

PĀIA-SADDA-MAHAṆṆAVO

A COMPREHENSIVE PRAKRIT-HINDI DICTIONARY
with Sanskrit equivalents, quotations
AND
complete references

BY
PANDIT HARGOVIND DAS T. SHETH

MOTILAL BANARSIDASS
Delhi Varanasi Patna Madras

पाइअ-सद्द-महण्णवि

(प्राकृत-शब्द-महार्णवः)

अर्थात्

विविध प्राकृत भाषाओं के शब्दों का संस्कृत प्रतिशब्दों से युक्त, हिन्दी अर्थों से अलंकृत,
प्राचीन ग्रन्थों के अनल्प अवतरणों और परिपूर्ण प्रमाणों से विभूषित बृहत्कोश

कर्ता

पंडित हरगोविन्ददास त्रिकमचंद सेठ

© मोती लाल बनारसीदास
मुख्य कार्यालय बगलो रोड, जवाहर नगर, दिल्ली ११० ००७
शास्त्राणँ चौक, वाराणसी २२१ ००१
अशोक राजपथ, पटना ८०० ००४
१२० रायपेट्टा हाई रोड, मैलापुर, मद्रास ६०० ००४

प्राकृत ग्रन्थ परिपद् ग्रन्थाङ्क ७
द्वितीय संस्करण वाराणसी, १९६३
पुनर्मुद्रण दिल्ली, १९८६

ISBN 81-208-0239-x

नरेन्द्रप्रकाश जैन, मोतीलाल बनारसीदास, दिल्ली ७
द्वारा प्रकाशित तथा जैनेन्द्रप्रकाश जैन, श्री जैनेन्द्र प्रेस, ए-४५,
फेज-१, नारायणा, नई दिल्ली २८ द्वारा मुद्रित ।

PUBLISHER'S NOTE

The present *Pāṭi-sadd-mahannavo* or 'The Great Ocean of Prākṛit Words' is a comprehensive Prākṛit-Hindī Dictionary compiled by Pt. Hargovind Das Trikam Chand Sheth and was first published slightly less than six decades ago in 1928. It is a pioneer work, being the result of several years' single-minded devotion and indefatigable labour on the part of the compiler, to whom the students and scholars of the Prākṛit language will ever remain grateful.

The work is of immense value since in addition to serving the needs of the students of Prākṛit it has also proved very much helpful to researchers in understanding Old-Hindī words of obscure origin as well as all the other languages of the Middle Indo-Aryan group including Old-Rajasthani, Old-Gujarati, Old-Marathi, Old-Bengali, Old-Maithili etc.

After its first appearance in 1928 the work remained out of print for a number of years when its rare copies were sold at fabulous prices—a fact further attesting to its importance, utility and popularity. To fulfil a pressing need a long awaited second edition was brought out by the Prākṛit Text Society in 1963 and in view of a persistent demand this reprint is being issued after a long gap for the benefit of the interested scholars.

The Publishers hope that the work will inspire talented scholars for further intensive research in the field culminating, so we wish, in a more comprehensive dictionary of the language including also the cognate Apabhramśa language and literature.

संकेत—सूची

अ	=	अव्यय ।
अक	=	अकर्मक धातु ।
(अप)	=	अपञ्च श भाषा ।
(अशो)	=	अशोक शिलालेख ।
उभ	=	सकर्मक तथा अकर्मक धातु ।
कर्म	=	कर्मणि-वाच्य ।
कवकृ	=	कर्मणि-वर्तमान-कृदन्त ।
कृ	=	कृत्य-प्रत्ययान्त ।
क्रि	=	क्रियापद ।
क्रिवि	=	क्रिया-विशेषण ।
गु०	=	गुजराती ।
(चूपै)	=	चूलिकापैशाची भाषा ।
त्रि	=	त्रिलिङ्ग ।
[दे]	=	देश्य-शब्द ।
न	=	नपुंसकलिङ्ग ।
पुं	=	पुंलिङ्ग ।
पुंन	=	पुलिङ्ग तथा नपुंसकलिङ्ग ।
पुंछी	=	पुलिङ्ग तथा छीलिङ्ग ।

(पै)	=	पैशाची भाषा ।
प्रयो	=	प्रेरणार्थक रिजन्त ।
व	=	बहुवचन ।
भकृ	=	भविष्यत्कृदन्त ।
भवि	=	भविष्यत्काल ।
भूका	=	भूतकाल ।
भूकृ	=	भूत-कृदन्त ।
(मा)	=	मागवी भाषा ।
वकृ	=	वर्तमान कृदन्त ।
वि	=	विशेषण ।
(शौ)	=	शौरसेनी भाषा ।
स	=	सर्वनाम ।
संकृ	=	सबन्धक कृदन्त ।
सक	=	सकर्मक धातु ।
छी	=	छीलिङ्ग ।
छीन	=	छीलिङ्ग तथा नपुंसकलिङ्ग
हेकृ	=	हेत्वर्थ कृदन्त ।

प्रमाण-ग्रन्थों [रेफरेन्सेज़] के संकेतों का विवरण

संकेत	ग्रन्थ का नाम	संस्करण आदि	जिसके अंक दिए गए हैं वह
अ.ग	= अंगविज्जा	प्राकृत ग्रन्थ परिपद, वाराणसी—५, १९५७	
अ.ग	= अंगचूलिआ	हस्तलिखित ।	
अ.त	= अतगडदसाओ	❧ १ रॉयल एसियाटिक सोसाइटी, लंडन, १९०७ २ आगमोदय-समिति, बम्बई, १९२० पत्र
अ.चु	= अचचुअसअअं	वाणीविलास प्रेस, मद्रास, १८७२	... गाथा
अ.जि	= अजिअसतिषव	स्व-संपादित, कलकत्ता, संवत् १९७८	... "
अ.ज्म	= अघ्यात्ममतपरीक्षा	१ भीमसिंह माणक, संवत् १९३३ २ जैन आत्मानन्द सभा, भावनगर "
अ.गु	= अणुओगदारसुत्त	१ राय घनपतिसिंहजी बहादुर, कलकत्ता, संवत् १९३६ २ आगमोदय समिति, १९२४ बम्बई, पत्र
अ.नु	= अणुत्तरोववाइअदसा	❧ १ रॉयल एसियाटिक सोसाइटी, लंडन, १९०७ २ आगमोदय-समिति, बम्बई, १९२० पत्र
अ.मि	= अभिज्ञानशाकुन्तल	निर्णयमागर प्रेस, बम्बई, १९१६	... पृष्ठ
अ.वि	= अविमारक	त्रिवेन्द्र संस्कृत सिरोज	... "
अ.उ	= आउरपञ्चखारणपयत्रो	१ जैन-धर्म-प्रचारक सभा, भावनगर, संवत् १९६६ २ शा. वालाभाई कलभाई, अहमदाबाद, संवत् १९६२ गाथा ... "
अ.क	= १ आवश्यककथा २ आवश्यक-एरज्यालु गनु	हस्तलिखित डाँ. इ. ल्युमेन्-संपादित, लाइपजिग, १८९७ पृष्ठ
अ.ख्या	= आख्यानकमणिकोश	प्राकृत ग्रन्थ परिपद, वाराणसी—५	
अ.चा	= आचारांगसूत्र	❧ १ डॉ. डवल्यु शुभ्रिगु संपादित, लाइपजिग, १९१० + २ आगमोदय-समिति, बम्बई, १९१६ ३ प्रो. रवजीभाई देवराज-संपादित, राजकोट, १९०६	... श्रुतस्कन्ध, अन्वय० ... "
अ.चानि	= आचारांग-नियुक्ति	आगमोदय-समिति, बम्बई, १९१६	... गाथा
अ.चू	= आवश्यकचूर्णि	हस्तलिखित	... अध्ययन
अ.आत्म	= आत्मसंबोधकुलक	† हस्तलिखित	... गाथा
अ.आत्महि	= आत्महितोपदेश-कुलक	"	... "
अ.आत्मानु	= आत्मानुशास्ति-कुलक	"	... "
अ.आनि	= आवश्यकनियुक्ति	१ यशोविजय-जैन-ग्रन्थमाला, बनारस । २ हस्तलिखित ।	

❧ ऐसी निशानी वाले संस्करणों में अकारादि क्रम में शब्द-सूची छपी हुई है, इसमें ऐसे संस्करणों के पृष्ठ आदि के अंकों का उल्लेख प्रस्तुत कोश में बहुधा नहीं किया गया है, क्योंकि पाठक उस शब्द सूची में ही अभिलिखित शब्द के स्थल को पुरन्त पा सकते हैं। जहाँ किसी विशेष प्रयोजन से अंक देने की आवश्यकता प्रतीत भी हुई है, वहाँ पर उसी ग्रन्थ की पद्धति के अनुसार अंक दिए गए हैं, जिसमें जिज्ञासु को अभीष्ट स्थल पाने में विशेष सुविधा हो।

+ इन संस्करणों में श्रुतस्कन्ध, अध्ययन और उद्देश के अङ्क समान होने पर भी सूत्रों के अङ्क भिन्न-भिन्न हैं। इससे इस कोष में जिस संस्करण से जो शब्द लिया गया है उसी का सूत्राङ्क वहाँ पर दिया गया है। अंक की गिनती उसी उद्देश्य या अध्ययन के प्रथम सूत्र से आरम्भ की गई है।

† अद्वेय श्रीयुक्त केशवलालभाई प्रेमचन्द मोदी, बी. ए., एल्. एल्., बी. से प्राप्त।

संकेत	ग्रन्थ का नाम	संस्करण आदि	जिसके अंक दिए गए हैं वह
आप	= आराधनाप्रकरण	शा. बालाभाई ककलभाई, अहमदाबाद, संवत् १९६२	गाया
आरा	= आराधनासार	मानिकचंद-दिगंबर-जैन-ग्रंथमाला, संवत् १९७३	"
आव	= आवश्यकसूत्र	हस्तलिखित
आवटि	= आवश्यक टिप्पण	देवचन्द लालभाई	
आवदी	= आवश्यक दीपिका	विजयदानसूरि ग्रंथमाला	
आवपगा	= आवश्यकसूत्र पत्रे गाया	(हरिभद्र टीका)	
आवम	= आवश्यकसूत्र मलर्यागरि टीका	हस्तलिखित
इदि	= इन्द्रियपराजयशतक	भीमसिंह माणिक, बंबई, संवत् १९६८	गाया
इक	= दि कोम्मोग्राफी देर् इदेर्	* डा. डबल्यु. किर्फेल-कृत, लाइपजिग, १९२०	
उत्त	= उत्तराध्ययनसूत्र	१ राय घनपतिसिंह बहादुर, कलकत्ता, संवत् १९३६ २ स्व-संपादित, कलकत्ता, १९२३ + ३ हस्तलिखित ..	अध्ययन, गाथा
उत्त	= उत्तराध्ययन सूत्र	देवचन्द लालभाई	
उत्त का	= "	डॉ. जे. कारपेंटिअर-संपादित, १९२१	..
उत्तनि	= उत्तराध्ययननियुक्ति	हस्तलिखित	...
उत्तर	= उत्तररामचरित	नियाँसागर प्रेस, बम्बई, १९१५	... पृष्ठ
उप	= उपदेशपद	हस्तलिखित गाथा
उप टी	= उपदेशपद-टीका	हस्तलिखित मूल-गाथा
उपपं	= उपदेशपचाशिका	† "	.. गाथा
उप पृ	= उपदेशपद	जैन विद्या-प्रचारक वगं, पालीताणा	पृष्ठ
उर	= उपदेशरत्नाकर	देवचन्द लालभाई पुस्तकोद्धार फंड, बम्बई, १९१४	अश, तरंग
उव	= उवएसमाला	* डॉ. एल्. पी. टेसेटोरि-संपादित, १९१३	..
उवकु	= उवदेशकुलक	† हस्तलिखित	... गाथा
उवर	= उपदेशरहस्य	मनसुखभाई भगुभाई, अहमदाबाद, संवत् १९६७	... "
उवा	= उवासगदसामो	* एसियाटिक सोसाइटी, बंगाल, कलकत्ता, १८६०	...
ऊव	= ऊवभग	त्रिवेन्द्र संस्कृत-सिरीज पृष्ठ
ओघ	= ओघनियुक्ति	आगमोदय समिति, बम्बई, १९१९	... गाथा
ओघ भा	= ओघनियुक्ति-भाष्य	" "
ओप	= ओपपत्रिकसूत्र	* डॉ. इ. ल्युमेन्-संपादित, लाइपजिग, १८८३	...
कप्प	= कल्पसूत्र	* डॉ. एच्. जेकोबी-संपादित, लाइपजिग, १८७९	..
कप्पू	= कपूरमञ्जरी	* हावर्ड् ओरिएण्टल् मिरोज, १९०१	...
कम्म १	= कर्मग्रंथ पहला	* आत्मानन्द-जैन-पुस्तक-प्रचारक मण्डल, आगरा, १९१८	गाथा
कम्म २	= " दूसरा	* " "	" "
कम्म ३	= " तीसरा	* " "	१९१९ "
कम्म ४	= " चौथा	* " "	१९२३ "

+ मुखबोधा नामक प्राकृत-बहुल टीका से विभूषित यह उत्तराध्ययन सूत्र की हस्त-लिखित प्रति आचार्य श्रीविजय-भेषमूरिकी के भंडार से अर्द्धेय श्रियुक्त के. प्रे. मोदी द्वारा प्राप्त हुई थी, इस प्रति के पृ १८६ हैं।

† अर्द्धेय श्रियुक्त के. प्रे. मोदी द्वारा प्राप्त।

संकेत ।	ग्रन्थ का नाम	संस्करण आदि	जिसके अंक दिए गए हैं वह
कम्म ५	= कर्मग्रन्थ पाँचवा	१ भीमसिंह माणिक, वम्बई, संवत् १९६८ २ जैन-धर्म-प्रसारक सभा, भावनगर, संवत् १९६८	“ गाथा ”
कम्म ६	= ,, छठवाँ	“	”
कम्मप	= कर्मप्रकृति	जैन-धर्म-प्रसारक-सभा, भावनगर, १९१७	“ पत्र
करु	= कर्तव्यावज्ञायुधम्	आत्मानन्द जैन-सभा, भावनगर, १९१६	“ पृष्ठ
कर्ण	= कर्णभार	त्रिवेन्द्र-संस्कृत-मिरीज	“
कपूर्	= कपूर्चरित (भाण)	गायकवाड श्रीरिएन्टल् सिरीज, नं. ८, १९१८	“
कर्म	= कर्मकुलक	† हस्त-लिखित	गाथा
कल्पभाष्य	= बृहत्कल्प-भाष्य	आत्मानन्द सभा	
,, गा०	= ,, गाथा	”	
कस	= (वृत्त) कल्पसूत्र	* डॉ डबल्यु शुक्ति संपादित, लाइपजिग, १९०५	“
कहा	= कहावली	अमुद्रित	
काप्र	= काव्यप्रकाश	वामनाचार्यवृत्त टीका-युक्त, निर्णयसागर प्रेस, वम्बई	“ पृष्ठ
काल	= कालकाचार्यकथानक	* डॉ एच् जेकोबी-संपादित, जेड्-डी-एम-जी, खंड ३४, १८८०	
किरात	= किराताजुनीय (व्यायोग)	गायकवाड श्रीरिएन्टल् सिरीज, नं. ८, १९१८	“ पृष्ठ
कुप्र	= कुमारपालप्रतिबोध	गायकवाड श्रीरिएन्टल् सिरीज, १९२०	“
कुमा	= कुमारपालचरित	* ववई-संस्कृत मिरीज, १९००	“
कुम्मा	= कुम्मापुलचरित्र	स्व-संपादित, कलकत्ता, १९१९	“ पृष्ठ
कुलक	= कुलकसंग्रह	जैन श्रेश्ठस्कर मंडल, म्हैसाणा, १९१४	“
खा	= खामणाकुलक	† हस्तलिखित	गाथा
खेत्त	= लघुक्षेत्रसमाप्त	भीमसिंह माणिक, ववई, संवत् १९६८	“
गउड	= गउडवहो	* ववई-संस्कृत-सिरीज, १८८७	“
गच्छ	= गच्छाचारपयन्नी	१ हस्तलिखित	“ अधिकार, गाथा
		२ चटुलाल मोहोलाला कोठारी, अहमदाबाद, संवत् १०८०	“
		३ मेठ जमनाभाई भगूभाई, अहमदाबाद, १९२४	“
गण	= गणधरस्मरण	स्व-संपादित, कलकत्ता, संवत् १९७८	गाथा
गणि	= गणिविज्जापयन्नी	राय धनपतिसिंह बहादुर, कलकत्ता, १८४२	“
गा	= गाथासप्तशती	+ १ डॉ. ए. वेवर् -संपादित, लाइपजिग, १८८१	“
		२ निर्णयसागर प्रेस, वम्बई, १९११	“
उ	= गुरुपारतन्त्र्य-स्मरण	स्व-संपादित, कलकत्ता, संवत् १९७८	गाथा
गुण	= गुणानुरागकुलक	अवालाल गोत्रधनदास, वम्बई, १९१३	“
गुभा	= गुरुवन्दनभाष्य	भीमसिंह माणिक, वम्बई संवत् १९६२	“ गाथा

† श्रद्धेय के. प्रे. मोदी द्वारा प्राप्त ।

+ लाइपजिगवाले संस्करण का नाम “सप्तशतक डेस हाल” है और वम्बईवाले का “गाथासप्तशती” । ग्रन्थ एक ही है, परन्तु वम्बईवाले संस्करण में सात शतको के विभाग में करीब ७०० गाथाएँ छपी हैं और लाइपजिगवाले में सोवे नंबर से ठीक १००० । एक से ७०० तक की गाथाएँ दोनों संस्करणों में एक सी हैं, परन्तु गाथाओं के क्रम में कहीं कहीं दो चार नंबरों का भ्रमा-पीछा है । ७०० के बाद का और ७०० के भीतर भी जहाँ गाथाओं के अनन्तर ‘अ’ दिया है वह नंबर केवल लाइपजिग के ही संस्करण का है ।

संज्ञित	ग्रंथ का नाम	संस्करण आदि	जिनके ग्रंथ दिए गए हैं वह
गुरु	= गुरुप्रदक्षिणापुलक	अनलाल गोवर्धनदास, बम्बई, १९६२	गाथा
गीत	= गीतमपुलक	भीममिह माणिक, बम्बई, संवत् १९६५	...
चउ	= चउमरणपयत्रो	१ जैन-धर्म-प्रसारक-सभा, भावनगर, संवत् १९६६ २ शा. बालाभाई ककलभाई, अहमदाबाद, संवत् १९६२	...
चउ	= चउपन्दमहापुरिमचरियं	प्रावृत्त ग्रंथ-परिपद, वाराणसी—५, १९६१	...
चंड	= प्रावृत्तलक्षण	* एसियाटिक सोसायटी, बंगाल, कलकत्ता, १८८०	...
चद	= चदपत्रति	हस्तलिखित	पाहुड
चार	= चारदत्त	त्रिवेन्द्र-संस्कृत-मिरोज	...
चेइय	= चेइयवदणमहाभाम	जैन आत्मानन्द सभा, भावनगर, संवत् १९६२	गाथा
चैत्य	= चैत्यवन्दन भाष्य	भीममिह माणिक, बम्बई, संवत् १९६२	...
जं	= जंयूद्वीपप्रज्ञति	१ देवचंद लालभाई पु० फंड, बम्बई, १९१० २ हस्तलिखित	वक्षस्कार
जय	= जयतिहुअण स्तोत्र	जैन प्रभाकर प्रिंटिंग प्रेस, रतलाम, प्रथमावृत्ति	...
जिन	= जिनदत्ताख्यान	सिधो जैन सिरोज	गाथा
जी	= जीवविचार	आत्मानन्द जैन-पुस्तक-प्रचारक मंडल, आगरा, संवत् १९७८	...
जीत	= जीतकल्प	हस्तलिखित	...
जीव	= जीवाजीवामिगमसूत्र	देवचंद लालभाई पुस्तकोद्धार फंड, बम्बई, १९१९	प्रतिपत्ति
जीवस	= जीवममासप्रकरण	† हस्तलिखित	गाथा
जीवा	= जीवानुशासनकुलक	अनलाल गोवर्धनदास, बम्बई, १९१३	...
जो	= ज्योतिष्करण्डक	हस्तलिखित	पाहुड
टि	= + टिप्पण (पाठान्तर)
टी	= † टीका
ठा	= ठाणगमुत्त (स्थानागमूत्र)	आगमोदय-समिति, बम्बई, १९१८-१९२०	ठाण०
एंदि	= एदिसूत्र	१ हस्तलिखित २ आगमोदय समिति, बम्बई, १९२४	...
एमि	= एमिज्जण न्मरण	स्व-संपादित, कलकत्ता, संवत् १९७८	गाथा
एया	= एयाधम्मकहामुत्त	आगमोदय समिति, बम्बई, १९१९	...
सदु	= संदुलवेयालियपयत्रो	१ हस्तलिखित २ दे० ला० पुस्तकोद्धार फंड, बम्बई, १९६२	...
ति	= तिजयपहृत्त	जैन-ज्ञान-प्रसारक-मंडल, बम्बई, १९११	गाथा
तित्व	= तित्थुगालियपयन्तो	हस्तलिखित	...
तो	= तोपंगल्य	हस्तलिखित	...
त्रि	= त्रिपुरदाह (डिम)	गायकवाड ओरिएण्टल् मिरोज, नं० ८ १९१८	पृष्ठ

† अश्वेय श्रीपुत्र के० प्रे- मोदी द्वारा प्राप्त ।

+ पाठान्तर वाले संस्करणों के जो पाठान्तर हमें उपादेय माने पड़े हैं उन्हें भी इन कोष में स्थान दिया है और प्रमाण के पाठ 'टि' शब्द जोड़ दिया है जिससे उन शब्द की उसी स्थान के टिप्पण का सम्बन्ध चाहिए ।

‡ जहाँ पर प्रमाण में ग्रंथ संज्ञित और स्थान-निर्देश के अन्तर 'टी' शब्द लिखा है वहाँ उन ग्रंथ के उसी स्थान की टीका के प्रावृत्तार से मतलब है ।

सकेत	ग्रंथ का नाम	संस्करण आदि	जिसके ग्रंथ दिए गए हैं वह
द	=	दंडकप्रकरण १ जैन-ज्ञान-प्रसारक-मंडल, बम्बई, १९११ २ भीमसिंह माणिक, बम्बई, १९०८	... गाथा ... "
दस	=	दर्शनशुद्धिप्रकरण हस्तलिखित	.. तत्त्व
दशभगस्त्य दशवैचू	} =	दशवैकालिक भगस्त्य सिंहचूणि P. T. S.	... "
दस	=	दसवैकालिकसूत्र १ भीमसिंह माणिक, बम्बई, १९०० २ डॉ० जीवराज घेलामाई, अहमदाबाद, १९६२	... अध्ययन० ... "
दसचू	=	दशवैकालिकचूलिका " " "	... चूलिका०
दसनि	=	दशवैकालिकनियुक्ति १ भीमसिंह माणिक, बम्बई, १९०० २ देवचन्द लालभाई	... अध्ययन, गाथा
दशवैवृद्ध	=	दशवैकालिक वृद्ध विवरण मुद्रित चूणि, ऋषभदेव केसरीमल	.. "
दसा	=	दशानुतस्कन्ध हस्तलिखित	... "
दीव	=	दीवसागरपन्नति "	...
दूत	=	दूतघटोत्कच त्रिवेन्द्र संस्कृत-सिरीज	पृष्ठ
दे	=	देशीनाममाला बम्बई-संस्कृत-सिरीज, १८८०	वर्ग, गाथा
देव	=	देवेन्द्रस्तवप्रकीर्णक हस्तलिखित	..
देवदिन्न	=	देवदिन्न कथानक "	...
देवेन्द्र	=	देवेन्द्रनरकेन्द्रप्रकरण जैन आत्मानन्द सभा, भावनगर, १९२२	... गाथा
द्र	=	द्रव्यसित्तरी १ जैन धर्म-प्रसारक-सभा, भावनगर, संवत् १९५८ २ शा० वेणीचंद सूरचंद, म्हेसाणा, १९०६	... " ...
द्रव्य	=	द्रव्यसंग्रह जैन-ग्रंथ रत्नाकर-कार्यालय, बंबई, १९०६	... "
धण	=	अणभपचाशिका अध्वमाला, सप्तम गुच्छक, बंबई, १८९०	... "
धम्म	=	धर्मरत्नप्रकरण सटीक १ जैन विद्या-प्रचारक वर्ग, पालीताणा, १९०५ २ हस्तलिखित	.. मूल-गाथा ... "
धम्मि	=	धम्मिलहिंडी (वसुदेवहिंडी अन्तर्गत) आत्मानन्द सभा	..
धम्मो	=	धम्मोवएसकुलक † हस्तलिखित	... गाथा
धर्म	=	धर्मसंग्रह जैन-विद्या-प्रचारक-वर्ग, पालीताणा, १९०५	... अधिकार
धर्मर	=	धर्मरत्नलघुवृत्ति आत्मानन्द सभा	...
धर्मवि	=	धर्मविधिप्रकरण सटीक जिसंगभाई छोटालाल सुतरीया, अहमदाबाद, १९२४	... पत्र
धर्मस	=	धर्मसंग्रहणी दे० ला० पुस्तकोद्धार फंड, बंबई, १९१६-१८	... गाथा
धर्मा	=	धर्माभ्युदय जैन-आत्मानन्द-सभा, भावनगर, १९१८	... पृष्ठ
धात्वा	=	प्राकृतधात्वादेश एसियाटिक सोसाइटी ऑफ बंगाल, १९२४	.. पृष्ठ
ध्व	=	ध्वन्यालोक निराण्यसागर प्रेस, बंबई	... "
नंदीटिप्प	=	नन्दीटिप्पण P. T. S.	...
नलदवरास	=	नलदवदंतोरास (अपिबर्धन), वेन्डर संपादित	...

संकेत	ग्रन्थ का नाम	संस्करण आदि	जिसके अंक दिए गए हैं वह
नव	= नवतत्त्वप्रकरण	१ आत्मानन्द-जैन-सभा, भावनगर २ ग्रान्थ-जैन धर्म-प्रवर्तक-सभा, अहमदाबाद, १९०६	.. गाथा ... "
नाट	= † नाटकीयप्राकृतशब्दसूची		
निबू	= निशोयचूणि	हस्तलिखित	... उद्देश
निर	= निरयावलोसूत्र	१ हस्तलिखित २ आगमोदय-समिति, बम्बई, १९२२	... वर्ग, अष्ट्य० .. "
निसा	= निशाविरामकुलक	१ हस्तलिखित	... गाथा
निसी	= निशोयसूत्र	हस्तलिखित	... उद्देश
पञ्चम	= पञ्चमचरित्र	जैन-धर्म-प्रसारक-सभा, भावनगर, प्रथमावृत्ति	पर्व, गाथा
पञ्चम	= पञ्चमचरित्र	प्राकृत-ग्रन्थ-परिपद, वाराणसी-५	... "
पञ्च	= पञ्चसंग्रह	१ हस्तलिखित २ जैन आत्मानन्द सभा, भावनगर, १९१९	द्वार, गाथा .. "
पञ्चभा	= पञ्चकल्पभाष्य	हस्तलिखित	... "
पञ्चव	= पञ्चवस्तु	,, ..	द्वार
पञ्चा	= पञ्चानकप्रकरण	जैन-धर्म-प्रसारक सभा, भावनगर, प्रथमावृत्ति	... पञ्चानक
पञ्चू	= पञ्चकल्पचूणि	हस्तलिखित	...
पनि	= पञ्चनिर्ग्रन्थीप्रकरण	आत्मानन्द-जैन सभा, भावनगर, संवत् १९७४	... गाथा
पंरा	= पञ्चरात्र	प्रिवेन्द्र संस्कृत-मिरीज	... पृष्ठ
पंसू	= पञ्चसूत्र	हस्तलिखित सूत्र

† सेंट्रल लाइब्रेरी, बड़ोदा में स्थित एक मुख्यपृष्ठ-हीन पुस्तक में गृहीत, जिनके पूर्ण भाग में क्रमशः का प्राकृत व्याकरण और उत्तर भागमें 'प्राकृतमिथानम्' शीर्षक से कतिपय ग्रंथों में उद्धृत प्राकृत शब्दों की एक छोटी सी सूची छपी हुई है। इस सूची में उन ग्रंथों के जो सक्षिप्त नाम और पृष्ठाङ्क दिए गये हैं वे ही नाम तथा पृष्ठाङ्क ज्यों के त्यों प्रस्तुत रूप में भी यथास्थान 'नाट' के बाद रखे गये हैं। उक्त पुस्तक में उन ग्रंथों के सक्षिप्त नामों तथा संस्करणों का विवरण इस तरह है,—

मालती	101	मालतीमाधवम्	Calcutta Edition of 1830
चैत	,,	चैतन्यचन्द्रोदयम्	" 1854
विक्र	,,	विक्रमोर्वशी	" 1830
साहित्य	,,	साहित्यदर्पण	Edition of Asiatic Society
उत्तर	,,	उत्तररामचरित	Calcutta Edition of 1831
रत्ना	,,	रत्नावली	" 1832
मृच्छ	,,	मृच्छकटिक	" 1832
प्राप्र	,,	प्राकृतप्रकाश	Mr Cowell's Edition of 1854
शकु	,,	शकुन्तला	Calcutta Edition of 1840
मानवि	,	मालविकाग्निमित्र	Lulberg's Edition of 1850
वेणि	,,	वेणिसहार	Muktaram's Edition of 1855
पात्र	,,	सक्षिप्तसारस्य प्राकृताव्याय	
महावी	,,	महावीरचरितम्	Trithen's Edition of 1848
पिंग	,,	पिंगल.	Ms.

† अष्ट्रेय के, प्रे. मोदी द्वारा प्राप्त ।

संकेत	ग्रन्थ का नाम	संस्करण आदि	जिसके अंक दिए गए हैं वह
पक्खि	= पक्खिसूत्र	भीमसिंह माणिक, बम्बई, संवत् १९६२	...
पच्च	= महापच्चक्खणाणपयसो	शा. बालाभाई ककलभाई, अहमदाबाद, संवत् १९६२	गाथा
पडि	= पंचप्रतिक्रमणसूत्र	१ जैन-ज्ञान-प्रसारक-मंडल, बम्बई, १९११ २ आत्मानन्द-जैन-पुस्तक-प्रचारक मंडल, आगरा, १९२१	
परण	= परणवणामुत्त	राय घनपतिसिंह बहादुर, बनारस, संवत् १९४०	.. पद
परह	= प्रश्नव्याकरणसूत्र	आगमोदय समिति, बम्बई, १९१६	श्रुतस्कन्ध, द्वार
पभा	= पच्चक्खणाभाष्य	भीमसिंह माणिक, बम्बई, संवत् १९६२	... गाथा
पव	= प्रवचनसारोद्धार	१ .. संवत् १९३४ २ दे० ला० पुस्तकोद्धार फंड, बम्बई, १९२२-२५	+ द्वार ..
पस	= प्रज्ञापनोपाङ्ग तृतीयपदसंग्रहणी	आत्मानन्द-जैन सभा, भावनगर, संवत् १९७४	गाथा
पाग्र	= पाइअलच्छीनाममाला	* बी. बी. एण्ड कंपनी, भावनगर, संवत् १९७३	..
पार्थ	= पार्थपराक्रम	गायकवाड ओरिएण्टल सिरीज, नं. ४, १९१७	पृष्ठ
पि	= ग्रामेटिक देर प्राकृत स्पाखन्	डा. आर्. पिरोल् कृत, १९००	पैरा
पिंग	= प्राकृतपिंगल	* एसियाटिक सोसाइटी, बंगाल, कलकत्ता, १९०२	...
पिड	= पिडनिष्ठुंक्ति	१ हस्तलिखित २ दे० ला० पुस्तकोद्धार फंड, बम्बई, १९२२	... गाथा ..
पिडभा	= पिडनिष्ठुंक्तिभाष्य
पुष्फ	= पुष्पमालाप्रकरण	जैन-श्रेयस्कर-मंडल, म्हेसाणा, १९११	...
प्रति	= प्रतिमानाटक	त्रिवेन्द्र संस्कृत-सिरीज	.. पृष्ठ
प्रबो	= प्रबोधचन्द्रोदय	निरांयसागर प्रेस, बम्बई, १९१०	..
प्रयौ	= प्रतिज्ञायौगन्धरायण	त्रिवेन्द्र संस्कृत सिरीज	..
प्रवि	= प्रव्रज्या-विधान-कूलक	† हस्तलिखित	... गाथा
प्राकृ	= प्राकृतसर्वस्व (मार्कण्डेयकृत)	विभागापटन्, विशाखापट्टणम्	पृष्ठ
प्राप	= इण्टरडिक्शन टु दि प्राकृत	* पंजाब युनिवर्सिटी, लाहौर, १९१७	..
प्राप्र	= प्राकृतप्रकाश	* १ डा. कावल्-सपादित, लंडन, १८८८ * २ बगीच-साहित्य-परिपद, कलकत्ता, १९१४
प्राभा	= प्राकृतमार्गोपदेशिका	* शाह हर्षचन्द्र भूराभाई, बनारस, १९११	..
प्राकृ	= प्राकृतशब्दरूपावली	* सेठ मनमुखभाई भगुभाई, अहमदाबाद, संवत् १९६८	..
प्रासू	= प्राकृतसूक्तस्वमाला	जैन-विविध-साहित्य शास्त्र-माला, बनारस, १९१६	.. गाथा
बाल	= बालचरित	त्रिवेन्द्र-संस्कृत-सिरीज	... पृष्ठ
बृह	= बृहत्कल्पभाष्य	हस्तलिखित	.. उद्देश
भग	= भगवतीसूत्र	* १ जिनागमप्रकाश सभा, बम्बई, संवत् १९७४ २ हस्तलिखित	... शतक, उद्देश
भत्त	= भत्तपरिणयणपयसो	३ आगमोदय समिति, बम्बई, १९१८-१९१९-१९२१ १ जैन-धर्म-प्रसारक-सभा, भावनगर, संवत् १९६६	.. गाथा
भवबुक्था	= भवभावनावृत्तिकथा	२ शा. बालाभाई ककलभाई, अहमदाबाद, संवत् १९६२ देवचन्द लालभाई	..

+ द्वार—प्रारम्भ के पूर्व के प्रस्ताव के लिए 'पव' के बाद केवल गाथा के अंक दिए गए हैं।

† अर्द्धेय श्रीयुत के प्रे. मोदी द्वारा प्राप्त।

संकेत	ग्रन्थ का नाम	नस्करण आदि	जिसके अंक दिए गए हैं वह
भवि	= भविसत्तकहा	* १ डा एच्. जेकोवी-संपादित १९१८ * २ गायकवाड ओरिएण्टल सिरीज, १९२३	
भाव	= भावकुलक	अबालाल गोवर्धनदास, बम्बई १९१३	गाथा
भास	= भाषारहस्य	मेठ मनमुखभाई भगुभाई, अहमदाबाद	"
मगल	= मगलकुलक	† हस्तलिखित	"
मव्य	= मध्यमव्यायोग	त्रिवेन्द्र सम्कृत-सिरीज	*** पृष्ठ
मन	= मनोनिग्रहभावना	† हस्तलिखित	गाथा
महा	= आउसगेव्यालते एरस्यालुंगन् इन् महाराष्ट्री	❧ टी. एच. जेकोवी-संपादित, लाइपजिग, १८८६	
महानि	= महानिशीयसूत्र	हस्तलिखित	अध्ययन
मा	= मालविकार्गिनमित्र	निर्णयसागर प्रेस, बम्बई १९१५	" पृष्ठ
माल	= मालतीमाधव	" "	"
मुणि	= मुनिसुव्रतस्वामिचरित	हस्तलिखित	" गाथा
मुद्रा	= मुद्राराक्षस	बम्बई-संस्कृत-सिरीज, १९१५	पृष्ठ
मृच्छ	= मृच्छकटिक	१ निर्णयसागर प्रेस, बम्बई, १९१६ २ बम्बई-संस्कृत-सिरीज, १८९६	"
मै	= मैथिलीकल्याण	माणिकचन्द-दिगम्बर जैन ग्रन्थमाला, बम्बई, १९७३	"
मोह	= मोहराजपराजय	गायकवाड ओरिएण्टल सिरीज, नं. ६, १९१८	"
यति	= यतिशिक्षापांचाशिका	† हस्तलिखित	गाथा
रभा	= रंभाभजरी	* निर्णयसागर प्रेस, बम्बई, १८८६	"
रत्न	= रत्नत्रयकुलक	† हस्तलिखित	गाथा
रयण	= रयणसेहरनिवकहा	स्व-संपादित, बनारस, १९१८	पृष्ठ
राज	= अभिषानराजेन्द्र	* जैन-प्रभाकर प्रिंटिंग प्रेस, रतलाम	
राय	= रायपसेणुसुत्त	१ हस्तलिखित २ प्रागमोदय-समिति बम्बई, १९२५	" पत्र
रुक्मि	= रुक्मिणी-हरण (ईहामृग)	गायकवाड ओरिएण्टल सिरीज, नं. ८, १९१८	पृष्ठ
लघु	= लघुसग्रहणी	भीमसिंह माणिक, बम्बई, १९०८	" गाथा
लघुग्र	= लघुअजितशान्ति स्मरण	स्व-संपादित, कलकत्ता, सवत् १९७८	"
लोक	= लोकप्रकाश	देवचन्द लालभाई	
वज्रा	= वज्रालम्ब	एसियाटिक सोसाइटी, बंगाल, कलकत्ता	पृष्ठ
वव	= व्यवहारसूत्र, सभाष्य	१ हस्तलिखित २ मुनि माणिक संपादित, भावनगर, १९२६	" उद्देश्य
वसु	= वसुदेवहिंडी	१ हस्तलिखित २ आत्मानन्द सभा	"
वा	= वाग्भटकाव्यानुशासन	निर्णयसागर प्रेस, बम्बई, १९१५	पृष्ठ
वाग्र	= वाग्भटालकार	" १९१६	"
वि	= विषयत्यागोपदेशकुलक	† हस्तलिखित	*** गाथा

संकेत	ग्रन्थ का नाम	संस्करण आदि	जिसके अंक दिए गए हैं वह
विक्र	= विक्रमोवंशीय	निर्णयसागर प्रेस, बम्बई, १९१४	पृष्ठ
विक्र	= विक्रान्तकौरव	भाणिकचन्द-दिगम्बर-जैन-ग्रन्थ-माला, सवत् १९७२	"
विचार	= विचारसारप्रकरण	आगमोदय-समिति, बम्बई, १९२३	गाथा
विपा	= विपाकश्रुत	स्व-संपादित, कलकत्ता सवत् १९७६	श्रुतम्कन्द, अथर्व०
विवे	= विवेकमजरीप्रकरण	स्व-संपादित, बनारस, सवत् १९७५-७६	गाथा
विसे	= विशेषावश्यकभाष्य	स्व संपादित, बनारस, वीर-सवत् २४२१	"
वृष	= वृषभानुजा	निर्णयसागर प्रेस, बम्बई, १८९५	पृष्ठ
वेणी	= वेणीसहार	निर्णयसागर प्रेस, बम्बई, १९१५	"
वै	= वैराग्यशतक	विठ्ठलभाई जीवाभाई पटेल, अहमदाबाद, १९२०	गाथा
आ	= आद्वैतप्रतिक्रमणसूत्रवृत्ति	दे०ला० पुस्तकोद्धार फंड, बम्बई, १९१९	*** मूलगाथा
आवक	= आवकप्रज्ञप्ति	१ श्रीयुत केशवलाल प्रेमचन्द संपादित, १९०५ २ जैन धर्म शाखा	गाथा
श्रु	= श्रुतास्वाद	† हस्तलिखित	"
पड्	= पड्भाषाचन्द्रिका	* बम्बई संस्कृत एन्ड प्राकृत सिरीज, १९१६	"
स	= समराइचकहा	एसियाटिक सोसाइटी, बंगाल, कलकत्ता, १९०८-२३	पृष्ठ
स	= सवोधसत्तरी	विठ्ठलभाई जीवाभाई पटेल, अहमदाबाद, १९२०	गाथा
सक्षि	= सक्षिप्तसार	१ हस्तलिखित २ संस्कृत प्रेम डिपोजिटरी, कलकत्ता, १८८९	पृष्ठ
संग	= वृहत्संग्रहणी	१ भीमसिंह माणिक, बम्बई, संवत् १९६८ २ आत्मानन्द जैन सभा, भावनगर, सवत् १९७३	गाथा "
संघ	= संघाचारभाष्य	हस्तलिखित	प्रस्ताव
सच	= शान्तिनाथचरित्र (देवचन्द्रसूरि-कृत)	"	"
सति	= सतिकरस्तोत्र	१ जैन-ज्ञान-प्रसारक-मंडल, बम्बई, १९११ २ आत्मानन्द-जैन-पुस्तक-प्रचारक-मंडल, आगरा, १९२१	गाथा "
सथा	= सथारगपयज्ञो	१ हस्तलिखित २ जैन-धर्म-प्रचारक-सभा, भावनगर, सवत् १९६६	" "
सवोध	= सवोधप्रकरण	जैन ग्रन्थ-प्रकाशक-सभा, अहमदाबाद, १९१६	पत्र
सवे	= सवेगचूलिकाकुलक	† हस्तलिखित	गाथा
सवेग	= सवेगमजरी	"	"
सट्टि	= सट्टिसयपयरण	१ स्व-संपादित, बनारस, १९१७ २ सत्यविजय-जैन-ग्रन्थमाला, नं० ६, अहमदाबाद, १९२५	" "
सण	= सनत्कुमारचरित	* डॉ एच जेकोबी-संपादित, १९२१	"
सत्त	= उपदेशसमांतिका	जैन धर्म-प्रसारक-सभा, भावनगर, सवत् १९७६	गाथा
सम	= समवायागसूत्र	आगमोदय समिति, बम्बई, १९१८	पृष्ठ
समु	= समुद्रमन्थन (समवकार)	गायकवाड थोरिएन्टल सिरीज, नं० ८, १९१८	"
सम्म	= सम्मत्तिसूत्र	जैन-धर्म प्रसारक-सभा, भावनगर, सवत् १९६५	गाथा

संकेत	ग्रन्थ का नाम	संस्करण आदि	जिसके अंक दिए गए हैं वह
सम्मत्त	=	सम्यक्त्वसप्तति सटीक दे० ला० पुस्तकोद्धार-फंड, बम्बई, १९१६	पत्र
सम्य	=	सम्यक्त्वस्वरूप पञ्चीसो शंभालाल गोवर्धनदास, बम्बई, १९१३	गाथा
सम्यक्त्वो	=	सम्यक्त्वोत्पादविधिकुलक † हस्तलिखित	”
सा	=	सामान्यगुणोपदेशकुलक ”	”
सार्ध	=	गणधरसार्धशतकप्रकरण जौहरी चुन्नीलाल पन्नालाल, बम्बई, १९१६	”
सिक्खा	=	शिक्षाशतक † हस्तलिखित	”
सिग्ध	=	सिग्धमवहरउ-स्मरण स्व संपादित, कलकत्ता, संवत् १९७८	”
सिरि	=	सिरिसिरिवालकहा दे० ला० पुस्तकोद्धार फंड, बम्बई, १९२३	”
मुख	=	मुखबोधा टीका (उत्तराध्ययनस्य) ‡ हस्तलिखित	” अध्ययन, गाथा
सुज्ज	=	सूर्यप्रज्ञप्ति आगमोदय-समिति, बम्बई, १९१९	पाहुड
सुपा	=	सुपासनाहचरित्र स्व-संपादित बनारस, १९१८-१९	पृष्ठ
सुर	=	सुरसुदरोचरित्र जैन-विविध-साहित्य-शास्त्र-माला, बनारस, १९१६	परिच्छेद, गाथा
सूध	=	सूधगडागसुत + १ भीमसिंह माणिक, बंबई, १९३६	श्रुतस्कंध, अध्या०
		२ आगमोदय समिति, बंबई, संवत् १९१७	”
सूधनि	=	सूत्रकृताङ्गनियुक्ति १ हस्तलिखित	श्रुतस्कंध
		२ आगमोदय-समिति, बंबई, संवत् १९७३	गाथा
		३ भीमसिंह माणिक ” ” १९३६	”
सूक्त	=	सूक्तमुक्तावली दे० ला० पुस्तकोद्धार फंड, बंबई, १९२२	पत्र
सूत्रचू	=	सूत्रकृतागचूणि P 'I' S	
से	=	सेतुचंघ निर्णयसागर प्रेस, बंबई, १८९५	आश्वासक, पत्र
स्वप्न	=	स्वप्नवासवदत्त त्रिवेन्द्र-संस्कृत-सिरीज	पृष्ठ
हम्मीर	=	हम्मीरमदमदन गायकवाड ओरिएण्टल सिरीज, न. १०, १९२०	”
हास्य	=	हास्यचूडामणि (प्रहसन) ”	”
हि	=	हितोपदेशकुलक † हस्तलिखित	गाथा
हित	=	हितोपदेशसारकुलक ”	”
हे	=	हेमचन्द्र-प्राकृत-व्याकरण * १ डॉ. आर्. पिशेल-संपादित, १८७७	पद, सूत्र
		२ बंबई-संस्कृत-सिरीज, १९००	”
हेका	=	हेमचन्द्र-काव्यानुशासन निर्णयसागर प्रेस, बंबई, १९०१	पृष्ठ

† श्रद्धेय श्रीयुत के प्रे. मोदी द्वारा प्राप्त ।

‡ देखो 'उत्त' के नीचे की टिप्पणी ।

+ सूत्र के अंक इन दोनों में भिन्न भिन्न हैं, प्रस्तुत कोष में सूत्रांक केवल भी. मा. के संस्करण के दिए गये हैं ।

प्रथम संस्करण में लेखक का निवेदन

कोई भी भाषा के ज्ञान के लिए उस भाषा का व्याकरण और कोष प्रदान साधन है। प्राकृत भाषा के प्राचीन व्याकरण अनेक हैं, जिनमें चड का प्राकृतलक्षण, वररुचि का प्राकृतप्रकाश, हेमाचार्य का मिद्धहेम (अष्टम अव्याय), मार्कण्डेय का प्राकृतसर्वस्व और लक्ष्मीधर की पड्भाषाचन्द्रिका मुख्य हैं। और अर्वाचीन प्राकृत व्याकरणों की सख्या अल्प होने पर भी उनमें जर्मनी के सुप्रसिद्ध प्राकृत-विद्वान् डॉ. पिशाल का प्राकृतव्याकरण सर्वश्रेष्ठ है जो अतिविस्तृत और तुलनात्मक है। परन्तु प्राकृत-कोष के विषय में यह बात नहीं है। प्राकृत के प्राचीन कोषों में ग्रन्थापि पर्यन्त केवल दो ही कोष उपलब्ध हुए हैं—परिणत धनपाल-कृत पाइअलच्छीनाममाला और हेमाचार्-प्रणीत देशीनाममाला। इनमें पहला अतिसंक्षिप्त—दो सौ से भी कम पन्नों में ही समाप्त और दूसरा केवल देश्य शब्दों का कोष है। इनके सिवा अन्य कोई भी प्राकृत का कोष न होनेसे प्राकृत के हर एक अभ्यासी को अपने अभ्यास में बहुत असुविधा होती थी, खुद मुझे भी अपने प्राकृत-ग्रन्थों के अनुशीलन-काल में इस अभाव का कटु अनुभव हुआ करता था। इससे आज से करीब पनरह साल पहले पूज्यपाद, प्रात-स्मरणीय, गुरुवर्य शास्त्र-विशारद जैनाचार्य श्री १-०८ श्री विजयधर्मसूरीश्वरजी महाराज की प्रेरणा ने प्राकृत का एक उपयुक्त कोष बनाने का मैंने विचार किया था।

इसी अरसे में श्री राजेन्द्र सूरिजी का अभिवानराजेन्द्र नामक कोष का प्रथम भाग प्रकाशित हुआ और अभी दो वर्ष हुए इसका अन्तिम भाग भी बाहर हो गया है। बड़ी बड़ी सात जिल्दों में यह कोष समाप्त हुआ है। इस संपूर्ण कोष का मूल्य २६०) रुपये हैं जो परिश्रम और ग्रन्थ-परिमाण में अधिक नहीं कहे जा सकते। यद्यपि इस कोष की विस्तृत आलोचना करने की न तो यहाँ जगह है, न आवश्यकता ही, तथापि यह कहे बिना नहीं रहा जा सकता कि इसकी तय्यारी में इसके कर्ता और उसके सहकारियों की सचमुच घोर परिश्रम करना पड़ा है और प्रकाशन में जैन श्वेताम्बर संघ को भारी धन-व्यय। परन्तु खेद के साथ कहना पड़ता है कि इसमें कर्ता की सफलता की अपेक्षा निष्फलता ही अधिक मिली है और प्रकाशक के धनका अपव्यय ही विशेष हुआ है। सफलता न मिलने का कारण भी स्पष्ट है। इस ग्रन्थ को थोड़े गौर से देखने पर यह सहज ही मालूम होता है कि इसके कर्ता को न तो प्राकृत भाषाओं का पर्याप्त ज्ञान था और न प्राकृत शब्द-कोष के निर्माण की उतनी प्रबल इच्छा, जितनी जैन दर्शन-शास्त्र और तर्क-शास्त्र के विषय में अपने पाण्डित्यप्रख्यापन की धृति। इसी धृति ने अपने परिश्रम को योग्य दिशा में ले जानेवाली विवेक-बुद्धि का भी हान कर दिया है। यही कारण है कि इस कोष का निर्माण, केवल पचहत्तर से भी कम प्राकृत जैन पुस्तकों के ही, जिनमें अध्रमागवी के दर्शनविषयक ग्रन्थों की बहुलता है, आधार पर किया गया है और प्राकृत की ही इतर मुख्य शाखाओं के तथा विभिन्न विषयों के अनेक जैन तथा जैनेतर ग्रन्थों में एक का भी उपयोग नहीं किया गया है। इससे यह कोष व्यापक न होकर प्राकृत भाषा का एकदेशीय कोष हुआ है। इसके सिवा प्राकृत तथा संस्कृत ग्रन्थों के विस्तृत अर्थों को और कही-कही तो छोटे-बड़े संपूर्ण ग्रन्थों की ही अवतरण के रूप में उद्धृत करने के कारण पृष्ठ-सख्या में बहुत बड़ा होने पर भी शब्द-सख्या में ऊन ही नहीं, बल्कि आधार-भूत ग्रन्थों में आए हुए कई उपयुक्त शब्दों को छोड़ देने से और विशेषार्थ-हीन अतिदीर्घ सामासिक शब्दों की भरती से वास्तविक शब्द-सख्या में यह कोष अतिन्यून भी है। इतना ही नहीं, इस कोष में आदर्श पुस्तकों की, असावधानी की और प्रेस की तो असंख्य अशुद्धियाँ हैं ही, प्राकृत भाषा के अज्ञान से सवन्ध रखनेवाली भूलों की भी कमी नहीं है। और सबसे बड़कर दोष इस कोष में यह है कि वाचस्पत्य, अनेकान्नजयपताका, अष्टक, रत्नाकराचतारिका आदि केवल संस्कृत के और जैन इतिहास जैसे

१. जैसे 'चेद्व्य' शब्द की व्याख्या में प्रतिमागतक नामक मटीक संस्कृत ग्रन्थ की आदि से लेकर अन्त तक उद्धृत किया गया है। इस ग्रन्थ की श्लोक-सख्या करीब पाँच हजार है।

२. अक्ष = अर्क आदि।

३. जैसे अइ-तिव्व-रोस, अइ-दुक्ख-वम्म, अइ-तिव्व-कम्म-विगम, अकुसल-जोग-एणरोह, आचियते(?) उर-पर-धर-प्पवेस, अजिम्म(?) कत-एयणा, अजस-सय-विसप्पमाण-हियय, अजहण्णको(?) स-एएसिय आदि। इन शब्दों का इनके अवयवों की अपेक्षा कुछ भी विशेष अर्थ नहीं है।

केवल आधुनिक गुजराती ग्रन्थों के संस्कृत और गुजराती शब्दों पर से कोरी निजी कल्पना से ही बनाये हुए प्राकृत शब्दों की हममें खूब मिलावट की गई है, जिससे इस कोष की प्रामाणिकता ही एकदम नष्ट हो गई है। ये और अन्य अनेक अक्षम्य दोषों के कारण साधारण अभ्यासी के लिए इस कोष का उपयोग जितना आमक और भयकर है, विद्वानों के लिए भी उतना ही क्लेशकर है।

इस तरह प्राकृत के विविध भेदों और विषयों के जैन तथा जैनतर साहित्य के यथेष्ट शब्दों से संकलित, आवश्यक अवतरणों से युक्त, शुद्ध एवं प्रामाणिक कोष का नितान्त अभाव बना ही रहा। इस अभाव की पूर्ति के लिये मैंने अपने उक्त विचार को कार्य-रूप में परिणत करने का दृढ़ संकल्प किया और तदनुसार शीघ्र ही प्रयत्न भी शुरू कर दिया गया, जिसका फल प्रस्तुत कोष के रूप में चौदह वर्षों के कठोर परिश्रम के पश्चात् आज पाठकों के सामने उन्मिश्रित है।

प्रस्तुत कोष की तय्यारी में जो अनेक कठिनाइयाँ मुझे भोगनी पड़ी हैं उनमें सर्व-प्रथम प्राकृत के शुद्ध पुस्तकों के विषय में थी। प्राकृत का विशाल साहित्य-भण्डार विविध-विषयक ग्रन्थ-रत्नों से पूर्ण होने पर भी आज तक वह यथेष्ट रूप में प्रकाशित ही नहीं हुआ है। और हस्त-लिखित पुस्तकें तो बहुधा अज्ञान लेखकों के हाथ से लिखी जानेके कारण प्रायः अशुद्ध ही हुआ करती हैं, परन्तु आज तक जो प्राकृत की पुस्तकें प्रकाशित हुई हैं वे भी, न्यूनाधिक परिमाण में, अशुद्धियों से खाली नहीं हैं। अतः, यूरोप की और इन देश की कुछ पुस्तकें ऐसी उत्तम पद्धति से छपी हुई हैं कि जिनमें अशुद्धियाँ बहुत ही कम हैं, और जो कुछ रह भी गई हैं वे उनमें टिप्पणी में दिए हुए अन्य प्रतियों के पाठान्तरो से सुधारी जा सकती हैं। परन्तु दुर्भाग्य से ऐसे संस्करणों की संख्या बहुत ही अल्प—नगण्य है। सचमुच, यह बड़े खेद की बात है कि भारतीय और खास कर हमारे जैन विद्वान् प्राचीन पुस्तकों के संशोधन में अधिक हस्त-लिखित पुस्तकों का उपयोग करने की और उनके भिन्न-भिन्न पाठों को टिप्पणी के आकार में उद्धृत करने की तकलीफ ही नहीं उठाते। इसका नतीजा यह होता है कि संशोधक की वृद्धि में जो पाठ शुद्ध मालूम होता है वही एक, फिर चाहे वह वास्तव में अशुद्ध ही क्यों न हो, पाठकों को देवने की मिलता है। प्राकृत के इतर मुद्रित ग्रन्थों की तो यह दुर्दशा है ही, परन्तु जैनों के पवित्रतम और अति प्राचीन आगम-ग्रन्थों की भी यही अवस्था है। कई वर्षों के पहले मुर्शिदाबाद के प्रसिद्ध वन-कुबेर राय धनपतिसिंहजी बहादुर ने अनेक आगम-ग्रन्थ भिन्न-भिन्न स्थानों में भिन्न-भिन्न संशोधकों ने संपादित करा कर छपवाये थे, जिनमें अधिकांश अज्ञानी संशोधकों से सम्पादित होनेके कारण खूब ही अशुद्ध छपे थे। किन्तु अभी कुछ ही वर्ष हुए हमारी आगमोदय समिति ने अच्छा फंड एकत्रित करके भी जो आगमों के ग्रन्थ छपवाये हैं वे कागज, छपाई सफाई आदि बाह्य शरीर की सजावट में सुन्दर होने पर भी शुद्धता के विषय में बहुधा पूर्वोक्त संस्करणों की पुनरावृत्ति ही है। क्योंकि, न किसी में आदर्श-पुस्तकों के पाठान्तर देने का परिश्रम किया गया है, न मूल और टीका के प्राकृत शब्दों की संगति की ओर ध्यान दिया गया है, और न तो प्रथम संस्करण की साधारण अशुद्धियाँ सुधारने की यथोचित कोशिश ही की गई है। क्या ही अच्छा हो, यदि श्री आगमोदयसमिति के कार्य-कर्त्ताओं का ध्यान इस तथ्य की ओर आकृष्ट हो और वे प्राकृत के विशेषज्ञ और परिश्रमी विद्वानों से संपादित करा कर ममस्त (प्रकाशित और अप्रकाशित) आगम-ग्रन्थों का एक शुद्ध (Critical) संस्करण प्रकाशित करें, जिसकी अनिवार्य आवश्यकता है।

इस तरह हस्त लिखित और मुद्रित प्राकृत-ग्रन्थ प्रायः अशुद्ध होने के कारण आवश्यकतानुसार एकाधिक हस्त-लिखित पुस्तकों का ग्रन्थ-ग्रन्थों में उद्धृत उन्ही पाठों का और भिन्न भिन्न संस्करणों का सावधानी से निरीक्षण करके उनमें से शुद्ध प्राकृत शब्दों का तथा एक ही शब्द के भिन्न-भिन्न परन्तु शुद्ध रूपों का ही यहाँ ग्रहण किया गया है और अशुद्ध शब्द या रूप छोड़ दिए गए हैं। और जिस ग्रन्थ की एक ही हस्त-लिखित प्रति अथवा एक मुद्रित संस्करण पाया गया है उसमें रही हुई अशुद्धियों का भी संशोधन यथामति किया गया है और संशोधित शब्दों को ही इस कोष में स्थान दिया गया है। साधारण स्थलों को छोड़ कर खाम खाम स्थानों में ऐसी अशुद्धियों का उल्लेख भी उन पाठों को उद्धृत करके किया गया है, जिनमें विद्वान् पाठकों को मेरी की हुई शुद्धि की योग्यता या अयोग्यता पर विचार करने की सुविधा हो। इस प्रकार जैसे मूल प्राकृत शब्दों की अशुद्धियों के संशोधन में पूरी मावधानी रक्खी गई है वैसे ही आधुनिक विद्वानों की की हुई छाया (संस्कृत प्रतिशब्द) और अर्थ की भूलों को सुधारने की भी पूरी कोशिश की गई है। सारांश यह कि इस कोष की सर्वाङ्ग-शुद्ध बनाने में संपूर्ण ध्यान दिया गया है।^१ मुझे यह जानकर संतोष हुआ है कि मेरे इस प्रयत्न की कदर भी प्रोफेसर ल्योमेन जैसे प्राकृत के सुप्रसिद्ध जर्मन विद्वान् तक ने की है।

१. देखो अमर, अखण्डाणोरञ्ज, अंगोरसंख्य, अर्चितगुणसमुदय, अज्झत्तविट्ठु, अज्झत्तमयपरिक्खा, अज्झत्तविट्ठु, अज्झत्तमयपरिक्खा, अम्भ(?)त्यप्रोगसाहणजुत्त, अणेतजयपडागा प्रभृति शब्दों के रेफरेंस।

२. देखो अन्यत्र उद्धृत किए हुए इस ग्रन्थ-विषयक अभिप्रायों में रॉयल एसियाटिक सोसाईटी के जर्नल में प्रकाशित प्रो. ल्योमेन का अभिप्राय।

दूसरी मुख्य कठिनाई अर्थ-व्यय के बारे में थी। मेरी आर्थिक अवस्था ऐसी नहीं थी कि इस महान् ग्रन्थ की तय्यारी के लिए पुस्तकादि आवश्यक साधनों के और सहायक मनुष्यों के वेतन-खर्च के अतिरिक्त प्रकाशन का भार भी वहन कर सकूँ। और मुफ्त में किसी से आर्थिक सहायता लेना मैं पसन्द नहीं करता था। इससे इस कठिनाई को दूर करने के लिए अग्रिम ग्राहक बनाने की योजना की गई, जिसमें उन अग्रिम ग्राहकों को हर पचीस रुपये में इस संपूर्ण ग्रन्थ की एक कॉपी देने की व्यवस्था थी। इसमें मेरी उक्त कठिनाई सम्पूर्ण तो नहीं, किन्तु बहुत-बहुत कम हो गई। इस योजना को इतने दूर तक मफल बनाने का अधिक श्रेय कलकत्ता के जैन श्वेताम्बर-श्रीसंघ के अग्रगण्य नेता श्रीमान् सेठ नरोत्तमभाई जेठाभाई को है, जिन्होंने शुरु से ही इसकी सरसकता का भार अपने पर लेते हुए मुझे हर तरह से इस कार्य में सहायता की है, जिसके लिए मैं उनका चिर-कृतज्ञ हूँ। इसी तरह अहमदाबाद निवासी श्रद्धेय श्रीयुक्त केशवलालभाई प्रेमचन्द मोदी जी ए, एल्. एल्. वी का भी मैं बहुत ही उपकृत हूँ कि जिन्होंने कई मुद्रित पुस्तकों में दी हुई प्राकृत शब्द सूचियों पर मे एकत्रित किया हुआ एक बड़ा शब्द संग्रह मुझे दिया था, इतना ही नहीं, बल्कि समय समय पर प्राकृत की अनेक हस्त-लिखित तथा मुद्रित पुस्तकों का जोगाह कर दिया था और उक्त योजना में ग्राहक-संख्या बढ़ा देने का हादिक प्रयत्न किया था। प्रात स्मरणीय, पूज्यपाद, गुरुवर्य मुनिराज श्रीअमीचिजयजी महागज, पूज्य जैनाचार्य श्रीचिजयमोहन सूरिजी, ज. यु. भट्टारक श्रीजिनचारित्रसूरिजी तथा स्वतन्त्र-सम्पादक विद्वद्वय श्रीयुक्त अम्बिकाप्रसादजी धाजपेयी का भी मे हृदय में उपकार मानता हूँ कि जिनकी प्रेरणा से अग्रिम ग्राहकों की वृद्धि द्वारा मुझे इस कार्य में सहायता मिली है। उन महानुभावों को, जिनके शुभ नाम इसी ग्रन्थ में ग्रन्थ की हुई अग्रिम-ग्राहक-सूची में प्रकाशित किए गए हैं, अनेकानेक धन्यवाद हैं कि जिन्होंने यथाशक्ति अल्पाधिक संख्या में इस पुस्तक की कॉपियाँ खरीद कर मेरा यह कार्य सरल कर दिया है। यहाँ पर मेरे मित्र श्रीयुक्त सेठ गिरधरलाल त्रिभलाल और श्रीमान् बाबू डालचन्दजी सिन्धी के नाम विशेष उल्लेखनीय हैं। इन दोनों महाशयों ने अपनी अपनी शक्ति के अनुसार यथेष्ट संख्या में इस कोप की कॉपियाँ खरीदने के अतिरिक्त मुझे इस कार्य के लिये समय समय पर बिना सूद ऋण देने की भी कृपा की थी। यह कहने में कोई अत्युक्ति नहीं है कि यदि उक्त सब महानुभावों की यह सहायता मुझे प्राप्त न हुई होती तो इस कोप का प्रकाशन मेरे लिए मुश्किल ही नहीं, असंभव था।

यहाँ इस बात का भी उल्लेख करना उचित जान पड़ता है कि आज से करीब दस वर्ष पहले मेरे सहाय्यापक श्रद्धेय प्रोफेसर मुरलीधर बनर्जी एम्. ए. महाशय ने और मैंने मिलकर एक प्रस्ताव विजिट पद्धति का प्राकृत इंग्लिश कोप तैयार करने के लिए कलकत्ता-विश्वविद्यालय में उपस्थित किया था, परन्तु उम समय वह अनिश्चित काल के लिए स्थगित कर दिया गया था। इसके कई वर्ष बाद जब मेरे इस प्राकृत-हिन्दी कोप का प्रथम भाग प्रकाशित हुआ तब उसे देखकर कलकत्ता-विश्वविद्यालय के कर्णधार स्वर्गीय आनन्दरेल जस्टिस आशुतोष मुखर्जी इतने सतुष्ट हुए कि उन्होंने तुरत ही विश्वविद्यालय की तरफ से हम दोनों के तत्वावधान में इसी तरह के प्रमाण-युक्त एक प्राकृत-इंग्लिश कोश तैयार और प्रकाशित करने का न केवल प्रस्ताव ही पान करवाया, बल्कि उसको कार्य-रूप में परिणत करने के लिए उपयुक्त व्यवस्था भी करायी है। इसके लिए उनको जितने धन्यवाद दिये जायें, कम हैं। यहाँ पर मैं कलकत्ता-विश्वविद्यालय की भी प्रशंसा किए बिना नहीं रह सकता कि जिसके द्वारा मुझे इस कार्य में समय, पुस्तक आदि की अनेक सुविधाएँ मिली हैं, जिससे यह कार्य अपेक्षा-कृत शीघ्रता से पूर्ण हो सका है। इस कोप के उपोद्घात से सम्बन्ध रखनेवाले अनेक ऐतिहासिक जटिल प्रश्नों को सुलझाने में श्रद्धेय प्रोफेसर मुरलीधर बनर्जी एम्. ए. ने अपने कीमती समय का बिना सकोच भोग देकर मुझे जो सहायता की है उसके लिए मैं उनका अन्त-करण से आभार मानता हूँ।

इस कोप के मुद्रण-कार्य के आरम्भ से लेकर प्रायः शेष होने तक, समय समय पर जैसे जैसे जो अतिरिक्त हस्त-लिखित और मुद्रित पुस्तकें या संस्करण मुझे प्राप्त होते जाते थे वेमे वेमे उनका भी यथेष्ट उपयोग इस कोप में किया जाता था। यही कारण है कि तब तक के अमुद्रित भाग के शब्द उनके रेफरेंसों के साथ साथ प्रस्तुत कोप में ही यथास्थान शामिल कर दिए जाते थे और मुद्रित अंश के शब्दों का एक अलग संग्रह तैयार किया जाता था जो परिशिष्ट के रूप में इसी ग्रन्थ में अन्त्य प्रकाशित किया जाता है। ऐसा करते हुए तृतीय भाग के छपने तक जिन अतिरिक्त पुस्तकों का उपयोग किया गया था उनकी एक अलग सूची भी तृतीय भाग में दी गई थी। उनके बाद के अतिरिक्त पुस्तकों की अलग सूची इसमें न देकर प्रथम की दोनों (द्वितीय और तृतीय भाग में प्रकाशित) सूचियों की जो एक साधारण सूची यहाँ दी जाती है उसीमें उन पुस्तकों का भी वर्णानुक्रम से यथास्थान समावेश किया गया है, जिसमें पाठकों को अलग अलग रेफरेंस-सूचियाँ देखने की तकलीफ न हो।

उक्त परिशिष्ट में केवल उन्हीं शब्दों को स्थान दिया गया है जो पूर्व-संग्रह में न आने के कारण एकदम नये हैं या आने पर भी लिग या अर्थ में पूर्वागत शब्द की अपेक्षा विशेषता रखते हैं। केवल रेफरेंस की विशेषता को लेकर किसी शब्द को परिशिष्ट में पुनरावृत्ति नहीं की गई है।

१ 'अग्रिम-ग्राहक सूची' का अंश द्वितीय संस्करण में नहीं छपा गया है—संपादक।

२. 'परिशिष्ट' का संपूर्ण अंश इस द्वितीय संस्करण में यथास्थान समावेश कर दिया गया है—संपादक।

यद्यपि मेरी मातृभाषा हिन्दी नहीं है तथापि वही एकमात्र भारतवर्ष की सर्वाधिक व्यापक और इसलिए राष्ट्र-भाषा के योग्य होने के कारण यहाँ अर्थ के लिए विशेष उपयुक्त समझी गई है ।

अन्त मे, आर्य से लेकर अपभ्रंश तक की प्राकृत भाषाओं के विविध-विषयक जैन एवं जैनेतर प्राचीन ग्रंथों के (जिनकी कुल संख्या ढाई सौ से भी ज्यादा है) अतिविशाल शब्द-राशि से, संस्कृत प्रतिशब्दों से, हिन्दी अर्थों से, सभी आवश्यक अवतरणों से और संपूर्ण प्रमाणों से परिपूर्ण इस बृहत् प्राकृत-कोष में, यथेष्ट सावधानता रखने पर भी, जो कुछ मनुष्य-स्वभाव-मुलभ त्रुटियाँ या भूलें हुई हो उनको सुधारने के लिए विद्वानों से नम्र प्रार्थना करता हूँ। यह आशा रखता हूँ कि वे ऐसी भूलों के विषय मे मुझे सतर्क करेंगे ताकि द्वितीयावृत्ति मे तदनुसार संशोधन का कार्य सरल हो पड़े । जो विद्वान् मेरे भ्रम प्रमादों की प्रामाणिक पद्धति से सूचना देंगे, मैं उनका चिर-कृतज्ञ रहूँगा ।

यदि मेरी इस कृति से, प्राकृत-साहित्य के अभ्यास मे थोड़ी भी सहायता पहुँचेगी तो मैं अपने इस दीर्घ-काल-व्यापी परिश्रम को सफल समझूँगा ।

कलकत्ता
ता० ३१-१-२८ }

हरगोविन्द दास टि. सेठ

प्रथम संस्करण का उपोद्घात

जो भाषा अतिप्राचीन काल में इस देश के आर्य लोगों की कथ्य भाषा—बोलचाल की भाषा—थी, जिस भाषा में भगवान् महावीर और बुद्धदेव ने अपने पवित्र सिद्धान्तों का उपदेश दिया था, जिस भाषा को जैन और बौद्ध विद्वानों ने विविध-विषयक विपुल साहित्य की रचना कर अपनाई है, जिस भाषा में श्रेष्ठ काव्य-निर्माण द्वारा प्रवरसेन, हाल आदि प्राकृत किसे कहते हैं? महाकवियों ने अपनी अनुपम प्रतिभा का परिचय दिया है, जिस भाषा के मौलिक साहित्य के आधार पर संस्कृत के अनेक उत्तम ग्रन्थों की रचना हुई है, संस्कृत के नाटक ग्रन्थों में संस्कृत-भिन्न जिस भाषा का प्रयोग दृष्टिगोचर होता है, जिस भाषा से भारतवर्ष की वर्तमान समस्त आर्य भाषाओं की उत्पत्ति हुई है और जो भाषाएँ भारत के अनेक प्रदेशों में आजकल भी बोली जानी हैं, इन सब भाषाओं का साधारण नाम है प्राकृत, क्योंकि ये सब भाषाएँ एकमात्र प्राकृत के ही विभिन्न रूपान्तर हैं जो समय और स्थान की भिन्नता के कारण उत्पन्न हुई हैं। इसीसे इन भाषाओं के व्यक्ति-वाचक नामों के आगे 'प्राकृत' शब्द का प्रयोग आजतक किया जाता है, जैसे प्राथमिक प्राकृत, आर्य या अर्धमागधी प्राकृत, पाली प्राकृत, पैशाची प्राकृत, शौरसेनी प्राकृत, महाराष्ट्री प्राकृत, अपभ्रंश प्राकृत, हिन्दी प्राकृत, बंगला प्राकृत आदि।

भारतवर्ष की अर्वाचीन और प्राचीन भाषाएँ और उनका परस्पर सम्बन्ध

भाषातत्त्व के अनुसार भारतवर्ष की आधुनिक कथ्य भाषाएँ इन पाँच भागों में विभक्त की जा सकती हैं —(१) आर्य (Aryan), (२) द्राविड (Dravidian), (३) मुण्डा (Munda), (४) मन्-ख्मेर (Mon-khmer) और (५) तिब्बत-चीना (Tibeto-Chinese).

भारत की वर्तमान भाषाओं में मराठी, बँगला, ओडिया, बिहारी, हिन्दी, राजस्थानी, गुजराती, पंजाबी, सिन्धी और काश्मीरी भाषा आर्य भाषा से उत्पन्न हुई हैं। पारसी तथा अग्रेजी, जर्मनी आदि अनेक आधुनिक युरोपीय भाषाओं की उत्पत्ति भी इसी आर्य भाषा से है। भाषा-गत सादृश्य को देखकर भाषा-तत्त्व ज्ञाताओं का यह अनुमान है कि इस समय विच्छिन्न और बहु-दूरवर्ती भारतीय आर्य-भाषा-भाषी समस्त जातियाँ और उक्त युरोपीय भाषा भाषी सकल जातियाँ एक ही आर्य-वंश से उत्पन्न हुई हैं।

तेलगु, तामिल और मलयालम प्रभृति भाषाएँ द्राविड भाषा के अन्तर्गत हैं, कोल तथा सँथाली भाषा मुण्डा भाषा के अन्तर्भूत हैं, खासी भाषा मन्ख्मेर भाषा का और भोटानी तथा नागा भाषा तिब्बत-चीना भाषा का निदर्शन है। इन समस्त भाषाओं की उत्पत्ति किसी आर्य भाषा से सम्बन्ध नहीं रखती, अतएव ये सभी अनार्य भाषाएँ हैं। यद्यपि ये अनार्य भाषाएँ भारत के ही दक्षिण, उत्तर और पूर्व भाग में बोली जाती हैं तथापि अग्रेजी आदि सुदूरवर्ती भाषाओं के साथ हिन्दी आदि आर्य भाषाओं का जो वंश-गत ऐक्य उपलब्ध होता है, इन अनार्य भाषाओं के साथ वह सम्बन्ध नहीं देखा जाता है।

ये सब कथ्य भाषाएँ आजकल जिस रूप में प्रचलित हैं, पूर्वकाल में उसी रूप में नहीं थीं, क्योंकि कोई भी कथ्य भाषा कभी एक रूप में नहीं रहती। अन्य वस्तुओं की तरह इसका रूप भी सर्वदा बदलता ही रहता है—देश, काल और व्यक्ति-गत उच्चारण के भेद से भाषा का परिवर्तन अनिवार्य होता है। यद्यपि यह परिवर्तन जो लोग भाषा का व्यवहार करते हैं उनके द्वारा ही होता है तथापि उस समय वह लक्ष्य में नहीं आता। पूर्वकाल की भाषा के सरक्षित आदर्श के साथ तुलना करने पर वाद में ही वह जाना जाता है। प्राचीन काल की जिन भारतीय भाषाओं के आदर्श सरक्षित हैं—जिन भाषाओं ने साहित्य में स्थान पाया है, उनके नाम ये हैं—वैदिक संस्कृत, लौकिक संस्कृत, पाली, अशोक लिपि तथा उसके बाद की लिपि की भाषा और प्राकृत भाषा-समूह। इनमें प्रथम की दो भाषाएँ कभी जन साधारण की कथ्य भाषा नहीं, केवल लेख्य—साहित्यिक भाषा—ही थीं। अवशिष्ट भाषाएँ कथ्य और लेख्य उभय रूप में प्रचलित थीं। इस

समय ये समस्त भाषाएँ कथ्य रूप से व्यवहृत नहीं होतीं, इसी कारण ये मृत भाषा (dead languages) कहलाती हैं। उक्त वैदिक आदि सब भाषाएँ आर्य भाषा के अन्तर्गत हैं और इन्हीं प्राचीन आर्य भाषाओं में से कई एक क्रमशः रूपान्तरित होकर आधुनिक समस्त आर्य भाषाएँ उत्पन्न हुई हैं।

ये प्राचीन आर्य भाषाएँ कौन युग में किस रूप में परिवर्तित होकर क्रमशः आधुनिक कथ्य भाषाओं में परिणत हुई, इसका सक्षिप्त विवरण नीचे दिया जाता है।

प्राचीन भारतीय आर्य भाषाओं का परिणति-क्रम

सर जॉर्ज ग्रियर्सन ने अपनी लिङ्ग्विस्टिक सर्वे ऑफ इंडिया (Linguistic survey of India) नामक पुस्तक में भारतवर्षीय समस्त आर्य भाषाओं के परिणाम का जो क्रम दिखाया है उसके अनुसार वैदिक भाषा उक्त साहित्य-भाषाओं में सर्व-प्राचीन है। इसका समय अनेक विद्वानों के मत में ख्रिस्ताब्द-पूर्व दो हजार वर्ष (2000 B. C.) और प्रो. मेक्समूलर के मत में ख्रिस्ताब्द-पूर्व बारह सौ वर्ष (1200 B. C.) है। यह वेद-भाषा क्रमशः परिष्कारित होती हुई ब्राह्मण, उपनिषद् और यास्क के निरुक्त की भाषा में और बाद में पाणिनि-प्रभृति के व्याकरण-द्वारा नियन्त्रित होकर लौकिक संस्कृत में परिणत हुई है। पाणिनि आदि के पद-प्रभृति के नियम-रूप संस्कारों को प्राप्त करने के कारण यह संस्कृत कहलाई। मुख्य रूप से 'संस्कृत' शब्द का प्रयोग इसी भाषा के अर्थ में किया जाता है। यह संस्कृत भाषा वैदिक भाषा से उत्पन्न होने से उसके साथ घनिष्ठ सम्बन्ध रखने से वेद-भाषा के अर्थ में भी 'संस्कृत' शब्द बाद के समय से प्रयुक्त होने लग गया है। पाणिनि के बाद संस्कृत भाषा का कोई परिवर्तन नहीं हुआ है। यह परिवर्तन होने में—वेद-भाषा को लौकिक संस्कृत के रूप में परिणत होने में—प्रायः डेढ़ हजार वर्ष लगे हैं। पाणिनि का समय गोलडस्टुकर के मत में ख्रिस्ताब्द पूर्व सप्तम शताब्दी और बोथलिक के मत में ख्रिस्ताब्द-पूर्व चतुर्थ शताब्दी है।

यहाँ पर इस बात का उल्लेख करना आवश्यक है कि डॉ. हॉर्नलि और सर ग्रियर्सन के मन्तव्य के अनुसार आर्य लोगों के दो दल भिन्न-भिन्न समय में भारतवर्ष में आये थे। पहले आर्यों के एक दल ने यहाँ आकर मध्यदेश में अपने उपनिवेश की स्थापना की थी। इसके कई सौ वर्षों के बाद आर्यों के दूसरे दल ने भारत में प्रवेश कर प्रथम दल के वेद और वैदिक सभ्यता आर्यों को मध्यदेश की चारों ओर भगा कर उनके स्थान को अपने अधिकार में किया और मध्यदेश को ही अपना वास-स्थान कायम किया। उक्त विद्वानों को यह मन्तव्य इसलिए करना पड़ा है कि मध्यदेश के चारों पार्श्वों में स्थित पंजाब, सिन्ध, गुजरात, राकपूताना, महाराष्ट्र, अयोध्या, बिहार, बंगाल और उड़ीसा प्रदेशों की आधुनिक आर्य कथ्य भाषाओं में परस्पर जो निकटता देखी जाती है तथा मध्यदेश की आधुनिक हिन्दी भाषा [पाश्चात्य हिन्दी] के साथ उन सब प्रांतों की भाषाओं में जो भेद पाया जाता है, उस निकटता और भेद का अन्य कोई कारण दिखाना असम्भव है। मध्यदेशवासी इस दूसरे दल के आर्यों का उस समय का जो साहित्य और जो सभ्यता थी उन्हीं के क्रमशः नाम हैं वेद और वैदिक सभ्यता।

१ आर्य लोगों के आदिम वास स्थान के विषय में आधुनिक विद्वानों में गहरा मत-भेद है। कोई स्कान्डीनेविया को, कोई जर्मनी को, कोई पोलैण्ड को, कोई हंगरी को, कोई दक्षिण रशिया को, कोई मध्य एशिया को आर्यों की आदिम निवास-भूमि मानते हैं तो कोई-कोई पंजाब और काश्मीर को ही इनका प्रथम वसति-स्थान बतलाते हैं। किन्तु अधिकांश विद्वान् भाषा-तत्त्व के द्वारा इस सिद्धान्त पर उपनीत हुए हैं कि युरोपीय और पूर्वदेशीय आर्यों में प्रथम विच्छेद हुआ। पीछे पूर्वदेश के आर्य लोग मेसोपोटेमिया और ईरान में एक साथ रहे और एक ही देव-देवी की उपासना करते थे। उसके बाद वे भी विच्छिन्न होकर एक दल फारस में गया और अन्य दल ने अफगानिस्तान के बीच होकर भारतवर्ष में प्रवेश और निवास किया। परन्तु जैन और हिन्दू शास्त्रों के अनुसार भारतवर्ष ही चिरकाल से आर्यों का आदिम निवास-स्थान है। कोई-कोई आधुनिक विद्वान् ने पुरातत्त्व की नूतन खोज के आधार पर भारतवर्ष से ही कुछ आर्य लोगों का ईरान आदि देशों में गमन और विस्तार-लाभ सिद्ध किया है, जिससे उक्त शास्त्रीय प्राचीन मत का समर्थन होता है।

उक्त वेद-भाषा प्राचीन होने पर भी वह वैदिक युग में जन-साधारण की कथ्य भाषा न थी, ऋषि-लोगों की साहित्य-भाषा थी। उस समय जन-साधारण में वैदिक भाषा के अनुरूप अनेक प्रादेशिक भाषाएँ (dialects) कथ्य रूप से प्रचलित थीं। इन प्रादेशिक भाषाओं में से एक ने परिमार्जित होकर वैदिक साहित्य में स्थान पाया है। ऊपर वैदिक युग से प्राकृत-भाषाओं का प्रथम स्तर (ख्रिस्त-पूर्व २००० से ख्रिस्त-पूर्व ६००) का उल्लेख किया गया है उन्होंने वैदिक युग अथवा उसके पूर्व-काल में अपने-अपने प्रदेशों की कथ्य भाषाओं में, दूसरे दल के आर्यों की वेद-रचना की तरह, किसी साहित्य की रचना नहीं की थी। इससे उन प्रादेशिक आर्य भाषाओं का तात्कालिक साहित्य में कोई निदर्शन न रहने से उनके प्राचीन रूपों का संपूर्ण लोप हो गया है। वैदिक काल की और इसके पूर्व की उन ममस्त कथ्य भाषाओं को सर प्रियर्सन ने प्राथमिक प्राकृत (Primary Prākṛits) नाम दिया है। यही प्राकृत भाषा-समूह का प्रथम स्तर (First stage) है। इसका समय ख्रिस्त-पूर्व २००० से ख्रिस्त-पूर्व ६०० तक का निर्दिष्ट किया गया है। प्रथम स्तर की ये समस्त प्राकृत भाषाएँ स्वर और व्यञ्जन आदि के उच्चारण में तथा विभक्तियों के प्रयोग में वैदिक भाषा के अनुरूप थीं। इससे ये भाषाएँ विभक्ति-बहुल (synthetic) कही जाती हैं।

वैदिक युग में जो प्रादेशिक प्राकृत भाषाएँ कथ्य रूप से प्रचलित थीं, उनमें परिवर्ति-काल में अनेक परिवर्तन हुए जिनमें ऋ ऋ आदि स्वरों का, शब्दों के अन्तिम व्यञ्जनों का, संयुक्त व्यञ्जनों का तथा विभक्ति और वचन-समूह का लोप या रूपान्तर मुख्य हैं। इन परिवर्तनों से ये कथ्य भाषाएँ प्रचुर परिमाण में रूपान्तरित हुईं। इस तरह द्वितीय स्तर (second stage) की प्राकृत भाषाओं की उत्पत्ति हुई। द्वितीय स्तर की ये भाषाएँ जैन और बौद्ध धर्म के प्रचार के समय से अर्थात् ख्रिस्त-पूर्व षष्ठ शताब्दी से लेकर ख्रिस्तीय नवम या दशम शताब्दी पर्यन्त प्रचलित रहीं। भगवान् महावीर और बुद्धदेव के समय ये समस्त प्रादेशिक प्राकृत भाषाएँ, अपने द्वितीय स्तर के आकार में, भिन्न-भिन्न प्रदेशों में कथ्य भाषा के तौर पर व्यवहृत होती थीं। उन्होंने अपने सिद्धान्तों का उपदेश इन्हीं कथ्य प्राकृत भाषाओं में से एक में दिया था। इतना ही नहीं, बल्कि बुद्धदेव ने अपना उपदेश संस्कृत भाषा में न लिखकर कथ्य प्राकृत भाषा में लिखने के लिए अपने शिष्यों को आदेश दिया था। इस तरह प्राकृत भाषाओं का क्रमशः साहित्य की भाषाओं में परिणत होने का सूत्रपात हुआ, जिसके फलस्वरूप पश्चिम मगध और सूरसेन देश के मध्यवर्ती प्रदेश में प्रचलित कथ्य भाषा से जैनों के धर्म-पुस्तकों की अर्ध-भागवी और पूर्व मगध में प्रचलित लोक-भाषा से बौद्ध धर्म-ग्रन्थों की पाली भाषा उत्पन्न हुई। पाली भाषा के उत्पत्ति-स्थान के सम्बन्ध में पाश्चात्य विद्वानों का जो मतभेद है उसका विचार हम आगे जा कर करेंगे। ख्रिस्ताब्द से २५० वर्ष पहले सम्राट् अशोक ने बुद्धदेव के उपदेशों को भिन्न-भिन्न प्रदेशों में वहाँ-वहाँ की विभिन्न प्रादेशिक प्राकृत भाषाओं में खुदवाए। इन अशोक शिलालेखों में द्वितीय स्तर की प्राकृत भाषाओं के असंदिग्ध सर्व-प्राचीन निदर्शन संरक्षित हैं। द्वितीय स्तर के मध्य भाग में—प्रायः ख्रिस्तीय पंचम शताब्दी के पूर्व में भिन्न-भिन्न प्रदेशों की अपभ्रंश भाषाओं की उत्पत्ति हुई। इस स्तर की भाषाओं में चतुर्थी विभक्ति का, सब विभक्तियों के द्विवचनों का और आख्यात की अधिकांश विभक्तियों का लोप होने पर भी विभक्तियों का प्रयोग अधिक मात्रा में विद्यमान था। इससे इस स्तर की भाषाएँ भी विभक्ति-बहुल कही जाती हैं।

सर प्रियर्सन ने यह सिद्धान्त किया है कि आधुनिक भारतीय आर्य भाषाओं की उत्पत्ति द्वितीय स्तर की प्राकृत भाषाओं से, खासकर उसके शेष भाग में प्रचलित विविध अपभ्रंश भाषाओं से हुई है और आधुनिक भाषाओं को 'तृतीय प्राकृत भाषाओं का तृतीय स्तर' (Tertiary Prākṛits) कह कर निर्देश किया है। इन भाषाओं की उत्पत्ति का समय ख्रिस्तीय दशम शताब्दी है। इनका साधारण लक्षण यह है कि इनमें अधिकांश विभक्तियों का लोप हुआ है, एवं भाषाओं की प्रकृति विभक्ति-बहुल न होकर विभक्तियों के बोधक स्वतन्त्र शब्दों का व्यवहार हुआ है। इससे ये विश्लेषणशील भाषाएँ (Analytical Languages) कही जाती हैं।

जिस प्रादेशिक अपभ्रंश से जिस आधुनिक भारतीय आर्य भाषा की उत्पत्ति हुई है उसका विवरण आगे 'अपभ्रंश' शीर्षक में दिया जायगा।

द्वितीय स्तर की प्राकृत भाषाओं का इतिहास

प्रस्तुत कोष में द्वितीय स्तर की साहित्यिक प्राकृत भाषाओं के शब्दों को ही स्थान दिया गया है। इससे इन भाषाओं की उत्पत्ति और परिणति के सम्बन्ध में यहाँ पर कुछ विस्तार से विवेचन करना आवश्यक है।

साधारणतः लोगों की यही धारणा है कि संस्कृत भाषा से ही द्वितीय स्तर की समस्त प्राकृत भाषाएँ और आधुनिक भारतीय भाषाएँ उत्पन्न हुई हैं। कई प्राकृत-वैयाकरणों ने भी अपने प्राकृत-व्याकरणों में इसी मत का समर्थन किया है। परन्तु यह मत उहाँ तक सत्य है इसका विचार करने के पहले इन भाषाओं के भेदों को जानने की जरूरत है।

प्राकृत का संस्कृत-सापेक्ष प्राकृत वैयाकरणों ने प्राकृत भाषाओं के शब्द, संस्कृत शब्दों के सादृश्य और पार्थक्य के अनुसार विभाग इन तीन भागों में विभक्त किए हैं—(१) तत्सम, (२) तद्भव और (३) देश्य या देशी।

(१) जो शब्द संस्कृत और प्राकृत में मिलकुल एक रूप हैं उनको 'तत्सम' या 'संस्कृतसम' कहते हैं, जैसे—प्रज्जलि, भ्रगम, इच्छा, ईहा, उत्तम, उठा, एरड, ओद्धार, किद्धार, खज्ज, गण, घण्टा, चित्त, छल, जल, भुद्धार, टद्धार, डिम्म, ढक्का, तिमिर, दल, धवल, नोर, परिमल, फल, बहु, भार, मरण, रस, लव, वारि, सुन्दर, हरि, गच्छन्ति, हरन्ति प्रभृति।

(२) जो शब्द संस्कृत से वर्ण-लोप, वर्णागम अथवा वर्ण-परिवर्तन के द्वारा उत्पन्न हुए हैं वे 'तद्भव' अथवा 'संस्कृतभव' कहलाते हैं, जैसे—अग्र = अग, आर्य = आरिअ, इष्ट = इड्ड, ईर्ष्या = ईसा, उद्गम = उगम, कृष्ण = कसण, खज्जर, गज = गअ, घर्म = घम्म, चक्र = चक्क, क्षोभ = छोह यज्ञ = जक्ख, ध्यान = भाण, दंश = डंस, नाय = नाह, त्रिदश = तिमस, दृष्ट = दिट्ठ, धार्मिक = धम्मिअ, पश्चात् = पच्छा, स्पर्श = फस, बदर = बोर, भार्या = भारिआ, मेघ = मेह, भरण्य = ररण, लेश = लेस, शेष = सेस, हृदय = हिअअ भवति = हवइ, पिबति = पिअइ पृच्छति = पुच्छइ, अकार्षीत् = अकासी, भविष्यति = होहिइ इत्यादि।

(३) जिन शब्दों का संस्कृत के साथ कुछ भी सादृश्य नहीं है—कोई भी सम्बन्ध नहीं है, उनको 'देश्य' या 'देशी' बोला जाता है, यथा—अगय (दैत्य), आकासिय (पर्याप्त), इराव (हस्ती), ईस (कीलक), उग्रचित्त (अपगत), ऊसअ (उपधान), एलविल (घनाब्ज, वृषभ), ओडल (धम्मिल्ल), कदोट्ट (कुमुद), खुड्डिअ (सुरत), गयसाउल (विरक्त), घड (स्तूप), चउक्कर (कार्तिकेय) छकुई (कपिवच्छू), जच्च (पुरुष), झड्डप (शीघ्र), टका (जङ्घा), डाल (शाखा), ढडर (पिशाच, ईर्ष्या), णित्तिरडिअ (श्रुति), तोमरी (लता), थमिअ (विस्मृत), दाणि (शुल्क), धयण (गृह), निक्खुत्त (निश्चित), पणिआ (करोटिका), फुंटा (केश-वन्ध), विट्ठ (पुत्र), भुंड (सूकर), मड्डा (बलात्कार), रत्ति (भ्राजा), लच (कुक्कुट), विच्छड्ड (समूह), सयराह (शीघ्र), हुत्त (अभिमुख), उअ (पश्य), खुप्पइ (निमज्जति), छिवइ (स्पृशति), केक्खइ (पश्यति), चुक्कइ (भ्रश्यति), चोप्पइ (अज्ञति), अहिपच्चुअइ (गुह्यति) प्रभृति।

उपर्युक्त विभाग प्राकृत के साथ संस्कृत के सादृश्य और पार्थक्य के ऊपर निर्भर करता है। इसके सिवा संस्कृत और प्राकृत के प्राचीन ग्रन्थकारों ने प्राकृत भाषाओं का और एक विभाग किया है जो प्राकृत भाषाओं के उत्पत्ति-स्थानों से संबन्ध रखता है। यह भौगोलिक विभाग (Geographical Classification) कहा जा सकता है। भरत-

प्राकृत भाषाओं का प्रणीत कहे जाते नाट्य-शास्त्र में, 'सात भाषाओं को जो मागधी, अवन्तिजा, प्राच्या, सूरसेनी, भौगोलिक विभाग अर्धमागधी, वाह्लीका और दाक्षिणात्या ये नाम हैं, चण्ड के प्राकृत-व्याकरण में जो 'पैशाचिकी और मागधिका ये नाम मिलते हैं, ढण्डी ने काव्यादर्श में जो 'महाराष्ट्राश्रया, शौरसेनी, गौडी और लाटी ये नाम दिए हैं, आचार्य हेमचन्द्र आदि ने मागधी, शौरसेनी, पैशाची और चूलिकापैशाचिक कह कर जिन नामों का निर्देश

१ "मागव्यवन्तिजा प्राच्या सूरसेन्यर्धमागधी।

वाह्लीका दाक्षिणात्या च सप्त भाषा प्रकीर्तिता ॥" (नाट्यशास्त्र १७, ४८)।

२ "पैशाचिक्या रणयोर्लनौ" (प्राकृतलक्षण ३, ३८)।

३ "मागधिकाया रणयोर्लनौ" (प्राकृतलक्षण ३, ३९)।

४ 'महाराष्ट्राश्रया भाषा प्रकृतं प्राकृतं विदुः।

सागर सूक्तिरत्नाना सेतुबन्धादि यन्मयम् ॥

शौरसेनी च गौडी च लाटी चान्या च तादृशी।

याति प्रकृतमिदमेव व्यवहारेषु सान्निधिम ॥" (काव्यादर्श १, २४ ३५)।

किया है और मार्कण्डेय ने अपने प्राकृतसर्वस्व में प्राकृतचन्द्रिका के 'कतिपय श्लोको को उद्धृत कर महाराष्ट्री, आवन्ती, शौरसेनी, अर्धमागधी, वाह्लीकी, मागधी, प्राच्या और दाक्षिणात्या इन आठ भाषाओं के, छह विभाषाओं में द्राविड़ और ओड्रज इन दो विभाषाओं के, ग्यारह पिशाच-भाषाओं में काञ्चीदेशीय, पाण्ड्य, पाञ्चाल, गौड, मागध, ब्राचड, दाक्षिणात्य, शौरसेन, कैकय और द्राविड़ इन दस पिशाच-भाषाओं के और सताईस अपभ्रंशों में ब्राचड, लाट, वैदर्भ, वार्चर, आवन्त्य, पाञ्चाल, टाक्क, मालव, कैकय, गौड, उड्र, हैव, पाण्ड्य, कौन्तल, सिंहल, कालिङ्ग, प्राच्य, कार्णाट, काञ्च, द्राविड़, गौर्जर, आभीर और मध्यदेशीय इन तेईस अपभ्रंशों के जिन नामों का उल्लेख किया है वे उस भिन्न-भिन्न देश से ही संबन्ध रखते हैं जहाँ-जहाँ वह-वह भाषा उत्पन्न हुई है। पद्मभाषाचन्द्रिका के कर्ता ने 'शूरसेन' देश में उत्पन्न भाषा शौरसेनी कही जाती है, मगध देश में उत्पन्न भाषा को मागधी कहते हैं और पिशाच-देशों की भाषा पैशाची और चूलिकापैशाची है' यह लिखते हुए यही बात अधिक स्पष्ट रूप में कही है।

पूर्व में प्राकृत भाषाओं के शब्दों के जो तीन प्रकार दिखाए हैं उनमें प्रथम प्रकार के तत्सम शब्द संस्कृत से ही सब देशों के प्राकृतों में लिये गए हैं, दूसरे प्रकार के तद्भव शब्द संस्कृत से उत्पन्न होने पर भी प्राकृत वैयाकरणों के मत से तत्सम आदि शब्दों की प्रकृति काल-क्रम से भिन्न-भिन्न देश में भिन्न-भिन्न रूप को प्राप्त हुए हैं और तीसरे प्रकार के देश्य शब्द वैदिक अथवा लौकिक संस्कृत से उत्पन्न नहीं हुए हैं, किन्तु भिन्न-भिन्न देश में प्रचलित भाषाओं से गृहीत हुए हैं। प्राकृत वैयाकरणों का यही मत है।

देश्य शब्द

पहले प्राकृत भाषाओं का जो भौगोलिक विभाग बताया गया है, ये तृतीय प्रकार के देश्यशब्द उन्हीं भौगोलिक विभाग से उत्पन्न हुए हैं। वैदिक और लौकिक संस्कृत भाषा पंजाब और मध्यदेश में प्रचलित वैदिक मूल काल की प्राकृत भाषा से उत्पन्न हुई है। पंजाब और मध्यदेश के बाहर के अन्य प्रदेशों में उस समय आर्य लोगों की जो प्रादेशिक प्राकृत भाषाएँ प्रचलित थीं उन्हीं से ये देश्यशब्द गृहीत हुए हैं। यही कारण है कि वैदिक और संस्कृत साहित्य में देश्यशब्दों के अनुरूप कोई शब्द (प्रतिशब्द) नहीं पाया जाता है।

प्राचीन काल में भिन्न-भिन्न प्रादेशिक प्राकृत भाषाएँ हयात थीं, इस बात का प्रमाण व्यास के महाभारत, भरत के नाट्यशास्त्र और वात्स्यायन के कामसूत्र आदि प्राचीन संस्कृत ग्रन्थों में और जैनों के ज्ञाताधर्मकथा, विपाकश्रुत, औपपातिकसूत्र तथा राजप्रश्नीय आदि प्राचीन प्राकृत ग्रन्थों में भी मिलता है^१। इन ग्रन्थों में 'नानाभाषा', 'देशभाषा' या 'देशीभाषा' शब्द का प्रयोग प्रादेशिक प्राकृत के अर्थ में ही किया गया है। चंड ने अपने प्राकृत व्याकरण में जहाँ देश्यप्रसिद्ध प्राकृत

१. ये श्लोक 'पैशाची' और 'अपभ्रंश' के प्रकरण में दिए गए हैं।

२. "शूरसेनोद्भवा भाषा शौरसेनीति गीयते।

मगधोत्पन्नभाषा ता मागधी सप्रचक्षते।

पिशाचदेशनियत पैशाचीद्वितय भवेत् ॥" (पद्मभाषाचन्द्रिका, पृष्ठ २)।

३. "नानाचर्मभिराच्छन्ना नानाभाषाश्च भारत। कुशला देशभाषासु जल्पन्तोऽन्योन्यमीश्वरा" (महाभारत, शल्यपर्व ४६, १०३)।

"अत ऊर्ध्वं प्रवक्ष्यामि देशभाषाविकल्पनम्।"

"अथवा च्छन्दत कार्या देशभाषा प्रयोक्तृभिः" (नाट्यशास्त्र १७, २४; ४६)।

"नात्यन्तं संस्कृतेनैव नात्यन्तं देशभाषया। कथा गोष्ठीषु कथयन्त्येके बहुमतो भवेत्" (कामसूत्र १, ४, ५०)।

"तते एं से मेहे कुमारे . . अट्टारसविहिष्णारदेसीभासाविसारए . होत्था", "तत्थ एं चपाए नयरीए देवदत्ता नाम गणिया परिवसइ अट्टा.. अट्टारसदेसीभासाविसारया" (ज्ञाताधर्मकथासूत्र, पत्र ३८, ६२)।

"तत्थ ए वाणियगामे कामज्झया एणं गणिया होत्था, . . अट्टारसदेसीभासाविसारया" (विपाकश्रुत, पत्र २१-२२)।

"तए ए दहपइएणे दारए . अट्टारसदेसीभासाविसारए" (औपपातिक सूत्र, पत्रा १०६)।

"तए ए से दहपतिएणे दारए.. अट्टारसविहदेसिप्पगारभासाविसारए" (राजप्रश्नीयसूत्र, पत्र १४८)।

४. "सिद्धं प्रसिद्धं प्राकृतं त्रैप्रकारं भवति—संस्कृतयोनि, संस्कृतसमं... देशीप्रसिद्धं तच्चेदं हर्षितं = ल्हसिभं" (प्राकृतलक्षण पृष्ठ १-२)।

का उल्लेख किया है वहाँ भी देशी शब्द का अर्थ देशीभाषा ही है। ये सब देशी या प्रादेशिक भाषाएँ भिन्न-भिन्न प्रदेशों के निवासी आर्य लोगों की ही कथ्य भाषाएँ थीं। इन भाषाओं का पजाव और मध्यदेश की कथ्य भाषा के साथ अनेक अशों में जैसे सादृश्य था वैसे किसी किसी अश में भेद भी था। जिस जिस अश में इन भाषाओं का पजाव और मध्यदेश की प्राकृत भाषा के साथ भेद था उसमें से जिन भिन्न-भिन्न नामों ने और धातुओं ने प्राकृतसाहित्य में स्थान पाया है वे ही हैं प्राकृत के देशी वा देश्य शब्द।

प्राकृत-वैयाकरणों ने इन समस्त देश्य शब्दों में अनेक नाम और धातुओं को संस्कृत नामों के और धातुओं के स्थान में आदेश-द्वारा सिद्ध करके तद्भव-विभाग में अन्तर्गत किए हैं^१। यही कारण है कि आचार्य हेमचन्द्र ने अपनी देशीनाममाला में केवल देशी नामों का ही संग्रह किया है और देशी धातुओं का अपने प्राकृत-व्याकरण में संस्कृत धातुओं के आदेश-रूप में उल्लेख किया है; यद्यपि आचार्य हेमचन्द्र के पूर्ववर्ती कई वैयाकरणों ने इनकी गणना देशी धातुओं में ही की है^२। ये सब नाम और धातु संस्कृत के नाम और धातुओं के आदेश-रूप में निष्पन्न करने पर भी तद्भव नहीं कहे जा सकते, क्योंकि संस्कृत के साथ इनका कुछ भी सादृश्य नहीं है।

कोई कोई पाश्चात्य भाषातत्त्वज्ञ का यह मत है कि उक्त देशी शब्द और धातु भिन्न-भिन्न देशों की द्राविड़, मुण्डा आदि अनार्य भाषाओं से लिए गए हैं। यहाँ पर यह कहा जा सकता है कि यदि आधुनिक अनार्य भाषाओं में इन देशी-शब्दों और देशी-धातुओं का प्रयोग उपलब्ध हो तो यह अनुमान करना असंगत नहीं है। किन्तु जबतक यह प्रमाणित न हो कि 'ये देशी शब्द और धातु वर्तमान अनार्य भाषाओं में प्रचलित हैं', तबतक 'ये देशी शब्द और धातु-प्रादेशिक आर्य भाषाओं से ही गृहीत हुए हैं' यह कहना ही अधिक संगत प्रतीत होता है। इन अनार्य भाषाओं में दो-एक देश्य शब्द और धातु प्रचलित होने पर भी 'वे अनार्य भाषाओं से ही प्राकृत भाषाओं में लिए गए हैं' यह अनुमान न कर 'प्राकृत भाषाओं से ही वे देश्य शब्द और धातु अनार्य भाषाओं में गए हैं' यह अनुमान किया जा सकता है। हाँ, जहाँ ऐसा अनुमान करना असंभव हो वहाँ हम यह रविकार करने के लिए बाध्य होंगे कि 'ये देश्य शब्द और धातु अनार्य भाषाओं से ही प्राकृत में लिए गए हैं, क्योंकि आर्य और अनार्य ये उभय जातियाँ जब एक स्थान में मिश्रित हो गई हैं तब कोई कोई अनार्य शब्द और धातु का आर्य भाषाओं में प्रवेश करना असंभव नहीं है।

डॉ. काल्डवेल (Caldwell) प्रभृति के मत में वैदिक और लौकिक संस्कृत में भी अनेक शब्द द्राविड़ीय भाषाओं से गृहीत हुए हैं। यह बात भी सदिग्ध ही है, क्योंकि द्राविड़ीय भाषा के जिस साहित्य में ये सब शब्द पाये जाते हैं वह वैदिक संस्कृत के साहित्य से प्राचीन नहीं है। इससे 'वैदिक साहित्य में ये सब शब्द द्राविड़ीय भाषा से गृहीत हुए हैं' इस अनुमान की अपेक्षा 'आर्य लोगों की भाषा से ही अनार्यों की भाषा में ये सब शब्द लिए गए हैं' यह अनुमान ही विशेष ठीक मालूम पड़ता है।

जिन प्रादेशिक देशी-भाषाओं से ये सब देशी शब्द प्राकृत-साहित्य में गृहीत हुए हैं वे पूर्वोक्त प्रथम स्तर की प्राकृत भाषाओं के अन्तर्गत और उनकी समसामयिक हैं। ख्रिस्त-पूर्व षष्ठ शताब्दी के पहले ये सब देशीभाषाएँ प्रचलित थीं, इससे ये देश्य शब्द अर्वाचीन नहीं, किन्तु उतने ही प्राचीन हैं जितने कि वैदिक शब्द।

द्वितीय स्तर की प्राकृत भाषाओं की उत्पत्ति—वैदिक या लौकिक संस्कृत से नहीं, किन्तु

प्रथम स्तर की प्राकृतों से

प्राकृत के वैयाकरण-गण प्राकृत शब्द की व्युत्पत्ति में प्रकृति शब्द का अर्थ संस्कृत करते हुए प्राकृत भाषाओं की उत्पत्ति लौकिक संस्कृत से मानते हैं। संस्कृत के कई अलंकार शास्त्रों के टीकाकारों ने भी तद्भव और तत्सम शब्दों में स्थित

१. देखो हेमचन्द्र-प्राकृत-व्याकरण के द्वितीय पाद के १२७, १२६, १३४, १३६, १३८, १४१, १७४ वगैरह सूत्र और चतुर्थ पाद के २, ३, ४, ५, १०, ११, १२ प्रभृति सूत्र।

२. एते चान्यैर्देशीषु पठिता अपि अस्माभिर्षास्त्रादेशीकृता (हे० प्रा० ४, २), अर्थात् अन्य विद्वानों ने वज्जर, पज्जर, उप्पाल प्रभृति धातुओं का पाठ देशी में किया है, तो भी हमने संस्कृत धातु के आदेश-रूप से ही ये यही बताए हैं।

‘तत्’ शब्द का सम्बन्ध संस्कृत से लगाकर इस मत का अनुसरण किया है^१। कतिपय प्राकृत-व्याकरणों में प्राकृत शब्द की व्युत्पत्ति इस तरह की गई है —

‘प्रकृति संस्कृतं तत्र भव तत आगतं वा प्राकृतम्’ (हेमचन्द्र प्रा० व्या०) ।

‘प्रकृति संस्कृतं तत्र भवं प्राकृतमुच्यते’ (प्राकृतसर्वस्व) ।

‘प्रकृति संस्कृत तत्र भवत्वात् प्राकृतं स्मृतम्’ (प्राकृतचन्द्रिका) ।

‘प्रकृतेः संस्कृतायास्तु विकृतिः प्राकृती मता’ (पद्भाषाचन्द्रिका) ।

‘प्राकृतस्य तु सर्वमेव संस्कृतं योनिः’ (प्राकृतसंजीवनी) ।

इन व्युत्पत्तियों का तात्पर्य यह है कि प्राकृत शब्द ‘प्रकृति’ शब्द से बना है, ‘प्रकृति’ का अर्थ है संस्कृत भाषा, संस्कृत भाषा से जो उत्पन्न हुई है वह है प्राकृत भाषा ।

प्राकृत वैयाकरणों की प्राकृत शब्द की यह व्याख्या अप्रामाणिक और अव्यापक ही नहीं है, भाषा-तत्त्व से असंगत भी है । अप्रामाणिक इसलिए कही जा सकती है कि प्रकृति शब्द का मुख्य अर्थ संस्कृत भाषा कभी नहीं होता—संस्कृत के किसी कोष में प्राकृत शब्द का यह अर्थ उपलब्ध नहीं है^२ और गौण या लाक्षणिक अर्थ तब तक नहीं लिया जाता जब तक मुख्य अर्थ में बाध न हो । यहाँ प्रकृति शब्द के मुख्य अर्थ स्वभाव अथवा जन-साधारण लेने में किसी तरह का बाध भी नहीं है । इससे उक्त व्युत्पत्ति के स्थान में ‘प्रकृत्या स्वभावेन सिद्धं प्राकृतम्’ अथवा ‘प्रकृतीना साधारणजनानामिदं प्राकृतम्’ यही व्युत्पत्ति संगत और प्रामाणिक हो सकती है । अव्यापक कहने का कारण यह है कि प्राकृत के पूर्वोक्त तीन प्रकारों में तत्सम और तद्भव शब्दों की ही प्रकृति उन्होंने संस्कृत मानी है, तीसरे प्रकार के देश्य शब्दों की नहीं, अथवा देश्य को भी प्राकृत कहा है । इससे देश्य प्राकृत में वह व्युत्पत्ति लागू नहीं होती । प्राकृत की संस्कृत से उत्पत्ति भाषा-तत्त्व के सिद्धान्त से भी संगति नहीं रखती, क्योंकि वैदिक संस्कृत^३ और लौकिक संस्कृत ये दोनों ही साहित्य की मार्जित भाषाएँ हैं । इन दोनों भाषाओं का व्यवहार शिक्षा की अपेक्षा रखता है । अशिक्षित, अज्ञ और बालक लोग किसी काल में साहित्य की भाषा का न तो स्वयं व्यवहार कर सकते हैं और न समझ ही पाते हैं । इसलिए समस्त देशों में सर्वदा ही अशिक्षित लोगों के व्यवहार के लिए एक कथ्य भाषा चालू रहती है जो साहित्य की भाषा से स्वतन्त्र—अलग होती है । शिक्षित लोगों को भी अशिक्षित लोगों के साथ बातचीत के प्रसंग में इस कथ्य भाषा का ही व्यवहार करना पड़ता है । वैदिक समय में भी ऐसी कथ्य भाषा प्रचलित थी । और जिस समय लौकिक संस्कृत भाषा प्रचलित हुई उस समय भी साधारण लोगों की स्वतन्त्र कथ्य भाषा विद्यमान थी, यह नाटक आदि में संस्कृत भाषा के साथ प्राकृत-भाषी पात्रों के उल्लेख से प्रमाणित होता है ।

पाणिनि ने संस्कृत भाषा को जो लौकिक भाषा कही है और पतञ्जलि ने इसको जो शिष्ट-भाषा का नाम दिया है, उसका मतलब यह नहीं है कि उस समय प्राकृत भाषा थी ही नहीं, परन्तु उसका अर्थ यह है कि उस समय के शिक्षित लोगों के आपस के वार्तालाप में, वर्तमान काल के पण्डित लोगों में संस्कृत की तरह और भिन्नदेशीय लोगों के साथ के व्यवहार Lingua Franca की भाँति संस्कृत भाषा व्यवहृत होती थी । किन्तु बालक, स्त्रियाँ और अशिक्षित लोग अपनी मातृ-भाषा में बातचीत करते थे जो संस्कृत-भिन्न साधारण कथ्य भाषा थी । साधारण कथ्य भाषा किसी देश में किसी काल में साहित्य की भाषा से गृहीत नहीं होती, बल्कि साहित्य-भाषा ही जन-साधारण की कथ्य भाषा से उत्पन्न होती है । इसलिए ‘संस्कृत से प्राकृत भाषा की उत्पत्ति हुई है’ इसकी अपेक्षा ‘क्या तो वैदिक संस्कृत और क्या लौकिक संस्कृत दोनों ही उस समय की प्राकृत भाषाओं से उत्पन्न हुई हैं’ यही सिद्धान्त विशेष युक्ति संगत है । आजकल के भाषा तत्त्वज्ञों में इसी सिद्धान्त का अधिक आदर देखा जाता है । यह सिद्धान्त पाश्चात्य विद्वानों का कोई नूतन आविष्कार नहीं है, भारतवर्ष के

१. ‘प्रकृतेः संस्कृतादागतं प्राकृतम्’ (वाग्भटालंकारटीका २, २), ‘संस्कृतरूपाया प्रकृतेः स्वरूपात् प्राकृतम्’ (काव्यादर्श की प्रेमचन्द्र-तर्कवागीश-कृत टीका १, ३३) ।

२. ‘प्रकृतियों निशित्पिनो । पौरमात्यादिनिगेषु गुणसाम्यस्वभावयो । प्रत्यात् पूर्विकाया च’ (अनेकार्थसंग्रह ८७६-७) ।

३. ‘स्वाम्यमात्यं सुहृत्कोशो राष्ट्रदुर्गवलानि च ।

राज्याङ्गानि प्रकृतयः पौराणा श्रेणयोऽपि च ॥ (अभिधानचिन्तामणि ३, ३७८) ।

‘यत् काल्य — शमात्याद्याश्च पौराण्यं सद्भिः प्रकृतयः स्मृता’ (अ० चि० ३, ३७८ की टीका) ।

४. कोई कोई प्राधुनिक विद्वान् प्राकृत भाषा की उत्पत्ति वैदिक संस्कृत से मानते हैं, देखो ‘पाली-प्रकाश’ का प्रवेशक पृष्ठ ३४-३६ ।

ही प्राचीन भाषातत्त्वज्ञों में भी यह मत प्रचलित था यह निम्नोद्धृत कतिपय प्राचीन ग्रन्थों के अवतरणों से स्पष्ट प्रतीत होता है। रुद्रट-कृत काव्यालङ्कार के एक श्लोक की व्याख्या में खरत की ग्यारहवीं शताब्दी के जैन-विद्वान् नमिसाधु ने लिखा है कि—

“प्राकृतेति । सकलजगज्जन्तूना व्याकरणादिभिरनाहितस्कार सहजो वचनव्यापार प्रकृतिः, तत्र भव सैव वा प्राकृतम् । ‘भारि-सवयणे सिद्धं देवाण्य अद्भ्यमागहा वाणी’ इत्यादिवचनाद् वा प्राक् पूर्वं कृतं प्राकृतं बाल-महिलादि-सुबोध सकलभाषानिवन्धनभूत वचनमुच्यते । मेघनिमुं कजलमिवैकस्वरूप तदेव च देशविशेषात् सस्कारकरणाच्च समासादितविशेष सत् सस्कृताद्युत्तरविभेदानापनोति । अत एव शास्त्रकृता प्राकृतमादौ निर्दिष्टं तदनु सस्कृतादीनि । पाणिन्यादिव्याकरणोदितशब्दलक्षणेन सस्करणात् सस्कृतमुच्यते ।”

इस व्याख्या का तात्पर्य यह है कि—‘प्रकृति’ शब्द का अर्थ है लोगो का व्याकरण आदि के संस्कारो से रहित स्वाभाविक वचन-व्यापार, उससे उत्पन्न अथवा वही है प्राकृत । अथवा ‘प्राक् कृत’ पर से प्राकृत शब्द बना है, ‘प्राक् कृत’ का अर्थ है ‘पहले किया गया’ । बारह अंग-ग्रन्थों में ग्यारह अंग ग्रन्थ पहले किए गए हैं और इन ग्यारह अङ्ग-ग्रन्थों की भाषा अप्रामाण्य वचन में—सूत्र में अर्धमागधी कही गई है^१ जो बालक, महिला आदि को सुबोध—सहज गम्य है^२ और जो सकल भाषाओं का मूल है । यह अर्धमागधी भाषा ही प्राकृत है । यही प्राकृत, मेघ-मुक्त जल की तरह, पहले एक रूपवाला होने पर भी, देश-भेद से और संस्कार करने से भिन्नता को प्राप्त करता हुआ संस्कृत आदि अवान्तर विभेदों में परिणत हुआ है अर्थात् अर्धमागधी प्राकृत से संस्कृत और अन्यान्य प्राकृत भाषाओं की उत्पत्ति हुई है । इसी कारण से मूल ग्रन्थकार (रुद्रट) ने प्राकृत का पहले और संस्कृत आदि बाद में निर्देश किया है । पाणिन्यादि व्याकरणों में बताए हुए नियमों के अनुसार संस्कार पाने के कारण संस्कृत कहलाती है ।

‘अकृत्रिमस्वादुःसंज्ञं जनजिनेन्द्र साक्षादिव पासि भाषितैः’ (द्वान्त्रिशद्वात्रिशिका १, १८) ।

“अकृत्रिमस्वादुपदा जैनों वाचमुपास्महे ।” (हेमचन्द्रकाव्यानुशासन, पृष्ठ १) ।

उक्त पद्यों में क्रमशः महाकाव्य सिद्धसेन दिवाकर और आचार्य हेमचन्द्र जैसे समर्थ विद्वानों का जिनदेव की वाणी को ‘अकृत्रिम’ और संस्कृत भाषा को ‘कृत्रिम’ कहने का भी रहस्य यही है कि प्राकृत जन-साधारण की मातृभाषा होने के कारण अकृत्रिम—स्वाभाविक है और संस्कृत भाषा व्याकरण के संस्कार-रूप बनावटीपन से पूर्ण होने के हेतु कृत्रिम है ।

१. “प्राकृतसंस्कृतमागधीपिशाचभाषाश्च शौरसेनी च ।

षष्ठोऽत्र भूरिभेदो देशविशेषादपञ्च श ॥” (काव्यालङ्कार २, १२) ।

२. बारहवां अङ्ग-ग्रन्थ, जिसका नाम दृष्टिवाद है और जिसमें चौदह पूर्व (प्रकरण) थे, संस्कृत भाषा में था । यह बहुत काल से लुप्त हो गया है । यद्यपि इसके विषयों का संक्षिप्त वर्णन समवायाङ्गसूत्र में है ।

“अनुदशापि पूर्वाणि संस्कृतानि पुराऽभवन् ॥११४॥

प्रज्ञातिशयसाध्यानि तान्युच्छिन्नानि कालतः । अधुनैकादशाङ्गयस्ति सुधर्मस्वामिभाषिता ॥११५॥

बालक्रीमूढमूर्खादिजनानुग्रहणाय स । प्राकृता तामिहाकार्षीत्’ (प्रभावकचरित्र, पृ० ६८-६९) ।

३. “मृत्तुण दिद्विवायं कालियउकालियगसिद्धं त । थोवालवायणत्थं पाययमुद्दयं जिणवरेहि ॥”

(आचारदिनकर में उद्धृत प्राचीन गाय) ।

“बालक्रीमन्दमूर्खाणां नृणां चारित्रकाक्षिणाम् । अनुग्रहार्थं तत्त्वज्ञैः सिद्धान्तं प्राकृतं कृतं ॥”

(दशवैकालिक टीका पत्र १० में हरिभद्रसूरि द्वारा और काव्यानुशासन की टीका पृ० १ में आचार्य हेमचन्द्र द्वारा उद्धृत किया हुआ प्राचीन श्लोक) ।

४. “अकृत्रिमाणि—असंस्कृतानि, अत एव स्वादूनि मन्दब्रियामपि पेशलानि पदानि यस्यामिति विग्रहः” (काव्यानुशासनटीका) । आचार्य हेमचन्द्र की ‘अकृत्रिम’ शब्द की इस स्पष्ट व्याख्या से प्रतीत होता है कि उनका अपने प्राकृत-व्याकरण में प्राकृत की प्रकृति संस्कृत कहना सिद्धान्त-निरूपण के लक्ष्य से नहीं, परन्तु अपने प्राकृत-व्याकरण की रचना-शैली के उपलक्ष में है, क्योंकि सभी उपलब्ध प्राकृत-व्याकरणों की तरह हेमचन्द्र-प्राकृत-व्याकरण में भी संस्कृत पर से ही प्राकृत-शिक्षा की पद्धति अलप्यार की गई है और इस पद्धति में प्रकृति—मूल के स्थान में संस्कृत को रखना अनिवार्य हो जाता है । अथवा यह भी असम्भव नहीं है कि व्याकरण-रचना के समय उनका यही सिद्धान्त रहा हो जो बाद में बदल गया हो और इस परिवर्तित सिद्धान्त का काव्यानुशासन में प्रतिपादन किया हो । काव्यानुशासन की रचना व्याकरण के बाद उन्होंने की है यह काव्यानुशासन की “शब्दानुशासनेऽस्माभिः साध्यो वाचो विवेचिता” (पृष्ठ २) इस उक्ति से ही सिद्ध है ।

केवल जैन विद्वानों में ही यह मत प्रचलित न था, ख्रिस्त की आठवीं शताब्दी के जैनैतर महाकवि वाक्पतिराज ने भी अपने 'गण्डवहो' नामक महाकाव्य में इसी मत को इन स्पष्ट शब्दों में व्यक्त किया है —

“सयलाग्रो इम वाया विसंति एतो य एति वायाग्रो ।

एति समुद्रं चिय एति सायराग्रो श्विय जलाई ॥६३॥”

अर्थात् इसी प्राकृत भाषा में सब भाषाएँ प्रवेश करती हैं और इस प्राकृत भाषा से ही सब भाषाएँ निगंत हुई हैं, जल (प्रा कर) समुद्र में ही प्रवेश करता है और समुद्र से ही (वाष्प रूप से) बाहर होता है। वाक्पति के इस पद्य का मर्म यही है कि प्राकृत भाषा की उत्पत्ति अन्य किसी भाषा से नहीं हुई है, बल्कि संस्कृत आदि सब भाषाएँ प्राकृत से ही उत्पन्न हुई हैं।

ख्रिस्त की नवम शताब्दी के जैनैतर कवि राजशेखर ने भी अपने 'वालरामायण' में नीचे का श्लोक लिखकर यही मत प्रकट किया है —

“यद् योनि किल संस्कृतस्य मुहशा जिह्वासु यन्मोदते, यश्च श्रोत्रपथावतारिणि कटुर्माषाक्षराणां रस” ।

गद्य चूर्णपद पदं रतिपतेस्तत्र प्राकृत यद्वचस्तल्लिटांल्ललिताङ्गि पश्य नुदती दृष्टेनिमेषव्रतम् ॥” (४८, ४९) ।

जैन और जैनैतर विद्वानों के उक्त वचनों से यह स्पष्ट है कि प्राचीन काल के भारतीय भाषातत्त्वज्ञों में भी यह मत प्रचल रूप से प्रचलित था कि प्राकृत की उत्पत्ति संस्कृत भाषा से नहीं है।

प्राकृत भाषा लौकिक संस्कृत से उत्पन्न नहीं हुई है इसका और भी एक प्रमाण है। वह यह कि प्राकृत के अनेक शब्द और प्रत्ययों का लौकिक संस्कृत की अपेक्षा वैदिक भाषा के साथ अधिक मेल देखने में आता है। प्राकृत भाषा साक्षाद्रूप से लौकिक संस्कृत से उत्पन्न होने पर यह कभी संभव नहीं हो सकता। वैदिक साहित्य में भी प्राकृत के अनुरूप अनेक शब्द और प्रत्ययों के प्रयोग विद्यमान हैं। इससे यह अनुमान करना किसी तरह असंगत नहीं है कि वैदिक संस्कृत और प्राकृत ये दोनों ही एक प्राचीन प्राकृत भाषा से उत्पन्न हुई हैं और यही इस सादृश्य का कारण है। वैदिक भाषा और प्राकृत के सादृश्य के कतिपय उदाहरण हम नीचे उद्धृत करते हैं, ताकि उक्त कथन की सत्यता में कोई संदेह नहीं हो सकता।

वैदिक भाषा और प्राकृत में सादृश्य

१ प्राकृत में अनेक जगह संस्कृत ऋकार के स्थान में उकार होता है, जैसे—वृन्द = वुन्द, ऋतु = उत, पृथिवी = पुह्वी, वैदिक साहित्य में भी ऐसे प्रयोग पाये जाते हैं, जैसे—कृत = कुठ (ऋग्वेद १, ४६, ४) ।

२ प्राकृत में संयुक्त वर्णवाले कई स्थानों में एक व्यञ्जन का लोप होकर पूर्व के ह्रस्व स्वर का दीर्घ होता है, जैसे—दुर्लभ = दूल्ह, विश्राम = वीसाम, स्पर्श = फास, वैदिक भाषा में भी वैसा होता है, यथा—दुर्लभ = दूल्भ (ऋग्वेद ४, ६, ८), दुर्गाश = दूणाश (शुक्लयजु प्रातिशाख्य ३, ४३) ।

३. संस्कृत व्यञ्जनान्त शब्दों के अन्त्य व्यञ्जन का प्राकृत में सर्वत्र लोप होता है, जैसे—तावत् = ताव, यशस् = जस, वैदिक साहित्य में भी इस नियम का अभाव नहीं है, यथा—पश्चात् = पश्चा (अथर्वसंहिता १०, ४, ११), उच्चात् = उच्चा (तैत्तिरीयसंहिता २, ३, १४), नीचात् = नीचा (तैत्तिरीयसंहिता १, २, १४) ।

४ प्राकृत में संयुक्त र और य का लोप होता है, जैसे—प्रगल्भ = पगल्भ, श्यामा = सामा, वैदिक साहित्य में भी यह पाया जाता है, यथा—अ-प्रगल्भ = अ-पगल्भ (तैत्तिरीयसंहिता ४, ५, ६१), त्र्यच = त्रिच (शतपथब्राह्मण १, ३, ३, ३३) ।

५ प्राकृत में संयुक्त वर्ण का पूर्व स्वर ह्रस्व होता है, यथा—पात्र = पत्र, रात्रि = रत्ति, साध्य = सङ्ग इत्यादि, वैदिक भाषा में भी ऐसे प्रयोग हैं, जैसे—रोदसीप्रा = रोदसिप्रा (ऋग्वेद १०, ८८, १०), अमात्र = अमत्र (ऋग्वेद ३, ३६, ४) ।

६. प्राकृत में संस्कृत द का अनेक जगह ढ होता है, जैसे—दण्ड = ढण्ड, दंस = डंस, दोला = डोला, वैदिक साहित्य में भी ऐसे प्रयोग दुर्लभ नहीं हैं, जैसे—दुर्दभ = दूडभ (वाजसनेयसंहिता ३, ३६), पुरोदास = पुरोडाश (शुक्ल-यजु प्रातिशाख्य ३, ४४) ।

७. प्राकृत में व का ह होता है, यथा—बधिर = बहिर व्याव = वाह, वेद-भाषा में भी ऐसा पाया जाता है, जैसे—प्रतिसहाय = प्रतिसहाय (गोपब्राह्मण २, ४)।

८ प्राकृत में अनेक शब्दों में सयुक्त व्यञ्जनों के बीच में स्वर का आगम होता है, जैसे—क्लिष्ट = किलिष्ट, स्व = सुव, तन्त्री = तणुत्री, वैदिक साहित्य में भी ऐसे प्रयोग विरल नहीं हैं, यथा—सहस्र = सहस्रियः, स्वर्ग = सुवर्ग। (तैत्तिरीयसंहिता ४, २, ३), तन्व = तनुव, स्व = सुव (तैत्तिरीयब्राह्मण ७ २२, १, ६, २, ७)।

९ प्राकृत में अकारान्त पुलङ्ग शब्द के प्रथमा के एकवचन में ओ होता है, जैसे—देवो, जिणो, सो इत्यादि, वैदिक भाषा में भी प्रथमा के एकवचन में कहीं-कहीं ओ देखा जाता है, यथा—संवत्सरो अजायत (ऋग्वेदसंहिता १०, १६०, २), सो चित् (ऋग्वेदसंहिता १, १६१, १०-११)।

१०. तृतीया विभक्ति के बहुवचन में प्राकृत में देव आदि अकारान्त शब्दों के रूप देवेहि, गभीरेहि, जेट्टेहि आदि होते हैं, वैदिक साहित्य में भी इसीके अनुरूप देवेभि, गम्भीरेभि, ज्येष्ठेभि आदि रूप मिलते हैं।

१ प्राकृत की तरह वैदिक भाषा में भी चतुर्थी के स्थान में पष्ठी विभक्ति होती है।

२. प्राकृत में पञ्चमी के एकवचन में देवा, वच्छा, जिगा आदि रूप होते हैं, वैदिक साहित्य में भी इसी तरह के उच्चा, नीचा, पश्चा प्रभृति उपलब्ध होते हैं।

११ प्राकृत में द्विवचन के स्थान में बहुवचन ही होता है वैदिक भाषा में भी इस तरह के अनेकों प्रयोग मौजूद हैं, यथा—‘इन्द्रावरुणौ’ के स्थान में ‘इन्द्रावरुणा’, ‘मित्रावरुणौ’ की जगह ‘मित्रावरुणा’, ‘यौ सुरथौ रथितमौ दिविस्पृशावश्विनौ’ के बदले ‘या सुरथा रथितमा दिविस्पृशा अश्विना’, ‘नरौ हे’ के स्थल में ‘नरा हे’ आदि।

इस तरह अनेक युक्ति और प्रमाणों से यह साबित होता है कि प्राकृत की उत्पत्ति वैदिक अथवा लौकिक संस्कृत से नहीं, किन्तु वैदिक संस्कृत की उत्पत्ति जिस प्रथम स्तर की प्रादेशिक प्राकृत भाषा से पूर्व में कही गई है उसीसे हुई है। इससे यहाँ पर इस बात का उल्लेख करना आवश्यक है कि संस्कृत के अनेक आलंकारिकों ने और प्राकृत के प्रायः समस्त वैयाकरणों ने ‘तत्’ शब्द से संस्कृत को लेकर ‘तद्भव’ शब्द का जो व्यवहार ‘संस्कृतभव’ अर्थ में किया है वह किसी तरह सत्य नहीं हो सकता। इसलिए वहाँ ‘तत्’ शब्द से संस्कृत के स्थान में वैदिक काल के प्राकृत का ग्रहण कर ‘तद्भव’ शब्द का प्रयोग ‘वैदिक काल के प्राकृत से जो शब्द संस्कृत में लिया गया है उससे उत्पन्न’ इसी अर्थ में करना चाहिए। संस्कृत शब्द और प्राकृत तद्भव शब्द इन दोनों का साधारण मूल वैदिक काल का प्राकृत अर्थात् पूर्वोक्त प्राथमिक प्राकृत या प्रथम स्तर का प्राकृत है। इससे जहाँ पर ‘तद्भव’ शब्द का सैद्धान्तिक अर्थ ‘संस्कृतभव’ नहीं, किन्तु ‘वैदिक काल के प्राकृत से उत्पन्न’ यही समझना चाहिए।

द्वितीय स्तर की प्राकृत भाषाओं का उत्पत्ति-क्रम और उनके प्रधान भेद

जब उपर्युक्त कथन के अनुसार वैदिक तथा लौकिक संस्कृत और समस्त प्राकृत भाषाओं का मूल एक ही है और वैदिक तथा लौकिक संस्कृत द्वितीय स्तर की सभी प्राकृत भाषाओं से प्राचीन है, तब यह कहने की कोई आवश्यकता नहीं है कि द्वितीय स्तर की प्राकृत भाषाओं के उत्पत्ति-क्रम का निर्णय एकमात्र उसी सादृश्य के तारतम्य पर निर्भर करता है जो उभय संस्कृत और प्राकृत तद्भव शब्दों में पाया जाता है। जिस प्राकृत भाषा के तद्भव शब्दों का वैदिक और लौकिक संस्कृत के साथ जितना अधिक सादृश्य होगा वह उतनी ही प्राचीन और जिसके तद्भव शब्दों का उभय संस्कृत के साथ जितना अधिक भेद होगा वह उतनी ही अर्वाचीन मानी जा सकती है, क्योंकि अधिक भेद के उत्पन्न होने में समय भी अधिक लगता है यह निर्विवाद है।

द्वितीय स्तर की जिन प्राकृत भाषाओं ने साहित्य में अथवा शिलालेखों में स्थान पाया है उनके शब्दों की वैदिक और लौकिक संस्कृत के साथ, उपर्युक्त पद्धति से तुलना करने पर, जो भेद (पार्थक्य) देखने में आते हैं उनके अनुसार द्वितीय स्तर की प्राकृत भाषाओं के निम्नोक्त प्रधान भेद (प्रकार) होते हैं, जो क्रम से इन तीन मुख्य काल-विभागों में बाँटे जा सकते हैं—(१) प्रथम युग—ख्रिस्त-पूर्व चार सौ से लेकर ख्रिस्त के बाद एक सौ वर्ष तक (400 B. C. to 100 A. D.), (२) मध्ययुग—ख्रिस्त के बाद एक सौ से पाँच सौ वर्ष तक (100 A. C. to 500 A. D.), (३) शेष युग—ख्रिस्तीय पाँच सौ से एक हजार वर्ष तक (500 A. D. to 1000 A. D.)।

प्रथम युग (ख्रिस्त-पूर्व ४०० से ख्रिस्त के बाद १००)

- (क) हीनयान बौद्धों के त्रिपिटक, महावश और जातक-प्रभृति ग्रन्थों की पाली भाषा ।
- (ख) पैशाची और चूलिकापैशाची ।
- (ग) जैन अंग-ग्रन्थों की अर्धमागधी भाषा ।
- (घ) अंग-ग्रन्थ-भिन्न प्राचीन सूत्रों की और पद्म-चरित्र आदि प्राचीन ग्रन्थों की जैन महाराष्ट्री भाषा ।
- (ङ) अशोक-शिलालेखों की एवं परवर्ति-काल के प्राचीन शिलालेखों की भाषा ।
- (च) अश्वघोष के नाटकों की भाषा ।

मध्ययुग (ख्रिस्तीय १०० से ५००)

- (क) त्रिवेन्द्रम् से प्रकाशित भास-रचित कहे जाते नाटकों की और बाद के कालिदास-प्रभृति के नाटकों की शौरसेनी, मागधी और महाराष्ट्री भाषाएँ ।
- (ख) सेतुबन्ध, गाथासप्तशती आदि काव्यों की महाराष्ट्री भाषा ।
- (ग) प्राकृत व्याकरणों में जिनके लक्षण और उदाहरण पाये जाते हैं वे महाराष्ट्री, शौरसेनी, मागधी, पैशाची, चूलिकापैशाची भाषाएँ ।
- (घ) दिगम्बर जैन ग्रन्थों की शौरसेनी और परवर्ति-काल के श्वेताम्बर ग्रन्थों की जैन महाराष्ट्री भाषा ।
- (ङ) चंड के व्याकरण में निदिष्ट और विक्रमोर्वशी में प्रयुक्त अपभ्रंश भाषा ।

शेष युग (ख्रिस्तीय ५०० से १००० वर्ष)

भिन्न-भिन्न प्रदेशों की परवर्ती काल की अपभ्रंश भाषाएँ ।

अब इन तीन युगों में विभक्त प्रत्येक भाषा का लक्षण और विशेष विवरण, उक्त क्रम के अनुसार (१) पालि, (२) पैशाची, (३) चूलिकापैशाची, (४) अर्धमागधी, (५) जैन महाराष्ट्री, (६) अशोकलिपि, (७) शौरसेनी, (८) मागधी, (९) महाराष्ट्री, (१०) अपभ्रंश इन शीर्षकों में क्रमशः दिया जाता है ।

(१) पालि

हीनयान बौद्धों के धर्म-ग्रन्थों की भाषा को पालि कहते हैं । कई विद्वानों का अनुमान है कि पालि शब्द 'पड्क्ति' पर से बना है^१ । 'पड्क्ति' शब्द का अर्थ है 'श्रेणी' । प्राचीन बौद्ध लेखक अपने ग्रन्थ में धर्म-शास्त्र की वचन-पड्क्ति को उद्धृत करते समय इसी पालि शब्द का प्रयोग करते थे, इससे बाद के समय में बौद्ध धर्म-शास्त्रों की भाषा का ही नाम पालि हुआ । अन्य विद्वानों का मत है कि पालि शब्द 'पड्क्ति' पर से नहीं, परन्तु 'पल्लि' पर से हुआ निर्देश और व्युत्पत्ति है । 'पल्लि' शब्द असल में संस्कृत नहीं, परन्तु प्राकृत है, यद्यपि अन्य अनेक प्राकृत शब्दों की तरह यह भी पीछे से संस्कृत में लिया गया है । 'पल्लि' शब्द जैनो के प्राचीन अंग-ग्रन्थों में भी पाया जाता है^३ । 'पल्लि' शब्द का अर्थ है ग्राम या गाँव । 'पालि' का अर्थ गाँवों में बोली जाती भाषा — ग्राम्य भाषा — होता है । 'पड्क्ति' पर से 'पालि' होने की कल्पना जितनी क्लेश-साध्य है 'पल्लि' पर से 'पालि' होना उतना ही सहज-बोध्य है । इससे हमें पछिला मत ही अधिक सगत मालूम होता है । 'पालि' केवल ग्रामों की ही भाषा थी, इससे उसका यह नाम हुआ है यह बात नहीं है । बाल्क प्रदेश-विशेष के ग्रामों की तरह शहरों के भी जन-साधारण की यह भाषा थी, परन्तु संस्कृत के अनन्य-भक्त

१ "पड्क्ति = पक्ति = पति = पण्डित = पंति = पलि = पल्लि = पालि, अथवा पड्क्ति = पत्ति = पट्टि = पल्लि = पालि" (पालिप्रकाश, प्रवेशक, पृष्ठ ६) ।

२ "सेतुस्सिं तन्तिपन्तीमु नालियं पालि कथ्यते" (अभिधानप्रदीपिका ६६६) ।

३ देखो, विपाकश्रुत (पत्र ३८, ३९) ।

ब्राह्मणों की ही ओर से इस भाषा की तरफ अपनी स्वाभाविक घृणा^१ को व्यक्त करने के लिए इसका यह नाम दिया जाना और अधिक प्रसिद्ध हो जाने के कारण पीछे से बौद्ध विद्वानों का भी मागधी की जगह इस शब्द का प्रयोग करना आश्चर्य-जनक नहीं जान पड़ता ।

उक्त प्राकृत भाषा-समूह में पालि भाषा के साथ वैदिक संस्कृत का अधिक सादृश्य देखा जाता है । इसी कारण से द्वितीय स्तर की प्राकृत भाषाओं में पालि भाषा सर्वापेक्षा प्राचीन मालूम पड़ती है ।

पालि भाषा के उत्पत्ति-स्थान के बारे में विद्वानों का मत-भेद है । बौद्ध लोग इसी भाषा को मागधी कहते हैं और उनके मत से इस भाषा का उत्पत्ति-स्थान मगध देश है । परन्तु इस भाषा का मागधी प्राकृत के साथ कोई सादृश्य नहीं है । डॉ. कोनो (Dr Konow) और सर ग्रियर्सन ने इस भाषा का पैशाची भाषा के साथ सादृश्य

देखकर पैशाची भाषा जिस देश में प्रचलित थी उसी देश को इसका उत्पत्ति-स्थान बताया है, उत्पत्ति-स्थान यद्यपि पैशाची भाषा के उत्पत्ति-स्थान के विषय में इन दोनों विद्वानों का मतैक्य नहीं है । डॉ. कोनो के मत में पैशाची भाषा का उत्पत्ति-स्थान विन्ध्याचल का दक्षिण प्रदेश है और सर ग्रियर्सन का मत यह है कि 'इसका उत्पत्ति-स्थान भारतवर्ष का उत्तर-पश्चिम प्रान्त है, वहाँ उत्पन्न होने के बाद संभव है कि कोंकण-प्रदेश-पर्यन्त इसका विस्तार हुआ हो और वहाँ इससे पाली भाषा की उत्पत्ति हुई हो ।' परन्तु पालि भाषा अगोक के गुजरात-प्रदेश-स्थित गिरनार के शिलालेख के अनुरूप होने के कारण यह मगध में नहीं, किन्तु 'भारतवर्ष के पश्चिम प्रान्त में उत्पन्न हुई है और वहाँ से सिन्धु प्रदेश में ले जाई गई है' यही मत विशेष सगत प्रतीत होता है, क्योंकि निम्नोक्त उदाहरणों से पालिभाषा का गिरनार-शिलालेख के साथ सादृश्य और पूर्व-प्रान्त-स्थित धौलि (खडगिरि) शिलालेख के साथ पार्थक्य देखा जाता है—

संस्कृत	पाली	गिरनारशिला०	धौलिशिला०
राज	राजिनो, रन्नो	राणो	लजिने
कृतम्	कत्तं	कत्तं	कत्ते

इस विषय में डॉ. सुनीतिकुमार चटर्जी का कहना है कि "बुद्धदेव^२ के समस्त उपदेश मागधी भाषासे बाद के समय में मध्यदेश (Doab) की शौरसेनी प्राकृत में अनुवादित हुए थे और वे ही ख्रिस्त-पूर्व प्रायः दस सौ वर्ष से पालि-भाषा के नाम से प्रसिद्ध हुए हैं ।" किन्तु सच तो यह है कि पालि भाषा का शौरसेनी और मागधी की अपेक्षा पैशाची के साथ ही अधिक सादृश्य है जो निम्नाक्त उदाहरणों से स्पष्ट जाना जाता है ।

संस्कृत	पालि	पैशाची	शौरसेनी	मागधी
*क (लोक)	क (लोक)	क (लोक)	० (लोम)	० (लोम)
*ग (नग)	ग (नग)	ग (नग)	० (णम)	० (णम)
*च (सची)	च (सची)	च (सची)	० (सई)	० (सई)
*ज (रजत)	ज (रजत)	ज (रजत)	० (रमद)	० (लमद)
*त (कृत)	त (कत्त)	त (कत्त)	द (कद)	ड (कड)
र (कर)	र (कर)	र (कर)	र (कर)	ल (कल)

१. "लोकायत कुतर्कं च प्राकृत म्लेच्छमापितम् ।

न श्रोतव्यं द्विजेनैतदधो नयति तद् द्विजम्" (गण्डपुराण, पूर्वखण्ड ६८, १७) ।

२. The Origin and Development of the Bengalee Language, Vol I, page 57.

३. इन उदाहरणों में प्रथम वह अक्षर दिया गया है जिसका उस उस भाषा के नीचे दिए गए अक्षरों में परिवर्तन होता है और अक्षर के बाद ब्रकेट में उसी अक्षरवाला शब्द स्पष्टता के लिए दिया गया है ।

* स्वर वर्णों के मध्यवर्ती असंगुक्त वर्ण ।

संस्कृत	पालि	पैशाची	शौरसेनी	मागधी
श (वश)	स (वस)	स (वस)	स (वस)	श (वश)
प (मेप)	स (मेस)	स (मेस)	स (मेस)	श (मेश)
स (सारस)	स (सारस)	स (सारस)	स (सारस)	श (शालश)
न (वचन)	न (वचन)	न (वचन)	ण (वअण)	ण (वअण)
ट्ट (पट्ट)	ट्ट (पट्ट)	ट्ट (पट्ट)	ट्ट (पट्ट)	स्ट (पस्ट)
थ (अर्थ)	त्थ (अत्थ)	त्थ (अत्थ)	त्थ (अत्थ)	स्त (अस्त)
स् (वृक्ष)	ओ (रुक्खो)	ओ (रुक्खो)	ओ (रुक्खो)	ए (लुक्खे)

पालि भाषा की उत्पत्ति का समय ख्रिस्त के पूर्व षष्ठ शताब्दी कहा जाता है, किन्तु वह काल बुद्धदेव की सम-
सामयिक कथ्य मागधी भाषा का हो सकता है। पालि कथ्य भाषा नहीं, परन्तु बौद्ध धर्म-साहित्य
उत्पत्ति-समय की भाषा है। संभवत यह भाषा ख्रिस्त के पूर्व चतुर्थ या पञ्चम शताब्दी में पश्चिम भारत में

उत्पन्न हुई थी।

इस पालि-भाषा से आधुनिक सिंहली भाषा की उत्पत्ति हुई है।

प्राकृत शब्द से साधारणतः पालि-भिन्न अन्य भाषाएँ ही समझी जाती हैं। इससे, और पालि भाषा के अनेक स्वतन्त्र कोष होने से, प्रस्तुत कोष में पालि भाषा के शब्दों को स्थान नहीं दिया गया है। इसलिए पालि भाषा की विशेष आलोचना करने की यहाँ आवश्यकता नहीं है।

(२) पैशाची

गुणाढ्य ने ^१बृहत्कथा पैशाची भाषा में लिखी थी, जो लुप्त हो गई है। इस समय पैशाची भाषा के उदाहरण प्राकृतप्रकाश, आचार्य हेमचन्द्र का प्राकृतव्याकरण, षड्भाषाचन्द्रिका, प्राकृत-सर्वस्व और संक्षिप्तसार आदि प्राकृत-व्याकरणों में आचार्य हेमचन्द्र के कुमारपाल-चरित तथा काव्यानुशासन में, मोहराज-पराजय नामक नाटक में और दो-एक षड्भाषास्तोत्रों में मिलते हैं।

भरत के नाट्यशास्त्र में पैशाची नाम का उल्लेख देखने में नहीं आता है, परन्तु इसके परवर्ती ^४रुद्रट, ^५केशव-मिश्र आदि संस्कृत के आलंकारिकों ने इसका उल्लेख किया है। वाग्भट ने इस भाषा को ^६'भूतभाषित' के नाम से अभिहित की है।

^७वाग्भट तथा ^८केशवमिश्र ने क्रम से भूत और पिशाच-प्रभृति पात्रों के लिए और ^९षड्भाषा-चन्द्रिकाकार ने राक्षस, पिशाच और नीच पात्रों के लिए इसका विनियोग बतलाया है।

१. पुलिग में प्रथमा के एक वचन का प्रत्यय।

२. आचार्य उद्द्योतन की कुवलय माला में, दण्डी के काव्यादर्श में, बाण के हर्षचरित में, वनञ्जय के दशरूपक में, सुवन्धु की वासवदत्ता में और अन्यान्य प्राकृत-संस्कृत ग्रंथों में इसका उल्लेख पाया जाता है। जेमिन्द्रकृत बृहत्कथामञ्जरी और सोमदेवभट्ट-प्रणीत कथासरित्सागर इसी बृहत्कथा का संस्कृत अनुवाद है। इस बृहत्कथा के ही भिन्न-भिन्न अंशों के आधार पर बाण, श्रीहर्ष, भवभूति आदि संस्कृत के महाकवियों की कादम्बरी, रत्नावली, मालतीमाधव-प्रभृति अनेक संस्कृत ग्रंथों की रचना की गई है।

३. पृष्ठ २२६, २३३।

४. काव्यालंकार २, १२।

५. 'संस्कृतं प्राकृतं चैव पैशाची मागधी तथा' (अलङ्कारशेखर, पृष्ठ ५)।

६. 'संस्कृतं प्राकृतं तस्यापञ्च शो भूतभाषितम्' (वाग्भटालङ्कार २, १)।

७. 'यद् भूतैरुच्यते त्रिविधं तद्भौतिकमिति स्मृतम्' (वाग्भटालङ्कार २, ३)।

८. 'पैशाची तु पिशाचाद्या प्राहु' (अलङ्कारशेखर, पृष्ठ ५)।

९. रक्ष पिशाचनीचेण पैशाचीद्वितयं भवेत् ॥३५॥' (षड्भाषा-चन्द्रिका, पृष्ठ ३)।

पद्भाषाचन्द्रिकाकार पिशाच-देशों की भाषा को ही पैशाची कहते हैं और पिशाच-देशों के निर्देश के लिए नीचे उत्पत्ति-स्थान के श्लोकों को उद्धृत करते हैं —

‘पाण्ड्यकेकयवाहीकसङ्घनेपालकुन्तला ।
सुघेष्णमोजगान्धारहैचकन्नोजनास्तथा ।
एते पिशाचदेशाः स्युः’

मार्कण्डेय ने अपने प्राकृतसर्वस्व में प्राकृतचन्द्रिका के

‘काञ्चीदेशीयपाण्ड्ये च पाञ्चाल गौड-मागधम् ।
त्राचड दाक्षिणात्यं च शौरसेनं च कैकयम् ॥
शावरं द्राविडं चैव एकादश पिशाचजा ।

इस वचन को उद्धृत कर ग्यारह प्रकार की पैशाची का उल्लेख किया है, परन्तु बाद में इस मत का खण्डन करके सिद्धान्त रूप से इन तीन प्रकार की पैशाची का ग्रहण किया है, यथा—‘कैकय शौरसेन च पाञ्चालमिति च त्रिधा पैशाच्य’ ।

लक्ष्मीधर और मार्कण्डेय ने जिन प्राचीन वचनों का उल्लेख किया है उनमें पाण्ड्य, काञ्ची और कैकय आदि प्रदेश एक दूसरे से अतिदूरवर्ती प्रान्तों में अवस्थित हैं । इतने दूरवर्ती प्रदेश एकदेशीय भाषा के उत्पत्ति-स्थान कैसे हो सकते हैं ? यदि पैशाची भाषा किसी प्रदेश की भाषा न हो कर भिन्न भिन्न प्रदेशों में रहनेवाली किसी जाति-विशेष की भाषा हो तो इसका सभव इस तरह हो भी सकता है कि पूर्वकाल में किसी एक देश-विशेष में रहनेवाली पिशाच-प्रायः मनुष्य-जाति बाद में भिन्न-भिन्न देशों में फैलती हुई वहाँ अपनी भाषा को ले गई हो । मार्कण्डेय-निर्दिष्ट तीन प्रकार की पैशाची परस्पर सनिहित प्रदेशों की भाषा है, इससे खूब ही सभव है कि यह पहले कैकय देश में उत्पन्न हुई हो और बाद में उसी के समीपस्थ शूरसेन और पञ्जाव तक फैल गई हो । मार्कण्डेय ने शौरसेन-पैशाची और पाञ्चाल-पैशाची की प्रकृति जो कैकय-पैशाची वही है इसका मतलब भी यही हो सकता है । सर ग्रियर्सन के मत में पिशाच-भाषा-भाषी लोगों का आदिम वास-स्थान उत्तर-पश्चिम पञ्जाव अथवा अफगानिस्थान का प्रान्त प्रदेश है और बाद में वहाँ से ही सभवतः इसका अन्य देशों में विस्तार हुआ है । किन्तु डॉ. हॉर्नोल का इस विषय में और ही मत है । उनका कहना यह है कि अनार्य जाति के लोग आर्य-जाति की भाषा का जिस विकृत रूप में उच्चारण करते थे वही पैशाची भाषा है, अर्थात् इनके मत से पैशाची भाषा न तो किसी देश-विशेष की भाषा है और न वह वास्तव में भिन्न भाषा ही है । हमें सर ग्रियर्सन का मत ही प्रामाणिक प्रतीत होता है जो मार्कण्डेय के मत के साथ अनेकांश में मिलता-जुलता है ।

वररुचि ने शौरसेनी प्राकृत को ही पैशाची भाषा का मूल कहा है^१ । मार्कण्डेय ने पैशाची भाषा को कैकय, शौरसेन और पाञ्चाल इन तीन भेदों में विभक्त कर संस्कृत और शौरसेनी उभय को कैकय-पैशाची का और कैकय-पैशाची को शौरसेन-पैशाची का मूल बतलाया है । पाञ्चाल-पैशाची के मूल का उन्होंने निर्देश ही नहीं किया है, किन्तु उन्होंने इसके जो केरी (केलि) और मदिल (मन्दिरम्) ये दो उदाहरण दिये हैं इससे मालूम होता है कि इस पाञ्चाल-पैशाची का कैकय-पैशाची से रकार और लकार के व्यत्यय के अतिरिक्त अन्य कोई भेद नहीं है, सुतरा शौरसेन-पैशाची की तरह पाञ्चाल-पैशाची की प्रकृति भी इनके मत से कैकय-पैशाची ही हो सकती है । यहाँ पर यह कहना आवश्यक है कि मार्कण्डेय ने शौरसेन-पैशाची के जो लक्षण दिए हैं उन पर से शौरसेन-पैशाची का

१. वर्तमान मदुरा और कन्याकुमारी के आसपास के प्रदेश का नाम पाण्ड्य, पञ्चनद प्रदेश का नाम कैकय, अफगानिस्थान के वर्तमान वालखनगरवाले प्रदेश का नाम वाहीक, दक्षिण भारत के पश्चिम उपकूल का नाम सङ्घ, नर्मदा के उत्पत्ति-स्थान के निकटवर्ती देश का नाम कुन्तल, वर्तमान कावूल और पेशावरवाले प्रदेश का नाम गान्धार, हिमालय के निम्न-वर्ती पार्वत्य प्रदेश-विशेष का नाम हैव और दक्षिण महाराष्ट्र के पार्वत्य अञ्चल का नाम कन्नोजन है ।

२. “प्रकृति शौरसेनी” (प्राकृतप्रकाश १०, २) ।

३. “सस्य श”, “रस्य लो भवेत्”, “चवगंस्पोपरिष्ठाद् य” “कृतादिषु कदादय”, “क्षस्य च्छ”, “स्थावकृते एस्य शत”, “तत्थयो श ऊर्ध्वं स्यात्”, “अत सोरो (२३) त्” (प्राकृतसर्वस्व, पृष्ठ १२६) ।

शौरसेनी भाषा के साथ कोई भी सवन्व प्रतीत नहीं होता, क्योंकि कैश्य-पैशाची के साथ शौरसेन-पैशाची के जो भेद उन्होंने बतलाए हैं वे मागधी भाषा के ही अनुरूप हैं, न कि शौरसेनी के। इससे इसको शौरसेन-पैशाचा न कह कर मागध-पैशाची कहना ही संगत जान पड़ता है।

प्राकृत वैयाकरणों के मत से पैशाची भाषा का मूल शौरसेनी अथवा संस्कृत भाषा है, किन्तु हम पहले यह भली-भाँति दिखा चुके हैं कि कोई भी प्रादेशिक कथ्य भाषा, संस्कृत अथवा अन्य प्रादेशिक भाषा से उत्पन्न नहीं है, परन्तु वह उसी कथ्य अथवा प्राकृत भाषा से उत्पन्न हुई है जो वैदिक युग में उस प्रदेश में प्रचलित थी। इस लिए पैशाची भाषा का भी मूल संस्कृत या शौरसेनी नहीं, किन्तु वह प्राकृत भाषा ही है जो वैदिक युग में भारतवर्ष के उत्तर-पश्चिम प्रान्त की या अफगानिस्थान के पूर्व प्रान्त-वर्ती प्रदेश की कथ्य भाषा थी।

प्रथम युग का पैशाची भाषा का कोई निदर्शन साहित्य में नहीं मिलता है। गुणाढ्य की बृहत्कथा संभवतः इसी प्रथम युग की पैशाची भाषा में रची गई थी, किन्तु वह आजकल उपलब्ध नहीं है। इस समय हम व्याकरण, नाटक और काव्य में पैशाची भाषा के जो निदर्शन पाते हैं वह मध्ययुग की पैशाची भाषा का है। मध्ययुग की यह पैशाची भाषा ख्रिस्त की द्वितीय शताब्दी से पाँचवीं शताब्दी पर्यन्त प्रचलित थी।

पैशाची भाषा का शौरसेनी भाषा के साथ जिस-जिस अंश में भेद है वह सामान्य रूप से नीचे दिया जाता है। इसके सिवा अन्य सभी अंशों में वह शौरसेनी के ही समान है। इससे इसके बाकी के लक्षण शौरसेनी के प्रकरण से जाने जा सकते हैं।

वर्ण-भेद

१. ज, न्य और एय के स्थान में झ होता है, यथा—जज्ञा = पञ्ञा; ज्ञान = ञ्ञान, कन्यका = कञ्ञका, अभिमन्यु = अभिमञ्ञु, पुण्य = पुञ्ञ ।
२. ण और न के स्थान में न होता है, जैसे—गुण = गुन, कनक = कनक ।
३. त और द की जगह थ होता है, जैसे—भगवतो = भगवती, शन = सत, मदन = मतन, देव = तेव ।
४. लकार ल में बदलता है, यथा—सील = सीळ, कुल = कुळ ।
५. द्र की जगह ड्र और तु होता है, जैसे—कुटुम्बक, कुटुम्बक, कुतुम्बक ।
६. महाराष्ट्री के लक्षण में असयुक्त-व्यञ्जन परिवर्तन के १ से १३, १५ और १६ अंकवाले जो नियम बतलाए गए हैं वे शौरसेनी भाषा में लागू होते हैं, किन्तु पैशाची में नहीं, यथा—लोक = लोक्, शाखा = साखा; भट = भट, मठ = मठ, गरुड = गरुड, प्रतिभास = पतिभास, कनक = कनक, शपथ = सपथ, रेफ = रेफ, शवल = सवल, यशस् = यस, करगीय = करणाय, अगर = इंगार, दाह = दाह ।
७. यादृश आदि शब्दों का द परिणत होता है ति में, यथा—यादृश = यातिस, सदृश = सतिस ।

नाम-विभक्ति

१. अकारान्त शब्द की पञ्चमी का एकवचन आतो और आतु होता है, जैसे—जिनातो, जिनातु ।

आख्यात

१. शौरसेनी के दि और दे प्रत्ययों की जगह ति और ते होता है, यथा—गच्छति, गच्छते, रमति, रमते ।
२. भविष्य-काल में त्सि के बदल एय्य हाता है, जैसे—भविष्यति = हुवेय्य ।
३. भाव और कर्म में ईम तथा इज के स्थान में इय्य होता है, यथा—पठ्यते = पठिय्यते, हसिय्यते ।

कृदन्त

१. त्वा प्रत्यय के स्थान में कहीं तून और कही त्थून और दून होते हैं, यथा पठित्वा = पठितून, गत्वा = गन्तून, नष्ट्वा = नत्थून, नद्धून, तष्ट्वा = तत्थून, तद्धून ।

(३) चूलिकापैशाची

चूलिकापैशाची भाषा के लक्षण आचार्य हेमचन्द्र ने अपने प्राकृत-व्याकरण में और पंडित लक्ष्मीधर ने अपनी षड्भाषाचन्द्रिका में दिए हैं। आचार्य हेमचन्द्र के कुमारपालचरित और काव्यानुशासन में इस भाषा के निदर्शन पाये जाते हैं। इनके अतिरिक्त हम्मीरमदमर्दन नामक नाटक में और दो-एक छोटे-छोटे षड्भाषास्तोत्रों में भी इसके कुछ नमूने देखने में आते हैं।

प्राकृतलक्षण, प्राकृतप्रकाश, सक्षिप्तसार और प्राकृतसर्वस्व वगैरह प्राकृत-व्याकरणों में और संस्कृत के अलंकार ग्रन्थों में चूलिकापैशाची का कोई उल्लेख नहीं है, अथवा आचार्य हेमचन्द्र ने और पंडित लक्ष्मीधर ने चूलिकापैशाची के जो लक्षण दिए हैं वे चंड, वररुचि, क्रमदीश्वर और मार्कण्डेय-प्रभृति वैयाकरणों ने पैशाची भाषा के लक्षणों में ही अन्तर्गत किए हैं। इससे यह स्पष्ट जाना जाता है कि उक्त वैयाकरण-गण चूलिकापैशाची को पैशाची भाषा के अन्तर्भूत पैशाची में इसका ही मानते थे स्वतन्त्र भाषा के रूप में नहीं। आचार्य हेमचन्द्र भी अपने अभिधानविन्तामणि नामक संस्कृत कोष-ग्रन्थ के “भाषा. पट् संस्कृतादिका (काण्ड २, १६६) इस वचन की “संस्कृत-प्राकृत-मागधी-शौरसेनी-पैशाच्यपञ्च शलक्षणा” यह व्याख्या करते हुए चूलिकापैशाची का अलग उल्लेख नहीं करते। इससे मालूम पड़ता है कि वे भी चूलिकापैशाची को पैशाची का ही एक भेद मानते हैं। हमारा भी यही मत है। इससे यहाँ पर इस विषय में पैशाची भाषा के अनन्तरोक्त विवरण से कुछ अधिक लिखने की आवश्यकता नहीं रहती। सिर्फ आचार्य हेमचन्द्र ने और उन्हीं का पूरा अनुसरण कर ५० लक्ष्मीधर ने इस भाषा के जो लक्षण दिए हैं वे नीचे उद्धृत किए जाते हैं। इनके सिवा सभी अशों में इस भाषा का पैशाची से कोई पार्थक्य नहीं है।

लक्षण

१. वर्ग के तृतीय और चतुर्थ अक्षरों के स्थान में क्रमशः प्रथम और द्वितीय होता है^१, यथा—नगर = नकर, व्याघ्र = वक्ख, राजा = राचा, निर्भर = निच्छर, तडाग = तटाक, ढक्का = ठक्का, मदन = मतन, मधुर = मथुर, बालक = पालक, भगवती = फकवती।
२. र के स्थान में वैकल्पिक ल होता है, यथा—रुद्र = लुद्र, रुद्र।

(४) अर्धमागधी

भगवान् महावीर अपना धर्मोपदेश अर्धमागधी भाषा में देते थे^२। इसी उपदेश के अनुसार उनके समसामयिक गणधर श्री सुधर्मस्वामी ने अर्धमागधी भाषा में ही आचाराङ्ग-प्रभृति सूत्र-ग्रन्थों की रचना की थी^३। ये ग्रन्थ उस समय लिखे नहीं गए थे, परन्तु शिष्य परम्परा से कण्ठ-पाठ द्वारा सरक्षित होते थे। दिगम्बर जैनों के मत से ये समस्त ग्रन्थ विलुप्त हो गए हैं, परन्तु श्वेताम्बर जैन दिगम्बरों के इस मन्तव्य से सहमत नहीं हैं। श्वेताम्बरों के मत के अनुसार ये सूत्र-ग्रन्थ महावीर-निर्वाण के बाद ९८० अर्थात् ख्रिस्ताब्द ४५४ में बलभी (वर्तमान बल्ल, काठियावाड़) में श्रादेवर्द्धिगणि क्षमाश्रमण ने वर्तमान आकार में लिपिवद्ध किए। उस समय लिखे जाने पर भी इन ग्रन्थों की भाषा प्राचीन है। इसका एक कारण यह है कि जैसे ब्राह्मणों ने कण्ठ-पाठ-द्वारा बहु-शताब्दी-पर्यन्त वेदों की रक्षा की थी वैसे ही जन मुनियों ने भी अपनी शिष्य-परम्परा से मुख-पाठ द्वारा करीब एक हजार वर्ष तक अपने इन पवित्र ग्रन्थों को याद रखा था। दूसरा यह है कि जैन धर्म में सूत्र-पाठों के शुद्ध उच्चारण के लिए खूब जोर दिया गया है, यहाँ तक कि मात्रा या अक्षर के भी अशुद्ध या विपरीत उच्चारण करने में दोष माना गया है। तिस पर भी सूत्र-ग्रन्थों की भाषा का सूक्ष्म निरीक्षण करने से इस बात को स्वीकार करना ही पड़ेगा कि भगवान् महावीर के समय की अर्ध-

१. अन्य वैयाकरणों के मत से यह नियम शब्द के आदि के अक्षरों में लागू नहीं होता है (हे० प्रा० ४, ३२७)।

२. “भगव च एण अद्धमाहीए भासाए धम्ममाइक्खद्ध” (समवायाङ्ग सूत्र, पत्र ६०)।

“तए एण समणे भगव महावीरे कूणिअस्स रएणो भिसिआरपुत्तस्स” अद्धमागहाए भासाए भासाइ। सा वि य एण अद्धमागहा भासा तेसि सब्वेसि आरियमणारियाण अप्पणो सभासाए परिणामेण परिणमइ” (श्रौपपातिक सूत्र)।

३. “अर्थं भासइ प्ररिहा, सुत्त गथति गणहरा निउण” (आवश्यकनिष्पत्ति)।

मागधी भाषा के इन ग्रन्थों में, अज्ञातभाव से ही क्यों न हो, भाषा-विषयक परिवर्तन अवश्य हुआ है। यह परिवर्तन होना असंभव भी नहीं है, क्योंकि ये सूत्र-ग्रन्थ वेदों की तरह शब्द-प्रधान नहीं, किन्तु अर्थ-प्रधान हैं। इतना ही नहीं, बल्कि ये ग्रन्थ जन-साधारण के बोध के लिये ही उस समय की कथ्य भाषा में रचे गये थे और कथ्य भाषा में समय गुजरने के साथ-साथ अवश्य होनेवाले परिवर्तन का प्रभाव कण्ठ-पाठ के रूप में स्थित इन सूत्रों की भाषा पर पड़ना, अन्ततः उस-उस समय के लोगों को समझाने के उद्देश्य से भी, आश्चर्यकर नहीं है। इसके सिवा, भाषा-परिवर्तन का यह भी एक मुख्य कारण माना जा सकता है कि भगवान् महावीर के निर्वाण से करीब दो सौ वर्ष के बाद (ख्रिस्त-पूर्व ३१०) चन्द्रगुप्त के राजत्व-काल में मगध देश में बारह वर्षों का सुदीर्घ अकाल पड़ने पर साधु लोगों को निर्वाह के लिए समुद्र-तीर-वर्ती प्रदेश (दक्षिण देश) में जाना पड़ा था। उस समय वे सूत्र-ग्रन्थों का परिशीलन न कर सकने के कारण उन्हें भूल से गए थे। इससे अकाल के बाद पाटलिपुत्र में सघ ने एकत्रित होकर जिस-जिस साधु को जिस-जिस अङ्ग ग्रन्थ का जो-जो अंश जिस-जिस आकार में याद रह गया था, उस-उस से उस-उस अङ्ग ग्रन्थ के उस-उस अंश को उस-उस रूप में प्राप्त कर ग्यारह अङ्ग-ग्रन्थों का संकलन किया। इस घटना से जैसे अङ्ग-ग्रन्थों की भाषा के परिवर्तन का कारण समझ में आ सकता है, वैसे इन ग्रन्थों की अर्धमागधी भाषा में, मगध के पार्श्ववर्ती प्रदेशों की भाषाओं की तुलना में दूरवर्ती महाराष्ट्र-प्रदेश की भाषा का जो अधिक साम्य देखा जाता है उसके कारण का भी पता चलता है। जब ऐतिहासिक प्रमाणों से यह बात सिद्ध है कि दक्षिण प्रदेश में प्राचीन काल में जैन धर्म का अच्छी तरह प्रचार और प्रभाव हुआ था तब यह अनुमान करना अयुक्त नहीं है कि उक्त दीर्घकालिक अकाल के समय साधु लोग समुद्र-तीर-वर्ती इस दक्षिण देश में ही गए थे और वहाँ उन्होंने उपदेश-द्वारा जैन धर्म का प्रचार किया था। यह कहने की कोई आवश्यकता नहीं है कि उक्त साधुओं को दक्षिण प्रदेश में उस समय जो भाषा प्रचलित थी उसका अच्छी तरह ज्ञान हो गया था, क्योंकि उसके बिना उपदेश-द्वारा धर्म-प्रचार का कार्य वे कर ही नहीं सकते थे। इससे यह असंभव नहीं है कि उन साधुओं की इस नव-परिचित भाषा का प्रभाव, उनके कण्ठ-स्थित सूत्रों की भाषा पर भी पड़ा था। इसी प्रभाव को लेकर उनमें से कई एक साधु-लोग पाटलिपुत्र के उक्त संमेलन में उपस्थित हुए थे, जिससे अङ्गों के पुनः संकलन में उस प्रभाव ने न्यूनाधिक अंश में स्थान पाया था।

उक्त घटना से करीब आठ सौ वर्षों के बाद वलभी (सौराष्ट्र) और मथुरा में जैन ग्रन्थों को लिपिबद्ध करने के लिए मुनि-संमेलन किए गए थे, क्योंकि इन सूत्र-ग्रन्थों का और उस समय तक अन्य जो जैन ग्रन्थ रचे गए थे उनका भी क्रमशः विस्मरण हो चला था और यदि वही दशा कुछ अधिक समय तक चालू रहती तो समग्र जैन शास्त्रों के लोप हो जाने का डर था जो वास्तव में सत्य था। संभवतः इस समय तक जैन साधुओं का भारतवर्ष के अनेक प्रदेशों में विस्तार हो चुका था और इन समस्त प्रदेशों से अल्पाधिक संख्या में आकर साधु लोगों ने इन संमेलनों में योग-दान किया था। भिन्न-भिन्न प्रदेशों से आगत इन मुनियों से जो ग्रन्थ अथवा ग्रन्थ के अंश जिस रूप में प्राप्त हुआ उसी रूप में वह लिपिबद्ध किया गया। उक्त मुनियों के भिन्न-भिन्न प्रदेशों में चिर-काल तक विचरने के कारण उन प्रदेशों की भिन्न-भिन्न भाषाओं का,

१. "मुत्तूण दिट्ठिवायं कालियउक्कालियंगसिद्धत ।

धीबालवायणत्थ पाययमुद्दय जिणवरेहि ॥'

(भाषा-दिनकर में श्रीवर्धमानसूरि द्वारा उद्धृत की हुई प्राचीन गाथा) ।

'बालजीमन्दमूर्खाणा नृणा चारित्रकाङ्क्षणाम् ।

अनुग्रहार्थं तत्त्वज्ञैः सिद्धान्तं प्राकृतं कृतं ॥'

(हरिभद्रसूरि की दशवैकालिक टीका में श्री हेमचन्द्र के काव्यानुशासन में उद्धृत प्राचीन श्लोक) ।

२. देखो Annual Report of Asiatic Society, Bengal, 1898 में डॉ. हॉर्नल का लेख ।

३. "इत्थं तस्मिन् दुष्काले कराले कालरात्रिवत् । निर्वाहार्थं साधुसङ्घस्तीर नीरनिधेयौ ॥५५॥

अगुण्यमान तु तदा साधूना विस्मृतं श्रुतम् । अनभ्यसन्तो नश्यत्यधीतं धीमतामपि ॥५६॥

सघोष्य पाटलीपुत्रे दुष्कालान्तेऽखिलोऽमिलत् । यदङ्गाध्ययनोद्देशाद्यासीद् यस्य तदाददे ॥५७॥

ततश्चैकादशाङ्गानि श्रीसघोषेलयत् तदा । दृष्टिवादनिमित्तं च तस्थौ किञ्चिद् विचिन्तयन् ॥५८॥

नेपालदेशमागंस्थ भद्रवाहुं च पूर्विणम् । ज्ञात्वा संघं समाह्वातुं ततः प्रैषीन्मुनिद्वयम् ॥५९॥

(स्थविरावलीचरितं, सर्ग ६) ।

उच्चारणों का और विभिन्न प्राकृत भाषाओं के व्याकरणों का कुछ-न-कुछ अलक्षित प्रभाव उनके कण्ठ-स्थित धर्म-ग्रन्थों की भाषा पर भी पड़ना अनिवार्य था। यही कारण है कि अग-ग्रन्थों में, एक ही अङ्ग-ग्रन्थ के भिन्न-भिन्न अंशों में और कहीं कहीं तो एक ही अग-ग्रन्थ के एक ही वाक्य में परस्पर भाषा-भेद नजर आता है। संभवतः भिन्न-भिन्न प्रदेशों की भाषाओं के प्रभाव से युक्त इसी भाषा-भेद को लक्ष्य में लेकर ख्रिस्त की सप्तम शताब्दी के ग्रन्थकार श्रीजिनदासगणि ने अपनी निशीथ-चूर्णि में अर्धमागधी भाषा का “अठारसदेसीभासानियय वा अद्धमागह” यह वैकल्पिक लक्षण किया है। भाषा-परिवर्तन के उक्त अनेक प्रबल कारण उपस्थित होने पर भी अग-ग्रन्थों की अर्धमागधी भाषा में, पाटलिपुत्र के सम्मेलन के बाद से, आमूल वा अधिक परिवर्तन न होकर उसके बदले जो सूक्ष्म या अल्प ही भाषा-भेद हुआ है और सैकड़ों की तादाद में उसके प्राचीन रूप अपने असल आकार में जो संरक्षित रह सके हैं उसका श्रेय सूत्रों के अशुद्ध उच्चारण आदि के लिए प्रदर्शित पाप-बन्ध के उस धार्मिक नियम को है जो संभवतः पाटलीपुत्र के सम्मेलन के बाद निर्मित या दृढ़ किया गया था।

यहाँ पर प्रसंग-वश इस बात का उल्लेख करना उचित प्रतीत होता है कि समवायाग सूत्र में निर्दिष्ट अग-ग्रन्थ-सम्बन्धी विषय और परिमाण का वर्तमान अङ्ग-ग्रन्थों में कहीं-कहीं जो थोड़ा-बहुत क्रमशः विसंवाद और हास पाया जाता है और अङ्ग-ग्रन्थों में ही बाद के उपाङ्ग-ग्रन्थों का और बाद की घटनाओं का जो उल्लेख दृष्टिगोचर होता है उसका समाधान भी हमको उक्त सम्मेलनों की घटनाओं से अच्छी तरह मिल जाता है।

समवायाङ्ग सूत्र, व्याख्याप्रज्ञप्ति सूत्र, औपपातिक सूत्र और प्रज्ञापना सूत्र में तथा अन्यान्य प्राचीन जैन ग्रन्थों में जिस भाषा को अर्धमागधी नाम दिया गया है, स्थानाङ्गसूत्र और अनुयोगद्वारसूत्र में जिस भाषा को ‘ऋषिभाषिता’ कहा गया है और सम्भवतः इसी ‘ऋषिभाषिता’ पर से ‘आचार्य हेमचन्द्र आदि ने जिस भाषा की ‘आर्षमागधी और आर्ष एक हैं (ऋषियों की भाषा)’ संज्ञा रखी है वह वस्तुतः एक ही भाषा है अर्थात् अर्धमागधी, ऋषिभाषिता और आर्ष ये तीनों एक ही भाषा के भिन्न-भिन्न नाम हैं, जिनमें पहला उसके उत्पत्ति-स्थान से और बाकी के दो उस भाषा को सर्व-प्रथम साहित्य में स्थान देनेवालों से सम्बन्ध रखते हैं। जैन सूत्रों की भाषा यही अर्ध-मागधी, ऋषिभाषिता या आर्ष है। आचार्य हेमचन्द्र ने अपने प्राकृत-व्याकरण में आर्ष प्राकृत के जो लक्षण और उदाहरण

१. समवायाङ्ग सूत्र, पत्र १०६ से १२५।

२. “जहा पन्नवणाए पढमए आहारहेसए” (व्याख्याप्रज्ञप्ति सूत्र १, १—पत्र १६)।

३. देखो, स्थानाङ्ग सूत्र, पत्र ४१० में वर्णित निहव-स्वरूप।

४. देखो, पृष्ठ १६ में दिया हुआ समवायाङ्गसूत्र और औपपातिकसूत्र का पाठ।

“देवा ए भते। कयराए भासाए भासति? कयरा वा भासा भासिज्जमाणी विसिस्सति? गोयमा! देवा ए अद्धमागहाए भासाए भासति, सावि य ए अद्धमागहा भासा भासिज्जमाणी विसिस्सति।” (व्याख्याप्रज्ञप्ति सूत्र ५, ४—पत्र २२१)।

“से किं तं भासारिया? भासारिया जे एं अद्धमागहाए भासाए भासति” (प्रज्ञापनासूत्र १—पत्र ६२)।

मगहद्विषयभासाणिबद्धं अद्धमागह, अठारसदेसीभासानियय वा अद्धमागह” (निशीथचूर्णि)।

“आरिसवयणे सिद्धं देवाण अद्धमागहा वाणी” (काव्यालकार की नमिसाधुकृतटीका २, १२)।

“सर्वार्धमागधी सर्वभाषासु परिणामिनीम्।

सर्वपा सर्वतो वाच सार्वज्ञी प्रणिदम्भहे ॥” (वाग्भटकाव्यानुशासन, पृष्ठ २)।

५. “सक्कता पागता चेव दुहा भणित्तीओ आहिया।

सरमडलम्मि गिज्जते पसत्था इसिभासिता ॥” (स्थानाङ्गसूत्र ७—पत्र ३६४)।

“सक्कया पायया चेव भणिईओ होंति दोरिण वा।

सरमडलम्मि गिज्जते पसत्था इसिभासिता ॥” (अनुयोगद्वारसूत्र, पत्र १३१)।

६. देखो, हेमचन्द्र-प्राकृतव्याकरण का सूत्र १, ३।

“आर्षोत्थमार्पणुल्यं च द्विविधं प्राकृतं विदुः” (हेमचन्द्रतर्कवागीश द्वारा काव्यादर्शटीका १, ३३ में अर्द्धत किया हुआ पद्यांश)।

वताए हैं उनसे तथा 'अत एव सौ पुंसि मागव्याम्' (हे० प्रा० ४, २८७) इस सूत्र की व्याख्या में जो "यदपि "पोराणमद्वमागह-भासानियम हवइ सुत्त" इत्यादिना आर्पस्य अर्धमागधभापानियतत्वमाप्नायि वृद्धैस्तदपि प्रायोऽस्यैव विधानात्, न वक्ष्यमाणलक्षणस्य" यह कहकर उसी के अनन्तर जो दशवैकालिक सूत्र से उद्धृत "कयरे आगच्छइ, से तारिसे जिइदिए" यह उदाहरण दिया है उससे उक्त बात निर्विवाद सिद्ध होती है ।

डॉ. जेकोवी ने प्राचीन जैन सूत्रों की भाषा को प्राचीन महाराष्ट्री कहकर 'जैन महाराष्ट्री' नाम दिया है ।^१ डॉ. पिशल ने अपने सुप्रसिद्ध प्राकृत-व्याकरण में डॉ. जेकोवी की इस बात का सप्रमाण खडन किया है और यह सिद्ध किया है कि आर्प और अर्धमागधी इन दोनों में परस्पर भेद नहीं है, एव प्राचीन जैन सूत्रों की—गद्य और पद्य दोनों की भाषा परम्परागत मत के अनुसार अर्धमागधी है^२ । परवर्ती काल के जैन प्राकृत ग्रन्थों की भाषा अल्पाश में अर्धमागधी की और अविकाश में महाराष्ट्री की विशेषताओं से युक्त होने के कारण 'जैन महाराष्ट्री' कही जा सकती है, परन्तु प्राचीन जैन सूत्रों की भाषा को, जो शौरसेनी आदि भाषाओं की अपेक्षा महाराष्ट्री से अधिक साम्य रखती हुई भी, अपना उन अनेक खासियतों से परिपूर्ण है जो महाराष्ट्र आदि किसी प्राकृत में दृष्टिगाचर नहीं होती हैं, यह (जैन महाराष्ट्री) नाम नहीं दिया जा सकता ।

पंडित वेचरदास अपने गुजराती प्राकृत-व्याकरण की प्रास्तावना में जैन सूत्रों की अर्धमागधी भाषा को 'प्राकृत (महाराष्ट्री) सिद्ध करने की विफल चेष्टा करते हुए डॉ. जेकोवी से भी दो कदम आगे बढ़ गए हैं, क्योंकि डॉ. जेकोवी जब इस भाषा को प्राचीन महाराष्ट्री—साहित्य-निबद्ध महाराष्ट्री से पुरातन महाराष्ट्री बताते हैं तब पंडित वेचरदास, प्राकृत भाषाओं के इतिहास जानने की तनिक भी परवाह न रखकर, अर्वाचीन महाराष्ट्री से इस प्राचीन अर्धमागधी को अभिन्न सिद्ध करने जा रहे हैं । पंडित वेचरदास ने अपने सिद्धान्त के समर्थन में जो दलीलें पेश की हैं वे अधिकांश में भ्रान्त संस्कारों से उत्पन्न होने के कारण कुछ महत्त्व न रखती हुई भी कुतूहल-जनक अवश्य हैं । उन दलीलों का सारांश यह है—(१) अर्धमागधी में महाराष्ट्री से मात्र दो-चार रूपों की ही विशेषता, (२) आचार्य हेमचन्द्र का इस भाषा के लिए स्वतन्त्र व्याकरण या शौरसेनी आदि की तरह अलग-अलग सूत्र न बनाकर प्राकृत (महाराष्ट्री) या आर्प प्राकृत में ही इसको अन्तर्गत करना, (३) इसमें मागधी भाषा की कतिपय विशेषताओं का अभाव, (४) निशीथचूर्णिकार के अर्धमागधी के दोनों में एक भी लक्षण की इसमें असंगति, (५) प्राचीन जैन ग्रन्थों में इस भाषा का 'प्राकृत' शब्द से निर्देश, (६) नाट्य-शास्त्र में और प्राकृत-व्याकरणों में निर्दिष्ट अर्धमागधी के साथ प्रस्तुत अर्धमागधी की असमानता ।

१. मागधी भाषा में अकारान्त पुलिग शब्द के प्रथमा के एकवचन में 'ए' होता है ।

२. इसका अर्थ यह है कि प्राचीन आचार्यों ने "पुराणा सूत्र अर्धमागधी भाषा में नियत है" इत्यादि वचन-द्वारा आर्प भाषा को जो अर्धमागधी भाषा कही है वह प्रायः मागधी भाषा के इसी एक एकारवाले विधान को लेकर, न कि आगे कहे जानेवाले मागधी भाषा के अन्य लक्षण के विधान को लेकर ।

३. इसी वचन के आधार पर डॉ. हॉर्नलि का चण्ड-कृत प्राकृतलक्षण के इन्ट्रोडक्शन (पृष्ठ १८-१९) में यह लिखना कि हेमचन्द्र के मत में 'पोराण' आर्प प्राकृत का एक नाम है, भ्रम-पूर्ण है, क्योंकि यहाँ पर 'पोराण' यह सूत्र का ही विशेषण है, भाषा का नहीं ।

४. आवश्यकसूत्र के पारिष्ठापनिकाप्रकरण (दे० ला० पु० फं० पृष्ठ ६२८) में यह सपूर्ण गाथा इस तरह है :—

"पुञ्जावरसंजुत वेरगकरं सतंतमविरुद्धं । पोराणमद्वमागहभासानियमं हवइ सुत्तं ॥"

५. Kalpa Sutra, Sacred Books of the East, Vol. XII.

६. Grammatik der Prākṛit-Sprachen, 16-17.

७. जैसे आचार्य हेमचन्द्र ने अपने प्राकृत-व्याकरण में महाराष्ट्री भाषा के अर्थ में प्राकृत शब्द का प्रयोग किया है वैसे पंडित वेचरदास ने भी अपने प्राकृत-व्याकरण में, जो केवल हेमाचार्य के ही प्राकृत व्याकरण के आधार पर रचा गया है, सर्वत्र साहित्यिक महाराष्ट्री के अर्थ में ही प्राकृत शब्द का व्यवहार किया है ।

प्रथम दलील के उत्तर में हमें यहाँ अधिक कहने की कोई आवश्यकता नहीं, इसी प्रकरण के अन्त में महाराष्ट्री से अर्धमागधी की विशेषताओं की जो सक्षिप्त सूची दी गई है वही पर्याप्त है। इसके अतिरिक्त डॉ. बनारसीदास की 'अर्धमागधी रीडर', मुनि श्रीरत्नचन्द्रजी की 'जैन सिद्धान्त कौमुदी' और डॉ. पिशाल का 'प्राकृत-व्याकरण' मौजूद है, जिनमें क्रमशः अधिकाधिक संख्या में अर्धमागधी की विशेषताओं का स्पष्ट है। आचार्य हेमचन्द्र के ही प्राकृत-व्याकरण के 'आर्षम्' सूत्र से, इसकी स्पष्ट और सर्व-भेद-ग्राही व्यापक व्याख्या से और जगह-जगह किए हुए आर्ष के सोदाहरण उल्लेखों से दूसरी दलील की निर्मूलता सिद्ध होती है। यदि आचार्य हेमचन्द्र द्वारा ही निर्दिष्ट की हुई दो-एक विशेषताओं के कारण चूलिकापैशाची अलग भाषा मानी जा सकती है, अथवा आठ-दस विशेषताओं को लेकर शौरसेनी, मागधी और पैशाची भाषाओं को भिन्न-भिन्न भाषा स्वीकार करने में आपत्ति नहीं की जा सकती, तो कोई वजह नहीं है कि उसी वैयाकरण के द्वारा प्रकारान्तर से अच स्पष्ट रूप से बताई हुई वैसी ही अनेक विशेषताओं के कारण आर्ष या अर्धमागधी भी भिन्न भाषा न कही जाय। तीसरी दलील की जड़ यह भ्रान्त संस्कार है कि 'वही भाषा अर्धमागधी कही जाने योग्य हो सकती है जिसमें मागधी भाषा का आधा अंश हो'। इसी भ्रान्त संस्कार के कारण चौथी दलील में उद्धृत निशोधचूर्णिके अर्धमागधी के प्रथम लक्षण का सत्य और सीधा अर्थ भी उक्त पंडितजी की समझ में नहीं आया है। इस भ्रान्त संस्कार का निराकरण और निशोधचूर्णिकार द्वारा बताए हुए अर्धमागधी के प्रथम लक्षण का और उसके वास्तविक अर्थ का निर्देश इसी प्रकरण में आगे चलकर अर्धमागधी के मूल की आलोचना के समय किया जायगा, जिससे इन दोनों दलीलों के उत्तरों को यहाँ दुहराने की आवश्यकता नहीं है। पाँचवीं दलील भी प्राचीन आचार्यों के द्वारा जैन सूत्र-ग्रन्थों की भाषा के अर्थ में प्रयुक्त किए हुए 'प्राकृत' शब्द को 'महाराष्ट्री' के अर्थ में घसीटने से ही हुई है। मालूम पड़ता है, पंडितजी ने जैसे अपने व्याकरण में 'प्राकृत' शब्द को केवल महाराष्ट्री के लिए रिजर्व कर रखा है वैसे सभी प्राचीन आचार्यों के 'प्राकृत' शब्द को भी वे एकमात्र महाराष्ट्री के ही अर्थ में मुकर्र किया हुआ समझ बैठे हैं। परन्तु यह समझ गलत है। प्राकृत शब्द का मुख्य अर्थ है प्रादेशिक कथ्य भाषा—लोक-भाषा। प्राकृत शब्द की व्युत्पत्ति भी वास्तव में इसी अर्थ से संगति रखती है यह हम पहले ही अच्छी तरह प्रमाणित कर चुके हैं। ख्रिस्त की पष्ठ शताब्दी के आचार्य दण्डी ने अपने काव्यादर्श में—

‘शौरसेनी च गौडी च लाटी चान्या च तादृशी । याति प्राकृतमित्येव व्यवहारेण सन्निधिम ॥’ (१, ३५) ।

इन खुले शब्दों में यही बात कही है। इससे भी यह स्पष्ट है कि प्राकृत शब्द मुख्यतः प्रादेशिक लोक-भाषा का ही वाचक है और इससे साधारणतः सभी प्रादेशिक कथ्य भाषाओं के अर्थ में इसका प्रयोग होता आया है। दण्डी के समय तक के सभी प्राचीन ग्रंथों में इसी अर्थ में प्राकृत शब्द का व्यवहार देखा जाता है। खुद दण्डी ने भी महाराष्ट्री भाषा में प्राकृत शब्द के प्रयोग को 'प्रकृष्ट' शब्द से विशेषित करते हुए इसी बात का समर्थन किया है^१। दण्डी के महाराष्ट्री को 'प्रकृष्ट प्राकृत' कहने के बाद ही से विशेष प्रसिद्धि होने के कारण, महाराष्ट्री के अर्थ में 'प्रकृष्ट' शब्द को छोड़ कर केवल प्राकृत शब्द का भी प्रयोग हेमचन्द्र आदि, किन्तु दण्डी के पीछे के ही विद्वानों ने, कहीं कहीं किया है। पंडितजी ने वररुचि के समय से लेकर पीछले आचार्यों का महाराष्ट्री के ही अर्थ में प्राकृत शब्द का व्यवहार करने की जो बात उक्त टिप्पणी में ही लिखी है उससे प्रतीत होता है कि उन्होंने न तो वररुचि का ही व्याकरण देखा है और न उनके पीछे के आचार्यों के ही ग्रन्थों का निरीक्षण करने की कोशिश की है, क्योंकि वररुचि ने तो 'शेषं महाराष्ट्रीवत्' (प्राकृतप्रकाश १२, ३२) कहते हुए इस अर्थ में महाराष्ट्री शब्द का ही प्रयोग किया है, न कि प्राकृत शब्द का। आचार्य हेमचन्द्र ने भी कुमारपालचरित में 'पाइआहि भासाहि' (१, १) में बहुवचन का निर्देश कर और देशीनाममाला (१, ४) में 'विशेष' शब्द लगाकर 'प्राकृत' का प्रयोग साधारण

१. 'आर्षं प्राकृतं बहुलं भवति । तदपि यथास्थानं दर्शयिष्यामः । आर्षे हि सर्वे विधयो विकल्प्यन्ते' (हि० प्रा० १, ३) ।

२. देखो, हेमचन्द्र-प्राकृत व्याकरण के १, ४६, १, ५७, १, ७६, १, ११८; १, ११९, १, १५१, १, १७७, १, २२८, १, २५४, २, १७, २, २१, २, ८६, २, १०१, २, १०४; २, १४६, २, १७४, ३, १६२, और ४, २८७ सूत्रों की व्याख्या ।

३. 'ऊपरना वधा उल्लेखोमा वपरायेलो 'प्राकृत' शब्द प्राकृत भाषानो सूचक छे, अनुयोगद्वारमा 'प्राकृत' शब्द प्राकृत भाषाना अर्थमा वपरायेलो छे. (पृ० १३१ स०) । वैयाकरण वररुचिना समयथी तो ए शब्द ज अर्थमां वपरातो आव्यो छे, अने ए पछीना आचार्योंए पण ए शब्दने ए ज अर्थमां वापरेलो छे, माटे कोईए गही ए शब्दने मरडवो नही ।' (प्राकृत-व्याकरण, प्रवेश, पृष्ठ २६ टिप्पणी) ।

४ 'महाराष्ट्राप्रया भाषा प्रकृष्टं प्राकृतं विदुः' (काव्यादर्श १, ३४) ।

लोक-भाषा के ही अर्थ में ही किया है। आचार्य दण्डी और हेमचन्द्र ही नहीं, बल्कि ख्रिस्त की नववीं शताब्दी के कवि राजशेखर^१, ग्यारहवीं शताब्दी के नमिसाधु^२, उन्नीसवीं शताब्दी के प्रेमचन्द्रतर्कवागीश प्रभृति^३ प्रभूत जैन और जैनैतर विद्वानों ने इसी अर्थ में प्राकृत शब्द का प्रयोग किया है। इस तरह जब यह अभ्रान्त सत्य है कि प्राचीन काल से लेकर आज तक प्राकृत शब्द प्रादेशिक कथ्य भाषा के अर्थ में व्यवहृत होता आया है और इसका मुख्य और प्राचीन अर्थ साधारणतः सभी और विशेषतः कोई भी प्रादेशिक भाषा है, तब प्राचीन आचार्यों द्वारा भगवान् महावीर की उपदेश-भाषा के और उनके समसामयिक शिष्य सुवर्मस्वामि-प्रणीत जैन सूत्रों की भाषा के ही अभिप्राय में प्रयुक्त किए हुए 'प्राकृत' शब्द का 'अर्ध-मगध-प्रदेश' (जहाँ भगवान् महावीर और सुवर्मस्वामी का उपदेश और विचरण होना प्रसिद्ध है) की लोक-भाषा (अर्धमागधी)^४ इस सुसंगत अर्थ को छोड़ कर मगध से सुदूरवर्ती प्रदेश 'महाराष्ट्र' (जहाँ न तो भगवान् महावीर का और न सुवर्मस्वामी का ही उपदेश या विचार होना जाना गया है) की भाषा (महाराष्ट्री)^५ यह असंगत अर्थ लगाना, अपनी हीन विवेचना-शक्ति का परिचय देना है। इसी सिलसिले में पंडितजी ने अनुयोगद्वारा सूत्र की एक अपूर्ण गाथा उद्धृत की है। यदि उक्त पंडितजी अनुयोगद्वारा की गाथा के पूर्वार्ध का यहाँ पर उल्लेख करने के पहले इस गाथा के मूल स्थान को ढूँढ पाते और वे प्राकृत शब्द से जिस भाषा (महाराष्ट्री) का ग्रहण करते हैं इसके और प्राचीन सूत्रों की अर्धमागधी भाषा के इतिहास को न जानते हुए भी सिर्फ उत्तरार्ध-सहित इस गाथा पर ही प्रकरण-संगति के साथ जरा गौर से विचार करने का कष्ट उठाते, तो हमारा यह विश्वास है कि वे कम से कम इस गाथा का यहाँ हवाला देने का साहस और अनुयोगद्वारा के कर्त्ता पर अर्धमागधी के विस्मरण का व्यङ्ग्य-वाण छोड़ने की धृष्टता कदापि नहीं कर पाते। क्योंकि इस गाथा का मूल स्थान है तृतीय अंग-ग्रन्थ जिसका नाम स्थानाङ्ग-सूत्र है। इसी स्थानाङ्ग-सूत्र के सम्पूर्ण स्वर-प्रकरण को अनुयोगद्वारा-सूत्र में उद्धृत किया गया है जिसमें वह गाथा भी शामिल है। वह सम्पूर्ण गाथा इस तरह है :—

“सक्कता पागता चैव दुहा मणिंश्रो आहिया । सरमडलम्मि गिज्जते पसत्था इसिभासिता ॥”

इसका शब्दार्थ है—“संस्कृत और प्राकृत ये दो प्रकार की भाषाएँ कही गई हैं, गाये जाते स्वर-समूह (पङ्क्त-प्रभृति) में ऋषिभाषिता—मार्ग भाषा प्रशस्त है।” यहाँ पर प्रकरण है सामान्यतः गीत की भाषा का। वर्तमान समय की तरह उस समय भी सभी भाषाओं में गीत होते थे। इससे यहाँ पर इन सभी भाषाओं का निर्देश करना ही सूत्रकार को अभिप्रेत है जो उन्होंने संस्कृत—व्याकरण-संस्कार युक्त भाषा और प्राकृत—व्याकरण-संस्कार-रहित—लोक-भाषा इन दो मुख्य विभागों में किया है। इस तरह इस गाथा में पहले गीत की भाषाओं का सामान्य रूप से निर्देश कर बाद में इन भाषाओं में जो प्रशस्त है वह ‘ऋषिभाषिता’ इस विशेष रूप से बताई गई है। यदि यहाँ पर प्राकृत शब्द का ‘प्रादेशिक लोक-भाषा’ यह सामान्य अर्थ न लेकर पंडितजी के कथनानुसार ‘महाराष्ट्री’ यह विशेष अर्थ लिया जाय तो गीत की सभी भाषाओं का निर्देश, जो सूत्रकार को करना आवश्यक है, कैसे हो सकता है? क्या उस समय अन्य लोक-भाषाओं में गीत होते ही न थे? गीत का ठेका क्या संस्कृत और महाराष्ट्री इन दो भाषाओं को ही मिला हुआ था? यह कभी संभावित नहीं है। इसी गाथा के उत्तरार्ध के “पसत्था इसिभासिता” इस वचन से अर्धमागधी की सूचना ही नहीं, बल्कि उसका श्रेष्ठपन भी सूत्रकार ने स्पष्ट रूप में बताया है। इससे पंडितजी के उस कथन में कुछ भी सत्याश नजर नहीं आता है, जो उनसे सूत्रकार के अर्धमागधी की अलग सूचना न करने के बारे में किया गया है।

जैसे बौद्धसूत्रों की मागधी (पालि) से नाट्य-शास्त्र या प्राकृत-व्याकरणों में निर्दिष्ट मागधी भिन्न है वैसे जैन सूत्रों की अर्धमागधी से नाट्य-शास्त्र की या प्राकृत व्याकरणों की अर्धमागधी भी अलग है। इससे बौद्धसूत्रों की मागधी नाट्य-शास्त्र या प्राकृत-व्याकरणों की मागधी से मेल न रखने के कारण जैसे महाराष्ट्री न कही जाकर मागधी कही जाती है वैसे जैन सूत्रों की अर्धमागधी भाषा भी नाट्य-शास्त्र या प्राकृत-व्याकरणों की अर्धमागधी से समान न होने की वजह से ही महाराष्ट्री न कही जाकर अर्धमागधी ही कही जा सकती है।

१. ‘पस्सो सक्कम-वंधो पाठम-वंधोवि होइ सुउमारो’ (कर्पूरमञ्जरी, अङ्क १)।

२. ‘सूरसेन्यपि प्राकृतभाषैव, तथा प्राकृतमेवापत्र श’ (काव्यालङ्कार-टिप्पण २, १२)।

३. ‘सर्वासामेव प्राकृतभाषाणा’—(काव्यादर्श-टीका १, ३३), ‘तादृशीत्यनेन देशनामोपलक्षिता सर्वा एव भाषा’ प्राकृतसंज्ञापोष्यन्त इति सूचितम्’ (काव्यादर्श-टीका १, ३५)।

भरत-रचित कहे जाते नाट्य-शास्त्र में जिन सात भाषाओं का उल्लेख है उनमें एक अर्धमागधी भी है।^१ इसी नाट्यशास्त्र में नाटकों के नौकर, राजपुत्र और श्रेष्ठी इन पात्रों के लिए इस भाषा का प्रयोग निर्दिष्ट किया गया है। इससे नाटकों में इन पात्रों की जो भाषा है वह अर्धमागधी कही जाती है। परन्तु नाटकों की अर्धमागधी और जैन सूत्रों की अर्धमागधी में परस्पर समानता की अपेक्षा इतना अधिक भेद है कि यह एक दूसरे से अभिन्न कभी नाटकीय अर्धमागधी नहीं कही जा सकती। मार्कण्डेय ने अपने प्राकृत-व्याकरण में मागधी भाषा के लक्षण बताकर उसी जैन-सूत्रों की अर्धमागधी प्रकरण के शेष में अर्धमागधी भाषा का यह लक्षण कहा है—“शौरसेन्या प्रदूरत्वादियमेवाधमागधी”^२ से मिश्र है अर्थात् शौरसेनी भाषा के निकट-वर्ती होने के कारण मागधी ही अर्धमागधी है। इस लक्षण के अनन्तर उन्होंने उक्त नाट्य-शास्त्र के उस वचन को उद्धृत किया है, जिसमें अर्धमागधी के प्रयोगार्ह पात्रों का निर्देश है और इसके बाद उदाहरण के तौर पर वेणीसहार की राज्ञसी की एक उक्ति का उल्लेख कर अर्धमागधी का प्रकरण खतम किया है। इससे यह स्पष्ट मालूम होता है कि भरत का अर्धमागधी-विषयक उक्त वचन और मार्कण्डेय का अर्धमागधी-विषयक उक्त लक्षण नाटकीय अर्धमागधी के लिए ही रचित है, जैन सूत्रों की अर्धमागधी के साथ इसका कोई संबंध नहीं है। क्रमदीश्वर ने अपने प्राकृत-व्याकरण में अर्धमागधी का जो लक्षण किया है वह यह है—“महाराष्ट्रीमिश्राधमागधी”^३ अर्थात् महाराष्ट्री से मिश्रित मागधी भाषा ही अर्धमागधी है। जान पड़ता है, क्रमदीश्वर का यह लक्षण भी नाटकीय अर्धमागधी के लिए ही प्रयोज्य है, क्योंकि उक्त नाट्यशास्त्र में जिन पात्रों के लिए अर्धमागधी के प्रयोग का नियम बताया गया है, अनेक नाटकों में उन पात्रों की भाषा भिन्न-भिन्न है।^४ संभवतः इसी भिन्नता के कारण ही क्रमदीश्वर ने और मार्कण्डेय ने अर्धमागधी के भिन्न-भिन्न लक्षण किए हैं।

जैसे हम पहले कह चुके हैं, जैन सूत्रों की अर्धमागधी में इतर भाषाओं की अपेक्षा महाराष्ट्री के लक्षण अधिक देखने में आते हैं। किन्तु यह याद रखना चाहिए कि ये लक्षण साहित्यिक महाराष्ट्री से जैन अर्धमागधी में नहीं आये हैं। इसका कारण यह है कि जैन सूत्रों की अर्धमागधी भाषा साहित्यिक महाराष्ट्री भाषा से अधिक प्राचीन है और इससे यहाँ (अर्धमागधी) महाराष्ट्री का मूल कही जा सकती है।^५ डॉ. हॉर्नलि ने जैन अर्धमागधी महाराष्ट्री से अर्धमागधी को ही आर्ष प्राकृत कहकर इसीको परवर्ती काल में उत्पन्न नाटकीय अर्धमागधी, महाराष्ट्री और शौरसेनी भाषाओं का मूल माना है। आचार्य हेमचन्द्र ने अपने प्राकृत-व्याकरण में महाराष्ट्री नाम न दे कर प्राकृत के सामान्य नाम से एक भाषा के लक्षण दिए हैं और उनके उदाहरण साधारण तौर से अर्वाचीन महाराष्ट्री-साहित्य से उद्धृत किये हैं, परन्तु जहाँ अर्धमागधी के प्राचीन जैन ग्रन्थों से उदाहरण लिए हैं वहाँ इसको आर्ष प्राकृत का विशेष नाम दिया है। इससे प्रतीत होता है कि आचार्य हेमचन्द्र ने भी एक ही भाषा के प्राचीन रूप को आर्ष प्राकृत और अर्वाचीन रूप को महाराष्ट्री मानते हुए आर्ष प्राकृत को महाराष्ट्री का मूल स्वीकार किया है।

नाटकीय अर्धमागधी में मागधी भाषा के लक्षण अधिकांश में पाये जाते हैं इससे ‘मागधी से ही अर्धमागधी भाषा की उत्पत्ति हुई है और जैन सूत्रों की भाषा में मागधी के लक्षण अधिक न मिलने से वह अर्धमागधी कहलाने योग्य नहीं’ यह जो भ्रान्त संस्कार कई लोगों के मन में जमा हुआ है, उसका मूल है अर्धमागधी शब्द को मागधी भाषा के अर्धांश-

१. “मागध्यवन्तिजा प्राच्या सूरसेन्यधमागधी । वाहीका दाक्षिणात्या च सप्त भाषा प्रकीर्तिता” (१७, ४८) ।

२. “चेटाना राजपुत्राणां श्रेष्ठिना चार्धमागधी” (भरतीय नाट्यशास्त्र, निर्णयसागरीय सस्करण, १७, ५०) ।

मार्कण्डेय ने अपने व्याकरण में इस विषय में भरत का नाम देकर जो वचन उद्धृत किया है वह इस तरह है—“राक्षसी-श्रेष्ठिचेटानुकम्प्यदिरधमागधी” इति भरत ” यह पाठान्तर ज्ञात होता है ।

३. प्राकृतसर्वस्व (पृष्ठ १०३) ।

४. संक्षिप्तसार (पृष्ठ ३८) ।

५. देखो, भास-रचित कह जाते ‘चारुदत्त’ और ‘स्वप्नवासदत्त’ में क्रमशः चेट तथा चेटी की भाषा और शूद्रक के ‘मृच्छकटिक’ में चेट और श्रेष्ठी चन्दनदास की भाषा ।

६. “It thus seems to me very clear, that the Prākṛit of Chanda is the ARSHA or ancient (Puran) form of the Ardhamāgadhī, Mahārāshṭrī and Sauraseni.” (Introduction to Prākṛit, akshana of Chanda, Page XIX).

मे ग्रहण करना, अर्थात् 'अर्ध मागधी' वह व्युत्पत्ति कर 'जिसका अर्धांश मागधी भाषा वह अर्धमागधी' ऐसा करना ।
 वस्तुन. अर्धमागधी शब्द की न वह व्युत्पत्ति ही सत्य है और न वह अर्थ ही । अर्धमागधी शब्द
 अर्धमागधी शब्द की संगत-व्युत्पत्ति की वास्तविक व्युत्पत्ति है 'अर्धमगधस्येयम्' और इसके अनुसार इसका अर्थ है 'मगध देश के अर्धांश
 की जो भाषा वह अर्धमागधी' । यही बात ख्रिस्त की सातवीं शताब्दी के ग्रन्थकार श्रीजिनदासगणि
 महत्तर ने निजीयचूर्णि नामक ग्रन्थ में "पोरणमदमागहभासानियय हवइ सुत्त" इस उल्लेख के 'अर्धमागध'
 शब्द की व्याख्या के प्रसङ्ग में इन स्पष्ट शब्दों में कही है — "मगहद्विसयभासानिवद्ध अदमागह" अर्थात् मगध देश के अर्ध
 प्रदेश की भाषा में निवद्ध होने के कारण प्राचीन सूत्र 'अर्धमागध' कहा जाता है ।

परन्तु, अर्धमागधी का मूल उत्पत्ति स्थान पश्चिम मगध अथवा मगध और शूरसेन का मध्यवर्ती प्रदेश (अयोध्या)
 होने पर भी जैन अर्धमागधी में मागधी और शौरसेनी भाषा के विशेष लक्षण देखने में नहीं आते । महाराष्ट्री के साथ ही
 इसका अधिक सादृश्य नजर आता है । यहाँ पर प्रश्न होता है कि इस सादृश्य का कारण क्या है ? सर प्रियर्सन ने
 जैन अर्धमागधी का अपने प्राकृत-भाषाओं के भौगोलिक विवरण में यह स्थिर किया है कि जैन अर्धमागधी मध्यदेश
 उत्पत्ति-स्थान और (शूरसेन) और मगध के मध्यवर्ती देश (अयोध्या) की भाषा थी एवं आधुनिक पूर्वीय हिन्दी उससे
 उसका 'महाराष्ट्री' के उत्पन्न हुई है । किन्तु हम देखते हैं कि अर्धमागधी के लक्षणों के साथ मागधी, शौरसेनी और
 साथ सादृश्य का कारण आधुनिक पूर्वीय हिन्दी का कोई सम्बन्ध नहीं है, परन्तु महाराष्ट्री प्राकृत और आधुनिक मराठी भाषा के
 साथ उसका सादृश्य अधिक है । इसका कारण क्या ? किसीने अभी तक यह ठीक-ठीक नहीं बताया
 है । यह सम्भव है, जैसा हम पाटलिपुत्र के सम्मेलन के प्रसंग में ऊपर कह आये हैं, चन्द्रगुप्त के राजत्वकाल में
 (ख्रिस्त-पूर्व ३१०) बारह वर्षों के अकाल के समय जैन मुनि-संघ पाटलीपुत्र से दक्षिण की ओर गया था । उस समय वहाँ
 के प्राकृत के प्रभाव से अग-ग्रन्थों की भाषा का कुछ-कुछ परिवर्तन हुआ था । यही महाराष्ट्री प्राकृत का आपे प्राकृत के
 साथ सादृश्य का कारण हो सकता है ।

सर आर. जि. भाण्डारकर जैन अर्धमागधी का उत्पत्ति-समय ख्रिस्तीय द्वितीय शताब्दी मानते हैं । उनके मत में
 कोई भी साहित्यिक प्राकृत भाषा ख्रिस्त की प्रथम या द्वितीय शताब्दी से पहले की नहीं है । शायद इसी मत का अनुसरण
 कर डॉ. सुनीतिकुमार चटर्जी ने अपनी Origin and Development of Bengalee Language नामक पुस्तक में
 उत्पत्ति-समय (Introduction, page 18) समस्त नाटकीय प्राकृत-भाषाओं का और जैन अर्धमागधी का उत्पत्ति-
 काल ख्रिस्तीय तृतीय शताब्दी स्थिर किया है । परन्तु त्रिवेन्द्रम् से प्रकाशित भास-रचित कहे जाते
 नाटकों का निर्माण-समय अन्ततः ख्रिस्त की दूसरी शताब्दी के बाद का न होने से और अश्वघोष-कृत बौद्ध-धर्म-विषयक
 नाटकों के जो कतिपय अंश डॉ. ल्युडर्स ने प्रकाशित किए हैं उनका समय ख्रिस्त की प्रथम शताब्दी निश्चित होने से यह
 प्रमाणित होता है कि उस समय भी नाटकीय प्राकृत भाषाएँ प्रचलित थीं । और डॉ. ल्युडर्स ने यह स्वीकार किया है कि
 अश्वघोष के नाटकों में जैन अर्धमागधी भाषा के निदर्शन हैं । इससे जैन अर्धमागधी की प्राचीनता का यह भी एक
 विध्वस्त प्रमाण है । इसके अतिरिक्त, डॉ. जेकोबी जैन सूत्रों की भाषा और मथुरा के शिलालेखों (ख्रिस्तीय सन् ८३ से
 १७६) की भाषा से यह अनुमान करते हैं कि जैन अग-ग्रन्थों की अर्धमागधी का काल ख्रिस्त-पूर्व चतुर्थ शताब्दी का शेष भाग
 अथवा ख्रिस्त-पूर्व तृतीय शताब्दी का प्रथम भाग है । हम डॉ. जेकोबी के इस अनुमान को ठीक समझने हैं जो पाटलिपुत्र
 के उस सम्मेलन से सगति रखता है जिसका उल्लेख हम पूर्व कर चुके हैं ।

संस्कृत के साथ महाराष्ट्री के जो प्रधान-प्रधान भेद हैं, उनकी संक्षिप्त सूची महाराष्ट्री के प्रकरण में दी जायगी ।
 यहाँ पर महाराष्ट्री से अर्धमागधी का जो मुख्य-मुख्य विशेषताएँ हैं उनकी संक्षिप्त सूची दी जाती है । उससे अर्ध मागधी के
 लक्षणों के साथ महाराष्ट्री के लक्षणों की तुलना करने पर यह अच्छी तरह ज्ञात हो सकता है कि
 महाराष्ट्री की अपेक्षा अर्धमागधी की वैदिक और लौकिक संस्कृत से अधिक निकटता है जो अर्ध-
 मागधी की प्राचीनता का एक श्रेष्ठ प्रमाण कहा जा सकता है ।

वर्ण-भेद

१. दो स्वरों के मध्यवर्ती असंयुक्त क के स्थान में प्रायः सर्वत्र ग और अनेक स्थलों में त और य होता है, जैसे—

ग—प्रकल्प = पगल्प, आकर = आगर, आकाश = आगास, प्रकार = पगार, श्रावक = सावग, विवर्जक = विवजग, निषेवक = निसेवग,
 लोक = लोग, श्राकृति = श्रागइ ।

त—आराधक = आराहत (ठाणुगसूत्र—पत्र ३१७), सामायिक = सामातित (ठा० ३२२), विशुद्धिक = विशुद्धित (ठा० ३२२), अधिक = अहित (ठा० ३६३), शाकुनिक = साउणित (ठा ३६३), नैपयिक = रोमजित (ठा० ३६७), वीरासनिक = वीरासणित (ठा० ३६७), वर्धक = ववृति (ठा० ३६८), नैरयिक = नेरतित (ठा० ३६६), सीमतक = सीमतत (ठा० ४५८), नरकात् = नरतातो (ठा० ४५८), माडम्बिक = माडवित (ठा० ४५६), कौटुम्बिक = कौडु वित (ठा० ४५६), सचक्षुष्केण = सचक्षुतेण (विपाकश्रुत—पत्र ५), कूणिक = कूणित (विपा० ५ टि), अन्तिकात् = अन्तिततातो (विपा० ७), राहसिकेन = रहस्सितेण (विपा ४, १८) इत्यादि ।

य—कायिक = काइय, लोक = लोय वगैरह ।

२. दो स्वरों के बीच का असयुक्त ग प्राय कायम रहता है । कहीं-कहीं इसका त और य होता है, जैसे—आगम = आगम, आगमन = आगमण, आनुगामिक = आणुगामिय, आगमिष्यत् = आगमिस्स, जागर = जागर, आगारिन् = आगारि, भगवन् = भगवं, अतिग = अतित (ठा० ३६७), सागर = सायर ।
३. दो स्वरों के बीच के असयुक्त च और ज के स्थान में त और य उभय ही होता है । च के उदाहरण, जैसे—नाराच = एणारत (ठा० ३५७), वचस् = वति (ठा० ३६८, ४५०), प्रवचन = पावतण (ठा० ४५१), कदाचित् = कयाती (विपा० १७, ३०), वाचना = वायणा, उपचार = उवयार, लोच = लोय, आचार्य = आयरिय । ज के कुछ निदर्शन ये हैं—भोजिन् = भोति (सूत्र २, ६, १०), वज्र = वतिर (ठा० ३५७) पूजा = पूता (ठा० ३५८), राजेश्वर = रातीसर (ठा० ४५६), आत्मज = अत्तते (विपा० ४ टि), प्रजात = पयाय, कामध्वजा = कामजभ्या, आत्मज = अत्तय ।
४. दो स्वरों का मध्यवर्ती त प्राय कायम रहता है कहीं-कहीं इसका य होता है, यथा—वन्दते = वदति, नमस्यति = नमंसति, पयुं पास्ते = पज्जुवासति (सूत्र २, ७, विपा—पत्र ६), जितेन्द्रिय = जितिदिय (सूत्र २, ६, ५), सतत = सतत (सूत्र १, १, ४, १२), भवति = भवति (ठा०—पत्र ३१७), अतरित = अतरित (ठा० ३४६), वैवत् = वेवत् (ठा० ३६३), जाति = जाति, आकृति = आगिति, विहरति = विहरति (विपा—४), पुरत = पुरतो, करोति = करेति (विपा० ६), तत = तते (विपा० ६, ७, ८), सदिसत्तु = सदिसत्तु, संलपति = सलवति (विपा० ७, ८), प्रभृति = पभिति (विपा० १५, १६), करतल = करयल ।
५. स्वरों के बीच में स्थित द का द और त ही अधिकांश में देखा जाता है, कहीं-कहीं य भी होता है, जैसे—
द—प्रदिश = पदिसो (आचा), भेद = भेद, अनादिक = अणादिय (सूत्र २, ७), वदत् = वदमाण, नदति = एदति, जनपद = जणवद, वेदिष्यति = वेदिहिती (ठा०—पत्र क्रमश ३२१, ३६३, ४५८, ४५६) इत्यादि ।
त—यदा = जता, पाद = पात, निषाद = निसात, नदी = नतो, मुषावाद = मुसावात, वादिक = वातित, अन्यदा = अन्नता, कदाचित् = कताती (ठा०—पत्र क्रमश ३१७, ३४६, ३६३, ३६७, ४५०, ४५१, ४५८, ४५६), यदि = जति, चिरादिक = चिरातीत (विपा० पत्र ४) इत्यादि ।
य—प्रतिच्छादन = पडिच्छायण, चतुष्पद = चउप्पय वगैरह ।
६. दो स्वरों के मध्य में स्थित प के स्थान में प्राय सर्वत्र व ही होता है, यथा—पापक = पावग, सलपति = संलवति, सोपचार = सोवयार, अतिपात = अतिवात, उपनीत = उवणीय, अघ्युपपन्न = अज्जोववण, उपगूढ = उवगूढ, आधिपत्य = आदेवच्च, तपक = तवय, व्यपरोपित = ववरोवित इत्यादि ।
७. स्वरों के मध्यवर्ती य प्राय कायम रहता है, अनेक स्थानों में इसका त देखा जाता है, जैसे—
य—वायव = वायव, प्रिय = पिय, निरय = निरय, इन्द्रिय = इन्दिय, गायति = गायइ प्रभृति ।
त—स्यात् = सिता, सामायिक = सामातित, कायिक = कातित, पालयिष्यन्ति = पालतित्सति, पर्याय = परित्तात, नायक = एणतग, गायति = गातति, स्यायिन् = ठाति, शायिन् = साति, नैरयिक = नेरतित (ठा० पत्र क्रमश ३१७, ३२२, ३२३, ३५७, ३५८, ३६३, ३६४, ३६७, ३६८, ३६९), इन्द्रिय = इन्दित (ठा० ३२२, ३५५) इत्यादि ।
८. दो स्वरों के बीच के व के स्थान में व, त, और य होता है, यथा—
व—वायव = वायव, गौरव = गारव, भवति = भवति, अनुविचिन्त्य = अणुवीति (सूत्र १, १, ३, १३) इत्यादि ।
त—परिवार = परिताल, कवि = कति (ठा० पत्र क्रमश ३५८, ३६३) इत्यादि ।
य—परिवर्तन = परियट्टण, परिवर्तना = परियट्टणा (ठा० ३४६) वगैरह ।
९. महाराष्ट्री में स्वर-मध्य-वर्ती असयुक्त क, ग, च, ज, त, द, प, य, व इन व्यञ्जनों का प्राय सर्वत्र लोप होता है और प्राकृतप्राग आदि प्राकृत-व्या रणों के अनुसार इन लुप्त व्यञ्जनों के स्थान में अन्य कोई वर्ण नहीं होता । सेतुबन्ध गाथासप्तशती और कर्मव्याजरी आदि नाटकों की महाराष्ट्री भाषा में भी यह लक्षण ठीक-ठीक देखने में

आता है। आचार्य हेमचन्द्र के प्राकृत-व्याकरण के अनुसार उक्त लुप्त व्यञ्जनों के दोनों तरफ अवर्ण (अ या आ) होने पर लुप्त व्यञ्जन के स्थान में 'य्' होता है। 'गडडवहो' में यह 'य्' अधिक मात्रा में (उक्त व्यञ्जनों के पूर्व में अवर्ण-भिन्न स्वर रहने पर भी) पाया जाता है। परन्तु जैन अर्धमागधी में, जैसा हम ऊपर देख चुके हैं, प्रायः उक्त व्यञ्जनों के स्थान में अन्य व्यञ्जन होते हैं और कहीं कहीं तो वही व्यञ्जन कायम रहता है। हाँ, कहीं कहीं उक्त व्यञ्जनों के स्थान में अन्य व्यञ्जन होने या वही व्यञ्जन रहने के बदले महाराष्ट्री की तरह लोप भी देखा जाता है, किन्तु यह लोप वहाँ पर ही देखने में आता है जहाँ उक्त व्यञ्जनों के बाद अ या आ से भिन्न कोई स्वर होता है, जैसे—लोक = लोओ, रोचित = रोइत, भोजिन् = भोइ, आतुर = आउर, आदेशि = आएशि, कायिक = काइय, आवेश = आएस वगैरह।

१०. शब्द के आदि में, मध्य में और सयोग में सर्वत्र ए की तरह न भी होता है, जैसे—नदी = नई, ज्ञातपुत्र = नायपुत्र, आरनाल = आरनाल, अनल = अनल, अनिल = अनिल, प्रज्ञा = पन्ना, अन्योन्य = अनमन्, विज्ञ = विन्नु, सर्वज्ञ = सव्वन्नु इत्यादि।
११. ए के पूर्व के अम् के स्थान में आम् होता है, यथा—यामेव = जामेव, तामेव = तामेव, क्षिप्रमेव = क्षिप्पामेव, एवमेव = एवामेव, पूर्वमेव = पुव्वामेव इत्यादि।
१२. दीर्घ स्वर के बाद के इति वा के स्थान में ति वा और इ वा होता है; जैसे—इन्द्रमह इति वा = इदमहे ति वा, इदमहे इ वा इत्यादि।
१३. यथा और यावत् शब्द के य का लोप और ज दोनों ही देखे जाते हैं, जैसे—यथाख्यात = अहक्खाय, यथाजात = अहाजात, यथानामक = जहाणामए, यावत्कथा = आवक्का, यावजीव = जावजीव।

वर्णागम

१. गद्य में भी अनेक स्थलों में समास के उत्तर शब्द के पहले म आगम होता है, यथा—निरयगामी, उड्डगारव, दीहगारव, रहस्संगारव, गोणमाइ, सामाइयमाइयाई, अजहणमणुक्कोस, अदुक्खममुहा आदि। महाराष्ट्री के पद्य में पादपूर्ति के लिए ही कहीं कहीं म आगम देखा जाता है, गद्य में नहीं।

शब्द-भेद

१. अर्धमागधी में ऐसे प्रचुर शब्द हैं जिनका प्रयोग महाराष्ट्री में प्रायः उपलब्ध नहीं होता, यथा—अज्झत्थिय, अज्झोव-वरण, अणुवीति, आधवणा, आधवेत्तग, आणापाणू, आवीकम्म, कएहुइ, केमहालय, दुब्ब, पच्चत्थिमिल्ल, पाउकुव्वं, पुरत्थिमिल्ल, पोरेवच्च, महत्तिमहालिया, वक्क, विउस इत्यादि।
२. ऐसे शब्दों की संख्या भी बहुत बड़ी है जिनके रूप अर्धमागधी और महाराष्ट्री में भिन्न भिन्न प्रकार के होते हैं। उनके कुछ उदाहरण नीचे दिए जाते हैं—

अर्धमागधी	महाराष्ट्री	अर्धमागधी	महाराष्ट्री
अभियागम	अव्वाअम	तच्च (तथ्य)	तच्छ
आउंटरण	आउंचण	तेगिच्छा	चिइच्छा
आहरण	उआहरण	दुवालसग	वारसग
उप्पि	उवरि, अव्वरि	दोच्च	दुइअ
किया	किरिआ	नितिय	रिअ
कीस, केस	केरिस	निएय	रिअअ
केवच्चिर	किअच्चिर	पडुप्पन्न	पच्चुप्पण
गेहि	गिद्धि	पच्छेकम्म	पच्छाकम्म
चियत्त	चइअ	पाय (पात्र)	पत्त
छच्च	छक्क	पुढो (पुयक्)	पुहं, पिहं
जाया	जत्ता	पुरेकम्म	पुराकम्म
रिणण, रिणिण (नग्न)	रुण्ण	पुव्वि	पुव्वं
रिगिरिण (नाग्न्य)	रुण्णत्तण	माय (मात्र)	मत्त, मेत्त
६ तच्च (तृतीय)	तइअ	माहण	बम्हण

अर्धमागधी	महाराष्ट्री	अर्धमागधी	महाराष्ट्री
मिलक्यु, मेच्छ	मिलिच्छ	सोघाण, सुसाण	मसाण
वग्ग	वाग्गा	सुमिण	सिमिण
वाहणा (उपानह्)	उवाणा	सुहम, सुहुम	सएह
सहेज्ज	सहाअ	सोहि	सुद्धि

और, दुवालस, वारस, तेरस, अउणवीसइ, बत्तीस, पणतीस, इगयाल, तेयालीस, पणयाल, अढयाल, एणट्टि, वावट्टि, तेवट्टि, छावट्टि, अढसट्टि, अउणत्तरि, वावत्तरि, पणत्तरि सत्तहत्तरि, तेयासी, छलसीइ, वाणउइ प्रभृति संख्या-शब्दों के रूप अर्धमागधी में मिलते हैं, महाराष्ट्री में वैसे नहीं ।

नाम-विभक्ति

- अर्धमागधी में पुलिंग अकारान्त शब्द के प्रथमा के एकवचन में प्रायः सर्वत्र ए और क्वचित् ओ होता है, किन्तु महाराष्ट्री में ओ ही होता है ।
- सप्तमी का एक वचन स्त्ति होता है जब महाराष्ट्री में स्मि ।
- चतुर्थी के एक वचन में भाए या भाते होता है, जैसे—देवाए, सवणयाए, गमणाए, अट्टाए, अहिताते, असुभाते, अखमाते (अ० पत्र ३५८) इत्यादि महाराष्ट्री में यह नहीं है ।
- अनेक शब्दों के तृतीया के एकवचन में सा होता है; यथा—मणसा, वयसा, कायसा, जोगसा, बलसा, चक्खुसा, महाराष्ट्री में इनके स्थान में क्रमशः मणेण, वएण, काएण, जोगेण, बलेण, चक्खुणा ।
- कम्म और धम्म शब्द के तृतीया के एक वचन में पालि की तरह कम्मणा और धम्मणा होता है, जब कि महाराष्ट्री में कम्मेण और धम्मेण ।
- अर्धमागधी में तत् शब्द के पञ्चमी के बहुवचन में तेवो रूप भी देखा जाता है ।
- युष्मत् शब्द की षष्ठी का एकवचन संस्कृत की तरह तव और अस्मत् की षष्ठी का बहुवचन अस्माकं अर्धमागधी में पाया जाता है जो महाराष्ट्री में नहीं है ।

आख्यात-विभक्ति

- अर्धमागधी में भूतकाल के बहुवचन में इंसु प्रत्यय है, जैसे—पुच्छिंसु, गच्छिंसु, आमासिंसु इत्यादि । महाराष्ट्री में यह प्रयोग लुप्त हो गया है ।

धातु-रूप

- अर्धमागधी में आइक्खइ, कुव्वइ, भुवि, होक्खती, वूया, अन्ववी, होत्या, हुत्या, पहारेत्या, भाघं, दुल्लइ, विगिचए, तिवायए, अकासी, तिउट्टई, तिउट्टिजा, पडिंसधयाति, सारयती, वेच्छिइ, समुच्छिहिंति, आहंसु प्रभृति प्रभूत प्रयोगों में धातु की प्रकृति, प्रत्यय अथवा ये दोनों जिस प्रकार में पाये जाते हैं, महाराष्ट्री में वे भिन्न भिन्न प्रकार के देखे जाते हैं ।

धातु-प्रत्यय

- अर्धमागधी में त्वा प्रत्यय के रूप अनेक तरह के होते हैं .—
 (क) टट्ट, जैसे—कट्ट, साहट्ट, अवहट्ट इत्यादि ।
 (ख) इत्ता, एत्ता, इत्ताणं और एत्ताणं, यथा—चइत्ता, विउट्टित्ता, पासित्ता, करेत्ता, पासित्ताणं, करेत्ताण इत्यादि ।
 (ग) इत्तु, यथा—दुल्लहित्तु, जाणित्तु, ववित्तु प्रभृति ।
 (घ) व्वा, जैसे—किच्चा, एच्चा, सोच्चा, भोच्चा, चेच्चा वगैरह ।
 (ङ) इया, यथा—परिजाणिया, दुल्लहिया आदि ।
 (च) इनके अतिरिक्त विउक्कम्म, निसम्म, समिच्च, सखाए, अणुवीति, लढं, लढूण, दिस्सा इत्यादि प्रयोगों में 'त्वा' के रूप भिन्न भिन्न तरह के पाये जाते हैं ।
- तुम् प्रत्यय के स्थान में इत्तए या इत्तते प्रायः देखने में आता है, जैसे—करित्तए, गच्छित्तए, संभुजित्तए, उवसामित्तते (विपा० १३), विहरित्तए आदि ।
- ऋकारान्त धातु के त् प्रत्यय के स्थान में ड होता है, जैसे—कड, मड, अभिहड, वावड, संतुड, वियड, वित्यड प्रभृति ।

तद्धित

१. तर प्रत्यय का तराय रूप होता है; यथा—अणिद्वतराए, अण्यतराए, बहुतराए, कंततराए इत्यादि ।
२. आउसो, आउसंतो, गोमी, दुसिमं, भगवतो, पुरत्यिम, पच्चत्यिम, ओयंसी, दोसिणो, पोरेवच्च आदि प्रयोगों में मतुप्, और अन्य तद्धित प्रत्ययों के जैसे रूप जैन अर्धमागधी में देखे जाते हैं, महाराष्ट्री में वे भिन्न तरह के होते हैं ।

महाराष्ट्री से जैन अर्धमागधी में इनके अतिरिक्त और भी अनेक सूक्ष्म भेद हैं, जिनका उल्लेख विस्तार-भय से यहाँ नहीं किया गया है ।

(५) जैन महाराष्ट्री

जैन सूत्र-ग्रन्थों के सिवा श्वेताम्बर जैनों के रचे हुए अन्य ग्रन्थों की प्राकृत भाषा को 'जैन महाराष्ट्री' नाम दिया नाम-निर्देश और साहित्य गया है । इस भाषा में तीर्थंकर और प्राचीन मुनियों के चरित्र, कथाएँ, दर्शन, तर्क, ज्योतिष, भूगोल, स्तुति आदि विषयों का विशाल साहित्य विद्यमान है ।

प्राकृत के प्राचीन व्याकरणों ने 'जैन महाराष्ट्री' यह नाम देकर किसी भिन्न भाषा का उल्लेख नहीं किया है । किन्तु आधुनिक पाश्चात्य विद्वानों ने व्याकरण, काव्य और नाटक-ग्रन्थों में महाराष्ट्री का जो रूप देखा जाता है उससे श्वेताम्बर जैनों के ग्रन्थों की भाषा में कुछ कुछ पार्थक्य देख कर इसको 'जैन महाराष्ट्री' नाम दिया है । इस भाषा में प्राकृत-व्याकरणों में बताये हुए महाराष्ट्री भाषा के लक्षण विशेष रूप से मौजूद होने पर भी जैन अर्धमागधी का बहुत-कुछ प्रभाव देखा जाता है ।

जैन महाराष्ट्री के कतिपय ग्रन्थ प्राचीन हैं । यह द्वितीय स्तर के प्रथम युग के प्राकृतों में स्थान पा सकती हैं । पयन्ना-ग्रन्थ, नियुक्तिर्यो, पउमचरिअ, उपदेशमाला प्रभृति ग्रन्थ प्रथम युग की जैन महाराष्ट्री के उदाहरण हैं । बृहत्कल्प-भाष्य, व्यवहारसूत्र-भाष्य, विशेषावश्यक-भाष्य, निशीथचूर्णि, धर्मसंग्रहणी, समराइच्चकहा प्रभृति ग्रन्थ मध्य-युग और शेष-युग में रचित होने पर भी इनकी भाषा प्रथम युग की जैन महाराष्ट्री के समान हैं । दशम शताब्दी के बाद रचे गये प्रवचन-सारोद्धार, उपदेशपदटीका, सुपासनाहचरिअ, उपदेशरहस्य प्रभृति ग्रन्थों की भाषा भी प्रायः प्रथम युग की जैन महाराष्ट्री के ही अनुरूप है । इससे यहाँ पर यह कहना होगा कि जैन महाराष्ट्री के ये ग्रन्थ आधुनिक काल में रचित होने पर भी उसकी भाषा, संस्कृत की तरह, अतिप्राचीन काल में ही उत्पन्न हुई थी और यह भी अनुमान किया जा सकता है कि जैन महाराष्ट्री क्रमशः परिवर्तित होकर मध्य-युग की व्यञ्जन-लोप-बहुल महाराष्ट्री में रूपान्तरित हुई हैं ।

अर्धमागधी के जो लक्षण पहले बताये गए हैं उनमें से अनेक इस भाषा में भी पाये जाते हैं । ऐसे लक्षणों में लक्षण कुछ ये हैं :—

१. क के स्थान में अनेक स्थलों में ग ।
२. लुप्त व्यञ्जनों के स्थान में य् ।
३. शब्द के आदि और मध्य में भी ण की तरह न ।
४. यथा और यावत् के स्थान में क्रमशः 'जहा' और 'जाव' की तरह ग्रहा और ग्राव भी ।
५. समास में उत्तर पद के पूर्व में 'म्' का आगम ।
६. पाय, माय, तेगिच्छण, पटुप्पण, साहि, सुहम, सुमिण आदि शब्दों का भी, पत्त, मेत्त, चेइच्छय आदि की तरह प्रयोग ।
७. तृतीया के एकवचन में कहीं कहीं सा प्रत्यय ।
८. आइक्खइ, कुव्वइ प्रभृति धातु-रूप ।
९. सोष्ठा, किष्ठा, वंदित् आदि त्वा प्रत्यय के रूप ।
१०. कड, वावड, संवुड, प्रभृति त-प्रत्ययान्त रूप ।

(६) अशोक-लिपि

सम्राट् 'अशोक' ने भारतवर्ष के भिन्न-भिन्न स्थानों में अपने धर्म के उपदेशों को शिलालेखों में खुदवाये थे। ये सब शिलालेख उस समय में प्रचलित भिन्न-भिन्न प्रादेशिक भाषाओं में रचित हैं। भाषा-साम्य की दृष्टि से ये सब शिलालेख ४४ प्रधानतः इन तीन भागों में विभक्त किये जा सकते हैं—

(१) पंजाब के शिलालेख। इनकी भाषा संस्कृत के अनुरूप है। इनमें र का लोप नहीं देखा जाता।

(२) पूर्व भारत के शिलालेख। इनकी भाषा का मागधी के साथ सादृश्य देखने में आता है। इनमें र के स्थान में सर्वत्र ल है।

(३) पश्चिम भारत के शिलालेख। ये उज्जयिनी की उस भाषा में हैं जिसका पालि के साथ अधिक साम्य है।

इन तीनों प्रकार के शिलालेखों के कुछ उदाहरण नीचे दिए जाते हैं जिन पर से इनका भेद अच्छी तरह समझ में आ सकता है।

संस्कृत	कपर्दगिरि (पंजाब)	धौलि (उड़ीसा)	गिरनार (गुजरात)
देवानाप्रियस्य	देवानप्रियस	देवानपियस	देवानपियस
राज्ञ	रणो	सजिने	रानो, रनो
वृक्षा*	—	बुलनि	वच्छा
शुष्मूषा	सुश्रुषा	सुसूसा	सुसुसा
नास्ति	नस्ति, नास्ति	नाधि, नधि, नथा	नास्ति

इन शिलालेखों का समय ख्रिस्त-पूर्व २५० वर्ष का है।

इन शिलालेखों की भाषा की उत्पत्ति भगवान् महावीर की एवं सम्भवतः बुद्धदेव की उपदेश-भाषा से ही हुई है।^१

(७) सौरसेनी

संस्कृत-नाटकों में प्राकृत गद्यांश सामान्य रूप से सौरसेनी भाषा में लिखा गया है। अश्वघोष के नाटकों में एक निदर्शन तरह की सौरसेनी के उदाहरण पाये जाते हैं, जो पालि और अशोकलिपि की भाषा के अनुरूप और पिछले काल के नाटकों में प्रयुक्त सौरसेनी की अपेक्षा प्राचीन है। भास के, कालिदास के और इनके बाद के अधिक नाटकों में सौरसेनी के निदर्शन देखे जाते हैं।

वररुचि, हेमचन्द्र, क्रमदीश्वर, लक्ष्मीधर और मार्कण्डेय आदि के प्राकृत-व्याकरणों में सौरसेनी भाषा के लक्षण और उदाहरण पाये जाते हैं।

दण्डी, रुद्रट और वाग्भट आदि संस्कृत के अलंकारिकों ने भी इस भाषा का उल्लेख किया है।

भरत के नाट्यशास्त्र में सौरसेनी भाषा का उल्लेख है, उन्होंने नाटक में नायिका और सखियों के लिए इस भाषा विनियोग का प्रयोग बताया है।^२

भरत ने विदूषक की भाषा प्राच्या कही है^३, परन्तु मार्कण्डेय के व्याकरण में प्राच्या भाषा के जो लक्षण दिये गये हैं

प्राच्या भाषा सौरसेनी के उनसे और नाटकों में प्रयुक्त विदूषक की भाषा पर से यह मालूम होता है कि सौरसेनी से इस भाषा भन्तर्गत (प्राच्या) का कुछ विशेष भेद नहीं है। इससे हमने भी प्रस्तुत कोष में उसका अलग उल्लेख न करके सौरसेनी में ही अन्तर्भाव किया है।

दिगम्बर जैनों के प्रवचनसार, द्रव्यसंग्रह प्रभृति ग्रन्थ भी एक तरह की सौरसेनी भाषा में ही रचित हैं। यह भाषा

जैन सौरसेनी श्वताम्बरो की अर्द्धमागधी और प्राकृत-व्याकरणों में निर्दिष्ट सौरसेनी के मिश्रण से बनी हुई है। इस भाषा को 'जैन सौरसेनी' नाम दिया गया है। जैन सौरसेनी मध्ययुग की जैन महाराष्ट्री की अपेक्षा

जैन अर्द्धमागधी से अधिक निकटता रखती है और मध्ययुग की जैन महाराष्ट्री से प्राचीन है।

१. हाल ही में डॉ० त्रिभुवनदास लहेरचंद ने अपने एक गुजराती लेख में अनेक प्रमाण और युक्तियों से यह सिद्ध किया है कि अशोक के शिलालेखों के नाम से प्रसिद्ध शिलालेख सम्राट् अशोक के नहीं, परन्तु जैन सम्राट् सम्राट् के खुदवाये हुए हैं।

२. See Dr A B Keith's Sanskrit Drama, Page 87.

३. "नायिकाना सखीनां च सूरसेनाविरोधिनी" (नाट्यशास्त्र १७, ५१)।

४. "प्राच्या विदूषकादीनां" (नाट्यशास्त्र १७, ५१)।

सौरसेनी भाषा की उत्पत्ति^१ सूरसेन देश अर्थात् मथुरा प्रदेश से हुई है।

वररुचि ने अपने व्याकरण में संस्कृत को ही सौरसेनी भाषा की प्रकृति अर्थात् मूल कहा है^२। किन्तु यह हम पहले ही प्रमाणित कर चुके हैं कि किसी प्राकृत भाषा की उत्पत्ति संस्कृत से नहीं हुई है। सुतरां, सौरसेनी प्राकृत का मूल भी वैदिक या लौकिक संस्कृत नहीं है। सौरसेनी और संस्कृत ये दोनों ही वैदिक युग में प्रचलित सूरसेन प्रकृति अथवा मध्यदेश की कथ्य प्राकृत भाषा से ही उत्पन्न हुई हैं। संस्कृत भाषा पाणिनि-प्रभृति के व्याकरण द्वारा नियन्त्रित होने के कारण परिवर्तन-हीन मृत-भाषा में परिणत हुई। वैदिक काल की सौरसेनी ने प्राकृत-व्याकरण द्वारा नियन्त्रित न होने के कारण क्रमशः परिवर्तित होते हुए पिछले समय की सौरसेनी भाषा का आकार धारण किया। पिछले समय की यह सौरसेनी भी बाद में प्राकृत-व्याकरणों के द्वारा जकड़े जाने के कारण संस्कृत की तरह परिवर्तन-शून्य होकर मृत-भाषा में परिणत हुई है।

अश्वघोष के नाटकों में जिस सौरसेनी भाषा के उदाहरण मिलते हैं वह अशोकलिपि की सम-सामयिक कही जा सकती है। भास के नाटकों की सौरसेनी का और जैन सौरसेनी का समय सम्भवतः ख्रिस्त की प्रथम या द्वितीय शताब्दी मालूम होता है।

महाराष्ट्री भाषा के साथ सौरसेनी भाषा का जिस-जिस अंश में भेद है वह नीचे दिया जाता है। इसके सिवा महाराष्ट्री भाषा के जो लक्षण उसके प्रकरण में दिये जायेंगे उनमें महाराष्ट्री के साथ सौरसेनी का कोई भेद नहीं है। इन भेदों पर यह ज्ञात होता है कि अनेक स्थलों में महाराष्ट्री की अपेक्षा सौरसेनी का संस्कृत के साथ पार्थक्य कम और सादृश्य अधिक है।

वर्ण-भेद

१. स्वर-वर्णों के मध्यवर्ती असयुक्त त और द के स्थान में द होता है, यथा—रजत = रमत, गदा = गदा।
२. स्वरों के बीच असयुक्त थ का ह और ष दोनों होते हैं; जैसे—नाथ = णाष, णाह।
३. यं के स्थान में व्य और ञ होता है, यथा—मार्य = मय्य, भञ्ज, सूर्य = सुय्य, सुञ्ज।

नाम-विभक्ति

१. पञ्चमी के एकवचन में दो और दु ये दो ही प्रत्यय होते हैं और इनके योग में पूर्व के अकार का दीर्घ होता है, यथा—जिनात् = जिणादो, जिणादु।

आख्यात

१. ति और ते प्रत्ययों के स्थान में दि और दे होता है, जैसे—हसदि, हसदे, रमदि, रमदे।
२. भविष्यत्काल के प्रत्यय के पूर्व में स्ति लगता है, यथा—हसिस्तिदि, करिस्तिदि।

सन्धि

१. अन्त्य मकार के बाद इ और ए होने पर ए का वैकल्पिक आगम होता है, यथा—युक्तम् इदम् = जुतं णिमं, जुतमिमं, एवम् एतत् = एवं णेदं, एवमेदं।

कृदन्त

१. त्वा प्रत्यय के स्थान में इम, दूण और ता होते हैं, यथा—पठित्वा = पठिम, पठिदूण, पठित्ता।

१. पञ्चवर्णासूत्र के “सोत्तियमइया (?मई य) चेदी वीयभयं सिन्धुसोवीरा। मथुरा य सूरसेणा पावा भंगी य मासपुरिवट्टा” (पत्र ६१)। इस पाठ पर “चेदिपु शुक्तिकावती, वीतभय सिन्धुपु, सौवीरेषु मथुरा, सूरसेनेषु पापा, भङ्गे(?) ङ्गिषु मासपुरिवट्टा” इस तरह व्याख्या करते हुए आचार्य मलयगिरि ने सूरसेन देश की राजधानी पावा बतलाकर आजकल के बिहार प्रदेश को ही सूरसेन कहा है। नेमिचन्द्रसूरि ने अपने प्रवचनसारोद्धारनामक ग्रंथ में पञ्चवर्णासूत्र के उक्त पाठ को अविकल रूप में उद्धृत किया है। इसकी टीका में श्रीसिद्धसेनसूरि ने आचार्य मलयगिरि की उक्त व्याख्या को ‘अतिव्यवहृत’ कहकर, उक्त मूल पाठ की व्याख्या इस तरह की है—‘शुक्तीमती नगरी चेदयो देश, वीतभयं नगरं सिन्धुसोवीरा जनपद, मथुरा नगरी सूरसेनाख्यो देश, पापा नगरी भङ्गयो देश, मासपुरी नगरी वतों देश’ (दे० ला० संस्करण, पत्र ४४६)।

२. प्राकृतप्रकाश (१२, २)।

(८) मागधी

मागधी प्राकृत के सर्व-प्राचीन निदर्शन अशोक-साम्राज्य के उत्तर और पूर्व भागों के खालसी, मिरट, लौरिया (Lauriya), सहसराम, बराबर (Barabar), रामगढ़, धौलि और जौगढ़ (Jaugadha) प्रभृति स्थानों के अशोक-शिलालेखों में पाये जाते हैं। इसके बाद नाटकीय प्राकृतों में मागधी भाषा के उदाहरण देखे जाते हैं।

नाटकीय मागधी के सर्व-प्राचीन नमूने अश्वघोष के नाटकों के खण्डित अंशों में मिलते हैं। भास के नाटकों में, कालिदास के नाटकों में और मृच्छकटिक आदि नाटकों में मागधी भाषा के उदाहरण विद्यमान हैं।

वररुचि के प्राकृतप्रकाश, चण्ड के प्राकृतलक्षण, हेमचन्द्र के सिद्धहेमचन्द्र (अष्टम अध्याय), क्रमदीश्वर के संक्षिप्त-सार, लक्ष्मीधर की षड्भाषाचन्द्रिका और मार्कण्डेय के प्राकृतसर्वस्व आदि प्रायः समस्त प्राकृत-व्याकरणों में मागधी भाषा के लक्षण और उदाहरण दिए गए हैं।

भरत के नाट्यशास्त्र में मागधी भाषा का उल्लेख है और उन्होंने नाटक में राजा के अन्त पुर में रहनेवाले, सुरंग खोदनेवाले, कलवार, अश्वपालक वगैरह पात्रों के लिए और विपत्ति में नायक के लिए भी इस भाषा का प्रयोग करने को कहा है^१। परन्तु मार्कण्डेय द्वारा अपने प्राकृतसर्वस्व में उद्धृत किये हुए कोहल के “राक्षसमिबुलपणकचेटाद्या

मागधी प्राहु” इस वचन से मालूम होता है कि भरत के कहे हुए उक्त पात्रों के अतिरिक्त भिक्षु, क्षपणक आदि अन्य लोग भी इस भाषा का व्यवहार करते थे। रुद्रट, वाग्भट, हेमचन्द्र आदि आलंकारिकों ने भी अपने-अपने अलंकार-ग्रन्थों में इस भाषा का उल्लेख किया है।

मगध देश ही मागधी भाषा का उत्पत्ति-स्थान है। मगध देश की सीमा के बाहर भी अशोक के शिलालेखों में जो इसके निदर्शन पाये जाते हैं उसका कारण यह है कि मागधी भाषा उस समय राज-भाषा होने के कारण मगध के बाहर भी

इसका प्रचार हुआ था। सम्भवतः राज-भाषा होने के कारण ही नाटकों में सर्वत्र ही राजा के अन्त पुर के लोगों के लिए इस भाषा का व्यवहार करने का नियम हुआ था। प्राचीन भिक्षु और क्षपणक भी मगध के ही निवासी होने से, सम्भव है, नाटकों में इनकी भाषा भी मागधी ही निर्दिष्ट की गई है।

वररुचि ने अपने प्राकृत व्याकरण में मागधी की प्रकृति—मूल होने का सम्मान सौरसेनी को दिया है^२। इसीका अनुसरण कर मार्कण्डेय ने भी सौरसेनी से ही मागधी की सिद्धि कही है^३। किन्तु मागधी और सौरसेनी आदि प्रादेशिक

भाषाओं का भेद अशोक के शिलालेखों में भी देखा जाता है। इससे यह सिद्ध है कि ये सब प्रादेशिक भेद प्राचीन और समसामयिक हैं, एक प्रदेश की भाषा से दूसरे प्रदेश में उत्पन्न नहीं हुए हैं। जैसे सौरसेनी मध्यदेश में प्रचलित वैदिक युग की कथ्य भाषा से उत्पन्न हुई है वैसे मागधी ने भी उस कथ्य भाषा से जन्म-ग्रहण किया है जो वैदिककाल में मगध देश में प्रचलित थी।

अशोक-शिलालेखों की और अश्वघोष के नाटकों की मागधी भाषा प्रथम युग की मागधी भाषा के निदर्शन हैं।

भास के और परवर्ती काल के अन्य नाटकों की और प्राकृत-व्याकरणों की मागधी मध्य-युग की मागधी भाषा के उदाहरण हैं।

शाकारी, चाण्डाली और शावरी ये तीन भाषाएँ मागधी के ही प्रकार-भेद—रूपान्तर हैं। भरत ने शाकारी भाषा का व्यवहार शबर, शक आदि और उसी प्रकृति के अन्य लोगों के लिए कहा है^४, किन्तु मार्कण्डेय ने राजा के साले की भाषा शाकारी बतलाई है^५। भरत पुक्स आदि जातियों की व्यवहार-भाषा को चाण्डाली और अंगारकार, व्याध,

१. “मागधी तु नरेन्द्राणामन्त पुरनिवासिनाम्” (नाट्यशास्त्र १७, ५०)।

“सुरङ्गाखनकादीना शुण्डकाराश्वरक्षिणाम् । व्यसने नायकाना स्यादात्मरक्षासु मागधी ॥” (नाट्यशास्त्र १७, ५६)।

२. “प्रकृति सौरसेनी” (प्राकृतप्रकाश ११, २)।

३. “मागधी सौरसेनीत” (प्राकृतसर्वस्व, पृष्ठ १०१)।

४. “शवराणां शकादीना तत्त्वभावश्च यो गण । शकारभाषा योक्तव्या” (नाट्यशास्त्र १७, ५३)।

५. “शकारस्यैव शाकारी, शकारश्च

‘राक्षोज्जूढाभ्राता श्यालस्त्वैश्वर्यसंपन्नः ।

मदभूखताभिमानो शकार इति दुष्कूलिनः स्यात्’ इत्युक्ते” (प्राकृतसर्वस्व, पृष्ठ १०५)।

शाकरी आदि भाषाएँ कठहार और यन्त्र-जीवी लोगों की भाषा को शाकरी कहते हैं^१। इन तीनों भाषाओं के जो लक्षण और उदाहरण मार्कण्डेय के प्राकृत-व्याकरण में और नाटकों के उक्त पात्रों की भाषा में पाये जाते हैं उनमें और इतर प्राकृत-व्याकरणों की मागधी भाषा के लक्षण और उदाहरणों में तथा नाटकों के मागधी-भाषा-भाषी पात्रों की भाषा में इतना कम भेद और इतना अधिक साम्य है कि उक्त तीन भाषाओं को मागधी से अलग नहीं कही जा सकती। यही कारण है कि हमने प्रस्तुत कोष में इन भाषाओं का मागधी में ही समावेश किया है।

मृच्छकटिक के पात्र माथुर और दो घूतकारों की भाषा को 'ढक्की' नाम दिया गया है। यह भी मागधी भाषा का ही एक रूपान्तर प्रतीत होता है। मार्कण्डेय ने 'ढक्की' को ही 'टाक्की' नाम से निर्देश किया है, यह उनके वहाँ पर उद्धृत किये हुए एक श्लोक से ज्ञात होता है^२। मार्कण्डेय ने पदान्त में च, वृतीया के एकवचन में ए, पञ्चमी के बहुवचन में हुम्

ढक्की या टाक्की
भाषा

आदि जो इस भाषा के लक्षण दिए हैं उनपर से इसमें अपभ्रंश का ही विशेष साम्य नजर आता है। इस लिए मार्कण्डेय ने वहाँ पर जो यह कहा है कि 'हरिश्चन्द्र इस भाषा को अपभ्रंश मानता है'^३ वह मत हमें भी संगत मालूम पड़ता है।

मागधी भाषा का सौरसेनी के साथ जो प्रधान भेद है वह नीचे दिया जाता है। इसके सिवा अन्य अंशों में मागधी लक्षण भाषा साधारणतः सौरसेनी के ही अनुरूप है।

वर्ण-भेद

१. र के स्थान में सर्वत्र ल होता है^४, यथा—नर = एल, कर = कल।
२. श, ष और स के स्थान में तालव्य श होता है, यथा—शोभन = शोहण, पुरुष = पुलिश, सारस = शालश।
३. संयुक्त ष और स के स्थान में दन्त्य सकार होता है, यथा—शुष्क = शुस्क, कट = कस्ट, स्वलति = स्वलदि, बृहस्पति = बृहस्पदि।
४. ट्ट और ठ के स्थान में स्ट होता है, यथा—पट्ट = पस्ट, सुष्ठु = शुस्तु।
५. स्थ और थ की जगह स्त होता है, जैसे—उपस्थित = उवस्तिद, सार्थ = शस्त।
६. ज, घ और य के बदले य होता है, यथा—जनाति = याणदि, दुर्जन = दुयण, मद्य = मय, भद्य = भय, याति = यादि, यम = यम।
७. न्य, एय, ञ और झ के स्थान में ञ होता है, यथा—अन्य = अन्न, पुण्य = पुन्न, प्रज्ञा = पन्ना, अन्नजलि = अन्नजलि।
८. अनादि छ के स्थान में क्ष होता है, यथा—गन्ध = गक्ष, पिच्छिल = पिखिल।
९. क्ष की जगह स्क होता है^५, जैसे—राक्षस = लस्कश, यक्ष = यस्क।

नाम-विभक्ति

१. अकारान्त पुल्लिङ्ग-शब्द के प्रथमा के एकवचन में ए होता है, यथा—जिन = यिणे, पुरुष = पुलिशे।
२. अकारान्त शब्द के षष्ठी का एकवचन स्स और आह होता है, यथा—जिनस्य = यिणस्स, यिणाह।
३. अकारान्त शब्द के षष्ठी के बहुवचन में आण और आह ये दोनों होते हैं, जैसे—जिनानाम् = यिणाण, यिणाहं।
४. अस्मत् शब्द के एकवचन और बहुवचन का रूप हगे होता है।

१. "चाण्डाली पुक्कसादिपु। अगारकरव्याधाना काष्ठयन्त्रोपजीविनाम्। योज्या शवरभाषा तु" (नाट्यशास्त्र १७, ५३-४)।

२. "प्रयुज्यते नाटकादौ घूतातिव्यवहारिभिः।

वणिग्भिर्हीनदेहैश्च तदाहुष्टकमावितम्" (प्राकृतसर्वस्व, पृष्ठ ११०)।

३. "हरिश्चन्द्रस्त्विमा भाषामपभ्रंश इतीच्छति" (प्राकृतसं० पृष्ठ ११०)।

४. मार्कण्डेय यह नियम वैकल्पिक मानते हैं, "रस्य लो वा भवेत्" (प्राकृतसं० पृष्ठ १०१)।

५. हेमचन्द्र-प्राकृत व्याकरण के अनुसार 'क्ष' की जगह जिह्वामूलीय 'क्ष' होता है, देखो हे० प्रा० ४, २६६।

(९) महाराष्ट्री

प्राकृत काव्य और गीति की भाषा महाराष्ट्री कही जाती है। सेतुबन्ध, गाथासप्तशती, गउडवहो, कुमारपालचरित प्रभृति ग्रन्थों में इस भाषा के निदर्शन पाये जाते हैं। गाथा (गीति-साहित्य) में महाराष्ट्री प्राकृत ने इतनी प्रसिद्धि प्राप्त की थी कि वाद के नाटकों में गद्य में सौरसेनी बोलनेवाले पात्रों के लिए संगीत या पद्य में महाराष्ट्री भाषा का व्यवहार करने का रिवाज सा बन गया था। यही कारण है कि कालिदास से लेकर उसके बाद के सभी नाटकों में पद्य में प्रायः महाराष्ट्री भाषा का ही व्यवहार देखा जाता है।

चंड ने अपने प्राकृतलक्षण में 'महाराष्ट्री' इस नाम का उल्लेख और इसके विशेष लक्षण न देकर भी आर्ष-प्राकृत अथवा अर्धमागधी के और जैन महाराष्ट्री के लक्षणों के साथ साधारण भाव से इसके लक्षण दिए हैं। वररुचि ने अपने प्राकृत-व्याकरण में इस भाषा के 'महाराष्ट्री' नाम का उल्लेख किया है और इसके विशेष लक्षण और उदाहरण दिए हैं। आचार्य हेमचन्द्र ने अपने व्याकरण में 'महाराष्ट्री' नाम का निर्देश न कर 'प्राकृत' इस साधारण नाम से महाराष्ट्री के ही लक्षण और उदाहरण बताए हैं। क्रमदीश्वर का संक्षिप्तसार, त्रिविक्रम की प्राकृतव्याकरणसूत्रवृत्ति, लक्ष्मीधर की पदभाषाचन्द्रिका और मार्कण्डेय का प्राकृतसर्वस्व प्रभृति प्राकृत-व्याकरणों में इस भाषा के लक्षण और उदाहरण पाये जाते हैं। चंड-भिन्न सभी प्राकृत वैयाकरणों ने महाराष्ट्री का मुख्य रूप से विवरण दिया है और सौरसेनी, मागधी प्रभृति भाषाओं के महाराष्ट्री के साथ जो भेद हैं वे ही बतलाए हैं।

संस्कृत के अलंकार-शास्त्रों में भी भिन्न-भिन्न प्राकृत भाषाओं का उल्लेख मिलता है। भरत के नाट्य-शास्त्र में 'दाक्षिणात्या' भाषा का निर्देश है, किन्तु इसके विशेष लक्षण नहीं दिए गए हैं। संभवतः वह महाराष्ट्री भाषा ही हो सकती है, क्योंकि भरत ने महाराष्ट्री का अलग उल्लेख नहीं किया है। परन्तु मार्कण्डेय के प्राकृतसर्वस्व में उद्धृत प्राकृतचन्द्रिका के वचन में और प्राकृतसर्वस्व के खुद मार्कण्डेय के वचन में महाराष्ट्री और दाक्षिणात्या का भिन्न भिन्न भाषा के रूप में उल्लेख किया गया है। दण्डी के काव्यादर्श के

‘महाराष्ट्राश्रयां भाषां प्रकृष्टं प्राकृतं विदुः।

सागर सूक्तिरत्नानां सेतुबन्धादि यन्मयम् ॥” (१, ३४)।

इस श्लोक में महाराष्ट्री भाषा का और उसकी उत्कृष्टता का स्पष्ट उल्लेख है। दण्डी के समय में महाराष्ट्री प्राकृत का इतना उत्कर्ष हुआ था कि इसके परवर्ती अनेक ग्रन्थकारों ने केवल इस महाराष्ट्री के ही अर्थ में उस प्राकृत शब्द का प्रयोग किया है जो सामान्यतः सर्व प्रादेशिक भाषाओं का वाचक है। रुद्रट का काव्यालंकार, वाग्भटालंकार, पाइअलच्छीनाममाला, हेमचन्द्र का प्राकृत-व्याकरण प्रभृति ग्रन्थों में महाराष्ट्री के ही अर्थ में प्राकृत शब्द व्यवहृत हुआ है। अलंकार-शास्त्र-भिन्न पाइअलच्छीनाममाला और देशीनाममाला इन कोष-ग्रन्थों में भी महाराष्ट्री के उदाहरण हैं।

डॉ. हॉर्नलि के मत में महाराष्ट्री भाषा महाराष्ट्र देश में उत्पन्न नहीं हुई है। वे मानते हैं कि महाराष्ट्री का अर्थ 'विशाल राष्ट्र की भाषा' है और राजपूताना तथा मध्यदेश प्रभृति इसी विशाल राष्ट्र के अन्तर्गत है, इसीसे 'महाराष्ट्री' मुख्य प्राकृत कही गई है। किन्तु दण्डी ने इस भाषा को महाराष्ट्र देश की ही भाषा कही है। सर प्रियर्सन के मत में महाराष्ट्री प्राकृत से ही आधुनिक मराठी भाषा उत्पन्न हुई है। इससे महाराष्ट्री प्राकृत का उत्पत्ति-स्थान महाराष्ट्र देश ही है यह बात निःसन्देह कही जा सकती है।

आचार्य हेमचन्द्र ने अपने व्याकरण में महाराष्ट्र को ही 'प्राकृत' नाम दिया है और इसकी प्रकृति संस्कृत कही है। इसी तरह चण्ड, लक्ष्मीधर, मार्कण्डेय आदि वैयाकरणों ने साधारण रूप से सभी प्राकृत भाषाओं का मूल (प्रकृति) संस्कृत बताया है। किन्तु हम यह पहले ही अच्छी तरह प्रमाणित कर आए हैं कि कोई भी प्राकृत भाषा संस्कृत से उत्पन्न नहीं हुई है, बल्कि वैदिक काल में भिन्न-भिन्न प्रदेशों में प्रचलित आर्यों की कथ्य भाषाओं

१. “शेषं महाराष्ट्रीवत्” (प्राकृतप्रकाश १२, ३२)।

२. “महाराष्ट्री तथावन्ती सौरसेन्यधसागधी। वाहीकी मागधी प्राच्यत्यष्टौ ता दाक्षिणात्यया ॥” (प्रा० स० पृष्ठ २)।

३. देखो प्राकृतसर्वस्व, पृष्ठ २ और १०४।

से ही सभी प्राकृत भाषाओं की उत्पत्ति हुई है, सुतरा महाराष्ट्री भाषा की उत्पत्ति प्राचीन काल के महाराष्ट्र-निवासी आर्यों की कथ्य भाषा से हुई है।

कौन समय आर्यों ने महाराष्ट्र में सर्व-प्रथम निवास किया था, इस बात का निर्णय करना कठिन है, परन्तु अशोक के पहले प्राकृत भाषा महाराष्ट्र देश में प्रचलित थी, इस विषय में किसीका मत-भेद नहीं है। उस समय महाराष्ट्र देश में प्रचलित प्राकृत से क्रमशः काव्यीय और नाटकीय महाराष्ट्री भाषा उत्पन्न हुई है। प्राकृतप्रकाश का कर्ता वररुचि यदि वृत्तिकार कात्यायन से अभिन्न व्यक्ति हो तो यह स्वीकार करना होगा कि महाराष्ट्री ने अन्ततः ख्रिस्त-पूर्व दो सौ वर्ष के पहले ही साहित्य में स्थान पाया था। लेकिन महाराष्ट्री भाषा के तद्भव शब्दों में व्यञ्जन वर्णों के लोप की बहुलता देखने से यह विश्वास नहीं होता कि यह भाषा उतनी प्राचीन है। वररुचि का व्याकरण संभवतः ख्रिस्त के बाद ही रचा गया है। जैन अर्धमागधी और जैन महाराष्ट्री में महाराष्ट्री प्राकृत के प्रभाव का हमने पहले उल्लेख किया है। महाराष्ट्री भाषा में रचित जो सब साहित्य इस समय पाया जाता है उसमें ख्रिस्त के बाद की महाराष्ट्री के ही निदर्शन देखे जाते हैं। प्राचीन महाराष्ट्री का कोई साहित्य उपलब्ध नहीं है। प्राचीन महाराष्ट्री में वाद की महाराष्ट्री की तरह व्यञ्जन-वर्ण-लोप की अधिकता नहीं थी, इस बात के कुछ निदर्शन चण्ड के व्याकरण में मिलते हैं। जैन अर्धमागधी और जैन महाराष्ट्री में प्राचीन महाराष्ट्री भाषा का सादृश्य रक्षित है।

भरत ने नाट्यशास्त्र में आवन्ती और वाह्लीकी भाषा का उल्लेख कर नाटकों में धूर्त पात्रों के लिए आवन्ती का आवन्ती और वाह्लीकी और द्यूतकारों के लिए वाह्लीकी का प्रयोग कहा है। मार्कण्डेय ने अपने प्राकृतसर्वस्व में 'आवन्ती स्यान्महाराष्ट्रीशौरसेन्योस्तु सकरान्' और 'आवन्त्यामेव वाह्लीकी किन्तु रस्यात्र लो भवेत्' यह कह कर इनका सक्षिप्त लक्षण-निर्देश किया है। मार्कण्डेय ने आवन्ती भाषा के जो त्वा के स्थान में तूण और भविष्यत् काल के प्रत्यय के स्थान में ल और ला प्रभृति लक्षण वतलाए हैं वे महाराष्ट्री के साथ साधारण हैं। उनके दिए हुए किराद, वेदस, पेच्छदि प्रभृति उदाहरणों में जो तकार के स्थान में दकार हैं वहाँ शौरसेनी के साथ इमका (आवन्ती का) सादृश्य है परन्तु वह भी सर्वत्र नहीं है, जैसे उनके दिए हुए होइ, मुव्वइ, लिब्बइ, भएणए आदि उदाहरणों में। इसी तरह वाह्लीकी में जो र का ल होता है वही एकमात्र मागधी का सादृश्य है। इसके सिवा सभी अशों में यह भी आवन्ती की तरह महाराष्ट्री के ही सादृश्य है। सुतरा, ये दोनों भाषाएँ महाराष्ट्री के ही अन्तर्गत कही जा सकती हैं। इससे हमने भी इनका इस कोष में अलग निर्देश नहीं किया है।

संस्कृत भाषा के साथ महाराष्ट्री भाषा के वे भेद नीचे दिए जाते हैं जो महाराष्ट्री और संस्कृत के साथ अन्य प्राकृत लक्षण भाषाओं के सादृश्य और पार्थक्य की तुलना के लिए भी अधिक उपयुक्त हैं।

स्वर

- अनेक जगह भिन्न स्वरों के स्थान में भिन्न-भिन्न स्वर होते हैं, जैसे—समृद्धि = सामिद्धि, ईपत् = ईप्ति, हर = हीर, वनि = कुणि, शय्या = सेज्जा, पय = पोम्म; यया = जह सदा = सइ, स्थान = थोण, सास्ना = मुएहा, शासार = ऊमार, ग्राह्य = गेज्ज, गाली = गौली, इति = इम्प, पथिन् = पइ, जिह्वा = जीहा, द्विवचन = दुवअण, पिण्ड = पेंड, द्विधाकृत = दोहाइअ, हरीतकी = हरडई, कश्मीर = कम्हार, पानीय = पाणिअ, जीर्ण = जुएण, हीन = हूण, पीयूष = पेऊस, मुकुल = मउल, भ्रुकुटि = भिउडि, क्षुत = छोअ, मुसल = मूसल, तुण्ड = तोड, सूक्ष्म = सरह, उद्व्यूढ = उव्वीढ, वातूल = वाउल, तूपुर = एउर, तूणीर = तोणीर, वेदना = विअणा, स्तेन = थूण, मनोहर = मणहर, गो = गउ, गाम्भ, सोच्छ्वास = सूसास।
- महाराष्ट्री में ऋ, ॠ, ल, लृ ये स्वर सर्वथा लुप्त हो गये हैं।
- ऋ के स्थान में भिन्न-भिन्न स्वर एवं रि होता है, यथा—तृण = तण, मृदुक = माउक्क, कृपा = किवा, मातृ = माइ, माठ, वृत्तान्त = वुत्तंत, मृषा = मुसा, मूसा, मोसा, वृन्त = विट, वेंट, वोट, ऋतु = उउ, रिउ, ॠद्धि = रिद्धि, ऋक्ष = रिच्छ, सदृश = सरिस, हृत् = दरिअ।
- ल के स्थान में इलि होता है, जैसे—क्लृप्त = किलित्त, क्लृन्त = किलिएण।
- ऐ का प्रयोग भी प्रायः महाराष्ट्री में नहीं है। उसके स्थान में सामान्यतः ए और विणोपत अइ होता है, यथा—शैल = सेल, ऐरावण = एरावण, वैद्य = वेज, वैषय्य = वेहव्व, सैन्य = सेएण, सइएण, कैलाश = केलास, कइलास, दैव = देव्व, दइव, ऐश्वर्य = अइसरिअ, दैन्य = दइएण।

६. ओ का व्यवहार भी प्रायः महाराष्ट्र में नहीं है। उसके स्थान में सामान्यतः ओ और विशेष स्थलों में उ या ऋ होता है, यथा—कौमुदी = कोमुई, यौवन = जोवण, दौवारिक = दुवारिक, पौलोमी = पुलोमी, कौरव = कजरव, गौड = गरड, सौध = सरह।

असंयुक्त व्यञ्जन

१. स्वरों के मध्यवर्ती क, ग, च, ज, त, द, य, व इन व्यञ्जनों का प्रायः लोप होता है, जैसे क्रमशः—लोक = लीक, नग = एग, शची = सई, रजत = रजग, यती = जई, गदा = गगा, वियोग = विओग, लावण्य = लावण।
२. स्वरों के बीच के ख, घ, ङ और भ के स्थान में ह होता है, यथा क्रमशः—शाखा = साहा, श्लाघते = लाहइ, नाथ = एाह, साधु = साहु, सभा = सहा।
३. स्वरों के बीच के ट का ड होता है, यथा—मट = मड, घट = घड।
४. स्वरों के बीच के ठ का ढ होता है, जैसे—मठ = मढ, पठति = पढइ।
५. स्वरों के बीच के ढ का ल प्रायः होता है, यथा—गरुड = गरुल, तडाव = तलाम।
६. स्वरों के बीच के त का अनेक स्थल में ड होता है, यथा—प्रतिभास = पडिहास, प्रभृति = पडुडि, व्यापृत = वावड, पताका = पडागा।
७. न के स्थान में सर्वत्र ए होता है, यथा—कनक = कणक, वचन = वचण, नर = एर, नदी = एई, अन्य = एण, दैन्य = दइएण^२।
८. दो स्वरों के मध्यवर्ती प का कहीं-कहीं व और कहीं-कहीं लोप होता है, यथा—शपथ = सवह, शाप = साव, उपसर्ग = उवसर्ग, रिपु = रिठ, कपि = कइ।
९. स्वरों के बीच के फ के स्थान में कहीं-कहीं भ, कहीं-कहीं ह और कहीं-कहीं ये दोनों होते हैं, यथा—रेफ = रेभ, शिफा = सिभा, मुक्ताफल = मुक्ताहल, सफल = सभल, सहल, शेफालिका = सेभालिभा, सेहालिभा।
१०. स्वरों के मध्यवर्ती व का व होता है, जैसे—भलावू = भलावू, सवल = सवल।
११. आदि के य का ज होता है, यथा—यम = जम, यशस् = जस, याति = जाइ।
१२. कृदन्त के प्रतीय और य प्रत्यय के य का ज होता है, जैसे—करणिय = करणज, पेय = पेज।
१३. अनेक जगह र का ल होता है, यथा—हलिदा = हलिदा, दरिद्र = दलिद्र, ग्रुधिष्ठिर = जहुठिल, भ्रंगार = इंगाल।
१४. श और प का सर्वत्र स होता है, यथा—शब्द = सड, विश्राम = वीसाम, पुरुष = पुरिस, सस्य = सास, शेष = सेस।
१५. अनेक जगह ह का घ होता है, यथा—दाह = दाघ, सिंह = सिघ, संहार = संधार।
१६. कहीं-कहीं श, प और स का छ होता है, जैसे—शाव = छाव, पष्ठ = छडु, सुषा = छुहा।
१७. अनेक शब्दों में स्वर सहित व्यञ्जन का लोप होता है, यथा—राजकुल = राजल, आगत = आग, कालायस = कालास, हृदय = हिम, पादपतन = पावडण, यावत् = जा, त्रयोदश = तेरह, स्थविर = थेर, बदर = वोर, कदल = केल, कर्णिकार = कणोर, चतुर्दश = चोदह, मयूख = मोह।

संयुक्त व्यञ्जन

१. क्ष के स्थान में प्रायः ख और कहीं-कहीं छ और क होता है, जैसे—क्षय = खय, लक्षण = लखण, भक्षि = भच्छि, क्षीण = छीण, भीण।
२. त्व, थ्व, द्ध और ध्व के स्थान में कहीं-कहीं क्रमशः च, छ, ज और क होता है, यथा—ज्ञात्वा = एच्चा, पृथ्वी = पिच्छी, विद्वान् = विज्ज, बुद्ध्वा = बुज्जा।
३. हुस्व स्वर के परवर्ती थ्य, थ्व, त्म और प्थ के स्थान में छ होता है, जैसे—पथ्य = पच्छ, पश्चात् = पच्छा, उत्साह = उच्छाह, भ्रमरा = भ्रच्छरा।

१. संस्कृत के 'भ्रयि' शब्द का महाराष्ट्री में 'ऐ' होता है। इसके सिवा किसी किसी के मत में 'ऐ' तथा 'भ्री' का भी प्रयोग होता है, जैसे—कैतव = कैभव, कौरव = कौरव (हे० प्रा० १, १)।

२. वररुचि के प्राकृत-व्याकरण के 'नो एः सर्वत्र' (२, ४२) सूत्र के अनुसार सर्वत्र 'न' का 'ए' होता है। सेतुबन्ध और गाथा-शप्तशती में इसी तरह सार्वत्रिक 'ए' पाया जाता है। हेमचन्द्र आदि कई प्राकृत वैयाकरणों के मत से शब्द के आदि के 'न' का विकल्प से 'ए' होता है, यथा—नदी = एई, नई, नर = एर, नर। गडडवहो में एकार का वैकल्पिक प्रयोग देखा जाता है।

४. घ, व्य और यं का ज होता है, यथा—मघ = मज, जघ्य = जज, कार्य = कज ।
 ५. व्य और झ का झ होता है; यथा—घ्यान = झान, साध्य = सज्झ, गुह्य = गुज्झ, सध्य = सज्झ ।
 ६. तं का प्रायः ट होता है, जैसे—नतंकी = एट्टई, कैवतं = केवट्ट ।
 ७. ट के स्थान में ठ होता है; यथा—पुष्टि = मुष्टि, पुष्ट = पृष्ठ, काष्ठ = कट्ट, इष्ट = इट्ट ।
 ८. म्न का ण होता है, यथा—निम्न = निण्ण, प्रद्युम्न = पज्जुण्ण ।
 ९. ज्ञ का ण और ज होता है, जैसे—ज्ञान = णान, जाण, प्रज्ञा = पण्णा, पज्जा ।
 १०. स्त का थ होता है, जैसे—हस्त = हत्थ, स्तोत्र = थोत्त, स्तोक = थोव ।
 ११. ड्म और क्म का प होता है, यथा—कुड्मल = कुपल, रुक्मिणी = रुप्पिणी ।
 १२. ष्य और स्य का फ होता है, यथा—पुष्प = पुप्फ, स्पन्दन = फदण ।
 १३. ह्व का भ होता है, यथा—जिह्वा = जिह्मा, विह्वल = विह्मल ।
 १४. न्म और ग्म का म होता है, जैसे—जन्मन् = जम्म, मन्मथ = मम्मह, युग्म = जुज्म, तिग्म = तिम्म ।
 १५. श्म, ष्म, स्म और ह्य का म्ह होता है, यथा—काश्मीर = कम्हार, ग्रीष्म = गिम्ह, विस्मय = विम्हय, ब्राह्मण = बम्हण ।
 १६. श्र, ष्र, ल्र, ह्र, ल्र और क्षण के स्थान में एह होता है, यथा—प्रश्न = परह, उष्ण = उएह, स्नान = एहाण, वह्नि = वएह, पूर्वाह्ण = पृष्वएह, तीक्ष्ण = तीएह ।
 १७. ह्र का ल्ह होता है, यथा—प्रह्लाद = पल्हाम, कल्हार = कल्हार ।
 १८. संयोग में पूर्ववर्ती क, ग, ट, ड, त, द, प, श, य और स का लोप होता है, जैसे—भुक्त = भुत्त, मुग्ध = मुद्ध, षट्पद = छप्पम, खड्ग = खग, उत्पल = उप्पल, मुद्गर = मुगयर, सुप्त = सुत्त, निश्चल = निच्चल, निष्ठुर = निट्ठुर, खलित = खलिम ।
 १९. संयोग में परवर्ती म, न और य का लोप होता है, यथा—स्मर = सर, लग्न = लग, व्याघ्र = वाह ।
 २०. संयोग में पूर्ववर्ती और परवर्ती सभी ल, व और र का लोप होता है, यथा—उल्का = उक्का, विक्लव = विक्कव, शब्द = सद्, पक्क = पक्क, अर्क = अक्क, चक्र = चक्क ।
 २१. संयुक्त अक्षरों के स्थान में जो-जो आदेश ऊपर कहा है उसका और संयुक्त व्यञ्जन के लोप होने पर जो-जो व्यञ्जन बाकी रहता है उसका, यदि वह शब्द के आदि में न हो तो, द्वित्व होता है, जैसे—ज्ञात्वा = एच्चा, मघ = मज, भुक्त = भुत्त, उल्का = उक्का । परन्तु वह आदेश अथवा शेष व्यञ्जन यदि षर्ग का द्वितीय अथवा चतुर्थ अक्षर हो तो द्वित्व न होकर उसके पूर्व में आदेश अथवा शेष व्यञ्जन के अनन्तर-पूर्व व्यञ्जन का आगम होता है, यथा—लक्षण = लक्खण, पश्चात् = पच्छा, इष्ट = इट्ट, मुग्ध = मुद्ध ।

विश्लेषण

१. हं, शं, पं के मध्य में और संयोग में परवर्ती ल के पूर्व में स्वर का आगम होकर संयुक्त व्यञ्जनों का विश्लेषण किया जाता है, यथा—अहंत = अरह, अरिह, अरह, आदर्श = आयरिस, हर्ष = हरिस, क्लृप्त = किलिट्ट ।

व्यत्यय

१. अनेक शब्दों में व्यञ्जन के स्थान का व्यत्यय होता है, यथा—करेणू = करेरू, भालान = आणाल, महाराष्ट्र = मरहट्ट, हरिताल = हलिमार, लघुक = हलुम, ललाट = एटाल, गुह्य = गुह्, सध्य = सग्ह ।

सन्धि

१. समास में कहीं-कहीं ह्रस्व स्वर के स्थान में दीर्घ और दीर्घ के स्थान में ह्रस्व होता है, यथा—अन्तर्वेदि = अन्तावेइ, पतिगृह = पइहर, यमुनातट = जंउणअट्ट, नदीस्रोत = एइसोत्त ।
 २. स्वर पर रहने पर पूर्व स्वर का लोप होता है, जैसे—त्रिदेश = तिप्रतीस ।
 ३. संयुक्त व्यञ्जन का पूर्व स्वर ह्रस्व होता है, जैसे—आस्य = अस्स, मुनीन्द्र = मुणिण्द, वृणं = वुण्ण, नरेन्द्र = एरिण्द, म्लेच्छ = मिलिच्छ, नीलोत्पल = एणुत्पल ।

सन्धि-निषेध

१. उद्भूत (व्यञ्जन का लोप होने पर अवशिष्ट रहे हुए) स्वर की पूर्व स्वर के साथ प्रायः सन्धि नहीं होती है, यथा—निशाकर = एिसाकर, रजनीकर = रजणीकर ।

२. एक पद में स्वरों की सन्धि नहीं होती है, जैसे—पाद = पाप्, गति = गद्, नगर = एग्नर ।
३. इ, ई, और ऊ की, असमान स्वर पर रहने पर, सन्धि नहीं होती है, यथा—वग्गेवि अन्वयासो, दण्डो ।
४. ए और ओ की परवर्ती स्वर के साथ सन्धि नहीं होती है, यथा—फले प्रावधो, आलम्बिमो एहि ।
५. आख्यात के स्वर की सन्धि नहीं होती है, जैसे—होइ इह ।

नाम-विभक्ति

१. अकारान्त पुलिग शब्द के एकवचन में ओ होता है, जैसे—जिन = जिणो, वृक्ष = वृक्षो ।
२. पञ्चमी के एकवचन में तो, ओ, उ, हि और लोप होता है और तो-भिन्न अन्य प्रत्ययों के प्रसंग में अकार का आकार होता है; जैसे—जिनात् = जिणात्तो, जिणाओ जिणाउ, जिणाहि, जिणा ।
३. पञ्चमी के बहुवचन का प्रत्यय तो, ओ, उ और हि होता है, एवं तो से अन्य प्रत्यय में पूर्व के अ का आ होता है, हि के प्रसंग में ए भी होता है, यथा—जिणत्तो, जिणाओ, जिणाउ, जिणाहि, जिणेहि ।
४. पञ्चमी के एकवचन के प्रत्यय के स्थान में हितो और बहुवचन के प्रत्यय के स्थान में हितो और सुतो इन स्वतन्त्र शब्दों का भी प्रयोग होता है, यथा—जिनात् = जिणा हितो, जिनेम्य = जिणा हितो, जिणे हितो, जिणा सुतो, जिणे सुतो ।
५. षष्ठी के एकवचन का प्रत्यय स्त होता है, यथा—जिणस्स, मुणस्स, तस्स ।
६. अस्मत् शब्द के प्रथमा के एकवचन के रूप म्मि, अम्मि, अम्हि, हं, अह और अह्य होता है ।
७. अस्मत् शब्द के प्रथमा के बहुवचन के रूप अम्ह, अम्हे, अम्हो, मो, वयं और मे होता है ।
८. अस्मत् शब्द के षष्ठी का बहुवचन ऐ, णो, मज्ज, अम्ह, अम्ह, अम्हे, अम्हो, अम्हाण, ममाण, महाण और मज्जाण होता है ।
९. युष्मत् शब्द के षष्ठी का एकवचन तद्, तु, ते, तुम्ह, तुह, तुहं, तुव, तुम, तुमो, तुमाद्, दि, दे, इ, ए, तुव्म, तुम्ह, तुज्म उव्म, उम्ह, उज्म और उव्ह होता है ।

लिङ्ग व्यत्यय

१. संस्कृत में जो शब्द केवल पुलिग है, उनमें से कई एक महाराष्ट्री में स्त्रीलिङ्ग और नपुंसक लिङ्ग भी है, यथा—प्रश्न = पण्हो, पण्हा, गुण = गुणा, गुणाइ, देवा = देवा, देवाणि ।
२. अनेक जगह स्त्रीलिङ्ग के स्थान में पुलिग होता है, यथा—शरत् = सरओ, प्रावृट् = पाउसो, विद्युता = विज्जुण ।
३. संस्कृत के अनेक क्लीबलिङ्ग शब्दों का प्रयोग महाराष्ट्री में पुलिग और स्त्रीलिङ्ग में भी होता है, यथा—यश = जसो, जन्म = जम्मो, अस्ति = अच्छी, पुण्ड्र = पिट्टो, चौयम् = चोरिमा ।

आख्यात

१. ति और ते प्रत्ययों के त का लोप होता है, जैसे—हसति = हसइ, हवए, रपते = रमइ, रमए ।
२. परस्मैपद और आत्मनेपद का विभाग नहीं है, महाराष्ट्री में सभी धातु उभयपदी की तरह हैं ।
३. भूतकाल के ह्यस्तन, अद्यतन और परोक्ष विभाग न होकर एक ही तरह के रूप होते हैं और भूतकाल में आख्यात की जगह त-प्रत्ययान्त कृदन्त का ही प्रयोग अधिक होता है ।
४. भविष्यत्-काल के भी संस्कृत का तरह अस्तन और भविष्यत् ऐसे दो विभाग नहीं है ।
५. भविष्यत्काल के प्रत्ययों के पहले हि होता है, यथा—हसिष्यति = हसिहिइ, करिष्यति, = करिहिइ ।
६. वर्तमान काल के, भविष्यत्काल के और विधि-लिङ्ग और आज्ञार्थक प्रत्ययों के स्थान में ज्ज और ज्जा होता है, यथा—हससि, हसिष्यति, हसेत्, हसतु = हसेज्ज, हसेज्जा ।
७. भाव और कर्म में ईप्प और इज्ज प्रत्यय होते हैं, यथा—हस्यते = हसोमइ, हसिज्जइ ।

कृदन्त

१. शीलाद्यर्थक वृ-प्रत्यय के स्थान में इर होता है, यथा—गन्तु = गमिर, नमन्शील = एमिर ।
२. क्वा-प्रत्यय के स्थान में तुम्, अ, तूण, तुआण और ता होता है, जैसे—पठित्ता = पठिउ, पठिअ, पठिअण, पठिउआण, पठित्ता ।

तद्धित

१. त्व-प्रत्यय के स्थान में त और तण होता है, यथा—देवत्व = देवत्त, देवत्तण ।

(१०) अपभ्रंश

महर्षि पतञ्जलि ने अपने महाभाष्य में लिखा है कि “भूयासोऽपशब्दा श्लपीयास शब्दा । एकैकस्य हि शब्दस्य बहवोऽपभ्रंशा , सद्यथा—गौरित्यस्य शब्दस्य गावी, गोणी, गोता, गोपोतलिका इत्येवमादयोऽपभ्रंशा ” अर्थात् अपशब्द बहुत और शब्द (शुद्ध) थोड़े हैं, क्योंकि एक एक शब्द के बहुत अपभ्रंश हैं, जैसे ‘गौ’ इस शब्द के गावी, गोणी, गोता, गोपोतलिका इत्यादि अपभ्रंश हैं ।

यहाँ पर ‘अपभ्रंश’ शब्द अपशब्द के अर्थ में ही व्यवहृत है और अपशब्द का अर्थ भी ‘संस्कृत-सामान्य और विशेष ग्रंथों’ व्याकरण से असिद्ध शब्द’ है, यह स्पष्ट है । उक्त उदाहरणों में ‘गावी’ और ‘गोणी’ ये दो शब्दों का प्रयोग प्राचीन जैन-सूत्र-ग्रन्थों में पाया जाता है और चण्ड तथा आचार्य हेमचन्द्र आदि प्राकृत-वैयाकरणों ने भी ये दो शब्द अपने-अपने प्राकृत-व्याकरणों में लक्षण-द्वारा सिद्ध किये हैं । दण्डी ने अपने काव्यादर्श में पहले प्राकृत और अपभ्रंश का अलग-अलग निर्देश करते हुए काव्य में व्यवहृत आभीर-प्रभृति की भाषा को अपभ्रंश कही है और बाद में यह लिखा है कि ‘शास्त्र में संस्कृत भिन्न सभी भाषाएँ अपभ्रंश कही गई हैं’^१ । यहाँ पर दण्डी ने शास्त्र-शब्द का प्रयोग महाभाष्य-प्रभृति व्याकरण के अर्थ में ही किया है । पतञ्जलि-प्रभृति संस्कृत-वैयाकरणों के मत में संस्कृत-भिन्न सभी प्राकृत-भाषाएँ अपभ्रंश के अन्तर्गत हैं, यह ऊपर के उनके लेख से स्पष्ट है । परन्तु प्राकृत-वैयाकरणों के मत में अपभ्रंश भाषा प्राकृत का ही एक अवान्तर भेद है । काव्यालंकार की टीका में नमिसाधु ने लिखा है कि “प्राकृतमेवापभ्रंश ” (२, १२) अर्थात् अपभ्रंश भी शौरसेनी, मागधी आदि की तरह एक प्रकार का प्राकृत ही है । उक्त क्रमिक उल्लेखों से यह स्पष्ट है कि पतञ्जलि के समय में जिस अपभ्रंश शब्द का ‘संस्कृत-व्याकरण-असिद्ध (कोई भी प्राकृत)’ इस सामान्य अर्थ में प्रयोग होता था उसने आगे जाकर क्रमशः ‘प्राकृत का एक भेद’ इस विशेष अर्थ को धारण किया है । हमने भी यहाँ पर अपभ्रंश शब्द का इस विशेष अर्थ में ही व्यवहार किया है ।

अपभ्रंश भाषा के निदर्शन विक्रमोर्वशी, धर्माभ्युदय आदि नाटक-ग्रन्थों में, हरिवंशपुराण, पद्मचरित्र (स्वयंभूदेवकृत) निदर्शन भविस्यत्तकहा, सजममजरी, महापुराण, यशोधरचरित, नागकुमारचरित, कथाकोश, पार्श्वपुराण, सुदर्शनचरित्र, करकंडुचरित, जयतिहुग्रणस्तोत्र, विलासवईकहा, सणकुमारचरित्र, सुपासनाहचरित्र, कुमारपालचरित, कुमारपाल-प्रतिबोध, उपदेशतरंगिणी प्रभृति काव्यग्रन्थों में, प्राकृतलक्षण, सिद्धहेमचन्द्रव्याकरण (अष्टम अध्याय), संज्ञितसार, षड्भाषाचन्द्रिका, प्राकृतसर्वस्व वगैरह व्याकरणों में और प्राकृतपिङ्गल नामक छन्द-ग्रन्थ में पाये जाते हैं ।

डॉ. हॉर्नेलि के मत में जिस तरह आर्य लोगों की कथ्य भाषाएँ अनार्य लोगों के मुख से उच्चारित होने के कारण प्रकृति और समय जिस विकृत रूप को धारण कर पायी थीं वह पैशाची भाषा है और वह कोई भी प्रादेशिक भाषा नहीं है, उस तरह आर्यों की कथ्य भाषाएँ भारत के आदिम-निवासी अनार्य लोगों की भिन्न-भिन्न भाषाओं के प्रभाव से जिन रूपान्तरों को प्राप्त हुई थीं वे ही भिन्न-भिन्न अपभ्रंश भाषाएँ हैं और ये महाराष्ट्री की अपेक्षा अधिक प्राचीन हैं । डॉ. हॉर्नेलि के इस मत का सर ग्रियर्सन-प्रभृति आधुनिक भाषातत्त्वज्ञ स्वीकार नहीं करते हैं । सर ग्रियर्सन के मत में भिन्न-भिन्न प्राकृत भाषाएँ साहित्य और व्याकरण में नियन्त्रित होकर जन-साधारण में अप्रचलित होने के कारण जिन नूतन कथ्य भाषाओं की उत्पत्ति हुई थी वे ही अपभ्रंश हैं । ये अपभ्रंश-भाषाएँ ख्रिस्तीय पञ्चम शताब्दी के बहुत काल पूर्व से ही कथ्य भाषाओं के रूप में व्यवहृत होती थीं, क्योंकि चण्ड के प्राकृत-व्याकरण में और कालिदास की विक्रमोर्वशी में इसके निदर्शन पाये जाने के कारण यह निश्चित है कि ख्रिस्तीय पञ्चम शताब्दी के पहले से ही ये साहित्य में स्थान पाने लगी थीं । ये अपभ्रंश भाषाएँ प्रायः दशम शताब्दी पर्यन्त साहित्य की भाषाएँ थीं । इसके बाद फिर जन-साधारण में अप्रचलित होने से जिन नूतन कथ्य भाषाओं की उत्पत्ति हुई वे ही हिन्दी, वगला, गुजराती वगैरह आधुनिक

१ ‘खीरोणियाग्रो गावीग्रो’, “गोण वियाल” (आचा २, ४, ५) ।

“एगर्गावीग्रो” (विपा १, २ – पत्र २६) ।

“गोणीण संगेह” (व्यवहारसूत्र, उ० ४) ।

२. “गोवावी” (प्राकृतलक्षण २, १६) । ३. “गोणादय ” (हे० प्रा० २, १७४) ।

४. “आभीरादिगिर काव्येष्वपभ्रंश इति स्मृता ।

शास्त्रे तु संस्कृतादन्यदपभ्रंशतयोदितम्” (१, ३६) ।

आर्य कथ्य भाषाएँ हैं। इनका उत्पत्ति-समय ख्रिस्त की नववीं या दसवीं शताब्दी है। सुतरा, अपभ्रंश भाषाएँ ख्रिस्त की पञ्चम शताब्दी के पूर्व से लेकर नववीं या दशवीं शताब्दी पर्यन्त साहित्य की भाषाओं के रूप में प्रचलित थीं। इन अपभ्रंश भाषाओं की प्रकृति वे विभिन्न प्राकृत-भाषाएँ हैं, जो भारत के विभिन्न प्रदेशों में इन अपभ्रंशों की उत्पत्ति के पूर्वकाल में प्रचलित थीं।

भेद अपभ्रंश के बहुत भेद हैं, प्राकृतचन्द्रिका में इसके ये सत्ताईस भेद बताये गए हैं।

“ब्राचडो लाटवैदर्भावुपनागरनागरी। बावरावन्त्यपाञ्चालटाक्कमालवकैकया ॥

गौडोद्वैवपाश्चात्यपाण्ड्यकौन्तलसैहला। कालिगयप्राच्यकाण्टिकाव्यद्राविडगौर्जरा ॥

आभीरी मध्यदेशीय सूक्ष्ममेदव्यस्थिता। सप्तविंशत्यपभ्रंशा वैतालादिप्रभेदतः ॥

मार्कण्डेय ने अपने प्राकृतसर्वस्व में प्राकृतचन्द्रिका से सत्ताईस अपभ्रंशों के जो लक्षण और उदाहरण उद्धृत किए हैं^१। वे इतने अपर्याप्त और अस्पष्ट हैं कि खुद मार्कण्डेय ने भी इनको सूक्ष्म कह कर नगण्य बताये हैं और इनका पृथग्-पृथग् लक्षण-निर्देश न कर उक्त समस्त अपभ्रंशों का नागर, ब्राचड और उपनागर इन तीन प्रधान भेदों में ही अन्तर्भाव माना है। परन्तु यह बात मानने योग्य नहीं है, क्योंकि जब यह सिद्ध है कि जिन भाषाओं का उत्पत्ति स्थान भिन्न-भिन्न प्रदेश है और जिनकी प्रकृति भी भिन्न-भिन्न प्रदेश की भिन्न-भिन्न प्राकृत भाषाएँ हैं तब वे अपभ्रंश भाषाएँ भी भिन्न-भिन्न ही हो सकती हैं और उन सब का समावेश एक दूसरे में नहीं किया जा सकता। वास्तव में बात यह है कि वे सभी अपभ्रंश भिन्न भिन्न होने पर भी साहित्य में निबद्ध न होने के कारण उन सब के निदर्शन ही उपलब्ध नहीं हो सकते थे। इसीसे प्राकृतचन्द्रिकाकार न उनके स्पष्ट लक्षण ही कर पाये हैं और न तो उदाहरण ही अधिक दे सके हैं। यही कारण है कि मार्कण्डेय ने भी इन भेदों को सूक्ष्म कहकर टाल दिये हैं। जिन अपभ्रंश भाषाओं के साहित्य-निबद्ध होने से निदर्शन पाये जाते हैं उनके लक्षण और उदाहरण आचार्य हेमचन्द्र ने केवल अपभ्रंश के सामान्य नाम से और मार्कण्डेय ने अपभ्रंश के तीन विशेष नामों से दिये हैं। आचार्य हेमचन्द्र ने ‘अपभ्रंश’ इस सामान्य नाम से और मार्कण्डेय ने ‘नागरापभ्रंश’ इस विशेष नाम से जो लक्षण और उदाहरण दिये हैं वे राजस्थानी-अपभ्रंश या राजपूताना तथा गुजरात प्रदेश के अपभ्रंश से ही संबन्ध रखते हैं। ब्राचडापभ्रंश के नाम से सिन्धुप्रदेश के अपभ्रंश के लक्षण और उदाहरण मार्कण्डेय ने अपने व्याकरण में दिये हैं, और उपनागर-अपभ्रंश का कोई लक्षण न देकर केवल नागर और ब्राचड के मिश्रण को ‘उपनागर-अपभ्रंश’ कहा है। इसके सिवा सौरसेनी-अपभ्रंश के निदर्शन मध्यदेश के अपभ्रंश में पाये जाते हैं। अन्य अन्य प्रदेशों के अथवा महाराष्ट्री, अर्धमागधी, मागधी और पैशाची भाषाओं के जो अपभ्रंश थे उनका कोई साहित्य उपलब्ध न होने से कोई निदर्शन भी नहीं पाये जाते हैं।

भिन्न-भिन्न अपभ्रंश भाषा का उत्पत्ति-स्थान भी भारतवर्ष का भिन्न भिन्न प्रदेश है। रुद्रट ने और वाग्भट ने उत्पत्ति-स्थान अपने अपने अलङ्कार-ग्रन्थ में यह बात सन्क्षेप में अथच स्पष्ट रूप में इस तरह कही है —

“षष्ठोऽत्र भूरिभेदो देशविशेषादपभ्रंशः” (काव्यालङ्कार २, १२)।

“अपभ्रंशस्तु यच्छुद्ध तत्तद्देशेषु भाषितम्” (वाग्भटालङ्कार २, ३)।

ख्रिस्त की पञ्चम शताब्दी के पूर्व से लेकर दशम शताब्दी पर्यन्त भारत के भिन्न-भिन्न प्रदेश में कथ्य भाषाओं के प्राधुनिक आर्य कथ्य रूप में प्रचलित जिस जिस अपभ्रंश भाषा से भिन्न-भिन्न प्रदेश की जो जो आधुनिक आर्य कथ्य भाषाओं की प्रकृति भाषा (Modern Vernacular) उत्पन्न हुई है उसका विवरण यों है :—

१. बंगीयसाहित्यपरिषत्-पत्रिका, १३१७।

२. “टाक्क टक्कभाषानागरोपनागरादिभ्योऽवधारणीयम्। तुवहुला मालवी। वाडीवहुला पाञ्चाली। उल्लप्राया वैदर्भी। संबोधनाढ्या लाटी। ईकारोकारवहुला श्रीडी। सवोप्सा कैकेयी। समासाढ्या गौडी। डकारवहुला कौन्तली। एकारिणी च पाण्ड्या। युक्ताढ्या सैहली। हियुक्ता कालिगी। प्राच्या तद्देशीयभाषाढ्या। ज(भ)ट्टादिबहुलाऽऽभीरी वणविपर्ययात् काणादि। मध्यदेशीया तद्देशीयाढ्या। संस्कृताढ्या च गौर्जरी। चकारात् पूर्वोक्तटक्कभाषाग्रहणम्। रत्त(ल)हभा व्यत्ययेन पाश्चात्या। रेफ व्यत्ययेन द्राविडी। डकारवहुला वैतालिकी। एभीवहुला काञ्ची। शेपा देशभाषाविभेदात्।”

३. “नागरी ब्राचडवोपनागरश्चेति ते त्रय। अपभ्रंश, परे सूक्ष्ममेदवत्वात् पुण्ड्र मता” (प्रा० सं० पृष्ठ ३)। “अन्येषामपभ्रंश-नामेष्वेवान्तर्भावः” (प्रा० सं० पृष्ठ १२२)।

महाराष्ट्री-अपभ्रंश से मराठी और कोंकणी भाषा ।

मागधी-अपभ्रंश की पूर्व शाखा से वगला, उड़िया और आसामी भाषा ।

मागधी-अपभ्रंश की विहारी शाखा से मैथिली, मगही और भोजपुरिया ।

अर्धमागधी-अपभ्रंश से पूर्वीय हिन्दी भाषाएँ अर्थात् अवधी, बघेली और छत्तीसगढ़ी ।

सौरसेनी-अपभ्रंश से बुन्देली, कन्नौजी, ब्रजभाषा, वॉगरू, हिन्दी या उर्दू ये पाश्चात्य हिन्दी भाषा ।

नागर-अपभ्रंश से राजस्थानी, मालवी, मेवाड़ी, जयपुरी, मारवाड़ी तथा गुजराती भाषा ।

पालि से सिंहली और मालदीवन ।

टाक्री अथवा ढाक्री से लहण्डो या पश्चिमीय पंजाबी ।

टाक्री-अपभ्रंश (सौरसेनी के प्रभाव-युक्त) से पूर्वीय पंजाबी ।

ब्राचड-अपभ्रंश से सिन्धी भाषा ।

पैशाची-अपभ्रंश से काश्मीरी भाषा ।

लक्षण नागर-अपभ्रंश के प्रधान लक्षण ये हैं —

वर्ण-परिवर्तन

- भिन्न-भिन्न स्वरों के स्थान में भिन्न-भिन्न स्वर होते हैं, यथा—कृत्य = कच, काच, वचन = वेण, वीण, बाहु = बाह, बाहा, वाहु, वृहु = पट्टि, पिट्टि, पुट्टि, तुण = तण, तिण, तुण, सुकृत = सुकिद, सुकृद, लेखा = लिह, लोह, लेह ।
- स्वरों के मध्यवर्ती असंयुक्त क, ख, त, थ, प और फ के स्थान में प्रायः क्रमशः ग, घ, द, ध, व और भ होता है, यथा—विच्छेदकर = विच्छोहगर, सुख = सुघ, कथित = कघिद, शपथ = शवघ, सफल = समल ।
- अनादि और असंयुक्त म के स्थान में वैकल्पिक सानुनासिक व होता है, यथा—कमल = कवैल, कमल, भ्रमर = भवैर, भमर ।
- संयोग में परवर्ती र का विकल्प से लोप होता है, यथा—प्रिय = पिय, प्रिय, चन्द्र = चन्द, चन्द्र ।
- कहीं-कहीं संयोग के परवर्ती य का विकल्प से र होता है, जैसे—व्यास = व्रास, वास, व्याकरण = व्रागरण, वागरण ।
- महाराष्ट्री में जहाँ म्ह होता है वहाँ अपभ्रंश में म्म और म्ह दोनों होते हैं, यथा—ग्रीष्म = गिम्म, गिम्ह, श्लेष्म = सिम्म, सिम्ह ।

नाम-विभक्ति

- विभक्ति के प्रसंग में ह्रस्व स्वर का दीर्घ और दीर्घ का ह्रस्व प्रायः होता है, यथा—श्यामल = सामल, खड्गा = खग, दृष्टि = दिष्टि, पृथ्वी = पृत्ति ।
- साधारणतः सातों विभक्ति के जो प्रत्यय हैं वे नीचे दिये जाते हैं । लिंग-भेद में और शब्द-भेद में अनेक विशेष प्रत्यय भी हैं, जो विस्तार-भय से यहाँ नहीं दिये गए हैं ।

	एकवचन	बहुवचन
प्रथमा	उ, हो	०
द्वितीया	"	०
तृतीया	एं	हि
चतुर्थी	सु, हो, स्तु	हं, ०
पञ्चमी	हे, हु	हुं
षष्ठी	सु, हो, स्तु	हं, ०
सप्तमी	इ, हि	हि

आख्यात विभक्ति

	एकवचन	बहुवचन
१. १ पु०	उं	हुं
२ पु०	हि	इ
३ पु०	इ, ए	हि

२. मध्यम पुरुष के एकवचन में आह्वार्थ में इ, उ और ए होते हैं, यथा—कुरु = करि, करु, करे ।
३. भविष्यत्काल में प्रत्यय के पूर्व में स आगम होता है, यथा—भविष्यति = होसइ ।

कृदन्त

१. तव्य-प्रत्यय के स्थान में इएव्वउ, एव्वउ और एवा होता है, यथा—कर्तव्य = करिएव्वउं, करेव्वउ, करेवा ।
२. त्वा के स्थान में इ, इउ इवि, अवि, एप्पि, एप्पिणु, एवि, एविण, होते हैं, यथा—कृत्वा = करि, करिउ, करिवि, करवि, करेप्पि, करेप्पिणु करेवि, करेविणु ।
३. तुम्-प्रत्यय की जगह एवं अण, अणह, अणहि एप्पि, एप्पिणु, एवि, एविण होते हैं, यथा—कर्तुम् = करेव, करण, करणह कर-एहि, करेप्पि, करेप्पिणु, करेवि, करेविणु ।
४. गीलाद्यर्थक तु-प्रत्यय के स्थान में अणग्र होता है, जैसे—कर्तुं = करणग्र, मारयितुं = मारणग्र ।

तद्धित

१. त्व और ता के स्थान में ण होता है, यथा—देवत्व = देवण, महत्त्व = बहुण ।

हम पहले यह कह आये हैं कि वैदिक और लौकिक संस्कृत के शब्दों के साथ तुलना करने पर जिस प्राकृत भाषा में वर्ण-लोप-प्रभृति परिवर्तन जितना अधिक प्रतीत हो, वह उतनी ही परवर्ती काल में उत्पन्न मानी जानी चाहिए । इस नियम के अनुसार, हम देखते हैं कि महाराष्ट्री प्राकृत में व्यञ्जनों का लोप सर्वापेक्षा अधिक है, इससे वह अपभ्रंशों का भिन्न आदर्श में गठन अन्योन्य प्राकृत-भाषाओं के पीछे उत्पन्न हुई है, ऐसा अनुमान किया जाता है । परन्तु अपभ्रंश में उक्त नियम का व्यत्यय देखने में आता है, क्योंकि भिन्न-भिन्न प्रदेशों की अपभ्रंश भाषाएँ यद्यपि महाराष्ट्री के बाद ही उत्पन्न हुई हैं तथापि महाराष्ट्री में जो व्यञ्जन-वर्ण-लोप देखा जाता है, अपभ्रंश में उसकी अपेक्षा अधिक नहीं, बल्कि कम ही वर्ण-लोप पाया जाता है और ऋ स्वर तथा संयुक्त रकार भी विद्यमान है । इस पर से यह अनुमान करना असंगत नहीं है कि वर्ण-लोप की गति ने महाराष्ट्री प्राकृत में अपनी चरम सीमा को पहुँच कर उसको (महाराष्ट्री को) अस्थिहीन-भाँस पिण्ड की तरह स्वर-बहुल आकार में परिणत कर दिया । अपभ्रंश में उसीकी प्रतिक्रिया शुरू हुई, और प्राचीन स्वर एवं व्यञ्जनों को फिर स्थान देकर भाषा को भिन्न आदर्श में गठित करने की चेष्टा हुई । उस चेष्टा का ही यह फल है कि पिछले समय में संस्कृत-भाषा का प्रभाव फिर प्रतिष्ठित होकर आधुनिक आर्य कथ्य भाषाएँ उत्पन्न हुई हैं ।

प्राकृत पर संस्कृत का प्रभाव

जैन और बौद्धों ने संस्कृत भाषा का परित्याग कर उस समय की कथ्य भाषा में धर्मोपदेश को लिपिवद्ध करने की प्रथा प्रचलित की थी । इससे जो दो नया साहित्य-भाषाओं का जन्म हुआ था, वे जैन सूत्रों की अर्धमागधी और बौद्ध-धर्म-ग्रन्थ की पालि भाषा है । परन्तु ये दो साहित्य-भाषाएँ और अन्योन्य समस्त प्राकृत-भाषाएँ संस्कृत के प्रभाव को उल्लंघन नहीं कर सकी हैं । इस बात का एक प्रमाण तो यह है कि इन समस्त प्राकृत-भाषाओं में संस्कृत-भाषा के अनेक शब्द अविकल रूप में गृहीत हुए हैं । ये शब्द तत्सम कहे जाते हैं । यद्यपि इन तत्सम शब्दों ने प्रथम स्तर की प्राकृत-भाषाओं से ही संस्कृत में स्थान और रक्षण पाया था, तो भी यह स्वीकार करना ही होगा कि ये सब शब्द परवर्ती काल की प्राकृत-भाषाओं में जो अपरिवर्तित रूप में व्यवहृत होते थे वह संस्कृत-साहित्य का ही प्रभाव था ।

इसके अतिरिक्त, संस्कृत के ही प्रभाव से बौद्धों में एक मिश्र-भाषा उत्पन्न हुई थी । महायान-बौद्धों के महावैपुल्य-सूत्र-नामक कतिपय सूत्र ग्रन्थ हैं । ललितविस्तर, सद्धर्म-पुण्डरीक, चन्द्रप्रदीपसूत्र प्रभृति इसके अन्तर्गत हैं । इन ग्रन्थों की भाषा में अधिकांश शब्द तो संस्कृत के हैं ही, अनेक प्राकृत शब्दों के आगे भी संस्कृत की विभक्ति लगाकर उनको भी संस्कृत के अनुरूप किये गए हैं । पार्श्वत्य विद्वानों ने इस भाषा को 'गाथा' नाम दिया है । परन्तु यहाँ पर यह कहना आवश्यक है कि इसका यह 'गाथा' नाम असंगत है, क्योंकि यह संस्कृत-मिश्रित-प्राकृत का प्रयोग उक्त ग्रन्थों के केवल पद्यांशों में ही नहीं, बल्कि गद्यांश में भी देखा जाता है । इससे इन ग्रन्थों की भाषा को 'गाथा' न कहकर 'प्राकृत-मिश्र-संस्कृत' या 'संस्कृत मिश्र-प्राकृत' अथवा संक्षेप में 'मिश्र-भाषा' ही कहना उचित है ।

डॉ. बनेफ और डॉ. राजेन्द्र लाल मित्र का मत है कि, 'संस्कृत भाषा, क्रमशः परिवर्तित होती हुई प्रथम गाथा भाषा के रूप में और बाद के पालि-भाषा के आकार में परिणत हुई है । इस तरह गाथा भाषा संस्कृत और पालि की मध्यवर्ती

होने के कारण इन दोनों के (संस्कृत और पालि के) लक्षणों से आक्रान्त हैं । यह सिद्धान्त सर्वथा भ्रान्त है, क्योंकि हम यह पहले ही अच्छी तरह प्रमाणित कर चुके हैं कि संस्कृत-भाषा क्रमशः परिवर्तित होकर पालि भाषा में परिणत नहीं हुई है, किन्तु पालि-भाषा वैदिक-युग की एक प्रादेशिक भाषा से ही उत्पन्न हुई है । और, गाथा-भाषा पालि-भाषा के पहले प्रचलित न थी, क्योंकि गाथा-भाषा के समस्त ग्रन्थों का रचना-काल ख्रिस्त-पूर्व दो सौ वर्षों से लेकर ख्रिस्त की तृतीय शताब्दी पर्यन्त का है, इससे गाथा-भाषा बहुत तो पालि भाषा की समकालीन हो सकती है, न कि पालि-भाषा की पूर्वावस्था । यह भाषा संस्कृत के प्रभाव को कायम रखकर विभिन्न प्राकृत-भाषाओं के मिश्रण से बनी है, इसमें सन्देह नहीं है । यही कारण है कि इसके शब्दों को प्रस्तुत कोष में स्थान नहीं दिया गया है ।

गाथा-भाषा का थोड़ा नमूना ललितविस्तर से यहाँ उद्धृत किया जाता है —

“अध्रुव त्रिभवं शरदभ्रनिभ, नटरङ्गसमा जगि जन्मि च्युति ।

गिरिनद्यमम लघुशीघ्रजव, व्रजतापु जगे यथ विद्यु नभे ॥ १ ॥”

“उदकचन्द्रसमा इमि कामगुणा, प्रतिविम्ब इवा गिरिघोष यथा ।

प्रतिभाससमा नटरङ्गसमास्तथ स्वप्नसमा विदितार्थजनैः ॥ १ ॥” (श्रु २०४, २०६) ।

बुद्धदेव और उसके सारथी की आपस में बातचीत —

“एषो हि देव पुरुषो जरयामिभूतः, क्षीणेन्द्रिय सुदु खितो बलवीर्यहीनः ।

बन्धुजनेन परिभूत अनाथभूत, कार्यसमर्थ अपविद्ध बनेव दाह ॥

कुलधर्म एव अयमस्य हि त्व भणाहि, अयवापि सर्वजगतोऽस्य इयं ह्यवस्था ।

शीघ्रं भणाहि वचनं यथभूतमेतत्, श्रुत्वा तथार्थमिह योनि सचिन्तयिष्ये ॥

नैतस्य देव कुलधर्मं न राष्ट्रधर्मं, सर्वे जगस्य जर यौवन धर्पयाति ।

तुम्यपि मातृपितृबान्धवजातिसंघो, जरया अमुक्त नहि अन्यगतिर्जनस्य ॥

धिक् सारथे श्रवणबालजनस्य बुद्धिर्यद् यौवनेन मदमत्त जरा न पश्ये ।

आवर्तयस्विह रथं पुनरहं प्रवेक्ष्ये, किं महा क्रीडरतिभिर्जरया श्रितस्य ॥”

संस्कृत पर प्राकृत का प्रभाव

पहले जो यह कहा जा चुका है कि वैदिक काल के मध्यदेश-प्रचलित प्राकृत से ही वैदिक संस्कृत उत्पन्न हुआ है और वह साहित्य और व्याकरण के द्वारा क्रमशः माजित और नियन्त्रित होकर अन्त में लौकिक संस्कृत में परिणत हुआ है; एवं प्राकृत के अन्तर्गत समस्त तत्सम शब्द संस्कृत से नहीं, परन्तु प्रथम स्तर के प्राकृत से ही संस्कृत में और द्वितीय स्तर के प्राकृत में आये हैं, प्राकृत के अन्तर्गत तद्भव शब्द भी संस्कृत से प्राकृत में गृहीत न होकर प्रथम स्तर के प्राकृत से ही क्रमशः परिवर्तित होकर परवर्ती काल के प्राकृत में स्थान पाये हैं और संस्कृत व्याकरण-द्वारा नियन्त्रित होने से वे शब्द संस्कृत में अपरिवर्तित रूप में ही रह गये हैं, इसी तरह प्राकृत के अधिकांश देशी-शब्द भी वैदिक काल के मध्यदेश-भिन्न अन्यान्य प्रदेशों के आर्य-उपनिवेशों की प्राकृत-भाषाओं से ही बाद की प्राकृत-भाषाओं में आये हैं; इससे उन्होंने (देशी शब्दों ने) मध्यदेश के प्राकृत से उत्पन्न वैदिक और लौकिक संस्कृत में कोई स्थान नहीं पाया है । इस पर से यह सहज ही समझा जा सकता है कि प्राकृत ही संस्कृत भाषा का मूल है ।

अब इस जगह हम यह बताना चाहते हैं कि प्राकृत से न केवल वैदिक और लौकिक संस्कृत भाषाएँ उत्पन्न ही हुई हैं, बल्कि संस्कृत ने मृत होकर साहित्य-भाषा में परिणत होने पर भी अपनी अग-पुष्टि के लिए प्राकृत से ही अनेक शब्दों का संग्रह किया है । ऋग्वेद आदि में प्रयुक्त वक्र (वक्र), वहू (वधू), मेह (मेघ), पुराण (पुरातन), तित्तउ (चालनी), उच्छेक (उत्सेक), प्रभृति शब्द और लौकिक संस्कृत में प्रचलित तित्तउ (चालनी), आवुत्त (भगिनीपति), खुर (क्षुर), गोखुर (गोक्षुर), गुग्गुलु (गुल्लुलु), छुरिका (क्षुरिका), अच्छ (ऋष), कच्छ (कक्ष), पियाल (प्रियाल), गह (गरह), चन्दिर (चन्द्र), इन्दिर (इन्द्र), शिथिल (शय), मरन्द (मकरन्द), किसल (किसलय), हाळा (सुराविशेष), हेवाक (व्यसन), दाढा (दण्डा), खिडकिका (लघुद्वार, भाषा में खिडकी), जारुज (जरायुज), पुराण (पुरातन) वगैरह शब्द प्राकृत

से ही अविकल रूप में गृहीत हुए हैं और मारिप (माप), जहिष्यमि (हास्यमि), ब्रूमि (ब्रवमि), निकृन्तन (निकर्तन), लटभ (सुन्दर), प्रभृति प्राकृत के ही मूल शब्द माजित कर संस्कृत में लिए गए हैं ।

प्राकृत-भाषाओं का उत्कर्ष

कोई भी कथ्य भाषा क्यों न हो, वह सर्वदा ही पारवतन-शील होती है । साहित्य और व्याकरण उसको नियम के बन्धन में जकड़कर गति-हीन और अपरिवर्तनीय करते हैं । उसका फल यह होता है कि साहित्य की भाषा क्रमशः कथ्य भाषा से भिन्न हो जाती है और जन-साधारण में अप्रचलित मृत-भाषा में परिणत होती है । साहित्य की हरकोई भाषा एक समय की कथ्य भाषा से ही उत्पन्न होती है और वह जब मृत-भाषा में परिणत होती है तब कथ्य भाषा से फिर एक नयी साहित्य की भाषा की सृष्टि होती है । इस तरह एक समय की कथ्य भाषा से ही वैदिक और लौकिक संस्कृत उत्पन्न हुई थी और वह साधारण के पक्ष में दुर्वोध होने पर अर्धमागधी, पालि आदि प्राकृत भाषाओं ने साहित्य में स्थान पाया था । ये सब प्राकृत-भाषाएँ भी समय पाकर जन-साधारण में दुर्वोध हो जाने पर संस्कृत की तरह मृत-भाषा में परिणत हो गईं और भिन्न-भिन्न प्रदेश की अपभ्रंश-भाषाएँ साहित्य-भाषाओं के रूप में व्यवहृत होने लगीं । अपभ्रंश-भाषाएँ भी जब दुर्वोध होकर मृत-भाषाओं में परिणत हो चलीं तब हिन्दी, बंगला, गुजराती, मराठी प्रभृति आधुनिक आर्य कथ्य भाषाएँ साहित्य की भाषाओं के रूप में गृहीत हुई हैं । उक्त समस्त कथ्य भाषाएँ उस-उस युग की साहित्य की मृत-भाषाओं की तुलना में अवश्य ऐसे कतिपय उत्कर्षों से विशिष्ट होनी चाहिए जिनकी वदौलत ही ये उस-उस समय की मृत-भाषाओं को साहित्य के सिंहासन से च्युत कर उस सिंहासन को अपने अधिकार में कर पायी थीं । अब यहाँ हमें यह जानना जरूरी है कि ये उत्कर्ष कौन थे ?

हरकोई भाषा का सर्व-प्रथम उद्देश्य होता है अर्थ-प्रकाश । इसलिए जिस भाषा के द्वारा जितने स्पष्ट रूप से और जितने अल्प प्रयास से अर्थ-प्रकाश किया जाय वह उतना ही उत्कृष्ट भाषा मानी जाती है । इन दो कारणों के वश होकर ही भाषा का निरन्तर परिवर्तन साधित होता है और भिन्न-भिन्न काल में भिन्न-भिन्न कथ्य-भाषाओं से नयी-नयी साहित्य भाषाओं की उत्पत्ति होती है । वैदिक संस्कृत क्रमशः लुप्त होकर लौकिक संस्कृत की उत्पत्ति उक्त दो कारणों से ही हुई थी । वैदिक शब्द-समूह अप्रचलित होने पर उसके अनावश्यक प्रकृति और प्रत्ययों को वाद देकर जो सहज ही समझ में आ सकें वेसी प्रकृति और प्रत्ययों का संग्रह कर वैदिक भाषा से लौकिक संस्कृत की उत्पत्ति हुई थी । संस्कृत-भाषा के प्रकृति-प्रत्यय काल-क्रम से अप्रचलित होकर जब दुःख-बोध्य हो उठे तब उस समय की कथ्य भाषाओं से ही स्पष्टार्थक, सुखोच्चारण-योग्य, मधुर और कोमल प्रकृति-प्रत्ययों का संग्रह कर संस्कृत के अनावश्यक, दुर्वोध, कष्टोच्चारणीय, कठोर और कर्कश प्रकृति-प्रत्यय-सन्धि-समासों का वर्जन कर अर्धमागधी, पालि और अन्यान्य प्राकृत-भाषाएँ साहित्य-भाषाओं के रूप में व्यवहृत होने लगीं । यदि इन सब नूतन साहित्य-भाषाओं में संस्कृत की अपेक्षा अर्थ-प्रकाश की अधिक शक्ति, अल्प आयास से और सुख से उच्चारण-योग्यता प्रभृति गुण न होते तो ये कर्म भी संस्कृत जैसी समृद्ध भाषा को साहित्य के सिंहासन से च्युत करने में समर्थ न होतीं । काल-क्रम से ये सब प्राकृत-साहित्य-भाषाएँ भी जब व्याकरण-द्वारा नियन्त्रित होकर अप्रचलित और जन-साधारण में दुर्वोध हो चलीं तब उस समय प्रचलित प्रादेशिक अपभ्रंश भाषाओं ने इनको हटाकर साहित्य-भाषाओं का स्थान अपने अधिकार में किया । यहाँ पर यह प्रश्न हो सकता है कि साहित्य की प्राकृत-भाषाओं की अपेक्षा इन अपभ्रंश-भाषाओं में वह कौन-सा गुण था जिससे ये अपने पहले की प्राकृत साहित्य-भाषाओं को परास्त कर उनके स्थान को अपने अधिकार में कर सकीं ? इसका उत्तर यह है कि कोई भी गुण चरम सीमा में पहुँच जाने पर फिर वह गुण ही नहीं रहने पाता, वह दोष में परिणत हो जाता है । संस्कृत की अपेक्षा प्राकृत-भाषाओं में यह उत्कर्ष था कि इनमें संस्कृत के कर्कश और कष्टोच्चारणीय असंयुक्त और संयुक्त व्यञ्जन वर्णों के स्थान में सब कोमल और सुखोच्चारणीय वर्ण व्यवहृत होते थे । किन्तु इस गुण की भी सीमा है, महाराष्ट्री-प्राकृत में यह गुण सीमा का अतिक्रम कर गया, यहाँ तक कि संस्कृत के अनेक व्यञ्जनों का एकदम हाँ लोप कर उनके स्थान में स्वर-वर्णों की परम्परा-द्वारा समस्त शब्द गठित होने लगे । इससे इन शब्दों के उच्चारण सुख-साध्य होने के बदले अधिकतर कष्टसाध्य हुए, क्योंकि बीच-बीच में व्यञ्जन-वर्णों से व्यवहृत न होकर केवल स्वर-परम्परा का उच्चारण करना कष्टकर होता है । इस तरह प्राकृत-भाषा महाराष्ट्री-प्राकृत में आकर जब इस चरम अवस्था में उपनीत हुई तबसे ही इसका पतन अनिवार्य हो उठा । इसकी प्रतिक्रिया-

स्वरूप अपभ्रंश-भाषाओं में नूतन व्यञ्जन वर्ण बैठ कर सुखोच्चारण-योग्यता करने की चेष्टा हुई। इसका फल यह हुआ कि प्रादेशिक अपभ्रंश-भाषाएँ साहित्य की भाषाओं के रूप में उन्नीत हुईं। आधुनिक प्रादेशिक आर्य-भाषाएँ भी प्राकृत भाषाओं के उस दोष का पूर्ण संशोधन करने के लिए नूतन सस्कृत शब्दों को ग्रहण कर अपभ्रंशों के स्थान को अपने अधिकार में करके नवीन साहित्य-भाषाओं के रूप में परिणत हुईं। आधुनिक आर्य-भाषाओं में पूर्व-वर्ती प्राकृतों और अपभ्रंशों की अपेक्षा उत्कर्ष यह है कि इन्होंने शब्दों के सम्बन्ध में प्राकृत और सस्कृत को मिश्रित कर उभय के गुणों का एक सुन्दर सामञ्जस्य किया है। इनके तद्भव और देश्य शब्दों में प्राकृत की कोमलता और मधुरता है और तत्सम शब्दों में संस्कृत की ओजस्विता। आधुनिक आर्य-भाषाओं में सस्कृत और प्राकृत दोनों की अपेक्षा उत्कर्ष यह है कि ये सस्कृत और प्राकृतों के अनावश्यक लिंग, वचन और विभक्तियों के भेदों का वर्जन कर, उनके बदले भिन्न भिन्न स्वतन्त्र शब्दों के द्वारा लिंग, वचन और विभक्तियों के भेदों को प्रकाशित कर और सस्कृत तथा प्राकृतों के विभक्ति-बहुल स्वभाव का परित्याग कर विश्लेषण-शील-भाषा में परिणत हुई हैं। इस तरह इन भाषाओं ने अल्प आयास से वक्ता के अर्थ को अधिकतर स्पष्ट रूप में प्रकाशित करने का मार्ग-प्रदर्शन किया है। उक्त गुणों के कारण ही आधुनिक आर्य-भाषाओं ने वैदिक, सस्कृत, प्राकृत और अपभ्रंश इन सब साहित्य-भाषाओं के स्थान पर अपना अधिकार जमाया है।

सस्कृत की अपेक्षा प्राकृत-भाषाओं में जो उत्कर्ष—गुण ऊपर बताये हैं वे अनेक प्राचीन ग्रन्थकारों ने पहले ही प्रदर्शित किये हैं। उनके ग्रन्थों से, प्राकृत के उत्कर्ष के संबन्ध में, कुछ वचन यहाँ पर उद्धृत किए जाते हैं —

^१“अभिभं पाउम-कव पठिउं सोळं च जे ए आणंति ।

कामस्स तत्त-तत्ति कुणंति, ते कह ए लज्जति ? ॥ (हाल की गाथासप्तशती १, २) ।

अर्थात् जो लोग अमृतोपम प्राकृत-काव्य को न तो पढ़ना जानते हैं और न सुनना जानते हैं अथवा काम-तत्त्व की आलोचना करते हैं उनको शरम क्यों नहीं आती ?

^२‘उम्मिल्लइ लायएणं पयय-च्छायाए सक्कय-वयाणं ।

सक्कय सक्काक्करिसणेण पययस्सवि पहावो ॥’ (वाक्पतिराज का गउडवहो ६५) ।

सस्कृत शब्दों का लावण्य प्राकृत को छाया से ही व्यक्त होता है, सस्कृत-भाषा के उत्कृष्ट संस्कार में भी प्राकृत का प्रभाव व्यक्त होता है।

^३‘एवमत्थ-दसणं सनिवेश-सिसिरागो वव-रिद्धोओ ।

अविरलमिणमो आभुवण-वंधमिह एवर पययम्मि ॥’ (गउडवहो ७२) ।

सृष्टि के प्रारम्भ से लेकर आजतक प्रचुर परिमाण में नूतन नूतन अर्थों का दर्शन और सुन्दर रचनावाली प्रवन्ध-संपत्ति कहीं भी है तो वह केवल प्राकृत में ही।

^४‘हरिस-विसेसो वियसावओ य मउलावओ य अन्धोण ।

इह वहि-हुतो अंतो-मुहो य हिययस्स विप्फुरइ ॥’ (गउडवहो ७४) ।

प्राकृत-काव्य पढ़ने के समय हृदय के भीतर और बाहर एक ऐसा अभूत-पूर्व हर्ष होता है कि जिससे दोनों आँखें एक ही साथ विकसित और मुद्रित होती हैं।

^५‘परुसो सक्कअ-वंधो पाउअ वंधोवि होइ सुउमारो ।

पुरिस-महिलाणं जेत्तिअमिहत्तर तेत्तिअमिमाण ॥’ (राजशेखर की कर्पूरकञ्जरी, अङ्क १) ।

सस्कृत-भाषा कर्कश और प्राकृत भाषा सुकुमार है। पुरुष और महिला में जिनना अन्तर है, इन दो भाषाओं में भी उतना ही प्रभेद है।

१ प्रमृत प्राकृत काव्य पठितुं श्रोतुं च ये न जानन्ति । कामस्यतत्त्वचिन्ता कुर्वन्ति, ते कथं न लज्जन्ते ? ॥

२. उन्मीलति लावण्यं प्राकृतच्छायाया सस्कृतपदानाम् । सस्कृतसंस्कारोत्कर्षणेन प्राकृतस्यापि प्रभावः ॥

३. नवामार्थदर्शनं सनिवेशशिशिरा बन्धद्वयम् । अविरलमिदमाभुवनबन्धमिह केवलं प्राकृते ॥

४. हर्षविशेषो विकासको मुकुलीकारकश्चाश्च । इह बहिर्मुखोऽन्तर्मुखश्च हृदयस्य विस्फुरति ॥

५. परुष सस्कृतबन्धं प्राकृतबन्धस्तु भवति सुकुमारः । पुरुषमहिलयोर्याविद्विहान्तरं तावदनयोः ॥

‘गिर श्रव्या दिव्या प्रकृतिमधुरा प्राकृतगिर ।

सुभव्योऽपभ्रंश सरसरचनं भूतवचनम् ।’ (राजशेखर का बालरामायण १, ११) ।

संस्कृत-भाषा सुनने योग्य है, प्राकृत भाषा स्वभाव-मधुर है, अपभ्रंश भाषा भव्य है और पैशाची-भाषा की रचना रस-पूर्ण है ।

‘सक्कय-कव्वस्सत्थं जेण न याणति मद-बुद्धीया ।

सव्वाणवि सुह-वोहं तेणेम पायय रइय ॥

गुढत्थ-देसि-रहियं सुललिय-वन्नोहि विरइयं रम्मं ।

पायय-कव्व लोए कस्स न हिययं सुहावेइ ? ॥ (महेश्वरमूरि का पञ्चमीमाहात्म्य) ।

सामान्य मनुष्य संस्कृत-काव्य के अर्थ को समझ नहीं पाते हैं । इसलिए यह ग्रन्थ उस प्राकृत-भाषा में रचा जाता है जो सब लोगों को सुख-बोध है ।

गूढार्थक देशी-शब्दों से रहित और सुललित पदों में रचा हुआ सुन्दर प्राकृत-काव्य किसके हृदय को सुखी नहीं करता ?

‘उज्झउ मक्कय-कव्व सक्कय-कव्व च निम्मिय जेण ।

वस-हरं व पलित तडयडतट्टत्तणं कुणइ ॥’

(वज्जालग (?) से अपभ्रंशकाव्यश्रयी की प्रस्ता०, पृष्ठ ७६ में उद्धृत) ।

संस्कृत-काव्य को छोड़ो और जिसने संस्कृत काव्य की रचना की उसका भी नाम मत लो, क्योंकि वह (संस्कृत) जलने हुए बॉस के घर की तरह ‘तड़ तड़ तड़’ आवाज करता है—श्रुतिकटु लगता है ।

‘पाइअ-कव्वम्मि रसो नो जायइ तह व छेय-भणिएहि ।

उययस्स य वासिय-सीयलस्स तित्ति न वच्चामो ॥

ललिए महुवरक्खरेण जुवई-यण-वल्लहे स-सिगारे ।

सते पाइय-कव्वे को सकइ सकयं पढिउं ? ॥” (जयवल्लभ का बज्जालग, पृष्ठ ६)

प्राकृत-भाषा की कविता में और विदग्ध के वचनों में जो रस आता है उससे, वासी और शीतल जल की तरह, तृप्ति नहीं होती है—मन कभी ऊबता नहीं है—उत्कण्ठा निरन्तर बनी ही रहती है ।

जब सुन्दर, मधुर, शृङ्गार-रस-पूर्ण और युवतियों को प्रिय ऐसा प्राकृत-काव्य मौजूद है तब संस्कृत पढ़ने को कौन जाता है ?

१ संस्कृतकाव्यम्यार्थं येन न जानन्ति मन्दबुद्धयः । सर्वेषामपि सुखबोधे तेनेदं प्राकृतं रचितम् ॥

गूढार्थदेशीरहितं सुललितवर्णैर्विरचितं रम्यम् । प्राकृतकाव्यं लोके कस्य न हृदयं सुखयति ? ॥

२ उज्झयता संस्कृतकाव्यं संस्कृतकाव्यं च निर्मितं येन । वशगृहमिव प्रदीप्तं तडतडतट्टत्वं करोति ॥

३. प्राकृतकाव्ये रसो यो जायते तथा वा छेयमणितैः । उदकस्य च वासितशीतलस्य तृप्तिं न व्रजामः ॥

ललिते मधुराक्षरके युवतिजनवल्लभे सशृङ्गारे । सति प्राकृतकाव्ये कः प्लवङ्गते संस्कृतं पठितुम् ? ॥

इस कोष में स्वीकृत पद्धति

१. प्रथम काले टाइपो में क्रम से प्राकृत शब्द, उसके बाद सादे टाइपो में उस प्राकृत शब्द के लिङ्ग आदि का संक्षिप्त निर्देश, उसके पश्चात् काले कोष्ठ (ब्राकेट) में काले टाइपो में प्राकृत शब्द का संस्कृत प्रतिशब्द, उसके अनन्तर सादे टाइपो में हिन्दी भाषा में अर्थ और तदनन्तर सादे टाइपो में ब्राकेट में प्रमाण (रेफरेंस) का उल्लेख किया गया है।
२. शब्दों का क्रम नागरी वर्ण-माला के अनुसार इस तरह रखा गया है.—अ, आ, इ, ई, उ, ऊ, ए, ऐ, ओ, औ, अं, क, ख, ग आदि। इस तरह अनुस्वार के स्थान की गणना संस्कृत-कोषों की तरह पर-सवर्ण अनुनासिक व्यञ्जन के स्थान में न कर अन्तिम स्वर के बाद और प्रथम व्यञ्जन के पूर्व में ही करने का कारण यह है कि संस्कृत की तरह प्राकृत में व्याकरण की दृष्टि से भी अनुस्वार के स्थान में अनुनासिक का होना कही भी अनिवार्य नहीं है और प्राचीन हस्त-लिखित पुस्तकों में प्रायः सर्वत्र अनुस्वार का ही प्रयोग पाया जाता है।
३. प्राकृत शब्द का प्रयोग विशेष रूप से आप्रं (अर्धमागधी) और महाराष्ट्री भाषा के अर्थ में और सामान्य रूप से आप्रं से लेकर अपभ्रंश भाषा तक के अर्थ में किया जाता है। प्रस्तुत कोष के 'प्राकृत-शब्द-महाराष्ट्र' नाम में प्राकृत-शब्द सामान्य अर्थ में ही गृहीत हैं। इन्होंने यहाँ आप्रं, महाराष्ट्री, शौरसेनी, अशोक-शिलालिपि, देश्य, मागधी, पैशाची, चूलिकापैशाची तथा अपभ्रंश भाषाओं के शब्दों का संग्रह किया गया है। परन्तु प्राचीनता और साहित्य की दृष्टि से इन सब भाषाओं में आप्रं और महाराष्ट्री का स्थान ऊँचा है। इससे इन दोनों के शब्द यहाँ पूर्ण रूप से लिए गये हैं और शौरसेनी आदि भाषाओं के प्रायः उन्हीं शब्दों को स्थान दिया गया है जो या तो प्राकृत (आप्रं और महाराष्ट्री) से विशेष भेद रखते हैं अथवा जिनका प्राकृत रूप नहीं पाया गया है, जैसे—'प्येव', 'विधुव', 'संपाद-इत्तम', 'संभावीमदि' वगैरह। इस भेद की पहिचान के लिए प्राकृत से इतर भाषा के शब्दों और आख्यात-कृदन्त के रूपों के आगे सादे टाइपो में कोष्ठ में उस उस भाषा का संक्षिप्त नाम-निर्देश कर दिया गया है, जैसे ^३ '(शौ)', '(मा)' इत्यादि। परन्तु शौरसेनी आदि में भी जो शब्द या रूप प्राकृत के ही समान हैं वहाँ ये भेद-दर्शक चिह्न नहीं दिए गए हैं।
 - (क) आप्रं और महाराष्ट्री से शौरसेनी आदि भाषाओं के जिन शब्दों में सामान्य (सर्व-शब्द-साधारण) भेद है उनको इस कोष में स्थान देकर पुनरावृत्ति-द्वारा ग्रन्थ के कलेवर को विशेष बढाना इसलिए उचित नहीं समझा गया है कि वह सामान्य भेद प्राकृत-भाषाओं के साधारण अभ्यासी से भी अज्ञात नहीं है और वह उपोद्घात में भी उस उस भाषा के लक्षण-प्रसङ्ग में दिखा दिया गया है जिससे वह सहज ही ख्याल में आ सकता है।
 - (ख) आप्रं और महाराष्ट्री में भी परस्पर उल्लेखनीय भेद है। तिस पर भी यहाँ उनका भेद-निर्देश न करने का एक कारण तो यह है कि इन दोनों में इतर भाषाओं से अपेक्षा-कृत समानता अधिक है, दूसरा, प्रकृति की अपेक्षा प्रत्ययों में ही विशेष भेद है जो व्याकरण से सम्बन्ध रखता है, कोष से नहीं, तीसरा, जैन ग्रंथकारों ने महाराष्ट्री-अर्थों में भी आप्रं प्राकृत के शब्दों का अविकल रूप में अधिक व्यवहार कर उनको महाराष्ट्री का रूप दे दिया है ^४।
४. प्राकृत में यश्रुतिवाला ^५ नियम खूब ही अव्यवस्थित है। प्राकृत-प्रकाश, सेतुबन्ध, गाथासप्तशती और प्राकृतपिंगल आदि में इस नियम का एकदम अभाव है जबकि आप्रं, जैन महाराष्ट्री तथा गजबहो-प्रभृति ग्रन्थों में इस नियम का हृद से ज्यादा आदर देखा जाता है, यहाँ तक कि एक ही शब्द में कही तो यश्रुति है और कही नहीं, जैसे 'पअ' और 'पय', 'लोअ' और 'लोय'। इस कोष में ऐसे शब्दों की पुनरावृत्ति न कर कोई भी (यश्रुतिवाले 'य', से रहित या सहित) एक ही शब्द लिया गया है। इससे क्रम तथा इतर समान शब्द की

१. देखो प्राकृतप्रकाश, सूत्र ४, १४, १७, हेमचन्द्र-प्राकृत-व्याकरण, सूत्र १, २५, और प्राकृतसर्वस्व, सूत्र, ४, २३ आदि।

२. प्राकृतमर्वस्व (पृष्ठ १-३) आदि में इनसे अतिरिक्त और भी प्राच्या, शाकारि आदि अनेक उपभेद बताए गए हैं, जिनका समावेश यहाँ शौरसेनी आदि इन्हीं मुख्य भेदों में यथास्थान किया गया है।

३. इन संक्षिप्त नामों का विवरण सकेत-सूची में देखिए।

४. इसी से डॉ. पिशल् आदि पाश्चात्य विद्वानों ने आप्रं-भिन्न जैन प्राकृत-ग्रन्थों की भाषा को 'जैन महाराष्ट्री' नाम दिया है। देखो डॉ. पिशल् का प्राकृतव्याकरण और डॉ. टेसेटोरी की उपदेशमाला की प्रस्तावना।

५. हेमचन्द्र-प्राकृत व्याकरण का सूत्र १, १८०।

तुलना की सुविधा के लिए आवश्यकतानुरूप कहीं कहीं रेफरेंसवाले शब्द के 'अ' के स्थान में 'य' और 'य' की जगह 'अ' किया गया है।

आपं ग्रन्थों में यधुतिवाले 'य' की तरह 'त' का प्रयोग भी बहुत ही पाया जाता है, जैसे 'अय' (अज) के स्थान में 'अत', 'अईअ' (अतीत) की जगह 'अतीय' आदि। ऐसे शब्दों की भी इस कोष में बहुधा पुनरावृत्ति न करके त-वर्जित शब्दों की ही विशेष रूप से स्थान दिया गया है।

६. संयुक्त शब्दों को उनके क्रमिक स्थान में अलग न देकर मूल (पूर्व भागवाले) शब्द के भीतर ही उत्तर भागवाले शब्द अकारादि क्रम से काले टाइपो में दिए गए हैं और उसके पूर्व (ऊर्ध्व बिन्दी) का चिह्न दिया गया है। ऐसे शब्द का सस्कृत प्रतिशब्द भी काले टाइपो में चिह्न दे कर दिए गए हैं। विशेष स्थानों में पाठकों की सुगमता के लिए संयुक्त शब्द उसके क्रमिक स्थान में अलग भी बतलाये गए हैं और उसके अर्थ तथा रेफरेंस के लिए मूल शब्द में जहाँ वे दिए गए हैं, देखने की सूचना की गई है।

(क) इन संयुक्त शब्दों में जहाँ 'देखो'— से जिस शब्द को देखने को कहा गया है वहाँ उस शब्द के उसी मूल शब्द के भीतर देखना चाहिए न कि अन्य शब्द के अन्दर।

७. त, तण (त्व), आ, या (तल्), अर, यर, तराग (तर), अम, तम (तम) आदि सुगम और सर्वत्र-साधारण प्रत्ययवाले शब्दों में प्रत्ययों को छोड़कर केवल मूल शब्द ही यहाँ लिए गए हैं। परन्तु जहाँ ऐसे प्रत्ययों में रूप आदि की विशेषता है वहाँ प्रत्यय-सहित शब्द भी लिए गए हैं।

८. धातुओं के सब रूप सादे टाइपो में और कृदन्तों के रूप काले टाइपो में धातु के भीतर दिए गए हैं।

(क) भाव तथा कर्म-कर्तरि रूपों का निर्देश भी धातु के भीतर 'कर्म—' से ही किया गया है।

(ख) भूत कृदन्त के रूप तथा अन्य ग्राह्यात तथा कृदन्त के विशिष्ट रूप बहुधा अलग अलग अपने क्रमिक स्थान में दिए गए हैं।

९. जिन सस्करणों से शब्द-संग्रह किया गया है उनमें रही हुई संपादन की या प्रेस की भूलों को सुवार कर शुद्ध शब्द ही यहाँ दिए गए हैं। पाठकों के ज्ञानार्थ साधारण भूलों को छोड़कर विशेष भूलवाले पाठ रेफरेंस के उल्लेख के अनन्तर-पूर्व में ज्यों के त्यों उद्धृत भी किये गए हैं और भूलवाले भाग की शुद्धि कौश में '१' (शङ्काचिह्न) के बाद बतला दी गई है, जैसे देखो क्षोब्ध, वृब्ध आदि शब्द।

(क) जहाँ भिन्न भिन्न ग्रंथों में या एक ही ग्रंथ के भिन्न भिन्न स्थानों में या सस्करणों में एक ही शब्द के अनेक संदिग्ध रूप पाये गए हैं और जिनके शुद्ध रूप का निर्णय करना कठिन जान पड़ा है वहाँ पर ऐसे रूपवाले सब शब्द इस कोष में यथास्थान दिए गए हैं और तुलना के लिए ऐसे प्रत्येक शब्द के अन्त भाग में 'देखो—' लिख कर इतर रूप भी सूचाया गया है, जैसे देखो 'पुक्खलच्छिभय, पोक्खलच्छिलय', 'पेसल, पेसलेस, 'भयालि, सयालि' आदि शब्द।

१०. एक ही ग्रंथ के एक या भिन्न भिन्न सस्करणों के अथवा भिन्न भिन्न ग्रंथों के पाठ-भेदों के सभी शुद्ध शब्द इस कोष में यथास्थान दिए गए हैं, जैसे—परिजुसिय (भगवतीसूत्र २५—पत्र ६२३) और परिभुसिय (भग २५ टी—पत्र ६२५), णिविदेज्ज (भा. मा. का सूत्रकृताग १, २, ३, १२) और णिविदेज्ज (भा. स. का सूत्रकृताग १, २, ३, १२), पविरल्लिय (भा. स. का प्रश्नव्याकरण १, ५—पत्र ६१) और पवित्थरिह्ल (अभिधानराजेन्द्र का प्रश्नव्याकरण १, ५), सामकोट्ट (समवायाग-सूत्र, पत्र १५३) और सामिकुट्ट प्रवचनसारोद्धार, द्वार ७) प्रसूति।

११. सस्कृत की तरह प्राकृत में भी कम से कम शब्द के आदि के 'व' तथा 'व' के विषय में गहरा मत-भेद है। एक की शब्द कहीं वकारादि पाया जाता है तो कहीं वकारादि। जैसे भगवतीसूत्र में 'वत्थि' हैं तो विपाकश्रुत में 'वत्थि' छपा है। इससे ऐसे शब्दों की दोनों स्थानों में न देकर जो 'व' या 'व' उचित जान पड़ा है उसी एक स्थल में वह शब्द दिया गया है और उभय प्रकार के शब्दों के रेफरेंस भी वहाँ ही दिये गये हैं। हाँ, जहाँ दोनों अक्षरों के अस्तित्व का स्पष्ट रूप से उल्लेख पाया गया है वहाँ दोनों स्थलों में वह शब्द दिया गया है, जैसे 'वप्फाउल' और 'वप्फाउल' आदि।

१२. लिङ्गादि-बोधक संज्ञित शब्द प्राकृत शब्द से ही सवन्व रखते हैं, सस्कृत-प्रतिशब्द से नहीं।

(क) जहाँ अर्थ-भेद में लिङ्ग आदि का भी भेद है वहाँ उस अर्थ के पूर्व में ही भिन्न लिङ्ग आदि का सूचक शब्द दे दिया गया है। जहाँ ऐसा भिन्न शब्द नहीं दिया है वहाँ उसके पूर्व के अर्थ या अर्थों के समान ही लिङ्ग आदि समझना चाहिए।

(ख) प्राकृत में लिंग-विधि खूब ही अनियमित है। प्राकृत वैयाकरणों ने भी कुछ अति सक्षिप्त परन्तु व्यापक सूत्रों के द्वारा इस बात का स्पष्ट उल्लेख किया है। प्राचीन ग्रंथों में एक ही शब्द का जिस-जिस लिंग में योग जहाँ तक हमें दृष्टिगोचर हुआ है, उस-उस लिंग का निर्देश इस कोष में उस शब्द के पास कर दिया गया है। जहाँ लिंग में विशेष विलक्षणता पाई गई है वहाँ उस ग्रंथ का अवतरण भी दे दिया गया है।

(ग) जहाँ स्त्रीलिंग का विशेष रूप पाया गया है वहाँ उस अर्थ के बाद 'स्त्री—' निर्देश करके रेफरेंस के साथ दिया गया है।

(घ) प्राकृत में अनेक ग्रंथों में अव्यय के बाद विभक्ति का प्रयोग पाया जाता है। इससे ऐसे स्थानों में अव्यय-सूचक 'अ' के बाद प्रायः लिंग बोधक शब्द भी दिया गया है, जैसे 'बला' के बाद 'अ. स्त्री' = (अव्यय तथा स्त्रीलिंग)।

१३. देश्य शब्दों के संस्कृत-प्रतिशब्द के स्थान में केवल देश्य का सक्षिप्त रूप 'दे' ही काले टाइपो में कोष्ठ में दिया गया है।

(क) जो धातु वास्तव में देश्य होने पर भी प्राकृत के प्रसिद्ध-प्रसिद्ध व्याकरणों में संस्कृत धातु के आदेश कह कर तद्भव बतलाये गये हैं उनके संस्कृत-प्रतिशब्द के स्थान में 'दे' न देकर प्राचीन वैयाकरणों की मान्यता बतलाने के उद्देश्य से वे वे आदेशित संस्कृत रूप ही दिये गये हैं। इससे संस्कृत से विलकुल विसदृश रूपवाले इन देश्य धातुओं को वास्तविक तद्भव समझने की भूल कोई न करे।

(ख) जो धातु तद्भव होने पर भी प्राकृत-व्याकरणों में उसको अन्य धातु का आदेश बतलाया गया है उस धातु के व्याकरण-प्रदर्शित आदेशित संस्कृत रूप के बाद वास्तविक संस्कृत रूप भी दिखलाया गया है यथा पेच्छ के [दृश्, प्र + ईक्ष्] आदि।

(ग) प्राचीन ग्रंथों में जो शब्द देश्य रूप से माना गया है परन्तु वास्तव में जो देश्य न होकर तद्भव ही प्रतीत होता है, ऐसे शब्दों का संस्कृत-प्रतिशब्द दिया गया है और प्राचीन मान्यता बतलाने के लिए संस्कृत प्रतिशब्द के पूर्व में 'दे' दिया गया है।

(घ) जो शब्द वास्तव में देश्य ही है, परन्तु प्राचीन व्याख्याकारों ने उसको तद्भव बतलाते हुए उसके जो परिमार्जित—छिल-छाल कर बनाये हुए संस्कृत—रूप अपने ग्रंथों में दिये हैं, परन्तु जो संस्कृत-कोषों में नहीं पाये जाते हैं, ऐसे संस्कृत-प्रतिरूपों को यहाँ स्थान न देते हुए केवल 'दे' ही दिया गया है।

(ङ) जो शब्द देश्य रूप से सदिग्ध है उसके प्रतिशब्द के पूर्व में 'दे' भी दिया है।

१४. प्राचीन व्याख्याकारों के दिये हुए संस्कृत-प्रतिशब्द से भी जो अधिक समानतावाला संस्कृत प्रतिशब्द है वही यहाँ पर दिया गया है, जैसे 'एहाणिय' के प्राचीन प्रतिशब्द 'स्नापित' के बदले 'स्नानित'।

१५. अनेक अर्थवाले शब्दों के प्रत्येक अर्थ १, २, ३ आदि अंकों के बाद क्रमशः दिये गये हैं और प्रत्येक अर्थ के एक या अनेक रेफरेंस उन अर्थ के बाद सादे ब्राकेट में दिये हैं।

(क) धातु के भिन्न-भिन्न रूपवाले रेफरेंसों में जो-जो अर्थ पाये गये हैं वे सब १, २, ३ के अंकों से देकर क्रमशः धातु के आख्यात तथा कृदन्त के रूप दिये गये हैं और उस-उस रूपवाले रेफरेंस का उल्लेख उसी रूप के बाद ब्राकेट में कर दिया गया है।

(ख) जिन शब्द का अर्थ वास्तव में सामान्य या व्यापक है, किन्तु प्राचीन ग्रंथों में उसका प्रयोग प्रकरण-वश विशेष या संकीर्ण अर्थ में हुआ है, ऐसे शब्द का सामान्य या व्यापक अर्थ ही इस कोष में दिया गया है, यथा—'हृत्विच्ग' का प्रकरण-वश होता 'हाथ के योग्य आभूषण' यह विशेष अर्थ यहाँ पर न देकर 'हाथ सम्बन्धी' यह सामान्य अर्थ ही दिया गया है। 'एकलक्षत् (नाक्षत्र)' आदि तद्धितान्त शब्दों के लिए भी यही नियम रखा गया है।

१६. शब्द-रूप, लिंग, अर्थ की विशेषता या मुभापित की दृष्टि से जहाँ अवतरण देने की आवश्यकता प्रतीत हुई है वहाँ पर वह, पर्याप्त अंश में, अर्थ के बाद और रेफरेंस के पूर्व में दिया गया है।

(क) अवतरण के बाद कोष्ठ में जहाँ अनेक रेफरेंसों का उल्लेख है वहाँ पर केवल सर्व-प्रथम रेफरेंस का ही अवतरण से संबन्ध है, शेष का नहीं।

१७. एक ही ग्रंथ के जिन अनेक संस्करणों का उपयोग इस कोष में किया गया है, रेफरेंस में माधारणतः संस्करण-विशेष का उल्लेख न करके केवल ग्रंथ का ही उल्लेख किया गया है। इसमें ऐसे रेफरेंसवाले शब्दों का सब संस्करणों का या संस्करण-विशेष का समझना चाहिए।

(क) जहाँ पर संस्करण-विशेष के उल्लेख की खास आवश्यकता प्रतीत हुई है वहाँ पर रेफरेंस की सकेत-सूची में दिये हुए संस्करण के १, २ आदि अंक रेफरेंस के पूर्व में दिये हैं, जैसे पेसल और पेसलेस शब्दों के रेफरेंस 'आचा' के पूर्व में '२' का अंक आगमोदय-समिति के संस्करण का और '३' का अंक प्रो० रवजी भाई के संस्करण का बोधक है।

१८. जहाँ कहीं प्राकृत के किसी शब्द के रूप की, अर्थ की अथवा संयुक्त शब्द आदि की समानता या विशेषता के लिये प्राकृत के ही ऐसे शब्दान्तर की तुलना बतलाना उपयुक्त जान पड़ा है वहाँ पर रेफरेंस के बाद 'देखो—' से उक्त शब्द को देखने की सूचना की गई है।
१९. जहाँ कहीं 'देखो' के बाद काले टाइपो में दिये हुए प्राकृत शब्द के अनन्तर सादे टाइपो में लिगादि-बोधक या संस्कृत-प्रतिशब्द दिया गया है वहाँ उसी लिग आदिवाले या संस्कृत प्रतिशब्दवाले ही प्राकृत शब्द से मतलब है, न कि उसके समान इतर प्राकृत शब्द से। जैसे अ शब्द के 'देखो च अ' के च से पुलिग च को छोड़कर दूसरा ही अव्यय-भूत च शब्द, और ओसार के 'देखो ऊसार = उत्सार' के 'ऊसार' से तीसरा ही ऊसार शब्द देखना चाहिए, पहले, दूसरे और चौथे ऊसार शब्द को नहीं।

उक्त नियमों से अतिरिक्त जिन नियमों का अनुसरण इस कोष में किया गया है वे आधुनिक नूतन पद्धति के संस्कृत आदि कोषों के देखनेवालों से परिचित और सुगम होने के कारण खुलासे की जरूरत नहीं रखते।

पाइअ-सह-महणवो ।

(प्राकृत-शब्द-महार्णवः)

णासिअ-दोस-समूह, भासिअणेगंतवाय-ललिअत्थं ।

पासिअ-लोआलोअ, वंदामि जिणं महावीरं ॥ १ ॥

निक्किन्तिम-साउ-पयं, अइसइअ सयल-वाणि-परिणमिरं ।

वायं अवाय-रहिअ, पणमामि जिणिद-देवाण ॥ २ ॥

पाइअ-भासामइअ, अवलोइअ सत्थ सत्थमइविउलं ।

सह-महणव-णाम, रएमि कोस स-वण्ण-कर्म ॥ ३ ॥

अ

अ पु [अ] १ प्राकृत वर्ण-माला का प्रथम अक्षर (हे १, १; प्रामा) । २ विष्णु, कृष्ण (से १, १) ।

अ देखो च अ (आ १४, जी २, पठम ११३, १४, कुमा) ।

अ [दे] देखो इव, 'चदो अ' (प्राकृ ७६) ।

अ° अ [अ] निम्न-लिखित अर्थों में से, प्रकरण के अनुसार, किसी एक को बतलानेवाला अव्यय—१ निषेध, प्रतिषेध, 'अहमण' (सुर ७, २४८), 'सव्वनिमेहे मअोऽकारो' (विसे १२३२) । २ विरोध, उल्टापन, 'अवम्म' (गाया १, १८) । ३ अयोग्यता, अनुचितपन, 'अयाल' (पठम २२, ८५) । ४ अल्पता, थोडा-पन, 'अघण' (गडड), 'अचेल' (सम ४०) । ५ अभाव, अविद्यमानता, 'अगुण' (गडड) । ६ भेद, भिन्नता, 'अमणुस्स' (गंदि) । ७ सादृश्य, तुल्यता, 'अचक्खुदसण' (सम १५) । ८ अप्रशस्तता, बुरापन, 'अभाइ' (चार २६) । ९ लघुपन, छोटाई, 'अतड' (वृह १) ।

अ पु [क] १ सूर्य, सूरज (से ७, ४३) । २ अग्नि, आग । ३ मयूर, मोर (से ६, ४३) । ४

न पानी, जल (से १, १) । ५ शिखर, टोच (से ६, ४३) । ६ मस्तक, सिर (से ६, १८) ।

अ वि [ज] उत्पन्न, जात (गा ६७१) ।

अअंख वि [दे] स्नेह-रहित, सूखा (दे १, १३) ।

अअर देखो अवर (पि १६५) ।

अअर देखो आयर (पि १६५) ।

अइ अ [अयि] १-२ सभावना और ग्रामस्मरणार्थ का सूचक अव्यय (हे २, २०५, स्वप्न ५८) ।

अइ अ [अति] यह अव्यय नाम और धातु के पूर्व में लगता है और नीचे के अर्थों में से किसी एक को सूचित करता है—१ अतिशय, अति-रेक, 'अइज्जह', 'अइउत्ति', 'अइचित्त' (आ १४, रभा, गा २१४) । २ उत्कर्ष, महत्त्व, 'अइवेग' (कप्प) । ३ पूजा, प्रशंसा, 'अइजाय' (ठा ४) । ४ अतिक्रमण, उल्लंघन, 'अइउक्खो' (दस ५, ४, ४२) । ५ ऊपर, ऊंचा, 'अइमच', 'अइपडागा' (औप, गाया १, १) । ६ निन्दा, 'अइपडिय' (वृह १) ।

अइ अ [अति] सामर्थ्य-सूचक अव्यय, 'अइवह' (सूअ १, २, ३, ५) ।

अइ सक [आ + इ] आगमन करना, आगिरना, 'अइति नाराया' (स ३८३) ।

अइइ ओ [अदिति] पुनर्वसु नक्षत्र का अधिष्ठाता देव (सुज १०) ।

अइइ सक [अति+इ] १ उल्लंघन करना । २ गमन करना । ३ प्रवेश करना । वहु अइंत (से ६, २६, कप्प) । संक्र. अइच्च (सूअ १, ७, २८) ।

अइउट्ट वि [अतिवृत्त] अतिगत, प्राप्त (सूअ १, ५, १, १२) ।

अइच सक [अति + अञ्च्] १ अभिषेक करना, स्थानापन्न करना । २ उल्लंघन करना । ३ अक दूर जाना (से १३, ८, ८६) ।

अइचिअ वि [अत्यञ्चित] १ अभिषिक्त, स्थानापन्न किया हुआ (से १३, ८) । २ उल्लंघित, अतिक्रान्त (से १३, ८) । ३ दूर गया हुआ (से १३, ८६) ।

अइछ देखो अइच (से १३, ८) ।

अइछिअ देखो अइचिअ (से १३, ८) ।

अइछण न [अत्यञ्चन] १ उल्लंघन (से १३, ८) । २ आकर्षण, खींचाव (से ८, ६४) ।

अइत देखो अइइ = अति + इ ।

अइंत वि [अनायत्] १ नहीं आता हुआ ।
 २ जो जाना न जाता हो, 'गाहाहि पणइणीहि य खिअइ चित्तं अइंतीहि' (वज्रा ४) ।
 अइंदिय वि [अतीन्द्रिय] इन्द्रियो से जिसका ज्ञान न हो सके वह (विसे २८१८) ।
 अइमुत्त देखो अइमुत्त (प्राकृ ३२) ।
 अइकम अक [अतिक्रम] गुजरना, बीतना, 'देववणस्स समओ अइकमइ दुद्धरस्स रायस्स' (सम्मत्त १७४) । देखो अइक्कम = अति + क्रम ।
 अइकाय पु [अतिकाय] १ महोरग—जातीय देवों का एक इन्द्र (ठा २) । २ रावण का एक पुत्र (से १६, ५६) । ३ वि. बड़ा शरीरवाला (गाथा १, ६) ।
 अइक्कं वि [अतिक्रान्त] १ अतीत, गुजरा हुआ, 'अइक्कतजोव्वणा' (ठा ५) । २ तीर्थों, पार पहुँचा हुआ (भाव) । ३ जिसने त्याग किया हो वह, 'सव्वसिणोहाइक्कता' (भौग) ।
 अइक्कम सक [अति + क्रम] १ उल्लंघन करना । २ अत-नियम का आशिक रूप से खण्डन करना, 'अइक्कमइ' (भग) । वक्तु अइक्कमत, अइक्कममाण (सुपा २३८, भग) ।
 कृ अइक्कमणिज्ज (सूत्र, २, ७) ।
 अइक्कम पुं [अतिक्रम] १ उल्लंघन (गा ३४८) । २ अत या नियम का आशिक खण्डन (ठा ३, ४) ।
 अइक्कमण न [अतिक्रमण] ऊपर देखो (सुपा २३८) ।
 अइक्ख वि [अतीक्षण] तीक्ष्णतारहित, 'अइक्खा वेयरणी' (तदु ४६) ।
 अइक्ख वि [अनीक्ष्य] अदृश्य, 'अइक्खा वेयरणी' (तदु ४६) ।
 अइगच्छ । अक [अति + गम्] १ गुजरना, अइगम } बीतना । २ सक पहुँचना । ३ प्रवेश करना । ४ उल्लंघन करना । ५ जाना, गमन करना । वक्तु अइगच्छमाण (गाथा १, १) । सक अइयच्च (भावा), 'अइगंतूण अलोग' (विसे ६०४) ।
 अइगम पु [अतिगम] प्रवेश (विसे ३८६) ।
 अइगमण न [अतिगमन] १ प्रवेश-मार्ग (गाथा १, २) । २ उत्तरायण, सूर्य का उत्तर दिशा में जाना (भग) ।

अइगय वि [दे] १ आया हुआ । २ जिसने प्रवेश किया हो वह (दे १, ५७), 'ससुरकुलम्म अइगयो, दिट्ठा य सगच्छरव्वं तत्थ' (उप ५६७ टी) । ३ न मार्गका पीछला भाग (दे १, ५७) ।
 अइगय वि [अतिगत] अतिक्रान्त, गुजरा हुआ, 'हिहतस्स अइगय वरिसमेण' (महा, से १०, १८, विसे ७ टी) ।
 अइगय वि [अतिगत] प्राप्त, 'एव बुदिमइ-गमो गम्भे सवसइ दुक्खिओ जीवो' (तदु १३) ।
 अइचिरं अ [अतिचिरम्] बहुत काल तक (गा ३४६) ।
 अइच्च देखो अइच्च = अति + इ ।
 अइच्छ सक [गम्] जाना, गमन करना । अइच्छइ (हे ४, १६२) ।
 अइच्छ सक [अति + क्रम] उल्लंघन करना । अइच्छइ (शोध ५१८) । वक्तु अइच्छत (उत्त १८) ।
 अइच्छा ली [अदित्सा] १ देने की अनिच्छा । २ प्रत्याख्यान विशेष (विसे ३५०४) ।
 अइच्छिय वि [गत] गया हुआ, गुजरा हुआ (पठम ३, १२२, उप पृ १३३) ।
 अइच्छिय वि [अतिक्रान्त] अतिक्रान्त, उल्लंघित (पाथ, विसे ३५८२) ।
 अइजाय पुं [अतिजात] पिता से अधिक संपत्ति को प्राप्त करनेवाला पुत्र (ठा ४) ।
 अइड वि [अट्ट] १ जो न देखा गया हो वह । २ न कर्म, दैव, भाग्य (भवि) । 'उव्व, 'पुव्व वि [पूर्व] जो पहले कभी न देखा गया हो वह (गा ४१४, ७४८) ।
 अइड वि [अट्ट] जो देखा न गया हो वह (हास्य १४६) ।
 अइड वि [अनिष्ट] १ अप्रिय । २ खराब, दुष्ट, 'जो पुणु खलु खुदु अइडसु, तो किमव्व-त्यच देइ अंयु' (भवि) ।
 अइडा सक [अति + स्था] उल्लंघन करना । सक अइडिय (उत्त ७) ।
 अइडिय वि [अतिष्ठित] अतिक्रान्त, उल्लंघित (उत्त ७) ।
 अइग न [दे] गिरि-तट, तराई, पहाड़ का निम्न भाग (दे १, १०) ।

अइण न [अजिन] चर्म, चमड़ा (पाथ) ।
 अइणिय वि [दे अतिनीत] आनीत, लाया हुआ (दे १, २४) ।
 अइणिय वि [अतिनीत] १ फँका हुआ (से अइणीय ६, ५६) । २ जो दूर ले जाया गया हो (प्राप) ।
 अइणीअ वि [अतिगत] गत, गया हुआ (सुख २, १३) ।
 अइणीय वि [दे अतिनीत] आनीत, लाया हुआ (महा) ।
 अइणु वि [अतिनु] जिसने नौका का उल्लंघन किया हो वह, जहाज से उतरा हुआ (पड्) ।
 अइतह वि [अचितय] सत्य, मच्चा (उप १०३१ टी) ।
 अइतेया ली [अतितेजा] पक्ष की चौदहवीं रात (सुज्ज १०, १४) ।
 अइदपज्ज न [ऐदपर्यं] तारमयं, रहस्य, भावार्थ (उप ८६४, ८७६) ।
 अइदुसमा } ली [अतिदुष्पमा] देखो दुस्स-
 अइदुस्समा } मदुस्समा (पठम २०, ८३,
 अइदुसमा } ६०, उप पृ १४७) ।
 अइदपज्ज देखो अइदपज्ज (पचा १४) ।
 अइधाडिय वि [अतिधाटित] फिराया हुआ, घुमाया हुआ (पण्ह १, ३) ।
 अइनिट्ठुहावण वि [अतिविष्टम्भन] स्तब्ध करनेवाला, रोकनेवाला (कुमा) ।
 अइन्न न [अजीर्ण] १ बद्धजमी, अपच । २ वि जो हजम न हुआ हो वह । ३ जो पुराना न हुआ हो, नूतन (उव) ।
 अइन्न वि [अदत्त] नहीं दिया हुआ । 'याण न [दान] चोरो (भावा) ।
 अइपंडुकवलसिला ली [अतिपाण्डुकम्वल-शिला] मेरु पर्वत पर स्थित दक्षिण दिशा की एक शिला (ठा ४) ।
 अइपडाग पु [अतिपताक] १ मत्स्य की एक जाति (विपा १, ८) । २ ली पताका के ऊपर की पताका (गाथा १, १) ।
 अइपरिणाम वि [अतिपरिणाम] आवश्यकता न रहने पर भी अपवाद-मार्ग का ही आश्रय लेनवाला, शास्त्रोक्त अपवादों की मर्यादा का उल्लंघन करनेवाला,

‘जो दव्वखेत्तकालभावकयं ज जहिं जया काले ।
तल्लेसुसुत्तमई, अइपरिणामं वियाणाहिं’
(वृह १) ।

अइपाइअ वि [अतिपातिक] हिंसा करनेवाला
(सूत्र २, १, ५७) ।

अइपास पु [अतिपार्श्व] भगवान् अरनाथ
के समकालिक ऐरवत क्षेत्र के एक तीर्थकर-
देव (तिल्य) ।

अइपास सक [अति + दृश्] अतिशय
देखना, खूब देखना । अइपासइ (सूत्र १, १,
४, ६) ।

अइप्पगे अ [अतिप्रगे] पूर्व-प्रभात, बड़ी
सवेर (सुर ७, ७८) ।

अइप्पमाण वि [अतिप्रमाण] १ तृप्त होना
हुआ भोजन करनेवाला । २ न तीन बार से
अधिक भोजन (पिंड ६४७) ।

अइप्पसग पुं [अतिप्रसङ्ग] १ अतिपरिचय
(पञ्चा १०) । २ तर्क-शास्त्र में प्रसिद्ध अति-
व्याप्ति-नामक दोष (स १६६, उवर ४८) ।

अइप्पसंगि वि [अतिप्रसङ्गिन्] अतिप्रसंग
दोषवाला (अज्झ १०) ।

अइप्पहाय न [अतिप्रभात] बड़ी सवेर (गा
६८) ।

अइवल वि [अतिवल] १ बलिष्ठ, शक्ति-शाली
(श्रौप) । २ न अतिशय बल, विशेष सामर्थ्य ।
३ बड़ा सैन्य (हे ४, ३५४) । ४ पु एक
राजा, जो भगवान् ऋषभदेव के पूर्वोक्त चतुर्थ
भव में पिता या पितामह था (आचू) । ५
भरत चक्रवर्ती का एक पौत्र (ठा ८) । ६
भरत क्षेत्र में आगामी चौबीसी में होनेवाला
पाँचवा वासुदेव (सम ५) । ७ रावण का एक
योद्धा (पउम ५६, २७) ।

अइभदा स्त्री [अतिभद्रा] भगवान् महावीर
के प्रभास नामक ग्यारहवें गणधर की माता
(आचू) ।

अइभूइ पु [अतिभूति] एक जैन मुनि, जो
पञ्चम वासुदेव के पूर्व-जन्म में गुरु थे (पउम
२०, १७६) ।

अइभूमि स्त्री [अतिभूमि] १ परम प्रकपं ।
२ बहुत जमीन (से ३, ४२) । ३ गृहस्थो
के घर का वह भाग, जहाँ साधुओं का प्रवेश

करने की अनुज्ञा न हो, ‘अइभूमि न गच्छेज्जा,
गोयरगगओ मुणी’ (दस ५, १, २४) ।

अइमट्टिया स्त्री [अतिमृत्तिका] कीचवाली
मट्टी (जीव ३) ।

अइमत्त } वि [अतिमात्र] बहुत, परिमाण
अइमाय } से अधिक (उव ठा ६) ।

अइमुक्क } पुं [अतिमुक्त, °क] १ स्वनाम
अइमुंन } ख्यात एक अन्तकृद् (उसी जन्म में
अइमुंतय } मुक्ति पानेवाला) जैन मुनि, जो
अइमुत्त } पोलासपुर के राजा विजय का पुत्र
अइमुत्तय } था और जिसने बहुत छोटी ही
उम्र में भगवान् महावीर के पास
दीक्षा ली थी (अन्त) । २ कस
का एक छोटा भाई (आव) । ३
वृक्ष-विशेष (पउम ४२, ८) । ४
माधवी लता (पाप्र, स ३५) ।
५ न अन्तगढदसा नामक अग-ग्रन्थ
का एक अध्यायन (अन्त) । (हे १,
२६, १७८, पि २४६) ।

अइय वि [अतिग] अतिक्रान्त, ‘अव्वो अइअ-
म्मि तुमे, एवरं जइ सा न जूरिहिइ’ (हे
२, २०४) । २ करनेवाला, ‘ठाणाइय’
(श्रौप) ।

अइय वि [अतिग] प्राप्त (राय १३४) ।
°अइय वि [दयित] १ प्रिय, प्रीतिपात्र । २
दया-पात्र, दया करने योग्य (से ६, ३१) ।
अइयस्स देखो अइगच्छ ।

अइयण न [अत्यदन] बहुत खाना, अधिक
भोजन करना (वव २) ।
अइयय वि [अतिगत] गया हुआ (स
३०३) ।
अइयर सक [अति + चर्] १ उल्लघन
करना । २ व्रत को दूषित करना । वृक्ष
अइयरत (सुपा ३५४) ।

अइया सक [अति + या] जाना, गुजरना
(उत्त २०) ।

अइया स्त्री [अजिका] बकरी, छागी (उप
२३७) ।

°अइया स्त्री [दयिता] स्त्री, पत्नी (से ६,
३१) ।

अइयाण न [अतियान] १ गमन, गुजरना ।

२ राजा वगैरह का नगर आदि में घूम-घाम
सें प्रवेश करना (ठा ४) ।

अइयाय वि [अतियात] गया हुआ, गुजरा
हुआ (उत्त २०) ।

अइयार पु [अतिचार] उल्लघन, अतिक्रमण
(भवि) । २ गृहीत व्रत या नियम में दूषण
लगाना (आ ६) ।

अइर अ [अचिर] जल्दी, शीघ्र (स्वप्न ३७) ।
अइर न [अजिर] आगन, चौक (पाप्र) ।

अइर पु [दे] आयुक्त, गावका राज-नियुक्त
मुखिया (दे १, १६) ।

अइर न [दे अतर] देखो अयर = अतर
(सुपा ३०) ।

अइर वि [दे] अतिरोहित (पिंड ५६०,
५६१) ।

अइरजुवइ स्त्री (दे) नई बहू, दुलहिन (दे १,
४८) ।

अइरत्त पु [अतिरात्र] अधिक तिथि, ज्योतिष
की गिनती से जो दिन अधिक होता है वह
(ठा ६) ।

अइरत्त वि [अतिरत्त] १ गाढा लाल । २
विशेष रागी । °कंबलसिला, °कंबला स्त्री
[°कम्बलशिला, कम्बला] मेरु पर्वत के
पाहुक वन में स्थित एक शिला, जिसपर
जिनदेवों का जन्माभिषेक किया जाता है
(ठा २ ३) ।

अइरा अ [अचिरात्] शीघ्र, जल्दी (मे
३, १५) ।

अइरा स्त्री [अचिरा] पाचवें चक्रवर्ती और
सोलहवें तीर्थकर-देव की माता (सम
अइराणी १५२, पउम २०, ४२) ।

अइराणी स्त्री [दे] १ इन्द्राणी । २ सौभाग्य के
लिए इन्द्राणी-व्रत करनेवाली स्त्री (दे १, ५८) ।

अइरावण पु [ऐरावण] इन्द्र का हाथी (पाप्र) ।
अइरावय पु [ऐरावत] इन्द्र का हाथी (भवि) ।

अइराहा स्त्री [अचिराभा] विजली, चपला
(दे १, ३४ टी) ।

अइरि न [अतिरि] घन या सुवर्ण का अति-
क्रमण करनेवाला, घनाढ्य (पड्) ।

अइरिप पु [दे] कथावन्ध, बातचीत, कहानी
(दे १, २६) ।

अइरित्त वि [अतिरित्त] १ वचा हुआ, अव-
शिष्ट (पउम ११८, ११९)। २ अधिक, ज्यादा
(ठा २, १), 'पवद्धमाणाइरित्तगुणनिलम्भो'
(सार्व ६३)। ३ 'सिज्जासणिय वि [शय्या-
सन्निक] लम्बी-चौड़ी शय्या और आसन रखने-
वाला (साधु) (भावा)।

अवरूव वि [अतिरूप] १ सुख, सुडौल
(पउम २०, ११३)। २ पु भूत-जातीय देव-
विशेष (पण १)।

अइरेइय वि [अतिरेकित्त] अतिरेक-युक्त, अति-
प्रभूत (राय ७८ टी)।

अइरेग पु [अतिरेक] १ अधिक, अधिकता,
'साइरेगअट्टवासजायय' (णाय १, ५)। २
अतिशय (जीव ३)।

अइरेण } अ [अचिरेण] जल्दी, शीघ्र (गा
अइरेण } १३५, पउम ६२, ४, उवर ४०)।

अइरेय देखो अइरेग (णाय १, १)।

अइव अ [अतीव] अतिशय, अत्यन्त,
'रित्त अइव महत्,

चिट्ठ मज्झिम्म तस्स भवणस्स।

ता त सव्व सुपुरिस।

अप्पायत्त करेज्जासु ॥' (महा)।

अइवट्टण न [अतिवर्त्तन] उल्लंघन, अति-
क्रमण (भावा)।

अइवत्त सक [अति + वृत्] अतिक्रमण
करना। अइवत्तड (भावा)।

अइवत्तिय वि [अतिवर्त्तिक] १ जिसका
उल्लंघन किया गया हो वह। २ प्रधान,
मुख्य। ३ उल्लंघन करनेवाला (भावा)।

अइवय सक [अति + वृत्] उल्लंघन करना।
सकु अइवइत्ता (सूत्र २, २, ६५)।

अइवय सक [अति + व्रज्] १ उल्लंघन
करना। २ संमुख जाना। ३ प्रवेश करना।
अइवयति (पण १, ५)। वक्तु 'नियगवयण
अइवयन्तं गय सुमिणे पासित्तार्ण पडिबुद्धा'
(णाय १, १, कप)।

अइवय सक [अति + पत्] उल्लंघन करना।
२ सम्बन्ध करना। ३ प्रवेश करना। ४ अक
मरना। ५ गिरजाना, 'अवरे रण-सीस-लद्ध-
लक्खा सगामम्मि अइवयति' (पण १, ३),
'लोमपत्त्या ससार अइवयति' (पण १, ५)।
वक्तु 'जरं वा सरीरव्व-विणासिणि सरीर

वा अइवयमाणि निवारेसि' (णाय १, ५),
अइवयत (कप)। प्रयो अइवाएमाण
(भावा, ठा ७)।

अइवह सक [अति + वह] वहन करने में
समर्थ होना। अइवहइ (सूत्र १, २, ३, ५)।
अइवाइ वि [अतिपातिन्] १ हिंसक (सूत्र
१, ५)। विनश्वर (विसे १५७८)।

अइवाइत्तु वि [अतिपातयित्तु] मारनेवाला
(ठा ३, २)।

अइवाइय वि [अतिपातिक] ऊपर देखो
(सूत्र २, १)।

अइवाएत्तु देखो अइवाइत्तु (ठा ७)।

अइवाएमाण देखो अइवय = अति + पत्।

अइवाय पु [अतिपात] १ हिंसा आदि दोष
(शोध ४६)। २ विनाश, 'पाणाइवाएण'
(णाय १, ५)।

अइवाय पु [अतिवात] १ उल्लंघन। २ भय-
कर पवन, तूफान (उप ७६८ टी)।

अइवाह सक [अति + वाहय्] वीताना,
गुजारना, 'सो अइवाहेइ दुन्नि दिणे' (धर्मवि
३३)।

अइविरिय वि [अतिवीर्य] १ बलिष्ठ, महा-
पराक्रमी। २ पु. इइवाकु वंश का एक राजा
(पउम ५, ५)। ३ नन्दावर्त नगर का एक
राजा (पउम ३७, ३)।

अइविसाल वि [अतिविशाल] १ बहुत बड़ा,
विस्तीर्ण। २ स्त्री यमप्रभ नामक पर्वत के
दक्षिण तरफ की एक नगरी (दीव)।

अइस [अप] वि [ईदृश] ऐसा, इस तरह
का (हे ४, ४०३)।

अइसइ वि [अतिशयिन्] अतिशय वाला,
विशिष्ट, आश्चर्य-कारक (सुपा २५७)।

अइसइअ वि [अतिशयित] ऊपर देखो
(पात्र)।

अइसवण देखो अइसधाण, 'भितगाणति-
सधण न कायव्व' (पचा ७, २९)।

अइसंधाण [अतिसंधान] ठगई, वचना,
'भियगाणइसंधाण सासयवुड्डी य जयणा य'
(पचा ७)।

अइसक्का स्त्री [अतिवृद्धका] उत्तेजना,
प्रेरणा, बढ़ावा (निमी)।

अइसय सक [अति + शा] मात करना।

वक्तु. 'परवलम् अइसयन्तो' (पउम ६०,
१८)।

अइसय पुं [अतिशय] १ श्रेष्ठता, उत्तमता
(कुमा १, ५)। २ महिमा, प्रभाव, 'त्रयणा-
इसयो' (महा)। ३ बहुत, अत्यन्त (सुर, १२,
८१)। ४ चमत्कार (उर १, ३)। ५ भूरिय
वि [°भूत] पूर्ण, पूरा भरा हुआ (पात्र)।
अइसरिय न [ऐश्वर्य] वैभव, संपत्ति, गौरव
(हे १, १५१)।

अइसाइ वि [अतिशायिन्] १ श्रेष्ठ (धम्म
६ टी)। २ दूसरे को मात करनेवाला।
स्त्री °णी (सुपा ११४)।

अइसायण न [अतिशायन] उत्कृष्टता,
उत्कर्ष (चैइय ५३३)।

अइसार पु [अतिसार] सग्रहणी रोग, जठर
की व्याधि-विशेष (लहुअ १५)।

अइसेस पु [अतिशेप] १ महिमा, प्रभाव,
आव्यात्मिक सामर्थ्य (मम ५६)। २ वचा
हुआ, अवशिष्ट (ठा ४, २)। ३ अतिशय
वाला (विसे ५५२)।

अइसेसि वि [अतिशेपिन्] १ प्रभावशाली,
महिमान्वित। २ समृद्ध (राज)।

अइसेसि वि [अतिशेपिन्] १ महिमान्वित।
२ समृद्ध, ज्ञान आदि के अतिशय में सम्पन्न
(सट्ठि ४२ टी)।

अइसेसिय वि [अतिशेपित] ऊपर देखो
(शोध ३०)।

अइसेसिय वि [अतिशेपित] ज्ञात, जाना
हुआ (वव १)।

अइहर पुं [अतिभर] हृद, अवधि, मर्यादा,
'सत्तीय को अइहरो ?' (अचु २३)।

अइहारा स्त्री [दे] विजली, चपला (दे १,
३४)।

अइहि पुं [अनिधि] जिसके आने की तिथि
नियत न हो वह, पाहुन, यात्री, भिक्षुक, साधु
(भावा)। २ सविभाग पु [°संविभाग] साधु
को भोजन आदि का निर्दोष दान (धर्म ३)।

अई सक [गम] जाना, गमन करना। अईइ
(हे ४, १६२, कुमा), अइति (गउड)।

अईअ पु [अनीत] १ भूतकाल (पव्व ६०)।
२ वि. जो बीत चुका हो, गुजरा हुआ, 'जे अ
अईया सिद्धा' (पडि)। ३ अतिक्रान्त (सूत्र

१, १०, सार्ध ४, विसे ८०८) । ४ जो दूर हो गया हो (उत्त १५) ।
 अईअ } अ [अतीव] बहुत, विशेष, अत्यन्त
 अईव } (भग २, १, पणह १, २) ।
 अईसत वि [अ + दृश्यमान] जो दिखता न हो (मे १, ३५) ।
 अईसय देखो अइसय (पउम ३, १०५, ७५, २६) ।
 अईसार पु [अतीसार] रोग-विशेष, संग्रहणी रोग (सुख १, ३) ।
 अईसार पु [अतीसार] १ संग्रहणी रोग ।
 २ इस नाम का एक राजा (ठा ५, ३) ।
 अउ देखो आउ = स्त्री, 'उल्लसिओ तमरुवो वलयागारो अउक्काओ' (पव २५५) ।
 अउअ न [अयुत] १ दस हजार की सख्या ।
 २ 'अउअंग' को चौरासी लाख से गुणने पर जो सख्या लव्व हो वह (ठा २, ४) ।
 अउअग न [अयुताङ्ग] 'अच्छणिउर' को चौरामी लाख से गुणने पर जो सख्या लव्व हो वह (ठा २, ४) ।
 अउठ वि [अकुण्ठ] निपुण, कार्य-दक्ष (गउड) ।
 अउचित्त न [औचित्य] उचितपन (प्राक् १०) ।
 अउज्झ वि [अयोध्य] १ युद्ध में जिसका सामना न किया जा सके वह (सम १३७) ।
 २ जिस पर रिपु-सैन्य आक्रमण न कर सके ऐमा किला, नगर आदि (ठा ४) ।
 अउज्झा स्त्री [अयोध्या] नगरी-विशेष, इक्ष्वा-कुवश के राजाओ की राजधानी, विनीता, कोसला, साकेतपुर आदि नामोंसे विख्यात नगरी, जो आजकल भी अयोध्या नाम से ही प्रसिद्ध है (ठा २) ।
 अउण वि [एकोन] जिसमें एक कम हो वह । यह शब्द बीस से लेकर तीस, चालीस आदि दहाई सख्या के पूर्व में लगता है और जिसका अर्थ उस सख्या से एक कम होता है । °टिठ स्त्री [°पटि] उनसाठ, ५६ (कप्प) । °त्तरि स्त्री [°सप्तति] उनसत्तर, ६६ (कप्प) । °तीस स्त्री [°त्रिंशत्] उनतीस, २६ (राया १, १३) । °सट्ठि स्त्री [°षष्टि] उनसाठ, ५६ (कप्प) । °पन्न, °वन्न स्त्री

[पञ्चाशत्] उनपचास, ४६ (जी ३८, पउम १०२, ७०) । देखो एगूण ।
 अउणतीसइ स्त्री देखो अउण-तीस (उत्त ३६, २४०) ।
 अउणप्पन्न देखो अउणापन्न (जीवस २०८) ।
 अउणामट्ठि देखो अउण-सट्ठि (मुज्ज ६) ।
 अउणोणिउत्ति स्त्री [अपुनर्निवृत्ति] अन्तिम निवृत्ति, मोक्ष (अचु १०) ।
 अउण्ण } न [अपुण्य] १ पाप (सुर ६,
 अउन्न } २४) । २ वि अपवित्र । ३ पुण्य-रहित, पापी (पउम २८, ११२, सुर २, ५१) ।
 अउम देखो ओम (गुभा १४) ।
 अउमर वि [अदुमर] खानेवाला, भक्षक (प्राक् २८) ।
 अउल वि [अनुल] असाधारण, अद्वितीय (उप ७२८ टी, पणह १, ४) ।
 अउलीन वि [अकुलीन] कुल-हीन, कुनाति, संकर (गा २५३) ।
 अउव्व वि [अपूर्व] अनोखा, अद्वितीय (गा ११६) ।
 अउस पु [दे] उपासक, पूजारी (प्रयौ ८२) ।
 अए अ [अये] आमन्त्रण-सूचक अव्यय (कप्प) ।
 अओ अ [अतस्] १ यहा से लेकर (सुपा ४७८) । २ इसलिए, इस कारण से (उप ७३०) ।
 अओ° [अयस्°] लोह । °घण पु [घन] लोहे का हथौड़ा, 'सीसपि भिदति अओघ-रोहि' (सूअ १, ५, २, १४) । °मय वि [°मय] लोहे की बनी हुई चीज (सूअ २, २) । °मुह पु [°मुख] १-२ इस नाम का अन्तर्द्वीप और उसके निवासी (ठा ५) । ३ वि लोहे की माफिक मजबूत मुह वाला, 'पक्खीहि खज्जति अओमुहेहि' (सूअ १, ५, २, ४) । °मुही स्त्री [°मुखी] एक नगरी (उप ७६४) ।
 अओग वि [अयोग्य] नालायक (स ७६४) ।
 अओज्झा देखो अउज्झा (प्रति ११५) ।
 अअ [दे] स्मरण-श्रोतक अव्यय, 'अ दट्ठवा मालइलआ' (प्राक् ८०) ।
 अक पु [अक्क] १ उत्सव, कोला (स्वप्न २१६) । २ रत्न की एक जाति (कप्प) ।

३ नौ की एक सख्या, 'कासी विक्रमवच्छरम्मि य गए बाणकसुओहुवे' (सुर १६, २४६) ।
 ४ संख्या-दर्शक चिह्न, १, २, ३ (पण २) । ५ नाटक का एक अंश, 'सुरणा मणु-स्सभवणाडएसु निज्झाइआ अका' (घण ४५) ।
 ६ सफेद मणि की एक जाति (उत्त ३४) ।
 ७ चिह्न, निशान (चद २०) । ८ मनुष्य के बत्तीस प्रशस्त लक्षणों में से एक (पणह १, ४) । ९ आसन-विशेष (चद ४) । °कण्ड पुन. [काण्ड] रत्नप्रभा पृथ्वी के खर-काण्ड का एक हिस्सा, जो अक रत्नों का है (ठा १०) । °अरेल्लुग, °करेल्लुअ पु [°करेल्लुक] पानी में होनेवाली एक जाति की वनस्पति (आचा) । °टिइ स्त्री [°स्थिति] अक रेखाओं की विचित्र स्थापना, ६४ कलाओं में एक कला (कप्प) । °धर पु [°धर] चन्द्रमा (जीव ३) । °धाई स्त्री [°धात्री] पांच प्रकार की धाई-माताओं में से एक, जिसका काम बालक को उत्सव में ले उसका जी बहलाना है (राया १, १) । °लिवि स्त्री [°लिपि] अठारह लिपियों में की एक लिपि, वणमाला-विशेष (सम ३५) । °वणिय पु [°वणिक] अक-रत्नों का व्यापारी (राय) । °वालि, °वाली स्त्री [°पालि, °पाली] आलिंगन (काप्र १६४) । °हर देखो °धर (जीव ३) ।
 अंक [दे अङ्क] निकट, समीप, पास (दे १, ५) ।
 अक पुन [अङ्क] एक देव-विमान (देवेन्द्र १३२) ।
 अककरेल्लुअ, °ग देखो अक-करेल्लुअ (आचा २, १, ८, ५) ।
 अकग न [अङ्कन] १ चिह्नित करना (आव) ।
 २ बेल आदि पशुओं को लोहे की गरम सलाई आदि से दागना (पणह १, १) । ३ वि. अंकित करनेवाला, गिनती में लानेवाला, 'अंकण जोइ-सस्स' सूर' (कप्प) ।
 अकणा स्त्री [अङ्कना] ऊपर देखो (राया १, १७) ।
 अकदास पु [अङ्कदास] बालक को उत्सव में लेकर उमका जी बहलानेवाला नौकर (सम्मत २१७) ।
 अकवाणिय देखो अंक-वणिय (राय १२६) ।

अंकार पुं [दे] सहायता, मदद (दे १, ६) ।
 अंकावई लो [अङ्कावती] १ महाविदेह क्षेत्र
 के रम्य नामक विजय की राजधानी (ठा २) ।
 मेरु की पश्चिम दिशा में बहती हुई शीतोदा
 महानदी की दक्षिण दिशा में वर्तमान एक
 वक्षस्कार पर्वत (ठा ५, २) ।
 अंकिअ न [दे] आलिंगन (दे १, ११) ।
 अंकिअ वि [अङ्किन] चिह्नित, निशानवाला
 (औष) ।
 अंकिइल पुं [दे] नट, नर्तक, नचवैया (राया
 १, १) ।
 अकुडग पु [अङ्कुटक] नागदन्तक, खूँटी,
 ताख (जं १) ।
 अंकुर पुं [अङ्कुर] प्ररोह, फुलगी (जी ६) ।
 अंकुरिय वि [अङ्कुरित] अंकुर-युक्त, जिसमें
 अंकुर उत्पन्न हुए हो वह (उवा) ।
 अकुस पु [अङ्कुश] १ आकड़ी, लोहे का
 एक हथियार, जिससे हाथी चलाये जाते हैं,
 'अकुसेण जहा रागो धम्मे सपडिवाइओ'
 (उत्त २२) । २ ग्रह-विशेष (ठा २, ३) । ३
 सीता का एक पुत्र, कुस (पउम ६७, १६) ।
 ४ नियन्त्रण करनेवाला, काबू में रखनेवाला
 (गउड) । ५ एक देव-विमान (राज) । ६ पुन
 शुरु-वन्दन का एक दोष (पव २) ।
 अंकुस पुन [अङ्कुश] १ एक देव-विमान
 (देवेन्द्र १४०) । २ पु अकुशाकार खूँटी
 (राय ३७) ।
 अकुसइय न [दे अकुशित] अकुश के आकार-
 वाली चीज (दे १, ३८, से ६, ६३) ।
 अकुसय पु [अङ्कुशक] देखो अकुस । २
 सन्यासी का एक उपकरण, जिससे वह देव-
 पूजा के वास्ते वृक्ष के पल्लवों को काटता है
 (औष) ।
 अंकुसा लो [अङ्कुशा] चौदहवें तीर्थंकर श्री
 अनन्तनाथ भगवान् की शासन-देवी (पव २८) ।
 अकुसिअ वि [अङ्कुशित] अकुश की तरह
 मुड़ा हुआ (से १४, २६) ।
 अंकुसी लो [अङ्कुशी] देखो अकुसा
 (संति १०) ।
 अकूर देखो अकुर, 'सा पुण विरतमिता
 निचकूरे विसेसेइ' (सूत्रानि ६१ टी) ।

अंकेलण न [दे] घोड़ा आदि को मारने का
 चाबुक, कोड़ा, औंठी (ज ४) ।
 अकेल्लि पु [दे] अशोक-वृक्ष (दे १, ७) ।
 अंकोल पु [अङ्कोठ] वृक्ष-विशेष (हे १, २००) ।
 अग व पु [अङ्ग] १ इस नाम का एक देश,
 जिसको आजकल बिहार कहते हैं (सुर २,
 ६७) । २ रामका एक सुभट (पउम ५६, ३७) ।
 ३ न आचाराग सूत्र आदि बारह जैन आगम-
 ग्रंथ (विपा २, १) । ४ वेदांग, वेद के शिक्षादि
 छ अंग (आचू) । ५ कारण, हेतु (पव १) ।
 ६ आत्मा, जीव (भवि) । ७ पुन शरीर
 (प्रासू ८४) । ८ शरीर के मस्तक आदि अवयव
 (कम्म १, ३४) । ९ अ मिश्रता का आम-
 न्तरण, सम्बोधन (राय) । १० वाक्यालंकार
 में प्रयुक्त किया जाता अव्यय (ठा ४) । ११ पु
 [जित्] इस नामका एक गृहस्थ, जिसने
 भगवान् पार्श्वनाथ के पास दीक्षा ली थी
 (निर) । १२ इस पु [पि] चपा नगरी का
 एक नृपति (आचू) । [चूलिया] लो
 [चूलिका] अंग-ग्रंथों का परिशिष्ट (पक्खि) ।
 च्छहिय वि [छिन्नाङ्ग] जिसका अंग
 काटा गया हो वह (सूत्र २, २, ६३) ।
 जाय वि [जात] वच्चा, लडका (उप
 ६४८) । १३ देखो 'य = द' (ठा ८) ।
 पविट्ट न [प्रविष्ट] १ बारह जैन अंग-ग्रन्थों
 में से कोई भी एक (कम्म १, ६) । २ अंग-
 ग्रंथों का ज्ञान (ठा २, १) । ३ वाहिर न
 [बाह्य] १ अंग-ग्रंथों के अतिरिक्त जैन आगम
 (आचू) । २ अंग-ग्रंथों से भिन्न जैन आगमों का
 ज्ञान (ठा २) । ३ मग न [ङ्ग] १ अंग-प्रत्यय
 (राय) । २ हर एक अवयव (पह) । ३ मंदिर
 न [मन्दिर] चम्पा नगरी का एक देव-गृह
 (भग १, १) । ४ मद्, मद्दय पु [मद्दे,
 मर्दक] १ शरीर की चपी करनेवाला नौकर ।
 २ वि शरीर को मलनेवाला, चपी करनेवाला
 (सुपा १०८, महा, भग ११, १) । ५ पुं
 [द] १ नाली नामक विद्याधरराज का
 पुत्र (पउम १०, १०, ५६, ३७) । २ न.
 बाबूद, केहुटा (पएह १, ४) । ३ य वि
 [ज] १ शरीर में उत्पन्न । २ पु पुत्र,
 लडका (उप १३४ टी) । ३ या लो [जा]
 कन्या, पुत्री (पात्र) । ४ रक्ख, रक्खग वि

[रक्ख, रक्खक] शरीर को रक्षा करनेवाला
 (सुपा ५२७, इक) । ५ राग, राय पु [राग]
 शरीर में चन्दनादि का विलेपन (औष, गा
 १८६) । ६ राय पु [राज] १ अंगदेश का
 राजा (उप ७६५) । २ अंग देश का राजा कर्ण
 (राया १, १६, वेणी १०४) । ३ रिसि देखो
 'इसि' । ४ रुह वि [रुह] देखो 'य = ज'
 (सुपा ५१२, पउम ५६, ३२) । ५ रुहा लो
 [रुहा] पुत्री, लडकी (सुपा १५०) । ६ विज्जा
 लो [विद्या] १ शरीर के स्फुरण का शुभा-
 शुभ फल बतलानेवाली विद्या (उत्त ८) । २ उस
 नाम का एक जैन ग्रंथ (उत्त ८) । ३ वियार पुं
 [विचार] देखो पूर्वोक्त अर्थ (उत्त १५) ।
 सभूय वि [संभूत] सतान, बच्चा (उप
 ६४८) । ४ हारय पु [हारक] शरीर के
 अवयवों के विक्षेप, हाव-भाव (अजि ३१) ।
 दाण न [दान] पुरुषेन्द्रिय, पुरुष-चिह्न
 (निसी) ।
 अग पु [अङ्ग] भगवान् आदिनाथ के एक पुत्र
 का नाम (ती १४) । २ न लगातार बारह
 दिनों का उपवास (सवोष ५८) । ३ ज देखो
 'य' (धर्मवि १२६) । ४ हर वि. [धर] अङ्ग-
 ग्रंथों का जानकार (विचार ४७३) ।
 अग वि [आङ्ग] १ शरीर का विकार (ठा
 ८) । २ शरीर-सबधी, शारीरिक (सूत्र २,
 २) । ३ न शरीर के स्फुरण आदि विकारों के
 शुभाशुभ फल को बतलानेवाला शास्त्र, निमित्त-
 शास्त्र (सम ४६) ।
 अग वि [चङ्ग] सुन्दर, मनोहर (भवि) ।
 अगइया लो [अङ्गदिका] एक नगरी, तीर्थ-
 विशेष (उप ५५२) ।
 अंगंगीभाव पु [अङ्गाङ्गीभाव] अमेद-भाव,
 अमिन्नता, 'अंगगीभावेण परिणएणन्नसरि-
 जिणधम्मे' (सुपा २१८) ।
 अंगण न [अङ्गण] आगन, चौक (सुर ३,
 ७१) ।
 अंगणा लो [अङ्गना] लो, औस्त (सुर ३,
 १८) ।
 अगदिआ देखो अङ्गइया (ती) ।
 अंगवड्डण न [दे] रोग, बीमारी (दे १,
 ४७) ।

अंगवलिज्ज न [दे] शरीर को मोड़ना (दे १, ४२) ।

अंगार पु [अङ्गार] १ जलता हुआ कोयला (हे १, ४७) । २ जैन साधुओं के लिए भिक्षा का एक दोष (आचा) । ३ मद्दग पु [मर्दक] एक अभव्य जैन-आचार्य (उप २५४) । ४ वई स्त्री [वती] सुमुमार नगर के राजा धुन्धुमार की एक कन्या का नाम (धम्म ८ टी) ।

अंगारग १ पु [अङ्गारक] १-२ ऊपर देखो अंगारय १ (गा २६१) । ३ मगल-ग्रह (पहल १, ५) । ४ पहला महाग्रह (ठा २) । ५ राक्षस-वंश का एक राजा (पउम ५, २६२) ।

अंगारिय वि [अङ्गारित] कोयले की तरह जला हुआ, विवरण (नाट, आचा) ।

अंगाल देखो अंगार, 'निदड्डगालनिम' (पिंड ६७५) ।

अंगालय देखो अंगारग (राज) ।

अंगालिय न [दे] ईश का टुकड़ा (दे १, २८) ।

अंगालिय देखो अंगारिय (आचा) ।

अंगि पु [अङ्गिन्] १ प्राणी, जीव (गण ८) । २ वि. शरीरवाला । ३ अग्न-ग्रन्थो का ज्ञाता (कप्प) ।

अगिरस न [अङ्गिरस] एक गोत्र, जो गोतम-गोत्र की शाखा है (ठा ७) ।

अगिरस वि [अङ्गिरस] १ अगिरस-गोत्र में उत्पन्न (ठा ७) । २ पु एक तापस (पउम ४, ८६) ।

अंगीकड } वि [अङ्गीकृत] स्वीकृत (ठा ५, अंगीकय } सुपा ५२६) ।

अंगीकर } सक [अङ्गी + कृ] स्वीकार अंगीकुण } करना । अंगीकरेइ (महा, नाट) । अंगीकरेहि (स ३०६) संकु अंगीकरेऊण (विसे २६४२) ।

अंगुअ पुं [इङ्गुद] १ वृक्ष-विशेष । २ न इङ्गुद वृक्ष का फल (हे १, ८६) ।

अंगुठ पु [अङ्गुठ] अंगुठा (ठा १०) ।

पसिण पु [प्रश्न] १ एक विद्या । २ 'प्रश्न-व्याकरण' सूत्र का एक लुप्त अव्ययन (ठा १०) ।

अंगुटी स्त्री [दे] सिरका अवगुण्ठन, घूघट (दे १, ६, स २८४) ।

अंगुत्थल न [दे] अंगुठी, अंगुलीय (दे १, ३१) ।

अगुब्भव वि [अङ्गोद्भव] सतान, बधा (उप २६४) ।

अंगुम सक [पूरय] पूति करना, पूरा करना । अंगुमइ (हे ४, ६८) ।

अगुमिय वि [पूरित] पूरा किया हुआ (कुमा) ।

अंगुरि, शी स्त्री [अङ्गुलि, °ली] उंगली (गा २७७) ।

अगुल न [अङ्गुल] यव के आठ मध्यभाग के बराबर का एक नाप, मान-विशेष (भग ३, ७) । °पोहत्तिय वि [°पृथाक्त्त्वक] दो से लेकर नव अंगुल तक का परिमाण वाला (जीव १) ।

अगुलि स्त्री [अङ्गुलि] उंगली (कुमा १) ।

°कोस पु [°कोश] अंगुलि-त्राण, दास्ताना (राय) । °फोडण न [°स्फोटन] उंगली फोड़ना, कड़ाका करना (तट्ठ) ।

अगुलिअ } न [अङ्गुलीयक] अंगुठी अगुलिज्जक } (दे ५, ६, कप्प, पि २५२) । अगुलिज्जग }

अगुलिणी स्त्री [दे] प्रियगु, वृक्ष-विशेष (दे १, ३२) ।

अंगुली स्त्री [अङ्गुली] देखो अगुलि (कप्प) ।

अंगुलीय } पुन [अङ्गुलीयक] अंगुठी अंगुलीयग } (सुर १०, ६४), 'पायवडि-एण सामिय । समप्पिओ अंगुलीययो तीए' (पउम ५४, ६, सुर १, १३२, पि २५२, पउम ४६, ३६) । अंगुलेयय }

अंगुलेयग देखो अंगुलेयय (सुख २, २६) ।

अगुवंग } न [अङ्गोपाङ्ग] १ शरीर के अगोवग } अवयव (पण २३) । २ नख वगैरह शरीर के छोटे-छोटे अवयव, 'नहकेसम-सुअगुलीओट्टा खलु अंगोवगाणि' (उत्त ३) । °णाम न [°नामन्] शरीर के अवयवों के निर्माण में कारण-भूत कर्म-विशेष (कम्म १, ३४, ४८) ।

अगोहलि स्त्री [दे] शिर को छोड़कर बाकी शरीर का स्नान (उप पृ २३) ।

अंघो अ [अङ्ग] भय-सूचक अव्यय (प्रति ३६, प्रयो २०५) ।

अच सक [कृप्] १ खीचना । २ जोतना, चास करना । ३ रेखा करना । ४ उठाना । अंचइ (हे ४, १८७) । सक अचेइत्ता (आव) । अच सक [अञ्च] पूजना, पूजा करना । अचए (भवि) ।

अच सक [अञ्च] जाना । अंचति (पचा १६, २३), 'अञ्चु गइ पूयणम्मि य', 'सोधोए पारमचइ' (बृह ४) ।

अंचल पु [अञ्चल] कपड़े का शेष भाग (कुमा) ।

अंचि पु [अञ्चि] गमन, गति (भग १५) ।

अचि पु [आञ्चि] आगमन, आना (भग १५) ।

अंचिय वि [अञ्चित] १ युक्त, सहित (सुर ४, ६७) । २ पूजित (सुपा २१८) । ३ प्रशस्त, श्लाघित (प्रासू १८) । ४ न एक प्रकार का नृत्य (ठा ४, ४, जीव ३) । ५ एक बार का गमन (भग १५) । °यचि पु [°अञ्चि] १ गमनागमन, आना जाना (भग १५) । २ ऊचा-नीचा होना (ठा १०) ।

अंचियरिभिय न [अञ्चितरिभित] एक तरह का नाट्य (राय ५३) ।

अचिया स्त्री [अञ्चिका] आकर्षण (स १०२) ।

अछ सक [कृप्] १ खीचना, 'अछति वासु-देव अगइतडम्मि ठिय सत' (विसे ७६४) । २ थक लम्बा होना । वहु अंछमाण (विसे ७६९) । प्रयो अछावेइ (णाय १, १) ।

अछण न [कर्पण] खींचाव (पहल २, ५) ।

अछिय वि [दे] आकृष्ट, खींचा हुआ (दे १, १४) ।

अंज सक [अञ्ज] आजाना । कृ अंजियञ्ज (स ५४३) ।

अंजण पुं [अञ्जण] १ कृष्ण पुद्गल-विशेष (सुज २०) । २ देव-विशेष (सिरि ६६७) ।

अजण पु [अज्जण] १ पर्वत-विशेष (ठा ५) । २ एक लोकपाल देव (ठा ४) । ३ पर्वत-विशेष का एक शिखर, जो दिग्हस्ती कहा जाता है (ठा २, ३, ८) । ४ वृक्ष-विशेष (आव) । ५ न. एक जाति का रत्न (णाय १, १) । ६ देवविमान-विशेष (मम ३५) । ७ काजल, कजल (प्रासू ३०) । ८ जिमका

सुरमा बनता है ऐसा एक पार्थिव द्रव्य (जी ४)। ६ आखको आजना (सूत्र १, ६)। १० तैल आदिसे शरीर की मालिश करना (राज)। ११ लेप (स ५८२)। १२ रत्नप्रभा पृथिवी के खर-काण्ड का दशवां अंश-विशेष (ठा १०)। °केसिया स्त्री [°केशिका] वनस्पति-विशेष (परण १७, राय)। °जोग पु [°योग] कला-विशेष (कप्प)। °दीव पु [°द्वीप] द्वीप-विशेष (इक)। °पुल्य पु [°पुलक] एक जाति का रत्न (ठा १०)। २ पर्वत-विशेष का एक शिखर (ठा ८)। °पवहा स्त्री [°प्रभा] चौथी नरक-पृथिवी (इक)। °रिट्ट पु [°रिष्ट] इन्द्र-विशेष (भग ३, ८)। °सलागा स्त्री [°शलाका] १ जैन-मूर्तिकी प्रतिष्ठा। २ अजन लगाने की सलाई (सूत्र १, ५)। °सिद्ध वि [°सिद्ध] आख में अजन-विशेष लगाकर अदृश्य होने की शक्तिवाला (निसी)। °सुन्दरी स्त्री [°सुन्दरी] एक सती स्त्री, हनुमान की माता (पउम १५, १२)।

अंजणइसिआ स्त्री [दे] वृक्ष-विशेष, श्याम तमाल का पेड़ (दे १, ३७)।

अंजणई स्त्री [दे] वल्ली-विशेष (परण १)। अजणईस न [दे] देखो अजणइसिआ (दे १, ३७)।

अजणग देखो अजण।

अजणा स्त्री [अजना] १ हनुमान की माता (पउम १, ६०)। २ स्वनाम-ख्यात चौथी नरक-पृथिवी (ठा २, ४)। ३ एक पुष्करिणी (ज ४)। °तणय पु [°तनय] हनुमान (पउम ४७, २८)। °सुन्दरी स्त्री [°सुन्दरी] हनुमान की माता (पउम १८, ५८)।

अजणाभा स्त्री [अजनाभा] चौथी नरक-पृथिवी (इक)।

अजणिआ स्त्री [दे] देखो अंजणइसिआ (दे १, ३७)।

अजणी स्त्री [अजनी] कजल का आघार-पात्र (सूत्र १, ४०)।

अजलि, °ली पुस्त्री [अजलि] १ हाथ का सपुट (हे १, ३५)। एक या दोनो संकुचित हाथों को ललाट पर रखना, 'एगेए वा दोहि वा मजलिएहि हत्योहि रिण्डालससितेहि अजली मएणति' (निचू)। ३ कर-संपुट, नमस्कार

रूप विनय, प्रणाम (प्रासू ११०, स्वप्न ६३)। °उड पु [°पुट] हाथ का सपुट (महा)। °करण न [°करण] विनय-विशेष, नमन (दे)। °पग्गह पु [°प्रग्रह] १ नमन, हाथ जोड़ना (भग १४, ३)। २ सभोग-विशेष (राज)।

अंजस वि (दे) ऋजु, सरल (दे १, १४)।

अजिय वि [अजित] आज्ञा हुआ, अजन-युक्त किया हुआ (से ६, ४८)।

अजु वि [ऋजु] १ सरल, अकुटिल, 'अजुधम्मं जहा तच्च, जिणएण तह सुणेह मे' (सूत्र १, १, १, ४, ८)। २ समय में तत्पर, समयी, 'पुटोवि नाइवत्तइ अजु' (आचा)। ३ स्पष्ट, व्यक्त (सूत्र १, १)।

अंजुआ स्त्री [अजुका] भगवान् अनन्तनाथ की प्रथम शिष्या (सम १५२)।

अजू स्त्री [अजू] १ एक सार्थवाह की कन्या (विपा १, १०)। २ 'विपाकश्रुत' का एक अध्ययन (विपा १, १)। ३ एक इन्द्राणी (ठा ८)। ४ 'ज्ञाताधर्मकया' सूत्र का एक अध्ययन (गाया २)।

अठि पुन [अस्थि] हड्डी, हाड (पड्), 'अहिअमहुरस्स अवस्स अजोगगदाए अएठी न भक्खीअदि' (चारु ६)।

अड | न [अण्ड, °क] १ अडा (कप्प, श्रीप)। २ अंड-कोश (महानि ४)। अडग | ३ 'ज्ञाताधर्मकया' सूत्र का तृतीय अध्ययन (गाया १, १)। °ऊड वि [°कृत] जो अण्डे में बनाया गया हो, 'वभण्णा माहणा एगे, आह अण्डकडे जगे' (सूत्र १, ३)। °वध पु [°वन्ध] मन्दिर के शिखर पर रखा जाता अण्डाकार गोला (गडड)। °वाणियय पु [°वाणिजक] अण्डो का व्यापारी (विपा १, ३)।

अडग | ि [अण्डज] १ अण्डे से पैदा होनेवाले जंतु, पक्षी, साप, मछली वगैरह (ठा ३, १, ८)। २ रेशम का धागा। ३ रेशमी वस्त्र (उत्त २६)। ४ शण का वस्त्र (सूत्र २, २)।

अंडय पु [दे, अण्डज] मछली, मत्स्य (दे १, १६)।

अंडाउय वि [अण्डज] अण्डे से पैदा होने-वाला (पउम १०२, ६७)।

अत पु [अन्त] १ स्वरूप, स्वभाव (मे ६, १८)। २ प्रान्त भाग (से ६, १८)। ३ सीमा, हृद (जी ३३)। ४ निकट, नजदीक (विपा १, १)। ५ भग, विनाश (विमे ३४५४, जी ४८)। ६ निर्णय, निश्चय (ठा ३)। ७ प्रदेश, स्थान, 'एगतमतमवक्कमड' (भग ३, २)। ८ राग श्रीर द्वेष, 'दोहि अतेहि अदिस्समाणो' (आचा)। ९ रोग, बीमारी (विमे ३४५४)। १० वि इन्द्रियों को प्रतिकूल लगनेवाली चीज, अमुन्दर, नीरस वस्तु (पणह २, ४)। ११ मनोहर, सुन्दर (से ६, १८)। १२ नीच, धुद्र, तुच्छ (कप्प)। °कर वि [°कर] उसी जन्म में मुक्ति पानेवाला (सूत्र १, १५)। °करण वि [°करण] नाशक (पणह १, ६)। °काल पु [°काल] १ मृत्यु काल। २ प्रलय काल (से ५, ३२)। °किरिया स्त्री [°क्रिया] मुक्ति, ममार का अन्त करना (ठा ४, १)। °कुल न [°कुल] सुद्र कुल (कप्प)। °गड वि [°कृन्] उमी जन्म में मुक्ति पानेवाला (उप ४६१)। °गडदसा स्त्री [°कृद्शा] जैन अग-ग्रथों में आठवां अग-ग्रथ (अणु १)। °चर वि [°चर] भिक्षा में नीरस पदार्थों की ही खोज करनेवाला (पणह २, १)।

अंत वि [अन्त्य] अन्तिम, अन्त का (परण १५)। °कखरिया स्त्री [°क्षरिका] १ ब्राह्मी लिपि का एक भेद (परण १)। २ कला-विशेष (कप्प)।

अत न [अन्त्र] आत (सुपा १८२, गा ५८५)।

अत अ [अन्तर्] मध्य में, बीच में (हे १, १४)। °उर न [°पुर] देखो अंतेउर (नाट)। °करण, °करण [°करण] मन, हृदय, 'कण्णारसपरवसंतकरणेण' (उप ६ टी, नाट)। °ग्गय वि [°गत] मध्यवर्ती, बीचवाला (हे १, ६०)। °द्धा स्त्री [°धा] १ तिरोधान। २ नाश (आचू)। °द्धाण न [°धान] अदृश्य होना, तिरोहित होना

(उप १३६ टी) । °द्धाणी स्त्री [°धानी] जिससे अदृश्य हो सके ऐसी विद्या (सूत्र २, २) । °द्धाभूअ वि [°धाभूत] नष्ट, विगत, 'नष्टेति वा विगतेति वा अतद्धाभूतेति वा एगद्धा' (आचू) । °प्पाअ पु [°पात] अन्तर्भाव, समावेश (हे २, ७७) । °भाव पु [°भाव] समावेश (विमे) । °मुहुत्त न [°मुहूर्त] कुछ कम मुहूर्त, न्यून मुहूर्त (जी १४) । °रद्धा स्त्री [°धा] १ तिरोधान । २ नाश, 'बुड्ढी सइअन्तरद्धा' (आ १६) । °रद्धा स्त्री [°अद्धा] मध्य-काल, बीच का समय (आचा) । °रप्प पु [°आत्मन्] आत्मा, जीव (हे १, १४) । °रहिय, °रिहिद (शौ) वि [°हित] १ व्यवहित, अंतराल-युक्त (आचा) । २ युक्त, अदृश्य (सम ३६, उप १६६ टी, अमि १२०) । °वेइ पु [°वेदि] गंगा और यमुना के बीच का देश (कुमा) । °अत वि [°कान्त] सुन्दर, मनोहर (से १, ५६) ।

अतअ वि [आयात्] आता हुआ (मे ६, ४६) ।

अतअ वि [अन्तग] पार-गामी, पार-प्राप्त (मे ६, १८) ।

अंतअ वि [अन्तद] १ अविनाशी, शाश्वत । २ जिसकी सीमा न हो वह (मे ६, १८) ।

अतअ } वि [अन्तक] १ मनोहर, सुन्दर
अतग } (से ६, १८) । २ अन्तर्गत,
समाविष्ट (सूत्र १, १५) । ३ पर्यन्त, प्रान्त
भाग, 'जे एव परिभासति अन्तए ते समाहिण'
(सूत्र १, ३) । ४ यम, मृत्यु (से ६, १८, उप
६६६ टी), 'समागमं कखति अन्तगस्स' (सूत्र
१, ७) ।

अतग वि [अन्तग] १ पार-गामी । २
दुस्त्रयज, जो कठिनाई से छोड़ा जा सके,
'चिच्चाण अन्तग सोय निरवेक्खो परिब्बए'
(सूत्र १, ६) ।

अतगय देखो अत-गय (वव १) ।

°अतण न [यन्त्रण] वन्धन, नियन्त्रण (प्रयी
२४) ।

अतद्धाण वि [अन्तर्धान] तिरोधान-कर्त्ता (पिंड
५००) ।

अतवभाव देखो अंत-भाव (अज्झ १४२) ।

अंतर न [अन्तर] १ मध्य, भीतर, 'गामतरे
पविट्ठो सो' (उप ६ टी) । २ भेद, विशेष,
फरक (प्रासू १६८) । ३ अवसर, समय
(णाय १, २) । ४ व्यवधान (ज १) ।
५ अवकाश, अन्तराल (भग ७, ८) । ६ विवर,
छिद्र (पात्र) । ७ रजोहरण । ८ पात्र । ९ पुं.
आचार, कल्प । १० सूत के कपड़े पहनने का
आचार, सौत्र कल्प (कप्प) । °कप्प पुं
[°कल्प] जैन साधु का एक आत्मिक प्रशस्त
आचरण (पचू) °कट्ट पु [°कन्द] कन्द की
एक जाति, वनस्पति-विशेष (परण १) ।
°करण न [°करण] आत्मा का शुभ अर्घ्य-
वसाय-विशेष (पच) । °गिह न [°गृह]
१ घर का भीतरी भाग । २ दो घरों के बीच
का अंतर (वृह ३) । °णई स्त्री [°नदी]
छोटी नदी (ठा ६) । °दीप पु [°द्वीप]
१ द्वीप-विशेष (जी २३) । २ लवण समुद्र
के बीच का द्वीप (परण १) । °सत्तु पु
[°शत्रु] भीतरी शत्रु, काम-क्रोधादि (सुपा
८५) ।

अतर सक [अन्तरय्] व्यवधान करना, बीच
में डालना । अतरेहि, अतरेमि (विक्र १३६) ।

अतर वि [आन्तर] १ अभ्यन्तर, भीतरी, 'सय-
लमुराणपि अतरो अप्पाणो' (अञ्चु २०) । २
मानसिक (उवर ७१) ।

अतरग वि [अन्तरङ्ग] भीतरी (विसे
२०२७) ।

अतरजी स्त्री [आन्तरजी] नगरी-विशेष (विसे
२३०३) ।

अतरपल्ली स्त्री [अन्तरपल्ली] मूल स्थान से
ढाई गव्यूत की दूरी पर स्थित गांव (पव ७०) ।

अतरमुहुत्त देखो अत-मुहुत्त (पच २, १३) ।

अतरा अ [अन्तरा] १ मध्य में, बीच में (उप
६५४) । २ पहले, पूर्व में (कप्प) ।

अतराइय न [आन्तरायिक] १ कर्म-विशेष,
जो दान आदि करने में विघ्न करता है (ठा
२) । २ विघ्न, रुकावट (परह २, १) ।

अतराईय न [अन्तरायीय] ऊपर देखो (सुपा
६०१) ।

अंतरापह पुं [अन्तरापथ] रास्ता का बीचला
भाग (सुख १, १५) ।

अतराय पुन. [अन्तराय] देखो अतराइय
(ठा २, ४, स २०३) ।

अतराल पु [अन्तराल] अंतर, बीच का भाग
(अमि ८२) ।

अतरावण पुन [अन्तरापण] दूकान, हाट
(चाह ३) ।

अतरावास पु [अन्तरवर्ष, अन्तरावास]
वर्षा-काल (कप्प) ।

अंतरिक्ख पुंन [अन्तरिक्ख] अन्तराल,
आकाश (भग १७, १०, स्वप्न ७०) । °जाय
वि [°जात] जमीन के ऊपर रही हुई प्रासाद,
मंच आदि वस्तु (आचा २, ५) । °पासणाह
पु [°पार्श्वनाथ] खानदेश में अकोला के
पास का एक जैन-तीर्थ और वहाँ की भगवान
श्रीपार्श्वनाथ की मूर्ति (ती) ।

अतरिक्ख वि [आन्तरिक्ख] १ आकाश-
संबन्धी, आकाश का (जी ५) । २ ग्रहों के
परस्पर युद्ध और भेद का फल बतलानेवाला
शस्त्र (सम ४६) ।

अंतरिज्ज न [अन्तरीय] १ वस्त्र, कपड़ा ।
२ शय्या का नीचला वस्त्र, 'अतरिज्जं णाम
णियसण, अहवा अतरिज्ज नाम सेज्जाए हेट्ठिल्ल
पोत्त' (निच्च १५) ।

अंतरिज्ज न [दे] करघनी, कटीसूत्र (दे १,
३५) ।

अतरिज्जिया स्त्री [अन्तरीया] जैनीय
वैश्वाटिक गच्छ की एक शाखा (कप्प) ।

अतरित } वि [अन्तरित] व्यवहित, अतर-
अतरिय } वाला (सुर ३, १४३, से १,
२७) ।

अतरिया स्त्री [दे] समाप्ति, अत (ज २) ।

अतरिया स्त्री [अन्तरिका] छोटा अन्तर,
थोड़ा व्यवधान (राय) ।

अतरीय न [अन्तरीप] द्वीप, 'सरवरगिहत-
राले जिणभवण आसि अतरीय व' (धर्मवि
१४३) ।

अतरेण अ [अन्तरेण] बिना, सिवाय (उत्त
१) ।

अंतरेण अ [अन्तरेण] बीच मे, मध्य मे (स ७६७)।

अनल्लिख देखो अनरिख (गाया १, १, चार ७)।

अति देखो पति (से ६, ६६)।

अतिम वि [अन्तिम] चरम, शेष, अन्त्य (ठा १)।

अतिय न [अन्तिक] १ समीप, निकट (उत्त १)। २ अवसान, अंत, 'अह भिक्षू गिलाएजा आहारस्मेव अतिया' (आचा १, ८)। ३ अन्तिम, चरम (सूत्र २, २)।

अंतीहरी स्त्री [दे] दूती (दे १, ३५)।

अतेआरि वि [अन्तआरिन्] बीच में जाने-वाला, बीचक (हे १, ६०)।

अतेउर न [अन्त पुर] १ राजस्त्रियो का निवासगृह। २ रानी, 'मणकुमारो वि तेसि वदएत्य सतेउरो गयो तमुजाए' (महा)।

अतेउरिया स्त्री [आन्त पुरिकी, 'री] अन्त पुर मे रहनेवाली स्त्री, अतेउरी, 'रानी (उप ६ टी, सुपा २२८, २८६)। २ रोगी का नाममात्र लेने से उसको नीरोग बनानेवाली एक विद्या (वव ५)।

अतेछी स्त्री [दे] १ मध्य, बीच। २ उदर, पेट। ३ कल्लोल, तरंग (दे १, ५५)।

अतेवासि वि [अन्तेवासिन्] शिष्य (कप्प)।

अतेवुर देखो अतेउर (प्रति ५७)।

अंतो अ [अन्तर्] बीच, भीतर, 'गामतो संपत्ता' (उप ६ टी, सुर ३, ७४)। 'खरिया स्त्री [खरिका] नगर मे रहनेवाली वेश्या (भग १५)। 'गइया स्त्री [गतिका] स्वागत के लिए सामने जाना, 'सन्वाए विभूईए अतोगइयाए तणयस्स' (सुर १५, १६१)। 'गय वि [गत] मध्यवर्ती, समाविष्ट (उप ६८६ टी)। 'णिअसणी स्त्री [निवसनी] जैन साध्वियो को पहनने का एक वस्त्र (वृह ३)। 'दहण न [दहन] हृदय-दाह (तदु)। 'मव्माव-साणिय पुन [मध्यावसानिक] अभिनय का एक भेद (राय)। 'मुहुत्त न [मुहूर्त्त] कम मुहूर्त्त, ४८ मिनट से कम समय

(कप्प)। 'वाहिणी स्त्री [वाहिनी] क्षुद्र नदी (ठा २, ३)। 'वीसभ पु [विश्रम्भ] हादिक विश्वास (हे १ ६०)। 'सल्ल न [शल्य] १ भीतरी शल्य, घाव (ठा ४)। २ कपट, माया (श्रौप)। 'साला स्त्री [शाला] घरका भीतरी भाग, 'कोलालभड अतोसालाहितो वहिया नीरोइ' (उवा, पि ३४३)। 'हुत्त वि [मुख] भीतर, 'अताहुत्त डज्झइ जायासुएणे घरे हलिअउत्तो' (गा ३७३)।

अतोहुत्त वि [दे] अघोमुख, झोंघा मुह वाला (दे १, २१)।

अत्रही (अप) स्त्री [अन्त्र] आत, आतो (हे ४, ४४५)।

अद पु [चन्द्र] १ चन्द्रमा, चांद 'पसुव-इणो रोसारणपडिमामअंतगोरिमुहअंद' (गा १)। २ कपूर (मे ६, ४७)। 'राअ पु ('राग) चन्द्रकान्त मणि (मे ६, ४७)।

अदरा स्त्री [कन्दरा] गुफा (से ६, ४७)।

अदल पु [कन्दल] वृक्ष-विशेष (से ७, ४७)।

अदावेदि (शौ) देखो अतावेइ (हे ४, २८६)।

अंदु स्त्री [अन्दु] शृङ्खला, जजीर अदुया (श्रौप, स ५३०)।

अदेउर (शौ) देखो अतेउर (हे ४, २६१)।

अदोल अक [अन्दोल] १ हिचकना, झूलना। २ कपना, हिलना। ३ मदिघ होना, 'अदोलइ दोलासु व माणो गल्लोवि विलयाए' (स ५२१)। वक्र अदोलत, अदोलिन, अंदोलमाण (से ८, ५१, ११, २५, सुर ३, ११६)।

अंदोल सक [अन्दोलय] कपाना, हिलाना। वक्र अदोलंत (सुर ३, ६७)।

अदोलग पु [आन्दोलक] हिडोला (राय)।

अदोलण न [आन्दोलन] १ हिचकना, झूलना (सुर ४, २२५)। २ हिडोला। ३ मार्ग-विशेष (सूत्र १, ११)।

अदोलय देखो अंदोलग (सुर ३, १७५)।

अंदोलि वि [आन्दोलिन्] हिलानेवाला, कपानेवाला (गा २३७)।

अदोलि वि [आन्दोलिन्] झूलनेवाला (मुपा ७८)।

अदोहण देखो अदोलण।

अंध वि [अन्ध] १ अन्धा, नेत्रहीन (विपा १, १)। २ अज्ञान, ज्ञानरहित 'एए एण अघा मूठा तमप्पइट्ठा' (भग ७, ७)। 'कंटइज्ज न [कण्टकीग] अघ पुरप के कंटक पर चलने के माफिक अविचारित गमन करना (आचा)। 'तम न [तमम] निविड अन्धकार (सूत्र १, ५)। 'पुर न [पुर] नगर-विशेष (वृह ४)।

अध पु [अन्ध] पाचवाँ नरक का चौथा नरकेन्द्रक, एक नरक-स्थान (देवेन्द्र ११)।

अध पु व. [अन्ध] इस नाम का एक देश (पउम ६८, ६७)।

अंध वि [आन्ध] आन्ध्र देश का रहनेवाला (पएह १, १)।

अंधधु पुं [दे] कूप, कुँआ (दे १, १८)।

अंधकार देखो अंधयार (चद ४)।

अधग पु [दे] वृक्ष, पेड़ (भग १८, ४)।

'वण्ह पु [वहि] म्यूल अग्नि (भग १८, ४)।

अधग देखो अध (भग १८, ४)। 'वण्ह पुं [वहि] सूक्ष्म अग्नि (भग १८, ४)।

'वण्ह पु [वृणि] यदुवश का एक राजा, जो समुद्रविजयादि के पिता था (अत २)।

अंधय पु [अन्धक] १ अघा, नेत्र-हीन (पएह १, २)। २ वानर-वश का एक राज कुमार (पउम ६, १८६)।

अधयार पुन [अन्धकार] अंधेरा, अंधकार (कप्प, स ४२६)। 'पक्ख पु [पक्ष] कृष्णपक्ष (सुज १३)।

अधयारण न [अन्धकार] अन्धेरा (भवि)।

अधयारिय वि [अन्धकारित] अंधकार-वाला (से १, १५, ६३)।

अंधरअ वि [अन्ध] अघा, नेत्रहीन अघल (गा ७०४, हे २, १७३)।

अघलरिछी स्त्री [अन्धयित्री] अघ बनाने-वाली एक विद्या (मुपा ४२८)।

अधार पु [अन्धकार] अंधेरा (अध १११, २७०)।

अंधार मक [अन्धकार्य्] अन्धकार-युक्त करना। कर्म. 'मेहनच्छले सूरै अवारिजड न कि भुवण' (कुप्र ३८७)।
 अधारिय वि [अन्धकारित] अन्धकार वाला (सुपा ५४, सुर ३, २३०)।
 अंधाव सक [अन्धय्] अन्ध करना। अन्ध-वेइ (विक्र ८४)।
 अधिअ वि [अन्धित] अन्ध बना हुआ (सम्मत १२१)।
 अंधिआ स्त्री [अन्धिका] अन्ध-विशेष (दे २, १)।
 अधिआ स्त्री [आन्धका] चतुरिन्द्रिय जलु की एक जाति (उत्त ३६, १४७)।
 अंधिलग वि [अन्ध] अन्ध, जन्मान्व (परह २, ५)।
 अधिलय देखो अंधिलग, (पिंड ५७२)।
 अंधीकिद् (शौ) वि [अन्धीकृत] अन्ध किया हुआ (स्वप्न ४६)।
 अंधु पुं [अन्धु] कृप, कुंआ (प्रामा. दे १, १८)।
 अंधेलग देखो अधिल्लग (पिण्ड)।
 अप पुं [कम्प] कंपन (से ५, ३२)।
 अत्र पु [अम्ब] एक जात के परमाधामिक देव, जो नरक के जीवों को दुख देते हैं (सम २८)।
 अंत्र पु [आम्र] १ आम का पेड़। २ न आम, आम्र-फल (हे १, ८४)। ३ गंडुया स्त्री [दे] आम की आठी, गुठली (निचू १५)।
 चोयग न [दे] १ आम का रखा (निचू १५)। २ आम की छाल (आचा २, ७, २)।
 डगल न [दे] आम का टुकड़ा (निचू १५)।
 डाला न [दे] आम का छोटा टुकड़ा (आचा २, ७, २)।
 पेसिया स्त्री [पेशिका] आम का लम्बा टुकड़ा (निचू १५)।
 भित्त न [दे] आम का टुकड़ा (निचू १५)।
 सालग न [दे] आम की छाल (निचू १५)।
 सालवण न [शालवन] चैत्य-विशेष (राय)।
 अंत्र न [अम्ब] १ तक्र, मट्टा (ज ३)। २ खट्टा रम। ३ खट्टी चीज (विसे)। ४ वि. निष्ठुर वचन बोलनेवाला (वृह १)।
 अंत्र वि [आम्ब] १ खट्टी वस्तु। २ मट्टे से सज्जित चीज (ज ३)।
 अत्र वि [आम्र] लाल, रक्तवर्णवाला (से ३, ३४)।

अत्रग देखो अत्र = आम्र (अणु) °ट्टिया स्त्री [°स्थि] आम्र की गुठली (अणु)।
 अत्रट्ट पु [अम्बट्ट] १ देश-विशेष (पउम ६८, ६५)। २ जिसका पिता ब्राह्मण और माता वैश्य हो वह (सूत्र १, ६)।
 अवड पु [अम्बड] १ एक परिव्राजक, जो महाविदेह क्षेत्र में जन्म लेकर मोक्ष जायगा (श्रीप)। २ भगवान् महावीर का एक श्रावक, जो आगामी चौवीसी में २२ वां तीर्थंकर होगा (ठा ६)।
 अचड वि [दे] कठिन (दे १, १६)।
 अववाई स्त्री [अम्बाधात्रा] धाई माता (सुपा २६८)।
 अत्रमसी स्त्री [दे] कठिन और वाली कनिक (दे १, ३७)।
 अवय देखो अंत्र (सुपा ३३४)।
 अंत्र पुन [अम्बर] एक देव-विमान (देवेन्द्र १४४)।
 अंत्र न [अम्बर] १ आकाश (पात्र, भग २, २)। २ वस्त्र, कपड़ा (पात्र, निचू १)।
 तिलय पु [°तिलक] पर्वत-विशेष (आव)।
 वत्य न [°वत्स] स्वच्छ वस्त्र (कम्प)।
 अंत्रस पुन [अम्बरस] आकाश, गगन (भग २०, २—पत्र ७७५)।
 अवरिस पुन [अम्बरीष] १ भट्टी, माड (भग ३, ६)। २ कोष्ठक (जीव)। ३ पु नारक-जीवों को दुख देनेवाले एक प्रकण के परमाधामिक देव (पव १८०)।
 अवरिसि पु [अम्बच्छि] १ ऊपर का तीसरा अर्थ देखो (सम २८)। २ उज्जयिनी नगरी का निवासी एक ब्राह्मण (आव)।
 अंवरीस देखो अवरिस।
 अवरीसि देखो अंवरीसि।
 अवसमिआ } देखो अवमसी।
 अवसमी }
 अत्रहुडं स्त्री [अम्बहुण्डी] एक देवी (महानि २)।
 अवा स्त्री [अम्बा] १ माता, मा (स्वप्न २२४)। २ भगवान् नेमिनाथ की शासनदेवी (सति १०)। ३ वल्लो-विशेष (परण १)।
 अवाड सक [खरण्ट] खरडना, लेप करना; 'चमडेति खरण्टेति अवाडेति ति वुत्त भवति' (निचू ४)।

अवाड सक [तिरस् + कृ] उपालम्ब देना। तिरस्कार करना, 'तयो हक्कारिय अवाडिअ भणिआ य' (महा)।
 अवाडग पु [आम्रातक] १ आमला का अवाडय (परण १, पउम ४२, ६)। २ न. आमला का फल (अनु ६)।
 अवाडिय वि [तिरस्कृत] १ तिरस्कृत (महा) २ उपालम्ब (स ५१२)।
 अविआ स्त्री [अम्बिका] १ भगवान् नेमिनाथ की शासनदेवी (ती १०)। २ पांचवें वासुदेव की माता (पउम २०, १८४)।
 समय पु [°समय] गिरनार पर्वत पर का एक तीर्थ स्थान (ती ४)।
 आंवर न [आम्र] आम का फल (दे १, १५)।
 अविल पु [आम्ब] १ खट्टा रस (सम ४१)। २ वि. खटाई वाली चीज, खट्टी वस्तु (श्रीप ३४०)। ३ नामकर्म-विशेष (कम्म १, ४१)।
 अंबिलिया स्त्री [अम्बिका] १ इमली का पेड़ (उप १०३१ टी)। २ इमली का फल (आ २०)।
 अंबु न [अम्बु] पानी, जल (पात्र)।
 अं, °ज न [°ज] कमल, पद्म (अबु ५५, कुमा)।
 णाह पु [°नाथ] समुद्र (वव ६)।
 रुह न [°रुह] कमल (पात्र)।
 वहु पुं [°वह] मेघ, बारिस (गडड)।
 वाह पु [°वाह] मेघ, बारिस (गडड)।
 अत्रुपिसाअ पुं [दे] राहु (गा ८०४)।
 अत्रुसु पु [दे] श्रापद जन्तु विशेष, हिसक पशु-विशेष, शरभ (दे १, ११)।
 अवेट्टिआ स्त्री [दे] एक प्रकार का जूआ, अवेट्टी मुष्टि-यूत (दे १, ७)।
 अवेसि पु [दे] द्वार-फलक, दरवाजे का तख्ता (दे १, ८)।
 अवोच्चि स्त्री [दे] फूलों को बिननेवाली स्त्री (दे १, ६, नाट)।
 अंभ पु [अम्भस्] पानी, जल (आ १२)।
 अंभु (अप) पुं [अश्मन्] पत्थर, पापाण (पड)।
 अभो पुं [अम्भस्] पानी, जल।
 अं न [°ज] कमल (दे ७, ३८)।
 इणी स्त्री [°जिनी] कमलिनी, पद्मिनी (मै ६१)।
 निहि पु [°निधि] समुद्र (आ १२)।

°रुह न [°रुह] कमल, पद्म, 'कुभभोरुहसर-
जलनिहिणो, दिव्वविमाणरयणगणसिहिणो'
(उप ६ टी) ।

अंभोहि पुं [अम्भोधि] समुद्र (कुप्र २७१) ।
अस पु [अरा] १ भाग, अवयव, खंड, टुकड़ा
(पाप्र) । २ भेद, विकल्प (विसे) । ३ पर्याय,
धर्म, गुण (विमे) ।

अस पु [अश] विद्यमान कर्म, सत्ता-स्थित
कर्म, 'अस इति सतकम्मं भन्नई' (कम्म ६, ६) ।
°हर वि [°हर] भागीदार (उत्त १३, २२) ।

अंस } पु [अस] कान्व, कथा (गाया
असला } १, १८, तदु) ।

अंसि देखो अस = असु ।

अंसि स्त्री [अंशि] १ कोण, कोना (उप पु
६८) । २ चार, नोक (ठा ८) ।

असिया स्त्री [अंशिका] भाग, हिस्सा (वृह
३) ।

असिया स्त्री [अंशिका] १ ववामीर का रोग
(भग १६, ३) । २ नासिका का एक रोग
(निचू ३) । ३ फुन्सी, फोड़ा (निचू ३) ।

असु पु [अंशु] किरण (लहुअ ६) । °मालि
पु [°मालिन] सूर्य, सूरज (रयण १) ।

असु देखो असुय = अशुक (पच ३, ४०) ।

अंसु पु [अंशु] किरण । °मत, °वत वि
[°मत्] १ किरणवाला । २ पु. सूर्य
(प्राक ३५) ।

अंसु न [अंशु] आंसू, नेत्र-जल । °मत, °वत
वि [°मत्] अश्रुवाला (प्राक ३५) ।

असु } न [अंशु] आंसू, नेत्र-जल (हे १,
अंसुय } २६, कुमा) ।

असुय न [अशुक] १ वस्त्र, कपड़ा (से ६,
८२) । २ वारीक वस्त्र (वृह २) । ३ पोशाक,
वेश (कप्प) ।

अंसोत्थ देखो अरसोत्थ (पि ७४, १५२,
३०६) ।

अंह पुन [अहस्] मल, 'मउय व वाहिओ
सो निरहसा तेण जलपवाहेण' (धर्मवि
१४६) ।

अहि पुं [अहि] पाद, पांव (कप्प) ।

अकइ वि [अकति] असख्यात, अनन्त (ठा
३) ।

अकंड देखो अयंड (गा ६६५) ।

अकडतलिम वि [दे] १ स्नेह रहित । जिसने
शादी न की हो वह (दे १, ६०) ।

अकपण वि [अकम्पन] १ कप रहित । २
पु रावण का एक पुत्र (से १४, ७०) ।

अकपिय वि [अकम्पित] १ कम्परहित
२ पु भगवान् महावीर का आठवां गणधर
(सम १६) ।

अकज देखो अकय = अकृत्य (उव) ।

अकण्ण } वि [अकर्ण] १ कर्ण रहित ।

अकन्न } २-३ पु स्वनामख्यात एक अत-
र्द्धीय और उममे रहनेवाला (ठा ४, २) ।

अकप्प पु [अकल्प] अयोग्य आचार,
शास्त्रोक्त विधि-मर्यादा से बाहर का आचरण
(कप्प) ।

अकप्प वि [अकल्प्य] अनाचरणीय, शास्त्र-
निषिद्ध आहार-वस्त्र आदि अग्राह्य वस्तु
(वव १) ।

अकप्पिय पु [अकल्पिक] जिसको शास्त्र
का पूरा-पूरा ज्ञान न हो ऐसा जैन साधु
(वव १) ।

अकप्पिय देखो अकल्प = अकल्प्य (दम ५) ।

अकम वि [अकम] १ क्रम रहित । २
क्रि वि एक साथ (कुमा) ।

अकम्म } न [अकर्मन्, °क] १ कर्म
अकम्मग } का अभाव (वृह १) । २ पु
मुक्त, सिद्ध जीव (आचा) । ३ कृपि आदि
कर्म रहित (देश, भमि वगैरह) (जी २४) ।

°भूमग, °भूमय वि [°भूमक] अकर्म-भूमि
मे उत्पन्न होने वाला (जीव १) । °भूमि,
°भूमी स्त्री [°भूमि, भूमी] जिस भूमि मे
कल्प वृक्षों से ही आवश्यक वस्तुओं की प्राप्ति
होने से कृपि वगैरह कर्म करने की आवश्यकता
नहीं है वह, भोग-भूमि (ठा ३, ४) ।

°भूमिय वि [°भूमिज] अकर्म-भूमि मे
उत्पन्न (ठा ३, १) ।

अकम्हा अ [अकस्मान्] अचानक, निष्का-
रण (सुपा ५६६) ।

अकय वि [अकृत] नहीं किया हुआ (कुमा) ।

°मुह वि [°मुख] अपठित, अशिक्षित (वृह
३) । °थ वि [°थ] असफल (नाट) ।

अकय वि [अकृत्य] १—२ करने के अयोग्य
या अशक्य । ३ न अनुचित काम । °कारि

वि [°कारिन्] अकृत्य को करनेवाला
(पउम ८०, ७१) ।

अकय्य (मा) ऊपर देखो (नाट) ।

अकरण न [अकरण] १ नहीं करना (कस)
२ मैथुन, 'जइ सेवति अकरण पचएहवि
वाहिरा हूति' (वव ३) ।

अकाइय वि [अकायिक] १ शारीरिक चेष्टा
से रहित । २ पु मुक्तात्मा (भग ८, २) ।

अकाम पु [अकाम] १ अनिच्छा (सूअ
२, ६) । २ वि इच्छारहित, निष्काम
(सुपा २०६) । °णिज्जरा स्त्री [°निज्जरा]
कर्म-नाश की अनिच्छा ने बुझा आदि कष्टों
को सहन करना (ठा ४, ४) ।

अकामग } [अकामक] ऊपर देखो ।
अकामय } ३ अवाछनीय, इच्छा करने
के अयोग्य (पएह १, १ ; गाया १, १) ।

अकामिय वि [अकामिक] निराश (विपा
१, १) ।

अकाय वि [अकाय] १ शरीररहित । २ पुं
मुक्तात्मा (ठा २, ३) ।

अकार पुं [अकार] 'अ' अक्षर, प्रथम स्वर
वर्ण (विसे ४६५) ।

अकारग पुं [अकारक] १ अरुचि, भोजन की
अनिच्छा रूप रोग (गाया १, १३) । २ वि
अकर्ता (सूअ १, १) । °वाइ वि [°वादिन्]
आत्मा को निष्क्रिय माननेवाला (सूअ १,
१) ।

अकासि अ [दे] निषेध-सूचक अव्यय, अलम्,
'अकासि लवाए' (दे १, ८) ।

अकिंचण वि [अकिञ्चन] १ साधु, मुनि,
मिक्षुक (पएह २, ५) । २ गरीब, निर्धन,
दरिद्र (पाप्र) ।

अकिट्ट वि [अकृष्ट] नहीं जोती हुई जमीन
'अकिट्टजाय-' (पउम ३३, १४) ।

अकिट्ट वि [अकिष्ट] १ क्लेशरहित, बाधा-
रहित,

'पिच्छामि तुज्जं वत,

सगामे कइएसु दियहेसु ।

मह नाहेण विणिहय,

रामेण अकिट्टवम्मेण' (पउम

५३, ५२) ।

अकिरिय वि [अक्रिय] १ आलसी, निरुद्यम ।
२ अशुभ व्यापार से रहित (ठा ७) । ३
परलोक-विषयक क्रिया को नहीं माननेवाला,
नास्तिक (एदि) । १य वि [०त्मन्] आत्मा
को निष्क्रिय माननेवाला, साध्य (सूत्र १,
१०) ।

अकिरिया स्त्री [अक्रिया] १ क्रिया का
अभाव (भग २६, २) । २ दुष्ट क्रिया, खराब
व्यापार (ठा ३, ३) । ३ नास्तिकता (ठा ८) ।
०वाइ वि [०वादिन्] परलोक-विषयक क्रिया
को नहीं माननेवाला, नास्तिक (ठा ४, ४) ।
अकीरिय देखो अकिरिय, 'जे केइ लोगम्मि
अकीरियाया, अन्नेण पुट्टा धुयमादिसति' (सूत्र
१, १०) ।

अकुइया स्त्री [अकुचिका] देखो अकुय ।
अकुओभय वि [अकुतोभय] जिसको किसी
तरफ से भय न हो वह, निर्भय (आचा) ।
अकुंठ वि [अकुण्ठ] अपने कार्य में निपुण
(गउड) ।

अकुय वि [अकुच] निखल, स्थिर (निचू १) ।
स्त्री अकुइया (कप्प) ।

अकोप्प वि [अकोप्य] रम्य, सुन्दर (पएह
१, ४) ।

अकोप्प पु [दे] अपराध, गुनाह (पड्) ।
अकोस देखो अक्कोस = अक्कोश ।

अकोसायत वि [अकोशायमान] विकसता
हुआ, 'रविकिरणतल्लणवोहियअकोसायतपउम-
गमोरवियडणामे' (श्रौप) ।

अक पु [अके] १ सूर्य, सूरज (सुर १०,
२२३) । २ आक का पेड (प्रासू १६८) । ३
सुवर्ण, सोना, 'जेण अन्नुन्नसरिसो विहिओ
रयणक्कमजोगो' (रयण ५४) । रावण का
एक सुभट (पउम ५६, २) । ०तूल न [०तूल]
आक की रूई (पएण १) । ०तेअ पु [०तेजस्]
विद्याधर वंश का एक राजा (पउम ५, ४६) ।
०बोदीया स्त्री [०बोन्दिक्का] बल्ली-विशेष
(पएण १) ।

अक पु [दे] दूत, सदेश-हारक (दे १, ६) ।
०अक देखो चक्र (गा ५३०, से १, ५) ।
अकअ वि [अकृत] नहीं किया गया । ०पुव्व
वि [०पूर्व] जो पहले कभी न किया गया हो
(से १२, ५०) ।

अकड देखो अकड (प्राउ ५३) ।

अकंत वि [आक्रान्त] १ बलवान् के द्वारा
दवाया हुआ (गाया १, ८) । २ घेरा हुआ,
ग्रस्त (आचा) । ३ परास्त, अभिभूत (सूत्र १,
१, ४) । ४ एक जाति का निर्जीव वायु (ठा
५, ३) । ५ न आक्रमण, उल्लघन (भग १,
३) । ०दुक्ख वि [०दुख] दुःख से दवा
हुआ (सूत्र १, १, ४) ।

अकत वि [दे] बढ़ा हुआ, प्रवृद्ध (दे १, ६) ।
अकत वि [आक्रान्त] अनिष्ट, अनभिलषित,
अनभिमत (सूत्र १, १, ४, ६) ।

अकद अक [आ + क्रन्द] रोना, चिल्लाना
(प्राप्ता) । वक अकदत (सुपा ५७४) ।

अकद (अप) देखो अकम = आ + क्रम् ।
अकदइ, सकृ. अकदडिऊण (सण) ।

अकद पु [आक्रन्द] रोदन, विलाप, चिल्ला-
कर रोना (सुर २, ११४) ।

अकद वि [दे] त्राण करनेवाला, रक्षक (दे
१, १५) ।

अकदावणय वि [आक्रन्दक] खलानेवाला
(कुमा) ।

अकदिय न [आक्रन्दित] विलाप, रोदन (से
४, ६४, पउम ११०, ५) ।

अकम सक [आ + क्रम्] १ आक्रमण करना,
दवाना । २ परास्त करना । वक अकमत
(पि ४८१) । सकृ. अकमिन्ता (पएह १, १) ।

अकम पु [आक्रम] १ दवाना, चढ़ाई करना ।
२ पराभव (भाव) ।

अकमण न [आक्रमण] १—२ ऊपर देखो
(से १४, ६६) । ३ पराक्रम (विसे १०४६) ।
४ वि आक्रमण करनेवाला (से ६, १) ।

अकमिअ देखो अकत = आक्रान्त (काप्र १७२,
सुपा १२७) ।

अकसाला स्त्री [दे] १ बलात्कार, जबरदस्ती ।
२ उन्मत्त-स्त्री (दे १, ५८) ।

अक्का स्त्री [दे] वहिन (दे १, ६) ।

अक्का स्त्री [अक्का] कुटुनी, दूती (कुप्र १०) ।

अक्कासी स्त्री [अक्कासी] व्यन्तर-जातीय एक
देवी (ती ६) ।

अक्किज वि [अक्केय] खरीदने के अयोग्य (ठा
६) ।

अक्किट्ट वि [अक्किट्ट] १ क्लेश-वर्जित (जीव
३) । २ वाधारहित (भग ३, २) ।

अक्किट्ट वि [अक्किट्ट] अविलिखित (भग ३, २) ।
अक्किय वि [अक्किय] क्रियारहित (विसे
२२०६) ।

अक्कुट्ट वि [दे] अध्यासित, अविष्टित (दे १,
११) ।

अक्कुस सक [गम्] जाना । अक्कुमइ (हे
४, १६२) ।

अक्कुहय वि [अक्कुहक] निष्कपट, मायारहित
(दम ६, २) ।

अक्कूर पुं [अक्कूर] श्रीकृष्ण के चाचा का
नाम (रुक्मि ४६) ।

अक्कूर वि [अक्कूर] क्रूरतारहित, दयालु (पव
२३६) ।

अक्केज्ज देखो अक्किज्ज ।

अक्केहय वि [एक्काकिन्] अकेला, एकाकी
(नाट) ।

अक्कोड पु [दे] छाग, बकरा (दे १, १२) ।

अक्कोडण न [आक्कोडन] इकट्ठा करना, संग्रह
करना (विसे) ।

अक्कोस न [अक्कोश] जिस ग्राम के अति नज-
दीक में अटवी, श्वपद या पर्वतीय नदी आदि
का उपद्रव हो वह ।

'वेत्त चलमचल वा, इंदमणिद सकोसमक्कोम ।
वाघातम्मि अक्कोस, अडवीजले सावए तेणे'
(वह ३) ।

अक्कोस सक [आ + क्रुश्] आक्कोश करना ।
वक अक्कोसित (सुर १२, ४०) ।

अक्कोस पुं [आक्कोश] कटु वचन, शाप,
भर्त्सना (सम ४०) ।

अक्कोसग वि [आक्कोशक] आक्कोश करनेवाला
(उत्त २) ।

अक्कोसणा स्त्री [आक्कोशना] अभिशाप, निर्भ-
र्त्सना (गाया १, १६) ।

अक्कोसिअ वि [आक्कोशित] कटु वचनो में
जिसकी भर्त्सना की गई हो वह (सुर ६,
२३४) ।

अक्कोह वि [अक्कोध] १ अल्प-क्रोधो (ज २) ।
२ क्रोधरहित (उत्त २) ।

अक्ख पु [अक्ख] १ जीव, आत्मा (ठा १) ।
२ रावण का एक पुत्र (से १४, ६५) । ३

चन्दनक, समुद्र मे होनेवाला एक द्वीन्द्रिय जन्तु, जिसके निर्जीव शरीर को जैन साधु लोग स्थापनाचार्य मे रखते हैं (श्रा १)। ४ पहिया की घुरी, कील (ओघ ५४६)। ५ चौसर का पासा (वरण ३२)। ६ विभीतक, बहेडा का वृक्ष (से ६, ४४)। ७ चार हाथ या ६६ अंगुली का एक मान (अणु-सम)। ८ रुद्राक्ष (अणु ३)। ९ न इन्द्रिय (विसे ६१, वरण ३२)। १० द्यूत, जूआ (से ६, ४४)। ११ चम्म न [चमेन्] पखाल, मसक, 'अक्खचम्म उट्ठगडदेस' (राया १, ६)। १२ पाडय न [पादक] कील का टुकड़ा, 'राइणा हाहारवं करेमाणेण पहरो सो सुणाम्मो अक्खपाडएणंति' (स २५५)। १३ माला स्त्री [माला] जपमाला (पउम ६६, ३१)। १४ लया स्त्री [लता] रुद्राक्ष की माला (दे)। १५ वत्त न [पात्र] पूजा का पात्र, 'तो लोओ। गहियक्खवत्तहत्यो एइ गिहे

वद्धावणत्थ' (सुपा ५८५)। १६ वलय न [वलय] रुद्राक्ष की माला (दे २, ८१)। १७ वाअ पु [पाद] नैयायिक मत के प्रवर्तक गौतम ऋषि (विसे १५०८)। १८ वाडग पु [वाटक] अखाडा (जीव ३)। १९ सुत्तमाला स्त्री [सूत्रमाला] जपमाला (अणु ३)।

अक्ख देखो अक्खा = आ + ख्या। अक्खइ (सण)।

अक्खइय वि [आख्यात] उक्त, कथित (सण)।

अक्खउहिणी देखो अक्खोहिणी (प्राकृ ३०)।

अक्खड वि [अखण्ड] १ संपूर्ण। २ अखण्डित। ३ निरन्तर, अविच्छिन्न, 'अक्ख-एडपयारोहि रहवीस्परे गम्भो कुमरो' (सुपा २६६)।

अक्खंडल पुं [आखण्डल] इन्द्र (पाप्र)। अक्खंडिअ वि [अखण्डित] १ संपूर्ण, खण्ड रहित (से ३, १२)। २ अविच्छिन्न, निरन्तर (उर ८, १०)।

अक्खत देखो अक्खा = आ + ख्या।

अक्खड सक [आ + स्कन्द] आक्रमण करना, 'अक्खड पिआ हिए, अएण महिलाअणं रमंतस्स' (गा ४४)।

अक्खणवेल न [दे] १ मैथुन, संभोग।

२ शाम, संव्या काल (दे १, ५६)।

अक्खणिआ स्त्री [दे] विपरीत मैथुन (पाप्र)।

अक्खम वि [अक्षम] १ असमर्थ (सुपा-३७०)। २ अयुक्त, अनुचित (ठा ३, ३)।

अक्खय वि [अक्षय] १ धावरहित, व्रण शून्य (सुर २, ३३)। २ अखण्डित, संपूर्ण (सुर ६, १११)। ३ पु. व. अखण्ड चावल (सुपा ३२६)।

अयार वि [अचार] निर्दोष आचरणवाला (वव ३)।

अक्खय वि [अक्षय] १ क्षय का अभाव (उवर ८३)। २ जिसका कभी नाश न हो वह (सम १)।

अनिहि पुन [अनिधि] एक प्रकार की तपश्चर्या (पव २७१)। २ तइया स्त्री [तृतीया] वैशाख शुक्ल तृतीया (आनि)।

अक्खर पुन [अक्षर] १ अक्षर, वर्ण (सुपा ६५६)। २ ज्ञान, चेतना, 'नक्खरइ अणुव-ओगेवि, अक्खरं, मो य चेयणाभावो' (विसे ४५५)। ३ वि अविनश्वर, नित्य (विसे ४५७)। ४ अर्थ पुं [अर्थ] शब्दार्थ (अभि १५१)। ५ पुट्टिया स्त्री [पुट्टिका] लिपि-विशेष (सम ३५)। समास पुं [समास] १ अक्षरो का समूह। २ श्रुत-ज्ञान का एक भेद (कम्म १, ७)।

अक्खल पु [दे] १ अखरोट वृक्ष। २ न अखरोट वृक्ष का फल (पएण १६)।

अक्खलिय वि [दे] १ जिसका प्रतिशब्द हुआ हो वह, प्रतिध्वनित (दे १, २७)। २ आकुल, व्याकुल (सुर ४, ८८)।

अक्खलिय वि [अस्खलित] १ अवाधित, निरुपद्रव (कुमा)। २ जो गिरा न हो वह, अपतित (नाट)।

अक्खवाया स्त्री [दे] दिशा (दे १, ३५)।

अक्खा सक [आ + ख्या] कहना, बोलना। वक्क अक्खत (सण, धर्म ३)। कवक्क अक्खज्जंत (सुर ११, १६२)। क अक्खेअ, अक्खाइयव्व (विसे २६४७, गा २४२)। हेक्क अक्खाउं (दस ८, सत्त ३ टी)।

अक्खा स्त्री [आख्या] नाम (विसे १६११)।

अक्खाइ वि [आख्यायिन्] कहनेवाला, उपदेशक, 'अधम्मक्खाई' (राया १, १८, विपा १, १)।

अक्खाय न [आग्यातिक] क्रियापद, क्रिया-वाचक शब्द (विसे)।

अक्खाइय वि [अक्षितिक] स्यामी, अनश्वर, शाश्वत, 'एव ते अलियवयणदच्छा परदोमुपाय-रणसत्ता वेदति अक्खाइयवीएण अण्णाण कम्मबंधणेण' (पएह १, २)।

अक्खाइया स्त्री [आख्यायिनी] उपन्यास, वार्ता, कहानी (कप्पू, भाग ५०)।

अक्खाउ वि [आख्याउ] कहनेवाला (सूय १, १, ३, १३)।

अक्खाग पुं [आख्याक] स्तेच्छो को एक जाति (सूय १, ५)।

अक्खाडग पुं [अक्षवाटक] १ जूआ अक्खाडय } खेलने का अड्डा। २ अखाडा, व्यायाम-स्थान (उप पृ १३०)। ३ प्रेक्षको को बैठने का आसन (ठा ४, २)।

अक्खाण न [आख्यान] १ कथन, निवेदन (कुमा)। २ वार्ता, उपकथा (पउम ४८, ७७)।

अक्खाणय न [आख्यानक] कहानी, वार्ता (उप ५६७ टी)।

अक्खाय वि [आख्यात] १ प्रतिपादित, कथित (सुपा ३६५)। २ न. क्रियापद (पएह २, २)।

अक्खाय न [अखात] हाथी को फकड़ने के लिए किया जाता गद्दा, लड्डा (पाप्र)।

अक्खाया स्त्री [आख्याता] एक प्रकार की जैन दीक्षा, 'अक्खायाए सुदसणो सेट्ठी सामिणा पडिबोहिओ' (पंचू)।

अक्खि वि [अक्षि] आख, नेत्र (हे १, ३३, ३५, स २, १०४, प्राप्र, स्वप्न ६१)।

अक्खिअ वि [आक्षिक] पासा से जूआ खेलनेवाला, जुआडी (दे ७, ८)।

अक्खिअ वि [आख्यात] प्रतिपादित, कथित (श्रा १४)।

अक्खितर न [अक्ष्यन्तर] आख का कोटर (विपा १, १)।

अक्खिज्जंत देखो अक्खा = आ + ख्या ।

अक्खित्त वि [आक्षिप्त] सब तरह से प्रेरित (सिरि ३६६) ।

अक्खित्त वि [आक्षिप्त] १ व्याकुल । २ जिम पर टीका की गई हो वह । ३ आकृष्ट, खींचा हुआ (सुर ३, ११५) । ४ सामर्थ्य से लिया हुआ (से ४, ३१) ।

अक्खित्त न [अक्षेत्र] मर्यादित क्षेत्र के बाहर का प्रदेश (निच्चू १) ।

अक्खित्त सक [आ + क्षिप्] १ आक्षेप करना, टीका करना, दोषारोप करना । २ रोकना । ३ गंवाना । ४ व्याकुल करना । ५ फेंकना । ६ स्वीकार करना, 'अक्खिवइ पुरि-सगार' (उवर ४६) । हेतु अक्खिविउ (निर १, १), 'तयो न जुत्तमिह कालम् अक्खिविउ' (स २०५, पि ५७७) । कर्म 'अक्खिप्पइ य मे वाणी' (म २३, प्रामा) ।

अक्खित्त सक [आ + क्षिप्] आक्रोश करना । अक्खिवति (सिरि ८३१) ।

अक्खिवण न [आक्षेपण] व्याकुलता, घबराहट (परह १, ३) ।

अक्खीण वि [अक्षीण] १ हास-शून्य, क्षय-रहित, अखूट (कम्प) । २ परिपूर्ण, सपूर्ण (कुमा) । 'महाणसिय वि [महानसिक] जिमको निम्नोक्त अक्षीण महानसी शक्ति प्राप्त हुई हो वह (परह २, १) 'महाणसी स्त्री [महानसी] वह अद्भुत आत्मिक शक्ति जिसमे थोड़ा भी भिक्षात्र दूसरे सैकड़ों लोगों को यावत्-तृप्ति खिलाने पर भी तबतक कम न हो, जबतक भिक्षात्र लानेवाला स्वयं उसे न खाय (पव २७०) । 'महालय वि [महालय] जिससे थोड़ी जगह में भी बहुत लोगों का समावेश हो सके ऐसी अद्भुत आत्मिक शक्ति से युक्त (गच्छ २) ।

अक्खुअ वि [अक्षत] अक्षीण, श्रुति-शून्य, 'अक्खुआयारचरित्ता' (पडि) ।

अक्खुडिअ वि [अखण्डित] सपूर्ण, अखण्ड, श्रुतिरहित, 'अक्खुडिओ पक्खुडिओ छिक्कतोवि सबालदुद्धजणो' (सुपा ११६) ।

अक्खुण्ण वि [अक्षुण्ण] जो टूटा हुआ न हो, अविच्छिन्न (वृह १) ।

अक्खुद् वि [अक्षुद्र] १ गमीर, अशुच्य (दव्व ५) । २ दयालु, करुण (पचा २) । ३ उदार (पचा ७) । ४ मूक बुद्धिवाला (धम्म २) ।

अक्खुद् न [अक्षौद्रय] क्षुद्रता का अभाव (उप ११५) ।

अक्खुपुरी स्त्री [अक्षुपुरी] नगरी-विशेष (णया २) ।

अक्खुब्भमाण वि [अक्षुब्धमाण] जो क्षोभ को प्राप्त न होता हो (उप पृ ६२) ।

अक्खुभिय देखो अक्खुहिय (णदि ४६) । अक्खुहिय वि [अक्षुभित] क्षोभरहित, अशुच्य (सण) ।

अक्खूण मि [अक्षूण] अशून्य, परिपूर्ण, 'भोयणवत्याहरण सपायतेण सव्वमक्खूण' (उप ७२८ टी) ।

अक्खेअ देखो अक्खा = आ + ख्या ।

अक्खेव पु [अ + क्षेप] शीघ्रता, जल्दी (सुपा १२६) ।

अक्खेव पु [आक्षेप] १ आकर्षण, खींच कर लाना (परह १, ३) । २ सामर्थ्य, अर्थ की सगति के लिए अनुक्त अर्थ को बतलाना (उप १००२) । ३ आशका, पूर्वपक्ष (भग २, १, विसे १४३६) । ४ उत्पत्ति, 'दइवेण फलक्खेवे अइप्पसंगो भवे पयडो' (उवर ४८) ।

अक्खेवग पु [आक्षेपक] १ खींचकर लाने-वाला, आकर्षक । २ ममर्थक पद, अर्थसगति के लिए अनुक्त अर्थ को बतलानेवाला शब्द (उप ६६६) । ३ सान्निध्यकारक (उवर १८८) ।

अक्खेवणी स्त्री [आक्षेपणी] श्रोताओं के मन को आकर्षण करनेवाली कथा (औप) ।

अक्खेवि वि [आक्षेपिन्] आकर्षण करने-वाला, खींचकर लानेवाला (परह १, ३) ।

अक्खोड सक [कृप्] म्यान से तलवार को खीचना, बाहर करना । अक्खोडइ (हे ४, १८७) । अक्खोड सक [आ + स्फोटय्] थोड़ा या एक बार भटकना । अक्खोडिआ । वक्र । अक्खोडत (दम ४) ।

अक्खोड पुं [अक्षोट] १ अखरोट का पेड़ । २ न अखरोट वृक्ष का फल (परह १७, सण) । ३ राजकुल की दी जाती सुवर्ण आदि की भेंट (वव १ टी) ।

अक्खोड पु [आस्फोट] प्रतिलेखन की क्रिया-विशेष (पव २) ।

अक्खोडिय वि [कृष्ट] खींचा हुआ, बाहर निकला हुआ (खड्ग) (कुमा) ।

अक्खोभ } पु [अक्षोभ] १ क्षोभ का अभाव, घबराहट का अभाव अक्खोह } (णया १, ६) १-२ यदुवंश के राजा

अक्खोहणिण का एक पुत्र, जो भगवान् नेमिनाथ के पास दीक्षा लेकर शत्रुंजय पर मोक्ष गया था (अत १, ७) । ३ न. 'अन्तकृद्शा' सूत्र का एक अध्ययन (अत १, ७) । ४ वि क्षोभरहित, अचल, स्थिर (परह २, ५, कुमा) ।

अक्खोहणिज्ज वि [अक्षोभणोय] जो क्षुब्ध न किया जा सके (सुपा ११४) ।

अक्खोहिणी स्त्री [अक्षोहिणी] एक बड़ी सेना, जिसमे २१८७० हाथी, २१८७० रथ, ६५६१० घोड़े और १०६३५० पैदल होते हैं (पउम ५५, ७, ११) ।

अखड वि [अखण्ड] परिपूर्ण, खण्डरहित (औप) ।

अखडल पु [आखण्डल] इन्द्र (पउम ४६, ४४) ।

अखडिय वि [अखण्डित] नहीं टूटा हुआ, परिपूर्ण (पचा १८) ।

अखपण वि [दे] स्वच्छ, निर्मल, 'आयव-त्ताइ' धारित, ठविति पुरो अखम्पणं दम्पण केवि' (सुपा ७४) ।

अखज्ज वि [अखाद्य] जो खाने लायक न हो (णया १, १६) ।

अखत्त न [अक्षात्र] क्षत्रिय-धर्म के विरुद्ध, जुलुम, 'यपइ विजावलिओ,

अहह अखत्त करेइ कोइ इमो'

(धम्म ८ टी) ।

अखम देखो अक्खम (कुमा) ।

अखरय पु [दे] श्रुत्य-विशेष, एक प्रकार का दास (पिड ३६७) ।

अखलिअ देवो अक्खलिय = अस्खलित (कुमा) ।

अखादिम वि [अखाद्य] खाने के अयोग्य, अक्षय, 'कुपहे धावति, अखादिम खादति' (कुमा) ।

अखाय वि [अखात] नही खुदा हुआ । °तल न [°तल] छोटा तलाव (पात्र) ।

अखिल वि [अखिल] १ सर्व, सकल, परिपूर्ण (कुमा) । २ ज्ञान आदि गुणों से पूर्ण, 'अखिले अगिद्धे अणिअचारी' (सूत्र १, ७) ।

अखुट्टि वि [दे] अखूट (भवि) ।

अखुट्टिअ वि [अतुडित] अखूट, परिपूर्ण (कुमा) ।

अखुडिअ देखो अक्खुडिअ (कुमा) ।

अखेयण वि [अखेदज्ञ] अकुशल, अनिपुण (सूत्र १, १०) ।

अखोड देखो अक्खोड + आस्फोट (पव २ टी) ।

अखोहा स्त्री [अक्षोभा] विद्या-विशेष (पउम ७, १३७) ।

अग पु [अग] १ वृक्ष, पेड़ । २ पर्वत, पहाड़ (मे ६, ४१), 'उच्चागयठाललदुसठिय' (कप्प) ।

अगइ स्त्री [अगति] १ नीच गति, नरक या पशु-योनि में जन्म (ठा २, २) । २ निरुपाय (अचु ६६) ।

अगठिम न [अग्रन्थिम] १ कदली-फल, केला (वृह १) । २ फल की फाँक, टुकड़ा (निचु १६) ।

अगडिगेह वि [दे] यौवनोन्मत्त, जवानी से उन्मत्त बना हुआ (दे १, ४०) ।

अगडूयग वि [अकण्डूयक] नही खुजलाने-वाला (सूत्र २, २) ।

अगथ वि [अग्रन्थ] १ घनरहित । २ पुम्ब्री. निर्ग्रन्थ, जैन साधु, 'पाव कम्म अकुव्वमाणे एम मह अगथे विआहिण' (आचा) ।

अगधण पु [अगन्धन] इस नाम की सपों की एक जाति, 'निच्छति वतय भोत्तु कुले जाय । अगधणे' (दस २) ।

अगड पु [दे अवट] कूप, इनारा (सुर ११, ८६, उव) । °तड वि [°तट] इनारा का किनारा (विसे) । °दत्त पु [°दत्त] इस नाम का एक राजकुमार (उत्ता) । ददुटुर पु [°दुटुर] कुंए का मेढक, अल्पज्ञ, वह मनुष्य जो अपना घर छोड़ बाहर न गया हो (एयाया १, ८) ।

अगड पु [अवट] कूप के पास पशुओं के जल पीने के लिए जो गर्त बनाया जाता है वह (उप २०५) ।

अगड वि [अकृत] नही किया हुआ (व ६) ।

अगणि पु [अग्नि] आग (जी ६) । °काय पु [°काय] अग्नि के जीव (भग ७, १०) । °मुह पु [°मुख] देव, देवता (आचु) ।

अगणिअ वि [अगणित] अवगणित, अपमानित (गा ४८४, पउम ११७, १४) ।

अगणिज्जत वि [अगण्यमान] जो गुणों में न आता हो, जिसकी श्रवृत्ति न की जाती हो, 'अगणिज्जतो नासे विजा' (प्रासू ६६) ।

अगत्थि } पु [अगस्ति, °क] १ इम नाम अगत्थिय } का एक ऋषि । २ बृक्ष-विशेष (दे ६, १३३, अनु) । ३ एक तारा, अठासी महाग्रहों में ५४ वाँ महाग्रह (ठा २, ३) ।

अगन्न वि [अगण्य] १ जिमकी गिनती न हो सके वह (उप ७२८ टी) ।

अगन्न वि [अकर्ण्य] नही सुनने लायक, आश्रव्य (भवि) ।

अगम पु [अगम] १ वृक्ष, पेड़, 'दुमा य पायवा रुक्खा आ (२ अ) गमा विडिमा तल' (दसनि १, ३५) । २ वि स्यावर, नही चलने वाला (महानि ४) ।

अगम न [अगम] आकाश, गगन (भग २० २) ।

अगमिय वि [अगमिक] वह शास्त्र, जिसमें एक सदृश पाठ न हो, या जिसमें गाथा वगैरह पद्य हो, 'गाहाइ अगमिय खलु कालियसुय' (विसे ४४६) ।

अगम्म वि [अगम्य] १ जाने के अयोग्य । २ स्त्री भोगने के अयोग्य, भगिनी, पर स्त्री आदि (भवि, सुर १२, ५२) । °गामि वि [°गामिन्] पर स्त्री को भोगनेवाला, पारदारिक (पएह १, २) ।

अगय न [अगद] औपव, दवाई (सुपा ४४७) ।

अगय पु [दे] दैत्य, दानव (दे १, ६) ।

अगर पुन [अगरु] सुगन्धि काष्ठ-विशेष (पएह २, ५) ।

अगरल वि [अगरल] सुविभक्त, स्पष्ट, 'अगरलाए असम्मणाए भासाए भासेइ' (औप) ।

अगरु देखो अगर (कुमा) ।

अगरुअ वि [अगरुक] बड़ा नही, छोटा, लघु (गउड) ।

अगरुलहु वि [अगरुलघु] जो भारी भी न हो और हलका भी न हो वह, जैसे आकाश, परमाणु वगैरह (विसे) । °णाम न [°नामन्] कर्म-विशेष, जिसमें जीवों का शरीर न भारी न हलका होता है (कम्म १, ४७) ।

अगलदत्त पु [अगडदत्त] एक रथिक-पुत्र (महा) ।

अगलय देखो अगर (औप) ।

अगहण पु [दे] कापालिक, एक ऐसे मप्रदाय के लोग, जो माघे की खोपड़ी में ही खाने-पीने का काम करते हैं (दे १, ३१) ।

अगहिल वि [अग्रहिल] जो भूतादि से आविष्ट न हो, अपागल (उप ५६७ टी) ।

°राय पु [°राज] एक राजा, जो वास्तव में पागल न होने पर भी पागल-प्रजा के आक्रान्त में बनावटी पागल बना था (ती २१) ।

अगाड वि [अगाध] अयाह, बहुत गहरा; 'अगाडपण्णमु वि भाविअप्पा' (सूत्र १, १३) ।

अगामिय वि [अग्रामिक] ग्रामरहित, 'अगामियाए अडवीए' (औप) ।

अगार पु [अकार] 'अ' अक्षर (विसे ४८४) ।

अगार न [अगार] १ गृह, घर (मम ३७) । २ पु गृहस्थ, गृही, ससारी (दस १) । °त्य वि [°स्थ] गृही, (आचा) । °धम्म पु [°धर्म] गृहि-धर्म, श्रावक-धर्म (औप) ।

अगारग वि [अकारक] अकर्ता (सूत्रनि ३०) ।

अगारि वि [अगारिन्] गृहस्थ, गृही (सूत्र २, ६) ।

अगारी स्त्री [अगारिणी] गृहस्थ स्त्री (वव ४) ।

अगाल देजो अयाल (स ८२) ।

अगाह वि [अगाध] गहरा, गभीर (पात्र) ।

अगिणि देखो अग्नि (मक्षि १२) ।

अगिला स्त्री [अग्लानि] अ.खन्नता, उत्साह (ठा ५, १) ।

अगिला स्त्री [दे] अवज्ञा, तिरस्कार (दे १, १७) ।

अगीय वि [अगीत] शास्त्रों का पूरा ज्ञान जिसको न हो वैसा (जैन साधु) (उप ८३३ टी) ।

अगीयत्य वि [अगीतार्थ] ऊपर देखो (वव १) ।

अगुम्हर् वि [दे] गुप्त वात को प्रकाशित करनेवाला (दे १, ४३) ।

अगुण देखो अउण (पि २६५) ।

अगुण वि [अगुण] १ गुणरहित, निर्गुण (गउड) । २ पु दोष, दूषण (दम ५) ।

अगुणासी देखो एगूणासी (पव २४) ।

अगुणि वि [अगुणिन्] गुण-वर्जित, निर्गुण (गउड) ।

अगुरु } वि [अगुरु] १ बड़ा नहीं सो,
अगुरुअ } छोटा, लघु । २ पुन सुगन्धि काष्ठ विशेष, अगुरु चन्दन, 'धूवेण कि अगुरुणो किमु कंकणेषु' (कप्प, पउम २, ११) ।

अगुरुलहु } देखो अगुरुलहु (मम ५१,
अगुरुलहुअ } ठा १०) ।

अगुरुलु देखो अगुरु, 'सखतिणिसागुलुचदणाड' (निचू २) ।

अग्ग न [अग्रव] प्रकर्ष (उत्त २०, १५) ।

अग्ग पुंन [दे] १ परिहास । २ वर्णन (सखि ४७) ।

अग्ग न [अग्र] १ आगे का भाग, ऊपर का भाग (कुमा) । २ पूर्वभाग, पहले का भाग (निचू १) । ३ परिमाण, 'अग्रं गति वा परिमाणं वि ता एणद्धा' (आचू १) । ४ वि प्रधान, श्रेष्ठ (सूपा २४८) । ५ प्रथम, पहला (आव १) । ६ क्लृप्तं पु [स्कन्ध] सैन्य का अग्र भाग (मे ३, ४०) । ७ गामिग वि [गामिक] अग्रगामी, आगे जानेवाला (स १४७) । ८ ज देखो य (दे ६, ४६) । ९ जम्म [जन्मन्] देखो य (उप ७२८ टी) । १० जाय [जात] देखो य (आचा) । ११ जीहा स्त्री [जिह्वा] जीभ का अग्र-भाग । १२ णिय, णी वि [णी] अगुग्रा, मुखिया, नायक (कप्प, नाट) । १३ तावस पु [तापस] ऋषि-विशेष का नाम (सुज १०) । १४ ङ्ग न [र्ध] पूर्वाध (निचू १) । १५ पिंढ पु [पिण्ड] एक प्रकार का भिक्षान्न (आचा) । १६ प्पहारि वि [प्रहारिन्] पहले प्रहार करनेवाला (आव १) । १७ बीय वि [बीज] जिसमें बीज पहले ही उत्पन्न हो जाता है या जिसकी उत्पत्ति में उसका अग्र-

भाग ही कारण होता है, जैसे आम, कोरटक आदि वनस्पति (परण १, ठा ४१) । १८ मणि पु [मणि] मुख्य, श्रेष्ठ, शिरोमणि (उप ७२८ टी) । १९ महिसी स्त्री [महिषी] पट-रानी (सुपा ४६) । २० य वि [ज] १ आगे उत्पन्न होने वाला । २ पु. ब्राह्मण । ३ बड़ा भाई । ४ स्त्री बड़ी बहन (नाट) । ५ लोग पु [लोक] मुक्तिस्थान, सिद्धि-क्षेत्र (आ १२) । ६ हत्थ पु [हस्त] १ हाथ का अग्र-भाग (उवा) । २ हाथ का अवलम्बन महारा (मे ४, ३) । ३ अगुली (प्राप) ।

अग्ग न [अग्र] १ प्रभूत, बहु । २ उपकार (आचानि २८५) । ३ भाव न [भाव] धनिष्ठा-नक्षत्र का गोत्र (ज ७, पय ५००) ।

माहिसी देखो महिसी (उत्त १६, १) ।

अग्ग वि [अग्र्य] १ श्रेष्ठ, उत्तम (मे ८, ४४) । २ प्रधान, मुख्य (उत्त १४) ।

अग्गओ अ [अग्रतस्] सामने, आगे (कुमा) ।

अग्गथ वि [अग्रन्य] १ धनरहित । २ पु जैन साधु (श्रीप) ।

अग्गक्खध पु [दे] रणभूमि का अग्रभाग (दे १, २७) ।

अग्गल न [अर्गल] १ किवाड़ बन्द करने की लकड़ी, आगल (दस ५, २) । २ पु एक महा-ग्रह (सुज २०) । ३ पासय पु [पाशक] जिसमें आगल दिया जाता है वह स्थान (आचा २, १, ५) । ४ पासाय पु [प्रासाद] जहाँ आगल दिया जाता है वह घर (राय) ।

अग्गल वि [दे] अविक, 'वीसा एक्कगला' (पिग) ।

अग्गला स्त्री [अर्गला] आगल, हुडका (पाम) । अग्गलिअ वि [अर्गलित] जो आगल से बन्द किया गया हो वह (सुर ६, १०) ।

अग्गवेअ पु [दे] नदी का पूर (दे १, २६) ।

अग्गह पु [आग्रह] आग्रह, हठ, अभिनिवेश (सूअ १, १, ३, म ५१३) ।

अग्गहण न [अग्रहण] १ अज्ञान (सुर १२, ४६) । २ नहीं लेना (मे ११, ६८) ।

अग्गहण न [दे अग्रहण] अनादर, अवज्ञा (दे १, १७, से ११, ६८) ।

अग्गहणिया स्त्री [दे] सीमतोन्नयन, गर्भाधान के बाद किया जाता एक संस्कार और उसके

उपलक्ष्य में मनाया जाता उत्सव, जिसको गुजराती भाषा में 'अग्रघण्णी' कहते हैं (मुपा २३) ।

अग्गहि वि [आग्रहिन्] आग्रही, हठी (सूअ १, १३) ।

अग्गहिअ वि [दे] १ निर्मित, विरचित । २ स्वीकृत, कबूल किया हुआ (पड्) ।

अग्गाणी वि [अग्रणी] मुख्य, प्रधान, नायक, 'दक्खिन्नदयाकलिस्सो अग्गाणी सयलवणिय-मन्यस्स' (सुर ६, १३८) ।

अग्गारण न [उद्गारण] वमन, वान्ति (चाह ७) ।

अग्गाह वि [अगाध] अगाध, गभीर, 'खीरा-दहिणुव्व अग्गाहा' (गुरु ४) ।

अग्गाहार पुं [अग्राधार] ग्राम-विशेष का नाम (सुपा ५४५) ।

अग्गाहार पुं [दे अग्राहार] उच्च जीविका (सुख २, १३) ।

अग्नि पु [अग्नि] नरकावाम-विशेष, एक नरक-स्थान (देवेन्द्र २७) । १ मत, चत वि [मत] अग्निवाला (प्राक् ३५) । २ हुत्त देखो होत्त (उत्त २५, १६, सुख २५, १६) ।

अग्नि पुं स्त्री [अग्नि] १ आग, वद्धि (प्रासू २२), 'एस पुण कावि अग्नी' (सट्ठि ६१) । २ कृतिका नक्षत्र का अधिष्ठायाक देव (ठा २, ३) । ३ लोकान्तिक देव-विशेष (प्रावम) । ४ आरिआ स्त्री [कारिआ] अग्नि-कर्म, होम (कप्प) । ५ उत्त पु [पु] ऐरवत धेनू के एक तीर्थंकर का नाम (मम १५३) । ६ कुमार पु [कुमार] भवतपति देवों की एक अवा-न्तर जाति (परण १) । ७ कोण पु [ओण] पूर्व और दक्षिण के बीच की दिशा (मुपा ६८) । ८ जस पु [यशस] देव-विशेष (दीव) । ९ ज्योय पु [द्योत] भगवान् महा-वीर का पूर्वोक्त वीरसत् ब्राह्मण-जन्म का नाम (प्राचू) । १० ठु वि [स्थ] आग में न्हा हुआ (दे ४, ४२६) । ११ ट्रोम पु [थ्रोम] यज्ञ विशेष (पि १०, १५६) । १२ यमणी स्त्री [स्तमनी] आग की शक्ति को रोकनेवाली एक निया (पउम ७, १३६) । १३ दत्त पु [दत्त] १ भगवान् पाशनाय के समकालीन ऐरवत धेनू के एक तीर्थंकर देव (तित्व) । २ भद्रवाहू

स्वामी का एक शिष्य (कप्प) । °दाग पु [°दान] सातवें वासुदेव के पिता का नाम (पउम २०, १८२) । °देव पु [°देव] देव-विशेष (दीव) । °भूइ पु [°भूति] १ भगवान् महावीर का द्वितीय गणधर (कप्प) । २ भगवान् महावीर का पूर्वोय अठारहवें ब्राह्मण-जन्म का नाम (आच्छ) । °माणव पु [°माणव] अग्निकुमार देवो का उत्तर-दिशा का इन्द्र (ठा २, ३) । °माली स्त्री [°माली] एक इन्द्राणी (दीव) । °वेस पु [°वेश] १ इस नाम का एक प्रसिद्ध ऋषि (एदि) । २ न एक गोत्र (कप्प) । °वेस पु [°वेश्मन्] १ चतुर्दशी तिथि (ज) । २ दिवस का वाइसवां मुहूर्त (चद १०) । °वेसायग पु [°वैद्यायन] १ अग्निवेश ऋषि का पौत्र (एदि, स २२५) । २ अग्निवेश-गोत्र में उत्पन्न (कप्प) । ३ गोशालक का एक दिक्चर (भग १५) । ४ दिन का वाइसवां मुहूर्त (सम ५१) । °सक्कार पु [°सस्कार] विधि-पूर्वक जलाना, दाह देना (आवम) । °सप्पभा स्त्री [°सप्रभा] भगवान् वासुपूज्य की दीक्षा समय की पालकी का नाम (सम) । °सम्म पु [°शर्मन्] एक प्रसिद्ध तपस्वी ब्राह्मण (आचा) । °सिह पु [°शिख] १ सातवें वासुदेव का पिता (सम १५२) । २ अग्निकुमार देवो का दक्षिण-दिशा का इन्द्र (ठा २, ३) । °सिह पु [°सिह] एक जैन मुनि (उप ८८६) । °सिहा-चारण पु [°शिखा-चारण] अग्नि-शिखा में निर्वातया गमन करने की शक्ति वाला साधु (पव ६८) । °सीह पु [°सिह] सातवें वासुदेव के पिता का नाम (ठा ६) । °सेण पु [°पेण] ऐरवत क्षेत्र के तीसरे और वाइसवें तीर्थंकर (तित्थ, सम १५३) । °होत्त न [°होत्र] १ अग्न्याधान, होम (विमे १६४०) । २ पु ब्राह्मण (पउम ३५, ६) । °होत्तवाइ वि [°होत्रवादिन्] होम से ही स्वर्ग की प्राप्ति माननेवाला (सूत्र १, ७) । °होत्तिय वि [°होत्रिक] होम करनेवाला (सुपा ७०) ।

अग्गिअ पु [अग्गि] १ यमदग्नि नामक एक तापम (आच्छ) । २ भस्मक रोग, जिससे जो कुछ खाये वह तुरन्त ही हजम हो जाता है (विपा १, १, विसे २०४८) ।

अग्गिअ पु [दे] इन्द्रगोप, एक जातिका क्षुद्र कीट (दे १, ५३) । २ वि मन्द (दे १, ५३) । अग्गिआय पु [दे] इन्द्रगोप, क्षुद्र कीट-विशेष (पड्) ।

अग्गिच्च वि [आग्नेय] १ अग्नि-सम्बन्धी । २ पुं लोकान्तिक देवों की एक जाति (राया १, ८) । ३ न गोत्र-विशेष, जो गोतम गोत्र की शाखा है (ठा ७) ।

अग्गिच्चाभ न [आग्नेयाभ] देव-विमान विशेष (सम १४) ।

अग्गिज्ज वि [अग्राह] लेने के अयोग्य (पउम ३१, ५४) ।

अग्गिम वि [अग्निम] १ प्रथम पहला (कप्प) । २ श्रेष्ठ, प्रधान, मुख्य (सुपा १) ।

अग्गियय पु [आग्नेयय] इस नाम का एक राजपुत्र (उप ६३७) ।

अग्गिल देखो अग्गिल्ल = अग्निनल (सुज २०) ।

अग्गिलिय देखो अग्गिम (पचव २) ।

अग्गिल्ल पु [अग्गिल्ल] एक महाग्रह (ठा २, ३) ।

अग्गिल्ल वि [अग्निम] अग्रवर्ती (सिदि ४०६) ।

अग्गीय देखो अग्गीय (उप ८४०) ।

अग्गीवय न [दे] घर का एक भाग (पउम १६, ६४) ।

अग्गुच्छ वि [दे] प्रमित, निश्चित (पड्) ।

अग्गे अ [अग्गे] आगे, पहले (पिग) । °यण वि [तन] आगे का, पहले का (आवम) ।

°सर वि [°सर] अगुआ, मुखिया, नायक (आ २८) ।

अग्गेई स्त्री [आग्नेयी] अग्निकोण, दक्षिण-पूर्व दिशा (घण १८) ।

अग्गेणिय न [अग्रायणीय] दूसरा पूर्व, बारहवें जैनागम का दूसरा महान् भाग (सम २६) ।

अग्गेणी देखो अग्गेई (आवम) ।

अग्गेणीय देखो अग्गेणिय (एदि) ।

अग्गेय वि [आग्नेय] अग्नि (कोण) सम्बन्धी (अणु २१५) ।

अग्गेय वि [आग्नेय] १ अग्नि-सम्बन्धी, अग्नि का (पउम १२, १२६, विमे १६६०) । २ न शस्त्र-विशेष (सुर ८, ४१) । ३ एक

गोत्र, जो वत्स गोत्र की शाखा है (ठा ७) । ४ अग्नि-कोण, दक्षिण-पूर्व दिशा (भवि) । अग्गेदय न [अग्गेदक] समुद्रीय वेला की वृद्धि और हानि (सम ७६) ।

अग्घ अक [राज्] विराजना, शोभना, चमकना । अग्घइ (हे ४, १००) ।

अग्घ सक [आ-घ्रा] सूंघना । सक अग्घे-ऊण (मम्मत्ता १४२) ।

अग्घ सक [अर्ह] योग्य होना, लायक होना, 'कल ए अग्घइ' (राया १, ८) ।

अग्घ मक [अये] १ अच्युती कीमत में बेचना । २ आदर करना, सम्मान करना, 'पहिएण पुणो भरिय, नुप्पेहि म्पिट्ठि ।

कम्मि नयरम्मि ।

गतव्व मो माहइ, परिणय अग्घिम्सए जत्थ' (सुपा ५०१) । वक्क अग्घायमाण (राया १, १) ।

अग्घ पु [अर्घ] १ एक देव-विमान (देवेन्द्र १, २) । २ पूजा (राय १००) ।

अग्घ पु [अर्घ] १ मछली की एक जाति (जीव ३) । २ पूजा-सामग्री (राया १, १६) । ३ पूजा में जलादि देना (कुमा) । ४ मूल्य, मोल, कीमत (निचू २) । °वत्त न [°पात्र] पूजा का पात्र (गाउड) ।

अग्घ वि [अर्घ्य] १ पूजा में दिया जाता जलादि द्रव्य (कप्प) । २ कीमती, बहुमूल्य (प्राप) ।

अग्घव सक [पूर] पूर्ति करना, पूरा करना । अग्घवइ (हे ४, ६६) ।

अग्घविय वि [पूर्ण] १ भरा हुआ, सपूर्ण । २ पूरा किया गया (सुपा १०६, कुमा) ।

अग्घावय वि [अर्घित] पूजित, मत्कृत, सम्मानित (से ११, १६, गउड) ।

अग्घा सक [आ + घ्रा] सूंघना । वक्क अग्घाअत, अग्घायमाण (गा ५६५, राया १, ८) । कवक्क अग्घाइज्जमाण (परण २८) ।

अग्घाइ वि [आघ्रायिन्] सूंघनेवाला, 'सम-मरपउमवाइणि । वारियवामे । सहसु इणिह' (काप्र २६४) ।

अग्घाइअ वि [आघ्रात] सूंघा हुआ (गा ६७) ।

अग्घाइज्जमाण देखो अग्घा ।

अग्घाडर वि [आघ्रात्] सूँघनेवाला । स्त्री
°री (गा ८८६) ।

अग्घाड सक [पूर] पूर्ति करना, पूरा
करना । अग्घाडइ (हे ४, १६६) ।

अग्घाड } पु [दे] वृक्ष-विशेष, अपामार्ग,
अग्घाडग } चिचडा, लटजीरा (दे १, ८,
परण १) ।

अग्घाण वि [दे] तृप्त, सतुष्ट (दे १, १८) ।

अग्घाय वि [आघ्रात] सूँघा हुआ (पात्र) ।

अग्घायमाण देखो अग्घ = अघे ।

अग्घायमाण देखो अग्घा ।

अग्घिय वि [राजिन] विराजित, शोभित
(कुमा)

अग्घिय वि [अर्घित] १ बहुमूल्य, कीमती,
'अग्घिय नाम बहुमोल्ल' (निचू २) । २ पूजित
(दे १, १०७, से २०२) ।

अग्घोदय न [अर्घोदक] पूजा का जल (अभि
११८) ।

अघ न [अघ] १ पाप, कुकर्म (कुमा) । २ वि
शोचनीय, शोक का हेतु, 'अघ वम्हणभाव'
(प्रयौ ८०) ।

अघो देखो अहो (नाट) ।

अचक्खु पुन [अचक्षुस्] १ आँख के सिवाय
बाकी इन्द्रियाँ और मन (कम्म १, १०) । २
आँख को छोड़ बाकी इन्द्रिय और मन में होने-
वाला मामान्य ज्ञान (द १६) । ३ वि अवा,
नेत्रहीन (कम्म ४) । °दंसण न [दंसेन]
आँख को छोड़ बाकी इन्द्रियाँ और मनसे होने-
वाला मामान्य ज्ञान (सम १५) । °दंसणावरण
न [दर्शनावरण] अचक्षुर्दर्शन को रोकने-
वाला कर्म (ठा ६) । °फास पु [°स्पर्श]
अवकार, अवरो (गाया १, १४) ।

अचक्खुस वि [अचाक्षुप] जो आँख से देखा
न जा सके (परह १, १) ।

अचक्खुस्स वि [अचक्षुष्य] जिसको देखने
का मन न चाहता हो (वृह ३) ।

अचर वि [अचर] पृथिव्यादि स्थिर पदार्थ,
स्थायर (दस) ।

अचल वि [अचल] १ निश्चल, स्थिर
(आचा) । २ पु यदुवरा के राजा अन्वकवृष्णि
के एक पुत्र का नाम (अत ३) । एक बलदेव
का नाम (पव २०६) । ४ पर्वत, पहाड़ (गउड

१२०) । ५ एक राजा, जिसने रामचन्द्र के
छोटे भाई के साथ जैन दीक्ष ली थी (पउम
८५, ४) । °पुर न [°पुर] ब्रह्म-द्वीप के पास
का एक नगर (कप्प) । °प्प न [°त्मन्]
हस्तप्रहेलिका को ८४ लाख से गुणने पर जो
संख्या लब्ध हो वह, अन्तिम संख्या (इक) ।

°भाय पु [°भ्रात्] भगवान् महावीर का
नववाँ गणधर (कप्प) ।

अचल पु [अचल] छठवाँ रुद्र पुरुष (विचार
४७२) ।

अचल न [दे] १ घर । २ घर का पिछला
भाग । ३ वि कहा हुआ । ४ निष्ठुर, निर्दय ।
५ नीरस, सूखा (दे १, ५३) ।

अचला स्त्री [अचला] पृथिवी । २ एक
इन्द्राणी (गाया २) ।

अचित वि [अचिन्त] निश्चिन्त, चिन्तारहित ।

अचित वि [अचिन्त्य] अनिर्वचनीय, जिसकी
चिन्ता भी न हो सके वह अद्भुत (लहुअ ३) ।

अचितणिज्ज } वि [अचिन्तनीय] ऊपर
अचितणीअ } देखो (अभि २०३, महा) ।

अचितिय वि [अचिन्तित] आकस्मिक,
असमावित (महा) ।

अचित्त वि [आचत्त] जीव-रहित, अचेतन,
'चित्तमचित्त वा ऐव सय अजिन्ना गिएहेज्जा'
(दम ४) ।

अचियत } वि [दे] १ अनिट, अप्रीतिकर
अचियत्त } (सूअ २, २, परह २, ३) । २
न अप्रीति, द्वेष (ओघ २६१) ।

अचिरजुवइ देखो अइरजुवइ (दे १, १८ टी) ।

अचिरा देखो अइरा (पउम ३७, ३७) ।

अचिराभा स्त्री [अचिराभा] विजली, विद्युत्
(पउम ४२, ३२) ।

अचिरेण देखो अइरेण (प्राह) ।

अचेयण वि [अचेतन] चैतन्यरहित, निर्जीव
(परह १, २) ।

अचेल न [अचेल] १ वस्त्रो का अभाव । २
अल्प-मूल्यक वस्त्र । ३ थोड़ा वस्त्र (सम
४०) । ४ वि वस्त्र-रहित, नग्न । ५ जीर्ण
वस्त्र वाला । ६ अल्प वस्त्र वाला । ७ कुत्सित
वस्त्र वाला, मैला, 'तह थोव-जुन्न-कुत्थियचेले-
हिवि भएणए अचेलोत्ति' (विसे २६०१) ।

°परिसह, °परीसह पु [°परिषह, °परीषह]

वस्त्र के अभाव से अथवा जीर्ण, अल्प या
कुत्सित वस्त्र होने से उसे अदीन भाव से सहन
करना (सम ४०, भग ८, ८) ।

अचेलग } वि [अचेलक] १ वस्त्र-रहित,
अचेलय } नग्न । २ फटा-टूटा वस्त्र वाला । ३
मलिन वस्त्र वाला । ४ अल्प वस्त्र वाला । ५
निर्दीप वस्त्र वाला, ६ अनियत रूप से वस्त्र का
उपभोग करनेवाला (ठा ५, ३),
'परिसुद्धजिएण-कुच्छियथोवानिय-

यत्तभोगभोगेहि' ।

मुएणओ मुच्छारहिया, सतेहि अचेलया हुति'
(विसे २५६६) ।

अञ्च सक [अर्च] पूजना, सत्कार करना ।
अञ्चैइ (ओप) । अञ्च (दे २, ३५ टी) । कवक-
अञ्चिज्जत (मुपा ७८) । क अञ्चणिज्ज
(गाया १, १) ।

अञ्च पु [अर्च्य] १ लव (काल-मान) का एक
भेद (कप्प) । २ वि पूज्य, पूजनीय (हे १,
१७७) ।

अञ्चंग न [अत्यङ्ग] विलासिता के प्रधान
अंग, भोग के मुख्य साधन, 'अञ्चगाण च
भोगओ माए' (पवा १) ।

अञ्चत वि [अत्यन्त] हृद से ज्यादा, अत्यधिक,
बहुत (सुर ३, २२) । °थावर वि [°स्थावर]
अनादि-काल से स्थावर-जाति में रहा हुआ
(आवम) । °दूसमा स्त्री [°दुष्पमा] देखो
दुस्समदुस्समा (पउम २०, ७२) ।

अञ्चतिअ वि [आत्यन्तिक] १ अत्यन्त,
अधिक, अतिशयित । २ जिसका नाश कभी
न हो वह, शाश्वत (सम २, ६) ।

अञ्चग वि [अचेक] पूजक (चैत्य १२) ।

अञ्चगल वि [अत्यर्गल] निरकुश, अनियन्त्रित
(मोह ८७) ।

अञ्चण न [अर्चन] पूजा, सम्मान (सुर ३,
१३, सत्त १२ टी) ।

अञ्चणा स्त्री [अर्चना] पूजा (अचु ५७) ।

अञ्चणिया स्त्री [अर्चनिका] अर्चन, पूजा (राय
१०८) ।

अञ्चत्त वि [अत्यक्त] नहीं छोड़ा हुआ, अप-
रित्यक्त (उप १०७) ।

अञ्चत्थ वि [अत्यर्थ] १ अतिशयित, बहुत

(परह १, १) । २ गभीर अर्थ वाला (राय) ।
३ क्रिक्वि ज्यादा, अत्यंत (सुर १, ७) ।

अच्यभुय वि [अत्यद्भुत] बड़ा आश्चर्य-जनक (प्रासू ४२) ।

अच्य पु [अत्यय] १ विपरीत आचरण (वृह ३) । विनाश, मरण (उव) ।

अच्य वि [अर्चक] पूजक, 'अराध्याण च चिरतराण, जहारिह रक्खणवद्धणति' (विवे ७० टी) ।

अच्य } न [आश्चर्य] विस्मय, चमत्कार
अच्यरिअ } (विक्र ६४, प्रवो १७, रभा, भवि,
अच्यरीअ } नाट) ।

अच्यहम वि [अत्यधम] अति नीच (कप्पू) ।

अच्चा स्त्री [अर्चा] पूजा, मत्कार (गउड) ।

अच्चा स्त्री [अर्चा] १ शरीर, देह (सूत्र १, १३, १७, १, १५, १८, २, २, ६, ठा १, पत्र १६) ।

२ लेश्या, चिन-वृत्ति (सूत्र १, १३, १७, १, १५, १८) । ३ ऐश्वर्य (ठा ३ १-पत्र ११७) ।

अच्चासण पु [अत्यशन] पक्ष का बारहवा दिन, द्वादशी तिथि (मुज १०, १४) ।

अच्चासणया स्त्री [अत्यासनता] खूब बैठना, देर तक या बार-बार बैठना (ठा ६) ।

अच्चासणया स्त्री [अत्यशनना] खूब खाना (ठा ६) ।

अच्चासण } न [अत्यासन्न] अति समीप
अच्चासन्न } खूब नजदीक (भग १, १, उवा) ।

अच्चासाइय } वि [अत्याशातित] अपमान-
अच्चासादिय } नित, हैरान किया गया (ठा १०, भग ३, २) ।

अच्चासाय सक [अत्या + शातय] अपमान करना, हैरान करना । वक्तु अच्चासाएमाण (ठा १०) । हेतु अच्चासाइत्तए (भग ३, २) ।

अच्चाहिअ } वि [अत्याहित] १ महा भीति,
अच्चाहिद } बड़ा भय । २ झूठा, असत्य (स्वप्न ४७) । ३ ऐसा जखमी कार्य, जिसमें प्राण-हानि की सम्भावना हो (अभि ३७) ।

अच्चि स्त्री [अर्चिस्] १ कान्ति, तेज (भग २ ५) । २ अग्नि की ज्वाला (परण १) ।

३ किरण (राय) । ४ दीप की शिखा (उत्त ३) । ५ न लौकान्तिक देवों का एक विमान (सम १४) । ६ 'मालि पु [मालिन्] १ सूर्य, रवि (सूत्र १, ६) । २ वि किरणों से शोभित (राय) । ३ न लौकान्तिक देवों

पाइअसइमहणवो

का एक विमान (सम १४) । 'माली स्त्री [माली] १ चन्द्र और सूर्य की तृतीय अग्र-महिणी का नाम (ठा ४, १) । २ 'जातासूत्र' के द्वितीय श्रुतस्त्व के एक अध्ययन का नाम (राया २) । ३ शक्रेन्द्र की तृतीय अग्रमहिणी की राजधानी का नाम (ठा ४, २) । ४ 'मालिणी स्त्री [मालिनी] चन्द्र और सूर्य की एक अग्र-महिणी का नाम (भग १०, ५, इक) ।

अच्चिअ वि [अर्चित] १ पूजित, सत्कृत (गा १५०) । २ न विमान-विशेष (जीव ३, पत्र १३७) ।

अच्चित्त देखो अचित्त (शोध २२, सुर १२, २७) ।

अच्चीकर सक [अर्ची + कृ] १ प्रशसा करना । २ खुशामद करना । अच्चीकरेइ । वक्तु अच्चीकरत (निबू ५) ।

अच्चीकरण न [अर्चीकरण] १ प्रशसा । २ खुशामद, 'अच्चीकरण राणो, गुणवयण त समामगो दुविह । सतमसत च तहा, पच्चसपगेक्खमेक्के' (निबू ५) ।

अच्चुअ पु [अच्युत] १ विष्णु (अच्यु ५) । २ बारहवा देवलोक (सम ३९) । ३ ग्यारहवा और बारहवा देवलोक का इन्द्र (ठा २, ३) । ४ अच्युत-देवलोकवासी देव, 'त चेव आरण-च्युय श्रोहिण्णारेण पासति' (विसे ६६६) ।

'नाह पु [नाथ] बारहवा देवलोक का इन्द्र (भवि) । 'वइ पु [पति] इन्द्र-विशेष (मुपा ६१) । 'वडिसग न [वतसक] विमान-विशेष का नाम (सम ४९) । 'सगग पु [स्वर्ग] बारहवा देवलोक (भवि) ।

अच्चुअ पुन [अच्युत] एक देव-विमान (देवेन्द्र १३५) ।

अच्चुआ स्त्री [अच्युता] छठवे और सनरहवें तीर्थंकर की शासनदेवी (सति ६, १०) ।

अच्चुइद पु [अच्युतेन्द्र] ग्यारहवा और बारहवा देवलोक का स्वामी, इन्द्र-विशेष (पञ्च ११७, ७) ।

अच्चुफड वि [अत्युत्कट] अत्यन्त उग्र (आवम) ।

अच्चुग वि [अत्युग] ऊपर देखो (पव २२४) ।

अच्यभुय—अच्छ

अच्यभुय वि [अत्युभ] खूब ऊँचा, विशेष उन्नत (उप ६८६ टी) ।

अच्चट्टिय वि [अत्युत्थित] अकार्य करने को तैय्यार (सूत्र १, १४) ।

अच्चण्ह वि [अत्युष्ण] खूब गरम (ठा ५, ३) ।

अच्चुत्तम वि [अत्युत्तम] अति श्रेष्ठ (कप्पू) ।

अच्चुदय न [अत्युदक] १ बड़ी वर्षा (श्रोष ३०) । २ प्रभूत पानी (जीव ३) ।

अच्चुदार वि [अत्युदार] अत्यन्त उदार (स ६००) ।

अच्चुन्नय वि [अत्युन्नत] बहुत ऊँचा (कप्प) ।

अच्चुच्चभड वि [अत्युद्धट] अति-प्रबल (भवि) ।

अच्चुवयार पु [अत्युपकार] महान् उपकार (गा ५१४) ।

अच्चुवयार पु [अत्युपचार] विशेष सेवा-सुधूपा (गा ५१४) ।

अच्चुच्चाय वि [अत्युद्धात] अत्यन्त धका हुआ (वृह ३) ।

अच्चुसिण वि [अत्युष्ण] अधिक गरम (आचा २, १, ७) ।

अच्चे अक [अति + इ] १ अतिक्रान्त होना, गुजरना । २ सक उत्लघन करता । अच्चेइ (उत्त १३, ३१, सूत्र १, १५, ८) ।

अच्चे सक [अत्या + इ] त्याग करवाना । अच्चेही (सूत्र १, २, ३, ७) ।

अच्चेअर न [आश्चर्य] आश्चर्य, विस्मय (विक्र १५) ।

अच्छ अक [आस्] बैठना । अच्छइ (हे १, २१४) । वक्तु अच्छत, अच्छमाण (सुर ७, १३, राया १, १) । कृ अच्छि-यव्व, अच्छेयव्व (पि ५७०, सुर १२ २२८) ।

अच्छ सक [आ + छिद्] १ काटना, छेदना । २ खींचना । अच्छे (आचा १, १, २, ३) । सक अच्छित्तु (आवक २२५), अच्छेत्तु (पिड ३६८) ।

अच्छ वि [अच्छ] १ स्वच्छ, निर्मल (कुमा) । २ पु स्फटिक रत्न (पव २७५) । ३ पु व. आर्य देश-विशेष (प्रव २७५) ।

अच्छ पु [अच्छ] रीछ, भालू (परह १, १)।

अच्छ वि [आच्छ] अच्छे देश में उत्पन्न (परह ११)।

अच्छ पु [अच्छ] मेरु पर्वत (सुज ५)।
२ न. तीन बार झोटा हुआ स्वच्छ पानी (पडि)।

अच्छ न [दे] १ अत्यन्त, विशेष। २ शीघ्र, जल्दी (दे १, ४६)।

अच्छ वि [अक्षि] आख, नेत्र (कुमा)।

अच्छ पु [कच्छ] १ अधिक पानीवाला प्रदेश। २ लताओं का समूह। ३ तृण, घास (से ६, ४७)।

अच्छ पु [वृक्ष] वृक्ष, पेड़ (से ६, ४७)।

अच्छअ पु [अक्षक] १ बहेड़ा का वृक्ष।
२ न स्वच्छ जल (से ६, ४७)।

अच्छअर न [आश्चर्य] विस्मय, चमत्कार (कुमा)।

अच्छद वि [अच्छन्द] जो स्वाधीन न हो, पराधीन, 'अच्छदा जे रा भुजति रा से चाइति बुचइ' (दम २)।

अच्छक देखो अत्यक्क (गउड)।

अच्छण न [आसन] १ बैठना (गाया १, १)। २ पालकी वगैरह मुखासन (ओघ ७८)।

अच्छ न [गृह] विश्राम स्थान (जीव ३)।

अच्छग न [दे] १ सेवा, शुश्रूषा (वृह ३)।
२ देखना, अवलोकन (वव १)। ३ ग्राहिता, दया (दम ८)।

अच्छणिउर न [अच्छनिकुर] अच्छनिकुराण को चौरासी लाख से गुणने पर जो मख्या लव्व हो वह (ठा २, १)।

अच्छणिउरग न [अच्छनिकुराङ्ग] सख्या-विशेष, नलिन को चौरासी लाख से गुणने पर जो मख्या लव्व हो वह (ठा २, १)।

अच्छण वि [अच्छन्न] अणुप्त, प्रकट (वृह ३)।

अच्छभल पु [अक्षभल] रीछ, भालू (दे १, ३७, परह १, १)।

अच्छभल पु [दे] यक्ष, देव-विशेष (दे १, ३७)।

अच्छरआ देखो अच्छरा (पड्)।

अच्छरय पु [आस्तरक] शय्या पर बिछाने का वस्त्र-विशेष (गाया १, १)।

अच्छरसा } स्त्री [अप्सरस्] १ इन्द्र की
अच्छरा } पटरानी (ठा ६)। २ 'ज्ञाता-धर्मकथा' का एक अध्ययन (गाया २)।
३ देवी (पटम २, ४१)। ४ रूपवती स्त्री (परह १, ४)।

अच्छरा स्त्री [दे अप्सरा] चुटकी, चुटकी का आवाज (सुस २, २, ५४)।

अच्छराणिवाय पु [दे] १ चुटकी। २ चुटकी बजाने में जितना समय लगता है वह, अत्यल्प समय (परह ३६)।

अच्छरिअ } न [आश्चर्य] विस्मय, चम-
अच्छरिज्ज } त्कार (हे १, ५८, प्रयौ ४२)।
अच्छरीअ }

अच्छल न [अच्छल] निर्दोषता, अनपराध (दे १, १०)।

अच्छवि वि [अच्छवि] जैन-दर्शन में जिनको स्नातक कहते हैं वह जीवनन्मुक्त योगी (भग २५, ६)।

अच्छविअर पु [अक्षपिकर] एक प्रकार का मानसिक वित्त (ठा ८)।

अच्छहल्ल पु [अक्षभल्ल] रीछ, भालू (पाप्र)।

अच्छा स्त्री [अच्छा] वरुण देश की राजधानी (पव २७५)।

अच्छा स्त्री [कक्षा] गर्व, अभिमान (से ६, ४७)।

अच्छाड वि [आच्छाटिन्] ढकनेवाला, आच्छादक (स ५१)।

अच्छायण न [आच्छादन] १ ढकना (दे ७, ४५)। २ वस्त्र, कपड़ा (आचा)।

अच्छायणा स्त्री [आच्छादना] ढकना, आच्छादित करना (वव ३)।

अच्छायत वि [अच्छातान्त] तीक्ष्ण, धारदार (पाप्र)।

अच्छि वि [अक्षि] आख, नेत्र (हे १, ३३, ३५)।

अच्छिण न [मलन] आख का मलना (वृह २)।

णिमीलिय न [निमीलित] १ आँख को मूँदना, मीचना। २ आँख मीचने में जो समय लगे

वह, 'अच्छिणिमीलियमेत्त, एत्थि सुह दुक्खमेव अणुवद्ध। एत्थ एत्थ रोइआण, अहोएिअ पच्च-माणए' (जीव ३)। १ पत्त न [पत्र] आँख का पक्ष्म, पपनी (भग १४, ८)। १ वेइग पु [वेधक] एक चतुरिन्द्रिय जन्तु, क्षुद्र जीव-विशेष (उत्त ३६)। १ रोडय पु [रोडक] एक चतुरिन्द्रिय जन्तु, क्षुद्र कीट-विशेष (उत्त ३६)। १ लल वि [मत्त] १ आँख वाला प्राणी। २ चतुरिन्द्रिय जन्तु (उत्त ३६)। १ मल पु [मल] आँख का मैल, कीट (निचू ३)।
अच्छिद सक [आ + छिद्] १ थोड़ा छेद करना। २ एक बार छेद करना। ३ बलात्कार से छीन लेना। वक्क अच्छिदमाण (भग ८, ३)।

अच्छिद पु [अक्षीन्द्र] गोशालक के एक दिक्चर (शिष्य) का नाम (भग १५)।

अच्छिदण न [आच्छेदन] १ एक बार छेदना (निचू ३)। २ छीनना। ३ थोड़ा छेद करना, थोड़ा काटना (भग १५)।

अच्छिक्क वि [दे] अस्थिर, नहीं छुआ हुआ (वव १)।

अच्छिक्कल्ल वि [दे] अप्रोतिकर। २ पुं वेश, पोशाक (दे १, ४१)।

अच्छिज्ज वि [आच्छेद्य] १ जवरदस्ती जो हमरे में छीन लिया जाय (पिंड)। २ पु, जैन माधु के लिए भिक्षा का एक दोष (आचा)।

अच्छिज्ज वि [अच्छेद्य] जो तोड़ा न जा सके (ठा ३, २)।

अच्छित्ति स्त्री [अच्छित्ति] १ नाश का अभाव, नित्यता। २ वि नाश-रहित (विमे)।
अणय पु [अनय] नित्यता-वाद, वस्तु को नित्य माननेवाला पक्ष (पव)।

अच्छिद् वि [अच्छिद्] १ छिद्र-रहित, निविड, गाढ (ज २)। २ निर्दोष (भग २, ८)।

अच्छिण्ण } वि [आच्छिन्न] १ बलात्कार
अच्छिन्न } से छीना हुआ। २ छेदा हुआ, तोड़ा हुआ (पाप्र)।

अच्छिण्ण } वि [अच्छिन्न] १ नहीं तोड़ा
अच्छिन्न } हुआ, अलग नहीं किया हुआ (ठा १०)। २ अव्यवहित, अन्तर-रहित (गउड)।

अच्छिप्प वि [अस्पृश्य] छूने के अयोग्य (मुपा २८१) ।

अच्छिप्पत वि [अस्पृशत] स्पर्श नहीं करता हुआ (श्रा १२) ।

अच्छिद्य वि [आसित] बैठा हुआ (पि ४८०, ५६५) ।

अच्छिद्वडण न [दे] अंश का मूंदना (दे १, ३६) ।

अच्छिद्विअच्छि ली [दे] परस्पर-आकर्षण, आपस की खींचतान (दे १, ४१) ।

अच्छिद्वहरिल्ल } देखो अच्छिद्वरुल्ल (दे
अच्छिद्वरुल्ल } १, ४१) ।

अच्छी देखो अच्छि (रभा) ।

अच्छुक्क न [दे] अक्षि-कूप-नुला, अक्षि का कोटर (मुपा २०) ।

अच्छुत्ता ली [अच्छुत्ता] १ एक विद्याधि-
ष्ठात्री देवी (ति ८) । २ भगवान् मुनिसुव्रत
स्वामी की शासनदेवी (सति १०) ।

अच्छुद्धसिरी ली [दे] इच्छा से अधिक फल
की प्राप्ति, असमावित लाभ (पड्) ।

अच्छुल्लूह वि [दे] निष्कासित, बाहर निकाला
हुआ, स्थान-भ्रष्ट किया हुआ (वृह १) ।

अच्छेज्ज देखो अच्छिज्ज (ठा ३, २, ४) ।

अच्छेर न [आश्चर्य] १ विस्मय चमत्कार
अच्छेरग (हे १, ५८) । २ पुन विस्मय-जनक
अच्छेरय घटना, अपूर्व घटना (ठा १०,
१३८) । ३ कर वि [कर] विस्मय-जनक,
चमत्कार उपजातेवाला (श्रा १४) ।

अच्छोड सक [आ + छोटय्] १ पटकना,
पछाड़ना । २ मिचाना, छिटकना, 'अच्छोडेमि
सिलाए, तिल तिल किं नु छिदामि' (सूर १५,
२३, सूर २, २४५) ।

अच्छोड पु [आच्छोट] १ सिंचन । २
आस्फालन करना, पटकना (श्रौघ ३५७) ।

अच्छोडण न [आच्छोटन] १ सिंचन । २
आस्फालन (सूर १३, ४१, मुपा ५६३, वेणी
१०६) । ३ मृगया शिकार (दे १, ३७) ।

अच्छोडाविय वि [दे आच्छोटित] वधित,
वधायी हुआ (स ५२५, ०२६) ।

आच्छोडिअ वि [दे] आकृष्ट, खींचा हुआ
'अच्छोडिअवत्यद्ध (गा १६०) ।

अच्छोडिअ वि [आच्छोटित] सिक्त, सिंचा
हुआ (सूर २, २४५) ।

अच्छोडिअ वि [आच्छोटित] पटका हुआ,
आस्फालित (कुप ४३३) ।

अच्छिप्प वि [अस्पृश्य] स्पर्श करने के अयोग्य,
'मो सुणओव्व अच्छिप्पो कुलुगयाए, न उए
पुरिसो' (मुपा ४८७) ।

अज देखो अय = अज (पउम ११, २५, २६) ।

अजगा देखो अयगर (भवि) ।

अजड पु [दे] जार, उपपति (पड्) ।

अजड वि [अजड] १ पक्क, विकण्ठित
(गडड) । २ निगुण, चतुर (कुमा) ।

अजम वि [दे] १ सरल, ऋजु (पड्) । २
जमाईन (पभा १५) ।

अजय वि [अयन] १ पाप-कर्म से अविरत,
नियम-रहित (कम्म ४) । २ अनुद्योगी, यत्न-
रहित (अघो ५४) । ३ उपयोग-शून्य, वेक्याल
(मुपा ५२२) । ४ क्रिबि वेक्याल में, अनुप-
योग में, 'अजय चरमाणो य पाएभूयाड हिमड
(दस ४, उवर ४ टी) ।

अजय पु [अजय] पटपद छद का एक भेद
(पिग) ।

अजयगा ली [अयतना] अनुपयोग, त्याग
नहीं रखना गफलती (गच्छ ३) ।

अजरवि [अजर] १ वृद्धावस्था-रहित, बुढ़ापा-
वर्जित । २ पु देव, देवता (आवम) । ३ मुक्त
आत्मा (श्रौघ) ।

अजराउर वि [दे] उष्ण, गरम (दे १, ४५) ।

अजरामर वि [अजरामर] १ बुढ़ापा और
मृत्यु से रहित 'एत्थि कोइ जगम्मि अजरा-
मरो' (महा) । २ न मुक्ति, मोक्ष । ३ ली
रा विद्या-विशेष (पउम ७, १३६) ।

अजस पु [अयशस्] १ अप्रयश, अपकीर्ति
(उप ७६८) । २ कीर्त्तिनाम न [कीर्त्ति-
नामन्] अपकीर्ति का कारण-भूत एक कर्म
(सम ६७) ।

अजस्स क्रिबि [अजस्स] निरन्तर, हमेशा,
'आमरणंतमजस्स सजमपरिपालण विहिणा'
(पचा ७) ।

अजा देखो अया (कुमा) ।

अजाण वि [अज्ञान] अनजान, मूर्ख (रयण
८५) ।

अजाणअ वि [अज्ञायक] अनजान, जानकारी-
रहित (काल) ।

अजागणा ली [अज्ञान] जानकारी-रहित वे-
समझी, 'अघाएणाए तज्जती न कया तम्मि'
(श्रा २८) ।

अजाणुय वि [अज्ञायक] अज्ञ, नहीं जानने-
वाला (ठा ३, ४) ।

अजाय वि [अजात] अनुत्पन्न, अनिपन्न ।
० कप्प पु [कल्प] शास्त्रों को पूरा-पूरा नहीं
जाननेवाला जैन साधु, अज्ञोत्तार्य, 'गीयत्य
जायकप्पो अगीआं खलु भवे अजाओ अ' (धर्म
३) । ० कटिपय पु [कल्पिक] अज्ञोत्तार्य
जैन साधु (गच्छ १) ।

अजिअ वि [अजिन] १ अपराजित, अपरा-
भूत । २ पु दूसरे तीर्थंकर का नाम (अजि
१) । ३ नववे तीर्थंकर का अधिष्ठाता देव
(सति ७) । ४ एक भावी बलदेव (ती २१) ।
० वला ली [वला] भगवान् अजितनाथ की
शासनदेवी (पव २७) । ० सेण पु [सेन]
१ एक प्रसिद्ध राजा (आव) । २ चौथा कुलकर
(ठा १०) । ३ एक विख्यात जैन मुनि
(अत ४) ।

अजिअ पु [अजित] भगवान् मल्लिनाथ का
प्रथम श्रावक (विचार ३७८) ।

० नाह पु [नाथ] नववा छद पुरुष (विचार
४७३) ।

अजिअ वि [अजीव] जीव-रहित, अचेतन
(कम्म १, १५) ।

अजिअ वि [अजय्य] जो जीता न जा मके
(मुपा ७५) ।

अजिया ली [अजिता] १ भगवान् अजित-
नाथ की शामन देवी (सति ६) । २ चतुर्थ
तीर्थंकर की एक मुख्य शिष्या (तित्य) ।

अजिण न [अजिन] १ हारण आदि पशुओं
का चमड़ा (उत्त ५, दे ७, २७) । २ वि
जिसने राग-द्वेष का सर्वथा नाश नहीं किया
है वह (भग १५) । ३ जिन भगवान् के तुल्य
सत्त्वोपदेशक जैन साधु, 'अजिणा जिएसकासा,
जिए' इवावितहं वागरेमाण' (श्रौघ) ।

अजिण्ण देखो अइन्न = अजीर्ण (आव) ।

अजियंधर पु [अजितधर] ग्याह् रुद्रों में
आठवा छद पुरुष (विचार ४७३) ।

अजिर न [अजिर] आंगन, चौक (सरा) ।

अजीर } देखो अइन्न = अजीर (वव १,
अजीरय } राया १, १३)।
अजीरण देखो अइन्न = अजीर (पिंड २७,
पव १३१)।
अजीव पु [अर्जव] अचेतन, निर्जीव, जड
पदार्थ (नव २)। °काय पुं [°काय] धर्मा-
न्तिकाय आदि अजीव पदार्थ (भग ७, १०)।
अजुअ पु [दे] वृक्ष-विशेष, समच्छद, मतीना
(दे १, १७)।
अजुअ न [अयुत] दश हजार, 'दोएण सहस्पा
रहाण, पच अजुयाणि ह्याण' (महा)।
अजुअलवण पु [अयुगलपर्ण] सतीना (दे
१, ४८)।
अजुअलवण्णा स्त्री [दे] इमली का पेड़ (दे
१, ४८)।
अजुत्त वि [अयुक्त] अयोग्य, अनुचित
(विसे)। °कारि वि [°कारिन्] अयोग्य कार्य
करनेवाला (सुपा ६०४)।
अजुत्तीय वि [अयुक्तिक] युक्ति-शून्य, अन्याय्य
(मुर १२, ५४)।
अजुय देखो अउअ, 'पंच अजुयाणि ह्याण सत्त
कोडीओ पाइक्कण्णाण' (सुख ६, १)।
अजेअ वि [अजय] जो जीता न जा सके,
'सो मउडरयणपहवेण अजेआ दोमुहराया'
(महा)।
अजोग पु [अयोग] मन, वचन और काया
के सब व्यापारो का जिममें अभाव होता है
वह सर्वोत्कृष्ट योग, शैलेशी-करण (औप)।
अजोग वि [अयोग्य] अयोग्य, लायक नहीं
वह (नीच ११)।
अजोगि पु [अयोगिन्] १ सर्वोत्कृष्ट योग को
प्राप्त योगी। २ मुक्त आत्मा (ठा २, १, कम्म
४, ४७, ५०)।
अज्ज मक [अर्ज] पैदा करना, उपार्जन
करना, कमाना। अज्ज (हे ४, १०८)। सकु.
अज्जिय (पिग)।
अज्ज वि [अर्थ] १ वैश्य। २ स्वामी, मालिक
(दे १, ५)।
अज्ज वि [आर्य] १ निर्दोष। २ आर्य-गोत्र मे
उत्पन्न (एदि ४६)। ३ शिष्ट-जनोचित, 'अज्जाई
कम्माद करेहि राय' (उत्त १३, ३२)। °खड्ड
पुं [°खड्ड] एक जैन आचार्य (कुप्र ४४०)।

अज्ज वि [आर्य] १ उत्तम, श्रेष्ठ (ठा ४, २)।
२ मुनि, साधु (कप्प)। ३ सत्यकार्य करने-
वाला (वव १)। ४ पूज्य, मान्य (विपा १,
१)। ५ पु. मातामह (निसी)। ६ पितामह
(राया १, ८)। ७ एक ऋषि का नाम
(एदि)। ८ न गोत्र-विशेष (एदि)। ९ जैन
साधु, साध्वी और उनकी शाखाओ के पूर्व में
यह शब्द प्रायः लगता है, जैसे अज्जवड्ढर,
अज्जचंदगा, अज्जपोमिला (कप्प)। °उत्त
पु [°पुत्र] १ पति, भर्ता (नाट)। २ मालिक
का पुत्र (नाट)। °घोस पु [°घोष] भगवान्
पार्श्वनाथ का एक गणगर (ठा ८)। °मगु पु
[°मङ्ग] एक प्राचीन जैनाचार्य (सार्ध २२)।
°मिस्स वि [°मिश्र] पूज्य, मान्य (अभि
१३)। °समुद पु [°समुद्र] एक प्रसिद्ध
जैनाचार्य (सार्ध २२)।
अज्ज अ [अद्य] आज (मुर २, १६७)।
°त्त वि [°तन] अधुनातन, आजकल का
(रभा)। °त्ता स्त्री [°ता] आज कल (कप्प)।
°प्पभिइ अ [°प्रभृति] आज से ले कर
(उवा)।
अज्ज पु [दे] १ जिनन्द्र देव। २ बुद्ध देव (दे
१, ५)।
अज्ज न [आद्य] वी, घृत (पात्र)।
अज्ज° देखो रि = ऋ।
अज्ज अ [अद्य] आज (गा ५८)।
अज्जत वि [आयत्] आगामी। °काल पु
[°काल] भविष्य काल (पात्र)।
अज्जहिज्जो अ [अद्यह्य] आजकल (उप पृ
३६४)।
अज्जकालिअ वि [अद्यकालिक] आजकल का
(अणु १५८)।
अज्जग देखो अज्जय = अर्जक, 'अज्जगतस्मज-
रिक्ख' (सुपा ५३)।
अज्जग देखो अज्जय = आर्यक (निर १, १)।
अज्जण सक [अर्ज] उपार्जन करना। सकु
अज्जणित्ता (सूअ १, ५, २, २३)।
अज्जण } [अर्जन] उपार्जन, पैदा करना
अज्जणण } (आ १२, सत्त १८), 'रज्ज केरिस-
मेवं करेमुवाय तदज्जणणे' (उप ७ टी)।
अज्जम पु [अर्यमन्] १ सूर्य (पि
२६१)। २ देव-विशेष (ज ७)। ३ उत्तरा-

णालुनी नक्षत्र का अर्चिष्ठायक देव (ठा २,
३)। ४ न उत्तरा-फाल्गुनी नक्षत्र (ठा २,
३)।

अज्जय पुं [आर्यक] १ मातमह, मा का
बाप (पउम ५०, २)। २ पितामह, पिता का
पिता (भग ६, ३३), 'ज पुण अज्जय-पज्जय-
जणयज्जियअत्यमज्जओ दाए परमत्यओ कलक
तय तु पुरिसाभिमामीण' (मूर १, २२०)।

अज्जय वि [अर्जक] १ उपार्जन करनेवाला,
पैदा करनेवाला (मुपा १२४)। २ पु वृक्ष-
विशेष (परण १)।

अज्जय पु [दे] १ सुरम नामक तृण। २
गुरेटक नामक तृण (दे १, ५४)। ३ तृण,
घास (निचू ११)।

अज्जल पुं [आर्यल] म्लेच्छो की एक जाति
(परण १)।

अज्जव न [आर्जव] सरलता, निष्कपटता
(नव २६)।

अज्जव (अप) देखो अज्ज = आर्य। °खड्ड पु
[खण्ड] आर्य-देश (भवि)।

अज्जवया स्त्री [आर्जव] ऋजुता, सरलता
(पक्ख)।

अज्जवि वि [आर्जविन्] सरल, निष्कपट
(आचा)।

अज्जविय न [आर्जव] सरलता (सूअ १, ५,
२, २३)।

अज्जा स्त्री [आर्या] १ साध्वी (गच्छ २)।
२ गौरी, पार्वती (दे १, ५)। ३ आर्या छन्द
(ज २)। ४ भगवान् मल्लिनाथ की प्रथम
शिष्या (मम १५२)। ५ मान्या, पूज्या स्त्री
(पि १०६, १४३, १४५)। ६ एक कला
(औप)।

अज्जा स्त्री [आज्ञा] आदेश, हुकुम (हे २,
८३)।

अज्जाय वि [अजात] अनुत्पन्न, 'अज्जायस्सि-
यरस्सवि एस सहावो त्ति दुग्घड जाए' (वर्मस
२७०)।

अज्जाव सक [आ + ज्ञापय्] आज्ञा करना,
हुकुम फरमाना। कृ अज्जावेयव्व (सूअ
२, १)।

अज्जिअ वि [अर्जित] उपार्जित, पैदा किया
हुआ (आ १४)।

अज्जिआ ली [आर्यिका] १ मान्या, पूज्या ली । २ साध्वी, सन्यासिनी (सम ६५, पि ४४८) । ३ माता की माता (दस ७) । ४ पिता की माता (स २५५) ।

अज्जिड्डीअ वि [दे] दत्ता, दिया हुआ (वव १ टी) ।

अज्जिणण देखो अज्जणण (उप ६६४) ।

अजीव देखो अजीव, 'धम्माधम्मा पुगल, नह कालो पच हति अजीवा' (नव १०) ।

अज्जु (अप) अ [अद्य] आज (हे ४, ३४३, भवि, पिग) ।

अज्जुअ (शौ) देखो अज्ज = आर्य (नाट) ।

अज्जुआ (शौ) देखो अज्जा = आर्या (पि १०५) ।

अज्जुण पु [अर्जुन] १ तीमरा पारुडव (गाया १, १६) । २ वृक्ष-विशेष (गाया १, ६, औप) । ३ गोशालक के एक दिक्कर (शिष्य) का नाम (भग १५) । ४ न श्वेत सुवर्ण, सफेद सोना, 'सव्वज्जुरासुवराणगमई' (औप) । ५ तृण-विशेष (परण १) । ६ अर्जुन वृक्ष का पुष्प (गाया १, ६) ।

अज्जुणग } [अर्जुनक] १-६ ऊपर देखो ।
अज्जुणय } ७ एक माली का नाम (अत १८) ।

अज्जू ली [आर्या] सास, श्वश्रू (हे १, ७७) ।

अज्जोग देखो अजोग = अयोग (पच १) ।

अज्जोगि देखो अजोगि (पच १) ।

अज्जोरुह न [दे] वनस्पति-विशेष (परण १) ।

अज्जक्ख वि [अध्यक्ष] अधिष्ठाता (कप्पू) ।

अज्ज पु [दे] यह (पुरुष मनुष्य) (दे १, ५०) ।

अज्जत्त देखो अज्जत्त (सूत्र १, २, २, १२) ।

अज्जत्थ वि [दे] आगत, आया हुआ (दे १, १०) ।

अज्जत्थ } न [अध्यात्म] १ आत्मा मे, आत्म-
अज्जत्त } सबधी, आत्म-विषयक, (उत्ता १, आचा) । २ मन में, मन सबधी, मनो-विषयक (उत्ता ६, सूत्र १, १६, ४) । ३ मन, चित्त, 'अज्जत्तपसाणयण' (दसनि १, २६) । ४ शुभ-ध्यान, 'अज्जत्त-ए सुसमाहि-अप्पा, सुत्तात्थ च विद्याणइ जे स भिक्खू' (दस १०, १५) । ५ पु आत्मा (ओघ ७४५) । ६ जोग पु [योग] योग-विशेष, चित्त की एकाग्रता (सूत्र १, १६,

४) । १ दोस पु [दोष] आध्यात्मिक दोष—क्रोध, मान, माया और लोभ (सूत्र १, ६) । २ वत्तिय वि [प्रत्ययिक] चित्त-हेतुक, मन से ही उत्पन्न होनेवाला शोक, चिन्ता आदि (सूत्र २, २, १६) । ३ विसोहि ली [विशुद्धि] आत्म-शुद्धि (ओघ ७४५) । ४ सवुड वि [संवृत] मनो-निग्रही, मन को कावू में रखने-वाला (आचा) । ५ सुइ ली [श्रुति] अध्यात्म-शास्त्र, आत्म-विद्या, योग-शास्त्र (परह २, १) । ६ सुद्धि ली [शुद्धि] मन की शुद्धि (आचू १) । ७ सोहि ली [शुद्धि] मन-शुद्धि (आचू १) ।

अज्जत्थिय वि [आध्यात्मिक] आत्म-विषयक, आत्मा या मन मे सव्व रखनेवाला (विपा १, १, भग २, १) ।

अज्जत्थीअ देखो अज्जत्थिय (पव १२१) ।

अज्जत्थिअ वि [आध्यात्मिक] १ अध्यात्म का जानकारी (अज्ज २) । २ अध्यात्म सम्बन्धी (सूत्रनि ६४) ।

अज्जत्थ वि [दे] प्रातिवेशिक, पड़ोसी (दे १, १७) ।

अज्जत्थय पुन [अध्ययन] १ शब्द, नाम (चद १) । २ पढ़ना, अभ्यास (विसे) । ३ ग्रन्थ का एक अंश (विपा १, १) ।

अज्जत्थयि वि [अध्ययनिन्] पढ़ने वाला, अभ्यासी (विसे १४६५) ।

अज्जत्थाव सक [अधि + आप्] पढ़ाना, सीखाना । १ अज्जत्थाविति (विसे ३१६६) ।

अज्जत्तवस सक [अध्यव + सो] विचार करना, चिन्तन करना । वक्क अज्जत्तवसंत (सुपा ५६५) ।

अज्जत्तवसण } न [अध्यवसान] चिन्तन,
अज्जत्तवसाण } विचार, आत्म-परिणाम, 'तो कुमरेण भरिण्यं, मुरिणपुगव । रद्धसुहज्जवस-एणि । किं इयफलं जायइ ?' (सुपा ५६९, प्रासू १०४, विपा १, २) ।

अज्जत्तवसाय पु [अध्यवसाय] विचार, आत्म-परिणाम, मानसिक सकल्य (आचा, कम्म ४, ८२) ।

अज्जत्तवसिय वि [अध्यवसित] निश्चित, (धर्मसं ४२८) ।

अज्जत्तवसिय वि [अध्यवसित] १ जिसका चिन्तन किया गया हो वह (औप) । २ न चिन्तन, विचार (अणु) ।

अज्जत्तवसिय न [दे] मुंडा हुआ मुह (दे १, ४०) ।

अज्जत्तसिय वि [दे] देखा हुआ, दृष्ट (दे १, ३०) ।

अज्जत्तस सक [आ + क्रुश] आक्रोश करना, अभिशाप देना । अज्जत्तसइ (दे १, १३) ।

अज्जत्तस } वि [आक्रुश] जिस पर आक्रोश
अज्जत्तसिय } किया गया हो वह (दे १, १३) ।

अज्जत्तहिय वि [अध्यधिक] अत्यंत, अतिश-यित (महा) ।

अज्जत्ता ली [दे] १ असती, कुलटा । २ प्रशस्त ली । ३ नवोढा, दुलहिन । ४ युवती ली । ५ यह (ली) (दे १, ५०, गा ८३८, ८६८, वजा ६४) ।

अज्जत्ता } सक [अधि + इ] अध्ययन करना,
अज्जत्ताअ } पढ़ना । अज्जत्तामि, (सुख २, १३) ।
हेक्क अज्जत्ताइउं (सुख २, १३) ।

अज्जत्ताअ सक [अध्यापय्] पढ़ाना । कर्म अज्जत्ताइजइ (सुख २, १३) ।

अज्जत्ताइअव्व वि [अध्येतव्य] पढ़ने योग्य, 'सुअ मे भविस्सइ त्ति अज्जत्ताइअव्वं भवइ' (दस ६, ४, ३) ।

अज्जत्ताय पु [अध्याय] १ पठन, अभ्यास (नाट) । २ ग्रन्थ का एक अंश (विसे १११०, प्राप) ।

अज्जत्तारुह पु [अध्यारुह] १ वृक्ष-विशेष । २ वृक्षों के ऊपर बढनेवाली बल्ली या शाखा वगैरह (परण १) ।

अज्जत्तारोव पु [अध्यारोप] आरोप, उपचार (धर्मसं ३५२, ३५३) ।

अज्जत्तारोवण न [अध्यारोपण] १ आरोपण, ऊपर चढ़ाना । २ पूछना, प्रश्न करना (विसे २६२८) ।

अज्जत्तारोह पु [अध्यारोह] देखो अज्जत्तारुह (सूत्र २, ३, ७, १८, १६) ।

अज्जत्ताव देखो अज्जत्ताअ = अध्यापय् । अज्जत्ता-वेइ (सुख २, १३) । वक्क, अज्जत्तावअत्त (हात्स १२४) ।

अज्जत्तावग देखो अज्जत्तावय (दसनि १, १ टी) ।

अज्मावण न [अध्यापन] पाठन (तिरि २७) ।
अज्मावणा स्त्री [अध्यापना] पढाना (कम्म
१, ६०) ।

अज्मावय वि [अध्यापक] पढानेवाला,
शिक्षक, गुरु (वसु, सुर ३, २६) ।

अज्मावस अक [अध्या + वस्] रहना,
वास करना । वक्क अज्मावसत (उवा) ।
अज्मास पु [अध्यास] १ ऊपर बैठना । २
निवास-स्थान (सुपा २०) ।

अज्मासणा स्त्री [अध्यासना] सहन करना
(राज) ।

अज्मासिअ वि [अध्यासित] १ आश्रित,
अधिष्ठित । २ स्थानित, निवेशित (नाट) ।

अज्माहय वि [अध्याहृत] १ उत्तेजित, 'सीय-
लेणं सुरहिगवमट्टियागवेण हत्थी अज्माहयो
वण समरेइ' (महा) ।

अज्मीण वि [अक्षीण] १ अक्षय, अखुट । २
न अध्ययन (विसे ६५८) ।

अज्मुववज्ज देखो अज्झोववज्ज (पि ७७,
श्रौप) ।

अज्मुववण देखो अज्झोववण (विपा १,
१) ।

अज्मुववाय देखो अज्झोववाय (उप पृ २८१) ।

अज्मुसिअ वि [अध्युपित] आश्रित (पिड
४५०) ।

अज्मुसिर वि [अशुषिर] छिद्र-रहित (श्रोष
३१३) ।

अज्मेउ वि [अध्येतृ] पढनेवाला (विसे
१४६५) ।

अज्मेल्ली स्त्री [दे] दोहने पर भी जिसका दोहन
हो सके ऐसी गैया (दे १, ७) ।

अज्मेसणा स्त्री [अध्येषणा] अधिक प्रार्थना,
विशेष याचना (राज) ।

अज्मोयरग पु [अध्यवपूरक] १ साधु के
अज्मोयरय } लिए अधिक रसोई करना । २
साधु के लिए बढाकर की हुई रसोई (श्रौप,
पव ६७) ।

अज्मोल्लिआ स्त्री [दे] वक्ष-स्थल के आभू-
पण में की जाती मोतियों की रचना (दे १,
३३) ।

अज्मोवगमिय वि [आभ्युपगमिक] स्वेच्छा
से स्वीकृत (परण ३४) ।

अज्मोववज्ज अक [अध्युप + पद्] अत्यासक्त
होना, आसक्ति करना । अज्मोववज्जइ (पि
७७) । भविअज्मोववज्जिहिड (श्रौप) ।

अज्मोववण } वि [अध्युपपन्न] अत्यंत
अज्मोववज्ज } आसक्त (विपा १, २, णाया १,
२, महा, पि ७७) ।

अज्मोववाय पु [अध्युपपाद] अत्यन्त आस-
क्ति, तल्लीनता (परह २, ५) ।

अज्मावणा देखो अज्मावणा, 'पममो पसन्नव-
यणो विहिणा सव्वाणभावणाकुसलो' (सवोध
२४) ।

अट } सक [अट्] भ्रमण करना, घूमना ।
अट्ट } अटइ (पड्, हे १, १६५), परिअट्टइ
(हे ४, २३०) ।

अट्ट सक [कथ्] कथा करना । अट्टइ (हे
४, ११६, पड्, गड्ड) ।

अट्ट अक [शुप्] सूखना, शुष्क होना ।
अट्टति (मे ५, ६१) । वक्क अट्टन (मे ५,
७३) ।

अट्ट वि [आर्त] १ पीड़ित, दुःखित (विपा
१, १) । २ ध्यान-विशेष—अष्ट-संयोग, अनिष्ट-
वियोग, रोग-निवृत्ति और भविष्य के लिए
चिन्ता करना (ठा ४, १) । °ण वि [°ह्]
पीड़ित की पीड़ा को जाननेवाला (पड्) ।

अट्ट वि [ऋत] गत, प्राप्त (णाया १, १, भग
१२, २) ।

अट्ट पुन [अट्ट] १ दूकान, हाट (आ १४) ।
२ महल के ऊपर का घर, अटारी (कुमा) । ३
आकाश (भाग) २०, २) ।

अट्ट वि [दे] १ कुश, दुर्बल । २ बडा, महान् ।
३ निर्लज्ज, वेशरम । ४ आलसी, सुम्त । ५ पु-
शुक, तोता । ६ शब्द, आवाज । ७ न सुख ।
८ झूठ, असत्योक्ति (दे १, ५०) ।

अट्टट्ट वि [दे] गया हुआ, गत (दे १, १०) ।
अट्टट्टहास पु [अट्टट्टहास] देखो अट्टहास
(उव) ।

अट्टण न [अट्टन] १ व्यायाम, कसरत (श्रौप) ।
२ पु इस नाम का एक प्रसिद्ध मल्ल (उत्त
४) । °शाला स्त्री [°शाला] व्यायाम-शाला,
कसरत-शाला (श्रौप, कण्) ।

अट्टण न [अट्टन] परिभ्रमण (वर्म ३) ।
अट्टणा स्त्री [आवर्तना] आवृत्ति (प्राक् ३१) ।

अट्टमट्ट वि [दे] निरर्थक, व्यर्थ, निकम्मा
(सुख ५, ८) ।

अट्टमट्ट पुं [दे] १ आलवान, कियारी (हे २,
१७४) । २ अशुभ सकल्प-विकल्प, पाप-संबद्ध
अव्यवस्थित विचार,

'अणवट्टिय मणो जस्स भाइ बहुयाइ अट्टमट्टाइ ।
तं चितिय च न लहइ, सच्चिणुइ य पावकम्माइ'
(उव) ।

अट्टय पुं [अट्टक] १ हाट, दूकान (आ १२) ।
२ पात्र के छिद्र को बन्द करने में उपयुक्त
द्रव्य-विशेष (वृह १) ।

अट्टयक्कली स्त्री [दे] कमर पर हाथ रखकर
खडा रहना (पात्र) ।

अट्टहास पु [अट्टहास] बहुत हँसना, खिल-
खिला कर हँसना (पि २७१) ।

अट्टालग पुन [अट्टालक] महल का उपरि-
अट्टालय } भाग, अटारी (सम १३७, पउम
२, ६) ।

अट्टि स्त्री [आर्ति] पीडा, दुःख (आचा) ।

अट्टिय वि [आर्तित] शोकादि से पीड़ित,
'अट्टा अट्टियचित्ता, जह जीवा दुक्खसागरमुर्वेत्ति'
(श्रौप) ।

अट्टिय वि [अर्दित] व्याकुल, व्यग्र, 'अट्टदुह-
ट्टियचित्ता' (श्रौप) ।

अट्ट पु [अर्थ] संयम (सूत्र १, २, २, १६) ।

अट्ट पुन [अर्थ] ५ वस्तु, पदार्थ (उवा २;
अच्छु), 'अट्टदसी' (सूत्र १, १४), 'अट्टाई,
हेऊई, पसिणाइ' (भग २, १) । २ विषय,
'इदियट्टा' (ठा ६) । ३ शब्द का अभिवेय,
वाच्य (सूत्र १, ६) । ४ मतलब, तात्पर्य (विपा
२, १; भास १८) । ५ तत्त्व, परमार्थ, 'तुम्मे-
त्थ भो भारहरा गिराण, अट्ट न याणाह अहिज्ज
वेए' (उत्त १२, ११), 'इयो पुणसु दुहमट्ट-
दुग' (सूत्र १, १०, ६) । ६ प्रयोजन, हेतु
(हे २, २३) । ७ अभिलाष, इच्छा; 'अट्टो भते !
भागहि, हता अट्टो' (णाया १, १६, उत्त ३) ।
८ उद्देश्य, लक्ष्य (सूत्र १, २, १) । ९ वन,
पैसा (आ १४; आचा) । १० फल, लाभ,
'अट्टजुत्ताणि सिक्खेज्जा गिरट्टाणि उ वज्जे'
(उत्त १) । ११ मोल, मुक्ति (उत्त १) । °कर
पु [°कर] । १ मंत्री । २ निमित्त शास्त्र का
विद्वान् (ठा ४, ३) । °जाय वि [°जातार्थ]

जिसकी आवश्यकता हो, जिसका प्रयोजन हो वह, 'अट्टेण जस्स कज्ज सजात एस अट्टजाओ य' (वव २)। 'जाय वि [°याच] घनार्थी, घन की चाहवाला (वव २)। 'सइय वि [°शक्ति] सौ अर्थवाला, जिसका सौ अर्थ हो सके ऐसा (वचन आदि) (ज २)। 'सेण प [°सेन] देखो अट्टिसेण, देखो अत्य=अर्थ।

अट्ट वि व [अष्टन्] सख्या-विशेष, आठ, ८ (जी ४१)। 'चत्ताल वि [°चत्वारिंश] अठतालीसवां (पउम ४८, १२६)। 'चत्तालीस वि [°चत्वारिंशत्] अठतालीस (पि ४४५)। 'ट्टमिया वी [°ट्टमिका] जैन माधुओ का ६४ दिन का एक व्रत, प्रतिमा-विशेष (सम ७७)। 'तालीस वि [°चत्वारिंशत्] अठतालीस (नाट)। 'तीस वि [°त्रिंशत्] सख्या-विशेष, अठतीस (सम ६५, पि ४४२, ४४५)। 'तीसइम वि [°त्रिंश] अठतीसवां (पउम ३८, ५८)। 'त्तरि वी [°सप्तति] अठत्तर, ७८ की सख्या (पि ४४६)। 'त्तीस वि [°त्रिंशत्] अठतीस (सुपा ६५९, पि ४४५)। 'दस वि [°दशन्] अठारह, १८ (संति ३)। 'दसुत्तरसय वि [°दशोत्तर-शत्] एक सौ अठारहवां (पउम ११८, १२०)। 'दह वि [°दशन्] अठारह, १८ की संख्या (पिग)। 'पएसिय वि [°प्रदेशिक] आठ अवयव वाला (ठा १०)। 'पया वी [°पदा] एक वृत्त, छन्द-विशेष (पिग)। 'पाहरिअ वि [°प्राह-रिक] आठ प्रहर संवधी (सुर १५, २१८)। 'भाइया वी [°भागिका] तरल वस्तु नापने का बत्तीस पलो का एक परिमाण (अणु)। 'म न [°म] तेला, लगातार तीन दिनों का उपवास (सुर ४, ५५)। 'मंगल पुन [°मङ्गल] स्वस्तिक आदि आठ मांगलिक वस्तु (राय)। 'मभत्त पुन [°मभक्त] तेला, लगातार तीन दिनों का उपवास (राया १, १)। 'मभत्तिय वि [°मभक्तिक] तेला करनेवाला (विपा २, १)। 'मी वी [°मी] तिथि-विशेष, अष्टमी (विपा २, १)। 'मुत्ति पु [°मूर्ति] महादेव, शिव (ठा ६)। 'याल वि [°चत्वारिंशत्] अठतालीस (भवि)। 'वन्न वि [°पञ्चाशत्] सख्या-विशेष, अट्ठावन, ५८ (कम्म १, ३२)। 'वरिस, 'वारिस वि [°वार्षिक] आठ वर्ष

की उम्र का (सुर २, १४६, ८, १०१)। 'विह वि [°विध] आठ प्रकार का (जी २४)। 'वीस वीन [°विंशति] अट्ठाईस (कम्म १, ५)। 'सट्ठि वी [°षष्टि] सख्या-विशेष, अठमठ (पि ४४२-६)। 'समइय वि [°सामयिक] जिसकी अवधि आठ 'समय' की हो वह (श्रीप)। 'सय न [°शत] एक सौ आठ, १०८ (ठा १०)। 'सहस्स न [°सहस्र] एक हजार और आठ (श्रीप)। 'सामइय देखो 'समइय (ठा ८)। 'सिर वि [°शिरस्, 'सिर] अष्ट-कोण, आठ कोण वाला (श्रीप)। 'सेण पुं [°सेन] देखो अट्टिसेण। 'हत्तर वि [°सप्ततितम] अठत्तरवां (पउम ७८, ५७)। 'हत्तरि वी [°सप्तति] अठत्तर की सख्या ७८ (मम ८६)। 'हा म [°धा] आठ प्रकार का (पि ४५१)। 'अट्ट न [°काष्ठ] काष्ठ, लकड़ी (प्रयो ७४)।

अट्टग वि [अष्टाङ्ग] जिसका आठ अंग हो वह। 'णिमित्त न [°निमित्त] वह शास्त्र जिसमें भूमि, स्वप्न, शरीर, स्वर आदि आठ विषयों के फलाफल का प्रतिपादन हो (सूत्र १, १२)। 'महाणिमित्त न [°महानिमित्त] अनन्तर-उक्त अर्थ (कप्प)।

अट्टम वि [अष्टास] अष्ट-कोण (सूत्र २, १, १५)।

अट्टदिट्ठि वी [अष्टदृष्टि] योग की आठ दृष्टियाँ, वे ये हैं —मित्रा, तारा, बला, दीप्रा, स्थिरा, कान्ता, प्रमा और परा (सिरि ६२३)।

अट्टय न [अष्टक] आठ का समूह (वव १)। अट्टा वी [अष्टा] १ मुष्टि, 'चर्जहि अट्ठाहि लोयं करेइ' (ज २, स १८२)। २ मुट्ठीभर चीज (पचव २)।

अट्टा वी [आस्था] श्रद्धा, विश्वास (सूत्र २, १)। अट्टा वी [अर्थ] लिए, वास्ते, 'तइया य मणी दिव्वो, समप्पिओ जीवरक्खट्ठा' (सुर ६, ६, ठा ५, २)। 'दड पुं [°दण्ड] कार्य के लिए की गई हिंसा (ठा ५, २)।

अट्ठाइस वि [अष्टाविंश] अट्ठाईसवां (पिग)। अट्ठाइस } वीन [अष्टाविंशति] सख्या-अट्ठाईस } विशेष, अट्ठाईस (पिग, पि ४४२)। अट्टाण न [अस्थान] १ अयोग्य स्थान (ठा ६, विसे ८४५)। २ कुत्सित स्थान, वेश्या का मुहल्ला वगैरह (वव २)। ३ अयोग्य, गैरव्याजवी

'अट्ठाणमेय कुसला वयति, दगेण जे सिद्धिमुया-हरति' (सूत्र १, ७)।

अट्टाण न [आस्थान] सभा, सभा-गृह (ठा ५, १)।

अट्टाणउड वी [अष्टानवति] अठानवे, ६८ (सम ६६)।

अट्टाणउय वि [अष्टानवत] अठानवेवां, ६८ वां (पउम ६८, ७८)।

अट्टाणवइ देवो अट्टाणउइ (सुत्र २१६)।

अट्टाणिय वि [अस्थानिक] अपात्र, अनाश्रय, 'अट्टाणिए होइ वइ गुणाल जेएणालमकाइ मुमं वएज' (सूत्र १, १३)।

अट्टायमाण वरु [अतिष्ठन्] नहीं बैठता हुआ (पचा १६)।

अट्टार } वि व [अष्टादशन्] नम्पा
अट्टारस } विशेष, अठारह (पउम ३५, ७६, मति ८)। 'वह वि [°विध] अठारह प्रकार का (सम ३५)।

अट्टारसग न [अष्टादशक] १ अठारह का समूह (पंचा १४, ३)। २ वि जिसका मूल्य अठारह मुद्रा हो वह (पव १११)।

अट्टारसम वि [अष्टादश] १ अठारहवां (पउम १८, ५८)। २ न. लगातार आठ दिनों का उपवास (राया १, १)।

अट्टारसिय वि [अष्टादशिक] अठारह वर्ष की उम्र का (वव ४)।

अट्टारह } देखो अट्टार (पड्, पिग)।
अट्टाराह }

अट्टावण्ण } वीन [अष्टापञ्चाशत्] संख्या-
अट्टावन्न } विशेष, पचास और आठ, ८८ (पि २६५, सम ७४)।

अट्टावन्न वि [अष्टापञ्चाश] अठानवां (पउम ५८, १६)।

अट्टावय पुं [अष्टापद] १ स्वनाम-स्थात पर्वत-विशेष, कैलास (परह १, ४)। २ न. एक जाति का जुआ (परह १, ४)। ३ द्यूत-फलक, जिस पर जुआ खेला जाता है वह (परह १, ४)। ४ सुवर्ण, सोना (अण ८)। 'सेल पु [°शैल] १ मेरु-पर्वत। २ स्वनाम-स्थात पर्वत-विशेष, जहाँ भगवान् ऋषभदेव निर्वाण पाये थे, 'जम्मि लुमं अहिस्सित्तो, जत्थ य सिवसुक्ख-संपय पत्तो। ते अट्टावयसेला, सीसामेला गिरि-कुलस्स' (अण ८)।

अट्टावय न [अथेपद] गृहस्थ (दस ३, ४) ।
अट्टावय न [अर्थेपद] अर्थ-शास्त्र, सपत्ति-शास्त्र
(सूत्र १, ६ परह १, ४) ।

अट्टावीस स्त्रीन [अष्टाविंशति] अठाईस, २८
(पि ४४२, ४४५) ।

अट्टावीसइ स्त्री [अष्टाविंशति] सख्या-विशेष,
अठाईस, २८ । °विह् वि [°विच] अठाईस
प्रकार का (पि ४४१) ।

अट्टावीसइ वि [अष्टाविंश] १ अठाईसवां
(पउम २८, १४१) । २ न तेरह दिनो के
लगातार उपवाम (गाया १, १) ।

अट्टासट्टि स्त्री [अष्टापट्टि] सख्या-विशेष, अठ-
सठ, ६८ (पिंग) ।

अट्टासि स्त्री [अष्टाशीति] सख्या-विशेष
अट्टासीड स्त्री [अष्टासी, ८८ (पिंग, सम ७३) ।

अट्टासीय वि [अष्टाशीत] अठामीवां (पउम
८८, ४४) ।

अट्टाह न [अष्टाह] आठ दिन (गाया १, ८) ।

अट्टाहिया स्त्री [अष्टाहिका] १ आठ दिनो
का एक उत्सव (पंचा ८) । २ उत्सव (गाया
१, ८) ।

अट्टि वि [अर्थिन्] प्रार्थी, गरजवाला, अभि-
लापी (आचा) ।

अट्टि पुं [अस्थि] १ हड्डी, हाड, 'अय अट्टी'
(सूत्र २, १, १६) । २ फल की गुट्टी (दम
५, १, ७३) ।

अट्टि स्त्रीन [अस्थि, °क] १ हड्डी, हाड
अट्टिग (कुमा; परह १, ३) । २ जिसमे
अट्टिय वीज उत्पन्न न हुए हो ऐसा अपरि-
पक्व फल (वृह १) । ३ पु कापालिक, 'अट्टी
विजा कुच्छियमिक्खु' (वृह १, वव २) ।

°मिजा स्त्री [°मिजा] हड्डी के भीतर का रस
(ठा ३, ४) । °सरक्ख पुं [°सरजस्क] कापा-
लिक (वव ७) । °सेण न [°पेण] १ वल्म-
गोत्र की शाखारूप एक गोत्र । २ पु इस गोत्र
का प्रवर्तक पुरुष और उसकी मन्तान (ठा ७) ।

अट्टिय वि [अर्थिक] १ गरजू, याचक, प्रार्थी
(सूत्र १, २, ३) । २ अर्थ का कारण, अर्थ
सम्बन्धी । ३ मोक्ष का हेतु, मोक्ष का कारण-
भूत, 'पसन्ना लाभइस्सति विउलं अट्टियं सुय'
(उत्त १) ।

अट्टिय वि [आर्थिक] १ अर्थ का कारण, अर्थ-
सम्बन्धी । २ मोक्ष का कारण (उत्त १) ।

अट्टिय वि [अर्थित] अभिलपित, प्रार्थित
(उत्त १) ।

अट्टिय वि [अस्थित] १ अव्यवस्थित, अनि-
यमित (परह १, ३) । २ चल, चपल (से
२, २४) ।

अट्टिय वि [आस्थिक] हड्डी-सम्बन्धी, हाड
का, 'अट्टिय रस मुण्णा' (भत १४२) ।

अट्टिय वि [आस्थित] स्थित, रहा हुआ, (से
१, ३५) ।

अट्टिय पु [अस्थिक] १ वृक्ष-विशेष । २ न
फल-विशेष, अस्थिक वृक्ष का फल (दम ६,
१, ७३) ।

अट्टिल्लय पुं [अस्थि] फल की गुट्टी (पिड
६०३) ।

अट्टुत्तर वि [अष्टोत्तर] आठ से अधिक
(श्रौप) । °सय न [°शत] एक सौ और
आठ (काल) । °सय वि [°शततम] एक
सौ आठवां (पउम १०८, ५०) ।

अड स्त्री देखो अट्टु = अष्टु (पिंग, पि ४४२,
अड १४६, भग, सम १३४) ।

अड सक [अट्] भ्रमण करना, फिरना,
'अडति ससारं' (परह १, १) । वक्र अडमाण
(गाया १, १४) ।

अड पु [अवट] १ कूप, इनारा (पाग्न) । २
कूप के पास पशुओं के पानी पीने के लिए
जो गत किया जाता है वह (हे १, २७१) ।
°अड देखो तड = तट (गा ११७, से १,
५५) ।

अडइ स्त्री [अटवि, °वी] भयानक जंगल,
अडई स्त्री वन (सुपा १८१, नाट) ।

अडडम्मिय न [दे] विपरीत मैथुन (दे १,
४२) ।

अडखम्म सक [दे] सभालना, रक्षण करना ।
कर्म 'अडखम्मिज्जति सवरिआहि वणे' (दे १,
४१) ।

अडखम्मिअ वि [दे] सभाला हुआ, रक्षित
(दे १, ४१) ।

अडड न [अटट] 'अटटाग' को चौरासी
लाख से गुणने पर जो संख्या लब्ध हो वह
(ठा ३, ४) ।

अडडग न [अटटाङ्ग] संख्या-विशेष, 'तुडिय'
या 'महातुडिय' को चौरासी लाख से गुणने
पर जो संख्या लब्ध हो वह (ठा ३, ४) ।

अडण न [अटन] भ्रमण, घूमना (ठा ६) ।

अडणा स्त्री [दे] मार्ग, रास्ता (दे १ १६) ।

अडपल्लण न [दे] वाहन-विशेष (जीव) ।

अडयणा स्त्री [दे] कुलटा, व्यभिचारिणी
अडया स्त्री [दे १, १८, पाग्न, गा २-४,
६६२, वजा ८६) ।

अडयाल न [दे] प्रशसा, तारोफ (परण २) ।

अडयाल स्त्री [अष्टचत्वारिंशान्] अठ-
अडयालीस स्त्री तालीम, ४८ की संख्या (जीव
३, सम ७०) । °सय न [°शत] एक सौ
और अठतालीस, १४८ (कम्म २, २५) ।

अडवडण न [दे] खलना, एक-एक चलना,
'तुरयावि परिस्सता अडवडण काउमारद्धा'
(मुपा ६४५) ।

अडाव स्त्री [अटवि, °वी] भयंकर जंगल,
अडवी स्त्री गहरा वन (परह १, १, महा) ।

अडसट्टि स्त्री [अष्टपट्टि] अठसठ (पि ४४२) ।
°म वि [°तम] अठमठवां (पउम ६८, ५१) ।

अडाड पु [दे] बलात्कार, जबरदस्ती (दे
१, १९) ।

अडिल्ल पुं [अटिल] एक जाति का पक्षी
(परण १) ।

अडिल्ला स्त्री [अडिल्ला] छन्द-विशेष (पिंग) ।

अडोलिया स्त्री [अटोलिका] १ एक राज-
पुत्री, जो युवराज की पुत्री और गदंभराज की
वहिन थी । २ मूषिका, चूही (वृह १) ।

अडोविय वि [अटोपित] भरा हुआ (परह
१, ३) ।

अडु वि [दे] जो आढे आता हो, बीच में
बाधक होता हो वह, 'सो कोहाडओ अडुओ
आवडिओ' उप १४६ टी) ।

अडुक्ख सक [क्षिप्] फेंकना, गिराना ।
अडुक्खइ (हे ४, १४३, पड्) ।

अडुक्खिय वि [क्षिप्] फेंका हुआ (कुमा) ।

अडुण न [अडुन] १ चर्म, चमड़ा । २ ढाल,
फलक, 'नवमुग्गवरणअडुणअडिआजाणुभोम-
णसरीरा' (सुर २, ५) ।

अडुण वि [दे] आरोपित (वव १ टी) ।

अडुया स्त्री [अडुका] मल्लो की क्रिया-विशेष
(विसे ३३५७) ।

अद्ध देखो अद्ध = अर्ध (हे २, ४१, चद १०, सुर ६, १२६, महा) ।

अद्ध वि [आढ्य] १ सप्त, वैभव-शाली, धनी (पाम्म, उवा) । २ युक्त, सहित (पचा १२) । ३ पूर्ण, परिपूर्ण, 'विणुणमवि गुणइद्' (प्रासू ७१) ।

अद्धअक्कली स्त्री [दे] देखो अट्टयक्कली (दि १, ४५) ।

अद्धत्त वि [आरब्ध] शुरु किया हुआ, प्रारब्ध (से १३, ६) ।

अद्धाइल } वि [अर्धतृतीय] ढाई (सम
अद्धाइय } १०१, सुर १, ४४, भवि, विस १४०१) ।

अद्धिय वि [कृष्ट] खोचा हुआ (से ५, ७२) ।

अद्धुट्ठ वि [अर्धचतुर्थ] साढे तीन, 'अद्धुट्ठाइ सयाइ' (पि ४५०) ।

अद्धेज्ज न [आढ्यत्व] धनीपन, श्रीमताई (ठा १०) ।

अद्धेज्जा स्त्री [आढ्येज्या] श्रीमत से किया हुआ सत्कार (ठा १०) ।

अद्धोरुग पु [अर्धोरुक] जैन साध्वियों के पहनने का एक वस्त्र (ओघ ३१५) ।

अढ (अप) देखो अद्ध = अपट्ठ (पि ६७, ३०४, ४४२, ४४५) ।

अढाइस (अप) स्त्रीन [अष्टाविंशति] संख्या-विशेष, अठाईस, २८ (पि ४४५) ।

अढारसग देखो अट्टारसग (पिंड ४०२) ।

अढारसम देखो अट्टारसम (भग १८, एया १, १८) ।

अण अ [अ, अन] देखो अं (ह २, १६०, से ११, ६४) ।

अण सक [अण्] १ आवाज करना । २ जाना । ३ जानना । ४ समझना । अणइ (विसे २४४१) ।

अण पु [अण] १ शब्द, आवाज । २ गमन, गति (विसे ३४४०) । ३ कपाय, क्रोध आदि आन्तर शत्रु (विसे १२८७) । ४ गाली, आक्रोश, अभिशाप (तदु) । ५ न, पाप (पएह १, १) । ६ कर्म (आचा) । ७ वि कुत्सित, खराब (विसे २७६७ टी) ।

अण पु [अन] देखो अणताणुवंधि (कम्म २, ५, १४, २६) ।

अण पु [अनस्] शकट, गाड़ी (धर्म २) ।

अण देखो अण्ण = अन्य, 'अणहिअणवि पिआण' (से ११, १६, २०) ।

अण न [अण्ण] १ करजा, ऋण (हे १, १४१) ।

२ कर्म (उत्त १) । °धारग वि [°धारक]

करजदार, ऋणी (एया १, १५) । °वल वि [°वल]

उत्तमण, लेनदार (पएह १, २) । °भजग वि [°भजक]

देउलिया (पएह १, २) । °अण देखो गण (मे ६, ६६) ।

°अण देखो जण, 'अण्ण महिलाअण रमतस्स'

(गा ४४), 'गुल्लणपरवम पिअ कि (काप्र ६१), 'दासअण्ण' (अचु ३२) ।

°अण देखो तण (मे ६, ६६) ।

°अणअरद देखो अणवरय (नाट) ।

अणइवर वि [अनतिवर] जिमसे बडकर

दूसरा न हो, सर्वोत्तम, 'अच्छराओ

अणइवरमोमचारुवाओ' (औप) ।

अणइवुट्ठि स्त्री [अनतिवृष्टि] अवृष्टि, वर्षा का

अभाव, 'दुब्बिक्कडमरदुम्मारिइअइवुट्ठि अणइ-

वुट्ठि य' (सवोव २) ।

अणईइ वि [अनीति] ईति-रहित, शनभादि-

कृत उपद्रव से रहित 'अणईइपत्ता' (औप) ।

अणग पु [अनङ्ग] १ काम, विषयाम्नाप,

रमणेच्छा (आ १६, आव ६) । २ कामदेव,

मन्मथ (गा २३३, गउड, कप्पू) । ३ एक राज-

कुमार, जो आनन्दपुर के राजा जीतारि का पुत्र

था (गच्छ २) । ४ न विषय-सेवन के मुख्य

अणो के अतिरिक्त मन्त, कुक्षि, मुख आदि अण

(ठा ५, २) । ५ वनावटी लिंग आदि (ठा ५,

२) । ६ बारह अंग-ग्रन्थो से भिन्न जैन शास्त्र

(विसे ८४४) । ७ वि शरीर-रहित, अण-हीन

मृत, 'पहरड कह गु अणगो, कह गु दुविधति

कोमुमा वाणा' (गउड), 'पईवमज्जे पडई पयगो,

ख्वाणुरतो हवई अणगो' (सत्त ४८) । °धरिणी

स्त्री [°गृहिणी] रति, कामदेव की पत्नी (मुपा ६६७) । °पडिसेविणी स्त्री [°प्रतिपेविणी]

अमर्यादित रीति से विषय-सेवन करनेवाली स्त्री

(ठा ५, २) । °पविट्ट न [°प्रविट्ट] बारह

अण-ग्रन्थो से भिन्न जैन ग्रन्थ (विसे ५२७) । °वाण पु [°वाण] काम के वाण (गा ७४८) । °लवण पु [°लवन] रामचन्द्रजी का

एक पुत्र, लव (पउम ६७, ६) । °सर पु [°शर] काम के वाण (गा १०००) । °सेणा स्त्री [°सेना] द्वारका की एक विख्यात गरिका (एया १, ५, १६) ।

अणत पुं [अनन्त] चालू अवर्मापणी काल के

चौदहवें तीर्थंकर-देव, 'दिमताणतं च जिण' (पडि) । २ विष्णु, कृष्ण (पउम ५, १२२) ।

३ शेष नाम (मे ६, ८६) । ४ जिममें अनन्त

जीव हो ऐसी वनस्पति कन्द-मूल वगैरह (ओघ ४१) । ५ न केवल-ज्ञान (एया १ ८) । ६

आकाश (भग २, २) । ७ वि. नाश-वर्जित,

शाश्वत (सूत्र १, १, ४, पएह १, ३) । ८ नि सीम,

अपरिमित, अमन्य मे भी कहे अधिक (विने) ।

९ प्रभूत, बहुत, विशेष (प्रानू २६, ठा ४, १) ।

°काइय वि [°कायिक] अनन्त जीववाली वन-

स्पति, कन्द-मूल आदि (धर्म २) । °काय पु [°काय]

कन्द-मूल आदि अनन्त जीववाली वनस्पति (पएण १) । °खुत्तो अ [°कृत्वस्]

अनन्त वार (जी ४४) । °जीव पु [°जीव]

देखो °काइय (पएण १) । °जीविय वि [°जीविक]

देखो °काइय (भग ८, ३) । °णाण न [°ज्ञान]

केवल-ज्ञान (धर्म २) । °णाणि वि [°ज्ञानिन्]

केवल-ज्ञानी, सर्वज्ञ (सूत्र १, ६) । °दसि वि [°दर्शन]

नर्वज्ञ (पउम ४८, १०५) । °पासि वि [°दर्शिन्] ऐरवत क्षेत्र

के बीसवें जिन-देव (नित्य) । °मिस्सिया स्त्री [°मिश्रिका]

सन्धमित्र भाषा का एक भेद, जैसे अनन्तकाय से भिन्न प्रत्येक वनस्पति मे

मिली हुई अनन्तकाय को भी अनन्तकाय कहना (पएण ११) । °मोस न [°मिश्रक]

देखो °मिस्सिया (ठा १०) । °रह पुं [°रथ] विद्यात

राजा दशरथ के बड़े भाई का नाम (पउम २२, १०१) । °विजय पु [°विजय]

भरतक्षेत्र के २४ वें श्रीर ऐरवत क्षेत्र के बीसवें भावी तीर्थं-

कर का नाम (सम ६४८) । °वीरिय वि [°वीर्य]

१ अनन्त बलवाला । २ पु. एक केवलज्ञानी मुनि का नाम (पउम १४, १५८) ।

३ एक ऋषि, जो कार्त्तवीर्य के पिता थे (आचू १) । ४ भरतक्षेत्र के एक भावी तीर्थंकर का नाम (ती २१) । °ससारय वि [°ससारिक]

अनन्त काल तक ससार में जन्म-मरण पाने-

वाला (उप ३८४) । °सेग पुं [°सेन] १ चीया

कुलकर (सम १५०) । २ एक अन्तकृद् मुनि (अत ३) ।

अणतइ पु [अनन्तजित्] चालू काल के चौद-
हवें जिन-देव, (पञ्चम ९, १४८) ।

अणतग १ देखो अणत (ठा ५, ३) । २ न
अणंतय १ वज्र-विशेष (श्लो ३६) । ३ पु
ऐरवत क्षेत्र के एक जिनदेव (मम १५३) ।

अणंतय न [अनन्तक] वज्र, कपडा (पव २) ।

अणंतर वि [अनन्तर] १ व्यवधान-रहित, अव्य-
वहित, 'अणतर चय चइत्ता' (राया १, ८) ।
२ पु वर्तमान समय (ठा १०) । ३ क्रि वि वाद
में, पीछे (विपा १, १) ।

अणतरहिय वि [अनन्तर्हित] १ अव्यवहित,
व्यवधान-रहित (आचा) । २ मजीव, सचित्त,
चेतन (निचू ७) ।

अणतसो अ [अनन्तशस्] अनन्त बार (द
४५) ।

अणताणुवधि पुं [अनन्तानुबन्धिन्] अनन्त
काल तक आत्मा को ससार में भ्रमण कराने-
वाले कपायो की चार चौकाडियो में प्रथम
चौकाडी, अतिप्रचंड क्रोध, मान, माया और लोभ
(सम १६) ।

अणस वि [अनंश] अखण्ड (वर्मस ७८६) ।

अणक्क पु [दे] १ एक म्लेच्छ देश । २ एक
म्लेच्छ जाति (परह १, १) ।

अणक्ख पु [दे] १ रोष, गुस्सा, क्रोध (सुपा
१३, १३०, ६१० भवि) । २ लजा (म ३७६) ।

अणक्खर न [अनक्षर] श्रुत-ज्ञान का एक
भेद—वर्णों के बिना सपक के, छौंकना, चुटकी
वजाना, सिर हिलाना आदि सकेतों में दूसरे का
अभिप्राय जानना (एदि) ।

अणगार वि [अनगार] १ जिसने घर-बार
त्याग किया हो वह, साधु, यति, मुनि (विपा
१, १, भग १७, ३) । २ घर-रहित, भिक्षुक,
भोखमंगा (ठा ६) । ३ पु भरतक्षेत्र के भावी
पाचवें तीर्थंकर का एक पूर्वभवीय नाम (मम
१५४) ।

सुय न [श्रुत] 'सूत्रकृतांग' सूत्र का एक अव्य-
यन (सूत्र २, ५) ।

अणगार वि [अणगार] १ करजा करनेवाला ।
२ दुष्ट शिष्य, अपात्र (उत्त १) ।

अणगार वि [अनाकार] आकृति-शून्य, आकार-
रहित, 'उवलभव्वहाराभावओ नाणगार च'
(विसे ६५) ।

अणगारि पु [अनगारिन्] साधु, यति, मुनि
(सम ३७) ।

अणगारिय वि [आनगारिक] साधु-मन्वी,
मुनि का (विसे २६७३) ।

अणगाल पु [अकाल] दुर्भिक्ष, अकाल
(वृह ३) ।

अणगिण वि [अनग] १ जो नंगा न हो, वस्त्रों
से आच्छादित । २ पु कल्पवृक्ष की एक जाति,
जो वज्र देता है (तदु) ।

अणगघ देखो अनघ (कुप्र १) ।

अणगघ वि [अणगघन्] ऋण-नाशक, कर्म-
नाशक (दस) ।

अणगघ १ वि [अनघ] १ अमूल्य, बहुमूल्य,
अणगघेय १ कीमती (आव ४), 'रयणाइ
अणगघेयाइ हुति पचप्पयारवणाइ' (उप
५६७ टी, स ८०) । २ महान्, गुरु । ३ उत्तम,
श्रेष्ठ, 'त भगवत अणह नियमतीए अणगघम-
तीए, सक्कारेमि' (विवे ६५, ७१) ।

अणघ वि [अनघ] शुद्ध, निर्मल, स्वच्छ (पचव
४) ।

अणच्छ देखो करिस = कृप् । अणच्छइ (हे
४, १८७) ।

अणच्छिआर वि [दे] अच्छिन्न, नहीं छेदा
हुआ (दे १, ४४) ।

अणज्ज वि [अन्याद्य] अयोग्य, जो न्याय-
युक्त नहीं (परह १, १) ।

अणज्ज वि [अनार्य] आर्य-भिक्ष, दुष्ट, खराब,
पापी (परह १, १, अमि १२३) ।

अणज्जव (अप) ऊपर देखो । खड पु [खण्ड]
अनार्य देश, (भवि ३१२, २) ।

अणज्जवसाय पु [अनध्यवसाय] अव्यक्त
ज्ञान, अति सामान्य ज्ञान (विसे ६२)

अणज्जमाय पु [अनध्याय] १ अध्ययन का
अभाव । २ जिसमें अध्ययन निषिद्ध है वह काल
(नाट) ।

अणट्ट वि [अनार्त] आर्त-ध्यान से रहित,
'अणट्टा कित्ति पव्वए' (उत्त १८, ५०) ।

अणट्ट पु [अनर्थ] १ नुकसान, हानि (राया
१, ६, उप ६ टी) । २ प्रयोजन का अभाव

(आव ६) । ३ वि निष्कारण, वृथा, निष्फल
(निचू १, परह २, १) ।

दंड पु [दण्ड] निष्कारण हिंसा, बिना ही
प्रयोजन दूसरे की हानि (सूत्र २, २) ।

अणड पु [दे] जार, उपपत्ति (दे १, १८, पड्) ।

अणड्ड वि [अनर्थ] विभाग-रहित, अखण्ड
(ठा ३, ३) ।

अणणग वि [अनन्य] १ अमित्र, अप्रियभूत
(निचू १) । २ मोक्ष-मार्ग, 'अणणण चरमाणे
से ए छएणे ए छणावए' (आचा) । ३ अमा-
धारण, अद्वितीय (मुपा १८६, सुर १, ७) ।
तुल्ल वि [तुल्य] अमाधारण, अनुपम (उप
६४८ टी) । दंसि वि [दर्शिन्] पदार्थ को
सत्य-मत्य देखनेवाला (आचा) । परम वि
[परम] समय, इन्द्रिय-निग्रह, 'अणणणपरमे
राणी, एणे पमाण कयाइवि' (आचा) । मण,
मणस वि [मनस्क] एकाग्र चित्तवाला,
तल्लीन (श्लो, पउम ९, ६३) । समान वि
[समान] अमाधारण, अद्वितीय (उप ५६७
टी) ।

अणत्त वि [अनात्त] अगृहीत, अस्वीकृत (ठा
२, ३) ।

अणत्त वि [अनार्त्त] अनीडित, 'दग्गवइमाईमु
अत्तमएत्ते गवेसए कुणइ' (वव १) ।

अणत्त वि [अणार्त्त] ऋण से पीडित (ठा
३, ४) ।

अणत्त वि [अनात्र] दु खकर, सुख-नाशक,
'एरेइअए भते । कि अत्ता पोगगला अएत्ता
वा' (भग १४, ६) ।

अणत्त न [दे] निर्माल्य, देवोच्छिष्ट द्रव्य
(दे १, १०) ।

अणत्थ देखो अणट्ट (पउम ६२, ४, आ २७,
सरा) ।

अणत्थत वट्ट [अतिष्ठत्] १ नहीं रहता
हुआ । २ अस्त होता हुआ, 'अणत्थंते दिवसयरे
जो चयइ चउव्वहपि आहार' (पउम १४
१३४) ।

अणन्न देखो अणणग (सुपा १८६, सुर १,
७, पउम ६, ६३) ।

अणपन्निय देखो अणवणिय (भग १०, २) ।

अणप्प वि [अनर्प्य] अर्पण करने के अयोग्य
या अशक्य (ठा ६) ।

अणप्प वि [अनल्प] अधिक, बहुत (औप) ।
अणप्प पु [अनात्मन्] निज से भिन्न, आत्मा
से परे (पउम ३७, २२) । °ज्ज वि [°ज्ज]
१ निर्बोध, मूर्ख । २ पागल, भूताविष्ट, पराधीन
(निबू १) । °वसग वि [°वश] परवश,
पराधीन (पउम ३७, २२) ।

अणप्प पु [दे] खड्ग, तलवार (दे १,
१२) ।

अणप्पिय वि [अनर्पित] १ नहीं दिया हुआ ।
२ साधारण, सामान्य, अवशिष्ट (ठा १०) ।
°णय पु [°नय] सामान्य-ग्राही पक्ष (विसे) ।
अणवभतर वि [अनभ्यन्तर] भीतरी तत्त्व
को नहीं जाननेवाला, रहस्य-अनभिज्ञ, 'अणवभ-
तरा खु अम्हे मदणगदस्म वुत्ततम्स' (अभि
६१) ।

अणभिग्गह न [अनभिग्रह] 'सर्वे देवा
धन्वा' इत्यादि रूप मिथ्यात्व का एक भेद
(आ ६) ।

अणभिग्गहिय न [अनभिग्रहिक] ऊपर
देखो (ठा २, १) ।

अणभिग्गहिय वि [अनभिगृहीत] १ कदा-
ग्रह-शून्य (आ ६) । २ अन्वोक्त (उत्त २८) ।

अणभिण्ण } वि [अनभिज्ञ] अज्ञान, निर्बोध
अणभिन्न } (अभि १७४, सुपा १६८) ।

अणभिलप्प वि [अनभिलाष्य] अनिर्वच-
नीय, जो वचन से न कहा जा सके (लहुअ
७) ।

अणमिस वि [अनिमिष] १ विक्रमित, खिला
हुआ (सुर ३, १४३) । २ निमेष-रहित,
पलक-वर्जित (सुपा ३५४) ।

अणय पु [अनय] अनीति, अन्याय (आ २७,
स ५०१) ।

अणयार देखो अणगार (पउम ११, ७) ।

अणरण पु [अनरण्य] साकेतपुर का एक
राजा जो, पीछे से ऋषि हुआ था (पउम १०,
८७) ।

अणरह } वि [अनर्ह] अयोग्य, नालायक,
अणरिह } (कुमा), 'एवि दिज्जंति अणरिहे,
अणरुह' अणरिहते तु इमो होइ' (पचमा) ।

अणरहू स्त्री [दे] नवोढा, दुलहिन (पड्) ।

अणरामय पु [दे] अरति, वेचैनी (दे १,
४५ भवि) ।

अणराय वि [अराजक] राज-शून्य, जिमसे
राजा न हो वह (बृह १) ।

अणराह पु [दे] सिर में पहनी जाती रंग-
विरगी पट्टी (दे १, २४) ।

अणरिक्क वि [दे] अवकाश-रहित, फुरसत-
रहित (दे १, २०) । २ दधि, क्षीर आदि
गोरस भोज्य (निबू १६) ।

अणरिह } वि [अनर्ह] अयोग्य, नालायक
अणरुह } (एणाया १, १) ।

अणल अ [अनलम्] अममर्थ (आचा २,
५, १, ७) ।

अणल पु [अनल] १ अग्नि, आग (कुमा) ।
२ वि अममर्थ । ३ अयोग्य, 'अणलो अपच-
लोत्ति य होति अजोगो व एणट्ठा' (निबू ११) ।

अणव वि [ऋणवत्] १ करजदार । पु.
दिवम का छव्वीसवाँ मुहूर्त (चद) ।

अणवकय वि [अनपकृत] जिसका अपकार
न किया गया हो वह (उव) ।

अणवगल्ल वि [अनवगल्लान] ग्लानि-रहित,
निरोग,

'सट्ठस्म अणवगल्लस्स, निरुक्कट्ठस्स, जतुण
एगे ऊमामनीमामे एम पाणुत्ति बुब्बइ' (ठा २,
४) ।

अणवच्च वि [अनपत्य] मन्तान-रहित, निर्वंश
(सुपा २५६) ।

अणवज्ज न [अनवद्य] १ पाप का अभाव,
कर्म का अभाव (सूत्र १, १, २) । २ वि
निर्दोष, निष्पाप (पड्) ।

अणवज्ज वि [अणवज्ज्य] ऊपर देखो
(विसे) ।

अणवट्ठप्प वि [अनवस्थाप्य] १ जिसको
फिरसे दीक्षा न दी जा सके ऐसा गुरु अपराध
करनेवाला (बृह ४) । २ न गुरु प्रायश्चित्त का
एक भेद (ठा ३, ४) ।

अणवट्ठिय वि [अनवस्थित] १ अव्यवस्थित,
अनियमित (प्रासू १३७, सुर ४, ७६) । २
चंचल, अस्थिर, 'अणवट्ठिय च चित्त' (सुर
१२, १३८) । ३ पल्य-विशेष, नाप-विशेष
(कम्म ४, ७३) ।

अणवण्णिय पु [अणपन्निक, अणपर्णिक]
वानव्यतर देवो की एक जाति (पणह १, ४,
भाग १०, २) ।

अणवत्थ वि [अनवस्थ] अव्यवस्थित, अनि-
यमित अममजस (दे १, १३६) ।

अणवत्था स्त्री [अनवस्था] १ अवस्था का
अभाव (उव) । २ एक तर्क-दोष (विसे) ।
३ अव्यवस्था, 'जणणी जायड जाया, जाया
माया पिया य पुत्तो य । अणवत्था संमारे,
कम्मवमा सव्वजीवाण' (पिवे १०७) ।

अणवदग्ग वि [दे] १ अनन्त, अपरिमित,
निस्सीम (भाग १, १) । २ अविनाशी (सूत्र
२, ५) ।

अणवद् वि [अनवद्य] निष्पाप, निर्दोष, शुद्ध
(प्राकृ २१) ।

अणवन्निय देखो अणवण्णिय (औप) ।

अणवयग्ग देवो अणवदग्ग (सम १२५, पणह
१, ३, प्राप) ।

अणवयमाण वक्क [अनपवदत्] १ अप-
वाद नहीं करता हुआ । २ गत्यवादी (वव
३) ।

अणवरय वि [अनवरत] १ सतत, निरन्तर,
अविच्छिन्न । २ न सदा, हमेशा (गा २८०,
६) ।

अणवराइस (अप) वि [अनन्यादृश] असा-
धारण, अद्वितीय (कुमा) ।

अणवसर वि [अनवसर] आकस्मिक, अचि-
न्तित (प्राप्र) ।

अणवाह वि [अवाध] वाधा-रहित, निर्बाध
(सुपा २६८) ।

अणवेक्खिय वि [अनपेक्षित] उपेक्षित,
जिसकी परवाह न हो ।

अणवेक्खिय वि [अनवेक्षित] १ नहीं
देखा हुआ । २ अविवर्धित, नहीं सोचा हुआ ।
°कारि वि [°कारिन्] साहसिक । °कारिया
स्त्री [°कारिता] साहस कर्म (उप ७६८ टी) ।

अणसण न [अनशन] आहार का त्याग, उप-
वास (सम ११६) ।

अणसिय वि [अनशित] उपोषित, उपवासी
(आवम) ।

अणह वि [अनघ] निर्दोष, पवित्र (औप, गा
२७२, से ६, ३) ।

अणह वि [दे] अक्षत, क्षति-रहित, ब्रण-
शून्य (दे १, १३, सुपा ६, ३३, सण) ।

भवि. हम्महिइ, हणहिइ (हे ४, २४४) ।
वक्क. हणंत (आचा, कुमा) । कवक्क हण्णु,
हणिज्जमाण, हम्मंत, हम्ममाण (सूत्र १,
२, २, ५, आ १४, सुर १, ६६, विपा १,
२—पत्र २४, पि ५४०) । सक्क. हंता,
हंतूण, हंतूणं, हत्तूण, हणिऊण, हणिअ
(आचा, प्रासू १४७, प्राक्क ३४, नाट) ।
हेक्क हत्तु, हणिउं (महा, उप पृ ४८) ।
क. हतव्व (से ३, ३; हे ४, २४४,
आचा) ।

हण सक [श्रु] सुनना । हणइ (हे ४, ५८) ।

हण वि [दे] दूर, अनिकट (दे ८, ५६) ।

हण देखो हणण, 'हणदहणपयणमारण—'
(पउम ८, २३२) ।

हण देखो धण = धन (गा ७१५, ८०१) ।

हणण न [हनन] १ मारण, वध, घात (सुपा
२४५, सण) । २ विनाश (पण्ह २, ५—
पत्र १४८) । ३ वि. वध-कर्ता । स्त्री. णी
(कुप्र २२) ।

हणिअ वि [हत] जिसका वध किया गया हो
वह (आ २७, कुमा, प्रासू १६, पिण) ।

हणिअ देखो हण = हन् ।

हणिअ वि [श्रुत] सुना हुआ (कुमा) ।

हणिद देखो हिणिद (गा ६६३) ।

हणिर वि [हन्तु] वध करनेवाला (सुपा
६०७) ।

हणिहणि } अ [अहन्यहनि] १ प्रतिदिन,
हणिहणि } हमेशा (पण्ह २, ३—पत्र
१२२) । २ सर्वथा, सब तरह से (पण्ह २,
५—पत्र १४८) ।

हणु वि [दे] सावशेष, बाकी बचा हुआ (दे
८, ५६, सण) ।

हणु पुं स्त्री [हनु] चिबुक, होठ के नीचे का
भाग, ठोड़ी, ठोड़ी, दाढ़ी (आचा, पण्ह १,
४—पत्र ७८) । अ, म, मत, यंत पुं
[मत] हनुमान, रामचन्द्रजी का एक
प्रख्यात अनुचर, पवन तथा अञ्जनसुन्दरी
का पुत्र (पउम १, ५६, १७, १२१, ४७,
२६, हे २, १४६, कुमा, प्राप्र; पउम १६,
१५, ५६, २१) । रुह, रुह न [रुह]

नगर-विशेष (पउम १, ६१, १७, ११८) ।
व, वंत देखो म (पउम ४७, २५, ५०,
६, उप पृ ३७६) ।

हणुया स्त्री [हनुका] १ ठोड़ी, ठोड़ी, दाढ़ी
(अनु ५) । २ दंष्ट्र-विशेष दाढ़ा-विशेष
(उवा) ।

हणू स्त्री [हन्तु] देखो हणु (पि ३६८, ३६६) ।

हण्णु देखो हण = हन् ।

हत्त देखो हय = हत (पि १६४, ५६५) ।

हत्तरि देखो सत्तरि (पि २६४) ।

हत्तु वि [हर्तु] हरण-कर्ता (प्राक्क २०) ।

हत्तूण देखो हण = हन् ।

हत्थ वि [दे] १ शीघ्र, जल्दी करनेवाला (दे
८, ५६) । २ क्रिवि जल्दी (ओप) ।

हत्थ पुन [हस्त] १ हाथ, 'अत्थित्तणेण
हत्थं पसारिय जस्स कएहेण' (वज्ज १०६,
आचा, कप्प, कुमा, दं ६) । २ पुं. नक्षत्र-
विशेष (सम १०, १७) । ३ चौबीस अंगुल
का एक परिमाण । ४ हाथी की सूँठ (हे
२, ४५, प्राप्र) । ५ एक जैन मुनि (कप्प) ।
कप्प न [कल्प] नगर-विशेष (णाय १,
१६—पत्र २२६, पिठ ४६१) । कम्म न
[कर्मन्] हस्त क्रिया, दुश्चेष्टा-विशेष (सूत्र
१०, ६, १७, ठा ३, ४—पत्र १६२, सम
३६, कस) । ताड, ताल पुं [ताड]
हाथ से ताडन (राज, कस ४, ३ टि) । पहे-
लिअ स्त्रीन [पहेलिक] संख्या-विशेष,
शेषप्रकम्पित को चौरासी लाख से गुणने पर
जो संख्या लब्ध हो वह (इक) । प्पाहुड न
[प्राभृत] हाथ से दिया हुआ उपहार (दे
८, ७३) । मालय न [मालक] आभरण-
विशेष (ओप) । लहुत्तण न [लघुत्त] १
हस्त-लाघव । २ चोरी (पण्ह १, ३—पत्र
४३) । सीस न [शीर्ष] नगर-विशेष
(णाय १, १६—पत्र २०८) । भरण न
[भरण] हाथ का गहना (मग) । याल
पुं [याल] देखो ताड (कस) । लंघ
पु [लम्ब] हाथ का सहारा, मदद (से
१, १६, सुर ४, ७१, कस) ।

हत्थकर पुं [हस्तकर] वनस्पति-विशेष
(आचा २, १०, २) ।

हत्थदु } पुन [हस्तान्दुक] हाथ बांधने
हत्थदुय } का काठ आदि का बन्धन-विशेष
(पिठ ५७३, विपा १, ६—पत्र ६६) ।

हत्थच्छुहणी स्त्री [दे] नव-वधू, नवोटा (दे
८, ६५) ।

हत्थड (अ) देखो हत्थ (हे ४, ४४५, पि
५२६) ।

हत्थय न [हस्तक] कलाप-समूह (दश-
अगस्त्य० सूत्र ५१ पत्र ८१) ।

हत्थल पु [दे] १ क्रीडा के लिए हाथ में ली
हुई चीज । २ वि. हस्त-लोल, चञ्चल हाथ-
वाला (दे ८, ७३) ।

हत्थल वि [हस्तल] १ खराब हाथवाला ।
२ पुं. चोर, तस्कर (पण्ह १, ३—पत्र
४३) ।

हत्थलिज्ज देखो हत्थिलिज्ज (राज) ।

हत्थल्ल वि [दे] क्रीडा से हाथ में लिया हुआ
(दे ८, ६०) ।

हत्थलिअ वि [दे] हस्तापसारित, हाथ से
हटाया हुआ (दे ८, ६४) ।

हत्थल्ली स्त्री [दे] हस्त वृत्ती, हाथ में स्थित
आसन-विशेष (दे ८, ६१) ।

हत्थार न [दे] सहायता, मदद (दे ८, ६०) ।

हत्थारोह पुं [हस्त्यारोह] हस्तिपक, हाथी
का महावत (विपा १, २—पत्र २३) ।

हत्थावार न [दे] सहायता, मदद (भवि) ।

हत्थाहत्थि स्त्री [हस्ताहस्तिका] हाथोहाथ-
एक हाथ से दूसरे हाथ (गा १७६) ।

हत्थाहत्थि अ. ऊपर देखो (गा २२६, ५८१,
पुष्क ४६३) ।

हत्थि पुं स्त्री [हस्तिन्] १ हाथी (गा १, ६,
कुमा, अभि १८७) । स्त्री. णी (णाय १,
१—पत्र ६३) । २ पु नृप-विशेष (ती १४) ।
आरोह पुं [आरोह] हाथी का महावत
(धमंवि १६) । कण्ण, कन्न पु [कर्ण]
२ एक अन्तर्द्वीप । २ वि. उसका निवासी
मनुष्य (इक ठा ४, २—पत्र २२६) ।
कप्प न [कल्प] देखो हत्थ-कप्प
(राज) । गुल्लगुल्लिय न [गुल्लगुल्लयित]
हाथी का शब्द-विशेष (राय) । नागपुर न
[नागपुर] नगर-विशेष, हस्तिनापुर (उप
६४८ टी, सण) । तावस पुं [तापस]

हीर देखो हर = हर (हि १, ५१, कुमा, पङ्.) ।
हीर पुं [हीर] १ विषम भग, अममान छेद
(परण १—पत्र ३७) । २ बागेक कुत्सित
तृण, फन्द आदि मे होती वारिक रेखा (जाव
३, ४, जो १२) । ३ पुन. हीरा, मणि-
विशेष (स २०२, मिरि १८६; कप्पू) ।
४ ऋ-विशेष (पिग) । ५ दाढा का अग्र
भाग (से ४, १४) ।

हीर पुन [दे] १ सूई की तरह तीक्ष्ण मुंह
वाला काष्ठ आदि पदार्थ (दे ८, ७०, कस) ।
२ भस्म (दे ८, ७०) । ३ प्रान्त, अन्त भाग
(गउड) ।

हीरत देखो हर = ह ।

हीरणा ली [दे] लाज, शरम (दे ८, ६७,
पङ्.) ।

हीरमाण देखो हर = ह ।

हील सक [हेलय्] १ अवज्ञा करना,
तिरस्कार करना । २ निन्दा करना । ३
कदर्यन करना, पीडना । हीलइ (उव, सुख
२, १६), हीलति (दस ६, १, २, प्राप्
२६) । वक्र. हीलन (सट्टि ८६) । कवक.
हीलिज्जत, हीलिज्जमाण (उप पृ १३३,
णाय १, ८—पत्र १४४, प्राप् १६५) ।
क. हीलणिज्ज (णाय १, ३), हीलियन्व
(पणह २, १—पत्र १००, २, ५—पत्र
१५०) ।

हीलण लीन [हेलन] १ अवज्ञा, तिरस्कार ।
२ निन्दा (मुपा १०५) । ली. °णं (पणह २,
१—पत्र १००, श्रौप, उव, दम ६, १, ७,
सट्टि १००) ।

हीला ली [हेला] ऊपर देखो (उव, उप पृ
२१६, उप १४२ टी) ।

हीलअ वि [हीलित] १ निन्दित । २
अपमानित, तिरस्कृत (सुख २, १७, श्रौप
५२६, कस, दम ६, १, ३) । ३ पीडित,
मदर्यित (आचा २, १६, ३) ।

हीसमाण न [दे हेपित] हेपारव, अश्व—
घोड़े का शब्द (दे ८, ६८, हे ४, २५८) ।

हीही (शी) अ. विद्रूपक का हर्ष-सूचक
हीहीभो १ मव्यय (हे ४, २८५, कुमा, प्राक्
६७, मोह ४१) ।

हु अ [खल्ल] इन अर्थों का द्योतक अव्यय—
१ निश्चय (हे २, १६८, से १, १५, कुमा,
प्राक् ७८, प्राप् ५४) । २ ऊह, वितर्क
(हे २, १६८, कुमा, प्राक् ७८) । ३ सशय,
सदेह (हे २, १६८, कुमा) । ४ मंभात्रा
(हे २, १६८, कुमा, प्राक् ७८) । ५ विस्मय,
आश्चर्य (हे २, १६८, कुमा) । ६ किन्तु,
परन्तु (प्राप् १०१) । ७ अपि, भी, 'हु
अविमद्वयमि व त्ति' (धर्मस १४० टी) ।
८ वाक्य की शोभा (पचा ७, ३५) । ९
पादपूर्ति, पाद-पूरण (पचम ८, १४६,
कुमा) ।

हु } देखो हव = भू । हुअइ, हुएइ, हुति,
हुअ } हुडरे, हुअइरे, हुज्ज, हुएज, हुएइरे,
हुएज्जइरे (पि ४७६, हे ४, ६१, पि ४५८,
४६६) । भवि. हुक्कामि, होक्कामि, हुक्क
(उत्त २, १२, मुख २, १२) । वक्र. हुत
(हे ४, ६१, स ३४) ।

हुअ देखो हुण—हु । हुअइ (प्राक् ६६) ।
वक्र. हुअत (पात्वा १५७) ।

हुअ वि [हुत] १ होमा हुआ हवन किया
हुमा (मुपा २६३, स ५५, प्राक् ६६) । २
न होम, हवन (सूअ १, ७, १२, प्राक्
६६) । °वह पुं [°वह] अग्नि, आग (गा
२११, पाप्र, णाय १, १—पत्र ६३,
गउड) । °स पु [°स] अग्नि (गउड,
अज्म १५०, भवि. हि १३) । °सन पु
[°शान] वही अर्थ (भग. से ५, ५७, पाप्र) ।

हुअ देखो हूअ—भूत (प्राप्र, कुमा, भवि,
सण) ।

हुअग देखो भुअंग, चन्दनलट्टिव्व हुआगूमिआ
कि णु हूमसि' (गा ६२६) ।

हुअग देखो भुअग (गा ८०६, पि १८८) ।

हु अ [हुम्] इन अर्थों का सूचक अव्यय—
१ दान । २ पृच्छा, प्रश्न (हे २, १६७,
प्राप्र, कुमा) । ३ निवारण (हे २, १६७,
कुमा) । ४ निवारण (प्राप्र, रंभा) । ५
स्वीकार (आ १२, कुप्र ३४५) । ६ हुकार,
'हु' शब्द, 'हुं करति पुअग्व' (मुपा ४६२) ।
७ अनादर (मिरि १५३) ।

हुंकय पुं [दे] अजलि, प्रणाम (दे ८, ७१) ।

हुकार पुं [हुकार] १ अनुमति-प्रकाशक शब्द,
हाँ (विसे ५६५, से १० २४ गा ३५६,
आत्मानु ६) । २ हु' आवाज, 'हु' ऐसा
शब्द (हे ४, ४२२, कप्पू, मुर १, २४६) ।
हुकारिय न [हुकारित] 'हु' ऐसी की
हुई आवाज (न ३७७) ।

हुकरव पुं [दे] अजलि, प्रणाम (दे ८, ७१) ।
हुड न [हुण्ड] १ शरीर की आकृति-विशेष,
शरीर का देहव अवयव (ठा ६—पत्र ३५७,
सम ४८, १४६) । २ कर्म-विशेष जिसके
उदय से शरीर का अवयव असंपूर्ण देहव—
प्रमाण शून्य अव्यवस्थित हो वह कर्म (कम्म
१, ४०) । ३ वि. देहव अंगवाला (विपा
१ १—पत्र ५) । °वसपिणी ली
[°वसपिणी] वर्तमानहीन समय (विचार
५०३) ।

हुडी ली [दे] घटा (पाप्र) ।

हुवउड पुं [दे] वानप्रस्थ ऽभस की एक
जाति (श्रौप, भग ११, ६—पत्र ५१५,
५१६) ।

हुहय अक [हुंहुं + कृ] 'हु' 'हु' आवाज
करना । वक्र. हुहयत (वेइय ४६०) ।

°हुञ्ज देखो पहुञ्ज = प्र + भू ।

हुट्ट देखो होट्ट (आचा, पि ८४, ३३८) ।

हुड पु [दे] १ मेघ, मेढा (दे ८, ७०) । २
खान, कुत्ता (मृच्छ २५३) ।

हुडअ पु [दे] प्रवाह (दे ८, ७०) ।

हुडुक पुं ली [दे. हुडुक] वाद्य-विशेष (श्रौप,
कप्पू, सण, विक्र ८७) । ली. °का (राय,
मुपा ५०, १७५, २४२) ।

हुडम पु [दे] पताका, ध्वजा (दे ८, ७०,
पाप्र) ।

हुडु पुं ली [दे] होड, बाजी, पण, शनं, दांव ।
ली. °हुा (दे ८, ७०, मुपा २७६, पव
३८), 'हुडाहुट्ट मुयतेहि' (सम्मत्त १४३) ।
देखो होडु ।

हुण सक [हु] होम करना । हुणइ (हे ४,
२४१, भग ११, ६—पत्र ५१६, कुमा) ।
कर्म. हुणइ, हुण्णज्जइ, हुण्णज्ज (हे ४,
२४२, कुमा) । दसक हुणिज्जमाण (मुपा
६७) । सक. हुणिऊण हुणेऊण, हुणिजा
(पङ्. भग ११, ६—पत्र ५१६) ।

बौद्ध साधु विशेष, हाथी को मारकर उसके मांस से जीवन-निर्वाह करने के सिद्धान्तवाला सन्यासी (श्रौप, सूत्रनि १६०)। °नायपुर देखो °नागपुर (भवि)। °पाल पु [°पाल] भगवान् महावीर के समय का पावापुरी का एक राजा (कप्प)। °पिप्पली, स्त्री [°पिप्पली] वनस्पति-विशेष (उत्त ३४, ११)। °मुह पुं [°मुख] १ एक अन्तर्द्वीप। २ वि. उसका निवासो मनुष्य (ठा ४, २—पत्र २२६, इक)। °रयण न [°रत्न] उत्तम हाथी (श्रौप)। °राय पुं [°राज] उत्तम हाथी (सुपा ४२६)। °वाउय पु [°व्यापृत] महावत (श्रौप)। °वाल देखो °पाल (कप्प)। °विजय न [°विजय] वैताव्य की उत्तर श्रेणि का एक विद्याधर-नगर (इक)। °सीस न [°शीर्ष] एक नगर, जो राजा दमदन्त की राजधानी थी (उप ६४८ टी)। °मुडिया देखो °मोंडिगा (राज)। °सोंड पु [°जौण्ड] श्रोत्रिय जन्तु-विशेष (पण १—पत्र ४४)। °सोंडिगा स्त्री [°शुण्डिका] आसन-विशेष (ठा ५, १ टी—पत्र २६६)। हत्थिअचक्खु न [दे] वक्र अवलोकन (दे ८, ६४)।

हत्थिअच्चग वि [हस्तीय, हस्त्य] हाथ का, हाथ-संबन्धी (पिड ४२४)।

हत्थिणउर न [हस्तिनापुर] नगर-विशेष हत्थिणपुर (ठा १०—पत्र ४७७, सुर हत्थिणाउर १०, १५५, महा, गउड, सुर हत्थिणापुर १, ६४, नाट—शकु ७४, अत्त)।

हत्थिणी देखो हत्थि।

हत्थिमल्ल पु [दे] इन्द्र-हस्ती, ऐरावण हाथी (दे ८, ६३)।

हत्थियार न [दे] १ हथियार, शस्त्र (धर्मसं १०२२, ११०४, भवि)। २ घुड़, लड़ाई, 'ता उट्ठेहि सपय करेहि हत्थियार ति', 'देव, बोद्धसं देवेण सह हत्थियारकरणं' (स ६३७, ३८)।

हत्थियाट्ठ न [हस्तितीय] एक जैन-मुनि-पुत्र (कप्प)।

हत्थिवय पु [दे] ग्रह-भेद (दे ८, ६३)।

हत्थिहरिह पु [दे] वेप (दे ८, ६४)।

हत्थुत्तरा स्त्री [हस्तोत्तरा] उत्तराफाल्गुनी नक्षत्र (कप्प)।

हत्थुल्ल देखो हत्थ (हे २, १६४, पड्)।

हत्थोडी स्त्री [दे] १ हस्ताभरण, हाथ का आभूषण। २ हस्त-प्राभृत, हाथ से दिया जाता उपहार (दे ८, ७३)।

हत्थलेव पुं [दे] हस्त-ग्रहण, पाणि-ग्रहण (सिरि १५८)।

हद् देखो ह्य = हत (प्राप्र, प्राकृ १२)।

हद् पुं [दे] बालक का मल-मूत्रादि (पिड हद् ४७१)।

हद्दय पुं [दे] हास, विकास (दे ८, ६२)।

हद्धि } अ [हा विकृ] १ खेद। २ अनुताप हद्धी } (प्राकृ ७६, पड्, स्वप्न ६१, नाट—शकु ६६, हे २, १६२)।

हमार (अप) वि [अस्मदीय] हमारा, हमसे संबन्ध रखनेवाला (पिग)।

हमिर देखो भमिर (पि १८८)।

हम्म सक [हन्] वध करना। हम्मइ (हे ४, २४४, कुमा, संक्षि ३४, प्राकृ ६८)।

हम्म सक [हम्म] जाना। हम्मइ (हे ४, १६२)।

हम्म न [हर्म्य] क्रीडा-गृह (से ६, ४३)।

हम्म° देखो हण = हन्।

हम्मर देखो हमार (पिग)।

हम्मिअ वि [हम्मिअ] गत, गया हुआ (स ७४३)।

हम्मिअ न [दे. हर्म्य] गृह, प्रासाद, महल (दे ८, ६२, पाप्र, सुर ६, १५०, आचा २, २, १, १०)।

हम्मीर पुं [हम्मीर] विक्रम की तेरहवीं शताब्दी का एक मुसलमान राजा (ती ५, हम्मीर २७, पिग)।

ह्य वि [ह्य] जो मारा गया हो वह (श्रौप, से २, १५, महा)। °नाफोड पु [°मत्कोट] एक विद्याधर-नरेश (पउम १०, २०)। °स वि [°श] निराश (पउम ६१, ७४, गा २८१, हे १, २०६, २, १६५, उव)।

ह्य पुं [ह्य] अश्व, घोड़ा (श्रौप, से २, ११; कुमा)। °कठ पु [°कण्ठ] रत्न-विशेष, अश्व के कंठ जितना बड़ा रत्न (राय ६७)। °कण्ण, °कण पुं [°कर्ण] १ एक अन्तर्द्वीप।

२ वि. उसका निवासो मनुष्य (इक, ठा ४, २—पत्र २२६)। ३ एक अनायं देश (पव २७४)। °मुह पुं [°मुख] १ एक अन्तर्द्वीप (इक)। २ एक अनायं देश (पव २७४)।

ह्य देखो हिअ = हत (महा, भवि, राय ४४)।

ह्य देखो हर = ब्रह्म। °पोंडरीय पुं [°पुण्डरीक] पक्षि-विशेष (पणह १, १—पत्र ८)।

°ह्य देखो भय (गा ३८०)।

ह्यमार पुं [दे. हतमार] कणेर का गाछ (पाप्र)।

हर सक [हृ] १ हरण करना, छीनना। २ प्रमत्त करना, छुड़ा करना। हरइ (हे ४, २३४, उव, महा)। कर्म, हरिजइ, हीरइ, हरीमइ, हीरिजइ (हे ४, २५०, घात्वा १५७)। वक्र. हरंत (पि ३६७)। कवक. हीरंत, हीरमाण (गा १०५, सुर १२, १११, सुपा ६३५)। संक्र. हरिऊग (महा)। हेक हरिउ (महा)। क. हिज्ज, हेज्ज (पिड ४४६, ४५३)।

हर सक [ग्रह्] ग्रहण करना, लेना। हरइ (हे ४, २०६)।

हर सक [हृद्] आवाज करना। °हरइ (से ५, ७१)।

हर पुं [हर] १ महादेव, शंकर (सुपा ३६३, कुमा, पड्, हे १, ५१, गा ६८७, ७६४)। २ छन्द-विशेष (पिग)। °मेहल न [°मेखल] कला-विशेष (सिरि ५६)। °वल्लहा स्त्री [°वल्लभा] गौरी, पार्वती (सुपा ५९७)।

हर पुं [हृद्] ब्रह्म, बड़ा जलाशय (से ६, ६५)।

हर देखो घर = गृह, 'ता वच्च पहिय मा मग वासय एत्थ मज्झ हरे' (वज्जा १००, कुमा, सुपा ३६३, हे २, १४४)।

°हर देखो धर = धृ। कृ °हरेअव्व (से ६, ३)।

°हर देखो भर = भर (पउम १००, ५४, सुपा ४३२)।

°हर वि [°हर] हरण-कर्ता (सण)।

°हर वि [°धर] धारण करनेवाला (गा ३१५, ३६५)।

हुणण न [हवन] होम (सुपा ६३) ।
हुणिअ देखो हुअ = हुत (सुपा २१७, मोह १०७) ।
हुत्त वि [दे] अभिमुख, समुख (दे ८, ७०, हे २, १५८, गउड, भवि) ।
हुत्त देखो हूअ = हुत (हे २, ६६) ।
हुत्त देखो हूअ = भूत (गा २४५, ८६६) ।
हुमआ देखो भुमआ (गा ५०५, पि १८८) ।
हुर देखो फुर = स्फुर । वक्र 'कतीए हुरतीए' आदि (कुप्र ४२०) ।
हुरड पु खी [दे] घृण आदि से कुछ कुछ पकाया हुआ चना आदि धान्य, होला—होरहा (सुपा ३८६, ४७३) ।
हुरथा अ [दे] बाहर (आचा १, ८, २, १, ३, २, १, ३, २, कस) ।
हुरुडी खी [दे] विपादिका, रोग विशेष (दे ८, ७१) ।
हुल सक [क्षिप्] फेंकना । हुलइ (हे ४, १४३, पड) ।
हुल सक [सृज्] मार्जन-करना, साफ करना । हुलइ (हे ४, १०५, पड) ।
हुलण वि [मार्जन] सफा करनेवाला (कुमा ६, ६८) ।
हुलण न [क्षेपण] फेंकना (कुमा) ।
हुलिअ वि [दे] १ शीघ्र, वेग-युक्त, 'मइ पवणहुलिए' (दे ८, ५६) । २ न. शीघ्र, जल्दी, तुरत (पएह १, १—पत्र १४, स ३५०, उप ७२८ टी) ।
हुलुभुलि खी [दे] कपट, धम्म (नाट—मुच्छ २८२) ।
हुलुव्वी खी [दे] प्रसव-परा, निकट-भविष्य में प्रसव करनेवाली खी (दे ८, ७१) ।
हुल्ल देखो फुल = फुल्ल (भवि) ।
हुव देखो हुण = हु । हुवइ (प्राक ६६) ।
हुव देखो हव = भू । हुवति (हे ४, ६०, प्राप्र) । भूका, हुवीअ (कुमा ५, ८८) । भवि. हुविस्सति (पि ५२१) । वक्र. हुवंत, हुवमाण, हुवेमाण (पड) । संक्र. हुविअ (नाट—चैत ५७) ।
हुव (अप) देखो हूअ = भूत (भवि) ।
हुव (अप) देखो हुअ = हुत (भवि) ।
हुव्व देखो हुण = हु ।

हुव्वत देखो धुव्वत = धुव = धाव (से ६, ३४) ।
हुस्स देखो हरस = हस्व (आचा, श्रीप, सम्मत १६०) ।
हुहुअ पुंन [हुहुक] देखो हूहूअ (अणु ६६; १७६) ।
हुहुअंग पुंन [हुहुकाङ्ग] देखो हूहूअंग (अणु ६६, १७६) ।
हुहुरु अ [हुहुरु] अनुकरण-शब्द-विशेष, 'हुहुरु' ऐसा शब्द (हे ४, ४२३; कुमा) ।
हूअ देखो भूअ = भूत (हे ४, ६४, कुमा; आ १४, १६, महा, सार्ध १०५) ।
हूअ वि [हूत] आहूत, आकारित (हे २, ६६) ।
हूअ देखो हुअ = हुत, 'मन्ने पंचसरो पुरा भगवया ईसेए हूओ सयं. कोहवेए सप्रासुगोवि सघणुहडोवि णित्तानले' (रभा २५) ।
हूण पु [हूण] १ एक अनार्य देश । २ वि. उसका निवासी मनुष्य (पएह १, १—पत्र १४, कुमा) ।
हूण देखो हीण = हीन (हे १, १०३, पड) ।
हूम पु [दे] लोहार (दे ८, ७१) ।
हूसण देखो भूसण (गा ६५५, पि १८८) ।
हूह पुं [हूह] गन्धवं देवों की जाति (धर्मवि ४८, सुपा ५६) ।
हूहूअ पुन [हूहूक] संख्या-विशेष, 'हूहूअंग' को चौरासी लाख से गुनने पर जो संख्या लव्व हो वह (ठा २, ४—पत्र ८६, अणु २४७) ।
हूहूअंग पुंन [हूहूकाङ्ग] संख्या-विशेष, 'अवव' को चौरासी लाख से गुनने पर जो संख्या लव्व हो वह (ठा २, ४—पत्र ८६, अणु २४७) ।
हे अ [हे] इन अर्थों का सूचक अव्यय—१ संवोधन । २ आह्वान । ३ असूया, ईर्ष्या (हे २, २१७ टि, पि ७१, ४०३, भवि) ।
हेअ देखो हा = हा ।
हेअ देखो भेअ = भेद (गा ८२७) ।
हेअंगवीण न [हैयङ्गवीन] १ नवनीत, मखन । २ ताजा घी (नाट—साहित्य २३६) ।
हेआल पु [दे] हस्त-विशेष से निपेच, सॉप

के फण की तरह किए हुए हाथ से निवारण (दे ८, ७२) ।
हेउ पुं [हेतु] १ कारण, निमित्त, 'हेऊइ' (राय २६, उवा; पएह २, २—पत्र ११४, कप; गउड, जी ५१, महा, पि ३५८) । २ अनुमान-वाक्य, पंचावयव वाक्य (उत्त ६, ८; सुख ६, ८) । ३ अनुमान का साधन (धर्मसं ५७, ठा ४, ४ टी—पत्र २८३) । ४ प्रमाण (अणु) ।
'वाय पुं [वाद] १ वारहवाँ जैन ग्रंथ-ग्रन्थ दृष्टिवाद (ठा १०—पत्र ४६१) । २ तर्कवाद, युक्तिवाद (सम्म १४०, १४२) ।
हेउअ वि [हेतुक] १ हेतुवाद को माननेवाला, तर्कवादी, 'जो हेउवायपक्खम्मिहेउओ आगमे य आगमिओ' (सम्म १४२, उवर १५१) । २ हेतु का, हेतु से संबन्ध रखनेवाला । खी. 'उई' (विसे ५२२) ।
हेअ } देखो हा = हा ।
हेआण }
हेज देखो हर = ह ।
हेट्ट खी [अधस्] नीचे, गुजराती में 'हेठ', 'नगोहेट्टम्मि' (सुर १, २०५, पि १०७, हे २, १४१, कुमा, गउड), 'हेट्टओ' (महा) ।
खी 'ट्टा' (श्रीप, महा, पि १०७, ११४) ।
'मुह वि [मुख] अवाङ्मुख; जिसने मुँह नीचा किया हो वह (विपा १, ६—पत्र ६८, दे १, ६३, भवि) । 'वणि वि [अवनी] महाराष्ट्र देश का निवासी, मरहट्टा—मरहटा (पिड ६१६) ।
हेट्टिम } वि [अधस्तन] नीचे का (सम हेट्टिम } १६, ४१, भग, हे २, १६३, सम ८७, पड, श्रीप) ।
हेटा खी [दे] १ घटा, समूह (सुपा ३८६, ५३०) । २ घटूत आदि खेलने का स्थान, अखाड़ा (धम्म १२ टी) ।
हेडिस } (अशो) देखो एरिस (पि १२१) ।
हेडिस }
हेपिअ वि [दे] उन्नत, ऊँचा (पड) ।
हेम न [हेम] १ सुवर्ण, सोना (पाप्र, जं ४, श्रीप, ससि १७) । २ घटूरा । ३ मासे का परिमाण । ४ पुं काला घोड़ा । ५ वि. पडित (संक्षि ७) । ६ पुं. एक विद्यापरा राजा (परम १०, २१) । 'चद पुं [चन्द्र] १-२ विक्रम की बारहवीं शताब्दी के दो

हरअई } श्री [हरीतकी] १ हरें का गाछ ।
हरडई } २ फल-विशेष, हरें (पड, हे १,
६६, कुमा) ।

हरण न [हरण] १ छीनना (सुपा १८, ४३६;
कुमा) । २ वि छीननेवाला (कुप्र ११४,
धर्मवि ३) ।

हरण न [ग्रहण] स्वीकार (कुमा) ।

हरण न [स्मरण] स्मृति, याद,

‘अलिअकुविअपि कम्ममनुअव

म जेसु मुहअ अणुणेतो ।

ताण दिअहाण हरणे रुआमि,

ए उणो अहं कुविआ’

(गा ६४१) ।

हरण देखो भरण (गा ५२७ अ) ।

हरतणु पु [हरतनु] खेत में बोये हुए गेहूँ,
जौ आदि के वाली पर होता जल-विन्दु
(कप्प, चेइय ३७३, जी ५) ।

हरद देखो हरय (भग) ।

हरपच्छुअ वि [दे] १ स्मृत, याद किया
हुआ । २ नाम के उद्देश से दिया हुआ (दे
८, ७४) ।

हरय पु [हृद] बड़ा जलाशय, द्रव (आचा,
भग, पणह २, ५—पत्र १४६, उत्त १२,
४५, ४६, हे २, १२०) ।

हरहरा श्री [दे] युक्त प्रसंग, योग्य अवसर,
उचित प्रस्ताव,

निदूमग च गामं महिला-

धूम च सुएणय दट्ठु ।

नीय च काया शीलिति

जाया निक्खस्स हरहरा’

(विसे २०६४) ।

हरहराइय न [हरहरायित] ‘हर हर’ आवाज
(पणह १, ३—पत्र ४५) ।

हराविअ वि [हारित] हराया हुआ, जिमका
परामव किया गया हो वह (हे ४, ४०६) ।

हरि पुं [दे हरि] शुक, तोता (दे ८, ५६) ।

हरि पु [हरि] १ विद्युत्कुमार-देवो की दक्षिण
दिशा का इन्द्र (ठा २, ३—पत्र ८४) । २
एक महाग्रह (ठा २, ३—पत्र ७८) । ३
इन्द्र, देव-राज (कुमा, कुप्र २३, सम्मत

२२६; श्रु ८६) । विष्णु, श्रीकृष्ण (गा
४०६, ४११, सुपा १४३) । ५ रामचन्द्र
(से ६, ३१) । ६ सिंह, मृगेन्द्र (से ६, ३१,
कुमा, कुप्र ३४६) । ७ वानर, वन्दर (मे ४,
२५, ६, २२, धर्मवि ५१, सम्मत २२२) ।
८ अश्व, घोड़ा (उप १०३१ टी, ती ८, कुप्र
२३, सुख ४, ६) । ९ भारत के साथ जैन
दीक्षा लेनेवाला एक राजा (पउम ८५, ४) ।
१० ज्योतिषशास्त्र-प्रसिद्ध एक योग, ‘गुह्यरि-
विट्ठे गडविइवाए’ (सवीध ५४) । ११
छन्द का एक भेद (पिंग) । १२ सर्प साँप ।
१३ भेक, मण्डक । १४ चन्द्र । १५ सूर्य ।
१६ वायु, पवन । १७ यम, जमराज । १८
हर, महादेव । १९ ब्रह्मा । २० किरण ।
२१ वर्ष-विशेष । २२ मयूर, मोर । २३
कोकिल, कोयल । २४ भटुहार नामक एक
विद्वान् । २५ पीला रंग । २६ पिंगल वर्ण ।
२७ हरा रंग । २८ वि. पीत वर्णवाला ।
२९ पिंगल वर्णवाला (हे ३, ३८) । ३०
हरा वर्णवाला, ‘हरिमणिसरिच्छणिअरुइ’
(अच्छु ३२) । ३१ पुंन. महाहिमवत पर्वत
का एक शिखर (ठा ८—पत्र ४३६) । ३२
विद्युत्प्रभ पर्वत का एक शिखर (ठा ६, इक) ।
३३ निषध पर्वत का एक शिखर (ठा ६—
पत्र ४५४, इक) । ३४ हरिवर्ष-क्षेत्र का
मनुष्य-विशेष (कप्प) । ३५ अंद पु [अन्द्र]
स्वनाम प्रसिद्ध एक राजा (हे २, ८७, पड,
गडड, कुमा) । ३६ अदण न [चन्दन] १
चन्दन की एक जाति (से ७, ३७, गडड,
सुर १६, १४) । २ पुं. एक तरह का कल्प-
वृक्ष (सुपा ८७, गडड) । देखो चंदण ।
३ अण्ण देखो अद (सलि १७) । ४ आल
पुंन [ताल] १ पीत वर्णवाली उपधातु-
विशेष, हरताल (गाया १, १—पत्र २४,
जी ३, पव १५५, कुमा, उत्त ३४, ८, ३६,
७५) । २ पुं. पक्षि-विशेष (हे २, १२१) ।
देखो ताल । ५ एस पुं [केश] १ चडाल
(श्रोध ७६६, सुख ६, १, महा) । २ एक
चण्डाल मुनि (उत्त १२) । ३ एसवल पुं
[केशवल] चण्डालकुलोत्पन्न एक मुनि
(उप, उत्त १२, १) । ४ एमिज्ज वि
[केशीय] १ चण्डाल-सन्तवी । २ हरि-

केशवल नामक मुनि का (उत्त १२) । ५ कंखि
न [काङ्खिअन्] नगर-विशेष (ती २७) ।
६ कन पु [कान्त] विद्युत्कुमार देवो की
दक्षिण दिशा का इन्द्र (इक) । ७ कनपत्राय,
‘कतपत्राय पु’ [कान्नाप्रपात] एक द्रव
(ठा २, ३—पत्र ७२, टी—पत्र ७५) ।
८ कना श्री [कान्ता] १ एक महा-नदी (ठा
२, ३—पत्र ७२, सम २७, इक) । २
महाहिमवान् पर्वत का एक शिखर (इक, ठा
८—पत्र ४३६) । ३ केलि पुं [केलि]
भारतीय देश विशेष (कप्प) । ४ कंसवल देखो
एसवल (कुलक ३१) । ५ केंसि पुं
[केशिन्] एक जैन मुनि (श्रु १४०) ।
६ गीअ न [गीत] छन्द का एक भेद (पिंग) ।
७ गीव पु [ग्रीव] राक्षस-वंश का एक
राजा (पउम ५, २६०) । ८ चंद पु [चन्द्र]
१ विद्याधर-वंश का एक राजा (पउम ५,
४४) । २ एक विद्याधर-कुमार (महा) ।
९ चंदण पु [चन्दन] १ एक अन्तर्हृद् जैन
मुनि (अंत १८) । २ देखो अंदण (प्रासू
१४५, स ३४६) । ३ णयर न [नगर]
चैताव्य की दक्षिण श्रेणि में स्थित एक
विद्याधर-नगर (इक) । ४ ताल पु [ताल]
द्वीप-विशेष (इक) । देखो आल । ५ दास
पुं [दास] एक वणिक का नाम (पउम ५,
८३) । ६ धणु न [धनुप्] इन्द्र-धनुष
(उप ५६७ टी) । ७ पुरी श्री [पुरी] इन्द्र-
पुरी, अमरावती, स्वर्ग (सुपा ६३५) । ८ भट्ट
पुं [भट्ट] एक सुविख्यात जैन आचार्य तथा
ग्रन्थकार (चेइय ३४, उप १०३६, सुपा १) ।
९ भय पुं [मन्थ] धान्य-विशेष, काला चना
(था १८, पव १५६, सवीध ४३) । १० मेला
श्री [मेला] वृक्ष-विशेष (श्रीव) । ११ वइ पुं
[पति] वानर-पति, सुग्रीव (से १, १६) ।
१२ वस पु [वंश] एक सुप्रसिद्ध क्षत्रिय-कुल
(कप्प, पउम ५, २) । १३ वस्स, वास पुं
[वर्ष] १ क्षेत्र-विशेष (अणु १६१, ठा २,
३—पत्र ६७, सम १२, पउम १०२, १०६,
इक) । २ पुंन. महाहिमवान् पर्वत का एक
शिखर (ठा ८—पत्र ४३६) । ३ निषध पर्वत
का एक शिखर (ठा ६—पत्र ४५४, इक) ।
४ वाहण पुं [वाहन] १ मयूरा का एक

सुप्रसिद्ध जैन आचार्य तथा ग्रन्थकार (दे ८, ७७, सुपा ६५८) । ३ विक्रम की पनरहवीं शताब्दी का एक जैन मुनि (सिरि १३४१) ।
 °जाल न [°जाल] सुवर्ण की माला (श्रौप) ।
 °तिलय पुं [°तिलन] विक्रम की चौदहवीं शताब्दी का एक जैन आचार्य (मिरि १३४०) ।
 °पुर न [°पुर] एक विद्याघर-नगर (इक) ।
 °मय वि [°मय] सोने का बना हुआ (सुपा ८८) । °महिहर पु [°महिधर] मेरु पर्वत (गड्ड) । °मालिग श्री [°मालिनी] एक विष्णुमारी देवी (इक) । °व पु [°वन] फाल्गुन मास (सुज १० १६) । °विमल पु [°विमल] एक जैन आचार्य (कुम्मा ३५) । °भ पु [°भ] चौथी नरक-पृथिवी का एक नरक-स्थान (निर १, १) ।

हेमत पुं [हेमन्त] १ ऋतु-विशेष, मगसिर या अग्रहन तथा पौष या पूष महिना (पात्र, आचा, कप्प, कुमा) । २ शीतकाल (दम ३, १२) ।

हेमत वि [हेमन्त] हेमत ऋतु में उत्पन्न (सुज १२—पत्र २१६) ।

हेमन्ति वि [हेमन्तिक] ऊपर देखो (कप्प, श्रौप, गा ६६, राय ३८) ।

हेमग वि [हेमक] हिम का, हिम-संवन्धी (ठा ४, ४—पत्र २८७) ।

हेमवड् पुन [हेमवत] १ वर्ष विशेष, क्षेत्र-हेमवय विशेष (इक, सम १२, ज ४—पत्र २६६, ३००, ठा २, ३ टी—पत्र ६७, पडम १०२, १०६) । २ हिमवत पर्वत का एक शिखर । ३ कूट-विशेष (इक) । ४ वि. हिमवत पर्वत का (राय ७४, श्रौप) । ५ पु हेमवत क्षेत्र का अधिष्ठाता देव (ज ४—पत्र ३००) ।

हेम्म देखो हेम (संखि १७) ।

हेर सक [३] १ देखना, निरीक्षण करना । २ खोजना, श्रवण करना । वक्र, हेरत (पिग) । सक हेरज्ज (धर्मवि ५४) ।

हेरं व पु [५] १ महिष, भैंसा । २ डिण्डिम, वाद्य-विशेष (दे ८, ७६) ।

हेरणवय पुं [हेरणवन] १ वर्ष-विशेष, एक युगलिवक्षेत्र (इक पडम १०२, १०६) । २ रुक्मि पर्वत का एक शिखर । ३ शिखरी पर्वत का एक शिखर (इक २१८) ।

हेरणिअ पु [हेरणिक] सुवर्णकार (उप पृ २१०) ।

हेरन्नवय देखो हेरणवय (ठा २, ३—पत्र ६७, ७६) ।

हेरिअ पु [हेरिक] गुप्त चर, जासूस (सुपा ४६६ ५८६) ।

हेरिअ पु [दे हेरम्भ] त्रिनायक, गणेश (दे ८, ७२, पड्ड) ।

हेरुयाल सक [दे] क्रुद्ध करना, गुस्सा उपजाना । हेरुयालंति (गाया १, ८—पत्र १४४) ।

हेला श्री [हेला] १ श्री की शृङ्गार-संवन्धी चैतन्य-विशेष (पात्र) । २ अनादर (पात्र, से १, ५५) । ३ अनायास, अल्प प्रयास, सहलाई, मरलता (मे १, ५५, कप्पू, प्रवि ११, पि ३७५) ।

हेला श्री [दे हेला] वेग, शीघ्रता (दे ८, ७१, कप्पू, प्रवि ११, पि ३७५) ।

हेलिय पु [हेलिक] एक तरह की मछली (जीव १ टी—पत्र ३६) ।

हेलुअ न [दे] क्षुत्, छोक (दे ८, ७२) ।

हेलुका श्री [दे] हिका, हिचकी (दे ८, ७२) ।

हेल्लि (अप) अ [हले] सखी का आमन्त्रण, हे सखि (हे ४, ४२२, ३७६, पि १०७) ।

हेव (अशो) देखो हेव (पि ३३६) ।

हेवाग पुं [हेवाक] स्वभाव, आवत (राज) ।

हेसमण वि [दे] उन्नत, ऊँचा (पड्ड) ।

हेसा श्री [हेपा] अश्व-शब्द (सुपा २८८, आ २७) ।

हेसिअ न [हेपिन] ऊपर देखो (दे ८, ६८, पडम ५४, ३०, श्रौप, महा, भवि) ।

हेसिअ न [दे हेषित] रसित, चीत्कार (पड्ड) ।

हेहभूअ वि [दे] गुण-दोष के ज्ञान से रहित और निदम्भ, अज्ञ किन्तु निखालस (वव १) ।

हेहय पु [हेहय] १ एक राजा (राज) । २ °डिअ पु [°डिअ] एक विद्याघर राजा (पडम १०, २०) ।

हो देखो हव = भू । होइ, होअइ, होअए, होएइ, होति, होरे, होअरे (हे ४, ६०, पड्ड, कप्प, उव, महा, पि ४५८, ४७६) । होज, होजा, होएज, होएजा, होउ (हे ३,

१५६, १७७, भग, प्राप्र, पि ४६६) । भूका, होत्या, होहोअ (कप्प, प्राप्र) । भवि, होहिइ, होहिंति, होहामि, होहिमि, होस्स, होस्सामि, होक्खइ, होक्ख (हे ३, १६६, १६७, १६६, प्राप्र, पि ५२१), होसइ (अप) (हे ४, ३८८) । कर्म होइजइ, होइज्जए, होईअइ (पड्ड पि ४७६) वक्र, होँत, होमाण (हे ३, ५८०, ४, ३५५, ३७२, कुमा, पि ४७६) । संक होऊण, होऊण, होअऊण, होइऊण, हविय, होत्ता (गड्ड, पि ५८५, ५८६, कुमा) । हेक्क, होउ, होत्तए (महा, पि ४७५ कप्प) । क. होयउव (कप्प, महा, उव, प्रासू १६, ६१) ।

हो अ [हो] इन अर्थों का सूचक अव्यय—१ विस्मय, आश्चर्य (पात्र, नाट—सृच्छ ११२) । २ सबीवन, आमन्त्रण (संखि ४७, उप ५६७ टी) ।

होउ वि [होउ] होम-कर्ता (गा ७२७) ।

होँड देखो हु ड (विचार ५०७) ।

होइ पुं [ओउ] हाँठ, ओठ (आचा) ।

होइ देखो हुइ, 'तो हं छोडेमि होइयो' (सुपा २७७, २७८) ।

होइ पु [होइ] मोष, चोरी की वस्तु (गाया १, २—पत्र ८६, पिड ३८०) ।

होण देखो हूग = हूण (पव २७४, विचार ४३) ।

होत्तिअ पु [होत्तिक] १ वानप्रस्थ तापसों का एक वर्ग, अग्निहोत्रिक वानप्रस्थ (श्रौप, भग ११, ६—पत्र ५१५) । २ न. वृण-विशेष (पण १—पत्र ३३) ।

होम पुं [होम] हवन, अग्नि में मन्त्र-पूर्वक घृत आदि का प्रक्षेप (अभि १५६) ।

होम सक [होमय] होम करना । हेक्क, होमिउ (ती ८) ।

होमिअ वि [होमिन] हवन किया हुआ, 'अणत्थपडियकुक्कव्हविहोमिअ' (स ७१४) ।

होरभा श्री [होरम्भा] वायु-विशेष, महा-ढक्का, बड़ा ढोल (राय ४६) ।

होरण न [दे] वज्र, कपडा (दे ८, ७२, गा ७७१) ।

राजा (पउम १२, २) । २ नन्दीश्वर द्वीप के अपराध का अघिष्ठाता देव (जोव ३, ४) ।
 °सह देखो °स्सह (राज) । °सेण पुं [°पेण]
 १ दशवां चक्रवर्ती राजा (सम ६८, १५२) ।
 २ भगवान् नमिनाथजी का प्रथम श्रावक
 (विचार ३७८) । °स्सह पुं [°सह] १
 विद्युत्कुमार-देवों की दक्षिण दिशा का इन्द्र
 (ठा २, ३—पत्र ८४, इक) । मात्यवन्त
 पर्वत का एक शिखर (ठा ६—पत्र ४५४) ।

हरि पुं [हरित्] १ हरा रंग, वर्ण-विशेष ।
 २ वि. हरा रंगवाला (गाथा १, १६ पत्र
 २२८) । ३ स्त्री. एक महा-नदी (सम २७,
 इक, ठा २, ३—पत्र ७२) । ४ षड्ज ग्राम
 की एक सूच्छंता (ठा ७—पत्र ३६३) ।
 °पवात, °पवाय पुं [°प्रपात] एक द्रव,
 जहाँ से हरित् नदी निकलती है (ठा २, ३—
 पत्र ७२, टी—पत्र ७५) ।

हरि° देखो हिरि° (भग, पि ६८, उत ३२,
 १०३) ।

हरिअ पु [°हरित्] १ वर्ण-विशेष, हरा रंग ।
 २ वि. हरा वर्णवाला (श्रीप, गाथा १, १
 टी—पत्र ४, १, ७—पत्र ११६, से ८,
 ४६, गा ६६५) । ३ पु एक आर्य मनुष्य-
 जाति (ठा ६—पत्र ३५८) । ४ पुन.
 वनस्पति-विशेष, हरा तुण, सब्जी (परण
 १—पत्र ३०, श्रीप, पात्र, पत्र २, ५०,
 दस १०, ३) ।

हरिअ देखो हिअ = हृत (कस, महा) ।

°हरिअ देखो भरिअ = भरित (गा ६३२) ।

हरिअग } न [हरितक] जीरा आदि के
 हरिअय } पत्तों से बना हुआ भोज्य विशेष
 (पव २५६, सुज २० टी) ।

हरिआ स्त्री [हारता] द्वर्वा, द्वव, तुण-विशेष
 (से ७, ५६, ६, ३१) ।

हरिआ देखो हिरि (कुमा) ।

हरिआल देखो हरि-आल ।

हरिआली स्त्री [दे. हरिताली] द्वर्वा, द्वव
 (दे ८, ६४, पात्र, अत, कप्प, अणु २३) ।

हरिएस देखो हरि-एस ।

हरिचदण देखो हरि-चदण ।

हरिचदण न [दे. हरिचन्दन] कुंकुम, केसर
 (दे ८, ६५) ।

हरिडय पुं [हरितक] कोकण देश-प्रसिद्ध
 वृक्ष-विशेष (परण १—पत्र ३१) ।

हरिण पुं [हरिण] १ हिरन, मृग (कुमा) ।
 २ छन्द का एक भेद (पिंग) । °च्छी स्त्री
 [°क्षी] सुन्दर नेत्रवाली स्त्री (कप्पू) । °रि
 पु [°रि] सिंह (उप पु २६) । °हिव पु
 [°धिप] वही (हे ३, १८०) ।

हरिणक पु [हरिगाङ्क] चन्द्र, चाँद (हे ३,
 १८०, कप्पू, सण) ।

हरिणकुस पु [हरिणाकुश] चौथे बलदेव के
 गुरु एक जैन मुनि (पउम २०, २०५) ।

हरिणगवेसि देखो हरिणेगमेसि (पउम ३,
 १०४) ।

हरिणी स्त्री [हरिणी] १ मादा हिरन, हिरनी
 (पात्र) । २ छन्द-विशेष (पिंग) ।

हरिणेगमेसि पु [हरिनैगमैपिन्] शक्र के
 पदाति सैन्य का अधिपति देव (ठा ५, १—
 ३०२, अत ७, इक) ।

हरिहा देखो हलिहा (पि ३७५) ।

हरिमय पुं [दे] काला चना, अन्न-विशेष
 (श्रा १८, पव १५६, सबोध ४३, दे ८, ७०
 टी) । देखो हरिमय ।

हरिमिग पु [दे] लगुड, लट्ठी, लाठी, डडा
 (दे ८, ६३) ।

हरियदपुर न [हरिचन्द्रपुर] गधवर्नगर
 (चउपपन्न० ऋषभचरित्र) ।

हरिली देखो हिरिली (उत ३६, ६८) ।

°हरिल वि [°भरवत्] भारवाला, बोझवाला
 (गा ५४५) ।

हरिस एक [हृप्] खुशी होना । हरिसह
 (हे ४, २३५, प्राप्र, षड्), 'हरिसिज्जह
 कयतावो रुद्धमाणोवगयचित्तो' (संबोध ४६) ।

हरिस सक [हर्ष] हर्ष से रोम खड़ा करना,
 'लोमादिथं पि ण हरिसे सुभागारगमो मुणी'
 (सूत्र १, २, २, १६) ।

हरिस पुं [हर्ष] १ सुख । २ आनन्द, प्रमोद,
 खुशी (हे २, १०५, प्राप्र; कुमा, भग) । ३
 आभूषण विशेष (श्रीप) । °उर पुं [°पुर]
 एक जैन गच्छ (सुपा ६५८) । °ल वि
 [°वत्] हर्ष-युक्त (प्राक् ३५) ।

हरिसण पु [हर्षण] ज्योतिष-प्रसिद्ध एक
 योग (सुपा १०८) ।

हरिसाह्य वि [हर्षित] हर्ष-प्राप्त (पउम
 ६१, ७२) ।

हरिसाल देखो सरिसाल = हर्ष-वत् ।

हरिसिअ वि [हर्षित] हर्ष-प्राप्त, आनन्दित
 (श्रीप, भवि, महा, सण) ।

हरी देखो हिरि (सूत्र १, १३, ६, भग) ।

हरीडई देखो हरडई (प्राक् १२) ।

हरे अ [अरे] इन अर्थों का सूचक अव्यय—
 १ आक्षेप, निन्दा । २ समापण । ३ रति कलह
 (हे २, २०२, कुमा, स ४३०, पि ३३८) ।

हरेडगी देखो हरीडई (पचा १०, २५) ।

हरेणुया स्त्री [हरेणुका] त्रिषु गु, मानकांगनी
 (उत्तनि ३) ।

हरेस सक [हरेप्] गति करना (नाट—
 वेणी ६७) ।

हल न [हल] हर, जिसमें खेत जोतते हैं
 (उवा, श्रीप) । °उत्तय पुं [°युक्त]
 हल जोतना, 'असुभे समयम्मि कम्मो तेण
 हलउत्तमो खित्ते' (सुपा २३७, २३६, सुर
 २, ७७) । °कुडाल, °कुडाल पुं [°कुडाल]
 हल के ऊपर का भाग (उवा) । °धर पुं
 [°धर] बलदेव, राम (परण १७—पत्र
 ५२६, दे २, ५५) । °धारण पु [°धारण]
 बलभद्र, राम (पउम ११७, ६) । °वाहा
 वि [°वाहक] हालिक, हल जोतनेवाला
 (श्रा २३) । °हर देखो °धर (सम ११३,
 पव—गाथा ४८; श्रीप, कुप्र २५७) ।
 °उह पुं [°युध] बलभद्र, राम (पउम
 ३८, २३, ७६, २६) ।

°हल देखो फल = फल (सुपा ३६६, भवि,
 वि १०३) ।

हलअ (मा) देखो हिअय = हृदय (चार ११,
 नाट—मृच्छ २१) ।

हलउत्तय देखो हल उत्तय ।

हलहा देखो हलिहा (हे १, ८८, कुमा;
 हलही षड्) ।

हलप्प वि [दे] बहु-भाषी, वाचाल (दे
 ८, ६१) ।

हलबोल पुं [दे] कलकल, शोरगुल, कोलाहल
 (दे ८, ६४, पात्र, कुमा, सुपा ८७, १३२,
 हट्टि १४०, कुप्र ३६२, सिरि ४३३, सम्मत
 १२२) ।

होरा व्री [होरा] १ खडी या खलो से की हुई रेखा (गा ४३५) । २ ज्योतिष शास्त्र में उक्त लग्न (मोह १०१) । ३ होराज्ञापक शास्त्र (स ६०२) ।

होल पुत्री [दे] १ वाद्य-विशेष, होलं वाएह मे इत्य' (धर्मवि ४४), 'श्राद्धत मज्जपाण वायावेइ होल' (सुख ३, १) । २ पक्षि विशेष,

'होलाहगिद्धकुक्कुडहसन्नगाईसु सवणजार्डमु ।
जं खुहवसेण खद्धा किमिगाई तेवि' खामेमि'
(खा १३) ।

३ एक तरह की गाली, अपमान-सूचक शब्द—
मूर्ख, वेवकूफ (आचा २, ४, १, ६, ११,
दस ७, १४, १६) । 'वाय पुं [वाद] दुवंचन
वोलना, गाली-प्रदान (सूअ १, ६, २७) ।

होलिया व्री [होलिका] होली, फागुन मास का पर्व-विशेष (सट्टि ७८ टी) ।

होस° देखो हो = भू ।

हद देखो दह (पिड ८४, पि ३६६ ए) ।

हस देखो रहस = हस्त (पि ३५४) ।

हास देखो हास = ह्याम (एदि २०६ टी) ।

॥ इअ पाइअसद्महण्णवम्मि हधाराइसदसकलणो श्रद्धतोसइमो तरंगो

समतो । समतो अ तस्समत्तीए एम गथो ॥

पसर्था [प्रशस्तिः]

आसाइ पच्छिमाए भारह-यासे इहत्थि अइ-रम्मो । गुज्जरणामा देसो पुव्वं लाढो त्ति विक्खाओ ॥१॥
तस्सुत्तर-दिमि-भाए पुरं पुराणं पुराणमइ-पवर । राहणपुरं त्ति अच्चइ सच्चञ्चाण जिणिद-भवणाण ॥२॥
चंगण तुङ्गाणं वय-वड-येअं चलेहि चलिरेहि । पडिसेहत पिव ज णिअ-वासि-जणे अहम्माओ ॥३॥
णिअ-पाय-ण्णासेण वामेण य वास-याल-पेरत । जं पुण कय पवित्तं जय-गुरु-पमुहेहि मूरीहि ॥४॥ [कुल्य]
तव्वत्थन्ना असी सिट्ठी सिरिमाल-वंस-वर-रयणं । णामेण तिममचदो दक्खिण-दयाइ-गुण-कन्तिओ ॥५॥
आवय-सपत्तीण संपत्तीए वि जेण णिअचित्ते । दिण्णो णेव कयाई विसाय हरिसाण अवयासो ॥६॥ [जुग]
अणवज्ज-कज्ज-सज्जा धम्म मणा धम्मपत्तो से धणिअं । सीलाइ-गुण-प्पहाणा पहागदेवि त्ति अ अहेसि ॥७॥
तेसि दो तणुजम्मा आवह लद्ध-वम्म-सक्कारा । जिट्ठो हरगोविदो कणिट्ठओ बुद्धिचंदो ओ ॥८॥
सत्थ-विसारय-जइणायरिहि विजयवम्म-मूरीहि । कासीइ महेसीहि विज्जागारम्मि सठविह ॥९॥
गतूण सोअरेहि तेहि वेहिपि तत्थ सत्थाण । सक्कय-पययमयाण अब्भासो काउमारट्ठो ॥१०॥
खण-दिट्ठ-णट्ठ-भाअ ससार सार-वज्जिअ णाउं । एअतिअ-अच्चंतिअ-सोक्ख मोक्ख च चाय-फलं ॥११॥
पडिबज्जिअ पव्वज्ज अणुओ पणुअ-गग-विदेसो । विहरउ त पालितो विसाल-विजओ त्ति पत्तभिहो ॥१२॥ [जुग]
जेट्ठो उण सत्थाणं णाय-व्यायरणमाइ-विसयाणं । वढणज्जावाण-सलोहणाइ-ऊजेसु दिण्ण-मणो ॥१३॥
लंकाइ सिहलेसुं पाली-भासाइ सुगय-समयाणं । अब्भास-परिक्खासुं पार पत्तोप्प-कालेण ॥१४॥
कलिकायाए णाए वायरणे चेव लद्ध-तित्थ-पओ । खायाइ परिक्खाए उत्तिण्णो उच्च-कक्खाए ॥१५॥
तत्थेव विस्सविज्जालयम्मि सव्वुत्तमाइ सेणीए । पायय-सक्कय-सत्थज्जावण-कज्जम्मि विणिउत्तो ॥१६॥
तेण य पायय-भासाहिहाण गंथस्स विक्खमाणेणं । चिर-कालउ अभाव आयर जोगास्स विबुहाण ॥१७॥
वाणारसीइ वरिसे सिअहय हय-अर-रयणिरयण-मिए । विहिओ उवक्कमो विक्कमाओ एअस्स गंथस्स ॥१८॥
कालिकायाए जाया पावय-वसु-अरु इट्ठ-परिगणिए । वरिसे भदय-भासे सिअ-सत्तमीए समत्ती ओ ॥१९॥
तस्स सुभदादेवी-णामाइ सधम्मिगीइ एत्थ बहु । आयरिअ साहिज्ज विज्जज्जयणाणुरत्ताए ॥२०॥
आरभ काऊण आरिस-भामाउ आ अवब्भसा । जो सद्धो जहि अत्थे जत्थ गंथे उ उवलद्धो ॥२१॥
वण्णाणमणुक्कमेण सो सद्धो तम्मि अत्थए लिहिओ । तग्गन्थ-ठाण-दसण पुव्वं णिउणं णिरुवेत्ता ॥२२॥
पाईण-पाइआणं भासाण वहुत्त-भेअ-भिण्णाणं । सद्धणव-पार जे गया तयट्ठो ण एस समो ॥२३॥
जे उण अण-पत्तट्ठा सय तयज्जासिणो य अ-सहाया । ताणं हत्थालवण-दाणाएवस्स णिम्माणं ॥२४॥
जइ थेवोवि हवेज्जा तेसि गन्थेणणेण उवयारो । ता एत्तिअमेत्तेणं मण्णे आयास-साहल्ल ॥२५॥
अण्णाणेण मईए भमेण वा एत्थ किंचि जमसुद्धं । तं सोहितु पसाय काऊण सयासया स-यणा ॥२६॥

हसिस्स (हे ३, १६६, १६७, १६८, १६९)। कर्म. हसीअइ, हसिज्जइ, हसिज्जति (हे ३, १६०, १४२)। वक्र. हसत, हसेत, हसमाण (औप, हे ३, १५८, १८१, (षड्)। कवक. हसिज्जंत, हसीअत, हसीअमाण, हसिज्जमाण, हसेज्जमाण (हे ३, १६०, उप ५६७ टी, सुर १४, १८०)। सक. हसिऊण, हसेऊण, हसिउआण, हसिउआणं, हसेउआण, हसेउआण, हसिऊणं (हे ३ १५७, पि ५८४, ५८५)। हेक. हसिउ, हसेउ (हे ३, १५७)। क. हसिअव्व, हसेअव्व. हसणीअ (पणह २, ५—पत्र १४६, हे ३, १५७, षड्, सक्षि ३४, नाट—मृच्छ ११४)।

हस अक [हस] हीन होना, कम होना। हसइ (पत्र ५, ५३)।

हस पुं [हास] हास्य (उप १०३१ टी)।

हसण बीन [हसन] हास्य, हँसी (भग, उत्त ३६, २६२, पंचा २, ८)। बी. °णा (उप ४ २७५)।

हसहस अक [हसहसाय] १ उत्तेजित होना। २ सुलगना, 'सिगाररसत्तु (?) इया मोहमईकु फुमा हसहसेइ' (सुख १, ८)। वक्र. हसहसित (दसनि ३, ३५)। सक. हसहसेऊण (राज)।

हसाव देखो हास = हासय्। हसावइ, हसावेइ (हे ३, १४६)।

हसिअ वि [हसित] १ जिसका उपहास किया गया हो वह (उव ११३)। २ न हास्य, हँसी (उव २२४)।

हसिअ वि [हसित] हास-प्राप्त, हीन (पत्र ५, ५३)।

हसिर वि [हसित] हास्य-कर्ता, हँसने की आदतवाला (प्राप्र, गा १७४, उप ७२८ टी, सुर २, ७८, कुमा)। बी. °री (गउड)।

हसिरिआ बी [दे] हास, हँसी (दे ८, ६२)।

हस्स अक [हस] कम होना, न्यून होना, क्षीण होना। वक्र. हस्समाण (एदि ८२ टी)।

हस्स देखो हस = हस्। हस्सइ (घात्वा १५७)। कर्म. हस्सइ (घात्वा १५७, हे ४, २४६)।

हस्स न [हास्य] १ हँसी (आचा १, २, १, २, पत्र ७२, नाट—मृच्छ ६२)। २ पु महाक्रन्दित नामक देवो का दक्षिण दिशा का इन्द्र (ठा २, ३—पत्र ८५)। °गय न [गत] कला-विशेष (स ६०३)। °रइ पुं [रति] इन्द्र-विशेष, महाक्रन्दित-निकाय का उत्तर दिशा का इन्द्र (ठा २, ३—पत्र ८५)।

हस्स वि [हस्व] १ लघु, छोटा (सूअ २, १, १५, पत्र ५४)। २ वामन, खर्व (पाअ)। ३ अल्प, थोड़ा (भग, पंच ५, १०३, कम्म ५, ८४)। ४ पु. एक मायावाला स्वर (पणण ३६—पत्र ८४६, विसे ३०६८)।

हस्सण वि [हर्षण] हर्ष-कारक 'रोमहस्सणो जुद्धसंमहो' (विक्र ८७)।

हस्सिर देखो हसिर, 'अ-हस्सिरे सदा दंते' (उत्त ११, ४, सुख ११, ४)।

हहह } अ [हहह, °हा] १ इन अर्थों का सूचक अव्यय—१ आश्चर्य (प्रयौ ७४)। २ खेद, विषाद (सिरि ६१२)।

हहा पुं [हहा] १ गन्धर्व देवो की एक जाति (हे ३, १२६)। २ अ. खेद-सूचक अव्यय (सिरि २६८; ७६७)।

हा अ [हा] इन अर्थों का सूचक अव्यय—१ विषाद, खेद (सुर १, ६६, स्वप्न २७, गा २१८, ७५४, ६६०, प्रासू २०)। २ शोक, दिलगिरी। ३ पीडा। ४ कुत्सा, निन्दा (हे १, ६७, २, २१७)। कंद पुं [क्रन्द] हाहाकार (पिंग)। °रव पुं [रव] वही अर्थ (सुर २, १११)।

हा सक [हा] १ त्याग करना। २ गति करना। ३ क्षीण करना, हीन करना, कम करना। हाइ (षड्)। कर्म. हायइ, हायंति (भग, उव), हिज्जइ (भवि), हिज्जउ (प्रयौ १०७)। कवक. हायत (एया १, १० टी—पत्र १७१), हीयमाण (काल)। सक. हाउ (उवकु १०, ११), हिच्चा, हिच्चाण (आचा १, ४, ४, १, पि ५८७), हेच्च, हेच्चा (सूअ १, २, ३, १, उत्त १८, ३५),

हेच्चाण, हेच्चाण (पि ५८७)। क. हेअ (स ५६५, पंचा ६, २७, अन्नु ८, गउड)। °हा देखो भा—बी (गउड)।

हाअ देखो हा—सक। हाअइ, हाअए (पड्)। हाअ सक [हादय] अतिसार रोग को उत्पन्न करना। हाएज्ज (पिड ६४६)।

°हाअ देखो भाअ = भाग (से ८, ८२, पड्)।

°हाअ देखो घाय = घात (से ७, ५६)।

°हाअ देखो भाव = भाव (से ३, १५)।

हाउ देखो भाउ, 'मह वमणं मइरागधिप्रति हाआ तुहं भणइ' (गा ८७२)।

हांसल देखो हंसल (राज)।

हाकंद देखो हा-कद।

हाकलि बी [हाकलि] छन्द का एक भेद (पिंग)।

हाडहड न [दे] तत्काल, तत्क्षण (वव १)।

हाडहडा बी [दे] आरोपणा का एक भेद, प्रायश्चित्त-विशेष (ठा ५, २—पत्र ३२५, निवू २०)।

हाणि बी [हानि] क्षति, अपचय (भवि)।

हाम अ [दे] इस तरह, इस प्रकार, एवं, 'हाम भण' (प्राकृ ८१)।

हायण पुं [हायन] वर्ष, संवत्सर (औप: एया १, १ टी—पत्र ५७)।

हायणी बी [हायनी] मनुष्य की दस दशाओं में छठवीं अवस्था (ठा १८—पत्र ५१६, ददु १०)।

हार सक [हारय] १ नाश करना। २ हारना, पराभव पाना। हारेइ, हारसु (उव, महा)। वक्र. हारंत (सुपा १५४)।

हार पुं [हार] १ माला, अठारह सर की मोती आदि की माला (कण, राय १०२, उवा, कुमा, भवि)। २ हरण, अपहरण (वव १)। ३ द्वीप-विशेष। ४ समुद्र-विशेष (जीव ३, ४—पत्र ३६७)। ५ हरण-कर्ता, 'अदत्त-हारा' (आचा १, २, ३, ५)। °पुड पुं [पुट] घातु-विशेष, लोहा (आचा २, ६, १, १)। °भद पुं [भद्र] हार-द्वीप का अविष्ठाता एक देव (जीव ३, ४—पत्र ३६७)। °महाभद पुं [महाभद्र] हार-द्वीप का एक अविष्ठाता देव (जीव ३, ४)।

°महावर पुं [महावर] हार-समुद्र का एक

अणायरणया स्त्री [अनाचरण] ऊपर देखो (सम ७१) ।

अणायरिय देखो अणज्ज = अनायं (परह १, पउम १४, ३०) ।

अणायार देखो अणागार = अनाकार (विसे) ।
अणायार पु [अनाचार] १ शास्त्र-निषिद्ध आचरण (स १८८) । २ गृहीत नियमो का जान-बूझ कर उल्लंघन करना, व्रत-भङ्ग (वव १) ।

अणारिय देखो अणज्ज = अनायं (उवा) ।

अणारिस वि [अनार्प] जो ऋषि-प्रणीत न हो वह (पउम ११, ८०) ।

अणारिस वि [अन्यादृश] दूसरे के जैसा (नाट) ।

अणालत्त वि [अनालपित] अनुक्त, अकथित, नहीं बुलाया हुआ (उवा) ।

अणालवय पु [अनालपक] मौन, नहीं बोलना (पात्र) ।

अणाव सक [आ + नायय्] मगवाना, अणावेमि (सिरि ६४६) ।

अणावरण वि [अनावरण] १ आवरण-रहित । २ न केवल-ज्ञान (सम्म ७१) ।

अणाविअ वि [आनायित] मगवाया हुआ (सिरि ६६, ७१८) ।

अणाविट्ठि } स्त्री [अनावृष्टि] वर्षा का अभाव
अणावुट्ठि } (पउम २०, ८७, सम ६०) ।

अणाविल वि [अनाविल] १ निर्मल, स्वच्छ (गज्ज) ।

अणाससि वि [अनाशसिन्] अनिच्छु, निस्पृह (वृह १) ।

अणासण देखो अणसण (सूत्र १, २, १, १४) ।

अणासय पु [अनाश, °क] अनशन, भोजनाभाव, 'खारम्भ लोएस्म अणसएण' (सूत्र १, ७, १३) ।

अणासव वि [अनाश्रव] १ आश्रव-रहित । २ पु आश्रव का अभाव, सवर । ३ अहिंसा, दया (परह २, १) ।

अणासिय वि [अनशित] भूखा (सूत्र १, ५, २) ।

अणाह वि [अनाथ] २ शरण-रहित (निच् ३) । २ स्वामि-रहित, मालिक-रहित । ३ रंक,

गरीब, बेचारा (एया १, ८) । ४ पु एक जैन मुनि (उत्त २०) ।

अणाहार पु [अनाहार] एक दिन का उखास (सवोच ५८) ।

अणाहि } वि [अनाधि, °क] मानसिक
अगाहिय } पीडा से रहित (मे ३, ४४, पि ३६५) ।

अणाहिट्ठि पु [अनाधृष्टि] एक अन्तर्कृद मुनि (अन्त ३) ।

अणिइण देखो अणगिण (विचार २२) ।

अणिइय वि [अनियत] १ अनियमित, अव्यवस्थित । २ पु ससार (भग ६, ३३) ।

अणिउच्चिय वि [अनिकुञ्चित] टेढ़ा नहीं किया हुआ, सरल (गज्ज) ।

अणिउत्त } देखो अइमुत्त (दे १, ३८, हे
अणिउत्तय } १, १७८, कुमा) ।
अणिउत्तय }

अणिएय वि [अनियत] अनियमित, अप्रतिबद्ध, 'अखिले अगिदे अणिएयचारी, अमयकरे भिक्षू अणाविलप्पा' (सूत्र १, ७, २८) ।

अणिदिय वि [अनिन्दित] १ जिसकी निन्दा न की गई हो वह, उत्तम (धर्म १) । २ पु किन्नर देव की एक जाति (परह १) ।

अणिदिय वि [अनिन्द्रिय] १ इन्द्रिय-रहित । २ पु मुक्त जीव । ३ केवलज्ञानी (ठा १०) । ४ वि अतीन्द्रिय, जो इन्द्रियो से जाना न जा सके, 'नय विज्झइ तग्गहणे लिगपि अणिदियत्तएण्णो' (पुर १२, ४८, स १६८, विसे १८६२) ।

अणिदिया स्त्री [अनिन्दिता] ऊर्ध्व लोक में रहनेवाली एक दिक्कुमारी देवी (ठा ८) ।

अणिक्क वि [अनेक] एक से ज्यादा (नव ४३) ।

°वाइ वि [°वादिन्] अक्रियावादी (ठा ८) ।

अणिक्किणी स्त्री [अनीकिनी] ऐसी सेना जिसमें २१८७ हाथी, २१८७ रथ, ६५६१ घोड़े और १०६३५ प्यादें हो (पउम ५६, ६) ।

अणिक्वित्त वि [अनिक्कित्त] नहीं छोड़ा हुआ, अपरित्यक्त, अविच्छिन्न, 'अणिक्वित्तेणं तवोक्कमेण सज्जेणं तवसा अप्पाए भावेमाणे विहरइ' (उवा, औप) ।

अणिगण } देखो अणगिण (जीव ३, सम
अणिगिण } १७) ।

अणिग्गह वि [अनिग्रह] स्वच्छन्द, असयत (परह १, २) ।

अणिच्च वि [अनित्य] नश्वर, अस्थायी (नव २४, प्रासू ६५) । °भावणा स्त्री [°भावना] सांसारिक पदार्थों की अनित्यता का चिन्तन (पव ६७) । °णुप्पेहा स्त्री [°णुप्पेहा] देखो पूर्वोक्त अर्थ (ठा ४, १) ।

अणिट्ठ वि [अनिष्ट] अप्रीतिकर, द्वेष्य (उव) ।

अणिट्ठिय वि [अनिष्टित] असंपूर्ण (गज्ज) ।

अणिण देखो अणिरिण (नाट) ।

अणिदा स्त्री [दे अनिदा] १ बिना ख्याल किये की गई हिंसा (भग १६, ५) । २ चित्त की विकलता । ३ ज्ञान का अभाव (भग १, २) ।
अणिमा पु स्त्री [अणिमन्] आठ सिद्धियों में एक सिद्धि, अत्यन्त छोटा वन जाने की शक्ति (पउम ७, १३६) ।

अणिमिस न [अनिमिप] फल-विशेष (दस ५, १, ७३) ।

अणिमिस } वि [अनिमिप, °मेप] १ निमेष-
अणिमेस } शून्य (सुर ३, १७३) । २ पु मत्स्य, मछली (दस ५, १) । ३ देव, देवता (वव १, आ १६) । °नयण पु [नयन] देव, देवता (विसे ३४८६) ।

अणिय न [अनीक] सैन्य, लश्कर (कप्प) ।

अणिय न [अनृत] असत्य, झूठ (ठा १०) ।

अणिय न [दे] धार, अन्न-भाग (परह २, २) ।

अणिय वि [अनित्य] अस्थिर, अनित्य (उव) ।

अणियट्ठ पु [अनिवर्त्त] १ मोक्ष, मुक्ति (आचा १, ५, १) । २ एक महाग्रह (ठा २, ३) ।

अणियट्ठि वि [अनिवर्त्तिन्] १ निवृत्त नहीं होनेवाला, पीछे नहीं लौटनेवाला (औप) । २ न शुक्ल-ध्यान का एक भेद (ठा ४, १) । ३ पु एक महाग्रह (चद २०) । ४ आगामी उत्सर्पणी काल में होनेवाले एक तीर्थंकर देव का नाम (सम १५४) ।

अणियट्ठि वि [अनिवृत्ति] १ निवृत्ति-रहित, व्यावृत्ति-वर्जित (कर्म २, २) । २ नववां गुरु-स्थानक (कर्म २) । °करण न [°करण] आत्मा का विशुद्ध परिणाम-विशेष (आचा) । °वादर न [°वादर] १ नववा गुरु-स्थानक । २ नववें गुरु-स्थानक में प्रवृत्त जीव (आव ४) ।

अणियण देखो अणगिण (जीव ३) ।

अधिष्ठायक देव, 'हारसमुद्र हारवर-हारवर-
(हार)महावरा एत्थ दो देवा महिद्धीया'
(जीव ३, ४—पत्र ३६७)। °वर पु [°वर]
१ हार-समुद्र का एक अधिष्ठाता देव। २
द्वीप-विशेष। ३ समुद्र-विशेष। ४ हारवर-
समुद्र का एक अधिष्ठाता देव (जीव ३, ४)।
°वरभद्र पुं [°वरभद्र] हारवर-द्वीप का
एक अधिष्ठायक देव (जीव ३, ४)।
°वरमहाभद्र पुं [°वरमहाभद्र] हारवर-
द्वीप का एक अधिष्ठाता देव (जीव ३, ४)।
°वरमहावर पुं [°वरमहावर] हारवर-
समुद्र का एक अधिष्ठायक देव (जीव ३, ४)।
°वरावभास पु [°वरावभास] १ एक द्वीप।
२ एक समुद्र (जीव ३, ४)। °वरावभास-
भद्र पुं [°वरावभासभद्र] हारवराभास-
द्वीप का एक अधिष्ठाता देव (जीव ३, ४)।
°वरावभासमहाभद्र पु [°वरावभासमहा-
भद्र] हारवरावभास-द्वीप का एक अधिष्ठायक
देव (जीव ३, ४)। °वरावभासमहावर पुं
[°वरावभासमहावर] हारवराभास-समुद्र
का एक अधिष्ठाता देव (जीव ३, ४)।
°वरावभासवर पुं [°वरावभासवर] हार-
वरावभास-समुद्र का एक अधिष्ठायक देव (जीव
३, ४—पत्र ३६७)।
°हार देखो भार (सुपा ३६१, भवि)।
हारअ वि [हारअ] नाश-कर्ता (अभि १११)।
हारण वि [हारण] ऊपर देखो, 'धम्मत्थ-
कामभोगाण हारणं कारणं दुहसयाण' (पुप्प
२६२, धम्म १० टी)।
हारव देखो हार = हारय्। हारवइ (हे ४,
३१)। भवि. हारविस्सइ (स ५६६)।
हारविअ वि [हारित] नाशित (कुमा, सुपा
५१२)।
हारा स्त्री [दे] लक्षा जन्तु-विशेष (दे ८,
६६)।
°हारा देखो धारा (कप्प, गा ७८५)।
हारि स्त्री [हारि] १ हार, पराजय (उप पु
५२)। २ पक्ति, श्रेणि (कुप्र ३४४)। ३
छन्द-विशेष (पिंग)।
हारि वि [हारिन्] १ हरण-कर्ता (विसे
३२४५, कुमा)। २ मनोहर, चित्ताकर्षक
(गठड)।

हारिअ न [हारीत] १ गोत्र-विशेष, जो
कौत्स गोत्र की एक शाखा है। २ पुंस्त्री. उस
गोत्र में उत्पन्न (ठा ७—पत्र ३६०, एदि
४६, कप्प)। °मालागारी स्त्री [°मालागारी]
एक जैन मुनि-शाखा (कप्प)।
हारिअ वि [हारित] १ हारा हुआ, चूत
आदि में पराजित (सुपा ३६६, महा, भावि)।
२ छोया हुआ, गुमाया हुआ (वव १, सुपा
१६६)।
हारियद वि [हारिचन्द्र] हरिचन्द्र का,
हरिचन्द्र-कवि का बनाया हुआ (गठड)।
हारिया स्त्री [हारीता] एक जैन मुनि-शाखा
(राज)। देखो हारिअ-मालागारी।
हारियायण न [हारितायन] एक गोत्र
(कप्प)।
हारी स्त्री [हारी] देखो हारि = हारि (उप
पु ५२, कुप्र ३४४, पिंग)।
हारीय पुं [हारीत] १ मुनि-विशेष। २ न.
गोत्र-विशेष (राज)। °वध पु [°वन्ध]
छन्द-विशेष (पिंग)।
हारोस पु [हारोप] १ अनायं देश-विशेष।
२ वि. उम देश का निवासी (पण्य १—
पत्र ४८)।
हाल पुं [दे हाल] राजा सातवाहन, गाथा-
सप्तशती का कर्ता (दे ८, ६६, २, ३६, गा
३, वजा ६४)।
हाला स्त्री [हाला] मदिरा, दारू (पाप्र, कुप्र
४०७; रंभा)।
हालाहल पुं [दे] मालाकार, माली (दे ८,
७५)।
हालाहल पुंस्त्री [हालाहल] १ जन्तु-विशेष,
ब्रह्मसर्प, वाम्हीनी (दे ६, ६०, पाप्र, गा
६२)। स्त्री. °ला (दे ८, ७५)। २ श्रीन्द्रिय
जन्तु-विशेष (पण्य १—पत्र ४५)। ३
पुन स्यावर विप-विशेष (दस ६, १, ७,
गच्छ २, ४)। ४ पु. रावण का एक सुभट
(पउम ५६, ३३)।
हालाहला स्त्री [हालाहला] एक आजीविक-
मतानुयायिनी कुम्हारिन (भग १५—पत्र
६५६)।
हालिअ देखो हलिअ = हालिक (हे १, ६७,
प्राप्र)।

हालिज्ज न [हालीय] एक जैन मुनि-गुल
(कप्प)।
हालिइ पु [हारिद्र] १ हल्दी के तुल्य रंग,
पीला वर्ण (अणु १०६, ठा ५, १—पत्र
२६१)। २ वि. पीला, जिसका रंग पीला
हो वह (पण्य १—पत्र २५, सूय २, १,
१५, भग, श्रौप)। ३ पुन एक देव-विमान
(देवेन्द्र १३२)।
हालिया स्त्री [हालिका] देखो हलिआ
(राज)।
हालुअ वि [दे] क्षीव, मत्त (दे ८, ६६)।
हाव सक [हापय्] १ हानि करना। २
त्याग करना। ३ परिभव करना। ४ लोप
करना, 'थडिलसामायारि हावेइ' (वव १),
हावए (उत्त ५, २३, सट्ठि २१ टी)। हाव-
इज्जा (दस ८, ४१)। वक्र. हावित (विसे
२७४६)।
हाव पुं [हाव] मुख का विकार-विशेष (पण्य
२, ४—पत्र १३२, भवि)।
हाव वि [दे] जघाल, द्रुतगामी, वेग से दौड़ने-
वाला (दे ८, ७५)।
°हाव देखो भाव = भाव, 'ईसरहावेण' (अञ्चु
२५)।
हावण वि [हापन] हानि करनेवाला (हे २,
७८)।
हाघिर वि [दे] १ जघाल, द्रुतगामी। २
दीर्घ, लम्बा। ३ मन्यर। ४ विरत (दे ८,
७५)।
हास देखो हस = हस्। वक्र. 'न हाममाणो
वि गिर वइज्जा' (दस ७, ५४)।
हास सक [हासय्] हँसाना। हासेइ (हे
३, १४६)। कर्म हासीअइ, हासिज्जइ (हे
३, १५२)। वक्र. हासेंत (श्रौप)। क्वकृ
हासिज्जत (मुपा ५७)।
हास पु [हास] १ हास्य, हँसी (श्रौप, गच्छ
२, ४२, उव, गा ११, ३३२)। २ कर्म-
विशेष, जिसके उदय से हँसी आवे वह कर्म
(कम्म १, २१, ५७)। ३ अलंकार-शास्त्रोक्त
रस-विशेष (अणु १३५)। °कर वि [°कर]
हास्य-कारक (सुपा २४३)। °कारि वि
[°कारिन्] वही (गठड)।

अणुइण्ण वि [अनुदुर्गीण] वाहर नही निकला हुआ (श्रोत्र) ।

अणुइण्ण देखो अणुचिण्ण ।

अणुइण्ण देखो अणुदिण्ण ।

अणुऊल वि [अनुकूल] अप्रतिकूल, अनुकूल (गा ५२३) ।

अणुऊल मक [अनुकूल्य] अनुकूल करना । भवि अणुऊलइस्स (पि ५२८) ।

अणुओअ पु [अनुयोग] १ व्याख्या, टीका, सूत्र का विस्तार से अर्थ-प्रतिपादन (श्रोत्र २) । २ पृच्छा प्रश्न (अभि ४४) ।

अणुओइय वि [अनुयोजित] प्रवर्तित, प्रवृत्त कराया हुआ (एदि) ।

अणुओम देखो अणुओअ (विने ६) ।

अणुओम पु [अनुयोग] सम्बन्ध (गु १७) ।

अणुओमि पु [अनुयोगिन्] सूत्रों का व्याख्याता आचार्य, अणुओमी लोग एण कल समय-एणामो दह होइ' (पचव ४) ।

अणुओमिअ वि [अनुयोगिक] दीक्षित, मुनि-शिष्य (एदि) ।

अणुओयण न [अनुयोजन] सवन्त, जोड़ना (विने १३८५) ।

अणुरूप सक [अनु + कम्प्] १ दया करना । २ भक्ति करना । ३ हित करना । वक्क अणु-कपंत (नाट) । कृ अणुकपणिज्ज, अणु-कपणीअ (अभि ६४ खण १५) ।

अणुरूप वि [अनुकम्प्य] अनुकम्पा के योग्य (दे १, २२) ।

अणुरूप } वि [अनुकम्प, °क] १ दयालु, अणुरूपय } करण । २ भक्त, भक्तिमान् (उत्त १२), 'हियाणुकपएण देवेण हरिणगमेमिण' (कप्प) । ३ हितकर 'आयाणुकपए एणममेगे, नो पराणुकपए' (ठा ४ ४) ।

अणुरूपण न [अनुकम्पन] १ दया, कृपा (वव ३) । २ भक्ति, सेवा, 'माउअणुकपणट्टाए' (कप्प) ।

अणुरूपा स्त्री [अनुकम्पा] ऊपर देखो (राया १ १), 'आयरियणुकपाए गच्छो अणुकपिओ महाभागो' (कप्प-टी) । °दाण न [°दान] कल्याण में भरीवो को अन्न आदि देना, 'अणु-कपादाण सड्ढयाण न कहिपि पडिसिद' (धम्म २) ।

अणुकपि वि [अनुकम्पिन्] १ दयालु, कृपालु (माल ७०) । २ भक्ति करनेवाला (सूअ १, ३, २) ।

अणुकापअ वि [अनुकम्पित] जिस पर अनु-कम्पा की गई हो वह (नाट) ।

अणुकड्ड मक [अनु + कृप्] १ खींचना । २ अनुसरण करना । वक्क अणुकड्डमाण, अणुकड्डमाण (विपा १, १, एदि) ।

अणुकड्डि स्त्री [अनुकृष्टि] अनुवर्तन, अनु-सरण (पच ५) ।

अणुकड्डिदय वि [अनुकृष्ट] अनुकृत, अनुसृत (स १८२) ।

अणुरूप पु [अनुकल्प] १ बड़े पुरुषों के मार्ग का अनुकरण । २ वि महापुम्पों का अनुकरण करनेवाला, 'एणएचरणड्डमाण पुव्वायरियाण अणुकिंति कुणइ अणुगच्छइ गुणधारी, अणु-कल्प त वियाणाहि' (पचभा) ।

अणुरूप पु [अनुक्रम] परिपाटी, क्रम (महा) । 'सो अ [°शस्] क्रम से, परिपाटी से (जी २८) ।

अणुकर मक [अनु + कृ] अनुकरण करना, नकल करना । अणुकरेइ (स ४३६) ।

अणुकरण न [अनुकरण] नकल (वव ३) ।

अणुकइ सक [अनु + कथ्य] अनुवाद करना, पीछे बोलना ।

अणुकइ न [अनुकथन] अनुवाद (सूअ १, १३) ।

अणुकार पु [अनुकार] अनुकरण, नकल (कप्प) ।

अणुकारि वि [अनुकारिन्] अनुकरण करने-वाला, 'किन्नराणुकारिणा महुरोएण' (महा) ।

अणुकिइ स्त्री [अनुकृति] अनुकरण, नकल, पुव्वायरियाण नाएगगहणेण य तवोविहाणेमु य अणुकिइ करेइ' (पचू) ।

अणुकिण वि [अनुकीर्ण] व्याप्त भरा हुआ (पउम २१, ७) ।

अणुकिंत्तण न [अनुकीर्तन] वर्णन, प्रशंसा, श्लाघा (पउम ६३, ७३) ।

अणुकिंति देखो अणुकिइ (पचभा) ।

अणुकुइय वि [अनुकुचित] १ पीछे फँका हुआ । २ ऊंचा किया हुआ (निबू ८) ।

अणुकुण सक [अनु + कृ] अनुकरण करना । अणुकुणइ (विक्र १२६) ।

अणुकल देखो अणुकल (हे २, २१७) ।

अणुकूल न [अनुकूलन] अनुकूल करना, प्रमत्त करना 'त कहइ । तम्मज्जे जिट्टमुणी तच्चित्तणुकूलणय ज' (मुपा २३४) ।

अणुकूलि वि [अनुकूलिन] अनुकूल-कारक, 'मुहथिरजोगाणुकूलिणो भणिया' (मंबोव ०) ।

अणुककत वि [अन्वाक्रान्त] आचरित, अनु-ष्ठित (आवा) ।

अणुककत वि [अनुक्रान्त] आचरित, विहित, अनुष्ठित, 'एम् विही अणुककते माहणेण मइ-मया (आवा) ।

अणुकम सक [अनु + क्रम्] क्रम में कहना । भवि अणुकमिम्मामि (जीवस १) ।

अणुकक्रम सक [अनु + क्रम्] अतिक्रमण करना । वक्क अणुकक्रमत (सूअ १, ५, १, ७) ।

अणुकक्रम देखो अणुकम (महा, नव १६) ।

अणुकक्रमण न [अनुक्रमण] गमन, गति, (सूअ १, ५, २, २१) ।

अणुककुइअ वि [अनुकुचित] थोड़ा सकुचित (पव ६२) ।

अणुककोस पु [अनुकोश] दया, कल्याण (ठा ४, ४) ।

अणुककोस पु [अनुत्कर्ष] १ उत्कर्ष का श्रमाव । २ वि २ उत्कर्षरहित (भग ८, १०) ।

अणुक्खित्त वि [अनुक्खित्त] ऊंचा न किया हुआ, 'दिट्ठ वणुक्खित्तमुह एमो मग्गो कुल-वहूण' (गा ५२६) ।

अणुग वि [अनुग] अनुचर, नौकर (दे ७, ६६) ।

अणुग वि [अनुग] अनुसरण-कर्ता (गच्छ ३, ३१) ।

अणुगंतव्व देखो अणुगम = अनु + गम् ।

अणुगपा स्त्री [अनुकम्पा] कल्याण, दया (म १५८) ।

अणुगंपिय वि [अनुकम्पित] जिस पर कल्याण की गई हो वह (स ४७५) ।

अणुगच्छ देखो अणुगम = अनु + गम् । अणु-गच्छइ वक्क अणुगच्छत, अणुगच्छमाण

हास पुं [हास] क्षय, हानि (धर्मस ११६४)।
 हास देखो हरिस = हर्ष (श्रीप)।
 हासंकर देखो हास-कर (सुपा ७८)।
 हासकुहय वि [हास्यकुहक] हास्य-जनक
 कौतुक-कर्ता (दस १०, २०)।
 हासण वि [हासन] १ हास्य करानेवालों
 (पव ७३ टी)। २ हास्य-कर्ता (आचा २,
 १५, ५)।
 हासा स्त्री [हासा] एक देवी (महा)।
 हासाविअ } वि [हासित] हँसाया हुआ
 हासिअ } (गा १२३, पङ्, कुमा, हे
 ३, १५६)।
 हासि वि [हासिन्] हास्य कर्ता (आचा २,
 १५, ५)।
 हासिअ वि [हास्य] हँसने योग्य, 'चडु-
 आरअ पई मा हु पुत्ति जणहासिअ कुणसु'
 (गा ६०५, हे ३, १०५)।
 हासिअ देखो भासिअ = भाषित (नाट—
 विक्र ६१)।
 हासीअ न [दे हास्य] हास, हँसी (दे ८,
 ६२)।
 हाहकार देखो हाहा-कार, 'हाहकारमुहरवा'
 (पउम १७, १०)।
 हाहा पु [हाहा] गन्धर्व देवों की एक जाति
 (सुपा ५६, कुमा, धर्मवि ४८)। २ अ
 विलाप, हाहाकार, शोकवृत्ति (प्राप्र, भग
 ७, ६—पत्र ३०५)। °कय न [°कृत]
 हाहाकार, शोक-शब्द (गाया १, ६—पत्र
 १५७)। °कार पुं [°कार] वही (महा,
 भवि, वेणी १३६)। °भूअ वि [°भूत]
 हाहाकार की प्राप्ति (भग ७, ६—पत्र
 ३०५)। °रव पु [°रव] हाहाकार (महा;
 सुपा १३६, भवि)। °हूह [°हूह] संख्या-
 विशेष 'हाहाहूहअग' को चौरासी लाख से
 गुनने पर जो संख्या लब्ध हो वह (इक)।
 °हूहअग न [°हूहअङ्ग] संख्या-विशेष,
 'अमम' को चौरासी लाख से गुनने पर जो
 संख्या लब्ध हो वह (इक)।
 हि अ [हि] इन अर्थों का सूचक अव्यय—१
 अवधारण, निश्चय (स्वप्न १०)। २ हेतु,
 कारण (कुमा ८, १७, कप्प)। ३ एवम्,

इस तरह (गउड ३२४, सण)। ४ विशेष।
 ५ प्रश्न। ६ सभ्रम। ७ शोक। ८ असूया।
 ९ पाद-पूरण (कुमा, गउड, गा २४२,
 २६५, ६०२, ६४८, पिग, हे २, २१७)।
 हिअ वि [हत्त] १ अपहृत, छीना हुआ
 (गाया १, १६—पत्र २१५, पउम ५, ७३,
 ३०, २०, सुर ६, १७५)। २ नीत, जो
 दूसरी जगह ले जाया गया हो वह (प्राप्र,
 हे १, १२८)। ३ विनष्ट, स्फोटित (पिंड
 ४१५)। ४ आकृष्ट, खींचा हुआ, 'हियहियए'
 (राय)।
 हिअ न [हित] १ मङ्गल, कल्याण। २
 उपकार, भलाई (उत्त १, ६, पउम ६५,
 २१, उव, ठा ४, ४ टी—पत्र २८३, प्रासू
 १४)। ३ वि. हित-कारक, उपकारी (उत्त
 १, २८, २६, उव ३२६, ४५०; प्रासू
 १४)। ४ स्थापित, निहित (भत्त ७८)।
 °कर वि [°कर] १ हितकारक (ठा ६)। २
 पु. दो उपवास (सबोध ५८)। ३ एक
 वणिक् का नाम (पउम ५, २८)। °कार वि
 [°कार] हित-कारक (श्रु १४६)। °यर
 देखो °कर (पउम ६५, २१)।
 °हिअ देखो हिअय = हृदय (हे १, २६६,
 कुमा, आचा, कप्प)। °इट्ट वि [°इष्ट]
 मन प्रिय (पउम ८५, २३)। °उड्ढावण वि
 [°उड्ढायन] चित्ताकर्षण का साधन (गाया
 १, १४—पत्र १८७)। २ चित्त को शून्य
 बनानेवाला (विपा १, २—पत्र ३६)।
 °हिअ न [घृत] घी (सुख १८, ४३)।
 हिअउल्ल (अप) देखो हिअय = हृदय (कुमा)।
 हिअंकर पु [हितकर] राम-पुत्र कुश के पूर्व
 जन्म का नाम (पउम १०४, २६)।
 हिअड } (अप) देखो हिअय = हृदय (हे
 हिअडुल्ल } ४, ३५०, पि ५६६, सण)।
 हिअय न [हृदय] १ अन्तःकरण, हिया, मन
 (हे १, २६६, स्वप्न ३३, कुमा, गउड, द
 ४६, प्रासू ४४)। २ वक्षस्, छाती (से ४,
 २१)। ३ पर ब्रह्म (प्राप्र)। °गमणीअ वि
 [°गमनीय] हृदयगम, मनोहर (सम ६०)।
 °हारि वि [°हारिन्] चित्ताकर्षक (उप
 ७२८ टी)।

हिअय देखो हिअ = हित, 'कुट्टेहि जेहि
 जणो अयाणगो हिअयमगम्मि' (उप ७६८
 टी)।
 हिअयंगम वि [हृदयंगम] मनोहर, चित्ता-
 कर्षक (दे १, १)।
 हिआली स्त्री [हृदयाली] काव्य-समस्या
 विशेष, शूद्रायक काव्य-विशेष (वज्जा
 १२४)।
 हिइ स्त्री [हृति] १ अपहरण। २ न. स्वा
 नान्तर मे ले जाना (संक्षि ५)।
 हिएसय वि [हितैपरु] हितेच्छु, हित चाहने-
 वाला (उत्त ३४, २८)।
 हिएसि वि [हितैपिन्] ऊपर देखो (उत्त
 १३, १५, उप ७२८ टी; सुपा ६०४,
 पुष्प १०)।
 हिओ अ [ह्यस्] गत कल (अभि ५६,
 प्राप, पि १३४)।
 हिंग पुं [दे] जार, उपर्षित (दे १, ४)।
 हिंगु पुंन [हिङ्गु] १ वृक्ष-विशेष, हींग का
 गाछ (परण १—पत्र ३४)। २ हींग, 'इए
 लोणे हिण्ण सकामण फोडणे धूमे' (पिंड २५०,
 स २५८, चार ७)। °सिच पु [°शिव]
 व्यन्तर देव-विशेष (दसनि १, ६६)।
 हिगुल पुन [हिङ्गुल] पार्थिव धातु-विशेष,
 हिगुल, मिगरफ (परण १—पत्र २५, ती
 २, जो ३, सुख ३६, ७५)।
 हिगुल पुंन [हिङ्गलु] ऊपर देखो (उत्त ३६,
 ७५, कप्प)।
 हिंगोल पुन [दे] मृतक-भोजन, किसी के
 मरण के उपलक्ष्य में दी जाती जमीन,
 आदि। २ यज्ञ आदि के यात्रा के उपलक्ष्य में
 किया जाता जोमनवार (आचा २, १,
 ४, १)।
 हिचिअ न [दे] एक पैर से चलने की बाल-
 कीड़ा (दे ८, ६८)।
 हिजोर न [हिजोर] शृङ्खलक, सिकरी,
 सकिल (दे ६, ११६, गउड)।
 हिंड सक [हिण्ड] १ भ्रमण करना। २
 जाना, चलना। हिंडइ (सुपा ३८४, महा)
 हिंडिज्जा (अध २५४)। कर्म, हिंडिज्जइ (प्रासू
 ४०)। वक्र, हिंडत (गा १३८)। कृ हिंडि-

अणुग्यास सक [अनु + ग्रासय्] खीलाना, भोजन कराना, 'असण वा पाण वा खाइम वा साइम वा अणुग्यासेज वा अणुपाएज वा' (निसी ७) । वहु अणुग्यासत (नित् ७) ।

अणुचय पु [अनुचय] फैलाकर इकट्ठा करना (उप पृ १५) ।

अणुचर सक [अनु + चर्] १ मेवा करना । २ पीछे-पीछे जाना, अनुसरण करना । ३ अनुष्ठान करना । अणुचरइ (आरा ६) । अणुचरति (स १३०) । कर्म अणुचरिजइ । (विसे २५५४) । वहु अणुचरत (पुष्क ३१३) सक अणुचरित्ता (चउ १४) ।

अणुचर देखो अणुअर (उत्त २८) ।

अणुचरग वि [अनुचरक] मेवा करनेवाला (पव ६६) ।

अणुचरिय वि [अनुचरित] अनुष्ठित, विहित, किया हुआ (कप्प) ।

अणुचि सक [अनु + च्य] मरना, एक जन्म से दूसरे जन्म में जाना । सक अणुचिऊण (महा) ।

अणुचित सक [अनु + चिन्त] विचारना, याद करना, मोचना । अणुचिते (सया ६६) । वहु अणुचितेमाण (राया १, १) । सक अणुचीइ, अणुचीति, अणुवीइ (आचा, सूय १, १, ३, १३, दम ७) ।

अणुचितण न [अनुचिन्तन] मोच-विचार, पर्यालोचन (आव ४) ।

अणुचिता बी [अनुचिन्ता] ऊपर देखो (आव ४) ।

अणुचिट्ट सक [अनु + स्था] १ अनुष्ठान करना । २ करना । अणुचिट्टइ । (महा) ।

अणुचिण वि [अनुचीण] १ अनुष्ठित, आचरित, विहित, 'मोहतिगिच्छा य कया, विरिया-यारो य अणुचिएणो' (ओष २४६) । २ प्राप्त, मिला हुआ, 'कायसफासमणुचिएणा एगइया पाणा उहाइया' (आचा) । ३ परिणमित (जोव १) ।

अणुचिणव वि [अनुचीर्णवन] जिम्मे अनुष्ठान किया हो वह (आचा) ।

अणुचिन्न देखो अणुचिण (सुपा १६२, रयण ७५, पुष्क ७२) ।

अणुचिय वि [अनुचित] अयोग्य (बृह १) । अणुचीइ } देखो अणुचिन् । अणुचीति }

अणुच वि [अनुच] ऊचा नहीं, नीचा । 'कुइय वि [कुचिऊ] नीची और अस्थिर शय्या वाला (कप्प) ।

अणुच्छदत वि [अनुत्सहमान] उन्माह नहीं रखना हुआ (पउम १८, १८) ।

अणुच्छत्त वि [अनुत्तिप्त] नहीं छोड़ा हुआ, अ यत्त (गउड २३८) ।

अणुच्छत्त वि [अनुत्थित] १ गर्व-रहित, विनोद । २ स्फोट, समृद्ध । ३ सब में उन्नत, सर्वाच्च 'पडिद्व नजर तुम, नारदचय पयान-वियटोप । गहवनयमणुच्छिते धुवेव्व, पण्यत्तइ एरिद' (गउड) ।

अणुच्छद वि [अनुत्क्षिप्त] अत्यक्त, नहीं छोड़ा हुआ (गा १०६) ।

अणुज पु [अनुज] छोटा भाई (स ३८८) ।

अणुजत्त न [अनुयात्र] यात्रा में, 'अणुयात्रा अणुजत्त निगमो पेच्छइ कुमुमिय चूय' (महा) ।

अणुनत्ता बी [अनुयात्रा] निर्गम, नि मरण (पिड ८८) ।

अणुजा मक [अनु + या] अनुसरण करना, पीछे चलना । अणुजाइ (विसे ७१६) ।

अणुजाइ वि [अनुयायिन] अनुसरण करने-वाला (मुपा ८०५) ।

अणुजाइ बी [अनुयाति] अनुसरण (धर्म-वि ८६) ।

अणुजाण न [अनुयान] १ पीछे-पीछे चलना । २ महोत्सव-विशेष, रथयात्रा (बृह १) ।

अणुजाण नक [अनु + जा] अनुमति देना, सम्मति देना । अणुजाणइ (उव) । भूना. अणुजाणित्ता (वि ११७) । हेहु, अणुजा गित्तप (ठा २, १) ।

अणुजणण न [अनुजान] अनुमति, सम्मति (सूय १, ६) ।

अणुजाणावण न [अनुज्ञापन] अनुमति लेना, अणुजाणावणविहिता' (पचा ६, १३) ।

अणुजाणिय वि [अनुज्ञात] सम्मन, अनुमन (मुपा ५८४) ।

अणुजाय वि [अनुयात] १ अनुगत, अनुसृत (उप १३७ टी) ।

अणुजाय वि [अनुजान] १ पीछे में उत्पन्न । २ महण नुत्प 'वमभागुजाए' (नुज १२) ।

अणुजीव मक [अनु + जीव] आश्रय करना । अणुजीवनि (उत्त १८, १८) ।

अणुनीवि वि [अनुजीविन] १ आश्रित, नीवर, नेवर पयण, चिय अणुजीविच्छदे' (मुपा ३३७ पाय, म ८६) । 'तण न [८६] आश्रय नीलगे (वि १६७) ।

अणुजुज मक [अनु + युज्] प्रवृत्त करना । कर्म अणुजुजने (सम्म २२३) ।

अणुजुत्ति बी [अनुयुक्ति] योग्यवृत्ति, उचित न्याय (नूय १, ३, ३) ।

अणुजेदु वि [अनुजेदु] १ बड़े के नन्दीक का (आपन) । २ छोटा, उतरना (पउम २२, ७६) ।

अणुजोग देवो अणुओअ (ठा १-१) ।

अणुज वि [अनुज] उन्माह-रहित अनुत्पात्री हताश (रप्प) ।

अणुज वि [अनोजर] तेजस्विन, फाँटा, 'अणुज शैगवयण विहइ' (कप्प) ।

अणुज वि [अनूय] उद्देश्य नक्ष (धर्म १) ।

अणुजा बी [अनुजा] अनुमति सम्मति (पउम ३८, २४) ।

अणुजा देवो अणुजा (आचा २, १५ ३) ।

अणुजि न वि [अनुजित] बल-रहित, निर्बल (बृह ३) ।

अणुजुय वि [अनुजुय] अमरन वक्र, कवरी (गा ७८६) ।

अणुज्झा नक [अनु + ध्या] चिन्तन करना, ध्यान करना । नक अणुज्झाइत्ता (आपम) ।

अणुज्झाण न [अनुध्यान] चिन्तन, विचार (आपम) ।

अणुभा देवो अणुभा । वहु अणुभात्त (कुमा) ।

अणुभिअ वि [दे] १ प्रयत्न, प्रयत्न-शील । २ जागृत, जाग्रत (पड्) ।

अणुभिज्जि वि [अनुचयिन] क्षीण होने-वाला (वजा १, २) ।

अणुद्रा सक [अनु + द्रा] १ अनुष्ठान करना, शास्त्रीय विधान करना । २ करना । वहु अणु-

यव्व (उप पृ ५०, महा) । सकृ. हिंडिय (महा) । हेकृ. हिंडिउं (महा) ।

हिङग वि [हिण्डक] १ भ्रमण करनेवाला (पंचा १८, ८) । २ चलनेवाला (अणु १२६) ।

हिङण न [हिण्डन] १ परिभ्रमण, पर्यटन (पउम ६७, १८, स ४६) । २ गमन, गति (उप १०१७) । ३ वि. भ्रमण-शील (दे २, १०६) ।

हिंडि ओ [हिण्ड] परिभ्रमण, पर्यटन; 'वासुदेवाइणो हिंडी राय-वसुववाण वि । तारुण्येवि कह हुंता न हुंतं जइ कम्मयं (कर्म १६) ।

हिंडि पुं [हिण्डिन्] रावण का एक सुभट (पउम ५६, ३३) ।

हिंडिअ वि [हिण्डित] १ चला हुआ, चलित, गत (महा ३४) । जहाँ पर जाया गया हो वह, 'हिंडियं असेसं गाम' (महा ६१) । ३ न. गति, गमन, विहार (राया १, ६—पत्र १६५, शोध २५४) ।

हिंडुअ पुं [दे. हिण्डुक] आत्मा, जीव, जन्मान्तर माननेवाला आत्मा, हिन्दु (मग २०, २—पत्र ७७६) ।

हिंडोल न [दे.] १ खेत में पशुओं को रोकने की आवाज । २ क्षेत्र की रक्षा का यन्त्र (दे ८, ६६) ।

हिंडोल देखो हिंदोल (स ५२१) ।

हिंडोलण न [दे.] १ रत्नावली, रत्नमाला । २ क्षेत्र की रक्षा की आवाज, खेत में पशु आदि को रोकने का शब्द (दे ८, ३६) ।

हिंडोलय देखो हिंडोल (दे ८, ६६) ।

हिंताल पुं [हिंताल] धूल-विशेष (उप १०३१ टी. कुमा) ।

हिंद सक [ग्रह्] स्वीकार करना, ग्रहण करना । हिंदइ (प्राकृ ७०, घात्वा १५७) । कर्म. हिदिजइ (घात्वा १५७) । सकृ. हिदिऊण (प्राकृ ७०, घात्वा १५७) ।

हिंदोल सक [हिन्दोलय्] झूलना । वक्र. हिंदोलअत (कप्पु) ।

हिंदोल पु [हिन्दोल] हिंडोला, झूलना, दोला (कप्पु) ।

हिंदोलग न [हिन्दोलन] झूलना, दोलन (कप्पु) ।

हिंविअ न [दे] एक पैर से चलने की बाल-क्रीड़ा (दे ८, ६८) ।

हिंस सक [हिंस] १ वध करना । २ पीटा करना । हिंसइ, हिंसई (आचा, पव १२१) । भूका. हिंसिमु (आचा, पव १२१) । भवि. हिंसिस्सइ, हिंसिस्सति, हिंसेही (वि ५१६, आचा, पव १२१) । वक्र. हिंसमाण (आचा) । कृ. हिंस, हिंसियव्व (उप ६२५, पणह १, १—पत्र ५, २, १—पत्र १००, उव) ।

हिंस वि [हिंस] १ हिंसा करनेवाला, हिंसक (उत्त ७, ५, पणह १, १—पत्र ५, विसे १७६३, पंचा १, २३, उप ६२५, स ५०) । °पपदाण, °पपयाण न [°प्रदान] हिंसा के साधन-भूत खड्ग आदि का दान (औप, राज) ।

हिंस° देखो हिंसा (पणह १, १—पत्र ५) । °पेहि वि [°प्रेक्षिन्] हिंसा को देखनेवाला (ठा ५, १—पत्र ३००) ।

हिंसअ } वि [हिंसक] हिंसा करनेवाला
हिंसग } (मग, शोध ७५२, उत्त ३६, २५६, उव, कुप्र २६) ।

हिंसण न [हिंसन] हिंसा, 'अहिंसण सव्व-जियाण वम्मो' (सत्त ४२) ।

हिंसा ओ [हिंसा] १ वध, घात (उवा, महा, प्रासू १४३) । २ वध, वधन आदि से जीव को की जाती पीड़ा, हैरानी (ठा ४, १—पत्र १८८) ।

हिंसा ओ [हेपा] अश्व का शब्द, 'गयगळि हयहिंसं च तप्पुरओ केवि कुव्वता' (सुपा १६४) ।

हिंसिय वि [हिंसित] हिंसा-प्राप्त (राज) ।

हिंसिय न [हेपित] अश्व शब्द (पउम ६, १८०, दस ३, १ टी) ।

हिंसी ओ [हिंसी] लता-विशेष (गठड) ।

हिंदु पु [दे] हिन्दू, हिन्दुस्तान का निवासी (पिंग) ।

हिंका ओ [दे] रजकी, घोविन (दे ८, ६६) ।

हिंका ओ [हिंका] रोग-विशेष, हिचकी (सुपा ४८६) ।

हिंकास पुं [दे] पट्टा, कादा (दे ८, ६६) ।

हिंकिअ न [दे] हेपा-रव, अश्व-शब्द (दे ८, ६८) ।

हिज्ज देखो हर = ह ।

हिज्ज° देखो हा ।

हिज्जा } अ [दे. ह्यस] गत कल (पड;
हिज्जो } दे ८, ६७, पात्र, प्रयौ १३, पि १३४) ।

हिज्जो अ [दे] आगामी कल (दे ८, ६७) ।

हिट्ट वि [दे] आकुल (दे ८, ६७) ।

हिट्ट देखो हेट्ट (सुर ४, २२५, महा, सुपा ६८) ।

हिट्ट देखो हट्ट = हट्ट (उव, सम्मत ७५) ।

हिट्टाहिड वि [दे] आकुल (दे ८, ६७) ।

हिट्टिम देखो हेट्टिम (सिरि ७०८, सुज १०, ५ टी) ।

हिट्टिल देखो हेट्टिल (सम ८७) ।

हिडिअ पु [हिडिअ] १ एक विद्याधर राजा (पउम १०, २०) । २ एक राक्षस (वेणी १७७) । ३ देश-विशेष (पउम ६८, ६५) ।

हिडिवा ओ [हिडिम्वा] एक राक्षसी, हिडिम्वा राक्षस की वहिन (हि ४, २६६) ।

हिडोलणय देखो हिडोलण (दे ८, ७६) ।

हिडु वि [दे] वामन, खर्व (दे ८, ६७) ।

हिणिद वि [भणित] उक्त, कथित, 'खणपा-हुणिआ देअरजाआ ए सुहम किं ति दे ह- (हि)णिदा' (गा ६६३) ।

हिण्ण सक [ग्रह्] ग्रहण करना । हिण्णइ (घात्वा १५७) ।

हिण्ण (अप) देखो हीण (पिंग) ।

°हिण्ण देखो भिण्ण (गा ५६३) ।

हितअ } (पे) देखो हिअअ = हृदय (प्राप्र,
हितप } पड, पात्र १६, पि २५४, हे ४, ३१०, कुमा, प्राकृ १२४) ।

हित्य वि [दे] १ लजित (दे ८, ६७, घण ६) । २ अस्त, भय-भीत (दे ८, ६७, हे २, १३६, प्राप्र, गा ३८६, ७६३, सुर १६, ६१, कुमा) । ३ हिंसित, मारा हुआ, 'हित्यो व ख हित्यो मे सत्तो, भणियँ व न भणियं मोस' (वव १) ।

हित्या ओ [दे] लजा, शरम (दे ८, ६७) ।

(कर्म) (भग १, २, ३), 'उदिरण = उदित' (भग १, ४, ७ टी) ।

अणुदिण्ण } व [अनुदीरित] १ जिसकी
अणुदिन्न } उदीरणा दूर भविष्य में हो ।
२ जिसकी उदीरणा भविष्य में न हो (भग १, ३) ।

अणुदिय वि [अनुदित] उदय को अप्राप्त
'मिच्छत्त जमुदिन्न न खीण अणुदिय च उर-
सन' (भग १, ३ टी) ।

अणुदियह न [अनुदिवस] प्रतिदिन, हमेशा
(मुर १, ११५) ।

अणुदिव न [दे] प्रभान, प्रातः काल (पङ्) ।
अणुदिमा } स्त्री [अनुदिक्] विदिक्,
अणुदिसी } ईशान कोण आदि विदिशा (विने
२७०० टी, पि ६८, ४१३, कप्प) ।

अणुद्विट् वि [अनुद्विट्] जिसका उद्देश्य न
किया गया हो वह (पण्ह २, १) ।

अणुद्व वि [अनुर्ध्व] ऊचा नहो, नीचा
(कुमा) ।

अणुद्धय वि [अनुद्धत] मरल, भद्र, विनयी
(उप ७६८ टी) ।

अणुद्धरि पु [अनुद्धरिन्] एक क्षुद्र जन्तु,
कुशु (कप्प) ।

अणुद्धिय वि [अनुद्धृत] १ जिसका उद्धार
न किया गया हो वह । २ बाहर नहीं निकाला
हुआ, 'ज कुणइ भावसल्ल अणुद्धिय इत्य
सव्वदुहमूल' (था ८०) ।

अणुद्धयुय वि [अनुद्धूत] अपरित्यक्त, नही
छोड़ा हुआ (कप्प) ।

अणुधम्म पु [अनुधम्म] गृहस्थ-धर्म (विसे) ।
अणुधम्म पु [अनुधम्म] अनुकूल—हितकर
धर्म 'एसोणुयस्मो मुणिएणा पवेइअ' (सूत्र
१२१) । 'चारि वि [चारिन्] हिन-
वर धर्म का अनुयायी, जैन-धर्मी (सूत्र १,
२, २) ।

अणुधम्मिय वि [अनुधार्मिक] धर्म के अनु-
कूल, धर्मोचित, 'एय नु अणुधम्मिय तस्स'
(आचा) ।

अणुवाव सक [अनु + धाव्] पीछे दौड़ना ।
वक्तृ. अणुवाचत (मे ४, २१) ।

अणुवावण सक [अनुधावन] पीछे दौड़ना
(मुपा ५०३) ।

अणुधाविर वि [अनुधावित्] पीछे दौड़ने-
वाला (उप ७२८ टी) ।

अणुनाइ वि [अनुनादिन्] प्रतिध्वनि करने-
वाला (कप्प) ।

अणुनाय वि [अनुज्ञात] अनुमन, जिमको
अनुमति दी गई हो वह, 'आहवणे मोक्कलय
अणुनायाए तए नाह' (मुपा ४७७) ।

अणुनास देखो अणुणास (जीव ३ टी) ।

अणुन्नव देखो अणुणव । वक्तृ. अणुन्नवेमाण
(ठा ५, ३) । कृ. अणुन्नवेयव्व (कम) ।
संक्र. अणुन्नवेत्ता (कम) ।

अणुन्नवगा देखो अणुणवणा (शोध ६३०,
कस) ।

अणुन्नवणी देखो अणुणवणी (ठा ८, १) ।

अणुन्ना देखो अणुण्णा (मुर ४, १३३, प्रासू
१८१) ।

अणुन्नाय देखो अणुण्णाय (शोध १, महा) ।

अणुपथ पु [अनुपथ] १ समीप का मार्ग
(कस) । २ मार्ग के समीप, रास्ता के पाम
(वृह २) ।

अणुपत्त वि [अनुप्राप्त] प्राप्त, मिला हुआ
(मुर ४, २११) ।

अणुपन्न वि [अनुपन्न] प्राप्त (कुप्र ४०१) ।

अणुपयट् वि [अनुप्रवृत्त] अनुसृत, अनुगत
(महा) ।

अणुपयाण न [अनुप्रदान] दान का बदला
प्रतिग्रहण (संवाध ३४) ।

अणुपरियट् सक [अनुपरि + अट्] धूमना,
परिभ्रमण करना । संक्र. अणुपरियट्तिताण,
'देवे ए भते महिड्डिए, पभू लवणन-
मुइ अणुपरियट्तिताण हव्वमाणच्छित्तए ?' (भग
१८, ७) । कृ. अणुपरियट्ठियव्व (णया १,
६) । हेक अणुपरियट्ठेउ (णया १, ६) ।

अणुपरियट् अक [अनुपरि + वृत्] फिरना,
फिरते रहना, 'डुक्खाणमेव आवट्ठ अणुपरिय-
ट्ठे' । (आचा) । वक्तृ. अणुपरियट्माण
आचा) । संक्र. अणुपरियट्तिता (शोप) ।

अणुपरियट्ठण न [अनुपर्यटन] परिभ्रमण
(सूत्र १, १, २) ।

अणुपरियट्ठण न [अनुपरिवर्तन] परिवर्तन,
फिरना (भग १, ६) ।

अणुपरिवट् देखो अणुपरियट् = अनुपरि +
वृत् । वक्तृ. अणुपरिवट्माण (पि २८६) ।

अणुपरिवाडि, °डी स्त्री [अनुपरिपाटि, °टी]
अनुक्रम (मे १५ ६६, पउम २०, ११, ३२,
१६) ।

अणुपरिहारि वि [अणुपरिहारिन्] 'परि-
हारी' को मदद करनेवाला, त्यागी मुनि की
सेवा-गुथूपा करनेवाला (ठा ३, ४) ।

अणुपरिहारि वि [अनुपरिहारिन्] ऊपर
देखो (ठा ३, ४) ।

अणुपवन्न वि [अनुपपन्न] प्राप्त (सूत्र २,
३, २१) ।

अणुपवाएत्तु वि [अनुप्रवाचयित्] पढ़ाने-
वाला, पाठन, उपाध्याय (ठा ५, २) ।

अणुपवाय देखो अणुण्णवाय = अनुप्र +
वाचय् ।

अणुपविट् वि [अनुप्रविष्ट] पीछे से प्रविष्ट
(णया १, १, कप्प) ।

अणुपविस सक [अनुप्र + विश्] १ पीछे
से प्रवेश करना । २ प्रवेश करना, भीतर
जाना । अणुपविसइ (कप्प) । वक्तृ. अणुप-
विसन (निवू २) । संक्र. अणुपविसित्ता
(कप्प) ।

अणुपवेस पु [अनुप्रवेश] प्रवेश, भीतर
जाना । (निवू ७) ।

अणुपस्स मक [अनु + दृश्] पर्यालोचन
करना, विवेचना करना । संक्र. अणुपस्सिय
(सूत्र १, २, २) ।

अणुपस्सि वि [अनुदर्शिन्] पर्यालोचक,
विवेचक (आचा) ।

अणुपाल मक [अनु + पालय्] १ अनुभव
करना । २ रक्षण करना । ३ प्रतीक्षा करना,
राह देखना । अणुपालेइ (महा), वक्तृ. 'साया-
सोक्कम् अणुपाल्लेण' (पक्खि), अणुपालित,
अणुपालेमाण (महा) । मक्तृ. अणुपालेऊण,
अणुपालित्ता, अणुपालिय (महा, कप्प, पि
५७०) ।

अणुपालण न [अनुपालन] रक्षण, प्रति-
पालन (पंचमा) ।

अणुपालणा देखो अणुपालणा (विसे २५२०
टी) ।

हिदि अ [हृदि] हृदय मे 'हिदि निरुद्धवाञ्छव'
(विसे २००)।

हिद्ध वि [दे] सस्त, विसका हुआ, विसक
कर गिरा हुआ (पङ् १)।

हिम न [हिम] १ तुषार, आकाश से गिरता
जल-कण (पात्र, आचा, से २, ११)। २
चन्दन, श्रीखण्ड (मे २, ११)। ३ शीत,
ठडी, जाडा (बृह १)। ४ वर्ष, जमा हुआ
जल (कप्प जी ५)। ५ पृष्ठ छत्रों नरक-
पृथिवी का पहला नरकेन्द्रक—नरक-स्यान
(देवेन्द्र १२)। ६ ऋतु-विशेष, मार्गशीर्ष तथा
पौष का महीना (उप ७२८ टी)। ७ कर पु
[कर] चन्द्रमा, चाँद (मुपा ५१)। ८ गिरि
पुं [गिरि] हिमाचल पर्वत (कुमा, भवि;
सण)। ९ धाम पुं [धामन्] वही (धम्म
६ टी)। १० नग पुं [नग] वही (उप पृ
३४८)। ११ यर देखो कर (पात्र)। १२ वत
पुं [वत्] १ वर्षधर पर्वत-विशेष, 'हिमवो
य महाहिमवो' (पउम १०२, १०५, उवा,
कप्प, इक)। २ हिमाचल पर्वत (पि ३६६)।
३ राजा अन्धकवृष्णि का एक पुत्र (अत ३)।
४ एक प्राचीन जैन मुनि, जो स्कन्दिलाचार्य
के शिष्य थे, 'हिमवतलमासमणे वदे' (एदि
५२)। ५ वाय पुं [पात] तुषार-पतन
(आचा)। ६ सीयल पुं [शीतल] कृष्ण
पुद्गल-विशेष (सुज २०)। ७ सेल पुं [शैल]
हिमालय पर्वत (उप २११ टी)। ८ गम पुं
[गम] ऋतु-विशेष, हेमन्त ऋतु (गा
३३०)। ९ णी ओ [नी] हिम-समूह
(कुप्र ३६७)। १० यल पुं [यल] हिमालय
पर्वत (मुपा ६३२)। ११ लय पुं [लय]
वही अर्थ (पउम १०, १३, गउड)।

हिर देखो किर = किल (हे २, १८६, कुमा)।

हिरडी ओ [दे] चील पक्षी की मादा (दे ८,
६८)।

हिरण्ण } न [हिरण्य] १ रजत, चाँदी
हिरण्ण } (उवा कप्प)। २ सुवर्ण, सोना
(आचा, कप्प)। ३ द्रव्य, धन (सूअ १, ३,
२, ८)। ४ कल पुं [कल] एक दैत्य (से
४, २२)। ५ गम्भ पुं [गम्भ] १ ब्रह्मा।
२ प्रथम जिन भगवान् (पउम १०६, १२),

'गम्भट्टिग्रस्त जस्त उ

हिरण्णवुद्धी सरुचणा णडिया।

तेणं हिरण्णगम्भो

जयम्मि उवगिज्जए उमभो।

(पउम ३, ६८)।

हिरि अक [ह्री] लजित होना। हिरिआमि
(अभि २५५)।

हिरि° देखो हिरि (गाया १, १६—पत्र २१७,
पङ्)। १ म वि [मन्] लज्जालु, शरमिन्दा
(उत्त ११, १३, ३२ १०३, पिड ५२६)।
२ ण पुं [णेर] तृण-विशेष, सुगन्धवाला
(पात्र, उत्तनि ३)।

हिरि पुं [हिरि] भातुक भातू का शब्द (पउम
४५)।

हिरिअ वि [ह्रीत] लज्जित (हे २, १०४)।

हिरिया ओ [ह्रीरा] लज्जा, शरम (उप
७०६, कुमा)।

हिरिच न [दे] पल्लव, क्षुद्र तलाव (दे ८,
६६)।

हिरिमथ पु [दे] चना, अन्न-विशेष (दे ८,
७०)। देखो हरिमथ।

हिरिली ओ [दे] कन्द-विशेष (उत्त ३६,
६८)।

हिरिवंग पु [दे] लण्ड, लट्टी (दे ८, ६३)।

हिरि ओ [ह्री] १ लज्जा, शरम (आचा, हे
२, १०४)। २ महापद्म-हृद की अचिष्ठात्री
देवी (ठा २, ३—पत्र ७२)। ३ उत्तर
रुचक-पर्वत पर रहनेवाली एक दिक्कुमारी
देवी (ठा ८—पत्र ४३७)। ४ सत्पुरुष
नामक किपुल्लेन्द्र की एक अग्र महिषी (ठा
४, १—पत्र २०४)। ५ महाहिमवान् पर्वत
का एक कूट (इक)। ६ देवप्रतिमा-विशेष
(गाया १, १ टी—पत्र ४३)।

हिरिअ देखो हिरिअ (हे २, १०४)।

हिरि देखो हरे (प्राप्र)।

हिला ओ [दे] भुजा, हाथ,

'वञ्चामो पेच्छता वणदलपावरण-

साहुलिहिलाओ।'

(पुट्ठी० चं०-शातिसुरि)

साहुलिहिलाओ ति शाखाभुजा।

(पुट्ठी० चं० प्रथमभव, सकेतकार रत्नप्रभक्त)।

हिला } ओ [दे] बाहुका, बाहु, रंती (दे ८,
हिला } ६६)।

हिरिय पुंओ [दे] कीट-विशेष, शीन्द्रिय जन्तु
की एक जाति (परण १—पत्र ४५)।

हिरिरी ओ [दे] मछली पकड़ने का जाल-
विशेष (विपा १, ८—पत्र ८५)।

हिल्लूरी ओ [दे] लहरी, तरङ्ग (दे ८, ६७)।

हिल्लेडण न [दे] खेत में पशुओं को रोकने
की आवाज (दे ८, ६६)।

हिय देयो ह्व = नू। ह्विइ (हे ४, २३८)।

हिसोहिना ओ [दे] स्पर्धा (दे ८, ६१)।

ही अ [ही] इन अर्थों का सूचक अव्यय—
१ विस्मय, आश्चर्य (सिरि ४७३)। २ दुःख
(उप ५६७ टी)। ३ विपाद, खेद। ४ शोक,
दिलगीरी (आ १६, कुप्र ४३६, कुमा, रमा,
मन ३७)। ५ वितर्क (सिरि २६८)। ६
कन्दर्प का प्रतिरेक। ७ प्रशान्त भाव का
अतिशय (अणु १३६)।

ही देखो हिरि (विसे २६०३)। १ म वि [मन्]
लज्जाशील, लज्जालु (सूअ १, २, २, १८)।

हीं अ [हीं] मन्त्राक्षर-विशेष, मायावीज
(सिरि १२१०)।

हीण वि [हीन] १ न्यून, कम, अपूर्ण (उवा,
गाया १, १४—पत्र १६०)। २ रहित,
वर्जित, 'हयं नाण कियमहीण' (हे २, १०४)।
३ अधम, हलका। ४ निन्द्य, निन्दनीय
(प्रासू १२५, उप ७२८ टी)। ५ पु.
प्रतिवादि-विशेष (हे १, १०३)। ६ जाडल
वि [जातिक] अधम जाति का, नीच
जाति का (उप ७०८ टी)। ७ वाइ पुं
[वादिन्] वादि-विशेष (मुपा २८२)।

हीण वि [हीण] भीत (विपा १, २ टी—
पत्र २८)।

हीमाणहे } (शौ) अ १ विस्मय, आश्चर्य।
हीमादिके } २ निर्वेद (हे ४, २८२, कुमा,
प्राक ६८, मुच्छ ००२, २०६)।

हीयमाण देखो हा।

हीयमाणरा } न [हीयमानक] अवविज्ञान
हीयमाणय } का एक भेद, क्रमशः कम होता
जाता अवविज्ञान (ठा ६—पत्र ३७०,
एदि)।

अणुवज्ज } वि [अनुवज्ज] ? वंघा हुआ,
अणुवज्ज } सबद्ध (मे ११, ६०) । २ सतत,
अविच्छिन्न, अणुवदतिव्वेरा परोपर वेयण
उदीरेति' (परह १, १) । ३ व्याप्त (एयाया
१, २) । ४ प्रतिवद्ध (एयाया १, २) । ५
अन्यत, बहुत, 'अणुवदनिगतरवेयणामु' (परह
१, १) । ६ उत्पन्न (उत्तर ६२) ।

अणुवद वि [अनुवद] ? अनुगत (पचा ६,
२७) । १ पीछे वंघा हुआ (सिरि ४४४) ।

अणुवूह देखो अणुवूह ।

अणुवभड वि [अनुवभट] अनुदत्त, अनुत्वरण
(उत्तर २) ।

अणुवभूय वि [अनुवभूय] अप्रकट, अनुत्पन्न
(नाट) ।

अणुभअ देखो अणुभव = अनुभव (नाट) ।

अणुभव मक [अनु + भू] ? अनुभव करना,
जानना, समझना । २ कर्मफल को भोगना ।

अणुभवति (पि ४७५) । वहु, अणुभवत
(पि ८७५) । सक्र अणुभवतिअ, अणुभवित्ता
(नाट परह १, १) । हेक अणुभवित्
(उत्तर १८) ।

अणुभव पु [अनुभव] ? ज्ञान, बोध निश्चय
(पचा ५) । २ कर्मफल का भोग (विमे) ।

अणुभवण न [अनुभवन] ऊपर देखो (आव
४ विमे २०६०) ।

अणुभवि वि [अनुभविन] अनुभव करनेवाला
(विमे १६५८) ।

अणुभव्व वि [अनुभव्व] आमन्न भव्व
(मवोध ५४) ।

अणुभाग पु [अनुभाग] ? प्रभाव, माहात्म्य
(सूत्र १, ५१) । २ शक्ति, सामर्थ्य (परह २) ।

३ कर्मों का विपाक—फल (सूत्र १, ५, १) । ४
कर्मा का रस, कर्मों में फल उत्पन्न करने की
शक्ति, 'ताण रसो अणुभागो' (कम्म १, २ टी,
नव ३१) । ५ वध पु [वन्ध] कर्म-पुद्गलो
में फल उत्पन्न करने की शक्ति का बनना (ठा
४, २) ।

अणुभाय : पु [अनुभाव] ?-४ ऊपर देखा
अणुभाव } (प्रासू ३५, ठा ३, ३, गजड, आचा,
सम ६) । ५ मनोगत भाव की सूचक चेष्टा,
जैसे भाँह का चढ़ाना वगैरह (नाट) । ६ कृपा,
मेहरबानी (स ३५५) ।

अणुभावग वि [अनुभावक] वांछक, सूचक,
(आवम) ।

अणुभास मक [अनु + भाप्] ? अनुवाद
करना, कही हुई बात को उसी शब्द में शब्दा-
न्तर में या दूसरी भाषा में कहना । २ चिन्तन
करना 'अणुभासइ गुण्वयण' (आचू ६, वव
३) । वहु अणुभासयत, अणुभासमाग
(स १८४ विमे २५१२) ।

अणुभासग न [अनुभापण] अनुवाद, उक्त
वात का कहना (नाट) ।

अणुभासणा ली [अनुभापणा] ऊपर देखो
(ठा ५, ३, विमे २५२० टी) ।

अणुभासय वि [अनुभापक] अनुवादक, अनु-
वाद करनेवाला (विमे ३२१७) ।

अणुभासयत देखो अणुभास ।

अणुभुज मक [अनु + भुज्] भोग करना ।
वहु अणुभुजमाण (स १६) ।

अणुभूइ ली [अनुभूति] अनुभव (विमे
१६११) ।

अणुभूय वि [अनुभूत] ज्ञात निश्चित (महा) ।

पुव्व वि [पुव्वे] पहले ही जिसका अनुभव
हो गया हो वह (एयाया १, १) ।

अणुभूस मक [अनु + भूप्] भूषित करना,
शोभित करना । अणुभूमेदि (शा) (नाट) ।

अणुमड ली [अनुमति] अनुमोदन, सम्मति
(था ६) ।

अणुमतव्व देखो अणुमण (विमे १६६०) ।

अणुमग न [न] पीछे-पीछे, 'एव विचितयनी
अणुमगणेव चलियाह' (नुर ४, १४२ महा) ।

गामि वि [गामिन] पीछे-पीछे जानेवाला
(पि ८०५) ।

अणुमज्ज मक [अनु + मज्ज] विचार
करना । सक्र अणुमज्जत्ता (जीवग १६६) ।

अणुमण } सक्र [अनु + मन] अनुमति
अणुमन्न } देना, अनुमोदन करना । अणु-
मणो, अणुमन्नड (पि ४५७, महा) । वहु
अणुमणमाण (उवर ३१) । सक्र अणु-
मन्निउण (महा) ।

अणुमन्निय } वि [अनुमत] अनुमोदित,
अणुमय } सम्मत (उप पृ २६१) ।

अणुमर अक [अनु + मृ] ? मरना । २ सती
होना, पति के मरने से मर जाना, 'ज केव-

लियो अणुमरति' (आउ ३५) । भवि, अणु-
मरिहिड (पि ५२२) ।

अणुमर अक [अनु + मृ] क्रम से मरना, पीछे-
पीछे मरना, 'इय पापरमरणो अणुमरइ सह-
स्सजो जाव' (पिड २७४) ।

अणुमरण न [अनुमरण] ऊपर देखो (गजड) ।

अणुमहत्तर वि [अनुमहत्तर] सुविद्या का
प्रतिनिधि (निचू ३) ।

अणुमाण न [अनुमान] ? अदृश्य-ज्ञान, हेतु
के द्वारा अज्ञात वस्तु का निर्णय (गा ३, २५,
ठा ८, ८) ।

अणुमाण न [अनुमान] ? अभिप्राय-ज्ञान
(नृम १, १३, २०) । २ अनुसार (तदु २७) ।

अणुमाण मक [अनु + मानय्] अनुमान
करना । महु अणुमाणइत्ता (वव १) ।

अणुमाय वि [अणुमात्र] बहुत थोड़ा, थोड़ा
परिमाणवाला (दम ५, २) ।

अणुमाल अक [अनु + मालय्] शोभित
होना, चमकना । सक्र अणुमालि वि (भवि) ।

अणुमिण सक्र [अनु + मा] अटकल से
जानना । कर्म, अणुमिणिज्ज (धर्मस १२१६)

अणुमीयण (दमनि ८, ३०) ।

अणुमेअ वि [अनुमेय] अनुमान के योग्य
(मै ७३) ।

अणुमेरा ली [अनुमर्यादा] मर्यादा हद
(कय) ।

अणुमोडय वि [अनुमोदित] अनुमत समत,
प्रशमित (आउर, भवि) ।

अणुमोय मक [अनु + मुद] अनुमति देना,
प्रशंसा करना । अणुमोयड (उव) । अणुमोएमो
(चउ ५८) ।

अणुमोयग वि [अनुमोदक] अनुमोदन करने
वाला (विसे) ।

अणुमोयण न [अनुमोदन] अनुमति, सम्मति,
प्रशंसा (उव, पचा ६) ।

अणुमुक वि [अनुमुक्त] नहीं छोड़ा हुआ
(परह १, ४) ।

अणुमुह वि [अनुमुख] असंमुख, विमुख,
'किह साहुस्स अणुमुहो चिट्ठामि ति' (महा) ।

अणुय पु [अणुक] धान्य-विशेष (पव १५६) ।

अणुयपा देखो अणुकपा (गजड, म २१४) ।

अणह न [अनभस्] भूमि, पृथिवी (से ६, ३) ।
 अणहप्पणय वि [दे] अनष्ट, विद्यमान (दे १, ४८) ।
 अणहवणय वि [दे] तिरस्कृत, भर्त्सित (पड) ।
 अणहा स्त्री [अधुना] इस समय (प्राक् ८०) ।
 अणहारय पुं [दे] खल्ल, खला, जिसका मध्य-नीचा हो वह जमीन (दे १, ३८) ।
 अणहिअ वि [अहृदय] हृदय-रहित, निष्ठुर, निर्दय (प्राप, गा ४१) ।
 अणहिगय वि [अनधिगत] १ नहीं जाना हुआ । २ पु वह माधु, जिसको शास्त्रों का ज्ञान न हो, अगोतायं (वव १) ।
 अणहिण्ण देखो अणभिण्ण (प्राप) ।
 अणहियास वि [अनध्यास] अनहिण्णु, महन नहीं करनेवाला (उव) ।
 अणहिल १ न [अणहिल्ल] गुजरात देश की अणहिल्ल १ प्राचीन राजधानी, जो आजकल 'पाटन' नाम से प्रसिद्ध है (ती २६, कुमा) ।
 *वाडय न [पाटक] देखो अणहिल (पु १०, मुणि १०८८८) ।
 अणहीण वि [अनधीन] स्वतन्त्र, अनायत्त (सग १६१) ।
 अणहुल्लिय वि [दे] जिसका फल प्राप्त न हुआ हो वह (सम्मत् १४३) ।
 अणाइ वि [अनादि] आदि-रहित, नित्य (सम १२५) । *णिहण, निहण वि [निधन] आद्यन्त-वर्जित, शाश्वत (उव, सम्म ६५, भाव ४) । *मत, वत वि [मत्] अनादि काल से प्रवृत्त (पउम ११८, ३२, भवि) ।
 अणाडज्ज वि [अनादेय] १ अनुपादेय, ग्रहण करने के योग्य । २ नाम-कर्म का एक भेद, जिसके उदय से जीव का वचन, युक्त होने पर भी प्राय नहीं समझा जाता है (कम्म १, २७) ।
 अणाइय वि [अनादिक] आदि-रहित, नित्य (सम १२५) ।
 अणाइय वि [अज्ञातिक] स्वजन-रहित, अकेला (भग १, १) ।
 अणाइय वि [अणातीत] पापों, पापिष्ठ (भग १, १) ।

अणाइय पु [अणातीत] संसार, दुनिया (भग १, १) ।
 अणाइय वि [अनादृत] जिसका आदर न किया गया हो वह (उप ८३३ टी) ।
 अणाइल वि [अनाविल] १ अकल्पित, निर्मल (परह २, १) ।
 अणाईअ देखो अणाइय (उप १०३१ टी; पि ७०) ।
 अगाउ १ पुं [अनायुक्क] १ जिन-देव (सूअ अणाउय १, ६) । २ मुक्तात्मा, सिद्ध (ठा १) ।
 अणाउल वि [अनाकुल] अव्याकुल, धीर (सूअ १, २, २; णाय १, ८) ।
 अणाउत्त वि [अनायुक्त] उपयोग-शून्य, बे-ह्याल, असावधान (औप) ।
 अणाएज्ज देखो अगाइज्ज (सम १५६) ।
 अणागय पुं [अनागत] १ भविष्य काल, 'अणागयमपस्सता, पच्चुप्पन्नगवेसगा । ते पच्छा परितप्पति, खीणे आउम्मि जीव्वणे' (सूअ १, ३, ४) । २ वि. भविष्य में होनेवाला (सूअ १, २) । *द्धा स्त्री [अद्धा] भविष्य काल (नव ४२) ।
 अणागलिय वि [अनर्गलित] नहीं रोका हुआ (उवा) ।
 अणागलिय वि [अनाकलित] १ नहीं जाना हुआ, अलक्षित (णाय १, ६) । २ अपरिमित, 'अणागलियतिव्वचंढरोसं मण्यरुवं विउव्वइ' (उवा) ।
 अणागार वि [अनाकार] १ आकार-रहित, आकृति-शून्य (ठा १०) । २ विशेषता-रहित (कम्म ४, १२) । ३ न दर्शन, सामान्य ज्ञान (सम ६५) ।
 अणाजीव वि [अनाजीव] १ आजीविका-रहित । २ आजीविका की इच्छा नहीं रखने-वाला । ३ नि मृह, निरीह (दम ३) ।
 अणाजीवि वि [अनाजीविन्] ऊपर देखो, 'अणिलाई अणाजीवी' (पडि, निचू १) ।
 अणाठ पु [दे] जार, उपति (दे १, १८) ।
 अणाठिय वि [अनादृत] १ जिसका आदर न किया गया हो वह, तिरस्कृत (भाव ३) । २ पु जम्बूद्वीप का अधिष्ठायाक एक देव (ठा २, ३) ।

३ स्त्री जम्बूद्वीप के अधिष्ठायाक देव की राज-धानी (जीव ३) ।
 अणाणुगामिय वि [अनानुगामिक] १ पीछे नहीं जानेवाला (ठा ५, १) । २ न अवधि-ज्ञान का एक भेद (एदि) ।
 अणादि देखो अणाइ (म ६८३) ।
 अणादिय १ देखो अणाइय (इक, परह १, १, अणादीय १ ठा ३, १) ।
 अणादेज्ज देखो अगाइज्ज (परह १, ३) ।
 अगाभिग्गह न [अनाभिग्रह] मित्यात्व का एक भेद (पच १, २) ।
 अगाभोग पुं [अनाभोग] १ अनुपयोग, बे-ह्याली, असावधानी (भाव ४) । २ न मित्यात्व-विशेष (कम्म ४, ५१) ।
 अणामिय वि [अनामिक] १ नाम-रहित । २ पुं असाध्य रोग (तदु) । ३ स्त्री, कनिष्ठायुली के ऊपर की अयुली ।
 अणाय वि [अज्ञात] नहीं जाना हुआ, अपरिचित (पउम २४, १७) ।
 अणाय पु [अनाक] मर्त्यलोक, मनुष्य-लोक (से १, १) ।
 अणाय पु [अनात्मन्] आत्म-भिन्न, आत्मा से परे (सम १) ।
 अणायग वि [अनायक] नायक-रहित (पउम ९६, ७०) ।
 अणायग वि [अज्ञातक] स्वजन-रहित, अकेला (निचू ६) ।
 अणायग वि [अज्ञायक] अज्ञान, निर्बोध (निचू ११) ।
 अणायतण १ न [अनायतन] १ वेश्या आदि अणाययण १ नीच लोगों का घर (दम ५, १) ।
 २ जहाँ सज्जन पुरुषों का संगम न होता हो वह स्थान (परह २, ४) । ३ पतित माधुओं का स्थान (भाव ३) । ४ पशु, नपुमक वगैरह के संगमवाला स्थान (श्रोष ७६३) ।
 अणायत्त वि [अनायत्त] पराधीन (पउम २६, २६) ।
 अणायर पुं [अनादर] अवहमान, अपमान (पाप) ।
 अणायरण न [अनाचरण] अनाचार, गराव आचरण ।

अणुवजीवि वि [अनुपजीविन्] १ अना-
श्रित । २ आजीविका-रहित (पंचा १५) ।

अणुवजुत्त वि [अनुपयुक्त] असावधान,
ह्याल-शून्य (अभि १३१) ।

अणुवज्ज सक [गम्] जाना । अणुवज्जइ (हे
४, १६२) ।

अणुवज्ज सक [दे] सेवा-शुश्रूपा करना (दे
१, ४१) ।

अणुवज्जण न [दे] सेवा-शुश्रूपा (दे १, ४१) ।

अणुवज्जिअ वि [दे] जिसकी सेवा-शुश्रूपा
की गई हो वह (दे १, ४१) ।

अणुवज्जिअ वि [दे] गत, गया हुआ (दे
१, ४१) ।

अणुवट्ट देखो अणुवत्त = अनु + वृत् । क
अणुवट्टणीअ (नाट) ।

अणुवट्टि देखो अणुवत्ति = अनुवत्तिन् (विसे
२४१७) ।

अणुवड सक [अनु + पत्] अभिन्न होना ।
अणुवडइ (उवर ७१) ।

अणुवडिअ वि [अनुपतित] पीछे गिरा हुआ
(हम्मीर ५०) ।

अणुवत्त सक [अनु + वृत्] १ अनुसरण
करना । २ सेवा-शुश्रूपा करना । ३ अनुकूल
वरतना । ४ व्याकरण आदि के पूर्व सूत्र के
पद का, अन्वय के लिए नीचे के सूत्र में
जाना । अणुवत्तइ (स ४२) । वक्तु अणुत्तंत,
अणुवत्तत, अणुवत्तमाण (प्राप्र, विसे
३५६८, नाट) । क अणुवट्टणीअ, अणु-
वत्तणीअ, अणुवत्तियव्व (नाट, उप १०३१
टी) ।

अणुवत्त वि [अनुद्वृत्त] अनुत्पन्न (पिंड
१८) ।

अणुवत्त वि [अनुवृत्त] १ अनुसृत, अनुगत ।
२ अनुकूल किया हुआ । ३ प्रवृत्त (वव २) ।

अणुवत्तग वि [अनुवर्त्तक] अनुकूल प्रवृत्ति
करनेवाला, सेवा करनेवाला (उव) ।

अणुवत्तग वि [अनुवर्त्तक] अनुसरण-कर्ता
(सूत्र १, २, २, ३२) ।

अणुवत्तण न [अनुवर्त्तन] १ अनुसरण (स
२३६) । २ अनुकूल प्रवृत्ति (गा २६५) । ३
पूर्व सूत्र के पद का अन्वय के लिए नीचे के
सूत्र में जाना (विसे ३५६८) ।

अणुवत्तणा स्त्री [अनुवर्त्तना] ऊपर देखो
(उवर १४८) ।

अणुवत्तय देखो अणुवत्तग, 'अन्नमन्नच्छदाणु-
वत्तया' (राया १, ३) ।

अणुवत्ति स्त्री [अनुवृत्ति] १ अनुसरण (स
४५६) । २ अनुकूल प्रवृत्ति । ३ अनुगम (विसे
७०५) ।

अणुवत्ति वि [अनुवर्त्तिन] अनुकूल प्रवृत्ति
करनेवाला, भक्त, सेवक,

'तुह चडि । चलणकमलाणुवत्तिणो कह
णु सजमिजति ।

सेरिहवहसकियमहिमहीरमाणेण व जमेण'
(गडड) ।

अणुवत्ति वि [अनुवर्त्तिन्] ऊपर देखो
(घर्भेवि ५२, मोह १०२) ।

अणुवम वि [अनुपम] उपमा-रहित, बेजोड,
अद्वितीय (आ २७) ।

अणुवमा स्त्री [अनुपमा] एक प्रकार का खाद्य
द्रव्य (जीव ३) ।

अणुवमिय वि [अनुपमित] देखो अणुवम
(मुपा ६८) ।

अणुवय देखो अणुव्वय (पउम २, ९२) ।

अणुवय सक [अनु + वद्] अनुवाद करना,
कहे हुए अर्थ को फिर से कहना । वक्तु अणु-
वयमाण (आचा) ।

अणुवरय वि [अनुपरत] १ असयत, अनि-
शही (ठा २, १) । २ क्रि. निरन्तर हमेशा
(रयण २५) ।

अणुवलद्धि स्त्री [अनुपलब्धि] १ अभाव,
अप्राप्ति । २ अभाव-ज्ञान, 'दुविहा अणुवलद्धीर'
(विसे १६८२) ।

अणुवल्लभमाण वि [अनुपलभ्यमान] जो
उपलब्ध न होता हो, जो जानने में न आता
हो (दसनि १) ।

अणुवलेवय वि [अनुपलेपक] उपलेप-रहित,
अलिप्त (पणह १, २) ।

अणुवसत वि [अनुपशान्त] अशान्त, कुपित
(उत १६) ।

अणुवसम पु [अनुपशम] उपशम का अभाव
(उव) ।

अणुवसु वि [अनुवसु] रागवाला, प्रीतिवाला
(आचा) ।

अणुवह न [अनुपथ] पीछे, 'कुमराणुवहेण
सो लगो' (उप ६ टी) ।

अणुवहण न [अनुवहन] वहन, 'तवोवहाण-
मुयाणमणुवहण' (धु १३५) ।

अणुवहय वि [अनुपहत] अविनाशित
(पिंड) ।

अणुवहुआ स्त्री [दे] नवोढा स्त्री, दुलहिन (दे
१, ४८) ।

अनुवाड वि [अनुपातिन्] १ अनुसरण
करनेवाला (ठा ६) । २ सम्बन्ध रखनेवाला
(मम १७) ।

अनुवाइ वि [अनुवादिन्] अनुवाद करने-
वाला, उक्त अर्थ को कहनेवाला (सूत्र १,
१२, मत्त १४ टी) ।

अनुवाइ वि [अनुवाचिन्] पढ़नेवाला,
अभ्यासी, 'मनुव्वीमवरिणो अणुवाइ सव्वमु-
त्तस्स' (सत्त १८ टी) ।

अनुवाएज्ज वि [अनुपादेय] ग्रहण करने
के योग्य, (आवम) ।

अनुवाद देखो अणुवाय = अनुवाद (विसे
३५७७) ।

अनुवादि देखो अणुवाइ = अनुपातिन् (उत्त
१६, ६) ।

अणुवाय पु [अनुपात] १ अनुसरण (पणण
१७) । २ सम्बन्ध, संयोग (भग १२, ४) ।
३ आगमन (पंचा ७) ।

अणुवाय पु [अनुवात] १ अनुकूल पवन
(राय) । २ वि अनुकूल पवन वाला प्रदेश—
स्थान (भग १६, ६) ।

अणुवाय वि [अनुपाय] उपाय-रहित, निरु-
पाय (उप पृ १४) ।

अणुवाय पुं [अनुवाद] अनुभाषण, उक्त बात
को फिर से कहना (उवा, दे १, १३१) ।

अणुवायण न [अनुपातन] अवतारण, उता-
रना (घर्म २) ।

अणुवायय वि [अनुवाचक] कहनेवाला,
अभिवाचक, 'पोमहमहो रुद्धीए एत्थ पव्वाणु-
वायओ अणिओ' (सुपा ६१६) ।

अणुवाल देखो अणुपाल । वक्तु अणुवालेंत
(स २३) । संक अणुवाल्लिऊण (स १०२) ।

अणुवालण न [अनुपालन] रक्षण, परिपालन
(आचा) ।

अणुयय वि [अनियत] १ अव्यवस्थित, अनियमित (उव) । २ कल्पवृक्ष की एक जाति, जो वस्त्र देती है (ठा १०) ।

अणिया देखो अणिदा (पिंड) ।

अणिया स्त्री [दे] धार, अन्न-भाग, गुजगती में 'अणी', 'सखाणियाइ पइया' (धर्मवि १७) ।

अणिरिक्क वि [दे] परतन्त्र, पराधीन । (काप्र ५५, गा ६६१) ।

अणिरिण वि [अनृण] ऋण-वर्जित, उन्नत, अनृणी (अभि ४६, चार ६६) ।

अणिरुद्ध वि [अनिरुद्ध] १ अप्रतिहत, नहीं रोका हुआ । (सूत्र १, १२) । २ एक अन्त-कृद् मुनि (अन्त ५) ।

अणिल पु [अनिल] १ वायु, पवन (कुमा) । २ एक अतीत तीर्थंकर का नाम (तित्य) । ३ राक्षस-वंशीय एक राजा (पउम ६, २६४) । अणिला स्त्री [अनिला] वाइसवें तीर्थंकर की एक शिष्या (पव ६) ।

अणिल्ल न [दे] प्रभात, सवेरा (दे १, १६) ।

अणिस न [अनिग] निरन्तर, सदा, हमेशा (गा २६२, प्रामू २६) ।

अणिसट्ठ } वि [अनिसुट्ठ] १ अनिक्षित ।
अणिसिट्ठ } २ असमत, अननुज्ञात । ३ ऐनो भिक्षा, जिसके मालिक अनेक हो और जो सब की अनुमति से ली न गई हो, माधु की भिक्षा का एक दोष (पिंड, औप) ।

अणिसोह वि [अनिशीथ] शास्त्र-विशेष, जो प्रकाश में पड़ा या पढ़ाया जाय (आवम) ।

अणिस्सकड वि [अनिशीकृत] जिन पर किसी खास व्यक्ति का अधिकार न हो, सर्व-साधारण (धर्म २) ।

अणिरसा स्त्री [अनिश्रा] अनासक्ति, आसक्ति का अभाव (उव) ।

अणिरिसय वि [अनिश्रित] १ अनामक्त, आसक्तिरहित (सूत्र १, १६) । २ प्रतिबन्ध-रहित, रुकावट-रहित (दम १) । ३ अनाश्रित, किसी के साहाय्य की इच्छा न रखनेवाला (उत्त १६) । ४ न. ज्ञान-विशेष, अवग्रह-ज्ञान का एक भेद, जो लिंग या पुस्तक के बिना ही होता है (ठा ६) ।

अणिह वि [अनीह] १ घोर, महिष्णु (सूत्र ५

१, २, २) । २ निष्कपट, सरल (सूत्र १, ८) । ३ निर्मम, निःस्पृह (आचा) ।

अणिह वि [अस्निह] स्नेहरहित (सूत्र १, २, २, ३०) ।

आणह वि [दे] १ महण, तुल्य । २ न मुल, मुंह (दे १, ५१) ।

अणिहय वि [अनिहत्त] अहत नहीं मारा हुआ । °रिउ पु [°रिपु] एक अन्तकृद् मुनि (अन्त ३) ।

अणीइम वि [अनीइश] इम माफिक नहीं, विलक्षण (म ३०७) ।

अणीय न [अनोक] सेना, लश्कर (श्रोप) ।

अणीयस पु [अनीयस] एक अन्तकृद् मुनि का नाम (अन्त ३) ।

अणीस वि [अनीश] असमर्थ (अभि ६०) ।

अणीसकड देखो अणिस्सकड (धर्म २) ।

अणीहारम वि [अनिहारीम] गुफा आदि में होनेवाला मरण-विशेष (भग १३, ८) ।

अणु अ [अनु] यह अव्यय नाम और धातु के साथ लगता है और नीचे के अर्थों में से किसी एक को बतलाना है, १ समीर, नजदीक, 'अणुकुडल' (गडड) । २ लघु, छोटा 'अणु-गाम' (उत्त ३) । ३ क्रम, परिपाटी, 'अणुगुरु' (वृह १) । ४ में, भीतर, 'अणुजत्त' (महा) । ५ लक्ष्य करना, 'अणु जिण अकारि सणीय इत्थोहि' (कुमा), 'अणु धार सदद्धेमोत्तिण तुह असिम्मि सच्चविया' (गडड) । ६ योग्य, उचित, 'अणुजुत्ति' (सूत्र १, ५, १) । ७ वीष्मा, 'अणुदिण' (कुमा) । ८ बीच का भाग, 'अणुदिमी' (पि ४१३) । ९ अनुकूल, हितकर, 'अणुवम्म' (सूत्र १, २१) । १० प्रतिनिधि, 'अणुप्पभु' (निचू २) । ११ पीछे, बाद, 'अणु-मज्झण' (गडड) । १२ बहुत, अत्यंत, 'अणुवक' (मा ६२) । १३ मदद करना सहायता करना 'अणुपरिहाहि' (ठा ३, ४) । १४ निरर्थक भी इसका प्रयोग होता है, देखो 'अणुकम', 'अणु-मग्गि' ।

अणु वि [अणु] १ थोड़ा, अल्प (परह २, ३) । २ छोटा (आचा) । ३ पु परमाणु (मम्म १३६) । °मय वि [°मत] उत्तम कुल, श्रेष्ठ वंश (कप्प) । °चिरइ स्त्री [°चिरिति] देखो देसचिरइ (कम्म १, १८) ।

अणु पु [दे] धान-विशेष, चावल की एक जाति (दे १ ५) ।

°अणु स्त्री [तनु] शरीर, 'सुअणु' (गा २६६) ।

अणुअ देखो अणु = अणु (पात्र) ।

अणुअ वि [अज्ज] अजान, मूर्ख (गा १८४, ३४५) ।

अणुअ पु [दे] १ आकृति, आकार । २ पुष्पी धान्य-विशेष (दे १ ५२, आ १८) ।

अणुअ वि [अनुग] अनुमरण करनेवाला 'अधम्ममाणु' (विपा १, १) ।

अणुअ वि [अनुज] १ पीछे में उत्पन्न । २ पु छोटा भाई । ३ स्त्री छोटी बहिन (अभि ८२ पउम २८, १००) ।

अणुअच सक [अनु + कृप्] पीछे खींचना । सक अणुअचिवि (भवि) ।

अणुअप सक [अनु + कम्प्] दया करना । कृ अणुअपणिज्ज (हास्य १४४) ।

अणुअंपा स्त्री [अनुकम्पा] दया, कल्याण (मे ६, २४, गा १६३) ।

अणुअंपि वि [अनुकम्पिन्] दयानु, कल्याण करनेवाला (अभि १७३) ।

अणुअत्तय वि [अनुवर्त्तक] अनुकूल आचरण करनेवाला, अनुमरण करनेवाला (विसे ३४०२) ।

अणुअत्ति देखो अणुवत्ति (पुष्फ ३२६) ।

अणुअर वि [अनुचर] १ गायताकारी, सह-चर (पात्र) । २ नेवक, नौकर (प्रामा) ।

अणुअर वि [अनुचर] अनुसरण-कर्ता (हास्य १२१) ।

अणुअल्ल न [दे] प्रभात, सुबह (दे १, १६) ।

अणुआ स्त्री [दे] लाठी (दे १, ५२) ।

अणुआर पु [अनुकार] अनुकरण (नाट) ।

अणुआरि वि [अनुकारिन्] अनुकरण करने-वाला (नाट) ।

अणुआस पु [अनुकास] प्रसार, विकास (गाया १, १) ।

अणुइअ पु [दे] धान्य-विशेष, चना (दे १, २१) ।

अणुइअ देखो अणुदिय ।

अणुङ्ण वि [अनुकीर्ण] १ व्याप्त, भरा हुआ । २ नहीं गिरा हुआ, अप्रतिष्ठ, 'अवाइरणपत्ता अणुइरणपत्ता निद्धयजरद्धपडुपत्ता (श्रोप) ।

करना । २ प्रीति करना । ३ परिचय करना ।
अणुसज्जन्ति (स) । भूका अणुसज्जित्या (भग
६, ७)

अणुसज्जणा स्त्री [अनुसज्जना] अनुसरण,
अनुवर्तन (वव १) ।

अणुसट्ठ वि [अनुशिष्ट] जिसको शिक्षा दी
गई हो वह, शिक्षित (सुर ११, २६) ।

अणुसट्ठि वि [अनुशिष्टि] १ शिक्षण, सीख,
उपदेश (ठा ३, ३) । २ स्तुति, श्लाघा
'अणुमट्ठो य शुद्धं ति एगट्ठा' (वव १) । ३
प्राज्ञा, अनुज्ञा, सम्मति, 'इच्छामो अणुसट्ठि
पव्व ज देह मे भयव' (सुर ६, २०६) ।

अणुसमय न [अनुसमय] प्रतीक्षण (भग
४१, १) ।

अणुसय पु [अनुशय] १ पश्चात्ताप, खेद
(से २, १६) । २ गर्व, अभिमान (अणु) ।

अणुसर सक [अनु + स्] पीछा करना,
अनुवर्तन करना । अणुसरइ (मण) । वक्क
अणुसरत (महा) । क अणुसरियव्व (ठा
५, १) ।

अणुसर सक [अनु + स्मृ] याद करना,
चिन्तन करना । वक्क अणुसरत (पचम ६६,
७) क अणुसरियव्व (भावम) ।

अणुसरण न [अनुसरण] १ पीछा करना ।
२ अनुवर्तन (विसे ६१३) ।

अणुसरण न [अनुस्मरण] अनुचिन्तन, याद
करना (पचा १, स २३१) ।

अणुसारि देखो अणुसारि, 'आसायण परिहारो
भतो मत्तीइ पवयणाणुसरी' (सवोध ४) ।

अणुसारिउ वि [अनुस्मर्तृ] याद करनेवाला
(विसे ६२) ।

अणुसारिच्छ वि [अनुसहश] १ समान,
अणुसारिस तुल्य (पचम ६४, ७०) । २
योग्य, लायक (से ११, ११५, पचम ८५,
२६) ।

अणुसार पु [अनुस्वार] १ वर्ण-विशेष, विन्दी ।
२ वि अनुनासिक वर्ण (विसे ५०१) ।

अणुमार पु [अनुसार] अनुसरण, अनुवर्तन
(गउड, भवि) । २ माफिक, मुताविक, 'कहिया-
णुमारओ सव्वमुवगय सुमइणा सम्म' (सार्ध
१४४) ।

अणुसारि वि [अनुसारिन्] अनुसरण करने
वाला (गउड, म १०१, सार्ध २६) ।

अणुसास सक [अनु + शास्] १ सीख
देना, उपदेश देना । २ आज्ञा करना । ३ शिक्षा
करना, सजा देना । अणुसासति (पि १७२) ।
वक्क अणुसासंत (पि ३६७) । क अणुसा-
सणिज्ज (कुमा) । हेक्क अणुसासितं (पि
५७६) ।

अणुसासण न [अनुशासन] १ सीख, उप-
देश (सूत्र १, १५) । २ आज्ञा, हुकुम (सूत्र
१, २, ३) । ३ शिक्षा, सजा (पचा ६) । ४
अनुकम्पा दया, 'अणुकप त्ति वा अणुसासणत्ति
वा एगट्ठा' (पचचू) ।

अणुसासणा स्त्री [अनुशासना] ऊपर देखो
(णाय १, १३) ।

अणुसासिय वि [अनुशासित] शिक्षित (उन
१, पि १७३) ।

अणुसिक्खि वि [अनुशिचित्] सीखनेवाला,
'ज ज करेसि ज ज, जंपसि जह जह
तुम निग्रच्छेमि ।

तं तं अणुसिक्खिरोए, दीहो दिग्रहो ए सपडइ' ।
(गा ३७८) ।

अणुसिट्ठ देखो अणुसट्ठ (सूत्र १, ३, ३) ।
अणुसिट्ठि देखो अणुसट्ठि (ओष १७३, बृह
१, उत्त १०) ।

अणुसिण वि [अनुष्ण] गरम नहीं वह,
ठण्डा (कम्म १, ४६) ।

अणुसील सक [अनु + शील्य] पालन
करना, रक्षण करना । अणुसीलइ (सण) ।

अणुसुत्ति वि [दे] अनुकूल (दे १, २५) ।

अणुसुमर सक [अनु + स्मृ] याद करना ।
अणुसुमरइ (धर्मवि ५६) । प्रयो. अणुसुमरावेइ
(धर्मवि ६५) ।

अणुसुय अक [अनु + स्वप्] सोने का अनु-
करण करना । अणुसुयइ (तदु १३) ।

अणुसूआ स्त्री [दे] शीघ्र ही प्रसव करनेवाली
स्त्री (दे १, २३) ।

अणुसूय वि [अनुस्यूत] अनुबद्ध, मिला हुआ
(सूत्र २, ३) ।

अणुसूय वि [अनुसूचक] जासूस की एक
श्रेणी,

'सूयग तहाणुसूयग-पडिसूयग-सव्वसूयगा एव ।
पुरिसा कयवित्तीया, वसति सामंतनगरेसु ।
महिला कयवित्तीया, वसति सामंतनगरेसु ॥'
(वव १) ।

अणुसेट्ठि स्त्री [अनुश्रेणि] १ सीधी लाइन ।
२ न लाइनसर (पि ६६, ३०४) ।

अणुसोय पु [अनुस्रोतस्] १ अनुकूल
प्रवाह (ठा ४, ४) । २ वि अनुकूल, 'अणु-
सोयसुहो लोगो पडिमोओ आममो सुविहियाणः
(दसचू २) । ३ न. प्रवाह के अनुसार,
'अणुसोयपट्ठिए बहुजणम्मि

पडिसोयलदलक्खेण ।

पडिमोयमेव अप्पा, दायव्णो होउगमेण ।

(दसचू २) ।

अणुसोय सक [अनु + शुच्] मोचना,
चिन्ता करना, अकमोस करना । वक्क अणु-
सोयमाण (मुपा १३३) ।

अणुस्सर देखो अणुसर = अनु + स्मृ । संक.
अणुस्सरित्ता (सूत्र १, ७, १६) ।

अणुस्सर देखो अणुसर = अनु + स् । वक्क.
अणुस्सरत (म १४०) ।

अणुस्सरण न [अनुस्मरण] चिन्तन करना,
याद करना (उव, स ५३५) ।

अणुस्सार पु [अनुस्वार] १ अनुस्वार, विन्दी ।
२ वि अनुस्वारवाला अक्षर, अनुस्वार के माथ
जिमका उच्चारण हो वह (एदि, विसे ५०३) ।

अणुस्सुय वि [अनुत्सुक] उत्कण्ठा-रहित
(सूत्र १, ६) ।

अणुस्सुय वि [अनुश्रुत] १ अवधारित (उत्त
५) । २ सुना हुआ (सूत्र १, २, २) । ३ न.
भारत-आदि पुराण-शास्त्र (सूत्र १, ३, ४) ।

अणुहर सक [अनु + हृ] अनुकरण करना,
नकल करना । अणुहरइ (पि ४७७) ।

अणुहरिय वि [अनुहृत] जिसका अनुकरण
किया गया हो वह, अनुकृत,

'अणुहरिय धीर तुमे, चरिय निययस्स

पुव्वपुरिसस्स ।

भरह-महानरवइणो, तिहुयणाविकसाय-कित्तिस्स'
(महा) ।

अणुहव सक [अनु + भू] अनुभव करना ।
अणुहवइ (पि ४७५) । वक्क अणुहवमाण
(सुर १, १७१) । क. अणुहवियव्व, अणु-

(नाट, सूत्र १, १४) । कवक अणुगच्छिज्जत (गाया १, २) । सक्क अणुगच्छित्ता (कप्प) ।

अणुगच्छण देखो अणुगमग (पुष्प ४०८) । अणुगच्छिर वि [अनुगामिन्] अनुमरण करनेवाला (मण) ।

अणुगज्ज अक [अनु + गज्ज] प्रतिव्वनि करना, प्रतिशब्द करना । वक्क अणुगज्जे-माण (गाया १, १८) ।

अणुगम सक [अनु + गम] १ अनुमरण करना, पीछे-पीछे जाना । २ जानना, सम-मना । ३ व्याख्या करना, सूत्र के श्रवणों का स्पष्टीकरण करना । कर्म अणुगम्मड (विने ६१३) । वक्क अणुगम्मंत, अणुगम्ममाण (उप ६ टी: सुपा ७८, २०८) । सक्क अणुगम्म (सूत्र १, १४) । क अणुगतव्व (मुर ७, १७६, परण १) ।

अणुगम पु [अनुगम] १ अनुसरण, अनुवर्तन (दे २, ६१) । २ जानना, ठीक-ठीक समझना, निश्चय करना (ठा १) । ३ सूत्र की व्याख्या, सूत्र के श्रवणों का स्पष्टीकरण (वव १) । ४ अन्वय, एक की सत्ता में दूसरे की विद्यमानता (विने २६०) । ५ व्याख्या, टीका (विने १३ ५७) । अणुगम्मइ तेण तहि, तस्यो व अणुगम-णमेव वाणुगमो । 'अणुणोणुव्वओ वा, ज सुत्तयाणमणुमरण' (विने ६१३) ।

अणुगमण न [अनुगमन] अपर देखो ।

अणुगमिअ वि [अनुगत] अनुसृत (कुप्र ४३) ।

अणुगमिर वि [अनुगन्त] अनुसरण करने-वाला (दे ६, १२७) ।

अणुगय वि [अनुगत] १ अनुसृत, जिसका अनुसरण किया गया हो वह (परह १, ४) । २ जात, जाना हुआ (विसे) । ३ अनुवृत्त, जो पूर्व में बराबर चला आया हो (परह १, ३) । ४ अतिक्रान्त (विसे ६५६) ।

अणुगर देखो अणुकर । अणुगरेइ (स ३३४) । वक्क अणुगरितं (म ६८) ।

अणुगरण देखो अणुकरण (कुप्र १७६) ।

अणुगवेस सक [अनु + गवेप्] खोजना, शोधना, तलाश करना । अणुगवेसइ (कस) ।

वक्क अणुगवेसेमाण (भग ८, ५) । क अणुगवेसियव्व (कम) ।

अणुगह देखो अणुगह = अनु + ग्रह (नाट) । अणुगहिअ देखो अणुगहिअ (दे ८, २६) । अणुगाम पु [अनुग्राम] १ छोटा गाँव, (उत्त ३) । २ उपपुर, शहर के पास का गाँव (ठा ५, २) । ३ विवक्षित गाँव में दूसरा गाँव, 'गामाणुगाम दुइज्जमाणे' (विपा १, १, श्रौप, आचा) ।

अणुगामि } वि [अनुगामिन्, 'मिक्क]
अणुगामिय } १ अनुमरण करनेवाला, पीछे-पीछे जानेवाला (श्रौप) । २ निर्दोष हेतु, शुद्ध कारण (ठा ३, ३) । ३ अवधिज्ञान का एक भेद (कम्म १, ८) । ४ अनुचर, सेवक (सूत्र १, २, ३) ।

अणुगारि वि [अनुकारिन्] अनुकरण करनेवाला, नकालची (महा, धर्म ५, स ६३०) ।

अणुगिइ स्त्री [अनुकृति] अनुकरण, नकल (आ १) ।

अणुगिण्ह देखो अणुगह = अनु + ग्रह । वक्क अणुगिण्हमाण, अणुगिण्हमाण (निर १, १, गाया १, १६) ।

अणुगिद्ध वि [अनुगृद्ध] अत्यन्त आमन्त, लोलुप (सूत्र १, ७) ।

अणुगिद्धि स्त्री [अनुगृद्धि] अत्यार्मात्ता (उत्त ३२) ।

अणुगिल सक [अनु + गृ] भक्षण करना । सक्क अणुगिलित्ता (गाया १, ७) ।

अणुगिहीअ वि [अनुगृहीत] जिस पर मेह-रवानी की गई हो वह (स १४, १६३) ।

अणुगीय वि [अनुगीत] १ पीछे कहा हुआ, अनुदित । २ पूर्व ग्रन्थकार के भाव के अनुकूल किया हुआ ग्रन्थ, व्याख्यान आदि (उत्त १३) । ३ जिसका गान किया गया हो वह, कीर्तित, वर्णित । ४ न. गाना, गीत, 'उज्जारो मत्त-भिगाणुगीए' (पउम ३३, १४८) ।

अणुगुण वि [अनुगुण] १ अनुकूल, उचित, योग्य (नाट) । २ तुल्य, सदृश गुणवाला, जाण अलंकारमो, विहवो मइलेइ तेवि वड्ढतो ।

विच्छाएइ मियं, तुमार-

वरिमो अणुगुणेवि' (गज्ज) ।

अणुगुरु वि [अनुगुरु] गुरु-परम्परा के अनु-सार जिस विषय का व्यवहार होता हो वह (वृह १) ।

अणुगूल वि [अनुकूल] अनुकूल (स ३७८) । अणुगेज्ज वि [अनुग्राह्य] अनुग्रह के योग्य, कृपा-पात्र (प्राप) ।

अणुगेण्ह देखो अणुगह = अनु + ग्रह । अणुगेण्हतु (पि ५१२) ।

अणुगह सक [अनु + ग्रह] कृपा करना मेहरवानी करना । क अणुगहइव्व, अणु-ग्गाहिदव्व (शौ) (नाट) ।

अणुगह पु [अनुग्रह] १ कृपा, मेहरवानी (कप्प) । २ उपकार (श्रौप) । ३ वि जिस पर अनुग्रह किया जाय वह (वव १) ।

अणुगह पु [अनवग्रह] जैन साधुओं को रहने के लिए शास्त्र-निषिद्ध स्थान, 'एओ गोयरे एओ वणगोणियाण, एओ वड्ढ दुज्जेति य जत्थ गावो ।

अणुगह्य गोणेहिनु जत्थ खुएण, स उगहो सेसमणुगहो तु' (वृह ३) ।

अणुगहिअ } वि [अनुगृहीत] जिस पर
अणुगहीअ } कृपा की गई हो वह, आभारी
अणुगिहीअ } (महा, सुपा १६२, स ६७) ।

अणुगघाडम न [अनुद्धातिम] १ महा-प्राय-श्चित का एक भेद (ठा ३, ४) । २ वि महा-प्रायश्चित का पात्र (ठा ३, ४) ।

अणुगघाडय वि [अनुद्धातिक] १ अनुद्धातिक नामक महा-प्रायश्चित का पात्र (ठा ५, ३) । २ न ग्रन्थाश-विरोध, जिसमें अनुद्धातिक प्रायश्चित का वर्णन है (परह २, ५) ।

अणुगघाय वि [अनुद्धात] १ उद्धात-रहित । २ न निशीय सूत्र का वह भाग, जिसमें अनु-द्धातिक प्रायश्चित का विचार है, 'उग्घायम-णुगघाय आरोवरण तिविहमो निसीह तु' (आव ३) ।

अणुगघाय न [अनुद्धात] गुरु-प्रायश्चित (वव १) ।

अणुगघायण न [अणोद्धातन] कर्मों का नाश (आचा) ।

अणोसिय वि [अनुपित] १ जिसने वाम न किया हो। २ अव्यवस्थित, 'अणोसिएण न करेड लाचा' (वर्म ३, सूत्र १, १४)।

अणोहंतर वि [अनोघन्तर] पार जाने के लिए अममयं, 'मुणिएण ह एय पवेइय अणो-हंतरा एण, नो य ओह तरित्तए' (आचा)।

अणोहट्टय वि [अनपघट्टक] निरकुश, स्वच्छन्दी (गाथा १, १६)।

अणोहीण वि [अनवहीन] हीनता-रहित (पि १२०)।

अण्ण सक [भुज्] भोजन करना, खाना। अण्णइ (पड्)।

अण्ण म [अन्य] दूसरा, पर (प्राप्त १३१)।

°उत्थिय वि [°तिथिक, °युथिक] अन्य दर्शन का अनुयायी (सम ६०)। °गहण न [°ग्रहण] १ गान के समय होनेवाला एक प्रकार का मुख-विकार। १ पु गानेवाला, गानाविक, गवेया (निच् १७)। °धम्मिय वि [°वार्मिक] भिन्न वर्म वाला (ओव १५)।

अण्ण न [अन्न] १ नाज, चावल आदि वान्य (सूत्र १, ४, २)। २ भक्ष्य पदार्थ (उत्त २०)।

३ भक्षण, भोजन (सूत्र १, २)। °इलाय, °गिलाय वि [°गलायक] वानी अन्न को खानेवाला (ओप; भग १६, ३)। °विहि पुत्थी [°विधि] पाक-कला (ओप)।

अण्ण न [अर्णस्] पानी, जल (उत्त ५)।

अण्ण वि [दे] १ आरोपित। २ खरिडत (पड्)।

°अण्ण देखो कण्ण = कणं (गा ५६४, कप्पू)।

अण्णअ पु [दे] १ जवान, तरुण। २ घूतें, ठग। ३ देवर (दे १, ५५)।

अण्णइअ वि [दे] १ तृप्त (दे १, १६)। २ सब विषयों में तृप्त, सर्वार्थ-तृप्त (पड्)।

अण्णओ अ [अन्यतस्] दूसरे से, दूसरी तरफ (उत्त १)। देखो अन्नओ।

अण्णण वि [अन्योन्य] परस्पर, आपस में (पड्)।

अण्णण वि [अन्यान्य] और और, अलग-अलग,

'अण्णणण्ड उव्वता,

ससारवहम्मि शिखरसाणम्मि।

मएणति वीरहियआ,

वगइटाणाइव कुलाड' (गजड)।

अण्णत्त अ [अन्यत्र] दूसरे में, भिन्न स्थान में (गा ६५५)।

अण्णत्ति स्त्री [दे] अवज्ञा, अपमान, निरादर (दे १, १७)।

अण्णत्तो देखो अण्णओ (गा ६३६)।

अण्णत्थ देखो अण्णत्त (विपा १, २)।

अण्णत्थ वि [अन्यस्थ] दूसरे (स्थान) में रहा हुआ (गा ५५०)।

अण्णत्थ वि [अन्यर्थ] यथार्थ, यथा नाम तथा गुण वाला, 'ठियमएणत्थे तयत्थनिर-वेक्ख' (विसे)।

अण्णमण्ण देवो अण्णण्ण = अन्योन्य, 'अण्ण-मएणमएणरत्तया' (गाथा १, २)।

अण्णमय वि [दे] पुनश्च, फिर में कहा हुआ (दे १, २८)।

अण्णय देखो अन्नय (वर्मस ३६२)।

अण्णयर वि [अन्यतर] दो में में कोई एक (कप्प)।

अण्णया अ [अन्यदा] कोई समय में (उप ६ टी)।

अण्णय पु [अर्णव] १ समुद्र। २ संसार, 'अण्णवमि महोधमि एगे तिएणे दुक्खे' (उत्त ५)।

अण्णव न [अण्वत्] एक लोकोत्तर मुहूर्त्त का नाम (ज ७)।

अण्णह न [अन्वह] प्रतिदिन, हमेशा (वर्म १)।

अण्णह देखो अण्णत्त (पड्)।

अण्णह } अ [अन्यथा] अन्य प्रकार से,
अण्णहा } विपरीत रीति से, उलटा (पड्, महा)। °भाव पुं [°भाव] विपरीत्य, उलटा-पन (वृह ४)।

अण्णहि देखो अण्णत्त (पड्)।

अण्णा स्त्री [आज्ञा] आज्ञा, आदेश (गा २३, अभि ६३, मुद्रा ५७)।

अण्णाइट्ट वि [अन्वादिष्ट] आदिष्ट, जिसको आदेश दिया गया हो वह, 'अज्जुणए मालागारे मोग्गरपाणिणा जक्खेण अएणाइट्टे समाणे' (अंत २०)।

अण्णाइट्ट वि [अन्वादिष्ट] १ व्याप्त (भग १४, १)। २ परावीन, परवश (भग १८ ६)।

अण्णाइस (अप) वि [अन्यादृश] दूसरे के जैसा (पि २४५)।

अण्णाण न [अज्ञान] १ अज्ञान, अज्ञानकारी, मूर्खता (दे १, ७)। २ मिथ्या ज्ञान, झूठा ज्ञान (भग ८, २)। ३ वि ज्ञान-रहित, मूर्ख (भग १, ६)।

अण्णाण न [दे] दाय, विवाह-काल में वधू को अथवा वर को जो दान दिया जाता है वह (दे १, ७)।

अण्णाणि वि [अज्ञानिन] १ ज्ञान रहित, मूर्ख (सूत्र १, ७)। २ मिथ्या-ज्ञानी (पंच १)। ३ अज्ञान को ही श्रेयस्कर माननेवाला, अज्ञान-वादी (सूत्र १, १२)।

अण्णाणिय वि [आज्ञानिक] १ अज्ञानवादी, अज्ञानवाद का अनुयायी (आव ६, सम १०६)। २ मूर्ख, अज्ञानी (सूत्र १, १, २)।

अण्णाय वि [अज्ञात] अविदित, नहीं जाना हुआ (पएह २१)।

अण्णाय पु [अन्याय] न्याय का अभाव (आ १२)।

अण्णाय वि [दे] आर्द्र, गीला (मे ४, ६)। अण्णाय वि [अन्याय्य] न्याय में व्युत्त, न्याय-विरुद्ध, 'जे विग्गहीए अण्णायभासी, न से समे होइ अक्कपत्ते' (सूत्र १, १३)।

अण्णाय्य (शौ) ऊपर देखो (मा २०)।

अण्णारिच्च वि [अन्यादृच] दूसरे के जैसा (प्राप्ता)।

अण्णारिस वि [अन्यादृश] दूसरे के जैसा (पि २४५)।

अण्णासय वि [दे] विस्तृत, विद्याया हुआ (पड्)।

अण्णिजमाण देखो अण्णे।

अण्णिय वि [अन्वित] युक्त, सहित (सूत्र १, १०, नाट)।

अण्णिया स्त्री [दे] देखो अण्णी (दे १, ५१)।

अण्णिया स्त्री [अन्त्रिका] एक विख्यात जैन मुनि की माता का नाम (ती ३६)। °उत्त पुं [°पुत्र] एक विख्यात जैन मुनि (ती ३६)।

द्वियव्व, अणुट्टेअ (सुपा ५३७, मुर १४, ८५) ।

अणुट्टाई वि [अनुष्टागिन्] अनुष्ठान करने-
वाला (आचा) ।

अणुट्टाग न [अनुष्ठान] १ कृति । २ शास्त्रोक्त
विधान (आचा) ।

अणुट्टाण न [अनुष्ठान] क्रिया का अभाव
(उवा) ।

अणुट्टावग न [अनुष्ठापन] अनुष्ठान करना
(कम) ।

अणुट्टिय वि [अनुष्ठित] विधि में मपादित,
विहित, किया हुआ (पड्, मुर ४, १६६) ।

अणुट्टिय नि [अनुस्थित] १ बैठा हुआ । २
आलसी, प्रमादी (आचा) ।

अणुट्टियव्व देखो अणुट्टा ।

अणुट्टुम न [अनुट्टप्] एक प्रसिद्ध छंद,
'पञ्चस्वरगणणाए अणुट्टुभाए हवति दम
सहम्मा (सुपा ६५६) ।

अणुट्टेअ देखो अणुट्टा ।

अणुण देखो अणुणी । अणुणह (भवि) ।

अणुणत देखो अणुणी ।

अणुणय पु [अनुनय] विनय, प्रार्थना (महा,
अमि ११९) ।

अणुणाइ वि [अनुनादिन्] प्रतिस्वनि करने
वाला 'गजियमहस्म अणुणाइणा' (कप्प) ।

अणुणाय पु [अनुनाद] प्रतिस्वनि प्रतिशब्द
(विसे ३००४) ।

अणुणाय वि [अनुज्ञात] अनुमत, अनुमोदित
(पच्च) ।

अणुणास पुन [अनुनास] अनुनासिक, जो
नाक से बोला जाता है वह अक्षर । २ वि
सानुस्वार, अनुस्वार-युक्त (ठा ७), कागम्पर-
मणुणास च' (जीव ३ टी) ।

अणुणामिअ पु [अनुनासिक] देखो ऊपर का
पहला अर्थ (वजा ६) ।

अणुणी मक [अनु + नी] १ अनुनय करना,
विनय करना प्रार्थना करना । २ सम्मानना,
दिलाना देना सान्त्वना देना । वक्तु अणुणन,
'पुरोहिं त कममाणुणत' (उत्त १४ भवि),
अणुणेत्त (गा ६०२) । कवक अणुणिज्जत,
अणुणिज्जमाण, अणुणीअमाण (सुपा ३६७,
मे २, १६, वि ५३६) ।

अणुणीअ वि [अनुनीत] जिमका अनुनय
किया गया हो वह (दे ८, ४८) ।

अणुणेत्त देखो अणुणी ।

अणुणय वि [अनुन्नय] १ नीचा नम्र (दम
५, १) । २ गवर्गहित, निर्भिमानी, 'एत्यवि
भिक्षू अणुणयण विणीए' (सूय १ १६) ।

अणुणय सक [अनु + ज्ञापय] १ अनु-
मति देना । २ आज्ञा देना, हुकुम देना । कर्म
अणुणयविज्जइ (उवा) । वक्तु अणुणयवेमाण
(ठा ६) । कृ अणुणयवेयव्व (श्लो ३८५
टी) । मक अणुणयवित्ता, अणुणयविय
(आवम, आचा २ २, ६) ।

अणुणयवया } स्त्री [अनुज्ञापना] १ अनु-
अणुणयवया } मति, सम्मति । २ आज्ञा
फरमाइज (मम ४८, श्लो ३८८ टी) ।

अणुणयवगी स्त्री [अनुज्ञापनी] अनुमति-प्रका-
शक भाषा अनुमति देने का वाक्य (ठा ८, ३) ।

अणुणया स्त्री [अनुज्ञा] १ अनुमति, अनुमोदन
(सूय २ २) । २ आज्ञा । °रूप पु [°कल्प]
जैन नाधुओ के लिए वस्त्र-पात्रादि लेने के विषय
में शास्त्रीय विधान (पचभा) ।

अणुणया स्त्री [अनुज्ञा] १ पठन विषयक
गुरु-आज्ञा-विशेष (अणु ३) । २ सूत्र के अर्थ का
अव्ययन (वव १) ।

अणुणयाय वि [अनुज्ञान] १ जिमको आज्ञा
दी गई हो वह । २ अनुमत, अनुमोदित (ठा
३, ५) ।

अणुणह वि [अनुण] ठंडा जो गरम नहीं है
वह (पि ३१२) ।

अणुणतड पु [अनुतट] भेद पदार्थ का एक
जाति का पृथक्करण, जैसे मतल लोहे को
हथौड़े में पीटने में स्फुलिंग (चिन्तागरी) पृथक्
होते हैं (ठा ५) ।

अणुणतडिया स्त्री [अनुतटिका] १ ऊपर देखो
(परण ११) । २ तलाव, द्रव आदि का भेद
(भाम ७) ।

अणुणत्तप्प अक [अनु + तप्] अनुपात करना,
पछताना । अणुणत्तप्प (म १८८) ।

अणुणत्तपि वि [अनुतापिन्] पश्चात्ताप करने-
वाला (वव) ।

अणुताव सक [अनु + तापय] तपाना ।
मक अणुतावित्ता (सूय २, ४, १०) ।

अणुताव पु [अनुताप] पश्चात्ताप (पाय, म
१८४) ।

अणुतावय वि [अनुतापक] पश्चात्ताप करने-
वाला (सूय २, ७, ८) ।

अणुतावि देखो अणुणत्तपि (उम ७२८ टी) ।

अणुत्त वि [अनुत्त] अकथित (पच ५) ।

अणुत्तन देखो अणुवत्त ।

अणुत्तप्प वि [अनुत्तप्प] १ परिपूर्ण शरीर ।
२ पूर्ण शरीरवाला, 'होइ अणुत्तप्पो नो अदि-
गलद्वियपडिप्पुरणो' (वव २) ।

अणुत्तर वि [अनुत्तर] १ सर्वश्रेष्ठ, सर्वोत्तम
(ठा १०) । २ एक सर्वोत्तम देवलोका का
नाम (अनु) । ३ छोट्टा, 'अणुत्तरो भाया'
(पउम ६, ४) । °ग्गा स्त्री [°अन्धा] एक

पृथिवी, जहाँ मुक्त जीवों का निवास है (सूय
१, ६) । °णाणि वि- [°ज्ञानिन्] केवलजानों
(सूय १, २, ३) । °विमाण न [°विमान]
एक सर्वोत्कृष्ट देवलोका (भग ६ ६) । °ववाइय
वि [°ोपपातिक] अनुत्तर देवलोका में
उत्पन्न (अनु) । °ववाइयदम्मा स्त्री व
[°ोपपातिकदरा] नववाँ जैन अग-अय
(अनु) ।

अणुत्थाण देखो अणुट्टाण (म ६४६) ।

अणुत्थारय वि [अनुत्साह] हनोत्साह निराश
(कुमा) ।

अणुत्त पु [अनुत्त] नीचे में बोला जाने-
वाला स्वर (वृह १) ।

अणुत्तय पु [अनुत्तय] १ उदय का अभाव ।
२ कर्म-फल के अनुभव का अभाव (कम्म २
१३ १४, १५) ।

अणुत्तवि न [दे] प्रभात सुबह (दे १, १६) ।

अणुदिअ वि [अनुदित] जिमका उदय न
हुआ हो (भग) ।

अणुदिअय न [अनुदियस] प्रतिदिन, हमेशा
(नाट) ।

अणुदिज्जत वि [अनुदीयमान] उदय में न
आना हुआ (भग) ।

अणुदिग न [अनुदिन] प्रतिदिन, हमेशा
(कुमा) ।

अणुदिण } वि [अनुदित] १ उदय को
अणुदिज्ज } अप्राप्त । २ फल-दान में अन्तर

अणोसिय वि [अनुषित] १ जिमने वाम न किया हो। २ अव्यवस्थित, 'अणोसिएण न करेइ एणा' (धर्म ३, सूत्र १, १८)।

अणोहतर वि [अनोधन्तर] पार जाने के लिए अममर्थ, 'मुणिएणा हु एय पवेइय अणो-हतरा एण, नो य ओह तरित्तए' (आचा)।

अणोहट्टय वि [अनपघट्टक] निरकुश, स्व-च्छन्दी (गाया १, १६)।

अणोहीण वि [अनगहीन] हीनता-रहित (पि १२०)।

अण्ण मक [भुज्] भोजन करना, खाना। अण्णइ (पट्)।

अण्ण न [अन्य] दूसरा, पर (प्राम् १३१)।

°उत्थिय वि [°तिथिक, °यूथिक] अन्य दर्शन का अनुयायी (सम ६०)। °गगहण न [°ग्रहण] १ गान के समय होनेवाला एक प्रकार का मुख-विकार। १ पु गानेवाला, गान्वाविक, गवैया (निबू १७)। °वम्मिय वि [°वार्मिक] भिन्न धर्म वाला (ओव १५)।

अण्ण न [अन्न] १ नाज, चावल आदि वान्य (सूत्र १, ४, २)। २ भक्ष्य पदार्थ (उत्त २०)।

३ भक्षण, भोजन (सूत्र १, २)। °इलाय, °गिलाय वि [°ग्लायक] वामी अन्न को खानेवाला (ओप, भग १६, ३)। °विहि पुस्सो [°विधि] पाक कला (ओप)।

अण्ण न [अर्णस्] पानी, जल (उत्त ५)।

अण्ण वि [दे] १ आरोपित। २ खण्डित (पट्)।

°अण्ण देखो कण्ण = कणं (गा ५६४, कप्पु)।

अण्णअ पु [दे] १ जवान, तरुण। २ वृत्त, ठग। ३ देवर (दे १, ५५)।

अण्णइअ वि [दे] १ तृप्त (दे १, १६)। २ सब विषयो में तृप्त, सर्वार्थ-तृप्त (पट्)।

अण्णओ अ [अन्यतस्] दूसरे में, दूसरी तरफ (उत्त १)। देखो अन्नओ।

अण्णण वि [अन्योन्य] परस्पर, आपस में (पट्)।

अण्णण वि [अन्यान्य] और और, अलग-अलग,

'अण्णणणइ उवेंता,

संमारवहम्मि णिरवसाणम्मि।

मण्णति घोरहियमा,

वगइट्टाणाइव कुलाडं' (गउड)।

अण्णत्त अ [अन्यत्र] दूसरे में, भिन्न स्थान में (गा ६५५)।

अण्णत्ति स्त्री [दे] अवज्ञा, अपमान, निरादर (दे १, १७)।

अण्णत्तो देखो अण्णओ (गा ६३६)।

अण्णत्थ देखो अण्णत्त (विपा १, २)।

अण्णत्थ वि [अन्यस्थ] दूसरे (स्थान) में रहा हुआ (गा ५५०)।

अण्णत्थ वि [अन्वर्थ] यथार्थ, यथा नाम तथा गुण वाला, 'ठियमण्णत्थे तयत्थनिर-वेक्ख' (विसे)।

अण्णमण्ण देखो अण्णण्ण = अन्योन्य, 'अण्ण-मण्णमण्णुरत्तया' (गाया १, २)।

अण्णमय वि [दे] पुनरुक्त, फिर से कहा हुआ (दे १, २८)।

अण्णय देखो अन्नय (धर्मम ३६२)।

अण्णयर वि [अन्यतर] दो में में कोई एक (कप्प)।

अण्णया अ [अन्यदा] कोई समय में (उप ६ टी)।

अण्णव पु [अर्णव] १ समुद्र। २ संसार, 'अण्णवसि महोघसि एणे तिण्णे दुहत्तरे' (उत्त ५)।

अण्णव न [अण्वत्] एक लोकोत्तर मुहूर्त का नाम (ज ७)।

अण्णह न [अन्वह] प्रतिदिन, हमेशा (धर्म १)।

अण्णह देखो अण्णत्त (पट्)।

अण्णह } अ [अन्यथा] अन्य प्रकार से,
अण्णहा } विपरीत रीति से, उलटा (पट्, महा)। °भाव पुं [°भाव] विपरीत्य, उलटा-पन (वृह ४)।

अण्णहि देखो अण्णत्त (पट्)।

अण्णा स्त्री [आज्ञा] आज्ञा, आदेश (गा २३, अमि ६३, मुद्रा ५७)।

अण्णाइट्ट वि [अन्वादिष्ट] आदिष्ट, जिसको आदेश दिया गया हो वह, 'अण्णुणए मालागारे मोग्गएणिएणा जक्खेणं अण्णाइट्टे समाणे' (अंत २०)।

अण्णाइट्ट वि [अन्वादिष्ट] १ व्याप्त (भग १४, १)। २ पराधीन, परवश (भग १८ ६)।

अण्णाइस (अप) वि [अन्यादृश] दूसरे के जैसा (पि २४५)।

अण्णाण न [अज्ञान] १ अज्ञान, अज्ञानकारी, मूर्खता (दे १, ७)। २ मिथ्या ज्ञान, झूठा ज्ञान (भग ८, २)। ३ वि ज्ञान-रहित, मूर्ख (भग १, ६)।

अण्णाण न [दे] दाय, विवाह-काल में वधू को अथवा वर को जो दान दिया जाता है वह (दे १, ७)।

अण्णाणि वि [अज्ञानिन्] १ ज्ञान रहित, मूर्ख (सूत्र १, ७)। २ मिथ्या-ज्ञानी (पच १)। ३ अज्ञान को ही श्रेयस्कर माननेवाला, अज्ञान-वादी (सूत्र १, १२)।

अण्णाणिय वि [आज्ञानिक] १ अज्ञानवादी, अज्ञानवाद का अनुयायी (आव ६, सम १०६)। २ मूर्ख, अज्ञानी (सूत्र १, १, २)।

अण्णाय वि [अज्ञात] अविदित, नहीं जाना हुआ (परह २१)।

अण्णाय पु [अन्याय] न्याय का अभाव (आ १२)।

अण्णाय वि [दे] आद्रं, गोला (से ४, ६)। अण्णाय वि [अन्याय्य] न्याय से च्युत, न्याय-विरुद्ध, 'जे विग्गहीए अण्णायभासी, न से समे होइ अममपत्ते' (सूत्र १, १३)।

अण्णाय्य (शौ) ऊपर देखो (मा २०)।

अण्णारिच्छ वि [अन्यादृच्छ] दूसरे के जैसा (प्रामा)।

अण्णारिस वि [अन्यादृश] दूसरे के जैसा (पि २४५)।

अण्णासय वि [दे] विस्तृत, विद्याया हुआ (पट्)।

अण्णिज्जमाण देखो अण्णे।

अण्णिय वि [अन्वित] युक्त, सहित (सूत्र १, १०, नाट)।

अण्णिया स्त्री [दे] देखो अण्णी (दे १, ५१)।

अण्णिया स्त्री [अन्निका] एक विख्यात जैन मुनि की माता का नाम (ती ३६)। °उत्त पु [°पुत्र] एक विख्यात जैन मुनि (ती ३६)।

अणुपालिय वि [अनुपालित] रक्षित, प्रति-
पालित (ठा ८) ।

अणुपास देखो अणुयस्स । वक्र. अणुपासमाण
(दस २) ।

अणुपिठ न [अनुपिठ] अनुक्रम, 'अणुपिठ-
मिद्धाड' (सम्म) ।

अणुपिहा देखो अणुपेहा (द्रव्य ३५) ।

अणुपुख न [अनुपुख] मूल तक, अन्त-पर्यन्त,
'अणुपुखमावडतावि आवया तस्म ऊमवा वृत्ति'
(कुप्र ३३) ।

अणुपुव्व वि [अनुपूर्व] क्रमवार, आनुक्रमिक
(ठा ४, ४) । क्रि वि क्रमश (पात्र) । 'सो
[शस्] अनुक्रम मे (आचा) ।

अणुपुव्व न [अनुपूर्व] क्रम, परिपाटी, अनु-
क्रम (राय) ।

अणुपुव्वी स्त्री [अनुपूर्वी] ऊपर देखो (पात्र) ।
अणुपेक्खा स्त्री [अनुप्रेक्षा] भावना, चिन्तन,
विचार (पउम १४, ७७) ।

अणुपेहण न [अनुप्रेक्षण] ऊपर देखो (उप
१४२ टी) ।

अणुपेहा स्त्री [अनुप्रेक्षा] ऊपर देखो (पि
३२३) ।

अणुपेहि वि [अनुप्रेक्षिन्] चिन्तन-कर्ता
(सूत्र १, १०, ७) ।

अणुप्पइन्न वि [अनुप्रकीर्ण] एक दूसरे से
मिला हुआ, मिश्रित (कप्प) ।

अणुप्पणी सक [अनुप्र+णी] १ प्रणय
करना । २ प्रसन्न करना । वक्र. अणुप्पणत
(उप पृ २८) ।

अणुप्पगथ [अनुप्रग्रन्थ] सन्तोषी, अल्प परि-
ग्रह वाला (ठा ६) ।

अणुप्पगथ वि [अनुप्रग्रन्थ] ऊपर देखो
(ठा ६) ।

अणुप्पण वि [अनुत्पन्न] अवित्तमान (नीच
५) ।

अणुप्पत्त देखो अणुपत्त (कप्प) ।

अणुप्पदा सक [अनुप्र+दा] दान देना, फिर-
फिर देना । अणुप्पदेइ (कस) । कृ अणुप्प-
दायव्व (कस) । हेक्क अणुप्पदारं (उवा) ।

अणुप्पदाण न [अनुप्रदान] दान, फिर-फिर
दान देना (आव ६) ।

अणुप्पमु पु [अनुप्रमु] स्वामी के न्यानापन्न
प्रतिनिधि (निचू २) ।

अणुप्पया देखो अणुप्पदा । अणुप्पएट (कम) ।
हेक्क अणुप्पयाड (उवा) ।

अणुप्पयाण देखो अणुप्पदाण (आचा) ।
अणुप्पवत्त सक [अनुप्र+वृत्] अनुसरण
करना । हेक्क अणुप्पवत्तए (विसे २०७) ।

अणुप्पवाइत्तु वि [अनुप्रवाचयित्तु]
अणुप्पवाएत्तु) अध्यापक, पाठक पढ़ानेवाला
(ठा ५, १, गच्छ १) ।

अणुप्पवाद पु [अनुप्रवाद] कथन (सूत्र २
७, १३) ।

अणुप्पवाय सक [अनुप्र+वाचय] पढ़ाना ।
वक्र अणुप्पवाएमाण (जं ३) ।

अणुप्पवाय न [अनुप्रवाद] नववा पूर्व, वार-
हवें जेन अग्र-अन्य का एक अग्र-विशेष (ठा ६) ।

अणुप्पविट्ट देखो अणुपविट्ट (कम) ।
अणुप्पवित्ति स्त्री [अनुप्रवृत्ति] अनुप्रवेश,
अनुगम (विसे २१६०) ।

अणुप्पविस देखो अणुपविस । अणुप्पविमड
(उवा) । सक अणुप्पवेसेत्ता (निचू १) ।

अणुप्पवेस देखो अणुपवेस (नाट) ।

अणुप्पवेसण न [अनुप्रवेशन] देखो अणुप-
वेस (नाट) ।

अणुप्पसाद (शौ) सक [अनुप्र+सादय]
प्रसन्न करना । अणुप्पसादेदि (नाट) ।

अणुप्पसूय वि [अनुप्रसूत] उत्पन्न, पैदा
किया हुआ (आचा) ।

अणुप्पाइ वि [अनुपातिन्] युक्त, सबद्ध,
सबन्धी (निचू १) ।

अणुप्पिय वि [अनुप्रिय] अनुकूल, दृष्ट (सूत्र
१, ७) ।

अणुप्पेत वि [अनुत्प्रयन्] दूर करता,
हटाता हुआ,

जम्मि अविसरणहिययत्तणेण ते
गारव वलग्गति ।

त विसममणुप्पेतो गह्याण विही खलो होइ'
(गडड) ।

अणुप्पेच्छ देखो अणुप्पेह,
'तह पुक्वि कि न कय, न वाहए

जेण मे ममत्थोवि ।

एहिह कि कस्स व कुप्पिमोत्ति धीरा ।
अणुप्पेच्छ' (उव) ।

अणुप्पेसिय वि [अनुप्रेषित] पीछे से भेजा
हुआ (नाट) ।

अणुप्पेह सक [अनुप्र+ईत्] चिन्तन करना,
विचारना अणुप्पेहि (पि ३२३) । कृ अणु-
प्पेहिगव्व (पसू १) ।

अणुप्पेहा स्त्री [अनुप्रेक्षा] चिन्तन भावना,
विचार, स्वाध्याय-विशेष (उत्त २९) ।

अणुप्पास पु [अनुस्पर्श] अनुमान, प्रभाव,
'लाहम्मवेव अणुप्फामो मत्ते अन्नयरामवि'
(दस ६) ।

अणुप्फमिय वि [अनुप्रोत्तिङ्गन] पोछा हुआ,
माक किया हुआ (म ७८८) ।

अणुवव सक [अनु+वन्ध] १ अनुसरण
करना । २ सबन्ध बनाने रखना । अणुववति
(उत्तर ७१) । वक्र. अणुवंधत (वेणी १८३) ।
वक्क अणुववीअमाण अणुवधिज्जमाण
(नाट) । हेक्क अणुवधितु (शौ) (मा ६) ।

अणुवध पु [अनुवन्ध] १ मततपन निरुत्त-
रना विच्छेद का अभाव (ठा ८, उवर १२८) ।
२ सबन्ध (स १३८, गडड) । ३ कमा का
सबन्ध (पचा १५) । ४ कर्मों का विचार
परिणाम (उवर ४, पचा १८) । ५ म्नेह
प्रेम (म २७२)

'नयणाण पडउ वज्ज, ग्रहवा वज्जम्म
वड्डिल किपि ।

अमुणियजणेवि दिट्ठे, अणुवध जाणि कुव्वति'
(नुर ४, २०) । ६ शास्त्र के आरम्भ में कहने
लायक अधिकारी विषय, प्रयोजन और मन्त्र
(आव १) । ७ निर्वन्ध आग्रह (म ४५८) ।

अणुववअ वि [अनुवन्धक] अनुवन्ध करने-
वाला (नाट) ।

अणुवधण न [अनुवन्धन] अनुकूल वचन
(उत्त २६, ४५, मुख २९, ४५) ।

अणुवधणा स्त्री [अनुवन्धना] अनुमन्वान,
विमृत अर्थ का सन्धान (पचा १२, ४५) ।

अणुवधि वि [अनुवन्धिन] अनुवन्धवाना,
अनुवन्ध करनेवाला (धर्म २ म १२७) ।

अणुवधिअ न [दे] हिक्का-रोग, हिचकी (दे
१, ४४) ।

अणुवधेल वि [अनुवन्धिन] विच्छेद-रहित,
अनुगमवाला, अवितन्धर (उप २३३) ।

वन्धन हो वह । २ पु आघाकर्म दोष (पिंड ६५) ।

अत्तट्ट वि [आत्मार्थ] १ आत्मीय, स्वकीय (धर्म २) । २ पु स्वार्थ, 'इह कामनियत्तस्स अत्तट्टे नावरज्जइ' (उत्त ८) ।

अत्तट्टिय वि [आत्मार्थिक] १ आत्मीय । २ जो अपने लिए किया गया हो, 'उवक्खड भोयण माहणणां अत्तट्टिय सिद्धमहेगपक्ख' (उत्त १२) ।

अत्तण } देखो अप्प = आत्मन् (मृच्छ
अत्तणअ } २३६) । १ केरक वि [आत्मीय]
निजी, स्वकीय (नाट, पि ४०१) ।

अत्तणअ } (शौ) वि [आत्मीय] स्वकीय,
अत्तणक } अपना, निजका (पि २७७, नाट) ।
अत्तणज्जिय वि [आत्मीय] स्वकीय (ठा ३, १) ।

अत्तणीअ (शौ) ऊपर देखो (स्वप्न २७) ।

अत्तमाण देखो आवत्त = आ + वृत् ।

अत्तय पु [आत्मज] पुत्र, लडका । १ या स्त्री
[०जा] पुत्री, लडकी (विपा १ १) ।

अत्तव्व वि [अत्तव्य] खाने लायक, भक्ष्य (नाट) ।

अत्ता स्त्री [दे] १ माता, माँ (दे १, ५१,
चार ७०) । २ सासू (दे १, ५१, गा ६६७,
हेका ३०) । ३ फूफा । ४ सखी (दे १, ५१) ।

० अत्ता देखो जत्ता (प्रति ८२) ।

अत्ताण देखो अत्त = आत्मन्, (पि ४०१) ।

अत्ताण वि [अत्राण] १ शरण-रहित, रक्षक-
वर्जित (परह १, १) । २ पु कन्धे पर लाठी
रखकर चलनेवाला मुसाफिर । ३ फटे-टूटे कपड़े
पहनकर मुसाफिरी करनेवाला यात्री (वृह १) ।
अत्ति पु [अत्रि] इस नाम का एक ऋषि
(गउड) ।

अत्ति स्त्री [अत्ति] पीढा, दु ख (कुमा, सुपा
१८५) । १ हर वि [०हर] पीढा-नाशक, दु ख
का नाश करनेवाला (अभि १०३) ।

अत्तिहरी स्त्री [दे] दूती, समाचार पहुँचाने-
वाली स्त्री (पड्) ।

अत्तीकर सक [आत्मी + कृ] अपने अधीन
करना, वश करना । अत्तीकरेइ; वक्क. अत्ती-
करत (निचू ४) ।

अत्तीकरण न [आत्मीकरण] अपने वश
करना (निचू ४) ।

अत्तुकरिस } पु [आत्मोत्कर्ष] अभिमान,
अत्तुक्कोस } गर्व, 'तम्हा अत्तुकरिसो वज्जे-
यव्वो जइजणेण' (सूअ १, १३, सम ७१) ।

अत्तुक्कोसिय वि [आत्मोत्कर्षिक] गर्विष्ठ,
अभिमानी (श्रौप) ।

अत्तेय पु [आत्रेय] १ अत्रि ऋषि का पुत्र
(पि १०, ८३) । २ एक जैन मुनि (विमे
२७६९) ।

अत्तो अ [अतस्] १ इसमे, इस हेतु से
(गउड) । २ यहा से (प्रामा) ।

अत्थ देखो अट्ट = अर्थ (कुमा, उप ७२८,
८८४ टी, जी १, प्रासू ६५, गउड), 'अरोड-
अत्थे कहिए विलावो' (गोय ७), 'अत्यमट्टो
फलत्थोय' (विसे १०३६, १२४३) । ० जोणि
स्त्री [०योनि] घनोपाजन का उपाय, माम,
दाम, दण्ड रूप अर्थ नीति (ठा ३, ३) । ० णय
पु [०नय] शब्द को छोड़ अर्थ को ही मुख्य
वस्तु माननेवाला पक्ष (अणु) । ० सत्य न
[शास्त्र] अर्थ शास्त्र, संपत्ति-शास्त्र (णाया १,
१) । ० वइ पु [०पति] १ धनी । २ कुवेर
(वव ७) । ० वाय पु [०वाद] १ गुणवर्णन ।
२ दोष-निरूपण । ३ गुण-वाचक शब्द । ४
दोष-वाचक शब्द (विमे) । ० वि वि [०वित्]
अर्थ का जानकार (पिंड १ भा) । ० सिद्ध वि
[०सिद्ध] १ प्रभूत धनवाला (ज ७) । २
पु ऐरवत क्षेत्र के एक भावी जिनदेव (तित्थ) ।
० लिय न [०लीक] धन के लिए असत्य
बोलना (परह १, २) । ० लोयण न
[०लोचन] पदार्थ का सामान्य ज्ञान (आचू
१) । ० लोयण न [०लोकन] पदार्थ का
निरीक्षण,

'अत्थालोयण-तरला, इयरकईण भमति बुद्धीओ ।
अत्थन्वेय निरारम्भमेति हियय कइन्दाणं ॥'
(गउड) ।

अत्थ पुं [अस्त] १ जहा सूर्य अस्त होता है
वह पर्वत (से १०, १०) । २ मेरु पर्वत
(सम ६५) । ३ वि प्रविशमान (णाया १,
१३) । ० गिरि पुं [०गिरि] अस्ताचल (सुर
३, २७७, पउम १६ ४५) । ० सेल पु
[०शैल] अस्ताचल (सुर ३, २२६) । ० चल
पुं [०चल] अस्त-गिरि (कप्पु) ।

अत्थ न [अस्त्र] हथियार, आयुध (पउम ८,
५०, से १४, ६१) ।

अत्थ सक [अर्थय] मांगना, याचना करना,
प्रार्थना करना, विज्ञप्ति करना । अत्थयए
(निचू ४) ।

अत्थ अक [स्था] बैठना । अत्थइ (आरा ७१) ।
अत्थ } देखो अत्त = अत्र (कप्प, पि २६३,
अत्थं } ३६१) ।

अत्थडिल वि [अस्थण्डिल] साधुओं के रहने
के लिए अयोग्य स्थान, क्षुद्र जन्तुओं से व्याप्त
स्थान (श्रोघ १३) ।

अत्थंत वक्क [अस्त यत्] अस्त होता हुआ
(वजा २२) ।

अत्थकिरिआ स्त्री [अर्थक्रिया] वस्तु का
व्यापार, पदार्थ से होनेवाली क्रिया (धर्मसं
४६६) ।

अत्थक्क न [दे] १ अकारण, प्रकम्मात्, वे-
समय (उप ३३०, से ११, २४, आ ३०,
भवि), 'अत्थक्कज्जिउभतहित्थिअस्मा पहिअ-
जाआ' (गा ३८६) । २ वि. अखिन्न (वजा
६) । ३ क्वि वि अनवरत, हमेशा (गउड) ।

अत्थग्घ वि [दे] १ मध्य-वर्ती, बीच का,
'समए अत्थग्घे वा ओइएणेसु घए पट्टं' (श्रोघ
३४) । २ अगाध, गभीर । ३ न. लम्बाई,
आयाम । ४ स्थान, जगह (दे १, ५४) ।

अत्थण न [अर्थन] प्रार्थना, याचना (उप
७२८ टी) ।

अत्थणिऊर पुन [अर्थनिपूर] देखो अच्छ-
णिउर (अणु ६६) ।

अत्थणिऊरग पुन [अर्थनिपूराङ्ग] देखो
अच्छणिउरग (अणु ६६) ।

अत्थत्थि वि [अर्थार्थिन्] धन की इच्छा-
वाला (उव १३६) ।

अत्थम अक [अस्तम् + इ] अस्त होना, अदृश्य
होना । अत्थमइ (पि ५५८) । वक्क. अत्थमत
(पउम ८२, ५६) ।

अत्थमण न [अस्तमयन] अस्त होना, अदृश्य
होना (श्रोघ ५०७, से ८, ८५, गा २८४) ।

अत्थमाविय वि [अस्तमापित] अस्त कर-
वाया हुआ (सम्मत्त १६१) ।

अत्थमिय वि [अस्तमित] १ अस्त हुआ,

अणुयत्त देखो अणुवत्त = अनु + वृत् । अणु-
यत्तऽ (भवि) । वक्र. अणुयत्तत्त, अणुयत्त-
माण (पंचमा, विसे १५५१) । संक्र. अणु-
यत्तिऊण (गउड) ।

अणुयत्त देखो अणुवत्त = अनुवृत्त (भवि) ।
अणुयत्तणा स्त्री [अनुवर्तना] १ बीमार की
सेवा-शुश्रूषा करना (बृह १) । २ अनुसरण ।
३ अनुकूल वर्तन (जीव १) ।

अणुयत्तिय वि [अनुवृत्त] अनुकूल किया
हुआ, प्रनादित (सुपा १३०) ।

अणुयरिय वि [अनुचरित] आचरित, अनु-
ष्ठित (गाया १, १) ।

अणुया देखो अणुण्णा (सूअ २, १) ।

अणुयाव देखो अणुताव (स १८३) ।

अणुयास पु [अनुकाश] विशेष विकास
(गाया १, १) ।

अणुरगा स्त्री [दे] गाढी (बृह १) ।

अणुरगि वि [अनुरङ्गिन्] अनुकरण-कर्ता
(सुज १०, ८) ।

अणुरंगिय वि [अनुरङ्गित] रगा हुआ (भवि) ।
अणुरज सक [अनु + रज्ज्] अनुरागी
करना, प्रीणित करना । वक्र. अणुरंजअत
(नाट) । सक. अणुरजिअ (नाट) ।

अणुरजणन [अनुरञ्जन] राग, आनक्ति (विसे
२६७७) ।

अणुरंजिएल्लय } वि [अनुरञ्जित] अनुरक्त
अणुरजिय } किया हुआ, अनुरागी बनाया
हुआ (ज ३, महा) ।

अणुरक्क वि [अनुरक्त] अनुराग-प्राप्त, प्रेम-
प्राप्त (नाट) ।

अणुरज्ज अक [अनु + रज्ज्] अनुरक्त
होना, प्रेमी होना, 'अणुरजति खणेण जुवईउ
खणेण पुण विरजति' (महा) ।

अणुरत्त देखो अणुरक्क (गाया १, १६) ।

अणुरसिय वि [अनुरसित] बोलाया हुआ,
आहूत (गाया १, ६) ।

अणुराइ } वि [अनुरागिन्] अनुराग-
अणुराइल्ल } वाला, प्रेमी (स ३३०, महा,
सुर १३, १२०) ।

अणुराग पुं [अनुराग] प्रेम, प्रीति (सुर ४,
२२८) ।

अणुरागय वि [अन्वागत] १ पीछे आया
हुआ । २ ठीक-ठीक आया हुआ । ३ न
स्वागत (भग २, १) ।

अणुरानि देखो अणुराइ (महा) ।

अणुराय देखो अणुराग (प्रासू १११) ।

अणुराहा स्त्री [अनुराधा] नक्षत्र-विशेष (सम
६) ।

अणुरध सक [अनु + रुध्] १ अनुरोध
करना । २ स्वीकार करना । ३ आज्ञा का
पालन करना । ४ प्रार्थना करना । ५ अक्र.
अधान होना । कर्म अणुरधिजइ (हे ४, २४८
प्राप्ता) ।

अणुरुअ वि [अनुरुप्] १ योग्य, उचित
अणुरुव } (से ६, ३६) । २ अनुकूल (मुपा
११०) । ३ सदृश, तुल्य (गाया १, १६) ।
४ न. समानता, योग्यता (सम्म) ।

अणुरोह पु [अनुरोध] १ प्रार्थना, 'ता ममा-
णुरोहेण एत्थ घरे निचमेव आगतव्व' (महा) ।
२ दक्षिण, दक्षिणता (पाथ) ।

अणुरोहि वि [अनुरोधिन्] अनुरोध करने-
वाला (स १२१) ।

अणुलग्ग वि [अनुलग्न] पीछे लगा हुआ (गा
३४५, सुर ३, २२६, सूक्त ७) ।

अणुलद्ध वि [अनुलब्ध] १ पीछे से मिला
हुआ । २ फिर से मिला हुआ (नाट) ।

अणुलाव पु [अनुलाप] फिर-फिर बोलना
(ठा ७) ।

अणुलिप सक [अनु + लिप्] १ पोतना,
लेप करना । २ फिर से पोतना । संक्र. अणु-
लिपित्ता (पि ५८२) । हेक. अणुलिपित्तए
(पि ५७८) ।

अणुलिपण न [अनुलेपन] लेप, पोतना (पणह
२, ३) ।

अणुलित्त वि [अनुलिप्त] लिप्त, पोता हुआ
(कप्प) ।

अणुलिह सक [अनु + लिह्] १ चाटना ।
२ छूना । वक्र. अणुलिहत (सम १३१),
'गयणयलमणुलिहंत' (पउम ३६, १२) ।

अणुलेवण न [अनुलेपन] १ लेप, पोतना
(स्वप्न ६४) । २ फिर से पोतना (पणह २) ।

अणुलेविय वि [अनुलेपित] लिप्त, पोता हुआ,
'कम्माणुलेविमो तो' (पउम ८२, ७५) ।

अणुलोम सक [अनुलोमय्] १ क्रम में
रखना । २ अनुकूल करना । सक. अणुलोम-
इत्ता (ठा ६) ।

अणुलोम न [अनुलोम] १ अनुक्रम, यथाक्रम;
'वत्थ दुहाणुलोमेण तह य पडिलोममो भवे
वत्थ' (सुर १६, ४८) ।

अणुलोम वि [अनुलोम] मीघा, अनुकूल
(ज २) ।

अणुल्लग देखो अणुल्लय (सुख ३६, १३०) ।
अणुल्लग वि [अनुल्लवण] अनुद्धत, अनुद्धट
(बृह ३) ।

अणुल्लय पु [अनुल्लक] एक द्वीन्द्रिय क्षुद्र जन्तु
(उत्त ३६) ।

अणुल्लाव पु [अनुल्लाप] खराब कथन, दुष्ट
उक्ति (ठा ३) ।

अणुव पुं [दे] बलात्कार, जबरदस्ती (दे १,
१६) ।

अणुवइट्ठ वि [अनुपदिष्ट] १ अ-कवित, अ-
व्याख्यात । २ जो पूर्व-परम्परा से न आया हो,
'अणुवइट्ठ नाम ज एणो आयरियपरपरागय'
(नीच ११) ।

अणुवउत्त वि [अनुपयुक्त] असावधान
(विसे) ।

अणुवएस पु [अनुपदेश] १ अयोग्य उपदेश
(पचा १२) । २ उपदेश का अभाव । ३
स्वभाव (ठा २, १) ।

अणुवओग वि [अनुपयोग] १ उपयोग-रहित ।
२ उपयोग का अभाव, असावधानता (अणु) ।

अणुवक वि [अनुवक्र] अत्यंत वक्र, बहुत
टेंढा, 'जाव अगारथा रासि विअ अणुवक पणि-
गमण गु करेदि' (माल ६०) ।

अणुवदण न [अनुवन्दन] प्रति-नमन, प्रनि-
प्रणाम (साधं ३६) ।

अणुवक्क देखो अणुवंक (पि ७४) ।

अणुवक्ख वि [अनुपाख्य] नाम-रहित, अनि-
वंचनीय (बृह १) ।

अणुवक्खइ वि [अनुपस्कृत] सम्कार-रहित
(पाक) (निचू १) ।

अणुवच्च सक [अनु + व्रज्] अनुसरण
करना, पीछे-पीछे जाना । अणुवच्चइ (हे ४,
१०७) ।

अणुवक्षिअ वि [अनुव्रजित] अनुसृत (कुमा) ।

अथुरण न [दे आस्तरण] विछौना (म ६७) ।

अथुरिय वि [दे आस्तरण] विछाया हुआ (स २३५, दे १, ११३) ।

अथुवड न [दे] भल्लानक, भिलावा वृक्ष का फल (दे १, २३) ।

अथेक वि [दे] आकस्मिक, अचिन्तित (मे १२, ४७) ।

अथोगाह देखो अथुगाह (मम ११) ।

अथोगाहण देखो अथुगाहण (भग ११, ११) ।

अथोडिग वि [दे] आकट, खोचा हुआ (महा) ।

अथोभय वि [अन्तेभक] 'उत', 'वे' आदि निरर्थक शब्दों के प्रयोग में अप्रति (सूत्र) (वृह १) ।

अथोवगाह देखो अथुगाह (पराण १५) ।

अथक न [दे] १ अकारण, अनवसर, अकस्मात् (पड्) । २ वि पमरनेवाला, फेलनेवाला (कुमा) ।

अथवण पु [अथर्वण] चौथा वेद-शास्त्र (कप्प, राया १, ५) ।

अथिर वि [अस्थिर] १ चंचल, चपल (कुमा) । २ अनित्य, विनश्वर (कुमा) । ३ अहट, शिथिल (शोध) । ४ निर्बल (वव २) । ५ मजबूती से नहीं बैठता हुआ, नहीं जमा हुआ (अभ्यास), 'अथिरस्म पुव्वगहियस्म, वत्तणा ज इह थिरीकरण' (पचा १२) । ६ 'णाम न [नामन्] नाम-कर्म का एक भेद (मम ६७) ।

अद मक [अद्] खाना, भोजन करना । अदइ, अदए (पड्) ।

अदसण देखो अहसण (पचभा) ।

अदसण पु [दे] चोर, डाकू (दे १, २६, पड्) ।

अदंसिया स्त्री [अदशिका] एक प्रकार की मोठी चीज (पराण १७) ।

अदक्खु वि [अदृष्ट] १ नहीं देखा हुआ । २ असंबन्ध (सूत्र १, २, ३) ।

अदक्खु वि [अदक्ष] अनिपुण, अकुशल (सूत्र १, २, ३) ।

अदक्खु वि [अदृश्य] १ नहीं देखनेवाला,

अन्वा । २ असंबन्ध, 'अदक्खुव' । दक्खुवाहिय सहसु अदक्खुदमणा' (सूत्र १, २, ३) ।

अदण न [अदन] भोजन (वृह १) ।

अदत्त वि [अदत्त] नहीं दिया हुआ (पराण १, ३) । १ 'हार वि [हार] चोर (आचा) । २ 'हारि वि [हारिन्] चोर (सूत्र १, ५, १) ।

३ 'दाण न [दान] चोरी (मम १०) । ४ 'दाणवेरमण न [दानवेरमण] चोरी से निवृत्ति, नृतीय व्रत (पराण २, ३) ।

अदन्न देखो अन्न (निरि ३१०) ।

अदच्च वि [अदच्च] अनल्प, बहुत (ज ३) । अदय वि [अदय] निर्दय, निष्ठुर (निच्च २) ।

अदिइ देखो अइइ (ठा २, ३) ।

अदिण देवो अदत्त (ठा १) ।

अदित्त वि [अदित्त] १ दर्प-रहित, नम्र (वृह १) । २ अहिंसक (शोध ३०२) ।

अदिन्न देखो अदत्त (मम १०) ।

अदिस्स देखो अहिरस (मम ६०, सुपा १५३) ।

अदिहि स्त्री [अधृति] अधीराई, धीरज का अभाव (पाय) ।

अदीण वि [अदीन] दीनता-रहित । १ 'सत्तु पु [अत्रु] हस्तिनापुर का एक राजा (राया १, ८) ।

अदु अ [दे] १ आनन्तर्य-सूचक अव्यय, अव (आचा) । २ इसमें (सूत्र १, २, २) ।

अदु अ [दे] १ अथवा, या (सूत्र १, ४, २, १५, उत ५, १२, दमच्च २, १४) । २ अधिकारान्तर का सूचक (सूत्र १, ४, २, ७) ।

अदुत्तर अ [दे] आनन्तर्य-सूचक अव्यय, अव, वाद (राया १, १) ।

अदुय न [अद्रुय] अ-शीघ्र, धीरे-धीरे (भग ७, ६) । १ 'वधण न [वन्धन] दीर्घ काल के लिए बन्धन (सूत्र २, २) ।

अदुव १ अ [दे] या, अथवा, और, 'हिसेज अदुवा १ पाणभूयाइ, नसे अदुव थावरे' (दस ५, ५, आचा) ।

अदोलि १ वि [अदोलिन्] स्थिर, निश्चल अदोलि १ (कुमा) ।

अह वि [आह] १ गीला, भोगा हुआ, अकठिन (कुमा) । २ पुं इस नाम का एक

राजा । ३ एक प्रणि राजकुमार और पीछे में जैन मुनि । ४ वि. आर्द्र-राजा के वंशज । ५

नगर-विशेष (सूत्र २, ६) । ६ 'कुमार पु [कुमार] एक राजकुमार और बाद में जैन

मुनि, 'अहकुमारो दहन्तहारो अ' (पडि) । ७ 'मुत्था स्त्री [मुस्ता] कन्द-विशेष, नागर

मोथा (अ २०) । ८ 'मल्लग न [मल्लक] १ हरा आमला । २ पीलु-वृक्ष की कली (धर्म २) । ३ शण वृक्ष की कली (पव ४) । ४ 'रिट्ट

पु [रिट्ट] कर्म का नाम (आवम) ।

अह पु [अह] १ मेव, वर्या, वरिष (हे २, ७६) । २ वर्ष, मन्वन्तर, सवत् (मुर १३, ७०) ।

अह पु [अह] आकाश (भग २०, २) ।

अह पुन [दे] १ पन्थाम । २ वणन (मक्षि ४७) ।

अह मक [अह] मारना, पीटना (वव १०) ।

अहइअ न [अहइ] १ भेद का अभाव । २ वि भेद-रहित तन्म वगैरह (नाट) ।

अहइज्ज वि [आर्द्रिय] १ आर्द्र-कुमार-सम्बन्धी । २ इस नाम का 'सूत्रकृताङ्ग' सून का एक अव्ययन (सूत्र २, ६) ।

अहसण न [अदर्शन] १ दर्शन का निषेध, नहीं देखना (मुर ७, २४५) । २ वि परोक्ष, जिसका दर्शन नहीं हो, 'एकपणचिय हाहिति मज्ज अहसणा इरिइ' (सुपा ६१७) । ३

नहीं देखनेवाला, अन्वा । ४ 'धीरणी' या अवम निद्रा वाला (गच्छ १, पव १०७) । ५ 'भूअ,

'हूय वि [भूत] जो अहम्य हुआ हो (मुर १०, ५६, महा) ।

अहण १ वि [दे] आकुल, व्याकुल (दे १, अहण १५, वृह १, निच्च १०) ।

अहन्न देखो अहण (सुख १, १४) ।

अहव वि [आहव] गला हुआ (आव ६) ।

अहव्व न [अहव्व] अवस्तु, वस्तु का अभाव, (पचा ३) ।

अहह सक [आ + अह] ज्वालना, पानी-तेल वगैरह को खूब गरम करना । अहहइइ, अहह-हेमि, संक. अहहइत्ता (उवा) ।

अहहिय वि [आहित] रखा हुआ, स्थापित (विपा १, ६) ।

अणुवाल्गना स्त्री [अनुपालना] १ ऊपर देखो (पंचू) । २ कल्प पु [कल्प] साधु-गण के नायक की श्रकस्मात् भृत्य हो जाने पर गण की रक्षा के लिए शास्त्रीय विधान (पचभा) ।

अणुवालय वि [अनुपालक] १ रक्षक, परिपालक । २ पु गोशालक के एक भक्त का नाम (भग २४, २०) ।

अणुवाम सक [अनु + वासय्] व्यवस्था करना । अणुवासेज्जासि (आचा) ।

अणुवास पु [अनुवास] एक स्थान में अमुक काल तक रह कर फिर वही वाम करना (पचभा) ।

अणुवासण न [अनुवासन] १ ऊपर देखो । २ यन्त्र-द्वारा तेल आदि को अपान से पेट में चढ़ाना (गाया १, १३) ।

अणुवासणा स्त्री [अनुवासना] ऊपर देखो (पचभा, गाया १, १३) कल्प पु [कल्प] अनुवास के लिए शास्त्रीय व्यवस्था (पचभा) ।

अणुवासग वि [अनुपासक] १ सेवा नहीं करनेवाला । २ पु जैनतर गृहस्थ (निबू ८) ।

अणुवासर न [अनुवासर] प्रतिदिन, हमेशा (मुर १, २४१) ।

अणुवित्ति स्त्री [अनुवृत्ति] १ अनुकूल वर्तन (कुमा) । २ अनुमरण (उप ८३३ टी) ।

अणुविद्ध द्वि [अनुविद्ध] सबद्ध, जुड़ा हुआ (से ११, १५) ।

अणुविस सक [अनु + विश्] प्रवेश करना । अणुविसंति (सिक्का ७७) ।

अणुविहाण न [अनुविधान] १ अनुकरण । २ अनुसरण (विसे २०७) ।

अणुवीइ स्त्री [अनुवीचि] अनुकूलता, 'वेया-णुवीइ मा कासि चोइच्चतो गिलाइ से भुजो' (सूत्र १, ४, १, १६) ।

अणुवीइ } अ [अनुविचिन्त्य] विचार
अणुवीई } कर, पर्यालोचना कर (पि ५६३,
अणुवीति } आचा, दस ७) । देखो अणु-
अणुवीतिय } चित ।

अणुवीइत्तु } देखो अणुवीई (सूत्र १, १२,
अणुवीय } २, १, १०, १) ।

अणुवूह सक [अनु + वृह] अनुमोदन करना, प्रशंसा करना । अणुवूहेइ (कप) ।

अणुवूहेत्तु वि [अनुवृहत्] अनुमोदन करने वाला (ठा ७) ।

अणुवेद सक [अनु + वेदय्] अनुभव करना । वक्तु अणुवेदयत (सूत्र १, ५, १) ।

अणुवेध } पु [अनुवेध] १ अनुगम, श्रव्य,
अणुवेह } सम्बन्ध (धर्मसं ७१२, ७१५) ।
२ समिश्रण (पिंड ५६) ।

अणुवेयण न [अनुवेदन] फल-भोग, अनुभव (स ४०३) ।

अणुवेल अ [अनुवेल] निरन्तर, सदा (पात्र) ।

अणुवेलधर पु [अनुवेलधर] नाग-कुमार देवों का एक इन्द्र (सम ३३) ।

अणुवेह देखो अणुपेह । वक्तु अणुवेहमाण (सूत्र १, १०) ।

अणुव्वइय वि [अनुव्रजित] अनुधृत (स ६८७) ।

अणुव्वज सक [अनु + व्रज्] १ अनुसरण करना । २ सामने जाना । अणुव्वजे (सूत्र १, ४, १, ३) ।

अणुव्वय न [अणुव्रत] छोटा व्रत, साधुओं के महाव्रतों की अपेक्षा लघु व्रत, जैन गृहस्थ के पालने के नियम (ठा ५, १) ।

अणुव्वय न [अनुव्रत] ऊपर देखो (ठा ५, १) ।

अणुव्वय पु [अणुव्रत] श्रावक-धर्म (पचा १०, ८) ।

अणुव्वयण न [अनुव्रजन] अनुगमन (धर्मवि ५४) ।

अणुव्वयय वि [अनुव्रजक] अनुसरण करने-वाला, 'अन्नमन्नमणुव्वया' (गाया १, ३) ।

अणुव्वया स्त्री [अनुव्रता] पतिव्रता स्त्री (उत्त २०) ।

अणुव्वस वि [अनुवश] अधीन, आयात, 'एवं नुम्मे सरागत्था अन्नमन्नमणुव्वया' (सूत्र १, ३, ३) ।

अणुव्वाण वि [अनुव्वान] १ अ-दन्ध, खुला हुआ (उप २११ टी) । २ स्निग्ध, चिकना, 'पव्वाण किचिउव्वाणमेव किचिच्च होअणु-व्वाण' (शोध ४८८) ।

अणुव्विग्ग वि [अनुद्विग्ग] अ-स्निग्ध, खेद-रहित (गाया १, ८, गा २८५) ।

अणुव्विवाग न [अनुविपाक] विपाक के अनुसार, 'एव तिरिकवे मणुयासुरेसु चउरतएतं तयणुव्विवाग (सूत्र १, ५, २) ।

अणुव्वीइय देखो अणुवीइ (जीव)

अणुसकम सक [अनुस + क्रम्] अनुसरण करना । अणुसंकमति (उत्त १३, २५) ।

अणुसग पु [अनुपङ्ग] १ प्रसंग, प्रस्ताव (प्रासू ३६, भवि) । २ मसंगं, सोहवत, 'मज्झिम्मे पुण एसा, अणुमङ्गेण हवन्ति गुण-दोमा' (सट्ठि २८, २७) ।

अणुसंगिअ वि [अनुपङ्गिक] प्रासङ्गिक (प्रवि १५) ।

अणुसचर सक [अनुस + चर्] १ परि-भ्रमण करना । २ पीछे चलना । अणुसंचरइ (आचा, सूत्र १, १०) ।

अणुसंज देखो अणुसज्जा अणुसंजति (पव ६८) ।

अणुसंध सक [अनुस + धा] १ खोजना, ढूँढना, तलाश करना । २ विचार करना । ३ पूर्वापर का मिलान करना । अणुसंधेमि (पि ५००) । सक्र अणुसंधिवि (भवि) ।

अणुसंधण } न [अनुसंधान] गवेषणा,
अणुसंधाण } खोज (सवोध ४४) । २ पूर्वा-
पर की संगति (धर्मसं ३०३) ।

अणुसधण } न [अनुसंधान] १ खोज,
अणुसधाण } शोध । २ विचार, चिन्तन, 'अन्ताणुसंधणपरा सुसावगा एरिसा हुंति' (आ २०) । ३ पूर्वापर का मिलान (पचा १२) ।

अणुसधिअ न [दे] अविच्छिन्न हिक्रा, निरन्तर हिचकी (दे १, ५६) ।

अणुसंभर सक [अनु + स्मृ] याद करना । अणुसंभरइ (दमनि ४, ५५) ।

अणुसवेयण न [अनुसवेदन] १ पीछे से जानना । २ अनुभव करना (आचा) ।

अणुससर सक [अनुसं + स्] गमन करना, भ्रमण करना, 'जो इमाओ दिसाओ वा विदिसाओ वा अणुसंसरइ' (आचा) ।

अणुससर सक [अनुस + स्मृ] स्मरण करना, याद करना । अणुसंसरइ (आचा) ।

अणुसज्ज अक [अनु + सज्] १ अनुसरण करना, पूर्व काल से कालान्तर में अनुवर्तन

अद्धक्खिअ न [दे] १ सजा करना, इशारा करना, संकेत करना (दे १ ३४)।

अद्धक्खिअ वि [अर्धाक्षिक] विकृत आख वाला (महानि ३)।

अद्धज १ १ १ [दे अर्धजङ्घा] एक प्रकार अद्धजघी } का जूता, मोचक नामक जूता, जिमे गुजराती में 'मोजडी' कहते हैं (दे १, ३३, २ ५, ६ १३६)।

अद्धद्वा १ [दे अद्धाद्धा] दिन अथवा रात्रि का एक भाग (मन ६ टी)।

अद्धपेडा ली [अर्धपेडा] मन्दूक के अर्ध भाग के आकरवाली गृह-पक्ति में भिक्षादन (उत्त ३०, १६)।

अद्धर पु [अध्वर] यज्ञ, याग (पाञ्च)।

अद्धर वि [दे] प्रच्छन्न, गुप्त, 'तम्हा एयस्स चिट्ठियमद्धरट्ठिओ चेव पिच्छामि, तओ राया तपिट्ठिलगो' (मम्मत्त १६१)।

अद्धविआर न [दे] १ मरडन, भूषा, 'मा कुण अद्धविआर' (दे १, ४३)। २ मडल, छोटा मडल (दे १, ४३)।

अद्धा ली [दे अद्धा] १ काल समय, वक्त, (ठा २, १, नव ४२)। २ मकेत (भग ११, ११)। ३ लब्धि, शक्ति-विशेष (विसे)। ४ अ तत्त्वत वन्तुत। ५ मात्सात्, प्रत्यय (पिंग)। ६ दिवस। ७ रात्रि (सत्त ६ टी)। °काल पु [°काले] सूर्य आदि की क्रिया (परि-भ्रमण) में व्यक्त होनेवाला समय, 'सूरकिरिया-विनिट्ठो गोदोहाडकिरियामु निरवेक्खो। अद्धा-कालो भरणई' (विमे)। °छेय पु [°छेद] समय का एक छोटा परिमाण, दो आवलिका परिमित काल (पच)। °पञ्चक्खण न [°प्रत्याख्यान] अमुक समय के लिए कोई व्रत या नियम करना (आच्छ ६)। °मीसय न [°मिसय] एक प्रकार की सत्य-मृषा आपा (ठा १०)। मीसिया ली [°मिश्रिता] देखो पूर्वाक्त अर्थ (परण ११)। °समय पु [°सम] नर्व-सूक्ष्म काल (परण ४)।

अद्धाण पु [अध्वान्] मार्ग, रास्ता (णाय १, १४, सुर ३, २२७)। °सीसय न [°शीर्षक] मार्ग का अन्त, अटवी आदि का अन्त भाग (वव ४, बृह ३)।

अद्धाण पु [अध्वन्] मार्ग, रास्ता, 'हवइ मलामं नरस्स अद्धाण' (सुख ८, १३)। °सीसय न [°शीर्षक] जहा पर संपूर्ण मार्ग के लोग अगे जाने के लिए एकत्र हो वह मार्ग-स्थान (वव ४)।

अद्धाणिय वि [आध्विक] पथिक, मुसाफिर (बृह ४)।

अद्धासिय वि [अध्यासिन] १ अविधित, आश्रित (सुर ७, २१४, उप २६४ टी)। २ आरूढ (स ६३०)।

अद्धि देखो डडिद्ध,

'घण्णा वहिरघग्गा, ने घिअ जीअति मारुणे लोए।

एण मुणति खलवअण, वलारण अद्धि न पेक्कति' (गा ७०४)।

अद्धिइ ली [अवृत्ति] धीरज का अभाव, अवीरज (पउम ११८, ३६)।

अद्धुडअ वि [अवोदित] थोडा कहा हुआ (पि १५८)।

अद्धुग्वाड वि [अवोद्घाट] आवा बुला, 'अद्धोद्घाडा थणया' (पउम ३८, १०७)।

अद्धुहु वि [अर्धचतुर्थ] नाढे तीन (सम १०१, विसे ६६३)।

अद्धुत्त वि [अवोक्त] थोडा कहा हुआ (वव १०)।

अद्धुव वि [अध्रुव] १ चचल, अस्थिर, विनश्वर (स ३३६, पचा १६, पउम २६, ३०)। २ अनियत (आचा)।

अद्धेअद्ध वि [अर्धार्ध] १ दिवा-भूत, दो टुकडेवाला, खरिडत। २ क्रिचि आवा-आघा जैसे हो,

'अद्धेअद्धफुडिआ, अद्धेअद्धकउउखअमिलवेडा। पवअभुआहअविसडा अद्धेअद्धमिहरा पडति महिहरा।' (मे ६, ६६)।

अद्धोरु } देखो अद्धोरुग (दे ३, ४५, ओव अद्धोरुग } ६७६)।

अद्धोवमिय वि [अद्धोपम्य, अद्धोपमिक] काल का वह परिमाण जो उपमा से समझाया जा सके, पल्योपम आदि उपमा-काल (ठा २, ४, ८)।

अध अ [अधस्] नीचे (आचा, पि १६०)। अध (शौ) अ [अथ] अथ, वाद (कप्पु)।

अवई (शौ) [अवाकम्] १ हाँ। २ और क्या। ३ जरूर अवश्य (कप्पु)।

अधं अ [अधस्] नीचे (पि ३४०)।

अधट्ट वि [अधृष्ट] अ-ठीठ (कुमा)।

अधण वि [अधन] निर्धन, गरीब,

'रमइ विहवी विमेने, थिइमेत्त थोयवित्थरो महइ।

मगइ मरोरमवणो, रोई जीए चिय कयत्थो।' (गउड, नरा)

अधणि वि [अधनिन] धन-रहित, निर्धन (था १४)।

अधण्ण वि [अधन्य] अकृतार्थ निन्द्य (परह १, १)।

अधम देखो अहम (उत्त ६)।

अधमण्ण } वि [अधमर्ण] करजदार, देनदार अधमन्न } (धर्मवि १४६, १३५)।

अधम्म पुं [अधर्म] १ पाप-कार्य निषिद्ध कर्म, अनीति, 'अधम्मएण चेव वित्ति कप्पेमाणे विहरई' (णाय १, १८)। २ एक स्वतन्त्र और लोक-व्यापी अजीव वन्तु, जो जीव वगैरह को म्यति करने में सहायता पहुँचानी है (सम २, नव ५)। ३ वि धर्म-रहित, पापी (विपा १, १)। °केउ पु [°केतु] पापिष्ठ (णाय १, १८)। °क्खाइ वि [°ख्याति] प्रसिद्ध पापी (विपा १, १)। °क्खाइ वि [°ख्यायिन] पाप का उपदेश देनेवाला (भग ३, ७)।

°त्थिकाय पु [°स्तिकाय] अधम्म का दूसरा अर्थ देखो (अणु)। °बुद्धि वि [°बुद्धि] पापी, पापिष्ठ (उप ७२८ टी)।

अधम्मिट्ट वि [अधर्मिट्ट] १ धर्म को नहीं करनेवाला (भग १२, २)। २ महा-पापी, पापिष्ठ (णाय १, १८)।

अधम्मिट्ट वि [अधर्मेट्ट] अधर्म-प्रिय, पाप-प्रिय (भग १२, २)।

अधम्मिट्ट वि [अधर्माट्ट] पापियों का प्यारा (भग १२, २)।

अधम्मिय देखो अहम्मिय (ठा ४, १)।

अधर देखो अहर (उवा, सुपा १३८)।

अधवा (शौ) देखो अहवा (कप्पु)।

अधा ली [अधस्] अधो-दिशा, नीचली दिशा (ठा ६)।

अधि देखो अहि = अधि।

हवणाय (पठम १७, १४; मुपा ५८१)। संक
अणुहवेऊण, अणुहविउं (प्राह, पचा २)।
अणुहवण न [अनुभवन] अनुभव (स २८७)।
अणुहविय वि [अनुभूत] जिसका अनुभव
किया गया हो वह (मुपा ६)।
अणुहारि वि [अनुहारिन्] अनुकरण करने
वाला, नकालची (कुमा)।
अणुहाय देखो अणुभाव (स ४०३, ६५६)।
अणुहियासण न [अन्वध्यासन] धैर्य में
सहन करना (ज २)।
अणुहु मक [अनु + भू] अनुभव करना।
वहु अणुहुत (पठम १०३, १५०)।
अणुहुंज मक [अनु + भुञ्ज] भोग करना,
भोगना। अणुहुजइ (भवि)।
अणुहुत्त देखो अणुहूअ (गा ६५६)।
अणुहूअ वि [अनुभूत] १ जिनका अनुभव
किया गया हो वह (कुमा)। २ न अनुभव
(वि ४, २७)।
अणुहो मक [अनु + भू] अनुभव करना।
अणुहोति (पि ४७५)। वहु अणुहोत (पठम
१०६, १७)। कवहु अणुहोईअंत, अणु-
होइजंत, अणुहोइजमाण, अणुहोईअमाण
(पइ)। क अणुहोदच्च (शौ) (अभि
१३१)।
अणुकप्प देखो अणुकप्प, 'एत्तो वोच्छं अणू-
कप्प' (पंचमा)।
अणूण वि [अनून] कम नहीं, अधिक
(कुमा)।
अणूय } पुं [अनूप] अधिक जलवाला देश,
अणूय } जल-बहुल स्थान (विसे १७०३,
वव ४)।
अणेअ वि [अनेक] देखो अणेक (कुमा अभि
२४६)।
अणेकम्म वि [दे] चञ्चल, चपल (दे १,
३०)।
अणेक } वि [अनेक] एक से अधिक, बहुत
अणेग } (श्रीप; प्राप् ५३)। 'करण न
[करण] पर्याय, धर्म, अवस्था (सम्म १०६)।
'राइय वि [रात्रिक] अनेक रातों में होने-
वाला, अनेक रात सक्की (उत्सवादि)
(कम)। 'सो म [शस्] अनेक बार
(आ १४)।

अणेगंत पुं [अनेकान्त] अनिश्चय, नियम का
अभाव (विसे)। 'वाय पुं [वाद] स्याद्वाद,
जैनो का मुख्य सिद्धान्त, सत्त्व-अमन्व आदि
अनेक विरुद्ध धर्मों का भी एक वस्तु में मापेझ
स्वीकार,
'जेण विण्ण लोगस्मवि, ववहारो
सक्वहा न निव्वडइ।
तम्म भुवणेकुण्णो नमो अणेगतवायम्म'
(सम्म १६६)।
अणेगतिय वि [अनैकान्तिक] ऐकान्तिक
नहीं, अनिश्चित, अनियमित (भग १, १)।
अणेगावाइ वि [अनेकवादिन] पदार्थों को
मर्वया अलग-अलग माननेवाला, अक्रियावाद-
मत का अनुयायी (ठा ८)।
अणेच्छन वि [अनिच्छन्] नहीं चाहता
हुआ (उप ७६८ टी)।
अणेज वि [अनेज] निश्चल, निष्कम्प (आक)।
अणेज्ज वि [अज्ञेय] जानने के अयोग्य,
जानने के अशक्य (महा)।
अणेज्जि वि [अनीदृश] अनुपम, असाधारण,
'जे वम्म मुद्धमक्खाति पडिपुएणमणेज्जि'
(सूत्र १, ११)।
अणेवमूय वि [अनेवमूय] विलक्षण,
विचित्र 'अणेवमूयपि वेयणं वेदति' (भग
५, ५)।
अणेस देखो अणेस। वहु अणेसंत (नाट)।
अणेसण न [अन्वेपण] खोज, तलाश (महा)।
अणेसणा स्त्री [अनेपणा] एपणा का अभाव
(उवा)।
अणेसणिज्ज वि [अनेपणीय] अकल्पनीय,
जैन साधुओं के लिए अग्राह्य (भिक्षा-आदि)
(ठा ३, १, गाय १, ५)।
अणोउया स्त्री [अनृतुका] जिसको ऋतु-वर्ष
न आता हो वह स्त्री (ठा ५, २)।
अणोक्कत वि [अनवक्रान्त] जिसका पराभव
न किया गया हो वह, अजित, 'परवाईहि
अणोक्कता' (श्रीप)।
अणोरगाह देखो अणुगाह = अनवग्रह; 'नाग-
रगो संवट्ठो अणोरगाहो' (वह ३)।
अणोरघसिय वि [अनवधर्पित] नहीं चिमा
हुआ, अमाजित (राय)।

अणोज्ज वि [अनवद्य] निर्दोष, शुद्ध (गाया
१, ८)।
अणोज्जगी स्त्री [अनवद्याङ्गी] भगवान् महा-
वीर की पुत्री का नाम (आचू)।
अणोज्जा स्त्री [अनवद्या] ऊपर देखो (कण्)।
अणोणअ वि [अनवनन] नहीं भुक्ता हुआ
(मि १, १)।
अणोत्तप्प देखो अणुत्तप्प (पव ६८)।
अणोम वि [अनवम] हीन-रहित, परिपूर्ण
(आवा)।
अणोमाग न [अनपमान] अनादर का अभाव,
सत्कार, 'एव उगमदोना विजडा
पइरिक्कया अणोमाण।
मोहनिगिच्छा य कया,
विरियायारो य अणुचिरणो'
(श्रीघ २४६)।
अणोरपार वि [दे] १ प्रचुर, प्रभूत (आवम)।
२ अनादि-अनन्त (पचा १५, जी ४४)। ३
अति विस्तीर्ण (परह १, ३)।
अणोरुम्मिअ वि [अनुद्वान] अ-शुष्क, गीला
(कुमा)।
अणोलय न [दे] प्रमात, प्रात काल (दे १,
१६)।
अणोवणिहिया स्त्री [अनौपनिधिकी] आनु-
पूर्वी का एक भेद, क्रम-विशेष (अणु)।
अणोवणिहिया स्त्री [अनुपनिहिता] ऊपर
देखो (पि ७७)।
अणोल्ल वि [अनाद्ध] १ शुष्क, सूखा हुआ
(गा ५२१)। 'मण वि [मनस्क] अकरण,
निष्ठुर, निर्दय (काप्र ८६)।
अणोवदग्ग वि [अनवदग्ग] अनन्त (सूत्र १,
१२, ६)।
अणोवम वि [अनुपम] उपमा-रहित, अदि-
तीय (पठम ७६, २६, सुर ३, १३०)।
अणोवमिय वि [अनुपमित] ऊपर देखो
(पठम २, ६३)।
अणोवसंखा स्त्री [अनुपसख्या] अज्ञान,
सत्य ज्ञान का अभाव (सूत्र २, १२)।
अणोवहिय वि [अनुपधिक] १ परिग्रह-
रहित, सतोपी। २ सरल, अकपटी (आवा)।
अणोवाहणग } वि [अनुपानत्त] ज्ञान-
अणोवाहणय } रहित, जो ज्ञान न पहिना हो
(श्रीप, पि ७७)।

१०) । °काय प [°काय] पानी के जीव (दे १३) ।
 अपडट्टाण देखो अप्पडट्टाण (आचा, ठा ४, ३) ।
 अपडट्टिअ पु [अप्रतिष्ठित] १ नरक-स्थान विशेष (द्वेन्द्र २६) । देखो अप्पडट्टिअ ।
 अपडट्टिय देखो अप्पडट्टिय (ठा ४, १) ।
 अपएस वि [अप्रदेश] १ निरश, अवयव-रहित (भग २०, ५) । २ पु खराब स्थान (पचा ७) ।
 अपग पु [अपाङ्ग] १ नेत्र का प्रान्त भाग । २ निलक । ३ वि हीन अंग वाला (नाट) ।
 अपडिअ वि [दे] अनष्ट, विद्यमान (पड्) ।
 अपडिअ [अपण्डित] १ सद्बुद्धि-रहित (वृह १) । २ मूर्ख (अचु ५) ।
 अपकरिस पु [अपकर्ष] हान (वर्मस ८३७) ।
 अपगड वि [अपगण्ड] १ निर्दोष । २ न. फेन, पानी का भाग (सूत्र १, ३) ।
 अपचय पु [अपचय] अपकर्ष, हीनता (उत्त १) ।
 अपच्च देखो अवच्च, 'अपच्चरिण्विसेसारिण मत्तारिण' (पि ३६७) ।
 अपच्चय पु [अप्रत्यय] अविश्वास (परह १, २) ।
 अपच्चल वि [अप्रत्यल] १ असमर्थ । २ अयोग्य (नचू ११) ।
 अपच्छ वि [अपथ्य] १ अ-हितकर (पञ्चम ८२, ७२) । २ न नहीं पचनेवाला भोजन, 'धेवेण अपच्छासेवणेण रोगुव्व वड्ढेइ' (सुपा ४३८) ।
 अपाच्छिम वि [अपश्चिम] अन्तिम (एदि, पाअ, उप २६४ टी) ।
 अपज्जत्त वि [अपर्याप्त] १ अपर्याप्त, अपज्जत्तग असमर्थ (गडड) । २ पर्याप्ति (आहारादि ग्रहण करने की शक्ति) से रहित (ठा २, १, नव ४) । °नाम न [°नामन्] नाम-कर्म का एक भेद (सम ६७) ।
 अपज्जवसिय वि [अपर्यवसित] १ नाश-रहित (सम्म ६१) । २ अन्त-रहित (ठा १) ।
 अपडिच्छिर वि [दे] जड-बुद्धि, मूर्ख (दे १, ४३) ।

अपडिण्ण } वि [अप्रतिज्ञ] १ प्रतिज्ञा-
 अपडिन्न } रहित, निश्चय-रहित (आचा) ।
 २ राग-द्वेष आदि बन्धनो से वर्जित (सूत्र १, ३, ३) । ३ फल की इच्छा न रखकर अनुष्ठान करनेवाला, निष्काम, 'गन्धेसु वा चन्दण-माहु सेट्ठ, एव मुणीण अपडिन्नमाहु' (सूत्र १, ६) ।
 अपडिपोग्गल वि [अप्रतिपुद्गल] दरिद्र, निर्धन (निचू ५) ।
 अपडिवट्ठ वि [अप्रतिवट्ठ] १ प्रतिबन्ध-रहित, बेरोक, 'अपडिवट्ठो अनतो व्व' (परह २, ५) । २ ग्रामक्ति-रहित (पव १०४) ।
 अपडिवाइ देखो अप्पडिवाइ (ठा ६, ओष ५३२, एदि) ।
 अपडिसलीण वि [अप्रतिसलीन] असयत्त, इन्द्रिय आदि जिसके कावू में न हो (ठा ४, २) ।
 अपडिहट्ठु अ [अप्रतिहृत्य] न दे कर (कस, वृह ३) ।
 अपडिह्य देखो अप्पडिह्य (गाया १, १६) ।
 अपडीकार वि [अप्रतीकार] इलाज-रहित, उपाय-रहित (परह १, १) ।
 अपडुप्पण्ण } वि [अप्रत्युत्पन्न] १ अ-वर्त-
 अपडुप्पन्न } मान, अ-विद्यमान (पि १६३) ।
 २ प्रतिपत्ति में अ-कुशल (नव ६) ।
 अपणट्ठ वि [अप्रनष्ट] नाश को अप्राप्त (मुर ४, २४०) ।
 अपत्त देखो अप्पत्त (वृह १, ठा ५, २, सूत्र १, १४) ।
 अपत्तिअत वक्क [अप्रतियत्त] विश्वास नहीं करता हुआ (गा ६७८, पि ४८७) ।
 अपत्तिय देखो अप्पत्तिय (भग १६, ३, पचा ७) ।
 अपत्थ देखो अपच्छ (उत्त ७, पचा ७) ।
 अपभासिय देखो अवभासिय = अपभाषित (वव १) ।
 अपमत्त देखो अप्पमत्त (आचा) ।
 अपमाण न [अप्रमाण] १ झूठा, असत्य (आ १२) । २ वि. ज्यादा, अधिक (उत्त २४) ।
 अपमाय वि [अप्रमाद] १ प्रमाद-रहित ।

२ पु. प्रमाद का अभाव, सावधानी (परह २, १) ।
 अपय वि [अपद] १ पाँव रहित, वृक्ष, द्रव्य, भूमि वगैरह पैर रहित वस्तु (गाया १, ८) ।
 २ पुं मुक्तात्मा, 'अपयम्स पयं नत्थि' (आचा) ।
 ३ सूत्र का एक दोष (वृह १, विसे) ।
 अपय स्त्री [अप्रज] सन्तानरहित (वृह १) ।
 अपर देखो अवर (निचू २०) । २ वैशेषिक दर्शन में प्रसिद्ध अवान्तर सामान्य (विसे २४६१) ।
 अपरच्छ वि [अपराक्ष] असमक्ष, परोक्ष (परह १, ३) ।
 अपरट्ठ देखो अवरज्झ (क्प्प) ।
 अपरंतिा स्त्री [अपरान्तिका] छन्द-विशेष (अजि ३४) ।
 अपराइय वि [अपराजित] १ अ-परिभूत (परह १, ४) । २ पुं सातवें बलदेव के पूर्व-जन्म का नाम (सम १५३) । ३ भरतक्षेत्र का छठवाँ प्रतिवासुदेव (सम १५४) । ४ उत्तम-पत्ति के देवों की एक जाति (सम ५६) ।
 ५ भगवान् ऋषभदेव का एक पुत्र (राज) ।
 ६ एक महाग्रह (ठा २, ३) । ७ न अनुत्तर देव-लोक का एक विमान—देवावास (सम ५६) ।
 ८ रुचक पर्वत का एक शिखर (ठा ८) ।
 ९ जम्बूद्वीप की जगती का उत्तर द्वार (ठा ४, २) ।
 अपराइया स्त्री [अपराजिता] १ विदेह-नर्प की एक नगरी (ठा २, ३) । २ आठवें बलदेव की माता (सम १५२) । ३ अगारक ग्रह की एक पटरानी का नाम (ठा ४, १) । ४ एक दिशा-कुमारी देवी (ठा ८) । ५ ओषधि-विशेष (ती ७) । ६ अञ्जनादि पर्वत पर स्थित एक पुष्करिणी (ती २) ।
 अपराजिय देखो अपराइय (क्प्प, सम ५६, १०२ ठा २, ३) ।
 अपराजिया देखो अवराइया (ठा २, ३) ।
 अपराजिया स्त्री [अपराजिता] १ भगवान् मल्लिनाथ की दीक्षा-शिबिका (विचार १२९) ।
 २ पक्ष की दशवी रात (सुज १०, १४) ।
 अपरिगह वि [अपरिग्रह] १ घन-धान्य आदि परिग्रह से रहित (परह २, ३) । २

अण्णी स्त्री [दे] १ देवर की स्त्री । २ पति की वहिन, ननद । ३ फूफा, पिता की वहिन (दे १, ५१) ।

अण्णु } वि [अन्न] अज्ञान, निर्वोध, मूर्ख
अण्णुअ } (पङ्, गा १८४) ।

अण्णुण वि [अन्योन्य] परस्पर, आपस में (गउड) ।

अण्णूण वि [अन्यून] परिपूर्ण (उप पृ २२४) ।

अण्णे सक [अनु + इ] अनुसरण करना । अण्णेइ (विमे २५२६) । अण्णेति (पि ४६३) । कवक अण्णज्जमाण, (अन्वीयमान) (विपा १, १) ।

अण्णेस सक [अनु + इप्] १ खोजना, ढूँढना, तहकीकात करना । २ चाहना, वाछना । ३ प्रार्थना करना । अण्णेसइ (पि १६३) । वक्क अण्णेस्त, अण्णेसअत, अण्णेसमाण (महा, काल) ।

अण्णेसण न [अन्वेपण] खोज, तलाश, तहकीकात (उप ६ टी) ।

अण्णेसणा स्त्री [अन्वेपणा] १ खोज तहकीकात (प्राप) । २ प्रार्थना (आचा) । ३ गृहस्थ में दी जाती मित्रा का ग्रहण (ठा, ३, ४) ।

अण्णेसय वि [अन्वेपक] गवेपक (पव ७१) ।

अण्णेसि वि [अन्वेपिन्] खोज करनेवाला (आचा) ।

अण्णेमिय वि [अन्वेपित] जिसकी तहकीकात की गई हो वह, 'अण्णेषिया सब्बो तुब्बे न कर्हिचि दिट्ठा' (महा) ।

अण्णेण देवो अण्णुण, 'अण्णेणममणुचट्ठं रिच्छयसो भणियविसय तु' (पंचा ६, म्वप्प ५२) ।

अण्णेसरिअ वि [दे] अतिक्रान्त, उल्लघित (दे १, ३६) ।

अण्ह सक [भुज्] १ खाना, भोजन करना । २ पालन करना । ३ ग्रहण करना । अण्हइ (हे ४, ११०, पङ्) । अण्हइ (औप) । अण्हए (कुमा) ।

अण्ह न [अहन्] दिवस, दिन, 'पूर्वावरणह-कालसमयसि' (उवा) ।

अण्हग } पु [आश्रय] वर्न-वन्व के कारण
अण्हय } हिसादि (परह १, १, ५, औप) ।
अण्हो स्त्री [तृष्णा] तृषा, प्यास (गा ६३) ।
अण्होअ वि [दे] भ्रान्त, भूला हुआ (दे १, २१) ।

अतक्किय वि [अतर्कित] १ अचिन्तित, आकस्मिक, 'अतक्कियमेव एरिस वसणमह पत्तो' (महा) । २ ठीक-ठीक नहीं देखा हुआ, अपरिलक्षित (वव ८) । ३ क्वि 'अतक्किय चेव विहरिओ रायहत्थो' (महा) ।

अतड वि [अतट] छोटा किनारा, 'अतडुव वातो सो चेव मग्गो' (वृह १) ।

अतण्होअ वि [अतृष्णाक] तृष्णा रहित, निस्पृह (अन्नु ६४) ।

अनत्त न [अतत्त्व] असत्य, भ्रू, गैरव्याजवी (उप ५०८) ।

अतत्थ वि [अत्रस्त] नहीं डरा हुआ, निर्भीक (कुमा) ।

अतत्थ वि [अतथ्य] अमत्य, झूठा (आचा) ।

अतर देखो अयर (पव १, कम्म ५, भवि) ।

अतव पुन [अतपस्] १ तपश्चर्या का अभाव (उत्त २३) । २ वि तप-रहित (वृह ४) ।

अतव पु [अस्तव] अ-प्रशमा, निन्दा (कुमा) ।

अतसी देखो अयसी (परण १) ।

अतह वि [अतथ] अमत्य, अ-वास्तविक, झूठा (सूत्र १, १, २, आचा) ।

अतह वि [अतथा] उम माफिक नहीं, 'जाओ चिय कायव्वे उच्छाहेति गय्याण कित्तीओ ।

ताओ चिय अतह-रिणवेयणेण अलसेति हिययाइ' (गउड) ।

अतार वि [अतार] तरने को अशक्य (गाया १, ६, १४) ।

अतारिम वि [अतारिम] ऊपर देखो (सूत्र १, ३, २) ।

अतिउट्ट अक [अति + उट्] १ खूब दूटना, दूट जाना । २ सब वन्वन से मुक्त होना ।

अतिउट्टइ (सूत्र १, १५, ५) ।

अतिउट्ट सक [अति + वृत्] १ उल्लघन करना । २ व्याप्त होना । अतिउट्टइ (सूत्र १, १५, ६ टी) ।

अतिउट्ट वि [अतिवृत्त] १ अतिक्रान्त । २

अनुगत, व्याप्त, 'जमी गुहाए जलणेतिउट्टे अविजाणओ डज्झइ लुत्तपरणो' (सूत्र १, ५, १, १२) ।

अतिथ न [अतीर्थ] १ तीर्थ (चनुविच सघ) का अभाव, तीर्थ की अनुत्पत्ति । २ वह बाल, जिसमें तीर्थ की प्रवृत्ति न हुई हो या उसका अभाव रहा हो (परण १) । अतिथ वि [अतिथ] अतीर्थ काल में जो मुक्त हुआ हो वह, 'अतिथमिद्धा य मन्देवी' (नव ५६) ।

अतिहि देखो अइहि ।

अतीगाढ वि [अतिगाढ] १ अति-निविड । २ क्वि अत्यत, बहुत, 'अतीगाढ भोओ जक्काहिंवो' (पउम ८, ११३) ।

अतुल वि [अतुल] अनुपम, अनाधारण (परह १, १) ।

अतुलिय वि [अतुलित] आमाधारण, अद्वितीय (भवि) ।

अत्त देखो अप्प = आत्मन् (मुर ३, १७४, सम ५७, एदि) । अत्त पु [अत्त] स्वरूप की प्राप्ति, उत्पत्ति (कम्म २, २५) ।

अत्त वि [आर्त्त] पीडित, दुःखित, हैरान (मुर ३, १४३, कुमा) ।

अत्त वि [आत्त] १ गृहीत, लिया हुआ (गाया १, १) । २ स्वीकृत, मजूर किया हुआ (ठा २, ३) । ३ पु ज्ञानी मुनि (वृह १) ।

अत्त वि [आप्प] १ ज्ञानादि-गुण-संपन्न, गुणी । २ राग-द्वेष वर्जित, वीतराग । ३ प्रायश्चित्त-दाता गुरु,

'नारामादीणि अत्ताणि, जेण अत्तो उ नो भवे । रागदोमपहीणो वा, जे व इट्ठा विमोहिण' (वव १०) । ४ मोक्ष, मुक्ति (सूत्र १, १०) । ५ एकान्त हितकर (भग १४, ६) । ६ प्राप्त, मिला हुआ (वव १०), 'अत्तप्पसरणलेस्से' (उत्त १२) ।

अत्त वि [आत्त] दुःख का नाश करनेवाला, सुख का उत्पादन (भग १४, ६) ।

अत्त अ [आत्त] यहा, इस स्थान में (नाट) ।

अभव वि [अभवन्] पूज्य, माननीय (अभि ६१, पि २६३) ।

अत्तअ देखो असय्य = अत्यय (प्राहु २१) ।

अत्तकम्म वि [आत्मकर्मन्] १ जिससे कर्म-

अपोरिसिय } वि [अपौरुषिक] पुरुष से
अपोरिसीय } ज्यादा परिमाण वाला, अगाध
(गाथा १, ५, १४)।

अपोरिसीय वि [अपौरुषेय] पुरुष से नहीं
बनाया हुआ, नित्य (ठा १०)।

अपोह सक [अप + ऊह्] निश्चय करना,
निश्चय रूप से जानना। अपोहए (विसे
५६१)।

अपोह पु [अपोह] १ निश्चय-ज्ञान (विसे
३६६)। २ पृथग्भाव, भिन्नता (शोध ३)।

अप्प देखो अत्त = आत्मा, 'अप्पोनभनिमित्त
पढमस्स गायज्झयणस्स अयमट्ठे परएणत्तेति
वेमि' (गाथा १, १)।

अप्प वि [अल्प] १ थोड़ा स्तोक (सुपा
२८०, स्वप्न ६७)। २ अभाव (जीव ३,
भग १४, १)।

अप्प पु [आत्मन्] १ आत्मा, जीव, चेतन
(गाथा १, १)। २ निज, स्व, 'अप्पणा
अप्पणो कम्मक्खय करित्तए' (गाथा १, ५)।
३ देह, शरीर (उत्त १)। ४ स्वभाव,
स्वरूप (आचा)। °वाइ वि [°वातिन]
आत्म-हत्या करनेवाला (उप ३५७ टी)।
°छट्ट वि [°च्छन्द] स्वैरी, स्वच्छन्दी (उप
८३३ टी)। °ज्ज वि [°ज्ज] १ आत्मज्ञ
(हे २, ८३)। २ स्वाधीन (निच्च १)।
°ज्जोइ पु [°ज्जोतिस्] ज्ञानस्वरूप,
'किजोइय पुरिसो अप्पज्जोइ त्ति एहिट्ठो'
(विसे)। °णु वि [°णु] आत्म-ज्ञानी
(पड्)। °वस वि [वश] स्वतन्त्र, स्वा-
धीन (पाअ, पउम ३७, २२)। °वह पु
[°वध] आत्म-हत्या, अपघात (सुर २,
१६६, ५, २३७)। °वाइ वि [°वादिन]
आत्मा के अतिरिक्त दूसरे पदार्थ को नहीं
माननेवाला (एदि)।

अप्प पु [दे] पिता, बाप (दि १, ६)।

अप्प सक [अर्पेय्] अर्पण करना, भेंट
करना। अप्पेइ (हे १, ६३)। अप्पअइ
(नाट)। सकु अप्पिअ (सुपा २८०)।
कु अप्पेयव्व (सुपा २६५, ५१६)।

अप्पआस देखो अप्पगास (नाट)।

अप्पआस सक [अप्पि] आलिङ्गन करना।
अप्पआसइ (पड्)।

अप्पइट्ठाण पुन [अप्रतिष्ठान] १ मोक्ष,
मुक्ति (आचा)। २ सातवीं नरक-भूमि का
बीचला आवास (सम २, ठा ५, ३)।

अप्पइट्ठिअ वि [अप्रतिष्ठित] १ अप्रति-
बद्ध। २ अशरीरी, शरीर-रहित (आचा
२, १६, १२)। देखो अपइट्ठिअ।

अप्पउल्लिय वि [अपक्वौर्षधि] नहीं पकी
हुई फल-फलहरी (स ५०)।

अप्पओजग वि [अप्रयोजक] अ-नामक,
अ-निधायक (हेतु) (धर्मसं १२२३)।

अप्पंभरि वि [आत्मम्भरि] अवेलेपेट्ट,
स्वार्थी (उप ५७०)।

अप्पकप वि [अप्रकम्प] निश्चल, स्थिर
(ठा १०)।

अप्पकेर वि [आत्मीय] स्वकीय, निजी
(प्रामा)।

अप्पक वि [अपक्क] नहीं पका हुआ, कच्चा
(सुपा ४१३)।

अप्पग देखो अप्प (आव ४, आचा)।

अप्पगास पु [अप्रकाश] प्रकाश का अभाव,
अन्वकार (निच्च १)।

अप्पगुत्ता लो [दे] कपिकच्छू, कौंच वृक्ष
(दे १, २६)।

अप्पजाणुअ वि [आत्मज्ञ] आत्मा का
जानकार (प्राकृ १८)।

अप्पजाणुअ वि [अल्पज्ञ] अज्ञ, मूर्ख (प्राकृ
१८)।

अप्पज्म वि [दे] आत्म-वश, स्वाधीन (दे
१, १४)।

अप्पडिआर वि [अप्रतिकार] इलाज-रहित,
उपाय-रहित (मा ४३)।

अप्पडिकटय वि [अप्रतिकण्टक] प्रतिपक्ष-
शून्य, प्रतिस्पर्धि-रहित (राय)।

अप्पडिक्कम वि [अप्रतिकर्मन्] सत्कार-
रहित, परिष्कार-वर्जित, 'सुएणागारे व अप्प-
डिक्कमे' (पएह २, ५)।

अप्पडिक्कत वि [अप्रतिक्रान्त] दोष से
अनिवृत्त, व्रत-नियम में लगे हुए दूषणों की
जिसमें शुद्धि नहीं की हो वह (श्रौप)।

अप्पाडकुटठ वि [अप्रतिकुष्ट] अनिवारित,
नहीं रोका हुआ (ठा २, ४)।

अप्पडिचक्क वि [अप्रतिचक्क] अतुल्य,
असमान (एदि)।

अप्पडिण्ण } देखो अपडिण्ण (आचा)।
अप्पडिन्न }

अप्पडिवं व पु [अप्रतिवन्ध] १ प्रतिवन्ध
का अभाव। २ वि प्रतिवन्ध-रहित (सुपा
६०८)।

अप्पडिवद्ध देखो अपडिवद्ध (उत्त २६, पि
२१८)।

अप्पडिवुट्ट वि [अप्रतिवुद्ध] १ अ-जागृत।
२ कोमल, सुकुमार (अभि १६१)।

अप्पडिम वि [अप्रतिम] असाधारण, अनु-
पम (उप ७६८ टी, सुपा ३५)।

अप्पडिरूव वि [अप्रतिरूप] ऊपर देखो (उप
७२८ टी)।

अप्पडिलद्ध वि [अप्रतिलब्ध] अप्राप्त
(गाथा १, १)।

अप्पडिलेस्स वि [अप्रतिलेश्य] असाधारण
मनो-बलवाला (श्रौप)।

अप्पडिलेहण न [अप्रतिलेखन] अपर्यवे-
क्षण, अनवलोकन, नहीं देखना (आव ६)।

अप्पडिलेहणा लो [अप्रतिलेखना] ऊपर
देखो (कप्प)।

अप्पडिलेहिय वि [अप्रतिलेखित] अपर्यवे-
क्षित, अनवलोकित, नहीं देखा हुआ (उवा)।

अप्पडिलोम वि [अप्रतिलोम] अनुकूल (भग
२५, ७, अभि २४)।

अप्पडिवरिय पु [अप्रतिवृत्त] प्रदोष काल
(वृह १)।

अप्पडिवाइ वि [अप्रतिपातिन्] १ जिसका
नाश नहीं हो ऐसा, नित्य (सुर १४, २६)। २
अवधिज्ञान का एक भेद, जो केवल ज्ञान को
बिना उत्पन्न किये नहीं जाता (विसे)।

अप्पडिहत्थ वि [अप्रतिहस्त] असमान,
अद्वितीय (से १३, १२)।

अप्पडिहय वि [अप्रतिहत] १ किसी से नहीं
रुका हुआ (पएह २, ५)। २ अखण्डित,
अबाधित, 'अप्पडिहयसासणे' (गाथा १, १६)।

३ विसवाद-रहित 'अप्पडिहयवरणाणदंसणावरे'
(भग १, १)।

अप्पडीबद्ध देखो अपडिवद्ध, 'निम्ममनिरहं-
कारा निअयसरीरेवि अप्पडीबद्धा' (सया ६०)।

अण्णी स्त्री [दे] १ देवर की स्त्री । २ पति की बहिन, ननद । ३ फूफा, पिता की बहिन (दे १, ५१) ।

अण्णु } वि [अञ्ज] अज्ञान, निर्वोध, मूर्ख
अण्णुअ } (पङ्, गा १८४) ।

अण्णुण वि [अन्योन्य] परस्पर, आपस में (गडड) ।

अण्णूण वि [अन्यून] परिपूर्ण (उप पृ २२४) ।

अण्णे मक [अनु + इ] अनुसरण करना ।
अण्णेइ (विमे २५२६) । अण्णेति (पि ४६३) ।
कक्क अण्णज्जमाण, (अन्वीयमान) (विवा १, १) ।

अण्णोस मक [अनु + इप्] १ खोजना, ढूँढना तहकीकात करना । २ चाहना, वाछना । ३ प्रार्थना करना । अण्णेमइ (पि १६३) । वक्क अण्णेस्त, अण्णेसअत, अण्णेसमाण (महा, काल) ।

अण्णेमण न [अन्वेपण] खोज तलाश, तहकीकात (उप ६ टी) ।

अण्णेसणा स्त्री [अन्वेपणा] १ खोज तहकीकात (प्राप) । २ प्रार्थना (आचा) । ३ गृहस्थ ने दी जाती शिक्षा का ग्रहण (ठा, ३, ४) ।

अण्णोसय वि [अन्वेपक] गवेपक (पव ७१) ।

अण्णेमि वि [अन्वेपिन्] खोज करनेवाला (आचा) ।

अण्णोसिय वि [अन्वेपित] जिसकी तहकीकात की गई हो वह, 'अण्णोमिया सव्वओ तुब्बे न कहिचि दिट्ठा' (महा) ।

अण्णोण देखो अण्णुण, 'अण्णोणसमणुचद्धं रिणच्छयओ भणियविसय तु' (पंचा ६, स्वप्न ५२) ।

अण्णोसरिअ वि [दे] अतिक्रान्त, उल्लघित (दे १, ३६) ।

अण्ह सक [भुज्] १ खाना, भोजन करना । २ पालन करना । ३ ग्रहण करना । अण्हइ (हे ४, ११०, पङ्) । अण्हइ (श्रौप) । अण्हए (कुमा) ।

अण्ह न [अहन्] दिवस, दिन, 'पूज्जावरह-कालममयसि' (उवा) ।

अण्हग } पु [आश्रव] कर्न-वन्व के कारण
अण्हय } हिमादि (परह १, १, ५, श्रौप) ।
अण्हो स्त्री [तृष्णा] तृषा, प्यास (गा ६३) ।
अण्होअ वि [दे] भ्रान्त, मूला हुआ (दे १, २१) ।

अतक्किय वि [अतर्कित] १ अचिन्तित, आकस्मिक, 'अतक्कियमेव एरिस वसणमह पत्ता' (महा) । २ ठीक-ठीक नहीं देखा हुआ, अपरिलक्षित (वव ८) । ३ क्वि 'अतक्किय चेव विहरिओ रायहत्थी' (महा) ।

अतड वि [अतट] छोटा किनारा, 'अतडुव वातो मो चेव मग्गो' (वृह १) ।

अतण्होअ वि [अतृष्णाक] तृष्णा रहित, निस्पृह (अन्वु ६४) ।

अनत्त न [अतत्त्व] असत्य, भूट, गैरव्याजवी (उप ५०८) ।

अतत्थ वि [अत्रस्त] नहीं डरा हुआ, निर्भीक (कुमा) ।

अतत्थ वि [अतथ्य] अमत्य, भूटा (आचा) ।

अतर देखो अयर (पव १, कम्म ५, भवि) ।

अतव पुन [अतपस्] १ तपश्चर्या का अभाव (उत्त २३) । २ वि तप-रहित (वृह ४) ।

अतव पु [अस्तव] अ-प्रशंसा, निन्दा (कुमा) ।

अतसी देखो अयसी (परण १) ।

अतह वि [अतथ] अमत्य, अ-वास्तविक, भूटा (सूत्र १, १, २, आचा) ।

अतह वि [अतथा] उम माफिक नहीं, 'जाओ चिय कायवे उच्छाहेति गय्याण किन्तीओ ।

ताओ चिय अतह-रिणवेयणेण अलसेति हिययाई' (गडड) ।

अतार वि [अतार] तरने को अशक्य (गाया १, ६, १४) ।

अतारिम वि [अतारिम] ऊपर देखो (सूत्र १, ३, २) ।

अतिउट्ट अक [अति + उट्ट] १ खूब हटना, हट जाना । २ सब वन्व में मुक्त होना ।

अतिउट्टइ (सूत्र १, १५, ५) ।

अतिउट्ट सक [अति + वृत्] १ उल्लघन करना । २ व्याप्त होना । अतिउट्टइ (सूत्र १, १५, ६ टी) ।

अतिउट्ट वि [अतिवृत्त] १ अतिक्रान्त । २

अनुगत, व्याप्त, 'जमी गुहाए जलणेतिउट्टे अविजाणओ डज्जइ लुत्तपरणो' (सूत्र १, ५, १, १२) ।

अतिथ न [अतीर्थ] १ तीर्थ (चतुर्विध मघ) का अभाव, तीर्थ की अनुत्पत्ति । २ वह काल, जिसमें तीर्थ की प्रवृत्ति न हुई हो या उसका अभाव रहा हो (परण १) । असिद्ध वि [सिद्ध] अतीर्थ काल में जो मुक्त हुआ हो वह, 'अतिथसिद्धा य मन्देवी' (नव ५६) ।

अतिहि देखो अइहि ।

अतीगाढ वि [अतिगाढ] १ अति-निविड । २ क्वि अत्यत, बहुत, 'अतीगाढ भीओ जक्काहिवा' (पडम ८, ११३) ।

अतुल वि [अतुल] अनुपम, अनाधारण (परह १, १) ।

अतुलिय वि [अतुलित] आसाधारण, अद्वितीय (भवि) ।

अत्त देखो अप्प = आत्मन् (सुर ३, १७४, सम ५७, एदि) । लोभ पु [लोभ] स्वरूप की प्राप्ति, उत्पत्ति (कम्म २, २५) ।

अत्त वि [आर्त्त] पीडित, दुःखित, हैरान (सुर ३, १४३, कुमा) ।

अत्त वि [आत्त] १ गृहीत, लिया हुआ (गाया १, १) । २ स्वीकृत, मजूर किया हुआ (ठा २, ३) । ३ पु ज्ञानी मुनि (वृह १) ।

अत्त वि [आप्त] १ ज्ञानादि-गुण-संपन्न, गुणी । २ राग-द्वेष वर्जित, वीतराग । ३ प्रायश्चित्त-दाता गुरु,

'नाणमादीणि अत्ताणि, जेण अत्तो उ सो भवे । रागदोमपहीणो वा, जे व इट्ठा विमोहिण' (वव १०) । ४ मोक्ष, मुक्ति (सूत्र १, १०) । ५ एकान्त हितकर (भग १४, ६) । ६ प्राप्त, मिला हुआ (वव १०), 'अत्तप्पसरणलेस्से' (उत्त १२) ।

अत्त वि [आत्र] दुःख का नाश करनेवाला, सुख का उत्पादक (भग १४, ६) ।

अत्त अ [अत्र] यहाँ, इस स्थान में (नाट) ।

भव वि [भवन्] पूज्य, माननीय (अभि ६१, पि २६३) ।

अत्तअ देखो अच्चय = अत्यय (प्राक् २१) ।

अत्तकम्म वि [आत्मकर्मन्] १ जिसे कर्म-

अप्पाअप्पि लो [दे] उक्कएठा, ओत्तुक्क
(पिग) ।

अप्पाउड वि [अप्रावृत] अनाच्छादित, नग्न
(सूत्र २, २) ।

अप्पाउय वि [अल्पायुष्क] थोडा आयु-
वाला (ठा ३, ३, पउम १४ ३०) ।

अप्पाउरण वि [अप्रावरण] १ नग्न । २ न
वस्त्र का अभाव । ३ वस्त्र नहीं पहनने का
नियम (पचा ५, पव ४) ।

अप्पाण देखो अप्प = आत्मन् (परह १, २,
ठा २, २, प्राप्र. हे ३, ५६) । रक्खि वि
[रक्षित] आत्मा को रक्षा करनेवाला
(उत्त ४) ।

अप्पावहु १ न [अल्पवहुत्व] न्यूनाधिकता,
अप्पावहुय १ कम-वेशीपन (नव ३२, ठा
६, २) ।

अप्पावय वि [अप्रावृत] १ वस्त्र-रहित,
नग्न (परह २, १) । २ खुला हुआ, बन्द
नहीं किया हुआ (सूत्र १, ५, १) ।

अप्पाविय वि [अर्पित] दिया हुआ (सुपा
३३१) ।

अप्पाह सक [स + दिश्] सदेश देना,
खबर पहुँचाना । अप्पाहइ (पड, हे ४,
१८०) । अप्पाहइ (गा ६३२) । सक
अप्पाहट्टु, अप्पाहिवि (पि ५७७,
भवि) ।

अप्पाह सक [आ + भाप्] सभाषण
करना । अप्पाहइ (प्राक् ७०) ।

अप्पाह सक [अधि + आपय] पढाना,
सीवाना । कर्म अप्पाहिजइ (मे १०, ७४) ।
वक्क अप्पाहेत (मे १०, ७४) । हेक्क अप्पा-
हेड (पि २८६) ।

अप्पाहणी लो [दे] सदेश, समाचार (पिंड
४३०) ।

अप्पाहण न [अप्राधान्य] मुख्यता का
अभाव, गौणता (पचा १, भाग ११) ।

अप्पाहिय वि [सविष्ट] संदेश दिया हुआ
(भवि) ।

अप्पाहिय वि [अध्यापित] १ पाठित,
शिक्षित (से ११, ३८, १४, ६१) । २ न
सीख, उपदेश, 'अप्पाहियमरण' (उप ५६२
टी) ।

अप्पिडि विटय [अल्पद्विक] अल्प सर्वात
वाला (भग, पउम २, ७४) ।

अप्पिण सक [अर्पय] अर्पण करना, भेंट
करना, देना, 'अहीरोवि वारणेण अप्पिणइ'
(आक) । अप्पिणामि (पि ५५७) । अप्पि-
णति (विसे ७ टी) ।

अप्पिणग न [अर्पण] दान, भेंट (उप
१७४) ।

अप्पिणिच्चिय वि [आत्मीय] स्वकीय,
निजी (भग) ।

अप्पिय वि [अर्पित] १ दिया हुआ, भेंट
किया हुआ (विपा १, २, हे १, ६३) ।
२ विवक्षित, प्रतिपादन करने को इष्ट, 'जह
दवियमप्पिय त तहेव अत्थिति पज्जनयस्स'
(मम्म ४२) । ३ पुं पर्यायाधिक नय, अप्पि-
यमय विमेषो सामन्तमणप्पियनयस्स' (विमे) ।

अप्पिय वि [अप्रिय] १ अनिष्ट, अप्रीतिकर
(भग १, ५, विपा १, १) । २ न. मन का
दुःख । ३ चित्त को जका, 'अदु णाईण व
सुहीण वा अप्पिय दट्ठु एगता होति' (सूत्र
१, ४, १, १४) ।

अप्पीइ लो [अप्रीति] अप्रेम अरुचि (सुपा
२६४) ।

अप्पीकय वि [आत्मीकृत] आत्मा मे नवट्ट
(विसे) ।

अप्पुट्ट वि [अस्पृष्ट] नहीं छूया हुआ, अम-
युक्त, 'ज अप्पुट्ठा भावा ओहिनाणस्स हुति
पच्चक्खा' (मम्म ८१) ।

अप्पुट्ट वि [अस्पृष्ट] नहीं पूछा हुआ (सुपा
१११) ।

अप्पुण वि [दे आपूर्ण] पूर्ण (पड) ।

अप्पुल वि [आत्मीय] आत्मा मे उत्पन्न
(हे २, १६३, पड, कुमा) ।

अप्पुव्व देखो अपुव्व, 'अप्पुव्वो पडिंव्वो
जीवियमवि चयइ मह कज्जे' (सुपा ३११) ।

अप्पेयव्व देखो अप्प = अर्पय ।

अप्पोलि लो [अप्रचलिता] कच्ची फल-
फुलहरी (आ २१) ।

अप्पोल वि [दे] पील-रहित, नकर (वृह ३) ।

अप्फडिअ वि [आस्फालित] आस्फालित,
आहत (विसे २६८२ टी) ।

अप्फाल सक [आ + स्फालय] १ आम्फो-
टन करना, हाथ मे आघात करना । २ ताडना,
पीटना । ३ ताल ठोकना । अप्फालेइ (महा) ।
कवक्क अप्फालिज्जत (राय) । मक्क अप्फा-
लिऊण (काप्र १८६, महा) ।

अप्फालण न [आस्फालन] १ ताल ठोकना ।
२ ताडन, आघात (गा ५४८, मे ५, २२,
मुपा ८७) ।

अप्फालिय वि [आस्फालित] १ हाथ से
ताडित, आहत (पि ३११) । २ वृद्धि प्राप्त,
उन्नत (राज) ।

अप्फुड सक [आ + वप्] १ आक्रमण
करना । २ जाना, 'सम्भागाओ व्व एह
अप्फुडइ मलिअरविअर कुमुमरओ' (मे ६,
५७) ।

अप्फुडिय देखो अफुडिय (ज २, दस ६) ।

अप्फुण वि [दे आक्रान्त] आक्रान्त,
दबाया हुआ (हे ४, २५८) ।

अप्फुण वि [अपूर्ण] अपूर्ण, अधूरा
(गडड) ।

अप्फुण १ वि [दे आपूर्ण] पूर्ण, मरा
अप्फुण २ हुआ (दे १, २०, मुर १०,
१७०, पाय), 'महया पुत्तसोएण अप्फुणा
समाणी' (निग १, १) ।

अप्फुल्य देखो अप्फुल (गडड) ।

अप्फोआ लो [दे] वनस्पति-विशेष (परण
१) ।

अप्फोड सक [आ + स्फोटय] १ आस्फा-
लन करना, हाथ से ताल ठोकना । २ ताडन
करना । वक्क अप्फोडित (राया १, ८,
मुर १३, १८२) ।

अप्फोडण न [आस्फोटन] आस्फालन
(गडड) ।

अप्फोडिय १ वि [आस्फोटित] १ आम्फा-
अप्फोलिय २ लित, आहत । २ न आम्फा-
लन आघात (परह १, ८, कप्प) ।

अप्फोया लो [दे] वनस्पति-विशेष (राय
८० टी) ।

अप्फोव वि [दे] वृक्षादि मे व्याप्त, गहन,
निविड (उत्त १८) ।

अफल वि [अफल] निष्फल, निरर्थक (द्र
१) ।

हुव गया, अदृश्य हुआ (श्लोक ५०७, महा, सुपा १५५) । २ हीन, हानि-प्राप्त (ठा ४, ३) । अथयारिआ छी [दे] मखी, वयस्या (दे १ १६) ।

अथर सक [आ + स्तु] विद्याना, शय्या करना, पसारना । अथरड (उव) । सक अथरिऊग (महा) ।

अथरण न [आस्तरण] १ विद्यौना, शय्या (से १४, ५०) । २ विद्याना, शय्या करना (विसे २३२२) ।

अथरय वि [आस्तरक] १ आच्छादन करने-वाला (राय) । २ पु. विद्यौने के ऊपर का वस्त्र (भग ११, ११, कप्प) ।

अथरय वि [अस्तरजस्क] निर्मल, शुद्ध (भग ११, ११) ।

अथवण देखो अथमण (भवि) ।

अथसिद्ध पु [अर्थसिद्ध] पल का दशवाँ दिवस, दशमी तिथि (सुज १०, १४) ।

अथा देखो अट्टा = आस्था ।

अथा } सक [अस्ताय] अस्त होना,
अथाअ } हुव जाना, अदृश्य होना । अथाइ,
अथाए (पठम ७३, ३५) । अथाअति (से ७, २३) । वहु अथाअत (से ७, ६६) ।

अथाअ वि [अस्तमित] अस्त हुआ, हुवा हुआ । 'तावच्चिय दिवसयरो अथाओ विगयकि-रणसघाओ' (पठम १०, ६६ से ६, ५२) ।

अथाइया छी [दे] गोष्ठी-मण्डप (स ३६) ।

अथाण न [आस्थान] सभा, सभा-स्थान (सुर १, ८०) ।

अथाणिय वि [अस्थानिन्] गैर-स्थान में लगा हुआ, 'अथाणियनयणहि' (भवि) ।

अथाणी छी [आस्थानी] सभा-स्थान (कुमा) ।

अथाणीअ वि [आस्थानीय] सभा-सबन्धी (कुप्र ७८) ।

अथाम वि [अस्थामन्] बल-रहित, निर्बल (गाया १, १) ।

अथार पु [दे] सहायता, साहाय्य (दे १, ६, गात्र) ।

अथारिय पु [दे] नौकर, कर्मचारी (वव ६) ।

अथावगह देखो अथुगह (पण ५) ।

अथावत्ति छी [अर्थापत्ति] अनुक्त अर्थ को अटकल से समझना, एक प्रकार का अनुमान-

ज्ञान, जैसे 'देवतस पुट है और दिन में नहीं खाता है' इस वाक्य से 'देवदत्त रात में खाता है' ऐसा अनुक्त अर्थ का ज्ञान (उप ६६८) ।

अथाह वि [अस्ताघ] १ अथाह, याह-रहित, गभीर (गाया १, १४) । २ नासिका के ऊपर का भाग भी जिसमें हुव सके इतना गहरा जलाशय (वृह ४) । ३ पु अतीत चौबीसी में भारत में ममुत्पन्न इस नाम के एक तीर्थकर-देव (पव ६) ।

अथाह वि [दे] देखो अथरघ (दे १, ५४, भवि) ।

अथि वि [अथिन्] १ याचक, मांगनेवाला (सुर १०, १००) । २ धनी, धनवाला (पचा) । ३ मालिक, स्वामी (विमे) । ४ गरजू, चाहने-वाला,

'अणओ अणत्थियाण, कामत्थीण च

सव्वकामकरो ।

सग्गापवग्गमंगमहेऊ जिणदेसिओ धम्मो ॥'

(महा) ।

अथि न [अस्थि] हाड, हड्डी (महा) ।

अथि अ [अस्ति] १ सत्व-सूचक अव्यय है, 'अथेगइया मूडा भवित्ता अगाराओ अणगारिय पव्वइया' (श्रौप), 'अथि ए भते । विमाणइ' (जीव ३) । २ प्रदेश, अवयव, 'चत्तारि अथि-काया' (ठा ४, ४) । ३ अवत्तव्व वि [अव-क्तव्य] सप्तभङ्गी का पाचवाँ भङ्ग, स्वकीय द्रव्य आदि की अपेक्षा से विद्यमान और एक ही साथ कहने को अशक्य पदार्थ, 'सम्भावे आइडो देसो देसो अ उभयहा जस्स । त अथिअवत्तव्व च होइ दविअ विअप्पवत्ता' (सम्म ३८) ।

० काय पु [० काय] प्रदेशों का—अवयवों का समूह (सम १०) । ० णत्थवत्तव्व वि [० नास्त्यवत्तव्य] सप्तभङ्गी का सातवाँ भङ्ग, स्वकीय द्रव्यादि की अपेक्षा से विद्यमान, परकीय द्रव्यादि की अपेक्षा से अविद्यमान और एक ही समय में दोनों धर्मों से कहने को अशक्य पदार्थ,

'सम्भावासम्भावे, देसो देसो अ उभयहा जस्स । त अथिणत्थवत्तव्व च दविअ विअप्पवत्ता' (सम्म ४०) ।

० काय पु [० काय] प्रदेशों का—अवयवों का समूह (सम १०) । ० णत्थवत्तव्व वि [० नास्त्यवत्तव्य] सप्तभङ्गी का सातवाँ भङ्ग, स्वकीय द्रव्यादि की अपेक्षा से विद्यमान, परकीय द्रव्यादि की अपेक्षा से अविद्यमान और एक ही समय में दोनों धर्मों से कहने को अशक्य पदार्थ,

'सम्भावासम्भावे, देसो देसो अ उभयहा जस्स । त अथिणत्थवत्तव्व च दविअ विअप्पवत्ता' (सम्म ४०) ।

० न [० त्व] सत्व, विद्यमानता, हयाती

(सुर २, १४२) । ० ता छी [० ता] मत्व,

हयाती (उप पृ ३७४) । ० त्तिनय पुं [० इति-नय] द्रव्याधिक नय (विमे ५३७) । ० नथि वि [० नास्ति] सप्तभङ्गी का तीसरा भङ्ग—

प्रकार, स्वद्रव्यादि की अपेक्षा में विद्यमान और परकीय द्रव्यादि की अपेक्षा में अविद्यमान वस्तु,

'अह देसो मव्भावे देसोमव्भावपजवे निअओ । त दविअमत्थिनत्थि अ, आएमविनेमअ जम्हा' (सम्म ३७) ।

० नात्थिपवाय न [० नास्तिपवाय] बारहवें जैन अङ्ग-ग्रन्थ का एक भाग, चौथा पूर्व (मम २६) ।

अथिअ न [आस्तिक्य] आस्तिकता, आत्मा-परलोक आदि पर विश्वास (था , पुप्फ ११०) ।

अथिय देखो अथि = अथिन् (महा, श्रौप) । अथिय वि [अर्थिक] धनी, धनवान् (हे २, १५६) ।

अथिय न [अस्थिक] १ हड्डी, हाड । २ पु वृक्ष-विशेष । ३ न बहु बीजवाला फल-विशेष (पण १) ।

अथिय वि [आस्तिक] आत्मा, परलोक आदि की हयाती पर श्रद्धा रखनेवाला (धर्म २) ।

अथिर देखो अथिर (पंचा १२) । अथीकर सक [अर्थी + कृ] प्रार्थना करना, याचना करना । अथीकरेड (निचू ४) । वहु अथीकरत (निचू ४) ।

अथीकरण न [अर्थीकरण] प्रार्थना, याचना (निचू ४) ।

अथु सक [आ + स्तु] विद्याना, शय्या करना । कर्म अथुव्वइ, कवक, अथुव्वंत (विमे २३२१) ।

अथुअ वि [आस्मृत] विद्याया हुआ (पात्र-विमे २३२१) ।

अथुगह पु [अर्थावग्रह] इन्द्रियों और मन द्वारा होनेवाला ज्ञान-विशेष, निर्विकल्पक ज्ञान (मम ११, ठा २, १) ।

अथुगहण न [अर्थावग्रहण] फल का निश्चय (भग ११, ११) ।

अथुड वि [दे] लघु, छोटा, (दे १, ६) ।

देना, सम्मति देना । अवभणुजाणिस्सदि (शौ)
(पि ५३४) ।

अवभणुणा [अभ्यनुज्ञा] अनुमति, सम्मति
(राज) ।

अवभणुणाय वि [अभ्यनुज्ञात] अनुमत,
समत (ठा ५, १) ।

अवभणुन्ना देखो अवभणुणा ।

अवभणुन्नाय देखो अवभणुणाय (णाया १,
१, कप्प, मुर ३, ८८) ।

अवभणु न [अभ्यर्ण] १ निकट, नजदीक ।
२ वि समीपस्थ (पउम ६८, ५८) । °पुर
न [°पुर] नगर-विशेष (पउम ६८, ५८) ।

अवभत्त वि [अभ्यत्त] १ तेलादि से मर्दित,
मालिश किया हुआ । २ मिक, सीचा हुआ,
'दिसि-दिमि चवमत्तभूरिकेयारो, पत्तो वासा-
रत्तो' (मुर २, ७८) ।

अभ्यत्थ वि [अभ्यरत्त] पठित, शिक्षित
(मुपा ६७) ।

अवभत्थ सक [अभि + अर्थय] १ सत्कार
करना । २ प्रार्थना करना । अवभत्थम्ह (पि
४७०) । संकृ अवभत्थइअ, अवभत्थिअ
(नाट) । कृ अवभत्थणीय (अभि ७०) ।

अवभत्थण न [अभ्यर्थन] १ सत्कार ।
२ प्रार्थना (कप्प, हे ४, ३८४) ।

अवभत्थणा } स्त्री [अभ्यर्थेना] १ आदर,
अवभत्थणिया } सत्कार (मे ४, ४८) । २
प्रार्थना, विज्ञप्ति (पचा ११, मुर १, १६),
'न सहइ अवभत्थणिय, अमइ
गयाणपि पिट्ठिमसाइ ।
दइ हूण भासुरमुह, खलसीह
को न वीहेइ' (वजा १२) ।

अवभत्थिय वि [अभ्यर्थित] १ आदर,
मत्कृत । २ प्रार्थित (मुर १, २१) ।

अवभन्न देखो अवभण (पात्र) ।

अवभपडल न [दे] उपवास-विशेष, भोडल,
अन्नक, अन्नरक (उत्त ३६, ७५) ।

अवभपिसाअ पु [दे अभ्रपिशाच] राहु (दे
१, ४२) ।

अवभय पु [अभय] बालक, बच्चा (पात्र) ।

अवभय पु [अभ्रक] अन्नरक (जी ४) ।

अवभरहिय वि [अभ्यर्हित] सत्कार-प्राप्त,
गौरवशाली (वृह १) ।

अवभवहरिय वि [अभ्यवहृत] भुक्त (सुख
२, १७) ।

अवभवहार पु [अभ्यवहार] भोजन, खाना
(विसे २२१) ।

अवभवालुया स्त्री [दे] अन्नक का चूर्ण
(उत्त ३६, ७५) ।

अवभवव देखो अवभव, 'अवभववाण सिद्धा
एतगुणा एतया भव्वा' (पस ८८) ।

अवभवस मक [अभि + अस्] सीखना,
अभ्यास करना । यकृ अवभवसंत (स ६०६) ।
कृ अवभवसियवव (मुर १४, ८५) ।

अवभवसण न [अभ्यमन] अभ्यास (दमनि
१) ।

अवभवसिय वि [अभ्यरत्त] सीखा हुआ (मुर
१, १८०, ६, १६) ।

अवभवहर पु [दे] अन्नक (पच ३, ३९) ।

अवभवहिय वि [अभ्यधिकृ] विशेष, ज्यादा
(सम २ मुर १ १७०) ।

अवभाअच्छ वि [अभ्या + गम्] समुख
आना, सामने आना । अवभाअच्छइ (पड्) ।

अवभाइक्ख देखो अवभक्खा । अवभाइक्खइ,
अवभाइक्खेजा (आचा) ।

अवभागम पु [अभ्यागम] १ मनुवागमन ।
२ समीप स्थिति (निच्च २) ।

अवभागमिय } वि [अभ्यागत] १ समु-
अवभागय } खागत । २ पु आगलुक,
पाहुन, अतिथि (सूय १, २, ३, मुपा ५) ।

अवभायत्त } वि [दे] प्रत्यागत, वापस आया
अवभायत्थ } हुआ (दे १, ३१) ।

अवभास पु [अभ्यास] गुणकार (अणु ७४,
पिड ५५५) ।

अवभास न [अभ्यास] १ निकट, नजदीक
(मे ६, ६०, पात्र) । २ वि समीपवर्ती, पार्श्व-
स्थित (पात्र) । ३ पु शिक्षा, पढाई, सीख ।

४ आवृत्ति (पात्र, वृह १) । ५ आदत (ठा
४, ४) । ६ आवृत्ति से उत्पन्न संस्कार (धर्म
२) । ७ गणित का संकेत-विशेष (कम्म ४,
७८, ८३),

अवभास सक [अभि + अस्] अभ्यास
करना, आदत डालना,
'जं अवभासइ जीवो, गुणं च दोस च
एत्थ जम्ममि ।

त पावइ पर-नोए तेण य

अवभास-जाणण' (धर्म २, भवि) ।

अवभाहय वि [अभ्याहृत] आघात-प्राप्त
(महा) ।

अव्भिभग देवो अव्भिभंग = अभि + अज् । प्रयो-
अव्भिभावेइ (पि २३४) ।

अव्भिभग देवो अव्भिभग = अभ्यग (णाया १,
१८) ।

अव्भिभगण देखो अव्भिभगण (कण) ।

अव्भिभगिय देवो अव्भिभागय (कप्प) ।

अव्भिभतर देवो अव्भिभतर (कप्प, स ७, परह
३, ५, णाया १, १३) ।

अव्भिभतरओ अ [अभ्यन्तरतस] १ भीतर
में । २ भीतर में (आवम) ।

अव्भिभतरिय वि [आभ्यन्तरिक] भीतर
का, अन्तरंग (नम ६७, कप्प, णाया १,
१) ।

अव्भिभतरुद्धि पु [अभ्यन्तरोद्धिन्] कायो-
त्थर्ग का एक दोप, दोनों पैर के अंगुठों को
मिलाकर और पृष्ठियों को बाहर फैलाकर
किया जाता ध्यान-विशेष (चिइय ४८७) ।

अव्भिभट्ट वि [दे] सगत, सामने आकर भिडा
हुआ, 'हत्थो हत्थीण मम अव्भिभट्टो रत्तवरो
मह रहेण' (पउम ६, १८२, ६८, २७) ।

अव्भिभड मक [स + गम्] सगति करना,
मिलना । अव्भिभड (कुमा, हे ४, १६४) ।
अव्भिभडु (मुपा १५२) ।

अव्भिभडिअ वि [संगत] सगत युक्त (पात्र,
दे १, ७८) ।

अव्भिभडिअ वि [दे] सार, मजवृत्त (दे १,
७८) ।

अव्भिभण वि [अभिन्न] भेदरहित (धर्म २) ।

अव्भुअअ देखो अव्भुदय (मे १५, ६५,
स ३०) ।

अव्भुक्ख सक [अभि + उच्] सींचन
करना । वकृ, अव्भुक्खत (वज्जा ८६) ।

अव्भुक्खण न [अभ्युक्षण] सिंचन करना,
छिड़काव (स ५७६) ।

अव्भुक्खणीया स्त्री [अभ्युक्षणीया] सीकर,
आसार, पवन से गिरता जल (वृह १) ।

अद्वा स्त्री [आर्द्रा] १ नक्षत्र-विशेष (सम २)। २ छन्द-विशेष (पिंग)।

अद्वाअ पु [दे] १ आदर्श, दर्पण (दे १, १४, परण १५, निचू १३)। १°पस्मिण पुं [°प्रश्न] विद्या-विशेष, जिसमें दर्पण में देवता का आगमन होता है (ठा १०)। १°विज्ञा स्त्री [°विद्या] चिकित्सा का एक प्रकार, जिससे बीमार को दर्पण में प्रतिबिम्बित कराने से वह नीरोग होता है (वव ५)।

अद्वाइअ वि [दे] आदर्श वाला, आदर्श से पवित्र (वृह १)।

अद्वाग [दे] देखो अद्वाअ (सम १२३)।

अद्दि पु [अद्रि] पहाड़, पर्वत (गडड)।

अद्दिट्ट वि [अट्ट] १°नहीं देखा हुआ (सुर १, १७२)। २ दर्शन का अविषय (सम्म ६६)।

अद्दिय वि [आर्द्रित] आर्द्र किया हुआ मिगाया हुआ (विक्र २३)।

अद्दिय वि [अर्दित] पीटा हुआ, पीड़ित (वव १०)।

अद्दिस्स वि [अट्टश्य] देखने के अयोग्य या अशक्य (सुर ६, १२०, सुपा ८५, आ २७)।

अद्दिस्संत वक्क [अट्टश्यमान] नहीं अद्दिस्समाण दिखाता हुआ (सुपा १५४, ४५७)।

अद्दीण वि [अद्दीण] क्षोभ को अप्राप्त, अशुद्ध, निर्भीक (परह २, १)।

अद्दीण देखो अद्दीण (श्लोच ५३७)।

अद्दुमाअ वि [दे] पूर्ण, भरा हुआ (पड्)।
अद्देस वि [अट्टश्य] देखने के अशक्य (म १७०)।

अद्देसीकारिणी स्त्री [अट्टश्यीकारिणी] अट्टश्य बनानेवाली विद्या (सुपा ४५४)।

अद्देस्सीकरण वि [अट्टश्यीकरण] १ अट्टश्य करना। २ अट्टश्य करनेवाली विद्या, 'किंपुण विजासिज्झा अद्देस्सीकरणसगग्रो वावि' (सुपा ४५५)।

अद्दोहि वि [अद्रोहिन्] द्रोह-रहित, द्वेष-वर्जित (धर्म ३)।

अद्ध पुन [अर्ध] १ आधा (कुमा)। २ खण्ड, अंश (पि ४०२)। १°करिस्स पुं [°कर्प] परिमाण-विशेष, फल का आठवाँ भाग (अणु)।

°कुडव, °कुलव पुं [°कुडव, °कुलव] एक प्रकार का धान्य का परिमाण (राय)।

°क्खेत्त न [°क्षेत्र] एक ग्रहोरात्र में चन्द्र के साथ योग प्राप्त करनेवाला नक्षत्र (चद १०)। °खल्ला स्त्री [°खल्वा] एक प्रकार का जूता (वृह ३)। °घडय पु [°घटक] आधा परिमाणवाला घड़ा, छोटा घड़ा (उवा)।

°चद पु [°चन्द्र] १ आधा चन्द्र (गो ५७१)। २ गल-हस्त, गला पकड़ कर बाहर करना (उप ७२८ टी)। ३ न एक हथियार (उप पु ३६५)। ४ गर्भ नन् के आकारवाले मोपान (राया १, १)। ५ एक तरह का वाण, 'एसो तुह तिवखेण मीम छिदामि अद्ध-चदेण' (सुर ८, ३७)। °चक्कवाल न [°चक्रवाल] गति-विशेष (ठा ७)। °चक्कि पु [°चक्रिन्] चक्रवर्ती राजा से अर्ध विभूति वाला राजा, वासुदेव (कम्म १, १२)।

°च्छट्ट, °छट्ट वि [°पट्ट] साढे पाँच (पि ४५०, मम १००)। °ट्टम वि [°ष्टम] साढे सात (ठा ६)। °णाराय न [°नाराच] चौथा संहनन, शरीर के हाडों की रचना-विशेष (जीव १)। °णारीसर पु [°नारीश्वर] शिव, महादेव (कप्पु)। °तइय वि [°तृतीय] ढाई (पउम ४८, ३५)। °तेरस वि [°त्रयोदश] साढे चारह (भग)। °नेवन्न वि [°त्रिपञ्चाश] साढे दान (सम १३४)। °द्ध वि [°र्ध] चौथा भाग, पौआ (वृह ३)। °नवम वि [°नवम] साढे आठ (पि ४५०)। °नाराय देखो °णाराय (कम्म १, ३८)।

°पचम वि [°पञ्चम] साढे चार (सम १०२)। °पल्लिक वि [°पर्यङ्क] आसन-विशेष (ठा ५, १)। °पहर पु [°प्रहर] ज्यौतिष शास्त्र प्रसिद्ध एक कुयोग (गण १८)। °वव्वर पु [°ववर] देश-विशेष (पउम २७, ५)। °मागहा, °ही स्त्री [°मागधी] प्राचीन जैन साहित्य की प्राकृत भाषा, जिसमें मागधी भाषा के भी कोई २ नियम का अनुसरण किया गया है, 'पोराण-मद्धमागहभामानिययं हवइ सुत्त' (हे ४, २८७, पि १६, सम ६०, पउम २, ३४)। °मास पुं [°मास] पक्ष, पनरह दिन (दे १०)। °मासिय वि [°मासिक] पाक्षिक, पक्ष-सम्बन्धी (महा)। °थंद देखो °चद (उप ७२८)

टी)। °रज्जिय वि [°राज्यिक] राज्य का आधा हिस्सेदार, अर्ध राज्य का मालिक (विपा १, ६)। °रत्त पुं [°रत्त] मध्य रात्रि का समय, निशीथ (गा २३१)। °वेयाली स्त्री [°वेताली] विद्या-विशेष (सूत्र २, २)। °सकासिया स्त्री [°साकासिका] एक राज-कन्या का नाम (आव ४)। °सम न [°सम] एक वृत्त, छन्द-विशेष (ठा ७)। °हार पु [°हार] १ नवसरा हार (राय, औप)। २ इस नाम का एक द्वीप। ३ समुद्र-विशेष (जीव ३)। °हारभद्द [°हारभद्र] अर्धहार-द्वीप का अधिष्ठाता देव (जीव ३)। °हारमहाभद्द पु [°हारमहाभद्र] पूर्वोक्त ही अर्थ (जीव ३)। °हारमहावर पु [°हारमहावर] अर्धहार समुद्र का एक अधिष्ठायक देव (जीव ३)। °हारवर पु [°हारवर] १ द्वीप-विशेष। २ समुद्र-विशेष। ३ उनका अधिष्ठायक देव (जीव ३)। °हारवरभद्द पुं [°हारवरभद्र] अर्धहारवर द्वीप का एक अधिष्ठाता देव (जीव ३)। °हारवरमहावर पुं [°हारवरमहावर] अर्धहारवर समुद्र का एक अधिष्ठाता देव (जीव ३)। °हारोभास पु [°हारावभास] १ द्वीप-विशेष। २ समुद्र-विशेष (जीव ३)। °हारोभासभद्द पु [°हारावभासभद्र] अर्धहारवभास नामक द्वीप का एक अधिष्ठाता देव (जीव ३)। °हारोभासमहाभद्द पु [°हारावभासमहाभद्र] पूर्वोक्त ही अर्थ (जीव ३)। °हारोभासमहावर पुं [°हारावभासमहावर] अर्धहारवभास नामक समुद्र का एक अधिष्ठाता देव (जीव ३)। °हारोभासवर पु [°हारावभासवर] देखो पूर्वोक्त अर्थ (जीव ३)। °इय पु [°इय] एक प्रकार का परिमाण, आढक का आधा भाग (ठा ३, १)।

अद्ध पु [अध्वन्] मार्ग, रास्ता (महा, आचा)।

अद्धत पु [दे] १ पर्यन्त, अन्त भाग (दे १, १८, से ६, ३२, पाअ), 'भरिजतमिद्धपहद्धतो' (विक्र १०१)। २ पु व. कतिपय कईएक (मे १३ ३२)।

अद्धखण न [दे] १ प्रतीक्षा करना, राह देखना (दे १, ३४)। २ परीक्षा करना (दे १, ३४)।

अभय (सुपा १८) । 'मेण पुं [°सेन] एक राजा का नाम (पिंड) ।

अभयंकर वि [अभयंकर] अभय देनेवाला, अहिंसक (सूत्र १, ७, २८) ।

अभयकरा स्त्री [अभयकरा] भगवान् अभिनन्दन की दीक्षा-गिविका (विचार १२६) ।

अभया स्त्री [अभया] १ हरीतकी, हरें, हरडई (निचू १५) । २ राजा दधिवाहन की स्त्री का नाम (ती ३५) ।

अभयारिष्ट न [अभयारिष्ट] मय-विशेष (सूत्र १, ८) ।

अभवमिद्विय } पु [अभवमिद्विक, अभव्य, अभवसिद्धीय } मुक्ति के लिये अयोग्य जीव (ठा २, २ एदि ठा ?) ।

अभविय } वि [अभव्य] १ अमुन्दर अचार अभव्य } (विसे) । २ पु. मुक्ति के लिये अयोग्य जीव (विने, कम्म ३, २३) ।

अभाअ वि [अभाग] अग्र्यान्, अयोग्य स्थान (से ८, ४२) ।

अभाइ वि [अभागिन्] अभागा, हत-भाग्य, कमनसीव (चार २६) ।

अभागवेज्ज वि [अभागवेय] ऊपर देखो (पउम २८, ८६) ।

अभाव पु [अभाव] १ ध्वम, नाश (वृह १) । २ अव्ययमानता, अमत्व (पचा ३) । ३ अमम्भ (दम १) । ४ अशुभ परिणाम (उत्त १) ।

अभाविय वि [अभावित] अयोग्य, अनुचित (ठा १०, वृह ८) ।

अभावुग वि [अभावुक] जिमपर दूसरे के सग की अमर न पड सके वह, 'विमहरमणी अभावुगदव्वं जीवो उ भावुग तम्हा' (सुपा १७५, श्रोच ७७३) ।

अभासग } वि [अभासक] १ बोलने की अभासय } शक्ति जिसको उत्पन्न न हुई हो वह । २ नहीं बोलनेवाला । ३ पु केवल त्वग्-इन्द्रियवाला एकेन्द्रिय जीव । ४ मुक्त आत्मा (ठा २, ४; भग; अणु) ।

अभासा स्त्री [अभापा] १ असत्य वचन । २ सत्य-मिश्रित असत्य वचन (भग २५, ३) ।

अभिअ [अभि] निम्न-लिखित अर्थों में से किसी एक की वतलानेवाला अव्यय—१ समुख,

मामने, 'अभिगच्छणया' (श्रोच) । २ चारो ओर, समन्तात्, 'अभिदो' (स्वप्न ४२) । ३ बलात्कार, 'अभिघो' (धर्म २) । ४ उल्लघन, अतिक्रमण 'अभिधत' (आचा) । ५ अव्यन्त, ज्यादा, 'अभिदुग्ग' (सूत्र १, ५, २) । ६ लक्ष्य, 'अभिमुह' । ७ प्रतिकूल, 'अभिवाय' (आचा) । ८ विकल्प । ९ समावना (निचू १) । १० निरर्थक भी इम अव्यय का प्रयोग होता है, 'अभिमति' (नुर १६ ६२) ।

अभिअण पु [अभिजन] १ कुल । २ जन्म-भूमि (नाट) ।

अभिआवण वि [अभ्यापन्न] समुख-आगत (सूत्र १, ४, २) ।

अभिइ स्त्री [अभिजिन्] नक्षत्र-विशेष (ठा २, ३) ।

अभिइ मक (अभि + इ) नामने जाना, समुख जाना । वक्तु अभिइत (उा १८२ टी) ।

अभिउज देखो अभिजुज । मक्तु. अभिउजिय (ठा ३, ८, दम १०) ।

अभिओअ } पुं [अभियोग] १ आज्ञा, अभिओग } हुकुम (श्रोच, ठा १०) । २ बलात्कार, 'अभिघोणे अ निघोणे' (आ ५) ।

३ बलात्कार से कोई भी कार्य में लगाना (धर्म २) । ४ अभिभव, पराभव (आव ५) । ५ कर्मण-प्रयोग, वशीकरण, वश करने का चूर्ण या मन्त्र-नन्वादि, 'दुविहो खलु अभिघोणे, दव्वे भावे य

होइ नायव्वो ।

दव्वम्मि होइ जोगो, विज्जा मंता य भावम्मि' (श्रोच ५६७) ।

६ गर्व, अभिमान (आव ५) । ७ आग्रह, हठ (नाट) । 'पणत्ति स्त्री [°प्रजप्ति] वित्या-विशेष (राया १, १६) । देखो अहिओय ।

अभिओग पु [अभियोग] उद्यम, उद्योग (सिरि ५८) ।

अभिओगी स्त्री [आभियोगी] भावना-विशेष, व्यान-विशेष, जो अभियोगिक देव-गति (नौकर-स्थानीय देव-जाति) में उत्पन्न होने का हेतु है (वृह १) ।

अभिओयण न [अभियोजन] देखो अभिओग (आव; पण २०) ।

अभिगण } देखो अवभंगण (नाट, रंभा) । अभिजण }

अभिवक्ख मक [अभि + काइक्ष्] उच्छा करना, चाहना । अभिवक्खेजा (आचा) । वक्तु. अभिकरमाण (दम ६, ३) ।

अभिकखा स्त्री [अभिकाइत्ता] अभिनापा, उच्छा (आचा) ।

अभिकवि } वि [अभिनादिक्षन्] अभि-अभिकविर } नापी, उच्छृङ्ख (पि ८०५, मुपा १२६) ।

अभिकत वि [अभिकान्त] १ गत, अतिक्रान्त, 'अग्रभियंत च खनु वय सपेहाए' (आचा) । २ समुख गत । ३ आग्रह । ४ उल्लघित (आचा; सूत्र २, २) ।

अभिकम सक् [अभि + क्रम्] १ जाना, गुजगना । २ मामने जाना । ३ उल्लघन करना । ४ शुरू करना । वक्तु अभिकममाण (आचा) । मक्तु अभिकम (सूत्र १, १, २) ।

अभिकम पु [अभिक्रम] १ उल्लघन । २ प्रारम्भ । ३ समुख-गमन । ४ गमन, गति (आचा) ।

अभिकव्व } अ [अभीक्षण] बारबार (उप अभिकव्वण } १४७ टी, ठा २, ४, वव ३) ।

अभिकखा स्त्री [अभिक्या] नाम (विने १०४८) ।

अभिगच्छ मक [अभि + गम्] प्राप्त करना । अभिगच्छइ (दम ४, २१, २२, ६, २, २) ।

अभिगच्छ मक [अभि + गम्] नामने जाना । अभिगच्छति (भग २, ५) ।

अभिगच्छणया स्त्री [अभिगसन] समुख-गमन (श्रोच) ।

अभिगच्छणा देखो अभिगच्छणया (वव १) ।

अभिगज्ज अक [अभि + गर्ज्] गर्जना, खूब जोर में आवाज करना । वक्तु अभिगज्जत (राया १, १८, नुर १३, १८२) ।

अभिगम देखो अभिगच्छ । वक्तु अभिगमणीय (उ ६७६) ।

अभिगम पुं [अभिगम] १ प्राप्ति, स्वीकार (पक्खि) । २ आदर, सत्कार (भग २, ५) । ३ (गुरु का) उपदेश, सीख (राया १, १) ।

अधिङ देखो अद्धिङ (सुपा ३५६) ।
 अधिकरण देखो अहिगरण (परह १, २) ।
 अधिग वि [अधिक] विशेष, ज्यादा (वृह १) ।
 अधिगम देखो अहिगम (वर्म २, विते २२) ।
 अधिगरण देखो अहिगरण (निचू १) ।
 अधिगरणिया देखो अहिगरणिया (परण २१) ।
 अधिगार देखो अहिगार (सूअनि ५८) ।
 अधिण्ण } (अप) वि [अधीन] आगत,
 अधिन्न } परवश (पि ६१, हे ४, ४२७) ।
 अधिमासग पु [अधिमासक] अधिक मास (निचू २०) ।
 अधिरोधिअ वि [अधिरोपित] आरोपित, 'सूनाचिरोविओ मो' (वर्मवि १३७) ।
 अधीगार देखो अहिगार (सूअनि १८०) ।
 अधीय देखो अहीय (उत्त २८, २२) ।
 अधीस वि [अधीश] नायक, अधिपति (कुम्मा २३) ।
 अधुव देखो अद्धुव (गाया १, १, पउम ६५, ४६) ।
 अधो देखो अहो = अधम् (पि ३४२) ।
 अनदि स्त्री [अनन्दि] अमङ्गल, अकुशल, 'त मोएउ अनदि' (अजि ३७) ।
 अनन्न देखो अणण (कुमा) ।
 अनय देखो अणय (मुपा ३७१) ।
 अनल देखो अणल (हे १, २२८, कुमा) ।
 अनागय देखो अणागय (भग) ।
 अनागार देखो अणागार (भग) ।
 अनाय देखो अणाय (सुपा ४७०, पि ३८०) ।
 अनालफ (चूपै) वि [अनारम्भ] पाप-रहित (कुमा) ।
 अनालफ (चूपै) वि [अनालम्भ] अहिंसक, दयालु (कुमा) ।
 अनिगिण देखो अणगिण (सम १७) ।
 अनिदाया } देखो अणिदा (परण ३४) ।
 अनिदाया }
 अनिमित्ती स्त्री [अनिमित्ती] लिपि-विशेष (विते ४६४ टी) ।
 अनियमिय वि [अनियमित] १ अव्यवस्थित । २ असंयत, इन्द्रियो का नियम नहीं

करनेवाला, 'गओ य नरय अनियमियणा' (पउम ११४, २६) ।
 अनियट्टि देखो अणियट्टि (मम २६, कम्म २, सत्त ७१ टी) ।
 अनियय देखो अणियय (शोध २) ।
 अनिरुद्ध देखो अणिरुद्ध (अंत १४) ।
 अनिल देखो अणिल (हे १, २२८, कुमा) ।
 अनिसट्ट देखो अणिसट्ट (ठा ३, ४) ।
 अनिहारिम } देखो अगीहारिम (भग, ठा
 अनीहारिम } २, ४) ।
 अनु (अन) देखो अण्णहा (कुमा) ।
 अनुकूल देखो अणुकूल (सुपा ४७४) ।
 अनुग्गह देखो अणुग्गह (अभि ४१) ।
 अनुचिट्ठिय देवा अणुट्ठिय (म १५) ।
 अनुज्जुय देखो अणुज्जुय (पि ५७) ।
 अनुहव देखो अणुहव = अनु + भू । वक्क अनुहवत (रभा) ।
 अन्न देखो अण्ण (मुपा ३६०, प्रासू ४३, परह २, १, ठा ३, २, ८, १, आ ६) ।
 अन्नइय देखो अण्णइय (भवि) ।
 अन्नओ देखो अण्णओ । हुत्त किंवि [°मुख] दूसरी तरफ (मुर ३, १३६) ।
 अन्नत्तो देखो अण्णत्तो (कुमा) ।
 अन्नत्थ } देखो अण्णत्थ (आचा, स १५०,
 अन्नत्थ } कुमा) ।
 अन्नदो देखो अण्णत्तो (कुमा) ।
 अन्नमन्न देखो अण्णमण्ण (गाया १, १) ।
 अन्नन्न देखो अण्णण (महा कुमा) ।
 अन्नय पु [अन्वय] एक की सत्ता में ही दूसरे की विद्यमानता, जैसे अग्नि की हयाती में ही धूम की सत्ता, नियमित सम्बन्ध (उप ४१३, स ६५१) ।
 अन्नयर देखो अण्णयर (मुपा ३७०) ।
 अन्नया देखो अण्णया (महा) ।
 अन्नव देखो अण्णव (मुपा ८५, ५२६) ।
 अन्नह देखो अण्णह (मुर १, १५६, कुमा) ।
 अन्नहा देखो अण्णहा (पउम १००, २४, महा, मुर १, १४३, प्रासू ७) ।
 अन्नहि देखो अण्णहि (कुमा) ।
 अन्ना स्त्री [दे] माता, जननी (दम ७, १६, १६) ।
 अन्नाइट्ट वि [अन्वाविष्ट] आक्रान्त, 'तुम एं आउसो कासवा । मम तवेण अन्नाइट्टे समाणे

अतो छएह मासाए पित्तजरपरिगयसरीणे दाह-वक्कतीए छउमत्थे चैव काल करेस्समि' (भग १५) ।
 अन्नाण देखो अण्णाण = अज्ञान (कुमा, मुर १, १५, महा, उवर ६५, कम्म ४, ६, ११) ।
 अन्नाणि देखो अण्णाणि (उव, सुपा ५८८) ।
 अन्नाणिय देखो अण्णाणिय (पउम ४, २७) ।
 अन्नाय देखो पहला ओर दूसरा अण्णाय (मुर ६, २, मुपा २५६, मुर २, ६, २०२, मम्म ६६, सुपा २३३, मुर २, १६५, सुपा, ३०८), 'नाएण ज न सिद्ध को खनु महलो तयत्यमन्नाओ ?' (उर ७१८ टी) ।
 अन्नारिस देखो अण्णारिस (हे १, १४२, महा) ।
 अन्नाहुत्त वि [दे] पराङ्मुख (सुख २, १७) ।
 अन्नि वि [अन्यदीय] परकीय, 'अन्न वा अन्नि वा' (सूअ २, २, ६) ।
 अन्निज्जमाण देखो अण्णिज्जमाण (गाया १, १६) ।
 अन्निय देखो अण्णिय ।
 अन्नियसुय पु [अन्निकासुत] एक विख्यात जैन मुनि (उव) ।
 अन्निया देखो अण्णिया (सया ५६) ।
 अन्नुत्ति स्त्री [अन्योक्ति] साहित्य-प्रसिद्ध एक अलङ्कार (मोह ३७, सम्मत १४५) ।
 अन्नुन्न } देखो अण्णुण्ण (हे १, १५६,
 अन्नुमन्न } काप) ।
 अन्नूण वि [अन्यूत] अहीन (धर्मवि १२६) ।
 अन्नेस देखो अण्णेस । वक्क. अन्नेसमाण (उप ६ टी) ।
 अन्नेसण देखो अण्णेसण (मुर १०, २२८, सण) ।
 अन्नेसणा देखो अण्णेसणा (ठा ३, ४) ।
 अन्नेसय वि [अन्वेषक] गवेषक, खोज करने-वाला (स ५३५) ।
 अन्नेसि } देखो अण्णेसि (पि ५१६,
 अन्नेसिय } आचा) ।
 अन्नोन्न देखो अण्णोण्ण (कुमा, महा) ।
 अप स्त्री. व. [अप्] पानी, जल (सुज्ज

अभिणिव्वट्ट सक [अभिनि + वृत्] रोकना, प्रतिषेध करना, 'मे मेहावी अभि-
णिव्वट्टेज्जा कोह च माण च माय च लोभ
च पेज्ज च दोस च मोह च गव्व च जम्मं
च मारं च नरय च तिगिय च दुक्ख च'
(आचा)।

अभिणिव्वट्ट सक [अनिर् + वृत्] १
सपादित करना, निष्पन्न करना। २ उत्पन्न
करना। संकृ—अभिणिव्वट्टित्ता, (भग
५ ४)।

अभिणिव्वट्ट वि [अभिनिवृत्त] १
निष्पन्न। २ उत्पन्न, 'इह खनु अत्तत्ताए तेहिं
तेहिं कुलेहिं अभिमेएण अभिसमूया अभि-
सजाया अभिणिव्वट्टा अभिसवुट्ठा अभिमवुट्ठा
अभिनिक्खता अणुपुव्वेण महामुणी' (आचा)।

अभिणिव्वुड वि [अभिनिवृत्त] १ मुक्त,
मोक्ष-प्राप्त (सूत्र १, २, १)। २ शान्त,
अकुपित (आचा)। ३ पाप मे निवृत्त (सूत्र
१, २, १)।

अभिणिसज्जा स्त्री [अभिनिपद्या] जैन
साधुओं के रहने का स्थान-विशेष (वव १)।

अभिणिसट्ठ देखो अभिणिसिट्ठ (सुज्ज ६)।

अभिणिसिट्ठ वि [अभिनिस्सट्ठ] बाहर
निकला हुआ (जीव ३, १)।

अभिणिसेहिया स्त्री [अभिनिपेयिकी] जैन
साधुओं के स्वाव्याय करने का स्थान-विशेष
(वव १)।

अभिणिरसव अक [अभिनिर् + स्तु]
निकलना। अभिणिस्मवति (राय ७४)।

अभिणी सक [अभि + नी] अभिनय करना,
नाट्य करना। वक्क अभिणअंत (मै
७५)। कवक्क अभिणइज्जत (सुपा
३५६)।

अभिणूम न [अभिणूम] माया, कपट (सूत्र
१, २, १)।

अभिण्ण वि [अभिज्ञ] जानकार, निपुण
(उप ५८०)।

अभिण्ण वि [अभिज्ञ] १ अश्रुटित, अवि-
दारित, अखण्डित (उवा, पचा ११)।
२ भेदरहित, अपृथग्भूत (वृह ३)।

अभिण्णपुड पुं [दे] खाली पुटिया, लोगो

को ठगने के लिए लडके जिमको रास्ता पर
रख देते हैं (दे १, ४४)।

अभिण्णाण न [अभिज्ञान] निशानी, चिह्न
(आ १४)।

अभिण्णाय वि [अभिज्ञात] जाना हुआ,
विदित (आचा)।

अभितज्ज सक [अभि + तर्ज] तिरस्कार
करना, ताड़न करना। वक्क अभितज्जेमाण
(णाय १, १८)।

अभितत्त वि [अभितप्त] १ तपाया हुआ,
गरम किया हुआ (सूत्र १, ८, १, २७)।

अभितव सक [अभि + तप्] १ तपाना।
२ पीडा करना, 'चत्तारि अगणिओ समार-
भित्ता जेहि कूरकम्मा भितविति, वाल' (सूत्र
१, ५, १, १३)। कवक्क अभितप्पमाण,
'ते तत्थ चिट्ठतिभितप्पमाण मच्छा व जीव-
तुवजोतिपत्ता' (सूत्र १, ५, १, १३)।

अभिताव सक [अभि + तापय] १ तपाना,
गरम करना। २ पीडित करना। अभितावयति
(सूत्र १, ५, १, २१, २२)।

अभिताव पु [अभिताप] १ दाह। २ पीडा
(सूत्र १, ५, १, २, ६)।

अभिताम सक [अभि + त्रासय] ग्राम
उपजाना, भयभीत करना। वक्क अभितासे-
माण (णाय १, १८)।

अभित्थु सक [अभि + स्तु] स्तुति करना,
श्लाघा करना, वर्णन करना। अभित्थुणति,
अभित्थुणामि (पि ४६४, विसे १०५४)।
वक्क अभित्थुणमाण (कप्प)। कवक्क
अभित्थुव्वमाण (रण ९८)।

अभित्थुय वि [अभिष्टुत] स्तुत, श्लाघित
(सथा)।

अभित्थु देखो अभित्थु। वक्क अभित्थुणत
(णाय १, १)। कवक्क अभित्थुव्वमाण
(कप्प, ठा ६)।

अभिटुग्ग वि [अभिटुर्ग] १ दु खोत्पादक
स्थान। २ अतिविषम स्थान (सूत्र १, ५, १,
१७)।

अभिदो (शौ) अ [अभितः] चारो ओर से
(स्वप्न ४२)।

अभिद्व सक [अभि + द्रु] पीडा करना,

दु ख उपजाना, हैरान करना, 'नुदति वायाहि
अभिद्व एरा' (आचा २, १६, २)।

अभिद्विय वि [अभिद्रुत] उपद्रुत, हैरान
किया हुआ (सुर १२, ६७)।

अभिद्वुय देखो अभिद्विय (णाय १,
६, स ५६)।

अभिधाइ वि [अभिधायिन्] वाचक,
कहनेवाला (विमे ३७२)।

अभिधार सक [अभि + धारय] १ चिन्तन
करना। २ स्पष्ट करना। अभिधारए (दस ५,
२, २५, उत २, २१), अभिधारयामो (सूत्र
२, ६, १६)। वक्क अभिधारयंत (उत्तिनि
३)।

अभिधारण न [अभिधारण] धारणा,
चिन्तन (वृह ३)।

अभिधेज्ज पु [अभिधेय] अर्थ, वाच्य,
अभिधेय पदार्थ (विमे १ टी)।

अभिनद देखो अभिणद। वक्क अभिनद-
माण (कप्प)। कवक्क अभिनदिज्जमाण
(महा)।

अभिनंदण देखो अभिणदण (कप्प)।

अभिनदि स्त्री [अभिनंदि] आनन्द, खुशी,
'पावेउ अ नंदियेणमभिनदि' (अजि ३७)।

अभिनिक्खत देखो अभिणिक्खंत (आचा)।

अभिनिक्खम अक [अभिनिर् + क्रम्]
दीक्षा (मन्याम) लेना, दीक्षा लेने की इच्छा
करना, गृहवाम से बाहर निकलना। वक्क
अभिनिक्खमंत (पि ३६७)।

अभिनिगिण्ह देखो अभिणिगिण्ह (आचा)।

अभिनिवुज्ज देखो अभिणिवुज्ज। अभिनि-
वुज्जइ (विसे ६८)।

अभिनिवट्ट देखो अभिणिवट्ट। सक. अभि-
निवट्टित्ताण (पि ५८३)।

अभिनिविट्ट देखो अभिणिविट्ट (भग)।

अभिनिवेश सक [अभिनि + वेशय]
१ स्थापन करना। २ करना। अभिनिवेशए
(दस ८, ५६)।

अभिनिवेशिय न [अभिनिवेशिक] मिथ्या-
त्व का एक प्रकार, सत्य वस्तु का ज्ञान होने
पर भी उसे नही मानने का दुराग्रह (आ ६,
कम्म ४, ५१)।

ममता-रहित, निर्मम, 'अपरिगहा अणारभा भिक्खु ताण परिव्वण' (सूत्र १, १, ४)।
 अपरिगहा स्त्री [अपरिगहा] वेश्या (वव २)।
 अपरिगहास्त्री स्त्री [अपरिगृहीता] १ वेश्या, कन्या वगैरह अविवाहिता स्त्री (पडि)। २ पति-हीना स्त्री, विधवा (धर्म २)। ३ घर-दासी। ४ पनहारी। ५ देव-पुत्रिका, देवता को भेंट की हुई कन्या (आचू ५)।
 अपरिच्छण } वि [अपरिच्छन्न] १ नही
 अपरिच्छन्न } ढका हुआ, अनावृत (वव ३)।
 २ परिवार रहित (वव १)।
 अपरिणय वि [अपरिणत] १ रूपान्तर को अप्राप्त (ठा २, १)। २ जैन साधु की भिक्षा का एक दोष। (आचा)।
 अपरित्त वि [अपरीत] अपरिमित, अनन्त (पण १८)।
 अपरिसेस वि [अपरिशेष] सव, सकल, नि शेष (पण १, २, पञ्च ३, १४०)।
 अपरिहारिय वि [अपरिहारिक] १ दोषो का परिहार नहीं करनेवाला। (आचा)।
 २ पु जैनैतर दर्शन का अनुयायी गृहस्थ (निच २)।
 अपवग्ग पु [अपवर्ग] मोक्ष, मुक्ति (सुर ८, १०६, सत्त ११)।
 अपविद्ध वि [अपविद्ध] १ प्रेरित (मि ७, ११)। २ न गुरु-वन्दन का एक दोष, गुरु को वन्दन करके तुरन्त ही भाग जाना (गुभा २३)।
 अपह वि [अप्रभ] निस्तेज (दे १, १६४)।
 अपहत्य देखो अवहत्य (भवि)।
 अपहारि वि [अपहारिन्] अपहरण करने-वाला (म २१७)।
 अपहिय वि [अपहत] छोना हुआ (पञ्च ७६, ५)।
 अपहु वि [अप्रभु] १ अममर्थ। २ नाथ-रहित, अनाथ (पञ्च १०१, ३५)।
 अपाइय वि [अपात्रित] पात्र-रहित, भाजन-वर्जित, 'नो कप्पइ निग्गयीए अपाइयाए होत्तए' (कस)।
 अपाउड वि [अपावृत] नहीं ढका हुआ, वज्र-रहित, नम्र (ठा ५, १)।

अपादाण न [अपादान] कारक-विशेष, जिममे पञ्चमी विभक्ति लगतो है (विमे २११७)।
 अपाण न [अपान] १ पान का अभाव। (उप ८४४)। २ पानी जैसा ठंडा पेय वस्तु-विशेष। (भग १५)। ३ पुन-अपान वायु। ४ गुदा (सुपा ६२०)। ५ वि जल-वर्जित, निर्जल (उपवास), 'छट्ठेण भनेण अपाणएण' (ज २)।
 अपायावगम पु [अपायावगम] जिनद्व का एक अतिशय (सबोध २)।
 अपार वि [अपार] पार-रहित, अनन्त (सुपा ४५०)।
 अपारमग्ग पु [दे] विश्राम, विश्रान्ति (दे १, ४३)।
 अपाव वि [अपाप] १ पाप-रहित (सूत्र १, १, ३)। २ न पुण्य (उव)।
 अपावा स्त्री [अपापा] नगरी-विशेष, जहा भगवान् महावीर का निर्वाण हुआ था, यह आजकल 'पावापुरी' नाम से प्रसिद्ध है और विहार से आठ माईल पर है (राज)।
 अपिट्ठ वि [दे] पुनरुक्त, फिरसे कहा हुआ (पट्)।
 अपिय वि [अप्रिय] अनिष्ट (जीव १)।
 अपिह अ [अपृथक्] अ-भिन्न (कुमा)।
 अपुणवधग } वि [अपुनर्वन्धक] फिर मे
 अपुणवधय } उल्लूक कर्मवन्ध नहीं करने
 वाला, तीव्र भाव से पाप को नहीं करने
 वाला (पचा ३, उप २५३, ६५१)।
 अपुणवभव पु [अपुनर्भव] १ फिर से नहीं होता। २ वि जिममे फिर जन्म न हो वह, मुक्ति-प्रद (पण २, ४)।
 अपुणवभाव वि [अपुनर्भाव] फिर से नहीं होनेवाला (पच १)।
 अपुणभव देखो अपुणवभव (कुमा)।
 अपुणरागम पु [अपुनरागम] १ मुक्त आत्मा। २ मुक्ति, मोक्ष (दसत्त १)।
 अपुणरावत्तग } पु [अपुनरावर्त्तक] १
 अपुणरावत्तय } फिर नहीं घूमने वाला, मुक्त
 आत्मा। २ मोक्ष, मुक्ति (पि ३४३, श्रौप, भग १ १)।

अपुणरावत्ति पु [अपुनरावर्त्तिन्] मुक्त आत्मा (पि ३४३)।
 अपुणरावित्ति पु [अपुनरावृत्ति] मोक्ष, मुक्ति (पडि)।
 अपुणरुत्त वि [अपुनरुत्त] फिर से अकथित, पुनरुक्ति-दोष में रहित, 'अपुणरुत्तेहि महा-वित्तेहि सञ्चुण्ण' (राय)।
 अपुणागम देखो अपुगरागम (पि ३४३)।
 अपुणागमण न [अपुनरागमन] १ फिर से नहीं आना। २ फिर न अनुत्पत्ति, 'अपुणा-गमणाय व त निमिर उम्भूतिअ रविणा' (गण्ड)।
 अपुण न [अपुण्य] १ पाप। २ वि पुण्य-रहित, कम-नवीन, हन-माय्य (विपा १, ७)।
 अपुण वि [अपूणे] अद्वारा, अपरिपूर्ण (विपा १, ७)।
 अपुण वि [दे] आक्रान्त (पड्)।
 अपुत्त } वि [अपुत्र, °क] १ पुत्र-रहित
 अपुत्तिय } (सुपा ४१२, ३१४)। २ स्वजन-रहित, निर्मम, नि मृदु (आचा)।
 अपुत्त देखो अपुण (राया १, १३)।
 अपुम न [अपुम्] नपुमक (श्रीच २२३)।
 अपुल्ल देखो अपुल्ल (चड)।
 अपुव्व वि [अपूर्व] १ नूतन, नवीन। २ अद्भुत, आश्चर्यकारक। ३ असाधारण, अद्वितीय (हे ८, २७०, उप ६ टी)। °करण न [°करग] १ आत्मा का एक अभूतपूर्व शुभ परिणाम (आचा)। २ आठवाँ गुण-स्थानक (पच २२८, कम्म २, ६)।
 अपूय } पु [अपूप] एक भक्ष्य पदार्थ, पूआ,
 अपूय } पूड़ी (श्रीप; पण ३६, दे १, १३४, ६, ८१)।
 अपेक्ख सक [अप + इक्ष्] अपेक्षा करना, राह देखना। हेक्क अपेक्खिदुं (शो) (नाट)।
 अपेच्छ वि [अप्रेक्ष्य] १ देखने के अशक्य। २ देखने के अयोग्य (उव)।
 अपेय वि [अपेय] पीने के अयोग्य, मद्य आदि (कुमा)।
 अपेय वि [अपेत] गया हुआ, नष्ट; 'अपय-चक्खु' (वृह १)।
 अपेह्य वि [अपेक्षक] अपेक्षा करने वाला (आव ४)।

अभिलासुग वि [अभिलापुऋ] अभिलाषी
(उप ३५७ टी) ।

अभिलोयण न [अभिलोकन] जहां खडे रह
कर दूर की चीज देखी जाय वह स्थान
(परह २, ४) ।

अभिलोयण न [अभिलोचन] ऊपर देखो
(परह २, ४) ।

अभिवद सक [अभि + वन्द्] नमस्कार
करना, प्रणाम करना । वक्तु अभिवदत
(पउम २३, ६), कृ 'जे साहुणो ते अभि-
वदियव्वा' (गोय १४), अभिवदणिज्ज
(विसे २६४३) ।

अभिवदणा स्त्री [अभिवन्दना] प्रणाम, नम-
स्कार (चिइय ६३६) ।

अभिवदय वि [अभिवन्दक] प्रणाम करने
वाला (श्रौप) ।

अभिवड्ढ अक [अभि + वृध्] बढना,
बढा होना, उन्नत होना । अभिवड्ढामो, भूका,
अभिवड्ढित्था (कण्) । वक्तु अभिवड्ढेमाण
(ज ७) ।

अभिवड्ढि देखो अभिवुड्ढि (इक) ।

अभिवड्ढि देखो अहिंवड्ढि (मुज १०
१२ टी) ।

अभिवड्ढिय वि [अभिर्वाधन] १ बढाया
हुआ । २ अधिक मास । ३ अधिक मासवाला
वर्ष (सम ५६, चन्द ११) ।

अभिवड्ढे सक [अभि + वधेय्] बढाना ।
अभिवड्ढेति (सुज ६) । वक्तु अभिवड्ढेमाण
(सुज ६) । सक अभिवड्ढेत्ता (सुज ६) ।

अभिवत्त वि [अभिव्यक्त] आविर्भूत
(धर्मस ८८) ।

अभिवत्ति स्त्री [अभिव्यक्ति] प्रादुर्भाव
(उप २८५) ।

अभिवय सक [अभि + व्रज्] सामने
जाना । वक्तु अभिवयंत (णाय १, ८) ।

अभिवाइय वि [अभिवादित] प्रणत, नम-
स्कृत (सुपा ३१०) ।

अभिवात पु [अभिवात] १ सामने का
पवन । २ प्रतिकूल (गरम या रूक्ष) पवन
(आचा) ।

अभिवाद } सक [अभि + वादय्] प्रणाम
अभिवाय } करना, नमस्कार करना । अभि-

वाइ (महा) । अभिवादये (विसे १०५४) ।
वक्तु अभिवायमाण (आचा) । कृ अभि-
वायणिज्ज (सुपा ५६८) ।

अभिवाय देखो अभिवात (आचा) ।

अभिवायण न [अभिवादन] प्रणाम, नम-
स्कार (आचा, दस ८) ।

अभिवाहरण न [अभिव्याहरण] बुलाहट,
पुकार (पचा २) ।

अभिवाहार पु [अभिव्याहार] प्रश्नोत्तर,
सवाल-जवाब (विसे ३३६६) ।

अभिविहि पुत्री [अभिविधि] मर्यादा, व्याप्ति
(५ चा १५, विसे ८७४) ।

अभिवुड्ढि स्त्री [अभिवृष्टि] वृष्टि, वर्षा (पव
४०) ।

अभिवुड्ढ देखो अभिवड्ढ । सक अभि-
वुड्ढित्ता (सुज १) ।

अभिवुड्ढि स्त्री [अभिवृद्धि] १ वृद्धि,
बढाव । २ उत्तरभाद्रपद नक्षत्र का अधिष्ठाता
देव (ज ७) ।

अभिवुड्ढे देखो अभिवड्ढे । सक अभि-
वुड्ढेत्ता (सुज ६) ।

अभिवेदणा स्त्री [अभिवेदना] श्रत्यन्त पीडा
(सूत्र १, ५, १, १६) ।

अभिव्वज्जण न [अभिव्यञ्जन] देखो अभि-
वत्ति (सूत्र १, १, १) ।

अभिवाहार देखो अभिवाहार (विसे
३११२) ।

अभिसकण न [अभिशाङ्कन] शका, वहम
(सवोध ४६) ।

अभिसका स्त्री [अभिशाङ्का] सशय, सदेह
(सूत्र १, ६, १, १४) ।

अभिसकि वि [अभिशाङ्किन्] १ सदेह करने-
वाला । २ भीरु, डरनेवाला, 'उज्जु मारा-
भिसकी मरणा पमुच्चति' (आचा, णाय
१, १८) ।

अभिसग पु [अभिष्वङ्ग] आसक्ति (ठा
३, ४) ।

अभिसजाय वि [अभिसजात] उत्पन्न
(आचा) ।

अभिसथुण सक [अभिस + स्तु] स्तुति
करना, वर्णन करना । वक्तु अभिसंथुणमाण
(णाय १, ८) ।

अभिसधारण न [अभिसंधारण] पर्या-
लोचन, विचारना (आचा) ।

अभिसधि पुत्री [अभिसधि] आशय, अभि-
प्राय (उप २११ टी) ।

अभिसधिय वि [अभिसंहित] गृहीत, उपात्त
(आचा) ।

अभिसंभूय वि [अभिसंभूत] उत्पन्न, प्रादु-
र्भूत (आचा) ।

अभिसंवुद्ध वि [अभिसंवुद्ध] ज्ञान-प्राप्त,
बोध-प्राप्त (आचा) ।

अभिसवुड्ढ वि [अभिसवृद्ध] बढा हुआ,
उन्नत अवस्था का प्राप्त (आचा) ।

अभिसमण्णागय वि [अभिसमन्वागत]
अभिसमन्नागय १ अच्छी तरह जाना
हुआ, सुनिर्णीत (भग ५, ४) । २ व्यवस्थित
(सूत्र २, १) । ३ प्राप्त, लब्ध (भग १५, कण्,
णाय १, ८) ।

अभिसमागम सक [अभिसमा + गम्]
१ सामने जाना । २ प्राप्त करना । ३ निर्णय
करना, ठीक-ठीक जानना । सक अभिसमा-
गम्म (आचा, दस ५) ।

अभिसमागम पुं [अभिसमागम] १ समुल्ल
गमन । २ प्राप्ति । ३ निर्णय (ठा ३, ४) ।

अभिसमे मक [अभिसमा + इ] देखो अभि-
समागम = अभिममा + गम् । अभिसमेइ (ठा
३, ४) । सक अभिसमेच्च (आचा) ।

अभिसर सक [अभि + स्तु] प्रिय के पास
जाना । वक्तु अभिसरत (मोह ६१) ।

अभिसरण न [अभिसरण] १ सामने जाना,
समुल्ल गमन (परह १, १) । २ प्रिय के पास
जाना (कुमा) ।

अभिसवे पु [अभिपव] १ मद्य आदि का
अर्क । २ मद्य मास आदि से मिश्रित चीज
(पव ६) ।

अभिसारिआ देखो अहिसारिआ (गा
८७१) ।

अभिसिच सक [अभि + सिच्] अभिपेक
करना । अभिसिचति (कण्) । कवक्तु अभि-
सिच्चमाण (कण्) । प्रयो, हेक्क अभिसिचा-
वित्तए (पि ५७८) ।

अभिसिच वि [अभिषिक्त] जिसका अभि-
पेक किया गया हो वह (आवम) ।

अप्यङ्गिहय वि [अल्पङ्गिक] थोडी ऋद्धि-
वाला, अल्प वैभववाला (सुपा ४३०)।

अप्यण न [अर्पण] १ भेंट, उपहार, दान
(आ २७)। २ प्रधान रूप से प्रतिपादन (विसे
१८४३)।

अप्यण देखो अप्य = आत्मन् (आचा, उत
१, महा, हे ४, ४२२)।

अप्यण वि [आत्मीय] स्वकीय, निजका, 'नो
अप्यणा पराया गुरुणो कइयावि होति सुद्धाण'
(सट्ठि १०५)।

अप्यणय वि [आत्मीय] स्वकीय, निजी
(पउम ५०, १६, सुपा २७६, हे २, १५३)।

अप्यणा अ [स्वयम्] स्वय, आप, निज,
खुद (पड्)।

अप्यणिज्ज } वि [आत्मीय] स्वकीय,
अप्यणिज्जिय } स्वीय (ठा १, आवम)।

अप्यणो अ [स्वयम्] आप, खुद, निज,
'विअमति अप्यणो चैव कमलसरा' (हे २,
२०६)।

अप्यण्ण देखो अकम = आ + क्रम्। अप्यण्णइ
(प्राक ७३)।

अप्यण्णुअ देखो अप्यजाणुअ = आत्मज्ञ,
अल्पज्ञ (प्राक १८)।

अप्यत्तकिय वि [अप्रतर्कित] अवितर्कित,
असभावित (स ५३०)।

अप्यत्त पुन [अपात्र] १ अयोग्य, नालायक,
कुपात्र, 'अण्णेवि हु अप्यत्ता पररिद्धि नेय
विसहति' (सुर ३, ४५, गा १५७)। २ वि
आधार-रहित, भाजन-शून्य (सुर १३, ४५)।

अप्यत्त वि [अपत्र] १ पत्ता मे रहित (वृक्ष)
(सुर ३, ४५)। २ पाख से रहित (पक्षी)
(सूत्र १, १४)।

अप्यत्त वि [अप्राप्त] अलब्ध, अनवाप्त (सुर
१३, ४५, श्लोक ८६)। १ कारि वि [कारिन्]
वस्तु का बिना स्पर्श किये ही (दूर से) ज्ञान
उत्पन्न करनेवाला, 'अप्यत्तकारि एणय'
(विसे)।

अप्यत्ति स्त्री [अप्राप्ति] नहीं पाना (सुर ४,
२१३)।

अप्यत्तिय पुन [अप्रत्यय] अविश्वास (स
६६७, सुपा ५१२)।

अप्यत्तिय न [अप्रीति] १ अप्रीति, प्रेम का
अभाव (ठा ४, ३)। २ क्रोध, गुस्सा (सूत्र
१, १, २)। ३ मानसिक पीडा (आचा)।
४ अपकार (निचू १)।

अप्यत्तिय वि [अपात्रिक] पात्र-रहित,
आधार-वर्जित (भग १६, ३)।

अप्यत्तियण न [अप्रत्ययन] अविश्वास,
अश्रद्धा (उप ३१२)।

अप्यत्थ वि [अप्रार्थ्य] १ प्रार्थना करने के
अयोग्य। २ नहीं चाहने लायक (सुपा ३३६)।

अप्यत्थण न [अप्रार्थन] १ अयाच्चा। २
अनिच्छा, अचाह (उत्त ३२)।

अप्यत्थिय वि [अप्रार्थिन] १ अयाचित।
२ अनभिलाषित, अवाछित (ज ३)। १ पत्थिय,
१ पत्थिय वि [१ प्रार्थक, १ थिक] मरणार्थी,
मौत को चाहनेवाला, 'कीस ए एस अप्यत्थिय-
पत्थए दुरतपतलक्खणे' (भग ३, २, एणया
१, ६, पि ७१)।

अप्यत्थुय वि [अप्रस्तुत] प्रसंग के अनुपयुक्त,
विषयान्तर (सुपा १०६)।

अप्यदुट्ठ वि [अप्रद्विष्ट] जिसपर द्वेष न हो
वह, प्रीतिकर (श्लोक ७४४)।

अप्यदुस्समाण वक्क [अप्रद्विष्यत] द्वेष नहीं
करता हुआ (अत १२)।

अप्यप्प वि [अप्राप्य] प्राप्त करने के अशक्य
(विसे २६८७)।

अप्यभाय न [अप्रभात] १ बनी सवेर। २
वि प्रकाश-रहित, कान्ति-वर्जित, 'अज पुण
अप्यभाए गयणे' (सुर ११, ११०)।

अप्यभु वि [अप्रभु] १ असमर्थ (भग)। २
पु मालिक से भिन्न, नौकर वगैरह (धर्म ३)।
अप्यमज्जिय वि [अप्रमार्जित] साफ नहीं
किया हुआ (उवा)।

अप्यमत्त वि [अप्रमत्त] प्रमाद-रहित, साव-
धान, उपयोगवाला (परह २, ५, हे १, २३१,
अभि १८५)। १ सजय पुंस्त्री [सयत] १
प्रमाद-रहित मुनि। २ न सातवा गुण-स्थानक
(भग ३, ३)।

अप्यमाण देखो अपमाण (बृह ३, परह २, ३),
'अद्वक्किता जिणरायआणं, तवति तिब्व
तवमप्यमाणं'।

पढति नाणं तह दिति दाणं, सर्व्वपि
तेसि कयमप्यमाणं' (सत्त २०)।

अप्यमाय पु [अप्रमाद] प्रमाद का अभाव
(निचू १)।

अप्यमेय वि [अप्रमेय] १ जिसका माप न
हो सके, अनन्त (पउम ७५, २३)। २ जिसका
ज्ञान न हा सके (धर्म १)। ३ प्रमाण से
जिसका निश्चय न किया जा सके वह (परह
१, ४)।

अप्यय देखो अप्य (उव, पि ४०१)।

अप्यरिचत्त वि [अपरित्यक्त] नहीं छोड़ा
हुआ, अपरिमुक्त (सुपा ११०)।

अप्यरिवडिय वि [अपरिपत्तिन] अनष्ट,
विद्यमान (आ ६)।

अप्यलहुअ वि [अप्रलघुक] महान्, बड़ा (से
१, १)।

अप्यलीण वि [अप्रलीन] असंबद्ध, सङ्ग-
वर्जित (सूत्र १, ४)।

अप्यलीयमाण वक्क [अप्रलायमान] आसक्ति
नहीं करता हुआ (आचा)।

अप्यवित्त वि [अप्रवृत्त] प्रवृत्ति-रहित (पंचा
१४)।

अप्यवित्ति स्त्री [अप्रवृत्ति] प्रवृत्ति का अभाव
(धर्म १)।

अप्यसत्त वि [अप्रशान्त] अशान्त, कुपित
(पंचा २)।

अप्यससणिज्ज वि [अप्रशंसनीय] प्रशंसा
के अयोग्य (तदु)।

अप्यसज्ज वि [अप्रसज्ज] १ सहने के अश-
क्य। २ सहन करने के अयोग्य (वव ७)।

अप्यसण्ण वि [अप्रसन्न] उदासीन (नाट)।

अप्यसत्थ वि [अप्रशस्त] अचार, असुन्दर,
खराब (ठा ३, ३, भग, आ ४)।

अप्यसत्तिय वि [अल्पसत्त्विक] अल्प सत्त्व
वाला, 'सुसमत्थाविसमत्था कीरति अप्यसत्तिया
पुरिसा' (सूत्र १, ४, १)।

अप्यसारिय वि [अप्रसारक] निर्जन, विजन
(स्थान) (उप १७०)।

अप्यहव्वं वक्क [अप्रभवत्] समर्थ नहीं
होता हुआ, नहीं पहुँच सकता हुआ (म
३०५)।

अप्यहिय वि [अप्रथित] १ अविस्तृत। २
अप्रसिद्ध (सुपा १२५)।

अमर पुं [अमर] १ देव, देवता (पात्र) । २ मुक्त आत्मा (औप) । ३ भगवान् ऋषभदेव का एक पुत्र (राज) । ४ अनन्तवीर्य नामक भावी जिनदेव के पूर्वजन्म का नाम (ती २१) । ५ वि मरणादरहित, 'पावति श्रविग्वेण जीवा अयरायरं ठाण' (पडि) । 'कका स्त्री [कका] एक नगरी का नाम (उप ६४८ टी) । 'केउ पुं [केतु] एक राजकुमार (दंस) । 'गिरि पुं [गिरि] मेरु पर्वत (पउम ६५, ३७) । 'गेह न [गेह] स्वर्ग (उप ७२८ टी) । 'चन्दण न [चन्दन] १ हरिचन्दन वृक्ष । २ एक प्रकार का सुगन्धित काष्ठ (पात्र) । 'तरु पु [तरु] कल्पवृक्ष (सुपा ४४) । 'दत्त पु [दत्त] एक श्रेष्ठिपुत्र का नाम (वम्म) । 'नाह पु [नाथ] इन्द्र (पउम १०१, ७५) । 'पुर न [पुर] स्वर्ग (पउम २१४) । 'पुरी स्त्री [पुरी] स्वर्गपुरी, अमरावती (उप पृ १०५) । 'पभ पु [प्रभ] वानर-द्वीप का एक राजा (पउम ६, ६६) । 'वइ पु [पति] इन्द्र (पउम १०१, ७०, सुर १, १) । 'वहू स्त्री [वधू] देवी (महा) । 'सामि पु [स्वामिन्] इन्द्र (विसे १४३६ टी) । 'सेण पु [सेन] १ एक राजा का नाम (दंस) । २ एक राजकुमार का नाम (णाय १, ८) । 'लय वि [लय] स्वर्ग, 'चविउममरालयाए' (उप ७२८ टी, सुपा ३५) । 'वई स्त्री [वती] १ देव-नगरी, स्वर्ग-पुरी (पात्र) । २ मर्त्य लोक की एक नगरी, राजा श्रीसेन की राजधानी (उप ६८६ टी) ।

अमरगणा स्त्री [अमराङ्गना] देवी (श्रा २७) ।

अमरिंद पु [अमरेन्द्र] देवों का राजा, इन्द्र (भवि) ।

अमरिस पु [अमरप] १ असहिष्णुता (हे २, १०५) । २ कदाग्रह (उत्त ३४) । ३ क्रोध, गुस्सा (पएह १, ३, पात्र) ।

अमरिसण न [अमरपण] १—३ ऊपर देखो । ४ वि असहिष्णु, क्रोधी (पएह १, ४) । ५ महिष्णु, क्षमाशील (सम १५३) ।

अमरिसण वि [अमसण] उद्यमी, उद्योगी (सम १५३) ।

अमरिसिय वि [अमरिषित] १ मत्सरी, असहिष्णु (आवम, स ५६५) ।

अमरी स्त्री [अमरी] देवी (कुमा) ।

अमरीस पु [अमरेश] इन्द्र (चिइय ३१०) ।

अमल वि [अमल] १ निर्मल, स्वच्छ (उव, सुपा ३४) । २ पु भगवान् ऋषभदेव के एक पुत्र का नाम (राज) ।

अमला स्त्री [अमला] शक्र की एक अग्र-महिषी का नाम, इन्द्राणी-विशेष (ठा ८) ।

अमवस्सा देखो अमावस्सा (पंचा १६, २०) ।

अमाइ १ वि [अमायिन्] निष्कपट, सरल अमाइल १ (आवा, ठा १०, द्र ४७) ।

अमाघाय देखो अमग्घाय (उवा) ।

अमाण वि [अमान] १ गर्वरहित, नम्र (कप्प) । २ असंख्य, 'ठाणट्ठाणविलोइज्जमा-णमाणोसहिसमूहो' (उव ६ टी) ।

अमाय वि [अमात] नहीं समाया हुआ, 'सुसाहुवग्गस्स मणे अमाया' (सत्त ३५) ।

अमाय वि [अमाय] निष्कपट, सरल (कप्प) ।

अमायि देखो अमाइ (भग) ।

अमारि स्त्री [अमारि] हिंसा-निवारण, जीवित-दान (सुपा ११२) । 'वोस पु [वोष] अहिंसा की घोषणा (सुपा ३०६) । 'पडह पु [पटह] हिंसा-निषेध का डिटिडम, 'अमा रिपडह च घोसावेइ' (रयण ६०) ।

अमावसा } स्त्री [अमावास्या] तिथि
अमावस्सा } विशेष, अमावस (कप्प, सुपा
अमावासा } २२६, णाय १, १०, चद १०) ।

अमिज्ज वि [अमेय] माप करने के लिए अशक्य, असंख्य (कप्प) ।

अमिज्ज न [अमेय] १ अशुचि वस्तु 'भरियमिज्जस्स दुरहिगघस्स' (उप ७२८ टी) । २ विद्या (सुपा ३१३) ।

अमित्त पुं [अमित्र] रिपु, दुश्मन (ठा, ४, ४, से ५, १७) ।

अमिय देखो अमय = अमृत (प्रासू १, गा २, विसे, आवम, पिण) । 'कुड न [कुण्ड] नगर-विशेष का नाम (सुपा ५७८) । 'गइ स्त्री [गति] एक छन्द का नाम (पिण) । 'णाणि पुं [ज्ञानिन्] ऐरवत क्षेत्र के एक

तीर्थंकर देव का नाम (सम १५३) । 'भूय वि [भूत] अमृत तुल्य (आउ) । 'मेह पु [मेघ] अमृतवर्षा (जं ३) । 'रइ पु [रुचि] चन्द्र, चन्द्रमा (श्रा १६) ।

अमिय वि [अमित] परिमाण-रहित, असंख्य, अनन्त (भग ५, ४, सुपा ३१, श्रा २७) ।

'गइ पु [गति] दक्षिण दिशा के एक इन्द्र का नाम, दिक्कुमारो का इन्द्र (ठा २, ३) ।

'जस पु [यशस्] एक चक्रवर्ती राजा का नाम (महा) । 'णाणि वि [ज्ञानिन्] १ सर्वज्ञ (विसे) । २ ऐरवत क्षेत्र के एक जिन-

देव का नाम (सम १५३) । 'तेय पुं [तेजस्] एक जैन मुनि का नाम (उप ७६८ टी) । 'वल पुं [बल] इक्ष्वाकु वंश के

एक राजा का नाम (पउम ९, ४) । 'वाहण पुं [वाहन] दिक्कुमार देवों के एक इन्द्र का

नाम (ठा २, ३) । 'वेग पुं [वेग] राक्षस वंश के एक राजा का नाम (पउम ९, २६१) ।

'सणिय वि [सन्निक] एक स्थान पर नहीं बैठनेवाला, चंचल (कप्प) ।

अमिल न [दे] ऊन का बना हुआ वस्त्र (श्रा १८) । २ पुं मेघ, मेढ (ओघ ३६८) ।

अमिल वि [दे आमिल] अमिल देश में बना हुआ (आवा २, ५, १, ५) ।

अमिला स्त्री [अमिला] १ बीसवें जिनदेव की प्रथम शिष्या (सम १५२) । २ पाड़ी, छोटी भैंस (बृह १) ।

अमिलाण } वि [अम्लान] १ म्लान-
अमिलाय } रहित, ताजा, हृष्ट (सुर ३, ६५, भग ११, ११) । २ पुं कुरण्टक वृक्ष । ३ न

कुरण्टक वृक्ष का पुष्प (दे १, ३७) ।

अमु स [अदस्] वह, अमुक (पि ४३२) ।

अमुअ स [अमुक] वह, कोई, अमका-दमका (ओघ ३२ भा, सुपा ३१४) ।

अमुअ देखो अमय = अमृत (प्रासू ५१, गा ६७६) ।

अमुअ देखो अमय = अमय (काप्र ७७७) ।

अमुअ वि [अस्मृत] स्मरण में नहीं आया हुआ (भग ३, ६) ।

अमुइ वि [अमोचिन्] नहीं छोड़नेवाला (उव) ।

अमुग देखो अमुअ = अमुक (कुमा) ।

अफाय पुं [दे] भूमि-स्फोट, वनस्पति-विशेष (परण १)।

अफास वि [अस्पर्श] १ स्पर्श-रहित (भग)।
२ खराब स्पर्श वाला (सूत्र १, ५, १)।

अफासुय वि [अप्रासुक] १ सचित्त, सजीव (भग ५, ६)। २ अग्राह्य (भिक्षा) (ठा ३, १)।

अफुड वि [अस्फुट] अस्पष्ट, अव्यक्त (सुर ३, १०६, २१३, गा २६६, उप ७२८ टी)।

अफुडिअ वि [अस्फुटित] अखण्डित, नहीं टूटा हुआ (कुमा)।

अफुस वि [अस्पृश्य] स्पर्श करने के अयोग्य (भग)।

अफुसिय वि [अभ्यान्त] भ्रम-रहित (कुमा)।

अफुस्स देखो अफुस (ठा ३, २)।

अवभ न [अव्रह्म] मैथुन, स्त्री-सङ्ग (परह १, ४)। चारि वि [चारिन्] ब्रह्मचर्य नहीं पालनेवाला (पि ४०५, ५१५)।

अवद्विय पु [अवद्विक] 'बर्मों का आत्मा से स्पर्श ही होता है, न कि क्षीर-नीर की तरह ऐक्य' ऐसा माननेवाला एक निह्व—जैनाभास। २ न उमका मत (ठा ७, विसे)।

अवल वि [अवल] बल रहित, निर्बल (पउम ४८, ११७)।

अवला स्त्री [अवला] स्त्री, महिला, जनाना (पात्र)।

अवस पु [अवश] वडवानल (से १, १)।

अवहिट्ट न [दे अवहित्थ] मैथुन, स्त्री-सङ्ग (सूत्र १, ६)।

अवहिम्मण वि [अवहिर्मनस्क] धर्मिष्ठ, धर्म-तत्पर (आचा)।

अवहिहेस } वि [अवहित्थेय] जिसकी अवहित्थेस } चित्त-वृत्ति बाहर न घूमती हो, सयत (भग, परह २, ५)।

अवाधा देखो अवाहा (जीव ३)।

अवाह पु [अवाह] देश-विरोध (इक)।

अवाहा स्त्री [अवाधा] १ वाघ का अभाव (शोध ५२ भा, भग १४, ८)। २ व्यवधान, अन्तर (मम १६)। ३ वाच-रहित समय (भग)।

अवाहिर अ [अवहिस्] बाहर नहीं, भीतर (कुमा)।

अवाहिरय वि [अवाहा] भीतरी, आभ्यन्तर (वव १)।

अवाहिरय वि [अवाहिरिक] जिसके किले के बाहर वसति न हो ऐसा गाँव या शहर (वह १)।

अवीय देखो अवीय (कप्प)।

अवुज्झ अ [अवुद्धा] नहीं जान कर, 'किसवि तत्काइ अवुज्झ भाव' (सूत्र १, १३, २०)।

अवुद्ध वि [अवुध] १ अज्ञान, मूर्ख। (दस २)। २ अचिवेकी (सूत्र १, ११)।

अवुद्धिय १ वि [अवुद्धिक] बुद्धि-रहित, मूर्ख अवुद्धीय } (गाथा १, १७, सूत्र १, २, १, पउम ८, ७४)।

अवुह वि [अवुध] १ अज्ञान। (सूत्र १, २, १, जो १)। २ मूर्ख, वेकूफ (परह १, १)।

अवोह वि [अवोध] १ बोध-रहित, अज्ञान। २ पु ज्ञान का अभाव (धर्म १)।

अवोहि पुत्री [अवोधि] १ ज्ञान का अभाव (सूत्र २, ६)। २ जैन धर्म की अप्राप्ति। ३ बुद्धि-विरोध का अभाव (भग १, ६)। ४ मिथ्या-ज्ञान, 'अवोहि परिआणमि वोहि उवसप-जामि' (आव ४)। ५ वि बोधि-रहित (भग)।

अवोहिय न [अवोधिक] ऊपर देखो (दम ६, सूत्र १, १, २)।

अव् स्त्री व [अप्] पानी, जल (आ २३)।

अव्वभ देखो अव्वभ (मुपा ३१०)।

अव्वभण्ण } न [अव्वहाण्य] ब्रह्मण्य का अव्वभण्ण } अभाव (नाट, प्रयो ७६)।

अव्वीय देखो अवीय (वेइय ७३८)।

अव्वुद्धिसिरी स्त्री [दे] इच्छा से भी अधिक फल की प्राप्ति (दे १, ४२)।

अव्वुय पु [अवुद्ध] पर्वत-विशेष, जो आज-कल 'आवू' नाम से प्रसिद्ध है (राज)।

अव्वुय न [अवुद्ध] जमा हुआ शुक्र और शोणित (तदु ७)।

अव्व न [अव्व] १ आकाश। (राय, पात्र)। २ मेघ, बादल (ठा ४, ४, पात्र)।

अव्व सक [आ + भिद्] भेदन करना। अव्वे (आचा १, १, २, ३)।

अव्वभग सक [अभि + अञ्ज] तेल आदि से मर्दन करना, मालिश करना। अव्वभगइ, अव्वभगेइ (महा)। मकु अव्वभगिइ, अव्वभगेत्ता, अव्वभंगित्ता (ठा ३, १, पि २३४)। हेक्क अव्वभंगेत्तए (कस)।

अव्वभंग पुं [अभ्यञ्ज] तेल-मर्दन, मालिश (निचू ३)।

अव्वभगण न [अभ्यञ्जन] ऊपर देखो (गाथा १, १, महा)।

अव्वभगिएह्य १ वि [अभ्यक्त] तेनादि में अव्वभगिय } मर्दित, मालिश किया हुआ (शोध ८२, कप्प)।

अव्वभतर न [अभ्यन्तर] १ भीतर, में (गा ६२३)। २ वि भीतर का, भीतरी (राय, महा)। ३ समीप का, नजदीक का (मम्बन्वी) (ठा ८)। ४ ठाणिज्ज वि [स्थानीय] नजदीक के मम्बन्वी, कौटुम्बिक लोग (विपा १, ३)। ५ तव पुं [तपस्] विनय, वैया-वृत्य, प्रायश्चित्त, स्वाध्याय, ध्यान और कायो-

त्संग रूप अन्तरगत तप (ठा ६)। ६ परिसा स्त्री [परिपद्] मित्र आदि समान जनो की सभा (राय)। ७ लद्धि स्त्री [लद्धि] अवधि-ज्ञान का एक भेद (विसे)। ८ सबुक्का स्त्री [शम्बूका] भिक्षा की एक चर्चा, गति-विशेष (ठा ६)। ९ सगडुद्धिया स्त्री [गङ्ग-टोर्द्धिका] कायोत्संग का एक दोष (पव ५)।

अव्वभतर वि [अभ्यन्तर] भीतरी, भीतर का (ज ७, ठा २, १, परण ३६)।

अव्वभसि वि [अभ्रंशिन] १ भ्रष्ट नहीं होने-वाला (नाट)। २ अनष्ट (कुमा)।

अव्वभक्खइज्ज देखो अव्वभक्खा

अव्वभक्खण न [दे] अकीर्ति, अपयश (दे १, ३१)।

अव्वभक्खा सक [अभ्या + ख्या] झूठा दोष लगाना, दोषारोप करना। अव्वभक्खाइ (भग ५, ७)। क. अव्वभक्खइज्ज (आचा)।

अव्वभक्खाण न [अभ्याख्याण] झूठा अभि-योग, असत्य दोषारोप (परह १, २)।

अव्वभट्ट देखो अव्वभत्थिय, 'उ(अ)व्वभट्टपरि-आय' (पिठ २८१)।

अव्वभड अ [दे] पीछे जाकर (हे ४, ३६९)।

अव्वभणुजाण सक [अभ्यनु + ज्ञा] अनुमति,

अय न [अयस्] लोहा, लोह (श्लो ६२)।
 °आगर पु [आकर] १ लोहे की खान (निचू ५)। २ लोहे का कारखाना (ठा ८)।
 °कत, °कखंत पु [°कान्त] लोह-चुम्बक (आवम)। °कडिल्ल न [दे °कडिल्ल] कटाह (श्लो)। कुडी स्त्री [°कुण्डी] लोहे का भाजन-विशेष (विपा १, ६)। °कोट्टय पु [°कोष्ठक] लोहे का कुशूल लोहे का गोला, 'पोट्ट अयकोट्टया व्व वट्ट' (उवा)। °गोलय पु [°गोलक] लोहे का गोला (श्रा १९)। °दव्वी स्त्री [°दर्वी] लोहे की कडल्ली या कर्छुल, जिससे दाल, कडी आदि हिलाया जाता है (दे २, ७)। °पाय न [°पात्र] लोहे का भाजन। °सलागा स्त्री [°शलाका] लोहे की सलाई (उप २११ टी)।
 अय मक [अय्] १ गमन करना, जाना। २ प्राप्त करना। ३ जानना। वक्क अयमाण (सम ६३)।
 अयछ सक [कुप्] १ खीचना। २ जोतना, चास करना। ३ रेखा करना। अयछइ (हे ४, १८७)।
 अयछिर वि [कर्पिन्] कर्पणशील, खीचने-वाला (कुमा)।
 अयड पु [अकाण्ड] १ अनुचित समय (महा)। २ अकस्मात्, हठात् (पउम ५, १६४, मे ४४, गउड)। ३ क्रिवि अनधारित, अतर्कित (पात्र)।
 अयत वक्क [आयत्] आता हुआ, प्रवेश करता हुआ (आवम)।
 अयनिय वि [अयन्त्रित] अनान्वयणीय (उत्त २०, ४२)।
 अयपिर वि [अजल्पित्] नहीं बोलनेवाला, मौनी (पि २६६, ५६६)।
 अयपुल पु [अयपुल] गोशालक का एक शिष्य (भग ८, ५)।
 अयस पु [आदर्श] दर्पण, कांच। °मुह पुं [°मुख] १ इस नाम का एक द्वीप। २ द्वीप-विशेष का निवासी (इक)।
 अयसधि वि [इदसधि] उपयुक्त कार्य को यथासमय करनेवाला (आचा)।
 अयकरय पु [अयकरक] एक महाग्रह (सुज २०)।

अयक } पु [दे] दानव, असुर (दे १, ६)।
 अयग }
 अयगर पु [अजगर] अजगर, मोटा साँप (पण्ह १, १, पउम ६३, ५४)।
 अयड पु [दे अवट] कूप, कुंआ (दे १, १८)।
 अयण न [अतन] सतत होना, निरन्तर होना (विसे ३५७८)।
 अयण न [अयन] १ गमन। २ प्राप्ति, लाभ (विसे ८३)। ३ ज्ञान, निर्णय (विसे ८३)। ४ गृह, मन्दिर, 'चडियायण' (स ४३५)। ५ वि प्रापक, प्राप्त करनेवाला (विसे ६६०)। ६ पुन वर्ष का आधा भाग, जिसमें सूर्य दक्षिण में उत्तर में या उत्तर से दक्षिण में जाता है (ठा २, ४)।
 'एके अयणे दिग्रहा, वीए रअणीओ होति दीहाओ।
 विरहाअणो अउव्वो, इत्थ दुवे ज्वेअ वड्हति' (गा ८४६)।
 अयण न [अदन] १ भक्षण। २ खुराक, भोजन (स १३०, उर ८, ७)।
 अयणु वि [अज्ज] अजान, मूर्ख (मुर ३, १६६)।
 अयणु वि [अतनु] स्थूल, मोटा, महान् (सण)।
 अयतंचिअ वि [दे] पुष्ट, उपचित (दे १, ४७)।
 अयर वि [अजर] वृद्धावस्थारहित 'अयरामर ठाण' (पडि, उव)।
 अयर पुन [अतर] १ सागर, समुद्र (द २८)। २ समय का मान-विशेष, सागरोपम (संग २१, २५, घण ४३)। ३ वि तरने के अशक्य (बृह १)। ४ असमर्थ, अशक्त (निचू १)। ५ ग्लान, बीमार (बृह १)।
 अयरामर वि [अजरामर] १ जरा और मरण से रहित (नव २)। २ न मृत्ति, मोक्ष (पउम ८, १२७)।
 अयल देखो अचल = अचल (पात्र, गउड, उप पृ १०५, अत ३, पउम ८५, ४, सम ८८, कप्प, सम १६)।
 अयल देखो अचला (पउम १२०, १५६)।
 अयस देखो अजस (गउड, प्रासू २३, १५३, गा १७८)।

अयसि वि [अयशस्विन्] अजमी, यशो-रहित, कीर्ति शून्य (गउड)।
 अयसि } स्त्री [अतमी] धान्य-विशेष, अजमी,
 अयसी } तीसी (भग, ठा ७, राया १, ५)।
 अया स्त्री [अजा] १ वकरी। २ माया, श्रविद्या। ३ प्रकृति, कुदरत (हे ३, ३२, पड)। °किवाणिज्जपुं [°कृपाणीय] न्याय-विशेष, जैसे वकरी के गले पर अनधारी छुरी पड़ती है उस माफिक अनधारा किसी कार्य का होना (आचा)। °पाल पु [°पाल] आभीर, वकरी चरानेवाला (म २६०)। °वय पु [°व्रज] वकरी का बाढा (भग १६, ३)।
 अयागर देखो अय-आगर (ठा ८)।
 अयाण न [अज्ञान] ज्ञान का अभाव (सत्त ६३)।
 अयाण वि [अज्ज, अज्ञान] अजान, अज्ञानी, मूर्ख (श्लो ७४, पउम २२, ८३, गा २७५, दे ७, ७३)।
 अयाणअ वि [अज्ञायक] ऊपर देखो (पात्र, भवि)।
 अयाणत देखो अजाणत (श्लो ११)।
 अयाणमाण देखो अजाणमाण (नव ३६)।
 अयाणिय देखो अजाणिय (उप ७२८ टी)।
 अयाणुय देखो अजाणुय (सुर ३, १६८, सुपा ५४३)।
 अयार पु [अकार] 'अ' अक्षर (विसे ४७८)।
 अयाल पु [अकाल] अयोग्य समय, अनुचित काल (पउम २२, ८५)।
 अयालि पु [दे] दुर्दिन, मेघाच्छन्न दिवस (दे १, १३)।
 अयालिय वि [अकालिक] आकस्मिक, अकारणोत्पन्न, 'पडउ पडउ एयस्स हत्थतले अयालिया विज्जू' (रभा)।
 अयि देखो अइ = अयि (हे २, २१७)।
 अयुजरेवइ स्त्री [दे] अचिर-युवति, नवोढा, दुर्दिन (पड)।
 अयोमय देखो अओ-मय (अंत १६)।
 अय्यावत्त (शौ) पु [आर्यावर्त] भारत, हिन्दुस्तान (कुमा)।
 अय्युण (मा) देखो अज्जुण (हि ४, २६२)।
 अर पुं [अर] १ धूरी, पहिये के बीचका काष्ठ। २ अठारहवाँ जिनदेव और सातवाँ

अभुक्खिय वि [अभ्युक्षित] मित्त (स ३४०) ।

अभुगम पु [अभ्युद्गम] उदय, उन्नति (सूत्र १, १४) ।

अभुगगय वि [अभ्युद्गत] १ उन्नत । २ उत्पन्न (गाया १, १) । ३ ऊँचा किया हुआ, उठाया हुआ (ग्रौप) । ४ चारो तरफ फैला हुआ (चद १८) ।

अभुगगय वि [अभ्युद्गत] ऊँचा, उन्नत (मग १२, ५) ।

अभुच्चय पु [अभ्युच्चय] ममुच्चय (भास ६५) ।

अभुज्जय वि [अभ्युज्जय] १ उन्नत, उद्यम-युक्त (गाया १, ५) । २ तैयार (गाया १, १, सुपा २२२) । ३ पुं एकाकी विहार (वम्म १२ टी) । ४ जिनकल्पिक मुनि (पचव ४) ।

अभुट्ठ उभ [अभ्युत् + स्था] १ आदर करने के लिए खड़ा होना । २ प्रयत्न करना । ३ तैयारी करना । अभुट्ठेड (महा) । वक्क अभुट्ठमाण (म ४१६) । सक्र अभुट्ठित्ता (मग) । हेक्क अभुट्ठित्तए (ठा २, १) । क अभुट्ठेयव (ठा ८) ।

अभुट्ठण न [अभ्युत्थान] आदर के लिए खड़ा होना (मे १०, ११) ।

अभुट्ठा देखो अभुट्ठ ।

अभुट्ठाण देखो अभुट्ठण (सम ५१, सुपा ३७६) ।

अभुट्ठिय वि [अभ्युत्थित] १ सम्मान करने के लिए जो खड़ा हुआ हो (गाया १, ८) । २ उन्नत, तैयार, 'अभुट्ठिएसु मेहेसु' (गाया १, १, पडि) ।

अभुट्ठेत्तु [अभ्युत्थात्] अभ्युत्थान करने वाला (ठा ५, १) ।

अभुण्णय वि [अभ्युन्नत] १ उन्नत, ऊँचा (पएह १, ४) ।

अभुण्णयत् वक्क [अभ्युन्नयत्] १ ऊँचा करता हुआ । २ उत्तेजित करता हुआ, 'तीएवि जलंति दीववत्तिमवुण्णएणंतीए' (गा २६४) ।

अभुत्त शक [स्ता] स्नान करना । अभुत्तइ (हे ५, १४) । वक्क अभुत्तंत (कुमा) ।

अभुत्त शक [प्र + दीप्] १ प्रकाशित होना । २ उत्तेजित होना । अभुत्तइ (हे ४, १५२) । अभुत्तए (कुमा) । प्रयो अभुत्तंति (से ५, ५९) ।

अभुत्तिअ वि [प्रदीप्त] १ प्रकाशित । २ उत्तेजित (से १५, ३८) ।

अभुत्थ वि [अभ्युत्थ] उत्पन्न, 'पुच्चमवभुत्थमिणेहाओ' (महा) ।

अभुत्थ १ देखो अभुट्ठा । वक्क अभुत्थत अभुत्था १ (से १२, १८) । सक्र अभुत्थित्ता (काल) ।

अभुदय पु [अभ्युदय] १ उन्नति, उदय (प्रयो २६), 'अभ्युयभूयवुदय लदधूण नरमव सुदीहद' (उप ७६८ टी) ।

अभुद्धर सक्र [अभ्युद् + धृ] उद्धार करना । अभुद्धरामि (भवि) ।

अभुद्धरण न [अभ्युद्धरण] १ उद्धार (स ०४३) । २ वि उद्धार-कारक (हे ४, ३३४) ।

अभुन्नय देखो अभुण्णय (गाया १, १) ।

अभुव्वभड वि [अभ्युव्वट] अत्युद्धट, विशेष उद्धत (भवि) ।

अभुय न [अद्भुत] १ आश्चर्य, विस्मय (उप ७६८ टी) । २ वि आश्चर्य-कारक (राय, सुपा, ३५) । ३ पु साहित्य शास्त्र प्रसिद्ध रसो मे मे एक, 'विम्वहकरो अपुव्वो, अभूयपुव्वो य जो रसो होइ ।

हरिसविसाउपत्ती, लक्खणओ अभुओ नाम' (अणु) ।

अभुवगच्छ सक्र [अभ्युप + गम्] १ स्वीकार करना । २ पास जाना । प्रयो, सक्र अभुवगच्छाविय (पि १६३) ।

अभुवगच्छाविअ वि [अभ्युपगमित] स्वीकार कराया हुआ, 'ताहे तेहि कुमारेहि सबो मज पाएत्ता अभुवगच्छाविओ विगयमओ चित्ते' (आक पृ ३०) ।

अभुवगम पु [अभ्युपगम] १ स्वीकार, अङ्गीकार (सम १४५, स १७०) । २ तर्क-शास्त्र-प्रसिद्ध सिद्धान्त-विशेष (वृह १, सूत्र १, १२) ।

अभुवगमणा स्त्री [अभ्युपगमना] स्वीकार, अङ्गीकार (उप ८०५) ।

अभुवगय वि [अभ्युपगत] १ स्वीकृत (सुर ६, ५८) । २ समीप में गया हुआ (आचा) । अभुववण वि [अभ्युपपन्न] अनुग्रह-प्राप्त, अनुगृहीत (नाट, पि १६३, २७६) ।

अभुववत्ति स्त्री [अभ्युपपत्ति] अनुग्रह, मेहरबानी (अभि १०४) ।

अभुवे सक्र [अभ्युप + इ] स्वीकार करना । अभुवेजामि (गाया १, १६ टी, पत्र २०५) ।

अभो देखो अव्वो (पड्) ।

अभोक्खिय वि [अभ्युक्षित] मित्त, सींचा हुआ (सुर ६, १६१) ।

अभोज्ज वि [अभोज्य] भोजन के अयोग्य (पिड १६०) ।

अभोय (अप) देखो आभोग (भवि) ।

अभोवगमिय वि [आभ्युपगमिक] स्वेच्छा से स्वीकृत । १ स्त्री [१] स्वेच्छा से स्वीकृत तपश्चर्यादि की वेदना (ठा ४, ३) ।

अव्हिड देखो अविमड । अव्हिडइ (पड्) ।

अव्हुत्त देखो अभुत्त अव्हुत्तइ (पड्) ।

अभग्ग वि [अभग्न] १ अखरिडत, अत्रुटित (पडि) । २ इस नाम का एक चोर (विपा १, १) ।

अभत्त वि [अभक्त] १ भक्ति नहीं करनेवाला (कुमा) । २ न भोजन का अभाव (वव ७) । ३ पु [१र्थ] उपवास (आचू, पडि, सुपा ३१७) । ४ द्वितीय वि [१र्थिक] उपोषित, जिम्मे उपवास किया हो वह (पंचव २) ।

अभय न [अभय] १ भय का अभाव, धैर्य (राय) । २ जीवित, मरण का अभाव (सूत्र १, ६) । ३ वि भय-रहित, निर्भीक (आचा) । ४ पु राजा श्रेणिक का एक विख्यात पुत्र और मन्त्री, जिसने भगवान् महावीर के पास दीक्षा ली थी (अनु १, गाया १, १) । ५ कुमार पुं [कुमार] देखो अनन्तरोक्त अर्थ (पडि) । ६ दय वि [दय] नय-विनाशक, जीवित-दाता (पडि) । ७ दान न [दान] जीवित-दान (पएह २, ४) । ८ देव पु [देव] कईएक विख्यात जैनाचार्य और ग्रन्थकारों का नाम (मुणि १०८७४, गु १४, ती ४०, सार्ध ७३) । ९ उपदान न [प्रदान] जीवित का दान (सूत्र १, ६) । १० वत्त न [वत्त्व] निर्मयता,

—काम, क्रोध, लोभ, मोह, मद, मात्सर्य (सूत्र १, १, ४) । °दमण वि [°दमन] १ रिपु विनाशक । २ पु. इक्ष्वाकु वंश के एक राजा का नाम (पउम ५, ७) । ३ एक जैन मुनि जो भगवान् अजितनाथ के पूर्वजन्म के गुरु थे (पउम २०, ७) । °दमणी स्त्री [°दमनी] विद्या विशेष (पउम ७, १४५) । °विद्धसी स्त्री [°विध्वंसिनी] रिपु का नाश करनेवाली एक विद्या (पउम ७, १४०) । °सतास पु [°संत्रास] राक्षसवंश में उत्पन्न लङ्का का एक राजा (पउम ५, २६५) । °हंत वि [°हन्तृ] १ रिपु-विनाशक । २ पु. जिनदेव (आवम) ।

अरिअल्लि पुंस्त्री [दे] व्याघ्र, शेर (दे १, २४) । अरिजय पु [अरिजय] १ भगवान् ऋषभदेव का एक पुत्र । २ न. नगर-विशेष (पउम ५, १०६, इक; सुर ५, १०३) ।

अरिट्ट पु [अरिट्ट] १ वृक्ष-विशेष (पराण १) । २ पनरह्वें तीर्थंकर का एक गणधर (सम १५२) । ३ पुन एक देवविमान (देवेन्द्र १३३) । ४ न गोत्र-विशेष, जो मारुडव्य गोत्र की शाखा है (ठा ७) । ५ रत्न की एक जाति (उत्त ३४, ४, सुपा ६) । ६ फल-विशेष, रीठा (पराण १७, उत्त ३४, ४) । ७ अग्निष्ट-सूचक उत्पात (आवृ) । °गेमि, °नेमि पुं [°नेमि] वर्तमान काल के बाईसवें जिनदेव (सम १७, अंत ५, कप्प, पडि) ।

अरिट्ठा स्त्री [अरिट्ठा] कच्छ नामक विजय की राजधानी (ठा २, ३) ।

अरित्त न [अरित्र] पतवार, कन्हार, नाव की पीछे का डाढ़, जिससे नाव दाहिने-बाये घुमायी जाती है (वर्मावि १३२) ।

अरिरिहो अ [अरिरिहो] पादपूरक अव्यय (हे २, २१७) ।

अरिस देखो अरस (राया १, १३) ।

अरिसल्ल } वि [अरिस्त्वत्] ववासीर
अरिसिल्ल } रोगवाला (पाण्ड, विपा १, ७) ।

अरिह वि [अर्ह] १ योग्य, लायक (सुपा २६६, प्राप्र) । २ पुं जिनदेव (औप) ।

अरिह सक [अर्ह] १ योग्य होना । २ पूजा के योग्य होना । ३ पूजा करना । अरिहह (महा) । अरिहेति (भग) ।

अरिह देखो अरह = अर्हत् (हे २, १११, पड्) । °दत्त, °दिण्ण पुं [°दत्त] जैन मुनि-विशेष का नाम (कप्प) ।

अरिहणा देखो अरहणा (प्राक् २८) ।

अरिहंत देखो अरहंत = अर्हत् (हे २, १११, पड्, राया १, १) । °चेइय न [°चैत्य] १ जिन-मन्दिर (उवा, आचू) । °सासन न [°शासन] १ जैन आगम-ग्रन्थ । २ जिन-आज्ञा । (पराह २, ५) ।

°अरु देखो तरु (से २, १६, ५, ८५) ।

अरु वि [अरुज्] रोग-रहित (तदु ४६) ।

अरु देखो अरुव (तदु ४६) ।

अरुग न [दे अरुक] ब्रण, घाव, 'अरुगं इहरा कुत्यइ' (वृह ३) ।

अरुंतुद वि [अरुन्तुद] १ मर्म-वेधक । २ मर्म-स्पर्शी, 'इय तदरुतुदवायावाणेहि विधियस्सावि' (सम्मत्त १५८) ।

अरुण पु [अरुण] १ सूर्य सूरज (से ३, ६) । २ सूर्य का सारथी । ३ सव्याराग, सन्ध्या की लाली (से ८, ७) । ४ द्वीप-विशेष । ५ समुद्र-विशेष, 'गत्तूण होइ अरुणो, अरुणो दीवो तम्रो उदही' (दीव) । ६ एक ग्रह-देवता का नाम (ठा २, ३, पत्र ७८) । ७ गन्धावती-पर्वत का अधिष्ठाता देव (ठा २, ३, पत्र ६६) । ८ देव-विशेष (एदि) । ९ रक्त रंग, लाली । (गड्ड) । १० न. विमान-विशेष (सम १४) । ११ वि. रक्त, लाल (गड्ड) । °कत न [°कान्त] देवविमान-विशेष (उवा) । [°कील] न [°कील] देवविमान-विशेष (उवा) । °गंगा स्त्री [°गङ्गा] महाराष्ट्र-देश की एक नदी (ती २८) । °गव न [°गव] देवविमान-विशेष (उवा) । °उभय न [°ध्वज] एक देवविमान का नाम (उवा) । °प्पभ, °प्पह न [°प्रभ] इस नाम का एक देवविमान (उवा) । °भद् पु [°भद्र] एक देवता का नाम (सुज १६) । °भूय न [°भूत] एक देवविमान (उवा) । °महाभद् पुं [°महाभद्र] देव-विशेष (सुज १६) । °महावर पुं [°महावर] १ द्वीप-विशेष । २ समुद्र-विशेष (इक) । °वडिसय न [°वत्तसक] एक देवविमान (उवा) ।

°वर पुं [°वर] १ द्वीप-विशेष । २ समुद्र-विशेष (सुज १६) । °वरोभास पुं [°वरावभास] १ द्वीप-विशेष । २ समुद्र-विशेष (सुज १६) । °सिट्ट न [°शिष्ट] एक देवविमान (उवा) । °भ न [°भ] देवविमान-विशेष (उवा) ।

अरुण न [दे] कमल, पद्म (दे १, ८) ।

अरुण पुं [अरुण] १ एक देव-विमान । (देवेन्द्र १३१) । °प्पभ पुं [°प्रभ] १ अनुवेलन्वर नामक नागराज का एक आवास-पर्वत । २ उस पर्वत का निवासी देव । (ठा ४, २, पत्र २२६) । °भ पुं [°भ] कृष्ण पुद्गल-विशेष (सुज २०) ।

अरुणिम पुंस्त्री [अरुणिमन्] लाली, रक्तता; 'पाणिपल्लवार्णिमरमणीय' (सुपा ५८) ।

अरुणिय वि [अरुणित] रक्त, लाल (गड्ड) ।

अरुणुत्तरवडिसग न [अरुणोत्तरावतंसक] इस नाम का एक देवविमान (सम १४) ।

अरुणोद पुं [अरुणोद] समुद्र-विशेष (सुज १६) ।

अरुणोदय पु [अरुणोदक] समुद्र-विशेष (भग) ।

अरुणोचवाय पु [अरुणोपपात] ग्रन्थ-विशेष का नाम (एदि) ।

अरुय वि [अरुप्] ब्रण, घाव (सूत्र १, ३, ३) ।

अरुय वि [अरुज्] निरोगी, रोगरहित (सम १, अजि २१) ।

अरुह देखो अरह = अर्हत् (हे २, १११, पड; भवि) ।

अरुह वि [अरुह] १ जन्मरहित । २ पुं-मुक्त आत्मा (पव २७५, भग १, १) । ३ जिन देव (पउम ५, १२२) ।

अरुह देखो अरिह = अर्हत् । अरुहसि (अभि १०४) । वक्र अरुहमाण (पड्) ।

अरुह वि [अर्ह] योग्य (उत्तर ८४) ।

अरुहंत देखो अरहंत = अर्हत् (हे २, १११; पड्) ।

अरुहंत वि [अरोहत्] १ नहीं उगता हुआ, जन्म नहीं लेता हुआ (भग १, १) ।

अरुव वि [अरुप] रूपरहित, अमूर्त, (पउम ७५, २६) ।

४ ज्ञान, निश्चय (पव १४६) । ५ मन्थ-
कच का एक भेद (ठा २, १) । ६ प्रवेश
(से ८, ३३) ।

अभिगमण न [अभिगमन] ऊपर देखो
(स्वप्न १६, राया १, १२) ।

अभिगमि वि [अभिगमिन्] १ प्रादर
करते वाला । २ उपदेशक । ३ निश्चय-कारक ।

४ प्रवेश करने वाला ५ स्वीकार करने
वाला, प्राप्त करने वाला (परण ३४) ।

अभिगम्य वि [अभिगत] १ प्राप्त । २
सकृत । ३ उपदिष्ट । ४ प्रविष्ट (बृह १) ।

५ ज्ञात, निश्चित (राया १, १) ।

अभिगहिय न [अभिग्रहिक] मिथ्यात्व-
विशेष (कम्म ४, ५१) ।

अभिगिज्झ अक [अभि + गृ] अति
लोभ करना, आसक्त होना । वक्तु अभि-
गिज्झति (सूत्र २, २) ।

अभिगिण्ह } सक [अभि + ग्रह] ग्रहण
अभिगिण्ह } करना, स्वीकारना । अभि-
गिण्ह (कप्प) । सक अभिगिण्हित्ता,
अभिगिज्झ (पि ५८२, ठा २, १) ।

अभिगगह पु [अभिग्रह] १ प्रतिज्ञा, नियम ।
(शोध ३) । २ जैन साधुओं का आचार-
विशेष (बृह १) । ३ प्रत्याख्यान, (नियम-
विशेष) का एक भेद (आव ६) । ४ कदा-
ग्रह, हठ (ठा २, १) । ५ एक प्रकार का
शारीरिक विनय (वव १) ।

अभिगगहणी स्त्री [अभिग्रहणी] भापा का
एक भेद, असत्य-मृपा वचन (सबोव २१) ।

अभिगगहिय वि [अभिग्रहिक] अभिग्रह
वाला (ठा २, १, पव ६) ।

अभिगगहिय वि [अभिगृहीत] १ जिसके
विषय में अभिग्रह किया गया हो वह
(कप्प, पव ६) । २ न अवधारण, निश्चय
(परण ११) ।

अभिघट्ट सक [अभि + घट्ट] वेग में
जाना । कवक्तु अभिघट्टिज्झमाण (राय) ।

अभिघाय पु [अभिघात] प्रहार, मार-पीट,
हिंसा (परह १, १, बृह ४) ।

अभिचंद पु [अभिचन्द्र] १ यदुवश के
राजा अश्वकवृष्णि का एक पुत्र, जिसने जैन

दीक्षा ली थी (अत ३) । २ इस नाम का
एक कुलकर पुरुष (पउम ३, १५) । ३
मुहूर्त-विशेष । (सम ५१) ।

अभिजण देखो अभिअण (स्वप्न २६) ।

अभिजस न [अभियशस्] इस नाम का
एक जैन साधुओं का कुल (एक आचार्य की
सतति) (कप्प) ।

अभिजाइ स्त्री [अभिजाति] कुलीनता,
खानदानी (उत्त ११) ।

अभिजाण सक [अभि + जा] जानना ।
वक्तु अभिजाणमाग (आचा) ।

अभिजान पु [अभिजात] पक्ष का ग्यारहवाँ
दिन (सुज १०, १४) ।

अभिजाय वि [अभिजात] १ उत्पन्न, 'अभि-
जायमड्ढो' (उत्त १४) । २ कुलीन (राज) ।

अभिजुंज सक [अभि + युज्] १ मन्त्र-
तन्त्रादि से बश करना । २ कोई कार्य में
लगाना । ३ आलिंगन करना । ४ स्मरण
कराना, याद दिलाना । संघ अभिजुजिय,
अभिजुजियाण, अभिजुजित्ता (भग २,
५, सूत्र १, ५, २ आचा, भग ३, ५) ।

अभिजुत्त वि [अभियुक्त] १ व्रत-नियम में
जिसने दूषण न लगाया हो वह (राया १,
१४) । २ जानकार, परिणत (रादि) ।
३ दुश्मन से घिरा हुआ (वेणी १२०) ।

अभिज्झा स्त्री [अभिध्या] लोभ, लोलुपता,
आसक्ति (मम ७१, परह १, ५) ।

अभिज्झिय वि [अभिधित] अभिलपित,
वाञ्छित (परण २८) ।

अभिद्धिअ वि [अभीष्ट] अभिलपित (वज्जा
१६४) ।

अभिद्धिय वि [अभिष्टुत] वर्णित, श्ला-
घित, प्रशंसित (आव २) ।

अभिद्धिय देखो अभिद्धिय (सूत्र १, २,
३) ।

अभिणअत } देखो अभिणी
अभिणइज्जत }

अभिणद सक [अधि + नन्द] १ प्रशंसा
करना, स्तुति करना । २ आशीर्वाद देना ।
३ प्रीति करना । ४ खुशी मनाना । ५ चाहना,
इच्छा करना । ६ बहुमान करना, आदर करना ।

अभिणदइ (म १६२) । वक्तु अभिणदन
(आप, राया १, १, पउम ५, १३०) ।
कवक्तु अभिणदिज्झमाण (ठा ६, राया
१, १) ।

अभिणदिय वि [अभिनन्दित] जिसका
अभिनन्दन किया गया हो वह (सुपा ३१०) ।

अभिणदण न [अभिनन्दन] १ अभिनन्दन ।
२ पु वर्तमान अवमर्षणीकाल के चतुर्थ
जितवेव (सम ८३) । ३ लोकोत्तर श्रावणमाम ।
(मुज १०) ।

अभिणय पु [अभिनय] शारीरिक चेष्टा के
द्वारा हृदय का भाव प्रकाशित करना, नाट्य-
क्रिया (ठा ४, ४) ।

अभिणय वि [अभिनय] नूतन, नया (जीव
३) ।

अभिणिक्खत वि [अभिनिष्क्रान्त]
दीक्षित, प्रव्रजित (स २७८) ।

अभिणिगिण्ह सक [अभिनि + ग्रह]
रोकना, अटकाना । सक अभिणिगिज्झ
(पि ३३१, ५६१) ।

अभिणिचारिया स्त्री [अभिनिचारिका]
मिक्षा के लिए गति-विशेष (वव ४) ।

अभिणिपया स्त्री [अभिनिप्रजा] अलग-
अलग रही हुई प्रजा (वव ६) ।

अभिणिवुज्झ सक [अभिनि + बुध्]
जानना, इन्द्रिय आदि द्वारा निश्चित रूप में
ज्ञान करना । अभिणिवुज्झए (विमे ८१) ।

अभिणिवोह पु [अभिनिवोव] ज्ञान-विशेष,
मति-ज्ञान (सम्म ८६) ।

अभिणियदुण न [अभिनिवर्त्तन] पीछे
लौटना, वापस जाना (आचा) ।

अभिणिविट्ठ वि [अभिनिविष्ट] १ तीव्र
रूप में निविष्ट । २ आग्रही (उत्त १४) ।

अभिणिवेस पु [अभिनिवेश] आग्रह, हठ
(राया १, १२) ।

अभिणिवेसि वि [अभिनिवेशिन्] कदा-
ग्रही (अज्झ १५७) ।

अभिणिवेह पु [अभिनिवेव] उनटा मापना
(आवम) ।

अभिणिष्ठागड वि [दे अभिनिष्ठागड]
मित्र परिचि वाला, प्रियभूत (घर वीरह)
(वव १, ६) ।

अलय पु [अलक] १ विच्छ का काटा ।
(विपा १, ६) । २ केश, घुंघराले बाल ।
(पात्र, स ६६) ।

अलया स्त्री [अलका] कुवेर की नगरी (पात्र,
गाथा १, ४) । देखो अलका ।

अलव वि [अलप] मौनी, नहीं बोलनेवाला
(सूत्र २, ६) ।

अलवलवसह पु [दे] घूतं वैल (पङ्) ।

अलस वि [अलस] १ आलसी, सुप्त (प्रासू
७) । २ मन्द, धीमा (पात्र) । ३ पु क्षुद्र कीट-
विशेष, भू-नाग, वर्षाऋतु में साँप सरीखा
लाल रंग का जो लम्बा जन्तु उत्पन्न होता है
वह (जी १५, पुष्प २६५) ।

अलस वि [दे] १ मधुर आवाजवाला, 'ख
अलस कलमंजुल' (पात्र) । २ कुसुम रंग से
रंगा हुआ । ३ न मोम (दे १, ५२) ।

°अलस देखो कलस (से १, ६, ११, ४०, गा
३६६) ।

अलसग } पु [अलसक] १ विसूचिका रोग
अलसय } (उवा) । २ श्वयथु, सूजन (आचा) ।

अलसाइअ वि [अलसायित] जिसने आलसी
की तरह आचरण किया हो, मन्द (गा ३५२) ।

अलसाय अक [अलसाय्] आलसी होना,
आलसी की तरह काम करना । अलसायइ
(पि ५५८) । वक्र अलसायत, अलसाय-
माण (से १४, १, उप पृ ३१५, गच्छ १) ।

अलसी देखो अयसी (आचा, पङ्, हे २,
११) ।

अला स्त्री [अला] १ इस नाम की एक देवी
(ठा ६) । २ एक इन्द्राणी का नाम (गाथा
२) । °वडिमग न [°वतसक] अलादेवी
का भवन (गाथा २) ।

°अला देखो कला (गा ६५७) ।

अलाउ न [अलावु] तुम्बी फल, लौकी, तुम्बा
(श्रौप प्रासू १५१) ।

अलाऊ } स्त्री [अलावू] तुम्बी-लता
अलावू } (कुमा, पङ्) ।

अलाय न [अलात] १ उत्प्लुक्त, जलता हुआ
काष्ठ (दे १, १०७, श्रौप २१ भा) । २ अङ्गार,
कोयला (से ३, ३४) ।

अलावणी स्त्री [अलावुणी] वीणा-विशेष
(प्राकृ ३७) ।

अलावु देखो अलाउ (जं ३) ।

अलावू देखो अलाऊ (पि १४१, २०१) ।

अलाह पु [अलाभ] नुकमान, गैरलाभ, 'वव-
हरमाणण पुणो होइ सुलाहो कयावलाहो
वा' (सुपा ४४६) ।

अलाहि देखो अल (उव ७२८ टी, हे २, १८६,
गाथा १, १, गा १२७) ।

अलि पु [अलि] भ्रमर (कुमा) । °उल न
[°कुल] भ्रमरो का समूह (हे ४, २५३) ।

°विरुय न [°विरुन] भ्रमर का गुजारव
(पात्र) ।

अलि पुत्री [अलि] वृश्चिक राशि (विचार
१०६) ।

अलिअल्ली स्त्री [दे] १ कस्तूरी । २ व्याघ्र,
शेर (दे १, ५६) ।

अलिआ स्त्री [दे] सखी (दे १, १६) ।

अलिआर न [दे] दूध (दे १, २३) ।

अलिजर न [अलिजर] १ घडा, कुम्भ (ठा
४, २) । २ कुड, पात्र-विशेष (दे १, ३७) ।

अलिजरअ पु [अलिजरक] १ घडा (उवा) ।
रगने का कुडा, रग-पात्र (पात्र) ।

अलिड न [अलिन्ड] पात्र-विशेष, एक प्रकार
का जलपात्र (श्रौप ४७६) ।

अलिदग पुं [अलिन्दक] १ द्वार का प्रकोष्ठ
(स ४७६) । २ घर के बाहर के दरवाजे का
चौक । ३ बाहर का अग्र भाग (वृह २, राज) ।

अलिदय पुन [आलिन्दक] धान्य रखने का
पात्र-विशेष (अणु १५१) ।

अलिण पु [दे] वृश्चिक, विच्छ (दे १, ११) ।

अलिणी स्त्री [अलिनी] भ्रमरी (कुमा) ।

अलित्त न [अरित्र] नौका खेवने का ड, ड,
चप्पू (आचा २, ३१) ।

अलिय न [अलिक] कपाल (पात्र) ।

अलिय न [अलीक] १ मृपावाद, असत्य
वचन (पात्र) । २ वि भूठा, खोटा, 'अलिअ-
पोरुसालाव'—(पात्र) । ३ निष्फल, निरर्थक
(पण्ड १, २) । °वाइ वि [°वादिन्] मृपा-
वादी (पञ्च ११, २७, महा) ।

अलिल्ल सक [कथय्] कहना, बोलना ।
अलिहह (पिग) ।

अलिल्लह न [दे] १ छन्द विशेष का नाम ।
२ वि अप्रयोजक, नियमरहित (पिग) ।

अलिल्ला स्त्री [अलिल्ला] इस नाम का एक
छन्द (पिग) ।

अलीग } देखो अलिय = अलीक (मुर ४,
अलीय } २२३, मुपा ३००, महा) ।

अलीवहू स्त्री [अलिधू] भ्रमरी (कुमा) ।

अलीसअ स्त्री पु [दे] शाक-वृक्ष, साग का
पेठ (दे १, २७) ।

अलुकिव वि [अरुक्षिन्] कोमल (भग
११, ४) ।

अलेसि वि [अलेदियन्] १ नेयारहित ।
२ पुं मुक्त आत्मा (ठा ३, ४) ।

अलोग पु [अलोक] जीव-मुद्गन आदि रहित
आकाश (भग) ।

अलोणिय वि [अलवणिक] लूणरहित, नमक-
शून्य, 'नय अलोणियं सिल कोड चट्टेइ'
(महा) ।

अलौय देखो अलोग (मम १) ।

अलोभ पु [अलोभ] १ लोभ का अभाव,
सतोष । २ वि लोभरहित, सतोषी (भग,
उव) ।

अलोल वि [अलोल] अलम्पट, निर्लोभ (दस
१०, पि ८५) ।

अलोह देखो अलोभ (कप्प) ।

अल्ल न [दे] दिन, दिवस (दे १, ५) ।

अल्ल देखो अद् (हे १, ८२) ।

अल्ल अक [नम्] नमना, नीचे झुकना ।
अग्रल्लति (मे ६, ४३) ।

अल्लई स्त्री [आर्द्रकी] लता-विशेष, आर्द्रक-
लता (पण्ड १७) ।

अल्लग देखो अल्लय = आर्द्रक (धर्म २) ।

अल्लथ सक [उन् + क्षिप्] ऊँचा फेंकना ।
अल्लथइ (हे ४, १४४) ।

अल्लथ न [दे] १ जलार्द्र, गोला पखा । २
केयूर, भूषण-विशेष (दे १, ५४) ।

अल्लथिअ वि [उत्तिष्ठ] ऊँचा फेंका हुआ
(कुमा) ।

अल्लय न [आर्द्रक] आदी, अदरक (जी ६) ।

°तिथि न [°त्रिक] आदी, हल्दी और कचूर
(जी ६) ।

अल्लय वि [दे] परिचित, ज्ञात (दे १, १२) ।

अल्लय पुं [अल्लक] इस नाम का एक
विख्यात जैन मुनि और ग्रन्थकार, उद्द्योतन-

अभिनिवृट् देखो अभिणिवृट् (कप्प, ग्राचा) ।

अभिनिवृट् अक [अभिनि + वृत्] शृथक् होना । वृत् अभिनिवृट्माण (सूअ २, ३, २१) ।

अभिनिवृट् सक [अभिनिर् + वृत्] खीचना । संकृ 'कोसाशो अस्ति अभिनिवृट्-ट्टिता (सूअ २, १, १६) ।

अभिनिव्यागड वि [अभिनिव्याकृत] विभिन्न द्वार वाला (मकान) । (वव १ टी) ।

अभिनिवृट् वि [अभिनिर्विष्ट] सजात, उत्पन्न (कप्प) ।

अभिनिवृट् देखो अभिनिवृट् (पि २१६) ।

अभिनिषट् वि [अभिनि सट्] जिसका स्कन्व प्रदेश बाहर निकल आया हो वह (भग १५, पत्र ६६६) ।

अभिनिस्सव देखो अभिणिस्सव अभि-निस्सवति (राय ७५) ।

अभिनिस्सव अक [अभिनि + स्सु] टपकना, भरना । अभिनिस्सवइ (भग) ।

अभिन्न देखो अभिण (प्राप्र) ।

अभिन्नाण देखो अभिण्णाण (श्रोघ ४३६, सुर ७, १०१) ।

अभिन्नाय देखो अभिण्णाय (कप्प) ।

अभिपल्लणिय वि [अभिपर्याणित] अघ्या-रोपित, ऊपर रखा हुआ (कुमा) ।

अभिपवुट् वि [अभिप्रवृष्ट] बरसा हुआ (ग्राचा २, ३, १, १) ।

अभिपाइय वि [आभिप्रायिक] अभिप्राय सम्बन्धी, मन कल्पित (अणु) ।

अभिप्पाय पु [अभिप्राय] आशय, मन-परिणाम (ग्राचा, स ३४, सुपा २६२) ।

अभिप्पेय वि [अभिप्रेत] इष्ट, अभिमत (स २३) ।

अभिभव सक [अभि + भू] पराभव करना, परास्त करना । अभिभवइ (महा) । सक अभिभविय, अभिभूय (भग ६, ३३, पण १, २) ।

अभिभव पु [अभिभव] पराभव, पराजय, तिरस्कार (ग्राचा, दे १, ५७) ।

अभिभवण ~ [अभिभवन] ऊपर देखो (सुपा ५७६) ।

अभिभास सक [अभि + भाष्] संभाषण करना । अभिभासे (पि १६६) ।

अभिभूइ खी [अभिभूति] पराभव, अभिभव (द्र ३०) ।

अभिभूय वि [अभिभूत] पराभूत, पराजित (ग्राचा, सुर ४, ७५) ।

अभिभंजु देखो अभिमण्णु (हे ४, ३०५) ।

अभिमत सक [अभि + मन्त्रय] मंत्रित करना, मन्त्र से सस्कारना । संकृ अभि-मतिऊण, अभिमतिय (निचू १, ग्रावम) ।

अभिमतिय वि [अभिमन्त्रित] मन्त्र से सस्कारित (सुर १६, ६२) ।

अभिमत सक [अभि + मन्] १ अभिमान करना । २ सम्मत करना । अभिमत्तइ (विसे २१६०, २६०३) ।

अभिमत वि [अभिमत] इष्ट, अभिप्रेत (सूअ २, ४) ।

अभिमाण पु [अभिमान] अभिमान, गर्व (निचू १) ।

अभिमार पु [अभिमार] वृक्ष विशेष (राज) ।

अभिमुह वि [अभिमुख] १ समुख, सामने स्थित । २ क्रिवि सामने (भग) ।

अभिमुहिय वि [अभिमुखित] समुख किया हुआ (सूअनि १४६) ।

अभियागम पुं [अभ्यागम] समुख आगमन (सूअ १, १, ३, २) ।

अभियावन्न वि [अभ्यापन्न] समुख प्राप्त (सूअ १, ४, २, २८) ।

अभिरइ खी [अभिरति] १ रति, संभोग । २ प्रीति, अनुराग, (विसे ३२२३) ।

अभिरम अक [अभि + रम्] १ क्रीडा करना, संभोग करना । २ प्रीति करना । ३ तल्लीन होना, आत्मिक करना । अभिरमइ (महा) । वृत्. अभिरमंत, अभिरममाण (सुपा १२०, ग्राया १, २, ४) ।

अभिरमिय वि [अभिरमित] अनुरक्त किया हुआ, 'अभिरमियकुमुयवणसडं ससिभंडलं पलो-यइ' (सुपा ३४) ।

अभिरमिय वि [अभिरमित] समुक्त, 'जेणा-मिरमिय परकलत्त' (घमंवि १२८) ।

अभिरमिय } वि [अभिरत] १ अनुरक्त (सुपा अभिरय } ३४) । २ तल्लीन, उत्पल; 'साहू

तवनियमसजमामिरया' (पल्ल ३७, ६३, स १२२) ।

अभिराम वि [अभिराम] सुन्दर. मनोहर (ग्राया १, १३, स्वप्न ४५) ।

अभिराम सक [अभि + रामय] तत्परता में कार्य में लगाना । अभिरामयति (दम ६, ४, १) ।

अभिरुइय वि [अभिरुचित] पसंद, मन का अभिमत (ग्राया १, १, उवा, सुपा ३४४, महा) ।

अभिरुय सक [अभि + रुच्] पसंद पडना, रुचना । अभिरुयइ (महा) ।

अभिरुयसि वि [अभिरुपिन्] सुन्दर रूप वाला, मनोहर (ग्राचा २, ४, २, १) ।

अभिरुह सक [अभि + रुह्] १ रोकना । २ ऊपर चढ़ना, आरोहना । सकृ.

'चत्तारि साहिण मासे बहवे

पाराणजइया आगम्म ।

अभिरुक्क काय विहरिसु,

आरुहिया ए तत्थ हिंसिमु' (ग्राचा) ।

अभिरोहिय वि [अभिरोधित] चारो ओर से निरुद्ध, रोक हुआ (ग्राया १, ६) ।

अभिरोहिय वि [अभिरोहित] ऊपर देखो, 'परचक्रायाभिरोहिया', ('परचक्राजेनापरमं-न्यनृपतिनाभिरोहिता सर्वत कृतनिरोधा या सा तथा' टी) (ग्राया १, ६) ।

अभिलघ सक [अभि + लङ्घ्] उल्ल-घन करना । वृत् अभिलंघमाण (ग्राया १, १) ।

अभिलप्प वि [अभिलाप्य] कथन-योग्य निवंचनीय (आचू १) ।

अभिलस सक [अभि + लप्] चाहना, वाञ्छना । अभिलसइ (उव) ।

अभिलाअ } पुं [अभिलाप] १ शब्द, अभिलाघ } ध्वनि (ठा ३, १, भास २७) । २ संभाषण (ग्राया १, ८, विसे) ।

अभिलास पुं [अभिलाप] इच्छा, चाह (ग्राया १, ६, प्रयो ६१) ।

अभिलासि } वि [अभिलापिन्] चाहने अभिलासिण } वाला, इच्छुक (वमु, स ६५४, पल्ल ३१, १२८) ।

अवंग पुं [दे] कटाक्ष (दे १, १५) ।
 अवंगु } वि [दे अपावृत्त] नही ढका
 अवगुय } हुआ, खुला (श्रीप. पणह २, ४) ।
 अवगुण सक [दे] खोलना । अवगुणेज्जा
 (भावा २, २, २, ४) ।
 अवचिअ वि [अवाञ्छित] अवोमुख, अवाड'-
 मुख (वज्जा १०) ।
 अवचिअ वि [अवञ्छित] नही ठगा हुआ
 (वज्जा १०) ।
 अवक्क वि [अवन्ध्य] सफल, अचूक (सुपा
 ३२५) । 'पवाय न [प्रवाद] ग्यारहवा
 पूर्व, जैन ग्रन्थाश-विशेष (सम २६) ।
 अवतर वि [अवान्तर] भीतरी, बीच का
 (आवम) ।
 अवति पुं [अवन्ति] भगवान् आदिनाथ का
 एक पुत्र (ती १४) ।
 अवन्ति } स्त्री [अवन्ति, 'न्ती] १ मालव देश ।
 अवती } २ मालव देश की राजधानी, जो
 आजकल राजपूताना में 'उज्जैन' नाम से प्रसिद्ध
 है (महा. सुपा ३६६, आवम) । 'गंगा स्त्री
 [गङ्गा] आजीविक मत में प्रसिद्ध काल-
 विशेष (भग २४, १) । 'वड्डण पु [वर्धन]
 इस नाम का एक राजा (आव ४) । 'सुकु-
 माल पु [सुकुमाल] एक श्रेष्ठ-पुत्र, जो
 आर्यमुहस्ति आचार्य के पास दीक्षा लेकर
 देव-लोक के तलिनीगुल्म विमान में उत्पन्न
 हुआ है (पडि) । 'सेण पु [पेण] एक राजा
 (आक) ।
 अवन्दिम वि [अवन्ध्य] वन्दन करने के
 अयोग्य, प्रणाम के अयोग्य (दमचू १) ।
 अवक्ख सक [अव + काङ्क्ष] १ चाहना ।
 २ देखना । अवक्खइ (भग) । वक्क. अव-
 क्खमाण (आया १, ६) ।
 अवक्कंत देखो अवक्कंत, 'कुमरोवि सत्थराओ
 उट्टेत्ता सणियमवक्कंतो' (महा) ।
 अवक्कप्प सक [अव + कल्पय्] कल्पना
 करना, मान लेना । अवक्कप्पति (सूअ १, ३,
 ३, ३) ।
 अवक्कय वि [अपकृत] १ जिसका अपकार
 किया गया हो वह (उव) । २ अपकार,
 अहित (सुपा ६४१) ।
 अवकर सक [अप + कृ] अहित करना ।
 अवकरेंति (सूअ १, ४, १, २३) ।

अवकरिस पुं [अपकर्ष] अपकर्ष, हास,
 हानि (सम ६०) ।
 अवक्कलुसिय वि [अपक्कलुपित] मलिन
 (गठड) ।
 अवक्कस सक [अव + कृप्] त्याग करना ।
 सक अवक्कसित्ता (चउ १४) ।
 अवक्कारि वि [अपकारिन्] अहित करने
 वाला (पउम ६, ८५) ।
 अवक्किण वि [अवकीर्ण] परित्यक्त (दे १,
 १३०) ।
 अवक्किणग } पुं [अपकर्षणक] करकण्डू
 अवक्किणय } नामक एक जैन महर्षि का पूर्व
 नाम (महा) ।
 अवक्कित्ति स्त्री [अपकीर्त्ति] अपयश (दे १,
 ६०) ।
 अवक्कित्ति स्त्री [अपकृत्ति] अपकार, अहित
 (प्राक् १२) ।
 अवक्कीरण न [अवकरण] छोड़ना, त्याग,
 उत्सर्ग (आव ५) ।
 अवक्कीरिअ वि [दे अवकीर्ण] विरहित,
 वियुक्त (दे १, ३८) ।
 अवक्कीरियव्य वि [अवकरितव्य] त्याग्य,
 छोड़ने लायक (पणह १, ५) ।
 अवक्कूजिय न [अवक्कूजित] हाथ को ऊँचा-
 नीचा करना (निचू १७) ।
 अवक्केसि पु [अवक्केशिन्] फल-वन्ध्य वन-
 स्पति (उर २, ८) ।
 अवक्कोडक देखो अवक्कोडग (पणह १, १) ।
 अवक्कंत वि [अपक्रान्त] १ पीछे हटा हुआ,
 वापस लौटा हुआ (सुपा २६२, उप १३४
 टी, महा) । २ निकृष्ट, जघन्य (ठा ६) ।
 अवक्कंत पु [अवक्रान्त] प्रथम नरक भूमि का
 ग्यारहवां नरकेन्द्रक—नरक-स्थान विशेष
 (देवेन्द्र ५) ।
 अवक्कति स्त्री [अपक्रान्ति] १ अपसरण ।
 २ निर्गमन (आया १, ८) ।
 अवक्कति स्त्री [अवक्रान्ति] गमन गति
 (भावा) ।
 अवक्कम अक [अप + क्रम] १ पीछे
 हटना । २ बाहर निकलना । अवक्कमइ (महा,
 कण्ठ) । वक्क. अवक्कममाण (विपा १, ६) ।

संकु अवक्कमइत्ता, अवक्कम्म (कण्ठ, वव
 १) ।
 अवक्कम सक [अव + क्रम्] जाना । अवक्क-
 मइ (भग) । संक्क. अवक्कमित्ता (भग) ।
 अवक्कमण न [अपक्रमण] १ बाहर निकलना
 (ठा ५, २) । २ पलायन, भागना, 'निग्गमण-
 मवक्कमण निस्सरण पलायण च एगट्ठा' (वव
 १०) । ३ पीछे हटना (आया १, १) ।
 अवक्कमण न [अपक्रमण] अवतरण, 'उत्त-
 रावक्कमण' (भग ६, ३३) ।
 अवक्कय पु [अवक्कय] भाड़ा, भाटि (वृह १) ।
 अवक्कय वि [अपकृत] जिसका अहित किया
 गया हो वह (चउ) ।
 अवक्करस पु [दे] दाढ़, मद्य (दे १, ४६;
 पाय) ।
 अवक्करिस } पु [अपकर्ष] हानि, अपचय
 अवक्कास } (विसे १७६६, भग १२, ५) ।
 अवक्कास पुं [अवक्कर्ष] ऊपर देखो (भग १२,
 ५) ।
 अवक्कास पु [अप्रकाश] अन्धकार, अंधेरा
 (भग १२, ५) ।
 अवक्कोस पु [अवक्कोश] मान, अहंकार (मम
 ७१) ।
 अवक्ख सक [ट्टर] देखना । अवक्खइ
 (पड्) । अवक्खए (भवि) । वक्क. अव-
 क्खत (कुमा) ।
 अवक्खंद पुं [अवक्खन्द] १ शिविर, छावनी,
 सैन्य का पड़ाव । २ नगर का रिपु-सैन्य द्वारा
 घेरना, घेरा (हे २, ४, स ४१२) ।
 अवक्खर पुं [अवक्कर] पुरोप, विष्ठा (प्राक्
 २१) ।
 अवक्खारण न [अपचारण] १ निर्मत्संता,
 कठोर वचन । २ सहानुभूति का अभाव (पणह
 १, २) ।
 अवक्खेव पुं [अवक्खेप] विघ्न, बाधा (विपा
 १, ६) ।
 अवक्खेवण न [अवक्खेपण] १ बाधा, अन्त-
 राय । २ क्रिया-विशेष, नीचे जाना । (आवम;
 विसे २४६२) ।
 अवखेर सक [दे] १ खिन्न करना । २ तिर-
 स्कार करना । अवखेरइ (भवि) । वक्क. अव-
 खेरंत (भवि) ।

अभिसेअ } पुं [अभिषेक] १ राजा, आचार्य
अभिसेग } आदिपद पर आलु करना (सथा,
महा) । २ स्नान-महोत्सव, 'जिणाभिसेग'
(सुपा ५०) । ३ स्नान (श्रौप, स ३२) । ४
जहा पर अभिषेक किया जाता है वह स्थान
(भग) । ५ शुक्र शोणित का संयोग, 'इह खलु
श्रतत्ताए तेहि तेहि कुलेहि अभिषेएण अभि
सभूया' (आचा १, ६, १) । ६ वि. आचार्य
आदि पद के योग्य (वृह ३) । ७ अभिषिक्त
(निचू १५) ।

अभिसेगा स्त्री [अभिषेका] १ माव्वी, संन्या-
सिनी (निचू १५) । २ साध्वियों की मुखिया,
प्रवर्तिनी (धर्म ३, निचू ६) ।

अभिसेज्जा स्त्री [अभिषय्या] देखो अभि-
णिसज्जा (वव १) । २ भिन्न स्थान (विसे
३४६१) ।

अभिसेवण न [अभिषेवण] पूजा, सेवा,
भक्ति (पउम १४, ४६) ।

अभिसेवि वि [अभिषेचिन्] सेवा-कर्ता (सूअ
२, ६, ४४) ।

अभिस्सग पु [अभिष्वङ्ग] आसक्ति (विसे
२६६५) ।

अभिहट्टु अ [अभिहत्य] बलात्कार करके,
जबरदस्ती करके (आचा, पि ५७७) ।

अभिहट्ट वि [अभिहत] १ सामने लाया
हुआ (पचा १३) । २ जैन साधुओं की भिक्षा
का एक दोष (ठा ३, ४) ।

अभिहण सक [अभि + हन्] मारना, हिंसा
करना (पि ४६६) । वक्तु. अभिहणमाण
(ज ३) ।

अभिहणण न [अभिहनन] अभिघात, हिंसा
(भग ८, ७) ।

अभिहय वि [अभिहत] मारा हुआ, आहत
(पडि) ।

अभिहा स्त्री [अभिधा] नाम, आख्या (सण) ।
अभिहाण न [अभिधान] १ नाम, आख्या
(कुमा) । २ वाचक, शब्द (वव ६) । ३
कथन, उक्ति (विसे) ।

अभिहाण न [अभिधान] १ उच्चारण
(सूअनि १३८) । २ कथन, उक्ति (धर्मसं
११११) । ३ कोशग्रन्थ (वेद्व ७४) ।

अभिहिय वि [अभिहित] कथित, उक्त
(आचा) ।

अभिहेअ वि [अभिधेय] वाच्य, पदार्थ
(विसे ८४१) ।

अभीइ } स्त्री [अभिजिन्] १ नक्षत्र-
अभोजि } विशेष (मम ८, १५) । २ पुं. एक
राजकुमार (भग १३, ६) । ३ राजा श्रेणिक
का एक पुत्र, जिसने जैन दीक्षा ली थी (अनु) ।

अभीरु वि [अभीरु] १ निडर, निर्भीक
(आचा) । २ स्त्री मध्यम ग्राम की एक मूर्च्छना
(ठा ७) ।

अभेज्जा देखो अभिज्जा (परह १, ३) ।

अभोज्ज वि [अभोज्य] भोजन के अयोग्य
(णाय १, १६) । °घर न [°गृह] भिक्षा
के लिए अयोग्य घर, घोवी आदि नीच जाति
का घर (वृह १) ।

अम सक [अम्] १ जाना । २ आवाज
करना । ३ खाना । ४ पीटना । ५ अक
रोगी होना, 'अम गच्चाईसु' (विसे ३४५३),
'अम रोगे वा' (विसे ३४५४) । अमइ (विसे
३४५३) ।

अमग्ग पु [अमार्ग] १ कुमार्ग, खराब रास्ता
(उव) । २ मिथ्यात्व, कषाय आदि हेतु पदार्थ,
'अमग्गं परियाणामि मग्गं उपसंपज्जामि'
(आव ४) । ३ कुमत, कुदर्शन (दस) ।

अमग्घाय पु [अमाघात] १ द्रव्य का अ-
हरण । २ मारिनिवारण, अमय घोषणा (पचा
६) ।

अमच्च पु [अमात्य] मन्त्री, प्रधान (श्रौप, सुर
४, १०४) ।

अमच्च पु [अमर्त्य] देव, देवता (कुमा) ।

अमज्ज वि [अमध्य] १ मध्य रहित, अखण्ड
(ठा ३, २) । २ परमाणु (भग २०, ६) ।

अमण न [अमन] १ ज्ञान, निर्णय (ठा ३,
४) । २ अन्त अवसान (विसे ३४५३) ।

अमण } वि [अमनस्क] १ अप्रीतिकर,
अमणक्ख } अभीष्ट (ठा ३, ३) । ३ मनरहित
(आव ४, सूअ २, ४, २) ।

अमणाम वि [अमनआप] अनिष्ट, अनोहर
(सम १४६, विपा १, १) ।

अमणाम वि [अमनोम] ऊपर देखो (भग;
विपा १, १) ।

अमणाम वि [अचनाम] पीड़ा-कारक, दुःखो-
त्पादक (सूअ २, १) ।

अमणुस्स पुं [अमनुष्य] १ मनुष्य भिन्न देव
आदि (णदि) । २ नपुंसक (निचू १) ।

अमत्त न [अमत्र] भाजन, पात्र (सूअ १, ६) ।

अमम वि [अमम] १ ममता-रहित, नि स्पृह
(परह २, ५, सुपा ५००) । २ पु आगामी
काल में होने वाले एक जिनदेव का नाम
(सम १५३) । ३ युग्म रूप से होने वाले
मनुष्यों की एक जाति (ज ४) । दिन के
२५ वां मुहुर्त का नाम (चद १०) । °न्त वि
[°त्व] नि स्पृह, ममता-रहित (पचव ४) ।

अमय वि [अमय] विकार-रहित,
'अममो य होइ जीवो, कारणविरहा
जहेव आगास ।

समय च होअनिच्च, मिम्मयवडततुमाईय'
(विसे) ।

अमय न [अमृत] १ अमृत, सुधा (प्रासू
६६) । २ क्षीर समुद्र का पानी (राय) । ३
पु मोक्ष, मुक्ति (सम्म १६७, प्रासू) । ४
वि नहीं मरा हुआ, जीवित, 'अममो ह नय
विमुञ्चामि' (पउम ३३, ८२) । °कर पु [°कर]
चन्द्र, चन्द्रमा (उप ७६८ टी) । °किरण पुं
[°किरण] चन्द्र (सुपा ३७७) । °कुड पुं
[°कुण्ड] चन्द्र, चाँद (आ २७) । °घोस पुं
[°घोष] एक राजा का नाम (संथा) । °फल
न [°फल] अमृतोपम फल (णाय १, ६) ।
°मइय—°मय वि [°मय] अमृत-पूर्ण (कुमा,
सुर ३, १२१, २३३) । °मऊह पु [°मयूख]
चन्द्र (मै ६८) । °वल्लरि, °वल्लरी स्त्री
[°वल्लरि, °री] शत्रुतलता, वल्ली-विशेष,
गुहची । °वल्लि, °वल्ली स्त्री [°वल्लि,
°ल्ली] वल्ली-विशेष, गुहची (आ २०, पव
४) । °वास पुं [°वर्ष] सुधा-वृष्टि (आचा) ।
देखो अमिय = अमृत ।

अमय पु [दे] १ चन्द्र, चन्द्रमा (दे १, १५) ।
२ असुर, दैत्य (पड्) ।

अमयघडिअ पु [दे. अमृतघटित] चन्द्रमा,
चाँद (कुप्र २१) ।

अमयणिग्गम पुं [दे. अमृतनिर्गम] १
चन्द्र, चन्द्रमा (दे १, १५) ।

अमर वि [आमर] दिव्य, देव-सम्बन्धी, 'अमरा
आलहेया' (पउम ६१, ४६) ।

अवधीय वि [अपत्यीय] सतानीय, सतान-सवन्वी (ठा ६) ।
 अवच्छुण्ण न [दे] क्रोध से कहा जाता मार्मिक वचन (दे १, ३६) ।
 अवच्छेय पु [अवच्छेद] विभाग, अंश (ठा ३, ३) ।
 अवच्छद वि [अपच्छन्दस्क] छन्द के लक्षण से रहित, छन्दोदोष-दुष्ट (पिग) ।
 अवजस पु [अपयशस्] अपकीर्ति (उप पृ १८७) ।
 अवजाण सक [अप+जा] १ अपलाप करना, 'वालस्स मंदय वीय ज च कड अवजाणई भुजो' (सूत्र १, ४, १, २६) ।
 अवजाय पु [अपजात] पिता की अपेक्षा हीन वैभववाला पुत्र (ठा ४, १) ।
 अवजिठभ पुं [अपजिह्व] दूसरी नरक-पृथिवी का आठवा नरकेन्द्रक—नरक-स्थान विशेष (देवेन्द्र ६) ।
 अवजीव वि [अपजीव] जीवरहित मृत, अचेतन (गडड) ।
 अवजुय वि [अवयुत] पृथग्भूत, भिन्न (वव ७) ।
 अवज्ज न [अवद्य] १ पाप (परह २, ४) । २ वि निन्दनीय (सूत्र १, १, २) ।
 अवज्जस सक [गम्] जाना, गमन करना । अवजसइ (हे ४, १६२) । वक्तु अवज्जसंत (कुमा) ।
 अवज्जा ली [अवज्ञा] अनादर (स ६०४) ।
 अवज्झ वि [अवध्य] मारने के अयोग्य (गाया १, १६) ।
 अवज्झ सक [हृश्] देखना (सखि ३६) ।
 अवज्झस न [दे] १ कटी, कमर । २ वि. कठिन (दे १, ५६) ।
 अवज्झा ली [अवध्या] १ अयोध्या नगरी (इक) । २ विदेह वर्ष की एक नगरी (ठा २, ३) ।
 अवज्झाण न [अपध्यान] बुरा चिन्तन, दुर्ध्यान (सुपा ५४६, उप ४६६, सम ५०, विसे ३०१३) ।
 अवज्झाण पुं [अपध्यान] दुर्ध्यान, 'चउ-अवज्झाण' ज्विहो अवज्झाणो' (आवक २८६, पचा १, २३, संवीध ४५) ।

अवज्झाय वि [उ.पध्यात] १ दुर्ध्यान का विषय । २ अवज्ञात, तिरस्कृत (गाया १, १४) ।
 अवज्झाय (अप) देखो अवज्झाय (दे १, ३७) ।
 अवट्ट सक [अप + वृत्] घुमाना, फिराना, 'अवट्ट अवट्ट ति वाहरते कएणहारे रज्जुपरिवत्तणुज्जएणुं निजामएसु अयडम्मि चैव गिरि-सिहरनिवडिय पिव विवन्न जाणवत्त' (स ३५५) ।
 अवट्ट सक [अप + वृत्] पीछे हटना । अवट्टइ (प्राकृ ७२) ।
 अवट्टा ली [आवत्ता] राजमार्ग से बाहर की जगह (उप ६६१) ।
 अवट्टभ पु [अवट्टम्भ] अवलम्बन, आश्रय (पद्म २६, २७, स ३३१) ।
 अवट्टभ पु [अवट्टम्भ] दृढता, हिम्मत (धर्मवि १४०) ।
 अवट्टभ देखो अवठंभ । कर्म अवट्टमति (स ७४९) ।
 अवट्ठभण } न [अवट्टम्भन] अवलम्बन,
 अवट्ठहण } सहारा (स ७५६ टी, ७४६) ।
 अवट्ठवि [अवट्ठव] रोका हुआ (द्रव्य २७) ।
 अवट्ठवि [अवट्ठव] १ अवलम्बित । २ आक्रान्त, 'अवट्ठवा महाविसोएण' (स ५८४) ।
 अवट्ठव सक [अव + स्तम्भ] अवलम्बन करना, सहारा लेना । संकृ अवट्ठविअ (विक ६४) ।
 अवट्ठाण न [अवस्थान] १ अवस्थिति, अवस्था । २ व्यवस्था (वृह ५) ।
 अवट्ठिअ वि [अवस्थित] १ अवगाहन करके स्थित (सूत्र १, ६, ११) । २ कर्म-बन्ध विशेष, प्रथम समय में जितनी कर्म-प्रकृतियों का बन्ध हो द्वितीय आदि समयों में भी उतनी ही प्रकृतियों का जो बन्ध हो वह (पच ५, १२) ।
 अवट्ठिअ वि [अवस्थित] १ स्थिर रहनेवाला (भग) । २ नित्य, शाश्वत (ठा ३, ३) । ३ जो बढता-घटता न हो (जीव ३) ।
 अवट्ठिइ ली [अवस्थिति] अवस्थान (ठा ३, ४, विसे ७५८) ।
 अवठंभ सक [अव + स्तम्भ] अवलम्बन करना । संकृ.

'धाएण मग्गो, सदेण मई, चोजेण वाहवहुयावि ।
 अवठंभिऊण धणुहं वाहेणवि मुक्किया पाणा' (वज्जा ४६) ।
 अवठभ पुं [दे] ताम्बूल, पान (दे १, ३६) ।
 अवठ पु [अवट] कूप, कुंआ (गडड) ।
 अवठ } पु [दे] १ कूप, कुंआ । २ आराम,
 अवठअ } वगीचा (दे १, ५३) ।
 अवठअ पु [दे] १ चश्मा, घास-रूम का पतला, तुरा-पुष्प (दे १, २०) ।
 अवठक पुं [अवटक्क] प्रमिद्धि, व्याप्ति, 'जण-कयावडकेण निग्घिएणस्समो एणम' (महा) ।
 अवठक्किअ वि [दे] कूप आदि में गिरकर मरा हुआ, जिसने आत्म-हत्या की हो वह (दे १, ४७) ।
 अवडाह सक [उत् + क्रुग] ऊँचे स्वर से रुदन करना । अवडाहेमि (दे १, ४७) ।
 अवडाहिअ न [दे] १ ऊँचे स्वर में रोदन (दे १, ४७) । २ वि. उत्कृष्ट (पड) ।
 अवडिअ वि [दे] खिन्न, परिश्रान्त (दे १, २१) ।
 अवडु पुं [अवट्ट] कृकाटिका, घंटो या घाटी, कण्ठमणि (पाप्र) ।
 अवडुअ पुं [दे] सड्डल, उलूखल (दे १, २६) ।
 अवडुडिअ वि [दे] कूप आदि में गिरा हुआ (पड) ।
 अवड्डा ली [दे] कृकाटिका, घंटो, गर्दन का ऊँचा हिस्सा (भग १५, पत्र ६७६) ।
 अवड्डवि [अपार्थ] १ आधा (मुज्ज १०) । २ आधा दिन, 'अवड्डं पच्चक्खाइ' (पडि, भग १६, ३) । ३ आधे में कम (भग ७, १, नव ४१) । 'क्खेत्त न [°क्षेत्र] १ नक्षत्र-विशेष (चद १०) । २ मुहूर्त-विशेष (ठा ६) ।
 अवण पुं [दे] १ पानी का प्रवाह । २ घर का फलहक (दे १, ५५) ।
 अवण न [अवन] १ गमन । २ अनुभव (एदि, विसे ८३) ।
 अवणण देखो अवणयण (पिंड ४७३) ।
 अवणद्ध वि [अवनद्ध] १ संबद्ध, जोड़ा हुआ (सुर २, ७) । २ आच्छादित (भग) ।
 अवणम सक [अव + नम्] नीचे नमना । वक्तु. अवणमत (राय) ।

अमुगत्थ वि [अमुत्र] अमुक स्थान मे (सुपा ६०२)।

अमुण वि [अज्ञ] अज्ञान, मूर्ख (वृह १)।

अमुणिय वि [अज्ञात] अविदित (सुर ४, २०)।

अमुणिय वि [अज्ञान] मूर्ख, अज्ञान (परह १, २)।

अमुत्त वि [अमुक्त] अपरित्यक्त (ठा १०)।

अमुत्त वि [अमूर्त] रूपरहित, निराकार (सुर १४, ३६)।

अमुदग्ग } न [अमुदग्र] १ अतीन्द्रिय
अमुयग्ग } मिथ्याज्ञान विशेष, जैसे देवताओं के पुद्गलरहित शरीर को देखकर जीव का शरीर पुद्गल से निर्मित नहीं है ऐसा निर्णय (ठा ७)।

अमुस वि [अमृष] सच्चा, सत्य, 'अमुसे वरे' (सूत्र १, १०, १२)।

अमुसा स्त्री [अमृषा] सत्यवचन (सूत्र १, १०)। °वाइ वि [°वादिन्] सत्यवादी (कुमा)।

अमुह वि [अमुख] निरुत्तर (वव ६)।

अमुहरि वि [अमुखरिन्] अवाचाल, मित-भाषी (उत्त १)।

अमूढ वि [अमूढ] अमृग, विचक्षण (णाय १, ६)। °णाण न [°ज्ञान] सत्य-ज्ञान (आवम)। °दिट्ठि स्त्री [°दृष्टि] १ सम्यग्दर्शन (पव ६)। २ अविचलित बुद्धि (उत्त २)। ३ वि. अविचलित दृष्टि वाला, सम्यग्दृष्टि (गच्छ १)।

अमूस वि [अमृष] सत्यवादी (कुमा)।

अमेज्ज देखो अमिज्ज (भग ११, ११)।

अमेज्झ देखो अमिज्झ (महा)।

अमोल्ल वि [अमूल्य] जिसकी कीमत न हो सके वह, बहुमूल्य (गठ, सुपा ५१६)।

अमोसलि न [दे. अमुशलि] वस्त्रादि निरीक्षण का एक प्रकार (भीष २६५)।

अमोसा देखो अमुसा (कुमा)।

अमोह वि [अमोघ] १ अवन्ध्य, सफल (सुपा ८३, ५७५)। २ पुं. सूर्य के उदय और अस्त के समय किरणों के विकार से होने वाली रेखा विशेष (भग ३, ६)। एक यक्ष का नाम (विपा १, ४)। °दंसि वि

[°दर्शिन्] १ ठीक-ठीक देखनेवाला (दस ६)। २ न. उद्यान-विशेष। ३ पु. यक्ष-विशेष (विपा १, ३)। °पहारि वि [°प्रहारिन्] अचूक प्रहार करनेवाला, निशानबाज (महा)। °रह पुं [°रथ] इस नाम का एक रथिक (महा)।

अमोह पुं [अमोह] १ मोह का अभाव, सत्य-ग्रह (विमे)। २ रुचक पर्वत का एक शिखर (ठा ८)। ३ वि. मोहरहित, निर्मोह (सुपा ८३)।

अमोह पुं [अमोघ] १ सूर्य-चिम्ब के नीचे कभी-कभी दीखती श्याम आदि वर्णवाली रेखा (अणु १२१)। २ पुन. एक देवविमान (देवेन्द्र १४४)।

अमोहण न [अमोहन] १ मोह का अभाव (वव १०)। २ वि. मुग्ध नहीं करनेवाला (कप्प)।

अमोहा स्त्री [अमोघा] १ एक जम्बूद्वीप, जिसके नाम से यह जम्बूद्वीप कहलाता है (जीव ३)। २ एक पुष्करिणी (दीव)।

अम्म देखो अव = आम्म (उर २, ६)।

अम्मएव पु [आम्रदेव] एक जैन आचार्य (पव २७६, गा ६०६)।

अम्मगा देखो अम्मया (उवा)।

अम्मच्छ वि [दे] असवद्ध (पड्)।

अम्मह देखो अंवह (औप)।

अम्मही (अप) स्त्री [अम्वा] माता, मां (हे ४, ४२४)।

अम्मणुअचिय न [दे] अनुगमन, अनुसरण (दे १, ४६)।

अम्मधार्ई देखो अबधार्ई (विपा १, ६)।

अम्मया स्त्री [अम्वा] १ माता, जननी (उवा)। २ पाचवें वासुदेव की माता का नाम (सम १५२)।

अम्महे (शौ) अ. हर्ष-सूचक अव्यय (हे ४, २८४)।

अम्मा स्त्री [दे अम्वा] माता, मां (दे १, ५)। °पिइ, °पिउ, °पियर, °पीइ पुं व. [°पितृ] मां-बाप, माता-पिता (वव ३, कप्प, सुर ३, ८३, ठा ३, १, सुर ३, ८८, ७, १७०)। °पेइय वि [°पैतृक] मां-बाप-संबन्धी (भग १, ७)।

अम्माइआ स्त्री [दे] अनुसरण करने वाली स्त्री, पीछे-पीछे जानेवाली स्त्री (दे १, २२)। अम्मो अ [?] १ आश्चर्य-सूचक अव्यय (हे २, २०८, स्वप्न २६)। २ माता का संबोधन, हे मां (उवा; कुमा)।

अम्मोगइया स्त्री [दे] समुख-गमन, म्वागत करने के लिए मामले जाना, 'राया सयमेव अम्मोगइयाए निग्गओ' (सुख २, १३)।

अम्मोस वि [अमप्य] अक्षम्य, क्षमा के अयोग्य (सुपा ४८७)।

अम्ह स [अस्मत्] हम, निज, खुद (हे २, ६६, १४२)। °केर, °क्केर, °क्षय वि [°ीय] अस्मदीय, हमारा (हे २, ६६, सुपा ४६६)।

अम्हत्त वि [दे] प्रमुष्ट, प्रमाजित (पड्)।

अम्हार } (अप) वि [अस्मदीय] हमारा
अम्हारय } (पड्, कुमा)।

अम्हारिच्छ वि [अस्मादृत्त] हमारे जैसा (प्राप्ता)।

अम्हारिस वि [अस्मादृश] हमारे जैसा (हे १, १४२, पड्)।

अम्हेच्चय वि [अस्माक] अस्मदीय, हमारा (कुमा, हे २, १४९)।

अम्हो अ [अहो] आश्चर्य-सूचक अव्यय (पड्)।

अय पु [अग] १ पहाड़, पर्वत। २ सांप, सर्प। ३ सूर्य, सूरज (आ २३)।

अय पु [अज] १ छाग, बकरा (विपा १, ४)। २ पूर्वभाद्रपद नक्षत्र का अविष्टायक देव (ठा २, ३)। ३ महादेव। ४ विष्णु। ५ राम-चन्द्र। ६ ब्रह्मा। ६ कामदेव (आ २३)। ८ महाग्रह-विशेष (ठा ६)। ९ वीजोत्पादक शक्ति से रहित घान्य (पउम ११, २५)। °करक पु [°करक] एक महाग्रह का नाम (ठा २, ३)। °वाल पु [°पाल] आभीर (आ २३)।

अय पु [अय] १ गमन, गति (विमे २७६३, आ २३)। २ लाभ, प्राप्ति। ३ अनुभव (विसे)। ४ न. पुण्य (ठा १०)। ५ भाग्य, नसीब (आ २३)।

अय न [अक] १ दुःख। २ पाप (आ २३)।

अवहार } देखो अवहार (गाया १, २, अवहार } प्राण) ।

अवहारणा स्त्री. देखो अवदहण (विपा १, १) ।

अवदुस न [दे] उलूखल आदि घर का सामान्य उपकरण, गुजराती में जिसको 'राच-रचि' कहते हैं (दे १, ३०) ।

अवद्वंस पु [अवध्वंस] विनाश (ठा ४, ४) ।

अवधसि वि [अपध्वसिन्] विनाशकारक (उत्त ४, ७) ।

अवधार सक [अव + धारय्] निश्चय करना । कृ अवधारियव्य (पचा ३) ।

अवधारण न [अवधारण] निश्चय, निर्णय (आ ३०) ।

अवधारणा स्त्री [अवधारणा] दीर्घकाल तक याद रखने की शक्ति (सम्मत ११८) ।

अवधारिय वि [अवधारित] निश्चित, निर्णीत (वसु) ।

अवधारियव्य देखो अवधार ।

अवधाव सक [अप + धाव्] पीछे दौटना । अवधावइ (सण) । वक्तु अवधावंत (स २३२) ।

अवधिका स्त्री [दे] उपदेहिता, दीमक (परह १, १) ।

अवधीरिय वि [अवधीरित] तिरस्कृत, अपमानित (वृह १, ४) ।

अवधुण } सक [अव + धू] १ परित्याग
अवधूण } करना । २ अवज्ञा करना । संकृ
अवधूणिअ, अवधूणिअ (माल २३२, वेणी ११०) ।

अवधूय वि [अवधूत] १ अवज्ञात, तिरस्कृत (श्लो १८ भा टी) । २ विसित (श्राव ४) ।

अवनिहय पु [अपनिहय] उजागर, निद्रा का अभाव (सुर ६, ८३) ।

अवन्न देखो अवण्ण = अवण (भग, उव, श्लो ३५१) ।

अवन्ना देखो अवण्णा (श्लो ३८२ भा, सुर १६, १३१, सुपा ३७२) ।

अवपगुण } सक [दे] खोलना । अवपगुणे
अवपगुर } (सूत्र १, २, २, १३) । अव-
पगुरे (वस ५, १, १८) ।

अवपक्षा स्त्री [अवपाक्या] तापिका, तबी, छोटा तवा (गाया १, १ टी—पत्र ४३) ।

अवपट्ट वि [अवपट्ट] जिसका मशं किया गया हो वह,

'जीए ससिकतमणिमदिराई

निमि ससिकरावपट्टाड ।

वियलियवाहजलाई रोयतिव,

तरणितवियाई' (सुपा ३) ।

अवपुसिय वि [दे] सघटित, संयुक्त (दे १, ३६) ।

अवपूर सक [अव + पूरय्] पूर्ण करना । अवपूरति (स ७१२) ।

अवपेक्ख सक [अवप्र + ईक्ष] अवलोकन करना । अवपेक्खइ (उत्त ६, १३) ।

अवप्पओग पु [अपप्रयोग] उलटा प्रयोग, विरुद्ध श्रौर्पाधयो का मिश्रण (वृह १) ।

अवप्फार पु [अवप्फार] विस्तार, फैलाव, 'ता किमिमिणा अहोपुरिसियावप्फारपाएण' (स २८८) ।

अववध पु [अववन्ध] बन्ध, बन्धन (गउड) । अववद्ध वि [अववद्ध] बंधा हुआ, नियन्त्रित (धर्म ३) ।

अववाण वि [अपवाण] वाणरहित (गउड) ।

अववुज्झ सक [अव + वुध्] १ जानना । २ समझना, 'जत्व त मुज्झमी राय, पेच्चत्य नाववुज्झमे' (उत्त १८, १३) । वक्तु अववुज्झमाण (स ८५) । संकृ अववुज्झेऊण (स १६७) ।

अववोह पु [अववोध] १ ज्ञान, बोध (सुपा १७) । २ विकास (गउड) । ३ जागरण (धर्म २) । ४ स्मरण, याद (आचा) ।

अववोहय वि [अववोधक] अवबोध-कारक, 'भवियकमलाववोहय, मोहमहातिमिरपसरभर-सूर' (काल) ।

अववोहि पु [अववोधि] १ ज्ञान । २ निश्चय, निर्णय (आचू १, विसे ११५४) ।

अवभास सक [अव + भास्] चमकना, प्रकाशित होना ।

अवभास पु [अवभास] प्रकाश (सुज ३) ।

अवभास पु [अवभास] ज्ञान (धर्मस १३३३) ।

अवभासण वि [अवभासन] प्रकाश-कर्ता (सुख १, ४०) ।

अवभासय वि [अवभासक] प्रकाशक (विसे ३१७, २०००) ।

अवभासि वि [अवभासिन] देदीप्यमान, प्रकाशने वाला (गउड) ।

अवभासिय वि [अवभासित] प्रकाशित (विमे) ।

अवभासिय वि [अपभापित] आकृष्ट, अभिशष्ट (वच १) ।

अवम देखो ओम (आचा)

अवमगग पु [अपमार्ग] कुमार्ग, त्रास रास्ता (कुमा) ।

अवमगग पु [अपमार्ग] वृक्ष-निक्षेप, विचटा, लट्जीरा (दे १, ८) ।

अवमच्चु पु [अपमृत्यु] अकाल मृत्यु, बिना मौत मरण (दे ६, ३, कुमा) ।

अवमज्ज सक [अव + मृज्] पोछना, फाटना, माफ करना । संकृ. अवमज्जिऊण (स ३४८) ।

अवमण्ण सक [अव + मन्] तिरस्कार करना । अवमण्णति (उवर १२०) ।

अवमह पुं [अवमर्द] मर्दन, विनाश (परह १, २) ।

अवमहग वि [अवमर्दक] मर्दन करने वाला (गाया १, १६) ।

अवमन्न सक [अव + मन्] अवज्ञा करना, निरादर करना । अवमन्नइ (महा) । वक्तु अवमन्नत (सूत्र १, ३, ४) संकृ. अवमन्निऊण (महा) ।

अवमन्निय } वि [अवमत्] अवज्ञात, अव-
अवमय } गणित (सुर १६, १२७, महा, उव) ।

अवमाण पु [अपमान] तिरस्कार (सुर १, २३५) ।

अवमाण पुत [अवमान] १ अवज्ञा, तिरस्कार । २ परिमाण (ठा ४, १) ।

अवमाण सक [अव + मानय्] अवगणना करना । अवमाणइ (मवि) ।

अवमाणण न [अवमानन] अनादर, अवज्ञा (परह १, ५, श्रौप) ।

अवमाणण न [अपमानन] तिरस्कार, अपमान (स १०) ।

चक्रवर्ती राजा, 'सुमिणे अरं महरिहं पासइ जणणी अरो तम्हा' (आव २, सम ५३, उत्त १८) । ३ समय का एक परिमाण, कालचक्र का बारहवाँ हिस्सा । (ती २१) ।

अर पु [अर] १ किरण । गा ३४३, से १, १७) । २ हस्त, हाथ (मे १, २८) । ३ शुल्क, चुगी (से १, २८) ।

अरइ स्त्री [अरति] अशं, मसा (आचा २, १३, १) ।

अरइ स्त्री [अरति] १ वेचैनी । (भग, आचा, उत्त २) । २ कम्म न [कर्मन्] अरति का हेतुभूत कर्मविशेष (ठा ६) । ३ परिसह, परीसह पु [परिपह, परोषह] अरति को महन करना (पच ८) । ४ मोहणिज्ज न [मोहनीय] अरति का उत्पादक कर्म-विशेष (कम्म १) । ५ रइ स्त्री [रति] सुख-दुःख (ठा १) ।

अरंग देखो तरंग (से २, २६) ।

अरजर पुन [अरजर] घडा, जल-घट (ठा ४, ४) ।

अरक्ख देखो वरक्ख (से ६, ४४) ।

अरक्खरी स्त्री [अराक्षरी] नगरी-विशेष (आक) ।

अरग देखो अर (परह २, ४, भग ३ ५) ।

अरज्झिय वि [अरहित] निरन्त, रमतत, 'अरज्झियमित्तावा' (सूअ १, ५, १) ।

अरडु पु [अरडु] वृक्ष-विशेष (उप १०३१ टी) ।

अरण न [अरण] हिंसा (उव) ।

अरणि पु [अरणि] १ वृक्ष-विशेष । २ इय वृक्ष की लकड़ी, जिसको घिसने पर अग्नि जल्दी पैदा होती है (आवम, णाया १, १८) ।

अरण पुत्री [दे] १ रास्ता, मार्ग । २ पक्ति, कतार । (पड्) ।

अरणिस्त्री [अरणिस्त्री] वनस्पर्ति-विशेष (आचा) ।

अरणेद्वय पु [दे अरणेद्वय] पत्थरो के टुकड़ों से मिली हुई सफेद मिट्टी (जी ३) ।

अरण्य वि [आरण्य] जंगल में रहने वाला (सूअ १, १, १, १६) ।

अरण्य न [अरण्य] वन, जंगल (दे १, ६६) । २ वडिसग न [वतंसक] देवविमान

विशेष (सम ३६) । ३ साण पु [अधन्] जंगली कुत्ता (कुमा) ।

अरण्य वि [आरण्यक] जंगली, जंगल-धामी (अभि ५२) ।

अरत्त वि [अरत्त] राग-रहित, नीराग (आचा) ।

अरत्त देखो अरण्य (कण, उव) ।

अरवाग पु [दे] एक अनार्य देश, अरव देश (पव २७४) ।

अरमत्तिया स्त्री [अरमन्तिका] अरमणता, कार्य में अतत्परता (उवा) ।

अरय देखो अर (खेत्त १०८) ।

अरय वि [अरजस्] १ रजोगुण-रहित (पउम ६, १४६) । २ एक महाग्रह का नाम (ठा २, ३) । ३ वि. धूलिरहित, निर्मल (कण) । ४ न पाचवें देव लोक का एक प्रतर (ठा ६) । ५ रजोगुण का अभाव, 'अरो य अरय पत्तो पत्तो गडमणुतर' (उत्त १८) ।

अरय वि [अरत] अनासक्त, नि स्पृह (आचा) ।

अरय पुन [अरजस्] एक देवविमान (देवेन्द्र १४१) ।

अरया स्त्री [अरजा] कुमुद नामक विजय की राजधानी (ज ४) ।

अरयगि पु [अरति] परिमाण विशेष, खुली अगुलीवाला हाथ (ठा ४, ४) ।

अरर न [अरर] १ युद्ध । २ ढकना । ३ कुरी स्त्री [कुरी] नगरी-विशेष (धम्म ६ टी) ।

अररि पुन [अररि] किवाड, द्वार (प्राभा) ।

अरल न [दे] १ चोरी, कीट-विशेष । २ मशक, मच्छर (दे १, ५३) ।

अरलया स्त्री [दे] चोरी, कीट-विशेष (दे १, २६) ।

अरलु देखो अरडु (पउम ४२, ८) ।

अरविंद न [अरविन्द] कमल, पद्म (परह २, ४) ।

अरविंदर वि [दे] दीर्घ, लम्बा (दे १, ४५) ।

अरस पु [अरस] रसरहित, नीरस (णाया १, ५) ।

अरस पु [अरस] व्याधि-विशेष, बवासीर (आ २२) ।

अरस न [अरस] तप-विशेष, निर्विकृति तप (संबोध ५८) ।

अरह वि [अर्हन्] १ पूजा के योग्य, पूज्य (पड्, हे २, १११) । २ पु जिनदेव, तीर्थंकर (सम्म ६७) । ३ मित्त पु [मित्त] एक व्यसारी का नाम (गच्छ २) ।

अरह देखो अरिह = अर्ह । अरहइ (प्राक २८) ।

अरह वि [अरहस्] १ प्रकट । २ जिससे कुछ भी न छिपा हो । ३ पु जिनदेव, सर्वज्ञ (ठा ४, १, ६) ।

अरह वि [अरथ] परिग्रहरहित (भग) ।

अरहत वक्क [अर्हत्] १ पूजा के योग्य, पूज्य (पड्, हे २, १११, भग ८, ५) । २ पु जिन भगवान्, तीर्थंकरदेव (आचा, ठा ३, ४) ।

अरहन वि [अरहोन्तर] १ सर्वज्ञ, सब कुछ जाननेवाला । २ पु. जिन भगवान् (भग २, १) ।

अरहत वि [अरथान्त] १ नि स्पृह, निर्मम । २ पु जिनदेव (भग) ।

अरहत वक्क [अरहयन्] १ अपने स्वभाव को नहीं छोड़नेवाला । २ पु जिनेश्वर देव (भग) ।

अरहट्ट पु [अरघट्ट] अरहट, रहट, पानी का चरखा, पानी निकालने का यन्त्र विशेष (गा ४६०, प्रासू ५५), 'ममिओ कालमणत्त अरहट्टडिण्व जलमज्जे' (जीवा १) ।

अरहट्टिय वि [अरघट्टिक] अरहट चलाने-वाला (कुप्र ५८) ।

अरहणा स्त्री [अर्हणा] १ पूजा । २ योग्यता (प्राक २८) ।

अरहण्य पु [अरहन्नक] एक व्यापारी का नाम (णाया १, ८) ।

अरहन्न पु [अर्हन्न] एक जैन मुनि का नाम (सुख २, ६) ।

अराइ पु [अराति] रिपु, दुश्मन (कुमा) ।

अराइ स्त्री [अरात्रि] दिन, दिवस (कुमा) ।

अरागि वि [अरागिन्] रागरहित, वीतराग (पउम ११७, ४१) ।

अरि देखो अरे (तंदु ५०, ५२ टी) ।

अरि पु [अरि] दुश्मन, रिपु (पउम ७३, १६) ।

अरि पु [अरि] दुश्मन, रिपु (पउम ७३, १६) ।

अरि पु [अरि] दुश्मन, रिपु (पउम ७३, १६) ।

अवर स [अपर] १ पिछला काल या देश (महा) । २ पिछले काल या देश में रहा हुआ, पाश्चात्य (मम १३, महा) । ३ पश्चिम दिशा में स्थित, 'अवरद्वारेण' (स ६४६) । 'कक्रा' स्त्री [°कक्रा] १ घातकी-खड के भरतक्षेत्र की एक राजधानी । २ इस नाम के 'जातवर्म-कथा' सूत्र का एक अध्ययन (शाया १, १६) । 'ण्ड' पु [°ह] १ दिन का अन्तिम प्रहर (ठा ४, २) । २ दिन का उत्तरी भाग (आचू १, गा २६६, प्रासू ५४) । 'दाहिण' पु [°दक्षिण] १ नैऋत्य कोण । २ वि नैऋत्य कोण में स्थित (पचा २) । 'दाहिणा' स्त्री [°दक्षिणा] पश्चिम और दक्षिण दिशा के बीच की दिशा, नैऋत कोण (वव ७) । 'फाणु' स्त्री [°पाणि] एडी, अड़ी का पिछला भाग (वव ८) । 'राय' पु [°रात्र] देखो अवरत्त = अपररात्र (आचा) । 'विदेह' पु [°विदेह] महाविदेह नामक वर्ष का पश्चिम भाग (ठा २, ३, पडि) । 'विदेहकूट' न [°विदेहकूट] पर्वत-विशेष का शिखर-विशेष (जं ४) । देखो अपर ।

अवर स [अवर] ऊपर देखो (महा, शाया १, १६, वव ७, पचा २) ।

अवरमुद् वि [अपराङ्मुख] १ समुख । २ तत्पर (पि २६६) ।

अवरच्छ देखो अपरच्छ (पण्ड १, ३) ।

अवरज्ज पु [°ज] १ गत दिन । २ आगामी दिन । ३ प्रमात, मुवह (दे १, ५६) ।

अवरज्ज् अक [अप + राज्] १ अपराध करना, गुनाह करना । २ नष्ट होना । अवरज्ज् (महा, उव) । वहु अवरज्ज्मंत (राज) ।

अवरत्त पु [अपरात्र, अवररात्र] रात्रि का पिछला भाग (भग, शाया १, १) ।

अवरत्त वि [अपरत्त] १ विरक्त, उदास (उप पृ ३०८) । २ नाराज, नापुष्ट (मुद्रा २६७) ।

अवरत्त अ } पु [दे] पश्चात्ताप, अनुताप (दे अवरत्ते अ } १, ४५, पात्र) ।

अवरदक्खिणा देखो अवर-दाहिणा (पव १०६) ।

अवरद्ध न [अपराद्ध] १ अपराध, गुनाह (सुर २, १२१) । २ वि. जिसने अपराध किया हो

वहु अपराधी, 'सगडे दारए ममं अतेउरंसि अवरद्धे' (विपा १, ४, म २८) । ३ विना-शित, नष्ट किया हुआ (शाया १, १) ।

अवरद्धि वि [अपराधिक] १ अपराधी, दोषी । २ पु लूता-स्फोट । ३ सर्पादि-दश (पिड १४) ।

अवरद्धिग } पुंस्त्री [अपराधिक] १ सर्व-
अवरद्धिय } दंश । २ कुनमो, छोटा फोडा (श्रोष ३४१, पिड) ।

अवरा स्त्री [अपरा] विदेहवर्ष की एक नगरी (ठा २, ३) ।

अवरा स्त्री [अपरा] पश्चिम दिशा (पव १०६) ।

अवराड्या देखो अपराड्या (पञ्च २५, १, ज ४, ठा २, ३) ।

अवराडस देखो अणगाडस (पड्, हे ४, ४१३) ।

अवराजिय देखो अपराड्य (इक) ।

अवराजिया देखो अपराड्या (इक) ।

अवराह पु [अपराध] १ अपराध, गुनाह (आव १) । २ अनिष्ट, बुराई, 'अवराहेमु गुणेमु य निमित्तमेत परो होई' (प्रासू १२२) ।

अवराह पु [दे] कटी, कमर (दे १, २८) ।

अवराहिय न [अपराधित] १ अपराध, गुनाह, 'जपड जणो महल्ल कस्सवि अवराहिय जाय' (पञ्च ६४, २५, म ३२०) । २ अप-कार, अनिष्ट, अहित, 'मिरि चडिआ खति प्फनई पुणु डालड मोउति । तोवि महद्धुम मज्झाह, अवराहिउ न करति' (हे ४, ४५) ।

अवराहिल वि [अपराधिन] अपराधी (प्राक ५०) ।

अवराहुत्त वि [अपराभिमुख] १ पराङ्मुख । २ पश्चिम दिशा की तरफ मुंह किया हुआ (आव ४) ।

अवरि } अ [उपरि] ऊपर (दे १, २६; प्राप्र) ।
अवरि } अ [उपरि] ऊपर (दे १, २६; प्राप्र) ।

अवरिक वि [दे] अवसररहित, अनवसर (दे १, २०) ।

अवरिगलिअ वि [अपरिगलित] पूर्ण, भरपूर (मे ११, ८८) ।

अवरिज्ज वि [दे] अद्वितीय, असाधारण (दे १, ३६, पड्) ।

अवरिल्ल वि [उपरि] उत्तरीय वस्त्र, चादर (हे २, १६६, कुमा, गजड, पात्र) ।

अवरिल्ल वि [अपरीय] पाश्चात्य, पश्चिम दिशा सवन्वी; 'तो ए तुम्हे अवरिल्ल वणसंड गच्छे-ज्जाह' (शाया १, ६) ।

अवरिहड्ढपुसण न [दे] १ अकीर्ति, अजस । २ असत्य, झूठ । ३ दान (दे १, ६०) ।

अवरंड मक [दे] आलिङ्गन करना । अवरंडइ (दे १११, सुर ३, १८२, भवि) । कमं, अव-हंडिजइ (दे १, ११) । संकृ अवहंडिज्जा (दे १, ११, स ४२१) ।

अवरंडण } न [दे] आलिङ्गन (भवि, पात्र,
अवरंडिअ } दे १, ११) ।

अवरुत्तर पु [अपरोत्तर] १ वायव्य कोण । २ वि. वायव्य कोण में स्थित (भग) ।

अवरुत्तरा स्त्री [अपरोत्तरा] वायव्य दिशा, पश्चिम और उत्तर के बीच की दिशा (वव ७) ।

अवरुद्ध वि [अवरुद्ध] घिरा हुआ (विअ २६७५) ।

अवरुप्पर देखो अवरोप्पर (कुमा, रंभा) ।

अवरुद्ध अक [अव + रुद्ध] नीचे उतरना । अवरुहेहि (मै १४) ।

अवरुव देखो अपुव (प्राक ८५) ।

अवरोप्पर } वि [परस्पर] आपस में (हे ४,
अवरोवर } ४०६, गजड, मुपा २०, सुर ३, ७६, पड्) ।

अवरोह पुं [अवरोध] १ अन्त पुर, जनान-खाना (सुपा ६३) । २ अन्त पुर में रहनेवाली स्त्री (विपा १, ४) । ३ नगर को मैन्य से घेरना (निचू ८) । ४ मक्षेप (विमे ३५५५) । ५ प्रतिवन्ध, 'कहं सञ्चत्यिक्तावरोहोति' (विसे १७२३) । 'जुवइ स्त्री [°युवति] अन्त पुर की स्त्री (पि ३८७) ।

अवरोह पु [अवरोह] उगनेवाला (तृण आदि) (गजड) ।

अवरोह पुं [दे] कटि, कमर (दे १, २८) ।

अवलव सक [अव + लम्ब] १ सहारा लेना, आश्रय लेना । २ लटकना । अवलंबइ (कस) । अवलंबइ (महा) । वहु अवलंब-माण (सम्म ५८) । कवक. अवलंबिज्जंत (पि ३६७) । संकृ. अवलंबिज्जण, अवल-विय (आव ५, आचा २, १, ६) । हेक.

अरुवि वि [अरुपिन्] ऊपर देखो (ठा ९, ३; आचा, पण १)।
 अरे अ [अरे] १-२ समापण और रति-कलह का सूचक अव्यय (हे २, २०१, पड्)।
 अरे अ [अरे] इन अर्थों का सूचक अव्यय—
 १ आक्षेप। २ विस्मय, आश्चर्य। ३ परिहास, ठट्ठा (ससि ३८, ४७)।
 अरोअ अक [उत् + लस्] उल्लास पाना, विकसित होना। अरोअइ (हे ४, २०२, कुमा)।
 अरोअअ पु [अरोचक] रोग-विशेष, अन्न की अरुचि (आ २२)।
 अरोइ वि [अरोचिन्] अरुचि वाला, रुचि-रहित, 'अरोइ अत्ये कहिए विलावो' (गोय ७)।
 अरोग वि [अरोग] रोगरहित (भग १८, १)। °या बी [°ता] आरोग्य, नीरोगता (उप ७२८ टी)।
 अरोगि वि [अरोगिन्] नीरोग, रोग-रहित। °या बी [°ता] आरोग्य, तदुल्लेखी (महा)।
 अरोगा देखो आरोय = आरोग्य (आचा २, आरोय १५, २)।
 आरोस वि [अरोप] १ गुस्मा-रहित। २-३ पुं. एक स्लेच्छ देश और उसमें रहनेवाली स्लेच्छ जाति (पण १, १)।
 अल न [अल] १ विच्छेद के पुच्छ का अग्र भाग, 'अलमेव विच्छुआणं, मुहमेव अहीण तह य मदस्स। दिट्ठि-वियं पिसुणाणं, सव्वं सव्वस्स भय-जणयं' (प्रासू १९)।
 २ अलादेवी का एक सिंहासन (गाया २)।
 ३ वि. समर्थ (आचा)। °पट्ट न [°पट्ट] विच्छेद की पूंछ जैसे आकारवाला एक शस्त्र (विपा १, ६)।
 °अल देखो तल (गा ७५, से १, ७८)।
 अल अ [अलम्] १ पर्याप्त, पूर्ण, 'अलमा-णदं जणतीए' (सुर १३, २१)। २ प्रतिषेध, निवारण, वस (उप २, ७)।
 अलं अ [अलम्] अलङ्कार, भूषा (सूअनि २०२)।

अलंकर सक [अलं + कृ] भूषित करना, विराजित करना। अलंकरंति (पि ५०६)।
 वक्त. अलकरंत (माल १४३)। संक्र. अल-करिअ (पि ५८१)। प्रयो, कर्म. अलंकरा-वीयउ (स ६४)।
 अलकरण न [अलङ्करण] १ आभूषण, अल-कार (रयण ७४, भवि)। २ वि शोभा-कारक, 'मज्झमलोअस्स अलकरणं सुलोअणि' (विक्र १४)।
 अलकरिय वि [अलंकृत] सुशोभित, विभूषित; 'किं नयरमलंकरिय जम्ममहेण तए महापुरिस।' (सुपा ५८४, सुर ४, ११८)।
 अलकार पु [अलङ्कार] १ शास्त्र-विशेष, साहित्यशास्त्र (सिरि ५५, सिक्खा २)। २ पुन. एक देवविमान (देवेन्द्र १३५)।
 अलंकार पु [अलंकार] १ भूषण, गहना (श्रीप, राय)। २ भूषा, शोभा (ठा ४, ४)। °सहा बी [°सभा] भूषा-गृह, शृङ्गार-घर (इक)।
 अलंकारिय पुं [अलंकारिक] नापित, नाई, हजाम (गाया १, १३)। °कम्म न [°कर्मन्] हजामत, क्षीर कर्म (गाया १, १३)। °सहा बी [°सभा] हजामत बनाने का स्थान (गाया १, १३)।
 अलकिय वि [अलंकृत] १ विभूषित, सुशो-भित (कप्प, महा)। २ न संगीत का एक गुण (जीव ३)।
 अलकुण देखो अलंकर। अलकुणति (रयण ५२)।
 अलय वि [अलङ्घ्य] १ उल्लंघन करने के अयोग्य (सुर १, ४१)। २ उल्लंघन करने के अशक्य (उप ५६७ टी)।
 अलंघणिय वि [अलङ्घनीय] ऊपर देखो अलंघणीय (महा, सुपा ६०१, पि ६६, नाट)।
 अलं पु [दे] कृक्कुट, मुर्गा (दे १, १३)।
 अलबुसा बी [अलम्बुषा] १ एक दिक्कुमारी देवी का नाम। (ठा ८)। २ गुल्म-विशेष। (पात्र)।
 अलभि बी [अलाभ] अप्राप्ति (श्रीप २३, भा)।
 अलका बी [अलका] नगरी-विशेष, पहले

प्रतिवासुदेव की राजधानी (पठम २०, २०१)। देखो अलया।
 अलक्ख पु [अलक्ष] १ इस नाम का एक राजा, जिसने भगवान् महावीर के पास दीक्षा लेकर मुक्ति पाई थी (अत १८)। २ न. 'अतगड्ढसा' सुत्र के एक अव्ययन का नाम। (अत १८)।
 अलक्ख वि [अलक्ष्य] लक्ष्य में न आ सके ऐसा (सुर ३, १३६, महा)।
 अलक्खमाण वि [अलक्ष्यमाण] जो पहि-चाना न जा सकता हो, गुप्त (उप ५६३ टी)।
 अलक्खिय वि [अलक्षित] १ अज्ञात, अपरिचित। (से १३, ४५)। २ न पहचाना हुआ। (सुर ४, १४०)।
 अलग देखो अलय = अलक (महा)।
 अलगा देखो अलया (अत १)।
 अलग्ग न [दे] कलंक देना, दोष का झूठा आरोप (दे १, ११)।
 अलचपुर न [अचलपुर] नगर-विशेष (कुमा)।
 अलज्ज वि [अलज्ज] निर्लज्ज, वेशराम (पण १, ३)।
 अलज्जिर वि [अलज्जालु] ऊपर देखो (गा ६०, ४४५, ६६१, महा)।
 अलट्टपल्लट्ट न [दे] पार्श्व का परिवर्तन (दे १, ४८)।
 अलत्त पु [अलक्त] आलता, बियाँ हाथ-पैर को लाल करने के लिए जो रंग लगाती हैं वह (अनु ५)।
 अलत्तय पु [अलक्तक] १ ऊपर देखो। (सुपा ४०६)। २ वि आलता से रंगा हुआ (अनु)।
 °अलधोय देखो कलधोय (से ६, ४६)।
 अलमजुल वि [दे] आलसी, सुस्त (दे १, ४६)।
 अलमथु वि [अलमस्तु] १ समर्थ। २ निषेधक, निवारक। (ठा ४, २)।
 अलमल पुं [दे] दुर्दान्त बैल (दे १, २५)।
 अलमलवसह पुं [दे] उन्मत्त बैल (दे १, २५)।
 अलय न [दे] विद्रुम, प्रवाल (दे १, १६, भवि)।

अवसरण न [अपशकुन] अनिष्ट-सूचक
निमित्त, खराब शकुन (श्रीघ ८१ भा, गा
२६१, सुपा ३६३)।
अवसकि वि [अपशङ्किन्] अपसरण-
कर्ता (सूत्र १, १२, ४)।
अवसक्क सक [अव + ष्वक्] पीछे हट
जाना। अवसक्केजा (आचा)।
अवसक्कण न [अवष्वक्कण] अपसरण, पीछे
हटना (पंचा १३)।
अवसक्कि वि [अवष्वक्किन्] पीछे हटने
वाला (आचा)।
अवसण्ण वि [दे] भरा हुआ, टाका हुआ
(षड्)।
अवसण्ण वि [अवसन्न] निमग्न, 'नागो
जहा पकजलावसरणो' (उत्त १३, ३०)।
अवसद् पु [अपशब्द] १ अशुद्ध शब्द
(सुर १६, २४८)। २ खराब वचन (हे १,
१७२)। ३ अपकीर्ति, अपयश (कुमा)।
अवसप्प अक [अव + सप्] पीछे हटना।
२ निवृत्त होना। ३ उतरना। अवसप्पति
(पि १७३)।
अवसप्पण न [अपसर्पण] अपसरण, अप-
वर्तन (पठम ५६, ७८)।
अवसप्पि वि [अपसर्पिन्] १ पीछे हटने-
वाला। २ निवृत्त होनेवाला (सूत्र १, २,
२)।
अवसप्पिय वि [अपसर्पित] १ अपसृत।
२ निवृत्त। ३ अवतीर्ण (भवि)।
अवसप्पिणी देखो ओसप्पिणी (भग ३, २,
भवि)।
अवसमिआ (दे) देखो अवसमी (दे १
३७)।
अवसय वि [अपशद] नीच, अधम (ठा ४,
४)।
अवसर अक [अप+सृ] १ पीछे हटना।
२ निवृत्त होना। अवसरइ (हे १, १७२)।
क अवसरियव्व (उप १४६ टी)।
अवसर सक [अव + सृ] आश्रय करना।
सक ओसरणम् अवसरित्ता' (चउ १८)।
अवसर पु [अवसर] १ काल, समय
(पाप्र)। २ प्रस्ताव, मौका (प्रासू ५७,
महा)।

अवसरण देखो ओसरण (पव ६२)।
अवसरण न [अपसरण] १ पीछे हटना।
२ निवृत्ति (गउड)।
अवसरिय वि [आवसरिक] सामयिक, सम-
योपयुक्त (सण)।
अवसरीर पु [अपशरीर] रोग, व्याधि,
'सम्भावसरीरहिओ' (उप ५६७ टी)।
अवसवस वि [अपस्ववश] पराधीन, पर-
तन्त्र (गाया १, १६)।
अवसव्व न [अपसव्व] वाम पार्श्व (एदि
१५९)।
अवसव्वय न [अपसव्वयक] शरीर का
दहिना भाग (उप पृ २०८)।
अवसह पु [आवसथ] घर, मकान (उत्त
३२)।
अवसह न [दे] १ उत्सव। २ नियम (दे
१, ५८)।
अवसाइअ वि [अप्रसादित] प्रसन्न नहीं
किया हुआ (से १०, ६३)।
अवसाण न [अवसान] १ नारा। २ अन्त
भाग (गउड, पि ३६६)।
अवसाय पु [अवश्याय] हिम, वर्ष (गउड)।
अवसारिअ वि [अप्रसारित] न फैला हुआ,
अविस्तारित (से, १)।
अवसारिअ वि [अपसारित] १ आकृष्ट,
खींचा हुआ (से १, १)। २ दूर किया हुआ,
हटाया हुआ (सुपा २२२)।
अवसावण न [अवस्त्रावण] १ काँजी (बृह
१)। २ भात वगैरह का पानी (सूक्त
८६)।
अवसावणिआ ली [अवस्त्रापनिका]
सुलानेवाली विद्या (धर्मवि १२४)।
अवसिअ वि [अपसृत] पीछे हटा हुआ
(से १३, ६३)।
अवसिअ वि [अवसित] १ समाप्त, परि-
पूर्ण। २ ज्ञात, जाना हुआ (विसे २४८२)।
अवसिज्ज अक [अव + सद्] हारना,
पराजित होना, 'एक्कोवि नावसिज्ज' (विसे
२४८४)।
अवसित्त वि [अवसित्त] सींचा हुआ (रभा
३१)।

अवसिद (श्री) वि [अवसित] समाप्त, पूर्ण
(अभि १३३, प्रति १०६)।
अवसिद्धं पु [अपसिद्धान्त] दूषित सिद्धांत
(विसे २४५७, ६)।
अवसीय अक [अव + सद्] क्लेश पाना,
खिल होना। वक्र. अवसीर्यत (पठम ३३,
१३१)।
अवसुअ अक [उद् + वा] सूखना, शुष्क
होना। अवसुअइ (पड्)।
अवसेअ पु [अवसेक] सिंचन, छिड़काव
(अभि २१०)।
अवसेअ वि [अवसेय] जानने योग्य (विसे
२६७१)।
अवसें (अप) देखो अवस (हे ४, ४२७)।
अवसेण देवो अवसं; 'अवमेण भुजियव्वा
(पठम १०२, २०१)।
अवसेस पु [अवसेप] १ अवगिट, बाकी
(सुपा ७७)। २ वि. सब, सर्व (उप २११
टी)।
अवसेसिय वि [अवसेपित] १ समाप्त
किया हुआ, पार पहुंचाया हुआ (से ४,
४७)। २ बाकी का, अवशिष्ट (भग)।
अवसेह सक [गम्] जाना। अवसेहइ (हे
४, १६२)। अवसेहति (कुमा)।
अवसेह अक [नश्] भागना, पलायन
करना। अवसेहइ (हे ४, १७८, कुमा)।
अवसोइया ली [अवस्त्रापिका] निद्रा (सुपा
६०६)।
अवसोग वि [अपशोक] १ शोक-रहित।
२ देव-विशेष (दीव)।
अवसोग वि [अपशोग] थोड़ा लाल
(गउड)।
अवसोवणी ली [अवस्त्रापनी] निद्रा (सुपा
४७)।
अवस्स वि [अवश्य] जरूरी, नियत (आवम,
आव ४)। °कम्म न [°कर्मन्] आवश्यक
क्रिया (आचू १)। °करणिज्ज वि [°करणीय]
अवश्य करने लायक कर्म, सामयिक आदि।
°किरिया ली [°क्रिया] आवश्यक अनुष्ठान
(आचू १)। °किञ्च वि [°कृत्य] आवश्यक
कार्य (दे)।

सुरि का उपाध्याय अवस्था का नाम (सुर १६, २३६)।

अल्लल्ल पु [८] मयूर, मोर (दे १, १३)।
अल्लविय [अप] देखो आलत्त = आलपित (भवि)।

अल्ला की [दे] माता, माँ (दे १, ५)।

अल्लि } देखो अल्ली। अल्लिइ (पड्)।
अल्लिअ } अल्लिमइ (दे १, ५८, हे ४, ५४)।
वक्क अल्लिअत (से १२, ७१, पउम १२, ५१)।

अल्लिअ सक [उप + सृप्] समीप में जाना। अल्लिमइ (हे ४, १३६)। वक्क अल्लिअत (कुमा)। प्रयो अल्लियावेइ (पि ४८२, ५०१)।

अल्लिअ वि [आर्द्रित] गीला किया हुआ (गा ४४०)।

अल्लियावण न [आलायन] आलीन करना, छिट्ट करना, मिलान (भग ८, ६)।

अल्लिल्ल पु [दे] भमरा (पड्)।

अल्लिव सक [अर्पय्] अर्पण करना। अल्लिवइ (हे ४, ३६, भवि, पि १६६, ४८५)।

अल्ली } सक [आ + ली] १ आना। २
अल्लीअ } प्रवेश करना। ३ जोड़ना। ४
आश्रय करना। ५ आलिङ्गन करना। ६ अक.
सगत होना। अल्लीअइ (हे ४, ५४)। भूका.
अल्लीसी (प्रामा) हेक्क अल्लीउं (वृह ६)।

अल्लीण वि [आलीन] १ आच्छिष्ट। २
आगत। ३ प्रविष्ट। ४ सगत। ५ योजित।
६ थोड़ा लीन (हे ४, ५४)। ७ आश्रित
(कप्प)। ८ तल्लीन, तत्पर (वव १०)।

अल्लेस वि [अलेश्य] लेश्यारहित (कम्म ४, ५०)।

अल्लोग देखो अलोग (द्रव्य १६)।

अल्लाद पुं [आह्लाद] खुशी, प्रमोद, आनन्द (प्राप्त)।

अव अ [अप] इन अर्थों का सूचक अव्यय—
१ विपरीतता, उल्टापन, 'अवकय, अवयुय'।
२ वापसी, पीछेपन, 'अवक्कमइ'। ३ बुरापन,
खराबपन, 'अवमग्ग, अवसइ'। ४ न्यूनता,
कमी, 'अवड्ढ'। ५ रहितपन, वियोग; 'अव-
नाण'। ६ बाहरपन, 'अवक्कमण'।

अव अ [अव] निम्नलिखित अर्थों का सूचक
अव्यय—१ निम्नता, 'अवइरण'। २ पीछेपन,
'अवचुल्ली'। ३ तिरस्कार, अनादर, 'अव-
गणत'। ४ खराबी, बुराई, 'अवयुण'। ५
गमन। ६ अनुभव (राज)। ७ हानि, ह्रास,
'अवक्कास'। ८ अभाव, 'अवलद्धि'। ९ मर्यादा
(विमे ८२)। १० निरर्थक भी इसका प्रयोग
होता है, 'अवपुट्ट, अवगल्ल'।

अव सक [अव्] १ रक्षण करना, 'अवतु
मुण्णिणो य पयकमल' (रयण ६)। २ जाना,
गमन करना। ३ इच्छा करना। ४ जानना।
५ प्रवेश करना। ६ सुनना। ७ माँगना,
याचना। ८ करना, बनाना। ९ चाहना। १०
प्राप्त करना। ११ आलिङ्गन। १२ मारना,
हिंसा करना। १३ जलाना। १४ अक. प्रीति
करना। १५ तुम होना। १६ प्रकाशना।
१७ बढ़ना। अव (आ २३, विसे २०२०)।

अव पुं [अव] शब्द, आवाज (आ २३)।

अवअक्ख सक [दृश्] देखना। अवअक्खइ
(हे ४, १८१, कुमा)।

अवअक्खिअ न [दे] निवापित मुख, मुँहाया
हुआ मुँह (दे १, ४०)।

अवअच्छ न [दे] कक्षा-वक्त्र (दे १, २६)।

अवअच्छ अक [ह्लाद्] आनन्द पाना, खुश
होना। अवअच्छइ (हे ४, १२२)।

अवअच्छ सक [ह्लादय्] खुश करना।
अवअच्छइ (हे ४, १२२)।

अवअच्छिअ [दे] देखो अवअक्खिअ (दे
१, ४०)।

अवअच्छिअ वि [ह्लादित] १ हृष्ट,
आह्लाद प्राप्त। २ खुश किया हुआ, हर्षित
(कुमा)।

अवअज्झ सक [दृश्] देखना। अवअज्झइ
(पड्)।

अवअणिअ वि [दे] असंघटित, असयुक्त (दे
१, ४३)।

अवअण्ण पु [दे] ऊखल, भूगल (दे १, २६)।

अवअत्त वि [अपवृत्त] स्वलित (से १०,
१८)।

अवआस सक [दृश्] देखना। अवआसइ
(हे ४, १८१, कुमा)।

अवइ वि [अव्रतिन्] व्रतशून्य, अविरत,
असंयत (वृह १)।

अवइण्ण वि [अवतीणे] १ उतरा हुआ, नीचे
आया हुआ। २ जन्मा हुआ (कप्प, पउम ७६,
२८)।

अवइद (शौ) वि [अवचित्] एकत्रित, इकट्ठा
किया हुआ (अभि ११७)।

अवइद (शौ) वि [अपकृत] १ जिसका अहित
किया गया हो वह। २ न अपकार, अहित
(चार ४०)।

अवइन्न देखो अवइण्ण (सुर ३, १२२)।

अवउज्ज सक [अवकुब्ज] नीचे तमना।
संक्क अवउज्जिय (आचा २, १, ७)।

अवउज्झ सक [अप + उज्झ्] परित्याग
करना। छोड़ देना। संक्क. अवउज्झिअण
(वृह ३)।

अवउज्झं देखो अववह।

अवउडग } देखो अवओडग (गाया १, २,
अवउडय } अनु)।

अवउठण न [अवगुण्ठन] १ ढकना। २
मुँह ढकने का वक्त्र, घूँघट (चार ७०)।

अवऊढ वि [अवगूढ] आलिङ्गित, 'सभावहू-
अवऊढो राववारिहोव्व विज्जुलापडिभिन्नो'
(हे २, ६, स ४६६)।

अवऊसण न [अपवसन] तपश्चर्या-विशेष
(पचा १६)।

अवऊसण न [अपजोषण] ऊपर देखो (पचा
१६)।

अवऊहण न [अवगूहन] आलिङ्गन (गा
३३४, ५५९, वजा ७४)।

अवएड पुं [अवएज] तापिका-हस्त पात्र-
विशेष (गाया १, १ टी—पत्र ४३)।

अवएस पुं [अपदेश] बहाना, छल (पात्र)।

अवओडग न [अवओटक] गले को मरोड़ना,
कृकाटिका को नीचे ले जाना (विपा १, २)।

बंधण न [बन्धन] १ हाथ और सिर को
गुष्ठ भाग से बांधना (पणह १, २)। २ वि.
रस्ती से गला और हाथ को मोड़कर गुष्ठ भाग
के साथ जिसको बाधा जाय वह (विपा १,
२)।

अवंग पुं [अपाङ्ग] नेत्र का प्रान्त भाग (सुट
३, १२४, ११, ६१)।

सुपा ४२३) । °मण वि [°मनस्] तल्लीन, एकाग्र-चित्त (सुपा ६) ।
 अवहिय वि [रचित] निर्मित, बनाया हुआ (कुमा) ।
 अवहीण वि [अवहीन] हीन, उतरता, कम दरजा वाला (नाट, पि १२०) ।
 अवहीय वि [अपधीक] निम्न बुद्धिवाला, दुर्बुद्धि (पणह १, २) ।
 अवहीर सक [अव + धीरय्] अवज्ञा करना, तिरस्कार करना । अवहीरेइ (महा) । वक्तु अवहीरंत (सुपा ३१२) । कवक्तु अवहीरिज्जत (सुपा ३७६) । सक अवहीरिऊण (महा) ।
 अवहीरण न [अवधीरण] अवहेलना, तिरस्कार (गा १४६, अमि ६८, गडड) ।
 अवहीरणा ली [अवधीरणा] ऊपर देखो (से १३, १६, वेणी १८) ।
 अवहीरमाण देखो अवहर = अप + ह ।
 अवहीरिअ वि [अवधीरित] अवज्ञात, तिरस्कृत (से ११, ७, गडड) ।
 अवहील देखो अवहीर । अवहीलह (सण) ।
 अवहीला ली [अवहेला] अनादर (सिरि १७६) ।
 अवहूय वि [अवधूत] मार भगाया हुआ (संबोध ५२) ।
 अवहेअ वि [दे] दया-योग्य, कृपा-पात्र (दे १, २२) ।
 अवहेड सक [मुच्] छोड़ना, त्याग करना । अवहेडइ (हे ४, ६१) । सक अवहेडिउ (कुमा) ।
 अवहेडग } पुन [अवहेटक] आगे सिर का
 अवहेडय } दर्द, आघा सीसी रोग (उत्तनि ३) ।
 अवहेडिय वि [दे] नीचे की तरफ मोड़ा हुआ, अवमोहित (उत्त १२) ।
 अवहेरि } ली [अवहेला] अवगणना, तिर-
 अवहेरी } स्कार (उप २६०, ५६७ टी, भवि, सुपा २६१, महा) ।
 अवहेलअ वि [अवहेलक] तिरस्कारक (सुपा १०६) ।
 अवहेलण वि [अवहेलन] उपेक्षा करने वाला (सुम २, ६, ३३) ।
 अवहोअ पुं [दे] विरह, वियोग (पड्) ।

अवहोडय देखो अवओडग, 'सो वडो अवहोड-एण' (सुख २, २५) ।
 अवहोमुह वि [उभयमुख] दोनो तरफ मुह वाला (प्राक् ३०) ।
 अवहोल अक [अव + होलय्] १ झूलना । २ सदेह करना । वक्तु अवहोलन्त (णाय १, ८) ।
 अवाइ वि [अपायिन्] १ दु ली । २ दोषी, अपराधी, 'निग्भिच्चसच्चवाई होइ अवाई य नेह-लोएवि' (सुपा २७५) ।
 अवाईण वि [अवाचीन] अधोमुख (णाय १, १) ।
 अवाईण वि [अवातीन] वायु से अनुपहत (णाय १, १) ।
 अवाउड वि [अ-व्यापृत] किसी कार्य में न लगा हुआ (उप पृ ३०२) ।
 अवाउड वि [अप्रावृत] अनाच्छादित, नम्र, दिगम्बर (णाय १, १, ठा ५, १) ।
 अवाडिअ वि [दे] वञ्चित, प्रतारित (पड्) ।
 अवाण देखो अपाण (पाम्र, विपा १, ६) ।
 अवाय पु [अपाय] पानी का आगमन (आ २३) ।
 अवाय वि [अपाय] भाग्यरहित (आ २३) ।
 अवाय वि [अपाग] वृक्षरहित (आ २३) ।
 अवाय वि [अपाक] पापरहित (आ २३) ।
 अवाय पु [अवाय] प्राप्ति (आ २३) ।
 अवाय पु [अपाय] १ अनर्थ, अनिष्ट (ठा १) । २ दोष, दूषण (सुर ४, १२०) । ३ उदाहरण-विशेष (ठा ४, ३) । ४ विनाश (धर्म १) । ५ वियोग, पार्थक्य (णदि) । ६ संशय-रहित निश्चयात्मक ज्ञान-विशेष (ठा ४, ४, एदि) ।
 °दसि वि [°दर्शिन] भावी अनर्थों को जाननेवाला (ठा ८, द्र ४६) । °विजय न [°विचय, °विजय] ध्यान-विशेष (ठा ४, २) ।
 अवाय पुं [अवाय] सशय रहित निश्चयात्मक ज्ञान-विशेष, मति ज्ञान का एक भेद (ठा ४, ४, एदि) ।
 अवाय वि [अम्लान] अम्लान, म्लानरहित, ताजा, 'अवायमम्लान्दिवा' (स ३७२) ।
 अवायाण न [अपादान] कारक-विशेष, स्थानान्तरीकरण (ठा ८, विसे २०६६) ।

अवार वि [अपार] पार-रहित, अनन्त (मै ६८) ।
 अवार पुं [दे] दूकान, हाट (दे १, १२) ।
 अवारी ली [दे] ऊपर देखो (दे १, १२) ।
 अवालुआ ली [दे] होठ का प्रान्त भाग (दे १, २८) ।
 अवाव पु [अवाप] रसोई, पाक । °कहा ली [°कथा] रसोई-सम्बन्धी कथा (ठा ४, २) ।
 अवाम् } (अप) देखो अवसें (पड्) ।
 अवाम्से }
 अवाह पु [अवाह] देश-विशेष (इक) ।
 अवाहा देखो अवाहा (प्राप) ।
 अवि अ [अपि] निम्नलिखित अर्थों का सूचक अव्यय—१ प्रश्न (से ५, ४) । २ अवधारण, निश्चय (आचा, गा ५०२) । ३ समुच्चय (विसे ३५५१, भग १, ७) । ४ समावना (विसे ३५४८, उत्त ३) । ५ विलाप (पाम्र) । ६-७ वाक्य के उपन्यास और पादपूर्ति में भी इसका प्रयोग होता है (आचा, पठम ८, १४६, पड्) ।
 अवि पुं [अवि] १ अज । २ भेष (विसे १७७४) ।
 अविअ वि [दे] उक्त, कथित (दे १, १०) ।
 अविअ वि [अवित] रक्षित (दे ५, ३५) ।
 अविअ अ [अपिच] विशेषण-सूचक अव्यय (पंचा ७, २१) ।
 अविअ अ [अपिच] समुच्चय-प्रोक्तक अव्यय (सुर २, २४६, भग ३, २) ।
 अविअ पु [अविक] भेष, भेद (आचा) ।
 अविअ वि [अवित्] अज्ञ, मूर्ख (सट्ठि ४६) ।
 अविउक्तिय वि [अव्युत्क्रान्तिक] उत्पत्ति-रहित (भग) ।
 अविउसरण न [अव्युत्सर्जन] अपरित्याग, पास में रखना (भग) ।
 अविकप वि [अविकम्प] निश्चल (पचा १८, ३५) ।
 अविकरण न [अविकरण] गृहीत वस्तुओं को यथास्थान न रखना (बृह ३) ।
 अविकख देखो अवेकख । अविकखइ (महा) ।
 हेक्क अविकखउं (स ३०७) । क अविकखणिज्ज (विसे १७१६) ।
 अविकख वि [अपेक्षक] अपेक्षा करने वाला (विसे १७१६) ।

अवग पुन [दे अवक] जल मे होने वाली वनस्पति-विशेष (सूत्र २, ३, १८)।
 अवगइ स्त्री [अपगति] १ खराब गति। २ गोपनीय स्थान (मुपा ३४५)।
 अवगड न [अवगण्ड] १ सुवर्ण। २ पानी का फेन (सूत्र १, ६)।
 अवगतव्व देखो अवगम = अवगम्।
 अवगच्छ सक [अव + गम्] जानना। अवगच्छइ (महा)। अवगच्छे (स १५२)।
 अवगच्छ अक [अप + गम्] दूर होना, निकल जाना। अवगच्छइ (महा)।
 अवगण } सक [अव + गणय्] अनादर
 अवगणण } करना, तिरस्कारना। वक्क अव-
 गणत (आ २७)। सक अवगणिय
 (आरा १०५)।
 अवगणणा स्त्री [अवगणना] अवज्ञा, अनादर
 (दे १, २७)।
 अवगणिय } वि [अवगणित] अवज्ञात,
 अवगणिय } तिरस्कृत (दे, जीव १)।
 अवगद वि [दे] विस्तीर्ण, विशाल (दे १, ३०)।
 अवगन्न देखो अवगण। अवगन्नड (भवि)।
 सक अवगन्निवि (भवि)।
 अवगन्नि देखो अवगणिय (मुपा ४२१, भवि)।
 अवगम पु [अपगम] १ अपसरण (मुपा ३०२)। २ विनाश (स १५३, विसे ११८२)।
 अवगम सक [अव + गम्] १ जानना। २ निर्णय करना। सक. अवगमित्तु (सार्ध ६३)। क अवगतव्व (स ५२६)।
 अवगम पु [अवगम] १ ज्ञान। २ निर्णय, निश्चय (विसे १८०)।
 अवगमण न [अवगमन] ऊपर देखो (स ६७०, विसे १८६, ४०१)।
 अवगमिअ } वि [अवगत] १ ज्ञात, विदित
 अवगय } (मुपा २१८)। २ निश्चित, अव-
 धारित (दे ३, २३, स १४०)।
 अवगय वि [अपगत] गुजरा हुआ, विनष्ट
 (राया १, १, दस १०, १६)।
 अवगर सक [अप + कृ] अपकार करना, ग्रहित करना। अवगरेइ (स ६३६)।

अवगरिस देखो अवकरिस विसे (१५८३)।
 अवगल वि [दे] आक्रान्त (पड्)।
 अवगल वि [अवगलान] वीमार (ठा २, ४)।
 अवगहण न [अवग्रहण] निश्चय, अवधारण
 (पव २७३)।
 अवगाढ देखो ओगाढ (ठा १, भग, स १७२)।
 अवगाढु वि [अवगाहित] अवगाहन करने
 वाला (विसे २८२२)।
 अवगार पुं [अपकार] अपकार, ग्रहित-करण
 (सुर २, ४३)।
 अवगारय वि [अपकारक] अपकार-कारक
 (स ६६०)।
 अवगारि वि [अपकारिन्] ऊपर देखो (स ६६०)।
 अवगास पु [अवकाश] १ फुरसत (महा)।
 २ जगह, स्थान (आवम)। ३ अवस्थान, अव-
 स्थिति (ठा ४, ३)।
 अवगाह सक [अव + गाह्] अवगाहन
 करना। अवगाहइ (सण)।
 अवगाह पु [अवगाह] १ अवगाहन। २
 अवकाश (उत्त २८)।
 अवगाहण न [अवगाहन] अवगाहन, 'नित्या-
 वगाहणस्य आगतव्व तए तत्थ' (मुपा ५६३)।
 अवगाहणा देखो ओगाहणा (ठा ४, ३, विसे २०८८)।
 अवगिचण न [दे अववेचन] वृथकरण (उप
 पृ ६६)।
 अवगिज्झ देखो ओगिज्झ। सक अव-
 गिज्झिय (कप्प)।
 अवगीय वि [अवगीत] निन्दित (उप पृ १८१)।
 अवगुठण देखो अवउठण (दे १, ६)।
 अवगुठिय वि [अवगुण्ठित] आच्छादित
 (महा)।
 अवगुण पुं [अवगुण] दुष्ण, दोष (दे ४, ३६५)।
 अवगुण सक [अव + गुणय्] खोलना,
 उद्घाटन करना। अवगुणेजा (आवा २, २,
 २, ४)। अवगुणति (भग १५)।
 अवगूढ वि [अवगूढ] १ आलिङ्गित (दे २, १६८)। २ व्याप्त (राया १, ८)।
 अवगूढ न [दे] व्यलीक, अपराध (दे १, २०)।

अवगूहण न [अवगूहन] आलिङ्गन (सुर १४, २२०, पठम ७४, २४)।
 अवगूहाविय वि [अवगूहित] आश्लेषित
 (स ६६६)।
 अवग्ग वि [अव्यक्त] १ अस्पष्ट। २ पु.
 अग्रीतार्थ, शास्त्रानभिज्ञ माधु (उप ८७४)।
 अवग्गह देखो उग्गह (पव ३०)।
 अवग्गहण न [अवग्रहण] देखो उग्गह (विसे १८०)।
 अवच देखो अवय = अवच (भग)।
 अवचइय वि [अपचयिक] अपकर्षप्राप्त,
 हासवाला (आवा)।
 अवचय पु [अपचय] हास, अपकर्ष (भग ११, ११, स २८२)।
 अवचय पु [अवचय] इकट्ठा करना (कुमा)।
 अवचयण न [अवचयन] ऊपर देखो (दे ३, ५६)।
 अवचि अक [अप + चि] हीन होना, कम
 जाना। अवचिजइ (भग)। अवचिज्जति (भग २५, २)।
 अवचि } सक [अव + चि] इकट्ठा करना
 अवचिण } (फूल आदि को वृक्ष से तोड़
 कर)। अवचिणइ (नाट)। भवि अवचिणित्त
 (पि ५३१)। हेक्क अवचिणेदु (शौ) (पि ५०२)।
 अवचिय वि [अवचित] हीन, हासप्राप्त
 (विसे ८६७)।
 अवचिय वि [अपचित] इकट्ठा किया हुआ
 (पात्र)।
 अवचुणिय वि [अवचूर्णित] तोड़ा हुआ,
 चूर-चूर किया हुआ (महा)।
 अवचुल्ल पु [अवचुल्ल] चूल्हे का पीछला भाग
 (पिडभा ३४)।
 अवचूल देखो ओऊल (राया १, १६, पव २१६)।
 अवच्च वि [अवाच्य] १ बोलने के अयोग्य।
 २ बोलने के अशक्य (धर्मस ६६८)।
 अवच्च न [अपत्य] सतान, बचा (कप्प, आवा १, प्रासु ८३)। व वि [वत्] सतान-
 वाला (मुपा १०६)।
 अवच्चिज्ज देखो अवच्चिय (सूत्रनि २०५)।

अविहड पु [दे] वालक, बच्चा (बृह १) ।
 अविहव वि [अविभव] दरिद्र (गउड) ।
 अविहवा स्त्री [अविधवा] जिसका पति
 जीवित हो वह स्त्री, सधवा (गाया १, १) ।
 अविहा देखो अविदा (अभि २२४) ।
 अविहाड वि [अविघाट] अविघट (वव ७) ।
 अविहाविअ वि [दे] १ दीन, गरीब । २ न.
 मौन (दे १, ५६) ।
 अविहाविअ वि [अविभावित] अनालोचित
 (गउड) ।
 अविहि देखो अविधि (दस १) ।
 अविहिअ वि [दे] मत्त, उन्मत्त (पड्) ।
 अविहित वक्र [अविघ्नन्] नहीं मारता
 हुआ, हिंसा नहीं करता हुआ,
 'वज्रेमिति परिणमो, सपत्तीए विमुचई वेरा ।
 अविहितोवि न मुचइ, किलिट्भावोत्ति वा तस्स'
 (मोघ ६०) ।
 अविहिंस वि [अविहिंस] अहिंसक (आचा) ।
 अविहिंसा स्त्री [अविहिंसा] अहिंसा (सूत्र
 १, २, १) ।
 अविहीर वि [अप्रतीक्ष] प्रतीक्षा नहीं करने
 वाला (कुमा) ।
 अविहेडय वि [अविहेटक] आदर करनेवाला
 (दस १०, १०) ।
 अवी देखो अवि (उत्त २०, ३८) ।
 अवीइय अ [अविचिच्य] अलग न हो कर
 (भग १०, २) ।
 अवीइय [अविचिन्त्य] विचार न कर (भग
 १०, २) ।
 अवीय वि [अद्वितीय] १ असाधारण, अनुपम
 (कुमा) । २ एकाकी, असाहाय (विपा १, २) ।
 अवुक्क सक [वि + क्लृपय्] विज्ञप्ति करना,
 प्रार्थना करना । अवुक्कइ (हिं ४, ३८) । वक्र,
 अवुक्कंत (कुमा) ।
 अवुड्ड वि [अवृद्ध] तल्लण, जवान (कुमा) ।
 अवुगगह देखो अविगगह (ठा ५, १) ।
 अवुह देखो अवुह (सण) ।
 अवुह देखो अवोह (गाया १, १) ।
 अवे सक [अव + इ] जानना । अवेसि (विसे
 १७७३) ।
 अवे अक [अप + इ] दूर होना, हटना । अवेइ
 (स २०) । अवेह (मुद्रा १६१) ।

अवेक्ख सक [अप + ईक्ष्] अपेक्षा करना ।
 अवेक्खइ (महा) ।
 अवेक्ख सक [अव + ईक्ष्] अवलोकन करना ।
 अवेक्खाहि (स ३१७) सक्र अवेक्खऊण
 (स ५२७) ।
 अवेक्खा स्त्री [अपेक्षा] अपेक्षा, परवाह (सुर
 ३, ८४, स ५६२) ।
 अवेक्खि वि [अपेक्षिन्] अपेक्षा करनेवाला
 (गउड) ।
 अवेक्खिय वि [अपेक्षित] जिसकी अपेक्षा
 हुई हो वह (अभि २१६) ।
 अवेक्खिय वि [अवेक्षित] अवलोकित
 (अभि १६६) ।
 अवेय वि [अपेत] रहित, वजित (विसे
 २२१३) । रुइ वि [रुचि] रुचि-रहित,
 निरीह (उप ७२८ टी) ।
 अवेय } वि [अवेद, °क] १ पुरुष-वेदादि
 अवेयग } वेद से रहित (परण १) । २ मुक्त,
 मोक्ष-प्राप्त (ठा २, १) ।
 अवेसि देखो अवेसि (दे १, ८, पाग) ।
 अवेह देखो अवेक्ख = अव + ईक्ष् । अवेहइ
 (सूत्र ६) ।
 अवोअड वि [अव्याकृत] अव्यक्त, अस्पष्ट
 (भास ७६) ।
 अवोच्छिण्ण देखो अवोच्छिण्ण (आचा) ।
 अवोच्छित्ति देखो अवोच्छित्ति (ठा ५,
 ३) ।
 अवोह सक [अप + ऊह्] १ विचार करना ।
 २ निर्णय करना । अवोहए (आवम) ।
 अवोह पु [अपोह] १ विकल्पज्ञान, तर्क-
 विशेष । २ त्याग, वर्जन (उप ६६७) । ३
 निर्णय, निश्चय (एदि) ।
 अव्वईभाव पु [अव्ययीभाव] व्याकरण-
 प्रसिद्ध एक समास (अणु) ।
 अव्वग वि [अव्यङ्ग] अक्षत, अखण्ड (वव
 ७) ।
 अव्वग न [अव्यङ्ग] १ पूर्ण अंग, पूरा
 शरीर । २ वि. अविक्ल, अन्वून, सपूर्ण, 'परि-
 हियअव्वगघोयसियवसरण' (धर्मवि १७,
 १५) ।
 अव्वक्खित्त वि [अव्याक्षिप्त] १ विक्षेप-
 रहित । २ तल्लीन, एकाग्र (उत्त २०) ।

अव्वग वि [अव्यग्र] व्यग्रताशून्य, अनाकुल
 (उत्त १५) ।
 अव्वत्त } वि [अव्यक्त] १ अस्पष्ट, अस्पष्ट
 अव्वत्तय } उप ७६८ टी, सुर ४, २१४, आ
 २७) । २ छोटी उमर का बालक, बच्चा
 (निचु १८) । ३ अमीतार्थ, शास्त्र-रहस्यान-
 भित्त (साधु) (धर्म २, आचा) । ४ पु.
 अव्यक्त मत का प्रवर्तक एक जैनाभास मुनि
 (ठा ७) । ५ न साख्य मत में प्रसिद्ध प्रकृति
 (आवम) । °मय न [°मत] एक जैनाभास
 मत (विसे) ।
 अव्वत्तव्य वि [अव्यक्तव्य] १ अवचनीय ।
 २ पु कर्मवन्व विशेष, नव जीव सर्वथा कर्म-
 वन्वरहित होकर फिर जो कर्मवन्व करे वह
 (पव ५, १२) ।
 अव्वत्तिय देखो अवत्तिय (प्रोप, विसे-
 आवम) ।
 अव्वभिचारि वि [अव्यभिचारिन्] ऐका-
 न्तिक (पंचा २, ३७) ।
 अव्वय न [अव्यय] 'च' आदि निपात (चेइय
 ६८३) ।
 अव्वय न [अव्रत] १ व्रत का अभाव (आ
 १६, सम १३२) । २ वि. व्रतरहित (विसे
 २५४२) ।
 अव्वय वि [अव्यय] १ अक्षय, अक्षूट (सुपा
 ३२१) । २ नित्य, शाश्वत (भग २, १) ।
 अव्ववसिय वि [अव्यवसित] १ अनिश्चित,
 सदिग्ध । २ अपराक्रमी (ठा ३, ४) ।
 अव्वसन वि [अव्यसन] १ व्यसन-रहित ।
 २ पुन लोकोत्तर रीति से १२ वाँ दिन (जं
 ७) ।
 अव्वह वि [अव्यथ] १ व्याथरहित । २
 न निश्चल ध्यान (ठा ४, १, औप) ।
 अव्वहिय वि [अव्यथित] १ अपीडित
 (पंचा ५) । २ निश्चल (बृह १) ।
 अन्वा स्त्री [अर्वाक्] पर से भिन्न, 'एणो
 हन्वाए एणो पाराए' (सूत्र २, १, ६) ।
 अन्वा स्त्री [दे. अम्वा] माता, जननी (दे १,
 ५; (पड्) ।
 अन्वाइद्ध वि [अव्याविद्ध] १ अविपर्यस्त,
 अविपरीत । २ न. सूत्र का एक गुण, अक्षरो
 की उलट-पुलट का अभाव (बृह १, गच्छ २) ।

अवणमिय वि [अवनत] अवनत (सुपा ४२६) ।

अवणमिय वि [अवनमित] नीचे किया हुआ, नमाया हुआ (सुर २, ४१) ।

अवणय वि [अवनत] नमा हुआ (दस ५) ।

अवणय पु [अपनय] १ अपनय, हटाना (ठा ८) । २ निन्दा (पव १४०, विसे १४०३ टी) ।

अवणयण न [अपनयन] हटाना, दूर करना (सुपा ११, स ४८३, उप ४९६) ।

अवणाम पुं [अवनाम] ऊर्ध्वगमन, ऊंचा जाना, 'तुलाए रामावणामव' (धर्मसं २४२) ।

अवणि स्त्री [अवनि] पृथिवी, भूमि (उप ३३६ टी) ।

अवणिन देखो अवणी = अप + नी ।

अवणिद पु [अवनीन्द्र] राजा, भूप (भवि) ।

अवणिग्र देखो अवणीय, 'तं कुणसु चित्तिनि-वसणमवणिग्रनीमेसदोसमल' (विवे १३८) ।

अवणी देखो अवणि (सुपा ३१०) । °सर

पु [°श्वर] राजा, भूमिपति (भवि) ।

अवणी सक [अप + नी] दूर करना, हटाना । अवणेइ, अवणेमि (महा) । वहु अवणित,

अवणेत (निचू १, सुर २, ८) । कवहु.

अवणेज्जत (उप १४६ टी) । क अवणेअ (द्र ३७) ।

अवणीय वि [अपनीत] दूर किया हुआ (सुपा ५४) ।

अवणीयवयण न [अपनीतवचन] निन्दा-वचन (आचा २, ४, १, १) ।

अवणेत देखो अवणी = अप + नी ।

अवणोय पु [अपनोद] अपनयन, हटाना (विसे ६८२) ।

अवणोयण न [अपनोदन] अपनयन, दूरी करण (स ६२१) ।

अवण वि [अवर्ण] १ वर्णरहित, रूपरहित (भग) । २ पु निन्दा (पचव ४) । ३ अपकीर्ति (ओघ १८४ भा) । °व वि [°वत्] निन्दक,

'तेसि अवणव वाले महामोह पकुवई' (सम ५१) । °वाय पु [°वाद] निन्दा (द्र २६) ।

अवण न [दे] अवज्ञा, निरादर (दे १, १७) ।

अवण्णा स्त्री [अवज्ञा] निरादर, तिरस्कार (श्रीप) ।

अवण्हअ पु [अपह्व] अपलाप (पढ) ।

अवण्हवण न [अपह्वन] अपलाप (आचा) ।

अवण्हण न [अवस्नान] साबुन आदि से स्नान करना (गाया १, १३, विपा १, १) ।

अवतस देखो अवयस = अवतस (कुमा) ।

अवतंस पु [अवतस] मेरुपर्वत (सुज ५) ।

अवतसिय वि [अवतसित] विभूषित (कुमा) ।

अवतट्ट वि [अवतष्ट] तनूकृत, छिला हुआ (सूत्र १, ५, २) ।

अवतट्टि देखो अवयट्टि = अवतष्टि (सूत्र १, ७) ।

अवतारण न [अवतारण] १ उतारना । २ योजना करना (विसे ६४०) ।

अवतासण न [अवत्रासन] डराना (पव ७३ टी) ।

अवतिरिथ न [अपतीर्थ] कुत्सित घाट, खराब किनारा (सुपा १५) ।

अवत्त वि [अव्यक्त] १ अस्पष्ट (विसे) । २ कम उमर वाला (वृह १) । ३ असंस्कृत (गच्छ १) । ४ पु देखो अवग्ग (निचू २) ।

अवत्त वि [अवात] पवनरहित (गच्छ १) ।

अवत्त वि [अवाप्त] प्राप्त, लब्ध ।

अवत्त न [अवत्र] आमन विशेष (निचू १) ।

अवत्तय वि [दे] विसंस्थुल, अव्यवस्थित (दे १, ३४) ।

अवत्तव्य वि [अवत्तव्य] १ वचन से कहने के अशक्य, अनिवचनीय । २ सप्तभगी का चतुर्थ भग,

'अत्यतरभूएहि अ नियएहि दोहि समयमाईहि । वयणविसेसाईअ दव्वमवत्तयं पडई' (सम्म ३६) ।

अवत्तिय न [अव्यक्तिक] १ एक जैनाभास मत, निह्वप्रचालित एक मत । २ वि इस मत का अनुयायी (ठा ७) ।

अवत्थतर न [अवस्थान्तर] जुदी दशा, भिन्न अवस्था (सुर ३, २०६) ।

अवत्थग वि [अपार्थक] १ निरर्थक, व्यर्थ । २ असम्बद्ध अर्थवाला (सूत्र वगैरह) (विसे) ।

अवत्थद्ध वि [अवष्टब्ध] अवलम्बन-प्राप्त, जिसको सहारा मिला हो वह (गाया १, १८) ।

अवत्थय वि [अपार्थक] निरर्थक (विसे ६६६ टी) ।

अवत्थरा स्त्री [दे] पाद-प्रहार, लात मारना (दे १, २२) ।

अवत्था स्त्री [अवस्था] दशा, अवस्थिति (ठा ८, कुमा) ।

अवत्थाण न [अवस्थान] अवस्थिति (ठा ४, १, स ६२७ महा, सुर १, २) ।

अवत्थाय सक [अव + स्थापय] १ स्थिर करना ठहराना । २ व्यवस्थित करना । हेहु,

अवत्थाविट्ठु, अवत्थावइट्ठु (शौ) (पि ५७३, नाट) ।

अवत्थाविट (शौ) वि [अवस्थापित] अवस्थित किया हुआ (नाट) ।

अवत्थिय देखो अवट्टिय (महा, स २७४) ।

अवत्थिय वि [अवस्तृत] फैलाया हुआ, प्रसारित (गाया १, ८) ।

अवत्थु न [अवस्तु] १ अभाव, असत्त्व (भवि, आचम) । २ वि निरर्थक, निष्फल (पएह १, २) ।

अवथभ देखो अवठभ । संक अवथभिय (चेइय ४८१) ।

अवदग्ग देखो अवयग्ग (सूत्र २, २, ५) ।

अवदल वि [अपदल] १ नि सार, सार-रहित । २ कच्चा, अपक्व (ठा ४, ४) ।

अवदहण न [अवदहन] दम्भन, गरम लोहे के कोश आदि से चर्म (फोडे आदि) पर दागना (गाया १, ४) ।

अवदाण न [अवदान] शुद्ध कर्म (ती १५) ।

अवदाय वि [अवदात] १ पवित्र, निर्मल, 'दिणायकरावदाय भत्त पेहितु चक्खुणा सम्म' (सुपा ४९१) । २ श्वेत, सफेद (पएह १, ४, पात्र) ।

अवदार न [अपद्वार] १ छोटी छिडकी । २ गुप्त द्वार (उप ६६१) ।

अवदाल सक [अव + दलय] खोलना । अवदालेइ (श्रीप) । सक अवदालेसा (श्रीप) ।

अवदालिय वि [अवदलित] विकसित, विजृ-म्भित, 'अवदालियपुठरीयनयो' (श्रीप, पएह १, ४, उवा) ।

अवदिसा स्त्री [अपदिक्] भ्रान्त दिशा (स ५२६) ।

अवदेस देखो अवएस (अभि ७६) ।

असगहिय वि [असगृहीत] १ जिसका सग्रह न किया गया हो वह । २ अनाश्रित (ठा ८) ।
 असगहिय वि [असग्रहिक] १ सग्रह न करने वाला । २ पुं नैगम नय का एक भेद (विसे) ।
 असगिअ पु [दे] १ अध, घोडा । २ वि. अनवस्थित, चञ्चल (दे १, ५५) ।
 असंघयण वि [असहनन] सहनन से रहित । २ वज्र, ऋषभ, नाराच आदि प्राथमिक तीन सघयणो से रहित (निचू २०) ।
 असजण न [अमञ्जन] नि ज्ञाता, अनासक्ति (निचू १) ।
 असजम वि [असयम] १ हिंसा, झूठ आदि सावध अनुष्ठान (सूत्र १, १३) । २ हिंसा आदि पाप-कार्यों से अनिवृत्ति (धर्म ३) । ३ अज्ञान (आचा) । ४ असमाधि (वव १) ।
 असजय वि [असयत] १ हिंसा आदि पाप कार्यों से अनिवृत्त (सूत्र १, १३) । २ हिंसा आदि करने वाला (भग ६, ३) । ३ पु साधु मित्र, गृहस्थ (आचा) ।
 असजल पु [असज्वल] १ ऐरवत वर्ष के एक जिनदेव का नाम (सम १५३) ।
 असजोगि वि [असयोगिन] १ सयोग-रहित । २ पु मुक्त जीव, मुक्तात्मा (ठा २, १) ।
 असत वक्तु [असत्] १ अविद्यमान (नव ३३) । २ झूठ, अमत्य (परह १, २) । ३ असुंदर, अचार (परह २, २) ।
 असत देखो अस = अश ।
 असत वि [अशान्त] गान्तरहित, क्रुद्ध (परह २, २) ।
 असत वि [अमत्त्व] मत्त्व-रहित, वल-शून्य (परह १, २) ।
 असयड वि [दे असस्तुत] अशक्त, असमर्थ (आचा, वृह ५) ।
 असथरत वक्तु [दे असस्तरन्] १ समर्थ न होता हुआ । २ खोज न करता हुआ (वव ४) । ३ वृत्त न होता हुआ (शोध १८२) ।
 असथरण न [दे असस्तरण] १ निर्वाह का अभाव (वृह १) । २ पर्याप्त लाभ का अभाव (पचव २) । ३ अममर्थता, अशक्त अवस्था (धर्म ३, निचू १) ।

असथरमाण वक्तु [दे असस्तरमाण] देखो असथरत (वव ४, शोध १८१) ।
 असधिम वि [असंधिम] मधान रहित, अखण्ड (वृह ५) ।
 असभंत पु [असभ्रान्त] प्रथम नरक का छठवां नरकेन्द्रक—नरक-स्थान विशेष (देवेन्द्र ४) ।
 असभव्व वि [असभाव्य] जिसकी सभावना न हो सके ऐसा (था १२) ।
 असभावणीय वि [असभावनीय] ऊपर देखो (महा) ।
 असलप्प वि [असलप्य] अनिर्वचनीय (अणु) ।
 असलोय पु [असलोक] १ अप्रकाश । २ वह स्थान जिसमें लोगो का गमनागमन न हो, भीडरहित स्थान (आचा) ।
 असवर पु [असवर] आश्रय, सवर का अभाव (ठा ५, २) ।
 असवरीय वि [असंवृत] १ अनाच्छादित । २ नही रुका हुआ (कुमा) ।
 असवुड वि [असवृत] असयत, पाप-कर्म से अनिवृत्त (सूत्र १, १, ३) ।
 अससइय वि [असशयित] असंदिग्ध (सूत्र २, २) ।
 अससट्ट वि [असंसृष्ट] १ दूसरे से न मिला हुआ (वृह २) । २ लेप-रहित (औप) । ३ स्त्री पिएडैपणा का एक भेद (पव ६६) ।
 असंसत्त वि [असंसक्त] १ अमिलित (उत्त २) । २ अनासक्त (दस ८, उत्त ३) ।
 अससय वि [असशय] १ सशय-रहित (वृह १) । २ क्वि. नि सदेह, नक्षी (अभि ११०) ।
 अससार पु [असंसार] संसार का अभाव, मोक्ष (जीव १) ।
 अससि वि [असंसिन्] अविनश्वर (कुमा) ।
 असक्क वि [अशक्य] जिसको न कर सके वह (मुपा ६५१) ।
 असक्क वि [अशक्त] असमर्थ (कुमा) ।
 असक्कय वि [असत्कृत] संस्कार-रहित (परह १, २) ।
 असक्कय वि [असत्कृत] सत्कार-रहित (परह १, २) ।
 असक्कणिज्ज वि [अशकनीय] अशक्य (कुमा) ।

असगाह पु [असद्ग्रह] १ कदाग्रह (उप असगाह ६७२, मुपा १३४) । २ अति-असगाह निर्वन्व, विशेष आग्रह (भवि) ।
 असच्च न [असत्य] १ झूठ वचन (प्रासू १५१) । २ वि. झूठा (परह १, २) । ३ मोस न [मृप] झूठ में मिला हुआ सत्य (द्र २२) । ४ वाइ वि [वादिन्] झूठ बोलने वाला (सम ५०, पठम ११, ३४) । ५ मोस न [मृप] न सत्य और न झूठ ऐसा वचन (आचा) । ६ मोसा स्त्री [मृपा] देखो अनन्तरोक्त अर्थ (पच १) । ७ संध वि [संध] १ अमत्य-प्रतिज्ञ । २ अमत्य अभिप्राय दाता (महा, परह १, २) ।
 असज्ज वक्तु [असज्ज] नग न असज्जमाण करता हुआ (आचा, उत्त १४) ।
 असज्जाइय वि [अस्वाध्यायिक] पठन-पाठन का प्रतिबन्धक कारण (पव २६८) ।
 असज्जाय पु [अस्वाध्याय] अनव्याय, वह काल जिसमें पठन-पाठन का निषेध किया गया है (गच्छ ३, ३०) ।
 असड्ड वि [अश्रद्ध] श्रद्धारहित (कुमा) ।
 असठ वि [अशठ] सरल, निष्कपट (मुपा ५५०) । २ करण वि [करण] निष्कपट भाव से अनुष्ठान करने वाला (वृह ६) ।
 असण न [अशन] १ भोजन, खाना (निचू ११) । २ जो खाया जाय वह, खाद्य पदार्थ (पव ४) ।
 असण पुं [असन] १ बीजक नामक वृक्ष (परण १, राया १, १, औप, पात्र, कुमा) । २ न. क्षेपण, फेंकना (विसे २७६५) ।
 असणि पुत्री [अशनि] १ एक प्रकार की विजली (मुज २०) । २ पुं एक नरक-स्थान (देवेन्द्र २६) ।
 असणि पुत्री [अशनि] १ वज्र (पात्र) । २ आकाश में गिरता अग्नि-करण (परण १) । ३ वज्र का अग्नि (जी ६) । ४ अग्नि (स ३३२) । ५ अश्वविशेष (स ३८५) । ६ पपह पु [प्रभ] रावण के मामा का नाम (से १२, ६१) । ७ मेह पु [मेघ] १ वह वर्षा जिसमें ओले गिरते हैं । २ अति भयकर वर्षा, प्रलय-मेघ (भग ७, ६) । ३ वेग पु [वेग] विद्याधरो का एक राजा (पठम ६, १५७) ।

अवमाणणा स्त्री [अवमानना] अवगणना (काल) ।

अवमाणि वि [अवमानिन्] अवज्ञा करने वाला (अभि ६६) ।

अवमाणिय वि [अपमानित] तिरस्कृत (से १०, ६६, सुपा १००) ।

अवमाणिय वि [अवमानित] १ अवज्ञात, मनाहत (सुर २, १७६) । २ अपूरित, 'अवमाणियदोहला' (भग ११, ११) ।

अवमार पुं [अपरमार] भयकर रोग-विशेष, पागलपन (आचा) ।

अवमारिय वि [अपस्मारित, 'रिक] अपस्मार रोग वाला (आचा) ।

अवमारुय पु [अवमारुत] नीचे चलता पवन (गडड) ।

अवमिचु देखो अवमचु (प्राह) ।

अवमिय वि [दे] जिसको घाव हो गया हो वह, व्रणित (वृह ३) ।

अवमुक्त वि [अवमुक्त] परित्यक्त (पि ५६६) ।

अवमेह वि [अपमेघ] मेघ-रहित (गडड) ।

अवय देखो अपय = अपद (सूत्र १, ८, ११) ।

अवय न [अवज] कमल, पद्म (पराण १) ।

अपय वि [अवच] १ नीचा, अनुच (उत्त ३) । २ जघन्य, हीन, अश्रेष्ठ (सूत्र १, १०) ।

३ प्रतिकूल (भग १, ६) ।

अवयंस पु [अवतंस] १ शिरोमूषण विशेष (कुमा, गा १७३) । २ कान का आभूषण (पात्र) ।

अवयंस सक [अवतंसय] भूषित करना । अवयंसव्रति (पि १४२, ४६०) ।

अवयक्ख सक [अप + ईक्ष्] अपेक्षा करना, राह देवना । अवयक्खह (गाया १, ६) ।

वक्तु अवयक्खंत, अवयक्खमाण (गाया १, ६, भग १०, २) ।

अवयक्ख सक [अव + ईक्ष्] १ देखना । २ पीछे से देखना । वक्तु. अवयक्खत (ओघ १८८ भा) ।

अवयक्खा स्त्री [अपेक्षा] अपेक्षा (गाया १, ६) ।

अवयग्ग न [दे] अन्त, अवसान (भग १, १) ।

अवयच्छ सक [अव + गम्] जानना । अवयच्छइ (स ११३) । सक. अवयच्छिय (स २१०) ।

अवयच्छ सक [हृग्] देखना । अवयच्छइ (हे ४, १८१) । वक्तु. अवयच्छत (कुमा) ।

अवयच्छिय वि [हृष्ट] देखा हुआ (गाया १, ८) ।

अवयच्छिय वि [दे] प्रसारित, 'कु कारपवणपिसुणियमवयच्छियमयरमहा य' (स ११३) ।

अवयज्झ सक [हृश्] देखना । अवयज्झइ (हे ४, १८१) । सक. अवयज्झऊण (कुमा) ।

अवयट्ठि स्त्री [अवतट्ठि] तनूकरण, पतला करना (आचा) ।

अवयट्ठि वि [अवस्थायिन्] अवस्थिति करने वाला, स्थिर रहने वाला (आचा) ।

अवयट्ठि स्त्री [अवकृष्टि] आकर्षण (आचा) ।

अवयड्ढिअ वि [दे] युद्ध में पकड़ा हुआ (दे १, ४६) ।

अवयण न [अवचन] कुलित वचन, दूषित भाषा (ठा ६) ।

अवयर सक [अव + तृ] १ नीचे उतरना । २ जन्म ग्रहण करना । अवयरइ (हे १, १७२) । वक्तु. अवयरंत, अवयरमाण (पउम ८२, ६३, सुपा १८१) । सक. अवयरिंत (प्रासु) ।

अवयरिअ पु [दे] वियोग, विरह (दे १, ३६) ।

अवयरिअ वि [अपकृत] १ जिसका अपकार किया गया हो वह । २ न. अपकार, अहित-करण, 'को हेऊ तुह गमणे तुह अवयरियं मए कि व' (सुपा ४२१) ।

अवयरिअ वि [अवतीर्ण] १ जन्मा हुआ । २ नीचे उतरा हुआ (सुर ६, १८६) ।

अवयव पुं [अवयव] १ अंश, विभाग । २ अनुमान-प्रयोग का वाक्यांश (दसनि १, हे १, २४५) ।

अवयवि वि [अवयविन्] अवयव वाला (ठा १, विसे २३५०) ।

अवयाढ देखो ओगाढ (नाट, गडड) ।

अवयाण न [दे] स्त्रीचने की डोरी, लगाम (दे १, २४) ।

अवयाय पुं [अवचाय] अपराव, दोष (उप १०३१ टी) ।

अवयाय वि [अवदात] निर्मल (सिरि १०२७) ।

अवयार पु [अपकार] अहित-करण (स ४३७, कुमा, प्रासु ६) ।

अवयार पु [अवतार] १ उतरना । २ देहान्तर-धारण, जन्म-ग्रहण । ३ मनुष्य रूप में देवता का प्रकाशित होना, 'अज्ज ! एव तुम देवावयारी विय आगईए' (स ४१६, भवि) ।

४ सगति, योजना (विसे १००८) । ५ प्रवेश (विसे १०४३) ।

अवयार पु [अवतार] गमावेश (पव ८६) ।

अवयार पु [दे] माघ-पूर्णिमा का एक उत्सव, जिसमें इक्ष से दत्तवन आदि किया जाता है (दे १, ३२) ।

अवयारण न [अवतारण] उतारना (मिरि १००४) ।

अवयारय देखो अवगारय (स ६६०) ।

अवयारि वि [अपकारिन्] अपकार करने वाला (म १७६, विवे ७६) ।

अवयालिय वि [अवचालित] चलायमान किया हुआ (स ४२) ।

अवयास सक [अभिप्] आलिंगन करना । अवयासइ (हे ४, १६०) । वक्तु. अवयासिज्जमाण (ओप) । सक. अवयासिय (गाया १, २) ।

अवयास सक [अव + काश्] प्रकट करना । सक. अवयासेऊण (तडु) ।

अवयास देखो अवगास (गडड, कुमा) ।

अवयास पुं [अभेप] आलिंगन (ओघ २४४ भा) ।

अवयासण न [श्लेषण] आलिंगन (वृह १) ।

अवयासाविय वि [श्लेषित] आलिंगन कराया हुआ (विपा १, ४) ।

अवयासिय वि [अभिष्ट] आलिंगित (कुमा; पात्र) ।

अवयासिणी स्त्री [दे] नामा-रज्जु, नाक में डाली जाती डोर (दे १, ४६) ।

अवर वि [अपर] अन्य, दूसरा, तद्विन्न (आ २७, महा) । 'हा अ [ंथा] अन्यया (पचा ८) ।

[°पत्त] (से ३, ४२) । °हर वि [°धर] तलवार-धारक, योद्धा (से ६, १८) । °हारा देखो °धारा (उव) ।

असिइ (अप) देखो असीइ (सण) ।

असिण न [अशन] भोजन, खाना, 'अग्ग-पिंड परिट्टविज्जमाण पेहाए, पुरा असिणा इत्ता अवहारा इवा' (आचा २, १, ५, १) ।

असित्थ न [असिक्थ] आटा लगे हुए हाथ या वर्तन का कपड़े से छना हुआ घोवन (पडि) ।

असिद्ध वि [असिद्ध] १ अनिष्पन्न । २ तर्क-शास्त्र प्रसिद्ध दुष्ट हेतु (विसे २८२४) ।

असिय वि [अशित] भुक्त, खादित (पात्र, सुपा २१२) ।

असिय वि [असित] १ कृष्ण, श्वेतारहित (पात्र) । २ अशुभ (विसे) । ३ अवद्ध, अ-यन्त्रित (सूत्र १, २, १), 'सिया एगे अणु-गच्छति, असिया एगे अणुगच्छति' (आचा) । °क्ख पुं [°क्ष] यक्ष-विशेष (सण) ।

असिय न [दे] दात्र, दांती (दे १, १४) ।

असियव्व देखो अस = अश् ।

असिलेसा स्त्री [अश्लेषा] नक्षत्र-विशेष (सम ११) ।

असिलोग पु [अश्लोक] अकीर्ति, अजस (सम १२) ।

असिव न [अशिव] १ विनाश । २ असुख । ३ देवतादि कृत उपद्रव (ओष ७) । ४ मारी रोग (वव ४) ।

असिविण पु [अस्वप्न] देव, देवता (ग्रामा) ।

असिव्व देखो असिव (वव ७, प्राप्र) ।

असिसुई स्त्री [अशिश्वी] शिशुरहित स्त्री (प्राकृ २८) ।

असिह वि [अशिश्व] शिखारहित (वव ४) ।

असीइ स्त्री [अशीति] संख्या-विशेष, अस्सी, ८० (सम ८८) । °म वि [°तम] अस्सीवाँ, ८० वाँ (पउम ८०, ७४) ।

असीइग वि [अशीतिक] अस्सी वर्ष की उम्र वाला (तंदु १७) ।

असीम वि [असीमन्] निस्सीम, 'असीमंत-भक्तिराण' (उप ७२८ टी) ।

असील वि [अशील] १ दु शील, असदा-चारी (पएह १, २) । २ न असदाचार, अन्नहाचर्य । °मंत वि [°वत्] १ अन्नहाचारी (ओष ७७७) । २ अत्यंत (सूत्र १, ७) ।

असु पुं व [असु] १ प्राण (स ३८३) । २ न चित्त । ३ ताप (प्राप्र, वृष ५१) ।

असु देखो अंसु (प्राप्र) ।

असुइ वि [अशुचि] १ अपवित्र, अस्वच्छ, मलिन (श्रीप, वव ३) । २ न अमेध्य, विष्ठा (ठा ६, प्रासू १६६) ।

असुइ वि [अश्रुति] शास्त्रश्रवण-रहित (भग ७, ६) ।

असुईकय वि [अशुचीकृत] अपवित्र किया हुआ (उप ७२८ टी) ।

असुग पुं [असुक] देखो असु = असु (हे १, १७७) ।

असुज्जंत वि [अदृश्यमान] नहीं दिखाता हुआ, 'अन्नपि ज असुज्जंत । भुजतएण रत्ति' (पउम १०३, २५) ।

असुणि वि [अश्रोतृ] न सुननेवाला, 'अलि-यपयपिरि अणिमित्तकोवणे अमुणि सुणमु मह वयण' (वजा ७२) ।

असुद्ध वि [अशुद्ध] १ अस्वच्छ, मलिन । २ न मैला, अशुचि । °विसोहय पु [°विशो-धक] भगी, मेहतर (सुर १६, १६५) ।

असुभ देखो असुह = अशुभ (सम ६७, भग) ।

असुय वि [अश्रुत] न सुना हुआ (ठा ४, ४) । °णिस्सिय न [°निश्चित] शास्त्र-श्रवण के बिना ही होनेवाली बुद्धि—ज्ञान (एदि) ।

°पुव्व वि [°पूर्व] पहले कभी नहीं सुना हुआ (महा, राया १, १, पउम ६५, १४) ।

असुय वि [असुत] पुत्ररहित (उत्त २) ।

असुर पु [असुर] १ दैत्य, दानव (पात्र) ।

२ देवजाति-विशेष, भवनपति और व्यन्तर देवों की जाति (पएह १, ४) । ३ दास-स्थानीय देव (आठ ३६) । °कुमार पु [°कुमार] भवनपति देवों की एक अवान्तर जाति (ठा १, १, महा) । °राय पुं [°राज] असुरों का इन्द्र (पि ४००) । °वदि पुं [°वन्दिन्] राक्षस (से ६, ५०) ।

असुरिंद पु [असुरेन्द्र] असुरों का राजा, इन्द्र-विशेष (राया १, ८, सुपा ७७) ।

असुह न [अशुभ] १ अमंगल, अनिष्ट (सुर ४, १६३) । २ पाप-कर्म (ठा ४, ४) । ३ वि खराब, अमुन्दर (जीव १, कुमा) । °णाम न [°नामन्] अशुभ फल देनेवाला कर्म-विशेष (सम ६७) ।

असुह न [असुख] दुःख (ठा ३, ३) ।

असूअ मक [असूय्] अमूया करना । अमू-एहि (मै ७) ।

असूया स्त्री [असूचा] १ मूत्रना का अभाव । २ दूसरे के दोषों को न कह कर अपना ही दोष कहना (निच्च १०) ।

असूया स्त्री [असूया] अमूया, असहिष्णुता (दस) ।

असूरिय वि [असूर्य] १ सूर्यरहित, अन्व-कारमय स्थान । २ पु नरक-स्थान (सूत्र १, ५, १) ।

असेव्व देखो असिय (प्राप्र) ।

असेव्व वि [असेव्व] सेवा के अयोग्य (गउड) ।

असेस वि [अशेष] नि शेष, मवं (प्राप्र) ।

असोअ पुं [अशोक] १ देव-विशेष (राय असोग ८१) । २ पुंन एक देवविमान (देवेन्द्र १४२) । ३ शक्र आदि इन्द्रों का एक आभाव्य विमान (देवेन्द्र २६३) । °वडिसय पुंन [°वतंसक] सौवर्ग देवलोक का एक विमान (राय ५६) ।

असोग पुं [अशोक] १ सुप्रसिद्ध वृक्ष-विशेष (श्रीप) । २ महाप्रह-विशेष (ठा २, ३) । हरा रंग (राय) । ४ भगवान् मल्लिनाथ का चैत्य-वृक्ष (सम १५२) । ५ देव-विशेष (जीव ३) । ६ न. तीर्थ-विशेष (ती १०) । ७ यक्ष-विशेष (विपा १, ३) । ८ वि शोक रहित । °चंद पुं [°चन्द्र] १ राजा श्रेणिक का पुत्र, राजा कीणिक (आवम) । २ एक प्रसिद्ध जैनचार्य (सार्ध ७७) । °ललिय पु [°ललित] चतुर्थ बलदेव का पूर्व-जन्मीय नाम (सम १५३) । °वण न [°वन] अशोक वृक्षों वाला वन (भग) । °वणिया स्त्री [°वणिका] अशोक वृक्ष वाला वगीचा (राया १, १६) । °सिरि पु [°श्री] इस नाम का एक प्रख्यात राजा, सम्राट् अशोक (विसे ८६२) ।

अवलंबित्तए (दसा ७)। कृ. अवलंबणिय,
अवलंबिअन्व (से १०, २६)।
अवलंब } पुं [अनलम्ब, °क] १ सहारा,
अवलंबग } आश्रय (आ १६)। २ वि लट-
कनेवाला (श्रीप, वव ४)। ३ सहारा लेनेवाला
(पञ्च ८०)।
अवलंबण न [अवलम्बन्] १ लटकना। २
आश्रय, सहारा (ठा ५, २, राय)।
अवलंबणया स्त्री [अवलम्बनता] अवग्रह-
ज्ञान (एदि १७५)।
अवलंबि वि [अवलम्बिन्] अवलम्बन
करनेवाला (गडड, विसे २३२६)।
अवलंबिय वि [अवलम्बित] १ लटका
हुआ। २ आश्रित (राया १, १)।
अवलंबिर देखो अवलंबि (गा ३६७)।
अवलम्बण न [अपलक्षण] सराव लक्षण,
बुरी आदत (भवि)।
अवलम्ग वि [अवलम्ग] १ आरुढ। २ लगा
हुआ, संलग्न (महा)।
अवलम्त वि [अपलपित] अपहुत, छिपाया
हुआ (स २१२)।
अवलम्द्र वि [अपलम्द्र] अनादर से प्राप्त
(ठा ६)।
अवलम्द्रि स्त्री [अवलम्बि] अप्राप्ति (भग)।
अवलम् न [दे] घर, मकान (दे १, २३)।
अवलम् सक [अप + लप्] १ असत्य
बोलना। २ सत्य को छिपाना। कवकृ.
अवलम्बित्त (सुपा १३२)। कृ. अवलम्ब-
णिज्ज (सुपा ३१५)।
अवलाव पु [अपलाप] अपहव (निचू १)।
अवलिअ न [दे] असत्य, झूठ (दे १, २२)।
अवलंब पुं [अवलम्ब] जीव या पुद्गलो से
व्याप्त स्थान-विशेष (ठा २, ४)।
अवलम्बिअ वि [दे] अप्राप्त, अनासादित
(से ६, ७८)।
अवलम्त वि [अवलम्त] व्याप्त (सूत्र १,
१३, १४)।
अवलम्त वि [अवलम्त] १ लिप्त। २ गवित;
'मलसो सडोवलिन्तो, मलबण-तप्परी
अइपमाई।
एवं ठिप्रोवि मन्नइ, अप्पाणं सुट्टिओ मित्ति'
(उव)।

अवलुअ देखो अवल्लय (आचा २, ३, १, ६)।
अवलुआ स्त्री [दे] क्रोध, गुस्सा (दे १, ३६)।
अवलुत्त वि [अवलुत्त] लोप-प्राप्त (नाट)।
अवल्लेअ } पुं [अवल्लेप] १ ग्रहंकार, गर्व।
अवल्लेव } २ लेप, लेपन (पाय, महा, नाट)।
३ अवज्ञा, अनादर (गडड)।
अवल्लेह पु [अवल्लेह] चटनी (वजा १०४)।
अवल्लेहणिया स्त्री [अवल्लेखनिका] १ बोंस
का छिलका (ठा ४, २)। २ वृत्ति आदि भावने
का एक उपकरण (निचू १)।
अवल्लेहि } स्त्री [अवल्लेखि, °का] १ वास
अवल्लेहिया } का छिलका (कम्म १, २०)।
२ लेख विशेष (पव ४)। ३ चावल के आटा
के साथ पकाया हुआ दूध (पमा ३२)।
अवल्लेअ सक [अव+लोक] देखना, अव-
लोकन करना। वक्र. अवलोअत, अवलोए-
माण (रयण ३६, राया १, १) सक अव-
लोडऊण (काल)। कृ. अवलोयणीय (सुपा
७०)।
अवल्लेग } पु [अवल्लेग] अवलोकन, दर्शन
अवल्लेय } (उप ६८६ टी, सुपा ६, स २७६,
गडड)।
अवल्लेयण न [अवल्लेकन] १ दर्शन, विलो-
कन (गडड)। २ स्थान-विशेष, 'तुग अव-
लोयणं चैव' (उपम ८०, ४)। ३ शिखर-विशेष
(ती ४)।
अवल्लेयणी स्त्री [अवल्लेकनी] देवी-विशेष
(सम्मत्त १६०)।
अवल्लेव पुं [अपलोप] छिपाना, लोप करना
(पह १, २)।
अवल्लेवणी स्त्री [अपलोपनी] विद्या-विशेष
(पञ्च ७, १३६)।
अवल्लेह वि [अपलोह] लोहरहित (गडड)।
अवल्लेय न [दे अवल्ले] नौका खेवने का
उपकरण-विशेष (आचा २, ३, १)।
अवल्लेव } पु [दे. अपलाप] असत्यकथन,
अवल्लेवय } अपलाप (दे १, ३८)।
अवव न [अवव] संख्या-विशेष, 'अववाङ्ग' को
चौरासी लाख से गुणने पर जो संख्या लब्ध
हो वह (ठा २, ४)।
अववंग न [अववाङ्ग] संख्या-विशेष, 'अडड'
को चौरासी लाख से गुणने पर जो संख्या
लब्ध हो वह (ठा २, ४)।

अववक्कल वि [अपवक्कल] त्वचारहित
(गडड)।
अववक्का स्त्री [अवपाक्या] तापिका, छोटा
तवा (भग ११, ११)।
अववग्ग पुं [अपवर्ग] मोक्ष, मुक्ति (आवम)।
अववट्टण न [अपवर्तन] १ अपनरण। २
कर्मपरमाणुओ की दीर्घ स्थिति को छोटी
करना (पच ५)।
अववट्टणा स्त्री [अपवर्तना] ऊपर देखो (पच
५)।
अववत्त वि [अपवृत्त] १ वापस लौटा
हुआ। २ अपसृत (दे १, १५२)।
अववरक पुं [अपवरक] कोठरी, छोटा घर
(मुद्रा ८१)।
अववह सक [अप+वह] बाहर फेंकना, दूर
हटाना। कर्म. अ उज्झइ (पचा १६, ६)।
अववाइअ वि [आपवादि. F] अपवाद-संबंधी
(अज्झ १०८)।
अववाइय वि [अपवादिक] अपवादवाला
(नाट)।
अववाय पु [अपवाद] १ विशेष नियम, अप-
वाद (उप ७८१)। २ निन्दा, अवर्ण-वाद
(पह २, २)। ३ अनुज्ञा, संमति (निचू १)।
४ निश्चय, निर्णय वाली हकीकत (निचू ५)।
अववास सक [अव+काश] अवकाश देना,
जगह देना। अववासइ (प्राप्र)।
अववाह सक [अव + गाह] अवगाहन
करना। अववाहइ (प्राप्र)।
अवविह पु [अवविध] गोशालक के एक
भक्त का नाम (भग ८, ५)।
अववीड पु [अवपीड] निष्पीडन, दवाना
(गडड)।
अववीडण न [अवपीडन] ऊपर देखो
(गडड)।
अवस वि [अवश] १ अस्वाधीन, पराधीन
(सूत्र १, ३, १)। २ स्वतन्त्र, स्वाधीन (से
१, १)।
अवस वि [अवश] अकाम, अनिच्छु (धर्मसं
७००)।
अवसं अ [अवश्यम्] अवश्य, जरूर,
निश्चय (दे ४, ४२७)।

अस्सोत्थ देखो अस्सत्थ (पि ७४, १६२, ३०६) ।

अस्सोयव्व वि [अश्रोतव्य] मुनने के अयोग्य (सुर १४, २) ।

अह अ [अथ] इन अर्थों का सूचक अव्यय—
१ अथ, बाद (स्वप्न ४३, द ३१, कुमा) ।
२ अथवा, और,

‘छिज्ज सीस ग्रह होउ ववण चयउ

सव्वहा लच्छी ।

पडिबन्नपालणे सुपुरिमाण ज होइ त होउ ॥’
(प्रासू ३) ।

३ मंगल (कुमा) । ४ प्रश्न । ५ समुच्चय । ६ प्रतिवचन, उत्तर (बृह १) । ७ विशेष (ठा ७) । ८ यथार्थता, वास्तविकता (विसे १२७६) ।
९ पूर्वपक्ष (विसे १७८३) । १०-११ वाक्य की शोभा बढ़ाने के लिए और पाद-पूर्ति में भी इसका प्रयोग होता है (सूअ १, ७, पचा १६) ।

अह न [अहन्] दिवस, दिन (आ १४, पाअ) ।

अह अ [अधस्] नीचे (सुर २, ३८) ।
‘ल्लो ग पुं [‘ल्लोक] वाताल्लोक (सुपा ४०) ।
‘त्थ वि [‘स्थ] नीचे रहा हुआ, निम्न-स्थित (पउम १०२, ६५) ।

अह स [अदस्] यह, वह (पाअ) ।

अह न [दे] दुःख (दे १, ६) ।

अह न [अध] पाप (पाअ) ।

अह° देखो अहा (हे १, २४५, कुमा) । ‘कम, ‘कमसो अ [‘क्रम] क्रम के अनुसार, अनुक्रम से (ओघ ५ भा, स ६) । ‘क्खाय, ‘खाय न [‘ख्यात] निर्दोष चारित्र्य, परिपूर्ण संयम (ठा ५, २, नव २६, कुमा) । ‘क्खायसजय वि [‘ख्यातसयत] परिपूर्ण संयम वाला (भग २५, ७) । ‘च्छद देखो अहालद (सं ६) । ‘त्थ वि [‘स्थ] ठीक-ठीक रहा हुआ, यथास्थित (ठा ९, ३) । ‘त्थ वि [‘र्थ] वास्तविक (ठा ५, ३) । ‘प्पहाण अ [‘प्रधान] प्रधान के हिसाब से (भग १५) ।

अहइं अ [अथकिम्] स्वीकार-सूचक अव्यय—हाँ, अच्छा (नाट, प्रयौ ५) ।

अहकार पु [अहकार] अभिमान, गर्व (सूअ १, ६, स्वप्न ८२) ।

अहकारि वि [अहकारिन्] अभिमानी, गर्विष्ठ (गउड) ।

अहणिस न [अहर्निश] रात-दिन, सर्वदा (पिंग) ।

अहकम्म देखो अहेकम्म (पिड १३६) ।

अहण वि [अधन] निर्धन, धनरहित (विसे २८१२) ।

अहणिस न [अहर्निश] रात-दिन, निरन्तर (नाट) ।

अहत्ता अ [अधस्तात्] नीचे (भग) ।

अहन्न वि [अधन्य] अप्रशस्त, हतभाग्य (सुर २, ३७) ।

अहन्निस देखो अहणिस (सुपा ४६२) ।

अहम वि [अधम] अधम, नीच (कुमा) ।

अहमति वि [अहमन्तिन्] अभिमानी, गर्विष्ठ (ठा १०) ।

अहमहमिआ } स्त्री [अहमहमिका] में
अहमहमिगया } इससे पहले हो जाऊ ऐसी
अहमहमिगा } चेष्टा, अत्युत्कण्ठा (गा ५८०, सुपा ५४, १३२, १४८) ।

अहमिद पु [अहमिन्द्र] १ उत्तम-श्रेणीय पूर्ण स्वाधीन देवजाति विशेष, त्रैविक और अनुत्तर विमान के निवासी देव (इक) । २ अपने को इन्द्र समझने वाला, गर्विष्ठ, ‘संपद पुण रायाणो नरिद । सव्वेवि अहमिदा’ (सुर १, १२६) ।

अहम्म देखो अधम्म (सूअ १, १, २, भग, नव ६, सुर २, ४४, सुपा २५८, प्रासू १३६) ।

अहम्म वि [अधर्म्य] धर्मच्युत, धर्मरहित, गैरव्याजवी (सण) ।

अहम्माणि वि [अहम्मानिन्] अभिमानी (आवम) ।

अहम्मि वि [अधर्मिन्] धर्म रहित, पापी (सुपा १७२) ।

अहम्मिट्ट देखो अधम्मिट्ट (भग १२, २, राय) ।

अहम्मय वि [अधार्मिक] अधर्मी, पापी (विपा १, १) ।

अहय वि [अहत्] १ अनुवृद्ध, अव्यवच्छिन्न (ठा ८, पत्र ४१८) । २ अक्षत, अखण्डित (सूअ २, २) । ३ जो दूसरी तरफ लिया गया हो (चद १६) । ४ नया, नूतन (भग ८, ६) ।

अहर वि [दे] अशक्त, असमर्थ (दे १, १७) ।

अहर पु [अधर] १ होठ, ओष्ठ (गदि) । २ वि नीचे का, नीचला (परह १, ३) । ३ नीच, अधम (परह १, २) । ४ दूसरा, अन्य (प्राभा) । ‘गइ स्त्री [‘गति] अवगति, दुर्गति, नीच गति, ‘अहरगइ निति कम्माइ’ (पिड) ।

अहरिय वि [अधरित] तिरस्कृत (सुपा ४७) ।

अहरी स्त्री [अधरी] पेपर-शिला, जिस पर मसाला वगैरह पीसा जाता है वह पत्थर, सिलवट (उवा) । ‘लोट्ट पुं [‘लेष्ट] जिससे पीसा जाता है वह पत्थर, लोढा (उवा) ।

अहरीकय वि [अधरीकृत] तिरस्कृत, अव-गणित (सुपा ४) ।

अहरीभूय वि [अधरीभूत] तिरस्कृत, ‘उयरेण धरतीए, नररयणमिम महप्पहं देवि । अहरीभूयमसेस, जयपि तुह रयणगम्माए’ (सुपा ३५) ।

अहरुद्ध पुन [अधरोष्ठ] नीचे का होठ (परह १, ३, हे १, ८४, पड) ।

अहरेम देखो अहिरेम । अहरेमइ (हे ४, १६९) ।

अहरेमिअ वि [पूरित] पूरा किया हुआ (कुमा) ।

अहल वि [अफल] निष्फल, निरर्थक (प्रासू १३५, रंभा) ।

अहलद न [यथालन्द] पाँच रात का समय (पव ७०) ।

अहलदि देखो अहालदि (पव ७०) ।

अहव देखो अहवा (हे १, ६७) ।

अहवइ (अप) देखो अहवा (कुमा) ।

अहवण } अ [अथवा] १ वाक्यालंकार में
अहवा } प्रयुक्त किया जाता अव्यय (अणु, सूअ २, २) । २ या, अथवा (बृह १, निच १, पचा ३, हे १, ६७) ।

अहव्व देखो अभव्व (गा ३६०) ।

अहव्वण पु [अथर्वन्] चौथा वेद-शास्त्र (श्रौप) ।

अहव्वा स्त्री [दे] अस्त्री, कुलटा स्त्री (दे १, १८) ।

अहह अ [अहह] इन अर्थों का सूचक

अवस्स अ [अवश्यम्] जरूर, निश्चय (पि ३१५) ।

अवस्सप्पिणी देखो अवसप्पिणी (संघोष ४८) ।

अवस्साअ देखो अवसाय (विक्र) ।

अवस्सिय वि [अवाश्रित] आश्रित, अवलम्बन (अनु ६) ।

अवह सक [रच्] निर्माण करना, बनाना । अवहइ (हे ४, ६४) ।

अवह न [उभय] दोनों, युगल (हे २, १३८) ।

अवह वि [अवह] न वहता हुआ, जो चालू नहीं है, बद, 'श्रोसप्पिणीइ अवहो इमाइ जाओ तमो य सिद्धिपहो (धर्मवि १५१) ।

अवहइ ओ [अपहति] विनाश (विसे २०-१६) ।

अवहइ वि [दे] अभिमानी, गर्वित (दे १, २३) ।

अवहइ देखो अवहर = अप + ह ।

अवहइ वि [अपहृत] ले लिया गया, छीन हुआ (सुपा २६६, परह १, ३) ।

अवहइ वि [अवहृत] ऊपर देखो (प्राह) ।

अवहइ न [दे] मुसल (दे १, ३२) ।

अवहण पु [दे] मज्जल, श्रोत्रल, उद्गल (दे १, २६) ।

अपहत्थ पु [अपहस्त] मारने के लिए या निकाल बाहर करने के लिए ऊँचा किया हुआ हाथ, 'अवहत्थेण ह्यो कुमरो' (महा) ।

अवहत्थ सक [अपहस्त्य] १ हाथ को ऊँचा करना । २ त्याग करना, छोड़ देना । अवहत्थेइ (महा) । सक्र. अवहत्थिऊण, अवहत्थेऊण (पि ५८६, महा) ।

अवहत्थरा ओ [दे] लात मारना, पाद-प्रहार (दे १, २२) ।

अवहत्थिय वि [अपहस्ति] परित्यक्त, दूर किया हुआ (महा, काप्र ५२४, गा ३५३, सुपा १६३, एदि) ।

अवहय वि [अपहृत] नष्ट, नाश-प्राप्त (से १४, २८) ।

अवहय वि [अघातक] अहिंसक (शोध ७५०) ।

अवहर सक [गम्] जाना । अवहरइ (हे ४, १६२) ।

अवहर अक [नश्] भाग जाना, पलायन करना । अवहरइ (हे ४, १७८, कुमा) ।

अवहर सक [अप + ह] १ छीन लेना, अपहरण करना । २ भागाकार करना, भाग देना । अवहरइ (महा) अवहरेजा (उवा) । कवक अवहरिज्जत, अवहीरमाग (सुर ३, १४२, भग २५, ४, णाय १, १८) । संक्र. अवहरिऊण, अवहट्ठु (महा, आचा, भग) ।

अवहर सक [अप + ह] परित्याग करना । सक्र अवहट्ठु (सूत्र १, ४, १, १७) ।

अवहर वि [अपहर] अपहारक, छीन लेने वाला (गा १५६) ।

अवहरण न [अपहरण] छीन लेना (कुमा, सुपा २५०) ।

अवहरिअ वि [गत] गया हुआ (कुमा) ।

अवहरिअ वि [अपहृत] छीन लिया हुआ (सुर ३, १४१, कुम्पा ६) ।

अवहस सक [अव, अप + हस्] तुच्छ करना, तिरस्कार करना, उपहास करना । अवहसइ (णाय १, १८) ।

अवहसिय वि [अप, अवहसित] तिरस्कृत, उपहसित (णाय १, ८, सुर १२, ६७) ।

अवहाउ सक [दे] आक्रोश करना । अवहाउमि (दे १, ४७ टी) ।

अवहाडिअ वि [दे] उत्क्रुष्ट, जिस पर आक्रोश किया गया हो वह (दे १, ४७) ।

अवहाण न [अवधान] १ ख्याल, उपयोग (सुर १०, ७१, कुमा) । २ ज्ञान, जानना (विसे ८२) ।

अवहाय पु [दे] विरह, वियोग (दे १, ३६) ।

अवहाय अ [अपहाय] छोड़ कर, त्याग कर (भग १६) ।

अवहार सक [अव + धारय] निर्णय करना, निश्चय करना । कर्म अवहारिज्जइ (स १६६) । हेक अवहारेउ (भास १६) । अवहार (अप) देखो अवहर = अप + ह । अवहारइ (भवि) । सक्र अवहारिअ (भवि) ।

अवहार पुं [अपहार] १ अपहरण (परह १, ३, सुपा २७५) । २ दूर करना, परित्याग

(णाय १, ६) । ३ चोरी (सुपा ४४६) । ४ बाहर करना, निकालना (निचू ७) । ५ भागाकार (भग २५, ४) । ६ नाश, विनाश (सुर ७, १२५) ।

अवहार पु [अवधार] निश्चय, निर्णय । 'व वि [वन्] निश्चय वाला (ठा १०) ।

अवहार पु [अवधार्य] ध्रुव राशि, गणित-प्रसिद्ध राशिविशेष (सुज १०, ६ टी) ।

अवहारण न [अवधारण] निश्चय, निर्णय (से ११, १५, स १६६) ।

अवहारय वि [अपहारक] छीननेवाला, अपहरण करनेवाला (सुर ११, १२) ।

अवहारि वि [अपहारिन्] अपहारक, छीननेवाला (सुपा ५०३) ।

अवहारिय वि [अवधारित] निश्चित (स ५७६, पउम २३, ६, सुपा ३३१) ।

अवहाव सक [ऋप्] दया करना, कृपा करना । अवहावेइ (पड, हे ४, १५१) । अवहावसु (कुमा) ।

अवहाविअ वि [अवधावित] गमन के लिए प्रेरित (सिरि ४३४) ।

अवहास पु [अवभास] प्रकाश, तेज (गउड, प्राप्र) ।

अवहासिणी ओ [अवहासिनी] नासारज्जु, 'मोत्तव्वे जोत्तअपगगहम्मि अवहासिणी मुक्का' (गा ६६४) ।

अवहासिय वि [अवभासित] प्रकाशित (सुपा १४२) ।

अवहि देखो ओहि (सुपा ८६, ५७८, विसे ८२, ७३७) ।

अवहिट्ट वि [दे] दर्पित, अभिमानी, गर्वित (पड) ।

अवहिट्ट न [दे] मैथुन, संभोग (सूत्र १, ६, १०) ।

अवहिय वि [अपहृत] छीन लिया हुआ (पउम २०, ६६, सुर ११, ३२, सुपा ४१३) ।

अवहिय वि [अपहित] अहित (चड) ।

अवहिय वि [अवधृत] नियमित (विसे २६३३) ।

अवहिय न [अवधृत] अवधारण (वव १) ।

अवहिय वि [अवहित] सावधान, ख्यालवाला (प्राप्र, महा, णाय १, २, पउम १०, ६५,

अहिक्खेव पु [अधिक्खेप] १ तिरस्कार ।
२ स्थापन । ३ प्रेरणा (नाट) ।

अहिक्खिव देखो अहिक्खिव वक्क अहिक्खिवत
(स ५७) ।

अहिग देखो अहिय = अधिक (विसे १६४३
टी) ।

अहिरखीर सक [दे] १ पकड़ना । २ आघात
करना । अहिरखीरइ (भवि) ।

अहिगंध वि [अधिगन्ध] अधिक गन्ध वाला
(गण्ड) ।

अहिगम सक [अधि + गम्] १ जानना ।
२ निर्णय करना । ३ प्राप्त करना । कृ.
अहिगम्म (सम्म १६७) ।

अहिगम सक [अभि + गम्] १ सामने
जाना २ आदर करना । कृ अहिगम्म
(सण) ।

अहिगम पुं [अधिगम] १ ज्ञान (विसे
६०८) ।

‘जीवाईणमहिगमो मिच्छतस्स खओवसमभावे’
(धर्म २) । २ उपलम्भ, प्राप्ति (दे ७, १४) ।
३ गुरु आदि का उपदेश (विसे २६७५) ।
४ सेवा, भक्ति (सम ५१) । ५ न. गुरु आदि
के उपदेश से होनेवाली सद्धर्म-प्राप्ति—सम्य-
क्त्व (सुपा ६४८) । °रुइ ओ [°रुचि] १
सम्यक्त्व का एक भेद । २ सम्यक्त्व वाला
(पव १४५) ।

अहिगम देखो अभिगम (औप, से ८, ३३,
गण्ड) ।

अहिगमण न [अधिगमन] १ ज्ञान । २
निर्णय । ३ प्राप्ति, उपलम्भ (विसे) ।

अहिगमय वि [अधिगमक] जनानेवाला,
बतलानेवाला (विसे ५०३) ।

अहिगमिय वि [अधिगत] १ ज्ञात । २
निश्चित (सुर १, १८१) ।

अहिगम्म देखो अहिगम = अभि + गम् ।

अहिगम्म देखो अहिगम = अभि + गम् ।

अहिगय वि [अधिकृत] १ प्रस्तुत (रयण
३६) । २ न. प्रस्ताव, प्रसंग (राज) ।

अहिगय वि [अधिगत] १ उपलब्ध, प्राप्त
(उत्त १०) । २ ज्ञात (दे ६, १४८) । ३
पु. गीतार्थ मुनि, शास्त्राभिज्ञ साधु (वव १) ।

अहिगर पुं [दे] अजगर (जीव १) ।

अहिगरण पुन [अधिकरण] १ युद्ध, लड़ाई
(उप पृ २६८) । २ असयम, पाप-कर्म से
अनिवृत्ति (उप ८७२) । ३ आत्म-भिन्न बाह्य
वस्तु (ठा २, १) । ४ पाप जनक क्रिया
(णाय १, ५) । ५ आघात (विसे ८४) ।
६ भेंट, उपहार (वृह १) । ७ कलह, विवाद
(वृह १) । ८ हिंसा का उपकरण, ‘मोहघेण
य रइय हलउक्खलमुसलपमुहमहिगरण’ (विवे
६१) । °कड्, °कर वि [°कर] कलहकारक
(सूअ १, २, २, आचा) । °किरिया स्त्री
[°क्रिया] पाप-जनक कृति, दुर्गति मे ले
जानेवाली क्रिया (पणह १, २) । °सिद्धत
पुं [°सिद्धान्त] आनुपंगिक सिद्धि करनेवाला
सिद्धान्त (सूअ १, १२) ।

अहिगरणी ओ [अधिकरणी] लोहार का
एक उपकरण (भग १६, १) । °खोटि ओ
[°खोटि] जिसपर अधिकरणी रखी जाती
है वह काष्ठ (भग १६, १) ।

अहिगरणिया } ओ [आधिकरणीकी] देखो
अहिगरणीया } अहिगरण-किरिया (सम
१०, ठा २, १, नव १७) ।

अहिगरी [दे] अजगरिन, स्त्री अजगर (जीव
२) ।

अहिगार पुं [अधिकार] १ वैभव, संपत्ति,
‘नियग्रहिगारणुव जम्मणमहिम विहिस्सामो’
(सुपा ४६) । २ हक, सत्ता (सुपा ३५०) ।
३ प्रस्ताव, प्रसंग (विसे ४८७) । ४ गन्ध-
विभाग (वसु) । ५ योग्यता, पात्रता (प्रासू
१३५) ।

अहिगारि } वि [अधिकारिन्] १ अमल-
अहिगारिय } दार, राज-निष्पुक्त सत्ताधीश,
‘ता तप्पुराहिगारी समागओ तत्थ तम्मि खणे’
(सुपा ३५०, आ २७) । २ पात्र, योग्य (प्रासू
१३५, सण) ।

अहिगिअ अ [अधिकृत्य] अधिकार करके
(उवर ३६, ६६) ।

अहिघाय पु [अभिघात] आस्फालन, आघात
(गण्ड) ।

अहिछत्ता ओ [अहिच्छत्रा] नगरी-विशेष,
कुरुजल देश की प्राचीन राजधानी (सिरि
७८) ।

अहिजाइ ओ [अभिजाति] कुलीनता (प्राप्र) ।

अहिजाण सक [अभि + ज्ञा] पहिचानना ।
भवि. अहिजाणिस्मदि (शौ) (पि ५३४) ।

अहिजाय वि [अभिघात] कुलीन (भग ६,
३३) ।

अहिजुंज देखो अभिजुज । संकृ. अहिजुंजिय
(भग) ।

अहिजुत्त देखो अभिजुत्त (प्रवो ८४) ।

अहिज्ज सक [अधि + ज्] पढ़ना, अभ्यास
करना । अहिज्जइ (अंत २) । वक्क अहिज्जंत,
अहिज्जमाण (उप १६६ टी, उवा) । संकृ
अहिज्जित्ता, अहिज्जित्ता (उत्त १, सूअ १, १२)
हेक अहिज्जित्तं (दस ४) ।

अहिज्ज वि [अधिज्य] धनुष की डोरी पर
चढ़ाया हुआ (वारण) (दे ७, ६२) ।

अहिज्ज } वि [अभिज्ञ] जानकार, निपुण
अहिज्जग } (पि २६६, प्राक, दस) ।

अहिज्जण न [अध्ययन] पठन, अभ्यास (विसे
७ टी) ।

अहिज्जाण (शौ) देखो अहिज्जाण (प्राक ८७) ।
अहिज्जाविय वि [अध्यापित] पाठित, पढ़ाया
हुआ (उप पृ ३३) ।

अहिज्जिय वि [अधीत] पठित, अभ्यस्त (सुर
८, १२१, उप ५३० टी) ।

अहिज्जिय वि [अभिध्यत] लोभ-रहित,
अनुवध (भग ६, ३) ।

अहिट्ठ सक [अधि + घा] करना । अहिट्ठए
(दस ६, ४, २) ।

अहिट्ठग वि [अधिष्ठक] अधिष्ठाता, विधायक,
कारक,

‘नासदीपलिअकेसु, न निसिज्जा न पीढए ।

निग्गयापडिलेहाए, बुद्धवुत्तमहिट्ठगा’

(दस ६, ५५) ।

अहिट्ठण देखो अहिट्ठाण (पंचा ७, ३३) ।

अहिट्ठा सक [अधि + स्था] १ ऊपर चलना ।
२ आश्रय लेना । ३ रहना, निवास करना ।
४ शासन करना । ५ करना । ६ हराना । ७
आक्रमण करना । ८ ऊपर चढ़ बैठना । ९
वश करना । अहिट्ठेइ (निचू ५), ‘ता अहि-
ट्ठेहि इमं रज्जं’ (स २०४) । अहिट्ठेज्जा (पि
२५२, ४६६) । वक्क अहिट्ठत (निचू ५) ।
कवक. अहिट्ठिज्जमाण (ठा ४, १) । संकृ-
अहिट्ठेइत्ता (निचू १२) । हेक. अहिट्ठित्तए
(वृह ३) ।

अविक्रयण न [अवेक्षण] अवलोकन, निरीक्षण (भवि) ।

अविक्रयण न [अपेक्षण] अपेक्षा, परवाह (विने १७१६) ।

अविक्रय देवो अवेक्खा (कुमा) ।

अविक्रिय वि [अपेक्षित] १ अपेक्षित ।
२ न अपेक्षा, परवाह, 'नाविक्रियं समाए' (था १४) ।

अविक्रिय वि [अवेक्षित] अवलोकित (मुपा ७२) ।

अविगडय वि [अविकृतिक] घृत आदि विकार-जनक वस्तुओं का त्यागी (सूय २, २) ।

अविगडिय वि [अविकटित] अनालोचित (वव १) ।

अविगप्प देवो अवियप्प- (सुर ४, १८६) ।

अविगप्पग वि [अविकल्पक] १ विकल्प-रहित । २ न कल्पना-रहित प्रत्यक्ष ज्ञान (धम्म ७४०) ।

अविगल वि [अविकल] अखण्ड, पूर्ण (उप २८३) ।

अविगिच्छ वि [अविचिक्खित्तिय] जिसका इलाज न हो सके ऐसा, असाध्य व्याधि;

'तालपुड गरलाणं, जह वहुवाहीण

सित्तिओ वाही ।

दोसाणमसेसाणं, तह अविगिच्छो

मुसादोसो' (था १२) ।

अविगीय पु [अविगीत] अगोतार्थ, शास्त्रों के रहस्य का अनभिज्ञ साधु (वव ३) ।

अविग्गह वि [अविग्रह] १ शरीर-रहित ।
२ युद्ध-रहित, कलह-वर्जित (मुपा २३४) ।
३ सरल, सीधा (भग) । 'ग्गाइ लो [°गति] अकुटिल गति (भग १४, ५) ।

अविच्छ वि [अवीप्स्य] वीप्सारहित, व्याप्ति-रहित (पड्) ।

अविजाणय वि [अविज्ञायक] अनजान, मूर्ख (सूय १, ५, १) ।

अविज्ज वि [अवीज] बीजशक्ति से रहित (पडम ११, २५) ।

अविणय पु [अविनय] विनय का अभाव (ठा ३, ३) ।

अविणयवइ } पुं [दे] जार, उपपत्ति (दे १, अविणयवर } १८) ।

अविणयवई लो [दे] अतली, कुलटा (दे १, १८) ।

अविणिह वि [अविनेद्र] निद्रा-विच्छेदरहित (गा ६६) ।

अविण्णा लो [अवेज्ञा] अनुपयोग, त्याग का अभाव (सूय १, १, १) ।

अवितह वि [अवितथ] सत्य, सच्चा (महा, उव) ।

अविद } अ [अविद, °दा] विपाद-सूचक
अविदा } अन्वय (पि २२, स्वप्न ५८) ।

अविधि पु लो [अविधि] १ विच्छ विवि ।
२ विधि का अभाव (वृह ३, आबू १) ।

अविज्ञाण वि [अविज्ञान] १ अज्ञान । २ अज्ञात, अपरिचित (पडम ५, २१६) ।

अवियड्ड वि [अविदग्ध] अनिपुण (मुपा ५८२) ।

अवियत्त न [अप्रोतिक] १ प्रीति का अभाव (ठा १०) । २ वि अप्रोतिकारक (पणह १, १) ।

अवियत्त वि [अव्यक्त] अस्फुट, अस्पष्ट, 'अवियत्त दंसण अणागार' (सम्म ६५) ।

अवियप्प वि [अविकल्प] १ भेदरहित, 'वज्जणपजायस्स उ पुरिमो पुरिसो त्ति निच्च-मवियप्पो' (सम्म ३५) । २ क्रि वि नि संशय, संशयरहित, 'सविअणनिविअणं इय पुरिसं जो मणिज्ज अवियप्प' (सम्म ३५) ।

अवियाउरी लो [दे. अविजनयित्री] वन्ध्या लो (गाया १, २) ।

अवियाणय देवो अविजाणय (आवा) ।

अविरइ लो [अविरति] १ विराम का अभाव, अनिवृत्ति । २ पाप कर्म से अनिवृत्ति (सम १०, पणह २, ५) । ३ हिंसा (कम्म ४) । ४ अन्नहा, मैथुन (ठा ६) । ५ विरति-परिणाम का अभाव (सूय २, २) । ६ वि. विरतिरहित (नाट) । 'वाय पु [°वाद] १ अविरति की चर्चा । २ मैथुन-चर्चा (ठा ६) ।

अविरइय वि [अविरतिक] विरति से रहित, पापनिवृत्ति से वर्जित, पाप कर्म में प्रवृत्त (भग, कत्त) ।

अविरत्त वि [अविरक्त] वैराग्यरहित (गाया १, १४) ।

अविरय वि [अविरत] १ विरामरहित, अविच्छिन्न (गा १५५) । २ पाप निवृत्ति से रहित (ठा २, १) । ३ चतुर्थं गुणस्यानक वाला जीव (कम्म ४, ६३) । ४ क्रि वि सदा, हमेशा (पात्र) । 'सम्मदिट्ठि लो [°सम्य-ग्दृष्टि] चतुर्थं गुणस्यानक (कम्म २, २) ।

अविरल वि [अविरल] निविड, घन (गाया १, १) ।

अविरहि वि [अविरहिन] विरहरहित (कुमा) ।

अविराम वि [अविराम] १ विरामरहित । २ क्रि वि निरन्तर, हमेशा (पात्र) ।

अविराय वि [अविलीन] अभ्रष्ट (कुमा) ।

अविराहिय वि [अविराधित] अखण्डित, आराधित (भग १५) ।

अविरिय वि [अवीर्य] वीर्यरहित (भग) ।

अविल पु [दे] १ पशु । २ वि कठिन (दे १, ५२) ।

अविलविय वि [अविलम्बित] विलम्ब-रहित, शीघ्र (कप्प) ।

अविला लो [अविला] मेपी, भेड़ी (पात्र) ।

अविवेग पु [अविवेक] १ विवेक का अभाव । २ वि विवेकरहित । 'वत् वि [°वत्] अविवेकी (पडम ११३, ३९) ।

अविसधि वि [अविसधि] पूर्वापर विरोध से रहित, संगत, सवद्ध (श्रौप) ।

अविसंचाइ वि [अविसंचादिन्] विसवाद-रहित, प्रमाण भूत, सत्य (कुमा, सुर ६, १७८) ।

अविसम वि [अविषम] सदृश, तुल्य (कुमा) ।

अविसाइ वि [अविषादिन्] विषादरहित (पणह २, १) ।

अविसेस वि [अविशेष] तुल्य, समान (ठा २, ३, उप ८७७) ।

अविसेसिय वि [अविशेषित] (ठा १०) ।

अविस्स न [अविश्र] मास और रुधिर (पव ४०) ।

अविस्साम वि [अविश्राम] १ विश्रामरहित (पणह १, १) । २ क्रि वि. निरन्तर, सदा (उप ७२८ टी) ।

अहिया स्त्री [अधिका] भगवान् श्रीनमिनाय
की प्रथम शिष्या (सम १५२) ।
अहियाइ देखो अहिजाइ (पङ्) ।
अहियाय देवो अहिजाय (पात्र) ।
अहियार पुं [अभिचार] शत्रु के वध के लिए
किया जाता मन्त्रादि-प्रयोग (गड्ड) ।
अहियार देखो अहिगार (स ५४३, पात्र,
मुद्रा २६६, मट्टि ७ टी, मवि, दे ७, ३२) ।
अहियारि देखो अहिगारि (दे ६, १०८) ।
अहियास सक [अधि + आस्, अधि +
सह्] सहन करना, कष्टों को शान्ति से
भेलना । अहियामड, अहियामए, अहियामेइ
(उव, महा) । कर्म अहियामिज्जति (भग) ।
वहु अहियासेमाण (आचा) । संक. अहि-
यासित्ता, अहियासेत्तु (सूय १, ३, ४,
आचा) हेहु अहियासित्तण (आचा) । कृ
अहियासियव्व (उप ५४३) ।
अहियास वि [अध्यास, अधिसह] महिणु
(वृह १) ।
अहियासण न [अध्यासन अधिसहन]
नहन करना (उप ५३६, स १६२) ।
अहियासण न [अधिकाशन] अन्निक भोजन,
अजीर्ण (ठा ६) ।
अहियासिय वि [अध्यामित, अधिपोड]
सहन किया हुआ (आचा) ।
अहिर पु [आभीर] अहीर, गोवाला (गा
८११) ।
अहिरम देखो अभिरम । बहु अहिरमत
(समु १५४) ।
अहिरम अक [अभि + रम्] क्रीडा करना,
सभोग करना । अहिरमदि (शौ) (नाट) । हेहु
अभिरमिटु (शौ) (नाट) ।
अहिरम्म वि [अभिरम्भ] सुन्दर, मनोहर
(मवि) ।
अहिराम वि [अभिराम] सुन्दर, मनोहर
(पात्र) ।
अहिरामिण वि [अभिरामिन्] आनन्द देने
वाला (सण) ।
अहिराय पु [अविराज] १ राजा (वृह ३) ।
२ स्वामी, पति (सण) ।
अहिराय न [अधिराज्य] राज्य, प्रभुत्व
(मट्टि ७) ।

अहिरिअ देखो अहिरीअ (पिड ६३१) ।
अहिरीअ वि [अहीरु] निलंब, वेशरम (हे २,
१०४) ।
अहिरीअ वि [दे] निस्तेज, फीका (दे १,
२७) ।
अहिरीमाण वि [दे अहारिन्, अहीमनस्]
१ अमनोहर, मन को प्रतिकूल । २ अनजा-
कारक, 'एगयरे अन्नयरे अभिन्नाय तिनिस्र-
माणे परिव्वए जे य हिर्रो, जे य अहिरोमाणा'
(आचा १, ६, २) ।
अहिरुव वि [अभिरुप] १ सुन्दर, मनोहर
(अभि २११) । २ अनुत्प, योग्य (विक्र ३८) ।
अहिरेम सक [पृ] पूरा करना, पूति करना ।
अहिरेमड (हे ४, १६६) ।
अहिरोअ वि [दे] पूर्ण (पङ्) ।
अहिरोहण न [अधिरोहण] ऊपर चढ़ना,
आरोहण (मा ४०) ।
अहिरोहि वि [अविरोहिन्] ऊपर चढ़ने
वाला (अभि १७०) ।
अहिरोहिणी स्त्री [अविरोहिणी] निश्रेणी,
मीढी (दे ८, २६) ।
अहिल वि [अरिमल] सकल, सब (गड्ड,
रभा) ।
अहिलंख । सक [काड्छ] चाहना, अभि-
अहिलय } लाय करना । अहिलखइ, अहि-
अहिलक्ख } लवइ (हे ४, १६२), 'अहिन-
क्खति मुग्रति अ रुवावार विलामिणीहिअ-
आइ' (मे १०, ५७) ।
अहिलक्ख वि [अभिलक्ष्य] अनुमान से
जानने योग्य (गड्ड) ।
अहिलय सक [अभि + लप्] समापण
करना, कहना । वक्क अहिलप्पमाण (स
८४) ।
अहिलस सक [अभि + लप्] अभिलाप
करना, चाहना । अहिलमड (महा) । बहु
अहिलसंत (नाट) ।
अहिलसिय वि [अभिलपित] वाग्दित (सुर
४, २४८) ।
अहिलसिर वि [अभिलापिन्] अभिलापी,
इच्छुक (दे ६, ५८) ।
अहिलाण न [अभिलान] मुख का बन्वन
विशेष (शाया १, १७) ।

अहिलाव पु [अभिलाप] शब्द, आवाज (ठा
२, ३) ।
अहिलाम पुं [अभिलाप] इच्छा, वाञ्छा,
चाह (गड्ड) ।
अहिलासि वि [अभिलापिन्] चाहनेवाला
(नाट) ।
अहिलिअ न [दे] १ परामव । २ क्रोध, गुस्सा
(दे १, ८७) ।
अहिलिह सक [अभि + लिख्] १ चिन्ता
करना । २ लिखना । अहिलिहति (मुद्रा
१०८) । संक. अहिलिहिअ (वेणी २५) ।
अहिलोयण न [अभिलोकन] ऊँचा स्थान
(पण्ह २, ४) ।
अहिलोल वि [अभिलोल] चपल, चञ्चल
(गड्ड) ।
अहिलोहिआ स्त्री [अभिलोभिका] तोलुपता,
तृष्णा (मे ३, ४७) ।
अहिल वि [दे] घनवान्, बनी (दे १, १०) ।
अहिलिया स्त्री [अहिल्या] एक मती स्त्री
(पण्ह १, ८) ।
अहिव [अधिप] १ ऊपरी, मुखिया (उप
७२८ टी) । २ मानिक, स्वामी (गड्ड) ।
३ राजा, भूप, 'हुडाहिवा दंउपरा हवंति'
(गोय ८) ।
अहिवइ वि [अधिपति] ऊपर देखो (शाया
१, ८, गड्ड, मुर ६, ६२) ।
अहिवजु देवो अहिमजु (पङ्) ।
अहिवदिय वि [अभिवन्दित] नमस्कृत (न
६४१) ।
अहिवजु देवो अहिमजु (पङ्) ।
अहिवड अक [अधि + पत्] क्षीण होना ।
बहु 'एव नित्तारे माणुसत्तणे जीविअ अहि-
वडते' (तदु ३३) ।
अहिवड सक [अधि + पत्] आना । बहु
अहिवडत (राज) ।
अहिवड्ड देखो अभिवड्ड अहिवड्डामो
(कण्) ।
अहिवड्डि स्त्री [अभिवृद्धि] उत्तर प्रोष्ठ-
अहिवद्धि } पदा नक्षत्र का अधिष्ठाता देवता
(सुख १०, १२, जं ७—पत्र ४६८) ।
अहिवड्डिय वि [अभिवर्धित] बढ़ाया हुआ
(स २४७) ।

अव्वागड वि [अव्याकृत] अव्यक्त, अस्फुट (आचा, सत्त ६ टी) ।

अव्वाण वि [आव्यान] थोडा स्निग्ध (शोध ४८८) ।

अव्वावाह वि [अव्यावाध] १ हरज-रहित, वावा-वर्जित (आव ३) । २ न रोग का अभाव (भग १८, १०) । ३ सुख (आवम) । ४ मोक्ष-स्थान, मुक्ति (भग १, १) । ५ पुं-लोकार्न्तिक देव-विशेष (गाया १, ८) ।

अव्वावाह पुन [अव्यावाध] एक देवविमान (देवेन्द्र १४५) ।

अव्वावड वि [अव्वापुन] १ जो व्यवहार में न लाया गया हो, व्यापार-रहित । २ एक प्रकार का वास्तु (वृह ३) ।

अव्वावन्न वि [अव्यापन्न] अविनष्ट, नाश को अप्राप्त (भग १, ७) ।

अव्वावार वि [अव्यावार] व्यापार-वर्जित (स ५०) ।

अव्वाहय वि [अव्याहत] १ रुकावट-वर्जित (ठा ४, ४, सुपा ८६) । २ अनुपहत, आघात-रहित (एदि) । ३ पुन्यावरत्त न [पूर्वा-परत्व] जिसमें पूर्वापर का विरोध या असंगति न हो ऐसा (वचन) (राय) ।

अव्वाहार पु [अव्याहार] न बोलना, मौन (पाद्य) ।

अव्वाहिय वि [अव्याहत] न बुलाया हुआ (जीव ३, आचा) ।

अव्विरय वि [अविरत] विरति-रहित (सट्ठि ८) ।

अव्वो अ नीचे के अर्थों में से, प्रकरण के अनुसार, किसी एक अर्थ का सूचक अव्यय—१ सूचना । २ दुःख । ३ संभाषण । ४ अपराध । ५ विस्मय । ६ आनन्द । ७ आदर । ८ भय । ९ खेद । १० विपाद । ११ पश्चात्ताप, 'अव्वो हरति हियय,

तहवि न वेसा हवति जुवईण ।

अव्वो किपि रहस्स, मुएति धुत्ता जणम्महिम्मा ॥

अव्वो सुपहायमिण,

अव्वो अज्जम्ह सप्पल जीअं ।

अव्वो अइअम्मि तुमे, नवरं जइ सा न

जूरिहिइ ॥' (हे २, २०४) ।

अव्वोगड वि [अव्याकृत] १ अवशिष्ट

(वृह २) । २ फैलाव-रहित (दसा ३) । ३ नही बाटा हुआ । ४ अस्फुट, अस्पष्ट । ५ न एक प्रकार का वास्तु (वृह ३) ।

अव्वोच्छिण्ण वि [अव्युच्छिन्न, अव्यव-च्छिन्न] १ आन्तर-रहित, सतत, विच्छेद-वर्जित (वव ७) । २ नित्य । ३ अव्याहत (गडड) ।

अव्वोच्छित्ति वी [अव्युच्छित्ति, अव्यव-च्छित्ति] १ सातत्य, प्रवाह, वीच में विच्छेद का अभाव, परपरा से बराबर चला आना (आवम) । २ नय पुं [नय] वस्तु को किसी न किसी रूप से स्थायी माननेवाला पक्ष, द्रव्यार्थिक नय (भग ७, ३) ।

अव्वोच्छिन्न देखो अव्वोच्छिण्ण (शोध ३२२, स २५६) ।

अव्वोयड देखो अव्वोगड (भग १०, ४, भास ७१) ।

अस सक [अश्] व्याप्त करना । असइ, असए (पड्) ।

अस अक [अस्] होना । अस्सि, 'हाहा हम्मोहमस्सि त्ति कट्ठु' (भग १५) । अस्सि (प्राप) । अत्थि (हे ३, १४६, १४७, १४८) । भूका आवि, आसी (भग, उवा) ।

अस सक [अश्] भोजन करना, खाना । असइ, 'भवमणोसालूर नामइ दोसोवि जत्थाही' (साधं १०६, भवि) । वड्ठु असंत (भवि) । कृ असियव्व (सुपा ४३८) ।

अस वड्ठु [असत्] अविद्यमान, असत्, 'दुह्मो ए विणस्सति, नो य उप्पज्जए अस्' (सूय १, १, १, १६) ।

असइ वी [असत्ति] १ उलटा रखा हुआ हस्त तल । २ धान्य मापने का एक परिमाण । ३ उससे मापा हुआ धान्य (अणु, गाया १, ७) ।

असइ वी [दे असत्त्व] अभाव, अविद्यमानता, 'पढम जईए दाऊण,

अप्पणा पणमिऊण पारेइ ।

असईय सुविहियाण, भुजेइ य क्यदिसालोओ' (उवा) ।

असइ } अ [असकृत] अनेकवार, बार-
असई } बार (भवि, आचा, उप ८३३ टी) ।
असई } वार (भवि, आचा, उप ८३३ टी) ।

असई वी [असती] १ कुलटा, व्यभिचारिणी वी (सुपा ६) । २ दासी (भग ८, ६) । ३ पोस

[पु पोष] घन के लिए दासी, नपुंसक या पशुओं का पालन, 'असईपोस च वज्जिजा' (आ २२) । ४ पोसणया वी [पोपणा] देखो अनन्तरोक्त अर्थ (पडि) ।

असउग पुन [अशकुन] अपशकुन (पचा ७) । असक वि [अशङ्क] १ शङ्का-रहित, असं-दिग्ध । २ निडर, निर्भय (आचा, सुर २, २६) ।

असंकल वि [अशृङ्खल] शृङ्खला-रहित, अनियन्त्रित (कुमा) ।

असकि वि [अशङ्किन्] संदेह न करने वाला (सूय १, १, २) ।

असंकिलिट्ट वि [असंक्लिष्ट] १ संक्लेश-रहित । २ विशुद्ध, निर्दोष (श्रीप, परह २, १) ।

असख वि [असख्य] सख्या-रहित, परिमाण-रहित (सूपा ५६६, जी २७, ४०) ।

असंख न [असंख्य] साध्य मत से भिन्न दर्शन (सूपा ५६६) ।

असंखड वीन [दे] कलह, भगडा, 'जत्थ य समणीणमसंखडाइ गच्छम्मि नेव जायति' (गच्छ ३, ११) । वी ० डी (पव १०६) ।

असंखड न [दे] कलह, भगडा (निचू १) ।

असखडिय वि [दे] कलह करने वाला, भगडाखोर (वृह १) ।

असखय देखो असख = असंख्य (स ८५) ।

असखय वि [असंस्कृत] १ सत्कार-हीन । २ सधान करने के अशक्य (राज) ।

असखिज्ज वि [असंख्येय] गिनती या परिमाण करने के अशक्य (नव ३५) ।

असखिज्जय देखो असखेज्जय (अणु) ।

असखेज्ज देखो असखिज्ज (भग) ।

असंखेज्जइ वि [असंख्येय] अमख्यातवा । ३ भाग पुं [भाग] असंख्यातवा हिस्सा (श्रीप; भग) ।

असंखेज्जय पुन [असंख्येयक] गणना-विशेष (अणु) ।

असग वि [असङ्ग] १ निस्सङ्ग, अनासक्त (परण २) । २ पुं आत्मा (आचा) । ३ मुक्त जीव । ४ न. मोक्ष, मुक्ति (पचव ३, श्रीप) ।

असंगय न [दे] वज्र, कपडा (दे १, ३४) ।

अहुल वि [अफुल्ल] अविकमित (कुमा) ।
अहुवंत वक्तु [अभवत्] न होता हुआ
(कुमा) ।

अहूण देखो अहीण = अहीन (कुमा) ।

अहूय वि [अभूत] जो न हुआ हो °पुत्र
वि [°पूर्व] जो पहले कभी न हुआ हो (कुमा) ।

अहे अ [अधस्] नीचे (आचा) । °कम्म
न [कर्मन्] आघाकर्म, भिक्षा का एक दोष
(पिंड) । °काय पुं [°काय] शरीर का नीचला
हिस्सा (सूत्र १, ४, १) । °चर वि [°चर]
बिल आदि में रहने वाले सर्प वगैरह जन्तु
(आचा) । °तारग पु [°तारक] पिशाच-
विशेष (पराण १) । °दिमा स्त्री [°दिक्]
नीचे की दिशा (आचा) । °लोग पु [°लोक]
पाताल-लोक (ठा २ २) । °वाय पु [°वात]
नीचे बहनेवाला वायु (पराण १) । २ अपान-
वायु, पर्दन (आवम) । °विग्रह वि [°विकट]
भित्त्यादिरहित स्थान, खुला स्थान, 'तंसि
भगव अपडिन्ने अहेवियडे अहियासए दविए'
(आचा) । °सत्तमा स्त्री [°सप्तमी] सातवी
या अन्तिम नरकभूमि (सम ४१, एया १,
१६, १६) । देखो अहो = अवस् ।

अहे देखो अह = अव (भग १, ६) ।

अहेउ पु [अहेतु] १ सत्य हेतु का विरोधी,
हेत्वाभास (ठा ५, १) । २ वि कारणरहित,
नित्य (सूत्र १, १, १) । °वाय पु [°वाद]
आगमवाद, जिसमें तर्क—हेतु को छोड़कर

केवल शास्त्र ही प्रमाण माना जाता हो ऐसा
वाद (सम्म १४०) ।

अहेउय वि [अहेतुक] हेतुवर्जित, निष्कारण
(पउम ६३, ४) ।

अहेकम्म पुन [अध कर्मन्] १ अधोगति में
ले जाने वाला कर्म । २ भिक्षा का आघाकर्म
दोष (पिंड ६९) ।

अहेसणिज्ज वि [यथैपणीय] संस्काररहित,
कोरा, 'अहेमणिजाइं वत्याइ जाएजा' (आचा) ।
अहेसर पु [अहरीश्वर] सूर्य, सूरज (महा) ।
अहो देखो अह = अवस् (सम ३६, ठा २, २,
३, १, भग, एया १, १, पउम १०२, ८१,
आव ३) ।

°करण न [°करण] कलह, झगडा (निबू
१०) । °गड स्त्री [°गति] १ नरक या तिर्यञ्च-
योनि । २ अवनति (पउम ८०, ४६) । °गामि
वि [°गामिन्] दुर्गति में जानेवाला (सम
१५३, आ ३३) । °तरण न [°तरण] कलह,
झगडा (निबू १०) । °मुह वि [°मुख]
अधोमुख, अवनत मुख, लजित (सुर २, १५८,
३, १३५, सुपा २४२) । °लोइय वि
[°लौकिक] पाताल लोक से सबन्ध रखने-
वाला (सम १४२) । °हि वि [°अवधि]
१ नीचे दर्जा का अवधिज्ञान वाला (राय) ।
२ पुत्री नीचे दर्जा का अवधितान, अव-
धिज्ञान का एक भेद (ठा २, २) ।

अहो अ [अहनि] दिवस में, 'अहो य रामो

य सिवाभिलासिणो' (पउम ३१, १२८, परह
२, १) ।

अहो अ [अहो] इन अर्थों का सूचक अव्यय—
१ विस्मय, आश्चर्य । २ खेद, शोक । ३ ग्राम-
न्त्रण, सवोधन । ४ वितर्क । ५ प्रशंसा । ६
असूया, द्वेष (हे २, २१७, आचा, गउड) ।
°दान न [°दान] आश्चर्य-कारक दान (उत्त
२, कप्प) । °पुरिसिगा, °पुरिसिया स्त्री
[°पुरुषिका] गर्व, अभिमान (स १२३,
२८८) । °विहार पुं [°विहार] समय का
आश्चर्यजनक अनुष्ठान (आचा) ।

अहो अ [अहो] दीनता-सूचक अव्यय (अणु
१६) ।

अहो पुंन [अहन्] दिन, दिवस (पिण) ।
°णिस, निस, निसि न [°निश] रात और
दिन, दिन-रात, 'णिरए णेरइयाण अहोणिम
पच्चमाणाण' (सूत्र १, ५, १, आ ५०), 'अंतो
अहोनिमिस्स उ' (विसे ८७३) । °रत्त पु
[°रात्र] १ दिन और रात्रि परिमित काल,
आठ प्रहर (ठा २, ४), 'तिरिण अहोरत्ता
पुण न खामिया कयतेण' (पउम ४३, ३१) ।
२ चार प्रहर का समय (जो २) । °राइया
स्त्री [°रात्रिकी] ध्यानप्रधान अनुष्ठान विशेष
(पचा १८, आव ४, सम २१) । °राडिय
न [°रात्रिन्दिव] दिनरात (भग, औप) ।
अहोरण न [दे] उत्तरीय वस्त्र, चादर (दे १,
२५, गा ७७१) ।

इअ सिरिपाइअसहमहणवे अयाराइसहसकलणो
एणम पढमो तरणो समत्तो ।

आ

आ पुं [आ] १ प्राकृत वर्णमाला का द्वितीय
स्वर-वर्ण (ग्रामा) । इन अर्थों का सूचक
अव्यय—२ अ मर्यादा, सीमा, 'आस-
मुह' (गउड, विसे ८७४) । ३ अभिविधि,
व्याप्ति, 'आमूलसिरं फलिहयंभाओ' (कुमा,
विसे ८७४) । ४ थोड़ापन, अल्पता,

'आणोलककण्ठतुरं वरण' (गउड), 'आअवं'
(से ६, ३१, विसे १२३५) । ५ समन्तात्,
चारों ओर, 'आणुकडलमा विवइएणसरस-
कवरोविलंधियसम्मि' (गउड, विसे ८७५) ।
६ अधिकता, विशेषता, 'आदीण' (सूत्र
१, ५) । ७ स्मरण, याद (पड्) । ८ विम्वय,

आश्चर्य (ठा ५) । ९-१० क्रियाशब्द के योग
में अर्थविस्तृति और विपर्यय, 'आरुहइ',
'आगच्छंत' (पह्, कुमा) । ११ वाक्य की
शोभा के लिए भी इसका प्रयोग होता है
(एया १, २) । १२ पादपूर्ति में प्रयुक्त किया
जाता अव्यय (पड् २, १, ७६) ।

असणी स्त्री [अशनी] एक इन्द्राणी (ठा ४, १)।
 असणी स्त्री [अशनी] जिह्वा, जीभ, 'अवख-
 णमणी कम्माण मोहण तह वयाण वमं च'
 (मुख २, ४२)।
 असण वि [असञ्ज] सन्नारहित, अचेतन
 (लहुश्र ६)।
 अमणि वि [असञ्जिन्] १ सज्जि-भिन्न,
 मनोज्ञान से रहित (जीव) (ठा २, २)। २
 सम्पद्दृष्टि भिन्न, जैनेतर (भग १, २)। ३ सुय
 न [°श्रुत] जैनेतर शास्त्र (एदि)।
 असत्त वि [अशक्त] असमर्थ (सुर ३, २४४,
 १०, १७४)।
 असत्त वि [असक्त] अनासक्त (आचा)।
 असत्त न [असत्त्व] अभाव, असत्ता (एदि)।
 असत्ति स्त्री [अशक्ति] सामर्थ्य का अभाव।
 °मत वि [°मत्] असमर्थ, अशक्त (पञ्चम
 - ६६, ३६)।
 असत्थ वि [अस्वस्थ] अतदुल्लत, बीमार
 (सुर ३, १२७)।
 असत्थ न [अशस्त्र] १ शस्त्र-भिन्न। २ समय,
 निर्दोष अनुष्ठान (आचा)।
 असद्द पु [अशब्द] १ अकीर्ति, अपयश
 (गच्छ २)। २ वि शब्दरहित (बृह ३)।
 असद्द वि [अशब्द] शब्दरहित। स्त्री. °द्वी
 (उप वृ ३६४)।
 असन्नि देखो असणि (भग, जी ४३)।
 असवल वि [अशवल] १ अमिश्रित। २
 निर्दोष, पवित्र (पएह २, १)।
 असवभ वि [असभ्य] अशिष्ट, जगली (स
 ६१०)। °भासि वि [भापिन्] असभ्य-
 भाषी (सुर ६ २१)।
 असवभाव पु [असद्भाव] १ यथार्थता का
 अभाव, भूठ (पिंड)। २ वि असत्य, अयथार्थ
 (उत्त ३, श्रौप)।
 असवभावि वि [असद्भाविन्] भूठा, असत्य
 (महा)।
 असवभूय वि [असद्भूत] असत्य (भग)।
 असम वि [असम] १ असमान, असाधारण
 (सुर ३, २४)। २ एक, तीन, पाच आदि
 एकाई मस्या वाला, विषम। °सर पु [°शर]
 कामदेव (गउड)।

असमवाइ न [असमवायिन्] नैयायिक और
 वैशेषिक मत प्रसिद्ध कारण-विशेष (विसे
 २०६६)।
 असमजस वि [असमजस] १ अव्यवस्थित,
 गैरव्याजवी (आचा, सुर २, १३१, सुपा
 ६२३, उप १०००)। २ त्रिवि. अव्यवस्थित
 रूप से (पात्र)।
 असमिक्खिय वि [असमाक्षित] अना-
 लोचित, अविचारित (पएह १, २)। °कार
 वि [°कारिन्] साहसिक। °कारिया स्त्री
 [°कारिता] साहस कर्म (उप ७६८ टी)।
 असरासय वि [दे] निर्दय, निष्ठुर हृदय
 वाला (दे १, ४०)।
 असल्लि वि [अल्लि] असभ्य भाषा (मोह
 ८७)।
 असव पु [असु] प्राण, 'विउत्तासवो विअ
 ठिमो कवि काल' (स ३५७)।
 असवण वि [असवण] असमान, असाधारण
 (सएण)।
 असवार पु [अश्ववार] घुडसवार (धर्मवि
 ४१)।
 असह वि [असह] १ असहिष्णु (कुमा, सुपा
 ६२०)। २ असमर्थ (वव १)। ३ खेद करने
 वाला (पात्र)।
 असहण वि [असहन] असहिष्णु, शीघ्र
 (पात्र)।
 असहाय वि [असहाय] १ सहायरहित
 (भग)। २ एकाकी (बृह ४)।
 असहिज्ज वि [असाहाय्य] १ सहायता-
 रहित। २ सहायता का अनिच्छुक (उवा)।
 असहीण वि [अस्वाधीन] परतन्त्र, पराधीन
 (दस ८)।
 असहु वि [असह] १ असहिष्णु (उवा)।
 २ असमर्थ, अशक्त (श्रोध ३६, भा)। ३
 बीमार, ग्लान (निचू १)। ४ सुकुमार, कोमल
 (ठा ३, ३)।
 असहेज्ज देखो असहिज्ज (भग)।
 असागारिय वि [असागारिक] गृहस्थो के
 आचरणम से रहित स्थान (वव ३)।
 असाढभूइ पु [अपाढभूति] एक जैन मुनि
 (पिंड ४७४)।

असाढय न [असाढक] तृण-विशेष (पएण
 १, पत्र ३३)।
 असाय न [असात] दु ख, पीडा (पएह १, १),
 'रागवा इह जीवा,
 दुल्लहलोयम्मि गाढमणुरत्ता।
 ज वेईति अमाय, कत्तो त हदि नरएवि'
 (सुर ८, ७६)।
 °वेयणिज्ज न [°वेदनीय] दु ख का कारण-
 भूत कर्म (ठा २, ४)।
 असार १ वि [असार, °रु] निस्सार, सार-
 असारय १ रहित (महा, कुमा)।
 असारा स्त्री [दे] कदली-वृक्ष, केला का पेड़
 (दे १, १२)।
 असालिय पु स्त्री [दे] सर्प की एक जाति
 (सूत्र २, ३, २४)।
 असासय वि [अशाश्वत] अनित्य, विनश्वर
 (एणया १, १, गा २४७)।
 असाहण न [असाधन] असिद्धि (सुर ४,
 २४८)।
 असाहारण वि [असाधारण] अनुत्थ, अनुपम
 (भग, दस)।
 असि पुं [असि] १ खड्ग, तलवार (पात्र)।
 २ इस नाम की नरकपाल देवों की एक जाति
 (भग ३, ६)। ३ स्त्री. बनारस की एक नदी
 का नाम (ती ३८)। °कुड न [°कुण्ड] मथुरा
 का एक तीर्थ-स्थान (ती ७)। °वाय पु
 [°घात] तलवार का घाव (पञ्चम ५६, २५)।
 °चम्मपाय न [°चर्मपात्र] तलवार की
 म्यान, कोश (भग ३, ५)। °धारा स्त्री
 [°धारा] तलवार की धार (उत्त १९)।
 °धेणु, °धेणुआ स्त्री [°धेनु, °धेनुका] छुरी
 (गउड; पात्र)। °पत्त न [°पत्र] १ तलवार
 (विपा १, ६)। २ तलवार के जैसा तीक्ष्ण
 पत्र (भग ३, ६)। ३ तलवार की पतरी (जीव
 ३)। ४ पु. नरकपाल देवों की एक जाति (सम
 २६)। °पुत्तगा स्त्री [°पुत्तिका] छुरी (उप
 वृ ३३४)। °मुट्ठि स्त्री [°मुट्ठि] तलवार
 की मूठ (पात्र)। °रयण न [°रत्न] चक्रवर्ती
 राजा की एक उत्तम तलवार (ठा ७)। °लट्ठि
 स्त्री [°यष्टि] खड्ग-लता, तलवार (विपा १,
 ३)। °वण न [°वन] मङ्गाकार पत्ते वाले
 वृक्षों का जंगल (पएह १, १)। °वत्त देखो

आइग्व सक [आ + घ्रा] सूँघना। आइग्वद, आइग्वघाह (षड्)। हेक. आइग्वउ (कुमा)।
 आइच्च अ [दे] कदाचित्, कोद्वार (परण १७—पत्र ४८५)।
 आइच्च पु [आदित्य] १ सूर्य, सूरज, रवि (सम ५६)। २ लोकान्तिक देव-विशेष (गाया १, ८)। ३ न देवविमान-विशेष। ४ पुं तन्निवासी देव (पव)। ५ वि आद्य, प्रथम (सुज २०)। ६ सूर्य सवन्धी, 'आइचे रा मासे' (सम ५६)। 'गइ पु [गति] राक्षस वश के एक राजा का नाम (पउम ५, २६१)।
 'जस पु [यशस्] भरत चक्रवर्ती का एक पुत्र, जिससे इक्ष्वाकु वंश की शाखा रूप सूर्यवंश की उत्पत्ति हुई थी (पउम ५, ३, सुर २, १३४)। 'पभ न [प्रभ] इस नाम का एक नगर (पउम ५, ८०)। 'पीठ न [पीठ] भगवान् ऋषभदेव का एक स्मृतिचिह्न—पाद-पीठ (भावम)। 'रवख पु [रत्न] इस नाम का लङ्का का एक राजपुत्र (पउम ५, १६६)।
 'रय पु [रजस्] वानर वंश का एक विद्याधर राजा (पउम ८, २३४)।
 आइज्ज देखो आएज्ज (नव १५)।
 आइज्जमाण वक्क [आर्त्ताक्रियमाण] आर्द्र किया जाता, भीजाया जाता (आचा)।
 आइज्जमाण देखो आढा = आ + द।
 आइड्ड वि [आदिष्ट] १ उक्त, उपदिष्ट (सुर ४, १०१)। २ विवक्षित (सम्म ३८)।
 आइड्ड वि [आविष्ट] अविष्टित, आश्रित (कस)।
 आइड्डि वी [आदिष्टि] धारणा (ठा ७)।
 आइड्डि वी [आत्मद्वि] आत्मा की शक्ति, आत्मीय सामर्थ्य (भग १०, ३)।
 आइड्डिहय वि [आत्मद्विक] आत्मीय शक्ति-संपन्न (भग १०, ३)।
 आइड्डिहय वि [आकृष्ट] खींचा हुआ (हम्मीर १७)।
 आइण्ण देखो आइन्न = (दे) (तदु २०)।
 आइण्ण देखो आइन्न (औप, भग ७, ८, हे ३, १३४)।
 आइत्त वि [आदीप्त] थोड़ा प्रकाशित—ज्वलित (गाया १, १)।
 आइत्त वि [आयत्त] अधीन, वशीभूत, 'तुज्ज सिरो जा परस्स आइत्ता' (जीवा १०)।

आइत्तु वि [आदात्त] ग्रहण करने वाला (ठा ७)।
 आइत्तूण देखो आइ = आ + दा।
 आइत्थ न [आतिथ्य] अतिथि-सत्कार (प्राक् २१)।
 आइदि वी [आकृति] आकार (प्राप्र, स्वप्न २०)।
 आइद्ध वि [आविद्ध] १ प्रोत (ने ७, १०)। २ स्पृष्ट, छूआ हुआ (से ३, ३५)। ३ पहना हुआ, परिहित (आक ३८)।
 आइद्ध वि [आदिग्ध] व्याप्त (गाया १, १)।
 आइन्न वि [आकीर्ण] १ व्याप्त, भरा हुआ (सुर १, ४६, ३, ७१)। २ पु. वस्त्र दायक कल्पवृक्ष (ठा १०)।
 आइन्न वि [आचीर्ण] आचरित, विहित (आचा, चैत्य ४६)।
 आइन्न वि [आदीर्ण] उद्विग्न, खिन्न, 'आइ-आइ पियराड तीए पुच्छति दिव्व-देवन्' (सुपा ५६७)।
 आइन्न पु [दे] जात्यश्व, कुलीन घोड़ा (परह १, ४)।
 आइण्ण न [दे] १ आटा (गा १६६ दे १, ७८)। २ घर की शोभा के लिए जो चूना आदि की सफेदी दी जाती है वह। ३ चावल के आटा का दूध। ४ घर का मण्डन—भूषण (दे १, ७८)।
 आइय (अप) वि [आयात] आया हुआ (भवि)।
 आइय वि [आचित] १ सचित, एकत्रीकृत। २ व्याप्त, आकीर्ण। ३ अथित, गुम्फित (कप्प, औप)।
 आइय वि [आहत] आदरप्राप्त (कप्प)।
 आइयण न [आदान] ग्रहण, उपादान (परह १, ३)।
 आइयणया वी [आदान] ग्रहण, उपादान (ठा २, १)।
 आइरिय देखो आयरिय = आचार्य (हे १, ७३)।
 आइल वि [आविल] मलिन, कलुष, अस्वच्छ (परह १, ३)।

आइल } वि [आदिम] प्रथम, पहला
 आइल्लिय } (सम १२६, भग)। 'आइल्लियासु तिसु लेसासु' (परण १७, विसे २६२४)।
 आइवाहिअ पु [आतिवाहिक] देव-विशेष, जो मृत जीव को दूसरे जन्म में ले जाने के लिए नियुक्त है,
 'काहे अमाणवन्ता अग्गिमुहा,
 आइवाहिआ तव पुरिसा।
 अइल्लोहिहि मम अच्चुआ।
 तमगहणनिउणयरकन्तार' (अच्चु ८५)।
 आइवाहिग पु [आतिवाहिक] मार्गदर्शक (वासुदेवहिडी पत्र १५)।
 आइस सक [आ + दिश] आदेश करना, हुकुम करना, फरमाना। आइसह (पि ४७१)।
 वक्क. आइसंत (सुर १६, १३)।
 आइसण वि [दे] उज्जिभूत, परित्यक्त (दे १, ७१)।
 आईण वि [आदीन] १ अतिदीन, बहुत गरीब (सूअ १, ५)। २ न दूषित भिक्षा (सूअ १, १०)।
 आईण पुं [दे] जातिमान् अश्व, कुलीन घोड़ा (गाया १, १७)।
 आईण } न [आजिन, क] १ चमड़े का बना
 आईणग } हुआ वस्त्र (गाया १, १, आचा)।
 १ पु द्वीप-विशेष। २ समुद्र विशेष (जीव ३)।
 'भइ पु [भद्र] आजिन-द्वीप का अघिष्ठाता देव (जीव ३)। 'महाभइ पुं [महाभद्र] देखो पूर्वोक्त अर्थ (जीव ३)। 'महावर पुं [महावर] आजिन और आजिनवर नामक समुद्र का अघिष्ठाता देव (जीव ३)। 'वर पु [वर] १ द्वीप-विशेष। २ समुद्र-विशेष। ३ आजिन और आजिनवर समुद्र का अघिष्ठाता देव (जीव ३)। 'वरभइ पु [वरभद्र] आजिनवरद्वीप का अघिष्ठाता देव (जीव ३)। 'वरमहाभइ पु [वरमहाभद्र] देखो अनन्तर उक्त अर्थ (जीव ३)। 'वरोभास पुं [वरावभास] १ द्वीप-विशेष। २ समुद्र-विशेष (जीव ३)। 'वराभासभइ पुं [वरावभासभद्र] उक्त द्वीप का अघिष्ठाता देव (जीव ३)। 'वरोभासमहाभइ पु [वरावभासमहाभद्र] देखो पूर्वोक्त अर्थ

असोगा स्त्री [अशोका] १ इस नाम की एक इन्द्राणी (ठा ४, १) । २ भगवान् श्री शीतल-नाथ की शासनदेवी (पव २७) । ३ एक नगरी का नाम (पउम २०, १८६) ।

असोभण वि [अशोभन] असुन्दर, खराब (पउम ६६, १६) ।

असोय देखो असोग (भग, महा, रंभा) ।

असोय पु [अश्वयुक्] आश्विन मास (सम २९) ।

असोय वि [अशौच] १ शौचरहित (महा) । २ न. शौच का अभाव, अशुचिता । ३ वाइ वि [वादिन्] अशौच को ही माननेवाला (श्लो ३१८) ।

असोयणया स्त्री [अशोचनता] शोक का अभाव (पक्वि) ।

असोया देखो असोगा (ठा २, ३, सति ६) ।

असोल्लिय वि [अपक्व] कच्चा (उवा) ।

असोहि स्त्री [अशोधि] १ अशुद्धि । २ विरा-घना (श्लो ७८८) । ३ ठाण न [स्थान] १ पाप-कर्म । २ अशुद्धि स्थान । ३ दुर्जन का संसर्ग । ४ अनायतन (श्लो ७६३) ।

अस्स न [आस्थ] मुख, मुँह (गा ९८६) ।

अस्स वि [अस्व] १ द्रव्यरहित, निर्वन । २ निर्ग्रन्थ, साधु, मुनि (आचा) ।

अस्स पु [अश्व] १ घोडा (उप ७६८ टी) । २ अश्विनी नक्षत्र का अग्निष्टायक देव (ठा २, ३) । ३ ऋषि-विशेष (ज ७) । ४ कण्ण पु [कर्ण] १ एक अन्तर्द्वीप । २ इस अन्तर्द्वीप का निवासी (एदि) । ३ कण्णी स्त्री [कर्णी] वनस्पति-विशेष (पएण १) । ४ करण न [करण] जहाँ घोडा रखने में आता हो वह स्थान, अस्तबल (आचा २, १०, १४) । ५ गीव पु [ग्रीव] पहले प्रति-वासुदेव का नाम (सम १९३) । ६ तर पु [तर] खच्चद (पएण १) । ७ मुह पु [मुख] १-२ इस नाम का एक अन्तर्द्वीप और उसके निवासी (एदि, पएण १) । ८ मेह पु [मेघ] यज्ञ-विशेष, जिसमें अश्व मारा जाता है (अणु) । ९ सेण पु [सेन] १ एक प्रसिद्ध राजा, भगवान् पार्श्वनाथ का पिता (पव ११) । २ एक महाग्रह का नाम (चन्द २०) ।

१ यर पु [यदर] विद्याधर वंश के एक राजा का नाम (पउम ५, ४२) ।

अस्स न [अस्] १ अश्रु, आँसू । २ रुधिर, खून (प्राकृ २६) ।

अस्संख वि [असंख्य] सख्या-रहित (उप १७) ।

अस्संगिअ वि [दे] आसक्त (षड्) ।

अस्सघयणि वि [असहननिन्] सहनन रहित, किसी प्रकार के शारीरिक बन्ध से रहित (भग) ।

अस्संजम देखो असजम (उव) ।

अस्सजय वि [अस्वयत] १ गुरु की आज्ञा-नुसार चलनेवाला, अस्वच्छदी (आ ३१) ।

अस्सजय देखो असंजय (उव) ।

अस्संदम पु [अश्वन्दम] अश्व-पालक (सुपा ६४५) ।

अस्सच्च देखो असच्च, 'सुरिणो हवउ वयणा-मस्सच्च' (उप १४६ टी) ।

अस्सणि देखो असणि (विसे ५१६) ।

अस्सत्थ पुं [अश्वत्थ] वृक्ष-विशेष, पीपल (नाट) ।

अस्सत्थ वि [अश्वत्थ] रोगी, बीमार (सुर ३, १५१; माल ६५) ।

अस्सन्नि देखो असणि (सुर १४, ६६, कम्म ४, २, ३) ।

अस्सम पु [आश्रम] १ स्थान, जगह । २ ऋषियो का स्थान (अभि ६६, स्वप्न २५) ।

अस्समिअ वि [अश्रमित] श्रमरहित, अन-न्यासी (भग) ।

अस्सवार देखो असवार (सम्मत १४२) ।

अस्सस अक [आ + श्वस्] आश्वासन लेना । हेऊ अस्ससिदुं (शौ) (अभि १२०) ।

अस्साइय वि [आस्वादित] जिसका आस्वादन किया गया हो वह (दे) ।

अस्साएमाग देखो अस्साय = आस्वादय् ।

अस्साद सक [आ + सादय्] प्राप्त करना । अस्सादेति, अस्सादेस्सामो (भग १५) ।

अस्साद सक [आ + स्वादय्] आस्वादन करना ।

अस्सादण देखो अस्सायण (सुज १०, १६) ।

अस्सादिय वि [आसादित] प्राप्त किया हुआ (भग १५) ।

अस्साय देखो अस्साद = आ + सादय् ।

अस्साय देखो अस्साद = आ + स्वादय् । वहु.

अस्साएमाग (भग १२, १) । कृ. अस्सा-यणिज्ज (गाया १, १२) ।

अस्साय देखो असाय (कम्म २, ७, भग) ।

अस्सायण पुं [आश्वायन] १ अश्व ऋषि का सतान (जं ७) । २ अश्विनी नक्षत्र का गोत्र (इक) ।

अस्सावि वि [आस्त्राविन्] करता हुआ, टप-कता हुआ, संचिद्ध, 'जहा अस्साविणि नाव जाइअंधो दुल्लहए' (सुप्र १, १, २) ।

अस्सास सक [आ + आसय्] आश्वासन देना, दिलासा देना । अस्सासअदि (शौ) (पि ४६०) । अस्सासि (उत्त २, ४०, पि ४६१) ।

अस्सासण पु [आश्वासन] एक महाग्रह (सुज २०) ।

अस्सि स्त्री [अश्रि] १ कोण, घर आदि का कोना (ठा ६) । २ तलवार आदि का अग्र-भाग—बार (उप पृ ६६) ।

अस्सि पु [अश्विन्] अश्विनी नक्षत्र का अग्नि-ष्टायक देव (ठा २, २) ।

अस्सिणी स्त्री [अश्विनी] इस नाम का एक नक्षत्र (सम ८) ।

अस्सिय वि [आश्रित] आश्रय-प्राप्त, 'विराग-भेगमस्सिओ' (वसु, ठा ७, सथा १८) ।

अस्सु पुन [अश्रु] आँसू, 'अस्सु' (संक्षि १७) । अस्सु (शौ) न [अश्रु] आँसू (अभि ५९, स्वप्न ८५) ।

अस्सुक वि [अशुक्त] जिसकी चुगी या फीस माफ की गई हो वह (उप ५६७ टी) ।

अस्सुद (शौ) देखो असुय = अश्रुत (अभि १६३) ।

अस्सुय वि [अस्मृत] माद नहीं किया हुआ (भग) ।

अस्सेसा देखो असिलेसा (सम १७, विसे ३४०८) ।

अस्सोई स्त्री [आश्वयुजी] आश्विन मास की पूर्णिमा (चद १०) ।

अस्सोई स्त्री [आश्वयुजी] आश्विन मास की अमावस (सुज १०, ६ टी) देखो आसोया ।

अस्सोकांता स्त्री [अश्वोत्क्रान्ता] संगीत-शास्त्र प्रसिद्ध मध्यम ग्राम की पाचवी मूर्च्छना (ठा ७) ।

आउट्टि ली [आकुट्टि] १ हिंसा, मारना (प्राचा: उव) । २ निर्दयता (प्राप १८) ।

आउट्टि ली [आवृत्ति] देखो आउट्टण = आवृत्तन (वव १, १, २, १०, सूत्र १, १, प्राचा) । ५ बार-बार करना, पुन पुन क्रिया (सुज १२) ।

आउट्टि वि [आकुट्टिन्] १ मारनेवाला, हिंसक, 'जाण काएण णाउट्टी' (सूत्र) । २ अकार्य-कारक (दसा) ।

आउट्टि वि [दे] साढे तीन, 'एणे पुण एवमा-हंसु ता आउट्टि चदा आउट्टि सूर सव्वलोयं ओभासेति' (सुज १६) ।

आउट्टिम वि [आकुट्ट्य] कूटकर बैठने योग्य (जैम सिक्के मे अक्षर) (दसनि २, १७) ।

आउट्टिय देखो आउट्ट = आवृत्त (दसा) ।

आउट्टिय पु [आकुट्टिक] दण्ड-विशेष (भत्त २७) ।

आउट्टिय वि [आकुट्टित] छिन्न, विदारित (सूत्र) ।

आउट्टिया ली [आकुट्टिका] पास मे आकर करना (पंचा १५, १८) ।

आउट्ट वि [आतुष्ट] सतुष्ट (निच १) ।

आउड सक [आ+जोडय्] संबन्ध करना, जोडना । कवक आउडिज्जमाण (भग ५, ४) ।

आउड सक [आ+कुट्] १ कूटना, पीटना । २ ताडन करना, आघात करना । आउडेइ (जं ३) । कवक आउडिज्जमाण (भग ५, ४) ।

आउड सक [लिख्] लिखना, 'इति कट्ठु गामग आउडेइ' संक. आउडित्ता (जं ३—पत्र २९०) ।

आउडिय वि [आकुट्टित] ग्राह्य, ताडित (ज ३—पत्र २२२) ।

आउडु अक [मस्ज्] मज्जन करना, झुक्ना । आउडुइ (हे ४, १०१, पड्) ।

आउडुअ वि [मग्न] झुका हुआ, तल्लीन (कुमा) ।

आउण वि [आपूर्णे] पूर्ण, भरपूर, व्याप्त; 'कुमुमफलाउएणहव्येहि' (पउम ८, २०३) ।

आउत्त वि [आयुक्त] १ उपयोग वाला, सावधान (कप्प) । २ क्रि. उपयोग-पूर्वक (भग) । ३ न पुरोपोत्सर्ग, फरागत जाना (?)

(उप ६८५) । ४ पुं. गांव का नियुक्त किया हुआ मुखिया (दे १, १६) ।

आउत्त वि [आगुप्त] १ सक्षिप्त (ठा ३, १) । २ सयत (भग) ।

आउत्थ वि [आत्मोत्थ] आत्म-कृत (वव ४) ।

आउर वि [आतुर] १ रोगी, बीमार (एंदि) । २ उत्कण्ठित । ३ दुःखित, पीडित (प्रासू २८, ६५) ।

आउर न [दे] १ लडाई, युद्ध । २ वि. बहुत । ३ गरम (दे १, ६५, ७६) ।

आउरिय वि [आतुरित] दुःखित, पीडित (प्राचा) ।

आउल वि [आकुल] १ व्याप्त (प्राप) । २ व्यग्र (प्राव) । ३ व्याकुल, दुःखित । ४ सकीर्ण (स्वप्न ७३) । ५ पुं समूह (विसे ७००) ।

आउल सक [आकुलय्] १ व्याप्त करना । २ व्यग्र करना । ३ दुःखी करना । ४ सकीर्ण करना । ५ प्रचुर करना । कवक—आउलिज्जंत, आउलीअमाण (महा, पि ५६३) ।

आउलि ली [आतुलि] वृक्ष-विशेष (दे ५, ५) ।

आउलिअ वि [आकुलिन] आकुल किया हुआ (गा २५, पउम ३३, १०६, उप पृ ३२) ।

आउलीकर सक [आकुली+कृ] देखो आउल = आकुलय् । आउलीकरेति (भग) । कवक आउलीकिअमाण (नाट) ।

आउलीभूअ वि [आकुलीभूत] घबड़ाया हुआ (सुर २, १०) ।

आउल्य न [दे] जहाज चलाने का काष्ठमय उपकरण (सिरि ४२४) ।

आउस अक [आ + वस्] रहना, वास करना । कव. आउसंत (सम १) ।

आउस सक [आ + क्रुश्] आक्रोश करना, शाप देना, निष्ठुर वचन बोलना । आउसह (भग १५) । आउसेज, आउसेसि (उवा) ।

आउस सक [आ + मृश्] स्पर्श करना, छूना । कव. आउसंत (सम १) ।

आउस सक [आ + जुष्] सेवा करना । कव. आउसत (सम १) ।

आउस न [दे] कूच (दे १, ६५) । क्षुरकर्म (नंदीटि टिप्पनक)

आउस देखो आउ = आयुष् (कुमा) ।

आउस } वि [अयुष्मत्] चिरायु, दीर्घायु
आउसंत } (सम २६, प्राचा) ।

आउसणा ली [आक्रोशना] अमिश्राप, निर्म-त्संन (णाय १, १८, भग १५) ।

आउस्स देखो आउस = आ + क्रुश् । आउ-स्सति (णाय १, १८) ।

आउस्स पु [आक्रोश] दुर्वचन, असम्य वचन (सूत्र १, ३, ३, १८) ।

आउरिसय वि [आवश्यक] १ जरूरी । २ क्रि. जरूर, अवश्य (पएण ३६) । °करण न [°करण] १ मन, वचन और काया का शुभ व्यापार । २ मोक्ष के लिए प्रवृत्ति (पएण ३६) ।

आउह न [आयुध] १ शस्त्र, हथियार (कुमा) । २ विद्याधर वंश के एक राजा का नाम (पउम ५, ४४) । °घर न [°गृह] शस्त्रशाला (ज) । °घरसाला ली [°गृहशाला] देखो अनन्तर-उक्त अर्थ (जं) । °घरिय वि [°गृहिक] आयुधशाला का अव्यय—प्रधान कर्मचारी (ज) । °गार न [°गार] शस्त्रगृह (प्राप) ।

आउहि वि [आयुधिन] योद्धा, शस्त्रधारक (विसे) ।

आऊड अक [दे] जुए में पण करना । आऊ-डइ (दे १, ६६) ।

आऊडिय न [दे] द्यूत-पण, जुए मे की जाती प्रतिज्ञा (दे १, ६८) ।

आऊर सक [आ + पूरय्] भरना, पूर्ति करना, भरपूर करना । आऊरेइ (महा) । क. आऊरयत्त, आऊरमाण (पउम) १०२, ३३, से १२, २८) । कवक. आऊरिज्जमाण (पि ५३७) । सक. आऊरिवि (अप) (भवि) ।

आऊरिय वि [आपूर्ति] भरा हुआ, व्याप्त (सुर २, १६६) ।

आऊसिय वि [आयुषित] १ प्रविष्ट । २ सकुचित (णाय १, ८) ।

आएज्ज वि [आदेय] ग्रहण करने के योग्य उपादेय । °णाम, °नाम न [°नामन्] कर्म-विशेष, जिसके उदय से किसी का कोई भी वचन ग्राह्य माना जाता है (सम ६७) ।

आएस वि [ऐष्यत्] आगामी, भविष्य में होने वाला (सूत्र १, २, ३, २०) ।

अव्यय—१ आमन्त्रण । २ छेद । ३ आश्रय ।
४ दुःख । ५ आधिक्य, प्रकर्ष (हे २, २१७,
आ १४, कप्पु, गा ६५६) ।

अहा° अ [यथा] जैसे, माफिक, अनुसार (हे
१, २४५) । °छन्द वि [°च्छन्द] १
स्वच्छन्दी, स्वेरी (उप ८३३ टी) । २ न मरजी
के अनुसार (वव २) । °जाय वि [°जात]
१ नम्र, प्रावरण-रहित (हे १, १४५) । २ न
जन्म के अनुसार । ३ जैन साधुओं में दीक्षा
काल के परिमाण के अनुसार किया जाता
वन्दन—नमस्कार (धर्म २) । °णुपुञ्जी स्त्री
[°नुपूर्वी] यथाक्रम, अनुक्रम (गाथा १, १,
पञ्चम १, ८) । °तच्च न [°तत्त्व] तत्त्व के
अनुसार (भग २, १) । °तच्च न [°तथ्य]
सत्य-सत्य (सम १६) । °पडिस्व वि
[°प्रतिरूप] १ उचित, योग्य (श्रौष) । २
क्रि वि यथायोग्य (विपा १, १) । °पवत्त वि
[°प्रवृत्त] १ पूर्व की तरह ही प्रवृत्त, अपरि-
वर्तित (गाथा १, ९) । २ न. आत्मा का
परिणाम-विशेष (स ४७) । °पवित्तिकरण
न [°प्रवृत्तिकरण] आत्मा का परिणाम-
विशेष (कम्म ८) । °वायर वि [°वादर]
निह्यार, सार-रहित (गाथा १, १) । °भूय
वि [°भूत] तात्त्विक, वास्तविक (ठा १, १) ।
°राइगिय, °रायणिय न [°रालिक] यथा-
ज्येष्ठ, वडे के क्रम में (गाथा १, १, आचा) ।
°रिय न [°रुजु] गरलता के अनुसार
(आचा) । °रिह न [°ह] यथोचित (ठा २,
१) । २ वि उचित, योग्य (धर्म १) । °रीय
न [°रीत] १ रीति के अनुसार । २ स्वभाव
के माफिक (भग ५, २) । °लट् पु [°लन्द]
काल का एक परिमाण, पानी से भोजा हुआ
हाथ जितने समय में सूख जाय उतना समय
(कप्प) । °वगास न [°वकाश] अवकाश
के अनुसार (सूत्र २, ३) । °वच्च वि [°पत्य]
पुत्र-स्थानीय (भग ३, ७) । °सयड वि
[°सस्तुत] शयन के योग्य (आचा) । °सवि-
भाग पु [°सविभाग] साधु को दान देना
(उवा) । °सच्च न [°सत्य] वास्तविकता,
सचाई (आचा) । °सत्ति न [°शक्ति] शक्ति
के अनुसार (पसू ४) । °सुत्त न [°सूत्र]
आगम के अनुसार (सम ७७) । °सुह न

[°सुख] इच्छानुसार (गाथा १, १, भग) ।
°सुहुम वि [°सूक्ष्म] सारभूत (भग ३, १) ।
देखो अह° ।

अहालद वि [यथालन्द] यथानुज्ञात (काल),
इच्छानुसार (समय) (आचा २, ७, १, २) ।

अहालदि पुं [यथालन्दिन्] 'यथालन्द' अनु-
ष्ठान करने वाला मुनि (पव ७०) ।

अहासखड वि [दे] निष्कम्प, निश्चल (निचू
२) ।

अहासल वि [अहास्य] हास्य-रहित (नुपा
६१०) ।

अहाह अ [अहाह] देखो अहह (हे २,
२१७) ।

अहि देखो अभि (गड्ड, पाय, पंचव ४) ।

अहि अ [अधि] इन अर्थों का सूचक अव्यय—
१ आधिक्य, विशेषता, 'अहिगव, अहिमास' ।
२ अधिकार, सत्ता, 'अहिगय' । ३ ऐश्वर्य,
'अहिद्वारा' । ४ ऊँचा, ऊपर, 'अहिद्वारा' ।

अहि पुं [अहि] १ सर्प, साँप (पण १, प्रासू
१६, ३६, १०५) । २ शेष नाग (पिंग) ।
°च्छत्ता स्त्री [°च्छत्रा] नगरी-विशेष (गाथा
१, १६, ती ७) । °मड पुन [°मृतक] साँप
का मुर्दा (गाथा १, ६) । °वइ पु [°पति]
शेष नाग (अचू ६०) । °विज्झिअ पुं
[°वृश्चिक] मर्प के मूत्र से उत्पन्न होने वाली
वृश्चिक जाति (कुमा) ।

अहिअल न [दे] क्रोध, गुस्ता (दे १, ३६,
पड) ।

अहिआअ न [अभिजात] कुलीनता, खान-
दानी (गा ३८) ।

अहिआइ स्त्री [अभिजाति] कुलीनता
(पड) ।

अहिआर पु [दे] लोक यात्रा, जीवन-निर्वाह
(दे १, २६) ।

अहिउत्त वि [दे] व्याप्त, खचित (गड्ड) ।

अहिउत्त वि [अभियुक्त] १ विद्वान्, परिउत्त ।
२ उग्रत, उग्रोणी (पाय) । ३ शत्रु में विरा
हुआ (वेणी १२३ टि) ।

अहिऊर सक [अभि + पूरय] पूर्ण करना,
व्याप्त करना । कर्म अहिऊरजति (गड्ड) ।

अहिउल सक [दह] जलाना, दहन

करना । अहिऊलड (हे ४, २०८, पड,
कुमा) ।

अहिओय पुं [अभियोग] १ सवन्व (गड्ड) ।
२ दोषारोपण (स २२६) । देखो अभिओअ
(भवि) ।

अहिंद पुं [अहीन्द्र] १ सर्पों का राजा,
शेष नाग (अचू १) । २ श्रेष्ठ सर्प (कुमा) ।

°वुर न [°पुर] वामुकि-नगर । °वुरणाह पुं
[°पुरनाय] विष्णु, अच्युत (अचू २६) ।

अहिंसग वि [अहिंसक] हिंसा न करने
वाला (श्रौष ७४७) ।

अहिसण न [अहिसन] अहिमा (धर्म १) ।

अहिसय देखो अहिंसग (पण २, १) ।

अहिंसा स्त्री [अहिंसा] दूसरे को किसी प्रकार
से दुःख न देना (निचू २, धर्म ३, सूत्र १,
११) ।

अहिसिय वि [अहिसित] अमारित, अपी-
डित (सूत्र १, १, ४) ।

अहिकंख देखो अभिकंख वक्क. अहिकखन
(पंचव ४) ।

अहिकंखरि वि [अभिकाक्षिन्] अभिलाषी,
इच्छुक (सण) ।

अहिकखि देखो अहिकखरि (सूत्र १, १२,
२२) ।

अहिकय वि [अधिकृत] जिसका अधिकार
चलता हो वह, प्रमत्त (विमे १५८) ।

अहिकरण देखो अहिगरण (निचू ४) ।

अहिकरणी देखो अहिगरणी (ठा ८) ।

अहिकार देखो अहिगार (उत्त १४, १७) ।

अहिकारि देखो अहिगारि (रमा) ।

अहिकिअ अ [अधिकृत्य] अधिकार कर,
सहेय कर (आचू १) ।

अहिकखण न [दे] उपालभ, उलहना (दे १,
३५) ।

अहिकिखत्त वि [अविक्षिप्त] १ तिरस्कृत ।
२ निन्दित । ३ स्थापित । ४ परित्यक्त । ५
क्षिप्त (नाट) ।

अहिकिखव सक [अधि + क्षिप्] १
तिरस्कार करना । २ फेंकना । ३ निन्दना ।
४ स्थापित करना । ५ छोड़ देना । अहिकिख-
वइ (उव) । अहिकिखवाहि (स ३२६) । वक्क
अहिकिखवत (पञ्च ६५, ४४) ।

आकिदि देखो आकिइ (कुमा) ।
 अकुंच सक [आ + कुञ्चय्] संकोच करना ।
 आकुचइ, सक्र आकुंचिवि (अप) (भवि) ।
 आकुचण न [आकुञ्चन] संकोच, संक्षेप
 (सम्म १३३, विसे २४६२) ।
 आकुचिय वि [आकुञ्चित] संकुचित, 'रुद्ध
 गलय आकुचियाओ धमणीओ पसरिया वियणा'
 (सुर ४, २३८) ।
 आकुट्ट न [आकुट्ट] १ आक्रोश । २ वि, जिस
 पर आक्रोश किया गया हो वह (दे ३, ३२) ।
 आकुल दे आउल (कप्प) ।
 आकूय न [आकूत] १ इङ्गित, इशारा (उप
 ७२८ टी) । २ अभिप्राय (विसे ६२८) ।
 आकेवलिय वि [आकेवलिक] असंपूर्ण
 (आचा) ।
 आकोडण न [आकोटन] कूट कर घुसेडना
 (परह १, ३) ।
 आकोस देखो अकोस = आक्रोश (पच ४,
 २३) ।
 आकोसाय अक [आकोशाय्] विकसित
 होना । वक्र आकोसायत (परह १, ४) ।
 आकद (मा) देखो आकंद । आकदामि (पि
 ८८) ।
 आखच (अप) सक [आ + कृप्] पीछे
 खीचना । संक्र आखचिवि (भवि) ।
 आखडल पुं [आखण्डल] इन्द्र (सुपा
 ४७) । १ धनुह न [व्यनुप्] इन्द्रधनुष
 (उप ६८६ टी) । २ भूइ पु [भूति] भग-
 वान् महावीर के मुख्य शिष्य गौतम-स्वामी
 (पउम ११८, १०२) ।
 आगइ ली [आगति] आगमन (आचा, विसे
 २१४६) ।
 आगइ देखो आकिइ (महा) ।
 आगतव्व देखो आगम = आ + गम् ।
 आगतगार } न [आगन्त्रगार] धर्मशाला,
 आगतार } मुसाफिरखाना (श्रौप, आचा) ।
 आगतु वि [आगन्तु] आनेवाला (सूअ) ।
 आगन्तु देखो आगम = आ + गम् ।
 आगतुग } वि [आगन्तुक] १ आनेवाला ।
 आगतुय } २ अतिथि (स ४७१, चार २४,
 सुपा ३३६, श्रौष २१६) । ३ कृत्रिम, अस्वा-
 भाविक (सुर १२, १०) ।

आगतूण देखो आगम = आ + गम् ।
 आगंप सक [आ + कम्पय्] कँपाना,
 हिलाना । वक्र. आगपयंत (स ३३१, ४४३) ।
 आगपिय देखो आकपिय (पउम ३४, ४३) ।
 आगच्छ सक [आ + गम्] आना, आग-
 मन करना । आगच्छइ (महा) । भवि.
 आगच्छिस्सइ (पि ५२३) । वक्र. आगच्छत,
 आगच्छमाण (काल, भग) । हेक आग-
 च्छित्तए (पि ५७८) ।
 आगत देखो आगय (सुर २, २४८) ।
 आगत्ती ली [दे] कूप तुला (दे १, ६३) ।
 आगम सक [आ + गम्] १ आना आगमन
 करना । २ जानना । भवि आगमिस्स (पि
 ५२३, ५६०) । वक्र. आगममाण (आचा) ।
 संक्र. आगतूण, आगमेत्ता, आगम्म (पि
 ५८१, ५८२, श्रौप) । कृ. आगंतव्व (सुपा
 १२) । हेक आगंतु (काल) ।
 आगम पुं [आगम] १ समागम (पंच, १४५) ।
 २ ज्ञान, जानकारी, 'चोइसविजाठाणाए आगमे
 कए' (सुख २, १३) ।
 आगम पुं [आगम] १ आगमन (मे १४,
 ७५) । २ शास्त्र, सिद्धान्त (जी ४८) । ३ कुसल
 वि [कुशल] सिद्धान्तों का जानकार (उत्त) ।
 ४ ज्ञ वि [ज्ञ] शास्त्रों का जानकार (प्राह) ।
 ५ णीइ ली [नीति] आगमोक्त विधि (धर्म
 २) । ६ णु वि [ज्ञ] शास्त्रों का जानकार
 (प्राह) । ७ परतत वि [परतन्त्र] सिद्धान्त
 के अधीन (पंचव) । ८ वलिय वि [वलिक]
 सिद्धान्तों का अच्छा जानकार (भग ८, ८) ।
 ९ ववहार पु [व्यवहार] सिद्धान्तानुमोदित
 व्यवहार (वव) ।
 आगम सक [आ + गम्] प्राप्त करना । सक्र
 आगमिस्स (सूअ २, ७, ३६) ।
 आगमण न [आगमन] आगमन (आ ४) ।
 आगमि वि [आगमिन्] आने वाला, आगामी
 (विसे ३१५४) ।
 आगमिअ वि [आगमित] विदित, ज्ञात,
 'तत्थ अञ्छतो आगमिओ' (सुख १, ३) ।
 आगमिय वि [आगमिक] १ शास्त्र-संवन्धी,
 शास्त्र-प्रतिपादित (उवर १५१) । २ शास्त्रोक्त
 वस्तु को ही माननेवाला (सम्म १४२) ।

आगमिर वि [आगन्तु] आनेवाला, आगमन
 करनेवाला (सण) ।
 आगमिस्स वि [आगमिष्यत्] १ आगामी,
 होनेवाला (पउम ११८, ६३) । २ आनेवाला
 (सम १५३) ।
 आगमिस्सा ली [आगमिष्यन्ती] भविष्य-
 काल, 'अईअकालम्मि आगमिस्साए' (पच
 ६०) ।
 आगमेस } देखो आगमिस्स (अत १६,
 आगमेसि } श्रौप) ।
 आगम्म देखो आगम = आ + गम् ।
 आगय वि [आगत] १ आया हुआ (प्रागू ५) ।
 २ उत्पन्न (एया १, ७) ।
 आगर देखो आकर = आकर (आचा, उप ८३३
 टी) ।
 आगरि वि [आकरिन्] खान का मालिक,
 खान का काम करनेवाला (परह १, २) ।
 आगरिस पु [आकर्ष] १ ग्रहण, उपादान
 (विसे २७८०, सम १४७) । २ खींचाव (विसे
 २७८०, हे १, १७७) । ३ ग्रहण कर छोड़
 देना (आचू) । ४ प्राप्ति (भग २५, ७) ।
 आगरिस सक [आ + कृप्] खींचना । वक्र.
 आगरिसत (धर्मस ३७२) ।
 आगरिसग वि [आकर्षक] १ खींचनेवाला ।
 २ पु. अयस्कान्त, लोह-चुम्बक (आवम) ।
 आगरिसण न [आकर्षण] खींचाव (सम्मत्त
 २१५) ।
 आगरिसणी ली [आकर्षणी] विद्या-विशेष
 (सुर १३, ८१) ।
 आगरिसिय वि [आकृष्ट] खींचा हुआ (सुपा
 १६६, महा) ।
 आगल सक [आ + कल्य] १ जानना ।
 २ लगाना । ३ पहुँचाना । ४ संभावना करना ।
 आगलेइ (उव) । आगलेंति (भग ३, २) ।
 सक् 'हत्थि खम्मि आगलेऊण' (महा) ।
 आगल वि [आगलान] ग्लान, बीमार (वृह १) ।
 आगस सक [आ + कृप्] खींचना । आग-
 साहि (आचा २, ३, १, १४) । संक्र. आग-
 सिउं (विसे २२२) ।
 आगह देखो आगाह । सक्र आगहइत्ता (दस
 ५, १, ३१) ।
 आगहिअ वि [आगृहीत] संगृहीत (विसे
 २२०४) ।

अहिष्ठाण न [अधिष्ठाण] १ वैठना (निचू ५) । २ आश्रयण (सूत्र १, २, ३) । ३ मालिक बनना (आचा) । ४ स्थान, आश्रय (स ४६६) ।

अहिष्ठायग वि [अधिष्ठायक] अव्यक्त, अवि-पति (कुप्र २१६) ।

अहिष्ठावण न [अधिष्ठापन] ऊपर रखना (निचू ५) ।

अहिष्ठिय वि [अधिष्ठित] १ अध्यासित (राया १, १४) । २ अधीन किया हुआ (राया १, १४) । ३ प्राक्रान्त, आविष्ट (अ ५, २) ।

अहिष्ठाण न [अधिष्ठाण] अपान-प्रदेश (पव १३५) ।

अहिष्ठुय वि [दे. अभिद्रुत] पीडित, 'अहिष्ठुयं पीडिअ परद्धं च' (पात्र) ।

अहिणंद देखो अभिणंद । वक्र अहिणंद-माण (पउम ११, १२०) कवक. अहिणं-दिज्जमाण, अहिणंदीअमाण (नाट, पि ५६३) ।

अहिणंदण देखो अभिणंदण (पउम २०, ३०, भवि) ।

अहिणदि वि [अभिनन्दिन्] आनन्द मानने वाला (स ६७७) ।

अहिणदिय देखो अभिणंदिय (पउम ८, १२३, स १४) ।

अहिणय देखो अभिणय (कप्पु; सण) ।

अहिणव पु [अभिनव] १ सेतुबन्ध काव्य का कर्ता राजा प्रवरसेन (से १, ६) । २ वि. नूतन, नया (राया १, १, सुपा ३३०) ।

अहिणवेमाण देखो अहिणी ।

अहिणवेमाण देखो अहिणु ।

अहिणाण देखो अहिण्णाण (भवि) ।

अहिणिवोह पुं [अभिनिबोध] ज्ञान-विशेष, मतिज्ञान (परण २६) ।

अहिणिवस सक [अभिनि + वस्] वसना, रहना । वक्र. अहिणिवसमाण (मुद्रा २३१) ।

अहिणिविद्ध वि [अभिनिविष्ट] आग्रह-ग्रस्त (स २७३) ।

अहिणिवेस पुं [अभिनिवेश] आग्रह, हठ (स ६२३, भवि ६५) ।

अहिणिवेसि वि [अभिनिवेशिन्] आग्रही (पि ४०५) ।

अहिणी स्त्री [अहि] नागिन (वज्जा ११४) । अहिणी देखो अभिणी वक्र. अहिणवेमाण (सुर ३, १५०) ।

अहिणील वि [अभिनील] हरा, हरा रंग वाला (गउड) ।

अहिणु सक [अभि + नु] स्तुति करना, प्रशंसना । वक्र. अहिणवेमाण (सुर ३, ७७) ।

अहिण्ण वि [अभिन्न] मेदरहित, अपृथग्भूत (गा २६५, ३८०) ।

अहिण्णाण न [अभिज्ञान] चिह्न, निशानी (भमि १३) ।

अहिण्णु वि [अभिज्ञ] निपुण, ज्ञाता (हे १, ५६) ।

अहितत्त वि [अभितप्त] तापित, सतापित (उत्त २) ।

अहिता देखो अहिज्ज = अवि + इ ।

अहिदायग वि [अभिदायक] देने वाला, दाता (सुपा ५४) ।

अहिदेवया स्त्री [अधिदेवता] अघिष्ठाता देव (सुपा ६०, कप्पु) ।

अहिद्व सक [अभि + द्र] हैरान करना । अहिद्वति (स ३६३) । भवि. अहिद्विस्सइ (स ३६६) ।

अहिद्वदुय वि [अभिद्रुत] हैरान किया हुआ (स ५१४) ।

अहिधाव सक [अभि + धाव्] दौडना, सामने दौड कर जाना । वक्र. अहिधावंत (मे १३, २६) ।

अहिनाण १ देखो अहिण्णाण (आ १६, सुपा अहिन्नाण २ २५०) ।

अहिनिवेस देखो अहिणिवेस (स १२५) ।

अहिपञ्चुअ सक [अह्] ग्रहण करना । अहिपञ्चुअइ (हे ४, २०६, षड्) । अहि-पञ्चुअति (कुमा) ।

अहिपञ्चुअ सक [आ + गम्] आना । अहि-पञ्चुअइ (हे ४, १६३) ।

अहिपञ्चुइअ वि [आगत] आयात (कुमा) । अहिपञ्चुइअ न [दे] अनुगमन, अनुसरण (दे १, ४६) ।

अहिपड सक [अभि + पत्] सामने आना । अहिपडति (पव १०६) ।

अहिपास सक [अधि + दृश्] १ अधिक

देखना । २ समान रूप से देखना । अहिपासए (सूत्र १, २, ३, १२) ।

अहिप्पाय देखो अभिप्पाय (महा, कप्पु) । अहिप्पेय देखो अभिप्पेय (उप १०३१ टी-स ३४) ।

अहिभव देखो अभिभव (गउड) ।

अहिमज्ज पुं [अभिमन्यु] अजुन के एक पुत्र का नाम (कुमा) ।

अहिमतण वि [अभिमन्त्रण] मन्त्रित करना, मन्त्र से संस्कारना (भवि) ।

अहिमंतिअ वि [अभिमन्त्रित] मन्त्र से संस्कृत (महा) ।

अहिमज्जु } देखो अहिमज्ज (कुमा, षड्) ।
अहिमण्णु }
अहिमन्नु }

अहिमय वि [अभिमत] संमत, इष्ट (स २००) ।

अहिमयर पुं [अहिमकर] सूर्य, रवि (पात्र) ।

अहिमर पुं [अभिमर] वनादि के लोम से दूसरे को मारने का साहस करने वाला (सुर १, ६८) । २ गजादिघातक (विसे १७६४) ।

अहिमाण पु [अभिमान] गर्व, अहकार (प्रासु १७, सण) ।

अहिमाणि वि [अभिमानिन्] अभिमानी, गर्विष्ठ (स ४३१) ।

अहिमार पु [अभिमार] वृक्ष-विशेष, 'एगं अहिमारदारुअ अग्गी' (उत्ति ३) ।

अहिमास १ पु [अधिमास, °क] अधिक
अहिमासग १ मास (अव १, निचू २०) ।

अहिमुह वि [अभिमुख] समुज, सामने रहा हुआ (से १, ४४, पउम ८, १६७; गउड) ।

अहिमुहिहूअ १ वि [अभिमुखीभूत] सामने
अहिमुहीहूअ १ आया हुआ (पउम १२, १०५, ४५, ६) ।

अहिय वि [अधिक] १ ज्यादा, विशेष (औप, जी २७, स्वप्न ४०) । २ क्वि वहुत, अत्यन्त (महा) ।

अहिय वि [अहित] अहितकर, शत्रु, दुश्मन (महा, सुपा ६६) ।

अहिय वि [अधीत] पठित, अभ्यस्त, 'अहिय-सुओ पड्विजिय एगल्लविहारपडिम सो' (सुर ४, १५४) ।

आचिक्ख सक [आ + चक्ष्] कहना ।
कृ. आचिक्खणीय (स ४०) ।
आचिक्खिय वि [आख्यात] कथित, उक्त
(स ११६) ।

आचुण्णिअ वि [आचूर्णित] १ चूर-चूर
किया हुआ (पउम १७, १२०) ।

आचेलक्क न [आचेलक्य] १ वक्र का अभाव
(क्वप्) । २ वि आचार विशेष, 'आचेलक्को
घम्मो' (पचा) ।

आच्छेदण न [आच्छेदन] १ नाश । २ वि.
नाशक (कुमा) ।

आजत्थ देखो आगम + आ = गम । आजत्थइ
(प्राकृ ७४) ।

आजाइ देखो आयाइ (ठा, स १७८) ।

आजि देखो आइ = आजि (कुमा, दे १, ४६) ।

आर्ज रण पु [आजीरण] स्वनामख्यात एक
जैन मुनि, 'आजीरणो य गोत्रो' (संया ६७) ।

आजीव } पु [आजीव] १ आजीविका,
आजीवग } जीवन निर्वाह का उपाय, 'आजी-
वमेय तु भद्रुज्जमाणो पुणो पुणो पिप्परिया-
सुवैत्ति' (सूय) । २ जैन साधु के लिए भिक्षा
का एक दोष—गृहस्थ को अपनी जाति, कुल
आदि की समानता बतलाकर उससे भिक्षा
ग्रहण करना (ठा ३, ४) । ३ गोशालक मत
का अनुयायी साधु (पत्) । ४ घन का समूह
(सूय) ।

आजीवग पु [आजीवक] १ घन का गवं
(सूय) । २ सकल जीव (जीव ३ टी) । देखो
आजीवय ।

आजीवण न [आजीवन] १ आजीविका,
जीवन-निर्वाह का उपाय । २ जैन साधु के
लिए भिक्षा का एक दोष (वव) ।

आजीवणा स्त्री [आजीवना] ऊपर देखो
(दस, जीत) ।

आजीवय देखो आजीवग, 'आजीवयद्वि तेण
चउरासीतिजातिकुलकोडीजोणिपमुहसयसहस्सा
भवतीतिमक्खाया' (जीव ३) ।

आजीविय वि [आजीविक] गोशालक के
मत का अनुयायी (पण्ण २०, उवा) ।

आजीविग स्त्री [आजीविका] १ निर्वाह
(प्राव) । २ जैन साधु के लिए भिक्षा का एक
दोष (उत्त) ।

आजुत्त वि [आयुक्त] अप्रमादी (निवृ) ।

आजुत्त अक [आ + युष्] लडना । हेक
आजुत्तुं (शौ) (वेणी १२४) ।

आजुह न [आयुध] हथियार (मै २४) ।

आजोज्ज देखो आभोज्ज (विसे १५०३) ।

आडवर पु [आडम्बर] १ आटोप, ऊपरी
दिखाव (पाग) । २ वाद्य की आवाज (ठा) ।
३ यज्ञ-विशेष (आचू) । ४ न यज्ञ का मन्दिर
(पव) ।

आडवर पु [आडम्बर] वाद्य-विशेष, पटह
(अणु १२८) ।

आडवरिह वि [आडम्बरवत्] आडम्बरी
(पाग) ।

आडविय वि [दे] १ चूर्णित, चूर-चूर किया
हुआ (पह) ।

आडविय वि [आटविक] जंगल में रहनेवाला,
जंगली (स १२१) ।

आडह सक [आ + दह्] चारों ओर से
जलाना । आडहइ (पि २२२, २२३) । आड-
हति (पि २२२, २२३) ।

आडह सक [आ + धा] स्थापन करना,
नियुक्त करना । आडहइ । संकृ आडहेत्ता
(श्रौप) ।

आडाडा स्त्री [दे] बलात्कार, जबरदस्ती (दे
१, ६४) ।

आडासेतीय पुं [आडामेतीक] पक्षि-विशेष
(पण्ण १, १) ।

आडि स्त्री [आटि] १ पत्रि-विशेष । २ मत्स्य-
विशेष (दे ८, २४) ।

आडियत्तिय पु [दे] शिविका-वाहक पुरुष
(?) (स ५३७, ५४१) ।

आडुआल सक [दे] मिश्र करना, मिलाना ।
आडुआलइ (दे १, ६६) ।

आडुआलि पुं [दे] मिश्रता, मिलावट (दे १,
६६) ।

आडोय देखो आडोव = आटोप (सुपा २६२) ।

आडोलिय वि [दे] रुद्ध, रोका हुआ (णाय
१, १८) ।

आडोव सक [आ + टोपय्] १ आडवर
करना । २ पवन द्वारा फूलाना । आडोवेइ
(भग) । संकृ आडोवेत्ता (भग) ।

आडोव पु [आटोप] आडम्बर (उवा, सण्ण) ।

आडोविअ वि [दे] आरोपित, गुस्सा किया
हुआ (दे १, ७०) ।

आडोविअ वि [आटोपिक] आटोपवाला,
स्फारित (पण्ण १, ३) ।

आडई स्त्री [आडकी] वनस्पति-विशेष (पण्ण
१) ।

आडग पुन [आडक] १ चार प्रत्य (सेर) का
एक परिमाण । २ चार सेर परिमित चीज
(श्रौप, सुपा ६७) ।

आडत्त वि [दे] आक्रान्त, 'एत्थतरम्मि विजय-
वम्मनरवइणा आडत्तो लच्छिनिलयमामी सूर-
तेयो नाम नरवई' (स १४०) ।

आडत्त वि [आरब्ध] शुरू किया हुआ, प्रारब्ध
(श्रौप ४८२, हे २, १३८) ।

आडत्तिअ } वि [आरब्ध] प्रारम्भ किया हुआ
आडविअ } (मगल २३, चेइय १४८) ।

आडप्प^० देखो आडव ।

आडय देखो आडग (महा; ठा ३, १) ।

आडव सक [आ + रम्] आरंभ करना,
शुरू करना । आडवइ (हे ४, १५५, घम्म
२२) । कर्म आडवइ, आडवीअइ (हे ४,
२५४) ।

आडा सक [आ + द] आदर करना,
मानना । आडाइ (उवा) । वक्र आडामाण,
आढायमाण (पि ५००, आचा) । कवक
आडजमाण (आचा) ।

आडा स्त्री [आदर] संमान (पव २—गाया
१५५, संवोष ५५) ।

आडिअ वि [आहृत] सत्कृत, सम्मानित
(हे १, १४३) ।

आडिअ वि [दे] १ इष्ट, अभीष्ट । २ गणनीय,
माननीय । ३ अप्रमत्त, उद्युक्त । ४ गाढ,
निविड (दे १, ७४) ।

आण सक [ज्ञा] जानना, 'किं न आणह
एअ' (से १३, ३) । आणमि (से १५, २८),
'अमिअ पाइअकव्व पडिउ सोउ च जे ण
आणंति' (गा २) । आणे (अमि १६७) ।

आण सक [आ + णी] लाना, आनयन
करना, ले आना । आणइ (पि १७, भवि) ।
वक्र आणमाणे (णाय १, १६) । हेक
आणिवि (अप) (भवि) ।

आण पुं [आन] १ श्वासोच्छ्वास, सास ।
२ श्वास के पुद्गल (पण्ण) ।

अहिवर्ण वि [दे] पीला और लाल रंग वाला (दे १, ३३) ।

अनिवर्णु } देखो अहिमजु (पङ्, कुमा ।
अहिवर्णु }

अहिवल्ली स्त्री [अहिचल्ली] नाग-वल्ली (सिंहि ८७) ।

अहिवस सक [अधि + वस्] निवास करना, रहना । वक्तु अहिवसत (म २०८) ।

अहिवाइय वि [अभिवादित] अभिनन्दित (स ३१४) ।

अहिवायण देखो अभिवायण (भवि) ।

अहिवाल वि [अधिपाल] पालक, रक्षक (भवि) ।

अहिवास पु [अधिवास] वासना, संस्कार (दे ७, ८७) ।

अहिवासण न [अधिवासन] संस्काराधान (पचा ८) ।

अहिवासि वि [अधिवासिन्] निवासी (वेद्य ६८७) ।

अहिवासिअ वि [अधिवासित] सजाया हुआ, तय्यार किया हुआ (दस ३, १ टी) ।

अहिविण्णा स्त्री [दे] कृत-सापत्न्या स्त्री, उप-पत्नी (दे १, २५) ।

अहिसंका स्त्री [अभिशङ्का] भ्रम, संदेह (पञ्चम ४२, २१) ।

अहिसंका स्त्री [अभिशङ्का] भय, डर (सूत्र १, १२, १७) ।

अहिसजमण न [अभिसंयमन] नियन्त्रण (गण्ड) ।

अहिसधारण न [अभिसधारण] अभिप्राय (पचा ६, ३६) ।

अहिसधि पुत्री [अभिसवि] अभिप्राय, आशय (परह १, २, स ४६३) ।

अहिसधि पु [दे] बारंवार (दे १, ३२) ।

अहिसक्कण पुन [अभिष्वक्कण] समुख गमन (पव २) ।

अहिसर सक [अभि + स्] १ प्रवेश करना । २ अपने दयित—प्रिय के पास जाना । प्रयो., कर्म अभिसारीअवि (शौ) (नाट) । हेक्क अभि-मारिदुं (शौ) (नाट) ।

अहिसरण न [अभिसरण] प्रिय के समीप गमन (स ५३३) ।

अहिसरिअ वि [अभिस्त] १ प्रिय के समीप गत । २ प्रविष्ट (भावम) ।

अहिसहण न [अधिसहन] सहन करना (ठा ६) ।

अहिसाअ देखो अकम = आ + कम् । अहि-साअइ (प्राक् ७३) ।

अहिसाम वि [अभिशाम] काला, कृष्ण वर्ण वाला (गण्ड) ।

अहिसाय वि [द] पूर्ण, पूरा (दे १, २०) ।

अहिसारण न [अभिसारण] १ आनयन (से १०, ६२) । २ पति के लिए सकेत स्थान पर जाना (गण्ड) ।

अहिसारिअ वि [अभिसारित] आनीत (स १, १३) ।

अहिसारिआ स्त्री [अभिसारिका] नायक को मिलने के लिए सकेत स्थान पर जानेवाली स्त्री (कुमा) ।

अहिसिअ न [दे] १ अग्निष्ट ग्रह की आशका से खेद करना—रोना (दे १, ३०) । २ वि. अग्निष्ट ग्रह से भयभीत (पङ्) ।

अहिसिच देखो अभिमिच । अहिसिचइ (महा) । सक्र अहिसिचिऊण (स ११६) ।

अहिसिचण न [अभिपेचन] अभिपेक (सम १२५) ।

अहिसित्त देखो अभिसित्त (महा, सुर ८, ११६) ।

अहिसेअ देखो अभिसेअ (सुपा ३७, नाट) ।

अहिसोद वि [अधिसोढ] सहन किया हुआ (उप १४७ टी) ।

अहिस्सग पु [अभिष्वङ्ग] आसक्ति (नाट) ।

अहिहय वि [अभिहत] १ आघात-प्राप्त (से ५, ७७) । २ मारित, व्यापादित (से १४, १२) ।

अहिहर सक [अभि + ह] १ लेना । २ उठाना । ३ अक. शोभना, विराजना । ४ प्रतिभास होना, लगना,

‘वीयाभरणा अकयणमंडणा
अहिहरति रमणीयो ।

सुरणाओ व कुसुमफलतरम्मि

सहयारवल्लीओ ।

इह हि हलिहाहयदविडसा-

मलीगडमडलानील ।

फलमसअलपरिणामावलवि

अहिहरइ चूयाण’ (गण्ड) ।

अहिहर न [दे] १ देवकुल, पुराना देवमन्दिर । २ वल्मीक (दे १, ५७) ।

अहिहव सक [अभि + भू] पराभव करना, जीतना । अहिहवति (स १६८) कर्म अहिह-वीयति (स ६६८) ।

अहिहाण न [दे अभिधान] वर्णन, प्रशंसा (दे १, २१) ।

अहिहाण देखो अभिहाण (स १६५, गण्ड, सुर ३, २५, पात्र) ।

अहिहू देखो अहिहव । कवक्क अहिहूअमाण (अभि ३७) ।

अहिहूअ वि [अभिभूत] पराभूत, परास्त (दे १, १५८) ।

अही सक [अधि + इ] पढ़ना । कर्म अही-यइ (विसे ३१६६) ।

अही स्त्री [अही] नागिन, सर्पिणी (जीव २) ।

अहीकरण न [अधिकरण] कलह, झगडा (निचू १०) ।

अहीगार देखो अहिगार, ‘सेसेसु अहीगारो, उवगरणसरीरमुक्केसु’ (आचानि २५४) ।

अहीण वि [अधीन] आयत्त, अधीन (परह २, ४) ।

अहीण वि [अ-हीन] अन्वून, पूर्ण (विपा १, १, उवा) ।

अहीय देखो अहिय = अधिक (पव १६८) ।

अहीय वि [अधीत] पठित, अभ्यस्त, ‘वेया अहीया ए भवति ताए’ (उत्त १५, १२, राया १, १४, स ७८) ।

अहीरग वि [अहीरक] तन्तुरहित (फलादि) (जो १२) ।

अहीरू वि [अभीरू] निडर, निर्भीक (भवि) ।

अहीलास देखो अहिलास, ‘देहम्मि अहिलासो’ (तंडु ४१) ।

अहीसर पु [अधीश्वर] परमेश्वर (प्रामा) ।

अहुआसेय वि [अहुताशेय] अग्नि के अयोग्य (गण्ड) ।

अहुणा अ [अधुना] अभी, इस समय, आज-कल (ठा ३, ३, नाट) ।

अहुणि (पै) देखो अहुणा (प्राक् १२७) ।

अहुलण वि [अमार्जक] अनाशक (कुमा) ।

आणाइत्त वि [आज्ञावत्] आज्ञा मानने-
वाला (पचा) ।

आणाइय वि [आनायित] मँगवाया हुआ
(कुमा २, २१) ।

आणापाण पु [आनप्राण] १ श्वासोच्छ्वास
(प्रासू १०४) । २ श्वासोच्छ्वास-परिमित
समय (अणु) । °पञ्जत्ति लो [°पर्याप्ति]
श्वासोच्छ्वास लेने की शक्ति (भग ६, ४) ।

आणापाणु लो [आनप्राण] ऊपर देखो,
'आणापाणुओ' (भग २५, ५) ।

आणापाणुय पु [आनप्राणरु] श्वासो-
च्छ्वास-परिमित काल (कण) ।

आणाम पु [आनाम] श्वास, अन्त श्वास
(भग) ।

आणामिय वि [आनामित] १ थोड़ा नमाया
हुआ (परह १, ४) । २ अधीन किया हुआ
(पउम ६८, ३७) ।

आणाल पु [आलान] १ वधन । २ हाथी
बाँधने की रज्जु—डोरी । ३ जहाँ पर हाथी
बाँधा जाता है वह स्तम्भ, कील (हे २,
१७७, प्रामा) । °खम्भ, °खम्भ पुं
[°स्तम्भ] जहाँ हाथी बाँधा जाता है वह
स्तम्भ (हे २, ११७) ।

आणाव देखो आणव = आ + जपय् । आणा-
वेइ (स १२६) । कवक. आणाविज्जत
(सुपा ३२३) । कृ आणावेयव्य (आचा) ।
आणाव सक [आ + नायय्] मँगवाना ।
आणावइ (भवि) । संकृ आणाविय
(नाट) ।

आणाव (अप) सक [आ + नी] लाना ।
आणावइ (प्राकृ १२०) ।

आणावण न [आनायन] दूसरे से मँगवाना,
'मयमाणयणे पढमा वीया आणावणेण अन्नेहि
(सवोघ ७) ।

आणावण न [आज्ञापन] आज्ञा, हुकुम
(पङ्) ।

आणाविय वि [आज्ञापित] जिसको हुकुम
किया गया हो वह, फरमाया हुआ (सुपा
२५१) ।

आणाविय वि [आनायित] मँगवाया हुआ
(सुपा ३८५) ।

आणि देखो आणी । कृ आणियञ्च (रयण
६) । सकृ आणिय (नाट) ।

आणिअ वि [आनीत] लाया हुआ (हे १,
१०१) ।

आणिअ [दे] देखो आदिअ (दे १, ७४) ।

आणिक्क वि [दे] टेढ़ा, वक्र (से ६, ८६) ।

आणिक्क न [दे] तिर्यक् मैथुन (दे १, ६१) ।

आणी सक [आ + नी] लाना । कर्म.

आणीअइ (पि ५४८) । वक्र 'आणंतीए

गुणेषु, दोमेषु परमुह कुणतीए' (मुद्रा २३६) ।

सकृ आणीय (विसे ६१६) । कवक

आणिज्जत (सुपा १६३) ।

आणीय वि [आनीत] लाया हुआ (हे १,
१०१, काल) ।

आणुअ न [दे] १ मुख, मुँह (दे १, ६२,
पङ्) । २ आकार, आकृति (दे १, ६) ।

आणुओगिअ वि [आनुयोगिक] व्याख्या-
कर्ता (एदि ५१) ।

आणुरुपिय वि [आनुकम्पिक] दयालु, कृपालु
(राज) ।

आणुगामि वि [अनुगामिन्] नीचे देखो
(विसे ७३६) ।

आणुगामिय वि [आनुगामिक] १ अनुसरण
करनेवाला, पीछे-पीछे जानेवाला (भग) ।

२ न अवधिज्ञान का एक भेद (आवम) ।

आणुगुण न [आनुगुण्य] १ औचित्य,

आणुगुण न [अनुरूपता] (पंचा ६, २६) । २

अनुरूपता (धर्मस ११८६) ।

आणुधम्मिय वि [आनुधर्मिक] इतर धर्म-
वालो को भी असीष्ट, सर्वधर्म-सम्मत (आचा) ।

आणुपाणु देखो आणापाणु (कम्म ५, ४०) ।

आणुपुव्व न [आनुपूव्ये] अनुक्रम, परिपाटी
(निर १, १) ।

आणुपुव्वी लो [आनुपूर्वी] क्रम, परिपाटी
(अणु) । °णाम, °नाम न [°नामन्] नाम-

कर्म का एक भेद (सम ६७) ।

आणुलोमिअ वि [आनुलोमिक] अनुलोम,

अनुरूप, मनोहर (दस ७, ५६) ।

आणुवित्ति लो [अनुवृत्ति] अनुसरण (स
६१) ।

आणुग पुन [अनूप] सजलप्रदेश (धर्मसं
६२६) ।

आणूव पु [दे] धपच, डोम (दे १, ६४) ।

आणे सक [आ + नी] लाना, ले आना ।

आणेइ (महा) । कृ आणेयव्व (सुपा

१६३) । सकृ. आणेऊण (महा) ।

आणे सक [ज्ञा] जानना । आणेइ (नाट) ।

आणेसर देखो आणा-ईसर (आ १०) ।

आत देखो आय = आत्मन् (ठा १) ।

आतव देखो आयव = आताम (स २६१) ।

आतित्थ देखो आइत्थ (कुप्र १००, २८६) ।

आत्त देखो अत्त = आत्मन्, 'आत्तहियं खु

दुहेण लब्भइ' (सूत्र १, २, २, ३०) ।

आत्त देखो अत्त = आत्त (अणु २१) ।

आत्त वि [आत्मीय] स्वकीय (अणु २१) ।

आदस } देखो आयस (गा २०४, प्रति

आदंसग } ८, सूत्र १, ४) ।

आद (शौ) देखो अत्त = आत्मन् (द्रव्य ६) ।

आद देखो आइ = आ + दा । आदए (सूत्र १,

८, १६) ।

आदण्ण } वि [दे] आकुल, व्याकुल, धव-

आदन्न } डया हुआ (उप पृ २२१, हे ४,

४२२) ।

आदयाण वि [आदवान] ग्रहण करता हुआ

(श्रु १३८) ।

आदर देखो आयर = आ + द । आदरइ (हे

४, ८३) ।

आदरिस देखो आयस (कुमा, दे २, १०७) ।

आदाउ वि [आदाउ] ग्रहण करनेवाला

(विसे १५६८) ।

आदाण देखो आयाण (ठा ४, १), 'गम्मा-

दाणेण सज्जुयामि तुम' (पउम ६५, ६०, उवा) ।

आदाण न [आद्रहण] उवाला हुआ, गरम

किया हुआ (जल तैल आदि) (उवा) ।

आदाणिय न [आदानीय] लाभ, नफा (सुख

४, ६) ।

आदाणीय देखो आयाणीय (कण्) ।

आदाय देखो आया = आ + दा ।

आदि देखो आइ = आदि (कण्, सूत्र १, ५) ।

आदिच्च देखो आइच्च (ठा ५, ३, ८) ।

आदिच्छा लो [आदित्सा] ग्रहण करने की

इच्छा (आव) ।

आदिज्ज देखो आएज्ज (भग) ।

आदिट्ट देखो आइट्ट (अभि १०६) ।

आदित्त देखो आइत्त (वजा १६०) ।

आ अ [आ] नोचे, अघ (राय ३५, ३६)।
आ अ [आस्] इन अर्थों का सूचक अव्यय—
१ खेद (गा ६२६)। २ दुःख। ३ गुस्ता,
क्रोध (कप्पू)।

आ सक [या] जाना। 'अग्नो ए ग्रामि छेत'
(गा ८२१)।

आअ वि [दे] १ अत्यंत, बहुत। २ दीर्घ,
लम्बा। ३ विषम, कठिन। ४ न लोह,
लोहा। ५ मुसल, मूषल (दे १, ७३)।

आअ वि [आगत] आया हुआ, 'पत्यति
आग्रोता' (से १२, ६८, कुमा)।

आअअ वि [आगत] आया हुआ (से ३, ४,
१२, १८, गा ३०१)।

आअअ वि [आयत] लम्बा, विस्तार (से
११, ११),

'मरगयसईविद्ध व मोत्तिअ पिअइ आग्रमगोवो।
मोरो पाउसअले तएगलगग उअग्रविद्ध'
(गा ३६४)।

आअंछ सक [कृप्] १ खीचना। २ जोतना,
चास करना। ३ रेखा करना। आअंछइ (पड्)।

आअतव्य देखो आगम = आ + गम्।

आअतुअ देखो आगतुय (स्वप्न २०, अग्नि
१२१)।

आअंपिअ देखो आकंपिय (से १०, ५१)।

आअव वि [आताम्र] थोडा लाल (से ६, ३१,
सूर ३, ११०)।

आअव पु [कादम्ब] हंस, पक्षि-विशेष (से
६, ३१)।

आअक्ख मक [आ + चक्ष्] कहना,
बोलना, उपदेश करना। आअक्खाहि (भग)।
कर्म आअक्खीअदि (शौ) (नाट)। भूक. आअ-
क्खिद (शौ) (नाट)।

आअच्छ देखो आगच्छ। आअच्छइ (पड्)।
संकु आअच्छिअ, आअच्छिऊण (नाट,
पि ५८१, ५८४)।

आअहु मक [दे] परवश होकर चलना।
आअहुइ (दे १, ६६)।

आअहु मक [व्या + पृ] व्यापृत होना, काम
में लगना। आअहुइ (सण, पड्)। आअहुइ
(हे ४, ८१)।

आअड्डिअ वि [दे] परवशचलित, दूसरे की
प्रेरण से चला हुआ (दे १, ६८)।

आअड्डिअ वि [व्यापृत] कार्य में लगा हुआ
(कुमा)।

आअण्ण देखो आयण्ण (गा ६५६)।

आअत्ति देखो आयइ (पिंग)।

आअद् देखो आगय (प्राक् १२, सक्षि ६)।

आअम देखो आगम (अचु ७, अग्नि १८४,
गा ४७६, स्वप्न ४८, मुद्रा ८३)।

आअमण देखो आगमण (से ३, २०, मुद्रा
१८७)।

आअर सक [आ + ह] आदर करना, सत्कार
करना। आअरइ (पड्)।

आअर न [दे] १ उड़खल, ऊखल। २ कूचं
(दे १, ७४)।

आअल पु [दे] १ रोग, बीमारी (दे १, ७५,
पाग्र)। २ वि चंचल, चपल (दे १, ७५)।
देखो आयल्लया।

आअल्लि [औ] [दे] झाडी, लताओं से निबिड़
आअल्ली प्रदेश (दे १, ६१)।

आअव्व मक [वेप्] कांपना। आअव्वइ
(पड्)।

आआमि देखो आगामि (अग्नि ८१)।

आआस देखो आयस (पड्)।

आआसतअ [दे] देखो आयासतल (पड्)।

आइ सक [अ + दा] ग्रहण करना, लेना।

आइएजा (सूत्र १, ७, २६)। आइयत्ति (भग)।
कर्म. आइयइ (कस)। सक्र आइत्तूण,

आयइत्ता, आइत्तु (आचा, सूत्र १, १२,
पि ५७७)। प्रयो. आइयावेंति (सूत्र २, १)।

कृ आइयव्व (कस)।

आइ पु [आदि] १ प्रथम, पहला (सुर २,
१३२)। २ वगैरह, प्रभृति (जी ३)। ३

समीप, पास। ४ प्रकार, भेद। ५ अवयव,
अंश। ६ प्रवान, मुख्य, 'इअआसंसति निसोह।

सिहदत्ताइणो दिअ तुज्ज' (कुमा, सूत्र १,
१५)। ७ उत्पत्ति (सम्म ६५)। ८ ससार,

दुनया (सूत्र १, ७)। ९ गर वि [कर] १
आदि प्रवर्तक (सम १)। २ पुं. भगवान्

अपमदेव (पठम २८, ३६)। १० गुण पु [गुण]
सहभावी गुण (आव ४)। ११ णाह पुं [नाथ]

भगवान् अपमदेव (भावम)। १२ तित्थयर पुं
[तीर्थकर] भगवान् अपमदेव (एदि)।

१३ देव पु [देव] भगवान् अपमदेव (मुर २,

१३२)। १४ म पुं [म] प्रथम, आद्य, पहला
(आव ५)। १५ मूल न [मूल] मुख्य कारण

(आचा)। १६ मोक्ख पुं [मोक्ष] ससार से
छुटकारा, मोक्ष। १७ शीघ्र ही मुक्त होने वाली

आत्मा, 'इत्योयो जे ए मेवति आइमोक्खा
हि ते जणा' (सूत्र १, ७)। १८ राय पुं [राज]

भगवान् अपमदेव (ठा ६)। १९ वराह पुं
[वराह] कृष्ण, नारायण (से ७, २)।

आइ वि [आदिन्] खनेवाला (पंचा १८,
३६)।

आइ छी [आजि] सग्राम, लड़ाई (सथा)।

आइअंनिय देखो अचतिय (भग १२, ६)।

आइ अ [दे] वाक्य की शोभा के लिए प्रयुक्त
किया जाने वाला अव्यय (भग ३, २)।

आईख गा } औ [दे] १ देवता-विशेष,
आईखगिया } कर्ण-पिशाचिका देवी (पव

आईखगिया } २, ७३ टी—पत्र १८२, वृह
१)। २ डोमिनी, चाडाली (वृह १)।

आईंग न [दे] वाद्य-विशेष (पठम ३, ८७,
६६, ६)।

आइच देखो आयंच। आइचइ (उवा)।

आइच देखो अकम = आ + क्रम्। आइचइ
(प्राक् ७३)।

आइचवार पु [आदित्यवार] रविवार (कुप्र
४११)।

आईचिय वि [आदित्यिक] आदित्य-संबन्धी
(सूत्रनि ८ टी)।

आइछ देखो आअंछ। आइछइ (हे ४, १८७)।

आइक्ख सक [आ + चक्ष्] कहना, उप-
देश देना, बोलना, आइक्खइ (उवा)। वक्र.

आइक्खमाण (णया १, १२)। हेक्क आइ-
क्खत्तए (उवा)।

आइक्खग वि [आख्यायक] कहनेवाला,
वक्ता (पणह २, ४)।

आइक्खण न [आख्यान] कथन, उपदेश
(वृह ३)।

आइक्खिय वि [आख्यात] उक्त, उन्दिष्ट
(स ३२)।

आडक्खिया औ [आख्यायिका] १ वार्ता,
कहानी (णया १, १)। २ एक प्रकार की

मैली विद्या, जिससे चाण्डालिनी भूत-काल आदि
की परीक्षा बातें कहती है (ठा ६)।

आइग वि [आविग] उद्दिप्त, त्रिप्त (पाग्र)।

आभिओगिय वि [आभियोगित] वशीकरण
आदि से संस्कृत (आव) ।

आभिओग देखो आभिओग (परण २०) ।

आभिगगहिअ वि [आभिग्रहिक] १ अग्निग्रह-
संबन्धी (पंचा ४, ८) । २ न मिथ्यात्व-
विशेष (पच ४, २) ।

आभिगगहिय वि [आभिग्रहिक] १ प्रतिज्ञा
से सवन्ध रखनेवाला । २ प्रतिज्ञा का निर्वाह
करनेवाला (आव) । ३ न. मिथ्यात्व-विशेष
(आ ६) ।

आभिणदिय पुं [आभिनन्दित] आचरण
मास (चद) ।

आभिट्ट १ वि [दे] प्रवृत्त, 'आभिट्ट पर-
आभिडिय १ मरण' (पचम ४, ४२, ६, १६२,
वज्रा ४२) ।

आभिणिबोहिग देखो आभिणिबोहिय (धर्मस
८२३) ।

आभिणिबोहिय न [आभिनिबोधिक] इन्द्रिय
और मन से होनेवाला प्रत्यक्षज्ञान-विशेष
(सम ३३) ।

आभिप्पाइअ वि [आभिप्रायिक] अभिप्राय-
वाला (अणु १४५) ।

आभिसेक्क वि [आभिषेक्य] १ अभिषेक के
योग्य (निर १, १) । २ मुख्य, प्रधान, 'आभि-
सेक्क हत्थिरयण पडिकप्पेह' (श्रौप) ।

आभीर १ पुं [आभीर] एक शूद्र-जाति,
आभीरिय १ अहीर, गोवाला (सूत्र १, ८, सुर
९, ६२) ।

आभूअ वि [आभूत] उत्पन्न (निर १, १) ।
आभेडिय [दे] देखो आभिट्ट (उप पृ ४२) ।

आभोइअ वि [आभोगित] देखा हुआ (कण्) ।
आभोग पुं [आभोग] १ विलोकन, देखना
(उप १४७) । २ प्रदेश, स्थान (सुर २, २२१) ।

३ उपकरण, साधन (श्लो ३६) । ४ प्रति-
लेखन (श्लो ३) । ५ उपयोग, ख्याल (भग) ।
६ विस्तार (णाय १, १) । ७ ज्ञान, जानना
(भग २५, ६, ठा ४) । देखो आभोय =
आभोग ।

आभोगण न [आभोगन] ऊपर देखो (णदि) ।
आभोगि वि [आभोगिन्] परिपूर्ण, 'जह
कमलो निरवाओ जाओ जसविहवामोगी' (सुपा

२७५) । ० जी स्त्री [०नी] मानसिक निर्णय
उत्पन्न करानेवाली विद्या-विशेष (वृह) ।

आभोय सक [आ + भोग्य] १ देखना ।
२ जानना । ३ ख्याल करना । आभोएइ (उवा-
णाय) । वक्क आभोएमाण (कण्) । संक
आभोइत्ता, आभोएऊण, आभोइअ (दस
५, महा, पंचव) ।

आभोय पु [आभोग] १ सपं की फण (स
६१०) । २ देखो आभोग (आव, महा, सुर
३, ३२) ।

आम अ [आम] अनुमति प्रकाशक अव्यय—
हां (गा ४१७, सुर २, २४५, म ४५६) ।

आम अ [भवन्] आप (प्राकृ ८१) ।

आम पु [आम] १ रोग, पीडा (से ६, ४४) ।
२ 'वि. अपक्क, कच्चा (आ २०) । ३ अशुद्ध,
अपवित्र (आचा) । ० जर पु [०जर] अजीर्ण
से उत्पन्न बुखार (गा ५१) ।

आमइ वि [आमयिन्] रोगी (वव १) ।

आम अ [आम] १ स्वीकार-सूचक अव्यय—हां
(सुख २, १३) । २ अतिशय, अत्यन्त (धर्मस
६४६) ।

आमंड न [दे] बनावटी आमला का फल,
कृत्रिम आमलक (उप पृ २१४, उप १४५ टी) ।

आमडण न [दे] भाएड, पात्र (दे १, ६८) ।

आमत सक [आ + मन्त्रय] १ आह्वान
करना, संबोधन करना । २ अभिनन्दन करना ।
वक्क आमतेमाण (आचा) । संक आमतेत्ता
(कण्), आमतिय (सूत्र १, ४) ।

आमतण न [आमन्त्रण] आह्वान, संबोधन
(वव) । ० वयण न [०वचन] संबोधन-विभक्ति
(विसे ३४५७) ।

आमतणी स्त्री [आमन्त्रणी] १ संबोधन की
भाषा, आह्वान की भाषा (दस ६) । २ आठवीं
संबोधन-विभक्ति (ठा ८) ।

आमतिय वि [आमन्त्रित] संबोधित (विपा
१, ६) ।

आमग देखो आम (णाय १, ६) ।

आमघाय पुं [आमाघात] अमारि-प्रदान, हिंसा-
निवारण (पचा ६, १५, २०, २१) ।

आमज्ज सक [आ + मृज्] एक बार साफ
करना । आमज्जेज (आचा) । वक्क आमज्जत
(निच्) । प्रयो. आमज्जावत (निच्) ।

आमइ पुं [आमर्द] मघपं, आघात (कुमा) ।

आमय पु [आमय] रोग, दर्द (स ५६६,
स्वप्न ६०) । ० करणी स्त्री [०करणी] विद्या-
विशेष (सूत्र २, २) ।

आमय वि [आमत] संमत, अनुमत (विवे
१३६) ।

आमराय पुं [आमराज] एक प्रसिद्ध राजा
(ती ७) ।

आमरिस पुं [आमर्ष] स्पर्श (विसे ११०६) ।

आमल पुं [आमलक] आमला का फल
(सम्मत १५६) ।

आमलई स्त्री [आमलकी] आमला का पेड़
(दे) ।

आमलकप्पा स्त्री [आमलकल्पा] नगरी-विशेष
(णाय २, १) ।

आमल्ला पु [आमरक] १ चारो ओर से
मारना । २ विपाक-श्रुत का एक अव्ययन (ठा
१०) ।

आमल्ला पुं [आमलक] १ आमला का
आमलय १ पेड़ (ठा ४) । २ आमला का फल,
'मुक्खोवाओ आमलगो विव करतले देसिओ
भगवया' (वसु, कुमा) ।

आमलय न [दे] तूपुर-गृह, तूपुर रखने का
स्थान (दे १, ६७) ।

आमसिण वि [आमसृण] १ थोड़ा चिकना ।
२ च्लसित (से १२, ४३) ।

आमिल सक [आ + मुच्] छोड़ना ।
आमिलइ (भवि) ।

आमिस न [आमिष] नैवेद्य (पंचा ६, २६-
कुप्र ४२३, ती १३) ।

आमिस न [आमिष] १ मांस (णाय १,
४) । २ वि मनोहर, सुन्दर (से ६, ३१) ।
३ आसक्ति का कारण, 'आमिसं सव्वमुज्झिता
विहरिस्सामो निरामिसा' (उत्त १४) । ४
आहार, फलादि भोज्य वस्तु (पंचा ६) ।

आमुच सक [आ + मुच्] १ छोड़ना ।
२ उतारना । ३ पहनना । वक्क आमुचंत
(आक ३८) ।

आमुक्क वि [आमुक्त] १ त्यक्त (गा ५३६,
गडह) । २ उतारा हुआ (आक ३८) । ३ परि-
हित (वेणी १११ टी) ।

(जीव ३) । °वरोभासमहावर पुं [वराव-
भासमहावर] अजिनवराभास नामक समुद्र
का अघिष्ठाता देव (जीव ३) । °वरोभासवर
[°वरावभासवर] देखो अनन्तरोक्त अर्थ
(जीव ३) ।

आईनीड स्त्री [आदिनीति] सामरूप पहली
राजनीति (सुपा ४६२) ।

आईय देखो आइ = आदि (जी ७, काल) ।

आइय वि [आतीत] १ विशेष-ज्ञात । २
समार-प्राप्त, संसार मे घूमनेवाला (आचा) ।

आईल पुन [आचील] पान का थूकना
(पव) ।

आईव अक [आ + दीप्] चमकना । वक
आईवमाग (महानि) ।

आईसर पुं [आदीश्वर] भगवान् ऋषभदेव
(सिरि ५५१) ।

आउ स्त्री [दे] १ पानी, जल (दे १, ६१) ।

२ इस नाम का एक नक्षत्र-देव (ठा २, ३) ।

°काय, °काय पुं [°काय] जल का जीव
(उप ६८५, परण १) । °काइय, °काइय

पु [°कायिक] जल का जीव (परण १,
भग २४, १३) । °जीव पु [°जीव] जल

का जीव (सूत्र १, ११) । °बहुल वि
[°बहुल] १ जल-प्रचुर । २ रत्नप्रभा पृथिवी

का तृतीय काण्ड (सम ८८) ।

आउ अ [दे] अथवा, या, 'आउ पलोहेइ में
अजउत्तवेसेण कोइ अमाणुसो, आउ सच्चय
चेव अजउत्तोत्ति' (स ३४६) ।

आउ } न [आयुष्] १ आयु, जीवन-
आउअ } काल (कुमा, रयण १६) । २ उमर,
वय (गा ३२१) । ३ आयु के कारणभूत कर्म-
पुद्गल (ठा ८) । °काल पु [°काल] मरण,
मृत्यु (आचा) । °कखय पु [°क्षय] मरण,
मौत (विपा १, १०) । °कखेम न [°क्षेम]
आयु-पालन, जीवन (आचा) । °विज्ञा स्त्री
[°विद्या] वैद्यकशास्त्र, चिकित्साशास्त्र,
(आच) । °वेय पु [°वेद] वैद्यक, चिकित्सा-
शास्त्र (विपा १, ७) ।

आउंच सक [आ + कुञ्चय्] सकुचित
करना, समेटना । सक आउंचिवि (अप)
(भवि) ।

आउचण न [आकुञ्चन] संकोच, गात्रसंश्लेष
(कस) ।

आउचणा स्त्री [आकुञ्चना] ऊपर देखो
(घर्म ३) ।

अउंचिअ वि [आकुञ्चित] १ संकुचित । २
उठा कर धारण किया हुआ (से ६, १७) ।

आउजि वि [आकुञ्चिन्] १ सकुचनेवाला ।
२ निश्चल (गउड) ।

आउट देखो आउट्ट = अ-वर्त्तय् । आउटावेमि
(राया १, ५) ।

आउंट अक [आ + कुञ्च्] संकोचना,
प्रयो., संकृ आउटाविचु (पव ५) ।

आउटण न [आकुटन] आवर्जन (पचा
१७, १६) ।

आउटण न [आकुञ्चन] संकोच, गात्र-संश्लेष
(हे १, १७७) ।

आउवालिय वि [दे] आप्लावित, डूनाया
हुआ, पानी आदि द्रवपदार्थ से व्याप्त (पाप) ।

आउक } देखो आउ = आयुप् (सुपा ६५५,
आउग } भग ६, ३) ।

आउच्छ सक [आ + प्रच्छ्] आज्ञा लेना,
अनुज्ञा लेना । वक आउच्छत, आउच्छमाण

(से १२, २१, ४७) । संकृ आउच्छिऊण,
आउच्छिय (महा, सुपा ६१) ।

आउच्छण न [आप्रच्छन] आज्ञा, अनुज्ञा
(गा ४७, ५००) ।

आउच्छणा स्त्री [आप्रच्छना] प्रश्न (पचा
१२, २६) ।

आउच्छा स्त्री [आपृच्छा] आज्ञा (कुप्र
१२४) ।

आउच्छिय वि [आपृष्ट] जिमको आज्ञा ली
गई हो वह (से १२, ६४) ।

आउज्ज देखो आओज्ज = आतोय (हे १,
१५६) ।

आउज्ज पुं [आवर्ज] १ समुख करना । २
शुभ क्रिया (परण ३६) ।

आउज्ज वि [आवर्ज्य] सम्मुख करने योग्य
(आवम) ।

आउज्ज वि [आयोज्य] जोडने योग्य, सम्बन्ध
करने योग्य (विसे ७४ ३२६६) ।

आउज्जिय वि [आतोयिक] वाय वजानेवाला
(सुपा १६६) ।

आउज्जिय वि [आयोगिक] उपयोगवाला,
सावधान (भग २, ५) ।

आउज्जिय वि [आवर्जित] समुख किया
हुआ (वरण ३६) ।

आउज्जिया स्त्री [आवर्जिका] क्रिया, व्यापार
(आवम) । °करण न [°करण] शुभ व्यापार-
विशेष (परण ३६) ।

आउज्जीकरण न [आवर्जीकरण] शुभ
व्यापार-विशेष (परण ३६) ।

आउट्ट सक [आ + वृत्] १ करना । २
भूलाना । ३ व्यवस्था करना । ४ अक

समुख होना, तत्पर होना । ५ निवृत्त होना ।
६ घूमना, फिरना । आउट्टइ, आउट्टति (भग

७, १, निवृ ३) । वक आउट्टत (सम २२) ।
सक आउट्टिऊण (राज) । हेक आउट्टित्तए

(कप्प) । प्रयो. आउट्टावेमि (राया १, ५
टी) ।

आउट्ट सक [आ + कुट्ट्] छेदन करना,
हिंसा करना । आउट्टामो (आचा) ।

आउट्ट वि [आवृत्त] १ निवृत्त, पीछे फिरा
हुआ (उप ६६८), 'दप्पकए वाउट्टे जइ

खिसति तत्थवि तहेव' (वृह ३) । २ भ्रामित,
भुलाया हुआ (उप ६००) । ३ ठीक-ठीक

व्यवस्थित (आचा) । ४ कृत, विहित (राज) ।

आउट्ट पु [आकुट्ट] छेदन, हिंसा (सूत्र १,
१) ।

आउट्ट } वि [आहृत] आदर-युक्त (पिंड
आउट्टिअ } ३१९, पव ११२) ।

आउट्टण न [आकुट्टन] हिंसा (सूत्र १, १) ।

आउट्टण न [आवर्त्तन] १ आराधन, सेवा,
भक्ति (वव १, ६) । २ अग्निमुख होना, तत्पर

होना (सूत्र १, १०) । ३ अभिनाया, इच्छा
(आचा) । ४ घूमना, भ्रमण । ५ निवृत्ति

(सूत्र १, १०) । ६ करना, क्रिया, कृति
(राज) ।

आउट्टणया स्त्री [आवर्त्तनता] अपायज्ञान
(एदि) ।

आउट्टणा स्त्री [आवर्त्तेना] ऊपर देखो (निवृ
२) ।

आउट्टावण न [आवर्त्तन] अग्निमुख करना,
तत्पर करना (आचा २) ।

रखनेवाला, मन और इन्द्रियो का निग्रह करने-
वाला । २ अथ आदि को सयत रहने को
सिखानेवाला (ठा ४, २) ।

आयप पु [आक्म्प] १ कपना, हिलना ।
२ कपानेवाला (पउम ६६, १८) ।

आयपिय वि [आक्म्पित] कपया हुआ (स
३५३) ।

आयव अक [वेप्] कपना, हिलना ।
आयवइ (हे ४, १४७) ।

आयव } वि [आताम्र] थोड़ा लाल
आयविर } (श्रोप, सुर ३, ११०, सुपा ६,
१८४) ।

आयविल न [आचाम्ल] तपो-विशेष, आविल
(राया १, ८) । °वड्डमाण न [°वधेमान]
तपश्चर्या विशेष (अत ३२, महा) ।

आयविलिय वि [आचाम्लिक] आम्बिल-तप
का कर्ता (ठा ७, परह २, १) ।

आयभर } वि [आत्मभरि] स्वार्थी, अकेल-
आगभरि } पैदा (ठा ४, ३) ।

आयव अक [आ + कम्प्] कपना, हिलना
(प्रामा) ।

आयम } पु [आदर्श] १ दर्शन (परह १, ४,
आयंसन } सूत्र १, २) । २ वैल आदि के गले
का भूषण-विशेष (अणु) । °मुह पु [°मुख] १
एक अन्तर्द्वीप । २ उसके निवासी मनुष्य (ठा
४, २) ।

आयकव देखो आइकव । आयकवाहि (भग) ।
अयग वि [आजरु] देखो आय = आज
(आचा) ।

आयज्झ अक [वेप्] कपना, हिलना ।
आयज्झइ (हे ४, १४१, पड्) । वक्क
आयज्झत (कुमा) ।

आयट्ट सक [आ + वर्त्तय्] १ फिराना,
घुमाना । २ उवाचना । वक्क आअट्टत (से
५, ७५, ८, १६) । कवक्क आयट्टिज्झमाण
(राया १, ६) ।

आयट्टण न [आवर्त्तन] फिराना (सुपा ५३०) ।

आयड्ड सक [आ + कृप्] खीचना ।
आयड्डइ (महा) । कवक्क आअड्डिज्झत (से
५, २८) । सक्क आयड्डिऊण (महा) ।

आयड्डण न [आकर्षण] आकर्षण, खीचाव
(सुपा १२, ७६, गा ११८) ।

आयड्डि छी [आकृष्टि] ऊपर देखो (गउड,
दे ६, २१) ।

आयड्डि पुं [दे] विस्तार (दे १, ६४) ।

आयड्डिय वि [आकृष्ट] खीचा हुआ (काल,
कप्पू) ।

आयणग सक [आ + कर्णय्] सुनना,
श्रवण करना । आअणगेइ (गा ३६५) । वक्क
आअणंत (से १, ६५, गा ४६५; ६४३) ।
सक्क आयणिऊण (उवा) ।

आयणण न [आकर्णन] श्रवण (महा) ।

आयणिय वि [आकर्णित] सुना हुआ
(उवा) ।

आययत वक्क [आददन्] ग्रहण करता
हुआ (सूत्र २, १) ।

आयत्त वि [आयत्त] अधीन, स्ववश (गा
३७६) ।

आयन्न देखो आयणण । वक्क आयन्न न (सुर
१, २४७) ।

आयन्नण देखो आयणणग (सुर ३, २१०) ।

आयम सक [आ + चम्] आचमन करना,
कुल्ला करना । हेक्क आयमित्तए (कप्पू) ।
वक्क आयममाण (ठा ५) ।

आयमग न [आचमन] शुद्धि, शौच (आ
१२, गा ३३०, निच्च २, स २०६, २५२) ।

आयमिअ देखो आगमिअ (हे १, १७७) ।

आयमिणी छी [आयमिनी] विद्या-विशेष
(सूत्र २, २) ।

आयय वि [आयत] १ लम्बा विस्तृत (उवा,
पउम ८, २१५) । २ पु मोक्ष (सूत्र १, २) ।

आयय सक [आ + दद्] ग्रहण करना ।
आयय, आययति (दम ५, २, ३१, उत ३,
७) । वक्क आययमाण (पिड १०७) ।

आययण न [आयतन] १ प्रकृतीकरण (सूत्र
१, ६, १६) । २ उपादान कारण (सूत्र १,
१२, ५) ।

आययण न [आयतन] १ घर, गृह (गउड) ।
२ आश्रय, स्थान (आचा) । ३ देव-मन्दिर
(आवम) । ४ धार्मिक जनो का एकत्र होने
का स्थान,

‘जल्य साहम्मिया बह्वे सीलवता बहुसुया ।

चरित्तयासपणणा आययण त वियाण हु’
(धम्म) । ५ कर्म-बन्ध का कारण (आचा) ।

६ निर्णय, निश्चय (सूत्र १, ६) । ७ निर्दाप
स्थान (साधं १०६) ।

आयर मक [आ + चर] आचरना, करना ।
आयरइ (महा, उव) । वक्क आयरत,
आयरमाण (भग) । क. आयरियव्व (स १) ।
आयर पु [आकर] १ खानि, खान । २ समूह
(काल, कप्पू) ।

आयर देखो आयार = आचार (पुण्फ ३५६) ।

आयर पु [आदर] १ सत्कार, सम्मान
(गउड) । २ परिग्रह, असंतोष (परह १, ५) ।
३ स्थान, मभाल (कप्पू) ।

आयरग पु [आयरङ्ग] इस नाम का एक
म्लेच्छ राजा (पउम २७, ६) ।

आयरण न [आचरण] प्रवृत्ति, अनुष्ठान (पडि) ।

आयरण न [आदरण] आदर (भग १२, ५) ।

आयरणा छी [आचरणा] परंपरा का रिवाज
(चिद्व २५) ।

आयरणा छी [आचरणा] आचरण, अनुष्ठान
(मट्ठि १४५, उवर १४५) ।

अयरिय वि [आचरित] १ अनुष्ठित, विहित,
कृत (उवा) । २ न शास्त्र-मम्मत्त चाल-चलन,
‘अमटेण समाइन् ज कत्यड केणइ असावजं’
न निवारियमन्तेहि य, बहुमगुमयमेयमारिय’
(उप ८१३) ।

आयरिय पु [आचार्य] १ गण का नायक,
मुखिया (आवम) । २ उपदेशक, गुरु, शिक्षक
(भग १, १) । ३ अर्थ पढानेवाला (भग
८, ८) ।

आयरिस देखो आयस (हे २, १०५) ।

आयल्ल अक [लम्ब] १ व्याप्त होना । २
लटकना, ‘केसकलाउ खवि ओणल्लइ, परि-
मोक्कतु नियवि आयल्लइ’ (भवि) ।

आयल्लया छी [दे] वेचैनी, ‘मयणमरविट्ठ-
रियणी सहमा आयल्लय पत्ता’ (पउम ८,
१८६), ‘विद्धो अणगवारोहि भत्ति आयल्लयं
पत्तो’ (सुर १६, ११०), ‘फि उण पिअव-
अस्म मअणायल्लय अत्तणो उड्देहि अक्खरेहि
णिवेदेमि’ (कप्पू) । देखो आअल्ल ।

आयल्लिय वि [दे] आक्रान्त, व्याप्त (उप
१०३१ टी, भवि) ।

आयव पुं [आतपवत्] अहोरात्र का २४वां
मुहूर्त (सुज १०, १३) ।

आएस पुं [आदेश] १ अपेक्षा । २ प्रकार, रीति (एंडि १८४) । ३ वि. नीचे देखो (पिंड २३०) ।

आएस देखो आवेस (भग १४, २) ।

आएस } पु [आदेश] १ उपदेश, शिक्षा ।
आएसग } २ आज्ञा, हुकुम (महा) । ३ विवक्षा, मम्मति (सम्म ३७) । ४ अतिथि, मेहुमान (सूत्र २, १, ५६) । ५ प्रकार, भेद, 'जीवे ए भते ! कालाएसेए कि सपदेसे अपदेमे' (भग ६, ४, जीव २, विसे ४०३) । ६ निर्देश (निचू) । ७ प्रमाण, 'जाव न बहुपसन्नं ता मीस एस इत्य आएसो' (पिंड २१) । ८ इच्छा, अभिलाषा, देखो आएसि । ९ दृष्टान्त, उदाहरण, 'वाघाइयमाएसो श्रवरद्धो हुअ भन्नतरएण' (आचानि २६७) । १० सूत्र, ग्रन्थ, शास्त्र (विसे ४०५) । ११ उपचार, शरीर, 'आएसो उवयारो' (विसे ३४, ८८) । १२ शिष्ट सम्मत, 'बहुसुयमाइएणं तु,

न बाहियएणेहि जुगप्पहाणेहि ।

आएसो सो उ भवे,

अहवावि नयतरविगप्पो' (वव २, ८) ।

आएसण न [आदेशन] ऊपर देखो (महा) ।

आएसण न [आदेशन, आवेशन] लोहा कौरह का कारखाना, शिल्पशाला (आचा २, २, २, १०, श्रौप) ।

आएसि वि [आदेशिन्] १ आदेश करनेवाला । २ अभिलाषी, इच्छुक (आचा) ।

आएसिय वि [आदिष्ट] जिसको आज्ञा दी गई हो वह (भवि) ।

आएसिय वि [आदेशिक] १ आदेश संवन्धी । २ विवाह आदि के ज़िम्मे में बने हुए वे स्त्रिय-पदार्थ जिनको श्रमणों में बाँट देने का सकल्प किया गया हो (पिंड २२६) ।

आओ अ [दे] अथवा, या, 'हत किमेयति, कि ताव सुविण्णो, आओ इदजाल, आओ मइविन्मो, आओ सच्चयं चेतति' (स ४५४) ।

आओग पुं [आयोग] १ लाभ, नफा (श्रौप) ।

२ अत्यधिक सूद के लिए करजा देना (भग) ।

३ परिकर, सरंजाम (श्रौप) ।

आओग पु [आयोग] अर्थोपाय, अर्थोपार्जन का साधन (सूत्र २, ७, २) ।

आओग पुं [आयोग्य] परिकर, सरजाम (श्रौप) ।

आओज पुन [आयोग्य] वाद्य, वाजा (महा, पङ्) ।

आओज वि [आयोज्य] संवन्ध-योग्य, जोड़ने योग्य (विसे २३) ।

आओड सक [आ + खोटय्] प्रवेश कराना, घुसेडना । आओडावेंति (विपा १, ६) ।

आओडण न [आकोलन] मजबूत करना (से ६, ६) ।

आओडिअ वि [दे] ताडित, मारा हुआ (से ६, ६) ।

आओध अक [आ + युध्] लडना । आओधेहि (वेरिण १११) ।

आओस सक [आ + कुश, क्रोशय्] आक्रोश करना, शाप देना । आओसइ (निर १, १) आओसेजसि, आओसेमि (उवा) । कवकू आओसेजमाग (अंत २२) ।

आओस पु [दे] प्रदोष-समय, सन्ध्या-काल (श्रौघ ६१ भा) ।

आओसणा खी [आक्रोशना] निर्मत्संता, तिरस्कार (निर १, १) ।

आओहण न [आयोधन] युद्ध, लड़ाई (उप ६४८ टी, सुर ६, २२०) ।

आंत वि [अन्त्य] अन्त का (पचा १८, ३६) । आकख सक [आ + काङ्क्ष्] चाहना, इच्छना । आकखिहि (भवि) ।

आकंखा खी [आकाङ्क्षा] चाह, इच्छा, अभिलाषा (विसे ८५६) ।

आकंखि वि [आकाङ्क्षिन्] अभिलाषी, इच्छुक (आचा) ।

आकद अक [आ + कन्द] रोना, चिल्लाना । आकदामि (पि ८८) ।

आकदिय न [आक्रन्दित] १ आक्रन्दन, रोदन । २ वि जिसने आक्रन्दन किया हो वह (दि ७, २७) ।

आकप अक [आ + कम्प्] १ थोड़ा कांपना । २ तत्पर होना । ३ आराधन करना । संकृ. आकंपइत्ता, आकंपइत्तु (राज) ।

आकंप पुं [आकम्प] १ थोड़ा कांपना । २ आराधन (वव) । ३ तत्परता, आराधन (राज) ।

आकपण न [आकम्पन] ऊपर देखो (वव, धर्म) ।

आकंपिय वि [आकम्पित] ईपत् चलित, कम्पित (उप ७२८ टी) ।

आकपिय वि [आकम्पित] आवाजित, प्रसन्न किया हुआ (पिंड ४३६) ।

आकड्ड पु [आकर्ष] खींचाव । 'विकड्डि खी' [विकृष्टि] खींच-तान (भग १५) ।

आकड्डण न [आकर्षण] खींचाव (निचू) ।

आकड्डिय वि [दे] बाहर निकाला हुआ, 'पुव्व व वच्छ तीए निव्वमच्छिया

ता धरित्तु गलयम्मि ।

पच्छिमअसोगवणिगयादारेणाकड्डिया क्कति ॥' (धर्मवि १३३) ।

आकणण न [आकर्णन] श्रवण (नाट) ।

आकणिय वि [आकर्णित] श्रुत, सुना हुआ (आचा) ।

आकदि देखो आकिदि (संक्षि ६) ।

आकम्हिय वि [आकस्मिक] अकस्मात् होनेवाला, बिना ही कारण होनेवाला, 'वज्झमिन्मिताभावा जं भयमाकम्हियं तति' (विसे ३४५१) ।

आकर पु [आकर] १ खान । २ समूह (कुमा) ।

आकस देखो आगस । आकसिस्सामो (आचा २, ३, १, १५) हेऊ. आकसित्तए (आचा २, ३, १, १५) ।

आकार देखो आगार (कुमा, द १३) ।

आकास देखो आगास (भग) ।

आकासिय वि [दे] पर्याप्त, काफी (पङ्) ।

आकिइ खी [आकृति] स्वरूप, आकार (हे १, २०६) ।

आकिंचण न [आकिञ्चन्य] निस्पृहता, निष्परिग्रहता, 'आकिंचण च वंमं च जइधम्मो' (नव २३) ।

आकिंचणया खी [आकिञ्चनता] ऊपर देखो (सम १२०) ।

आकिंचणिय } देखो आकिंचण (आचू, सुपा
आकिंचन } ६०८) ।

आकिट्टि खी [आकृष्टि] आकर्षण (धर्म वि १५) ।

आयासइत्तिअ वि [आयासयित्] तकलीफ देनेवाला (अभि ६३) ।

आयासतल न [आकाशतल] चन्द्रशाला, घर के ऊपर की खुली छत (कुप्र ४६२) ।

आयासतल न [दे] प्रासाद का पृष्ठ भाग (दे १, ७२) ।

आयासलव न [दे] पक्षिगृह, नोड (दे १, ७२) ।

आयासिअ वि [आयासित] परिश्रान्त, खिन्न (गा १६०) ।

आयाहम्म वि [आत्मघ्न] १ आत्मविनाशक । २ न आधाकर्म दोष (पिंड ६५) ।

आयाहिण न [आदक्षिण] दक्षिण पार्श्व से भ्रमण करना (उवा) । १ पयाहिण वि [प्रदक्षिण] दक्षिण पार्श्व से भ्रमण कर दक्षिण पार्श्व में स्थित होनेवाला (विपा १, १) । १ पयाहिणा स्त्री [प्रदक्षिणा] दक्षिण पार्श्व से परिभ्रमण, प्रदक्षिणा (ठा १) ।

आयु देखो आड = आयुप् । १ वत वि [वत्] चिरायुष्क, दीर्घ आयुवाला (पएह १, ४) ।

आर पु [आर] १ इह-लोक, यह जन्म (सूअ १, २, १, ८, १६, २८, १, ८, ६) । २ मनुष्य-लोक (सूअ १, ६, २८) । ३ नुकीली लोहे की कील (कुप्र ४३४) । ४ न गृहस्थपन (सूअ १, २, १, ८) ।

आर पु [आर] १ मंगल-ग्रह (पउम १७, १०८, सुर १०, २२४) । २ चौथा नरक का एक नरकावास (ठा ६) । ३ वि. अर्वाक्त्तन, पूर्व का (सूअ १, ६) ।

आरअ वि [कारक] कर्त्ता, करनेवाला (गा १७६, ३४८) ।

आरओ अ [आरतस्] १ पूर्व, पहले, अर्वाक् (सूअ १, ८, स ६४३) । २ समीप में, पास में (उप ३३१) । ३ शुरू कर के, प्रारम्भ कर के (विसे २२८५) ।

आरओ अ [आरतस्] पीछे से (एदि २४६ टी) ।

आरदर वि [दे] १ अनेकान्त । २ संकट, व्याप्त (दे १, ७८) ।

आरभ सक [आ + रभ्] १ शुरू करना । २ हिंसा करना । आरंभइ (हे ४, १९५) ।

वक्र. आरभंत (गा ४२, से ८, ८२) । संक्र. आरंभइत्ता, आरंभिअ (नाट) ।

आरंभ पु [आरम्भ] १ शुरूआत, प्रारम्भ (हे १, ३०) । २ जीव-हिंसा, वध (आ ७) । ३ जीव, प्राणी (पएह १, १) । ४ पाप-कर्म (आचा) । १ य वि [ज] पाप-कार्य से उत्पन्न (आचा) । १ विणय पु [विनय] आरंभ का अभाव । १ विणइ वि [विनयिन्] आरंभ से विरत (आचा) ।

आरभग पु [आरम्भक] १ ऊपर देखो आरंभय (सूअ २, ६) । २ वि. शुरू करने-वाला (विमे ६२८, उप पृ ३) । ३ हिंसक, पाप-कर्म करनेवाला (आचा) ।

आरभि वि [आरम्भिन्] १ शुरू करनेवाला (गउड) । २ पाप-कार्य करनेवाला (उप ८६६) ।

आरभिअ पु [दे] मालाकार, माली (दे १, ७१) ।

आरंभिअ वि [आरब्ध] प्रारब्ध, शुरू किया हुआ (मवि) ।

आरभिअ देखो आरंभ = आ + रम् ।

आरभिआ स्त्री [आरम्भिणी] १ हिंसा से सम्बन्ध रखनेवाली क्रिया । २ हिंसक क्रिया से होनेवाला कर्म-बन्ध (ठा २, १, नव १७) ।

आरक्ख न [आरक्ष्य] कोतवाल का ओहदा, कोतवाली, आरक्षकना (मुख ३, १) ।

आरक्ख वि [आरक्ष] १ रक्षण करनेवाला (दे १, १५) । २ पु. कोतवाल, नगर का रक्षक (पात्र) ।

आरक्खग वि [आरक्षक] १ रक्षण करने-वाला, आता (कण्, मुपा ३५१) । २ पु. क्षत्रियो का एक वंश । ३ वि. उस वंश में उत्पन्न (ठा ६) ।

आरक्खि वि [आरक्षिन्] रक्षक, आता (ठा ३, १, ओघ २६०) ।

आरक्खिग वि [आरक्षिक] १ रक्षक, आरक्खिग आता । २ पुं. कोतवाल (निचू १, १६, सुपा ३३६, महा. स १२७, १५१) ।

आरज्ज सक [आ + रज्] आराधन करना । आरज्जइ (आक्र ६८) ।

आरज्ज वि [आराध्य] पूज्य, माननीय (अच्छु ७१) ।

आरड सक [आ + रट्] १ चिल्लाना, वृम मागना । २ रोना । वक्र. आरडंत (उप १२८ टी) । संक्र. आरडिऊण (महा) ।

आरडिअ न [दे] १ विलाप, क्रन्दन । २ वि. चित्र-युक्त (दे १, ७५) ।

आरण पुं [आरण] १ देवलोक-विशेष (अनु, सम ३६, इक) । २ उम देवलोक का निवासी देव, 'त चेव आरण्यचुय ओहीनाणेण पासति' (सग २२१, विसे ६६६) ।

आरण पुन [आरण] एक देवविमान (देवेन्द्र १३५) ।

आरण न [द] १ अवर, होठ । २ फलक (दे १, ७६) ।

आरणाल न [आरनाल] काजी, मावूदाना (दे १, ६७) ।

आरणाल न [दे] कमल, पद्म (दे १, ६७) ।

आरण वि [आरण्य] जंगली, जंगल-निवासी (से ८, ५६) ।

आरणग वि [आरण्यक] १ जंगली, जंगल-आरण्य निवासी, जंगल में उत्पन्न (उप २२६, मा) । २ न गाल-विशेष, उपनिषद्-विशेष, (पउम ११, १०) ।

आरणिय वि [आरण्यक] जंगल में वनने-वाला (तापम आदि) (सूअ २, २) ।

आरत वि [आरत] १ थोड़ा रक्त (आचा) । २ अत्यन्त अनुरक्त (पएह २, ४) ।

आरत्तिय न [आरत्तिक] आरत्ती (सुर १०, १६, कुमा) ।

आरद्ध वि [आरब्ध] प्रारब्ध, शुरू किया हुआ (काल) ।

आरद्ध वि [दे] १ बढ़ा हुआ । २ सत्पुण, सत्पुण । ३ घर में आया हुआ (दे १, ७५) ।

आरनाल देखो आरणाल = आरनाल (पात्र) ।

आरनाल न [दे] कमल, पद्म (पड्) ।

आरन्निय देखो आरणिय (सूअ २, २, २१) ।

आरव देखो आरव ।

आरब्भ नीचे देखो ।

आरभ देखो आरंभ = आ + रम् । आरभइ (हे ४, १५५, उवर १०) । वक्र. आरभंत, आरभमाण (ठा ७) । संक्र. आरब्भ (विसे ७६५) ।

आगाढ वि [आगाढ] १ प्रबल, दु साध्य, 'कडुगोसहव आगाढरोगिणो रोगसमदण्ड्य' (उप ७२८ टी), 'नो कण्ठ निगंयाण वा निगन्धीण वा अन्नमन्नस्स मोए आइइत्तए, नन्नत्थ आगडेहि रोगायकेहि' (कस) । २ अपवाद, खास कारण (पचमा) । ३ अत्यन्त गाढ (निचू) ।
 'जोग पु [योग] योग-विशेष, गणि-योग (श्लो ५४८) । 'पण्ण न [प्रज्ञ] शास्त्र, आगम, 'आगाढपण्णसु य भाविपणा' (वव) ।
 'सुय न [श्रुत] आगम-विशेष (निचू) ।

आगामि वि [आगामिन्] आनेवाला (सुपा ९) ।

आगार सक [आ + कराय्] बुलाना, आह्वान करना । संक्र आगारेऊण (आव) ।

आगार न [आगार] १ घर, गृह (गाया १, १, महा) । २ वि. गृहस्थ, गृही (ठा) । 'इय वि [स्थ] गृही (पि ३०६) ।

आगार पु [आकार] १ अपवाद (उप ७२८ टी, पडि) । २ इंगित, चेष्टा-विशेष (सुर ११, १६२) । ३ आकृति, रूप (सुपा ११५) ।

आगारिय वि [आगारिक] गृहस्थ-सक्न्वी (विमे) ।

आगारिय वि [आकारित] १ आहूत । २ उत्सारित, परित्यक्त (आव) ।

आगाल पु [आगाल] १ समान प्रदेश मे रहना । २ सम भाव से रहना (आचा) । ३ उदीरणा-विशेष (राज) ।

आगास पुन [आकाश] आकाश, अन्तराल (उवा) । 'गमा स्त्री [गमा] विद्या-विशेष, जिसके बल से आकाश मे गमन कर सकता है (पउम ७, १४४) । 'गामि वि [गामिन्] आकाश मे गमन करने वाला, पक्षि-प्रभृति (आचा) । 'जोङ्गी स्त्री [योगिनी] पक्षि-विशेष, आगासजोङ्गीए निबुओ सद्दोवि वाम-पासम्मि' (सुपा १८५) । 'त्थिकाय पु [स्तिक्काय] आकाश-प्रदेशो का समूह, अखण्ड आकाश-द्रव्य (पण्ण १) । 'थिग्गलन [दे] मेघरहित आकाश का भाग (आवम) । 'फलिह, 'फालिय पु [स्फटिक] निर्मल स्फटिक-रत्न (राय, औप) । 'फालिया स्त्री [फालिका] एक मोठा द्रव्य (पण्ण १७) ।

'इवाइ वि [तिपातिन्] विद्या आदि के बल से आकाश मे गमन करनेवाला (औप) ।
 आगासिय वि [आकाशित] आकाश को प्राप्त (औप) ।

आगासिय वि [आकर्षित] खींचा हुआ (औप) ।

आगासिया स्त्री [आकाशिकी] आकाश मे गमन करने की लब्धि-शक्ति (सूत्रनि १६३) ।

आगाह सक [अव + गाह्] अवगाहन करना, स्नान करना । आगाहइत्ता (दस ५, १, ३१) ।

आगिइ स्त्री [आकृति] आकार, रूप, मूर्ति (सुर २, २२, विपा १, १) ।

आगिट्टि स्त्री [आकृष्टि] आकर्षण (सुपा २३२) ।

आगी देखो आगिइ, 'छिएणावल्लियगागी-दिसासु सामाइय न जं तासु' (विसे २७०७) ।

आगु पु [आकु] अभिलाष, इच्छा (आक) ।

आघं देखो आघव । 'सूत्रकृताग' सूत्र के प्रथम श्रुतस्कन्ध का दसवाँ अध्यायन (सूत्र १, १०) ।

आघंस सक [आ + घृप्] घर्षण करना (निचू) ।

आघस सक [आ + घृप्] घिसना, थोड़ा घिसना । आघसिज्ज (आचा २, २, १, ४) ।

आघस वि [आघर्ष] जल के साथ घिसकर जो पिया जा सके वह (पिड ५०२) ।

आघसण न [आघर्षण] एक बार का घर्षण (निचू) ।

आघयण न [दे] वच-स्थान (गाया १, ६—पत्र १६७) ।

आघव सक [आ + ख्या] १ कहना, उपदेश देना । २ ग्रहण करना । आघवेइ (ठा) । कवक आघविज्ज (भग) । भूका. आघं (सूत्र, पि ८८) । वक आघवेमाण (पि ४४) । हेक आघवित्तए (पि ८८) ।

आघवणा स्त्री [आख्यान] कथन, उक्ति (गाया १, ६) ।

आघवइत्तु वि [आख्यायक] कथक, वक्ता, उपदेशक (ठा ४, ४) ।

आघविय वि [आख्यात] उक्त, कहा हुआ (पि ४४) ।

आघविय वि [दे] गृहीत, स्वीकृत (अणु २०) ।

आघवेत्तग वि [आख्यापयितृक] उपदेष्टा, वक्ता (आचा) ।

आघस सक [आ + घस्] थोड़ा घिसना । आघमावेज (निचू) ।

आघा सक [आ + ख्या] कहना । (आचा) ।

आघा सक [आ + घ्रा] सूँघना । वक आघायत (उप ३५७ टी) ।

आघाय वि [आख्यात] कथित, उक्त (आचा) ।

आघाय वि [आख्यात] १ उक्त, कथित (सूत्र १, १३, २) । २ न उक्ति, कथन (सूत्र १, १, २, १) ।

आघाय पुं [आघात] १ एक नरक-म्यान (देवेन्द्र २६) । २ विनाश (उक्त ५, ३२, सुख ५, ३२) ।

आघाय पुं [आघात] १ वध । २ चोट, प्रहार (कुमा, गाया १, ६) ।

आघायत देखो आघा = आ + घ्रा ।

आघाव देखो आघव । आघावेइ (पि ८८; २०२) ।

आघुट्ट वि [आघुष्ट] घोपित, जाहिर किया हुआ (भवि) ।

आघुम्म अक [आ + घूर्ण] डोलना, हिलना, काँपना, चलना ।

आघुम्मिय वि [आघूर्णित] डोला हुआ, कम्पित, चलित, 'आघुम्मियनयणजुओ' (पउम १०, ३२, ८७, ५६) ।

आघोस सक [आ + घोपय्] घोपणा करना, ढिंढोरा पिटवाना । आघोमेह (म ६०) ।

आघोसण न [आघोपण] ढिंढोरा, घोपणा (महा) ।

आचक्ख सक [आ + चक्ष्] कहना । वक आचक्खन (पि २५, ८८, नाट) ।

आचक्खिद (शो) वि [आख्यात] उक्त, कथित (अभि २००) ।

आचरिय वि [आचरित] १ अनुष्ठित, विहित । २ न आचरण (प्रासू १११) ।

आचाम सक [आ + चामय्] चाटना, खाना, पीना । वक आचामत (कुप्र ३६) ।

आचार देखो आचार = आचार (कुमा) ।

आचारिअ देखो आयरिय = आचार्य (प्राप) ।

आरेइअ वि [दे] १ मुकुलित, सकुचित ।
२ भ्रान्त । ३ मुक्त (दे १, ७७) । ४ रोमा-
न्वित, पुलकित (दे १, ७७, पात्र) ।

आरेण अ [आरेण] १ ममीप, पास (उप
३३६ टी) । २ अर्वाक, पहले (विसे ३६१७) ।
३ प्रारम्भ कर (विसे २२८४) ।

आरोअ अक [उत् + लस्] विकसित होना,
उल्लास पाना । आरोअड (हे ८, २०२) ।

आरोअणा देखो आरोअणा (ठा ४, १, विसे
२६२७) ।

आरोइअ [दे] देखो आरेइअ (पड्) ।

आरोग्ग सक [दे] खाना, भोजन करना,
आरोगना । आरोगगड (दे १, ६६) ।

आरोग्ग न [आरोग्य] एकामन तप (सवोष
५८) ।

आरोग्ग न [आरोग्य] १ नीरोगता, रोग का
अभाव (ठा ४, ३, उव) । १ वि रोग-
रहित, नीरोग (कप्) । ३ पु एक ब्राह्मणो-
पासक का नाम (उप ५४०) ।

आरोग्गारिअ वि [दे] रक्त, रंगा हुआ
(पड्) ।

आरोग्गिअ वि [दे] मुक्त, खाया हुआ (दे
१, ६६) ।

आरोद्ध वि [दे] १ प्रवृद्ध, बढ़ा हुआ । २
गृहागत, घर में आया हुआ (पड्) ।

आरोय न [आरोग्य] १ क्षेम, कुशल । २
नीरोगता, 'आरोयारोय पसूया' (आचा २,
१५, ६) ।

आरोल सक [पुञ्ज्] एकत्र करना, इकट्ठा
करना, आरोलड (हे ४, १०२, पड्) ।

आरोलिअ वि [पुञ्जित] एकत्रित, इकट्ठा
किया हुआ (कुमा) ।

आरोव सक [आ + रोपय्] १ ऊपर
चढ़ाना, ऊपर बैठाना । २ स्थापन करना ।
आरोवेइ (हे ४, ४७) । संक्रु आरोवेत्ता,
आरोविडं, आरोविऊण (भग, कुमा,
महा) ।

आरोवण न [आरोपण] ऊपर चढ़ाना (सुपा
२४६) । २ सम्भावना (दे १, १७४) ।

आरोवणा स्त्री [आरोपणा] १ उपर चढ़ाना ।
२ प्रायश्चित्त-विशेष (वव १) । ३ प्राख्यणा,

व्याख्या का एक प्रकार । ४ प्रश्न, पर्यनुयोग
(विसे २६२७, २६२८) ।

आरोविअ वि [आरोपित] १ चढ़ाया हुआ ।
२ संस्थापित (महा, पात्र) ।

आरोस पु [आरोप] १ म्नेच्छ देश-विशेष ।
२ वि उय देश का निवासी (पएह १, १,
कम) ।

आरोसिअ वि [आरोपित] कोपित, रूठ
किया हुआ (मे ६, ६६, भवि, दे १, ७०) ।
आरोह सक [आ + रुह्] ऊपर चढ़ना,
बैठना । आरोहड (कम) ।

आरोह सक [आ + रोहय्] उपर चढ़ाना ।
क्रु आरोहडयन्त्र (वव १) ।

आरोह पु [आरोह] १ मवार, हाथी, घोडा
आदि पर चढ़नेवाला (से १३, ७५) । २
ऊँचाई (वृह) । ३ लम्बाई (वव १, ५) ।

आरोह पुं [दे] स्तन, यन, चूँचो (दे १,
६३) ।

आरोहग वि [आरोहक] १ सवार होनेवाला ।
२ हस्तिपक, पीलवान, हाथी का रक्षक (श्रौप) ।
आरोहि वि [आरोहिन] ऊपर देखो
(गड्ड) ।

आरोहिय वि [आरुह] ऊपर चढ़ा हुआ,
ऊपर चढ़ा हुआ (भवि) ।

आल न [दे] अनर्थक, मुवा (सिरि ८६५) ।
आल न [दे] १ छोटा प्रवाह । २ वि कोमल,
मृदु (दे १, ७३) । ३ आगत (रभा) ।

आल न [आल] कलकारोप, दोषारोपण (स
४३३), 'न दिज कस्सवि कूडआल' (सत्त २) ।

°आल देखो काल (गा ५५, से १, २६, ५,
८५, ६, ५६) ।

°आल देखो जाल (से ५, ८५, ६, ५६) ।

°आल देखो ताल, 'समविसम एमति हरिआल-
वकियाड' (मे ६, ५६) ।

आलइअ वि [आलगित] यथास्थान स्थापित,
योग्य स्थान में रखा हुआ (कप्) ।

आलइअ वि [आलयिक] गृही, आश्रयवाला
(आचा) ।

आलइय वि [आलगित] पहना हुआ (आचा
२, १५, ५) ।

आलंकारिय वि [आलङ्कारिक] १ अलंकार-
शास्त्र-ज्ञाता । २ अलंकार-सवन्धी । ३ अल-

कार के योग्य, 'आलंकारिय भट उवणेह'
(जीव ३) ।

आलकिअ वि [दे] पंगु किया हुआ (दे १,
६८) ।

आलंद न [आलन्द] समय का परिमाण-
विशेष, पानी में भोजा हुआ हाथ जितने समय
में सूख जाय उसने में नेकर पाँच अहोरात्र
तक का काल (विसे) ।

आलदिअ वि [आग्निद्वि] उद्युक्त समय
का उल्लेखन न कर कार्य करनेवाला (विने) ।

आलव सक [आ + लम्ब] आश्रय करना,
सहारा लेना । नंक्रु. आलविय (भाम ११) ।

आलव पु [आलम्ब] आश्रय, आचार (मुपा
६३५) ।

आलव न [दे] भूमि-द्युत, वनस्पति-विशेष जो
वर्षा में होता है (दे १, ६४) ।

आलवण न [आलम्बन] १ आश्रय, आचार,
जिसका अवलम्बन किया जाय वह (गाया १,
१) । २ कारण, हेतु, प्रयोजन (आवमः
आचा) ।

आलवणा स्त्री [आलम्बना] उपर देखो (पि
३६७) ।

आलवि वि [आलम्बिन] अवलम्बन करने
वाला, आश्रयी (गड्ड) ।

आलभिय न [आलम्भिभ्र] १ नगर-विशेष
(ठा १) । २ भगवती मूत्र के ग्यारहवें शतक
का बारहवाँ उद्देश (भग ११, १२) ।

आलभिया स्त्री [आलम्भिभ्रा] नगरी-विशेष
(भग ११, १२) ।

आलक पु [दे] पागल कुना (भत्त १२५) ।

आलक्य सक [आ + लक्ष्य] १ जानना ।
२ चिह्न से पहिचानना । आलक्यमो (गड्ड) ।

आलक्खिय वि [आलक्षित] १ ज्ञात, परि-
चित । २ चिह्न में जाना हुआ (गड्ड) ।

आलग वि [आलग] लगा हुआ, संयुक्त (मे
५, ३३) ।

आलत्त वि आलपित] समापित, आभापित
(पञ्च १६, ४२, मुपा २०८, आ ६) ।

आलत्तय देखो अलत्त (गड्ड, गा ६४६) ।

आलत्थ पु [दे] मयूर, मोर (दे १, ६५) ।

आलद्ध वि [आलद्ध] १ संसृष्ट । २ संयुक्त ।
३ सृष्ट, छुआ हुआ । ४ मारा हुआ (नाट) ।

°आण देखो जाग = यान (चार ८) ।

आणछ देखो आअछ । आणछइ (पङ्) ।

आणत देखो आणी ।

आणतरिय न [आनन्तर्य] १ अविच्छेद, व्यवधान का अभाव (ठा ४, ३) । २ अनुक्रम, परिपाटि, 'आणतरियति वा अणुपरिवाडिति वा अणुकमेति वा एण्टा' (आचू) ।

आणद अक [आ + नन्द] आनन्द पाना, खुश होना ।

आणद सक [आ + नन्दय] खुश करना । आणदेदि (शौ) (नाट) । कृ आणदिअन्व (रयण १०) ।

आणद पु [आनन्द] १ अहोरात्र का सोल-हवां मूहूर्त (सुज १०, १३) । २ एक देव-विमान (देवेन्द्र १३१) ।

आणद पुं [आनन्द] १ हर्ष, खुशी (कुमा) । २ भगवान् शीतलनाथ के मुख्य-शिष्य (सम १५२) । ३ पोतनपुर नगर का एक राजा, जो भगवान् अजितनाथ का मातामह था (पद्म ५, ५२) । ४ भावी छठवां बलदेव (सम १५४) । ५ नागकुमार-जातीय देवों के स्वामी धरणेन्द्र के एक रथ-सैन्य का अधिपति देव (ठा ५, १) । ६ मूहूर्त-विशेष (सम ५१) । ७ भगवान् ऋषभदेव का एक पुत्र (राज) । ८ भगवान् महावीर के एक साधु शिष्य का नाम (कण्) । ९ भगवान् महावीर के दस मुख्य उपासकों (श्रावक-शिष्य) में पहला (उवा) । १० देव-विशेष (ज, दीव) । ११ राजा श्रेणिक के एक पौत्र का नाम (निर २, १) । १२ 'उपासगदसा' सूत्र का एक अध्ययन (उवा) । १३ 'अणुत्तरोपपातिक दसा' सूत्र का सातवां अध्ययन (भग) । १४ 'निरयावली' सूत्र का एक अध्ययन (निर २, १) । १५ व. देश-विशेष (पद्म ६८, ६६) । °पुर न [°पुर] नगर विशेष (वृह) । °रक्खिय पु [°रक्षित] स्वनामव्याप्त एक जैन साधु (भग) ।

आणदण न [आनन्दन] १ खुशी, हर्ष (सुपा ४४०) । २ वि खुश करनेवाला, आनन्द-दायक (स ३१३, रयण ३, सण) ।

आणदवड } पु [दे] पहली बार की रज-
आणदवस } स्वाला का रक्त वस्त्र (गा ४५७, दे १, ७२, पङ्) ।

आणदा स्त्री [आनन्दा] १ देवी-विशेष, मेरु की पश्चिम दिशा में स्थित रुक्म पर्वत पर रहनेवाली एक दिक्कुमारी (ठा ८) । २ इस नाम की एक पुष्करिणी (राज) । आणदिय वि [आनन्दिता] १ हर्षप्राप्त (श्रीप) । २ रामचन्द्र के भाई भरत के साथ दीक्षा लेनेवाला एक राजा (पद्म ८५, ३) । आणदिर वि [आनन्दिन्] आनन्दी, खुश रहनेवाला (भवि) ।

आणक्ख सक [परि + ईक्ष्] परीक्षा करना । हेक आणक्खेउ (श्रीप ३६) । आणच्छ देखो आअछ । आणच्छइ (पङ्) । आणट्ट वि [आनट्ट] सर्वथा नष्ट (उत्त १८, ५०, सुख १८, ५०) ।

आणण न [आनन] मुछ, मुँह (कुमा) । आणण न [आनयन] लाना (महा) । आणत्त वि [आज्ञप्त] आदिष्ट, जिसको हुकुम दिया गया हो वह (णया १, ८, सुर ४, १००) ।

आणत्ति स्त्री [आज्ञप्ति] आज्ञा, हुकुम (अभि ८१) । °अर वि [°कर] आज्ञाकारक, नौकर (से ११, ६५) । °किंकर वि [°किङ्कर] नौकर (पणह) । °हर वि [°हर] आज्ञा-वाहक, संदेश-वाहक (अभि ८१) ।

आणत्तिया स्त्री [आज्ञप्तिका] ऊपर देखो (उवा, पि ८८) ।

आणत्थ न [आनर्थ्य] अनर्थता (समु १५०) ।

आणप (अशो) देखो आणव = आ + ज्ञपय् । आणपयति (पि ४) ।

आणपाण देखो आणापाण (नव ६) ।

आणप्प वि [आज्ञाप्य] आज्ञा करने योग्य (सूय १, ४, २, १५) ।

आणम अक [आ + अन्] श्वास लेना । आणमति (भग) ।

आणमणी देखो आणवणी (भास १८, पि ८८, २४८) ।

आणय पुन [आनत] १ देवलोक-विशेष (सम ३५) । २ पु उम देवलोक-वासी देव (उत्त) ।

आणय पुंन [आनत] एक देवविमान (देवेन्द्र १३५) ।

आणयण न [आनयन] लाना, आनना (श्रा १४, स ३७६) ।

आणव सक [आ + ज्ञपय्] आज्ञा देना, फरमाना । आणवइ, आणवेसि (पद्म ३३, १००, ६८) । वक आणवेमाण (पि ५५१) । कृ आणवेयव्व (महा) ।

आणव देखो आणाव = आ + नायय् ।

आणवण न [आज्ञपन] आज्ञा, आदेश, फर-माइश (उवा, प्रामा) ।

आणवण न [आनायन] मँगवाना (सुपा ५७८) ।

आणवणिय वि [आज्ञापनिक] आज्ञा फर-मानेवाला (राय २५) ।

आणवणिया स्त्री [आज्ञापनिका, आनाय-निका] देखो दोनो आणवणी (ठा २, १) ।

आणवणी स्त्री [आज्ञापनी] १ क्रिया-विशेष, हुकुम करना । २ हुकुम करने से होनेवाला कर्मवन्ध (नव १६) ।

आणवणी स्त्री [आनायनी] १ क्रिया-विशेष, मँगवाना । २ मँगवाने से होनेवाला कर्म-वन्ध (नव १९) ।

आणा स्त्री [आज्ञा] आदेश, हुकुम (श्रीप ६०) । २ उपदेश, 'एसा आणा निगयिया' (आचा) । ३ निर्देश, 'उववाओ णिहेसो आणा विणओ य होति एण्टा' (वव) । ४ आगम, सिद्धान्त (विसे ८६४, एदि) । ५ सूत्र की व्याख्या (श्रीप) । °ईसर पु [°ईश्वर] आज्ञा फरमानेवाला मालिक (विपा १, १) । °जोग पु [°योग] १ आज्ञा का सम्बन्ध (पंचा) । २ शास्त्र के अनुसार कृति, 'पाव विसाइतुल्लं आणाजोगो अ मतसमो' (पचव) । °रुइ स्त्री [°रुचि] सम्यक्त्व-विशेष (उत्त) । २ वि. आगमो पर श्रद्धा रखनेवाला (पच) । °व वि [°वन्] आज्ञा माननेवाला (पंचा) । °वत्त न [°पत्र] आज्ञापत्र, हुकुमनामा (से १, १८) । °ववहार पु [°व्यवहार] व्यवहार-विशेष (पंचा) । °विजय न [°विजय, °विजय] धर्मव्याप्त-विशेष, जिसमें आज्ञा—आगम के गुणों का चिन्तन किया जाता है (श्रीप) ।

आणाइ पुं [दे] शकुनि, पक्षी (दे १, ६४) ।

आलीढ पुंन [आलीढ] योद्धा का युद्ध समय का आसन-विशेष (वृ १) ।

आलीण वि [आलीन] १ लीन, आसक्त, तत्पर (पठम ३२, ६) । २ आलिङ्गित, आच्छिष्ट (कप्प) ।

आलीयग वि [आदीपक] जलानेवाला, आग नुलगानेवाला (शाया १ २) ।

आलीयमाण देखो आली = आ + ली ।

आलील न [दे] समीप का भय, पान का डर (दे १, ६५) ।

आलीवग देखो आलीयग (पण्ह १, ३) ।

आलीवण न [आदीपन] आग लगाना (दे १, ५१, विपा १, १) ।

आलीचिय वि [आदीपित] आग में जलाया हुआ (पि २४४) ।

आलु पुंन [आलु] कन्द-विशेष, आलू (आ २०) ।

आलुई स्त्री [आलुकी] बल्ली-विशेष (पव १०) ।

आलुख सक [वह्] जलाना, दाह देना । आलुखइ (हे ४, २०८ पङ्) ।

आलुख सक [स्पृज्] न्यङ्ग करना, छूना । आलुखइ (हे ४ १८२) ।

आलुखण न [स्पर्शन] न्यङ्ग, छूना (गठड) ।

आलुखिअ वि [स्पृष्ट] स्पृष्ट, छुआ हुआ (से १, २१, पात्र) ।

आलुखिअ वि [दग्ध] जला हुआ (सुर ६ २०३) ।

आलुय सक [स्पृज्] छूना । आलुयइ (प्राक् ७४) ।

आलुप सक [आ + लुप्] हरण करना । आलुपह (आचा) ।

आलुप वि [आलुम्प] अपहारक, हरण करने-वाला, छीन लेनेवाला (आचा) ।

आलुग देखो आलु (पण्ह १) ।

आलुगा स्त्री [दे] घटी, छोटा घडा (उप ६६०) ।

आलुगार वि [दे] निरर्थक, ध्यर्थ निष्प्रयोजन, 'ता दनिनो नमगं अन्नह किं आलुमारमणि-एहि' (नुपा ३४३) ।

आलेकख } वि [आलेख्य] चित्रित, 'रत्ति
आलेक्खिय } परिवट्टेणं लक्खं आलेक्खदिराय-

राणवि न खम' (अचु २५, ने २, ४५; गा ६४१, गठड) ।

आलेटु } देखो आसिलिम ।

आलेटुअ }

आलेव पुं [आलेप] विलेपन, लेप, 'आनेव-निमित्तं च देवीश्रो वनयानकियवाहाश्रो घसति चंदणं' (महा) ।

आलेवण न [आलेपन] १ लेप विलेपन । २ जिनका लेप किया जाता है वह वस्तु, 'जे भिक्खू रत्ति आनेवणजाय पडिगाहेता' (निह १२) ।

आलेमिय वि [आश्लेषित] आनिगन कराया हुआ (चिइय ३७६) ।

आलेह पुं [आलेख] चित्र (आवम) ।

आलेहिअ वि [आलेखिन] चित्रित (महा) ।

आलोअ नक [आ + लोक्] देखना, विलोकन करना । वक्क. आलोअत, आलो-इंत, आलोएमाण (गा ५४६, उप पृ ४३, आचा) । वक्क. आलोअन (ने १, २५) । सक. आलोएऊण, आलोइत्ता (कान, ठा ६) ।

आलोअ सक [आ + लोच्] १ देखना । २ गुरु को अपना अपराध कह देना । ३ विचार करना । ४ आलोचना करना । अनोएइ (भग) । वक्क. आलोअत (पडि) । सक. आलोएत्ता, आलो-इअ (भग, पि ५८२) । हेक्क. आलोइत्तए (ठा २, १) । क. आलो-एयव्व, आलोएइयव्व (उप ६८२, श्रौय ७६६) ।

आलोअ पुं [आलोक] १ तेज, प्रकाश (ने २, १२) । २ विलोकन, अच्छी तरह देखना (श्रौय ३) । ३ पृथ्वी का सनातन-भाग, सम नू-भाग (श्रौय ५६५) । ४ गवाजादि प्रकाश-स्थान (आचा) । ५ जगत, संसार (आव) । ६ ज्ञान (पण्ह १, ४) ।

आलोअग } वि [आलोचक] आलोचना
आलोअय } करनेवाला (आ ४०, पुप्फ ३५५, ३६०) ।

आलोअण न [आलोकन] विलोकन, दर्शन निरीक्षण (श्रौय ५६ ना) ।

'अत्यानोअणतरला, इयत्तईणं भमंति बुद्धीश्रो । त एव निरारम, एति हियय कईदाण' (गठड) ।

आलोअग न [आलोचन] नीचे देखो (पण्ह २, १, प्राप् २४) ।

आलोअणा स्त्री [आलोचना] १ देवता, वतलाना । २ प्रायश्चित के लिए अपने दोषों को गुरु को बता देना । ३ विचार करना (भग १७, २, आ ४२, न ५०६) ।

आलोइअ वि [आलोचित] दृष्ट, निरीक्षित (ने ६, ६४) ।

आलोइअ वि [आलोचित] प्रदर्शित, गुरु को बताया हुआ (पडि) ।

आलोइअ देखो आलोअ = आ + लोच् ।

आलोइत्तु वि [आलोकयित्] देखने वाला, द्रष्टा (सम १५) ।

आलोइह वि [आलोख्यन्] प्रकाश-गुक्त (वज १६०) ।

आलोअन देखो आलोअ = आ + लोच् ।

आलोग देखो आलोअ = आनोक (श्रौय ५६५) । 'नयर न [नगर] नगर-विशेष (पठन ६८, ५७) ।

आलोच देखो आलोअ = आ + लोच् । वक्क. आलोचंत (नुपा ३०७) । सक. आलो-चिऊण (स ११७) ।

आलोचण देखो आलोअण (उप ३३२) ।

आलोड सक [आ + लोडय्] हिलोना, नयन करना । सक. आलोडिवि (अप) (सण) ।

आलोडिय } वि [आलोडित] मथित,
आलोलिय } हिलोरा हुआ, 'आलोडिया य नयरो' (पठम ५३ १२६, उप १४२ टी) ।

आलोयण न [आलोकन] गवाज (उत्त १६, ४) ।

आलोय सक [आ + लोपय्] आच्छादित करना । वक्क. आलोविजमाण (स ३८२) ।

आलोय देखो आलोअ = आलोक; 'भते अत्यानोवे भेत्तज्जे भोयणे पियागनणे' (रना) । आलोचिय वि [आलोपित] आच्छादित, ढका हुआ (शाया १, १) ।

आव वि [यावन्] जितना । आवति (पि ३६६) ।

आव अ [यावन्] जब तक, जब लग । 'कह वि [कथ] देखो 'कहिय (विसे १२६३, आ १) । 'अहं अ [कथम्]

आदित्तु वि [आदात्] ग्रहण करनेवाला (ठा ७)।

आदिय सक [आ + दा] ग्रहण करना। आदियइ (उवा)। प्रयो आदियावेंति (सूत्र २, १)।

आदिल } देखो आइल (पि ५६५)।
आदिलग }

आदी लो [आदी] इस नाम की एक महानदी (ठा ५, ३)।

आदीण वि [आदीन] १ अत्यंत दीन, वहुत गरीब (सूत्र १, ५)। २ न दूषित भिक्षा। 'भोइ वि [भोजिन्] दूषित भिक्षा को लेनेवाला, 'आदीणभोईवि करेति पावं' (सूत्र १, १०)।

आदीणिय वि [आदीनिक] अत्यन्त दीन-सबन्धी, 'आदीणिय दुकडिय पुरत्या' (सूत्र १, ५)।

आदु (शौ) देखो अदु (त्रि ६०)।

आदेज देखो आएज (परह १, ४)।

आदेस देखो ओएस = आदेश (कुमा, वव २ ८)।

आदेस पु [आदेश] व्यपदेश, व्यवहार (सूत्र १, ८, ३)। देखो आएस = आदेश (सूत्र २, १, ५६)।

आधरिस सक [आ + धर्पय्] परास्त करना, तिरस्कारना। आधरिसहि (आवम)।

आधा देखो आहा (पिड)।

आधार देखो आहार = आवार (परह २, ५)।

आयोरण पु [आधोरण] हस्तिपक, महावत, हाथीवान् (वर्मवि १३६)।

आनय देखो आणय (अनु)।

आनामिय देखो आणामिय (परह १, ४)।

आपण देखो आवण (अभि १८८)।

आपण्ण देखो आवण्ण (अभि ६५)।

आपत्ति लो [आपत्ति] प्राप्ति (सवोष ५५, पव १४६)।

आपाइय वि [आपादित] १ जिसकी आपत्ति की गई हो वह। २ उत्पादित, जनित (विसे १७४६)।

आपायण न [आपादन] सपादन (आवक ८२, पचा ६, १६)।

आपीड पु [आपीड] शिरोभूषण (आ २८)।

आपीण देखो आवीण (गउड)।

आपुच्छ सक [आ + प्रच्छ] आज्ञा लेना, सम्मति लेना। आपुच्छइ (महा)। वक्क आपुच्छंत (पि ३६७)। क. आपुच्छणीय (णया १, १)। संक आपुच्छिता, आपुच्छित्ताणं, आपुच्छिऊण, आपुच्छिं, आपुच्छिय (पि ५८२, ५८३, कप्प, ठा ५, १)।

आपुच्छण न [आप्रच्छन] आज्ञा, अनुमति (णया १, ६)।

आपुट्ट वि [आपृष्ट] जिसकी आज्ञा या सम्मति ली गई हो वह (सुर १०, ५१)।

आपुण्ण वि [आपूर्ण] पूर्ण, भरपूर (दे १, २०)।

आपूर पुं [आपूर] पूरनेवाला, 'मयणासरा-पूरं सर्म' (कप्प)।

आपूर देखो आऊर। कर्म. आपूरिखइ (महा)। वक्क आपूरमाण, आपूरेमाण (भग, राय)।

आपेड }
आपेड्डु } देखो आपीड (पि १२२, महा)।
आपेल }

आप्पण न [दे] पिष्ट, घाटा (पड्)।

आफंस पुं [आस्पर्श] अल्प स्पर्श (हे १, ४४)।

आफर पुं [दे] दूत, जुआ (दे १, ६३)।

आफाल सक [आस्फालय्] आस्फालन करना, आघात करना। सक आफालित्ता, आफालिऊण (पि ५८२, ५८६)।

आफालग देखो अफालण (गा ५४६)।

आफुण्ण वि [दे] आक्रान्त (अणु १६२)।

आफोडिअ न [आस्फोटित] हाथ पछाडना (परह १, ३)।

आवध सक [आ + वन्ध्] मजबूत बांधना। वक्क आवधत (हे १, ७)। सक आवंधिऊण (पि ५८६)।

आवध पु [आधन्व] सवन्व, सयोग (गउड)।

आवद्ध वि [आवद्ध] बंधा हुआ (स ३५८)।

आवाहा लो [आवाधा] १ अल्प वावा (णया १, ४)। २ अन्तर (सम १५)। ३ मानसिक पीडा (वृह)।

आभकर पु [आभङ्कर] १ ग्रह-विशेष (ठा २, ३)। २ न विमान-विशेष (सम ८)।

पंभंकर न [पंभङ्कर] विमान-विशेष (सम ८)।

आभक्खाण देखो अठभक्खाण (उवा)।

आभट्ट वि [आभापित] १ कथित, उक्त (सुपा १५१)। २ संभाषित (सुर २, २४८)। आभरण न [आभरण] अलंकार, आभूषण (पि ६०३)।

आभव्व वि [आभव्य] होने योग्य, संभाव्य (वव, सुपा ३०७)।

आभा लो [आभा] प्रभा, कान्ति, तेज (कुमा, औप)।

आभागि वि [आभागिन्] भोक्ता, भोगी, 'अण्णेण जम्ममरणेण आभागी भवेज्' (वसु, णया १, १८)।

आभार पु [आभार] बोरु, भार (सुपा २३६)।

आभास सक [आ + भाप्] कहना, समा-पण करना। आभासइ (हे ४, ४४७)।

आभास पु [आभास] १ जो वास्तविक में वह न होकर उसके समान लगता हो। २ विपरीत, 'करणमासेहि' (कुमा)।

आभासिय पुं [आभाषिक] १ इस नाम का एक म्लेच्छ देश। २ उसमें रहनेवाली म्लेच्छ जाति (परह १, १)। ३ एक अन्तर्द्वीप। ४ उसमें रहनेवाला, 'कहि णं भंते। आभासियमणुयाणं आभप्सियदीवे नाम दीवे' (जीव ३, ठा ४, २)।

आभासिय देखो आभट्ट (निर)।

आभिओइय देखो आभिओगिय (महा)।

आभिओग पु [आभियोग्य] १ किकर-स्थानीय देव-विशेष (ठा ४, ४)। २ नौकर, किकर (राय)। ३ किकरता, नौकरी (दस ६, २)।

आभिओगा लो [आभियोग्या] आभियोगिक भावना (उत्त ३६, २५५)।

आभिओगि वि [आभियोगिन्] किकर-स्थानीय देव (दम ६)।

आभिओगिय वि [आभियोगिक] १ मन्त्र आदि से आजीविका चलानेवाला (परण २०)। २ नौकर स्थानीय देव-विशेष (णया १, ८)। ३ वशीकरण, दूसरे को वश में करने का मन्त्रादि-कर्म (पंचा, महा)।

आवदि स्त्री [आवृत्ति] आवरण (संक्षिप्त ६)।
आवन्न देखो आवण (पठम ३४, ३०, लाया १, २, स २५६, उवर १६०)।

आवय पुं [आवर्त्त] देखो आवत्त, 'कित-कम्म वारणावय' (सम २१)।

आवय देखो आवड। वक्तु आवयंन, आवय-माण (पठम ३३, १३, लाया १, १, न)।
आवया स्त्री [आपगा] नदी (पात्र, स ६१२)।

आवया स्त्री [आपद्] आपदा, विपद्, दुःख (पात्र धण ४२),

'न गणति पुष्पवेहे, न य

नीड नेय लोय-धववाय।

नय भाविआवयाओ, पुरिसा

महिलाए आयाता' (सुर २, १८६)।

आवर सक [आ + वृ] आच्छादन करना, ढकना। कर्म आवरिज्जइ (भग ६, ३३)।
कवक. आवरिज्जमाण (भग १५)। सक आवरित्ता (ठा)।

आवरण न [आवरण] १ आच्छादन करने-वाला, ढकनेवाला, तिरोहित करनेवाला (सम ७१, लाया १, न)। २ वास्तु-विद्या (ठा ६)।

आवरणिज्ज वि आवरणीय] १ आच्छादनीय। २ ढकनेवाला, आच्छादन करनेवाला (श्रौप)।

आवरिय वि [आवृत्त] आच्छादित, तिरोहित, 'आवरियो कम्मेहि' (निच्च १)।

आवरिसण न [आवर्पण] छिडकना, सिंचन (वृह १)।

आवरिसण न [आवर्पण] सुगव जल की वृष्टि (अणु २५)।

आवरेंइया स्त्री [दे] करिका, मय परोसने का पात्र-विशेष (दे १, ७१)।

आवल न [आवलन] मोडना (पण्ह १, १)।

आवलि स्त्री [आवलि] १ पङ्क्ति, श्रेणी (महा)। २ पु एक विदुमार्थी का नाम (पठम ५, ६५)।

आवलिआ स्त्री [आवलिका] १ पङ्क्ति, श्रेणी (राय)। २ क्रम, परिपाटी (सुज १०)। ३ समय-विशेष, एक सूक्ष्म काल-परिमाण (भग

६, ७)। °पविट्ट वि [°प्रविष्ट] श्रेणी से व्यवस्थित (भग)। °वाहिर वि [°वाह्य] विप्रकीर्ण, श्रेणि-बद्ध नहीं रहा हुआ (भग)।
आवलिय वि [आवलि] वेष्टित (सुमनि २००)।

आवली स्त्री [आवली] १ पङ्क्ति, श्रेणी (पात्र)। २ रावण की एक कन्या का नाम (पठम ६, ११)।

आवस मक [आ + वस्] रहना, वास करना। आससेजा (सूत्र १, १२)। वक्तु 'आगार आसंनं वि' (सूत्र १, ६)।

आवसह पु [आवसय] १ घर, आश्रय, स्थान (सूत्र १, ४)। २ मठ, संन्यासियों का स्थान (पण्ह. हे २, १८७)।

आवसहिं पु [आवसयि] १ गृहस्थ, गृही (सूत्र २, २)। °सन्ध्यामी (सूत्र २, ७)।

आवसिय वि [आवसयि] १ आवश्यक-कृतव्य, आवश्यक जहूरी। २ न सामयिकादि धर्मा-आवससय, अनुष्ठान, नित्य-कर्म (उव, दस १०, एदि)। ३ जैन ग्रन्थ-विशेष, आवश्यक सूत्र (आवम)। °णुभाग पु [°णुयोग] आवश्यक सूत्र को व्याख्या (विमे १)।

आवसय पुन [आपाश्रय] १—३ ऊपर देखो। °आश्रय आश्रय (विसे ८७४)।

आवससिया स्त्री [आवसयि] सामाचारी-विशेष, जैन साधु का अनुष्ठान-विशेष (उत्त २६)।

आवह सक [आ + वह] धारण करना, वहन करना, 'धेवोत्रि गिहिपसगो जइणो सुद्धस पकमावहइ' (उव), 'णो पूयण तवसा आवहेजा' (सू १, ७)।

आवह वि [आवह] धारण करनेवाला (आचा)।

आवा सक [आ + पा] १ पीना। २ भोग में लाना, उपभोग करना। इह 'वत इच्छसि आवेड, सेय ते मरणं भवे' (दस २, ७)।

आवाइया स्त्री [आवापिका] प्रवान होम, 'पत्युयाए पक्खावाइयाए' (स ७५७)।

आवाग पु [आपाक] आवा, मिट्टी के पात्र पकाने का स्थान (उप ६४८, विसे २४६ टी)।

आवाड पु [आपात] भीलो की एक जाति, तेण

कालेण तेण समएण उत्तरड्ढमरहे वामे वहवे आवाडा एणं चिलाया परिवसति' (ज ३)।

आवाणय न [आपाणक] दूकान, 'मित्राईं आवाणयाइ' (स ५३०)।

आवाय पुन [आपात] अभ्यागम, आगमन (पव ६१, ६१ टी)।

आवाय देखो आवाग (आ २३)।

आवाय पु [आपात] १ प्रारम्भ, शुरुआत (पात्र, से ११, ७५)। २ प्रथम मेलन (ठा ४, १)। ३ तत्काल, तुरत (आ २३)। ४ पतन, गिरना (आ २३)। ५ सम्बन्ध, संयोग (उव, कम)।

आवाय पु [आवाप] १ आवा, मिट्टी के पात्र पकाने का स्थान। २ आलवाल। ३ प्रक्षेप, फेंकना। ४ शत्रु की चिन्ता। ५ बोना, वान (आ २३)।

आवायण न [आपादन] सम्पादन, (धर्मसं १०६८)।

आवाल देखो आलवाल (धर्मवि १६, ११२)।

आवाल } न [दे] जल के निकट का प्रवेश
आवाल्य } (दे २, ७०)।

आवाव देखो आवाय = आवाप। °आवा स्त्री [°कथा] रसोई सम्बन्धी कथा, वि. कथा। जेप (ठा ४, २)।

आवास पु [आवास] १ वास-स्थान (ठा ६, पात्र)। २ निवास, अवस्थान, रहना (पण्ह १, ४, श्रौप)। ३ पक्षि-गृह, नोड (वव १, १)। ४ पड़ाव, डेरा (सुपा २५६, उप पु १३०)। °पव्वय पु [°पर्वत] रहने का पर्वत (इक)।

आवास } देखो आवससय = आवश्यक (पि
आवासग } ३४८, श्रौप ६३८, विसे ८५०)।

आवासणिया स्त्री [आवासनिका] आवाग-स्थान (स १२२)।

आवासय न [आवासक] १ आवश्यक जहूरी। २ नित्य-कृतव्य धर्मानुष्ठान (हे ४३, विसे ८५८)। ३ पुं. पक्षि-गृह, नोड (वव १, १)। ४ वि. सस्कारावायक, वासक। ५ आच्छादक (विसे ८७५)।

आवासि वि [आवासिन्] रहनेवाला, 'एगंतनियावासी' (उव)।

आवासिय वि [आवासित] सनिवेशित, पड़ाव डाला हुआ (सुपा ४५६, सुर २, १)।

आमुट्ट वि [आमुट्ट] १ स्पृष्ट । २ उलटा किया हुआ (शोध) ।

आमुय सक [आ + मुच] छोड़ना, त्यागना । आमुयइ (गड्ड) ।

आमुस सक [आ + मृश] थोड़ा या एक बार स्पर्श करना । वक्त आमुसत, आमुस-माण (ठा १, आचा, भग ८, ३) ।

आमेडणा स्त्री [आमेडना] विपर्यस्त करना, उलटा करना (पएह १, ३) ।

आमेल पु (दे) लट, जटा (दे १, ६२) ।

आमेल पुं [आपीड] फूलों की माला, जो आमेलग मुकुट पर धारण की जाती है, आमेलग शिरोभूषण (दे १, १०५, पि १२२, भग ६, ३३) ।

आमेह देखो आमेल = आपीड (उवा २०६) ।

आमेह्मिअ वि [आपीडित] अवतसित, शिरो-भूषण में विभूषित (मे ६, २१) ।

आमोअ अक [आ + मुद्] खुश होना । सक आमोएवि (अप) (भवि) ।

आमोअ पुं [दे आमोद] हर्ष, खुशी (दे १, ६४) ।

आमोअ पुं [आमोद] मुगन्व, अच्छी गन्व (से १, २३) ।

आमोअ पु [आमोद] वाद्य-विशेष (राय ४६) ।

आमोअअ वि [आमोदक] १ सुगन्व उत्पन्न करनेवाला । २ आनन्द-जनक (से ६, ४०) ।

आमोअअ वि [आमोदद] सुगन्व देनेवाला (से ६, ४०) ।

आमोइअ वि [आमोदित] हृष्ट, हर्षित (भवि) ।

आमोअक्ख पुं [आमोक्ष] मोक्ष, मुक्ति, पूर्ण छुटकारा (सूत्र १, १, ४, १३) ।

आमोअक्खा स्त्री [आमोक्ष] १ छुटकारा । २ परित्याग (सूत्र १, ३, पि ४६०) ।

आमोड पु [दे] छूट, लट, समूह (दे १, ६२) ।

आमोडग न [आमोटक] १ वाद्य-विशेष (आचा) । २ फूलों से बालों का एक प्रकार का बन्वन (उत्तनि ३) ।

आमोडण न [आमोटन] थोड़ा मोड़ना (पएह १, १) ।

सामोडिअ वि [आमोटित] मंदित (माल ६०) ।

आमोद १ देखो आमोअ (स्वप्न ५२, सुर ३, आमोय ४१, काल) ।

आमोय पुं [आमोक] कतवार-पुब्ज, कतवार का ढेर, कूड़े का पुब्ज (आचा २, ७, ३) ।

आमोरअ वि [दे] विशेषज्ञ, अच्छा जानकार (दे १, ६६) ।

आमोस पुं [आमर्श, °र्ष] स्पर्श, छूना 'सफ-रिसणमामोसो' (पएह २, १ टी, विसे ७८१) ।

आमोस पु [आमोष] चोर (उत्त ६, २८) ।

आमोसग वि [आमोषक] १ चोर, चोरी करनेवाला (ठा ५, २) । २ चोरो की एक जाति (उर २, ६) ।

आमोसहि पु [आमर्शौषधि] लज्जित-विशेष, जिसके प्रभाव से स्पर्श मात्र में ही सब रोग नष्ट होते हैं (पएह २, १, औप) ।

आय पु [आय] १ लाभ, प्राप्ति, फायदा (अणु) । २ वनस्पति-विशेष (पएण १) । ३ कारण, हेतु (विसे १२२६, २६७६) । ४ अध्ययन, पठन (विसे ६५८) । ५ गमन (विसे २७६२) ।

आय पु [आय] अध्ययन, शास्त्राश-विशेष (अणु २५०) ।

आय वि [आज] १ अज-सम्बन्धी । २ वकरो के बाल से उत्पन्न (वज्रादि) (आचा) ।

आय वि [आगत] आया हुआ (काल) ।

आय वि [आत्त] गृहीत, 'आयचरित्तो करेइ सामरण, (सथा ३६) ।

आय पु [आगस्] १ पाप । २ अपराध, गुनाह (आ २३) ।

आय पुत्री [आत्मन्] १ आत्मा, जीव (सम १) । २ निज, स्वयं, 'अहालहुस्सगाइ रयणाइ गहाय आयाए एतमंत अवक्कामत्ति' (भग ३, २) । ३ शरीर, देह (आया १, ८) । ४ ज्ञान आदि आत्मा के गुण (आचा) । 'गुत्त वि [°गुत्त] सयत, जितेन्द्रिय, 'आयगुत्ता जिह्-दिया' (सूत्र) । 'जोगि वि [°योगिन्] मुमुक्षु, ध्यानी (सूत्र) । 'ट्ठि वि [°थिन्] मुमुक्षु, 'एव से भिक्खू आयट्ठो' (सूत्र) । 'तत्त वि [°तन्त्र] स्वाधीन, स्वतन्त्र (राज) । 'तत्त न [°तन्त्र] परम पदार्थ, ज्ञानादि रत्न-त्रय (आचा) । 'पपमाण वि [°प्रमाण] साढे तीन हाथ का परिमाण वाला (पव) । 'पपवाय न

[°प्रवाद] वारहवे जैन अङ्ग ग्रन्थ का एक भाग, सातवाँ पूर्व (सम २६) । 'भाव पुं [°भाव] १ आत्म-स्वरूप । २ निज अभिप्राय (भग) । ३ विषयासक्ति 'विणइज्जओ सव्वह आयभाव' (सूत्र) । 'य पु [°ज] पुत्र, लड़का (भवि) । 'रक्ख वि [°रक्ष] अङ्गरक्षक (आया १, ८) । 'व वि [°वत्] ज्ञानादि आत्मगुणों से संपन्न (आचा) । 'हम्म वि [°ह्म] आत्मा को अधोगति में ले जानेवाला । २ देखो आहामम्म (पिंड) ।

आय° देखो आवड, 'किंचायरक्खिओ जो पुरिसो सो होइ वरिससयआऊ' (सुपा ४५३) ।

आयइ स्त्री [आयति] भविष्य काल (सुर ४, १३१) ।

आयइजणग न [आयतिजनक] तपश्चर्या-विशेष (पव २७१) ।

आयइत्ता देखो आइ = आ + दा ।

आयंक पु [आतङ्क] १ दुःख । २ पीडा (आचा) । ३ दुःसाध्य रोग, आशु-याती रोग (औप) ।

आयकि वि [आतङ्किन्] रोगी, रोग युक्त (ठा ५, ३, टी—पत्र ३४२) ।

आयगुल न [आत्माङ्गुल] परिमाण का एक भेद,

'जेण जया मणूसा, तेसि ज होइ माणखुव तु । त भणियमिहायगुलमणिययमाण पुण इम तु ।' (विसे ३४० टी) ।

आयच सक [आ + तञ्च्] सीचना, छिड़कना । आयचइ, आयंचामि (उवा) ।

आयंचणिया स्त्री [आतञ्चनिः] कुम्भकार का पात्र-विशेष, जिसमें वह पात्र बनाने के समय मिट्टीवाला पानी रखता है (भग १५) ।

आयचणी स्त्री [आतञ्चनी] ऊपर देखो (भग १५) ।

आयत वि [आचान्त] जिसने आचमन किया हो वह (आया १, १, स १८९) ।

आयत देखो आया = आ + या ।

आयतम वि [आत्मतम] आत्मा को खिन्न करनेवाला (ठा ४, २) ।

आयतम वि [आत्मतमस्] १ अज्ञानी, अज्ञान । २ क्रोधी (ठा ४, २) ।

आयंदम वि [आत्मदम] १ आत्मा को शान्त

आवेढण न [आवेष्टन] ऊपर देखो (गउड, पि ३०४) ।

आवेष्टिय वि [आवेष्टित] १ चारो ओर से वेष्टित (भग १६, ६, उप पृ ३२७) । २ एक बार वेष्टित (ठा) ।

आवेयण न [आवेदन] निवेदन, मनो-भाव का प्रकाश-करण (गउड, दे ७, ८७) ।

आवेचअ वि [दे] १ विशेष आसक्त । २ प्रवृद्ध, बड़ा हुआ (पड़) ।

आवेस सक [आ + वेशय्] भूताविष्ट करना । सकृ आवेसिऊण (स ६४) ।

आवेस पु [आवेश] १ अभिनिवेश । २ जोश । ३ भूतग्रह । ४ प्रवेश (नाट) ।

आवेसण न [आवेशन] शून्यगृह, 'आवेमण-समापवासु परिणयसालासु एगया वासो' (आचा) ।

आस देखो अस्स = अस्स (प्राकृ २६) ।

आस अक [आस्] बैठना । वक्क 'अजय आसमाणो य पाणभूयाई हिंसइ' (दस ४) । हेक्क आसित्तए, आसइत्तए, आसइत्तु (पि ५७८, कस, दस ६, ५४) ।

आस पु [अश्व] १ अश्व, घोड़ा (गाया १, १७) । २ देव-विशेष, अश्विनी नक्षत्र का अश्वि-हायक देव (ज) । ३ अश्विनी नक्षत्र (चद २०) । ४ मन, चित्त (परण २) । ५ कण्ण, कंज पु [कर्ण] १ एक अन्तर्द्वीप । २ उसका निवासी (ठा ४, २) । ३ गंगीव पु [ग्रीव] एक प्रसिद्ध राजा, पहला प्रतिवासुदेव (पउम ५, १५६) । ४ तर पु [तर] खबर (आ १८) । ५ स्थाम पु [स्थामन्] द्रोणाचार्य का प्रख्यात पुत्र (कुमा) । ६ द्वअ पु [ध्वज] विद्याधर वंश का एक राजा (पउम ५, ४२) । ७ धम्म पु [वर्म] देखो पूर्वोक्त अर्थ (पउम ५, ४२) । ८ धर वि [धर] अश्वो को धारण करनेवाला (ओप) । ९ पुर न [पुर] नगर-विशेष (इक) । १० पुरा, पुरी स्त्री [पुरी] नगरी-विशेष (कस, ठा २, ३) । ११ मक्खिया स्त्री [मक्षिका] चतुरिन्द्रिय जीव-विशेष (ओष ३६७) । १२ मद्ग, मद्दय पु [मर्दक] अश्व का मर्दन करनेवाला (गाया १, १७) । १३ मित्र पु [मित्र] एक जैनाभास दार्शनिक, जो महागिरि के शिष्य कौरिहन्त्य का शिष्य था और जिसने

साधुज्यैदिक पथ चलाया था (ठा ७) । १ मुह पु [मुख] १ एक अन्तर्द्वीप । २ उमका निवासी (ठा ४, २) । ३ मेह पु [मेघ] यज्ञ-विशेष (पउम ११, ४२) । ४ रह पु [रथ] घोड़ा-गाड़ी (गाया १, १) । ५ वार पु [वार] घुड़-सवार, घुड़-चढ़ैया (मुपा २१४) । ६ वाह-गिया स्त्री [वाहनिगा] घोड़े की सवारी, घोड़े पर सवार होकर फिरना (विपा १, ६) । ७ सेण पु [सेन] १ भगवान् पार्श्वनाथ के पिता (कण्ण) । २ पंचवें चक्रवर्ती का पिता (सम १५२) । ३ रोह पु [रोह] घुड़-सवार, घुड़-चढ़ैया (से १२, ६६) ।

आस पुस्त्री [आश] भोजन, 'सामासाए पाय-रासाए' (सूत्र २, १) ।

आस पुं [आस] क्षेपण, फेंकना (विसे २७६५) ।

आस न [आस्य] मुख, मुँह (गाया १, ८) । आसइ वि [आश्रयिन्] आश्रय-स्थित, 'यमा-सइणी जाया सा देवी सालभजिन्व' (धर्मवि १४७) ।

आसक सक [आ + शङ्क्] १ सदेह करना, संशय करना । २ अक भयभीत होना । आसकइ (स ३०) । वक्क आसकत, आस-कमाग (नाट, माल ८३) ।

आसका स्त्री [आशङ्का] शङ्का, भय, वहम, संशय (सुर ६, १२१, महा, नाट) ।

आसकि वि [आशङ्किन्] आशङ्का करने-वाला (गा २०५) ।

आसंकिय वि [आशङ्कित] १ सदिग्ध, संशयित । २ संभावित (महा) ।

आसकिर वि [आशङ्कित्] आशङ्का करने-वाला, वहमी (सुर १४, १७, गा २०६) ।

आसंग पुं [दे] वास-गृह, शय्या-गृह (दे १, ६६) ।

आसंग पुं [आसङ्ग] १ आसक्ति, अभिष्वग । २ संबन्ध । (गउड) । ३ रोग (आचा) ।

आसगि वि [आसङ्गिन्] १ आसक्त । २ सक्की, संयोगी (गउड) । स्त्री. ३ णी (गउड) ।

आसघ सक [सं + भावय्] १ संभावना करना । २ अध्यवसाय करना । ३ स्थिर करना, निश्चय करना । आसंघइ (से १५, ६०) । वक्क. आसघंत (से १५, ६२) ।

आसघ पुं [दे] १ श्रद्धा, विश्वास (मुपा ५२६, पड़) । २ अध्यवसाय, परिणाम (से १, १५) । ३ आशंसा, इच्छा, चाह (गउड) ।

आसंघा स्त्री [दे] १ इच्छा, वाञ्छा (दे १, ६३) । २ आसक्ति (मै २) ।

आसघिअ वि [दे] १ अध्यवसित । २ अवधारित (से १०, ६६) । ३ संभावित (कुमा, स १३७) ।

आसजिअ वि [आसक्त] पीछे लगा हुआ (सुर ८, ३०, उत्तर ६१) ।

आसदय न [आसन्दक] आसन-विशेष (आचा, महा) ।

आसंदय पुन [आसन्दक] आसन-विशेष, मंच (सुख ६, १) ।

आसदाण न [आसन्दान] अवष्टम्भन, अवरोध, रुकावट (गउड) ।

आसदिआ स्त्री [आसन्दिका] छोटा मञ्च (सूत्र १, ४, २, १५, गा ६६७) ।

आसदी स्त्री [आसन्दी] आसन-विशेष, मञ्च (सूत्र १, ६, दस ६, ५४) ।

आसधी स्त्री [अश्वगन्धी] वनस्पति-विशेष (मुपा ३२४) ।

आसंवर वि [आशाम्बर] १ दिगम्बर, नग्न (प्रामा) । २ जैन का एक मुख्य भेद । ३ उसका अनुयायी (स २) ।

आससइय वि [असशयित] संशय-रहित (सूत्र २, २, १६) ।

आसंसण न [आशंसन] इच्छा, अभिलाषा (मास ६५) ।

आसंसा स्त्री [आशंसा] अभिलाषा, इच्छा (आचा) ।

आससि वि [आशंसिन्] अभिलाषी, इच्छा करनेवाला (आचा) ।

आससिअ वि [आशसित] अभिलषित (गा ७६) ।

आसकखय पु [दे] प्रशस्त पक्षि-विशेष, श्रीवद (दे १, ६७) ।

आसग देखो आस = अश्व (गाया १, १२) । आसगलिअ वि [दे] आक्रान्त, 'आसगलिओ तिक्ककम्मपरिणईए' (स ४०४) ।

आसगलिअ वि [दे] प्राप्त, 'एव विसयविसुद्ध-चित्तेण खविओ कम्मसघाओ, आसगलियं बोधिवीर्यं' (स ६७६) ।

आयव वि [आतप] १ उग्रोत्, प्रकाश (गा ४६) । २ ताप, धाम (उत्त) । ३ न मुहूर्त-विशेष (सम ५१) । °णाम, °नाम न [°नामन्] नामकर्म का एक भेद (सम ६७) । आयवत्त न [आतपत्र] छत्र, छाता (णाय १, १) ।

आयवत्त पु [आर्यावर्त्त] भारत, हिंदुस्तान (इक) ।

आयवा स्त्री [आतपा] १ मूर्य की एक अग्र-महिषी—पटरानी । २ इस नाम का 'ज्ञाता-धर्मकथा' सूत्र का एक अध्ययन (णाय २, १) ।

आयस वि [आयस] लोहे का, लोह-निर्मित (गड्ड, निचू १) ।

आयसी स्त्री [आयसी] लोहे का कोश (पएह १, १) ।

आया देखो आय = आतम् ।

आया मक [आ + या] आना, आगमन करना । आयति (सुपा ५७) । आयाइति, आयाइसु (कप्प) । वक्र. आयत ।

आया मक [आ + दा] ग्रहण करना, स्वीकार करना । आयइज्ज (उत्त ६) । कृ आया-णिज्ज (ठा ६) । सकृ आयाए, आदाय, आयाय (कस, कप्प, महा) ।

आयाइ स्त्री [आजाति] १ उत्पत्ति, जन्म (ठा १०) । २ जाति, प्रकार । ३ आचार, आचरण (आचा) । °ट्टाण न [°स्थान] १ ससार, जगत् । २ 'आचाराङ्ग' सूत्र के एक अध्ययन का नाम (ठा १०) ।

आयाइ स्त्री [आयाति] १ आगमन । २ उत्पत्ति, गर्भ से बाहर निकलना (ठा २, ३) । ३ आयति, भविष्य काल (दसा) ।

आयाए देखो आया = आ + दा ।

आयाण पुंन [आदान] १ ग्रहण, स्वीकार (आचा) । २ इन्द्रिय (भग ५, ४) । ३ जिसका ग्रहण किया जाय वह, ग्राह्य वस्तु (ठा ४, सूत्र २, ७) । ४ कारण, हेतु, 'सति मे तत्त प्रायाणा जेहि कीरड पावग' (सूत्र १, १), 'किंवा दुक्खायाणं प्रदुक्खाणं समाह्वसि' (पउम ६५, ४८) । ५ आदि, प्रथम (अणु) ।

आयाण न [आदान] १ मंयम, चरित्र (सूत्र १, १३, २२) । २ आदेय, उपादेय (सम

१, १४, १७, तंदु २०) । °पय न [°पद] ग्रन्थ का प्रथम शब्द (अणु १४०) ।

आयाण न [आयान] १ आगमन । २ अश्व का एक आभरण-विशेष (गड्ड) ।

आयाम सक [आ + यमय्] लम्बा करना । क्वक्क आआमिज्जत (मे १० ९) । सकृ आयामेत्ता, आयामेत्ताण (भग, पि ५८३) ।

आयाम सक [आ + यम्] शौच करना, शुद्धि करना । आयामइ (पव १०६ टी) । आयाम सक [दा] देना, दान करना । आया-मेइ (भग १५) । सकृ आयामेत्ता (भग १५) ।

आयाम पु [आयाम] लम्बाई, दैर्घ्य (सम २, गड्ड) । आयाम पु [दे] बल, जोर (दे १, ६५) । आयाम न [आचाम्ल] तपो-विशेष, आर्यविल, 'नाइविगिट्ठो उ तवो छम्मासे परिमिय तु आयाम' (आचानि २७२, २७३) ।

आयाम } न [आचाम] श्रवस्त्रावरण, चावल आयामग } आदि का पानी (श्रोघ ३५६, उत्त १५) । आयामणया स्त्री [आयामनता] लम्बाई (भग) ।

आयामि वि [आयामिन्] लम्बा (गड्ड) । आयामुही स्त्री [आयामुही] इस नाम की एक नगरी (स ४३१) ।

आयाय देखो आया = आ + दा । आयाय वि [आयात] आया हुआ (पउम १४, १३०, दे १, ६६, कुम्मा १६) ।

आयार सक [आ + कारय्] बुलाना, आह्वान करना । आआरेदि (शौ) (नाट) । सकृ आआ-रिअ, आआरेऊण (नाट, स ५७८) ।

आयार पु [आकार] १ आकृति, रूप (णाय १, १) । २ इङ्गित, इशारा (पात्र) । आयार पु [आकार] 'अ' अक्षर (कुप्र ३२) ।

आयार पु [आचार] १ आचरण, अनुष्ठान (ठा २, ३, आचा) । २ चाल-चलन, रीत-भात (पउम ६३, ८) । ३ बारह जैन शङ्खग्रन्थो मे पहला ग्रन्थ, 'आयारपढमसुत्ते' (उप ६८०) । ४ निपुण शिष्य (भग १, १) । °क्खेवणी स्त्री [°क्षेपणी] कथा का एक भेद (ठा ४) ।

°भडग, °भडय न [°भाण्डक] ज्ञानादि का उपकरण—साधन (णाय १, १, १६) ।

आयारिमय न [आचारिमक] विवाह के समय दिया जाता एक प्रकार का दान (स ७७) ।

आयारिय वि [आकारित] १ आहूत, बुलाया हुआ (पउम ६१, २५) । २ न आह्वान-वचन, आलोप-वचन (से १३, ८०, अग्नि २०९) ।

आयाव सक [आ + तापय्] सूर्य के ताप मे शरीर को थोड़ा तपाना । २ शीत, आतप आदि को सहन करना । वक्र आयावत्त पउम ६, ६१), आयावित (काल), आयावेत्त (पउम २६, २१), आयावेमाण (महा, भग) । हेक्क आयावेत्तए (कस) । सकृ आयाविय (आचा) ।

आयाव पुं [आताप] असुरकुमार-जातीय देव-विशेष (भग १३, ६) ।

आयाव पुं [आनाप] आतप-नामकर्म (पच ५, १३७) ।

आयावग वि [आतापक] शीत आदि को सहन करनेवाला (सूत्र २, २) ।

आयावण न [आतापन] एक बार या थोड़ा आतप आदि को सहन करना (णाय १, १६) । °भूमि स्त्री [°भूमि] शीतादि सहन करने का स्थान (भग ६, ३३) ।

आयावणया } स्त्री [आतापना] ऊपर देखो आयावणा } (ठा ३, ५) ।

आयावय वि [आतापक] शीत आदि को सहन करनेवाला (पएह २, १) ।

आयावल } पु [दे] सवेर का तडका, आयावलय } बालातप (दे १, ७०, पात्र) ।

आयावि वि [आतापिन्] देखो आयावय (ठा ४) ।

आयास सक [आ + यासय्] तकलीफ देना, खिन्न करना । आआसति (पि ४६०) । सकृ आआसिअ (मा ४५) ।

आयास पुं [आयास] १ तकलीफ, परिश्रम, खेद (गड्ड) । २ परिग्रह, श्रमन्तोष (पएह १, ५) । °लेवि स्त्री [°लिपि] लिपि-विशेष (पएह १) ।

आयास देखो आयस (पड्) ।

आयास देखो आगास (पउम ६६, ४०, हे १, ८४) । °तिलय न [°तिलक] नगर-विशेष (भवि) ।

आसायण न [आस्वादन] स्वाद लेना, चखना (पउम २२, २७, एगया १, ६, मुपा १०७)।
 आसायण न [आशातन] १ नीचे देखो (विवे ६६)। २ अनन्तानुबन्धि कपाय का वेदन (विसे)।
 आसायणा स्त्री [आशातना] विपरीत वर्त्तन, अपमान, तिरस्कार (पडि)।
 आसार सक [आ + सारय्] तदुरस्त करना, वीणा को ठीक करना। सक आसारेऊण (सिरि ७६४)।
 आसार पु [आसार] समीकरण, वीणा को ठीक करना (कुप्र १३६)।
 आसार पु [आसार] वेग से पानी का बरसना, (मे १, २०, सुपा ६०६)।
 आसारिय वि [आसारित] ठीक किया हुआ, 'आसारिया कुमारण वीणा' (कुप्र १३६)।
 आसालिय पुत्री [आशालिक] १ सर्प की एक जाति (परह १, १)। २ स्त्री विद्या-विशेष (पउम १२, ६४, ५२, ६)।
 आसावल्ली स्त्री [आशापल्ली] एक नगरी (ती १५)।
 आसावि वि [आसाविन्] करनेवाला, सन्धिद्र (सूत्र, १, ११)।
 आसास सक [आ + शास्] आशा करना, उम्मीद रखना। आसासदि (वेणी ३०)।
 आसास अक [आ + आसय्] आशवासन देना, सान्त्वना करना। आसासइ (वज्जा १६)।
 वहु आसासत, आमासित (से ११, ८७, आ १२)।
 आसास पु [आश्वास] १ आशवासन, सान्त्वना (श्रोध ७३, सुपा ८३, उप ६६२)। २ विश्राम (ठा ४, ३)। ३ द्वीप-विशेष (आचा)।
 आसासअ पुं [आश्वासक] विश्राम-स्थान, ग्रन्थ का अंश, सर्ग, परिच्छेद, ग्रन्थाय (से २, ४६)। २ वि. आशवासन देनेवाला, 'नाण आसासय सुमित्तुव' (पुष्प ३८)।
 आसासग पुं [आशासक] वीजक-नामक वृक्ष (श्रौप)।
 आसासन न [आश्वासन] १ सान्त्वना, दिलासा (सुर ६, ११०, १२, १५, उप पु ५७)। २ ग्रहों के देव-विशेष (ठा २, ३)।

आसासण पु [आश्वासन] १ एक महाग्रह (सुज २०)। २ वि. आशामन-दाता (कुप्र ११०)।
 आसासिअ वि [आश्वासित] जिसको आशवासन दिया गया हो वह (से ११, १३६, सुर ४, २८)।
 आसि सक [आ + श्रि] आश्रय करना। संक्र. आसिज्ज (आरा ६६)।
 आसि देखो अस = अस्।
 आसि वि [आशिन] खानेवाला, भोजक (सट्ठि १३)।
 आमिअ वि [आश्विक] अश्व का शिक्षक, 'दुट्ठे वि य जो आसे दमेइ त आसियं विति' (वव ४)।
 आसिअ वि [आशित] खिलाया हुआ, भोजित (से ८, ६३)।
 आसिअ वि [आश्रित] आश्रय-प्राप्त (कप्प, सुर ३, १७, से ६, ६५, विसे ७५६)।
 आसिअ वि [आसित] १ उपविष्ट, बैठा हुआ (से ८, ६३)। २ रहा हुआ, स्थित (पउम ३२, ६६)।
 आसिअ देखो आसित्त (एगया १, १, कप्प, श्रौप)।
 आसिअअ वि [दे] लोहे का, लोह-निर्मित (दे १, ६७, सूत्र कृ० चूर्णी सू० गा २८५)।
 आसिआ स्त्री [आसिका] बैठना, उपवेशन (से ८, ६३)।
 आसिआ देखो आसी = आशिप् (पड्)।
 आसिच सक [आ + सिच्] सीचना। कर्म आसिच्चंत (चेइय १५१)।
 आसिण वि [आशिन] खानेवाला, भोक्ता, 'मसासिणस्स' (पउम २६, ३७)।
 आसिण पुं [आश्विन] आश्विन मास (पाप्र)।
 आसित्त वि [आसित्त] १ थोड़ा सिक्त (भग ६, ३३)। २ सिक्त, सींचा हुआ (आवम)।
 ३ पु नपुसक का एक भेद (पुष्प १२८)।
 आसित्तिया स्त्री [दे] खाद्य-विशेष, 'विसा-हार्हि आसित्तियाओ भोचा कजं सार्धेति' (सुज १०, १७)।
 आसियावाय देखो आसीवाय (सूत्र १, १४, १६)।

आसिल पु [आसिल] एक महर्षि (सूत्र १, ३, ४, ३)।
 आसिलिट्ठ वि [आशिलिट्ठ] आनिमित्त (नाट)।
 आसिलिस सक [आ + शिल्प्] आश्लिष्य करना। हेक्क आलेट्टुअ, आलेट्टु (हे २, १६४)।
 आसिसा देखो आसी = आशिप् (महा, अग्नि १३३)।
 आसी देखो अस् = अस्।
 आसी स्त्री [आशी] दाढा (विमे)। 'विस पु [विप] १ जहरिला म'प, 'आसी दाढा तग्गयविमामीविना मुण्येयवा' (जीव १ टी: प्रासू १२०)। २ पर्वत-विशेष का एक शिखर (ठा २, ३)। ३ निग्रह और अनुग्रह करने में समर्थ, लव्वि विशेष को प्राप्त (भग ८, १)।
 आसी स्त्री [आशिप्] आशीर्वाद (सुर १, १३८)। 'वयण न [वचन] आशीर्वाद (सुपा ४६०)। 'वाय पु [वाद] आशीर्वाद (सुर १२, ४३, सुपा १७४)।
 आसीण वि [आसीन] बैठा हुआ, 'नमिऊण आमीणा तमो' (वमु)।
 आसीवअ पु [दे] दरजी, कपडा सीनेवाला (दे १, ६६)।
 आसीसा देखो आसी = आशिप् (पड्)।
 आसु पुन [अश्रु] आंसू (सट्ठि १७)।
 आसु अ [आशु] शीघ्र, तुरत, जल्दी (सार्ध आसु) १८, महा, काल)। 'कार पुं [कार] १ हिंसा, मारना। २ मरने का कारण, विसूचिका वगैरह (आव)। ३ शीघ्र उपस्थित, 'आसुकारे मरणे, अन्धिआए य जीवियासाए' (आउ ६)। 'पण वि [पज] १ शीघ्र-बुद्धि। २ दिव्य-ज्ञानी, केवल-ज्ञानी (सूत्र १, ६, १४)।
 आसुर वि [आसुर] असुर-सबन्धी (ठा ४, ४, आउ ३६)।
 आसुरत्त न [आसुरत्व] क्रोधपन, गुस्सा (दस ८, २५)।
 आसुरिय पु [आसुरिक] १ असुर, अमुर रूप से उत्पन्न (राज)। २ वि. असुर-सबन्धी (सूत्र २, २, २७)।
 आसुरीय वि [असुरीय] असुर-सबन्धी,

आरभड न [आरभट] १ नृत्य का एक भेद (ठा ४, ४) । २ इस नाम का एक मुहूर्त, 'छन्नेव य आरभडो सोमित्तो पंचअगुलो होइ' (गणि) ।

आरभड न [आरभट] एक तरह की नाट्य-विवि (राय ५४) । °भसोल न [°भसोल] नाट्यविवि-विशेष (राय ५४) ।

आरभडा स्त्री [आरभटा] प्रतिलेखना-विशेष (शोध १६२ भा) ।

आरभिय न [आरभित] नाट्यविवि-विशेष (राय) ।

आरय वि [आरत] १ उपरत । २ अपगत (सूत्र १, १५) ।

आरय वि [आरत] उपरत, सर्वथा निवृत्त (सूत्र १, ४, १, १, १, १०, १३) ।

आरव पुं [आरव] शब्द, आवाज, ध्वनि (सण) ।

आरव पुं [आरव] इस नाम का एक प्रसिद्ध म्नेच्छ-देश (पण १, १) ।

आरव } वि [आरव] अरव देश में उत्पन्न, आरवग } अरव देश का निवासी । स्त्री °वी (गाया १, १) ।

आरविद वि [आरविन्द] कमल-सम्बन्धी (गउड) ।

आरस सक [आ + रस्] चिल्लाना, वूम मारना । वक्र. आरसंत (उत्त १६) । हेक आरसिडं (काल) ।

आरसिय न [आरसित] १ चिल्लाहट, वूम । २ चिल्लाया हुआ (विपा १, २) ।

आरसिय पु [आदर्श] दर्पण (कहावली) ।

आरह देखो आरभ । आरहइ (पड्) । सक. आरहिअ (अभि ६०) ।

आरहत } वि [आर्हत] अर्हन्त का, जिन-आरहत्तिय } देव सम्बन्धी, 'आरहतेहि' (दस ६, ४, ४, पव २—गाथा १७०) ।

आरा स्त्री [आरा] लोहे की सलाई, पैने में डाली जाती लोहे की खोली (पण १, १, स ३८) ।

आरा अ [आरात्] १ अर्वाक्, पहले (दे १, ६३) । २ पूर्व-भाग (विसे १७४०) ।

आराइअ वि [दे] १ गृहीत, स्वीकृत । २ प्राप्त (दे १, ७०) ।

आराडि स्त्री [आराटि] चोत्कार, चिल्लाहट (सुख २, १५) ।

आराडी स्त्री [दे] देखो आरडिअ (दे १, ७५) ।

आराम पु [आराम] वगीचा, उपवन (श्रौप, राया १ १) ।

आराम पुं [आराम] वगीचा, उपवन, 'आरा-मार्णी' (आचा २, १०, २) ।

आरामिअ पुं [आरामिक] माली (कुमा) ।

आराव पुं [आराव] शब्द, आवाज (स ९७७, गउड) ।

आराह सक [आ + राघय्] १ सेवा करना, भक्ति करना । २ ठीक-ठीक पालन करना । आराहइ, आराहेइ (महा, भग) ।

वक्र. आराहंत (रण ७०) । सक आरा-हिता, आराहेता, आराहिऊण (कप्प, भग, महा) । हेक. आराहिड (महा) ।

आराह वि [आराध्य] आराधन-योग्य (आरा ११) ।

आराहग वि [आराधक] १ आराधन करने-वाला । २ मोक्ष का साधक (भग ३, १) ।

आराहण न [आराधन] १ सेवना (आरा ११) । २ अनशन (राज) ।

आराहणा स्त्री [आराधना] १ सेवा, भक्ति । २ परिपालन (गाया १, १२, पचा ७) ।

३ मोक्ष-मार्ग के अनुकूल वर्तन (पक्खि) । ४ जिसका आराधन किया जाय वह (आरा १) ।

आराहणा स्त्री [आराधना] आवश्यक, साम-यिक आदि षट्-कर्म (अणु ३१) ।

आराहणी स्त्री [आराधनी] माया का एक प्रकार (दस ७) ।

आराहिय वि [आराधित] १ सेवित, परि-पालित (सम ७०) । १ अनुरूप, योग्य (स ६२३) ।

आरिद्वि वि [दे] यात, गत, गुजरा हुआ (पड्) ।

आरिय न [आश्रित] आगमन (राय १०१) ।

आरिय देखो अज्ज = आर्य । (भग, पड्, सुपा १२८, पउम १४, ३०, सुर ८, ६३) ।

आरिय वि [आरित] सेवित, 'आरिओ आरिओ सेवितो वा एणद्वित्ति' (आचू) ।

आरिय वि [आकारित] आहूत, बुलाया हुआ, 'आरिओ आगादिओ वा एणद्वि' (आव) ।

आरिया देखो अज्जा = आर्या (प्राह) ।

आरिह वि [दे] अर्वाक् उत्पन्न, पहले जो उत्पन्न हुआ हो (दे १, ६३) ।

आरिस वि [आर्प] ऋषि-सम्बन्धी (कुमा) ।

आरिहय देखो आरहत (दस १, १ टी) ।

आरुग देखो आरोग्ग = आरोग्य, 'आरुग-वोहिलाभ समाहिवरमुत्तम दिवु' (पडि) ।

आरुट्ट वि [आरुट्ट] क्रुद्ध, लुट (पउम ५३, १४१) ।

आरुण (अप) सक [आ + रुप्] आलिङ्गन करना । आरुणइ (प्राह ११६) ।

आरुभ देखो आरुह = आ + रुह् । वक्र आरुभमाण (कस) ।

आरुवणा देखो आरोवणा (विसे २६२८) ।

आरुस सक [आ + रुष्] क्रोध करना, रोष करना । सक आरुसस (सूत्र १, ५) ।

आरुसिय वि [आरुट्ट] क्रुद्ध, कुपित (गाया १, २) ।

आरुह सक [आ + रुह्] ऊपर चढ़ना, ऊपर बैठना । आरुहइ (पड्, महा) ।

आरुहेइ (भग) । वक्र आरुहत, आरुहमाण (से ५, १६, आ३६) । संक्र आरुहिऊण, आरुहिय (महा, नाट) । हेक. आरुहिडं (महा) ।

आरुह वि [आरुह] उत्पन्न, उद्भूत, जात, 'गामाहहि म्हि गामे,

वसामि नअरद्विइं शा आणामि ।

राअरिआण पइणो हरेमि

जा होमि सा होमि' (गा ७०५) ।

आरुहण न [आरोहण] ऊपर बैठना (गाया १, २, गा ६३०, सुपा २०३, विपा १, ७ गउड) ।

आरुहण न [आरोहण] आरोपण, ऊपर चढ़ाना (पव १५५, राय १०६) ।

आरुहिय वि [आरोपित] १ स्थापित । २ ऊपर बैठना हुआ (से ८, १३) ।

आरुहिय } वि [आरुह] १ ऊपर चढ़ा हुआ आरुह } (महा) । २ कृत, विहित, 'तीए

पुअओ पइणणा आरुहिया दुक्करा मए सामि' (पउम ८, १६१) ।

(धर्मवि ८) । संक्र. आहविउं, आहविऊण
(धर्मवि ६८, सम्मत्त २१७) ।
आहव पुं [आहव] युद्ध, लड़ाई (पात्र, सुपा
२८८, आरा ४१) ।
आहवण } न [आह्वान] १ बुलाना ।
आहवण } २ ललकारना (आ १२, सुपा
६०, पउम ६१, ३०, स ६४) ।
आहविअ देखो आहूअ = आहूत (ती ४) ।
आहव्व वि [आभाव्य] शास्त्रोक्त क्षेत्रादि
(पंवा ११, ३०, पव १०५) ।
आहव्वणी स्त्री [आह्वानी] विद्या-विशेष
(सूत्र २, २) ।
आहा सक [आ + ख्या] कहना । कर्म.
आहिज्झ (पि ५४५), आहिज्जति (कप्प) ।
आहा सक [आ + धा] स्थापन करना ।
कर्म आहिज्झ (सूत्र २, २) । हेक्क आहेउ
(सूत्र १, ६) । सक आहाय (उत्त ५) ।
आहा स्त्री [आभा] कान्ति, तेज (कप्प) ।
आहा स्त्री [आधा] १ आश्रय, आचार (पिंड) ।
२ साधु के निमित्त आहार के लिए मन-
प्रणिधान (पिंड) । ३ कड वि [कृत] आधा-
कर्म-दोष मे युक्त (स १८८) । ४ कम्म न
[कर्मन्] १ साधु के लिए आहार पकाना ।
२ साधु के निमित्त पकाया हुआ भोजन, जो
जैन साधुओं के लिए निषिद्ध है (परह २, ३,
ठा ३, ४) । ५ कम्मिय वि [कर्मिक] देखो
पूर्वोक्त अर्थ (अनु) ।
आहाण न [आधान] १ स्थापन । २ स्थान,
आश्रय, 'सव्वगुणाहाण' (आव ४, उवर २६) ।
आहाण } न [आख्यान, क] १ उक्ति,
आहागय } वचन । २ किंवदन्ती, कहावत,
लोकोक्ति (सुर २, ६६, उप ७२८ टी) ।
आहातहिय वि [याथातथ्य] सत्य, वास्त-
विक (सूत्र २, १, २७) । देखो आहत्तहीय ।
आहार सक [आ + हारय] खाना, भोजन
करना, भक्षण करना । आहारइ, आहारेंति
(भग) । वक्क आहारेमाण (कप्प) । भक्क.
आहारिज्जस्समाण (भग) । हेक्क आहा-
रित्तए, आहारेत्तए (कप्प) । क. आहारे-
यव्व (ठा ३) ।
आहार पु [आहार] १ खुराक, भोजन (स्वप्न
६०, प्रासू १०४) । २ खाना, भक्षण (पव) ।
३ न देखो आहारग (पउम १०२, ६८) ।

पज्जत्ति स्त्री [पर्याप्ति] भुक्त आहार को
खल और रस के रूप मे बदलने की शक्ति (भग
६, ४) । ४ पोसह पुं [पोपध] व्रत विशेष,
जिसमे आहार का सर्वथा या आंशिक त्याग
किया जाता है (आव ६) । ५ सण्णा स्त्री
[सज्ञा] आहार करने की इच्छा (ठा ४) ।
आहार पुं [आधार] १ आश्रय, अधिकरण
(सुपा १२८, संथा १०३) । २ आकाश (भग
२०, २) । ३ अवधारण, याद रखना (पुष्प
३५६) ।
आहारग न [आहारक] १ शरीर विशेष,
जिसको चौदह-पूर्वी, केवलज्ञानी के पास जाने
के लिए बनाता है (ठा २, २) । २ वि भोजन
करनेवाला (ठा २, २) । ३ आहारक शरीर-
वाला (विसे ३७५) । ४ आहारक शरीर उत्पन्न
करने का जिसे सामर्थ्य हो वह (कप्प) ।
५ जुगल न [युगल] आहारक शरीर और
उसके अंगोपाङ्ग (कम्म २, १७, २४) । ६ गाम
न [नामन्] आहारक शरीर का हेतु-भूत
कर्म (कम्म १, ३३) । ७ दुग न [द्विक]
देखा ८ जुगल (कम्म २, ३, ८, १७) ।
आहारण वि [आधारण] १ धारण करने-
वाला । २ आधार-भूत (से ६, ५०) ।
आहारण वि [आधारण] आकर्षक (से ६,
५०) ।
आहारय देखो आहारग (ठा ६, भग, परण
२८, ठा ५, १, कर्म १, ३७) ।
आहाराइणिया स्त्री [याथारात्तिकता] यथा-
ज्येष्ठ, ज्येष्ठानुक्रम (कस) ।
आहारि वि [आहारिन्] आहार-कर्त्ता
(अज्झ १११) ।
आहारिम वि [आहार्य] १ खाने योग्य ।
२ जल के साथ खाया जा सके ऐसा योग्य भूत-
विशेष (पिंड ५०२) ।
आहारिम वि [आहार्य] आहार के योग्य,
खाने लायक (निच्च ११) ।
आहारिय वि [आहारित] १ जिसने आहार
किया हो वह, 'तस्स कडरीयस्स ररणो त
पणीयं पाणभोगण आहारियस्स समाणस्स'
(राया १, १६) । २ भक्षित, भुक्त (भग) ।
आहावगा स्त्री [आभावना] अपरिगणना,
गणना का अभाव (राज) ।

आहावणा स्त्री [आभावना] उद्देश्य (पिंड
३६१) ।
आहाविअ वि [आवावित] दौड़ा हुआ
(सिरि ७५२) ।
आहाविर वि [आधावितृ] दौड़नेवाला
(सण) ।
आहास देखो आभास = आ + भाप् । सक.
आहासिवि (अप) (भवि) ।
आहाह भ [आहाह] आश्चर्य-व्योतक अव्यय
(हे २, २१७) ।
आहि पुत्री [आधि] मन की पीड़ा (धम्म
१२ टी) ।
आहिआइ स्त्री [आभिजानि] कुलीनता,
खानदानी (से १, ११) ।
आहिआई स्त्री [आभिजाती] कुलीनता (गा
२८५) ।
आहिंड सक [आ + हिण्ड] १ गमन
करना, जाना । २ परिभ्रम करना । ३ घूमना,
परिभ्रमण करना । वक्क आहिंडंत, आहिं-
डेमाण (उप २६४ टी, राया १, १) । सक.
आहिंडिय (महा, स १६३) ।
आहिडग } वि [आहिण्डक] चलनेवाला,
आहिंडय } परिभ्रमण करनेवाला (ओघ
११५, ११८, औप) ।
आहिक्क न [आधिक्य] अधिकता (विसे
२८८७) ।
आहिजाइ देखो आहिआइ (महा) ।
आहिजाई देखो आहिआई (गा २४) ।
आहितुडिअ पुं [आहितुण्डिक] गारुडिक,
सपहरिया, सपेरा (मुद्रा ११६) ।
आहित्व वि [दे] १ चलित, गत । २ कुपित,
क्रुद्ध (दे १, ७६, जीव ३ टी) । ३ आकुल,
घबड़ाया हुआ (दे १, ७६, से १३, ८३,
पात्र), 'आहित्वं जप्पिच्छं च आउलं रोस-
भरिय च' (जीव ३ टी) ।
आहिद्ध वि [दे] १ रुद्ध, रुका हुआ । २
गलित, गला हुआ (पड्) ।
आहिपत्त न [आधिपत्य] मुखियापन, नेतृत्व
(उप १०३१ टी) ।
आहिय वि [आहित] १ स्थापित, निवेशित (ठा
४) । २ सम्पूर्ण हितकर (सूत्र) । ३ विरचित,

आलप्प वि [आलप्य] कहने के योग्य, निर्वचनीय, 'सदसदणभिलप्पालप्पमेगं श्रेण' (लहुअ ८) ।

आलभ मक [आ + लभ्] प्राप्त करना । आलभिजा (उवर ११) ।

आलभण न [आलभन्] विनाशन (धर्मसं ८८२) ।

आलभिया छी [आलभिका] नगरी-विशेष (उवा, भग ११, २) ।

आलय पुन [आलय] गृह, घर, स्थान (महा, गा १३५) ।

आलय पुन [आलय] बौद्धदर्शन-प्रसिद्ध विज्ञान-विशेष (धर्म ६६५, ६६६, ६६७) ।

आलयण न [दे] वाम-गृह, शय्या-गृह (दे १, ६६, ८, ५८) ।

आलव सक [आ + लप्] १ कहना, बात-चीत करना । २ थोड़ा या एक बार कहना । वहु आलवंत (गा ११८, अभि ३८), आलवमाण (ठा ४) । आलविऊण (महा), आलविय (नाट) ।

आलवण न [आलपन] संभाषण, बातचीत, वार्तालाप (श्रेण ११३, उव १२८ श्रे, आ १६, दे १, ५६, स ६६) ।

आलवाल न [आलवाल] कियारी, थाँवला (पाय) ।

आलस वि [आलस] आलसी, सुस्त (भग १२, २) । ०त्त न [०त्व] आलस, सुस्ती (आ २३) ।

आलसिय वि [आलसित] आलसी, मन्द (भग १२, २) ।

आलसुय देखो आलसिय, 'सावि सायसीला आलमुया कुडिला' (सम्मत्त ५३) ।

आलस्स पुन [आलस्य] सुस्ती, 'आलस्सो रणरणभो' (वज्जा १६२) ।

आलस्स न [आलस्य] आलस, सुन्ती (कुमा, सुपा २५१) ।

आलस्सि वि [आलस्यिन्] आलसी, सुस्त (गच्छ २, १) ।

आलाअ देखो आलाव (गा ४२८, ६१६, मै १६) ।

आलाण देखो आणाल (पाय, से ५, १७, महा) ।

आलाणिय वि [आलानित] नियन्त्रित, मज-वृत्ती से बाँधा हुआ, 'दढभुयदडालाणियकमना-करिणी निवो समरसीहो' (मुपा ४) ।

आलाव पु [आलाप] १ सभाषण, बातचीत (आ ६) । २ अल्प भाषण (ठा ५) । ३ प्रथम भाषण (ठा ४) । ४ एक बार की वक्ति (भग ५, ४) ।

आलावक देखो आलापग (मुज ८) ।

आलावग पु [आलापक] पैरा, पैरागाफ, परिच्छेद, ग्रय का अश-विशेष (ठा २, २) ।

आलावण न [आलापन] बाँवने का रज्जु आदि मावन, वन्वन-विशेष । ०वव पुं [०वन्व] वन्व-विशेष (भग ८, ६) ।

आलावण न [आलापन] आलाप, सभाषण (वज्जा १२४) ।

आलावणी छी [आलापनी] वाद्य-विशेष (वज्जा ८०) ।

आलास पु [दे] वृद्धिक, विच्छू (दे १, ६१) । आलाहि देखो अलाहि (पड) ।

आलि पु [अलि] भ्रमर, ममरा, मौंरा (पडि) । आलि देखो आली (राय, पाय) ।

आलिग सक [आ + लिङ्ग] आलिङ्गन करना, भेंटना, गले लगाना । आलिगइ (महा) । संकु आलिगिऊण (महा) । हेकु आलिगिउ (महा) ।

आलिग पुं [आलिङ्ग] वाद्य-विशेष (राय) । आलिग वि [आलिङ्ग्य] १ आलिङ्गन करने योग्य । २ पु वाद्य-विशेष (जीव ३) ।

आलिगण न [आलिङ्गन] आलिगन, भेंट (कप्प) । ०वट्टि छी [०वृत्ति] गाल या कपोल का उपधान—तकिया, शरीर-प्रमाण उपधान (भग ११, ११) ।

आलिगणिया छी [आलिङ्गनिका] देखो आलिगणवट्टि (जीव ३) ।

आलिगिणी छी [आलिङ्गिनी] जानु आदि के नीचे रखने का तकिया (पव ८४) ।

आलिगिय वि [आलिङ्गित] आश्विपु, जिसका आलिगन किया गया हो वह (काल) ।

आलिइ पुं [आलिन्द] बाहर के दरवाजे के चौकट्टे का एक हिस्सा (अभि १५६, अवि २८) ।

आलिप सक [आ + लिप्] पोतना, लेा करना । आलिपइ (उव) । हेकु आलि-

पित्तए (कस) । वहु. आलिपंत । प्रयो. आलिपावत (निचू ३) ।

आलिपग न [आलिपण] १ लेप करना, विलेपन (रयण ५५) । २ जिसका लेप होता है वह चीज (निचू १२) ।

आलिगा देखो आवलिआ (पंच ५, १४५) । आलित्त न [आलित्र] जहाज चलाने का काष्ठ-विशेष (आचा २, ३, १, ६) ।

आलिच वि [आलित्र] खरगिटत, खम्बा हुआ, लिपा हुआ (पिड २३४) ।

आलित्त वि [आदिम] १ चारो ओर से जला हुआ, 'जह आलित्ते गेहे कोइ पमुत्त नर तु वोहेजा' (वव १, ३, राया १, १, १४) । २ न आग लगनी, आग से जलना, 'कोट्टिमघरे वसने आलित्तम्मि वि न डङ्गइ' (वव ४) ।

आलिद्ध वि [आडिलिट्] आलिगित (भग १६, ३, सुर ३, २२२) ।

आलिद्ध वि [आलीढ] चला हुआ, आस्वादित (से ६, ५६) ।

आलिसदग पु [दे आलिसन्दक] धान्य-विशेष (ठा ५, ३, भग ६, ७) ।

आलिसिंदय पु [दे आलिसिन्दक] ऊपर देखो (ठा ५, ३) ।

आलिह मक [स्पृश्] स्पर्श करना, छूना । आलिहइ (हे ८, १८२) । वहु आलिहत्त (नाट) ।

आलिह सक [आ + लिख्] १ विन्यास करना, स्थापन करना । २ चित्र करना, चित्ररत्ना या चित्र बनाना । वहु आलिहमाण (सुर १२, ४०) ।

आलिहिअ वि [आलिखित] चित्रित (सुर १, ८७) ।

आली सक [आ + ली] १ लीन होना, आसक्त होना । २ आलिगन करना । ३ निवास करना । वहु आलीयमाण (गडड) ।

आली छी [आली] १ पत्ति, श्रेणी । २ सखी, वयस्या (हे १, ८३) । ३ वनस्पति-विशेष (राया १, ३) ।

आलीढ वि [आलीढ] १ आसक्त, 'आमूलालो-लवूलीवहुल गरिमलालीढलालिमलाल' (पडि) । २ न. आसन-विशेष (वव १) ।

इओ अ [इतस्] १ इससे, इस कारण (पि १७४) । २ इस तरफ (मुपा ३६४) । ३ इस (लोक) में (विसे २६८२) ।

इओअ अ [इतश्च] प्रसगान्तर-सूचक अव्यय (आ २८) ।

इंखिणिया स्त्री [दे. इङ्खिनिका] निन्दा, गर्हा (सूत्र १, २) ।

इंखिणी स्त्री [दे. इङ्खिनी] ऊपर देखो (सूत्र १, २) ।

इंगार } देखो अंगार (पि १०२, जी ६,
इंगाल } प्राप्) । °कम्म न [°कर्मन्]

कोयला आदि उत्पन्न करने का और बेचने का व्यापार (पडि) । °सगडिया स्त्री [°शकटिका] अंगीठी, आग रखने का बर्तन (भग) ।

इंगारडाह पुंन [अङ्गारदाह] आवा, मिट्टी के पात्र पकाने का स्थान (आचा २, १०, २) ।

इंगाल वि [आङ्गार] अङ्गार-संबन्धी (दस ५) ।

इंगालग देखो अंगारग (ठा २, ३) ।

इंगालय देखो इंगालग (सुज्ज २०) ।

इंगाली स्त्री [दे] ईख का टुकड़ा, गंडेरी (दे १, ७६, पाप्) ।

इंगाली स्त्री [आङ्गारी] देखो इंगाल-कम्म (आ २२) ।

इंगिअ न [इङ्गित] इशारा, मकेत, अभिप्राय के अनुरूप चेष्टा (पाप्) । °ज्ज, °ण्ण, ण्णु वि [°ज्ज] इंगारे में समझनेवाला (प्राप्, हे २, ८३, पि २७६) । °मरण न [°मरण] मरण-विशेष (पचा) ।

इंगिअजाणुअ देखो इंगिअज्ज (प्राक् १८) ।

इंगिगी स्त्री [इङ्गिनी] मरण-विशेष, अनशन-क्रिया-विशेष (सम ३३) ।

इगुअ न [इङ्गुअ] इगुदी वृक्ष का फल (कुमा, पउम ४१, ६) ।

इगुअ } स्त्री [इङ्गुदी] वृक्ष-विशेष, इसके
इगुदी } फल तैलमय होते हैं, इसका दूसरा नाम त्रण-विरोपण भी है, क्योंकि इसके तैल से त्रण बहुत शीघ्र अच्छे होते हैं (आचा, अमि ७३) ।

इविअ वि [दे] घात, सूँघा हुआ (दे १, ८०) ।

°इणर देखो किण्णर (से ८, ६१) ।

इंत देखो ए = आ + इ ।

इंद पुं [इन्द्र] १ देवताओं का राजा, देवराज (ठा २) । २ श्रेष्ठ, प्रधान, नायक; 'एरिंद' (गउड), 'देविंद' (कप्प) । ३ परमेश्वर, ईश्वर (ठा ४) । ४ जीव, आत्मा, 'इदो जीवो सव्वो-वलद्विभोगपरमेसरत्तण्णो' (विसे २६६३) ।

५ ऐश्वर्य-शाली (आवम) । ६ विद्याधरो का प्रसिद्ध राजा (पउम ६, २, ७, ८) । ७ पृथ्वी-काय का एक अधिष्ठायक देव (ठा ५, १) ।

८ ज्येष्ठा नक्षत्र का अधिष्ठायक देव (ठा २, ३) । ९ उन्नीसवें तीर्थंकर के एक स्वनाम-ख्यात गणधर (सम १५२) । १० सप्तमी तिथि (कप्प) । ११ मेघ, वर्षा, 'किं जयइ सव्वत्था दुब्बिक्खं अह भवे इंदो' (दसनि १०५) । १२ न देवविमान-विशेष (सम ३७) ।

°इ पुं [°जित्] १ इस नाम का राक्षस वंश का एक राजा, एक लकेश (पउम ५, २६२) । २ रावण के एक पुत्र का नाम (से १२, ८८) । °ओव देखो °गोव (पि १६८) ।

°काइय पुं [°कायिक] श्रीन्द्रिय जीव-विशेष (पण १) । °कील पु [°कील] दरवाजा का एक अवयव (औप) । °कुभ पुं [कुम्भ] १ बड़ा कलश (राय) । २ उद्यान-विशेष (णया १, ६) । °केउ पुं [°केतु]

इन्द्र-ध्वज, इन्द्र यष्टि (पण १, ४, २, ४) । °खील देखो °कील (औप, पि २०६) । °गाइय देखो °काइय (उत्त २६) । °गाह पुं [°ग्रह]

इन्द्रावेश, किसी के शरीर में इन्द्र का अधिष्ठान, जो पागलपन का कारण होता है, 'इंदगाहा इवा खंदगाहा इवा' (भग ३, ७) । °गोव, °गोवग, °गोवय पुं [°गोष]

वर्षा ऋतु में होनेवाला रक्त वर्ण का शुद्ध जन्तु-विशेष, जिसकी गुजराती में 'गोकुल गाय' कहते हैं (उव ३२, सुर २, ८७, जी १७, पि १६८) । °गह पुं [°ग्रह] ग्रह-विशेष (जीव ३) । °गिग पुं [°गिगि] १

विशाखा नक्षत्र का अधिष्ठायक देव (अणु) । २ महाग्रह-विशेष (ठा २, ३) । °गोव पुं [°ग्रीव] ग्रहाधिष्ठायक देव-विशेष (ठा २, ३) । °जसा स्त्री [°यशस्] काम्पिल्य नगर के

ब्रह्मराज की एक पत्नी (उत्त १३) । °जाल न [°जाल] माया-कर्म, छल, कपट (स ४५४) । °जालि, °जालिअ वि [°जालिन्, °क] मायावी, बाजीगर (ठा ४, सुपा २०३) ।

°जुइण्ण पुं [°द्युतिह] स्वनाम-ख्यात इक्ष्वाकु-वंश का एक राजा (पउम ५, ६) । °ज्मय पुं [°ध्वज] बड़ी ध्वजा (पि २६६) ।

°ज्मया स्त्री [°ध्वजा] इन्द्र द्वारा भरतराज को दिखाई हुई अपनी दिव्य अङ्गुलि के उपलक्ष में राजा भरत से उस अङ्गुलि के समान आकृति की की हुई स्थापना और उसके उपलक्ष में किया गया उत्सव (आचू २०) । °गील पुन [°नील] नीलम, नीलमणि, रत्न-विशेष (गउड, पि १६०) । °तरु पुं [°तरु] वृक्ष-विशेष, जिसके नीचे भगवान् संभवनाथ को केवल-ज्ञान हुआ था (पउम २०, २८) । °त्त न [°त्व] १ स्वर्ग का अधिपत्य, इन्द्र का असाधारण धर्म । २ राजत्व । ३ प्राधान्य (सुपा २५३) । °दत्त पु [°दत्त] इस नाम का एक प्रसिद्ध राजा (उप ६३६) । २ एक जैन मुनि (विपा २, ७) । °दिण्ण पु [°दिन्न]

स्वनाम-ख्यात एक जैन आचार्य (कप्प) । °धणु न [°धनुष्] १ शक्र-धनु, सूर्य की किरणें मेघों पर पड़ने से आकाश में जो धनुष का आकार दीख पड़ता है वह । २ विद्याधर-वंश के एक राजा का नाम (पउम ८, १८६) । °नील देखो °गील (पउम ३, १३२) । °पाडिवया स्त्री [°प्रतिपत्] कार्तिक (गुजराती आश्विन) मास के कृष्णपक्ष की पहली तिथि (ठा ४) । °पुर न [°पुर] १

इन्द्र का नगर, अमरावती (उप पृ १२६) । २ नगर-विशेष, राजा इन्द्रदत्त की राजधानी (उप ६३६) । °पुरग न [°पुरक] जैनीय वेशवाटिक गण के चौथे कुल का नाम (कप्प) । °प्पभ पु [°प्रभ] राक्षस वंश के एक राजा का नाम, जो लङ्का का राजा था (पउम ५, २६१) । °भूइ पु [°भूति] भगवान् महावीर का प्रथम—मुख्य शिष्य, गौतमस्वामी (सम १६, १५२) । °मह पुं [°मह] १ इन्द्र की आराधना के लिए किया जाता एक उत्सव । २ आश्विन पूर्णिमा (ठा ४, २) । °माली स्त्री [°माली] राजा आदित्य की पत्नी (पउम ६, १) । °मुद्धाभिसिन्त पु [°मूर्द्धाभिषिक्त] पक्ष की सातवी तिथि, सप्तमी (चद्र १०) । °मेह पु [°मेघ] राक्षस वंश में उत्पन्न एक राजा (पउम ५, २६१) । °य पुं [°क] १ देखो इन्द्र (ठा ६) । २ नरक-विशेष । ३

यावजीव, जीवन-पर्यन्त (आव) । °कहा स्त्री [°कथा] जीवन-पर्यन्त, 'घरणा आवकहाए गुरुकुलवासं न मुंचति' (उप ६८१) । °कहिय वि [°कथिऊ] यावजीविक, जीवन-पर्यन्त रहनेवाला (ठा ६, उप ५२०) ।

आव पु [आप] १ प्राप्ति, लाभ (परह २, १) । २ जल का समूह । °वहुल न [°वहुल] देखो आउ-वहुल (कस) ।

आव सक [आ + या] आना, आगमन करना, 'वरणवसिराएवि निचवं आवइ निदामुह तारण' (सुपा ६४७) । आवेइ (नाट) । आवति (मंग १६२) ।

आवआस सक [उप + गूह्] आलिंगन करना । आवआसइ (प्राक ७४) ।

आवइ स्त्री [आपद्] आपत्ति, विपत्, सकट (सम ५७, सुपा ३२१, सुर ४, २१५, प्रासू ५, १५६) ।

आवग पुं [दे] अपामार्ग, वृक्ष विशेष, लट्जीरा (दे १, ६२) ।

आवडु वि [आपाण्डु] धोडा सफेद, फीका (गा २६५) ।

आवंडुर वि [आपाण्डुर] ऊपर देखो (मे ६, ७४) ।

आवंत देखो जावत, 'आवंती के यावती लोगसि समणाय माहणाय' (आचा १, ४, २, ३, १, ५, २, १, ४, पि ३५७) ।

आवगगन न [आवल्गन] अश्व पर चढ़ने की कला (भवि) ।

आवच्चेज वि [अपत्तीय] अपत्य-स्थानीय (कण्य) ।

आवज्ज देखो आओज्ज (हे १, १५६) ।

आवज्ज अक [अ + पद्] प्राप्त होना, लागू होना । आवज्जइ (कस) । कृ आवज्जियन्व (परह २, ५) ।

आवज्ज सक [आ + वर्ज] १ समुख करना । २ प्रसन्न करना, 'आवज्जति गुणा खलु अबुहपि जण अमच्छरिय' (स ११) ।

आवज्ज सक [आ + पद्] प्राप्त करना । आवज्जई (उत्त ३२, १०३) । आवज्जे (सूत्र १, १, २, १६, २०), आवज्जसु (सुख २, ६) ।

आवज्ज } वि [आवर्ज, °क] प्रोत्पत्तादक
आवज्जन } (पिंड ४३८) ।

आवज्जन न [आवर्जन] १ समुख करना । २ प्रसन्न करना (आनू) । ३ उपयोग, ख्याल । ४ उपयोग-विशेष । ५ व्यापार-विशेष (विसे ३०५१) ।

आवज्जिय वि [आवर्जित] १ प्रसन्न किया हुआ । २ अभिमुख किया हुआ (महा. सुर ६, ३१, मुपा २३२) । °करण न [°करण] व्यापार-विशेष (आनू) ।

आवज्जिय देखो आउज्जिय = आतोद्यिक (कुमा) ।

आवज्जीकरण न [आवर्जीकरण] उपयोग-विशेष या व्यापार-विशेष का करना, उदीर-णावलिका मे कर्म-प्रक्षेप रूप व्यापार (श्रौप, विसे ३०५०) ।

आवट्ट अक [आ + वृत्] १ चक्र की तरह घूमना, फिरना । २ विलीन होना । ३ सक शोषण करना, सुखाना । ४ पीडना, दुखी करना । आवट्टइ (हे ४, ४१६, सूत्र १, ५, २) । वक्र आवट्टमाण (से ५, ८०) ।

आवट्ट देखो आवत्त (आचा, सुपा ६४, सूत्र १, ३) ।

आवट्टणा स्त्री [आवर्तना] आवर्तन (प्राक ३१) ।

आवट्टिआ स्त्री [दे] १ नवोढा, दुलहिन । २ परतन्य स्त्री (दे १, ७७) ।

आवड देखो आवत्त = आवर्त (राय ३०) ।

आवड सक [आ + पत्] १ आना, आगमन करना । २ आ लगना । वक्र आवडत (प्रासू १०६) ।

आवडण न [आपतन] १ गिरना (से ६, ४२) । २ आ लगना (स ३८४) ।

आवणवीहि स्त्री [आपणवीधि] १ हट्ट-मार्ग, बाजार । २ रथ्या-विशेष, एक तरह का मुहल्ला (राय १००) ।

आवडिअ वि [आपत्ति] १ गिरा हुआ (महा) । २ पास मे आया हुआ (से १४, ३) ।

आवडिअ वि [दे] १ सगत, सवद्ध (दे १, ७८, पात्र) । २ सार, मजवूत (दे १, ७८) ।

आवण पु [आपण] १ हाट, दूकान (णाय १, १, महा) । २ बाजार (प्राभा) ।

आवणिय पु [आपणिक] सौदागर, व्यापारी (पात्र) ।

आवण वि [आपन्न] १ आपत्ति-युक्त । २ प्राप्त (गा ४६७) । °सत्ता स्त्री [°सत्त्वा] गर्भिणी, गर्भवती स्त्री (अभि १२४) ।

आवण वि [आपन्न] आश्रित (सूत्र १, १, १, १६) ।

आवत्त सक [आ + वृत्] आना, 'नावत्तइ नागच्छइ पुणो भवे तेण अपुणराविति' (वेडव ३६६) ।

आवत्त अक [आ + वृत्] १ परिभ्रमण करना । २ बदलना । ३ चक्राकार घूमना । ४ सक पठित पाठ को याद करना । °गुमाना । आवत्तइ (सूक्त ५१) । वक्र. अत्तमाण, आवत्तमाण (हे १, २७१, कुमा) ।

आवत्त पु [आवर्त्त] १ चक्राकार परिभ्रमण (स्वप्न ५६) । २ मुहूर्त्त-विशेष (सम ५१) ।

३ महाविदेह क्षेत्रस्य एक विजय (प्रदेश) का नाम (ठा २, ३) । ४ एक खुरवाला पशु-विशेष (परह १, १) । ५ एक लोकपाल का नाम (ठा ४, १) । ६ पर्वतविशेष (ठा ६) ।

७ मणि का एक लक्षण (राय) । ८ ग्राम-विशेष (आवम) । ९ शारीरिक चेष्टा-विशेष, कायिक व्यापार-विशेष, 'दुवालसावत्ते कित्ति-कम्मे' (सम २१) । °कूड न [°कूट] पर्वत-विशेष का शिखर-विशेष (इक) । °यित वक्र [°यमान] दक्षिण की तरफ चक्राकार घूमने-वाला (भग ११, ११) ।

आवत्त पुन [आवर्त्त] १ एक तरह का जहाज (सिरि ३८३) । २ न लगातार २५ दिनों का उपवास (संवोध ५८) ।

आवत्त न [आतपन्न] छत्र, छाता (पात्र) । आवत्तण न [आवर्त्तन] चक्राकार भ्रमण (हे २, ३०) । °पेडिया स्त्री [°पीठिका] पीठिका-विशेष (राय) ।

आवत्तय पु [आवर्त्तक] देखो आवत्त । १० वि. चक्राकार भ्रमण करनेवाला (हे २, ३०) । आवत्ता स्त्री [आवर्त्ता] महाविदेह-क्षेत्र के एक विजय (प्रदेश) का नाम (इक) ।

आवत्ति स्त्री [आपत्ति] १ दोष-प्रसंग, 'सव्व-विमोक्खावत्ती' (विसे १६३४) । २ आपदा, कष्ट । ३ उत्पत्ति (विसे ६६) ।

आवत्ति स्त्री [आपत्ति] प्राप्ति (धर्मस ४७३) ।

इक्कार देखो एक्कारह (कम्म ६, ६६) ।

इक्किक्क वि [एकैक] प्रत्येक (जी ३३, प्रासू ११८, सुर ८, ४२) ।

इक्किल्ली स्त्री [एकचत्वारिंशत्] एकचालीस, ४१ (कम्म ६, ५६) ।

इक्कुस न [दे] नीलोत्पल, कमल (दे १, ७६) ।

इक्ख सक [ईक्ष्] देखना । इक्खइ (उव) । इक्ख (सूअ १, २, १, २१) ।

इक्खअ वि [ईक्ष्] देखनेवाला (गा ५५७) ।

इक्खण न [ईक्ष्ण] अवलोकन, प्रेक्षण (पउम १०१, ७) ।

इक्खाउ देखो इक्खागु (विक्र ६४) ।

इक्खाग वि [ऐक्ष्वाक] इक्ष्वाकु नामक प्रसिद्ध क्षत्रियवश मे उत्पन्न (तित्थ) ।

इक्खाग } पुं [इक्ष्वाकु] १ एक प्रसिद्ध क्षत्रिय
इक्खागु } राजवंश, भगवान् ऋषभदेव का वंश । २ उस वंश मे उत्पन्न (भग ९, ३३, कप्प, औप, अजि १३) । ३ कोशल देश (गाया १, ८) । ४ भूमि स्त्री [भूमि] अयोध्या नगरी (भाव २) ।

इक्खु पुं [ईक्ष्] १ ईक्ष, ऊख (हे २, १७, पि ११७) । २ धान्य-विशेष, 'वरट्टिका' नाम का धान्य (आ १८) । गड्डिया स्त्री [गण्डिका] गड्ढी, ईख का टुकड़ा (आचा) । ३ घर न [गृह] उद्यान-विशेष (विसे) । ४ चोयग न [दे] ईख का कुत्ता (आचा) । ५ डालग न [दे] १ ईख की शाखा का एक भाग (आचा) । २ ईख का छेद (निचू १) । ३ पेसिया स्त्री [पेशिका] गण्डरी (निचू १६) । ४ भित्ति स्त्री [दे] ईख का टुकड़ा (निचू १६) । ५ मेरग न [मेरक] गण्डरी, कटे हुए ऊख के गुल्ले (आचा) । ६ लाट्ट स्त्री [यष्टि] ईख की लाठी, इधु-दण्ड (आचा) । ७ वाट पुं [वाट] ईख का खेत, 'सुचिर' पि अच्छमाणो नलथमो इच्छुवाडमज्झमि' (भाव ३) । ८ सालग न [दे] १ ईख की लम्बी शाखा (आचा) । २ ईख की बाहर की छाल (निचू १६) । देखो उच्छु ।

इग देखो एक्क (कम्म १, ८, ३३, सुपा ४०६, आ १४, नव ८, पि ४४५, आ ४४, सम ७५) ।

इगयाल स्त्री [एकचत्वारिंशत्] एकचालीस, ४१ (कम्म ६, ५६) ।

इगवीसइम वि [एकविंश] एकवीसवां (पव ४६) ।

इगुचाल वि [एकचत्वारिंशत्] संख्या-विशेष, ४१—चालीस और एक (भग, पि ४४५) ।

इगुणीस वि [एकोनविंश] उन्नीसवां (पव ४६) ।

इगुणीस } स्त्री [एकोनविंशति] उन्नीस (पव
इगुवीस } १८, कम्म ६, ५६) ।

इगुसट्ठि स्त्री [एकोनषष्टि] उनसठ (कम्म ६, ६१) ।

इग्ग वि [दे] भीत, डग हुआ (दे १, ७६) ।

इग्ग देखो एक्क (नाट) ।

इग्घिअ वि [दे] भस्मित, तिरस्कृत (दे १, ८०) ।

इच्चा देखो इ सक ।

इच्चाइ पुं [इत्यादि] वगैरह, प्रभृति (जी ३) ।

इच्चेव अ [इत्येवम्] इस प्रकार, इस माफिक (सूअ १, ३) ।

इच्छ सक [इप्] इच्छा करना, चाहना । इच्छइ (उव, महा) । वक्क इच्छत, इच्छ-माण (उत्त १, ५५) ।

इच्छ सक [आप् + स् = ईप्स्] प्राप्त करने को चाहना । कृ इच्छियव्व (वव १) ।

इच्छकार देखो इच्छा-कार (पडि) ।

इच्छकार पुं [इच्छाकार] 'इच्छा' शब्द (पंचा १२, ४) ।

इच्छा स्त्री [इच्छा] पक्ष की ग्याह्वी रात्रि, 'जयति-अपरराजिया य ग(?) इच्छा य' (सुअ १०, १४) ।

इच्छा स्त्री [इच्छा] अभिलाषा, चाह, वांछा (उवा, प्रासू ४८) । २ कार पुं [कार] स्वकीय-इच्छा, अभिलाष (पडि) । ३ छद वि [च्छन्द] इच्छा के अनुकूल (भाव ३) । ४ गुलोम वि [गुलोम] इच्छा के अनुकूल (पराण ११) । ५ गुलोमिय वि [गुलोमिक] इच्छा के अनुकूल (आचा) । ६ पणिय वि [पणीत] इच्छानुसार किया हुआ (आचा) । ७ परिमाण न [परिमाण] परिग्राह्य वस्तुओं के विषय की इच्छा का परिमाण करना, आवक का पाचवां व्रत (ठा ५) । ८ मुच्छा स्त्री [मूच्छा]

अत्यासक्ति, प्रबल इच्छा (पराह १, ३) । ९ लोभ पुं [लोभ] प्रबल लोभ (ठा ६) । १० लोभिय वि [लोभिक] महालोभी (ठा ६) । ११ लोल पुं [लोल] १ महान् लोभ । २ वि. महा-लोभी (बृह ६) ।

इच्छा स्त्री [दित्ता] देने की इच्छा (भाव) । इच्छिय [इष्ट] इष्ट, अभिलषित, वांछित (सुर ४, १५३) ।

इच्छिय वि [ईप्सित] प्राप्त करने को चाहना, अभिलषित (भग, सुपा ६२५) ।

इच्छिय वि [इच्छित] जिसकी इच्छा की गई हो वह (भग) ।

इच्छिर वि [एषित्] इच्छा करनेवाला (कुमा) ।

इच्छु देखो इक्खु (कुमा, प्रासू ३३) ।

इच्छु वि [इच्छु] अभिलाषी (गा ७४०) ।

इज सक [आ + इ] आना, आगमन करना । वक्क. इज्जंत,

'विणयम्मि जो उवाएण, चोइमो कुप्पई नरो । दिव्वं सो सिरिमिज्जंति, दहेण पडिसेहए ॥' (दस ६, २, ४) ।

इज पुं [इज्या] यज्ञ, याग, 'मिक्खट्ठा वंम-इज्जमि' (उत्त १२, ३) ।

इज्जा स्त्री [इज्या] १ याग, पूजा । २ ब्राह्मणों का सन्यास (अणु ठा १०) ।

इज्जा स्त्री [दे] माता, जननी (अणु) ।

इज्जिसिय वि [इज्यैषिक] पूजा का अभिलाषी (भग ९, ३३) ।

इज्जम अक [इज्ज्] चमकना (हे २, २८) । वक्क. इज्जमाण (राय) ।

इट्टा पुं [दे] सेवई, गुं सेव (पिडनि० गा० ४६१, ४६६) ।

इट्टा स्त्री [इष्टका] नीचे देखो (पराह २, २, पिड) ।

इट्टा स्त्री [दे] खाद्य-विशेष, सेव (पिड ४६१, ४६६, ४७२) ।

इट्टाय देखो इट्टा-वाय (सम्मत्त १३७) ।

इट्टा स्त्री [इष्टका] ईंट (गजड, हे २, ३४) ।

पाय, वाय पुं [पाक] ईंटो का पकना । २ जहाँ पर ईंटें पकाई जाती हैं वह स्थान (ठा ८) ।

आवाह सक [आ + वाहय्] १ सानिध्य के लिए देव या देवाधिष्ठित चीज को बुलाना । २ बुलाना । संकृ आवाहिवि (अप) (भवि) ।

आवाह पुं [आवाध] पीडा, वावा (विपा १, ६) ।

आवाह पुं [आवाह] १ नव-परिणीता वधू को घर के घर लाना (पण्ड २, ५) । २ विवाह के पूर्व किया जाता पान देने का एक उत्सव (जीव ३) ।

आवाहण न [आवाहन] ग्राह्य (विमे १८८३) ।

आवाहिय वि [आवाहित] १ बुलाया हुआ, ग्राह्य (भवि) । २ मदद के लिए बुलाया हुआ देव या देवाधिष्ठित वस्तु, 'एव च भगतेर्यं ग्रावाहियाइ सत्याइ' (सुर ८, ४२) ।

आवि न [दे] १ प्रसव-मीडा । २ वि नित्य, शाश्वत । ३ दृष्ट, देखा हुआ (दे १, ७३) ।

आवि अ [चापि] समुच्चय-प्रोतक अव्यय (कप्प) ।

आवि अ [आविस्] प्रकटता-सूचक अव्यय (सुर १४, २११) ।

आविअ सक [आ + पा] पीना, 'जहा दुमस्त पुण्हेमु भमरो आविअइ रस्' (दम १, २) ।

आविअ वि [आवृत] आच्छादित (से ६, ६२) ।

आविअ पुं [दे] १ इन्द्रगोप, कुद्र कीट-विशेष । २ वि मयित, आलोडित (दे १, ७६) । ३ प्रोत (दे १, ७६, पात्र, पङ्) ।

आविअ वि [आविच] अविच-देशोत्पन्न (राय) ।

आविअज्मा स्त्री [दे] १ नवोडा, दुलहिन । २ परतन्ना, पराधीन स्त्री (दे १, ७७) ।

आविध सक [आ + व्यध्] १ विवना । २ पहनना । ३ मन्त्र से अवीन करना । आविध (आक ३८) । आविधामो (पि ४८९), 'पालव वा सुवरणमुत्त वा आविधेज् पिरिण्वेज् वा' (आचा २, १३, २०) । कर्म. आविध्भइ (उव) ।

आविधण न [आव्यधन] १ पहनना । २ मन्त्र से आविष्ट करना, मन्त्र में अवीन करना (पण्ड १, २, आक ३८) ।

आविक्कम्म पुन [आविक्कर्मन्] प्रकट-कर्म, प्रकटरूप से किया हुआ काम (आचा २, १५, ५) ।

आविग्ग वि [आविग्ग] उद्विग्न, उदामीन (से ६, ८६, १३, ६३, दे ७, ६३) ।

आविट्ठ वि [आविष्ट] १ आवृत, व्याप्त (मम ५१, मुपा १८७) । २ प्रविष्ट (सूत्र १, ३) । ३ अविष्टित, आधित (ठा ५, भास ३६) ।

आविट्ठ वि [आविष्ट] भूत आदि के उपद्रव से युक्त (सम्मत १७३) ।

आविद्ध वि [आविद्ध] परिहित, पहना हुआ (कप्प) ।

आविद्ध वि [दे] क्षिप्त, प्रेरित (दे १, ६३) ।

आविद्धभाव पु [आविर्भाव] १ उत्पत्ति । २ प्रादुर्भाव, आभिव्यक्ति, 'आविद्धभावतिरोभाव-मेत्तपरिणामिद्वन्मेवाय' (विसे) ।

आविद्धभूय वि [आविर्भूत] १ उत्पन्न । २ प्रादुर्भूत (कप्प) । ३ अभिव्यक्त (सुर १४, २११) ।

आविल वि [आविल] १ मलिन, अस्वच्छ (मम ५१) । २ आकुल, व्याप्त (सूत्र १, १५) ।

आविलिअ वि [दे] कुपित, क्रुद्ध (पङ्) ।

आविलुपिअ वि [आकाङ्क्षित] अभिलषित (दे १, ७२) ।

आविस सक [आ + विग्] प्रवेश करना, घुसना । आविनेइ (सम्मत १७३) ।

आविस अक [आ + विग्] १ सबद्ध होना युक्त होना । २ सक उपभोग करना, सेवना, 'परदारमाविसामिति' (विसे ३२५६),

'ज ज समय जीवो, आविसई जेण जेण भावेण । सो तम्मि तम्मि समए, सुहासुह वधए कम्म' (उव)

आविहव अक [आविर् + भू] १ प्रकट होना । २ उत्पन्न होना । आविहवइ (स ४८) ।

आविहूअ देखो आविद्धभूय (स ७१८) ।

आवी देखो आवि = आविस्, 'आनी वा जइ वा रहस्से' (उत्त १, १७, मुख १, १७) ।

°कम्म देखो आविक्कम्म (आचा २, १५, ५) ।

आवीअ वि [आपीत] १ पीत । २ शोषित (से १३, ३१) ।

आवीइ वि [आवीचि] निरन्तर, अविच्छिन्न,

'गल्मप्पमिइमावीइलिलच्छेए सर व सूसंतं । अणुसमयं मरमाणे, जीयति जणो कहं भणइ ?' (मुपा ६५१) ।

°मरण न [°मरण] मरण-विशेष (भग १३, ७) ।

आवीक्कम्म न [आविक्कर्मन्] १ उत्पत्ति । २ अभिव्यक्ति (ठा ६, कप्प) ।

आवीड सक [आ + पीड्] १ पीडना । २ दवाना । आवीडइ (सण) ।

आवीण न [आपीन] स्तन, थन (गडड) ।

आवील देखो आपेट = आपीट (म ३१५) ।

आवील देखो आवीड । सक आवीलयाण (आचा २, १, ८, १) ।

आवीलण न [आपीडन] समूह, निचय (गडड) ।

आवुअ पुं [आवुक] नाटक की भाषा में पिता, बाप (नाट) ।

आवुण वि [आपूर्ण] पूर्ण, भरपूर (दे २, १०२) ।

आवुत्त पु [दे] भगिनी-पति (अमि १८३) ।

आवुद वि [आवृत] ढका हुआ (प्राक ८, १२) ।

आवुदि स्त्री [आवृति] आवरण (प्राक ८, १२) ।

आवूर देखो आपूर = आ + पूरय् । वक्क आवूरस (पडम ७६, ८) । कवक्क. आवूरिज्ज-माण (स ३८२) ।

आवूरण न [आपूरण] पूर्ति (स ४३६) ।

आवूरिय देखो आऊरिय (पडम ६४, ५२, स ७७) ।

आवेअ सक [आ + वेदय्] १ विनति करना, निवेदन करना । २ बतलाना । आवे-एइ (महा) ।

आवेअ पुं [आवेग] कष्ट, दुख (से १०, ५७, ११, ७२) ।

आवेअ देखो आवा ।

आवेइइय वि [आवेष्टित] वेष्टित, विरा हुआ (गा २८) ।

आवेड १ देखो आमेल (हे २, २३४, आवेडय १ कुमा) ।

आवेड पु [आवेष्ट] १ वेष्टन । २ मण्डलाकार करना (से ७, २७) ।

इमेरिस वि [एतादृश] ऐसा, इसके जैसा (सण) ।

इय देखो इम (महा) ।

इय देखो इइ (पड़, हे १, ६१, औप) ।

इय न [दे] प्रवेश, पैठ (आवम) ।

इय वि [इत] १ गत, गया हुआ (सूअ १, ६) । २ प्राप्त, 'उदयमिओ जस्तीमो जयम्मि चदुव्व जिणचदो' (साधं ७१, विसे) । ३ ज्ञात, जाना हुआ (आचा) ।

इयण्हि अ [इदानीम्] हाल में, इस समय, अधुना (ठा, ३) ।

इयर वि [इतर] १ अन्य, दूसरा (जो ४६, प्रासू १००) । २ हीन, जघन्य (आचा १, ६, २) ।

इयरहा अ [इतरथा] अन्यथा, नहीं तो, अन्य प्रकार से (कम्म १, ६०) ।

इयरेयर वि [इतरेतर] अन्योन्य, परस्पर (राज) ।

इयाणि } अ [इदानीम्] हाल में, इस
इयाणि } समय (भग, पि १४४) ।

इर देखो किल (हे २, १८६, नाट) ।

इरमदिर पु [दे] करम, ऊँट (दे १, ८१) ।

इराव पु [दे] हाथी (दे १, ८०) ।

इरावदी (शौ) स्त्री [इरावती] नदी-विशेष (नाट) ।

इरि देखो गिरि, 'विभइरिपवरसिहरे' (पउम १०, २७) ।

इरिण न [ऋण] करजा, ऋण (चार ६६) ।

इरिण न [दे] कनक, मुवणं (दे १, ७६, गउड) ।

इरिय सक [ईर्] जाना, गति करना । इरि-यामि (उत्त १८, २६, सुख १८, २६) ।

इरिया स्त्री [दे] कुटी, कुटिया (दे १, ८०) ।

इरिया स्त्री [ईर्या] गमन, गति, चलना (आचा) । °वह पुं [°पथ] १ मार्ग में जाना (ओष ५४) । २ जाने का मार्ग, रास्ता (भग ११, १०) । ३ केवल शरीर से होने-वाली क्रिया (सूअ २, २) । °वहिय न [°पथिक] केवल शरीर की चेष्टा से होनेवाला कर्मवन्ध, कर्म-विशेष (सूअ २, २, भग ८, ८) । °वहिया स्त्री [°पथिकी] कषाय-रहित केवल कायिक क्रिया, क्रिया-विशेष

(पडि, ठा २) । °समिइ स्त्री [°समिति] विवेक से चलना, दूसरे जीव को किसी प्रकार की हानि न हो ऐसा उपयोग-पूर्वक चलना (ठा ८) । °समिय वि [°समित] विवेक-पूर्वक चलनेवाला (विपा २, १) ।

इल पु [इल] १ वाराणसी का वास्तव्य स्वनाम-ख्यात एक गृहपति—गृहस्थ (गाया २) । २ न इलादेवी के सिंहासन का नाम (गाया २) । °सिरी स्त्री [°श्री] इल नामक गृहस्थ की स्त्री (गाया २) ।

°इलतअ देखो किलत (मे ३, ४७) ।

इला स्त्री [इला] १ पृथिवी, भूमि (मे २, ११) । २ घरणेन्द्र की एक अग्र-महिषी (गाया २) । ३ इल नामक गृहस्थ की पुत्री (गाया २) । ४ रुचक पर्वत पर रहनेवाली एक दिवकुमारी (ठा ८) । ५ राजा जनक की माता (पउम २१, ३३) । ६ इलावर्धन नगर में स्थित एक देवता (आवम) । °कूड न [°कूट] इलादेवी के निवास-भूत एक शिखर (ठा ४) । °पुत्त पुं [°पुत्र] इलादेवी के प्रसाद में उत्पन्न एक श्रेष्ठि-पुत्र, जिसने नटिनी पर मोहित होकर नट का पेशा सीखा और अन्त में नाच करते-करते ही शुद्ध भावना में केवलज्ञान प्राप्त कर मुक्ति पाई (आचू) । °वइ पु [°पति] एलापत्य गोत्र का आदि पुरुष (एदि) । °वइसय न [°वतसक] इलादेवी का प्रासाद (गाया २) ।

इलाइपुत्त देखो इला-पुत्त, 'घन्नो इलाइपुत्तो चिलाइपुत्तो अ वाहुमुणो' (पडि) ।

इलिया स्त्री [इलिका] क्षुद्र जीव-विशेष, चीनी और चावल में उत्पन्न होनेवाला कीट-विशेष (जो १७) ।

इली स्त्री [इली] शस्त्र-विशेष, एक जाति की तलवार की तरह का हथियार (पएह १, ३) ।

इल पु [दे] १ प्रतीहार, चपरासी । २ लवित्र, दाँती । ३ वि दरिद्र, गरीब । ४ कोमल, मृदु । ५ काला, कृष्ण वर्णवाला (दे १, ८२) ।

इलपुलिद पु [द] व्याघ्र, शेर (चंड) ।

इलि पु [दे] १ शाङ्गल, व्याघ्र । २ सिंह । ३ छाता (दे १, ८३) ।

इलिय वि [द] आमिक्त, उपेलणफुल्लाविग्रह-

अफुल्लामवेल्लिग्रमल्लिग्रामकवतल्लएण' (विक्र २३) ।

इल्लिया स्त्री [इल्लिका] क्षुद्र जीव-विशेष, अन्न में उत्पन्न होनेवाला कीट-विशेष (जो १६) ।

इल्लीर न [दे] १ आसन-विशेष । २ छाता । ३ दरवाजा, गृह-द्वार (दे १, ८३) ।

इय अ [इय] इन अर्थों का द्योतक अव्यय— १ उपमा । २ मादृश्य, तुलना । ३ उत्प्रेक्षा (हे २, १८२, सण) ।

इसअ वि [दे] विस्तीर्ण (पड़) ।

इसणा देखो एसणा (रभा) ।

इसाणी स्त्री [ऐशानी] ईशान कोण, पूर्व और उत्तर के बीच की दिशा (नाट) ।

इसि पु [ऋपि] १ मुनि, साधु, जानी, महात्मा (उत्त १२, अवि १४) । २ ऋषिवादि-निकाय का दक्षिण दिशा का इन्द्र, इन्द्र-विशेष (ठा २, ३) । °गुत्त पु [°गुप्त] १ स्वनाम-ख्यात एक जैन मुनि (कप्प) । २ न जैन मुनियों का एक कुल (कप्प) । °गुत्तिय न [°गुप्तीय] जैन मुनियों का एक कुल (कप्प) । °दाम पुं [°दास] १ इस नाम का एक सेठ, जिसने जैन दीक्षा ली थी । २ 'अनुत्तरोववाइसा' सूत्र का एक अध्ययन (अनु २) । °दत्त, °दिण पुं [°दत्त] एक जैन मुनि (कप्प) । °पालिय पुं [°पालिन] ऐरवत क्षेत्र के पाँचवें तीर्थंकर का नाम (मम १५३) । °पालिया स्त्री [°पालिता] जैन मुनियों की एक शाखा (कप्प) । °भइपुत्त पुं [°भद्रपुत्र] एक जैन आवक (भग ११, १२) । °भासिय न [°भापित] १ अग्रग्रन्थों के अतिरिक्त जैन आचार्यों के बनाए हुए उत्तराव्ययन आदि शास्त्र (आवम) । २ 'प्रश्नव्याकरण' सूत्र का तृतीय अध्ययन (ठा १०) । °वाइ, °वाइय, °वादिय पु [°वादिन्] व्यन्तरो की एक जाति (औप: पएह १, ४) । °वाल पु [°पाल] १ ऋषिवादि-व्यन्तरो का उत्तर दिशा का इन्द्र (ठा २, ३) । २ पाचवें वासुदेव का पूर्वभवीय नाम (सम १५३) । °वालिय पुं [°पालित] ऋषिवादि-व्यन्तरो के एक इन्द्र का नाम (देव) । इसिण पुं [इसिन] अनार्य देश विशेष (गाया १, १) ।

आसज्ज अ [आसाद्य] प्राप्त करके (विसे ३०) ।

आसड पुं [आसड] विक्रम की तेरहवीं शताब्दी का स्वनाम-ख्यात एक जैन ग्रन्थकार (विवे १४३) ।

आसण न [आसन] १ जिसपर बैठा जाता है वह चौकी आदि (श्राव ४) । २ स्थान, जगह (उत्त १, १) । ३ शय्या (आचा) । ४ बैठना, उपवेशन (ठा ६) ।

आसणिय वि [आसनि] आसन पर बैठाया हुआ (स २६२) ।

आसण्ण न [आसन्न] १ समीप, पास । २ वि समीपस्थ (गठह) । देखो आसन्न ।

आमत्त वि [आसक्त] लीन, तत्पर (महा, प्रासू ६४) ।

आसत्त वि [आसक्त] १ नीचे लगा हुआ (राय ३५) । २ पुं नपुंसक का एक भेद, वीर्यपात होने पर भी स्त्री का आलिंगन कर उसके कलादि अंगों में जुड़कर सोनेवाला नपुंसक (पव १०६) ।

आसत्ति स्त्री [आसक्ति] अभिप्रेक्षण, तल्लीनता (कुमा) ।

आसत्थ पुं [अश्वत्थ] पीपल का पेड़ (पउम ५३, ७६) ।

आसत्थ वि [आश्वस्त] १ आश्वसन-प्राप्त, स्वस्थ । २ विश्रान्त (णाय १, १, सम १५२, पउम ७, ३८, दे ७, २८) ।

आसन्न देखो आसण (कुमा, गठह) । १ वृत्ति वि [वृत्तिन्] नजदीक में रहनेवाला (सुपा ३५१) ।

आसम पु [आश्रम] तापस आदि का निवास स्थान, तीर्थ-स्थान (पएह १, ३, श्रौप) । २ ब्रह्मचर्य, गार्हस्थ्य, वानप्रस्थ और मैत्र्य (सत्यास) ये चार प्रकार की अवस्था (पचा १०) ।

आसमपय न [आश्रमपद] तापसी के आश्रम से उपलब्धित स्थान (उत्त ३०, १७) ।

आसमि वि [आश्रमिन्] आश्रम में रहनेवाला, ऋषि, मुनि वगैरह (पंचव १) ।

आसय अक [आस्] बैठना । आसयति (जीव ३) ।

आसय सक [आ + श्री] १ आश्रय करना,

अवलम्बन करना । २ ग्रहण करना । आसयइ (कप्प) । वक्र. आसयंत (विसे ३२२) ।

आसय पुं [आशक] खानेवाला (आचा) । आसय पुं [आश्रय] आचार, अवलम्बन (उप ७१७, सुर १३, ३६) ।

आसय पुं [आशय] १ मन, चित्त, हृदय (सुर १३, ३६, पाप्र) । २ अभिप्राय (सूत्र १, १५) ।

आसय न [दे] निकट, समीप (दे १, ६५) । आसरिअ वि [दे] समुख-आगत, मामने आया हुआ (दे १, ६६) ।

आसव अक [आ + स्तु] घीरे-घीरे करना, टपकना । वक्र. आसावमाण (आचा) ।

आसव सक [आ + स्तु] आना, 'आसवदि जेण कम्मं परिणामेण्णणो स विण्णोमो भावा-सवो' (द्रव्य २६) ।

आसव पुं [आश्रव] सूक्ष्म छिद्र, देखो, 'सया-सव' (भग १, ६) ।

आसव पुं [आसव] मद्य, दारु (उप ७२८ टी) ।

आसव पुं [आश्रव] १ कर्मों का प्रवेश-द्वार, जिससे कर्मबन्ध होता है वह हिंसा आदि (ठा २, १) । २ वि श्रोता, गुरु-वचन को सुननेवाला (उत्त १) । ३ सक्ति वि [सक्तिन्] हिंसादि में आसक्त (आचा) ।

आसवण न [दे] वास-गृह, शय्या-घर (दे १, ६६) ।

आसवाहिया स्त्री [अश्ववाहिका] अश्व-क्रीडा (धर्मवि ४) ।

आसाअ सक [आ + सादय्] स्पर्श करना, छूना । आसाएवा । वक्र. आसायमाण (आचा २ ३, २, ३) ।

आसम अक [आ + श्वस्] आश्वसन लेना, विश्राम लेना । आससइ, आसससु (पि ८८, ४६६) ।

आससण न [आशसन] विनाश, हिंसा (पएह १, ३) ।

आससा स्त्री [आशसा] अभिलाषा, 'जेमि तु परिमाण, त दुट्ठं आससा हाइ' (विसे २५१६) ।

आससिय वि [आश्वस्त] आश्वसन-प्राप्त (स ३७८) ।

आसा स्त्री [आशा] १ आशा, उम्मीद (श्रौप, से १, २६, सुर ३, १७७) । २ दिशा (उप

६४८ टी) । ३ उत्तर रुचक पर बसनेवाली एक दिक्कुमारी, देवी-विशेष (ठा ८) ।

आसाअ सक [आ + स्वाद्] स्वाद लेना, चखना, खाना । आसायति (भग) । वक्र. आसाअअत, आसाएंत्त, आसायमाण (नाट, से ३, ४२, णाय १, १) ।

आसाअ सक [आ + सादय्] प्राप्त करना । वक्र. आसाएत्त (से ३, ४५) ।

आसाअसक [आ + शातय्] अवज्ञा करना, अपमान करना । आसाएवा (महानि ५) । वक्र. आसायंत, आसाएमाण (आ ६, ठा ४) ।

आसाअ पुं [आस्वाद] १ स्वाद, रस (गा ५६३, से ६, ६८, उप ७६८ टी) । २ वृत्ति (से १, २६) ।

आसाअ पु [आस्वाद] स्वाद का विलकुल अभाव (तंदु ४५) ।

आसाअ देखो आसय = आश्रय (तंदु ४५) ।

आसाअ पु [आसाद्] प्राप्ति (से ६, ६८) ।

आसाइअ वि [आशासित] १ अवज्ञात, तिरस्कृत (पुष्क ४५४) । २ न अवज्ञा, तिरस्कार (विवे ६२) ।

आसाइअ वि [आस्वादित] चखा हुआ, थोड़ा खाया हुआ (से ५, ४६) ।

आसाइअ वि [आसादित] प्राप्त, लब्ध (हेका ३०, भवि) ।

आसाढ पु [आपाढ] १ आमाढ मास (सम ३९) । २ एक निहव, जो अव्यक्तिक मत का उत्पादक था (ठा ७) । ३ भूइ पु [भूति] एक प्रसिद्ध जैन मुनि (कुम्मा २६) ।

आसाढा स्त्री [आपाढा] नक्षत्र-विशेष (ठा २) ।

आमाढा स्त्री [आपाढा] आपाढ मास की पूर्णिमा (सुज) ।

आसाढी स्त्री [आपाढी] १ आपाढ मास की पूर्णिमा । २ आपाढ मास की अमावस (सुज १०, ६) ।

आसादेत्तु वि [आस्वादयित्] आस्वादन करनेवाला (ठा ७) ।

आसामर पु [आशामर] सातवें वासुदेव और बलदेव के पूर्वभवीय धर्मगुरु का नाम (ज्य १५३) ।

ईसर पु [ईश्वर] अणिमा आदि आठ प्रकार के ऐश्वर्य से सम्पन्न (अणु २२) ।

ईसरिय न [ऐश्वर्य] वैभव, प्रभुता, ईश्वरपन (पउम ८६, ६३) ।

ईसा स्त्री [ईषा] १ लोकपालो की अग्रमहि-
पियो की एक पार्षदा (ठा ३, २) । २ पिशा-
चेन्द्र की एक परिपदा (जीव ३) । ३ हल का
एक काष्ठ (दे २, ६६) ।

ईसा स्त्री [ईषा] ईर्ष्या, द्वेष (गउड) । °रोस
पुं [°रोष] क्रोध, गुस्मा (कण्णु) ।

ईसाइय वि [इय्योयित] जिसको ईर्ष्या हुई
हो वह (सुपा ६१) ।

ईसाण पु [ईशान] १ देवलोक-विशेष, दूसरा
देवलोक (सम २) । २ दूसरे देवलोक का इन्द्र
(ठा २, ३) । ३ उत्तर और पूर्व के बीच की
दिशा, ईशान-कोण (सुपा ६८) । ४ मुहूर्त-
विशेष (सम ५१) । ५ दूसरे देवलोक के
निवासी देव (ठा १०) । ६ प्रभु, स्वामी
(विसे) । °वडिसग न [°वतसक] विमान-
विशेष का नाम (सम २५) ।

ईसाण पुं [ईशान] महोरात्र का ग्यारहवाँ
मुहूर्त (मुज १०, १३) ।

ईसाणा स्त्री [ऐशानी] ईशान कोण (ठा
१०) ।

ईसाणी स्त्री [ऐशानी] १ ईशान-कोण । २
विद्या-विशेष (पउम ७, १४१) ।

ईसालु वि [ईर्ण्यलु] ईर्ण्यलु, अग्रमहिष्णु,
द्वेषी (महा, गा ६३४, प्राप्र) । स्त्री. °णी
(पउम ३६, ४५) ।

ईसास देखो इस्सास, 'ईयामठ्ठाण' (निर, पि
१६२) ।

ईसि अ [ईपत्त] १ थोड़ा, अल्प (परण
३६) । २ पृथिवी-विशेष, सिद्धि-क्षेत्र, मुक्त-
भूमि (सम २२) । °पउभार वि [°प्राग्भार]
थोड़ा अवन्त (पचा १८) । °पउभारा स्त्री
[°प्राग्भारा] पृथिवी-विशेष, सिद्धि क्षेत्र
(ठा ८, मम २२) ।

ईसिअ न [ईर्ण्यित] १ ईर्ण्य, द्वेष (गा
५१०) । २ वि. जिसपर ईर्ण्य की गई हो
वह (दे २, १६) ।

ईसिअ न [दे] १ भील के सिर पर का पत्र-

पुट, भोलो की एक तरह की पगड़ी । २ वि.
वशीकृत, वश किया हुआ (दे १, ८४) ।

ईसि } देखो ईसि (महा, गुर २, ६६, कस;
ईसी } पि १०२) ।

ईह सक [ईह, ईह] १ देखना । २
विचारना । ३ चेष्टा करना । ईहण (विसे
५६१) । वक्क ईहंत, ईहमाण (गउड, सुपा
८८, विसे २५८), संक्र. 'अनिप्राणो ईहि-
ऊण मइपुव्वं' (पउम ८६; विसे २५७) ।

ईहण न [ईहण] नीचे देखो (प्राचू १) ।

ईहा स्त्री [ईहा] १ विचार, ऊहापोह, विमर्श
(णाय १, १, सुपा ५७२) । २ चेष्टा, प्रयत्न
(श्रीघ ३) । ३ मति-ज्ञान का एक भेद (परण
१५, ठा ५) । ४ इच्छा (म ६१२) । °मिग,
°मिय पुं [°मृग] १ वृक, भेडिया (णाय १,
१; मग ११, ११) । २ नाटक का एक
भेद (राय) ।

ईहा स्त्री [ईहा] अवलोकन, विलोकन (श्रीप) ।

ईहिय वि [ईहित] चेष्टित (सूम १, १, ३) ।
२ विमर्शित, विचारित, ईहा-विषयीकृत (विसे
२५७) ।

॥ इअ सिरिपाइअसदमहण्णवे ईभाराइसदसंकलणो
णाम चउत्थो तरगो समत्तो ॥

उ

उ पु [उ] प्राकृत वर्णमाला का पञ्चम अक्षर,
स्वर-विशेष (प्राभा) । २ उपयोग रखना,
खाल करना, 'उत्ति उवओगकरणे' (विसे
३१६८) । ३ गति-क्रिया (आवम) ।

उ अ [उ] निम्नोक्त अर्थों का सूचक अव्यय—
१ संबोधन, आमन्त्रण । २ कोप-वचन,
क्रोधोक्ति । ३ अनुकम्पा, दया । ४ नियोग,
हुकुम । ५ विस्मय, आश्चर्य । ६ अंगीकार,
स्वीकार । ७ प्रश्न, पृच्छा (हे २, २१७) ।

उ अ [उ] इन अर्थों का सूचक अव्यय—१
विशेषण । २ कारण (वव १) ।

उ अ [उ] इन अर्थों का द्योतक अव्यय—१
समुच्चय, और (कप्प) । २ अवधारण, निश्चय
(आवम) । ३ किन्तु, परन्तु (ठा ३, १) । ४
नियोग, आज्ञा । ५ प्रशंसा । ६ विनिग्रह ।
७ शंका की निवृत्ति (उव) । ८ पादपूर्ति के
लिए भी इसका प्रयोग होता है (उव) ।

उ देखो उव, 'उओ उवे' (पह् २, १, ६८) ।

उ अ [उत्त] निम्नोक्त अर्थों का सूचक अव्यय—
१ ऊँचा, ऊर्ध्व; 'उक्कमंत' (आवम) । २ विप-
रीत, उलटा; 'उक्कम' (विसे) । ३ अभाव,
रहितता; 'उक्कर' (णाय १, १) । ४ ज्यादा,

विशेष; 'उक्कोविय' (उपपृ ७८, विसे ३५७६) ।
उअ अ [दे] विलोकन करो, देखो (दे १, ८६
टी; हे २, २११) ।

उअ अ [उत्त] इन अर्थों का सूचक अव्यय—
१ विकल्प, अथवा । २ वितर्क, विमर्श (कुमा) ।
३ प्रश्न, पृच्छा । ४ समुच्चय । ५ बहुत, अति-
शय (हे १, १७२) ।

उअ अ [दे] ऋजु, सरल (पह्) ।

उअ देखो उव (गा ५०, से ६, ६) ।

उअ न [उद] पानी, जल । °सिंधु पुं
[°सिन्धु] समुद्र, सागर (पि ३४०) ।

‘आसुरीयं दिसं वाला गच्छति अवसातम’ (उत्त ७, १०) ।
 आसुरक्त वि [आशुरुक्त] १ शीघ्र क्रुद्ध । २ अति कुपित (राया १, १) ।
 आसुरक्त वि [आसुरोक्त] अति कुपित (राया १, १) ।
 आसुरक्त वि [आशुरुक्त] अति-कुपित (विपा १, ६) ।
 आसृणि न [आशूनिन] १ बलिष्ठ बनाने-वाली खुराक । २ रसायन-क्रिया (सूत्र १, ६) ।
 आसृणां स्त्री [आशूनी] श्लाघा, प्रशंसा (सूत्र १, ६, १५) ।
 आसृणिय वि [आशूनिन] थोडा म्थूल किया हुआ (परह १, ३) ।
 आसूय न [दे] औपयाचितक, मनौती (पिंड ४०५) ।
 आसेअगय वि [आसेचनक] जिमको देखने से मन को तृप्ति न होती हो वह (दे १, ७२) ।
 आसेय नक [आ + सेव्] १ सेवना । २ पानना । ३ आचरना । आमेवए (ग्राम ६७) ।
 आसेवण न [आसेवन] १ परिपालन, सरक्षण (सुपा ४३८) । २ आचरण (स २७१) । ३ मैथुन, रतिसंभोग (दसत्र १, पव १७०) ।
 आमेवणना स्त्री [आसेवना] १ परिपालन आसेवणा (सूत्र १, १४) । २ विपरीत आचरण (पव) । ३ अभ्यास (आचू) । ४ शिक्षा का एक भेद (धर्म ३) ।
 आसेवा स्त्री [आसेवा] ऊपर देखो (सुपा १०) ।
 आसेविथ वि [आसेचित] १ परिपालित । २ अभ्यस्त (आचा) । ३ आचरित, अनुष्ठित (म ११८) ।
 आसोअ पु [अश्वयुक्] आश्विन मास (ख्यण ३६) ।
 आसोअ वि [आशोक] अशोक वृक्ष सख्खी (गड्ड) ।
 आसोइया स्त्री [दे. आसोतिका] औपवि-विरोध, ‘आमोड्याइमीस चोल घुसिएं कुमुस-मीस’ (सुपा ३६७) ।
 आसोई स्त्री [आश्वयुजी] आश्विन पूर्णिमा (इक) ।

आसोई स्त्री [आश्वयुजी] १ आश्विन आमोया } मास की पूर्णिमा । २ आश्विन मास की अमावस (सुज १०, ७, ६) ।
 आसोकना स्त्री [आरोकान्ता] मध्यम ग्राम की एक मूर्च्छना (ठा ७) ।
 आसोत्थ पु [अश्वयुक्] पीपल का पेड़ (परण १, उप २३६) ।
 आह सक [ह्रस्व] कहना । भूका—आहंमु, आहु (कप्प) ।
 आह सक [काहत्] चाहना, इच्छा करना । आहइ (हे ४, १६२, पड्) । वहु आहन (कुमा) ।
 आहडल देखो आहडल (हम्मीर १५) ।
 आहतु देखो आहण ।
 आहइ अ [दे] १ अन्यथा । २ निष्कारण (वव १) । ३ भाव पु [भाव] कादाचित्कता (पव १०७ टी) ।
 आहइ न [दे] १ अत्यर्थ, बहुत, अतिशय (दे १, ६२) । २ अ शीघ्र, जल्दी (आचा) । ३ कदाचित्, कभी (भग ६, १०) । ४ उप-स्थित होकर (आचा) । ५ व्यवस्था कर (सूत्र २, १) । ६ विभक्त कर (आचा) । ७ छीन कर (दसा) ।
 आहइ स्त्री [आहत्या] प्रहार, आघात (भग १५) ।
 आहइ न [दे] देखो आहट्टु = दे (पव ७३ टी) ।
 आहट्टु स्त्री [दे] प्रहेलिका, पहेलियाँ, बुझी बल, ‘तेमु न विम्हयइ मय आहट्टुकुहेडएहि व’ (पव ७३) ।
 आहट्टु देखो आहर = आ + ह ।
 आहड [आहत] १ छीन लिया हुआ । २ चोरी किया हुआ (सुपा ६४३) । ३ सामने लाया हुआ, उपस्थापित (स १८८) ।
 आहड न [दे] सीत्कार, सुरत शब्द (पड्) ।
 आहण सक [आ + हन्] आघात करना, मारना । आहणामि (पि ४६६) । सक आहणिअ, आहणिऊण, आहणित्ता (पि ५६१, ५८५, ५८२) । हेक आहतुं (पि ५७६) ।
 आहण सक [आ + हन्] उठाना । सक आहु [ह] गिय (राय १८, २१) ।
 आहणन न [आहनन] आघात (उप ३६६) ।

आहणाविथ वि [आवातित] आहत कराया हुआ (स ५२७) ।
 आहत्तहीय न [याथातथ्य] १ यथावन्विन-पन, वान्तविकता । २ तथ्य-मार्ग—सम्यग्ज्ञान आदि । ३ ‘सूत्रकृताङ्ग’ सूत्र का तेरहवाँ अध्ययन (सूत्र १, १३, नि ३३५) ।
 आहम्म सक [आ + हम्] आना, आगमन करना । आहम्मइ (हे ४, १६२) ।
 आहम्मिअ वि [अवार्मिक] अधर्म-सख्खी (दस ८, ३१) ।
 आहम्मिय वि [अवार्मिक] अधर्मी, पापी (सम ५१) ।
 आहय वि [आहत] आघात प्राप्त, प्रेरित (कप्प) ।
 आहय वि [आहन] १ आकृष्ट, खींचा हुआ । २ छीना हुआ (उप २११ टी) ।
 आहर नक [आ + ह] १ छीनना, खींच लेना । २ चोरी करना । ३ खाना, भोजन करना । आहरइ (पि १७३) । कवहु आहरिडजमाण (ठा २) । महु आहट्टु (पि २८६) । हेक आहरित्तए (तडु) ।
 आहर सक [आ + ह] लाना । आहराहि (सूत्र १, ४, २, ४), आहरेमो (सूत्र २, २, ५५) ।
 आहरण पुन [आहरण] १ उदाहरण, दृष्टान्त (श्रोष ५३६, उग २६३, ६५१) । २ आह्वान, बुलाना (सुपा ३१७) । ३ गहरण, स्वीकार । ४ व्यवस्थापन (आचा) । ५ आनयन, लाना (सूत्र २, २) ।
 आहरण पुन [आभरण] मूषण, अलंकार, ‘देहे आहरणा वहु’ (आ १२, कप्पू) ।
 आहरणा स्त्री [दे] खरटि, नाक का खरखर शब्द (श्रोष २) ।
 आहरिसिय वि [आवपित] तिरस्कृत, भस्मित, ‘आहरिमियो ह्यो समतेण नियन्तिओ’ (आवम) ।
 आहल्ल (अप) अक [आ + चल्] हिलना, चलना, ‘न-इ दतपतो आहल्लइ, खलइ जीह’ (अवि) ।
 आहल्ल स्त्री [आहल्या] विद्याधर-राज की एक कन्या (पउम १३, ३५) ।
 आहव सक [आ + ह्वे] बुलाना । आह-

उईरण देखो उदीरण (ठा ४, पुष्प १६५) ।
 उईरणया } देखो उदीरणा (विसे २५१५,
 उईरणा } टी, कम्मप १५८, विसे २६६२) ।
 उईरिय देखो उदीरिय (पुष्प २१६) ।

उउ वि [ऋतु] १ ऋतु, दो मास का काल विशेष, वसन्त आदि छ प्रकार का काल (औप, अन्त ७), 'उऊए', 'उऊड' (कप्प) ।
 २ स्त्री-कुसुम रजो-दर्शन, स्त्री-धर्म (ठा ५, २) । 'वद्ध पुं' [वद्ध] शीत और उष्णकाल, वर्षा-काल के अतिरिक्त आठ मास का समय (श्रोघ २६, २६०, ३४८) । 'मास पुं' [मास] १ आवर्ण मास (वव १ टी) । २ तीस दिनवाला मास (सम) । 'य वि' [ज] ऋतु में उत्पन्न, समय पर उत्पन्न होनेवाला (पणह २, ५, राया १, १), 'उयअगुल्लर-पवरव्वणउउयमल्लाण्णानेवणविहीनु । गवेमु रज्जमाणा रमति धारिणदियवसट्ठा' (राया १, १७) ।

'सधि पुस्त्री' [सधि] ऋतु का सन्धि-काल, ऋतु का अन्त समय (आचा) । 'संवच्छर पुं' [संवत्सर] वर्ष-विशेष (ठा ५) । देखो उइ = उउ ।

उउवर देखो उवर = उदुम्बर (कुमा, हे १, २७०, पड्) ।

उउवहिय न [ऋतुवद्ध] मास-कल्प, एक मास तक एक स्थान में साधु का निवास-गुप्तान (आचा २, २, ७) ।

उऊखल } पुन [उदूखल] उलूखल, शूलल
 उऊहल } (कुमा, पड्, हे १, १७१)

उएट्ट पु [दे] शिल्प विशेष (अणु १४६) ।

उओग्गिअ वि [दे] सम्बद्ध, सयुक्त (पड्) ।

उं अ [दे] इन अर्थों का सूचक अव्यय—१ क्षेप, निन्दा । २ विस्मय । ३ खेद । ४ वितर्क । ५ सूचन (प्राक् ७६) ।

उघ अक [नि + डा] नीद लेना । उंघड । (हे ४, १२) ।

उंचहिआ स्त्री [दे] चक्रवारा (दे १, १०६) ।

उंछ पुन [उच्छ] मित्रा (भूम १, २, ३ १४) ।

उंछ पुं [उच्छ] मित्रा, माधुकरी (उप ६७७, श्रोघ ४२४) ।

उंछअ पुं [दे] वस्त्र छापने का काम करने वाला शिल्पी, छापी, जो कपड़ा छापता है, छोट बनाता है वह (दे १, ६८, पाप्र) ।

उंज सक [सिच्] मोचना, छीड़कना ।

उंजिआ (राज) । भवि—उजिन्सइ (मुपा १३६) ।

उज सक [युज्] प्रयोग करना, जोड़ना, 'अहमवि उंजेमि तह किपि' (वम्म ८ टी) ।

उंजायण न [उजायन] गोत्र-विशेष, जो वशिष्ठ-गोत्र की एक शाखा है (ठा ७) ।

उजिअ वि [सिक्त] भिक्त, छीड़का हुआ (मुपा १३६) ।

उंड } वि [दे] १ गमीर, गहरा (दे १,
 उडग } ८५, मुपा १५, उप १४७ टी, ठा
 उडय } १०, आ १६) । २ पु पिएड, 'वालाई

मंसउडग मज्जारई विराहेज्जा' (श्रोघ २४६ भा) । ३ चलते समय पंख में पिएड रूप से लग जाय उतना गहरा कीचड़, कंदम (श्रोघ ३३ भा) । ४ शरीर का एक भाग, मांस पिंड; 'हियपउडए' (विपा १, ५) ।

उडग } न [दे] स्थंडिल, स्थान, जगह (दस
 उंडुअ } ४, १, ५, १, ८७) ।

उडल न [दे] १ मञ्च, मंचान, उद्यासन ।
 २ निकर, समूह (दे १, १२६) ।

उडिया स्त्री [दे] मुद्रा-विशेष (राज) ।

उडी स्त्री [दे] पिएड, गोलाकार वस्तु, 'तत्थ ए एगा वस्मज्जो दो पुट्टे परियागने पिट्ठं-टीपंडुरे निव्वणे निव्वहए मित्रमुट्ठियमाणे मज्जोअडए पमवति' (राया १, ३) ।

उंदर } पुंस्त्री [उन्दुर] मूषक, चूहा (गडड,
 उंदुर } पणह १, १, उवा, दे १, १०२) ।

उंदु न [दे] मुँह, मुँह (अणु २६) । 'रुक्क न [दे] मुँह से वृषम आदि की तरह आवाज करना (अणु २६) ।

उदुरअ पुं [दे] लम्बा दिवस (दे २, १०५) ।

उंदुरु पुंस्त्री [उन्दुरु] मूषक, चूहा (दस २, ७) ।

उंव पुं [उम्व] वृक्ष-विशेष, 'निव्वउवउंव' (उप १०३१ टी) ।

उंवर पुं [उदुम्बर] १ वृक्ष-विशेष, शूलर का पेड़ (पणह १) । २ न. शूलर का फल (प्राप्र) । ३ देहली, द्वार के नीचे की लकड़ी (दे १, ६०) । 'दत्त पुं' [दत्त] १ यज्ञ-

विशेष (विपा १, ७) । २ एक सायंवाह का पुत्र (विपा १, ७) । 'पंचग, पणग न [पञ्चक] वट, पीपल, शूलर, प्लव और काकोदुम्बरी इन पांच वृक्षों के फल (मुपा ४६, भग ६, ३३) । 'पुष्प न [पुष्प] शूलर का फल (भग ६, ३३) ।

उंवर वि [दे] बहुत, प्रचुर (दे १, ६०) ।

उंवरउप्प न [दे] नवीन अमृतदय, अपूर्व उत्पत्ति (दे १, ११६) ।

उंवरय पुं [दे] कुछ रोग का एक भेद (सिदि ११४) ।

उंवा स्त्री [दे] वन्वन (दे १, ८६) ।

उंवी स्त्री [दे] पका हुआ गेहूँ (दे १, ८६; मुपा ४७३) ।

उंवेभरिया स्त्री [दे] वृक्ष-विशेष (पणह १) ।

उंभ सक [दे] पूति करना, पूरा करना (राज) ।

उकिट्ठ देखो उक्किट्ठ (पिग) ।

उकुरुडिया [दे] देखो उक्कुरुडिया (निर १, १) ।

उक्क वि [उत्क] १ उत्सुक, उत्कण्ठित (मुर ३, ५३) । एक विद्यावर राजा का नाम (पठम १०, २०) ।

उक्क वि [उत्क] कथित (पिग) ।

उक्क न [दे] पाद-पतन, पाव पर गिर कर नमस्कार करना (दे १, ८५) ।

उक्कअ वि [दे] प्रवृत्त, फैला हुआ (पट्) ।

उक्कंचण } न [दे] १ झूठी प्रशंसा करना,
 उक्कंचणया } कुशामद (राया १, २) । २

ऊँचा करना, उठाना (सूत्र २, २) । ३ झगड़ निकालना (निचू ५) । ४ घूस, रिगवत (दसा २) । ५ मूर्ख पुरुष को ठगनेवाले वृत्त का, समीपस्थ विचक्षण पुरुष के भय से थोड़ी देर के लिए निश्चेष्ट रहना (औप) । 'दीव पुं' [दीप] ऊँचा दंडवाला प्रदीप (अन्त) ।

उक्कट्ठण न [दे] देखो उक्कंचण (राज) ।

उक्कंठ अक [उत् + कण्ठ] उत्कण्ठा करना, उत्सुक होना । उक्कंठेहि (मै ७३) । वट्ठ. उक्कंठत (मै ६३) । हेक्क उक्कठिट्ठुं (शो) (अभि १४७) ।

उक्कठा स्त्री [उत्कण्ठा] उत्सुकता, मौलुस्य (हे १, २५, ३०) ।

निमित्त (पात्र) । °गि पु [°गि] अग्नि-
होत्रीय ब्राह्मण (पउम ३५, ५) ।
आहिय वि [आहित] १ व्याप्त, अचिरेणा-
हिओ एम जलोयखाहिणा' (कुप्र ४३) । २
जनित, उत्पादित । ३ प्रथित, प्रसिद्धि-प्राप्त
(सूअ १, २, २, २६) । ४ मर्वया हितकारी
(सूअ १, २, २, २७) ।
आहिय वि [आख्यात] कहा हुआ, प्रति-
पादित, उक्त (पण ३३, सुज १६) ।
आहियार पुं [अधि-कार] अधिकार, सत्ता,
हक (पउम ५५, ८) ।
आहियत्त देखो आहिपत्त (काल) ।
आहिसानिअ वि [अभिसारित] नायक-बुद्धि
मे गृहीत, पति बुद्धि से स्वीकृत (से १३, १७) ।
आहीर पु [आहीर] १ देश-विशेष (कण्) ।
२ शूद्र जाति विशेष, अहीर (सूअ १, १) ।
३ इस नाम का एक राजा (पउम ६८, ६४) ।
औ 'री—अहीरि (सुपा ३६०) ।
आहु सक [आ + हु] बुलाना । कृ. आहु-
णिज्ज (औप) ।
आहु [आ + हु] दान करना, त्याग करना ।
कृ. आहुणिज्ज (णाय १, १) ।
आहु अ [आहु] अयथा, या (नाट) ।
आहु पुं [दे] धूक, उल्लू (दे १, ६१) ।
आहु देखो आह = धूव् ।
आहुड वि [आहोव] दाता, दयागी (णाय
१, १) ।

आहुइ औ [आहुति] १ हवन, होम (गउड) ।
२ होम का पदार्थ, वलि (स १७) ।
आहुटुर पुं [दे] बालक, बच्चा (दे १,
आहुटुरु ६६) ।
आहुड न [दे] १ सौत्कार, सुरत समय का
शब्द । २ पणित, विक्रय, वेचना (दे १, ७४) ।
आहुड अक [दे] गिरना । आहुडइ (दे १,
६६) ।
आहुडिअ वि [दे] निपतित, गिरा हुआ (दे
१, ६६) ।
आहुण मक [आ + धु] कंपाना, हिलाना ।
कवक. आहुणिज्जमाण (णाय १, ६) ।
आहुणिय वि [आधुनिक] १ आजकल का,
नवीन । २ पु ग्रह-विशेष (ठा २, ३) ।
आहुत्त न [दे. अभिमुख] सम्मुख, सामने,
'कुमरोवि पहाविओ तयाहुत्त' (महा, भवि) ।
आहुअ वि [आहूत] बुलाया हुआ (पात्र) ।
आहुअ पुं [आहूक] पिशाच-विशेष (इक) ।
आहुअ वि [आभूत] उत्पन्न, जात, 'आहुओ
से गम्भो' (वसु) ।
आहुँ देखो आहा = आ + घा ।
आहुड पुन [आखेट, °क] शिकार,
आहुडग मृगया (सुपा १६७, स ६७;
आहुडय दे) ।
आहुडिय वि [आखेटिक] मृगया-सम्बन्धी,
'आहुडियभसणेण' (सम्मत्त २२६) ।
आहुण न [दे] विवाह के बाद वर के घर

वधू के प्रवेश होने पर जो जिमाने का उत्सव
किया जाता है वह (आचा २, १, ४) ।
आहुय वि [आवेय] १ स्याप्य । २ आश्रित
(विसे ६२४) ।
आहुर देखो आहीर (विसे १४५४) ।
आहेवन्न न [आधिपत्य] नेतृत्व, मुखियापन
(सम ८६) ।
आहेवण न [आक्षेपण] १ आक्षेप । २ क्षोभ
उत्पन्न करना (पणह १, २) ।
आहोअ देखो आभोग (से १, ४६, ६, ३)
गा ८८, गउड) ।
आहोअ देखो आभोय = आ + भोज्य ।
सक. आहोइऊण (स ५५) ।
आहोइअ वि [आभोगित] ज्ञात, दृष्ट (स
४८५) ।
आहोइअ वि [आभोगिक] उपयोग हो
जिसका प्रयोजन हो वह, उपयोग-प्रधान
(कण्) ।
आहोड मक [ताडय] ताडन करना, पिटना
आहोडइ (हे ४, २७) ।
आहोरण [आघोरण] हस्तिपक, महावत
(पात्र, स ३६६) ।
आहोहि वि [आधोवधिक] अवधि-
आहोहिय } ज्ञानी का एक भेद, नियत क्षेत्र
को अवधिज्ञान से देखनेवाला (भग, गम
६६) ।

इअ पाइअसदमहणवे आयाराइसदसंकलणो
विइओ तरगो समत्तो ।



इ

इ पुं [इ] १ प्राकृत वर्णमाला का तृतीय स्वर-
वर्ण (प्राभा) । २-३ वाक्यालङ्कार और पाद-
पूति में प्रयुक्त किया जाता अव्यय (कण्, हे
२, ११७, पट्) ।
इ देखो इइ (उवा) ।

इ सक [इ] १ जाना, गमन करना । २
जानना । एइ एति (कुमा) । वक. एंत
(कुमा) । सक इशा (पाचा) । हेइ. इत्तए,
एत्तए (कण्; कस) ।
इअहरा देखो इयरहा (प्राक ३७) ।

इइ अ [इति] इन अर्थों का सूचक अव्यय—
१ ममाति (पाचा) । २ अवधि, हद (विसे) ।
३ मान, परिमाण (पव ८४) । ४ निश्चय (निचू
२, १५) । ५ हेतु, कारण (ठा ३) । ६ एवम,
इस तरह, इस प्रकार (उन २२) । देखो इति ।

उक्करिसण न [उत्कर्षण] १ उत्कर्ष, बढाई, महत्व । २ स्थापन, आधान ,

'उम्मिल्लइ लायएण

पययच्छायाए सक्कय वयाए ।

सक्कयसक्काहक्करिसणएण

पययस्सवि पहावो ॥' (गउड) ।

उक्करिसिय वि [उत्कृष्ट] खोच निकाला हुआ, उन्मूलित (से १४, ३) ।

उक्कल देखो उक्कड (ठा ५, ३) ।

उक्कल अक [उत् + कल्] उत्कट रूप से बरतना । उक्कलइ (सुख २, ३७) ।

उक्कल वि [उत्कल] १ धर्म-रहित । २ न चोरी (पएह १, ३, टी) । २ पु देश-विशेष, जिसको आजकल 'उडिया' या 'उडीसा' कहते हैं (प्रवो ७८) ।

उक्कलव सक [उत् + लम्बय्] फांसी लटकाना । उक्कलवेमि (स ६३) ।

उक्कलवण न [उल्लम्बन] फांसी लटकाना । (स ३५८) ।

उक्कल देखो उक्कलिया (उत् ३६, १३८) ।

उक्कलिय वि [दे] उबला हुआ, गुजराती में 'उक्कलेबु', 'उसिणोदग त्रिदंडुक्कलिय' (विचार २९७) ।

उक्कलिया बी [उत्कलिका] १ लूता, मकड़ी एक प्रकार का कीटा जो जाल बनाता है, 'उक्कलियडे' (कप्प) । २ नीचे की तरफ बहनेवाला वायु (जी ७) । ३ छोटा समुदाय, समूह-विशेष (ठा ३, १) । ४ लहरी, तरंग (राज) । ५ ठहर-ठहर कर तरंग की तरह चलनेवाला वायु (आचा) ।

उक्कस सक [गम्] जाना, गमन करना । उक्कसइ (हे ४, १६२, कुमा) । प्रयो उक्कसावेइ । वक्क उक्कसावत (निबु १०) । उक्कस देखो ओकस । वक्क, उक्कसमाण (कस) । हेक्क उक्कसित्तए (आचा २, ३, १, १५) ।

उक्कस देखो उक्कुस (कुमा) ।

उक्कस देखो उक्कस्स = उत्कर्ष (सूअ १, १, ४, १२), 'तवस्ती अइक्कसो' (दस ५, २, ४२) ।

उक्कसण न [उत्कर्षण] १ अभिमान करना

(सूअ १, १३) । २ ऊँचा जाना । ३ निवर्तन, निवृत्ति । ४ प्रेरणा (राज) ।

उक्कसाइ वि [उत्कसायिन] सत्कागदि के लिए उत्कण्ठित (उत्ता ३) ।

उक्कसाइ वि [उत्कपायिन] प्रबल कपाय-वाला (उत्त १५) ।

उक्कस्स अक [अप+कृप्] १ हास प्राप्त होना, हीन होना । २ फिसलना, गिरना, पैर रपटने से गिर जाना । वक्क, उक्कस्समाण (ठा ५) ।

उक्कस्स पु [उत्कर्षे] १ गर्व, अभिमान (सूअ १, १, ४, २) । २ अतिशय, उत्कृष्टता (भवि) ।

उक्कस्स वि [उत्कर्षयन्] १ उत्कृष्ट, ज्यादा से ज्यादा, 'उक्कस्सठिइयाए' (ठा १, १,), 'उक्कस्सा उदीरणया' (कम्मप १६६) । २ अभिमान, गर्विष्ठ (सूअ १, १) ।

उक्का बी [उल्का] १ लूका, आकाश से जो एक प्रकार का अगार सा गिरता है (भोष ३१० भा, जी ६) । २ छिन्न-मूल दिग्दाह (आचू) । ३ अग्नि-पिण्ड (ठा ८) । ४ आकाश-बहि (दस ४) । 'मुह पुं [मुख] १ अन्तर्द्वीप-विशेष । २ उसके निवासी लोक (ठा ४, २) । 'वाय पु [पात] तारा का गिरना, लूका गिरना । (भग ३, ६) ।

उक्का बी [दे] कूप-तुला (दे १, ८७) ।

उक्काम सक [उत् + क्रामय्] दूर करना, पीछे हटाना, 'उक्कामयंति जीव धम्माओ तेण ते कामा' (दसनि २—पत्र ८७) ।

उक्कारिया देखो उक्करिया (पएण ११, भास ७) ।

उक्कालिय वि [उत्कालिक] वह शास्त्र, जिसका अमुक समय में ही पढ़ने का विधान न हो (ठा २, १) ।

उक्कास देखो उक्कस्स = उत्कर्ष (भग १२, ५) ।

उक्कास वि [दे] उत्कृष्ट, ज्यादा से ज्यादा (पड्) ।

उक्कासिअ वि [दे] उत्थित, उठा हुआ (दे १, ११४) ।

उक्किट्ट वि [उत्कृष्ट] १ ज्यादा (पव—गा १५) । २ पुन. हमली आदि के पत्तों का

समूह (दस ५, १, ३४) । ३ लगातार दो दिन का उपवास (सवोष ५८) ।

उक्किट्ट वि [उत्कृष्ट] १ उत्कृष्ट, उत्तम (हे १, १२८, द २६) । २ फल का शस्त्र द्वारा किया हुआ टुकड़ा (दस ५, १, ३४) ।

उक्किट्टि बी [उत्कृष्टि] हर्षध्वनि, आनन्द की आवाज (भोष, भग २, १) । देखो उक्कट्टि ।

उक्किण वि [उत्कीर्ण] १ खोदित, खोदा हुआ (अभि १८२) । २ नट (आचू २) ।

उक्कित्त वि [उत्कृत्त] कटा हुआ (मे ५, ५१) ।

उक्कित्तण न [उत्कीर्त्तन] १ कथन (पउम ११८, ६३) । २ प्रशंसा, श्लाघा (चउ १) ।

उक्कित्तिय वि [उत्कीर्त्तित] कथित, कहा हुआ (सुज्ज २० टी) ।

उक्किन्न वि [उत्कीर्ण] १ चर्चित, उपनिप्त, 'चदणोक्किन्नणायशरीरे' (तंडु २६) । २ खोदा हुआ (दसनि २, १७) ।

उक्किर सक [उत् + कृ] खोदना, पत्थर आदि पर अक्षर वगैरह का शस्त्र से लिखना । उक्किरइ (पि ४७७) ।

उक्किरणग न [उत्करणक] अक्षत आदि से बढाना, वधावा, वर्धपन, 'पुप्फारुहणगाइ उक्किरणगाइ' । पूयं च चेइयाणं तेवि सरज्जेसु कारितं' (धर्मवि ४६) ।

उक्किरिय देखो उक्करिअ = उत्कीर्ण (आ १४, सुपा ५१८) ।

उक्कीर देखो उक्किर । उक्कीरसि (अणु) । वक्क उक्कीरमाण (अणु) ।

उक्कीरिअ देखो उक्करिअ = उत्कीर्ण (उप पु ३१५) ।

उक्कीलिय न [उत्कीलित] उत्तम क्रीडा (पउम ११५, ६) ।

उक्कीलिय वि [उत्कीलित] कीलक से नियंत्रित, 'उक्कीलित्तव परिभित्तव सुनुव्व भुक्कजीउव्व' (सुपा ४७५) ।

उक्कुचण न [उत्कुञ्चन] ऊँचे चढाना (सूअ २, २, ६२) ।

उक्कुड वि [दे] मत्त, उन्मत्त (दे १, ६१) ।

उक्कुक्कुर अक [उत् + स्था] उठना, खड़ा होना । उक्कुक्कुरइ (हे ४, १७, पड्) ।

द्वीप-विशेष । ४ न. विमान विशेष (इक) ।
 'याल देखो जाल (महा) । 'रह पु [रथ]
 विद्याधर वश के एक राजा का नाम (पउम
 ५, ४४) । 'राय पु [राज] इन्द्र (तित्य) ।
 'लट्टि ली [यष्टि] इन्द्र-ध्वज (गाया १,
 १) । 'लेहा ली [लेखा] राजा त्रिकसंयत
 की पत्नी (पउम ५, ५१) । 'वज्रा स्त्री
 [वज्रा] छन्द-विशेष का नाम, जिसके एक
 पाद मे ग्यारह अक्षर होते हैं (पिंग) । 'वसु
 ली [वसु] ब्रह्मराज की एक पत्नी (राज) ।
 'वाय पु [वात] एक माण्डलिक राजा
 (भवि) । 'वारण पु [वारण] इन्द्र का
 हाथी, ऐरावत (कुमा) । 'सम्म पु [शर्मन]
 स्वनाम-ख्यात एक ब्राह्मण (आवम) । 'साम-
 गिय पु [सामानिक] इन्द्र के समान ऋद्धि-
 वाला देव (महा) । 'सिरी ली [श्री] राजा
 ब्रह्मदत्त की एक पत्नी (राज) । 'सुअ पुं
 [सुत] इन्द्र का लडका, जयन्त (दे ६, १६) ।
 'सेना ली [सेना] १ इन्द्र का सैन्य । २
 एक महानदी (ठा ५, ३) । 'हणु देखो धणु
 (हे १, १८७) । 'उह न [युध] इन्द्रधनु
 (गाया १, १) । 'उहपभ पु [युधप्रभ]
 वानरद्वीप का एक राजा (पउम ६, ६६) ।
 'मअ पु [मय] राजा इन्द्रायुधप्रभ का
 पुत्र, वानरद्वीप का एक राजा (पउम ६, ६७) ।
 इद पुन [इन्द्र] एक देवविमान (देवेन्द्र १४१) ।
 इद वि [ऐन्द्र] १ इन्द्र-संबन्धी (गाया १,
 १) । २ न. संस्कृत का एक प्राचीन व्याकरण
 (आवम) ।

इदगाइ पुं [दे] साथ मे संलग्न रहनेवाले
 कीट-विशेष (दे १, ८१) ।

इदगि पु [दे] बर्फ, हिम (दे १, ८०) ।
 इदगिधूम न [दे] बर्फ, हिम (दे १, ८०) ।
 इदड्डलअ पु [दे] इन्द्र का उत्थापन (दे १,
 ८२) ।

इदमह वि [दे] १ कुमारी मे उत्पन्न । २ न.
 कुमारी, यौवन (दे १, ८१) ।

इदमहकामुअ पुं [दे- इन्द्रमहकामुअ]
 कुत्ता, श्वान (दे १, ८२, पात्र) ।

इंदा ली [इन्द्रा] १ एक महानदी (ठा ५, ३) ।
 २ धरणेन्द्र की एक अग्र-महिषी (गाया २) ।

इदा ली [ऐन्द्री] पूर्व-दिशा (ठा १०) ।

इदाणी ली [इन्द्राणी] १ इन्द्र की पत्नी (सुर
 १, १७०) । २ एक राज-पत्नी (पउम ६,
 २१६) ।

इंदासणि पु [इन्द्राशनि] एक नरक-स्थान
 (देवेन्द्र २६) ।

इदिंदिर पु [इन्दिन्दिर] भ्रमर, भमरा, भौरा
 (पात्र, दे १, ७६) ।

इदिय पुन [इन्द्रिय] १ आत्मा का चिह्न, ज्ञान
 के साधन-भूत इन्द्रिय—श्रोत्र, चक्षु, घ्राण,
 जिह्वा, त्वक् और मन, 'त तारिसं नो पयलेति
 इदिया' (दसचू १, १९, ठा ६) । २ अग्न,
 शरीर के अवयव, 'नो निगगथे इत्थीणं इदियाइ
 मणोहराइ मणोरमाइ आलोइत्ता निज्झाइत्ता
 भवइ' (उत्त १६) । 'अवाय पुं [पाय] इन्द्रियो
 द्वारा होनेवाला वस्तु का निश्चयात्मक ज्ञान-विशेष
 (पण १५) । 'ओगाहणा ली [प्राग्रहणा]
 इन्द्रियो द्वारा उत्पन्न होनेवाला ज्ञान-विशेष
 (पण १५) । 'जय पुं [जय] १ इन्द्रियो
 का निग्रह, इन्द्रियो को वश मे रखना, 'अजि-
 इदिहं चरण, कट्ट व घुणेहि कीरइ असार ।
 तो वम्मत्थीहि वड्ड, जइमव्व इदियजयम्मि'
 (इदि ४) । २ तपो-विशेष (पव २७०) । 'ट्टाण
 न [स्थान] इन्द्रियो का उपादान कारण,
 जैसे श्रोत्रेन्द्रिय का आकाश, चक्षु का तेज वगैरह
 (सूत्र १, १) । 'णिव्यत्तणा ली [निर्वर्त्तना]
 इन्द्रियो के आकार की निष्पत्ति (पण १५) ।
 'णाण न [ज्ञान] इन्द्रिय-द्वारा उत्पन्न ज्ञान,
 प्रत्यक्ष ज्ञान (वव १०) । 'त्थ पु [र्थ]
 इन्द्रिय से जानने योग्य वस्तु, रूप-रस-गन्ध
 वगैरह (ठा ६) । 'पज्जत्ति ली [पर्याप्ति]
 शक्ति-विशेष, जिसके द्वारा जीव धातुओं के
 रूप मे बदले हुये आहार को इन्द्रियो के रूप मे
 परिणत करता है (पण १) । 'विजय पु
 [विजय] देखो जय (पचा १८) । 'विसय
 पु [विषय] देखो त्थ (उत्त ५) ।
 इदिय न [इन्द्रिय] लिंग, पुरुष-चिह्न (धर्मस
 ६८१) ।
 इंदियाल देखो इद-जाल (सुपा ११७, महा) ।
 इदियाल १ देखो इद-जालि, 'तुह कोउयत्थ-
 इदियाल १ मित्थं विहिय मे खयरइदियालेण'
 (सुपा २४२), 'जह एस इदियाली, दंसइ
 खणनस्सराइ रुवाई' (सुपा २४३) ।

इदियालीअ देखो इंद-जालिअ, 'न भवामि
 अहं खयरो नरपुगव । ईदियालीओ' (सुपा
 २४३) ।

इदिर पु [इन्दिर] भ्रमर, भमरा, भौरा-
 'भंकारमुहरिदिराइ' (विक्र २६) ।

इदिरा ली [इन्दिरा] लक्ष्मी (सम्मत्त २२६) ।
 इंदोवर न [इन्दीवर] कमल, पद्म (पउम १०,
 ३६) ।

इंदु पुं [इन्दु] चन्द्र, चन्द्रमा (पात्र) ।
 इदुत्तरवडिसग न [इन्द्रोत्तरावतसक] देव-
 विमान-विशेष (सम ३७) ।

इदुर पुं ली [उन्दुर] चूहा, मूषक (नाट) ।
 इदोक्कन न [इन्दुप्पान्त] विमान-विशेष (सम
 ३७) ।

इदोव देखो इद-गोव (पात्र, दे १, ७६) ।
 इदोवत्त पु [दे] इन्द्रगोप, कीट-विशेष (दे १,
 ८१) ।

इद्र देखो इद = इन्द्र (पि २६८) ।
 इध न [चिह्न] निशानी, चिह्न (हे १, १७७-
 २, ५०, कुमा) ।

इधन न [इन्धन] १ ईधन, जलावन, लकड़ी
 वगैरह दाह्य-वस्तु (कुमा) । २ अन्न-विशेष
 (पउम ७१, ६४) । ३ उद्दीपन, उत्तेजन (उत्त
 १४) । ४ पलाल, पुआल, तृण वगैरह, जिससे
 फल पकाये जाते हैं (निचू १५) । 'साला ली
 [शाला] वह घर, जिसमे जलावन रक्खे
 जाते हैं (निचू १६) ।

इधिय वि [इन्धित] उद्दीपित, प्रज्वलित (वृह
 ४) ।

इक न [दे] प्रवेश, पैठ, 'इकमप्पए पवेसण'
 (विसे ३४८३) ।

इक देखो एक (कुमा, सुपा ३७७, द ४०,
 पात्र, प्रासू १०, कस, सुर १०, २१२, आ
 १०, द २१, रयण २, आ ६, पउम ११,
 ३२) ।

इकड पुं [इकड] तृण-विशेष (पण २, ३,
 पण १) ।

इकड वि [ऐकड] इकड तृण का बना हुआ
 (आचा २, २, ३, १४) ।

इक्षण वि [दे] चोर, चुरानेवाला (दे १, ८०),
 'वाहुलयामूलेसु रइयाओ जणमणेक्कणाओ उ ।
 वाहुसरियाउ तीसे' (स ७६) ।

उक्खंद पुं [अवस्कन्द] १ घेरा डालना ।

२ छल मे शत्रु-सैन्य को मारना (पएह १, २) ।

उक्खम पु [उत्तम्भ] अवलम्ब, सहारा (सथा) ।

उक्खभिय देखो उत्थंभिय (भवि) ।

उक्खभिय न [औत्तम्भिक] अवलम्ब, सहारा (राज) ।

उक्खडमड्डा अ [दे] पुन पुन, बारंबार, 'उक्खडमड्डति वा भुजो भुजोति वा पुणो पुणोति वा एगट्ठा' (वव १) ।

उक्खण सक [उत् + खन्] उखाडना, उच्छेदन करना, काटना । उक्खगादि (पएह १, १) । सक उक्खणिऊण (नीचू १) । कमं उक्खम्मति (पि ५४०) । कवक्क उक्खम्मत्त (से ७, २८) । क उक्खम्मिअव्व (से १०, २६) ।

उक्खण सक [दे] खांडना, मुसल वगैरह से ब्रीहि आदि का छिलका दूर करना (दे १, ११५) ।

उक्खण वि [दे] अवकीर्ण, चूर्णित (पड्) । उक्खणण न [उत्खनन] उन्मूलन, उत्पादन (वएह १, १) ।

उक्खणण न [दे] खांडना, निस्तुपीकरण (दे १, ११५ टी) ।

उक्खणिअ न [दे] खरिडत, निस्तुपीकृत (दे १, ११५) ।

उक्खत्त देखो उक्खय (पि ६०, १६३, ५६६) ।

उक्खम्म देखो उक्खण = उत् + खन् ।

उक्खय वि [उत्खात] १ उखाडा हुआ, उन्मूलित (गाया १, ७, हे १, ६७, षड्, महा) । २ खुला हुआ, उद्घाटित, 'एत्यन्तरम्म पत्तो, सुदाढविज्जाहरो तहि भवणे । उक्खयखग्गा दिट्ठा, ज्जुयारा तेणवि दुवारे' (सुवा ४००) ।

उक्खल } देखो उऊखल (हे २, ६०, सूअ उक्खलमा } १, ४, २, १२) ।

उक्खलिय वि [दे उत्खण्डित] उन्मूलित, उत्पाटित (से ६, २६) ।

उक्खलिया } स्त्री [दे] थाली, पात्र-विशेष उक्खली } (दे १, ८८), 'उक्खलिया थाली जा साधुणिमित्त सा आहाकम्मिया' (निचू १) ।

उक्खा स्त्री [ऊखा] स्थाली, भाजन-विशेष (आचा २, १, १) ।

उक्खाइद (शौ) वि [उत्खातित] उद्घृत (उतर ६७) ।

उक्खाय देखो उक्खय (हे १, ६७, गा २७३) ।

उक्खाल सक [उत् + खन्, खाल्य] उखाडना, उन्मूलन करना । संक उक्खल-इत्ता (रभा) ।

उक्खण देखो उक्खण = उत् + खन् । उक्ख-णमि (भवि) । सक. उक्खणिवि (अप) (भवि) ।

उक्खणण वि [दे] १ अवकीर्ण, चूर्णित, चूर्णित । २ आच्छन्न, गुप्त । ३ पारवं में शिथिल, एक तरफ से ढीला (दे १, १३०) ।

उक्खत्त } वि [उत्क्षिप्त] १ फेंका हुआ । उक्खत्तय } २ ऊँचा उढाया हुआ (पाअ) । ३ ऊँचा किया हुआ (गाया १, १) । ४ उन्मूलित, उत्पाटित (राज) । ५ बाहर निकाला हुआ (पएह २, १) । ६ उत्थित (पिंग) । ७ न गेय-विशेष (राय, ठा ४, ४) । चरय वि [चरक] पाक पात्र से बाहर निकाले हुए भोजन को ही ग्रहण करने का नियमवाला (साधु) (पएह २, १) ।

उक्खत्त देखो उक्खव = उत् + क्षिप् । उक्खय वि [उत्क्षित] सिक्त, सींचा हुआ; 'चदणोक्खियगायसरीरे' (सूअ २, २, ५५, कप्पू) ।

उक्खल सक [दे] उखाडना । प्रयो, हेक 'उक्खल्लविउ माढत्तो थूमो' (ती ७) ।

उक्खव सक [उप + क्षिप्] स्थापन करना, 'सुयस्स य भगवओ चेक नाम उक्ख-विस्सामो' (स १६२) ।

उक्खव सक [उत् + क्षिप्] १ फेंकना । २ ऊँचा फेंकना । ३ उढाना । ४ बाहर करना । ५ काटना । ६ उठाना । उक्खवैइ (सूक ५६) । वक्क. 'पाएवि उक्खवती न लज्जति णट्ठिया सुणेवत्था' (बृह ३) । सक. उक्खविउ; उक्खप्प (पि ५७५, आचा २, २, ३) । कवक्क. उक्खप्पत्त, उक्ख-प्पमाण (से ६, ३५, पएह १, ४), उच्छिप्पत्त (से २, १३) ।

उक्खवण न [उत्क्षेपण] १ फेंकना, दूर करना । २ वि. दूर करनेवाला (कुमा) ।

उक्खवणा स्त्री [उत्क्षेपणा] बाहर करना, दूर करना (बृह १) ।

उक्खविय देखो उक्खत्त (सुर २, १८०) ।

उक्खुंड पु [दे] १ उल्मुक, शलाक, मशाल । २ समूह । ३ वज्र का एक अंश, अवचल (दे १, १२६) ।

उक्खुड सक [तुड्] तोडना, टुकड़ा करना । उक्खुडइ (हे ४, ११६) ।

उक्खुडिअ वि [तुडित] १ खरिडत, छिन्न, भिन्न (कुमा, से ४, २१, सुपा २६२) । २ व्यय किया हुआ, खर्च किया हुआ; 'एत्तियकाला इएहि, उक्खुडिय

सालिमाइय नाउं ।

तुह जोगग तो सहसा,

पुणो पुणो कुट्टिय हिययं' (सुपा १५) ।

उक्खुत्त वि [दे. उत्कृत्त] काटा हुआ, 'रण्णु दुरदंतुक्खुत्तविसंवलिय तिलच्छेत्त' (गा ७६६) ।

उक्खुम्भ अक [उत् + क्षुम्] क्षुब्ध होना । उक्खुम्भइ (प्राक ७५) ।

उक्खुरुहुंचिअ वि [दे] उत्क्षिप्त, फेंका हुआ (दे १, ४) ।

उक्खुलप सक [दे] खुजवाना । सक. उक्खु-लंपिय (आचा २, १, ६, २) ।

उक्खुहिअ वि [उत्क्षुब्ध] क्षुब्ध, क्षोभ-प्राप्त (से ७, १६) ।

उक्खेव पुं [उत्क्षेप] १ उत्पादन, उन्मूलन (औप) । २ ऊँचा करना (गड्ड) । ३ जो उठाया जाय वह, 'उक्खेवे निक्खेवे महल्ल-भाणम्मि' (पिंड ५७०) ।

उक्खेव पुं [उपक्षेप] उपोद्घात, भूमिका (उवा, विपा १, २, ३, ४) ।

उक्खेवग वि [उत्क्षेपक] १ ऊँचा फेंकने-वाला । २ पु एक जाति का पखा, व्यजन-विशेष (पएह २, ५) ।

उक्खेवण न [उत्क्षेपण] १ फेंकना (पउम ३७, ५०) । २ उन्मूलन, उत्पादन (सूअ २, १) ।

इष्टाल न [इष्टाल] ईंट का टुकड़ा (दस ५, १, ६५)।

इष्टु वि [इष्ट] १ अभिलपित, अभिप्रेत, वालिष्ठ (विपा १, १; सुपा ३७०)। २ पूजित, सत्कृत (श्रीप)। ३ आगमोक्त, सिद्धान्त से अविरुद्ध (उप ८८२)।

इष्टु न [इष्ट] १ स्वाम्युपगत, स्व-सिद्धान्त (धर्मसं ५१९)। २ न. तपो-विशेष, निर्विकृति-तप (सम्बोध ५८)। ३ यागक्रिया (स ७१३)।

इष्टि स्त्री [इष्टि] १ इच्छा, अभिलाषा, चाह (सुपा २४६)। २ याग-विशेष (अभि २२७)।

°इष्टि स्त्री [इष्टि] स्त्रीचाव, स्त्रीचना (गा १८)।

इडा स्त्री [इडा] शरीर के बाएँ भाग में स्थित नाडी (कुमा)।

इडुर न [दे] गाढी (श्रीप ४७६)।

इडुरग न [दे] रसोई ढकने का बड़ा पात्र इडुरय (राय १४०)।

इडुरिया स्त्री [दे] मिष्टान्न-विशेष, एक प्रकार की मिठाई (सुपा ४८५)।

इड्ड वि [इड्ड] ऋद्धि-सम्पन्न (भग)।

इड्डि स्त्री [इड्डि] १ वैभव, ऐश्वर्य, सम्पत्ति (सुर ३, १७)। २ लब्धि, शक्ति, सामर्थ्य (उत्त ३)। ३ पदवी (ठा ३, ४)। °गौरव न [°गौरव] सम्पत्ति या पदवी आदि प्राप्त होने पर अभिमान और प्राप्त न होने पर उसकी लालसा (सम २, ठा ३, ४)। °पन्न वि [°पन्न] ऋद्धिशाली (पण ११, सुपा ३६०)। °म, °मत वि [°मत] ऋद्धिवाला (निचू १, ठा ६)।

इड्डिसय वि [दे] याचक-विशेष, माँगन की एक जाति (भग ६, ३३ टी)।

इणं } म [एतत्] यह (दे १, ७६)।

°इण देखो दिण्ण (से ४, ३५)।

°इण देखो किण्ण (से ८, ७१)।

इण्ह न [चिह्] चिह्न, निशान (से १, १२, पड्)।

°इण्हा स्त्री [इण्हा] इण्हा, प्यास, सूखा (गा ६३)।

इण्हि अ [इदानीम्] इस समय, इस वक्त (दे १, ७६, पात्र)।

इतरेतरासय पु [इतरेतराश्रय] तर्कशास्त्र-प्रसिद्ध एक दोष, परस्पर एक दूसरे की अपेक्षा (धर्मसं ११५८)।

इति देखो इह (पि १८)। °हास पुं [°हास] पूर्ववृत्तान्त, अतीतकाल की घटनाओं का विवरण, पुरावृत्त (कप्प)। २ पुराणशास्त्र (भग)।

इत्तए देखो इ सक।

इत्तर वि [इत्तर] १ अल्प, थोड़ा (अणु)। २ अल्प-कालिक, थोड़े समय के लिए जो किया जाता हो वह (ठा ६)। ३ थोड़े समय तक रहनेवाला (आ १६)। °परिगहा स्त्री [°परिगहा] थोड़े समय के लिए रखी हुई वेश्या, रखैल, रखात आदि (आव ६)।

°परिगहिया स्त्री [°परिगृहीता] देखो °परिगहा (आव ६)।

इत्तरिय वि [इत्तरिक] ऊपर देखो (निचू २, आचा; उवा, पंचा १०)।

इत्तरिय देखो इयर (सूम २, २)।

इत्तरी स्त्री [इत्तरी] थोड़े काल के लिए रखी हुई वेश्या आदि (पंचा १)।

इत्तहे (अप) अ [अत्र] यहा पर (कुमा)।

इत्ताहे म [इदानीम्] इस समय, इस वक्त, अथुना (पात्र)।

इत्ति देखो इड (कुमा)।

इत्तिय वि [इयत्, एतावत्] इतना (हे २, १५६, कुमा; प्रासू १३८ पड्)।

इत्तिरिय वि [इत्तरिक] अल्पकालिक, जो थोड़े समय के लिए किया जाता हो (स ४६, विसे १२६५)।

इत्तिल देखो इत्तिय (हे २, १५६)।

इत्तो देखो इओ (आ १७)।

इत्तोअ देखो इओअ (आ १४)।

इत्तोप्प [दे] यहाँ से लेकर, इत प्रभृति (पात्र)।

इत्थ अ [अत्र] यहाँ, इसमें (कप्प, कुमा, प्रासू १४१)।

इत्थ अ [इत्थम्] इस तरह, इस प्रकार (पण २)। °थ वि [°स्थ] नियत आकार-वाला, नियमित (जोव १)।

इत्थ अ [अत्र] यहाँ, इसमें (कप्प, कुमा, प्रासू १४१)।

इत्थ अ [इत्थम्] इस तरह, इस प्रकार (पण २)। °थ वि [°स्थ] नियत आकार-वाला, नियमित (जोव १)।

इत्थ अ [अत्र] यहाँ, इसमें (कप्प, कुमा, प्रासू १४१)।

इत्थ अ [इत्थम्] इस तरह, इस प्रकार (पण २)। °थ वि [°स्थ] नियत आकार-वाला, नियमित (जोव १)।

इत्थ अ [इत्थम्] इस तरह, इस प्रकार (पण २)। °थ वि [°स्थ] नियत आकार-वाला, नियमित (जोव १)।

इत्थंय वि [इत्थंस्थ] इस तरह रहा हुआ (दस ६, ४, ७)।

इत्थत्थ पु [इत्थत्थं] वह अर्थ (भग)।

इत्थत्थ पुं [इत्थत्थं] स्त्री-विषय (पि १६२)।

इत्थयं देखो इत्थ (आ १२)।

इत्थि स्त्री [स्त्री] महिला, नारी, 'इत्थीणि वा पुरिसाणि वा' (आचा २, ११, ३)।

इत्थि स्त्री [स्त्री] जनाना, औरत, महिला (सूत्र २, २, हे २, १३०)। °कल्य

स्त्री [°कल्य] स्त्री के गुण, स्त्री को सीखने योग्य कला (ज २)। °कहा स्त्री [°कथा] स्त्री-विषयक

वार्तालाप (ठा ४)। °गपुसग पुन [°नपु-सक] एक प्रकार का नपुसक (निचू १)।

°णाम न [°नामन्] कर्म-विशेष, जिसके उदय से स्त्रीत्व की प्राप्ति होती है (राया १, ८)। °परिसह पु [°परिपह] ब्रह्मचर्य

(भग ८, ८)। °विप्पजह वि [°विप्रजह] १ स्त्री का परित्याग करनेवाला। २ पु मुनि,

साधु (उत्त ८)। °वेद, °वेय पुं [°वेद] १ स्त्री को पुरुष संग की इच्छा। २ कर्म-विशेष,

जिसके उदय से स्त्री को पुरुष के साथ भोग करने की इच्छा होती है (भग, पण २३)।

इत्थेण वि [स्त्रैण] स्त्रियों का समूह, स्त्री-जन, 'लब्धसि किं न महतो दीणाओ मारिसित्थेणा' (उप ७२८ टी)।

इदार्णि देखो इयार्णि (आचा)।

इदाणि (शौ) देखो इयार्णि (प्राक् ८७)।

इदाणी } देखो इदार्णि (संक्षि १६)।

इदिवित्त (शौ) न [इतिवृत्त] इतिहास (मोह १२८)।

इदुर न [दे] घान्य रखने का एक तरह का पात्र (अणु १५१)।

इदुद पुं [दे] भौंरा, मधुकर (दे १, ७६)।

इद्विगधूम न [दे] तुहिन, हिम (पड्)।

इद्वि देखो इड्डि (पड्)।

इध (शौ) देखो इह (हे ४, २६८)।

इध पुं [इधय] धनी, आश्रय (पात्र)।

इध पुं [दे] वणिक्, व्यापारी (१, ७६)।

इध पुं [इध] हाथी, हस्ती (ज २, कुमा)।

इधपाल पुं [इधपाल] महावत (सम्मत १५७)।

इध स [इधम्] यह (हे ३, ७२)।

उग्गाल पु [उद्गार] विनिगंम, बाहर निकलना (वव १) ।

उग्गाह सक [उद् + ग्रह] ग्रहण करना, 'मायणावत्थाई पमजइ, पमजइत्ता भायणाइ उग्गाहेइ' (उवा) । सक. उग्गाहेत्ता जेणेव समण भगवं महावीरे तेणेव उवागच्छइ' (उवा) ।

उग्गाह सक [अव + गाह] अवगाहन करना, 'उग्गाहेत्ति नाणाविहाओ चिगिच्छा-सहियाओ' (स १७) ।

उग्गाह सक [उद् + ग्राह्य] १ तगादा करना । २ ऊँचे से चलना । उग्गाहइ (प्राकृ ७२) ।

उग्गाह पु देखो उग्गाहा (पिंग) ।

उग्गाहण न [उद्ग्राहण] तगादा, दी हुई चीज की माँग (सुपा ५७८) ।

उग्गाहणिआ स्त्री [उद्ग्राहणिका] ऊपर देखो, 'उज्जाणपालयाणं पासम्मि गग्गो तथा सोवि । उग्गाहणियाहेउ' (सुपा ६३२) ।

उग्गाहणी स्त्री [उद्ग्राहणी] ऊपर देखो (द्र ६) ।

उग्गाहा स्त्री [उद्गाथा] छन्द-विशेष (पिंग) ।

उग्गाहिअ वि [दे उद्ग्राहित] १ गृहीत, लिया हुआ । २ उत्क्षिप्त, फेंका हुआ । ३ प्रवर्तित (दे १, १३७) । ४ उच्चालित, ऊँचे में चलाया हुआ (पात्र म २१३) ।

उग्गाहिम वि [अवगाहिम] तनी हुई वस्तु । (पगह २, ५) ।

उग्गिण्ण } वि [उद्गीर्ण] १ उक्त, कथित उग्गिन्न } (भवि) । २ वान्त, उद्गीर्ण (राया १, १) । ३ उठाया हुआ, ऊपर किया हुआ ।

'उग्गिन्नखगमवल अवलोइय

नरवईवि विम्हइओ ।

चिनेइ अहो घट्टा, मज्झ वहट्टा

इह पविट्ठा' (सुर १६, १४७) ।

'निह्य । निर्यविणीवह-

कलकमलिणोव्व रे तुमं जाओ ।

उग्गिन्नखगपसरतकतिसा-

मलियसव्वगो' (सुपा ५३८) ।

उग्गिर देखो उग्गाल । उग्गिरेइ (मुद्रा १२१) ।

वक्क उग्गिरत (काल) ।

उग्गिरण न [उद्गरण] १ वान्ति, वमन, कय । २ उक्ति, कथन ।

'माणसिणोवि अवमाणवचणा

ते परस्स न करंति ।

सुहदुक्खुगिरणत्थं, साहू

उयहिच्च गभीरा' (उव) ।

उग्गाल सक [उद् + गृ] १ कहना, बोलना ।

२ डकार करना । ३ उलटी करना, वमन

करना । ४ उठाना । वक्क, 'अग्गिजालुग्गिलंत

वयण' (राया १, ८) । सक. उग्गिलित्ता

(कस), उग्गिलेत्ता (नि ०) ।

उग्गिलिअ देखो उग्गिण्ण (पात्र) ।

उग्गीय वि [उद्गीत] १ उच्च स्वर से गाया

हुआ (दे १, १६३) । २ न संगीत गीत, गान

(से १, ६५) ।

उग्गीयमाण देखो उग्गा ।

उग्गीर देखो उग्गिर । वक्क 'खग्ग उग्गीरंतो

इत्थिवहत्थं, हयासलोयाण' (सुपा १५८) ।

उग्गीरिअ देखो उग्गिण्ण, 'उग्गीरिओ ममो-

वरि, जमजीहादीहतरलकरवालो' (सुपा १५८) ।

उग्गीव वि [उद्गीव] उत्कण्ठित, उत्सुक

(कुमा) । १ कय वि [कृत] उत्कण्ठित

किया हुआ (उप १०३१ टी) ।

उग्गुलुंछिआ स्त्री [दे] हृदय-रस का उछलना,

भावोद्रेक (दे १, ११८) ।

उग्गोव सक [उद् + गोपय] १ खोजना ।

२ प्रकट करना । ३ विमृश करना । वक्क

'इत्थी वा पुरिमे वा सुविण्णं एग मह

किण्हसुत्तग वा जाव सुक्किल्लमुत्तग वा

पाममाणे पासति उग्गोवेमाणे उग्गोवेइ'

(भग १६, ६) ।

उग्गोवणा स्त्री [उद्गोपना] १ खोज,

गवेषणा,

'एसण गणेरणा लग्गणा

य उग्गोवणा य बोद्धवा ।

एण उ एसणाए नामा

एणट्ठिया होति' (पिड ७३) ।

२ देखो उग्गम, उग्गम उग्गोवण मग्गणा

य एणट्ठियाणि एयाणि' (पिड ८५) ।

उग्गोविय वि [उद्गोपित] विमोहित, भ्रान्त,

'उग्गोवियमिति अप्पाण मन्तति' (भग १६, ६) ।

उग्घ देखो उव । उग्घइ (पड) ।

उग्घट्ठि स्त्री [दे] अवतस, शिरो-भूषण (दे उग्घट्ठी १, ९०) ।

उग्घड सक [उद् + घाटय] खोलना (प्राप्ता) ।

उग्घड अक [उद् + घट] खुलना ।

उग्घडइ (मिरि ५०४) । उग्घडति (धर्म

वि ७६) ।

उग्घडिअ वि [उद्घाटित] खुला हुआ (धर्म

वि ७७) ।

उग्घडिअ वि उद्घाटित] खुला हुआ । २

छिन्न, नष्ट किया हुआ (से ११, १३०) ।

उग्घर वि [उद्गृह] गृह-त्यागी, जिसने

घरवार छोड़ कर सन्यास लिया हो वह,

साधु,

'चंदोव्व कालपक्खे परिहाईएए पए पमायपरो ।

तह उग्घरविग्घरनिरंगणो वि नय इच्छिय लहइ'

(राया १, १० टी) ।

उग्घवे देखो अग्घव । उग्घवइ (हे ४, १६९

टि, राज) ।

उग्घसिय न [अवघर्षित] घर्षण (राय ६७) ।

उग्घाअ पु [दे] १ समूह, सघात (दे १,

१२६, स ७७, ४३६, गडड, से ५, ३४) ।

२ स्थपुट, विपमोन्नत प्रदेश (दे १, १२६) ।

उग्घाअ पु [उद्घात] १ आरम्भ, प्रारम्भ

'उग्घाओ आरभो' (पात्र) । २ प्रतिघात ठोकर

लगना । ३ लघुकरण, भाग-पात (ठा ३) ।

४ उपोद्घात, भूमिका (विसे १३४८) । ५

ह्रास (ठा ५ २) । ६ न प्रायश्चित्त-विशेष ।

७. निश्चय सूत्र का एक अंश, जिसमें उक्त

प्रायश्चित्त का वर्णन है, 'उग्घायमणुग्घाय

आरोवण तिविहमो निसीह तु' (आव ३) ।

उग्घाअ सक [उद् + घातय] विनाश

करना । उग्घाएड (उत्त २६, ६) ।

उग्घाइम वि [उद्घातिम] १ लघु, छोटा ।

२ न लघु प्रायश्चित्त (ठा २) ।

उग्घाइय वि [उद्घातित] १ विनाशित (ठा

१०) । २ न लघु प्रायश्चित्त (ठा ५) ।

उग्घाइय वि [उद्घातित] लघु प्रायश्चित्त

वाला (वव १) ।

उग्घाइय न [उद्घातिक] लघु प्रायश्चित्त

(कस) ।

इसिणय वि [इसिनक] इसिन-नामक अनार्य देश मे उत्पन्न (एगाया १, १, इक) ।
 इसिया की [इषिका] सलाई, शलाका (सुभ २, १) ।
 इसु पुं [इषु] वारण (पात्र) ।
 इस्स वि [एष्यत्] १ भविष्य काल, 'भुत्तं संपयमिस्स' (विसे) । २ होनेवाला, भावी; 'सभरइ भूय मिस्स' (विसे ५०८) ।
 इस्सर देखो ईसर (प्राप्र, पि ८७, ठा २, ३) ।
 इस्सरिय देखो ईसरिय (पउम ५, २७०, सम १३, प्रासू ७५) ।
 इस्ता की [इष्या] द्रोह, असूया (उत्त ३४, २३) ।

इस्सास पुं [इष्वास] १ धनुष, कामुक, शरासन । २ वारण-क्षेपक, तीरंदाज (प्राह) ।
 इह पु [इभ] हाथी, हस्ती (प्राह) ।
 इह अ. [इदानीम्] इस समय, अधुना (प्राह ८०) ।
 इह अ [इह] यहाँ, इस जगह (आचा, स्वप्न २२) । °पारलोइय वि [ऐहिकपारलौकिक] इस और परलोक से सम्बन्ध रखनेवाला (स १५६) । °भविय वि [ऐहभविक] इस जन्म सबन्धी (भग) । °लोअ, °लोग पु [°लोक] वर्तमान जन्म, मनुष्य-लोक (ठा ३, प्रासू ७५, १५३) । °लोय, °लोइय वि [ऐहलौकिक] इस जन्म-सबन्धी, वर्तमान जन्म-

सबन्धी (कप्प, सुपा ४०८, परह १, ३, स ४८१), 'इहलोयपारलोइयसुहाइ सव्वाइ तेण दिन्नाइ' (स १५५) ।

इहअ } ऊपर देखो (पह्, पउम २१, ७) ।
 इहइ }
 इहइ अ [इदानीम्] हाल, संप्रति, इस समय (पात्र) ।
 इह } देखो इह = इह (औप, आ १४) ।
 इहय }
 इहरहा } देखो इयर-हा (उप ८६०, भत्त ३६, इहरा } हे २, २१२) ।
 इहरा देखो इहइ = इदानीम् (गठड) ।
 इहामिय देखो ईहामिय (पि ५४) ।
 इहि अ [इह] यहाँ (रभा) ।

॥ इम सिरिपाइअसद्महणवो इमाराइसद्मसकलणो
 णाम तइमो तरंगो समत्तो ॥

इ

ई पु [ई] प्राकृत वर्णमाला का चतुर्थ वर्ण, स्वर विशेष (प्राभा) ।
 ईअ अ [एनत्, इदम्] यह (पि ४२६, ४२६) ।
 ईअ अ [इति] इस तरह, 'ईय मणोविसईण' (विसे ५१४) ।
 ईइ पुंकी [ईति] धान्य वगैरह को नुकसान पहुँचानेवाला नुहा आदि प्राणि-गण (औप) ।
 ईडस वि [ईट्टश] ऐसा, इस तरह का, इसके समान (महा, स १५) ।
 ईजिह अक [ध्रा] रुम होना । ईजिहइ (प्राह ६५) ।
 'ईह देखो कीड = कीट; 'दुइंसएणियईहसारि-न्य' (गा ३०) ।
 ईडा की [ईडा] स्तुति (चेइय ८६८) ।
 ईण वि [ईन] प्रार्थी, अमिलापी; 'आहाकडं चैव निकाममीणे' (सुअ १, १०, ८) ।
 'ईण देखो दीण (से ८, ६१) ।
 ईति देखो ईह (सम ६०) ।

ईदिस देखो ईइस (स १४०, अमि १८२, कप्प) ।
 ईर सक [ईर्] १ प्रेरणा करना । २ कहना । ३ गमन करना । ४ फेंकना । ईरेइ (विसे १०६०), कृ 'ठाएगमणगुणजोगजुण-जुगतर्निवातियाए दिट्ठीए ईरियव्व' (परह २, १) । भूक. ईरिद (शौ) (अमि ३०) ।
 ईरिय वि [ईरित] प्रेरित (विसे ३१४४) ।
 ईरिया देखो इरिया (सम १०, ओघ ७४८, सुर २, १०४) ।
 ईरिस देखो ईइस (कुमा, स्वप्न ५५) ।
 ईस न [दे] खूँटा, खोला, कीलक (दे १, ८४) ।
 ईस सक [ईर्ष] ईर्ष्या करना, द्वेष करना । ईसाप्रति (गा २४०) ।
 ईस पु [ईश] देखो ईसर = ईश्वर (कुमा, पउम १०२, ५८) । २ न ऐश्वर्य, प्रभुता (परण २) ।
 ईस देखो ईसि (कप्प) ।

ईसअ पुं [दे] रोक, हरिण की एक जाति (दे १, ८४) ।
 ईसत्थ न [इष्वस्त्रास्त्र] धनुर्वेद, वारण-विद्या (औप, परह १, ५), 'विस्त्राणनाण-कुसला ईसत्थकयस्समा बीरा' (पउम ६८, ४०, पि ११७) ।
 ईसर पुं [दे] मन्मथ, कामदेव (दे १, ८४) ।
 ईसर पु [ईश्वर] १ परमेश्वर, प्रभु (हे १, ८४) । २ महादेव, शिव (पउम १०६, १२) । ३ स्वामी, पति (कुमा) । ४ नायक, मुखिया (विपा १, १) । ५ देवताओं का एक आवास, वेलघर-देवों का आवास विशेष (सम ७३) । ६ एक पाताल कलश (ठा ४, २) । ७ आढ्य, घनी (सुपा ४३६) । ८ ऐश्वर्य-शाली, वैभवी (जीव ३) । ९ युवराज । १० मारण्डलिक, सामन्त-राजा । ११ मन्त्री (अणु) । १२ इन्द्र विशेष, भूतवादि-निकाय का इन्द्र (ठा २, ३) । १३ पाताल-विशेष (ठा ४) । १४ एक राजा का नाम । १५ एक जैन मुनि (महान्ति ६) । १६ यक्ष-विशेष (पव २७) ।

उच्चर सक [उत् + चर] १ पार जाना, उत्तीर्ण होना । २ कहना, बोलना । ३ श्रक ममर्थ होना पहुँच सकना । ४ बाहर निकलना । उच्चर (सूक्त ४६), 'मूलदेवेण य निरुविद्याई पामाई जाव दिट्ट निसियासि-हृथेहि वेढियमताणयं मग्गुसेहि । चितियं च, एाहमेएसि उच्चरामि, कायव्वं च मए चइरनिज्जायण, निराउहो सपय, ता न पोरिमस्सावसरोत्ति चितिय भणिय' (महा) । चक्र 'भरिउच्चरतपरिअपिअसभरणपिसुणो वराईए । परिवहो विअ दुक्खस्स वहइ एाअणद्विओ बाहो' (गा ३७७) ।

उच्चरण न [उच्चरण] कथन, उच्चारण, 'सिद्ध-समकव सोहि वय-उच्चरणाइ काऊण' (सुपा ३१७) ।

उच्चरिय वि [उच्चरित] १ उत्तीर्ण, पार-प्राप्त, 'तीए हृत्थिसभमुच्चरियाए उज्झिऊण भय, जीवियदाययोत्ति मुणिएऊण तुम साहिलासं पलोइओ' (महा) । २ उच्चरित, कथित उक्त (विम १०८३) ।

उच्चलण न [उच्चलन] उन्मर्दन, उत्पीडन (पाअ) ।

उच्चलिय वि [उच्चलित] चलित, गत (भवि) । उच्चल वि [दे] १ अध्यासित, आरूढ । २ विदारित, छिन्न (पड्) ।

उच्चल सक [उत् + चल] १ चलना, जाना । २ समीप में आना ।

उच्चलिय वि [उच्चलित] १ गत, गया हुआ । २ समीप में आया हुआ, 'जिणभवणदुवारद्वियउच्चलिय-फुल्लमालिओहस्स ।

पुष्काइ गेएहतो, अतो विहिण पविट्ठो ह' (सुर ३, ७४) ।

उच्चा अ [उच्चैस्] १ ऊँचा, 'तो तेण दुट्ट-हरिणा उचा हरिऊण लोय-पच्चक्ख । उव-णीओ सो रणणे' (महा) । २ उत्तम, श्रेष्ठ (ठा २, १) । 'गोत्त, 'गोय न [गोत्र] १ उत्तम गोत्र, श्रेष्ठ-वश । २ कर्म विशेष, जिसके प्रभाव से जीव उत्तम माने-जाते कुल में उत्पन्न होता है (ठा २, ४, आचा) । 'वय

न [व्रत] १ महाव्रत (उत्त १) । २ वि. महाव्रतधारी (उत्त १५) ।

उच्चाअ वि [दे] १ श्रान्त, यका हुआ (श्रोष ५१८) । २ पु श्रालिगन, परिस्म (गुपा ३३२) ।

उच्चाइय वि [दे उच्चाजित] उत्थापित, उठाया हुआ, 'उच्चाइया नगरा' (म २०६) ।

उच्चाग पुं [उच्चाग] हिमाचल पर्वत । 'य वि [ज] हिमाचल मे उत्पन्न, 'उच्चागयठाण-लट्टसठिय' (कप्प) ।

उच्चाड वि [दे] त्रिपुल, विशाल (दे १, ६७) ।

उच्चाड सक [दे] १ रोकना, निवारना । २ श्रक श्रफमोस करना, दिलगीर होना (हे २, १६३ टि) ।

उच्चाडण न [उच्चाटन] १ एक स्थान में दूसरे स्थान में उठा ले आना, मन्-स्थान से श्रु करना । २ मन्-विशेष, जिसके प्रभाव में वस्तु अपने स्थान से उठायी जा सकती है, 'उच्चाडणयभणमोहणाइ सव्वपि मह करणय व' (सुपा ५६६) ।

उच्चाडणी श्री [उच्चाटनी] त्रिया-विशेष जिसके द्वारा वस्तु अपने स्थान में उठायी जा सकती है (सुर १३, ८१) ।

उच्चाडिर वि [दे] १ रोकनेवाला, निवारण करनेवाला । २ श्रफमोस करनेवाला, दिलगीर, 'कि उल्लावेंतीए, उअ जूरतीए कि नु मीआए । उच्चाडिरीए वेव्वेत्ति, तीए भणिअ न विम्हरिमो' (हे २, १६३) ।

उच्चार सक [उत् + चारय] १ बोलना, उच्चारण करना । २ मलोत्सर्ग करना, पाखाना जाना । उच्चारै (उवा) । वक्र उच्चारयन (स १०७) । उच्चारैमाग (कप्प, एाया १, १) । कृ उच्चारैयव्व (उवा) ।

उच्चार पु [उच्चार] १ उच्चारण । २ विष्ठा, मलोत्सर्ग (सम १०, उवा, मुपा ६११) ।

उच्चार वि [दे] विमल, स्वच्छ (दे १, ६७) । उच्चारण न [उच्चारण] कथन 'इसि हस्स-पच्चक्खल्लुच्चारणद्धाए' (श्रीप) ।

उच्चारिअ वि [दे] गृहीत, उपात्त (दे १, ११४) ।

उच्चारिअ वि [उच्चारित] १ कथित, उक्त । २ पाखाना गया हुआ (राज) ।

उच्चाळ सक [उत् + चालय] १ ऊँचा फेंकना । २ दूर करना । संक्र. 'उच्चाळइय निहाणमु अदुवा आसणाओ खलइमु' (आचा) ।

उच्चाळइय वि [उच्चाळयित] दूर करनेवाला त्यागनेवाला, 'जं जाणेजा उच्चाळइय तं जाणेजा दुरानइय' (आचा) ।

उच्चाळिय वि [उच्चाळित] उठाया हुआ, ऊँचा किया हुआ, उत्थापित, 'उच्चाळियम्मि पाए इरियाममियस्स संकमट्टाए' (श्रोष ७४८, दर्मान ४५) ।

उच्चाव सक [उच्चय] ऊँचा करना, उठाना । सक उच्चावइत्ता, 'दोवि पाए उच्चावइत्ता सव्वओ समत नममिन्नोएज' (परण १७) ।

उच्चावय वि [उच्चावच] १ ऊँचा और नीचा (एाया, १, १, परण ३४) । २ उत्तम और अधम (भग १५) । ३ अनुकूल और प्रतिकूल (भग १, ६) । ४ असमञ्जस, अव्यवस्थित (एाया १, १६) । ५ विविध, नाना-विध, 'उच्चावयाहि तेज्जाहि तवम्सी भिक्खु पामव' (उत्त ८) । ६ उत्कृष्टतर, विशेष उत्तम, 'तए ए तस्म आणदम्स समणोवानगम्म उच्चावएहि मीणव्वयगुणवेरमणपञ्चक्खाणपोम-होववानेहि अण्ण भावेमाणस्स' (उवा, श्रीप) ।

उच्चाविय वि [उच्चित] ऊँचा किया हुआ (वज्जा १३२) ।

उच्चिट्ट श्रक [उन् + स्था] खड़ा होना । उच्चिट्ट (काल) ।

उच्चिडिम वि [दे] मर्यादा-रहित, निर्लज्ज, 'उच्चिडिम मुक्कमजाय' (पाअ) ।

उच्चिण सक [उत् + चि] फूल वगैरह को तोड़ कर एकत्रित करना, इकट्ठा करना । उच्चि-णइ (हे ४, २४१) । वक्र. उच्चिणत (भवि) । उच्चिण ग न [उच्चयन] अवचयन, एकत्रीकरण (सुपा ४६६) ।

उच्चिणिय वि [उच्चित] इकट्ठा किया हुआ, अवचित (पाअ) ।

उच्चिणिर वि [उच्चैत्] फूल वगैरह को चुनने-वाला (कुमा) ।

उअ वि [उदञ्च्] उत्तर, उत्तर दिशा मे स्थित । °महिहर पुं [°महिधर] हिमाचल-पर्वत (गउड) ।

उअअ न [उदक] पानी, जल (गा ५३, से ६, ८८) ।

उअअ देखो उदय (से १०, ३१) ।

उअअ न [उदर] पेट, उदर (से ६, ८८) ।

उअअ वि [दे] ऋजु, सरल, सीधा (दे १, ८८) ।

उअअद (शौ) देखो उवगय (नाट) ।

उअआरअ वि [उपकारक] उपकार करने-वाला (गा ५०) ।

उअआर वि [उपकारिन्] ऊपर देखो (विक २५) ।

उअइव्य वि [उपजीव्य] आश्रय करने योग्य, सेवा करने योग्य (से ६, ६) ।

उअऊह सक [उप + गूह्] आलिंगन करना । सक्र. उअऊहेऊण (पि ५८६) ।

उअएस देखो उवएस (गा १०१) ।

उअंचण न [उदञ्चन] १ ऊँचा फँकना । २ ढकने का पात्र, आच्छादक पात्र (दे ४, ११) ।

उअचिद (शौ) वि [उदञ्चित] १ ऊँचा ठगया हुआ, ऊँचा फँका हुआ (नाट) ।

उअत पुं [उदन्त] हकीकत, वृत्तान्त, समाचार (पात्र; प्रामा) ।

उअकिद (शौ) वि [उपकृत] जिसपर उपकार किया गया हो वह (पि ६४) ।

उअक्किअ वि [दे] पुरस्कृत, आगे किया हुआ (दे १, १०७) ।

उअगअ देखो उवगय (गा ६४४) ।

उअचिन्त वि [दे] अपगत, निवृत्त (दे १, १०८) ।

उअजीवि वि [उपजीविन्] आश्रित (अभि १८६) ।

उअज्जाअ देखो उवज्जाय (नाट) ।

उअट्टी स्त्री [दे] नीवी, स्त्री के कटि-वस्त्र की नावी; 'उअट्टी उच्चो नीवी' (पात्र) ।

उअट्टिअ देखो उवट्टिय (प्राप) ।

उअणिअ } देखो उवणीय (प्राक् ६) ।
उअणीअ }

उअण्णास देखो उवण्णास (नाट) ।

उअत्तत देखो उव्वट्ट = उद + वृत् ।

उअत्थाण देखो उवट्ठाण (नाट) ।

उअत्थिअ देखो उवट्ठिय (से ११, ७८) ।

उअदिट्ठ देखो उवइट्ठ (नाट) ।

उअमुत्त देखो उवमुत्त (रभा) ।

उअभोग देखो उवभोग (नाट) ।

उअमिज्जंत वक्क [उपसीयमान] जिसकी

तुलना की जाती हो वह (काप्र ८६६) ।

उअर न [उदर] पेट (कुमा) ।

उअरिं } देखो उवरि (गा ६४, से ८,
उअरि } ७५) ।

उअरी स्त्री [दे] शाकिनी, देवी-विशेष (दे १, ६८) ।

उअरुज्ज देखो उवरुज्ज । उअरुज्जदि (शौ) (नाट) ।

उअरोअ } देखो उवरोह (प्राप; नाट) ।
उअरोह }

उअलद्ध देखो उवलद्ध (नाट) ।

उअविट्ठअ न [औपविष्टक] आसन (प्राक् १०) ।

उअविय वि [दे] उच्छिष्ट, 'इहरा मे णिसि-भत्त उअवियं चैव गुरुमादी' (वृह १) ।

उअसप्प देखो उवसप्प । उअसप्प (अभि ५१) ।

उअसम } देखो उवसम्म = उप + शम् ।
उअसम्म } उअसमइ, उवसम्मइ (प्राक् ६६)

उअह अ [दे] देखो, देखिए (दे १, ६८, प्राप्र) ।

उअहस देखो उवहस । उअहसइ (प्राक् ३४) ।

उअहार देखो उवहार (नाट) ।

उअहारी स्त्री [दे] दोग्घी, दोहनेवाली स्त्री (दे १, १०८) ।

उअहि पु [उदधि] १ समुद्र, सागर (गउड) ।

२ स्वनाम-ख्यात एक विद्याधर राजकुमार (पउम ५, १६६) । ३ काल परिमाण, साग-रोपम (सुर २, १३६) । ४ स्वनाम-ख्यात एक जैन मुनि (पउम २०, ११७) । देखो उदधि ।

उअहि देखो उवहि = उपधि (पञ्च ६) ।

उअहुज्जत देखो उवमुज ।

उअहोअ देखो उवभोग (प्रवो ३०, नाट) ।

उआअ देखो उवाय (नाट) ।

उआअण देखो उवायण (माल ४६) ।

उआर देखो उराल (सुपा ६०७, कण्णु) ।

उआर देखो उवयार (पड्, गउड) ।

उआलभ देखो उवालभ = उपा + लभ् । कृ.

उआलभणिज्ज (नाट) ।

उआलंभ देखो उवालंभ = उपालम्भ (गा २०१) ।

उआलभ देखो उआलभ = उपा + लभ् ।

उआलभेमि (त्रि ८२) ।

उआलि स्त्री [दे] श्रवतस, शिरोभूषण (दे १, ६८) ।

उआस वि [उदास] नीचे देखो (पिंग) ।

उआस देखो उवास = उपा + आस् । कवकृ-उआसिज्जमाण (हास्य १४०) ।

उआसीण वि [उदासीन] १ उदासी, दिल-गीर । २ मध्यस्थ, तटस्थ (स ५४६, नाट) ।

उआहरण देखो उदाहरण (मन ३) ।

उइ सक [उप + इ] समीप जाना । उएइ, उएउ (पि ४६३) ।

उइ अक [उद् + इ] उदित होना । उएइ (रंभा) । वक्क उइयत (रभा) ।

उइ देखो उउ, 'अन्नोवि हूतु उइयो सरिसा परं ते' (रंभा) । °राय पु [°राज] वसन्त ऋतु (रभा) ।

उइअ वि [उदित] १ उदय प्राप्त, उदगत (सुपा १२७) । २ उक्त, कथित (विसे २३३, ८४६) । °परकम पु [°पराक्रम] इक्ष्वाकु-वंश के एक राजा का नाम (पउम ५, ६) ।

उइअ वि [उचित] योग्य, लायक (से ८, १०३) ।

उइतण न [दे] उत्तरीय वस्त्र, चादर (दे १, १०३, कुमा) ।

उइद पुं [उपेन्द्र] इन्द्र का छोटा भाई, विष्णु का वामन अवतार, जो श्रद्धा के गर्भ से हुआ था (हे १, ६) ।

उइट्ठ वि [अपकृष्ट] हीन, सकुचित, 'आउसिय-अक्खच्चम्मउइट्ठगउदेस' (गाया १, ८) ।

उइण्ण देखो उदिण्ण (ठा ५, विसे ५०३) ।

उइण्ण वि [उदीच्य] उत्तर दिशा सम्बन्धी, उत्तर दिशा में उत्पन्न (आवम) ।

उइन्न देखो ओइण्ण (सम्मत्त ७७) ।

उइयत देखो उइ = उद् + इ ।

उईण देखो उदीण (राय) ।

उईर देखो उदीर, 'उईरइ अइपीड' (आ २७) । वक्क उईरत (पुफ १३) । सकृ-उईरइत्ता (सुम १, ६) ।

उच्छाय सक [अत्र + छादय्] आच्छादन करना, ढकना । संक्र उच्छादक (वेद्य ४८५) ।

उच्छायण वि [अवच्छादन] आच्छादक, ढकनेवाला (स ३२३) ।

उच्छायण वि [उच्छादन] नाशक (स ३२३, ५६३) ।

उच्छायणया स्त्री [उच्छादना] १ उच्छेद, उच्छायणा विनाश (भग १५) । २ व्यवच्छेद, व्यावृत्ति (राज) ।

उच्छार देखो उत्थार = आ + क्रप् (हे ४, १६० टी) ।

उच्छाल सक [उत् + शालय्] उछालना, ऊँचा फेंकना । वक्र. उच्छालिन (कुम्मा ४) ।

उच्छालण न [उच्छालन] उछालना, उत्क्षेपण (कुम्मा ५) ।

उच्छालिअ वि [उच्छालित] फेंका हुआ, उत्क्षिप्त (मुपा ६७) ।

उच्छास देखो ऊसास (मै ६८) ।

उच्छाह सक [उत् + साहय्] उत्साह दिलाना, उत्तेजित करना । उच्छाहइ (मुपा ३५२) ।

उच्छाह पु [उत्साह] १ उत्साह (ठा २, १) । २ दृढ उत्थम, स्थिर प्रयत्न (सुज २०) । ३ उत्कठा, उन्मुक्तता (चंद २०) । ४ पराक्रम, बल । ५ सामर्थ्य, शक्ति (आहू १, हे १, ११४, २, ४८, पउम २०, ११८) ।

उच्छाह पुं [दे] सूत का डोरा (दे १, ६२) । उच्छाहण न [उत्साहन] उत्तेजन, प्रोत्साहन (उप ५६७ टी) ।

उच्छाहिय वि [उत्साहित] प्रोत्साहित, उत्तेजित (पिंड) ।

उच्छिद सक [उत् + छिद्] उन्मूलन करना, उखाड़ना । संक्र उच्छिदिअ (सूक्त ४४) ।

उच्छिदण न [दे] उधार लेना, करजा लेना, सूद पर लेना (पिंड ३१७) ।

उच्छिंपग वि [अवच्छिम्पक] चोरों को खान-पान वगैरह की सहायता देनेवाला (परह १, ३) ।

उच्छिपण न [उत्क्षेपण] १ ऊपर फेंकना । २ बाहर निकालना (परह १, १) ।

उच्छिष्ट वि [उच्छिष्ट] बूठा, उच्छिष्ट (मुपा ११७, ३७५, प्रासू १५८) ।

उच्छिष्ट वि [उच्छिष्ट] अशिष्ट, असम्य (दस ३, १ टी) ।

उच्छिण वि [उच्छिन्न] उच्छिन्न, उन्मूलित (ठा ५) ।

उच्छित्त वि [दे] १ उत्क्षिप्त, फेंका हुआ । २ विक्षिप्त, पागल (दे १, १२४) ।

उच्छित्त वि [उत्क्षिप्त] फेंका हुआ (ले ५, ६१, पाथ) ।

उच्छित्त नेवो उट्टिय (मे २, १२, गउड) ।

उच्छित्त वि [उत्क्षिप्त] सींचा हुआ, सिक्त (दे १, १२३) ।

उच्छिन्न देखो उच्छिण (कप्प) ।

उच्छिप्पत देखो उत्क्षिप्त ।

उच्छिय वि [उच्छित] उन्नत, ऊँचा (राज) ।

उच्छिरण वि [दे] उच्छिष्ट, बूठा (पड्) ।

उच्छिल्ल न [दे] १ छिद्र, विवर (दे १, ६५) । २ वि अवजीर्ण (पड्) ।

उच्छु देखो इक्खु (पाथ, गा ६४१, पि १७७, ओष ७७१, दे १, ११७) । °जत न [°यत्र] ईख परेने का साचा (दे ६, ५१) ।

उच्छु पु [दे] पवन, वायु (दे १, ८५) ।

उच्छुअ वि [उत्सुक] उत्कण्ठित (दे २, २२) ।

उच्छुअ न [दे] डरते-डरते की हुई चोरी (दे १, ६५) ।

उच्छुअरण न [दे] ईख का खेत (दे १, ११७) ।

उच्छुआर वि [दे] सछन्न, ढका हुआ (दे १, ११५) ।

उच्छुडिअ वि [दे] १ बाण वगैरह से आहत । २ अपहत, छोना हुआ (दे १, १३५) ।

उच्छुग देखो उच्छुअ (सुर ८, ६१) । °भीय वि [°भीत] जो उत्कण्ठित हुआ हो (सुर २, २१४) ।

उच्छुच्छु वि [दे] दम, अभिमानी (दे १, ६६) ।

उच्छुण वि [उत्क्षुण] १ खण्डित, तोड़ा हुआ, 'उच्छुणं महिअं च निहलिय' (पाथ) । २ आक्रान्त,

'रइणावि अणुच्छुणा,
वीसत्थं मारुण वि अणालिद्धा ।
तिअसेहि वि परिहरिआ,
पवगमेहि मलिआ सुवेनुच्छया'
(सि १०, २) ।

उच्छुद्ध वि [दे] १ विक्षिप्त । २ पतित (ओष २२० भा) ।

उच्छुभ सक [अप + क्षिप्] आक्रोश करना, गाली देना । उच्छुभह (भग १५) ।

उच्छुभण न [उत्क्षेपण] ऊँचा फेंकना (पव ७३ टी) ।

उच्छुर वि [दे] अविनयवर स्यायी (दे १, ६०) ।

उच्छुरण न [दे] १ ईख का खेत । २ ईख, ऊँख (दे १, ११७) ।

उच्छुल्ल पु [दे] १ अनुवाद । २ खेद, उद्वेग (दे १, १३१) ।

उच्छूढ वि [दे] आरुढ़, ऊपर बैठा हुआ (पड्) ।

उच्छूढ वि [उत्क्षिप्त] १ त्यक्त, उष्णित (णाया १, १ उव) । २ मुपित, चुराया हुआ (राज) । ३ निष्कासित, बाहर निकाला हुआ (ओप) ।

उच्छूढ वि [उत्क्षुब्ध] ऊपर देखो, 'उच्छूढ-सरीरघरा अन्नो जीवो सरीरमन्न ति' (उव पि ६६) ।

उच्छूर देखो उल्लूर = तुड (हे ४, ११६ टि) । उच्छूल देखो उच्चूल (उव) ।

उच्छेअ पुं [उच्छेद] १ नाश, उन्मूलन, 'एगनुच्छेअम्मि वि सुहदुक्खविअप्पणमजुत्त' (सम्म १८) । २ व्यवच्छेद, व्यावृत्ति, 'उच्छेओ सुत्तयाण ववच्छेज्जि वुत्त भवति' (नीचू १) ।

उच्छेयण न [उच्छेदन] विनाश, उन्मूलन, 'चित्तेह एस समओ एयस्सुच्छेयणे मज्झ' (मुपा ३३५) ।

उच्छेर अक [उत् + श्रि] १ ऊँचा होना, उन्नत होना । २ अधिक होना, अतिरिक्त होना । वक्र उच्छेरत (काप्र १६४) ।

उच्छेव पु [उत्क्षेप] १ ऊँचा करना, उठाना । २ फेंकना (वव २, ४) ।

उच्छेव पुं [उत्क्षेप] प्रक्षेप (वव ४) ।

उक्कंठिय } वि [उत्कण्ठित] उत्सुक (गा
उक्कंठिर } ५४२, सुर ३, ८६, पउम ११,
उक्कंठुल्य } ११८, वज्जा ६०) ।

उक्कंड वि [उत्कण्डित] खूब छटा हुआ,
विशेष करिडत (पिंड १७१) ।

उक्कंडय सक [उत्कण्टय्] पुलकित करना,
'दियसेवि भूमसंभावणाए उक्कटयति अंगाड'
(गउड) ।

उक्कंडय वि [उत्कण्टक] पुलकित, रोमांचित
(गउड) ।

उक्कंडा स्त्री [दे] धूस, रिशवत (दे १,
६२) ।

उक्कंडिअ वि [दे] १ आरोपित । २ खरिडत
(पड्) ।

उक्कन वि [उत्क्रान्त] ऊंचा गया हुआ
(भवि) ।

उक्कति } स्त्री [दे] देखो उक्कदा (दे १,
उक्कंती } ८७) ।

उक्कद वि [दे] विप्रलब्ध, ठगा हुआ, वञ्चित
(पड्) ।

उक्कंदल वि [उत्कन्दल] अकुरित (गउड) ।

उक्कदि } स्त्री [दे] कूपतुला (दे १, ८७) ।
उक्कदी }

उक्कप अक [उत् + कम्प्] कांपना,
हिलना ।

उक्कंप पुं [उत्कम्प] कम्प, चलन (सण,
गा ७३५) ।

उक्कपिय वि [उत्कम्पित] १ चञ्चल किया
हुआ (राज) । २ न कम्प, हिलन,
'णीसामुक्कपिअपुनइएहि जाणति एण्चिउं
घएणा । अम्हारिसीहि दिट्ठे, पिअम्मि
अप्पावि वोसरिओ' (गा ३६१) ।

उक्कपिय वि [दे] धवलित, सफेद किया
हुआ (कम्प) ।

उक्कवण न [दे. अवकम्वन] काठ पर काठ
के हाते से घर की छत बांधना, घर का
संस्कार-विशेष (बृह १) ।

उक्कविय वि [दे. अवकम्बित] काठ से
बांधा हुआ (राज) ।

उक्कच्छ वि [उत्कच्छ] स्फुट, स्पष्ट (पिंग)

उक्कच्छा स्त्री [उत्कच्छा] छन्द-विशेष
(पिंग) ।

उक्कच्छिआ स्त्री [औपकक्षिकी] जैन
शास्त्रियों को पहनने का वस्त्र-विशेष
(श्रौष ६७७) ।

उक्कच्छ वि [दे] अनवस्थित, चञ्चल (पड्) ।

उक्कट्टि स्त्री [अपकृष्टि] अपकर्ष, हानि
(वृत् १) ।

उक्कट्टि स्त्री [उत्कृष्टि] उत्कर्ष, 'महता
उक्कट्टिसीहणादकलकलखेण' (सुज्ज १९—
पत्र २७८) । देखो उक्कट्टि ।

उक्कड वि [उत्कट] १ तीव्र, प्रचण्ड, प्रखर
(णदि, महा) । २ विशाल, विस्तीर्ण (कम्प,
सुर १, १०६) । ३ प्रवल (उवा; सुर ६,
१७२) ।

उक्कड देखो दुक्कड (उप ६४६) ।

उक्कडिय वि [दे] तोड़ा हुआ, छिन्न (पाअ) ।

उक्कडिय देखो उक्कुडुय (कस) ।

उक्कड्ड सक [उत् + कर्षय्] उत्कृष्ट करना,
बढ़ाना । उक्कड्डए (कम्म ५, ६८ टी) ।

उक्कड्डग पुं [अपकर्षक] १ चोर की एक-
जाति—जो घर से घन आदि ले जाते हैं ।
२ जो चोरो को बुलाकर चोरी कराते हैं । ३
चोर की पीठ ठोकने वाले, चोर के सहायक
(पणह १, ३ टी) ।

उक्कड्डिय वि [उत्कर्षित] १ उत्पादित,
उठाया हुआ । २ एक स्थान से उठा कर
अन्यत्र स्थापित (पिंड ३६१) ।

उक्कण्ण वि [उत्कर्ण] सुनने के लिए उत्सुक
(से ६, १६) ।

उक्कत्त सक [उत् + कृत्] काटना, कतरना ।
वक्क उक्कत्तत (सुपा २१६) ।

उक्कत्त वि [उत्कृत्त] कटा हुआ, छिन्न
(विपा १, २) ।

उक्कत्तण न [उत्कर्त्तन] काट डालना, छेदन
(पुपफ ३८४) ।

उक्कत्तिय देखो उक्कत्त = उत्कृत्त (पउम
५६, २४) ।

उक्कत्थण न [उत्कत्थन] उखाड़ना (पणह
१, १) ।

उक्कप्प पु [उत्कल्प] शास्त्र-निषिद्ध आचरण
(पचभा) ।

उक्कनाह पुं [दे] उत्तम अश्व की एक जाति
(सम्मत्त २१६) ।

उक्कम सक [उत् + क्रम्] १ ऊंचा जाना ।
२ उलटे क्रम से रखना । वक्क उक्कमंत
(आवम) । सक्क उक्कमिऊणं (विसे
३५३१) ।

उक्कम पु [उत्क्रम] उलटा क्रम, विपरीत
क्रम (विसे २७१) ।

उक्कमण न [उत्क्रमण] ऊर्ध्व गमन । २
बाहर जाना (समु १७२) ।

उक्कग्गि वि [उपक्रान्त] १ प्रारब्ध । २
क्षीण, 'अवभागमितम्मि वा दुहे, अहवा उक्कमिते
भवन्तीए । एगस्स गती य आगती, विदुम ता
सरण ए मन्तइ।' (सूअ १, २, ३, १७) ।

उक्कर सक [उत् + कृ] खोदना । कवक्क-
उक्करिउजमाण (आवम) ।

उक्कर पुं [उत्कर] १ समूह, सघात, 'सक्क-
खक्करसड्ढे' (सुपा ५१८) । २ कर-रहित,
राज-देय शुल्क से रहित (एयाया १, १) ।

उक्करड देखो उक्कर = उत्कर, 'कस्सावि
उत्तरीयं गहिकण कम्मो अ उक्करडो'
(सिरि ७६५) ।

उक्करड पु [दे] १ अशुचि राशि । २ जहाँ
मैला इकट्ठा किया जाता है वह स्थान (श्रा
२७, सुपा ३५५) ।

उक्करिअ वि [दे] १ विस्तीर्ण, आयात । २
आरोपित । ३ खरिडत (पड्) ।

उक्करिअ वि [उत्कीर्ण] खोदित, खोदा
हुआ, 'टक्ककरियव्व निच्चलनिहितलोयणा'
(महा) ।

उक्करिद (शौ) वि [उत्कृत] ऊंचा किया
हुआ (स्वप्न ३६) ।

उक्कारिया स्त्री [उत्करिका] जैसे एरण्ड के
बीज से उसका छिलका अलग होता है उस
तरह अलग होना, भेद-विशेष (भग ५, ४) ।

उक्कारस सक [उत् + कृप्] १ खोचना ।
२ गर्व करना, बड़ाई करना । वक्क उक्करिसंत
(से १४, ६) ।

उक्करिस देखो उक्कस्स = उत्कर्ष (उव-
विसे १७६६) ।

उज्जाणी स्त्री [औद्यानी] गोष्ठी, गोठ (सुपा ४८५)।

उज्जायण न [उद्यायन] गोधन-विशेष (सुज्ज १०, १ टी)।

उज्जाल सक [उत् + ज्वालय्] उज्ज्वल करना, विशेष निर्मल करना। सकृ. उज्जालिय (श्रावक ३७६)।

उज्जाल सक [उद् + ज्वालय्] १ उजाला करना। २ जलाना। सकृ. उज्जालिय, उज्जालित्ता (दस ५, आचा)।

उज्जालण न [उज्ज्वालयन्] जलाना (दस ५)।
उज्जालण न [उज्ज्वालयन्] उज्ज्वल करना (सिरि ६८०)।

उज्जालय वि [उज्ज्वालयन्] आग सुलगाने-वाला (सूत्र १, ७, ५)।

उज्जालिअ वि [उज्ज्वालयन्] जलाया हुआ, सुलगाया हुआ (मुर ६, ११७)।

उज्जायण न [उद्यापन] व्रत का समाप्ति-कार्य (प्राह)।

उज्जाविय वि [दे] विकसित (सण)।

उज्जित देखो उज्जयत (णाय १, १६),

‘उज्जितसेलसिहरे, दिक्खा

नाण निमोहिआ जस्स ।

त धम्मचक्कवट्ठि,

अरिदुत्तेमि नमसामि’ (पडि)।

उज्जीरिअ वि [दे] निर्भर्त्सित, अपमानित, तिरस्कृत (दे १, ११२)।

उज्जीवण न [उज्जीवन] १ पुनर्जीवन, जिलाना, ‘तस्मपभावो एसो कुमरस्सुज्जीवरो जाओ’ (सुपा ५०४)। २ उद्दीपन (सण)।

उज्जीविय वि [उज्जीवित] पुनर्जीवित, जिलाया हुआ (सुपा २७०)।

उज्जु वि [ऋजु] सरल, निष्कपट, सीधा (श्रीप, आचा)। °कड् वि [°कृत] १ निष्कपट तवस्वी (आचा, उत)। °कड् वि [°कृत] माया-रहित आचरणवाला (आचा)। °जड्, °जड्डु वि [°जड्] सरल किन्तु मूर्ख, तात्पर्य को नहीं समझनेवाला (पचा १६, उत २६)। °मइ स्त्री [°मति] १ मन पर्यंत ज्ञान का एक भेद, सामान्य मनोज्ञान, सामान्य रीति से दूसरों के मनोभाव

को जानना। २ वि. उक्त मनो-ज्ञानवाला (पएह २, १, श्रीप)। °वालिया स्त्री [°वालिका] नदी-विशेष, जिसके किनारे भगवान् महावीर को केवल-ज्ञान उत्पन्न हुआ था (कप्प, स ४३२)। °सुत्त पु [°सुत्र] वर्तमान वस्तु को ही माननेवाला नय-विशेष (ठा ७)। °सुय पु [°श्रुत] देखो पूर्वोक्त अर्थ, ‘पञ्चुप्पमग्गाही उज्जुमुओ णयविही मुणेअव्वो’ (अणु)। °हत्थ पु [°हस्त] दाहिना हाथ (श्रीप ५११)।

उज्जु पु [ऋजु] समय (सूत्र १, १३, ७)।
उज्जुअ वि [ऋजुक] ऊपर देखो (आचा, कुमा, गा १५६, ३५२)।

उज्जुआइअ वि [ऋजुकारित] सरल किया हुआ (से १३, २०)।

उज्जुग देखो उज्जुअ (पि ५७)।

उज्जुत्त वि [उद्युत्त] उन्मी, प्रयत्नशील (मुर ४, १५, पात्र)।

उज्जुरिअ वि [दे] १ क्षीण, नट। २ शुष्क, सूखा (दे १, ११२)।

उज्जुड वि [उद्-व्यूड] धारण किया हुआ (संघोष ५३)।

उज्जेणग पु [उज्जयनक] श्रावक-विशेष, एक उपासक का नाम (आचू ४)।

उज्जेणी देखो उज्जइणी (महा, काप्र ३३३)।
उज्जोअ सक [उद् + द्योतय्] प्रकाश करना, उद्योत करना। उज्जोएइ (महा)। वक्र उज्जोयत, उज्जोइत, उज्जोयमाण, उज्जो-एमाण (णाय १, १, सुपा ४७, मुर ८, ८७, सुपा २४२, जीव ३)।

उज्जोअ पु [उद्योग] प्रयत्न, उद्यम (पउम ३, १२६, सूक्त ३६ पुष्क २८, २६)।

उज्जोअ पु [उद्योत] १ प्रकाश, उजेल। °गर वि [°कर] प्रकाशक; ‘लोगस्स उज्जो-अगरे, धम्मतित्थयरे जिये’ (पडि, पात्र, हे १, १७७)। २ उद्योत का कारण-भूत कर्म-विशेष (सम ६७, कम्म १)। °त्थ न [°स्थ] शस्त्र-विशेष (पउम १२, १२८)।

उज्जोअग वि [उद्योतक] प्रकाशक, ‘सव्व जयुज्जयोगस्स’ (एदि)।

उज्जोअण न [उद्योतन] १ प्रकाशन, अव-भासन। २ वि प्रकाश करनेवाला (उप

७२८ टी)। ३ पुं. सूर्य, रवि। ४ एक प्रसिद्ध जैनाचार्य (गु ७, मार्घ ६२)।

उज्जोअय वि [उद्योतक] १ प्रकाशक। २ प्रभावक, उन्नति करनेवाला (उर ८, १२)।

उज्जोइत देखो उज्जोअ = उद् + द्योतय्।

उज्जोइय वि [उद्योतित] प्रकाशित (मम १५३, सुपा २०५)।

उज्जोमाण देखो उज्जोअ = उद् + द्योतय्।
उज्जोमिआ स्त्री [दे] रश्मि, रस्सी (दे १, ११५)।

उज्जोव देखो उज्जोअ = उद् + द्योतय्। वक्र-उज्जोवत, उज्जोवयत, उज्जोवैत, उज्जो-वैमाण (पउम २१, १५, स २०७, ६३१, ठा ८)।

उज्जोवण न [उद्योतन] प्रकाशन (स ६३१)।

उज्जोविय देखो उज्जोइय (कप्प, णाय १, १, पएह १, ४, पउम, १६०, स ३६)।

उज्जम सक [उज्जम्] त्याग करना, छोड़ देना। उज्जमइ (महा)। कवक. उज्जिमज्जमाण (उप २११ टी)। सकृ. उज्जिमअ, उज्जिमउं, उज्जिमऊण (प्रमि ६०, पि ५७६, राज)। हेक उज्जिमत्तए (णाय १, ८)। क उज्जिम-यव्व (उप ५६७ टी)।

उज्जम पुं [उज्जम, उद्ध्य] उपाध्याय, पाठक (विमे ३१६८)।

उज्जमअ } वि [उज्जमक] त्याग करनेवाला,
उज्जमग } छोड़नेवाला (सूत्र १, ३, उप १७६ टी)।

उज्जमण न [उज्जमन्] परित्याग (उप १७६ पृ ४०३, पउम १, ६०, श्रीप)।

उज्जमणया } स्त्री [उज्जमना] परित्याग (उप
उज्जमणा } ५६३, श्राव ४)।

उज्जमणिअ वि [दे] विक्रीत, बेचा हुआ। २ निम्नीकृत, नीचा किया हुआ (पड्)।

उज्जमणन न [दे] पलायन, भागना (दे १, १०३)।

उज्जमाण वि [दे] पलायित, भागा हुआ (पड्)।

उज्जमर पु [निर्भर] पर्वत से गिरनेवाला जल-प्रवाह, पहाड़ का झरना (णाय १, १, गउड, गा ६३६)। °वण्णी स्त्री [°पर्णी] उदक-पात, जल-प्रपात (निचू ५)।

उक्कुञ्ज अक [उत् + कुञ्ज] ऊँचा होकर नीचा होना । संकृ उक्कुञ्जिय (आचा) ।

उक्कुञ्जिय न [उत्कूजित] अव्यक्त शब्द (नीच) ।

उक्कुट्ट न [उत्कृष्ट] वनस्पति का कूटा हुआ चूर्ण (आचा, निचू १, ४) ।

उक्कुट्ट वि [उत्कृष्ट] ऊँचे स्वर से आकृष्ट (दे १, ४७) ।

उक्कुडुग } वि [उत्कुटुक] आसन-विशेष,
उक्कुडुय } निषद्या-विशेष (भग ७, ६, ओष १५२ भा, णाया १, १) । ओ उक्कुडुई (ठा ५ १) । °सणिय वि [°सन्निक] उत्कुटुक-ग्रामन से स्थित (ठा ५, १) ।

उक्कुइ अक [उत् + कूद्] कूदना, उछलना । उक्कुइइ (उत्त २७, ५) ।

उक्कुरुआ देखो उक्कुरुडिया (ती ११) ।

उक्कुरुड पु देखो उक्कुरुडी (कुप्र ५५) ।

उक्कुरुड पु [दे] राशि, ढेर (दे १, ११०) ।

उक्कुरुडिगा } ओ [दे] घूरा, कूड़ा डालने
उक्कुरुडिया } की जगह (उव ५६३ टी, विपा उक्कुरुडी १, १, णाया १, २, दे १, ११०) ।

उक्कुस सक [गम्] जाना, गमन करना । उक्कुसइ (हे ४, १६२) ।

उक्कुस वि [उत्कृष्ट] उत्तम, श्रेष्ठ (कुमा) ।

उक्कूडय न [उत्कूजित] अव्यक्त महा-ध्वनि (परह १, १) ।

उक्कूल वि [उत्कूल] १ सन्मार्ग से अष्ट करनेवाला । २ किनारे से बाहर का । ३ न. चोरी (परह १, ३) ।

उक्कूव अक [उत् + कूज्] अव्यक्त आवाज करना, चिल्लाना । वक्क. उक्कूवमाण (विपा १, ८, निर ३, १) ।

उक्केर पुं [उत्कर] १ समूह, राशि, ढेर (कुमा, महा) । २ करण-विशेष, कर्मों की स्थित्यादि को बढ़ाना (विसे २५१४) । ३ मिल्न, एरण्ड के बीज की तरह जो भलग किया गया हो वह (राज) ।

उक्केर पु [दे] उपहार, भेंट (दे १, ६६) ।

उक्केलविय वि [दे] उकेलाया हुआ, खुलवाया हुआ, 'राइणा उक्केलियाई चोल्ल-याई, निळवियाई समन्तमो, जाव दिट्ट

कत्यइ सुवण्णं, कत्यइ रुपयं, कत्यइ मणि-मोत्तियपवालाड' (महा) ।

उक्कोट्टिय वि [दे] अवरोध-रहित किया हुआ, घेरा उठाया हुआ (स ६३९) ।

उक्कोड न [दे] राज-कुल में दातव्य द्रव्य, राजा आदि को दिया जाता उपहार (वव १ टी) ।

उक्कोडा ओ [दे] घूस, रिशवत (दे १, ६२, परह १, ३, विपा १, १) ।

उक्कोडिय वि [दे] घूस लेकर कार्य करने-वाला, घुसखोर (णाया १, १, औप) ।

उक्कोडी ओ [दे] प्रतिशब्द, प्रतिध्वनि (दे १, ६४) ।

उक्कोय वि [उत्कोप] प्रखर, उत्कट (सण) ।

उक्कोयण देखो उक्कोवण (भवि) ।

उक्कोया ओ [उत्कोचा] १ घूस, रिशवत । २ मूर्ख को ठगने में प्रवृत्त घूतं पुरुष का, समीपस्थ विचक्षण पुरुष के भय से थोड़ी देर के लिए अपने कार्य को स्थगित करना (राज) ।

उक्कोल पु [दे] घाम, घूप, गरमो (दे १, ८७) ।

उक्कोवण न [उत्कोपन] उद्दीपन, उत्तेजन, 'मयणुक्कोवण' (भवि) ।

उक्कोविअ वि [उत्कोपित] अत्यंत क्रुद्ध किया हुआ (उप ५ ७८) ।

उक्कोस सक [उत् + कुश्] १ रोना, चिल्लाना । २ तिरस्कार करना । वक्क. उक्कोसंत (राज) ।

उक्कोस वि [उत्कर्ष] उत्कृष्ट, प्रधान, मुख्य (पंचा १, २) ।

उक्कोस पुं [उत्कर्ष] १ प्रकर्ष, अतिशय, 'उक्कोसजहलेणं अंतमुहुत्त चिय जियंति' (जी ३८, औप) । २ गर्व, अभिमान (सूय १, २, २, २६, सम ७१, ठा ४, ४—पत्र २७४) ।

उक्कोस वि [उत्कृष्ट] उत्कृष्ट, अधिक से अधिक, 'सुनेरइयाण ठिई उक्कोसा सागराणि तित्तीस' (जी ३६), 'कोसतिगं च मणुस्सा उक्कोससरीरमाणेण' (जी ३२), 'तमो वियड-तीमो पडिगाहितए, तं जहा—उक्कोसा, मज्झिमा, जहणणा' (ठा ३, उव) ।

उक्कोस पुं [उत्कोश] १ क्रूर, पक्षि-विशेष

(परह १, १) । २ वि जोर से चिल्लाने-वाला (राज) ।

उक्कोसण न [उत्कोशन] १ क्रन्दन । २ निर्मत्स्य, तिरस्कार,

'उक्कोसणतज्जणताडणाओ

अवमाणहीलणाओ य ।

मुण्णिणो मुण्णियपरमवा

दढप्पहारिव्व विसहति' (उव) ।

उक्कोसा ओ [उत्कोशा] कोशानामक एक प्रसिद्ध वेश्या (धर्म वि ६७) ।

उक्कोसिअ वि [उत्कोशित] भत्सित, तिरस्कृत, दुतकारा हुआ (उप ५ ७८) ।

उक्कोसिअ वि [उत्कर्षिन्] देखो उक्कोस = उत्कृष्ट (कप्प, भत्त ३७) ।

उक्कोसिअ पु [उत्कौशिक] १ गोत्र-विशेष का प्रवर्तक एक ऋषि । २ न. गोत्र-विशेष, 'थेरस्स ए अज्जवइरसेणस्स उक्कोपियगोत्तस्स (कप्प) ।

उक्कोसिअ वि [दे] पुरस्कृत, आगे किया हुआ (पड्) ।

उक्कोसिया ओ [उत्कृष्टि] उत्कर्ष, आधिक्य (भग) ।

उक्कोरस देखो उक्कोस = उत्कृष्ट (विसे ५८७) ।

उक्ख सक [उक्ष्] सीचना (सूय २, २, ५५) ।

उक्ख [उक्ष्] १ सवन्व (राज) । २ जैन साध्वियों के पहनने के वस्त्र-विशेष का एक भंश (बह १) ।

उक्ख देखो उच्छ = उक्षन् (पाय) ।

उक्खइअ वि [उत्खचित] व्याप्त, भरा हुआ (से १, ३३) ।

उक्खड सक [उत् + खण्डय्] तोड़ना, टुकड़ा करना । वक्क. उक्खडत (नाट) ।

उक्खड पुं [दे] १ सघात, समूह । २ स्थपुट, विषमोन्नत प्रदेश (दे १, १२६) ।

उक्खडण न [उत्खण्डन] उत्कर्तन, विच्छेदन (विक्र २८) ।

उक्खडिअ वि [उत्खण्डित] खण्डित, छिन्न (से ५, ४३) ।

उक्खडिअ वि [दे] आक्रान्त, दबाया हुआ (से १, ११२) ।

‘जमह दिया य राओ य, हुणामि महसप्पिसं ।
तेण मे उडओ दड्ढो, जाय सरणओ भय’
(निचू १) ।

उदाहिअ वि [दे] उत्क्षिप्त, फेंका हुआ
(पङ्) ।

उडिअ वि [दे] अन्विष्ट, खोजा हुआ (पङ्) ।

उडिउ पु [दे] उडिद, उरद, माप, वान्य-विशेष
(दे १, ६८) ।

उडु पु [उडु] एक देव-विमान (देवेन्द्र १३१) ।
°पुभ पुन [°प्रभ] उडु नामक विमान के
पूर्व तरफ स्थित एक देव-विमान (देवेन्द्र
१३८) । °मज्झ पुन [°मध्य] उडुविमान
के दक्षिण तरफ का एक देव विमान (देवेन्द्र
१३८) । °यावत्त पुन [°कावर्त] उडुविमान
के पश्चिम तरफ का एक देव-विमान (देवेन्द्र
१३८) । °सिद्ध पुन [°सृष्ट] उडुविमान के
उत्तर तरफ का एक देव विमान (देवेन्द्र
१३८) ।

उडु न [उडु] १ नक्षत्र (पात्र) । २ विमान-
विशेष (सम ६६) । °प, °व पु [°प] १
चन्द्र, चन्द्रमा (श्रौप, सुर १६, २४६) । २
जहाज, नौका (दे १, १२२) । ३ एक की
सख्या (सुर १६, २४६) । °वड पु [°पति]
चन्द्र (नम ३०, परह १, ४) । °वर पुं
[°वर] सूर्य (राज) ।

उडु देखो उउ (ठा २, ४, श्रौष १२३ भा) ।
उडु वरिजिया स्त्री [उडुम्बरीया] जैन मुनियो
की एक शाखा (कप्प) ।

उडुहिअ न [दे] १ विवाहिता स्त्री का कोप ।
२ वि उच्छिष्ट, बूठा (दे १, १३७) ।

उडुखल } पुन [उडुखल] उलूखल, उडूखल
उडूहल } (पिड ३६१, प्राकृ ७) ।

उडु पु [उडु] १ देश-विशेष, उत्कल, ओड,
ओड नामो से प्रसिद्ध देश, जिसको आजकल
उडीसा कहते हैं (स २८६) । २ इस देश का
निवासी, उडिया, सगजवण-वज्जर-गाय मुरु-
डोडु भडग—’ (परह १, १) ।

उडु वि [दे] कुंआ आदि को खोदनेवाला,
खनक (दे १, ८५) ।

उडुण पु [दे] १ वैल, सांड । २ वि दीर्घ,
लम्बा (दे १, १२३) ।

उडुस देखो उडस (उत ३६, १३८) ।

उडुस पुं [दे] खटमल, खटकीरा, उडिम (दे
१, ६६) ।

उडुहण पु [दे] चोर, डाकू (दे १, ६१) ।

उडुआ पुं [दे] उदगम, उदय, उडूव (दे १,
६१) ।

उडुण न [उडुयन] उडान, उडना, ‘भोगेवि
अहव धिप्पह, हत तइजम्मि उडुणे’ (सुर ८,
५२) ।

उडुण पु [दे] १ प्रतिशब्द, प्रतिव्वनि । २
कुरर, पक्षि-विशेष । ३ विष्ठा, पुरोप । ४
मनोरथ, अभिलाष । ५ वि गविष्ठ, अभिमानी
(दे १, १२८) ।

उडुआमर वि [उडुआमर] उडूट, प्रवल (कुप्र
१४५) ।

उडुआमर वि [उडुआमर] १ भय भीति । २
आडम्बरवाला, टोपटापवाला (पात्र) ।

उडुआमरिअ वि [उडुआमरिअ] भय-भीत किया
हुआ (कप्प) ।

उडुआव मक [उडु + डायय] उडाना ।
उडूवह (भवि) । वक्र. उडूवत (हे ४,
३५२) ।

उडुआवि [उडुआयक] उडानेवाला (पिड ४७१) ।

उडुआवण न [उडुआयन] १ उडाना, ‘मत्तजल-
वायमुडुवणेण जलकलुमण किमिम’ (कुमा) ।
२ आकर्षण, ‘हियउडुवणे’ (राया १, १४) ।

उडुआविअ वि [उडुआयित] उडायी हुआ (गा
११०, पिग) ।

उडुआविर वि [उडुआयि] उडानेवाला (वज्रा
६४) ।

उडुआस पुं [दे] सताप, परिताप (दे १, ६६) ।

उडुआह पुं [उडुआह] १ भयङ्कर दाह, जला
देना (उप २०८) । २ मालिन्य, निन्दा, उप-
घात (श्रौष २२१) ।

उडुआ वि [औडू] उडीसा देश का निवासी
(नाट) ।

उडुआ वि [दे] उत्क्षिप्त, फेंका हुआ (पङ्) ।

उडुआंत देखो उडू = उ + डी ।

उडुआहरण न [दे] छुरी पर रखे हुए फूल
को पांव की दो उँगलियों से लेते हुए चल
जाना; ‘छुरिअगमुक्कपुं धेतुअ पायंगुलीहि
उपपयण । तं उडुआहरण’

‘कुंमुम यत्रोहीय, धुरिकाग्राह्यावेन सगृह्य ।
पादान्निर्निगच्छति, तद्विज्ञातव्यमुडुआहरण’
(दे १, १२१) ।

उडुय वि [उडूयिअ] उडा हुआ, ‘तत्तडुय-
पस्विगुण्व पगे’ (वमंवि १३६) ।

उडुहिअ वि [दे] ऊपर फेंका हुआ (पात्र) ।

उडूी अक [उडू + डी] उडना । उडूट, उडूटिनि
(पि ४७४) । वक्र. उडुअत, उडुन (दे ६,
६८, उप १०३१ टी) । मक्र. उडूऊण,
उडूवि (पि ५८६, भवि) ।

उडूी स्त्री [औडूी] निपि-विशेष, उक्कन देण
की लिपि (विम ४६४ टी) ।

उडूीण वि [उडूीण] उडा हुआ (राया १,
१, पात्र, मुत्ता ४६४) ।

उडूडुअ पु [दे] डकार, उदगार, ‘जमाइएण
उडूडुण वायनिमगेण’ (पांडे) ।

उडूडुइय } पु [दे] देखो उडूडुअ (चिह्न
उडूीअ } ४३८, ४३७) ।

उडूडुवाडिय पुं [उडूडुवाटिक] भगवान्
महावीर के एक गण का नाम (कप्प) । देखो
उडूवाडिअ ।

उडूडुहिअ देखो उडुहिअ (दे १, १३७) ।

उडूडुय देखो उडूडुअ (राज) ।

उडूडु न [ऊर्ध्व] १ ऊपर, ऊँचा (अणु) । २
वमन, उलटी, ‘उडूडुणिरोहो कुट्ट’ (वृह ३) ।

३ वि. उत्तम, मुख्य ‘अहताए नो उडूडुताए
परिणमति’ (भग ६, ३, आवम) । ४ मटा,
दण्डायमान, ‘खाणुव उडूडुदेहो वाउत्सगं तु
ठाइज’ (आव ६) । ५ ऊपर का, उपरितन
(उवा) । °कडूयग पु [°कण्डूयक] तापमो
का एक मम्प्रदाय जो नाभि के ऊपर भाग में

हो गुजलाते हैं (भग ११, ६) । °काय पु
[°काय] शरीर का उपरितन भाग (राज) ।

°काय पुं [°काय] काव, वायम, ‘ते उडूडु-
काएहि पवजमाणा अवरोहि खजंति सणफ-
एहि’ (सूत्र १, ५, २, ७) । °गम वि [°गम]
ऊपर जानेवाला (सुपा ४५६) । °गामि वि
[°गामिन्] ऊपर जानेवाला (सम १५३) ।

°चर वि [°चर] ऊपर चलनेवाला, आकाश
में उडनेवाला (गृध्रादि) (आचा) । °दिशा
स्त्री [°दिश] ऊर्ध्व दिशा (उवा; आव ६) ।

°रेणु पु [°रेणु] परिमाण-विशेष, आठ

उक्खेविअ वि [उत्तेपित] जलाया हुआ (घृण) (भवि) ।

उक्खोडिअ वि [उत्खोटित] १ उक्लित, उड़ाया हुआ (पात्र) । २ छिन्न, उखाड़ा हुआ (दे १, १०५, १११) ।

उग अक [उत् + गम्] उदित होना । उगइ (नाट) ।

उग (अप) वि [उद्गत] उदित (पिंग) ।

उगाहिअ वि [दे] उक्लिप्त, फेंका हुआ (पद्) ।

उगुणपन्न जीन [एकोनपञ्चाशत्] ऊनपचास, ४६ (सुज्ज १०, ६ टी) ।

उगुणवीसा स्त्री [एकोनविंशति] उन्नीस, १९ (सुज्ज १०, ६ टी) ।

उगुणुत्तर न [एकोनसप्तति] उनहत्तर, ६६, 'उगुणुत्तराई' (सुज्ज १०, ६ टी) ।

उगुणउइ स्त्री [एकोननवति] नवासी, ८६ (कम्म ६, ३०) ।

उगुसीइ स्त्री [एकोनाशीति] उनासी, ७६ (कम्म ६, ३०) ।

उग अक [उद् + गम्] उदित होना । उगो (पिंग) । वक्क उग्गांत, 'देव । पणयज-एकल्लाणकंदुट्टविसट्ठगुगतमिह-('हि)। राणु-गारिणो' (धर्मा ५) ।

उग सक [उद् + घाटय्] खोलना । उगइ (हे ४, ३३) ।

उग वि [उग्र] १ तेज, तीव्र, प्रबल (पउम ८३, ४) । २ पु क्षत्रिय की एक जाति, जिसको भगवान् आदिदेव ने आरक्षक-पद पर नियुक्त की थी (ठा ३, १) । 'वई स्त्री [°वती] ज्योति-शास्त्र-प्रसिद्ध नन्दा-तिथि की रात (जं ७) । 'सिरि पु [°श्रीक] राक्षस वंश का एक राजा, स्वनाम-ख्यात एक लकेश (पउम ५, २६४) । 'सेण पु [°सेन] मथुरा नगरी का एक यदुवंशीय राजा (णाय १, १६, अत) ।

उगंठ सक [उत् + ग्रन्थ्] खोलना, गांठ खोलना । संक उगंठिऊण (हम्मो १७) ।

उग्गाध वि [उद्गन्ध] अत्यन्त सुगन्धित (गउड) ।

उग्गच्छ } अक [उद् + गम्] उदय
उग्गम } होना । उग्गच्छदि (शौ) (नाट) ।

उग्गमइ (वज्रा १६) । उग्गमेज (काल) । वक्क उग्गमत, उग्गममाण (सुपा ३८, परण १) ।

उग्गम पु [उद्गम] १ उत्पत्ति, उद्भव, 'तत्थुरगमो पसुई पभवो एमाई होंति एगट्ठा' (राज) । २ उदय, 'सूरुगमो' (सुर ३, २५०) । ३ उत्पत्ति से सम्बन्ध रखनेवाला एक भिक्षा दोष (ओघ ६५, ६३० भा, ठा १०) ।

उग्गमण न [उद्गमन] उदय (सिरि ४२८, सुज्ज ६) ।

उग्गमिय वि [उद्गमित] उपार्जित (निच्च २) ।

उग्गाय वि [उद्गत] उत्पन्न, जात (आव ३) । २ उदित, उदय-प्राप्त (सुर ३, २४७) । ३ व्यवस्थित (राज) ।

उग्गाह सक [रचय्] रचना, बनाना, निर्माण करना । करना । उग्गाहइ (हे ४, ६४) ।

उग्गाह सक [उद् + ग्रह] ग्रहण करना । उग्गाहइ (भग) । सक उग्गाहिचा (भग) ।

उग्गाह पु [अवग्रह] इन्द्रिय द्वारा होनेवाला सामान्य ज्ञान-विशेष (विसे) । २ अवधारण, निश्चय (उत्त) । ३ प्राप्ति, लाभ (आवू) । ४ पात्र, भाजन (पचा ३) । ५ साध्वियो का एक उपकरण (ओघ ६६६, ६७६) । ६ योनिद्वार (वृह ३) । ७ ग्रहण करने योग्य वस्तु (पएह १, ३) । ८ आश्रय, आवास-स्थान, वसति (आचा), 'आहापडिख्वं उग्गाहं ओगिन्हित्ता' (णाय १, १) । ९ वह वस्तु, जिसपर अपना प्रभुत्व हो, अवीन चीज (वृह ३) । १० देव या गुरु से जितनी दूरी पर रहने का शास्त्रीय विधान है उतनी जगह, मर्यादित भू-भाग, श्रुति की चारों तरफ की शरीर-प्रमाण जमीन, 'अणुजाणह मे मिउ-ग्गाह' (पडि) । 'णंत, 'णंतग न [°नन, 'क] जैन साध्वियो का एक गुहाच्छादक वस्त्र, जाधिया, लेंगोट, 'छादतोग्गाहणंत' (वृह ३) । 'पट्ट, 'पट्टग पुन [°पट्ट, 'क] देखो पूर्वोक्त अर्थ: 'नो कप्पइ निग्गयाण उग्गाहणंतग वा उग्गाहपट्टग वा धारित्तए वा परिहस्तिए वा' (वृह ३) ।

उग्गाह पुं [अवग्रह] परोसने के लिए उठाया हुआ भोजन (सुध २, २, ७३) ।

उग्गाहण न [अवग्रहण] इन्द्रिय द्वारा होने-वाला सामान्य ज्ञान, 'अव्याणं उग्गाहण अवग्रह' (विसे १७६) ।

उग्गाहिअ वि [रचित] १ निर्मित, विहित (कुमा) ।

उग्गाहिअ वि [अवग्रहीत] १ सामान्य रूप से ज्ञात । २ परोसने के लिए उठाया हुआ (ठा १) । ३ गृहीत । ४ आनीत । ५ मुख में प्रक्षिप्त, 'तिविहे उग्गाहिए परणत्ते;—ज च उग्गाहइ, जं च साहरइ, जं च आसगम्मि पक्खिवति' (वव २, ८) ।

उग्गाहिअ वि [दे] निपुण-गृहीत, अच्छी तरह लिया हुआ (दे १, १०४) ।

उग्गा सक [उद् + गै] १ ऊँचे स्वर से गान करना । २ बर्णन करना । ३ श्लाघा करना, 'उग्गाइ गाइ हसइ,

असवुडो सय करेइ कंदप्प ।

गिहिकज्जचित्तगो वि य,

ओसन्ते देइ गेएहइ वा' (उव) ।

वक्क उग्गायंत (सुर ८, १८६) । कवक्क उग्गीयमाण (पउम २, ४१) ।

उग्गाढ वि [उद्गाढ] १ अति गाढ़, प्रबल (उप ६८६ टी, सुपा ६४) । २ स्वस्थ, तन्दुरुस्त (वृह १) ।

उग्गामिय वि [उद्गमित] ऊपर उठाया हुआ, ऊँचा किया हुआ (सुख १, १४) ।

उग्गायत देखो उग्गा ।

उग्गार } पु [उद्गार] १ वचन, उक्ति, 'ति उग्गाल } पिसुणा जे ए सहंति णिग्गुणा परगुणगारे' (गउड) । २ शब्द, आवाज, ध्वनि, 'तियसरहपेत्तिपणो राहदुंदुहिबहल-गज्जिउगारो', 'अहिताडियकंसुग्गारमंफणा-पडिरवाहोओ' (गउड) । ३ डकार । ४ वमन, ओकाई (नाट, कस), 'जिण्णालाण-डज्जंतमयणधूमग्गारेण पिव केसकलावेण' (स ३१३, निच्च १०) । ५ जल का छोटा प्रवाह, 'उग्गालो छिछोली' (पात्र) । ६ रोमन्ध, पुराना, 'रोमथो उग्गालो' (पात्र) । उग्गाल पु [दे. उद्गाल] पान की पिचकारी (पव ३८) ।

उत्तण वि [उत्तृण] तृणवाली जमीन,
'खित्तखिलभूमिवल्लराइं उत्तणघडसंकडाइ
ढज्झतु' (परह १, १)।

उत्तणुअ वि [उत्तनुअ] अभिमानी, गर्विष्ठ
(पात्र)।

उत्तत्त वि [उत्तत्त] अति-तप्त, बहुत गरम
(सुपा ३७)।

उत्तत्त वि [दे] अव्यासित, आरुढ़ (पद्)।

उत्तत्थ वि [उत्तत्थ] भय-भीत, त्रास-प्राप्त
(परह १, ३, पात्र)।

उत्तद्ध देखो उत्तरद्ध (पिंग)।

उत्तप्प वि [द] १ गर्वित, अभिमानी (दे १,
१३१, पात्र)। अधिक गुणवाला (दे १३१)।

उत्तप्प वि [उत्तप्प] देदीप्यमान (राज)।

उत्तम पुं [उत्तम] एक दिन का उपवास
(सवोव ५८)।

उत्तम वि [उत्तम] १ श्रेष्ठ, प्रशस्त, सुन्दर
(कप्प, प्रासू ६)। २ प्रधान, मुख्य (पचा ४)।
३ परम, उत्कृष्ट, 'उत्तमकट्टपत्ते' (भग ७, ६)।
४ अन्त्य, अन्तिम (राज)। ५ पु मेरु-पर्वत
(इक)। ६ समय, त्याग (दसा ५)। ७

राक्षस वंश का एक राजा, स्वनाम-ख्यात एक
लकेश (पउम ५, २६४)। ८ पु [०] १
श्रेष्ठ वस्तु। २ मोक्ष (उत्त २)। ३ मोक्ष-
मार्ग, 'जीवा ठिया परमट्टम्मि' (पउम २,
८१)। ४ अनशन, मरण (शोध ७)।

०ण वि [०ण] लेनदार (नाट)।

उत्तम वि [उत्तमस्] अज्ञान-रहित,
'तिविहता उम्मुक्का, तम्हा ते उत्तमा हुति'
(आवनि ५५, कप्प)।

उत्तमग न [उत्तमाङ्ग] मस्तक, मिर (सम
५०, कुमा)।

उत्तमा स्त्री [उत्तमा] १ 'गायाधम्मकहा'
का एक अव्ययन (गाया २, १)। २ इन्द्राणी
(गाया २, १, ठा ४, १)।

उत्तमा स्त्री [उत्तमा] पक्ष की प्रथम रात्रि
(सुज्ज १०, १४)।

उत्तम्म अक [उत् + तम्] खिन्न होना,
उद्धिन्न होना। उत्तम्मइ (स २०३)। वक्र।
उत्तम्मंत, उत्तम्ममाण (नाट)। संक्र
उत्तम्मिअ (नाट)।

उत्तम्मिअ वि [उत्तान्त] खिन्न, दिनगीर
(दे १, १०२, पात्र)।

उत्तर अक [उत् + तृ] १ बाहर निकलना।
२ सक. पार करना। उत्तरिस्सामो (स
१०१)। वक्र उत्तरत,

'पेच्छति अणिमिसच्छा पहिआ

हलिअस्स पिट्ठपट्ठुरिअ।

घृअ दुद्धसमुदुत्तरतलच्छि

विअ सयएहा' (गा ३८८),

'उत्तरताण य मरु, खघवारो तिमाए मरिउ-
मारद्धो' (महा)। सक्र उत्तरित्तु (वि ५७७)।

हेक. उत्तरित्तिए (पि ५७८)।

उत्तर अक [अव + तृ] उत्तरना, नीचे आना।

वक्र उत्तरमाण, 'उत्तरमाणस्स तो विमा-
णाओ' (सुपा ३४०)। उत्तर वि [उत्तर]
१ श्रेष्ठ, प्रशस्त (पउम ११८, ३०)। २

प्रवान, मुख्य (सूम १, ३)। ३ उत्तर-दिशा
में रहा हुआ (ज १)। ४ उपरि-वर्ती,
उपरितन (उत्त २)। ५ अधिक, अतिरिक्त,

'अट्ठुत्तर—' (श्रीप, मूम १, २)। ६
अवान्तर, भेद, शाखा, 'उत्तरपगइ' (कम्म
१)। ७ ऊन का बना हुआ वस्त्र, कम्बल

वगैरह (कप्प)। ८ न जवाव, प्रत्युत्तर (वव
१)। ९ वृद्धि (भग १३, ४)। १० पु.

ऐरवत क्षेत्र के वाईसवें भावी जिनदेव का
नाम (सम १५४)। ११ वर्षा कल्प (कप्प)।

१२ एक जैन मुनि, आर्य-महागिरि के प्रथम
शिष्य (कप्प)। १३ कचुय पु [कञ्चुक]
वस्त्र-विशेष (विपा १, २)। १४ करण न

[करण] उपस्कार, सम्कार, विशेष-गुणाधान,
'खडियविराहियाए,

मूलगुणाए सउत्तरगुणाए।

उत्तरकरण कीरइ, जह

सगड-रहण-गेहाण' (आव ५)।

१ कुरा स्त्री [कुरु] स्वनाम-ख्यात क्षेत्र-विशेष,
'उत्तरकुराए हां भंते। कुराए केरिमए आगार-
भावपाडोयारे परणत्ते' (जीव ३)। २ कुरु

पुं [कुरु] १ वर्ष-विशेष, 'उत्तरकुरुमाण-
सच्छरावो' (पि ३२८, सम ७०, परह १,
४, पउम ३५, ५०)। २ देव-विशेष (जं २)।

३ कुरुकूड न [कुरुकूट] १ माल्यवंत पर्वत
का एक शिखर (ठा ६)। २ देव-विशेष

(ज ४)। ४ कोडि स्त्री [कोटि] संगीतशास्त्र-
प्रसिद्ध गान्धार-ग्राम की एक मूर्च्छना (ठा
७)। ५ गंधारा स्त्री [गान्धारा] देखो

पूर्वोक्त अर्थ (ठा ७)। ६ गुण पु [गुण]
शाखा गुण, अवान्तर गुण (भग ७, ३)।

७ चावाला स्त्री [चावाला] नगरी-विशेष
(आवम)। ८ चूल [चूड] गुरु-वन्दन का एक

दोष, गुरु को वन्दन कर बड़े आवाज से 'मत्त्व-
एण वदामि' कहना (धर्म २)। ९ चूलिया स्त्री

[चूलिका] देखो अनन्तर-उक्त अर्थ (वृह ३;
गुमा २५)। १० इड न [ईध] पिछला आवा

भाग उत्तरार्ध (ज ४)। ११ दिसा स्त्री [दिश]
उत्तर दिशा (मुर २, २२८)। १२ न [ईध]

पिछला आवा भाग (पिंग)। १३ पगड. पयडि
स्त्री [प्रकृति] कर्मों के अवान्तर भेद (उत्त

३३, सम ६६)। १४ पञ्चत्थिमिह पु [पा-
आत्य] वायव्य कोण (पि)। १५ पट्ट पु

[पट्ट] विद्यौना के ऊपर का वस्त्र (शोध
१५६ भा)। १६ पारणग न [पारणक]

उपवासादि व्रत की समाप्ति, पारण (काल)।
१७ पुरच्छिम, पुरत्थिम पुं [पौरत्थय]

ईशान कोण, उत्तर और पूर्व के बीच की
दिशा (गाया १, १, भग, पि ६०२)।

१८ पोडवया स्त्री [पौष्टपदा] उत्तरा भाद्रपदा
नक्षत्र (सुज ४)। १९ फग्गुणी स्त्री [फाल्गुनी]

उत्तर-फाल्गुनी नक्षत्र (कप्प, पि ६३)।
२० वलिस्सह पु [वलिस्सह] १ एक प्रसिद्ध

जैन साधु (कप्प)। २ उत्तर वलिस्सह नामक
स्थविर ने निकाला हुआ एक गण, भगवान्

महावीर का द्वितीय गण—साधु-संप्रदाय
(कप्प, ठा ६)। ३ भइवया स्त्री [भाद्रपदा]
नक्षत्र-विशेष (ठा ६)। ४ मंदा स्त्री [मन्दा]

मध्यम ग्राम की एक मूर्च्छना (ठा ७)।
५ महुरा स्त्री [मधुरा] नगरी विशेष (दम)।

६ वाय पु [वाड] उत्तरवाद (आवा)।
७ विक्किय, वेडन्विय वि [वैक्किय]
स्वाभाविक-भिन्न वैक्किय, बनावटी वैक्किय
(कम्म १ कप्प)। ८ साला स्त्री [शाला]
१ क्रीडा-गृह। २ पीछे में बनाया हुआ घर।
३ वाहन-गृह हाथी-घोडा आदि बांधने का
स्थान, तबेला (निचू ८)। ९ साहग, साहय
वि [साधक] विद्या, मन्त्र वगैरह का

उगधाड सक [उद् + घाट्य] १ खोलना ।
२ प्रकट करना । ३ बाहर करना । उगधाडइ
(हे ४, ३३) । उगधाडए (महा) । संकृ
उगधाडिऊण (महा) । कृ उगधाडिअव्व
(आ १६) । कवकृ उगधाडिजंत (से ५,
१२) ।

उगधाड पुं [उद्घाट] प्रकट, प्रकाश, 'किन्तु
क्यों बहुएहि उगधाडो निययकम्माण' (सिरि
५२८) ।

उगधाड देखो उगधाड = उद् + घाट्य । हेकृ.
'तं जिणहरम्म दार केणवि नो मक्कियं
उवाडेउ' (सिरि ५२८) ।

उगधाड वि [उद्घाट] १ खुला हुआ,
अनाच्छादित (पउम ३६, १०७) । २ थोटा
बन्द किया हुआ, 'उगधाडकवाडउगधाडएण' (आव ४) । ३ व्यक्त, प्रकट । ४ परिपूर्ण,
अन्यून, 'एत्थतरम्म उगधाडपोरिसीसूयगो
वली पत्तो' (मुपा ६७) ।

उगधाडण न [उद्घाटन] १ खोलना (आव
४) । २ बाहर करना, बाहर निकालना
(उप पृ ३६७) ।

उगधाडणा स्त्री [उद्घाटना] ऊपर देवो
(आव ४) ।

उगधाडिअ वि [उद्घाटित] १ खुला हुआ ।
२ प्रकटित, प्रकाशित (से २, ३७) ।

उगधायण न [उद्घातन] १ नाश, विनाश
(आचा) । २ पूज्य-स्थान, उत्तम जगह । ३
सरोवर में जाने का मार्ग (आचा २, ३) ।

उगधार पुं [उद्धार] सिञ्चन, छिड़काव,
'विणितरुहिरुगधार निवडिओ धरणिवट्टे'
(स ५६८) ।

उगिघट्टु वि [उद्घट्ट] सघट्ट, 'नमिरसुर-
उगिघट्टु' किरौडुगिघट्टुपायारविदे' (लहुअ ४,
से ६, ८०) ।

उगघट्टु वि [उद्घुष्ट] घोपित, उद्घोषित (सुर
१०, १४, सण), 'अमरवहुगघट्टुजयजारव'
(महा) ।

उगघट्टु वि [दे] उद्योब्धित, लुप्त, दूरीकृत,
विनाशित (दे १, ६६), 'उरघालिरवेणीमुह-
थणलगुगघट्टुमहिरआ जणअमुआ' (से ११,
१०२) ।

उगघुस सक [मृज्] साफ करना, मार्जन
करना । उगघुमड (हे ४, १०५) ।

उगघुस सक [उद् + घुप्] देखो उगघोस ।
संकृ. उगघुमिअ (नाट) ।

उगघुसिअ वि [मृष्ट] मार्जित, साफ किया
हुआ (कुमा) ।

उगघोम सक [उद् + घोपय्] घोपणा
करना, ढिढोरा पिटवाना, जाहिर करना ।
उगघोमेह (विपा १, १) । वकृ. उगघोसेमाण
(विपा १, १, राया १, ५) । कवकृ.
उगघोसिज्जमाण (विपा १, २) ।

उगघोस पुं [उद्घोप] नीचे देखो (स्वप्न
२१) ।

उगघोसणा स्त्री [उद्घोपणा] दुग्गी पिटवाना,
ढिढोरा पिटवा कर जाहिर करना (विपा
१, १) ।

उगघोसिय वि [मार्जित] साफ किया हुआ,
'उगघोसियमुनिम्मलं व आर्यसमंडलतल' (पएह
२, ५) ।

उगघोसिय वि [उद्घोषित] जाहिर किया
हुआ, घोषित (भवि) ।

उघूण वि [दे] पूर्ण, भरपूर (पड्) ।

उच्चिय वि [उचित] योग्य, लायक, अनुरूप
(कुमा, महा) । °ण्णु वि [°ज्ञ] विवेकी
(उप ७६८ टी) ।

उच्च न [दे] नाभि-तल (दे १, ८६) ।

उच्च वि [उच्च, °क, उच्चैस्] १ ऊँचा
उच्चअ (कुमा) । २ उत्तम, उत्कृष्ट (हे २,
१५४, सूअ १, १०) । °च्छद वि
[°च्छन्दस्] स्वैर, स्वेच्छाचारी (पएह
१, २) । °णागरी देखो °नागरी (कप्प) ।
°त्त न [त्व] १ ऊँचाई (सम १२, जी २८) ।
२ उत्तमता (ठा ४, १) । °त्तभयग, °त्तभ-
यय पु [°त्वभृतक] जिससे समय और
वेतन का इकरार कर यथासमय नियत काम
लिया जाय वह नौकर (राज, ठा ४, १) ।
°त्तरिया स्त्री [°त्तरिका] लिपि-विशेष
(सम ३५) । °त्थवणय न [°स्थापनक]
लम्बगोलाकार वस्तु-विशेष, 'धरणस्स ए
अणगारस्स गीवाए अयमेयाख्वे तवरूवलावन्ने
होत्था, से जहानामए करगगोवा इवा कुडिया-
गीवा इवा उच्चत्थवणए इवा' (अनु) । °वच्चिआ

स्त्री [°वच्चिका] ऊँचा-नीचा करना, जैसे-
तैसे रखना,

'कह तपि तुह एण आअ जह सा
आसंदिआण वहुआण' ।

काऊए उच्चवचिअं तुह
दंसणलेहला पडिआ'

(गा ६६७) ।

°वाय पु [°वाद] प्रशंसा, श्लाघा (उप ७२८
टी) । देखो उच्चा ।

उच्चइअ वि [उच्चयित] एकत्रीकृत, इकट्ठा,
किया हुआ (काल) ।

उच्चडिय वि [दे] ऊँचा चढाया हुआ (हम्मीर
२८) ।

उच्चतय पु [उच्चन्तग] दन्त-रोग, दांत में
होनेवाला रोग-विशेष (राज) ।

उच्चपिअ वि [दे] १ दीर्घ, लम्बा, आयत (दे
१, ११६) । २ आक्रान्त, दबाया हुआ, रोदा
हुआ, 'सीसं उच्चपिअ' (तदु) ।

उच्चडिअ वि [दे] उत्क्षिप्त, ऊँचा फेंका हुआ
(दे १, १०६) ।

उच्चत्त वि [उत्त्यक्त] पतित, त्यक्त (पाअ) ।

उच्चत्तवरत्त न [दे] १ दोनों तरफ का स्थूल
भाग । २ अनियमित भ्रमण, अव्यवस्थित
विवर्तन (दे १, १३६) । ३ दोनों तरफ से
ऊँचा-नीचा करना (पाअ) ।

उच्चत्थ वि [दे] दृढ, मजबूत (दे १, ६७)

उच्चदिअ वि [दे] मुपित, चुराया हुआ
(पड्) ।

उच्चप्प वि [दे] आरूढ, ऊपर बैठा हुआ (दे
१, १००) ।

उच्चय सक [उत् + त्यज्] त्याग देना,
छोड़ देना । कृ उच्चयणिज्ज (पउम ६६,
२८) ।

उच्चय पु [उच्चय] १ समूह, राशि, 'रयणो-
च्चय विसाल' (मुपा ३४, कप्प) । २ ऊँचा
ढेर करना (भग ८, ६) । ३ नीची, स्त्री के
कटी-वस्त्र की नाडी (पाअ) । °वध पु
[°वन्ध] बन्ध-विशेष, ऊपर ऊपर रख कर
चीजों को बाँधना (भग ८, ६) ।

उच्चय पु [अत्रचय] इकट्ठा करना, एकत्री-
करण (दे २, ५६) ।

पगाहि उत्ताल' (ठा ७), 'भीय दुयमुपिच्छ-
त्यमुत्ताल च कमसो मुखेयव' (जीव ३)।
उत्ताल न [दे] लगातार रुदन, अन्तर-रहित
क्रन्दन की आवाज (दे १, १०१)।
उत्तालण देखो उत्ताडण।
उत्तावल न [दे] उतावल, शीघ्रता। २ वि.
शीघ्रकारी, आकुल, 'हल्लुत्तावलिगहदासिवि-
हियतकालकरणिज्जे' (सुर १०, १)।
उत्तास सक [उत् + त्रासय्] १ भयभीत
करना, डराना। २ पीडना, हैरान करना।
उत्तामेदि (शौ) (नाट)। कृ उत्तासणिज्ज
(तदु)।
उत्तास पुं [उत्त्रास] १ त्रास, भय। २
हैरानी (कप्पु)।
उत्तासइत्तु वि [उत्त्रासयित्] १ भय-भीत
करनेवाला। २ हैरान करनेवाला (आचा)।
उत्तासणअ } वि [उत्त्रासनक] १ भयकर,
उत्तासणग } उद्वेग-जनक। २ हैरान करने-
वाला (पउम २२, ३५, राया १, ८)।
उत्तासिय वि [उत्त्रासित] १ हैरान किया
हुआ। २ भयभीत किया हुआ (सुर १, २४७,
आव ४)।
उत्ताहिय वि [दे] उत्क्षिप्त, फेंका हुआ (दे
१, १०६)।
उत्ति स्त्री [उत्ति] वचन, वाणी (आ १४,
मुपा २३, कप्पु)।
उत्तिंग पु [उत्तिङ्ग] १ गंदभाकार कीट-विशेष
(घर्म २, निचू १३)। २ चीटियों का
विल, 'उत्तिंगपणगदगमट्टीमक्कडासताणासक-
मणे' (पडि)। ३ चीटियों की सन्तान (दसा
३)। ४ तृण के अग्रभाग पर स्थित जल-विंदु
(आचा)। ५ वनस्पति-विशेष, सर्पच्छन्ना,
गुजराती में जिसको 'विलाडी नी टोप' कहते हैं,
'गहरोसु न चिट्ठज्जा,
वोएसु हरिएसु वा।
उदगम्मि तहा निच्च,
उत्तिंगपणगेसु वा' (दस ८, ११)।
६ न. छिद्र, विवर, रन्ध्र (निचू १८, आचा
२, ३, १, १६)। ७ लोण न [लयन] कीट-
विशेष का गृह—विल (कप्पु)।
उत्तिंगपणग पुंन [उत्तिङ्गपनक] कीटिका-
नगर, चीटियों का विल (दास ५, १, ५६)।

उत्तिट्ठ अक [उत् + स्था] १ उठाना। २
उदित होना। वक्र. 'उत्तिट्ठन्ते दिवायरे' (उत्त
११, २४)।
उत्तिण वि [उत्तृण] तृण-शून्य,
'भक्कावाउत्तिणवरविवर-
पलोत्तट्तसलिलवाराहि।
कुडुलिहिओहिदिअह
रखइ अज्जा करअलेहि'
(गा १७०)।
उत्तिणिअ वि [उत्तृणिअ] तृण-रहित किया
हुआ, 'भक्कावाउत्तिणिअ घरम्मि' (गा १३५)।
उत्तिणग वि [उत्तृण] १ बाहर निकला हुआ,
'उत्तिणग तलागाओ' (महा)। दिट्ठ च महा-
सरवर, मज्जिओ जहाविहि तम्मि, उत्तिणो
य उत्तरपच्छिमतीरे' (महा)। २ पार पहुँचा
हुआ, पार-प्राप्त (स ३३२), 'उत्तिणग
समुद्द, पत्ता वीयभय' (महा)। ३ जो कम
हुआ हो, 'सचरइ चिरपडिगहलायएणुत्ति-
सरणवेससोहगो' (गउड)। ४ रहित, 'सोहइ
अदोसभावो गुणोव्व जइ होइ मच्छरुत्तिणो
(गउड)। ५ निपटा हुआ, जिमने कार्य समाप्त
किया हो वह, 'एहाणुत्तिणग' (गा ५५५)।
६ उल्लिखित, अतिक्रान्त (राज)।
उत्तिण्ण वि [अवतीर्ण] १ नीचे उतरा हुआ,
'रायादक्खो, तेण साहा गहिया, उत्तिणो,
निराणदो किंकायव्वविमूढो गओ चप' (महा)।
उत्तिथ पुंन [उत्तीर्थ] कुपथ, अपमार्ग (भवि)।
उत्तिम देखो उत्तम (पड्, पि १०१, हे १,
४१, निचू १)।
उत्तिमग देखो उत्तमग (महा, पि १०१)।
उत्तिन्न देखो उत्तिण्ण (काप्र १४६, कुमा)।
उत्तिरिविडि स्त्री [दे] भाजन वगैरह का
उत्तिवडा } ऊँचा ढेर, भाजनों की थप्पी,
गुजराती में जिसको 'उतरेवड' कहते हैं (दे
१, १२२), 'फोडे विरालो लोलयाए सारेवि
उत्तिवड' (उप ७२८ टी)।
उत्तंग वि [उत्तुङ्ग] ऊँचा, उन्नत (महा,
कप्पु, गउड)।
उत्तुंड वि [उत्तुण्ड] उन्मुख, ऊर्ध्व-मुख
(गउड)।
उत्तुण वि [दे] गर्ज-युक्त, हृत्त, अभिमानी
(दे १, ६६, गउड)।

उत्तुपिय वि [दे] स्निग्ध, चिकना (विपा
१, २)।
उत्तुय सक [उत् + तुद] पीडा करना,
हैरान करना। वक्र. उत्तुयत (विपा १, ७)।
उत्तुरिद्धि स्त्री [दे] गर्व, अभिमान। २ वि.
गर्वित, अभिमानी (दे १, ६६)।
उत्तुर्वे वि [दे] दृष्ट, देखा हुआ (पड्)।
उत्तुहिअ वि [दे] उल्हासित, छिन्न, नष्ट
(दे १, १०५, १११)।
उत्तुह् पुं [दे] किनारा-रहित इगारा, तट-
शून्य कूप (दे १, ६४)।
उत्तेअ वि [उत्तेजस्] १ तेजस्वी, प्रखर।
२ पु. म्नावृत्त का एक भेद (पिंग, नाट)।
उत्तेअण न [उत्तेजन] उत्तेजन (मुद्रा १६८)।
उत्तेडअ } वि [उत्तेजित] उद्दीपित, प्रोत्सा-
उत्तेजिअ } हित, प्रेरित (दस ३, पाअ)।
उत्तेड } पुं [दे] विन्दु (पिएड १६),
उत्तेडय } 'मिती य एमा घडउत्तेडएहि' (न
२६४)।
उत्थ न [उक्थ] १ स्तोत्र-विशेष। २ योग-
विशेष (विसे)।
उत्थ वि [उत्थ] उत्पन्न, उत्थित (मुपा
१६६, गउड)।
उत्थ (शौ) देखो उट्ठ = उत् + स्था। उत्थेदि
(प्राकृ ६४)।
उत्थइय वि [अवस्तृत] १ व्याप्त (से ४,
३८)। २ प्रमारित, फैलाया हुआ। ३
आच्छादित, 'अच्छरगमउयमसूरगउच्छ-
(? त्य)-इय भद्दासणं रयावेइ' (राया १, १,
पि ३०६)।
उत्थंगिअ देखो उत्थधिअ = उत्तम्मिअ (पि
५०५)।
उत्थघ सक [उद् + नमय्] ऊँचा करना,
उन्नत करना। उत्थघइ (हे ४, ३६)।
उत्थंघ सक [उत् + स्तम्भ्] १ उठाना।
२ अवलम्बन देना। ३ रोकना (गउड, से
५, ६)। उत्थंघइ (गा ७२४)।
उत्थघ सक [उत् + क्षिप्] ऊँचा फेंकना।
उत्थघइ (हे ४, १४४)। संक्र. उत्थधिअ
(कुमा)।
उत्थघ सक [रुध्] रोकना। उत्थंघइ (हे
४, १३३)।

उच्चिय देखो उच्चिय, 'तस्स सुओच्चियपन्न-
त्तणेण संतोसमणुपत्ता' (उप १६६ टी)।

उच्चिवलय न [दे] कलुपित जल, मैला पानी
(पात्र)।

उच्चुंच वि [दे] हृत्, गर्विष्ठ, अभिमानी (दे
१, ६६)।

उच्चुग वि [दे] अनवस्थित (पङ्)।

उच्चुड अक [उत् + चुड्] अपसरण
करना, हटना। वक्क उच्चुडत (गउड ७३३)।

उच्चुप्प मक [चट्] चटना, आरुढ होना,
ऊपर बैठना। उच्चुप्पइ (हे ४, २५६)।

उच्चुप्पिअ वि [दे चटित] आरुढ, ऊपर
बढ़ा हुआ (दे १, १००)।

उच्चुरण [दे] उच्छिष्ट, बूठा (पङ्)।

उच्चुलउलिअ न [दे] कुतूहल से शीघ्र शीघ्र
जाना (दे १, १२१)।

उच्चुल वि [दे] १ उद्विग्न, खिन्न। २ अवि-
लम्ब, आरुढ। ३ भीत, डरा हुआ (दे १,
१२७)।

उच्चूड पुं [उच्चूड] निशान का नीचे लट-
कता हुआ शृङ्गारित वस्त्राश (उप ४४६)।

उच्चूर वि [दे] नानाविध, बहुविध (राज)।

उच्चूल पु [अवचूल] १ निशान का नीचे
लटकता हुआ शृङ्गारित वस्त्राश (उप ४४६
टी)। २ श्रौंघा-सिर—पैर ऊपर और सिर
नीचे कर—खड़ा किया हुआ (विपा १, ६)।

उच्चे देखो उच्चिण। उच्चेइ (हे ४, २४१)।
हेक्क. उच्चेइ (गा १५६)।

उच्चेय वि [उच्चेतस्] चिन्तातुर मनवाला
(पात्र)।

उच्चेय न [दे] १ ऊसर भूमि। २ जघन-
स्थानीय केश (दे १, १३६)।

उच्चेय वि [दे] प्रकट, व्यक्त (दे १, ६७)।

उच्चोड पु [दे] शोषण, 'चदणुच्चोडकारी चडो
देहस्स दाहो' (कप्प, प्राप)।

उच्चोदय पु [उच्चोदय] चक्रवर्ती का एक देव-
कृत प्रासाद (उत्त १३, १३)।

उच्चोल पुं [दे] १ खेद, उद्वेग। २ नीची, स्त्री
के कटी-वस्त्र की नाडी (दे १, १३१)।

उच्छ पु [उक्षन्] बेल, वृषभ (हे २, १७)।
उच्छ पुं [दे] १ श्रांत का आवरण (दे १,

८५)। २ वि. न्यून, हीन, 'उच्छतं वा न्यून-
त्वम्' (पण्ड २, १)।

उच्छअ पुं [उत्सव] क्षण, उत्सव (हे २,
२२)।

उच्छअ वि [पृच्छक] प्रश्न-कर्ता (गा ५०)।

उच्छइअ वि [उच्छदित] आच्छादित,
'पालंवउच्छइयवच्छयलो' (काल)।

उच्छंखल वि [उच्छंखल] १ शृङ्खला-रहित,
अवरोध-वर्जित, वन्धन-शून्य। २ उद्वत, निरं-
कुश (गउड)।

उच्छगलिय वि [उच्छंखलिन] अवरोध-
रहित किया हुआ, खुला किया हुआ, 'उच्छं-
खलियवणाण सोहगं किपि पवणाण'
(गउड)।

उच्छग पुं [उत्सङ्ग] मध्य भाग, 'मउच्छग-
परिगहमियं कजोएहावभामिणो पमुवइणो'
(गउड, से १०, २)। २ क्रोड, गोद, कोरा
(पात्र), 'उच्छंगे णिविसेत्ता' (आवम)। ३
पृष्ठ देश (मौप)।

उच्छगिअ वि [उत्सङ्गित] कोरा, कोली या
गोद में लिया हुआ (उप ६४८ टी)।

उच्छगिअ वि [दे] आगे किया हुआ, आगे
रखा हुआ (दे १, १०७)।

उच्छय देखो उत्थय (हे ५, ३६ टी)।

उच्छट पु [दे] मूडप से की हुई चोरी (दे १,
१०१, पात्र)।

उच्छट्ट पु [दे] चोर, डाकू (दे १, १०१)।

उच्छडिअ वि [दे] चुराई हुई चीज, चोरी
का माल (दे १, ११२)।

उच्छण न [प्रच्छन्] प्रश्न, पूछना (गा
५००)।

उच्छण्ण देखो उच्छन्न (हे १, ११४)।

उच्छत न [अपच्छन्न] १ अपने दोष को
ढकने का व्यर्थ प्रयत्न, गुजराती में 'ढाकपि-
छोडो'। २ मृपावाद, झूठ वचन (पण्ड
१, २)।

उच्छन्न वि [उत्सन्न] छिन्न, खण्डित, नष्ट
(कुमा, सुपा ३८४)।

उच्छप्प सक [उत् + सर्पय] उन्नत करना,
प्रभावित करना। उच्छप्पइ (सुपा ३५२)।

वक्क. उच्छप्पंत (सुपा २६६)।

उच्छप्पण न [उत्सर्ग] उन्नति, अभ्युदय
(सुपा २७१)।

उच्छप्पणा स्त्री [उत्सर्पणा] ऊपर देखो,
'जिणपवयणमि उच्छप्पणाउ कारेइ विवि-
हाओ' (सुपा २०६, ६४६)।

उच्छल अक [उत् + शल्] १ उछलना,
ऊँचा जाना। २ कूदना। ३ पसरना, फैलना।
वक्क उच्छलंत (कप्प, गउड)।

उच्छलण न [उच्छलन] उछलना (दे १,
११८, ६, ११५)।

उच्छलिअ वि [उच्छलित] उछला हुआ,
ऊँचा गया हुआ (गा ११७, ६२४, गउड)।

२ प्रसृत, फैला हुआ, 'ता ताए वरगवो।
उच्छालयो छलिउं पिव गध गोसांसचदणव-
णस्स' (सुपा ३८५)।

उच्छलिर वि [उच्छलितृ] उछलनेवाला
(धर्माव १४, कुप्र ३७३)।

उच्छल्ल देखो उच्छल। उच्छल्लइ (पि ३२७)-
'उच्छल्लति समुदा' (हे ४, ३२६)।

उच्छल्ल वि [उच्छल] उछलनेवाला (भवि)।

उच्छल्लणा स्त्री [दे] अवर्त्तना, अप्रेरणा,
'कप्पडप्पहारनिद्वयमारक्खियखरफस्सवयणत-
ज्जागलच्छल्लुच्छल्लणाहिं विमणा चारगवसहिं
पवेसिया' (पण्ड १, ३)।

उच्छल्लिअ देखो उच्छलिअ (भवि)।

उच्छल्लिअ वि [दे] जिसकी छाल नाड़ी गई
हो वह, 'तण्णो उच्छल्लिमा य दंतीहि' (दे
१, १११)।

उच्छव देखो उच्छअ (कुमा)। २ उत्प्रेक
(भवि)।

उच्छविअ न [दे] शय्या, बिछौना (दे १,
१०३)।

उच्छह सक [उत् + सह] उन्नम करना।
वक्क उच्छह (दम ६, ३, ६)।

उच्छह अक [उत् + सह] उत्साहित
होना। वक्क उच्छहंत (भवि)।

उच्छहय वि [उत्सहित] उत्साह-युक्त
(सण)।

उच्छाइअ वि [अवच्छादित] आच्छादित,
ढका हुआ (पउम ६१, ४२, सुर ३, ७१)।

उच्छाइअ (अप) वि [अवच्छादित] ढका
हुआ (भवि)।

उच्छाण देखो उच्छ = उन्न (प्रामा)।

उच्छाण पुं [उच्छ्राय] उत्प्रेष, ऊँचा (ठा
७)।

['वस्ति] दृति, पानी भरने का मशक (गाथा १, १८)। 'सिहा स्त्री ['शिखा] वेला (ठा १०)। 'सीम पु ['सीमन्] पर्वत-विशेष (इक)।

उदग वि [उदग्र] १ सुन्दर, मनोहर 'तत्तो दट्ठु तीए ख्व तह जोव्वणमुदगं' (सुर १, १२२)। २ उग्र, उत्कट, प्रखर (ठा ४, २, गाथा १, १, सत्त ३०)। ३ प्रधान, मुख्य 'उदगचारित्तवो महेसी' (उत्त १३)।

उदङ्ग पुं [उदग्ग] एक नरक-स्थान (देवेन्द्र २७)।

उदत्त वि [उदात्त] उदार, अकृपण (संबोध ३८)।

उदत्त वि [उदात्त] स्वर-विशेष, जो उच्च स्वर से बोला जाय वह स्वर (विसे ८५२)।

उदन्ना स्त्री [उदन्या] तुपा, तरस, पिपासा (उप १०३१ टी)।

उदय देखो उदग (गाथा १, ८, सम १५३, उप ७२८ टी, प्रासू ७२, परण १)।

उदय पु [उदय] लाभ (सूत्र २, ६, २४)।

उदय पु [उदय] १ अभ्युदय, उन्नति, 'जो एवविहपि कज्ज आयरइ, सो कि वभदत्त-कुमारस्स उदय इच्छइ ?' (महा)। २ उत्पत्ति (विसे)। ३ विपाक, कर्म-परिणाम,

'वहमारणअवभक्खाणदाणा

परवरविलोवणाईणं।

सव्वजहन्नो उदयो दसणुणिओ

एकमि कयाण' (उव)।

४ प्रादुर्भाव, उदगम, 'आइच्चोदए चंदगहा इव निप्पभा जाया मुरा' (महा),

'उदयम्मि वि अत्थमरोवि

धरइ रत्तत्तणं दिवसनाहो।

रिद्धीसु आवईसुवि

तुल्लच्चिय गणूण सण्णुरिसा।'

(प्रासू १२)।

५ भरतक्षेत्र के भावी सातवें जिनदेव (सम १५३)। ६ भरतक्षेत्र में होनेवाले तीसरे जिनदेव का पूर्व-भवीय नाम (सम १५४)। ७ स्वनाम-ख्यात एक राजकुमार (पउम २१, ५६)। 'यल पुं ['यल] पर्वत-विशेष, जहाँ सूर्य उदित होता है (सुपा ८८)।

उदयत देखो उदि।

उदयण पुं [उदयन] १ राजा सिद्धराज का प्रसिद्ध मंत्री (कुप्र १४३)।

उदयण पु [उदयन] १ एज राजकुमार, कोशाम्बी नगरी के राजा शतानीक का पुत्र (विपा १, ५)। २ एक विख्यात जैन राजा (कप्प)। ३ न. उन्नति, उदय। ४ वि. उन्नत होनेवाला, प्रवर्धमान (ठा ५, ३)।

उदर न [उदर] १ पेट, जठर (सूत्र १, ८)। २ पेट की बीमारी, 'खयजरवणलूआसामसो-सोदराणि' (लङ्घ १५)।

उदरभरि वि [उदरम्भरि] स्वार्थी, अकेलपेट (पि ३७६)।

उदरि वि [उदरिन्] पेट की बीमारीवाला (परह २, ५)।

उदरिय वि [उदरिक] ऊपर देखो (विपा १, ७)।

उदवाह वि [उदवाह] १ पानी वहन करने-वाला, जल-वाहक। २ पु छोटा प्रवाह (भग ३, ६)।

उदसी [दे] [उदश्चित् ?] तक

उदहिं पुं [उदधि] १ समुद्र, सागर (कुमा)। २ भवनपति देवों की एक जाति, उदधिकुमार (परह १, ४)। 'कुमार पुं ['कुमार] देवों की एक जाति (परण १)। देखो उअहि।

उदाइ पुं [उदायिन्] १ एक जैन राजा, महाराजा कोणिक का पुत्र, जिसको एक दुष्ट ने जैन साधु बनकर धर्मच्छल से मारा था और जो भविष्य में तीसरा जिनदेव होगा (ठा ६, ती)। २ पु राजा कूणिक का पट्ट-हस्ती (भग १६, १)।

उदाइण देखो उदायण (कुलक २३)।

उदात्त देखो उदत्त (रादि १७४ टी)।

उदायण पुं [उदायन] सिन्धु-देश का एक राजा, जिसने भगवान् महावीर के पास दीक्षा ली थी (ठा ८, भग ३, ६)।

उदार देखो उराल (उप पृ १०८)।

उदासि वि [उदासिन्] उदास, उदासीन। 'व न ['त्व] औदासीन्य (रमा, स ४५६)।

उदासीण वि [उदासीन] १ मध्यस्थ, तटस्थ (परह १, २)। २ उपेक्षा करनेवाला (ठा ६)।

उदाहड वि [उदाहृत] कथित, दृष्टान्तित (राज)।

उदाहर सक [उदा + ह] १ कहना। २ दृष्टान्त देना। उदाहरति (पि १४१), 'भासं मुसं नेव उदाहरिजा' (सत्त ४३)। भूका. उदाहु (आचा; उत्त १४, ६), उदाहू (सूत्र १, १२, ४)। वक्र. उदाहरंत (सूत्र १, १२, ३)।

उदाहरण न [उदाहरण] १ कथन, प्रति-पादन। २ दृष्टान्त (सूत्र १, १२, विसे)।

उदाहिय वि [उदाहृत] १ कथित, प्रति-पादित। २ दृष्टान्तित (आचा; गाथा १, ८)।

उदाहिय वि [दे] उत्कृष्ट, फेंका गया (पड्)। उदाहु देखो उदाहर।

उदाहु अ [उताहो] अथवा, या (उवा)।

उदाहू देखो उदाहर।

उदाहो देखो उदाहु = उताहो (स्वप्न ७०)।

उदि अक [उद् + इ] १ उन्नत होना। २ उत्पन्न होना। (विसे १२६६, जीव ३)। वक्र. उदयंत (भग, पउम ८२, ५६, सुपा १६८)। कवक उदिज्जत (विसे ५३०)।

उदिकिखअ वि [उदीक्षित] अवलोकित (दे ६, १४४)।

उदिण वि [उदीच्य] उत्तर-दिशा में उत्पन्न (आवम)।

उदिण १ वि [उदीर्ण] १ उदित, उदय-प्राप्त उदिन्न] (ठा ५), 'इक्को वि इक्को विसओ उदिन्नो' (सत्त ५२)। २ फलोन्मुख (कर्म) (परण १६, भग)। ३ उत्पन्न, 'जहा उदिणो नगु कोवि वाही' (सत्त ९, आ २७)। ४ उत्कट, प्रवल, 'अणुत्तरोववाइयाण भते। देवा कि उदिण मोहा, उवसतमोहा, खीणमोहा ?' (भग ५, ४)।

उदिय वि [उदित] १ उदित, उदगत (सम ३६)। २ उन्नत (ठा ४)। ३ उक्त, कथित (विसे ३५७६)।

उदीण वि [उदीचीन] १ उत्तर दिशा से सवन्ध रखनेवाला, उत्तर दिशा में उत्पन्न (आचा; पि १६५)। 'पाईणा स्त्री ['प्राचीना] ईशान-कोण (भग ५, १)।

उदीणा स्त्री [उदीचीना] उत्तर दिशा (ठा १, १)।

उच्छेवण न [उत्क्षेपण] ऊपर देखो (दे ६, २७)।

उच्छेवण न [दे] घृत, घी (दे १, ११६)।

उच्छेह पुं [उत्सेध] ऊँचाई (दे १, १३०)।

उच्छोडिय वि [उच्छोटित] छुड़ाया हुआ, मुक्त किया हुआ, 'उच्छोडिय-ववो सो रत्ना भणिओ य भइ। उवविसमु' (सुर १, १०५), 'पासट्टियपुरिमेहि तक्खणमुच्छोडिया य से वंवा' (सुर २, ३६)।

उच्छोभ वि [उच्छोभ] १ शोभा-रहित।

२ न. पिशुनता, चुगलो (राज)।

उच्छोल सक [उत् + मूल्य] उन्मूलन

करना, उखाड़ना। वक्र. उच्छोलत (राज)।

उच्छोल सक [उत् + क्षाल्य] प्रक्षालन

करना, धोना। वक्र. उच्छोलत (निचू १७)।

प्रयो., वक्र. उच्छोलाघंत (निचू १६)।

उच्छोलण न [उत्क्षालन] प्रभूत जल से

प्रक्षालन, 'उच्छोलणं च कक्क च त निज्ज

परियाणिया' (सूत्र १, ६, औप)।

उच्छोलणा स्त्री [उत्क्षालना] प्रक्षालन

(दम ४)।

उच्छोला स्त्री [दे] प्रभूत जल, 'नहदंतकेगरो

मे जमेइ उच्छोलवोयणो अज्जो' (उव)।

उच्छोलित्तु वि [उत्क्षालयितृ] हवोनेवाला,

निमग्न करनेवाला (सूत्र २, २, १८)।

उजु देखो उज्जु (आचा, कप्प)।

उजुअ देखो उज्जुअ (नाट)।

उज्ज देखो ओय = ओजस् (कप्प)।

उज्ज न [उज्ज] १ तेज, प्रताप। २ बल

(कप्प)।

उज्जअणी स्त्री [उज्जयनी, °यिनि]

उज्जङ्गी स्त्री नगरी-विशेष, मालव देश की

प्राचीन राजधानी, आजकल भी यह 'उज्जैन'

नाम से प्रसिद्ध है (चार ३९, पि ३८६)।

उज्जगल न [द] बलात्कार, जबरदस्ती।

२ वि दीर्घ, लम्बा (दे १, १३५)।

उज्जगरय पु [उज्जागरक] १ जागरण,

निद्रा का अभाव,

'जत्थ न उज्जगरयो,

जत्थ न ईसा विसूरण माण।

सम्भावचाहुयं जत्थ,

नत्थि नेहो तहि नत्थि'

(वज्जा ६८)।

उज्जगिर न [उज्जागर] जागरण, निद्रा का

अभाव (दे १, ११७, वज्जा ७४)।

उज्जग्गुज्ज वि [दे] स्वच्छ, निर्मल (दे १

११३)।

उज्जड वि [दे] उजाड, वसति-रहित (दे

१, ६६)।

'उक्किरणरयमरोणयत-

लज्जजरभूविसट्टविलविसमा

थोउज्जडक्कविडवा इमाओ

ता उन्दरथलीओ' (गउड)।

उज्जणिअ वि [दे] वक्र, टेढ़ा (दे १, १११)।

उज्जम अक [उद् + यम्] उद्यम करना,

प्रयत्न करना। उज्जमइ (घम्म १४)।

उज्जमह (उव)। वक्र. उज्जमत, उज्जम-

माण (परह १, ३), 'ए करेइ दुक्खमोक्ख

उज्जममाणवि संजमतवेसु' (सूत्र १, १३)।

क उज्जमिअव्व, उज्जमेयव्व (सुर १४,

८३, सुपा २८७, २२४)। हेऊ. उज्जमिउं

(उव)।

उज्जम पु [उद्यम] उद्योग, प्रयत्न (उव,

जी ५०, प्रासू ११५)।

उज्जमण (अप) न [उद्यापन] उद्यापन, व्रत-

समाप्ति-कार्य (भवि)।

उज्जमि वि [उद्यमिन्] उद्योगी (कुप्र ४१६)।

उज्जमिय (अप) वि [उद्यापित] समापित

(व्रत) (भवि)।

उज्जमह अक [उत् + जृम्भ्] जोर से

जैमाई लेना। उज्जमहइ (प्राकृ ६४)।

उज्जय हि [उद्यत] उद्योगी, उद्युक्त, प्रयत्न-

शील (पाअ, काप्र १६६, गा ४४८)।

'मरण न [मरण] मरण-विशेष (आचा)।

उज्जयत पु [उज्जयन्त] गिरनार पर्वत, 'इय

उज्जयतक्कप, अविषयं जो करेइ जिणमतो'

(तो, विवे १८), 'ता उज्जयंतसत्तुजणसु

तित्थेसु दोमुवि जिणिदे' (मुणि १०६७५)।

उज्जर वि [दे] १ मध्य-गत, भीतर का।

२ पुं निर्जरण, क्षय (तदु ४१)।

उज्जल अक [उद् + ज्वल्] १ जलना।

२ प्रकाशित होना, चमकना। उज्जलति

(विक्र ११४)। वक्र. उज्जलत (एदि)।

उज्जल वि [उज्ज्वल] १ निर्मल, स्वच्छ

(भग ७, ८, कुमा)। २ दीप्त, चमकीला

(कप्प, कुमा)।

उज्जल वि [दे] देखो उज्जल्ल (हे २,

१७४ टि)।

उज्जल्लग वि [उज्ज्वलन] चमकीला, देदीप्य-

मान, 'जालुज्जल्लगगववरव कत्थइ पयत

अव्वेगचंचल सिहि' (कप्प)।

उज्जलिअ पुं [उज्ज्वलिन] तीमरी नरक-भूमि

का सातवां नरकेन्द्रक—नरक-स्थान विशेष

(देवेन्द्र ८)।

उज्जलिअ वि [उज्ज्वलित] १ उद्दीप्त, प्रका-

शित (पउम ११८, ८८, औप)। २ ऊँची

ज्वालाओं से युक्त (जीव ३)। ३ न. उद्दीपन

(राज)।

उज्जल्ल वि [दे] स्वेद-सहित, पसीनावाला,

मलिन, 'मुंडा कहुविणट्ठगा उज्जल्ला

असमाहिया' (सूत्र १, ३)। २ बलवान,

बलिष्ठ (हे २, १७४)।

उज्जल्ल न [औज्ज्वल्य] उज्ज्वलता (गा

६२६)।

उज्जल्ला स्त्री [दे] बलात्कार, जबरदस्ती

(दे १, ६७)।

उज्जव अक [उद् + यत्] प्रयत्न करना।

वक्र. 'सुट्ठुवि उज्जवमाण पंचेव करंति

रित्तय समण' (उव)।

उज्जवण देखो उज्जावण (भवि)।

उज्जह सक [उद् + हा] प्रेरणा करना।

सकृ उज्जहित्ता (उत्त २७, ७)।

उज्जाअर पुं [उज्जागर] जागरण, निद्रा

उज्जागर } का अभाव (गा ४८२, वज्जा ७६)।

उज्जाडिअ वि [दे] उजाड किया हुआ

(भवि)।

उज्जाण न [उद्यान] उद्यान, बगीचा, उपवन

(अणु, कुमा)। °जत्ता स्त्री [°यात्रा] गोष्ठी,

गोठ (राणा १, १)। °पालअ, °वाल वि

[पालक, °पाल] बगीचा का रखक, माली

(सुपा २०८, ३०७)।

उज्जाणिअ वि [औद्यानिक] उद्यान-संबंधी,

बगीचा का (भग १४, १)।

उज्जाणिअ वि [दे] निम्नीकृत, नीचा किया

हुआ (दे १, ११३)।

उज्जाणिआ स्त्री [औद्यानिका] गोष्ठी,

उज्जाणिगा } गोठ, 'उज्जाण जत्थ लोणो

उज्जाणिमाए वच्चइ' (निचू ८, स १५१)।

उद्धाव देखो उद्धा ।

उद्धवण न [उद्धावन] नीचे देखो (श्रा १) ।

उद्धावणा स्त्री [उद्धावना] १ प्रवल प्रवृत्ति ।

२ दूर-गमन, दूर क्षेत्र में जाना (धर्म ३) । ३

कार्य की शीघ्र सिद्धि (वव १) ।

उद्धि देखो बुद्धि (पड्) ।

उद्धि स्त्री [दे] गाढी का एक अवयव, गुजराती 'उव' (सुज १०, ८ टी, ठा ३, २ टी-पन १३३) ।

उद्धिअ देखो उद्धरिअ = उद्धृत (श्रा ४०, श्रौप, राय, वव १, श्रौप, पञ्च २८) ।

उद्धीमुह वि [ऊर्ध्वीमुख] मुँह ऊँचा किया हुआ (चद ४) ।

उद्धुधलिय वि [दे] धुँधलाया हुआ (सण) ।

उद्धुधुणिय देखो उद्धुय (सण) ।

उद्धुधुम सक [पू] पूर्ण करना, पूरा करना । उद्धुमइ (हे ४, १५६) ।

उद्धुधुमा सक [उद् + ध्मा] १ आवाज करना । २ जोर से धमनी को चलाना । उद्धुमाइ उद्धु-माअइ (पड्, प्राप्ता) ।

उद्धुधुमाइअ वि [उद् + ध्मापित] ठहा किया हुआ, निर्वापित (से १, ८) ।

उद्धुधुमाय वि [दे] १ परिपूर्ण, 'मायाइ उद्धु-माया' (कुमा), 'पडिहत्थमुद्धुमाय आहिरेइयं च जाण आउणो' (णदि) । २ उन्मत्त, 'मअरदरसुद्धुमाअमुहलमहुअरं' (मे ६, ११) ।

उद्धुधुय वि [उद्धूत] १ पवन से उडा हुआ (से ७, १४) । २ प्रमूत, फैला हुआ, 'गधुद्धु-याभिरामे' (श्रौप) । ३ प्रकम्पित, 'वाउद्धुय-विजयवेजयनी' (जीव ३) । ४ उत्कट, प्रवल (मम १३७) । ५ व्यक्त, प्रकट (कप्प) ।

उद्धुधुर वि [उद्धुधुर] १ ऊँचा, उच्च, उद्धुर उच्च (पात्र) । २ प्रचण्ड, प्रवल (सुर ३, ३६, १२, १०६) ।

उद्धुधुवत } देखो उद्धू
उद्धुधुवमाण }

उद्धुधुमिय वि [उद्धुधुपित] १ रोमाञ्च, 'अन्नोन्नजपिएहि हसिउद्धु सिएहि खिप्पमाणो य' (उव) । २ वि रोमाञ्चित, पुलकित (दे १, ११५, २, १००), 'उद्धुसियरोमकूवो सीयनअनिलेण संकुइयगतो' (सुर २, १०१), 'उद्धुसियकेसरसठ' (महा) ।

उद्धू सक [उद् + धू] १ कँपाना, चलाना । २ चामर वगैरह वीजना, पखा करना । कवक उद्धुधुवतं, उद्धुधुवमाण (पउम २, ४०, कप्प) ।

उद्धुधुणिय देखो उद्धुधुय (मण) ।

उद्धूद (शौ) देखो उद्धुधुय (चार ३५) ।

उद्धूल सक [उद् + धूलय्] १ व्याप्त करना । २ घुलित लगाना । उद्धूलेइ (हे ४, २६) ।

उद्धूलण न [उद्धूलन] घुलित को अन्न पर लगाना,

'जारमसाणसमुभवमूदुहफमसिजिरगोए । एण समप्पइ एवकावालिआइ उद्धूलणारभो' (गा ४०८) ।

उद्धूलिय वि [उद्धूलित] १ घुलित में लपेटा हुआ । २ व्याप्त, 'तिमिरोद्धूलिअभवण' (कुमा) ।

उद्धूधुवणिया स्त्री [उद्धूधुपनिआ] धूप देना, 'केवि हु विरालतन्नयपुरीसमीमेहि उगुलाईहि । उव्वरियम्मि खिवित्ता उद्धूवणिय पयच्छति' (सुर १४, १७४) ।

उद्धूधुविअ वि [उद्धूधुपित] जिसको धूप किया गया हो वह (विक्र ११३) ।

उद्धोस पु [उद्धोस] उल्लाम, ऊँचा होना (सट्ठि ६५), 'ज ज इह मुहुमबुद्धोए चित्तिज्ज त सव्व रोमुद्धोस जणोइ मह अम्मो' (सुश ६४) ।

उन्न न [ऊर्ण] ऊन, भेड या बकरी के रोम । 'मय वि [मय] ऊन का बना हुआ, 'गोवालिआण विद नच्चावड फारमुत्तियाहारं । उन्नमयवासनिवमणपीणुअयणहराभोग' (सुपा ४३२) ।

उन्न (अप) वि [विपण] विपाद-प्राप्त, खिल (पड्) ।

उन्नइ देखो उण्णइ (काल, सुपा २५७, प्रासू २८, सार्ध ३४) ।

उन्नइज्जमाण देखो उन्नी ।

उन्नइय वि [उन्नीत] ऊँचा लिया हुआ (पउम १०५, ५७) ।

उन्नद सक [उद् + नन्द] अभिनन्दन करना । कवक 'हिययमालासहम्मोहि उन्नदिज्जमाणे' (कप्प) ।

उन्नय देखो उण्णय (सुपा ४७६, मम ७१, कप्प) ।

उन्ना देखो उण्णा । 'मय वि [मय] ऊन का बना हुआ (सुपा ६४१) ।

उन्नाडिय न [उन्नाटित] हर्ष-श्रोतक आवाज (स ३७६) ।

उन्नाम पु [उन्नाम] १ ऊँचाई । २ अग्निमान, गर्व (सम ७१) ।

उन्नामिअ वि [उन्नमित] ऊँचा किया हुआ (पात्र, महा, म ३७७) ।

उन्नालिअ वि [दे] देखो उण्णालिअ, 'उन्ना-लिअ उन्नामिअ' (पात्र) ।

उन्नाह पु [उन्नाह] ऊँचाई (पात्र) ।

उन्निअ देखो उण्णिअ = श्रीणिक (श्राघ ५०५) ।

उन्निक्ख सक [उन्नि + खन्] उखाड़ना, उन्मूलन करना । भवि, उन्निक्खिस्सामि (सूय २, १, ६) । क उन्निक्खेयव्व (सूय २, १, ७) ।

उन्निक्खमण न [उन्निष्क्रमण] दीक्षा छोड़ कर फिर गृहस्थ होना, माधुपन छोड़कर फिर गृहस्थ बनना (उप १३० टी, ३६६) ।

उन्नी देखो उण्णी । कवक, उन्नइज्जमाण (कप्प) ।

उन्नाल (अप) पु [उण्णाल] श्रीण्य ऋतु (भवि) ।

उपक्खर न [उपस्कर] घर का उपकरण (उत्त ६, ६) ।

उपंत न [उपान्त] १ पिछला या पीछे का भाग । २ वि समीपस्थ (गा ६६३) ।

उपरि } देखो उवरि (विसे १०२१, पड्) ।
उपरि }

उपरिइ देखो उवरिइ (पड्) ।

उपवज्जमाण देखो उववाय = उप + वादय् ।

उपसप्प देखो उवसप्प । उपसप्पइ (पड्) । सक उपसप्पिय (नाट) ।

उपाणहिय पुंस्त्री [उपानत्] जूता, 'अन्न-दिणे जपाणेपाणहिए मुत्तमाख्खा' (सुपा ३६२), 'तह तं निज्जाणहियाउवि वाहिस्स' (सुपा ३६२) ।

उत्प देखो ओत्प = अर्पय् । उपेइ (पि १०४, हे १, २६६) ।

उज्जरिअ वि [दे] टेढी नजर से देखा हुआ ।
 २ विक्षिप्त । ३ क्षिप्त, फँका हुआ । ४ परित्यक्त, उज्जित (दे १, १३३) ।
 उज्जल वि [दे] प्रवल, वलिष्ठ (पङ्) ।
 उज्जलिअ वि [दे] १ प्रक्षिप्त, फँका हुआ ।
 २ विक्षिप्त (पङ्) ।
 उज्जस पु [दे] उद्यम, उद्योग, प्रयत्न (दे १, ६५) ।
 उज्जसिअ वि [दे] उत्कृष्ट, उत्तम (पङ्) ।
 °उज्ज्मा देखो अउज्ज्मा (उप पृ ३७४) ।
 उज्ज्माय पु [उपाव्याय] विद्या-दाता गुरु, शिक्षक, पाठक (महा, सुर १, १८०) ।
 उज्ज्मासि वि [उज्ज्मासिन्] चमकनेवाला, देदीप्यमान, 'ककरणुज्ज्मासिहत्या' (रमा) ।
 उज्ज्मासिअ न [दे] १ वचनीय, लोकापवाद ।
 २ वि निन्दनीय । ३ कथनीय (दे ३, ५५) ।
 उज्ज्माय वि [उज्ज्माय] १ परित्यक्त, विमुक्त (कुमा) । २ मित्र (आव ४) । ३ न परित्याग (अणु) । °य पु [क] एक साथवाह का पुत्र (विपा १, २) ।
 उज्ज्माय वि [दे] १ शुष्क, सूखा हुआ । २ निम्नीकृत, नीचा किया हुआ (पङ्) ।
 उज्ज्माय स्त्री [उज्ज्माय] एक साथवाह-पत्नी (गाया १, ७) ।
 उट्ट पुत्री [उट्ट] ऊँट, करम (विपा १, ६, हे २, ३४; उवा) । स्त्री उट्टी (राज) ।
 उट्टार पु [अवतार] घाट, तीर्थ, जलाशय का तट,
 'अह ते तुरउट्टारे बहुमडमयरे सुसत्त्वकमलवणे ।
 लीलायति जहिच्छ समरतलाए कुमारगया' (पउम ६८, ३०) ।
 उट्टिगा देखो उट्टिया (धर्मस ७८) ।
 उट्टिय } वि [औष्ट्रिक] ऊँट सम्बन्धी । ऊँट उट्टियय } के रोमों का बना हुआ (ठा ५, ३, शोध ७०६) । ३ पुं मृत्य, नौकर (कुमा) ।
 ४ घडा, घट (उवा) ।
 उट्टिया स्त्री [उट्टिका] घडा, घट, कुम्भ (विपा १, ६, उवा) । °समण पु [°श्रमण] आजी-विक-मत का साधु, जो वडे घडे में बैठ कर तपस्या करता है (श्रीप) ।
 उट्ट अक [उत् + स्था] उठाना, खडा होना ।

उट्टइ (हे ४, १७, महा) । उट्टेइ (पि ३०६) ।
 वक्क उट्टत (गा ३८२, सुपा २६६), उट्टित (सुर ८, ४३, १३, ५३) । सक्र. उट्टाय, उट्टित्त, उट्टित्ता, उट्टेत्ता (राज, आचा, पि ५८२) । हेक्क उट्टित्त (उप पृ २५८) ।
 उट्ट वि [उत्थ] उत्थित, उठा हुआ (शोध ७० उवा) । °वइसअप [°ोपवेरा] उठ-बैठ (हे ४, ४२३) ।
 उट्ट पुं [ओष्ट] ओठ, अघर (मम १२५, सुपा ५२३) ।
 उट्ट पु [उट्ट] जलचर जल-विशेष (सूय १, ७, १५) ।
 उट्टण देखो उट्टाण (धर्मवि १३०) ।
 उट्टभ सक्र [अव + स्तभ्] १ आलम्बन देना, सहाय देना । २ आक्रमण करना कर्म उट्टभइ (हे ४, ३६५) । सक्र 'उट्ट-भिया एगया काय' (आचा १, ६, ३, ११) ।
 उट्टवण न [उत्थापन] उत्थापन, ऊँचा करना, उठाना (शोध २१४, दे १, ८२) ।
 उट्टविय वि [उत्थापित] उत्थापित, उठाया हुआ, खडा किया हुआ, 'सा मणिय उट्टविया भणइ किमागमणकारण सुणहे' (सुर ६, १६०) ।
 उट्टा देखो उट्ट = उत् + स्था (प्रामा) ।
 उट्टा स्त्री [उत्था] उत्थान, उठान, 'उट्टाए उट्टेइ' (गाया १, १, औप) ।
 उट्टाइ वि [उत्थाइन्] उठनेवाला (आचा) ।
 उट्टाइअ वि [उत्थित] १ जो तैयार हुआ हो, प्रणुण (पउम १२, ६६) । २ उत्पन्न, उत्थित (स ३७६) ।
 उट्टाइअ देखो उट्टाविअ (उवा) ।
 उट्टाण न [उत्थान] १ उठान, ऊँचा होना (उवा), 'ममसलिलेहि घडासु अ वोच्छिजइ पसरिअ महिरउट्टाण' (से १३, ३७) । २ उद्भव, उत्पत्ति (गाया १, १४) । ३ आरम्भ, प्रारम्भ (भग १५) । ४ उद्भवन, बाहर निकलना (एदि) । °सुय न [°श्रुत] शास्त्र-विशेष (एदि) ।
 उट्टाय देखो उट्ट = उत् + स्था ।
 उट्टाव सक्र [उत् + स्थापय्] उठाना ।
 उट्टावेइ (महा) ।

उट्टावण देखो उट्टवण (कस) ।
 उट्टावण देखो उवट्टावण, 'पव्वावणविहिमुट्टा-वणं च अजाविहि निरवसेस' (उव) ।
 उट्टावणा देखो उवट्टावणा (भत २५) ।
 उट्टाविअ वि [उत्थापित] १ उठाया हुआ, खडा किया हुआ (नाट) । २ उत्पातित, 'नुमए उट्टाविअो कली एम' (उप ६४८ टी) ।
 उट्टिउ }
 उट्टित्त } देखो उट्ट = उत् + स्था ।
 उट्टित्ता }
 उट्टित्तु }
 उट्टिय वि [उत्थित] उत्थित, खडा हुआ (सुर ३, ६६) । २ उत्पन्न, उद्भूत (परह १, ३), 'विहीसिया कावि उट्टिया एस' (सुपा ५४१) । ३ उदित, उदय-प्राप्त, 'उट्टियम्मि सूर' (अणु) । उद्यत, उद्युक्त (आचा) ।
 ५ उद्भसित, बाहर निकला हुआ (शोध ६५ मा) ।
 उट्टिर वि [उत्थाट्] उठनेवाला (सण) ।
 उट्टिसिय वि [उट्टुपित] पुलकित, रोमा-ञ्चित (शोध, कुमा) ।
 उट्टीअ (अप) देखो उट्टिय (पिंग) ।
 उट्टुभ } अक [अव + छीव्] थकना ।
 उट्टुह } उट्टुभति, उट्टुभह (पि १२०),
 उट्टुहह (भग १५) । सक्र उट्टुहइत्ता (भग १५) ।
 उठिअ (अप) देखो उट्टिय (पिंग—पत्र ५८१) ।
 °उड पुन [कुट] घट, कुम्भ,
 'पडिक्कमएणुपुजे लावएणउडे अणगगमकुंभे ।
 पुरिससअहिअअवरिण कीस थएणती थएे वहसि' (गा २६०)
 °उड पु [कूट] समूह, राशि, 'सप्पी जहा अडउडं भत्तार जो विहिंसइ' (सम ५१) ।
 °उड देखो पुड (उवा, महा, गडड, गा ६६०, सुर २, १३, प्रासू ३६) ।
 उडक पुं [उट्टक] एक ऋषि, तापम-विशेष (निचू १२) ।
 उडव वि [दे] लिप्त, लिपा हुआ (पङ्) ।
 उडज } पु [उटज] ऋषि-आश्रम, पण-
 उडय } शाला, पत्तों से बना हुआ घर (अभि
 उडव } १११, प्रति ८४, अभि ३७, स १०), 'उडवो तावसगेह' (पात्र) ;

उत्पाड सक [उत् + पाटय्] १ ऊपर उठाना। २ उखाडना, उन्मूलन करना। उप्पा-डेह (परह १, १, म ६५, काल)। कृ उप्पा-डणिज्ज (सुपा २४६)। सकृ उप्पाडिय (नाट)।

उत्पाड सक [उत् + पाटय्] उत्पन्न करना। सकृ उप्पाडिऊण (विसे ३३२ टी)।

उत्पाड पु [उत्पाट] उन्मूलन, उत्खनन, 'नयणोप्पाडो' (उप १४६ टी, ६८६ टी)।

उत्पाडण न [उत्पाटन] १ उत्थापन, ऊपर उठाना। २ उन्मूलन, उत्खनन (स २६६, राज)।

उत्पाडिय वि [उत्पाटित] १ ऊपर उठाया हुआ (पात्र, प्राण)। २ उन्मूलित (आक)।

उत्पाडिय वि [उत्पादित] उत्पन्न किया हुआ, 'उप्पाडियणणणा खदगमीमाण तेसि नमो' (भाव १३)।

उत्पादअ वि [उत्पादक] उत्पन्न कर्ता (प्रयौ १७)।

उत्पादीअमाण देखो उत्पाय = उत् + पादय्।

उत्पाय सक [उत् + पादय्] उत्पन्न करना, बनाना। उप्पाएहि (काल)। वक्र उप्पाएंत, उत्पायंत (सुर २, २२, ६, १३)। सकृ उप्पाएत्ता (भग)। हेकृ उप्पाइत्ता, उप्पा-एउ, उप्पाएत्तए (राज, पि ४६५, राया १, ४)। कवकृ उप्पादीअमाण (शौ) (नाट)।

उत्पाय पुन [उत्पात] १ उत्पत्ति, ऊर्ध्व-गमन, 'न मग्गं गतुमणा सिक्खति नहणुप्पाय' (सुपा १८०)। २ आकस्मिक उपद्रव, 'पव-हणं च पासइ समुद्धमज्जे उप्पाएण छम्मासे भमत ताहे अणेण त उत्पाय उवसामिय' (महा)। ३ आकस्मिक उपद्रव का प्रतिपादक शास्त्र, निमित्त शास्त्र-विशेष (ठा ६, सम ४७, परह १, ४)। 'निवाय पु [निपात] चढना और उतरना (स ४११)।

उत्पाय पुं [उत्पाद] उत्पत्ति, प्रादुर्भाव (सुपा ६, कुमा)। 'पठवय पु [पर्वत] एक प्रकार के पर्वत, जहां आकर कई व्यन्तर-जातीय देव-देविया क्रीड़ा के लिए विचित्र प्रकार के शरीर बनाते हैं (सम ३३, जीव ३)। 'पुव्व न

[पूर्व] प्रथमपूर्व, ग्रन्थाश-विशेष, वारहवें जैन अङ्ग-ग्रन्थ का एक भाग (सम २६)।

उत्पायग वि [उत्पादक] १ उत्पन्न करने-वाला। २ पु. श्रीन्द्रिय जन्तु-विशेष, कीट-विशेष (वव ८)।

उत्पायण न [उत्पादन] १ उत्पादन, उपाजन (ठा ३, ४)। २ वि उत्पादक, उपाजक (पउम ३०, ४०)।

उत्पायणया } स्त्री [उत्पादना] १ उपाजन, उत्पायणा } उत्पन्न करना। जैन साधु की भिक्षा का एक दोष (श्लो ७४६, ठा ३, ४, पिरड १)।

उत्पायय वि [उत्पादक] उत्पन्न-कर्ता (सुख २, २५)।

उत्पाल सक [कथ्] कहना, बोलना। उप्पा लइ (हे ४, २)। उप्पालसु (कुमा)।

उत्पाव सक [उत् + प्लावय्] १ लेंवाना, तैराना। २ कुदाना, उडाना। उप्पावेइ (हे २, १०६)। कवकृ उत्पियमाण (उवा)।

उत्पास सक [उत्प्र + अस्] हँसी करना। उप्पामिति (सुख १, १६)।

उत्पाहल न [दे] उत्कठा, उत्सुकता (पात्र)।

उत्पि सक [अर्पय्] देना। उत्पिउ (कप्प)।

उत्पि अ [उपरि] ऊपर, 'कहि ए भते। जोइ-सिआ देवा परिवसति ? गोयमा। उत्पि दीव-समुदाए इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए' (जीव ३, राया १, ६, ठा ३, ४, श्रीप)।

उत्पिगलिआ स्त्री [दे] हाथ का मध्य भाग, करोत्सग (दे १, ११८)।

उत्पिजल न [दे] १ सुरत, संभोग। २ रज, धूली। ३ अपकीर्ति, अपयश (दे १, १३५)।

उत्पिजल वि [उत्पिजल] अति-आकुल, व्याकुल (कप्प)।

उत्पिजल अक [उत्पिजलय्] आकुल की तरह आचरण करना। वक्र उत्पिजलमाण (कप्प)।

उत्पिच्छ [दे] देखो उत्पित्थ, 'आहित्य उत्पिच्छ च आउल रोसभरिय च', 'भीयं दुय-मुपिच्छमुत्ताल च कममो मुणेयव' (जीव ३), 'हत्थी अह तस्स सवडहुत्तो पहाविओ आय-रुपिच्छो', 'रक्खससेन्नपि आयरुपिच्छ' (पउम

८, १७५, १२, ८७), 'उत्पिच्छमथरादीहि' (भत्त ११६)।

उत्पिण देखो उत्पण। वक्र उत्पिणित (सुपा ११)।

उत्पित्थ वि [दे] १ अस्त, भीत (दे १, १२६, से १०, ६१, म ५७४, पुफ ४४३, गउड), 'किं कायव्वविमूढा सरणविहूणा भयुप्पित्था' (सुर १२, १६०)। २ कुपित, क्रुद्ध। ३ विधुर, आकुल (दे १, १२६, पात्र)।

उत्पित्थ वि [दे] स्वाम-युक्त (गीत) (राय ७७ टी)।

उत्पिय सक [उत् + पा] १ आम्वादन करना। २ फिर-फिर स्वास लेना। वक्र, उत्पियंत (परह १, ३—पत्र ५५, राज)।

उत्पिय वि [अर्पित] अर्पण किया हुआ (हे १, २६६)।

उत्पियण न [उत्पान] फिर-फिर स्वास लेना (राज)।

उत्पियमाण देखो उत्पाव।

उत्पिलण न [उत्सावन] लांघना (पिंड ४२२)।

उत्पिलाव देखो उत्पाव। उत्पिलावेइ। वक्र उत्पिलावत, 'जे भित्तू सरण नाव उत्पिलावेइ, उत्पिलावत वा साइज्जइ' (निचू १८)।

उत्पीड पु [दे उत्पीड] समूह, राशि (से ४, ३७, ८, ३)।

उत्पीडण न [उत्पीडन] १ कस कर बांधना। २ दवाना (से ८ ६७)।

उत्पील सक [उत् + पीडय्] १ कस कर बांधना। २ उठवाना 'सरणं वा एाव उप्पीलावेज्जा (आचा २, ३, १, ११)। उप्पीलवेज्जा (पि २४०)।

उत्पील पु [दे] १ सघात, समूह (दे १, १२६, मुपा ६१, मुर ३, ११६, वज्जा ६०, पुफ ७३, घम्म १२ टी), 'हुयामणो दहे सव्व जालुप्पीलो विणासए' (महा)। २ स्यपुट, विपमोन्नत प्रदेश (दे १ १२६)।

उत्पीलण न [उत्पीडन] पीडा, उपद्रव (स २७२)।

उत्पीलिय वि [उत्पीडित] कस कर बांधा हुआ, 'उप्पीलियचिचपट्टगहियाउहपहरणा' (परह १, ३, विपा १, २)।

अक्षरअक्षरिका (इक) । °लोग, °लोग पु
[°लोक] स्वर्ग, देव-लोक (ठा ५, ३, भग) ।
°वाय पुं [°वात] ऊँचा गया हुआ वायु,
वायु-विशेष (जीव १) ।

उद्ध ऊपर देखो, 'उद्धजाण अहोसिरे भाण-
कोटोवगए' (भग १, १ महा, आ ३३) ।

उद्धक न [दे] मागं का उन्नत भू-भाग (सूत्र
१, २) ।

उद्धल } पु [दे] उल्लास, विक्रम (दे १,
उद्धल } ६१) ।

उद्धविय वि [ऊर्ध्वित] ऊँचा किया हुआ
(ववा १४६) ।

उद्धा स्त्री [ऊर्ध्वा] ऊर्ध्व-दिशा (ठा ६) ।

उद्धि [दे] देखो उद्धि (मुल १०, ८) ।

उद्धि देखो बुद्धि (पड्) ।

उद्धि देखो इद्धि (पड्) ।

उद्धिय देखो उद्धरिअ = उद्धृत (रभा) ।

उद्धिया स्त्री [दे] १ पात्र-विशेष (स १७३) ।

२ कम्बल वगैरह ओढ़ने का वस्त्र (स ५८६) ।

उण देखो पुण = पुनर् (पिंड ८२) ।

उण न [ऋण] ऋण, करजा (पड्) ।

उण } देखो पुण (प्राभा, प्रासू ६१, कुमा,
उणा } हे १, ६५) ।
उणाइ

उणपन्न स्त्रीन [एकोनपञ्चाशत्] उनचाम,
४६ (वेवेन्द्र ६६) ।

उणाइ पु [उणादि] व्याकरण का एक
प्रकरण (परह २, २) ।

उणाइ पु [दे] प्रिय, पति, नायक, 'उणाइ-
साहबोह्ला प्रियायें' (सझि ४७) ।

उणो देखो पुण (गउड, पि ३४२, हे १, ६५) ।

उण्ण न [ऊर्ण] भेड या वकरी के रोम,
रोश्री । देखो उन्न । °कप्पास पुं [°कार्पास]
ऊन, भेड के रोम (निचू १) । °णाभ पुं
[°नाभ] मकड़ी, कीट-विशेष (राज) ।

°उण्ण देखो पुण्ण = पूर्ण (सि ८, ६१, ६५) ।

उण्णअ सक [उद् + नद्] पुकारना, आह्वान
करना । उण्णअइ (प्रकृ ७४) ।

उण्णइ स्त्री [उन्नात] उन्नति, अभ्युदय (गा
४६७) ।

उण्णइज्जमाण देखो उण्णो ।

उण्णम अक [उद् + नम्] ऊँचा होना,
उन्नत होना । वकृ. उण्णमत (पि १६६) ।

सकृ. उण्णमिय (आचा २, १, ५) ।

उण्णम वि [दे] समुन्नत, ऊँचा (दे १, ८८) ।

उण्णय वि [उन्नत] १ उन्नत, ऊँचा (अभि
२०६) । २ गुणवान्, गुणी (गाया १, १) ।

३ अभिमानी (सूत्र १, १६) । ४ न अभि-
मान, गर्व (भग १२, ५) ।

उण्णय पु [उन्नय] नीति का अभाव (भग
१२, ५) ।

उण्णा स्त्री [ऊर्णा] ऊन, भेड के रोम
(आवम) । °पिपीलिया स्त्री [°पिपीलिका]
चीटी, जन्तु-विशेष (दे ६, ४८) ।

उण्णाअक वि [उन्नायक] १ उन्नति-कारक ।
२ पुन. छन्द शास्त्र प्रसिद्ध मध्य-गुरु चतुष्कल
की सज्ञा (पिग) ।

उण्णाग पु [उन्नाक] ग्राम-विशेष (आवम) ।

उण्णाम पुं [उन्नाम] १ उन्नति, ऊँचाई (मे
६, ५६) । २ गर्व, अभिमान । १ गर्व का
कारण-भूत कर्म (भग १२, ५) ।

उण्णाम सक [उद् + नमय्] ऊँचा करना
(सि ४, ५६) ।

उण्णामिय वि [उन्नमित] ऊँचा किया
हुआ (गा १६, २५६, से ६, ७१) ।

उण्णाल सक [उद् + नमय्] ऊँचा करना ।
उण्णालइ (प्राकृ ७५) ।

उण्णालिय वि [दे] १ कृश, दुर्बल । २
उन्नमित, ऊँचा किया हुआ (दे १, १३६) ।

उण्णिअ वि [उन्नीत] वितर्कित, विचारित
(मे १३, ७७) ।

उण्णिअ वि [और्णिक] ऊन का बना हुआ
(ठा ६, ३, श्रोध ७०६, ८६ आ) ।

उण्णिइ वि [उन्निद्र] १ विकसित, उल्लसित
(गउड) । २ निद्रा-रहित (माल ८५) ।

उण्णी सक [उद् + नी] १ ऊँचा ले जाना ।
२ कहना । भवि उण्णेहं (विमे ३५८५) ।
कवकृ. उण्णइज्जमाण (राज) ।

उण्णुइअ पु [दे] १ हूँकार । २ आकाश की
तरफ मुँह किए हुए कुत्ते की आवाज (दे
१, १३२) । ३ वि. गर्वित, 'एव भण्णिओ सतो
उण्णुइओ सो कहेइ सव्व तु' (वव २, १०) ।

उण्ह पु [उण्ण] १ आतप, गरमी (गाया
१, १) । २ वि गरम, तप्त (कुमा) ।

उण्हवण न [उण्णन] गरम करना (पिंड
२४०) ।

उण्हिआ स्त्री [दे] कृसर, खिचड़ी (दे
१, ८८) ।

उण्हिस पुन [उण्णीप] पगड़ी, मुकुट (हे
२, ७५) ।

उण्होदयभट्ट पु [दे] भ्रमर, भमरा, भौरा (दे
१, १२०) ।

उण्होला स्त्री [दे] कीट-विशेष (आवम) ।

उताहो अ [उताहो] अथवा, या (वि ८५) ।

उत्त वि [उत्त] कथित, अभिहित (सुर १०,
७६, स ३७७) ।

उत्त वि [उत्त] १ बोया हुआ । २ निष्पादित,
उत्पादित, 'देवउत्ते' अए लोए वमउत्तेति
यावरे' (सूत्र १, १, ३) ।

उत्त पु [दे] वनस्पति-विशेष (राज) ।

°उत्त वि [गुप्त] रक्षित (सूत्र १, १, ३, ५) ।

उत्त देखो पुत्त (गा ८४, सुर ७, १५८) ।

उत्तइय } वि [उत्तेजित] (दश० नि० गा०
उत्तइय } १११. अग०) ।

उत्तंघ देखो उत्तंघ = हृत् । उत्तघइ (हे ४,
१३३) ।

उत्तघ देखो उत्तभ । उत्तघइ (प्राकृ ७०) ।

उत्तत देखो वुत्तत (पड्, विक्र ३६) ।

उत्तंपिअ वि [दे] खिन्न, उद्विग्न (दे १,
१०२) ।

उत्तंभ सक [उत् + स्तम्भ्] १ रोकना ।
२ अवलम्बन देना, सहारा देना । कर्म.
उत्तभिज्जइ, उत्तभिज्जेति (पि ३०८) ।

उत्तभण न [उत्तम्भन] १ अवरोध । २
अवलम्बन (उप पृ २२१) ।

उत्तंभय वि [उत्तम्भक] १ रोकनेवाला ।
२ अवलम्बन देनेवाला, सहायक (उप पृ
२२०) ।

उत्तंस पुं [अवतंस] शिरो-भूषण, अवतंस
(गउड, दे २, ५७) ।

उत्तस पुं [उत्तंस] कर्णपूरक, कनफूल, कर्ण-
भूषण (पात्र) ।

उत्तइय वि [दे] उत्तेजित, अधिक दीपित
(दसनि ३, ३५) ।

उत्तण वि [दे] गर्वित (सट्ठि ५६ टी) ।
देखो उत्तुण ।

उठ्ठुक्क सक [उद् + ठ्ठुक्] बोलना, कहना ।
उठ्ठुक्कइ (हे ४, २) ।

उठ्ठुक्क न [दे] १ प्रलपित, प्रलाप । २ सकट । ३ बलात्कार (दे १, १२८) ।

उठ्ठुड अक [उद् + ठ्ठुड] तेरना ।

उठ्ठुड } पु [उद् + ठ्ठुड] तेरना । 'निठ्ठुड,
उठ्ठुडु } 'निठ्ठुडुण न [निठ्ठुड, ण]
उभउभ करना (पएह १, ३, उप १२८ टी) ।

उठ्ठुडु वि [उद् + ठ्ठुडित] उन्मग्न, तीर्ण (गा ३७, स ३६०) ।

उठ्ठुडुण न [उद् + ठ्ठुडन] उन्मज्जन (कप्पु) ।

उठ्ठुह अक [उत् + ठ्ठुभ] सक्षुब्ध होना ।
उठ्ठुहड (प्राक ७५) ।

उठ्ठूर वि [दे] १ अशुभ, ज्यादा । २ पुं सघात, समूह । ३ म्यपुट, विपमोन्नत प्रदेश (दे १, १२६) ।

उठ्ठ सक [ऊर्ध्वय्] ऊँचा करना, खड़ा करना । उठ्ठेउ (वज्जा ६४), उठ्ठेह (महा) ।

उठ्ठ देखो उड्ड (हे २, ५६, सुर २, ६, पड्) ।

उठ्ठभ पुं [उद् + भाण्ड] १ उत्कट भांड, बहुरूपा, निर्लज्ज हडा, उग्र विदूषक,

'खरउत्ति कह जाएसि

देहागारा कहिति से हदि ।

छिक्कोवण उठ्ठभो

शीयासि दाहणसहावो ।' (ठा ६ टी) ।

२ न गाली, कुत्सित-वचन, 'उठ्ठभवयण—' (भवि) ।

उठ्ठभत वि [दे] ग्लान, वीमार (दे १, ६५, महा) ।

उठ्ठभत वि [उद् + भ्रान्त] १ आकुल, व्याकुल, खिन्न (दे १, १४३),

'अवलवह मा संकह ए इमा गहलघिआ परिवभमइ । अत्यक्कगज्जिउठ्ठभतहित्थिअग्रा पहिअजाआ' (गा ३८६), 'भवभमणुउठ्ठभतमाणना अम्हे' (सुर १५, १२३) । २ मूर्च्छित (मे १, ८) । ३ भ्रान्तियुक्त, भौचक्का, चकित (हे २, १६४) ।

उठ्ठभत पुं [उद् + भ्रान्त] प्रथम नरक-मृथिवी का चौथा नरकेन्द्रक—एक नरक-स्थान (देवेन्द्र ३) ।

उठ्ठभग वि [दे] गुणित व्याप्त, 'तिमि-रोवभगणिमाण' (दे १, ६५, नाट) ।

उठ्ठभज्जि स्त्री [दे] कोद्रव-समूह (राज) ।

उठ्ठभड वि [उद् + भट] १ प्रवल, प्रचण्ड, 'उठ्ठभटपवणपकं पिरजयप्पडागाइ अइयहं' (सुपा ४६), 'उठ्ठभडकल्लोलभीमणारावे' (गमि ४) । २ भयकर, विकराल (भग ७, ६) । ३ उद्धत, आडवरी (पाग्र), 'अइरोसो अइतोमो अइहामो

दुजणेहि सवासो ।

अइउठ्ठभो य वेमो पंचवि

गलयपि लहुअति ।' (घम्म) ।

उठ्ठभ पु [उद् + भ्रम] १ उद्वेग २ परिभ्रमण (नाट) ।

उठ्ठभव अक [उद् + भू] उत्पन्न होना । उठ्ठभवइ (पि ४७५, नाट) । वहु उठ्ठभवत (सुपा ५७१, ६५६) ।

उठ्ठभव अक [ऊर्ध्वय्] ऊँचा करना, खड़ा करना ।

उठ्ठभव पु [उद् + भव] उत्पत्ति, प्रादुर्भाव (विसे; णाया १, २) ।

उठ्ठभवि वि [ऊर्ध्वय्] ऊँचा किया हुआ (उप पृ १३०, वज्जा १४) ।

उठ्ठभाअ वि [दे] शान्त, ठंडा, (दे १, ६६) ।

उठ्ठभाम सक [उद् + भ्रामय्] घुमाना । उठ्ठभामेइ (राय १२६) ।

उठ्ठभाम पुं [उद् + भ्राम] १ प्ररिभ्रमण (ठा ४) । २ वि परिभ्रमण करनेवाला (वव १) ।

उठ्ठभामइ स्त्री [उद् + भ्रामिणी] स्वरिणी, कुलटा स्त्री (वव ४, वृह ६) ।

उठ्ठभामय पु [उद् + भ्रामक] जार, उपपत्ति (पिंड ४२०) ।

उठ्ठभामग पुं [उद् + भ्रामक] १ पारदारिक, परस्त्री-लम्पट (ओष ६० भा) । २ वायु-विशेष, जो तुण वगैरह को ऊपर ले उडता है (जी ७) । ३ वि परिभ्रमण करनेवाला (वव १) ।

उठ्ठभामिगा स्त्री [उद् + भ्रामिका] कुलटा उठ्ठभामिया स्त्री, स्वरिणी (वव ६, उप पृ २६४) ।

उठ्ठभालण न [दे] १ सूप आदि से साफ-सुथरा करना, उत्पन्न । २ वि. अपूर्व, अद्वितीय (दे, १, १०३) ।

उठ्ठभालिअ वि [दे] सूप आदि से साफ किया हुआ, उत्पन्न, 'उठ्ठभालिअं उप्पुणिअं' (पाग्र) ।

उठ्ठभाव अक [रम्] क्रीड़ा करना, खेलना । उठ्ठभावइ (हे ४, १६८, पड्) । वहु उठ्ठभावंत (कुमा) ।

उठ्ठभावणया स्त्री [उद् + भावना] १ प्रभा-उठ्ठभावणा वना, गौरव, उन्नति, 'पवयण-उठ्ठभावणया' (ठा १०—पत्र ५१४) । २ उत्प्रेक्षा, वितर्कणा, 'असउठ्ठभावउठ्ठभावणहि' (णाया १, १२—पत्र १७४) । ३ प्रकाशन, प्रकटीकरण (गुंदि) ।

उठ्ठभाविअ न [रमण] मुरत, क्रीड़ा, समोग (दे १, ११७) ।

उठ्ठभाम सक [उद् + भासय्] प्रकाशित करना । वहु उठ्ठभासत, उठ्ठभासेत (पउम २८, ३६, ३, १५५) ।

उठ्ठभासिय वि [उद् + भासित] प्रकाशित (हेका २८२),

'भवणामो नीहरंते जिणम्मि

चाउव्विहेहि देवेहि ।

इतेहि य जतेहि य

कहमिव उठ्ठभासिय गयणं ॥'

(सुपा ७७) ।

उठ्ठभासुअ वि [दे] शोभाहीन (दे १, ११०) ।

उठ्ठभासेत देखो उठ्ठभास

उठ्ठिभ देखो उठ्ठिभय = उठ्ठिभद् (आचा) ।

उठ्ठिभडि वि [उद् + भ्रुकुटि] भौह चढाया हुआ (गउड) ।

उठ्ठिभज्जा स्त्री [उद् + भेद्या] माजी, एक तरह का शाक (पिंड ६२६) ।

उठ्ठिभद् सक [उद् + भिद्] १ ऊँचा करना, खड़ा करना । २ विकसित करना । ३ अंकुरित करना । ४ खोलना । कर्म. उठ्ठिभज्जति । वहु उठ्ठिभद्माण (आचा २, ७) ।

कवहु. 'भत्तिभरनिवमरुठ्ठिभज्जमाणघणपुलय-पूरियसरीरा' (सुपा ६५६ ६७, भग १६, ६) । सक. उठ्ठिभदिय, उठ्ठिभडिउ (पचा १३, पि ५७४) ।

उठ्ठिभग देखो उठ्ठिभय = उठ्ठिभद् (पएह १, ४) ।

सावन करनेवाले का महायक (सुपा १५१, स ३६६)। देखो उत्तरा°।

उत्तरओ अ [उत्तरत] उत्तर दिशा की तरफ (ठा ८, भग)।

उत्तरग न [उत्तरङ्ग] १ दरवाजे का ऊपर का काष्ठ (कुमा)। २ वि चपल, चंचल (मुद्रा २६८)।

उत्तरकुरु पु. व [उत्तरकुरु] १ देव-भूमि स्वर्ग (स्वप्न ६०)। २ स्त्री भगवान् नमिनाथ की दीक्षाशिषिका (विचार १२६)।

उत्तरण न [उत्तरण] १ उतरना, पार करना (ठा ५, स ३६२)। २ अवतरण, नीचे आना (ठा १०)।

उत्तरणवरडिया स्त्री [दे] उड्डप, जहाज, डोगी (दे १, १२२)।

उत्तरविउन्विय वि [उत्तरवैक्रियिक] उत्तर-वैक्रियनामक लव्वि से सम्पन्न (पच २, २०)।

उत्तरसंग देखो उत्तरा-संग (पव ३८)।

उत्तरा स्त्री [उत्तरा] १ उत्तर दिशा (ठा १०)।

२ मध्यम ग्राम की एक मूर्च्छना (ठा ७)।

३ एक दिशा-कुमारी देवी (ठा ८)। ४

दिगम्बर-मत-प्रवर्तक आचार्य शिवभूति की स्वनाम ख्यात भगिनी (विसे)। ५ अहिच्छत्रा

नगरी की एक बापी का नाम (ती)। °णंदा

स्त्री [°नन्दा] एक दिक्कुमारी देवी (राज)।

°पह पु [°पथ] उत्तरदिशा-स्थित देश, उत्त-

रीय देश (आचू २)। °फगुणी देखो उत्तर-

फगुणी (सम ७, इक)। °भद्वया देखो

उत्तर-भद्वया (सम ७, इक)। °यण न

[°यण] उत्तरायण, सूर्य का उत्तर दिशा में

गमन, माघ से लेकर छ महीना (सम ५३)।

°यया स्त्री [°यता] गान्धार-ग्राम की एक

मूर्च्छना (ठा ७)। °वह देखो °पह (महा,

उव १४२ टी)। °सग पु [°सग] उत्तरीय

वस्त्र का शरीर में न्यास-विशेष, उत्तरासण

(कप, भग, श्रीप)। °समा स्त्री [°समा]

मम्मम ग्राम की एक मूर्च्छना (ठा ७)। °साढा

स्त्री [°पाढा] नक्षत्र-विशेष (सम ६, कस)।

°हुत्त न [°भिमुख] १ उत्तर की तरफ।

२ वि. उत्तर दिशा की तरफ मुँह किया हुआ

(श्रीप ६५०, भाव ४)।

उत्तरिज्ज } न [उत्तरीय] चादर, डुपट्टा

उत्तरिय } (उवा, प्राप्र: हे १, २४८),

‘जरजिघं उत्तरिय’ (सुपा ५४६),

उत्तरिय वि [उत्तीर्ण] १ उतरा हुआ, नीचे

आया हुआ (सुर ६, १५६)। २ पार पहुँचा

हुआ (महा)।

उत्तरिय वि [औत्तरिक, औत्तराह] देखो

उत्तर (ठा १०, विसे १२४५)।

उत्तरिल्ल वि [औत्तराह] उत्तर दिशा या

काल में उत्पन्न या स्थित, उत्तर-सम्बन्धी,

उत्तरीय, ‘अह उत्तरिल्लस्यो’ (सुपा ४२,

सम १००, भग)।

उत्तरीअ देखो उत्तरिय = उत्तरीय (कुमा: हे

१, २४८, महा)।

उत्तरीकरण न [उत्तरीकरण] उत्कृष्ट बनाना,

विशेष शुद्ध करना, ‘तस्स उत्तरीकरणे’

(पडि)।

उत्तरोट्ट पु [उत्तरौष्ठ] १ ऊपर का ओठ (पि

३६७)। २ शम्भू, मूँछ (राज)।

उत्तलहअ पुं [दे] विटप, अकुर (दे १,

११६)।

उत्तव वि [उत्तवत्] जिसने कहा हो वह

(पि ५६६)।

उत्तस अक [उत् + त्स] १ त्रास पाना,

पीड़ित होना। २ डरना, भयभीत होना। वक्त

उत्तसंत (सुर १, २४६, १०, २२०)।

उत्तसिय वि [उत्तस्त] १ भयभीत। २

पीड़ित (सुर १, २४६)।

उत्ताड सक [उत् + ताडय्] १ ताडना,

ताडन करना। २ बाध बनाना। कवक.

‘उत्ताडिज्जाताणं दहरियाण कुडवाणं’

(राय)।

उत्ताडण न [उत्ताडन] १ ताडना करना

(कुमा)। २ बाध बनाना (राज)।

उत्ताण वि [उत्ताण] १ उन्मुख, ऊर्ध्व-मुख

(पचा १८)। २ चित्त (विपा १, ६, ठा

४, ४)। ३ विस्फारित, ‘उत्ताणणयणपेच्छ-

णिज्जा पासोदोया दरिसणिज्जा’ (श्रीप)।

४ अनिपुण, अकुशल, ‘उत्ताणमई न साहए

घम्म’ (घम्म ८)। °साइय वि [°सायिन्]

चित्त सोनेवाला (कस)।

उत्ताणअ } ऊपर देखो (भग: गा ११०,

उत्ताणग } कस)।

उत्ताणपत्तय वि [दे] एरण्ड-सम्बन्धी (पत्ती

वगैरह), (दे १, १२०)।

उत्ताणिअ वि [उत्तानित] १ चित्त किया

हुआ (से ६, ८९, गा ४६०)। २ चित्त

सोनेवाला (दमा)।

उत्तार सक [अव + तारय्] नीचे उता-

रना। वक्त, उत्तारेमाण (ठा ५)।

उत्तार सक [उत् + तारय्] १ पार पहुँ-

चाना। २ बाहर निकालना। ३ दूर करना,

‘देहो नईए खित्तो, तथो एए जइ नो उत्ता-

रिता तो ह मरिऊए’ (सुपा ३५७, काल)।

उत्तार पुं [उत्तार] १ उतरना, पार करना,

‘अणुसोओ संसारो पडिसोओ तस्म उत्तारो’

(दम २), एण्डुत्ताराइ’ (उवर ३२)। २

परित्याग (विसे १०४२)। ३ उतारनेवाला,

पार करानेवाला,

‘भवसयसहससदुलहे,

जाइजयमरणसागरोत्तारे।

जिणवयणम्मि गुणायर।

खणमवि मा काहिसि पमाय’

(प्रासू १३४)।

उत्तार पुं [दे] आवास-स्थान, गुजराती में

‘उतारो’ (सिरि ७००)।

उत्तारण न [उत्तारण] १ उतारना २ दूर

करना। ३ बाहर निकालना। ४ पार करना,

‘ता अज्जवि मोहमहाअहिहिवसवेगा

फुरति तुह वाढ।

ताणुत्तारणहेउ, तम्हा

जत्त कुणसु भद् ॥’

(सुपा ५५७, विसे १०४०)।

उत्तारय वि [उत्तारक] पार उतारनेवाला

(स ६४७)।

उत्तारिअ वि [उत्तारिन] १ पार पहुँचाया

हुआ। २ दूर किया हुआ। ३ बाहर निकाला

हुआ, ‘तेणवि उत्तारिओ भूमिविवराओ’

(महा)।

उत्ताल वि [उत्ताल] १ ‘महान्, बडा, ‘उत्ताण-

तालयाण वणिणहि दिज्जमाणाण’ (मुपा

५०२)। २ उतावला, शीघ्रकारी, ‘कहवि

उत्तालो अप्पडिलेहियतेज्जं गिएहत्तो’ (मुपा

६२०)। ३ उद्धत (दे १, १०१)। ४ वेताल,

ताल विरुद्ध गान का एक दोष, ‘गायतो मा

रसरमित्रो पिच्छइ नन्न विणा कणय”
(मोह २२) ।

उम्मतथ सक [अभ्या + गम्] सामने
श्राना । उम्मतथइ (हे ४, १६७, कुमा) ।

उम्मतथ वि [दे] अधो-मुख, विपरीत (दे १,
६३) ।

उम्मर पु [दे] देहली, द्वार के नीचे की लकड़ी
(दे १, ६५) ।

उम्मरिअ वि [दे] उत्थात, उन्मूलित (दे १,
१०० पङ्) ।

उम्मल वि [दे] स्नान, कठिन, घट्ट (दे १,
६१) ।

उम्मलण न [उन्मर्दन] मसलना (पात्र) ।

उम्मल पु [दे] १ राजा, वृष । २ मेघ,
वारिश । ३ बलात्कार । ४ वि पीवर, पुष्ट
(दे १, १३१) ।

उम्मल्ला छी [दे] वृष्णा (दे १, ६४) ।

उम्महण वि [उन्मथन] नाशक, विनाशकारी
(सुर ३, २३१) ।

उम्माइअ वि [उन्मादित] उन्मत्त किया हुआ
(पउम २४, १९) ।

उम्माडिय न [दे] उल्लुक जलता काष्ठ, गुज-
राती मे ‘उवाडु’ (मिरि ६८०) ।

उम्माण न [उन्मान] १ माप, माशा आदि
तुला मान (ठा २, ४) । २ जो तौला जाता
है वह (ठा १०) ।

उम्माद देखो उम्माय (भग १४, २) ।

उम्मादइत्तअ (शौ) वि [उन्मादयितृ] उन्माद
करानेवाला (अभि ४२) ।

उम्माय अक [उद् + मद्] उन्माद करना,
उन्मत्त होना । वहु उम्मायत (उप ६८६
टी) ।

उम्माय पु [उन्माद] १ चित्त-विभ्रम, पागल-
पन (ठा ६, महा) । २ कामाधीनता, विषय
मे अत्यन्तासक्ति (उत्त १६) । ३ श्रालिङ्गन
(विमे) ।

उम्माल देखो ओमाल (पात्र) ।

उम्मालिय व [उन्मालित] सुशोभित (भवि) ।

उम्माह पुं [उन्माथ] विनाश, ‘निसेविजतावि
(कामभोगा) करैति अहियुम्माहय’ (महा) ।

उम्माहय वि [उन्माथक] विनाशक, ‘अहो
उम्माहयत्त विसयाण’ (महा, भवि) ।

उम्माहि वि [उन्माथिन] विनाशक (महा-
टि) ।

उम्माहिय वि [उन्माथित] विनाशित (भवि) ।

उम्मि पुत्री [उम्मि] १ नल्लोन, तरंग (कुमा,
दे ३ ६) । २ भीट, जन-मगुदाय (भग २,
१) । ३ मालिणी छी [मालिनी] नदी-प्रियेप
(ठा २, ३) ।

उम्मिठ वि [दे] हस्तिपक-रहित, महावत-
रहित, निरकुश, ‘उम्मिठारिउरो उर उम्पू-
नइयसमूह सो’ (नुता ३४८, २०३) ।

उम्मिण सक [उद् + मी] तीनना, नाप
करना । कर्म उम्मिणिजड (अणु १०३) ।

उम्मिय वि [उन्मिन] प्रमित, ‘कोटापोडि-
जुगुम्मियावि निहियो हाहा विचित्ता गदी’
(रभा) ।

उम्मिलिअ वि [उन्मीलितृ] विकामी, ‘नत्थ य
उम्मिलिरपडमपल्लवारणियमयत्तमाहम्म’ (मुपा
८६) ।

उम्मिह अक [उद् + मील्] १ विकमित
होना । २ खुलना । ३ प्रकाशित होना ।
उम्मिल्लइ (गउड) । वहु उम्मिहन (मे १०,
३१) ।

उम्मिह वि [उन्मील] १ विकमित (पात्र,
से १०, ५०, न ७६) । २ प्रकाशमान (से
११, ६४, गउड) ।

उम्मिहण न [उन्मीलन] विकाम, उल्लान
(गउड) ।

उम्मिहिय वि [उन्मीलिन] १ विकमित,
उल्लमित । २ उद्धाटित, खुला हुआ, ‘तथो
उम्मिल्लियाणि तस्स नयणाणि’ (आवम,
स २८०) । ३ प्रकाशित । ४ बहिष्कृत,
‘पजरुम्मिल्लियमणिक्कणगथुम्मियाणे’ (जीव
४) । ५ न. विकास (अणु) ।

उम्मिस अक [उद् + मिप्] खुलना,
विवसना । वहु उम्मिसत (विक्र ३४) ,

उम्मिसिय वि [उन्मिपित] १ विकसित,
प्रफुल्ल (भग १४, १) । २ न विकास,
उन्नेप (जीव ३) ।

उम्मिरस देखो उम्मीस (पव ६७) ।

उम्मीलण देखो उम्मिल्लण (कुमा, गउड) ।

उम्मीलणा छी [उन्मीलना] प्रभव, उत्पत्ति
(राज) ।

उम्मीलिय देखो उम्मिलिय (राज) ।

उम्मीम वि [उन्मिअ] मिथित, युक्त (मुपा
७८, प्राप् ३२) ।

उम्मुअ देखो उमुय । वहु ‘जणम्मि पोउमपि-
वुम्मुअत चक्कु पगएणं गट निम्मिअज्जा’
(उप पृ २०) ।

उम्मुअ न [उल्लुक] श्रलान, लूवा (पात्र) ।

उम्मुअ गव [उद् + मुच्] परित्याग
करना । वहु उम्मुअत (विमे २७७०) ।

उम्मुअ वि [उन्मुक्त] १ विमुक्त, रहित,
‘ते धीग वधाणुम्मया नापाम्पति जीविय’
(सूत्र १, ६) । २ उन्निपन (श्रीप) । ३
परित्यक्त (आवम) ।

उम्मुग वि [उन्मग] १ जल के ऊपर तैरा
हुआ । २ न तैरना । ३ निमुग्गिया छी
[‘निमग्नता] उन्मुग करना, ‘मे भिम्पू
या० उद्गमि परमाणे नो उम्मुगनिमुग्गियं
करेज्जा’ (प्राचा २, ३, २, ३) ।

उम्मुगगा } छी देखो उम्मगा = उन्मग्न
उम्मुजा } (पएह १, ३, पि १०४, २३४-
प्राचा) ।

उम्मुट्ट वि [उन्मुट्ट] स्पृष्ट छुआ हुआ
(पात्र) ।

उम्मुदिअ वि [उन्मुट्टिन] १ विकसित,
प्रफुल्ल (गउड वपू) । २ उद्घाटित, खोला
हुआ, ‘उम्मुदिअओ समुग्गो, तम्मज्जे लहुन-
मुग्गय नियइ’ (मुपा १४४) ।

उम्मुयण न [उन्मोचन] परित्याग, छोड़
देना (नुर २, १६०) ।

उम्मुयणा छी [उन्मोचना] त्याग उन्मन
(आव ५) ।

उम्मुह वि [दे] हम अभिमानो (दे १,
६६, पङ्) ।

उम्मुह वि [उन्मुख] १ संमुख (उप पृ
१३४) । २ ऊर्ध्व-मुख (मे ६, ८२) ।

उम्मूह वि [उन्मूह] विशेष मूह, अत्यन्त
मुग्ध । ३ विसूडया छी [‘विसूचिका] रोग-
विशेष, हैजा (मुपा १६) ।

उम्मूल वि [उन्मूल] उन्मूलन करनेवाला,
विनाशक (गा ३९५) ।

उम्मूल सक [उद् + मूलय्] उखाडना,
मूल मे उखाड फेंकना । उम्मूलेइ (महा) ।

उत्थय पु [उत्तम्भ] ऊर्ध्व-प्रसरण, ऊँचा फैलाना (से ६, ३३) ।

उत्थयण न [उत्तम्भन] ऊपर देखो (गउड) ।

उत्थयि वि [उत्थेपिन्] ऊँचा फेंकना (गउड) ।

उत्थयिअ वि [उन्नमित] ऊँचा किया हुआ, उन्नत किया हुआ (कुमा) ।

उत्थयिअ वि [रुद्ध] रोका हुआ (कुमा) ।

उत्थयिअ वि [उत्तम्भित] उत्थापित, उठाया हुआ (मे १, ६०) ।

उत्थभि वि [उत्तम्भिन्] १ आघात-प्राप्त, अवलम्बन करनेवाला,

‘धारिज्जइ जलनिहीवि

कल्लोलोत्थमिसत्तकुलमेत्तो ।

न हं अन्नजम्भनिम्भिअ-

मुहामुहो कम्म-परिणामो ॥’

(प्राम् १२७) ।

उत्थभिअ वि [उत्तम्भित] १ अवलम्बित ।

२ रुका हुआ, स्तम्भित, ‘अइपीणत्थणत्थ-
भिआणणे मुअण सुणमु मह वअण’ (गा
६२४) । ३ वन्धन-मुक्त किया हुआ (स
५६८) ।

उत्थभिर देखो उत्तंभि (वज्जा १५२) ।

उत्थग्घ पु [दे] समदं, उपमदं (दे १, ९३) ।

उत्थप्पण देखो उट्ठयण (कुप्र ११७) ।

उत्थय देखो उत्थइय (कप्प), ‘निवडति
तणोत्थयकूपियासु तुगावि मायगा’ (उप
७२८ टी) ।

उत्थर सक [आ + क्रम्] आक्रमण
करना । संक्रु उत्थरिचि (अप) (भवि) ।

उत्थर सक [अव + स्तृ] १ आच्छादन करना,
ढकना । २ परामव करना । वक्र. उत्थरंत,
उत्थरमाण (पण्ह १, ३, राज) ।

उत्थर } सक [उत् + स्तृ] आच्छादन
उत्थल्ल } करना (?) । उत्थरइ, उत्थल्लइ
(प्राक् ७५) ।

उत्थरिअ वि [आक्रान्त] आक्रान्त, दबाया
हुआ, ‘उत्थरिअवगिआई अक्कतं’ (पाअ,
भवि) ।

उत्थरिय वि [दे] १ निस्तृत, निगंत (स
४७३) ।

‘अच्छुक्कुत्थरियमहल्लवाह-

भरनीसहा पडिया’ (मुपा २०) ।

२ उत्थित, उठा हुआ (दे ७, ६२) ।

उत्थल न [उत्थल] १ ऊँची घूल राशि,
उन्नत रज पुञ्ज (भग ७, ६ टी) । २ उन्मागं,
कुपय (से ८, ६) ।

उत्थलिअ न [दे] १ घर, गृह । २ वि
उन्मुख-गत, ऊँचा गया हुआ (दे १ १०७,
स १८०) ।

उत्थल्ल अक [उत् + शल्] उछलना,
कूदना । उत्थल्लइ (पड्) ।

उत्थल्लपत्थल्ल स्त्री [दे] दोनों पार्श्वों से
परिवर्तन, उथल पुथल (दे १, १२२) ।

उत्थल्ल स्त्री [दे] १ परिवर्तन (दे १, ६३) ।
२ उद्वर्तन (गउड) ।

उत्थलिअ वि [उच्छलित] उछला हुआ,
‘उत्थल्लिअ उच्छलिअ’ (पाअ) ।

उत्थाड वि [उत्थायिन्] उठनेवाला (दे =
१६) ।

उत्थाइय वि [उत्थापित] उठाया हुआ,
‘पुत्तुत्थाइयनरवरदेमे दडाहिवं ठवइ महण’
(मुपा ३५२) ।

उत्थाण न [उत्थान] १ वीर्य, बल, पराक्रम
(विस २८-२९) । २ उत्थान, उत्पत्ति,
‘वच्चावाही अमज्झो न नियत्तइ ओसहेहि कएहि ।
तम्हा तीउत्थाण निरुमियव्व हिएसीहि’
(मुपा ४०४) ।

उत्थामिय (अप) वि [उत्थापित] उठाया
हुआ (भवि) ।

उत्थार सक [आ + क्रम्] आक्रमण करना,
दवाना । उत्थारइ (हे ४, १६०, पड्) ।

उत्थार देखो उच्छाह = उत्साह (हे २, ४८,
पड्) ।

उत्थारिय वि [आक्रान्त] आक्रान्त, दबाया
हुआ, ‘उत्थारिअतरंगरिउवगो’ (कुमा, मुपा
५४६) ।

उत्थिय देखो उट्ठिय (हे ४, १६, पि ३०) ।

उत्थिय देखो उत्थइअ (पंचा ८) ।

‘उत्थिय वि [‘तीर्थिक] मतानुयायी, दर्शना-
नुयायी (उवा, जीव ३) ।

‘उत्थिय वि [‘यूथिक] यूथ प्रविष्ट, ‘अएण-
उत्थिय—’ (उवा; जीव ३) ।

उत्थुभण न [अवस्तोभन] अनिष्ट की शान्ति
के लिए किया जाता एक प्रकार का कौतुक,
शू-शू आवाज करना । (वृह १) ।

उद न [उद] जल, पानी, ‘अवि साहिए दुवे
वाये सीओदं अमोच्चा निक्खते’ (आचा,
भग ३, ६) । ‘उल्ल ओल्ल वि [‘द्रि]’
पानी से गोला । (श्लो ४८६, पि १६१) ।
‘गत्ताभ न [‘गर्ताभ] गोत्र-विशेष
(ठा ७) ।

उदइग देखो ओदइय (अणु) ।

उदइल्ल वि [उदयिन्] उदयवान्, उन्नति-
शील, ‘सिरिअमयदेवसूरो अपुव्वसूरो सयावि
उदइल्लो’ (मुपा ६२२) ।

उदक पु [उदक्क] जल का पात्र विशेष, जिससे
जल ऊँचा छिड़का जाता है (ज २) ।

उदच सक [उद् + अञ्च्] ऊँचा जाना
(कुमा) ।

उदचण प [उदच्चन] १ ऊँचा फेंकना ।
१ वि ऊँचा फेंकनेवाला (अणु) ।

उदचिर वि [उदच्चिर] ऊँचा जानेवाला
(कुमा) ।

उदत्त पु [उदन्त] हकीकत, समाचार, वृत्तान्त,
‘एिअमेअए कइवल वीओदतो व्व राहवस्स
उवणिओ’ (से ४, ५५, स ३०, भग) ।

उदप पुं [उदप्प] कृष्णराज पुत्र उदय (नल-
दव० रास० ऋषिवर्धन)

उदग पुन [उदक] जल पानी, ‘चत्तारि
उदगा पएणत्ता’ (ठा ४, जी ५) । २

वनस्पति-विशेष (दस ८, ११) । ३ जलाशय
(भग १, ८) । ४ पुं स्वनाम-ख्यात एक
जैन साधु । ५ सातवें भावी जिनदेव (सूअ
२, ७) । ‘गन्ध पु [गर्भ] बादल,
अन्न (भग २, ५) । ‘दोणि स्त्री [‘द्रोणि]

१ जल रखने का पात्र-विशेष, ठाड़ा करने के
लिए गरम लोहा जिससे डाला जाता है वह
(भग १६, १) । २ जो अरघट्ट में लगाया
जाता है वह छोटा घड़ा (दस ७) । ‘पोगल

न [पौद्गल] बादल, मेघ (ठा ३, ३) ।
‘मच्छ पु [‘मत्स्य] इन्द्र-धनुष का खण्ड,
उत्पात-विशेष (भग ३, ६) । ‘माल पु स्त्री
[‘माल] जल का ऊपर चढ़ता तरंग, उदक-
शिखा, वेला (ठा १०, जीव ३) । ‘वत्थि स्त्री

उल्लेत्ता देखो उल्ल = आद्रय ।
 उल्लेव पु [दे] हास्य, हँसी (दे १, १०२) ।
 उल्लेहड वि [दे] लम्पट, लुब्ध (दे १, १०४, पात्र) ।
 उल्लोइय न [दे] १ पोतना, भीत को चूना वगैरह से सफेद करना (श्रौप) । २ वि पोता हुआ (गाया १, १, सम १३७) ।
 उल्लोक वि [दे] श्रुति, छिन्न (पङ्) ।
 उल्लोच पु [दे उल्लोच] चन्द्रातप, चंदनी (दे १, ६८, मुर १२, १, उप १०७) ।
 उल्लोढ सक [उल्लोघ्र] लोघ आदि से घिसना । उल्लोडिज (आचा २, १३, १) ।
 उल्लोय पु [उल्लोक] १ अगासी, छत (गाया १, १, कप्प, भग) । २ थोड़ी देर, थोड़ा विलम्ब (राज) ।
 उल्लोय देखो उल्लोच (मुर ३, ७०, कुमा) ।
 उल्लोल अक [उत् + लुल्] लुठना लेटना । वक्र उल्लोलत (निचू १७) । पु शोकाकुल स्त्री-रुदन शब्द (चउ० सगरचरिय) ।
 उल्लोल सक [उद् + लोलय] पोछना । उल्लोलेह, सक उल्लोलेत्ता (आचा २, १५, ५) ।
 उल्लोल पु [दे] १ शत्रु, दुश्मन (दे १, ६६) । २ कोलाहल (पउम १६, ३६) ।
 उल्लोल पु [उल्लोल] १ प्रबन्ध, 'उद्देशे आसि एराहिवाण वियडा कहल्लोला' (गउड) । २ वि उद्भट, उद्धत, 'तरुणजणविम्भमुल्लोल-सागरे' (स ६७) । ३ वि उत्सुक, 'बहुसो घडंतविहडतसइसुहासायसगमुल्लोले । हियए च्चेय सम्पति चचला वीइवावारा' (गउड) ।
 उल्लोव (अप) देखो उल्लोच (भवि) ।
 उल्लव सक [वि + ध्मापय] ठठा करना, आग को बुझाना । उल्लवइ (हे ४, ४१६) ।
 उल्लविय वि [दे. विध्मापित] बुझाया हुआ, शान्त किया हुआ (पउम २, ६६) ।
 उल्लसिअ वि [दे] उद्भट, उद्धत, (दे १, ११६) ।
 उल्ला अक [वि + ध्मा] बुझ जाना । उल्लाइ (स २८३) ।
 उव अ [उप] निम्न लिखित अर्थों का सूचक अव्यय—१ समीपता, 'उवदसिय' (परण १) । २ सदृशता, तुल्यता (उत्त ३) ।

३ समस्तपन (राय) । ४ एकवार । ५ भीतर (आव ४) ।
 उव न [उद्] पानी, जन, 'पाउवदाड च एहाणुवदाड च' (गाया १, ७—पत्र ११७) ।
 उवअठ वि [उपकण्ठ] समीप का, आसन्न (गउड) ।
 उवइठ वि [उपदिष्ट] कथित, प्रतिपादित, शिक्षित (श्रोष १८ भा, पि १७३) ।
 उवइण वि [उपवीर्ण] सेवित (ग ३६) ।
 उवइय वि [उपचित] १ मासल, पुष्ट (परह १, ४) । २ उन्नत (श्रौप) ।
 उवइय पुत्री [दे] श्रीन्द्रिय जीव-विशेष, देखो आंवडय (जीव १ टी, परण) ।
 उवइस सक [उप + डिश्] १ उपदेश देना, सिखाना । २ प्रतिपादन करना । उवइमइ (पि १८४) । उवइसति (भग) ।
 उवउज सक [उप + युज्] उपयोग करना । कर्म उवउज्जति (विमे ४८०) । सक उवउज्जिऊण, उवउज्ज (पि ५८५, निचू १) ।
 उवउज्ज पु [दे] १ उपकार (दे १, १०८) । २ वि उपकारक (पङ्) ।
 उवउत्त वि [उपयुक्त] १ न्याय्य, वाजवी । २ सावधान, अप्रमत्त (उव, उप ७७३) ।
 उवऊढ वि [उपगूढ] आलिङ्गित (पात्र, से १, ३८, गा १३३) ।
 उवऊह सक [उप + गूह्] आलिङ्गन करना । उवऊहइ (प्राकृ ७४) ।
 उवऊहण न [उपगूहण] आलिङ्गन (से ५, ४८) ।
 उवऊहिअ वि [उपगूहित] आलिङ्गित (गा ६२१) ।
 उवएइआ स्त्री [दे] शराब परोसने का पात्र (दे १, ११८) ।
 उवएस पु [उपदेश] १ शिक्षा, बोध (उव) । २ कथन, प्रतिपादन । ३ शास्त्र, सिद्धान्त (आचा, विसे ८६४) । ४ उपदेश्य, जिसके विषय में उपदेश दिया जाय वह (धर्म १) ।
 उवएसग वि [उपदेशक] उपदेश देनेवाला, 'हिच्चाण पुव्वसजोगं, सिया किच्चोवएसगा' (सूत्र १, १) ।
 उवएसण न [उपदेशन] देखो उवएस (उत्त २८, ठा ७, विसे २५८३) ।

उवएसणया } स्त्री [उपदेशना] उपदेश
 उपएसणा } (राज, विसे २५८३) ।
 उवएसिय वि [उपदेशित] उपदिष्ट, 'सामा-इयणिज्जुत्ति वोच्च उवएसिय गुरुजणेण' (विसे १०८०, सण) ।
 उवओग पु [उपयोग] १ ज्ञान, चैतन्य (परण १२, ठा ४, ४, द ४) । २ व्याल, व्यान, सावधानी, 'त पुण सविग्गेण उवओगजुएण तिव्वसद्धाए' (पचा ४) । ३ प्रयोजन, आवश्यकता (सुपा ६४३) ।
 उवओगि वि [उपयोगिन्] उपयुक्त, योग्य, प्रयोजनीय, पताइएण विसुद्धि माहेउं गिएहए जमुवओगि' (सुपा ६४३, स ५) ।
 उवंग पुन [उपाङ्ग] १ छोटा अवयव, क्षुद्र भाग, 'एवमादी मव्वे उवगा भएणति' (निचू १) । २ ग्रन्थ-विशेष, मूल-ग्रन्थ के अंश-विशेष को लेकर उसका विस्तार से वर्णन करने-वाला ग्रन्थ, टीका, संगोवगाण सरहत्साण चउएह वेयाण' (श्रौप) । ३ 'श्रौपपातिक' सूत्र वगैरह बाहर जैन ग्रन्थ (कप्प, ज, १, सूक्त ७०) ।
 उवजग न [उपाजन] मुक्षण, मालिश (परह २, १) ।
 उवकंड देखो उवअठ (भवि) ।
 उपकठ न [उपकण्ठ] समीप (सिरि ११२१) ।
 उवकटुअ (शौ) अ [उपकृत्य] उपकार करके (प्राकृ ८८) ।
 उवकप्प सक [उप + कल्] १ उपस्थित करना । २ करना, 'उवकप्पइ करेइ उवणेइ वा होति एकट्ठा' (पचभा) । उवकप्पति (सूत्र १, ११) ।
 उवकप्प पु [उपकल्प] साधु को दी जाने-वाली भिक्षा, अन्नपान वगैरह (पचभा) ।
 उवकय वि [उपकृत] जिसपर उपकार किया गया हो वह, अनुगृहीत, 'अणुवकयप-राणुगहपरायणा' (आव ४) ।
 उवकय वि [दे] सज्जित, प्रयुक्त, तैयार (दे १, ११६) ।
 उवकर देखो उवयर = उप + कृ । उवकरेउ (उवा) ।
 उवकर सक [अव + कृ] व्याप्त करना । भूका 'अहवा पमुणा उवकरिसु' (आचा १, ६, ३, ११) ।

उदीर सक [उद् + ईरय्] १ प्रेरणा करना।
२ कहना, प्रतिपादन करना। ३ जो कर्म उदय-प्राप्त न हो उसको प्रयत्न-विशेष से फलोन्मुख करना। उदीरइ, उदीरैति (भग, पंनि ७८)। भूका, उदीरिसु, उदीरैसु (भग)। भवि. उदीरिस्सति (भग)। वहु-उदीरैत (ठा ७), 'कुसलवइमुदीरतो' (उप ६०४)। कवक, उदीरिज्जमाण (परण २३)। हेक्क उदीरेत्तए (कस)।

उदीरणा देखो उदीरय (पच ५, ५)।
उदीरय न [उदीरण] १ कथन, प्रतिपादन।
२ प्रेरणा। ३ काल-प्राप्त न होने पर भी प्रयत्न-विशेष से किया जाता कर्म-फल का अनुभव (कम्म २, १३)।

उदीरणया } स्त्री [उदीरणा] ऊपर देखो
उदीरणा } (कम्म २, १३, १), 'ज करणे-
णोक्कडिय उदए दिज्जइ उदीरणा एमा' (कम्मप १४३, १६६)।

उदीरय वि [उदीरक] १ कथक, प्रतिपादक।
२ प्रेरक, प्रवर्तक, 'एक्केक्क विसयविसउदीरएसु' (परह १, ४)। ३ उदीरणा करनेवाला, काल-प्राप्त न होने पर भी प्रयत्न-विशेष से कर्म-फल का अनुभव करनेवाला (कम्मप १५६)।

उदीरिइ देखो उदीरिय (राय ७४)।

उदीरिय वि [उदीरित] १ प्रेरित, 'चालियाणं घट्टियाणं खोमियाणं उदीरियाणं केरिमे सहो भवति' (राय, जीव ३)। २ कथित, प्रतिपादित, धोरे धम्मे उदीरिए' (आचा)। ३ जानित, कृत, 'ससहफासा फलमा उदीरिया' (आचा)। ४ समय-प्राप्त न होने पर भी प्रयत्न-विशेष से खींच कर जिसके फल का अनुभव किया जाय वह (कर्म) (परण २३, भग)।

उदु देखो उउ (प्राप, भमि १८९, पि ५७)।

उदुवर देखो उवर (कस)।

उदुरुह मक [उद् + रुह्] ऊपर चढ़ना।
उदुरुह (पि ११८)।

उदुखल देखो उऊखल (पि ६६)।

उदूग पुन [दे] पृथिवी-शिला (पचा ८, १० टी)।

उदूलिय वि [दे] भवनत, नीचा नमा हुआ (पड्)।

उदूहल देखो उऊहल (आचा, पि ६६)।

उद् न [दे] १ जल-मानुष। २ ककुद, वैल के कंधे का कूबड (दे १, १२३)। ३ मत्स्य-विशेष। ४ उसके चर्म का बना हुआ वस्त्र (आचा)।

उद् वि [आर्द्र] गीला, आर्द्र (पड्)।

उद्अ वि [उद्यत] उद्यम-युक्त (प्राक् २१)।

उद्दड्ड } वि [उद्दण्ड] १ प्रचण्ड, उद्धत
उद्दड्डग } (कुमा, गउड)। २ पु हाथ में दण्ड को ऊँचा रखकर चलनेवाले तापसों की एक जाति (श्रौप, निचू १)।

उद्दतुर वि [उद्दन्तुर] १ जिसका दंत बाहर आया हो वह। २ ऊँचा (गउड)।

उद्दभ पुं [उद्दम्भ] छन्द का एक भेद (पिग)।

उद्दस पु [उद्दंश] मधुमक्षिका, मत्स्य आदि छोटा कीट (कप्प)।

उद्दुड्ड पु [उद्दग्ध] रत्नप्रभा नरक-पृथिवी का एक नरकावास (ठा ६)। 'मज्झिम पु [मध्यम] रत्नप्रभा पृथिवी का एक नरकावास (ठा ६)। 'वत्त पु [वत्त] देखो पूर्वोक्त अर्थ (ठा ६)। 'वसिट्ट पुं [वशिष्ट] देखो पूर्वोक्त अर्थ (ठा ६)।

उद्दहर न [दे ऊर्ध्वदर] सुमिश्र, सुकाल (वृह १)।

उद्दम पुन देखो उज्जम = उग्रम (प्राक् २१)।

उद्दरिअ वि [दे] १ उत्खात, उखाड़ा हुआ (दे १, १००)। २ स्फुटित, विकसित, 'फुडिअ फलिअ च दलिअ उद्दरिअ' (पाप्र)।

उद्दरिअ वि [उद् + दत्त] गवित, उद्धत, अभिमानी (एदि)।

उद्दलण न [उद्दलन] विदारण (गउड)।

उद्दव सक [उद्, उप + द्र] १ उपद्रव करना, पीडा करना। २ मारना, विनाश करना, हिमा करना, 'तए ए सा रेवई गाहा-वईणी अन्नया कयाइ तासि दुवालमएहं सवत्तीण अतर जाणित्ता छ मवत्तीओ सत्थप्प-ओगेणं उद्दवेइ, उद्दवेइत्ता छ सवत्तीओ विसप्पओगेण उद्दवेइ, उद्दवेइत्ता तासि दुवालसएह सवत्तीण कोलवरिय एगमेग हिरण्णकोडि एगमेग वय सयमेव पडिवज्जेइ, २ ता महासयएण समणोवासएण सद्धि उरा-लाइ भोगभोगाइ भुंजमाणो विहरइ' (उवा)।

भवि. उद्दवेहिड (भग १५)। कवक उद्द-विज्जमाण (सूअ २, १)। क उद्दवेयव्व (सूअ २, ३)।

उद्दवअ पु [उद्द्रव, उपद्रव] १ उपद्रव। २ विनाश, हिंसा, 'आरंभो उद्दवओ' (आ ७)।

उद्दवड्डु वि [उद्द्रोत, उपद्रोत] १ उपद्रव करनेवाला। २ हिंसक, विनाशक, 'से हंता छेता भेता तु पिता उद्दवइत्ता विलु पिता अकड करिम्सामि त्ति मन्नमाणे' (आचा)।

उद्दवग न [उद्द्रवग, उपद्रवग] १ उपद्रव, हरकत, 'उद्दवण पुण जाणमु अइवायविवज्जिय' (पिड, श्रौप)। २ विनाश, हिंसा (सं ८४, आचा)।

उद्दवण न [अपद्रावण] मृत्यु को छोड़कर सब प्रकार का दुःख, 'उद्दवण पुण जाणमु अइवायविवज्जियं पीड' (पिडभा २५, पिड ६७)।

उद्दवणया } स्त्री [उद्द्रवणा, उपद्रवणा]
उद्दवणा } ऊपर देखो (भग, परह १, १)।
उद्दवाइअ देखो उड्डुवाइय, 'ममणस्स एं भगवओ महावीरस्स एव गणा हुत्था, तं—गोदासे गणे उत्तरवल्लिस्सहगणे उद्देहगणे चारणगणे उद्दवातित-(इअ)-गणे विस्सवाति-(इअ)-गणे कामड्ढित-(अ)-गणे माणवगणे कोडितगणे' (ठा ६)।

उद्दविअ वि [उद्द्रुत, उपद्रुत] १ पीडित, 'सधाइआ सर्धाइआ परियाविआ किलामिआ उद्दविया ठाणाओ ठाण सकामिया' (पडि)। २ विनाशित, 'नाऊण विभगेण नियजिट्टमुयस्स विलसिय, तो सो सकुदु'वो उद्दविओ' (मुपा ४०६)।

उद्दवेत्तु देखो उद्दवइत्तु (आचा)।

उद्दा सक [उद् + दा] बनाना, निर्माण करना। उद्दाइ (भग)।

उद्दा अक [अव + द्रा] मरना। उद्दाई, उद्दायाति (भग)। सक उद्दाइत्ता (जीव ३, ठा १०, भाग)।

उद्दाइआ स्त्री [उद्द्रोत्री, उपद्रोत्री] उपद्रव करनेवाली स्त्री, 'ताण वा उद्दाइआए कोइ संजओ गहिंतो होज्जा' (शोध १८ भा टी)।

उद्दाइन देखो उद्दाय = शुभ्।

उद्दाइत्ता देखो उद्दा = भव + द्रा।

उवगम देखो उवगच्छ । सक उवगम्म
(विसे ३१६६) । हेक उवगतुं (निचू १६) ।

उवगय वि [उपगत] १ पास आया हुआ
(से १, १६, गा ३२१) । २ ज्ञात, जाना
हुआ (सम ८८, उप पृ ५६, सार्ध १४४) ।
३ युक्त, सहित (राय) । ४ प्राप्त (भग) ।
५ प्रकप-प्राप्त (सम्म १) । ६ स्वीकृत,
'अज्झम्पवद्धमूला, अणोहि वि उवगया
किरिया' (उवर ५५) । ७ अन्तर्भूत, अन्तर्गत;
'ज च महाकम्मसुयं,

जाणि असेसाणि छेअमुत्ताणि ।

चरणकरणाणुओगो त्ति

कालियत्ये उवगयाणि'

(विसे १२६५) ।

उवगय वि [उपकृत] जिसपर उपकार किया
गया हो वह (स २०१) ।

उवगर सक [उप + कृ] हित करना । उव-
गरेमि (स २०६) ।

उवगरण न [उपकरण] १ साधन, सामग्री,
साधक वस्तु (ओष ६६६) । २ बाह्य इन्द्रिय-
विशेष (विसे १६४) ।

उवगरिय न [उपकृत] उपकार (कुप्र ४५) ।

उवगस सक [उप + कस्] समीप आना,
पास आना । संक उवगसित्ता (सूअ १,
४) । वकृ ।

'उवगसत भपित्ता, पडिलोमाहि वग्गुहि ।
भोगभोगे वियारेई, महामोह पकुव्वई'
(सम ५०) ।

उवगा सक [उप + गै] वर्णन करना, श्लाघा
करना, गुणगान करना । कवक उवगाइज्ज-
माण, उवगिज्जमाण, उवगीयमाण (राय,
भग ६, ३३, स ६३) ।

उवगार देखो उवयार = उपकार (सुर २,
४३) ।

उवगारग वि [उपकारक] उपकार करने-
वाला (स ३२१) ।

उवगारि वि [उपकारिन्] ऊपर देखो (सुर
७, १६७) ।

उवगारिया स्त्री [उपकारिका] प्रासाद आदि
की पीठिका (राय ८१) ।

उवगिअ न [उपकृत] १ उपकार । २ वि.

जिसपर उपकार किया गया हो वह (स
६३६) ।

उवगिज्जमाण देखो उवगा ।

उवगिण्ह सक [उप + ग्रह्] १ उपकार
करना । २ पुष्टि करना । ३ ग्रहण करना ।
उवगिण्हह (पि ५१२) ।

उवगीय वि [उपगीत] १ वर्णित, श्लाघित ।
२ न. संगीत, गीत, गान, 'वाइयमुवगीयं
नठुमवि सुय दिट्ठ चिट्ठमुत्तिकर' (सार्ध
१०८) ।

उवगीयमाण देखो उवगा ।

उवगूढ वि [उपगूढ] १ आलिङ्गित (गा
३५१, स ४४८) । २ न. आलिंगन (राज) ।

उवगूह सक [उप + गुह्] १ आलिंगन
करना । २ गुप्त रीति से रक्षण करना ।
३ रचना करना, बनाना । कवक उवगूहि-
ज्जमाण (गाया १, १, औप) ।

उवगूहण न [उपगूहण] १ आलिंगन । २
प्रच्छन्न रक्षण । ३ रचना, निर्माण, 'आरुह-
णाणुदुणोहि वालयउवगूहणोहि च' (तदु) ।

उवगूहिय वि [उपगूह] आलिंगित (आवम) ।

उवगूहिय न [उपगूहित] गाढ आलिंगन
(पव १६६) ।

उवग्ग न [उपाग्र] १ अग्र के समीप । २
आपाढ मास, 'एसो चिय कालो पुणरेव
गण उवग्गम्मि' (वव १) ।

उवग्गह पुं [उपग्रह] १ पुष्टि, पोषण (विसे
१८५०) । २ उपकार (उप ५६७ टी, स
१५४) । ३ ग्रहण, उत्पादन (ओष २१२
भा) । ४ उपधि, उपकरण, साधन (ओष
६६६) ।

उवग्गह पु [उपग्रह] सामीप्य-सम्बन्ध (धर्मसं
३६३) ।

उवग्गहग वि [उपग्राहक] उपकार-कारक
(कुलक २३) ।

उवग्गहिअ न [उपगृहीत] उपकार (तंदु
५०) ।

उवग्गहिअ वि [उपगृहित] १ उपस्थापित
(पण २३) । २ आलिंगनादि चेष्टा, 'उवह-
सिएहि उवग्गहिएहि उवसद्धेहि' (तदु) । ३
उपकृत (स १५६) । ४ उपगृम्भित (राज) ।

उवग्गहिअ देखो ओवग्गहिअ (पंचव) ।

उवग्गाहि वि [उपग्राहिन्] सम्बन्धी, सम्बन्ध
रखनेवाला (स ५२) ।

उवग्गघाय पु [उपोद्धात] गन्ध के आरम्भ
का वक्तव्य, भूमिका (विसे ६६२) ।

उवग्गघाय वि [उपघातक] विनाशक (धर्म-
सं ५१२) ।

उवग्गइ वि [उपघातिन्] उपघात करने-
वाला (भास ८७, विसे २००८) ।

उवग्गइय वि [उपघातिक] १ उपघात-
कारक (विसे २००६) । २ हिंसा से सम्बन्ध
रखनेवाला, 'भूओवघाइए' (औप) ।

उवग्गय पु [उपघात] १ विरावना, आघात
(ओष ७८८) । २ अशुद्धता (ठा ५) । ३
विनाश (कम्म १, ५४) । ४ उपद्रव (तंदु) ।
५ दूसरे का अशुभ-चिन्तन (भास ५१) ।
'नाम न ['नामन्] कर्म-विशेष, जिसके
उदय से जीव अपने ही शरीर के पडजीम,
चोरदत, रसौली आदि अवयवों ने क्लेश
पाता है वह कर्म (सम ६७) ।

उवग्गयण न [उपघातन] ऊपर देवों
(विसे २२३) ।

उवचय पु [उपचय] १ वृद्धि (भग ६, ३) ।
२ समूह (पिड २, ओष ४०७) । ३ शरीर
(आव ५) । ४ इन्द्रिय-पर्याप्ति (पण १५) ।

उवचयण न [उपचयन] १ वृद्धि । २
परिपोषण, पुष्टि (राज) ।

उवचर सक [उप + चर] १ सेवा करना ।
२ समीप में धूमना-फिरना । ३ आरोप
करना । ४ समीप में खाना । ५ उपद्रव
करना । उवचरइ, उवचरण, उवचरामो,
उवचरंति (वृह १, पि ३४६, ४५५,
आचा) ।

उवचर सक [उप + चर] व्यवहार करना ।
उवचरंति (पिडभा ६) ।

उवचरय वि [उपचरक] १ सेवा के लिए
से दूसरे के अहित करने का मौका देने-
वाला (सूअ २, २, २८) । २ पुं जासूस,
चर (आचा २, ३, १, ५) ।

उवचरिय वि [उपचरित] कल्पित (धर्मसं
२४५) ।

उवचरिय वि [उपचरित] १ उपासित,
सेवित, बहुमानित (स ३०) । २ न. उपचार,
सेवा (पचा ६) ।

उत्पद्भूत वि [उत्पत्ति] ऊँचा गया हुआ, उठा हुआ, 'सिवि य आगासे उत्पद्भूत' (उवा. सुर ३, ६६) । २ उत्पन्न, ऊँचा (आचा) । ३ उद्भूत, उत्पन्न (उत्त २) । ४ न उत्पन्न, उठना (औप) ।

उत्पद्भूत वि [उत्पादित] उत्पापित, उठाया हुआ, 'खुडिउत्पद्भूतमुणाल दट्ठूण पिअ व सिद्धिलवलअ गालिणि' (से १, ३०) ।

उत्पद्भूतव्य } देखो उत्पय = उत् + पत् ।
उत्पद्भूत

उत्पत्तं वि [दे] १ बहु, अत्यन्त । २ पु पद्ध, कीचड़, काँदो । ३ उत्पत्ति (दे १, १३०) । ४ समूह, राशि (दे १, १३०, पाअ. गडड, स ४३७) ।

उत्पत्तं पु [दे] समूह, राशि,
'एवपल्लव विसएणा, पहिआ
पेच्छंति कूअरक्खत्स ।

कामस्स नेहिउत्पत्तगाराइअं
हृत्थमल्लं व ॥' (गा ५८५) ।

उत्पज्ज अक [उत् + पद्] उत्पन्न होना ।
उत्पज्जति (कप) । वक्क उत्पज्जत, उत्पज्ज-
माण (से ८, ५५, सम्म १३४, भग. विसे ३३२२) ।

उत्पड सक [उत् + पत्] उठना, ऊँचा
जाना, कूदना (प्राप्ता) ।

उत्पड पु [उत्पट] श्रीन्द्रिय जन्तु-विशेष, क्षुद्र
कीट-विशेष (राज) ।

उत्पडिअ देखो उत्पद्भूत (नाट) ।

उत्पण सक [उत् + पू] धान्य वगैरह को
सूप आदि से साफ-सुथरा करना । कर्म. 'साली
वीही जवा य लुव्वतु मलिज्जतु उत्पणिज्जतु
य' (पएह १, २) ।

उत्पणण न [उत्पवन] सूप आदि से धान्य
वगैरह को साफ-सुथरा करना (दे १, १०३) ।

उत्पण्ण वि [उत्पन्न] उत्पन्न, संजात, उद्भूत
(भग. नाट) ।

उत्पत्त वि [दे] १ गलित । २ विरक्त
(पड) ।

उत्पत्ति वि [उत्पत्ति] उत्पत्ति, प्रादुर्भाव
(उव) ।

उत्पत्तिया स्त्री [औत्पत्तिकी] बुद्धि-विशेष,

विना शास्त्राभ्यासादि के ही होनेवाली बुद्धि,
स्वामाविक मति (ठा ४, ४, णाया १, १) ।

उत्पन्न देखो उत्पण्ण (उवा. सुर २, १६०) ।

उत्पय सक [उत् + पत्] उठना, कूदना ।

उत्पयड (महा) । वक्क उत्पयंत, उत्पयमाण

(उप १४२ टी. णाया १, १६) । संक उत्प-
इत्ता (औप) । क. उत्पइअव (से ६, ७८) ।

हेक्क उत्पइउ (सुर ६, २२२) ।

उत्पय देखो उत्पव । वक्क उत्पअत (से ५,
५६) ।

उत्पय पु [उत्पात] १ उत्पन्न, ऊँचे जाना,
कूदना, उड़्यन । २ उत्पत्ति, 'अवट्टिए चले

मदपडिवाउत्पयई य' (विसे ५७७) । °निवय

पु [°निपात] १ ऊँचा-नीचा होना;

'खरपवणुद्धुयसायरतरगवेगेहि हीरण नावा ।

गुरुकुल्लोलवसुद्धियनगरनियरेण धरियावि ॥

अणवरयतरगेहि उत्पयनिवयं कुणंतिया वहइ'

(सुर १३, १६७) । २ नाट्य-विवि का एक

प्रकार (जीव ३) ।

उत्पयण न [उत्पत्तन] ऊँचा जाना, उड़्यन

(ठा १०, से ६, २४) ।

उत्पयण न [उत्पलवन] जल को लाँघना,

तेरना (से ५, ६०) ।

उत्पयणी स्त्री [उत्पत्तनी] विद्या-विशेष (सूअ
२, २, २७) ।

उत्परि (अप) देखो उत्परि (हे ४, ३३४,
पिग) ।

उत्परिवाडि, °टी स्त्री [उत्परिपाटि, °टी]
उलटा क्रम, विपर्यास, विपर्यय, 'उत्परिवाडो-

वहणे चाउम्मासा भवे लहुगा' (गच्छ १) ।

उत्परोत्पर अ [उपयुपरि] ऊपर-ऊपर (स
१४०) ।

उत्पल न [उत्पल] १ कमल, पद्म (णाया १,
१, भग) । २ विमान-विशेष, (सम ३८) ।

३ सख्या-विशेष, 'उत्पलग' को चौरासी लाख

से गुणने पर जो सख्या लब्ध हो वह (ठा २,
४) । ४ सुगन्धि द्रव्य-विशेष: 'परमुपलगाधि' (जं ३) । ५ पु. परिव्राजक-विशेष (आचू
१) । ६ द्वीप-विशेष । ७ समुद्र-विशेष (पएण
१५) । °वेटग पु [°वृत्तक] आजीविक

मत का एक साधु-समाज (औप) ।

उत्पलंग न [उत्पलङ्ग] सख्या-विशेष, 'हुहुय'

को चौरासी लाख से गुणने पर जो संख्या
लब्ध हो वह (ठा २, ४) ।

उत्पला स्त्री [उत्पला] १ एक इन्द्राणी, कान

नामक पिशाचेन्द्र की एक अग्र-महिषी (ठा
४, १) । २ इस नाम का 'ज्ञाताधर्मकथा' का

एक अव्ययन (णाया २, १) । ३ स्वनाम

ख्यात एक आविका (भग १२, १) । ४ एक

पुष्करिणी (जीव ३) ।

उत्पलिणी स्त्री [उत्पलिनी] कमलिनी, कमल

का गाछ या पौधा (पएण १) ।

उत्पल वि [दे] अव्यासित, आरुढ़ (पड) ।

उत्पव सक [उत् + पलु] १ लाँघना, पार

करना, तेरना । २ ऊँचा जाना, उठना । वक्क.

उत्पवत, उत्पवमाण (से ५, ६१, ८, ८६) ।

उत्पवइय वि [उत्पवजित] जिसने दीक्षा

छोड़ दी हो वह, साधु होकर फिर गृहस्थ

बना हुआ (स ५८५) ।

उत्पह पु [उत्पथ] उन्मागं, कुमागं, 'पथाउ

उत्पह नेति' (निचू ३, से ४, २६, हेका
२५६) । °जाइ वि [°यायिन्] उलटे रास्ते

जानेवाला, विपथ-नामी (ठा ४, ३) ।

उत्पा स्त्री देखो उत्पाय = उत्पाद (ठा १—
पत्र १६, ठा ५, ३—पत्र ३४६) ।

उत्पाइ वि [उत्पादिन्] उत्पन्न होनेवाला

(विसे २८१९) ।

उत्पाइत्ता देखो उत्पाय = उत् + पादय् ।

उत्पाइत्तु वि [उत्पादयित्] उत्पादक, उत्पन्न

करनेवाला (ठा ७) ।

उत्पाइय न [औत्पातिक] भूकंप आदि

उत्पातो का सूचक शास्त्र (सूअ १, १२, ६) ।

उत्पाइय वि [उत्पादित] उत्पन्न किया हुआ,

'उत्पाइयाविच्छिण्णकोउहलत्ते' (राय) ।

उत्पाइय वि [औत्पातिक] १ अस्वामाविक,

कृत्रिम, 'उत्पाइयपव्वय व चकमंत' । २ आक-

स्मिक, अकस्मात् होनेवाला, 'उत्पाइया वाही'

(राज) । ३ न अनिष्ट-सूचक आकस्मिक उपद्रव,

उत्पात, 'भो भो नावियपुरिसा मकधवाग समु-

जया होह । दीसइ कयतवयणं व भीममुप्पाइयं

जेण' (सुर १३, १८६) ।

उत्पाएउ

उत्पाएत्त } देखो उत्पाय = उत् + पादय् ।

उत्पाएत्तए }

उचयारय वि [उपकारक] उपकार करने-
वाला (धम्म ८ टी) ।

उचयारि वि [उपकारिन्] उपकारक (स
२०८, विक २३, विवे ७६) ।

उचयारिअ वि [औपचारिक] उपचार से
संबन्ध रखनेवाला (उवर ३४) ।

उचयालि पु [उपजालि] १ एक अन्तकृद् भुनि,
जो वसुदेव का पुत्र था और जिसने भगवान्
श्रीनेमिनाथजी के पास दीक्षा लेकर शत्रुघ्न
पर मुक्ति पाई थी (अंत १४) । २ राजा
श्रेणिक का इस नाम का एक पुत्र, जिसने
भगवान् महावीर के पास दीक्षा लेकर अनुत्तर-
विमान में देव गति प्राप्त की थी (अनु १) ।

उवरइ स्त्री [उपरति] विराम, निवृत्ति (विसे
२१७७, २६४०, सम ४४) ।

उवरज सक [उप + रज्ज्] अस्त करना ।
कर्म उवरज्जदि (शौ) (मुद्रा ५८) ।

उवरग देखो ओअरय, 'उवरगपविट्ठाए कणग-
मंजरीए निरुवणत्थं दारदेसट्ठिएण दिट्ठं त
पुव्ववरिणयवेट्ठिय' (महा) ।

उवरत्त वि [उपरत्त] १ अनुरक्त, राग-युक्त,
'कुमरगुणेषुवरत्त' (सुपा २५६) । २ राहु से
असित (पात्र) । ३ म्लान (स ४७३) ।

उवरम अक [उप + रम्] निवृत्त होना,
विरत होना, 'भो उवरमसु एयाओ असुमज्ज-
वसाणाओ' (महा) ।

उवरम पु [उपरम] १ निवृत्ति, विराम,
(उप पृ ६३) । २ नाश (विसे ६२) ।

उवरय वि [उपरत] १ विरत, निवृत्त (आचा,
सुपा ५०८) । २ मृत (स १०४) ।

उवरय देखो उवरग, 'उवरयगया दारं पिहिएण
किपि मुणमुणती चिट्ठइ' (महा) ।

उवरल (अप) देखो उव्वरिय [दे] (पिण) ।

उव्वराग पुं [उपराग] सूर्य या चन्द्र का
उव्वराय } ग्रहण, राहु-ग्रहण (पण्ह, १, २,
से ३, ३६, गउड) ।

उव्वराय पु [उपरात्र] दिन, 'राओव्वरायं अप-
डिल्ले अन्नगिलाय एगया भुजे' (आचा) ।

उवरि अ [उपरि] ऊपर, ऊर्ध्व (उव) । 'भासा
स्त्री [भापा] गुरु के बोलने के अनन्तर ही
विशेष बोलना (पडि) । 'म, 'मग, 'मय,

इ वि [तन] ऊपर का, ऊर्ध्व-स्थित (सम
४३, सुपा ३५, भग, हे २, १६३, सम २२,
८६) । 'हुत्त वि [अभिमुख] ऊपर की
तरफ (सुपा २६६) ।

उवरि ऊपर देखो (कुमा) ।

उवरितण देवो उवरि-म (धर्मवि १५१) ।

उवरुध सक [उप + रुध्] १ अटकाव
करना । २ अडचन डालना । ३ प्रतिबन्ध
करना, रोकना । कर्म उवरुध्मइ, उवरुधिज्जइ,
(हे ४, २४८) ।

उवरुध पु [उपरुध्] नरक के जीवों को दुःख
देनेवाले परमाधार्मिक देवों की एक जाति,
'रुद्धोवरुध् काले अ, महाकाले त्ति यावरे'
(सम २८), 'भजति अगमगारिण, ऊरुवाहुमि-
रारिण करचरणा । कप्पेति कप्परणीहि, उवरुद्धा
पावकम्मरया'

(सूत्र १, ५) ।

उवरुद्ध वि [उपरुद्ध] १ रक्षित । २ प्रतिरुद्ध,
अवरुद्ध, 'पासत्यपमुहचोरोवरुद्धधणभवसत्याण'
(साधं ६८, उप पृ ३८५) ।

उवरोह सक [उप + रोधय्] अडचन
डालना । कृ उवरोहणीय (सुख १, ४०) ।

उवरोह पु [उपरोध] १ अडचन, बाधा
(विसे १४१३, स ३१६), 'भूओवरोहरहिण'
(आव ४) । २ अटकाव, प्रतिबन्ध (वृह १,
स १५) । ३ घेरा, नगर आदि का सैन्य द्वारा
वेष्टन, 'उवरोहभया कीरइ सप्परिखो पुरवरस्स
पागारो' (वृह ३) । ४ निबन्ध, आग्रह
(स ४५७) ।

उवरोहिअ वि [उपरोधित] जिसको उपरोध
—निबन्ध किया गया हो वह (कुप्र १३५,
४०६) ।

उवरोहि वि [उपरोधिन्] उपरोध करने-
वाला (आव ४) ।

उवल पुं [उपल] १ पाषाण, पत्थर (प्रासू
१७५) । २ टांकी वगैरह को संस्कृत करने-
वाला पाषाण-विशेष (पण्ह १) ।

उवलम्बण पु [उपलम्बन] सांकल (सिक्कड)
वाला एक प्रकार का दीपक (अनु) ।

उवलंभ सक [उप + लम्] १ प्राप्त करना ।
२ जानना । ३ उलाहना देना । कर्म.

उवलभिज्जइ (पि ५४१) । वक्र उवलभेमाण
(णाय १, १८) ।

उवलभ पु [उपलम्भ] १ लाभ, प्राप्ति (सुपा
६) । २ ज्ञान (स ६५१) । ३ उलाहना, 'एव
वहुवलभे' (उप ६४८ टी) ।

उवलंभ देखो उवालभ = उपालम्भ, 'उवल-
भम्मि मिगावई नाहियवाई वि वत्तव्वे'
(दमनि १, ७७) ।

उवलभण न [उपलम्भन] प्राप्ति (एदि
२१०) ।

उवलभणा स्त्री [उपलम्भना] उलाहना,
'धएण सत्यवाह बहहि खेज्जणाहि य रुटणाहि
य उवलभणाहि य खेज्जमाणा य रुटमाणा य
उवलभेमाणा य धएणस्म एयमट्ठ णिवेदंति'
(णाय १, १८) ।

उवलम्ब सक [उप + लम्बय्] जानना,
पहिचानना । उवलम्बइ (महा) । संक्र.
उवलम्बेऊण (महा) । कृ. उवलम्बिऊज
(उप पृ १७) ।

उवलक्ख पुं [उपलक्ष] ज्ञान, खबर, मालूम,
'खित्ताइ अणुवलक्ख रयणाइं रक्खगहणम्मि'
(कुप्र ३२६) ।

उपलक्खण न [उपलक्षण] १ पहिचान
(सुपा ६१) । २ अन्यार्थ-बोधक संकेत
(आ ३०) ।

उवलक्खिअ वि [उपलक्षित] १ पहिचाना
हुआ, परिचित (आ १२) ।

उवलग्ग वि [उपलग्न] लगा हुआ, लग्न,
'पडमिणिपत्तोवलग्गजलविदुनिचयचित्त' (कप्प,
भवि) ।

उवलद्ध वि [उपलद्ध] १ प्राप्त । २ विज्ञात,
'जइ सव्व उवलद्ध, जइ अप्पा भाविओ
उवसमेण' (उव, णाय १, १३, १४) । ३
उपालब्ध, जिसको उलाहना दिया गया हो वह
(उप ७२८ टी) ।

उवलद्धि स्त्री [उपलद्धि] १ प्राप्ति, लाभ ।
२ ज्ञान (विसे २०६) ।

उवलद्धिय देखो उवलद्ध, 'सत्तरत्तुहियस्स मे
भक्खमुवलद्धिय, ता तुम भक्खिस्स' (कुप्र
५६) ।

उवलद्धु वि [उपलद्धु] ग्रहण करनेवाला,
जाननेवाला (विसे ६२) ।

उत्पुअ वि [उत्प्लुत] उच्छलित, कूदा हुआ (से ६, ४८, परह १, ३)।

उत्पुसिअ देखो उत्पुसिअ (से ६, ८५)।

उत्पुणिअ वि [उत्पूत] सूप से साफ-सुथरा किया हुआ (पात्र)।

उत्पुण्ण वि [उत्पूर्ण] पूर्ण, व्याप्त (स २५)।

उत्पुलइअ वि [उत्पुलकिन] रोमान्चित (म २८१)।

उत्पुसिअ वि [उत्प्रोञ्छित] लुप्त, प्रोञ्छित (ने ६, ८५ गउड)।

उत्पूर पु [उत्पूर] १ प्राचुर्य (परह १, ३)। २ प्रकृष्ट-प्रवाह (औप)।

उत्पेक्ख (अप) देखो उचिक्ख। उत्पेक्ख (पिग)।

उत्पेक्ख सक [उत्प्र + ईक्ष] संभावना करना, कल्पना करना। उत्पेक्खामि (स १४७)। उत्पेक्खेमि (स ३४६)।

उत्पेक्खा स्त्री [उत्प्रेक्षा] १ अलंकार-विशेष २ वितर्कणा, संभावना (गा ३३६)।

उत्पेक्खिअ वि [उत्प्रेक्षित] संभावित, विकल्पित (दे १, १०६)।

उत्पेय न [दे] अभ्यग, तैलादि की मालिश, 'पुत्र च मगलट्ठा उत्पेय जइ करेइ निहियाए' (वव ६)।

उत्पेल सक [उद् + नमय्] ऊँचा करना, उन्नत करना। उत्पेलइ (हे ४, ३६)।

उत्पेलिअ वि [उन्नमित] ऊँचा किया हुआ, उन्नत किया हुआ (कुमा)।

उत्पेल पु [उन्नमन] ऊँचा करना (पउम ८, २७२)।

उत्पेस पु [उत्पेप] त्रास, भय, डर (से १०, ६१)।

उत्पेहड वि [दे] उद्भट, आडम्बरवाला (दे १, ११६, पात्र, स ४४६)।

उत्फ देखो पुत्फ (गा ६३६)।

उत्फण सक [उत् + फण्] छांटना, पवन में धान्य आदि का छिलका दूर करना। उत्फणति, भूका उत्फणिसु, भवि उत्फणिससति (आचा २, १, ६, ४)।

उत्फदोल वि [दे] चल, अस्थिर (दे १, १०२)।

उत्फाल पु [दे] खल, दुर्जन (दे १, ६०, पात्र)।

उत्फाल सक [उत् + पाटय्] १ उठाना। २ उखाडना। उत्फालेइ (हे २, १७४)।

उत्फाल सक [कथ्] कहना, बोलना। उत्फालेइ (हे २, १७४)।

उत्फाल वि [कथक] कहनेवाला, सूचक (स ६४४)।

उत्फालिअ वि [कथित] १ कथित। २ सूचित (पात्र, उप ७२८ टी, स ४७८)।

उत्फिड अक [उन् + स्फिट्] कुण्ठित होना, असमर्थ होना। उत्फिडइ, उत्फेडइ, 'एमाइनिगण्णोहि वाहिज्जमाणो उत्फि-(फे)-इइ परसू' (महा)।

उत्फिड अक [उन् + स्फिट्] मल्ल की तरह कूदना, उठना। उत्फिडइ (उत्त २७, ५)। वक्क उत्फिडत (पव २)।

उत्फिडण न [उत्स्फेण] कुण्ठित होना (स ६६८)।

उत्फिडिय वि [उत्स्फिटित] १ कुण्ठित। २ बाहर निकला हुआ, 'कथ्यइ नक्कुक्क-त्तियमिप्पिपुडुप्फिडियमोत्तिया-नो' (सुर १३, २१३)।

उत्फुकिआ स्त्री [दे] धोविन, कपडा धोने-वाली (दे १, ११४)।

उत्फुडिअ वि [दे] आस्तृत, बिछाया हुआ (दे १, ११३)।

उत्फुण्ण वि [दे] आपूर्ण, भरा हुआ, व्याप्त (दे १, ६२, सुर १, २३३, ३, २१५)।

उत्फुल्ल वि [दे] स्पृष्ट, छुआ हुआ (पव १५८ टी)।

उत्फुल्ल वि [उत्फुल्ल] विकसित (पात्र, से ६, ६६)।

उत्फुल्लिआ स्त्री [उत्फुल्लिका] क्रीडा विशेष, पाँव पर बैठ कर बारबार ऊँचा-नीचा होना, 'उत्फुलिआइ खेल्लउ,

मा ए वारेहि होउ परिऊडा।

मा जहणभारगइ,

पुरिसाअतो किलिमिहिइ'

(गा १६६)।

उत्फुस सक [उत् + स्पृश्] सिंचना, छिड़कना। संकृ उत्फुसिऊण (राज)।

उत्फेणउत्फेणिय क्रिवि [दे] क्रोव-युक्त प्रबल वचन से, 'उत्फेणउत्फेणिय सीहरायं एव वयासी' (विपा १, ६—पत्र ६०)।

उत्फेस पु [दे] १ त्रास, भय (दे १, ६४)। २ मुकुट, पगड़ी, शिरोवेष्टन, 'पच रायककुहा परणत्ता, तं जहा-खग्ग छत्त उत्फेस उवाहणाउ वालवियणी' (ठा ५, १—पत्र ३०३, औप, आचा २, ३, २, २)।

उत्फेसण न [दे] डराना, भयोत्पादन (मुख ३, १)।

उत्फोअ पु [दे] उद्गम, उदय (दे १, ६१)।

उत्तुस सक [मृज्] मार्जन करना, शुद्धि करना, साफ करना। उत्तुसइ (पड्)।

उत्तवंध सक [उद् + वन्ध्] १ फाँसी लगाना, फाँसी लगा कर मरना। २ वेष्टन करना। वक्क 'जलनिहितडम्मि दिट्ठा उत्तवंधंती इहपाए' (सुपा १६०)। सकृ उत्तवंधिअ, उत्तवंधिऊण (नाट, पि २७०, स ३४६)।

उत्तवंधण न [उद् + वन्धन] फाँसी लगाना, उल्लम्बन (प २, ५)।

उत्तवण वि [उत्तवण] उत्कुट (पि २६६)।

उत्तवद्ध वि [उद् + वद्ध] १ जिसने फाँसी लगाई हो वह, फाँसी लगा कर मरा हुआ। २ वेष्टित, 'भुअगसंधायउत्तवद्धो' (सुर ८, ५७)। ३ शिक्षक के साथ शर्तों से बैठा हुआ, शिक्षक के आग्रह (ठा ३),

'सिपाई मिक्खतो,

सिक्खावैतस्स देइ जा सिक्खा।

गहियम्मि वि सिक्खम्मि,

ज चिरकाल तु उत्तवद्धो' (वह)।

उच्चिव वि [दे] १ खिन्न, उद्विग्न। २ शून्य ३ क्रान्त। ४ प्रकट वेप वाला। ५ भीत, डरा हुआ। ६ उद्भट (दे १, १२७, वज्जा ६२)।

उच्चिवल वि [दे] कलुप जलवाला (दे १११ टी)।

उच्चिवल न [दे] कलुप जल, मैला पानी (दे १, १११)।

उच्चिविर वि [दे] खिन्न, उद्विग्न (कप्पु)।

(राया १, १६, गड) । २ वि सहित, युक्त, 'गुणसपओववीओ' (विसे ३४११) ।

उववीड अ [उपपीड] उपमर्दन, 'सिविणो-ववीड आलिङ्गणेण गाढ पीडिओ' (रमा) ।

उववृह सक [उप + वृह्] १ पुष्ट करना । २ प्रशमा करना, तारीफ करना । सक उववृहेऊण (दसनि ३) । कृ उववृहेयव्व (दसनि ३) ।

उववृहण न [उपवृहण] १ वृद्धि, पोषण (परह १, १) । २ प्रशसा, श्लाघा (पचा २) । उववृहा ओ [उपवृहा] ऊपर देखो उववृह-यिरीकणे वच्छल्लपभावणे धट्ठ' (पडि) ।

उववृहणिय वि [उपवृहणीय] पुष्टि-कर्त्ता (निव्व ८) । ओ पट्ट-विशेष, राजा वगैरह के भोजन-समय में उपभोग में आनेवाला पट्टा (निव्व ६) ।

उववृहिय वि [उपवृहित] १ वृद्धि को प्राप्त, पुष्ट (सं १५) । २ प्रशसित (उप पृ ३८६) । उववृहिर वि [उपवृहिन्] १ पोषक, पुष्टि-कारक । २ प्रशसक (सण) ।

उववेय वि [उपेत] युक्त, सहित (राया १, १, औप वसु, सुर १, ३४, विसे ६६६) ।

उवसक्रम सक [उपस + क्रम्] समीप आना । वक्त उवसक्रमत (दम ५, २, १०) ।

उवसखड सक [उपस + कृ] रंघना, पकाना । कवक्त उवसखडिज्जमाण (आचा २, १ ४, २) ।

उवसखा ओ [उपसख्या] यथावस्थित पदार्थ-ज्ञान (सूत्र १, १२) ।

उवसगह सक [उपस + ग्रह्] उपकार करना । कर्म उवसगहिब्बइ (सं १६१) ।

उवसंहर सक [उपस + हृ] उपसहार करना । उवसहरमि (भवि) ।

उवसहरिय देखो उवसहरिय (भवि) ।

उवसघिय वि [उपसहृत] जिसका उपसंहार किया गया हो वह, समापित (विसे १०११) ।

उवसचि सक [उपसं + चि] संचय करना । सक उवसंचिवि (सण) ।

उवसठिय वि [उपसंस्थित] १ समीप में स्थित । २ उपस्थित (सण) ।

उवसत वि [उपशान्त] १ क्रोधदि विकार-

रहित (सूत्र १, ६, धर्म ३) । २ नष्ट, अपगत, 'उवसंतरय करेह' (राय) । ३ पु ऐरवत क्षेत्र के स्वनाम-घन्य एक तीर्थंकर-देव (पव ७) । 'मोह पुं [मोह] ग्यारहवां गुण-स्थानक (सम २६) ।

उवसंति ओ [उपशान्ति] उपशम (आचा) ।

उवसंधारिय वि [उपसधारित] सकल्पित (निव्व १) ।

उवसपज्ज [उपस + पद्] १ समीप में जाना । २ स्वीकार करना । ३ प्राप्त करना । उवसपज्जइ (सं १६१) । वक्त उवसपज्जत (वव १) । मंक्त उवसपज्जिता, उवसपज्जित्ताण (कप्प, उवा) । हेक्त उवसपज्जित (वृह १) ।

उवसपण्ण वि [उपसंपन्न] १ प्राप्त । २ समीप-गत (धर्म ३) ।

उवसपया ओ [उपसंपद्] १ ज्ञान वगैरह की प्राप्ति के लिए दूसरे गुणों के पास जाना (धर्म ३) । २ अन्य गुण आदि की सत्ता का स्वीकार करना (ठा ३, ३) । ३ लाभ, प्राप्ति (उत्त २६) ।

उवसंहर सक [उपस + हृ] १ हटाना, दूर करना । २ सकेलना, ममेटना, 'ता उवसहर इम कोव' (कुप्र २८५) । सक 'उवसहरिड नीमेसदेवमाय गयो जाव' (धर्मवि १८) ।

उवसंहरिय वि [उपसहृत] समेटा हुआ, 'वतरेण य उवसहरिया माया' (महा) ।

उवसहार पुं [उपसहार] सकोचन, समेट (द्रव्य १०) ।

उवसहार पुं [उपसहार] १ समाप्ति । २ उपनय (आ ३६) ।

उवसगग पु [उपसर्ग] १ उपद्रव, बाधा (ठा १०) । २ अव्यय-विशेष, जो धातु के पूर्व में जोड़े जाने से उस धातु के अर्थ की विशेषता करता है (परह २, २) ।

उवसगग वि [दे] मन्द, आलसी (दे १, ११३) ।

उवसग्गिअ वि [उपसर्गित] हैरान किया हुआ (मिरि १११७) ।

उवसज्ज अक [उप + सृज्] आश्रय करना । उवसज्जिआ (आचा २, ८, १) ।

उवसज्जण न [उपसर्जन] १ अप्रवान, गौण (विसे २२६२) । ३ मन्वन्व (विसे ३००५) ।

उवसत्त वि [उपसक्त] विशेष आसक्तिवाला (उत्त ३०) ।

उवसद् पुं [उपशब्द] मुक्त-समय का शब्द (तंदु) ।

उवसद् पुं [उपशब्द] १ प्रच्छन्न शब्द । २ समीप का शब्द (तंदु ५०) ।

उवसप्प सक [उप + सृप्] समीप जाना । सक उवसप्पिऊण (महा, स ५२६) ।

उवसप्पि वि [उपसर्पिन्] समीप में जाने-वाला (भवि) ।

उवसप्पिय वि [उपसर्पित] पाम गया हुआ (पाम) ।

उवसम पु [उप + शम्] १ क्रोध-रहित होना । २ शान्त होना, ठंडा होना । ३ नष्ट होना । उवसमइ (कप्प, कम, महा) । कृ उवसमियव्व (कप्प) । प्रयो उवसमेइ (विसे १२८४), उवसमावेइ (पि ५५२) । कृ उवसमाधियव्व (कप्प) ।

उवसम पुं [उपशम] १ क्रोध का अभाव, क्षमा (आचा) । २ इन्द्रिय-निग्रह (धर्म ३) । ३ पन्द्रहवां दिवस (चद १०) । ४ मुहूर्त-विशेष (मम ५१) । 'सम्म न [सम्यक्त्व] सम्यक्त्व-विशेष (भग) ।

उवसमणा ओ [उपशमना] आत्मिक प्रयत्न-विशेष, जिसमें कर्म-मुद्गल उदय-उदीरणादि के अयोग्य बनाए जाय वह (पंच) ।

उवसमि वि [उपशमिन्] उपगमवाला (विसे ५३० टी) ।

उवसमिअ पु [औपशमिक] कर्मों का उप-शम (अणु ११३) ।

उवसमिय वि [उपशमित] उपशम-प्राप्त (भवि) ।

उवसमिय वि [औपशमिक] १ उपशम से होनेवाला । २ उपशम से संबन्ध रखनेवाला (सुपा ६४८) ।

उवसाम सक [उप + शमय्] १ शान्त करना । २ रहित करना । उवसामेइ (भग) । वक्त उवसामेमाण (राज) । कृ उवसामि-यव्व (कप्प) । सक. उवसामइत्तु (पंच) ।

उत्तिभङ्ग ४ [उद्भेदन] लग कर अलग होना, आघात कर पीछे हटना।

‘जेमु चिय कुठिजइ,

रहुमुत्तिभङ्गमुहलो महिहरेसु।

तेसु त्रेय एगिम्जइ,

पहिरोहदोलिरो कुलिसो ॥

(गउड)।

उत्तिभण १ वि [उद्भिन्न] १ अकुरित उत्तिभन्न (प्रोध ११३), उत्तिन्ने पाणियं पडिय (सुर ७, ११४)। २ उद्घाटित खोला हुआ। ३ न जैन साधुओं के लिए भिक्षा का एक दोष, मिट्टी वगैरह से लिप्त पात्र को खोलकर उसमें से दी जाती भिक्षा, ‘छगणाद्ध-णोवउत्त उत्तिभिय ज तमुत्तिमण’ (पंचा १३, ठा ३, ४)। ४ वि ऊँचा हुआ, खड़ा हुआ, ‘हरिसवसुत्तिन्नरोमचा’ (महा)।

उत्तिभय वि [उद्भिद्] पृथ्वी को फाड़कर उगनेवाली वनस्पति (पएह १, ४)।

उत्तिभय वि [ऊर्ध्वित] ऊँचा किया हुआ, खड़ा किया हुआ (सुपा ८६, महा, वज्जा ८८)।

उत्तिभय न [उद्भिद्] १ लवण-विशेष, समुद्र के किनारे पर क्षार जलके ससर्ग से होने-वाला नोन (आचा २, १, ६, ५)। २ पुन. खजरीट, शलभ आदि प्राणी (सबोध २०, धर्मस ७२, सूअ १, ६, ८)।

उत्तीकय वि [ऊर्ध्वीकृत] ऊँचा किया हुआ, ‘उत्तीकयवाहुजुयो’ (उप ५६७ टी)।

उत्तुअ अक [उद् + भू] उत्पन्न होना। उत्तुअइ (हे ४, ६०)।

उत्तुआग वि [दे] १ उबलता हुआ, अग्नि से तप्त जो दूध वगैरह उछलता है वह (दे १, १०५, ७, ८१)।

उत्तुग वि [द] चल, अस्मिर (दे १, १०२)।

उत्तुत्त सक [उत् + क्षिप्] ऊँचा फेंकना। उत्तुत्तइ (हे ४, १४४)।

उत्तुत्तिअ वि [उत्क्षिप्त] ऊँचा फेंका हुआ (कुमा)।

उत्तुत्तिअ वि [द] उदीपित, प्रदीपित (पात्र)।

उत्तुअ वि [उद्भूत] १ उत्पन्न (सुर ३, २३६)। २ आगन्तुक कारण (विसे १४७६)।

उत्तुअ श्री [औद्भूतिकी] श्रीकृष्ण वासु-देव की एक भेरी जो किसी आगन्तुक प्रयोजन के उपस्थित होने पर बजाई जाती थी (विसे १४७६)।

उत्तुअ पुं [उद्भेद] उद्गम, उत्पत्ति, ‘उम्हा-अतगिरियडंसीमाणिव्वडियकंदलुम्मेय’ (गउड), ‘अभिणवजोव्वणउम्मेयसुन्दरा सयलमणहरा-रावा’ (सुर ११, ११६)।

उत्तुअ वि [उद्भेदिम] स्वय उत्पन्न होने-वाला, उम्मेहम पुण सयह जहा मामुद्-लोण’ (निच्छ ११)।

उभ पुं [उभ] उभय, दोनों (पंच ६, ५८)।

उभओ अ [उभयतस्] द्विवा, दोनों तरह से, दोनों ओर से (उव, औप)।

उभजायण देखो ओमजायण (सुज्ज १०, १६)।

उभय वि [उभय] युगल, दो, दोनों (ठा ४, ४)। १ त्थ अ [त्र] दोनों जगह (सुपा ६४८)। २ लेग पु [लोक] यह और पर जन्म (पंचा ११)। ३ हा अ [था] दोनों तरफ में, द्विधा (सम्म ३८)।

उमच्छ सक [वञ्च्] ठगना, धूर्तना। उमच्छइ (हे ४, ६३)। वक्क उमच्छत (कुमा)।

उमच्छ सक [अभ्या + गम्] सामने आना। उमच्छइ (पड)।

उमा श्री [उमा] गौरी, पार्वती (पात्र)। २ द्वितीय वासुदेव की माता (सम १५२)। ३ देव-गणिका-विशेष (आचू)। ४ श्री-विशेष (कुमा)। ५ साइ [रवाति] स्वनाम धन्य एक प्राचीन जैनाचार्य और विख्यात ग्रन्थकार (मार्घ ५०)।

उमाण न [दे] प्रवेश (आचा २, १, ६)।

उमार देखो कुमार (अचु २६)।

उमीस वि [उन्मिअ] मिश्रित, ‘पलिलसिर-पलिअपीवलकरणधुमणुमीसएहवणजल’ (कुमा)।

उमुय सक [उद् + मुच्] छोड़ना। वक्क उमुयत (उत्त ३०, २३)।

उम्मइअ वि [द] १ मूढ, मूर्ख (दे १, १०२)। २ उन्मत्त (गा ४६८, वज्जा ४२)।

उम्मऊह वि [उन्मयुल] प्रभाशाली (गउड)।

उम्मड पुं [दे] १ हठ। वि उद्दत्त (दे १, १२४)।

उम्मथिय वि [दे] दग्ध, जला हुआ (वज्जा ५२)।

उम्मग वि [उन्मग] १ पानी के ऊपर आया हुआ, तीर्थ (राज)। २ न. उन्मज्जन, तैरना, जल के ऊपर आना (आचा)। ३ जला श्री [जला] नदी-विशेष, जिसमें पत्थर वगैरह भी तैर सकते हैं (जं ३)।

उम्मग पु [उन्मग] १ कुपय, उलटा रास्ता, विपरीत मार्ग (सुर १, २४३, मुपा ६५)। २ छिद्र, रन्ध्र (आचा) ३ अकार्य करना (आचा)।

उम्मगणा श्री [उन्मार्गणा] छिद्र, विवर (आचा)।

उम्मच्छ न [दे] १ क्रोध, गुस्सा (दे १, १२५, से ११, १६, २०)। २ वि असंबद्ध, ३ प्रकारान्तर से कथित (दे १, १२५)।

उम्मच्छर वि [उन्मत्सर] १ ईर्ष्या, द्वेषी (से ११, १४)। २ उद्मट (गा १२७, ६७५)।

उम्मच्छविअ वि [दे] उद्मट (दे १, ११६)।

उम्मच्छिअ वि [दे] १ रुपित, रुष्ट, २ आकुल, व्याकुल (दे १, १३७)।

उम्मज्ज न [उन्मज्जन] तरण, तैरना। १ निमज्जिया श्री [निमज्जिका] उमचुम करना, पानी में ऊँचा-नीचा होना (ठा ३, ४)।

उम्मज्जग वि [उन्मज्जक] १ उन्मज्जन करने-वाला, गोता लगाने वाला। २ उन्मज्जन से ही स्नान करनेवाले तापसों की एक जाति (और, भग ११, ६)।

उम्मड्डा श्री [दे] १ बलात्कार, जबरदस्ती (दे १, ६७)। २ निषेध, अस्वीकार (उप ७२८ टी)।

उम्मण वि [उन्मनस्] उत्कण्ठित, उत्सुक (उप पृ ५८)।

उम्मत्त पु [दे] १ घटूरा, वृक्ष-विशेष। २ एण्ड, वृक्ष-विशेष (दे १, ८६)।

उम्मत्त वि [उन्मत्त] १ उद्धत, उन्माद-युक्त (वृह १)। २ पागल, मूताविष्ट (पिंड ३८०)।

जला श्री [जला] नदी-विशेष (ठा २, ३)।

उम्मत्तय न [दे] घटूरे का फल, “उम्मत्तय-

उवहिय वि [उपहित] १ उपढौकित, अर्पित ।
२ निहित, स्थापित (आचा, विसे ६३७) ।
३ न उपढौकन, अर्पण (निचू २०) ।

उवहिय वि [औपाधिक] माया से प्रच्छन्न
विचरनेवाला (गाया १, २) ।

उवहुज सक [उप + भुज्] उपभोग करना,
कार्य में लाना । उवहुंजइ (पि ५०७) । कवक
उवहुज्जत (पि ५४६) ।

उवहुत्त देखो उवभुत्त (पाग्र, से १०, ४५) ।

उवाइकम सक [उपाति + क्रम्] उल्लघन
करना । सक उवाइकम्म (आचा २,
८, १) ।

उवाइण सक [उपाति + नी] गुजारना । सक,
उवाइणित्ता (आचा २, २, २, ७) ।

उवाइण सक [उप + याच्] मनौती करना,
किसी काम के पूरा होने पर किसी देवता
की विशेष आराधना करने का मानसिक
सकल्प करना । हेक 'जति ए अह देवाणु-
प्पिया । दारगं वा दारियं वा पयामि, ताए
अह तुवमं जाय च दाय च भाग च अक्ख-
यणिहि च अणुवड्ढेस्सामि ति कट्ठु औवाइय
'उवाइणित्ते' (विपा १, ७) ।

उवाइण सक [उपा + दा] १ ग्रहण करना ।
२ प्रवेश करना । हेक उवाइणित्ते (ठा
३) । प्रयो, 'त सेय खलु मम जितसत्तुस्स
रणो सताए तच्चाए तहियाणं अवितहाए
सम्भूताए जिणपणत्ताए भावाए अभिग-
मण्डुयाए एयमट्ठ उवाइणावित्ते' (गाया
१, १२) ।

उवाइणाव सक [अति + क्रम्] १ उल्लघन
करना । २ गुजारना, पसार करना । उवाइ-
णावेइ । वक उवाइणावेत्त । हेक उवाइणा-
वेत्ते (कस), उवाइणावित्ते (कप्प),
'से गामसि वा जाव सनिवेसंसि वा वहिया
से ए सनिविट्ठ पेहाए कप्पइ निग्गथाए वा
निग्गथीए वा तदिदवस भिक्खायिरियाए
गदूए पडिनियत्ते, नो से कप्पइ त रयणि
तत्थेव उवाइणावेत्ते । जे खलु निग्गथे वा
निग्गथी वा त रयणि तत्थेव उवाइणावेइ,
उवाइणावेत्त वा साइज्जइ, से दुह्मो वीइक्क-
ममाणे आवज्जइ चउमासिय परिहारट्ठाणं

अणुगघाइयं' (कस), 'नो से कप्पइ तं रयणि
उवाइणावित्ते' (कप्प) ।

उवाइणाविय वि [अतिक्रान्त] १ उल्लघित ।
२ गुजारा हुआ, पसार किया हुआ, बिताया
हुआ, 'नो कप्पइ निग्गथाए वा निग्गथीए वा
अमण वा ४ पढमाए पोस्सीए पडिग्गाहेत्ता
पच्छिम पोर्सि उवाइणावेत्ते । से य आहच्च
उवाइणाविए सिया, त नो अप्पणा भुजेज्जा'
(कस) ।

उवाइय देखो उवयाइय (गाया १, २, सुपा
१०, महा) ।

उवाई स्त्री [उलावकी] पोताकी-नामक विद्या
की प्रतिपक्षभूत एक विद्या (विसे २४५४) ।

उवाएज्ज वि [उपादेय] ग्राह्य, ग्रहण करने
उवाएय } योग्य (विसे, स १४८) ।

उवागच्छ सक [उपा + गम्] समीप में
उवागम } आना । उवागच्छइ (भग, कप्प) ।
भवि. उवागमिस्सति (आचा २, ३, १, २)
सक उवागच्छित्ता (भग, कप्प) । हेक
उवागच्छित्ते (कप्प) ।

उवागम पु [उपागम] समीप में आगमन
(राज) ।

उवागमण न [उपागमन] १ समीप में
आगमन । २ स्थान, स्थिति (आचानि
३११) ।

उवागय वि [उपागत] १ समीप में आया
हुआ (आचा २, ३, १, २) । २ प्राप्त,
'एगदिवसपि जीवो पवज्जमुवागमो अणन्-
मणो' (उव) ।

उवाडिय वि [उत्पाटित] उखाड़ा हुआ (विपा
१, ६) ।

उवाणया स्त्री [उपानह] जूता (पड्),
उवाणहा } 'पुव्वमुत्तारियाओ उवाणहाओ
पएसु ठवियाओ' (सुपा ६१०, सूअ १, ४,
२, ६) ।

उवादा सक [उपा + दा] ग्रहण करना ।
कर्म उवादीयति (भग) । संक उवादाय,
उवादिएत्ता (भग) । कवक. उवादीयमाण
(आचा २) ।

उवादाण न [उपादान] १ ग्रहण, स्वीकार ।
२ कार्यरूप में परिणत होनेवाला कारण ।
३ जिसका ग्रहण किया जाय वह, ग्राह्य,

'नाओवादाणे च्चिय मुच्छा लोभोति तो रागो'
(विसे २६७०) ।

उवादिय वि [उपजग्घ] उपभुक्त (राज) ।

उवाय पु [उपाय] १ हेतु, साधन (उत्त
३२) । २ दृष्टान्त, 'उवाओ सोसाधम्मेण य
विधम्मेण य' (आचू १) । ३ प्रतीकार (ठा
४, ३) ।

उवाय सक [उप + याच्] मनौती करना ।
वक उवायमाण (गाया १, २, १७) ।

उवायण न [उपायन] भेंट, उपहार, नज-
राना (उप २४५, सुपा २२४, ४१०,
गड्ड) ।

उवायणाव देखो उवाइणाव । उवायणावेइ ।
वक उवायणावेत्त । हेक उवायणावेत्ते
(कस), उवायणावित्ते (कप्प) ।

उवायाण देखो उवादाण (अचु १२, स २,
विसे २६७६) ।

उवायाय वि [उपायात] समीप में आया
हुआ (निर १, १) ।

उवाउद वि [उपाउद] आरूढ़ (स ३३१) ।
उवालंभ सक [उपा + लभ्] उलाहना
देना । उवालम्भइ (कप्प) । वक. उवालभत
(पउम १६, ४१) । सक उवालभित्ता (वृह
४) । क उवालभणिज्ज (माल १५५) ।

उवालंभ पु [उपालम्भ] उलाहना (गाया १,
१, मा ४) ।

उवालद्ध वि [उपालब्ध] जिसको उलाहना
दिया गया हो वह, 'उवालद्धो य सो सिवो
वभणो' (निचू १, माल १६७) ।

उवालइ सक [उपा + लभ्] उलाहना
देना । भवि उवालहिस्सं (प्राप) ।

उवावत्त पु [उपावृत्त] वह अश्व जो लेटने
से श्रम-मुक्त हुआ हो (चार ७०) ।

उवावत्तिद (शौ) वि [उपावृत्ति] उपयुक्त
अश्व से युक्त (चार ७०) ।

उवास सक [उप + आस्] उपासना
करना, सेवा करना; 'सुस्सुसमाणो उवासेज्जा
सुपणं सुतवस्सिय' (सूअ १, ६) । वक.
उवासमाण (ठा ६) ।

उवास पु [अवकाश] खाली जगह, आकाश
(ठा २, ४, ८, भग) ।

वक्र उम्मूलन, उम्मूलयंत (से १, ४, स ५६६)। संक्र. उम्मूलिऊण (महा)।

उम्मूलण न [उम्मूलन] उत्पादन, उत्खनन (पि २७८)।

उम्मूलणा स्त्री [उम्मूलना] ऊपर देखो (पण्ह १, १)।

उम्मूलिअ वि [उम्मूलिन] उत्पादित, मूल से उखाड़ा हुआ (गा ४७५, सुर ३, २४५)। उम्मेठ [दे] देखो उम्मेठ (पउम ७१, २६, स ३३२)।

उम्मेस पु [उम्मेप] उन्मीलन, विकास (भग १३, ४)।

उम्मोयणी स्त्री [उम्मोचनी] विद्या-विशेष (सुर १३, ८१)।

उम्ह पुंस्त्री [ऊप्मन्] १ सताप, गरमी, उष्णता, 'सरीरउम्हाए जीवइ सयावि' (उप ५६७ टी, गाया १, १, कुमा)। २ भाफ, वाष्प (मे २, ३२, हे २, ७४)।

उम्हइअ } वि [ऊप्मायित] सतप्त, गरम
उम्हविय } किया हुआ (मे ४, १, पउम २, ६६ गउड)।

उम्हाअ अक [ऊप्माय्] १ गरम होना। २ भाफ निकालना। वक्र. उम्हाअत, उम्हाअमाण (मे ६, १०, पि ५५८)।

उम्हाल वि [ऊप्मवत्] १ गरम, परितप्त। २ वाष्प युक्त (गउड)।

उम्हाविअ न [दे] सुरत, सभोग (दे १, ११७)।

उयचिय वि [दे] देखो उविअ = परिकर्मित, 'उयचियखोमदुगुत्तलपट्टपडिच्छरणे' (गाया १, १—पत्र १३)।

उयट्ट देखो उव्वट्ट = उद् + वृत्। उयट्टेति, भूका उयट्टिसु (भग)।

उयट्ट देखो उव्वट्ट = उद् + वृत्।

उयत्त अक [अप + वृत्] हटना। उयत्तति (दन ३, १ टी)।

उयर वि [उदार] श्रेष्ठ, उत्तम, 'देवा भवति विमलोयरकतिजुत्ता' (पउम १०, ८८)।

उयरिया स्त्री [अपवरिका] छोटा कमरा (मम्मत्त ११६)।

उयविय देखो उविअ = (दे) (राय ६३ टी)।

उयाइय न [उपयाचित] मनीती (सुपा ८, ५७८)।

उयाय वि [उपयात] उपगत (राज)।

उयारण न [अवतारण] निछावर, उतारा,

हर्ष-दान, गुजराती मे 'उवारण' (कुप्र ६५)।

उयाहु देखो उदाहु (सुर १२, ५६, काल, विसे १६१०)।

उय्यकिअ वि [दे] इकट्ठा किया हुआ (पड्)।

उय्यल वि [दे] अव्यासित, आरुढ़ (पड्)।

उर पुन [उरस्] वक्ष स्थल, छाती (हे १, ३२)। 'अ, 'ग पुंस्त्री [ग] मर्ष, साँप (काप्र १७१)।

'उरगगिरिजलणमागरनह-

तलत्तकणमो अ जो होइ।

भमरमियधरणिजलरुहरविपव-

णसमो अ सो समणो।' (अणु)।

°तव पु [°तपस्] तप-विशेष (ठा ४)।

°त्थ न [°त्त्र] अन्न-विशेष, जिसके फेंकने

मे शत्रु मर्षों मे वेष्टित होता है (पउम ७१, ६६)।

°परिसप्प पुंस्त्री [°परिसर्प] पेट

से चलनेवाला प्राणी (सर्पादि) (जो २०)।

°सुत्तिया स्त्री [°सूत्रिका] मोतियों की हार

(राज)।

उर न [दे] आरम्भ, प्रारम्भ (दे १, ८६)।

उरउरेण अ [दे] साक्षात् (विपा १, ३)।

उरत्त वि [दे] खरिउत्त, विदारित (दे १, ६०)।

उरत्थ वि [उरत्थ] १ छाती मे स्थित। २

छाती मे पहनने का आभूषण (आचा २, १३, १)।

उरत्थय न [दे] वर्म, बल्तर, कवच (पात्र)।

उरन्भ पक्षी [उरभ्र] भेप, भेड (गाया १, १, पण्ह १, १)।

उरन्भिअ वि [औरभ्रिअ] भेड चरानेवाला

(सूत्र २, २, २८)।

उरान्भज्ज, वि [उरभ्रीय] १ भेप-सम्पन्नवी।

उरन्भिअ २ उत्तराव्ययन सूत्र का एक

अव्ययन, 'तत्तो समुद्धियमेय उरन्भिज्जति

अज्झयण' (उत्तनि, राज)।

उरय पु [उरज] वनस्पति-विशेष (राज)।

उररि पु [दे] पशु, वकरा (दे १, ८८)।

उरल देखो उराल (कम्म १, भग, द २२)।

उरविय वि [दे] १ आरोपित। २ खरिउत्त, छिन्न (पड्)।

उरसिज पुं [उरसिज] स्तन, थन (पमंवि ६६)।

उरस्स वि [उरस्य] १ मन्तान, वच्चा (ठा १०)। २ हादिक, आभ्यन्तर, 'उरस्सवल-समएणागय' (राय)।

उराल वि [उनार] १ प्रवल (राय)। २

प्रधान, मुख्य (मुज्ज १)। ३ गुन्दर, श्रेष्ठ

(सूत्र १, ६)। ४ अद्भुत (चन्द २०)। ५

विशाल, विस्तीर्ण (ठा ५)। ६ न शरीर-

विशेष, मनुष्य और तिर्यञ्च (पशु पक्षी) इन

दोनों का शरीर (अणु)।

उराल वि [उदार] म्यूल, मोटा (सूत्र १, १,

४, ६)।

उराल वि [दे] भयकर, भीष्म (मुज्ज १)।

उरालिय न [ओदारिक] शरीर-विशेष

(मण)।

उरिआ स्त्री [उड्डिका] लिपि-विशेष (मम ३५)।

उरितिय न [दे उरसि-त्रिक] तीन मर-

वाला हार (ओप)।

°उरिम देखो पुरिस (गा २८२)।

उरु वि [उरु] विशाल, विस्तीर्ण (पात्र)।

उरुपुल्ल पु [दे] १ अपूप, पूसा। २ पिचटी

(दे १, १३४)।

उरुमल्ल } वि [दे] प्रेरित (पड्, दे १, १०८)।

उरुमिल्ल } वि [दे] प्रेरित (पड्, दे १, १०८)।

उरुसोल्ल } वि [दे] प्रेरित (पड्, दे १, १०८)।

उरोरुह पु [उरोरुह] स्तन, थन (पम ६२)।

उरोरुह न [उरोरुह] १ स्तन, थन। २ जैन

साध्वियों का उपकरण-विशेष (ओप ३१७

भा)।

°उल देखो कुल (मे १, २६, गा ११६, सुर

३, ४१, महा)।

उलय } पुंन [उलय] वृण-विशेष (मुपा

उलय } २८१, प्राप्र)।

उलवी स्त्री [उलपी] वृण-विशेष, 'उनवी

वीरण' (पात्र)।

उलिअ वि [दे] अमकुचित नजरवागा, स्फार

दृष्टि (दे १, ८८)।

उलित्त न [दे] ऊँचा कुंआ (दे १, ८६)।

°उलीण देखो कुलीण (गा २५२)।

उव्वट्टण न [उट्टर्त्तन] तुले से उसके बीज को अलग करना (पिंड ६०३) ।

उव्वट्टण न [अपवर्त्तन] देखो उव्वट्टणा = अपवर्त्तना (विसे २५१४) ।

उव्वट्टणा स्त्री [उट्टर्त्तना] १ मरण, शरीर से जीव का निकलना (ठा २, ३) । २ पार्श्व का परिवर्त्तन (आव ४) । ३ जीव का एक प्रयत्न, जिससे कर्म-परमाणुओं की लघु स्थिति दीर्घ होती है, करण विशेष (भग ३१, ३२) ।

उव्वट्टणा स्त्री [अपवर्त्तना] जीव का एक प्रयत्न जिससे कर्मों की दीर्घ स्थिति का ह्रास होता है (विसे २७१५ टी) ।

उव्वट्टिअ वि [उट्टवर्त्तित] साफ किया हुआ, प्रमाजित, 'करोसेण वावि उव्वट्टिअ' (पिंड २७६) ।

उव्वट्टिय वि [उट्टवृत्त] किसी गति से बाहर निकला हुआ, मृत, 'आउक्खएण उव्वट्टिया समाणा' (पण्ह १, १) ।

उव्वट्टिय वि [उट्टवर्त्तित] १ जिसने किसी भी द्रव्य से शरीर पर का तेल वगैरह का मैल दूर किया हो वह, 'तस्यो तत्थट्ठिओ' चेव अम्मगिओ उव्वट्टिओ उएहखलउदगेहि पमज्झिओ' (महा) । २ प्रच्यावित, किसी पद से भ्रष्ट किया हुआ (पिंड) ।

उव्वट्टु वि [उट्टवृद्ध] वृद्धि-प्राप्त (आवम) ।

उव्वण वि [उत्त्वण] प्रचण्ड, उड्डट (उप ७०, गडड, धम्म ११ टी) ।

उव्वत्त देखो उव्वट्ट = उद् + वृत् । उव्वत्तइ (पि २८६) । वक्क उव्वत्तत्त, उव्वत्तमाण (से ५, ४२, स २५८, ६२७) । कवक्क उव्वत्तिज्जमाण (णाय १, ३) । संक उव्वत्तिवि (भवि) ।

उव्वत्त देखो उव्वट्ट (दे) ।

उव्वत्त सक [उद् + वर्त्तय्] १ खड़ा करना । २ उलटा करना । उव्वत्तति (पव ७१) सक उव्वत्तिया (दस ५, १, ६३) ।

उव्वत्त वि [उट्टवर्त्त] खड़ा करनेवाला (पव ७१) ।

उव्वत्त वि [उट्टवृत्त] १ उत्तान, चित्त (से ५, ६२) । २ उल्लसित (हे ४, ४३४) । ३ जिसने पार्श्व को घुमाया हो वह (आव ३) ।

४ ऊर्ध्व-स्थित, 'सो उव्वत्तविसाणो खववसभो जाओ' (महा) । ५ घुमाया हुआ, फिराया हुआ (प्राप) ।

उव्वत्त वि [अपवृत्त] उलटा रहा हुआ, विपरीत स्थित (से १, ६१) ।

उव्वत्तण न [उट्टवर्त्तन] १ पार्श्व का परिवर्त्तन (गा २८३, निव्व ४) । २ ऊँचा रहना, ऊर्ध्व-वर्त्तन (ओघ १६ भा) ।

उव्वत्तिय वि [उट्टर्त्तित] १ परिवर्त्तित, चक्राकार घुमा हुआ (स ८५), 'भमिय व वणतएहि उव्वत्तिय व सयलवसुहाए' (सुर १२, १६६) । उव्वट्ट देखो उव्वट्ट (महा) ।

उव्वम सक [उद् + वम्] उलटी करना, पीछा निकाल देना । वक्क उव्वमत (से ५, ६, गा ३४१) ।

उव्वमिअ वि [उट्टान्त] उलटी किया हुआ, वमन किया हुआ (पाअ) ।

उव्वर अक [उद् + वृ] शेष रहना, बच जाना, तुम्हाए 'देताए जमुव्वरेइ देज्जाह साहूए तमायरेण' (उप २११ टी) । वक्क उव्वरत्त (नाट) ।

उव्वर पु [दे] धर्म, ताप (दे १ ८७) ।

उव्वरिअ वि [दे] १ अधिक, बचा हुआ, अवशिष्ट (दे १, १३२, पिग, गा ४७४, सुपा ११, ५३२, ओघ १६८ भा) । २ अनोपिप्त, अनभीष्ट । ३ निश्चित । ४ अगणित । ५ न ताप, गरमी (दे १, १३२) । ६ वि अतिक्रान्त, उल्लङ्घित, 'परदव्वहरणविरया निरया-इदुहाए वे खलुव्वरिया' (सुपा ३६८) ।

उव्वरिअ न [अपवर्त्तिका] कोठरी, छोटा घर (सुर १४, १७४) ।

उव्वल सक [उद् + वल्] १ उपलेपन करना । २ पीछे लौटना । हेक्क उव्वलित्तए (कस) ।

उव्वल सक [उद् + वल्य्] उन्मूलन करना । उव्वलए । वक्क उव्वलमाण (पव ५, १६६) ।

उव्वलण न [उट्टलन] १ शरीर का उपलेपन-विशेष (णाय १, १, १३) । २ मालिश, अभ्यङ्गन (बृह ३, औप) ।

उव्वलणा स्त्री [उट्टलना] १ उन्मूलन । २ उट्टलन-योग्य कर्म-प्रकृति (पच ३, ३४) ।

उव्वलिय वि [उट्टलित] पीछे लौटा हुआ (महा) ।

उव्वस वि [उट्टस] उजाड़, वसति-रहित (सुपा १८८, ४०६) ।

उव्वसिय वि [उट्टसित] ऊपर देखो (गा १६४ सुर २, ११६, सुपा ५४१) ।

उव्वसी स्त्री [उर्वशी] १ एक अम्परा (सण) । २ रावण की एक स्वनाम-ख्यात पत्नी (पउम ७४, ८) ।

उव्वह सक [उद् + वह्] १ धारण करना । २ उठाना । उव्वहइ (महा) । वक्क उव्वहंत, उव्वहमाण (पि ३६७, से ६, ५) । कवक्क उव्वुज्जमाण (णाय १, ६) ।

उव्वहण न [उट्टहन] १ धारण । २ उत्थापन । (गडड, नाट) ।

उव्वहण न [दे] महान् आवेश (दे १, ११०) ।

उव्वा स्त्री [दे] धर्म, ताप (दे १, ८७) ।

उव्वा } अक [उद् + वा] १ सूखना,
उव्वाअ } शुष्क होना । उव्वाइ, उव्वाअइ (पड्, हे ४, २४०) ।

उव्वाअ वि [उट्टात] शुष्क, सूखा (गडड) ।

उव्वाअ } वि [दे] खिन्न, परिश्रान्त (दे १,
उव्वाअइ } १०२, बृह १, वव ४, पाअ, गा ७५८, सुपा ४३६) ।

उव्वाउल न [दे] १ गीत । २ उपवन, वगीचा (दे १, १३४) ।

उव्वाडुल न [दे] १ विपरीत सुरत । २ मर्यादा-रहित मैथुन (दे १, १३३) ।

उव्वाड वि [दे] १ विस्तीर्ण, विशाल । २ दु खरहित (दे १, १२६) ।

उव्वाण देखो उव्वाअ = उट्टात (कुप्र १६६) ।

उव्वाय देखो उवाय = उपाय (सूत्र १, ४, १, २) ।

उव्वार (अप) सक [उद् + वर्त्तय्] त्याग करना, छोड़ देना । कर्म, उव्वारिज्जइ (हे ४, ४३८) ।

उव्वाल सक [कथ्] कहना, बोलना । उव्वालइ (पड्) ।

उव्वास सक [उद् + वासय्] १ दूर करना । २ देशनिकाला करना । ३ उजाड़ करना । उव्वासइ (नाट, पिग) ।

उव्वासिय वि [उट्टासित] १ उजाड़ किया हुआ (पउम २७, ११) । २ देश-बाहर

उवकरण देखो उवगरण (श्रीप) ।

उवकस सक [उप + कप्] प्राप्त होना, 'नारीण वसमुवकसति' (सूत्र १, ४) ।

उवकसिअ वि [दे] १ सनिहित । २ परिसे-
वित । ३ सजित, उत्पादित (दे १, १३८) ।

उवकार देखो उवगार (धर्मस ६२० टी) ।

उवकारिया देखो उवगारिया (राय ८२) ।

उवकिड } स्त्री [उपकृति] उपकार (दे ४,
उवकिडि } ३४, ८, ४५) ।

उवकुल न [उपकुल] नक्षत्र-विशेष, श्रवण
आदि बारह (ज ७) ।

उवकुल पुन [उपकुल] कुल नक्षत्र के पास
का नक्षत्र (मुज्ज १०, ५) ।

उवकोसा स्त्री [उपकोशा] एक गणिका,
कोशा वेश्या की छोटी वहिन (कुप्र ४५३) ।

उवकोसा स्त्री [उपकोशा] एक प्रसिद्ध वेश्या
(उव) ।

उवकंत वि [उपक्रान्त] १ समीप में आनीत ।
२ प्रारब्ध, प्रस्तावित (विसे ६८७) ।

उवकम सक [उप + क्रम्] १ शुरू करना,
प्रारम्भ करना । २ प्राप्त करना । ३ जानना ।
४ समीप में लाना । ५ संस्कार करना ।
६ अनुसरण करना, 'सीनो गुरुणो भाव
जमुवकमए' (विसे ६२९), 'ता तुवमे ताव
अवकमह लहुं, जाव एयासि भावमुव-
क्कमामि ति' (महा), 'जेणोवक्कमि
ज्जइ ममीवमारिज्जए' (विसे २०३६),
'जएण हलकुलिआदीहि खेत्ताड उवक्कमिज्जति
से त खेतोवक्कमे' (अणु) । वहु उवकमत
(विसे ३४१८) ।

उवकम पुं [उपक्रम] १ आरम्भ, प्रारम्भ ।
२ प्राप्ति का प्रयत्न, 'सीच्चा भगवाणुसासए
सच्चे तत्थ करेज्जुवक्कम' (सूत्र १, २,
३, १४) । ३ कर्मों के फल का अनुभव
(सूत्र १, ३, भग १, ४) । ४ कर्मों की
परिणति का कारण-भूत जीव का प्रयत्न-
विशेष (ठा ४, २) । ५ मरण, मौत, विनाश,
'हुज्ज इमम्मि समए उवक्कमो जीवियस्स जइ
मज्झ' (आउ १५, बृह ४) । ६ दूरस्थित
को समीप में लाना; 'सत्यस्सोवक्कमए
उवक्कमो तेण तम्मि अ तन्नो वा सत्यसमी-
वीकरण' (विसे, अणु) । ७ आयुष्य विघातक

वस्तु (ठा ४, २, स २८७) । ८ शत्रु,
हथियार, 'भुम्माहारच्छेए उवक्कमेण च
परिणाए' (धर्म २) । ९ उपचार (स २०५) ।
१० ज्ञान, निश्चय । ११ अनुवर्तन, अनुकूल-
प्रवृत्ति (विसे ६२६, ६३०) । १२ संस्कार,
परिकर्म, 'खेतोवक्कमे' (अणु) ।

उवकम पु [उपक्रम] अनुदित कर्मों को
उद्य में लाना (मृगनि ४७) ।

उवकमण न [उपक्रमण] उपर देखो (अणु,
उवर ४६, विमे ६११, ६१७, ६२१) ।

उवकमिय वि [ओपक्रमिक] उपक्रम से
सम्बन्ध रखनेवाला (ठा २, ४, सम १४५,
पराण ३५) ।

उवकम देखो उवकम = उप + क्रम् । कर्म,
उवक्कामिज्जइ (विसे २०३६) ।

उवकम सक [उप + क्रम्] दीर्घकाल में
भोगने योग्य कर्मों को अल्प समय में ही
भोगना । कर्म उवक्कामिज्जइ (धर्मस
६४८) ।

उवकमण न [उपक्रमण] उपक्रम कराना
(आवक १६७) ।

उवकमण देखो उवकमण (विसे २०५०) ।

उवकमे पुं [उपक्लेश] १ वावा । २ शोक
(राज) ।

उवक्खड सक [उप + स्कु] १ पकाना,
रसोई करना । १ पाक को मसाले से
संस्कारित करना । उवक्खडेइ, उवक्खडि
(पि ५५६) । संकृ. उवक्खडेत्ता (आचा) ।
प्रयो उवक्खडावेइ, उवक्खडाविति (पि ५५६,
कप्प) । संकृ. उवक्खडावेत्ता (पि ५५६) ।

उवक्खड } वि [उपस्कृत] १ पकाया
उवक्खडिय } हुआ । २ मसाला वगैरह से
संस्कार-युक्त पकाया हुआ (निबू ८, पि ३०६,
५५६, उत १२, ११) । ३ पुन रसोई,
पाक, 'भणियामहाणसणारा जह अज्ज उव-
क्खडो न कायवो' (उप ३५६ टी, ठा ४, २,
णाय १, ८, श्रोघ ५४ भा) । ४ 'म वि
[म] पकाने पर भी जो कच्चा रह जाता
है वह, मूंग वगैरह अन्न-विशेष, 'उवक्खडाम
णाम जहा चणयादीण उवक्खडियाणं जे ण
सिज्झति ते ककडुयाम उवक्खडियाम भएणइ'
(निबू १५) ।

उवक्खर पु [उपस्कर] १ संस्कार । २ जिससे
संस्कार किया जाय वह (ठा ४, २) ।

उवक्खर पु [उपस्कर] घर का उपकरण,
साधन (सूत्रनि ५) ।

उवक्खरण न [उपस्करण] ऊपर देखो ।
'साला स्त्री [शाला] रसोई-घर, पाक-
गृह (निबू ६) ।

उवक्खा सक [उपा + ख्या] कहना । कर्म,
उवक्खाइज्जति (सूत्र २, ४, १०, भग १६,
३—पत्र ७६२) ।

उवक्खा स्त्री [उपाख्या] उपनाम (धर्मसं
७२७) ।

उवक्खाइत्तु वि [उपख्यापयितु] प्रसिद्धि
करानेवाला, 'अत्ताण उवक्खाइत्ता भवइ'
(सूत्र २, २, २६) ।

उवक्खाइया स्त्री [उपाख्यायिका] उपकथा,
अवान्तर कथा (सम ११६) ।

उवक्खाण न [उपाख्यान] उपाख्यान,
कथा (पउम ३३, १४६) ।

उवक्खित्त वि [उपक्षिप्त] प्रारब्ध, शुरू किया
हुआ (मुद्रा ९३) ।

उवक्खिण सक [उप + क्षिप्] १ स्थापन
करना । २ प्रयत्न करना । ३ प्रारम्भ करना ।
उवक्खिण (पि ३१६) ।

उवक्खीण वि [उपक्षीण] क्षय-प्राप्त (धर्मवि
४२) ।

उवक्खेअ पु [उपक्षेप] १ प्रयत्न, उद्योग ।
२ उपाय, 'ए भणामि तस्सिं साहणिज्जे
किदो उवक्खेओ' (मा ३६) ।

उवक्खेव पु [दे उपक्षेप] वालोत्पादन,
मुएडन (तटु १७) ।

उवग वि [उपग] १ अनुसरण करनेवाला
(उप २४३, श्रीप) । २ समीप में जानेवाला
(विसे २५६५) ।

उवगच्छ सक [उप + गम्] १ समीप में
आना । २ प्राप्त करना । ३ जानना । ४
स्वीकार करना । उवगच्छइ (उव, स २३७) ।
उवगच्छति (पि ५८२) । संकृ. उवगच्छि-
ऊण (म ४४) ।

उवगणिय वि [उपगणित] गिना हुआ,
सख्यात, परिगणित (स ४६१) ।

उवगपिय वि [उपकल्पित] विरचित (म
७२१) ।

°कर वि [°कर] उत्कण्ठा-जनक (गाथा १, १)।

उस्सुण वि [उच्छून] मूजा हुआ, फूला हुआ (उप ५६४, गउड, स २०३)।

उस्सुर न [उत्सूर] सन्ध्या, शाम, 'वचामो नियनयरे उत्सूरं वट्टए जेण' (मूर ७, ६३, उप ४ २२०)।

उस्सेअ पु [उत्सेक] १ सिचन। २ उन्नात। ३ गवं (चार ४५)।

उस्सेइम वि [उत्सेदिम] आटा से मिश्रित पानी, आटा-घोया जन (कण, ठा ३, ३)।

उस्सेह पु [उत्सेध] १ ऊँचाई (विपा १, १)। २ शिखर, टोच (जीव ३)। ३ उन्नति, अभ्युदय, 'पडणता उस्सेहा' (स ३६६)।

उस्सेहगुल न [उत्सेधाङ्गुल] एक प्रकार का परिमाण (विसे ३४० टी)।

उह न [उभ] दोनों, युग्म, युगल (पड्)।

उहट्ट अक [अप + घट्ट] नष्ट होना। उहट्टइ (सम्मत्त १६२)।

उहट्टु देखो उव्वट्ट = उद् + वृत्।

उहय स [उभय] दोनों, युग्म (कुमा, भवि)।

उहर न [उपगृह] छोटा घर, आश्रय-विशेष (पणह १, १)।

उहस सक [उप + हस्] उपहास करना। उहसइ (प्राक् ३४)।

उहार पु [उहार] मत्स्य विशेष (राज)।

उहिंजल पुं [दे] चतुरिन्द्रिय जन्तु विशेष (सुख ३६, १४६)।

उहिंजलिआ ली [दे] ऊपर देखो (उत्त ३६, १४६)।

उहु (अप) देखो अहो = अहो (सण)।

उहुर वि [दे] अवाङ्मुख, अवोमुख (गउड)।

॥ इअ सिरिपाइअसदमहणवे उयाराइसदसकलणो
राम पचमो तरणो समत्तो ॥

ऊ

ऊ पु [ऊ] प्राकृत वर्णमाला का षष्ठ स्वर-वर्ण (हे १, १, प्रामा)।

ऊ अ [दे] निम्नलिखित अर्थों का सूचक अव्यय—१ गर्हा, निन्दा, 'ऊ णिल्लज'। २ आक्षेप, प्रत्युत वाक्य के विपरीत अर्थ की आशका से उमे उलटाना, 'ऊ कि मए भणिए'। ३ विस्मय, आश्चर्य, 'ऊ कह मुणिएअ अहय'। ४ सूचना, 'ऊ केण ए विणाय' (हे २, १६६, पड्)।

ऊअट्ट वि [अववृट्ट] वृष्टि से नष्ट (पात्र)।

ऊआ ली [दे] घूका, लूँ (दे १, १३६)।

ऊआस पुं [उपचास] भोजनाभाव (हे १, १७३)।

ऊणिय वि [दे] झलंकृत (पड्)।

ऊज्झाअ देखो उव्वज्झाय (हे १, १७३, प्रामा)।

°ऊड देसो कूड (से १२, ७८, गा ५८३)।

उड वि [उड] वहन किया हुआ, धारण किया हुआ, 'उडकल वज्जुणपरिमलेसु मुरम-दिरत्तेयु' (गउड)।

उड वि [उड] परिणीत, विवाहित (धर्मसं १२६०)।

ऊडा ली [ऊडा] विवाहिता ली (पात्र)।

ऊढिअय वि [दे] १ प्रावृत्त, आच्छादित। २ न. आच्छादन, प्रावरण (पात्र)।

ऊण वि [ऊण] न्यून, हीन (पउम ११८, ११६)। °वीसइम वि [°विंशतितम] जन्ती-सर्वा (पउम १६, ८०)।

ऊण न [ऊण] ऋण, करजा (नाट)।

ऊणदिअ वि [दे] आनन्दित, हर्षित (दे १, १४१, पड्)।

ऊणिमा ली [पूर्णिमा] पूर्णिमा, तथो तीप चेव ऊणिमाए भरिऊण मंडस्स वहणाई पत्थियो पारमज्जल' (महा)।

ऊणिय वि [ऊनित] कम किया हुआ (जं २)।

ऊणिय पुं [ऊणिक] सेवक-विशेष (प्रश्नव्या० पत्र १३)।

ऊणोयरिआ ली [ऊनोदरिता] कम ग्राह्य करना, तन-विशेष (भग २५, ७, नव २८)।

ऊतालीस } ली न [एकोनचत्वारिंशत्]
ऊयाल } उनचालीस, ३६ (सुज २, ३, पत्र ५२, देवेन्द्र २६४)।

ऊमिगण न [दे] प्रोक्षणक, नुमना (धर्म २)।

ऊमिणिय वि [दे] प्रोच्छिन्न, जिसने स्नान के बाद शरीर पोछा हो वह (स ७५)।

ऊमिन्तिअ न [दे] दोनों पार्श्वों में आघात करना (दे १, १४२)।

ऊर पु [दे] १ ग्राम, गाँव। २ सत्र, समूह (दे १, १४३)।

°ऊर देखो तूर (से ८, ६५)।

°ऊर देखो पूर (से ८ ६५, गा ४५, २३१)।

ऊरण पु [ऊरण] मेप, भेड (राय, विसे)।

ऊरणी ली [दे] मेप, भेड (दे १, १४०)।

ऊरणीअ वि [औरणिक] भेडी चरानेवाला (अणु १४४)।

°ऊरय वि [पूरक] पूर्ति करनेवाला (भवि)।

ऊरस वि [औरस] पुत्र-विशेष, स्व-पुत्र (ठा १०)।

ऊरिसंकिअ वि [दे] रुद्ध, रोका हुआ (पड्)।

ऊरी अ [ऊरी] १ अगोकार। २ विस्तार।

°कय वि [°कृत] अगोकृत, स्वीकृत (उप ७२८ टी)।

ऊरु पु [ऊरु] जङ्घा, जाँघ (गाथा १, १८,

उवचि सक [उप + चि] १ इकट्ठा करना ।
२ पुष्ट करना । उवचिणइ, उवचिणइ, उव-
चिणति । भूका उवचिणिमु । भवि. उवचि-
णिस्सति (ठा २, ४, भग) । कर्म उवचि-
ज्जइ, उवचिज्जति (भग) ।

उवचिट्ठ सक [उप + स्था] उपस्थित होना,
ममीप आना । उवचिट्ठे, उवचिट्ठेज्जा
(पि ४६२) ।

उवचिणिय देखो उवचिय (धर्मंवि १०६) ।

उवचिय वि [उपचित] १ पुष्ट, पीन
(परह १, ४, कप्प) । २ स्थापित, निवेशित
(कप्प, परण २) । ३ उत्तति (श्रौप) । ४ व्याप्त
(अणु) । ५ वृद्ध, बड़ा हुआ (आचा) ।

उवच्चया स्त्री [उपत्यका] पर्वत के पाम की
नीची जमीन (ती ११) ।

उवच्छन्दिद (शौ) वि [उपच्छन्दित]
अभ्यर्णित (अभि १७३) ।

उवजगल वि [दे] दीर्घ, लम्बा (दे १,
११६) ।

उवजा अक [उप + जन] उत्पन्न होना ।
उवजायइ (विमे ३०२९) ।

उवजाइ स्त्री [उपजाति] छन्द-विशेष (पिंग) ।

उवजाडय देखो उवयाडय (आद्ध १६, मुपा
३५४) ।

उवजाय वि [उपजात] उत्पन्न (मुपा ६००) ।

उवजीव सक [उप + जीव] आश्रय लेना ।
उवजीवइ (महा) ।

उवजीवग वि [उपजीवक] आश्रित (मुपा
११६) ।

उवजीवि वि [उपजीविन्] १ आश्रय लेने-
वाला, 'न करेइ नेय पुच्छइ निद्धम्मा लिग-
मुवजीवी' (उव) । २ उपकारक (विसे
२८८६) ।

उवजोडय वि [उपज्योतिष्क] १ अग्नि के
समीप में रहनेवाला । २ पाक-स्थान में स्थित,
'के इत्य खत्ता उवजोडया वा अज्जावया वा
सह खडिर्हि' (उत्त १२, १८) ।

उवज्ज अक [उत् + पद्] उत्पन्न होना ।
उवज्जति (सूत्र १, १, ३, १६) ।

उवज्जन न [उपार्जन] पैदा करना, कमाना
(सुर ८, १४४) ।

उवज्जिण मक [उप + अर्ज] उपार्जन
करना । उवज्जिणेमि (स ४४३) ।

उवज्ज्माय } पु [उपाध्याय] १ अध्यापक,
उवज्ज्माय } पढानेवाला, (पउम ३६, ६०,
पड) । २ सूत्राध्यापक जैन भुनि को दी जाती
एक पदवी (विसे) ।

उवज्ज्माय वि [दे] आकारित, बुलाया हुआ
(राज) ।

उवज्माय देखो उवज्माय (सिरि ७७) ।

उवट्ठण देखो उव्वट्ठण (राज)

उवट्ठणा देखो उव्वट्ठणा (भग, विसे २५१५
टी) ।

उवट्ठ वि [उपस्थ] एक स्थान में सतत अव-
स्थित (वव ४) । 'काल पु [काल] आने
की बेला, अभ्यागम समय (वव ४) ।

उवट्ठभ पुं [उपट्ठभ] १ अवस्थान (भग) ।
२ अनुकम्पा, करुणा (ठा २) ।

उवट्ठप्प वि [उपस्थाप्य] १ उपस्थित करने
योग्य । २ व्रत—दीक्षा के योग्य, 'वियत्त-
किच्चे सेहे य उवट्ठप्पा य आहिया' (वृह ६) ।

उवट्ठव सक [उप + स्थापय] युक्ति से
संस्थापित करना । उवट्ठयति (सूत्र २, १
२७) ।

उवट्ठव सक [उप + स्थापय] १ उपस्थित
करना । २ व्रतो का आरोपण करना, दीक्षा
देना । उवट्ठवेड, उवट्ठवेह (महा, उवा) ।
हेक. उवट्ठवेत्तए (वृह ४) ।

उवट्ठवणा स्त्री [उपस्थापना] १ चारित्र्य-
विशेष, एक प्रकार की जैन दीक्षा (धर्म २) ।
२ शिष्य में व्रत की स्थापना, 'वयट्ठवरणमु
वट्ठवणा' (पचमा) ।

उवट्ठवणीय वि [उपस्थापनीय] देखो
उपट्ठप्प (ठा ३) ।

उवट्ठा सक [उप + स्था] उपस्थित होना ।
उवट्ठाएब्बा (भग) ।

उवट्ठान न [उपस्थान] १ बैठना, उपवेशन
(गाया १, १) । २ व्रत-स्थापन (महानि ७) ।
३ एक ही स्थान में विशेष काल तक रहना
(वव ४) । 'दोस पुं [दोप] नित्यवास
दोप (वव ४) । 'साला स्त्री [शाला]
आस्थान-मण्डप, सभा-स्थान (गाया १, १,
निर १, १) ।

उवट्ठाण न [उपस्थान] अनुष्ठान, आचार
(सूत्र १, १, ३, १४) ।

उवट्ठाणा स्त्री [उपस्थाना] जिनमें जैन साधु-
लोग एक बार ठहर कर फिर भी शास्त्र-
निषिद्ध-अवधि के पहले ही आकर ठहरे वह
स्थान (वव ४) ।

उवट्ठाव देखो उवट्ठव । उवट्ठावेहि (पि
४६८) । हेक. उवट्ठावित्तए, उवट्ठावेत्तए
(ठा) ।

उवट्ठावणा देखो उवट्ठवणा (वृह ६) ।

उवट्ठिय वि [उपस्थित] १ प्राप्त 'जगवा-
द-मुवट्ठिओ' (उन १२) २ ममीप-स्थित (आव
१०) । ३ तैय्यार, उद्यत (धर्म ३) । ४
आश्रित, निम्नतमुवट्ठिओ' (आच, सूत्र १,
२) । ५ मुमुक्षु, प्रव्रज्या नेने को तैय्यार,
'उवट्ठिय पडिरय, सजय सुतवस्सिय ।

वुक्कम्म धम्माओ भसेइ, महामोह पकुव्वइ'
(सम ५१) ।

उवठावणा देखो उवट्ठवणा (पचा १७, ३०) ।

उवड्हित्तु वि [उपदहित्] जलानेवाला,
'अगणिकाएणं कायमुवड्हित्ता भवइ' (सूत्र
२, २) ।

उवड्हिअ वि [दे] अवन्त, नमा हुआ (पड) ।

उवणगर न [उपनगर] उपपुर, शाखा-नगर
(श्रौप) ।

उवणक्क सक [उप + नर्त्तय] नचाना,
नाच कराना । कवक. उवणक्किज्जमाण
(श्रौप) ।

उवणद्ध वि [उपनद्ध] घटित (उत्तर ६१) ।

उवणम सक [उप + नम्] १ उपस्थित
करना, ला रखना । २ प्राप्त करना । उव-
णमइ (महा) । वक. उवणमत (उप १३६
टी, सूत्र १, २) ।

उवणमिय वि [उपनमित] उपस्थापित
(सरण) ।

उवणय वि [उपनत] उपस्थित (से १, ३६) ।

उवणय पुं [उपनय] १ उपसहार, दृष्टान्त के
अर्थ को प्रकृत में जोड़ना, हेतु का पक्ष में
उपसहार (पव ६६, ओष ४४ भा) । २
स्तुति, श्लाघा (विसे १४०३ टी, पव १४०) ।
३ अवान्तर नय (राज) । ४ संस्कार-विशेष,
उपनयन (स २७२) ।

ऊह सक [ऊह] १ तर्क करना । २ विचारना । ऊहइ (विसे ८३१), ऊहमि (सुर ११, १८५) । संकृ ऊहिऊण (आठ ५२) ।
ऊह न [ऊहस्] स्तन (विपा १, २) ।
ऊह पु [ऊह] १ विचार, विवेक-बुद्धि (राज) । २ तर्क, वितर्क (सूत्र २, ४) । ३

सख्या-विशेष (राज) । ४ ओघ-सजा, अव्यक्त ज्ञान (विसे ५२२, ४२३) ।
ऊहंग न [ऊहाङ्ग] सख्या-विशेष (राज) ।
ऊहट्ट वि [दे] उपहसित (दे १, १४०) ।
ऊहसिय वि [उपहसित] जिसका उपहास किया गया हो वह (दे १, १४०) ।

ऊहा स्त्री [ऊहा] तर्क, विचार-बुद्धि (भावम) ।
ऊहापोह पु [ऊहापोह] सोच-विचार, मन में होनेवाला तर्क-वितर्क (कुप्र ६१) ।
ऊहिअ वि [ऊहित] अनुमान से ज्ञात (से ६, ४२) ।
ए पु [ए] स्वर-वर्ण विशेष (हे १, १, प्रामा) ।

॥ इअ सिरिपाइअसदमहणवे ऊआराइसदसकलणो
छट्टो तरगो समत्तो ॥

ए

ए पु [ए] स्वर वर्ण-विशेष (हे १, १, प्रामा) ।
ए अ [ए, ऐ] इन अर्थों का सूचक अव्यय—
१ आमन्त्रण, सम्बोधन, 'ए एहि सबहुत्तो मज्झ' (पउम ८, १७४) । २ वाक्यालंकार, वाक्य-शोभा, 'से जहाणाम ए' (अणु) । ३ स्मरण । ४ असूया, ईर्ष्या । ५ अनुकम्पा, कल्याण । ६ आह्वान (हे २, २१७, भवि, गा ६०४) ।

ए सक [आ + इ] आना, आगमन करना ।
एह (उवा) । भवि. एहिइ (उवा) । वक्रु.
एत (पउम ८, ४३, सुर ११, १४८), इत (सुर ३, १३), एज्जंत (पि ५६१), एज्जमाण (उप ६४८ टी) ।

ए° देखो एत्तिअ (उवा) ।

ए° देखो एवं (उवा) ।

एअ वि [एत] आया हुआ, आगत (सम्मत्त ११६) ।

एअ स [एतत्] यह (भग. हे १, ११, महा) ।
°रिस वि [°इश] ऐसा, इसके जैसा (द्र ३२) । °रूव वि [°रूप] ऐसा, इस प्रकार का (गाया १, १, महा) ।

एअ देखो एग (गडड, नाट, स्वप्न ६०, १०६) । °आइ वि [°किन्] अकेला (अभि १६०, प्रति ६५) । °रह वि [°दशन्] ग्यारह की सख्या, दश और एक (पि २४५) । °रहम वि [°दिश] ग्यारहवां (भवि) ।

एअ देखो एव = एव (कुमा) ।

एअ } देखो एव, 'एअ वि सिरिअ दिट्ठा'
एअ } (से ३, ४६, गडड, पिग) ।

एअंत देखो एकंत (वेणी १८) ।

एआईस (अप) पु व [एकविंशति]
एक्कीस (पिग) ।

एयारिच्छ वि [एतादृश] ऐसा, इसके जैसा (प्रामा) ।

एइज्जमाण देखो एय = एज्ज ।

एइय वि [एजित] कम्पित (राय ७४) ।

एइस देखो एईस (सुख २, १७) ।

एइस वि [एतादृश] ऐसा (विसे २५४६) ।

एउजि (अप) अ [एवमेव] १ इसी तरह ।

२ यही (भवि) ।

एऊण देखो एगूण (पिग) ।

एंत देखो इ = इ ।

एंत देखो ए = आ + इ ।

एक देखो एक तथा एग (षट्, सम ६६, पउम १०३, १७२, हेका ११६, परह २, ५, पउम ११४, २४, सुपा १६५, कप्प, सम ७१, १५३) । °इआ अ [°दा] एक समय में, कोई वक्त (हे २, १६२) । °ल (अप) वि [°क] एकाकी (पि ५६५) । °लिय वि [°किन्] एकाकी, अकेला (उप ७२८ टी) । °णउइ स्त्री [°नवति] संख्या-विशेष, एकानवे (सम ६५, पि ४३५) ।

एकूण देखो अऊण = एकोन (सुज्ज १६) ।

एक देखो एक तथा एग (हे २, ६६; सुपा १४३, सम ६६, ५५, पउम ३१, १२८, गडड, कप्प, मा १८, सुपा ४८६, मा ४१, पि ५६५, नाट, राया १, १, गा ६१८, काल, सुर ५, २४२, भग, सम ३६, पउम २१, ६३, कप्प) । °वए देखो एगए (गडड, सुर १, ३८) । °सणिय वि [°श-निक] एक ही बार भोजन करनेवाला (परह २, १) । °सत्तरि स्त्री [°सप्तति] सख्या-विशेष, ७१, एकहत्तर (सम ८२) । °सरग, °सरय वि [°सरक, °सर्ग] एक समान, एक सरीखा (उवा, भग १६, परह २, ५) । °सि अ [°शस्] एक बार, 'सव्वजहल्लो उदओ दसगुणिओ एककसि कयाए' (भग), 'एककसि कओ पमाओ जीव पाडेइ भवसमु दम्मि' (सुर ८, ११२), 'एककसि सोलकलंकि-अह देज्जहि पच्छिताइ' (हे ४, ४२८) । °सि अ [°त्र] एक (किसी एक) में, 'एककसि न खु त्थिरो सित्ति पिओ कीइवि उवालद्धो' (कुमा) । °सि, °सिअ अ [°दा] कोई एक समय में (हे २, १६२) । °सिं अ [°शस्] एक बार (पि ४५१) । °इ वि [°किन्] अकेला (प्रयो २३) । °इ पुं [°दि] स्वनाम-ख्यात एक माएडलिक (सूवा) (विपा १, १) । °णउय वि

उवलभ देखो उवलभ = उप + लम् । वक्तु ।
उवलभंत (पि ४५७) । संकृ उवलभ
(पि ५६०) ।

उवलभत्ता } स्त्री [दे] वलय, कङ्कन
उवलभभग्गा } (दे १, १२०) ।

उवलल अक [उप + लल्] क्रीडा करना,
विलास करना । कवक उवललंत (महा) ।

प्रयो, वक्तु उवललज्जमाण (गाथा १, १) ।

उवललय न [दे] सुरत, मैथुन (दे १,
११७) ।

उवललिय न [उपललित] क्रीडा-विशेष
(गाथा १, ६) ।

उवलह देखो उवलभ = उप + लम् । संकृ
उवलहिय (स ३२), उवलहिऊण (स
६१०) ।

उवला सक [उप + ला] १ ग्रहण करना ।
२ आश्रय करना । हेक उवलाउ (वव १) ।

उवलि देखो उवलि । उवलिइज्जा (आचा २,
३, १, २) ।

उवलिप सक [उप + लिप्] लीपना,
पोतना । भवि उवलिपिहिह (पि ५४६) ।

उवलिप सक [उप + लिप्] चुम्बन करना,
'बलाए जो उ सीसाएँ जीहाए उवलिपए'
(गच्छ १, १६) ।

उवलित्त वि [उपलिप्त] लीपा हुआ, पोता
हुआ (गाथा १, १) ।

उवलीण देखो उवल्लीण ।

उवलुअ वि [दे] सलज्ज, लजा-युक्त (दे १,
१०७) ।

उवलेव पुं [उपलेप] १ लेपना । २ कर्म-
बन्ध (श्रौप) । ३ सरलेप (आचा) । ४

आश्लेष (सूत्र १, १, २) ।

उवलेवण न [उपलेपन] ऊपर देखो (भग
११ ६, निवृ १; श्रौप) ।

उवलेविय वि [उपलेपित] लीपा हुआ,
पोता हुआ (कप्प) ।

उवलोभ सक [उप + लोभय्] लालच
देना, लोभ दिखाना । संकृ उवलोभेऊण
(महा) ।

उवलोहिय वि [उपलोभित] जिसको लालच
दो गई हो वह (उप ७२८ टी) ।

उवल्लि सक [उप + ली] १ रहना, स्थिति

करना । २ आश्रय करना । उवल्लियइ (पि
१६६, ४७४), 'तयो संजयामेव वासावासं
उवल्लिइज्जा' (आचा २, ३, १, १, २) ।

उवललीण वि [उपलीन] १ स्थित । २
प्रच्छन्न-स्थित, 'उवल्लोणा मेहुणवम्मं विण्ण-

वेंति' (आचा २) ।

उववइ पुं [उपपति] जार (धर्मवि १२८) ।

उववज्ज अक [उप + पद्] १ उत्पन्न होना ।
२ सगत होना, युक्त होना । उवज्जइ, भवि

उववज्जिहिह (भग, महा) । वक्तु उववज्ज-

माण (ठा ४) । संकृ । उववज्जित्ता (भग
१७, ६) । हेक उववज्जिउ (सूत्र २, १) ।

उववज्जण न [उपवर्जन] त्याग, 'असमजसो-
ववज्जणमिह जायइ सव्वसगचायाओ' (सुपा
४७१) ।

उववज्जमाण देखो उववाय = उप + वादय् ।

उववज्ज वि [उपवाह्य] राज आदि का वल्लभ
—प्रधान, सेनापति आदि (दस ६, २, ५) ।

उववज्ज वि [औपवाह्य] प्रधान आदि का,
प्रधान आदि को बैठने योग्य (दस ६, २, ५) ।

उववट्ट अक [उप + वृत्] च्युत होना,
मरना, एक गति से दूसरी गति में जाना ।

उववट्टइ (भग) । वक्तु उववट्टमाण (भग) ।

उववण न [उपवन] बगीचा (गाथा १, १,
गउड) ।

उववण वि [उपपन्न] १ उत्पन्न, 'उववणो
माणुसम्मि लोगम्मि' (उत्त ६) । २ संगत,

युक्त (पचा ६, उवर ४७) । ३ प्रेरित,
'उववणो पावकम्मुरा' (उत्त १६) । ४ न.

उत्पत्ति, जन्म (भग १४, १) ।

उववत्ति स्त्री [उपपत्ति] १ उत्पत्ति, जन्म
(ठा २) । २ युक्ति, न्याय (पउम २, ११७,

उवर ४६) । ३ विषय । ४ समव, 'विसउ त्ति
वा संभउ त्ति वा उवव त्ति त्ति वा एण्डा'

(आचू १) ।

उववत्तु वि [उपपत्तृ] उत्पन्न होनेवाला,
'देवलोसेसु देवत्ताए उववत्तारो भवति' (श्रौप,

ठा ८) ।

उववन्न देखो उववण (भग, टा २, २, स
१५८, १६२) ।

उववयण न [उपपतन] देखो उववाय =
उपपात, 'उववयण उववाओ' (पचभा) ।

उववसण न [उपवसन] उपवास (सुपा
६१६) ।

उववाइय वि [औपपादिक, औपपातिक]
१ उत्पन्न होनेवाला, 'अत्थि मे आया उव-

वाइए, नत्थि मे आया उववाइए' (आचा) ।

२ देवर्ष या नारक रूप से उत्पन्न होनेवाला
(परह १, ४) ।

उववाय सक [उप + पादय्] सपादन
करना, सिद्ध करना । उववायए (उत्त १,
४३, दम ८, ३३) ।

उववाय पु [उप + वादय्] वाद्य बजाना ।
कवक उपवज्जमाण, उववज्जमाण (कप्प,

राज) ।

उववाय पु [उपपात] १ देव या नारक जीव
की उत्पत्ति—जन्म (कप्प) । २ सेवा, आदर,

'आणोववायवयणनिहेसे चिट्ठि' (भग ३, ३) ।

३ विनय । ४ आज्ञा, 'उववाओ णिहेसो
आणा विण्णो य होति एण्डा' (वव ४) ।

५ प्रादुर्भाव (परण १६) । ६ उपसंपादन,
संप्राप्ति (निवृ ५) । °कप्प पु [°कल्प]

साध्वाचार-विशेष, पार्श्वस्थो के साथ रह कर
सविग्न विहार की संप्राप्ति (पंचभा) । °य

वि [°ज] देव या नारक गति में उत्पन्न
जीव (आचा) ।

उववास पुन [उपवास] उपवास, अनाहार,
दिन-रात भोजनादि का भ्रमाव (उवा, महा) ।

उववासि वि [उपवासिन्] जिसने उपवास
किया हो वह (पउम ३३, ५१, सुपा ४७८) ।

उववासिय वि [उपवासित] उपवास किया
हुआ (भवि) ।

उवविअ देखो उववीअ, 'सव्वगं जुव्वणो च
(? व) विओ' (धर्मवि ८) ।

उवविट्ट वि [उपविष्ट] बैठा हुआ, निपण्ण
(आचम) ।

उवविणिग्गय वि [उपविनिर्गत] सतत
निर्गत (जीव ३) ।

उवविस अक [उप + विश्] बैठना । उव-
विसइ (महा) । संकृ उवविसिअ (अग्नि

३८) ।

उवविसण न [उपवेशन] बैठना (कुलक ७) ।

उववीअ न [उपवीत] १ यज्ञसूत्र, जनेऊ

एल वि [दे] कुशल निपुण (दे १, १४४) ।
 एल पु [एड, एल] १ मृगो की एक
 एलग } जाति (विपा १, ४) । २ मेप मेड
 (सूत्र २, २) । °मूअ, °मूग वि [°मूक]
 १ मूक, मेड की तरह अव्यक्त बोलनेवाला,
 जलएलमूअमम्मणअलियवयणअणए दोमा
 (आ १२ दस ५, आव ४, निचू ११) ।
 एलगच्छ न [एलगाच्छ] स्वनाम-ख्यात नगर-
 विशेष (उप २११ टी) ।
 एलय देखो एल (उवा, पि २४०) ।
 एलविल वि [द] १ घनाञ्च, वनी । २ पु
 वृषभ, वैन् (दे १, १४८, पड्) ।
 एला स्त्री [एला] १ इलायची का पेड (मे ७,
 ६२) । २ इलायची-फल (मुर १३, ३३) ।
 °रस पु [°रम] इलायची का रस (परह
 २ ५) ।
 एलालुय पुन [एलालुक] आनू की एक
 जानि, कन्द-विशेष (अनु ६) ।
 एलावच्च न [एलापत्य] माण्डव गोत्र का
 एक शाखा-गोत्र (ठा ७) ।
 एलावच्च वि [एलापत्य] एलापत्य-गोत्र का
 (गदि ४६) ।
 एलावच्चा स्त्री [एलापत्या] पक्ष की तीसरी
 रान (चद १०, १४) ।
 एलिकव वि [ईहृत्] ऐमा (उत्त ७, २२) ।
 एलिघ पु [एलिङ्ग] वात्य-विशेष (परह १) ।
 एलिया स्त्री [एलिङ्का, एलिङ्का] १ एक जात
 की मृगी । २ भेडिया (हे ३, ३२) ।
 एलिम देखो एरिस (सूत्र १, ६, १) ।
 एलु पु [एलु] वृक्ष-विशेष (उप १०३१ टी) ।
 एलुग पुन [एलुक] देहली, द्वार के नीचे
 एलुय } की लकड़ी (जीव ३, आचा २) ।
 एह वि [द] दरिद्र, निर्बल (द १, १७४) ।
 एव अ [एव] इन अर्थों का सूचक अव्यय — १
 अवधान, निश्चय (ठा ३, १ प्राप्त १६) । २
 सादर्य तुल्यता । ३ चार-नियोग । ४ निग्रह ।
 ५ परिभव । ६ अल्प, थोड़ा (हे २, २१७) ।
 एव देखो एव (हे १, २६, पउम १५, २४) ।
 एवड वि [इयत्, एतावत्] इतना ।
 °नुनो अ [°ह्रस्वस्] इतनी बार (कप्प) ।

एवइय वि [इयत्, एतावत्] इतना (कप्प,
 विमे ४४४) ।
 एव अ [एवम्] इस तरह, इस रीति से,
 इस प्रकार (सूत्र १, १, हे १, २६) । °भूअ
 पुं [°भूत] १ व्युत्पत्ति के अनुसार उभ क्रिया
 से विशिष्ट अर्थ को ही शब्द का अभिव्य
 मानानेवाला पक्ष (ठा ७) । २ वि इस तरह
 का, एव-प्रकार (उप ८७७) । °विघ, °विह
 वि [°विव] इस प्रकार का (हे ४, ३२३,
 काल) ।
 एवहास पु [एवहास] इतिहास (गउड
 ८=२) ।
 एवड (अप) वि [इयन्] इतना (हे ४,
 ४०८, कुमा, भवि) ।
 एवमाइ देखो एमाइ (परह १, ३) ।
 एवमेव } देखो एमेव (हे १, २७१, उवा) ।
 एवामेव }
 एव देखो एव (पड्, अभि ७२, स्वप्न १०) ।
 एव देखो एव = एव (अभि १३ स्वप्न ४०) ।
 एवहि (अप) अ [इदानीम्] इस समय,
 अधुना (पड्) ।
 एव्वारु पु [इर्वारु] ककड़ी (कुमा) ।
 एस सक [इप्] १ इच्छा करना । २
 खोजना । ३ प्रकाशित करना । एमइ (पिड
 ७५) ।
 एस सक [आ + इप्] करना, 'नम्हा
 विणएममिजा' (उत्त १, ७, मुख १, ७) ।
 एस सक [आ + इप्] १ खोजना, शुद्ध
 भिक्षा की खोज करना । २ निर्दोष भिक्षा का
 ग्रहण करना । एमनि (आचा २, ६, २) ।
 वहु, एसमाण (आचा २, ५, १) । सक
 एसित्ता, एसिया (उत्त १, आचा) । हेहु
 एसित्तए (आचा २, २, १) ।
 एस वि [एण्य] १ भावी पदार्थ, होनेवाली
 वस्तु (आव ५) । २ पु भविष्य काल (दसनि
 १), 'अकयव सपइ गए कह कीरइ, किह व
 एसम्मि' (विसे ४२२) ।
 °एस देखो देस; 'अण को एण रुम्मइ जणो
 पयिजतो अएसकालम्मि' (गा ४००) ।

एसग वि [एपक] अन्वेषक, गवेपक (आचा) ।
 एसज न [एउचये] वनव, प्रभुत्व, सपत्ति
 (ठा ७) ।
 एसण न [एपण] १ अन्वेषण, खोज । २
 ग्रहण (उत्त २) ।
 एसणा स्त्री [एपणा] १ अन्वेषण, गवेपण,
 खोज (आचा) । २ प्राप्ति, लाभ, 'विसएसण
 भियायनि' (सूत्र १, ११) । ३ प्रार्थना (सूत्र
 १, २) । ४ निर्दोष आहार की खोज करना
 (ठा ६) । ५ निर्दोष भिक्षा (आचा २) । ६
 इच्छा, अभिलाष (पिड १) । ७ भिक्षा का
 ग्रहण (ठा ३, ८) । °समिड स्त्री [°समिति]
 निर्दोष भिक्षा का ग्रहण करना (ठा ५) ।
 °समिय वि [°समित] निर्दोष भिक्षा को
 ग्रहण करनेवाला (उत्त ६, भग) ।
 एसणिज वि [एपणीय] ग्रहण-योग्य (गाया
 १, ५) ।
 एसि वि [एपिन्] अन्वेषक, खोज करनेवाला
 (आचा) ।
 एसिय वि [एपिक] १ खोज करनेवाला,
 गवेपक । २ पु व्याघ्र । ३ पाखण्डि-विशेष
 (सूत्र १, ६) । ४ मनुष्यों की एक नीच
 जाति (आचा २, १, २) ।
 एसिय वि [एपित] गवेपित, अन्वेषित (भग
 ७, १) । २ निर्दोष भिक्षा (वव ४) ।
 एसिय वि [एपित] भिक्षा-चर्या की विधि से
 प्राप्त (सूत्र २, १, ५६) ।
 एससरिय देखो एसज (उव) ।
 एह अक [एव्] बढना, उत्त होना । एहइ
 (पड्) । प्रयो, कवहु 'दीसति दुहम् एहता
 (दम ६) ।
 एह (अप) वि [ईहृक्] ऐमा, इसके जेमा
 (पड्, भवि) ।
 एहत्तरि (अप) स्त्री [एकसपत्ति] सत्या-
 विशेष, ७१ (पिग) ।
 एहा स्त्री [एधस्] समिध, इन्धन (उत्त १२,
 ४३, ४४) ।
 एहिअ वि [एहिक] इस जन्म-सबन्धी (ओघ
 ६२) ।

॥ इअ सिरिपाईअसदमहणवो एआराइमहसकलणो
 सत्तमो तरंगो समत्तो ॥

उवसाम पुं [उपशम] उपशान्ति (सिरि २३५) ।
 उवसाम-देखो उवसम (विसे १३०६) ।
 उवसामग वि [उपशमक] १ क्रोधादि को उपशान्त करनेवाला (विसे ५२६, श्राव ४) ।
 २ उपशमसे सवन्व रखनेवाला, 'उवसामग-मेडिगयत्स होइ उवसामग तु सम्मत्त' (पिमे २७३५) ।
 उवसामण न [उपशमन] उपशान्ति, उपशम (स ४६६) ।
 उवसामणया व्री [उपशमना] उपशम (ठा ८) ।
 उवसामय देखो उवसामग (मम २६, विमे १३०२) ।
 उवसामिय वि [औपशमिक] १ उपशम-संबन्धी । २ पु भाव-विशेष, 'मोहोवममस-हावो, सव्वो उवसामियो भावो' (विसे ३४-६४) । ३ न सम्यक्त्व-विशेष (विमे ५२६) ।
 उवसामिय वि [उपशमित] शान्त किया हुआ (वव १) ।
 उवसाह मक [उप + कथ] कहना । उव-साहइ (सण) ।
 उवसाहण वि [उपसाधन] निष्पादक (सण) ।
 उवसाहिय वि [उपसाधित] तैयार किया हुआ (पाउम ३४, ८, सण) ।
 उवसित्त वि [उपसिक्त] सिक्त, छिड़का हुआ (रंभा) ।
 उवसिलोअ सक [उपश्लोक्य] वर्णन करना, प्रशंसा करना । क उवसिलोअइइउव (शौ) (मुद्रा १६८) ।
 उवसुत्त वि [उपसुत्त] सोया हुआ (से १५, ११) ।
 उवसुद्ध वि [उपशुद्ध] निर्दोष (सूअ १, ६) ।
 उवसुइय वि [उपसूचित] ससूचित (सण) ।
 उवसेर वि [दे] रति योग्य (दे १, १०४) ।
 उवसेवण न [उपसेवन] सेवा, परिचय (पव ६) ।
 उवसेवय वि [उपसेवक] सेवा करनेवाला, भक्त (भवि) ।
 उवसोभ अक [उप + शुभ] शोभना, विराजना । वक उवसोभमाण, उवसोभमाण (भग, णाया १, १) ।

उवसोभिय वि [उपशोभित] सुशोभित, विराजित (औप) ।
 उवसोहा व्री [उपशोभा] शोभा, विभूषा (सुर ३, १०४) ।
 उवसोहिय वि [उपशोधित] निर्मल किया हुआ, शुद्ध किया हुआ (णाया १, १) ।
 उवसोहिय देखो उवसोभिय (सुपा ५, भवि, सार्ध ६६) ।
 उवस्सग देखो उवसग (कम) ।
 उवस्सय पुं [उपाश्रय] जैन साधुओं के निवास करने का स्थान (सम १८८, ओघ १७ भा, उप ६४८ टी) ।
 उवस्सा व्री [उपाश्रा] द्वेप (वव १) ।
 उवस्सिय वि [उपाश्रित] १ द्वेपी (वव १) । २ अङ्गीकृत । ३ समीप में स्थित । ४ न द्वेप (राज) ।
 उवस्सुदि व्री [उपश्रुति] प्ररत-फल को जानने के लिए ज्योतिषी को कहा जाता प्रथम वाक्य (हास्य १३०) ।
 उवह स [उभय] दोनों, युगल (कुमा, हे २, १३८) ।
 उवह अ [दे] देखो अर्थ को बतलानेवाला अव्यय (पड्) ।
 उवहट्ट सक [समा + रभ्] शुरू करना, आरम्भ करना । उवहट्टइ (पड्) ।
 उवहट्ट वि [उपहृत] १ उपहौकित, उपस्थापित (राज) । २ भोजन स्थान में अर्पित भोजन (ठा ३, ३) ।
 उवहण सक [उप + हन्] १ विनाश करना । २ आघात पहुँचाना । उवहणइ (उव) । कर्म उवहम्मइ (पड्) । वक उवहणत (राज) ।
 उवहणण न [उपहनन] १ आघात । २ विनाश (ठा १०) ।
 उवहत्थ मक [समा + रच्] १ रचना, बनाना । २ उत्तेजित करना । उवहत्थइ (हे ४, ६५) ।
 उवहत्थिय वि [समारचित] १ बनाया हुआ । २ उत्तेजित (कुमा) ।
 उवहम्म देखो उवहण ।
 उवहय वि [उपहत] १ विनाशित (प्रासू १३५) । २ दूषित (वृह १) ।
 उवहर सक [उप + ह] १ पूजा करना ।

२ उपस्थित करना । ३ अर्पण करना । उव-हरइ (हे ४, २५६) । भूका उवहरिमु (ठा ६) ।
 उवहस मक [उप + हस्] उपहास करना, हँसी करना । क उवहसणिज्ज (म ३) ।
 उवहसिअ वि [उपहसित] १ जिमका उपहास किया गया हो वह (पि १५५) । २ न उपहास (तदु) ।
 उवहा व्री [उपधा] माया, कपट (धमं ३) ।
 उवहाण न [उपधान] १ तकिया, उनीमा (दे १, १४०, सुर १२, २५, सुपा ४) । २ तपधर्या (सूअ १, ३, २, २१) । ३ उपाधि, 'सच्छपि फलिहरयण उवहाणवसा कलिजए काल' (उप ७२८ टी) ।
 उवहार पु [उपहार] १ भेंट, उपहार (प्रति ७४) । २ विस्तार, फैलाव, 'पहासमुदओव-हारेहि सव्वओ चैव दीवयत' (कप्प) ।
 उवहारणया देखो उवधारणया (राज) ।
 उवहारिअ वि [उपधारित] अवधारित, निश्चित (सूअ २, ७) ।
 उवहारिआ व्री [दे] दोहनेवाली व्री (गा उवहारी ७३१, दे १, १०८) ।
 उवहारुल्ल वि [उपहारवत्] उपहारवाला (ससि २०) ।
 उवहास पु [उपहास] हँसी, ठट्ठा, दित्तगो (हे २, २०१) ।
 उवहास वि [उपहास्य] हँसी के योग्य, 'सुसमत्यो वि ह जो, जणयअज्जिय सपय नित्सेवेइ । सो अम्मि । ताव लोए, ममं व उवहासयं लहइ' (सुर १, २३२) ।
 उवहासणिज्ज वि [उपहसनीय] हास्यास्पद (पउम १०६, २०) ।
 उवहि पुं [उदधि] समुद्र, सागर (से ५, ४०, ४२, भवि) ।
 उवहि पुखी [उपाधि] १ माया, कपट (आचा) । २ कर्म (सूअ १, २) । ३ उपकरण, साधन, 'तिविहा उवही परणत्ता' (ठा ३, ओघ २) ।
 उवहिंड सक [उप + हिण्ड] पर्यटन करना, घूमना, 'मिक्खत्थं उवहिंडे' (संवीध ४१) ।

प्पिआ । सिधुए महाणईए पच्चत्थिमिल्लं
णिक्खुड मसिधुमागरगिरिमेराग समविसमणि-
क्खुडाणि अ ओअवेहि' (ज ३) । सक
ओअवेत्ता (ज ३) ।

ओअवण न [साधन] विजय, वश करना,
स्वायत्त करना (ज ३—पत्र २४८) ।

ओआअ पु [दे] १ ग्रामाधीश, गांव का
स्वामी । २ आज्ञा, आदेश । ३ हस्ती वगैरह
को पकड़ने का गर्त । ४ वि अपहृत, छीना
हुआ (दे १, १६६) ।

ओआअव पु [दे] अस्त-ममय (दे १, १६२) ।

ओआर सक [अप + वारय्] ढाकना,
'कह सुज्ज ह्येए ओआरेसि' (मै ४६) ।

ओआर पुं [अपकार] अतिष्ठ, हानि, क्षति
(कुमा) ।

ओआर पु [अवतार] १ अवतारण (ठा १,
गउड) । २ अवतार, देहान्तर-धारण (पड्) ।
३ उत्पत्ति, जन्म, 'अच्चतमणोयासे जत्थ
जरारोगवाहीए' (स १३१) । ४ प्रवेश
(विमे १०४०) ।

ओआर देखो उवयार (पड्) ।

ओआरण न [अवतारण] उत्तरना, अवतारित
करना (दे ४, ४०) ।

ओआरिअ वि [अवतारित] उतारा हुआ
(से ११, ९३, उप ५६७ टी) ।

ओआल पु [दे] छोटा प्रवाह (दे १, १५१) ।

ओआली स्त्री [दे] १ खड्ग का दोष । २
पंक्ति, श्रेणी (दे १, १६४) ।

ओआवल पु [दे] बालातप, सुबह का सूर्य-
ताप (दे १, १६१) ।

ओआस देखो अवगास (हे १, १७२, कुमा,
२०), 'अम्हारिसाए सुदर । ओआसो कत्थ
पावाए' (काप्र ६०३) ।

ओआस देखो उववास (हे १, १७३, प्रालु) ।

ओआहिअ वि [अवगाहित] जिसका
अवगाहन किया गया हो वह (से १, ४, ८,
१००) ।

ओडव सक [आ + मुच्] १ छोड़ देना,
त्यागना, फेंक देना । २ उतार कर रख देना,
'तो उज्जिक्कण लज ओडवइ कच्चुय सरीराओ'
(पउम ३४, १६), 'तहेव य मडत्ति परिव-
होए ओडवइ ति' (आक ३८) ।

ओइण वि [अवतीर्ण] उतरा हुआ (पाअ,
गा ६३) ।

ओइत्त } न [दे] परिवान, वल्ल (दे १,
ओइत्तग } १५५) ।

ओइह वि [दे] आरूढ (दे १, १५८) ।

ओउठण न [अवगुण्ठन] स्त्री के मुँह पर
का बन्ध, घूँघट (अभि १६८) ।

ओउल्लिय वि [दे] पुरस्कृत, आगे किया हुआ
(पड्) ।

ओऊल न [अवचूट] लटकता हुआ वस्था-
अल, प्रालम्ब (पाअ), 'मरगयलवतमोत्तिओ-
उल' (पउम ८, २८३) । देखो ओचूल ।

ओअ [ओम्] प्रणव मुख्य मन्त्राक्षर (पडि) ।

ओकार पु [ओङ्कार] 'ओ' अक्षर (उत्त २५
२१) ।

ओगण अक [क्वण] अव्यक्त आवाज करना ।
ओगणइ (प्राकृ ७३) ।

ओघ देखो उव । ओघइ (हे ४, १२ टि) ।

ओडल न [दे] केश-गुम्फ, केश-रचना,
बम्मिल्ल (दे १, १५०) ।

ओडुर देखो उडुर (पड्) ।

ओवाल सक [छादय्] ढकना, आच्छादित
करना । ओवालइ (हे ४, २१) ।

ओवाल मक [पज्ञावय्] १ डुबाना । २
व्याप्त करना । ओवालइ (हे ४, ४१) ।

ओवाल्लिअ वि [छादित] ढका हुआ (कुमा) ।

ओवाल्लिअ वि [प्लावित] १ डुबाया हुआ ।
२ व्याप्त (कुमा) ।

ओकवण देखो उक्कवण (आचा २, २, ३,
१ टी) ।

ओकच्छिआ देखो उक्कच्छिआ (पव ६२) ।

ओकड्ड वि [अपकृष्ट] १ खीचा हुआ । २
न अपकर्षण, खीचाव (उत्त १६) ।

ओकड्डग देखो उक्कड्डग (पएह १, ३) ।

ओकरग पु [अवकरक] विष्ठा (मन ३०) ।

ओकस सक [अव + कृप्] १ निमग्न
होना, गड जाना । २ खीचना । ३ वह
जाना । वक्क ओकसमाण (कस) ।

ओक्कन्त वि [अवक्रान्त] निराकृत, पराजित,
'परवाईहि अणोक्कन्ता अरणउत्थिएहि
अणइसिजमाणो विहरति' (ओप) ।

ओक्कदी देखो उक्कदी (दे १, १७४) ।

ओक्कणी स्त्री [दे] यूका, जूँ (दे १, १५६) ।

ओक्किअ न [दे] १ वास, वसन, अवस्थान ।

२ वसन, उट्टी (दे १, १५१) ।

ओक्कवच सक [आ + कृप्] खीचना ।
कर्म 'जह जह ओक्कवचिजइ, तह तह वेग
पणिएहमाणे । नयव । तुरगमेण, इहाणिओ
आममे तुम्ह' (मुर ११, ५१) ।

ओक्कख मक [अव + खण्डय्] तोड़ना,
भागना । क ओक्कखडेअव (ने १०, २८) ।

ओक्कखडिअ वि [दे] आक्रान्त (दे १, ११२) ।

ओक्कख देखो अवक्कख (मुर १०, २१०,
पउम ३७, २६) ।

ओक्कख देखो उऊखल (कुमा प्राप्र) ।

ओक्कखली [द] देवो उक्कखली (दे १, १७४) ।

ओक्कखमाण (शौ) वि [भविष्यन्] भविष्य
में होनेवाला, भारी (प्राकृ ६६) ।

ओक्कखण वि [दे] १ अवकीर्ण । २
खरिडत, चूरित (कम, दे १, १३०) । २
छन्न, ढका हुआ । ३ पार्श्व में शिन्नि
(दे १, १३०) ।

ओक्कखत्त वि [अवक्षिप्त] फेंका हुआ (कस) ।

ओक्कख देखो ओक्कख ।

ओगम देखो अवगम । क ओगमिदव्व
(शौ) (मा ४८) ।

ओगय वि [उपगत] प्राप्त (सूअ १, ५,
२, १०) ।

ओगर देखो ओगर (पिण) ।

ओगलिअ वि [अवगलिन] गिरा हुआ,
खिसका हुआ (गा २०५) ।

ओगसण न [अपकसन] हास (राज) ।

ओगहिअ वि [अवगृहीत] उपात्त, गृहीत
(ठा ३) ।

ओगाढ वि [अवगाढ] १ आश्रित, अधिष्ठित
(ठा २, २) । २ व्याप्त (राया १, १६) ।
३ निमग्न (ठा ४) । ४ गभीर, गहरा (पउम
२०, ६५, मे ६, २६) ।

ओगास पुं [अवकाश] जगह, स्थान (त्रिवे
१३६ टी) ।

ओगास पु [अवकाश] मार्ग, रास्ता (सुख
२, २१) ।

ओगाह सक [अव + गाह] पंख से चलना ।
वक्क ओगाहंत (पिड ५७५) ।

उवासग वि [उपासक] १ सेवा करनेवाला ।
२ पुं. जैन या बृद्ध दर्शन का अनुयायी गृहस्थ
(धर्मस १०१३) ।

उवासग वि [उपासक] १ उपासना करने-
वाला, सेवक । २ पुं. श्रावक, जैन गृहस्थ
(उत्त २) । °दसा स्त्री [°दशा] सातवाँ
जैन अंग ग्रन्थ (सम १) । °पडिमा स्त्री
[°प्रतिमा] श्रावको को करने योग्य नियम-
विशेष (उत्त २) ।

उवासण न [उपासन] उपासना, सेवा (स
५४३, मै ८६) ।

उवासणा स्त्री [उपासना] १ क्षौर कर्म,
हजामत बगैरह सफाई । २ सेवा, शुश्रूषा,
'उवाणणा मंमुकम्ममाइया, पुञ्जवाइणं वा
उवासणा पञ्जुवामणया' (आवम) ।

उवासय देखो उवासग (सम ११६) ।

उवासय पु [उपाश्रय] जैन मुनियों का
निवास-स्थान (उप १४२ टी) ।

उवासिय वि [उपासित] सेवित (पउम ६८,
४२) ।

उवाहण सक [उपा + हन्] विनाश करना,
मारना । वहु उवाहणत (पएह १, २) ।

उवाहणा देखो उवाणहा (अनु, णाया १,
१५) ।

उवाहि पु स्त्री [उपाधि] १ कर्म-जनित
विशेषण (आचा) । २ सामीप्य, सन्निधि
(भग १, १) । ३ अस्वाभाविक धर्म, 'सुद्धोवि
फलहमणी उपाहिवसओ घरेइ अन्नत्त' (धम्म
११ टी) ।

उवि सक [उप + इ] १ समीप आना । २
स्वीकार करना । ३ प्राप्त करना । उविति
(भग) । वहु उवित (पि ४६३, प्रामा) ।

उविअ देखो अविअ = अपि च (स २०६) ।

उविअ वि [उपेत] युक्त, सहित (भवि) ।

उविअ न [दे] शीघ्र, जल्दी (दे १, ८६) ।
२ वि परिकर्मित, संस्कारित, 'एणाणमणिक-
णगरयणविमलमहिरुद्धनिउणोवियमिसिमिसंत-
विरइयसुसिलिद्विसिदुलदुसठियपसत्थआविद्ध-
वीरव्वनए' (णाया १, १) ।

उविंद पुं [उपेन्द्र] कृष्ण (कुमा) । °वज्जा
स्त्री [°वज्रा] रयारह असरो के पादवाला
एक छन्द (पिंग) ।

उविंद पुन [उपेन्द्र] एक देव-विमान (द्वेन्द्र
१४१) ।

उविकख सक [उप + ईक्ष्] उपेक्षा करना,
अनादर करना । वहु उविकखमाण (द्र
१६) ।

उविकखा स्त्री [उपेक्षा] उपेक्षा, अनादर
(काल) ।

उविकखय वि [उपेक्षित] तिरस्कृत, अनादृत
(सुपा ३६५) ।

उविकखेव पु [उद्विच्छेप] हजामत, मुण्डन
(तन्दु) ।

उवियग्ग वि [उद्विग्न] खिन्न, उद्वेग-प्राप्त
(राज) ।

उवीव अक [उद् + विच्] उद्वेग करना,
खिन्न होना । उवीवइ (नाट) ।

उवे देखो उवि । उवेइ, उवेति (श्रौप) । वहु
उवेत (महा) । सक उवेच्च (सूअ १, १४) ।

उवेक्ख देखो उविकख । उवेक्खह (सुपा
३५४) । क उवेक्खयव्व (म ६०) ।

उवेक्खअ देखो उविकखय (गा ४२०) ।
उवेच्च देखो उवे ।

उवेय वि [उपेत] १ समीप-गत । २ युक्त,
सहित (सत्था ६) ।

उवेय वि [उपेय] उपाय-साध्य (राज) ।

उवेल्ल अक [प्र + ख्] फैलना, प्रसारित होना ।
उवेल्लइ (हे ४, ७७) ।

उवेस अक [उप + विश्] बैठना । वहु
उवेसमाण (पिंड ५८३) ।

उवेह सक [उप + ईक्ष्] उपेक्षा करना,
तिरस्कार करना, उदासीन रहना । उवेहइ
(धम्म १६) । वहु उवेहत, उवेहमाण (स
४६, ठा ६) । क उवेहियव्व (सण) ।

उवेह सक [उत्प्र + ईक्ष्] १ जानना, सम-
झना । २ निश्चय करना । ३ कल्पना करना ।
उवेहाहि । वहु उवेहमाण, 'उवेहमाणे अणु-
वेहमाणं वूया, उवेहाहि समियाए' (आचा) ।
संक उवेहाए (आचा) ।

उवेहण न [उपेक्षण] उपेक्षा, उदासीनता
(संघोष १०, हित २३) ।

उवेहा स्त्री [उपेक्षा] तिरस्कार, अनादर, उदा-

सीनता (मम ३२) । °कर वि [°कर] उपे-
क्षक, उदासीन (आ २८) ।

उवेहा स्त्री [उपेक्षा] १ ज्ञान, समझ । २
कल्पना । ३ अवधारण, निश्चय (श्रौप) ।

उवेहिय वि [उपेक्षित] अनादृत, तिरस्कृत
(उप १२६, सुपा १३५) ।

°उव्व देखो पुव्व (गा ४१४) ।

उव्वत वि [उद्वान्त] १ वमन किया हुआ ।
२ निष्क्रान्त, निर्गत (अभि २०६) ।

उव्वक्क सक [उद् + वम्] १ बाहर निका-
लना २ वमन करना । हेक्क उव्वक्किउ (सुपा
१३६) ।

उव्वक्क } वि [उद्वान्त] १ बाहर निकाला
उव्वक्किय } हुआ (वव १) । २ वमन किया
हुआ ;

'मतोनामयपाण, काउ उव्वक्कियं हयमेण ।
ज गहिऊण विरई, कलकिया मोहमूढेण'
(सुपा ४३५) ।

उव्वग्ग देखो ओवग्ग । संक. उव्वग्गिगवि
(भवि) ।

उव्वट्ट उभ [उद् + वृत्, वर्त्तय्] १
चलना-फिरना । २ मरना, एक गति से दूसरी
गति में जन्म लेना । ३ पिष्टिका आदि से
शरीर के मल को दूर करना । ४ कर्म-पर-
माणुओं की लघु स्थिति को हटाकर लम्बी
स्थिति करना । ५ पार्श्व को चलाना-फिराना ।
६ उत्पन्न होना, उदित होना । उव्वट्टइ
(भग) । वहु. उव्वट्टत, उव्वट्टमाण, उअत्तत
(भग, नाट, उत्तर १०७, वृह १) । सक
उव्वट्टित्ता, उहट्टट्ट, उव्वट्टिय (जीव १,
विपा १, १, आचा २, ७, स २०६) ।
हेक्क, उव्वट्टित्तए (कस) ।

उव्वट्ट देखो उव्वट्टिय = उद्वृत्त (भग) ।

उव्वट्ट वि [दे] १ नोराग, राग-रहित । २
गलित (दे १, १२६) ।

उव्वट्टण न [उद्वर्त्तन] १ शरीर पर से मल
बगैरह को दूर करना । २ शरीर को निर्मल
करनेवाला द्रव्य—सुगन्धि वस्तु (उवा, णाया
१, १३) । ३ दूसरे जन्म में जाना, मरण । ४
पार्श्व का परिवर्त्तन (आव ४) । ५ कर्म-पर-
माणुओं की लघु स्थिति को दीर्घ करना
(पंच) ।

‘ओच्छाहिओ परेण व लद्धि-
पसंमाहि वा समुत्तइओ ।
अवमारिओ परेण य जो
एसइ माणपिडो सो ॥’
(पिड ४६५) ।

ओच्छिअ न [दे] केश-विवरण (दे १,
१५०) ।

ओच्छिण्ण वि [अवच्छिन्न] आच्छादित,
‘पत्तेहि य पुप्फेहि य ओच्छिएणपलिच्छिएणा’
(जीव ३) ।

ओच्छुद सक [आ + क्रम्] १ आक्रमण
करना । २ गमन करना । ओच्छुदति (मे
१३, १६) । कर्म ओच्छुदइ (से १०,
५५) ।

ओच्छुण्ण वि [आक्रान्त] १ दबाया हुआ ।
२ उल्लिखित, ‘ओच्छुण्णदुग्गमपहा’ (मे १३,
६३, १५, १३) ।

ओच्छोअअ न [दे] घर की छत के प्रान्त
भाग में गिरता पानी

‘रक्खेइ पुत्तअ मत्थएण
ओच्छोअअ पटिच्छती ।

असूहि पहिअधरिणी ओलि-
ज्जंत ए लक्खेइ’ (गा ६२१)

ओजिम्ह अक [आ] वृत्त होना । ओजिम्हइ
(प्राकृ ६५) ।

ओज्जर वि [दे] भीरु, डरपोक (पड्) ।

ओज्जल देवो उज्जल (दे) ।

ओज्जल्ल वि [दे] बलवान् प्रबल (दे १,
१५८) ।

ओज्जाअ पु [दे] गर्जित, गर्जारव (दे १
१५८) ।

ओज्ज वि [दे] मैला, अस्वच्छ, चोखा नहीं
वह (दे १, १४८) ।

ओज्जमत देवो ओज्जमा = अप + ध्या ।

ओज्जमण न [दे] पलायन, भाग जाना (दे
१, १०३) ।

ओज्जर पु [निर्भर] भरना, पर्वत में
निकलता जल-प्रवाह (गा ६४०, हे १, ६८,
कुमा, महा) ।

ओज्जरिअ [दे] देवो उज्जरिअ (दे १,
१३३) ।

ओज्जरी स्त्री [दे] श्रोम, आत का आवरण
(दे १, १५७) ।

ओज्जमा मक [अप + ध्या] खराब चिन्तन
करना । कवक ओज्जमत (भवि) ।

ओज्जमा देवो उज्जमा (उप पृ ३७४) ।

ओज्जमाय देवो उज्जमाय (कुमा, प्राकृ) ।

ओज्जमाय वि [दे] दूसरे को प्रेरणा कर
हाथ में लिया हुआ (दे १, १५२) ।

ओज्जमावग देवो उज्जमाय (उप ३५७ टी) ।

ओट्ट पु [ओष्ट] ओठ, अवर (पउम १,
२४ स्वप्न १०४ कुमा) ।

ओट्टिय वि [औष्ट्रिक] उष्ट्र मस्वन्वी, उष्ट्र
के बालों से बना हुआ (कस, म १८६) ।

ओडड्ड वि [दे] अनुक्त, रागी (दे १,
१५६) ।

ओड्ड पु [ओड्ड] १ उत्कल देश । २ वि
उत्कल देश का निवासी, उड्डिया (पिंग) ।

ओड्डिअ वि [ओड्डिय] उत्कल-देशीय (पिंग) ।

ओड्डण न [दे] ओदन, उत्तरीय, चादर
(दे १, १५५) ।

ओड्डिगा स्त्री [दे] ओढनी (म २११) ।

ओड्डण न [दे] अवगुण्ठन (प्राकृ ३८) ।

ओण देवो ऊण = ऊन (रमा) ।

ओणंठ मक [अव + नन्द] अभिनन्दन
करना । कवक ओणविज्जमाण (कप्प) ।

ओणम अक [अव + नम] नीचे नमना ।
वक्क ओणमत (मे १, ४५) । सक्र. ओण-
मिअ, ओणमिऊण (आचा २, निवृ १) ।

ओणय वि [अवनत] १ नमा हुआ (मुर २,
४६) । २ न नमस्कार, प्रणाम (नम २१) ।

ओणल्ल अक [अव + लम्भ] लट्ठाना,
‘केसकल्लवु खवे ओणल्लइ’ (भवि) ।

ओणविय वि [अवनमित] नमाया हुआ,
अवनत किया हुआ (गा ६३५) ।

ओणाम मक [अव + नमय्] नीचे नमाना,
अवनत करना । ओणामेहि (मृच्छ ११०) ।

संक्र ओणामित्ता (निवृ) ।

ओणामणी स्त्री [अवनामनी] एक विद्या,
जिम्हके प्रभाव में वृक्ष वगैरह स्वयं फलादि
देने के लिए अवनत होते हैं (उप पृ १५५,
निवृ १) ।

ओणामिय १ वि [अवनमित] अवनत किया
ओणाविय १ हुआ (मे ५, ३६, ६, ४, गा
१०३, भवि) ।

ओणिअत्त अक [अपनि + वृत्] पीछे
हटना, वापिस आना । वक्क ओणिअत्तंत
(से २, ७) ।

ओणिअत्त वि [अपनिवृत्त] पीछे हटा हुआ,
वापिस आया हुआ (से ५, ५८) ।

ओणिमिद्ध वि [अवनिमीलित] मुद्रित, मूँदा
हुआ (मे ६, ८७, १३, ८२) ।

ओणियट्ट दवो ओनियट्ट (पि ३३३) ।

ओणियन्व पु [दे] क्लमीक, चींटियों का
गुदा हुआ मिट्टी का ढेर (दे १, १५१) ।

ओणीवी स्त्री [दे] नीवी, कटि-मूत्र (दे १,
१५०) ।

ओणुगअ वि [दे] अभिभूत, पराभूत (दे १,
१५८) ।

ओणिगद न [औन्निद्रय] निद्रा का अभाव,
‘ओणिगद दोन्वत्त’ (काप्र ८५, दे १,
१५७) ।

ओणिणय वि [और्णिक्] ऊन का बना हुआ,
ऊर्ण-निर्मित (कम) ।

ओणेज्ज वि [उपनेय] माँचे में ढाल कर
बना हुआ फूल आदि, माँचे में बनता मोम का
पुतला, ‘आउट्टिमउक्किअ ओणणे (१ रे)
उज पीलिम च रग च’ (दसनि २, १७) ।

ओत्तलहअ पु [दे] विटप (दे १, ११६) ।

ओत्ताण देवो उत्ताण (विक्र २८) ।

ओत्थ मक [स्थग्] ढकना । ओत्थइ (प्राकृ
६५) ।

ओत्थअ वि [अवस्तुत] १ फेला हुआ, प्रखन
(मे २, ३) । २ आच्छादित, पिहित ‘ममं-
तओ अन्वय नयण’ (आवम, दे १, १५१,
म ७७, ३८६) ।

ओत्थअ वि [दे] अवस्तुत, खिन्न (दे १,
१५१) ।

ओत्थइअ देवो ओन्द्धइय (गा ५६६, से
८, ६२, म ५७६) ।

ओत्थर देवो ओन्धर । ओन्धरइ (पि ५०५,
नाट) ।

ओत्थर पु [दे] उत्ताह (दे १, १५०) ।

ओत्थरण न [अवस्तरण] विछोना (पउम
४६, ८४) ।

किया हुआ (मुपा ५४२) । ३ दूर किया हुआ (गा १०६) ।

उच्चाह पु [दे] धर्म, ताप (दे १, ८७) ।

उच्चाह पु [उच्चाह] विवाह (मै २१) ।

उच्चाह सक [उद् + चाधय्] विशेष प्रकार से पीड़ित करना । कवक. उच्चाहि-ज्जमाण (आचा, णाया १, २) ।

उच्चाहिअ वि [दे] उत्क्षिप्त, फेंका हुआ (दे १, १०६) ।

उच्चाहुल न [दे] १ उत्सुकता, उत्कण्ठा (भवि; दे १, १३६) । २ वि. द्वेष्य, अप्रीतिकर (दे १, १३६) ।

उच्चाहुलिय वि [दे] उत्सुक, उत्कण्ठित (भवि) ।

उच्चिआइअ वि [उच्चेदित] उत्पीड़ित (से १३, २६) ।

उच्चिक न [दे] प्रलपित, प्रलाप (पङ्) ।

उच्चिग वि [उच्चिग] १ खिन्न । २ भीत, घबड़ाया हुआ (हे २, ७६) ।

उच्चिगिर वि [उच्चेगशील] उद्देग करने वाला (वाका ३८) ।

उच्चिज्ज देखो उच्चिय । उच्चिज्ज (प्राक् ६८), उच्चिज्जति (वै ८६) । सकृ उच्चिज्जअण (धर्मवि ११६) ।

उच्चिड वि [दे] १ चकित, भीत । २ क्लान्त, क्लेश-युक्त (पङ्) ।

उच्चिडिम वि [दे] १ अधिक प्रमाण वाला । २ मर्यादा-रहित, निर्लज्ज (दे १, १३४, वउ० पत्र २६७-३९६ पत्र) ।

उच्चिण्ण देखो उच्चिग (पि २१६) ।

उच्चिद्व वि [उच्चिद्व] १ ऊँचा गया हुआ, उच्चिद्वृत (परह १, ४) । २ गम्भीर, गहरा (मम ४४, णाया १, १) । ३ विड, 'कीलय-सएहि घरणियले उच्चिद्वो' (सया ८७) ।

उच्चिद्व वि [उच्चिद्व] जिसकी ऊँचाई का माप किया गया हो वह (पव १५८) ।

उच्चिन्न देखो उच्चिग (हे २, ७६, सुर ४, २४८) ।

उच्चिय अक [उद् + विज्] उद्देग करना, उदामीन होना, बिन्न होना, 'को उच्चिण्ण नरवर । मरणस्स भवस्स गतव्वे' (म १२६) । वक्क उच्चियमाण (स १३६) ।

उच्चियणिज्ज वि [उच्चेजनीय] उद्देग-प्रद (पउम १६, ३६, मुपा ५६७) ।

उच्चियेयग न [उच्चिरेचन] खाली करना, 'एव च भरिउच्चियेयण कुव्वतस्स' (काल) ।

उच्चिल्ल अक [उद् + वेल्] १ चलना, कांपना । २ सक. वेष्टन करना । वक्क उच्चिल्लत, उच्चिल्लमाण (मुपा ८८, उप पृ ७७) ।

उच्चिल्ल अक [प्र + सू] फेंकना, पमरना । उच्चिल्लइ (भवि) ।

उच्चिल्ल अक [उद् + वेल्] १ तडफडाना, डहर-उधर चलना, 'उच्चिल्लइ सयणीए देवो ग्रामन्नचवणुव्व' (धर्मवि ११२) ।

उच्चिल्ल वि [उद् + वेल्] चञ्चल, चपल (मुपा ३४) ।

उच्चिल्लिर वि [उच्चिल्लित्] चलनेवाला, हिलनेवाला (मुपा ८८) ।

उच्चिव अक [उद् + विज्] उद्देग करना, खिन्न होना । उच्चिल्लइ (पङ्) ।

उच्चिव्व } देखो उच्चिय । उच्चिव्वइ, उच्चि-उच्चिअ } अइ (प्राक् ६८) ।

उच्चिव्व वि [दे] १ क्रुद्ध, क्रोध-युक्त (पङ्) । २ उद्भट वेप वाला (पाप्र) ।

उच्चिह सक [उत् + व्यध्] १ ऊँचा फेंकना । २ ऊँचा जाना, उडना, 'भे जहाणा-मए केइ पुरिने उसुं उच्चिहइ' (पि १२६) । वक्क, 'मणसावि उच्चिहंताइ अणेगाई ग्राम-सयाइ पासति' (णाया १, १७ टी—पत्र २३१) । वक्क, उच्चिहमाण (भग १६) । सकृ उच्चिहित्ता (पि १२६) ।

उच्चिह पुं [उच्चिह] स्वनाम-स्यात एक आजीविक मत का उपासक (भग ८, ५) ।

उच्चो पु [उच्चो] पृथिवी (से २, ३०) । °म पु [°श] राजा (कुमा) ।

उच्चोड देखो उच्चूड (कुमा, हे १, १२०) ।

उच्चोड वि [दे] उत्खात, खोदा हुआ (दे १, १००) ।

उच्चोड वि [उच्चिद्व] उत्क्षिप्त, 'तस्स उसुस्स उच्चोडस्स समाणस्स' (पि १२६) ।

उच्चोल सक [अव + पीडय्] पीड़ा पहुँचाना, मार-पीट करना । वक्क उच्चोलो-माण (राज) ।

उच्चोअल्य वि [अपवीडक] लज्जा-रहित करनेवाला, शिष्य को प्रायश्चित्त लेने में शरम को दूर करने का उपदेश देनेवाला (गुरु) (भग २५, ७, द्र ४६) ।

उच्चुडममाण देखो उच्चह ।

उच्चुण्ण } वि [दे] १ उद्धिग्न । २ उत्क्षिप्त । उच्चुन्न } ३ शून्य (दे १, १२३) । ४ उद्धट, उत्त्रण (दे १, १२३, सुर ३, २०५) ।

उच्चूड वि [उद् + व्यूड] १ धारण किया हुआ, पहना हुआ (कुमा) । २ ऊँचा लिया हुआ, ऊपर धारण किया हुआ (से ५, ५४, ६, ११) । ३ परिणीत, कृत-विवाह (मुपा ४५६) ।

उच्चैअणोअ वि [उद् + वेजनीय] उद्देग-कारक (नाट) ।

उच्चैग पुं [उद् + वेग] १ शोक, दिलगीरी (ठा ३, ३) । २ व्याकुलता (भग ३, ६) ।

उच्चैड सक [उद् + वेष्ट्] १ बाँधना । २ पृथक् करना, वन्धन-मुक्त करना । उच्चैडइ (पङ्), उच्चैडिज (आचा २, ३, २, २) ।

उच्चैडण न [उद् + वेष्टन] १ वन्धन । २ वि. वन्धन-रहित किया हुआ (राज) ।

उच्चैडिअ वि [उद् + वेष्टित] १ वन्धन रहित किया हुआ । २ परवेष्टित (दे ४, ४६) ।

उच्चैत्ताल न [दे] अविच्छिन्न चिह्नाना, निरन्तर रोदन (दे १, १०१) ।

उच्चैय देखो उच्चैग (कुमा; महा) ।

उच्चैयग वि [उद् + वेजक] उद्देग-कारक (रण ४०) ।

उच्चैयणग } वि [उद्देजनक] उद्देग-जनक उच्चैयणय } (आल, परह १, १) ।

उच्चैयणय पुन [उद्देजनक] एक नरक-स्थान (देवेन्द्र २८) ।

उच्चैल अक [प्र + सू] फेंकना । उच्चैलड (पङ्) ।

उच्चैल वि [उद् + वेल्] उच्चलित (मे २, ३०) ।

उच्चैलिअ वि [उद् + वेलित्] फेंका हुआ, प्रक्षत (माल १४२) ।

उच्चैलल देखो उच्चैड । उच्चैल्लइ (हे ४, २२३) । कर्म. उच्चैल्लिज्जड (कुमा) ।

उच्चैल्ल सक [उद् + वेल्] १ सत्वर जाना । २ त्याग करना । ऊँचा उठना, ऊँचा

ओमत्थ वि [दे] नत, अघोमुख (पात्र) ।
ओमत्थिय [दे] देखो ओमत्थिय (श्रोघ
३८६) ।

ओमल्ल न [निर्माल्य] निर्माल्य, देवोच्छिष्ट
द्रव्य (पङ्) ।

ओमल्ल वि [दे] घनीभूत, कठिन, जमा हुआ
(पङ्) ।

ओमाण पु [अपमान] अपमान, तिरस्कार
(उत्त २६) ।

ओमाण न [अवमान] ? जिसने क्षेत्र वगैरह
का माप किया जाता है वह, हस्त, दण्ड
वगैरह मान (ठा २, ४) । २ जिसका माप
किया जाता है वह क्षेत्रादि (अणु) ।

ओमाणण न [अवमानन, अप^०] अपमान,
तिरस्कार (स ६६७) ।

ओमाय वि [अवमित] परिमित, मापा हुआ
(मुज्ज ६) ।

ओमाल देवो ओमल्ल = निर्माल्य (हे १, ३८,
कुमा, वज्जा ८८) ।

ओमाल अक [उप + माल्] १ शोभना,
शोभित होना । २ सक सेवा करना, पूजना ।
सक ओमालिवि (भवि) । कवक 'अहवावि
भक्तिपणमततियनवहूसीसदुमुमदमेहि' ओमा-
लिज्जतकमो, नियमा तित्थाहिबो होई'
(उप ६८६ टी) ।

ओमालिअ देवो ओमल्ल = निर्माल्य (प्राह
३४) ।

ओमालिअ वि [उपमालिन] १ शोभित ।
२ पूजित, अर्चित (भवि) ।

ओमालिआ स्त्री [अवमालिना] चिमड़ी या
मुरझाई हुई माला (गा १६४) ।

ओमास पु [अवमर्श] स्पर्श (से ६, ६७) ।

ओमिण सक [अव + मा] मापना, मान
करना । कर्म ओमिणज्जइ (अणु) ।

ओमिणण न [दे] प्रोखनक, विवाह की एक
रीति वर के लिये सासू की ओर से किया
हुआ न्योछावर (पचा ८, २५) ।

ओमय वि [अवमित] परिच्छिन्न, परिमित
(मुज्ज ६) ।

ओमील अक [अव + मील] मुद्रित होना,
बन्द होना । वक ओमीलंत (से ३, १) ।

ओमीस वि [अवमिश्र] १ मिश्रित । २
समीपस्थ । ३ न सामीप्य, समीपता ।

'मुचिरपि अच्छमारो,
वेरुलिओ कायमणियओमीमे ।
न उवेइ कायभाव,
पाहन्नुणेण नियएण ।'
(श्रोघ ७७२) ।

ओमुक्क वि [अवमुक्त] परित्यक्त (सम्मत्त
१५६) ।

ओमुग्ग देखो उम्मुग्ग (पि १०८, २३४) ।

ओमुच्छिअ वि [अवमूर्च्छित] महा-मूर्च्छा
को प्राप्त (पउम ७, १५८) ।

ओमुद्धग वि [अवमूर्धक] अघोमुख, 'ओमु-
द्धगा घरणियले पडंति' (सूत्र १, ५) ।

ओमुय सक [अव + मुच्] पहनना ।
ओमुयद (कप्प) । वक ओमुयत (कप्प) ।
सक ओमुइत्ता (कप्प) ।

ओमोय पु [ओमोक] आभरण, आभूषण
(भग ११, ११) ।

ओमोयर वि [अवमोदर] भूख की अपेक्षा
न्यून भोजन करनेवाला (उत्त ३०) ।

ओमोयरिय न [अवमोदरिक] १ न्यून
भोजनत्व, त-विशेष (आचा) । २ दुश्चिन्ता,
अकाल (श्रोघ ७) ।

ओमोयरिया स्त्री [अवमोदरिता, 'रिका]
न्यून भोजन रूप तप (ठा ६) ।

ओम्माय पु [उम्माद] उम्मतता (सबोव २१) ।

ओय न [ओजस्] १ विषम सख्या, जैसे
एक, तीन, पाँच आदि (पिंड ६२६) । २
आहार-विशेष, अपनी उत्पत्ति के समय जीव
प्रथम जो आहार लेता है वह (सूत्रनि १७१) ।

ओय वि [ओजस्] गृह, घर (वव ५) ।

ओय वि [ओज] १ एक, असहाय (सूत्र १,
४, २, १) । २ मध्यस्थ, तटस्थ, उदासीन
(वृह १) । ३ पु विषम राशि (भग २५, ३) ।

ओय न [ओजस्] १ वल (आचा) । २
प्रकाश, तेज (चद ५) । ३ उत्पत्ति स्थान
में आहत पुद्गलो का समूह (पण ८, सग
१८२) । ४ आतंज, ऋतु-धर्म (ठा ३, ३) ।

ओयंसि वि [ओजस्विन्] १ वलवान् ।
२ तेजस्वी (सम १५२, औप) ।

ओयट्ठण न [अपवर्त्तन] पीछे हटना, वापिस
लौटना (उप ७६०) ।

ओयड्ढ सक [अप + कृप्] जीवना ।
कवक ओयड्ढियत (पउम ७१, २६) ।

ओयड्ढिया स्त्री [दे] ओढनी, ओढने
ओयड्ढी का वस्त्र चादर, दुपट्टा (मुत्त
२, २०) ।

ओयग देवो ओढग (पउम ६६, १६) ।

ओयत्त वि [अववृत्त] अवनत, अघोमुख
(पात्र) ।

ओयत्त सक [अप + वर्तय्] उलटाना,
बाली करने के लिए नमाना । सक
ओयत्तियाण (आचा २, १, ७, ५) ।

ओयत्तण न [अपवर्त्तन] खिमकाना, हटाना
(पिंड ५६३) ।

ओयविय वि [दे] परिक्रमिन् (पण १, ४;
श्रोप) ।

ओया स्त्री [ओजस्] शक्ति, सामर्थ्य (णाय
१, १०—पत्र १७०) ।

ओया स्त्री [ओजस्] १ प्रकाश (सुज्ज ६) ।
२ माता का शुक्र-शोणित (तदु १०) ।

ओयाइअ देवो उवयाइय (मुपा ६२५, दे
४, २२) ।

ओयाय वि [उपयात] उपागत, समीप पहुँचा
हुआ (णाय १, ६; निर १, १) ।

ओयार सक [अव + तारय्] नीचे उता-
रना । सक ओयारिया (दस ५, १, ६३) ।

ओयार पु [अवतार] घाट, तीर्थ (वेइय
५१८) ।

ओयारग वि [अवतारक] १ उतारनेवाला ।
२ प्रवृत्ति करनेवाला (सम १०६) ।

ओयारण देवो उयारण (कुप्र ७१) ।

ओयावइत्ता अ [ओजयित्ता] १ वल दिखा
कर । २ चमत्कार दिखा कर । ३ विद्या आदि
का सामर्थ्य दिखा कर (जो दीक्षा दी जाय
वह) (ठा ४) ।

ओर वि [दे] १ चारु, सुन्दर (दे १, १४६) ।
२ समीप (दण० अग० चू०, आख्या० कोश
पत्र ८७ गा० ६) ।

ओरपिअ वि [दे] १ आक्रान्त । २ नष्ट (दे
१, १७१) ।

ओरपिअ वि [दे] पतला किया हुआ, छिला
हुआ (पात्र) ।

कुमा) । °जाल न [°जाल] जाँच तक लटकने-
वाला एक आभूषण (श्रौप) ।

ऊरुदग्ध वि [ऊरुदग्ध] जघा-प्रमाण (गहरा
वगैरह) (पङ्) ।

ऊरुइअस वि [ऊरुद्वयस] ऊपर देखो
(पङ्) ।

ऊरुमेत्त वि [ऊरुमात्र] ऊपर देखो (पङ्) ।
ऊल पुं [दे] गति-भग (दे १, १३९) ।

°ऊल देखो कूल (गा १८६) ।

ऊस पु [उस] किरण (हे १, ४३) ।

°मालि पु [°मालिन्] सूर्य (कुमा) ।

ऊस पु [ऊप] क्षार-भूमि की मिट्टी (पण १,
जी ४) ।

ऊसअ न [दे] उपवान, उसीमा, तकिया (दे
१, १४० पङ्) ।

ऊसठ वि [उत्सृष्ट] १ परित्यक्त । २ न.
उत्सर्जन, मलादि का त्याग, 'नो तत्तय ऊसठं
पकरेवा, त जहा, उच्चारं वा' (आचा २, २,
१, ३) ।

ऊसठ वि [दे उच्छ्रित] १ उच्च, श्रेष्ठ
(आचा २, ४, २, ३, जीव ३) । २ ताजा,
'भद् भद्एति वा, ऊमठं ऊसठेति वा, रतिय
रसिए ति वा' (आचा २, ४, २, २) ।

ऊसण न [दे] गति-भङ्ग (दे १, १३६) ।

ऊसण्हसण्हिया देखो उत्सण्हसण्हिया (पव
२५४) ।

ऊसत्त देखो उसत्त (कप्प, आवम) ।

ऊसत्थ पु [दे] १ जम्माई । २ वि आकुल
(दे १, १४३) ।

ऊसरअक [उत् + सू] १ खिसकना । ३ दूर
होना । ३ सक त्यागना । ऊसरइ (भवि)
संज्ञ ऊसरिवि (भवि) ।

ऊसर न [ऊपर] क्षार-भूमि, जिसमे बीज
नहीं पैदा होता है, 'ऊसरदवदलियदढ्ढक्खना-
एण' (सम्य १७, भक्त ७३) ।

ऊसरण न [उत्सरण] आरोहण, 'थाणूसरण
तथो समुपयण' (विसे १२०८) ।

ऊसय पु [उच्छ्रय] १ उत्सेध, ऊँचाई । २
उत्सेधागुल (जीवस १०४) ।

ऊसल अक [उत् + लस्] उल्लसित होना ।
ऊसलइ (हे ४, २०२, पङ्, कुमा) ।

ऊसल वि [दे] पीन पुष्ट (दे १, १४०) ।

ऊसलिअ वि [उल्लसिन्] उल्लसित, पादुर्भूत
ऊसलिअ वि [दे] रोमाञ्चित, पुलकित
(दे १, १४१, पात्र) ।

ऊसव देखो उत्सव = उत्सव (स्वप्न. ६३) ।

ऊसव देखो उत्सव = उत् + श्रि । उत्सवेह
(पि ६४, ५५१) । मङ्ग ऊमविय (कप्प,
भग) ।

ऊसविअ वि [दे] १ उद्भ्रान्त (दे १, १४३) ।

२ ऊँचा किया हुआ (दे १, १४३, गाया
१, ८, पात्र) । ३ उद्भ्रान्त, वमित (पङ्) ।

ऊसविय वि [उच्छ्रित] ऊर्ध्व-स्थित (कप्प) ।

ऊसस सक [उत् + श्वस्] १ उसाँस

लेना, ऊँचा साँस लेना । २ विक्रमिit होना ।

३ पुलकित होना । ऊससइ (पि ६४, ३१५) ।

वङ्ग ऊससत, ऊससमाण (गा ७४,
घण ४, पि ४६६) ।

ऊससण न [उच्छ्वमन] उसाँस । °लद्धि
व्री [°लद्धि] श्वासोच्छ्वास की शक्ति
(कम्म १, ४४)

ऊससिअ न [उच्छ्वमित] १ उसास
(पङ्) । २ वि उल्लसित । ३ पुलकित
(स ८३) ।

ऊससिर वि [उच्छ्वसितृ] उमास लेने-
वाला (हे २, १४५) ।

ऊसाअत वि [दे] खेद होने पर शिथिल
(दे १, १४१) ।

ऊसाइअ वि [दे] १ विक्षिप्त । २ उत्क्षिप्त (दे
१, १४१) ।

ऊसार सक [उत् + सारय्] दूर करना,
त्यागना । सक. ऊसारिवि (अप) (भवि) ।

ऊसार पु [दे] गर्त-विशेष (दे १, १४०) ।

ऊसार पु [उत्सार] परित्याग (भवि) ।

ऊसार पु [आसार] वग वाली वृष्टि (हे १,
७६, पङ्) ।

ऊसारि वि [आसारिन्] वेग से वरसनेवाला
(कुमा) ।

ऊसारिअ वि [उत्सारित] दूर किया हुआ
(महा, भवि) ।

ऊसास पुं [उच्छ्वास] १ उसास, ऊँचा
श्वास (आच ५) । २ भरण (वृह १) ।

°णाम न [°नामन्] कर्म विशेष (कम्म १
४४) ।

ऊसासय वि [उच्छ्वासक] उसास लेने-
वाला (विसे २७१४) ।

ऊसासिअ वि [उच्छ्वासित] बाधा-रहित
किया हुआ (दे १२, ६२) ।

ऊसाह पु [उत्साह] उत्साह, उछाह (मा
१०) ।

ऊसि सक [उत् + श्रि] ऊँचा करना, उन्नत
करना । सक. ऊसिया (उत्त १०, ३५) ।

ऊसिक्क सक [उत् + ष्वक्] ऊँचा करना ।
सक. ऊसिक्किऊग (भग १, ८ टी) ।

ऊसिक्किअ वि [दे] प्रदीप्त, शोभायमान
(पात्र) ।

ऊसित्त वि [उत्सिक्त] १ गर्वित । २ उद्धत ।
३ बढ़ा हुआ । ४ अतिशायित (हे १, ११४) ।

ऊसित्त वि [अवसिक्त] उपलित (पात्र) ।

ऊसिय देखो उत्सिय = उच्छ्रित (श्रौप, कप्प,
सण) ।

ऊसीस | न [उच्छ्रीर्ष, °क] उसीमा,
ऊसीसग | सिरहाना (गाया १, ७, पात्र,
ऊसीसय | सुपा ५३, १२०) ।

ऊसुअ वि [उत्सुक] उत्कण्ठित (गा ५४३,
कुमा) ।

ऊसुअ वि [उच्छ्रुक] जहा से शुक उदगत
हुआ हो वह (हे १, ११४) ।

ऊसुइअ वि [उत्सुकित] उत्सुक किया हुआ
(गा ३१२) ।

ऊसुभ अक [उत् + लस्] उल्लसित होना ।
ऊसुमइ (हे ४, २०२) ।

ऊसुभिअ वि [उल्लसित] उल्लाम-प्राप्त
(कुमा) ।

ऊसुभिअ न [दे] १ रोदन-विशेष, गला बैठ
जाय ऐसा रुदन (दे १, १४२, पङ्) ।

ऊसुक्किअ वि [दे] विमुक्त, परित्यक्त (दे १,
१४२) ।

ऊसुग देखो ऊसुअ = उत्सुक (उप ५६७ टी) ।

ऊसुग न [दे] मध्य भाग (आचा २, १,
८, ६) ।

ऊसुम्मिअ वि [दे] उसीसा या सिरहाना
किया हुआ (पङ्) ।

ऊसुर न [दे] ताम्बूल, पान (हे २, १७४) ।

ऊसुरुसुभिअ [दे] देखो ऊसुंभिअ (दे १,
१४२) ।

ओलिभा स्त्री [दे] जगदेहिवा, दीमक (दे १, १५३, गडउ)।
 ओलिङ्गमाण देवो ओलिह।
 ओलिङ्ग वि [अप + लिङ्ग, उपलिङ्ग] लीपा हुआ, वृत्तलेप (परह १, २, उव पात्र, दे १ १५८ यौप)।
 ओलिङ्गी स्त्री [दे] खट्ग आदि का एक दोष (दे १, १५९)।
 ओलिङ्ग न [दे] हास हैमी (दे १, १५३)।
 ओलिङ्गपता स्त्री [दे] खट्ग आदि का एक दोष (दे १, १६०)।
 ओलिङ्ग सक [अव + लिङ्ग] आन्वादा करना। कवक ओलिङ्गमाण (कप)।
 ओली मक [अव + ली] १ आगमन करना। २ नीचे आना। ३ पीछे आना नीय च वाया ओलिति' (विने २०६८)।
 ओली स्त्री [अ.ली] पत्ति, यणी (बुमा)।
 ओली स्त्री [दे] कुन-परिपाटी, कुनाचार (दे १, १४८)।
 ओलुङ्ग स्त्री [दे] बानका की एक प्रकार की क्रीडा (दे १, १५३)।
 ओलुङ्ग मक [अव + रचय्] करना टपकना, बाहर निकलना। ओलुङ्ग (हे ८, २६)।
 ओलुङ्गि वि [धिरचयितृ] करनेवाला (कुमा)।
 ओलुङ्ग पु [जनलोप] ममलना, मर्दन करना (गडउ)।
 ओलुङ्गअ पु [दे] तापिका-हस्त, तवा का हाथा (दे १, १६३)।
 ओलुङ्ग वि [अवरुग] १ रोगी, बीमार (पात्र)। २ भग्न, नष्ट (परह १, १), 'मुक्ता भुक्ता निम्नमा ओलुङ्गा ओलुङ्ग-मरारा' (निर १, १)।
 ओलुङ्ग वि [दे] १ मेवक नौकर। २ निम्नज, निर्वल, बल-हीन (दे १, १६४)। ३ निष्ठा, निस्तेज (मुर २, १०२ दे १, १६४ म ४६६ ५०४)।
 ओलुङ्गावि वि [दे] १ बीमार। २ विरह, पीडित (वज्जा ८६)।
 ओलुङ्ग वि [दे] १ असपटमान, असगत। २ मिया, अमत्य (दे १, १६४)।

ओलेहड वि [दे] १ अन्यामक। २ तुणा-पर। ३ प्रवृद्ध दे १, १७२)।
 ओलोअ देवो अवलोअ। वक ओलोअन, ओलोअमाण (मा ५ एपा १, १६, १ १)।
 ओलोह मक [अप + लुट्] पीछे मोटना। वक ओलोहमाण (राज)।
 ओलोयण न [अवलोकन] १ देखना। २ दृष्टि नजर (ज पृ १०७)।
 ओलोयण न [अवलोकन] नवाध 'दिष्टा अन्त्या नेण तानायगगण' (मुष २, ६)।
 ओलोयणा स्त्री [अवलोकन] १ देवता। २ नेयणा, राग वा ()।
 ओल्लु पु [दे] १ पति स्वामी। २ दण्ड प्रतिनिधि पुन्य राजपुत्र-विशेष (पिग)।
 ओल्लु देवो उल्ल = आर्द्र (हे, १ ८०, वाप्र १७०)।
 ओल्लु यो उल्ल = आर्द्र। ओल्ले (पि १११)। वक ओल्लन (ने १३ ६६)।
 वक ओल्लिज्जत (गा ६०१),
 ओल्लुङ्ग पु [अवलोकन] एक नर न्यान (देव २८)।
 ओल्लण न [आवेयण] गोला करना, भिजाना (पि १११)।
 ओल्लणी स्त्री [दे] माजिता, श्लायची दान-चीनी आदि ममाला से मन्दृत दधि (दे १, १५४)।
 ओल्लरण न [दे] स्वाप, माना (दे १ १६३)।
 ओल्लरिअ वि [दे] मुग्न, मोया हुआ (दे १६३ मुगा ३१२)।
 ओल्लविद (गो) नीचे देवा (पि १११, मृच्छ १०५)।
 ओल्लिअ वि [आदिन] आर्द्र किया हुआ (गा ३३०, सण)।
 ओल्ली स्त्री [दे] पनक, काटी, गुजराती में 'ऊन' (चेडय ३७३)।
 ओल्लह सक [वि + ध्यापय्] बुझाना। ठडा करना। कवक ओल्लहविज्जत (म ३६२)। क ओल्लहवेयव (म ३६२)।
 ओल्लहविअ वि [दे] देखो उल्लहविय (मुर १०, १४६)।
 ओव न [दे] हाथी वगैरह को बचने के लिए किया हुआ गत्त (दे १, १८६)।

ओवअण न [अवपतन] नीचे गिरना, अव-पान (ने ६ ७७, १३, २२)।
 ओवडुण स्त्री [अवपतिनी] मिया मित्रेप, जितने प्रभाव ने मय नीचे आता है या हमने जो नीचे उतारता है (मुष २ २)।
 ओवडुय वि [अवपतिन] १ अमतीर्ण, नीचे आया हुआ (म ६, २८ वाप)। २ आ पडा हुआ, आ पडा हुआ (त ६ २८)। ३ न पतन (ग्रोप)।
 ओवडुय पुत्री [दे] तीन उन्मियमाना एक पुत्रजन्तु, 'ने १३ त तद्विद्य १ से-दिय पत्ते-पित्त पणणा, त तदा —ओवडुय गण-लीवा हविमोदा' (जीप १)।
 ओवडुय वि [ओपचयितृ] उचित, परिपुष्ट (राज)।
 ओवगागिय वि [ओपचारिक] उपचार करने वाला (म १३, ६)।
 ओवगागिय वि [ओपचारिक] उपचार के निमित्त या उपचारार्थ (देव २०६)।
 ओवगग म [अप + क्रम] १ प्राप्त करना। २ टटना, आच्छादन करना। ओवगग, ओवगग (ने ४, २५ ३ ११)।
 ओवगग म [अप + वल्, आ + क्रम] १ पारम्पर्य करना। २ परभाव करना। ओवगग (मवि)। मक ओवगगवि (मवि)।
 ओवगगदिय वि [ओपग्रहिक] जैन नाधुश्रो के एक प्रकार का उपकरण जो कारण-विशेष ने ओडे नमय के लिए लिया जाता है (पत्र ६०)।
 ओवगगिअ वि [दे उपवर्त्तित] १ अनिभूत १ आक्रान्त (से ६, ३०, पात्र मुर १३ ८०)।
 ओवगाडय वि [ओपघातिक] उपघात करने वाला पीडा उत्पन्न करनेवाला, 'मुग वा जह वा दिट्ठ न लविज्जोवघाडय' (दम ८)।
 ओवच मक [अप + व्रज्] पान जाना, मुहा 'ओवच वासहर' (मवि)।
 ओवट्ट मक [अप + वृत्] १ पीछे हटना। २ कम होना, हानि-प्राप्त होना। वक ओवट्टन (उप ७६२)।
 ओवट्ट पु [अपवर्त्त] १ हास हानि। २ भागाकार, (विने २०६२)।

[नवत] ६१ वां (पउम ६१, ३०)।
 १रसम वि [दश] ग्यारहवां (विगा १,
 १, उवा: सुर ११, २५०)। १रह वि व
 [दशान्] ग्यारह, दश और एक (पड्)।
 १सीइ ली [शीति] सख्या-विशेष, एकासी
 (सम ८८)। १सीइविह वि [शीतिविह]
 एकासी तरह का (पएण १, १७)। १सीय वि
 [शीत] एकासीवां, ८१ वां (पउम ८१,
 १६)। १ओत्तरसय वि [ओत्तरशततम] एक
 सौ एक वां, १०१ वां (पउम १०१, ७६)।
 १ओयर पु [ओदर] सहोदर भाई, मगा भाई
 (पउम ६, ६०, ४६, १८)। १ओयरा ली
 [ओदरा] समी बहिन (पउम ८ १०६)।
 एक वि [एकक] अकेला (हेका ३१)।
 एक वि [दे] स्नेह-गर, प्रेम-तत्पर (दे १,
 १४४)।
 एकई (अन) वि [एकाकिन्] एकाकी,
 अकेला (भवि)।
 एकान्त न [दे] चन्दन, सुगन्धि काष्ठ-विशेष
 (दे १, १४४)।
 एककत पु [एकान्त] १ सर्वथा। २ तत्त्व,
 प्रमेय। ३ जहर, अवश्य। ४ असाधारणता,
 विशेष (मे ४, २३)। ५ निर्जन, निराला (गा
 १०२)। देखो एगत।
 एककक वि [एकैक] हर एक, प्रत्येक
 (नाट)।
 एककककम [दे] देखो एककैककम (से ५,
 ५६)।
 एकगसित्थ न [एकसिक्थ] तपो-विशेष
 (पव २७१)।
 एककग देखो एग-ग = एक-क (कुप्र ७६)।
 एककवरिल्ल पुं [दे] देवर, पति का छोटा
 भाई (दे १, १४६)।
 एकणड पुं [दे] कथक, कथा कहनेवाला (दे
 १, १४५)।
 एकमुह वि [दे] १ धर्म-रहित, निर्धर्मी। २
 दरिद्र, निर्धन। ३ प्रिय, हट (दे १, १४८)।
 एकमेक वि [एकैक] प्रत्येक, हर एक
 (हे ३, १, पड्, कुमा)।
 एकल वि [दे] प्रवल, बलवान् (पड्)।
 एकलपुडिग न [दे] विरल-विन्दु-वृष्टि, अल्प
 विन्दुवाली बारिश (दे १, १४७)।

एकसरिअं अ [दे] १ शीघ्र, तुरन्त। २
 संप्रति, आजकल (हे २, २१३, पड्)।
 एकसरिआ अ [दे] शीघ्र, जलदो (प्राकृ
 ८१)।
 एकसाहिल वि [दे] एक स्थान में रहने-
 वाला (दे १, १४६)।
 एकसिबली ली [दे] शाल्मली-पुष्पो से नूतन
 फलवाली (दे १, १४६)।
 एकसेस देखो एग-सेस (अणु १४७)।
 एकह देखो एग (प्राकृ ३५)।
 एकार देखो एकारह (कम्म ६, १६)।
 एकार पु [अयस्कार] लोहार (हे १, १६६,
 कुमा)।
 एकी ली [एका] एक (ली) (निचू १)।
 एककूण देखो अउण (पि ४४५)।
 एकैकम वि [दे] परम्पर, अन्योन्य (दे १,
 १४४), 'सुहृद्वा एकैककम अपेच्छता' (पउम
 ६८, १५)।
 एकैल } देखो एग (प्राकृ, ३५)।
 एकौल }
 एग स [एक] १ एक, प्रथम-सख्या (अणु)।
 २ एकाकी, अकेला (ठा ४, १)। ३ अद्वितीय
 (कुमा)। ४ असहाय, नि सहाय (विपा १,
 २)। ५ अन्य, दूसरा, 'एवमेग वदति मोसा'
 (पएह १, २)। ६ समान, सदृश, तुल्य
 (उवा)। ७ इय देखो एग, 'अत्येगइयाण
 नेरइयाण एग पलिओवम ठिई पन्ता' (सम
 २, ठा ७, श्रौप)। ८ इय वि [क] अकेला,
 एकाकी (भग)। ९ ओ अ [तस्] एक
 तरफ (कप्प)। १० कखरिय वि [त्तरिक]
 एक अक्षरवाला (नाम) (अणु)। ११ खवी
 ली [स्कन्ध] एक स्कन्धवाला (वृक्ष वगैरह)
 (जीव ३)। १२ खुर वि [खुर] एक खुरवाला
 (गौ वगैरह पशु) (पएण १)। १३ ग वि
 [क] एकाकी, अकेला (आ १४)। १४ ग
 वि [प्र] तल्लीन, तत्पर (सुर १, ३०)।
 १५ चक्खु वि [चक्षुष्क] एक आँखवाला,
 एकाक्ष, काना (पएह २, ५)। १६ चत्ताल वि
 [चत्वारिंश] एकतालीसवां (पउम ४१,
 ७६)। १७ चर वि [चर] एकाकी विहरने-
 वाला (आचा)। १८ चरिया ली [चर्या]
 एकाकी विहरना (आचा)। १९ चारि वि

[चारिन्] अकेल-विहारी (सूअ १, १३)।
 चूड पुं [चूड] विद्यावर वरा का एक
 राजा (पउम ५, ४५)। २० च्छत्त वि
 [च्छत्र] १ पूर्ण प्रभुत्ववाला, अकण्टक,
 'एगच्छत्त ससागर भुजिऊण वमुह' (पएह २,
 ४)। २ अद्वितीय (काप्र १८६)। २१ जडि
 वि [जटिन्] महाग्रह-विशेष (ठा २, ३)।
 २२ जाय वि [जात] अकेला, निस्सहाय,
 'खगगिसाण व एगजाए' (पएह २, ५)।
 २३ ठू वि [स्थ] इकठ्ठा, एकत्रित (भग १४,
 ६, उप पृ ३४१)। २४ ठू वि [र्थ] एक
 अर्थवाला, पर्याय-शब्द (ओघ १ भा)। २५
 ठू अ [त्र] एक स्थान में, 'मिलिया मव्वेवि
 एगठ्ठ' (पउम ४७, ४४)। २६ ठिय वि
 [थिक्] एक ही अर्थवाला, समानार्थक,
 पर्याय-शब्द (ठा १)। २७ ठिय वि [स्थिक्]
 जिसके फल में एक ही बीज होता है ऐसा
 आम वगैरह का पेड़ (पएण १)। २८ णासा ली
 [नासा] एक दिक्कुमारो, देवी-विशेष
 (आव १)। २९ त्त न [त्र] एक ही स्थान
 में, 'एगत्ते ठिप्रो' (स ४७०)। ३० स्थ देखो
 ठू (सम्म १०६, निचू १)। ३१ नासा देखो
 णासा (ठा ८)। ३२ पए अ [पदे] एक
 ही साथ, युगपत् (पि १७१)। ३३ पक्ख वि
 [पक्ष] १ असहाय (राज)। २ ऐकान्तिक,
 अविरुद्ध (सूअ १, १२)। ३४ पन्नास लीन
 [पञ्चाशत्] एकावन, पचास और एक।
 ३५ पन्नासदम वि [पञ्चाशत्तम] एकावनवां,
 ५१ वां (पउम ५१, २८)। ३६ पाइअ वि
 [पादिक] एक पाँच ऊँचा रखनेवाला
 (आतापना में) (कस)। ३७ पासग वि
 [पादिक] एक ही पारवों की भूमि से
 सम्बन्ध रखनेवाला (आतापना में) (पएह
 २, १)। ३८ पासिय वि [पादिक] देखो
 पूर्वोक्त अर्थ (कस)। ३९ भत्त न [भक्त]
 व्रत-विशेष, एकासन (पचा १२)। ४० भूय वि
 [भूत] १ एकीभूत, मिला हुआ (ठा १)।
 २ समान (ठा १०)। ४१ मण वि [मनस्]
 एकाग्रचित्त, तल्लीन (सुर २, २२६)।
 ४२ मेग वि [एक] प्रत्येक, हर एक (सम
 ६७)। ४३ य वि [क] एकाकी, अकेला
 (दस ५)। ४४ यं वि [ग] अकेला जानेवाला
 (उत्त ३)। ४५ यर वि [तर] दो में से कोई

ओवाह सक [अव + गाह्] श्रवणाहना ।
 ओवाहइ (प्राप्र) ।
 ओवाहिअ वि [अपवाहित] १ नीचे गिराया
 हुवा (से ६, १६, १३, ७२) । २ घुमाकर
 नीचे डाला हुआ (से ७, ५५) ।
 ओविअ वि [दे] १ आरोपित, अव्यासित ।
 २ मुक्त, परित्यक्त । ३ हत, छोना हुआ ।
 ४ न खुशामद । ५ रवित, रोदन (दे १,
 १६७) । ६ वि परिकर्मित, संस्कारित
 (कप्प) । ७ खचित, व्याप्त (आवम) । ८
 उज्ज्वलित, प्रकाशित (गाया १, १६) । ९
 विभूषित, शृंगारित (प्राप्र) । देखो उविय ।
 ओविद्ध वि [अपविद्ध] १ प्रेरित, आहत
 (से ७, १२) । २ नीचे गिराया हुआ (मे १३,
 २६) ।
 ओवील सक [अव + पीडय्] पीडा पहुँ-
 चाना, मार-पीट करना । वहु ओवीलेमाण
 (गाया १, १८—पत्र २३६) ।
 ओवीलय देखो उव्वीलय (परह १, ३) ।
 ओवुन्भमाण देखो ओवह ।
 ओवेहा स्त्री [उपेक्षा] १ उपदर्शन, देखना ।
 २ श्रवण, 'सजयगिहिचोयणचोयणे य
 वावारओवेहा' (श्लो १७१ भा) ।
 ओव्वण देखो जोव्वण (से ७, ६२) ।
 ओव्वत्त श्रक [अप + वृत्] १ पीछे
 फिरना, लौटना । २ श्रवणत होना । सक
 ओवत्तिऊण (श्लो भा ३० टी) ।
 ओव्वत्त वि [अपवृत्त] पीछे फिरा हुआ ।
 २ नमा हुआ, श्रवणत (से ८, ८४) ।
 ओव्वेव्व देखो उव्वेव्व (सक्षि ३५) ।
 ओस देखो ऊस = ऊप (दस ५, १, ३३) ।
 ओस पु [दे] देखो ओसा (राज) । ओचारण
 पु [ओचारण] हिम के श्रवलम्बन से जाने-
 वाला साधु (गच्छ) ।
 ओसक सक [अव + ण्वण्क्] कम करना,
 घटाना । सक ओसकिया (दम ५, १, ६३) ।
 ओसक श्रक [अव + ण्वण्क्] १ पीछे
 हटना, श्रपसरण करना । २ भागना, पलायन
 करना । ३ उदीरण करना, उत्तेजित करना ।
 ओसकइ (पि ३०२, ३१५) । वहु ओसकंत,
 ओसकमाण (से ५, ७३, स ६४) । सक्र.

ओसकइत्ता, ओसकिय, ओसकियऊण
 (ठा ८, दस ४, सुर २, १५) ।
 ओसक वि [दे अवण्वण्कित] श्रपसृत, पीछे
 हटा हुआ (दे. १, १४६, पात्र) ।
 ओसकण न [अवण्वण्कण] १ श्रपसरण (स
 ६३) । २ नियत काल से पहले करना (धमं
 ३) । ३ उत्तेजन (वृह २) ।
 ओसकिय वि [अवण्वण्कित] नियत काल
 से पहले किया हुआ (पिड २६०) ।
 ओसट्ट श्रक [वि + सृप्] फैलना, पसरना ।
 ओसट्टइ (गा ८५६) ।
 ओसट्ट वि [दे] विकसित, प्रकुलित (पड्)
 ओसडिअ वि [दे] आकीर्ण, व्याप्त (पड्) ।
 ओसड न [औपय] दवा, इलाज, भैषज
 (हे १, २२७) ।
 ओसडिअ वि [औपधिक] वैद्य, चिकित्सक
 (कुमा) ।
 ओसण न [दे] उद्देग, खेद (दे १ १५५) ।
 ओसण वि [अवसन्न] १ खिन्न (गा ३८२,
 से १३, ३०) । २ शिथिल, ढीला (वव ३) ।
 देखो ओसन्न ।
 ओसण वि [दे] श्रुति, खरिडत (दे १,
 १५६, पड्) ।
 ओसण श्र [दे] प्राय बहुत कर (कप्प) ।
 ओसत्त वि [अवसत्त] सबद्ध, संयुक्त (गाया
 १, ३, स ४४६) ।
 ओसधि देखो ओसहि (ठा २, ३) ।
 ओसद्ध वि [दे] पातित, गिराया हुआ (पात्र) ।
 ओसन्न देखो ओसण = श्रवमन्न (सुर ४,
 ३४, गाया १, ५, स ६, पुष्क २१) । ३
 न एकान्त, 'ओसन्ने देह गेएहड वा' (उव) ।
 ओसन्न वि [अवसन्न] निमग्न (दसन् १,
 ८) ।
 ओसन्न देखो ओसण (कम्म १, १३, विसे
 २२७५) ।
 ओसप्पिणी स्त्री [अवसर्पिणी] दश कोटा-
 कोटि सागरोपमपरिमित काल-विशेष, जिसमे
 सर्व पदार्थों के गुणों की क्रमशः हानि होती
 जाती है (सम ७२, ठा १) ।
 ओसम सक [उप + शमय्] उपशान्त
 करना । भवि. ओसमेहिहि (पिड ३२६) ।

ओसमिअ वि [उपशमित] शान्ति-प्राप्त
 (सम ३७) ।
 ओसर श्रक [अव + त्] १ नीचे आना ।
 २ श्रवतरना, जन्म लेना । ओसरइ (पड्) ।
 ओसर श्रक [अप + सृ] श्रपसरण करना,
 पीछे हटना । २ सरकना, खिसकना, फिम-
 लना । ओसरइ (महा, काल) । वहु ओसरंत
 (गा १८, ३६३, से ६, २६, ६, ८२, १२,
 ६, से ६३) ।
 ओसर सक [अव + सृ] आना, तीर्थकर
 आदि महापुरुष का पधारना (उप ७२८ टी) ।
 ओसर पु [अवसर] १ श्रवसर, समय (सूत्र
 १, २) । २ अन्तर (राज) ।
 ओसरण न [अवसरण] १ जिन-देव का
 उपदेश स्थान (उप १३३, रयण १) । २
 साधुओं का एकत्रित होना (सूत्र १, १२) ।
 ओसरण न [अपसरण] १ हटना, दूर होना ।
 २ वि दूर करनेवाला; 'वहुपावकम्मओसरण'
 (कुमा १) ।
 ओसरिअ वि [दे] १ आकीर्ण, व्याप्त । २
 आँख के इशारे से संकेतित या इंगित (पड्) ।
 ३ श्रमोमुख, श्रवणत । ४ न. आँख का इशारा
 (दे १, १७१) ।
 ओसरिअ वि [अवसृत] आगत, पधारा हुआ
 (उप ७२८ टी) ।
 ओसरिअ वि [अपसृत] १ पीछे हटा हुआ
 (पउम १६, २३, पात्र, गा ३५१) । २ न.
 श्रपसरण (मे २, ८) ।
 ओसरिअ वि [उपसृत] संमुखागत, मामने
 आया हुआ, (पात्र) ।
 ओसरिआ स्त्री [दे] श्रलिव्दक, बाहर के दर-
 वाजे का प्रकोष्ठ (दे १, १६१) ।
 ओसव पु [उत्सव] उत्सव, आनन्द-क्षण
 (प्राप्र) ।
 ओसविय देखो ओसमिअ (पिड ३२६) ।
 ओसविय वि [उच्छ्रयित] ऊँचा किया हुआ
 (पउम ८, २६६) ।
 ओसविअ वि [दे] १ शोभा-रहित । २ न
 श्रवसाद, खेद (दे १, १६८) ।
 ओसह न [औपय] दवाई, भैषज (श्रौप,
 स्वप्न ५६) ।

ऐ

ते अ [अयि] इन अर्थों का सूचक अव्यय—
१ मभावना । २ ग्रामन्यरण, सबोधन । ३

प्रश्न । ४ अनुराग, प्रीति । ५ अनुनय, 'ऐ
वीहेमि, ऐ उम्मत्ति' (हे १, १६६) ।

॥ इअ सिरिपाइअसहमहणवे ऐअराइसहसकलणो
अट्टमो तरंगो समत्तो ॥

ओ

ओ पुं [ओ] स्वर वणं-विशेष (हे १, १,
प्राप्ता) ।

ओ देखो अव = अप (हे १, १७२, प्राप्ता,
कुमा, पङ्) ।

ओ देखो अव (हे १, १७२, प्राप्ता, कुमा,
पङ्) ।

ओ देखो उव (हे १, १७२, कुमा) ।

ओ देखो उअ = उत (हे १, १७२, कुमा) ।

ओ अ [ओ] इन अर्थों का सूचक अव्यय—
१ वितर्क । २ प्रकोप, विस्मय (प्राक् ७८) ।

ओ अ [ओ] इन अर्थों का सूचक अव्यय—
१ सूचना, 'ओ श्रीविणयतत्तिल्ले' । २ परचा-
त्ताप, अनुताप, 'ओ न मए द्याया इत्तिआए'
(हे २, २०३, पङ्, कुमा, प्राप्ता) । ३
सबोधन, ग्रामन्यरण (नाट—चैत ३४) ।
४ पादपूर्ति में प्रयुक्त किया जाता अव्यय
(पचा १, विसे २०२४) ।

ओअ न [दे] वार्ता, कथा कहानी (दे १,
१४६) ।

ओअअ वि [अपगत] अपसृत, 'ओअआअव-'
(पि १६५) ।

ओअअ पु [दे] गजित, गजना (दे १, १५४) ।

ओअअ मक [आ + छिद्] १ बलात्कार से
छीन लेना । २ नाश करना । ओअअदे (हे ४,
१२५, पङ्) ।

ओअअणा स्त्री [आच्छेदना] १ नाश । २
जवरदस्ती छीनना (कुमा) ।

ओअअअ सक [हृग्] देखना । ओअअअअ
(हे ४, १८१, पङ्) ।

ओअअग सक [वि + आप्] व्याप्त करना ।
ओअअगअ (हे ४, १४१) ।

ओअअगिअ वि [व्याप्] विस्तृत, फैला
हुआ (कुमा) ।

ओअअगिअ वि [दे] १ अभिभूत, परिभूत ।
२ न केश वगैरह को एकत्रित करना (दे १,
१७२) ।

ओअअगिअ } वि [दे] प्राप्त, सूँघा हुआ
ओअअगिअ } (दे १, १६२, पङ्) ।

ओअअण वि [अवनत] नमा हुआ, नीचे की
तरफ मुड़ा हुआ (से ११, ११८) ।

ओअअत्त वि [अपवृत्त] श्रौंघा किया हुआ,
उलटा किया हुआ, ओअअत्ते कुंभपुहे जललव-
कणिआवि कि ठाड ?' (गा ६५४) ।

ओअअत्तअ वि [अपवर्त्तितव्य] १ अपवर्त्तन-
योग्य । २ त्यागने योग्य, छोड़ने लायक,
'कुमुमम्मि व पव्वाआए भमरोअत्तअम्मि'
(से ३, ४८) ।

ओअअम्मअ वि [दे] अभिभूत, पराभूत
(पङ्) ।

ओअअर सक [अव + तृ] १ जन्म-ग्रहण
करना । २ नीचे उतरना । ओअअरइ (हे ४,
८५) । वक्क. ओअअरंत (ओअ १६१, मुर
१४, २१) । हेक्क. ओअअरिउ (प्राक्) । कृ
ओअअरियव्व (मुर १०, १११) ।

ओअअरण न [उपकरण] साधन, सामग्री (गा
६८१) ।

ओअअरण न [अवतरण] उतरना, नीचे आना
(गउड) ।

ओअअरय पुं [अपवरक] कमरा, कोठरी (सुपा
४१५) ।

ओअअरिअ वि [अवतीर्ण] उतरा हुआ (प्राप्ता) ।
ओअअरिअ वि [औदरिक] पेट-भरा, पेट, उबर
भरने मात्र की चिन्ता करनेवाला (ओअ
११८ भा) ।

ओअअरिया स्त्री [अपवरिका] कोठरी, छोटा
कमरा (सुपा ४१५) ।

ओअअइ देखो ओअअट्ट = अप + वृत् । ओअअल्लइ
(प्राक् ७०) ।

ओअअल्ल अक [अव + चल] चलना ।
ओअअल्लति (पि १६७, ४८८) । वक्क. ओअअ-
ल्लत (पि १६७, ४८८) ।

ओअअल्ल पु [दे] १ अपचार, खराब आचरण,
अहित आचरण (पङ्, स ५२१) । २ कम्प,
कापना (पङ्, दे १, १६५) । ३ गौश्री का
वाडा । ४ वि पर्यस्त, प्रक्षिप्त । ५ लम्बमान,
लटकता हुआ (दे १, १६५) । ६ जिसकी
आँखें निमीलित होती हों वह, 'मुच्छिज्जतो-
अल्ला अककता एणअअमहिहरेहि पवणा' (से
१३, ४३) ।

ओअअल्लअ वि [दे] विप्रलब्ध, प्रतारित (पङ्) ।

ओअअव सक [साधय] साधना, वश में
करना, जीतना, 'गच्छाहि ए भो देवाण-

ओहट्ट १ वि [अपघट्ट] निवारक, हटाने-ओहट्ट १ वाला, निषेधक (विपा १, २, गाया १, १६, १८) ।

ओहट्टिअ वि [टे] दूसरे को दवाकर हाथ से गृहीत (दे १, १५६) ।

ओहट्ट पुं [टे] हास हंसी (दे १, १५३) ।

ओहट्ट वि [अवघट्ट] घिसा हुआ (पउम ३७ ३) ।

ओहट्ट वि [अपहट्ट] नीचे लाया हुआ (दस ५, १, ८६) ।

ओहट्टणी स्त्री [टे] अगंला (दे १, १६०) ।

ओहट्ट वि [टे] श्रवन्त (दे १, १५६) ।

ओहट्टियअ वि [अपहस्ति] परित्यक्त, दूर किया हुआ (मै ३५) ।

ओहट्ट वि [उपहट्ट] उपघात-प्राप्त (गाया १ १) ।

ओहट्ट वि [अवहट्ट] विनाशित (श्रौप) ।

ओहट्ट मक [अप + हट्ट] अपहरण करना । वर्म ओहट्टीआमि (पि ६८) ।

ओहट्ट अक [अव + हट्ट] टेढ़ा होना, वक्र होना । २ सक उलटा करना । ३ फिराना । संक ओहट्टिय (आचा २, १ ७) ।

ओहट्ट न [उपगृह] छोटा गृह, कोठरी (परह १, १) ।

ओहट्ट न [अपहरण] उठा ले जाना, अपहार (उप ६७६) ।

ओहट्ट न [टे] १ विनाशन, हिना । २ असंभव अर्थ की सम्भावना (दे १, १७४) ।

३ अन्न, हथियार (स ५३१, ६३७) । ४ वि आघात (पड्) ।

ओहट्टिअ वि [टे. अपहट्ट] १ फेंका हुआ (मै १३, ३) । २ नीचे गिराया हुआ (से ३, ३७) । ३ उतारा हुआ, उत्तारित (श्रौष १०६) । ४ अपनीत, 'ओहट्टिअमन्व भार-वहो' (आ ४०) ।

ओहट्टिअ वि [टे] १ आघात, सूँधा हुआ । २ पु चन्दन विसने की शिला, चन्द्रौटा (दे १ १६६) ।

ओहट्ट देखो उऊखल (हे १, १७१, कुमा) ।

ओहट्ट सक [अव + खल] घिसना । भवि-ओहट्टिही (सुपा १३६) ।

ओहलिय वि [अग्गलिय] जिमा हुआ, 'अंमुजलोहलियगड्यलो' (मुर २, १८६, सण) ।

ओहली स्त्री [टे] श्रोत्र, मूत्र (सुपा ३६४) ।

ओहस सक [उप + हस्] उपहाम करना ।

ओहसइ (नाट) । कवक ओहमिज्जत (से १५, १०) । क ओहसणिज्ज (म ८) ।

ओहसिअ न [टे] १ वस्त्र, कपडा । २ वि घृत, कम्पित (दे १, १७३) ।

ओहसिअ वि [उपहसित] जिमका उपहास किया गया हो वह (ग, ६०, दे १, १७३, म ४४८) ।

ओहाडअ वि [टे] अघो-मुख (१, १५८) ।

ओहाडअ वि [अवधाविन] चरित्र में भ्रष्ट (दस १, १) ।

ओहाडण न [अवघाटन] प्रायश्चित्त-विशेष (वव १) ।

ओहाडण न [अवघाटन] टकना, पिघान (वव १) ।

ओहाडणी स्त्री [टे अवघाटनी] १ पिघानी (दे १, १६१) । २ एक प्रकार की ओढनी (जीव ३) ।

ओहाडिय वि [अवघाटित] १ पिहित, बन्द किया हुआ, 'वइरामयकवाडोहाडियाओ' (जं १—पत्र ७१) । २ स्थगित (आव ५) ।

ओहाण न [उपधान] म्यगल, टकना (वव ४) ।

ओहाण न [अवधान] उपयोग, ख्याल (आचा) ।

ओहाण न [अवधावन] अवक्रमण, पीछे हटना (निचू १६) ।

ओहाम सक [तुल्य] तौलना, तुलना करना । ओहामइ (हे ४, २५) । क ओहामन (कुमा) ।

ओहामिय वि [तुलित] तौला हुआ (पात्र, सुपा २६६) ।

ओहामिय वि [टे] १ अभिप्रेत (पड्) । २ तिरस्कृत (स ३१३, श्रौष ६०) । ३ बन्द किया हुआ, स्थगित, 'जह वीणावसरवा खणेण आहामिआ सव्वा' (पउम ४६, ६) ।

ओहार सक [अव + धारय] निश्चय करना । संक ओहारिअ (आम १६४) ।

ओहार पु [टे] १ कच्छप । २ नदी बगेरह के बीच की शुष्क जगह, द्वीप । ३ अग्न, विभाग (दे १, १६७) । ४ जलचर-जन्तु-विशेष (परह १, ३) ।

ओहार पुं [अवधार] निश्चय । 'व वि [वन्] निश्चयवाला (द ४६) ।

ओहारइत्तु वि [अवधारयित्] निश्चय करने-वाला (राज) ।

ओहारइत्तु वि [अवधारयित्] दूसरे पर मिय्याभियोग लगानेवाला (राज) ।

ओहारण न [अवधारण] नियम, निश्चय (द २) ।

ओहारणी स्त्री [अवधारणी] निश्चयात्मक भाषा 'ओहारणि अप्पियकारिणि च भासं न भासिज्ज मया स पुजो' (दस ८, ३) ।

ओहारिणी स्त्री [अवधारिणी] ऊपर देखो (भाम १४) ।

ओहाव सक [आ + क्रम्] आक्रमण करना । ओहावइ (हे ४, १६०, पड्) ।

ओहाव अक [अव + धाव] पीछे हटना । क ओहावत, ओहावेत (श्रौष १२६, वव ८) ।

ओहावग न [अववागन] १ अपमर्पण, पलायन (वव १) । २ दीक्षा से भागना, दीक्षा को छोड़ देना (वव ३) ।

ओहावण न [अवभावण] अग्रमान, अपकीर्ति (पिड ४८६) ।

ओहावणा स्त्री [अपहापना] लायव, लघुता (जय २६) ।

ओहावणा स्त्री [अपभावना] तिरस्कार, अन्याय (उप १२६ टी, स ४१०) ।

ओहावणा स्त्री [आक्रान्ति] आक्रमण (काल) ।

ओहाविअ वि [अपभावित] १ तिरस्कृत (सुपा २२४) । २ ग्लान, ग्लानि-प्राप्त (वव ८) ।

ओहाविअ वि [अवधावित] पलायित, अप-सृत (दस १, २) ।

ओहास पु [अवहास, उपहास] हँसी, हास्य (प्राप्र; मै ४३) ।

ओहासण न [अवभापण] याचना, माग, विशिष्ट भिक्षा (आव ४) ।

ओगाह मक [अव + गाह्] अवगाहन करना। ओगाहइ (पङ्)। वक्तु ओगाहन (आव २)। सक ओगाहइत्ता, ओगाहिन्ता (दम ५, भग ५, ४)।

ओगाहण न [अवगाहन] अवगाहन (भग)। ओगाहणा स्त्री [अवगाहना] १ आधार-भूत आकाश-क्षेत्र (ठा १)। २ शरीर (भग ६, ८)। ३ शरीर परिमाण (ठा ४, १)। ४ अवस्थान, अवस्थिति (विमे)। ०णाम न [०णामन्] कर्म-विशेष (भग ६ ८)। ०णाम पु [०णाम] अवगाहनात्मक परिणाम (भग ६, ८)।

ओगाहिम वि [अवगाहिम] पक्वान्न (पचा ५)।

ओगिज्झ } सक [अव + ग्रह्] १ आश्रय
ओगिण्ह } लेना। २ अनुज्ञा-पूर्वक ग्रहण करता। ३ जानना। ४ उद्देश करना। ५ लक्ष्य कर कहना। ओगिण्हइ (भग, कप्प)। सक ओगिज्झिय, ओगिण्हइत्ता, ओगिण्हित्ता, ओगिण्हित्ताण (आचा, णाया १, १, कम, उवा)। क ओघेत्तव्व (कप्प पि ५७०)।

ओगिण्हण न [अवग्रहण] सामान्य ज्ञान-विशेष, अवग्रह (णदि)।

ओगिण्हणया स्त्री [अवग्रहणता] १ ऊपर देवो (णदि)। २ मनो विषयीकरण, मन से जानना (ठा ८)।

ओगिण्ह देखो ओगिण्ह। मक ओगिण्हित्ता (निर १, १)।

ओगुडिय वि [अवगुण्डित] लिप्त (वृह १)। ओगुट्टि स्त्री [अपकृष्टि] अपकर्ष, हलकाई, तुच्छता (पउम ५६, १५)।

ओगुहिय वि [अवगूहित] आलिंगित (णाया १, ६)।

ओगर पु [ओगर] धान्य विशेष, ओहि-विशेष (पिग)।

ओगाह देखो उग्गाह (मम्म ७५, उव; कम, म ३५, ५६८)।

ओगाह सक [प्रति + इप्] ग्रहण करना। ओगाहइ (प्राकृ ७३)।

ओगाहण देखो ओगिण्हण। ०पट्टा पुन [०पट्टक] जैन माध्वयो के पश्चिने का एक गुहाच्छादक वस्त्र, जाधिया, लंगोट (कस)।

ओगाहिय वि [अवगृहीत] १ अवग्रह-ज्ञान से जाना हुआ, अवग्रह का विषय। २ अनुज्ञा से गृहीत। ३ वद्ध, बँधा हुआ (उवा)। ४ देने के लिए उठाया हुआ (श्रीप)।

ओगाहिय वि [अवग्रहिक] अनुज्ञा से गृहीत, अवग्रहवाला (श्रीप)।

ओगारण न [उद्गारण] उद्गार (चारु ७)।

ओगाल पु [दे] छोटा प्रवाह (दे १, १५१)।

ओगाल मक [रोमन्थाय्] पगुराना, चवाई हुई वस्तु का पुन चवाना। ओगालइ (दे ४, ४३)।

ओगालि वि [रोमन्थायित्] पगुरानेवाला, चवाई हुई वस्तु का पुन चवानेवाला (कुमा)।

ओग्गाह देखो उग्गाह = उद् + ग्राह्य। ओग्गाहइ (प्राकृ ७२)।

ओगिअ वि [दे] अभिभूत, पराभूत (दे १, १५८)।

ओग्गीअ पु [दे] हिम, बर्फ (दे १, १४६)। ओग्घ देखो उग्घड। ओग्घइ (प्राकृ ७१)।

ओग्घसिय वि [अवघर्षित] प्रमाजित, साफ सुथरा किया हुआ (राय)।

ओघ पुं [ओघ] १ समूह मगत (णाया १, ५)। २ ससार, 'एते ओघ तरिम्मंति नमुह ववहारिणो' (सूत्र १, ३)। ३ अविच्छेद अविच्छिन्नता (परह १, ४)। ४ सामान्य, साधारण। सण्णा स्त्री [०सत्ता] सामान्य ज्ञान (परण ७)। ०देस पुं [०देश] सामान्य विवक्षा (भग २५, ३)। देखो ओह = ओघ।

ओघट्टि (शौ) वि [अवघट्टित] ग्राहत (प्रयो २७)।

ओघसर पुं [दे] १ घर का जल-प्रवाह। २ अनर्थ, खराबी, नुकसान (दे १, १७०, सुर २, ६६)।

ओघसिय देखो ओग्घसिय।

ओघाययण न [ओघायतन] १ परम्परा से पूजा जाना स्थान। २ तलाव में पानी जाने का साधारण रास्ता (आचा २, १०, २)। ओघेत्तव्व देखो ओगिण्ह।

ओचार पुं [दे अपचार] धान्य रखने की

बड़ी कोठी—मिट्टी का पात्र-विशेष (अगु १५१)।

ओचिदी (शो) स्त्री [ओचिती] उचितता, ओचित्य (रमा)।

ओचुव सक [अव + चुम्ब्] चुम्बन करना। मक ओचुविज्जण (भवि)।

ओचुह न [दे] कुन्हा का एक भाग (दे १, १५३)।

ओचूल } देवो ओऊल (विपा १, २, नुर
ओचूलण } ३, ७०)। २ मुख में हटा हुआ शिथिल—ढीला (वस्त्र), 'ओचूलगनियन्था' (जं ३—पत्र २/५)।

ओच्चय देखो जच्चय (महा)।

ओच्चिया स्त्री [अवचायिका] तोड़ कर (फूलों को) बकड़ा करनेवाली (गा ७६७)।

ओच्चेर न [दे] ऊपर-भूमि। २ जघन के रोम (दे १, १३६)।

ओच्छज } वि [अवस्तृत] १ आच्छादिन।
ओच्छडय } २ निरुद्ध, रोका हुआ (परह १, ४, गडड, स १६४)।

ओच्छट्ठिअ वि [दे] १ अपहत। २ व्यथित, पीड़ित (पङ्)।

ओच्छण वि [अवच्छन्न] आच्छादिन, ढका हुआ, 'णिच्चोउगो अनोगो ओच्छणो सानत्तलेण' (मम १५२)। देखो ओच्छन्न। ओच्छत्त न [दे] दन्त-धावन, दतवन (दे १, १५२)।

ओच्छन्न देखो ओच्छण (म ११२ ओप)। २ अवष्टब्ध, आक्रान्त (आचा)।

ओच्छर (गौ) सक [अव + स्तृ] १ विद्याना, फैलाना। २ आच्छादित करना, ढाँकना। ओच्छरीअदि (नाट—उत्तम १०५)।

ओच्छयिय } वि [अवच्छादित] आच्छा-
ओच्छाडय } दित टगा हुआ, 'गुच्छलयान्-
क्खग्गुम्मवत्तिगुच्छओच्छाडय सुरम्म वेभार-
गिरिकडगपायमूल' (णाया १, १—पत्र २५, २८ टी, महा-म १५०)।

ओच्छाडि वि नीचे देखो।

ओच्छाय नक [अव + छाड्य्] आच्छादन करना। सक ओच्छाडि (भवि)।

ओच्छायण वि [अवच्छादन] टाकना, पिघान (स ५५७)।

ओच्छाहिय देखो उच्छाहिय,

कइअक } पुं [दे] निकर, समूह (दे २,
कइअकसइ } १३) ।

अइअच न [कैतव] कपट, दम्भ (कुमा, प्राप्र) ।
कइआ अ [कदा] कव, किस समय ? (गा
१३८, कुमा) ।

कइउल्ल वि [दे] थोड़ा, अल्प (दे १, २१) ।

कइद पुं [कवीन्द्र] श्रेष्ठ कवि (गउड) ।

कइकच्छु छी [कपिकच्छु] वृक्ष-विशेष,
केवांच, कौल, कवाछ (गा ५३२) ।

कइगई छी [कैकयी] राजा दशरथ की एक
रानी (पउम ६५, २१) ।

कइत्थ पुं [कपित्थ] १ वृक्ष-विशेष, कैय का
पेट । २ फल-विशेष, कैय, कैथा (गा ६४१) ।

कइम वि [कतम] बहुत मे से कौन सा ? (दे
१, ४८, गा ११६) ।

कइयव्य देखो कइअच (तदु ५३) ।

कइयहा (अप) अ [कदा] कव, किस समय ?
(सण) ।

कइयाइ अ [कदाचिन्] किसी समय मे
(कुप्र ४१३) ।

कइर देखो कइर = कतर (पिड ४६६) ।

कइर पु [कदर] वृक्ष विशेष, 'ज कइरक्ख-
हिट्टा इह दगकोडी दविणमत्थि' (आ १६) ।

कइरव न [कैरव] कमल कुमुद (हे १, १५२) ।

कइरव पुन [कैरव] कुमुद, 'कइरवो' (सखि ५) ।

कइरविणी छी [कैरविणी] कुमुदिनी, कमलिनी
(कुमा) ।

कइलास पु [कैलास, °श] १ स्वनाम-ख्यात
पर्वत विशेष (पाप्र, पउम ५, ५३, कुमा) ।

२ मेरु पर्वत (निचू १३) । ३ देव-विशेष,
एक नाग-राज (जीव ३) । °मय पुं [°शय]
महादेव, शिव (कुमा) । देखो कैलास ।

कइलासा छी [कैलासा, °शा] देव-विशेष
की एक राजवानी (जीव ३) ।

कइल्लवइल्ल पु [दे] स्वच्छन्द-चारी वैल
(दे २, २५) ।

कइविया छी [दे] वरतन विशेष, पीकदान,
पीकपानी (गाया १, १ टी—पत्र ४३) ।

कइस (अप) वि [कीइश] कैसा (कुमा) ।

कईया (अप) देखो कइआ (सुपा ११६) ।

कईवय देखो कइवय (पउम २८, १६) ।

कईस पु [कवीश] श्रेष्ठ कवि, उत्तम कवि
(पिग) ।

कईसर पुं [कवीश्वर] उत्तम कवि (रंभा) ।

कउ पुं [कतु] यज्ञ (कपू) ।

कउ (अप) अ [कुत] कहाँ से (हे ४, ४१६) ।

कउअ वि [दे] १ प्रधान, मुख्य । २ पुंन
चिन्ह, निशान (दे २, ५६) ।

कउच्छेअय पुं [कौच्छेयक] पेट पर वैधो हुई
तलवार (हे १, १६२, पड) ।

कउड न [दे ककुद] देखो कउह = ककुद
(पड) ।

कउरअ } पुं [कौरव] १ कुरु देश का
कउरव } राजा । २ पुंछी. कुरु वंश मे
उत्पन्न । ३ वि कुरु (देश या वंश) से सवन्व
रखनेवाला । ४ कुरु देश मे उत्पन्न (प्राप्र,
नाट, हे १, १६२) ।

कउल न [दे] १ करोप, गोईठा का चूरा (दे
२, ७) ।

कउल न [कौल] तान्त्रिक मत का प्रवर्तक
ग्रन्थ, कौलोपनिषद् वगैरह । २ वि शक्ति का
उपासक । ३ तान्त्रिक मत को जाननेवाला ।
४ तान्त्रिक मत का अनुयायी । ५ देवता-
विशेष,

'विममिज्जंतमहापमुद-

सणमभमपरोप्पराख्ठा ।

गयणे च्चिय गघर्छाड

कुणति तुह कउलणारीओ'
(गउड) ।

कउलव देखो कउरव (चड) ।

कउसल पुन [कौशल] चतुर्गड, 'कउसलो'
(सखि ६, प्राक १०) ।

कउसल न [कौशल] कुशलता, दक्षता,
होशियारी (हे १, १६२, प्राप्र) ।

कउह न [दे] नित्य, सदा, हमेशा (दे २, ५) ।

कउह पुंन [ककुद] १ वैल के कंधे का
कुन्वड । २ सफेद छत्र वगैरह राज-चिह्न ।
३ पर्वत का अग्रभाग, टोच (हे १, २२५) ।
४ वि प्रधान, मुख्य,

'कलरिभियमहुरततौतलतालवसकलहामिरामेसु ।
सदेसु रज्जमाणा, रमती सोइदियवसट्टा ।'
(गाया १, १७) । देखो ककुह ।

कउहा छी [ककुम्] १ दिशा (कुमा) । २
शोभा, कान्ति । ३ चम्पा के पुष्पो की माला ।

४ इस नाम की एक रागिणी । ५ शास्त्र ।
६ विकीर्ण केश (हे १, २१) ।

कउहि वि [ककुदिन्] वृषभ, बैल (अणु
१४२) ।

कए } अ [कृते] वास्ते, निमित्त, लिए,
कएण } 'ततो सो तस्म कए, खणेइ खाणी-
कएण } खणेठाएमु' (कुम्मा १५, कुमा),

'अवरएहमजिरोण कएण कामो वहइ चाव'
(गा ४७३),

'लजा चत्ता मीलं च

खंडिअं अजमघोसणा दिएणा ।

जस्स कएण पिअसहि ।

सो चेअ जणो जणो जाओ

(गा ५२५) ।

कएल्ल वि [कृत] किया हुआ (सुख
२, १५) ।

कओ अ [कुत] कहाँ से ? (आचा, उव,
रयण २६) । हुत्त त्रिवि [दे] किस तरफ,
'कओहुत्त गंतव्व ?' (महा) ।

कओ अ [क] कहाँ, किस स्थान मे, 'कओ
वयामो ?' (गाया १, १४) ।

कओणह वि [कदुण्ण] थोड़ा गरम (वर्मवि
११२) ।

कओल देखो कवोल (से ३, ४६) ।

क अ [कम्] उदक, जल (तदु ५३) ।

कई अ [दे] किससे, 'कई पइ सिक्खिअ ए
गइलालस' (विक १०२) ।

कंक पुं [कङ्क] १ पक्षि-विशेष (पएह १, १;
४, अनु ४) । २ एक प्रकार का मजबूत
और तीक्ष्ण लोहा (उप ४६४) । ३ वृक्ष-
विशेष, 'कंकफलसरलनयण—' (उप १०३१
टी) । °पत्त न [°पत्र] बाण-विशेष, एक
प्रकार का बाण, जो उड़ता है (वेणी १०२) ।
°लोह पुंन [°लोह] एक प्रकार का लोहा
(उप पृ ३२६, सुपा २०७) । °वत्त देखो
°पत्त (नाट) ।

ककड पुं [कङ्कति] वृक्ष-विशेष, नागवला-
नामक श्लोपधि (उप १०३१ टी) ।

ककड पुं [कङ्कट] वर्म, कवच, 'रामो चावे
सक्कडे दिट्ठी देंतो' (पउम ४४, २१, औप) ।

कंकडइय वि [कङ्कटित] कवचवाला, वर्मित
(पएह १, ३) ।

ओत्थरिअ वि [अवस्तृत] १ विद्याया हुआ ।
 २ व्याप्त (मे ७, ४७) ।
 ओत्थरिअ वि [दे] १ आक्रान्त । २ जो
 आक्रमण करता हो वह (दे १ १६६) ।
 ओत्थल्ल देखो उत्थल्ल = उन् + स्तृ । ओत्थ-
 ल्लइ (प्राकृ ७१) ।
 ओत्थल्लपत्थल्ल देखो उत्थल्लपत्थल्ल (दे
 १, १२२) ।
 ओत्थाडिय वि [अवस्तृत] विद्याया हुआ
 (भवि) ।
 ओत्थार मक [अव + स्तारय्] आच्छादिन
 करना । कर्म ओत्थारिज्जति (म ६६८) ।
 ओदड्ग देखो ओदड्य (अज्ज १३६) ।
 ओदड्य पुन [ओदयिक] १ उदय, कर्म-
 विपाद (भग ७, १४; विने २१७८) । २ वि
 उदय निष्पन्न (विने २१७८, सूत्र १, १३) ।
 ३ पुं कर्मादय रूप भाव, 'कम्मोदयमहावो
 मन्थो अनुजो मुजो य ओदड्यो' (विने ३४६८) ।
 ४ वि उदय हाने पर हानेवाना (विने
 २१७८) ।
 ओदच्च न [ओदात्य] उदात्तता श्रेष्ठता
 (प्राप्) ।
 ओदज्ज न [ओदार्थ] उदारता (प्राप्) ।
 ओदण न [ओदन] भात, रोवा हुआ चावल
 (परह २, ५; ओप ७१८; प्राप् ६) ।
 ओदरिय वि [ओदरिक] पट-भरा, पेट भरने
 के लिए हो जा साधु हुआ हो वह (निबु १) ।
 ओदहण न [अवदहन] तप्त किए हुए लोहे
 के कोश बगरह मे दागता (राज) ।
 ओदारिय न [ओदार्थ] उदारता (प्राप्) ।
 ओद वि [आदे] गोला (प्राकृ २०) ।
 ओदपिअ वि [दे] १ आक्रान्त । २ नष्ट
 (दे १, १७१) ।
 ओद्वस मक [अव + ध्वस्] १ गिराना ।
 २ हटाना । ३ हराना । कवक 'परवाईहिं
 अणोक्कता अणउत्थिएहिं अणोद्वसिज्ज-
 माणा विहरति' (ओप) ।
 ओधाव मक [अव + धाव्] पोछे दोड़ना ।
 ओधावइ (महा, १) ।
 ओधुण रेयो अ युण । कर्म ओधुव्वति (पि
 ५३६) । मक ओधुणिअ (पि ५६१) ।
 ओधूअ वि [अदधूत] कम्पित (नाट) ।

ओधूसरिअ वि [अवधूसरित] धूसर रंग-
 वाना, हलका पीला रंगवाला (से १०,
 २१) ।
 ओनडिय वि [अवनटित] अवनणित, निर-
 नृत, 'चनुओनडियअरणपह' (मम्मत् २१८) ।
 ओनियट्ट वि [अवनिवृत्त] देखा अंगि-
 अत्त = प्रपनिवृत्त (कप्प) ।
 ओपल्ल वि [दे] अपदीर्णं कुरिठ्त, 'तते
 ए ने तंतलिपुत्ते नीलुप्पल जाव अमि खे
 ओहरति, तत्थवि य मे धारा ओपल्ल' (एणाया
 १, १४) ।
 ओप्प वि [दे] छुट, ओप दिया हुआ (पट्) ।
 ओप्प मक [अर्पय्] अर्पण करना । ओप्पेड
 (हे १, ६३) ।
 ओप्पा स्त्री [दे] शाण आदि पर मणि वगैरह
 का घर्पण करना (दे १ १४८) ।
 ओप्पाड्य वि [ओत्पानिक] उत्पात-मम्बन्धी
 (ओप) ।
 ओप्पिअ वि [अर्पित] समर्पित (हे १, ६३) ।
 ओप्पिअ वि [दे] शाण पर चिमा हुआ,
 'एणवमउडोप्पिअपयणह' (दे १, १४८) ।
 ओप्पील पुं [दे] समूह, जत्था (पाप्प) ।
 ओप्पुसिअ } देखो उत्पुसिअ (गउड, पि
 ओप्पुसिअ } ४८६) ।
 ओवद्ध वि [अववद्ध] १ वधा हुआ । २
 अवमन्न (वव १) ।
 ओवुड्म सक [अव + वुड्] जानना ।
 वहु ओवुड्ममाग (आचा) ।
 ओव्भालण देवो उव्भालण (दे १, १०३) ।
 ओभग्ग वि [अवभग्न] भग्न, नष्ट (मे ३,
 ६३, १०, २०) ।
 ओभावणा स्त्री [अपभ्राजना] लोक-निन्दा,
 अपकीर्ति (राज) ।
 ओभाम अक [अव + भास्] प्रकाशना,
 चमकना । वहु ओभाममाण (भग ११,
 ६) । प्रयो ओभामेड (भग) ओभानति, ओभा-
 नेति (सुज १६) क ओभासमाण (सूत्र
 १ १४) ।
 ओभाम मक [अव + भाप्] याचना करना
 मागना । कवक ओभासिज्जमाण (निबु २) ।
 ओभास पु [अवभाम] १ प्रकाश (ओप) ।
 २ महागह-विशेष (ठा २, ३) ।

ओभासण न [अवभामन] १ प्रकाशन
 उद्योगन (भग ८, ८) । २ आविर्भाव । ३
 प्राप्ति (सूत्र १, १२) ।
 ओभासण न [अवभायण] याचना, प्रार्थना
 (वव ८) ।
 ओभामिय वि [अवभापिन] १ याचित,
 प्रार्थित (वव ६) । २ न याचना, प्रार्थना
 (वृह १) ।
 ओभुग्ग वि [अवभुग्ग] वक्र, बांका, (एणाया
 १, ८—पत्र १३३) ।
 ओडिय वि [अवमुक्त] छुड़ाया हुआ,
 रहिन किया हुआ तेणवि कट्टिअणलक्ख
 विव सूडि-ओभोडियो नियकुत्तुडो (महा) ।
 ओम वि [अवम] अमार, निम्मार (आचा
 २, ५, २, ११) ।
 ओम वि [अवम] १ कम, न्यून हीन
 (आचा) । २ नष्ट छोटा (ओप २०३ मा) ।
 ३ न. दुर्भिक्ष, अकाल (ओप १३ भा) ।
 °कोट्ट वि [°कोट्ट] ऊनोदर, जिमने कम
 खाया हो वह (ठा ४) । °चेलग, °चेलय
 वि [°चेलक] जीर्ण और मलिन वस्त्र धारण
 करनेवाला (उत्त १२, आचा) । °रत्त पु
 [°रात्र] १ दिन-क्षय, ज्योतिष की गिनती
 के अनुसार जिस तिथि का क्षय होता है वह
 (ठा ६) । २ अहोरात्र, रात-दिन (ओप
 २८५) ।
 ओमइह वि [अमलित] मलिन, मैला (प
 २, २५) ।
 ओमथ [दे] देवो ओमथ (पाप्प) ।
 ओमथिय वि [दे] अवाप्तुव किया हुआ
 नमाया हुआ (एणाया १, १) ।
 ओमथिय वि [अवमस्तिर] शीर्षासन उ
 स्थित, नीचे मस्तक और ऊंचे पैर रखकर
 स्थित (एदि १२८ टी) ।
 ओमस वि [दे] अस्तुत, अगत (पट्) ।
 ओमज्जण न [अमज्जन] स्नान-क्रिया (उप
 ६८८ टी) ।
 ओमज्जायण पु [अवमज्जायन] ऋषि-
 विशेष (ज ७, इव) ।
 ओमज्जिअ वि [अमज्जित] जिमको मर्श
 कराया गया हो गइ स्थित (स ५६७) ।
 आमट्ट वि [अवट्ट] मट्ट, छुगा हुआ (से
 ५, २१) ।

कचुग देखो कचुअ (ओष ६७६, विये २५२८) ।

कचुगि देखो कचुड (मण) ।

कचुलिआ ली [कञ्चुलिआ] कचली, चोली (कप्प) ।

कंछुली ली [दे] हार, कण्ठाभरण (भवि) ।

कंजिअ न [काञ्जिक] काञ्जिक (मुर ३, १३३, कप्प) ।

कट देखो कटग (पिंड २००) ।

कटअन वि [कण्टकायमान] १ कण्टक जैमा, कण्टक की तरह आचरता (से ६, २२) । २ पुलकित होता (अबु ५८) ।

कटइअ वि [कण्टकित] १ कण्टकवाला (मे १, ३२) । २ रोमाञ्चित, पुलकित (कुमा, पाय) ।

कटइज्जत देखो कंटअन (गा ६७) ।

कटइल पुं [कण्टकिल] १ एक जात का वाम । २ वि कण्टको से व्याप्त (सूत्र १, ५) ।

कटइल देखो कटइअ (परह १, १, कुमा) ।

कटइवि वि [दे] कण्ट-प्रोत (दे २, १७) ।

कटकिल देखो कंटइअ (दे २, ७५) ।

कटग } पुं [कण्टक] १ काटा, कण्टक
कटय } (कस, हे १, ८०) । २ रोमाञ्च
पुलक (गा ६७) । ३ शत्रु, दुश्मन (गाया १, १) । ४ वृद्धि की पूँछ (वव ६) । ५ गत्य (विपा १, ८) । ६ दुःखोपादक वस्तु (उत्त १) । ७ ज्योतिष-शास्त्र-प्रसिद्ध एक कुयोग (गण १२) । ८ वौदिया ली [दे] कण्टक-शाखा (आचा २, १, ५) ।

कटाली ली [दे] वनस्पति विशेष, कण्ट-कारिका, भट्कटैया (दे २, ४) ।

कटिअ वि [कण्टिक] १ कण्टकवाला, कण्टक-युक्त । २ वृक्ष-विशेष (उप १०३१ टी) ।

कटिया ली [कण्टिका] वनस्पति-विशेष (बृह १, आचू १) ।

कटी ली [दे] उपकण्ठ, कण्ठिका, पर्वत के नजदीक की भूमि,

‘एयाओ पल्हाएफलभरवंधुरिया भूमिखज्जुराः वदोओ निव्ववति व, अमदररमंदआभोया’

(गउड) ।

कंटुल } [दे] देखो ककोड = (दे) (पाय,
कटोल } दे २, ७) ।

कठ पुं [दे] १ सूकर, सूग्र । २ मर्यादा, सीमा (दे २, ५१) ।

कठ पु [कण्ठ] १ गला, घाटी (कुमा) । २ समीप, पाम । ३ अञ्चल, ‘कठे वत्थाईएणं एणवदगठिम्मि’ (दे २, १८) । ४ दरखलिअ वि [दरखलिन] गद्गद (पाय) । ५ मुरय न [मुरज] आभरण विशेष (गाया १, १) । ६ मुरवी ली [मुरवी] गले का एक आभरण (ओष) । ७ मुही ली [मुखी] गले का एक आभूषण (राज) । ८ मुत्त न [मूत्र] १ मुरत-वन्ध-विशेष । २ गले का एक आभूषण (ओष) ।

कठ वि [कण्ठ्य] १ कण्ठ में उत्पन्न । २ मरल, मुगम (निचू १५) ।

कठकुची ली [दे] १ वस्त्र वगैरह के अञ्चल में बँधी हुई गाँठ । २ गले में लटकती हुई लम्बी नाड़ी-ग्रन्थि (दे २, १८) ।

कठदीणार पु [दे] छिद्र, विवर (दे १, २४) ।

कठमल्ल न [दे] १ ठठरी, मृत-शिविका । २ यान-पात्र, वाहन (दे २, २०) ।

कठमाल पुत्री [कण्ठमाल] रोग-विशेष (कुप्र ४७१) ।

कठय पु [कण्ठरु] म्वनाम-ख्यात एक चौर-नायक (महा) ।

कठाकठि अ [कण्ठाकण्ठि] गले-गले में ग्रहण कर (गाया १, २—पत्र ८८) ।

कठाल वि [कण्ठवन्] बड़ा गनावाला (धर्मवि १०१) ।

कठिअ पु [दे] चपरानी, प्रतीहार (दे २, १५) ।

कठिआ ली [कण्ठिका] गले का एक आभूषण (गा ७५) ।

कठीरअ देखो कठीरव (किरात १७) ।

कठीरव पुं [कण्ठीरव] मिह, शादून (प्रवो २१) ।

कड सक [कण्ड] १ ब्रीहि वगैरह का छिलका अलग करना । २ खीचना । ३ खुजवाना । वक्र, कडत (ओष ४६८ गा ६६३), कडित (गाया १, ७) ।

कड न [काण्ड] १ अगुल का अमस्यातवा

भाग, ‘कंडति एत्य भन्तइ अगुलभागो असं-खेज्जो’ (पत्र २६० टी) ।

कंड पुंन [काण्ड] १ दण्ड लाठी । २ निन्दित समुदाय । ३ पानी, जल । ४ पर्व ।

५ वृक्ष का स्कन्ध । ६ वृक्ष की गाथा । ७ वृक्ष का वह एक भाग, जहाँ से शाखाएँ निकलती हैं । ८ अन्ध का एक भाग । ९ गुच्छ, स्तवक । १० अश्व, घोड़ा । ११ प्रेत, पितृ और देवता के यज्ञ का एक हिस्सा ।

१२ रोड, प्रुप भाग की लम्बी हड्डी । १३ खुशामद । १४ ज्वाधा, प्रज्जमा । १५ गुप्तता, प्रच्छन्ता । १६ एकान्त, निर्जन । १७ वृक्ष-विशेष । १८ निर्जन पृथ्वी (हे १, ३०) । १९ अवसर, प्रस्ताव (गा ६३३) । २० समूह (गाया १, ८) । २१ बाण, शर (उप ६६६) ।

२२ देव-विमान-विशेष (राज) । २३ पर्वत वगैरह का एक भाग (नम ६५) । २४ खण्ड, टुकड़ा, अवयव (आचू १) । २५ आरिय पु [आरिक]

१ इस नाम का एक ग्राम । २ एक ग्राम-नायक (वव ७) । देखो कडग, कडय ।

कंडे पु [दे] १ फेन, फीन । २ वि दुर्वल । ३ विपन्न, विपत्ति-ग्रस्त (दे २, ५१) ।

कंडइअ देखो कटइअ (गा ५५८) ।

कंडइज्जत देखो कटइज्जत (गा ६७ अ) ।

कंडग न [कण्डक] १ मद्यानीत संयम-स्यान-समुदाय (पिंड २६, १००) । २ विभाग, पर्वत आदि का एक भाग (सूत्र १, ६, १०) ।

कडग पुन [काण्डक] देखो कड = काण्ड (आचा आवम) । २५ संयम श्रेणि-विशेष (बृह ३) । २६ इस नाम का एक ग्राम (आचू १) । देखो कडय ।

कंडण न [कण्डन] ब्रीहि वगैरह को नाफ करना, तुप ध्वंशण (था २०) ।

कडपंडवा ली [दे] यवनिका, परदा (दे २, २५) ।

कडय पुंन [काण्डक] देखो कंड = काण्ड तथा कडग । २७ वृक्ष-विशेष, राक्षसों का चैत्य वृक्ष, ‘तुलसी भूयाण भवे, रक्खसारं च कडयो’ (ठा ८) । २८ तावीज, गण्डा, यन्त्र, ‘वज्रभक्ति कंड्याद, पजरीकीरति अगयाद’ (मुर १६, ३२) ।

कडरीय पु [कण्डरीक] महापद्म राजा का एक पुत्र, पुरांडरीक का छोटा भाई, जिनने

ओरत्त वि [दे] १ गविष्ठ, अभिमानी । २ कुसुम्भ से रक्त । ३ विदारित, काटा हुआ (दे १, १६५, पात्र) ।

ओरद्ध देखो अवरद्ध = अपरद्ध (प्राक् ५०) ।

ओरम अक [उप + रम्] निवृत्त होना । ओरम (सूत्र १, २, १, १०) ।

ओरल्ली ली [दे] लम्बा और मधुर आवाज (दे १, १०४, पात्र) ।

ओरस सक [अव + तृ] नीचे उतरना । ओरसइ (हे ४, ८५) ।

ओरस वि [उपरस] स्नेह-युक्त, अनुरागी (ठा १०) ।

ओरस वि [औरस] १ स्वोत्पादित पुत्र, स्व-पुत्र (ठा १०) । २ औरस्य, हृदयोत्पन्न (जीव ३) ।

ओरसिअ वि [अवतीर्ण] उतरा हुआ (कुमा) ।

ओरस्स वि [औरस्य] हृदयोत्पन्न, आभ्यन्तरिक (प्राक्) ।

ओराल देखो उराल = उदार (ठा ४, १० जीव १) ।

ओराल देखो उराल (दे) (चद १) ।

ओराल न [औदार] नीचे देखो (विसे ६३१) ।

ओरालिय न [औदारिक] १ शरीर विशेष, मनुष्य और पशुओं का शरीर (औप) । २ वि. शोभायमान, शोभा वाला (पात्र) । ३ औदारिक शरीर वाला (विसे ३७५) । १ नाम न [नामन्] औदारिक शरीर का हेतुभूत कर्म (कम्म) ।

ओरालिय वि [दे] १ व्याप्त । २ उपलित, 'दिट्ठोरुहोरोरालियसिरो' (सुख १, १३) ।

ओरालिय वि [दे] १ पोछा हुआ, 'मुहि करयलु देवि पुणु ओरालिउमुहकमलु' (भवि) । २ फैलाया हुआ, प्रसारित, 'दसदिसि वृहकयवु ओरालिओ' (भवि) ।

ओराली देखो ओरल्ली (सुर ११, ८६) ।

ओरिक्किय न [अवरिद्धित] महिष की आवाज, 'कथइ महिसोरिक्किय कथइ डुहुडुहुडुह्वनइ-सलिल' (पउम ६४, ४३) ।

ओरिल्ल पुं [दे] लम्बा काल, दीर्घ काल (दे १, १५५) ।

ओरी [दे] समीप (आख्या० कोप. पत्र—८५ गा० १५) ।

ओरुंज न [दे] क्रीडा-विशेष (दे १, १५६) ।

ओरुभिय वि [उपरुद्ध] आवृत्त, आन्ध्यादित (गा ६१४) ।

ओरुण वि [अवरुदित] रोया हुआ (गा ५३८) ।

ओरुद्ध वि [अवरुद्ध] रुका हुआ, बन्द किया हुआ (गा ८००) ।

ओरुभ सक [अव + रुह्] उतरना । वक्क ओरुभमाण (कस) ।

ओरुम्मा अक [उद् + वा] सूखना, सूख जाना । ओरुम्माइ (हे ४, ११) ।

ओरुह देखो ओरुभ । वक्क ओरुहमाण (संघा ६३, कस) ।

ओरुहण न [अवरोहण] नीचे उतरना (पउम २६, ५५, विसे १२०८) ।

ओरुहण न [अवरोहण] नीचे उतारना, अवतारण (पव १५५) ।

ओरोव देखो ओरोह = अवरोह (विपा १, ६) ।

ओरोह देखो ओरुभ । वक्क ओरोहमाण (कस, ठा ५) ।

ओरोह पुं [अवरोह] १ अन्त पुर, जनानखाना (औप) । २ अन्त पुर की ली (सुर १, १४३) । ३ नगर के दरवाजा का अवान्तर द्वार (गाया १, १, औप) । ४ सघात, समूह (राज) ।

ओलअ पु [दे] १ श्येन पक्षी, वाज पक्षी । २ अपलाप, निहव (दे १, १६०) ।

ओलअणी ली [दे] नवोढा, दुलहिन (दे १, १६०) ।

ओलइअ वि [दे अवलगित] १ शरीर में सटा हुआ, परिहित (दे १ १६२, पात्र) । २ लगा हुआ (मे १, १६२) ।

ओलइणी ली [दे] प्रिया, ली (दे १, १६०) ।

ओलइ सक [उत् + लह्] उल्लघन करना । ओलइंति (गाया १, १—पत्र ६१) ।

ओलव देखो अवलव = अव + लम्ब । सक ओलविऊण (महा) ।

ओलव पु [अवलम्ब] नीचे लटकना (औप, स्वप्न ७३) ।

ओलंवण न [अवलम्बन] सहारा, आश्रय । १ दीव पु [दीप] शृङ्खला-बद्ध दीपक (राज) ।

ओलविय वि [अवलम्बन] आश्रित, जिमका सहारा लिया गया हो वह (निवृ १) । २ लटकाया हुआ (औप) ।

ओलविय वि [उल्लवित] लटकाया हुआ (सूत्र २, २ औप) ।

ओलभ पु [उपालम्भ] उलाहना, 'अप्पोलभ-णिमित्त पढमस्स णायज्जयणस्स अयमट्ठे पणत्ते ति वेमि' (गाया १, १) ।

ओलक्खिअ वि [उपलक्षित] पहिचाना हुआ (पउम १३, ४२, सुपा २५४) ।

ओलणि (अप) देखो ओलगि (सिरि ५२४) ।

ओलग सक [अव + लग्] १ पीछे लगना । २ सेवा करना । ओलगति (पि ४८८) । हेक्क ओलगिउ (सुपा २३४, महा) । प्रयो, सक ओलग्गावि (सण) ।

ओलग वि [अवरुण] १ ग्लान, बीमार । २ दुर्वल, निर्वल (गाया १, १—पत्र २८ टी. विपा १, २) ।

ओलग वि [अवलग्न] पीछे लगा हुआ, अनुलग्न (महा) ।

ओलग [दे] देखो ओलग्ग (दे १, १६४) ।

ओलग्गा ली [दे] सेवा, भक्ति, चाकरी, 'करेउ देवो पसाय मम ओलग्गाए' (म ६ ३६), 'ओलग्गाए वेलत्ति जपिउ निग्गमो खुजो' (धम्म ८ टी) ।

ओलगि वि [अवलागिन्] सेवा करने-वाला । ली-णी (रंभा) ।

ओलगिअ वि [अवलग्न] सेवित (वज्जा ३२) ।

ओलावअ पु [दे] श्येन, वाज पक्षी (दे १, १६०, स २१३) ।

ओलि देखो ओली = आली (हे १, ८३) ।

ओलिअ पु [अलिन्दक] बाहर के दरवाजे का प्रकोष्ठ (गा २५४) ।

ओलिप सक [दे] खोलना । कक्क 'ओलिप- [लिप्प] माणे वि तहा तहेव काया कवाडम्मिविभासियन्वा' (पिड ३५४) ।

ओलिप सक [अव + लिप्] लीपना, लेप लगाना । वक्क ओलिपमाण (राज) ।

कदणया स्त्री [कन्दनता] मोटे स्वर से चित्ताना (ठा ४, १)।

कदणप पु [कन्दर्प] १ कामदेव, अनग (पाप्र)।
- कामादीपक हात्यादि 'कदण्णे बुक्कण्ण' (पडि, णाया १, १)। ३ देव-विशेष (पत्र ७३)। ४ काम सवन्धी कपाया ५ वि काम-युक्त, कामी (बृह १)।

कदणप वि [कान्दर्प] कान्दर्प सवन्धी (पत्र ७३)।

कदण्पि वि [कन्दर्पिन्] कामादीपक, कान्दर्प का उत्तेजक (वव १)।

कदण्पिय पु [कान्दर्पिक] १ मजाक करने वाला भारुड वगैरह (श्रौप, भग)। २ भारुड-प्राय देवो की एक जाति (परह २, २)। ३ त्रास्य वगैरह भारुड कर्म में आजीविका चलानेवाला (परह २०)। ४ वि काम-सवन्धी (बृह १)।

कदर न [कन्दर] १ रन्ध्र विवर (णाया १ २)। २ गुहा, गुफा (उवा, प्रामू ७३)।

कदरा } स्त्री [कन्दरा] गृहा, गुफा (से ४,
कदरी } ६ राज)।

कदर पु [कन्दर] १ अकुर प्ररोह (मुपा ८)। २ लता विशेष (णाया १, ६)।

कदल न [दे] कपाल (दे २, ४)।

कदलग पु [कन्दलग्] एक खुरवाला जानवर विशेष (परगु १)।

कदलिअ } वि [कन्दलिन] अकुरित (कुमा,
कदलिह } पि ५६५)।

कदली स्त्री [कन्दली] १ लता विशेष (मुपा ६, पत्र ५३ ७६)। २ अकुर, प्ररोह, 'दारिद्र्मुमावलीगणदवो' (उप ७२८ टी)।
कदली स्त्री [कन्दली] कन्द-विशेष (उत्त ३६, ६८ ६६)।

कन्दिय पु [कान्दविक] हलवाई, मिठाई बचनवाला (उप २११ टी)।

कन्दि पु [कन्देन्द्र, कन्दितेन्द्र] कन्दित-नामक देव-निकाय का इन्द्र (ठा २ ४—पत्र ५)।

कन्दिय पु [कन्दिन] १ वाणव्यन्तर देवो की एक जाति (परह १, ८, श्रौप)। २ न. गेदन, प्राकन्द (उत्त २)।

कदिर वि [कान्दिन्] काँदनेवाला (भवि)।

कदी स्त्री [दे] मूला कन्द विशेष (दे २ १)।

कदु पु स्त्री [कन्दु] एक प्रकार का वस्तु, जिममें भारुड वगैरह पकाया जाता है, हाडा (विपा १, ३, सूत्र १, ५)।

कदुअ पु [कन्दुक] १ गेद (पाय, स्वप्न ३८, मै ६१)। २ वनस्पति-विशेष (परह १)।

कदुअ पु [कान्दविक] हलवाई, मिठाई बचनेवाला (दे २, ४१, ६६३)।

कदुरु देखो कदुअ (सूत्र २ ३, १६)।

कदुग देवो कदुअ (राज)।

कदुट्ट न [दे] देखो कदोट्ट (पाय, धर्मा ५, मण)।

कदुवय पुन [दे] कन्द-विशेष (सुख ३६, ६८)।

कंदुय देखो कदुअ (कुप्र ६८)।

कदोइय देखो कदुअ (मुपा ३८५)।

कदोट्ट न [दे] नील कमल (दे २, ६, प्राप्र, पड्, गा ६२२, उत्तर ११७, कप्प, भवि)।

कव देवो खव = न्कव (नाट, वज्जा ३६)।

कधरा स्त्री [कन्दरा] ग्रीवा, गरदन (पाप्र, सुर ४, १६६, गण ६)।

कधार पु [दे] स्कन्ध, ग्रीवा का पीछला भाग (उप पृ ८६)।

कप अक [कम्प] कापना, हिलना। कपइ (हे १, ३०)। वक्क कपत, कपमाण (महा, कप्प)। कवक्क कपिज्जन (से ६, ३८, १३, ५६)। प्रयो, वक्क कपावित (मुपा ५६३)।

कप पु [कम्प] अस्थैर्य, चलन, हिलन (कुमा, आउ)।

कपड पु [दे] पथिक, मुमाफिर (दे २, ७)।

कपण न [कम्पन] १ कम्प, हिलन (भवि)। २ रोग-विशेष। °वाडअ वि [°वातिक]

कम्प वायु नामक रोगवाला (अनु ६)।

कपि वि [कम्पिन्] कापनेवाला (कप्प)।

कपिअ वि [कम्पित] कापा हुआ (कुमा)।

कंपिर वि [कम्पित्] कापनेवाला (गा ६५६, मुपा १५८, आ २७)।

कपिल्ल वि [कम्पयन्] कापनेवाला, अस्थिर, 'निच्चमरुपिल्लं परमयाहि रपिल्लनामपुर' (उप ६ टी)।

कपल्लि पु [कम्पिल्ल] १ यदुवशीय राजा अन्धकवृष्णि के एक पुत्र का नाम (अन्त ३)।

२ न पजाव देश का एक नगर (ठा १०, उप ६४८ टी)। °पुर न [°पुर] नगर-विशेष (पत्र ८, १४३, उवा)।

कव वि [कम्प] १ कामुक, कामी। २ मुन्दर, मनोहर (पि २६५)।

कव° देवो कवा।

कवर पु [दे] विज्ञान (दे २, १३)।

कवल पुन [कम्बल] १ कामरी, ऊनी कपडा (आचा, भग)। २ पु स्वनाम रयात एक वलीवर्द (राज)। ३ गौ के गने का नमडा, मान्ना, गतकवन, लहर (विपा १, २)।

कवा स्त्री [कम्बा] यष्टि लम्बी 'दिट्ठा नज्जाएणं, निसूडिउं कवाएहि, वडो' (मुपा ३६६)।

कवि } स्त्री [कम्बि, °म्बी] १ दर्वी
कवी } कड्डी। २ लीला-यष्टि, छटी, गोत्र
में हाथ में रखी जानी लकड़ी (उप पृ २३७)।

कविया स्त्री [कम्बिका] पुस्तक का पृष्ठा, किताब का आवरण पृष्ठ (राय ६६)।

कवु पुं [कम्बु] १ शङ्ख (परह १, ४)। २ इस नाम का एक द्वीप (पत्र ४५, ३२)। ३ पर्वत-विशेष (पत्र ४५, ३२)। ४ न एक देव-विमान (सम २२)। °ग्रीव न [°ग्रीव] एक देव-विमान (सम २२)।

कवोय पु [कम्बोज] देश-विशेष (पत्र २७, ७, स ८०)।

कवोय वि [कम्बोज] कम्बोज देश में उत्पन्न (स ८०)।

कभार पु व [कभारी] इस नाम का एक प्रसिद्ध देश (हे २, ६८, पड्)। °जम्म न [°जम्मन्] कुकुम, केसर (कुमा)। देखो कम्हार।

कभूर (अप) ऊपर देखो (पड्)।

कस पु [कस] १ राजा उग्रसेन का एक पुत्र, श्रीकृष्ण का मानुल (परह १, ४)। २ महा-ग्रह-विशेष (ठा २, ३—पत्र ७८)। ३ काना, एक प्रकार की घातु (णाया १, ७—पत्र ११८)। °णाभ पु [°नाभ] ग्रह-विशेष (मुज २०, इक)। °वण्ण पुं [°वर्ण]

ग्रह-विशेष (ठा २, ३—पत्र ७८)। °वण्णाभ पु [°वर्णाभ] ग्रह-विशेष (ठा २, ३)। °सहारण पु [°सहारण] कृष्ण, विष्णु (पिग)।

ओवट्टण न [अपवर्त्तन] हाम, वमी (आवक २१६) ।

ओवट्टणा स्त्री [अपवर्त्तना] भागाकार, भाग-हरण (राज) ।

ओवट्टिअ न [दे] चाट्ट, खुशामद (दे १, १६२) ।

ओवट्ट वि [अवट्ट] वरना हुआ, जिनने वृष्टि की हो वह (से ६, ३८) ।

ओवट्ट पु [दे अववर्ष] १ वृष्टि, बारिश (से ६, २५) ।

२ मेघ-जल का मिञ्चन (दे १, १५२) ।

ओवट्टिअ वि [औपस्थितिक] उपस्थिति के योग्य, नौकर (प्रयो ११) ।

ओवड अक [अव + पन्] गिरना, नीचे पटना । वहु ओवडत (से १३, २८) ।

ओवडण न [अवपतन] १ अघ पात । २ भम्पा-पात (से २, ३२) ।

ओवड्ड वि [उपाध] आवे के करीब ।

ओमोयरिया स्त्री [ओमोदरिका] बारह बवल का ही आहार करना, तप-विशेष (भग-७, १) ।

ओवड्डि वि [अपवृद्धि] ह्रास (निवृ २०) ।

ओवड्डा स्त्री [दे] ओडनी का एक भाग (दे १ १५१) ।

ओवण न [उपधन] वगीचा, आराम (कुमा) ।

ओवणिहिय पु [औपनिहित, औपनिधिक] भिक्षाचर विशेष, समीपस्थ भिक्षा को लेनेवाला माधु (ठा ५, ओप) ।

ओवणिहिया स्त्री [औपनिधिका] आनुपूर्वी-विशेष, अनुक्रम-विशेष (ओप) ।

ओवत्त सक [अप + वर्त्तय्] १ उलटा करना । २ फिराना, घुमाना । ३ फेंकना । सक ओवत्तिय (दम ५) । क ओवत्तेअव्व (से १०, ५०) ।

ओवत्त वि [अपवृत्त] फिराया हुआ (से ६, ६१) ।

ओवत्तिय वि [अपवर्त्तित] १ घुमाया हुआ । २ भिन्न (शाया १, १—पत्र ४७) ।

ओवत्थाणिय वि [औपस्थानिक] नभा का कार्य करनेवाला नाकन । स्त्री ओया (भग ११ ११) ।

ओवम देखो ओवम्म, 'इदियपच्चक्ख पिय ग्रणुमाण ओवम च मइत्ताणं' (जीवम १४२) ।

ओवमिय वि [औपमिक] उपमा-सम्बन्धी (इणु) ।

ओवमिय } न [औपम्य] १ उपमा (ठा ८
ओवम्म } अणु) । २ उमान, प्रमाण (सूत्र १, १०) ।

ओवय सक [अव + पन्] १ नीचे उतरना । २ आ पटना । वक्क ओवयवत्, ओवयमाण कप्प, स ३७०, पि ३६, शाया १, १६) ।

ओवयण न [दे अवपदन] प्रोद्धणक, चुमना (शाया १, १—पत्र ३६) ।

ओवयण न [अवपतन] अवतरण, नीचे उतरना (भग ३, २—पत्र १७७) ।

ओवयाइय वि [औपयाचितक] मनौती में प्राप्त किया हुआ, मनौती में मिला हुआ (ठा १०) ।

ओवयारिय वि [औपचारिक] उपचार-सम्बन्धी (पंचा ६, पुष्प ५८६) ।

ओवर पु [ट] निरु, समूह (दे १, १५७) ।

ओववाइय वि [औपपातिक] १ जिसकी उत्पत्ति होती हो वह (पच १) । १ पु ससारी, प्राणी (आचा) । ३ देव या नारक-जीव (दस ४) । ४ न देव या नारक जीव का शरीर (पच १) । ५ जैन आगम-ग्रन्थ विशेष, औप-पातिक सूत्र (ओप) ।

ओववाइय वि [औपपातिक] एक जन्म में दूसरे जन्म में जानेवाला (सूत्र १, १, ११) ।

ओवसग्गिय वि [औपमगिक] १ उपसर्ग में सवन्व रखनेवाला, उपद्रव—समर्थ गेगादि । २ शब्द-विशेष, प्र, परा आदि अव्यय रूप शब्द (अणु) ।

ओवसमिअ पुन [औपशमिक] १ उपशम । २ वि उपशम में उत्पन्न । ३ उपशम होने पर होनेवाला (विसे २१७४) ।

ओवसेर न [दे] १ चन्दन, सुगन्धि काष्ठ-विशेष । २ वि रति-योग्य (दे १, १७३) ।

ओवस्सय देखो उवस्सय, 'वट्टिज्ज ओवस्सय-तण्य तेणाइरक्खट्ठा' (पव ८१) ।

ओवह सक [अव + वह्] १ वह जाना, वह चलना । २ ह्वना । कवक्क, ओवुद्धमाण (कम) ।

ओवहारिअ वि [औपहारिक] उपहार सम्बन्धी (विक ७५) ।

ओवहिय वि [औपविक] माया से गुप्त विचरनेवाला (शाया १, २) ।

ओवाअ पु [दे] आपातप, जल-समूह की गरमी (पट्) ।

ओवाइय देखो ओववाइय (राज) ।

ओवाइय देखो उववाइय (सुपा ११३) ।

ओवाइय वि [आवपातिक] सेवा करनेवाला (ठा १०) ।

ओवाडण न [अवपाटन] विदारण, नाश (ठा २, ५) ।

ओवाडिय वि [अवपाटित] विदारित (ओप) ।

ओवाय सक [उप + याच्] मनौती करना । वक्क ओवायत, ओवाइयमाण (सुर १३, २०६, शाया १, ८—पत्र १३४) ।

ओवाय पु [अवपात] १ सेवा भक्ति (ठा ३, २, औप) । २ गर्त, गड्ढा (पणह १ १) । ३ नीचे गिरना (पणह १, ४) ।

ओवाय वि [औपाय] उपाय-जन्य, उपाय-सम्बन्धी (उत्त १, २८) ।

ओवार सक [अप + वारय्] आच्छादन करना ढकना । सक ओवारिअ (अभि २१३) ।

ओवारि न [दे] धान्य भरने का एक प्रकार का लम्बा कोठा, गोदाम (राज) ।

ओवारिअ वि [दे] ढेर किया हुआ, रागि-कृत (स ४८७, ४८) ।

ओवारिअ वि [अपवारित] आच्छादित ढका हुआ (से ६१) ।

ओवास अक [अव + काञ्] शासन विराजना । ओवामइ (प्राप) ।

ओवास अक [अव + काश्] अवनाश पाना, जगह मिटना । ओवामइ (प्राप्र, कुमा ७, २३, प्राक्क ६६) ।

ओवाम पु [अवकाश] अवकाश, खाली जगह (प्राप्र, प्राप्र, से १, ५४) ।

ओवास पु [उपवास] उपवास, भोजनाभाव (पउम ४२, ८६) ।

ओवासतर पुन [अवकाशान्तर] आकाश गगन (भग २०, २—पत्र ७७६) ।

ओसहिं, ही स्त्री [ओषधि] १ वनस्पति (परण १) । २ नगरी-विशेष (राज) । ३ महि-हर पुं [महिहर] पर्वत-विशेष (अन्तु ४४) ।

ओसहिअ वि [आवसथिक] चन्द्रार्ध-दानादि व्रत को करनेवाला (गा ३४६) ।

ओसा स्त्री [दे] १ ओस, निशा जल (जी ५, आचा, विने २५७६) । २ हिम, बरफ (दे १, १६४) ।

ओसाअ पु [दे] प्रहार की पीड़ा (दे १, १५२) ।

ओसाअ पु [अवश्याय] हिम, ओस (मे १३, ५२, दे ८, ५३) ।

ओसाअन वि [दे] १ जैमाई खाता हुआ आलसी । २ बैठता । ३ वेदना-युक्त (दे १, १७०) ।

ओसाअण वि [दे] १ महीशान, जमीन का मालिक । २ आपोशान (पड्) ।

ओसाण न [अवसान] १ अन्त (ठा ४) । २ नमीपता, सामीप्य (सूत्र १, ४) ।

ओसाण न [अवसान] गुरु के समीप स्थान, गुरु के पास निवास (सूत्र १, १४, ४) ।

ओसाणिहाण वि [दे] विधि-पूर्वक अनुष्ठित (दे १, १६३) ।

ओसाय पु [अवश्याय] ओस, निशा-जल (जीवम ३१) ।

ओसायण न [अवसादन] परिशादन, नाश (विने) ।

ओसार सक [अप + सारय] दूर करना । ओमारिहि (म ४०८) । कर्म ओसारिज्जंतु (म ४१०) । सक ओसारिवि (भवि) ।

ओसार पु [दे] गो-वाट, गो-वाड़ा (दे १, १४६) ।

ओसार पु [अपसार] अपसरण (मे १३, १४) ।

ओसार देखो ऊसार = उत्सार (भवि) ।

ओसार पु [अवसार] कवच, वस्त्र (से १२, ५६) ।

ओसारिअ वि [अपसारित] दूर किया हुआ, अपनीत (गा ६६, पउम २३, ८) ।

ओसारिअ वि [अवसारित] अवलम्बित, लटकाया हुआ (श्रौप) ।

ओसास (अप) देखो ओवास = अवकाश (भवि) ।

ओसिअ वि [दे] १ अवल, चल-रहित (दे १, १५०) । २ अपूर्व, अमाधारण (पड्) ।

ओसिअ वि [उपित] १ वसा हुआ, रहा हुआ (सूत्र १, १४, ४) । २ व्यवस्थित (सूत्र १, ४, १, २०) ।

ओसिअत वक्तु [अवसीदत्] पीड़ा पाता हुआ (हे १, १०१, से ३, ५१) ।

ओसिअ वि [दे] घात, मूँचा हुआ (दे १, १६२, पात्र) ।

ओसिंचित्तु वि [अपसेचयित्] अपसेक करनेवाला (सूत्र २, २) ।

ओसिक्खिअ न [दे] १ गति-व्याघात । २ अरति-निहित (दे १, १७३) ।

ओसित्त वि [अवसिक्त] भीजाया हुआ, भिक्त (आचा २, १, १, १) ।

ओसित्त वि [दे] उपलिप्त (दे १, १५८) ।

ओसिय वि [अवसित] १ पर्यवसित । २ उपशान्त (सूत्र १, १३) । २ जीत, पराभूत (विसे) ।

ओसिरण न [दे] व्युत्पन्न, परित्याग (पड्) ।

ओसीअ वि [दे] अघो-मुख, अवनत (दे १, १५८) ।

ओसीर देखो उसीर (परह २, ५) ।

ओसीस अक [अप + वृत्] १ पीछे हटना । २ धूमना, फिरना । सक ओसी-सिऊण (दे १, १५२) ।

ओसीस वि [अप + वृत्] अपवृत्त (दे १, १५२) ।

ओसुअ वि [उत्सुक] उत्कण्ठित (प्राप्र) ।

ओसुखिअ वि [दे] उत्प्रेक्षित, कल्पित (दे १६१) ।

असुभ सक [अव + पातय] १ गिरा देना । २ नष्ट करना । कर्म ओमुम्भति (स ७, ६१) । वक्तु ओसुभइ (से ४, ५४) । कवक्तु ओसुम्भत (पि ५३५) ।

ओसुक्क सक [तिज्] तीक्ष्ण करना, तेज करना । ओसुक्कइ (हे २, १०४) ।

ओसुक्क वि [अवशुष्क] सूखा हुआ (पउम ५३, ७६, ५, १४) ।

ओसुक्ख अक [अव + शुप्] सूखना । वक्तु ओसुक्खन (से ६, ६३) ।

ओसुद्ध वि [दे] १ विनिपत्तित (दे १, १५७) । २ विनाशित (से १३, २२) ।

ओसुम्भत देखो ओसु भ ।

ओसुय न [औत्सुक्य] उत्सुकता, उत्कण्ठा (श्रौप, पि ३२७ ए) ।

ओसोयणी, स्त्री [अवस्थापनी] विद्या-ओसोवणिग्या विशेष, जिसके प्रभाव से दूसरे ओसोवणी को गाढ निद्रावीन किया जा सकता है (मुपा २२०, राया १, १६, कप्प) ।

ओस्सक पु [अवप्पक] अपसर्पण, पीछे हटना (पव २) ।

ओस्सककण देखो ओसककण (पिड २८५) ।

ओस्सा [दे] देखो ओसा (कम) ।

ओस्साड पुं [अवशाट] नाश, विनाश (सण) ।

ओह देखो ओघ (परह १, ४, गा ५१८, निवू १६, ओघ २, धम्म १० टी) । ५ सूत्र, शास्त्र-सम्बन्धी वाक्य (विसे ६५७) ।

ओह सक [अव + तृ] नीचे उतरना । ओहइ (हे ४, ८५) ।

ओह पुन [ओघ] १ उत्सर्ग, सामान्य नियम, (एदि ५२) । २ सामान्य, साधारण (वव १) । ३ प्रवाह (राय ४७ टी) । ४ सलिल-प्रवेश । ५ आसन्न-द्वार (आचा २, १६, १०) । ६ ससार (सूत्र १, ६, ६) । ७ सूय न [श्रुत] शास्त्र-विशेष (एदि ५२) ।

ओहक पु [दे] हास हँसी (दे १, १५३) ।

ओहजलिया स्त्री [दे] क्षुद्र जन्तु-विशेष, चतुरिन्द्रिय जीव-विशेष (जीव १) ।

ओहतर वि [ओघतर] संसार पार करने-वाला (मुनि), (आचा) ।

ओहंस पुं [दे] १ चन्दन । २ जिसपर चन्दन घिसा जाता है वह शिला, चन्द्रौटा या होरसा (दे १, १६८) ।

ओहट्ट अक [अप + घट्ट] १ कम होना, हास पाना । २ पीछे हटना । ३ सक हटाना, निवृत्त करना । ओहट्टइ (हे ४, ४१६) । वक्तु ओहट्टत (से ८, ६०, मुपा २३३) ।

ओहट्ट पु [दे] १ अवगुणन । २ नीवी, कटि वक्र । ३ वि अपवृत्त, पीछे हटा हुआ (दे १, १६६, भवि) ।

कट्टिअ पुं [दे] चपरासी, प्रतीहार (दे २, १५)।

कट्टिअ वि [काष्ठित] काठ में संस्कृत भीत वगैरह (आचा २, २)।

कट्टिण देखो कट्टिण (नाट—मालती ५६)।

कट्टेअ वि [काष्ठेय] देखो कट्टिअ—काष्ठित (आचा २, २, १, ६)।

कट्टोल देखो कट्ट = कट्ट (पिंड १०)।

कड वि [दे] १ क्षीण, दुर्बल। २ मृत, विनष्ट (दे २, ५१)।

कड पु [कट] १ गरुड-स्थल, गाल (गाया १, १ पत्र ६५)। २ तृण, घास। ३ चटाई, आन्तरण-विशेष (ठा ४, ४ पत्र २७१)। ४ लकड़ी, यष्टि, तैमि च जुद्ध लयालिट्टु-कडपायाणदतनिवाएहि' (वसु)। ५ वन, वान (विपा १, ६ ठा ४, ४)। ६ तृण-विशेष (ठा ४, ४)। ७ छिला हुआ काष्ठ (आचा २, २, १)। ८ छेज न [छेज] कला विशेष (श्रीप, ज २)। ९ तड न [तट] १ कटक का एक भाग। २ गरुड तल (गाया १, १)। ३ पृथणा स्त्री [पृतना] व्यन्तरी-विशेष (विसे २५४६)।

कड वि [कृत] १ किया हुआ, बनाया हुआ, रचित (भग, परह २, ४, विपा १, १, कप्प, मुपा २६)। २ पुन युग विशेष, मत्स्ययुग, (ठा ४, ३)। ३ चार की सख्या (सूत्र १, २)। ४ जुग न [युग] मत्स्य-युग, जलति का समय, आदि युग, १७२०००० वर्षों का यह युग होता है (ठा ४, ३)। ५ जुम्म पुं [युग्म] सम गणि-विशेष, चार में भाग देने पर जिसमें कुछ भी शेष न बचे ऐसी गणि (ठा ४, ३)। ६ जुम्मकडजुम्म पु [युग्मकृतयुग्म] राशि विशेष (भग ३४, १)। ७ जुम्मकलिओय [युग्मकल्योज] राशि विशेष (भग ३४, १)। ८ जम्मन्तओग पु [युग्मज्योज] राशि-विशेष (भग ३४, १)। ९ जुम्मदावरजुम्म पु [जुग्मद्वार-युग्म] राशि-विशेष (भग ३४, १)। १० जोगि वि [योगिन] १ कृत-क्रिय (निचू १)। २ मोतार्थ, ज्ञानी (श्रीघ १३४ भा)। ३ नपग्घी (निचू १)। ४ वाड पु [वादिन] उर्ध्व में नैरागिक न मानकर किसी की वनाई

हुई माननेवाला, जगत्कृतत्ववादी (सूत्र १, १, १)। ५ इ पु [इदि] देखो जोगि (भग, गाया १, १—पत्र ७४)। देखो कय = कृत।

कडअल्ल पु [दे] दीवारिक, प्रतीहार (दे २, १५)।

कडअल्ली स्त्री [दे] कण्ठ, गला (दे २, १५)।

कडडअ पु [दे] स्वपति, बढई (दे २, २२)।

कडइअ वि [कटकिन] वलय की तरह स्थित (से १२, ४१)।

कडइल्ल पु [दे] दीवारिक, प्रतीहार (दे २, १५)।

कडगार न [कडङ्गर] तुप, छिलका, भूसा (मुपा १२६)।

कडंत न [दे] मूली, कन्द विशेष। २ मुमल (दे २, ५६)।

कडतर न [दे] पुराना सूर्य आदि उपकरण (दे २, १०)।

कडतरिअ वि [दे] दारित, विदारित, विना-शिन (दे २, २०)।

कडव पु [कडम्ब] वाद्य विशेष (विसे ७८ टी)।

कडवा पुष्पी [कडम्बा] वाय-विशेष (राय ४६)।

कडंमुअ न [दे] १ कुम्भश्रीव-नामक पात्र-विशेष। घडे का कण्ठ-भाग (दे २, २०)।

कडक देखो कडग (नाट—गत्ता ५८)।

कडकडा स्त्री [कडकडा] अनुकरण शब्द-विशेष, कड कड आवाज (म २५७, पि ५५८, नाट—मालती ५६)।

कडकडिअ वि [कडकडित] जिसने कड कड आवाज किया हो वह, जीर्ण (गुर ३, १६३)।

कडकडिर वि [कडकडायित्] कड-कड आवाज करनेवाला (मण)।

कडकिय न [कडकिन] कडकड आवाज (मिरि ६६२)।

कडकख पु [कटाक्ष] कटाक्ष, तिरछी चितवन, भाव युक्त दृष्टि, आँख का नकेत (पात्र, सुर १, ४३, मुपा ६)।

कडकख मक [कटाक्षय्] कटाक्ष करना। कडकखड (भवि)। सकृ कडकखेवि (भवि)।

कडकखण न [कटाक्षण] कटाक्ष करना (भवि)।

कडकियअ वि [कटाक्षित] १ जिसपर कटाक्ष किया गया हो वह (रभा)। २ न कटाक्ष (भवि)।

कडग पुन [कटक] १ कडा, वलय, हाथ का आभूषण-विशेष (गाया १, १)। २ यवनिका, परदा, 'अन्नम्म भगगमण होही कडतरेण तं सच्च'। निसुयमुवग्गभाएण' (उप १६६ टी)। ३ पर्वत का मूल भाग। ४ पर्वत का मध्य भाग। ५ पर्वत की गम भूमि। ६ पर्वत का एक भाग, 'गिरिन्दरवडनविसमदुग्गेमु' (पत्र ८२, परह १, ३, गाया १, ४, १८)। ७ शिविर, सेना रहने का स्थान (वृह २)। ८ पु देश-विशेष (गाया १, १—पत्र ३३)। देखो कडय।

कडच्छु स्त्री [दे] चट्टी, चमची, डोई (दे २, ७)।

कडण न [कडन] १ मार डालना, हिना करना। (कुमा)। २ नाश करना। ३ मर्दन। ४ पाप। ५ दुष्ट। ६ विह्वलता, आकुलता (हे १, २१७)।

कडण न [कटन] १ घर की छत। २ घर पर छत डालना (गच्छ १)।

कडण न [कटन] चटाई आदि से घर का संस्कार, चटाई आदि से घर के पार्श्व भागों का किया जाता आच्छादन (आचा २, २, ३, १ टी, पत्र १३३)।

कडणा स्त्री [कटना] घर का अवयव विशेष (भग ८, ६)।

कडणी स्त्री [कटनी] मेखला, 'नुरगिगिकड-णिपरिट्ठित्तं' (गुर मिरिमणुहन्ति' (मुपा ६११)।

कडतला स्त्री [दे] लोहे का एक प्रकार का हथियार, जो एक धारवाला और वक्र होता है (दे २, १६)।

कडत्तरिअ वि [दे] देखो कडतरिअ (भवि)। कडदरिअ वि [दे] १ छिन्न, काटा हुआ। २ न छिद्रता (पट)।

कडप्प पु [दे कटप्प] १ समूह, निकर, कलाप (दे २, १३, पड, गडड, मुपा ६२, भवि, विक्र ६५)। २ वस्त्र का एक भाग (दे २, १३)।

ओहासिय वि [अवभापित] याचित (पचा १३, १०)।

ओहि पुत्री [अवधि] १ मर्यादा सीमा हृद (गा १००, २०६)। २ हृदि-वदार्थ का अतीन्द्रिय ज्ञान-विशेष (उवा, महा)। ३ जिण पुं [जिन] अवविज्ञानवाला नाधु (पर २, १)। ४ जाण न [ज्ञान] अवविज्ञान (वच १)। ५ जाणावरण न [ज्ञानावरण] अवविज्ञान का प्रतिबन्धक कर्म (कम्म १)। ६ डमण न [दमन] हयो वस्तु का अतीन्द्रिय सामान्य ज्ञान (नम १५)। ७ डमणावरण न [दर्शनावरण] अवविदर्शन का आभारक कर्म (ठा ६)। ८ नाण नेओ जाण (प्राह)। ९ मरण न [मरण] मरण-विशेष (भग १३, ८)।

ओहिअ वि [अवनीर्ण] उतरा हुआ (कुमा)।

ओहिअ वि [ओधिक] ओत्पन्निक, सामान्य रूप म उक्त (अणु १६६, २००)।

ओहिण वि [अपमित्र] रोका हुआ, अट-काया हुआ (ने १३, २४)।

ओहित्थ न [दे] १ विपाद, खेद। २ रमन, वेग। ३ वि विचारित (दे १, १६८)।

ओहिर देखो ओहोर। ओहिरइ (पड)।

ओहिर देखो ओहर = अ + ह। कर्म ओहिरिआमि (वि ६८)।

ओहीअन वि [अवहीरमान] क्रमश कम होता हुआ (ने १२, ४२)।

ओहीण वि [अवहीन] १ पीछे रहा हुआ (अभि ५६)। २ अगत, गुजरा हुआ (न १२, ६७)।

ओहीर अक [नि + टा] मो जाना, निद्रा लेना (हे १, १२)। वक्त ओहीरमाण (णाया १, १, विपा २, १, कप)।

ओहीर अक [मट्] खिन्न होना। वक्त ओहीरन च मोधत (पात्र)।

ओहीरिअ वि [अवहीरित] तिरस्कृत, परिभूत (आचा २, १)।

ओहीरिअ वि [दे] १ उद्गीत। २ अवयव, खिन्न (दे १, १६३)।

ओहुअ वि [दे] अभिभूत, पराभूत (दे १, १५८)।

ओहुज देखो उवहुज। ओहुजइ (भवि)।

ओहुड वि [दे] विफल, निष्फल (दे १, १५७)।

ओहुपन वि [आक्रम्यमाण] जिमपर आक्रमण किया जाता हो वह (मे ३, १८)।

ओहुर वि [दे] १ अवनत, अवाट्-मुख (गउड)। २ खिन्न, नेद-प्राप्त। ३ सन्त, जन्त (दे १, १५७)।

ओहुह वि [दे] १ खिन्न। १ अवनत, नीचे झुका हुआ (भवि)।

ओहूणग न [अवयूनन] १ कम्प। २ उल्लङ्घन। ३ अपूर्व करण से भिन्न ग्रन्थ का नेद करना (आचा १, ६, १)।

ओहूय वि [अवयूत] उल्लङ्घित (वह १)।

॥ इय विरिपाइअसदमहणगवे ओआराइनहसकलणो रावमो तरगो नमतो।

तम्ममत्तीए अ नविहाओवि समत्तो ॥

क

क पु [क] १ प्राकृत वर्ण-माला का प्रथम व्यन्तार, जिमका उच्चारण-स्थान कण्ठ है (प्राप प्रमा)। २ ब्रह्मा (दे ५, २६)। ३ किए हुए पाप का स्वीकार, 'कनि कड मे पाप' (आवम)। ४ न. पानी, जल (न ६११)। ५ मुख (मुर १६, ५५)। देखो अ = क।

क देखो किम् (गउड, महा)।

कअवत देखो अय-अ = कृतवत् (प्राह ३५)।

कड वि व [कनि] कितना, 'त भते। कडदिस ओमानेइ' (भग)। २ अ वि [क] कतिपय, कईएक; 'मोएमि जाव तुज्झ, पियर कडएमु दियहेमु' (पउम ३४, २७)। ३ अ वि [पय] कतिपय, कईएक (हे १, २५०)। ४ अ [चिन्] कईएक (उप पृ ३)। ५ अ वि [थ] कितनावां, कौन संख्या का? (विसे

६१७)। ६ अय, अय, अय वि [पय] कईएक (पउम ६१, १६, उवा पड, कुमा हे १, २५०)। ७ अ वि [अपि] कईएक (काल, महा)। ८ अ वि [विच] कितने प्रकार का (भग)।

कड वि [कृतिन] १ विद्वान्, परिणत। २ पुण्यवान् (मूय २, १, ६०)।

कड अ [कचित्] कही, किसी जगह में (दसचू २, १४)।

कड अ [कदा] कब, किस समय?, 'एआई उण मज्झो थणभार कड ए उव्वहइ?' (गा ८०३)।

कड पु [कपि] कन्दर, वानर (पात्र)। २ दीव पुं [द्वीप] द्वीप-विशेष, वानर द्वीप (पउम ५५, १६)। ३ अय, अय पुं [ध्वज]

१ वानर-द्वीप के एक राजा का नाम (पउम ६ ८३)। २ अजुन (हे २, ६०)। ३ अहसिअ न [हसित] १ स्वच्छ आकाश में अचानक बोजली का दर्शन। २ वानर के समान विकृत मुँह का हँसना (भग ३, ६)।

कड देखो कवि = कवि (गउड, मुर १, २७)।

अर (अप) पु [कवि] श्रेष्ठ कवि (पिग)।

मा ओ [त्वि] कवित्व, कविपन (पड)।

राय पु [राज] १ श्रेष्ठ कवि (पिग)। २

'गउडवहो' नामक प्राकृत काव्य के कर्ता वासपतिराज-न कवि, 'आसि कइरायईवो वण्णइराओ ति पणइल्लो' (गउड ७६७)।

कडअ वि [कयिरु] खरीदनेवाला, ग्राहक, 'किण्णतो कडओ होइ, विक्किणतो य वाणिओ' (उत्त ३५, १४)।

(मुपा २६२) । २ वि खीचनेवाला, आकर्षक (उप पृ २७७) ।
 कडहणया स्त्री [कर्पणता] आकर्षण (उप पृ २७७)
 कडहाचिय वि [कर्पित] खीचवाया हुआ, बाहर निकलवाया हुआ (भवि) ।
 कडिअ वि [दे] बाहर निकला हुआ, गुजराती में 'काहेनु', तो दामीहि सुगउ व्व कडिअओ कुट्टिऊण वहि' (सिरि ६८६) ।
 कडिटा वि [कुट्ट] १ आकृष्ट, खीचा हुआ (परह १, ३) । २ पठित, उच्चारित (स १८२) ।
 कडडोऊड न [कर्पापरुप] खीचातान (उत्त १६) ।
 कड सक [कथ] १ कथ करना । २ उवाचना । ३ तपाना, गरम करना । कडइ (हे ४, २२०) । वक्त कडमाण (पि २२१) । कवक्त 'राया जपड एय मिचह रे रे कडततिल्लेण' (मुपा १२०), कडीअमाण (पि २२१) ।
 कडरुडकडें वि [कडरुडायमान] कड-कड आवाज करता (पउम २१, ५०) ।
 कडण न [कथन] कथ करना, 'रागगुणेण पावइ खडणकडणाड मजिठ्ठा' (कुप्र २२३) ।
 कडिअ न [दे] कडी (पिड ६२४) ।
 कडिअ वि [कथिन] १ उवाला हुआ । २ खूब गरम किया हुआ, 'कडिओ खलु निवरसो अइकडुओ एव जाएड' (आ २७, ओष १४७, मुपा ४६६) ।
 कडिआ स्त्री [दे] कडी, भोजन-विशेष (दे २ ६७) ।
 कडिण वि [कठिन] १ कठिन, कर्करा, कडिणग } कठोर, पल्प (परह १ ३, पाथ) ।
 २ न तृण-विशेष (आचा २, ३, ३) । ३ पर्ण, पत्ता (परह २, ५) ।
 कडोर वि [कठोर] १ कठिन, परप, निष्ठुर । २ पु इस नाम का एक राजा (पउम ३२, २३) ।
 कण सक [कवण] शब्द करना, आवाज करना । कणइ (हे ४, २३६) । वक्त कणत (मुर १० २१८, वज्जा ६६) ।

कण सक [कण] आवाज करना । कणइ (हे ४, २३६) ।
 कण पु [कण] १ कण, लेश, 'गुणकणमवि परिकहिउ न नक्कइ' (मार्घ ७६) । २ विकीर्ण दाना (कुमा) । ३ वनस्पति-विशेष, (परण १) । ४ पु एक म्लेच्छ देश (राज) । ५ ग्रह-विशेष, ग्रहाधिष्ठायक देव-विशेष (ठा २, ३—पत्र ७७) । ६ तरङ्गुल, ओदन (उत्त १२) । ७ कनिक (आचा २, १) । ८ विटु, 'विटुअ कणअ' (पाप) । ९ अ वि [वत्] विन्दुवाला (पाथ) । [कुडग] पुं [कुण्डक] ओदन की बनी हुई एक भक्ष्य वस्तु, 'कणकुडग चड्ठाण विटु भुजइ सूर्यो' (उत्त १२) । १० पुपलिया स्त्री [पूपलिका] भोजन-विशेष, कणिक (आटा) की बनाई हुई एक खाद्य वस्तु (आचा २, १) । ११ भक्ष्य पु [भक्ष] वैशेषिक मत का प्रवर्तक एक ऋषि (राज) । १२ विचि स्त्री [वृत्ति] भिक्षा, भीख (मुपा २३४) । १३ वियाणग पु [चितानक] देखो कणग-वियाणग (मुज्ज २०, इक) । १४ संतानय पु [संतानक] देखो कणग-सनाणय (इक) । १५ इ पु [इ] वैशेषिक मत का प्रवर्तक ऋषि (विसे २१६४) । १६ यण वि [नीर्ण] विन्दुवाला (पाथ) ।
 कण पु [कण] शब्द, आवाज (उप पृ १०३) ।
 कणइकेड पु [कनिकेतु] इस नाम का एक राजा (दस) ।
 कणइपुर न [कनकिपुर] नगर-विशेष, जो महाराज जनक के भाई कनक की राजधानी थी (ती) ।
 कणडर पु [कर्णिकार] कणेर, वनस्पति-विशेष (परण १—पत्र ३२) ।
 कणइल पुं [दे] शुक, तोता, मुगा, मुआ (दे २, २१, पड, पाथ) ।
 कणई स्त्री [दे] लता, बल्ली (दे २, २५ पड, म ४१६, पाथ) ।
 कणग न [कनङ्गर] पापाण का एक प्रकार का हथियार (विपा १, ६) ।
 कणकण पु [कणकण] कण-कण आवाज (आवम) ।

कणकणकण अक [दे] कण-कण आवाज करना । कणकणकणति (पउम २६, ५३) ।
 वक्त कणकणकणत (पउम ५३, ८६) ।
 कणकणग पु [कनकनक] ग्रह-विशेष, ग्रहाधिष्ठायक देव विशेष (ठा २, ३) ।
 कणकणिअ वि [कणकणित] कण-कण आवाजवाला (कप्प) ।
 कणखल न [दे] उद्यान-विशेष (सट्टि ६ टी) ।
 कणग वि [कानक] सुवर्ण रस पाया हुआ (कपडा) (आचा २, ५, १, ५) । १ पट्ट वि [पट्ट] सोने का पट्टावाला (आचा २, ५, १, ५) ।
 कणग देखो कण (कप्प) ।
 कणग [दे] देखो कणय = (दे) (परह १, २) ।
 कणग पु [कनक] १ ग्रह विशेष, ग्रहाधिष्ठायक देव विशेष (ठा २, ३—पत्र ७७) । २ रेखा-सहित ज्योति-पिण्ड, जो आकाश से गिरता है (ओष ३१० भा, जी ६) । ३ विन्दु । ४ शलाका, सलाई (राज) । ५ घृतवर द्वीप का अधिपति देव (सुज १६) । ६ विल्व वृक्ष, बेल का पेड़ (उत्तनि ३) । ७ न. सुवर्ण, सोना (स ६४, जी ३) । ८ कत वि [कान्त] १ कनक की तरह चमकता (आचा २, ५, १) । २ पु देव विशेष (दीव) । ३ कुड न [कूट] १ पर्वत-विशेष का एक शिखर (ज ४) । २ पु. स्वर्ण मय शिखरवाला पर्वत (जीव ३) । ३ केड पुं [केतु] इस नाम का एक राजा (राया १, १४) । ४ गिरि पु [गिरि] १ मेरु पर्वत । २ स्वर्ण-प्रचुर पर्वत (ओष) । ३ उभय पु [ध्वज] इस नाम का एक राजा (पचा ५) । ४ पुर न [पुर] नगर विशेष (विपा २, ६) । ५ प्रभ पु [प्रभ] देव-विशेष (मुज्ज १६) । ६ प्रभा स्त्री [प्रभा] १ देवी-विशेष । २ 'ज्ञाना-धर्मसूत्र' का एक अध्ययन (राया २, १) । ३ कुलिअ न [पुष्पित] जिममे सोने के फूल लगाए गए हो ऐसा वस्त्र (निचू ७७) । ४ माला स्त्री [माला] १ एक त्रिधाघर की पुत्री (उत्त ६) । २ एक स्वनाम व्यात माघी (मुर १५, ६७) । ३ रह पु [रथ] इस नाम का एक राजा (ठा ७, १०) । ४ लया स्त्री

कंकडुअ } पु [काङ्कडु] दुर्भेय माप,
कंकडुग } उरद की एक जाति, जो कभी
पकता ही नहीं, 'कंकडुगो विव मामो, सिद्धि
न उवेइ जस्त ववहारो' (वव ३)।
कंकण न [कङ्कण] हाथ का आभरण-विशेष,
कंगन (आ २८, गा ६६)।
कङ्गण पु [दे] चतुरिन्द्रिय जन्तु की एक
जाति (उत्त ३६, १४७)।
कङ्कणी स्त्री [कङ्कण] हाथ का आभरण-
विशेष, 'मयमेव मकणीए धणीए त ककणी
वढा' (कुप्र १८५)।
कङ्कति पु [कङ्कति] गाम-विशेष (राज)।
कङ्कतिज्ज पुंस्त्री [काङ्कतीय] माघराज वंश मे
उत्पन्न (राज)।
कङ्कय पु [कङ्कत] १ नागवला-नामक ओपधि।
२ सर्प की एक जाति। ३ पुंस्त्री कघा, केश
सँवारने का उपकरण (सूत्र १, ४)।
कङ्कलास पु [कङ्कलाम] कर्कोट, साप की
एक जाति (पात्र)।
कङ्कसी स्त्री [दे] कयी, केश सँवारने का
उपकरण (ती १५)।
कङ्काल न [कङ्काल] चमडी और माम रहित
अस्थि-पञ्जर, 'कङ्कालवेसाए' (आ १६),
'अह नरकरङ्ककालसकुले भोसणममाणे'
(वज्रा २०, दे २, ५३)।
कङ्कधंस पु [कङ्कधस] वनस्पति-विशेष,
(पराण ३३)।
कङ्किल्लि देखो ककेल्लि (मुपा ५५६, कुमा)।
कङ्कुण देखो कङ्कण = दे (सुख ३६, १४७)।
कङ्केलि पु [कङ्केलि] अशोक वृक्ष (मै ६०
विक्र २८)।
कङ्केलि पुं [दे कङ्केलि] अशोक वृक्ष (दे २,
१२, गा ४०४, सुपा १४०, ५६२, कुमा)।
कङ्कोड न [दे. कर्कोट] १ वनस्पति विशेष,
ककरैल, एक प्रकार की सब्जी, जो वर्षा में
ही होती है (दे २, ७, पात्र)। २ पु एक
नागराज। ३ साप की एक जाति (हे १,
२६, पङ्)।
कङ्कोल पु [कङ्कोल] १ कङ्कोल, शीतल-चीनी
के वृक्ष का एक भेद। २ न उम वृक्ष का
फल, 'सकपूरेलाककोल तवोल' (उप १०३१
टी)। देखो ककोल।

कंख सक [काङ्ख] चाहना, वाछना। कखइ
(हे ४, १६२, पङ्)।
कंखण न [काङ्खण] नीचे देखो (धर्म २)।
कंखा स्त्री [काङ्खा] १ चाह, अभिलाष (सूत्र
१, १५)। २ आसक्ति, गृद्धि (भग)। ३
अन्य धर्म की चाह अथवा उममे आसक्ति
रूप सम्यक्त्व का एक अतिचार (पडि)।
°मोहणिज्ज न [°मोहनोय] कर्म विशेष
(भग)।
कंखि वि [काङ्खिन्] चाहनेवाला (आचा,
गउड, मुर १३, २४३)।
कंखिअ वि [काङ्खित] १ अभिलषित। २
काक्षा युक्त, चाहवाला (उवा, भग)।
कंखिर वि [काङ्खित्] चाहनेवाला, अभि-
लाषी (गा ५५, सुपा ५३७)।
कङ्गणी स्त्री [दे] वल्ली-विशेष, कागनी
(पराण १)।
कङ्गु स्त्री [कङ्गु] १ धान्य विशेष, काँगन या
काँगो (ग ७, दे ७, १)। २ वल्ली-विशेष
(पराण १)।
कङ्गुलिया स्त्री [दे कङ्गुलिका] जिन-मन्दिर
की एक बड़ी आशातना, जिन-मन्दिर में या
उसके नजदीक लघु या वृद्ध नीति का करना
(धर्म २)।
कचण पुन [काञ्चन] १ एक देव-विमान
(देवेन्द्र १३१)। २ वि. सोने का, सुवर्ण का,
'कचण खड' (वज्रा १५८)। °पह न [°प्रभ]
१ रत्न-विशेष। २ वि रत्न-विशेष का बना
हुआ (देवेन्द्र २६६)। °पायव पु [°पादप]
वृक्ष-विशेष (स ६७३)।
कचण पुं [काञ्चन] १ वृक्ष-विशेष। २ स्व-
नाम-ख्यात एक श्रेष्ठी (उप ७२८ टी)। ३
न सुवर्ण, सोना (कप्प)। °उर न [°पुर]
कलिग देश का एक मुख्य नगर (आक)।
°कूड न [°कूट] १ सौमनस-नामक वक्षस्कार
पर्वत का एक शिखर (ठा ७)। २ देव-
विमान-विशेष (सम ६२)। ३ रुचक पर्वत
का एक शिखर (ठा ८)। °कअई स्त्री
[°केतकी] लता-विशेष (कुमा)। °तिलय
न [°तिलक] इम नाम का विद्याधरो का
एक नगर (इक)। °त्यल न [°स्थल] स्व-
नाम ख्यात एक नगर (दस)। °वलाणग न
[°वलानक] चौरासी तीर्या में एक तीर्य का

नाम (राज)। °सेल पु [°शैल] मेरु-
पर्वत (कप्प)।
कंचणग पुं [काञ्चनक] १ पर्वत-विशेष
(सम ७०)। २ काञ्चनक पर्वत का निवासी
देव (जीव ३)।
कचणा स्त्री [कञ्चना] स्वनाम ख्यात एक
स्त्री (पराह १, ४)।
कचणार पु [कञ्चनार] वृक्ष-विशेष (पउम
५३, ७६, कुमा)।
कंचणिया स्त्री [काञ्चनिका] रुद्राक्ष माला
(श्रीप)।
कचा (पे) देखो कण्णा (प्राप्र)।
कंचि स्त्री [काञ्चि, °ञ्ची] १ स्वनाम-ख्यात
कची } एक देश (कुमा)। २ कटी-मेखला,
कमर का आभूषण (पात्र)। ३ स्वनाम-ख्यात
एक नगर (सुपा ४०६)।
कची स्त्री [दे] मुराल के मुँह में रक्खी जाती
लोहे की एक वलयाकार चीज, सामी या साम
(दे २, १)।
कंचीरय न [दे] पुप विशेष (वज्रा १०८)।
कचीरय न [काञ्चीरत] सुरत-विशेष (वज्रा
१०८)।
कचु } पु [कञ्चुक] १ स्त्री का स्तनाच्छा-
कचुअ } दक वस्त्र, चोली (पउम ६, ११,
पात्र)। २ सर्प-स्वक्, साप की कंचली, कंचुली
(विसे २५१७)। ३ वर्म, कवच (भग ६, ३३)।
४ वृक्ष-विशेष (हे १, २५, ३०)। ५ वस्त्र,
कपडा, 'तो उज्झिअण लज्जा (लज्ज), ओइघड
कचुय सरीराओ' (पउम ३४, १५)।
कचुइ पु [कञ्चुकिन्] १ अन्त पुर का प्रती-
हार, चपरासी (गाया १, १, पउम ८, ३६,
सुर २, १०६)। २ साँप (विसे २५१७)।
३ यव, जव। ४ चणक, चना। ५ जुआर,
अगहन में होनेवाला एक प्रकार का अन्न,
जोन्हरी। ६ वि जिमने कवच धारण किया
हो वह (हे ४, २६३)।
कचुइअ वि [कञ्चुकित] कञ्चुकवाला (कुमा,
विपा १, २)।
कचुइज्ज पु [कञ्चुकीय] अन्त पुर का प्रती-
हार (भग ११, ११)।
कचुइज्जत वि [कञ्चुफायमान] कञ्चुक की
तरह आचरण करता, 'रोमचकचुइज्जत-
सव्वगतो' (सुपा १८१)।

कणेडिआ स्त्री [दे] गुज्जा, घुँघची (दे २, २१)।

कणेर देखो कणिगआर (हे १, १६८, पि २५८)।

कणेरु १ स्त्री [करेणु] हस्तिनी, हथिनी
कणेरुया १ (हे २ ११६, कुमा, णाया १,
१—पत्र ६४)।

कणोवअ न [दे] गरम किया हुआ जल, तेन
वगैरह (दे २, १६)।

कणग पु [-ज्जा] रागि-विशेष, कन्या राशि,
'बुहो य करणम्मि वट्टए उच्चो' (पउम १७,
८१)।

कणण पु [कण्व] इस नामका एक परिव्राजक,
ऋषि विशेष (औप अभि २६२)।

कणण पु [कर्ण] १ कोटि भाग, अग्राश (सुज
१, १)। २ एक म्लेच्छ-जानि (मृच्छ १५२)।

कणण पुन [कर्ण] १ कान, श्रवण, श्रोत्र,
'करणाई' (पि २५८, प्रामू २)। १ पु अङ्ग

देश का इस नाम का एक राजा, युधिष्ठिर
का बड़ा भाई (णाया १, १६)। ३ काना,

वस्तु के छोर का एक अंग (अग० सूत्र ५१,
६६)। ०उर, ०ऊर न [०र] कान का

आभूषण (प्राप्र, हका ४५)। ०गइ स्त्री
[०गति] मेरु-मम्बन्वो एक उरि (जो १०)।

०जयमिहदेव पु [०जयसिहदेव] गुजरात
देश का वारहवीं शताब्दी का एक यशस्वी

राजा (नी)। ०दव पु [०देव] विक्रम की
नेरहवीं शताब्दी का मोगल-देशीय एक राजा

(नी)। ०वार पु [०वार] नाविक, नौयामक
(णाया १, ८)। ०पाउरण पु [०पावरण]

१ इस नाम का एक अन्तर्द्वीप। २ उस अन्त-
द्वीप का निवासी (परए १)। ०पावरण

देवा ०पाउरण (इक)। ०पीठ न [०पीठ]
कान का एक प्रकार का आभूषण (ठा ६)।

०पूर देखो ०ऊर (णाया १, ८)। ०रवा स्त्री
[०रवा] नदी-विशेष (पउम ४०, १२)।

०वालिथा स्त्री [०वालिका] कान के ऊपर
भाग में पहना जाता एक प्रकार का आभूषण

(ओप)। ०वेहणग न [०वेधनक] उत्तम-
विशेष, कर्णवेधोत्तम (ओप)। ०मककुली स्त्री

[०राण्डुली] १ कान का छिद्र। २ कान की
तवाई (णाया १, ८)। ०सोहण न

[०शोधन] कान का मेल निकालने का एक
उपकरण (निचू ४)। ०हार पु [०वार] देखो

०वार (अचू २४, स ३२७)। देखो कन्न।
कणणआर देखो कणिगआर (प्राकृ ३०)।

कणणउज्ज पु [कान्यकुब्ज] १ देश-विशेष,
दोआब, गङ्गा और यमुना नदी के बीच का

देश। २ न उम देश का प्रधान नगर, जिसको
आजकल 'कन्नौज' कहते हैं (ती, कप्पू)।

कणणवाल न [दे] कान का आभूषण—
कुण्डल वगैरह (दे २, २३)।

कणणगा देखो कन्नगा (आव ४)।
कणणल्लुरी स्त्री [दे] गृह-गोधा, छिपकली (दे

२, १६)।
कणणटय (अप) देखो कणग (हे ४, ४३२

४३३)।
कणणल (अप) वि [कर्णाट] १ देश-विशेष,

कर्णाटक। २ वि उम देश का निवासी
(पिंग)।

कणणलोयण पुन [कर्णलोचन] देखो कणि-
लायण (सुज १०, १६)।

कणणल पुन [कर्णल] ऊपर देखो (सुज १०,
१६ टी)।

कणणस वि [कन्यम] अथम जवन्म (उन
५)।

कणणस्सरिय वि [दे] १ कानी नगर में देवा
हुआ। २ न कानी नगर में देखना (दे २,

२४)।
कणणा स्त्री [कन्या] १ ज्योतिष शास्त्र-प्रसिद्ध

एक राशि। २ कन्या, लडकी, कुमारी (कप्पू,
पि २८२)। ०चोलय न [०चोलक] धान्य-

विशेष, जवनाल (एदि)। ०णय न [०नय]
चोल देश का एक प्रधान नगर, 'चोलदेवाव-

यसे करणारायनयरे' (ती)। ०लिय न
[०लीक] कन्या के विषय में बोला जाता

भूठ (परह १, ३)।
कणणाआस न [दे] कान का आभूषण—

कुण्डल वगैरह (दे २, २३)।
कणणाइधण न [दे] कान का आभूषण—

कुण्डल वगैरह (दे २, २३)।
कणणाड पु [कर्णाट] १ देश-विशेष, जो

आजकल 'कर्णाटक' नाम से प्रसिद्ध है। २

वि उम देश में उत्पन्न, वहाँ का निवासी
(कप्पू)।

कणगाम पु [दे] पर्यन्त, अन्त-भाग (दे २,
१८)।

कणिग पु [कर्णि] एक नरक-न्याय (देवेन्द्र
२६)।

कणिगआ स्त्री [कर्णिगा] १ पद्म-उदर, कमल
का बीज-कोप (दे ६, १८०)। २ कोण,

अन्न (अणु, ठा ८)। ३ शालि वर्ग-हू के बीज
का मुख-मूल तुल्य मुख (ठा ८)।

कणिगआर पु [कर्णिगार] १ वृक्ष विशेष,
कनेर का गच्छ (कुमा हे २ ६५, प्राप्र)।

२ गोशालक का एक भक्त (मग १४, १०)।
३ न कनेर का फूल (णाया १, ६)।

कणिगलायण न [कर्णिगलायन] नन्न-विशेष
का एक गोत्र (इक)।

कण्णारह देखो कन्नारह।
कण्णुपल न [कर्णोत्पल] कान का आभूषण-

विशेष (कप्पू)।
कणेर देखो कणिगआर (हे १, १६८)।

कणोन्धडिआ स्त्री [दे] दूसरे की बात
उपटुप नुननेवाली स्त्री (दे २, २२)।

कणोड्ड स्त्री [दे] स्त्री को पहनने का
कणोड्डिआ वस्त्र विशेष, नीरङ्गी (दे

२, २० टी)।
कणोडत्ता [दे] देखो कणोन्धडिआ (दे

२, २२)।
कणोपल देखो कणुपल (नाट)।

कणोही स्त्री [दे] १ चञ्चु, चोच, पक्षी का
ठोर, ठोठ। २ अथर्वतम, गेहर, भूषण विशेष

(दे २ ५७)।
कणोवगणिगआ स्त्री [कर्णोवगणिगा]

कर्णाकर्णी, कानाकानी (दे १ ६१)।
कणोस्सरिय [दे] देखो कणणस्सरिय

(दे २, २४)।
कण्ह पु [कृष्ण] कन्द विशेष (उत्त ३६,

६६)।
कण्ह पु [कृष्ण] १ श्रीकृष्ण, माता देवकी

और पिता वसुदेव में उत्पन्न नववां वामुदेव
(णाया १, १६)। २ पाचवां वामुदेव और

वलदेव के पूर्व जन्म के गुरु का नाम (मम
१५३)। ३ देशावकाशिक व्रत को अतिचरित

वर्षों तक जैनी दीक्षा का पालन कर अन्त में उसका त्याग कर दिया था (गाथा १, १६, उव)।

कडरीय वि [कण्डरीक] १ अशोभन, असुन्दर। २ अप्रवान (सूत्रनि १४७, १५३)।
कडलि } स्त्री [कन्दरिका] गुफा, कन्दरा
कडलिजा } (पि ३३३, हे २, ३८, कुमा)।
कडवा स्त्री [कण्डवा] वाय-विशेष (राय)।
कडार सक [उत् + क] चुदना, छील-छाल कर ठीक करना। सकृ।

‘गूण दुवे इह पमावडणी जन्मि,
जे देहणम्मवणजोव्वणदाणदक्खा।

एवँ घडेइ पढम कुमरीणमग,
कडारिऊण पमडेइ पुरो दुईओ’ (कप्पू)।

कडावेल्ली स्त्री [काण्डवल्ली] वनस्पति-विशेष (पण १)।

कडिअ वि [कण्डित] साफ-सुथरा किया हुआ (दे १, ११५)।

कडियायण न [कण्डिकायन] वैशाली (विहार) का एक चैत्य (भग १५)।

कडिल पुं [काण्डिल्य] १ कारिडल्य-गोत्र का प्रवर्तक ऋषि-विशेष। २ पुत्री कारिडल्य गोत्र उत्पन्न। ३ न. गोत्र-विशेष, जो माण्डव्य गोत्र की एक शाखा है (ठा ७-पत्र ३६०)।
‘ायण पु [‘ायन] स्वनाम स्यात् ऋषि-विशेष (चद १०)।

कंडु देखो कडू (राज)।

कडु देखो कटु (सूत्र १, ५)।

कंडुअ सक [कण्डूय] खुजवाना। कंडुअइ (हे १, १२१, उव), कंडुअए (पि ४६२)।
वक्र कंडुअत (गा ४६०), कंडुअमाण (प्रासू २८)।

कंडुअ पुं [कान्दविक] हलवाई, मिठाई बेचने-वाला, राया चिसेइ, कयो कंडुयस्स जल-कतरणसपत्ती ? (आवम)।

कंडुअ } पुं [कण्डुक] गेंद (दे ३, ५६,
कडग } राज)।

कंडुजुय वि [काण्डजु] वाण की तरह सीधा (म ३१७, गा ३५२)।

कंडुयग वि [कण्डूयक] खुजानेवाला (श्रीप)।
कंडुयण न [कण्डूयन] १ खुजली, खाज, पामा, रोग-विशेष। २ खुजवाना, ‘पामागहि-

यस्स जहा, कंडुयणं दुक्खमेव मूढस्स’ (स ५१५, उव २६४ टी; गउड)।

कंडुयय देखो कंडुयग, ‘अकडुयएहि’ (पणह २, १—पत्र १००)।

कडुरु पुं [कण्डुरु] स्वनाम-ख्यात एक राजा, जिसने रामचन्द्र के भाई भरत के साथ जैनी दीक्षा ली थी (पउम ८५, ५)।

कडू स्त्री [कण्डू] १ खुजलाहट, खुजवाना (गाथा १, ५)। २ रोग-विशेष, पामा, खाज (गाथा १, १३)।

कडूइ स्त्री [कण्डूति] ऊपर देखो (गा ५३२, सुर २, २३)।

कडूइअ न [कण्डूयित] खुजवाना (सूत्र १, ३, ३, गा १८१)।

कडूय देखो कडुअ = कण्डूय्। कडूयइ (महा)।
वक्र. कडूयमाण (महा)।

कडूयग वि [कण्डूयक] खुजवानेवाला (ठा ५, १)।

कंडूयण देखो कडुयण (उप २५६, सुपा १७६, २२७)।

कडूयय देखो कडूयग (महा)।

कडूर पु [दे] वक्र, वगुना (दे २, ६)।

कडूल वि [कण्डूल] खाजवाला, कण्डू-युक्त (कुमा)।

कत सक [कृत्] १ काटना, छेदना। २ काटना, चरखे में सूता बनाना, ‘सल्लं कतति अप्पणो’ (सूत्र १, ८, १०)। कतामि (पिडमा ३५)।

कंत वि [कान्त] १ मनोहर, सुन्दर (कुमा)।
२ अभिलषित, वाञ्छित (गाथा १, १)। ३ पु पति, स्वामी (पात्र)। ४ देव विशेष (सुज १६)। ५ न कान्ति, प्रभा (आचा २, ५, १)।

कत वि [कान्त] गत, गुजरा हुआ (प्राप)।

कता स्त्री [कान्ता] १ स्त्री, नारी (सुर ३, १४, सुपा ५७३)। २ रावण की एक पत्नी का नाम (पउम ७४, ११)। ३ एक योग-दृष्टि (राज)।

कतार न [कान्तार] १ अरण्य, जंगल (पात्र)। २ दुष्ट, दूषित। ३ निराश्रय। ४ पागल (कप्पू)।

कंतार पुन [कान्तार] जल-फलादि-रहित अरण्य, ‘कतारो’ (सम्मत १६६)।

कति स्त्री [कान्ति] १ तेज, प्रकाश (सुर २, २३६)। २ शोभा, सौन्दर्य (पात्र)। ३ इस नाम की रावण की एक पत्नी (पउम ७४, ११)। ४ अहिंसा (पणह २, १)। ५ इच्छा।
६ चन्द्र की एक कला (राज, विक १०७)।
‘पुरी स्त्री [‘पुरी] नगरी-विशेष (ती)। ‘म,
‘ह वि [‘मन्] कान्ति युक्त (आवम, गउड, सुपा ८, १८८)।

कति स्त्री [कान्ति] १ परिवर्तन, फेरफार।
२ गमन, गति (नाट—विक्र ६०)।

कतु पु [दे] काम, कामदेव (दे २, १)।

कथक } पु [कन्थक] अश्व की एक जाति
कथग } (ठा ४, ३, उत्त २३), ‘जहा से
कथय } कवोयाए आइन्ने कथए सिया’
(उत्त ११)।

कथा स्त्री [कन्था] कथड़ी, गुदड़ी, पुराने वस्त्र से बना हुआ ओढ़ना (हे १, १८७)।

कथार पुं [कन्थार] वृक्ष विशेष (उप २२० टी)।

कथारिया } स्त्री [कन्थारिका, ‘री] वृक्ष-
कथारी } विशेष (उप १०३१ टी)। ‘वण
न [‘वन] उजैन के समीप का एक जंगल
जहा अक्कीमुकुमार-नामक जैन मुनि ने अन-
शन व्रत किया था (आक)।

कथेर पु [कन्थेर] वृक्ष-विशेष (राज)।

कन्थेरी स्त्री [कन्थेरी] कण्टकमय वृक्ष-विशेष (उर ३, २)।

कद अक [कन्द] काँदना, रोना। कदइ (पि २३१)। भूका कदिमु (पि ५१६)। वक्र
कदत (गा ५८४), कन्दमाण (गाथा १, १)।

कद वि [दे] १ दृढ़, मजबूत। २ मन, उन्मत्त। ३ न. स्तरण, आच्छादन, (दे २, ५१)।

कंद पु [कन्द, कन्दि] व्यन्तर देवों की एक जाति (ठा २, ३—पत्र ८५)।

कंद पु [कन्द] १ गृधेदार और विना गजे की जड़, जमीकन्द, सूगन्ध शकरकन्द, विलारीकन्द, शोल, गाजर, लहसुन वगैरह (जी ६)। २ मूल, जड़ (गउड)। ३ छन्द विशेष (पिंग)।

कद पुं [कन्द] कार्तिकेय, पडानन (कुमा हे २, ५, पड)।

कद (मा) देखो कड = कृत (प्राक् १०३)
 कदग देखो कयग (हम्मीर ३४)।
 कदण देखो कडग = कदन (कुमा)।
 कडली देखो कयली (पराण १—पत्र ३२)।
 कडु देखो कड = क्रुत (प्राक् १२)।
 कडुअ (शौ) अ [कृत्वा] करके (प्राक् ८८)।
 कडुडया स्त्री [दे] बल्ली-विशेष, कदहू,
 लौकी (पराण १—पत्र ३३)।
 कडुशण (मा) वि [कडुण] थोडा गरम
 (प्राक् १०२)।
 कदम पुन [कदम] कीचड़, काँदो (कुप्र
 ६६)। ^१ल वि [ल] कीचड़वाला (सूअनि
 १६१)।
 कदम १ पु [कदम] १ कदो, कीच (पराह
 कदमग १ ४)। २ देव विशेष, एक नाग-
 राज (भग ६, ३)।
 कदमिअ वि [कदमित] पङ्क-युक्त, कीचड़
 वाला (मे ७, २०, गडड)।
 कदमिअ पु [दे] महिप, मैसा (दे २, १५)।
 कन्न देखो कण्ण = कर्ण (सुर १२, सुर २,
 १७१, सुपा ५२४, धम्म १२ टी ठ ४,
 २, सुपा ६५, पाअ)। ^१यस पु [वतस]
 कान का आभूषण (पाअ)।
 कन्न देखो कण्ण (कुलक)। ^१एव देखो कण्ण-
 देव (कुप्र ४)। ^१वट्टि, ^१वट्टि स्त्री [वृत्ति]
 किनारा, अग्र भाग (कुप्र ३३१, ३३४,
 विचार ३२७ पव १२५)।
 कन्नउज्ज देखो कण्णउज्ज (कुमा)।
 कन्नगा स्त्री [कन्यका] कन्या, लडकी,
 कुमारी (सुर ३, १२२, महा)।
 कन्नम नि [कर्नायस्] कनिष्ठ, जघन्य
 'कन्नममज्झिमजेट्ठा' (पव १५७)।
 कन्ना देखो कण्णा (सुर २, १५४, पाअ)।
 कन्नाड देखो कण्णाड (भवि)।
 कन्नारिय वि [दे] विभूषित अलकृत, 'आएहे'
 कन्नारिउ गडडु' (भवि)।
 कन्नारिह पु [कर्णीरथ] एक प्रकार की शिविका,
 घनाव्य का एक प्रकार का वाहन (गाया
 १ ३)।
 कन्नुटड (अप) पु [कर्ण] कान, श्रवणेन्द्रिय
 (कुमा)।
 कन्नरय देवो कण्णिआर (कुमा)।

कन्नोली [दे] देखो कण्णोली (पाअ)।
 कन्ह देखो कण्ह (मुपा ५६६, कप्प)। ^१सह
 न [सह] जैन साधुओं के एक कुल का
 नाम (कप्प)।
 कपय देखो कमन्व (प्राक् १५)।
 कपिजल पु [कपिजल] पक्षि-विशेष—
 चातक। २ गौरा पक्षी (पराह १, १)।
 कपूर देखो कपूर (आ २७)।
 कप्प अक [कप्प] १ समर्थ होना। २
 कल्पना, काम में आना। ३ सक. काटना,
 छेदना। कप्पइ कप्पए (कप्प, महा, पिग)।
 कमं कप्पिजइ (हे ४, ३५७)। कृ कप्प-
 णिज्ज (आव ६)। प्रयो कप्पावेज्ज (निब्व
 १७)। वहु कप्पावत (निब्व १७)।
 कप्प सक [कल्पय] १ करना, बनाना।
 २ वर्णन करना। ३ कल्पना करना। वहु
 कप्पेनाण (विपा १, १)। सक्क कप्पेऊण
 (पचव १)।
 कप्प वि [कल्पय] ग्रहण-योग्य (पचा १२)।
 कप्प पु [कल्प] १ प्रक्षालन (पिड २६६,
 २७१, ३०५, गच्छ २, ३२)। २ आचार,
 व्यवहार (वव १ पव ६६)। ३ दशाश्रु-
 तस्कन्व सूत्र। ४ कल्प-सूत्र। ५ व्यवहार
 सूत्र (वव १)। ६ वि उचित (पचा १८,
 ३०)। ^१काल पु [काल] प्रभूत काल
 (सूत्र १, १, ३, १६)। ^१वर वि [धर]
 कल्प तथा व्यवहार सूत्र का जानकार
 (वव १)।
 कप्प पु [कल्प] १ काल-विशेष, देवों के दो
 हजार युग परिमित समय, 'कम्माण कप्पिआण
 काहि कप्पनरेनु णिव्वेस' (अच्छु १८,
 कुमा)। २ शास्त्रोक्त विधि, अनुष्ठान (ठा
 ६)। ३ शास्त्र-विशेष (त्रिसे १०७५, सुपा
 ३२४)। ४ कम्बल-प्रमुख उपकरण (शोध
 ४०)। ५ देवों का स्थान, बारह देवलोक
 (भग ५, ४, ठा २, १०)। ६ बारह देवलोक
 निवासी देव, वमानिक देव (सम २)। ७
 वृक्ष-विशेष, मनोवाञ्छित फल को देनेवाला
 वृक्ष, कल्प-वृक्ष (कुमा)। ८ शस्त्र-विशेष,
 'अमिलेडयकप्पतामरविहत्था' (पउम ६,
 ७३)। ९ अविवास, स्थान (वृह १)। १०
 राजा नन्द का एक मन्त्री (राज)। ११ वि.

समर्थ, शक्तिमान् (गाया १, १३)। १२
 सदृश तुल्य, 'केवलकप्प' (आवम, पराह २,
 २)। ^१ट्ट पु [स्थ] बालक, बच्चा (वव
 ७)। ^१ट्टिइ स्त्री [स्थिति] साधुओं का
 शास्त्रोक्त अनुष्ठान (वृह ६)। ^१ट्टिया स्त्री
 [स्थिका] १ लडकी, बालिका (वव ४)।
 २ तरुण स्त्री (वृह १)। ^१ट्टि स्त्री [स्था]
 १ बालिका, लडकी (वव ६)। २ कुलाङ्गना,
 कुल वधू (वव ३)। ^१तरु पु [तरु] कल्प-
 वृक्ष (प्रासू १६८, हे २, ७६)। ^१ट्टी स्त्री
 [स्त्री] देवी, देव-स्त्री (ठा ३)। ^१ट्टुम,
^१ट्टुम पु [ट्टुम] कल्प-वृक्ष (घण ६,
 महा)। ^१पायव पु [पाडप] कल्प-वृक्ष (पडि,
 सुपा ३६)। ^१पाहुड न [प्राभृत] जैन
 ग्रन्थ विशेष (ती)। ^१रुक्ख पु [वृक्ष]
 कल्प-वृक्ष (पराह १, ४)। ^१वडिसय न
 [वतसक] १ विमान-विशेष। २ विमान-
 वाली देव-विशेष (निर)। ^१वडिसया स्त्री
 [वतसिका] जैन ग्रन्थ-विशेष, जिसमें कल्पा-
 वतसक देव-विमानों का वर्णन है (राय, निर
 १)। ^१विडवि पु [विटपिन्] कल्प-वृक्ष
 (सुपा १२६)। ^१साल पु [शाल] कल्प-वृक्ष
 (उप १४२ टी)। ^१साहि पु [साखिन्]
 कल्प-वृक्ष (सुपा ३६६)। ^१सुत्त न [सूत्र]
 श्रीभद्रबाहु स्वामि-विरचित एक जैन ग्रन्थ
 (कप्प, कम)। ^१सुय न [श्रुत] १ ज्ञान-
 विशेष। २ ग्रन्थ-विशेष (एवि)। ^१डिअ पु
 [तीत] उत्तम जाति के देव-विशेष, त्रैवेयक
 और अनुत्तर विमान के निवासी देव (पराह
 १, ५ पराण १)। ^१ग पु [ग] विधि को
 जाननेवाला (कम, औप)। ^१य पु [य]
 कर, बुद्धी, राज-देव भाग (विपा १, ३)।
 कप्पत पु [कल्पान्त] प्रलय-काल, संहार-
 समय (कप्प)।
 कप्पड पु [कपेट] १ कपडा, वस्त्र (पउम
 २५, १८, सुपा ३४४, स १८०)। २ जोरों
 वस्त्र, लकुटाकार कपडा (पराह १, ३)।
 कप्पाडअ वि [कार्पटिक] भिक्षुक, भोखमगा
 (गाया १, ८, सुपा १३८, वृह १)।
 कप्पडिअ वि [कार्पटिक] कपटी, मायावी
 (गाया १, ८—पत्र १५०)।
 कप्पण न [कल्पन] छेदन, काटना (सुपा
 १३८)।

कस न [कास्य] १ धातु-विशेष, कामा । २ वायु विशेष । ३ परिमाण विशेष । ४ जल पीने का पात्र, प्याला (हे १, २६, ७०) ।
 °ताल न [°ताल] वायु-विशेष (जीव ३) ।
 °पत्ती, °पाई स्त्री [°पात्री] कासा का बना हुआ पात्र-विशेष (कप्प, ठा ६) । °पाय न [°पात्र] कामा का बना हुआ पात्र (दम ६) ।

कसार पु [दे] कसार, एक प्रकार की मिठाई, 'ता करेज्जण कसारं तालपुडमंजुय चैग विसमोयग गोमे उवरोमि एयाण' (स १८७) ।

कसारी स्त्री [दे] त्रीन्द्रिय धुद्र जन्तु की एक जाति (जी १८) ।

कसाल पु [कास्याल] वायु-विशेष (हे २, ६२, सुपा ५०) ।

कमाला स्त्री [कसताला, कास्यताला] वायु का एक प्रकार का निर्घोष, ताल (णदि) ।

कमालिया स्त्री [कास्यतालिका] एक प्रकार का वाद्य (मुपा २४२) ।

कसिअ पुं [कास्यिक] १ कमेरा, कँसारी, काम्य-कार (हे १, ७०) । २ वाद्य विशेष (मुपा २४२) ।

कमिआ स्त्री [कसिका] १ ताल (णया १, १७) । २ वायु-विशेष (आचा २) ।

कमाणि पुस्त्री [दे] मर्म स्थान, 'अनस्म विज्जकति ककाणओ से' (सूय १, ५, २, १५) ।

ककुव } देखो कउह = ककुद (पि २०६,
 ककुभ } हे २, १७४) ।

ककुह देखो कउह = ककुद (ठा ५, १, णया १, १७, विपा १, २) । ५ हरिवंश का एक राजा (पउम २२, ६६) ।

ककुहा देखो कउहा (पड्) ।

कक पुं [कक] १ उद्वर्तन-द्रव्य, शरीर पर का मेल दूर करने के लिए लगाया जाता द्रव्य (सूय १ ६, निचू १) । २ न पाप (भग १२, ५) । ३ माया, कपट (सम ७१) ।
 °गरुग न [°गरुग] माया, कपट (परह १, २—पत्र २८) ।

कक पुन [कक] १ चन्दन आदि उद्वर्तन द्रव्य (दस ६, ६४) । २ प्रसूति-रोग आदि में किया जाता क्षार-पातन । ३ लोघ आदि में

उद्वर्तन (पत्र २—गाथा ११५) । °कुरुया स्त्री [°कुरुका] माया, कपट (पत्र २) ।

कक पु [कक] १ चक्रवर्त्ति का एक देव-कृत प्रामाद (उत्त १३, १३) । २ राशि-विशेष, कर्क राशि (धर्मवि ६६) ।

ककध पु [ककध] अहाधिष्ठायक देव विशेष (ठा २, ३) ।

ककधु स्त्री [ककधु] वैर का वृक्ष (पात्र) ।

ककड पु [ककड] ककंगशि (विचार १०६) ।

ककड न [ककड] १ जलजन्तु विशेष, कुलीर (पात्र) । २ ककड़ी, फल-विशेष (पत्र ४) ।

३ हृदय का एक प्रकार का वायु (भग १०, ३) ।

ककडच्छ पु [ककडक्ष] ककड़ी, खीरा (कप्प) ।

ककडिया } स्त्री [ककडिका, °टी] ककड़ी
 ककडी } (खीरा) का गाल (उप ६६१) ।

ककणा स्त्री [ककना] १ पाप । २ माया (परह १, २) ।

कककव पुं [दे] गुड बनाते समय की इक्षु-रस की एक अवस्था, इक्षु रस का विकार-विशेष (पिड २८३) ।

ककर पु [ककर] १ ककर, पत्थर (विपा १, २ गउड, सुपा ५६७, प्रासू १६८) । २ वि कठिन, पन्थ (आचू ४) । ३ ककर आवाज वाला (उत्त ७) ।

ककरणया स्त्री [ककरणता] १ दोषोद्भावन, दोषोद्भावनगमित प्रलाप (ठा ३, ३—पत्र १४७) ।

ककराइय न [ककरायित] १ ककर की तरह आचरित । २ दोषोच्चारण, दोष-प्रकटन (आव ४) ।

ककस वि [ककस] १ कठोर पुरुष (पात्र, सुपा ५८, आरा ६४, पउम ३१, ६६) । २ प्रवर, चण्ड । ३ तीव्र, प्रगाढ़ (विपा १, १) । ४ अनिष्ट, हानि कारक (भग ६, ३३) । ५ निष्ठुर, निर्दय (उग) । ६ चवा-चवा कर कहा हुआ वचन (आवा २, ४ १) ।

ककस } पु [दे] दन्त्योदन, कर्म (दे
 ककमार } २ १४) ।

ककसेण पु [ककसेण] अतीत उत्पत्ति-काल में उत्पन्न एक स्वनाम स्यात कुलकर पुरुष (राज) ।

ककालुआ स्त्री [ककारुका] १ कूमाएउ वल्ली, कोरडा का गाछ, ककालुआ गोठडलि-त्तवेठा' (मृच्छ ५६) ।

कक्किड पु [दे] कक्कलाम, गिरगिट, गुजरानी में 'काकेडो' (दे २, ५) ।

कक्कि पु [कक्किन्] आवण्य में होनेवाला पाटलिपुत्र का एक राजा (ती) ।

कक्किय न [कक्किक] माग (सूय १, ११) ।

कक्कअण पुन [कक्कतन] रत्न की एक जाति (कप्प पउम ३ ७५) ।

कक्करअ पुं [कक्करक] माण-विशेष की एक जाति (मृच्छ २०२) ।

कक्कओड न [कक्कोट] शाक विशेष, ककरैल, कक्कोडा (राज) । देखो कक्कओडय ।

कक्कओडई स्त्री [कक्कोटकी] कक्कोडे का वृक्ष ककरैल का गाछ (पाण १—पत्र ३३) ।

कक्कओडय न [कक्कोटक] देखो कक्कओड ।

२ पु अनुवेलन्धर-नामक एक नाग-राज । ३ उसका आवास पर्वत (भग ३, ६, इक) ।

कक्कओल पु [कक्कओल] १ वृक्ष-विशेष, शीतल-चीनी के वृक्ष का एक भेद (गउड, स ७१) ।

२ न फल-विशेष, जो सुगंधी होता है (परह २, ५) । देखो कक्कओल ।

कक्कओली स्त्री [कक्कओली] वृक्ष-विशेष (कुप्र २४६) ।

कक्कख देखो कक्क = कक्ष (उव, कप्प, सुर १, ८८, पउम ४४, १, पि ३१८, ४२०) ।

कक्कखग वि [कक्कखग] १ कक्षा-प्राप्त । २ पु कक्षा का केज (तदु ३६) ।

कक्कखड देखो कक्कस (सम ४१, ठा १, १० वज्जा ८०, उव) ।

कक्कखड वि [दे] पीत, पुष्ट (दे २, ११, कप्प आचा, भवि) ।

कक्कखडगी स्त्री [दे] मखी, सहेली (दे २, १६) ।

कक्कखल [दे] देखो कक्कख (पड्) ।

कक्कखा देखो कक्कखा = कक्षा (पात्र, णया १, ८, सुर ११, २२१) ।

कक्कघाड पु [दे] १ अपामार्ग, चिरचिग, लटजीरा । २ किलाट, दूध की मलाई (दे २, ५४) ।

कक्कघायल पु [दे] किलाट, दूध का विकार, दूध की मलाई (दे २, २२) ।

१५, २०२, दे २, ५४, अणुः कप्प, औप) ।
५ कलह, मगडा (पड्) ।

कमल पुन [कमल] एक देव-विमान (देवेन्द्र १४२) । °णअण पु [नयन] विष्णु, नारायण (समु १५२) ।

कमल न [कमल] १ कमल, पद्म, अरविन्द, (कप्प, कुमा, प्रासू ७१) । २ कमलाख्य इन्द्राणी का सिंहासन । ३ सख्या-विशेष, 'कमलाग' को चौरासी लाख से गुणने पर जो संख्या लब्ध हो वह (जो २) । ४ छन्द-विशेष (पिंग) । ५ पु कमलाख्य इन्द्राणी के पूर्व जन्म का पिता (गाया २) । ६ श्रेष्ठि-विशेष (सुपा २७५) । ७ पिंगल-प्रसिद्ध एक गण, अन्त्य अक्षर जिसमें गुरु हो वह गण (पिंग) । ८ एकजात का चावल, कलम (प्राप्र) । °कख पु [°क्ष] इस नाम का एक यक्ष (सण) । °जय न [°जय] विद्याधरो का एक नगर (इक) । °जोणि पु [°थोनि] ब्रह्मा, विधाता (पात्र) । °पुर न [°पुर] विद्याधरो का एक नगर (इक) । °पभा स्त्री [प्रभा] १ काल-नामक पिशाचेन्द्र की अग्र-महिषी (ठा ४, १) । २ 'ज्ञाता धर्मकया' सूत्र का एक अध्ययन (गाया २) । °बन्धु पु [°बन्धु] १ सूर्य, रवि (पउम ७०, ६२) । २ इम नाम का एक राजा (पउम २२, ६८) । °माला स्त्री [°माला] पोतनपुर नगर के राजा आनन्द की एक रानी, भगवान् अजितनाथ की मातामही—दादी (पउम ५, ५२) । °रय पु [°रजस्] कमल का पराग (पात्र) । °वडिसय न [°वतसक] कमला-नामक इन्द्राणी का प्रासाद (गाया २) । °सिरी स्त्री [°श्री] कमला-नामक इन्द्राणी की पूर्व जन्म की माता का नाम (गाया २) । °सुदरी स्त्री [°सुन्दरी] इस नाम की एक रानी (उप ७२८ टी) । °सेणा स्त्री [°सेना] एक राज-पुत्री (महा) । °अर, °गार पु [°कर] १ कमलो का समूह । २ सरोवर, हृद वगैरह जलाशय (मे १, २६, कप्प) । °पीड, °मेल पु [°पीड] भरत चक्रवर्ती का अश्व-रत्न (ज ३, पि ६२) । °सण पु [°सन्] ब्रह्मा, विधाता (पात्र, दे ७, ६२) ।

कमलग न [कमलाङ्ग] संख्या विशेष, चौरासी लाख महापद की सख्या (जो २) ।
कमला स्त्री [दे] हरिणी, मृगी (पात्र) ।
कमला स्त्री [कमला] १ लक्ष्मी (पात्र, सुपा २७५) । २ रावण की एक पत्नी (पउम ७४, ६) । ३ काल नामक पिशाचेन्द्र की एक अग्र-महिषी, इन्द्राणी विशेष (ठा ४, १) । ४ 'ज्ञाता धर्मकया' सूत्र का एक अध्ययन (गाया २) । ५ छन्द-विशेष (पिंग) । °अर पु [°कर] घनाढ्य, घनी (से १, २६) ।
कमलिणी स्त्री [कमलिनी] पद्मिनी, कमल का गाछ (पात्र) ।
कमलुचभव पु [कमलोद्भव] ब्रह्मा (वि ८२) ।
कमव } अक [स्वप्] सोना सो जाना ।
कमवस } कमवड (पड्) । कमवसइ (हे ४, १४६, कुमा) ।
कमसो अ [क्रमश] क्रम से, एक-एक करके (सुर १, ११६) ।
कमिअ वि [दे] उपसर्पित, पास आया हुआ (दे २ ३) ।
कमिय वि [क्रान्त] उल्लिखित (दस २, ५) ।
कमेलग } पुल्ली [क्रमेलक] उट्ट, जूट (पात्र, कमेलय } उप १०३१ टी, कइ ३३) । स्त्री °गी (उप १०३१ टी) ।
कम्म सक [कृ] हजामत करना, क्षौर-कर्म करना । कम्मइ (हे ४, ७२, षड्) । वक्क कम्मंत (कुमा) ।
कम्म सक [भुज्] भोजन करना । कम्मइ (षड्) । कम्मइ (हे ४, ११०) ।
कम्म देखो कम् = कम्
कम्म पुन [कम्मन्] १ जीव द्वारा ग्रहण किया जाता अत्यन्त सूक्ष्म पुद्गल (ठा ४, ४, कम्म १, १) । २ काम, क्रिया, करनी, व्यापार (ठा १, आचा), 'कम्मा गाणफला' (पि १७२) । ३ जो किया जाय वह । ४ व्याकरण-प्रसिद्ध कारक-विशेष (विसे २०६६, ३४२०) । ५ वह स्थान, जहाँ पर चूना वगैरह पकाया जाता है (पएह २, ५ - पत्र १२३) । ६ पूर्व-कृति, भाग्य, 'कम्मत्ता दुवभा चैव' (सूत्र १, ३, १, आचा (षड्) । ७ कामंण शरीर । ८ कामंण-शरीर नामकर्म, कर्म-विशेष (कम्म २, २१) । °कर वि [°कर] नौकर, चाकर (आचा) । देखो °गार ।

°करण न [°करण] कर्म-विषयक वन्धन, जीव-पराक्रम-विशेष (भग ६, १) । °कार वि [°कार] नौकर (पउम १७, ७) । °किन्विस वि [°किल्घिप] कर्म-चारडाल, खराब काम करनेवाला (उत्त ३) । °क्खध पुं [°स्कन्ध] कर्म-पुद्गलो का पिएड (कम्म ५) । °गर देखो °कर (प्राह) । °गार पुं [°वार] १ कारीगर, शिल्पी (गाया १, ६) । देखो °कर । °जोग पु [°योग] गास्त्रोक्त अनुष्ठान (कम्म) । °ट्टाण न [°स्थान] कारखाना (आचा) । °ट्टिइ स्त्री [°स्थिति] १ कर्म-पुद्गलो का अवस्थान-समय (भग ६, ३) । २ वि. समरी जीव (भग १४ ६) । °णिसेग पु [°निपेक] कर्म-पुद्गलो की रचना-विशेष (भग ६, ३) । °धारय पुं [°धारय] व्याकरण प्रसिद्ध एक समास (अणु) । °परिसाडणा स्त्री [°परि-शाटना] कर्म-पुद्गलो का जीव-प्रदेशो से पृथक्करण (सूत्र १, १) । °पुरिम पुं [°पुरुष] कर्म-प्रधान पुरुष—१ कारीगर, शिल्पी (सूत्र १, ४, १) । २ महारम्म करने-वाले वामुदेव वगैरह राजा लोग (ठा ३, १—पत्र ११३) । °पवाय न [°प्रवाद] जैन ग्रन्थाश-विशेष आठवां पूर्व (सम २६) । °वध पु [°वन्ध] कर्म पुद्गलो का आत्मा में लगना, कर्मों में आत्मा का बन्धन (आव ३) । °भूमग वि [°भूमिक] कर्म-भूमि में उत्पन्न (पएण १) । °भूमि स्त्री [°भूमि] कर्म-प्रधान भूमि, भरत क्षेत्र वगैरह (जो २३) । °भूमिग देखो °भूमग (पएण २३) । °भूमिय वि [°भूमिज] कर्म-भूमि में उत्पन्न (ठा ३, १—पत्र ११४) । °मास पु [°मास] आवण मास (जो १) । °मासग पु [°मापक] मान-विशेष, पाँच गुब्जा, पाँच रत्ती (अणु) । °य वि [°ज] १ कर्म से उत्पन्न होनेवाला । १ कर्म-पुद्गलो का बना हुआ शरीर-विशेष, कामंण शरीर (ठा २, १, ५, १) । °या स्त्री [°जा] अभ्यास से उत्पन्न होनेवाली बुद्धि, अनुभव (एदि) । °लेम्सा स्त्री [°लेश्या] कर्म द्वारा होनेवाला जीव का परिणाम (भग १४, १) । °वग्गणा स्त्री [°वर्गणा] कर्म-रूप में परिणत होनेवाला

कच्छुल पु [कच्छुल] तुल्य-विशेष (पण १—पत्र ३२) ।

कच्छुल पुं [कच्छुल] स्वनामख्यात एक नारद मुनि (गाथा १, १६) ।

कच्छू देखो कच्छु (प्रासू ७२) ।

कच्छोटी स्त्री [दे] कछौटी, लंगोटी (रभा—टि) ।

कज्ज वि [कार्य] १ जो किया जाय वह । २ करने योग्य । ३ जो किया जा सके (हे २, २४) । ४ न प्रयोजन, उद्देश्य, 'न य माहेइ सक्ज्ज' (प्रासू २७, कप्पू) । ५ कारण, हेतु (वव २) । ६ काम, काज,

'अन्नह परिचितिज्जइ,

सहरिसक्कुज्जएण हियएण ।

परिणमइ अन्नह च्चिय,

कज्जारभो विहिवसेण'

(सुर ४, १६) ।

°जाण वि [°ज्ञ] कार्य को जाननेवाला (उप ६४८) । °सेण पुं [°सेन] अतीत उत्सर्पिणी-काल में उत्पन्न स्वनामख्यात एक कुलकर-पुरुष (मम १४०) ।

कज्जआ (शौ) स्त्री [कन्याका] कन्या, कुमारी (प्राकृ ८७) ।

कज्जउड पु [दे] अनर्थ (दे २, १७) ।

कज्जमाण वि [क्रियमाण] जो किया जाता हो वह, 'कज्जं च कज्जमाणं च आगमिस्सं च पावगं' (सुत्र १, ८) ।

कज्जल न [कज्जल] १ काजल, मसी । २ अञ्जन, सुरमा (कुमा) । °पभा स्त्री [°प्रभा] सुदर्शना-नामक जम्बू-वृक्ष की उत्तर दिशा में स्थित एक पुष्करिणी (जीव ३) ।

कज्जलइअ वि [कज्जलित] १ काजलवाला । २ श्याम, कृष्ण (पाय) ।

कज्जलगी स्त्री [कज्जलाङ्गी] कज्जल-गृह, दीप के ऊपर रखा जाता पात्र, जिसमें काजल इकट्ठा होता है, कजरौटी (अत, गाथा १, १—पत्र ६) ।

कज्जला स्त्री [कज्जला] इस नाम की एक पुष्करिणी (इव) ।

कज्जलाव अक [वृद्ध] हठना, बूढ़ना, 'आउसंती समणा । एय ते गावाए उदयं

रत्तिगेण आमवइ, उवरवरि वा गावा कज्ज-लावेइ' (आचा २, ३, १, १६) । वट्ट कज्जलावेमाण (आचा २, ३, १, १६) ।

कज्जलिअ देखो कज्जलइअ (मि २, ३६, गउड) ।

कज्जव } पु [दे] १ विष्ठा, मैना । २ तृण कज्जवय } वगैरह का समूह, कूड़ा, क्तवार (दे २, ११, उप १७६, ५६३, स २६४, दे ६, ५६, अणु) ।

कज्जिय वि [कार्यिक] कार्यार्थी, प्रयोजनार्थी (वव ३) ।

कज्जोवग पुं [कार्योपग] अठासी महाग्रहों में एक ग्रह का नाम (ठा २, ३—पत्र ७८) ।

कज्जमाल न [दे] सेवाल, एक प्रकार की घास, जो जलाशयों में लगती है (दे २, ८) ।

कटरि (अप) अ [कटरे] इन अर्थों का द्योतक अव्यय—१ आश्चर्य, विस्मय, 'कटरि थणतरु मुद्धउहे, जे मणु विच्चिन माइ' (हे ४, ३५०) । २ प्रशंसा, श्लाघा, 'कटरि भालु सुविसालु, कटरि मुहकमल पसन्निम' (धम्म ११ टी) ।

कटार (अप) न [दे] छुरी, क्षुरिका (हे ४, ४४५) ।

कट्ट सक [कृत्] काटना, छेदना । कट्टइ (भवि) । सकृ कट्टि, कट्टिवि, कट्टिअ (रभा, भवि, पिग) ।

कट्ट वि [कृत्त] काटा हुआ, छिन्न (उप १८०) ।

कट्ट न [कट्ट] १ दु ख । २ वि. कट्ट-कारक, कट्टाई (पिग) ।

कट्टर पुंन [दे] कढी में डाला हुआ घी का बड़ा, खाल-विशेष (पिड ६३७) ।

कट्टर न [दे] खण्ड, अश्व, टुकड़ा, 'से जहा चित्तयकट्टरे इ वा वियाणपट्टे इ वा' (अनु) ।

कट्टराय न [दे] छुरी, शस्त्र-विशेष (स १४३) ।

कट्टारी स्त्री [दे] क्षुरिका, छुरी (दे २, ४) ।

कट्टिअ वि [कर्त्तित] काटा हुआ, छेदित (पिग) ।

कट्टु वि [कर्त्त] कर्ता, करनेवाला (पड्) ।

कट्टु अ [कृत्वा] करके (गाथा १, ५, कप्प भग) ।

कट्टोरग पुं [दे] कटोरा, प्याला, पान-विशेष, 'तओ पासेहि करोडगा कट्टोरगा मंकुआ मिप्पाओ य ठविज्जंति' (निचू १) ।

कट्ट न [कट्ट] १ दु ख, पीडा, व्यथा (कुमा) । २ पाप । ३ वि. कट्ट-दायक, पीडा-कारक (हे २, ३४, ६०) । °हर न [°गृह] कठ-घरा, काठ की बनी हुई चारदीवारी (सुर २, १८१) ।

कट्ट न [काष्ठ] काठ, लकड़ी (कुमा, सुपा ३५४) । २ पुं राजगृह नगर का निवासी एक स्वनाम-ख्यात श्रेष्ठी । (आवम) । °कम्मत्त न [°कर्मन्त] लकड़ी का कारखाना (आचा २, २) । °करण न [°करण] श्यामक-नामक गृहस्थ के एक खेत का नाम (कप्प) । °कार पु [°कार] काठ-कर्म में जीविका चलानेवाला (अणु) । °कोलव पु [°कोलम्ब] वृक्ष की शाखा के नीचे झुकता हुआ अन्न-भाग (अनु) । °खाय पुं [°खाद] कीट-विशेष, घृण (ठा ४) । °दल न [°दल] रहर की दाल (राज) । °पाउया स्त्री [°पादुका] काठ का जूता, खड़ाऊँ (अनु ४) । °पुत्तलिया स्त्री [°पुत्तलिका] कठपुतली (अणु) । °पेज्जा स्त्री [°पेया] १ मूँग वगैरह का क्वाथ । २ घृत में तली हुई तण्डुल की राव (उवा) । °मट्ट न [°मधु] पुष्प-मकरन्द (कुमा) । °मूल न [°मूल] द्विदल धान्य, जिसका दो टुकड़ा समान होता है ऐसा चना, मूँग आदि अन्न (वृह १) । °हार पु [°हार] शीन्त्रिय जन्तु-विशेष, क्षुद्र कीट-विशेष (जीव १) । °हारय पु [°हारक] कठहरा, लकड़हारा (सुपा ३८५) ।

कट्ट वि [कृष्ट] विलिखित, चासा हुआ, 'खोर-दुमहेट्टपथकट्टोल्ला इघणे य भीसो य' (ओष ३३६) ।

कट्टण न [कर्पण] आकर्षण, खींचाव (गउड) ।

कट्टहार पु [काष्ठहार] कठहरा, लकड़हारा, काष्ठवाहक (कुप १०४) ।

कट्टा स्त्री [काष्ठा] १ दिशा (सम ८८) । २ हृद, सीमा, 'कवडस्स अहो परा कट्टा' (आ १६) । ३ काल का एक परिमाण, अठारह निमेष (तंदु) । ४ प्रकर्ष (सुज ६) ।

पिय पु [°वनभालप्रिय] इस नाम का एक यक्ष (विष्णु २, १)। °वर्म पु [°वर्मन्] नृप-विशेष, भगवान् विमलनाथ का पिता (मम १५१)। °वीर्य पु [°वीर्य] कर्त-शाय के पिता का नाम (मम १, ८)।

कयं अ [कृन्म] अलम् वम (उत्तर १४४)। कयगला ली [कृन्गला] यावन्ती नगरी के समीप की एक नगरी (भग)।

कयत पु [कृतान्त] १ यम मृत्यु भरण (मुग् १२६ मुर २५)। २ शास्त्र मिदान्त, भरणति कय त प कयतसिद्ध उ मपरहिम् (सार्ध ११७, मुग् १६६)। ३ रावण का इस नाम एक सुभट (पउम ५६, ३१)। °मुह पु [°मुख] गमचन्द्र के एक मेनापति का नाम (पउम ६४ ६२)। °वयण पु [°वदन] राम का एक मेनापति (पउम ६४, २०)।

कयध देखो कमध (हे १, १३६, पङ्)। कनद देखो कलद (पण १, हे १, २२२)। कयव पु [कदम्ब] समूह, 'अप्याण पिव मव्वं जीवकयं च रक्खइ सयावि' (सवोध २०)।

कयविय वि [कदम्बित] अलकृत, विभूषित (कप)।

कयवुअ देखो कलवुअ (कप)।

कयग वि [कृतक] प्रयत्न-जन्य (वर्मस २६६, ४१४)।

कयग वि [क्रायक] गरीदनेवाला (वव १ टी)। कयग पु [कनक] १ वृक्ष-विशेष, निर्मल। २ न कतक-फल, निर्मल-फल, पायपमारी, 'जह कयगमजणार्इ जनबुद्धिओ विमोहिंति' (विमे ५३६ टी)।

कयज वि [कदर्य] कज्जम, कपण (राज)।

कयड्डि पु [कपडिन्] इस नाम का एक यक्ष देवता (मुग् ५४२)।

कयण न [कदन] हिंसा मार डालना (हे १, २१७)।

कयत्यण न [कदर्थन] हिरान करना, पीडा करना। कयत्यम (धम्म ८ टी)। कयक कयत्यिज्जत (म ८)।

कयत्यण न [कदर्थन] हिरान, हिरान करना, पीडन (मुग् १८०, मत्त)।

कयत्यणा ली [कदर्थना] ऊपर देखो (म ४७२, सुत् १५, १)।

कयत्यिय वि [कदर्थित] हिरान किया हुआ पीडित (मुग् २२७ मत्त)।

कयज वि [कदज] खराब अन्न (वर्मवि १३६)।

कयम वि [कनय] बहुत मे मे कौन? (म ४०२)।

कयर वि [कतर] दो मे मे कौन? (हे ३, ५८)।

कयर पु [ककर] ४ वृक्ष-विशेष, कगेर, करील (स २५६)। २ न कगेर का फल (पमा १४)।

कयल पु [कदल] १ कदली-वृक्ष, केला का गाछ। २ न कदली फल, केला (हे १, १६७)।

कयल न [दे] अलिज्जर, पानी भरने का बड़ा गगरा, ऊँकर, मटका (दे २, ४)।

कयलि, °ली ली [कदलि, °ली] केला का गाछ (महा, हे १, २००)। °समागम पु [°समागम] इस नाम का एक गाँव (आवम)। °हर न [°गृह] कदली-स्तम्भ ने बनाया हुआ घर (महा, मुर ३, १४, ११६)।

कयल्लय देखो कय = कृत (सुव २ ३)।

कयवर पु [दे] १ कतवार, कूडा, मैला (णाय १, १ मुग् ३८, ८७, स २६४ मत्त ८६, पाय, सण पुष्प ३१, निबु ७)। २ विष्ठा (आव १)।

कयवरुड्ढिकया ली [दे कचवरोड्ढिकया] कूटा साफ करनेवाली दासी (णाय १, ७—पत्र ११७)।

कयवाउ पु [कुरुवाकु] कुकुट, कुकडा, मुर्गा (गड्ड)।

कयवाय पु [कुकवाक] कुकुट, कुकडा, मुर्गा (पाय)।

कयमण न [कदशन] खराब भोजन (विमे १३६)।

कयमेहर पु [दे] कुकडा, मुर्गा, 'कयमेहराण मुम्मइ आलावो मत्ति गोमम्मि' (वजा ७२)।

कया अ [कदा] कब, किस समय? (ठा ३, ४, प्रामू १६६)।

कयाड अ [कदापि] कभी न, किसी समय भी (उवा)।

कयाड अ [कदाचिन्] १ किसी समय, कयाड कभी (उवा, वसु) 'अह अत्तया कयाडि' (मुग् ५०६, पि ७८)। २ वितर्क-योनक अवयव 'नट्टेमि कयाडि' (भग १५)।

कयाण न [कयाणक] बेचने योग्य वस्तु, करियाना (उण पृ १२०)।

कयाणम पुन देखो कयाण, 'देव निप्रवा-हणाण कयाणगे कि न विक्केह' (मिरि ४७८)।

कयार पु [दे] कतवार, कूडा, मैला (दे २, ११, भवि)।

कयाचि देखो कयाड = कदापि (प्रामू १३१)।

कयोग पु [कयोग] नट-विशेष, बहुलपिया (वृह ४)।

कर सक [कृ] करना, बनाना। करइ (हे ४, २३४)। भूका कासी, काही, काहीध, करिमु, करिमु, अवासि, अगामी (हे ४, १६२, कुमा, भग, कप)। भवि काहिइ, काही, करिस्सइ, करिहिइ, काहं, काहिमि (हे १, ५, पि ५३३, कुमा)। कर्म, कजइ, करीइ, करिजइ (भग, हे ४, २५०)। वक, करंत, करित, करेत, करेमाण (पि ५०६, खण ७२, से २, १५, मुर २, २४०, उवा)। कवक कजमाण, किरत, कीरमाण (पि ५४७, कुमा, गा २७२, खण ८६)। सक करित्ता, करित्ताण, करिदूण, काउ, काऊण, काऊणं, कट्टु, करिअ, किच्चा, कियाणं (कप, दत्त ३, पङ्, कुमा भग अमि ४१, सूअ १, १, १, औप)। हेक, काउं, करेत्तए (कुमा, भग ८, २)। क करणिज्ज, करणीअ, करिअव्व, करेअव्व, कायव्व (दम १० पङ्, स २१, प्रामू १४८, कुमा)। प्रयो करावेइ, करावेई (पि ५५३, ५५२)।

कर पु [कर] एक महाग्रह (सुज २०)।

कर पु [कर] १ हन्त, हाथ (सुर १, ५४, प्रामू ५७)। २ महमूल, चुगी (उम ७६८ टी, मुर १, ५४)। ३ किरण, अशु (उप ७६८ टी, कुमा)। हाथो की सूँड (कुमा)। ५ करका, शिला वृष्टि, ओला, 'करच्छडाभडि-यपत्तिवज्जे' (पउम ६६, १५)। °ग्गह पु [°अह] १ हाथ ने गहना करना 'अह-

कडमड पुंन [दे] उद्वेग (सक्ति ४७) ।
 कडय न [कटक] ऊख आदि की यष्टि (आचा २, १०, २) ।
 कडय देखो कडग (सुर १, १६३, पात्र, गडड, महा, सुपा १६२, दे ५, ३३) । ६ लश्कर, मैत्र्य (ठा ६) । १० पु काशी देश का एक राजा (महा) । 'विदे न्नी [विती] राजा कटक की एक कन्या (महा) ।
 कडयड पु [कडकड] कड कट आवाज, 'कथ्यइ खरपवहाणयकडम(?) य) डभजतदुम-गहण' (पलम ६४, ४४) ।
 कडयडिय वि [दे] परावर्तित, फिराया हुआ, घुमाया हुआ, 'न कुम्मह कडयडिय िडि नं पविहउ गिरिवर' (मुपा १७६) ।
 कडसक्करा न्नी [दे] वश शलाका वंम की मलाई (विपा १, ६) ।
 कडसार न [कटसार] मुनि का एक उपकरण, आसन, 'न वि लेड जिणा पिछी (? छि) । नवि बुटी (? डि) कम्कल च कडसार' (विचार १२८) ।
 कडसी स्त्री [दे] श्रम्यान्, मसान (दे २, ६) ।
 कडह पु [कटह] वृक्ष-विशेष (वृह १) ।
 कडा स्त्री [दे] कडी, सिकडी, जजीर की लडी, 'वियडकवाडकडाण खडस्वयो निमुण्णिओ ततो' (मुपा ४१४) ।
 कडार न [दे] नारियन, नरियर (दे २, १०) ।
 कडार पु [कडार] १ वण-विशेष, तामडा वण, भूरा रंग । २ वि कपिल वणवाला, भूरा रंग का, मटमैला रंग का (पात्र, रयण ७७, मुपा ३३, ६२) ।
 कडाली स्त्री [दे] कटालिका] घोडे के मुंह पर बाधने का एक उपकरण (अनु ६) ।
 कडाह पु [कटाह] १ कडाह, लोहे का पात्र, लोहे की बडी कटाही (अनु ६, नाट—मृच्छ ३) । २ वृक्ष विशेष (पलम १३, ७६) । ३ पाजर की हड्डी शरीर का एक अवयव (पण १) ।
 कडाहपन्हत्थिअ न [दे] दोनों पाश्वर्वा का अपवर्तन, पाश्वर्वा को घुमाना-फिराना (दे २, २५) ।
 कडि स्त्री [कटि] १ कमर, कटी (विपा १, २, अनु ६) । २ बुझादि का मध्य भाग

(ज १) । 'तड न [तट] १ कटी-तट । २ मध्य भाग (राय) । 'पट्टय न [पट्टक] घोती, वस्त्र-विशेष (वृह ४) । 'पत्त न [पत्र] १ सर्गादि वृक्ष की पत्ती । २ पतली कमर (अनु ५) । 'यल न [तल] कटी-प्रदेश (भवि) । 'ल न [टीय] देखो कडिल्ल (दे) का दूसरा अर्थ । 'वट्टी स्त्री [पट्टी] कमर का पट्टा, कमर-पट्टा (सुपा ३३१) । 'यत्थ न [वस्त्र] घोती, कमर में पहनने का कपडा (दे २, १७) । 'सुत्त न [सूत्र] कमर का आभूषण, मेखला (मम १८३, कप्पू) । 'हत्थ पुं [हस्त] कमर पर रखा हुआ हाथ (दे २, १७) ।
 कडि वि [कटिन्] चटाईवाला (अणु १४४) ।
 कडिअ वि [कटित] १ कट—चटाई से आच्छादित (कप्प) । २ कट से संस्कृत (आचा २, २, १) । ३ एक दूसरे में मिला हुआ, 'घणकडियकडिच्छाए' (श्रौप) ।
 कडिअ वि [दे] प्रीणित, खुशी किया हुआ (पड) ।
 कडिखभ पु [दे] १ कमर पर रखा हुआ हाथ (पात्र, दे २, १७) । २ कमर में किया हुआ आघात (दे, २, १७) ।
 कडिण पुन [दे] वृण विशेष (सूत्र २, २, ७) ।
 कडिअ देखो कालत्त (राया १, १ टी—पत्र ६) ।
 कडिभिह न [दे] शरीर के एक भाग में होनेवाला कुष्ठ विशेष (वृह ३) ।
 कडिल्ल वि [दे] १ छिद्र-रहित, निश्छिद्र (दे २, ५२, पड) । २ न कटी-वस्त्र, कमर में पहनने का वस्त्र, घोती वगैरह (दे २, ५२, पात्र, पड, सुपा १५२, कप्पू, भवि, विमे २६००) । ३ वन, जंगल, शटवी, ससारभवकडिल्ले सजोगवियोगसोगतरुहणे । कुपहणणट्टाण तुम, सत्थाहो नाह । उप्पन्नो' (पलम २, ४४, वव २, दे २, ५२) । ४ वि गहन, निविड, सान्द्र, 'भिल्लिभिल्लायडकडिल्ल' (उप १०३१ टी, दे २, ५२, पड) । ५ आशीर्वाद, आमीस । ६ पु दोवारिक, प्रतीहार । ७ विपक्ष, शत्रु, दुश्मन (दे २, ५२, पड) । ८ कटाह, लोहे का बडा पात्र (शोध ६२) । ९ उपकरण-विशेष (दस ६) ।

कडी देखो कडि (सुपा २२६) ।
 कडु पु [कटुक] १ कडुआ, तिक्त, रस-कडुआ विशेष (ठा १) । २ वि तीता, तिक्त रस वाला (से १, ६१, कुमा) । ३ अनिट (पणह २, ५) । ४ दाहण, भयकर (पणह १, १) । ५ पल्प, निष्ठुर (नाट-रत्ना ६६) । ६ स्त्री वनस्पति-विशेष, कुटकी (हे २, १५५) ।
 कडुअ (शौ)अ [कृत्वा] करके (हे २, २७२) ।
 कडुआल पु [दे] घण्टा, घण्ट (दे २, ५७) । २ छोटी मछली (दे २, ५७, पात्र) ।
 कडुइय वि [कटुकित] १ कडुआ किया हुआ । २ दूषित (गडड) ।
 कडुइया स्त्री [कटुकी] बल्ली-विशेष, वुटकी (पण १) ।
 कडुच्छय पु [दे] देखो कडुच्छु, कडुच्छु 'धूवकडुच्छयहत्था' (सुपा ५१, कडुच्छुय पात्र, निर ३, १, धम्म) ।
 कडुयाविय वि [दे] १ प्रहृत, जिस पर प्रहार किया गया हो वह (उप पृ ६५) । २ व्यथित, पीडित, 'सा य (चोरघाडी) कुमारपहारक-डुयाविया भग्गा परम्मुहा कया' (महा) । ३ हराया हुआ, पराभूत । ४ भारी विपद् में फँसा हुआ (भवि) ।
 कडुइड (शौ) वि [कटुकृत] कटुक किया हुआ (नाट) ।
 कडेवर न [क्लेवर] शरीर, देह (राय, हे ४, ३६५) ।
 कड्ह सक [कृप्] १ खीचना । २ चाम करना । ३ रेखा करना । ४ पढ़ना । ५ उच्चारण करना । कडुइ (हे ४, १८७) । वक्त कडुइत, कडुइमाण (गा ६८७, महा) । कवक्त कडिइज्जत, कडिइज्जमाण (मे ५, २६, ६, ३६ पणह १, ३) । सक कडिइऊण, कडुइउ, कडिइत्तु कडुइय (महा), 'कडुइत्तु, नमोस्कार' (पचव), कडिइउ (पि ५७७) । क कडुइयव्य (सुपा २३६) ।
 कडु पु [कृप्] खीचाव, आकर्षण (उत्त १६) ।
 कडुग न [कृप्ण] १ खीचाव, आकर्षण,

करपत्त न [करपत्र] करपत्र, करकच (विपा १, ६) ।

करभ पु [करभ] ऊँट उट्ट (परह १, १, गड्ड) ।

करभी स्त्री [करभी] १ उट्टी, स्त्री-ऊँट, ऊँटनी (पिंड) । २ वान्य भग्ने का बड़ा पात्र (बृह २ कम) । देखो करही ।

करम वि [दे] क्षीण, दुर्वन (दे २, ६, पङ्) ।

करमंड पु [करमण्ड] फलवाला वृक्ष-विशेष (गड्ड) ।

करमह पु [करमह] वृक्ष विशेष, करौदा (परह १—पत्र ३२) ।

करमरी स्त्री [दे] हठ-हठ स्त्री बाँदी (दे २, १५, पङ्, गा ५२७, पात्र) ।

करय देखो करग (उप ७२८ टी, परह १, कुमा, उवा ७) । ३ पक्षि-विशेष (परह १, १) ।

करयही स्त्री [दे] मल्लिका बेला का गाछ (दे २, १८) ।

करयर अक [करकराय्] कर-कर आवाज करना । वक्र करयरत (पउम ६४ ३५) ।

कररुह पुं [कररुह] छन्द-विशेष (पिंग) ।

करलि } स्त्री [कटलि, °ली] १ पताका ।
करली } २ हरिण की एक जाति । ३ हाथी का एक आभरण (हे १, १२०, कुमा) ।

करव पुन [दे करक] जल-पात्र, पालिकरवाच नीर पाएउ पुच्छिग्रो (मुपा २१४, ६३१) ।

करवही स्त्री [करमन्दी] लता-विशेष, एक जात का पेड़ (दे, ८, ३५) ।

करवन्तिआ स्त्री [करपात्रिका] जल पात्र-विशेष (आ १२) ।

करवाल पु [करवाल] खट्ग, तलवार (पात्र, मुपा ६०) ।

करविया स्त्री [दे करकिका] पान पात्र-विशेष (मुपा ४८८) ।

करवीर पु [करवीर] वृक्ष विशेष, कनेर का गाछ (गड्ड) ।

करसी [दे] देखो कडसी (हे २, १७४) ।

करह पु [करभ] १ ऊँट, उट्ट (पउम ५६, ४४, पात्र, कुमा, मुपा ४२७) । २ सुगन्धी द्रव्य-विशेष (गड्ड ६६८) ।

करहच न [करहञ्च] उद-विशेष (पिंग) ।

करहाड पु [करहाट] वृक्ष विशेष, बग्हाण शिफा कन्द मैनफल (गड्ड) ।

करहाडय पु [करहाटक] १ ऊपर देखो । २ देश-विशेष, 'चरहाडयविमए धन्तउरयमनिवे-सम्मि' (स २५३) ।

करही देखो करभी । ३ इस नाम का एक छन्द (पिंग) । °सह वि [°रोह] ऊँट मवार, उट्टी पग मयारी करने वाला (महा) ।

कराडणी स्त्री [दे] गामली वृक्ष, मेमर का पेड़ (दे २ १८) ।

करादह पु [करादह] स्वनाम त्याग एक राजा (ती ३७) ।

कराल वि [कराल] १ उन्नत, ऊँचा (अनु ५) । २ दन्तुगि जिमका दंत लम्बा और बाहर निमला हो वह (गड्ड) । ३ भयानक, भयकर (कण्ठ) । ४ फाटनेवाला । ५ विकसित (मे १० ८१) । ६ व्यवहित (से ११, ६६) । ७ वि इस नाम का विदेह-देश का राजा (वर्म १) ।

कराल मक [करालय्] १ फाड़ना छिद्र करना । २ विकसित करना । करालेड (से १०, ४१) ।

करालिअ वि [करालित] १ दन्तुगि, लम्बा और वहिनिगंत दंतवाला (से १२, १०) । २ व्यवहित किया हुआ, अन्तरालवाला बनाया हुआ (मे ११, ८६) । ३ भयकर बनाया हुआ (कण्ठ) ।

करली स्त्री [दे] दंतवन, दांत शुद्ध करने का काष्ठ (दे २, १२) ।

करावण न [कारण] करवाना, बनवाना, निर्माण (मुपा ३२२, घम्म ८ टी) ।

कराविय वि [कारित] कराया हुआ (म ५६८, महा) ।

करि पु [करिन] हाथी, हस्ती (पात्र, प्रासू १६६) । °धरणट्टाण न [°धरणस्थान] हाथी को बंधने का डोर—रज्जू, रम्मा (पात्र) । °नाह पु [°नाय] १ ऐरावण, इन्द्र का हाथी । २ उत्तम हस्ती (मुपा १०६) । °वधण न [°वन्धन] हाथी पकड़ने का गर्त (पात्र) । °मयर पुं [°मकर] जल हस्ती (पात्र) ।

करिअ पु [करिक] एक महाप्रह (सुज २०) ।

करिअ } देखो कर = कृ ।
करिअव्व }

करिआ स्त्री [दे] मदिरा परोमने का पात्र (दे २, १४) ।

करिणव्वड } (अप) देखो कायव्व (हे ८,
करिणव्वड } ४३८, कुमा, ति २५४) ।

करित देखो कर = कृ ।

करिणिआ } स्त्री [करिणी] हस्तिनी हस्तिनी
करिणी } (महा पउम ८०, ५३, मुपा ५) ।

करिण पु [करिन] हाथी हस्ती, °दुट्टु ऋणिणाम् । कुजाय । ममनजुव्वगहणेण' (उप ६ टी) ।

करित्ता }
करिन्नाण } देखो कर = कृ ।
करिट्ठण }

करिमरी [दे] देखो करमरी (गा ५४, ५५) ।

करिह न [दे] १ वंशाकुर वान का कोपड़, नेतीनी भूमि में उत्पन्न होनेवाला वृक्ष-विशेष, जिने ऊँट खाने हैं (दे २, १०) । २ कन्ना, तरकारी-विशेष 'याणुपुरिनादकुट्टुपलाटत्तं-भियकरिहमनाई' (विने २६३) । ३ अकुर, कन्दल (अनु) । ४ पुं करील वृक्ष, करील (पङ्) । ५ वि वंशाकुर के समान, 'हाहा ते वेय करिल्लणिययमावाहुमयणदुल्लनिय' (गड्ड) ।

करिस देखो कड्ड = कृप् । करिमंड (हे ४, १८७) । वक्र, करिसत (नुर १ २३०) । मंहु करिमित्ता (पि ५८२) ।

करिम पुं [कर्प] १ आकर्षण, खींचाव । २ विनेखन रेखा-करण । ३ मान विशेष, पल का चौथा हिस्सा (जो १) ।

करिस देखो करीस (हे १ १०१, पात्र) ।

करिमग वि [कर्पक] खेती करनेवाला, कृषी-वल (उत्त ३, आवम) ।

करिसण न [कर्पण] १ खींचाव, आकर्षण । २ चामना, खेती करना । ३ कृषि, खेती (परह १, १) ।

करिमय देखो करसग (मुपा २, २६०, नुर २, ७७) ।

करिसावण पुन [कार्पावण] निक्का-विशेष (विने ५०६ अनु) ।

करिसिद्ध (शौ) वि [कर्पित] १ आकर्षित । २ चामा हुआ, खेती किया हुआ (हेका ३३१) ।

[लना] चमरेन्द्र के मोम नामक लोकपाल-
देव की एक अग्रमहिषी (ठा ४, १—पत्र
२०५) । विद्याणग पु [वितानक] ग्रह-
विशेष, ग्रहाधिष्ठायक देव-विशेष (ठा २
३, पत्र ७७) । मनाणग पु [सतानक]
ग्रह-विशेष, ग्रहाधिष्ठायक देव-विशेष (ठा
२, ३—पत्र ७७) । वलि स्त्री [वलि]
१ सुवर्ण का एक आभूषण, सुवर्ण की
मणियों से बना आभूषण (अत २७) । २
तप-विशेष, एक प्रकार की तपश्चर्या (श्रौप) ।
३ पु द्वीप-विशेष । ४ समुद्र-विशेष (जीव ३) ।
वलिपविभक्ति स्त्री [वलिप्रविभक्ति]
नाट्य का एक प्रकार (राय) । वलिभद्र
पु [वलिभद्र] कनकावलि द्वीप का एक
अधिष्ठायक देव (जीव ३) । वलिमहाभद्र
पु [वलिमहाभद्र] कनकावलिवर नामक
समुद्र का एक अधिष्ठायक देव (जीव ३) ।
वलिमहावर पु [वलिमहावर] कनका-
वलिवर नामक समुद्र का एक अधिष्ठाता देव
(जीव ३) । वलिवर पु [वलिवर] १
इस नाम का एक द्वीप । २ इस नाम का एक
समुद्र । कनकावलिवर समुद्र का अधिष्ठाता
देव-विशेष (जीव ३) । वलिवरभद्र पु
[वलिवरभद्र] कनकावलिवर द्वीप का एक
अधिपति देव (जीव ३) । वलिवरमहाभद्र
पु [वलिवरमहाभद्र] कनकावलिवर नामक
द्वीप का एक अधिष्ठाता देव (जीव ३) ।
वलिवरोभास पु [वलिवरावभास] १
इस नाम का एक द्वीप । २ इस नाम का एक
समुद्र (जीव ३) । वलिवरोभासभद्र पु
[वलिवरावभामभद्र] कनकावलिवराव-
भास द्वीप का एक अधिष्ठाता देव (जीव ३) ।
वलिवरोभासमहाभद्र पु [वलिवरा-
वभाममहाभद्र] कनकावलिवरावभाम द्वीप
का एक अधिष्ठाता देव (जीव ३) । वलि-
वरोभासमहावर पु [वलिवरावभास-
महावर] कनकावलिवरावभाम-समुद्र का एक
अधिष्ठाता देव (जीव ३) । वलिवरोभास-
वर पु [वलिवरावभासवर] कनकावलि-
वरावभाम-समुद्र का एक अधिष्ठाता देव (जीव
३) । वलि स्त्री [वलि] देखो वलि का

पहला और दूसरा अर्थ (पत्र २७१) । देखो
कणय = कनक ।
कणगमत्तरि स्त्री [कनकसप्रति] एक प्राचीन
नैत्तर शास्त्र (अणु ३६) ।
कणगा स्त्री [कनका] १ भीम-नामक राक्ष-
सेन्द्र की एक अग्रमहिषी (ठा ४, २—पत्र
७७) । २ चमरेन्द्र के मोम-नामक लोकपाल
की एक अग्र-महिषी (ठा ४, २) । ३ 'गाया-
वम्मकहा' सूत्र का एक अव्ययन (गाया २,
१) । ४ क्षुद्र जन्तु-विशेष की एक जाति,
चतुरिन्द्रिय जीव-विशेष (जीव १) ।
कणगुत्तम पु [कनकोत्तम] इस नाम का
एक देव (दीव) ।
कणय पु [दे] १ फूलों को इकट्ठा करना,
अवचय । २ वाण, शर, 'असिखेडयकणयतो-
मर—' (पउम ८, ८८, पणह १, १, दे २,
५६, पात्र) ।
कणय पुन [कनक] एक देव विमान (देवेन्द्र
१४४) ।
कणय देवा कणग = कनक (श्रौव ३१० भा,
प्रासू १५६, हे १, २२८, उव, पात्र, महा,
कुमा) । ८ पु राजा जनक के एक भाई का
नाम (पउम २८, १३२) । ९ रावण का इस
नाम का सुभट (पउम ५६, ३२) । १०
धनूरा, वृक्ष-विशेष (मे ९, ४८) । ११ वृक्ष-
विशेष (पण्य १—पत्र ३३) । १२ न
छन्द-विशेष (पिंग) । पण्य पु [पर्वत]
देखो कणग-गिरि (सुपा ४३) । मय वि
[मय] सुवर्ण का बना हुआ (सुपा २०) ।
म न [म] विद्यावर के एक नगर
(इक) । मली स्त्री [मली] घर का एक
भाग (गाया १, १—पत्र १२) । मली स्त्री
[मली] देखो मणगावली । ३ एक राज-
पत्नी (पउम ७, ४५) ।
कणयदी स्त्री [दे] वृक्ष-विशेष, पाठरी, पाहल
(दे २, ५८) ।
कणविआणय पु [कणवितानक] देखो
कणगावयाणग (मुज्ज २०) ।
कणवी स्त्री [दे] कन्या (वज्जा १०८) ।
कणवीर पु [करवीर] १ वृक्ष विशेष, कनेर
(हे १, २५३, मुपा १५१) । २ न कणेर
का फूल (पणह १, ३) ।

कणि पुत्री [दे] स्फुरण, स्फूर्ति, 'कणी
फुरण' (पात्र) ।
कणिआर देखो कणिआर (कुमा, प्राप्र हे
२, ६५) ।
कणिआरिअ वि [दे] १ कानी अर्थ से जो
देखा गया हो वह । २ न कानी नजर से
देखना (दे २, २५) ।
कणिम स्त्री [कणिका] कनेक, रोटी के लिए
पानी से भिजाया हुआ आटा (दे १, ३७) ।
कणिक्क वि [कणिक्क] मत्स्य-विशेष (जीव
१) ।
कणिक्का देखो कणिक्का (था १४) ।
कणिट्ट वि [कणिट्ट] १ छोटा लघु (पउम
१५, १२, हे २, १७२) । २ निट्ट, जवन्य
(रभा) ।
कणिय न [कणित] १ आत्त-स्वर । २
आवाज, ध्वनि (आव ४) ।
कणिय } देखो कणिका (रूप) । २
कणिया } कणिका, चावल का टुकड़ा
(प्राचा २, १, ८) । कुडय देखो कण-कुडग
(स ४८७) ।
कणिया स्त्री [कणिता] दीणा-विशेष (जीव
३) ।
कणिर वि [कणित्ट] आवाज करनेवाला (उव
पु १०३, पात्र) ।
कणित्त न [कनित्त] नक्षत्र-विशेष का गोन
(इक) ।
कर्णाहिका स्त्री [कनिष्ठिका] छोटी अगुनी
(अगविजा, अग्या ० ६ श्लो १७५२) ।
कणिस न [कणिश] मन्थ-शीर्ष, धान्य का
अग्र भाग (दे २, ६) ।
कणिस न [द] विशाद, मन्थ-शूक, सस्य का
तीक्ष्ण अग्र भाग (दे २, ६, भवि) ।
कर्णाअ } वि [कर्णाअस] छोटा, नष्ट,
कर्णाअस } 'तन्म भाया कर्णमनो पद नाम'
(वमु, वेणी १७६, मप्प, अत १४) ।
कर्णाणिगा स्त्री [कर्णाणिगा] १ आत्त की
तारा । २ छोटी उगली (ताज) ।
कर्णीर देखो कणेर (चट) ।
कणुय न [कणुक] त्वग् वगैह ना अवयव
(थाचा २, १, ८) ।
कणूया देखो कणिया = कणिका (वज्ज) ।

आवाज (भग ६ ३३, राय) । ३ चूना आदि से मिश्रित जल (विण १, ६) ।

कलफल अक [कलकलाय्] 'कल कल' आवाज करना । वक्र कलकलत, कलकलित, कलकलेत, कलकलमाण (पणह १, १, ३, औप) ।

कलकलिअ न [कलकलित] कोलाहल करना (दे ६, ३६) ।

कलकलिअ वि [कलकलित] कलकल शब्द से युक्त (सिरि ६६४) ।

कलकम्य देखो कडकय = कटाक्ष (गा ७०२) ।

कलचुलि पु [कलचुलि] १ क्षत्रिय विशेष । २ इस नाम का एक क्षत्रिय-वंश (पिंग) ।

कलण देखो करण 'तामुवि कलणमु हामु मुहसकप्पो' (अचु ८२) ।

कलण न [कलन] १ शब्द, आवाज । २ मर्यादा, गिनती (विमे २०२८) । ३ धारण करना (सुपा २५) । ४ जानना (सुपा १६) । ५ प्राप्ति, ग्रहण जुक्त वा मयलकलाकलण रयणायरमुग्रम्म' (आ १६) ।

कलणा स्त्री [कलना] १ कृति, करण, 'जुरण वदप्प-दप्प गिहवणकलणाकंदलिल कुणता' (कप्प) । २ धारण करना, लगाना, 'मज्झिमे मिरिखटपककलणा' (कप्प) ।

कलणिज्ज देखो कल = कलय् ।

कलत्त न [कलत्त] स्त्री, भार्या (प्रासू ७६) ।

कलयोय देखो कलहोय (औप) ।

कलभ पुष्पी [कलभ] १ हाथी का वच्चा (गाया १, १) । २ वच्चा, बालक, 'उवमासु अपजत्तेभकलभवतावहासमूखुअ' (हे १, ७) । कलभिआ स्त्री [कलभिका] हाथी का स्त्री वच्चा (गाया १ १—पत्र ६३) ।

कलम पुं [दे] कलम १ चोर तस्कर (दे २, १०, पात्र, आचा) । २ एक प्रकार का उत्तम चावल (उवा जं २, पात्र) ।

कलमल पु [कलमल] १ पेट का मल (ठा ३, ३) । २ वि दुर्गन्धि, दुर्गन्धवाला (उप ८३३) ।

कलमल पुन [दे] १ मदन-वेदन (सक्ष ४७) । २ कंपन, थरथराहट, घृणा, 'अमुई अदीण सोणियकिमिजानपूडममाण । नामपि चित्तिं वलु कलमलय जणइ हिययम्मि' (मन ३३) ।

कलय देखो कालय (हे १, ६७) ।

कलय पु [दे] १ अर्जुन वृक्ष । २ मोनार, सुवर्णकार (दे २ ५८) ।

कलय पुं [कलान] सोनार सुवर्णकार (पड्) । कलयदि वि [दे] १ प्रसिद्ध, विख्यात । २ स्त्री वृक्ष-विशेष, पाडरी, पाढल (दे २, ५८) । कलयज्जल न [दे] श्रोत्र-लेप, होठ पर लगाया जाता लेप-विशेष (भवि) ।

कलयल देखो कलमल (हे २, २२०, पात्र, गा ५३५) ।

कलयलिर वि [कलकलायित्] कलकल करने-वाला (वजा ६६) ।

कलरुहाणी स्त्री [कलरुहाणी] इस नाम का छन्द (पिंग) ।

कलल न [कलल] १ वीर्य और शोणित का समुदाय, 'पाइज्जति रडता मुतत्तवुतवसनिभ कलल' (पउम ११८ ८), वसकललसंभ-सोणिय—' (पउम ३६ ५६) । २ गर्भ-वेष्टन चर्म । ३ गर्भ के अवयव रूप रेत विकार (गड्ड) । ४ काँदो, कीचड़, कंदम (गड्ड) ।

कललिय वि [कललित] कंदमित, कीचवाला किया हुआ 'अएणोएणकलहविअनियकेसरकी-लालकललियद्वारा' (गड्ड) ।

कलविक पु [कलविक्क] पक्षि विशेष, चटक, गौरिया पक्षी, गौरैया (पात्र गड्ड) ।

कलवू स्त्री [दे] तुम्बी पात्र (दे २, १२, पड्) ।

कलस पु [कलश] १ कलश, घड़ा, (उवा, गाया १, १) । २ स्कन्धक छन्द का एक भेद, छन्द-विशेष (पिंग) ।

कलम पुन [कलरा] १ एक देव विमान । (देन्द्र १४०) । २ वाद्य-विशेष (राय ५० टी) ।

कलसिया स्त्री [कलशिका] १ छोटा घड़ा (अणु) । २ वाद्य विशेष (आचू १) ।

कलह पुं [कलह] क्लेश, भगडा (उव, औप) ।

कलह देखो कलभ (उव, पउम ७८, २८) ।

कलह न [दे] तलवार की म्यान (दे २, ५, पात्र) ।

कलह अक [कलहाय्] भगडा करना, तडाई करना । वक्र कलहत, कलहमाण (पउम २८, ४, सुपा ११, २३३, ५४६) ।

कलहण न [कलहन] भगडा करना (उव) ।

कलहाअ देखो कलह = कलहाय् । कलहाएदि (श्री) (नाट) । वक्र कलहाअत (गा ६०) ।

कलहाइअ वि [कलहायित्] कलहावाला, भगडाखोर (पात्र) ।

कलहि वि [कलहिन] भगडाखोर (दे ५, ५४) ।

कलहोय न [कलधोत] १ सुवर्ण, माना (सण) । २ चाँदी, रजत (गड्ड, पणह १, ४, पात्र) ।

कला स्त्री [क्ला] १ अश, भाग, मात्रा (अनु ४) । २ समय का सूक्ष्म भाग (विसे २०२८) । ३ चन्द्रमा का सोलहवाँ हिस्सा (प्रासू ६५) । ४ कला, विद्या, विज्ञान (कप्प, राय, प्रासू ११२) । पुरुष योग्य कला के मुख्य बृहत्तर और स्त्री-योग्य कला के मुख्य चौसठ भेद हैं, 'वावत्तरी कला' (अणु), 'वावत्तरिकलापडियावि पुरिमा' (प्रासू १२६), 'चउसट्टिकलापडिया' (गाया १, ३) । पुरुष-कला ये हैं—१ निपि ज्ञान । २ अकणित । ३ चित्र कला । ४ नाट्यकला । ५ गान, गाना ।

६ वाग वजाना । ७ स्वर गत (पड्ड, ऋपम वगैरह स्वरों का ज्ञान) । ८ पुष्कर गत (मुदग, मुरजादि विशेष वाद्य का ज्ञान) । ९ समताल (संगीत के ताल का ज्ञान) । १० द्यूत कला । ११ जनवाद (लोगों के साथ आलाप सलाप करने की विधि) । १२ पासे का खेल । १३ अष्टापद (चौपाठ जलने की रीति) । १४ शीघ्र कवित्व । १५ दक-मृत्तिका (पृथक्करण-विद्या) । १६ पाक कला । १७ पान-विधि (जलपान के गुण दोष का ज्ञान) । १८ वस्त्र-विधि (वस्त्र की सजावट की रीति) । १९ विलेपन विधि । २० शयन-विधि । २१ आर्या (छन्द विशेष) बनाने की रीति । २२ प्रहेलिका (विनोद के लिए पहेलिया—शूढाराय पञ्च) । २३ मागधिका (छन्द विशेष) । २४ गाथा (छन्द विशेष) । २५ गीति (छन्द-विशेष) । २६ श्लोक (अनुष्टुप् छन्द) । २७ हिरण्य युक्ति (चाँदी के आभूषण की यथास्थान योजना) । २८ सुवर्ण-युक्ति । २९ चूर्ण-युक्ति (सुगन्धि पदार्थ बनाने की रीति) । ३० आभरण-विधि (आभूषणों की सजावट) । ३१ तस्त्री परिकर्म (स्त्री को सुन्दर बनाने

करनेवाला एक उपासक (मुग ५६२) । ४ विष्णु की तृतीय गतावली का एक प्रसिद्ध जैनाचार्य, दिगम्बर जैन मत के प्रवर्तक जिनमूर्ति मुनि के गुरु (विम २५५३) । ५ ताला धर्म (आत्मा) । ६ इस नाम का एक परिव्राजक, तावम (श्रौष) । ७ वि. ज्याम धर्म, काला रंगाला (कुमा) । ८ ओराल पु [ओराल] वनस्पति-विशेष (परण १—पत्र ३४) । ९ कट पु [कट] वनस्पति-विशेष, वन-विशेष (परण ६—पा ३६) । १० कृष्णि-चार पु [कृष्णिचार] कर्त्ता कर्त्त का गाल (जीव ३) । ११ कुमार पु [कुमार] राजा अश्वि का एक पुत्र (निर १, ४) । १२ गोमी स्त्री [गोमिन] काला शृगाल 'कण्हगोमी जहा चित्ता, नटग वा विचित्र' (वव ६) । १३ गाम न [नामन्] कर्म-विशेष, जिसके उदय में जीव का शरीर काला होता है (राज) । १४ पक्षिध्व वि [पाक्षिक] १ क्रूर कर्म करनेवाला (सूत्र २, २) । २ बहुत काल तक ससार में भ्रमण करनेवाला (जीव) (ठा १, १) । ३ वधुजीव पु [वधुजीव] वृद्ध विशेष, श्याम पुष्पवाला दुपहरिया (जीव २) । ४ भूम, भोम पु [भूम] काली जमीन (आवम, विम १४५८) । ५ राड, राई स्त्री [राजि, र्जा] १ काली रेखा (भग ६, ५, ठा ८) । २ एक इन्द्राणी, ईशानेन्द्र की एक श्रम-महिषी (ठा ८, जीव ४) । ३ 'ज्ञाता धर्मकथा' सूत्र का एक श्रव्ययन—परिच्छेद (गाथा २, १) । ४ रिमि पु [रिपि] इस नाम का एक ऋषि, जिसका जन्म शम्बावनी नगरी में हुआ था (ती) । ५ लेस, लेस्स वि [लेश्य] कृष्ण-नेश्यावाला (भग) । ६ लेसा, लेस्सा स्त्री [लेश्या] जीव का अति निकट मन—परिणाम, जघन्य-वृत्ति (भग, मम ११ ठा १ १) । ७ वडिसय, वडैसय न [वतसक] एक देव-विमान (राज, गाथा २, १) । ८ वहि, वह्य स्त्री [वहि, ह्य] वल्ली-विशेष, नागदमनी लता (परण १) । ९ सप्प पु [सप] १ काला माँप (जीव ३) । २ राह (मुज २०) । देखो कण्ह ।

कण्हई अ [कुत्तश्चन्] किसी में (सूत्र १, २, ३, ६) । देता कण्हइ ।

कण्ह्वा स्त्री [कुण्वा] १ एक इन्द्राणी, ईशानेन्द्र की एक श्रम-महिषी (ठा ८—पत्र ६२६) । २ एक श्रम-महिषी (अत २५) । ३ द्रोपदी, पाण्डवों की स्त्री (राज) । ४ राजा अश्वि की एक रानी (निर १, ४) । ५ ब्रह्म देश की एक नदी (आवम) ।

कण्हइ अ [कचिन्] कचित्, कहीं भी (सूत्र १, १) । २ कहाँ से ? (उत्त २) ।

कण्हइ देवो कण्हइ (सूत्र २, २, २१) । कनवार पु [दे] कतवार, कूडा (दे २, ११) । कति देवा कड = कति (पि ६३३, भग) । कतु देवो कड = कतु (कथ) ।

कत्त मक [कुन्] काटना, छेदना, कतरना । कत्ताहि (परह १ १) । कत्त कत्तन (श्रौष ४६८) ।

कत्त मक [कुन्] काटना, चरखे में मूत बनाना । कत्त कत्तन (पिड ५७८) ।

कत्त वि [कृत्त] निर्मित (मत्ति ४०) ।

कत्त न [दे] कलत्र, स्त्री (पड्) ।

कत्तण न [कर्त्तन] काटना (पिड ६०२) ।

कत्तण न [कर्त्तन] १ कतरना, काटना (मम १२५, उप पृ २) । २ वि काटनेवाला, कतरनेवाला (सुर १, ७२) ।

कत्तणया स्त्री [कर्त्तनता] लवन, कतराई (सुर १, ७२) ।

कत्तर पु [दे] कतवार, कूडा, 'इतो य कविलमूमयकन्तरवहकारिनिडुपभिर्हि, केमय-किमी विण्णु' (मुपा २०७) ।

कत्तरिअ वि [कत्त, कत्तित] कतरा हुआ, बाटा हुआ, लून (मुपा ५४६) ।

कत्तरी स्त्री [कर्त्तरी] कतरनी, कैंची (कथ) । कत्तवीरिअ पु [कर्त्तवीर्य] वृष विशेष (मम १५३, प्रति ३६) ।

कत्तव वि [कर्त्तव] १ करने योग्य (म १७२) । २ न कार्य, वाज, काम (आ ६) ।

कत्ता स्त्री [दे] श्रमिन्ना श्रूत से कपड़िका, कौडी (दे २ १) ।

कत्ति स्त्री [कृत्ति] धर्म, चमड़ा (म ४३६, गडड, गाथा १, ८) ।

कत्ति वि [कर्त्त] करनेवाला, 'कितियाण कत्तिरहिया' (धर्मस १४५) ।

कत्तिकेअ पु [कर्त्तिकेअ] महादेव का एक पुत्र, पञ्चानन (दे ३, ५) ।

कत्तिगी स्त्री [कर्त्तिगी] कर्त्ता माँ की पूर्णिमा (पउम ८६ ३०, इग) ।

कत्तिम वि [कृत्तिम] कृत्तिम, उमायदी (मुपा ८३, ज २) ।

कत्तिथ पु [कर्त्तिथ] १ कर्त्ता माँ (मम ६५) । २ इस नाम का एक श्रेष्ठी (निर १, ३) । ३ भक्त जेद के एक भावी तीर्थार के पूर्व भव का नाम (मम १५८) ।

कत्तिथी स्त्री [कर्त्तिथी] नक्षत्र विशेष (मम ११, इग) ।

कत्तिथी स्त्री [कर्त्तिथी] कर्त्तनी, कैंची (मुपा २६८) ।

कर्त्तिथी स्त्री [कर्त्तिथी] १ कर्त्तिक मान की पूर्णिमा (मम ६६) । २ कर्त्तिक मान की श्रमावास्या (चद १०) ।

कर्त्तिथविअ वि [दे] कृत्तिम दिवाङ्ग 'कर्त्ति-वविआहि उवहिण्णहण्णहि' (सूत्रनि १, ८) ।

कर्त्तु वि [कर्त्तु] करनेवाला, कत्ता भुना य पुत्रपावाण' (आ ६) ।

कर्त्तो अ [कुन] कहां में, निपने ? (पउम ४७, ८, कुमा) । २ अथ वि [त्य] कहां में उत्पन्न ? (विम १०१६) ।

कर्त्थ नक [कर्त्थ] ग्लाघा करना, प्रशमना । कर्त्थइ (दे १, ८७) ।

कर्त्थ अ [कुन] कहां से ? (पड्) ।

कर्त्थ अ [क, कुत्र] कहाँ ? (पड्, कुमा, प्रामू १२३) । २ अ [चिन्] कहीं, किसी जगह (आचा कण २, १७८) ।

कर्त्थ वि [कथ्य] १ कहने योग्य, कथनीय । २ न कथ्य का एक भेद (ठा ८, ४—पत्र २८८) । ३ वनस्पति-विशेष (राज) ।

कर्त्थं देवो कट = कथ्य ।

कर्त्थभाणा स्त्री [कर्त्थभाणी] पानी में हाने-वाली वनस्पति-विशेष (परण १—पत्र ३८) ।

कर्त्थूरिया स्त्री [कर्त्थूरी] मृग-नदी, हम्मिग कर्त्थूरी की नाभि में होनेवाली गुणधित चन्दु (मुपा १४७, न २३६, कण्ठू) ।

कथ वि [दे] १ उग्न, कृत । २ शीघ्र, दुर्बल (पड्) ।

(ठा ३, ३, दे ८, ६५) । ७ वि दक्ष, चतुर (दे ८, ६५) ।

कहवत्त पु [कल्यवत्त] कलेवा, प्रातर्भोजन, जल-पान (स्वप्न ६०, नाट) ।

कहवाल पु [कल्यपाल] कलवार, शराव बेचनेवाला (मोह ६२) ।

कहविअ वि [दे] १ तीमित, आद्रित । २ विस्तारित, फेलाया हुआ (दे २, १८) ।

कह्या स्त्री [दे] मय, दारु (दे २, २) ।

कह्याकह्लि } अ [कल्याकल्य] १ प्रतिदिन, कह्याकह्लि } हर रोज (विपा १, ३, णाया १, १८) । २ प्रति-प्रभात, रोज सुबह (उवा, प्राप) ।

कह्याण न [कल्याण] सुवर्ण (सिरि ३७३) ।

कह्याण पुन [कल्याण] १ सुख, मंगल, क्षेम, 'धुणट्टाणपरिणामे सने जीवाण सयलकल्लाणा' (उप ६००, महा, प्रामू १४६) । २ निर्वाण, मोक्ष (विसे ३४४०) । ३ विवाह, लग्न (वसु) । ४ जिन भगवान् का पूर्व भव से च्यवन, जन्म, दीक्षा, केवल ज्ञान तथा मोक्ष-प्राप्ति रूप अवसर, 'पच महाकल्लाणा सव्वेसि जिण्णाण होति णिअमेण' (पचा ६) । ५ समृद्धि, वैभव (कप्प) । ६ वृक्ष-विशेष (परण १) । ७ तप विशेष (पव) । ८ देश-विशेष । ९ नगर विशेष 'कल्लाणदेमे कल्लाणनयरे सकरो णाम राया जिण भत्तो हुत्था' (ती ५६) । १० पुण्य, शुभ कर्म (आचा) । ११ वि हित-कारक, सुख-कारक (जीव ३ उक्त ३) । १२ कडय न [कृतक] नगर-विशेष (ती) । १३ कारि वि [कारिन्] सुखावह, मंगल-कारक (णाया १, ६६) ।

कह्याणि वि [कल्याणिन्] कल्याण-प्राप्त (राज) ।

कह्याणी स्त्री [कल्याणी] १ कल्याण करने-वाली स्त्री (गडड) । २ दो वर्ष की बछिया (उत्तर १०३) ।

कह्याल पु [कल्यपाल] कलाल, दारु बेचने-वाला (अणु, आव ६) ।

कह्लि अ [कल्ये] कल दिन, कल को (गा ५०२) ।

कल्लुग पु [कल्लुग] द्वीन्द्रिय जीव-विशेष, कीट की एक जाति (जीव ३) ।

कल्लुय पुं [कल्लुग] द्वीन्द्रिय जन्तु की एक जाति (परण १—पत्र ४४) ।

कल्लुरिया [दे] देखो कुल्लुरिया (राज) ।

कल्लेउय पुंन [दे] कलेवा, प्रातराश (श्रोष ४६४ टी) ।

कल्लोडय पुं [दे] दमनीय बैल, सांड (आचा २, ४, २) ।

कल्लोडिआ [दे] देखो कल्लोडी (नाट) ।

कल्लोल पुं [कल्लोल] तरंग, ऊर्मि (श्रौप, प्रामू १२७) ।

कल्लोल वि [दे, कल्लोल] शत्रु, दुश्मन (द २, २) ।

कल्लोलिणी स्त्री [कल्लोलिनी] नदी (कप्पू) ।

कल्लहार न [कल्लहार] सफेद कमल (परण १, दे २, ७६) ।

कल्लि देखो कल्लि (गा ८०२) ।

कल्लोड पुं [दे] वत्सतर, बछड़ा (दे २, ६) ।

कल्लोडी स्त्री [दे] वत्सतरी, बछिया (दे २, ६) ।

कव अक [कु] आवाज करना, शब्द करना । कवइ (हे ४, २३३) ।

कवइय वि [कवचित] वल्नरवाला, वर्मित (पउम ७०, ७१, श्रौप) ।

कवव देखो कवव (परह १, ३, महा, गडड) ।

कवग्ग पु [कवर्ग] 'क' से 'उ' तक के पांच अक्षर (धर्मवि १४) ।

कवचिअ देखो कवइय (सिरि १३१६) ।

कवचिया स्त्री [कवचिका] कलाचिका, प्रकोष्ठ (राज) ।

कवट्टिअ वि [कदर्थित] पीडित, हैरान किया हुआ (हे १, १२४) ।

कवड न [कपट] माया, छद्म, शाल्य (पाय, सुर ४, १६१) ।

कवडि देखो कवडि, 'तो भण्ड कवडिजक्खो अज्जवि त पुच्छसे एय' (सुपा ५४२) ।

कवडु पु [कपट] बड़ी कौड़ी, वराटिका (दे ११०, जो १५) ।

कवडि पु [कपटिन्] १ यक्ष विशेष (सुपा ५१२) । २ महादेव, शिव (कुमा) ।

कवड्डिया स्त्री [कपटिका] कौड़ी, वराटिका (सुपा १५, ५८५) ।

कवग वि [किम्] कोन ? (पउम ७०, ८, कुमा) ।

कवय पुन [कवच] वर्म, वल्नर (विपा १, २, पउम २८, ३१, पाय) ।

कवच न [दे] वनस्पति-विशेष, भूमिच्छत्र (दे २, ३) ।

कवरी स्त्री [कवरी] केश-पाग, घम्मिल्ल (कुमा, वेणी १८३) ।

कवल सक [कवल्य] ग्रमना, हड़प करना । कवलेइ (गडड) । कर्म कवल्लिजइ (गडड) ।

कवक कवल्लिजत (सुपा ७०) । सक, कवल्लिजण (गडड) ।

कवल पुं [कवल] कवल, ग्राम (पत्र ४, श्रौप) ।

कवलण न [कवलन] रसन, भक्षण (काप्र १७०, सुपा ८७४) ।

कवल्लिअ वि [कवल्लिन्] शसित, भसित (पाय, सुर २, १४६, सुपा १२१, ३१६) ।

कवल्लिआ स्त्री [दे] ज्ञान का एक उपकरण (आप ८) ।

कवल्ल पुं [दे] लोहे का कडाह (सूय १, ५, १, १५) ।

कवल्लि स्त्री [दे] पाय विशेष, गुड वगैरह कवल्लि } पकाने का भाजन, कडाह, बराह, 'उज्झनेण य गिम्हे कालमिलाए कवल्लिमुमाए' (संया १२०, विपा १, ३) ।

कवाल पुन [कपाट] किवाड, किवाड़ी कवाल } (गडड, श्रौप, गा ६२०) ।

कवाल न [कपाल] १ खोपड़ी, सिर की हड्डी, 'करकलिअकवालो' (सुपा १५२) । २ घट-कर्पर, मिक्षा-पात्र (आचा, हे १, २३१) ।

कवास पु [दे] एक प्रकार का जूता, श्रध्वजङ्घा (दे २, ५) ।

कवि देखो इक = कपि (सुर १, २४६) ।

कवि पु [कवि] १ कविता करनेवाला (सुर १, १८, सुपा ५६२, प्रामू ६३) । २ शुक, ग्रह-विशेष (सुपा ५६२) । ३ उत्त न [त्वं] कविता, कवित्त (सुर १, ४२) । देखो कइ = कवि ।

कप्पणा स्त्री [कल्पना] १ रचना, निर्माण ।
 २ प्रक्षरण, निरूपण (निचू १) । ३ कल्पना,
 विकल्प (विसे १६३२) ।
 कप्पणी स्त्री [कल्पनी] कतरनी, कैंची (परह
 १, १, विपा १, ४, स ३७१) ।
 कप्पर पु [कर्पर] खप्पर, कपान, सिर की
 खोपड़ी (बृह ४, नाट) । देखो कुप्पर =
 कर्पर ।
 कप्परिअ वि [दे] दारित, चोरा हुआ (दे २,
 २०, वजा ३४ भवि) ।
 कप्पाम पु [कार्पास] १ कपाम, रई । २
 ऊन (निचू ३) ।
 कप्पासत्थि पु [कार्पासास्थि] श्रीन्द्रिय जीव-
 विशेष, धुद्र जन्तु-विशेष (जीव १) ।
 कप्पासिअ वि [कार्पासिक] १ काम
 वेचनेवाला (अणु १४६) । २ न जैनेतर
 शास्त्र-विशेष (अणु ३६, एदि) ।
 कप्पासिय वि [कार्पासिक] कपास का बना
 हुआ, सूती वनरह (अणु) ।
 कप्पासी स्त्री [कर्पासी] रई का गाछ (राज) ।
 कप्पिआर्काप्पअ न [कल्पाकल्प] एक जैन
 शास्त्र (एदि २०२) ।
 कप्पिय वि [कल्पित] १ रचित, निर्मित
 (श्रोप) । २ स्थापित, समीप में रखा हुआ,
 'मे अमए कुमारे त अल्ल मस रहिर अप्प-
 कप्पिय करेइ' (निर १, १) । ३ कल्पना निमित्त,
 त्रिकल्पित (वमनि १) । ४ व्यवस्थित (आचा,
 सूत्र १ २) । ५ छिन्न, काटा हुआ (विपा
 १, ४) ।
 कप्पिय वि [कल्पिक] १ अनुमत, अनिषिद्ध
 (उवर १२०) । २ योग्य, उचित (गच्छ १,
 वव ८) । ३ पु गीतार्थ, ज्ञानी साधु, 'कि वा
 अकप्पिएणो' (वव १) ।
 कप्पिया स्त्री [कल्पिका] जैन ग्रन्थ विशेष,
 एव उपाङ्ग ग्रन्थ (ज १, निर) ।
 कप्पर पु [कर्पर] कपूर, मुगन्वि द्रव्य-विशेष
 (परह २, ४, नुर २, ६, सुपा २६३) ।
 कप्पोवग पु [कल्पोपग] १ कल्प-युक्त । २
 देव विशेष बाह्य देव लोक-वासी देव (परह
 २१) ।
 कप्पोवण पु [कल्पोपवण] ऊपर देखो
 (मुपा ८८) ।

कप्पोवत्तिआ स्त्री [कल्पोपपत्तिका] देव-
 लोक विशेष में उत्पत्ति (भग) ।
 कप्फल न [कट्फल] डम नाम की एक
 वनस्पति, कायफल (हे २, ७७) ।
 कप्पाड देखो क्पाड = कपाट (गडड) ।
 कप्पाड [दे] देखो कफाड (पात्र) ।
 कफ पु [कफ] कफ, शरीर स्थित धातु विशेष
 (राज) ।
 कफाड पुं [दे] गुफा, गुहा (दे २, ७) ।
 कवव (शौ) देखो कमध (प्राक ८५) ।
 कच्चट्टी स्त्री [दे] छोटी लडकी (पिड २८५) ।
 कच्चड } पुन [कर्वट] १ खराब नगर,
 कच्चडग } कुलित शहर (भग, परह १,
 २) । २ पुं ग्रह विशेष, ग्रहाविधायक देव-विशेष
 (ठा २, ३—पत्र ७८) । ३ वि कुनगर का
 निवासी (उत्त ३०) ।
 कच्चर देखो कच्चुर (प्राक ७) ।
 कच्चडभयय पु [दे] ठीका पर जमीन खोदने
 का काम करनेवाला मजदूर ठा ४ १—पत्र
 २०३) ।
 कच्चुर } वि [कर्चुर] १ कवरा, चितक
 कच्चुरय } वरा, चितला (गडड, अचु
 ६) । २ पु ग्रह-विशेष, ग्रहाविधायक देव-
 विशेष (ठा २, ३, राज) ।
 कच्चुरिअ वि [कर्चुरित] अनेक वर्णवाला,
 चितकवरा किया हुआ, 'देहकतिकच्चुरिय-
 जम्मगिह' (मुपा ५४), 'मणिमयतोरणगोर-
 णितरणपहाकिरणकच्चुरिअ' (कुम्मा ६,
 पठम ८२, ११) ।
 कम (अप) देखो कफ (पड्) ।
 कमल न [दे] कपाल, खप्पर (अनु ५, उवा) ।
 कम सक [क्रम] १ चलना पांव उठाना ।
 २ उल्लंघन करना । ३ अक फैलना,
 पसरना । ४ होना, 'मणमोवि विसयनियमो
 न कमइ जयो म मवत्य' (विसे २४६),
 'न एत्थ उवायतर कमइ' (स २०६) । वट्ठ.
 कमत (मे २, ६) । वट्ठ कमणिज्ज (श्रीप) ।
 कम मक [क्रम] जाहना, वाजना । कवक
 कम्ममाण (दे २, ८५) । वट्ठ कमणीय
 (मुपा ३८, २६२) कम्म (गाया १ १८
 टी—पत्र १८८) ।
 कम आ [क्रम] १ नगत होना, युक्त होना,

घटना । २ अधिक रहना । कमइ (पिड २३१,
 पत्र ६१) ।
 कम पुं [क्रम] १ पाद, पग, पांव (नुर १,
 ८) । २ परम्परा, 'नियकुलकमागयाओ पिडणा
 विज्जाओ मज्ज दिन्नाओ' (नुर ३, २८) ।
 ३ अनुक्रम, परिपाटी (गडड) । ४ मर्यादा,
 सीमा (ठा ४) । ५ न्याय, फैसला, 'अवि-
 आरिअ कम ए वरिस्सदि' (स्वप्न २१) ।
 ६ नियम (बृह १) ।
 कम पु [क्रम] श्रम, थकावट, क्लान्ति (हे
 २, १०६, कुमा) ।
 कमडलु पुंन [कमण्डलु] सन्यासियों का
 एक मिट्टी या काष्ठ का पात्र (निर ३, १,
 परह १, ४, उव ६४८ टी) ।
 कमध पुंन [कवन्ध] रुड, मस्तकहीन शरीर
 (हे १, २३६, प्राप्र कुमा) ।
 कमठ पु [दे] १ दही की रलशी । २
 पिठर, स्याली । ३ वनदेव । ४ मुख, मुँह
 (दे २, ५५) ।
 कमठ पु [कमठ, क] १ तापस-विशेष,
 कमठग, जिसको भगवान् पारवनाथ ने बाद में
 कमठय जीता था और जो मरकर दैत्य हुआ
 था (एदि २२) । २ कूर्म, कच्छप (पात्र) ।
 ३ वश, वान । ४ शल्यकी वृक्ष (हे १,
 १६६) । ५ न मैल मल (निचू ३) । ६
 नावियों का एक पात्र (निचू १ श्रोध ३६
 भा) । ७ नावियों को पहनने का एक वस्त्र
 (श्रोव ६७५, बृह ३) ।
 कमण न [क्रमण] १ गति, चाल । २ प्रवृत्ति
 (आचू ४) ।
 कमणिआ स्त्री [क्रमणिका] उपानत, जूता
 (बृह ३) ।
 कमणिअ वि [क्रमणीयन्] जूतावाला, जूता
 पहना हुआ (बृह ३) ।
 कमणी स्त्री [क्रमण] जूता उतारत (बृह ३) ।
 कमणी स्त्री [दे] नि श्रेणि, मोड़ी (दे २, ८) ।
 कमणीय वि [क्रमणीय] नुन्दर, मनोहर
 (मुपा ३४, २००) ।
 कमल पु [दे] १ पिडन, न्याली । २ पट्ट
 टोच (दे २, ५४) । ३ मुख मुँह (दे २,
 ५८, पड्) । ४ हरिण, मृग, 'तत्त्व य एतो
 कमलो मगधमृगिणीए सगयो वमइ' (नुर

कसा छी [कशा, कसा] चमै-यष्टि, चायुक, कोडा (गिपा १, ६, मुपा ३४५) ।
 कसा देवो कामा (पङ्) ।
 कसाइ वि [कपायिन्] १ कपाय रगवाला । २ क्रोध-मान-माया-लोभवाला (परण १८, आचा) ।
 कसाइअ वि [कपायित] ऊपर देखो (गा ४८२, आ ३५, आचा) ।
 कसाय मक [कशाय] ताडन करना, मारना । भुका कसाइत्या (आचा) ।
 कसाय पुं [कपाय] १ क्रोध, मान, माया और लोभ (विसे १२२६, द ३) । २ रस-विशेष, कपैता (ठा १) । ३ वर्ण विशेष, लाल-पीला रंग (उवा २२) । ४ क्वाण, काढा । ५ वि कपैला न्वादवाला । ६ कपाय रगवाला । ७ सुगन्धी, खुशबूदार (हे २, १६०) ।
 कसार [दे] देखो कसार (भवि) ।
 कसि वि [कापेन्] मार्नेवाला, विनाशक, 'चत्तारि एए कसिणो कमाया विचति मूलाइ पुणव्ववस्म' (मुप १, १) ।
 कसिअ न [कशिका] प्रनोद, चायुक, 'अघो मए नइवदीए कसिअं श्राद्धनं' (प्रयौ १०८) ।
 कसिआ छी ऊपर देखो (मुर १३, १७०) ।
 कसिआ छी [दे] फल विशेष, अरण्यचारी नामक वनस्पति का फल (दे २, ६) ।
 कसिट (पे) देखो कट्ट = टट्ट (पङ्) ।
 कसिण देवो कसण = कृष्ण, कृष्ण (हे २, ७५, कुमा, पाप्र, दे ४, १२) ।
 कसुमीरा छी [कश्मीर] एक उत्तर भारतीय देश (प्राक २८, ३३) ।
 कसेरु } पुन [कशेरु, क] जलीय कन्द-
 कसेरुय } विशेष (गडड, परण १) ।
 कसेरुग पुन [कशेरुग] जलमे होनेवाली वन-
 स्पर्ति की एक जाति (सूत्र २३, १८, आचा २, १, ८, ५) ।
 कमोति छी [दे] खाय-विशेष, 'महाहि कमोति भोचा कज मधेति' (सुज १०, १७) ।
 कस्म पु [दे] पङ्क, कदम, कादो (दे २, २) ।
 कस्सय न [द] प्राश्रुत, उपगार, भेंट (दे २, १२) ।

कस्सय पु [काउप] १ वण-विशेष, 'कस्सव-
 वमुत्तसो' (विक्र ६७) । २ अपि विशेष
 (अभि २६) ।
 कह मक [कथय्] कहना, बोलना । कहट्ट
 (हे ४, २) । कर्म कथर, कहिजइ (हे १,
 १८७, ४, २४६) । वक्क कथन, कहित,
 कहेमाण (रयण ७२, मुर ११, १८८) ।
 वक्क कथत, कहिजत, कहिजमाण
 (राज, मुर १, ४४, गा १६८, मुर १४,
 ६४) । सक कहिउ, कहिऊण (महा,
 काल) । क कहणिज, कहियव्व, कहेयव्व,
 कहणीय (सूत्र १, १, १, मुर ४, १६२,
 मुपा ३१६, परह २, ४, मुर १२, १७०) ।
 कह मक [कथ्] कथा करना, उवाचना ।
 कहइ (पङ्) ।
 कह पु [कफ] कफ, शरीरम्य घानु-विशेष,
 वनगम (कुमा) ।
 कह देखो कह (हे १, २६, कुमा, पङ्) ।
 'कहवि देखो कह-कहपि (गडड, उप ७२८
 टी) । 'वि देखो कह-पि (प्रागू ११४,
 १४१) ।
 कहआ अ [कथंवा] वितर्क शोर आश्रय अर्थ
 को बतलानेवाला अव्यय (मे ७, ३४) ।
 कहं अ [कथम्] १ कैसे, किस तरह ?
 (स्वप्न ४५, कुमा) । २ क्यों किम लिए ?
 (हे १, २६, पङ्, महा) । 'कहपि अ
 [कथमपि] किमो तरह (गा १८६) ।
 'कहा छी [कथा] रात द्वेप को उत्पन्न
 करनेवाली कथा, प्रकथा (आचा) । 'चि,
 'चो अ [चिन्] किमो तरह, किमो
 प्रकार से (आ १२, उप ५३० टी) । 'पि अ
 [अपि] किसी तरह (गडड) ।
 कहकह पुं [कहकह] प्रमोद-कलकल, खुशी
 का शोर (ठा ३, १—पत्र ११६, कप) ।
 कहकह अक [कहकहय्] खुशी का शोर
 मचाना । वक्क कहकहित (परह १, २) ।
 कहकहकह पुं [कहकहकह] खुशी का शोर
 (भग) ।
 कहकह पुं [कथकथा] वातचीन (आचा २,
 १५, २) ।
 कहग वि [कथक] १ कहनेवाला, (मट्टि
 २३) । २ पुं कथा-कार (उप १०३१ टी) ।

कहण न [कथन] कथन, उक्ति (धर्म १) ।
 कहणा छी [कथना] ऊपर देखो (अन २;
 उप ४६५, ६६८) ।
 कहय देखो कहग (दे १, १८५) ।
 कहट्ट पुन [दे] कपूर, खपर (अत १२) ।
 कहा छी [कथा] कथा, वार्ता, हकीमत (मुर
 २, २१०, पुमा, स्वप्न ८३) ।
 कहाणग } न [कथानक] १ कथा, वार्ता
 कहाणय } (आ १२, उप पृ ११६) । २
 रमग, प्रस्ताव, 'कय मे नाम जालिणिनि
 कहाणयविमेण' (स १३, ५८८) । ३
 प्रयोजन, कार्य, 'कहाणयविमेण ममागग्रो
 पाउनाउह' (न ५८५) ।
 कहाय मक [कथय्] कहलाना, दुनयाना ।
 कहविइ (महा) ।
 कहायण पु [कार्पाण] मित्रा-विशेष (हे २,
 ७१, ६३, कुमा) ।
 गहायिअ वि [कथित] कहलाया हुआ (मुपा
 ६५, ४७७) ।
 कहि अ [कथ, कुत्र] कहा, किम म्यात
 कहिआ } मे ? (उवा, भग, नाट, कुमा,
 कहि } उर) ।
 कहित्तु वि [कथयित्तु] कहनेवाला, भाषक
 (मम १५) ।
 कहिय वि [कथिन] कथित, उक्त (उव नाट) ।
 कहिया छी [कथिका] कथा, कहानी (उप
 १०३१ टी) ।
 कहु (अप) अ [कुत] कहा से ? (पङ्) ।
 कहड वि [दे] तरण, जवान (दे २, १३) ।
 कहट्ट देवो कहित्तु (ठा ४, २) ।
 काअडची } छी [काकचिञ्ची] गुञ्जा,
 काडची } छु पको (प्राक ३०) ।
 काइअ वि [कायिक] शारीरिक, शरीर-
 सबन्धी (आ ३८, प्रामा) ।
 काइआ } छी [कायिकी] १ शरीर मव-
 काइगा } यो क्रिया, शरीर मे निर्वृत ध्या-
 पार (ठा २, १, नम १०, नव १७) २ शोच-
 क्रिया (म ६८६) । ३ मूत्र, पेशाव (शोप
 २१६, उप पृ २७८) ।
 काइदी छी [काइदी] इस नाम की एक
 नगरी, बिहार की एक नगरी (मथा ७६) ।
 काइणी छी [दे] गुञ्जा, लाल रस्ती (दे २,
 २१) ।

पुद्गल-ममूह (पच) । °वाइ वि [°वादिन्] भाग्य को ही सब कुछ माननेवाला (राज) । °विवाग पुं [°विपाक] १ कर्म परिणाम, कर्म-फल । २ कर्म-विपाक का प्रतिपादक ग्रन्थ (कम्म १, १) । °सवच्छर पुं [°सवत्सर] लौकिक वर्ष (सुज्ज १०) । °साला स्त्री [°शाला] १ कारखाना । २ कुम्भकार का घटादि बनाने का स्थान (बृह २) । °सिद्ध पु [°सिद्ध] कारीगर, शिल्पी (आवम) । °जीव [°जीव] १ कारीगर । २ कारीगरी का कोई भी काम बतलाकर भिक्षादि प्राप्त करनेवाला साधु (ठा ५, १) । °दान न [°दान] जिसमें भारी पाप हो ऐसा व्यापार (भग ८, ५) । °यरिय पु [°र्य] कर्म से आय, निर्दोष व्यापार करनेवाला (परण १) । °वाइ देखो °वाइ (आचा) ।

कम्म वि [कर्मण] १ कर्म-मन्वन्वी, कर्म-जन्म, कर्म-निमित्त, कर्म-मय । २ न कर्म-पुद्गल को ही बना हुआ एक अत्यन्त सूक्ष्म शरीर, जो भवान्तर में भी आत्मा के साथ ही रहता है (ठा १, कम्म ४) । २ कर्म-विशेष, कर्मण-शरीर का हेतु-भूत कर्म (कम्म २, २१) । ३ कर्मण-शरीर का व्यापार (कम्म २, १५, कम्म ४) ।

कम्मइय न [कर्मचित, कर्मण] ऊपर देखो (पञ्चम १०२, ६८) ।

कम्मत्त पु [दे. कर्मान्त] १ कर्म-बन्धन का कारण (आचा, सूत्र २, २) । २ कर्म-स्थान, कारखाना (दे २, ५२) ।

कम्मत्त वि [कुर्वत्] १ हजामत करता हुआ । २ हजाम, नापित (कुमा) । °साला स्त्री [°शाला] जहाँ पर उत्तरा—वाल बनाने का छुरा आदि सजाया जाता हो वह स्थान (निचू ८) ।

कम्मकर देखो कम्म-कर (प्राक् २६) ।

कम्मग न [कर्मक, कर्मक, कर्मण] देखो कम्म = कर्मण (ठा २, २, परण २१, भग) ।

कम्मण न [कर्मण] १ कर्म मय शरीर (द २२) । २ औपध, मन्त्र आदि के द्वारा मोहन, वशीकरण, उच्चाटन आदि कर्म (उप १३४ टी, स १०८) । °गारि वि [°कारिन्]

कामण करनेवाला (सुर १, ६८) । °जोय पुं [°योग] कर्मण-प्रयोग (राया १, १४) । कम्मण न [भोजन] भोजन (कुमा) ।

कम्ममाण देखो कम्म = कम्म ।

कम्मय देखो कम्मग (भग ५, पच) ।

कम्मव सक [उप + भुज्] उपभोग करना । कम्मवइ (हे ४ १११, पइ) ।

कम्मवण न [उपभोग] उपभोग, काम में लाना (कुमा) ।

कम्मस वि [कल्मस] १ मलिन । २ न. पाप (पात्र, हे २, ७६, प्रामा) ।

कम्मा स्त्री [कर्मन्] क्रिया, व्यापार (ठा ४, २—पत्र २१०) ।

कम्मर पु [कर्मार] १ लोहार, लोहकार (विसे १५६८) । २ ग्राम-विशेष (आचू १) ।

कम्मर वि [कर्मकार, °क] १ नौकर, कम्मरग चाकर (स ५३७, ओघ ४, ६४ कम्मरय टी) । २ कारीगर, शिल्पी (जीव ३) ।

कम्मरिया स्त्री [कर्मकारिका] स्त्री-नौकर, दासी (सुपा ६३०) ।

कम्मि वि [कर्मिन्] कर्म करनेवाला, कम्मिअ } अभ्यासी,

'एवकम्मिएण उअ पामरेण देहूण पाउहारीओ। मोतव्वे जोत्तअपगगहम्मि अवरसणी मुक्का।।' (गा ६६४) ।

२ पाप कर्म करनेवाला (सूत्र १, ७, ६) ।

कम्मिया स्त्री [कर्मिका, कर्मिका] १ अभ्यास से उत्पन्न होनेवाली बुद्धि (राया १, १) ।

२ असील कर्म-विशेष, अवशिष्ट कर्म (भग) ।

कम्हल न [कदमल] पाप (राज) ।

कम्हा अ [कस्मात्] क्यों, किम कारण से ? (औप) ।

कम्हार देखो कम्हार (हे २, ७४) । °ज न [°ज] केसर, कुकुम (कुमा) ।

कम्हिअ पु [दे] माली, मालाकार (दे २, ८) ।

कम्हीर देखो कम्हार (मुद्रा २४२, पि १२०, ३१२) ।

कय पु [कच] केश, वाल (हे १, १७७, कुमा) ।

कय पु [कय] खरीदना (सुपा ३४४) ।

कय देखो कड = कृत (आचा, कुमा, प्रासू १५) ।

°उण्ण, °उन्न वि [°पुण्य] पुण्यशाली, भाग्यशाली (स ६०७, सुपा ६०६) । °क

देखो °ग (परह १, २) । °कज्ज वि [°काय] कृतार्थ, सफल-मनोरथ (राया १, ८) ।

°करण वि [°करण] अभ्यासी, कृतभ्यास (बृह १, परह १, ३) । °किच्च वि [°कृत्य]

कृतार्थ, सफल मनोरथ (सुपा २७) । °ग वि [°क] १ अपनी उत्पत्ति में दूसरे की अपेक्षा

करनेवाला, प्रयत्न-जन्य (विमे १८३७, स ६५३) । पु दास-विशेष, गुलाम, 'भयगभत्तं वा वनभत्तं वा कयगभत्तं वा' (निचू ६) ।

३ न सुवर्ण मोना (राज) । °गघ वि [°घ्न] उपकार न माननेवाला, कृतघ्न (सुर २, ४४, सुपा ५८८) ।

°जाणुअ वि [°ज्ञायक] कृतज्ञ, उपकार को माननेवाला (पि ११८) ।

°णु वि [°ज्ञ] उपकार को माननेवाला, किए हुए उपकार की कदर करनेवाला (वम्म २६) ।

°णुया स्त्री [°ज्ञता] कृतज्ञता, एहसानमन्दी, निहोरा मानना (उप पृ ८६) ।

°थ वि [°र्थ] कृतकृत्य, चरितार्थ, सफल-मनोरथ (प्रासू २३) । °नासि वि [°ना-

शिन्] कृतघ्न (ओघ १६६) । °न्न, °न्नु देखो °णु, 'जं कित्तिजलहिराया विवेदनय-

मदिर कयन्नगुह' (सुपा ३०१, महा, स ३३, आ २८) । °पजलि वि [°प्राञ्जलि]

कृताञ्जलि, नमस्कार के लिए जिसने हाथ ऊँचा किया हो वह (आव) । °पडिऊ स्त्री

[°प्रतिकृति] १ प्रत्युपकार (पचा १६) । २ विनय-विशेष (वव १) । °पडिऊइया

स्त्री [°प्रतिकृतिता] १ प्रत्युपकार (राया १, २) । २ विनय का एक भेद (ठा ७) ।

°वलिकम्म वि [°वलिकर्मन्] जिसने देवता की पूजा की है वह (भग २, ५, राया

१, १६—पत्र २१०, तदु) । °मगला स्त्री [°मङ्गला] इस नाम की एक नगरी (सया) ।

°माल, °मालय वि [°माल, °क] १ जिसने माला बनाई हो वह । २ पु वृक्ष-विशेष, कनेर

का गाछ, 'अकोल्लविल्लसल्लइकयमालतमाल-सालड्ह' (उप १०३ टी) । ३ तमिस्र-नामक गुफा का अविष्टायक देव (ठा २, ३) ।

°लक्खण वि [°लक्षण] जिसने अपने शरीर चिन्ह को सफल किया हो वह (भग ६, ३३, राया १, १) । °व वि [°वन्] जिसने

किया हो वह (विमे १५५५) । °वणमाल-

काम पु [काम] १ इच्छा, कामना, अभिलाषा (उत्त १४, आचा: प्रामू ६६)। २ मुन्दर शब्द, रूप वगैरह विषय (भग ७, ७, ठा ४, ४)। ३ विषय का अभिलाष (कुमा)। ४ मदन, कन्दर्प (कुमा, प्रामू १)। ५ इन्द्रिय-प्रीति (धर्म १)। ६ मैथुन (परण २)। ७ छन्द-विशेष (पिंग)। °कन न [°कान्त] देव-विमान-विशेष (जीव ३)। °कन न [°काम] लान्तक देव-लोक के इन्द्र का एक यात्रा-विमान (ठा १०—पत्र ४३७)। °काम वि [°काम] विषय की चाहवाला (परण २)। °कामि वि [°कामिन] विषयाभिलाषी (आचा)। °कूड न [°कूट] देव विमान-विशेष (जीव ३)। °गम वि [°गम] १ स्वेच्छाचारो, स्वैरी (जीव ३)। २ न देखो °कम (जीव ३)। °गामि स्त्री [°गामी] विद्या-विशेष (पउम ७, १३५)। °गुण न [°गुण] १ मैथुन (परह १, ४)। २ शब्द-प्रमुख विषय (उत्त १४)। °घड पु [°घट] इप्सित चीज को देनेवाला दिव्य कलश (आ १४)। °जल न [°जल] स्नान-पीठ, जिसपर बैठकर स्नान किया जाता है वह पट्ट, 'मिण्णायपीठ तु कामजल' (निचू १३)। °जुग पु [°युग] पक्षि-विशेष (जीव ३)। °उभय न [°ध्वज] देवविमान-विशेष (जीव ३) °उभया स्त्री [°ध्वजा] इस नाम की एक वेश्या (विपा १, २)। °ट्टि वि [°थिन्] विषयाभिलाषी (राया १, १)। °डिडय पु [°द्विक] १ जैन साधुओं का एक गण (ठा ६—पत्र ४५१)। २ न जैन मुनियों का एक कुल (राज)। °णयर न [°नगर] विद्याधरो का एक नगर (इक)। °दाइणी स्त्री [°दायिनी] इप्सित फल को देनेवाली विद्या-विशेष (पउम ७, १३५)। °दुहा स्त्री [°दुवा] कामधेनु (आ १६)। °देअ, °दव पु [°दव] १ अनग, कन्दर्प (नाट, स्पन् ५५)। २ एक जैन श्रावक का नाम (उवा)। °धेणु स्त्री [°धेनु] इप्सित फल देनेवाली गौ (काल)। °पाल पुं [°पाल] १ देव-विशेष (दीव)। २ बलदेव, हलायुध (पात्र)। °पिपासय वि [°पिपासक] विषयाभिलाषी (भग)। °पुर न [°पुर] इस नाम का एक विद्याधर नगर (इक)। °प्पभ

न [°प्रभ] देवविमान-विशेष (जीव ३)। °फास पु [°रपज] ग्रह-विशेष, ग्रहाधिष्ठाता देव-विशेष (सुज २०)। °महावग न [°महावन] वनारन के ममीप का एक चैत्य (भग १५)। °रुअ पु [°रूप] देश-विशेष, जो आसाम में है (पिंग)। °लेस्म [°लेश्य] देव-विमान-विशेष (जीव ३)। °वणग न [°वर्ग] एक देव-विमान (जीव ३)। °सत्य न [°शास्त्र] रति शास्त्र (धर्म २)। °समणुणग वि [°समनोज] कामासक्त, कामान्व (आचा)। °सिगार न [°शृङ्गार] देव-विमान विशेष (जीव ३)। °सिष्ट न [°गिष्ट] एक देव विमान-विशेष (जीव ३)। °वट्ट न [°वर्त] देव-विमान-विशेष (जीव ३)। °वसाडत्त स्त्री [°वशा-यिता] योगी का एक तरह का ऐश्वर्य, जिसमें योगी अपनी इच्छा के अनुसार नव पदार्थों का अपने चित्त में समावेश करना है (राज)। °ससा स्त्री [°शसा] विषयाभिलाष (ठा ६, ४)।

काम अ [कामम्] इन अर्थों का सूचक अव्यय—१ अवधारण (सूत्र २, १)। २ अनुमति सम्मति (निचू १६)। ३ अभ्युपगम, स्वीकार (सूत्र २, ६)। ४ अतिशय, अविकय (हे २, २१७)।

कामग न [कामाङ्ग] कन्दर्प का उत्तेजक स्नान वगैरह (सूत्र २, २)।

कामदुहा स्त्री [कामदुधा] कामधेनु, इप्सित वस्तु को देनेवाली दिव्य गो (पउम ८२, १४)।

कामय पु [कामान्ध] विषयानुर, तीव्र कामी (प्रामू १७६)।

कामकिसोर पु [दे] गर्दभ, गधा (दे २, ३०)।

कामग वि [कामक] १ अभिलषणीय, वाञ्छनीय (परह १, १)। २ चाहनेवाला, इच्छुक (सूत्र १, २, २)।

कामण न [कामन] चाह, अभिलाष, 'परइ-त्थिकामणेण जीवा नरयम्मि वच्चेति' (महा)।

कामय देखो कामग (उवा)।

कामि वि [कामिन] विषयाभिलाषी (आचा, गउड)।

कामि वि [कामिन] अभिलाषी (कुप्र १५५)। कामिअ वि [कामित] वाञ्छित, अभिलषित (मुपा २५५)।

कामिअ वि [कामिक] १ काम-सम्बन्धी, विषय-सम्बन्धी (भक्त १११)। २ न. तीर्थ-विशेष (ती २८)। ३ सरोवर-विशेष, जिसमें इप्सित जन्म मिलता है (राज)। ४ वि इच्छा पूर्ण करनेवाला (स ३६०) ५ वि इच्छुक, इच्छावाला, साभिनाप (विपा १, १)।

कामिआ स्त्री [कामिका] इच्छा, अभिलाषा, 'अनामिआए चिणनि दुक्ख' (परह १ ३)।

कामिजुल पु [कामिञ्जुल] पक्षि विशेष (दे २, २६)।

कामिडिड पुं [कामिडि] एक जैन मुनि, आर्य नुह्मिसूरि का एक शिष्य (कप्प)।

कामिडिडय न [कामिडिक्क] जैन मुनियों का एक कुल (कप्प)।

कामिर्णा स्त्री [कामिनी] कान्ता, स्त्री (मुपा ५)।

कामिय वि [कामित] यथेष्ट, जितना चाहे उतना (पिड २७२)।

कामुअ } वि [कामुक] कामी, विषयाभिलाषी
कामुग } (मै २५, महा)। °सत्य न [°शास्त्र] काम-शास्त्र, रति-शास्त्र (उप ५३० टी)।

कामुत्तरवडिसग न [कामोत्तरायतसक] देवविमान-विशेष (जीव ३)।

काय पु [काय] १ वनस्पति की एक जाति (सूत्र २, ३, १६)। २ एक महाग्रह (मुज २०)। ३ पुन जीव-निकाय, जीव-समूह, 'एयाइं कायाइ पवेदिताइ' (सूत्र १, ७, २)। °मत वि [°वत्] बड़ा शरीरवाला (सूत्र २, १, १३)। °वह पु [°वव] जीव-हिना, (श्रावक ३४६)।

काय पु [काय] १ शरीर, देह (ठा ३ १, कुमा)। २ समूह, राशि (विसे ६००)। ३ देश-विशेष (परह १, १)। ४ वि उम देश में रहनेवाला (परण १)। °गुत्त वि [°गुम्] शरीर को वश में रखनेवाला (भग)। °गुत्ति स्त्री [°गुप्ति] शरीर को वश में रखना, जितेन्द्रियता (भग)। °जोअ, °जोग पु [°योग] शरीर व्यापार, शारीरिक क्रिया (भग)। °जोगि वि [°योगिन] शरीर-जन्य

करगहलुलिओ घम्मिल्लो (गा ५४४) । २ पाणि-ग्रहण, शादी (राज) । °य पु [°ज] नल (काप्र १७२) । °रुह पुन [°कररुह] १ नल (हे १, ३८) । २ पुं नृप-विशेष (पडम ७७, ८८) । °लाघव न [°लाघव] कला-विशेष, हस्त-लाघव (कप्प) । °वन्दन न [°वन्दन] वन्दन का एक दोष, एक प्रकार का शुल्क समझकर वन्दन करना (वृह ३) ।

करअडी } स्त्री [दे] स्थूल वस्त्र, मोटा कपडा
करअरी } (दे २, १६) ।

करआ स्त्री [करका] करका, ओला, शिला-वृष्टि (अच्छु ६५) ।

करडली स्त्री [दे] शुष्क-वृक्ष, सूखा पेड़ (दे २, १७) ।

करं क पुं [दे करङ्क] १ भिक्षा-पात्र (दे २, ५५, गउड) । २ अशोक-वृक्ष (दे २, ५५) ।

करक पुंन [करङ्क] १ हड्डी, हाड, 'करकच-यभीसणे मसाणम्मि' (मुपा १७५) । २ अग्नि-पञ्जर, हाड-पञ्जर (उप ७२८ टी) । ३ पानदान, पान वगैरह रखने की छोटी पेटी, 'तंवलकरवाहिणीओ' (कप्पू) । ४ हड्डियों का ढेर (सुर ६, २०३) ।

करज सक [भञ्ज] तोड़ना, फोड़ना, टुकड़ा करना । करजइ (ह ४, १०६) ।

करज पु [करञ्ज] वृक्ष विशेष, करिजा (पण १, दे १, १३, गा १२१) ।

करज पु [दे] शुष्क-त्वक्, सूखी त्वचा (दे २, ८) ।

करजिअ वि [भञ्ज] तोड़ा हुआ (कुमा) ।

करड पुंन [करण्ड] वंशाकार हड्डी (तंडु ३५) ।

करंड } पु [करण्ड, °क] १ करण्ड,
करंडग } डिब्बा, पेटिका (पण १, ५,
करंडय } आ १४, ठा ४, ४) ।

करडिया स्त्री [करण्डिका] छोटा डिब्बा (णाय १, ७, मुपा ४२८) ।

करडी स्त्री [करण्डी] १ डिब्बा, पेटिका (आ १५) । २ कुडी, पात्र विशेष (उप ५६३) ।

करडुय न [दे] पीठ के पास की हड्डी (पण १, ४—पत्र ७८) ।

करंत देखो कर = कृ ।

करंव पु [करम्ब] दही और भात का बना

हुआ एक खाद्य द्रव्य, दध्योदन (पात्र, दे २, १४, मुपा १३६) ।

करंविअ वि [करम्बित] व्याप्त, खचित (मुपा ३४, गउड) ।

करकट पु [करकण्ट] डम नाम का एक परिव्राजक, तापस-विशेष (औप) ।

करकडु पु [करकण्डु] एक जैन महर्षि (महा, पडि) ।

करकचिय वि [करकचित] करवत आदि से काड़ा हुआ (अणु १५४) ।

करकड वि [दे. कर्कर कर्कट] १ कठिन, पक्ष (उवा) ।

करकडी स्त्री [दे करकटी] चिबडा, निन्दनीय वस्त्र-विशेष, जो प्राचीन काल में वय्य पुरुष को पहनाया जाता था (विपा १, २—पत्र २४) ।

करकय पु [करकच] करपत्र, करात, आरा (पण १, १) ।

करकर पु [करकर] 'कर-कर' श्रावण (णाय १ ६) । °सुठ पुन [°शुण्ठ] वृण-विशेष (पण १—पत्र ४०) ।

करकरिग पु [करकरिक] ग्रह-विशेष, ग्रहावि-ष्टायक देव-विशेष (ठा २, ३—पत्र ७८) ।

करग देखो कारग = कारक (णदि ५०) ।

करग पुं [करङ्क] १ करका, ओला (आ २०, ओष ३४३, जी ५) । २ पानी की कलशी, जल पात्र (अनु ५, आ १६, मुपा ३३६, ३६४) । देखो करय = करक ।

करगय देखो करकय (स ६६६) ।

करगह देखो कर-गह (सम्मत १७३) ।

करवायल पु [दे] किलाट, दूध की मलाई (दे २, २२) ।

करच्छ्रोडिया स्त्री [दे] ताली, ताल (सुख २, १५) ।

करट्ट पु [दे] अपवित्र अन्न को खानेवाला ब्राह्मण (मुच्छ २०७) ।

करड पु [करट] १ काक, कौआ (उर १, १४) । २ हाथी का गण्ड-स्थल (मुपा १३६, पात्र) । ३ नाय-विशेष (विक्र ८७) । ४ कुसुम्भ-वृक्ष । ५ करीर-वृक्ष । ६ गिरगिट, सरट । ७ पाखडी, नास्तिक । ८ आद-विशेष (दे २, ५५ टी) ।

करड पु [दे] १ व्याघ्र, शेर । २ वि कवरा, चितकवरा (दे २, ५५) ।

करडा स्त्री [दे] लट्वा—१ एक प्रकार का करज वृक्ष । २ पक्ष विशेष, चटक । ३ अन्नर, भौंरा । ४ वाय-विशेष (दे २ ५५) ।

करडि पु [करटिन्] हाथी, हस्ती (सुर २, ६६, मुपा ५०, ७३६) ।

करडी स्त्री [दे, करटी] वाय-विशेष, 'अट्टमय करडीण' (ज २) ।

करडुयभत्ता न [दे] आद-विशेष (पिट) ।

करण न [करण] १ इन्द्रिय (सुर ४, २३६, कुमा) । २ आसन, पयासन वगैरह (कुमा) ।

३ अधिकरण, आश्रय (कुमा) । ४ कृति, क्रिया, विधान (ठा ३, ४, सुर ४, २४५) ।

५ कारक-विशेष, साधकतम (ठा ३, १, विस १६३६) । ६ उपाधि, उपकरण (ओष ६६६) । ७ न्यायालय, न्याय-स्थल (उप ४ ११७) । ८ वीर्य-स्फुरण (ठा ३, १—पत्र १०६) । ९ ज्योति-शास्त्र प्रसिद्ध बब-वालवादि

करण (सुर २, १६५) । १० निमित्त, प्रयो-जन (आचू १) । ११ जेल, कैदखाना (भवि) ।

१२ वि जो किया जाय वह (ओष २, भा ३) । १३ करनेवाला (कुमा) । °हिचइ पु [°धिपति] जेल का अध्यक्ष (भवि) ।

°साला स्त्री [°शाला] न्यायालय (दस० वृ० हारि० पत्र १०८, २) ।

करणया स्त्री [करणता] १ अनुष्ठान, क्रिया । २ संयमानुष्ठान (णाय १, १—पत्र ५०) ।

करणसाला स्त्री [करणशाला] न्याय मन्दिर (दस ३, १ टी) ।

करणि स्त्री [दे] क्रिया, कर्म (अणु १३७) ।

करणि स्त्री [दे] १ रूप, आकार (दे २ ७, मुपा १०५, ८७५, पात्र) । २ मादृश्य ममा-नता (अणु) । ३ अनुकरण, नकल करना (गउड) । ४ म्वीकार, अगीकार (उप ४ ३८५) ।

करणिज्ज देखो कर = कृ । -

करणिह वि [दे] समान, सदृश 'मगगज्जन्त-तोणीरवरणिन्नेण पयामयणेण निरत-ता च ऊत्थुयलेण' (स ३१२), 'वधूयकरणिन्नेण सहावायणेण अहरेण' (स ३१२) ।

करणिअ देखो कर = कृ ।

कारायणी स्त्री [दे] शाल्मलि-वृक्ष, चेमर का पेड़ (दे २, १८) ।

काराव देखो कारव । कारावेड (पि ५५२) । भवि काराविम्ब (पि ५२८) ।

कारावण देखो कारवण (पणह १, ३, उप ४०६) ।

कारावय वि [कारक] करानेवाला विधायक (न ५५७) ।

काराविय वि [कारित] करवाया हुआ, वनवाया हुआ (विसे १०१६, सुर ३, २४, स १६३) ।

कारि वि [कारिन्] कर्ता, करनेवाला, 'एयन्त कारिणो बालिसत्तमारोविया जेण' (उव ५६७ टी), 'एयअणत्थम्म कारिणी अहय' (सुर ८, ५६) ।

कारिका देखो कारिया (तदु ४३) ।

कारिम वि [दे] कृत्रिम, वनावटी, नकली (दे २, २७, गा ४५७, पङ्, उप ७२८ टी, स ११६, प्रासू २०) ।

कारिय देखो कज्ज = कार्य (सूत्र १, २, ३, १०, दम ६, ६५) ।

कारिय वि [कारित] कराया हुआ, वनवाया हुआ (पणह २, ५) । कार्य (सूत्र गा १५१) ।

कारियल्लई स्त्री [दे] बल्ली-विशेष, करैला का गाछ (पणह १—पत्र ३३) ।

कारिया स्त्री [कारिका] करनेवाली, कर्त्री (उवा) ।

कारिह देखो कारि (सवोध ३८) ।

कारिही स्त्री [दे] बल्ली विशेष, करैला का गाछ (सूक्त ६१) ।

कारीस पु [कारीष] गोइठा की अग्नि, बड़ा की आग (उत्त १२) ।

कारु पु [कारु] १ कारीगर, शिल्पी (पाम, प्रासू ८०) । २ नव प्रकार के कारु चर्मकर आदि ।

कारुइज्ज वि [कारुकीय] कारीगर से सम्बन्ध रखनेवाला (पणह १, २) ।

कारुणिय वि [कारुणिक] दयालु, कृपालु (ठा ४, २, सण) ।

कारुण्ण } न [कारुण्य] दया, करुणा, (महा कारुण्ण } उप ७२८ टी) ।

कारेमाण } देखो कार = कार्य ।

कारेइय न [दे] करैना, चकारी-विशेष (अनु ६) ।

कारोडिय पु [कारोटिक] १ कापालिक, भिक्षुव विशेष । २ ताम्बूल-वाहक, त्यगीवर (औप) ।

काल न [दे] तमिस्र, अन्धकार (दे २, २६ पङ्) ।

काल पुं [काल] १ समय वक्त (जी ४६) ।

२ मृत्यु, मरण (विसे २०६७, प्रासू ११२) ।

३ प्रस्ताव, प्रसंग, अवसर (विसे २०६७) ।

४ विलम्ब देरी (स्वप्न ६१) । ५ उमर, वय (स्वप्न ४२) । ६ ऋतु (स्वप्न ४२) ।

७ ग्रह-विशेष, ग्रहाविष्णायक देव-विशेष (ठा २, ३—पत्र ७८) । ८ ज्योति-शास्त्र प्रमिद्ध

एक कुयोग (गण १६) । ९ सातवां नरक-

पृथ्वी का एक नरकावाम (ठा ५, ३—पत्र ३४१, मम ५८) । १० नरक के जीवों को दुःख देनेवाले परमाध्यात्मिक देवों की एक जाति (सम २८) । ११ त्रैलोक्य इन्द्र का

एक लोकपाल (ठा ४, १—पत्र १६८) । १२ प्रमञ्जन इन्द्र का एक लोकपाल (ठा ५, १—पत्र १६८) । १३ इन्द्र-विशेष, पिशाच-

निन्नाय का दक्षिण दिशा का इन्द्र (ठा २, ३—पत्र ८५) । १४ पूर्वीय लवण समुद्र के पाताल कलशों का अधिष्ठाता देव (ठा ४, २—पत्र २२६) । १५ राजा श्रेणिक का एक पुत्र (निर १, १) । १६ इस नाम का एक गृहपति (गाया २, १) । १७ अभाव (वृह ४) । १८ पिशाच देवों की एक जाति (पणह १) । १९ विवि-विशेष (ठा ६—पत्र ४४६) । २० वर्ण-विशेष, श्याम-वर्ण (पणह २) । २१ न. देव-विमान-विशेष (मम ३५) । २२ 'निरयावली' सूत्र का एक अध्ययन (निर १, १) । २३ काली-देवी का सिंहासन (गाया २) । २४ वि कृष्ण, काला रंग का (सुर २, ५) 'कखि वि [काडि-क्षन्] १ समय की अपेक्षा करने-वाला (प्राचा) । २ अवसर का ज्ञाता (उत्त ६) । 'कप्प पुं [कल्प] १ समय-सम्बन्धी शास्त्रीय विज्ञान । २ उसका प्रतिपादक शास्त्र (पंचमा) । 'काल पु [काल] मृत्यु-समय (विसे २०६६) । 'कूड न [कूट] उत्कट

विष-विशेष (नुपा २३८) । 'क्खेय पुं [क्षेप] विलम्ब, देरी (ने १३, ४२) । 'गय वि [गत] मृत्यु-प्राप्त, मृत (गाया १, १, महा) । 'चक्क न [चक्र] १ वीम नागरोपम परिमित समय (णदि) । २ एक भयकर शस्त्र, 'जाहे एवमवि न सक्कड ताहे कालचक्कं विट्ठवद' (आवम) । 'चूला स्त्री [चूडा] श्रविक-भाम वगैरह का श्रविक समय (निचू १) । 'ण्णु वि [ण] अवसर का जानकार (उप १७६ टी, आचा) । 'ठट्ठ वि [ठट्ठ] मौत से मरा हुआ (उप ७२८ टी) । 'देव पु [देव] देव-विशेष (दीव) । 'धम्म पुं [धर्म] मृत्यु मरण (गाया १, १, विपा १, २) । 'न्न, 'न्नु देखो 'ण्णु (पि २७६, नुपा १०९) । 'परियाय पुं [पर्याय] मृत्यु-समय (आचा) । 'परिहीण न [परिहीन] विलम्ब, देरी (राय) । 'पाल पु [पाल] देव विशेष, वरणेन्द्र का एक लोकपाल (ठा ४, १) । 'पास पुं [पाश] ज्योति-शास्त्र-प्रमिद्ध एक कुयोग (गण १८) । 'पिट्ठ, 'पुट्ठ पुन [पृष्ठ] १ धनुष । २ कर्ण का धनुष । ३ काला हरिण । ४ कौञ्च पक्षी (पि ५३) । 'पुरिस पु [पुरुष] जो पुत्रेद कर्म का अनुभव करता हो वह (सूत्र १, ४, १, २ टी) । 'प्पभ पु [प्रभ] इस नाम का एक पर्वत (ठा १०) । 'फोडय पुंस्त्री [स्फोटक] प्राणहर फोटा । स्त्री 'डिया (ग्भा) । 'भास पुं [नाम] मृत्यु-समय, 'कालमाने कालं विच्चा' (विपा १, १, २, भग ७, ६) । 'भासिणी स्त्री [भासिनी] गर्भिणी, शुविणी (दस ५, १) । 'मिग पु [मृग] कृष्ण मृग की एक जाति (ज २) । 'रत्ति स्त्री [रात्रि] प्रलय रात्रि, प्रलय-काल (गउड) । 'वड्डिसग न [वत्तंसक] देव-विमान-विशेष, काली देवी का विमान (गाया २) । 'वाइ वि [वादिन्] जगत को कालकृत माननेवाला, समय को ही सब कुछ माननेवाला (णदि) । 'वासि पुं [वपिन्] अवसर पर वरसनेवाला मेघ (ठा ४, ३—पत्र २६०) । 'सदीव पु [सदीप] असुर-विशेष, त्रिपुरासुर (आक) ।

करिसिय वि [कृशिन] दुवल किया हुआ (सूत्र १, ३)।

करीर पु [करीर] वृक्ष-विशेष करीर, करील (उप ७२८ टी, आ १६, प्रामू ६२)।

करीस पु [करीप] जलाने के लिए सुखाया हुआ गोबर, बड़ा, गोइठा (हे १, १०१)।

करुण देखो कलुण (स्वप्न ५३ सुपा २१६), 'उज्झड़ उचारभाव दक्खिण करुणय च आमुयइ' (गठड)।

करुणा स्त्री [करुगा] दना, दूम्ने के दुख को दूर करने की इच्छा (गठड, कुमा)।

करुणाउय वि [करुणायित] जिमपर करुणा की गई हो वह (गठड)।

करुणि वि [करुणिन्] करुणा करनेवाला, दयालु (मण)।

करे मक [कारय] कराना। करेइ (प्राक ६०)।

करेअव्व } देखो कर = कृ।
करेत }

करेडु पुं [दे] कृकलाम, गिरगिट, सरट (दे २, ५)।

करेणु पु [करेणु] १ हस्ती, हाथी। २ कनेर का गाछ, 'एसो करेणू' (हे २, ११६)। ३ स्त्री हस्तिनी हयिनी (हे २, ११६, गाय १, १, मुर ८, १३६)। 'दत्ता स्त्री [दत्ता] ब्रह्मदत्त चक्रवर्ती की एक स्त्री (उत्त १३)। 'सेणा स्त्री [सेना] देखो पूर्वोक्त अर्थ (उत्त १३)।

करेणुआ स्त्री [करेणु] हस्तिनी, हयिनी (पात्र, महा)।

करेमाण } देखो कर = कृ।
करेअव्व }

करेवाहिय वि [करवाधित] राज-कर से पीड़ित, महसूल से हैरान (श्रौप)।

करोड पु [दे] १ नारिकेल, नारियल। २ काक, कौआ। ३ वृषभ, बैल (दे २, ५४)।

करोडग पु [दे] पात्र-विशेष, कटोरा (निबू १)।

करोडि स्त्री [करोटि] सिर की हड्डी (सुख, २, २९)।

करोडिय पु [करोटिक] कापालिक, मिथुक-विशेष (गाय १, ८—पत्र १५०)।

करोडिया } स्त्री [करोटिका, °टी] १ कुंडा,
करोडी } बड़े मुँह का एक पात्र, काम्य-
पात्र-विशेष (अणु, दे ७, १५, पात्र)। २ म्यगिका, पानदान (गाय १, १ टी—पत्र ४३)। ३ मिट्टी का एक तरह का पात्र (श्रौप)। ४ कपाल, भिक्षा-पात्र (गाय १, ८)। ५ परोसने का एक उपकरण (दे, २, ३८)।

करोडी स्त्री [दे] एक प्रकार की चीटी, धुद्र-जंतु-विशेष (दे २, ३)।

करोडी स्त्री [दे] मुरदा, गव (कुप्र १००)।

कल मक [कलय] १ संरखा करना। २ आवाज करना। ३ जानना। ४ पहिचानना। ५ सबन्ध करना। कलइ (हे ४, २५६, पड्)। कलयति (विसे २०२६)। भवि कलडम्स (पि ५३३)। कर्म कलिजए (विसे २०२६)। वक्क कलयत (मुपा ४)। कवक्क कलिज्जत (मुपा ६४)। सक्क कलिऊण, कलिअ (महा, अभि १८२)। कृ कलगिज्ज, कलगीअ (मुपा ६२२, पि ६१)।

कल वि [कल] १ मधुर, मनोहर (पात्र)। २ पुं अव्यक्त मधुर शब्द (गाय १, १६)। ३ कोलाहल, बलवन (चद १६)। ४ कदम, कीचड़, बादो (भत्त १३०)। ५ धान्य-विशेष, गोल चना, मटर (ठा ५, २)। 'कठी स्त्री [कण्ठी] कोकिला, कोयल (दे २, ३०, कप्पू)। 'मजुल वि [मज्जुल] शब्द ने मधुर (पात्र)। 'यठ पु [कण्ठ] कोकिल, कोयल (कुमा)। 'यटी देखो 'कण्ठी (मुर ४, ४८)। 'हस पुं [हम] एक पक्षी, राज-हंस (कप्प, गठड)।

कलक पु [कलक्क] १ दाग, दोष (प्रामू ६४)। २ लावछन, चिह्न (कुमा, गठड)।

कलक मक [कलक्कय] कलकित करना। कलकइ (भवि)। कृ. कलकियव्व (मुपा ४४८, ५८१)।

कलक पु [दे] १ बाँस, वश (दे २, ८)। २ बाँस की बनावी हुई बाड़ (गाय १, १८)। कलकण न [कलङ्कन] कलकित करना (पव ८)।

कलकल वि [कलङ्कल] अममंजस, अशुभ (श्रौप, संथा)।

कलकलीभागि वि [कलङ्कलीभागिन] दुख-व्याकुल (सूत्र २, २, ८१, ८३)।

कलकलीभाव पु [कलङ्कलीभाव] १ दुःख से व्याकुलता। २ ममार-परिभ्रमण (आन्ना २, १६, १२)।

कलकवई स्त्री [दे] वृत्ति, बाड़, कटे आदि में परिच्छन्न स्थान-परिधि (दे २, २४)।

कलकिय वि [कलङ्कित] कलकित, दागी (हे ४, ४३८)।

कलकिय वि [कलङ्कित] कलकवाला, दागी (काल, पि ५६५)।

कलतर न [कलानर] व्याज, नूद (कुप्र ३५५)।

कलड पु [कलण्ड] १ गुण्ड, कुण्ड, रग-पात्र (उत्ता)। २ जाति में आर्य एक प्रकार के मनुष्य (ठा ६—पत्र ३५८)।

कलड पुं [कडम्भ] १ वृक्ष-विशेष, नीप, कदम का गाछ (हे १, ३०, २२२ गा ३७, कप्पू)। 'चीर न [चीर] शस्त्र-विशेष (विपा १, ६—पत्र ६६)। 'चीरिया स्त्री [चीरिका] वृण-विशेष, जिमका अग्र भाग अति तीक्ष्ण होता है (जीव ३)। 'वालुया स्त्री [वालुका] १ कदम्ब के पुष्प के आकार-वाली धूल। २ नरक की नदी, कलववा-लुयाए दड्डुपुव्वो अणतसो' (उत्त १६)।

कलवु स्त्री [दे] वल्ली-विशेष, नानिका (दे २, ३)।

कलवुअ न [कडम्भक] कदम्ब-वृक्ष का पुष्प, 'धाराहयकलवुअं पिव समुम्मनियरोमकूवे' (कप्प)।

कलवुआ [दे] देखो कलवु (पण १, मुज ४)।

कलवुआ स्त्री [कलम्बुका] १ कदम्ब पुष्प के समान मास-गोलक। २ एक गाँव का नाम, जहाँ पर भगवान् महावीर को कालहस्ती ने सताया था (राज)।

कलवुगा स्त्री [कलम्बुका] जल में होनेवाली वनस्पति की एक जाति (सूत्र २, ३, १८)। कलवुय पु [कडम्भक] कदम्ब-वृक्ष (सुख १६)।

कलकल पु [कलकल] १ कोलाहल, कल-कलख (आ १४)। २ व्यक्त शब्द, स्पष्ट

कालुस्स न [कालुष्य] कलुषपन (मा २) ।
कालेज्ज न [दे] तापिच्छ, श्याम तमाल का
पेड (दे २, २६) ।

कालेय न [कालेय] १ काली देवी का अपत्य ।
२ सुगन्धि द्रव्य विशेष, कालचन्दन (स ७५) ।
३ हृदय का मास-खण्ड, कलेजा (सूत्र १,
५, १, रंभा) ।

कालोद देखो कालोय (जीव ३) ।
कालोदधि पु [कालोदधि] समुद्र-विशेष
(पण्ड १, ५) ।

कालोदाड पु [कालोदायिन्] इस नाम का
एक दार्शनिक विद्वान् (भग ७, १०) ।
कालोय पु [कालोद] समुद्र विशेष जो
घातकी-खण्ड द्वीप को चारों तरफ घिर कर
स्थित है (सम ६७) ।

काव } पु [दे] १ काँवर, वहाँगी, बोझ
कावड } ढोनेके लिए तराजूनुमा एक वस्तु,
इसमें दोनों ओर सिकहर लटकाये जाते हैं
(जीव ३, पउम ७५, ५२) । ०कोडिय पु
[०कोटिक] काँवर से भार ढोनेवाला
(अणु) । देखो काय = (दे) ।

कावडि } स्त्री [दे] कावर (कुप्र १२१,
कावोडि } २४४, दस ४, १ टी) ।

कावडिअ पु [दे] वेवधिक, काँवर से भार
ढोनेवाला (पउम ७५, ५२) ।

कावध पु [कावध्य] एक महाग्रह, ग्रहाधि-
प्रायक देव-विशेष (राज) ।

कावलिअ वि [दे] असहन, असहिष्णु (दे
२, २८) ।

कावलिअ वि [कावलिक] कवल-प्रक्षेप रूप
आहार (भग, सग १८१) ।

कावालिअ पु [कापालिक] वाम-मार्गी, अघोर
सम्प्रदाय का मनुष्य (सुपा १७४, ३६७, दे
१, ३१, प्रवो ११५) ।

कावालिआ } स्त्री [कापालिकी] कापालिक-
कावालिणी } व्रतवाली स्त्री (गा ४०८) ।

काविट्ट न [कापिट्ट] देव-विमान-विशेष (सम
२७, पउम २०, २३) ।

काविल न [कापिल] १ साख्य-दर्शन (सम्म
१४५) । २ वि साख्य मत का अनुयायी
(औप) ।

काविलिय वि [कापिलीय] १ कापिल मुनि-
सन्धी । २ न कापिल मुनि के वृत्तान्तवाला
एक ग्रन्थाश, 'उत्तराध्ययन' सूत्र का आठवाँ
अध्ययन (सम ६४) ।

काविसायण देखो कविसायण (जीव ३) ।
कावी स्त्री [दे] नीलवर्णवाली, हरा रंग की
चीज (दे २, २६) ।

कावुरिस देखो कापुरिम (म ३७५) ।

कावेअ न [कापेय] वानरपन, चञ्चलता
(अचु ६२) ।

कावोय वि [दे] काँवर बहन करनेवाला
(अणु ४६) ।

कास देखो कड्ड = कृप् । कासइ (पड्) ।

कास अक [काम्] १ कहरना, रोग विशेष
से खराब आवाज करना । २ कासना, खाँसी
को आवाज करना । ३ खोंखार करना । ४
छीक खाना । वक्तु कासंत, कासमाण (पण्ड
१, ३—पत्र ५४, आचा) । सकृ फासित्ता
(जीव ३) ।

कास पु [काश, °स] १ रोग विशेष, खाँसी
(णाय १, १३) । २ तृण-विशेष, कास, काम-
कुसुमव मन्ते मुनिफल जम्म-जीविय नियय'
(उप ७२८ टी) 'कामुकुसुमव विहल' (आप
५८) । ३ उसका फूल जो सफेद और शोभाय-
मान होता है, 'ता तव्य नियइ धूलि समहर-
हरहासकासकास' (मुपा ४२८, कुमा) । ४
ग्रह विशेष, ग्रह-देव-विशेष (ठा २, ३) । ५
रस (ठा ७) । ६ ससार, जगत् (आचा) ।

कास देखो कस = कास्य (हे १, २६, पड्) ।

कासंकस वि [कासङ्कप] प्रमादी, ससार में
आसक्त (आचा) ।

कासग देखो कासय, 'जेण रोहति बीजाई,
जेण जीवति कामगा' (निचू १) ।

कासण न [कासन] खोंखारना, खाट्कार
(ओष २३५) ।

कासमदग पु [कासमर्दक] वनस्पति-विशेष,
गुच्छ-विशेष (पण्ड १—पत्र ३२) ।

कासय } पु [कर्पक] कृषीवल, किसान (दे
कासव } १, ८७, पात्र),

'जह वा लुणाइ सस्ताई,
कासवो परिणयाई छितम्मि ।

तह भूयाई कयतो, वत्थुमहावो इमो जम्हा'
(सुपा ६५१) ।

कासय पु [काश्यप] १ इस नाम का एक
ऋषि (प्रामा) । २ हरिण की एक जाति ।
२ एक जात की मछली । ४ दक्ष प्रजापति
का जामाता । ५ वि दारु पीनेवाला (हे १,
४३, पड्) ।

कासव न [काश्यप] १ इस नाम का एक
गोत्र (ठा ७, णाय १, १, कप्प) । २ पु
भगवान् ऋषभदेव का एक पूर्व पुरुष । ३ वि.
काश्यप गोत्र में उत्पन्न, काश्यप-गोत्रीय (ठा
७—पत्र ३६०, उत्त ७, कप्प, सूत्र १, ६) ।
४ पुं नापित, हजाम (भग ६, १०, आचम) ।
५ इस नाम का एक गृहस्थ (अत १८) । ६
न, इस नाम का एक 'अतगडदमा' सूत्र का
अध्ययन (अत १८) ।

कासवनालिया स्त्री [काश्यपनालिका] श्री-
पर्णीफल (आचा २, १, ८, ६, दम ५, २,
२१) ।

कासविज्जया स्त्री [काश्यपीया] जैन मुनियों
की एक शाखा (कप्प) ।

कासवी स्त्री [काश्यपी] १ पृथिवी, वरित्री
(कुमा) । २ काश्यप-गोत्रीया स्त्री (कप्प) ।
३ स्त्री [रति] भगवान् सुमतिनाथ की
प्रथम शिष्या (सम १५२) ।

कासा स्त्री [कृशा] दुर्बल स्त्री (हे १, १२७,
पड्) ।

कासाइया } स्त्री [कापायी] कपाय-रंग में
कासाई } रंगी हुई माडी, लाल साडी (कप्प,
उवा) ।

कासाय वि [कापाय] कपाय-रंग से रंगा
हुया वस्त्रादि (गडड) ।

कासार न [कासार] १ तलाव, छोटा सरोवर
(सुपा १६६) । २ पक्षाक्ष-विशेष, काँसार
(स १८६) । ३ पु समूह, जत्या (गडड) ।
४ प्रदेश, स्थान (गडड) । ०भूमि स्त्री
[भूमि] नितम्ब-प्रदेश (गडड) ।

कासार न [दे] धातु-विशेष, सीसपत्रक (दे
२, २७) ।

कासि पु [काशी] १ देश-विशेष, काशी
जिला, 'कासित्ति जणवओ' (सुपा ३१, उत्त
१८) । २ काशी देश का राजा (कुमा) ।

की रीति) । ३२ म्त्री लक्षण (छो के शुभाशुभ चिन्हों का परिज्ञान) । ३३ पुरुष लक्षण । ३४ अश्व लक्षण । ३५ गज-लक्षण । ३६ गो-लक्षण । ३७ कुक्कुट-लक्षण । ३८ छत्र लक्षण । ३९ दण्ड लक्षण । ४० ग्रमि लक्षण । ४१ मणि-लक्षण (रत्न-परीक्षा) । ४२ काकणि-लक्षण (रत्न विशेष की परीक्षा) । ४३ वास्तुविद्या (गृह बनाने और मजाने की रीति) । ४४ स्कन्धावार मान (मैन्य परिमाण) । ४५ नगर-मान । ४६ चार (गृह-चार का परिज्ञान) । ४७ प्रतिचार (ग्रहों के वक्र-गमन वगैरह का ज्ञान, अथवा रोगप्रतीकार ज्ञान) । ४८ व्यूह (मैन्य रचना) । ४९ प्रतिव्यूह (प्रतिद्वन्द्व व्यूह) । ५० चक्र व्यूह । ५१ गरुड-व्यूह । ५२ शकट व्यूह । ५३ युद्ध (मल्ल-युद्ध) । ५४ निरुद्ध । ५५ युद्धातिरुद्ध (खड्गादि शस्त्र में युद्ध) । ५६ दृष्टि युद्ध । ५७ मुष्टि-युद्ध । ५८ बाहु युद्ध । ५९ लता युद्ध । ६० धनु-शस्त्र (दिव्यास्त्र-सूचक शास्त्र) । ६१ मरु-प्रपात (खड्ग शिक्षा शास्त्र) । ६२ वनबेद । ६३ हिरण्य पाक (चाँदी बनाने की रीति) । ६४ सुवर्ण-पाक । ६५ सूत्रक्रीडा (एक ही मूत को अनेक प्रकार कर दिखाना) । ६६ वस्त्र-क्रीडा । ६७ नालिका खेल (द्युत-विशेष) । ६८ पत्र-च्छेद्य (अनेक पत्रों में अमुक पत्र का छेदन, हस्त-लाघव) । ६९ कट-च्छेद्य (कट की तरह क्रम में छेद करने का ज्ञान) । ७० सजीव (मरी हुई वातु को फिर अमल बनाना) । ७१ निर्जीव (घालु-मारण, रमायण) । ७२ शकुन-स्त (शकुन-शास्त्र) । (ज २ टी. सम ८३) । गुरु पु [गुरु] कलाचार्य, विद्याध्यापक, शिक्षक (मुपा २५) । गुरिय पुं [गुरिय] देखो पूवाक्त शर्ष (गाथा १, १) । वई छो [वती] १ कलावाली छो । २ एक पत्रिता छो (उप ७३६, पडि) । सवणग न [सवर्ण] मर्या-विशेष (ठा १०) ।

कलाइआ छो [कलाचिका] प्रकोष्ठ, कोनी से लेकर मणिवन्ध तक का हस्नावयव (पात्र) । कलाय पु [कलाय] सोनार, भुवर्णकार (पणह १, २, गाथा १, ८) ।

कलाय पु [कलाय] धान्य विशेष, गोल चना, मटर (ठा ३, ५, अनु ५) ।

कलाय पु [कलाय] १ समूह, जत्या (हे १, २३१) । २ मयूर-पिच्छ (मुपा ४८) । ३ शरवि, तूण, जिममे बाण रखे जाते हैं (दे २, १५) । ४ कण्ठ का आभूषण (ग्रोप) । कलायन न [कलायक] १ चार श्लोकों को एक वाक्यता । २ ग्रीवा का एक आभरण (पणह २, ५) ।

कलायन न [कलायक] चार 'न्यो' की एक वाक्यता (मम्मत्त १८७) ।

कलावि पुछो [कलापिन्] मयूर, मोर (उप ७२८ टी) ।

कलि पु [कलि] एक नरकावास (देवेन्द्र २६) ।

कलि पु [कलि] १ कलह, झगडा (कुमा, प्रामू ६४) । २ युग-विशेष, कलि युग (उप ८३३) । ३ पर्वत विशेष (ती ५४) । ४ प्रथम भेद (निचू १५) । ५ एक, अकेला (सूत्र १, २, २, भग १८, ४) । ६ दुष्ट पुरुष, 'दुष्टो कली' (पात्र) । ७ ओग, 'ओय पु [ओज] युग्म-राशि विशेष (भग १८, ४, ठा ४, ३) । ८ ओयकडजुम्म पु [ओज-कृतयुग्म] युग्म-राशि-विशेष (भग ३४, १) । ९ ओयकलिओय पु [ओजकल्योज] युग्म-राशि विशेष (भग ३४, १) । १० ओजत-ओय पु [ओजज्योज] युग्म राशि विशेष (भग ३४, १) । ११ ओयदावरजुम्म पु [ओजद्वारयुग्म] युग्म-राशि-विशेष (भग ३४, १) । १२ कुड न [कुण्ड] तीर्थ-विशेष (ती १५) । १३ जुग न [युग] कलि-युग (ती ११) ।

कलि पु [दे] शत्रु दुश्मन (दे २, २) ।

कलिअ वि [कलिन] १ युक्त, सहित (पणह १, २) । २ प्राप्त, गृहीत । ३ ज्ञात, विदित (दे २, ५६, पात्र) ।

कलिअ देखो कल = कलय् ।

कलिअ पु [दे] १ नकुल, न्योला, नेवला । २ वि गवित, गवें युक्त (दे २, ५६) ।

कलिआ छो [दे] सखी, सहेली (दे २, ५६) ।

कलिआ छो [कलिका] अविकसित पुष्प, कली (पात्र, गा ४८२) ।

कलिग पु [कलिङ्ग] १ देश विशेष, यह देश उडीया में दक्षिण की ओर बोदावरी के मुहाने पर है (पचम ६८, ६७, ओष ३० भा.

प्रामू ६०) । २ कलिग देश का राजा (पिंग) । कलिग पु [कलिङ्ग] भगवान् आठनाय का एक पुत्र (ती १४) ।

कलिच देखो किलिच (गा ७७०) ।

कलिज पुं [कलिज] कट, चटाई (निचू १७) ।

कलिज न [दे] छोटी लकड़ी (दे २, ११) ।

कलिच पुन [कलिच] १ वान का पात्र-विशेष, कलिचो वनकम्परी (गच्छ २) । २ सूखी लकड़ी (भग ८, ३) ।

कलित्त न [कटित्र] कमर पर पहना जाता एक प्रकार का चर्म मय कवच (गाथा १, १, ग्रोप) ।

कलिम न [दे] कमल, पद्म (हे २, ६) ।

कलिमल देखो मलमल = कलकल (तदु ४१) ।

कलिल वि [कलिल] गहन, घना, दुर्भेद्य (पात्र) ।

कलुण वि [करुण] १ दीन, दया-जनक, कृपा-पात्र (हे १, २५४, प्रामू १२६, मुर २, २२६) । २ पु साहित्य शास्त्र-प्रसिद्ध नव रसों में एक रस (अणु) ।

कलुणा देखो करुणा (राज) ।

कलुस वि [कलुप] १ मतिन, अत्वच्छ, 'कलिकलुम' (विपा १, १, पात्र) । २ न पाप, दोष, मैल (स १३२, पात्र) ।

कलुसिअ वि [कलुपित्त] पाप-ग्रस्त, मतिन (से १०, ५, गडड) ।

कलुमीकय वि [कलुपीकृत] मलिन क्रिया हुआ (उव) ।

कलेर पु [दे] १ ककाल, अस्थि-पट्टजर । २ वि कराल, भयानक (दे २, ५३) ।

कलेवर न [कलेवर] शरीर, देह (आठ ६८, पिंग) ।

कलेसुय न [कलेसुक] तृण-विशेष (सूत्र २, २) ।

कलोवाइ छो [दे] पात्र-विशेष (आचा २, १, २, १) ।

कल न [कलय] १ कल, गया हुआ या आगामी दिन (पात्र, गाथा १, १, दे ८, ६७) । २ शब्द, आवाज । ३ सट्या, गिनती (विसे ३४४२) । ४ आरोग्य, निरोगता, 'कल किलालग' (विसे ३४३६) । ५ प्रमात, सुबह (अणु) । ६ वि निरोग, रोग रहित

किजकर पु [ट] शिरोप-वृद्ध, मिरम का पद (दे २, ३१) ।

किणेव (गो) । अ [किमिदम्, किमेनन्] यह क्या ? (पड, कुमा) ।

किन्तु अ [किन्तु] परन्तु, नेकिन (सुर ४, ३७) ।

विशुग्घ देखो किन्तुग्घ (राज) ।

किदिय न [किन्द] १ वल्लुन का मध्य-स्थल । २ उत्तोतिप मे इष्ट लन मे पहला, चौथा, सातवां और दसवा स्थान 'किदियठाणट्टिय-गुरम्मि' (सुपा ३६) ।

किदुअ पु [किन्दुक] कन्दुक, गेद (भवि) ।

किधर पु [दे] छोटी मछली (दे २, ३२) ।

किनर पु [किन्नर] १ व्यन्तर देवों की एक जाति (परह १, ४) । २ भगवान् धर्मेनाथ जी के शासनदेव का नाम (सति ८) । ३ चमरेन्द्र की रथ-सेना का अधिपति देव (ठा ५, १) । ४ एक इन्द्र (ठा २, ३) । ५ देव-गन्धर्व, देव-गायक (कुमा) । ६ कठ पु [कण्ठ] किन्नर के कण्ठ जितना बड़ा एक मणि (जीव ३) ।

किनरी स्त्री [किन्नरी] किन्नर देव की स्त्री (कुमा) ।

किन्तु अ [किन्तु] पूर्वपक्ष, आक्षेप, आशका का सूचक अव्यय (वव १) ।

किपय वि [दे] कृपण, कजूस (दे २, ३१) ।

किपाग पु [किम्पाक] १ वृद्ध-विशेष, 'हुति मुहि चिय महुरा विमया किपागभूहफल व' (पुष्प ३६२ ओप) । २ न उसका फल, जो देवने मे और स्वाद मे सुन्दर, परन्तु खाने मे प्राण का नाश करता है, 'किपागफलोवमा विमया' (सुर १२, १३८) ।

किपि अ [किमपि] कुछ भी (प्रामू ६०) ।

किपुरिस पु [किपुरूप] १ व्यन्तर देवों की एक जाति (परह १, ४) । २ एक इन्द्र, किन्न-निकाय के उत्तर दिशा का इन्द्र (ठा २, ३) । ३ वरोचन वलीन्द्र की रथसेना का अधिपति देव (ठा ५, १—पत्र ३०२) ।

६ कठ पु [कण्ठ] मणि की एक जाति, जो किपुरूप के कण्ठ जितना बड़ा होता है (जीव २) ।

किवोड वि [दे] स्वनिष्ठ, गिरा हुआ, भुला हुआ (२, ३१) ।

किमउम वि [किमय] असार, नि मार (परह २, ४) ।

किवयती स्त्री [किवदन्ती] जनश्रुति, जनरव (हम्मीर ३६) ।

किसारु पु [किगारु] सस्थ-शूक, मय्य का तीक्ष्ण अत्र भाग (दे २, ६) ।

किरुग्घ न [किरुत्तु] ज्योतिष-प्रसिद्ध एक स्थिर करण (विषे ३३५०) ।

किरुअ पु [किशुक] १ पलाश का पड, डेम्, ढाक (सुर ३ ४६) । २ न. पलाश का पुष्प (हे १, २६, ८६) ।

किक्किडि पु [दे] मर्प, सांप (दे २, ३२) ।

किक्किधा स्त्री [किक्किन्धा] नगरे विशेष (से १४, ५५) ।

किक्किधि पु [किक्किन्धि] १ पर्वत-विशेष (पउम ६, ४५) । २ इस नाम का एक गजा (पउम ६, १५४, १०, २०) । ३ पुर न [पुर] नगर विशेष (पउम ६, ४५) ।

किच्च वि [कृत्य] १ करने योग्य, कर्तव्य, फरज (सुपा ८६५, कुमा) । २ वन्दनीय, पूजनीय, 'न पिट्ठो न पुरो नेव किच्चाण पिट्ठो' (उत्त ३) । ३ पु गृहस्थ (सूअ १, १, ४) । ४ न गाम्भीर्य अनुष्ठान, क्रिया, कृति (आचा २ २, २, सूअ १, १, ४) ।

किच्चत वि [कृत्यमान] १ छिन्न किया जाता, काटा जाता । २ पीड़ित किया जाना, सताया जाता (राज) ।

किच्चण न [ट] प्रक्षालन, धोना, 'हरिश्चन्द्रेयण छप्पइयधच्चण किच्चण च पोत्ताण' (ओव १६८—पत्र ७२) ।

किच्चा स्त्री [कृत्या] १ काटना, कर्तन (उप पृ ३५६) । २ क्रिया, काम, कर्म । ३ देव वगैरह की मूर्ति का एक भेद । ४ जादूगरी जादू । ५ रोग-विशेष, महामारी का रोग (हे १, १२८) ।

किच्चा देखो कर = कृ ।

किच्चि स्त्री [कृत्ति] १ मृग वगैरह का चमड़ा । २ चमड़े का वस्त्र । ३ भूजपत्र, भोजपत्र । ४ कृत्तिका नक्षत्र (हे २, १२ ८६, पड) ।

० पाउरण पु [० प्रावरण] महादेव, शिव (कुमा) । ० हर पु [० वर] महादेव, शिव (पड) ।

किच्चिर अ [कियच्चिरम्] कितने समय तक, कब तक ? (उप १२८ वे) ।

किच्च न [कृच्च] १ दुःख कष्ट (ठा ५, १) । २ वि कष्ट-भाव्य, कष्ट-युक्त (हे १, १२८) । ३ किच्चि दुःख ने, मुष्किल ने (सुर ८, १४८) ।

किज वि [क्रेय] खरीदने योग्य, 'अन्निं किज्जमेव वा' (दम ७) ।

किज्जत देखो कि = कृ ।

किज्जअ वि [कृत] किया गया, निर्मित (पिग) ।

किट्ट सक [कीर्त्तय] १ श्लाघा करना, स्तुति करना । २ वर्णन करना । ३ बहना, बोलना । किट्ट किट्टेइ (आचा, भग) । बह, किट्टमाण (पि २८६) । सक्त किट्टइत्ता, किट्टित्ता (उत्त २६, कण्ठ) । हेक्क किट्टित्तए (कस) ।

किट्ट स्त्री [किट्ट] १ घातु का मल, मैल (उप ५३२) । २ रग-विशेष (उर ६, ५) । ३ तेल, धो वगैरह का मैल । स्त्री. ० ट्टी (पमा ३३) ।

किट्टण देखो किट्टण (वह ३) ।

किट्टि स्त्री [किट्टि] १ अल्पीकरण-विशेष, विभाग-विशेष, 'अपुव्वविसोहीए अणुमानोणु-एविभयणं किट्टी' (पच १२, आवम) ।

किट्टिय वि [कीर्त्तित] १ वर्णित, प्रशंसित (सूअ २, ६) । २ प्रतिपादित, कथित (सूअ २, २, ठा ७) ।

किट्टिया स्त्री [कीटिका] वनस्पति-विशेष (परह १, भग ७, २) ।

किट्टिन न [किट्टिस] १ खली, मरमो, तिन आदि का तेल रहित चूर्ण (अणु) । २ एक प्रकार का सूत, सूता (अणु, आवम) ।

किट्टिस न [किट्टिस] १ ऊन आदि का बाकी बचा हुआ अश । २ उसमे बना हुआ सूता । ३ ऊन, ऊँट के बाल आदि की मिलावट का सूता (अणु ३४) ।

किट्टी देखो किट्ट = कृट्ट ।

किट्टीकर वि [किट्टीकृत] आपम मे मिला हुआ, एकाकार, जैसे सुवर्ण आदि का किट्ट

कविअ न [कविक] लगाम (पात्र, मुपा २१३) ।
 कविजल देखो कविजल (आवा २) ।
 कविकच्छु } देखो कइकच्छु (पएह २, ५,
 कविगच्छु } आ १४, दे १, २६, जीव ३) ।
 कविट्ट देखो कइट्ट (पएण १, दे ३, ४५) ।
 कविड न [दे] घर का पिछला आंगन (दे २, ६) ।
 कवित्य देखो कइत्य (उप ३०३१ टी) ।
 कवियच्छु देखो कइकच्छु (स २३६) ।
 कविल पु [दे] श्वान, कुत्ता (दे २, ६, पात्र) ।
 कविल पु [कपिल] १ वरुण-विशेष, भूरा रग, तामटा वरुण (उवा २) । २ पल्लि-विशेष (पएह १, ४) । ३ साह्य मत का प्रवर्तक मुनि-विशेष (आवम, औप) । ४ एक ब्राह्मण महर्षि (उत्त ८) । ५ इस नामका एक वासुदेव (एया १, १६) । ६ राहु का पुत्र-विशेष (सुज २०) । ७ वि भूरा रग का, मटमैला रग का (पउम ६, ७०, से ७, २२) ।
 १ स्त्री [१] एक ब्राह्मणी का नाम (आचू) ।
 कविलडोला स्त्री [दे कपिलडोला] धुद्र जन्तु-विशेष, जिसको गुजराती में 'खडमाकडी' कहते हैं (जी १८) ।
 कविलास देखो कइलास, 'तेमुवि हवेज कविलासमेरुगिरिसंनिभा कूडा' (उव) ।
 कविलिअ वि [कपिलित] कपिल रंगवाला किया हुआ, भूरे रंग से रंगित (गउड) ।
 कविल्लुय न [दे] पात्र-विशेष, कडाही (वृह ५) ।
 कविस पुं [कपिश] १ वरुण-विशेष, काला-पीला रग, वादामी, कृष्ण-पीत-मिश्रित वरुण । २ वि कपिश वरुणवाला (पात्र, गउड) ।
 कविस न [दे] दाह, मय, मदिरा (दे २, २) ।
 कविसा स्त्री [दे] अर्धजह्वा, एक प्रकार का जूता (दे २, ५) ।
 कविसायण पुंन [कपिशायन] मय-विशेष, गुड का दाह (पएण १७—पत्र ५३२) ।
 कविसीसग } पुन [कपिशीर्षक] प्राकार
 कविसीमय } का अग्र-भाग (औप, एया १, १, राय) ।
 कविहसिय पुन [कपिहसित] आकाश में

अकस्मात् होनेवाली भयकर आवाज करती जवाला (अणु १२०) ।
 कवेल्लुय देखो कविल्लुय (ठा ८—पत्र ४१७) ।
 कवोड देखो कवोय (पिंड २१७) ।
 कवोय पु [कपोत] १ कवूतर, पारावत, परेवा (गउड, विपा १, ७) । २ म्लेच्छ देश-विशेष (पउम २७, ७) । २ न कूप्माएड, कोहडा (भग १५) ।
 कवोल पु [कपोल] गाल, गण्ड (सुर ३, १२०, हे ४, ५६५) ।
 कवोशण (मा) वि [कटुण्ण] थोडा गरम (प्राक् १) ।
 कव्य न [काव्य] १ कविता, कवित्व (ठा ४, ४, प्रामू १) । २ पु ग्रह-विशेष, शुक्र (सुर ३, ५३) । ३ वि वरुणीय, श्लाघनीय (हे २, ७६) । ४ इत्त वि [वत्] काव्यवाला (हे २, १५६) ।
 कव्य न [कव्य] मास (सुर ३, ५३) ।
 कव्यट्ट पु [दे] बालक, बच्चा (गच्छ ३, १६) ।
 कव्यड देखो कव्यड (भवि) ।
 कव्या स्त्री [कव्या] माया (सूत्र० चू० पत्र. १७५ सूत्र गा० ३४५ अय्या० ६ गा० १) ।
 कव्याड पु [दे] दक्षिण हस्त, दाहिना हाथ (दे २, १०) ।
 कव्याडिअ वि [दे] काँवर उठानेवाला, बहंगी से माल ढोनेवाला (कुप्र १२१) ।
 कव्याय पुं [कव्याद] १ राक्षस, पिशाच (पउम ७, १०, दे २, १५, स २१३) । २ वि. कच्चा माम खानेवाला (पउम २२, ३५) । ३ मास खानेवाला (पात्र) ।
 कव्याल न [दे] १ कर्म-स्थान, कार्यालय । २ गृह, घर (दे २, ५२) ।
 कस मक [कप्] १ ठार मारना । २ कसना, घिसना । ३ मलिन करना । कसति (पएण १३) । कवक कसिज्जमाण (मुपा ६१५) ।
 कस पु [कश] चर्म-पाट, चावुक (पएह १, ३, एया १, २, स २८७) ।
 कस पु [कप] १ कसौटी, कप-क्रिया, 'ताव-ज्येयकमेहि सुद्ध पासइ सुवन्नमुप्पन्न' (मुपा ३८६) । २ कसौटी का पत्थर (पात्र) । ३ वि. हिंसक, मार डालनेवाला, ठार मारने-

वाला (ठा ४, १) । ४ पुन ससार, भव, जगत् (उत्त ४) । ५ न कर्म, कर्म-मुद्गल, 'कम्म कस भवो वा कस' (विसे १२२८) ।
 १ पट्ट, १ पट्ट पु [१ पट्ट] कसौटी का पत्थर (अणु, गा ६२६, सुर २, २४) । १ हि पुत्री [१ हि] सर्प की एक जाति (पएण १) ।
 कसई स्त्री [दे] फल विशेष, अरण्यचारी वनस्पति का फल (दे २, ६) ।
 कसट (वे) देखो कट्ट = कट्ट (हे ४, ३१०, प्राप्र) ।
 कसट्ट पु [दे] कत्तवार, कूडा (औप ५५७) ।
 कसण पुं [कृष्ण] १ वरुण विशेष । २ वि. कृष्ण वरुणवाला, काला, श्याम (हे २, ७५, ११०, कुमा) । १ पक्कव पुं [१ पक्क] कृष्ण-पक्ष, बदी पखवारा (पात्र) । १ सार पु [१ सार] १ वृक्ष-विशेष । २ हरिण की एक जाति (नाट—मृच्छ ३) ।
 कसण वि [कृत्तन] सकल, सब, सम्पूर्ण (हे १, ७५) ।
 कसणसिअ पु [दे] बलमद्र, वासुदेव का बडा भाई (दे २, २३) ।
 कसणिअ वि [कृष्णित] काला किया हुआ (पात्र) ।
 कसमीर देखो कम्हीर (पउम ६८ ६५) ।
 कसर पु [दे] अवम वैल (दे २, ४, गा ७६५), 'नणु सीलमख्वहणे, तेवि हु सीयति का (? क) सव्व' (पुष्फ ६३) ।
 कसर पुंन [दे कसर] रोग-विशेष, कण्डू-विशेष, 'कच्छुव (? क) सराभिभूआ खरतिक्ख-णक्खकइइअविकयतणू' (ज २—पत्र १६५) ।
 कसरक पुंन [दे कसरक] १ चर्वण-शब्द खाते समय जो शब्द होता है वह, 'खजइ न उ कसरकहेहि' (हे ४, ४२३, कुमा) । २ कुड्मन, फूल की कली, ते गिरिसिहरा ते पीलु-पल्लवा ते करीरकसरका । लवमति करह । मरुविलमियाइ कलो वणेत्थम्मि' (वजा ४६) ।
 कसव्य न [दे] वाष्प, भाफ । २ वि स्तोक, अल्प । ३ प्रचुर, व्याप्त (दे २, ५३) । ४ आद्र, गोला, 'कहिरकसव्वालवियदीहरवणको-लवमनिउरंवं' (स ४३७, दे २, ५३) । ५ ककंश, परुष, 'वृद्धोभयकयरवचुएणकलुम-पालासफलकसव्वाओ' (गउड) ।

कित्तय वि [कीर्त्तक] कीर्त्तन-कर्ता (पव २१६ टी)।

कित्तवोरिअ देखो कत्तवीरिअ (ठा ८)।

कित्ता देखो किच्चा = कृत्या (प्राकृ ८)।

किन्ति स्त्री [कीर्त्ति] १ यश, कीर्त्ति, सुख्याति (श्रोप, प्रासू ४३, ७४, ८२)। २ एक विद्या-देवी (पउम ७, १४१)। ३ वेमरि-द्रह की अधिष्ठात्री देवी (ठा २, ३—पत्र ७२)। ४ देव-प्रतिमा-विशेष (गाया १, १ टी—पत्र ४३)। ५ श्लाघा, प्रशंसा (पच ३)। ६ नीलवन्त पर्वत का एक शिखर (ज ४)। ७ सौधमं देवलोक की एक देवी (निर)। ८ पुं इस नाम का एक जैन मुनि, जिसके पास पाँचवें बलदेव ने दीक्षा ली थी (पउम २०, २०५)। ९ कर वि [कर] १ यशस्कर, ख्याति-कारक (गाया १, १)। २ पु भगवान् आदिनाथ के एक पुत्र का नाम (राज)। १० चद पु [चन्द्र] नृप-विशेष (धम्म)। ११ धम्म पु [धर्म] इस नाम का एक राजा (दस)। १२ धर पु [धर] १ नृप-विशेष (तदु)। २ एक जैन मुनि, दूसरे बलदेव के गुरु (पउम २०, २०५)। पुरिस पु [पुरुष] कीर्त्ति-प्रधान पुरुष, वासुदेव वगैरह (ठा ६)। १३ म वि [मन्] कीर्त्ति-युक्त। १४ मई स्त्री [मती] १ एक जैन साध्वी, (आक)। २ ब्रह्मदत्त चक्रवर्ती की एक स्त्री (उत्त १३)। १५ य वि [य] कीर्त्ति-कर, यशस्कर (श्रौप)।

किन्ति स्त्री [कृत्ति] चमं, चमड़ा, 'कुत्तो अम्हाण वरधकिन्ती य' (काप्र ८६३, गा ६४०, वज्जा ४४)।

किन्तिम वि [कृत्तिम] वनावटी, नक्ली (सुपा २४, ६१०)।

किन्तिय वि [कीर्त्तित] १ उक्त, कथित, 'किन्तियवदियमहिया' (पडि)। २ प्रशंसित, श्लाघित (ठा २, ४)। ३ निरूपित, प्रति-पादित (तदु)।

किन्तिय वि [क्रियत्] कितना (गउड)।

किन्न वि [किन्न] आद्र, गोला (हे ४, ३२६)।

किन्ह देखो कण्ह (कप्प)।

किपाड वि [दे] स्वलित, गिरा हुआ (पड्)।

किन्विस न [किल्विप] १ पाप, पातक (परह १, २)। २ माम, 'निगय च से वीयपामेण किन्विस' (स २६३)। ३ पु. चाण्डाल-स्थानीय देव-जाति (भग १२, ५)। ४ वि मलिन। ५ अधम, नीच (उत्त ३)। ६ पापी, दुष्ट (धर्म ३)। ७ कबुर, चितकवरा (तदु)।

किन्विसिय पु [किल्विपिक] १ चाण्डाल-स्थानीय देव-जाति (ठा ३, ४—पत्र १६२)। २ केवल वेपधारी साधु (भग)। ३ वि अधम, नीच (सूत्र १, १, ३)। ४ पाप-फल को भोगनेवाला दरिद्र, पगु वगैरह (गाया १, १)। ५ भाण्ड-चेष्टा करनेवाला (श्रौप)।

किन्विसिया स्त्री [कैल्विपिकी] १ भावना-विशेष, धर्म-गुरु वगैरह की निन्दा करने की आदत (धर्म ३)। २ केवल वेप-धारी साधु की वृत्ति (भग)।

किम (अप) अ [कथम्] क्यों, कैसे? (हे ४, ४०१)।

किमण देखो किमण (आचा)।

किमस्स पुं [किमश्च] नृप-विशेष, जिसने इन्द्र को सगाम में हराया था और शाप लगने से जो मरकर अजगर हुआ था (निचू १)।

किमी पुं [कृमि] १ क्षुद्र जीव, कीट-विशेष (परह १, ३)। २ पेट में, फुनसी में और ववासीर में उत्पन्न होनेवाला जन्तु-विशेष (जी १५)। ३ द्वीन्द्रिय कीट-विशेष (परह १, १—पत्र २३)। ४ य न [ज] कृमि-तन्तु में उत्पन्न वस्त्र, 'कोसेज्जपट्टमाई ज, किमियं तु पवुच्चड' (पचभा)। ५ राग, राय पु [राग] किरमिजी का रंग (कम्म १, २०, दे २, ३२, परह २, ४)। ६ रासि पु [राशि] वनस्पति विशेष (परह १—पत्र ३६)।

किमिहरवसण [दे] देखो किमिहरवसण (पड्)।

किमिच्छय न [किमिच्छक] इच्छानुसार दान (गाया १, ८—पत्र १५०)।

किमिण वि [कृमिमत्] कृमि-युक्त, 'किमिणवहुदुरभिगधेसु' (परह २, ५)।

किमिराय वि [दे] लाक्षा से रक्त (दे ३, ३२)।

किमिहरवसण न [दे] कौशेय-वस्त्र, रेशमी वस्त्र (दे २, ३३)।

किमु अ [किमु] इन अर्थों का सूचक अव्यय—१ प्रश्न। २ वितर्क। ३ निन्दा। ४ निषेध (हे २, २१७, पिग)।

किमुय अ [किमुन] इन अर्थों का सूचक अव्यय—१ प्रश्न। २ विकल्प। ३ वितर्क। ४ अतिशय (हे २, २१८), 'अमरनररायमहियं ति पूड्य तेहि, किमुय सेसेहि' (विमे १०६१)। किम्मिय न [दे किम्मित] जडता, जाड्य (राज)।

किम्मीर वि [किर्मीर] १ कबुर, कवरा (पात्र)। २ पु. राक्षस-विशेष, जिसको भीमसेन ने मारा था (वेणी ११७)। ३ वश विशेष, 'जाया किम्मीरवसे' (रमा)।

क्रिय देखो कीय (पिड ३०६)।

क्रियत वि [क्रियत्] कितना (सम्मत् २२८)।

क्रियत्थ देखो कयत्थ (भवि)।

क्रियव्व देखो कडअव (उप ७२८ टी)।

क्रिया देखो किरिया, 'हय नाए क्रियाहीण' (हे २, १०४), 'मग्गणुसारी सद्धो पल्ल-वणिज्जो क्रियावरो चेव' (उप १६६, विने ३५६३ टी, कप्प)।

क्रियाडिया स्त्री [दे] कानवूट्टी, कान का ऊपरी भाग (वव १)।

क्रियाण देखो कर = कृ।

क्रियाणग न [क्रयाणक] किराना, नमक, मसाला आदि वेचने योग्य चीजे (सुर १, ६०)।

किर पुं [दे] सूकर, सूअर (दे २, ३०, पड्)।

किर अ [किल] इन अर्थों का सूचक अव्यय—१ संभावना। २ निश्चय। ३ हेतु, निश्चित कारण। ४ वार्त्ता-प्रसिद्ध अर्थ। ५ अरवि। ६ अलीक, असत्य। ७ सशय, सदेह (हे २, १८६, पड्, गा १२६, प्रासू १७, दस १)। ८ पाद पूर्ति में भी इसका प्रयोग होता है (कम्म ४, ७६)।

किर सक [कृ] १ पेंकना। २ पसारना, फैलाना। ३ विखेरना। वकृ किरत (से ४, ५८, १४ ५७)।

किरण पुन [किरण] किरण, रश्मि, प्रभा (सुपा ३५१, गउड, प्रासू ८२)।

काई स्त्री [कास्त्री] कौए की मादा (विपा १, ३) ।

काउ स्त्री [कापोती] लेण्या विशेष, आत्मा का एक प्रकार का परिणाम (भग, आचा) ।
 'लेसा स्त्री [लेदया] आत्म-परिणाम-विशेष (मम. ठा ३, १) । 'लेस्स वि [लेदय] कापोत लेण्यावाला (पण १७ भग) ।
 'लेस्सा देखो 'लेसा (पण १७) ।

काउ देखो कर = कृ ।

काउंवर पुं [काओदुस्वर] नीचे देखो (राज) ।
 काउवरी स्त्री [काओदुस्वरी] श्रोत्र-विशेष, 'निबंवरुवरकाउंवरिवोरि—' (उप १०३१ टी, पण १) ।

काउकाम वि [कर्तु काम] करने को चाहने-वाला (श्रोत्र ५३७) ।

काउडुवण न [कायोडुवन] उच्चाटन, दूर-स्थित दूसरे के शरीर का आकर्षण करना (गाथा १, १४) ।

काउदर पु [काओदर] नाँप की एक जाति (पण १, १) ।

काउमण वि [कर्तु मनस्] करने की चाह-वाला (उव, उप पृ ७०, सं १०) ।

काउरिस पु [कापुरूप] १ खराब आदमी, नीच पुरुष । २ कातर डरपोक पुरुष (गउड, सुर ८, १५०, सुपा १६२) ।

काउह पुं [दे] बक, वगुला (दे २, ६) ।

काउसग } पु [कायोत्सर्ग] १ शरीर पर
 काउस्सग } के ममल का त्याग (उन २६) ।

२ कायिक-क्रिया का त्याग । ३ ध्यान के लिए शरीर की निश्चलता (पडि) ।

काऊ देखो काउ (ठा १, कम्म ४, १३) ।

काऊण } देखो अर = कृ ।
 काऊण }

काओदर देखो काउदर (स्वप्न ६८) ।

काओली स्त्री [काकोली] कन्द-विशेष, वन-स्पति-विशेष (पण १) ।

काओवग पु [कायोवग] ससारी आत्मा (सूत्र २, ६) ।

काओसग देखो काउसग (भवि) ।

काक पु [काक] १ कौआ, वायस (अनु ३) ।
 २ ग्रह-विशेष, ग्रहाविष्टायक देव-विशेष (ठा २, ३—पत्र ७८) । 'जघा स्त्री [जघा]

वनस्पति-विशेष, चकमेनी, घुंघची (अनु ३) ।
 देखो काग, काय = काक ।

काकंदग पुं [काकन्दक] एक जैन महर्षि (कण) ।

काकदिय पु [काकन्दिक] एक जैन महर्षि (कण) ।

काकंदिया स्त्री [काकन्दिका] जैन मुनियों की एक शाखा (कण) ।

काकंदी देखो काडंदी (गाथा १, ६, ठा ५, १) ।

काकणि देखो कागणि (विण १, २) ।

काकलि देखो कागलि (ठा १०—पत्र ४७१) ।

काग देखो काक (दे १, १०६, ग्रामू ६०) ।

'तालसजीवगनाय पु [तालसजीवकन्या-य] काकतानीयन्याय (उप १४२ टी) ।

'तालिज्ज, 'तालीअ न [तालीय] जैसे कौए का अतर्कित आगमन और ताल फल का अकस्मात् गिरना होता है ऐसा अवितर्कित

सम्भव, अकस्मात् किसी कार्य का होना (आचा, दे ५, १५) । 'थल न [थल] देश-विशेष (दे २, २७) । 'पाल पु [पाल] कुष्ठ-विशेष (राज) । 'पिडी स्त्री [पिण्डी]

अग्र-पिण्ड (आचा २, १, ६) । देखो काय = काक ।

कागदी देखो काडंदी (अनु २) ।

कागणि स्त्री [दे] १ राज्य, 'अमोगसिरणो पुत्तो अघो जायइ कागणि' (विमे ८६२) ।

२ माम का छोटा टुकड़ा (श्रीप) ।

कागणी देखो कागिणी (आ २७, ठा ७) ।

कागणी स्त्री [काकिणी] सवा गुँजा का एक वाट (अणु १५५) ।

कागल पु [काकल] ग्रीवास्थ उन्नत प्रदेश (अनु) ।

कागलि } स्त्री [काकलि, 'ली] १ सूक्ष्म
 कागली } गीत-ध्वनि, स्वर-विशेष (मुपा ५६, उप पृ ३५) । २ देवी-विशेष, भगवान्

अभिनन्दन की शासन-देवी (पत्र २७) ।

कागिणी स्त्री [काकिणी] १ कौडी, कर्पदिका (उर ७, ३, उव, आ २८ टी) । २ बीस कौडी के मूल्य का एक सिक्का (उप ५४५) ।

३ रत्न विशेष (सम २७, उप ६८६ टी) ।

कागी स्त्री [काकी] १ कौए की मादा (वा २ विद्या-विशेष (विसे २५३) ।

काकोणंद पु [काकोनन्द] इस नाम की एक म्लेच्छ जाति, 'मिच्छा कागोणदा विक्काया महियलम्मि ते सुरा' (पठम ३४, ४१) ।

काठिण न [काठिन्य] कठिनता (धर्मन ५१, ५४) ।

काठ पुं [काथ] काढा (कुलक ११) ।

काण नि [काण] काना, एकाक्ष (सुपा ६४३) ।

काण वि [दे] १ मच्छिद्र, काना (आचा २, १, ८) । २ चुराया हुआ । 'कय पु [कय] चुराई हुई चीज को खरीदना (मुपा ३४३, ३४४) ।

काणच्छि } स्त्री [दे] टेढ़ी नजर से देखना,
 काणच्छिया } कटाक्ष (दे २, २४, भवि), 'काणच्छियाओ य जहा विडो तहा करेई' (आवम) ।

काणण न [कानन] १ जल, जंगल (पात्र) । बगीचा, उपवन (अनु, श्रोत्र) ।

काणत्येव पुं [दे] विरल जल-वृष्टि, बूँद-बूँद वरसना (दे २, २६) ।

काणद्धी स्त्री [दे] परिहास (दे २, २८) ।

काणिक्का स्त्री [दे] बड़ी ईंट (वह ३) ।

काणिट्टा स्त्री [काणेष्टा] लोहे की ईंट (वव ४) ।

काणिआर देखो कणिआर (सखि १७) ।

काणिय न [काण्य] आँख का रोग, 'काणियं भिम्मिअं चव, कुरियि खुज्जिय तहा' (आचा) ।

काणीण पु [कानीन] कुंवारी कन्या से उत्पन्न पुत्र (भवि) ।

कादव देखो कायव (पण १, १) ।

कादवरी देखो कायवरी (अभि १८८) ।

कादूमण वि [कदूपण] आत्मा को दूषित करनेवाला । स्त्री, 'णिया (भा ६, ५—पत्र २६८) ।

कापुरिस देखो काउरिस (गाथा १, १) ।

काम पु [काम] रोग, बीमारी (दमनि २, १५) । 'एय देखो कामदेव (कुप ४११) ।

'ग्घ न [ग्घ] आयविल तप (सत्रोव ५८) ।

'डहण पुं [दहन] महादेव, शिव (ववा ६८) । 'रुय देखो कामरूअ (धर्मवि ५६) ।

काम सक [कामय] चाहना, वाञ्छना । कामेइ (पि ४६१) । कामेंति (गउड) । वक्र, कामेंत कामअमाण (गा २५६, अभि ६१) ।

किलीण देखो किलिणग (भवि) ।

किलीव देखो कीव (न ६०) ।

किलेस अक [क्लिश्] क्लेश पाना, हेरान होना । किलेमइ (प्राकृ २७) ।

किलेस पुं [क्लेश] १ खेद, थकावट (औप) ।

२ दुःख, पीडा, बाधा (पउम २२, ७५, सुज २०) । ३ दुःख का कारण । ४ कर्म, शुभा-शुभ-कर्म (वृह १) । ५ थर वि [°कर] क्लेश जनक (पउम २२, ७५) ।

किलेसिय वि [क्लेशिन] दुःखी किया हुआ (सुर ४, १६७, १६९) ।

किल्हा देखो किड्डा (मे ६१) ।

किय पु [कृप] १ इस नाम का एक ऋषि, कृपाचार्य (हे १, १२८) । 'भाइमयसमग्ग गगेय विदुर दोण जयद्ध सउणी कीव (? सउणि किय) आगत्थाम' (णाय १, १६—पत्र २०८) ।

किवें (अप) देखो कह (कुमा) ।

कियण वि [कृपण] १ गरीब, रक, दीन (सूअ १, १, ३, अञ्चु ६७) । २ दरिद्र, निर्धन (परह १, २) । ३ कलम, अदाता (दे २ ३१) । ४ क्लीव, कायर (सूअ २, २) ।

किवा न्नी [कृपा] दया, मेहरबानी (हे १, १२८) । ५ वन्न वि [°पन्न] कृपा-प्राप्त, दयालु (पउम ६५, ४७) ।

किवाण पुन [कृपाण] खड्ग, तन्वार (सुपा १५८, हे १, १२८, गउड) ।

किवालु वि [कृपालु] दयालु, दया करनेवाला (पउम ३४, ५०, ६७, २०) ।

किविड न [दे] १ खलिहान, अन्न साफ करने का म्यान । २ वि खलिहान में जो हुआ हो वह (दे २, ६०) ।

किविडी स्त्री [दे] १ किवाड, पारखं द्वार । २ घर का पिछला आंगन (दे, २, ६०) ।

किविण देखो कियण (हे १, ४६, १२८, गा १३६, सुर ३, ४४, प्रासू ५१, परह १, १) ।

किवीडजोणि पु [कृपीटयोनि] अग्नि (मम्मत्त २२६) ।

किस सक [क्लिश्य] हसित करना, अपचित करना । किसए (सूअ १, २, १, १४) ।

किस वि [क्लिश] १ दुर्बल, निर्बल (उवर ११३) । २ पतला (हे १, १२८, ठा ४, २) ।

किसग वि [क्लिशङ्ग] दुर्बल शरीरवाला (गा ६५७) ।

किसर पु [क्लिशर] १ पक्वान्न-विशेष, तिल, चावल और दूध की बनी हुई एक खाद्य चीज । २ खिचड़ी, चावल और दाल का मिश्रित भोजन-विशेष (हे १, १२८) ।

किसर देखो केसर 'महमहिअदसणकिसर' (हे १, १४६) ।

किसरा स्त्री [क्लिशरा] खिचड़ी, चावल-दाल का मिश्रित भोजन-विशेष (हे १, १२८, दे १, ८८) ।

किसल देखो किमलय (हे १, २६६, कुमा) ।

किसलडय वि [किसलयित] अकुरित, नये अकुरवाला (सुर ३, ३६) ।

किसलय पुन [किसलय] १ नूतन अकुर (आ २०) । २ कोमल पत्ता (जी ६), 'मव्वेवि किसलओ खलु उग्गममाणो अणतओ भण्णिओ' (परह १) । ३ 'माला स्त्री [°माला] छन्द-विशेष (अजि १६) ।

किसा देखो कासा (हे १, १२७) ।

किसाणु पु [क्लिशानु] १ अग्नि, वह्नि, आग । २ वृक्ष-विशेष, चित्रक वृक्ष । ३ तीन की सख्या (हे १, १२८, पड्) ।

किसि स्त्री [क्लिपि] खेती, चास (विसे १६१५, सुर १५, २००, प्राप्र) ।

किसिअ वि [क्लिशित] दुर्बलता-प्राप्त, कृशता-युक्त (गा ४०, वज्जा ४०) ।

किसिअ वि [क्लिपित] १ विलखित, रेखा किया हुआ । २ जोता हुआ, कृष्ट । ३ खोचा हुआ (हे १, १२८) ।

किसीवल पु [क्लिषीवल] कर्पक, किसान, 'पाय परस्स धन्व भक्खंति किसीवला पुन्वि' (आ १६) ।

किसोर पु [क्लिशोर] बाल्यावस्था के बाद की अवस्थावाला बालक, 'सीहकिसोरोव्व गुहाओ निग्गओ' (सुपा ५४१) ।

किसोरी स्त्री [क्लिशोरी] कुमारी, अविवाहिता युवती (णाय १, ६) ।

किस्स देखो किलिस = क्लिश् । संस्कृत किस्स-इत्ता (सूअ १, ३, २) ।

किह देखो कह (आचा, कुमा, भाग ३, २, किह) णाय १, १७) ।

कीअ देखो कीव (पड्, प्राप्र) ।

कीइस वि [क्लिइस] कैसा, किस तरह का (स १४०) ।

कीकस पु [क्लिक्कश] १ कृमि-जन्तु-विशेष । २ न. हड्डी, हाड । ३ वि कठिन, कठोर (राज) ।

कीचअ देखो कीयग (वेणी १७७) ।

कीड देखो किड्डु = कीड् । भवि. कीडिस्सं (पि २२६) ।

कीड पु [क्लिट] १ कीडा, क्षुद्र जन्तु (उव) । २ कीट-विशेष, चतुरिन्द्रिय जन्तु की एक जाति (उत्त २) ।

कीडइल्ल वि [क्लिटवल्] कीडावाला, कीटक-युक्त (गउड) ।

कीडण न [क्लिडन] खेल, क्रीडा (सुर १, ११८) ।

कीडय पु [क्लिटक] देखो कीड = कीट (नाट सुपा ३७०) ।

कीडय न [क्लिटज] कीडे के तन्तु से उत्पन्न होनेवाला वस्त्र, वस्त्र-विशेष (अणु) ।

कीडा देखो किड्डा (सुर ३, ११६, उवा) ।

कीडाविया देखो किड्डाविया (राज) ।

कीडिया स्त्री [क्लिटिका] पिपीलिका, चींटी (सुर १०, १७६) ।

कीडी स्त्री [क्लिटी] ऊपर देखो (उप १४७ टी, दे २, ३) ।

कीण सक [क्लि] खरीदना, मोल लेना । कीणइ, कीणए (पड्) । भवि. कीणिस्सं (पि ५११, ५३४) ।

कीणास पुं [क्लिनाश] यम, जम (पाप्र, सुपा १८३) । १ गिह [°गृह] मृत्यु, मौत (उप १३६ टी) ।

कीदिस (शौ) देखो कीरिस (प्राकृ ८३) ।

कीय वि [क्लिीत] १ खरीदा हुआ, मोल लिया हुआ (सम ३६, परह २, १, सुपा ३४५) ।

२ जैन साधुओं के लिए भिक्षा का एक दोष (ठा ३, ४) । ३ न. क्रय, खरीद (दस ३, सूअ १, ६) । ४ कड, गड वि [°कृत] १ मूल्य देकर लिया हुआ (वृह १) । २ साधु के लिए मोल से कीना हुआ, जैन साधु के लिए भिक्षा-दोष-युक्त वस्तु (पि ३३०) ।

क्रियावाना (भग) । °ट्टिड स्त्री [°स्थिति] मर कर फिर उनी शरीर मे उत्पन्न होकर रहना (ठा २, ३) । °गिरोह पु [°निरोध] शरीर-व्यापार का परित्याग (आच ४) । °तिगिन्हा स्त्री [°चिकित्सा] १ शरीर-रोग की प्रतिक्रिया । २ उमका प्रतिपादक गान्न (विपा १, ८) । °भवत्थ वि [°भवस्थ] माता के उदर मे स्थित (भग) । °वंक पु [°वन्ध्य] ग्रह-विशेष (राज) । °समिअ वि [°समिन] शरीर की निर्दोष प्रवृत्ति करने-वाला (भग) । °समिड स्त्री [°सामति] उगेर की निर्दोष प्रवृत्ति (ठा ८) ।

नाय पु [°नाय] १ काया वायम (उप पृ २३, हवा १८८, वा २६) । २ वनस्पति-विशेष, काला उम्बर (पराण १—पत्र ३५) । देवो काय, काग ।

काय पु [°काय] कांच, शीशा (महा-आचा) । काय पु [°द] १ कावर, बहंगी, बोक होने के लिए तराजूनुमा एक वस्तु, धममे दोनो ओर निकहर लटकाने जाते हैं (गाया १, ८ टी—पत्र १५२) । °कोडिय पु [°कोटिक] कावर ने भार ढोनेवाला (गाया १, ८ टी) । देवो काय ।

काय पु [°द] १ लक्ष्य, वेद्य, निशाना । २ उपमान, जिस पदार्थ की उपमा दी जाय वह (दे २, २६) ।

कायजुल पु [°दे] कामिजुल, जल-पक्षी-विशेष (दे २, २६) ।

कायदी स्त्री [°दे] परिहास, उपहाम (दे २, २८) ।

कायदी देखो काडनी (म ६) ।

कायजुअ पु [°द] कामिजुल जल-पक्षी विशेष (दे २, २६) ।

कायं १ पु [°कादम्ब, °क] १ हंस-पक्षी कायन्नग (पात्र, कण) । २ गन्धर्व-विशेष । ३ कदम्ब वृक्ष (राज) । ४ वि कदम्ब-वृक्ष-सम्बन्धी । 'कायवपुष्पगोलयमसूरअइमुत्तयम्स पुष्प व' (पुष्प २६८) ।

कायवर न [°कादम्बर] मद्य-विशेष, गुड का दारु, 'कायवरपनन्ना' (पउम १-२, १२२) ।

कायवरी स्त्री [°कादम्बरी] एक उहा का नाम (मृप्र ६३) ।

कायवरी स्त्री [°कादम्बरी] १ मदिरा, दारु (पात्र, पउम ११८, १०) । २ अटवी-विशेष (म ५५१) ।

कायक न [°दे कायक] हरा रंग की रूई से बना हुआ वस्त्र (आचा २, ५, १) ।

कायत्थ पु [°कायत्थ] जाति-विशेष, कायथ जाति, कायन्थ नाम ने प्रसिद्ध जाति, लेखक, लिखने का काम करनेवाली मनुष्य-जाति (मुद्रा ७६, मृच्छ ११७) ।

कायपिउच्छा स्त्री [°दे] कोकिला, कोयल, कायपिउला पिकी (दे २, ३०, पट्) ।

कायर वि [°कानर] अघोर, डरपोक (गाया १, १ प्रासू ५८) ।

कायर वि [°दे] प्रिय, स्नेह-पात्र (दे २, ५८) ।

कायरिय वि [°कानर] १ डरपोक, भयभीत, अघोर, 'घोरणवि मरियव्व कायरिएणावि अवस्समरियव्व' (प्रासू १०६) । २ पु गोशालक का एक मन्त्र (भग ८, ५) ।

कायरिया स्त्री [°कातरिका] माया, कपट (सूत्र १, २, १) ।

कायल पुं [°दे] १ काक, कौआ (दे २, ५८, पात्र) । २ वि. प्रिय, स्नेह-पात्र (दे २, ५८) ।

कायलि देखो कागलि (नाट—मृच्छ ६२) ।

कायवम् [°कायवन्ध्य] ग्रह-विशेष, ग्रहा विष्टायक देव-विशेष (राज) ।

कायव्व देखो कर = कृ ।

कायह वि [°कायह] देश-विदेश में बना हुआ (वस्त्र) (आचा २, ५, १, ७) ।

काया स्त्री [°काया] शरीर, देह (प्रासू ११२) ।

कार मक [°कारय्] करवाना, बनवाना ।

कारेइ, कारेह (पि ४७२, सुपा ११३) ।

भूका कारेत्या (पि ५१७) । वक्र कारयत्त (सुर १६, १०), कारेमाण (कण्) । कवक कारिज्जन (सुपा ५७) । सक्र कारिऊण (पि ५८४) । कृ कारेयव्व (पचा ६) ।

कार वि [°दे] कद्र, कडवा, तीता (दे २ २६) । कार पुन देखो कारा = कारा (स ६११, गाया १ १) ।

कार पु [°कार] १ क्रिया, कृति, व्यापार (ठा १०) । २ रूप, आकृति । ३ मय का मध्य भाग (वव ३) ।

°कार वि [°कार] करनेवाला (पउम १७, ७) ।

कारकड वि [°दे] पक्ष, कठिन (दे २, ३०) ।

कारड पु [°कारण्ड, °क] पक्षि-विशेष, 'हंस-कारडग' कारडवचकवाओवसोभिय' (भवि कारडव) शोप, स ६०१, गाया १, १, परह १, १ विक्र ४१) ।

कारग वि [°कारक] १ करनेवाला (पउम ८२, ५६ उप पृ २१५) । २ करातेवाला (शा ६, विमे) । ३ न कर्ता, कर्म वगैरह व्याकरण प्रसिद्ध कारक (विमे ३०८४) । ४ कारण, हेतु, 'कारण ति वा कारण ति वा नाहारण ति वा एगद्धा' (आच्च १) । ५ उदाहरण, दृष्टान्त (शोष १६ भा) । ६ पुन मय्यकत्व विशेष, शास्त्रानुसार शुद्ध क्रिया, 'जं जह भणिय तुमए त तह करणम्म कारणो होइ' (मय्य १४) ।

कारण न [°कारण] १ हेतु निमित्त (विसे २०६८, स्वप्न १७) । २ प्रयोजन (आचा) । ३ अपवाद (कण्) ।

कारणिज्ज वि [°कारणीय] प्रयोजनीय (स ३२६) ।

कारणिय वि [°कारणिक] १ प्रयोजन से किया जाता (उवर १०८) । २ कारण से प्रवृत्त (वव २) । ३ पु न्याय-कर्ता, न्यायाधीश (मुपा ११८) ।

कारय देखो कारग (आ १६, विमे ३४२०) ।

कारय सक [°कारय्] करवाना, बनवाना । कारवेइ (उव) । वक्र कारचित्त (सुपा ६३२, पुष्प ४७) । सक्र कारचित्ता (कण्) ।

कारवण न [°कारण] निर्माणन, बनवाना (राज) ।

कारवम् पु [°कारवश] देश-विशेष (भवि) ।

कारवाहिय वि [°कारवाधित] देखो करे-वाहिय (शोप) ।

कारविय वि [°कारित] कराया हुआ (सुर १, २२६) ।

कारह वि [°कारभ] करम सम्बन्धी (गउड) ।

कारा स्त्री [°कारा] कैदखाना (दे २, ६०, पात्र) । °गार पुन [°गार] कैदखाना, जेल (मुपा १२२, मार्व ५२) । °घर न [°गृह] कैदखाना (अच्छ ८३) । °मदिर न [°मन्दिर] कैदखाना, जेलखाना (कण्) ।

कारा स्त्री [°दे] लेखा, रेखा (दे २, २६) ।

११)। °समय पु [°समय] १ अनाप्त-प्रणीत शास्त्र (सम्म १)। २ वि कुतीर्थिक, कुशास्त्र का प्रणेता और अनुयायी (सम्म १)। °सल्लिय वि [°शाल्यिक] जिसके भीतर खराब शल्य घुस गया हो वह (परह २, ४)। °सील न [°शील] १ खराब स्वभाव (आचा)। २ अन्नहचर्य, व्यभिचार (ठा ४, ४)। ३ वि, जिसका आचरण अच्छा न हो वह, दुराचारी (शोध ७६३)। ४ अन्नहचारी, व्यभिचारी (ठा ५, ३)। °स्सुमिण पुन [°स्वप्न] खराब स्वप्न (आ ६)। °ह्व वि [°वन] अल्प धनवाला दरिद्र (परह २, १—पत्र १००)।

कु ली [कु] १ पृथिवी, भूमि, 'कुसमयवि-सामण' (सम्म १ टी—पत्र ११४, से १, २६)। °त्तिअ न [°त्रिक] १ तीनो जगत्, स्वर्ग, मर्त्य और पाताल लोक। २ तीन जगत् मे स्थित पदार्थ (औप)। °त्तिअ वि [°त्रिज] तीनो जगत् मे उत्पन्न वस्तु (आवम)। °त्तिआवण पुन [°त्रिकापण] तीनो जगत् के पदार्थ जहाँ मिल सके ऐसी दूकान (भग, राया १, १—पत्र ५३)। °वल्य न [°वलय] पृथ्वी-मण्डल (आ २७)।

कुअरी देखो कुओरी (पि २५१)।

कुअलअ देखो कुवल्य (प्राप्र)।

कुओरी देखो कुमारी (गा २६८)।

कुइअ वि [कुचित] सकुचा हुआ (पव ६२)।

कुइमाण वि [दे] म्लान, शुष्क (दे २, ४०)।

कुइय वि [कुचित] अवस्थन्दित, क्षरित (ठा ६)।

कुइय वि [कुपित] क्रुद्ध, कोप-युक्त (भवि)।

कुइयण पु [कुविकर्ण] इस नाम का एक गृहपति, एक गृहस्थ (विसे ६३२)।

कुउअ पुन [कुतुप] स्नेह पात्र, धी तैल वगैरह भरने का चमड़े का पात्र-विशेष, 'तुप्पाइ को (?) कु) उआइ (पाप्र) देखो कुतुव।

कुउआ स्त्री [दे] तुम्बी-पात्र, तुम्बा (दे २, १२)।

कुउव देखो कुउअ (पिंड ५५७)।

कुऊल न [दे] १ नीवी, नारा, इजारबन्द।

२ पहने हुए कपड़े का प्रात भाग, अञ्चल (दे २, ३८)।

कुऊहल न [कुतूहल] १ अप्रव वस्तु देखने की लालसा—उत्सुकता। २ कौतुक, परिहास (हे १, ११७, कुमा)।

कुओ अ [कुत] कहीं से? (पड्)। °इ

अ [°चित्] कही से, किसी से (स १८५)।

°वि अ [°अपि] कही से भी (काल)।

कुंआरी स्त्री [कुमारी] वनस्पति-विशेष, कुवारपाठा, धीकुवार, धीधुवार (आ २०, जी १०)।

कुऊण न [दे] १ कोकनद, रक्त-कमल (परह १—पत्र ४०)। २ पुं क्षुद्र जन्तु विशेष,

चतुरिन्द्रिय कीड़े की एक जाति (उत्त ३६)।

कुंऊण पु [कोङ्कण] देश-विशेष (अगु, सार्ध ३४)।

कुऊण देखो कुऊण (सिरि २८६)।

कुऊम न [कुडूकुम] केसर, सुगन्धी द्रव्य-विशेष (कुमा, आ १८)।

कुग पु [कुङ्ग] देश-विशेष (भवि)।

कुच सक [कुञ्च] १ जाना, चलना। २

अक सकुचित होना। ३ टेढ़ा चलना (कुमा, गउड)।

कुंच पु [कौञ्च] १ पक्षि-विशेष (परह १,

१, उप पृ २०८, उर १, १४)। २ इस

नाम का एक असुर (पाप्र)। ३ इस नाम

का एक अनार्य देश। ४ वि उसके निवासी

लोग (पव २७४)। °रवा स्त्री [°रवा]

दण्डकारण्य की इस नाम की एक नदी

(पउम ४२, १५)। °वीरग न [°वीरक]

एक प्रकार का जहाज (निचू १६)। °रि

पु [°रि] कार्तिकेय, स्कन्द (पाप्र)। देखो

कौंच।

कुचल न [दे] मुकुल, कली, वौर (दे २,

३६, पाप्र)।

कुंचि वि [कुञ्चिन्] १ कुटिल, वक्र। २

मायावी, कपटी (वव १)।

कुंचिगा देखो कौंचिगा।

कुचिय वि [कुञ्चित] १ सकुचित (सुपा

५८)। २ कुण्डल के आकारवाला, गोलाकृति

(औप, जं २)। ३ कुटिल, वक्र (वव १)।

कुंचिय पु [कुञ्चिक] इस नाम का एक जैन उपासक (भत्त १३३)।

कुचिया देखो कौंचिगा। रुई से भरा हुआ पहनने का एक प्रकार का कपड़ा (जीत)।

कुंचिया स्त्री [कुञ्चिका] कुन्जी, ताली (पिंड ३५६)।

कुजर पुं [कुञ्जर] हस्ती, हाथी (हे १, ६६

पाम)। °पुर न [°पुर] नगर-विशेष,

हस्तिनापुर (पउम ६५, ३४)। °सेणा स्त्री

[°सेना] ब्रह्मदत्त चक्रवर्ती की एक रानी

(उत्त २६)। °वत्त न [°वर्त] नगर-

विशेष (सुर ३, ८८)।

कुट वि [कुण्ट] १ कुब्ज, वामन (आचा)।

२ हाथ-रहित, हस्त-हीन (पव ११०, निचू

११, आचा)।

कुटलविटल न [दे] १ मंत्र-तंत्रादि का प्रयोग,

पाखण्ड विशेष (आवम)। २ वि. मन्त्र-

तंत्रादि से आजीविका चलातेवाला (आक)।

कुंटार वि [दे] म्लान, सूखा, मलिन (दे २,

४०)।

कुंटी स्त्री [दे] १ गठरी, गांठ (दे २, ३४)।

२ शस्त्र-विशेष, एक प्रकार का श्रौजार,

'मुमलुक्खलहलदतालकुटिकुडालपमुहसत्याण'

(सुपा ५२६)।

कुंठ वि [कुण्ठ] १ मन्द, आलसी (आ १६)।

२ मूर्ख, बुद्धि-रहित (आचा)।

कुठी ली [दे] सैंडसी, चीमटा (वज्जा ११४)।

कुड न [कुण्ड] १ कुडा, पात्र-विशेष (पड्)।

२ जलाशय-विशेष (एदि)। ३ इस नाम

का एक सरोवर (ती ३४)। ४ आज्ञा,

आदेश, 'वेसमणकुडघारिणोतिरियजंभगा देवा'

(कप्प)। °कोलिय पु [°कोलिक] एक जैन

उपासक (उवा)। °ग्गाम पुं [°ग्राम]

मगध देश का एक गांव (कप्प, पउम २,

२१)। °वारि वि [°धारिन्] आज्ञाकारी

(कप्प)। °पुर न [°पुर] ग्राम-विशेष (कप्प)।

कुंड न [दे] ऊख पेरने का जीरा काण्ड,

जो बांस का बना हुआ होता है (दे २, ३३,

४, ४५)।

कुडग पुंन [कुण्डक] १ अन्न का छिलका

(उत्त १, ५, आचा २, १, ८, ६)। २

चावल से मिश्रित भूसा (उत्त १, ५)।

समय पु [समय] समय, वक्त (मुज ८) । समा स्त्री [समा] समय-विशेष, श्रावक का समय (जो २) । मार पु [मार] मृग की एक जाति, काता मृग, 'एषो वि कालमारो ए देइ गनु पयारिगव लतो' (गा २५) । सोअरिय पु [सोरिक] स्वनाम ध्यात एक जमाई (आक) । गारु, गुरु, गुरु न [गुरु] मुगन्वि द्रव्य-विशेष, जो घूष के काम में लाया जाता है (गाया १, २, कप, आप गडड) । यस, स न [यस] लोहे की एक जाति (हे १, २६६, कुना, प्राप्र, मे ८, ८६) । सवेनियपुत्त पु [स्यवैशिकपुत्र] इस नाम का एक जैन मुनि जो भगवान् पार्श्वनाथ की परम्परा में थे (भग) ।

कालजर पु [कालजर] १ देश-विशेष (पिंग) । २ पर्वत विशेष (आवम) । देखो कालिजर ।

कालकखर सक [दे] १ निर्भर्त्सना करना, फटकारना । २ निर्वासित करना, बाहर निकाल देना, 'तो तेण भरिया भजा, णि। पुतो बालकखरियइ एनो, तो मा रोमेण भणइ त्यभिमुह, मइ जीवतीए इम न होइ ता जाउ दव्वपि, कि वजइ लच्छोए, पुत्त-निउत्ताण पिउणा पिययम । जयम्म' (मुपा ३६६, ४००) ।

कालकखर पुन [कालाक्षर] १ अल्प-ज्ञान, अल्प-शिक्षा, २ वि अल्प-शिक्षित, 'कालकखरइत्तिमिय धम्मिअ ३ निवकीउमरिच्छ' (गा ८७८) ।

कालकखरिअ वि [दे] १ उपालब्ध, निर्भर्त्सित । २ निर्वासित, 'तहवि न विरमइ हुलहो अणाहुकुलडाए सगमे, ततो कालकखरिअ पिउणा' (मुपा ३८८), 'तो पिउणा कालेण कालम्परिओ' (मुपा ४८८) ।

कालकखरिअ वि [कालाक्षरिक] देरी में क्षर जाननेवाला, अशिक्षित, 'ओ तुम्हाण मज्जे अह एषो कालकखरिया' (कप्पु) ।

काला १ पु [कालक] १ प्रसिद्ध जनाचार्य काल्य (पुफ १-६, २४०) । २ अमर, भारा (राज) । देखो काल (उवा, उप ६८६ वे) ।

काला दि [दि] पुन उग दे २, ८८

कालयट्टु न [र. कालपुट्ट] वनुष (दे २, २८) ।

कालवेसिय पुं [कालवेशिक] एक वेण्या-पुत्र (ती ७) ।

काला स्त्री [काला] १ श्याम-वर्णवाली । २ तिरस्कार करनेवाली (कुमा) । ३ एक इन्द्राणी, चमण्द्र की एक पटरानी (ठा ५, १) । ४ वेण्या-विशेष (ती ७) ।

कालाडकमयन [कालातिकमक] तग-विशेष, दिन के पूर्वार्ध तक आहार-वाग (संबोध ५८) । कालाकोण पुन [काललगण] काला नोन या नमक (दम ३, ८) ।

कालि पु [कालिन] विहार का एक पर्वत (ती १३) ।

कालिअमुरि पु [कालिकमुरि] एक प्रसिद्ध प्राचीन जैन आचार्य (विचार ५२६) ।

कालिआ स्त्री [दे] १ शरीर, देह । २ कालान्तर । ३ मेघ, जारिण (दे २, ५८) । ४ मेघ-समूह, बादल (पाय) ।

कालिआ स्त्री [कालिका] १ देवी विशेष (मुपा १८२) । २ एक प्रकार का तूफानी पवन (उप ७२८ टी, गाया १ ६) ।

कालिय पु [कालिङ्ग] १ देश विशेष, पत्तो कालिगदमओ' (आ १२) । २ वि कलिङ्ग देश में उत्पन्न (पउम ६६, ५५) ।

कालिगी स्त्री [कालिङ्गी] वल्ली-विशेष, तग्वूज का गाछ (पण १) ।

कालिगी स्त्री [कालिङ्गी] विद्या विशेष (सूत्र २, २, २७) ।

कालिजण न [दे] तापिच्छ, श्याम तमाल का पेड़ (दे २, २६) ।

कालिजणी स्त्री [दे] ऊपर देखो (दे २, २६) ।

कालिजर पु [कालिजर] १ देश-विशेष (पिंग) । २ पर्वत-विशेष (उत्त १३) । ३ न जगल-विशेष (पउम ५८, ६) । ४ तीर्थ-म्यान-विशेष (ती ७) ।

कालिडी स्त्री [कालिङ्गी] १ यमुना नदी (पाय) । २ एक इन्द्राणी, शकेन्द्र की एक पटरानी (पउम १२२, १५६) ।

कालिय पु [र] १ शरीर, देह । २ मेघ वारिष्ठ (दे २, १२) ।

कालिय देवी कालिय = कालिय (राज) ।

कालिगी स्त्री [कालिङ्गी] मन्त्रा-विशेष, वहन समय पहले गुजरी हुई चीज का भी निम्ने स्मरण हो सके वह (विम ५०८) ।

कालिज्ज न [कालिय] हृदय का गूढ माम-विशेष (तदु) ।

कालिम पुस्त्री [कालिमन्] श्यामता, कृष्णता दागीपन (मुर ३ ४४, आ १०) ।

कालिय पु [कालिय] इस नाम का एक मर्ष (मुपा १८१) ।

कालिय वि [कालिङ्ग] १ काल में उत्पन्न काल-सन्ध्या । २ अनिश्चित, अच्यवस्थित, 'हत्थागया इमे कामा कालिया जे अणायया' (उत्त ५, क १६) । ३ वह शास्त्र, जिसकी श्रमक समय में ही पढ़ने की शास्त्रीय आज्ञा है (ठा २ १—पत्र ४६) । ४ दीव पु [दीप] द्वीप-विशेष (गाया १, १७—पत्र २२८) । ५ पुत्त पु [पुत्र] एक जैन मुनि जो भगवान् पार्श्वनाथ की परम्परा में थे (भग) । ६ सणि वि [सजिन] कालिकी सजावाला (विम ५०६) । ७ सुय न [श्रुत] वह शास्त्र जो श्रमक समय में ही पढ़ा जा सके (एदि) । ८ णुओग पु [नुयोग] देखो पूर्वोक्त अर्थ (भग) ।

काली स्त्री [काली] १ विद्या-देवी-विशेष (सति ५) । २ चमण्द्र की एक पटरानी (ठा ५, १, गाया २, १) । ३ वनस्पति-विशेष, कावजङ्घा (अनु ८) । ४ श्यामवर्ण-वाली स्त्री, माना गायइ महुर, वाली गायइ सर च रुख च' (ठा ७) । ५ राजा श्रेणिक की एक रानी (निर १, १) । ६ चौथी जैन शासन-देवी (सति ६) । ७ पार्वती, गौरी (पाय) । ८ इस नाम का एक छंद (पिंग) ।

कालुण न [कारुण] दया, करुणा । १ बाडिया स्त्री [वृत्ति] भोज्य मांस कर आजीविका करना (विपा १, १) ।

कालुणिय देखो कारुणिय (सूत्र १, १, १) ।

कालुणीय स्त्री कारुणिय (सूत्र १, २, २, ६) ।

कालुय पु [दे] गन्ध की एक उत्तम जाति (तम्मत्त २१६) ।

कालुमिय न [कालुय] अनुपम पन्थिना (गाउ) ।

कुंभ पु [कुम्भ] १ स्वनाम प्रसिद्ध एक राजा, भगवान् मल्लिनाथ का पिता (सम १५१, पउम २०, ४५)। २ स्वनाम-रूपात् जैन महर्षि, शठारहवें तीर्थंकर के प्रथम शिष्य (सम १५२)। ३ कुम्भकर्ण का एक पुत्र (मे १२, ६५)। ४ एक विद्याधर सुभट का नाम (पउम १०, १३)। ५ परमाधार्मिक देवों की एक जाति (सम २६)। ६ कलश, घड़ा (महा, कुमा)। ७ हाथी का गण्ड-स्थल (कुमा)। ८ धान्य मापने का एक परिमाण (अणु)। ९ तरने का उपकरण (निचू १)। १० ललाट, भाल म्यान (पव २)। ११ अण्ण पु [अण्ण] रावण के छोटे भाई का नाम (१५, ११)। १२ आर पु [आर] कुम्हार, घड़ा आदि मिट्टी का वरतन बनाने-वाला (हे १, ८)। १३ उर न [पुर] नगर-विशेष (दस)। १४ गार देखो आर (महा)। १५ ग न [ग] मगध-देश-प्रसिद्ध एक परिमाण (राया १, ८—पत्र १२५)। १६ सेण पु [सेन] उत्तिर्पणी काल के प्रथम तीर्थंकर के प्रथम शिष्य का नाम (तित्थ)।

कुभड न [कुम्भाण्ड] फल विशेष, कोहँडा, कुम्हड़ा (कप्पू)।

कुभार पु [कुम्भकार] कुम्हार, घड़ा आदि मिट्टी का वरतन बनानेवाला (हे १, ८)।

१७ वाय पु [पाक] कुम्हार का वरतन पकाने का स्थान (ठा ८)।

कुभि पु [कुम्भिन्] १ हन्ती, हाथी (सण)। २ नपुसक-विशेष, एक प्रकार का पड पुरुष (पुष्प १२७)।

कुभिक्क देखो कुभिय (राय ३७)।

कुभिणी स्त्री [दे] जल का गतं (दे २, ३८)।

कुभिय वि [कुम्भिक] कुम्भ-परिमाणवाला (ठा ४, २)।

कुभिल पु [दे कुम्भिल] १ चोर, स्तेन (दे २, ६२, विक ५६)। २ पिशुन, दुर्जन (दे २, ६२)।

कुभिल्ल वि [दे] खोदने योग्य (दे २, ३६)।

कुभी स्त्री [कुम्भी] १ पात्र-विशेष, घड़े के आकारवाला छोटा कोष्ठ (सम १२५)। २ कुंभ, घड़ा (ज २)। ३ पाग पु [पाक] १

कुभी मे पकना (पएह २, ५)। २ नरक की एक प्रकार की यातना (सूत्र १, १, १)।

कुभी स्त्री [कुम्भाण्डी] कोहँडा का गाल, 'चलिग्रो कुभीफन दतुरासु' (गडड)।

कुभी स्त्री [दे] केश-रचना, केश-मयम (दे २ ३४)।

कुभील पु [कुम्भील] जलचर प्राणि विशेष, नरक, मगर (चार ६४)।

कुमुब्भव पु [कुम्भोद्भव] ऋषि-विशेष, भगवन् ऋषि (कप्पू)।

कुम्भि वि [कुम्भिन्] खराब कर्म करने-वाला (सूत्र १, ७, १८)।

कुकुला स्त्री [दे] नवोडा, दुलहिन (दे २, ३३)।

कुकुस [दे] देखो कुक्कुस (दस ५ १३४)।

कुकुहाडय न [कुकुहायित] चलते समय का शब्द विशेष (तदु)।

कुकूल पु [कुकूल] करीपाग्नि, कड़े की आग (पएह १, १)।

कुक्क देखो कोक्क। कुक्कड (पि १६७, ४८८)।

कुक्क पु [दे] कुत्ता, कुक्कुर, 'कुक्केहि कुक्काहि अ कुक्कअते' (मृच्छ ३६)।

कुक्कयय न [दे] आभरण-विशेष, 'अदु अजणि अलकार कुक्कयय मे पयच्छाहि' (सूत्र १, ४, २, ७)। देखो कुक्कुडय।

कुक्की स्त्री [दे] कुत्ती, कुक्कुरी (मृच्छ ३६)।

कुक्कुअ वि [कुक्कुच] भांड की तरह शरीर के अवयवों की कुचेष्टा करनेवाला (धर्म २, पव ६)।

कुक्कुअ न [कौकुच्य] कुचेष्टा, कामोत्पादक अग-विकार (पउम ११, ६७, आचा)।

कुक्कुअ वि [कुक्कुज] आनन्दन करनेवाला (उत्त २१)।

कुक्कुआ स्त्री [कुक्कुचा] अवम्यन्दन, क्षरण, रस-रस कर चूना, रसना (वृह ६)।

कुक्कुइअ वि [कौकुचिक] भंड की तरह कुचेष्टा करनेवाला, काम-चेष्टा करनेवाला (भग, औप)।

कुक्कुइअ न [कौकुच्य] काम-कुचेष्टा, 'भडाईए व नयणाइयाए सविचारकरणमिह भणिय। कुक्कुइय' (मुपा ५०६, पडि)।

कुक्कुड पु [कुक्कुट] चतुरिन्द्रिय जन्तु की एक जाति (उत्त ३६, १४८)।

कुक्कुड पु [कुक्कुट] १ कुक्कुट, मुर्गा (गा ५८२, उवा)। २ वनस्पति-विशेष (भग १५)। ३ विद्या द्वारा किया जाता हस्त-प्रयोग-विशेष (वव १)। ४ मसय न [मास-क] १ मुर्गा का मास। २ वीजपूरक वनस्पति का गुदा (भग १५)।

कुक्कुड वि [दे] मत्त, उन्मत्त (दे २, ३७)।

कुक्कुडय न [कुक्कुटक] देखो कुक्कयय (सूत्र १, ४, २, ७ टी)।

कुक्कुडिया स्त्री [कुक्कुडिका टी] कुक्कुडी कुक्कुटी, मुर्गी (राया १, ३, विपा १, ३)।

कुक्कुडी स्त्री [कुक्कुटी] माया, कपट (पिड २६७)।

कुक्कुडेरन न [कुक्कुडेश्वर] तीर्थ-विशेष (ती १६)।

कुक्कुर पु [कुक्कुर] कुत्ता, श्वान (पउम ६४, ८०, मुपा २७७)।

कुक्कुरुड पु [दे] निकर, समूह (दे २, १३)।

कुक्कुस पु [दे] धान्य आदि का छिलका, भूसा (दे २, ३६, दस ५, १, ३४)।

कुक्कुह पु [कुक्कुभ] पक्षि-विशेष (गडड)।

कुक्कुहाइअ न [दे] चलते समय का अश्व का शब्द विशेष (तदु ५३)।

कुक्खि [दे कुक्खि] देखो कुक्खि (दे २, ३४, औप, स्वप्न ६१, कव ३३)।

कुक्खिभरि देखो कुक्खिभरि (धर्मवि १८६)।

कुक्खेअअ देखो कुक्खेअय (सक्ति ६)।

कुग्गाह पु [कुग्गाह] १ कदाम्रह, हठ (उप ८३३ टी)। २ जल-जन्तु विशेष, 'कुग्गाह-गाहाइयजतुसकुलो' (मुपा ६२६)।

कुच पु [कुच] स्तन, धन (कुमा)।

कुचोज्ज न [कुचोच्च] कुतर्क (धर्मस १९७५)।

कुच्च पु [कुच्च] कँधी, बाल सँवारने का उपकरण (उत्त २२, ३०)।

कुच्च न [कुच्च] १ दाढ़ी-मूँछ (पात्र, अमि २१२)। २ तृण-विशेष (पएह २, ३) देखो कुच्चग।

कुच्चधरा स्त्री [कुच्चधरा] दाढ़ी-मूँछ, धारण करनेवाली (औप ८३ भा)।

३ स्त्री. काशी नगरी, बनारस शहर (कुमा) ।
 °पुर न [°पुर] काशी नगरी, बनारस शहर
 (पउम ६, १३७) । °राय पु [°राज] काशी
 देश का राजा (उत्त १८) । °व पुं [°प]
 काशी देश का राजा (पउम १०४, ११) ।
 °वड्ढण पुं [°वर्धन] इस नाम का एक
 राजा, जिम्मे भगवान् महावीर के पाम दोक्षा
 ली थी (ठा ८—पत्र ४३०) ।

कासिअ न [दे] १ सूदम वस्त्र, वारीक
 कपडा । २ सफेद वस्त्र (दे २, ५६) ।

कासिअ न [कासित] छोक, झुत् (राज) ।

कासिअ न [दे] काकस्थल-नामक देश (दे
 २, २७) ।

कासिअ वि [कासिक] खांसी रोगवाला (विपा
 १, ७—पत्र ७२) ।

कासी स्त्री [काशी] काशी, बनारस (गाया
 १, ८) । °राय पु [राज] काशी का राजा
 (पिग) । °स पुं [°श] काशी का राजा
 (पिग) । °सर पुं [°श्वर] काशी का राजा
 (पिग) ।

काह सक [कथय्] कहना । काहयते (सूत्र
 १, १३, ३) ।

काहर देखो काहार (दस ४, १ टी) ।

काहल वि [दे] १ मृदु, कोमल । २ ठग, धूर्त
 (दे २, ५८) ।

काहल वि [कातर] कातर, डरपोक, अवीर
 (हे १, २१४, २५४) ।

काहल पुन [काहल] १ वाद्य-विशेष (सुर ३,
 ६६, औप, एदि) । २ अव्यक्त आवाज (परह
 २, २) ।

काहला स्त्री [काहला] वाद्य-विशेष, महा-
 ढक्का (विक्र ८७) ।

काहलिया स्त्री [काहलिका] आभूषण-विशेष
 (पव २७१) ।

काहली स्त्री [दे] तरुणी, युवती (दे २, २६) ।

काहली स्त्री [दे] १ शर्च करने का धान्यादि ।
 २ तवा, जिसपर पूरी या पूड़ी वगैरह पकायी
 जाती है (दे २, ५६) ।

काहार पु [दे] कहाँ, एक जाति जो पानी
 भरने और डोली वगैरह ढोने का काम करती
 है (दे २, २७, भवि) ।

काहार पुन [दे] काँवर, वहँगी (सुज १०, ६) ।

काहावण पु [कार्पापण] सिक्का-विशेष (हे
 २, ७१, परह १, २, पड्, (प्राप्र) ।

काहिय वि [काथिक] कथा-कार, वार्ता करने-
 वाला (वृह १) ।

काहिल पु [दे] गोपाल, ग्वाला, स्त्री, ल्य°
 (दे २, ३८) ।

काहिलिआ स्त्री [दे] तवा, जिसपर पूरी आदि
 पकायी जाती है (पाप्र) ।

काहीअ देखो काहिय (गच्छ ३, ६) ।

काहीइटाण न [कारिण्यतिदान] प्रत्युपकार
 को आशा से दिया जाता दान (ठा १०) ।

काहे अ [कदा] कब, किस समय ? (हे २,
 ६५, अत २४, प्राप्र) ।

काहेणु स्त्री [दे] गुआ, लाल रत्ती (दे २,
 २१) ।

कि देखो किं (हे १, २६, पड्) ।

कि सक [कृ] करना, बनाना, 'डुक्किय करणे'
 (विसे ३३००) । कवकृ किज्जत (सुर १,
 ६०, ३, १४, ५६) ।

किअ देखो कय = कृत (काप्र ६२५, प्रासू १५,
 घम्म २४, मै ६५, वजा ४) ।

किअ देखो क्रिय = कृप (पड्) ।

किअत वि [क्रियत्] कितना (सण) ।

किअत देखो कयत (अचु ५६) ।

किआडिआ स्त्री [कृकाटिका] गला का उन्नत
 भाग (पाप्र) ।

किइ स्त्री [कृति] कृति, क्रिया, विधान (पड्,
 प्राप्र, उव) । °कम्म न [°कर्मन्] १ वन्दन,
 प्रणमन (सम २१) । २ कार्य-करण (भग
 १४, ३) । ३ विश्रामणा (व्यव० गा० ६२) ।

किं स [किम्] कौन, क्या, क्यों, निन्दा,
 प्रश्न, अतिशय, अल्पता और सादृश्य को
 बतलानेवाला शब्द (हे १, २६, ३, ५८,
 ७१, कुमा, विपा १, १, निचू १३), 'किं
 बुल्लति मणीओ जाउ सहस्सेहि विप्पति'
 (प्रासू ४) । °उण अ [°पुन] तब फिर,
 फिर क्या ? (प्राप्र) ।

किक्कत्तव्या देखो किकायव्या (आचा २,
 २, ३) ।

किक्कम्म पुं [किक्कर्मन्] इस नाम का एक
 गृहस्थ (अत) ।

किंकर पुं [किङ्कर] नौकर, चाकर, दास (सुपा
 ६०, २२३) । °सच्च पु [°सत्य] १ पर-
 मेश्वर परमात्मा । २ अच्युत, विष्णु (अचु
 २) ।

किंकरी स्त्री [किङ्करी] दासी, नौकरानी
 (कप्पु) ।

किंकाइअ देखो केकाइय (अणु २१२) ।

किंकायव्या स्त्री [किंकर्त्तव्यता] क्या
 करना है यह जानना । °मूढ वि [°मूढ]
 किंकर्त्तव्य-विमूढ, हकावका, भौंचक्का, वह
 मनुष्य जिसे यह न सूझ पड़े कि क्या किया
 जाय (महा) ।

किंकार पुन [केङ्कार] अव्यक्त शब्द-विशेष
 (सिरि ५४१) ।

किंकिअ वि [दे] मफेद, धैत (दे २, ३१) ।

किंकिअजड वि [किङ्कत्यजड] हकावका,
 वह मनुष्य जिसे यह न सूझ पड़े कि क्या
 किया जाय (आ २७) ।

किंकिणिआ स्त्री [किङ्किणिका] क्षुद्र-धरिणिका,
 करवनी (सुपा १५६) ।

किंकिणी स्त्री [किङ्किणी] ऊपर देखो (सुपा
 १५४, कुमा) ।

किंकिहि देखो ककिहि (विचार ४६१) ।

किगिरिड पु [किङ्गिरिट] क्षुद्र कीट-विशेष,
 त्रीन्द्रिय जीव की एक जाति (राज) ।

किंच अ [किञ्च] ममुच्चय-द्योतक अव्यय, और
 भी, दूसरा भी (सुर १, ४०, ४१) ।

किंचण न [किञ्चन] १ द्रव्य-हरण, चोरी
 (विसे ३४५१) । २ अ कुछ, किञ्चित् (वव
 २) ।

किंचण न [किञ्चन] द्रव्य, वस्तु (उत्त ३२,
 ८, सुव ३२, ८) ।

किंचहिय वि [किञ्चिदधिक] कुछ ज्यादा
 (सुपा ४३०) ।

किंचि अ [किञ्चिन्] अल्प, ईपत, थोडा
 (जी १, स्वप्न ४७) ।

किंचिम्मत्त वि [किञ्चिन्मात्र] स्वल्प, बहुत
 थोडा, यत्किञ्चित् (सुपा १४२) ।

किचूण वि [किञ्चिदून] कुछ कम, पूर्ण-प्राय
 (औप) ।

किजक्क पुं [किञ्जल्क] पुष्प-रेणु, पराग
 (गाया १, १) ।

कुडगी स्त्री [दे कुटङ्गी] बाँस की जाली, एकपहारेण निवडिया वसकुडंगी (महा, सुर १२, २००, उप पृ २८१)।

कुडव देवो कुडव (महा, गा ६०६)।

कुडग देखो कुड (आवम, सूत्र १, १२)।

कुडभी स्त्री [कुटभी] छोटा पताका (सम ६०)।

कुडय न [दे] लता-गृह, लता से आच्छादित घर, कुटीर, भोपडी (दे २, ३७)।

कुडय पुन [कुटज] वृक्ष-विशेष, कुरैया (गाया १, ६, पण १७, स १६४), 'कुडय दलइ' (कुमा)।

कुडव पु [कुडव] अनाज या अन्न नापने का एक माप (गाया १, ७, उप पृ ३७०)।

कुडाल देखो कुडाल (उवा)।

कुडिअ वि [दे] कुन्ज, वामन, नाटा (पाग्र)।

कुडिआ स्त्री [दे] बाड का विवर (दे २, २४)।

कुडिच्छ न [दे] १ बाड का छिद्र। २ कुटी, भोपडी। ३ वि द्रुटित, छिन्न (दे २, ६४)।

कुडिल वि [कुटिल] वक्र, टेढा (सुर १, २०, २, ८६)।

कुडिलविडल न [दे. कुटिलविटल] हस्ति-शिक्षा (राज)।

कुडिल न [दे] १ छिद्र, विवर (पाग्र)। २ वि कुन्ज, कुवडा (पाग्र)।

कुडिलय वि [दे कुटिलक] कुटिल, टेढा, वक्र (दे २, ४०, मवि)।

कुडिव्यय देखो कुलिव्यय (राज)।

कुडी स्त्री [कुटी] छोटा गृह, भोपडी, कुटीर (सुपा १२०, वजा ६४)।

कुडीर न [कुटीर] भोपडी, कुटी (हे ४, ३६४, पम ३३, ८५)।

कुडीर न [दे] बाड का छिद्र (दे २, २४)।
कुडंग पु [दे] लतागृह, लताओं से ढका हुआ घर (पड, गा १७५, २३२ अ)।

कुडुव न [कुटुम्ब] परिजन, परिवार, स्वजन-वर्ग (उवा, महा, प्राप् १६७)।

कुडुवय पुं [कुस्तुम्बक] १ वनस्पति-विशेष, घनियाँ (पण १—पत्र ४०)। २ कन्द-विशेष, 'पलडुलसणकदे य कदली य कुडुवए' (उत्त ३६, ६८ का)।

कुडुंवि } वि [कुटुम्बिन, °क] १ कुटुम्ब-
कुडुंविअ } युक्त, गृहस्थ। २ कुनवेवाला,
कर्पक (गजड)। ३ सम्बन्धी, 'सोभागुणसमुद-
एण आणणकुडु विएण' (कप्प)।

कुडुंवीअ न [दे] सुरत, संभोग, मैथुन (पड)।

कुडुंभग पु [दे] जल-मण्डक, पानी का भेदक (निचू ?)।

कुडुक् पुं [दे] लता गृह (पड)।

कुडुच्चिअ न [दे] सुरत, संभोग, मैथुन (दे २, ४१)।

कुडुल्ली (अप) स्त्री [कुटी] कुटिया, भोपडी (कुमा)।

कुडु पुन [कुड्य] १ भित्ति, भीत (पम ६८, ६, हे २, ७८),

'अज्ज गमोत्ति अज गमोत्ति

अज्ज गमोत्ति गणिरिए।

पडमव्विअ दिअहदे कुडो तेहाहि

चित्तलिओ (गा २०८)।

कुडु न [दे] आरचय, कौतुक, कुतूहल (दे २, ३३, पाग्र, पड, हे २, १७४)।

कुडुगिलोई [दे] गृह-गोवा, छिपकली (दे २, १६)।

कुडुलेवणी स्त्री [दे. कुडलेपनी] सुघा, चूना, खडी, खटिका (दे २, ४२)।

कुडुल न [दे] हल के ऊपर का विस्तृत अश (उवा)।

कुड पुन [दे] १ चुराई हुई वस्तु की खोज में जाना (दे २, ६२, सुपा ५०३)। २ छीनी हुई चीज को छुड़ानेवाला, वापस लेनेवाला (दे २, ६२)।

कुडार पु [कुठार] कुल्हाडा, फरसा (हे १, १६६, पड)।

कुडावय न [दे] अनुगमन, पीछे जाना (विमे १४३६ टी)।

कुडिय वि [दे] कूड, मूख, वेममभ, 'कूयति नेउराइ पुणो पुणो वुडियपुरिमोव्व' (सुर ३, १४२)।

कुडिय वि [दे] जिसके माल की चोरी हो गई हो वह (सुख २, २१)।

कुण सक [कु] करना, बनाना। कुणइ, कुणउ, कुण (भा, महा, सुपा ३२०)।

वक्क कुणत, कुणमाण (गा १६५, सुपा ३६, ११३, आचा)।

कुणक् पु [कुणक] वनस्पति-विशेष (पण १—पत्र ३५)।

कुडव न [कुणव] १ मुरदा, मृत-शरीर (पाग्र, गजड)। २ वि. दुर्गन्धी (हे १, २३१)।

कुणाल पु. व. [कुणाल] १ देश-विशेष (गाया १, ८, उप ६८६ टी)। २ प्रसिद्ध महारान अणोक का एक पुत्र (विसे ८६१)।

°नयर न [°नगर] एक शहर, उज्जैन, 'आमी कुणालनयरे' (मथा)।

कुणाला स्त्री [कुणाला] इस नाम की एक नगरी (सुपा १०३)।

कुणि पु [कुणि] १ हस्त-विकल, हँठ, कुणिअ हाथ-कटा मनुष्य (पम २, ७७)।

२ जन्म से ही जिसका एक हाथ छोटा हो वह। ३ जिसका एक पाँव छोटा हो वह, खज्ज (पण २, ५—पत्र १५०, आचा)।

कुणिआ स्त्री [दे] वृत्ति-विवर, बाड का छिद्र (दे २, २४)।

कुणिम पुन [दे कुणप] १ शव, मृतक, मुरदा (पण २, ३)। २ मास (ठा ४, ४, औप)। ३ नरकावास-विशेष (सूत्र १, ५, १)। ४ शव का रुधिर, वसा वगैरह (भा ७, ६)।

कुणुकुण अक [कुणुकुणाय] शीत से कम्प होने पर 'कडकड' आवाज करना। वक्क कुणुकुणत (सुर २, १०३)।

कुणहरिया स्त्री [दे] वनस्पति-विशेष (पण १—पत्र ३५)।

कुत्तत्ती स्त्री [दे] मनोरथ, वाञ्छा (दे २, ३६)।

कुतुव पुं [कुस्तुम्ब] वाय-विशेष (राय ४६)।

कुतुवर पुं [कुस्तुम्बर] वाद्य-विशेष (राय ४६)।

कुतुव पुन [कुतुप] १ तेल वगैरह भरने का चमड़े का पात्र (दे ५, २२)। देखो कुडअ।

कुत्त पु [दे] कुत्ता, कुक्कुर (रमा)।

कुत्त न [दे. कुनक] ठेका, इजारा (विपा १, १—पत्र ११)।

कुत्तार वि [कुत्तार] अयोग्य तारक (गच्छ १, ३०)।

कुत्तिय पुंस्त्री [दे] एक तरह का कीड़ा, चतुरिन्द्रिय जन्तु-विशेष, 'करालिय कुत्तिय विच्छू' (प्राप १७, पमा ४१)।

उसमें मिल जाता है उम तरह मिला हुआ (उव) ।

किट्ट वि [क्लिष्ट] क्लेश-युक्त (भग ३, २, जीव ३) ।

किट्ट वि [कृष्ट] जोता हुआ, हल-विदारित (मुर ११, ५६, भग ३, २) । २ न. देव-विमान विशेष, 'जे देवा सिरिवच्छ सिरिदाम-कड मल्ल किट्ट (? ट्ट) चावोएणय अर-एणावडिसण विमाण देवताए उववएणा' (मम ३६) ।

किट्टि स्त्री [कृष्टि] १ कर्पण । २ खीचाव, आकर्षण । ३ देवविमान-विशेष (मम ६) । °कूड न [°कूट] देवविमान-विशेष (मम ६) । °घोस न [°घोष] विमान विशेष (मम ६) । °जुत्त न [°युक्त] विमान-विशेष (मम ६) । °ज्झय न [°ध्वज] विमान विशेष (मम ६) । °पभ न [°प्रभ] देवविमान-विशेष (मम ६) । °वण न [°वर्ण] विमान-विशेष (मम ६) । °सिग न [°शृङ्ग] विमान-विशेष (मम ६) । °सिद्ध न [°शिष्ट] एक देव-विमान (मम ६) ।

किट्टियावत्त न [कृष्टयावत्त] देवविमान-विशेष (मम ६) ।

किट्टुत्तरवडिसण न [कृष्टयुत्तरावत्तसक] इस नाम एक देव-विमान, देव-मवन (मम ६) ।

किडग वि [क्रीडक] क्रीडा करनेवाला (सूत्र १, ४, १, २ टी) ।

किडि पु [किरि] सूकर, सूअर (हे १, २५१, पड) ।

किडिकिडिया स्त्री [किटिकिटिका] सूखी हड्डी की आवाज (गाथा १, १—पत्र ७४) ।

किडिभ पु [किटिभ] रोग विशेष, एक प्रकार का क्षुद्र कोढ़ (लहुअ १५, भग ७, ६) ।

किडिया स्त्री [दे] खिडकी, छोटा द्वार (स ५८३) ।

किडु अक [क्रीड] खेलना, क्रीडा करना । वहु किडुत (पि ३६७) ।

किडुकर वि [क्रीडाकर] क्रीडा-कारक (औप) ।

किड्हा स्त्री [क्रीडा] १ क्रीडा, खेल (विपा १, ७) । २ वात्यावस्था (ठा १०—पत्र ५१६) ।

किड्हाविया स्त्री [क्रीडिका] क्रीडन धात्री, बालक को खेल-नूद करानेवाली दाई (गाथा १, १६—पत्र २११) ।

किटि वि [दे] १ सभोग के लिए जिसको एकान्त स्थान में लाया जाय वह (वव ३) । २ स्थविर, वृद्ध (वृह १) ।

किटिण न [किटिन] सन्यामियों का एक पात्र, जो वाँस का बना हुआ होता है (भग ७, ६) ।

किण सक [क्री] खरीदना । किणइ (हे ४, ५२) । वहु 'से किण किणावेमाणे हण घायमाणे' (सूत्र २ १) । किणत (मुपा ३६६) । सहु किणित्ता (पि ५८२) । प्रयो किणावेइ (पि ५५१) ।

किण पु [किण] १ घर्पण-चिह्न, घर्पण की निशानी (गडड) । २ मास-अधि । ३ सूखा घाव (मुपा ३००, वजा ३६) ।

किणइय वि [दे] शोभित, विभूषित (पउम ६२, ६) ।

किणण न [क्रयण] कीटना, खरीद, क्रय (उप पृ २५८) ।

किणा देखो किण्णा (प्राप्र, हे ३, ६६)

किणि वि [क्रयिन्] खरीदनेवाला (सम्बोध १६) ।

किणिकिण अक [किणिकिणय्] किण-किण आवाज करना । वहु. किणिकिणित (औप) ।

किणिय वि [क्रीत] कीना हुआ, खरीदा हुआ (मुपा ४३४) ।

किणिय पु [किणिक] १ मनुष्य की एक जाति, जो बाजा बजाती और बजाती है (वव ३) । २ रस्सी बनाने का काम करने-वाली मनुष्य जाति, 'किणिया उ वरत्ताओ वलित्ति' (पचु) ।

किणिय न [किणित] वाद्य-विशेष (राय) ।

किणिया स्त्री [किणिक्का] छोटा फोडा, फुनसी, 'अन्नेवि सइ महियलनिसीय-गुप्पन्नकिणियपोगिल्ला ।

मल्लिणजरकप्पडोच्छइयविगह्हा

कहवि हिंडित्ति' (स १८०) ।

किणिस सक [शाणय्] तीक्ष्ण करना, तेज करना । किणिसइ (पिग) ।

किणो अ [किमिति] क्यो, किसलिए ? (दे २, ३१, हे २, २१६, पाअ, गा ६७, महा) ।

किण वि [कीर्ण] १ उत्कीर्ण, खुदा हुआ- 'उवलकिणव्व कट्टुडियव्व' (मुपा ५७१) । २ क्षिप्त, फेंका हुआ (ठा ६) ।

किण पु [किणव] १ फलवाला वृक्ष विशेष, जिमभ दाख वनता है (गडड आचा) । २ न मुरा बीज, किरव-वृक्ष के बीज, जिसका दाख वनता है (उत्त २) । °सुरा स्त्री [°सुरा] किरव-वृक्ष के फल में बनी हुई मदिरा (गडड) ।

किण वि [दे] शोभमान, राजमान (दे २ ३०) ।

किण अ [किनम्] प्रश्नार्थक अव्यय (उवा) ।

किणर देखो किंनर (ज १, राय, इक) ।

किण्णा अ [कथम्] क्यो, क्यो कर, कैसे ? 'किण्णा लद्धा किण्णा पत्ता' (विपा २, १—पत्र १०६) ।

किण्णु अ [किंनु] इन अर्थों का सूचक अव्यय—१ प्रश्न । २ वितर्क । ३ सादृश्य । ४ स्थान, स्थल । ५ विकल्प (उवा, स्वप्न २४) ।

किण्ह देखो कण्ह (गा ६५, गाथा १, १, उर ६, ५, पराण १७) ।

किण्ह न [दे] १ बारीक कपडा । २ मफेद कपडा (दे २, ५६) ।

किण्हग पु [दे] वर्षाकाल में घडा आदि में होनेवाली एक तरह की काई (जीवस ३६) ।

किण्ह्हा देखो कण्ह्हा (ठा ५, ३—पत्र ३५१, कम्म ८, १३) ।

कित्तव पु [कित्तव] धूतकर, जूआरी (दे ४, ८) ।

कित्त देखो किच्च (सकि ५) ।

कित्त देखो किट्ट = कीर्त्तय् । भवि कित्तइस्स (पडि) । सहु कित्तइत्ताण (पच ११६) ।

कित्तण न [कीर्त्तन] १ श्लाघा, स्तुति, 'तव य जिणुत्तम संति कित्तण' (अजि ४, मे ११, १२३) । २ वर्णन, प्रतिपादन । ३ कथन, उक्ति (विसे ६४०, गडड, कुमा) ।

कित्तणा स्त्री [कीर्त्तना] कीर्त्तन, वर्णन, प्रशंसा (चैइय ७४८) ।

एक विजय-युगल, भूमि प्रदेश-विशेष (ठा २, ३—पत्र ८०) । ३ न चन्द्र-विकासी कमल (गाया १, ३—पत्र ६६ से १, २६) । ४ संख्या-विशेष, कुमुदाङ्ग को चौरासी लाख से गुणने पर जो संख्या लब्ध हो वह (जो २) । ५ शिखर-विशेष (ठा ८) । ६ वि. पृथ्वी में आनन्द पानेवाला । ७ खराब प्रीतिवाला (से १, २६) । देखो कुमुद ।

कुमुअ पु [कुमुद] देव-विशेष (मिरि ६६७) । °चंद पु [°चन्द्र] आचार्य सिद्धसेन दिवाकर की मुनि अवस्था का नाम (सम्मत् १४१) ।

कुमुअंग न [कुमुदाङ्ग] संख्या-विशेष, 'महाकाल' को चौरासी लाख में गुणने पर जो संख्या लब्ध हो वह (जो २) ।

कुमुआ स्त्री [कुमुदा] ? इस नाम की एक पुष्करिणी (ज ४) । २ एक नगरी (दीव) ।

कुमुइणी स्त्री [कुमुदिनी] ? चन्द्र-विकासी कमल का पेड़ (कुमा, २भा) । २ इस नाम की एक रानी (उप १०३१ टी) ।

कुमुद देखो कुमुअ (इक) । देव-विमान-विशेष (सम ३३, ३५) । °गुम्म न [°गुल्म] देव-विमान-विशेष (सम ३५) । °पुर न [°पुर] नगर-विशेष (इक) । °प्पभा स्त्री [°प्रभा] इस नाम की एक पुष्करिणी (ज ४) । °वण न [°वन] मथुरा नगरी के समीप का एक जङ्गल (ती २१) । °गार पु [°गार] कुमुद-षण्ड, कुमुदों से भरा हुआ वन (पणह १, ४) ।

कुमुदग देखो कुमुअग (इक) ।

कुमुदग न [कुमुदङ्ग] वृण-विशेष (सूअ २, २) ।

कुमुली स्त्री [दे] चुल्ली, चूल्हा (दे २, ३६) । कुम्म पुं [कुर्म] कच्छप, कछुआ (पाअ) । °ग्गाम पु [°ग्राम] मगध देश के एक गाँव का नाम (भग १५) ।

कुम्मण वि [दे] म्लान, शूष्क, कुम्हलाया हुआ (दे २, ४०) ।

कुम्मार पु [कुमार] मगध देश के एक गाँव का नाम (आचा २, १५, ५) ।

कुम्मास पु [कुत्साप] ? अन्न-विशेष, उरद (शोध ३५६, पणह २, ५) । २ थोड़ा भीजा हुआ भूँग वगैरह धान्य (पणह २, ५—पत्र १४८) ।

कुम्मी स्त्री [कुर्मी] ? कछुई, कच्छपी । २ नारद की माता का नाम (पउम ११, ५२) । °पुत्त पु [°पुत्र] दो हाथ ऊँचा इस नाम का एक पुरुष, जिसने मुक्ति पाई थी (श्रौप) ।

कुम्ह पुव [कुर्मन] देश-विशेष (हे २, ७४) । कुम्हड देखो कोहड (प्राकृ २२) ।

कुम्हंडी देखो कोहडी (प्राकृ २२) ।

कुय पु [कुच] ? स्तन, थन । २ वि शिथिल (वव ७) । ३ अस्थिर (निचू १) ।

कुयवा स्त्री [दे] वन्ली-विशेष (पणह १—पत्र ३३) ।

कुरग पु [कुरङ्ग] ? मृग की एक जाति (जं २) । २ कोई भी मृग, हरिण (पणह १, १, गउड) । स्त्री °गी (पाअ) । °च्छी स्त्री [°क्षी] हरिण के नेत्र जैसे नेत्रवाली स्त्री, मृगनयनी स्त्री (वाअ २०) ।

कुरटय पुं [कुरण्टक] वृक्ष-विशेष, पियवांसा (उप १०३१ टी) ।

कुरकुर देखो कुरकुर । वक्र कुरकुराडत (रंभा) ।

कुरय पु [कुरक] वनस्पति-विशेष (पणह १—पत्र ३५) ।

कुरय न [कुरवक] पुष्प विशेष (वज्जा १०६) ।

कुरर पु [कुरर] कुरर-पक्षी, उत्कोश (पणह १, १, उप १०२६) ।

कुररी स्त्री [दे] पशु, जानवर (दे २, ४०) ।

कुररी स्त्री [कुररी] ? कुरर पक्षी की मादा । २ गाथा छन्द का एक भेद (पिंग) । ३ मेपी, मेढी (रंभा) ।

कुरल पु [कुरल] ? केश, बाल, 'कुरल-कुरलीहि कलिओ तमालदलसामलो अइसणिद्धो' (सुपा २४, पाअ) । २ पक्षि-विशेष (जीव १) ।

कुरली स्त्री [कुरली] ? केशों की वक्र सटा (सुपा १, २४) । २ कुरल-पक्षिणी, 'कुरलिन्व नहणो भमइ' (पउम १७, ७६) ।

कुरवय पु [कुरवक] वृक्ष-विशेष, कटमरैया (गा ६, मा ४०, विक्र २६, स ४१४, कुमा, दे ५, ६) ।

कुरा स्त्री [कुरा] वर्ष-विशेष, अकर्म भूमि-विशेष (ठा २, ३, १०) ।

कुरिण न [दे] वडा जंगल, भयकर अटवी (शोध ४४७) ।

कुरु पुं व [कुरु] ? आर्य देश-विशेष, जो उत्तर भारत में है (गाया १, ८, कुमा) ।

२ भगवान् आदिनाथ का इस नाम का एक पुत्र (ती १४) । ३ अकर्म-भूमि विशेष (ठा ६) । ४ इस नाम का एक वंश (भवि) । ५ पुत्री कुरु वंश में उत्पन्न, कुरु वंशीय (ठा ६) । °अरा, °अरी देखो नीचे °चरा, °चरी (पड्) । °खेत्त °कखेत्त न [°चेत्त] ? दिल्ली के पास का एक मैदान, जहाँ कौरव और पाण्डवों की लड़ाई हुई थी । २ कुरु देश की राजधानी, हस्तिनापुर नगर (भवि, ती १६) । °चद पु [°चन्द्र] इस नाम का एक राजा (धम्म, आवम) । °चर वि [°चर] कुरु देश का रहनेवाला । स्त्री °चरा, °चरी (हे ३, ३१) । °जगल न [°जङ्गल] कुरु-भूमि, देश-विशेष (भवि, ती ७) । °णाह पु [°नाथ] दुर्योधन (गा ४४३, गउड) ।

°दत्त पु [°दत्त] इस नाम का एक श्रेष्ठी और जैन महर्षि (उत २, सथा) । °मई स्त्री [°मती] ब्रह्मदत्त चक्रवर्ती की पटरानी (सम १५२) । °राय पुं [°राज] कुरु देश का राजा (ठा ७) । °वइ पुं [°पति] कुरु देश का राजा (उप ७२८ टी) ।

कुरुकुया स्त्री [कुरुकुचा] पाँव का प्रक्षालन (शोध ३१८) ।

कुरुकुरु अक [कुरुकुराय] 'कुर-कुर' आवाज करना, कुलकुलाना, बड़बड़ाना । कुरुकुरासि (पि ५५८) । वक्र कुरुकुराअत (कप्पु) ।

कुरुकुरिअ न [दे] रणरणक, श्रौतुक्य (दे २, ४२) ।

कुरुगुर देखो कुरकुर । कुरुगुरेति (स ५०३) कुरुचिह्न पु [दे] ? कुलीर, जल-जन्तु-विशेष २ न ग्रहण, उपादान (दे २, ४१) । देखो कुरुचिह्न ।

कुरुस्व वि [दे] अनिष्ट, अप्रिय (दे २, ३६) कुरुड वि [दे] ? निर्दय, निष्ठुर (दे २, ६३ भवि) । २ निपुण, चतुर (दे २, ५३, भवि) कुरुण न [दे] राजा का या दूसरे का घ (राज) ।

कुरुमाल सक [दे] टटोलना, घीरे घीरे हाँ फेरना । वक्र, कुरुमालत (कुप्र ४४) ।

किरणिल वि [किरणवन्] किरणवाला, तेजस्वी (सुर २, २४२) ।
 किराड पुं [किराट] १ अनायं देश विदेश किराय (पव १४८) । २ भील, एक जगली जाति (सुर २, २७, १८०, सुपा ३६१, हे १, १८३) ।
 किरात (शौ) देखो किराय (प्राकृ ८६) ।
 किरि देखो किर = किल (सिरि ८३२, ८३४) ।
 किरि पुं [किरि] भालू की आवाज, 'कथइ किरिति कथइ हिरिति कथइ छिरिति रिच्छाणं सद्दो' (पउम ६४, ४५) ।
 किरि पुं [किरि] सूकर, सूअर (गउड) ।
 किरिआण देखो कयाण 'जम्मंतरगहिअपुन्न-किरिआणो' (कुलक २१) ।
 किरिइरिया स्त्री [दे] १ कर्णोपकर्णिका, किरिकिरिआ एक कान से दूसरे कान गई हुई बात, गप । २ कुतूहल, कौतुक (दे २, ६१) ।
 किरिकिरिया स्त्री [दे] वाद्य-विशेष, बाँस आदि की कम्बा—लकड़ी से बना हुआ एक प्रकार का वाजा (आचा २, ११, १) ।
 किरित्तण देखो कित्तण (नाट—माल ६७) ।
 किरिया स्त्री [क्रिया] १ क्रिया, कृति, व्यापार, प्रयत्न (सूअ २, १, ठा ३, ३) । २ शास्त्रोक्त अनुष्ठान, धर्मानुष्ठान (सूअ २, ४, पव १४६) । ३ मावद्य व्यापार (भग १७, १) । ४ 'ड्डाण न [स्थान] कर्मवन्व का कारण (सूअ २, २, आव ४) । 'वर वि [पर] अनुष्ठान कुशल (पड) । 'वाइ वि [वादिन्] १ आस्तिक, जीवादि का अस्तित्व माननेवाला (ठा ४, ४) । २ केवल क्रिया से ही मोक्ष होता है ऐसा माननेवाला (सम १०६) । 'विसाल न [विशाल] एक जैन ग्रन्थाश, लेखवा पूर्व-ग्रन्थ (सम २६) ।
 किरिड पुं [किरिट] मुकुट, शिरो भूषण (पाय) ।
 किरिडि पुं [किरिटिन्] अजुन, मव्यम पाण्डव (वेणी १६२) ।
 किरित वि [क्रीत] कीना हुआ, खरोदा हुआ (प्राप्र) ।
 केरीय पुं [किरिय] १ एक म्लेच्छ देश । २ उसमें उत्पन्न म्लेच्छ जाति (राज) ।

किरोलय न [किरोलक] फल-विशेष, किरो-लिका वल्ली का फल (उर ६, ५) ।
 किल देखो किर = किल (हे २, १८६, गउड, कुमा) ।
 किलत वि [क्लान्त] खिन्न, श्रान्त (पड) ।
 किलज न [किलिज] बाँस का एक पात्र, जिसमें गैया वगैरह को खाना खिलाया जाता है (उवा) ।
 किलज न [किलिज] तृण-विशेष (धर्मवि १३५, १३६) ।
 किलकिल अक [किलकिलाय्] 'किल-किल' आवाज करना, हँसना, 'किलकिलइ व्व सहरिस मणिक्कोकिरिखिण' (कप्पू) ।
 किलकिलाइय न [किलकिलायित] 'किल-किल' ध्वनि, हर्ष-ध्वनि (आवम) ।
 किलणी स्त्री [दे] रथ्या, गली (दे २, ३१) ।
 किलम्म अक [क्लम्] क्लान्त होना, खिन्न होना । किलम्मइ (कप्पू) । किलम्मसि (वजा ६२) । वक्क किलम्मत (पि १३६) ।
 किलाचक न [क्रीडाचक] इस नाम का एक छन्द—वृत्त (पिग) ।
 किलाड पुं [किलाट] दूध का विकार-विशेष, मलाई (दे २, २२) ।
 किलाम सक [क्लमय्] क्लान्त करना, खिन्न करना, ग्लानि उत्पन्न करना । किलामेज (पि १३६) । वक्क किलामेन (भग ५, ६) । कवक्क किलामीअमाण (मा ४६) ।
 किलाम पु [क्लम] खेद, परित्यग, ग्लानि, 'खमणिओ मे किलामो' (पडि, विमे २४०४) ।
 किलामणया स्त्री [क्लमना] खिन्न करना, उत्पन्न करना (भग ३, ३) ।
 किलामणा स्त्री [क्लमना] क्लम, क्लेश (महानि ४) ।
 किलामिअ देखो किलउ (अणु १३६) ।
 किलामिअ वि [क्लमित] खिन्न किया हुआ, हैरान किया हुआ, पीड़ित, 'तएहाकिलामि-अणो' (पउम १०३, २२, सुर १०, ४८) ।
 किलिच न [दे] छोटी लकड़ी, लकड़ी का टुकड़ा, दंततरसोहरणं किलिचमितपि अवि-दिन्' (भत्त १०२, पाय, दे २, ११) ।
 किलिचिअ न [दे] ऊपर देखो (गा ८०) ।
 किलित देखो किलत (नाट—मृच्छ २५, पि १३६) ।

किलिकिच अक [रम्] रमण करना, क्रीडा करना । किलिकिचइ (हे ४, १६८) ।
 किलिकिचिअ न [रत] रमण, क्रीडा, संभोग (कुमा) ।
 किलिकिल अक [किलिकिलाय्] 'किल-किल' आवाज करना । वक्क किलिकिलत (उप १०३१ टी) ।
 किलिकिल न [किलिकिलि] इस नाम का एक विद्यावरनगर (इक) ।
 किलिकिलिकिल देखो किलकिल । वक्क, किलिकिलिकिलत (पउम ३३ ८) ।
 किलिगिलिय न [किलिकिलित] 'किल-किल' आवाज करना, हर्ष-त्रोतक ध्वनि-विशेष (स ३७०, ३८५) ।
 किलिट्ट वि [क्लिट्ट] १ क्लेश-युक्त (उत्त ३२) । २ कठिन, विपम । ३ क्लेश जनक (प्राप्र, हे २, १०६, उव) ।
 किलिण देखो किलिन्न (स्वप्न ८५) ।
 किलित्त वि [क्लृप्त] कल्पित, रचित (प्राप्र, पड, हे १, १४५) ।
 किलित्ति स्त्री [क्लृप्ति] रचना, कल्पना (पि ५६) ।
 किलिन्न वि [क्लिन्न] आर्द्र, गीला (हे १, १४५, २, १०६) ।
 किलिम्म देखो किलम्म । किलिम्मइ (पि १७७) । वक्क किलिम्मंत (मे ६, ८०, ११, ५०) ।
 किलिम्मिअ वि [दे] कथित, उक्त (दे २, ३२) ।
 किलिय देखो कीव (वव २, मै ४३) ।
 किलिस अक [क्लिश्] खेद पाना, थक जाना, दुःखी होना । वक्क किलिसत (पउम २१, ३८) ।
 किलिस देखो किलेस, 'मिच्छत्तमच्छभीयाण, किलिससलिलम्मि वुड्डाण' (मुपा ६४) ।
 किलिसिअ वि [क्लेशित] आयासित, क्लेश प्राप्त (स १४६) ।
 किलिस्स देखो किलिस = किलिस् । किलिम्मइ (महा, उव) । वक्क किलिस्संत (नाट—माल ३१) ।
 किलिस्सिअ वि [क्लिट्ट] क्लेश प्राप्त, क्लेश-युक्त (उप पृ ११६) ।

कुलाल पु [कुलाट] १ माजरि, विलाड ।
२ ब्राह्मण, विप्र (सूत्र २, ६) ।

कुलिगाल पु [कुलाङ्गार] कुल मे कलक
लगानेवाला, दुराचारी (ठा ४, १—पत्र
१८५) ।

कुलिअ न [कुलिअ] खेत मे घास काटने का
छोटा काष्ठ-विशेष (अणु ४८) ।

कुलिक } पु [कुलिक] १ ज्योतिष-शास्त्र
कुलिय } में प्रसिद्ध एक कुयोग (गण १८) ।
२ न एक प्रकार का हल (परह १, १) ।

कुलिय न [कुलिय] १ भीत, भित्ति (सूत्र १,
२, १) । २ मिट्टी की बनाई हुई भीत (बृह
२, कस) ।

कुलिया स्त्री [कुलिका] भीत, कुञ्ज (बृह २) ।

कुलिर पु [कुलिर] मेघ वगैरह बारह राशि
मे चतुर्थ राशि (पञ्चम १७, १०८) ।

कुलिञ्चय पु [कुटिञ्चय] परिभ्राजक का एक
भेद, तापस-विशेष, घर मे ही रहकर क्रोधादि
का विजय करनेवाला (श्रौप) ।

कुलिस पुन [कुलिश] वज्र, इन्द्र का मुख्य
आयुध (पात्र, उप ३२० टी) । °निणाय पुं
[°निनाद] रावण का इस नाम का एक मुन्ध
(पञ्चम ५६, २६) । °मञ्जु न [°मध्य]
एक प्रकार की तपश्चर्या (पञ्चम २२, २४) ।

कुलीकोस पुं [कुटीकोश] पक्षि-विशेष (परह
१, १—पत्र ८) ।

कुलीण वि [कुलीन] उत्तम कुल मे उत्पन्न
(प्रासू ७१) ।

कुलीर पु [कुलीर] जन्तु-विशेष (पात्र, दे २
४१) ।

कुलुच सक [दह, म्लै] १ जलाना । २
म्लान करना । सक 'मालइकुसुमाई कुलु-
चिऊण मा जाणि रिण्वुओ सिसिरो' (गा
४२६) ।

कुलुक्खिय वि [दे] जला हुआ, 'विरहदवग्गि-
कुलुक्खियकायहो' (भवि) ।

कुलोवकुल पु [कुलोपकुल] ये चार नक्षत्र—
श्रमिजित्, शतभिषा, आर्द्रा और अनुराधा
(सुज १०, ५) ।

कुल पुं [दे] १ ग्रीवा, कण्ठ । २ वि अस-

मर्थ, अशक्त । ३ क्षिप्त-पुच्छ, जिमनी पूछ
कट गई हो वह (दे २, ६१) ।

कुल पुन [दे] चूतड, गुजराती मे 'कुलो'
(सुख ८, १३) ।

कुल प्रक [कूद्] कूटना । वक्र. 'मारुईरक्ख-
साण वल मुत्तकुक्कारपाडक्ककुल्लनवगगतमे-
णापुह' (पञ्चम ५३, ७६) ।

कुलउर न [कुल्यपुर] नगर-विशेष (सया) ।

कुलड न [दे] १ कुल्लो, चूल्हा (दे २, ६३) ।
२ छोटा पात्र पुडवा (दे २, ६३, पात्र) ।

कुलरिअ पुं [दे] कान्दविक, हलवाई, मिठाई
बनानेवाला (दे २, ४१) ।

कुलरिया स्त्री [दे] हलवाई की दूकान
(भावम) ।

कुल स्त्री [कुल्या] १ जल की नानी, नारिणी
(कुमा, हे २, ७६) । २ नदी, कृत्रिम नदी
(कप्प) ।

कुलाग पु [कुल्याक] सन्निवेश-विशेष, मगध
देश का एक गाव (कप्प) ।

कुली देखो कुल (धर्मवि ११२) ।

कुल्लुडिया स्त्री [कुल्लुडिका] घटिका, घडी
(सूत्र १, ४, २) ।

कुल्लुरी स्त्री [दे] स्नाय-विशेष गुजराती—
'कुलेर' (पत्र ४) ।

कुल्लुरिअ [दे] देखो कुल्लुरिअ (महा) ।

कुल्ल पुं [दे] शृगाल, सियार (दे २, ३४) ।

कुणय न [दे] लकुट, यष्टि, लडकी, छडी
(राज) ।

कुवलय न [कुवल्य] १ नीलोत्पल, हरा रंग
का कमल (पात्र) । २ चन्द्र-विकासी कमल
(श्रा २७) । ३ कमल, पद्म (गा ५) ।

कुवली स्त्री [दे] वृक्ष-विशेष (कुप्र २४६) ।

कुविंद पु [कुविन्द] तन्तुवाय, कपडा बुनने-
वाला (सुपा १८८) । °वल्ली स्त्री [°वल्ली]
वल्ली-विशेष (परह १—पत्र ३३) ।

कुविय वि [कुपित] क्रुद्ध, जिसको गुस्सा
हुआ हो वह (परह १, १, सुर २, ५, हेका
७३, प्रासू ६४) ।

कुविय देखो कुप्प = कुप्प (परह १, ५, सुपा
४०६) । °साला स्त्री [°शाला] विछोना
आदि गृहोपकरण रखने की कुटिया, घर का
वह भाग जिसमें गृहोपकरण रखे जाते हैं
(परह १, ४—पत्र ११३) ।

कुवेणी स्त्री [कुवेणी] गन्ध-विशेष, एक प्रकार
का हथियार (परह १, ३—पत्र ४४) ।

कुवेर देखो कुवेर (महा) ।

कुव सक [कु, कुव] करना, बनाना । कुव्व
(भग) । भूका. कुव्वित्था (पि ५१७) । वक्र.
कुव्वत, कुव्वमाण (श्रौप १५ भा, एया
१, ६) ।

कुम पुन [कुम] वृण-विशेष, दम, डाम,
काश (विपा १, ६, निवू ?) । २ पु दाश-
रथी राम के एक पुत्र का नाम (पञ्चम १००,
२) । °ग्ग [°ग] दम का अग्र-भाग जो
अत्यन्त तीक्ष्ण होता है (उत्त ७) । °गानयर
न [°ग्नगर] नगर-विशेष, विहार का एक
नगर, राजगृह, जो आजवन 'राजगिर' नाम
से प्रसिद्ध है (पञ्चम २, ६८) । °ग्गपुर न
[°ग्नपुर] देखो पूर्वोक्त अर्थ (सु १, ८१) ।

°दृ पु [°वर्त्त] आर्य देश-विशेष (नत्त ६७
टी) । °दृ पु [°वर्त्त] आर्य देश-विशेष, जिसकी
राजधानी शौर्यपुर थी (इक) । °त्त न [°क्त,
°क्त] आन्तरण-विशेष, एक प्रकार का
विद्योना (एया १, १—पत्र ६३) । °त्यल-
पुर न [°स्थलपुर] नगर-विशेष (पञ्चम २१,
७६) । °मट्टिया स्त्री [°मृत्तिका] डाम के
नाथ कुटी जानी मिट्टी (निवू १८) । °वर पु
[°वर] द्वीप-विशेष (अणु—टी) ।

कुस वि [कुश] दम का बना हुआ (आचा
२, २, ३, १४) ।

कुसण न [दे] तीमन, आर्द्र करना (दे २,
३५) ।

कुसण न [दे] गोरम (पिड २८२) ।

कुमणिय वि [दे] गोरम से बना हुआ कर्म्या
आदि स्नाय, 'कुमु (?) म' रिण्यति' (पिड
२८२ टी) ।

कुसल वि [कुशन्] १ निपुण, चतुर, दक्ष,
अभिज्ञ (आचा, एया १, २) । २ न. सुख,
हित (राय) । ३ पुण्य (पचा ६) ।

कुसला स्त्री [कुशला] नगरी-विशेष, विनीता,
अयोध्या (भावम) ।

कुसार देखो कूसार (स ६८६) ।

कुसी स्त्री [कुशी] लोहे का बना हुआ एक
हथियार (दे ८, ५) ।

कीयग पु [कीचक] विराट देश के राजा का माला, जिनको भीम ने मारा था (उप ६४८ टी), 'नवम दूय विराडनयर, तत्थ ए तुम कि (१ की) यगं भाउमयसमग्ग' (गाथा १, १६—पत्र २०६)।

कीया स्त्री [कीका] नयन तारा, 'मग्गतम-मारकलित्तनयणकीयरामिवन्ने' (गाथा १, १ टी—पत्र ६)।

कीर पु [दे. कीर] शुक, तोता, सुग्गा (दे २, २१, उर १, १४)।

कीर पु [कीर] १ देश-विशेष काश्मीर देश। २ वि काश्मीर देश सवन्धी। ३ वि काश्मीर देश में उत्पन्न (विसे ४६४ टी)।

कीरत } देखो कर = कृ।
कीरमाण }

कीरल पुं [कीरल] देग-विशेष (पउम ६८, ६४)।

कीरिस देखो केरिस (गा ३७४, मा ४)।

कीरी स्त्री [कीरी] लिपि-विशेष, कीर देश की लिपि (विसे ४६४ टी)।

कील अक [कीड्] क्रीडा करना, खेलना। कीलइ (प्राप्र)। वहु कीलत, कीलमाण (सुर १, १२१, पि २४०)। सहु कीलेत्ता, कीलिऊण (सुर १, ११७ पि २४०)।

कील वि [दे] स्तोक, अल्प, थोडा (दे २, २१)।

कील देखो कील (प्राप्र)।

कील पुन [दे कील] कंठ, गला (सूत्र १, ५, १, ६)।

कीलण न [कीलन] कील से वन्धन, खीले में नियन्त्रण 'फणिमणिकीलणदुक्ख विम्हरिय पुहविदेवीए' (मोह २०)।

कीलण न [कीडन] क्रीडा, खेल (श्रौप)। 'धाई स्त्री [वात्री] बालक को खेल-कूद करानेवाली दाई (गाथा १, १)।

कीलणअ न [कीडनक] खिलौना (अभि २४२)।

कीलणिआ } स्त्री [दे] रथ्या, गली (दे २, कीलणी } ३१)।

कीला स्त्री [दे] १ नव-वधू, दुलहिन (दे २, ३३)।

कीला स्त्री [कीला] सुरत समय में किया जाता हृदय-ताडन विशेष (दे २, ६४)।

कीला स्त्री [क्रीडा] खेल, क्रीडन (सुपा ३५८, नुर १, ११७)। 'वास पु [वास] क्रीडा करने का स्थान (इक)।

कीलाल न [कीलाल] खदिर, खून, रक्त (उप ८६, पाप्र)।

कीलालिअ वि [कीलालिन] खदिर-युक्त, खूनवाना (गउड)।

कलावण न [कीडन] खेल कराना (गाथा १, २)।

कीलावणय न [कीडनक] खिलौना (निर १, १)।

कलिअ न [कीडिन] क्रीडा, रमण, क्रीडन (सम १५, स २४१)।

कीलिअ वि [कीलिन] खूँटा ठोका हुआ, 'लिहियव्व कीलियव्व' (महा, सुपा २५४)।

कीलिआ स्त्री [कीलिका] १ छोटा खूँटा, खूँटी (कम्म १, ३६)। २ शरीर सहनन-विशेष, शरीर का एक प्रकार का बाधा, जिसमें हड्डियाँ केवल खूँटी से बँधी हुई हो ऐसा शरीर-बन्धन (सम १४६, कम्म १, ३६)।

कीव पु [कीव] १ नपुंसक (वृह ४)। २ वि कातर, अधीर (सुर २, १४, गाथा १, १)।

कीव पुं [दे कीव] पक्षि-विशेष (पणह १, १—पत्र ८)।

कीस वि [कीडण] कैमा, किस तरह का (भग, पणह ३४)।

कीस वि [किस्व] कौन स्वभाववाला, कैसे स्वभाव का (भग)।

कीस अ [कस्मान्] क्यों, किस से, किस कारण से? (सव, हे ३, ६८)।

कीस देखो किलिस्स। कीसति (उत्त १६, १५, वे ३३)। वहु कीसत (वे ८३)।

कु अ [कु] १ अल्प, थोडा। २ निपिद्ध, निवारित। ३ कुत्पित, निन्दित (हे २, २१७, से १, २६, सम्म १)। ४ विशेष, ज्यादा (गाथा १, १४)। 'उरिम पु [पुरुष] खराब आदमी, दुर्जन (मे १२, ३३)। 'चर वि [चर] खराब चाल-चलनवाला, सदाचार-रहित (आचा)। 'डड पु [दण्ड] पाश-विशेष, जिसका प्रान्त भाग काष्ठ का होता है ऐसा रज्जु पास (पणह १, ३)। 'डडिम वि [दण्डिम] दण्ड देकर छोना हुआ द्रव्य।

(विपा १, ३)। 'तित्थ न [नीर्थ] १ जलाशय में उतरने का खराब मार्ग (प्राप् ६०)। २ दूषित दर्शन (सूत्र १, १, १)। ३ 'तित्थि वि [तीर्थिन] दूषित मत का अनुयायी (कुमा)। 'दडिम देखो डडिम (गाथा १, १—पत्र ३७)। 'दम्मग न [दर्शन] दूषित मत, दूषित धर्म (पणह २)। 'दम्मणि वि [दर्शनिन] १ दूषित दार्शनिक। २ दूषित मत का अनुयायी (आ ६)। 'दिट्ठि स्त्री [दिट्ठि] १ कुत्पित दर्शन (उत्त २८)। २ दूषित मत का अनुयायी (धम २)। 'दिट्ठिय वि [दिट्ठिक] दूषित दर्शन का अनुयायी, मिथ्यात्वी (पउम ३०, ४४)। 'पपवयण न [प्रवचन] १ दूषित शास्त्र। २ वि दूषित सिद्धान्त को माननेवाला (अणु)। 'प्पावयणिय वि [प्रावचनिक] १ दूषित सिद्धान्त का अनुसरण करनेवाला (सूत्र १, २, २)। २ दूषित आगम-सवन्धी (अनुष्ठान) (अणु)। 'भत्त न [भक्त] खराब भोजन (पउम २०, १६६)। 'मार पुं [मार] १ कुत्पित मार (सूत्र २, २)। २ अत्यन्त मार, मृत-प्राय करनेवाला ताडन (गाथा १, १४)। 'रडा स्त्री [रण्डा] रांड, विधवा (आ १६)। 'रुव, 'रुव न [रूप] १ खराब रूप (उप ३६२ टी, पणह १, ४)। २ माया-विशेष (भग १२, ५)। 'ल्लिग न [लिङ्ग] १ कुत्पित भेष (दस)। २ पु कीट वगैरह क्षुद्र जन्तु (विसे १७५४)। ३ वि कुत्पित, दूषित धर्म का अनुयायी (आवम)। 'ल्लिगि पु [लिङ्गिन] १ कीट वगैरह क्षुद्र जन्तु (श्रौव ७४८)। २ वि कुत्पित, अमत्य धर्म का अनुयायी (पणह १२)। 'वय न [पद] खराब शब्द।

'सो सोहइ दूसतो, कइयणरइयाइ विविहकव्वाइ।
जो भजिऊण कुवय, अन्नपय सुदर देइ'
(वज्जा ६)।

'वियप्प पु [विकल्प] कुत्पित विचार (सुपा ४४)। 'वुरिस देखो 'उरिस (पउम ६५ ४५)। 'ससग्ग पु [ससर्ग] खराब सोहवत, दुर्जन-सगति (धर्म ३)। 'सत्थ पुन [शास्त्र] कुत्पित शास्त्र, अनाप्त-प्रणीत सिद्धान्त, 'ईमरमयाइया सव्वे कुसत्था' (निबू

‘कुहेडविजासवदारजीवी न गच्छई सरण तम्मि काले’ (उत्त २०, ४५) । २ आभाणक, वक्रोक्ति-विशेष, ‘तेसु न विम्हयइ सय आह-ट्टकुहेडएहि व’ (पव ७३ टी, बृह १) ।
 कुहेडग पुन [दे] अजमा (पचा ५, ३०) ।
 कुहेडगा ली [कुहेटका] कन्द-विशेष, पिरडालु (पव ४) ।
 कूअ देखो कूय = कूप (चड, हम्मीर ३०) ।
 कूअग न [कूजन] १ अव्यक्त शब्द । २ वि ऐमी आवाज करनेवाला (ठा ३, ३) ।
 कूअणया ली [कूजनता] कूजन, अव्यक्त शब्द (ठा ३ ३) ।
 कूडआ ली [कूभिका] कूई, छोटा कूप (चड) ।
 कूडय न [कूजित] अव्यक्त आवाज (महा, सुर ३, ४८) ।
 कूडया ली [कूजिका] किवांड आदि का अव्यक्त आवाज (पिंड ३५६ टी) ।
 कूचिआ ली [कूचिका] दाढी-मूँछ का बाल (सवोध ३१) ।
 कूचिया ली [कूचिका] बुदबुद, बुलबुला, पानी का बुलका (विसे १४६७) ।
 कूज अक [कूज्] अव्यक्त शब्द करना । कूजाहि (चार १) । वक्र कूजत (मै २६) ।
 कूजिअ न [कूजित] अव्यक्त आवाज (कुमा, मै २६) ।
 कूड सक [कूटय्] १ झूठा बहराना । २ अन्यथा करना । कूडे (अणु ५० टी) ।
 कूड पुं [दे कूट] पाश, फाँसी, जाल (दे २, ४३, राय, उत्त ५, सूत्र १, ५, २) ।
 कूड पुन [कूट] १ असत्य, छल युक्त, झूठा, ‘कूटतुलकूडमारो’ (पिंड) । २ भ्रान्ति-जनक वस्तु (भग ७ ६) । ३ माया, कपट, छल, दगा, धोखा (मुपा ६२७) । ४ नरक (उत्त ५) । ५ पीडा-जनक स्थान, दुःखोत्पादक जगह (सूत्र १, ५, २, उत्त ६) । ६ शिखर, टोच (ठा ४, २, २भा) । ७ पर्वत का मध्य भाग (ज २) । ८ पापाणमय यन्त्र-विशेष, मारने का एक प्रकार का यन्त्र (भग १५) । ९ समूह, राशि (निर १, १) । °कारि वि [°कारिन्] बोलेवाज, दगाखोर (मुपा ६२७) । °ग्गाह पु [°ग्राह] बोले में जीवो को फँसानेवाला (विपा १, २) । ली. °ग्गाहणी

(विपा १, २) । °जाल न [°जाल] बोले का जाल, फाँसी (उत्त १६) । °तुला ली [°तुला] झूठी नाप, बनावटी नाप (उवा १) । °पास न [°पाश] एक प्रकार की मछली पकड़ने का जाल (विपा १, ८) । °पपओग पु [°प्रयोग] प्रच्छन्न पाप (आव ४) । °लेह पुं [°लेख] १ जाली लेख, दूसरे के हस्ताक्षर-तुल्य अक्षर बना कर धोखे-वाजी करना । २ दूसरे के नाम में झूठे चिट्ठी वगैरह लिखना (पडि, उवा) । °वाहि पुं [°वाहिन्] बेल, बलीवर्द (आव ५) । °मक्ख न [°साक्ष्य] झूठी गवाही (पचा १) । °मक्खि वि [°साक्षिन्] झूठी साक्षी देनेवाला (आ १४) । °सक्खिज्ज न [°साक्ष्य] झूठी गवाही (मुपा ३७५) । °सामलि ली [°शालमलि] १ वृक्ष-विशेष के आकार का एक स्थान, जहाँ गरुड जातीय देवों का निवास है (सम १३, ठा २, ३) । २ नरक स्थित वृक्ष-विशेष (उत्त २०) । °गार न [°गार] १ शिखर के आकारवाला घर (ठा ४, २) । २ पर्वत पर बना हुआ घर (आचा २, ३, ३) । ३ पर्वत में खुदा हुआ घर (निच १२) । ४ हिंसा-स्थान (ठा ४, २) । °गारसाला ली [°गारशाला] पड्यन्त्र वाला घर, पड्यन्त्र करने के लिए बनाया हुआ घर (विपा १, ३) । °हच्च न [°हित्य] पापाणमय यन्त्र की तरह मारना, कुचल डालना (भग १५) ।
 कूड न [कूट] १ पाश, जाल, फँस, फंदा (सूत्र १, ५, २, १८, राय ११४) । २ लगातार २७ दिन का उपवास (संवोध ५८) ।
 कूडग देखो कूड (आवम) ।
 कूण अक [कूणय्] सकुचित होना, सकोच पाना (गउड) ।
 कूणिअ वि [कूणित] सकोच प्राप्त, सकोचित (गउड) ।
 कूणिअ वि [दे] ईपद् विकसित, थोड़ा खिला हुआ (दे २, ४४) ।
 कूणिअ पु [कूणिक] राजा श्रेणिक का पुत्र (औप) ।
 कूणिय वि [कूणित] मडा हुआ (कुप्र १६०) ।

कूय अक [कूज्] अव्यक्त आवाज करना । वक्र. कूयत, कूयमाण (औघ २१ भा. विपा १, ७) ।
 कूय पुं [कूप] १ कूप, कुँआ (गउड) । २ घी, तेल वगैरह रखने का पात्र, कुतुप (राया १, १—पत्र ५८, औप) । °टट्टुर पु [टट्टुर] १ कूप का मेढक । २ वह मनुष्य जो अपना घर छोड़ बाहर न गया हो, अल्पज्ञ (उप ६४८ टी) । देखो कूय ।
 कूर वि [कूर] १ निर्दय, निष्कृप, हिंसक (पगह १ ३) । २ भयकर, रौद्र (राया १, ८, सूत्र १, ७) । ३ पु रावण का इन नाम का एक सुभट (पउम ५६, २८) ।
 कूर पुन [कूर] वनस्पति-विशेष (सूत्र २, ३, १६) ।
 कूर न [कूर] भात, ओदन (दे २, ४३) । °गडुअ, °गडुडुअ पु [गडुक] एक जैन महर्षि (आचा, भाव ८) ।
 कूर°अ [ईपन्] थोड़ा, अल्प (हे २, १२९, पड्) ।
 कूरपिडड न [दे] भोजन-विशेष, खाद्य-विशेष (आवम) ।
 कूरे वि [कूरिन्] १ निर्दयी, क्रूर चित्तवाला । २ निर्दय परिवारवाला (पगह १, ३) ।
 कूल न [दे] सैन्य का पिछला भाग (दे २, ४३, मै १२, ६२) ।
 कूल न [कूल] तट, किनारा (पात्र, राया १, १६) । °धमग पुं [ध्मायक] एक प्रकार का वानप्रस्थ जो किनारे पर खड़ा हो आवाज कर भोजन करता है (औप) । बालग, बालय पुं [बालक] एक जैन मुनि (आव, काल) ।
 कूलकंसा ली [कूलकपा] नदी, तीर को तोड़नेवाली नदी (वेणी १२०) ।
 कूय पुन [दे] १ चुराई चीज की खोज में जाना (दे २, ६२, पात्र) । २ चुराई चीज को छुड़ानेवाला, छीनी हुई चीज को लड़ाई वगैरह कर वापस लेनेवाला, ‘तए ए मा दोवदी देवी पउमएणम एव वयासी—एवं खलु देवा० जवुदीवे दीवे भारहे वामे वारव-तीए रायरीए करहे रागम वासुदेवे मम पियभाउए परिवसति, त जइ ए से छएह

कुडभी स्त्री [दे. कुडभी] छोटी पत्ताका (आवम) ।
 कुडमोअ पुंन [कुण्डमोद] हाथी के पैर की आकृतिवाला मिट्टी का एक तरह का पात्र (दस ६, ५१) ।
 कुडल पुन [कुण्डल] १ एक देव-विमान (देवेन्द्र १४५) । २ तप-विशेष, 'पुरिमड्ड' या निर्विकृतिक तप (सवोध ५७) ।
 कुडल पुन [कुण्डल] १ कान का आभूषण (भग, औप) । २ पु विदर्भ देश के एक राजा का नाम (पउम ३०, ७७) । ३ द्वीप-विशेष । ४ समुद्र-विशेष । ५ देव-विशेष (जीव ३) । ६ पर्वत-विशेष (ठा १०) । ७ गोल आकार (मुपा ६२) । 'भद्र' पु [°भद्र] कुण्डल द्वीप का एक अधिष्ठातक देव (जीव ३) । 'मड्डिअ वि [°मण्डित] १ कुण्डल से विभूषित । २ विदर्भ देश का इस नाम का एक राजा (पउम ३०, ७४) । 'महाभद्र' पु [°महाभद्र] देव-विशेष (जीव ३) । 'महावर' पु [°महावर] कुण्डलवर समुद्र का अधिष्ठाता देव (मुज्ज १६) । 'वर पुं [°वर] १ द्वीप-विशेष । २ समुद्र-विशेष । ३ देव-विशेष (जीव ३) । ४ पर्वत-विशेष (ठा ३, ४) । 'वरमभद्र पुं [°वरमभद्र] कुण्डलवर द्वीप का एक अधिष्ठातक देव (जीव ३) । 'वरमहाभद्र पुं [°वरमहाभद्र] कुण्डलवर द्वीप का एक अधिष्ठाता देव (जीव ३) । 'वरोभास पु [°वरावभास] १ द्वीप-विशेष । २ समुद्र-विशेष (जीव ३) । 'वरोभासभद्र पु [°वरावभासभद्र] कुण्डलवरावभास द्वीप का अधिष्ठाता देव (जीव ३) । 'वरोभासमहाभद्र पुं [°वरावभासमहाभद्र] देखो पूर्वोक्त अर्थ (जीव ३) । 'वरोभासमहावर पुं [°वरावभासमहावर] कुण्डलवरावभास समुद्र का अधिष्ठातक देव-विशेष (जीव ३) । 'वरोभासवर पु [°वरावभासवर] समुद्र-विशेष का अधिपति देव-विशेष (जीव ३) ।
 कुडला स्त्री [कुण्डला] विदेहवर्ष-स्थित नगरी विशेष (ठा २, ३) ।
 कुडलि वि [कुण्डलिन] कुण्डलवाला (भास ३३) ।

कुडलिअ वि [कुण्डलित] वत्तुल, गोल आकारवाला (मुपा ६२, कप्पू) ।
 कुडलिआ वि [कुण्डलिका] छन्द विशेष (पिंग) ।
 कुडलोद पु [कुण्डलोद] इस नाम का एक समुद्र (मुज्ज १६) ।
 कुडाग पु [कुण्डाक] सनिवेश-विशेष, ग्राम-विशेष (आवम) ।
 कुंडि देखो कुडी (महा) ।
 कुडिअ पु [द] ग्राम का अधिपति, गाँव का मुखिया (दे २, ३७) ।
 कुडिअपेमण न [दे] ब्राह्मण विष्टि, ब्राह्मण की नौकरी, ब्राह्मण की सेवा (दे २, ४३) ।
 कुडिगा } स्त्री [कुण्डिका] नीचे देखो
 कुडिया } (रभा, अनु ५, भग, एया २, ५) ।
 कुडिण न [कुण्डिन] विदर्भ देश का एक नगर (कुप्र ४८) ।
 कुडी स्त्री [कुण्डी] १ कुण्डा, पात्र-विशेष, 'तिसिमहोभूमोए ठविया कुंडी य तेत्तपडि-पुन्ना' (मुपा २६६) । २ कमण्डल, संन्यासी का जल-पात्र (महा) ।
 कुड देखो कुठ (मुपा ४२२) ।
 कुडय न [दे] १ चुल्ली, चूल्हा । २ छोटा वरतन (दे २, ६३) ।
 कुत पु [दे] शुक, तोता, सुग्गा (दे २, २१) ।
 कुन पु [कुन्त] १ हथियार-विशेष, माला (परह १, १, औप) । २ राम के एक सुभट का नाम (पउम ५६, ३८) ।
 कुनल पु [कुन्तल] १ केश, बाल (सुर १, १, मुपा ६१, २००) । २ देश विशेष (मुपा ६१, उव ४५५) । 'हार पु [°हार] धम्मिल्ल, सयत केश, बाँधे हुए बाल (पात्र) ।
 कुतल पु [दे] सातवाहन, नृप-विशेष (दे २, ३८) ।
 कुतला स्त्री [कुन्तला] इस नाम की एक रानी (दस) ।
 कुतला स्त्री [दे] करोटिका, परोसने का एक उपकरण (दे २, ३८) ।
 कुतली स्त्री [कुन्तली] कुन्तल देश की रहने-वाली स्त्री (कप्पू) ।
 कुंनकुति न [कुन्ताकुन्ति] वछे की लड़ाई (सिरि १०३२) ।

कुती स्त्री [दे] मजरी, वौर (दे २, ३४) ।
 कुती स्त्री [कुन्ती] पाण्डवों की माता का नाम (उप ६४८) । 'विहार पुं [°विहार] नासिक-नगर का एक जैन मन्दिर, जिसका जोर्णोद्धार कुन्तीजी ने किया था (ती २८) ।
 कुतापोट्टलय वि [दे] चतुष्कोण, चार कोनवाला, चौकोर (दे २, ४३) ।
 कुंथु पु [कुन्थु] १ एक जिन-देव, इस अव-सर्पिणी काल में उत्पन्न सत्तरहवाँ तीर्थंकर और छठवाँ चक्रवर्ती राजा (सम ४३, पडि) । २ हरिवंश का एक राजा (पउम २२, ६८) । ३ चमरेन्द्र की हस्ति-सेना का अधिपति देव-विशेष (ठा ५, १—पत्र ३०२) । ४ एक क्षुद्र जन्तु, श्रीन्द्रिय जन्तु की एक जाति (उत्त ३६, जी १७) ।
 कुद पुं [कुन्द] १ पुष्प-वृक्ष विशेष (जं २) । २ न पुष्प-विशेष, कुन्द का फूल (सुर २, ७६, एया १, १) । ३ विद्या-घरो का एक नगर (इक) । ४ पुन छन्द-विशेष (पिंग) ।
 कुदय वि [दे] कृश, दुर्बल (दे २, ३७) ।
 कुंदा स्त्री [कुन्दा] एक इन्द्राणी, मानिभद्र इद्र की पटरानी (इक) ।
 कुदीर न [दे] विम्बी-फल, कुन्दरुन का फल (दे २, ३६) ।
 कुदुक्क पुं [कुन्दुक्क] वनस्पति-विशेष (परण १—पत्र ४१) ।
 कुदुरुक्क पुं [कुन्दुरुक्क] सुगन्धि पदार्थ विशेष (एया १, १—पत्र ४१, सम १३७) ।
 कुदुल्लुअ पु [दे] पक्षि-विशेष, उलूक, उल्लू (पात्र) ।
 कुधर पु [दे] छोटी मछली (दे २, ३२) ।
 कुपय पुन [कूपक] तैल वगैरह रखने का पात्र-विशेष (रयण ३१) ।
 कुपल पुन [कुट्मल, कुड्मल] १ इस नाम का एक नरक । २ मुकुल, कली, कलिका (हे १, २६ कुमा, पड्) ।
 कुवर [दे] देखो कुंधर (पात्र) ।
 कुभ पु [कुम्भ] १-३ साठ, अस्सी और एक सौ आठक की नाप (अणु १५१, तंदु २६) । ४ ज्योतिष-प्रसिद्ध एक राशि (विचार १०६) । ५ एक राजा (राय ४६) ।

केकाइय देखो केकाइय (एया १, ३—पत्र ६५) ।

केगाई देखो केकाई (पउम १, ६४, २०, १८४) ।

केगाइय देखो केकाइय (राज) ।

केज वि [केय] बेचने की चीज (ठा ६) ।

केड } पु [कैटभ] १ इस नाम का एक
केडव } प्रतिवासुदेव राजा (पउम ५, १५६) । २ दैत्य-विशेष (हे १, २४०, कुमा) । ३ रिउ पु [रिपु] श्रीकृष्ण, नारायण (कुमा) ।

केत्त देखो केत्तिअ (हास्य १३६) ।

केत्तिअ } वि [कियत्] कितना ? (हे २, केत्तिल १५७, कुमा, पड्, महा) ।

केत्तुल (अप) ऊपर देखो (कुमा, पड्, हे ४, ४०८) ।

केत्थु (अप) अ [कुत्र] कहाँ, किस जगह ? (हे ४, ४०५) ।

केहइ देखो केत्तिअ (हे २, १५७, प्राप्र) ।

केम } (अप) देखो कह (पड् हे ४, ४०१, केम्ब ४१८) ।

केय न [केत] १ गृह, घर । २ चिह्न, निशानी (पव ४) ।

केयण न [केतन] १ वक्र वस्तु, टेढ़ी चीज । २ चगेरी का हाथा (ठा ४, २—पत्र २१८) ।

३ सकेत, सकेत स्यात (वव ४) । ४ धनुष की मूठ (उत्त ६) । ५ मछली पकड़ने का जाल (सूअ १, ३, १) । ६ स्थान, जगह (आचा) । ७ 'कडवहसठिन' (सूअ० चूर्णी पत्र ८२ गा० १७६) ।

केयय देखो केकय (सुपा १४२) ।

केयव्य वि [केतव्य] खरीदने योग्य वस्तु (उत्त ३५, १५) ।

केर } वि [दे संवन्धिन] सवन्धी वस्तु,
केरय } सवन्धी चीज (स्वप्न ५१, हे ४, ३५६, ३७३, प्राप्र, भवि) ।

केरव न [कैरव] १ कुमुद, सफेद कमल (पाप्र, सुपा ४६) । २ कैतव, कपट (हे १, १५२) ।

केरिच्छ वि [कीट्छ] कैसा, किस तरह का ? (हे १, १०५, प्राप्र, काल) ।

केरिम वि [कीट्श] कैसा, किस तरह का ? (प्राप्ता) ।

केरी स्त्री [ककटी] वृक्ष-विशेष, करीर का गाछ, 'निववोरिकेरि' (उप १०३१ टी) ।

केल देखो कयल = कदन (हे १, १६७) ।

केलाइय वि [समारचित] साफमुयरा किया हुआ (कुमा) ।

केलाय सक [समा + रचय] समारचन करना, माफ कर ठीक करना । केलायइ (हे ४, ६५) ।

केलास पु [कैलास] राहु का कृष्ण पुद्गल-विशेष (मुज २०) ।

केलास पुं [कैलास] १ स्वनाम-प्रसिद्ध पर्वत-विशेष (मे ६, ७३, गड्ड, कुमा) । २ इस नाम का एक नाग राज (इक) । ३ इस नाग-राज का शावास-पर्वत (ठा ४, २) । ४ मिट्टी का एक तरह का पात्र (निर १, ३) । देखो कडलास ।

केलि देखो कयलि (कुमा) ।

केलि स्त्री [दे] कन्द-विशेष (उत्त ३६, ६८, मुख ३६, ६८) ।

केलि } स्त्री [केलि, °ली] १ क्रीडा, खेल,
केली } मजाक (कुमा, पाप्र, कप्पू) । २ परि-

हास, हाँसी, ठट्टा (पाप्र, अप) । ३ काम-क्रीडा (कप्पू, अप) । °आर वि [°कार]

क्रीडा करनेवाला, विनोदी (कप्पू) । °काणग न [°कानन] क्रीडोग्रान (कप्पू) । °किल,

°गिल वि [°किल] १ विनोदी, क्रीडा-प्रिय (सुपा ३१४) । २ पु व्यन्तर-जातीय देव-

विशेष (मुपा ३२०) । ३ पुन स्यात-विशेष (पउम ५५, १७) । °भवण न [°भवन]

क्रीडा-गृह, विलास-घर (कप्पू) । °विमाण न [°विमान] विलास-महल (कप्पू) ।

°सअण न [°शयन] काम शय्या (कप्पू) । °सेज्जा स्त्री [°शय्या] काम शय्या (कप्पू) ।

केली देखो कयली (हे १, १२०) ।

केली स्त्री [दे] असती, कुलटा, व्यभिचारिणी स्त्री (दे २, ४४) ।

केलीगिल वि [कैलीकिल] केलीकिल स्थान मे उत्पन्न (पउम ५५, १७) ।

केव° देखो के° (भग, पएण १७—पत्र ५४५, विसे २८६१) ।

केवें (अप) देखो कह (कुमा) ।

केवइय वि [कियत्] कितना ? (भग १३४, विमे ६४६ टी) ।

केवट्ट पु [केवर्त्त] धीपर, मछलीमार, मछुआ (पाप्र, म २५८, हे २, ३०) ।

केवड (अप) देखो केत्तिअ (हे ४, ४०८, कुमा) ।

केवल वि [केवल] १ शकेला, असहाय (ठा २, १, अप) । २ अनुपम, अद्वितीय (भग ६, ३३) । ३ शुद्ध, अन्य वस्तु मे प्रमिश्रित (दम ४) । ४ सपूर्ण, परिपूर्ण (निर १, १) ।

५ अनन्त, अन्त-रहित (विमे ८४) । ६ न, जान-विशेष सर्वश्रेष्ठ ज्ञान, भूत, भावी वगैरह सर्व वस्तुओं का ज्ञान, सर्वज्ञता (विसे ८२७) ।

°कप्प वि [°कल्प] परिपूर्ण, संपूर्ण (ठा ३, ४) । °णाण न [°ज्ञान] सर्वश्रेष्ठ ज्ञान, सपूर्ण ज्ञान (ठा २, १) । °णाणि, °नाणि

वि [°ज्ञानिन्] १ केवल-ज्ञानवाला, सर्वज्ञ (कप्प, अप) । २ पु इस नाम के एक

अर्हन् देव, अतीत उत्तमपिणी-काल के प्रथम तीर्थंकर (पव ६) । °ण्णाण, °नाण, °न्नाण

देखो °णाण (विमे ८२६, ८२६, ८२३) । °दसण न [°दर्शन] परिपूर्ण सामान्य बोध (कम्म ४, १२) ।

केवल अ [केवलम्] केवल, सिर्फ, मात्र (स्वप्न ६२, ६३, महा) ।

केवलाअ सक [समा + रभ्] आरम्भ करना, शुरू करना । केवलाअइ (पड्) ।

केवलि वि [केवलिन्] केवल ज्ञानवाला, सर्वज्ञ (भग) । °पक्खिय वि [पाञ्चिक] १ स्वयंबुद्ध । २ पु जिनदेव, तीर्थंकर (भग ६, ३१) ।

केवलिअ वि [केवलिक] १ केवलज्ञानवाला (भग) । २ परिपूर्ण, सपूर्ण, 'मामाइय केवलियं पसत्थं' (विमे २६८१) ।

केवलिअ वि [केवलिक] १ केवलज्ञान से सवन्ध रखनेवाला (द १७) । २ केवलि-प्रोक्त (सूअ १, १४) । ३ केवल-ज्ञानि सवन्धी (ठा ४, २) । ४ न केवल ज्ञान, सपूर्ण ज्ञान (आव ४) ।

केवलिअ न [केवल्य] केवल ज्ञान, केवलिए सपत्ते' (मत्त ६७ टी, विमे ११८०) ।

कुचग वि [कौचक] शर नामक माछ का बना हुआ (आचा २, २, ३, १४) ।

कुचग } देखो कुच (आचा २, २, ३,
कुचय } काल) । ३ कूँची, तृण-निमित्त
तूलिका, जिसमे दीवाल मे चूना लगाया जाता
है (उप पृ ३४३, कुमा) ।

कुचिय वि [कूचिक] दाढी-मूँछवाला (वृह
१) ।

कुच्छ सक [कुत्स्] निन्दा करना, धिक्कारना ।
क कुच्छ कुच्छणिज्ज (आ २७, परह १,
३) ।

कुच्छ पुं [कुत्स] १ ऋषि-विशेष । २ गोत्र-
विशेष, 'धेरस्स गु अजनिवभूडम्म कुच्छसपु
त्तस्स' (कप्प) ।

कुच्छ देखो कुच्छ = कुत्स् ।

कुच्छग पु [कुत्सक] वनस्पति विशेष (सूय
२ २) ।

कुच्छणिज्ज देखो कुच्छ = कुत्स्, 'अन्नेसि
कुच्छणिज्जं साण्णं भक्खणिज्जं हि' (आ
२७) ।

कुच्छा स्त्री [कुत्सा] निन्दा, घृणा, जुगुप्सा
(धोष ४४४ उप ३२० टी) ।

कुच्छि पुत्री [कुक्षि] १ उदर, पेट (हे १,
३५, उवा, महा) । २ अडतालीस अंगुल का
मान (जं २) । ३ किमि पु [क्रमि] उदर मे
उत्पन्न होनेवाला कीड़ा, द्विन्द्रिय जन्तु-विशेष
(परण १) । ४ वार पु [वार] १ जहाज
का काम करनेवाला नौकर, 'कुच्छिधारकन्न-
धारगम्भजसज्जाणावावाणियगा' (णाय १,
८—पत्र १३३) । २ एक प्रकार का जहाज
का व्यापारी (णाय १, १६) । ३ पूर पु
[पूर] उदर-पूति (वव ४) । ४ वेयणा स्त्री
[वेदना] उदर का रोग-विशेष (जीव ३) ।
५ सूल पुं [शूल] रोग-विशेष (णाय १,
१३, विपा १, १) ।

कुच्छिभरि वि [कुक्षिम्भरि] अकेलपेट, पेट
स्वार्थी, 'हा तियचरित्तकुत्सि (?) च्छि)
भरिए' (रभा) ।

कुच्छिमई स्त्री [दे. कुक्षिमती] गर्भिणी,
आपन्न-यत्त्वा (दे २, ४१, पड्) ।

कुच्छिमहिका (मा) देखो कुच्छिमई (प्राक
१०२) ।

कुच्छिय वि [कुत्सित] खराब, निन्दित,
गहित (पचा ७, भवि) ।

कुच्छिल न [दे] १ वृत्ति का विवर, वाड का
छिद्र (दे २, २४) । २ छिद्र, विवर (पात्र) ।
कुच्छेअ, पु [कौच्छेयक] तलवार, खड्ग
(दे १, १६१ पड्) ।

कुज पु [कुज] वृक्ष, पेड़ (ज २) ।

कुजय पु [कुजय] जूआरी, जूआखोर (सूय
१, २, २) ।

कुज्ज वि [कुज्ज] १ कुज्ज, कुवडा, वामन
(मुपा २, कप्प) । २ पुन पुष्प-विशेष (पड्) ।

कुज्जय पु [कुज्जक] १ वृक्ष-विशेष, शतपत्रिका
(पउम ४२, ८, कुमा) । २ न. उस वृक्ष का
पुष्प 'ववेउ कुज्जयपमूण' (हे १, १८१) ।

कुज्म सक [कुध्] क्रोध करना, गुस्सा
करना । वुज्मइ (हे ४, २१७, पड्) ।

कुट्ट सक [कुट्ट] १ कूटना, पीटना, ताडन
करना । २ काटना, छेदना । ३ गरम करना ।
४ उपालम्भ देना । भवि कुट्टइस्स (पि ५२८) ।

वक्र कुट्टित (सुर ११, १) । कवक्र कुट्टि-
ज्जत, कुट्टिज्जमाण (मुपा ३४०, प्रासू ६६,
राय) । सक कुट्टिय (भग १४, ८) ।

कुट्ट पुं [कुट्ट] घडा, कुम्भ (सूय २, ७) ।

कुट्ट पुन [दे] १ कोट, किला, 'दिज्जेति कवा-
टाइ कुट्टद्वरि भडा ठविज्जति' (सुवा ५०३) ।
२ नगर, शहर (सुर १५, ८१) । ३ वाल पुं
[पाल] कोतवाल, नगर-रक्षक (सुर १५,
८१) ।

कुट्टण न [कुट्टन] १ छेदन, चूर्णन, भेदन
(औप) । २ कूटना, ताडना (हे ४, ४३८) ।

कुट्टणा स्त्री [कुट्टना] शारीरिक पीडा (सूय
१, १२) ।

कुट्टणी स्त्री [कुट्टनी] १ मूसल, एक प्रकार
की मोटी लकड़ी, जिससे चावल आदि अन्न
कूटे जाते हैं (वृह १) । २ दूती, कुटनी,
कुट्टिनी (रंभा) ।

कुट्टयरी स्त्री [दे] चढी, पार्वती (दे २, ३५) ।

कुट्टा स्त्री [दे] गौरी, पार्वती (दे २, ३५) ।

कुट्टाय पु [दे] चर्मकार, मोची (दे २, ३७) ।

कुट्टिन देखो कुट्ट = कुट्ट ।

कुट्टितिया देखो कोट्टितिया (राज) ।

कुट्टिव [दे] देखो कोट्टिव (पात्र) ।

कुट्टिणी स्त्री [कुट्टिनी] कूटनी, दूती (कप्प-
रंभा) ।

कुट्टिम देखो कोट्टिम = कुट्टिम (भग ८, ६,
राय, जीव ३) ।

कुट्टिय वि [कुट्टित] १ कूटा हुआ, ताडित
(मुपा १५, उत्त १६) । २ छिन्न, छेदित
(वृह १) ।

कुट्ट पुं [कुट्ट] १ पंसारी के यहाँ बेची जाती
एक वस्तु, कूठ (विसे २६३, परह २, ५) । २
रोग-विशेष, कोड (वव ६) ।

कुट्ट पु [कोट्ट] १ उदर, पेट, 'जहा विसं
कुट्टगय मतमूलविसारया । वेजा हणति मतेहि'
(पडि) । २ कोठा, कुशूल, धान्य भरने का
बटा भाजन (परह २, १) । ३ बुद्धि वि
[बुद्धि] एक बार जानने पर नवी भूलने-
वाला (परह २, १) । देखो कोट्ट, कोट्टग ।

कुट्ट वि [कुट्ट] १ शपित, अभिशप्त । २ न-
शाप, अभिशाप-शब्द, 'उट्ट कुट्ट केहि पेच्छता
आगया इत्थ' (मुपा २५०) ।

कुट्टग पुन [कोट्टक] शून्य घर (दस ५, १
२०, ८२) ।

कुट्टा स्त्री [कुट्टा] इमली, चिचा (वृह १) ।

कुट्टि वि [कुट्टिन] कुष्ठ रोगवाला (मुपा
२४३, ५७६) ।

कुड पु [कुट] १ घडा, कलश (दे २, ३५,
गा २२६, विसे १४५६) । २ पर्वत । ३ हाथी
वगैरह का वन्धन-स्थान (णाय १, १—पत्र
६३) । ४ वृक्ष, पेड़, 'तट्टवियसिहमडियकु-
डगो' (मुपा ५६२) । कठ पुं [कण्ठ]
पात्र-विशेष, घडा के जैसा पात्र (दे २,
२०) । ५ दोहिणी स्त्री [दोहिनी] घडा भर
दूध देनेवाली (गा ५३७) ।

कुडग पुन [कुटङ्क] १ कुज्ज, निकुज्ज, लता
वगैरह से ढका हुआ स्थान (गा ६८०, हेका
१०५) । २ वन, जंगल (उप २२० टी) ।
३ बाँस की जाली, बाँस की बनी हुई छत
(वृह १) । ४ गह्वर, कोटर (राज) । ५ वश-
गहन (णाय १, ८, कुमा) ।

कुडग पुन [दे कुटङ्क] लता-गृह लता से ढका
हुआ घर (दे २, ३७, महा, पात्र, पड्) ।

कुडगा स्त्री [कुटङ्का] लता-विशेष (पउम ५३,
७६) ।

कोंड पु [कौण्ड, गौड] देश-विशेष (इक) ।
 कोंडल देखो कुडल (राज) । भेत्तग पुं
 [मित्रक] एक व्यन्तर देव का नाम (बृह
 ३) ।
 कोंडलग पु [कुण्डलक] पक्षि विशेष (श्रौप) ।
 कोडलिआ स्त्री [दे] १ श्वापद जन्तु-विशेष,
 साही, श्वावित् । २ क्रीडा, कीट (दे २, ५०) ।
 कोडिअ पु [दे] ग्राम-निवासी लोगों में फूट
 कराकर छल से गाँव का मालिक बन बैठने-
 वाला (दे २, ४८) ।
 कोडिणपुर न [कौण्डिनपुर] नगर विशेष
 (रुक्मि ५१) ।
 कोडिया देखो कुडिया (परह २, ५) ।
 कोडिण देखो कोडिन्न (राज) ।
 कोंड देखो कुड (हे १, ११६) ।
 कोंडुल्लु पु [दे] उल्लूक, उल्लू, पक्षि-विशेष
 (दे २, ४६) ।
 कोत देखो कुत (परह १, १ मुर २, २८) ।
 कोतल देखो कुतल = कुन्तल (प्राक् ६,
 सक्षि ४) ।
 कौंती देखो कुती (गाया १, १६—पत्र
 २१३) ।
 कौंभी देखो कुभी (प्राक् ६) ।
 कोक पु [कोक] १ चक्रवाक पक्षी (दे ८,
 ४३) । २ वृक, भेडिया (इक) ।
 कोकतिय पुत्री [दे] जन्तु-विशेष, लोमड़ी,
 लोवरिया (परह १, १) । स्त्री 'या (गाया
 १, १—पत्र ६५) ।
 कोकणद देखो कोकणय (संघ ४७) ।
 कोकणय न [कोकनद] १ रक्त कुमुद । २
 लाल कमल (परह १, स्वप्न ७२) ।
 कोकासिय [दे] देखो कोकासिय (परह
 १, ४—पत्र ७८) ।
 कोकुइय देखो कुक्कुइअ (ठा ६—पत्र ३७१) ।
 कोक सक [व्या + ह] बुलाना, आह्वान
 करना । कोक्कइ (हे १, ७६, पङ्) । वृक
 कोक्कत (कुमा) । सक कोक्किवि (भवि) ।
 प्रयो कोक्कावइ (भवि) ।
 कोक्काम पु [कोक्कास] इस नाम का एक
 वर्षिक, बढई (आचू १) ।
 कोक्कासिय [दे] देखो कोआसिय (दे २,
 ५०) ।

कोक्किय वि [व्याहत] आहत, बुलाया हुआ
 (भवि) ।
 कोक्कुइय देखो कुक्कुइअ (कम, श्रौप) ।
 कोखुन्भ देखो खोखुन्भ वृक कोखुन्भमाण
 (पि ३१६) ।
 कोचप्प न [दे] अलीक-हित, झूठी भलाई,
 दिखावटी हित (दे २, ४६) ।
 कोच्चिय पुत्री [दे] शैशक, नया शिष्य (वव
 ६) ।
 कोच्छ न [कोत्स] १ गोत्र विशेष । २ पुत्री
 कौत्स गोत्र में उत्पन्न (ठा ५—पत्र ३६०) ।
 कोच्छ वि [कौश्च] १ कुक्षि सम्बन्धी, उदर से
 सम्बन्ध रखनेवाला । २ न उदरप्रदेश,
 'गणियायारकणोत्कात्य (?) च्छ' हत्वी (गाया
 १, १—पत्र ६४) ।
 कोन्छभाम पु [दे कुत्तभाम] काक,
 कौआ, वायस, 'न मणी सयमाहस्तो आवि-
 ज्भइ कोच्छभामस्स' (उव) ।
 कोच्छेअय देखो कुच्छेअय (हे १, १६१,
 कुमा, पङ्) ।
 कोज देखो कुज (कप्प) ।
 कोजप्प न [दे] स्त्री रहस्य (दे २, ४६) ।
 कोज्जय देखो कुज्जय (गाया १, ८—पत्र
 १२५) ।
 कोज्जरिअ वि [दे] आपूरित, पूर्ण किया हुआ,
 भरा हुआ (पङ्) ।
 कोज्जरिअ वि [दे] ऊपर देखो (दे २,
 ५०) ।
 कोटर देखो कोट्टर (चेइय १५१) ।
 कोटिव पुं [दे] गौ (निशीय ३५६५ गा०) ।
 कोटुभ पुन [दे] हाथ से आहत जल, 'कोटु भो
 जलकरप्फालो' (पाम्म) । देखो कोट्टुंभ ।
 कोटीवरिस अ [कोटीवर्ष] लाट देश की
 प्राचीन राजधानी (विचार ४६) ।
 कोट्ट देखो कुट्ट = कुट्ट । कवक्क कोट्टिजमाण
 (आवम) । सक कोट्टिय (जीव ३) ।
 कोट्ट न [दे] १ नगर, शहर (दे २, ४५) ।
 २ कोट, किला, दुर्ग (गाया १, ८—पत्र
 १३४, उत्त ३०, बृह १, सुपा ११८) ।
 'वाल पुं [पाल] कोटवाल, नगर-रक्षक
 (सुपा ४१३) ।

कोट्टनिया स्त्री [कुट्टयन्तिका] तिल वगैरह
 की चूरने का उपकरण (गाया १, ७—पत्र
 ११७) ।
 कोट्टकिरिया स्त्री [कोट्टक्रिया] देवी-विशेष,
 दुर्गा आदि रूद्र रूपवाली देवी (अणु २५) ।
 कोट्टण देखो कुट्टण (उप १७६, परह १, १) ।
 कोट्टर देखो कोडर (महा, हे ४, ४२२, गा
 ५६३ अ) ।
 कोट्टवीर पु [कोट्टवीर] इस नाम का एक
 मुनि, आचार्य शिवभूति का एक शिष्य (विसे
 २५५२) ।
 कोट्टा स्त्री [दे] १ गौरी, पार्वती (दे २,
 ३५—१, १७४) । २ गला, गर्दन (उप
 ६६१) ।
 कोट्टाग पुं [कोट्टाक] १ वर्षिक बढई
 (आचा २, १, २) । २ न. हरे फलों को
 सुखाने का स्थान-विशेष (बृह १) ।
 कोट्टिव पु [दे] द्रोणी, नौका, जहाज (दे
 २, ४७) ।
 कोट्टिम पुन [कुट्टिम] १ रत्नमय भूमि
 (गाया १, २) । २ फरस-वव जमीन, बँधी
 हुई जमीन (जं १) । ३ भूमि-तल (सुर ३,
 १००) । ४ एक या अनेक तलावाला घर
 (वव ४) । ५ भोपड़ी, मढी । ६ रत्न की
 खान । ७ अनार का पेड़ (हे १, ११६,
 प्राप्र) ।
 कोट्टिम वि [कुट्टिम] बनावटी, बनाया
 हुआ, अकुदरती (पञ्च ६६, ३६) ।
 कोट्टिल पु [कोट्टिरु] मुग्गर, मुगरी, मुगरा,
 कोट्टिल जोड़ी (राज, विपा १, ६—पत्र ६६,
 ६६) ।
 कोट्टी स्त्री [दे] १ दोह, दोहन । २ विपम
 स्वलना (दे २, ६४) ।
 कोट्टुभ पुन [दे] हाथ से आहत जल,
 'कोट्टु भ करहए तोए' (दे २, ४७) ।
 कोट्टुम अक [रम्] क्रीडा करना, रमण
 करना । कोट्टुमइ (हे ४, १६८) ।
 कोट्टुवाणी स्त्री [कोट्टुवाणी] जैन मुनि-
 गण की एक शाखा (कप्प) ।
 कोट्ट देखो कुट्ट = कुट्ट (भग १६, ६, गाया
 १, १७) ।

कुत्ती स्त्री [दे] कुत्ती, कुक्कुरी (रंभा) ।
कुत्थ अ [कुत्र] कहाँ, किस स्थान में ?
(उत्तर १०४) ।

कुत्थ सक [कोथ्य्] मडाना, 'नो वाऊ
हरेज्जा, नो सलिल कुत्थिज्जा' (पव १५८
टी) कुच्छे (? त्ये) ज्जा (अण १६१) ।
मवि कुच्छि (? त्यि) हिई (पिड २३८) ।
क कुत्थ (दसनि १०, २४) ।

कुत्थ देखो कट । कुत्थमि, कुत्थमु (गा
५०१ अ) ।

कुत्थण स्त्रीन [कोथन] सडना, सड जाना
(वव ४) ।

कुत्थर न [दे] १ विज्ञान (दे २, १३) । २
कोटर वृक्ष की पोल, गह्वर (मुपा २४६) ।
३ सर्प वगैरह का बिल (उप ३५७ टी) ।

कुत्थल देखो कोत्थल, 'कुच्छ (? त्य) लम-
माणउयरो' (धर्मवि २७) ।

कुत्थुव पुं [कुत्थुम्ब] वाद्य-विशेष (राय) ।
कुत्थुम्बरी स्त्री [कुत्थुम्बरी] वनस्पति-विशेष,
धनियाँ (पण १—पत्र ३१) ।

कुत्थुह पुन [कौत्थुभ] मणि-विशेष, जो
विष्णु की छाती पर रहती है (हेका २५७) ।
कुत्थुहवत्थ न [दे] नीची, नारा, इजारबन्द
(दे २, ३८) ।

कुत्तो देखो कुओ (हे १, ३७) ।

कुद वि [दे] प्रभूत, प्रचुर (दे २, ३४) ।
कुदण पु [दे] रासक, रासा (दे २, ३८) ।
कुदव पुं [कोद्व] धान्य-विशेष, कोदो,
कोदव (सम्प १२) ।

कुदाल पु [कुदाल] १ भूमि खोदने का
साधन, कुदार, कुदारी (मुपा ५२६) । २
वृक्ष-विशेष (ज २) ।

कुद्व वि [कुद्व] कुपित, क्रोध-युक्त (महा) ।
कुपचि (पै) अ [कचित्] किसी जगह में
(प्राक १२३) ।

कुप्प मक [कुप्] कोप करना, गुस्सा
करना । कुप्पह (उव, महा) । वक्क, कुप्पत
(मुपा १६७) । क कुप्पियव्व (स ११) ।

कुप्प सक [भाप्] बोलना, कहना । कुप्पड
(भवि) ।

कुप्प न [कुप्प] सुवर्ण और चाँदी को छोट
कर अन्य धातु और मिट्टी वगैरह के बने हुए

गृह-उपकरण, 'लोहाई उवक्खरो कुप्प' (वृह
१, पडि) ।

कुप्पठ पुं [दे] १ गृहाचार, घर का रिवाज ।
२ समुदाचार, सदाचार (दे २, ३६) ।

कुप्पर न [दे] मुरत के समय किया जाता
हृदय ताडन-विशेष । २ समुदाचार, सदाचार ।
३ नर्म, हाँसी, ठट्ठा (दे २, ६४) ।

कुप्पर पु [कूर्पर] १ कफोरिण, हाथ का
मव्य भाग । २ जानु, घुटना । ३ रथ का
अवयव-विशेष (ज ३) ।

कुप्पर पु [कूर्पर] देखो कप्पर । भीत की
परत, भीत का जीराँ-शीराँ थर, 'एयामो
पाडलावडुकुप्परा जुएणभित्तिओ' (गउड) ।

कुप्पल देखो कुपल (पि २७७) ।

कुप्पास पु [कूर्पास] कन्बुक, काँचली,
जनानी कुरती (हे १, ७२, कप्प, पात्र) ।

कुप्पिय वि [कुपित] १ कुपित, क्रुद्ध । २
न क्रोध, गुस्सा, 'कुप्पिय नाम कुप्पिय'
(आचू ४) ।

कुप्पिस देखो कुप्पास (हे १, ७२, दे २,
४०) ।

कुवर पुं [कूवर] भगवान् मल्लिनाथ का
शासनाधिष्ठायक यक्ष (पव २६) ।

कुवेर पु [कुवेर] भगवान् कुन्धुनाथ के प्रथम
श्रावक का नाम (विचार ३७८) ।

कुवेर पुं [कुवेर] १ कुवेर, यक्ष-राज, धनेश
(पात्र, गउड) । २ भगवान् मल्लिनाथ का
शासनाधिष्ठाता यक्ष विशेष (सति ८) । ३
काश्चनपुर के एक राजा का नाम (पउम ७,
४५) । ४ इस नाम का एक श्रेष्ठी (उप
७२८ टी) । ५ एक जैन मुनि (कप्प) ।
°दिंसा पु [°दिश्] उत्तर दिशा (सुर २,
८५) । °नयरी स्त्री [°नगरी] कुवेर की
राजधानी, अलका (पात्र) ।

कुवेरा स्त्री [कुवेरा] जैन साधु-गण की एक
शाखा (कप्प) ।

कुव्वड वि [दे] कुवटा, कुब्ज, वामन (था
२७) ।

कुव्वर पु [कूवर] वैश्रमण के एक पुत्र का
नाम (अंत ५) ।

कुभड पु [कुभाण्ड] देव-विशेष की जाति
(ठा २, ३—पत्र ८५) ।

कुभडिड पु [कुभाण्डेन्द्र] इन्द्र-विशेष,
कुभाण्ड देवो का स्वामी (ठा २, ३) ।

कुमर देखो कुमार (हे १, ६७, सुपा २४३,
६५६, कुमा) ।

कुमरी देखो कुमारी (कप्पू, पात्र) ।

कुमार पु [कुमार] १ प्रथम-वय का बालक,
पाँच वर्ष तक का लडका (ठा १०, एाया
१, २) । २ युवराज, राज्याहं पुरुष (पणह
१, ५) । ३ भगवान् वासुपूज्य का शासना-
धिष्ठाता यक्ष (सति ७) । ४ लोहकार, लोहार,
'चवेडमुट्टिमईहि कुमारेहि अय पिव' (उत्त
२३) । ५ कार्तिकेय, स्कन्द (पात्र) । ६ शुक्र
पक्षी । ७ घुडसवार । ८ सिन्धु नदी । ९
वृक्ष-विशेष, वरुण-वृक्ष (हे १, ६७) । १०
अविवाहित ब्रह्मचारी (सम ५०) । °गाम
पु [°ग्राम] ग्राम-विशेष (आचा २, ३) ।
°णदि पु [°नन्दिन] इस नाम का एक
सोनार (आवम) । °धम्म पु [°धर्म] एक
जैन साधु (कप्प) । °वाल पु [°पाल]
विज्रम की बारहवीं शताब्दी का गुजरात का
एक सुप्रसिद्ध जैन राजा (दे १, ११३ टी) ।

कुमार पु [दे] कुआर का महीना, आश्विन
मास (ठा २, १) ।

कुमारा स्त्री [कुमारा] इस नाम का एक
सन्निवेश, 'तम्रो भगव कुमाराए सन्निवेशे
गम्रो' (आवम) ।

कुमारिय पु [कुमारिक] कसाई, सैनिक
(वृह १) ।

कुमारिया स्त्री [कुमारिका] देखो कुमारी
(पि ३५०) ।

कुमारी स्त्री [कुमारी] १ प्रथम त्रय की लडकी
२ अविवाहित कन्या (हे ३, ३२) । ३
वनस्पति-विशेष, धीकुआरी (पव ४) । ४
नवमल्लिका । ५ नदी-विशेष । ६ जम्बू-द्वीप
का एक भाग । ७ वनस्पति-विशेष, अप-
राजिता । ८ सीता । ९ बड़ी इलाची । १०
बन्व्या ककड़ी की लता । ११ पक्षि-विशेष
(हे ३, ३२) ।

कुमारी स्त्री [दे कुमारी] गौरी, पार्वती (दे
२, ३५) ।

कुमुअ पु [कुमुद] १ इल नाम का एक
वानर (से १, ३४) । २ महाविदेह-वर्ष का

कोणाली स्त्री [दे] गोष्ठी, गोठ (बृह १)।
 कोणिअ } पु [कोणिअ] राजा श्रेणिक का
 कोणिग } पुत्र, नृप-विशेष (अतः, राया १,
 १, महा, उव)।
 कोणु स्त्री [दे] लेखा, लकीर, रेखा (दे २, २६)।
 कोणेष्टिया स्त्री [दे] गुब्जा, गुं 'चणोठी'
 (अनु० वृ० हारि० पत्र० ७६) देखो,
 चणोष्टिया।
 कोणण पु [दे कोण] गृह-काण, घर का
 एक भाग, कोना (दे २, ४५)।
 कोतव न [कौतव] मूपक के रोम में निष्पन्न
 सूता (राज)।
 कोतुहल देखो कुऊहल (काल)।
 कोत्तलका स्त्री [दे] दारु परोसने का भाण्ड,
 पात्र-विशेष (२ १४)।
 कोत्तिअ वि [कौतुकिअ] कौतूकी कुतूहली
 (गा ६७२)।
 कोत्तिअ पु [कोत्रिक] १ भूमि-शयन करने-
 वाला वानप्रस्थ (श्रौप)। २ न एक प्रकार
 का मधु (ठा ६)।
 कोत्थ देखो कोच्छ = कौथ।
 कोत्थर न [दे] १ विज्ञान (दे २, १३)। २
 कोटर, गह्वर (मुपा २८७, निचू १५)।
 कोत्थल पु [दे] १ कुयूल, कोष्ठ (दे २,
 ८८)। २ कोयली, बैला (म १६२)।
 °मारा स्त्री [°कारी] भौरी, कीट विशेष
 (बृह १)।
 कोत्थुम } पु [कौस्तुभ] वामुदेव के वक्ष
 कोत्थुह } त्यल की मणि (ती १०, प्राप्र,
 कोत्थुम } महा, गा १५१, परह १, ४)।
 कोदड पु [कोदण्ड] धनुष, धनु, काभुंक,
 चाप (अत १६)।
 कोदडिम } देखो कु-दडिम (ज ३, कप्प)।
 कोदडिय }
 कोदूसग देखो कोडूसग (भग ६, ७)।
 कोदव गेखो कुदव (भवि)।
 कोदविया स्त्री [दे] मातृवाहा, क्षुद्र कीट-
 विशेष (सुख १८, ३५)।
 कोदाल देखो कुदाल (परह १, १—पत्र
 २३)।
 कोदालिया स्त्री [कुदालिका] छोटा कुदार,
 कुदारी (विपा १, ३)।

कोध पु [कोध] इस नाम का एक राजा,
 जिसने दाशरथि भरत के साथ जैन दीक्षा ली
 थी (पउम ८५, ४)।
 कोप्प देखो कुप्प = कुप्। कोप्पइ (नाट)।
 कोप्प पु [दे] अपराध, गुनाह (दे २, ४७)।
 कोप्प वि [कोप्य] द्वेप्य, अप्रीतिकर,
 'अकोणजघजुगला' (परह १, ३)।
 कोप्पर पु [कूर्पर] १ हाथ का मध्य भाग
 (श्रोध २६६ भा, कुमा, हे १, १२४)। २
 नदी का किनारा, तट, तीर (श्रोत्र ३०)।
 कोवेरी स्त्री [कौवेरी] विद्या-विशेष (पउम
 ७, १४२)।
 कोभग } पुं [कोभक] पक्षि-विशेष (अतः,
 कोभगक } श्रौप)।
 कोमल वि [कोमल] मृदु सुकुमार (जी १०,
 पाप्र, कप्प)।
 कोमार वि [कौमार] १ कुमार से संबन्ध
 रखनेवाला, कुमार-सवन्वी (विपा १, ७१)।
 २ कुमारी सवन्वी (पाप्र)। ३ कुमारी में
 उत्पन्न (दे १, ८१)। स्त्री °रिया, °री
 (भग १५)। °भिश्च न [°भृत्य] वैद्यक
 शास्त्र-विशेष, जिसमें बालको के स्तन पान-
 संबन्धी वर्णन है (विपा १, ७—पत्र ७५)।
 कोमारी स्त्री [कौमारी] विद्या-विशेष (पउम
 ७, १३७)।
 कोमुइया स्त्री [कौमुदिका] श्रीकृष्ण वासुदेव
 की एक भेरी, जो उत्सव की सूचना के समय
 बजाई जाती थी (विसे १४७६)।
 कोमुई स्त्री [दे] पूर्णिमा, कोई भी पूर्णिमा
 (दे २, ४८)।
 कोमुई स्त्री [कौमुदी] १ शरद् ऋतु की
 पूर्णिमा (दे २, ४८)। २ चन्द्रिका, चांदनी
 (श्रौप, धम्म ११ टी)। ३ इस नाम की एक
 नगरी (पउम ३६, १००)। ४ कार्तिक की
 पूर्णिमा (राय)। °नाह पु [°नाथ] चन्द्रमा,
 चांद (धम्म ११ टी)। °महूसव पु [°महो-
 त्सव] उत्सव-विशेष (पि ३६६)।
 कोमुदिया देखो कोमुइया (राया १, ५—
 पत्र १००)।
 कोमुदी देखो कोमुई = कौमुदी (राया १,
 १२)।
 कोयव वि [कौतव] चूहे के रोमों से बना
 हुआ (वस्त्र) (अणु ३४)।

कोयव वि [कौयव] 'कोयव' देश में निष्पन्न
 (आचा २, ५, १, ५)। देखो कोयवग।
 कोयवग } पु [दे] छई में भरे हुए कपड़े
 कोयवय } का बना हुआ प्रावरण-विशेष,
 रजाई (राया १, १७—पत्र २२६)।
 कोयवी स्त्री [दे] छई से भरा हुआ कपड़ा
 (बृह ३)।
 कोरंग पु [कोरङ्ग] पक्षि-विशेष (परह १,
 १—पत्र ८)।
 कोरट } पुं [कोरण्ट, °क] १ वृक्ष-विशेष
 कोरटग } (पाप्र)। २ न डम नाम का
 भृगुकच्छ (भडीच) शहर का एक उपवन
 (वव १)। ३ कोरएटक वृक्ष का पुष्प (परह
 १, ४, जं १)।
 कोरअ (शी) देखो कउरव (प्राक ८४)।
 कोरय } पुंन [कोरक] फलोत्पादक मुकुल,
 कोरव } फल की बली (पाप्र), 'चत्तारि
 कोरवा पन्नत्ता' (ठा ४, १—पत्र १८५)।
 कोरव देखो कउरव (सम्मत्त १७६)।
 कोरविआ स्त्री [कौरव्या] देखो कोरव्याया
 (अणु १३०)।
 कोरव्व पुत्री [कौरव्य] १ कुल-वश में उत्पन्न
 (मम १५२, ठा ६)। २ कौरव्य-नौवीय।
 ३ पु आठवाँ चक्रवर्ती राजा ब्रह्मदत्त (जीव
 ३)।
 कोरव्वीया स्त्री [कौरवीया] इस नाम की
 पडज ग्राम की एक मूर्च्छना (ठा ७)।
 कोरिट } देखो कोरट (राया १ १—
 कोरिटय } पत्र १६, कप्प, पउम ४२, ८,
 कोरेट } श्रौप, उवा)।
 कोल पुं [दे] ग्रीवा, नोक, गला (दे २, ४५)।
 कोल पुं [कोड] १ सूअर, बराह (परह १,
 १—पत्र ७, स १११)। २ उत्सङ्ग, गोद,
 'कोलीकय—' (गउड)।
 कोल पु [कोल] १ देश-विशेष (पउम ६८,
 ३६)। २ घुण, काष्ठ कीट (सम ३६)। ३
 सूकर, बराह, सूअर (उप ३२० टी, राया
 १, १, कुमा, पाप्र)। ४ मूपिक के आकार
 का एक जन्तु (परह १, १—पत्र ७)। ५
 अन्न-विशेष (धम्म ५)। ६ मनुष्य की एक
 नीच जाति (आचू ४)। ७ बदरी वृक्ष, बेर
 का गाछ। ८ न. बदरी-फल, बेर (दस ५,
 १, भग ६, १०)। °पाग न [°पाक] नगर-

कुर्य न [दे कुरु] माया, कपट (सम ७१)।
कुर्या श्री [दे कुरुका] शरीर-प्रज्ञालन,
नान (वव १)।

कुरर देवो कुरर (कुमा)।

कुरल पु [दे] १ कुटिल केश, टेढ़ा बाल (दे
२, ६३, भवि)। २ वि निर्दय। ३ निपुण,
चतुर (दे २, ६३)।

कुरल अक [कु] आवाज करना, कौए का
बोलना। कुरलहि (भवि)।

कुरलिअ न [कुन] वायस का शब्द कौए
की आवाज (भवि)।

कुरु देखो कुन (पञ्च ११८, ८३, भवि)।

कुरुवा देखो कुरयय (सुपा ७७)।

कुरुविद पु [कुरुविन्द] १ मणि-विशेष, रत्न
की एक जाति (गडड)। २ तृण विशेष
(परग १, परह १, ४—यत्र ७८)। ३

कुटिलिक-नामक रोग, एक प्रकार का जवा
रोग, 'पुण्णिकुरुविदचतवट्टाणुपुव्वजघे' (औप)।
१वत्त पुन [१वत्त] भूषण-विशेष (कप्प)।

कुरविना श्री [कुरुविन्दा] इस नाम की एक
वणिग्भाषा (पञ्च ५५, ३८)।

कुरुविद [दे] देखो कुरुचिल (पाथ)।

कुल पुन [कुल] १ कुल, वंश जाति (प्रास
१७)। २ पेतुक वंश (उत्त ३)। ३ परिवार,
कुटुम्ब (उप ६, ७७)। ४ सजातीय समूह

(परह १, ३)। ५ गोत्र (सुपा ८, ठा ४, १)।
६ एक आचार्य की सत्ति (कप्प)। ७ घर,
गृह (कप्प, सूत्र १, ४, १)। ८ सान्निध्य,

सामोप्य (आवा)। ९ ज्योतिष-शास्त्र-प्रसिद्ध
नक्षत्र-संज्ञा (मुख १०, इक), 'कुलो, कुल'
(हे १, ३३)। १० उच्च पु [पूर्व] पूर्वज,

पूर्व-गुरुप (गडड)। ११ कम पु [क्रम]
कुलाचार, वंश-परम्परा का रिवाज (सट्टि
७४)। १२ कर देखो नीचे 'गर (ठा १०)।

१३ कोडि श्री [कोटि] जाति विशेष (पव
१५१, ठा ६ १०)। १४ क्रम देखो क्रम
(सट्टि ६)। १५ गर पु [कर] कुल की स्थापना

करनेवाला, युग के प्रारम्भ में नीति वोट की
व्यवस्था करनेवाला महापुरुष (सम १२६,
घण ५)। १६ गद न [गेह] पितृ गृह (सण)।

१७ घर न [गुर] पितृ-गृह (औप)। १८ ज वि
[ज] कुलीन, खानदानी कुल में उत्पन्न

(द्र ५)। १९ जाय वि [जान] कुलीन, खान-
दानी कुल का (मुपा ५६८, पाथ)। २० जुअ
वि [युत] कुलीन (पव ६८)। २१ णाम न

[नामन] कुल के अनुसार किया जाता नाम
(अणु)। २२ ततु पु [तन्तु] कुल-संतान,
कुल-मतति (वव ६)। २३ तिलग पुन

[तिलक] कुल में श्रेष्ठ (भग ११, १६)।
२४ त्व वि [स्थ] कुलीन, खानदानी वंश का
(णाय १, ५)। २५ त्वेर पु [स्थविर] श्रेष्ठ

साधु (पच)। २६ दिगयर पु [दिनकर]
कुल में श्रेष्ठ (कप्प)। २७ दीव पु [दीप]
कुल प्रकाशक, कुल में श्रेष्ठ (कप)। २८ देव

पु [देव] गोत्र-देवता (काल)। २९ दवया
श्री [देवता] गोत्र-देवता (मुपा ५६७)।
३० देवी श्री [देवी] गोत्र देवी (मुपा ६०२)।

३१ धम्म पु [धर्म] कुलाचार (ठा १०)।
३२ पन्वय पु [पर्वत] पर्वत-विशेष (सम ६६,
सुपा ४३)। ३३ पुत्त पु [पुत्र] नश रक्षक

पुत्र (उत्त १)। ३४ वालिया श्री [वालिका]
कुलीन कन्या (सुर १, ४३, टंका ३०१)।
३५ भूमण न [भूषण] १ वंश को दिपाने या

चमकाने वाला। २ पु एक केवली भगवान्
(पञ्च ३६, १२२)। ३ भय पु [भद] कुल का
अभिमान (ठा १०)। ४ भयहरिया, 'महत्त-

रिया श्री [महत्तरिका] कुल में प्रचान
श्री, कुटुम्ब की मुखिया (सुपा ७६, आवम)।
५ य देखो 'ज (सुपा ५६८)। ६ रोग पु

[रोग] कुल व्यापक रोग (ज २)। ७ वइ पु
[पति] तापमो का मुखिया, प्रचान सन्यासी
(सुपा १६०, उप ३१)। ८ वंस पु [वंश]

कुल रूप वंश, वंश (भग ११, १०)। ९ वस
पु [वंश] कुल में उत्पन्न, वंश में सजात
(भग ६, ३३)। १० वडिसय पु [वितसक]

कुल-भूषण, कुल-दीपक (कप्प)। ११ वहु श्री
[वधू] कुलीन श्री, कुलाङ्गना (आव ५,
पि ३८७)। १२ सपण वि [सपन्न] कुलीन,

खानदानी कुल का (औप)। १३ समय पु
[समय] कुलाचार (सूत्र १, १, १)।
१४ सेल पु [शैल] कुल-पवन (मुपा ६००,
स ११६)। १५ सेलया श्री [शैलजा] कुल

पवत में निकली हुई नदी, वृत्तसलयापि
सरिया नृण नीययग्मगुसरइ (मुपा ६००)।

१६ हर न [गृह] पितृगृह, पिता का घर (गा
१२१, सुपा ३६४, से ६, ५३)। १७ जीव

वि [जीव] अपने कुल की बड़ाई बतला
कर आजीविका प्राप्त करनेवाला (ठा ५, १)।
१८ य न [य] पक्षी का घर, नीड (पाथ)।

१९ यार पु [चार] कुलाचार वंश-परम्परा
में चला आता रिवाज (वव १)। २० रिय पु
[रिये] पितृ-पक्ष की अपेक्षा में आर्य (ठा ३,

१)। २१ लय वि [लय] गृहस्थों के घर
भीख मंगनेवाला (सूत्र २, ६)।

कुल कर पु [कुलकर] इस नाम का एक राजा
(पञ्च ८२, २६)।

कुलप पु [कुलम्प] इस नाम का एक अनार्य
वंश। २ उसमें रहनेवाली जाति (सूत्र २, २)।

कुलकुल देखो कुरकुर। कुलकुलइ (भवि)।

कुलक्ख पु [कुलक्ष] १ एक म्लेच्छ वंश।
२ उसमें रहनेवाली जाति (परह १, १, इक)।

कुलाग्य पु [कुलार्थ] एक अनार्य वंश (पञ्च
२७४)।

कुलडा श्री [कुलदा] व्यभिचारिणी श्री,
पुश्चली (मुपा ३८४)।

कुल्लथ पुं श्री [कुल्लथ] अन्न-विशेष, कुलथी
(ठा ५, ३, णाय १, ५)। श्री 'त्या (आ
१८)।

कुलफसण पु [दे] कुल-कलक, कुल का दाग,
कुल की आपकीर्ति (दे २, ४२, भवि)।

कुलय देखो कुडव (तदु २६, अणु १५१)।

कुलय न [कुलक] तीन या चार से ज्यादा
परस्पर मापेक्ष पत्र (समत ७६)।

कुलल पु [कुलल] १ पति-विशेष (परह १,
१)। २ गृह पक्षी (उत्त १४)। ३ कुरर

पक्षी (सूत्र १, ११)। ४ माजिर, विजाल,
जहां कुम्कुडपायम्स गिन्च कुललओ भय'
(दस ४)।

कुलल्य पुन [दे] कुल्ला, गडूप (पञ्च ३८)।

कुलव देखो कुडव (जो २)।

कुलसत श्री [दे] उल्लू चूल्हा (दे २, ८६)।

कुलाअल पु [कुलाचल] कुलपर्वत (पि ८२)।

कुलाण देखो कुणाल (राज)।

कुलाल पु [कुलाल] कुम्भकार, कुम्हार (पाथ,
गडड)।

कोस पुं [कोश, प] १ खजाना, भण्डार (गाथा १, १३१, पउम ५, २४)। २ तलवार की म्यान (सूत्र १, ६)। ३ कुड्मल, 'कमलकोसव्व' (कुमा)। ४ मुकुल, कली (गउड)। ५ गोल, वृत्ताकार, 'ता मुह-मेलियकर कोमपिहियपमर तदतरपमर' (मुपा २७, गउड)। ६ दिव्य-भेद, तप्त लोहे का स्पर्श वगैरह शपथ 'एथ अम्हे कोमविसएहि पच्चाएमी' (म ३२४)। ७ अभिधान शास्त्र शब्दार्थ-निरूपक ग्रन्थ जैमा प्रस्तुत पुस्तक। ८ पुन पानपात्र चपक (पात्र)। ९ न नगर विशेष, 'कोम नाम नगर' (स १३३)। १० पाण न [°पान] सौगन्ध, शपथ (गा ४८८)। ११ हित्र पु [°विप] खजानची, भण्डारी (मुपा ७३)। कोमव पु [कोशाम्ब] कल-वृक्ष-विशेष (परण १—पत्र ३१)। १२ गडिया ली [गण्डिमा] खड्ग-विशेष, एक प्रकार की तलवार (राज)।

कोसविया ली [कौशाम्बिका] जैनमुनि-गण की एक शाखा (कप्प)।

कोसवी ली [कौशाम्बी] वत्स देश की मुख्य-नगरी (ठा १०, विपा १, ५)।

कोसग पु [कोशक] माधुओं का एक चर्म-मय उपकरण, चमड़े की एक प्रकार की थैली (धर्म ३)।

कोसट्टरिआ ली [दे] चण्डी, पार्वती, गौरी, शिव-पत्नी (दे २, ३५)।

कोसय न [दे कोशक] लघु शराव, छोटा पान पात्र (दे २, ४७, पात्र)।

कोसल न [कोराल] कुशलता, निपुणता, चातुरी (कुमा)।

कोमल न [दे] नीची, नारा, झारवन्द (दे २, ३८)।

कोसल पु [कोसल °क] १ देश-विशेष कोमलग (कुमा, महा)। २ एक जैन महर्षि, मुकोमल मुनि (पउम २२, ४८)। ३ कोसल देश का राजा। ४ वि कोशल देश में उत्पन्न (ठा ५, २)। ५ °पुर न [°पुर] अयोध्या नगरी (आक १)।

कोसला ली [कोसला] १ नगरी-विशेष,

अयोध्या-नगरी (पउम २०, २८)। २ अयोध्या प्रांत, कोमल देश (भग ७, ६)।

कोसलिअ वि [कोशलिक] १ कोमल देश में उत्पन्न, कोमल देश-सम्बन्धी (भग २०, ८)। २ अयोध्या में उत्पन्न, अयोध्या सम्बन्धी (ज २)।

कोसलिअ न [दे कोशलिक] प्राभृत, भेंट, उपहार (दे २ १२, मण, मुपा—प्रस्तावना ५)।

कोसलिआ ली [दे कोशलिका] ऊपर देवो (दे २, १२, मुपा—प्रस्तावना ५)।

कोसल न [कोशल्य] निपुणता, चतुराई (कुमा, मुपा १६, मुर १०, ८०)।

कोमल न [दे] प्राभृत, भेंट, उपहार, 'त पुरजणकोसल नरवइणा अप्पिय कुमारस्स' (महा)।

कोमलया ली [कोशल्य] निपुणता, चतुराई, 'तह मज्झनीइकोमल्लया य क्षीणच्चिय इयाणि' (मुपा ६०३)।

कोसल्ला ली [कोशलया] दाशरथि राम की माता (उा पृ ३७४)।

कोसल्लिअ न [दे कोशलिक] भेंट, उपहार (दे २, १२, महा, मुपा ४१३, ५२७, सण)।

कोसा ली [कोशा] इस नाम की एक प्रसिद्ध वेश्या, जिसके यहां जैन महर्षि श्रीस्थूलभद्र मुनि ने निर्विकार भाव से चातुर्मास (चौमामा) किया था (विवे ३३)।

कोसिण वि [कोण] थोड़ा गरम (नाट—वेणी)।

कोसिय न [कोशिक] १ मनुष्य का गोत्र विशेष (अभि ४१, ठा ३६०)। २ वीसवें नक्षत्र का गोत्र (चद १०)। ३ पुं उलूक, घूक, उल्लू (पात्र, सार्ध ५६)। ४ साप विशेष, चण्डकोशिक-नामक दृष्टि-विष सर्प, जिसको भगवान् श्रीमहावीर ने प्रबोधित किया था (आवम)। ५ वृक्ष-विशेष। ६ इन्द्र। ७ नकुल। ८ कोशाव्यक्ष, खजानची ९ प्रीति, अनुराग। १० इस नाम का एक राजा। ११ इस नाम का एक अमुर। १२ सर्प को पकड़नेवाला, सपेरा, गारुडिक। १३ अश्विसार, मज्जा। १४ शृगाररस (हे १,

१५६)। १५ इस नाम का एक तापम (भवि)। १६ पुखी कौशिक गोत्र में उत्पन्न, कौशिक-गोत्रीय (ठा ७—पत्र ३६०)। १७ ली कोमिई (मा १६)।

कोमिया ली [कोशिका] १ भारनवर्ष की एक नदी (कम)। २ इस नाम की एक विया-घर-राज-कन्या (पउम ७, ५४)। ३ चमड़े का हूता, कोमियमानाभूनिमिरोहणे विगय-वमणो य' (म २०३)। देवो कोमी।

कोमियार पुं [कोशिकार] १ कीट-विशेष, श्रेण का कीटा (पण्ड १, ३)। २ न श्रेणी वस्त्र (ठा ५, ३)।

कोमी ली [कोमी] १ जिनची, छोमी, फनी (पात्र)। २ तनवार की म्यान (सूत्र २, १, ६६)।

कोसा ली [कोशी] देवो कोसिया (ठा ५, ३—पत्र ३५१)। २ गोलाकार एक वस्तु, 'कचणकोमीपविदुदताण' (श्रीप)।

कोमुभ वि [कोमुभ] कुसुभ-सम्बन्धी (रंग) (सिरि १०५७)।

कोमुम वि [कोमुम] फूल सम्बन्धी, फूल का बना हुआ, 'कोमुमा वारण' (गउड)।

कोमुह देवो कुमुभ (मझि ४)।

कोमेअ } न [कोशेय] १ रेशमी वस्त्र,
कोमेज } रेशमी कपड़ा (दे २, ३३, सम १५३ पण्ड १, ४)। २ तसर का बना हुआ वस्त्र (जीव ३)।

कोह पुं [कोथ] गुल्मा, कोप (श्रौय २ भा, ठा ४, १)। २ मुड वि [°मुण्ड] क्रोध-रहित (ठा ५, ३)।

कोह पुं [कोथ] मउना, शीर्णता (भग ३, ६)। कोह पु [दे कोथ] कोथली, थैला (विने २६८८)।

कोह वि [कोथवन] क्रोध-युक्त, कोप-नहित 'काहाए माणाए मायाए लोभाए आसाय-णाए' (पडि)।

कोहंगर पु [कोभङ्गर] पक्षि-विशेष (श्रीप)। कोहभाण न [कोधध्यान] क्रोध-युक्त चिन्तन (भाउ ११)।

कोहड न [कुष्माण्ड] १ कुष्माण्डो-फल, कोहंडा (पि ७६, ८६, १२७)। २ न.

कुसीलव पु [कुशीलव] अभिनयकर्ता नट (कप्प) ।
 कुसुम पुन [कुसुम्भ] १ वृक्ष-विशेष, कुसुम, वर्रे (ठा ८—पत्र ४०५) । २ न. कुसुम का पुष्प, जिसका रंग वनता है (जं २) । ३ रग-विशेष (श्रा १२) ।
 कुसुभिअ वि [कुसुम्भित] कुसुम्भ रगवाला (श्रा १२) ।
 कुसुभिल पु [दे] पिशुन, दुर्जन, दुगलखोर (दे २, ४८) ।
 कुसुभी स्त्री [कुसुम्भी] वृक्ष-विशेष, कुसुम का पेड़ (पात्र) ।
 कुसुम अक [कुसुमय्] फूल आना । कुसुमति (सबोध ४७) ।
 कुसुम न [कुसुम] १ पुष्प, फूल (पात्र, प्रासू ३४) । २ पु इस नाम का भगवान् पद्मप्रभ का शासनाधिष्ठायक यक्ष (सति ७) । ३ 'केड पुं' [केतु] अरुणवर द्वीप का अधिष्ठायक देव (दीव) । ४ 'चाय, चाय पु [चाप] कामदेव, मकरव्वज (मुपा ५६, ५३०, महा) । ५ 'उम्भय पु [ध्वज] वसन्त ऋतु (कुमा) । ६ 'णयर न [नगर] नगर-विशेष, पाटलिपुत्र, आजकल जो 'पटना' नाम से प्रसिद्ध है (आवम) । ७ 'दन्त पुं [दन्त] एक तीर्थङ्कर देव का नाम, इस अवसरपिणी काल के नववें जिनदेव, श्री सुविधिनाय (पउम १, ३) । ८ 'दाम न [दामन्] फूलों की माला (उवा) । ९ 'वणु न [धनुस्] कामदेव (कुमा) । १० 'पुर न [पुर] देखो ऊपर 'णयर (उप ४८६) । ११ 'वाण पु [वाण] कामदेव (मुर ३, १६२, पात्र) । १२ 'रअ पु [रजस्] मकरन्द (पात्र) । १३ 'रद पु [रद] देखो दत्त (पउम २०, ५) । १४ 'लया स्त्री [लता] छन्द-विशेष (अजि १५) । १५ 'सभव पु [सभव] मधुमास, चैतमास (अणु) । १६ 'सर पु [शर] कामदेव (मुर ३, १०६) । १७ 'अर पुं [अर] इस नाम का एक छन्द (पिग) । १८ 'उड पु [अयुध] काम, कामदेव (स ५३८) । १९ 'वई स्त्री [वती] इस नाम की एक नगरी (पउम ५, २६) । २० 'मव पुं [सव] किजल्क, पराग, पुष्प-रेणु (गाया १, १, श्रीप) ।

कुसुमसभव पुं [कुसुमसम्भव] वैशाख मास का लोकोत्तर नाम (मुज्ज १०, १६) ।
 कुसमाल वि [कुसमवत्] फूलवाला (स ६६७) ।
 कुसुमाल पु [दे] चोर, स्तेन (दे २ १०) ।
 कुसुमालिअ वि [दे] शून्य-मनस्क, भ्रान्त-चित्त (दे २, ४२) ।
 कुसुमिअ वि [कुसुमिन] पुष्पित, पुष्प-युक्त, खिला हुआ (गाया १, १, पउम ३३, १४८) ।
 कुसुमिल्ल वि [कुसुमवत्] ऊपर देखो (मुपा २२३) ।
 कुसुर [दे] देखो कसुर (दे २, १७४ टि) ।
 कुसूल पु [कुशूल] कोष्ठ, अन्न रखने के लिए मिट्टी का बना एक प्रकार का बड़ा पात्र (पात्र) ।
 कुसुमिग पु [कुस्वप्न] दुष्ट स्वप्न (सबोध ४२) ।
 कुह अक [कुय्] सड़ जाना, दुर्गन्धी होना । कुहइ (भवि, हे ४, ३६५) ।
 कुह पुं [कुह] वृक्ष पेड़, गाछ, 'कुहा महीरहा वच्चा' (दसनि १) ।
 कुह देखो कह (गा ५०७ अ) ।
 कुहड पुं [कूप्माण्ड] व्यन्तर देवों की एक जाति (श्रीप) ।
 कुहड न [कूप्माण्ड] १ कुम्हडा, पेठा, कोहँडा (कम्म ५, ८५) ।
 कुहडिया स्त्री [कूप्माण्डी] कोहँडा का गाछ (राय) ।
 कुहक्क } देखो कुहय (घर्मवि १३५, कुप्र ८) ।
 कुहग }
 कुहग पु [कुहक] कन्द-विशेष, 'लाहिणीहू य थोहू य, कुहगा य तहेव य' (उत्त ३६, ६६ का) ।
 कुहड वि [दे] कुब्ज, कूबडा (दे २, ३६) ।
 कुहण पु [कुहन] १ वृक्षों का एक प्रकार, वृक्षों की एक जाति, 'से कि त कुहणा ? कुहण अणोगविहा परएत्ता' (परएण १—पत्र ३५) । २ वनस्पति-विशेष । ३ भूमि-स्फोट (परएण १—पत्र ३०, आचा) । ४ देश-विशेष । ५ इसमें रहनेवाली जाति (परह १, १—पत्र १४, इक) ।

कुहण वि [क्रोधन] क्रोधी, क्रोध करनेवाला (परह १, ४—पत्र १००) ।
 कुहणी स्त्री [दे] कूर्पर, हाथ का मध्य-भाग (मुपा ४१२) ।
 कुहय पुन [कुहक] १ वायु-विशेष दौड़ते हुए अरव के उदर-प्रदेश के समीप उत्पन्न होता एक प्रकार का वायु, 'घणगज्जिय-हयकुहए (गच्छ २) । २ इन्द्रजालादि कौतुक, 'अलोएण अक्कुहए अमाई (दस ६, ३) ।
 कुहर न [कुहर] १ पर्वत का अन्तराल (गाया १, १—पत्र ६३), 'गेहव वित्तरहिअ गिण्जरकुहर व सलिलसुएणविअ' (गा ६०७) । २ छिद्र, विल, विवर (परह १, ४, पासू २) । ३ पु व. देश-विशेष (पउम ६८, ६७) ।
 कुहाड पु [कुठार] कुल्हाड, फरमा (विपा १, ६, पउम ६६, २४, स २८४) ।
 कुहाडी स्त्री [कुठारी] कुल्हाडी, कुठार (उप ९६३) ।
 कुहावणा स्त्री [कुहना] १ आश्चर्य-जनक, दम्भ-क्रिया, दम्भ-चर्या । २ लोगों से द्रव्य हासिल करने के लिए किया हुआ कपट-भेष (जीत) ।
 कुहिअ वि [दे] लिप्त, पोता हुआ (दे २, ३५) ।
 कुहिअ वि [कुथित] १ थोड़ी दुर्गन्धवाला (गाया १, १२—पत्र १७३) । २ सड़ा हुआ (उप ५६७ टी) । ३ विलप्ट (गाया १, १) । ४ 'पूडय वि [पूतिक] अत्यन्त मड़ा हुआ (परह २, ५) ।
 कुहिणी स्त्री [दे] १ कूर्पर, हाथ का मध्य भाग । २ रथ्या, महत्ता (दे २, ६२) ।
 कुहिल पुं स्त्री [कुहुमन्] कोयल पक्षी (पिग) ।
 कुहु स्त्री [कुहु] कोकिल पक्षी की आवाज (पिग) ।
 कुहुण देखो कुहण = कुहन (उत्त ३६, ६६ का) ।
 कुहुव्वय पु [कुहुव्वत] कन्द-विशेष (उत्त ३६, ६८) ।
 कुहेड पुं [दे] ओपवी-विशेष, गुरेटक, एक प्रकार का हरे का गाछ (दे २, ३५) ।
 कुहेड पुं [कुहेट, क] १ चमत्कार
 कुहेडअ } उपजानेवाला मन्त्र तन्त्रादि ज्ञान,

खड्ड पु [खपुट] स्वनाम-प्रसिद्ध एक जैना-
चार्य (श्रावम, श्राव्) ।

खडर अक [क्षुम्] १ क्षुब्ध होना, डर से
विह्वल होना । २ मक कलुपित करना ।
खडरइ (हे ४, १५५; क्रमा), 'खडरेति
घिङ्गहण' (से ५, ३) ।

खडर वि [टे] कलुपित, 'दरददुविवरणविदु-
मरअवत्तरा' (मे ५, ४७, म ५७८) ।

खडर न [श्रौर] क्षोर-कर्म, हजामत (हेका
१८६) ।

खडर पुन [खपुर] खैर वगैरह का चिकना
रस गोद (वृह ३, निचू १६) । °कठिणय
न [°कठिनक] तापसो का एक प्रकार का
पात्र (विमे १४६५) ।

खडरिअ वि [क्षुब्ध] कलुपित (पाअ, वृह
३) ।

खडरिअ वि [क्षौरित] मुरिडन, लुब्धित, केश-
रहित किया हुआ (मे १०, ४३) ।

खडरिअ वि [खपुरित] सररिडत, चिपकाया
हुआ (निचू ५) ।

खडरीकय वि [खपुरीकृत] गोद वगैरह की
तरह चिकना किया हुआ,

'कलुसीकयो य किट्टीकयो य
खडरीकयो य मलिण्णिओ ।

कम्मैइ एम जीवो, नाऊएवि
मुज्झई जेए' (उव) ।

खओवसम पुं [क्षयोपशम] कुछ भाग का
विनाश और कुछ का दयना (भग) ।

खओवसमिय वि [क्षयोपशमिक] १ क्षयो-
पशम में उत्पन्न, क्षयोपशम-मवन्धो (सम
१४५, ठा २, १, भग) । २ पुन क्षयोपशम
(भग, विसे २१७५) ।

खखर पु [टे] पलाश-वृक्ष (ती ५३) ।

खगार पु [खङ्गार] राजा खेगार, विक्रम की
बारहवीं शताब्दी का सौराष्ट्र देश का एक
भूपति, जिसको गुजरात के राजा सिद्धराज
ने मारा था (ती ५) । °गड पु [°गड]
नगर विशेष, मोराष्ट्र का एक नगर, जो श्राज-
कल 'जूनागड' के नाम से प्रसिद्ध है (ती २) ।

खच सक [कृप्] १ खीचना । २ वश में
करना । खचइ (भवि), 'ता गच्छ तुरिय-

तुरियं तुरय मा खच मुच मुफलयं' (मुपा
१६८) ।

खचिय वि [कृष्ट] १ खीचा हुआ (न ५७४) ।
२ वश में किया हुआ (भवि) ।

खंज अक [खञ्ज] लगडा होना (कप्पु) ।

खज वि [खज] लगडा, प्णु, लूना (मुपा
२७६) ।

खज न [खज] गाडी में लोहे के डंडे के पाय
बाधा जाता मण आदि का गोच कपडा—
जो तेल आदि से भीजाया हुआ रहता है, वि-
डुआ, 'खण्जणनयणनिभा' (उत्त ३२, ४) ।

खजण पु [खज्जन] राहु का कृष्ण पुद्गल-
विशेष (मुज्ज २०) ।

खंजण पु [खज्जन] १ पक्षि विशेष, खज्जरोट
(दे २, ७०) । २ वृक्ष-विशेष, 'ताडवटखज-
जणमुखयरगहीरदुक्खसचारं' (स २५६) ।

खजण पुं [दे] १ कदम, कीचड (दे २, ६६,
पाअ) । २ कजल, काजल, मपी (ठा ४, २) ।
३ गाडी के पहिए के भीतर का काला कीच
(पएण १७—पन ५२५) ।

खजर पु [दे] सूखा हुआ पेड (दे २, ६८) ।

खंजा स्त्री [खजा] छन्द-विशेष (पिण) ।

खजिअ वि [खजित] जो लगडा हुआ हो,
पशुभूत (कप्पु) ।

खड मक [खण्डय्] तोडना, टुकड़ा करना,
विच्छेद करना । खडइ (हे ४, ३६७) । कवक
खडिज्जत (से १३, ३२, सुपा १३४) । हेक
खडित्तण (उवा) । कृ खडियन्न (उप
६२८ टी) ।

खंड पु [खण्ड] एक नरक-स्थान (देवेन्द्र २६) ।
°कव न [°काव्य] छोटा काव्यग्रन्थ
(सम्मत ८४) ।

खड (अप) देवो खग्ग, 'मुंडोरह खडइ वमइ
लच्छी' (भवि) ।

खड पुन [खण्ड] १ टुकड़ा अश, हिस्सा
(हे २, ६७, कुमा) । २ चीनी मिट्टी (उर
६, ८) । ३ पृथ्वी का एक हिस्सा,
'छक्खड—' (सण) । °घडग पुं [°घटक]
मिश्रक का जल-पात्र (गाया १, १६) ।
°पवाया स्त्री [°प्रपाता] वैताड्य पर्वत की
एक गुफा (ठा २, ३) । °भेय पु [°भेड]
विच्छेद-विशेष, पदार्थ का एक तरह का

पृथक्करण, पटके हुए घड़े की तरह पृथक्भाव
(भग ५, ४) । °महय पुन [°महक] मित्रा-
पात्र (गाया १, १६) । °सो अ [°गस्]
टुकड़ा-टुकड़ा, खण्ड-खण्ड (पि ५१६) ।
°भेय देवो °भेय (ठा १०) ।

खंड न [दे] १ गुण्ड, शिर, मम्मक । २
दारू का वरतन, मय-पात्र (दे २, ६८) ।

खडई स्त्री [दे] असती, कुलटा (दे २, ६७) ।

खडग पुन [खण्डक] चीया हिम्मा (पव
१४३) ।

खडग न [गण्टक] शिखर-विशेष (ठा ६,
इक) ।

खंडण न [गण्डन] १ विच्छेद, भञ्जन, नाश
(गाया १, ८) । २ कण्डन, घान्य वगैरह का
छिनका अन्नग करना, 'खण्डणदण्णाइ गिह-
कम्मं' (मुपा १४) । ३ वि. नाश करनेवाला,
नाशक (मुपा ४३२) ।

खडणा स्त्री [गण्डना] विच्छेद, विनाश
(कप्पु, निचू १) ।

खडपट्ट पु [गण्डपट्ट] १ त्र्युत्कार, जूआरी
(विपा १, ३) । २ घूँत, ठग । ३ अन्याय से
व्यवहार करनेवाला (विपा १, ३) ।

खडरक्ख पुं [खण्डरत्त] १ दाएडपाशिक,
कोतवाल (गाया १, १, पएह १, ३ ओप) ।
२ शुल्कपाल, चुगी वसूल करनेवाला (गाया
१, १, विमे २३६०, ओप) ।

खडव न [गण्टव] इन्द्र का वन-विशेष,
जिमको अर्जुन ने जलाया था (नाट—त्रेणी
११४) ।

खडा स्त्री [खण्ड] मिट्टी, चीनी, शक्कर, खांड
(ओप ३७३) ।

खडा स्त्री [खण्डा] इस नाम की एक विद्याधर-
कन्या (महा) ।

खडाखडि अ [खण्डशम्] टुकड़ा-टुकड़ा,
खण्डखण्ड (उवा, गाया १, ६) । °डीकय
वि [कुन] टुकड़ा-टुकड़ा किया हुआ (मुर
१६, ५६) ।

खडामणिकचण न [खण्डामणिकाञ्चन]
इस नाम का एक विद्याधर-नगर (इक) ।

खडावत्त न [खण्डावत्त] इस नाम का एक
विद्याधरनगर (इक) ।

मामाएणं मम कूवं नो हव्वमागच्छइ, तए ए
अहं देवा० जं तुमं वदसि तस्स आणाओवा-
यवयणादिहेते चिट्ठिस्तामि' (गाथा १,
१६—पत्र २१५), 'दोवईए कूवग्गाहा' (उप
६४८ नी, ६, ६२)।

कूव } पुं [कूप, क] १ कूप, कुआ,
कूवरा } गर्त (प्रासू ४५)। २ स्नेह-पात्र,
कूवय } कुतुप, कुप्पा (वजा ७२, उप पृ
४१२)। ३ जहाजका मव्य स्तम्भ, जहापरपाल
बद्धा जाता है (श्रौप, गाथा १, ८)। ४ तुला
छी [तुला] कूपतुला, लंकुवा (दे १, ६३,
८७)। ५ मडुक्क पुं [मण्डूक] १ कूप का
मेढक। २ अल्पज्ञ मनुष्य, जो अपना घर
छोड़ बाहर न जाता हो (निचू १)।

कूवय पु [कूपक] देखो कूव = कूप (रयण
३२)। स्वनाम-प्रमिद्ध एक जैन मुनि (अत
३)।

कूवर पुन [कूवर] १ जहाज का एक अवयव,
जहाज का मुख-भाग, 'मंभुरिणायकडूकूवरा'
(गाथा १, ६—पत्र १५७)। २ रथ या
गाड़ी वगैरह का एक अवयव, युगन्वर (से
१२, ८४)।

कूवल न [दे] जवन-वस्त्र (दे २, ४३)।

कूविय न [कूजित] अव्यक्त शब्द, 'तह कहवि
कुण्ड मो सुरयकूविय तप्पुरो जेण' (सुपा
५८८)।

कूविय पुं [कूपिक] इस नाम का एक सनि-
वेश—गाव (आवम)।

कूविय वि [दे] मोप-व्यावर्त्तक, चुराई हुई
चीज की खोज कर उसे लानेवाला (गाथा
१, १८—पत्र २३६)। २ चोर की खोज
करनेवाला (गाथा १, १)।

कूविया छी [कूपिका] १ छोटा कूप (उप
७२८ टी)। २ छोटा स्नेह-पात्र, कुप्पी (राज)।
कूवी छी [कूपी] ऊपर देखो, 'एयाओ अमय-
कूवीओ' (उप ७२८ टी)।

कूसार पु [दे] गर्ताकार, गर्त जैसा स्थान,
खड्डा, 'कूसारखलतपओ' (दे २, ४४,
पात्र)।

कूहड पु [कूप्पाण्ड] व्यन्तर देवो की एक
जाति (पण्ह १, ४)।

के नक [क्री] कीनना, खरीदना। केइ, केइइ
(पड्)।

के° वि [क्रियत्] कितना? °चिरेण अ
[°चिरेण] कितने समय मे? (अत २४)।
°चिर अ [°चिर] कितने समय तक? (पि
१४६)। °चिरेण देखो °चिरेण (पि
१४६)। °दूर न [°दूर] कितना दूर?
'वेदूरे सा पुरी लका?' (पउम ४८, ४७)।
°महालय वि [°महालय] कितना बड़ा?
(गाथा १, ८)। °महालय वि [°महत्]
कितना बड़ा? (पण्ह २१)। °महिडिदय
वि [°महिदिक] कितनी बड़ी अद्विवाला
(पि १४६)।

केअड पु [केकय] देश-विशेष, जिसका आवा
भाग आर्य और आघा भाग अनार्य है, सिन्धु
देश की सीमा पर का देश (इक), 'केयइ-
अड्ड च आरिय मणिय' (पण्ह १, सत्त ६७
टी)।

केअई छी [केतकी] वृक्ष-विशेष, केवडा का
वृक्ष (कुमा, दे ८, २५)।

केअग } पु [केतक] १ वृक्ष-विशेष, केवडा
केअय } का गाछ, केतकी (गड्ड)। २
न केतकी-पुष्प, केवडा का फूल (गड्ड)। ३
चिन्ह, निशान (ठा १०)।

केअगी छी [केतकी] १ केवडा का गाछ या
पौवा। २ केवडा का फूल (राय ३४)।

केअल देखो केवल (अभि २६)।

केअव देखो कइअव = केतव, 'ज केअवेण
पिम्म' (गा ७४४)।

केआ छी [दे] रज्जु, रस्सी (दे २, ४४,
भग १३, ६)।

केआर पु [केदार] १ क्षेत्र, खेत (सुर २,
७८)। २ आलवाल, क्यारी (पात्र, गा
६६०)।

केआरवाण पुं [दे] वृक्ष-विशेष, पलाश का
पेड़ (दे २, ४५)।

केआरिआ छी [केदारिका] घासवाली
जमीन, गोचर भूमि (कप्पु)।

केड पु [केतु] १ ध्वज, पताका (सुपा
२२६)। २ ग्रह-विशेष (सुज २०, गड्ड)।
३ चिन्ह, निशान (श्रौप)। ४ तूल-सूत्र, रई
का सूता (गड्ड)। °खेत्त न [°क्षेत्र] मेघ-वृष्टि
से ही जिसमे अन्न पैदा हो सकता हो ऐसा
क्षेत्र-विशेष (आव ६)। °मई छी [°मती]

किन्नरेन्द्र और किपुरुपेन्द्र की अन्न-महिणी का
नाम, इन्द्राणी-विशेष (भग १०, ५, गाथा
२)। °माल न [°माल] वेताव्य पर्वत पर
स्थित इस नाम का एक विद्यावर-नगर (इक)।
केड पु [दे] कन्द, काँदा (दे २, ४४)।
केड पुन [केतु] एक देवविमान (देवेन्द्र
१३४)।

केडग } पुं [केतुक] पाताल-कलश-विशेष
केडय } (सम ७१, ठा ४, २—पत्र २२६)।
केऊर पुन [केयूर] १ हाथ का आभूषण-
विशेष, अङ्गद, वाङ्गवन्द (पात्र, भग ६, ३३)।
२ पु. दक्षिण समुद्र का पाताल-कलश (पव
२७२)।

केऊरपुत्त पुं [दे] गाय तथा भैंस का बच्चा
(संक्षि ४७)।

केऊव पु [केयूप] दक्षिण समुद्र का एक
पालाल-कलश (इक)।

केऊय अक [केऊय] 'के-के' आवाज
करना। वक्त 'पेच्छइ तथो जडागि केऊयतं
महीपडिय' (पउम ५४, ५४)।

केसुअ देखो किसुअ (कुमा)।

केऊई छी [केऊयी] १ राजा दशरथ की एक
रानी, केकय देश के राजा की कन्या (पउम
२२, १०८, उप पृ ३७)। २ आठवें वामुदेव
की माता (सम १५२)। ३ अपर-विदेह के
विभीषण-वामुदेव की माता (आवम)।

केकय पु [केकय] १ देश विशेष, यह देश
प्राचीन वाह्लीक प्रदेश के दक्षिण की ओर
तथा सिन्धु देश की सीमा पर स्थित है। २
इस देश का रहनेवाला (पण्ह १, १)। ३
केकय देश का राजा (पउम २२, १०८)।

केऊसिया छी [केऊसिका] रावण की माता
का नाम (पउम ७, ५४)।

केका छी [केका] मयूर-वाणी। °रव पुं
[°रव] मयूर की आवाज, मयूर-शब्द (गाथा
१, १—पत्र २५)।

केकाडय न [केकायित] मयूर का शब्द (सुपा
७६)।

केकई देखो केऊई (पउम ७६, २६)।

केकय देओ केऊय (पव २७४)।

केकसी छी [केऊसी] रावण की माता (पउम
१०३, ११४)।

खगि पु [खडिगन] जन्तु-विशेष, गेटा (कुमा)।

खगिअ पु [दे] ग्रामेश गाव का मुखिया (दे २, ६६)।

खगी स्त्री [खङ्गी] विदेह वर्ष की नगरी-विशेष (ठा २, ३)।

खगूड वि [दे] १ शठ-प्राय धूर्त मद्दश (शोध ३६ भा)। २ धर्मरहित, नान्तिरु-प्राय (शोध ३५ भा)। ३ निद्रालु। ४ रम-लम्पट (वृह १)।

खच मक [खच्] १ पावन करना, पवित्र करना। २ कसकर बंधना। खचइ (हे ४, ८६)।

खचिअ देखो खइअ = खचिअ (कुमा)। ३ पिञ्जरित (कप्प)।

खचल पु [दे] ऋक्ष भल्लूक, भालू (दे २, ६६)।

खचोल पु [दे] ध्याघ, शेर (दे २, ६६)।

खज पु [खर्ज] वृक्ष-विशेष (म २५६)।

खज वि [खाय] १ खाने योग्य वस्तु (परह १, २)। २ न खाने विशेष (भवि)।

खज वि [क्षय] जिसका क्षय किया जा सके वह (पड्)।

खजत देखो खा।

खजग देखो खज = खाद्य (भग १५)।

खजमाण देखो खा।

खजय देखो खज = खाद्य (परम ६६ १६)।

खजअ वि [दे] १ जीर्ण, सड़ा हुआ। २ उपानवध, जिसको उलाहना दिया गया हो वह (दे २, ७८)।

खजिर (अप) वि [खाद्यमान] जो खाया गया हो वह (सण)।

खज्जू स्त्री [खर्जू] खजली, पामा (राज)।

खज्जूर पु [खर्जूर] १ खजूर का पेठ (कुमा, उत ३४)। २ न खजूर का फल (परम ४१, ६ मुपा ५७)।

खज्जूरी स्त्री [खर्जूरी] खजूर का गच्छ (पात्र, परण १)।

खजोअ पु [दे] नक्षत्र (दे २, ६६)।

खजोअ पु [खद्योत] कीट-विशेष, जुगनू, (मुपा ४७, राया १, ८)।

खट्ट न [दे] १ तीमन, कढी, मोर (दे २, ६७)। २ वि खट्टा, अम्ल (परण १—पर २७, जीव १)। ३ मेह पु [मेव] खट्टे जल की वषा (भग ७, ६)।

खट्टा न [दे] छाया, आतप का अभाव (दे २, ६८)।

खट्टा न [खट्टाङ्ग] १ जिन का एक आयुध (कुमा)। २ चारपाई का पाया या पाठी। ३ प्रायश्चित्तात्मक भिक्षा मागने का एक पात्र। ४ तान्त्रिक मुद्रा-विशेष,

‘हृत्पट्टिय कवाल, न मुयइ नृण सणपि खट्टंग। मा तुह विरहे वानय, वाला कावालिणी जाया’ (वजा ८८)।

खट्टकखड पु [खट्टाक्षक] रत्नप्रभा नामक पृथिवी का एक नकरकावाम, ‘काल काऊण रयणप्पमाए पुहवीए खट्टकखटाभिहाणे नराए पलिओवमाऊ चैव नारगो उववमोत्ति’ (म ८६)।

खट्टा स्त्री [खट्टा] खाट, पलंग, चारपाई (मुपा ३३७, हे १, १६५)। १ महु पु [महु] बीमारी की प्रवृत्ति से जो खाट से उठ न सकता हो वह (वृह १)।

खट्टिअ । [दे खट्टिक] खटोका, मौनिक, खट्टिक । कमाई (गा ६८२, सूय २, २, दे २, ७०)।

खड पु [दे] एक स्तेच्छ-जाति (मृच्छ १५२)।

खड न [दे] वृण, घास (दे २, ६७, कुमा)।

खडइअ वि [दे] मकुचित, सकोच-प्राप्त (दे २, ७२)।

खडग न [पडङ्ग] छ अग, वेद के ये छ अग—शिक्षा, कल्प, व्याकरण, ज्योतिष, छन्द, निरुक्त। १ वि वि [वित्] छहो अगो का जानकार (पि २६५)।

खडकय पुन [खट्टकृत] आहट देना, ध्वनि के द्वारा सूचना, सिकडी वगैरह की आवाज, ‘वियडकवाडकडाए खडकयो निसुणिओ ततो’ (मुपा ४१४)।

खडकार पु [खट्टकार] ऊपर देखो (सुर ११, ११२, विक्र ६०)।

खडकिआ स्त्री [दे] खडकी, छोटा द्वार। खडकी } (कप्प, महा, दे २, ७१)।

खडकिय देखो खडकय (धर्मवि ५६)।

खडखड पु [खट्टखट्ट] खट-खट आवाज (मोह ८६)।

खडखर देखो छडखर (मम्म १४३)।

खडखड पु [खडखड] देखो ग्याडखड (झ)।

खडखड वि [दे] ठोठा और लम्मा (राज)।

खडट्टोविल पु [दे] एक स्तेच्छ जाति (मृच्छ १५२)।

खडणा स्त्री [दे] गैया, गौ (गा ६३६ अ)।

खडहड पु [खट्टखट्ट] सावल वगैरह की आवाज, खट्टार (मुपा ५८२)।

खडहडी स्त्री [दे] जन्तु-विशेष, गिरहरी, गिल्ली (दे २, ७२)।

खडिअ देखो खट्टिअ (गा ६८२ अ)।

खडिअ देखो खलिअ (गा १६२ अ)।

खडिअ पु [दे] दवात, म्याही का पात्र (धर्मवि ५७)।

खडिआ स्त्री [खट्टिका] खडी, लडकी को लिखने की सखी या खडिया (कप्प)।

खडी स्त्री [खटी] ऊपर देखो (प्राह)।

खडुआ स्त्री [दे] मौक्तिक, मोती (दे २, ६८)।

खडुअ अक [आविस् + भू] प्रकट होना, उत्पन्न होना। खडुअति (वजा ४६)।

खडुअ पु [दे] मुट मिर पर उंगली। खडुग } का आघात (वव १)।

खडु सक [मृद्] मर्दन करना। खडइ (हे ४, १२६)।

खडु न [दे] १ शमश्रु, दाढ़ी-मुँछ (दे २, खडुग } ६६, पात्र)। २ बडा, महान् (विस्ते २५७६ टी)। ३ गर्त के आकारवाला (उवा)।

खडुआ स्त्री [दे] १ खानि, आकर (दे २, ६६)। २ पर्वत का खात, पर्वत का गर्त (दे २, ६६)।

३ गर्त, गड्ढा, खड्डा (सुर २, १०३, म १५२, मुपा १५, आ १६, महा, उत २, पचा ७)।

खडुअ वि [मृदित] जिसका मर्दन किया गया हो वह (कुमा)।

खड्डुया स्त्री [दे] छोकर, आघात, ‘खड्डुया मे चवेडा मे’ (उत १, ३८)।

खड्डोलय पु [दे] खड्डा, गर्त, गड्ढा (स ३६३)।

खण सक [खन्] खोदना। खणइ (महा)। कर्म खम्मइ, खणिज्जइ (हे ४, २४४)।

वह खणमाण (सुर २, १०३)। संक-

केवली स्त्री [केवली] ज्योतिष विद्या-विशेष (हास्य १२६, १२६)।

केस पु [केश] केश, बाल (उप ७६८ टी, प्रयौ २६)। °पुर न [°पुर] वैताव्य पर स्थित एक विद्यावर-नगर (इक)। °लोअ पु [°लोच] केशो का उन्मूलन (भग, परह २, ४)। °वाणिज न [°वाणिज्य] केश-वाने जीवों का व्यापार (भग ८, ५)। °हृत्थ, °हृत्थय पु [°हृत्त, °क] केशपाश, समारचित केश, संयत बाल (कप्प, पात्र)।

केस देखो केरिस। स्त्री °सी (अणु १३१)। केस देखो क्लेस (उप ७६८ टी, धम्म २२)।

केसर पु [केशीश्वर] उत्तम कवि, श्रेष्ठ कवि (उप ७२८ टी)।

केसर पुन [केसर] एक देवविमान (देवेन्द्र १४२)।

केसर पुन [केसर] १ पुष्प-रेणु, पराग, किजल्क (से १, ५०, दे ६, १३)। २ सिंह वगैरह के कंधा का बाल, केसरा (से १, ५०, मुपा २१५)। ३ पु वकुल वृक्ष (कप्प, गड्ड, पात्र)। ४ न इस नाम का एक उद्यान, काम्पिल्य नगर का एक उपवन (उत्त १७)। ५ फल विशेष (राज)। ६ मुवर्ण, सोना। ७ छन्द-विशेष (हे १, १४६)। ८ पुष्प-विशेष (गड्ड ११२२)।

केमरा स्त्री [केसरा] १ सिंह वगैरह के स्कन्ध पर के बालों की सटा, 'केमरा य मोहार' (प्राम् ५१, गड्ड, प्रामा)।

केसरि पु [केसरिन्] १ सिंह, वनराज, कण्ठीरव (उप ७२८ टी, से ८, ९४, परह १, ४)। २ हृद-विशेष, नीलवन्त पर्वत पर स्थित एक हृद (सम १०४)। ३ नृप-विशेष, भरत-क्षेत्र के चतुर्थ प्रति वासुदेव (सम १५४)। °द्रह पु [°द्रह] द्रह-विशेष (ठा २, ३)।

केसरिआ स्त्री [केसरिका] साफ करने का कपड़े का टुकड़ा (भग, विसे २५५२ टी)।

केसरिल्ल वि [केसरवन्] कमरवाला (गड्ड)।

केसरी स्त्री [केसरी] देखो केसरिआ, 'तिद-

डकुडियल्लत्तल्लुयं कुसपवित्तयकेमरीहत्थगए' (राया १, ५—पत्र १०५)।

केसव पु [केशव] १ अर्धचक्रवर्ती राजा (सम)। २ श्रीकृष्ण वासुदेव, नारायण (गड्ड)।

केसि वि [क्लेशिन्] क्लेश-युक्त, किमृष्ट (विमे ३१५४)।

केसि पु [केशि] १ एक चैन मुनि, भगवान् पार्श्वनाथ के शिष्य (राय, भग)। २ अमुर-विशेष, अश्व के रूप को धारण करनेवाला एक दैत्य, जिसको श्रीकृष्ण ने मारा था (मुद्रा २६२)।

केसि पु [केशिन्] देखो केसव (पद्म ७५, २०)।

केसिअ वि [केशिक] केशवाला, बाल-युक्त। स्त्री °आ (सूत्र १, ४, २)।

केसी स्त्री [केशी] सातवें वासुदेव की माता (पद्म २०, १८४)।

°केसी स्त्री [°केशी] केशवाली स्त्री, 'विद्वाण-केसी' (उवा)।

केसुअ देखो किंसुअ (हे १, २६, ८६)।

केह (अप) वि [कीट्ठ] कैसा, किस तरह का? (भवि, पड्, कुमा)।

केहिं (अप) अ लिए, वाम्ते (हे ४, ४२५)।

कैअव न [कैतव] कपट, धम्म (हे १, १, गा १२४)।

कोअ देखो कोक (दे २, ४५ टी)।

कोअ देखो कोव (गड्ड)।

कोअड देखो कोटड (पात्र)।

कोआस अक [वि + कस्] विकमना, खिलना। कोयासइ (हे ४, १६५)।

कोआसिय वि [विकसित] विकसित, प्रकुल, खिला हुआ (कुमा, ज २)।

कोइल पु [कोकिल] १ कोयल, पिक (परह १, ४, उप २३, स्वप्न ६१)। २ छन्द का एक भेद (पिंग)। °च्छय पु [°च्छद] वनस्पति विशेष, तलकण्टक (परह १७—पत्र ५२७)।

कोइला स्त्री [कोकिला] स्त्री कोयल, पिकी, 'कोइला पचम सर' (अणु, पात्र)।

कोइला स्त्री [दे] कोयला, काष्ठ के अगार (दे २, ४६)।

कोउआ स्त्री [दे] गोइठा की अग्नि, करीपाग्नि (दे २, ४८, पात्र)।

कोउग } न [कौतुक] १ कुतूहल, अपूर्व वस्तु
कोउय } देखने का अभिलाष (मुर २, २२६)।

२ आश्चर्य, विस्मय (वव १)। ३ उत्तम (राय)। ४ उत्सुकता, उत्कण्ठा (पचव १)।

५ दृष्टि-क्षोपादि से रक्षा के लिए किया जाता काजल का तिलक, रक्षा-वन्धनादि प्रयोग (राय, श्रोप, विपा १, १, परह १, २, धर्म ३)।

६ मौभाग्य आदि के लिए किया जाता स्नपन विम्पापन, धूरा, होम वगैरह कर्म (वव १, राया १, १४)।

कोउणह वि [कुटुण्ण] थोड़ा गरम (धर्मवि ११३)।

कोउहल } देखो कुऊहल (हे १, ११७,
कोउहल } १७१, २, ६६, कुमा, प्राप्र)।

कोउहल्लि वि [कुतूहल्लिन्] कुतूहली, कौतुकी, कुतूहल-प्रिय (कुमा)।

कोऊहल } देखो कुऊहल (कुमा, पि ६१)।
कोऊहल }

कौकण पु [कोङ्कण] देश-विशेष (म ४१२)।

कौकणग पु [कोङ्कणक] १ अनार्य देश-विशेष (इक)। २ वि. उस देश में रहनेवाला (परह १, १, विसे १४१२)।

कौच पु [कौञ्च] १ इस नाम का एक अनार्य देश (परह १, १)। २ पक्षि-विशेष (ठा ७)।

३ द्वीप-विशेष (ती ४५)। ४ इस नाम का एक अमुर (कुमा)। ५ वि. कौञ्च देश का निवासी (परह १, १)।

°रिपु पु [°रिपु] कात्तिकेय, स्कन्द (कुमा)। °वर पु [°वर] इस नाम का एक द्वीप (अणु-टी)।

°वीरग पुन [°वीरक] एक प्रकार का जहाज (बृह १)। देखो कुच।

कौचिगा स्त्री [कुञ्चिका] ताली, कुजी (उप १७७)।

कौचिय वि [कुञ्चित] आकुञ्चित, संकुचित (परह १, ४)।

कौटलय न [दे] १ ज्योतिष-सम्बन्धी सूचना। २ शकुनादि निमित्त-सम्बन्धी सूचना, 'पञ्जणे कौटलयन्स' (श्रोव २२१ भा)।

कौठ देखो कुठ (हे १, ११६ पि)।

कौंड देखो कुड (हे १, २०२)।

खमावणया } स्त्री [क्षमणा] खमाना, माफी
 खमावणा } माँगना (भग १७, ३, राज) ।
 खमाविय वि [क्षमित] माफ किया हुआ
 (हे ३, १५२, सुपा ३६४) ।
 खमिय वि [क्षमित] माफ किया हुआ
 (कुप्र १६) ।
 खम्म देखो खण = खन् । खम्मइ (प्राकृ ६८) ।
 खम्मक्खम पु [दे] १ संग्राम, लड़ाई । २
 मन का दुःख । ३ परचात्ताप का निरवास
 (दे २, ७६) ।
 खय देखो खच । खयड (पड्) ।
 खय अक [क्षि] क्षय पाना, नष्ट होना । खयइ
 (पड्) ।
 खय देखो खग (पात्र) । ३ आकाश तक ऊँचा
 पहुँचा हुआ (से ६, ४२) । °राय पु [°राज]
 पक्षिम्रो का राजा, गरुड-पक्षी (पात्र) । °वइ
 पु [°पति] गरुड-पक्षी (से १५, ५०) ।
 खय न [क्षत] २ ब्रण, घाव, 'खारक्खेव व
 खए' (उप ७२८ टी) । २ वि ब्रणित,
 घवाया हुआ, 'सुणओव्व कीडखओ' (श्रा
 १४, सुपा ३४६, सुर १२, ६१) । °यार
 स्त्री पु [°चार] शिथिलाचारी साधु या
 साध्वी (वव ३) ।
 खय वि [खात] खोदा हुआ (पउम ६१,
 ४२) ।
 खय पु [क्षय] १ क्षय, प्रलय, विनाश (भग
 ११, ११) । २ रोग-विशेष, राज-यक्ष्मा
 (लहुअ १५) । °कारि वि [°कारिन्] नाश-
 कारक (सुपा ६५५) । °काल, °गाल पुं
 [°काल] प्रलय काल, (भवि, हे ४, ३७७) ।
 °गि पु [°गि] प्रलय-काल की आग (से
 १२, ८१) । °नाणि पु [°जानिन्] केवल-
 ज्ञानी, परिपूर्ण ज्ञानवाला, सर्वज्ञ (विसे
 ५१८) । °समय पुं [°समय] प्रलय-काल
 (लहुअ २) ।
 खयर वि [क्षयकर] नाश-कारक (पउम ७,
 ८१, ६६, ३४, पुपफ ८२) ।
 खयंतकर वि [क्षयान्तकर] नाश-कारक
 (पउम ७, १७०) ।
 खयर पुस्त्री [खचर] १ आकाश में चलने-
 वाला, पक्षी (जी २०) । २ विद्याधर, विद्या
 चल से आकाश में चलनेवाला मनुष्य (सुर

३, ८८, सुपा २४०) । °राय पु [°राज]
 विद्याधरो का राजा (सुपा १३४) ।
 खयर देखो खइर = खदिर (अन्त १२, सुपा
 ५६३) ।
 खयरक वि [खादिरक] खदिर-मन्वन्वी । जी.
 °का (सुख २, ३) ।
 खयाल पुन [दे] वश-जाल, वाँस का वन
 (भवि) ।
 खर अक [क्षर्] १ भरना, टपकना । २
 नष्ट होना । खरइ (विसे ४५५) ।
 खर वि [खर] १ निष्ठुर, रुखा, परुष, कठोर
 (सुर २, ६, दे २, ७८, पात्र) । २ पुस्त्री
 गर्दम, गधा (परह १, १, पउम ५६, ४४) ।
 ३ पु. छन्द-विशेष (पिंग) । ४ न तिल का
 तेल (श्रोघ ४०६) । °कंट न [°कण्ट] ववूल
 वगैरह की शाखा (ठा ३, ४) । °कड न
 [°काण्ड] रत्नप्रभा पृथिवी का प्रथम कारुण-
 अश-विशेष (जीव ३) । °कम्म न [°कर्मन्]
 जिसमें अनेक जीवों की हानि होती हो ऐसा
 काम, निष्ठुर घंघा (सुपा ५०५) । °कम्मिअ
 वि [°कर्मिन्] १ निष्ठुर कर्म करनेवाला ।
 २ पु. कोतवाल, दाण्डपाशिक (श्रोघ २१८) ।
 °किरण पु [°किरण] सूर्य, सूरज (पिंग,
 सण) । °दूसण पु [°दूपण] इस नाम का
 एक विद्याधर राजा, जो रावण का बहनोई
 था (पउम १०, १७) । °नहर पु [°नखर]
 श्वापद जन्तु, हिसक प्राणी सुपा १३६,
 ४७४) । °निस्सण पु [°नि स्वन]
 इस नाम का रावण का एक सुभट
 (पउम ५६, ३०) । °मुह पुं [°मुख]
 १ अनार्य, देश-विशेष । २ अनार्य देश-विशेष
 का निवासी (परह १, ४) । °मुही स्त्री
 [°मुखी] १ वाद्य-विशेष (पउम ५७, २३,
 सुपा ५०, औप) । २ नपुसक दासी (वव
 ६) । °यर वि [°तर] १ विशेष कठोर
 (सुपा ६०६) । २ पु. इस नाम का एक
 जैन गच्छ (राज) । °सन्नय न [°संज्ञक]
 तिल का तेल (श्रोघ ४०६) । °साविआ स्त्री
 [°शाविका] लिपि-विशेष (सम ३५) ।
 °स्सर पु [°स्वर] परमाधार्मिक देवों की
 एक जाति (सम २६) ।

खर वि [क्षर] विनखर, अस्यायी (विसे
 ४५७) ।
 खरट सक [खरण्टय्] १ धूत्कारना, निर्भं-
 व्सना करना । २ लेप करना । खरटए (सूक्त
 ४६) ।
 खरट वि [खरण्ट] १ धूत्कारनेवाला, तिर-
 स्कारक । २ उपलिप्त करनेवाला । ३ अशुचि
 पदार्थ (ठा ४, १, सूक्त ४६) ।
 खरटण न [खरणटन] १ निर्भत्सन, परुष-
 भाषण (वव १) । २ प्रेरणा (श्रोघ ४० भा) ।
 खरटणा स्त्री [खरणटना] ऊपर देखो (श्रोघ
 ७५) ।
 खरंठिअ वि [खरण्ठित] निर्भत्सित (कुप्र
 ३१८) ।
 खरसुया स्त्री [दे] वनस्पति-विशेष (संबोध
 ४४) ।
 खरड पु [दे] हाथी की पीठ पर बिछाया
 जाता आभरण (पव ८४) ।
 खरड सक [लिप्] लेपना, पोतना । संकृ-
 खरडि वि (सुपा ४१५) ।
 खरड पु [खरट] एक जघन्य मनुष्य जाति,
 'अह केणइ खरडेण किण्णिउ हट्टम्मि वरुणव-
 णियस्स' (सुपा ३६२) ।
 खरडिअ वि [दे] १ रुखा, रुखा । २ भग्न,
 नष्ट (दे २, ७६) ।
 खरडिअ वि [लिप्] जिसको लेप किया गया
 हो वह, पोता हुआ (श्रोघ ३७३ टी) ।
 खरण न [दे] ववूल वगैरह की कण्टक-मय
 डाली (ठा ४, ३) ।
 खरफरुस पु [खरपरुष] एक नरक म्यान
 (देवेन्द्र २७) ।
 खरय पु [खरक] भगवान् महावीर के कान
 में से खीला (मास कील) निकालनेवाला एक
 वेद्य (वेइय ६६) ।
 खरय पु [दे] १ कर्मकर, नौकर (श्रोघ
 ४३८) । २ राहु (भग १२, ६) ।
 खरहर अक [खरखराय्] 'खर-खर' आवाज
 करना । वक्त्र खरहरत (गडड) ।
 खरहिअ पुं [दे] पौत्र, पोता, पुत्र का पुत्र
 (दे २, ७२) ।
 खरा स्त्री [खरा] जन्तु-विशेष, नेवला की तरह
 भुज से चलनेवाला जन्तु-विशेष (जीब २) ।

कोट्ट पु [कोट्ट] १ धारण, अवधारित अर्थ का कालान्तर मे स्मरण-योग्य अवस्थान (एदि १७६)। २ सुगन्धी द्रव्य-विशेष (राय ३४)।

कोट्ट { देवो कुट्ट = कोठ (राया १, १, ठा ३, १, पात्र)। ३ आश्रय-विशेष, कोट्टय { आवास-विशेष (श्रोव २००, वव १)। ४ अपवरक, कोठरी (दस ५, १, उप ५८६)। ५ चैत्य-विशेष (राया २, १)।

°गार न [°गार] धान्य भरने का घर (श्रोव, कप्प)। २ भाएडागार, भंडार (राया १, १)।

कोट्टार पुंन [कोट्टागार] भाएडागार, भंडार, (पउम २, ३)।

कोट्टि वि [कुट्टिन] कुष्ठ रोगी (आचा)।

कोट्टिया स्त्री [कोट्टिका] छोटा कोठ, लघु कुशल (उवा)।

कोट्टु पु [कोट्टु] शृगाल, सियार (पड्)।

कोड्ड देखो कोदड (स २५६)।

कोडडिय देखो कोदडिय (कप्प)।

कोडव न [दे] कार्य, काम काज (दे २, २)।

कोडय [दे] देखो कोडिअ (पाम)।

कोडर न [कोटर] गह्वर, वृक्ष का पोल भाग, विवर (गा ५६२)।

कोडल पु [कोटर] पक्षि-विशेष (राज)।

कोडाकोडि स्त्री [कोटाकोटि] सख्या-विशेष, करोड को करोड से गुनने पर जो सख्या लव्य हो वह (मम १०५, कप्प, उव)।

कोडाल पु [कोडाल] १ गोत्र-विशेष का प्रवर्तक पुरुष। २ न. गोत्र-विशेष (कप्प)।

कोडि स्त्री [कोटि] १ धनुष का अग्र भाग (राय ११३)। २ भेद, प्रकार (पिड ३६५)।

कोडि स्त्री [कोटि] १ संख्या विशेष, करोड, १००००००० (राया १, ८, सुर १, ६७, ४, ६७)। २ अग्र-भाग, अणी, नोक (सि १२, २६, पात्र)। ३ अंश, विभाग, भाग, 'नत्यिक्कमो पणसो लोए वालग्गकोडिमित्तोवि' (पव्व ३६, ठा ६)। °कोडि देखो कोडा-कोडि (मुपा २६६)। °वद्ध वि [°वद्ध] करोड सख्यावाला (वव ३)। °भूम स्त्री [°भूमि] एक जैन तीर्थ (ती ४३)। °सिला स्त्री [°शिला] एक जैन तीर्थ (पउम ४८,

६६)। °सो अ [°शस्] करोडो, अनेक करोड (मुपा ४२०)। देवो कोडी।

कोडिअ न [दे] १ छोटा मिट्टी का पात्र, लघु सराव, मकोरा (दि २, ४७)। १ पु पिशुन, दुर्जन, चुगलखोर (पड्)।

कोडिअ पु [कोटिरु] १ एक जैन मुनि (कप्प)। २ एक जैन मुनि-गण (कप्प, ठा ६)।

कोडिअ वि [कोटित] सकोचित (धर्मसं ३८८)।

कोडिण न [कोडिन्य] १ इस नाम का कोडिअ एक नगर (उप ६४८ टी)। २ वाशिष्ठ गोत्र की शाखा रूप एक गोत्र (कप्प)।

३ पु. कौडिन्य गोत्र का प्रवर्तक पुरुष। ४ वि. कौडिन्य-गोत्रीय (ठा ७—पत्र ३६०, कप्प)। ५ पु. एक मुनि, जो शिवमूर्ति का शिष्य था (विसे २५५२)। ६ महागिरि-

सूरि का शिष्य, एक जैन मुनि (कप्प)। ७ गोतम स्वामी के पास दीक्षा लेनेवाले पाँच सौ तापसों का गुरु (उप १४२ टी)।

कोडिन्ना स्त्री [कौण्डिन्या] कौडिन्य-गोत्रीय स्त्री (कप्प)।

कोडिल पु [दे] पिशुन दुर्जन, चुगलखोर (दे २, ४०, पड्)।

कोडिल देखो कोट्टिल (राज)।

कोडिल पु [कौटिल्य] इस नाम का एक ऋषि, चाणक्य मुनि (वव १, अणु)।

कोडिल्लय न [कोटिल्लय] चाणक्य-प्रणीत नीति-शास्त्र (अणु)।

कोडिसाहिय न [कोटिसहित] प्रत्याख्यान विशेष, पहले दिन उपवास करके दूसरे दिन भी उपवास की ली जाती प्रतिज्ञा (पव ४)।

कोडी देखो कोडि (उव, ठा ३, १, जो ३७)। °करण न [°करण] विभाग, विभजन (पिड ३०७)। °णार न [°नार]

इस नाम का मोरठ देश का एक नगर (ती ५६)। °मातसा स्त्री [°मातसा] गान्धार ग्राम की एक मूर्च्छना (ठा ७—पत्र ३६३)।

°वरिस न [°वर्ष] लाट देश की राजधानी, नगर-विशेष (इक, पव १७४)। °वरिसिया स्त्री [°वर्षिका] जैन मुनि-गण की एक

शाखा (कप्प)। °सर पुं [°श्वर] करोट पति, कोटीश (मुपा ३)।

कोडीण न [कोडीन] १ इस नाम का एक गोत्र, जो कौत्स गोत्र की एक शाखा रूप है। २ वि. इस गोत्र मे उत्पन्न (ठा ७—पत्र ३६०)।

कोडुं व न [दे] कार्य, काज (दे २, २)।

कोडुं वि देखो कुडु वि (ठा ३, १—पत्र १२५)।

कोडुविय पु [कौटुम्बिक] १ कुटुम्ब का स्वामी, परिवार का स्वामी, परिवार का मुखिया (भग)। २ ग्राम-प्रधान, गाँव का आदमी (पएह १, ५—पत्र ६४)। ३ वि. कुटुम्ब मे उत्पन्न, कुटुम्ब मे सम्बन्ध रखने-वाला, कुटुम्ब-सम्बन्धी (महा, जीव ३)।

कोडूसग पु [कोटूपक] अन्न-विशेष, कोदो की एक जाति (राज)।

कोडु [दे] देखो कुडु (दे २, ३३, स ६४१, ६४२, हे ४, ४२२, राया १, १६—पत्र २२४, उप ८६२, भवि)।

कोडूम देखो कोट्टुम (कुमा)।

कोडुमिअ न [रत] रति-कोडा-विशेष (कुमा)। कोडुय वि [दे] कुतुहली, कौतुकी, विनोद-शील, उत्कण्ठित (उप ७६८ टी)।

कोड्ड { पु [कुट्टि] रोग-विशेष, कुष्ठ-रोग कोड { पि ६६, राया १, १३, आ २०)।

कोडि वि [कुट्टिन] कुष्ठ-रोग से ग्रस्त, कुष्ठ-रोगी (आचा)।

कोडिरु { वि [कुट्टिरु] कुष्ठ-रोगी, कुष्ठ-कोडिय { ग्रस्त (पएह २, ५ विपा १, ७)।

कोण वि [दे] १ काला, श्याम वर्णवाला (दे २, ४५)। २ पुं. लकुट, लकड़ी, यष्टि (दे २, ४५, निचू १, पात्र)। ३ वीणा वगैरह वजाने की लकड़ी, वीणा-वादन-दण्ड (जीव ३)।

कोण { पुन [कोण] कोन, घन्न, घर का कोणग { एक भाग (गठड, दे २, ४५, रंभा)।

कोणव पु [कौगप] राक्षस, पिशाच (पात्र)।

कोणायल पुं [कोगाचल] भावान् शान्ति-नाथ के प्रथम श्रावक का नाम (विचार ३७८)।

कोणालग पु [कोनालरु] जलचर पक्षि-विशेष (पएह १, १)।

१, १८) । सकृ खवइत्ता, खवित्तु, खवेत्ता ।
(भग १५, सम्य १६, श्रौप) ।

खव पु [दे] १ वाम हात, बाया हाथ । २
गर्दभ, रामभ (दे २, ७७) ।

खवग वि [क्षपक] १ नाश करनेवाला, क्षय
करनेवाला । २ पु तपस्वी जैन-मुनि (उव
भाव ८) । ३ वि क्षपक श्रेणि मे आरुढ
(कम्म ५) । ४ सेढि लो [श्रेणि] क्षपण-
क्रम कर्मों के नाश की परिपाटी (भग ६
११, उवर ११४) ।

खवडिज [दे] स्वलित, स्वलन-प्राप्त
(दे २, ७१) ।

खवग १ न [क्षपण] १ क्षय, नाश (जोत) ।
खवग २ डालना, प्रक्षेप (कम्म ४, ७५) ।

३ पु जैन-मुनि (विमे २५८५, मुद्रा ७८) ।
खवग देखो खमण, 'विहिय पक्खखवणे सो'
(धर्म २३) ।

खवगा लो [क्षणा] अध्ययन, शास्त्र-प्रकरण
(अणु २५०) ।

खवय पु [दे] स्कन्ध, कंधा (दे २, ६७) ।
खवय देखो खवग (सम २६, आरा १३,
आचा) ।

खवलिअ वि [दे] क्रुपित, क्रुद्ध (दे २, ७२) ।
खवल्ल पु [खवल्ल] मत्स्य-विशेष (विपा १,
८—पत्र ८३ टी) ।

खवा लो [क्षपा] रात्रि, रात । १ जल न
[जल] आवश्यक, हिम (ठा ४, ४) ।

खाविअ वि [क्षपित] १ विनाशित, नष्ट किया
हुआ (सुर ४ ५७, प्राप) । २ उद्वेजित (गा
१३४) ।

खव्व पु [दे] १ वाम कर, बाया हाथ ।
२ रामभ, गधा (दे २, ७७) ।

खव्व वि [खवे] वामन, कुब्ज, नाटा (पात्र) ।

खव्व वि [खवे] लघु, थोड़ा, 'अखव्वगव्वो
दमो आमि' (मिरि ६७५) ।

खव्वुर देखो कव्वुर (विक्र २८) ।

खव्वुल न [दे] मूँह, मुख (दे २, ६८) ।

खव्व अक [दे] खिमकना, गिर पडना । खसइ
(पिंग) ।

खस पु व [खम] १ अनार्य देश-विशेष,
हिन्दुस्थान के उत्तर में स्थित इम नाम का
एक पहाड़ी मूलक (पउम ६८ ६६) । २ पुच्छी

खस देश में रहनेवाला मनुष्य (पएह १—पत्र
१४, इक) ।

खसरस पु [खसखस] पोस्ता का दाना,
उशीर, खस (स ६६) ।

खसफम अक [दे] खसना, खिसकना, गिर

पडना । वक्क खमफमेमाण (सुर २, १५) ।

खसफमि वि [दे] व्याकुल, अधीर । १ हूअ
वि [भूत] व्याकुल बना हुआ (हे ४,
४२२) ।

खसर देखो कसर = दे कमर (जं २, स
८८०) ।

खसिअ देखो खइअ = खचित (हे १, १६३) ।

खसिअ न [कसिन] रोग-विशेष, खाँसी
(हे १, १८१) ।

खसिअ वि [दे] खिसका हुआ (सुपा २८१) ।

खसु पुं [दे] रोग-विशेष, पामा, गुजराती में
'खम' (सण) ।

खह पुंन [खह] प्राकाश, गगन (भग २०,
२—पत्र ७७५) ।

खह देखो ख (ठा ३, १) ।

खहयर देखो खयर (श्रौप, विपा १, १) ।

खहयरी लो [खचरी] १ पक्षिणी, मादा
पक्षी । २ विद्यावरी, विद्याधर की लो (ठा
३, १) ।

खा १ सक [खाद्] खाना, भोजन करना,
खाअ १ भक्षण करना । खाइ खामइ, खाउ

(हे ४ २२८) । खति (सुपा ३७० महा) ।

अवि खाहिइ (हे ४, २२८) । कर्म खजइ
(उव) । वक्क खत, खायत, खायमाण

(कर १४, पउम २२, ७५, विपा १, १),
'खंता पिअता इह जे मरति पुणोवि ते खति

पिअति राय' (कर १४) । कवक्क खज्जत,
खज्जमाण (पउम २२, ४३ गा २४८

पउम १७, ८१, ८२, ४०) । हेक्क खइउ
(पि ५७३) ।

खाअ वि [ख्यात] प्रसिद्ध, विश्रुत (उप ३२६,
६२३, नव २७, हे २, ६०) । १ किंत्तीय वि

[कीर्त्तिक] यशस्वी, कीर्त्तिमान् (पउम ७,
४८) । २ जस वि [यशम्] वही अर्थ

(पउम ५ ८) ।
खाअ वि [खादत्त] भुक्त, भक्षित, खाउगि-
रण—' (गा ६६८, भवि) ।

खाअ वि [खात] १ खुदा हुआ । २ न. खुदा
हुआ जलाशय, 'खाओदगाई' (कप्प) । ३
ऊपर में विस्तारवाली और नीचे में सकुचित
ऐसी परिखा । ४ ऊपर और नीचे समान रूप
से खुदा हुई परिखा (श्रौप) । ५ खाई, परिखा
पात्र) ।

खाइ लो [खाति] खाई, परिखा (सुपा २६४) ।

खाइ लो [ख्याति] प्रसिद्धि, कीर्त्ति (सुपा
५२६ ठा ३, ४) ।

खाइ [दे] देखो खाइ (श्रौप) ।

खाइअ देखो खइअ = क्षायिक (विमे ४६,
२१७५ सत्त ६७ टी) ।

खाइअ वि [खातिन] खाया हुआ, भुक्त,
भक्षित (प्राप, निर १, १) ।

खाइआ लो [दे खातिआ] खाई, परिखा
(दे २, ७३, पात्र, सुपा ५२६, भग ५, ७,
पएह २, ५) ।

खाइ अ [दे] १—२ वाक्य की शोभा और
पुन शब्द के अर्थ का सूचक अव्यय (भग ५,
४, श्रौप) ।

खाइग देखो खाइअ = क्षायिक (सुपा ५५१) ।

खाइम न [खादिम] अन्न-वर्जित फल, श्रौपव
वगेरह खाद्य चीज (सम ३६, ठा ४२,
श्रौप) ।

खाइर वि [खादिर] गदिर-वृक्ष-सम्बन्धी, खैर
का, कथई (हे १, ६७) ।

खाउय न [खाद्यक] खाद्यपदार्थ (मूलशुद्धि
गा० १७६, देवदत्त कथा गा ६ पछी) ।

खाओवसम १ देखो खओवसमिय (सुपा
खाओवसमिअ ५५१, ६४८, सम्य २३) ।

खाओवसमिग देखो खाओवसमिअ (अज्ज
६८, मम्मक्खो ५) ।

खाइइअ वि [दे] प्रतिफलित, प्रतिबिम्बित
(दे २ ७३) ।

खाइखइ पु [खाइखइ] चौथी नरक-भूमि की
का एक नरकावास (ठा ६) ।

खाइहिलो लो [दे] एक प्रकार का जानवर,
गिलहरी, गिल्ली (पएह १, १, उप पृ २०५
विसे ३०४ टी) ।

खाण पु [दे] एक म्लेच्छजाति (मृच्छ
१५२) ।

खाण न [खादन] भोजन, भक्षण, 'खाणेण

विशेष, जहाँ श्रीऋषभदेव भगवान् का मंदिर है, यह नगर दक्षिण में है (ती ४५) । °पाल पु [°पाल] देव विशेष, वरुणेश्वर का लोकपाल (ठा ३, १—पत्र १०७) । °सुणय, °सुणह पुत्री [°शुनक] १ बड़ा शूकर, सूअर की एक जाति, जंगली बराह (आचा २, १, ५) । २ शिकारी कुत्ता (पण ११) । स्त्री °गिया (पण ११) । °वास पुंन [°वास] काष्ठ, लकड़ी (मम ३६) ।

कोल वि [कौल] १ शक्ति का उपासक, तान्त्रिक मत का अनुयायी । २ तान्त्रिक मत से सबन्ध रखनेवाला, 'कोलो धम्मो कस्स गो भाइ रम्मो' (कप्पु) । ३ न बदर-फल-सबन्धी (भग ६, १०) । °चुण्ण न [°चूर्ण] वेर का चूर्ण, वेर का मत्तू (दम ५, १) । °द्विय न [°स्थिक] वेर की गुठिया या गुठली (भग ६, १०) ।

कोलच पु [दे] पिठर, स्थाली (दे २, ४७, पात्र) । २ गृह, घर (दे २, ४७) ।

कोलच पु [कोलच] वृक्ष की शाखा का नामा हुआ अत्र भाग (अनु ५) ।

कोलगिणी स्त्री [कोली, कौलकी] कोल-जातीय स्त्री (आचा ४) ।

कोलधरिय वि [कौलगृहिक] कुलगृह-सबन्धी, पितृगृह-सबन्धी, पितृगृह से संबन्ध रखनेवाला (उवा) ।

कोलजा स्त्री [दे] धान्य रखने का एक तरह का गर्त (आचा २, १, ७) ।

कोलर देखो कोटर (गा ५६३ अ) ।

कोलव न [कौलव] ज्योतिष-शास्त्र में प्रसिद्ध एक करण (विसे ३३४८) ।

कोलाल वि [कौलाल] १ कुम्भकार-सबन्धी । २ न मिट्टी का पात्र (उवा) ।

कोलालिय पु [कौलालिक] मिट्टी का पात्र बेचनेवाला (वृह २) ।

कोलाह पुं [कोलाभ] साप की एक जाति (पण १) ।

कोलाहल पु [दे] पक्षी की आवाज, पक्षी का शब्द (दे २, ५०) ।

कोलाहल पु [कोलाहल] तुमुल, शोरगुल, रौला, हल्ला, बहुत दूर जानेवाला अनेक प्रकार

का अस्फुट शब्द (दे २, ५०; हेका १०५, उन ६) ।

कोलाहलिय वि [कोलाहलिक] कोलाहल-वाला, शोरगुलवाला (पउम ११७, १६) ।

कोलिअ पुं [दे] एक अवम मनुष्य जाति (मुख २, १५) ।

कोलिअ पु [दे] कोली, तन्तुवाय, जुलाहा, कपड़ा बुननेवाला (दे २, ६५, एदि, पव २, उप पृ २१०) । २ जाल का कीड़ा, मकड़ा (दे २, २५, पात्र, आ २०, आच ४, वृह १) ।

कोलित्त न [दे] उल्मुक, लूका (दे २, ४६) ।

कोलिन्न न [कौलीन्य] कुलीनता, खानदानी (धर्मवि १४६) ।

कोलीकय वि [कोलीकृत] स्वीकृत, ग्रंथकृत (गउड) ।

कोलीण न [कौलीन] १ किंवदन्ती, लोक वार्ता, जन-श्रुति (मा ३७) । २ वि. वंश-परंपरागत, कुलक्रम में आयात । ३ उत्तम कुल में उत्पन्न । ४ तान्त्रिक मत का अनुयायी (नाट—महावी १३३) ।

कोलीर न [दे] लाल रंग का एक पदार्थ, कुसुमिन्द, 'कोलीररत्तणयणेश्वर' (दे २, ४६) ।

कोलुण्ण न [कारुण्य] दया, अनुकम्पा, करुणा (निचू ११) । °पडिया, °वडिया स्त्री [°प्रतिज्ञा] अनुकम्पा की प्रतिज्ञा (निचू ११) ।

कोलेज्ज पुं [दे] नीचे गोल और ऊपर खाई के आकार का धान्य आदि भरने का कोठा (आचा २, १, ७, १) ।

कोलेय पुं [कौलेयक] श्वान, कुत्ता (सम्मत्त १६०, धर्मवि ५२) ।

कोल पु न [दे] कोयला, जली हुई लकड़ी का टुकड़ा (निचू १) ।

कोलडर न [कोलकिर] नगर-विशेष (पिड ४२७) ।

कोलपाग न [कोलपाक] दक्षिण देश का एक नगर, जहाँ श्री ऋषभदेव का मन्दिर है (ती ४५) ।

कोलर पु [दे] पिठर, स्थाली, थाली, थरिया (दे २, ४७) ।

कोला देखो कुला (कुमा) ।

कोलाग देखो कुलाग (अत) ।

कोलापुर न [कोलापुर] दक्षिण देश का एक नगर, महालक्ष्मी का स्थान (ती ३४) ।

कोलासुर पु [कोलासुर] इस नाम का एक दैत्य (ती ३५) ।

कोल्लुग [दे] देखो कोल्लुअ (वव १, वृह १) ।

कोल्लाहल न [दे] फल-विशेष, विन्वी-फल (दे २, ३६) ।

कोल्लुअ पुं [दे] १ शृगाल, सियार (दे २, ६५, पात्र, पउम ७, १७, १०५, ४२) ।

२ कोल्लू, चरखी, ऊख में रस निकाने का कल (दे २, ६५, महा) ।

कोव सक [कोपय्] १ दूषित करना । २ कुपित करना । कोवेइ (सूअनि १२५), कोवइज्ज (कुप्र ६४) ।

कोव पु [कोप] क्रोध, गुस्सा (दिता १, ६, प्रासू १७५) ।

कोवण वि [कोपन] क्रोधी, क्रोध-युक्त (पात्र, सुपा ३८५, सम ३४७, स्वप्न ८२) ।

कोवाय पु [कोपक] अनायें देश-विशेष (पव २७४) ।

कोवासिअ देखो कोआसिय (पात्र) ।

कोवि वि [कोपिन्] क्रोधी, क्रोध-युक्त (सुपा २८१, आ २०) ।

कोविअ वि [कोविद्] निपुण, विद्वान्, अभिज्ञ (आचा, सुपा १३०, ३६२) ।

कोविअ वि [कोपित] १ क्रुद्ध किया हुआ । २ दूषित, दोष-युक्त किया हुआ, 'वडरो विर दाहो वायणति नवि कोविय वयण' (उवा) ।

कोविआ स्त्री [दे] शृगाली, मियारिन (दे २, ४६) ।

कोविआर पु [कोविदार] वृक्ष-विशेष (विक्र ३३) ।

कोविणी स्त्री [कोपिनी] कोप युक्त स्त्री (आ १२) ।

कोशण (मा) वि [कटुण्ण] घोड़ा गम्भ (प्राकृ १०२) ।

कोस पु [दे] १ कुसुम्भ रंग से रंगा हुआ रक्त वस्त्र । २ समुद्र, जलधि, सागर (दे २, ६५) ।

कोस पुं [कोश] कोस, मार्ग की लम्बाई का परिमाण, दो मील (कप्प, जी ३२) ।

खिखिणी स्त्री [किङ्किणी] ऊपर देखो (ठा १०, एया १, १, अजि २७)।

खिखिणी स्त्री [दे] शृगाली, स्त्री-सियार (दे २, ७४)।

खिग पु [खिङ्ग] रडोवाज, व्यभिचारी: 'अरोगाखिगजणउवासियरसणे' (रंभा)।

खिस सक [खिस्] निन्दा करना, गर्हा करना, तुच्छकारना। खिसए (आचा)। कर्म खिसिजइ (वृह १)। कवकू खिसि-ज्जत (उप ५८८)। कू खिसणिज्ज (एया १, ३)।

खिमण न [खिसन] अवर्णवाद, निन्दा, गर्हा (औप)।

खिस गा स्त्री [खिसना] निन्दा, गर्हा (औप, उप १३४ टी)।

खिमा स्त्री [खिसा] ऊपर देखो (औष ६०, द्र ४२)।

खिसिय वि [खिसित] निन्दित गहिंत (ठा ६)।

खिक्खिड पु [दे] कृकलास, गिरगिट, सरट (दे २, ७४)।

खिक्खियत वि [खिखीयमान] 'खि-खि' आवाज करता (पणह १, ३—पत्र ४६)।

खिक्खिरी स्त्री [दे] डोम बगैरह का स्पशं रोकने की लकड़ी (दे २, ७३)।

खिष पुन [दे] खीचडी, कसरा (दे १, १३४)।

खिज्ज अक [खिद्] १ खेद करना,, अफसोस करना। २ उद्विग्न होना, थक जाना।

खिज्जइ, खिज्जए (स ३४, गउड, पि ४५७)। कू खिज्जियव्व (महा, गा ५१३)।

खिज्जणिया स्त्री [खेदनित्रा] खेद-क्रिया अफसोस, मन का उद्वेग (एया १, १६—पत्र २०२)।

खिज्जिअ न [दे] उगलम्भ, उलाहना (दे २, ७४)।

खिज्जिअ वि [खिज्ज] १ खेद प्राप्त। २ न खेद (स ५५५)। ३ प्रणय-जन्य रोप (एया १, ६—पत्र १६५)।

खिज्जिअय न [खेदितक] छन्द-विशेष (अजि ७)।

खिज्जिअ वि [खेदित्] खेद करनेवाला, खिन्न होने की आदतवाला (कुमा ७, ६०)।

खिड्ड न [खेल] खेल, क्रीडा, मजाक, 'खिड्डेण भए भणिय एयं' (सुपा ३०२), 'बालत्तण खिड्डपरो गमेइ' (सत्त ६८)। °कर वि [°कर] खेल करनेवाला, मजाक करनेवाला (सुपा ७८)।

खिण्ण वि [खिन्न] १ खिन्न, खेद प्राप्त। २ श्रान्त, थका हुआ (दे १, १२४, गा २२६)।

खिण्ण देखो खाण (प्राप)।

खित्त वि [क्षिप्त] १ फेंका हुआ (सुर ३, १०२, सुपा ३५७)। २ प्रेरित (दे १, ६३)।

°इत्त, °चित्त वि [°चित्त] भ्रान्त-चित्त, विक्षिप्त-मनस्क, पागल (ठा ५, २, औष ४६७, ठा ५, १)। °मण वि [मनम्] चित्त भ्रमवाला (महा)।

खित्त देखो खेत्त (अणु, प्रासू, पडि)। °देवया स्त्री [°देवता] क्षेत्र का अधिष्ठापक देव (आ ४७)।

°वाल पु [पाल] देव-विशेष, क्षेत्र-रक्षक देव (सुपा १५२)।

खित्तज पुं [क्षेत्रज] गोद लिया हुआ लडका, 'खित्तज सुएणावि कुल वट्टउ (कुप्र २०८)।

खित्तय न [क्षिप्तक] छन्द विशेष (अजि २४, २५)।

खित्तय न [दे] १ अनर्थ, नुकसान। २ वि. दीप्त, प्रज्वलित (दे २, ७६)।

खित्तअ वि [क्षेत्रिक] १ क्षेत्र-सम्बन्धी। २ पु व्याधि-विशेष, 'तालुपुडं गरलाण जह बहुवाहीण खित्तिओ वाही' (आ १२)।

खिन्न देखो खिण्ण = खिन्न (प्राप्त, महा)।

खिप्प अक [कृप्] १ समर्थ होना। २ दुर्बल होना। खिप्पइ (सक्षि ३५)।

खिप्प वि [क्षिप्र] शीघ्र, त्वरा युक्त। °गइ वि [°गति] १ शीघ्र गतिवाला। २ पु. अमितगति इन्द्र का एक लोकपाल (ठा ४, १)।

खिप्पं अ [क्षिप्रम्] तुरन्त, शीघ्र, जल्दी (प्रासू ३७, पडि)।

खिप्पत देखो खिव।

खिप्पामेव अ [क्षिप्रमेव] शीघ्र ही, तुरन्त ही (जं ३, महा)।

खिमा स्त्री [क्ष्मा] पृथिवी (चड)।

खिर अक [क्षर्] १ गिरना, गिर पडना। २ टपकना, भरना। खिरइ (हे ४, १७३)।

वक्र. खिरत (पत्रम १०, ३२)।

खिरिय वि [क्षरित] १ टपका हुआ। २ गिरा हुआ (प्राप्त)।

खिल न [खिल] अकट-भूमि, ऊपर जमीन (पणह १, २—पत्र २६)।

खिलीकरण न [खिलीकरण] खाली करना, शून्य करना, 'जुवजणधोरखिलीकरणकवाडयो वेमवाडयो' (मै ८)।

खिल सक [कीलय्] रोकना, रुकावट डालना, 'भणइ इमाण वन्धव। गमाण खिलेमि कट्टिउ रेह' (सुपा १३७)।

खिल अक [खेल्] क्रीडा करना, खेल करना, तमाशा करना। वक्र. खिलंत (सुपा ३६६)।

खिल पुं [दे] फोडा, फुनसी, गुजराती में 'खील' (तंदु ३८)।

खिलण न [खिलन] खिलौना, खेलनक (सुर १५, २०८)।

खिलहड } पु [दे. खिलहड] कन्द विशेष
खिलहल } (आ २०, धर्म २)।

खिल्लुहडा स्त्री [दे] कन्द-विशेष (सबोव ४४)।

खिव सक [क्षिप्] १ फेंकना। २ प्रेरना। ३ डालना। खिवइ, खिवेइ (महा)। वक्र

खिवेमाण (एया १, २)। कवकू खिप्पत (काल)। संकू. खिविय (कम्म ४, ७४)।

कू खिवियव्व (सुपा १५०)।

खिवण न [क्षेपण] १ फेंकना, क्षेपण (से १२, ३६)। २ प्रेरण, इधर-उधर चलाना (से ५, ३)।

खिविय वि [क्षिप्त] १ क्षिप्त, फेंका हुआ। २ प्रेरित (सुपा २)।

खिव्व देखो खिव। संकू 'अह खिच्चिऊण सव्व, पोए ते पत्थिया रयणभूमि' (कम्म १२ टी)।

खिस अक [दे] सरकना, खिसकना। संकू 'अह नियगामे गच्छतस्म खिसिऊण वाहणा-

हितो पडिय (सुपा ५२७, ५२८)।

खीण देखो खिण्ण = खिन्न, 'कोवेत्थ सुरय-खीणो' (पत्रम ३२, ३)।

खीण वि [क्षिण] १ क्षय-प्राप्त, नष्ट, विखिन्न (कम्म ६०, हे २, ३)। २ दुर्बल, कृश (भग २, ५)। °दुह वि [°दुख] दुःख-

रहित (मम १५३)। °मोह वि [°मोह] १ जिसका मोह नष्ट हो गया हो वह (ठा ३

देव-विमान-विशेष (ती ५६) । ३ पु. व्यन्तर-
श्रेणीय देव-जाति-विशेष (पव १६४) ।
कोहडी ली [कूष्माण्डी] कोहडे का गछ
(हे १, १२४, दे २, ५० टी) ।
कोहण वि [क्रोधन] १ क्रोधी, गुम्माखोर
(सम ३७, पचम ३५, ७) । २ पुं इम नाम
का रावण का एक सुभट (पचम ५६, ३२) ।
कोहल देखो कुऊहल (हे १, १७१) ।
कोहलिअ वि [कुहलिन] कुतूहली,
कुतूहल-प्रेमी । ली °आ (गा ७६८) ।
कोहलिआ ली [कूष्माण्डिका] कोहडा का
गाछ,
‘जह लंधेसि परवइ निययवड
भरसहपि मोत्तूण ।

तह मण्णे कोहलिए, अज्जं
कल्लपि फुट्टिहिसि (गा ७६८) ।
कोहली देखो कोहडी (हे २, ७३, दे २,
५० टी) ।
कोहल देखो कोहल (पड) ।
कोहली ली [दे] तापिका, तवा, पचन-पात्र-
विशेष (दे २, ४६) ।
कोहली देखो कोहडी (पड) ।
कोहि } वि [क्रोधिन] क्रोधी, क्रोधी-स्वभाव का
कोहिल } गुम्माखोर (कम्म ४, १४०, वृह २) ।
कौरव } देखो कउरव (हे १, १, चड) ।
कौलव }
°किसिय देखो किसिय = कृपित (उप
७२८ टी) ।

°कूर देखो कूर = कूर । (वा २६) ।
°कूर देखो °कूर (हे २, ६६) ।
°कखड देखो खड (गउड) ।
°कखभ देखो खभ (से ३, ५६) ।
°कखम देखो खम (ग्रमू २७) ।
°कखलण देखो खलण (गउड) ।
°खिखसा देखो खिसा (सुपा ५१०) ।
°कखु देखो खु (कप्पू, अग्नि ३७, चार १४) ।
°कखुत्त देखो खुत्त (गउड) ।
°कखेडु देखो खेडु (सुपा ५५२) ।
°कखेव देखो खेव, ‘खारखेव व खए’ (उप
७२८ टी) ।
°कखोडी देखो खोडी (पएह १, ३) ।

॥ इअ सिरिपाइअमदमहणवे कयाराइसदसकलणो
दममो तरणो समत्तो ॥

ख

ख पुं [ख] १ व्यजन-वर्ण विशेष, इसका
स्थान कण्ठ है (प्राप्ता, प्राप) । २ न आकाश,
गगन, ‘गजते खे मेहा’ (हे १, १८७, कुमा,
दे ६, १२१) । ३ इन्द्रिय (विसे ३४४३) ।
°ग पु [°ग] १ पक्षी, खग (पात्र, दे २,
५०) । २ मनुष्य की एक जाति, जो विद्या
के बल से आकाश में गमन करती है, विद्यावर-
लोक (आरा ५६) । देखो खय = खग ।
°गइ ली [°गति] १ आकाश-गति । २ कर्म-
विशेष, जो आकाश-गति का कारण है (कम्म
२, ३, नव ११) । °गामिणी ली [°गामिनी]
विद्या-विशेष, जिसके प्रभाव से आकाश में
गमन किया जा सकता है (पचम ७, १४५) ।
°पुप्फ न [°पुप्प] आकाश-कुसुम, असभावित
वस्तु (कुमा) ।
खअ } सक [खव] संपत्ति-युक्त करना ।
खउर } खमइ, खउरइ (प्राक् ७३) ।
खइ वि [क्षयिन] १ क्षयवाला, नाशवाला ।

२ क्षय रोगवाला, क्षय-रोगी (सुपा २३३,
५७६) ।
खइअ वि [क्षपित] नाशित, उन्मूलित (औप,
भवि) ।
खइअ वि [खचित] १ व्याप्त, जटित । २
मण्डित, विभूषित (हे १, १६३, औप, स
११४) ।
खइअ वि [खादित] १ खाया हुआ, भुक्त,
ग्रस्त (पात्र, स २५०, उप पु ४६) । २
आक्रान्त, ‘तह य होति उ कसाया । खइओ
जेहि मणुम्मो कजाकजाई न मुणेइ’ (स
११४) । ३ न. भोजन, भक्षण, ‘खइएण व
पोएण व न य एसो ताइओ हवइ अणा’
(पञ्च ६२, ठा ४, ४—पत्र २७६) ।
खइअ वि [क्षयित] क्षय-प्राप्त, क्षीण, ‘किमि-
कायखइयवेहो’ (सुर १६, १६१) ।
खइअ पुं [दे] हेवाक, स्वभाव (ठा ४, ४—
पत्र २७६) ।

खइअ } पु [क्षायिक] १ क्षय, विनाश,
खइअ } उन्मूलन, ‘से किं तं खइए ? खइए
अट्टएह कम्मपयडीएण खइएण’ (अणु) । २
वि. क्षय से उत्पन्न, क्षय-संबन्धी, क्षय से
संबन्ध रखनेवाला । ३ कर्म-नाश में उत्पन्न,
‘कम्मक्खयमहावो खइओ’ (विसे ३४६५, कम्म
१, १५, ३, १६, ४, २२, सम्य २३, औप) ।
खइत्त न [क्षेत्र] खेतों का समूह, अनेक खेत
(पि ६१) ।
खइया ली [खदिका] खान्य-विशेष, मेका हुआ
ब्रीहि—धान, लावा, ‘दहिघयपायमखइया-
निओए’ (भवि) ।
खइर पु [खदिर] वृक्ष विशेष, खैर का गाछ
(प्राचा, कुमा) ।
खइर वि [खादिर] खदिर-वृक्ष-संबन्धी (हे १,
६७, सुपा १५१) ।
खइव [दे] देखो खइअ (ठा ४, ४—पत्र
१७६ टी) ।

खुडंतदित्तोत्तिया' (पउम ५३, ११२, स ४४८) । सकृ. खुडिऊण (स ११३) ।

खुडक देखो खुडुक = (दे) । खुडकए (धर्मवि ७१) ।

खुडाकअ [दे] देखो खुडुकिअ (गा २२६) ।

खुडिअ वि [खण्डित] श्रुति खण्डित, विच्छिन्न (हे १, ५३, षड्) ।

खुडुक सक [अप + क्रमय्] हटाना, दूर करना । खुडुकइ (प्राकृ ७०) ।

खुडुक अक [दे] १ नीचे उतरना । २ स्थिति होना । ३ शल्य की तरह चुभना । ४ गुस्सा मे मौन रहना । खुडुकइ (हे ४, १६५) । वक्र खुडुकत (कुमा) ।

खुडुकिअ वि [दे] १ शल्य की तरह चुभा हुआ, खटका हुआ (उप ३५५) । २ रोष-मूक, गुस्सा से मौन धारण करनेवाला । औ. आ (गा २२६ अ) ।

खुडु } वि [दे] क्षुद्र क्षुल्लक १ लघु, खुडुग } छोटा (दे २, ७४, कप्प, दस ३, आचा २, २, ३, उत्त १) । २ नीच, अधम दुष्ट (पुप्फ ४४१) । ३ पुं छोटा साधु, लघु शिष्य (सूत्र १, ३, २) । ४ पुंन. अगुलीय-विशेष, एक प्रकार की अगुठी (औप, उप २०८) ।

खुडुमड्डा अ [दे] १ वह, अत्यन्त । २ फिर-फिर (निचू २०) ।

खुडुय देखो खुडु (हे २, १७४, षड्, कप्प, सम ३५, गाय १, १) ।

खुडुग } देखो खुडुग (औप, परण ३६, खुडुग } गाय १, ७, कप्प) । °णियठ न [°नैर्ग्रन्थ] उत्तराध्ययन सूत्र का छठवां अध्यायन (उत्त ६) ।

खुडुिअ न [दे] सुरत, मैथुन, संभोग (दे २ ७५) ।

खुडुआ औ [दे. क्षुद्रिका] १ छोटी, लघ्वी (ठा २, ३, आचा २, २, ३) । २ डावर, नही खुदा हुआ छोटा तलाव (जं १, परह २, ५) ।

खुणुक्खुडिआ औ [दे] घ्राण, नाक, नासिका (दे २, ७६) ।

खुण्ण वि [क्षुण्ण] १ मर्दित (गा ४४५, निचू १) । २ रूग्णित (दे २, ४५) । ३ मग्न,

नीन, 'अजरामरपहखुरणा साहू सरण सुकय-पुरणा' (चउ ३८, सथा) ।

खुण्ण वि [दे] परिवेष्टित (दे २, ७५) ।

खुत्त वि [दे] निमग्न, हवा हुआ (दे २, ७४, गाय १, १, गा २७६, ३२४, सथा. गउड) ।

°खुत्तो अ [°कन्वस्] बार, दफा (उव, सुर १४, ६१) ।

खुद वि [क्षुद्र] तुच्छ, नीच, दुष्ट, अधम (परह १, १, ठा ६) ।

खुद न [चौद्रय] क्षुद्रता, तुच्छता, नीचता (उप ६१५) ।

खुदिमा औ [क्षुद्रिमा] गान्धार ग्राम की एक मूर्च्छना (ठा ७—पत्र ३६३) ।

खुद्व वि [क्षुद्व] क्षोभ-प्राप्त, घबड़ाया हुआ (मुपा ३२५) ।

खुधा औ [क्षुध्] भूख (धर्मसं १०६२) ।

खुधिय वि [क्षुधित] क्षुधातुर, भूखा (सूत्र १, ३, १) ।

खुन्न देखो खुण्ण = क्षुण्ण (पि ५६८) ।

खुन्न देखो खुण्ण = (दे) (पात्र) ।

खुप्प सक [प्लुप्] जलाना । खुप्पइ (प्राकृ ६५) ।

खुप्प अक [मस्ज्] हवना, निमग्न होना ।

खुप्पइ (हे ४, १०१) । वक्र खुप्पंत (गउड, कुमा, ओष २३, से १३, ६७) । हेक खुप्पिउ (तदु) ।

खुप्पवासा औ [क्षुत्तिपासा] भूख और व्यास (पि ३१८) ।

खुम्भ अक [क्षुम्] १ क्षोभ पाना, क्षुभित होना । २ नीचे हवना । वक्र खुम्भत (ठा ७—पत्र ३८३) ।

खुम्भण न [क्षोभण] क्षोभ, घबड़ाहट (राज) ।

खुम्भ अक [क्षुम्] डरना, घबड़ाना । खुम्भइ (रयण १८) । कृ खुम्भियव्व (परह २, ३) ।

खुम्भिय वि [क्षुम्भित] १ क्षोभ-युक्त, घबड़ाया हुआ (परह १, ३) । २ न. क्षोभ, घबड़ाहट (औव) । ३ कलह, झगडा (बृह ३) ।

खुम्म अक [क्षुध्] भूख लगना । खुम्मइ (प्राकृ ६८) ।

खुम्मिय वि [दे] नमित, नमाया हुआ (गाय १, १—पत्र ४७) ।

खुय न [क्षुत] छोक (वेइय ४३३) ।

खुर पु [खुर] जानवर के पाँव का नख (सुर १, २४८, गउड, प्रासू १७१) ।

खुर पु [क्षुर] छूरा, उस्तरा (गाय १, ८, कुमा, प्रयौ १०७) । °पत्त न [°पत्र] अस्तुरा या उस्तरा, छूरा (विपा १, ६) ।

खुरप्प पुन [क्षुरप्प] एक तरह का जहाज (सिरि ३८३) ।

खुरप्प पु [क्षुरप्प] १ घास काटने का अस्त्र-विशेष, खुरपा (सम १३४) । २ शर-विशेष, एक प्रकार का वारण (वेणी ११७) ।

खुरसाण पुं [खुरशान] १ देश-विशेष (पिंग) । २ खुरशान देश का राजा (पिंग) ।

खुरहखुडी औ [दे] प्रणय-कोप (षड्) ।

खुरासाण देखो खुरसाण (पिंग) ।

खुरि वि [खुरिन्] खुरवाला जानवर (आव ३) ।

खुरु पुं [खुरु] प्रहरण-विशेष, आयुध-विशेष (सुर १३, १६३) ।

खुरुड्खुडी औ [दे] प्रणय-कोप (दे २, ७६) ।

खुरुप्प देखो खुरप्प (पउम ५६, १६, स १८४) ।

खुल क [दे] वह गाँव जहाँ साधुओं को भिक्षा कम मिलती हो या भिक्षा में दूत आदि न मिलता हो (वव १) ।

खुल देखो खुम्म । खुलइ (प्राकृ ६६) ।

खुलिअ देखो खुडिअ (पिंग) ।

खुलह पु [दे] गुल्फ, पैर की गाँठ, फीली (दे २, ७५, पात्र) ।

खुल न [दे] कुटी, कुटीर (दे २, ७४) ।

खुल } वि [क्षुल, °क] १ छोटा, लघु, खुल्लग } क्षुद्र (परण १) । २ पुं द्वीन्द्रिय जीव-विशेष (जीव १) ।

खुल्लग देखो खुल्लग (कुप्र २७६) ।

खुल्लण (अप) देखो खुल्ल (पिंग) ।

खुल्लय वि [क्षुल्लक] १ लघु, क्षुद्र, छोटा (भवि) । २ कपदक-विशेष, एक प्रकार की कौडी (गाय १, १८—पत्र २३५) ।

खुल्लासय पुं [दे] खलासी, जहाज का कर्मचारी-विशेष (सिरि ३८५) ।

खुल्लिरी औ [दे] सकेत (दे २, ७०) ।

खडाहंड वि [खण्डखण्ड] टुकड़ा-टुकड़ा किया हुआ (मुपा ३८५) ।
 खंडिअ पु [खण्डिक] छात्र, विद्यार्थी (श्रीप) ।
 खंडिअ वि [खण्डित] छिन्न, विच्छिन्न (हे १, ५३, महा) ।
 खंडिअ पु [दे] १ मागध, भाट, विरुद-पाठक ।
 २ वि अनिवार्य, निवारण करने की श्रवण (दे २, ७८) ।
 खंडिआ श्री [खण्डिका] खण्ड, टुकड़ा (अभि ६२) ।
 खंडिआ श्री [द] नाप-विशेष, बीस मन की नाप (स २४) ।
 खंडी श्री [दे] १ अपद्वार, छोटा गुप्त द्वार (गाया १, १८—पत्र २३६) । २ किले का छिद्र (गाया १, २—पत्र ७६) ।
 खंडु (अप) देखो खग्ग । गुजराती में 'खाडु' कहते हैं (प्राकृ १२१) ।
 खंडुअ न [दे] बाहु-वलय, हाथ का आभूषण-विशेष, बाजूबंद (मृच्छ १८१) ।
 खंडुय देखो खडग (पव १४३) ।
 खत पु [दे] पिता, बाप (पिंड ४३२, सुख २, ३ ५, ८)
 खत देखो खा ।
 खत वि [क्षान्त] क्षमा-शील, क्षमा-युक्त (उप ३२० टी, कप्पु, भवि) ।
 खतव्व वि [क्षन्तव्व] क्षमा-योग्य, माफ करने लायक (विक्र ३८, भवि) ।
 खंति श्री [क्षान्ति] क्षमा, क्रोध का अभाव (कप्प, महा, प्रासू ४८) ।
 खति देखो ग्या ।
 खतिया } श्री [दे] माता, जननी (पिंड
 खती } ४३०, ४३१) ।
 खद पुं [स्कन्द] १ कार्तिकेय, महादेव का एक पुत्र (हे २, ५, प्राप्र, गाया १, १—पत्र ३६) । २ राम का स्कन्द नाम का एक सुभट (पठम ६७, ११) । ३ कुमार पुं [कुमार] एक जैन मुनि (उव) । ४ गह पु [ग्रह] १ स्कन्दकृत उपद्रव, स्कन्दवेश (ज २) । २ ज्वर-विशेष (भाग ३, ६) । ३ मह पु [मह] स्कन्द का उन्मव (गाया १, १) । ४ सिरी

श्री [श्री] एक चोर-मेनापति की भार्या का नाम (विपा १, ३) ।
 खदग पु [स्कन्दक] १-२ ऊपर देखो । ३ खदय } एक जैन मुनि (उव, भग, अतः मुपा ४०८) । ४ एक पारस्राजक, जिमने भगवान् महावीर के पास पीछे से जेन दीक्षा ली थी (पुष्प ८४) ।
 खदरुद न [स्कन्दरुद] शास्त्र-विशेष (धर्मस ६३५) ।
 खदिल पुं [स्कन्दिल] एक प्रख्यात जैनाचार्य, जिसने मथुरा में जैनागमों को निपि-बद्ध किया (गच्छ १) ।
 खय पु [स्कन्ध] भित्ति, भीत, दीवार (आचा २, १, ७, १) ।
 खध पुं [स्कन्ध] १ पुद्गल-प्रचय, पुद्गल का पिरंड (कम्म ४, ६६) । २ समूह, निकर (विमे ६००) । ३ कन्वा, काँच (कुमा) । ४ पेड का घड़, जहाँ से शाखा निकलती है (कुमा) । ५ छन्द-विशेष (पिंग) । ६ करणी श्री [करणी] सावियों को पहनने का उपकरण-विशेष (शोध ६७७) । ७ मत वि [मन्] स्कन्धवाला (गाया १, १) । ८ धाय पुं [वीज] स्कन्ध ही जिमका बीज होता है ऐमा कदली वगैरह का गाछ (ठा ५, २) । ९ सालि पुं [शालिन्] व्यन्तर देवों की एक जाति (गज) ।
 खधग्गि पु [दे स्कन्वाग्नि] स्थूल काष्ठों की आग (दे २, ७०, पाग्र) ।
 खधमंस पु [दे] हाथ, भुजा, बाहु (दे २, ७१) ।
 खधमसी श्री [दे] स्कन्ध-यष्टि, हाथ (पड्) ।
 खधय देखो खध (पिंग) ।
 खधयट्टि श्री [दे स्कन्धयष्टि] हाथ, भुजा, (दे २, ७१) ।
 खवर पुष्ठी [क्वन्धर] श्रीवा, गला, गरदन (मण) । श्री. रा (महा) ।
 खधलट्टि श्री [दे स्कन्धयष्टि] स्कन्ध-यष्टि, हाथ, भुजा (पड्) ।
 खंधवार देखो खधावार (महा) ।
 खधाआर देखो खधावार (प्राकृ ३०) ।
 खधार पु व [स्कन्धार] देश विशेष (पठम ६८, ६६) ।

खधार देखो खधावार (पठम ६६, २८, महा, विसे २४४१) ।
 खधाल वि [स्कन्धवन्] स्कन्धवाला (मुपा १२६) ।
 खधावार पु [स्कन्धावार] छावनी, मैन्स का पडाव, शिविर (गाया १, ८, स ६०३, महा) ।
 खधि वि [स्कन्धिवन्] स्कन्धवाला (श्रीप) ।
 खंधिह देखो खवि (स ६६७) ।
 खधी श्री देखो खध (श्रीप) ।
 खंधीधार पु [दे] बहुत गरम पानी की धारा (दे २, ७२) ।
 खप सक [सिच्] सिञ्चना, छिड़कना । खपइ (भवि) ।
 खपणय न [दे] वल्ल, कपड़ा, 'बहुमेयमिन्न-मलमइल्लखणयचिकरणसरीरो' (मुपा ११) ।
 खभ पु [स्तम्भ] खमा थमा (हे १, १८७, २ ४, ६, भग, महा) ।
 खभ सक [स्कम्भ] धुव्य होना, विचलित होना । खंभेजा, खभाएजा (ठा ५, १—पत्र २६२) ।
 खभतित्थ न [स्तम्भतीर्थ] एक जैन तीर्थ, गुजरात का प्राचीन 'खमणा' गाँव (कुप्र २१) ।
 खभह्मिअ वि [स्तम्भि] तबे में बाँधा हुआ (मे ६, ८५) ।
 खंभाडत्त न [स्तम्भादित्थ] गुर्जर देश का एक प्राचीन नगर, जो आजकल 'खभात' नाम से प्रसिद्ध है (ती २३) ।
 खभालण न [स्तम्भालान] खम्भे में बाधना (पणह १, ३) ।
 खक्खरग पुन [दे] सूखी रोटी (धर्म २) ।
 खग्ग पु [खड्ग] १ पशु विशेष, गेडा (उप १४८, पणह १ १) । २ पुंन तलवार, अस्त्र (हे १, ३४, म ५३१) । ३ धेणुआ श्री [धेनु] घड़ी, चाकू (दन) । ४ पुरा श्री [पुरा] विदेह राजा की स्वनाम प्रसिद्ध नगरी (ठा २, ३) । ५ पुरी ली [पुरी] पूर्वोक्त ही अर्थ (उक) ।
 खग्गाखग्गि न [खड्गाखड्गि] तलवार तो लडाई (मिन् १०३२) ।

खेर पुं [दे] एक म्लेच्छ जाति (मृच्छ १५२) ।
खेरि स्त्री [दे] १ परिशटन, नाश, 'घरणखेरि
वा' (वृह २) । २ खेद, उद्वेग । ३ उत्कठा,
उत्मुक्ता (भवि) ।

खेल अक [खेल] खेलना, क्रीडा करना,
तमाशा करना । खेलइ (कप्पू), खेलउ (गा
१०६) । वक्र खेलत (पि २०६) ।

खेल पुं [दे] जहाज का कर्मचारी विशेष
(सिरि ३८५) ।

खेल वि [खेल] खेल करनेवाला, नाटक का
पात्र (धर्मवि ६) स्त्री ०लिया (धर्मवि ६) ।

खेल पुं [श्लेष्मन्] श्लेष्मा कफ, निष्ठीवन,
धूय (सम १०, औप, कप्प, पडि) ।

खेलण } न [खेलन, ०क] १ क्रीडा,
खेलणय } खेल । २ खिलौना (आक, स
१२७) ।

खेलोसहि स्त्री [श्लेष्मौपधि] १ लब्धि-
विशेष, जिससे श्लेष्म औपधि का काम देने
लगे (परह २, १, सति ३) । २ वि ऐसी
लब्धिवाला (आवम, पव २७०) ।

खेल देखो खेल = खेल । खेलइ (पि २०६) ।
वक्र खेलमाण (स ४४) । प्रयो संकृ
खेलावेऊण (पि २०६) ।

खेल देखो खेल = श्लेष्मन् (राज) ।

खेलण देखो खेलण (स २६५) ।

खेलावण } न [खेलनक] १ खेल कराना,
खेलावणय } क्रीडा कराना । २ न खिलौना
(उप १४२ टी) । ०वाई स्त्री [०धात्री] खेल
करनेवाली दाई (राज) ।

खेलिअ न [दे] हसित, हँसी, ठट्ठा (दे २,
७६) ।

खेल्लुड देखो खल्लुड (राज) ।

खेव पु [क्षेप] १ क्षेपण, फेंकना (उप ७२८
टी) । २ न्यास, स्थापना (विसे ६१२) । ३
सख्या-विशेष (कम्म ४, ८१, ८४) ।

खेव पुं [क्षेप] विलम्ब, देरी (स ७७५) ।

खेव पुं [खेद] उद्वेग, खेद, क्लेश, 'न हु कोइ
गुरु खेव वचइ सीसेसु सत्तिसुमहेसु (?)'
(पउम ६७, २३) ।

खेवण न [क्षेपण] प्रेरण (राया १, २) ।

खेवय वि [क्षेपक] फेंकनेवाला (गा २४२) ।

खेविय वि [खेदित] खिन्न किया हुआ
(भवि) ।

खेह पुं [दे] धूली, रज, 'वग्गिरतुरगखर-
खुल्लखयखेहाडन्तरिक्खपह' (सुर ११, १७१) ।

खोअ पु [क्षोद] १ इक्षु, ऊख । २ द्वीप-
विशेष, इक्षुवर द्वीप । ३ ममुद्र-विशेष,
इक्षुरस समुद्र (अणु ६०) ।

खोइय वि [दे] विच्छेदित, 'सन्ने सघी
खोइया' (सुख २ १५) ।

खोउदय पुं [क्षोदोदक] समुद्र-विशेष (सूअ
१, ६, २०) ।

खोओद देखो खोओद (सुअ १६) ।

खोटग } पु [दे] खूँटी, खूँटा (उप २७८,
खोटय } स २६३) ।

खोक्ख अक [खोख्] वानर का बोलना,
बन्दर का आवाज करना । खोक्खइ (गा
१७१ अ) ।

खोक्खा } स्त्री [खोखा] वानर की आवाज
खोखा } (गा ५३२) ।

खेखुब्भ अक [चोक्षुभ्य्] अत्यन्त भयभीत
होना, विशेष व्याकुल होना । वक्र खोखु-
ब्भमाण (औप परह १, ३) ।

खोज्ज पु न [दे] मार्ग-चिह्न (संक्षि ४७) ।

खोट्ट सक [दे] छटखटाना, ठकठकाना,
ठोकना । कवक्र खोट्टिज्जत (ओघ ५६७
टी) । संकृ खोट्टेउ (ओघ ५६७ टी) ।

खोट्टिय [दे] बनावटी लकड़ी (नदीटिप्प पत्र
१४६) ।

खोट्टी स्त्री [दे] दासी, चाकरानी (दे २, ७७) ।

खोड पु [स्फोट] फोडा (प्राकृ १८) ।

खोड पुं [दे] १ सीमा-निर्धारक काष्ठ, खूँटा ।
२ वि धार्मिक, धर्मिष्ठ (दे २, ८०) । ३
खज, लगडा (दे २, ८०, पिंग) । ४
शृगाल, सियार (मृच्छ १८३) । ५ प्रदेश,
जगह, 'सिगक्खोडे कलहो' (ओघ ७६ भा) ।
६ प्रस्फोटन, प्रमार्जन (ओघ २६५) । ७ न
राजकुल में देने योग्य सुवर्ण वगैरह द्रव्य
(वव १) ।

खोडपज्जालि पुं [दे] स्थूल काष्ठ की अग्नि
(दे २, ७०) ।

खोडय पु [स्फोटक] नख से चर्म का निष्पी-
डन (हे २, ६) ।

खोडय पुं [स्फोटक] फोडा, फुंसी (हे २,
६) ।

खोडिय पु [खोटिक] गिरनार पर्वत का
क्षेत्रपाल देवता (ती २) ।

खोडी स्त्री [दे] १ बडा काष्ठ (परह १, ३—
पत्र ५३) । २ काष्ठ की एक प्रकार की पेटी
(महा) । ३ नकली लकड़ी (३ आववृ हारि,
पत्र ४२१) ।

खोणि स्त्री [क्षोणि] पृथिवी, घरणी (सण) ।
०वइ पुं [०पति] राजा, भूपति (उप ७६८
टी) ।

खोणिद पु [क्षोणीन्द्र] राजा, भूमिपति
(सण) ।

खोणी देखो खोणि (सुर १२, ६१, सुपा
२३८, रंभा) ।

खोद पु [क्षोद] १ चूर्णन, विदारण (भग
१७, ६) । २ इक्षु-रस, ऊख का रस (सूअ
१, ६) । ०रस पु [०रस] समुद्र-विशेष
(दीव) । ०वर पु [०वर] द्वीप-विशेष (जीव
३) ।

खोद पु [क्षोद] चूर्ण, बुकनी (हम्मौर ३४) ।

खोदोअ } पु [क्षोदोद] १ समुद्र-विशेष,
खोदोद } जिसका पानी इक्षु-रस के तुल्य
मधुर है (जीव ३, इक) । २ मधुर पानीवाली
वापी (जीव ३) । ३ न मधुर पानी, इक्षु-
रस के समान मिठा जल (परण १) ।

खोइ न [क्षौद्र] मधु, शहद (भग ७, ६) ।

खोभ मक [क्षोभय्] १ विचलित करना,
धैर्य से च्युत करना । २ आश्चर्य उपजाना ।
३ रज पैदा करना । खोभेइ (महा) वक्र ।
खोभत (पउम ३, ६६, सुपा ४६३) । हेक्क-
खोभित्तए, खोभइउ (उवा, पि ३१६) ।

खोभ पु [क्षोभ] १ विचलता, संभ्रम (आव
५) । २ इस नाम का एक रावण का सुभट
(पउम ५६, ३२) ।

खोभण न [क्षोभण] क्षोभ उपजाना, विच-
लित करना, 'तेलोक्खोभणकर' (पउम २,
८२, महा) ।

खोभिय वि [क्षोभित] विचलित किया हुआ
(पउम ११७, ३१) ।

खोम } न [क्षौम] १ कार्पासिक वक्र,
खोमग } कपास का बना हुआ वक्र (राया

खणेतु (आचा)। कवक खन्नमाण (पि ५४०)।

खण पु [खण] काल विशेष, बहुत थोड़ा समय (ठा २, ५, हे २, २०, गउड, प्रासू १३४)। °जोड वि [°योगिन] क्षणमात्र रहनेवाला (सूत्र १, १, १)। °भगुर वि [°भङ्गुर] क्षण-विनश्वर, क्षणिक (पउम ८, १०५, गा ४२३, विवे ११४)। °या छी [°दा] रात्रि, रात (उप ७६८ टी)।

खगखग } अक [खगखगाय] 'खण-
रगखगखग } खण' आवाज करना। खण-
खणति (पउम ३६, ५३)। वक रग-
कखगन (म ३८४)।

खग वि [खनक] खोदनेवाला (गाया १, १८)।

खणन [खनन] खोदना (पउम ८६, ६०, उप ४ २२१)।

खगय देखो खग = क्षण (आचा, उवा)।

खगय वि [खनक] खोदनेवाला (दे १, ८५)।

खगाविय वि [खानिन] खुदाया हुआ (मुपा ४५८, महा)।

खणि छी [खनि] खान, आकर (मुपा ३५०)।

खणिक } देखो खणिय = क्षणिक, 'महाइया
खणिक } कामगुणा खणिका' (श्रु १५२,
धर्मस २२८)।

खणित्त न [खनित्र] खोदने का अस्त्र, खन्ती (दे ४, ४)।

खणिय वि [क्षणिक] १ क्षण-विनश्वर, क्षण-भगुर (विमे १६७२)। २ वि फुरमत-वाला काम धवा से रहित, 'नो तुम्हे विव अम्हे खणिया इय वुत्तु नीहरिओ' (धम्म ८ टी)। °वाड वि [°वादिन] सर्व पदार्थ को क्षण-विनश्वर माननेवाला, बौद्धमत का अनुयायी (राज)।

खणिय वि [खनित] खुदा हुआ (मुपा २५६)।

खणी देखो खणि (पात्र)।

खणुसा छी [द] मन का दुःख मानसिक पीडा (दे २, ६८)।

खणन [दे] खात, खोदा हुआ (दे २, ६६, वृह ३, वच १)।

खण वि [खन्य] खोदने योग्य (दे २, ३६)।

खणु देखो खाणु (दे २, ६६ पङ्)।

खणुअ पु [दे. स्थाणुक] कोलक, खोटी, खूँटा (दे २, ६८, गा ६४, ४२२ अ)।

खत्त न [दे] १ खात, खोदा हुआ (दे २, ६६, पात्र)। २ खन्न मे तोडा हुआ (श्रोघ ३००)। ३ सेव, चोरी करने के लिए दीवाल मे किया हुआ छेद (उप ४ ११६, गाया १, १८)। ४ खाद, गोबर (उप ५६७ टी)। °खगग पु [°खनक] सेव लगाकर चोरी करनेवाला (गाया १, १८)। °खगण न [°खनन] सेव लगाना (गाया १, १८)। °मेह पु [°मेव] करोप के नमान रमवाला मेघ (भग ७, ६)।

खत्त पु [क्षत्र] क्षत्रिय, मनुष्य जाति-विशेष (मुपा १६७, उत्त १२)।

खत्त वि [क्षत्र] १ क्षत्रिय-सम्बन्धी, क्षत्रिय का। २ न क्षत्रियत्व, क्षत्रियपन, 'अहह अखत्त करेइ कोइ इमो' (वम्म ८ टी, नाट)।

खत्तय पु [दे] १ खेत खोदनेवाला। २ सेव लगाकर चोरी करनेवाला। ३ ग्रह-विशेष, राहु (भग १२, ६)।

खत्ति पु [दे] एक म्लेच्छ-जाति (मुच्छ १५२)।

खत्ति पुंछी [क्षत्रिन] नीचे देखो, 'खत्तीण सेट्टे जह दतवक्के' (सूत्र १, ६, २२)।

खत्तिअ पुंछी [क्षत्रिय] मनुष्य की एक जाति, क्षत्री, राजन्य (पिंग, कुमा, हे २, १८५, प्रासू ८०)। °कुडगाम पुं [°कुण्डग्राम] नगर विशेष, जहा श्रीमहावीर देव का जन्म हुआ था (भग ६, ३३)। °कुंडपुर न [°कुण्डपुर] पूर्वोक्त ही अर्थ (आचा २, १५, ४)। °विजाा छी [°विद्या] धनु-विद्या (सूत्र २, २)।

खत्तिणी } छी [क्षत्रियाणी] क्षत्रिय जाति
खत्तियाणी } की छी (पिंग, कप्प)।

खद न [दे] प्रभूत लाभ (पचा १७, २१)।

खद वि [द] १ भुक्त, भक्षित (दे २, ६७, मुपा ६१०, उप ४ २५२ मण, भवि)। २ प्रदुर्, बहुत, 'वट्टे भवदुत्तवज्जे तरइ विणा नेय मुमुत्तरि' (मार्घ ११४ दे २, ६७, पत्र २, वृह ८)। ३ विज्ञान, बडा

(श्रोघ ३०७, ठा ३, ४)। ४ अ. गोत्र, जल्दी (आचा २, १, ६)। °दाणिअ वि. [°दानिक] ममूद, ऋद्धि-मपन्न (श्रोघ ८६)।

खन्न [दे] देखो खण (पात्र)।

खन्नमाण देखो खण = खन्।

खन्नुअ [द] देखो खणुअ (पात्र)।

खपुमाा छी [दे] एक प्रकार का जूता (वृह ३)।

खप्पर पु [कपेर] १ मनुष्य-जाति-विशेष, पत्ते तमिम दमएणगेमु पवल ज खप्परण वल' (रभा)। २ भिक्षा-पात्र वगान (मुपा ४६५)। ३ खोपड़ी, कपाल (हे १, १८१)। ४ घट वगैरह का टुकड़ा (पउम २०, १६६)।

खप्पर } वि [दे] रुज, रुखा, निपटुर
खप्पुर } (दे २ ६६, पात्र)।

खम सक [क्षम] १ क्षमा करना, माफ करना। २ सहन करना। खमइ (उवर ८३, महा)। कर्म खमिजइ (भवि)। कृ खम्मियव्व (मुपा ३०७, उप ७२८ टी, सुर ४, १६७)। प्रयो खमावइ (भवि)। सक खमावइत्ता, खमावित्ता (पडि, काल)। कृ खमावियव्व (कप्प)।

खम वि [क्षम] १ उचित, योग्य, 'सच्चित्तो आहारो न खमो मणसा वि पत्वे' (पत्र ५४, पात्र)। २ समर्थ, शक्तिमान् (दे १, १७ उप ६५०, मुपा ३)।

खमग पु [क्षमक क्षपक] तपस्वी जैन माधु (उप ४ ३६२, श्रोघ १४०, भत्त ४४)।

खमण न [क्षपण] तपश्चर्या, वेला, तेला आदि तप (पिड ३१२)।

खमण न [क्षपण, क्षमण] १ उपवास (वृह १, निचू २०)। २ पु तपस्वी जैन माधु (ठा १०—पत्र ५१४)।

खमय देखो खमग (श्रोघ ५२४, उप ४८६, भत्त ४०)।

खमाा छी [क्षमा] १ पृथिवी, भूमि 'उव्वूद-खमाभारो' (मुपा ३४८)। २ श्रोत्र का अभाव धाति (हे २, १८)। °वड पु [°पति] राजा, नृप, भूपति (धर्म १६)। °ममण पु [°ममग] नाधु, ऋषि मुनि (पडि)। °हर पु [°वर] १ पर्वत, पहाड़। २ नाधु, मुनि (मुपा ३०६)।

हिमाचल पर्वत पर का एक महान् हृद, जहाँ से गंगा निकलती है (ठा २, ३)। °मोअ पु [°स्त्रानस्] गंगा नदी का प्रवाह (पि ८५)।

गंगली स्त्री [दे] मौन, चुप्पी (सुपा २७८, ४८७)।

गंगा स्त्री [गङ्गा] १ स्वनाम-प्रमिद नदी (कम, सम २७, कप्प)। २ स्त्री-विशेष (कुमा)। ३ गोशालक के मत से काल-परिमाण-विशेष (भग १५)। ४ गंगा नदी की अविष्टायिका देवी (आवम)। ५ भीष्मपितामह की माता का नाम (राया १, १६)। कुड न [°कुण्ड] हिमाचल पर्वत पर स्थित हृद-विशेष, जहाँ से गंगा निकलती है (ठा ८)। °कूड न [°कूट] हिमाचल पर्वत का एक शिखर (ठा २, ३) °द्वीप पु [°द्वीप] द्वीप-विशेष, जहाँ गंगा-देवी का भवन है (ठा २, ३)। °देवी स्त्री [°देवी] गंगा की अविष्टायिका देवी, देवी विशेष (इक)। °वत्त पु [°वर्त्त] आवर्त्त-विशेष (कप्प)। °सय न [°शत] गोशालक के मत में एक प्रकार का काल-परिमाण (भग १५)। °सागर पु [°सागर] प्रमिद तीर्थ-विशेष, जहाँ गंगा समुद्र में मिलती है (उत्त १८)।

गगेअ पु [गाङ्गेय] १ गंगा का पुत्र, भीष्म-पितामह (राया १, १६, वेणी १०४)। २ द्वैतिय मत का प्रवर्त्तक आचार्य (आचू १)। १ एक जैन मुनि, जो भगवान् पारव-नाय के वग के थे (भग ६, ३२)।

गङ्ग पु [दे] वरुड, इस नाम की एक गङ्गय म्लेच्छ जाति (दे २, ८८)।

गण्डिय पु [द] तेनी। गु० पाँची (लोक प्र० ८६५।१-३१ मर्ग)।

गंज सक [गञ्ज] १ तिरस्कार करना। २ उल्लयन करना। ३ मर्दन करना। ४ पराभव करना। गजइ (जय ५)। कृ गजणीय (सिरि ३८)।

गज पु [द] गाल (दे २, ८१)।

गज पु [गञ्ज] भोज्य-विशेष, एक प्रकार की खाद्य वस्तु (परह २, ५—पत्र १४८)। °साला स्त्री [°शाला] लृण, लकड़ी वगैरह इन्धन रखने का स्थान (निचू १५)।

गजण न [गञ्जन] १ अपमान, तिरस्कार (सुपा ४८०)।

वेरिएणवि ररणुण्णत्ता,

वज्जंति गया न चेव केसरिणो।

सभाविज्जइ मरण,

न गजण घोरपुरिसाणं (वज्जा ४२)।

२ क्लक, दाग, 'गजणरहिओ जम्पो' (वज्जा १८)।

गजण वि [गञ्जन] मर्दनकर्ता (सिरि ५४६)।

गजा स्त्री [गञ्जा] सुरा-गृह, मय की दूकान (दे २, ८५ टी)।

गजिअ पु [गाञ्जिक] कल्य-पाल, दारु वेचने-वाला, कलाल (दे २, ८५ टी)।

गजिअ वि [गञ्जिन] १ पराजित, अभिभूत, 'तगरिमगजिओ इव' (उप ६८६ टी)। २ हत, मारा हुआ, विनाशित (पिंग)। ३ पीडित (हे ४, ४०६)।

गजिल्ल वि [दे] १ वियोग-प्राप्त, त्रियुक्त। २ भ्रान्त-चित्त, पागल (दे २, ८३)।

गंजुल्लिय वि [दे] रोमाञ्चित, पुलकित (जय १२)।

गजोल वि [दे] समाकुल, व्याकुल (पड्)।

गंजोल्लिअ वि [दे] १ रोमाञ्चित, जिसके रोम खड़े हुए हो वह (दे २, १००, भवि)। २ न हँमाने के लिए किया जाता अंग-स्पर्श, गुदगुदी, गुदगुदाहट (दे २, १००)।

गठ सक [अथ्] १ गठना, गूँथना। २ रचना, बनाना। गठइ (हे ४, १२०, पड्)।

गठ देखो गथ (राय, सूत्र २, ५, धर्म २)।

गठि स्त्री [गृष्टि] एकबार व्यायी हुई गौ (प्राक् ३२)।

गठि पुष्ठी [अन्थि] १ गाँठ, जोड़। २ वान आदि की गिरह, बंध (हे १, ३५, ४, १२०)।

३ गठरी, गाठ (राया १, १, श्रौप)। ४ रोग-विशेष (लहुम १५)। ५ राग-द्वेष का निविड परिणाम-विशेष (उप २५३)।

'गठित्ति सुदुग्घेओ कक्खडधणल्लुडगंठि व्व। जीवस्स कम्मजणिओ धरणराहोमपग्गिणाम' (विसे ११६५)।

°छेअ पु [°च्छेद] गाँठ तोड़नेवाला, चोर-विशेष, पाकेटमार (दे २, ८६)। °भेय पुं [°भेद] ग्रन्थि का भेदन (धर्म १)। °भेयग

वि [°भेदक] १ ग्रन्थि को भेदनेवाला। २ पुं. चोर-विशेष (राया १, १८, परह १, ३)। °वण पु [°पर्ण] सुगन्धि गाछ विशेष (कप्प)। °सहिय वि [°सहित] १ गाँठ-युक्त। २ न प्रत्याख्यान-विशेष, व्रत-विशेष (धर्म २, पडि)।

गठिम न [अन्थिम] १ ग्रन्थि ने बनी हुई माला वगैरह (परह २, ५, भग ६, ३३)। २ गुल्म-विशेष (परण १—पत्र ३२)।

गठिय वि [अथिन] गूँथा हुआ गठा हुआ, पिरोया हुआ (कुमा)।

गठिय वि [अन्थिक] गाँठवाला (सूत्र २, ५)।

गठिल्ल वि [अन्थिमन्] ग्रन्थि-युक्त, गाँठ-वाला (राज)।

गड पु [दे] १ वन, जंगल। २ दारुडपाशिक, कोतवाल। ३ छोटा मृग (दे २, ६६)। ४ नापित, नाई (दे २, ६६, आचा २, १, २)। ५ न गुच्छ, समूह, 'कुसुमदामगडमुव-ट्टविय' (महा)।

गंड पुंन [गण्ड] १ गाल, कपोल (भग, सुपा ८)। २ रोग-विशेष, गण्डमाला, 'ता मा करेह वीय गडोवरिफोडियातुल्ल (उप ७६८ टी आचा)। ३ हाथी का कुम्भस्थल (पव २६)। ४ कुच, स्तन (उत्त ८)। ५ ऊख का जलिया, डधु-समूह (उप पृ ३५६)। ६ छन्द-विशेष (पिंग)। ७ फोडा, स्फोटक (उत्त १०)। ८ गाँठ, ग्रन्थि (अवि १७, अमि १८४)। °भेअ, भेअअ पु [°भेदक] चोर-विशेष पाकेटमार (अवि १७ अमि १८४)। °माणिया स्त्री [°माणिया] वान्य का एक प्रकार की नाप (राय)। °माला स्त्री [°माला] रोग-विशेष, जिसमें आवा फूल जाती है (सण) °यल्ल न [°तल] कपोल-तल (मुर ४, १२७)। °लेहा स्त्री [°लेखा] कपोल-माली, गाल पर लगाई हुई कम्तूरी वगैरह की छटा (निर १, १, गउड)। °वच्छा स्त्री [°वक्षस्का] पीन स्तनो से युक्त छाती-वाली स्त्री (उत्त ८)। °वाणिया स्त्री [°पाणिना] वाँस का पात्र-विशेष, जो डाला से छोटा होता है (भग ७, ८)। °वास पु [°पार्श्व] गाल का पार्श्व-भाग (गउड)।

खरिअ वि [दे] भुक्त, भक्षित (दे २, ६७, भवि) ।

खरिआ खी [दे] नौकरानी, दामी (श्रोघ ४३८) ।

खरिसुअ पुं [दे खरिंशुक] कन्द-विशेष (आ २०) ।

खरुटी खी [खरोष्ट्री] एक प्राचीन लिपि जो दाहिने से बाएँ को लिखी जाती थी । गाधार लिपि । देखो, खरोष्ट्रिआ (परण १) ।

खरुल वि [दे] १ कठिन, कठोर । २ स्थपुट, विषम और ऊँचा (दे २, ७८) ।

खरोष्ट्रिआ खी [खरोष्ट्रिआ] लिपि-विशेष (सम ३५) ।

खल अक [खल] १ पटना, गिरना । २ झूलना । ३ रुकना । खलइ (प्राप्र) । वक्र खलत, खलमाण (से २, २७, गा ५४६, सुपा ६४१) ।

खल अक [खल] अपसरण करना, हटना । खलाहि (उत्त १२, ७) ।

खल अ [खल] पाद पूर्ति में प्रयुक्त होता अव्यय (प्राक् ८१) ।

खल वि [खल] १ दुर्जन, अधम मनुष्य (सुर १, १६) । २ न धान साफ करने का स्थान (विपा १ ८, आ १४) । °पू वि [°पू] खलिहान या खलियान को साफ करनेवाला (कुमा, पङ्, प्रामा) ।

खलइअ वि [दे] रिक्त, खाली (दे २, ७१) ।

खलक्खल अक [खलखलाय्] 'खल खल' आवाज करना । खलक्खलेइ (पि ५५८) ।

खलगडिअ वि [दे] मत्त, उन्मत्त (दे २, ६७) ।

खलण न [खलण] १ नीचे देखो (आचा, से ८, ५५, गा ४६६, वज्जा २६) ।

खलणा खी [खलणा] १ गिर जाना, निपतन (दे २, ६४) । २ विराधना, भजन (श्रोघ ७८८) । ३ अटकायत, रुकावट, 'होजा गुणो, ग खलणं करेमि जइ अस्स वसणम्स' (उप ३३६ टी) ।

खलभालय वि [दे] क्षुब्ध, क्षोभ-प्राप्त (भवि) ।

खलहर } पु [खलखल] नदी के प्रवाह की खलहल } आवाज, 'वहमाणवाहिणीणीं दिसि-दिसिमुव्वतखलहरासदो' (सुर ३, ११, २, ७५) ।

खला अक [दे] खराब करना, नुकसान करना, 'तारवि खलो खलाइ य' (पउम ३७, ६३) ।

खलिअ वि [खलित] १ रुका हुआ । २ गिरा हुआ पतित (हे २, ७७, पाप्र) । ३ न. अपराध, गुनाह । ४ झूल (से १, ६) ।

खलिअ वि [खलिक] खल से व्याप्त, खलि-खचित (दे ४, १०) ।

खलिण पुन [खलिन] १ लगाम (पाप्र) । २ कायोत्सर्ग का एक दोष (पव ५) ।

खलिया खी [खलिका] तिल वगैरह का तैल-रहित चूर्ण, खली, खरी (सुपा ४१४) ।

खालियार सक [खली + कृ] १ तिरस्कार करना, धृत्कारना । २ ठगना । ३ उपद्रव करना । खलियारसि, खलियारेंति (सुपा २३७, स ४६८) ।

खलियार पु [खलिकार] तिरस्कार, निर्भर्त्सना (पउम ३६, ११६) ।

खलियारण न [खलीकरण] तिरस्कार (पउम ३६, ८४) ।

खलियारणा खी [खलीकरणा] वक्त्रना, ठगाई (स २८) ।

खलियारिअ वि [खलीकृत] १ तिरस्कृत (पउम ६६, २) । २ वञ्चित, ठगा हुआ (स २८) ।

खलि वि [खलित] खलन करनेवाला (वज्जा ५८, सण) ।

खली खी [दे खली] तिल-पिण्डिका, तिल वगैरह का स्नेहरहित चूर्ण, खली (दे २, ६६, सुपा ४१५, ४१६) ।

खलीकय देखो खलियारिअ (चउ ४४) ।

खलीकर देखो खलियार = खली + कृ । खली-करेइ (स २७) । कर्म खलीकरीयइ, खली-किज्जइ (स २८, सण) ।

खलीण न [खलीन] देखो खलिण (सुपा ७७, स ५७४) । २ नदी का किनारा, 'खलीणमट्टिय खणमाणे' (विपा १, १—पत्र—१६) ।

खलु अ [खलु] विशेष-सूचक अव्यय (दसनि ४, १६) ।

खलु अ [खलु] इन अर्थों का सूचक अव्यय— १ अवधारण, निश्चय (जी ७) । २ पुन, फिर (आचा) । ३ पादपूर्ति और वाक्य की

शोभा के लिए भी इसका प्रयोग होता है (आचा, निचू १०) । °खित्त न [°क्षेत्र] जहाँ पर जरूरी चीज मिले वह क्षेत्र (वव ८) ।

खलुं क पु [दे] १ गली वेल, अविनीत वेल, (ठा ४, ३—पत्र २४८) । २ अविनीत शिष्य, कुशिष्य (उत्त २७) ।

खलुकिज्ज पु [दे] १ गली वेल सबन्धी । २ न उत्तराध्ययन सूत्र का इस नाम का एक अध्ययन (उत्त २७) ।

खलुग देखो खलुय (पव ६२) ।

खलुय न [खलुक] गुल्फ, पवि का मणि-वन्ध (विपा १, ६) ।

खल न [दे] १ बाढ का छिद्र । २ विलास (दे २, ७७) । ३ वि. खाली, रिक्त, 'जाया खल्लकवोला परिसोसियमससोणिया धणिय' (उप ७२८ टी, दे १, ३८) ।

खल वि [दे] निम्न-मध्य, जिसका मध्य भाग नीचा हो वह (दे १, ३८) ।

खलइअ वि [दे] १ सकुचित, संकोच-युक्त । २ प्रहृष्ट, हर्षयुक्त (दे २, ७६, गउड) ।

खलग } पुन [दे] १ पत्र, पत्ता । २ पत्र-खल्लय } पुट, पत्ते का बना हुआ पुडवा या दोना (सूत्र १, २, २, १६ टी, पिड २१०, वृह १) ।

खलग } पुन [दे] १ पात्र का रक्षण खल्लय } करनेवाला चमड़ा, एक प्रकार का जूता (धर्म ३) । २ धैला (उप १०३१ टी) ।

खल्ला खी [दे] चर्म, चमड़ा, खाल (दे २, ६६, पाप्र) ।

खल्लाड देखो खल्लीड (निचू २०) ।

खल्लिरा खी [दे] संकेत (दे २, ७०) ।

खल्लिहड (अप) देखो खल्लीड (हे ४, ३८६) ।

खल्ली खी [दे] सिर का वह चमड़ा, जिसमें केश पैदा न होता हो (आवम) ।

खल्लीड पुं [खल्लाट] जिसके सिर पर बाल न हो, गजा, चदला (हे १, ७४, कुमा) ।

खल्लूड पुं [खल्लूट] कन्द-विशेष (परण १—पत्र ३६) ।

खव सक [क्षपय्] १ नाश करना । २ डालना, प्रक्षेप करना । ३ उल्लघन करना । खवेइ (उव), खवयति (भग १८, ७) । कर्म. खविज्जति (भग) । वक्र खवेमाण (गाया

सुगन्धित लेप-द्रव्य (विपा १, ६)। °वट्टि स्त्री [°वत्ति] गन्ध-द्रव्य की बनाई हुई गोली (राया १, १, औप)। °वह पुं [°वह] पवन, वायु (कुमा, गा ५४२)। °वास पुं [°वास] १ सुगन्धित वस्तु का पुट। २ चूर्ण-विशेष (सुपा ६७)। °समिद्ध वि [°समृद्ध] १ सुगन्धित, सुगन्ध पूर्ण। २ न नगर-विशेष (आवम, इक)। °सालि पुं [°शालि] सुगन्धित श्रीहि, घान (आवम)। °हस्ति पुं [°हस्तिन्] उत्तम हस्ती, जिसकी गन्ध से दूसरे हाथी भाग जाते हैं (नम १, पडि)। °हरिण पुं [°हरिण] कम्पुरिया हिरन (कप्पू)। °हारग पुं [°हारक] १ इस नाम का एक म्लेच्छ देश। २ गन्धहारक देश का निवासी (परह १, १—पत्र १४)।

गंधण पु [गन्धन] एक सर्प-जाति (दस २, ८)।

गंधपिसाय पु [दे] गन्धक, पसारी (दे २, ८७)।

गंधय देखो गंध (महा)।

गंधलया स्त्री [दे] नासिका, घ्राण (दे २, ८५)।

गंधवाह पु [गन्धवाह] पवन (समु १८०)।

गंधव्य पुं [गन्धर्व] १ देव-गायक, स्वर्ग-गायक (उत्त १, सण)। १ एक प्रकार की देव-जाति, व्यतर देवों की एक जाति (परह १, ४, औप)। ३ यक्ष-विशेष, भगवान् कुन्धुनाय का शासनाधिप्रायक यज्ञ (सति ८)। ४ न. मुहूर्त-विशेष (सम ५१)। ५ नृत्य-युक्त गीत, गान (विपा १, २)। °कठ न [°कण्ठ] रत्न की एक जाति (राय)। °घर न [°गृह] सगीत-गृह, सगीतालय, संगीत का अभ्यास-स्थान (ज १)। °णगर, °नगर न [°नगर] असत्य-नगर, सव्या के समय में आकाश में दोखता मिथ्या-नगर, जो भावी उत्पात का सूचक है (अणु, पव १६८)। °पुर न [°पुर] देखो °णगर (गड्ड)। °लिवि स्त्री [°लिपि] लिपि-विशेष (सम ३५)। °विवाह पुं [°विवाह] उत्सव-रहित विवाह, स्त्री-पुरुष को इच्छा के अनुसार विवाह (सण)। °साला स्त्री [°शाला] गान-शाला, सगीत-गृह, संगीतालय (वव १०)।

गधन्व वि [गन्धर्व] १ गधर्व-संखन्वी, गधर्व से सखन्व रखनेवाला (ज १, अमि ११५)। २ पु. उत्सव-होन विवाह, विवाह-विशेष, 'गधन्वेण विवाहेण सममेव विवाहिया' (आवम)। ३ न गीत, गान (पाय)। गंधन्वि वि [गन्धर्विन्] गानेवाला (ती ३)। गंधन्विअ वि [गान्धर्विक] १ गधर्व-विद्या में कुशल (सुपा १६६)। गधा स्त्री [गन्धा] नगरी-विशेष (इक)। गधाण न [गन्धान] छन्द-विशेष (पिंग)। गंधार पु [गन्धार] देश-विशेष, कन्वार (स ३८)। २ पर्वत-विशेष (ग ३६)। ३ न. नगर-विशेष (स ३८)। गंधार पु [गान्धार] स्वर विशेष, रागिनी-विशेष (ठा ७)।

गंधारी स्त्री [गान्धारी] १ सती विशेष, कृष्ण वासुदेव की एक स्त्री (पडि, अंत १५)। २ विद्यादेवी-विशेष (सति ६)। ३ भगवान् नमिनाय की शासनदेवी (सति १०)।

गंधारी स्त्री [गान्धारी] विद्या-विशेष (सूत्र २, २, २७)।

गंधावइ पुं [गन्धापातिन्] स्वनाम-प्रसिद्ध गंधावाइ } एक वृत्त, वैताड्य पर्वत (इक, ठा २, ३—पत्र ६६, ८०; ठा ४, २—पत्र २२३)।

गंधि वि [गन्धिन्] गंध-युक्त, गधवाला (कप्प, गड्ड)।

गंधिअ वि [दे] दुर्गन्ध, खराब गन्धवाला (दे २, ८३)।

गंधिअ पु [गान्धिरु] गन्ध-द्रव्य बेचनेवाला, पसारी (दे २, ८७)।

गंधिअ वि [गन्धिरु] गध-युक्त, 'सुगन्धवर-गन्धगन्धिण' (औप)। °साला स्त्री [°शाला] दाख वगैरह गन्धवाली चीज की दूकान (वव ६)।

गंधिअ वि [गन्धित] गन्ध-युक्त, गन्धवाला (स ३७२, गा ५४५, ८७२)।

गंधिल पुं [गन्धिल] वर्ष-विशेष, विजय-क्षेत्र-विशेष (ठा २, ३, इक)।

गंधिलावई स्त्री [गन्धिलावती] १ क्षेत्र-विशेष, विजयवर्ष-विशेष (ठा २, ३, इक)। २ नगरी-विशेष (द्र ६१)। °कूड न [°कूट]

१ गन्धमादन पर्वत का एक शिखर (ज ५)। २ वैताड्य पर्वत का शिखर-विशेष (ठा ६)। गंधिल्ली स्त्री [दे] छाया, छाह (उप १०३१ टी)।

गधुत्तमा स्त्री [गन्धोत्तमा] मदिरा, सुरा (दे २, ८६)।

गधेल्ली स्त्री [दे] १ छाया, छाह। २ मधु-मक्षिका (दे २, १००)।

गंधोदग पुं न [गन्धोदक] सुगन्धित जला गंधोदय पुं सुगन्ध-वासित पानी (औप, विप, १, ६)।

गंधोल्ली स्त्री [दे] १ इच्छा, अभिलाषा। २ रजनी, रात (दे २, ६६)।

गंप्पि पुं देखो गम = गम्। गंप्पिणु पुं

गंभीर न [गाम्भीर्य] १ गम्भीरता। २ अनौदत्य (सूत्रिण ६६)।

गभीर वि [गम्भीर] १ गम्भीर, अस्ताव, अनुच्छ, गहरा (औप, से ६, ४४, कप्प)। २ पुन गहन-म्यान, गहन प्रदेश, जहाँ प्रति-शब्द उल्लिखित हो (विसे ३४०४, वृह १)। ३ पुं. रावण का एक सुभट (पठम ५६, ३)। ४ यदुवश के राजा अन्धकवृष्णि का एक पुत्र (अत ३)। ५ न. समुद्र के किनारे पर स्थित इस नाम का एक नगर (सुर १३, ३०)। °पोय न [°पोत] नगर-विशेष (राया १, १७)। °मालिणी स्त्री [°मालिनी] महा-विदेह-वर्ष की एक नगरी (ठा २ ३)।

गभीरा स्त्री [गम्भीरा] १ गभीर-हृदया स्त्री (वव ५)। २ मात्रा-छन्द का एक भेद (पिंग)। ३ क्षुद्र जंतु-विशेष, चतुरिन्द्रिय जीव विशेष (परण १)।

गभीरिअ न [गाम्भीर्य] गम्भीरता, गम्भीरपन (दे २, १०७)।

गभीरिम पुत्री [गाम्भीर्य] ऊपर देखो (सण)।

गगण न [गगन] आकाश, अम्बर (कप्प, स ३४८)। °णंदण न [°नन्दन] वैताड्य पर्वत पर का एक नगर (इक)। °वल्लभ, °वल्लह न [°वल्लभ] वैताड्य पर्वत पर का एक नगर (राज, इक)।

गगणंग पुं न [गगनाङ्ग] छन्द-विशेष (पिंग)।

अ पाणेण अ तह गहिओ मंडलो अडअणाए'
(गा ६६२, पउम १४, १३६)।
खाण न [ख्यान] कयन, उक्ति (राज)।
खाणि स्त्री [खानि] खान, आकर (दे २,
६६, कुमा, सुपा ३४८)।
खाणिअ वि [खानित] खुदवाया हुआ (हे
३, ५७)।
खाणी देखो खाणि (पात्र)।
खाणु { पुं [स्थाणु] स्थाणु, ठूठा वृद्ध, अचल
खाणुय { (पएह २, ५, हे २, ७ कय)।
खादि देखो खाइ = ख्याति (सक्ति ६)।
खाम सक [क्षमय्] क्षमाना, माफी मांगना।
खामेइ (भग)। कर्म खामिजइ, खामीअइ
(हे ३, १५३)। संकु खामेत्ता (भग)।
खाम वि [क्षाम] १ कृश, दुर्बल, 'खामप
डुकवोल' (उप ६८६ टी, पात्र)। २ क्षीण,
अशक्त (दे ६, ४६)।
खामण न [क्षमण] क्षमाना (आवक ३६५,।
खामणा स्त्री [क्षमणा] क्षमापना, माफी
मांगना, क्षमा-याचना (सुपा ५६४, विवे
७६)।
खामिय वि [क्षमित] १ जिसके पाम क्षमा
मांगी गई हो वह, क्षमाया हुआ (विमे २३८८,
हे ३, १५२)। २ सहन किया हुआ। ३
विलम्बित, विलम्ब किया हुआ, 'तिरिएण
अहोरत्ता पुण न खामिया मे कयतेण' (पउम
४३, ३१, हे ३, १५०)।
खाय पु [खाद] पाँचवी नरक-भूमि का एक
नरक-स्थान (देवेन्द्र ११)।
खायर देखो खाइर (कर्म ६)।
खार पु [क्षार] १ एक नरक स्थान (देवेन्द्र
३०) २ भुजपरिमर्ष की एक जाति (सूअ २
३, २५)। ५ वैर, दुश्मनी (सुख १, ३)।
'डाह पुन [दाह] क्षार पकाने की भट्टी
(आचा २, १०, २)। 'तन पुन [तन्त्र]
आयुर्वेद का एक भेद, वाजीकरण (ठा ८—
पत्र ४२८)।
खार पु [क्षार] १ क्षरण, भरना, संचलन
(ठा ८)। २ भस्म, ढाक (राया १, १२)।
३ क्षार, क्षार, लवण-विशेष (सूअ १, ७)।
४ लवण, नोन (बृह ४)। ५ जानवर-विशेष
(पएण १)। ६ सजिका, सजी (सूअ १, ४, २)।

७ वि कटु या चरपरा स्वादवाला, कटु चीज
(पएण १७—पत्र ५३०)। ८ खारो चीज,
नमकीन स्वादवाली वस्तु (भग ७, ६, सूअ १,
७)। 'तउसी [त्रपुपी] कटु त्रपुपी, वनस्प
ति-विशेष (पएण १७)। 'तिल्ल न [तैल]
खारे से संस्कृत तैल (पएह २, ५)। 'मेह पुं
[मेघ] क्षार रसवाले पानी की वर्षा (भग ७,
६)। 'वत्तिय वि [पात्रिक] क्षार-पात्र मे
जिमाया हुआ। २ क्षार-पात्र का आचार भूत
(ओप)। 'वत्तिय वि [वृत्तिक] खार मे
फँका हुआ, खार से सीचा हुआ (ओप, दसा
६)। 'वायो स्त्री [वापी] क्षार से भरी हुई
वापी, कूँआ (पएह १, १)।
खारफिडी स्त्री [दे] गोघा, गोह, जन्तु-विशेष
(दे २, ८३)।
खारदूसण वि [खारदूपण] खरदूपण का,
खरदूपण-मन्त्रवी (पउम ४५, १५)।
खारय न [दे] मुकुल, कली (दे २, ७३)।
खारायण पुं [क्षारायण] १ ऋषि-विशेष।
२ माण्डव्यगोत्र के शाखाभूत एक गोत्र (ठा
७)।
खारि स्त्री [खारी] एक प्रकार की नाप, ३४
सेर की तौल (गा ८१२)।
खारिभरी स्त्री [खारिभरी] खारी-परिमित
वस्तु जिसमे अट सके ऐसा पात्र भर दूध देने-
वाली (गा ८१२)।
खारिक न [दे] फल-विशेष, छुहारा (सिरि
११६६)।
खारिय वि [क्षारित] १ स्रावित, भरया
हुआ (वव ६)। २ पानी मे घिसा हुआ
(भवि)।
खारी देखो खारि (गा ८१२, जो १)।
खारुगणिय पु [क्षारुगणिक] १ म्लेच्छ देश-
विशेष। २ उसमे रहनेवाली म्लेच्छ जाति
(भग १२, २)।
खारोदा स्त्री [क्षारोदा] नदी-विशेष (राज)।
खाल सक [क्षालय्] धोना, पखारना, पानी
से साफ करना। क. खालणिज्ज (उप ३२६)।
खाल स्त्री [दे] नाला, मोरी, गदगी निकलने
का मार्ग (ठा २, ३) स्त्री खाला (कुमा)।
खालण न [क्षालन] प्रक्षालन, पखारना (सुपा
३२८)।

खालिअ वि [क्षालित] धोत, धोया हुआ
(ती १३)।
खावण न [ख्यापन] प्रतिपादन (पंचा १०,
७)।
खावणा स्त्री [ख्यापना] प्रसिद्धि प्रकथन,
'अक्खाणं खावणाविहाणं वा' (विसे)।
खावियत वि [खाद्यमान] जिसको खिलाया
जाता हो वह, 'कागणिमसाइ खावियत'
(विपा १, २—पत्र २४)।
खावियग वि [खादितरु] जिसको खिलाया
गया हो वह, 'कागणिमखावियगा' (ओप)।
खावेंत वि [ख्यापयन्] प्रख्याति करता
हुआ, प्रसिद्धि करता हुआ (उप ८३३ टी)।
खास अक [कास्] खांसना, खाँसी खाना।
खासई (तंदु १६)।
खाम पुं [कास] रोग विशेष, खाँसी की
बीमारी, खाँसी (विपा १, १, सुपा ४०४,
सण)।
खासि वि [कासिन्] खाँसी का रोगवाला
(सुपा ५७६)।
खासिअ न [कासित] खाँसी, खांसना (हे १,
१८१)।
खासिअ पु [खासिक] १ म्लेच्छ देश विशेष।
२ उसमे रहनेवाली म्लेच्छ जाति (पएह १,
१—पत्र १४, इक, सूअ १, ५, १)।
खि अक [क्षि] क्षीण होना। कर्म 'खिज्जइ
भवसतती' (स ६८४)। खीयंति, खीयते
(कम्म ६, ६६, टी)।
खिइ स्त्री [क्षिति] पृथिवी, घरा (पउम २०,
१५६, स ४१६)। 'गोयर पु [गोचर]
मनुष्य, मानुष, आदमी (पउम ५३, ४३)।
'पइट्ट न [प्रतिष्ठ] नगर-विशेष (स ६)।
'पइट्टय न [प्रतिष्ठित] १ इस नाम का
एक नगर (उप ३२० टी, स ७)। २ राजगृह
नाम का नगर, जो आजकल बिहार में 'राज-
गिर' नाम से प्रसिद्ध है (ती १०)। 'सार
पु [सार] इस नाम का एक दुर्ग (पउम
८०, ३)।
खिख अक [सिद्धय] खिखि आवाज करना।
खिखेइ। वक्र. खिखियत (सुख २, ३३)।
खिखिणिया स्त्री [किक्खिणिक्का] सुद्र धरिण्डका
(उवा)।

गण पुं [गण] १ समूह, समुदाय. यूय, थोक (जी ३४, कुमा, प्रासू ४, ७५, १५१) । २ गच्छ, समान आचार व्यवहारवाले साधुओं का समूह (कप्प) । ३ छन्द—शास्त्र प्रसिद्ध मात्रा-समूह (पिंग) । ४ शिव का अनुचर (पाम्म, कुमा) । ५ मल्लो का समुदाय (अणु) । ०ओ अ [तस्] अनेकश, बहुश (सूत्र २, ६) । ०नायग पुं [नायक] गण का मुखिया (णाय १, १) । ०नाह पु [नाथ] १ गण का स्वामी, गण का मुखिया (सुपा २, १०) । २ गणधर, जिनदेव का प्रधान शिष्य (पठम १२, ६) । ३ आचार्य, सूरि (सार्ध २३) । ०भाव पुं [भाव] चिवेक-विशेष (गड्ड) । ०राय पु [राज] १ सामन्त राजा (भग ७, ६) । २ सेनापति (आव ३, कप्प) । ०वइ पु [पति] १ गण का स्वामी । २ गणेश, गजानन, शिवपुत्र (गा ३७२ गड्ड) । ३ जिनदेव का मुख्य शिष्य, गणधर (सिध २) । ०सामि पु [स्वामिन्] गण का मुखिया, गणधर (उप २८० टी) । ०हर पुं [धर] १ जिनदेव का प्रधान शिष्य (सम ११३) । २ अनुपम ज्ञानादियुग-समूह को धारण करनेवाला जैन साधु, आचार्य वगैरह, 'सेजंभव गणहर' (आवम, पव २७६) । ०हरिद पु [धरेन्द्र] गणधरो मे श्रेष्ठ, प्रधान गणधर (पठम ३, ४३, ५८, १) । ०हारि पुं [धारिन्] देखो ०हर (गण २३, सार्ध १) । ०जीव पु [जीव] गण के नाम से निर्वाह करनेवाला (ठा ५, १) । ०वच्छेदय, ०वच्छेदय, ०वच्छेयय पु [वच्छेदक] साधु-गण के कार्य की चिन्ता करनेवाला साधु (आचा २, १, १०, ठा ३, ३, कप्प) । ०हिवइ पुं [धिपति] १ शिव-पुत्र, गजानन, गणेश (गा ४०३, पाम्म) । २ जिनदेव का प्रधान-शिष्य (पठम २६, ४) । गणग पुं [गणक] १ ज्योतिषी, जोशी, ज्योतिष-शास्त्र का जानकार, दैवज्ञ (णाय १, १) । २ भंडारी, भाण्डागारिक (णाय १, १—पत्र १६) । गणण न [गणन] गिनती, संख्या (वव १) । गणणा स्त्री [गणना] गिनती, संख्या, संख्या (सुर २, १३२, प्रासू १००, सूत्र २, २) ।

गणणाइआ स्त्री [दे. गण-नायिका] पावती, चण्डी, शिवपत्नी (दे २, ८७) । गणय देखो गणग (श्रीप, सुपा २०३) । गणसम वि [दे] गोष्ठी-रत, गोठ में लीन (दे २, ८७) । गणायमह पुं [दे] विवाह-गणक (दे २, ८६) । गणाचिअ वि [गणित] गिनती कराया हुआ (स ६२६) । गणि वि [गणिन्] १ गण का स्वामी, गण का मुखिया । स्त्री, गणिणी (सुपा ६०२) । २ पुं. आचार्य, गच्छनायक, साधु-समुदाय का नायक (ठा ८) । ३ जिनदेव का प्रधान साधु-शिष्य (पठम ६१, १०) । ४ परिच्छेद, निश्चय, सिद्धान्त (णदि) । ०पिटग न [पिटक] १ बारह मुख्य जैन आगम ग्रन्थ, द्वादशाङ्गी (सम १, १०६) । २ निर्गुक्ति वगैरह से युक्त जैन आगम (श्रीप) । ३ पुं. यल-विशेष, जिन-शामन का अविष्टायक देव (संति ४) । ४ निश्चय-समूह, सिद्धान्त-समूह (णदि) । ०विज्ञा स्त्री [विद्या] १ शास्त्र-विशेष । २ ज्योतिष और निमित्त शास्त्र का ज्ञान (णदि) । गणि पुस्त्री [गणि] अध्ययन, परिच्छेद, प्रकरण (णदि १४३) । गणिम न [गणिम] गिनती से बेची जाती वस्तु, सख्या पर जिसका भाव हो वह (आ १८, णाय १, ८) । गणिम न [गणिम] १ गणना, गिनती, सख्या । २ वि संख्येय, जिसकी गिनती की जा सके वह, (अणु १५४) । गणिय वि [गणित] १ गिना हुआ । २ न गिनती, सख्या (ठा ६, ज २) । ३ जैन साधुओं का एक कुल (कप्प) । ४ अंक गणित, गणित-शास्त्र (णदि, अणु) । ०लिवि स्त्री [लिपि] लिपि-विशेष, अक-लिपि (सम ३५) । गणिय पु [गणिक] गणित-शास्त्र का ज्ञाता, 'गणियं जाणइ गणिका' (अणु) । गणिया स्त्री [गणिका] वेश्या, गणिका (आ १२ विपा १, २) । गणिर वि [गणयितृ] गिनती करनेवाला (गा २०८) ।

गणेत्तिआ स्त्री [दे] १ छद्म का बना गणेश । हुमा हाय का आभूषण-विशेष (णाय १, १६—पत्र २१३, श्रीप, भग, महा) । २ अल-माला (दे २, ८१) । गणेशर पुं [गणेश्वर] १ गण का नायक । २ छन्द-विशेष (पिंग) । गणज वि [गण्य] गणनीय, संख्येय (सवोव १०) । गण्णा (मा) स्त्री [गणना] गिनती (प्राकृ १०२) । गत्त न [गात्र] देह, शरीर (श्रीप, पाम्म, सुर २, १०१) । गत्त देखो गड्ड (भग १५) । स्त्री, गत्ता (सुपा २१४) । गत्त न [दे] १ ईपा, चौपाई या चारपाई की लकड़ी-विशेष । २ पंक, कदम (दे २, ६६) । ३ वि गत, गया हुआ (पड्) । ०गत्तण वि [कर्तन] काटनेवाला, छेदक (सूत्र १, १५, २४) । गत्तडि स्त्री [दे] १ गवादनी, गोचर-भूमि गत्ताडी (दे २, ८२) । २ गायिका, गाने-वाली स्त्री (पड् दे २, ८२) । गत्थ वि [ग्रस्त] कवलित, प्राप्त किया हुआ, 'अइमहच्छनोभगच्छा (?) त्या' (परह १, ३—पत्र ४४, नाट—चैत १२६) । गद सक [गद] बोलना, कहना । वक्तृ गदत (नाट—चैत ४५) । गदि देखो गड्ड = गति (देवेन्द्र ३५१) । गदुअ (शौ) अ [गत्वा] जाकर (प्राकृ ८८) । गद् देखो गज्ज = गद्य (प्राकृ २१) । गदतोय पु [गर्दतोय] लोकान्तिक देवों की एक जाति (सम ८५, णाय १, ८) । गद्दभ पुं [दे] कटु-ध्वनि, कर्ण-कटु आवाज (दे २, ८२, पाम्म, स १११, ४२०) । गद्दभ देखो गद्दह = गर्दभ (प्राकृ) । गद्दभय देखो गद्दहय (आचा २, ३, १, आवम) । गद्दभाल पु [गर्दभाल] स्वनाम-प्रसिद्ध एक परिव्राजक (भग) । गद्दभालि पु [गर्दभालि] एक जैन मुनि (ती २५) । गद्दभिह पु [गर्दभिह] उज्जयिनी का एक राजा (निचू १०, पि २६१, ४००) ।

४) । २ न वारहवां गुण-स्थानक (सम २६) ।
°राग वि [°राग] १ वीतराग, राग-रहित ।
२ पु जिनदेव, तीर्थंकर देव (गच्छ १) ।

खीयमाण वि [क्षीयमाण] जिसका क्षय
होता जाता हो वह (गा ६८६ टी) ।

खीर न [क्षीर] वेला, दो दिन का उपवाम
(संश्लेष ५८) । °डिडिर पु [°डिण्डीग]
देव-विशेष (कुप्र ७६) । °डिडिरा स्त्री
[°डिण्डीरा] देवी-विशेष (कुप्र ७६) । °वर
पु [°वर] १ समुद्र-विशेष । २ द्वीप विशेष
(मुज्ज १६) ।

खीर न [क्षीर] १ दुग्ध, दूध (हे २, १७,
प्रासू १३ १६८) । २ पानी, जल (हे २,
१७) । ३ पु क्षीरवर समुद्र का अधिष्ठायक
देव (जीव ३) । ४ समुद्र विशेष, क्षीर समुद्र
(पउम ६६, १८) । कयच पु [°कदम्ब]
इस नाम का एक ब्राह्मण-उपाध्याय (पउम
२१, ६) । °काओली स्त्री [°काकोली]
वनस्पति-विशेष, क्षीरविदारी, (पएण १) ।
°जल पु [°जल] क्षीर समुद्र, समुद्र-विशेष
(दीव) । °जलनिहि पु [°जलनिधि] वही
पूर्वाक्त अर्थ (मुपा २६५) । °दुम, °दुम पु
[°द्रुम] दूधवाला पेड़, जिसमें दूध निकलता
है ऐसे वृक्ष की जाति (श्लेष ३४६, निरू
१) । °धाई स्त्री [°धात्री] दूध पिलानेवाली
दाई (गाया १, १) । °पूर पु [°पूर]
उबलता हुआ दूध (पएण १७) । °पूभ
पु [°प्रभ] क्षीरवर द्वीप का एक अधिष्ठाता
देव (जीव ३) । °मेह पु [°मेघ] दूध-
समान स्वादवाले पानी की वर्षा (तित्थ) ।
°वई स्त्री [°वती] प्रभूत दूध देनेवाली (वृह
३) । °वर पु [°वर] द्वीप-विशेष (जीव
३) । °वारि न [°वारि] क्षीर समुद्र का
जल (पउम ६६, १८) । °हर पु [°गृह,
°धर] क्षीर-सागर (वज्जा २४) । °सव
पु [°श्रव] लब्धि-विशेष, जिसके प्रभाव
में वचन दूध की तरह मधुर मालूम हो ।
२ ऐसी लब्धिवाला जीव (पएह २, १,
श्रीप) ।

खीरइय वि [क्षीरकित] सजात क्षीर, जिसमें
दूध उत्पन्न हुआ हो वह, 'तएण माली
पत्तिया वत्तिआ गम्भिया पसूया आगयगन्वा

खीरा (?) २ इया वद्धफला' (गाया १, ७) ।
खीरि वि [क्षीरिन्] १ दूधवाला । २ पुं
जिममें दूध निकलता है ऐसे वृक्ष की जाति
(उप १०३१ टी) ।

खीरज्जमाण वि [क्षीर्यमाण] जिसका
दोहन किया जाता हो वह (आचा २,
१, ४) ।

खीरिणी स्त्री [क्षीरिणी] १ दूधवाली (आचा
२, १, ४) । २ वृक्ष-विशेष (पएण १—
पत्र ३१) ।

खीरी स्त्री [क्षीरेयी] खीर, पक्वान्न-विशेष
(मुपा ६३६, पात्र) ।

खीरोअ पुं [क्षीरोद] समुद्र-विशेष, क्षीर-
सागर (हे २, १८२; गा ११७, गउड, उप
५३० टी, स ३४४) ।

खीरोआ स्त्री [क्षीरोदा] इस नाम की एक
नदी (इक ठा २, ३) ।

खीरोद देखो खीरोअ (ठा ७) ।

खीरोदक पु [क्षीरोदक] क्षीर-सागर
खीरोदय (गाया १, ८, श्रीप) ।

खीरोदा देखो खीरोआ (ठा ३, ४—पत्र
१६१) ।

खील पु [क्षील, °क] खीला, खूँट,
खीलग } खूँटी (स १०६, सूअ १, ११, हे
खीलव १, १८१, कुमा) । °मग्ग पु
[°मागे] मार्ग-विशेष, जहाँ धूली ज्यादा
रहने में खूँटे के निशान बनाये गये हो (सूअ
१, ११) ।

खीलावण न [क्षीलन] खेल कराना, ब्रीडा
कराना । °धाई स्त्री [°धात्री] खेल कूद
करानेवाली दाई (गाया १, १—पत्र ३७) ।

खीलिया देखो कीलिआ (जीवस ४८) ।

खीलिया स्त्री [क्षीलिका] छोटी खूँटी (आवम) ।

खीच पु [क्षीच] मद-आप्त, मदोन्मत्त, मस्त
(दे, ८, ६६) ।

खु अ [खलु] इन अर्थों का सूचक
अव्यय—१ निश्चय, अवधारण । २
वितर्क, विचार । ३ सशय, सदेह । ४ सभा-
वना । ५ विस्मय, आश्चर्य (हे २, १६८,
पह, गा ६, १४२, ४०१, स्वप्न ६, कुमा) ।

खु° देखो खुहा (पएह २, ४, मुपा १६८,
गाया १, १३) ।

खुइ स्त्री [क्षुति] १ छोक । २ छोक का
निशान (गाया १, १६, भग ३, १) ।

खुइय वि [दे] १ विच्छिन्न । २ विध्यात,
शान्त, 'खुइया चिया' (कुप्र १४०) ।

खुखुण्य पु [दे] नाक का छिद्र (दे २, ७६,
पात्र) ।

खुखुणी स्त्री [दे] रय्या, मुहत्ता (दे २ ७६) ।

खुगाह पु [दे] अश्व की एक उत्तम जाति
(सम्मत्त २१६) ।

खूट पुं [दे] खूँट, खूँटी । °मोडय वि
[°मोटक] १ खूँटे को मोड़नेवाला, उममें
छूटकर भाग जानेवाला । २ पु इस नाम का
एक हाथी (नाट—मुच्छ ८४) ।

खुडय वि [दे] स्खलित, स्खलना-प्राप्त (दे
२, ७१) ।

खुद (शौ) सक [क्षुद] १ जाना । २ पीसना,
कूटना । खुँददि (प्राक् ६३) ।

खुद अक [क्षुध] भूख लगना । खु दह
(प्राक् ६६) ।

खुपा स्त्री [दे] वृष्टि को रोकने के लिए बनाया
जाता एक तृणमय उपकरण (दे २, ७५) ।

खुभण वि [क्षोभण] क्षोभ उपजानेवाला
(पएह १, १—पत्र २३) ।

खुज्ज अक [परि + अस्] १ फँकना । २
निराम करना । खुज्ज (प्राक् ७२) ।

खुज्ज वि [कुज्ज] १ कूबडा । २ वामन
खुज्जय (हे १, १८१, गा ५३४) । ३ वक्र,
टेढ़ा (श्लेष) । ४ एक पार्श्व से हीन (पव
११०) । ५ न. सस्थान-विशेष, शरीर का
वामन आकार (ठा ६, सम १४६, श्रीप) ।
स्त्री खुज्जा (गाया १, १) ।

खुज्जिय वि [कुज्जिन्] कूबडा (आचा) ।

खुट्ट सक [तुड्] १ तोड़ना, खरिडत
करना, टुकड़ा करना । २ अक खूटना, क्षीण
होना । ३ टूटना, श्रुटित होना । खुट्ट (नाट—
साहित्य २२६, हे ४, ११६), खुट्टति
(उव) ।

खुट्ट वि [दे] श्रुटित, खरिडत, छिन्न (हे २,
७४, भवि) ।

खुड देखो खुह = तुड् । खुड (हे ४, ११६) ।
खुडेंति (से ८, ४८) । वक्र. 'पवगभिन्नमत्थया

१५, १४४)। ४ जाने योग्य। ५ भोगने योग्य—स्वपत्नी वगैरह (सुर १२, ५२)।
गम्भ न [गम्भ] गमन, 'अगम्भगम्भ सुविलोषु घन्' (सुख ८, १३)।

गम्भमाण देखो गम = गम्।

गय वि [दे] १ धृष्टित, अमित, घुमाया गया (दे २, ६६, षड्)। २ मृत, मरा हुआ, निर्जीव (दे २, ६६)।

गय वि [गत] १ गया हुआ (सुपा ३३४)। २ अतिक्रान्त, गुजरा हुआ (दे १, ५६)। ३ विज्ञात, जाना हुआ (गडड)। ४ नष्ट, हत (उप ७२८ टी)। ५ प्राप्त, 'आघईगयपि सुहए' (प्रासू ८३, १०७)। ६ स्थित, रहा हुआ, 'मणगय' (उत्त १)। ७ प्रविष्ट, जिसने प्रवेश किया हो (ठा ४, १)। ८ प्रवृत्त (सूत्र १, १, १)। ९ व्यवस्थित (श्रीप)। १० न गति, गमन, 'उसमो गइदमयगलमुललियगय-विक्कमो भयवं' (वसु, सुपा ५७८, आचा)।
°पाण वि [°पाण] मृत, मरा हुआ (आ २७)। °राय वि [°राग] राग-रहित, वीत-राग, निरीह (उप ७२८ टी)। °वइया, °वई स्त्री [°पतिका] १ विधवा, रांड, (श्रीप, पउम २६, ४२)। २ जिसका पति विदेश गया हो वह स्त्री, प्रोषित-भर्तृका (गा ३३२, पउम २६ ८२)। °वय वि [°वयस्] वृद्ध, वृद्धा (पात्र)। °णुगइअ वि [°नुग-तिक] अध, परम्परा का अनुयायी, अंध-अदालत (उवर ४६)।

गय पुं [गज] १ हाथी, हस्ती, कुजर (अणु, श्रीप, प्रासू १५४, सुपा ३३४)। २ एक अंतकृत् जैन मुनि, गज सुकुमाल मुनि (अंत ३)। ३ इस नाम का एक सेठ (उप ७६८ टी)। ४ रावण का एक सुभट (पउम ५६, २)। °उर न [°पुर] नगर-विशेष, कुरु देश का प्रधान नगर, हस्तिनापुर (उप १०१४, महा, सण)। °कण्ण, °कन्त पुं [°कण्] १ द्वीप-विशेष। २ उसमें रहनेवाला (जीव ३, ठा ४, २)। °कलभ पुं [°कलभ] हाथी का वस्त्र (राय)। °गय वि [°गत] हाथी के ऊपर आरुढ़ (श्रीप)। °गपय पु [°प्रपद] पर्वत-विशेष (आक)। °त्य वि [°स्थ] हाथी के ऊपर स्थित (पउम ८, ८६)। °पुर

देखो °उर (सूत्र १, ५, ६)। °वयय पुं [°वन्धक] हाथी को पकड़नेवाली जाति (सुपा ६४२)। °मारिणी स्त्री [°मारिणी] वनस्पति-विशेष, गुच्छ विशेष (पण १—पत्र ३२)। °मुह पुं [°मुख] १ गणेश, गणपति, शिव-पुत्र (पात्र)। २ यक्ष-विशेष (गण १६)। °राय पुं [°राज] प्रधान हाथी, श्रेष्ठ हस्ती (सुपा ३८६)। °वइ पुं [°पति] गजेन्द्र, श्रेष्ठ हस्ती (राया १, १६, सुपा २८६)। °वर पु [°वर] प्रधान हाथी। °वरारि पु [°वरारि] सिंह, शार्ङ्गल, वनराज (पउम १७, ७६)। °वहू स्त्री [°वधू] हथिनी, हस्तिनी (पात्र)। °वीही स्त्री [°वीही] शूक्र वगैरह महाग्रहो का चार-क्षेत्र-विशेष (ठा ६)। °ससण पु [°श्वसन] हाथी की सूँढ़ (श्रीप)। °सुकुमाल पु [°सुकुमाल] एक प्रसिद्ध जैन मुनि, उसी भव मे मुक्ति-गत जैन साधु-विशेष (अत, पडि)। °रि पु [°रि] सिंह, पञ्चानन (भवि)। °रोह पुं [°रोह] हस्तिपक, महावत (पात्र)।

गय पुं [गड] रोग, विमारी (श्रीप, सुपा ५७८)।

गयक पु [गजाङ्क] देवों की एक जाति, दिक्कुमार देव (श्रीप)।

गयद पुं [गजेन्द्र] श्रेष्ठ हाथी (गडड)।

गयकठ पुं [गजकण्ठ] रत्न-विशेष (राय ६७)।

गयकन्त पुं [गजकर्ण] अनायं देश-विशेष (पव २७४)।

गयगपय न [गजाग्रपद] दशार्णकूट का एक तीर्थ (आचानि ३३२)।

गयण न [गगन] 'ह' अक्षर (सिरि १६६)।

°मणि पु [°मणि] सूर्य (कुप्र ५१)।

गयण न [गगन] गगन, आकाश, अम्बर (हे २, १६४, गडड)। °गड पुं [गति] एक राजकुमार (दंस)। °चर वि [°चर] आकाश में चलनेवाला, पक्षी, विद्याधर वगैरह (सुपा २५०)। °मडल पु [मण्डल] एक राजा (दस)।

गयणरइ पुं [दे] मेघ, मेह, वादल (दे २, ८८)।

गयणिदु पुं [गगनेन्दु] विद्याधर वंश के एक राजा का नाम (पउम ५, ५५)।

गयनिमीलिया स्त्री [गजनिमीलिका] ज्येष्ठा, उदामीनता (म ५१)।

गयमुह पुं [गजमुख] अनायं देश-विशेष (पव २७४)।

गयसाउल } वि [दे] विरक्त, वैरागी (दे गयसाउल } ८७, षड्)।

गया स्त्री [गदा] लोहे का या पाषाण का शस्त्र-विशेष, लोहे का मुगदर या लाठी (राय)।

°हर पुं [°धर] वामुदेव; (उत्त ११)।

गया स्त्री [गदा] एक देव-विमान (देवेन्द्र १३३)।

गया स्त्री [गया] स्वनाम-प्रसिद्ध नगर-विशेष (उप २५१)।

°गर वि [°कर] करनेवाला, कर्ता (मण)।

गर पुं [गर] १ विप विशेष, एक प्रकार का जहर (निचू १)। २ ज्योतिष-शास्त्र-प्रसिद्ध ववादि करणों में से एक (विसे ३३४८)।

°गरण देखो करण (रयण ६३)।

गरल न [गरल] १ विप, जहर (प्रासू ३६)। २ रहस्य। ३ वि. अव्यक्त, अस्पष्ट; 'अ-गरलाए अ-मम्मणाए' (श्रीप)।

गरलिगावद्ध वि [गरलिगावद्ध] निक्षिप्त, उपन्यस्त (निचू १)।

गरह मक [गर्ह] निन्दा करना, घृणा करना। गरहइ, गरहट (भग)। वक्क गरहत (द्र १५)। कवक्क गरहिज्जमाण (राया १, ८)। सक्क गरहित्ता (आचा २, १५)। हेक्क गरहित्तए (कस, ठा २, १)। क. गरहिणज्ज, गरहणीय, गरहियव्व (सुपा १८४, ३७६, पणह २, १)।

गरहण न [गर्हण] निन्दा, घृणा (पि १३२)।

गरहणया } स्त्री [गर्हणा] निन्दा, घृणा (भग गरहणा } १७, ३, श्रीप, पणह २, १)।

गरहा स्त्री [गर्हा] निन्दा, घृणा (भग)।

गरहिअ वि [गर्हित] निन्दित, घृणित (स ६३, द्र ३३, सण)।

°गरिअ वि [कृत] किया हुआ, निर्मित (दे ७, ११)।

गरिद्व वि [गरिद्व] अति गुरु, बड़ा भारी (सुपा १०, १२८ प्रासू १५४)।

गरिम पु स्त्री [गरिमन्] गुल्ता, गुरुत्व, गौरव (हे १, ३५, सुपा २३, १०६)।

खुव पुं [क्षुप] जिसकी शाखा और मूल छोटे होते हैं ऐसा वृक्ष (गाथा १, १—पत्र ६५)।
खुवय पु [द] तृण-विशेष, कण्टकि-मृण, कंटीना घास (दे २, ७५)।

खुव देखो खुम। खुवइ (पह)।

खुवय न [दे] पत्ते का पुडवा, दोना (वव २)।

खुह देखो खुम। कृ खुहियन्व (मुपा ६१६)।

खुहा श्री [क्षुध] भूख, बुभुक्षा (महा, प्रासू १७३)। °परिसह, °परीसह पुं [°परिपह, °परीपह] भूख की वेदना को शान्ति से सहन करना (उत्त २, पचा १)।
खुहिय वि [क्षुभित] १ क्षोभ-प्राप्त (मे १, ४६, मुपा २४१)। २ क्षोभ, सत्रास (शोध ७)।

खूण न [क्षूग] नुकसान, हानि (सुर ४, ११३, महा)। २ अपराध, गुनाह (महा)।
३ न्यूनता, कमी (मुपा ७, ४३०)।

खेअ सक [खेदय] खिन्न करना, खेद उपजाना। खेइ (विसे १४७२; महा)।

खेअ पु [खेद] १ खेद, उद्वेग, शोक (उप ७२८ टी)। २ तकलीफ, परिश्रम (म ३१५)।
३ समय विरति (उत्त १५)। ४ थकावट, श्रान्ति (आचा)। °ण्ण, °न्न वि [°ज्ञ] निपुण, कुशल, चतुर, जानकार (उप ६०८, शोध ६४७)।

खेअ देखो खेन (सूय १, ६, आचा)।

खेअ पुं [क्षेप] ध्याग, मोचन (मे १२, ४८)।

खेअण न [खेदन] १ खेद, उद्वेग। २ वि खेद उपजानेवाला (कुमा)।

खेअर देखो खयर (कुमा, सुर ३, ६)। °हिव पु [°धिप] विद्याधरो का राजा (पउम २८, ५७)। °हिवइ पु [°धिपति] विद्याधरो का राजा (पउम २८, ४४)।

खेअरिंद पु [खेनरेन्द्र] खेचरो का राजा (पउम ६, ५२)।

खेअरी देखो खहररी (कुमा)।

खेआलु वि [दे] १ नि सह, मन्द, आलसी।
२ असहिष्णु ईर्ष्यालु (दे २, ७७)।

खेइय वि [खेदेत] खिन्न किया हुआ (स ६३४)।

खेचर देखो खेअर (ठा ३, १)।

खेज्जणा श्री [खेज्जना] खेद-सूचक वाणी, खेद (गाथा १ १८)।

खेड सक [कृप्] खेती करना, चास करना।
खेडइ (मुपा २७६), ग्रह अत्रया य दुस्त्रिवि हलाइं वेडन अत्रयाच्चेव' (मुपा २३७)।

खेड मक [खेडय] हकना। खेडए (वेइय ३३७, कुप्र ७१)।

खेड न [खेट] १ घूलो का प्राकारवाला नगर (श्रीप, पणह १, २)। २ नदी और पर्वतो से वेष्टित नगर (सूय २, २)। ३ पृ-मृगया, शिकार (अवि)।

खेडग न [खेटक] फलक, ढाल (पणह १, ३)।

खेडण न [रूपण] खेती करना (मुपा २३७)।

खेडग न [खेटन] खेदेडना, पीछे हटाना (उप २२६)।

खेडगअ न [खेलनरु] खिलौना (नाट—रत्ना ६२)।

खेडय पुं [क्षेवटक] १ विष, जहर (हे २, ६)। २ ज्वर-विशेष (कुमा)।

खेडय वि [स्फेटक] नाशक, नाश करनेवाला (हे २, ६, कुमा)।

खेडय न [खेटक] छोटा नाव (पास, सुर २, १६२)।

खेडावग वि [खेलक] खेल करनेवाला, तमासगिर (उप ५ १८८)।

खेडिअ वि [कृष्ट] हल ने विदारित (दे १, १३६)।

खेडिअ पु [स्फेटिक] १ नाशवाला, नश्वर।
२ अनादरवाला (हे २, ६)।

खेडु अक [रम्] क्रीडा करना, खेल करना।
खेडुइ (हे ४, १६८)। खेडुति (कुमा)।

खेडु { न [खेल] १ क्रीडा, खेल, तमाशा,
खेडुय { मजाक (हे २, १७४, महा, मुपा २७, स ५०६)। २ बहाना, छल, 'मय-खेडुय विहेकरण' (मुपा ५२३)।

खेडुा श्री [क्रोडा] क्रीडा, खेल, तमाशा (श्रीप, पउम ८, ३७, गच्छ २)।

खेडुिया श्री [दे] वारी, इफा, 'मह' पच्छिमा खेडुिया' (स ४८५)।

खेत्त पुन [क्षेत्र] १ आकाश (विसे २०८८)।

२ कृषि भूमि, खेत (बृह १)। ३ जमीन, भूमि। ४ देश, गांव, नगर वगैरह म्यान (कप्प, पंच विमे)। ५ भार्या, स्त्री (ठा १०)।
°कप्प पु [°कल्प] १ देश का रिवाज (बृह ६)। २ क्षेत्र-संबन्धी अनुष्ठान। ३ ग्रन्थ-विशेष, जिसमें क्षेत्र-विषयक आचार का प्रतिपादन हो (पंच)। °पलिओत्रम न [°पत्योपम] काल का नाप-विशेष (अणु)। °रिय पु [°र्य] आर्य भूमि में उत्पन्न मनुष्य (पण्ण १)। देखो खित्त = क्षेत्र।

खेत्तय पु [क्षेत्रक] राहु (मूज २०)।

खेत्ति वि [क्षेत्रिन्] क्षेत्रवाला, क्षेत्र का स्वामी (विमे १४६२)।

खेम न [क्षेम] १ कुशल, कल्याण, हित (पउम ६५, १७, गा ४६६, भत्त ३६, रयण ६)। २ प्राप्त वस्तु का परिपालन (गाथा १, ५)। ३ वि कुशलता-युक्त, हितकर, उपद्रव-रहित (गाथा १, १, दम ७)।
४ पु पाटलिपुत्र के राजा जितशत्रु का एक अमात्य (आचू १)। °पुरी श्री [°पुरी] १ नारी-विशेष (पउम २०, ७)। २ विदेह-वर्ष की एक नगरी (ठा २, ३)।

खेमकर पु [क्षेमकर] १ कुलकर पुरुष-विशेष (पउम ३, ५०)। २ ऐरवत क्षेत्र के चतुर्थ कुलकर-पुरुष (सम १५३)। ३ ग्रह-विशेष ग्राहिष्ठाधिक देव-विशेष (ठा २, ३)। ४ स्वनाम-प्रसिद्ध एक जैन मुनि (पउम २१, ८०)। ५ वि कल्याण-कारक, हित-जनक (उ २११ टी)।

खेमधर पु [क्षेमन्धर] १ कुलकर पुरुष-विशेष (पउम ३, ५२) ऐरवत क्षेत्र का पंचवां कुलकर पुरुष-विशेष (सम १५३)। ३ वि. क्षेम-धारक उपद्रव-रहित (राज)।

खेमर पुं [क्षेमरु] स्वनाम-प्रसिद्ध एक अन्त कृद् जैनमुनि (अत)।

खेमराय पुं [क्षेमराज] राजा कुमारपाल का एक पूर्व पुरुष (कुप्र ५)।

खेमलिज्जिया श्री [क्षेमलिग] जैनमुनि-गण की एक शाखा (कप्प)।

खेमा श्री [क्षेमा] १ विदेह वर्ष की एक नगरी (ठा २, ३)। २ दोमपुरी-नामक नगरी-विशेष (पउम २०, १०)।

गहलफोड पुं [दे] डमरुक, वाद्य-विशेष (दे २, ८६)।

गहल्लरण न [दे] मांस खाते हुए कुपित शेर की गर्जना (माल ६०)।

गह्लोह न [दे] गड्ढक, पात्र विशेष (निचू १)।

गव पुंजी [गो] पशु, जानवर (सूत्र १, २, ३)।

गवक्ख पु [गवाञ्च] १ गवाक्ष, वातायन, भरोखा (श्रीप, परह २, ४)। २ गवाक्ष के आकृति का रत्न विशेष (जीव ३)। ३ जाल न [नाल] १ रत्न-विशेष का ढेर (जीव ३, राय)। २ जालीवाला वातायन (श्रीप)।

गवन्छ पुं [दे] आच्छादन, ढकना (राय)।

गवन्छिय वि [दे] आच्छादित, ढका हुआ (राय, जीव ३)।

गवत्त न [दे] घास, तुण (दे २, ८५)।

गवत्थिय देखो गवच्छिय (पद्मच० ४१—५)।

गवय पु [गवय] गो की आकृति का जगली पशु-विशेष, नील गाय (परह १, १)।

गवर पुं [दे] वनस्पति-विशेष (परह १—पत्र ३४)।

गवल पुं [गवल] १ जगली पशु विशेष, जंगली महिष (पद्म ८८, ६)। २ न. महिष का सिंग (परह १७, सुपा ६२)।

गवा ली [गो] गैया, गाय (पद्म ८०, १३)।

गवादणी देखो गवायणी (आचा २, १०, २)।

गवायणी ली [गवादनी] गोचर-भूमि (दे २, ८२)।

गवार वि [दे] गँवार, छोटे गाँव का निवासी (वज्रा ४)।

गवालय न [गवालीक] गौ के विषय में अनृत भाषण (परह १, २)।

गविअ वि [दे] अव्युत्त, निश्चित (पड्)।

गविट्ट वि [गवेपित] खोजा हुआ (सुपा १५४, ६४०, स ४८४, पाञ्च)।

गविल न [दे] उत्तम कोटि की चीनी, शुद्ध मिर्ची (उर ५, ६)।

गवेधुआ ली [गवेधुका] जैनमुनि-गण की एक शाखा (कप्प)।

गवेलग पुंजी [गवेलक] १ मेघ, मेह (गाया १, १, श्रीप)। २ गौ और मेह (ठा ७)।

गवेस सक [गवेपय्] गवेपणा करना, खोजना, तलाश करना। गवेसइ (महा: पट्)। भूका गवेसित्वा (आचा)। वक्क गवेसन, गवेसयंत, गवेसमाण (आ १२, सुपा ४१०, सुर १, २०२, गाया १, ४)। हेक्क गवेसित्तण (कप्प)।

गवेसइत्तु वि [गवेपयित्ठ] खोज करनेवाला, गवेपक (ठा ४, २)।

गवेसग वि [गवेपक] ऊपर देखो (उप पृ ३३)।

गवेसण न [गवेपण] खोज, अन्वेषण (श्रीप, सुर ४, १४३)।

गवेसणया ली [गवेपणा] ईहा-ज्ञान, संभावना-ज्ञान (एदि १७४)।

गवेसणया } ली [गवेपणा] १ खोज, अन्वे-
गवेसणा } षण (श्रीप, सुपा २३३)। २ शुद्ध भिक्षा की याचना (श्रीप ३)। ३ भिक्षा का ग्रहण (ठा ३, ४)।

गवेसय देखो गवेसग (भवि)।

गवेसाविय वि [गवेपित] १ दूसरे से खोज-वाया हुआ, दूसरे द्वारा खोज किया गया (स २०७, श्रीप ६२२ टी)। २ गवेपित, अन्वे-पित, खोजा हुआ (स ६८)।

गवेसि वि [गवेप्पिन्] खोज करनेवाला, गवेपक (पुप्फ ४४०)।

गवेसिअ वि [गवेपित] अन्वेपित, खोजा हुआ (सुर १५, १२६)।

गव्व पुं [गर्वे] मान, अहंकार, अभिमान (भग १५, पव २१६)।

गव्वर न [गह वर] कोटर, उहा (स ३६३)।

गव्वि वि [गर्विन्] अभिमानी, गर्व-युक्त (आ १२, दे ७, ६१)।

गव्विट्ट वि [गर्विष्ठ] विशेष अभिमानी, गर्व करनेवाला (दे १, १२८)।

गव्विय वि [गर्वित्] गर्व-युक्त, जिसकी अभि-मान उत्पन्न हुआ हो वह (पाञ्च, सुपा २७०)।

गव्विर वि [गर्विन्] अहंकारी, अभिमानी (हे २, १५६, हेका ४५)। ली. ०री (हेका ४५)।

गस मक [ग्रस्] खाना, निगलना, भक्षण करना। गसइ (हे ४, २०४, पड्)। वक्क गसत (उप ३२० टी)।

गसण न [ग्रसन] भक्षण, निगलना (म ५७)।

गमिअ वि [ग्रस्त] भक्षित, निगलित (कुमा, सुर ६, ६०, सुपा ४८६)।

गह सक [ग्रय्] ग्रंथना, गठना। गहेति (सूत्रनि १४०)।

गह मक [ग्रह्] १ ग्रहण करना, लेना। २ जानना। गहेइ (सण)। वक्क गहत (आ २७)। सक. गहाय, गहिअ, गहिऊण, गहिया, गहेउं (पि ५६१ नाट, पि ५८६, सूत्र १, ४, १, १, ५, २)। क. गहीअव्व, गहेअव्व (रयण ७०, भग)।

गह पु [ग्रह] १ ग्रहण, आदान, स्वीकार (विमे ३७१, मुर ३, ६२)। २ सूर्य, चन्द्र वगैरह ज्योतिष्क-देव (गड्ड, परह १, २)। ३ कर्म का बन्ध (दस ४)। ४ भूत वगैरह का आक्रमण, आवेश (कुमा, मुर २, १४४)। ५ गृद्धि, आसक्ति, तल्लीनता (आचा)। ६ संगीत का रस-विशेष (दम २)। ०खोभ पु [०क्षोभ] राक्षस वंश के एक राजा का नाम, एक लकेश (पद्म ५, २६६)। ०गज्जिय न [०गजित्] ग्रहों के संचार में होनेवाली आवाज (जीव ३)। ०गहिय वि [०गृहीत] भूतादि में आक्रान्त, पागल (कुमा, मुर २, १४४)। ०चरिय न [०चरित्] १ ज्योतिष-शास्त्र (वव ४)। २ ज्योतिष-शास्त्र का परिज्ञान (सम ८३)। ०दंड पु [०दण्ड] दण्डाकार ग्रह-पक्ति (भग ३, ७)। ०नाह पु [०नाथ] १ सूर्य, सूरज (आ २८)। २ चन्द्र, चन्द्रमा (उप ७२८ टी)। ०मुसल न [०मुसल] मुसलाकार ग्रह पक्ति (जीव ३)। ०सिंघाडग न [०शृङ्गाटक] १ पानी-फल के आकार-वाली ग्रहपक्ति (भग ३, ७)। २ ग्रह घुसम, ग्रह की जोड़ी (जीव ३)। ०हिच पुं [०धिप] सूर्य, सूरज (आ २८)।

गह पु [ग्रह] १ सबध (धर्मसं ३६३)। २ पकड़, धरना (सूत्र १, ३, २, ११, धर्मवि ७२)। ३ ग्रहण, ज्ञान (धर्मसं १३६४)। ०भिन्न न [०भिन्न] जिसके बीच से ग्रह का गमन हो वह नक्षत्र (वव १)। ०सम न [०सम] गेय काव्य का एक भेद (दसनि २, २३)।

१, १—पत्र ४३ टी, उवा १) । २ सन का वना हुआ वख (सम १२३, भग ११, ११, पएह २, ४) । ३ रेशमी वख (उप १४६, स २००) । ४ वि. अतसी-संवंधी, सन-संवन्धी, (ठा १०, भग १, १ ११) । °पसिण न [°प्रश्न] विद्या-विशेष, जिससे वख में देवता का आह्वान किया जाता है (ठा १०) ।

खोमिय न [क्षौमिक] १ कपाम का वना हुआ वख (ठा ३, ३) । २ सन का वना हुआ वख (कप्य) ।

खोमिय वि [क्षौमिक] १ रेशम सम्बन्धी । २ सन-सम्बन्धी (पव १२७) । खोय देखो खोद (सम १५१, इक) । खोर } न [दे] पात्र-विशेष, कचोलक, कटोरा खोरय } (उप पु १३५, एदि) । खोल पुं [दे] १ छोटा घघा (दे २, ८०) । २ वख का एक देश (दे २, ८०, ५, ३०, वृह १) । ३ मय का नीचला कीट कदंम (आचा २, १, ८, वृह १) । खोल पु [दे] गुप्तचर, जासूम (पिंड १२७) । खोल्ल न [दे] कोटर, गह्वर 'खोल्ल कोत्थर' (निह १५) ।

खोसलय वि [दे] दन्तुल, लम्बे और बाहर निकले हुए दाँतवाला (दे २, ७७) । खोसिय वि [दे] जीरा-प्राय किया हुआ (पिंड ३२१) । खोह देखो खोभ = क्षोभ्य । खोह (भवि) । वक्र ग्योहेत (से १५ ३३) । कवक ग्योहि-जत (से २, ३) । खोह देखो खोभ = क्षोभ (पएह १, ४, कुमा सुपा ३६७) । खोहण देखो खोभण (आ १२, सुपा ५०२) । खोहिय देखो खोभिय (सण) ।

॥ इय सिरिपाइअसदमहणवे खभाराइसदसकलणो
आरहमो तरंगो समत्तो ॥

ग

ग पुं [ग] व्यञ्जन-वर्ण विशेष, इसका स्थान कण्ठ है (ग्रामा, प्राप) ।

°ग वि [°ग] १ जानेवाला । २ प्राप्त होने-वाला, जैसे—पारग, वसग (आचा, महा) ।

गअवंत वि [गतवत्] गया हुआ (प्राक ३५) ।

गइ छी [गति] १ ज्ञान, अवबोध (विसे २५०२) । २ प्रकार, भेद (से १, ११) । ३ गमन, चलन, देशान्तर-प्राप्ति, (कुमा) । ४ जन्मान्तर-प्राप्ति, भवान्तर-गमन ठा (१, १, द) । ५ देव, मनुष्य, तिर्यञ्च, नरक और मुक्त जीव की अवस्था, देवादि-योनि (ठा ५, ३) । °तस पुं [°त्रस] अग्नि और वायु के जीव (कम्म ३, १३, ४, १६) । °नाम न [°नामन्] देवादि गति का कारण-भूत कर्म (सम ६७) । °पपवाय पु [°प्रपात] १ गति की नियतता (पएण १६) । २ प्रयाश-विशेष (भग ८, ७) ।

गडव पु [गजेन्द्र] १ ऐरावण हाथी, इन्द्र-हस्ती । २ श्रेष्ठ हाथी (गडव, कुमा) । °पय ३६

न [°पद] गिरनार पर्वत का एक जल-तीर्थ (ती ३) ।

गइल्य देखो गय = गत (सुख २, २२) ।

गड } पु [गो] बैल, वृषभ, साँढ (हे १, गडअ १५८) । °पुच्छ पु न [°पुच्छ] १ बैल की पूँछ । २ बाण-विशेष (कुमा) ।

गडअ पुं [गवय] गो-तुल्य आकृतिवाला जंगली पशु-विशेष, नील गाय (कुमा) ।

गडआ छी [गो] गैया, गौ (हे १, १५८) ।

गडड पुं [गौड] १ स्वनाम ध्यात देश, बंगाल का पूर्वी भाग (हे १, २०२, सुपा ३८६) । २ गौड देश का निवासी (हे १, २०२) । ३ गौड देश का राजा (गडड, कुमा) । °वह पुं [°वय] वाक्पतिराज का बनाया हुआ प्राकृत-भाषा का एक काव्य-ग्रन्थ (गडड) ।

गडण वि [गौण] अप्रवान, अमुख्य (दे १, ३) ।

गडणी छी [गौणी] शक्ति-विशेष, शब्द की एक शक्ति (दे १, ३) ।

गडरव देखो गारव (कुमा, हे १, १६३) ।

गडरविय वि [गौरवित] गौरव-युक्त किया हुआ, जिसका आदर—सम्मान किया गया हो वह, 'तज्जणयाइ तत्थागयाइ खेवेहि चव दियहेहि, गडरवियाइ रयणायरेण' (सुपा ३५६, ३६०) ।

गडरी छी [गौरी] १ पार्वती, शिव-पत्नी (सुपा १०६) । २ गौर वर्णवाली छी । ३ छी-विशेष (कुमा) । °पुत्त पु [°पुत्र] पार्वती का पुत्र, स्कन्द, कार्तिकेय (सुपा ४०१) ।

गअ देखो गय = गत, 'भीया जहागयगई पडिवज्ज गए' (रभा) ।

गग पु [गङ्ग] मुनि-विशेष, द्विक्रिय मत का प्रवर्तक आचार्य (ठा ७, विसे २४२५) । °दत्त पु [°दत्त] १ एक जैन मुनि, जो पष्ठ वामुदेव के पूर्वजन्म के गुरु थे (स १५३) । २ नववें वामुदेव के पूर्वजन्म का नाम (पउम २०, ७१) । ३ इस नाम का एक जैन श्रेष्ठो (भग १६, ५) । °दत्ता छी [°दत्ता] एक सार्थवाह की छी का नाम (विपा १, ७) ।

गगं देखो गगा । °पपवाय पुं [°प्रपात]

गाढ वि [गाढ] १ गाढ, निविड, सान्द्र (पात्र, सुर १४, ४८)। २ मजवूत, दृढ (सुर ४, २३७)। ३ क्रिवि. अत्यन्त, अतिशय (कप्प)।
 गाण न [गान] गीत गाना (हे ४, ६)।
 गाण वि [गायन्] गवैया, गीत-प्रवीण (दे २, १०८)।
 गाणगणिअ पु [गाणङ्गणिक] छ ही मास के भीतर एक साधु-गण से दूसरे गण में जानेवाला साधु (बृह १)।
 गाणी स्त्री [दे] गवादनी, गोचर-भूमि (दे २, ८२)।
 गाथा देखो गाहा (भग, पिग)।
 गाध वि [गाध] अस्ताव-रहित, कम गहरा (दे ५, २४)।
 गाम पुं [ग्राम] १ समूह, निकर, 'चवलो इंदियगामो' (सुर २, १३८)। २ प्राणि-समूह, जन्तु-निकर (विसे २८६६)। ३ गाँव, वसति, ग्राम (कप्प, गाय १, १८, औप)। ४ इन्द्रिय-समूह (भग, औप)। ५ कंडग, कंडय पु [कण्टक] १ इन्द्रिय-समूह रूप कांटा (भग, औप)। २ दुर्जनो का रूक्ष आलाप, गाली (आचा)। ३ धायग वि [घातक] गाँव का नाश करनेवाला (पराह १, ३)। ४ णिद्धमण न [निर्धमन] गाँव का पानी जाने का रास्ता, नाला (कप्प)। ५ धम्म पु [धर्म] १ विषयामिलाप, विषय की वाब्दा (ठा १०)। २ इन्द्रियो का स्वभाव। ३ विषय-प्रवृत्ति (आचा)। ४ मैथुन (सूत्र १, २, २)। ५ शब्द, रूप वगैरह इन्द्रियो का विषय (पराह १, ४)। ६ गाँव का धर्म, गाँव का कर्तव्य (ठा १०)। ७ दु पुन [ार्ध] आवा गाँव। २ उत्तर भारत, भारत का उत्तरप्रदेश (निबू १२)। ८ मारी स्त्री [मारी] गाँव भर में फैली हुई बीमारी-विशेष (जीव ३)। ९ रोग पु [रोग] ग्राम-व्यापक बीमारी (ज २)। १० वइ पु [पति] गाँव का मुखिया (पात्र)। ११ णुग्गाम न [नुग्राम] एक गाँव से दूसरे गाँव (औप)। १२ यार पुं [चार] विषय (आवम)।
 गामउड } पु [दे] गाँव का मुखिया (दे २, गामऊड } ८६, बृह ३)।
 गामातय न [ग्रामान्तिक] १ गाँव की सीमा

(आचा)। २ वि. गाँव की सीमा में रहनेवाला (दसा १)। ३ पु जेनेतर दार्शनिक-विशेष (सूत्र २, २)।
 गामगोह पु [दे] गाँव का मुखिया (दे २, ८६)।
 गामह पु [ग्रामक] गाँव, छोटा गाँव (आ १६)।
 गामण न [दे गमन] भूमि में गमन, भू-सर्पण (भग ११, ११)।
 गामणह न [दे] ग्राम-स्थान, ग्राम-प्रदेश (पड्)।
 गामणि देखो गामगी (दे २, ८६, पड्)।
 गामणिसुअ पुं [दे] गाँव का मुखिया (दे २, ८६)।
 गामणी पु [दे] गाँव का मुखिया (दे २, ८६, ग्रामा)।
 गामणी वि [ग्रामणी] १ श्रेष्ठ, प्रधान, नायक (से ७, ६०, घण १, गा ४४६, पड्)। २ पुं. वृण-विशेष (दे २, ११२)।
 गामपिंडोल्लग पु [दे] भोज से पेट भरने के लिये गाँव का आश्रय लेनेवाला भोजारी (आचा)।
 गामरोड पु [दे] छन से गाँव का मुखिया बन बैठनेवाला, गाँव के लोगो में फूट उत्पन्न कर गाँव का मालिक होनेवाला (दे २, ६०)।
 गामहण न [दे] ग्राम-स्थान, गाँव का प्रदेश (दे २, ६०)। २ छोटा गाँव (पात्र)।
 गामाग पुं [ग्रामाक] ग्राम-विशेष, इस नाम का एक सन्निवेश (आवम)।
 गामार वि [दे. ग्रामीण] ग्रामीण, छोटे गाँव का रहनेवाला (वज्जा ४)।
 गामि वि [ग्रामिन्] जानेवाला (गा १६७, आचा)। स्त्री णी (कप्प)।
 गामिअ वि [ग्रामिक] १ देखो गामिह (दे २, १००)। २ ग्राम का मुखिया (निबू २)। ३ विषयामिलापी (आचा)।
 गामिणिआ स्त्री [ग्रामिनिआ] गमन करनेवाली स्त्री, 'ललिअहसवहुगामिणिआहि' (अजि २६)।
 गामिह } वि [ग्रामीण] गाँव का
 गामिल्लुअ } निवासी, गँवार, (पउम ७७, गामीण } १०८, विसे १ टी, दे ८, ४७)। स्त्री णी (कुमा)।

गामुअ वि [ग्रामुक] जानेवाला (स १७५)।
 गामेइआ स्त्री [ग्रामेयिका] गाँव की रहनेवाली स्त्री, गँवार स्त्री (गउड)।
 गामेणी स्त्री [दे] छागी, भजा, बकरी (दे २, ८४)।
 गामेय देखो गामेयग (धमंवि १३७)।
 गामेयग वि [ग्रामेयक] गाँव का निवासी, गँवार (बृह १)।
 गामेरेड [दे] देखो गामरोड (पड्)।
 गामेलुअ } देखो गामिह (मृच्छ २७५, गामेह } विपा १, १, विमे १४११)।
 गामेस पुं [ग्रामेश] गाँव का अधिपति (दे २, ३७)।
 गायण वि [गायन्] गवैया, गायक (सिरि ७०१)।
 गायरी स्त्री [दे] गगरी, गगरी, कलशी, छोटा घड़ा (दे २, ८६)।
 गार वि [कार] कारक, कर्ता (भवि)।
 गार पुं [दे. आवन्] पत्थर, पाषाण, कंकड़ (वव ४)।
 गार न [अगार] गृह, घर, मकान (ठा ६)।
 गार पुं [दे. स्थ] गृहस्थ, गृही (निबू १)।
 गारिय पुं [स्थित] गृहस्थ, गृही, संसारी, 'गारवियजणउचियं भासासमिओ न भासिआ' (पुष्क १८१, ठा ६)।
 गारय वि [कारक] कर्ता, करनेवाला (स १५१)।
 गारव पुन [गौरव] १ अभिमान, अहंकार। २ अभिलाष, लालसा, 'तओ गारवा परणत्ता' (ठा ३, ४, आ ३५, सम ८)। ३ महत्व, श्रद्धा, प्रभाव (कुमा)। ४ आदर, सम्मान (पड्, प्राप्र)।
 गारवित वि [गौरवित] १ गौरवान्वित, महत्त्वशाली। २ गर्वीला, अभिमानी। ३ लालासावाला, अभिलाषी (सूत्र १, १, १)।
 गारविह वि [गौरववत्] ऊपर देखो (कम्म १, ५६)।
 गारहत्य वि [गार्हस्थ] गृहस्थ-सम्बन्धी, गृहस्थ का (पव २३५)।
 गारि पुं [अगारिन्] गृही, संसारी, गृहस्थ (उत्त ५, १६)।

गंड न [गण्ड] दोष, नाग (सूत्र १, ६ १६)। °माणिया स्त्री [°मानिका] पात्र-विशेष (राय १४०)। °विड्वाय पुं [°व्यति-पात] ज्योतिष-शास्त्र-प्रसिद्ध एक योग (संवेध ५४)।

गडइया स्त्री [गण्डिका] नदी-विशेष (आवम)।

गडय पुं [गण्डक] १ गेंडा, जानवर-विशेष (पात्र, दे ७, ५७)। २ उद्घोषणा करने-वाला पुरुष, ढेर लगानेवाला पुरुष (शोध ६४४)।

गंडली स्त्री [दे] गेंदरी, ऊख का टुकड़ा (उप ५ १०६)।

गडा देखो गठि = ग्रन्थि (प्राक् १८)।

गडाग पु [गण्डक] नाई, हजाम (आचा २, १, २, २)।

गडि पु [गण्डि] जन्तु-विशेष (उत्त १)।

गडि वि [गण्डिन्] १ गण्डमाला का रोग-वाला (आचा)। २ गण्ड रोगवाला (परह २, ५)।

गडिया स्त्री [गण्डिका] १ गेंदरी, ऊख का टुकड़ा (महा)। २ सोनार का एक उपकरण (ठा ४ ४)। ३ एक अर्थ के अधिकारवाली ग्रन्थ-पद्धति (सम १२६)।

गडिल देखो गधिल (इक)।

गंडिलावई देखो गधिलावई (इक)।

गडी स्त्री [गण्डी] १ सोनार का एक उपकरण (ठा ४, ४—पत्र २७१)। २ कमल की कणिका (उत्त ३६)। °तिंदुग न [°तिन्दुक] यक्ष-विशेष (ती ३८)। °पय पु [°पद] हाथी वगैरह चतुष्पद जानवर (ठा ४, ४)। °पोत्थय पुन [°पुस्तक] पुस्तक-विशेष (ठा ४, २)।

गडीरी स्त्री [दे] गण्दरी, ऊख का टुकड़ा (दे २, ८२)।

गडीव न [गाण्डीव] १ अर्जुन का धनुष (वेणी ११२)।

गंडीव न [दे. गाण्डीव] धनुष, कामुक (दे २, ८४, महा, पात्र)।

गडीवि पु [गाण्डीविन्] अर्जुन, मध्यम पाण्डव (वेणी ५८)।

गंडुअ न [गण्डु] ओसीसा, सिरहाना (महा)। गडुअ न [गण्डुत्] तृण-विशेष (दे २, ७५)।

गंडुल पु [गण्डोल] कृमि-विशेष, जो पेट में पैदा होता है (जी १५)।

गंडुवहाण न [गण्डोपधान] गाल का तकिया (पव ८४)।

गडूपय पुं [गण्डूपद] जन्तु-विशेष (राज)।

गडूल देखो गंडुल (परह १, १—पत्र २३)।

गंडूस पुं [गण्डूप] पानी का कुल्ला (गा २७०, सुपा ४४६), 'बहुमहरागडूसपाण' (उप ६८६ टी)।

गंडूस पुं [गण्डूप] पानी का कुल्ला (सूत्रनि ५४)।

गत देखो गा।

गंतव्य } देखो गम = गम्।
गंता }

गतिय न [गन्तुक] तृण-विशेष (परह १—पत्र ३३)।

गंती स्त्री [गन्त्री] गाडी, शकट (धम्म १२ टी, सुपा २७७)।

गतुं देखो गम = गम्।

गतुपञ्चागया स्त्री [गत्वाप्रत्यागता] भिक्षा-चर्या-विशेष, जैन मुनियों की भिक्षा का एक प्रकार (ठा ६)।

गंतुकाम वि [गन्तुकाम] जाने की इच्छा वाला (आ १४)।

गतुमण वि [गन्तुमनस्] ऊपर देखो (वसु)।

गतूण } देखो गम = गम्।
गंतूण }

गथ देखो गठ—ग्रन्थ। गंथइ (पि ३३३)। कर्म गथीअति (पि ५४८)।

गंथ पु [ग्रन्थ] १ शास्त्र, सूत्र, पुस्तक (विसे ८६४, १३८३)। २ घन-धान्य वगैरह बाह्य मिथ्यात्व, क्रोध, मान आदि आश्रयन्तर उपधि, परिग्रह (ठा २, १, बृह १, विसे २५७३)। ३ घन, पैसा (स २३६)। ४ स्वजन, संवन्धी लोग (परह २, ४)। °ईअ पुं [°तीत] जैन साधु (सूत्र १, ६)।

गंथि वि [ग्रन्थिन्] रचना-कर्ता (सम्मत्त १३६)।

गंथि देखो गंठि (परह १, ३—पत्र ४४)।

गंधिम देखो गठिम (राया १, १३)।

गंदिला स्त्री [गन्दिला] देखो गंधिल (इक)।

गंदोणी स्त्री [दे] क्रीडा-विशेष, जिसमें श्रृंखल बद की जाती है, श्रृंखल-मिचौनी (दे २, ८३)।

गदुअ देखो गेंदुअ (पड)।

गध पुं [गन्ध] १ गन्ध, नासिका से ग्रहण करने योग्य पदार्थों की वास, महक (श्रीप, भग; हे १, १७७)। २ लव, लेश (से ६, ३)। ३ चूर्ण विशेष (परह १, १)। ४ वानव्यन्तर देवों की एक जाति (इक)। ५ न देव-विमान विशेष (निर १, ४)। ६ वि. गन्धयुक्त पदार्थ (सूत्र १, ६)। °उडी स्त्री [°कुटी] गन्ध-द्रव्य का घर (गठड, हे १, ८)। °कासाइया स्त्री [°काषायिमा] सुगन्ध कषाय रंग की साडी (उवा, भग ६, ३३)। °गुण पुं [°गुण] गन्धरूप गुण (भग)। °दृय न [°द्रुक] गन्ध-द्रव्य का चूर्ण (ठा ३, १—पत्र ११७)। °इड वि [°इथ] गन्धपूर्ण, सुगन्धपूर्ण (पंचा २)। °णाम न [°नामन्] गन्ध का हेतुभूत कर्म-विशेष (भगु)। °तेल्ल न [°तैल्ल] सुगन्धित तैल (कप्पु)। °दव्व न [°द्रव्य] सुगन्धित वस्तु, सुवासित द्रव्य (उत्त १)। °देवी स्त्री [°देवी] देवी-विशेष, सौधर्म देवलोक की एक देवी (निर १, ४)। °द्धणि स्त्री [°ध्राणि] गन्ध तृप्ति (राया १, १—पत्र २५, श्रीप)। °नाम देखो °णाम (सम ६७)। °मय पु [°मृग] कस्तूरी मृग, कस्तुरिया हरिन (सुपा २)। °मत वि [°वत्त] १ सुगन्धित, सुगन्ध-युक्त। २ अतिशय गन्धवाला, विशेष गन्ध से युक्त (ठा ५, ३—पत्र ३३३)। °मादण, °मायण पु [°मादन] १ पर्वत-विशेष, इस नाम का एक पहाड (सम १०३, परह २, २, ठा २, ३—पत्र ६६)। २ पुंन पर्वत-विशेष का एक शिखर (ठा २, ३—पत्र ८०)। ३ न. नगर-विशेष (इक)। °वई स्त्री [°वती] भूतानन्द-नामक नागेन्द्र का आवास-स्थान (दीव)। °वदृय न [°वर्त्तक]

गिण देखो गण = गणय् । गिराति (सट्टि ६७) ।

गिण्ह देखो गह = ग्रह् । गिरहइ (कप्प) । वक्क गिण्हत्त, गिण्हमाण (सुपा ६१६, १, १) । सक्क गिण्हउं, गिण्ह-ऊण, गिण्हत्ता (पि ५७४, ५८५, ५८२) । हेक्क गिण्हत्तए (कप्प) । क्क गिण्हियव्व, गिण्हियव्व (अणु, सुपा ५१३) ।

गिण्हण देखो गहण = ग्रहण (सिरि ३४७, पिड ४५६, तहु ५०) ।

गिण्हणा छी [ग्रहण] उपादान, आदान (उत्त १६, २७) ।

गिण्हविअ वि [ग्रहित] ग्रहण कराया हुआ (धर्मवि ११६) ।

गिद्ध पु [गृध्र] पक्षि-विशेष, गोघ (पाप्र, १, १६) ।

गिद्ध वि [गृध्र] आसक्त, लम्पट, लोलुप (परह १, २, आच ३) ।

गिद्धपिट्ठ न [गृध्र स्पृष्ट, गृध्रपृष्ट] मरण-विशेष, आत्महत्या के अभिप्राय से गोघ आदि को अपना शरीर खिला देना (पव १५७) ।

गिद्धि छी [गृद्धि] एक देव-विमान (देवेन्द्र १३४) ।

गिद्धि छी [गृद्धि] आसक्ति, लम्पटता, गाध्यं (सूत्र १, ६) ।

गिह्णा देखो गिण्हणा (उत्त १६, २७) ।

गिह्ण पु [ग्रीष्म] ऋतु-विशेष, गरमी का मौसम (हे २, ७४, प्राप्र) ।

गिह्णा छी देखो गिह्ण, 'गिह्णानु' (सुख २, ३७) ।

गिर सक [गृ] १ बोलना, उच्चारण करना । २ गिलना, निगलना । गिरइ (षट्) ।

गिरा छी [गिर्] वारणी, भापा, वाक् (हे १, १६) ।

गिरि पुं [गिरि] १ पहाड, पर्वत (गउड, १, २३) । २ अंडी छी [तटी] पर्वतीय नदी (गउड) । ३ कण्णई, कण्णी छी [कर्णी] बल्ली-विशेष, लता विशेष (परण १—पत्र ३३, आ २०) । ४ कूड न [कूट] १ पर्वत का शिखर । २ पु रामचन्द्र का महल (पउम ८०, ४) । ३ जण्ण पुं [यज्ञ]

कोकण देश मे वर्षाकाल मे किया जाता एक प्रकार का उत्सव (बृह १) । ४ णई छी [नदी] पर्वतीय नदी (पि ३८५) । ५ णाल पु [नार] प्रसिद्ध पर्वत विशेष, जो काठियावाड मे आजकल भी 'गिरनार' के नाम से विख्यात है (श्री ३) । ६ दारिणी छी [दा-रिणी] विद्या-विशेष (पउम ७, १३६) । ७ नई देखो णई (सुपा ६३५) । ८ पक्खदण न [प्रस्कन्दन] पहाड पर मे गिरना (निद्ध ११) । ९ यडय न [कटक] पर्वत का मध्य भाग (गउड) । १० पद्भार पु [प्राग्भार] पर्वत-नितम्ब (सया) । ११ राय पुं [राज] मेरु पर्वत (इक) । १२ वर पु [वर] प्रधान पर्वत, उत्तम पहाड (सुपा १७६) । १३ वरिद पुं [वरेन्द्र] मेरु पर्वत (आ २७) । १४ सुआ छी [सुता] पार्वती, गौरी (पिग) ।

गिरि पु [दे] बीज-कोश (दे ६, १४८) ।

गिरिद पु [गिरीन्द्र] १ श्रेष्ठ पर्वत । २ मेरु पर्वत । ३ हिमाचल (कप्प) ।

गिरिकुली देखो गिरि-कण्णी (पव ४) ।

गिरिडी छी [दे] पशुओं के दांत को बांधने का उपकरण-विशेष, 'दतगिरिडि पवचइ' (सुपा २३७) ।

गिरिनयर न [गिरिनगर] गिरनार पर्वत के नीचे का नगर, जो आजकल 'जूनगढ' के नाम से प्रसिद्ध है (कुप्र १७६) ।

गिरिफुल्लिय न [गिरिपुष्पित] नगर-विशेष (पिड ४६१) ।

गिरिस पुं [गिरिश] महादेश, शिव (पाप्र दे, ६, १२१) । २ वास पु [वास] कैलाश पर्वत (से ६, ७५) ।

गिरीस पु [गिरीश] १ हिमालय पर्वत । २ महादेव, शिव (पिग) ।

गिल सक [गृ] गिलना, निगलना, भक्षण करना । सक्क, गिलिऊण (नाट) ।

गिलण न [गरण] निगरण, भक्षण (हे ४, ४४५) ।

गिला १ अक [गलै] १ ग्लान होना, बीमार गिलाअ १ होना । २ खिल होना, थक जाना । ३ उदासीन होना । गिलाइ, गिलायइ, गिला-एम (भग, कस, आचा) । वक्क, गिलायमाण (ठा ३, ३) ।

गिला छी [ग्लानि] १ बीमारी, रोग । २ खेद, थकावट (ठा ८) ।

गिलाण देखो गिलाअ, 'गिलाणइ कज्जे' (स ७१७) ।

गिलाण वि [ग्लान] १ बीमार, रोगी (सूत्र १, ३, ३) । २ अशक्त, श्रममयं, थका हुआ (ठा ३, ४) । ३ उदासीन, हर्ष-रहित (आया १, १३, हे २, १०६) ।

गिलाणि छी [ग्लानि] ग्लानि, खेद, थकावट (ठा ५, १) ।

गिलायय वि [ग्लायक] ग्लानि-युक्त, लान (ओप) ।

गिलायि पुल्ली [ग्रासिन] व्याधि-विशेष, भस्मक रोग (आचा) । छी १ जी (आचा) ।

गिलिअ वि [गिलित] निगला हुआ, भक्षित (सुपा ३, २०६, सुपा ६४०) ।

गिलिअवंत वि [गिलितवन्] जिसने भक्षण किया हो वह (पि ५६६) ।

गिलोड्या १ छी [दे] गृह-गोघा, छिपकली गिलोर्ड १ (सुपा ६४०, पुष्प २६७) ।

गिल्लि छी [दे] १ हाथी की पीठ पर कसा जाता होता, ढौंदा (आया १, १—पत्र ४३ टी, ओप) । २ डोली, दो आदमी ने उठाई जाती एक प्रकार की शिविका (सूत्र २, २, दना ६) ।

गिन्वाण पुं [गोर्वाण] देव, सुर, त्रिदश (उप ४३० टी) ।

गिह न [गृह] घर मकान (आचा, आ २३, स्वप्न ६४) । १ द्य पुल्ली [स्य] गृहस्थ, गृही, ससारी (कप्प, द्र ५) । छी, द्या (पउम ४६, ३३) । २ नाह पु [नाथ] घर का मालिक (आ २८) । ३ लिगि पुल्ली [लि-ज्जिन्] गृहस्थ, गृही, ससारी (दस) । ४ वइ पुल्ली [पति] गृहस्थ, गृही, घर का मालिक (ठा ५, ३, सुपा २३४) । ५ वास पु [वास] १ घर मे निवास । २ द्वितीयाश्रम, ससारिपन, 'गिहवास पास पिव मन्ततो वसइ दुमिवयो तम्मि' (धम्म सूत्र १, ६) । ३ वट्ट पुं [वर्त्त] द्वितीय आश्रम, ससारिपन (सूत्र १, ४, १) । ४ असम पु [अश्रम] घर-वास, द्वितीयाश्रम (स १४८) ।

गग्ग पु [गर्ग] १ ऋषि-विशेष । २ गोत्र-विशेष, जो गौतम गोत्र की एक शाखा है (ठा ७) ।

गग्ग पुं [गर्ग] १ एक जैन महर्षि (उत्त २७, १) । २ विक्रम की वारहवीं शताब्दी का एक श्रेष्ठी (कुप्र १४३) ।

गग्ग पु [गार्ग्य] गर्ग गोत्र में उत्पन्न ऋषि-विशेष (उत्त २७) ।

गग्गर वि [गद्गद्] १ गद्गद् आवाजवाला, अति अस्पष्ट वक्ता (प्राप्र) । २ आनंद या दुःख में अव्यक्त कथन (हे १, २१६, कुमा) ।

गग्गरी स्त्री [गर्गरी] गगरी, छोटा घड़ा (दे २, ८६, सुपा ३३६) ।

गग्गिर देखो गग्गर, 'रुज्जगग्गिरं नेअ' (गा ८४३, सण) ।

गच्छ सक [गम्] १ जाना, गमन करना । २ जानना । ३ प्राप्त करना । गच्छइ (प्राप्र, पड्) । भवि, गच्छं (हे ३, १७१, प्राप्र) । वक्क, गच्छत, गच्छमाण (सुर ३, ६६, भग १२, ६) । सक, गच्छिअ (कुमा) । हेक्क, गच्छित्तए (पि ५६८) ।

गच्छ पुन [गच्छ] १ समूह, साथ, संघात (स १४८) । २ एक आचार्य का परिवार (औप, स ४७) । ३ गुरु-परिवार, 'गुरुपरिवारो गच्छो, तत्थ वसताण्णि ब्रह्मरा विट्ठा' (पचव, धर्म ३) । °वास पु [°वास] गुरु-कुल में रहना, गच्छापरिवार के साथ निवास (धर्म ३) । °विहार पु [°विहार] गच्छ की सामाचार्य, गच्छ का आचार (वव १) । °सारणा स्त्री [°सारणा] गच्छ का रक्षण (राज) ।

गच्छागच्छि अ गच्छ-गच्छ से होकर (औप) । गच्छिल वि [गच्छवत्] गच्छवाला, गच्छ में रहनेवाला (वृह १) ।

गज देखो गय = गज (गड्, प्रास १७१, डक) । °मार पुं [°सार] एक जैन मुनि, दण्डक-ग्रन्थ का कर्ता (दं ४७) ।

गज पु [गे] जव, यव, अन्न-विशेष (दे २, ८१, पाप्र) ।

गज न [गद्य] छन्द-रहित वाक्य, प्रबन्ध (ठा ४, ४—पात्र २८७) ।

गज्ज अक [गर्ज] गरजना, गडगडाना, घड-घडाना । गज्जइ (हे ४, ६८) । वक्क, गज्जंत, गज्जयत (सुर २, ७५, सण ५८) ।

गज्जण न [गर्जन] १ गर्जन, भयानक ध्वनि, मेघ या सिंह का नाद । २ नगर-विशेष (उप ७६५) ।

गज्जणसद्द पु [दे गर्जनशब्द] पशु और हाथी की आवाज (दे २, ८८) ।

गज्जफल } वि [दे] देश-विशेष में उत्पन्न
गज्जल } (वक्क) (आचा २, ५, १, ५, ७) ।

गज्जभ पु [गर्जभ] पश्चिमोत्तर दिशा का पर्वत (आवम) ।

गज्जर पुं [दे] कन्द-विशेष, गाजर, गजरा, इसका खाना धर्म-शास्त्र में निषिद्ध है । (आ १६, जो ६) ।

गज्जल वि [गर्जल] गर्जन करनेवाला (निचू ७) ।

गज्जह देखो गज्जभ (आवम) ।

गज्जि स्त्री [गर्जि] गर्जन, हाथी वगैरह की आवाज (कुमा सुपा ८६, उप पु ११७) ।

गज्जिअ वि [गर्जित] १ जिसने गर्जन किया हो वह, स्तनित (पाप्र) । २ न गर्जन, मेघ वगैरह की आवाज (पणह १, ३) ।

गज्जित्तु } वि [गर्जित्तु] गर्जन करनेवाला,
गज्जिर } गरजनेवाला (ठा ४, ४—पत्र २, ६, गा ५५) ।

गज्जिल्लिअ न [दे] १ गुदगुदी, गुदगुदाहट । २ अग-स्पर्श से होनेवाला रोमाच, पुलक (पड्) ।

गज्जवि [ग्राह्य] ग्रहण योग्य (स १४०, विसे १७०७) ।

गज्जण पु [गज्जन] धरणींद्र की नाट्य-सेना का अधिपति (राज) ।

गज्जिअ स्त्री [दे] गठिया, गुठली, 'अवगठिया' (निचू १५) ।

गड न [गड] १ विस्तीर्ण शिला, मोटा पत्थर (दे २, ११०) । २ गर्त, खाई (सुर १३, ४१) ।

गड (मा) देखो गय = गत (प्राप्र) ।

गडयड पुन [दे] गर्जन, भयानक ध्वनि, हाथी वगैरह की आवाज, 'ता गडयड कुणतो, ममागमो गयवरो, तत्थ' इत्यतरे सय चिय,

सो जक्खो गडयडं पकुव्वंतो' (सुपा २८१, ५४२) ।

गडयड अक [दे] गर्जन करना, भयानक आवाज करना । वक्क गडयडत (सुपा १६४) ।

गडयडी स्त्री [दे] वज्र-निर्घोष, गडगड आवाज, मेघ-ध्वनि (दे २, ८५, सण) ।

गडवड न [दे] गडवड, गोलमाल (सुपा ५४१) ।

गडिअ } देखो गम = गम् ।
गडुअ }

गडुल न [दे] चावल वगैरह का घोया-जल, चावल आदि का घोवन (धर्म २) ।

गडु पुं स्त्री [गर्त] गडहा, गड्ढा (हे २, ३२, प्राप्र, सुपा ११४) । स्त्री गड्ढा (हे १, ३५) ।

गडु न [दे] शकट, गाड़ी (तो १५) ।

गडुरिगा } स्त्री [दे] मेढी, मेपी, ऊर्णायु,
गडुरिया } 'गडुरिगपवाहेणं गयाणुगडयं जण वियाणंतो' (धम्म, सूत्र १, ३, ४) ।

गडुरी स्त्री [दे] १ छागी, भ्रजा, बकरी (दे २, ८४) । २ मेढी, मेपी (सट्ठि ३८) ।

गडुह पुं स्त्री [गर्दभ] गदहा, गधा, खर (हे २, ३७) । °वाहण पुं [°वाहन] रावण, दशानन (कुमा) ।

गडुआ } स्त्री [दे] गाड़ी, शकट (भोष ३८६
गड्डी } टी, दे २, ८१, सुपा २५२) ।

गड्ढ न [दे] शय्या, बिछौना (दे २, ८१) ।

गड देखो घड = घट् । गडइ (हे ४, ११२) ।

गड पुं स्त्री [दे] गड, दुर्ग, किला, कोट (दे २, ८१, सुपा २५, १०५) । स्त्री गड्ढा (कुमा) ।

गडिअ वि [घटित] गडा हुआ, जटित (कुमा) ।

गडिअ वि [अथित] १ शूँथा हुआ, निबद्ध, 'नेहनिगडगडियाण' (उप ६८६ टी, पणह १, ४) । २ रचित, युष्कित, निर्मित (ठा २, १) । ३ गूढ़, आमक्त, (आचा २, २, २, पणह १, २) ।

गण सक [गणय] १ गिनना, गिनती करना । २ आदर करना । ३ अभ्यास करना, आवृत्ति करना । ४ पर्यालोचन करना । गणइ, गणोइ (कुमा, महा) । वक्क, गणत, गणेन (पचा ४, मे ४, १५) । कृ गणेयव (उप ५५५) ।

मन्त्र, खुशी में लीन; 'तं वह ददु' आणंद-
गुदल' (सुपा १३४)।

गुदवडय न [दे] एक प्रकार की मिठाई, गुज-
राती में जिसको 'गुदवडा' कहते हैं (सुपा
४८५)।

गुंदा } श्री [दे] १ विन्दु २ अधम, नीच
गुंदा } (दे २, १०१)।

गुंध सक [ग्रन्थ] गठना। गुंध (प्राकृ
६३)।

गुंफ सक [गुम्फ] गुंथना, गठना। गुफड
(षड्) वक्र गुफंत (कुमा)।

गुफ पुं [गुम्फ] १ रचना, गुंथना, ग्रन्थन
(उप १०३१ टी दे १, १५०, ६, १४२)।

गुंफ पुं [दे] गुप्ति, कारागार, जेल (दे २,
६०)।

गुंफण न [दे] गोफन, पत्थर फेंकने का अन्न-
विशेष, 'गुंफणफेरणसुंकारएहि' (सुर २, ८)।

गुंफी श्री [दे] शतपदी, क्षुद्र कीट-विशेष,
गोजर, कनखजूरा (दे २, ६१)।

गुग्गुल पुं [गुग्गुल] सुगन्धित द्रव्य-विशेष,
गुगल या गुग्गुल (सुपा १५१)।

गुग्गुली श्री [गुग्गुल] गुगल का पेड (जी
१०)।

गुग्गुल देखो गुग्गुल (स ४३६)।

गुच्छ } पुं [गुच्छ] १ गुच्छा, गुच्छक,
गुच्छय } स्तवक (उत्त २, स्पन्द ७२)। २
बुझो की एक जाति (पण १)। ३ पत्तो
का समूह (जं १)।

गुच्छय देखो गोच्छय (शोध ६६८)।

गुच्छय वि [गुच्छित] गुच्छा वाला, गुच्छ-
युक्त, 'निच्च गुच्छया' (राय)।

गुज्ज देखो गोज्ज (सुपा २८१)।

गुज्जर पुं [गूजर] १ भारत का एक प्रान्त,
गुजरात देश (पिंग)। २ वि. गुजरात का
निवासी। श्री. °री (नाट)।

गुज्जरत्ता श्री [गूर्जरत्ता] गुजरात देश (सार्ध
६८)।

गुज्जलिअ वि [दे] संघटित (षड्)।

गुज्म पु [गुह्य] एक देव-जाति (दस ७,
५३)।

गुज्म } वि [गुह्य] १ गोपनीय, छिपाने
गुज्मअ } योग्य (शाया १, १, हे २, १२४)।

२ न. गुप्त बात, रहस्य, 'सिमंतिणिहिययगयं

गुज्मं पिव तस्खणा फुट्ट' (उप ७२८ टी)।

३ लिंग, पुरुष-चिह्न। ४ योनि, स्त्री-चिह्न (धर्म
२)। ५ मैथुन, सभोग (पण १, ४)। °हर
वि [°हर] गुप्त बात को प्रकट नहीं करने-
वाला (दे २ ४३)। °हर वि [°हर] रहस्य-
भेदी, गुप्त बात को प्रसिद्ध करनेवाला (दे २,
६३)।

गुज्मअ } पुं [गुह्य] देवों की एक जाति
गुज्मग } (ठा ५, ३)।

गुट्ट न. [दे] स्तम्भ, तृण-कारण; 'अज्जुण-
गुट्ट व तस्स जाणूई' (उवा)।

गुट्ट देखो गोट्ट (पाम्म. भत्त १६२)।

गुट्टी देखो गोट्टी (सूक्त ५८)।

गुड सक [गुड्] १ हाथी को कवच वगैरह
से सजाना। २ लड़ाई के लिए तय्यार करना,
सजाना, 'गुडह गइदे पडणीकरेह रहचक्कपा-
इक्के' (सुपा २८८)। कवक 'गुडिअगुडिज्ज-
तभडं' (से १२, ८७)।

गुड सक [गुड्] नियन्त्रण करना। गुडेइ
(संवेध ५४)।

गुड पुं [गुड] १ गुड, ईस का विकार, लाल
शक्कर (हे १, २०२, प्रासू १५१)। २ एक
प्रकार का कवच (राज)। °सत्थ न [°सार्थ]
नगर-विशेष (आक)।

गुडदालिअ वि [दे] पिण्डीकृत, इकट्ठा किया
हुआ (दे २, ६२)।

गुडा श्री [गुडा] १ हाथी का कवच। २
अश्व का कवच (विपा १, २)।

गुडिअ वि [गुडित] कवचित, वर्मित, कृत-
संनाह (से १२, ७३, ८७, विपा १, २)।

गुडिआ श्री [गुटिका] गाली (गा १७७)।

गुडोलिअ श्री [दे] कुम्बन (दे २, ६१)।

गुडुर पुंन [दे] खीमा या खेमा, तंबू, डेरा,
बल्ल-गृह (सिरि ४८२, ६४४)।

गुण सक [गुणय्] १ गिनना। २ आवृत्ति
करना, याद करना। गुणइ (सूक्त ५१, हे
४, ४२२), गुणइ (उव)। वक्र. गुणमाण
(उप पृ ३६६)।

गुण पुं [गुण] उच्चारण (सूत्रनि २०)। २
रसना, मेखला (आचा २, २, १, ७)।

गुण पुन [गुण] १ गुण, पर्याय, स्वभाव,
धर्म (ठा ५, ३)। २ ज्ञान, सुख वगैरह एक
ही साथ रहनेवाला धर्म (सम्म १०७, १०६)।

३ ज्ञान, विनय, दान, शौर्य, सदाचार वगैरह
दोष-प्रतिपक्षी पदार्थ (कुमा, उत्त १६, अणु,
ठा ४, ३, से १, ४)। ४ लाभ, फायदा,
'विहवेहि गुणाई मग्गंति' (हे १, ३४, सुपा
१०३)। ५ प्रशस्तता, प्रशंसा (शाया १,
१)। ६ रज्जु, डोरा, घागा (से १, ४)।

७ व्याकरण-प्रसिद्ध ए, आ और अरूप
स्वर-विकार (सुपा १०३)। ८ जैन गृहस्थ

को पालने का व्रत विशेष, गुण-व्रत (पंचव
३)। ९ रूप, रस, गन्ध वगैरह द्रव्याश्रित

धर्म, 'गुण-पञ्चकवत्तएआ गुणीवि जाओ घडान्व
पञ्चक्खो' (ठा १, १, उत्त २८)। १०

प्रत्यन्वा, घनुप का रोदा (कुमा)। ११ कार्य,
प्रयोजन (भग २, १०)। १२ अप्रधान,

अमुख्य, गौण (हे १, ३४)। १३ अंश,
विभाग (अणु)। १४ उपकार, हित (पंचा

५)। °कर वि [°कर] १ लाभ-कारक। २
उपकार-कारक (पंचा ५)। °कार पुं [°कार]

गुणा करना, अभ्यास-राशि (सम ६०)। °चद
पुं [°चन्द्र] १ एक राजकुमार (आवम)।

२ एक जैन मुनि और ग्रन्थकार। ३ श्रेष्ठि-
विशेष (राज)। °ट्टाण न [°स्थान] गुणों

का स्वरूप-विशेष, मिथ्यादि वगैरह चरदह
गुण-स्थानक (कम्म ४, पव ६०)। °ट्टिअ

पुं [°तिथिक] गुण को प्रधान माननेवाला
मत, नय-विशेष (सम्म १०७)। °ड्ड वि

[°ढ्य] गुणी, गुणवान् (सुर ३, २०,
१३०)। °ण्ण, °ण्णु, °न्त, °न्नु वि [°ज्ञ]

गुण का जानकार (गउड, उवर ८६, उप
५३० टी, सुपा १२२)। °पुरिस पुं [°पुरुष]

गुणी पुरुष (सूत्र १, ४) °मंत वि [°वत्]
गुणी, गुण-युक्त (आचा २, १, ६)। °रयणस-

वच्छर न [°रत्तसंवत्सर] तपश्चर्या-विशेष
(भग)। °व, °वत वि [°वत्] गुणी,

गुण-युक्त (आ ३६, उप ८७५)। °व्वय न
[व्रत] जैन गृहस्थ को पालने योग्य-व्रत-

विशेष (पडि)। °सिलय न [°शिल्क]
राजगृह नगर का एक चैत्य (शाया १, १)।
°सेदि श्री [°श्रेणि] कर्म-पुद्गलो की रचना-

गदभी स्त्री [गर्दभी] १ गधी, गदही (पि २६१)। २ विद्या-विशेष (काल)।

गदह पु [गर्दभ] १ गदहा, गवा, खर (मम ५०, दे २, ८०, पात्र, हे २, ३७)। २ इस नाम का एक मंत्रि-पुत्र (वृह १)।

गदह न [दे] कुमुद, चन्द्र-विकासी कमल (दे २, ८३)।

गदह्य पुं [गर्दभक] १ क्षुद्र जन्तु-विशेष, जो गोशाला बगैरह में उत्पन्न होता है (जी १७)। २ देखो गदह (नाट)।

गदही देखो गदभी (नाट—मुच्छ ५८, निचू १०)।

गद्विअ वि [दे] गवित, गर्व-युक्त (दे २, ८३)।

गद्व पुं [गुत्र] पक्षि-विशेष, गीब, गिद्ध (श्रौप)।

गद्व वि [गण्य] १ माननीय, आदरास्पद, 'हियमण्यो करैंतो, कस न होइ गरुओ गुलगनो', 'मन्त्रो गुणहि गन्नो' (उव)। २ न गणना, गिनती, 'मुल्लस कुणइ गन्न' (मुपा २५३)।

गद्व पु [गर्भ] १ कुक्षि, पेट, उदर (ठा ५, १)। २ उत्पत्ति-स्थान जन्म-स्थान (ठा २, ३)। ३ भ्रूण, अन्तरापत्य (कप्प)। ४ मध्य, अन्तर, भीतर का (आया १, ८)। 'गरा स्त्री [गरी] गर्भाधान करनेवाली विद्या-विशेष (मूअ २, २)। 'घर न [गृह] भीतर का घर, घर का भीतरी भाग (आया १, ८)। 'ज वि [ज] गर्भ में उत्पन्न होनेवाला प्राणी, मनुष्य, पशु बगैरह (पउम १०२, ६७)। 'स्थ वि [स्थ] १ गर्भ में रहनेवाला। २ गर्भ से उदयन होनेवाला मनुष्य बगैरह (ठा २, २)। 'मास पु [मास] कालिक से लेकर माघ तक का महीना (वव ७)। 'य देखो ज (जी २३)। 'वई स्त्री [वर्त] गमिणी स्त्री (सुपा २७६)। 'वक्कति स्त्री [व्युत्क्रान्ति] १ गर्भाशय में उत्पत्ति (ठा २, ३)। 'वक्कतिअ वि [व्युत्क्रान्ति] गर्भाशय में जिसकी उत्पत्ति हाती है वह (सम २, २४)। 'हर देखो घर (सुर ६, २१, सुपा १८२)।

गद्वभर न [गद्वर] १ कोटर, गुहा। २ गहन, विषम स्थान (भाव ४, पि ३३२)।

गद्वभर देखो गद्वर, 'गद्वरो' (प्राक् २४, संक्षि १६)।

गद्वभाहाण न [गर्भाधान] सस्कार-विशेष (राय १४६)।

गद्वभिज्ज पु [दे गर्भज] जहाज का निम्न श्रेणी का नौकर 'कुच्छिधारकलवारगविमज (? ज्ज) सज्जाणावावाणियगा' (आया १, ८—पत्र १३३, राज)।

गद्वभिण } वि [गर्भित] १ जिसकी गर्भ गद्विभय } पैदा हुआ हो वह गर्भ-युक्त (हे १, १०८, प्राप्, आया १ ७)। २ युक्त, सहित, 'वेडिमदलनीलभित्तिगविमणय' (कुमा, पड्)।

गद्वभिल्ल देखो गद्वभिज्ज (आया १, १७—पत्र २२८)।

गम सक [गम्] १ जाना, गति करना, चलना। २ जानना, समझना। ३ प्राप्त करना। भूका गमिही (कुमा)। कर्म गम्मइ, गमिज्जइ (हे ४, २४६)। कवक, गम्ममाण (म ३४०)। संकृ गतु, गमिअ, गता, गतूण, गंतूण (कुमा, पड्, प्राप्, श्रौप, कम्), गडुअ, गडिअ, गटुअ (शौ), (हे ४, २७२, पि ४८२, नाट—मालती ४०), गमेट्ठि, गमेट्ठिणु, गट्ठि, गट्ठिणु (अप), (कुमा)। हेकू गतुं (कस, आ १४)। कृ गतव्व, गमणिज्ज, गमणीअ (आया १, १, गा २४६, उव, भग, नाट)।

गम सक [गमय्] १ ले जाना। २ व्यतीत करना, पसार करना, गुजारना। गमेति (गउड), 'बुहा! बुहा मा दियहे गमेह' (सत्त ४)। कर्म गमेज्जति (गउड)। वकू, गमन (सुपा २०२)। सकृ गमिऊण (पि) हेकू गमित्तए (पि ५७८)।

गम पु [गम] १ गमन, गति, चाल (उप २२० टी)। २ प्रवेश (पउम १, २६)। ३ शाम्य का तुल्य पाठ, एक तरह का पाठ, जिसका तात्पर्य भिन्न हो (दे १, १ विमे ५४६, भग)। ४ व्याख्या, टीका (विमे ६१३)। ५ बोध, ज्ञान, समझ (अणु, एदि)। ६ मार्ग, रास्ता (ठा ७)।

गम पु [गम] १ प्रकार (वव १)। २ वि, जगम (मज्ञानि ४)।

गमग वि [गमक] बोधक, निश्चायक (विसे ३१५)।

गमण न [गमन] गमन, गति (भग, प्राप् १३२)। २ वेदन, बोध (एदि)। ३ व्याख्यान, टीका। ४ पुण्य बगैरह नव नसत्र (राज)।

गमणया } स्त्री [गमन] गमन, गति 'लोगत-गमणा } गमणयाए' (ठा ४, ३), 'पायवदए पहारेत्य गमणाए' (आया १, १—पत्र २६)।

गमणिज्ज देखो गम = गम्।

गमणिअ स्त्री [गमनिका] १ सज्जित, व्याख्यान, दिग्दर्शन (राज)। २ गुजारना, अतिक्रमण, 'कालगमणिया एत्य उवाओ' (उप ७२८ टी)।

गमणी स्त्री [गमनी] १ विद्या-विशेष, जिसके प्रभाव से आकाश में गमन किया जा सकता है (आया १, १६—पत्र २१३)। २ जूता, 'सव्वोवि जणो जल विगाहि तो उत्तारइ गमणीओ चरणाहिओ' (सुपा ६१०)।

गमणीअ देखो गम = गम्।

गमय देखो गमग (विसे २६७३)।

गमार वि [दे ग्राम्य] अविदग्ध, मूर्ख (संक्षि ४७)।

गमाव देखो गम = गमय्। गमावइ (सण)।

गमिअ वि [गमिक] प्रकारवाला (वव १)।

गमिद वि [दे] १ अपूर्ण। २ गूढ़। ३ स्खलित (पड्)।

गमिय वि [गमिन] १ गुजारा हुआ, अनिकृत (गउड)। २ ज्ञापित, बोधित, निवेदित (विमे ५५६)।

गमिय न [गमिक] शास्त्र-विशेष, सदृश पाठवाला शास्त्र, 'भग गणियाड गमिय सदि-मगम व कारणवनेण' (विमे ५४६, ८५४)।

गमिर वि [गन्तृ] जानेवाला (हे २, १४५)।

गमेट्ठि } देखो गम = गम्।
गमेट्ठिणु }

गमेर देखा गमार (संक्षि ४७)।

गमेस देखो गमेम। गमेसइ (हे ४, १८६)। गमेसति (कुमा)।

गम्म वि [गम्य] १ जानने योग्य। २ जो जाना जा सके (उवर १७०, सुपा ४२६)। ३ हराने योग्य, आक्रमणाय (सुर १२६,

गुम्भइअ वि [दे] १ मूढ, मूर्ख (दे २, १०३, ओष १३६, पात्र, षड्) । २ अपूरित, पूर्ण नहीं किया हुआ (षड्) । ३ पूरित, पूर्ण किया हुआ (दे २, १०३) । ४ खलित । ५ सचलित, मूल से उच्चलित । ६ विघटित, विद्युक्त (दे २, १०३, षड्) ।

गुम्भइ देखो गुम्भ । गुम्भइइ (हे ४, २०७) । गुम्भडिअ वि [मोहित] मोह युक्त, मुगध किया हुआ (कुमा ७, ४७) ।

गुम्भागुम्भि अ जत्थात्ता होकर (औप) ।

गुम्भिअ वि [मुग्ध] १ मोह प्राप्त मूढ (कुमा ७, ४७) । २ गणित मद में धूमता हुआ (वृह १) ।

गुम्भिअ पु [गौलिम] कोतवाल, नगर-रक्षक (ओष १६३, ७६६) ।

गुम्भिअ वि [दे] मूल से उखाड़ा हुआ, उन्मूलित (दे २, ६२) ।

गुम्मी स्त्री [दे] इच्छा, अभिलाषा (दे २, ६०) ।

गुम्मी स्त्री [गुल्मी] शनपदी, वृका, खटमल, जूँ (उत्त ३६, १३६, सुज ३६, १३६) ।

गुम्ह सक [गुम्ह] शूथना, गठना । गुम्हडु (शौ) (स्वप्न ५३) ।

गुह्य देखो गुज्झ (हे २, १२४) ।

गुरव देखो गुरु, 'जो गुरवे साहीणे धम्मं साहेइ पोढ्हुद्विओ' (पउम ६, ११४) ।

गुरु पु [गुरु] १ शिक्षक, विद्या-दाता, गुरुअ पढानेवाला (वव १, अणु) । २ धर्मोपदेशक, धर्माचार्य (विसे ६३०) । ३ माता, पिता वगैरह पूज्य लोग (ठा १०) । ४ बृहस्पति, ग्रह-विशेष (पउम १७, १०८, कुमा) । ५ स्वर विशेष, दो मात्रावाला आ, ई वगैरह स्वर जिसके पीछे अनुस्वार या सयुक्त व्यञ्जन हो ऐसा भी स्वर-वर्ण (पिंग) । ६ वि. बडा, महान् (उवा. से ३, ३८) । ७ भारी, बोझिल (ठा १, १, कम्म १) । ८ उत्कृष्ट, उत्तम (कम्म ४, ७२, ७६) । ९ कम्म वि [कर्मन्] कर्मों का बोझवाला, पापी (सुपा २६५) । १० कुल न [कुल] १ धर्माचार्य का सामीप्य (पंचा ११) । २ गुरु-परिवार (उप ६७७) । ३ गइ स्त्री [गति]

गति-विशेष, भारीपन से ऊँचा-नीचा गमन (ठा ८) । ४ लाघव न [लाघव] सारासार, अच्छा और बुरापन (वव ४) । ५ सज्जिमल्ला पुं [सहाध्यायिक] गुरु के भाई (वृह ४) ।

गुरुई देखो गरुई (णाय १, १) ।

गुरुणी स्त्री [गुर्वी] १ गुरु-स्थानीय स्त्री (सुर ११, २११) । २ धर्मोपदेशिका, साध्वी (उप ७२८ टी) ।

गुरेड न [गुरेट] वृण-विशेष (दे १, ५४) ।

गुल देखो गुड = गुड (ठा ३, १, ६, णाय १, ८, गा ५५४, औप) ।

गुल न [दे] कुम्भन (दे २, ६१) ।

गुलगुल सक [उन् + क्षिप्] ऊँचा फेंकना । गुलगुलइ (हे ४, १४४) । संकृ गुलगुल्लिऊण (कुमा) ।

गुलगुल देखो गुलगुल्ल = उद + नमय् । गुलगुलइ (हे ४, ३६) ।

गुलगुल अक [गुलगुलाय] 'गुलगुल' आवाज करना, हाथी का हर्ष से चिधाडना या बोलना । वक्र गुलगुलत, गुलगुलेत (उप १०३१ टी, उवा. पउम ८, १७१, १०२, २०) ।

गुलगुलइअ न [गुलगुलायित] हाथी की गुलगुलिय } गजना (ज ५, मुपा १३७) । गुलल सक [चाटौ कृ] खुशामद करना । गुललइ (हे ४, ७३) । वक्र गुललत (कुमा) ।

गुललावणिया स्त्री [गुडलावणिका] एक तरह की मिठाई, गोलपापड़ी । २ गुडवाना (पव २५६, सुज २० टी) ।

गुलहाणिया स्त्री [गुडधानिका] खाद्य-विशेष (पव ४) ।

गुलिअ वि [दे] मघित, विलोडित (दे २, १०३, षड्) । २ पुं गेंद, कन्दुक, 'कंदुओ गुलिओ' (पात्र) ।

गुलिआ स्त्री [दे] १ बुमिका । २ गेंद, कन्दुक । ३ स्तवक, गुच्छा (दे २, १०३) ।

गुलिआ स्त्री [गुलिका] १ गोली, गुदिका (महा. णाय १, १३, सुपा २६२) । २ वर्णक द्रव्य-विशेष, सुगन्धित द्रव्य-विशेष (औप. णाय १, १—पत्र २४) ।

गुलुइय वि [दे] गुल्मित, गुल्मवाला, लता समूहवाला (औप. भग) ।

गुलुछ पु [गुलुच्छ] गुच्छ, गुच्छा (दे २, ६२) ।

गुलुगुल देखो गुलुगुल्ल = उत् + क्षिप् । गुलुगुलइ (हे ४, १४४) ।

गुलुगुल सक [उन् + नमय्] ऊँचा करना, उन्नत करना । गुलुगुलइ (हे ४, ३६) ।

गुलुगुल्लिअ वि [उन्नमित] ऊँचा किया हुआ, उन्नमित (दे २, ६३, कुमा) ।

गुलुगुल्लिअ वि [दे] बाड से अन्तरित (दे २, ६३) ।

गुलुगुल देखो गुलुगुल । गुलुगुलति (भवि) । वक्र गुलुगुलेत (पि ५५८) ।

गुलुगुलाइय } देखो गुलुगुलाइअ (औप, गुलुगुलिय } परह १, ३, स ३६६) ।

गुलुच्छ वि [दे] भ्रमित, धुमाया हुआ, (दे २, ६२) ।

गुलुच्छ पु [गुलुच्छ] गुच्छा, स्तवक (पात्र) ।

गुलुइय वि [गुल्मचन्] लता-समूहवाला, गुल्म-युक्त (णाय १, १—पत्र ५) ।

गुव देखो गुप्त = गुप् । गुर्वति (भग १५) ।

गुवलय देखो कुवल्य, 'मुदियगुवल्यनिहाण' (णदि) ।

गुवालिया [दे] देखो गोआलिआ (जी १७) ।

गुविअ वि [गुप्त] व्याकुल, झुव्व (ठा ३, ४—पत्र १६१) ।

गुविल वि [गुपिल] १ गहन, गहरा, गाढ, निविड (सुर ६, ६६, उप पु ३०, परह १, ३) । २ न. भाडी, जंगल (उप ८३३ टी),

'इक्को करइ कम्मं,

इक्को अणुहवइ दुक्कयविमरं ।

इक्को संसरइ जियो,

जरमरणचउग्गइगुविलं' (पव ४४) ।

गुविल वि [दे] चीनी का बना हुआ, मिश्री-वाला (मिश्रा) (उर ५, १०) ।

गुन्विणी स्त्री [गुर्विणी] गर्भवती स्त्री (सुपा २७७) ।

गुह देखो गुभ । गुहइ (हे १, २३६) ।

गुह पुं [गुह] कार्तिकेय, एक शिव-पुत्र (पात्र) ।

गुहा स्त्री [गुहा] गुफा, कन्दरा (पात्र, ठा २, ३; प्रास २७१) ।

गुहिर वि [दे] गम्भीर, गहरा (पात्र, कण्ठ) ।

गरिह देखो गरह । गरिहइ, गरिहामि (महाः पडि) ।

गरिह पुं [गर्ह] निन्दा, गर्हा (प्राप्र) ।

गरिहणया देखो गरहणया (उत्त २६, १) ।

गरिहा स्त्री [गर्हा] निन्दा, घृणा, जुगुप्सा (श्लोक ७६१, स १६०) ।

गरु देखो गुरु 'गरुयगतए सिविअण' (सुपा २१४) ।

गरुअ वि [गुरुक] गुरु, बडा, महान् (हे १, १८६, प्राप्र, प्रासू ३६) ।

गरुअ सक [गुरुकारय] गुरु करना, बडा बनाना । गरुएइ (पि १२३),

'हांसाण सरेहि सिरी, मारिजेइ

अह सराण हंसेहि ।

अएणाएणं चिअ एए,

अप्पाण रावर गरुअति

(हेका २५५) ।

गरुआ } अक [गुरुकारय] १ बडा
गरुआअ } बनना । बडे की तरह आचरण
करना । गरुआइ, गरुआअइ (हे ३, १३८) ।

गरुइअ वि [गुरुकृत] बडा किया हुआ (से ६, २०, गरुड) ।

गरुई } स्त्री [गुर्वी] बडी, ज्येष्ठा, महती
गरुगी } (हे १, १०७, प्राप्र, निवृ १) ।

गरुक्क देखो गरुअ; 'एवजोव्वणएअपसाहिणा सिगारुणगरुक्केण' (प्राप्र) ।

गरुड देखो गरुल (सति १; स २६५, पिग) ।
छन्द-विशेष (पिग) । 'त्य न [गल्ल] अल्ल-
विशेष, सरगाळ का प्रतिपक्षी अल्ल (पउम १२,
१३०, ७१, ६६) । 'द्वय पुं [ध्वज]
विष्णु, वासुदेव (पउम ६१, ५७) । 'वूह पुं
[व्यूह] सेना की एक प्रकार की रचना
(महा, पि २४०) ।

गरुडंके पुं [गरुडाङ्क] १ विष्णु, वासुदेव ।
२ इक्ष्वाकु वंश के एक राजा का नाम (पउम
५, ७) ।

गरुल पुं [गरुड] एक देव विमान (देवेन्द्र
१३४) ।

गरुल पुं [गरुड] १ पक्षि-राज, पक्षि-विशेष
(परह १, १) । २ यक्ष-विशेष, भगवान्
शान्तिनाथ का शासन-यक्ष (सति ८) । ३
भवनपति देवो की एक जाति, सुपर्णकुमार

देव (परह १, ४) । ४ सुपर्णकुमार देवों का
इन्द्र (सुम १, ६) । 'केउ पुं [केतु] देखो
'ज्मय (राज) । 'ज्मय, 'द्वय पुं [ध्वज]
१ गरुड पक्षी के चित्रवाली ध्वजा (राय) ।
२ वासुदेव, कृष्ण । ३ देव-जाति-विशेष,
सुपर्णकुमार देव (आवम, सम; पि) । 'वूह
देखो गरुड-वूह (जं २), 'सत्य न [शस्त्र]
गरुडाळ, अल्ल-विशेष (महा) । 'सण न
[सण] आसन-विशेष (राय) । 'ववाय
न [पपान] शास्त्र-विशेष, जिसको याद
करने से गरुडदेव प्रत्यक्ष होते हैं (ठा १०) ।
देखो गरुड ।

गरुवी देखो गरुई (कुमा) ।

गल अक [गल्] १ गल जाना, सडना । २
खतम होना, समाप्त होना । ३ झरना, टप-
कना, गिरना । ४ पिघलना, नरम होना ।
५ सक. गिराना, टपकाना, 'जाव रती गलई'
(महा) । वक्र. 'नवेण रस सोएहि गलतम्
असुइरस' (महा, सुर ४, ६८, सुपा २०४) ।
गलित (परह १, ३, प्रासू ७२) । प्रयो.,
वक्र. गलावेमाण (गाया १, १२) ।

गल } पु [गल] १ गला, ग्रीवा, कण्ठ
गलअ } (सुपा ३३, पाप्र) । २ वडिश, बंसी,
मछली पकड़ने का काँटा (उप १८८, विपा १,
८, सुर ८, १४०) । 'गल्लि स्त्री [गर्जि]
गले की गर्जना (महा) । 'गल्लिय न
[गर्जित] गल-गर्जन (महा) । 'लाय वि
[लात] गले में लगाया हुआ, कण्ठ-न्यस्त
(श्रौप) ।

गलई स्त्री [गलकी] वनस्पति-विशेष (राज) ।
गल्ला देखो गलअ (परह १, १) ।

गल्लथ देखो खिव । गल्लथइ (हे ४, १४३,
भवि) ।

गल्लथण न [क्षेपण] १ क्षेपण करना, फेंकना ।
२ प्रेरण (से ५, ५३, सुपा २८) ।

गल्लथल्लिअ वि [दे] १ क्षिप्त, फेंका हुआ ।
२ प्रेरित (दे २, ८७) ।

गल्लथल्ल पुं [दे] गलहस्त, हाथ से गला पक-
डना (गाया १, ६, परह १, ३—पत्र ५३) ।

गल्लथल्लिअ [दे] देखो गल्लथल्लिअ (से ५,
४३, ८, ६१) ।

गल्लथा स्त्री [दे] प्रेरणा;

'गरुयाण चिय भुवराम्मि भ्रावया

न उण हंति लहुयाण ।

गहकल्लोलगलत्था, ससिसूराणं न ताराण'
(उप ७२८ टी) ।

गल्लथिअ वि [क्षिप्त] १ प्रेरित (सुपा
६३५) । २ फेंका हुआ (दे २, ८७, कुमा) ।
३ बाहर निकाला हुआ (पाप्र) ।

गल्लथअ पुं [दे] प्रेरित, क्षिप्त (पड्) ।

गल्लहथिअ वि [गलहस्तिअ] गला पकड़कर
बाहर निकाला हुआ (वज्रा १३८) ।

गल्लाण देखो गिलाण (नाट—चैत ३४) ।

गल्लि देखो गल = गल, 'मच्छुव्व गल्लि गिलित्ता'
(दसचू १, ६) ।

गल्लि } वि [गल्लि, क] दुर्विनीत, दुर्दम
गल्लिअ } (आ १२, सुपा २७६) । 'गहह
पुं [गर्दभ] अविनीत गदहा (उत्त २७) ।
'वइल्ल पुं [वलीवर्द] दुर्विनीत बैल (कप्पू) ।
'सस् पुं [श्व] दुर्दम घोडा (उत्त १) ।

गल्लिअ वि [गल्लित] १ गला हुआ, पिघला
हुआ (कप्पू) । २ क्षालित, प्रक्षालित (कुमा) ।
३ स्थलित, पतित (से १, २) । ४ नष्ट, नाश-
प्राप्त (सुपा २४३, सण) ।

गल्लिअ वि [दे] स्मृत, याद किया हुआ (दे
२, ८१) ।

गल्लित देखो गल = गल ।

गल्लिअ वि [गलीय, गल्य] गले का (पिड
४२४) ।

गल्लिर वि [गल्लित्] निरन्तर पिघलता, टप-
कता, 'बहुसोगल्लिरनयणेण' (आ १४) ।

गल्लुल देखो गरुल (अचु १, पड्) ।

गल्लोई } स्त्री [गुड्डी] बल्ली विशेष,
गल्लोया } गिलोय, गुरुच (हे १, १२४, जी
१०) ।

गल्ल पुं [गल्ल] १ गाल, कपोल (दे २, ८१,
उवा) । २ हाथी का गण्ड-स्थल, कुम्भ स्थल
(पड्) । 'मसूरिया स्त्री [मसूरिका]
गाल का उपधान (जीत) ।

गल्लक पुन [दे] १ स्फटिक मणि (प्राप्र, पि
२६६) ।

गल्लथ देखो गल्लथ । गल्लथइ (पड्) ।

१, २) । °दास पु [°दाम] १ एक जैन-मुनि, भद्रबाहु स्वामी का प्रथम शिष्य । २ एक जैनमुनिगण (कप्प, ठा ६) । °दोहिया स्त्री [°दोहिका] १ गौ का दोहन । २ आसन विशेष, गौ दुहने के समय जिस तरह बैठा जाता है उस तरह का उपवेशन (ठा ५, १) । °दुह वि [°दुह] गौ को दोहने-वाला (पड्) । °धूलिआ स्त्री [°धूलिका] लग्न-विशेष, गौश्रो को चरा कर लौटने का समय, सायकाल, 'वेलव्व गोधूलिया' (रंभा) । °पय °प्पय न [°प्पद्] १ गौ का खुर डूबे उतना गहरा, 'लद्धम्मि जम्मि जीवाण जायइ गोपय व भवजलही' (आप ६६) । २ गोपद-परिमित भूमि (अणु) । ३ गौ का खुर (ठा ४, ४) । °मद् पुं [°भद्र] श्रेष्ठ-विशेष, शालिभद्र के पिता का नाम (ठा १०) । °भूमि स्त्री [°भूमि] गौश्रो को चरने की जगह (आवम) । °म वि [°मन्] गौवाला (विसे १४६८) । °मड न [°मृत्] गौ का शव (आया १, ११—पत्र १७३) । °मय न [°मय] गोवर, गौ का मल, गो-विष्ठा (भग ५, २) । °मुत्तिया स्त्री [°मूत्रिका] १ गौ का मूत्र, गोमूत्र (श्लो ६४ भा) । २ गोमूत्र के आकारवाली गृहपत्ति (पचव २) । °मुहिअ न [°मुखित] गौ के मुख की आकारवाली ढाल (आया १, १८) । °रह्म पु [°रथक] तीन वर्ष का बैल (सूअ १, ५, २) । °रोयण स्त्री [°रोचन] स्वनाम-ख्यात पीत-वर्ण द्रव्य-विशेष, गोमस्तकस्थित शुष्क-पित्त (सुर १, १३७) । स्त्री °णा (पचा ४) । °लेहणिया स्त्री [°लेहनिका] ऊपर भूमि (निचू ३) । °लोम पु [°लोम] १ गौ का रोम, बाल । २ द्विन्द्रिय जन्तु विशेष (जीव १) । °वह पु [°पति] १ इन्द्र । २ सूर्य । ३ राजा (सुपा १४२) । ४ महादेव । ५ बैल (हे १, २३१) । °वइय पु [°व्रतिक] गौश्रो की चर्या का अनुकरण करनेवाला एक प्रकार का तपस्वी (आया १, १५) । °वय देखो °पय (राज) । °वाड पु [°वाट] गौश्रो का बाड़ा (दे १, १४६) । °ववइय देखो °वइय (श्रीप) । °साला स्त्री [°शाला]

गौश्रो का बाड़ा (निचू ८) । °हण न [°धन] गौश्रो का समूह (गा ६०६, सुर १, ४६) । गोअ देखो गोव = गोपय । कृ गोअणिज्ज (नाट—मालती १२१) । गोअट पुं [दे] १ गौ का चरण । २ स्थल-शृङ्गाट, स्थल में होनेवाला शृङ्गाट या सिंघाटा का पेड़ (दे २, ६८) । गोअग्गा स्त्री [दे] रथ्या, मुहल्ला (दे २, ६६) । गोअह्ला स्त्री [दे] दूध बेचनेवाली स्त्री (दे २, ६८) । गोअर पुं [गोचर] छायालय (दस ५, २ २) । गोअलिणी स्त्री [गोपालिनी] ग्वालिन, जो गयणभूमिभंडोपरम्मि जुह्वादहीय महणेण । पुत्रिमगोअलिणीए मक्खणापिडुव्व निम्मविओ । (धर्मवि ५५) । गोआ स्त्री [गोदा] नदी-विशेष, गोदावरी नदी, 'गोआणइक्कच्छकुडंगवासिणा दरिअसी-हेण' (गा १७५) । गोआ स्त्री [दे] गगरी, कलशो, छोटा घड़ा (दे २, ८९) । गोआअरी स्त्री [गोदावरी] नदी-विशेष, गोदावरी (गा ३५५) । गोआलिआ स्त्री [दे] वर्षा ऋतु में उत्पन्न होनेवाला कीट-विशेष (दे २, ६८) । गोआवरी देशो गोआअरी (हे २, १७४) । गोअर न [गोपुर] नगर या किले का दरवाजा (सम १३७, सुर १, ५६) । गोअलिय वि [गोकुलिक] गो-धन पर नियुक्त पुरुष, गोकुल-रक्षक (कुप्र ३१) । गौजी } स्त्री [दे] मजरी, वीर (दे २, ६५) । गौठी } गोड देखो कौड = कौण्ड (इक) । गोड न [दे] कानन, वन, जंगल (दे २, ६४) । गोडी स्त्री [दे] मंजरी, वीर (दे २, ६५) । गोदल देखो गुदल (भवि) । गोदीण न [दे] मयूर-पित्त, मोर का पित्त (दे २, ६७) । गोफ पुं [गुल्फ] पाद-ग्रन्थि, पैर की गाँठ (पह १, ४) । गोकण्ण } पुं [गोकर्ण] १ गौ का कान । गोकन्न } २ दो खुरवाला चतुष्पद-विशेष

(पह १, १) । ३ एक अन्तर्द्वीप, द्वीप-विशेष । ४ गोकर्ण-द्वीप का निवासी मनुष्य (ठा ४, २) । गोकुल्लिज देखो गो-कुल्लिजय (राय १४०) । गोक्खुरय पुं [गोक्खुरक] एक श्रीपवि का नाम, गोखर (स २५६) । गोक्षय पु [दे] प्राजन-दण्ड, कोठा, चायुक (दे २, ६७) । गोच्छ देखो गुच्छ (से ६, ४७, गा ५३२) । गोच्छअ } पुन [गोच्छक] पाय बगैरह गोच्छग } साफ करने का वस्त्र-खण्ड (कस) पह २, ५) । गोच्छड न [दे] गोमय, गो-विष्ठा (मृच्छ ३४) । गोच्छा स्त्री [दे] मंजरी, वीर (दे २, ६५) । गोच्छिय देखो गुच्छिय (श्रीप, आया १, १) । गोच्छ देखो गोच्छड (नाट—मृच्छ ४१) । गोजलोया स्त्री [गोजलौया] क्षुद्र कीट-विशेष, द्विन्द्रिय जन्तु-विशेष (पह १, १५) । गोज पुं [दे] १ शारीरिक दोषवाला बैल (सुपा २८१) । २ गानेवाला, गवैया, गायक, वीणावसराणाह, गोदं नडनट्टुत्तगोउज्जेहि । वदिजणेण सहरिंसं, जयसद्दालायण च कय' (पचम ८५, १६) । गोठ पु [गोष्ठ] गोवाड़ा, गौश्रो के रहने का स्थान (महा, पचम १०३, ४०, गा ४४७) । गोठामाहिल पुं [गोष्ठामाहिल] कर्म-पुद्गलो को जीव प्रदेश से अवद माननेवाला एक जैनभास आचार्य (ठा ७) । गोठि देखो गोठ्ठी (आवम) । गोठिह पु [गोष्ठिक] एक मण्डली के गोठिहण सदस्य, मित्र, समान-वयस्क दोस्त गोठिल्लय (आया १, १६—पत्र २०५, विपा १, २—पत्र ३७) । गोठ्ठी स्त्री [गोष्ठी] १ मण्डली, समान वय-वालो की सभा (प्राप्र, दसनि १, आया १, १६) । २ वार्तालाप, परामर्श (कुमा) । गोड पुं [गौड] १ देश-विशेष (स २८६) । २ वि. गौड देश का निवासी (पह १, १) । गोड पुं [दे] गोड, पाद, पैर (नाट—मृच्छ १५८) । गोडा स्त्री [गोला] नदी-विशेष, गोदावरी (गा ५८; १०३) ।

गहं न [गृह] घर, मकान । 'वइ पुं [पति] गृहस्थ, गृही, संसारी (पउम २०, ११६, प्राप्र) । 'वहणी छी [पत्नी] गृहिणी, छी (सुपा २२६) ।

गहकल्लोल पु [दे. ग्रहकल्लोल] राहु, ग्रह-विशेष (दे २, ८६, पाप्र) ।

गहगट् अक [दे] हपं से भग जाना, आनन्द-पूर्ण होना । गहगहड (भवि) ।

गहण न [ग्रहण] १ आदान, स्वीकार (मे ४, ३३, प्राप् १४) । २ आदर, सम्मान । ३ ज्ञान, अवबोध (से ४, ३०) । ४ शब्द, आवाज (आचा २, ३, ३, आवम) । ५ वि ग्रहण करनेवाला । ६ न इन्द्रिय (विसे १७०७) । ७ चन्द्र-सूर्य का उपराग—ग्रहण (भग १२, ६) । ८ वि ग्राह्य, जिमका ग्रहण किया जाय वह (उत्त ३२) । ९ न शिक्षा-विशेष (आत्र) ।

गहण न [ग्राहण] ग्रहण कराना, अग्रीकार कराना, 'जो आनि वमचेरगहणगुट' (कुमा) ।

गहण न [ग्रहण] १ आदान का कारण । २ आलेपक, 'चक्कुम्स रुव गहण वर्यति' (उत्त ३०, २२) ।

गहण न [गहन] अरण्य-क्षेत्र (आचा २, ३, ३, १) । 'विदुग्ग न [विदुर्ग] पवत के एक प्रदेश में स्थित वृक्ष-वल्ली-समुदाय (सूअ २, २, ८) ।

गहण वि [गहन] १ निविड, दुभेद्य, दुगंम, 'काले अण्णाइणिहणे जोणीगहणम्मि भोसणे इत्य' (जी ४६), 'फलसारणलिणिगहणा' (गडड) । २ वन, भाडी, घना कानन (पाप्र, भग) । ३ वृक्ष-गह्वर, वृक्ष का कोटर (विपा १, ३—पत्र ४६) ।

गहण न [दे] १ निर्जल-स्थान, जल-रहित प्रदेश (दे २, ८२, आचा २, ३, ३) । २ वन्वक, वरोहर, गिरवी (सुपा ५४८) ।

गहणय न [दे] गहना, आभूषण (सुपा १५४) ।

गहणया छी [ग्रहण] ग्रहण, स्वीकार, उपादान (औप) ।

गहणी छी [ग्रहणी] गुदाशय, गांड (पएह १, ४, औप) ।

गहणी छी [ग्रहणी] कुक्षि, पेट (पव १०६) ।

गहणी छी [दे] जवरदस्ती हरण की हुई छी, वदी या वदी (दे २, ८४, से ६, ४७) ।

गहस्थि पुं [गभस्ति] किरण, त्विड (पाप्र) ।

गहर पुं [दे] गृध्र, गोच-पक्षी (दे २, ८४, पाप्र) ।

गहर पुन [गह्वर] १ निकुज । २ वन, जंगल । ३ दम, कपट । विपम-स्थान । ५ रोदन । ६ गुफा । ७ अनेक अनर्थों का सकट, 'गहरो' (प्राक् २८) ।

गहवइ पु [गृहपति] कृपक, खेती करनेवाला (पाप्र) ।

गहवइ वि [दे] १ ग्रामीण, गाँव का रहनेवाला (दे २, १००) । २ पु चन्द्रमा, चाँद (दे २, १००, पाप्र, वाप्र १५) ।

गहिअ वि [दे] वक्रित, मोड़ा हुआ, टेढ़ा, किया हुआ (दे २, ८५) ।

गहिअ वि [गृहीत] १ उपात्त, स्वीकृत (औप, ठा ४, ४) । २ पकड़ा हुआ (पएह १, ३) । ३ ज्ञात, उपलब्ध, विदित (उत्त २, पड्) ।

गहिअ वि [गृद्ध] ग्रामक, तल्लीन (आचा) ।

गहिआ छी [दे] १ काम-भोग के लिए जिसकी प्रार्थना की जाती हो वह छी (दे २, ८५) । २ ग्रहण करने योग्य छी (पड्) ।

गहिर वि [गभीर] गहरा, गम्भीर, अन्ताध (दे १ १०१, काप्र ६२५, कप्प, गडड, औप, प्राप्र) ।

गहिल वि [ग्रहिल] भूतादि से आविष्ट, पागल (आ १४) ।

गहिलिय } वि [दे ग्रहिल] आवेश-युक्त, गहिल } पागल, आन्त-चित्त (पउम ११३, ४३, पड्, आ १२, उप ५६७ टी, भवि) ।

गहीअ देखो गहिअ = गृहीत (आ १२, रयण ६८) ।

गहीर देखो गभीर (प्राप् ६) ।

गहीरिअ न [गभीर्य] गहराई, गम्भीरपन (हे २, १०७) ।

गहीरिम पुछी [गभीरिमन्] गहराई, गम्भीर-स्ता (हे ४, ४१६) ।

गहेअव्व } देखो गह = ग्रह ।

गहेउ }

गहूण (अप) देखो गह = ग्रह । गहूइ (पड्) ।

गा } सक [गै] १ गाना, आलापना । २ गाअ } वर्णन करना । ३ श्लाघा करना ।

गाइ, गाअइ (हे ४, ६) । वहु गत, गाअत, गायमाण (गा ५४६, पि ४७६, पठम ६४, २४) । कवक गिज्जत (गडड, गा ६४२, सुपा २१, मुर ३, ७६) । सक, गाइउ (महा) ।

गाअ पु [गो] बैल, वृषभ, सांड (हे १, १५८) ।

गाअ न [गात्र] १ शरीर, देह (मम ६०) । २ शरीर का अवयव (औप) ।

गाअ वि [गायक] गानेवाला (कुमा) ।

गाअर पुं [गवाङ्क] महादेव, शिव (कुमा) ।

गाअग वि [गायन] गानेवाला, गवैया (सुपा ५५, सण) ।

गाडअ वि [गीत] १ गाया हुआ, 'किन्नरेण तो गाइय गीय' (सुपा १६) । २ न गीत, गान, गाना (आव ४) ।

गाडआ छी [गायिका] गानेवाली छी (गा ६४४) ।

गाइर वि [गाथक] गानेवाला, गवैया (सुपा ५८) ।

गाई छी [गो] गैया, गो (हे १, १५८, दे ४, १८, गा २७१, मुर ७, ६५) ।

गाउ } न [गव्यूत] १ कोस, कोश, दो गाउअ } हजार धनुष-प्रमाण जमीन (पि गाऊअ, २५४, औप, इक जी १८, विसे ८२ टी) । २ दो कोस, कोश-युग्म (औघ १२) ।

गागर पुं [दे] छी को पहनने का वस्त्र-विशेष, लहंगा, घँघरा या घाघरा गुजराती मे 'वाघरो' (पएह १, ४) । २ मत्स्य-विशेष (पएण १) ।

गागरी [दे] देखो गायरी (पि ६२) ।

गागलि पु [गागलि] एक जैनमुनि (उत्त १०) ।

गागेज्ज वि [दे] मथित, मया हुआ, आलो-डित (दे २, ८८) ।

गागेज्जा छी [दे] नवोढा, दुलहिन (दे २, ८८) ।

गाडिअ वि [दे] विधुर, वियुक्त (दे २, ८३) ।

गोयम वि [गौतम] १ गोतम गोत्र मे उत्पन्न, गोतम गोत्रीय, 'जे गोयमा ते सतविहा परएत्ता' (ठा ७, भग ज १)। २ पुं भगवान् महावीर का प्रधान-शिष्य (भग १४, ७, उवा)। ३ इस नाम का एक राज-कुमार, राजा श्रन्धकवृष्णि का एक पुत्र, जो भगवान् नेमिनाथ के पास दीक्षा लेकर शत्रुञ्जय पर्वत पर मुक्त हुआ था (अन्त २)। ४ एक मनुष्य जाति, जो बैल द्वारा भिक्षा मांग कर अपना निर्वाह चलाती है (गाथा १, १४)। ५ एक ब्राह्मण (उप ६१७)। ६ द्वीप विशेष (सम ८०, उप ५६७ टी)। °केसिज्ज न [°केशीय] 'उत्तराव्ययन' सूत्र का एक अव्ययन, जिसमें गौतम स्वामी और केशिमुनि का सवाद है (उत्त २३)। °सगुत्त वि [°सगोत्र] गोतम गोत्रीय (भग, आवम)। °सामि पु [°स्वामिन] भगवान् महावीर के सर्व-प्रधान शिष्य का नाम (विपा १, १—पत्र २)।

गोयमज्जिया } स्त्री [गौतमार्जिका] जैनमुनि-
गोयमज्जिया } गण की एक शाखा (राज, कप्प)।

गोयर पु [गोचर] १ गौश्रो को चरने की जगह, एगे गोयरे एगे वणगाणियाण' (वृह ३)। २ विषय, 'श्रबुहगोयर गामह सयभु' (गउड)। ३ इन्द्रिय का विषय, प्रत्यक्ष, 'इअ राया उज्जाण त कासी नयणगोअर मव्व' (कुमा)। ४ भिक्षाटन, भिक्षा के लिए भ्रमण (ओष ६६ भा, दस ५, १)। ५ भिक्षा, माधुकरी (उप २०४)। ६ वि. भूमि में विचरनेवाला, 'विभ्रवणगोयराण पुलिदारण' (गउड)। °चरिआ स्त्री [°चर्या] भिक्षा के लिए भ्रमण (उप १३७ टी, पउम ४, ३)। °भूमि स्त्री [°भूमि] १ पशुश्रो को चरने की जगह (दे ३, ४०)। २ भिक्षा-भ्रमण की जगह (ठा ६)। °वत्ति वि [°वर्त्तिन] भिक्षा के लिए भ्रमण करनेवाला (गा २०४)। गोयरी स्त्री [गौचरी] भिक्षा, माधुकरी (सुपा २६६)।

गोर पुं [गौर] १ शुक्ल-वर्ण, सफेद रंग। २ वि गौर वर्णवाला, शुक्ल (गउड, कुमा)। ३ अवदात, निर्मल (गाथा १, ८)। °खर पु

[°खर] नर्दभ की एक जाति (परण १)। °गिरि पु [°गिरि] पर्वत विशेष, हिमाचल (नि १)। °मिग पु [°मृग] १ हरिण की एक जाति। २ न उस हरिण के चमड़े का बना हुआ वस्त्र (आचा २, ५, १)।

गोरअ देखो गोरव (गा ८६)।

गोरंग वि [गौराङ्ग] गोरा शरीरवाला, शुक्ल शरीरवाला (कप्प)।

गोरफिडी स्त्री [दे] गोघा, गोह, जन्तु-विशेष (दे २, ६८)।

गोरडित वि [दे] सस्त, ध्वस्त (पड्)।

गोरव न [गौरव] १ महत्व, गुरत (प्रास ३०)। २ आदर, मन्मान, बहुमान (विने ३४७३, रयण ५३)। ३ गमन, गति (ठा ६)।

गोरविअ वि [गौरवित] सम्मानित, जिमका आदर किया गया हो वह (दे ४, ५)।

गोरव्य वि [गौरव्य] गौरव-योग्य (धर्मवि ६४, कुप्र ३७७)।

गोरस पुन [गोरस] गोरम, दूध, दही, मट्ठा या छाछ वगैरह (गाथा १, ८, ठा ४, १)।

गोरस पु [गोरस] बाणी का आनन्द (मिरि १४०)।

गोरह पु [दे] हल में जोतने योग्य बैल (आचा २, ४२, ३)।

गोरा स्त्री [दे] लाङ्गल-पद्धति, हल रेखा। २ चक्षु, आख। ३ ग्रीवा, गर्दन या डोक (दे २ १०४)।

गोरिं देखो गोरी (हे १, ४)।

गोरिअ न [गौरिक] विद्याघर का नगर विशेष (इक)।

गोरी स्त्री [गौरी] १ शुक्ल-वर्णा स्त्री (हे ३, २८)। २ पार्वती, शिव-पत्नी (कुमा, सुपा २४०, गा १)। ३ श्रीकृष्ण की एक स्त्री का नाम (अत १५)। ४ इस नाम की एक विद्या-देवी (सति ६)। °कूड न [°कूट] विद्याघर-नगर-विशेष (इक)।

गोरी स्त्री [गौरी] विद्या-विशेष (सूत्र २, २, २७)।

गोरुव न [गोरुप] प्रशस्त गाय (धर्मवि ११२)।

गोल पुं [दे] १ साक्षी (दे २, ६५)। २

पुरष का निन्दा गर्भ ग्रामन्त्रण (गाथा १, ६)। ३ निन्दुस्ता, कडोगना (दम ७)।

गोल पुं [गोल] १ वृक्ष-विशेष, 'कदम्बगोल-गिहकटअतरिणअग्गे' (अचनु ५८)। २ गोला-कार, वृत्ताकार मण्डनाकार वस्तु (ठा ८, ४, अनु ५)। ३ गोलक, कुडा (सुपा २७०)। ४ गेद, कन्दुक (सूत्र १, ४)।

गोल पुष्पी [दे] गोना, जार से उत्पन्न, कुंड (दम ७, १४)। स्त्री °ली (दम ७, १६)।

गोलग पु [गोलरु] ऊपर देखो (सूत्र २, गोलय २, उप पृ ३६२ वान)।

गोलव्यायण न [गोलव्यायन] गोत्र-विशेष (मुज १०, १६)।

गोला स्त्री [दे] गो, गैया (दे २, १०४, पात्र)। २ नदी, कोई भी नदी। ३ सखी, सहेली, सगिनी (दे ०, १०४)। गोदावरी नदी (दे २, १०४, गा ५८, १७५, हेका २६७ पि ८५, १६४, पात्र, पड्)।

गोलिय पु [गोडिक] गुड बनानेवाला (वव ६)।

गोलिया स्त्री [दे] १ गोली, गुटिका (राय, अणु)। गेद, लडकी के चेंबने की एक चीज, 'तीए दामीए घटो गोलियाए भिनो' (दननि २)। ३ बड़ा कुएडा बड़ी, धानी (ठा ८)। °लिछ, °लिच्छ न [°लिच्छ, °लिच्छ] १ तुल्ली, चूल्हा। २ अग्नि विशेष (ठा ८—पत्र ४१७)।

गोलियायण न [गोलिकायन] १ गोत्र-विशेष, जो कौशिक गोत्र की एक शाखा है। २ वि. गोलिकायन-गोत्रीय (ठा ७)।

गोली स्त्री [दे] मयनी या मयानी मयनिया, दही मयने की लकड़ी, रही (दे २, ६५)।

गोह न [दे] विम्बी-फल, कुन्दरुन का फल (गाथा १, ८, कुमा)।

गोल्ल पुं [गौल्य] १ देश विशेष (आवम)। २ न गोत्र-विशेष जो काश्यप गोत्र की शाखा है। ३ वि गौल्य गोत्र में उत्पन्न (ठा ७)।

गोल्ला स्त्री [दे] विम्बी, वल्ली-विशेष, कुन्दरुन की लतर (दे २, ६५, आवम, पात्र)।

गोव सक [गोपय] १ छिपाना। २ रक्षण करना। गोवए, गोवेइ (सुपा ३४६, महा)।

गारिहस्थिय स्त्री [गार्हस्थ्य] गृहस्थ-सवन्धी, संसारि-सवन्धी। स्त्री. °या (पव २३५)।
 गारुड } वि [गारुड] १ गरुड-संवन्धी।
 गारुड } २ सर्प के विष को उतारनेवाला, सर्प-विष को दूर करनेवाला। ३ पुं. सर्प विष को दूर करनेवाला मन्त्र (उप ६८६ टी. से १४, ५७)। ४ न. शास्त्र विशेष, मन्त्र शास्त्र-विशेष, सर्पविष नाशक मन्त्र का जिसमें वर्णन हो वह शास्त्र (ठा ६)। °मत् पुं [°मन्त्र] सर्प-विष का नाशक मन्त्र (सुपा २१६)।
 °विट वि [°विट] गारुड मन्त्र का जानकार, गारुड शास्त्र का जानकार (उप ६८६ टी)।
 गाल सक [गालय्] १ गालना, छानना। २ नाश करना। ३ उल्लघन करना, अतिक्रमण करना। गालयइ (विसे ६४)। वक्र. गालेमाण (भग ६, ३३)। कवक. गालि-ज्जत (सुपा १७३) प्रयो. गालावेह (गाया १, १२)।
 गालण न [गालन] छालना, गालना (परह १, १, उप पृ ३७६)।
 गालणा स्त्री [गालना] १ गालना, छानना। २ गिरवाना। ३ पिघलवाना (विपा १, १)।
 गालवाहिया स्त्री [दे] छोटी नौका, डोंगी, 'एत्थंतरम्मि समागया गालवाहियाए निव्वा-मया' (स ३५१)।
 गालि स्त्री [गालि] गाली, गारी, अपशब्द, असम्य वचन (सुपा ३७०)।
 गालिय वि [गालित] १ छाना हुआ। २ अतिक्रान्त। ३ विनाशित। ४ क्षिप्त, 'गालिय-मिठो निरंकुसो वियरिओ रायहत्थो' (महा)।
 गाली स्त्री [गाली] देखो गालि (पव ३८)।
 गाव (अप) देखो गा। गावइ (पिंग)। वक्र. गावत (वि २५४)।
 गाव (अप) देखो गव्व (भवि)।
 गाव वि [दे] गत, गया हुआ, गुजरा हुआ (पङ्)।
 गाव } पुं [गावन्] १ पत्थर, पाषाण
 गावाण } (पाप्र)। २ पहाड़, गिरि (हे ३, ५६)।
 गावि (अप) देखो गव्विय (भवि)।
 गावी स्त्री [गो] गौ, गैया (हे २, १७४, विपा १, २, महा)।

गास पुं [ग्रास] ग्रास, कवल (सुपा ४८८)।
 गास पुं [ग्रास] भोजन (पव ६५)।
 गाह देखो गह = ग्रह। कर्म. गाहिज्जइ (पाप्र)।
 गाह सक [ग्राह्य्] ग्रहण कराना। गाहेइ (श्रौप)।
 गाह सक [गाह्] १ गाहना, ढूँढना। २ पढ़ना, अभ्यास करना। ३ अनुभव करना। ४ टोह लगाना। गाहदि (शौ), (मुच्छ ७२)। कवक. गाहिज्जंत (वज्जा ४)।
 गाह पुं [गाध] अस्ताव-रहित, थाह (ठा ४, ४)।
 गाह पुं [ग्राह] १ गाह, कुभीर, नक्र, जल-जन्तु-विशेष, मगर (दे २, ८६, गाया १, ४, जी २०)। २ आग्रह, हठ (विसे २६८६, पउम १६, १२)। ३ ग्रहण, आदान (निचू १)। ४ गारुडिक, सर्प को पकड़नेवाली मनुष्य-जाति (वृह १)। °वई स्त्री [°वती] नदी-विशेष (ठा २, ३—पत्र ८०)।
 गाहग वि [ग्राहक] १ ग्रहण करनेवाला, लेनेवाला (सुपा ११)। २ समझनेवाला, जाननेवाला (सुपा ३४३)। ३ समझानेवाला, शिक्षक, आचार्य, गुरु (श्रौप)। ४ ज्ञापक, बोधक। स्त्री गाहिगा (श्रौप)।
 गाहक वि [ग्राहक] प्राप्ति करनेवाला, 'गाहग सयलपुण्णए' (स ६८२)।
 गाहण न [ग्राहण] १ ग्रहण कराना। २ ग्रहण, आदान, 'गाहण तवचरियस्सा गहण चिय गाहणा होति' (पचभा)। ३ शास्त्र, सिद्धान्त (वव ४)। ४ बोधक-वचन, शिक्षा, उपदेश (परह २, २)।
 गाहणया } स्त्री [ग्राहणा] ऊपर देखो (उप
 गाहणा } पृ ३१४, आचा, गच्छ १)।
 गाहय देखो गाहग (विसे ८३१, स ४६८)।
 गाहा स्त्री [गाथा] अभ्ययन, ग्रन्थ-प्रकरण (उत्त ३१, १३)।
 गाहा स्त्री [गाथा] १ छन्द-विशेष, आर्या, गोति (ठा ५, ३, अजि ३७, ३८)। २ प्रतिष्ठा। ३ निश्चय, 'सिपययाण य गाहा' (आव ४)। ४ 'सूत्रकृताग' सूत्र का सोलहवाँ अभ्ययन (सूत्र १, १, १)।
 गाहा स्त्री [दे] गृह, घर, मकान, 'गाहा घरं गिहमिति एणद्धा' (वव ८)। °वइ पुं स्त्री

[°पति] १ गृहस्थ, गृही, ससारी (ठा ४, ४, सुपा २२६)। २ घनी, घनाढ्य (उत्त १)। ३ भट्टारी, भारडागारिक (सम २७)। स्त्री. °णी (गाया १, ५, उवा)।
 गाहाल पुं [ग्राहाल] कीट-विशेष, श्रीन्द्रिय जन्तु विशेष (जीव १)।
 गाहावई स्त्री [ग्राहावती] १ नदी विशेष। २ द्वीप-विशेष। ३ ह्रद-विशेष, जहाँ से ग्राहावती नदी निकलती है (जं ४)।
 गाहावय वि [ग्राहित] जिसको ग्रहण कराया गया हो वह (सुर ११, १८३)।
 गाहिणी स्त्री [गाहिनी] १ गाहने वाली स्त्री। २ छन्द-विशेष (पिंग)।
 गाहिपुर न [गाधिपुर] नगर-विशेष (गउड)।
 गाहिय वि [ग्राहित] १ जिसको ग्रहण कराया गया हो वह। २ भ्रामित, उकसाया हुआ (सूत्र १, २, १)।
 गाहीकय वि [गाथीकृत] एकत्रित, इकट्ठा किया हुआ (सूत्रनि १, १६)।
 गाहु स्त्री [गाहु] छन्द-विशेष (पिंग)।
 गाहुलि पुं स्त्री [दे] ग्राह, नक्र, मगर, क्रूर जल-जन्तु विशेष (दे २, ८६)।
 गाहुलिया देखो गाहा = गाया (सुपा २६४)।
 गिंठि [गृष्टि] १ एक बार व्यायी हुई। २ एक बार व्यायी हुई गाय (हे १, २६)।
 गिंधुअ [दे] देखो गेंठुअ (पाप्र)।
 गिंधुल [दे] देखो गेंठुल्ल (पाप्र)।
 गिंभ (अप) देखो गिह (हे ४, ४४२)।
 गिंह देखो गिह (पङ्)।
 गिज्जंत देखो गा।
 गिज्जक अक [गृध्] आसक्त होना, लम्पट होना। गिज्जइ (हे ४, २१७)। गिज्जइ (गाया १, ८)। वक्र. गिज्जत (श्रौप)।
 क. गिज्जियठव (परह २, ५)।
 गिज्ज वि [गृह्य, ग्राह्य] १ ग्रहण करने योग्य। २ अपनी तरफ से किया जा सके ऐसा (ठा ३, २)।
 गिट्ठि देखो गिंठि, 'वारंतस्सवि वला दिट्ठी गिट्ठिव्व जवसम्मि' (उप ७२८ टी, पाप्र, गा ६४०)।
 गिद्धिया स्त्री [दे] गेही, गेंद खेलने की लकड़ी (पव ३८)।

घ

घ पुं [घ] कण्ठ-स्थानीय व्यञ्जन वर्ण-विशेष (प्राप; प्रामा) ।

घअअद न [दे] मुकुर, दर्पण (पङ्) ।

घई (अप) अ पाद-पूरक और अनर्थक अव्यय (हे ४, ४२४, कुमा) ।

घओअ } पु [घृतोद] १ समुद्र-विशेष,
घओद } जिसका पानी घी के तुल्य स्वादिष्ट है (इक, ठा ७) । २ मेघ विशेष (तित्थ) ३ वि जिसका पानी घी के समान मधुर हो ऐसा जलाशय । झी °आ, °दा (जीव ३, राय) ।

घंघ पुं [दे] गृह, मकान, घर (दे २, १०५) । °साला झी [°शाला] अनाथ-मण्डप, भिक्षुओं का आश्रय-स्थान (ओघ ६३६, वव ७, आचा) ।

घघल (अप) न [मकट] १ मगडा, कलह (हे ४, ४२२) । २ मोह, धवराहट (कुमा) ।

घघलिअ वि [दे] घबड़ाया हुआ (संवे ६, धर्मवि १३४) ।

घंघोर वि [दे] भ्रमण-शील, भटकनेवाला (दे २, १०६) ।

घंचिय पु [दे] तेली, तेल निकालनेवाला, गुजराती में 'घाची' (सुर १६, १६०) ।

घंट पुत्री [घण्ट] घण्टा, कास्य-निर्मित वाद्य-विशेष (ओघ ८६ भा) । झी °टा (हे १, १६५, राय) ।

घटिय पु [घण्टिक] चाण्डाल का कुल-देवता, यक्ष विशेष (बृह १) ।

घंटिय पुं [घाण्टिक] घण्टा बजानेवाला (कप्प) ।

घटिया झी [घण्टिका] १ छोटी घण्टी (प्रामा) । २ किकिरी, घुँघुल (सुर १, २४८, जं २) । ३ आभरण-विशेष (णाय १, ६) ।

घंस पुं [घर्ष] घर्षण, घिसन (णाय १, १—पत्र ६३) ।

घसण न [घर्षण] घिसन, रगड़ (स ४७) ।

घसिय वि [घर्षित] घिसा हुआ, रगड़ा हुआ (मौप) ।

घक्कूण देखो घे ।

घग्घर न [दे] घँघरा, घघरा, लहंगा, झिथो के पहनने का एक वस्त्र (दे २, १०७) ।

घग्घर पुं [घर्घर] १ शब्द-विशेष (गा०००) । २ खोखला गला, 'घग्घरगलम्मि' (दे ६, १७) ।

३ खोखला आवाज, 'स्यमाणी घग्घरेण-सहेण' (सुर २, ११२) । ४ न श्यादल, शैवाल या सेवार वगैरह का समूह (गउठ) ।

घट्ट सक [घट्ट] १ स्पर्श करना, छूना । २ हिलना, चलना । ३ सघर्ष करना । ४ आहत करना । घट्टइ (सुपा ११६) । वक्क-घट्टत (ठा ७) । कवक्क-घट्टिज्जांत (से २, ७) ।

घट्ट सक [घट्टय] हिलाना । संक्क-घट्टियाण (दस ५, १, ३०) ।

घट्ट अक [अश] अष्ट होना । घट्टइ (पङ्) ।

घट्ट पुं [दे] १ कुसुम्भ रंग से रंगा हुआ वस्त्र । २ नदी का घाट । ३ वेणु, वंश, बाँस (दे २, १११) ।

घट्ट पुं [घट्ट] १ शकंराप्रमानामक नरक-भूमि का एक नरकावास (इक) । २ पुंन. जमाव (आ २८) । ३ समूह, जत्था, 'हयघट्टाइ' (सुपा २५६) । ४ वि. गाढा, निविड, 'भूल पट्टकरहम्मो' (सुपा ११) ।

घट्टसुअ न [दे. घट्टयंशुक] वस्त्र-विशेष, बूटेदार कौसुम्भ वस्त्र (कुमा) ।

घट्टण वि [घट्टन] चालाक, हिला देनेवाला (पिंड ६३३) ।

घट्टण न [घट्टन] १ छूना, स्पर्श करना । २ चलाना, हिलाना (दस ४) ।

घट्टणग पुं [घट्टनक] पात्रवगैरह को चिकना करने के लिए उस पर घिसा जाता एक प्रकार का पत्थर (बृह ३) ।

घट्टणया } झी [घट्टना] १ आघात, आह-
घट्टणा } नन (मौप, ठा ४, ४) । २ चलन, हिलन (ओघ ६) । ३ विचार । ४ पृच्छा (बृह ४) । ५ कदर्यना, पीडा (आचा) । ६ स्पर्श, छूना (पण १६) ।

घट्टय देखो घट्ट (महा) ।

घट्टिय वि [घट्टित] १ आहत, सघर्ष-युक्त

(ज १) । २ प्रेरित, चालित (पण १, ३) ।

३ स्पृष्ट, छुआ हुआ (ज १, राय) ।

घट्ट वि [घट्ट] १ घिसा हुआ (हे २, १७४, औप, सम १३७) ।

घड सक [घट्] १ चेष्टा करना । २ करना, बनाना । अक, परिश्रम करना । ४ संगत होना, मिलना । घडइ (हे १, १६५) वक्क-घडत, घडमाण (से १, ५, निचू १) । क-घडियव्व (णाय १, १—पत्र ६०) ।

घड सक [घटय] १ मिलाना, जोड़ना, संयुक्त करना । २ बनाना, निर्माण करना । ३ संचालन करना । घडेइ (हे ४, ५०) । भवि. घडिस्सामि (स ३६४) । वक्क-घडत (सुपा २५५) । संक्क-घडिअ (दस ५, १) ।

घड पु [घट] घडा, कुम्भ, कलश (हे १, १६५) । °कार पुं [°कार] कुम्भकार, मिट्टी का बरतन बनानेवाला (उप पु ४१५) । °चेडिया स्त्री [°चेटिका] पानी भरनेवाली दासी, पनहारिन (सुपा ४६०) । °दास पुं [°दास] पानी भरनेवाला नौकर, पनहार आचा) । °दासी स्त्री [°दासी] पानी भरनेवाली, पनहारी (सूअ १, १५) ।

घड वि [दे] सृष्टीकृत, बनाया हुआ (पङ्) ।

घडइअ वि [दे] सकुचित (पङ्) ।

घडग पुं [घटक] छोटा घडा (ज २, अणु) ।

घटगार देखो घड-कार (वव १) ।

घडचडग पुं [घटचटक] एक हिसा-प्रधान संप्रदाय (मोह १००) ।

घडण झीन [घटन] १ घटना, प्रसंग (वि १३) । २ अव्यय, संबध (चेडय ४६७) ।

घडण न [घटन] १ घटना या गडना, कृति, निमाण (से ७, ७१) । २ यत्न, चेष्टा, परिश्रम (अनु ४, पण २, १) ।

घडणा झी [घटना] मिलान, मेल, संयोग (सूअ १, १, १) ।

घडय देखो घडग (जं २) ।

घडा झी [घटा] समूह, जत्था (गउठ) ।

गिहिकोइला श्री [गुहकोकिला] गुहगोषा, छिपकली (स ७५८) ।

गिहमेहि पु [गुहमेधिन्] गुहस्य (धर्मवि २६) ।

गिहवइ पु [गुहपति] देश का अधिपति, सूवेदार, 'तह गिहवईवि देस्स नायगो' (पव ८५) ।

गिहि पुं [गुहिन्] गृही, संसारी, गुहस्य (ओष १७ भा, नव ४३) । °धम्म पुं [°धम्म] गुहस्य-धर्म, आचक-धर्म (राज) ।

°लिमा न [°लिङ्ग] गुहस्य का वेश (वृह १) ।

गिहिणी श्री [गुहिणी] गृहिणी, भार्या, श्री (सुपा ८३, आ १६) ।

गिहीअ वि [गुहीत] आत, उपात, ग्रहण किया हुआ (स ४२८) ।

गिहेलुग देखो गिहेलुय (आचा २, ५, १, ८) ।

गिहेलुय पुं [गुहेलुक] देहली, द्वार के नीचे की लकड़ी (निचू १३) ।

गी श्री [गिर्] वाली, भाषा, वाक्, 'थिरमुज्जल च छायाघणं च गोविलसियं जस्स' (गठह) ।

गीआ श्री [गीता] श्रीमद्भगवद्गीता, ज्ञानमय उपदेश, छन्द-विशेष (पिंग) ।

गीइ श्री [गीति] १ छन्द-विशेष, आर्या-वृत्त का एक भेद । २ गान, गीत (ठा ७, उप १३० टी) ।

गीइया श्री [गीतिका] ऊपर देखो (श्रीप, राया १, १) ।

गीय वि [गीत] १ पद्य-मय वाक्य, गेय, जो गाया जाय वह (परह २, ५, अणु) । २ कथित, प्रतिपादित (राया १, १) । ३ प्रसिद्ध, विख्यात (संथा) । ४ न गान, ताल और वाजे के अनुसार गाना (ज २, उत्त १) ।

५ संगीत-कला, गान-कला, संगीत-शास्त्र का परिज्ञान (राया १, १) । ६ पु गीतार्थ, उत्सर्ग और अपवाद वगैरह का जानकार जैन साधु, विद्वान् जैन मुनि (उप ७७३) । °जस पुं [°यशस्] इन्द्र-विशेष, गन्धर्व देवों का एक इन्द्र (ठा २, ३, इक) । °थ्य पु [°थ्य] १ विद्वान् जैन मुनि (उप ८३३ टी, वव ४, सुपा १२७) । २ संगीत रहस्य (मै १४) ।

°पुर न [°पुर] नगर-विशेष (पउम ५५, ५३) । °रइ श्री [°रति] १ संगीत-क्रीडा

(श्रीप) । २ पु. गन्धर्व देवों का एक इन्द्र (इक, भग, ३, ८) । ३ गन्धर्व सेना का अधिपति देव-विशेष (ठा ७) । ४ वि. संगीत-प्रिय, गान-प्रिय (विपा १, २) ।

गीवा श्री [गीवा] कण्ठ, गरदन (पात्र)

गुछ देखो गुच्छ (हे १, २६) ।

गुछा श्री [दे] १ बिन्दु । २ दाढ़ी-मूंछ । ३ अधम, नीच (दे २, १०१) ।

गुंज अक [हस्] हँसना, हास्य करना । गुजइ (हे ४, १६६) ।

गुंज अक [गुञ्ज] १ गुन-गुन करना, भ्रमर आदि का आवाज करना । २ गर्जना, सिंह वगैरह का आवाज करना, 'गुजति सीहा' (महा) । वक्र गुजत (राया १, १—पत्र ५ रभा) ।

गुज पुं [गुञ्ज] १ गुञ्जारव करता वायु (पउम १३, ४३) । २ पर्वत-विशेष, 'गुंजवरपञ्चय ते' (पउम ८, ६०, ६४) ।

गुजा श्री [गुजा] १ लता विशेष (सुर २, ६) । २ फल विशेष, घुँघची (राया १, १, गा ३१०) । ३ भम्मा, वाद्य-विशेष (आचा) ।

४ परिणाम-विशेष (ठा ४, १) । ५ गुञ्जारव, गुजन, गुन-गुन आवाज, "गुजाचक्कुह-रोवगूह" (राय) । ६ वायु-विशेष, गुञ्जारव करनेवाला वायु (जीव १, जी ७) °फल, °हल न [°फल] फल-विशेष, घुँघची (सुर २, ६, सुपा २६१) ।

गुजालिआ श्री [गुजालिका] गभीर तथा टेढ़ी बापी—बावली या बावड़ी (आचा २, ३, ३, १) ।

गुंजालिया श्री [गुजालिका] वक्र-सारिणी, टेढ़ी कियारी (राया १, १) । २ गोल पुष्करिणी (निचू १२) । ३ वक्र नदी (परण ११) ।

गुजाविअ वि [हासित] हँसाया हुआ (कुमा ७, ४१) ।

गुजिअ न [गुजिन] गुन-गुन आवाज, भ्रमर वगैरह का शब्द (कुमा) ।

गुजिर वि [गुजित्] गुन-गुन आवाज करनेवाला (उप १०३१ टी) ।

गुजुल देखो गुजोल गुजुलइ (हे ४, २०२) ।

गुजेहिअ वि [दे] पिएडीकृत, इकट्ठा किया हुआ (दे २, ६२) ।

गुजोल सक [वि + लुल्] बिखेरना । गुंजोल्लइ (प्राकृ ७३) ।

गुजोल अक [उत् + लस्] उल्लास पाना, विकसित होना । गुजाल्लइ (हे ४, २०२) ।

गुजोल्लिअ वि [उल्लसित] विकसित, विकसित (कुमा) ।

गुंठ सक [उद् + धूल्य्, गुण्ठ्] धूल वाला करना, धूली के रंग का करना, धूसरित करना । गुठइ (हे ४, २६) । वक्र, गुंठंत (कुमा) ।

गुठ पु [दे] अधम अश्व, दुष्ट घोड़ा (दे २, ६१, स ४५४) । २ वि मायावी, कपटी (वव ३) ।

गुठा श्री [दे] माया, धम्म, छल (वव ३) ।

गुठिअ वि [गुण्ठित] १ बूसरित । २ व्याप्त ३ आच्छादित (दे १, ८५) ।

गुठी श्री [दे] नौरंगी, श्री का वस्त्र-विशेष (दे २, ६०) ।

गुड न [दे] मुस्ता में उत्पन्न होनेवाला वृण-विशेष (दे २, ६१) ।

गुंढण न [गुण्डन] धूलि का लेप, धूल का शरीर में लगाना, 'रयरेणुगु डणाणि य नो सम्म सहसि' (राया १, १—पत्र ७१) ।

गुंढिअ वि [गुण्डित] १ धूलि-लित, धूलि-युक्त (पात्र) । २ लित, पता हुआ, 'चुरण गुडिअगात' (विपा १, २—पत्र २४) । ३ घिरा हुआ, सचणी जह पमुगु डिया' (सूअ १, २, १) । ४ आच्छादित, प्रावृत (आचा) । ५ प्रेरित (परह १, ३) ।

गुथण न [ग्रन्थन] शूथना, गठना (रयण १८) ।

गुद पुं [गुन्द्र] वृक्ष-विशेष (पात्र) ।

गुदल न [दे. गुन्दल] १ आनन्द-वर्नि, खुशी की आवाज, हर्ष की तुमुलव्वनि, 'मत्त-वरकामिणीसघकयगुदल' (सुर ३, ११५) । 'करिणीहि कलहेहि य खणमेक्क हरिसगु दल काउ' (सुपा १३७) । २ हर्ष-भर, आनन्द-संदोह, खुशी की वृद्धि, 'अमदआणदु दल-पुरुव्व', 'आणदु दलेणं ललड लीलावईहि परिकलिओ' (सुपा २२, १३६) । वि आनन्द-

घय न [घृत] घी घृत (हे १, १२६, सुर १६, ६३)। °आमव पु [°श्रव] जिसका वचन घी की तरह मधुर लगे ऐसा लब्धिमान् पुरुष (आवम)। °क्रिट्ट न [°क्रिट्ट] घी का मैल (धर्म २)। °क्रिट्टिया स्त्री [°क्रिट्टिका] घी का मैल (पव ४)। °गोल न [°गोल] घी और गुड की बनी हुई एक प्रकार की मिठाई, मिष्ठान्न विशेष (मुपा ६३३)। °घट्ट पुं [°घट्ट] घी का मैल (बृह १)। °पुन्न पु [°पूर्ण] घेवर, मिष्ठान्न विशेष (उप १४२ टी)। °पूर पु [°र] घेवर या घीवर मिष्ठान्न-विशेष (मुपा ११)। °पूममिन्न पु [°पुण्यमित्र] एक जैन मुनि, आर्यरक्षित सूरि का एक शिष्य (आचू १)। °मड पु [°मण्ड] ऊपर का घी, घृतसार (जीव ३)। °मिल्लिया स्त्री [°इलिका] घी का कौट, सुद्र जन्तु-विशेष (जो १६)। °मेह पु [°मेघ] घी के तुल्य पानी बरसने-वाली वर्षा (ज ३)। °वर पु [°वर] द्वीप-विशेष (इक)। °सागर पु [°सागर] समुद्र-विशेष (दीव)।

घयण पु [दे] भारड, भांडा, भडवा (उप पृ २०४, २७५, पचव ४)।

घयपूम पुं [घृतपुण्य] एक जैन महर्षि (कुलक २२)।

घर पुन [गृह] घर, मकान, गृह (हे २, १४४ ठा ५, प्रासू ७५)। °कुडो स्त्री [°कुटी] १ घर के बाहर की कोठरी। २ चौक के भीतर की कुटिया (ओघ १०५)। ३ स्त्री का शरीर (तदु)। °कोइला, °कोइलिआ स्त्री [°कोकिला] गृहगोवा, छिपकली (पिड, सुपा ६४०)। °गोली स्त्री [°गोली] गृह-गोवा, छिपकली (दे २, १०५)। °गोहिआ स्त्री [°गोविका] छिपकली, जन्तु-विशेष (दे २, १६)। °जामाउय पु [°जामावृक] घर-जमाई, समुद्र घर में ही हमेशा रहनेवाला जामाता (राया १, १६)। °त्य पु [°स्थ] गृही, ससारी, घरवारी (प्रासू १३१)। °नाम न [°नामन्] अमली नाम, वास्तविक नाम (महा)। °वाडय न [°पाटक] ढकी हुई जमीन वाला घर (पास)। °वार न [°द्वार] घर का दरवाजा (काप्र १६५)। °सउणि

पुं [°शकुनि] पालतू जानवर (वव २)। °समुदाणिय पु [समुदानिक] आजीविक मत का अनुयायी साधु (औप)। °सामि [°स्वामिन्] घर का मालिक (हे २, १४४)। °सामिणी स्त्री [°स्वामिनी] गृहिणी, स्त्री (पि ६२)। °शूर [°शूर] अलीक शूर, झूठा शूर, घर में ही बहादुरी दिखानेवाला (दे)।

घरगण न [गृहाङ्गण] घर का आंगन, चौक (गा ४४०)।

घरकूडा स्त्री [गृहकूटी] स्त्री-शरीर (तदु ४०)। घरग देखो घर (जीव ३)।

घरघट पु [दे] चटक, गौरैया पक्षी (दे २, १०७, पात्र)।

घरघरग पुं [दे] गला का आभूषण-विशेष (ज १)।

घरट्ट पु [घरट्ट] जाता, चक्को, अन्न पीसने का पापाण यन्त्र (गा ८००, सण)।

घरट्ट प [दे] अरघट्ट, अरहट, पानी का चरखा (निचू १)।

घरट्टी स्त्री [घरट्टी] शतमी, तोप (दे ३, १०)। घरणी देखो घरिणी, 'त वरघरणि वरणि व' (७२८ टी, प्रासू ४५)।

घरयद पु [दे] आदर्श, दर्पण, शीशा (दे २, १०७)।

घरस पुं [दे गृहवास] गृहाश्रम, गृहस्थाश्रम (बृह ३)।

घरसण देखो घसण (सण)।

घरित वि [गृहवत्] घरवाला, गृहस्थ (प्राक ३५)।

घरिणी स्त्री [गृहिणी] घरवाली, स्त्री, भार्या, पत्नी (उप ७२८ टी, से २, ३८, सुर २ १००, कुमा)।

घरिल्ल पुं [गृहेन्] गृही, ससारी, घरवारी (गा ७३६)।

घरिल्ला स्त्री [गृहिर्णा] घरवाली, स्त्री, पत्नी (कुमा)।

घरिल्ली स्त्री [दे गृहिणी] गृहिणी, पत्नी (दे २, १०६)।

घरिस पुं [घर्ष] घर्षण, रगड़ (राया १, १६)।

घरिसण न [घर्षण] घर्षण, रगड़ (सण)। घरोइला स्त्री [दे] गृहगोवा, छिपकली, विस्तु-इया (पि १६८)।

घरोल न [दे] गृह-भोजन-विशेष (दे २, १०६)।

घरोलिया) स्त्री [दे] गृहगोविका, छिपकली, घरोली) गुजराती में घरोली (पणह १, १, दे २, १०५)।

घलवल पु [घलवल] 'घल-घल' आवाज, ध्वनि-विशेष (विपा १, ६)।

घल्ल सक [चिप्] फेंकना, डालना, घालना। घल्लइ, घल्लति (भवि, हे ४, ३३४, ४२२)।

घल्ल वि [दे] अनुरक्त, प्रेमी (दे २, १०५)।

घल्लय पु [दे] द्वीन्द्रिय जीव की एक घल्लोय) जाति (सुख ३६, १३०, उक्त ३६, १३०)।

घल्लिअ वि [क्षिप्र] फेंका हुआ, डाला हुआ (भवि)।

घल्लिअ वि [दे] घटित, निर्मित, किया हुआ, 'अइल्लेणं तेणवि घल्लिओ तिक्खल्लगगुल्लो' (मुपा २४६)।

घस सक [घृप्] १ घिसना, रगड़ना। २ मार्जन करना, सफा करना। घसइ (महा; पड) संकृ 'घसिऊण अरणिक्कट्ट अग्गो पज्जालिओ मए पच्छा' (सुर ७, १८६)।

घस स्त्रीन [दे] १ फटी हुई जमीन, फाटवाली भूमि (आचा २, १०, २)। २ शुषिर भूमि, पोली जमीन। ३ क्षार भूमि (दस ६, ३२)।

घसण देखो घसण (मुपा १४, दे १, १६६)।

घसणिअ वि [दे] अन्विष्ट, गवेपित (पड)।

घसणी स्त्री [घर्षणी] सर्प-रेखा, टेढ़ी लकीर (स ३५७)।

घसा स्त्री [दे] १ पोली जमीन। २ भूमि-रेखा, लकीर (राज)।

घसिय वि [घृष्ट] घिसा हुआ, रगड़ा हुआ (दसा ५)।

घसिर वि [असितृ] बहु-भक्षक, बहुत खाने-वाला (ओघ १३३ भा)।

घसी स्त्री [दे] १ भूमि-राजि, लकीर। २ नीचे उतरना, अवतरण (राज)।

घसी स्त्री [दे] जमीन का उतार, ढाल (आचा २, १, ५, ३)।

विशेष (पंच) । °सेण पुं [°सेन] इस नाम का एक प्रसिद्ध राजा (स ६) । °हर वि [°हर] १ गुणो को धारण करनेवाला, गुणी । २ तन्तु-धारक । स्त्री °रा (सुपा ३२७) ।

°यर पुं [°कर] गुणो की खान, अनेक गुण-वाला, गुणी (पचम १५, ६८, प्रासू १३४) । गुण देखो एगूण, 'गुणसद्धि अपमत्ते सुरावधं तु जइ इहागच्छे' (कम्म २, ८, ४, ५४, ५६, आ ४४) ।

°गुण वि [°गुण] गुना, आवृत्त, 'वीसगुणो तीसगुणो' (कुमा; प्रासू २६) ।

गुणण न [गुणन] १ गुणकार (पच २३६) । २ ग्रन्थ-परावर्तन, आवृत्ति, 'गुणणु (? गुण-णणु) प्पेहासु अ असत्तो' (पिड ६६४) ।

गुणणा स्त्री [गुणना] ऊपर देखो (सम्यक्त्वो १५) ।

गुणयालीस स्त्रीन [एकोनचत्वारिंशत्] उनचालीस, ३६ (राय ५६) ।

गुणवुद्धि स्त्री [गुणवृद्धि] लगातार आठ दिनों का उपवास (सवोष ५८) ।

गुणसेण पु [गुणसेन] एक जैन आचार्य जो सुप्रसिद्ध हेमाचार्य के प्रपुरु थे (कुप्र १६) ।

गुणा स्त्री [दे] मिष्टान्न-विशेष (भवि) ।

गुणाविय वि [गुणित] पढाया हुआ, पाठित, 'तत्थ सो अज्जएण मयलाओ वणुव्वेयाइयाओ महत्थविज्जाओ गुणाविओ' (महा) ।

गुणि वि [गुणिन्] गुण-युक्त, गुणवाला (उप ५६७ टी; गठह, प्रासू २६) ।

गुणिअ वि [गुणित] १ गुना हुआ, जिसका गुणा किया गया हो वह (आ ६) । २ चितित, याद किया हुआ (से ११, ३१) । ३ पठित अवीत (ओष ६२) । ४ जिस पाठ की आवृत्ति की गई हो वह, परावर्तित (वव ३) ।

गुणिल्ल वि [गुणवत्] गुणी, गुण-युक्त (पि ५६५) ।

गुण्ण देखो गोण्ण (अणु १४०) ।

गुण्ह (अप) देखो गिण्ह । गुण्ह (प्राक ११६) ।

गुत्त न [गोत्र] साधुत्व, साधुपन (सूअ २, ७, १०) ।

गुत्त वि [गुप्त] गुप्त, प्रच्छन्न, छिपा हुआ (गाया १, ४, सुर ७, २३४) । २ रक्षित (उत्त

१५) । ३ स्व-पर की रक्षा करनेवाला, गुप्ति-युक्त, मन वगैरह की निर्दोष प्रवृत्तिवाला (उप ६०४) । ४ एक स्वनाम-प्रसिद्ध जैनाचार्य (आक) ।

गुत्त देखो गोत्त (पाप्र, भग, आवम) ।

गुत्तण्हाण न [दे] पितृ-त्तरण (दे २, ६३) ।

गुत्ति स्त्री [गुप्त] १ कैदखाना, जेल (सुर १, ७३, सुपा ६३) । २ कठवरा (सुपा ६३) ।

३ मन, वचन और काया की अशुभ प्रवृत्ति को रोकना । ४ मन वगैरह की निर्दोष प्रवृत्ति ठा २, १, सम ८) । °गुत्त वि [°गुप्त] मन वगैरह की निर्दोष प्रवृत्तिवाला, सयत (परह २, ४) । °पाल पुं [°पाल] जेल का रक्षक, कैदखाना का अध्यक्ष (सुपा ४६७) । °सेण पुं [°सेन] ऐरवत क्षेत्र में उत्पन्न एक जिनदेव (सम १५३) ।

गुत्ति स्त्री [गुप्ति] गोपन, रक्षण (गु १२) ।

गुत्ति स्त्री [दे] १ वन्धन (दे २, १०१; भवि) । २ इच्छा, अभिलाषा । ३ वचन, आवाज । ४ लता, वल्ली । ५ सिर पर पहनी जाती फूल की माला (दे २, १०१) ।

गुत्तिदिय वि [गुप्तेन्द्रिय] इन्द्रिय-निग्रह करने वाला, संयतेंद्रिय (भग, गाया १, ४) ।

गुत्तिय वि [गौप्तिक] रक्षक, रक्षण करने-वाला, 'नगरगुत्तिए सहावेइ' (कप्प) ।

गुत्तिय वि [गौत्रिक] गोती, समान गोत्र-वाला, गोतिया (कुप्र ३४४) ।

गुत्तिवाल देखो गुत्ति-पाल (धर्मवि २६) ।

गुत्थ वि [ग्रथित] गुम्फित, शूँचा हुआ (स ३०३, प्राप, गा ६३, कप्पु) ।

गुत्थंड पुं [दे] भास-पक्षी, पक्षि-विशेष (दे २, ६२) ।

गुद पुं स्त्री [गुद] गाँव, गुदा (दे ६, ४६) ।

गुदह न [गोदह] नगर-विशेष (मोह ८८) ।

गुप्प अक [गुप्] व्याकुल होना । गुप्पह (हे ४, १५०, षड्) । वक्र. गुप्पंत, गुप्पमाण (कुमा ६, १०२, कप्प, श्रीप) ।

गुप्प वि [गोप्य] १ छिपाने योग्य । २ न एकान्त, विजन (ठा ४, १) ।

गुप्पई स्त्री [गोष्पदी] गौ का पैर हूवे उतना गहरा, 'को उत्तरिं जलहि, निवुहुए गुप्पई-नीरे' (धम्म १२ टी) ।

गुप्पंत न [दे] १ शयनीय, शय्या । २ वि. गोपित, रक्षित (दे २, १०२) । ३ समूह, गुग्ध, घवढाया हुआ, व्याकुल (दे २, १०२, से १, २, ४) ।

गुप्पय देखो गो-पय (सूक्त ११) ।

गुप्फ पुं [गुल्फ] फीली, पैर की गॉठ (स ३३, हे २, ६०) ।

गुफगुमिअ वि [दे] सुगन्धी, सुगन्ध-युक्त (दे २, ६३) ।

गुग्भ देखो गुप्फ (षड्) ।

गुम सक [गुप्] शूँचना, गठना । गुमइ (हे १, २३६) ।

गुम सक [भ्रम्] धूमना, पर्यटन करना, भ्रमण करना । गुमइ (हे ४, १६१) ।

गुमगुम } अक [गुमगुमाय्] १ 'गुम-गुमगुमाअ } गुम' आवाज करना । २ मधुर अव्यक्त ध्वनि करना । वक्र. गुमगुमंत, गुमगुमित, गुमगुमायंत (श्रीप; गाया १, १, कप्प, पचम ३३, ६) ।

गुमगुमाइय वि [गुमगुमायित] जिसने 'गुम-गुम' आवाज किया हो वह (श्रीप) ।

गुमिअ वि [भ्रमित] भ्रमित, धुमाया हुआ (कुमा) ।

गुमिल वि [दे] १ मूढ, गुग्ध । २ गहन, गहरा । ३ प्रस्खलित । ४ आपूर्ण, भरपूर (दे २, १०२) ।

गुमुगुमुगुम देखो गुमगुम । वक्र. गुमुगुमु-गुमत, गुमुगुमुगुमैत (पचम २, ४०, ६२, ६) ।

गुम्म अक [मुह्] गुग्ध होना, घवढाना, व्याकुल होना । गुम्मइ (हे ४, २०७) ।

गुम्म पुं [गुल्म] परिवार, परिकर, 'इत्थी-गुम्मसपरिवुहे' (सूअ २, २, ५५) ।

गुम्म पुंन [गुल्म] १ लता, वल्ली, वनस्पति-विशेष (परण १) । २ भांडी, वृक्ष-घटा (पाप्र) । ३ सेना-विशेष, जिसमें २७ हाथी, २७ रथ, ८१ घोडा और १३५ प्यादा हो ऐसी सेना (पचम ५६, ५) । ४ वृन्द, समूह (श्रीप, सूअ २, २) । ५ गच्छ का एक हिस्सा, जैनमुनि-समाज का एक अंश (श्रीप) । ६ स्थान, जगह (ओष १६३) ।

गूढ वि [गूढ] गुप्त, प्रच्छन्न, छिपा हुआ (पएह १, ४, जी १०)। °दंत पु [°दन्त] १ एक अन्तर्द्वीप, द्वीप विशेष। २ द्वीप-विशेष का निवासी (ठा ४, २)। ३ एक जैन मुनि। ४ 'अनुनरोपपातिक दशा' सूत्र का एक अध्यायन (अनु २)। ५ भरत ध्वज का एक भावी चक्रवर्ती राजा (सम १५८)।

गूह सक [गूह] छिपाना, गुप्त रखना। वक्र गूहत (म ६१०)।

गूह न [गूय] गू, विष्टा (तदु)।

गूहण न [गूहन] छिपाना (सम ७१)।

गूहिय वि [गूहित] छिपाया हुआ (स १८६)।

गूह } (अप) देखो गिण्ह। गूहइ (कुमा)।

गूह } सकृ गूहेहिपिणु (हे ४, ३६४)।

गेअ वि [गेय] १ गाने योग्य, गाने लायक, गीत (ठा ४, ४—पत्र २८७, वज्रा ४४)। २ न गीत, गान, 'मणहरगेयभूणीए' (मुर ३, ६६, गा ३३४)।

गेठुअ न [दे] स्तनो के ऊपर की वक्र ग्रन्थि (दे २, ६३)।

गेठुल न [दे] कळुचक, चोली (दे २, ६४)।

गेड न [दे] देखो गेंठुअ (दे २, ६३)।

गेडुई स्त्री [दे] क्रीडा, खेल, गम्मत, विनोद (दे २, ६४)।

गेंठुअ पुं [गेंठुक] गेंद, गेंदा, खेलने की एक वस्तु (हे १, ५७, १८२, मुर १, १२१)।

गेज वि [दे] मथित, विलोडित (दे २, ८८)।

गेजल न [दे] ग्रीवा का आभरण (दे २, ६४)।

गेजम वि [ग्राह्य] ग्रहण-योग्य (हे १, ७८)।

गेडण न [दे] १ फेंकना, छेपण। २ दे देना, 'तत्त वगेडणए ससंभमा आसमाउ लहु' (उप ६४८ टी)।

गेडु न [दे] १ पट्टा, कीच, कांदो। २ यव, अन्न-विशेष (दे २, १०४)।

गेही स्त्री [दे] गेही, गेंद खेलने की लकड़ी (कुमा)।

गेण्ह देखो गिण्ह। गेएहइ (हे ४, २०६, उप, महा)। भूका गेएहीअ (कुमा)। भवि गेएहसइ (महा)। वक्र गेण्हन, गेण्हमाण (मुर ३, ७४, विपा १, १)। सकृ गेण्हिता,

गेण्हऊण, गेण्हअ (भग, वि ५८६, कुमा)। कृ गेण्हियच्च (उत्त १)।

गेण्हण न [ग्रहण] आदान, उपादान, लेना (उप ३३६, म ३७५)।

गेण्हणया स्त्री [ग्रहणा] ग्रहण, आदान (उप ५२६)।

गेण्हायिय वि [ग्राहित] ग्रहण कराया हुआ (स ५२६, महा)।

गेण्हअ न [दे] उर-मूत्र, स्तनाच्छादक-वक्र (दे २, ६४)।

गेद्र देवो गिद्र (औप)।

गेरिअ } पुन [गैरिक] १ गेरु, लाल रङ्ग

गेरुअ } की मिट्टी (स २२३, पि ६०,

११८)। २ मणि-विशेष, रत्न की एक जाति

(पएण १—पत्र २६)। ३ वि. गेरु रंग का

(कपू)। ४ पु त्रिदण्डी साधु, माख्य मत

का अनुयायी परिव्राजक (पव ६४)।

गेलण } न [ग्लान्य] रोग, बीमारी, ग्लानि

गेलन } (विमे ५४०, उप ४६६, ओघ

७७, २२१)।

गेवेज } न [गैवेयक] १ ग्रीवा का आभू-

गेवेज } ण, गले का गहना (औप, णाया

गेवेजय } १, २)। २ गैवेयक देवो का

विमान (ठा ६)। ३ पु उत्तम श्रेणी के देवो

की एक जाति (कप्य, औप, भग, जी ३३,

६६)।

गेवेय देखो गेवेज (आवा २, १३, १)।

गेह पुन [गेह] घर, 'न नईन वण न उज्जडो

'गेहो' (वज्रा ६८)।

गेह न [गेह] गृह, घर, मकान (न्यप्न १६,

गउड)। °जामाउय पुं [°जामाउक] घर-

जमाई, सर्वदा ससुर के घर में रहनेवाला

जामाता (उप पु ३६६)। °गार वि

[°कार] १ घर के आकारवाला। २ पुं

कल्पवृक्ष की एक जाति (सम १७)। °लु

वि [°वत] घरवाला, गृही, संमारी (पड्)।

°सम पुं [°श्रम] गृहस्थाश्रम (पउम ३१,

८३)।

गेहि वि [गृह] लोलुप, अत्यामक्त (ओघ

८७)।

गेहि स्त्री [गृहि] भासक्ति, गार्ह्यं, सालच

(स ११३, पएह १, ३)।

गेहि वि [गेहिन्] नीचे देखो (णाया १, १४))।

गेहिअ वि [गेहिक] १ घरवाला, गृही। २ पुं. भर्ता, धनी, पति (उत्त २)।

गेहिअ [गृहिक] अत्यामक्त, लोलुप, लालची (पएह १, ३)।

गेहिणी स्त्री [गहिनी] गृहिणी, स्त्री (मुपा ३४१, कुमा, कपू)।

गो पु [गो] भूप, राजा, 'तडओ गो भूपपमुर-

स्सिणो त्ति' (वव १)। °माहिसक न

[°माहिक] गो और भैंस का झुंड या

समूह 'निव्वुय गोमाहिसक' (म ६८६)।

गो पुं [गो] १ रश्मि, किरण (गउड)। २

स्वर्ग, देव-भूमि (मुपा १४२)। ३ बैल,

बलीवर्द। ४ पशु, जानवर। ५ स्त्री गया,

'अपरपेरियतिरियानियमियदिग्गमणओणिलो

गोव्व' (विसे १७५८, पउम १०३, ५०,

मुपा २७५)। ६ वाली, वाग (गुत्र १,

१३)। ७ भूमि, 'ज महइ विक्कवणगोयगण

लोओ पुनिदाण' (गउड, मुपा १४२)।

°आल देखो °वाल (पुष्क २१६)। °इअ वि

[°मत्] गो-युक्त, जिसके पास अनेक गो हो

वह (दे २, ६८)। °उल न [°कुल] १

गौओ का समूह (आव ३)। २ गोष्ठ गो-

वाडा, 'सामी गोउलगओ' (आवम)। °उलिय

वि [°कुलिक] गो कुलवाला, गो कुल का

मालिक, गोवाला (महा)। °किलजय न

[°किलजक] पात्र-विशेष, जिसमें गा को

खाना दिया जाता है (भग ७, ८)। °क्रीड

पु [°क्रीट] पशुओ की मक्की, वषा (जी

१६)। °कखीर, °खीर न [°क्षीर] गया

का दूध (सम ६०, णाया १, १)। °गह

पु [°ग्रह] गाय की चोरी, गा को छीनना

(पएह १, ३)। °गहण न [°ग्रहण]

गो-ग्रहण (णाया १, १८)। °णिसज्जा स्त्री

[°निपद्या] आमन विशेष, गो की तरह

बैठना (ठा १, १)। °तिरिय न [°तीर्थ] १

गौओ का तालाव आदि में स्नान करने का स्थान,

क्रम में नीची जमीन (जीव ३)। २ लवण

समुद्र वगैरह की एक जगह (ठा १०)।

°त्ताम वि [°त्रास] १ गौओ को आन

देनेवाला। २ पु एक कृष्ण का पुत्र (विपा

च

च अ [च] अथवा, या, 'चसद्यो विगण्येण'
(पच ३, ४४) ।

च पु [च] तालु-स्थानीय व्यञ्जन-वर्ण-विशेष
(प्राप, प्रामा) ।

च अ [च] इन अर्थों में प्रयुक्त किया जाता
अव्यय—१ और, तथा (कुमा, हे २, २१७) ।
२ पुन, फिर (कम्म ४, २३, ६६, प्राप् ५) ।
३ अवधारण, निश्चय (पच १३) । ४ भेद, विशेष (निचू १) । ५ अतिशय, आधिक्य
(आचा, निचू ४) । ६ अनुमति, सम्मति
(निचू १) । ७ पाद-पूर्ति, पाद-पूरण (निचू १) ।

चआ स्त्री [त्वक्] चमड़ी, त्वचा (पड्) ।
चइअ वि [शक्ति] जो समर्थ हुआ हो, शक्त
(मे ६, ५१) ।

चइअ देखो चविअ (पउम १०३, १२६) ।

चइअ वि [त्यक्त] मुक्त, परित्यक्त (कुमा
३, ४६) ।

चइअ वि [त्याजित] छुड़ाया हुआ, मुक्त
कराया हुआ (ओघ ११५) ।

चइअ देखो चय = त्यज् ।

चइअ देखो चु ।

चइअ देखो चेइअ (पड्) ।

चइअ } देखो चय = त्यज् ।
चइऊण }

चइऊण देखो चु ।

चइत्त देखो चेइअ (हे २, १३, कुमा)

चइत्त पु [चैत्र] मास-विशेष, चैत्र मास (हे
१, १५२) ।

चइत्ता देखो चु ।

चइत्ताण } देखो चय = त्यज् ।
चइयव्व }

चइद् (शौ) वि [चकित] भीत, शक्ति (अभि
२१३) ।

चइयव्व देखो चु ।

चउ वि [चतुर्] चार, संख्या-विशेष, ४
(उवा, कम्म ४, २, जी ३३) । °आलीस स्त्री
[°चत्वारिंशत्] चौआलीस, ४४ (पि ७५,
१६६) । °कट्ट न [°काष्ठा] चारो दिशा
(कुमा) °कट्टी स्त्री [°काष्ठी] चौकठा, चौकठ,

चौखटा, द्वार के चारो ओर का काठ, द्वार का
ढांचा (निचू १) । °क्कोण वि [°कोण] चार
कोणवाला, चतुरस्र (णाय १, १३) । °ग
न देखो चउक्क = चतुष्क (द ३०) °गइ स्त्री
[°गति] नरक, तिर्यग्, मनुष्य और देव की
योनि (कम्म ४, ६६) । °गइअ वि
[°गतिक] चारो गति में भ्रमण करनेवाला
(आ ६) । °गमण न [°गमन] चारो
दिशाएँ (कप्प) । °गुण, °गुण वि [°गुण]
चौगुना (हे १, १७१, पड्) । °चत्ता स्त्री
[°चत्वारिंशत्] संख्या विशेष, चौआलीस
(भग) । °चरण पु [°चरण] चौपाया, चार
पैर के जन्तु, पशु (उप ७६८ टी, सुपा ४०६) ।

°चूड पु [°चूड] विद्यावर वंश के एक राजा
का नाम (पउम ५, ४५) । °ट्ट देखो °त्थ
(हे २, ३३) । °ट्टाणचडिअ वि [°स्थान-
पतित] चार प्रकार का (भग) । °णउइ स्त्री
[°नवति] संख्या-विशेष, चौरानवे, ६४
(पि ४४६) । °णउय वि [°नवत] चौरा-
नवेवा, ६४ वाँ (पउम ६४, १०६) । °णवइ
देखो °णउइ (सम ६७, आ ४४) । °ण
(अप) । देखो °पन्न (पिग) । °तिस, °तीस
न [°त्रिंशत्] चौतीस, ३४ (भग, औप) ।
°तीसइम देखो °त्तीसइम (पउम ३४, ६१) ।
°तीसा स्त्री देखो °तीस (प्राक्) । °त्तालीस
वि [°चत्वारिंश] चौआलीसवाँ, ४४ वाँ
(पउम ४४, ६८) । °त्तीसइम वि [°त्रिंश]
१ चौतीसवाँ ३४ वाँ (कप्प) । २ न. सोलह
दिनों का लगातार उपवास (णाय १, १—
पत्र ७२) । °त्थ वि [°थ] १ चौथा (हे
१, १७१) । २ पुन. उपवास (भग) ।
°त्थचउत्थ पुन [°थचतुर्थ] एक एक उप-
वास (भग) । °त्थभत्त न [°थभक्त] एक
दिन का उपवास (भग) । °त्थभत्तिय वि
[°थभक्तिक] जिसने एक उपवास किया हो
वह (पणह २, १) । °त्थिमगल न [°थीम-
ङ्गल] वषट्-चर के समागम का चतुर्थ दिन,
जिसके बाद जामाता अकेला अपने घर जाता
है, चौठारी (गा ६४६ अ) । °त्थी स्त्री [°थी]

१ चौथी । २ संप्रदान-विभक्ति, चतुर्थी विभक्ति
(ठा ८) । ३ तिथि-विशेष (सम ६) । °दंत
देखो °हंत (राज) । °दस वि व [°दशन्]
संख्या-विशेष, चौदह (नव २, जी ४७) ।
°दमपुत्ति पु [°दशपूर्विन्] चौदह पूर्व
ग्रन्थों का ज्ञानवाला मुनि (ओघ २) । °दसम
वि. देखो °दसम (णाय १, १४) । °दसहा
अ [°दशधा] चौदह प्रकार से (नव ५) ।
°दसी स्त्री [°दशी] तिथि विशेष, चतुर्दशी
(रयण ७१) । °दंत पु [°दन्त] ऐरावत,
इन्द्र का हाथी (कप्प) । °दस देखो °दस
(भग) । °दसपुत्ति देखो °दसपुत्ति (भग
५, ४) । °दसम वि [°दश] १ चौदहवाँ,
१४ वा (पउम १४, १५८) । २ पुन लगा-
तार छ दिनों का उपवास (भग) । °दसी
देखो °दसी (कप्प) । °दसुत्तरसय वि
[°दशोत्तरशततम] एक सौ चौदहवाँ,
११४ वाँ (पउम ११४, ३५) । °दह देखो
°दस (पि १६६, ४४३) । °दही देखो
°दसी (प्राप्र) । °दिस, °दिसि अ [°दिश्]
चारो दिशाओं की तरफ, चारो दिशाओं में
(भग, महा, ठा ४, २) । °द्धा अ [°धा]
चार प्रकार से (उव) । °नाण न [°ज्ञान]
मति, श्रुत, अवधि और मन पर्यंत ज्ञान (भग,
महा) । °नाणि वि [°ज्ञानिन्] मति बगैरह
चार ज्ञानवाला (सुपा ८३, ३२०) °पण
देखो °पन्न । °पणगइम वि [°पञ्चाश]
चौवनवाँ, ५४ वाँ । २ न लगातार छत्र्वीस
दिनों का उपवास (णाय २—पत्र २५१) ।
°पन्न, °पन्नास स्त्रीन [°पञ्चासत्] चौवन,
५४ (पउम २०, १७, सम ७२, कप्प) ।
°पन्नासइम वि [°पञ्चाशत्तम] चौवनवाँ,
५४ वाँ (पउम ५४, ४८) । °पय देखो
°प्पय (णाय १, ८, जी २१) । °पाल न
[°पाल] सूर्याभि देव का प्रहरण-कोश
(राय) । °पइया, °प्पइया स्त्री [°पदिक्]
१ छन्द-विशेष (पिग) । २ जन्तु-विशेष की
एक जाति (जीव २) । °प्पई स्त्री [°पदी]
देखो °पइया (सुपा १६०) । °प्पन्न देखो
°पन्न (सम ७२) । °प्पय पुंस्त्री [°पद्] १

गोडी स्त्री [गौडी] गुड की बनी हुई मदिरा, गुड का दारु (वृह २)।

गोडू वि [गौड] १ गुड का बना हुआ। २ मधुर, मीठा (भग १८, ६)।

गोडू [दे] देखो गोड (मृच्छ १२०)।

गोण पुं [दे] १ साक्षी (दे २, १०४)। २ बैल, वृषभ, बलीवर्द (दे २, १०४, कुमा, हे २, १७४, सुपा ५४७, औप; दस ५, १, आचा २, ३, ३, उप ६०४, विपा १, १)।

°इल वि [°वत्] गाय वाला, गौश्रो का मालिक (सुपा ५४७)। °वइ पुं स्त्री [°पति] गौश्रो का मालिक, गौ वाला (सुपा ५४७)।

गोण (शौ) पुन [गो] बैल, 'गोणो, गोण' (प्राक् ८८)।

गोण वि [गौण] १ गुण निष्पन्न, गुण-युक्त, यथार्थ (विपा १, २, औप)। २ अप्रधान, अमुख्य (औप)।

गोणगणा स्त्री [गवाङ्गना] गैया, गाय (सुपा ४६५)।

गोणत्त पुं पुन [दे] वैद्य का औजार रखने गोणत्तय का थैला (उप ३१७, स ४८४)।

गोणस पुं [गोनस] सर्प की एक जाति, फण-रहित साँप की एक जाति (परह १, १, उप पृ ४०३)।

गोणा स्त्री [दे] गाय, गैया, गऊ (पह)।

गोणिक पुं [दे] गो-समूह, गौश्रो का समूह (दे २, ६७, पात्र)।

गोणिय वि [दे] गौश्रो का व्यापारी (वव ६)।

गोणी स्त्री [दे] गाय, गैया (औघ २३ भा)।

गोण्ण देखो गोण = गौण (कप्प, णाय १, १—पत्र ३७)।

गोतिहाणी स्त्री [दे गोत्रिहायणी] गोवत्सा, गौ की बछड़ी (तदु ३२)।

गोत्त पुं [गोत्र] १ पर्वत, पहाड़, (आ १४)।

२ न. नाम, अभिधान, आख्या (से १५, १०)। ३ कर्म-विशेष, जिसके प्रभाव से प्राणी उच्च या नीच जाति का कहलाता है (ठा २, ४)। ४ पुन. गोत, वंश, कुल, जाति, 'सत्त मूलगोत्ता परणत्ता' (ठा ७)।

°क्खलिय न [°स्खलित] नाम-विपर्याय, एक के बदले दूसरे के नाम का उच्चारण (से ११, १७)। °देवया स्त्री [°देवता]

कुल-देवी (आ १४)। °फुस्सिया स्त्री [°स्पर्शिका] बल्ली-विशेष (परण १)।

गोत्त पुन [गोत्र] १ पूर्वज पुरुष के नाम से प्रसिद्ध अपत्य—सतति (गंदि ४६, सुज्ज १०, १६)। २ वि वाणी का रक्षक (सूत्र १, १३, ६)।

गोत्ति वि [गोत्रिन्] समान गोत्रवाला, कुटुम्बी, स्वजन (सुपा १०६)।

गोत्ति देखो गुत्ति (स २४२)।

गोत्तिअ वि [गोत्रिक] समान गोत्रवाला, स्वजन, भाई-वद (आ ७)।

गोत्थुम देखो गोथुम (इक)।

गोत्थूमा देखो गोथूमा (इक)।

गोथुम पुं पु [गोस्तूप] १ ग्यारहवें जिन-गोथूमा देव का प्रथम-शिष्य (सम १५२, पि २०८)। २ बेलन्धर नागराज का एक आवास-पर्वत (सम ६६)। ३ न. मानुषोत्तर पर्वत का एक शिखर (दीव)। ४ कौस्तुभ-रत्न (सम, १५८)।

गोथूमा स्त्री [गोस्तूपा] १ वापी-विशेष, अंजन पर्वत पर की एक वापी (ठा ३, ३)।

२ शत्रेन्द्र की एक अग्रमहिषी की राजधानी (ठा ४, २)।

गोदा स्त्री [दे गोदा] नदी-विशेष, गोदावरी (पह, गा ६५५)।

गोध पुं [गोध] १ म्लेच्छ देश। ३ गोघ देश का निवासी मनुष्य (राज)।

गोधा स्त्री [गोधा] गोह, हाथ से चलनेवाली एक साँप की जाति (परह १, १, णाय १, ८)।

गोन्न देखो गोण (णाय १, १६—पत्र २००)।

गोपुर देखो गोउर (उत्त ६, अमि १८५)।

गोप्पहेलिया स्त्री [गोप्रहेलिका] गौश्रो को चरने की जगह (आजा २, १०, २)।

गोफणा स्त्री [दे] गोफन, पत्थर फेंकने का अस्त्र-विशेष (राज)।

गोमहा स्त्री [दे] रथ्या, मुहल्ला (दे २, ६६)।

गोमाअ पुं पु [गोमायु] शृगाल, सियार, गोदह गोमाउ (नाट—मृच्छ ३२०, पि १६५, णाय १, ४, स २२६, पात्र)।

गोमाणसिया स्त्री [गोमानसिका] शय्या-कार स्थान-विशेष (जीव ३)।

गोमाणसी स्त्री [गोमानसी] ऊपर देखो (जीव ३)।

गोमि पुं वि [गोमिन्] जिसके पास घनेक गोमिअ गौ हो वह, (अणु, निच २)।

गोमिअ देखो गोम्मिअ (राज)।

गोमिअ [दे] देखो गोमा (अणु २१२)।

गोमिक (मा) [गौरवित] समानित (प्राक् १०१)।

गोमी स्त्री [दे] कनखकूरा, श्रीन्द्रिय जन्तु-विशेष (जी १६)।

गोमुह पुं [गोमुख] १ यक्ष-विशेष, भगवान् ऋषभदेव का शासन-यक्ष (सति ७)। २ एक अन्तर्द्वीप, द्वीप विशेष। ३ गोमुह-द्वीप का निवासी मनुष्य (ठा ४, २)। ४ न. उपलेपन (दे २, ६८)।

गोमुही स्त्री [गोमुखी] वाद्य-विशेष, (अणु, राय)।

गोमुही [गोमुखी] वाद्य-विशेष (राय ४६, अणु १२८)।

गोमेअ पुं पु [गोमेद] रत्न की एक जाति, गोमेज्ज राहुरत्न (कुमा ७०, उत्त २)।

गोमेह पुं [गोमेध] १ यक्ष-विशेष, भगवान् नेमिनाथ का शासन-देव (स ८)। २ यज्ञ-विशेष, जिसमें गौ का वध किया जाता है (पञ्च ११, ४१)।

गोम्मिअ पुं [गौल्मिक] कोतवाल, नगर-रक्षक (परह १, २)।

गोम्ही देखो गोमी (राज)।

गोय देखो गोत्त (सम ३३, कम्म १)।

°वाइ पि [°वादिन्] अपने कुल को उत्तम माननेवाला, वंशाभिपानी (आचा)।

गोय न [दे] उदुम्बर—गूलर वगैरह का फल (आव ६)।

गोय न [गोत्र] मौन, वाक्-संयम (सूत्र १, १४, २०)। °वाय पुं [°वाद] गोत्र-सूचक वचन (सूत्र १, ६, २७)।

गोयम पुं [गोनम] ऋषि-विशेष (ठा ७)। २ छोटा बैल (औप)। ३ न. गोत्र-विशेष (कप्प, ठा ७)।

चउवीस वि [चतुर्विंश] चौवीसवाँ (पव ४६)।

चउवीसिगा स्त्री [चतुर्विंशिका] समय-मान-विशेष, चौवीस तीर्थकर जितने समय में होते हैं उतना काल—एक उत्सर्पिणी या एक अव-सर्पिणी-काल (महानि ४)।

चउवेद } वि [चतुर्वेद] चारो वेदो का
चउवेय } जाता, चतुर्वेदी, चौवे (धर्मस
चउवेद } १२३८, मोह १०)।

चउसट्टिआ स्त्री [चतुःपष्टिका] रसवाली चीज तौलने का एक नाप, चार पल का एक माप (अणु १५१)।

चउसर वि [दे] चौसर, चार सरा (लढी)वाला (हार आदि) (सुपा ५१०, ५१२)।

चउहत्थ पुं [चतुर्हस्त] श्रीकृष्ण (मुख ६, १)।

चउहार पुं [चतुराहार] चार प्रकार का आहार, अशन, पान, स्नादिम और स्वादिम, 'कतासिज्जपि न संख्वेमि चउहारपरिहारो' (सुपा ५७३)।

चओर पुंन [दे] पात्र-विशेष, 'भुत्तावसाणे य आयमणवेलाए अवणीएसु चओरेसु' (स २५२)।

चओर } पु स्त्री [चओर] पक्षि-विशेष
चओरग } (पह १, १, सुपा ३७)।

चओवचइय वि [चयोपचयिक] वृद्धि-हानिवाला (उप २५८ टी, आचा)।

चक्रम अक [चङ्क्रम] बार बार चलना। २ इधर उधर घूमना। ३ बहुत भटकना। ४ टेढ़ा चलना। ५ चलना फिरना। वक्र, चक्रमत (उप १३० टी, ६८६ टी)। हेङ्क चक्रमित (स ३५६)। कृ चक्रमियव्व (पि ५५६)।

चक्रमण न [चङ्क्रमण] १ इधर उधर भ्रमण। २ बहुत चलना। ३ बार बार चलना। ४ टेढ़ा चलना। ५ चलना-फिरना। (सम १०६, णाया १, १)।

चक्रमिय वि [चंक्रमित] १ जिसने चंक्रमण या भ्रमण किया हो वह। २-६ ऊपर देखो (उप ७२८ टी, निचू १)।

चक्रमिर वि [चक्रमितृ] चंक्रमण करनेवाला (मण)।

चक्रम अक [चक्रम्य] देखो चक्रम। वक्र चक्रमत, चक्रममाण (गा ४६३, ६२३ उप पृ २३, पह २, ५, कप्प)।

चंक्रमण देखो चक्रमण (णाया १, १—पत्र ३८)।

चक्रमिअ देखो चक्रमिअ (मे ११, ६६)।

चमार पु [चकार] च वर्ण, 'च' अक्षर (ठा १०)।

चग वि [दे. चङ्ग] सुन्दर, मनोहर, रम्य (दे ३, १, उप पृ १२६, सुपा १०६, कर ३५, धम्म ६ टी, कप्पू, प्राप्र सण, भवि)।

चग क्रि वि [दे] अच्छा, ठीक (२५)।

चगदेव पु [चङ्गदेव] हेमाचार्य का गृहस्था-वस्था का नाम (कुप्र २०)।

चगवेर पु न [दे] काठ का तख्ता (आचा २, ४, २, ३)।

चगवेर पुं [दे] काष्ठ-पात्री, काठ का बना हुआ छोटा पात्र-विशेष, 'पीढए चगवेरे य' (दस ७)।

चगिम पुं स्त्री [दे चङ्गिमन्] सुन्दरता सौन्दर्य, श्रेष्ठता, चारुपन (नाट)। स्त्री. 'मा (विवे १००, उप पृ १८१, सुपा ५, १२३, २६३)।

चगेरी स्त्री [दे] टोकरी, चगेली, डलिया, कठारी, तृण आदि का बना पात्र-विशेष (विसे ७१०, पह १, १)।

चच देखो चङ्ग। चंचइ (प्राकृ ६५)।

चंच पुं [चञ्च] १ पङ्कप्रभा नरक-पृथिवी का एक नरकावास (इक)। २ न देव-विमान-विशेष (इक)।

चंचपुड पुंन [दे] आघात, अभिघात, 'खुर-वलणचचपुडोहं घरणिअल अभिहणमाण' (जं ३)।

चचप्पर न [दे] असत्य, झूठ, अनृत, 'चचप्परं न भणिमो' (दे ३, ४)।

चचरीअ पुं [चञ्चरीक] भ्रमर, भौरा (दे ३, ६)।

चंचल वि [चञ्चल] १ चपल, चञ्चल (कप्प, चार १)। २ पुं. रावण के एक सुभट का नाम (पउम ५, ३६)।

चचला स्त्री [चञ्चला] १ चञ्चल स्त्री। २ छन्द-विशेष (पिंग)।

चचल्लिअ वि [चञ्चल्लित] चञ्चल किया हुआ, 'मणयाणिलचंचे (?) च' त्तिअकेसराइ' (विक्र २६)।

चचा स्त्री [चञ्चा] १ नरकट की चटाई।

२ चमेन्द्र की राजधानी, स्वर्ग-नगरी-विशेष।

३ घास का पुतला (दीव)।

चंचाल (अप) देखो चंचल (सण)।

चंचु स्त्री [चञ्चु] चोच, पक्षी का ठोर (दे ३, २३)।

चचुच्चिय न [दे चञ्चुरित, चञ्चूच्चित] कुटिल गमन टेढ़ी चाल (श्रौप)।

चंचुमालइय वि [दे] रोमाञ्चित, पुलकित (कप्प, श्रौप)।

चचुय पुं [चञ्चुक] १ अनायं देश-विशेष।

२ उस देश का निवासी मनुष्य (पह १, १)।

चचुर वि [चञ्चुर] चपल, चञ्चल (कप्प)।

चङ्ग सक [तक्ष्] छिलना। चंङ्गइ (पड्)।

चड सक [पिप्] पीसना। चडइ (पड्)।

चड देखो चंद (इक)।

चड वि [चण्ड] १ प्रबल, उग्र, प्रवर, तीव्र (कप्प)। २ भयानक, डरावना (उत्त २६, श्रौप)। ३ प्रति क्रोधी, क्रोध-स्वभावी (उत्त १, १०, पिंग, णाया १, १८)। ४ तेजस्वी, तेजिल (उप पृ ३०१)। ५ पु राक्षस वंश के एक राजा का नाम (पउम ५, २६४)।

६ क्रोध, कोप (उत्त १)। °किरण पु

[°किरण] सूर्य, रवि (उप पृ ३२१)।

°कोमिय पुं [°कौशिक] एक सर्प, जिसने भगवान् महावीर को सताया था (कप्प)।

°दीव पु [द्वीप] द्वीप-विशेष (इक)।

°पज्जोअ पु [°प्रद्योत] उज्जयिनी के एक प्राचीन राजा का नाम (आवम)। °भाणु

पु [भातु] सूर्य, सूरज (कुम्मा १३)। °रुद्

पु [°रुद्र] प्रकृति-क्रोधी एक जैन आचार्य (भाव १७)। °वडिसय पुं [°वतसक]

नृप-विशेष (महा)। °वाल पु [°पाल] नृप-

विशेष (कप्पू)। °सेण पु [°सेन] एक

राजा का नाम (कप्पू)। °लिय न [°लीक] क्रोध-वंश कहा हुआ झूठ (उत्त १)।

चडसु पु [चण्डाशु] सूर्य, सूरज, रवि (कप्पू)।

कवक गोविज्जत (सुपा ३३७, सुर ११, १६२, प्रासू ६५) ।

गोत्र } पुं [गोप] गौश्री का रक्षक, ग्वाला, गोवअ } गोपाल (उवा ७, दे २, ५८, कप्प) । °जिरि पु [°गिरि] पर्वत विशेष, 'गोवगिरिसिहरसंठियचरमजिणाययणदारमव-रुद्धं' (मुणि १०८६७) ।

गोवड्डण देखो गोवद्धण (पि २६१) ।

गोवण न [गोपन] १ रक्षण । २ छिपाना (श्रा २८, उप ५६७ टी) ।

गोवद्धण पु [गोवर्धन] १ पर्वत-विशेष (पि २६१) । २ ग्राम विशेष (पउम २०, ११५) ।

गोवय वि [गोपक] छिपानेवाला, ढाँकनेवाला (सवोध ३४) ।

गोवर पुन [व] गोवर, गोमय, गो-विष्ठा (दे २, ६६, उप ५६७ टी) ।

गोवर पुं [गोवर] १ मगध देश का एक गाँव, गौतम-स्वामी की जन्मभूमि (आक) । २ वणिग्-विशेष (उप ५६७ टी) ।

गोवल न [गोवल] १ गोघन, गोकुल, गौश्री का समूह, 'रिति गोवलाई' (सुपा ४३३) । २ गोत्र-विशेष (सुज १०) ।

गोवलायण देखो गोवह्णायण (सुज १०) ।

गोवलिय पुं [गोवलिक] ग्वाला, अहीर (सुपा ४३३) ।

गोवल्ह पुन [गोवल] गोत्र-विशेष (सुज १०, १६ टी) ।

गोवह्णायण वि [गोवलायन] १ गोवन गोत्र मे उत्पन्न । २ न गोत्र विशेष (इक) ।

गोवा पु [गोपा] गौश्री का पालन करने-वाला, ग्वाला (प्राप्ता) ।

गोवाय मक [गोपाय] १ छिपाना । २ रक्षण करना । वक्र. गोवायत (उप ३५७) ।

गोवाल पु [गोपाल] गौ पालनेवाला, ग्वाला, अहीर (दे २, २८) । °गुज्जरी स्त्री [°गुज्जरी] शैरव रागवाली भाषा-विशेष, गुजरात के अहीरो का गीत (कुमा) ।

गोवालय पुं [गोपालक] ऊपर देखो (पउम ५, ६६) ।

गोवालि पुं [गोपालिन्] ग्वाला गोप, अहीर (सुपा ४३२, ४३३) ।

गोवालिगी स्त्री [गोपालिनी] गोप-स्त्री, अहीरिन, ग्वालि (सुपा ४३२) ।

गोवालिय पुं [गोपालिक] गोप, अहीर, ग्वाला (सुपा ४३३) ।

गोवालिया स्त्री [गोपालिका] गोप-स्त्री, गोपी, अहीरिन (खाया १, १६) ।

गोवाली स्त्री [गोपाली] वल्ली-विशेष (पएण १) ।

गोविअ वि [व] अजल्पाक, नहीं बोलनेवाला (दे २, ६७) ।

गोविअ वि [गोपित] १ छिपाया हुआ । २ रक्षित (सुर १, ८८, निर १, ३) ।

गोविआ स्त्री [गोपिका] गोपागना, अहीरिन (कुमा, ना ११४) ।

गोविंद पुं [गोपेन्द्र] १ स्वनाम-ख्यात एक योग-विषयक ग्रन्थकार । २ एक जैनमुनि (पचव, रांदि) ।

गोविंद पुं [गोविन्द] १ विष्णु, कृष्ण । २ एक जैन मुनि (ठा १०) । °गिज्जुत्ति स्त्री [°निर्युत्ति] इस नाम का एक जैन दार्शनिक ग्रन्थ (निचू ११) ।

गोविल्ल न [दे] कज्जुक, चोली (दे २, ६४) ।

गोवी स्त्री [दे] बाला, कन्या, कुमारी, लहकी (दे २, ६६) ।

गोवी स्त्री [गोपी] गोपागना, अहीरिन (सुपा ४५५) ।

गोव्वर [दे] देखो गोवर (उप ५६३, ५६७ टी) ।

गोस पुन [दे] प्रभात, सुबह, प्रातः काल (दे २, ६६, मएण, गउड, वव ६, पचव २, पाअ पड्, पव ४) ।

गोसधिय पु [गोसंधित] गोपाल, अहीर (राज) ।

गोसग्ग पुन [दे गोसर्ग] प्रातः काल, प्रभात (दे २, ६६, पाअ) ।

गोमण्ण वि [दे] मूख, वेवकूफ (दे २, ६७, पड्) ।

गोसाल } पुं व [गोशाल] १ देश-विशेष गोसालग } (पउम ६८, ६५) । २ पु. भगवान् महावीर का एक शिष्य, जिसने पीछे अपना आजीविक मत चलाया था (भग १५) ।

गोसाविआ स्त्री [दे] १ धरया, वारागना (मृच्छ ५५) । २ मूर्ख-जननी (नाट—मृच्छ ७०) ।

गोसिय वि [दे] प्रमातिक, प्रातः काल-सन्धी (सण) ।

गोसीस न [गोशीर्ष] चन्दन-विशेष, सुगन्धित काष्ठ-विशेष (पएण २, ४, ५, कप्प, सुर ४, १४, सण) ।

गोह पुं [दे] १ गाँव का मुखिया (दे २, ८६) । २ भट, सुभट, योद्धा (दे २, ८६, महा) । ३ जार, उपपति (उप पृ २१५) । ४ सिपाही, पुलिस (उप पृ ३३५) । ५ पुरुष, आदमी, मनुष्य (मृच्छ ५७) ।

गोह पुं [दे] कोतवाल आदि °गुण्य (मुख ३, ६) । २ वि ग्रामीण, ग्राम्य, गँवार या गँवारू, देहाती (मुख २, १३) ।

गोहा देखो गोधा (दे २, ७३, भग ८, ३) ।

गोहिया स्त्री [गोधिका] १ गोधा, गोह, जल-जन्तु-विशेष (सुर १०, १८६) । २ साँप की एक जाति (जीव २) । ३ वाद्य-विशेष (अणु) ।

गोहुर न [दे] गोमय, गो-विष्ठा (दे २, ६६) ।

गोहूम पुं [गोधूम] अन्न-विशेष, गेहूँ (वस) ।

गोहेर } पु [गोवेर] जन्तु-विशेष, साँप गोहेरय } की तरह का जानवर (पउम ४८, ६२, ६१) ।

°गह देखो गह = ग्रह (उड) ।

°गहण देखो गहण = ग्रहण (अभि ५६) ।

°गहण देखो गहण = ग्रहाण (कुमा) ।

राक्षस-वश का एक राजा, एक लकापति (पउम ५, २६६)। °विकप पुन [°विकम्प] चन्द्र का विकम्प-क्षेत्र (जो १०)। °विमाण न [°विमान] चन्द्र का विमान (ज ७)। °विलासि वि [°विलासिन्] चन्द्र के तुल्य मनोहर (राय)। °वेग पु [°वेग] एक विद्याधर-नरेश (महा)। °सवच्छर पुं [°सवत्सर] वर्ष-विशेष, चान्द्र मासो से निष्पन्न सवत्सर (चद १०)। °साला छो [°शाला] अट्टालिका, अटारी (दे ३, ६)। °सालिया छो [°शालिका] अट्टालिका (राया १, १)। °सिंग न [°शृङ्ग] देव-विमान-विशेष (सम ८)। °सिट्ट न [°शिष्ट] एक देवविमान (सम ८)। °सिरी छो [°श्री] द्वितीय कुलकर पुरुष की माँ का नाम (आचू १)। °सिहर पु [°शिखर] विद्याधर वंश का एक राजा (पउम ५, ४३)। °सूरदसा-वणिग्या, °सूरपामणिग्या छो [°सूरदर्श-निका] बालक का जन्म होने पर तीसरे दिन उसको कराया जाता चन्द्र और सूर्य का दर्शन और उसके उपलक्ष्य में किया जाता उत्सव (भग ११, ११, विपा १, २)। °सूरि पु [°सूरि] स्वनामविख्यात एक जैन आचार्य (सण)। °सेण पु [°सेन] १ भगवान् आदिनाथ का एक पुत्र। २ एक विद्याधर राज-कुमार (महा)। °सेहर पु [°शेखर] १ भूप-विशेष (ती ३८)। २ महादेव, शिव (पि ३६५)। °हास पु [°हास] खड्ग-विशेष, तलवार (मे १४, ५२, गडह)।

चंद पु [चन्द्र] सवत्सर-विशेष, जिसमें अधिक मास न हो वह वर्ष (मुज ११)। °उडु पु [°ऋतु] कुछ अधिक उनसठ दिनों की एक ऋतु (मुज १२)। °परिवेस पु [°परिवेष] चन्द्र-परिधि (अणु १२०)। °पहा छो [°प्रभा] देखो चद-पप्रभा (विचार १२६, कुप्र ४५३)। °वदी छो [°वती] एक नगरी (मोह ८८)।

चद वि [चान्द्र] चन्द्र-संबन्धी (चंद १२)। °कुल न [°कुल] जैन मुनियों का एक कुल (गच्छ ४)।

चदअ देखो चद = चन्द्र (हे २, १६४)।

चदइल्ल पुं [दे] मयूर, मोर (दे ३, ५)।

चदक पु [चन्द्राक] विद्याधर वंश का एक स्वनाम-प्रसिद्ध राजा (पउम ५, ४३)।

चदग [चन्द्रक] देखो चंद। °विज्झ, °वेज्झ न [°वेध्य] राधावेध, 'चदगविज्झं लद्धं, केवलसरिस समाउपरिहीण' (सथा १२२, निचू ११)।

चदट्टिआ छो [दे] १ भुज, शिखर, कन्धा। २ गुच्छा, स्तवक (दे ३, ६)।

चदण पु [चन्दन] १ एक देवविमान (देवेन्द्र १४३)। २ रत्न की एक जाति (उत्त ३६, ७७)। ३ पु द्वीन्द्रिय जीव-विशेष, अक्ष का जीव (उत्त ३६, १३०)।

चदण पुं न [चन्दन] १ सुगन्धित वृक्ष-विशेष, चन्दन का पेड़ (प्रासू ६)। २ न. सुगन्धित काष्ठ-विशेष, चन्दन की लकड़ी (भग ११, ११, हे २, १८२)। ३ घिसा हुआ चन्दन (कुमा)। ४ छन्द-विशेष (पिंग)। ५ रुचक पर्वत का एक शिखर (ज)। °कलस पु [°कलश] चन्दन-चर्चित कुम्भ, माङ्गलिक घट (श्रौप)। °घड पु [°घट] मंगल कारक घड़ा (जीव ३)। °वाला छो [°वाला] एक साध्वी छो, भगवान् महावीर की प्रथम शिष्या (पडि)। °वइ पुं [°पति] स्वनाम-स्थात एक राजा (उप ६८६ टी)।

चंदणग पु न [चन्दनक] १ ऊपर देखो। २ पु द्वीन्द्रिय जन्तु-विशेष, जिसके कलेवर को जैन साधु लोग स्थापनाचार्य में रखते हैं (पएह १, १, जी १५)।

चदणा छो [चन्दना] भगवान् महावीर की प्रथम शिष्या, चन्दनवाला (सम १५२, कप्प)।

चदणि छो [दे] आचमन, कुल्ला। °उयय न [°उदक] कुल्ला फेकने की जगह (आचा २, १, ६, २)।

चदणी छो [दे] चन्द्र की पत्नी, रोहिणी, 'चदो विय चदणीजोगो' (महा)।

चदम पु [चन्द्रमस्] चन्द्रमा, चाँद (भग)।

चंदरुइ देखो चंड-रुइ (पचा ११, ३५)।

चदवडाया छो [दे] जिसका आधा शरीर ढका और आधा नंगा हो ऐसी छो (दे ३, ७)।

चदा छो [चन्द्रा] चन्द्र-द्वीप की राजधानी (जीव ३)।

चदाअव पुं [चन्द्रातप] ज्योत्स्ना, चन्द्रिका, चन्द्र की प्रभा, चाँदनी (से १, २७)। देखो चदायय।

चदाणण पु [चन्द्रानन] ऐरवत क्षेत्र के प्रथम जिनदेव (सम १५३)।

चंदाणणा छो [चन्द्रानना] १ चन्द्र के तुल्य आह्लाद उत्पन्न करनेवाली, चन्द्रमुखी। २ शाश्वती जिन-प्रतिमा-विशेष (ठा १, १)।

चदाभ वि [चन्द्राभ] १ चन्द्र के तुल्य आह्लाद-जनक। २ पुं आठवाँ जिनदेव, चन्द्र-प्रभ स्वामी (आचू २)। ३ इस नाम का एक राज-कुमार (पउम ३, ५५)। ४ न एक देवविमान (सम १४)।

चदायण न [चान्द्रायण] तप-विशेष, जिसमें चन्द्रमा के घटने-बढ़ने के अनुसार भोजन के कौर घटाने-बढ़ाने पड़ते हैं (पचा १६)।

चदायण न [चन्द्रायण] चन्द्र का छ छ मास पर दक्षिण और उत्तर दिशा में गमन (जो ११)।

चंदायय देखो चदाअव। १ आच्छादन-विशेष, वितान, चाँदवा (सुर ३, ७२)।

चंदालग न [दे] ताम्र का भाजन-विशेष (सूत्र १, ४, २)।

चदावत्त न [चन्द्रावर्त्त] एक देवविमान (सम ८)।

चदायिज्झय देखो चदग-विज्झ (एदि)।

चदिअ वि [चान्द्रिक] चन्द्रका, चन्द्र-संबन्धी (पव १४१)।

चंदिआ छो [चन्द्रिका] चाँदनी, चन्द्र की प्रभा, ज्योत्स्ना (से ५, २, गा ७७)।

चंदिओज्जलीय वि [दे. चन्द्रिकोज्ज्वलिन] चन्द्र-कान्ति से उज्ज्वल बना हुआ (चद)।

चदिण न [दे] चन्द्रिका, चन्द्रप्रभा,

'मेहाण दाण चदाण,

चदिण तत्त्वराण फलनिवहो।

सण्पुरिसाण विडटं,

सामन्न सयललोआणं ॥' (आ १०)।

चदिम देखो चंदम (श्रौप, कप्प)। २ एक जैन मुनि (अनु २)।

चदिमा छो [चन्द्रिका] चन्द्र की प्रभा, ज्योत्स्ना, चाँदनी (हे १, १८५)।

चदिमाइय न [चान्द्रिक] 'ज्ञाताधर्मकथा' सूत्र का एक अध्ययन (राज)।

घडाघडी स्त्री [दे] गोष्ठी, सभा, मण्डली (पङ्.)।

घडाव सक [घटय्] १ बनाना। २ बनवाना। ३ सयुक्त करना, मिलाना। घडावड (हे ४, ३४०)। संकृ घडावित्ता (आत्रम)।

घडि वि [घटिन्] घटवाला (अणु १४४)। घडिं स्त्री [घटी] देखो घडिआ = घटिका (प्रासू ५५)। मत्तय, मत्तय न [मात्रक] छोटे घडे के आकार का पात्र-विशेष (राज, कम)। जत न [यन्त्र] रेंट रेंट, पानी निकालने का कल (पात्र)।

घडिअ वि [घटित] १ कृत्र, निर्मित (पात्र)। २ संसक्त सवद्ध, छिष्ट, मिला हुआ (पात्र, स १६४, औप, महा)।

घडिअघडा स्त्री [दे] गोष्ठी मण्डली (दे २ १०५)।

घडिआ स्त्री [घटिका] १ छोटा घडा, क्लशी (गा ४६०, आ २७)। २ घडी, मुहूर्त (सुपा १०८)। ३ समय बतानेवाला यन्त्र, घटी-यन्त्र, घडी (पात्र)। लय न [लय] घण्टागृह, घण्टा बजाने का स्थान (सुर ७, १७)।

घडिआ स्त्री [दे] गोष्ठी, मण्डली (पङ्, घडी दे २, १०५)।

घडिगा देखो घडिआ (सूत्र १, ४, २, १४)। घडी स्त्री [घटी] देखो घडिआ (स २३८, प्राक)।

घडुक्य पु [घटोत्कच] भीम का पुत्र (हे ४, २६६)।

घडुठभय वि [घटोद्भव] १ घट ने उत्पन्न। २ पुं ऋषि-विशेष, अगस्त्य मुनि (प्राक)।

घट न [दे] धूहा, टीला, स्तूप (पात्र)।

घण पु [घन] १ मेघ, बादल (सुर १३, ४५, प्रासू ७२)। २ हथौडा (दे ६, ११)।

३ गरिष्ठ-विशेष, तीन अंको का पूरण करना, जैसे दो का घन आठ होता है (ठा १०—पत्र ४६६ विस ३५४०)। ४ वायु का शब्द-विशेष, कास्पताल वगैरह (ठा २, ३)।

५ वि दृढ, ठोस (औप)। ६ अविरल, निरिच्छ, सांद्र (कुमा, औप)। ७ गाढ, प्रगाढ, 'जाया पीई घणा तेसि' (उप

५६७ टी)। ८ अतिशय, अधिक, अत्यन्त (राय)। ९ कठिन, तरलता-रहित, स्थान (जी ७, ठा ३, ४)। १० न देवविमान-विशेष (सम ३७)। ११ पिरड (सूत्र १, १, १)। १२ वाद्य-विशेष (सुज १२)। उदहि देखो घणोदहि (भग)। णिचिय वि [निचित] अत्यन्त निविड (भग ७, ८, औप)। तव न [तपस्] तपश्चर्या-विशेष (उत्त ३)। दंत पु [दन्त] १ इस नाम का एक अन्तर्द्वीप। २ उसका निवासो गदुष्य (ठा ४, २)। गान्ध न [माल] वैताल्य पर्वत पर स्थित विद्याधर-नगर-विशेष (इक)। मुडग पु [मुदङ्ग] मेघ की तरह गम्भीर आवाजवाला वाद्य विशेष (औप)। रह पु [रथ] एक जैन मुनि (पञ्च २०, १६)। वाड पु [वायु] स्थान वायु, जो नरक-पृथ्वी के नीचे है (उत्त ३६)। वाय पु [वात] देखो वाड (भग, जी ७)। वाहण पु [वाहन] विद्याधरो के राजा का नाम (पञ्च ५, ७७)। विज्जुआ स्त्री [विद्युता] देवी-विशेष, एक दिक्कुमारी देवी का नाम (इक)। समय पु [समय] वर्षा-काल, वर्षा ऋतु (कुमा पात्र)।

घणगुल पुन [घनाङ्गुल] परिमाण-विशेष, सूची में गुना हुआ प्रतरागुल (अणु १५८)।

घणसमद् पु [घनसमर्द्ध] ज्योतिष-प्रसिद्ध योग विशेष, जिसमें चन्द्र या सूर्य ग्रह अथवा नक्षत्र के बीच में होकर जाता है वह योग (सुज १२—पत्र २३३)।

घणवगाइय न [घनघनायित] रथ की घनघनाहट या गडगडाहट, अव्यक्त शब्द-विशेष (पणह १, ३)।

घमचाह पु [दे] इन्द्र, स्वर्गपति (दे २ १०७)।

घणसार पु [घनसार] कपूर (पात्र, अवि)। मजरी स्त्री [मञ्जरी] एक स्त्री का नाम (कप्पू)।

घणा स्त्री [घना] घरणेन्द्र की एक अग्र-महिषी, इन्द्राणी-विशेष (राया २, १—पत्र २५१)।

घणा स्त्री [घृणा] घृणा, जुगुप्सा, गर्हा (प्राप्र)।

घणिय न [घनित] गर्जना, गर्जन (सुज २०)।

घणोदहि पुं [घनोदधि] पत्थर की तरह कठिन जल-समूह (सम ३७)। वलय न [वलय] वलयाकार कठिन जल-समूह (पण २)।

घण पुं [दे] १ उर, वक्षस्, छाती। २ वि रक्त, रगा हुआ (दे २, १०५)। ३ घात्य, मार डालने योग्य (सूत्र कृ २-७, पत्र ४१०)।

घत्त सक [क्षिप्] १ फेंकना, डालना। २ प्रेरणा। घत्तइ (हे ४, १४)। सक अंकाग्रो घत्तिऊण वरवीण (पञ्च ५८, २०, स ३५१)।

घत्त सक [ग्रह्] ग्रहण करना। भवि घत्तिस्सं (प्रयौ ३३)।

घत्त सक [गवेपय्] खोजना, ढूँढना अनु-सधान करना। घत्तइ (हे ४, १८६)। नकु घत्तिअ (कुमा)।

घत्त सक [यत्] यत्न करना, उद्योग करना। घत्तह (तदु ५६)।

घत्त वि [घात्य] १ मार डालने योग्य। २ जो मारा जा सके (पि २८१, सूत्र २, ७ ६, ८)।

घत्तण न [क्षेपण] फेंकना (कुमा)।

घत्ता स्त्री [घत्ता] छन्द विशेष (पिग)।

घत्ताणद न [घत्तानन्द] छन्द-विशेष (पिग)।

घत्ति अ [दे] शीघ्र जल्दी (प्राकृ ८१)।

घत्तिय वि [क्षिप्त] प्रेरित (स २०७)।

घत्तु वि [घातुक] मारनेवाला घातक जल्लाद (उत्त १८ ७)।

घत्थ वि [ग्रस्त] गृहीत, पकड़ा हुआ (पिड ११६)।

घत्थ वि [ग्रस्त] १ भक्षित, निगला हुआ, कवलित (पञ्च ७१, ५१, पणह १, ५)। २ आक्रान्त, अभिभूत (सुपा ३५२ महा)।

घम्म पु [घर्म] घाम, गरमी सताप धूप (दे १, ८७, गा ४१४)। २ पसीना, स्वेद (हे ४, ३२७)।

घम्मा स्त्री [घर्मा] पहली नरक पृथिवी (ठा ७)।

घम्मोई स्त्री [दे] सृण विशेष (दे २ १०६)।

घम्मोडी स्त्री [दे] १ मध्याह्न काल। २ मशक, मच्छर, क्षुद्र जन्तु-विशेष। ३ ग्रामणी नामक-पुण (दे २, ११२)।

३, २०; भवि, वजा ६४, आवम, पड्) ।
४ विशाल, विस्तीर्ण (दे ३, २०, भवि) ।

चकलिअ वि [दे] चक्राकार किया हुआ (से ११, ६८, स ३८४, गउड) । °भिण्ण वि [°भिन्न] गोलाकार खण्ड, गोल टुकड़ा (बृह १) ।

चक्रवाडिं छो [चक्रवाही] चक्रवाक-पक्षी का मादा, चकवी, चकई (रभा) ।

चक्रवाग १ उ [चक्रवाक] पक्षि-विशेष, चक्रवाय १ चकवा (गाया १, १, पएह १, १, स ३३७, कप्प, स्वप्न ५१) ।

चक्रवाल न [चक्रवाल] १ चक्राकार भ्रमण, 'रीडज न चक्रवालेण' (पुष्क १७८) । २ मण्डल, चक्राकार पदार्थ, गोल वस्तु (पएण ३६, ओप, गाया १, १६) । ३ गोल जलाशय, 'ससारचक्रवाले' (पच्च ५२) । ४ गोल जल-समूह, जल राशि, 'जह खुहियचक्रवाले पोय रयणभरियममुद्मि । निजामगा धरिती' (पच्च ७६) । ५ आवश्यक कार्य, नित्य-कर्म (पंचव ४) ६ समूह, राशि, ढेर (आउ) । ७ पु पर्वत-विशेष (ठा १०) । °चिक्खभ पु [°चिक्खम्भ] चक्राकार घेरा, गोल परिधि (भग, ठा २, ३) । °मामायारी छो [°मामाचारि] नित्य-कर्म विशेष (पच्च ४) । चक्रवाला छो [चक्रवाला] गोल पक्ति, चक्राकार श्रेणी (ठा ७) ।

चक्राअ देखो चक्रवाय (हे १, ८) ।

चक्राग न [चक्रग] चक्राकार वस्तु, 'चक्राग भजमाणस्स लमो भगो य दीसइ' (पएण १, पि १६७) ।

चक्रार पु [चक्रार] राजस वश का एक राजा, एक लकापति (पउम ५, २६३) । °वद्ध न [°वद्ध] शकट, गाड़ी (दस ५, १) ।

चक्रायाप पुन देखो चक्रवाय 'मिलियाइ चक्रावायाइ' (न ७६८) ।

चक्राह पु [चक्राभ] सोलहवें जिन-देव का प्रथम शिष्य (सम १५२) ।

चक्राहव पु [चक्राधिप] चक्रवर्ती राजा, सम्राट् (सण) ।

चक्राह्विइ पुं [चक्राधिपति] ऊपर देखो (सण) ।

चक्कि १ वि [चक्किन्, चक्किर] १ चक्र-चक्रिय १ वाला, चक्र-विशिष्ट । २ पु. चक्रवर्ती राजा, सम्राट् (सण) । ३ तेली । ४ कुम्भार (कप्प, श्रीप, गाया १, १) । °साला छो [°शाली] तेल बेचने की दूकान (वव १) ।

चक्किय वि [चक्कित] भयभीत, 'समुद्गभीर-समा दुरामया, अचक्किया केणइ दुप्पहसिया' (उत्त ११) ।

चक्किय पु [चक्किर] १ चक्र से लउनेवाला योद्धा । २ भिक्षु की एक जाति (ओप, गाया १, १) ।

चक्किया क्रि [चक्कियान्] सके, कर सके, समयें हो सके (कप्प, कम पि ४६५) ।

चक्की छो [चक्र] छन्द-विशेष (पिंग) ।

चक्कुलडा छो [दे] सरों की एक जाति (दे ३, ५) ।

चक्केसर पु [चक्रेश्वर] १ चक्रवर्ती राजा (भवि) । २ विक्रम की तेरहवीं शताब्दी का एक जैन ग्रन्थकार मुनि (राज) ।

चक्केसरी छो [चक्रेश्वरी] १ भगवान् आदिनाय की सातनदेवी (सति ६) । २ एक विद्या-देवी (सति ५) ।

चक्कोडा छो [दे] अग्नि-भेद, अग्नि विशेष (दे ३ २) ।

चक्ख (अप) सक [आ + चक्ष्] कहना । चक्खइ (प्राकृ ११६) ।

चक्ख मरु [आ + स्नाद्य्] चखना, चीखना, स्वाद लेना । चक्खइ (पि २०२) । वक्क चक्खत (गा १७१) । कवक्क चक्खिज्जन, चक्खिअत (पि २०२) । सक चक्खिउण (मे १३, ३६) । हेक्क चक्खिउ (वज्जा ४६) ।

चक्खडिअ न [दे] जीवितव्य, जीवन (दे ३, ६) ।

चक्खण न [आस्वादन] आस्वादन, चीखना (उप पृ २५२) ।

चक्खिअ वि [अस्वादित] आस्वादित, चीखा हुआ (हे ४, २५८, गा ६०३, वज्जा ४६) ।

चक्खिदिय न [चक्षुरिन्द्रिय] नयनेन्द्रिय, आँख, चक्षु (उत्त २६, ६३) ।

चक्खु पुन [चक्षुप्] १ आँख, नेत्र, चक्षु (हे १, ३३, मुर ३, १५३, सम १) । २ पुं इस नाम का एक कुलकर पुरुष (पउम ३, ५३) । ३ न देखो नीचे °दमण (कम्म ३, १७; ४, ६) । ४ ज्ञान, बोध (ठा ३, ४) । ५ दर्शन, अवलोकन (आचा) । °कन पु [°कान्त] देव-विशेष, कुण्डलोद समुद्र का अधिष्ठाता देव (जीव ३) । °कन्ता छो [°कान्ता] एक कुलकर पुरुष की पत्नी (सम १५०) । °दसग न [°दशन] चक्षु मे वस्तु का सामान्य ज्ञान (सम १५) । °दसगवडिया छो [°दर्शनप्रतिज्ञा] आँख मे देखने का नियम, नयनेन्द्रिय का समय (निचू ६, आचा २, २) । °दय वि [°दय] ज्ञान-दाता (सम १, पडि) । °पडिलेहा छो [°प्रतिलेखा] आँख मे देखना (निचू १) । °परिज्ञाण न [°परिज्ञान] रूप-विषयक ज्ञान, आँख से होनेवाला ज्ञान (आचा) । °पह पुं [°पथ] नेत्र-मानं, नयन-गोचर (पएह १, ३) । °फाम पु [°स्पर्श] दर्शन, अवलोकन (ओप) । °भीय वि [°भीत] अवलोकन मात्र मे ही डरा हुआ (आचा) । °म, °मत वि [°मन्] १ लोचन-युक्त, आँखवाला (विमे) । २ पु एक कुलकर पुरुष का नाम (सम १५०) । °लोल वि [°लोल] देखने का शौकीन, जिसकी नयनेन्द्रिय सयत न हो वह (कस) । °लोलुय वि [°लोलुप] वही पूर्वाक्त अर्थ (कस) । °होयणलेस्स वि [°लोकनलेश्य] सुष्प, सुन्दर रूपवाला (राय, जीव ३) । °वित्तिहय वि [वृत्ति-हृत] दृष्टि से अपरिचित (वव ८) । °स्सव पु [°श्रवस्] मर्क, साँप (स ३३४) ।

चक्खुहुण न [द] प्रेक्षणक, तमाशा (दे २, ४) ।

चक्खुय देखो चक्खुस (आवम) ।

चक्खुरक्खणी छो [दे] लज्जा, शर्म (दे ३, ७) ।

चक्खुस वि [चक्षुष] आँख से देखने योग्य वस्तु, नयन-ग्राह्य (पएह १, १०, विसे ३३११) ।

चक्खुहर वि [चक्षुर्हर] दर्शनीय (राय १०२) ।

चगोर देखो चुओर (प्राकृ) ।

घसुमर वि [घस्मर] खाने की आदतवाला, खाधुक (प्राक् २८) ।

घाइ वि [घातिन्] घातक, नाशक, हिंसक (गा ४३७, विसे १२३८, भग) । °कम्म न [°कर्मन्] कर्म-विशेष, ज्ञानावरण, दर्शनावरण, मोहनीय और अन्तराय ये चार कर्म (अत) । °चउक्क न [चतुष्क] पूर्वोक्त चार कर्म (प्राक्) ।

घाइअ वि [घाति] १ मारित, विनाशित (गाया १, ८, उव) । २ घवाया हुआ, जो शक्ति-शून्य हुआ हो, सामर्थ्यरहित, 'करणाईं घाइयाईं जाया अह वैयणा मंदा' (सुर ४, २३६) ।

घाइआ स्त्री [घातिक्का] १ विनाश करनेवाली स्त्री, मारनेवाली स्त्री (ज २) । २ घात, हत्या । ३ घाव करना (सुर १६, १५०) ।

घाइज्जमाण } देखो घाय = हन् ।
घाइयन्व }

घाइयन्व देखो घाय = घातय् ।

घाइर वि [घायिन्] सूँघनेवाला (गा ८८६) ।

घाउक्काम वि [हन्तुक्काम] मारने की इच्छा-वाला (गाया १, १८) ।

घाएत देखो घाय = हन् ।

घाड भक [भ्र श्] भ्रष्ट होना, च्युत होना । घाडइ (पड्) ।

घाड पु [घाट] १ मित्रता, नौहार्द (बृह गाया १, २) । २ मस्तक के नीचे का भाग (गाया १, ८—पत्र १३३) ।

घाडिय वि [घाटिक] वयस्य, मित्र (गाया १, २ बृह १) ।

घाडेस्य पु [दे] खरगोश की एक जाति (?) 'जे तुह संगमुहासारज्जुनिबद्धा दुह मए रुद्धा । घाडेस्यसया इव अवंधणा ते पलायंति' (उप ७२८ टी) ।

घाण पु [दे] १ घानी, कोल्हू, तिल-पीडन-यन्त्र (पिड) । २ घान, चक्की आदि में एक बार डालने का परिमाण (सुपा १४) ।

घाण पुंन [घ्राण] नाक, नासिका, 'दो घाणा' (पुण १५, उप ६४८ टी, दे २, ७६) ।

°रिस पुंन [°रिस्] नासिका में होने-वाला रोग-विशेष, पीनस (ओघ १८४ भा) ।

घाणिदिय न [घ्राणेन्द्रिय] नासिका, नाक (उत्त २६) ।

घाय सक [हन्] मारना, मार डालना, विनाश करना । वक्क घाएह (उव) । वक्क. 'घाएत रिउमडहवे' (पउम ६०, १७) । घायत (पउम २४, २६, विसे १७६३) । कवक्क. 'से घणे चिलाएण चोरसेणावइणा पचहि चोर-सएहि सदिं गिह घाइज्जमाण पासइ' (गाया १, १८) । वक्क घाइयन्व (पउम ६६, ३४) ।

घाय सक [घातय्] मरवाना, दूसरे द्वारा मार डालना, विनाश करवाना । वक्क घायमाण (सूअ २, १) । कृ घाइयन्व (पउम ६६, ३४) ।

घाय पु [घात] गमन, गति (सुज १, १) ।

घाय पु [घात] १ प्रहार, चोट, वार (पउम ५६, २५) । २ नरक (सूअ १, ५, १) । ३ हत्या, विनाश, हिंसा (सूअ १, १, २) । ४ ससार (सूअ १, ७) ।

घायग वि [घातक] मार डालनेवाला, विनाशक (स २६४, सुपा २०७) ।

घायण न [हन्न] १ हत्या, नाश, हिंसा (सुपा ३४६, द्र २६) । २ वि. हिंसक, मार डालनेवाला (स १०८) ।

घायण पुं [दे] गायक, गवैया (दे २, १०८, हे २, १७४, पड्) ।

घायणा स्त्री [हन्न] मारना, हिंसा, वध (पएह १, १) ।

घायय देखो घायग (विसे १७६३, स २६७) ।

घायय पुं [घातक] नरक-स्थान विशेष (देवेन्द्र २६, ३०) ।

घायावणा स्त्री [घातना] १ मरवाना, दूसरे द्वारा मारना । २ लूटपाट मचवाना, 'वहुंगा-मवायावणाहिं ताविया' (विपा १, ३) ।

घार भक [घारय्] १ विष का फैलना, विष की असर से वेचैन होना । २ सक. विष से वेचैन करना । ३ विष से मारना । कर्म. 'घारिज्जतो य तथो विसेण' (स १८६) । हेक्क. घारिज्जिउ (स १८६) ।

घार पु [दे] प्रकार, किला, दुर्ग (दे २, १०८) ।

घारत पुं [दे] घृतपूर, घेवर, एक प्रकार की मीठाई (दे २, १०८) ।

घारण न [घारण] विष की असर से होने-वाली वेचैनी (सुपा १२४) ।

घारिय वि [घारित] जो विष की असर से वेचैन हुआ हो, 'तत्तथो भोगो । सव्वत्थ तदुवघाया विसघारियभोगतुल्लोत्ति' (उप ४४२), 'विसवा (? घा) रियम्स जह वा घणचन्दणकामिणीसगो' (उवर ६७), 'विसघारिओ सि घत्तूरिओ सि मोहेण किं ठगिओ सि' (सुपा १२४, ४४७) ।

घारिया स्त्री [दे] मिष्टान्न-विशेष, गुजराती में जिसे 'घारी' कहते हैं (भवि) ।

घारी स्त्री [द] १ शकुनिका, पक्षि-विशेष (दे २, १०७, पात्र) । २ छन्द-विशेष (पिग) ।

घास सक [घृप्] १ घिसना । २ पीडा करना । कर्म घासइ (सूअ १, १३, १५) ।

घास पुं [घास] तृण, पशुओं को खाने का तृण (दे २, ८५, औप) ।

घास पु [ग्राम] १ कवल, कौर (औप, उत्त २) । २ आहार, भोजन (आचा, ओघ ३३०) ।

घास पु [घर्ष] घर्षण, रगड़, 'जो मे उवज्जि-ओ इह करव्हघसणेण चरणघासेण' (सुपा १४) ।

घाससणा स्त्री [घ्रासैपणा] आहार-विषयक शुद्धि अशुद्धि का पर्यालोचन (ओघ ३३८) ।

घि देखो घे । भवि घिच्छिइ (विसे १०२३) । कर्म. घिप्पति (प्रासू ४) । मक्क घित्तूण (कुमा ७, ४६) । हेक्क. घित्तु (सुपा २०६) । कृ. घित्तव्व (सुर १४, ७७) ।

घिअ न [घृत] घी, घीव, आज्य (गा २०) ।

घिअ वि [दे] भरिसंत, तिरस्कृत, अवधीरित (दे २, १०८) ।

घिं } पु [घ्रीष्म] १ गरमी की ऋतु, ग्रीष्म
घिसु } काल, 'घिसिसिरवामे' (आघ ३१० भा, उत्त २, ८, पि ६, १०१) । २ गरमी, अभिताप (सूअ १, ४, २) ।

घिट्ट वि [द] कुब्ज, कूबडा (दे २, १०८) ।

घिट्ट वि [घृष्ट] घिसा हुआ, रगड़ा हुआ (सुपा २७८, गा ६२६ अ) ।

घिणा स्त्री [घृणा] १ जुगुप्सा, अहंति । २ दया, अनुकम्पा (हे १, १२८) ।

धिणिल वि [घृणावत्] घृणावाला, नफ-रत करनेवाला (पिड १७६) ।

चडुला छी [दे] रत्न-तिलक, सोने की मेखला मे लटकता हुआ रत्न निर्मित तिलक (दे ३, ८)।

चडुलातिलय न [दे] ऊपर देखो (दे ३, ८)।

चडुलिया छी [दे] अन्त भाग में जला हुआ घास का पूला, घास की आंटी (एदि)।

चडु सक [मृद] मर्दन करना, मसलना। चडुइ (हे ४, १२६)। प्रयो चड्वावए (सुपा ३३१)।

चडु सक [पिप्] पीसना। चडुइ (हे ४, १८५)।

चडु सक [भुज्] भोजन करना, खाना। चडुइ (हे ४, ११०)।

चडु न [दे] तैल-पात्र, जिसमें दीपक किया जाता है, गुजराती मे 'चाडु' (सुपा ६३८, वृह १)।

चडुण न [भोजन] १ भोजन, खाना। २ खाने की वस्तु, खाद्य-सामग्री (कुमा)।

चड्वावली छी [चड्वावली] इस नाम की एक नगरी, जहाँ श्रीधनेश्वर मुनि ने विक्रम की ग्यारहवीं सदी में 'सुरसुदरी-चरित्र' नामक प्राकृत काव्य रचा था (सुर १६, २४६)।

चड्डिअ वि [मृदित] मसला हुआ, जिसका मर्दन किया गया हो वह (कुमा)।

चड्डिअ वि [पिष्ट] पीसा हुआ (कुमा)।

चड देखो चड = आ + रुह। सकृ चडिऊण (सम्मत् १५६)।

चडण देखो चडण (सबोध २८)।

चण } पु [चणक] चना, अन्न विशेष
चणअ } (जं ३, कुमा, गा ५५७, दे १, २१)।

चणइया छी [चणकिा] मसूर, अन्न-विशेष (ठा ५, ३)।

चणग देखो चणअ (सुपा ६३१, सुर ३, १४८)। °गाम पुं [°ग्राम] ग्राम-विशेष, गौड देश का एक ग्राम (राज)। °पुर न [°पुर] नगर-विशेष, राजगृह-नगर का असली नाम (राज)।

चणयग्गाम देखो चणग-गाम (धर्मवि ३८)।

चणोद्विया छी [दे] गुजा। गु० 'चणोद्वी', देखो कोणेद्विया (अनु० वृ० हारि० पत्र ७६)।

चत्त पुन [दे] तकू, तकुआ, सूत बनाने का यन्त्र, तकली (दे ३, १, धर्म २)।

चत्त वि [त्यक्त] छोड़ा हुआ, परित्यक्त (पएह २, १, कुमा १, १६)। २ सूत की आंटी (प्रश्नव्या० ८०, १)।

चत्तर देखो चच्चर (पि २६६, नाट)।

चत्ता देखो चत्तालीसा (उवा)।

चत्ता छी [चर्चा] १ शरीर पर सुगन्धी वस्तु का विलेपन। २ विचार, चर्चा (प्राकृ ३८)।

चत्ताल वि [चत्वारिंश] चालीसवाँ (पउम ४०, १७)।

चत्तालीस न [चत्वारिंशत्] १ चालीस, ४०, 'चत्तालीस विमाणावाससहस्सा पएणत्तो' (सम ६६, कप्प)। २ वि चालीस वर्ष की उम्रवाली, 'चत्तालीसस्स विन्नाए' (तदु)।

चत्तालीसा छी [चत्वारिंशत्] चालीस, ४०, 'तीसा चत्तालीसा' (पएण २)।

चत्थरि पुंछी [दे. चत्तरि] हास, हास्य (दे ३, २)।

चपेटा छी [दे. चपेटा] कराघात, थप्पड़, तमाचा (षड्)।

चप्प सक [आ + क्रम्] आक्रमण करना, दवाना। संकृ चप्पिपवि (भवि)।

चप्प सक [चर्च] १ अव्ययन करना। २ कहना। ३ भर्त्सना करना। ४ चन्दन आदि से विलेपन करना। चप्पइ (प्राकृ. ७५ सक्ति ३५)।

चप्पडग न [दे] काष्ठ-यन्त्र-विशेष (पएह १, ३—पत्र ५३)।

चप्परण न [दे] तिरस्कार, निरास (गु ६)।

चप्पलअ वि [दे] १ असत्य, झूठा (कुमा ८, ७६)। २ बहुमिथ्यावादी, बहुत झूठ बोलने-वाला (षड्)।

चप्पिय वि [आक्रान्त] आक्रान्त, दबाया हुआ (भवि)।

चप्पुडिया } छी [चप्पुटिका] चपटी, चुटकी,
चप्पुडि } अंगुष्ठ के साथ अंगुली की ताली (एया १, ३—पत्र ६५; दे ८, ४३)।

चप्फल } न [दे] शेखर-विशेष, एक तरह
चप्फलय } का शिरोभूषण। २ वि असत्य, झूठा, मिथ्याभाषी (दे ३, २०, हे ३, ३८, कुमा ८, २५)।

चमक पु [चमत्कार] विस्मय, आश्चर्य, 'सजरियजएचमक्को' (धम्म ६ टी, उप ७६८ टी)। °यर वि [°कर] विस्मय-जनक (सण)।

चमक } सक [चमत् + कृ] विस्मित
चमकर } करना, आश्चर्यान्वित करना।
चमक्केइ, चमक्कति (विवे ४३, ४८) वक्र
चमकरत विक्र ६६)।

चमकार पु [चमत्कार] आश्चर्य, विस्मय (सुर १०, ८, वजा २४)।

चमक्किअ वि [चमत्कृत] विस्मित, आश्चर्यान्वित (सुपा १२२)।

चमड } सक [भुज्] भोजन करना, खाना।
चमड } चमडइ (षड्) चमडइ (हे ४, ११०)।

चमड सक [दे] १ मर्दन करना, मसलना। २ प्रहार करना। ३ कदर्थन करना, पीटना। ४ निन्दा करना। ५ आक्रमण करना। ६ उद्दिन करना, धिन्न करना। कवकृ चम-डिज्जत (ओघ १२८ भा: वृह १)।

चमडण न [भोजन] भोजन, खाना (कुमा)।

चमडण न [दे] १ मर्दन, अवमर्दन (ओघ १८७ भा: स २२)। २ आक्रमण (स ५७६)। ३ कदर्थन, पीटना। ४ प्रहार (ओघ १६३)। ५ निन्दा, गर्हण (ओघ ७६)। ६ वि जिसकी कदर्थना की जाय वह (ओघ २३७)।

चमडणा छी [दे] ऊपर देखो (वृह १)।

चमडिअ वि [दे] मर्दित, विनाशित (वव २)।

चमर पु [चमर] पशु-विशेष, जिसके बालों का चामर या चँवर बनता है, 'वराहचमरसे-विए रणणे' (पउम ६४, १०५, पएह १, १)। २ पु पाचवें जिनदेव का प्रथम शिष्य (सम १५२)। ३ दक्षिण दिशा के असुरकुमारों का इन्द्र (ठा २, ३)। °चच पु [°चञ्च] चम-रेन्द्र का आराम-पर्वत (भग १३, ६)। °चचा छी [°चञ्चा] चमरेन्द्र की राजधानी, स्वर्ग-पुरी-विशेष (एया २)। °पुर न [°पुर] विद्याधरो का नगर-विशेष (इक)।

चमर पुन [चामर] चँवर, चामर, बाल-व्यजन (हे १, ६७)। °धारी, °हारी छी

वेच्छ (विमे ११२७) । कर्म घेप्पइ (हे ४, २५६) । कक्क घेप्पत, घेप्पमाग (गा ५८१, भग, स १५२) । सकु. घेऊण, घक्कूण, घेक्कूण, घेत्तुआण, घेत्तुआणं, घेत्तूण, घेत्तूणं (नाट—मालती ७१, पि ५८४, हे ४, २१०, पि, उव, प्राप्र) । हेक्कू घेत्तु, घेत्तूण (हे ४, २१०, पउम, ११८, २४) । कृ घेत्तव्व (हे ४, २१०, प्राप्र) ।

घेउर पुंन [दे] घेउर, घृतपूर, मिट्टान-विशेष, 'सा भणइ नियगेहेवि हु घयघेउरभोयणं ममा-कुणइ' (मुपा १३) ।

घेक्कूण देखो घे ।

घेत्तुमण वि [अहीतुमनस्] ग्रहणकरने की इच्छावाला (पउम १११, १६) ।

घेप्प }
घेप्पंत } देखो घे ।
घेप्पमाण }

घेवर [दे] देखो घेउर (दे २, १०८) ।

घोट्ट } सक [पा] पीना, पान करना ।
घोट्टय } घोट्टइ (हे ४, १०) । वक्क घोट्ट-यत (स २५७) । हेक्कू घोट्टिउ (कुमा) ।

घोड देखो घुम्म । घोडइ (से ५, १०) ।

घोड } पुत्री [घोट, क] घोडा, अश्व,
घोडग } हय (दे २, १११, पत्र ५२,
घोडय } उवा, उप २०८) । २ पुं. कायो-
त्सगं का एक दोष (पव ५) । *रक्खग पु
[रक्क] अश्वपाल, नाईम (उप ५६७ टी) ।
*ग्गीव [ग्गीव] अश्वग्गीव-नामक प्रतिवासुदेव,
नृपविशेष (आवम) । *मुह न [मुख]
जैनेतर शास्त्र विशेष (अणु) ।

घोडिय पुं [दे] मित्र, वयस्य (बृह ५) ।

घोडी स्त्री [घोटी] १ घोडी । २ वृक्ष-विशेष,
'सीयल्लिघोडिवच्चूलकयरवहराइसकिरणे' (स २५६) ।

घोण न [घोण] घोडे की नाक (सण) ।

घोणस पु [घोनस] एक प्रकार का साँप
(पउम ३६, १७) ।

घोणा स्त्री [घोणा] १ नाक, नासिका (पाप्र) ।
२ घोडे की नाक । ३ सूअर का मुख-प्रदेश
(से २, ६४, गउड) ।

घोर अक [घुर] निद्रा में 'घुर-घुर' आवाज
करना । घोरति (गा ८००) । वक्कू. घोरत
(स ४२४, उप १०३१ टी) ।

घोर वि [दे] १ नाशित, विनाशित । २ पुं.
गोव, पक्षि विशेष (दे २, ११२) ।

घोर वि [घोर] भयंकर, भयानक, विकट (सूअ
१, ५, १, सुपा ३४५, मुर २, २४३, प्रासू
१३६) । २ निर्दय, निष्ठुर (पाप्र) ।

घोरि पुं [दे] शलम पशु की एक जाति (दे
२, १११) ।

घोल देखो घुम्म । घोलइ (हे ४, ११७) ।
वक्कू घोलन (कप्प, गा ३७१, कुमा) ।

घोल सक [घोल्] १ घिसना, रगडना । २
मिलाना (विसे २०४४, से ४, ५२) ।

घोल न [दे] कपडे से छाना हुआ दही (पमा
३३) ।

घोलण न [घोलन] घर्षण, रगड (विसे
२०४४) ।

घोलणा स्त्री [घोलना] पत्थर वगैरह का पानी
की रगड से गोलाकार होना (स ४७) ।

घोलवड } न [दे] एक प्रकार का खाद्य
घोलवडय } द्रव्य, दहीवडा (पमा ३३, आ
२०, सुपा ४६५) ।

घोलाविअ वि [वालिन] मिश्रित किया हुआ,
मिलाया हुआ (मे ४, ५२) ।

घोलिअ न [दे] १ शिलातल । २ हठ-कृत,
बलात्कार (दे २, ११२) ।

घोलिअ वि [घूर्णित] घुमाया हुआ (पाप्र) ।
घोलिअ वि [घूर्णित] अत्यन्त लीन, 'अज-
रक्खिअो जविण्णु अईव घोलिअो' (मुख २,
१५) ।

घोलिअ वि [घोलित] ग्राम की तरह घोला
हुआ (सूअ २, २, ६३) ।

घोलिअ वि [घालित] रगडा हुआ, मर्दित
(श्रीप) ।

घोलिर वि [घूर्णित] घूमनेवाला, चक्राकार
फिरनेवाला (गा ३३८, स ५७८, गउड) ।

घोस सक [घोषय्] १ घोषणा करना, ऊँची
आवाज से जाहिर करना । २ घोखना ऊँची
आवाज से अव्ययन करना, जोर-जोर से बोल
कर पढना या रटना । घोसइ (हे १, २६०,
प्राप्ता) । प्रयो घोसावेइ (भग) ।

घोस पुं [घोष] १ ऊँची आवाज (स १०७,
कुमा, गा ५४) । २ आभीर-पल्ली, अहीरो का
महल्ला, अहीर टोली (हे १, २६०) । ३ गोष्ठ,
गौम्रो का बाडा (ठा २, ४—पत्र ८६, पाप्र) । ४
स्तनितकुमार देवो की दक्षिण दिशा का इन्द्र
(ठा २, ३) । ५ उदात्त आदि स्वर-विशेष
(वव १०) । ६ अनुनाद (भग ६, १) । ७ न
देव-विमान विशेष (सम १२, १७) । *सेण
पु [सेन] सातवें वामुदेव का पूर्वजन्म का
धर्म गुरु, एक जैन मुनि (पउम २०, १७६) ।

घोस न [घोष] लगातार ग्यारह दिनों का
उपवास (संबोध ५८) ।

घोसण न [घोषण] १ ऊँची आवाज (निचू
१) । २ घोषणा, ढिंढोरा पिटवाकर जाहिर
करना (राय) ।

घोसणा स्त्री [घोषणा] ऊपर देखो (राया
१, १३, गा ५२४) ।

घोसय न [दे] दर्पण का घरा, दर्पण रखने
का उपकरण-विशेष (अंत) ।

घोसाडई स्त्री [घोषातकी] लता-विशेष
(पण १७—पत्र ५३०) ।

घोसाडिया देखो घोसाडई (राय ३१) ।

घोसालई } स्त्री [दे] शरद ऋतु में होने-
घोसाली } वाली लता-विशेष (दे २, १११,
पण १—पत्र ३३) ।

घोसावग न [घोषण] घोषणा, ढोडी या हुगो
पिटवा कर जाहिर करना (उप २११ टी) ।

घोसिअ वि [घोषित] जाहिर किया हुआ
(उव) ।

(३, ७) । °करण न [°करण] समय का मूल और उत्तर गुण (सूत्र १, १ सम्म १६४) । °करणाणुओग पुं [°करणाणुओग] संयम के मूल और उत्तर गुणों की व्याख्या (निचू १५) । °कुसीलपु [°कुशील] चारित्र को मलिन करनेवाला साधु, शिथिलाचारी साधु (पव २) । °णय [°नय] क्रिया को मुख्य माननेवाला मत (आचा) । °मोह पुन [°मोह] चारित्र का आवारक कर्म-विशेष (कम्म १) ।

चरम वि [चरम] १ अन्तिम, अन्त का, पर्यन्तवर्ती (ठा २, ४, भग ८, ३, कम्म ३, १७, ४, १६, १७) । २ अनन्तर भव मे मुक्ति पानेवाला । ३ जिसका विद्यमान भव अन्तिम हो वह (ठा २, २) । °काल पुं [°काल] मरणसमय (पचव ४) । °जलहि पुं [°जलधि] अन्तिम समुद्र, स्वयम्भूरमण समुद्र (लहुअ २) ।

चरमत पुं [चरमान्त] सब मे अन्तिम, सब से प्रान्त-वर्ती (सम ६६) ।

चरय देखो चरग (औप, णाया १, १५) ।

चरि पुल्ली [चरि] १ पशुओं को चरने की जगह । २ चारा, पशुओं को खाने की चीज, घास (कुप्र १७) ।

चरिगा देखो चरिया = चरिका (राज) ।

चरित्त न [चरित्र] १ चरित, आचरण । २ व्यवहार (भवि, प्रासू ४०) । ३ स्वभाव, प्रकृति (कुमा) ।

चरित्त न [चरित्र] जीवन कथा, जीवनी, कहानी (सम्मत्त १२०) ।

चरित्त न [चारित्र] समय, विरति, व्रत, नियम (ठा २, ४, ४, ४, भग) । °कप्प पु [°कल्प] समयानुष्ठान का प्रतिपादक ग्रन्थ (पचभा) । °मोह पुन [°मोह] कर्म-विशेष, समय का आवारक कर्म (भग) । °मोहणिज्ज न [°मोहनीय] वही पूर्वोक्त अर्थ (ठा २, ४) । °चरित्त न [°चारित्र] आशिक संयम, श्रावक-धर्म (पडि, भग ८, २) । °यार पु [°यार] संयम का अनुष्ठान (पडि) । °रिय पु [°रिय] चारित्र से आर्य, विशुद्ध चारित्रवाला, साधु, मुनि (परण १) ।

चरित्ति पुल्ली [चारित्रिन्] समयवाला, साधु, मुनि (उप ६६६, पचव १) ।

चरिम देखो चरम (सुर १, १०, औप, भग, ठा २, ४) ।

चरिय पु [चरक] चर-पुरुष, जासूस, दूत (सुपा ५२८) ।

चरिय न [चरित] १ चेट्टित, आचरण (औप, प्रासू ८६) । २ जीवनी, जीवन-चरित (सुपा २) । ३ चरित्र ग्रन्थ (सुपा ६५८) । ४ सेवित आश्रित (परह १, ३) ।

चरिया छी [चरिका] १ परिभ्राजिका, सत्यासिनी (शोध ५६८) । २ किला और नगर के बीच का मार्ग (सम १३७, परण १, १) ।

चरिया छी [चर्या] १ आचरण, अनुष्ठान, 'दुक्करचरिया मुणिवराण' (पउम १४, १५२) । २ गमन, गति, विहार (सूत्र १, १, ४) । ३ गाड़ी (आख्या० पत्र ११ गा ६८) ।

चरीया देखो चरिया = चर्या, 'तण्णफासो चरीया य दमेक्कारस जोगिमु' (पच ४, २०) ।

चरु पु [चरु] स्थाली-विशेष, पात्र-विशेष (औप, भवि) ।

चरुगिणय देखो चारुङ्गय (इक) ।

चरुल्लेख न [दे] नाम, आख्या (दे ३, ६) ।

चल सक [चल्] १ चलना, गमन करना । २ अक कापना, हिलना । चलइ (महा, गजड) । वकृ चलन, चलमाण (गा ३५६, सुर ३, ४०, भग) । हेकृ चलिउ (गा ४८४) । प्रयो सकृ चलइत्ता (दस ५, १) ।

चल वि [चल] १ चंचल, अस्थिर (म ४२०, वज्जा ६६) । २ पु रावण का एक सुभट (पउम ५६, ३६) ।

चलचल वि [चलचल] १ चंचल, अस्थिर, 'चलचलयकोडिमोहणकराई नयणाइ तरुणीण' (वज्जा ६०) । २ पु घी मे तली जाती हुई चीज का पहला तीन घान (निचू ४) ।

चलण पु [चरण] पाँव, पैर, पाद (औप, से ६, १३) । °मालिया छी [°मालिका] पैर का आभूषण-विशेष (परह २, ५, औप) । °वन्दण न [°वन्दन] पैर पर सिर झुका कर प्रणाम, प्रणाम-विशेष (पउम ८, २०६) ।

चलण न [चलन] चलना, गति, चाल, प्रया, रिवाज (मे ६, १३) ।

चलणा छी [चलना] १ चलन, गति । २ कम्प, हिलन (भग १६, ६) ।

चलणाउह पु [चरणायुध] कुक्कुट, मुर्गा (दे ३, ७) ।

चलणाओह पुं [दे चरणायुध] ऊपर देखो (पड्) ।

चलणिया छी [चलनिका] नीचे देखो (शोध ६७६) ।

चलणिया } छी [चलनिका, °नी] जैन
चलणी } साध्वियों को पहनने का कटि-
वस्त्र (पव ६२) ।

चलणी छी [चलनी] १ साध्वियों का एक उपकरण (शोध ३१५ भा) । २ पेर तक का कीच (जीव ३, भग ७, ६) ।

चलवलण न [दे] चटपटाई, चंचलता (पउम १०२, ६) ।

चलाचल वि [चलाचल] चंचल, अस्थिर (पउम ११२, ६) ।

चलिविय वि [चलेन्द्रिय] इन्द्रिय-निग्रह करने मे असमर्थ, जिसकी इन्द्रिया कावू मे न हो वह (आचा २, ५, १) ।

चलिअ न [चलित] १ विकलता, अस्थिर्य, चंचलता (पात्र) । २ वि चला हुआ, कम्पित (आवम) । ३ प्रवृत्त (पात्र, औप) । ४ विनष्ट (धम्म २) ।

चलिर वि [चलित्] चलनेवाला, अस्थिर, चपल चंचल, चलिरभमराली' (उप ६८६, सुपा ७६, २५७, स ४१) ।

चल्ल देखो चल = चल । चल्लइ (हे ४, २३१ पड्) ।

चल्लणग न [दे] जघनाशुक, कटि-वस्त्र (पड्) ।

चल्लि छी [दे] नाचते समय की एक प्रकार की गति (कप्पू) ।

चल्लि छी [दे] मदन-वेदना (ससि ४७) ।

चल्लिअ देखो चलिअ (सुर २, ६१, उप ५ ५०) ।

चव सक [कथयू] कहना, बोलना । चवइ (हे ४, २) । कर्म. चविजइ (कुमा) । वकृ. चवत (भवि) ।

चौपाया प्राणी, पशू (जी ३१)। २ न ज्योतिष-प्रसिद्ध एक स्थिर करण (विसे ३३५०)। °पुह पुं [°पथ] चौहट्टा, चौराहा, चौरास्ता (प्रयौ १००)। °पुड वि [°पुट] चार पुटवाला, चौसर, चौपठ (विपा १, १)। °फाल वि [°फाल] देखो °पुड (गाया १, १—पत्र ५३)। °वाहु वि [°वाहु] १ चार हाथवाला। २ पु. चतुर्भुज, श्रीकृष्ण (नाट)। °वुअ [°भुज] देखो °वाहु (नाट; सूत्र १, ३ १)। °भग पुन [°भङ्ग] चार प्रकार, चार विभाग (ठा ४, १)। °भगी स्त्री [°भङ्गी] चार प्रकार, चार विभाग (भग)। °भाइया स्त्री [°भागिका] चौसठ पल का एक नाप (अणु)। °मट्टिया स्त्री [°मृत्तिका] कपडे के साथ कूटी हुई मिट्टी (निचू १८)। °मड-लग न [°मण्डलक] लग्न मण्डप, विवाह-मण्डप (सुपा ६३)। °मासिअ देखो चाउ-म्मासिअ (आ ४७)। °मुह, °म्मुह पुं [°मुख] १ ब्रह्मा, विधाता (पउम ११, ७२, २८, ४८)। २ वि. चार मुँहवाला, चार द्वारवाला (औप, सण)। °वग्ग पुन [°वर्ग] चार वस्तुओं का समुदाय (निचू १५)। °वण्ण, °वन्न स्त्रीन [°पञ्चाशत्] चौवन, पचास और चार, ५४ (पि २६५, २७३, सम ७२)। °वार वि [°द्वार] चार दरवाजेवाला (गृह) (कुमा)। °विह वि [°विध] चार प्रकार का (दे ३२, नव ३)। °वीस स्त्रीन [°विंशति] चौबीस, बीस और चार, २४ (सम ४३, द १, पि ३४)। °वीसइ (अप)। स्त्री [°विंशति] बीस और चार, चौबीस (पि ४४५)। °वीसइम वि [°विंशतितम] १ चौबीसवाँ (पउम २४, ४०)। २ न ग्यारह दिनों का लगातार उपवास (भग)। °व्वग्ग देखो °वग्ग (आचा २, २)। °व्वार पुंन [°वार] चार बार, चार दफा (हे १, १७१, कुमा)। °व्विह देखो °विह (ठा ४, २)। °व्वीस देखो °वीस (सम ४३)। °व्वीसइम देखो °वीस-इम (गाया १, १)। °सट्ठि स्त्री [°पष्टि] चौसठ, साठ और चार (सम ७१, कप्प)। °सट्ठिम वि [°पष्टितम] चौसठवाँ (पउम

६४, ४७)। °स्सट्ठि देखो °सट्ठि (कप्प)। °स्साल न [°शाल] चार शालाओं में युक्त घर (स्वप्न ५१)। °हट्ठ, °हट्ठय पुंन [°हट्ठ, °फ] चौहट्टा, बाजार (महा, आ २७, सुपा ४५५)। °हत्तर वि [°सप्तत] चौहत्तरवाँ, ७४ वा (पउम ७४, ४३)। °हत्तरि स्त्री [°सप्तति] चौहत्तर, सत्तर और चार (पि २४५, २६४)। °हा अ [°धा] चार प्रकार से (ठा ३, १, जी १६)। देखो चो°।

चउक्क न [चतुष्क] चौकड़ी, चार वस्तुओं का समूह (सम ४०, सुर १४, ७८, सुपा १४), 'वण्णचउक्केण' (आ २३)।

चउक्क [दे. चतुष्क] चौक, चौराहा, जहाँ चार रास्ता मिलता हो वह स्थान, चौमुहानी (दे ३, २, पड, गाया १, १; औप, कप्प, अणु, बृह १, जीव १, सुर १, ६३, भग)। २ आंगन, प्राण (सुर ३, ७२)।

चउक्कर पु [दे] कार्तिकेय, शिव का एक पुत्र (दे ३, ५)।

चउक्कर वि [चतुष्कर] चार हाथवाला, चतुर्भुज (उत्त ८)।

चउक्किआ स्त्री [दे. चतुष्किआ] आंगन, छोटा चौक (सुर ३, ७२)।

चउज्जाइया स्त्री [दे] नाप-विशेष (भग ७, ८)।

चउड पु [चोड] देश-विशेष (सम्मत्त ६०)।

चउद देखो चउ-दस (संवेध २३)।

चउदह वि [चतुर्दश] चौदहवाँ (प्राक् ५)। स्त्री. °ही (प्राक् ५)।

चउपचम वि [चतुप्पचम] चार या पाँच (सूत्र २, २, २१)।

चउपाडिवय न [चतुप्पतिपत्त] चार पडवा या परिवा तिथियाँ (पव १०४)।

चउप्पाय पं [चतुप्पाद] एक दिन का उपवास (संवेध ५८)।

चउप्पल वि [चतुप्पल] चौगुना, 'मदल-वाय चउप्पललोय' (सिरि १५७)।

चउवोल स्त्रीन [चौवोल] छन्द-विशेष (पिग)। स्त्री °ला (पिग)।

चउम्मुह पुं [चतुर्मुख] दो दिन का उपवास, बेला (संवेध ५८)।

चउर वि [चतुर] १ निपुण, दक्ष, होशियार

(पाम्र, वेणी ६६)। २ क्वि. निपुणता से होशियारी में, 'किसी गायइ चउर' (ठा ७)।

चउरग वि [चतुरङ्ग] १ चार अंगवाला, चार विभागवाला (सैन्य वगैरह) (सण)। २ न. चार अंग, चार प्रकार (उत्त ३)।

चउरगय न [चतुरङ्गक] एक तरह का जुआ (मोह ८६)।

चउरगि वि [चतुरङ्गिन्] चार विभागवाला (सैन्य वगैरह)। स्त्री. °णी (सुपा ४५६)।

चउरंत वि [चतुरन्त] १ चार पर्यन्तवाला, चार सीमाएँवाला। २ पुं ससार (औप)। स्त्री °ता [°ता] पृथिवी, घरणी (ठा ४, १)।

चउरत न [चतुरन्त] चक्र, पहिया (वेइय ३४३)।

चउरंस वि [चतुरस्स] चतुष्कोण, चार कोणवाला (भग, आचा, द १२)।

चउरंसा स्त्री [चतुरसा] छन्द विशेष (पिग)।

चउरय पु [दे] चौरा, चवूतरा, गाँव का समा स्थान (सम १३८ टी)।

चउरस्स देखो चउरंस (विसे २७६७)।

चउरचिध पु [दे] सातवाहन, राजा शालि-वाहन (दे ३, ७)।

चउराणण वि [चतुरानन] १ चार मुँहवाला। २ पु ब्रह्मा, विधाता (गउड)।

चउरासी } स्त्री [चतुरशीति] सख्या-विशेष,
चउरासीइ } चौरासी, ८४ (जी ४५, सण, उवा, पउम २०, १०३, सम ६०, कप्प)।

चउरासीइम वि [चतुरशीतितम] चौरा-सीवाँ, ८४ वाँ (पउम ८४, १२, कप्प)।

चउरासीय स्त्रीन [चतुरशीति] चौरासी, 'चउरासीय तु गणहरा तस्स उप्पन्ना' (पउम ४, ३५)।

चउरिंदिय वि [चतुरिन्द्रिय] त्वक्, जिह्वा, नाक और चक्षु इन चार इन्द्रियवाला (जन्तु) (भग ठा १, १, जी १८)।

चउरिमा स्त्री [चतुरिमन्] चतुरता, चतुराई, चातुर्य, निपुणता (सट्ठि १६)।

चउरिया } स्त्री [दे] लग्न-मण्डप, मंडवा,
चउरी } विवाह-मण्डप, गुजराती में 'चोरी' (रंभा, सुपा ५५२)।

चउरुत्तरसय वि [चतुरुत्तरशततम] एकसी चारवाँ, १०४ वाँ (पउम १०४, ३५)।

चाउम्मासी स्त्री [चातुर्मासी] देखो चाउ-
म्मासिअ (धर्म २, आब) ।
चाउरग देखो चउरग (पउम २, ७५) ।
चाउरगि देखो चउरगि (भग, णाया १,
१—पत्र ३२) ।
चाउरगज्ज वि [चतुरङ्गीय] १ चार अंगो
से सम्बन्ध रखनेवाला । २ न 'उत्तराध्ययन'
सूत्र का एक अध्ययन (उत्त ४) ।
चाउरत देखो चउरत (सम १, ठा ३, १,
हे १, ४४) ।
चाउरत पु [चातुरन्त] १ चक्रवर्ती राजा,
सम्राट् (पएह १, ४) २ न लगन-मण्डप,
चौरी (स ७८) ।
चाउरत न [चातुरन्त] भरत-क्षेत्र, भारतवर्ष
(वेइय ३४०, ३४१) ।
चाउरत न [चतुरन्त] चक्र, पहिया (वेइय
३४४) ।
चाउरक वि [चातुरक्य] चार वार परिणत ।
'गोखीर न [गोक्षीर] चार वार परिणत
किया हुआ गो-दूध, जैसे कतिपय गौश्रो का
दूध दूसरी गौश्रो को पिलाया जाय, फिर
उनका अन्य गौश्रो को, इस तरह चार वार
परिणत किया हुआ गो-दुग्ध (जीव ३) ।
चाउल वि [दे] चावल का, 'तहेव चाउल्लं
पिटु' (दस ५, २ २२) ।
चाउल पु [दे] चावल, तण्डुल, (दे ३, ८,
आवा २, १, ३, ६, ८, उप पृ २३१,
श्रोध ३४४, सुपा ६३६, रयण ६०, कप) ।
चाउल्लग न [दे] पुरुष का पुतला—कृत्रिम
पुरुष (निबू १) ।
चाउवणग देखो चाउवन्न (सम्मत्त १६२) ।
चाउवन्न } वि [चातुर्वर्ण्य] १ चार वर्ण-
चाउवण्ण } वाला, चार प्रकार वाला । २
पु साधु, साध्वी, श्रावक और श्राविका का
समुदाय (ठा ५, २—पत्र ३२१), 'चाउव-
णणस्स समणसवस्स' (पउम ६०, १२०) ।
३ न ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र ये
चार मनुष्य-जाति (भग १५) ।
चारव्वज्ज देखो चाउव्वेज्ज (वी ७) ।
चाउव्वेज्ज न [चातुर्वैद्य] १ चार प्रकार
की विद्या—न्याय, व्याकरण, साहित्य और
धर्म-शास्त्र । २ पुं चौदे, ब्राह्मणों का एक

अल्ल—उपगोत्र या वर्ग, 'पउरचाउव्वेज्जलोएण'
(महा) ।
चाउस्साला स्त्री [चतुश्शाला] चारो तरफ
के कमराओ से युक्त घर (पव १३३ टी) ।
चाएत देखो चाय = चय ।
चौउडा स्त्री [चामुण्डा] स्वनाम-ख्यात देवी
(हे १, १७४) । 'काउअ पु [कामुक]
महादेव, शिव (कुमा) ।
चाग देखो चाय = त्याग (पंचव १) ।
चागि देखो चाइ (उप पृ १०५) ।
चाड वि [दे] मायावी, कपटी (दे ३, ८) ।
चाडु पुन [चाटु] १ प्रियवाक्य । २ खुशामद
(हे १, ६७, प्राप्र) । 'थार वि [कार]
खुशामदी (पएह १, २) ।
चाडुअ न [चाटुक] ऊपर देखो, कुमा) ।
चाणक पु [चाणक्य] १ राजा चन्द्रगुप्त का
स्वनाम-प्रसिद्ध मन्त्री (मुद्रा १४४) । २ एक
मनुष्य-जाति (भवि) ।
चाणकी स्त्री [चाणक्यी] लिपि-विशेष (विसे
४६४ टी) ।
चाणिक देखो चाणक (आक) ।
चाणूर पुं [चाणूर] मल्ल-विशेष, जिसको
श्रीकृष्ण ने मारा था (पएह १, ४, पिंग) ।
चामर पुंन [चामर] चँवर, बाल-व्यजन (हे
१, ६७) । २ छन्द-विशेष (पिंग) । 'गाहि
वि [ग्राहिन्] चामर बीजनेवाला नौकर ।
स्त्री. 'णी (भवि) । 'छायण न [च्छायन]
स्वाति नक्षत्र का गोत्र (इक) । 'ज्झय पु
[ध्वज] चामर-युक्त पताका (भौप) ।
'धार वि [धार] चामर बीजनेवाला (पउम
८०, ३८) ।
चामरच्छ न [चामरथ्य] गोत्र विशेष (मुज्ज
१०, १६) ।
चामरा स्त्री. उपर देखो (भौप, धसु, भग ६,
३३) ।
चामीअर न [चामीकर] सुवर्ण, सोना
(पाम्र, सुपा ७७, णाया १, ४) ।
चामुंडराय पुं [चामुण्डराज] गुजरात का
एक चौलुक्य वंश का राजा (कुप्र ४) ।
चामुंडा देखो चौउडा (विसे, पि) ।
चाय देखो चय = शक् । वक्र. चायत,
चाएत (सुप्र १, ३, १, वव १) ।

चाय देखो चाव (मुपा ५३०, से १४, १५;
पिंग) ।
चाय पुं [त्याग] १ छोड़ना, परित्याग (प्राप्
८, पंचव १) । २ दान (मुर १, ६५) ।
चायग } पु [चातक] पक्षि-विशेष, चातक-
चायव } पक्षी (मण, पाम्र, दे ६, ६०) ।
चार सक [चारय्] चराना, खिलाना ।
चारेइ (धर्मवि १४३) ।
चार पुं [चार] १ गति, गमन, 'पायचारेण'
(महा, उप पृ १२३, रयण १५) । २ भ्रमण,
परिभ्रमण (स १६) । ३ चर-पुरुष, जासूम
(विपा १, ३, महा, भवि) । ४ कारागार,
कैदखाना (भवि) । ५ संचार, सचरण
(भौप) । ६ अनुष्ठान, आचरण (आचानि
४५, महा) । ७ ज्योतिष-क्षेत्र, आकाश (ठा
२, २) ।
चार पुं [दे] १ वृक्ष-विशेष, पियाल वृक्ष,
चिरौंजी का पेड़ (दे ३, २१, अणु, पएण
१६) । २ वन्यन-म्यान (दे ३, २१) । ३
इच्छा, अभिलाष (दे ३, २१, भवि, सुपा
५११) । ४ न. फल-विशेष, मेवा-विशेष
(पएण १६) । 'वकय पुं [क्रय] बेचने-
वाले की इच्छानुसार दाम देकर खरीदना
(सुपा ५११) ।
चारए देखो चर = चर् ।
चारग दे [चारक] देखो चार (भौप, णाया
१, १, पएह १, ३, उप ३५७ टी) । 'पाल
पुं [पाल] जेलखाना का अध्यक्ष (विपा १,
६—पत्र ६५) । 'पाल्हा पुं [पालक]
कैदखाना का अध्यक्ष, जेलर (उप पृ ३३७) ।
'भंड न [भाण्ड] कैदी को शिक्षा करने
का उपकरण (विपा १, ६) । 'ाहिंवि पु
[धिप] कैदखाना का अध्यक्ष, जेलर (उप
पृ ३३७) ।
चारण पुं [दे] ग्रन्थि-च्छेदक, पाकेटमार, चोर-
विशेष (दे ३, ६) ।
चारण पु [चारण] १ आकाश में गमन करने
की शक्ति रखनेवाले जैन मुनियों को एक
जाति (भौप, सुर ३, १५, अजि १६) । २
मनुष्य-जाति-विशेष, स्तुति करनेवाली जाति
भाट (उप ७६८ टी; प्रामा) । ३ एक जैन
मुनि-गण (ठा ६) ।

चंडण देखो चडण, 'चडण, चडणो' (प्राक् १६)।

चंडमा पु [चन्द्रमस्] चन्द्रमा, चांद (पिंग)।
चंडा स्त्री [चण्डा] १ चमरादि इन्द्रो की मय्यम परिपद (ठा ३, २, भग ४, १)। २ भगवान् वासुपूज्य की शायनदेवी (सति १०)।
चंडातक न [चण्डातक] स्त्री का पहनने का वस्त्र, चाला, लहंगा (दे ३, १३)।

चंडार पु न [द] भण्डार, भाण्डागार (कुमा)।
चंडाल पुं [चण्डाल] १ वर्णसंकर जाति-विशेष, शूद्र और ब्राह्मणों से उत्पन्न (आचा, सूत्र १, ८)। २ डोम (उत्त १, अणु)।

चंडालि वि [चाण्डालिक] चण्डाल-सम्बन्धी, चण्डाल जाति में उत्पन्न (उत्त १)।

चंडाली स्त्री [चण्डाली] १ चण्डाल-जातीय स्त्री। २ विद्या-विशेष (पउम ७, १४२)।

चंडिअ वि [द] कृत, छिन्न, काटा हुआ (दे ३, ३)।

चंडिक पु न [द चाण्डिक्य] रोप, गुस्ता, क्रोध, रौद्रता (दे ३, २, पङ्, सम ७१)।
चंडिकिअ वि [दे चाण्डिक्यत] १ रोप-युक्त, रौद्राकारवाला, भयंकर (आया १, १, परह २, २, भग ७, ८, उवा)।

चंडिज पुं [द] कोप, क्रोध, गुस्सा। २ वि पशुन, खल, दुर्जन (दे ३, २०)।

चंडिम पु स्त्री [चण्डिमन्] चण्डिता, प्रचण्डता (सुपा ६६)।

चंडिया स्त्री [चण्डिका] देखो चंडी (स २६२, नाट)।

चंडिल वि [दे] पीन, पुष्ट (दे ३, ३)।

चंडिल पु [चण्डिल] हजाम, नापित (दे ३, २, पात्र, गा २६१ अ)।

चंडी स्त्री [चण्डी] १ क्रोध-युक्त स्त्री, कर्कशा और उग्र स्त्री (गा ६०८)। २ पार्वती, गौरी, शिव-पत्नी (पात्र)। ३ वनस्पति-विशेष (परण १)। ४ देवग वि [देवक] चण्डी का भक्त (सूयनि ६०)।

चंड पु [चन्द्र] १ चन्द्र, चन्द्रमा, चांद (ठा २, ३; प्रासू १३, ५५, पात्र)। २ नृप-विशेष (उप ७२८ टी)। ३ रामचन्द्र, दाशरथी राम (मे १, ३४)। ४ राम के एक सुभट का नाम (पउम ५६, ३८)। ५ रावण का एक सुभट

(पउम ५६, २)। ६ राशि-विशेष (भवि)। ७ आह्लादक वस्तु। ८ कपूर। ९ स्वर्ण, मोना। १० पानी, जल (हे २, १६४)। ११ एक जैन आचार्य (गच्छ ४)। १२ एक द्वीप का नाम, द्वीप-विशेष (जीव ३)। १३ राधावेध की पुतली का वायां नयन, आख का गोला (एदि)। १४ न. देवविमान-विशेष (सम ८)। १५ रुक्म पर्वत का एक शिखर (दीव)। १६ देखो कत (विक्र १३६)। १७ उत्त देखो गुत्त (मुद्रा १६८)। १८ कत पुं [कान्त] १ मणि-विशेष (स ३६०)। २ न देवविमान-विशेष (सम ८)। ३ त्रि चन्द्र की तरह आह्लादक (आवम)। ४ कता स्त्री [कान्ता] १ नगरी विशेष (उप ६७३)। २ एक कुलकर-पुरुष की पत्नी (सम १५०)। ५ कूड न [कूट] १ देवविमान विशेष (सम ८)। २ रुक्म पर्वत का एक शिखर (ठा ८)। ३ गुत्त पु [गुत्त] मौर्यवंश का एक स्वनाम-विख्यात राजा (विसे ८६२)। ४ चार पु [चार] चन्द्र की गति (चद १०)। ५ चूड, चूल पुं [चूड] विद्याधर वंश का एक स्वनाम प्रसिद्ध राजा (पउम ५, ४५, दंस)। ६ च्छाय पु [च्छाय] अग देश का एक राजा, जिसने भगवान् मल्लिनाथ के साथ दीक्षा ली थी (आया १, ८)। ७ जसा स्त्री [यशस्] एक कुलकर पुरुष की पत्नी (सम १५०)। ८ उम्भय न [ध्वज] देवविमान-विशेष (सम ८)। ९ णक्खा स्त्री [नखा] रावण की वहिन का नाम (पउम १०, १८)। १० णह पु [नख] रावण का एक सुभट (पउम ५६, ३१)। ११ णही देखो णक्खा (पउम ७, ६८)। १२ णागरी स्त्री [नागरी] जैन मुनि-गण की एक शाखा (कप्प)। १३ दरिसणिया स्त्री [दर्शनिका] उत्सव-विशेष, वस्त्र के पहली बार के चन्द्र-दर्शन के उपलक्ष्य में किया जाता उत्सव (राज)। १४ दिण न [दिन] प्रति-पदादि तिथि (पच ५)। १५ दीव पु [द्वीप] द्वीप-विशेष (जीव ३)। १६ द्ध न [ध] आवा चन्द्र, अष्टमी तिथि का चन्द्र (जीव ३)। १७ पडिमा स्त्री [प्रतिमा] तप-विशेष (ठा २, ३)। १८ पन्नत्ति स्त्री [प्रज्ञप्ति] एक जैन उपाङ्ग ग्रन्थ (ठा २, १—पत्र १२६)।

१९ पव्वय पु [पर्वत] वक्षस्कार पर्वत-विशेष (ठा २, ३)। २ पुर न [पुर] वैताव्य पर्वत पर स्थित एक विद्याधर-नगर (इक)। ३ पुरी स्त्री [पुरी] नगरी-विशेष, भगवान् चन्द्रप्रम की जन्म-भूमि (पउम २०, ३४)। ४ प्पभ वि [प्रभ] १ चन्द्र के तुल्य कान्तिवाला। २ पुं आठवें जिनदेव का नाम (धर्म २)। ३ चन्द्रकान्त, मणि-विशेष (परण १)। ४ एक जैन मुनि (दस)। ५ न देवविमान-विशेष (सम ८)। ६ चन्द्र का मिहासन (आया २, १)। ७ प्पभा स्त्री [प्रभा] १ चन्द्र की एक अग्र-महिषी (ठा ४, १)। २ मदिरा-विशेष, एक जात का दाह (जीव ३)। ३ इन नाम की एक राज-कन्या (उप १०३१ टी)। ४ इस नाम की एक शिविका, जिसमें बैठकर भगवान् शीतलनाथ और महावीर-स्वामी दीक्षा के लिए बाहर निकले थे (आवम)। ५ प्पह देखो प्पभ (कप्प, सम ४३)। ६ भागा स्त्री [भागा] एक नदी (ठा ५, ३)। ७ मडल पु न [मण्डल] १ चन्द्र का मण्डल, चन्द्र का विमान (ज ७, भग)। २ चन्द्र का विम्ब (परह १, ४)। ३ मग्ग पु [मार्ग] १ चन्द्र का मण्डल-गति से परिभ्रमण। २ चन्द्र का मण्डल (सुज ११)। ३ मणि पु [मणि] चन्द्रकान्त, मणि-विशेष (विक्र १२६)। ४ माला स्त्री [माला] १ चन्द्राकार हार, चन्द्र-हार। २ छन्द-विशेष (पिंग)। ३ मालिया स्त्री [मालिका] वही पूर्वोक्त अर्थ (ओप)। ४ मुडी स्त्री [मुखी] १ चन्द्र के समान आह्लादक मुखवाली स्त्री। २ सीता-पुत्र कुश की पत्नी (पउम १०६, १२)। ५ गह पु [रथ] विद्याधर वंश का एक राजा (पउम ५, १५, ४४)। ६ रिसि पु [रूपि] एक जैन ग्रन्थकार मुनि (पच ५)। ७ लस न [लेश्य] देवविमान-विशेष (सम ८)। ८ लेहा स्त्री [लेखा] १ चन्द्र की रेखा, चन्द्रकला। २ एक राज-पत्नी (ती १०)। ९ वडिभग न [वतसक] १ चन्द्र के विमान का नाम (चद १८)। २ देखो चंडवडिसग (उत्त १३)। ३ वण्ण न [वर्ण] एक देवविमान (सम ८)। ४ वयण वि [वदन] १ चन्द्र के तुल्य आह्लादजनक मुहवाला। २ पुं.

चिआ छी [त्विष्] कान्ति, तेज, प्रभा (पङ्.) ।

चिआ देखो चियगा (सुपा २४१, महा) ।

चिइ छी [चिति] १ उपचय, पुष्टि, वृद्धि (पव २) । २ इकट्ठा करना (उत्त ६) । ३ वृद्धि, मेधा (पात्र) । ४ भीत वगैरह बनाना । ५ चिता (परह १, १—पत्र ८) । ० कम्म न [० कर्मन्] वन्दन, प्रणाम-विशेष (आव ३) ।

चिइ देखो चेइअ (उप ५६७, चैत्य १२, पंचा १) ।

चिइगा देखो चियगा (जं १) ।

चिइच्छ सक [चिकित्स] १ दवा करना, इलाज करना । २ शका करना, सशय करना । चिइच्छइ (हे २, २१, ४, २४०) ।

चिइच्छअ वि [चिकित्सक] १ दवा करनेवाला, इलाज करनेवाला । २ पु. वैद्य (मा ३३) ।

चिइय देखो चितिय, 'जेण एस सुचरियतवोवि सुचिइयजिणिदवयणोवि' (महा) ।

चिउर पु [चिकुर] १ केश, बाल (गा १८८) । २ पीत रंग का गन्धद्रव्य-विशेष (परण १७—पत्र ५२८, राय) ।

चिच १ सक [मण्डय] विभूषित करना, चिचअ १ अलंकृत करना । चिचइ, चिचअइ (हे ४, ११५, पङ्.) ।

चिचइअ वि [मण्डित] शोभित, विभूषित, अलंकृत (पउम १५, १३, सुपा ८८, महा, पात्र, प्राप, कुमा) ।

चिचइअ वि [दे] चलित, चला हुआ (दे ३, १३) ।

चिचणिआ छी [दे] देखो चिचिणी (कुमा, सुपा १२, ५८३) ।

चिचणी छी [दे] घरट्टिका, अन्न पीसने की चक्की (दे ३, १०) ।

चिचा छी [चञ्चा] १ तृण की बनाई हुई चटाई वगैरह । ० पुरिस पुं [० पुरुष] तृण का मनुष्य, जो पशु, पक्षी आदि को डराने के लिए खेतों में गाड़ा जाता है (सुपा १२४) ।

चिचा छी [दे. चिञ्चा] इमली का पेठ (दे ३, १०, पात्र, विपा १, ६, सुपा १२४, ५८२, ५८३) ।

चिचिअ वि [मण्डित] भूषित, अलंकृत (कुमा) ।

चिचिणिआ छी [दे] इमली का पेठ
चिचिणिचिचा (श्लो २६; दे ३, १०,
चिचिणी सुपा ५८४, पात्र) ।

चिचिल सक [मण्डय] विभूषित करना, अलंकृत करना । चिचिल्लइ (हे ४, ११५, पङ्.) ।

चिचिल्लिअ वि [मण्डित] विभूषित, अलंकृत, सँवारा हुआ (पात्र, कुमा) ।

चित सक [चिन्तय] १ चिन्ता करना, विचार करना । २ याद करना । ३ ध्यान करना । ४ फीकिर करना, अफसोस करना । चितेइ, चितेमि (उव, कुमा) । वकृ. चितंत, चितंत, चितित, चितयत, चितयमाण, चितेमाण (कुमा, उव; पउम १०, ४, अमि ५७, हे ४, ३२२, ३१०, सुर ४, २३) । कवकृ. चितिज्जत (गा ६५१) । संकृ. चितितं, चितिऊण (महा, गा ३५८) । कृ चितणीय, चितियव्व, चितेयव्व (उप ७३२, पचा २, पउम ३१, ७७, सुपा ४४५) ।

चित वि [चिन्त्य] चिन्तनीय, विचारणीय, विचार-योग्य (उप ६८५) ।

चितग वि [चिन्तक] चिन्ता करनेवाला, विचारक (उप पृ ३३३, ३३६ टी) ।

चितण न [चिन्तन] १ विचार, पर्यालोचन (महा) । २ स्मरण, स्मृति (उत्त ३२, महा) ।

चितणा छी [चिन्तना] ऊपर देखो (उप ६८६ टी) ।

चितणिया छी [चिन्तनिका] याद करना, चिन्तन करना (ठा ५, ३) ।

चितय वि [चिन्तक] चिन्ता करनेवाला (स ५६५, निर १, १) ।

चितव देखो चित = चितय । चितवइ (कुमा, भवि) ।

चितविय वि [चिन्तित] जिसकी चिता की गई हो वह (भवि) ।

चिता छी [चिन्ता] १ विचार, पर्यालोचन (पात्र, कुमा) । २ अफसोस, शोक, दिलगिरी (सुर २, १६१, सूत्र २, १, प्रासू ६१) । ३ ध्यान (आव ४) । ४ स्मृति, स्मरण (एदि) । ५ इष्ट प्राप्ति का संदेह (कुमा) । ० उर वि [० तुर] शोक से व्याकुल (सुर ६, ११६) । ० दिट्ठ वि [ट्ट] विचार-पूर्वक देखा हुआ (पात्र) । ० मइअ वि [० मय] चिन्ता-युक्त, 'समणे वितामइअ काऊण पिअ' (गा १३३) । ० मणि पुं [० मणि] १ मनो-वाञ्छित अर्थ को देनेवाला रत्न-विशेष, दिव्य मणि (महा) । २ वीतशोक नगरी का एक राजा (पउम २०, १४२) । ० वर वि [० पर] चिन्ता-मग्न (पउम १०, १३) ।

चितायग वि [चिन्तक] चिन्ता करनेवाला चितायग (आवम) । छी. ० गा (सुपा २१) ।

चितिय वि [चिन्तित] १ विचारित, पर्यालोचित (महा) । २ याद किया हुआ, स्मृत (गाया १, १, पङ्.) । ३ जिसकी चिता उत्पन्न हुई हो वह (जीव ३, औप) । ४ न स्मरण, स्मृति (भग ६, ३३; औप) ।

चितिर वि [चिन्तयितृ] चिन्ताशील, चिन्ता करनेवाला (आ २७, सण) ।

चिध न [चिह] १ चिह्न, लान्छन, निशानी (हे २, ५०, प्राप्र, गाया १, १६) । २ ध्वजा, पताका (पात्र) । ० पट्ट पुं [० पट्ट] निशानी रूप वस्त्र-खण्ड (गाया १, १) । ० पुरिस पु [० पुरुष] १ दाढ़ी-भूँछ वगैरह पुरुष की निशानी वाला नपुंसक, हिजड़ा । २ पुरुष का श्रेष्ठ धारण करनेवाली छी वगैरह (ठा ३, १) ।

चिधाल वि [चिहयत्] चिह्नयुक्त, निशानी-वाला (पउम १०६, ७) ।

चिधाल वि [दे] १ रम्य, सुन्दर, मनोहर । २ मुख्य, प्रधान, प्रवर (दे ३, २२) ।

चिधिय वि [चिहिन] चिह्न-युक्त (पि २६७) ।

चिफुलणी छी [दे] छी का पहनने का वस्त्र-विशेष, लहंगा (दे ३, १३) ।

चिकिच्छ देखो चिइच्छ । चिकिच्छामि (घ ४८५) । कृ चिकिच्छिअव्व (अमि १६७) ।

चिकुर देखो चिउर (पि ५०६) ।

चदिल पुं [चन्दिल] नापित, हजाम (गा २६१, दे ३, २)।

चंदुत्तरवडिसग न [चन्द्रोत्तरावतंसक] एक देवविमान (सम ८)।

चदेरी स्त्री [दे] नगरी-विशेष (ती ४५)।

चदोज्ज } न [दे] कुमुद, चन्द्र-विकासी
चदोज्जय } कमल (दे ३, ४)।

चदोत्तरण न [चन्द्रोत्तरण] कौशाम्बी नगरी का एक उद्यान (विपा १, ५—पत्र ६०)।

चदोयर पुं [चन्द्रोदर] एक राज-कुमार (धम्म)।

चंदोवग न [चन्द्रोपग] संन्यासी का एक उपकरण (ठा ४, २)।

चदोवराग पुं [चन्द्रोपराग] चन्द्र-ग्रहण, चन्द्रमा का ग्रहण, राहु-ग्रास (ठा १०, भग ३, ६)।

चद्र देखो चद (हे २, ८०, कुमा)।

चप सक [दे] चाँपना, दावना, दवाना। चंपइ (आरा २५)। कर्म. चपिजइ (हे ४, ३६५)।

चंप सक [चर्च] चर्चा करना। चंपइ (प्राप्र)। सङ्ग. चंपिऊण (वजा ६४)।

चंप सक [आ + रुह] चढ़ना। चंपइ (प्राकृ ७३)।

चंप देखो चपय (राय ३०)।

चपग पुन [चम्पक] एक देवविमान (देवेन्द्र १४२)।

चपग देखो चपय, 'असुइट्टाणे पडिया, चंपग-माला न कीरइ सीसे' (आव ३)।

चपडण न [दे] प्रहार, आघात, 'सरभसचल-तविअडगुडिअगंवासिधुरणिवहचलणचंपडणस-मुप्पइआ . . . वूलीजालोली' (विक्र ८४)।

चपण न [दे] चाँपना, दवाना (उप १३७ टी)।

चंपय पुं [चंपक] १ वृक्ष-विशेष, चम्पा का पेड़ (स १५२, भग)। २ देव-विशेष (जीव ३)। ३ न चम्पा का फूल (कुमा)। ४ माला स्त्री [माला] १ छन्द-विशेष (पिंग)। २ चम्पा के फूलों का हार (आव ३)। ३ लता स्त्री [लता] १ लताकार चम्पक वृक्ष। २ चम्पक वृक्ष की शाखा (जं १, औप)। ३ वण

न [वन] चम्पक वृक्षों की प्रधानतावाला वन (भग)।

चपयवडिमय पुं [चम्पकावतंसक] सौवर्म देवलोक में स्थित एक विमान (राय ५६)।

चपा स्त्री [चम्पा] अंग देश की राजधानी, नगरी-विशेष, जिसको आजकल 'भागलपुर' कहते हैं (विपा १, १, कप्प)। २ पुरी स्त्री [पुरी] वही अर्थ (पउम ८, १५६)।

चपा स्त्री देखो चंपय। ३ कुसुम न [कुसुम] चम्पा का फूल (राय)। ४ वण वि [वर्ण] चम्पा के फूल के तुल्य रंगवाला, सुवर्ण-वर्ण। ५ स्त्री. ७णी (अप) (हे ४, ३३०)।

चपारण (अप) पु [चम्पारण्य] १ देश-विशेष, चपारन, तिरहुत कमिश्नरी (विहार) का एक जिला। २ चपारन का निवासी (पिंग)।

चपिअ वि [दे] चाँपा हुआ, दबाया हुआ, मर्दित (सुपा १३७, १३८)।

चपिअ न [दे] आक्रमण, दबाव (तदु ४४)।

चंपिजिया स्त्री [चम्पीया] जैन मुनिगण की एक शाखा (कप्प)।

चंभ पुं [दे] हल से विदारित भूमि-रेखा (दे ३, १)।

चकप्पा स्त्री [दे] त्वक्, त्वचा, चमड़ी (दे ३, ३)।

चकिद देखो चइद (कुमा)।

चकोर पुस्त्री [चकोर] पक्षि-विशेष, चकोर पक्षी (सुपा ४५७)। स्त्री २री (रयण ४६)।

चक्र पुं [चक्र] १ पक्षि-विशेष, चक्रवाक पक्षि (पाप्र, कुमा, सण), 'तो हरिसिपुलइयंगो चको इव दिट्ठउगयपयगो' (उप ७२८ टी)।

२ न. गाड़ी का पहिया (परह १, १)। ३ समूह (सुपा १५०, कुमा)। ४ अस्त्र-विशेष (पउम ७२, ३१, कुमा)। ५ चक्राकार आभूषण, मस्तक का आभरण-विशेष (औप)।

६ व्यूह-विशेष, जैन की चक्राकार रचना-विशेष (राया १, १, औप)। ७ कत पुं [कान्त] देव-विशेष, स्वयंभूरमण समुद्र का अधिष्ठाता देव (दीव)। ८ जोहि पुं [योधिन्] १ चक्र से लड़नेवाला योद्धा (ठा ६)। २ वासुदेव, तीन खंड पृथिवी का राजा (आव १)। ३ उभय पुं [ध्वज] चक्र के निशान-वाली ध्वजा (जं १)। ४ पहु पुं [प्रभु]

चक्रवर्ती राजा (सण)। ५ पाणि पु [पाणि]

१ चक्रवर्ती राजा, सम्राट्। २ वासुदेव, अर्ध-चक्रवर्ती राजा (पउम ७३, ३)। ३ पुरा, पुरी स्त्री [पुरी] विदेह वर्ष की एक नगरी (ठा २, ३, इक)। ४ पपहु देखो पहु (सण)।

५ यर पु [चर] भिक्षुक, भोखमगा (उप ६१७)। ६ रयण न [रत्न] अस्त्र-विशेष, चक्रवर्ती राजा का मुख्य आयुध (परह १, ४)।

७ वइ पु [पति] सम्राट् (पिंग)। ८ वइ, वट्टि पुं [वर्तिन्] छ खण्ड भूमि का अधिपति राजा, सम्राट् (पिंग, सण, ठा ३, १, पडि, प्रासू १७५)। ९ वट्टित्त न [वर्तिव] सम्राट्पन, साम्राज्य (सुर ४, ६१)। १० वत्ति देखो वट्टि (पि २८६)।

११ विजय पुं [विजय] चक्रवर्ती राजा से जीतने योग्य क्षेत्र-विशेष (ठा ८)। १२ माला स्त्री [शाला] वह मकान, जहाँ तिल पेरा जाता हो, तैलिक गृह (वव १०)। १३ सुह पुं [शुभ, सुख] देव-विशेष, मानुषोत्तर पर्वत का अधिपति देव (दीव)। १४ सेण पु [सेन] स्वनाम-ख्यात एक राजा (दंस)। १५ हर पु [धर] १ चक्रवर्ती राजा, सम्राट् (सम १२६, पउम २, ८५, ४, ३६, कप्प)। २ वासुदेव, अर्ध-चक्री राजा (राज)।

चक्र न [चक्र] एक देवविमान (देवेन्द्र १३३)।

चक्रआअ देखो चक्रवाय (पि ८२)।

चक्रग पुं [चक्राङ्ग] पक्षि-विशेष (सुपा ३४)।

चक्रणभय न [दे] नारंगी का फल (दे ३, ७)।

चक्रणाहय न [दे] कर्म, तरङ्ग, कल्लोल (दे ३, ६)।

चक्रम } अक [भ्रम्] घूमना, भटकना,
चक्रम्म } भ्रमण करना। चक्रमइ (दे २, ६)। चक्रममइ (हे ४, १६१)। वक्र-चक्रमत (स ६१०)।

चक्रमविअ वि [भ्रमित] घुमाया हुआ, फिराया हुआ (कुमा)।

चक्रय देखो चक्र (परण १)।

चकल न [दे] कुरण्डल, कर्ण का आभूषण। २ दोलाफलक, हिडोला का पटिया (दे ३, २०)। ३ वि. वत्तुल, गोलाकार पदार्थ (दे

(अजि २७)। 'गर पुं [°कर] चित्रकार, चितेरा (सुर १, १०४, णाया १, ८)। 'गुत्ता स्त्री [°गुप्ता] १ देवी-विशेष, सोम-नामक लोकपाल की एक अग्र-महिषी (ठा ४, १)। २ दक्षिण रुचक पर्वत पर बसनेवाली एक दिक्कुमारी, देवी-विशेष (ठा ८)। 'पक्ख पुं [°पक्ष] १ वेणु देव नामक इन्द्र का एक लोकपाल, देव-विशेष (ठा ४, १)। २ क्षुद्र जन्तु-विशेष, चतुरिन्द्रिय कीट-विशेष (जीव १)। 'फल, 'फल्ला, 'फल्य न [°फलक] तसवीरवाला तस्ता (महा, भग १५, पि ५१६)। 'भित्ति स्त्री [°भित्ति] १ चित्र-वाली भित्ति। २ स्त्री की तसवीर (दस ८)। 'यर देखो 'गर (णाया १, ८)। 'रस पुं [°रस] भोजन देनेवाली कल्पवृक्षों की एक जाति (सम १७, पउम १०२, १२२)। 'लेहा स्त्री [°लेखा] छन्द-विशेष (अजि १३)। 'सभूय न [°सभूतीय] चित्र और संभूत नामक चारण्डाल-विशेष के वृत्तान्त वाला 'उत्तराध्ययनसूत्र' का एक अध्ययन (उत्त १२)। 'मभा स्त्री [°सभा] तसवीरवाला गृह (णाया १, ८)। 'साला स्त्री [°शाला] चित्र-गृह (हेका ३३२)। चित्तग पुं [चित्राङ्ग] पुष्प देनेवाले कल्प-वृक्षों की एक जाति (सम १७)। चित्तग देखो चित्त = चित्र (उप पृ ३०)। चित्तजाणुअ देखो चित्त-णु (प्राक् १८)। चित्तठिअ वि [दे] परितोषित, खुश किया हुआ (दे ३, १२)। चित्तण न [चित्रण] चित्र-कर्म (धर्मवि ३४)। चित्तदाउ पुं [दे] मधु-मटल, मधुपुहा (दे ३, १२)। चित्तपत्तय पुं [चित्रपत्रक] चतुरिन्द्रिय जीव की एक जाति (उत्त ३६, १४६)। चित्तपरिच्छेय वि [दे] सधु, छोटा (भग, ७, ६)। चित्तय देखो चित्त = चित्र (पात्र)। चित्तयलया स्त्री [चित्रकलता] कल्ली-विशेष (हम्मोर २८)। चित्तल वि [दे] १ मरिडत, विभूषित। २ रमणीय, सुन्दर (दे ३, ४)। चित्तल वि [चित्रल] १ चितला, कबरा,

चितकवरा (पात्र)। २ पुं जगली पशु-विशेष, हरिण के आकारवाला द्विखुरा पशु-विशेष (जीव १, परह १, १)। चित्तलि पुत्री [चित्रलिन्] साँप की एक जाति (परण १)। चित्तलिअ वि [चित्रलित, चित्रित] चित्र-युक्त किया हुआ, 'पठम विअ दिअ ह्द्वे कुड्ढो रेहाहि चित्तलिअ' (गा २०८)। चित्तविअअ वि [दे] परितोषित (पड्)। चित्तवीणा स्त्री [चित्रवीणा] वाद्य-विशेष (राय ४६)। चित्ता स्त्री [चित्रा] १ नक्षत्र-विशेष (सम २)। २ देवी-विशेष, एक विद्युत्कुमारी देवी (ठा ४, १)। ३ शत्रेन्द्र के एक लोकपाल की स्त्री, देवी-विशेष (ठा ४, १—पत्र २०४)। ४ औषधि-विशेष (सुर १०, २२३, परण १७)। चित्ताचिल्लडय } पुं [दे] जगली पशु-विशेष
चित्ताचेल्लरय } (आचा २, १, ५, ३, ४)। चित्तावडी स्त्री [चित्रपटी] वस्त्र-विशेष, छोट (बूटीदार) आदि कपडा, 'उवविट्ठा चित्ता-वडिमसूरयम्मि विवमवई कमलया य' (स ७३८)। चित्ति पुं [चित्रिन्] चित्रकार, चितेरा (कम्म १, २३)। चित्तिअ वि [चित्रित] चित्र-युक्त किया हुआ (औप, कप्प, उप ३६१ टी, दे १, ७५)। चित्तिया स्त्री [चित्रिका] स्त्री-गीता, धापद-विशेष की मादा (परण ११)। चित्ती देखो चेत्ती (मुज १०, ७)। चित्ती स्त्री [चैत्री] चैत्र मास की पूर्णिमा (इक)। चिद्दविअ } वि [दे] निर्णयित, विनाशित
चिद्दविअ } (दे ३, १३, पात्र, भवि)। चित्र देखो चिण्ण (सुपा ४; सण, भवि)। चिप्प सक [दे] १ कूटना। २ दवाना। कर्म, 'वि (?) नि-प्पिअसि ज तस्सि केणवि गोमह-वसहेण' (दे २, ६६ टी)। संक्र. चिप्पित्ता (बृह २)। चिप्पग पुन [दे] कूटी हुई छाल; गुजराती में 'चेपो' (कस २, ३० टि)। चिप्पह देखो चिविड (धर्मवि २७)। चिप्पय देखो चिप्पग (कस २, ३० टि)।

चिप्पिअ पु [दे] नपुंसक-विशेष, जन्म के समय में अग्रूठे से मर्दन कर जिसका अङ्ककोश दवा दिया गया हो वह (पव १०६ टी)। चिप्पिडय पु [दे] अन्न-विशेष (दसा ६)। चिवुअ न [चिवुरु] होठ के नीचे का अव-यव, ठोड़ी (कुमा)। चिम्भड न [चिर्भिट] खीरा, ककड़ी, फल-विशेष, गुजराती में 'चीमड्ड' (दे ६, १४८)। चिम्भडिया स्त्री [चिर्भिटिका] १ बल्ली-विशेष, ककड़ी का गाछ। २ मत्स्य की एक जाति (जीव १)। चिम्भड देखो चिम्भड (सुपा ६३०, पात्र)। चिमिड्ड } वि [चिपिट] चिपटा, बैठा हुआ,
चिमिड्ड } दवा हुआ (नाक) (णाया १, ८, पि २०७, २४८)। चिमिण वि [दे] रोमश, रोमाञ्चित, पुलकित, गद्गद (दे ३, ११, पड्)। चिय देखो चेइअ = चैत्य, 'सो अन्नया कयाइ चियपरिवाडि कुणतन्नो नयरे' (सम्मत्त १५६)। चियका } स्त्री [चिता] मुर्दे को फूँकने के
चियगा } लिए चुनी हुई लकड़ियों का ढेर (परह १, ३—पत्र ४५, सुपा ६५७, स ४१६)। चियत्त देखो चत्त (भग २, ५, १०, २, कप्प, निवृ १)। चियत्त वि [दे] १ अभिमत, सम्मत (ठा ३, ३)। २ प्रीतिकर, राग-जनक (औप)। ३ प्रीति, रुचि। ४ अप्रीति का अभाव (ठा ३, ३—पत्र १४७)। चियया देखो चियगा (पउम ६२, २३)। चियाग } देखो चाय = त्याग (ठा ५, १,
चियाय } सम १६)। चिर न [चिर] १ दीर्घ काल, बहुत काल (स्वप्न ८३, गा १४७)। २ विलम्ब, देरी (गा ३४)। ३ वि. दीर्घ काल तक रहनेवाला; 'हियइच्छियपियलमा निरा सया कस्स जायति' (वज्जा ५२)। 'आरअ वि [°कारक] विलम्ब करनेवाला (गा ३४)। 'जीवि वि [°जीविन्] दीर्घ काल तक जीनेवाला (पि ५६७)। 'जीविअ वि [°जीवित] दीर्घ काल तक जीया हुआ, बुद्ध (वाअ २, ३४)। 'ट्ठिइ, 'ट्ठिइय, 'ट्ठिइय वि [°स्थितिक]

चक्ष सक [चक्षे] चन्दन आदि का विलेपन करना। चक्षेई (वर्मवि १५)।

चक्ष पुं [चक्षे] हेमाचार्य के पिता का नाम (कुप्र २०)।

चक्ष पुं [चक्षे] समालम्भन, चन्दन वगैरह का शरीर में उपलेप (दे ६, ७६)।

चक्षर न [चक्षर] चौहट्टा, चौरात्ता, चौराहा, चौक (राया १, १, परह १, ३, नुर १, ६२, (हे २, १२ कुमा)।

चक्षरिअ पु [दे चक्षरीरु] त्रमर, नौता (पङ्)।

चक्षरिया स्त्री [चक्षरिका] १ नृत्य-विशेष (रमा)। २ देखो चक्षरी (स ३०७)।

चक्षरी स्त्री [चक्षरी] १ गीत-विशेष, एक प्रकार का गान, 'वित्यरियचक्षरीरवमुहरियउ-व्वाणमुनाने' (नुर ३, ५४), 'पारभियचक्षरी-गीया' (मुपा ५५)। २ गानेवाली टोली, गानेवाली का दूय, 'पवत्ते मयणमहूमवे निग्गयानु विचित्तवेसानु नयरचक्षरीसु', 'कह नीयचक्षरी अम्हाण चक्षरीए नमानन् परिब्रवइ' (म ४२)। ३ छन्द-विशेष (पिन)। ४ हाथ की ताली की आवाज (आव १)।

चक्षमा स्त्री [दे] वाद्य-विशेष, 'अट्टमय चक्ष-माणं, अट्टमय चक्षमावायगाण' (राय)।

चक्ष स्त्री [दे] १ शरीर पर नुगन्धि पदार्थ का लगाना, विलेपन (दे ३, १६, पात्र, ज १, राया १, १, राय)। २ तल प्रहार, हाथ की ताली (दे ३, १६, पङ्)।

चक्षार सक [उपा + लभ्] उमालम देना, उमालना देना। चक्षारइ (पङ्)।

चक्षिक् वि [दे] १ मरिहल, विभूषित, 'चटुज्जयचक्षिक्का दिसार' (दे ३, ४), 'तण्णुपहापटलचक्षिक्को' (धम्म ६ टी), 'साहू गुणरयणचक्षिक्का' (चउ ३६)। २ पुन, विलेपन, चन्दनादि सुगन्धि वस्तु का शरीर पर मनलना (हे २, ७४), 'चक्षिक्को' (पङ्), 'कुकुमचक्षिक्कुरियंगो' (पउम २८, २८ टी), 'पेच्छइ सुवन्नकलसं सुरचदण-पंकचक्षिक्' (उम ७६८ टी), 'घणलेहिद-पंकचक्षिक्को' (मुच्छ ११०)।

चक्षिक् वि [चक्षिन्] विलिप्त (चैय ८४५)। चक्षुप्प सक [अर्पय्] अर्पण करना, देना। चक्षुप्पइ (हे ४, २६)।

चक्ष सक [तच्] छिलना, काटना। चक्षइ (हे ४, १६४)।

चक्षिअ वि [तष्ट] छिला हुआ (कुमा)।

चक्ष सक [दृश्] देखना, अवलोकन करना। चक्षइ (दे ३, ४, पङ्)।

चक्ष स्त्री [चर्या] १ आचरण, वर्तन। २ चलन, गमन। ३ परिभाषा, संकेत (विसे २०४४)।

चक्षिय वि [दृष्ट] अवलोकित, देखा हुआ (महा)।

चटुअ देखो चटुअ (गा १६२)।

चटु सक [दे] काटना, अवलेह करना, 'न य अलोणियं मिल कोड चट्टेइ' (महा)।

चटु पुं न [दे] १ मूल, कुमुदा, 'जीवति उदहिण्डिया, चट्टुच्छित्ता न जीवति' (सुक्त ७०)। २ पुं चट्टा, विद्यार्थी। 'माला स्त्री [शात्ता] चट्टाला, चटमार, छोटे बालको की पाठशाला (वृह १)।

चटु वि [चट्टिन] चायनेवाला (कप्पु)।

चटु पु [दे] दाब-हस्त, काठ की कलछी, परोमने का पात्र-विशेष (दे ३, १, गा १६२ अ)।

चड सक [आ + रुह्] चढना, ऊपर बैठना, आरुह होना। चडइ (हे ४, २०६)।

सक चडिउ, चडिऊण (सुपा ११४, कुमा)।

चड पुं [दे] शिखा, चोटी (दे ३ १)।

चडक पुं न [दे] १ चटकार, चटका (हे ४, ४०६, भवि)। २ शब्द-विशेष (पउम ७, २६)।

चडकारि वि [चट्टकारिन्] 'चट्ट' शब्द करनेवाला (पवन आदि) (गठड)।

चडग देखो चडय (परण १)।

चडगर पुं [दे] १ समूह, दूय, जत्या (पउम ६०, १५, राया १, १—पत्र ४६)। २ आडम्बर, आटोप, 'महया चडगरत्तणेण अत्यकहा हणइ' (दसनि ३)।

चडचड पुं [चडचड] 'चड-चड' आवाज (विपा १, ६)।

चडचडचड अक [चडचडाय्] 'चड-चड' आवाज करना। चडचडचडति (विपा १, ६)।

चडड पुं [चटट] ध्वनि-विशेष, बिजली के गिरने की आवाज (नुर २, ११०)।

चडग न [आरोहण] चढना, ऊपर बैठना (था १४, प्रासू १०१, उप ७२८ टी, ओघ ३०, सट्टि १४२, वज्जा ५४)।

चडपड अक [दे] चटपटाना, छटपटाना, क्लेश पाना। वक्क. चडपडन (मुद्रा ७२)।

चडय पुं स्त्री [चटरु] पक्षि-विशेष, गौरैया पक्षी (दे २, १०७)। स्त्री 'या (दे ८, ३६)।

चडवेला स्त्री देखो चवेडा (परह १, २—पत्र ५३)।

चडा(यण) न [आरोहण] चढना (उम १५२)।

चडाविय वि [आरोहित] चढाया हुआ, ऊपर स्थापित, 'रखमजरजिणहरे चडाविया कणयमयकलसा' (मुणि १०६०१, नुर १३, ३६ महा)।

चडाविय वि [दे] प्रेषित, भेजा हुआ, 'चाउहिंसिपि तेणं चडाविय साहण तमा सोवि' (सुपा ३६५)।

चडिअ वि [आरुह] चढा हुआ, आरुह (मुपा १३७, १५३, १५६, हे ४, ४४५)।

चडिआर पु [दे] आटोप, आडम्बर (दे ३, ५)।

चडु पुं [चटु] १ प्रिय वचन, प्रिय वाक्य। २ व्रती का एक ग्रामन। ३ उदर, पेट। ४ पुन प्रिय संभाषण, खुशामद (हे १, ६७, प्राप्र)। 'आर वि [मार] खुशामद करने-वाला, खुशामदी (परह १, ३)। 'आरअ वि [माररु] खुशामदी (गा ६०५)।

चडुकारि वि [चटुकारिन्] खुशामदी (पिड ४१४)।

चडुत्तरिया स्त्री [दे] १ उत्तरचड। २ वाद-विवाद (मोह ७)।

चडुथारि देखो चडुकारि (पिड ४८६)।

चडुल वि [चटुल] १ चचल, चपल (मि २, ४५, पउम ४२, १६)। २ कपवाला, हिलता हुआ (मे १, ५२)।

चडुला वि [दे. चटुलरु] खण्ड-खण्ड किया हुआ, 'विडुलपचडुलगच्छिने' (सूमनि ७१)।

चिहुर पुं [चिहुर] केश, बाल (पाम; सुपा २८१)।

ची } देखो चेइअ (हे १, १५१, सार्च
चीअ } ५७, ६३)।

चीअ न [चिता] मुँ को फूँकने के लिए
चुनी हुई लकड़ियों का ढेर, 'चीए वधुस्त व
अट्टिआई खई समुच्चिणइ' (गा १०४)।

चीइ देखो चेइअ (सुर ३, ७५)।

चीड वि [दे] काला काँच की मणिवाला
(सिरि ६८०)।

चीण वि [चीन] १ छोटा, लघु, 'चीणचिमि-
ढवकभगणस' (गाया १, ८—पत्र १३३)।

२ पु म्लेच्छ देश-विशेष, चीन देश (पह १, १, स ४४३)। ३ चीन देश का निवासी,
चीनी या चीना (पह १, १)। ४ धान्य-विशेष,
ब्रीहि का भेद (सण), 'चीणाकूरं छलिया-
तक्केण दिन्' (महा)। °पट्ट पुं [°पट्ट]
चीन देश में होनेवाला वस्त्र-विशेष (पह १,
४)। °पिट्ट न [°पिट्ट] सिन्दूर-विशेष (राय,
पराण १७)।

चीणसु } पुं [चीनांशु, °क] १ कीट-विशेष,
चीणसुय } जिसके तन्तुओं से वस्त्र बनता है
(बृह १)। २ चीन देश का वस्त्र-विशेष;
'चीणसुसमूसियधयविराडय' (सुपा ३४, अणु,
जं २)।

चीया स्त्री. देखो चीअ = चिता; 'चीयाए
पक्खिउ ततो उदीविओ जलणो' (सुर ६,
८८)।

चीर न [चीर] वस्त्र-खण्ड, कपड़े का टुकड़ा
(ओष ६३ भा; आ १२, सुपा ३६१)। °कडूस-
गपट्ट पु [°कडूसकपट्ट] जैन साधुओं का
एक उपकरण, रजोहरण का बन्धन-विशेष
(निचू ५)।

चीरग पुं [चीरक] नीचे देखो (गच्छ २)।

चीरिय पु [चीरिक] १ रास्ता में पड़े हुए
चीथड़ो को पहननेवाला मनुष्य। २ फटा-टूटा
कपड़ा पहननेवाली एक साधु-जाति (गाया
१, १५—पत्र १६३)।

चीरिया स्त्री [चीरिका] नीचे देखो (सुर ८,
१८८)।

चीरी स्त्री [चीरी] १ वस्त्र-खण्ड, वस्त्र का
टुकड़ा; 'तो तेण निययवत्थचलाउ चीरीउ

करेऊण' (सुपा ५८४)। २ क्षुद्र कीट-विशेष,
मीगुर (कुमा, दे १, २६)।

चीवट्टी स्त्री [दे] मल्ली, भाला, शस्त्र-विशेष
(दे ३, १४)।

चीवर न [चीवर] वस्त्र, सन्यासियों या भिक्षुओं
के पहनने का कपड़ा (सुर ८, १८८, ठा
५, २)।

चीहाडी स्त्री [दे] चीत्कार, चिल्लाहट, पुकार,
हाथी की गर्जना या चिघाडना (सुर १०,
१८२)।

चीही स्त्री [दे] मुस्ता का तृण-विशेष (दे ३,
१४, ६२)।

चु अक [च्यु] १ मरना, जन्मान्तर में जाना।
२ गिरना। भवि. चइस्सामि (कण्)। संकृ
चइऊण, चइत्ता, चइअ (उत्त ६, ठा
८, भग)। कृ. चइयन्व (ठा ३, ३)।

चुअ अक [श्चुत्] करना, टपकना।
चुमइ (हे २, ७७)।

चुअ सक [त्यज्] त्याग करना, परिहार
करना; 'एयमट्टं मिगे चुए' (सूअ १, १, २,
१२)।

चुअ वि [च्युत] १ च्युत, मृत, एक जन्म
से दूसरे जन्म में अवतीर्ण (भग, महा, ठा
३, १)। २ विनष्ट, 'चुअकलिकलुस' (मजि
१८)। ३ भ्रष्ट, पतित (गाया १, ३)।

चुइ स्त्री [च्युति] व्यवन, मरण (राज)।

चुङ्कारपुर न [चुङ्कारपुर] एक नगर (सम्मत्त
१४५)।

चुचुअ पु [दे] शेर, अवतस, मस्तक का
भूषण (दे ३, २६)।

चुचुअ पुं [चुञ्चुक] १ म्लेच्छ देश-विशेष।
२ उस देश में रहनेवाली मनुष्य जाति
(इक)।

चुचुण पुं [चुञ्चुन] इम्य (धनी) जाति-
विशेष, एक वैश्य-जाति (ठा ६—पत्र ३५८)।

चुचुणिअ वि [दे] १ चलित, गत। २
च्युत, नष्ट (दे ३, २३)।

चुचुणिआ स्त्री [दे] गोष्ठी की प्रतिष्ठानि।

२ रमण, रति, समोग। ३ इमली का पेड़।
४ घृत-विशेष, मुष्टि-घृत। ५ यूका, खटमल,
क्षुद्र कीट-विशेष (दे ३, २३)।

चुचुमालि वि [दे] १ भालस, भालसी, दीर्घ-
सूत्री (दे ३, १८)।

चुंचुलि पु [दे] १ चुंजु चौंच। २ चुलुक,
पसर, एक हाथ का सपुटाकार (दे ३, २३)।

चुंचुलिअ वि [दे] १ भवधारित, निश्चित।
२ न. वृष्णा, लालच, सस्पृहता (हे ३, २३)।

चुंचुलिपूर पुं [दे] चुलुक चुल्लू, पसर (दे
३, १८)।

चुछ वि [दे] परिशोषित, सूखाया हुआ (दे
३, १५)।

चुछिअ वि [दे] सूखा हुआ, परिशोषित,
'बुछियगल्लं एयं, मा भत्तारं हला कुणसु'
(सुपा ३४६)।

चुंट सक [चि] फूल वगैरह को तोड़ कर
इकट्ठा करना। वक्र. चुंटंत (सुपा ३३२)।

चुंटरि वि [दे] चुननेवाला (दे ६, ११६ टी)।

चुढी स्त्री [दे] थोड़ा पानीवाला अस्त्रात जला-
शय (गाया १, १—पत्र ३३)।

चुपालय [दे] देखो चुप्पालय,
'ताव य सेज्जासु ठिओ,

चादगइलेयरो निसासमए।

चुपालएण पेच्चइ,
निवडंत रयणपज्जलिय'
(पठम २६, ८०)।

चुव सक [चुम्ब] चुम्बन करना। चुंवइ
(हे ४, २३६)। वक्र. चुंवत (गा १७६,
५१६)। कवक. चुविज्जत (से १, ३२)।
संकृ. चुविवि (मप) (हे ४, ४३६)। कृ.
चुविअन्व (गा ४६५)।

चुवण न [चुम्बन] चुम्बन, चुम्बा चुमा (गा
२१३, कपू)।

चुविअ वि [चुम्बित] १ चुम्बा लिया हुआ,
कृत-चुम्बन। २ न. चुम्बन, चुम्बा (दे ६,
६८)।

चुंबिर वि [चुम्बित] चुम्बन करनेवाला
(भवि)।

चुंभल पु [दे] शेर, अवतस, शिरो-भूषण
(दे ३, १६)।

चुक्क अक [अंश्] १ चुकना, भूल करना।
२ भ्रष्ट होना, रहित होना, वञ्चित होना।
३ सक. नष्ट करना, खण्डन करना। चुक्कइ
(हे ४, १७७, यङ्), 'सो सम्बविरइवाई-
चुक्कइ देसं च सम्बं च' (विसे २६८४)।

[^०घारिणी] चामर वीजने या डोलानेवाली स्त्री (मुपा ३३६, मुर १०, १५७)।

चमरी स्त्री [चमरी] चमर-पशु की मादा, मुरही गाय (मे ७, ४८, स ४४१, श्रौप, महा)।

चमस पुन [चमस] चमचा, कलछी, दर्वी (श्रौप, महा)।

चमुकार पु [चमत्कार] १ आश्चर्य, विस्मय, 'पेच्छागयमुरकिन्नरचितचमुकारकारय' (मुर १३, ६७)। २ विजली का प्रकाश, 'ताव य विज्जुचमुकारणतर चडचडडससदो' (मुर २, ११०)।

चमू स्त्री [चमू] १ मैना, मैन्थ, लश्कर (भावम)। २ सेना-विशेष, जिसमें ७२६ हाथी, ७२६ रथ, २१८७ घोड़े और ३६४५ पैदल हों ऐमा लश्कर (पउम ५६, ६)।

चम्म न [चर्मन्] छाल, त्वक्, चमडा, खाल (हे १, ३२, स्वप्न ७०, प्रासू १७१)। ^०किड वि [^०किट] चमडे से सीआ हुआ (भग १३, ६)। ^०कोस, ^०कोसय पुं [कोश, ^०क] १ चमडे का बना हुआ बैला २ एक तरह का चमडे का जूता (भोज ७२८, आचा २, २, ३, वव ८)। ^०कोसिया स्त्री [^०कोशिका] चमडे की बनी हुई बैली (सूत्र २, २)। ^०खडिय वि [^०खण्डिक] १ चमडे का परिधानवाला। २ सब उपकरण चमडे का ही रखनेवाला (एयाया १, १५)। ^०ग वि [^०क] चमडे का बना हुआ चर्ममय (सूत्र २, २)। ^०पक्खि पु [^०पक्षिन्] चमडे की पखवाला पक्षी (ठा ४, ४—पत्र २७१)। ^०पट्ट पु [^०पट्ट] चमडे का पट्टा, वस्त्र (विपा १, ६)। ^०पाय न [पात्र] चमडे का पात्र (भावा २, ६, १)। ^०यर पुं [^०र] मोची, चमार (म २, ६, दे २, ३७)। ^०रयण न [रत्न] चक्रवर्त्तों का रत्न-विशेष, जिसमें सुवह में बांधे हुए शालि वगैरह उसी दिन पक कर खाने योग्य हो जाते हैं (पत्र २१२)। ^०रुक्ख पु [^०वृक्ष] वृक्ष-विशेष (भग ८, ३)।

चम्मट्टि स्त्री [चर्मयष्टि] चर्म-मय यष्टि, चर्म-दण्ड, चमड़ा लगी हुई छड़ी (कप्प)।

चम्मट्टिअ अक [चर्मयष्टीय्] चर्म-यष्टि की तरह आचरण करना। वक्र. चम्मट्टिअंत (कप्प)।

चम्मट्टिल पु [चर्मस्थिल] पक्षि-विशेष (पण्ह १, १)।

चम्मर पु [चर्मकार] चमार, मोची (विसे २६८८)।

चम्मरय पुं [चर्मकारक] ऊपर देखो (प्राप)।

चम्मिय वि [चर्मित] चर्म से बँधा हुआ, चर्म-वेष्टित (श्रौप)।

चम्मेट्ट पुं [चर्मेट्ट] प्रहरण-विशेष, चमडे से वेष्टित पापाणवाला आयुध (पण्ह १, १)।

चम्मेट्टग पुस्त्री [चर्मेट्टक] शस्त्र-विशेष (राय २१)। स्त्री. ^०गा (अणु १७५)।

चय सक [त्यज्] छोड़ना, त्याग करना। चयइ (पाप्र, हे ४, ८६)। कर्म. चडवड (उव)। वक्र. चयत (मुपा ३८८)। सक. चइअ, चइड, चिच्चा, चइऊण, चइत्ता, चइत्ताणं, चइत्तु (कुमा, उत १८, महा, उवा, उत १)। कृ. चइयव (मुपा ११६, ४०५, ५२१)।

चय सक [शक्] मकना, समर्थ होना। चयइ (हे ४, ८६)। वक्र. चयत (सूत्र १, ३, ३, से ६, ५०)।

चय अक [च्यु] मरना, एक जन्म से दूसरे जन्म में जाना। चयइ (भवि), चयति (भग)। वक्र. चयमाण (कप्प)।

चय पुं [चय] १ शरीर, देह (विपा १, १, उवा)। २ ममूह, राशि, ढेर (विसे २२१६, मुपा ५७१, कुमा)। ३ इकट्ठा होना (अणु)। ४ वृद्धि (आचा)।

चय पुं [चा] इँदों की रचना-विशेष (पिड २)।

चय पु [च्यव] च्यव जन्मान्तर-गमन (ठा ८, कप्प)।

चयण न [चयन] १ इकट्ठा करना (पव २)। २ ग्रहण, उपादान (ठा २, ४)।

चयण न [त्यजन] त्याग, परित्याग (मट्टि ३६)।

चयण न [च्यवन] १ मरण, जन्मान्तर-गमन (ठा १—पत्र १६)। २ पतन, गिर जाना। ^०कप्प पु [^०कल्प] १ पतन-प्रकार, चारिय वगैरह से गिरने का प्रकार। २ शिथिल माधुमो का विहार (गच्छ १, पचमा)।

चयण न [च्यवन] च्युति, अंश, क्षय (तदु ४१)।

चर सक [चर्] १ गमन करना, चलना, जाना। २ भक्षण करना। ३ नेवना। ४ जानना। चरइ (उव, महा)। भूका चरिमु (गउड)। भवि चरिस्स (पि १७३)। वक्र. चरत, चरमाण (उत २, भग, विपा १, १)। सक. चरिअ, चरिऊण (नाट—मृच्छ १०, आवम)। हेक. चरिउ, चारए (भोष ६५, कस)। कृ. चरियव (भग ६, ३३)। प्रयो, चारियव (पण्ह १७—पत्र ४६७)।

चर पु [चर] १ गमन, गति। २ वर्तन (दस, आवम ३ दूत, जासूम (पाप्र, भवि)।

चर पुं [चर] जंगम प्राणी (कुप्र २४)।

^०चर वि [^०चर] चलनेवाला (आचा)।

चरती स्त्री [चरन्ती] जिम दिशा में भगवान् जिनदेव वगैरह जानी पुरुष विचरते हो वह (वव १)।

चरग पु [चरक] १ देखो चर=चर। २ सन्यासियों का झुण्ड विशेष, गृध्रवध घूमने वाले त्रिदण्डियों की एक जाति (भग, गच्छ २)। ३ भिक्षुओं की एक जाति (पण्ह २०)। ४ दश-मशकादि जन्तु (राज)।

चरचरा स्त्री [चरचरा] 'चर-चर' आवाज (स २५७)।

चरड पु [चरट] छुट्टे की एक जाति (धम्म १२ टो, मुपा २३२, ३३३)।

चरण पुन [चरण] १ समय, चारिय, 'सम्म-त्तनाणचरणा पत्तेय अट्टमट्टमेइत्ता' (संघोष २२)। २ आचरण (सूत्रनि १२४)।

चरण न [चरण] १ समय, चारिय, द्रत, नियम (ठा ३, १, श्रोष २, विसे १)। २ चरना, पशुओं का तृणादि-भक्षण (मुर २, ३)। ३ पत्र का चौथा हिस्सा (पिग)। ४ गमन, विहार (एदि, सूत्र १, १०, २)। ५ सेवन, आदर (जीव २)। ६ पाद, पाँव

[°पितृ] चाचा, पिता का छोटा भाई (विपा १, ३) । °माउया स्त्री [°मातृ] १ छोटी माँ, माता की छोटी सपत्नी, विमाता, सौतेली माँ (उप २६४ टी; राया १, १, विपा १, ३) । २ चाची, पिता के छोटे भाई की स्त्री (विपा १, ३—पत्र ४०) । °सगाय, °सयय पु. [°शनक] भगवान् महावीर के दश मुख्य उपासकों में से एक (उवा) । °हिमवत पु [°हिमवन्] छोटा हिमवान् पर्वत, पर्वत-विशेष (ठा २, ३, सम १२, इक) । °हिम-वंतकूड न [°हिमवत्कूट] १ क्षुद्र हिमवान्-पर्वत का शिखर-विशेष । २ पु. उसका अधिपति देव-विशेष (ज ४) । °हिमवत-गिरिकुमार पु [°हिमवद्गिरिकुमार] देव-विशेष, जो क्षुद्र हिमवत्कूट का अधिष्ठायाक है (जं ४) ।

चुल्लग न [दे] सद्रुक (कुप्र २२७, २२८) ।

चुल्लग [दे] देखो चोल्लक (आक) ।

चुल्लि स्त्री [चुल्लि, °ल्ली] चूल्हा, जिसमें चुल्ली आग रखकर रसोई की जाती है वह (दे १ ८७, मुर २, १०३) ।

चुल्ली स्त्री [दे] शिला, पाषाण-खण्ड (दे ३, १५) ।

चुल्लुच्छल्ल आक [दे] छलकना, उछलना, 'चुल्लुच्छलेइ ज होइ ऊणय, रित्तय कणकणेइ । भरियाइ रा खुम्भती मुपुर्मिन्नाणमडाई ।' (मूअनि ६६ टी) ।

चुल्लोडय पु [दे] बड़ा भाई (दे ३, १७) ।

चूअ पु [दे] स्तन-शिखा, थन का अग्र भाग, चूची (दे ३, १८) ।

चूअ पु [चून] १ वृक्ष-विशेष, आम्र, आम का गाल (गड्ड, भग, मुर ३, ४८) । २ देव-विशेष (जीव ३) । °वड्डिसग न [°वत-सक] सौधर्म-विमान-विशेष (राय) । °वड्डिसा स्त्री [°वतसा] शक्रेन्द्र की एक अग्र-महिषी, इन्द्राणी-विशेष (इक, जीव ३) ।

चूआ स्त्री [चूता] शक्रेन्द्र की एक अग्र-महिषी, इन्द्राणी-विशेष (इक, ठा ४, २) ।

चूचुअ पुन [चूचुक] स्तन का अग्र-भाग (प्राक ११) ।

चूड पु [दे] चूड़ा, बाहु-भूषण, बलयावली (दे ३, १८, ७, ५२, ५६, पात्र) ।

चूडा देखो चून्डा (मुर २, २४२, गड्ड, राया १, १, सुपा १०४) ।

चूडुल्लअ (अप) देखो चूड (हे ४ ३६५) ।

चूर सक [चूरय, चूणय] खण्ड करना, तोड़ना, टुकड़ा-टुकड़ा करना । चूरेमि (धम्म ६ टी) । भवि चूरइम्स (पि ५२८) । वक्र. चूरंत (सुपा २६१, ५६०) ।

चूर (अप) पुन [चूर्ण] चूर, भुरभुर, 'जिह गिरसिगह पडिम मिल, अन्नुवि चूर करेइ' (हे ४, ३३७) ।

चूरण देखो चुन्नण (कुप्र २०३) ।

चूरिअ वि [चूर्ण, चूर्णित] चूर-चूर किया हुआ, टुकड़ा-टुकड़ा किया हुआ (भवि) ।

चूरिम पुन [दे] मिठाई विशेष, चूर्मा लड्डू (पव ४ टी) ।

चूल° देखो चूला । °मणि न [°मणि] विद्याधरो का एक नगर (इक) ।

चूलअ [दे] देखो चूड (नाट) ।

चूला स्त्री [चूडा] १ चोटी, सिर के बीच की केश-शिखा (पात्र) । २ शिखर, टोच, 'अवि चलड मेल्चूला' (उप ७२८ टी) । ३ मयूर-शिखा । ४ कुक्कुट शिखा । ५ शेर की केसरा । ६ कुत वगैरह का अग्र भाग । ७ विभूषण, अलंकार, 'तिविहा य दव्वचूला, सच्चिता भोगगा य अच्चिता । कुक्कुड सीह मोरसिहा, चूलामणि अगकुंतादी । चूला विभूसणाति य, मिहरति य होति एगद्धा' (निक्क १) ।

८ अधिक मास । ९ अधिक वर्ष । १० अन्य का परिशिष्ट (दसन् १) । °कम्म न [°कर्मन्] संस्कार-विशेष, मुण्डन (आवम) । °मणि पुंस्त्री [°मणि] १ सिर का सर्वोत्तम आभूषण विशेष, मुकुट-रत्न शिरो मणि (औप, राय) । २ सर्वोत्तम, सर्व-श्रेष्ठ, 'तिलायचूला-मणि नमो ते' (घण १) ।

चूलिय पु [चूलिक] १ अनार्य देश-विशेष । २ उस देश का निवासी (परह १, १) । ३ स्त्रीन सख्या विशेष, चूलिकाग को चौरासी लाख से गुणने पर जो सख्या लब्ध हो वह (इक, ठा २, ४) । स्त्री °या (राज) ।

चूलियंग न [चूलिकाङ्ग] सख्या-विशेष,

प्रयुक्त को चौरासी लाख से गुणने पर जो सख्या लब्ध हो वह (ठा २, ४, जीव ३) ।

चूलिया देखो चूला (सम ६६, मुर ३, १२, रादि, निचू १; ठा ४, ४) ।

चूव (अप) देखो चूअ (भवि) ।

चूड सक [क्षिप्] फेंकना, डालना, प्रेरणा । चूड (पड) ।

चे अ [चेन्] यदि, जो, अगार (उत १६), 'एवं च कम्मो तित्थ, न चेदचेत्तोत्ति को गाहो ?' (विसे २५८६) ।

चे देखो चय = ध्यज् । चेइ, (आचा) । सक.

चेइ (कप्, ओप) ।

चे } देखो चि । चेइ चेअइ, चेए, चेअए चेअ } (पड) ।

चेअ अक [चिन्] १ चेतना, भावधान होना, ख्याल रखना । २ सुष आना, स्मरण करना, याद आना । चेअइ (स ५३८) । ३ सक, जानना । ४ अनुभव करना । चेअए (आवम) ।

चेअ मक [चेत्तय] १ ऊपर देखो । २ देना, अर्पण करना, वितरण करना । ३ करना, बनाना, 'जो अतरायं चेअइ' (सम ५१) । चेराइ, चेअसि, चेअमि (आचा) । वक्र. चेते[ए]माण (ठा ५, २—पत्र ३१४, सम ३६) ।

चेअ अ [एव] अवधारण सूचक अव्यय, निश्चय बतानेवाला अव्यय (हे २, १८४) ।

चेअ न [चेत्तस्] १ चेत, चेतना, ज्ञान, चैतन्य (विसे १६६१, भग १६) । २ मन, चित्त, अन्तःकरण (दम ५, १, ठा ६, २) ।

चेइ पु [चेडि] देश-विशेष (इक सत्त ६७ टी) । °वइ पु [°पति] चेदि देश का राजा (पिग) ।

चेइ° पुन [चैत्तय] १ चित्ता पर बनाया चेइअ हुआ स्मारक, स्तूप, कवर या कब्र वगैरह स्मृति चिह्न, 'मडयदाहेसु वा मडययूभियासु वा मडयचेइएसु वा' (आचा २, २, ३) ।

२ व्यन्तर का स्थान व्यन्तरायतन (भग, उवा, राय, निर १, १, विपा १, १, २) ।

३ जिन-मन्दिर, जिन-गृह, अर्हन्मन्दिर (ठा ४, २—पत्र ४३०, पंचमा; पचा १२, महा, द्र ४, २७), 'पडिमं कासी य चेइए रम्मे' (पव ७६) । ४ इष्ट देव की मूर्ति,

चव अक [च्यु] मरना, जन्मान्तर में जाना ।
 चवइ (हे ४, २३०) । संकृ. चविकुण
 (प्राह) । कृ. चवियव्व (ठा ३, ३) ।
 चव पु [च्यव] मरण, मौत, 'मर्लता अपुण-
 चव', (उत्त ३, १४) ।
 चवचव पुं [चवचव] 'चव-चव' आवाज,
 ध्वनि-विशेष (ओष २८६ भा) ।
 चवण न [च्यवन] १ मरण, जन्मान्तर-प्राप्ति
 (सुर २, १३६, ७, ८, ८४) । २ पतन,
 गिर जाना (बृह १) ।
 चवल वि [चपल] १ चचल, अस्थिर (सुर
 १२, १३८, प्रासू १०३) । २ आकुल, व्या-
 कुल (श्रीप) । ३ पुं रावण का एक सुभट
 (पद्म ५६, ३६) ।
 चवल पु [दे] अन्न-विशेष, बोड़ा (आ १८) ।
 चवल्य पु [दे] धान्य-विशेष, गुजराती में
 'चाळा' (पव १५४) ।
 चवला श्री [चपला] विद्युत, बिजली (जीव
 ३) ।
 चविअ वि [च्युत] मृत, जन्मान्तर-प्राप्त
 (कुमा २, २६) ।
 चविअ वि [कथित] उक्त, कहा हुआ (भवि) ।
 चविआ श्री [चविका] वनस्पति विशेष
 (पराण १७—पत्र ५३१) ।
 चविडा } श्री [चपेटा] तमाचा, धप्पड
 चविला } (हे १, १४६, कुमा) ।
 चवेला }
 चवेडी श्री [दे] १ श्लिष्ट कर-संपुट । २ संपुट,
 समुद्र, डिब्बा (दे ३, ३) ।
 चवेण न [दे] वचनीय, लोकापवाद (दे ३,
 ३) ।
 चवेला देखो चविडा (प्राह) ।
 चव्य सक [चर्व] चवाना (सलि ३४) ।
 चव्व (शौ) देखो चव्व = चर्व् । चव्वदि (प्राह
 ६३) ।
 चव्वक्खिअ वि [दे] धवलित, चूने से पोता
 हुआ; 'चव्वक्खिया य चुल्लेण नासिया (सुपा
 ४५५) ।
 चव्वण न [चर्वण] चवाना (दे ७, ८२) ।
 चव्वाइ देखो चव्वागि (राज) ।
 चव्वाक } पुं [चार्वाक] नास्तिक, बृहस्पति
 चव्वाग } का शिष्य, लोकायतिक (प्रबो
 ७८, राज) ।

चव्वागि वि [चार्वाकिन्] १ चवानेवाला ।
 २ दुर्व्यवहारी (वव ३) ।
 चव्विय वि [चर्वित] चवाया हुआ (सुर
 १३, १२३) ।
 चस सक [चष्] चखना, आस्वाद लेना ।
 वक्क. चसद (शौ) (रंभा) । हेक्क. चसिट्टुं
 (शौ) (रंभा) ।
 चसग } पुं [चषक] १ दारु पीने का प्याला
 चसय } (जं ५, पाभ) । २ पान-पात्र, प्याला
 (सुर २, ११, पद्म ११३, १०) । ३ पक्षि-
 विशेष (दे ६, १४५) ।
 चटुत्तिआ श्री [दे] डुटकी, डुटकीभर, 'जोग-
 चुएणचहत्तियामेत्तपक्खेएण' (काल) ।
 चहुट्ट अक [दे] चिपकना, चिपटना, लगना;
 गुजराती में 'चोंटवु', 'रे मूढ तुह अकज्जे
 लीलाइ चहुट्टए जहा चित्तं' (सवेग १६) ।
 चहुट्टइ (कुप्र २४६) ।
 चहुट्ट वि [दे] १ निमग्न, लीन (दे ३, २,
 वजा ३८), 'मण-ममरो-पुण तीए मुहारविदे-
 चिय चहुट्टो' (उप ७२८ टी) ।
 चहुट्ट } वि [दे] चिपका हुआ, लगा
 चहुट्टिय } हुआ (धर्मवि १४१, उप ७२८
 टी; कुप्र २७) ।
 चहोड पुं [दे] एक मनुष्य-जाति (भवि) ।
 चाइ वि [त्यागिन्] १ त्याग करनेवाला,
 छोड़नेवाला । २ दानी, दान देनेवाला, उदार
 (सुर १, २१७, ४, ११८) । ३ नि संग,
 निरीह, संयमी (आचा) ।
 चाइय वि [त्याजित] छोड़वाया हुआ (धर्मवि
 ८) ।
 चाइय वि [शक्ति] जो समर्थ हुआ हो
 (पद्म ७, १२१, सूअ १, १४), 'सब्बोवा-
 एहि जया धेत्तूण न चाइया सुदिणं । ताहे
 ते नेरइया' (पद्म ११८, २४) ।
 चाउअंगी श्री [चार्वेङ्गी] सुन्दर अंगवाली
 श्री (प्राह २६) ।
 चाउड पु [चामुण्ड] राक्षस-वश का एक
 राजा, एक लक्ष्मी-पति (पद्म ५, २६३) ।
 चाउकाल न [चतुष्काल] चार वक्त, चार
 समय (विसे २५७६) ।
 चाउकोण वि [चतुष्कोण] चार कोनावाला,
 चतुरस्र (जीव ३) ।

चाउगघंट } वि [चतुर्घण्ट] चार घंटावाला,
 चाउघट } चार घण्टाओं से युक्त (णाय
 १, १, भग ६, ३३, निर १) ।
 चाउज्जाम न [चातुर्याम] चार महाव्रत,
 साधु-धर्म—अहिंसा, सत्य, अस्तेय और अपरि-
 ग्रह ये चार साधु-व्रत (णाय १, ७, ठा ४,
 १) ।
 चाउज्जाय न [चातुर्जात] दालचीनी, तमा-
 लपत्र, इलायची और नागकेसर (उप पृ
 १०६, महा) ।
 चाउत्थिय देखो चाउत्थिय (उत्तनि ३) ।
 चाउत्थिय पुं [चातुर्थिक] राग विशेष, चौथे-
 चौथे दिन पर होनेवाला ज्वर, चौथिया
 बुखार (जीव ३) ।
 चाउइसिया श्री [चतुर्दशिका] तिथि-विशेष,
 चतुर्दशी, चौदस, 'हीणपुएणचाउइसिया'
 (उवा) ।
 चाउइसी श्री [चतुर्दशी] ऊपर देखो (भग,
 जो ३) ।
 चाउइइ (अप) त्रि. व. [चतुर्दशान्]
 चौदह, १४ (पिंग) ।
 चाउइसिं देखो चउ-इसिं (महा, सुपा ३६५)
 चाउप्पाय न [चतुष्पाद] चतुर्विध, चार
 प्रकार का (उत्त २०, २३, सुख २०, २३) ।
 चाउमास } पुं [चातुर्मास] १ चौमासा,
 चाउम्मास } जैसे आषाढ़ से लेकर कार्तिक
 तक के चार महीने (उप पृ ३६०, पंचा
 १७) । २ आषाढ़, कार्तिक और फाल्गुन
 मास की शुक्ल चतुर्दशी, 'पक्खिए चाउमासे'
 (लहुअ १६) ।
 चाउम्मासिअ वि [चातुर्मासिक] १ चार
 मास सम्बन्धी, जैसे आषाढ़ से लेकर कार्तिक
 तक के चार महीने से सम्बन्ध रखनेवाला
 (णाय १, ५, सुर १४, २२८) । २ न.
 आषाढ़, कार्तिक और फाल्गुन मास की शुक्ल
 चतुर्दशी तिथि, पर्व-विशेष (आ ४७, अजि
 ३८) ।
 चाउम्मासी श्री [चातुर्मासी] चार मास,
 चौमासा, आषाढ़ से कार्तिक, कार्तिक से
 फाल्गुन और फाल्गुन से आषाढ़ तक के चार
 महीने (पद्म ११८, ५८) ।

चोणअ न [चोदन] प्रेरण, प्रेरणा (भत ३६, उत्त २८) ।
 चोइअ वि [चोदित] प्रेरित (स १५, सुपा १५०, औप, महा) ।
 चोए सक [चोदय] १ प्रश्न करना । २ सीखना, शिक्षण देना । चोएइ, चोएह (वव १) ।
 चोक्क [दे] देखो चुक्क = (दे) (महा) ।
 चोक्ख वि [दे] चोखा, शुद्ध, शुचि, पवित्र, (गाया १, १, उप १४२ टी; वृह १, भग ६, ३३, राय, औप) ।
 चोक्खलि वि [दे] चोखाई करनेवाला, शुद्धता वाला (पिंड ६०३) ।
 चोक्खा स्त्री [चाक्षा] परिव्राजिका-विशेष, इस नाम की एक सन्यायिनी (गाया १, ८) ।
 चोज्ज न [दे] आश्चर्य, विस्मय (दे ३, १४, सुर ३, ४, सुपा १०३, सट्ठि १५६, महा) ।
 चोज्ज न [चोर्य] चोरी, चोर-कर्म, 'तहेव हिंसं अलिय, चोज्जं अवमसेवण' (उत्त ३५, ३, गाया १, १८) ।
 चोज्ज न [चोद्य] १ प्रश्न, पृच्छा । २ आश्चर्य, अद्भुत । २ वि. प्रेरणा-योग्य (गा ४०६) ।
 चोट्टी स्त्री [दे] चोटी, शिखा (दे ३, १) ।
 चोट्टु न [दे] वृत्त, फल और पत्ती का बन्धन, (विक्र २८) ।
 चोट्ट पुं [दे] वित्त, वृक्ष-विशेष, वेल का पेड़ (दे ३, १६) ।
 चोणग न [दे] १ कलह, झगडा (निचू २०) । २ काष्ठानयन आदि नघन्य कर्म (सुम्म २, २) ।
 चोत्त } पुंन [दे] प्रतोद, प्राजन-दण्ड, चोत्तअ } चावूक (दे ३, १६, पाप्र) ।
 चोद [दे] देखो चोय (परह २, ५—पत्र १५०) ।
 चोदग देखो चोअअ (शोध ४ भा) ।
 चोदणा स्त्री [चोदना] प्रेरणा, किसी प्रभाव-शाली व्यक्ति की ओर से कुछ कहने या करने के लिए होनेवाला संकेत (धम्मसं १२४०) ।
 चोप्पड सक [अक्ष] स्निग्ध करना, धी तेल वगैरह लगाना । चोप्पडइ (हे ४, १६१) ।
 वक्क. चोप्पडमाण (कुमा) ।

चोप्पड न [अक्ष] धी, तेल वगैरह स्निग्ध वस्तु, 'गेहव्ययस्स जोगं किंचिवि कणचोप्प-डाईय' (सुपा ४३०) ।
 चोप्पडिय वि [दे] चुपडा हुआ (पव ४) ।
 चोप्पाल पु [चतुप्पाल] सूर्याम देव की आयुध-शाला (राय ६३) ।
 चोप्पाल न [दे] मत्तवारण, वरणहा (जं २) ।
 चोफुज वि [दे] स्निग्ध, स्नेहवाला, प्रेम-युक्त, प्रेमी (दे ३, १५) ।
 चोय } न [दे] त्वचा, छान (परह २, चोयग } ५—पत्र १५० टी) । २ आम वगैरह का रक्षा (निचू १५, आचा २, १, १०) । ३ गन्ध द्रव्य-विशेष (अणु, जीव १, राय) ।
 चोयग देखो चोअअ (रादि) ।
 चोयणा स्त्री [चोदना] प्रेरणा (स १५, उप ६४८ टी) ।
 चोयय पुं [दे] फल-विशेष (अणु १५४) ।
 चोयालीस स्त्रीन [चतुश्चत्वारिंशत्] चौवा-लीस, ४४ (चेइय ३६२) ।
 चोर पुं [चोर] तस्कर, दूसरे का धन चुराने-वाला (हे ३, १३४, परह १, ३) । °कीड पुं [°कीट] विष्ठा में उत्पन्न होता कीट (जी १७) ।
 चोरकार पुं [चौर्यकार] चोर, तस्कर, 'चोरकारकर ज थूलमदत्त तय वज्जे' (सुपा ३३४) ।
 चोरग वि [चोरक] १ चुरानेवाला । २ पुंन वनस्पति-विशेष (परण १—पत्र ३४) ।
 चोरण न [चोरण] १ चोरी, चुराना (सुर ८, १२२) । २ वि. चोर, चोरी करनेवाला (भवि) ।
 चोरली स्त्री [दे] श्रावण मास की कृष्ण चतुर्दशी (दे ३, १६) ।
 चोराग पुं [चोराक] सनिवेश विशेष, इस नाम का एक छोटा गाँव (श्रावम) ।
 चोराव सक [चोरय] चोरी करना । चोरावेइ (प्राक ६०) ।
 चोरासी } देखो चउरासी (पि ४३६, चोरासीइ } ४४६) ।
 चोरिअ न [चौर्य] चोरी, अपहरण (हे २, १०७, ठा १, १; प्रासू ६५, सुपा ३७६) ।

चोरिअ वि [चौरिक] १ चोरी करनेवाला (पव ४१) । २ पुं. चर, जासूस (परह १, १) ।
 चोरिअ वि [चोरित] चुराया हुआ (विसे ८५७) ।
 चोरिआ स्त्री [चौर्य, चोरिका] चोरी, अपहरण (गा २०६, पट्; हे १, ३५, सुर ६, १७८) ।
 चोरिअ न [चौरिक्य] ऊपर देखो (परह १, ३) ।
 चोरी स्त्री [चौरी] चोरी, अपहरण (आ २७) ।
 चोल वि [दे] १ वामन, कुञ्ज (दे ३, १८) । २ पु. पुरुष चिह्न, लिङ्ग (पव ६१) । ३ न. गन्ध-द्रव्य-विशेष, मजिष्ठा (उर ६, ४) । °पट्ट पुं [°पट्ट] जैन मुनि का कटि-बन्ध (शोध ३४) । °य पुं [°ज] मजीठ का रंग (उर ६, ४) ।
 चोल पु [चोल] देश-विशेष, द्रविड और कलिङ्ग के बीच का देश (पिंग, सण) ।
 चोलअ न [दे] कवच, वर्म (नाट) ।
 चोलअ } न [चौल, °क] संस्कार-विशेष, चोला } मुण्डन, 'विहिणा चूलाकम्मं वालाणं चोलदं नाम' (श्रावम, परह १, २) ।
 चोलुअ देखो चालुअ (ती ५) ।
 चोलोयणग न [चूलापनयन] १ चूलोप-चोलोवणय नयन, संस्कार-विशेष, मुंडन चोलोवणयण } (गाया १, १—पत्र ३८) । २ शिखा-धारण, चूडा-धारण (भग ११, ११—पत्र ५४४, औप) ।
 चोहक [दे] देखो चाला (परह २, ४) ।
 चोहक } पुन [दे] १ भोजन (उप पृ १२, चोहग } श्रावम, उत्त ३) । २ वि. खुदक, छोटा, लघु (उप पृ ३१) ।
 चोहय पुंन [दे] पैला, बोरा, गोत, 'पर मम ममक्ख तोलेह चोल्लए', 'राइणा उक्केल्ला-वियाई चोल्लयाई' (महा) ।
 चोवत्तरि स्त्री [चतु सप्तति] सत्तर और चार, ७४ (पच ५, १८) ।
 चोवालय पुन [चतुर्द्वार] चोवारा, ऊपर का शयन-गृह, 'इमो य एगा देवी हत्थिमिठे आसत्ता । एवरं हत्थी चो—(?) चो)वाल-याओ हत्थेण अवतारेइ' (दस २, १० टी) ।
 चोव्वह देखो चोप्पड = अक्ष । चोव्वहइ (पट्) ।

चारणिआ ली [चारणिआ] गणित-विशेष (श्लोक २१ टी) ।
 चारभट्ट पुं [चारभट्ट] शूर पुरुष, लढवैया, सैनिक (परह १, २, १, ३, बृह १) ।
 चारभट्ट पु [चारभट्ट] लुटेरा (पिंड ५७६) ।
 चारय देखो चारग (मुपा २०७, ल १५) ।
 चारवाय पु [दे] ग्रीष्म ऋतु का पवन (दे ३, ६) ।
 चारहड देखो चारभट्ट (वम्म १२ टी, भवि) ।
 चारहडी ली [चारभटी] शौर्यवृत्ति, सैनिक-वृत्ति (मुपा ४४१, ४४२, हे ४, ३६६) ।
 चारागार न [चारागार] कैदखाना, जेलखाना (सुर १६, १७) ।
 चारि ली [चारि] चारा, पशुओं के खाने की चीज, घास आदि (श्लोक २३८) ।
 चारि वि [चारिन्] १ प्रवृत्ति करनेवाला । (विसे २४३ टी, उव, आचा) । २ चलने वाला, गमन शील (श्रौप, कप्पू) ।
 चारिअ वि [चारित] १ जिसको खिलाया गया हो वह (से २, २७) । २ विज्ञापित, जताया हुआ (परण १७—पत्र ४६७) ।
 चारिअ पु [चारिक] १ चर पुरुष, जासूस (परह १, २, पठम २६, ६५), 'चोरित्ति चोरित्ति य होइ जअओ परदारगामित्ति' (विसे २३७३) । २ पचायत का मुखिया पुरुष, समुदाय का अग्रमुखा (स ४०६) ।
 चारित्ति देखो चरित्त = चारिअ (श्लोक ६ भा, उप ६७७ टी) ।
 चारित्ति देखो चरित्ति (पुष्क १५७) ।
 चारियव्व देखो चर = चर ।
 चारिया ली [चर्या] १ आचरण, इशर-उवर गमन, जीविका । २ चेष्टा (उत्त १६, ८१, ८२, ८४, ८५) ।
 चारी ली [चारी] देखो चारि = चारि (स ४८७, श्लोक २३८ टी) ।
 चारु वि [चारु] १ सुन्दर, शोभन, प्रवर (उवा, श्रौप) । २ पु तीसरे जिनदेव का प्रथम शिष्य (सम १५२) । ३ न. प्रहरण-विशेष, शस्त्र-विशेष (जीव १, राय) ।
 चारुङ्गय पुं [चारुङ्गिन्] १ देश-विशेष । २ वि. उस देश का निवासी (श्रौप, अत) ।
 ली. ँणिया (श्रौप) ।

चारुणय पुं [चारुनक] ऊपर देखो (श्रौप) ।
 ली. ँणिया (श्रौप, णाया १, १) ।
 चारुवच्चि पु व. [चारुवत्ति] देश-विशेष (पठम ६८, ६४) ।
 चारुसेणी ली [चारुसेनी] छन्द-विशेष (पिंग) ।
 चाल सक [चालय्] १ चलाना, हिलाना, कँपाना । २ विनाश करना । चालेइ (उव, स ४७४, महा) । कर्म. चालिज्जइ (उव) । वक्र. चालत, चालेमाण (मुपा २२४, जीव ३) । कवक. चालिज्जमाण (णाया १, १) । हेक. चालित्तण (उवा) ।
 चालण न [चालन] १ चलाना, हिलाना (रभा) । २ विचार (विसे १००७) ।
 चालण न [चालन] शका, प्रश्न, पूर्वपक्ष (चेइय २७१) ।
 चालणा ली [चालना] शंका, पूर्वपक्ष, आक्षेप (अणु, बृह १) ।
 चालणिया ली [चालनिका] नीचे देखो (उप १३४ टी) ।
 चालणी ली [चालनी] आखा, छानने का पात्र चलनी या छलनी (भावम) ।
 चालवास पु [दे] सिर का भूषण-विशेष (दे ३, ८) ।
 चालिय वि [चालित] चलाया हुआ, हिलाया हुआ, 'पुष्फवईए चालियाए सियसकेयपडागाए' (महा) ।
 चालिर वि [चालयित्] १ चलानेवाला । २ चलनेवाला, 'खरपवणचाहुचालिरदवगिस-रिसेण पेम्मेण' (वज्जा ७०) ।
 चाली ली [चत्वारिंशत्] चालीस, ४० (उवा) ।
 चालीस लीन [चत्वारिंशत्] चालीस, ४० (महा, पिंग) ली. ँसा (ति ५) ।
 चालुक पुं [चौलुक्य] १ चालुक्य वंश में उत्पन्न । २ पुं. गुजरात का प्रसिद्ध राजा कुमारपाल (कुमा) ।
 चाव सक [चर्व] चवाना । कृ. चावयव्व (उत्त १६, ३८) ।
 चाव पुं [चाप] धनुष, कामुक (स्वप्न ५५) ।
 चावल न [चापल] चपलता, चञ्चलता (अभि २४१) ।

चावल न [चापल्य] ऊपर देखो (स ५२६) ।
 चावाली ली [चावाली] ग्राम विशेष, इस नाम का एक गाँव (भावम) ।
 चाविय वि [चर्वित] चवाया हुआ (धर्मवि ४६, १४६) ।
 चाविय वि [च्यवित] मरवाया हुआ (परह २, १) ।
 चावेडी ली [चापेटी] विद्या-विशेष, जिसमें दूसरे को तमाचा मारने पर वीमार आदमी का रोग चला जाता है (वव ५) ।
 चावेयव्व देखो चाव = चर्व ।
 चावोणय न [चापोन्नत] विमान-विशेष, एक देव-विमान (सम ३६) ।
 चास पु [चाप] पक्षि-विशेष, स्वर्ण-चातक, पपीहा, लहलहरवा (परह १, १, परण १७, णाया १, १, श्लोक ८४ भा, उर १, १४) ।
 चास पु [दे] चास, हन-विदारित भूमि रेखा, खेती (दे ३, १) ।
 चाह सक [वाञ्छ] १ चाहना, वञ्छना । २ अपेक्षा करना । ३ याचना । चाहइ, चाहसि (भवि, पिंग) ।
 चाहिणी ली [चाहिनी] हेमाचार्य की माता का नाम (कुप्र २०) ।
 चाहिय वि [वाञ्छित] १ वाञ्छित, अभिलषित । २ अपेक्षित । ३ याचित (भवि) ।
 चाहुआग पु [चाहुयान] १ एक प्रसिद्ध क्षत्रिय-वंश, चौहान वंश । २ पुं. चौहान वंश में उत्पन्न (मुपा ५५६) ।
 चि देखो चिण । कर्म चिच्चइ, चिम्मइ, चिज्जति (हे ४, २४३, भग) ।
 चिअ अ [एव] निश्चय को बतलानेवाला अव्यय, 'अणुवद त चिअ कामिणीण' (हे २, १८४, कुमा, गा १६, ४६, द १) ।
 चिअ अ [इव] १—२ उपमा और उत्प्रेक्षा का सूचक अव्यय (प्राप्र) ।
 चिअ वि [चित] १ झकड़ा किया हुआ (भग) । २ व्याप्त (मुपा २४१) । ३ पुट, मासल (उप ८७५ टी) ।
 चिअ न [चित] इंट आदि का ढेर (अणु १५४) ।
 चिअ देखो चित्त = चित प्राकृ २६) ।

‘अतेउरपुरवलवाहणेहि

वरसिरिधरेहि मुणिवसभा ।

कामेहि बहुविहेहि य

छदिज्जतावि नेच्छति’ (उव) ।

संक्र. छंदिअ (दस १०) ।

छंद पुन [छन्द] ? इच्छा, मरजी, अभिलाषा (आचा, गा २०२, स २३६, उव, प्रासू ११) ।

२ अभिप्राय, आशय (आचा, भग) । ३ वशता, अधीनता (उत्त ४, हे १, ३३) । °चारि वि [°चारिन्] स्वच्छन्दी, स्वैरी (उप ७६८ टी) । °इत्त वि [°वत्] स्वैरी (भवि) । °णुवत्तण न [°णुवत्तण] मरजी के अनुसार वरतना (प्रासू १४) । °णुवत्तय वि [°णुवत्तक] मरजी का अनुसरण करनेवाला (गाया १, ३) ।

छंद पुन [छन्दस्] ? स्वच्छन्दता, स्वैरिता (उत्त ४) । २ अभिलाष, इच्छा । ३ आशय, अभिप्राय (सूअ १, २, २, आचा, हे १, ३३) । ४ छन्द-शास्त्र (सुपा २८७, औप) । ५ वृत्त, छन्द (वज्जा ४) । °णुय वि [°ज्ञ] छन्द का जानकार (गरड) ।

छंदण पुन [छादन] ढकना, ढक्कन (राय ६६) ।

छदण न [छन्दन] निमन्त्रण (पिंड ३१०) ।

छदण न [वन्दन] वन्दन, प्रणाम, नमस्कार (गुमा ४) ।

छदणा स्त्री [छन्दना] ? निमन्त्रण (पंचा १२) । २ प्रार्थना (वृह १) ।

छदा स्त्री [छन्दा] दोषा का एक भेद, अपने या दूसरे के अभिप्राय-विशेष से लिया हुआ सन्यास (ठा २, २, पंचभा) ।

छदिअ वि [छन्दित] अनुज्ञात, अनुमत (श्रीघ ३८०) । २ निमन्त्रित (निचू २) ।

छदो° देखो छद = छन्दस् (आचा, अभि १२६) ।

छक्क वि [पट्क] छक्का, छ का समूह, ‘अतररिउछक्काअक्कता (सुपा ५१६, सम ३५) ।

छग देखो छ = षष् (कम्म ४) ।

छग न [दे] पुरीष, विष्ठा (पणह १, ३—पत्र ५४, औघ ७२) ।

छग देखो छक्क (पव २७१) ।

छगण न [स्थगन] पिधान, ढकना (वव ४) ।
छगण न [दे] गोमय, गोवर (उप ५६७ टी, पंचा १३, निचू १२) ।

छगणिया स्त्री [दे] गोईठा, कडा (अनु ५) ।
छगल पुत्री [छगल] छाग, अज, वकरा (पणह १, १, औप) । स्त्री °ली (दे २, ८४) । °पुर न [°पुर] नगर-विशेष (ठा १०) ।

छग्ग देखो छक्क (द ११) ।

छग्गुरु पु [पड्गुरु] ? एक सौ और अस्सी दिनों का उपवास । २ तीन दिनों का उपवास (ठा २, १) ।

छच्छुदर पुन [दे] छछुंदर, भूमे या चूहे की एक जाति (स १६) ।

छज्ज अक [राज्] शोभना, चमकना । छज्जइ (हे ४, १००) ।

छज्जिअ वि [राजित] शोभित, अलंकृत (कुमा) ।

छज्जिआ स्त्री [दे] पुष्प-पात्र, चगेरी (स ३३४) ।

छट्टा [दे] देखो छटा (पड्) ।

छट्ट वि [पट्ट] ? छठवाँ (सम १०४, हे १, २६५) । २ न, लगातार दो दिनों का उपवास (सुर ४, ५५) । °क्खमण न [°क्षमण, °क्षपण] लगातार दो दिनों का उपवास (अत ६, उप पृ ३४३) । °क्खमय पु [°क्षमक, °क्षपक] दो-दो दिनों का बराबर उपवास करनेवाला तपस्वी (उप ६२२) । °भत्त न [°भक्त] लगातार दो दिनों का उपवास (धर्म ३) । °भत्तिय वि [°भक्तिक] लगातार दो दिनों का उपवास करनेवाला (पणह १, १) ।

छट्टी स्त्री [पट्टी] ? तिथि-विशेष (सम २६) । २ विभक्ति-विशेष, संबन्ध-विभक्ति (रादि, हे १, २६५) । ३ जन्म के बाद किया जाता उत्सव-विशेष (सुपा ५७८) ।

छड सक [आ + रुह्] आरुह होना, चढ़ना । छडइ (पड्) ।

छडक्खर पुं [दे] स्कन्द, कात्तिकेय (दे २, २६) ।

छडछडा स्त्री [छटच्छटा] सूप (सूप) वगैरह से अन्न को भाकते समय होता एक प्रकार का अव्यक्त आवाज (गाया १, ७—पत्र ११६) ।

छडा स्त्री [दे] विद्युत, विजली (दे ३, २४) ।
छडा स्त्री [छटा] ? समूह, परम्परा (सुर ४, २४३, वा १२) । २ छोटा, पानी की बूँद (पाअ) ।

छडाल वि [छटावत्] छटावाला (पत्तम ३५, १८) ।

छडिय वि [छटित] सूप आदि में छँटा या फटका हुआ (तदु २६, राय ६७) ।

छडु सक [छर्दय्, मुच्] ? वमन करना । २ छोड़ना, त्याग करना । ३ डालना, गिराना । छडइ (हे २, ३६, ४, ६१, महा, उव) ।

कर्म. छडिज्जइ (पि २६१) । वहु छडुत (भाग) । संक्र. छडुट भूमि ए खीरं जह पियइ टुट्टमज्जारी (विसे १४७१) । छडिच्च (वव २) ।

छडुण न [छर्दन, मोचन] ? परित्याग, विमोचन (उप १७६, औघ ८६) । २ वमन, वान्ति (विपा १, ८) ।

छडुय वि [छर्दक] छोड़नेवाला (कुप्र ३१७) । २ पु. एक सेठ का नाम (कुप्र ३६६) ।

छडुवण न [छर्दन, मोचन] ? छुड़वाना, मुक्त करवाना । २ वमन कराना । ३ वि. वमन करानेवाला । ४ छुड़ानेवाला (कुमा) ।

छडुवय वि [छर्दक, मोचक] त्याग करानेवाला, त्याजक (दे २, ६२) ।

छडुवण देखो छडुवण (सुपा ५१७) ।

छडुविय वि [छर्दित, मोचित] ? वमन कराया हुआ । २ छुड़वाया हुआ (आवम, वृह १) ।

छड्ढि स्त्री [छर्दि] वमन का रोग (पड्, हे २, ३६) ।

छड्ढि स्त्री [छर्दिस्] छिद्र, हूपण, ‘जो जगइ परछड्ढि, सो नियछड्ढि कि सुयइ’ (महा) ।

छड्ढिय } वि [छर्दित, मुक्त] ? वान्त, }
छड्ढियल्लिय } वमन किया हुआ । २ त्यक्त, }
मुक्त (विसे २६०६, दे १, ४६, औप) ।

छण सक [क्षण] हिसा करना । छणे (आचा) । प्रयो. छणावेइ (पि ३१८) ।

छण सक [क्षण] छेदन करना । छणह (सूअ २, १, १७) ।

छण पुं [क्षण] ? उत्सव, मह (हे २, २०) । २ हिसा (आचा) । °चद पुं [°चन्द्र] शरद

चिह्न वि [दे] १ स्तोक, थोडा, अल्प । २ न. सुत, छोका (पङ्) ।

चिह्ना वि [चिह्ना] चिकना, स्निग्ध (पण्ड १, १, सुपा ११) । २ निबिड, घना, 'जं पाव चिह्नां तए बद्ध' (सुर १४, २०६) । ३ दुर्भेद्य, दुःख से छूटने योग्य (पण्ड १, १) ।

चिह्ना स्त्री [दे] १ थोड़ी चीज । २ हलकी भेष-वृष्टि, सूक्ष्म छोट्टा (दे ३, २१) ।

चिह्ना पु [चीत्कार] चिल्लाहट, चिघाह (सण) ।

चिह्ना देखो चिह्ना (कुमा) ।

चिह्नाअग वि [दे] सहिष्णु, सहन करने-वाला (पङ्) ।

चिह्ना पु [दे] कदम, पक, कीच (दे ३, ११, हे ३, १४२, पण्ड १, १) ।

चिह्ना न [चिह्ना] काठियावाह का एक नगर (ती २) ।

चिह्ना [दे] देखो चिह्ना (गा ६७, चिह्ना ३२४, ४४५, ६८४, औप) ।

चिह्नाअग वि [चिह्ना] चक-चकाट करना, चमकना । वक्र. चिह्नाअगत (सुर २, ८६) ।

चिह्नाअग देखो चिह्नाअग (विवे ३०) ।

चिह्नाअग न [चिह्नाअग] चिकित्सा, इलाज (उप १३५ टी) ।

चिह्नाअग देखो चिह्नाअग (स २७८, णाया १, ५—पत्र १११) ।

चिह्नाअग स्त्री [चिह्नाअग] दवा, प्रतीकार, इलाज (स १७) । °सहि्या स्त्री [°संहिता] चिकित्सा-शास्त्र, वैद्यक-शास्त्र (स १७) ।

चिह्ना वि [दे] १ चिपटी नासिकावाला, वैठी हुई नाकवाला (दे ३, ६) । २ न. रमण, सभोग, रति (दे ३, १०) ।

चिह्ना वि [त्याज्य] छोड़ने योग्य, परिहरणीय, 'खरकम्माइ पि चिह्नाइ' (सुपा ४६८) ।

चिह्ना वि [दे] चिपटी नासिकावाला (दे ३, ६) ।

चिह्ना देखो चय = त्यज् ।

चिह्ना पु [चिह्ना] चीत्कार, चिल्लाहट, भयकर आवाज, 'चिह्नीसर—' (विपा १, २—पत्र २६) ।

चिह्ना पु [दे] हुताशन, अग्नि (दे ३, १०) । चिह्ना अ [दे] अत्यन्त, अतिशय (आचा १, ४, २, २) ।

चिह्ना अक [स्था] बैठना, स्थिति करना । चिह्ना (हे १, १६) । भूका. चिह्नासु (आचा) । वक्र. चिह्नात, चिह्नामाण (कुमा, भग) । संक्र. चिह्नातं, चिह्नाऊण, चिह्नाण, चिह्नात्ता, चिह्नात्ताण (कप्प, हे ४, १६, राज, पि) । हेक्र. चिह्नात्ताए (कप्प) । कृ. चिह्नाणिज्ज, चिह्नाअन्व (उप २६४ टी, भग) ।

चिह्ना देखो चेह्ना । वक्र. चिह्नामाण (पंचा २) । चिह्नाइतु वि [स्थात्] बैठनेवाला, ठहरनेवाला (भग ११, ११, दसा ३) ।

चिह्ना न [स्थान] खडा रहना (पव २) ।

चिह्ना न [चेष्टन] चेष्टा, प्रयत्न (हि २२) ।

चिह्ना स्त्री [स्थान] स्थिति, बैठना, अवस्थान (वृह ६) ।

चिह्ना देखो चेह्ना (सुर ४, २४५, प्रासू १२५) ।

चिह्ना वि [चेष्टित] १ जिसने चेष्टा की हो वह (पण्ड १, ३, णाया १, १) । २ न. चेष्टा, प्रयत्न, (पण्ड २, ४) ।

चिह्ना वि [स्थित] १ अवस्थित, रहा हुआ । २ न. अवस्थान, स्थिति (चद २०) ।

चिह्ना पु [चिह्ना] पक्षि-विशेष (पण्ड १, १) ।

चिह्ना सक [चि] १ इकट्ठा करना । २ पून वगैरह तोडकर इकट्ठा करना । चिह्नाइ (हे ४, २३८) । भूका. चिह्नासु (भग) । भवि. चिह्नाइइ (हे ४, २४३) । कर्म चिह्नाज्जइ (हे ४, २४२) । संक्र. चिह्नाऊण, चिह्नाऊण (पङ्) ।

चिह्ना देखो चण (आ १८) ।

चिह्ना देखो चित्त (प्राकृ २६) ।

चिह्नाअ वि [चित्त] इकट्ठा किया हुआ (सुपा ३२३, कुमा) ।

चिह्नाट्टी स्त्री [दे] गुंजा, घुंघची, लाल रत्ती, गुजराती में 'चणोठी' (दे ३, १२) ।

चिह्ना वि [चीर्ण] १ आचरित, अनुष्ठित (उत्त १३) । २ अंगीकृत, आहत (उत्त ३१) । ३ विहित, कृत (उत्त १३) ।

चिह्ना न [चिह्ना] निशानी, लाछन (हे २, ५०, गउड) ।

चित्त सक [चित्रय] चित्र बनाना, तसवीर खीचना । चित्तेइ (महा) । कवक चित्तिज्जत (उप पृ ३४१) ।

चित्त न [चित्त] १ मन, अन्त करण, हृदय (ठा ४, १, प्रासू ६१, १५५) । २ ज्ञान, चेतना (आचा) । ३ बुद्धि, मति (भव ४) । ४ अभिप्राय, आशय (आचा) । ५ उपयोग, ख्याल (अणु) । °णु वि [°ज्ञ] दिल का जानकार (उप पृ १७६) । °निवाड वि [°निपातिन्] अभिप्राय के अनुसार बरतने-वाला (आचा) । °मंत वि [°वत्] सजीव वस्तु (सम ३६, आचा) ।

चित्त देखो चइत्त = चैत्र (रभा, जं २, कप्प) ।

चित्त न [चित्र] १ छवि, आलेख्य, तसवीर (सुर १, ८६, स्वप्न १३१) । २ आश्चर्य, विस्मय (उत्त १३) । ३ काष्ठ-विशेष (अनु ५) । ४ वि विलक्षण, विचित्र (गा ६१२, प्रासू ४२) । ५ अनेक प्रकार का, विविध, नानाविध (ठा १०) । ६ अद्भुत, आश्चर्य-जनक (विपा १, ६, कप्प) । ७ कवरा, चित्तकवरा (णाया १, ८) । ८ पुं एक लोकपाल (ठा ४, १—पत्र १६७) । ९ पर्वत-विशेष (पण्ड १, ५—पत्र ६४) । १० चित्रक, चीता, श्वापद विशेष (णाया १, १—पत्र ६५) । ११ नक्षत्र-विशेष, चित्रा नक्षत्र, 'हृत्यो चित्तो य तहा, दस बुद्धिकराइ नाणस्स' (सम १७) । °उत्त पु [°गुप्त] भरत क्षेत्र के एक भावी जिनदेव (सम १५४) । °कणगा स्त्री [°कनका] देवी-विशेष, एक विद्याकुमारी देवी (ठा ४, १) । °कम्म न [°कर्मन्] आलेख्य, छवि, तसवीर (गा ६१२) । °कर देखो °गर (अणु) । °कह वि [°कथ] नाता प्रकार की कथाएँ कहने-वाला (उत्त ३) । °कूड पु [°कूट] १ सीतानदी के उत्तर किनारे पर स्थित एक वक्षस्कार-पर्वत (जं ४) । २ पर्वत-विशेष (पउम ३३, ६) । ३ न. नगर-विशेष, जो आजकल मेवाह में 'चित्तौड' नाम से प्रसिद्ध है (रयण ६) । ४ शिखर-विशेष (ठा २, ३) । °कवरा स्त्री [°क्षरा] छन्द-विशेष

छल° देखो छ = पप् (कम्म ६, ६) ।
 छल सक [छलय्] ठगना, वञ्चना ।
 छलिज्जेज्जा (स २१३) । सक. छलिउ,
 छलिऊण (महा) । क. छलिअव्य (आ १४) ।
 छल न [छल] १ कपट, माया (उव) । २
 व्याज, बहाना (पात्र, प्राप् ११४) । ३ अर्थ-
 विघात, वचन-विघात, एक तरह का वचन-
 युद्ध (सूत्र १, १२) । °ययण न [°यितन]
 छल, वचन-विघात (सूत्र १, १२) ।
 छलस वि [पडस्स] पट्-कोण, छ कोणवाला
 (ठा ८) ।
 छलसिअ वि [पडस्सिअ] छ कोणवाला
 (सूत्र २, १, १५) ।
 छलण न [छलन] प्रक्षेपण, फेंकना (आचानि
 ३११) ।
 छलण न [छलन] ठगाई, वञ्चना (सुर ६,
 १८१) ।
 छलणा ली [छलना] १ ठगाई, वञ्चना
 (ओष ७८५, उप ७७६) । २ छल, माया,
 कपट (विसे २५४५) ।
 छलत्थ वि [पडर्थ] छ अर्थवाला (विसे
 ६०१) ।
 छलसीअ लीन [पडशीति] सख्या-विशेष,
 अस्सी और छ, ८६ (भग) ।
 छलसीइ ली. ऊपर देखो (सम ६२) ।
 छलिअ वि [छलित] १ वञ्चित, विप्रतारित,
 ठगा हुआ (भवि, महा) । २ शृङ्गार-काव्य ।
 ३ चोर का इशारा, तस्कर-संज्ञा (राज) ।
 छलिअ वि [दे] विदग्ध, चालाक, चतुर (दे
 ३, २४, पात्र) ।
 छलिअ न [छलिक] नाट्य-विशेष (मा ४) ।
 छलिअ वि [स्खलित] स्खलन-प्राप्त (ओष
 ७८६) ।
 छलिया देखो छालिया, 'चीणाकूरं छलियात-
 वकेण दिन्निं' (महा) ।
 छलुअ } पु. [षडुलुक] वैशेषिक मत-प्रव-
 छलुग } र्तक कणाद ऋषि (कप्प, ठा ७;
 छलूअ } विसे २३०२), 'दब्बाइछप्पयत्थो-
 वएसणाओ छलूज्जित्ति' (विसे २५०८, २४५५) ।
 छली ली [दे] त्वचा, बल्कल, छाल (दे ३,
 २४, जी १३, गा ११५, ठा ४, १, णाया
 १, १३) ।

छल्लुय देखो छलुअ (पि १४८) ।
 छव देखो छिव । छवेमि (सुपा ५७३) ।
 छवही ली [दे] चर्म, चाम, चमड़ा (दे ३,
 २५) ।
 छवि ली [छवि] १ कान्ति, तेज (कुमा,
 पात्र) । २ अंग, शरीर (परह १, १) ।
 चर्म, चमड़ी (पात्र, जीव ३) । ४ अवयव
 (पडि) । ५ अंगी, शरीरी (ठा ४, १) ६
 अलङ्कार-विशेष (अणु) । °च्छेअ पु
 [°च्छेद] अङ्ग का विच्छेद, अवयव वर्तन
 (पडि) । °च्छेयण न [°च्छेदन] अंग-
 च्छेद (परह १, १) । °त्ताण न [°त्राण]
 चमड़ी का आच्छादन, कवच, वर्म (उत्त २) ।
 छविअ वि [स्पृष्ट] छूना हुआ (आ २७) ।
 छविपव्व न [छविपव्वन्] औदारिक शरीर
 (उत्त ५, २४) ।
 छवीइय वि [छविमत्] १ कान्तिवाला ।
 २ धन, निविह (आचा २, ४, २, ३) ।
 छव्वग [दे] देखो छव्वय (राज) ।
 छव्विअ वि [दे] पिहित, आच्छादित (गउड) ।
 छह (अप) देखो छ + पप् (पि ४४१) ।
 छहत्तर वि [पट्समत] छिहत्तरवां, ७६ वां
 (पउम ७६, २७) ।
 छहत्तरि ली [पट्समति] छिहत्तर, ७६ (पव
 १६) ।
 छाअ देखो छाव (प्राक् १५) ।
 छाइअ वि [छादित] आच्छादित, ढका हुआ
 (पउम ११३, ५४, कुमा) ।
 छाइल वि [छायावत्] छायावाला, कान्ति-
 युक्त (हे २, १५६, पड्) ।
 छाइल पु [दे] १ प्रदीप, दीपक, 'जोइक्खं
 तह छाइल्लयं च दीवं मुणेजाहि' (वव ७, दे
 ३, ३५) । २ वि. सहश, समान, तुल्य । ३
 ऊन, अधूरा (दे ३, ३५) । ४ सुरूप, सुहील,
 रूपवान् (दे ३, ३५, पड्) ।
 छाई देखो छाया (पड्) ।
 छाई ली [दे] माता, देवी, देवता (दे ३,
 २६) ।
 छाउमत्थ न [छादमस्थ] छदमस्थ-अवस्था
 (सट्ठि ६ टी) ।
 छाउमत्थिय वि [छादमस्थिक] केवलज्ञान
 उत्पन्न होने के पहले की अवस्था में उत्पन्न,

सर्वज्ञता की पूर्ववस्था से संबन्ध रखनेवाला
 (मम ११; परण ३६) ।
 छाओवग वि [छाओपग] १ छाया-युक्त,
 छायावाला (वृक्षादि) २ पुं. सेवनीय पुरुष,
 माननीय पुरुष (ठा ४, ३) ।
 छागल वि [छागल] १ अज-संबन्धी (ठा ५,
 ३) । २ पुं. अज, बकरा । ली. °ली (पि
 २३१) ।
 छागलिय पुं [छागलिक] छागो से आजीविका
 करनेवाला, अजा-पालक (विपा १, ४) ।
 छाण न [दे] १ घान्य बगैरह का मलना (दे
 ३, ३४) । २ गोमय, गोबर (दे ३, ३४,
 सुर १२, १७, णाया १, ७, जीव १) । ३
 वज्र, कपड़ा (दे ३, ३४, जीव ३) ।
 छाणण न [दे] छानना, गालन, 'भूमीपेहण-
 जलछाणणाइं जयणाओ होइ न्हाणाइ' (सट्ठि
 ४५ टी) ।
 छाणवइ (अप) देखो छणवइ (पिग) ।
 छाणी ली [दे] १ घान्य बगैरह का मलन ।
 २ वज्र, कपड़ा (दे ३, ३४) । ३ गोमय,
 गोबर (दे ३, ३४, धर्म २) ।
 छाणी ली [दे] कंडा, गोबर का इन्वन (पव
 ३८) ।
 छाय वि [छात] ऋणाद्धित, धाववाला (दस
 ६, २, ७) ।
 छाय सक [छादय्] आच्छादन करना,
 ढकना । छायइ (हे ४, २१) । वक. छायंत
 (पउम ७, १४) ।
 छाय वि [दे. छात] १ बुद्धित, भूला (दे
 ३, ३३, पात्र; उप ७६८ टी, ओष २६०
 भा) । २ कृश, दुर्बल (दे ३, ३३, पात्र) ।
 छायंसि वि [छायावत्] कान्तिमान्,
 तेजस्वी (सम १५२) ।
 छायण न [छादन] आच्छादन, ढकना (पिग,
 महा, स ११) ।
 छायण न [छादन] १ घर की छत, छाजन
 (पिड ३०३) । २ ढक्कन, आवरण । ३ वज्र,
 कपड़ा (सुख ७, १५) ।
 छायणिआ } ली [दे] डेरा, पड़ाव, छावनी;
 छायणी } 'तो तथेव ठिंमो एसो कुणित्ता
 गिह्छायणि' (आ १२, महा) ।

लम्बा आयुष्यवाला, दीर्घ काल तक रहनेवाला (भग. सूत्र १, ५, १), 'एयाई फामाई फुसति वाल, निरतर तत्य चिरट्टिईय' (सूत्र १, ५, २)। 'राअ पुं [रात्र] बहु काल, दीर्घ काल (आचा)।

चिर अक [चिरय्] १ विलम्ब करना। २ आलस करना। चिरअदि (शौ) (पि ४६०)।

चिर अ [चिरम्] दीर्घ काल तक, अनेक समय तक (स्वप्न २६, जी ४६)। 'तण वि [तन] पुराना, बहुत काल का (महा)। चिराचिय वि [चिरचित] निरकाल मे उप-जित—इकट्ठा किया हुआ या बढ़ा हुआ (पत्र ५, १६७)।

चिरडी ली [दे] वर्ण-माला, अक्षरावली, 'निराडिपि अयाणता लोआ लोएहि गोरवम्-हिआ' (दे १, ६१)।

चिरट्टिहिह्ल [दे] देखो चिरिट्टिहिह्ल (पात्र)। चिरमाल सक [प्रति + पालय्] परिपालन करना। चिरमालइ (प्राकृ ७५)।

चिरया ली [दे] कुटी-भोपडी (दे ३, ११)। चिरस्स अ [चिरस्य] बहुत काल तक (उत्तर १७६, कुमा)।

चिराअ देखो चिर = चिरय्। चिरायइ (स १२६)। चिराअसि (मै६२)। भवि चिराअस्सं (गा २०)। वहु. चिराअमाण (नाट—मालती २७)।

चिराडय वि [चिरादिक] पुराना, प्राचीन (गाया १, १, औप)।

चिराईय वि [चिरातीत] पुराना, प्राचीन (विपा १, १)।

चिराउ अ [चिरात्] चिर काल से, लम्बे समय से (कुप्र ३६७)।

चिराणय (अप) वि [चिरन्तन] पुरातन, पुराना, प्राचीन (भवि)।

चिरादण वि [चिरन्तन] ऊपर देखो (वृह ३)।

चिराय अक [चिरय्] १ विलम्ब करना। २ आलस करना। ३ सक. विलम्ब कराना, रोक रखना निरावइ (भवि)। चिरावेह (काल), 'मा ये चिरावेहि' (पउम ३, १२६)।

चिराविय वि [चिरायित] १ जिसने विलम्ब किया हो वह। २ विलम्बित, रोका गया। ३ न विलम्ब, देयो: 'भणिमो चंदाभाए कि अज चिरावियं सामि!' (पउम १०५, १०१)।

चिरिचिरा ली [दे] जलधारा, वृष्टि (दे ३, १३)।

चिरिका ली [दे] १ पानी भरने का चर्म-भाजन, मशक। २ अल वृष्टि। ३ प्रात काल, मुवह (दे ३, २१)।

चिरिचिरा [दे] देखो चिरिचिरा (दे ३, १३)।

चिरिडी देखो चिरडी (गा १६१ अ)।

चिरिट्टिहिह्ल न [दे] दधि, दही (दे ३, १४)।

चिरिट्टिही ली [दे] गुआ, धु गची, लाल रत्ती (दे ३, १२)।

चिलाअ पुं [किरात्] १ अनार्य देश-विशेष। २ किरात देश मे रहनेवाली स्तेच्छ-जाति, मिल्ल, पुलिद (दे १, १८३, २५४, पएह १, १, औप, कुमा)। ३ घन सार्यवाह (व्यापारी) का एक दास—नौकर (गाया १, १८)।

चिलाइया ली [किरातिका] किरात देश की रहनेवाली ली, किरातिन (गाया १, १)।

चिलाई ली [किराती] ऊपर देखो (इक)। 'पुत्त पु [पुत्र] एक दासी-पुत्र और जैन-महर्षि (पडि, गाया १, १८)।

चिलाद देखो चिलाअ (प्राकृ १२)।

चिलिचिलिआ ली [दे] वारा, वृष्टि (पड्)।

चिलिचिलिय वि [दे] भोजा या भोगा हुआ, आद्रित, गोला (तदु ३८)।

चिलिचिलि वि [दे] आद्रं, गोला (पएह चिलिचिलि १, ३—पत्र ४५, दे ३, चिलिचिलि १२)।

चिलिण [दे] देखो चिलीण, 'छक्कायसंजमम्मि अ चिलिणे सेहन्नाहामावो' (ओष १६५)।

चिलिमिणी } ली [दे] यवनिका, परदा,
चिलिमिलिगा } आच्छादन-पट (ओष भा,
चिलिमिलिया } सूत्र २, २, ४८, कस,
चिलिमिली } ओष ७८, ८०)।

चिलीण न [दे] अशुवि, मैला, मल-मूत्र, 'सत्रंति चिलीणे मच्छिआमो घण्णचदणं मोत्तु' (उप १०३१ टी)।

चिल पु [दे] १ बाल, बच्चा, लडका (दे ३, १०)। २ चेला, शिष्य (आवम)।

चिर पु [चिर] १ वृक्ष-विशेष (राज)। २ न पुष्प-विशेष।

'पूय कुणति देवा, कचणकुसुमेणु जिणवरिदाणं। इह पुण चिल्लदलेसु, नरेण पूया विरइयवा ॥' (पउम ६६, १६)।

चिल्ल न [दे] सूर्य, सूप, छाज (प्राकृ २८)।

चिल्लअ न [दे] देदोप्यमान, चमकता, 'मंड-णोहुणप्पगारएहि केहि केहिंवि अवंगतिलय-पत्तलेहनामएहि चिल्लएहि' (अजि २८, औप)।

चिल्लग [दे] देखो चिल्लिय (पएह १, ४—पत्र ७१ टी)।

चिल्लड [दे] देखो चिल्लल (दे) (आचा २, ३, ३)।

चिल्लणा ली [चिल्लणा] एक सती ली, राजा श्रेणिक की पत्नी (पडि)।

चिल्लय न [दे] अपचक्षु, खराब आँख (पएह १, १ टी—पत्र २५)।

चिल्लल पु [चित्तल] १ अनार्य देश विशेष। २ उस देश का निवासी (इक)।

चिल्लल पुली [दे] १ श्वापद पशु-विशेष, चीता (पएह १, १—पत्र ७, गाया १, १—पत्र ६५)। ली. 'लिया (पएह ११)। न. कौंदोवाला जलाशय, छोटा तलाव आदि (गाया १, १—पत्र ६३)। ३ देदीप्यमान, चमकता (गाया १, १६—पत्र २११)।

चिल्ला ली [दे] चील, पक्षि-विशेष, शकुनिका (दे ३, ६, ८, ८, पात्र)।

चिल्लिय वि [दे] १ लोन, आसक्त (गाया १, १)। २ देदीप्यमान (गाया १, १, औप, कण्)।

चिल्लिरि पु [दे] मशक, मच्छर, क्षुद्र जन्तु-विशेष (दे ३, ११)।

चिल्लूर न [दे] मुसल, एक प्रकार की मोटी लकड़ी जिससे चावल आदि अन्न कूटे जाते हैं (दे ३, ११)।

चिल्लय पु [दे] चक्र-भाग, पहिये की लकीर, गुजराती में 'चीलो' (मुपा २८०)।

चिचिट्ट } वि [चिपिट] चिपटा, बैठा या
चिचिह } घंसा हुआ (नाक), 'चिचिहनासा' (पि २४८, पउम २७, ३२, गउड)।

चिचिडा ली [चिपिटा] गत्व-द्रव्य-विशेष (दे ३, ७१)।

चिचिह देखो चिचिह (सुर १३, १८१)।

छिच्छिकार पुं [छिच्छिकार] निवारण-सूचक
या घृणा सूचक शब्द, छि, छि (पिठ ४५१)।
छिछि अ [दे धिक्धिक्] छि छि, धिक्-
धिक्, अनेक धिक्कार (दे २, १७४, पङ्.)।
छिज्ज देखो छिद = छिद। हेक. छिज्जिउं
(तंदु)।
छिज्ज वि [छेद्य] १ खरिडत किया जा सके।
२ छेदने योग्य (सूत्र २, ५)। ३ न. छेद,
विच्छेद, द्विधाकरण, 'पावति वधवहरोहछिज्ज-
मरणावसाणाई' (श्लोक ४६ भा; पुष्प
१८६)।
छिज्जत वि [क्षीयमाण] क्षय पाता, दुबल
होता, 'छिज्जतेहि अणुदिएण, पञ्चक्खम्मि वि
तुमम्मि अंगेहि' (गा ३४७)।
छिज्जत } देखो छिद
छिज्जमाण }
छिड्ड न [छिद्र] १ छिद्र, विवर (पठम २०,
१६२, अनु ६, उप पु १३८)। २ अवकाश,
अवसर (पणह १, ३)। ३ दूषण, दोष (सुपा
३६०)। °पाणि पु [°पाणि] एक प्रकार
का जैन साधु (आचा २, १, ३)।
छिड्ड पुन [छिद्र] आकाश, गगन (भग २०,
२—पत्र ७७५)।
छिण्ण देखो छिन्न (गाया १, १८, सूत्र
१, ८)।
छिण्ण पु [दे] जार, उपपत्ति (दे ३, २७,
षड्)।
छिण्णच्छोडण न [दे] शीघ्र, तुरन्त, जल्दी
(दे ३, २६)।
छिण्णयड वि [दे] टंक से छिन्न (पाम्)।
छिण्णा स्त्री [दे] असती, कुलटा (दे ३, २७)।
छिण्णाल पु [दे] जार, यार, उपपत्ति, छिनाला
या छिनरा (दे ३, २७, षड्)।
छिण्णालिआ } स्त्री [दे] असती, कुलटा,
छिण्णाली } पुश्चली, छिनारी, छिनाल,
व्यभिचारिणी। (मृच्छ ५५, दे ३, २७)।
छिण्णोन्मवा स्त्री [दे] हूँ, दूब (घास),
दाम (दे ३, २६)।
छित्त देखो खित्त = क्षेत्र (श्रीप; उप ८३३
टी, हेका ३०)।
छित्त वि [दे] स्पष्ट, छूमा हुआ (दे ३, २७,
गा १३, सुपा ५०४, पाम्)।

छित्तर [दे] देखो छेत्तर (स ८, २२३,
उप पु ११७, ५३० टी)।
छित्ति स्त्री [छित्ति] छेद, विच्छेद, खरिडन
(विसे १४५८, लहम ५)।
छित्तु वि [छेत्त] छेदनेवाला (पव १)।
छिद देखो छिड्ड (गाया १, २, ठा ५, १,
पठम ६४, ६)।
छिद पुं [दे] छोटी मछली (दे ३, २६)।
छिदिय वि [छिद्रित] छिद्र-युक्त, छिद्रवाला
(गच्छ)।
छिन्न वि [छिन्न] १ खरिडत, नुटित, छेद-युक्त
(भग, प्रासू १४६)। २ निर्धारित, निश्चित
(बृह १)। ३ न. छेद, खरिडन (उत्त १५)।
°गय वि [°ग्रन्थ] स्नेह-रहित, स्नेह-मुक्त
(पणह २, ५)। २ पु त्यागी, साधु, मुनि,
निग्रन्थ (ठा ६)। °च्छेद्य पु [°च्छेद्य] नय-
विशेष, प्रत्येक सूत्र को दूसरे सूत्र की अपेक्षा
से रहित माननेवाला मत (णदि)। °द्वाणतर
वि [°ध्वान्तर] मार्ग-विशेष, जहाँ गाँव,
नगर वगैरह कुछ भी न हो ऐसा रास्ता (बृह
१)। °मडंवि वि [°मडम्ब] जिस गाँव या
शहर के समीप में दूसरा गाँव वगैरह न हो
(निचू १०)। °रुह वि [°रुह] काट कर
वोने पर भी पैदा होनेवाली वनस्पति (जोव
१०, पणह ३६)।
छिन्नाल वि [दे] हल की जात का बेल आदि
(उत्त २७, ७)।
छिन्नालिगा } स्त्री [दे] स्थलचर पक्षि-विशेष
छिण्णालिगा } (अंग वि. अ० ५८)। देखो
छिण्णालिआ।
छिप्प न [छिप्र] जल्दी, शीघ्र। °तूर न
[°तूर्य] शीघ्र। २ बजाया जाता एक बाजा,
तुरही (विपा १, ३, गाया १, १८)।
छिप्प न [दे] १ मिला, भोख (दे ३, ३६,
सुपा ११५)। २ पुच्छ, लागूल (दे ६, ३६,
पाम्)।
छिप्पंत देखो छिव = स्पृश।
छिप्पती स्त्री [दे] १ व्रत-विशेष। २ उत्सव-
विशेष (दे ३, ३७)।
छिप्पंदूर न [दे] १ गोमय खरिड, गोबर-
खरिड। २ वि. विषम, कठिन (दे ३, ३८)।

छिप्पाल पुं [दे] सस्यासक्त बेल, खाने में लगा
हुमा बेल (दे ३, २८)।
छिप्पालुअ न [दे] पूँछ, लागूल (दे ३,
२६)।
छिप्पिंही स्त्री [दे] १ व्रत-विशेष। २ उत्सव-
विशेष। ३ पिष्ट, पिसान (दे ३, ३७)।
छिप्पिअ वि [दे] क्षरित, झरा हुआ, टपका
हुमा (पाम्)।
छिप्पीर न [दे] पलाल, पुमाल, लृण (दे ३,
२८)।
छिप्पोली स्त्री [दे] भजादि की विष्ठा (निचू १)।
छिप्प सक [क्षिप्] फेंकना। छिप्पंति
(सूत्र १, ५, २, १२)।
छिमिछिमिछिम अक [छिमिछिमाय्]
'छिम-छिम' आवाज करना। वक्र. छिमि-
छिमिछिमंत (पठम २६, ४८)।
छिरा स्त्री [शिरा] नस, नाडी, रग (ठा २,
१, हें १, २६६)।
छिरि पुं [दे] मान की आवाज (पठम ६४,
४५)।
छिल न [दे] १ छिद्र, विवर (दे ३, ३५,
पङ्.)। २ कुटी, कुटिया, छोटा घर। ३
बाढ का छिद्र (दे ३, ३५)। ४ पलाय का
पेढ (तो ६)।
छिलर न [दे] पल्लव, छोटा तलाव (दे ३,
२८, सुर ४, २२६)।
छिलर वि [दे] भसार, छिछर, खालर।
छिल्ली स्त्री [दे] शिखा, चोटी (दे ३, २७)।
छिव सक [स्पृश्] स्पर्श करना, छूना।
छिवइ (हे ४, १८२)। कर्म. छिप्पइ, छिवि-
अइ (हे ४, २५७)। वक्र. छिवत (गा
२६६)। कवक. छिप्पंत, छिविज्जमाण
(कुमा; गा ४४३, स ६३२, आ १२)।
छिवट्ट [दे] देखो छेवट्ट (कम्म २, ४)।
छिवण न [स्पर्शन] स्पर्श, छूना (उप १८७
टी, ६७७)।
छिवा स्त्री [दे] श्लक्ष्ण कप, चीकना चाबुक,
'छिवापहारे य' (गाया १, २—पत्र ८६,
पणह १, ३, विपा १, ६)।
छिवाडिआ } स्त्री [दे] १ वस्त्र वगैरह की
छिवाडी } फली, सीम या सेम (जं १)। २
पुस्तक-विशेष, पतले पन्नेवाली ऊँची पुस्तक,

चुक् वि [अष्ट] १ चुका हुआ, भूला हुआ, विस्मृत, 'चुक्कसकेमा', 'चुक्कविणमि' (गा ३१८, १६५)। अष्ट, वञ्चित, रहित, 'दंसणमेतपसणो चुक्का सि मुहाण बहुआण' (गा ४६५, चउ ३६, सुपा ८७)। ३ अन-वहित, वे-स्थाल (से १, ६)।
 चुक् पुं [दे] मुष्टि, मुट्ठी (दे ३, १४)।
 चुक्कार पुं [दे] धावाज, शब्द (से १३, २५)।
 चुक्कुड पुं [दे] छाग, बकरा, भ्रज (दे ३, १६)।
 चुक्ख [दे] देखो चोक्ख (सूक्त ४६)।
 चुचुय } न [चुचुक] स्तन का अग्र भाग,
 चुचुय } थन का वृत्त, चूची (पणह १, ४, राय)।
 चुचुय पुं [चुचुक] स्तन का अग्र भाग, स्तनों की गोलाई, चूची (राय ६४)।
 चुच्छ वि [तुच्छ] १ अल्प, थोड़ा, हलका। २ हीन, जघन्य, नगण्य (हे १, २०४, पङ्)।
 चुज्ज न [दे] आश्चर्य (दे ३, १४, सङ्गि ८३)।
 चुडण न [दे] जीर्णता, सड़ जाना (श्रोध ३४६)।
 चुडलिअ न [दे] गुरु-वन्दन का एक दोष, रजोहरण को अनात की तरह खड़ा रखकर वन्दन करना (गुमा २५)।
 चुडली [दे] देखो चुडुली (पव २)।
 चुडिली देखो चुडुली (तदु ४६)।
 चुडुप्प न [दे] १ खाल उत्तारना (दे ३, ३)। २ धाव, क्षत (गउड)। ३ चमड़ी, त्वचा (पात्र)।
 चुडुप्पा ली [दे] त्वचा, चमड़ी, खाल (दे ३, ३)।
 चुडुली ली [दे] उल्का, अलात, जलती हुई लकड़ी, उल्मुक (दे ३, १५, पात्र, सुर १३, १५६, स २४२)।
 चुण सक [चि] घुनन, घुगना, पक्षियों का खाना। चुणइ (हे ४, २३८), 'काओ लिबो-हलि चुणइ' (सूक्त ८६)।
 चुणअ पुं [दे] १ चारहाल। २ बाल, बच्चा। ३ छन्द, इच्छा। ४ अरुचि, भोजन की

अप्रोति। ५ व्यतिकर, सम्बन्ध। ६ वि. अल्प, थोड़ा। ७ मुक्त, त्यक्त। ८ आघात, सूँघा हुआ (दे ३, २२)।
 चुणिअ वि [दे] विधारित, धारण किया हुआ (दे ३, १५)।
 चुण्ण सक [चूर्ण्य] चूरना, टुकड़ा-टुकड़ा करना। सक्र. चुणिणय (राज)।
 चुण्ण पुन [चूर्ण] १ चूर्ण, चूर, कुकनी, बारीक खण्ड (बृह १, हे १, ८४, आचा)। २ आटा, पिमान (आचा २, २, १)। ३ धूलो, रज, रेणु (दे ३, १७)। ४ गन्ध द्रव्य का रज, कुकनी (भग ३, ७)। ५ चूना (हे १, ८४, विपा १, २)। ६ वशीकरणादि के लिए किया जाता द्रव्य-मिलान (गाया १, १४)।
 °कोसय न [°कोशक] भक्ष्य-विशेष (पणह २, ५)।
 चुणग न [चौर्ण] पद विशेष, गम्भीरार्थक पद, महार्थक शब्द (दसनि २)।
 चुण्णइअ वि [दे] चूर्णाहित, चूरन से आहत, जिस प्रकार चूर्ण फेंका गया हो वह (दे ३, १७, पात्र)।
 चुण्णग पुं [चूर्णक] वृक्ष-विशेष (आचा २, १०, २३)।
 चुण्णा ली [चूर्णा] छन्द-विशेष, वृत्त-विशेष (पिग)।
 चुण्णाआ ली [दे] कला विज्ञान (दे ३, १६)।
 चुण्णासी ली [दे] दासी, नौकरानी (दे ३, १६)।
 चुणि ली [चूणि] ग्रन्थ की टीका-विशेष (निबू)।
 चुणिअ वि [चूर्णित] १ चूर-चूर किया हुआ (पात्र)। २ धूलो से व्याप्त (दे ३, १७)।
 चुणिआ ली [चूर्णिका] भेद-विशेष, एक तरह का पृथग्भाव, जैसे पिसान का अवयव अलग-अलग होता है (पणह ११)।
 चुणिणय वि [चूर्णिक] गणित-प्रसिद्ध सर्वा-वशिष्ट अंश (सुज्ज १०, २२—पत्र १८५, १२—पत्र २१६)।
 चुदस देखो चउदस (सुर ८, ११८)।
 चुन्न देखो चुण्ण (कुमा, ठा ३, ४, प्रासू १८, भाव २, पमा ३१)।

चुन्नण न [चूर्णन] चूर-चूर करना (खा ३)।
 चुन्नि देखो चुणिण (विचार ३५२, चंड)।
 चुन्निअ देखो चुणिणअ (पणह २, ४)।
 चुन्निआ देखो चुणिणआ (भास ७)।
 चुप्प वि [दे] सस्नेह, स्निग्ध (दे ३, १५)।
 चुप्पल पुं [दे] शेखर, अवतस (दे ३, १६)।
 चुप्पलिअ न [दे] नया रंगा हुआ कपड़ा (दे ३, १७)।
 चुप्पालय पुं [दे] भरोखा, गवाक्ष, वातायन, जगला (दे ३, १७)।
 चुरिम न [दे] स्वाद्य-विशेष (पव ४)।
 चुलचुल अक [चुलचुलाय्] उत्कण्ठित होना, उत्सुक होना। वक्र. चुलचुलंत (गा ४८१)।
 चुलणी ली [चुलनी] १ द्वपद राजा की ली (गाया १, १६, उप ६४८ टी)। २ ब्रह्मदत्त चक्रवर्ती की माता (महा)। °पिय पु [°पितृ] भगवान् महावीर का एक मुख्य उपासक (उवा)।
 चुलसी ली [चतुरशीति] चौरासी, अस्सी और चार, ८४ (महा, जी ४७), 'चुलसीए नागकुमारावाससयसहसेसु' (भग)।
 चुलसीइ देखो चुलसी (पउम २०, १०२, जं २)।
 चुलिआला ली [चुलियाला] छन्द विशेष (पिग)।
 चुलअ पुन [चुलुक] जुलू, पसर, एक हाथ का सपुटाकार (दे ३, १८, सुपा २१६, प्रासू ५७)।
 चुलुक देखो चालुक (दे १, ८४ टी)।
 चुलचुल अक [स्पन्द] फड़कना, फरकना, थोड़ा हिलना। चुलुलइ (हे ४, १२७)।
 चुलुचुलिअ वि [स्पन्दित] १ फरका हुआ, कुछ हिला हुआ। २ न स्फुरण, स्पन्दन (पात्र)।
 चुलुप्प पुं [दे] छाग, भ्रज, बकरा (दे ३, १६)।
 चुल पु [दे] १ शिशु, बालक। २ दास, नौकर (दे ३, २२)। ३ वि. छोटा, लघु (ठा २, ३)। °ताय पुं [°तात] पिता का छोटा भाई, चाचा (पि ३२५)। °पिउ पुं

छुरी बी [छुरी] छुरी, चाकू (दे २, ४, प्रासू ६५) ।

छुह देखो छुहु (मुपा १५६) ।

छुल्लु-छुल्लु देखो चुल्लु-छुल्लु । छुल्लु-छुल्लेइ (सूअनि ६६ टी) ।

छुव सक [छुप] स्पर्श करना छूना । कर्म छुपइ, छुविज्जइ (हे ४, २४६) । कवक छुपंत (उप ३३६, ७२८ टी) ।

छुह सक [छिप] फँकना, डालना । छुहइ (उव, हे ४, १४३) । संक छेदूण, छोदूण (स ८५, विसे ३०१) ।

छुहा बी [सुया] १ अमृत, पीयूष (हे १, २६५, कुमा) । २ खड़ी, मकान पोतने का श्वेत द्रव्य-विशेष, जूना (दे १, ७६, कुमा) । ३ अर पु [अर] चन्द्र, चन्द्रमा (पड) । छुहा बी [छुध] छुधा, भूष, वुभुक्षा (हे १, १७, दे २, ४२) ।

छुहाइअ वि [छुधित] भूषा, वुभुक्षित (पाय) ।

छुहाउल वि [छुदाकुल] ऊपर देखो (गा ५८१) ।

छुहालु वि [छुधालु] ऊपर देखो (उप १६०, १५० टी) ।

छुहिअ वि [छुधित] ऊपर देखो (उव, उप ७२८ टी, प्रासू १८०) ।

छुहिअ वि [दे] लिप्त, पोता हुआ (दे ३, ३०) ।

छुड वि [चित्त] क्षिप्त, प्रेरित (हे २, ६२, १२७, कुमा) ।

छुहिअ न [दे] पार्श्व का परिवर्तन (पड) ।

छेअ मक [छेदय] १ छिन्न करना । २ तोड़वाना, छेदवाना । कर्म छेइज्जति (पि ५४३) । संक छेएत्ता (महा) ।

छेअ पुं [दे] १ अन्त, प्रान्त, पर्यन्त (दे ३, ३८, पाय, मे ७, ४८, कम्म १, ३६) ।

२ देवर, पति का छोटा भाई (दे ३, ३८) । ३ एक देश, एक भाग (से १, ७) । ४ निविभाग अग्र (कम्म ४, ८२) ।

छेअ वि [छेक] निपुण, चतुर, हुशियार (पाय, प्रासू १७२; औप, साया १, १) ।

५ पारिय पुं [आचा] शिल्पाचार्य, कलाचार्य (भग ७, ६) ।

छेअ वि [दे छेक] १ विशुद्ध, निर्मल (पचा ३, ३५, ३८) । २ न कालोचित हित (वमं-स ५४३) ।

छेअ पुं [छेद] १ नाश, विनाश-विज्जान्छेओ कयो-मह (सुर ५, १६४) । २ खण्ड, विभाग (मे १, ७) । ३ छेदन, कर्तन, 'जोहाछेअ' (गा १५३, से ७, ४८) । ४ छ जैन आगम ग्रन्थ, वे ये हैं-निशोयसूत्र, महानिशीयसूत्र, दशा-श्रुतस्कन्ध, बृहत्कल्प, व्यवहारसूत्र, पञ्चकल्पसूत्र (विसे-२२६५) । ५ छिन्न विभाग, अलग किया हुआ अंश (से ७, ४८) । ६ कमी, न्यूनता (पजा १६) । ७ प्रायश्चित्त-विशेष (ठा ४, १) । ८ शुद्धि-परीक्षा का एक अंग, धर्म-शुद्धि जानने का एक लक्षण, निर्दोष बाह्य आचरण, 'सो छेएण मुद्धोत्ति' (पंचव ३) । ९ रिह न [रिह] प्रायश्चित्त विशेष (ठा १०) ।

छेअअ वि [छेदक] छेदन करनेवाला, छेअग काटनेवाला (नाट, विसे ५१३) ।

छेअण न [छेदन] १ खण्डन, कर्तन, द्विधा करण (सम ३६, प्रासू १४०) । २ कमी न्यूनता, हास (आचा) । ३ शख, हथियार (सूअ २, ३) । ४ निश्चायक वचन (बृह १) । ५ सूक्ष्म अवयव (बृह १) । ६ जल-जीव-विशेष (सूअ २३) ।

छेओवट्टावण न [छेदोपस्थापनीय] जैन संयम-विशेष, बड़ी दीक्षा (नव २६, पञ्जा ११) ।

छेओवट्टावणिय न [छेदोपस्थापनीय] ऊपर देखो (सक) ।

छेछई [दे] देखो छिछई (गा ३०१) ।

छेड [दे] देखो छिड (दे ३, ३५) ।

छेडा बी [दे] १ शिखा, चोटी । २ नव-मालिका, लता-विशेष (दे ३, ३६) ।

छेडी बी [दे] छोटी गली, छोटा रास्ता (दे ३, ३१) ।

छेग देखो छेअ = छेक (दे ३, ४७) ।

छेज्ज देखो छिज्ज (दसनि २, महा) ।

छेज्जा बी [छेया] छेदन-क्रिया (सूअ १, ४) ।

छेण पु [दे] स्तेन, चोर (पड) ।

छेत्त देखो खेत्त (गा ६, उप ३५७ टी, से १६४, भवि) ।

छेत्तर न [दे] सूप वगैरह पुराना गृहोपकरण (दे ३, ३२) ।

छेत्तसोवणय न [दे] खेत में जागना (दे ३, ३२) ।

छेत्तु वि [छेत्त] छेदनेवाला, काटनेवाला (आचा) ।

छेद देखो छेअ = छेदय । कर्म छेदीअति (पि ५४३) । संक छेदिऊण, छेदेत्ता (पि ५८६, भग) ।

छेद देखो छेअ = छेद (पसं ४४, ६७; औप १ वव १) ।

छेदअ वि [छेदक] छेदनेवाला (पि २३३) ।

छेदण वि [छेदन] छेदन-कर्ता । बी-णी (स ७६६) ।

छेदोवट्टावणिय देखो छेओवट्टावणिय (ठा ४, ४) ।

छेव पु [दे] १ स्यामक, चन्दनादि मुगन्धि वस्तु का विलेपन । २ चोर, चोरी करनेवाला (दे ३, ३६) ।

छेप न [दे. शेप] पुच्छ, लाङ्गूल, पूँछ (गा ६२, विपा १, २, गउड) ।

छेभय पुं [दे] चन्दन आदि का विलेपन, स्यासक (दे ३, ३२) ।

छेल पुत्री [दे] अज, छाग, बकरा (दे छेला ३, ३२, स १५०) । बी. लिआ, छेलय, ली (पि २३१, परह १, १-पञ् १४) ।

छेलावण न [दे] १ उत्कृष्ट हर्ष-वर्णि । २ बाल क्रीडन । ३ चीत्कार, ध्वनि-विशेष, 'छेलावणमुक्किट्टाइ बालकीलावण-ज सँदाइ' (आवम) ।

छेलिय न [दे] सेरिटत, नाक छीकने का शब्द, अव्यक्त-ध्वनि-विशेष (परह १, ३-विसे ५०१) ।

छेली बी [दे] थोड़े फूलवाली माला (दे ३, ३१) ।

छेवण न [दे] महामारी या मारी वगैरह फैली हुई बीमारी (वव ५, निव १) ।

छेवट्ट न [दे. सेवार्त्त, छेदवृत्त] १ छेवट्ट सहनन-विशेष, शरीर-रचना-विशेष, जिसमें मर्कट-वन्ध, वेठन और खोला में होकर

यो ही हड्डियाँ आपस में जुड़ी हो ऐसी

अमोष्ट देवता की प्रतिमा, 'कल्लाण मंगलं चेइयं पज्जुवासामो' (अप, भग) । ५ अहं-प्रतिमा, जिन-देव की मूर्ति (ठा ३, १, उवा, पएह २, ३, आव २, पडि), 'विइएण उप्पाएण नदीसरवरे दीवे ममोसरण करेइ, तहि चेइयाइ वदइ' (भग २०, ६), 'जिण-विवे मंगलचेइयति सययन्नुणो विति' (पव ७६) । ६ स्यान, वगोचा, 'मिहिलाए चेइए वच्छे भीअच्छाए मणोरमे' (उत्त ६६) । ७ समा-वृक्ष, सभा-गृह के पाम का वृक्ष । ८ चवूतरा-वाला वृक्ष । ९ देवो का चिह्न-भूत वृक्ष । १० वह वृक्ष जहाँ जिनदेव को केवल ज्ञान उत्पन्न होता है (ठा ८ सम १३, १५६) । ११ वृक्ष, पेड़, 'वाएण हीरमाणम्मि चेइयम्मि मणोरमे' (उत्त ६, १०) । १२ यज्ञ स्यान । १३ मनुष्यो का विश्राम-स्थान (पड्, हे २, १०७) । 'खभ पुं [स्तम्भ] स्तूप, धूम, (सम ६३, राय, सुज्ज १८) । 'घर न [गृह] जिन-मन्दिर, अहंमन्दिर (पउम २, १२, ६४, २६) । 'जत्ता ली [यात्रा] जिन-प्रतिमा-सम्बन्धी महोत्सव-विशेष (धर्म ३) । 'धूम पुं [स्तूप] जिन-मन्दिर के समीप का स्तूप (ठा ४, २, ज १) । 'द्वय न [द्रव्य] देव-द्रव्य, जिन-मन्दिर-संबन्धी स्थावर या जगम मिल्कत (वव ६, पञ्चमा, उव १०७, द्र ४) । 'परिवादी ली [परि-पाटी] क्रम से जिन मन्दिरों की यात्रा (धर्म २) । 'मह पुं [मह] चैत्य-सम्बन्धी उत्सव (आवा २, १, २) । 'स्क्ख पु [वृक्ष] १ चवूतरावाला वृक्ष, जिसके नीचे चौतरा बाधा हो ऐसा वृक्ष । २ जिन-देव को जिसके नीचे केवल ज्ञान उत्पन्न होता है वह वृक्ष । ३ देवताओं का चिह्न भूत वृक्ष । ४ देव-सभा के पास का वृक्ष (सम १३, १५६, ठा ८) । 'वन्दण न [वन्दन] जिन-प्रतिमा की मन, वचन और काया से स्तुति (पव १, सघ १, ३) । 'वदणा ली [वन्दना] वही पूर्वोक्त अर्थ (सघ १) । 'वास पु [वाम] जिन मन्दिर में यतियों का निवास (वस) । 'हर देखो 'घर (जीव १, पउम ६५, ६२, सुपा १३, द्र ६५, उवर १६०) । चेइअ वि [चेतित] कृत, विहित, 'तत्थ २

अगारीहि अगाराइं चेइआइं भवति' (आवा २, १, २, २), 'चेइअं कइमेगट्ट' (वृह २, कस) । चेंघ देखो चिंघ (प्राप्र) । चेच्चा देखो चे = त्यज् । चेट्ट अक [चेष्ट] प्रयत्न करना, आचरण करना । वकृ चेट्टमाण (काल) । चेट्ट देखो चिट्ट = स्था (दे १, १७४) । चेट्टण न [स्थान] स्थिति, अवस्थान (वव ४) । चेट्टण देखो चिट्टण = चेष्टन (उपयं ११) । चेट्टा ली [चेष्टा] प्रयत्न, आचरण (ठा ३, १, सुर २, १०६) । चेट्टिय देखो चिट्टिय = चेष्टित (अप, महा) । चेड पुं [दे] बाल, कुमार, शिशु (दे ३, १०, णाया १, २, वृह १) । चेड } पुं [चेट, क] १ दास, नौकर चेडग } (अप, कप्प) । २ नृप-विशेष, चेडय } वैशालिका नगरी का एक स्वनाम प्रसिद्ध राजा (आवा १, भग ७, ६, महा) । ३ मैला देवता, देव की एक जघन्य जाति (सुपा २१७) । चेडिआ ली [चेटिका] दासी, नौकरानी (भग ६, ३३, कप्प) । चेडी ली [चेटी] ऊपर देखो (आवम) । चेडी ली [दे] कुमारी, बाला, लडकी (पाप्र) । चेत्त न [चैत्य] चैत्य-विशेष (पड्) । चेत्त पुं [चैत्र] १ मास-विशेष, चैत मास (सम २६, हे १, १५२) । २ जैन मुनियों का एक गच्छ (वृह ६) । चेत्ती ली [चैत्री] १ चैत मास की पूर्णिमा । २ चैत मास की अमावस (सुज १०, ६) । चेदि देखो चेइ (सण) । चेदीस पु [चेदीश] चेदि देश का राजा (सण) । चेयग वि [चेतक] दाता, देनेवाला (उप ६५७) । चेयण पुं [चेतन] १ आत्मा, जीव, प्राणी (ठा ४, ४) । २ वि. चेतनावाला, ज्ञानवाला; 'भुवि चेयणं च किमह्वं' (विसे १८४५) । चेयणा ली [चेतना] ज्ञान, चेत, चैतन्य, सुष, ह्याल (आव ६, सुर ४, २४५) । चेयण } न [चैतन्य] ऊपर देखो (विसे चेयन्न } ४७५, सुपा २०, सुर १४, ८) । चेयस देखो चेअ = चेतस्,

'ईसादासेण आविट्ठे, कलुपाविलवेयसे । जे अतरायं चेएइ, महामोह पकुव्वइ' (सम ५१) । चेया देखो चेयणा, 'पत्तेयमभावाप्रो, न रेणु-तेल्ल व समुदए चेया' (विसे १६५२) । चेळ } न [चेळ] वल्ल, कपडा (आवा चेळय } अप) । 'कण्ण न [कर्ण] व्यजन-विशेष, एक तरह का पंखा (म ५४६) । 'गोल न [गोल] वल्ल का गेंद कन्दुक (सूय १, ४, २) । 'हर न [गृह] तम्बू, पट-मण्डप, रावटी (स ५३७) । चेलय न [दे] तुला-पात्र, 'दिट्ठील्लाए भुवणं, तुलति जे चित्तचेलए निहिय' (वजा ५६) । चेलिय देखो चेळ, 'रयणकचणचेलियवहुवन्त-भरमरिया' (पउम ६६, २५, आवा) । चेलुं प न [दे] मुसल, मूपल (दे ३, ११) । चेळ } [दे] देखो चिह्न (दे) (पउम ६७, चेळअ } १३, १६, स ४६६, वसति १, उप २६८) । चेहग } [दे] देखो चिह्न (पएह १, चेहय } ४—पत्र ६८, ती ३३) । चेव अ [एव, चैव] १ अवधारण सूचक अव्यय, निश्चयदर्शक शब्द, 'जो कुराड परम्स दुहं पावइ त चेव सो अणंत-गुण' (प्रासू २६, महा), 'अवहारणे चेवसद्दो य' (विसे ३५६५) । २ पाद-पूरक अव्यय (पउम ८, ८८) । चेव अ [इव] सादृश्य-द्योतक अव्यय, 'पेच्छइ गणहरवसह सरयग्गि चेव तेएण' (पउम ३, ४, उत्त १६, ३) । चो देखो चउ (हे १, १७१, कुमा, सम ६०, अप, भग, णाया १, १, १४, विपा १, १, सुर १४, ६७) । आला ली [चत्वारि-शत्] चालीम और चार, ४४ (वसे २३०४) । 'वट्ठि ली [पट्टि] चौसठ, ६४ (कप्प) । 'वत्तरी ली [सप्तति] सत्तर और चार, ७४ (सम ८४) । चोअ सक [चोदय्] १ प्रेरणा करना । २ कहना । चोएइ (उव, स १५) । कवकृ. चोइज्जंत, चोइज्जमाण (सुर २, १०, णाया १, १६) । सकृ चोइऊण (महा) । चोअअ वि [चोदक] प्रेरक, प्रश्न-कर्ता, पूर्व-पक्षी (अणु) ।

विपा १, १) । °वि अ [°अपि] जो भी (महा) ।

जइ अ [यत्र] जहाँ, जिस स्थान में (षट्) ।
जइ वि [जयिन्] जीतनेवाला, विजयी (कुमा) ।

जइअव्व वि [जेतव्य] जीतने योग्य (प्रवि १२) ।

जइआ अ [यदा] जिस समय, जिस वक्त (उव, हे ३, ६५) ।

जइच्छा स्त्री [यदृच्छा] १ स्वतन्त्रता । २ स्वेच्छाचार (राज) ।

जइण वि [जैन] १ जिन-देव का भक्त, जिन-धर्मी । २ जिन भगवान् का, जिन-देव से संबन्ध रखनेवाला (विसे ३८३, धम्म ६ टी, सुर ८, ६४) । स्त्री. °णी (पचा ३) ।

जइण वि [जयिन्] जीतनेवाला, 'भरणपवरण-जइणवेग' (उवा, णाया १, १—पत्र ३१) ।

जइण वि [जयिन्] वेगवला, वेग-युक्त, त्वरा-युक्त, 'उवइयत्तप्पइयचवलजइणसिग्घवे-गाहि' (श्रौप) ।

जइत्त वि [जैत्र] १ जीतनेवाला, विजयी (ठा ६) । २ पु. नृप-विशेष (रंभा) ।

जइत्ता देखो जय = जि ।

जइय वि [जयिक] जयावह, विजयी (णाया १, ८—पत्र १३३) ।

जइय वि [यष्टृ] याग करनेवाला, 'तुब्भे जइया जन्नाए' (उत्त २५, ३८) ।

जययव्व देखो जय = यत् ।

जइवा अ [यदि वा] अथवा, या (वव १) ।

जइम्म (अप) वि [यादृश] जैसा, जिस तरह का (षट्) ।

जउ न [जतु] लाक्षा, लाख, लाह (ठा ४, ४, उप पु २४) ।

जउ पु [यदु] १ स्वनाम-ख्यात एक राजा । २ सुप्रसिद्ध क्षत्रिय वंश (उव) । °णदण पु [°नन्दन] १ यदुवंशीय, यदुवंश में उत्पन्न । २ श्रीकृष्ण (उव) ।

जउ पुं [यजुष्] वेद-विशेष, यजुर्वेद (अणु) ।

जउण पुं [यमुन] स्वनाम-प्रसिद्ध एक राजा (उप ४५७) ।

जउण स्त्री [यमुना] भारत की एक जँउण° } प्रसिद्ध नदी, जमुना (ठा १, २, हे जँउणा } १, ४, १७८) ।

जउणा देखो जँउणा (वज्जा १२२, प्राक् ११) ।

जओ अ [यत्] १ क्योंकि, कारण कि, चूँकि (आ २८) । २ जिससे, जहाँ से (प्रासू ८२, १४८) ।

ज अ [यत्] १ क्योंकि, कारण कि । २ वाक्यान्तर का संबन्ध-सूचक अव्यय (हे १, २४, महा, गा ६६) । °किंचि अ [°किञ्चित्] १ जो कुछ, जो कोई (पडि, परह १, ३) । २ असंबद्ध, अयुक्त, तुच्छ, नगण्य (पचव ४) ।
जकयसुकय वि [टे] अल्प सुकन से ग्राह्य, थोड़े उपकार से अधीन होनेवाला (दे ३, ४५) ।

जंगम वि [जगम] १ चलनेवाला, जो एक स्थान से दूसरे स्थान में जा सकता हो वह (ठा ६, भवि) । २ छन्द-पिशेष (पिंग) ।

जंगल पु [जङ्गल] १ देश विशेष, सपादलक्ष देश (कुमा, सत्त ६७ टी) । २ निर्जल प्रदेश (बृह १) । ३ न मास, 'गयकुभवियारिय-मोत्तिएहि जं जंगल किएइ' (वज्जा ४२) ।

जंगा स्त्री [टे] गोचर-भूमि, पशुओं को चरने की जगह (दे ३, ४०) ।

जगिअ वि [जाङ्गमिक] १ जगम वस्तु से संबन्ध रखनेवाला, जगम-संबन्धी । २ न. जगम जीवों के रोम का बना हुआ कपड़ा (ठा ३, ३, ५, ३, कस) ।

जगुलि स्त्री [जाङ्गुलि] विप उतारने का मन्त्र, विष-विद्या (ती ४५) ।

जगुलिय पुं [जाङ्गुलिक] गारुडिक, विषमन्त्र का जानकार, विषहरिया (पउम १०५, ५७) ।

जगोल स्त्रीन [जाङ्गुल] विष-विघातक तन्त्र, विष-विद्या, आयुर्वेद का एक विभाग जिसमें विष की चिकित्सा का प्रतिपादन है (विपा १, ७—पत्र ७५) । स्त्री. °ली (ठा ८) ।

जंघा स्त्री [जङ्घा] जाँघ, जानु के नीचे का भाग (आचा, कप्प) । °चर वि [°चर] पादचारी, पैर से चलनेवाला (अणु) । °चारण पु [°चारण] एक प्रकार के जैन मुनि, जो अपने तपोबल से आकाश में गमन कर सकते हैं (भग २०, ८, पव ६७) । °सतारिम वि

[सतार्य] जाँघ तक पानीवाला जलाशय (आचा २, ३, २) ।

जघाच्छेअ पु [दे] चत्वर, चौक (दे ३, ४३) ।

जघामय } वि [दे] जघाल, द्रुत-गामी, वेग
जंघालुअ } से जानेवाला (दे ३, ४२, पड्) ।

जघाल वि [जङ्घाल] द्रुत-गामी (दे ८, ७८) ।

जत सक [यन्त्र] १ वश करना, कावू में करना । २ जकाडना, बाँधना (उप पु १३१) ।

जत न [यन्त्र] १ कल, युक्ति-पूर्वक शिल्प आदि कर्म करने के लिए पदार्थ-विशेष, तिल-यन्त्र आदि (जीव ३, गा ५५४, पडि, महा, कुमा) । २ वशीकरण, रक्षा वगैरह के लिए किया जाता लेख प्रयोग (परह १, २) । ३ संयमन, नियन्त्रण (राय) । °पत्थर पु [प्रस्तर] गोफण का पत्थर (परह १, २) । °पिल्लणकम्म न [°पीडनकर्मन्] यन्त्र द्वारा तिल, ईल आदि पीलने या पेरनेका घघा (पडि) । °पुरिस पुं [°पुरुष] यन्त्र-निर्मित पुरुष, यन्त्र से पुरुष की चेष्टा करनेवाला पुतला (भावम) । °वाडचुली स्त्री [°पाटचुली] इक्षु-रस पकाने का चूल्हा (ठा ८—पत्र ४१७) । °हर न [°गृह] धारा-गृह, पानी का फवारावाला स्थान (कुमा) ।

जंत देखो जा = या ।

जतण न [यन्त्रण] १ नियन्त्रण, संयमन, कावू । २ रोकनेवाला, प्रतिरोधक, (से ४, ४६) ।

जतिअ पु [यान्त्रिक] यन्त्र-कर्म करनेवाला, कल चलानेवाला (गा ५५४) ।

जतिअ वि [यन्त्रित] नियन्त्रित, जकड़ा हुआ (पउम ५३, १४५) ।

जतु पु [जन्तु] जीव, प्राणी (उत्त ३, सरा) ।

जतुग न [जन्तुक] जलाशय में होनेवाला सृण-विशेष (परह २, ३—पत्र १२३) ।

जतुय वि [जान्तुक] जन्तुक नामक सृण का (आचा २, २, ३, १४) ।

जप सक [जल्प्] बोलना, कहना । जपइ (प्राप्) । वक्क जपंत, जंपमाण (महा, गा १६८, सुर ४, २) । सक. जपिऊण, जपिऊणं, जपिय (प्राक्, महा) । हेक्क जंपिउ (महा) । क. जंपिअव्व (गा २४२) ।

अ अ [एव] अवधारण-सूचक अव्यय (हे २, १८४, कुमा, पङ्.) ।

अिअ देखो चिअ = एव (हे २, १८४, कुमा) ।

अेअ } देखो चेव = एव (पि १२, जी ३२) ।
अेव }

॥ इम सिरिपाइअसइमहणवमि चयाराइमहसंकलणो
चइइसमो तरंगो समतो ।

छ

छ पु [छ] १ तालु-स्थानीय व्यञ्जन वर्ण-विशेष (प्राप, प्रामा) । २ आच्छादन, ढकना, 'छ त्ति य दोसाण छाये होइ' (भावम) ।

छ त्रि व. [षप्] संख्या-विशेष, छ, 'छ छंडिआओ जिणसासणम्मि' (आ ६, जी ३२, भग १, ८) । 'उत्तरसय वि [उत्तर-शततम] एक सौ और छठवाँ (पञ्च १०६, ४९) । 'कम्म न [कर्मन्] छ प्रकार के कर्म, जो ब्राह्मणों के कर्त्तव्य हैं, यथा—यजन, याजन, अव्ययन, अव्यापन, दान और प्रतिग्रह (निचू १३) । 'काय न [काय] छ प्रकार के जीव, पृथिवी, अग्नि, पानी, वायु, वनस्पति और त्रस जीव (आ ७, पंचा १५) । 'गुण, 'गुण वि [गुण] छुना (ठा ६, पि २७०) । 'चरण पुं [चरण] अमर, मौरा (कुमा) । 'जीव-निकाय पु [जीवनिकाय] देखो 'काय (आचा) । 'णउइ, 'णवइ [णवति] संख्या-विशेष, छानवे, ६६ (सम ६८, अजि १०) । 'त्तीस छीन [त्रिंशत्] संख्या विशेष, छत्तीस, ३६ (कप्प) । 'त्तीसइम वि [त्रिंशच्चम] छत्तीसवाँ (पञ्च ३६, ४३, पण ३६) । 'इस त्रि. व [पोडशन्] षोडश, सोलह । 'इसहा अ [षोडशधा] सोलह प्रकार का (वव ४) । 'इसि न [दिश] छ दिशाएँ—पूर्व, पश्चिम, उत्तर, दक्षिण, ऊर्ध्व और अधोदिशा (भग) । 'इहा अ [धा] छ प्रकार का (कम्म १, ३८) । 'नवइ, 'नुवइ 'नउइ देखो 'णउइ (कम्म ३, ४, १२, सम ७०) ।

'अउय वि [णवत] छानवेवाँ, ६६ वाँ (पञ्च ६६, ५०) । 'पण्ण, पण्ण छीन [पञ्चाशत्] छप्पन, ५६ (राज, सम ७३) । 'पण्ण वि [पञ्चाश] छप्पनवाँ (पञ्च ५६, ४८) । 'भाय पु [भाग] छठवाँ हिस्सा (पि २७०) । 'भासा छी [भाषा] प्राकृत, संस्कृत, मागधी, शौरसेनी, पेशाचिका और अपभ्रंश ये छ भाषाएँ (रंभा) । 'मासिय, 'म्मासिय वि [पाण-मासिक] छ मास में होनेवाला, छ मास सम्बन्धी (सम २१, औप) । 'वरिस वि [वार्पिक] छ वर्ष को उम्रवाला (साधं २६) । 'वीस देखो 'व्वीस (पिग) । 'व्विह वि [विध] छ प्रकार का (कस, नव ३) । 'व्वीस छीन [विंशति] छव्वीस, बीस और छ (सम ४५) । 'व्वी-सइम वि [विंशतितम] १ छव्वीसवाँ २६ वाँ (पञ्च २६, १०३) । २ लगातार बारह दिनों का उपवास (णाय १, १) । 'सट्ठि छी [षष्टि] संख्या विशेष, साठ और छ (कम्म २, १८) । 'स्सरि छी [सप्तति] छिहत्तर (कम्म २, १७) । 'हा देखो 'इहा (कम्म १ ५, ८) ।

छइ देखो छवि = छवि (वा १२) ।

छइअ वि [स्थगित] आवृत्त, आच्छादित, तिरोहित (हे २, १७, पङ्.) ।

छइल } वि [दे] विदग्ध, चतुर, होशियार
छइल } (पिग दे ३, २४, गा ७२०, वज्जा पाण, कुमा) ।

छउअ वि [दे] तनु, कृश, पतला (दे ३, २५) ।

छउम पुप [छुद्वान्] १ कपट, शठता, माया (सम १, पङ्.) । २ छल, वहाना (हे २, ११२, पङ्.) । ३ आवरण, आच्छादन (सम १, ठा २, १) ।

छउम न [छुद्वमन्] ज्ञानावरणीय आदि चार घाती कर्म (वेइय ३४६) ।

छउमत्थ वि [छुद्वमत्थ] १ असर्वज्ञ, संपूर्ण ज्ञान से वञ्चित । २ राग-सहित, सराग (ठा ४, १, ६, ७) ।

छउलूअ देखो छलूअ (राज, विसे २५०८) ।

छुंछुई छी [दे] कपिकच्छ, वृक्ष-विशेष, केवांच, कवाछ (दे ३, २४) ।

छट पुं [दे] छोटा, जल का छोटा, जल-च्छटा । २ वि. शीघ्र, जल्दी करनेवाला (दे ३, ३३) ।

छंट सक [सिच्] सीचना । छंटमु (सुपा २६८) ।

छंटण न [सेचन] सिचन, सिचना (सुपा १३६, कुमा) ।

छंटा छी [दे] देखो छट (पाण) ।

छटिअ वि [सिक्त] सीचा हुआ (सुपा १३८) ।

छड देखो छड्डु = मुच् । छडइ (आरा ३२, भवि) ।

छडिअ वि [दे] छल, गुप्त (पङ्.) ।

छडिअ वि [मुक्त] परित्यक्त, छोड़ा हुआ (आरा, भाव) ।

छंद सक [छन्द] १ चाहना, चान्छना । २ अनुज्ञा देना, संमति देना । ३ निमन्त्रण देना । कवकः

(पडि) । °भइ पुं [°भद्र] यक्षद्वीप का अधिपति देव-विशेष (चंद २०) । °मडलप-विभत्ति स्त्री [°मण्डलप्रविभक्ति] एक तरह का नाट्य (राय) । °मह पुं [°मह] यक्ष के लिए किया जाता महोत्सव (आचा २, १, २) । °महाभइ पुं [°महभद्र] यक्ष द्वीप का अधिपति देव (चंद २०) । °महावर पु [°महावर] यक्ष समुद्र का अधिष्ठाता देव-विशेष (चंद २०) । °राय पुं [°राज] १ यक्षों का राजा, कुवेर । २ प्रधान यक्ष (सुपा ४६२) । ३ एक विद्याधर राजा (पउम ८, १२४) । °वर पुं [°वर] यक्ष-समुद्र का अधिपति देव-विशेष (चंद २०) । °इदु वि [°विष्ट] यक्ष का आवेशवाला, यक्षाधिष्ठित (ठा ५, १, वव २) । °दिच्चय, °लित्तय न [°दिप्रक] १ कभी-कभी किसी दिशा में बिजली के समान जो प्रकाश होता है वह, आकाश में व्यन्तर-कृत अग्नि-दीपन (भग ३, ६, वव ७) । २ आकाश में दीखता अग्नि-युक्त पिशाच (जीव ३) । °वेस पु [°वेश] यक्ष-कृत आवेश, यक्ष का मनुष्य-शरीर में प्रवेश (ठा २, १) । °हिच पुं [°धिप] १ वैश्रमण, कुवेर, यक्ष राज । २ एक विद्याधर राजा (पउम ८, ११३) । °हिचइ पुं [°धिपति] देखो पूर्वोक्त अर्थ (पात्र, पउम ८, ११६) ।

जक्खरत्ति स्त्री [दे यक्षरात्रि] दीपालिका, दीवाली, कार्तिक वदि अमास का पर्व (दे ३, ४३) ।

जक्खा स्त्री [यक्षा] एक प्रसिद्ध जैन साध्वी, जो महर्षि स्थूलभद्र की बहिन थी (पडि) ।

जक्खइ पुं [यक्षेन्द्र] १ यक्षों की स्वामी, यक्षों का राजा (ठा ४, १) । २ भगवान् अरनाथ का शासनाधिष्ठायक देव (पव २६, सति ८) ।

जक्खणी स्त्री [यक्षिणी] १ यक्ष-योनिक स्त्री, देवियों की एक जाति (आवम) । २ भगवान् श्रीनेमिनाथ की प्रथम शिष्या (सम १५२) ।

जक्खणी स्त्री [यक्षिणी] देखो जक्खा (मगल २३) ।

जक्खा स्त्री [याक्षी] लिपि-विशेष (विसे ४६४ टी) ।

जक्खुत्तम पु [यक्षोत्तम] यक्ष-देवों की एक-अवान्तर जाति (पण १) ।

जक्खेस पु [यक्षेश] १ यक्षों का स्वामी । २ भगवान् अभिनन्दन का शासन-यक्ष (संति ७) ।

जग न [यकृत्] पेट की दक्षिण ग्रन्थि (पण १, १) ।

जग पु [दे] जन्तु, जीव, प्राणी, 'पुढो जगा परिसखाय भिक्खु' (सूअ १, ७, २०) ।

जग पुं [जगत्] प्राणी, जीव, 'पुढविजीवे हिंसिजा जेअ तन्निस्मिया जगे' (दस ५, १, ६८, सूअ १, ७, २०, १, ११, ३३) ।

जग न [जगत्] जग, ससार, दुनियाँ (स २४६, सुर २, १३१) । °गुरु पु [°गुरु] १ जगत् में सर्व-श्रेष्ठ पुरुष । २ जगत् का पूज्य । ३ जिन-देव, तीर्थंकर (स २१, पचा ४) । °जीवण वि [°जीवन] १ जगत् को जीलानेवाला । २ पु जिन-देव (राज) । °णाह पुं [°नाथ] जगत् का पालक, परमेश्वर, जिन-देव (एदि) । °पियामह पु [°पिता-मह] १ ब्रह्मा, विधाता । २ जिनदेव (एदि) । °प्पगास वि [°प्रकाश] जगत् का प्रकाश करनेवाला, जगत्प्रकाशक (पउम २२, ४७) । °प्पहाण न [°प्रधान] जगत् में श्रेष्ठ (गउड) ।

जगई स्त्री [जगती] १ प्राकार, किला, दुर्ग (सम १३, चैत्य ६१) । २ पृथिवी (उत्त १) ।

जगईपव्वय पु [जगतीपर्वत] पर्वत-विशेष (राय ७५) ।

जगजग अक [चकास्] चमकना, दीपना । वक्क 'जगजगत्, जगजगेत (पउम ७७, २३, १४, १३४) ।

जगड सक [दे] १ भगडना, भगडा करना, कलह करना । २ कदर्थन करना, पीडना । ३ उठाना, जागृत करना । वक्क 'जगडत (भवि) । कवक्क 'जगडिज्जत (पउम ८२, ६, राजे) ।

जगडण न [दे] नीचे देखो (उव) ।

जगडण वि [दे] १ भगडा करानेवाला । २ कदर्थन करानेवाला (धर्मवि ८६, कुप्र ४२६) ।

जगडणा स्त्री [दे] १ भगडा, कलह । २

कदर्थन, पीडन, 'सिए, चिय वम्महणायगस्त, जगजगडणापमत्तम्स' (उप ५३० टी) ।

जगडिअ वि [दे] विद्रावित, कदर्थित (दे ३, ४४, सार्ध ६७, उव) ।

जगडिअ वि [दे] लहाया हुआ (धर्मवि ३१) ।

जगर पु [जगर] सनाह, कवच, वर्म (दे ३, ४१) ।

जगल ने [दे] १ पङ्कवाली मदिरा, मदिरा का नीचला भाग (दे ३, ४१) । २ ईश की मदिरा का नीचला भाग (दे ३, ४१, पात्र) ।

जगार पुं [दे] राव, यवाग (पव ४) ।

जगार पु [जकार] 'ज' अक्षर, 'ज' वर्ण (निब १) ।

जगार पु [यत्कार] 'यत्' शब्द, 'जगाहिद्विद्वारो तगारेण निहेमो कीरइ' (निब १) ।

जगारी स्त्री [जगारी] अन्न-विशेष, एक प्रकार का सुद्र अन्न, 'असण ओयणसत्तुगमुग्गजगारीइ' (पंचा ५) ।

जगुत्तम वि [जगदुत्तम] जगत्-श्रेष्ठ, जगत् में प्रधान (पण २, ४) ।

जग्ग अक [जाग] १ जागना, नींद से उठना । २ सचेत होना, सावधान होना । जग्गइ, जग्गि (ह ४, ८०, पड ३, सार ६८) । वक्क 'जग्गंत (सुपा १८५) । प्रयो 'जग्गावइ (पि ५५६) ।

जग्गण न [जागरण] जागना, निद्रा-त्याग (श्रोघ १०६) ।

जग्गविअ वि [जागरित] जगाया हुआ, नींद से उठाया हुआ (सुपा ३३१) ।

जग्गह पु [यद्ग्रह] जो प्राप्त हो उमे ग्रहण करने की राजाज्ञा, 'रएणा जग्गहो घोसिओ' (आवम) ।

जग्गाविअ देखो जग्गाविअ (से १०, ५६) ।

जग्गाह देखो जग्गह (आक) ।

जग्गिअ वि [जागृत] जगा हुआ, त्यक्त-निद्रा (गा ३८५, कुमा ५६३) ।

जग्गिर वि [जागरित] १ जागनेवाला । २ सावचेत रहनेवाला (सुपा २१८) ।

जघण न [जघन] कमर के नीचे का भाग, ऊरस्थल (कप्प, भौप) ।

ऋतु को पूर्णिमा का चन्द्रमा (स ३७१) ।
°ससि पु [°शशिन्] वही पूर्वोक्त अर्थ
(मुपा ३०६) ।

छणण न [छगन] हिसन, हिसा (आचा) ।

छणिदु पु [क्षणेन्दु] शरद ऋतु की पूर्णिमा
का चन्द्र (मुपा ३३, ४०४) ।

छणण वि [छन्न] १ गुप्त, प्रच्छन्न, छिपाया हुआ
(वृह १, प्राप) । २ आच्छादित, ढका हुआ
(गा ५८०) । ३ न माया, कपट (सूत्र १,
२, २) । ४ निर्जन, विजन, रहस्य । ५ क्रिवि
गुप्त रीति ने, प्रच्छन्न रूप से,

‘ज छरणं आयरिय,

तइया जणणीए जोव्वणमएण ।

त पडिन्न (? यडि) जजइ

इएहि सुएहि सील चयतेहि’
(उप ७२८ टी) ।

छण्णालय न [दे पण्णालक] त्रिकाण्टिक,
तिपाई, सन्यासियों का एक उपकरण (भग,
श्रीप, शाया १, ५) ।

छत्त न [छत्र] छाता, आतपात्र (शाया १,
५, प्रासू ५२) । °धार पु [°धार] छाता
धारण करनेवाला नौकर (जीव ३) । °पडागा
स्त्री °[पताका] १ छत्र-युक्त ध्वज । २ छत्र
के ऊपर की पताका (श्रीप) । °पलासय न
[°पलाशक] कृतमगला नगरी का एक चैत्य
(भग) । °भग पु [°भङ्ग] राज-नाश, नृप-
मरण (राज) । °हार देखो °वार (आवम) ।
°डिच्छत्त न [°तिच्छत्र] १ छत्र के
ऊपर का छाता (सम १३७) । २ पुं.
ज्योतिष-शास्त्र प्रसिद्ध योग-विशेष (सुल १२) ।

छत्त न [छत्र] लगातार तैतीस दिनों का उप-
वास (सवोध ५८) । पुन. एक देवविमान
(देवेन्द्र १४०) । ३ पुं ज्योतिष प्रसिद्ध एक
योग जिसमें चन्द्र आदि ग्रह छत्र के आकार
से रहते हैं (मुज्ज १२—पत्र २३३) । °इल
वि [°वन्] छातावाला (सुख २, १३) ।
°कार वि [कार] छाता बनानेवाला शिल्पी
(अणु १४६) । °ग पुंन [°क] वनस्पति-
विशेष (सूत्र २, ३, १६) ।

छत्त पुं [छात्र] विद्यार्थी, श्रम्यासी (उप पु
३३१, १६६ टी) ।

छत्तविया स्त्री [छत्रान्तिका] परिपद-विशेष,
समा-विशेष (वृह १) ।

छत्तच्छय (अप) पु [सप्तच्छद] वृक्ष-विशेष,
सतीना, छतिवन (मण) ।

छत्तधन्न न [दे] घास, वृण (पात्र) ।

छत्तवण्ण देखो छत्तिवण्ण (प्राप्र) ।

छत्ता स्त्री [छत्रा] नगरी-विशेष (आवम) ।

छत्तार पुं [छत्रकार] छाता बनानेवाला
कारीगर (पण्ण १) ।

छत्ताइ पु [छत्राभ] वृक्ष-विशेष, ‘एगगोहस-
त्तिवण्णे, साले पियए पियंगुछताहे’ (सम
१५२) ।

छत्ति वि [छत्रिन्] छत्र-युक्त, छातावाला
(भास ३३) ।

छत्तिवण्ण पुं [सप्तपर्ण] वृक्ष-विशेष, सतीना,
छतिवन, (हे १, २६५, कुमा) ।

छत्तोय पु [छत्रौक] वनस्पति-विशेष, वृक्ष-
विशेष (पण्ण १—पत्र ३५) ।

छत्तोव पुं [छत्रोप] वृक्ष-विशेष (श्रीप, अंत) ।

छत्तोह पुं [छत्रौघ] वृक्ष-विशेष (श्रीप, पण्ण
१—पत्र ३१, भग) ।

छदमत्थ देखो छउमत्थ (द्रव्य ४४) ।

छदवण देखो छडुवण (राज) ।

छदसम वि [पडुदश] छ या दश (सूत्र २,
२, २१) ।

छदी स्त्री [दे] शय्या, बिछौना (दे ३, २४) ।

छन्न वि [क्षण] हिसा-प्रधान, हिसा-जनक
(सूत्र १, ६, २६) ।

छन्न देखो छण्ण (कप्प, उप ६४८ टी, प्रासू
८२) ।

छप्पइगिल वि [पट्पदिकावत्] शूका-युक्त
शूकावाला (वृह ३) ।

छप्पइया स्त्री [पट्पदिका] शूका, शू (शोध
७२४) ।

छप्पती स्त्री [दे] नियम-विशेष, जिसमें पथ
लिखा जाता है (दे ३, २५) ।

छप्पण्ण } वि [दे पट्पद्मक] विदग्ध,
छप्पण्णय } चतुर, चालाक (दे ३, २४,
पात्र, वजा ५८) ।

छप्पत्तिआ स्त्री [दे] १ चपत, थप्पड,
तमाचा । २ चपाती, रोटी, फुलका,

‘छप्पत्तिआवि खज्जइ,

निप्पत्ते पुत्ति । एत्थ को देसो ? ।

निअपुरिसेवि रमिज्जइ,

परपुरिसिविज्जिए गामे’

(गा ८८७) ।

छप्पन्न [दे] देखो छप्पण्ण (जय ६) ।

छप्पय पु [पट्पद] १ भ्रमर, भौरा (हे १,
२६५, जीव ३) । २ वि. छ स्थानवाला ।
३ छ प्रकार का (विसे २८६१) । ४ न
छन्द-विशेष (पिग) ।

छप्प } पुंन [दे] पात्र-विशेष (आचा २,
छप्पवग } १, ८, १, पिड ५६१, २७८) ।

छप्पन्न न [दे] वंश-पिटक, धी वगैरह को
छानने का उपकरण-विशेष, ‘मुइंगाईमक्कोड-
एहि समत्तं च नाऊणं । गालेज्ज छप्पण्ण’
(शोध ५५८) ।

छप्पभामरी स्त्री [पट्पभामरी] एक प्रकार की
बीणा (शाया १, १७—पत्र २२६) ।

छमच्छम अक [छमच्छमाय] ‘छम-छम’
आवाज करना, गरम चीज पर दिया जाता
पानी की आवाज । छमच्छमइ (वज्जा ८८) ।
छमं देखो छमा । °रुह पुं [°रुह] वृक्ष, पेड़,
दरवृक्ष (कुमा) ।

छमल्य पुं [दे] समच्छद, वृक्ष-विशेष,
सतीना, छतिवन (दे ३, २५) ।

छमा स्त्री [क्षमा, क्षमा] पृथिवी, धरणी,
भूमि (हे २, १८) । °हर पु [°धर] पर्वत,
पहाड़ (पड) । देखो छमं ।

छमी स्त्री [शमी] वृक्ष-विशेष, अतिन-गर्भ वृक्ष
(हे १, २६५) ।

छम्म देखो छउम (हे २, ११२, पड, पचम
४०, ५, सण) ।

छम्मुह पुं [पण्मुख] १ स्कन्द, कार्तिकेय (हे
१, २६५) । २ भगवान् विमलनाथ का
अविष्टायक देव (सति ८) ।

छय न [छद] १ पण, पत्ती, पत्र, पत्ता (श्रीप) ।
२ आवरण, आच्छादन (से ६, ४७) ।

छय न [क्षत] १ व्रण, घाव (हं २, १७) ।
२ पीडित, अग्रित (सूत्र १, २, २) ।

छयल [दे] देखो छइल (रमा) ।

छरु पु [त्सरु] खड्ग-मुष्टि, तलवार का हाथा
(पण्ण १, ४) । °प्पवाय न [°प्रवाद]
खड्ग-शिला-शास्त्र (ज २) ।

६५, स्पन्न १६)। २ देहाती मनुष्य (सूत्र १, १, २)। ३ समुदाय, वर्ग, लोक (कुमा; पंचव ४)। ४ वि. उत्पादक, उत्पन्न करने-वाला 'जेण सुहज्जमपजण' (विसे ६६०)। 'जत्ता' लो [यात्रा] जन-समागम, जन-संगति, 'जणजत्तारहियाणं होइ जइत्तं जइण सया' (दम ४)। 'ट्ठाण न [स्थान] १ दण्ड-कारण्य दक्षिण का एक जगल। २ नगर-विशेष, नासिक (ती २८)। 'वइ पुं [पति] लोगो का मुखिया (श्रीप)। 'वय पुं [व्रज] मनुष्य समूह (पउम ४, ५)। 'वाय पुं, [वाद] १ जन-श्रुति, किवदन्ती, उठती खबर (सुपा ३००)। २ मनुष्यो की आपस में चर्चा (श्रीप)। ३ लोकापवाद, लोक में निन्दा, 'जणवायभएण' (भव १)। 'स्सुइ लो [श्रुति] किवदन्ती। 'विवाय पुं [पवाद] लोक में निन्दा (गा ४८४)।

जणइ लो [जनिका] उत्पादिका, उत्पन्न करनेवाली (कुमा)।

जणइउ पु [जनयितृ] १ जनक, पिता जणइत्तु (राज)। २ वि. उत्पादक, उत्पन्न करनेवाला (ठा ४, ४)।

जणउत्त पु [दे] ग्राम का प्रधान पुरुष, गाँव का मुखिया (दे ३, ५२, पड्)। २ विट, भाएड, भौंड, विदुषक (दे ३, ५२)।

जणगम पु [जनङ्गम] चाएडाल, 'रायणो हंति रका य वंमणा य जणगमा' (उप १०३१ टी, पाप्र)।

जणग देखो जगय (भग, उप पृ २१६, सुर २, १३७)।

जणण न [जनन] १ जन्म देना, उत्पन्न करना, पैदा करना (सुपा ५६७, सुर ३, ६, द्र ५७)। २ वि. उत्पादक, जनक (उर ६, ६, कुमा; भवि), 'जणमणसायजणणा' (वसु)।

जणणि १ लो [जननि, नी] १ माता, जणणी १ भग्ना (सुर ३, २५, महा, पाप्र)। २ उत्पन्न करनेवाली लो, उत्पादिका (कुमा)।

जगइण पुं [जनार्दन] श्रीकृष्ण, विष्णु (उप ६४८ टी, पिण)।

जगप्पवाद पुं [जनप्रवाद] जन-रव, लोकोक्ति, अफवाह (मोह ४३)।

जणमेअअ पुं [जनमेजय] स्वनाम-प्रसिद्ध नृप-विशेष (चारु १२)।

जणमेजय देखो जणमेअअ (धर्मवि ८१)।

जणय वि [जनक] १ उत्पादक, उत्पन्न करनेवाला, 'दिट्ठिविय पिसुणाय सव्वं सव्वस्स भयजणाय' (प्रासू १६)। २ पु. पिता, बाप (पाप्र, सुर ३, २५, प्रासू ७७)। ३ देखो जण = जन (सूत्र १, ६)। ४ मिथिला का एक राजा, राजा जनक, सीता का पिता (पउम २१, ३३)। ५ पुन व. माता-पिता, माँ-बाप, 'जं किपि कोई साहइ. तज्जणयाइ कुणति त सव्व' (सुपा ३५६, ५६८)।

'तणआ लो [तनया] राजा जनक की पुत्री, राजा रामचन्द्र की पत्नी, सीता, जानकी (से १, ३७)। 'दुहिया, धूआ [दुहितृ] वही अर्थ (पउम २३, ११, ४८, ४)।

'नदण पुं [नन्दन] राजा जनक का पुत्र, भामरहल (पउम ६५, २५)। 'नदणी लो [नन्दनी] सीता, राम-पत्नी, जानकी (पउम ६४, ४६)। 'णंदिणी लो [नन्दिनी] वही अर्थ (पउम ४५, १८)। 'निवतणया लो [नृपतनया] राजा जनक की पुत्री, सीता (पउम ४८, ६०)।

'पुत्ती लो [पुत्री] वही अर्थ (रयण ७८)। 'सुअ पु [सुत] जनक राजा का पुत्र, भामरहल (पउम ६५, २८)। 'सुआ लो [सुता] जानकी, सीता (पउम ३७, ६२, से २, ३८, १०, ३)।

जणयगया लो [जनकाङ्गजा] जानकी, सीता, राजा रामचन्द्र की पत्नी (पउम ४१, ७८)।

जणवय पुं [जनपद] १ देश, राष्ट्र, जन-स्थान, लोकालय (श्रीप)। २ देश-निवासी जन-समूह, प्रजा (पएह १, ३, आचा)।

जणवय वि [जानपद] देश में उत्पन्न, देश का निवासी (आचा)।

जणस्सुइ लो [जनश्रुति] किवदन्ती, अफवाह, कहावत (धर्मवि ११२)।

जणि (अप) अ [इव] तरह, माफिक, जैसा (हे ४, ४४४, पड्)।

जणिअ वि [जनित] उत्पादित, उत्पन्न किया हुआ (पाप्र)।

जणी लो [जनी] लो, नारी, महिला (णया २—पत्र २५३, पउम १५, ७३)।

जणु देखो जणि (हे ४, ४४४, कुमा, पड्)। जणुकलिआ लो [जनोत्कलिङ्ग] मनुष्यो का छोटा समूह (भग)।

जणुम्मि लो [जनोर्मि] तरंग की तरह मनुष्यो की भीड़ (भग)।

जणेमाण देखो जण = जनय्।

जणेर (अप) वि [जनक] १ उत्पादक, पैदा करनेवाला। २ पुं. पिता, बाप (भवि)।

जणेरि (अप) लो [जननी] माता, माँ (भवि)।

जण्ण पु [यज्ञ] १ यज्ञ, याग, मख, क्रतु (प्राप्र, गा २२७)। २ देव-पूजा। ३ श्राद्ध (जीव ३)। 'इ, जाइ वि [याजिन्] यज्ञ करनेवाला (श्रीप, निवू १)। 'इज्ज वि [जीय] १ यज्ञ-सम्बन्धी, यज्ञ का। २ न. 'उत्तराध्ययन' सूत्र का एक प्रकरण (उत्त २५)। 'ट्ठाण न [स्थान] १ यज्ञ का स्थान। २ नगर-विशेष, नासिक (ती २०)। 'मुह न [मुख] यज्ञ का उपाय (उत्त २५)। 'वाड पुं [वाट] यज्ञ-स्थान (गा २२७)। 'सेट्ट पुं [श्रेष्ठ] श्रेष्ठ यज्ञ, उत्तम याग (उत्त १२)।

जण्ण देखो जन्न = जन्य (धर्मसं १००)।

जण्णय देखो जणय (प्राप्र)।

जण्णयत्ता लो [दे. यज्ञयात्रा] बरात, विवाह की यात्रा, वर के साधियों का गमन (उप ६५४)।

जण्णसेणी लो [याज्ञसेनी] द्रौपदी, पाण्डव-पत्नी (वेणो ३७)।

जण्णहर पु [दे] नर-राक्षस, दुष्ट-मनुष्य (पड्)।

जण्णिय पु [याज्ञिक] याजक, यज्ञ करानेवाला (आवम)।

जण्णोवईय } न [यज्ञोपवीत] यज्ञ-सूत्र,
जण्णोवईय } जनेऊ (उत्त २, आवम)।

जण्णोहण पु [दे] राक्षस, पिशाच (दे ३, ४३)।

जण्ह न [दे] १ छोटी स्थाली। २ वि. कृष्ण, काले रंग का (दे ३, ५१)।

जण्हई लो [जाहुवी] गंगा नदी, भागीरथी (अचु ६)।

छाया छी [छाया] १ आतप का अभाव, छाह (पात्र) । २ कान्ति, प्रभा, दीप्ति (हे १, २४६; श्रोत्र, पात्र) । ३ शोभा (श्रोत्र) । ४ प्रतिविम्ब, परछाई (प्राप्त ११४, उक्त २) । ५ धूप-रहित स्थान, अनातप देश (ठा २, ४) । गड़ छी [गति] १ छाया के अनुसार गमन । २ छाया के अवलम्बन से गति (परण १६) । पाम पु [पार्थ] हिमाचल पर स्थित भगवान् पार्थनाथ की मूर्ति (ती ४५) । छाया छी [दे] १ कीर्ति, यश, स्थाति । २ भ्रमरो, भमरो, भौरी (दे ३, ३४) । छायाइत्तय वि [छायावन्] छायावाला, छाया-युक्त । छी [इत्तिआ] (हे २, २०३) । छायाली छी [पट्चत्वारिण] छियालीस, चालीस और छ, ४६ (भग) । छायालीस छीन ऊपर देखो (सम ६६, कप) । छायालीस वि [पट्चत्वारिण] छियालीसवा, ४६ वां (पउम ४६, ६६) । छोर वि [छार] १ पिघलनेवाला, फूटनेवाला । २ छारा, लवण-रसवाला । ३ पुं. लवण, नोन, नमक । ४ सजी, सजीवार । ५ गुड, (हे २, १७, प्राप्र) । ६ भस्म, भूति (विसे १२५६; स ४४; प्राप्त १४५, राया १, २) । ७ मात्सर्य, असहिष्णुता (जीव ३) । छार पु [दे] अन्धमल, भालूक (दे ३, २६) । छारय देखो छार (आ २७) । छारय न [दे] १ इसु-शल्क, ऊख की छाल (६, ३, ३४) । २ मुकुल, कली (दे ३, ३४; पात्र) । छारिय वि [छारिक] छार-मन्त्रन्त्री (दस ५, १, ७) । छाल पु [छाग] अज, बकरा (हे १, १६१) । छालिया छी [छागिका] अजा, छागी (मुर ७, ३०, सण) । छाली छी [छागी] ऊपर देखो (प्रामा) । छाव पु [शाव] बालक, बच्चा, शिशु (हे १, २६५, प्राप्र, वव १) । छावण देखो छावण (वह १) । छावट्टि छी [पट्पट्टि] छाछठ, छियासठ, ६६ (सम ७८, विसे २७६१) । छावत्तरि छी [पट्सप्तति] छिहत्तर, सत्तर

और छ ७६ (पउम १०२, ८६, सम ८५) । म वि [तम] छिहत्तरवा (भग) । छावलिय वि [पंढावलिक] छ आवलिका-परिमित समयवाला (विसे ५३१) । छासंठ वि [पट्पट्ट] छियासठवां (पउम ६६, ३७) । छासी छी [दे] छाछ, तरु, मट्ठा (दे ३, २६) । छासीड छी [पडशीति] छियासी, अस्सी और छ । म वि [तम] छियासीवा, ८६ वां (पउम ८६, ७४) । छाहत्तरि (अप) देखो छावत्तरि (पि २४५) । छाहत्तरि देखो छावत्तरि (पव २३६) । छाहा छी [छाया] १ छाह, आतप छाहिया का अभाव । २ प्रतिविम्ब, परछाई छाही (पह; प्राप्र, मुर २, २४७, ६, ६५; हे १, २४६, गा ३४) । छाही छी [दे] गगन, आकाश । मणि पु [मणि] सूर्य, सूरज (दे ३, २६) । छिअ देखो छीअ (दे ८, ७२, प्रामा) । छिछई छी [दे] असंती, कुलटा (हे २, १७४, गा, ३०१; ३५०, पात्र, धर्मरत्न-लघुवृत्तिपत्र ३१, १) । छिछटरमण न [दे] कीड़ा-विशेष, चसु-स्नान की कीड़ा (दे ३, ३०) । छिछय पु [दे] १ देह, शरीर । २ जार, उपपत्ति । ३ न फल-विशेष, शलाकु-फल (दे ३, ३६) । छिछोली छी [दे] छोटा जल-प्रवाह (दे ३, २७, पात्र) । छिड न [दे] १ छूटा, चोटी (दे ३, ३५, पात्र) । २ छत्र, छाता । ३ धूप-यन्त्र (दे ३, ३५) । छिडिआ छी [दे] १ बाढ का छिद्र । २ अपवाद, 'छ छिडिआओ जिणसासणम्मि' (पव १४८; आ ६) । छिड्डी छी [दे] बाढ का छिद्र (राया १, २—पत्र ७६) । छिद सक [छिद] छेदना, विच्छेद करना । छिदइ (प्राप्र, महा) । मवि छेछई (हे ३, १७१) । कर्म, छिज्जइ (महा) । वक्र, छिदमाण (राया १, १) । कवक, छिज्जंत, छिजमाण (आ ६; विपा १, २) । सक

छिदिऊण, छिदिता, छिदित्तु, छिदिय, छेत्तूण (पि ५८५, भग १४, ८, पि ५०६, ठा ३, २; महा) । कृ. छिदियव्व (परह २, १) । हेक छेत्तु (आचा) । छिदण न [छेदन] छेद, खण्डन, कर्तन (श्रोत्र १५४ भा) । छिदावण न [छेदन] कटवाना, दूसरे द्वारा छेदन कराना (महानि ७) । छिदाविय वि [छेदित] विच्छिन्न कराया गया (स २२६) । छिपय पुं [छिम्पक] कपड़ा छापने का काम करनेवाला (दे १, ६८, प्राप्र) । छिक न [दे] क्षुत्, छोक (दे ३, ३—कुमा) । छिक वि [दे छुत्] स्पष्ट, छूआ हुआ (दे ३, ३६, हे २, १३८, से ३, ४६, स ४४४) । परोइया छी [प्ररोदिका] वनस्पति-विशेष (विसे १७५४) । छिक वि [छीकृत] छी-छी आवाज से आहत, 'पुण्विपि वीरसुणिआ छिककाछिकका पहावण तुरिय' (श्रोत्र १२४ भा) । छिकत वि [दे] छीक करता हुआ (सुपा ११६) । छिका छी [दे] छिकका, छीक (स ३२०) । छिकारिअ वि [छीकारित] छी-छी आवाज से आहत, अव्यक्त आवाज से बुलाया हुआ (श्रोत्र १२४ भा टी) । छिकिय न [दे] छीकना, छीक करना (स ३२४) । छिकोअण वि [दे] असहन, असहिष्णु (दे ३, २६) । छिकोदुली छी [दे] १ पैर की आवाज । २ पाँव से घान्य का मलना । ३ गोइठा का टुकड़ा, गोवर-खण्ड (दे ३, ३७) । छिककोलिअ वि [दे] तनु, पतला, कृश (दे ३, २५) । छिककोवण [दे] देखो छिककोअण (ठा ६—पत्र ३७२) । छिग (शौ) सक [छुप्] छूना । छिगदि (प्राक ६३) । छिचोलय पु [दे] देखो छिचोह (पात्र) । छिच्छई देखो छिछई (पह) । छिच्छय देखो छिछय (पह) ।

जमा स्त्री [यामी] दक्षिण दिशा (ठा १०—पत्र ४७८) ।

जमात्ति पुं [जमालि] स्वनाम-ख्यात एक राज-कुमार, जो भगवान् महावीर का जमाता था, जिसने भगवान् महावीर के पास दीक्षा ली थी और पीछे से अपना अलग पन्थ निकाला था (गाथा १, ८, ठा ७) ।

जमावण न [यमन] १ नियन्त्रण करना । २ विषम वस्तु को सम करना (निचू १) ।

जमिअ वि [यमित] नियन्त्रित, संयमित, काव्रु में किया हुआ (से ११, ४१, सुपा ३) ।

जमुणा देखो जँउणा (पि १७६, २५१) ।

जमू स्त्री [जमू] ईशानेन्द्र की एक अग्र-महिषी का नाम (इक) ।

जम्म अक [जन्] उत्पन्न होना । जम्मइ (हे ४, १३६, षड्) । वक्र-जम्मत्त (कुमा), 'जम्मतीए सोगो, वड्हँतीए य वड्हँ चित्ता' (सूक्त ८८) ।

जम्म सक [जम्] खाना, भक्षण करना । जम्मइ (षड्) ।

जम्म पुन [जम्मन्] जन्म, उत्पत्ति (ठा ६, महा, प्रासू ६०) ।

जम्मण न [जम्मन्] जन्म, उत्पत्ति, उत्पाद (हे २, १७४, गाथा १, १, सुर १, ६) ।

जम्मा स्त्री [याम्या] दक्षिण दिशा (उप पु ३७५) ।

जम्हाअ } देखो जभाअ । जम्हाअइ,
जम्हाह } जम्हाहइ, जम्हाहाइ (प्राकृ
जम्हाडा } ६४) ।

जय सक [जि] १ जीतना । २ अक. उत्कृष्ट-पन से बरतना । जयइ (महा) । जयति (स ३९) । सकृ. जइत्ता (ठा ६) ।

जय सक [यज्] १ पूजा करना । २ याग करना । जयइ (उत्त २५, ४) । वक्र, जअमाण (अभि १२५) ।

जय.अक [यत्] १ यत्न करना, चेष्टा करना । २ ख्याल करना, उपयोग करना । जयइ (उव) । भवि जइस्सामि (महा) । वक्र जयत, जयमाण (स २६०, आ २६, ओष १२४, पुष्प २४१) । कृ जइयव्व (उव, सुर १, ३४) ।

जय न [जगत्] जगत्, दुनियाँ, समार (प्रासू १५५, से ६, १) । 'त्तय न [त्रय] स्वर्ग, मर्त्य और पाताल लोक (सुपा ७६, ६५) । 'नाह पु [नाथ] परमेश्वर, परमात्मा (पउम ८६, ६५) । 'पहु पु [प्रभु] परमेश्वर (सुपा २८, ८२) । 'णद वि [नन्द] जगत् को आनन्द देनेवाला (पउम ११७, ६) ।

जय वि [यत्] १ सयत, जितेन्द्रिय (भास ६५) । २ उपयोग रखनेवाला, ख्याल रखनेवाला (उत्त १, आव ४) । ३ न, छठवाँ गुण-स्थानक (कम्म ४, ४८) । ४ ख्याल, उपयोग, सावधानता (गाथा १, १—पत्र ३३), 'जय चरे जय चिट्ठे' (दस ४) ।

जय पुं [जव] वेग, शीघ्र-गमन, दीड (पाप्र) ।

जय पुं [जय] १ जय, जीत, शत्रु का पराभव (श्रीप, कुमा) । २ स्वनाम-प्रसिद्ध एक चक्रवर्ती राजा (सम १५२) । 'उर न [पुर] नगर-विशेष (स ६) । 'कम्मा स्त्री [कर्मा] विद्या-विशेष (पउम ७, १३८) । 'घोस पु [घोष] १ जय ध्वनि । २ स्वनाम-प्रसिद्ध एक जैन मुनि (उत्त २५) । 'चंद पु [चन्द्र] १ विक्रम की बारहवीं शताब्दी का कन्नौज का एक अन्तिम राजा । २ पन्नरहवीं शताब्दी का एक जैनाचार्य (खण ६४) । 'जत्ता स्त्री [यात्रा] शत्रु पर चढ़ाई (सुपा ५४१) । 'पडाया स्त्री [पताका] विजय का झंडा (आ १२) । 'पुर देखो 'उर (वसु) । 'मगला स्त्री [मङ्गला] एक राज-कुमारी (दंस ३) । 'लन्ही स्त्री [लक्ष्मी] जय-लक्ष्मी, विजयश्री (से ४, ३१, काप्र ७४३) । 'वत वि [वन्] जय-प्राप्त, विजयी (पउम ६६ ४६) । 'वल्लह पुं [वल्लभ] नृप-विशेष (दस १) । 'संध पुं [सन्ध] पुण्डरीक-नामक राजा का एक मन्त्री (आत्त ४) । 'सधि पु [सन्धि] वही पूर्वोक्त अर्थ (आव ४) । 'सह पुं [शंद्ध] विजय-सूचक आवाज (श्रीप) । 'सिह पुं [सिंह] १ सिंहल द्वीप का एक राजा (खण ४४) । २ विक्रम की बारहवीं शताब्दी का गुजरात का एक प्रसिद्ध राजा, जिसका दूसरा नाम 'सिद्ध-राज' था, 'जेण जयसिंहदेवो राया भणिएण

सयलदेसम्मि' (मुणि १०६००) । ३ स्वनाम-ख्यात जैनाचार्य-विशेष (सुपा ६५८), 'सिरि-जयसिंहो गुरो नयभरोमएडलम्मि सुप्रसिद्धो' (मुणि १०८७२) । 'सिरि. स्त्री [श्री] विजयश्री, जयलक्ष्मी (आवम) । 'सेण पु [सेन] स्वनाम-प्रसिद्ध एक राजा (महा) । 'वह वि [वह] १ जय को बह्वन् करनेवाला, विजयी (पउम ७०, ७, सुपा २३४) । २ विद्याधर-नगर-विशेष (इक) । 'वहपुर न [वहपुर] एक विद्याधर-नगर (इक) । 'वास न [वास] विद्याधरो का एक स्वनाम-ख्यात नगर (इक) ।

जय पुं [यत्] प्रयत्न, चेष्टा, 'कोशिंग (दस ५, १, ९६) ।

जय पुस्त्री [जया] तिथि-विशेष—तृतीया, अष्टमी और त्रयोदशी तिथि (ज १) ।

जय देखो जया = यदा । 'प्पभिड अ [प्रभृति] जव से, जिन समय से (स ३१६) ।

जयंत पु [जयन्त] १ इन्द्र का पुत्र (पाप्र) । २ एक भावी बलदेव (सम १५४) । ३ एक जैन मुनि, जो वज्रसेन मुनि के तृतीय शिष्य थे (कप्प) । ४ इस नाम के देव-विमान में रहनेवाली एक उत्तम देव जाति (सम ५६) । ५ जवूद्वीप को जगती के पश्चिम द्वार का एक अधिष्ठाता देव (ठा ४, २) । ६ न देव-विमान-विशेष (सम ५६) । ७ जम्बूद्वीप की जगती का पश्चिम द्वार (ठा ४, २) । ८ रुचक पर्वत का एक शिखर (ठा ४) ।

जयती स्त्री [जयन्ती] १ पक्ष की नववीं रात (सुज १०, १४) । २ भगवान् धरनाथ की दीक्षा-शिविका (विचार १२६) ।

जयती स्त्री [जयन्ती] १ बह्नी-विशेष, अरणी, वर्ष गाँठ (परण १) । २ सप्तम बलदेव की माता (सम १५२) । ३ विदेह वर्ष की एक नगरी (ठा २, ३) । ४ अगारक-नामक ग्रह की एक अग्र-महिषी (ठा ४, १) । ५ जम्बूद्वीप के मेरु से पश्चिम दिशा में स्थित रुचक पर्वत पर रहनेवाली एक दिक्कुमारी देवी (ठा ८) । ६ भगवान् महावीर की एक उपासिका (भग १२, २) । ७ भगवान् महावीर के आठवें गणधर की माता (आवम) । ८ अजनक

जिसके पन्ने विशेष लम्बे और कम चौड़े हो
ऐसी पुस्तक (ठा ४, २; पव ८०) ।
छिविअ वि [स्पृष्ट] १ छूना हुआ (दे ३,
२७) २ न. स्पर्श, छूना (से २, ८) ।
छिविअ न [दे] ईख का टुकड़ा (दे ३, २७) ।
छिवोअ [दे] देखो छिवोअ (गा ६०५
अ) ।
छिव्व वि [दे] कृत्रिम, बनावटी (दे ३,
२७) ।
छिव्वोअ न [दे] १ निन्दार्थक मुख-विकृणन,
अरुचि-प्रकाशक मुख-विकार-विशेष । २ विकृ-
णित मुख (दे ३, २८) ।
छिह सक [स्पृश] स्पर्श करना, छूना ।
छिहइ (हे ४, १८२) ।
छिहंड न [शिखण्ड] मयूर की शिखा (गाया
१, १—पत्र ५७ टी) ।
छिहडअ पुं [दे] वही का बना हुआ मिष्टान्न,
दविसर, गुजराती में जिसे 'सिखंड' कहते हैं
(दे ३, २६) ।
छिहडि पु [शिखण्डिन्] १ मयूर, मोर ।
२ वि. मयूरपिच्छ को धारण करनेवाला
(गाया १, १—पत्र ५७ टी) ।
छिहली ओ [दे] शिखा, चौटी (वृह ४) ।
छिहा ओ [स्पृहा] स्पृहा, अभिलाष (कुमा,
हे १, १२८, पङ्) ।
छिहिंछिभिअ न [दे] दधि, दही (दे ३,
३०) ।
छिहिअ वि [स्पृष्ट] छूना हुआ (कुमा) ।
छीअ ओन [छुत] छिक्का, छोक (हे १,
११२, २, १७, ओष ६४३, पङि) । ओ,
°आ (आ २७) ।
छीअमाण वि [छुवत्] छोक करता (आचा
२, २, ३) ।
छीण वि [क्षीण] क्षय-प्राप्त, कृश, दुर्बल (हे
२, ३, गा ८४) ।
छीयंत वि [छुवत्] छोक करता (ती ८) ।
छीर न [क्षीर] जल, पानी । २ दुग्ध, दूध
(हे २, १७, गा ५६७) । °बिराली ओ
[°बिडाली] वनस्पति-विशेष, भूमि-कूष्माण्ड
(पण १—पत्र ३५) ।

छीरल पु [क्षीरल] हाथ से चलनेवाला एक
सरह का तन्तु, साँप की एक जाति (पणह
१, १) ।
छीवोअ [दे] देखो छिवोअ (गा ६०३) ।
छु सक [छुद्] १ पीसना । २ पीलना ।
कर्म. छुअइ (उव) । कवक. छुअमाण (संथा
६०) ।
छुअ देखो छीअ (प्राप्र) ।
छुअ देखो छुव । छुअइ (प्राकृ ७६) ।
छुई ओ [दे] बलाका, बकपंक्ति (दे ३, ३०) ।
छुंछुई ओ [दे] कपिकच्छु, केवाँच का पेड़
(दे ३, ३४) ।
छुछुमुसय न [दे] रणरणक, उत्सुकता,
उत्कण्ठा (दे ३, ३१) ।
छुंद वि [आ + क्रम्] आक्रमण करना ।
छुंदइ (हे ४, १६०, पङ्) ।
छुद सक [दे] बहु, प्रभूत (दे ३, ३०) ।
छुक्कारण न [धक्कारण] धक्कारना,
निंदा (वृह २) ।
छुच्छ वि [तुच्छ] तुच्छ, क्षुद्र, हलका (हे
१, २०४) ।
छुच्छुक्कर सक [छुच्छु + कृ] 'छु-छु'
भावाज करना, श्वानादि को बुलाने को
भावाज करना । छुच्छुक्करेति (आचा) ।
खुअमाण देखो छु ।
छुह भक [छुद्] छूटना, वन्धन-मुक्त होना ।
छुहइ (भवि) । छुहइ (धम्म ६ टी) ।
छुह वि [छुटि] छूटा हुआ, वन्धन-मुक्त
(सुपा ४०७, सूक्त ८६) ।
छुह वि [दे] छोटा, लघु (प्राप्र) ।
छुहण न [छोटन] छुटकारा, मुक्ति (आ
२७) ।
छुह वि [दे] १ क्षिप्त । २ क्षिप्त, फेंका हुआ
(भवि) ।
छुहु म [दे] १ यदि, जो (हे ४, ३८५;
४२२) । २ शीघ्र, तुरन्त (हे ४, ४०१) ।
छुहु वि [छुद्] क्षुद्र, तुच्छ, हलका, लघु
(भौप) ।
छुहुया ओ [छुद्रिका] आभरण-विशेष
(पणह २, ५—पत्र १५६ टी) ।

छुण वि [छुण] १ क्षीणित, चूर-चूर किया
हुआ । २ विहृत, विनाशित । ३ अम्यस्त (हे
२, १७, प्राप्र) ।
छुत्त वि [छुम] स्पृष्ट, छूना हुआ (हे २,
१३८, कुमा) ।
छुत्ति ओ [दे] छूत, अशौच (सूक्त ८६) ।
छुदहीर पुं [दे] १ शशि, बच्चा, बालक ।
२ शशी, चन्द्रमा (दे ३, ३८) ।
छुहिया देखो छुहुया (पणह २, ५—पत्र,
१४६) ।
छुद्ध देखो खुद्ध (प्राप्र) ।
छुद्ध वि [द] क्षिप्त, प्रेरित (अण) ।
छुध वि [छुध] भूखा (प्राकृ २२) ।
छुन्न पुन [छुण] क्लीव, नपुंसक (पिंड
४२५) ।
छुन्न देखो छुण, 'जंतम्म पावमइणा छुन्ना
अणेण कम्मेण' (संथा ५६) ।
छुप्पंत देखो छुव ।
छुव भक [छुम्] क्षुब्ध होना, विचलित
होना । छुवति (पि ६६) ।
छुवभत्थ [दे] देखो छोवभत्थ (दे ३, ३३) ।
छुम देखो छुह । छुमइ, छुमेइ (महा, रण
२०) । संकृ छुमिच्छा (पि ६६) ।
छुमा देखो छमा (दसत्त १) ।
छुर सक [छुर्] १ लेप करना, लीपना ।
२ छेदन करना, छेदना । ३ व्याप्त करना
(वा १२, पउम २८, २८) ।
छुर पुं [छुर] १ छुरा, नपित का अन्न । २
पशु का नख, छुर । ३ वृक्ष-विशेष,
गोखरु । ४ बाण, शर, तीर (हे २, १७,
प्राप्र) । ५ न. वृण-विशेष (पण १) ।
°धरय न [°गृहक] नापित के छुरा वगैरह
रखने की थैली (निह १) ।
छुरण न [छुरण] अवलेपन (कप्पू) ।
छुरमडि पुं [दे] नापित, हजाम (दे ३, ३१) ।
छुरहत्थ पुं [दे-छुरहत्त] नापित, हजाम
(दे ३, ३१) ।
छुरिआ ओ [दे] मृत्तिका, मिट्टी (दे ३, ३१) ।
छुरिआ ओ [छुरिका] छुरी, चाकू (महा,
छुरिगा सुपा ३८१, स १४७) ।
छुरिय वि [छुरित] १ व्याप्त । २ क्षिप्त
(पउम २८, २८) ।

°चारिया स्त्री [°चारिका] क्षुद्र जन्तु-विशेष, चतुरिन्द्रिय जीव की एक जाति (राज)। °जत न [°यन्त्र] पानी का यन्त्र, पानी का फवारा (कुमा)। °णाह पु [°नाथ] समुद्र, सागर (उप ७२८ टी)। °णिहि पुं [°निधि] समुद्र, सागर (गउड)। °णीली स्त्री [°नीली] शैवाल (दे ३, ४२)। °तुसार पु [°तुषार] पानी का बिन्दु (पाश्र)। °थभिणी स्त्री [°स्तम्भिनी] विद्या-विशेष (पउम ७, १३६)। °द पुं [°द] मेघ, अन्न (मुद्रा २६२, पव १८)। °हा स्त्री [°द्रा] पानी से भीजाया हुआ पखा (सुपा ४१३)। °निहि देखो °णिहि (प्रासु १२७)। °पपभ पुं [°प्रभ] १ इन्द्र-विशेष, उदधिकुमार-नामक देव-जाति का उत्तर दिशा का इन्द्र (ठा २, ३)। २ जलकान्त नामक इन्द्र का एक लोकपाल (ठा ४, १)। °य न [°ज] कमल, पद्म (पउम १२, ३७, औप, पएण १)। °य देखो °द (काल, गउड, से १, २४)। °यर पुं स्त्री [°चर] जल में रहने-वाला ग्राहादि जन्तु (जी २०)। स्त्री. °री (जीव २)। °रकु पु [°रकु] पक्षि-विशेष, डेक पक्षी (गा ५७८, गउड)। °रक्खस पुं [°राक्षस] राक्षस की जाति (पएण १)। °रमण न [°रमण] जल-क्रीड़ा, जल-कैलि (गाया १, १३)। °रय पुं [°रय] जलप्रभ-नामक इन्द्र का एक लोकपाल (ठा ४, १)। °रासि पुं [°राशि] समुद्र, सागर (सुपा १६५, उप २६४ टी)। °रुह पुन [°रुह] पानी में पैदा होनेवाली वनस्पति (पएण १)। °रुव पु [°रूप] जलकान्त नामक इन्द्र का एक लोकपाल (भग ३, ८)। °लल्लिर न [°लल्लिर] पानी में उत्पन्न होनेवाली वस्तु-विशेष (दस १)। °वायस पुत्री [°वायस] जलकौशा, पक्षि-विशेष (कुमा)। °वासि वि [°वासिन्] १ पानी में रहनेवाला। २ पुं तापसों की एक जाति, जो पानी में ही निमग्न रहते हैं (औप)। °वाह पुं [°वाह] १ मेघ, अन्न (उप ४२, सुपा ८६)। २ जन्तु-विशेष (पउम ८८, ७)। °विच्छुय पुं [°वृश्चिक] पानी का बिच्छू, चतुरिन्द्रिय जन्तु-विशेष (पएण १)। °वीरिय पुं

[°वीर्य] १ इक्ष्वाकु वंश का एक स्वनाम-ख्यात राजा (ठा ८)। २ क्षुद्र कीट-विशेष, चतुरिन्द्रिय जन्तु की एक जाति (जीव १)। °सय न [°शय] कमल, पद्म (उप १०३ टी)। °साला स्त्री [°शाला] प्रपा, पानी पिलाने का स्थान, न्याऊ (आ १२)। °सुग न [°शूक] १ शैवाल। २ जलकान्त-नामक इन्द्र का एक लोकपाल (ठा ४, १)। °सेल पुं [°शैल] समुद्र के भीतर का पर्वत (उप ५६७ टी)। °हत्थि पुं [°हस्तिन्] जल-हस्ती, पानी का एक जन्तु (पाश्र)। °हर पुं [°धर] १ मेघ, अन्न (सुर २, १०४, से १, ५६)। २ एक विद्याधर सुभट (पउम १२, ६५)। °हर पुं [°भर] जल-समूह (गउड)। °हर न [°गृह] समुद्र, सागर (से १, ५६)। °हरण न [°हरण] १ पानी की क्यारी (पाश्र)। २ छन्द-विशेष (पिंग)। °हि पुं [°धि] १ समुद्र, सागर (महा, सुपा २२३)। २ चार की सख्या (विवे १४४)। °सिय पुं न [°शय] सरोवर, तलाव (सुर ३, १)। जलइय पु [जलकित] जलकान्त-नामक इन्द्र का एक लोकपाल (ठा ४, १—पत्र १६८)। जलजलि पुं [जलजलि] तपण, दोनों हाथों में लिया हुआ जल (सुर ३, ५१, कप्पू)। जलगा पुं [ज्वलक] अग्नि, आग (पिंड)। जलजलिअ वि [जलजलित] 'जल जल' शब्द से युक्त (सिरि ६६४)। जलजलित वि [जाज्वल्यमान] देदीप्यमान, चमकता (कप्प)। जलण पुं [ज्वलन] १ अग्नि, वह्नि (उप ६४८ टी)। २ देवों की एक जाति, अग्नि-कुमार-नामक देव-जाति (पएण १, ४)। ३ वि. जलता हुआ। ४ चमकता, देदीप्यमान, 'एईए जलणजलणोवमाए' (उव ६४८ टी)। ५ जलानेवाला (सूअ १, १, ४)। ६ न अग्नि सुलगाना (पएण १, ३)। ७ जलाना, भस्म करना (गच्छ २)। °जडि पुं [°जटिन्] विद्याधर वंश का एक राजा (पउम ५, ४६)। °मित्त पुं [°मित्र] स्वनाम-ख्यात एक प्राचीन कवि (गउड)। जलावण न [ज्वालन] जलाना, दग्ध करना (पएण १, १)।

जलिअ वि [ज्वलित] १ जला हुआ, प्रदीप्त (सूअ १, ५, १)। २ उज्ज्वल, कान्ति-युक्त (पएण २, ५)। जल्लिर वि [ज्वलित्] जलता, सुलगता (पमंवि ३५, कुप्र ३७६)। जलूगा } स्त्री [जलौकस्] १ जन्तु-जलूया } विशेष, जोक, जलिका, जल का कीड़ा (पउम १ २४, पएण १, १)। २ पक्षि-विशेष (जीव १)। जलूसग पुं [दे] रोग-विशेष (उप ४३२)। जलोयर न [जलोदर] रोग-विशेष, जलन्धर, जठराम (सण)। जलोयरि वि [जलोदरिन्] जलन्धर रोग से पीड़ित (राज)। जलोया देखो जलूया (जी १५)। जल पुं [दे. जल] १ शरीर का मूल, सुखा पसीना (सम १०, ४०, औप)। २ नट की एक जाति, रस्ती पर खेल करनेवाला नट (पएण २, ४, औप, गाया १, १)। ३ वन्दी, विरुद्ध-पाठक (गाया १, १)। ४ एक म्लेच्छ देश। ५ उस देश में रहनेवाली म्लेच्छ जाति (पएण १, १—पत्र १४)। जल्लार पुं [जल्लार] १ स्वनाम-प्रसिद्ध एक अनार्य देश। २ जल्लार देश का निवासी (इक)। जल्लिय न [दे. जल्लक] शरीर का मूल (उत्त २४)। जल्लोसहि स्त्री [दे. जल्लौपधि] एक तरह की आध्यात्मिक शक्ति, जिसके प्रभाव में शरीर के मूल से रोग का नाश होता है (पएण २, १, विसे ७७६)। जव सक [यापय्] १ गमन करवाना, भेजना। २ व्यवस्था करना। जवइ (हे ४, ४०)। हेइ जवित्तए (सूअ १, ३, २)। कृ जवणिज्ज, जवणीय (गाया १, ५, हे १, २४८)। जव सक [यापय्] काल-यापन करना, पसार करना। जवेंति (पिंड ६१६)। जव सक [जप्] जाप करना, बार-बार मन ही मन देवता का नाम स्मरण करना, पुन. पुन मन्त्रोच्चारण करना। जवइ (रंभा), 'तपंति तवमणे जवेंति मंते तहा सुविज्जामो'

शरीर-रचना (सम ४४, १४६, भाग, कम्म १, ३६) । २ कर्म-विशेष, जिसके उदय से पूर्वोक्त सहनन की प्राप्ति होती है वह कर्म- (कम्म १, ३६) ।

छेवाडी [दे] देखो छियाडी (पव ८०, निचू १२, जीव ३) ।

छेह पु [दे] क्षेप] प्रेरण, क्षेपण, 'तो वध-परिणामोऽग्रभुमभावलिख्यमाणदिदृच्छेहो' (से ४, १७) ।

छेहत्तरि (अप) देखो छाहत्तरि (पिंग) ।

छोअ पु [दे] छिलका (सुप्र २, १, १६) ।

छोअ पु [दे] दास, नौकर (दे ३३) ।

छोआ छी [दे] छिलका, ईव वगैरह की छाल (उप ७६८ टी); 'उच्छुखडे पयिए छोइय पणामेइ' (महा) ।

छोकरी छी [दे] छोकरी, लडकी (कुप्र ५३) ।

छोटि छी [दे] उच्छिष्टता, बूटाई (पिड ५८७) ।

छोड सक [छोटय] छोडना, बन्धन से मुक्त करना । छोडइ, छोडई (भवि, महा) । सक, छोडिबि (सुपा २४६) ।

छोडय वि [दे] छोटा, लघु (वर्ज्जा १६४) ।

छोडाविग वि [छोटित] छुडाया हुआ, बन्धन-मुक्त कराया हुआ (स ६२) ।

छोडि छी [दे] छोटी, लघ्वी, क्षुद्र (पिंग) । छोडिअ वि [छोटित] १ छोडा हुआ, बन्धन मुक्त किया हुआ, 'वत्थायो छोडिओ गठी' (सुपा ५०४, स ४३१) । २ घटित, ग्राहत (पह १३४—पत्र ७८) ।

छोडिअ देखो फोडिअ (श्रीप) ।

छोहण वि [दे] छोडकर (कुप्र ३१) ।

छोहण } देखो छुह ।

छोहण }

छोप वि [स्पृश्य] स्पर्श-योग्य, छूने लायक (आचा २, १५, ५) ।

छोवम पु [दे] पिशुन, खल, दुर्जन (दे ३, ३३) । देखो छोम ।

छोवम वि [क्षोभ्य] क्षोभ-योग्य, क्षोभणीय, 'होति सत्परिवर्जिजया य छोमा (? व्मा) सिप्पकलासमयसत्यपरिवर्जिजया' (पह १, ३—पत्र ५५) ।

छोवमथ वि [दे] अप्रिय, अनिष्ट (दे ३, ३३) ।

छोवमाइत्ती छी [दे] १ अस्पृश्या, छूने के अयोग्या । २ द्वेष्या, अप्रीतिकर छी (दे ३, ३६) ।

छोभ [दे] देखो छोवम (दे ३, ३३ टि) । २ निस्सहाय, दीन (पह १, ३—पत्र ५५) ।

३ न, अम्याख्यात, कलंक-मारोपण, दोषारोप (बृह १, वव २) । ४ न बन्धन-विशेष, दो खमासमाण-रूप बन्धन (गुमा १) । ५ आघात, 'कोवेण धमधमतो दतच्छोमे ये देइ सो तम्मि' (महा) ।

छोम देखो छेउम (राया १, ६—पत्र १५७) ।

छोयर पु [दे] छोरा, लडका, छोकरा (उप पृ २१५) ।

छोलिअ देखो छोडिअ = छोडित (पिंग) ।

छोल मक [तक्ष] छीलना, छाल उतारना ।

छोलइ (पड) । कर्म छोलिज्जतु (हे ४, ३६५) ।

छोलण न [तक्षण] छीलना, निस्तुपीकरण, छिलका उतारना (राया १, ७) ।

छोलिय वि [तष्ट] छिलका उतारा हुआ, तुष-रहित किया हुआ (उप १७५) ।

छोह पु [दे] १ समूह, यूथ, जत्था । २ विक्षेप (दे ३, ३६) । ३ आघात, 'ताव य सो मायगो छोह जा देइ उत्तरिबम्मि' (महा) ।

छोह पु [क्षेप] १ क्षेपण, फेंकना, 'नियदिद्वि-छोहअमयधारहि' (सुपा २६८) ।

छोहर [दे] देखो छोयर (सुपा ५५२) ।

छोहिय वि [क्षोभित] क्षोभ-प्राप्त, घबडाया हुआ, व्याकुल किया गया (उप १३७ टी) ।

॥ इम सिरिपाइअसहमहणवम्मि छमाराइसहसकलणो पंचदसमो तरंगो समत्तो ॥

ज

ज पु [ज] तालु-स्थानीय व्यजन वणं विशेष (प्रामा, प्राप) ।

ज स [यत्] जो, जो कोई (ठा ३, १, जो ८, कुमा, गा १०६) ।

ज वि [ज] उत्पन्न, 'आसाइयरससेओ होइ विसेसेण येहजो दहणो' (गा ७६६), 'आर-मज' (आचा) ।

जअकार पु [जयकार] जीत, अभ्युदय (प्राक ३०) ।

जअड अक [त्वर] त्वरा करना, शीघ्रता करना ।

जअडइ (हे ४, १७०, पड) । वक-जअडत (हे ४, १७०) । प्रयो जअडावति (कुमा) ।

जअल वि [दे] छन्न, आच्छादित, ढका हुआ (पड) ।

जइ पु [यति] १ साधु, जितेन्द्रिय, संन्यासी (श्रीप, सुपा ४४४) । २ छन्द-शास्त्र में प्रसिद्ध विश्राम-स्थान, कविता का विश्राम स्थान (धम्म १ टी) ।

जइ वि [यति] जितना (वव १) ।

जइ अ [यदा] जिस समय, जिस-वक (प्राप्र) ।

जइ अ [यदि] यदि, जो, अगर (सम १५५,

जसो° देखो जस। °आ° श्री [°दा] १ नन्द नामक गोप की पत्नी (गा ११२, ६५७)। २ भगवान् महावीर की पत्नी (कम्प)। °कामि वि [°कामिन्] यश चाहने-वाला (दस २)। °कित्तिनाम न [°कीत्तिनामन्] कर्म-विशेष, जिसके प्रभाव से सुयश फैलता है (सम ६७)। °धर पु [°धर] १ धरणीन्द्र के अश्व-मैत्र्य का अधिपति देव (ठा ५, १)। २ न भवेयक देवलोक का प्रस्तर (इक)। °हरा श्री [°धरा] १ दक्षिण रुचक पर्वत पर रहनेवाली एक दिशाकुमारी देवी (ठा ८)। २ जम्बू-वृक्ष विशेष, सुदर्शना (जीव ३)। ३ पक्ष की चौथी रात्रि (जो ४)। जसोधर देखो जस-हर (सुज १०, १४)। जसोधरा देखो जसो-हरा (सुज १०, १४)। जसोया श्री [यशोदा] भगवान् महावीर की पत्नी का नाम (आचा २, १५, ३)। जह सक [हा] त्याग देना, छोड़ देना। जहइ (पि ६७)। वहु जहत (वव ३)। कृ जहणिज्ज (राज)। सहु जहिता (पि ५८२)। जह अ [यत्र] जह। जिममे (हे ३, १६१)। जह अ [यथा] जिस तरह से, जैसे (ठा ३, १, स्वप्न २०)। °क्रम न [°क्रम] क्रम के अनुसार, अनुक्रम (पचा ६)। °कखाय देखो अह-कखाय (आवम)। °द्विय वि [°स्थित] वास्तविक, सत्य (सुर १, १६२, सुपा ५७)। °स्थ वि [°र्थ] वास्तविक, सत्य (पंचा १५)। °थनाम वि [°र्थनामन्] नाम के अनुसार-गुणवाला, अन्वर्थ--(आ १६)। °थवाइ वि [°र्थवादिन्] सत्य-वक्ता, (सुर १४, १६)। °प्प न [यायात्म्य] वास्तविकता, सत्यता (राज)। °रिह-न [°ह] उचितता के अनुसार (सुपा १६२)। °वद्विय वि [°वृत्त] सत्य, यथार्थ (सुपा ५२६)। °विहि पुंश्री [°विधि] विधि के अनुसार, नहगामिणिपमुहाओ जहविहिणा साहियव्वाओ (सुर ३, २८)। °सख न [°संख्य] संख्या के क्रम से, क्रमानुसार (नाट)। देखो जहा = यथा। जहण न [जघन] कमर के नीचे का भाग (गा १६६, राया १, ६)।

जहणरोह पु [दे] ऊरु, जघा, जाघ (दे ३, ४४)।

जहणा श्री [हान] परित्याग (सवोव ५६)।

जहणूसव } न [दे] अत्रास्क, जघनाशुक,
जहणूसुअ } श्री को पहनने का वस्त्र-विशेष (दे ३, ४५, पड)।

जहण } वि [जघन्य] निकट, हीन, अवम,
जहन्न } नीच (सम ८, भग, ठा १, १, जी ३८, द ६)।

जहा = देखो जह = हा। (पि ३५०)। °संकु जहाइता, जहाय (सूअ १, २, १, पि ५६१)।

जहा देखो जह = यथा (हे १, ६७, कुमा)।

°जुत्त वि [°युक्त] यथोचित, योग्य (सुर २, २०१)। जेट्ट न [°ज्येष्ठ] ज्येष्ठता के

क्रम से (आणु)। °णामय वि [°नामक] जिनका नाम न कहा गया हो, अनिदिष्ट-नामा,

कोई (जीव ३)। °तच्च न [°तथ्य] सत्य, वास्तविक (आचा)। °तह न [°तथ्य] सत्य,

वास्तविक (राज)। °तह न [याथातथ्य] वास्तविकता, सत्यता, जाणसि ए भिक्खु

जहातहेण (सूअ १, ६)। २ 'सूयकताङ्ग' सूत्र का एक अव्ययन (सूअ १, १३)।

°पवट्टकरण न [°प्रवृत्तकरण] प्रात्मा का परिणाम-विशेष (आचा)। °भूय वि [°भूत] सचा, वास्तविक (राया १, १) °राइणिया

श्री [°शक्तिता] ज्येष्ठता के क्रम से, वडप्पन के अनुसार (कस)। °रुह देखो जह-

रिह (स-४६३)। °चित्त न [°वृत्त] जैसा हुआ हो वैसा, यथार्थ (स २४)। °सत्ति

श्रीन [°शक्ति] शक्ति के-अनुसार (पचा ३)।

जहाजाय वि [दे-यथाजात] जह, मूल, वेवकूप (दे ३, ४१, परह १, ३)।

जहि देखो जह = यथा (हे २, १६१; गा जहि १३१, प्रासू ५६)।

जहिय देखो जहि (पिड ५८)।

जहिच्छ न [यथेच्छ] इच्छा के अनुसार (सुपा १६; पिग)।

जहिच्छिय न [यथेप्सित] इच्छानुकूल, इच्छानुसार (पंचा १)।

जहिच्छिया श्री [यहच्छा] मरजी, स्वच्छा, स्वच्छन्दता (गा ४५३, विसे ३१६; स ३३२)।

जहिठिल पुं [युधिष्ठिर] पाण्डु-राजा का ज्येष्ठ पुत्र, ज्येष्ठ पाण्डव (हे १, १०७, प्राप्र)।

जहिमा श्री [दे] विदग्ध पुरुष की बनाई हुई गाथा (दे ३, ४२)।

जहुठिल देखो जहिठिल (हे १, १६६, १०७)।

जहुत्त न [यथोक्त] कथनानुसार (पडि)।

जहेअ अ [यथैव] जैसे ही (से ६, १६६)।

जहेच्छ देखो जहिच्छ (गा ८८२)।

जहोइय न [यथोदित] कथितानुसार (वम ३)।

जहोइय } न [यथोचित] योग्यता के अनु-

जहोचिय } मार (से ८, ५, सुपा ४७१)।

जा अक [जन्] उत्पन्न होना। जायइ (हे ४, १३६)। वहु जायत (कुमा)। सहु

एक्के न्विय निव्वरण्ण पुरो-युणो जाइउं च मरिउं च (स १३०)।

जा सक [या] १ जाना, गमन करना। २ प्राप्त करना। ३ जानना। जाइ (सुपा ३०१)।

जति (महा)। वहु जत (सुर ३, १४३, १०, ११७)। कवहु जाइजमाण (परह १४)।

जा सक [या] सकना, समर्थ होना, किन्तु मम एत्थ न जाइ पव्वइउं, 'वहिद्वियाणं कि

जायइ अक्काइउं' (सुख २, १३)।

जा देखो जाव = यावत् (हे १, २७१, कुमा, सुर १५, १३८)।

जाअ देखो जाव = जाप (हास्य १३२)।

जाअ देखो जा = या। जाअइ (प्राक् ६६)।

जाअर देखो जागर (मुद्रा १८७)।

जाआ श्री [यान्] देवर-भार्या, देव की पत्नी, देवरानी (प्राक् ४३)।

जाइ श्री [जाति] १० पुण्य-विशेष, सालती (कुमा)। सामान्य नैयायिकों के मत से एक धर्म-

विशेष, जो व्यापक हो, जैसे मनुष्य का मनुष्यत्व, गो का गोत्व (विसे १६०१)। ३ जात, कुल,

गोत्र, वंश, जाति (ठा ४, २, सूअ ६, १३, कुमा)। ४ उत्पत्ति, जन्म (सुत् ३, पडि)। ५ क्षत्रिय, ब्राह्मण, वैश्य आदि जाति (उत् ३)।

६ पुण्य-प्रधान वृक्ष, जाई का पेठ (परण १)।

जंपण न [जल्पन] उक्ति, कथन, कहना (आ १२, गउड) ।

जपण न [दे] १ प्रकीर्ति, प्रपयश । २ मुख मुँह (दे ३, ५१, भवि) ।

जंपय वि [जल्पक] बोलनेवाला, भाषक (पएह १, ३) ।

जंपाण न [जम्पान] १ वाहन-विशेष, सुखासन, शिविका विशेष (ठा ४, ३, औप, सुपा ३६३, उप ६५६) । २ मृतक-यान, शव-यान (सुपा २१६) ।

जंपिच्छय वि [दे] जिसको देखे उसी को चाहनेवाला (दे ३, ४४, पाप्म) ।

जपिय वि [जल्पित] कथित, उक्त (प्रासू १३०) ।

जंपिय देखो जंप ।

जपिर वि [जल्पितृ] १ जल्पाक, वाचाट (दे २, ६७) । २ बोलनेवाला, भाषक (हे २, १४५, आ २७, गा १६२, सुपा ४०२) ।

जपेक्खिरमगिर } वि [दे] जिसको देखे
जपेक्खिरमगिर } उसी की याचना करने-
वाला (पड्, ३, ४४) ।

जंववई स्त्री [जाम्बवती] श्रीकृष्ण की एक पत्नी (अत १४, आबू १) ।

जववत् पु [जाम्बवत्] एक विद्याधर राजा (कुप्र २५६) ।

जवाळ न [दे] १ जवाल, सैवाल, जलमल, सिवार या सेवार (दे ३, ४२, पाप्म) ।

जवाल पुंन [जम्वाळ] १ कदम, कांदी, पक (पाप्म, ठा ३, ३) । २ जरायु, गर्भ-वैष्टन चर्म (सूत्र १, ७) ।

जवीरिय (अन) न [जम्वीर] नीवू या नीवू, फल-विशेष (सण) ।

जवु पुं [जम्बु] १ जम्बुक, सियार, 'उद्धमु-
द्वुन्नद्वयजवुगण' (पउम १०५, ५७) । २ एक प्रसिद्ध जैन मुनि, सुघर्म-स्वामी के शिष्य, अन्तिम केवली (कप्प, वसु, विपा १, १) । ३ न जम्बू वृक्ष का फल, जामुन (आ ३६) ।

जवु पुन [जम्बु] जम्बू वृक्ष का फल, जामुन, 'ते विति जवू भक्खेमो' (संघोष ४७) ।

जवुं देखो जवू (कप्प, कुमा, इक पउम ५६, २२, से १३, ८६) ।

जंवुअ पुं [दे] १ वेतस वृक्ष, वेंत । २ पश्चिम दिक्पाल (दे ३, ५२) ।

जंवुअ } पु [जम्बुक] १ सियार, गीदह
जंवुग } (प्रासू १७१, उप ७६८ टी, पउम १०५, ६४) । २ न. जम्बूवृक्ष का फल, जामुन (सुपा २२६) ।

जंवुल पुं [दे] १ वानीर वृक्ष, वेंत । २ न. मयमाजन, सुरापात्र (दे ३, ४१) ।

जवुल वि [दे] जल्पाक, वाचाट, वक्तादी (पाप्म) ।

जवुवई देखो जववई (अत, पडि) ।

जंवू स्त्री [जम्बू] १ वृक्ष-विशेष, जामुन का पेड़ (राया १, १, औप) । २ जंवू वृक्ष के आकार का एक रत्नमय शायत पदार्थ, सुदर्शना, जिसके कारण यह द्वीप जंवूद्वीप कहलाता है (जं १) । ३ पुं एक सुप्रसिद्ध जैन मुनि, सुघर्म-स्वामी का मुख्य शिष्य (जं १) । °दीव पु [°द्वीप] भूखण्ड विशेष, सब द्वीप और समुद्रों के बीच का द्वीप, जिसमें वह भारत आदि क्षेत्र वर्तमान है (जं १, इक) । °दीवग वि [°द्वीपक] जम्बूद्वीप-सम्बन्धी, जम्बूद्वीप में उत्पन्न (ठा ४, २, ६) । °दीवपण्णत्ति स्त्री [°द्वीपप्रज्ञप्ति] जैन आगम-ग्रन्थ-विशेष, जिसमें जंवूद्वीप का वर्णन है (जं १) । °पीढ, °पेढ न [°पीठ] सुदर्शना-जम्बू का अधिष्ठान-प्रदेश (ज ४, इक) । °पुर न [°पुर] नगर-विशेष (इक) । °मालि पु [°मालिन्] रावण का एक पुत्र, रावण का एक सुभट (पउम ५६, २२, से १३, ८६) । °मेघपुर न [°मेघपुर] विद्याधर-नगर-विशेष (इक) । °संड पुं [°पण्ड] ग्राम-विशेष (आवम) । °सामि पुं [°स्वामिन्] सुप्रसिद्ध जैन मुनि-विशेष (आवम) ।

जंवूअ पुं [जम्बूक] सियार, गीदह (भोष ८४ भा) ।
जंवूणय न [जाम्बूनद] १ सुवर्ण, सोना (सम ६५, पउम ५, १२६) । २ पुं. स्वनाम-प्रसिद्ध एक राजा (पउम ४८, ६८) ।
जवूलय पुंन [जम्बूलक] उदक-माजन-विशेष (उवा) ।

जभ पु [दे] तुप, भूसा, धान्य वगैरह का छिलका (दे ३, ४०) ।

जभंत देखो जंभा = जृम्म् ।

जंभग वि [जृम्भक] १ जैमाई लेनेवाला । २ पु. व्यन्तर-देवों की एक जाति (कप्प, सुपा ४०) ।

जभणभण } वि [दे] स्वच्छन्द-भाषी, जो
जंभणभण } मरजी में भावे वह बोलने-
जभणय } वाला (पड्, दे ३, ४४) ।

जभणी स्त्री [जृम्भणी] तन्त्र-प्रसिद्ध विद्या-विशेष (सूत्र २, २, पउम ७, १४४) ।

जंभय देखो जंभग (राया १, १, अत, भग १४, ८) ।

जंभल पुं [दे] जड, सुस्त, मन्द (दे ३, ४१) ।
जंभा स्त्री [जृम्भा] जैमाई, जृम्भण (विपा १, १) ।

जभा स्त्री [जृम्भा] एक देवी का नाम (सिरि २०३) ।

जभा } अक [जृम्भ] जैमाई लेना ।
जंभाअ } जंमाइ, जंमाअइ (हे ४, १५७, २४०, प्राप्र, पड्) । वहु जंभंत, जभाअत (गा ५४६, से ७, ६५, कप्प) ।

जंभाइअ न [जृम्भित] जैमाई, जृम्भा (पडि) ।

जंभिय न [जृम्भित] १ जैमाई, जृम्भ । २ पुं. ग्राम-विशेष, जहाँ भगवान् महावीर को केवलज्ञान उत्पन्न हुआ था, यह गाँव पारसनाथ पहाड़ के पास की ऋजुवालिका नदी के किनारे पर था (कप्प) ।

जक्ख पु [यक्ष] १ व्यन्तर देवों की एक जाति (पएह १, ४, औप) । २ घनेश, कुवेर, यक्षाधिपति (प्राप्र) । ३ एक विद्याधर-राजा, जो रावण का मौसेरा भाई था (पउम ८, १०२) । ४ द्वीप-विशेष । ५ समुद्र-विशेष (चंद १६) । ६ खान, कुत्ता; 'अहं आयविरा-
हणया उक्खुल्लिहणे पवयणम्मि' (भोष १६३ भा) । °कदम पुं [°कर्दम] १ केसर, अगर, चन्दन, कपूर और कस्तूरी का समभाग मिश्रण (भवि) । २ द्वीप-विशेष । ३ समुद्र-विशेष (चंद २०) । °ग्गह पु [°ग्रह] यज्ञावेश, यज्ञकृत उपद्रव (जीव ३, जं २) । °णायग पुं [°नायक] यक्षों का अधिपति, कुवेर (मण्ण) । °दिच्च न [°दीप्त] देखो नीचे °दिच्चय (पव २६) । °दिन्ना स्त्री [°दत्ता] महर्षि स्थूलभद्र की वहिन, एक जैन साध्वी

जाणय वि [जापक] जनानेवाला, समझाने-
वाला (औप) ।
जाणया स्त्री [ज्ञान] ज्ञान, समझ, जानकारी,
'एणसि पयाए जाणजाए सवणयाए' (भग) ।
जाणयय वि [ज्ञानपद] १ देश मे उत्पन्न,
देश सबन्धी (भग, णाया १, १—पत्र ८) ।
जाणाव सक [ज्ञापय] ज्ञान कराना,
जनाना । जाणावइ, जाणावेइ (कुमा, महा) ।
हेक. जाणाविउ, जाणावेउ (पि ५५१) ।
कृ जाणावेयव्व (उप पृ २२) ।
जाण वण न [ज्ञापन] ज्ञापन, बोधन (पउम
११, ८८, सुपा ६०६) ।
जाणावणा } स्त्री [ज्ञापनी] विद्या-विशेष
जाणावणी } (उप पृ ४२, महा) ।
जाणाविय वि [ज्ञापित] जनाया, विज्ञापित,
मालूम कराया, निवेदित (सुपा ३५६,
आवम) ।
जाणि वि [ज्ञानिन्] ज्ञाना, जानकार (कुमा) ।
जाणिअ वि [ज्ञात] जाना हुआ, विदित
(मुर ४, २१४, ७, २६) ।
जाणु न [जाउ] १ घोंटू, घुटना । २ ऊर
और जघा का मध्य भाग (तदु, निर १, ३,
णाया १, २) ।
जाणु } वि [जायक] जाननेवाला, ज्ञाता,
जाणुअ } जानकार (ठा ३, ४, णाया १,
१३) ।
जाणे अ [जाने] उत्प्रेक्षा-सूचक अव्यय,
मानो (अभि १५०) ।
जाम मक [मृज्] मार्जन करना, सफा
करना । जामइ (नाट—प्राप्र ८० टी) ।
जाम पु [गाम] १ प्रहर, तीन घण्टा का
समय (मम ४४, मुर ३, २४२) । २ यम,
अहिंसा आदि पाँच व्रत । ३ उम्र विशेष,
आठ ने बत्तीस, बत्तीस से साठ और साठ से
अधिक वर्ष की उम्र (आचा) । ४ वि यम-
सबन्धी, जमराज का (सुपा २०५) । ५ डल्ल
वि [वन्] १ प्रहरवाला (हे २, १५६) ।
२ पु. प्राहरिक, पहरदार, यामिक (सुपा
५) । ३ दिसा स्त्री [दिश] दक्षिण
दिशा (सुपा ४०५) । ४ वडि स्त्री [वती]
रात्रि, रात (गडड) ।

जाम देखो जाव = यावत् (आरा ३३) ।
जामाइ देखो जामाउ (पिड ४२४) ।
जामग्गहण न [यामग्रहण] प्राहरिकत्व,
पहरदार (सुख २, ३१) ।
जामाउ } पुं [जामाट, °क] जामाता,
जामाउय } दामाद, लडकी का पति (पउम
८६, ४, हे १, १३१, गा ६८३) ।
जामि स्त्री [जामि, यामि] बहिन, भगिनी
(राज) ।
जामिअ देखो जामिग (धर्मवि १३५) ।
जामिग पुं [यामिक] प्राहरिक, पहरआ,
पहलू, पहरदार (उप ८३३) ।
जामिणी स्त्री [यामिनी] रात्रि, रात (उप
७२८ टी) ।
जामिल्ल देखो जामिग (सुपा १४६, २६६) ।
जामेअ पु [यामेय] भानजा, भागिनिय,
बहिन का पुत्र (धर्मवि २२) ।
जाय सक [याच्] प्रार्थना करना, माँगना ।
वकृ. जायत (परह १, ३) । कवकृ जाइ-
ज्जत (पउम ५, ६८) ।
जाय सक [यातय] पीडना, यन्त्रणा
करना । जाएइ (उव) । कवकृ जाइज्जत
(परह १, १) ।
जाय देखो जाग (णाया १, १) ।
जाय वि [जात] १ उत्पन्न, जो पैदा हुआ
हो (ठा ६) । २ न. समूह, सघात, (दस
४) । ३ भेद, प्रकार (ठा १०, निवू १६) ।
४ वि. प्रवृत्त (औप) । ५ पु लडका, पुत्र
(भग ६, ३३, सुपा २७६) । ६ न वच्चा,
सतान, 'जाय तोए जइ कहवि जायए पुन-
जोगेण' (सुपा ५६८) । ७ जन्म, उत्पत्ति
(णाया १, १) । ८ °कम्म न [°कर्मन्]
१ प्रसूति-कर्म (णाया १, १) । २ सस्कार-
विशेष (वमु) । ३ °तेय पु [°तेजस्] अग्नि,
बहि (सम ५०) । ४ °निदुट्टया स्त्री [°निद्रुता]
मृत-वत्सा स्त्री (विपा १, २) । ५ वि °मूअ
वि [°मूक] जन्म से मूक (विपा १, १) ।
६ °रुव न [°रूप] १ सुवर्ण, सोना (औप) ।
२ रूप्य, चाँदी (उत्त ३५) । ३ सुवर्ण-
निर्मित (सम ६५) । ४ °वेय पु [°वेदस्]
अग्नि, बहि (उत्त १२) ।

जाय वि [यात] गत, गया हुआ (सूत्र १,
३, १) । २ प्राप्त (सूत्र १, १०) । ३ न.
गमन, गति (आचा) ।
जाय पु. [जात] गीतार्थ, विद्वान् जैन मुनि
(पव—गाथा २४) ।
जायग वि [याचक] १ माँगनेवाला । २
पुं. भिक्षुक (आ २३, सुपा ४१०) ।
जायग वि [याजक] यज्ञ करानेवाला (उत्त
२५, ६) ।
जायण न [याचन] याचना, प्रार्थना (आ
१४, प्रति ६१) ।
जायण न [यातन] कदर्थन, पीडन (परह
१, २) ।
जायणया } स्त्री [याचना] याचना, प्रार्थना
जायणा } माँगना (उप पृ ३०२, सम ४०,
स २६१) ।
जायणा स्त्री [यातना] कदर्थना, पीडा
(परह १, १) ।
जायणी स्त्री [याचनी] प्रार्थना की भाषा
(ठा ४, १) ।
जायव पु स्त्री [यादव] यदुवंश मे उत्पन्न,
यदुवंशीय (णाया १, १६, पउम २०, ५६) ।
जाया स्त्री [यात्रा] निर्वाह, गुजारा, वृत्ति ।
°माय वि [°मात्र] जितने से निर्वाह हो
सके उतना, 'साहुस्स वित्ति वीरा जाया माय
च ओमं च' (पिड ६४३) ।
जाया स्त्री [जाया] स्त्री, औरत, (गा ६,
सुपा ३८६) ।
जाया देखो जत्ता (परह २, ४, सूत्र १, ७) ।
जाया स्त्री [जाता] चमरेन्द्र आदि इन्द्रो की
बाह्य परिषत् (भग, ठा ३, २) ।
जायाइ पु [यायाजिन्] यज्ञ-कर्ता, याजक,
यज्ञ करानेवाला (उत्त २५, १) ।
जार पुं [जार] १ उपपति, यार (हे १, १७७) ।
२ मणि का लक्षण-विशेष (जीव ३) ।
जारिच्छ वि [यादृक्ष] ऊपर देखो (प्रामा) ।
जारिस वि [यादृश] जैसा, जिस तरह का
(हे १, १४२) ।
जारेकण न [जारेकण] गोत्र-विशेष, जो
वाशिष्ठ गोत्र की एक शाखा है (ठा ७) ।
जाल सक [ज्वालय] जलाना, दग्ध करना,
'तो जलियजलणजालावलीमु जालेमि नियदेह'
(महा) । संकृ जालेवि (महा) ।

जञ पु [दे] पुरुष, मरद, आदमी (दे ३, ४०) ।
 जञ वि [जात्य] १ उत्तम जातवाला, कुलीन, श्रेष्ठ, उत्तम, सुन्दर (गाथा १, १, आ १२, सुपा ७७, कप्प) । २ स्वाभाविक, अकृत्रिम (तदु) । ३ सजातीय, विजाति-मिश्रण से रहित, शुद्ध (जीव ३) ।
 जञजण न [जात्याञ्जन] १ श्रेष्ठ अञ्जन, सुन्दर अञ्जन (गाथा १, १) । २ मदित अञ्जन, तैल धौरेह से मदित अञ्जन (कप्प) ।
 जञदण न [दे] १ श्रेष्ठ, सुगन्धि-द्रव्य-विशेष, जो घूप के काम में आता है । २ कुंकुम, केसर (दे ३, ५२) ।
 जञध वि [जात्यन्ध] जन्म से अन्धा, जन्माध (सुपा ३६५) ।
 जञणिय वि [जात्यन्धित] सुकुल में जञनिय, उत्पन्न, श्रेष्ठ-जाति का (सूत्र १, १०, बृह ३) ।
 जञास पुं [जात्यन्ध, जात्यान्ध] उत्तम जाति का घोड़ा (पउम ५४, २६) ।
 जञिय (अप) वि [जातीय] समान जाति का (मण) ।
 जञिर न [यञिर] जहां तक, जितने समय तक (वव ७) ।
 जञ्ज सक [यम्] १ उपरम करना, विराम करना । २ देना, दान करना । जञ्जइ (हे ४, २१५, कुमा) ।
 जञ्ज पुं [यचमन्] रोग-विशेष, यक्ष्मा, क्षय-रोग (प्राक २२) ।
 जञ्छं वि [दे] स्वच्छन्द, स्वैर (दे ३, ४३, पड) ।
 जज देखो जय = यज् । वक्क जजमाण (नाट—शकु ७२) ।
 जजु देखो जउ = यजुप् (गाथा १, ५, भग) ।
 जज वि [जय] जो जीता जा सके वह जीतने को शक्य (हे २, २४) ।
 जज्जर वि [जर्जर] जीर्ण, सच्छिद्र, खोखला, जर्जर, झोझरा या झोझर (गा १०१, सुर ३, १३६) ।
 जज्जर सक [जर्जरय्] जीर्ण करना, खोखला करना । कवक्क जज्जरिज्जत, जज्जरिज्जमाण (नाट—चैत ३३, सुपा ६४) ।

जज्जरिय वि [जर्जरित] जीर्ण किया गया, खोखला किया हुआ, पुराना (ठा ४, ४, सुर ३, १६५, कस) ।
 जज्जिग पुं [जयिक्क] एक जैन आचार्य का नाम (ती १५) ।
 जज्जिय न [यावज्जीव] जीवन-पर्यन्त, जज्जीव जिन्दगी भर, 'जज्जीव अहिगरण' (पिड ५०६, ५१२) ।
 जट्ट पुं [जर्ने] १ देश-विशेष (भव) । २ उस देश का निवासी (हे २, ३०) ।
 जट्ट वि [इष्ट] यजन किया हुआ, याग किया हुआ (स ५५) ।
 जट्ट न [इष्ट] यजन, याग, यज्ञ (उत्त १२, ४०, २५, ३०) ।
 जट्टि लो [यष्टि] लकड़ी, 'जट्टिमुट्टिलउडपहा-रेहि' (महा प्राप्) ।
 जड वि [जड] १ अचेतन, जीव रहित पदार्थ । २ मूर्ख, आलसी, विवेक शून्य (पात्र, प्रासू ७१) । ३ शिशिर, जाड़े से ठंडा होकर चलने को अशक्त (पात्र) ।
 जड देखो जड (पड) ।
 जड° लो [जडा] सटे हुए बाल, मिले हुए जडा वाल (हेका २५७, सुपा २५१) ।
 जड वि [जड] १ जडा को धारण करने वाला । २ पुं जडाधारी तापस, संन्यासी (पउम ३६, ७५) । धारि पु [धारिन्] देखो पूर्वोक्त अर्थ (पउम ३३, १) ।
 जडहारि देखो जड-धारि (कुप्र २६३) ।
 जडाउ- } पु [जटायु] स्वनाम-प्रसिद्ध गृध्र
 जडाउण } पक्षि-विशेष (पउम ४४, ५५, ४०) ।
 जडागि पुं [जटाकिन] ऊपर देखो (पउम ४१, ६५) ।
 जडाल वि [जटावत्] जटा-युक्त, जटाधारी (हे २, १४६) ।
 जडासुर पु [जटासुर] असुर-विशेष (वेणी १७७) ।
 जडि-वि [जटिन्] १ जटावाला, जटायुक्त । २ पु जटाधारी तापस (श्रीप, भत्त १००) ।
 जडिअ वि [जटिक] देखो जडि (कुप्र २६३) ।

जडिअ वि [जटित] पिहित, ढका हुआ (सिरि ५१६) ।
 जडिअ-वि [दे, जटित] जडित जडा हुआ, खचित, सलरन (दे ३, ४१, महा, पात्र) ।
 जडिम पुत्री [जडिमन्] जडता, जडपन, जाड्य (सुपा-६) ।
 जडियाइलग पुं [दे जटिकादिलक] ग्रह-जडियाइलग विशेष, ग्रहाधिपत्यक देव-विशेष (ठा २, ३, चन्द २०) ।
 जडिल वि [जटिल] १ जटावाला, जटा-युक्त (उवा, कुमा २, ३५) । २ व्यास, खचित, 'उल्लसियवहलजालोलिजडिले जलणे पवेमो वा' (सुपा ४६५) । ३ पु. सिंह, केसरी । ४ जटाधारी तापस (हे १, १६४, भग १५, पव ६४) ।
 जडिलय पुं [दे, जटिलक] राहु, ग्रह-विशेष (मुज २०) ।
 जडिलिय वि [जटिलित] जटिल किया जडिलिल हुआ, जटा-युक्त किया हुआ (सुपा १२५, २६६) ।
 जडिलि वि [जटिन्] जटावाला, जटाधारी (चंड) ।
 जगुल देखो जडिल (भग १५—पत्र ६७०) ।
 जडु वि [दे] अशक्त, असमर्थ (पव १०७) ।
 जडु न [जाड्य] जडता, जडपन (उप ३२० टी, सार्व १३०) ।
 जडु देखो जड (पव १०७, पचमा) ।
 जडु पु [दे] हाथी, हस्ती (श्रीप २३८, बृह १) ।
 जडु लो [दे] जाडा, शीत (सुर १३, २१५, पिग) ।
 जड वि [त्यक्त] परित्यक्त, मुक्त, वर्जित (हे ४, २५८, श्रीप ६०), 'जडवि न सम्मतजडो' सत्त ७१ टी) ।
 जडर न [जडर] पेट, उदर (हे १, २५४, जडल प्राप्, पड) ।
 जण सक [जनय्] उत्पन्न करना, पैदा करना । जणोइ, जणांति (प्रासू १५, १०८, महा) । जणयति (आचा) । वक्क जणत, जणेमाण (सुर १३, २१, द्र ३६, उव) ।
 जण पु [जन] १ मनुष्य, मानव, आदमी, लोग, व्यक्ति (श्रीप, आचा, कुमा, प्रासू ६५

जिअ अक [जीव] जीना, प्राण-धारण करना। जिअइ, जिअउ (हे १, १०१)। वकू. जिअत (गा ६१७)।

जिअ पुं [जीव] आत्मा, प्राणी, चेतन (सुर २, ११३, जी ६, प्रासू ११४, १३०)।
°लोअ पु [°लोक] संसार, दुनियाँ (सुर १२, १४३)।

जिअ न [जित] जीत, जय (प्राकृ ७०)।
°गासि वि [°काशिन्] जीत से शोभनेवाला विजेता (सम्मत् २१७)। °सत्तु पु [°शत्रु] अग-विद्या का जानकार दूसरा रूढ़-पुरुष (विचार ४७३)।

जिअ वि [जित] १ जीता हुआ, पराभूत, अभिभूत (कुमा, सुर ३, ३२)। २ परिचित (विसे १४७२)। °प्प वि [°त्मन्] जितेन्द्रिय, सयमी (सुपा २७६)। °भाणु पुं [°भानु] राक्षस-वंश का एक राजा, एक लका-पति (पउम ५, २५६)। °सत्तु पु [°शत्रु] १ भगवान् अजितनाथ का पिता (सम १५०)। २ नृप-वशेष (महा, विपा १, ५)। °सेण पु [°सेन] १ जैन आचार्य-विशेष। २ नृप-विशेष। ३ एक चक्रवर्ती राजा। ४ स्वनामख्यात एक कुलकर (राज)। °रि पु [°रि] भगवान् सभवनथजी का पिता (सम १५०)।

जिअती स्त्री [जीवन्ती] बह्वी-विशेष (परण १)।

जिअव वि [जातवत्] जय-प्राप्त (परह १, १)।

जिइदिय } वि [जितेन्द्रिय] इन्द्रियो को
जिएन्द्रिय } वश में रखनेवाला, संयमी
(पउम १४, ३६, हे ४, २८७)।

जिंघ सक [घ्रा] सूँघना, गन्ध लेना। कू जिंघगिज्ज (कप्प)।

जिंघण न [घ्राण] सूँघना, गन्ध-ग्रहण (स ५७७)।

जिंघणा स्त्री [घ्राण] ऊपर देखो (ओष ३७६)।

जिंघिअ वि [घ्रात] सूँघा हुआ (पाअ)।

जिडह पुन [दे] कन्दुक, गेंद, जिडहगेड्डिआ-इरमण (पव ३८, धर्म २)।

जिडुह पुं [दे] कन्दुक, गेंद (पव ३८)।

जिभ } देखो जभाय। जिभ (अभि
जिभाअ } २४१)। वकू. जिभाअत (से ११, ३०)।

जिभिया स्त्री [जृम्भा] जम्माई, जृम्भण, मुख विकाश (सुपा ५८३)।

जिगीसा स्त्री [जिगीषा] जय की इच्छा (कुप्र २७८)।

जिग्घ देखो जिंघ। जिग्घइ (निचू १)।

जिग्घिअ वि [दे] घ्रात, सूँघा हुआ (दे ३, ४६)।

जिच्च } देखो जिण = जि।
जिच्चमाण }

जिट्ट वि [ज्येष्ठ] १ महान्, बृद्ध, बड़ा (सुपा २३४, कम्म ४, ८६)। २ श्रेष्ठ, उत्तम। ३ पुं. बड़ा भाई, 'जिट्ट व कणिट्ट पि हु' (धर्म २)। °भूइ पु [°भूति] जैन साधु-विशेष (तो १७)। °मूली स्त्री [°मूली] ज्येष्ठ मास की पूर्णिमा (इक)।

जिट्ट पु [ज्येष्ठ] मास-विशेष, जेठ (राज)।

जिट्टा स्त्री [ज्येष्ठा] १ भगवान् महावीर की पुत्री। २ भगवान् महावीर की भगिनी (विमे २३०७)। ३ नक्षत्र-विशेष (ज १)। देखो जेट्टा।

जिट्टाणी स्त्री [ज्येष्ठा] बड़े भाई की पत्नी, जिठानी या जेठानी (सुपा ४८७)।

जिट्टिणी स्त्री [ज्यैष्ठी] जेठ मास की अमावस (सट्ठि ७८ टी)।

जिण सक [जि] जीतना, वश करना।

जिणइ (हे ४, २४१, महा)। कर्म. जिणि-

ज्जइ, जिण्वइ (हे ४, २४२)। वकू. जिणत,

जिणयत (पि ४७३, पउम १११, १७)।

कवकू. जिण्वमाण (उत्त ७, २२)। सकू

जिणिच्चा, जिणिऊण, जिणेऊण, जेऊण,

जेउआण (पि, हे ४, २४१, षड्, कुमा)।

हेकू. जिणिउ, जेउं (सुर १, १३०, रंभा)।

कू. जिच्च, जिणेयव्व, जेयव्व (उत्त ७,

२२, पउम १६, १६, सुर १४, ७६)।

जिण पु [जिन] १ राग आदि अन्तरंग शत्रुओं को जीतनेवाला, अहंन् देव, तीर्थंकर (सम १, ठा ४, १, सम्म १)। २ बुद्ध देव, बुद्ध भगवान् (दे १, ५)। ३ केवल-ज्ञानी,

सर्वज्ञ (परण १)। ४ चौदह पूर्व ग्रन्थों का जानकार (उत्त ५)। ५ जैन साधु-विशेष, जिनकल्पी मुनि। ६ अवधि-ज्ञान आदि अतीन्द्रिय ज्ञानवाला (पचा ४, ठा ३, ४)। ७ वि. जीतनेवाला (पचा ३, २०)। °इद पुं [°इन्द्र] अहंन् देव (सुर ४, ८१)। °कप्प पु [°कल्प] एक प्रकार के जैन मुनियों का आचार, चारित्र-विशेष (ठा ३, ४, वृह १)। °कप्पिय पुं [°कल्पिक] एक प्रकार का जैन मुनि (ओष ६६६)। °किरिया स्त्री [°क्रिया] जिनदेव का बतलाया हुआ धर्मानुष्ठान (पचव १)। °घर न [°गृह] जिन-मन्दिर (भग २, ८, एया १, १६—पत्र २१०)। °चट्ट पु [°चन्द्र] १ जिनदेव, अहंन् देव (कम्म ३, १, अजि २६)। २ स्वनाम-ख्यात जैन आचार्य विशेष (गु १२, सण)। °जत्ता स्त्री [°यात्रा] अहंन् देव की पूजा के उपलक्ष में किया जाता उत्सव-विशेष, रय-यात्रा (पचा ७)। °णाम न [°नामन्] कर्म-विशेष जिसके प्रभाव से जीव तीर्थंकर होता है (राज)। °दत्त पु [°दत्त] १ स्वनाम-प्रसिद्ध जैनाचार्य-विशेष (गण २६, सार्ध १५०)। २ स्वनाम-ख्यात एक जैन श्रेष्ठी (पउम २०, ११६)। °दव्व न [°द्रव्य] जिन-मन्दिर-सम्बन्धी धनादि वस्तु, 'बड्ढतो जिणदव्व तित्थगरत्त लहइ जीवो' (उप ४१८, दस १)। °दास पु [°दास] १ स्वनाम-प्रसिद्ध एक जैन उपासक (आचू ६)। २ स्वनाम-ख्यात एक जैन मुनि और ग्रन्थकार, निशीथ-सूत्र का खूणिकार (निचू २०)। °देव पु [°देव] १ अहंन् देव (गु ७)। २ स्वनाम-प्रसिद्ध जैनाचार्य (आक)। ३ एक जैन उपासक (आचू ४)। °धम्म पु [°धर्म] जिनदेव का उपदिष्ट धर्म, जैन धर्म (ठा ५, २, हे १, १८७)। °नाह पु [°नाथ] जिनदेव, अहंन् देव (सुपा २३५)। °पडिमा स्त्री [°प्रतिमा] अहंन् देव की मूर्ति (एया १, १६—पत्र २१०, राय, जीव ३), 'जिणपडिमादंसणेण पडिबुद्ध' (दसचू २)। °पवयण न [°प्रवचन] जैन आगम, जिनदेव-प्रणीत शास्त्र (विसे १३५०)। °पसत्थ वि [°प्रशस्त] तीर्थंकर-भाषित, जिनदेव-कथित (परह २,

जणहली स्त्री [दे] नीवी, नारा, झजारवन्द
(दे ३, ४०) ।

जणहवी स्त्री [जाहवी] १ सगर चक्रवर्ती
की एक पत्नी, भगीरथ की जननी (पद्य
५, २०१) । २ गङ्गा-नदी, भागीरथी (पद्य
४१, ५१, कुमा) ।

जणहु पुं [जह] भरत-वंशीय एक राजा
(प्राप्र; हे २, ७५) । °सुआ स्त्री [°सुता]
गङ्गा-नदी, भागीरथी (पाप्र) ।

जणहुआ स्त्री [दे] जानु, घुटना (पाप्र) ।
जणहुकन्या स्त्री [जह, कन्या] गंगा-नदी
(कुप्र ६६) ।

जत्त देखो जय = यत् । भवि जत्तिहामि
(निर १, १) ।

जत्त पुं [यत्त] उद्योग, उत्थम, चेष्टा (उप
पृ ५८) ।

जत्ता स्त्री [यात्रा] १ देशान्तर-गमन, देशाटन
(ठा ४, १, औप) । २ गमन, गति, 'जत्तित्ति
होइ गमण' (पंचभा, औप) । ३ देव-पूजा के
निमित्त किया जाता उत्सव-विशेष, अष्टाहिका,
रथ-यात्रा आदि, 'हुं नायं पारद्धा मिद्धाययणेमु
जत्ताओ' (सुर ३, ३८) । ४ तीर्थ-गमन,
तीर्थ-भ्रमण (धर्म २) । ५ शुभ-प्रवृत्ति (भग
१८, १०) ।

जत्ता स्त्री [यात्रा] संयम-निर्वाह (उत्त
१६, ८) ।

जत्ति स्त्री [दे] १ चिन्ता । २ सेवा, सुश्रूषा,
'अजाणुणाए तज्जत्ती न कया तम्मि केणवि'
(आ २८) ।

जत्तिअ देखो °यत्तिअ (उवा २० टि) ।

जत्तिय वि [यावत्] जितना (प्रासू १५६,
भावम) ।

जत्तो देखो जओ (हे २, १६०) ।

जत्य अ [यत्र] जहाँ, जिसमें (हे २, १६१,
प्रासू ७६) ।

जदि देखो जइ = यदि (निचू २) ।

जदिच्छा देखो जइच्छा (वृह ३, मा १२) ।

जदु देखो जउ = यदु (कुमा; ठा ८) ।

जहर पुन [दे] वस्त्र-विशेष (सम्मत्त २१८,
२१६) ।

जघा देखो जहा (ठा २, ३, ३, १) ।

जन्न देखो जण (पणह १, २, ४, पद्यम
११, ४६) ।

जन्न वि [जन्य] १ जन-हित, लोक-हितकर
(सूअ २, ६, २) । २ उत्पन्न होने योग्य
(धर्मस २८०) ।

जन्नत्ता } स्त्री [दे] वरात, युगरातो में 'जान'
जन्ना } (सुपा ३६६, उप ७६८ टी) ।

जन्नसेणी देखो जणसेणी (पाथं ४) ।

जन्नु देखो जाणु (पद्यम ६८, १०) ।

जन्नोवइय देखो जण्णोवईय (सुख २, १३) ।

जन्नोवईय देखो जण्णोवईय (णाय १,
१६—पत्र २१३) ।

जन्हवी देखो जण्हवी (ठा ६, ६) ।

जप देखो जव = जप् (पह) ।

जपिर वि [जपितृ] जाप करनेवाला (पह)

जप्प देखो जप । जप्पइ (पह) । जप्पति
(पि २६६) ।

जप्प पुं [जल्प] १ उक्ति, कथन । २ छल
का उपालम्भ रूप भाषण (राज) ।

जप्प वि [याप्य] गमन कराने योग्य ।
°जाण न [°यान] वाहन-विशेष, शिविका
(दे ६, १२२) ।

जप्पभिइ } अ [यत्प्रभृति] जव से, जहाँ से
जप्पभिइ } लेकर (णाय १, १; कप्प) ।

जप्पिथ वि [जल्पित] १ उक्त, कथित
(प्राप) । २ न उक्ति, वचन (अण्डु २) ।

जम सक [यमय] १ कावू में रखना,
नियन्त्रण करना । २ जमाना, स्थिर करना ।
जमेइ (से १०, ७०) । संकृ जमइत्ता
(औप) ।

जम पुं [यम] १ अहिंसादि पाँच महाव्रत,
साधु का व्रत (णाय १, ५, ठा २, ३) ।

२ दक्षिण दिशा का एक लोकपाल, देव-
विशेष, जम-देवता, जमराज (पणह १, १,
पाप्र, हे १, २४५) । ३ भरणी नक्षत्र का

अधिपति देव (सुज्ज १०) । ४ किष्किन्वा
नगरी का एक राजा (पद्यम ७, ४६) । ५

तापस-विशेष (भावम) । ६ मृत्यु, मौत (भाव
४, महा) । ७ संयमन, नियन्त्रण (भावम) ।

°काइय पुं [°कायिक] असुर-विशेष, परमा-
धार्मिक देव, जो नारकी के जीवों को दुःख
देते हैं (पणह १, १) । °घोस पुं [°घोष]

ऐरवत वर्ष के एक भावी जिन-देव (पव ७) ।
°पुरी स्त्री [°पुरी] जम की नगरी, मौत का
स्थान, 'को जमपुरीसमाणे सममाणे एव-
मुल्लवइ' (सुपा ४६२) । °पपभ पु [°प्रभ]
यमदेव का उत्पात-पर्वत, पर्वत-विशेष (ठा
१०) । °भड पुं [°भट] यमराज का सुभट
(महा) । °मदिर न [°मन्दिर] यमराज का
घर, मृत्यु स्थान (महा) । °लिय न [°लय]
पूर्वोक्त ही अर्थ (पद्यम ४५, १०) ।

जमग पुं [यमक] १ पक्षि-विशेष । देव-
विशेष (जीव ३) । ३ पर्वत-विशेष (जीव ३,
सम ११४, इक) । ४ द्रह-विशेष, दह, मौल
(जीव ३, इक) । देखो जमय ।

जमग } अ [दे] एक साथ, एक ही
जमगसमग } समय में, युगपत् (धम्म ११
टी; णाय १, ४, औप, विपा १, १) ।

जमणिया स्त्री [जमनिका] जैन साधु का
उपकरण-विशेष (राज) ।

जमदग्गि पुं [जमदग्नि] तापस-विशेष, इस
नाम का एक सन्यासी, परशुराम का पिता
(पि २०७) ।

जमदग्गिजडा स्त्री [यमदग्निजटा] गन्ध-
द्रव्य-विशेष, सुगन्धवाला (उत्तनि ३) ।

जमय देखो जमग ५ न अलंकार-शास्त्र में
प्रसिद्ध अनुप्रास-विशेष । ६ छन्द-विशेष (पिंग) ।

जमल न [यमल] १ जोड़ा, युग्म, युगल
(णाय १, १, हे २, १७३, से ५, ५६) ।

२ समान श्रेणि में स्थित, तुल्य पक्षिवाला
(राय) । ३ सहवर्ती, सहचारी (भग १५) ।

४ समान, तुल्य (राय, औप) । °जुणभजग
पुं [°जुनभजक] श्रीकृष्ण वासुदेव (पणह
१, ४) । °पद, °पय न [°पद] १ प्राय-

श्चित्त-विशेष (निचू १) । २ आठ अक्षरों की
संख्या (पणह १२) । °पाणि पुं [°पाणि]

मुष्टि, मुट्ठी (भग १६, ३) ।

जमलिय वि [यमलित] १ युग्म रूप से
स्थित (राय) । २ सम-श्रेणि रूप से अवस्थित
(णाय १, १, औप) ।

जमलोइय वि [यमलौकिक] १ यमलोक-
सम्बन्धी, यमलोक से सम्बन्ध रखनेवाला ।
२ परमाधार्मिक देव, असुरों की एक जाति
(सूअ १, १२) ।

जिव देखो जीव, 'मायाइ अह भणिओ कायव्वा वच्छ जिवदया तुमए' (धर्मवि ५)।

जिवे } (अप) देखो जिध (कुमा: पड्, हे जिह } ४, ३३७)।

जिहा देखो जीहा (पड्)।

जीअ देखो जीव = जीव्। जीअइ (गा १२४, हे १, १०१)। वक्त. जीअत (मे ३, १२, गा ८१६)।

जीअ देखो जीव = जीव (गड्ड)। ५ पानी, जल (से २, ७)।

जीअ देखो जीविअ (हे १, २७१, प्राप्र, सुर २, २३०)।

जीअ न [जीत] १ आचार, रिवाज, प्रथा, रूढि (श्रौप, राय, सुपा ४३)। २ प्रायश्चित्त से सम्बन्ध रखनेवाला एक तरह का रिवाज, जैन सूत्रो मे उक्त रीति से भिन्न तरह के प्रायश्चित्तो का परम्परागत आचार (ठा ५, २)। ३ आचार-विशेष का प्रतिपादक ग्रन्थ (ठा ५, २, वव १)। ४ मर्यादा, स्थिति, व्यवस्था (एदि)। ५ कल्प पु [कल्प] १ परम्परा से आगत आचार। २ परम्परागत आचार का प्रतिपादक ग्रन्थ (पचा ६, जीत)। ३ कल्पिय वि [कल्पिय] जीत कल्पवाला (ठा १०)। ४ धर वि [धर] १ आचार-विशेष का जानकार। २ स्वनाम-ख्यात एक जैनाचार्य (एदि)। ५ व्यवहार पु [व्यवहार] परम्परा के अनुसार व्यवहार (धर्म २, पचा १६)।

जीअण देखो जीवण (नाट-चैत २५८)।

जीअव वि [जीवितवत्] जीवितवाला, श्रेष्ठ जीवनवाला (पएह १, १)।

जीआ छी [ज्या] १ धनुष की डोर (कुमा)। २ पृथिवी, भूमि। ३ माता, जननी (हे २, ११५, पड्)।

जीण न [दे अजिन] जीन, अश्व की पीठ पर बिछाया जाता चर्ममय आसन (पव ८४)।

जीमूअ पु [जीमूत] १ मेघ, वर्षा (पाप्र, गड्ड)। २ मेघ-विशेष, जिसके बरसने से जमीन दश वर्ष तक चिकनी रहती है (ठा ४, ४)।

जीर° देखो जर = जू।

जीरण न [जीर्ण] १ अन्न पाक। २ वि. पुराना, पचा हुआ, 'अजीरण' (पिड २७)।

जीरय न [जीरक] जीरा, मसाला-विशेष (सुर १, २२)।

जीरव सक [जीरय] पचाना। जीरवइ (कुप्र २६६)।

जीव अक [जीव्] १ जीना, प्राण धारण करना। २ सक. आश्रय करना। जीवइ (कुमा)। वक्त जीवत, जीवमाण (विपा १, ५, उप ७२८ टी)। हेक्त जीविउ (आचा)। संक्त जीविअ (नाट)। वृ जीविअव्य, जीवणिज्ज (सूत्र १, ७)। प्रयो. जीवावेहि (पि ५१२)।

जीव पुंन [जीव] १ आत्मा, चेतन, प्राणी (ठा १, १, जी १, सुपा २३५), 'जीवाई' (पि ३६७)। २ जीवन, प्राण-धारण, 'जीवोत्ति जीवण पाणवारणं जीवियति पज्जाया' (विसे ३५०८, सम १)। ३ पुं. बृहस्पति, सुर-गुरु (सुपा १०८)। ४ वल, पराक्रम (भग २, १)। ५ देखो जीअ = जीव। ६ काय पु [काय] जीव-राशि, जीव-समूह (सूत्र १, ११)। ७ गाह न [गाह] जिन्दे को पकड़ना (गाया १, २)। ८ णिकाय पु [णिकाय] जीव-राशि (ठा ६)। ९ तिक्काय पु [तिक्काय] जीव-समूह, जीव-राशि (भग १३, ४, अणु)। १० दय वि [दय] जीवित देनेवाला (सम १)। ११ दया छी [दया] प्राणि-दया, दु खो जीव का दु ख से रक्षण (महानि २)। १२ देव पुं [देव] स्वनाम-ख्यात प्रसिद्ध जैन आचार्य और ग्रंथकार (सुपा १)। १३ पएस पु [प्रदेशजीव] अन्तिम प्रदेश मे ही जीव की स्थिति को माननेवाला एक जैनाभाष्य दार्शनिक (राज)। १४ पएसिय पु [प्रादेशिक] देखो पूर्वोक्त अर्थ (ठा ७)। १५ लोग, लोय पुं [लोक] १ जीव-जाति, प्राणि-लोक, जीव-समूह (महा)। १६ विजय न [विचय] जीव के स्वरूप का चिन्तन (राज)। १७ विभक्ति छी [विभक्ति] जीव का भेद (उत्त ३६)। १८ बुद्धिय न [बुद्धिक] अनुज्ञा, समति, अनुमति (एदि)।

जीव न [जीव] सात दिन का लगातार उपवास (सवोव ५८)। १ विसिद्ध न [विशिष्ट] वही अर्थ (सवोव ५८)।

जीवजीव पुं [जीवजीव] १ जीव-वल, आत्म-पराक्रम (भग २, १)। २ चकोर-पक्षी, चकवा (राज)।

जीवंत देखो जीव = जीव्। १ मुक्त पु [मुक्त] जीवन्मुक्त, जीवन-दशा मे ही संसार-बन्धन से मुक्त महात्मा (अच्छ ४७)।

जीवग पुं [जीवक] १ पक्षि-विशेष (उप ५८०)। २ नृप-विशेष (तित्य)।

जीवजीवग पु [जीवजीवक] चकोर पक्षी, चकवा (पएह १, १—पत्र ८)।

जीवण न [जीवन] १ जीना, जिन्दगी (विसे ३५२१, पडम ८, २५०)। २ जीविका, आजीविका (स २२७, ३१०)। ३ वि. जिलानेवाला (राज)। ४ वृत्ति छी [वृत्ति] आजीविका (उप २६४ टी)।

जीवमजीव पुं [जीवाजीव] चेतन और जड पदार्थ (आवम)।

जीवम्मुत्त देखो जीवत-मुक्त (उवर १६१)। जीवयमई छी [दे] मुगो के आकर्षण के साधन-भूत व्याव-मृगी (दे ३, ४६)।

जीवा छी [जीवा] १ धनुष की डोरी (स ३८४)। २ जीवन, जीना (विसे ३५२१)। ३ क्षेत्र का विभाग-विशेष (सम १०४)।

जीवाउ पु [जीवानु] जिलानेवाला श्रौषध, जीवनौषध (कुमा)।

जीवाविय वि [जीवित] जिलाया हुआ (उप ७६८ टी)।

जीवि वि [जीविन्] जीनेवाला (गा ८४७)।

जीविअ वि [जीवित] १ जो जिन्दा हो। २ न जीवित, जीवन, जिन्दगी (हे १, २७१, प्राप्र)। ३ नाह पु [नाथ] प्राण-पति (सुपा ३१५)। ४ रिसिका छी [रिसिका] वनस्पति-विशेष (पएह १—पत्र ३६)।

जीविआ छी [जीविका] १ आजीविका, निर्वाह साधक वृत्ति (ठा ४, २, स २१८, गाया १, १)।

जीविओसविय वि [जीवितोत्सविक] जीवन मे उत्सव के तुल्य, जीवनोत्सव के समान (भग ६, ३३, राय)।

पर्वत की एक वापी (ती २४) । ६ नवमी तिथि (जं ७) । १० जैन मुनियों की एक शाखा (कण्) ।

जयण न [यजन] १ याग, पूजा । २ अभय-दान (परह २, १) ।

जयण न [यतन] १ यत्न, प्रयत्न, चेष्टा, उद्यम, 'जयणघडण-जोग-चरित' (अनु) । २ यतना, प्राणी की रक्षा (परह २, १) ।

जयण वि [जवन] वेगवाला, वेग-युक्त (कण्) ।

जयण न [जयन] १ जीते, विजय (मुद्रा २६८, कण्) । २ वि जीतनेवाला (कण्) ।

जयण न [दे] घोड़े का बल्तर, हथ-सनाह (दे ३, ४०) ।

जयणा छी [यतना] १ प्रयत्न, चेष्टा, कोशिश (निचू १) । २ प्राणी की रक्षा, हिंसा का परित्याग (दम ४) । ३ उपयोग, किसी जीव को दुःख न हो इस तरह प्रवृत्ति करने का ह्याल (निचू १, स. ६७, औप) ।

जयइह पुं [जयद्रथ] मिथु देश का स्वनाम-प्रसिद्ध एक राजा, जो दुर्योधन का बहनोई था (गाथा १, १६) ।

जया अ [यदा] जिस समय, जिस वक्त (कण्, काल) ।

जया छी [जया] १ विद्या-विशेष (पठम ७, १४१) । २ चतुर्थ चक्रवर्ती राजा की अग्र-महिषी (सम १५२) । ३ भगवान् वामुपज्य की स्वनाम-ख्यात माता (सम १५१) । ४ तिथि-विशेष—चूतीया, अष्टमी और त्रयोदशी तिथि (सुज १०) । ५ भगवान् पार्थनाथ की शासनदेवी (ती ६) । ६ औपवि-विशेष (राज) ।

जयार पु [जकार] १ 'ज' अक्षर । २ जकारादि अरलील शब्द, जित्य जयारमयारं समणी जंपइ गिहथपचक्खं (गच्छ ३, ४) ।

जयिण देखो जइण = जयिन् (परह १, ४) ।

जर अक [ज] जीर्ण होना, पुराना होना, बूढ़ा होना (जरइ (हे ४, २३४) । कमं जोरइ, जरिजइ (हे ४, २३०) । वहु जरत (अच्छ ७६) ।

जर पुं [ज्वर] रोग-विशेष, बुखार-कुमा) ।

जर पु [जर] १ रावण का एक मुन्ट (पठम ५६, ३) । २ वि, जीर्ण, पुराना (दे ३, १५६) ।

जर वि [जरत] जीर्ण, पुराना, बूढ़ा, बूढ़ा (कुमा सु ३, ६६, १०४) । छी. ई (कुमा, गा ४७, २ अ) । १ गव पु [गव] बूढ़ा बैल (वृह १, अनु ४) । १ गवो छी [गवो] बूढ़ी गाय (गा ४६२) । १ गु पुं [गु] १ बूढ़ा बैल । २ छी बूढ़ी गाय, 'जिएणा य जरगवो पडिया' (पठम ३३, १६) ।

जर देखो जरा (कुमा, अत १६, वव ७) ।

जरइ वि [दे] बूढ़, बूढ़ा (दे ३, ४०) ।

जरग वि [जरत्क] जीर्ण, पुराना (अनु ५) ।

जरठ वि [जरठ] १ कठिन, पुरुष । २ जीर्ण, पुराना (गाथा १, १—पत्र ५) । देखो जरठ ।

जरठ वि [दे] बूढ़, बूढ़ा (दे ३, ४०) ।

जरठ देखो जरठ (पि १६८, से १०, ३८) ।

३ प्रौढ, मजबूत (से १, ४३) ।

जरण न [जरण] जीर्णता, आहार का हजम होना, हाजमा (धर्मसं ११३५) ।

जरय पुं [जरक] रत्नप्रधानात्मक नरक पृथिवी का एक नरकावास (ठा ६—पत्र ३६५) ।

मध्य पु [मध्य] नरकावास-विशेष (ठा ६) । १ वसंत पुं [वर्त] नरकावास-विशेष (ठा ६) । १ वसिष्ठ पुं [वशिष्ठ] नरकावास-विशेष (ठा ६) ।

जरल वि [दे] ग्रामीण, ग्राम्य (दे जरलविअ ३, ४४) ।

जरा, छी [जरा] बूढ़ापा, बूढ़त्व (आचा, कस, प्रास १३४) । १ कुमार पु [कुमार] श्रीकृष्ण का एक भाई (अंत) । १ संघ पु [सन्व] राजगृह, नगर का एक राजा, नववां प्रतिवासुदेव, जिसको श्री कृष्ण वामुदेव ने मारा था (सम १५३) । १ सिंध पु [सिन्ध] वही पूर्वोक्त अर्थ (परह १, ४—पत्र ७२) । १ सिंधु पुं [सिन्धु] वही पूर्वोक्त अर्थ (गाथा १, १६, पत्र ३०६, पठम ५, १५६) ।

जरा छी [जरा] वसुदेव की एक पत्नी (कुप्र ६६) ।

जराहिरण (अप) देखो जलहरण (पिग) ।

जरि वि [जरिन्] बुखारवाला, ज्वर-से पीड़ित (मुपा २४३) ।

जरि वि [जरिन्] जरा-युक्त, बूढ़, बूढ़ा (दे ३, ५७, उर ३, १) ।

जरिअ वि [जरित] ज्वर-युक्त, बुखारवाला (गा २६६, सुपा २८६) ।

जल अक [जल] १ जलना, दग्ध होना । २ चमकना । जलइ (महा) । वहु जलंत (उवा, गा २६४) । हेहु जलित (महा) ।

प्रयो, वहु जलित (महानि ७) ।

जल देखो जइ (आ १२, भाव ४) ।

जल ने [जाइय] जड़ता, मन्दता, जलघोय-जललेवा (सार्ध ७३, से १, २४) ।

जल पुं [जल] देदीप्यमान, चमकीला (सूष १, ५, १) ।

जले न [जल] वीर्य (वज्रा १०२) । १ कन पुन [कान्त] एक देवविमान (देवन्द १४४) । १ कारि पुं छी [कारिन्] चतुरिन्द्रिय जन्तु-विशेष (उत्त ३६, १४६) । १ य वि [ज] पानी में उत्पन्न (श्रु ६८) ।

वारिअ पु [वारिक] चतुरिन्द्रिय जन्तु की एक जाति (सुख ३६, १४६) ।

जल न [जल] १ पानी, उदक (सूष १, ५, २; जी २) । २ पुं जलकान्त-नामक इन्द्र का एक लोकपाल (ठा ४, १) । १ कत पु [कान्त] १ मणि-विशेष, रत्न की एक जाति (परह १, कुम्मा १५) । २ इन्द्र-विशेष, सिद्धिकुमार-नामक देव-जाति का दक्षिण दिशा का इन्द्र (ठा २, ३) । ३ जलकान्त इन्द्र का एक लोकपाल (ठा ४, १) । १ करप्फाल पुं [कराप्फाल] हाथ से आहत पानी (पाअ) ।

करि पुं छी [करिन्] पानी का हाथी, जल-जन्तु विशेष (महा) । १ कलंव पु [कलन्व] कंदर्प वृक्ष की एक जाति (गठड) । १ कीडा, कीला छी [कीडा] पानी में की जाती कीडा, जल-कील (गाथा १, २) । १ कैलि छी [कैलि] जल-कीडा (कुमा) । १ चर देखो चर (कण्, हे १, १७७) । १ चार पु [चार] पानी में चलना (आचा २, ५, १) । १ चारण पु [चारण] जिसके प्रभाव से पानी में भी भूमि की तरह चला जा सके ऐसी अनीकिक शक्ति रखने-वाला मुनि (गच्छ २) । १ चारि पुं [चारिन्] पानी में रहनेवाला जन्तु (जी २०) ।

विभागो दीवपगासाण जुगवजम्मेवि' (विसे ५३६ टी, औप)।

जुगुच्छ देखो जुउच्छ । जुगुच्छइ (हे ४, ४)।

जुगुच्छणया } स्त्री [जुगुप्सा] घृणा,
जुगुच्छा } तिरस्कार (स १६७, प्राप्र)।

जुगुच्छिय वि [जुगुप्सित] घृणित, निन्दित (कुमा)।

जुग्ग न [युग्य] १ वाहन, गाड़ी वगैरह यान (आचा)। २ शिविका, पुरुष-यान (सूअ २, २, जं २)। ३ गोल्ल देश मे प्रसिद्ध दो हाथ का लम्बा-चौड़ा यान-विशेष, शिविका-विशेष (णाय १, १, औप)। ४ वि यान वाहक अश्व आदि। ५ भार-वाहक (ठा ४, ३)।
°यिरिया, °रिया स्त्री [°चर्या] वाहन की गति (ठा ४, ३—पत्र २३६)।

जुग्ग वि [योग्य] लायक, उचित (विसे २६६२, स ३१, प्रासू ५६, कुमा)।

जुग्ग न [युग्म] युगल, द्वन्द्व, उभय (कुमा, प्राप्र, प्राप)।

जुज्ज देखो जुज। जुजइ (हे ४, १०६, पङ्)।
जुज्जत देखो जु।

जुज्ज अक [युध्] लड़ाई करना, लड़ना।
जुज्जइ (हे ४, २१७, पङ्)। वक्क जुज्जत,
जुज्जमाण (सुर ६, २२२, २, ५१)। संकृ.
जुज्जित्ता (ठा ३, २)। प्रयो जुज्जावेइ (महा)।
वक्क जुज्जावेत (महा)। कृ जुज्जावेयव्व (उप पृ २२५)।

जुज्ज न [युद्ध] लड़ाई, संग्राम, समर (णाय १, ८, कुमा, कप्पू, गा ६८४)।
°इजुद्ध न [°तिरुद्ध] महायुद्ध, पुरुषों की बहतर कलाओं में एक कला (औप)।

जुज्जण न [योधन] युद्ध लड़ाई (सुपा ५२७)।

जुज्जिअ वि [युद्ध] १ लड़ा हुआ, जिसने संग्राम किया हो वह (से १५, ३७)। २ न. युद्ध, लड़ाई, संग्राम (स १२६)।

जुद्ध वि [जुष्ट] सेवित (प्राभा)।

जुद्ध न [दे] झूठ, असत्य; 'आ द्दुद्ध तुम द्दुद्ध' जंपनि' (धर्मवि १३३)।

जुद्धिअ वि [दे] आपस में जुटा हुआ, लड़ने के लिए एक दूसरे से झोड़ा हुआ; 'सुहर्द्धेहि सम सुहर्द्धा जुद्धिया तह साइणावि सार्द्धिह' (उप ७२८ टी)।

जुण्ण वि [दे] विदग्ध, निपटण, दक्ष (दे ३, ४७)।

जुण्ण वि [जीर्ण] जूना, पुराना (हे १, १०२, गा ५३४)।

जुण्णदुग्ग न [जीर्णदुर्ग] नगर-विशेष, जो आजकल भी 'जूनागढ़' नाम से प्रसिद्ध है (ती २)।

जुण्ह देखो जोण्ह = ज्यौत्स्न (सुज १६)।

जुण्हा स्त्री [ज्येत्स्ना] चांदनी, चन्द्रिका, चन्द्र का प्रकाश (सुपा १२१, सण)।

जुत्त सक [युक्त्य्] जोतना। सकृ जुत्तित्ता (ती १५)।

जुत्त वि [युक्त] १ संगत, उचित, योग्य (णाय १, १६, चद २०)। २ संयुक्त, जोड़ा हुआ, मिला हुआ, सबद्ध (सूअ १, १, १, आचू)। ३ उद्युक्त, किसी कार्य में लगा हुआ (पव ६४)। ४ सहित, समन्वित (सूअ १, १, ३, आचा)। °संखिज्ज न [°सख्येय] सख्या-विशेष (कम्म ४, ७८)।

जुत्ताणंतय पुंन [युक्तानन्तक] गणना-विशेष (अणु २३४)।

जुत्तासंखेज्जय देखो जुत्तासखिज्ज (अणु २३४)।

जुत्ति स्त्री [युक्ति] १ योग, योजन, जोड़, संयोग (औप, णाय १, १०)। २ न्याय, उपपत्ति (उप ६५०, प्रासू ६३)। ३ साधन, हेतु (सूअ १, ३, ३)। °ण वि [°ज्ञ] युक्ति का जानकार (औप)। °सार वि [°सार] युक्ति-प्रधान, युक्त, न्याय-संगत, प्रमाण-युक्त (उप ७२८ टी)। °सुवण्ण न [°सुवर्ण] वनावटी सोना (दस १०, ३६)। °सेण पुं [°पेण] ऐरवत वर्ष के अष्टम जिन-देव (सम १५३)।

जुत्तिय वि [यौक्तिक] गाड़ी वगैरह में जो जोता जाय, 'जुत्तियतुरगमारण' (सुपा ७७)।

जुद्ध देखो जुज्ज = युद्ध (कुमा)।

जुन्न देखो जुण्ण (सुर १, २४४)

जुन्हा देखो जुण्हा (सुपा १५७)।

जुप्प देखो जुज जुप्पइ (हे ४, १०६)।
जुप्पसि (कुमा)।

जुम्म न [युग्म] १ युगल, दोनों, उभय (हे २, ६२, कुमा)। २ पुं सम राशि (शोध ४०७, ठा ४, ३—पत्र २३७)। °पएसिय वि [°प्रादेशिक] सम-सख्य प्रदेशों से निष्पन्न (भग २५, ४)।

जुम्म न [युग्म] परस्पर सापेक्ष दो पद्य (सिरि ३६१)।

जुम्ह° स [युष्मत्] द्वितीय पुरुष का वाचक सर्वनाम, 'जुम्हदम्हपयरण' (हे १, २६६)।

जुस्मिल्ल वि [दे] गहन, निविड, सान्द्र, 'दुहुजुस्मिल्लावत्थ' (दे ३, ४७)।

जुव पु [युवन्] जवान, तरुण (कुमा)।
°राअ पु [°राज] गद्दी का वारिस (उत्तरा-विकारी) राजकुमार, भावी राजा (सुर २, १७५, अग्नि ८२)।

जुवइ स्त्री [युवति] तरुणी, जवान स्त्री (हे १, ४, औप, गउड, प्रासू ६३, कुमा)।

जुवगव पुं [युवगव] तरुण बैल (आचा २, ४, २)।

जुवरज्ज न [यौवराज्य] १ युवराजपन (उप २११ टी, सुर १६, १२७)। २ राजा के मरने पर जब तक युवराज का राज्याभिषेक न हुआ हो तबतक का राज्य (आचा २, ३, १)। ३ राजा के मरने पर और युवराज के राज्याभिषेक हो जाने पर भी जबतक दूसरे युवराज की नियुक्ति न हुई हो तबतक का राज्य (बृह १)।

जुवल देखो जुगल (स ४७८, पउम ६५, २३)।

जुवलिय देखो जुगलिय (भग, औप)।

जुवाण देखो जुव (पउम ३, १४६, णाय १, १, कुमा)।

जुवाणी देखो जुवई (पउम ८, १८४)।

जुव्वण } देखो जोव्वण (प्रासू ४६,
जुव्वणत्त } ११६), 'पढमं चिय बालत्त,
'तत्तो कुमरत्तजुव्वणत्ताइ' (सुपा २४३)।

जुसिअ वि [जुष्ट] सेवित, 'पाएण देइ लोगो उवगारिसु परिचिए व जुसिए वा' (ठा ४, ४)।

(सुपा २०२) । वक्र. जवत (नाट) । कवक्र.
जविजंत (सुर १३, १८६) ।

जव पुं [जप] जाप, पुन. पुन. मन्त्रोच्चारण,
बार-बार मन ही मन देवता का नम-स्मरण
(पएह २, २, सुपा १२०) ।

जव पुं [यव] १ अन्न-विशेष, जव या जौ (राया
१, १, पएह १, ४) । २ परिमाण-विशेष, आठ
यूका को नाप (ठा ८) । ३ णाली स्त्री [नाली]
वह नाली जिसमें जौ बोए जाते हो (भाचू
१) । ४ मज्झ न [मध्य] १ तप-विशेष
(पउम २२, २४) । २ आठ यूका का एक
नाप (पव २५) । ३ मज्झा स्त्री [मध्या]
व्रत विशेष, प्रतिमा-विशेष (ठा ४, १) ४ राय
पुं [राज] नृप-विशेष (बृह १) । ५ वंसा
स्त्री [वशा] वनस्पति-विशेष (पएण १) ।

जव पु [जव] वेग, दौड, शीघ्र गति
(कुमा) ।

जव पुंन [यव] एक देवविमान (देवेन्द्र
१४०) । २ णालय पुं [नालक] कन्या का
कंचुक (एदि ८८ टी) । ३ न [न] न
यव-निष्पन्न परमाण, भोज्य विशेष, जव की
स्त्री, जाउर (पव २५६) ।

जवजव पुं [यवयव] अन्न-विशेष, एक तरह
का यव-धान्य (ठा २, १) ।

जवण न [दे] हल की शिक्षा, हल की चोटी
(दे ३, ४१) ।

जवण न [जपन] जाप, पुन पुन. मन्त्र का
उच्चारण, 'ग्रहिणा ददुस्स जए को कालो
मत्त-जवणम्मि' (पउम ८६, ६०, स ६) ।

जवण वि [जवन] १ वेग से जानेवाला (उप
७६८ टी) । २ पुं. वेग, शीघ्र गति (भावम) ।

जवण पुं [यवन] १ स्लेच्छ देश-विशेष
(पउम ६८, ६४) । २ उस देश में रहनेवाली
भनुष्य-जाति (पएह १, १) । ३ यवन देश
का राजा (कुमा) ।

जवण न [यापन] निर्वाह, गुजारा, (उत्त
८) ।

जवणा स्त्री [यापना] ऊपर देखो (पव २) ।

जवणाणिया स्त्री [यवनाणिका] लिपि-विशेष
(राज) ।

जवणालिया स्त्री [यवनालिका] कन्या का
कंचुक (भावम) ।

जवणिआ स्त्री [यवनिआ] परदा (दे ४, १,
सएण; कप्प) ।

जवणिज्ज देखो जव = यापय ।

जवणी स्त्री [यवनी] परदा, आच्छादक पट
(दे २, २५) । २ संचारिका, दूती (अभि
५७) ।

जवणी स्त्री [यावनी] १ यवन की स्त्री । २
यवन की लिपि (सम ३५, विसे ४६४ टी) ।

जवणीअ देखो जव = यापय ।

जवपचमाण पुं [दे] जात्यश्व का वायु-विशेष,
प्राण-वायु (गउह) ।

जवय } पुं [दे] जव का अकुर (दे ३,
जवरय } ४२) ।

जवली स्त्री [दे] जव, वेग, 'गच्छंति गस्य-
नेहेण पवरतुरयाहिस्स जवलीए' (सुपा
२७६) ।

जववारय [दे] देखो जवरय (पंचा ८) ।

जवस न [यवस] १ तुण, घास, 'गिट्ठिव्व
जवसम्मि' (उप ७२८ टी, उप पृ ८४) । २
गेहूं वगैरह धान्य (भाचा २, ३, २) ।

जवा स्त्री [जपा] १ वल्ली-विशेष, जवा-पुष्प
का वृक्ष । २ गुरुह्व का फूल, अडहुल का
पुष्प (कुमा) ।

जवास पुं [यवास] वृक्ष-विशेष, रक्त पुष्प-
वाला वृक्ष-विशेष, 'पाउसि जवासो' (आ २३,
पएण १), 'जवासकुसुमे ष्वा वा' (पएण
१७) ।

जवि } वि [जविन्] १ वेगवाला, वेग-युक्त
जविण } सुपा ११२) । २ पुं. अश्व, घोड़ा
(राज) ।

जविअ वि [जपित] १ जिसका जाप किया
गया हो वह (मन्त्र आदि) (सिरि ३६६) ।
२ न. अध्ययन, प्रकरण आदि प्रयाश (सुख
२, १३) ।

जविय वि [यापित] १ गमित, गुजरा हुआ ।
२ नाशित (कुमा) ।

जस पुं [यशस्] १ कीर्ति, इज्जत, सु-
ख्याति (भौप, कुमा) । २ संयम, त्याग,
विरति (वव १, दस ५, २) । ३ विनय
(उत्त ३) । ४ भगवान् अनन्तनाथ का प्रथम
शिष्य (सम १५२) । ५ भगवान् पार्श्वनाथ

का आठवां प्रधान शिष्य (कप्प) । ६ कीर्ति
स्त्री [कीर्त्ति] सुख्याति, सुप्रसिद्धि (सूत्र १,
६, भाचू १) । ७ भद्र पुं [भद्र] स्वनाम-
ख्यात एक जैन आचार्य (कप्प, सार्ध १३) ।
८ म मत वि [वत्] १ यशस्वी, इज्जतदार
कीर्तिवाला (पएह १, ४) । २ पुं. स्वनाम-
प्रसिद्ध एक कुलकर पुरुष (सम १५०) ।
३ वई स्त्री [वती] १ द्वितीय चक्रवर्ती सगर-
राज की माता (सम १५२) २ तृतीया,
ग्रष्टमी और त्रयोदशी की रात्रि (चंद १०) ।
४ वम्म पुं [वर्मन्] स्वनाम-ख्यात नृप-विशेष
(गउह) । ५ वाय पुं [वाद्] साधुवाद, यशो-
गान, प्रशंसा (उप ६८६ टी) । ६ विजय पुं
[विजय] विक्रम की आठारहवीं शताब्दी का
एक जैन सुप्रसिद्ध ग्रन्थकार, न्यायाचार्य श्रीमान्
यशोविजय उपाध्याय (राज) । ७ हर पुं [धर]
१ भारतवर्ष का भूत कालिक आठारहवां
जिन-देव (पव ८) । २ भारतवर्ष के एक
भावी जिन-देव (पव ४६) । ३ एक राज-
कुमार (धम्म) । ४ पक्ष का पाँचवां दिन (जं
७) । ५ वि. यश को धारण करनेवाला,
यशस्वी (जीव ३) । देखो जसो° ।

जसंसि पुं [यशस्विन्] भगवान् महावीर के
पिता का एक नाम (भाचा २, १५, ३,
कप्प) ।

जसद पुं [जसद] धातु-विशेष, जस्ता (राज) ।
जसदेव पुं [यशोदेव] एक प्रसिद्ध जैनाचार्य
(पव २७६) ।

जसभद पुं [यशोभद्र] १ पक्ष का चतुर्थ
दिवस (सुज्ज १०, १४) । २ एक राजर्षि,
जो वागड देश के रत्नपुर नगर का राजा था
और जिसने जैनी दीक्षा ली थी, जो आचार्य
हेमचन्द्र के गुरु थे (कुप्र ७, १८) । ३ न.
उद्दुवाटिक गण का एक कुल (कप्प) ।

जसवई स्त्री [यशोमती] भगवान् महावीर
की दौहित्री का नाम (भाचा २ १५, ३) ।

जसस्सि वि [यशस्विन्] यशस्वी, कीर्तिमान्
(सूत्र १, ६, ३, श्रु १४३) ।

जसहर पुंन [यशोधर] एक देव-विमान
(देवेन्द्र १४१) ।

जसा स्त्री [यशा] कपिलमुनि की माता (उत्त
८) ।

जेत्त देखो जइत्त (पि ६१) ।

जेत्तिअ } वि [यावत्] जितना (हे २,
जेत्तिल } १५७, गा ७१, गठड) ।

जेत्तिक (शौ) ऊपर देखो (प्राक् ६५) ।

जेत्तुल } (अप) ऊपर देखो (हे ४, ४३५) ।
जेत्तुल }

जेह देखो जेत्तिअ (हे २, १५७, प्राप्) ।

जेम सक [जिम्, मुज्] भोजन करना ।

जेमइ (हे ४, ११०, पड्) । वक्तु जेमत्त
(पउम १०३, ८५) ।

जेम (अप) अ [यथा] जैसे, जिस तरह से
(सुपा ३८३, भवि) ।

जेमण } न [जेमन] जीमन, भोजन (ओष
जेमणग } ८८ औप) ।

जेमणय न [दे] दक्षिण अग, गुजराती में
'जमणु' (दे ३, ४८) ।

जेमणी स्त्री [जेमनी] जीमन (सवोष
१७) ।

जेमावण न [जेमन] भोजन कराना, खिलाना
(भग ११, ११) ।

जेमाविय वि [जेमित] भोजित, जिसको
भोजन कराया गया हो वह (उप १३६ टी) ।

जेमिय वि [जेमित] जीमा हुआ, जिसने
भोजन किया हो वह (एया १, १—पत्र
४१ टी) ।

जेयव्व देखो जिण = जि ।

जेव (शौ) देखो एव = एव (रभा, कप्प) ।

जेव्व (अप) देखो जिव्व (हे ४, ३६७) ।

जेवड (अप) देखो जेत्तिअ (हे ४, ४०७) ।

जेव्व (शौ) देखो एव = एव (पि, नाट) ।

जेह (अप) वि [यादृश्] जैसा (हे ४,
४०२, पड्) ।

जेहिल पुं [जेहिल] स्वनाम ख्यात एक जैन
मुनि (कप्प) ।

जो } सक [दृश्] देखना । जोइ (सण),
जोअ } 'एसा ह्व वंक्क', जोयइ तुह सुघुहं

जेण' (सुर ३, १२६) । जोयति (स ३६१) ।

कर्म, जोइजइ (रयण ३२) । वक्तु जोअत्त

(धम्म ११ टी, महा, सुर १०, २४४) ।

कवक्तु जोइज्जत्त (सुपा ५७) ।

जोअ अक [युत्] प्रकाशित होना, चम-

कना । जोइ (कुमा) । भूका, जोइसु
(भग) । वक्तु 'जोअंत (कुमा, महा) ।

जोअ सक [द्योतय्] प्रकाशित करना ।

जोअइ (सुअ १, ६, १३), 'तस्सवि य
गिहं पुण वालपडिया जोयए दुहिया' (सुपा
६११) । जोएज्जा (विमे ६१२) ।

जोअ सक [योजय्] १ समाप्त करना,
खतम करना । २ करना । जोएइ (सुज्ज
१०, १२—पत्र १८० १८१, सुज्ज १२—
पत्र २३३) ।

जोअ सक [योजय्] जोडना, युक्त करना ।
जोएइ (महा) । वक्तु जोइयव्व, जोएअव्व
जोयणिय, जोयणिज्ज (उप ५६६, स
५६८, औप, निव्व १) ।

जोअ पु [दे] १ चन्द्र, चन्द्रमा (दे ३, ४८) ।
२ युगल, युग्म (एया १, १ टी—पत्र
४३) ।

जोअ देखो जोग (अवि २५, न ३६१,
कुमा) । वडय न [वटक] चूर्ण-विशेष,
पाचक चूर्ण, हाजमा (म २५२) ।

जोअंगण [दे] देखो जोइगण (भवि) ।

जोअग वि [द्योतक] १ प्रकाशनेवाला २ न.
व्याकरण-प्रसिद्ध निपात वगैरह पद (विसे
१००३) ।

जोअड पुं [दे] खद्योत, कीट-विशेष, जुगट्ट
(पड्) ।

जोअण न [दे] लोचन, नेत्र, चक्षु, आंख
(दे ३, ५०) ।

जोअण न [योजन] १ परिमाण-विशेष, चार
कोश (भग, इक) । २ संवन्ध, संयोग, जोडना
(पएह १, १) ।

जोअण न [यौवन] युवावस्था, तरुणता,
जवानी (उप १४२ टी, गा १६७) ।

जोअणा स्त्री [योजना] जोडना, संयोग
करना (उप पृ २२१) ।

जोआ स्त्री [द्यो] १ स्वर्ग । २ प्राकाश
(पड्) ।

जोआवइत्तु वि [योजयित्] जोडनेवाला,
संयुक्त करनेवाला (ठा ४, ३) ।

जोइ वि [योगिन्] १ युक्त, संयोगवाला ।
२ चित्त-निरोध करनेवाला, समाधि लगाने-
वाला । ३ पुं मुनि, यति, साधु (सुपा २१६,

२१७) । ४ रामचन्द्र का स्वनाम-ख्यात एक
सुभट (पउम ६७, १०) ।

जोइ पु [ज्योतिस्] १ प्रकाश, तेज (भग,
ठा ४, ३) । २ अग्नि, वह्नि, 'तप्पि जहा
जहा पडिय जोइमज्जे' (सुअ १, १३) । ३
प्रदीप आदि प्रकाशक वस्तु, 'जहा हि अवे सह
जाइणावि' (सुअ १, १२) । ४ अग्नि का
काम करनेवाला कल्पवृक्ष (सम १७) । ५
ग्रह, नक्षत्र आदि प्रकाशक पदार्थ (चद १) ।
६ ज्ञान । ७ ज्ञान-युक्त । ८ प्रसिद्धि-युक्त ।
९ सत्कर्म-कारक (ठा ४, ३) । १० स्वर्ग ।
११ ग्रह वगैरह का विमान (राज) । १२
ज्योतिष-शास्त्र (निर ३, ३) । 'अग पुं
[अङ्ग] अग्नि का काम करनेवाला कल्प-
वृक्ष-विशेष (ठा १०) । 'रस न [रस]
रत्न की एक जाति (एया १, १) । देखो
जोइस = ज्योतिस् ।

जोइअ पु [दे] कीट-विशेष, खद्योत, जुगट्ट,
पटवीजना (दे ३, ५०) ।

जोइअ वि [दृष्ट] देखा हुआ, विलोकित (सुर
३, १७३, महा भवि) ।

जोइअ वि [योजित] जोडा हुआ (स
२६४) ।

जोइअ देखो जोगिय (राज) ।

जोइगण पु [दे] कीट-विशेष, इन्द्र-गोप (दे
३, ५०) ।

जोइक पुन [ज्योतिष्क] प्रदीप आदि प्रका-
शक पदार्थ, कि सूरस्स दसणाहिगमे जाइक्क-
तरं गवेसीयदि' (रभा) ।

जोइक्ख पुं [दे ज्योतिष्क] १ प्रदीप, दीपक
(दे ३, ४६, पव ४, वव ७) । २ प्रदीप
आदि का प्रकाश (ओष ६५३) ।

जोइणी स्त्री [योगिनी] १ योगिनी, सन्या-
सिनी । २ एक प्रकार की देवी, ये चौमठ हे
(सति ११) ।

जोइर वि [दे] खलित (दे ३, ४६) ।

जोइस न [दे] नक्षत्र (दे ३, ४६) ।

जोइस देखो जोइ = ज्योतिस् (चद १, कप्प,
विसे १८७०, जो १, ठा ६) । 'राय पुं
[राज] १ सूर्य । २ चन्द्र (सुज्ज २०, १८) ।
'लिय पुं [लिय] सूर्य आदि देव (उत्त
३६) ।

७ मद्य-विशेष (विपा १, २) । °आजीव पु [°आजीव] जाति की नमानता बतला कर मित्रा प्राप्त करनेवाला साधु (ठा ५, १) । °थेर पु [स्थविर] साठ वर्ष की उम्र का मुनि (ठा ३, २) । °नाम न [°नामन्] कर्म-विशेष (सम ६७) । °प्पसण्णा स्त्री [°प्रसन्ना] जाति के पुष्पो में वासित मदिरा (जीव ३) । °फल न [°फल] १ वृक्ष-विशेष ।

२ फल-विशेष, जायफल, एक गर्म मसाला (सुर १३, ३३, सण) । °मंत वि [°मन्] उच्च जाति का (आचा २, ४, २) । °मय पु [°मद] जाति का अभिमान (ठा १०) । °वक्तिया स्त्री [°पत्रिका] १ सुगन्धित फलवाला वृक्ष-विशेष । २ पल्ल-विशेष, एक गर्म मसाला (सण) । °सर पुं [°स्मर] १ पूर्वं जन्म की स्मृति । २ वि. पूर्व जन्म का स्मरण करनेवाला, पूर्व-जन्म का ज्ञान-वाला, 'जाइसराइ मन्ने इमाई नयणाई सयललोयस्स' (सुर ४, २०८) । °सरण न [°स्मरण] पूर्व जन्म की स्मृति (उत्त १६) । °स्सर देखो °सर (कप्प, विसे १६७६, उप २२० टी) ।

जाइ स्त्री [जाति] १ न्याय-शास्त्र-प्रसिद्ध दूषणभास—अमत्य दूषण (धर्मसं २६०, स ७११) । २ माता का वय (पिंड ४३८) । जाइ देखो जाया (पड्) ।

जाइ स्त्री [दे] १ मदिरा, मुरा, दारु (दे ३, ४५) । २ मदिरा-विशेष (विपा १, २) ।

जाइ वि [याजिन्] यज्ञ-कर्ता (दसनि १, १४६) ।

जाइ वि [यायिन्] जानेवाला (ठा ४, ३) ।

जाइअ वि [याचित] प्रार्थित, मांगा हुआ (विसे २५०४, गा १६५) ।

जाइअ देखो जाय = जात (वज्जा १४४) ।

जाइच्छि° } वि [याहच्छिक] १ इच्छा-
जाइच्छिय } नुसार, यथेच्छ (धर्मसं १२) ।
२ इच्छानुसारी (धर्मसं ६०२) ।

जाइच्छिय वि [याहच्छिक] स्वेच्छा-निर्मित (विसे २५) ।

जाइज्जत देखो जाय = यातय् ।

जाइज्जंत } देखो जाय = याच् ।
जाइज्जमाण }

जाइणी स्त्री [याकिनी] एक जैन साध्वी, जिमको मुप्रसिद्ध जैन ग्रन्थकार श्री हरिभद्र-सूरि अपनी धर्म-माता समझते थे (उप १०३६) ।

जाइयव्वय न [यातव्य] गमन, गति (सुख २, १७) ।

जाईअ वि [जातीय] जाति-सम्बन्धी (आवक ४०) ।

जाउ न [जायु] क्षीरपेया, यवागू, माड की काजी, लपसी, खाद्य-विशेष (पिंड ६२५) ।

जाउ अ [जातु] कदाचित्, कभी (उक्कु ११) ।

जाउ अ [जातु] किसी तरह (उप ५४७) । °कण्ण पु [कणे] पूर्वामाद्रपदा नक्षत्र का गोत्र (इक) ।

जाउ स्त्री [यात्] १ देवर-पत्नी, देवरानी । २ वि. जानेवाला (ससि ४) ।

जाउया स्त्री [यात्का] देवर-पत्नी, पति के छोटे भाई की स्त्री, देवरानी (णाय १, १६) ।

जाउर पुं [दे] कपित्थवृक्ष, कैय का फल (दे ३, ४५) ।

जाउल पुं [जानुल] बल्ली-विशेष (परण १—पत्र ३२) ।

जाउहाण पु [यातुधान] राक्षस (उप १०३१ टी, पात्र) ।

जाग पुं [याग] १ यज्ञ, अश्वर, होम, हवन (पउम १४, ४७, न १७१) । २ देव-पूजा (णाय १, १) ।

जागर अक [जागृ] जागना, निद्रा-त्याग करना । जागरइ (पड्) । वहु जागरमाण (विसे २७१६) । हेक्क जागरित्तए, जाग-रेत्तए (कप्प, कस) ।

जागर वि [जागर] १ जागनेवाला, जागता (आचा, कप्प आ २५) । २ पुं. जागरण, निद्रा-त्याग (मुद्रा १८७, भग १२, २, सुर १३, ६७) ।

जागरइत्तु वि [जागरित्] जागनेवाला (आ २३) ।

जागरिअ वि [जागृत] जागा हुआ, निद्रा-रहित, प्रबुद्ध (णाय १, १६, आ २५) ।

जागरिअ वि [जागरिक] निद्रा-रहित (भग १२, २) ।

जागरिया स्त्री [जागरिका, जागर्या] जागरण, निद्रा-त्याग (णाय १, १, औप) ।

जागरूअ वि [जागरूक] जागता, जागा हुआ, जागने के स्वभाववाला (धर्मवि १३६) ।

जाजावर वि [यायावर] गमनशील, विनश्वर (सम्मत्त १७४) ।

जाडी स्त्री [दे] गुल्म, लता-प्रदान (दे ३, ४५) ।

जाण सक [जा] जानना, ज्ञान प्राप्त करना, समझना । जाणइ (हे ४, ७) । वहु जाणंत, जाणमाण (कप्प, विपा १, १) । सक्क जाणिऊण, जाणित्ता, जाणित्तु (पि ५८६, महा, भग) । हेक्क जाणिउ (पि ५७६) । क्क जाणियव्व (भग, अत्त १२) ।

जाण पुंन [यान] १ रथादि वाहन, सवारी (औप; परह २, ५, ठा ४, ३) । २ यान-पात्र, नौका, जहाज, 'नाणं संसारसमुद्गतारणे वधुर जाण' (पुष्फ ३७) । ३ गमन, गति (राज) । °पत्त, °वत्त न [°पात्र] जहाज, नौका (नमि ५, सुर १३, ३१) । °साला स्त्री [°शाला] १ तबेला, अस्तबल । २ वाहन बनाने का कारखाना (औप, आचा २, २, २) ।

जाण न [ज्ञान] ज्ञान, बोध, समझ (भग, कुमा) ।

जाणं वि [जानत्] जानता हुआ, 'जाणं काएण णाउट्ठी' (सूअ १, ५, १), 'आसु-पएणेण जाणया' (आचा) ।

जाणई स्त्री [जानकी] सीता, राम-पत्नी (पउम १०६, १८, से ६, ६) ।

जाणग वि [ज्ञायक] जानकार ज्ञानी, जाननेवाला (सूअ १, १, १, महा, मुर १०, ६५) ।

जाणगी देखो जाणई (पउम ११७, १८) । जाणण न [दे] बरात, गुजराती में 'जान', 'जो तदवत्थाए समुचिओत्ति जाणणणाइओ' (उप ५६७ टी) ।

जाणण न [ज्ञान] जानना, जानकारी, समझ, बोध (हे ४, ७, उप पु २३, सुपा ४१६, सुर १०, ७१; रयण १४, महा) ।

जाणणया } स्त्री. ऊपर देखो (उप ५१६,
जाणणा } विसे २१४८, अणु, आचू २) ।

जाणय देखो जाणग (भग, महा) ।

शास्त्र (विसे १७७५) । °सूल न [°शूल] योनि का एक रोग (गाया १, १६) ।

जोणिय वि [योनिक्, यवनिक्] श्रनायं देश-विशेष से उत्पन्न । स्त्री. °या (इक्, भौप, गाया १, १—पत्र ३७) ।

जोणलिआ स्त्री [दे] श्रन्-विशेष, जुआरि, जोन्हरी (दे ३, ५०) ।

जोणह वि [ज्योत्स्न] १ शुक्र, श्वेत, 'कालो वा जोएहो वा केणणुभावेण चदस्स' (सुज १६) । २ पुं. शुक्र पक्ष (जो ४) ।

जोणहा स्त्री [ज्योत्स्ना] चन्द्र-प्रकाश (पङ्, काप्र १६७) ।

जोणहाल वि [ज्योत्स्नावन्] ज्योत्स्ना वाला, चन्द्रिकायुक्त (हे २, १५६) ।

जोत्त देखो जुत्त = युक्त (कुप्र ३८१) ।

जोत्त } न [योक्त्र, °क] जोत, रस्सी या
जोत्तय } चमड़े का तस्मा, जिससे बेल या घोड़ा, गाड़ी या हल में जोता जाता है (परह २, ५, गा ६६२) ।

जोव देखो जोअ = इश् । जोवइ (महा, भवि) ।

जोव पु [दे] १ विन्दु । २ वि स्तोक, घोड़ा (दे ३, ५२) ।

जोवण न [दे] १ यन्त्र कल, 'आउज्जोवण'

(श्रोघ ६० भा) । २ धान्य का मर्दन, श्रन्-मलन (श्रोघ ६० भा) ।

जोवारि स्त्री [दे] श्रन्-विशेष, जुआरि (दे ३, ५०) ।

जोविय वि [ट्ट] विलोक्ति (स १४७) ।

जोव्वण न [यौवन] १ तारुण्य, जवानी (प्राप्र, कप्प) । २ मव्य भाग (से २, १) ।

जोव्वणणोर } न [दे] वय-परिणाम, वृद्धत्व,
जोव्वणवेअ } वृद्धापा, 'जोव्वणणोरं तरुणतणे वि विजिएदियाण पुरिसाण' (दे ३, ५१) ।

जोव्वणिया स्त्री [यौवनिका] यौवन, जवानी (राय) ।

जोव्वणोवय न [दे] वृद्धापा, वृद्धत्व, जरा (दे ३, ५१) ।

जोस देखो जुम् = जुप् । वक्क. जोसत (राज) । प्रयो, सकृ जोसियाण (वव ७) ।

जोस पु [भोप] श्रवमान, श्रन्त (सूय १, २, ३, २ टि) ।

जोसिअ वि [जुट] सेवित (सूय १, २, ३) ।

जोसिआ स्त्री [योषित्] स्त्री, महिला, नारी (पङ्; धर्म २) ।

जोसिणी देखो जोणहा (अभि ३१) ।

जोह अक [युध्] लडना । जोहइ (भवि) ।

जोह पु [योध] सुभट, योद्धा (भौप, कुमा) ।

°ट्टाण न [°स्थान] सुभटों का युद्ध कालीन शरीर-विन्यास, श्रग-रचना-विशेष (ठा १; निचू २०) ।

जोहणा देवो जोणहा (मै ७१) ।

जोहा स्त्री [योधा] भुज-परिमपं की एक जाति (सूय २, ३, २५) ।

जोहार सक [दे] जुहारना, जोहार करना, प्रणाम करना । कर्म जोहारिज्जइ (आक २५, १३) ।

जोहार पु [दे] जोहार, प्रणाम (पव ३८) ।

जोहि वि [योधिन्] लडनेवाला, सुभट (पत्र ७१) ।

जोहि वि [योधिन्] लडनेवाला, लडवैया (अप) ।

जोहिया स्त्री [योधिका] जतु-विशेष, हाथ में चलनेवाली एक प्रकार की सर्प-जाति (जं.व २) ।

जिअ } (शी) अ [दे] श्रवचारण—निधय
जिअ } का सूचक अव्यय (प्राकृ ६८) ।

°जोव } (शी) । देखो एव = एव (पि २३,
°जोव्व } ८५) ।

ज्मड देखो झड । ज्मडइ (हे ४, १३० टि) ।

ज्मन्नाविअ वि [दे] निवासित, निवास-प्राप्त (पङ्) ।

॥ इअ सिरिपाइअसहमहणवम्मि जम्भाराइसहसकलणो
सोलहमो तरंगो समत्तो ॥

भ

भ पु [भ] १ तालु-स्थानीय व्यञ्जन वर्ण-विशेष (प्राप्ता, प्राप) । २ ध्यान (विसे ३१६८) ।

भंकार पुं [भङ्कार] नूपुर वगैरह की आवाज (सुर ३, १८, पडि, सण) ।

भकारिअ न [दे] श्रवचयन, फूल वगैरह का आदान या चुनना (दे ३, ५६) ।

भंख सक [दे] स्वीकार करना । भंखहु (अप) (सिरि ८६४) ।

भंख अक [सं + तप्] सतप्त होना, सताप करना । भंखइ (हे ४, १४०) ।

भंख अक [वि + लप्] विलाप करना, बकवाद करना । भंखइ (हे ४, १४८) ।
वक्क भंखत (कुमा) ।

'घणनासाओ गहिलीभूओ भंखइ नरेस । एस धुवं ।
सोमोवि भणइ भंखसि तुमेव बहुलोहगहगहिओ'
(आ १४) ।

भंख सक [उपा + लभ्] उपालंभ देना, उलाहना देना । भंखइ (हे ४, १५६) ।

भंख अक [निर् + भ्रस्] निश्वास लेना । भंखइ (हे ४, २०१) ।

जाल न [जाल] १ समूह, नघात (सुर ४, १३५, म ४४३) । २ माला का समूह, दाम-निकर (राय) । ३ कारीगरीवाले छिद्रों से युक्त गृहाश, गवाक्ष-विशेष, झरोखा (श्रौप, राया १, १) । ४ मछली वगैरह पकड़ने का जाल, पाश-विशेष (परह १, १) । ४ मछली वगैरह पकड़ने की जाल, पाश-विशेष (परह १, १, ४) । ५ पैर का श्राम्भूपण-विशेष, कड़ा (श्रौप) । ६ कडग पुं [कटक] १ सच्छिद्र गवाक्षों का समूह । २ सच्छिद्र गवाक्ष-समूह से झलंकृत प्रदेश (जीव ३) । ३ घरग न [गृहक] सच्छिद्र गवाक्षवाला मकान (राय, राया १, २) । ४ पजर न [पजर] गवाक्ष (जीव ३) । ५ हरग देखो घरग (श्रौप) ।

जाल पु [ज्वाल] ज्वाला, अग्नि-शिखा, आग की लपट (सुर ३, १८८, जी ६) ।

जालतर न [जालन्तर] सच्छिद्र गवाक्ष का मध्यभाग (सम १३७) ।

जालंधर पुं [जालन्धर] १ पजाव का एक स्वनाम-ख्यात शहर (भवि) । २ न गोत्र-विशेष (कप्प) ।

जालंधरायण न [जालन्धरायण] गोत्र-विशेष (आचा २, १५) ।

जालग देखो जाल = जाल (परह १, १, ५, श्रौप, राया १, १) ।

जालग पुं [जालक] द्वीन्द्रिय जीव की एक जाति, मकड़ी (उत्त ३६, १३०) ।

जालघडिआ स्त्री [दे] चन्द्रशाला, अट्टालिका, भटारी (दे ३, ४६) ।

जालय देखो जाल = जाल (गड्ड) ।

जालयगी स्त्री [दे] संवाद, सम्हाल, खबर, गुजराती में 'जाळवण' (सिरि ३८५) ।

जाला स्त्री [ज्वाला] १ अग्नि की शिखा (आचा, सुर २, २४६) । २ नवम चक्रवर्ती की माता (सम १५२) । ३ भगवान् चन्द्रप्रभ की शासनदेवी (सति ६) ।

जाला अ [यदा] जिस समय, जिस काल में, 'वाला जाअति गुणा, जाला ते सहिअएहि घेपति' (हे ३, ६५) ।

जालाउ पु [जालायुप्] द्वीन्द्रिय जन्तु-विशेष, मकड़ी (राज) ।

जालाव सक [ज्वालय] जलाना, दाह देना । वक्तु जालावत (महानि ७) ।

जालाविअ वि [ज्वालित] जलाया हुआ (सुपा १८६) ।

जालि पुं [जालि] १ राजा श्रेणिक का एक पुत्र, जिसने भगवान् महावीर के पास दीक्षा ली थी (अनु १) । २ श्रीकृष्ण का एक पुत्र, जिसने दीक्षा ले कर शत्रुघ्न पर्वत पर मुक्ति पाई थी (अत १४) ।

जालिय पु [जालिक] जाल-जीवि, वायुरिक, बहेलिया, चिडोमार (गड्ड) ।

जालिय वि [ज्वालित] जलाया हुआ, सुल-गाया हुआ (उव, उप ५६७ टी) ।

जालिया स्त्री [जालिका] १ कन्धुक (परह १, ३—पत्र ४४, गड्ड) । २ वृत्त (राज) ।

जालुग्गाल पु [जालोद्गाल] मछली पकड़ने का साधन-विशेष (अभि १८३) ।

जाव देखो जावइअ (आचा २, २, ३, ३) ।

जाव सक [यापय] १ गमन करना, गुजारना । २ वरतना । ३ शरीर का प्रतिपालन करना । जावइ (आचा) । जावेइ (हे ४, ४०) जावए (सूत्र १, १, ३) ।

जाव अ [यावत्] इन अर्थों का सूचक अव्यय—१ परिमाण । २ मर्यादा । ३ अवधारण, निश्चय, 'जावदय परिमाणे मज्जाया-एवधारणे चेइ' (विसे ३५१६, राया १, ७) । ४ जीव स्त्री न [जीव] जीवन पर्यन्त (आचा) । स्त्री वा (विसे ३५१८, श्रौप) । ५ जीविय वि [जीविक] यावज्जीव-सबन्धी (स ४४१) । देखो जाव ।

जाव पुं [जाप] मन ही मन बार बार देवता का स्मरण, मन्त्र का उच्चारण (सुर ६, १७४, सुपा १७१) ।

जावड पु [ट] वृक्ष-विशेष (परह १—पत्र ३४) ।

जावइअ वि [यावत्] जितना, 'जावइया वयणपहा' (सम्म १४४, अत ६४) ।

जावई स्त्री [जानिपत्री] १ कन्द-विशेष (उत्त ३६, ६८, सुख ३६, ६८) । २ शुद्धवनस्पति की एक जाति (परह १—पत्र ३४) ।

जावईय पुं [जातिपत्रीक] कन्द-विशेष (उत्त ३६, ६८) ।

जावं देखो जाव (पउम ६८, ५०) । १ ताव अ [तावत्] १ गणित-विशेष । २ गुणाकार (ठा १०) ।

जावत देखो जावइअ (भग १, १) ।

जावग देखो जावय = यापक (दसनि १) ।

जावण न [यापन] १ विताना, गुजारना । २ दूर करना, हटाना (उप ३२० टी) ।

जावणा स्त्री [यापना] ऊपर देखो (उप ७२८ टी) ।

जावणिज्ज वि [यापनीय] १ जो बीताया जाय, गुजारने योग्य । २ शक्ति-युक्त, जावणिजाए एणिसिहिआए' (पडि) । ३ तत न [तन्त्र] ग्रन्थ-विशेष (धर्म २) ।

जावय वि [यापक] १ बीतनेवाला । २ पु. तर्क-शास्त्र-प्रसिद्ध काल-क्षेपक हेतु (ठा, ४, ३) ।

जावय वि [जापक] जीतनेवाला, 'जिणाए जावयाए' (पडि) ।

जावय पु [यावक] झलकतक, झलता, लाख का रंग (गड्ड, सुपा ६६) ।

जावभय वि [यावसिक] १ धान्य से गुजारा करनेवाला (बृह १) । २ घास वाहक (शोध २३८) ।

जाविय वि [यापित] बीताया हुआ (राया १, १७) ।

जास पु [जाप] पिशाच-विशेष (गज) ।

जासुमग । पु [जपासुमनस्] १ जपा जासुमिण का वृक्ष, पुष्पप्रधान (परह १, जासुयण । राया १, १) । २ न जपा का फूल (राया १, १ कप्प) ।

जाहग पु [जाहक] जन्तु-विशेष, जिसके शरीर में काटे होते हैं, साही या साहिल (परह १, १, विसे १४५४) ।

जाहत्थ न [याथार्थ्य] सत्यपन, वास्तविकता (विसे १२७६) ।

जाहासख देखो जहा-सख, 'जाहासखमिमीणं नियकज्ज साहुवाओ य' (उप १७६) ।

जाहे अ [यदा] जिस समय, जब, (हे ३, ६५, महा, गा ६८) ।

जि (अप) देखो एव=एव (हे ४, ४२०, कुमा, वज्जा १४) ।

भणभणिय देखो भणभणिय (सुपा ५०) ।
 भणि देखो भुणि (रंभा) ।
 भक्ति देखो भडक्ति (हे १, ४२, पड्, महा,
 सुर २, ६) ।
 भत्थ वि [दे] गत, गया हुआ । २ नष्ट (दे
 ३, ६१) ।
 भपिअ वि [दे] पर्यस्त, उत्क्षिप्त (पड्) ।
 भप्प देखो भण । भप्पइ (पड्) ।
 भमाल न [दे] इन्द्रजाल, माया-जाल (दे ३,
 ५३) ।
 भय पुंस्त्री [ध्वज] ध्वज, पताका (हे २, २७,
 औप) । स्त्री ०या (औप) ।
 भर अक [क्षर] भरना, टपकना, घूना,
 गिरना । भरइ (हे ४, १७३) । वक्र भरंत
 (कुमा, सुर ३, १०) ।
 भर सक [स्मृ] याद करना । भरइ (हे ४,
 ७४, पड्) । कृ भरेयव्व (वृह ५) ।
 भरक } पुं [दे] तृण का बनाया हुआ
 भरंत } पुरुष चञ्चा (दे ३, ५५) ।
 भरग वि [स्मारक] चिन्तन करनेवाला, ध्यान
 करनेवाला, 'भरणं करगं भरगं पभावग
 णाणदसणगुणाण' (रादि) ।
 भरभर पुं [भरभर] निर्भर या भरना
 आदि का 'भर-भर' आवाज (सुर ३, १०) ।
 भरण न [क्षरण] भरना, टपकना, पतन
 (वव १) ।
 भरणा स्त्री [क्षरणा] ऊपर देखो (आवम) ।
 भरय पु [दे] सुवर्णकार, सोनार (दे ३, ५४) ।
 भरिय वि [क्षरित] टपका हुआ, गिरा हुआ,
 पतित (उव, ओघ ७६०) ।
 भरुअ पु [दे] मशक, मच्छड (दे ३, ५४) ।
 भलक्किअ वि [दग्ध] जला हुआ, भस्मीभूत,
 'जयगुल्लुखरिहानलजालोलिभलक्किय हियय'
 (सुपा ६५७, हे ४, ३६५) ।
 भलभल अक [जाडवल] भलकना, चम-
 कना, दीपना । वक्र. भलभलत (भवि) ।
 भलभलिआ स्त्री [दे] भोली, कोथली, थैली
 (दे ३, ५६) ।
 भलहल देखो भलभल । भलहल (सुपा
 १५६) । वक्र. भलहलत (आ २८) ।

भलहलिय वि [दे] क्षुब्ध, विचलित, 'धर-
 हारंयवर भलहलियसायरं चलयसयलकुलमेल'
 (कुलक ३३) ।
 भला स्त्री [दे] मृगतृष्णा, घृष में जल-ज्ञान,
 व्यर्थ तृष्णा (दे ३, ५३, पाप्र) ।
 भलुकिअ } वि [दे] दग्ध, जला हुआ (दे
 भलुसिअ } ३, ५६) ।
 भल्लरी स्त्री [भल्लरी] बलयाकार वाद्य-विशेष,
 हुड्डा वाजा, भाल, भालर (ठा १०, औप, सुर
 ३, ६६, सुपा ५०, कप्प) ।
 भल्लरी स्त्री [दे] अजा, बकरी (चड) ।
 भल्लोउभल्लिअ वि [दे] सपूर्ण, परिपूर्ण, भरपूर
 (भवि) ।
 भवणा स्त्री [क्षपणा] १ नाश, ग्निनाश (विने
 ६६१) । २ अव्ययन, पठन (विसे ६५८) ।
 भस पु [भप] १ एक देवविमान (देवेन्द्र
 १४०) । २ एक नरक-स्थान (देवेन्द्र ११) ।
 भस पु [भप] १ मत्स्य, मछली (पएह १,
 १) । २ चिधय पु [चिहक] कामदेव,
 स्मर (कुमा) ।
 भस पु [दे] १ अयश, अपकीर्ति । २ तट,
 किनारा । ३ वि. तटन्य, मव्यस्य । ४ दोष-
 गभीर, लम्बा और गंभीर, बहुत गहरा (दे
 ३, ६०) । ५ टक से छिन्न (दे ३, ६०,
 पाप्र) ।
 भसय पु [भपक] छोटा मत्स्य (दे २, ५७) ।
 भसर पुन [व] शस्त्र-विशेष, आयुध-विशेष,
 'सरभसरसत्तसव्वल-' (पठम ८, ६५) ।
 भसिअ वि [दे] १ पर्यस्त, उत्क्षिप्त । २
 आक्रुष्ट, जिसपर आक्रोश किया गया हो वह
 (दे ३, ६२) ।
 भसिअ पु [भपचिह] काम, स्मर (कुमा) ।
 भसुर न [दे] १ ताम्बूल, पान (दे ३, ६१,
 गउड) । २ अर्थ (दे ३, ६१) ।
 भा सक [ध्यै] चिन्ता करना, ध्यान करना ।
 भाइ, भाइइ (हे ४, ६) । वक्र. भायत,
 भायमाण (पारु, महा) । सक. भाऊण
 (आरा ११२) । हेक. भाइत्तए (कस) । कृ
 भायव्व, भैय, भाइयव्व, भाएयव्व
 (कुमा, आरा ७८, आव ४, ति १०, सुर
 १४, ८४) ।

भाड वि [ध्यायिन्] चिन्तन करनेवाला,
 ध्यान करनेवाला (आचा) ।
 भाडअ वि [ध्यात] चिन्तित (सिरि १२५५) ।
 भाउ वि [ध्यातृ] ध्यान करनेवाला, चिन्तक
 (प्राद ४) ।
 भाड न [दे. भाट] १ लता-गहन, निकुञ्ज,
 भाडी (दे ३, ५७, ७, ८४, पाप्र, सुर ७,
 २४३) । २ वृक्ष, पेड़, 'आप्रल्ली भाडमेप्रमि'
 (दे १, ६१), 'दिट्ठो य तए पोमाड्जभाडयस्स
 इप्रमि पएमे विणिग्गमो पायमो' (स १४४) ।
 भाडण न [भाटन] १ भोप, क्षय, क्षीणता ।
 २ प्रस्फोटन, भाडना (राज) ।
 भाडल न [दे] कर्पास-फल, डोडो, कपास (दे
 ३, ५७) ।
 भाडावण स्त्री [भाटन] भडवाना, सफा
 कराना, मार्जन कराना । स्त्री. ०णी (सुपा
 ३७३) ।
 भाण वि [ध्यान] ध्यानकर्ता (ध्रु १२८) ।
 भाण पुन [ध्यान] १ चिन्ता, विचार,
 उत्कण्ठ-पूर्वक स्मरण, सोच (आव ४, ठा
 ४, १, हे २, २६) । २ एक ही वस्तु में
 मन की स्थिरता, लो लगाना (ठा ४, १) ।
 ३ मन आदि की चेष्टा का निरोध । ४ दृढ़
 प्रयत्न में मन वगैरह का व्यापार (विसे
 ३०७१, ठा ४, १) ।
 भाणंतरिया स्त्री [ध्यानान्तरिका] १ दो
 ध्यानो का मध्य भाग, वह समय जिसमें
 प्रथम ध्यान की समाप्ति हुई हो और दूसरे
 का आरम्भ जबतक न किया गया हो और
 अन्य अनेक ध्यान करने के बाकी हो (ठा ६,
 भग, ५, ४) । २ एक ध्यान समाप्ति होने पर
 शेष ध्यानो में किसी एक को प्रथम प्रारम्भ
 करने का विमर्श (वृह १) ।
 भाणि वि [ध्यानिन्] ध्यान करनेवाला
 (आरा ८६) ।
 भास सक [दह] जलाना, दाह देना, दग्ध
 करना । भासइ (सूअ २, २, ४४) । वक्र.
 भासत (सूअ २, २, ४४) ।
 भास वि [दे] दग्ध, जला हुआ (आचा २,
 १, १) । ०थडिल न [स्थण्डिल] दग्ध
 भूमि (आचा २, १, १) ।

५) । °पहु पुं [°प्रभु] जिन-देव, अहंन् देव (उप ३२० टी) । °पाडिहेर न [°प्रातिहार्य] जिन-देव की अहंता-सूचक देव-कृत अशोक वृक्ष आदि आठ बाह्य विमूर्तियाँ, वे ये हैं—१ अशोक वृक्ष, २ सुर-कृत पुष्प-वृष्टि, ३ दिव्य-ध्वनि, ४ चामर, ५ सिंहासन, ६ भामण्डल, ७ दुन्दुभि-नाद, ८ छय (दस १) । °पालिय पु [°पालिन] चम्पा नगरी का निवासी एक श्रेष्ठि-पुत्र (गाथा १, ६) । °विंय न [°विम्ब] जिन-रत्ति, जिन देव की प्रतिमा (पडि, पचा ७) । °भड पु [°भट] स्वनाम-प्रसिद्ध एक जैन आचार्य, जो सुप्रसिद्ध जैन ग्रन्थकार श्रीहरिभद्र सूरि के गुरु थे (सार्य ५८) । °भद पु [°भद्र] स्वनाम-प्रसिद्ध जैन आचार्य और ग्रन्थकार (आव ४) । °भयण न [°भयन] अहंन् मन्दिर (पचव ४) । °मय न [°मत] जैन दर्शन (पंचा ४) । °माया बी [°मातृ] जिन-देव की जननी (सम १५१) । °मुहा बी [°मुद्रा] जिनदेव जिम तरह से कायोत्सर्ग में रहते हैं उस तरह शरीर का विन्यास, आसन-विशेष (पचा ३) । °प्रद देखो °चद (सुर १, १०, सुपा ७६) । °स्वय पु [°रक्षित] स्वनाम-ख्यात एक सार्यवाह-पुत्र (गाथा १, ६) । °वइ पु [°पति] जिन-देव, अहंन्-देव (सुपा ८६) । °वई बी [°वाच्] जिन-देव की वाणी (वृह १) । °वयण न [°वचन] जिन-देव की वाणी (ठा ६) । °वयण न [°वदन] जिनदेव का मुख (औप) । °वर पु [°वर] अहंन् देव (पउम ११, ४, अजि १) । °वरिंद पु [°वरेन्द्र] अहंन् देव (उप ७७६) । °वलह पु [°वलभ] स्वनाम-ख्यात एक जैन आचार्य और प्रसिद्ध स्तोत्र-कार (लहुअ १७) । °वसह पु [°वृषभ] अहंन् देव (राज) । °सकहा बी [°सक्थि] जिन देव की अस्थि (मग १०, ५) । °सासन न [°शासन] जैन दर्शन (उत्त १८, सूअ १, ३, ४) । °हंस पुं [°हस] एक जैन आचार्य (द ४७) । °हर देखो °घर (पउम ११, ३, सुपा ३६१, महा) । °हरिम पुं [°हर्ष] एक जैन मुनि (रयण ६४) । °ययण न [°यतन] जिन-देव का मन्दिर (पचव ४) ।

जिणद देखो जिणिंद, 'सवे जिणंदा सुरविद-वंदा' (पडि, जी ४८) । जिणकपि पु [जिनकल्पिन्] जैन मुनि का एक भेद (पचा १८, ६) । जिणग न [जयन] जय, जीत (सण) । जिणपह पु [जिनप्रभ] एक जैन आचार्य (ती ५) । जिणिंद पु [जिनेन्द्र] जिन भगवान्, अहंन् देव (प्रासू ५२) । °गिह न [°गृह] जिन-मन्दिर (सुर ३, ७२) । °चद पुं [°चन्द्र] जिन-देव (पउम ६५, ३६) । जिणिय वि [जित] परामृत, वशीकृत (सुपा ५२२, रयण २७) । जिणिमर देखो जिणेसर (सम्मत्त ७६, ७७) । जिणिस्सर देखो जिणेसर (पचा १६) । जिणुत्तम पु [जिनोत्तम] जिन-देव (अजि ४) । जिणेंद देखो जिणिंद (चेइय ६०) । जिणेस पुं [जिनेश] जिन भगवान्, अहंन् देव (सुपा २६०) । जिणेसर पु [जिनेश्वर] १ जिन देव, अहंन् देव (पउम २, २३) । २ विक्रम की ग्यारहवीं शताब्दी के स्वनाम-ख्यात एक प्रसिद्ध जैन आचार्य और ग्रन्थकार (सुर १६, २३६, सार्य ७६, गु ११) । जिण वि [जीर्ण] १ पुराना, जर्जर (हे १, १०२, चार ४६ प्रासू ७६) । २ पचा हुआ, 'जिणो भोग्रणमत्ते' (हे १, १०२) । ३ वृद्ध, बूढ़ा (वृह १) । सेट्टि पुं [श्रेष्ठिन्] १ पुराना सेठ । २ श्रेष्ठि पद से च्युत (आव ४) । जिण (अप) देखो जिअ = जित (पिंग) । जिणगासा बी [जिज्ञासा] जानने की इच्छा (पचा ३) । जिणिअ } (अप) देखो जिणिय (पिंग) । जिणीअ } जिणोवभवा बी [दे] दूर्वा, दूब (घास) (दे ३, ४६) । जिणु वि [जिणु] १ जित्वर, जीतनेवाला, विजयी (प्राभा) । २ पु. अर्जुन, मध्यम पांडव (गडड) । ३ विष्णु, श्रीकृष्ण । ४ सूर्य, रवि । ५ इन्द्र, देव-नायक (हे २, ७५) ।

जित्त देखो जिअ = जित (महा, सुपा ३६५, ६४३) । जित्तिअ } वि [यावत्] जितना (हे २, जित्तिल } १५६, षड्) । जित्तुल (अप) ऊपर देखो (कुमा) । जिध (अप) अ [यथा] जैसे, जिस तरह से (हे ४, ४०१) । जिन्न देखो जिण (सुपा ६) । जिन्नामिय वि [जिज्ञासित] जानने के लिए इष्ट, जानने के लिए चाहा हुआ (भास ७२) । जिनुद्धार पुं [जीर्णोद्धार] पुराने और टूटे-फूटे मन्दिर आदि को सुधारना (सुपा ३०६) । जिठम पु [जिह्व] एक नरक-स्थान (द्वेन्द्र ६, २६) । जिठभा बी [जिह्वा] जीभ, रसना (परह २, ५, उप ६८६ टी) । जिठिभदिय न [जिह्वेन्द्रिय] रसनेन्द्रिय, जीभ (ठा ४, २) । जिठिभया बी [जिह्विका] १ जीभ । २ जीभ के आकारवाली चीज (ज ४) । जिम सक [जिम, भुज्] जीमना, भोजन करना, खाना । जिमइ (हे ४, ११०, षड्) । जिम (अप) देखो जिध (षड्, भवि) । जिमण न [जेमन, भोजन] जीमन, भोजन (आ १६, चैत्य ५६) । जिमण न [जेमन] जिमाना, भोज (धर्मवि ७०) । जिमिअ वि [जिमित, भुक्त] १ जिसने भोजन किया हुआ हो वह (पउम २०, १२७, पुष्प ३५, महा) । २ जो खाया गया हो वह, भक्षित (दे ३, ४३) । जिम्म देखो जिम = जिम् । जिम्मइ (हे ४, २३०) । जिम्ह पुं [जिह्व] १ मेघ-विशेष, जिसके बरसने से प्रायः एक वर्ष तक जमीन में चिकनापन रहती है (ठा ४, ४—पत्र २७०) । २ वि. कुटिल, कपटी, मायावी (सम ७१) । ३ मन्द, शलस (ज २) । ४ न. माया, कपट (वव ३) । जिम्ह न [जैम्ह] कुटिलता, वक्रता, माया, कपट (सम ७१) ।

भूसमाण (आचा) । संकृ भूसित्ता, भूसित्ताणं, भूसेत्ता (औप, पि ५८३, अत २७) ।

भूसणा स्त्री [जोषणा] सेवा, आराधना (उवा, अंत, औप, णाया १, १) ।

भूसरिअ वि [दे] १ अत्यर्थं, अत्यन्त । २ स्वच्छ, निर्मल (दे ३, ६२) ।

भूसिय वि [जुष्ट] १ सेवित, आराधित (णाया १, १, औप) । २ क्षपित, क्षिप्त, परित्यक्त (उवा, ठा २, २) ।

भेडुअ पुं [दे] कन्दुक, गेंद (दे ३, ५६) ।
भेय देखो म्हा ।

भेर पुं [दे] पुराना घण्टा (दे ३, ५६) ।

भोटिग पु [दे] देव-विशेष (कुप्र ४७२) ।

भोट्टी स्त्री [दे] अर्ध-महिषी, भैंस की एक जाति (दे ३, ५६) ।

भौडलिआ स्त्री [दे] रास के समान एक प्रकार की क्रीडा (दे ३, ६०) ।

भोड सक [शाटय्] पेड आदि में पत्र वगैरह को गिराना । भोडइ (पि ३२६) ।

भोड न [दे] १ पेड आदि से पत्र आदि का गिराना । २ जीरां वृक्ष (णाया १, ११ — पत्र १७१) ।

भोडण न [शाटन] पातन, गिराना (पणह १, १—पत्र २३) ।

भोडप्प पु [दे] १ चना, अन्न-विशेष । २ सूखे चने का शाक (दे ३, ५६) ।

भोडिअ पु [दे] व्याव, शिकारी, बहेलिया (दे ३, ६०) ।

भोलिआ } स्त्री [दे भोलिका] भोली,
भोलिआ } यैली, कोयली (दे ३, ५६, सूत्र २, ४) ।

भोस देखो भूम । भोमेइ (आचा) । वकृ

भोसमाण, भोसेमाण (सुपा २६, आचा) ।
सकृ 'सलेहणाए मम्मं भोसित्ता निययदेहं तु' (सुर ६, २४६) ।

भोस सक [गवेपय्] खोजना, अन्येषण करना । भोसेहि (वृह ३) ।

भोस सक [भोपय्] डालना, प्रक्षेप करना । कृ भोसेयव्व (वव १) ।

भोस पु [भोप] राशि-विशेष, जिसके डालने में गमान भागाकार हो वह राशि (वव १) ।

भोस पुं [दे] भाडना, दूर करना (ठा ५, २) ।

भोसण न [दे] गवेपण, मार्गण, 'आभोगण ति वा मग्गण ति वा भोसण ति वा एगद्धं' (वव २) ।

भोसणा देखो भूमणा (मम ११६, भग) ।

भोसणा स्त्री [जोषणा] अन्त समय की आराधना, सलेखना (आचक ३७८) ।

भोसिअ देखो भूसिय (आचा, हे ४, २५८) ।

॥ इअ सिरिपाइअसदमहणवम्मि म्मारुअसदसंकलणो
सत्तरहमो तरंगो ममत्तो ॥

ट

ट पु [ट] मूर्द्धं स्थानीय व्यञ्जन वर्ण-विशेष (प्रामा, प्राप) ।

टउया स्त्री [दे] आत्तान-शब्द, पुकारने की आवाज, गुजराती में 'टौको' (कुप्र ३०६) ।

टंक पु [टङ्क] चित्र-विशेष, सिक्का पर का चित्र (पचा ३, ३५) ।

टक पु [टङ्क] १ तलवार आदि का अग्र भाग (पणह १, १—पत्र १८) । २ एक प्रकार का सिक्का (आ १२, सुपा ५१३) ।

३ एक दिशा में छिन्न पर्वत (णाया १, १—पत्र ६३) । ४ पत्थर काटने का अन्न, टांकी, छेनी (से ५, ३५, उप पु ३१५) । ५ परिमाण-विशेष, चार मासे की तौल (पिंग) । ६ पक्षि-विशेष (जीव १) ।

टक पुं [दे] १ तलवार, खड्ग । २ खात, खुदा हुआ जलाशय । ३ जङ्घा, जाँघ । ४

भित्ति, भीत । ५ तट, किनारा (दे ४, ४) ।

६ खनिज, कुदाल (दे ४, ४, मे ५, ३५) ।

७ वि. छिन्न, छेदा हुआ, काटा हुआ (दे ४, ४) ।

टकण पु [टङ्कन] म्लेच्छ की एक जाति, (विसे १४४४) ।

टंकवत्थुल पु [दे] कन्द-विशेष, एक जाति की तरकारी (आ २०) ।

टका स्त्री [दे] १ जंघा, जाँघ (पात्र) । २ स्वनाम-ख्यात एक तीर्थ (ती ४३) ।

टंकार पु [टङ्कार] धनुष का शब्द (मवि) ।

टकार पु [दे] ओजस्, तेज (गडड) ।

टकिअ वि [दे] प्रच्छन्, फेला हुआ (दे ८, १) ।

टकिअ वि [टङ्कित] टांकी से काटा हुआ (दे ४, ५०) ।

टंक्रिया स्त्री [टङ्क्रिका] पत्थर काटने का अन्न, टांकी (सम्मत्त २२७) ।

टवरय वि [दे] भारवाला, गुरु, भारी (दे ४, २) ।

टक् पुं [टक्] देश-विशेष (हे १, १६५) ।

टक् वि [टक्] १ टक् देशीय । २ पु भाट की एक जाति (कुप्र १२) ।

टक्कर पु [दे] ठोकर, अंग से अंग का आघात (सुर १२, ६७, वव १) ।

टक्करा स्त्री [दे] टकोर, मुड-सिर में उगली का आघात (वव १ टी) ।

टक्कारा स्त्री [दे] अरणि-वृक्ष का फूल (दे ४, २) ।

टगर पुं [तगर] १ वृक्ष-विशेष, तगर का वृक्ष । २ सुगन्धित काष्ठ-विशेष (हे १, २०५, कुमा) ।

जीविओसासिय वि [जीवितोच्छ्वासिक] जीवन को बढ़ानेवाला (भग ६, ३३) ।
 जीविगा देखो जीविआ (स २१८) ।
 जीह अक [लरुज्] लजा करना, शरमाना ।
 जीहइ (हे ४, १०३, पङ्) ।
 जीहा स्त्री [जिह्वा] जीम, रसना (आचा; स्वप्न ७८) । ल वि [वत्] लम्बी जीमवाला (पउम ७, १२०, नमि ८, सुर २, ६२) ।
 जीहाविअ वि [लज्जित] लजा-युक्त किया गया, लजाया गया (कुमा) ।
 जु देखो जुज (कुमा) । कवक जुज्जत (सम्प १०७, से १२, ८७) ।
 जुं स्त्री [युव] लडाई, युद्ध, 'जुधि - वातिमए धेप्पइ' (विसे ३०१६) ।
 जु अ [दे] निश्चय-सूचक अव्यय (सा ४) ।
 जुअ देखो जुग (से १२, ६०, इक, पएह १, १) । ६ युग, जोडा, उमय (पिंग, सुर २, १०२, सुपा १६०) ।
 जुअ वि [युत] युक्त सलग्न, सहित (दे १, ८१, सुर ४, ६४) ।
 जुअ देखो जुव (गा २२८, कुमा, सुर २, १७७) ।
 जुअइ स्त्री [युवति] तरुणी, जवान स्त्री (गउड, कुमा) ।
 जुअजुअ (अप) अ [युतयुत] जुदा-जुदा, अलग-अलग, भिन्न-भिन्न (हे ४, ४२२) ।
 जुअण [दे] देखो जुअल= (दे) (पङ्) ।
 जुअणद्व पुं [युगनद्व] ज्योतिष प्रसिद्ध एक योग, जिसमे बैल के कंधे पर रखे हुए युग—जुआ या जुआठ की तरह चन्द्र और सूर्य तथा नक्षत्र अवस्थित होते हैं वह योग (सुज १२—पय २३३) ।
 जुअय न [युनरु] जुदा, पृथक् (दे ७, ७३) ।
 जुअरज्ज न [यौवराज्य] युवराज का भाव या पद, युवराजन (स २६८) ।
 जुअल न [युगल] १ युग्म, जोडा, उमय (पाप्र) । २ वे दो पद्य जिनका अर्थ एक दूसरे से सापेक्ष हो (धा १४) ।
 जुअल पुं [दे] युवा, तरुण, जवान (दे ३, ४७) ।

जुअलिअ वि [दे] द्विगुणित (दे ३, ४७) ।
 जुअलिय देखो जुगलिय (गाया १, १) ।
 जुअली स्त्री [युगली] युग्म, जोडा (प्राक ३८) ।
 जुआण देखो जुवाण (गा ५७, २४६) ।
 जुआरि स्त्री [दे] जुआरि, अन्न-विशेष (सुपा ५४६, सुर १, ७१) ।
 जुइ स्त्री [युति] कान्ति, तेज, प्रकाश, चमक (श्रीप, जीव ३) । म, मत्त वि [मत्त] तेजस्वी, प्रकाशशाली (स ६४१, पउम १०२, १५६) ।
 जुइ स्त्री [युति] सयोग, युक्तता (ठा ३, ३) ।
 जुइ पु [युगिन्] स्वनाम द्यात एक जैन मुनि (पउम ३२, ५७) ।
 जुईम वि [युतिमत्त] तेजस्वी (सूअ १, ६, ८) ।
 जुउच्छ सक [जुगुप्स] घृणा करना, निन्दा करना । जुउच्छइ (हे ४, ४, पङ्, मे ५, ५) ।
 जुउच्छिय वि [जुगुप्मित] निन्दित (निचू ४) ।
 जुगिय वि [दे] जाति, कर्म या शरीर से हीन, जिसको सन्यास देने का जैन शास्त्रों में निषेध है (पुप्फ १२५) ।
 जुगिय वि [दे] १ काटा हुआ (पिंड ४४६) । २ दूषित (सिरि २२३) ।
 जुज सक [युज्] जोडना, युक्त करना । जुजइ (हे ४, १०६) । वकृ. जुजत (श्रीप ३२६) ।
 जुजण न [योजन] जोडना, युक्त करना, किसी कार्य में लगाना (सम १०६) ।
 जुजणया स्त्री [योजना] १ ऊपर देखो जुजणा (श्रीप, ठा ७) । २ करण-विशेष—मन, वचन और शरीर का व्यापार, 'मणव-यणकायकिरिया पन्नरसविहाउ जुजणाकरण' (विसे ३३६०) ।
 जुजम [दे] देखो जुजुमय (उप ३१८) ।
 जुजिअ वि [दे] वुशुक्षित, भूखा (गाया १, १—पय ६६, ६८ टी) ।
 जुजुमय न [दे] हरा तृण-विशेष, एक प्रकार की हरी घान, जिसको पशु चाव से खाते हैं (स ४८७) ।

जुजुरुड वि [दे] परिग्रह-रहित (दे ३, ४७) ।
 जुग पु [युग] १ काल-विशेष—सत्य, त्रेता, द्वापर और कलि ये चार युग (कुमा) । २ पांच वर्ष का काल (ठा २, ४—पय ८६, सम ७५) । ३ न. चार हाथ का घूप (श्रीप, पएह १, ४) । ४ शकट का एक अंग, धुर, गाड़ी या हल खींचने के समय जो बैलों के कंधे पर रखे जाते हैं (उप पु १३६, उत २) । ५ चार हाथ का परिमाण (अणु) ।
 ६ देखो जुअ = युग । पवर वि [प्रवर] युग-श्रेष्ठ (मग) । पहाण वि [प्रधान] १ युग-श्रेष्ठ (रमा) । २ पु. युग-श्रेष्ठ जैन आचार्य की एक उपाधि (पव २६८, गुरु १) । बाहु पु [बाहु] १ विदेह वर्ष में उत्पन्न स्वनाम-प्रसिद्ध एक जिनदेव (विपा २, १) । २ विदेह वर्ष का एक त्रि-खण्डाधिपति राजा (आचू ४) । ३ मिथिला का एक राजा (तित्थ) । ४ वि घूप या खसा की तरह लम्बा हाथवाला, दीर्घ बाहु (ठा ६) । मच्छ पु [मत्स्य] की एक जाति (विपा १, ८—पय ८४ टी) सवच्छर पुं [सवत्सर] वर्ष-विशेष (ठा ५, ३) ।
 जुगतर न [युगान्तर] घूप-परिमित भूमि-भाग, चार हाथ जमीन (पएह २, १) । पलोयणा स्त्री [प्रलोकना] चलते समय चार हाथ जमीन तक दृष्टि रखना (भग) ।
 जुगधर न [युगन्धर] १ गाड़ी का काष्ठ-विशेष, शकट का एक अवयव (ज १) । २ पुं विदेह वर्ष में उत्पन्न एक जिन-देव (आचू १) । ३ एक जैन मुनि (पउम २०, १८) । ४ एक जैन आचार्य (आवम) ।
 जुगल न [युगल] युग्म, जोडा, उमय (अणु, राय) ।
 जुगलि वि [युगलिन्] स्त्री-पुरुष के युग्म रूप से उत्पन्न होनेवाला (रयण २२) ।
 जुगलिय वि [युगलिन] १ युग्म-युक्त, द्वन्द्व-सहित (जीव ३) । २ युग्म रूप में स्थित (राज) ।
 जुगव वि [युगवन्] समय के उपद्रव से वर्जित (अणु, राय) ।
 जुगव } म [युगपत्] एक ही साथ,
 जुगव } एक ही समय में, 'कारणक-

ठ

ठ पुं [ठ] मूष-स्थानीय व्यञ्जन वर्ण-विशेष (प्राप्ता, प्राप) ।

ठइअ वि [दे] १ उत्क्षिप्त, ऊपर फेंका हुआ । २ पु. अवकाश (दे ४, ५) ।

ठइअ वि [स्थगित] १ आच्छादित, ढका हुआ । २ वन्द किया हुआ, रुका हुआ (स १७३) ।

ठइअ देखो ठविअ (पिंग) ।

ठंडिल देखो थडिल (उव) ।

ठंभ देखो थंभ = स्तम्भ । कर्म ठंभिज्जइ (हे २, ६) ।

ठंभ देखो थंभ = स्तम्भ (हे २, ६, षड्) ।

ठकुर } पु [ठकुर] १ ठकुर, क्षत्रिय,
ठकुर } राजपूत (स ५४८, सुपा ४१२,
मट्टि ६८) । २ ग्राम वगैरह का स्वामी,
नायक, मुखिया (आवम) ।

ठकार पु [ठ कार] 'ठ' अक्षर, 'तम्मि चलते करिमयसित्ताइ महीइ तुरगलुरसेणी । लिहिया रिऊण विजए मती ठकारपति व्व' (धर्मवि २०) ।

ठग } सक [स्थग] वन्द करना, ढकना ।
ठय } ठोइ, ठपइ (सट्टि २३ टी, सुख २,
१७) ।

ठग पु [ठक] ठग, घूत, वञ्चक (दे २, ५८, कुमा) ।

ठगिय वि [दे] वञ्चित, ठगा हुआ, विप्र-
तारित (सुपा १२४) ।

ठगिय देखो ठइय = स्थगित (उप ४ ३८८) ।

ठट्टार पु [दे] ताम्र, पितलआदि धातु के बर्तन
बनाकर जीविका चलानेवाला, ठठेरा (धर्म २) ।

ठड्ड वि [स्तड्ड] हक्कावक्का, कुण्ठित,
जड (हे २, ३६, वज्जा ६२) ।

ठप्प वि [स्थाप्य] स्थापनीय, स्थापन करने
योग्य (ओष ६) ।

ठय मक [स्थग्] वन्द करना, रोकना ।
ठएति (स १५६) ।

ठयण [स्थगन] १ रुकाव, अटकाव । २ वि.
रोकनेवाला । स्त्री °णी (उप ६६६) ।

ठयण न [स्थगन] वन्द करना, 'अच्छिडयणं
च' (पंचा २, २५) ।

ठरिअ वि [दे] १ गौरवित । २ ऊर्ध्व-
स्थित (दे ४, ६) ।

ठलिय वि [दे] खाली, शून्य, रिक्त किया
गया (सुपा २३७) ।

ठल्ल वि [दे] निर्धन, धन-रहित, दरिद्र (दे
४, ५) ।

ठव सक [स्थापय्] स्थापन करना । ठवइ,
ठवेइ (पिंग, कप्प, महा) । ठवे (भग) । वक्क.
ठवत (रयण ६३) । सक्क ठविउ, ठविऊण,
ठवित्ता, ठवित्तु, ठवेत्ता (पि ५७६, ५८६,
५८२, प्रासु २७, पि ५८२) ।

ठवण न [स्थापन] स्थापन, सस्थापन (सुर
२, १७७) ।

ठवणा स्त्री [स्थापना] १ प्रतिकृति, चित्र,
मूर्ति, आकार (ठा २, ४, १०, अणु) । २
स्थापन, न्यास (ठा ४, ३) । ३ साकेतिक
वस्तु, मुख्य वस्तु के अभाव या अनुपस्थिति
में जिस किसी चीज में उसका सकेत किया
जाय वह वस्तु (विमे २६२७) । ४ जैन
साधुओं की भिक्षा का एक दोष, साधु को
भिक्षा में देने के लिए रखी हुई वस्तु (ठा ३,
४—पत्र १५६) । ५ अनुज्ञा, समति (एदि) ।
६ पयुपणा, आठ दिनों का जैन पर्व-विशेष
(निचू १०) । °कुल पुन [°कुल] भिक्षा के
लिए प्रतिषिद्ध कुल (निचू ४) । °णय पु
[°नय] स्थापन को ही प्रधान माननेवाला
मत (राज) । °पुरिस पुं [°पुरुष] पुरुष की
मूर्ति या चित्र (ठा ३, १, सूत्र १, ४, १) ।
°यरिय पुं [°चार्य] जिस वस्तु में आचार्य
का सकेत किया जाय वह वस्तु (धर्म २) ।
°सच्च न [°सत्थ] स्थापना-विषयक सत्य,
जिन भगवान् की मूर्ति को जिन कहना यह
स्थापना-सत्य है (ठा १०, पण ११) ।

ठवणा स्त्री [स्थापना] वासना (एदि १७६) ।

ठवणी स्त्री [स्थापनी] न्यास, न्यास रूप से
रखा हुआ द्रव्य (आ १४) । °मोस पुं
[°मोष] न्यास की चोरी, न्यास का अपलाप,
'दोहेसु मित्तदोहो, ठवणीमोसो असेसमोसेसु'
(आ १४) ।

ठविअ वि [स्थापित] रखा हुआ, संस्थापित
(षड्, पि ५६४, ठा ५, २) ।

ठविआ स्त्री [दे] प्रतिमा, मूर्ति, प्रतिकृति
(दे ४, ५) ।

ठविर देखो थविर पि १६६) ।

ठा अक [स्था] बैठना, स्थिर होना, रहना,
गति का रुकाव करना । ठाइ, ठाअइ (हे ४,
१६, षड्) । वक्क ठायमाण (उप १३०
टी) । सक्क ठाइऊण, ठाऊण (पि ३०६,
पंचा १८) । हेक्क ठाइत्तए, ठाउ (कस,
आव ५) । क्क ठाणिज्ज, ठायव्व, ठाए-
यव्व (णाय १, १४, सुपा ३०२, सुर ६,
३३) ।

ठाइ वि [स्थायिन्] रहनेवाला, स्थिर होने-
वाला (ओप, कप्प) ।

ठाएयव्व देखो ठा ।

ठाएयव्व देखो ठाव ।

ठाण पु [दे] मान, गर्व, अभिमान (दे ४,
५) ।

ठाण पुंन [स्थान] १ स्थिति, अवस्थान, गति
की निवृत्ति (सूत्र १, ५, १, बृह १) । २ स्वल्प-
प्राप्ति (सम्म १) । ३ निवास, रहना (सूत्र
१, ११, निचू १) । ४ कारण, निमित्त, हेतु
(सूत्र १, १, २, ठा २, ४) । ५ पर्यंक
आदि आसन (राज) । ६ प्रकार, भेद (ठा
१०, आचू ४) । ७ पद, जगह (ठा १०) ।
८ गुण, पर्याय, धर्म (ठा ५, ३, आव ४) ।
९ आश्रय, आचार, वसति, मकान, घर (ठा
४, ३) । १० तृतीय जैन अग-ग्रन्थ, 'ठाणाग'
सूत्र (ठा १) । ११ 'ठाणाग' सूत्र का अध्ययन,
परिच्छेद (ठा १, २, ३, ४, ५) । १२ कायोत्सर्ग
(ओप) । °भट्ट वि [°भट्ट] १ अपनी जगह
से च्युत (णाय १, ६) । २ चारित्र से पतित
(तदु) । °इय वि [°तिग] कायोत्सर्ग
करनेवाला (ओप) । °यय न [°यत]
ऊँचा स्थान (बृह ५) ।

ठाण न [स्थान] १ कुण (कोकण) देश का
एक नगर (सिरि ६३६) । २ तेरह दिन
का लगातार उपवास (सवोष ५८) ।

जुहिट्टिर } देखो जहिट्टिल (पिंग, उप
जुहिट्टिल } ६४८ टी, गाया १, १६—
जुहिट्टिल } पत्र २०८, २२६) ।

जुहु सक [हु] १ देना, अर्पण करना । २
हवन करना, होम करना । जुहुणामि (ठा
७—पत्र ३८१, पि ५०१) ।

जूअ न [यूत] जुआ, यूत (पाग्र) । °कर
वि [°कर] जुआरी, जुए का खिलाडी (सुपा
५२२) । °कार वि [°कार] वही पूर्वोक्त
अर्थ (गाया १, १८) । °कारि वि [°कारिन्]
जुआरी (महा) । °केलि स्त्री [°केलि] यूत-
क्रीडा (रयण ४८) । °खल्लय न [°खल्लय]
जुआ खेलने का स्थान (राज) । °केलि
देखो °केलि (रयण ४७) ।

जूअ पु [यूप] १ जुआ, धुर, गाढी का अवयव-
विशेष जो बैलो के कन्वे पर डाला जाता है,
जुअड (उप पृ १३६) । २ स्तम्भ-विशेष,
'जुअसहम्स मुसल सहस्सं च उस्सवेह' (कप्प) ।
३ यज्ञ-स्तम्भ (जं ३) । ४ एक महापाताल-
कलश (पव २७२) ।

जूअअ पुं [दे] चातक पक्षी (दे ३, ४७) ।

जूअग पुं [यूपरु] देखो जूअ = यूप (सम
७१) ।

जूअग पुं [यूपरु] सन्ध्या की प्रभा और चन्द्र
की प्रभा का मिश्रण (ठा १०) ।

जूआ स्त्री [यूआ] १ जूँ, चीलड, खटमल, सुद्र
कीट-विशेष (जी १६) । २ परिमाण-विशेष,
आठ लिखा का एक नाप (ठा ६, इक) ।
°सेत्तायर वि [°शट्यातर] यूकाग्रो को
स्थान देनेवाला (भग १५) ।

जूआर वि [यूतकार] जुआरी, जुए का
खिलाडी (रभा, भवि, सुपा ४००) ।

जूआरि } वि [यूतकारिन्] जुआ खेलने-
जूआरिअ } वाला, जुए का खिलाडी (द्र ४३,
सुपा ४००, ४८८, स १५०) ।

जूअ देखो जुअ = युष् । क. यूभियन्व (सिरि
१०२५) ।

जूड पुं [जूट] कुन्तल, केश-कलाप (दे ४,
२४, भवि) ।

जूय न [यूप] लगातार छ दिनों का उपवास
(सवोव ५८) ।

जूयय } पु [यूपरु] शुक्ल पक्ष की द्वितीया
जूयय } आदि तीन दिनों में होती चन्द्र की
कला और सन्ध्या के प्रकाश का मिश्रण (अणु
१२०, पव २६८) ।

जूर सक [गह] निंदा करना । जूरति (सूत्र
२, २, ५५) ।

जूर अक [क्रुध्] क्रोध करना, गुस्सा करना ।
जूरइ (हे ४, १३२, पड्) ।

जूर अक [खिद] न्नेद करना, अफसोस करना ।
जूरइ (हे ४, १३२, पड्) । जूर (कुमा) ।
भवि जूरिहिइ (हे २, १६३) । वक्र
जूरत (हे २, १६३) ।

जूर अक [जूर] १ झुरना, सूखना । २
सक, वध करना, हिंसा करना (राज) ।

जूरण न [जूरण] १ सूखना, झुरना । २
निन्दा, गहण (राज) ।

जूरव सक [वञ्च्] ठगना, वचना ।
जूरवइ (हे ४, ६३) ।

जूरवण वि [वञ्चन्] ठगनेवाला (कुमा) ।

जूरावण न [जूरण] झुराना, शोषण (भग
३, २) ।

जूराविअ वि [क्रोधित] क्रुद्ध किया हुआ,
कोपित (कुमा) ।

जूरिअ वि [खिन्न] खेद प्राप्त (पाग्र) ।

जूरुम्मिलय वि [दे] गहन, निविड, सान्द्र
(दे ३, ४७) ।

जूल देखो जूर = क्रुध् । जूल (गा ३५४) ।

जूव देखो जूअ = यूत (गाया १, २—पत्र
७६) ।

जूव } देखो जूअ = यूप (इक, ठा ४,
जूवय } २) ।

जूस देखो भूस (ठा २, १, कप्प) ।

जूस पुन [यूप] जूस, मूँग वगैरह का क्वाथ,
कडी (शोध १४७, ठा ३, १) ।

जूसअ वि [दे] उत्तिष्ठ, फेंका हुआ (पड्) ।

जूसणा स्त्री [जोपणा] सेवा (कप्प) ।

जूसिय वि [जुष्ट] १ सेवित (ठा २, १) ।
२ क्षपित, क्षीण (कप्प) ।

जूह न [यूथ] समूह, जत्था (ठा १०, गा
५४८) । °वइ पु [°पनि] समूह का अवि-
पति, यूथ का नायक (से ६, ६८, गाया १,
१, सुपा १३७) । °हिव पु [°धिप]

पूर्वोक्त ही अर्थ (गा ५४८) । °हिवइ
पु [°धिपति] यूथ-नायक (उत्त ११) ।

जूह न [यूथ] युग्म, युगल, जोड़ा (आचा २,
११, २) । °काम न [°काम] लगातार चार
दिनों का उपवास (सवोव ५८) ।

जूहिय वि [यूथिक] यूथ में उत्पन्न (आचा
२, २) ।

जूहियठाण न [यूथिअरुथान] विवाह-मण्डप
वाली जगह (आचा २, ११, २) ।

जूहिया स्त्री [यूथिका] लता-विशेष, जूही
का पेड़ (परण १, पउम ५३, ७६) ।

जूही स्त्री [यूथी] लता-विशेष, माधवी लता
(कुमा) ।

जे अ १ पाद-भूति में प्रयुक्त किया जाता
अव्यय (हे २, २१७) । २ अवधारण-सूचक
अव्यय (उव) ।

जेअ वि [जेय] जीतने योग्य (स्किम ५०) ।

जेअ वि [जेत्] जीतनेवाला (सूत्र १, ३, १,
१, १, ३, १, २) ।

जेउ वि [जेत्] जीतनेवाला, विजेता (भग
२०, २) ।

जेउआण

जेउं { देखो जिण = जि ।

जेऊण

जेकार पुं [जयकार] 'जय-जय' आवाज
स्तुति, 'हुति देवाण जेकारो' (गा ३३२) ।

जेट्ट देखो जिट्ट = ज्येष्ठ (हे २, १७२, महा
उवा) ।

जेट्ट देखो जिट्ट = ज्येष्ठ (महा) ।

जेट्टा देखो जिट्टा (सम ८, आच ४) । °मूल
पु [°मूल] जेठ मास (श्रीप, गाया १,
१३) । °मूला स्त्री [°मूली] जेठ मास की
पूर्णिमा (मुज १०) ।

जेट्टामूली स्त्री [ज्येष्ठामूली] १ जेठ मास की
पूर्णिमा । २ जेठ मास की अमावस्या (सुज
१०, ६) ।

जेण देखो जइण = जैन (मम्मत्त ११७) ।

जेण अ [येन] लक्षण-सूचक अव्यय, 'भमररुध्र
जेण कमलवण' (हे २, १८३, कुमा) ।

जेत्त वि [यावन्] जितना । स्त्री. °त्ती
(हास्य १३०) ।

प्रसिद्ध जगल, दण्डकारण्य (पद्य ६८, ४२) ।
 डंडि } स्त्री [दे] सिले हुए वस्त्र-खण्ड (दे ४,
 डंडी } ७, परह १, ३) ।
 डवर पुं [दे] धर्म, गरमी, प्रस्वेद (दे ४, ८) ।
 डवर पुं [डम्बर] आडम्बर, आटोम (उप
 १४२ टी. पिग) ।
 डभ देखो दभ (हे १, २१७) ।
 डभण न [दम्भन] दागने का शस्त्र-विशेष
 (विषा १, ६) ।
 डंभण न [दम्भन] वंचना, ठगाई (पव २) ।
 डभणया } स्त्री [दम्भना] १ दागना । २
 डभणा } माया, कपट, दम्भ, वञ्चना (उप
 पृ ३१५, परह २, १) ।
 डभिअ पु [दे] जुआरी, जुए का खेलाडी (दे
 ४, ८) ।
 डभिअ वि [दाम्भिक] वञ्चक, मायावी,
 कपटी (कुमा, पङ्) ।
 डस सक [दश] डसना, काटना । डसइ,
 डंसए (पङ्) ।
 डस पुं [दश] क्षुद्र जन्तु-विशेष, डाँस, मच्छर
 (जी १८) ।
 डंस पुं [दश] १ दन्त-स्रत । २ सपें आदि का
 काटा हुआ धाव । ३ दोप । ४ खडन । ५ दाँत
 ६ धर्म, कवच । ७ धर्म-स्थान (प्राक् १५) ।
 डसण पुन [दशन] धर्म, कवच; 'डंसणो'
 (प्राक् १५) ।
 डक वि [दष्ट] डसा हुआ, दाँत से काटा हुआ
 (हे २, २, गा ५३१) ।
 डक वि [दे] दन्त-गृहीत, दाँत से उपात (दे
 ४, ६) ।
 डक स्त्रीन [डक] वायु-विशेष (सुपा १६५) ।
 डक्कुरिज्जत वक्क [दे] पीडित होता हुआ
 (सुय० वृ० गा० ३१५) ।
 डगण न [दे] यान-विशेष (राज) ।
 डगमग अक [दे] चलित होना, हिलना,
 कांपना । डगमगीति (पिग) ।
 डगल न [दे] १ फल का टुकड़ा (निचू १५) ।
 २ ईंट, पाषाण वगैरह का टुकड़ा (ओष
 ३५६, ७८ भा) ।
 डगल पुं [दे] घर के ऊपर का भूमि-तल,
 छत (दे ४, ८) ।

डग्म }
 डग्मंत } देखो डह ।
 डग्ममाण }
 डट्ट देखो डक = दष्ट (हे १, २१७) ।
 डड्ड वि [दग्ध] प्रज्वलित, जला हुआ (हे
 १, २१७, गा १४६) ।
 डड्डाही स्त्री [दे] दव-भाग, आग का रास्ता
 (दे ४, ८) ।
 डप्फ न [दे] सेल, कुन्त, भाला, चरछी, आयुध-
 विशेष (दे ४, ७) ।
 डठभ पुं [दर्भ] डाम, कुश, तृण-विशेष (हे
 १, २१७) ।
 डमडम अक [डमडमाय्] 'डम-डम'
 आवाज करना, डमरू आदि का आवाज
 होना । वक्क, डमडमन (सुपा १६३) ।
 डमडमिय वि [डमडमायित] जिसने 'डम-
 डम' आवाज किया हो वह (सुपा १५१,
 ३३८) ।
 डमर पुन [डमर] १ राष्ट्र का भीतरी या
 बाह्य विप्लव, बाहरी या भीतरी उपद्रव
 (राया १, १, ज २, पव ४, श्रीप) । २
 कलह, लड़ाई, विग्रह (परह १, २, दे ८,
 ३२) ।
 डमरुअ } पुन [डमरुक] वायु-विशेष,
 डमरुग } कापालिक योगियों के वजाने का
 बाजा, डमरू (दे २, ८६, पद्य ५७, २३, सुपा
 ३०६, पङ्) ।
 डर अक [डरस्] डरना, भय-भीत होना ।
 डरइ (हे ४, १६८) ।
 डर पु [डर] डर, भय, भीति (हे १, २१७,
 सण) ।
 डरिअ वि [डरस्त] भय-भीत, डरा हुआ
 (कुमा; सुपा ६५५, सण) ।
 डल पु [दे] लोट, मिट्टी का ढेला (दे ४, ७) ।
 डल्ल सक [पा] पीना । डल्लइ (हे ४, १०) ।
 डल्ल } न [दे] पिटिका, डाला, डाली, बाँस
 डल्लग } का बना हुआ फल-फूल रखने का
 पात्र (दे ४, ७, आवम) ।
 डल्ला स्त्री [दे] डाला, डाली (कूप्र २०६) ।
 डल्लर वि [पाट्] पीनेवाला (कुमा) ।
 डव सक [आ + रभ्] आरम्भ करना, शुरू
 करना । डवइ (पङ्) ।

डवडव अ [दे] ऊँचा मुँह कर के वेग से
 दवर-उधर गमन (पङ्) ।
 डव्व पुं [दे] वाम हस्त, बायाँ हाथ, गुजराती
 में 'डावो' (दे ४, ६) ।
 डस देखो डंस । डसइ (हे १, २१८, पि
 २२२) । हेक्क डमिउ (सुर २, २४३) ।
 डसण न [दशन] १ दश, दाँत से काटना
 (हे १, २१७) । २ दाँत (कुमा) ।
 डसण वि [दशन] काटनेवाला (सिरि ६२०) ।
 डसिअ वि [दष्ट] डसा हुआ, काटा हुआ
 (सुपा ४४६, सुर ६, १८५) ।
 डह सक [दह्] जलाना, दग्ध करना ।
 डहइ, डहए (हे १, २१८, पङ्, महा, उव) ।
 भवि डहिहिइ (हे ४, २४६) । कवक्क,
 डग्मंत, डग्ममाण (सम ११७, उप पृ ३३,
 सुपा ८५) । हेक्क डहिउ (पद्य ३१, १७) ।
 क डग्म (ठा ३, २, दस १०) ।
 डहण न [दहन] १ जलाना, भस्म करना
 (वृह १) । २ पु अग्नि, वह्नि, आग (कुमा) । ३
 वि. जलानेवाला, 'तस्म सुहामुहडहणो ष्म्या
 जलणो पयामेइ' (आरा ८४) ।
 डहर पुं [दे] १ शिशु, बालक, बच्चा (दे ४,
 ८, पात्र, वव ३, दस ६, १, सूत्र १, २,
 १; २, ३, २१, २२, २३) । २ वि लघु,
 छोटा, क्षुद्र (ओष १७८, २६० भा) । गंगाम
 पु [ग्राम] छोटा गाँव (वव ७) ।
 डहरक पुं [दे] वृक्ष-विशेष । २ पुष्प-विशेष,
 'डहरककुल्लणुरत्ता भुजती तप्फल मुण्णि'
 (धर्मवि ६७) ।
 डहरिया स्त्री [दे] जन्म से अठारह वर्ष तक
 की लहकी (वव ४) ।
 डहरी स्त्री [दे] अलिङ्गर, मिट्टी का घड़ा (दे
 ४, ७) ।
 डाअल न [दे] लोचन, आँख, नेत्र (दे ४, ६) ।
 डाइणी स्त्री [डाकिनी] १ डाकिनी, डायन,
 छुडेल, प्रेतिनी । २ जंतर मंतर जाननेवाली
 स्त्री (परह १, ३, सुपा ५०५, स ३०७,
 महा) ।
 डाउ पुं [दे] १ फलिहंसक वृक्ष, एक जाति
 का पेड़ । २ गणपति की एक तरह की
 प्रतिमा (दे ४, १२) ।

जोइस पुं [ज्यौतिष] १ देवो की एक जाति, सूर्य, चन्द्र, ग्रह आदि (कप्प, औप, दड २७)। २ न सूर्य आदि का विमान (ति १२, जो १)। ३ शास्त्र-विशेष, ज्योतिष-शास्त्र (उत्त २)। ४ सूर्य आदि का चक्र। ५ सूर्य आदि का मार्ग, आकाश, 'जे गहा जाइसम्मि चारं चरति' (परण ३)।

जोइस पुं [ज्यौतिष] १ सूर्य, चन्द्र आदि देवो की एक जाति (कप्प, पचा २)। २ वि ज्योतिष शास्त्र का जानकार, जोतिपी (सुपा १५६)।

जोइसिअ वि [ज्यौतिषिक] १ ज्योतिष शास्त्र का ज्ञाता, दैवज्ञ, जोतिपी (म २२, सुर ४, १००, सुपा २०३)। २ सूर्य, चन्द्र आदि ज्योतिष्क देव (ओप, जी २४, परण २)। ३ राय पु [राज] १ सूर्य, रवि। २ चन्द्रमा (परण २)।

जोइसिंद पुं [ज्योतिरिन्द्र] १ सूर्य, रवि। २ चन्द्र, चन्द्रमा (ठा ६)।

जोइसिण पुं [ज्यौत्सन्] शुक्ल पक्ष (जो ४)।

जोइसिणा स्त्री [ज्यौत्सना] चन्द्र की प्रमा, चन्द्रिका, चाँदनी (ठा २, ४)। पक्ख पु [पक्ष] शुक्ल पक्ष (चद १५)। भा स्त्री [भा] चन्द्र की एक ग्रन्थ-महिपी (भग १०, ५)।

जोइसिणी स्त्री [ज्यौतिपी] देवी-विशेष (परण १७—पत्र ४६६)।

जोई स्त्री [दे] विद्युत्, विजली (दे ३, ४६, षड्)।

जोईरस देखो जोइ-रस (कप्प, जीव ३)।

जोईस पु [योगीश] योगीन्द्र, योगि-राज (स १)।

जोईसर पु [योगीश्वर] ऊपर देखो (सुपा ८३, रयण ६)।

जोडकण न [यौगकर्ण] गोत्र-विशेष (सुज १०, १६ टी)।

जोडकणिय न [यौगकर्णिक] गोत्र-विशेष (सुज १०, १६)।

जोक्कार देखो जेक्कार (गा ३३२ अ)।

जोक्ख वि [दे] मलिन, अपवित्र (दे ३, ४८)।

जोग देखो जुग्ग = युग्म, 'सपाउयाजोग समाजुत्त' (राय ४०)।

जोग पु [योग] नक्षत्र-समूह का क्रम से चन्द्र और सूर्य के साथ सबध (सुज १०, १)।

जोग पु [योग] १ व्यापार, मन, वचन और शरीर की चेष्टा (ठा ४, १, सम १०, स ४७०)। २ चित्तनिरोध, मन-प्रणिधान, समाधि (पउम ६८, २३, उत्त १)। ३ वरा करने के लिए या पागल आदि बनाने के लिए फँका जाता चूर्ण-विशेष, 'जोगो मदमोह-करो सोसे खित्तो इमाण सुत्ताण' (सुर ८, २०१)। ४ सम्बन्ध, संयोग, मेलन (ठा १०)। ५ ईप्सित वस्तु का लाभ (गाया १, ५)। ६ शब्द का अवयवार्थ-सम्बन्ध (भास २४)। ७ बल, वीर्य, पराक्रम (कम्म ५)। ८ 'क्खेम न [त्तेम] ईप्सित वस्तु का लाभ और उसका संरक्षण (गाया १, ५)। ९ 'त्य वि [स्थ] योग-निष्ठ, ध्यान-लीन (पउम ६८, २३)। १० 'त्य पुं [र्थ] शब्द के अवयवों का अर्थ, व्युत्पत्ति के अनुसार शब्द का अर्थ (भास २४)। ११ 'दिट्ठि स्त्री [ट्टि] चित्त-निरोध से उत्पन्न होनेवाला ज्ञान-विशेष (राज)। १२ 'धर वि [धर] समाधि में कुशल, योगी (पउम ११६, १७)। १३ 'परि-व्याइया स्त्री [परिव्राजिका] समाधि-प्रधान व्रतिनी-विशेष (गाया १, ६)। पिंड पु [पिण्ड] वशीकरण आदि के प्रयोग से प्राप्त की हुई मिखा (पचा १३, निचू १३)। १४ 'मुदा स्त्री [मुद्रा] हाथ का विन्यास-विशेष (पचा ३)। १५ 'व वि [वत्] १ शुभ प्रवृत्तिवाला (सूय १, २, १)। २ योगी, समाधि करनेवाला (उत्त ११)। ३ 'वाहि वि [वाहिन] १ शास्त्र ज्ञान की आराधना के लिए शास्त्रोक्त तपश्चर्या को करनेवाला। २ समाधि में रहनेवाला (ठा ३, १—पत्र १२०)। ३ 'विहि पुस्त्री [विहि] शास्त्रो की आराधना के लिए शास्त्र-निर्दिष्ट अनुष्ठान, तपश्चर्या-विशेष, 'इय वुत्तो जोगविही', 'एसा जोगविही' (अग)। सत्थ न [शास्त्र] चित्त-निरोध का प्रतिपादक शास्त्र (उवर १६०)।

जोग देखो जोगा, 'इय सो न एत्थ जोगो,

जोगो पुण होइ अक्करो' (धम्म १२, सुर २, २०५, महा, सुपा २०८)।

जोगि देखो जोइ = योगिन् (कुमा)।

जोगिंद पुं [योगीन्द्र] महान् योगी, योगेश्वर (रयण २६)।

जोगिणी देखो जोइणी (सुर ३, १८६)।

जोगिय वि [यौगिक] दो पदों के सम्बन्ध से बना हुआ शब्द, जैसे—उप-करोति, अभि-प्रेषयति (परह २, २—पत्र ११४)। २ यन्त्र-प्रयोग से बना हुआ (उप पृ ६४)।

जोगीसर देखो जोईसर (स २०१)।

जोगेसरी स्त्री [योगेश्वरी] देव-विशेष (सण)।

जोगेसी स्त्री [योगेशी] विद्या-विशेष (पउम ७, १४२)।

जोगा वि [योग्य] योग्य, उचित, लायक (ठा ३, १, सुपा २८)। २ प्रभु, समर्थ, शक्तिमान् (निचू २०)।

जोगा स्त्री [दे] चादु, खुशामद, (दे ३, ४८)।

जोगा स्त्री [योग्या] १ शास्त्र का अभ्यास (भग ११, ११, ज ३)। २ गर्भ-धारण में समर्थ योनि (तदु)।

जोज देखो जोअ = योजय्। भवि. जोज-इस्सामि (कुप्र १३०)। कृ. जोज्ज (उत्त २७, ८)।

जोड सक [योजय्] जोड़ना, संयुक्त करना। वक्क जोडेत्त (सुर ४, १६)। सक्र जोडिऊण (महा)।

जोड पुंन [दे] १ नक्षत्र (दे ३, ४६, पि ६)। २ रोग-विशेष (सण)।

जोड (अप) स्त्री [दे] जोड़ी, युगल, 'एरिस जोड न जुत्त' (कुप्र ४५३)।

जोडिअ पु [दे] व्याध, बहेलिया, चिडीमार (दे ३, ४६)।

जोडिअ वि [योजित] जोड़ा हुआ, संयुक्त किया हुआ (सुपा १४६, ३५१)।

जोण पु [योन, यवन] म्लेच्छ देश-विशेष (गाया १, १)।

जोणि स्त्री [यानि] १ उत्पत्ति-स्थान (भग, स ८२, प्राय ११५)। २ कारण, हेतु, उपाय (ठा ३, ३, पचा ४)। ३ जीव का उत्पत्ति-स्थान (ठा ७)। ४ स्त्री-चह्द, भग (अणु)। ५ 'विहाग न [विधान] उत्पत्ति-

म्लेच्छ-जाति, डोम (परह १, १, इक, पव ६) । ३ देखी डुब (पाप्र) ।

डोविल्ला पुं [दे] १ म्लेच्छ देश विशेष । २ डोविल्लय एक अनार्य जाति (परह १, १, इक) । ३ डोम, चारण्डाल (स २८६) ।

डोक्करी स्त्री [दे] वृद्धी स्त्री (कुप्र ३५३) ।
डोड पुं [दे] ब्राह्मण, विप्र (सुख ३, १) ।

डोडिणी स्त्री [दे] ब्राह्मणी (अनु० ६६ सूत्र) ।
डोडिणी स्त्री [दे] ब्राह्मणी (अणु ४६) ।

डोड्ड पु [दे] एक मनुष्य-जाति, ब्राह्मण,
‘दिट्ठो तक्खणजिमिअो निगच्छतो बहिं डोड्डो,
तो तत्सुदर फालिअ’ (उप १३६ ठी) ।

डोर पुं [दे] डोर, गुण, रस्सी (गा २११,
वज्जा ६६) ।

डोल अक [दोलय्] १ डोलना, हिलना,

भूलना । २ सशयित होना, सन्देह करना ।
वक्क डेलत (अच्छु ६०) ।

डोल पुं [दे] १ लोचन, आँख, नयन, गुज-
राती में ‘डोलो’, (दे ४, ६) । २ जन्तु-विशेष
(बृह १) । ३ फल-विशेष (पचव २) ।

डोल पु [दे] चतुरिन्द्रिय जीव की एक जाति
(उत्त ३६, १४८, सुख ३६, १४८) ।

डोला स्त्री [दोला] हिंडोला, भूलना या भूला
(हे १, २१७, पाप्र) ।

डोला स्त्री [दे] डाली, शिविका, पालकी (दे
४, ११) ।

डोलाअत वि [दोलायमान] सशय करने-
वाला, डँवाडोल (अच्छु ७) ।

डोलाइअ वि [दोलायित] सशयित, डँवाडोल,
‘भडस्स डोलाइअं हिअप्र’ (गा ६६६) ।

डोलायमाण देखो डोलाअत (निचू १०) ।

डोलाविय वि [दोलित] कम्पित, हिलाया
हुआ (पचम ३१, १२४) ।

डोलिअ पु [दे] कृष्णसार, काला हिरन (दे
४, १२) ।

डोलिर वि [दोलावत्] डोलनेवाला, काँपने-
वाला, ‘दरडोलिरसीस’ (कुमा) ।

डोल्लगग पु [दे] पानी में होनेवाला जन्तु-
विशेष (सूअ २, ३) ।

डोव [दे] देखो डोअ (एदि, उप पृ २१०) ।
स्त्री वा (पभा २७) ।

डोसिणी स्त्री [दे] ज्योत्स्ना, चन्द्र-प्रकाश,
चांदनी (पड्) ।

डोहल पुं [दोहद] १ गर्भिणी स्त्री का
अभिलाष । मनोरथ, लालसा (हे १, २१७,
कुमा) ।

॥ अथ सिरिपाइअसद्महणवम्मि डयाराइसद्संकलणो
वीसइमो तरंगो समत्तो ॥

ढ

ढ पु [ढ] व्यञ्जन वरुण-विशेष, यह मूढंय
है, क्योंकि इसका उच्चारण मूर्द्धा से होता
है (प्रामा, प्राप) ।

ढक पुं [दे] काक, वायस, कौआ (दे ४,
१३, ज २, प्राप, सण, भवि, पाप्र) ।
‘वस्थुल न [वास्तुल] शाक विशेष, एक
तरह की भाजी या तरकारी (घमं २) ।

ढक पुं [ढक्क] कुम्भकार-जातीय एक जैन
उपासक (विसे २३०७) ।

ढक देखो ढक्क । भवि, ढंकिस्स (पि २२१) ।

ढकण न [दे छादन] १ ढकना, पिघान
(प्रासू ६०, अणु) ।

ढकण देखो ढिकुण (राज) ।

ढकणी स्त्री [दे छादनी] ढकनी, पिघानिका,
ढकने का पात्र-विशेष (दे ४, १४) ।

ढकिअ देखो ढक्किअ (सिरि ५२६) ।

ढकुण पुं [दे] मत्कुण, खटमल (दे ४, १४) ।

ढकुण पु [ढक्कुण] वाद्य-विशेष (आचा
२, १११) ।

ढंख देखो ढरु = (दे) (पि २१३, २२३) ।

ढखर पुन [दे] फल पत्र से रहित डाल,
‘ढंखरसेसोवि हु महुअरेण मुक्को ण मालई-
विडवो’ (गा ७५५, वज्जा ५२) ।

ढंखरअ [दे] ढेला । गु० ढेखारा (आख्या-
नकम० को० नागश्री आख्यानक पत्र—
४ पद्य ६१) ।

ढखरी स्त्री [दे] वीणा-विशेष, एक प्रकार की
वीणा (दे ४, १४) ।

ढढ पु [दे] १ पंक, कीच, कर्दम, काँदो (दे
४, १६) । २ वि. निरर्थक, निकम्मा (दे ४,
१६, भवि) ।

ढढ पु [ढणढण] एक जैन महर्षि, ढणढण
ऋषि (सुख २, ३१) ।

ढढ वि [दे] दाम्भिक, कपटी (सम्मत्त ३१) ।

ढढण पुं [ढणढन] स्वनाम-ख्यात एक जैन
मुनि (विवे ३२, पडि) ।

ढढणी स्त्री [दे] कपिकच्छु, केवाँच, वृक्ष-
विशेष (दे ४, १३) ।

ढढर पु [दे] १ पिशाच । २ ईर्ष्या (दे
४, १६) ।

ढढरिअ पुं [दे] कर्दम, पक, कादा, काँदो
(दे ४, १५) ।

ढढल्ल सक [अम] धूमना, फिरना, भ्रमण
करना । ढढल्लइ (हे ४, १६१) ।

ढढल्लिअ वि [अनन्त] अनन्त, धूमा हुआ
(कुमा) ।

मंख वि [दे] तुष्ट, संतुष्ट, खुश (दे ३, ५३) ।
मंखण न [उपालम्भ] उपालम्भ, उलाहना (कुमा) ।

मंखर पुं [दे] शुष्क तरु, सूखा पेड़ (दे ३, ५४) ।

मंखरिअ [दे] देवो भक्कारिअ (दे ३, ५६) ।
मंखावण वि [संतापक] संताप करनेवाला (कुमा) ।

मंखिर वि [निश्वासितृ] निश्वास लेनेवाला (कुमा ७, ४४) ।

मंभ पुं [मंभ] कलह, झगडा (सम ५०) ।
°कर वि [°कर] कलहकारी, फूट करानेवाला (सम ३७) । °पत्त वि [°प्राप्त] क्लेश-प्राप्त (सूत्र १, १३) ।

मंभण } अक [भणणाय] 'भन-भन'
मंभणक } शब्द करना । मंभणइ (गा ५७५ अ) : मंभणकइ (पिंग) ।

मंभणा स्त्री [मंभना] 'भन-भन' शब्द (गड्ड) ।

मंभ्मा स्त्री [मंभ्मा] वाद्य-विशेष, मंभ, माल (राय ५० टी) ।

मंभ्मा स्त्री [मंभ्मा] १ प्रचण्ड वायु-विशेष (गा १७०, सण) । २ कलह, क्लेश, झगडा (उव, वृह ३) । ३ माया, कपट । ४ क्रोध, गुस्सा (सूत्र १, १३) । ५ लुप्टा, लोभ (सूत्र २, २) । ६ व्याकुलता, व्यग्रता (प्राचा) ।

मंभिय वि [मंभिय] बुभुक्षित, भूखा (णाय १, १) ।

मंभ सक [भ्रम्] घूमना, फिरना । मंभइ (हे ४, १६१) ।

मंभ अक [गुञ्ज] गुजारव करना । वक्र 'मंभंतमभिरभमरउलमालियं मालियं गहिउ' (सुपा ५२६) ।

मंभण न [भ्रमण] पर्यटन, परिभ्रमण (कुमा) ।

मंभलिआ स्त्री [दे] चक्रमण, कुटिल गमन (दे ३, ५५) ।

मंभिअ वि [दे] जिस पर प्रहार किया गया हो वह, प्रहृत (दे ३, ५५) ।

मंभ्ती स्त्री [दे] छोटा किन्तु ऊँचा केश-कलाप (दे ३, ५३) ।

मंभली स्त्री [दे] असती, कुलटा (दे ३, ५४) ।
मंभुअ पुं [दे] वृक्ष-विशेष, पीलु का पेड़ (दे ३, ५३) ।

मंभुली स्त्री [दे] असती, कुलटा । २ क्रीडा, खेल (दे ३, ६१) ।

मंभिय वि [दे] प्रवृत्त, पलायित, भगाया हुआ (पड्) ।

मंभ सक [भ्रम्] घूमना, फिरना । मंभइ (हे ४, १६१) ।

मंभ सक [आ + च्छादय्] मॉपना, आच्छादन करना, ढकना । मंभइ (पिंग) ।
सक मंभिऊण, मंभिवि (कुमा, भवि) ।

मंभ सक [आ = क्रामय्] आक्रमण करवाना । मंभइ (प्राकृ ७०) ।

मंभण वि [भ्रमण] भ्रमण-कर्ता (कुप्र ४) ।
मंभण न [भ्रमण] परिभ्रमण, पर्यटन (कुमा) ।

मंभणी स्त्री [दे] पक्ष, ग्राँव की वरौनी, ग्राँव के बाल (दे ३, ५४, पात्र) ।

मंभ्पा स्त्री [मंभ्पा] एकदम कूदना, मंभ्पा पात (सुपा १६८) ।

मंभिअ वि [दे] १ श्रुति, टूटा हुआ । २ घटित, आहत (दे ३, ६१) ।

मंभिअ वि [आच्छादित] मंभ हुआ, बंद किया हुआ (पिंग), 'पईवयो मंभियो मंभित्' (महा), 'तयो एव भणमाणस्म सहत्येणं मंभिअं मुहकुहर सुमइस्स एणइलेण' (महानि ४) ।

मंभिअ न [द] वचनीय, लोक-निन्दा (दे ३, ५; भवि) ।

मंभ देखो मंभ = वि + लप् । वक्र. मंभवत (जय २३) ।

मंभड पुं [दे] झगडा, कलह (सुपा ५४६, ५४७) ।

मंभगुली स्त्री [दे] भूमिसारिका, प्रिय से मिलने के लिए सकेत स्थान पर जानेवाली स्त्री या न्यायिका (विक्र १०१) ।

मंभकर पुं [मंभर] १ वाद्य-विशेष, मंभ । २ पटल, ढोल । ३ कलि-युग । ४ नद-विशेष (पि २१४) ।

मंभकरिय वि [मंभरित] वाद्य विशेष के शब्द से युक्त (ठा १०) ।

मंभमरी स्त्री [दे] दूसरे के स्पर्श को रोकने के लिए चाहाल लोग जो लकड़ी अपने पास रखते हैं वह (दे ३, ५४) ।

मंभ अक [शब्] १ मंभना, पके फल आदि का गिरना, टपकना । २ हीन होना । ३ सक. मंभ मारना, गिराना । मंभइ (हे ४, १३०) । वक्र. मंभत (कुमा) । कवक 'वासासु सीय-वाएहि मंभिजतो' (भाव १) । सक. 'मंभि-ऊण पल्लविह्मा, पुणोवि जायति तहरवा तुरिय । धोराणवि धणरिद्धी, गयावि न ह्व दुल्लहा एव' । (उप ७२८) ।

मंभित्ति अ [मंभित्ति] शीघ्र, जल्दी, तुरंत, (उप ७२८ टी, महा) ।

मंभप अ [दे] शीघ्रता, जल्दी (उप पु ११०, रभा) ।

मंभप सक [आ + छिद्] मंभटना, मंभट मारना, छीनना । मंभप्पमि (भवि) । सक. मंभप्पिवि (भवि) ।

मंभप्पड न [दे] मंभपट, मंभित्ति, शीघ्र (हे ४, ३८८) ।

मंभप्पिअ वि [आच्छिन्न] छीना हुआ (भवि) ।

मंभि अ [मंभित्ति] शीघ्र, जल्दी, तुरन्त, 'मंभि आपल्लवइ पुणो' (गा ६१३) ।

मंभिअ वि [दे] १ शिथिल, ढोला, सुस्त (गा २३०) । २ श्रान्त, विलस, (पड्) । ३ मंभ हुआ, गिरा हुआ, 'करच्छडा मंभिय-पक्खिजले' (पठम ६६, १५) ।

मंभित्ति देखो मंभित्ति (सुर २, ४) ।

मंभिल देखो जंभिल (हे १, १६४) ।

मंभी स्त्री [दे] निरन्तर वृष्टि, मंभी, गुजराती में 'मंभी' (दे ३, ५३) ।

मंभ सक [जुगप्स्] घुणा करना । मंभइ (पड्) ।

मंभजमण अक [मंभजमणाय्] 'भन-भन' आवाज करना । वक्र. मंभजमणत (प्राप) ।

मंभजमणिअ वि [मंभजमणित्] 'भन-भन' आवाजवाला (पिंग) ।

मंभजमण देखो मंभजमण । मंभजमणइ (वजा ६६) ।

मंभजमणारव पुं [मंभजमणारव] 'भन-भन' आवाज (पह्ल) ।

ढोइय वि [ढौकित] १ भेंट किया हुआ। २ उपस्थित किया हुआ (महा. सुपा १६८, भवि)।
 ढौघर वि [दे] भ्रमण-शील, घुमकड़, घूमनेवाला (दे ४, १५)।
 ढोयण देखो ढोवण (चेडय ५२, कुप्र १६८)।

ढोयणिया स्त्री [ढौकनिका] उपहार, भेंट (धर्मवि ७१)।
 ढोल पु [दे] प्रिय, पति (संक्षि ४७, हे ४, ३३०)।
 ढोल पुं [दे] १ ढोल, पटह। २ देश विशेष, जिसकी राजधानी धौलपुर है (पिंग)।

ढोवग } न [ढौकन, °क] १ भेंट करना,
 ढोवणय } भ्रमण करना (कुमा)। २ उपहार, भेंट (सुपा २८०)।

ढोविय वि [ढौकित] उपस्थापित, उपस्थित किया हुआ (स ५०८)।

॥ इअ सिरिपाइअसदमहणवम्मि ढयाराइसदसकलगो
 एकवीसइमो तरंगो समत्तो ॥

रा तथा न

ण पुं [ण, न] व्यञ्जन वरुण-विशेष, इसका उच्चारण-स्थान मूर्द्धा है, इससे यह मूर्द्धन्त्य कहाता है (प्राप, प्रामा)।

ण म्र [न] निषेधार्थक अव्यय, नहीं, मत (कुमा, गा २, प्राप् १५६)। °उण, °उणा, °उणाइ, °उणो अ [°पुन] न तु, नहीं कि (हे १, ६५, षड्)। °संतिपरलोगवाइ वि [शान्तिपरलोकवादिन्] मोक्ष और परलोक नहीं है ऐसा माननेवाला (ठा ८)।

ण स [तत्] वह (हे ३, ७०, कुमा)।

ण स [इदम्] यह, इस (हे ३, ७७, उप ६६०, गा १३१, १६६)।

ण वि [ज्ञ] जानकार, परिणत, विचक्षण (कुमा २, ८८)।

णअ देखो णव = नव (गा १०००, नाट—चैत ४२)। °दीअ पुं [°द्वीप] बंगाल का एक विख्यात नगर, जो न्याय-शास्त्र का केन्द्र गिना जाता है, जिसको आजकल 'नदिया' कहते हैं (नाट—चैत १२६)।

णअचर देखो णत्तचर (चढ)।

णइ स्त्री [नति] १ नमन, नम्रता। २ भव-सान, अन्त (राय ४६)।

णइ अ. १ निखय सूचक अव्यय, 'गईए णइ' (हे २, १८४, षड्)। २ निषेधार्थक अव्यय, 'नइ माया नेय पिया' (सुर २, २०६)।

णइ° देखो णई (गउड, हे २, ६७, गा १६७, सुर १३, ३५)।

णइअ वि [नयिक] नय-युक्त, अभिप्राय-विशेष-वाला (सम ४०)।

णइअ देखो णी = नी।

णइमासय न [दे] पानी में होनेवाला फल-विशेष (दे ४, २३)।

णइराय न [नौरात्म्य] आत्मा का अभाव। °वाद पुं [°वाद] आत्मा के अस्तित्व को नहीं माननेवाला दर्शन, बौद्ध तथा चार्वाक मत (धर्मस ११८५)।

णई स्त्री [नदी] नदी, पर्वत आदि से निकला वह स्रोत जो समुद्र या बड़ी नदी में जाकर मिले (हे १, २२६, प्राप्)। °कच्छ पु [°कच्छ] नदी के किनारे पर की भाँठी (णया ८, १)। °गाम पु [°ग्राम] नदी के किनारे पर स्थित गाँव (प्राप्)। °णाह पु [°नाथ] समुद्र, सागर (उप ७२८ टी)। °वइ पुं [°पति] समुद्र, सागर (पएह १, ३)। °संतार पुं [°सतार] नदी उत्तरना, जहाज आदि से नदी पार जाना (राज)। °सोत्त पुं [°स्रोतस्] नदी का प्रवाह (प्राप्, हे १, ४)।

णउ (अप) देखो इव (कुमा)।

णउअ न [नयुत] 'नयुताण' को चौरासी

लाख से गुणने पर जो सख्या लब्ध हो वह (ठा २, ४, इक)।

णउअग न [नयुताङ्ग] 'प्रयुत' को चौरासी से गुणने पर जो सख्या लब्ध हो वह (ठा २, ४, इक)।

णउइ स्त्री [नवति] संख्या-विशेष, नव्वे, ९० (सम ६४)।

णउइय वि [नवत] ९० वाँ (पउम ६०, ३१)।

णउल पुं [नकुल] १ न्योला, नेवला (पएह १, १, जो २२)। २ पाँचवाँ पाएडव (णया १, १६)।

णउल पु [नकुल] वाद्य-विशेष (राय ४६)।

णउली स्त्री [नकुली] एक महौषधि (ती ५)।

णउली स्त्री [नकुली] विद्या-विशेष, सर्प-विद्या की प्रतिपक्ष विद्या (राज)।

ण अ [दे] इन अर्थों का सूचक अव्यय—१ प्रश्न। २ उपमा (प्राक् ७६)।

णं अ १ वाक्यालंकार में प्रयुक्त किया जाता अव्यय (हे ४, २८३, उवा, पडि)। २ प्रश्न-सूचक अव्यय, ३ स्वीकार-द्योतक अव्यय (राज)।

ण (शौ) देखो णणु (हे ४, २८३)।

णं (अप) देखो इव (हे ४, ४४४, भवि, सण, पडि)।

भाम वि [ध्याम] अनुज्ज्वल (पण्ह १, २—
पत्र ४०) ।

भामण न [दे] जन्नाना, आग लगाना प्रदीप-
नक (वव २) ।

भामर वि [दे] वृद्ध, वृद्धा (दे ३, ५७) ।

भामल न [दे] १ आँख का एक प्रकार का
रोग, गुजराती मे 'भामरो' । २ वि. भामर
रोगवाला (उप ७६८ टी, आ १२) ।

भामल वि [ध्यामल] ग्याम, काला (धर्मसं
८०७) ।

भामलिय वि [ध्यामलित] काला किया
हुआ (कुप्र ५८) ।

भामिअ वि [दे] दग्ध, प्रज्वलित (दे ३,
५६, वव ७, आवम) । २ श्यामलित, काला
किया हुआ । ३ कलकित, 'पणहइहपयगाएवि
जीए जा भामिओ नेय' (सावं १६) ।

भाय वि [ध्यात] भस्मीकृत, दग्ध, जला
हुआ (एदि) ।

भायव देखो भाम ।

भारुआ बी [दे] चीरी, क्षुद्र जन्तु-विशेष
(दे ३, ५७) ।

भावण न [ध्यापन] देखो भामग (राज) ।
भावणा न [ध्यापना] दाह, जलाना, अग्नि-
सत्कार (आवम) ।

भावणा देखो अभावणा (संबोध २४) ।

भिलग न [दे] गुप्ताकरना (उप १४३ टी) ।
भिलिअ न [दे] वचनीय, लोकापवाद, लोक-
निन्दा (दे ३, ५५) ।

भिलिगि } पु [दे] क्षुद्र कीट-विशेष, श्रोत्रिय
भिलिगिड } जीव की एक जाति, भोग्र या
भिल्ली (जीव १) ।

भिलिअ वि [दे] कुपुक्षित, भूखा (वह ६) ।
भिलिणी } बी [दे] एक प्रकार का पेड़,
भिलिरी } लता-विशेष (उप १०३१ टी,
आचा २, १, ८, वृह १) ।

भिलजत } वि [क्षीयमाण] जो क्षय को
भिलजमाण } प्राप्त होता हो, कृश होता हुआ
(से ५, ५८, ७२८ टी, कुमा) ।

भिलज्झ अक [धि] क्षीण होना । भिलज्झ
(प्राक् ६३) ।

भिलिअरी बी [दे] वल्ली-विशेष (आचा २,
१, ८, ३) ।

भिलण देखो भोग (से १, ३५, कुमा) ।

भिमिय } न [दे] शरीर के अवयवों की
भिमिय } जड़ता (आचा) ।

भिया देखो भाम । भियाइ, भियायइ (उवा,
भग, कस, पि ४७६) । वक्. भियायमाण
(गाया १, १—पत्र २८, ६०) ।

भिरिड न [दे] जीर्ण कूप, पुराना इनारा (दे
३, ५७) ।

भिलिअ वि [दे] भीला हुआ, पकड़ी हुई
वह वस्तु जो ऊपर से गिरती हो (सुपा १७८) ।

भिलिअक [स्ना] भीलना, स्नान करना ।
भिलिअ (कुमा) ।

भिलिआ बी [भिलिअ] कीट-विशेष, श्रोत्रिय
जीव की एक जाति, भिल्ली (पाम्र, पण १) ।

भिलिरिआ बी [दे] १ चीही-नामक वृण ।
२ मशक, मच्छर (दे ३, ६२) ।

भिलिरी बी [दे] मछली पकड़ने की एक
तरह की जाल (विपा १, ८—पत्र ८५) ।

भिल्ली बी [दे] लहरो, तरंग (गजड) ।

भिल्ली बी [भिल्ली] १ वनस्पति-विशेष
(पण १, उप १०३१ टी) । २ कीट-विशेष,
भोग्र (गा ४६४) ।

भोग वि [क्षेण] दुर्वल, कृश (हे २, ३,
पाम्र) ।

भोग न [दे] १ अग, शरीर । २ कीट,
कीड़ा (दे ३, ६२) ।

भोगा बी [दे] लज्जा, शर्म (दे ३, ५७) ।

भोग पु [दे] तुणय नामक वाद्य (दे ३, ५८) ।

भुंभिय वि [दे] १ बुभुक्षित, भूखा (पण्ह
१, ३—पत्र ४६) । २ भुरा हुआ, भुरभा
हुआ (भग १६, ४) ।

भुंभुसय न [दे] मन का दुःख (दे ३,
५८) ।

भुंभुन न [दे] १ प्रवाह (दे ३, ५८) । २
पशु-विशेष, जो मनुष्य के शरीर की गरमीसे
जोता है और जिसका रोम कपड़े के लिये
बहुमूल्य है (उप ५५१) ।

भुपडा बी [दे] मोपडी, वृण कुटीर, तुण-
निमित्त घर (हे ४, ४१६, ४१८) ।

भुंभणग न [दे] प्रालम्ब (गाया १, १) ।

भुंभ देखो जुंभ = युष् । भुंभइ (पि
२१४) । वक्. भुंभंति (हे ४, ३७६) ।

भुठ वि [दे] झूठ, अलीक, असत्य (दे ३,
५८) ।

भुण सक [जुगुप्स्] घृणा करना, निन्दा
करना । भुणइ (हे ४, ४, सुपा ३१८) ।

भुणि पुं [ध्वनि] शब्द, आवाज (हे १, ५२,
पह, कुमा) ।

भुणिअ वि [जुगुप्सित] निन्दित, घृणित
(कुमा) ।

भुत्ती बी [दे] छेद, विच्छेद (दे ३, ५८) ।

भुमुभुसय न [दे] मन का दुःख (दे ३,
५८) ।

भुलुक् पुं [दे] अकस्मात् प्रकाश (आत्मानु
६) ।

भुल अक [अन्दोल] झूलना, डोलना,
लटकना । वक्. भुलत (सुपा ३१७) ।

भुलण बीन [दे] छन्द-विशेष । बी. ०णा
(पिग) ।

भुल्लुरी बी [दे] गुल्म, लता, गाछ (दे ६,
५८) ।

भुस देखो भूस । सक्र भूसित्ता (पि २०६) ।

भुसणा देखो भूसणा (राज) ।

भुसिय देखो भूसिय (वृह २) ।

भुसिर न [शुपिर] १ रुध्र, विवर, पोल,
खाली जगह (गाया १, ८ सुपा ६२०) ।

२ वि पोला, छूँछा (ठा २, ३, गाया १,
२, पण्ह १, २) ।

भूम देखो जूम । भूमति (संबोध १८) ।

भूर सक [स्मृ] याद करना, चिन्तन करना ।
भूरइ (हे ४, ७४) । वक्. भूरत (कुमा) ।

भूर सक [जुगुप्स्] निन्दा कर्ना, घृणा
करना,

'निखममोहगमइ, विट्ठण तस्स ख्वणुरिद्धि ।
इदो वि देवराया, भूरइ नियमेण नियख्व'
(रयण ४) ।

भूर अक [धि] भुरना, क्षीण होना, सूखना ।
वक्. भूरत, भूरमाण (सण, उप पृ २७) ।

भूर वि [दे] कुटिल, वक्र, टेढ़ा (दे ३, ५६) ।

भूरिय वि [स्मृत] चिन्तित, याद किया हुआ
(भवि) ।

भूस सक [जुप्] १ सेवा करना । २ प्रीति
करना । ३ क्षीण करना, खपाना । वक्.

आगम ग्रंथ-विशेष (एदि)। ८ वाब्छा, अभिलाप, चाह (सम ७१)। ९ गान्धार ग्राम की एक मूर्छना (ठा ७)। १० पुं स्वनाम ख्यात एक राजकुमार (विपा १, १)। ११ एक जैन मुनि, जो अपने आगामी भव में द्वितीय बलदेव होगा (पउम २०, १६०)। १२ वृक्ष-विशेष (पउम २०, ४२)। १३ आवत्त देखो ०यावत्त (इक)। १४ उड्ड पु ०वृद्ध एक प्राचीन कवि का नाम (कप्प)। १५ कर, गंर वि ०कर मंगल-कारक (कप्प, राया १, १)। १६ गाम पु ०ग्राम ग्राम-विशेष (उप ६१७, आच्छ १)। १७ घोन पु ०घोष १ बारह प्रकार के वाद्यों की आवाज (गंदि)। २ न देवविमान-विशेष (सम १७)। ३ चुण्णग न ०चूर्णक होठ पर लगाने का एक प्रकार का चूर्ण (सूय १, ४, २)। ४ तूर न ०तूर्य एक साथ बजाया जाता बारह तरह का वाद्य (वृह १)। ५ पुर न ०पुर सारिङ्गल्य देश का एक नगर (उप १०३१ टी)। ६ फल पु ०फल वृक्ष-विशेष (राया १, ८, १५)। ७ भाण न ०भाजन उपकरण-विशेष (वृह १)। ८ मित्त पुं ०मित्र १ देखो णंद-मित्त (राज)। २ एक राजकुमार, जिमने भगवान् मल्लिनाथ के साथ दीक्षा ली थी (राया १, ८)। ९ मुडग पु ०मृदङ्ग एक प्रकार का मृदग, वाद्य-विशेष (राय)। १० मुह न ०मुख पक्षि-विशेष (राज)। ११ यर देखो ०र (पउम ११८, ११७)। १२ यावत्त पु ०आवत्त १ स्वस्तिक-विशेष (श्रौप, परह १, ४)। २ एक लोकपाल देव (ठा ४, १)। ३ शुद्र जन्तु-विशेष (पराण १)। ४ न. देव-विमान-विशेष (राज)। ५ राय पु ०राज पाण्डवों के मम-कालीन एक राजा (राया १, १६—पत्र २०८)। ६ राय पु ०राग समृद्धि में हर्ष (भग २, ५)। ७ रुक्ख पु ०वृक्ष वृक्ष-विशेष (पराण १)। ८ वड्डणा देखो ०वद्धणा (इक)। ९ वद्धग पु ०वधेन १ भगवान् महावीर का ज्येष्ठ भ्राता (कप्प)। २ पक्ष-विशेष (कप्प)। ३ एक राजकुमार (विपा १, ६)। ४ न नगर-विशेष (सुपा ६८)। ५ वद्धणा स्त्री ०वर्धना १ एक

दिवकुमारी देवी (ठा ८)। २ एक पुष्करिणी (ठा ४, २)। ३ सेण पुं ०पेण १ ऐरवत वर्ष में उत्पन्न चतुर्थ जिन-देव (सम १५३)। ४ एक जैन कवि (अजि ३८)। ५ एक राज-कुमार (ठा १०)। ६ स्वनाम ख्यात एक जैन मुनि (उव)। ७ देव-विशेष (राज)। ८ सेणा स्त्री ०पेणा १ पुष्करिणी-विशेष (जीव ३)। ९ एक दिक्कुमारी देवी (दीव)। १० सेणिया स्त्री ०पेणिका राजा श्रेणिक की एक पत्नी (अत)। ११ स्सर पु ०स्वर १ देखो णंदीसर (राज)। २ बारह प्रकार के वाद्यों का एक ही साथ आवाज (जीव ३)। णंदिअ न ०दे सिंह की चिल्लाहट दहाड़ (दे ४, १६)। णंदिअ वि ०नन्दित १ समृद्ध (श्रौप) २ जैनमुनि-विशेष (कप्प)। णदिक्ख पु ०दे सिंह, मृगेन्द्र (दे ४, १६)। णदिघोस पु ०नन्दिघोष वाद्य विशेष (राय ४६)। णदिज्ज न ०नन्दीय जैन मुनियों का एक कुल (कप्प)। णदिणी स्त्री ०नन्दिनी पुत्री, लडकी (पउम ४६, २)। १ पिउ पुं ०पितृ भगवान् महावीर का एक स्वनाम-ख्यात गृहस्थ उपासक (उवा)। णदिणी स्त्री ०दे गऊ, गैया, गाय (दे ४, १८, पाय)। णदिल पुं ०नन्दिल आयंमंशु के शिष्य एक जैनमुनि (एदि ५०)। णदिस्सर पुं ०नन्दीश्वर १ एक द्वीप। २ णदीसर एक नमुद्र (सुज १६)। ३ एक देव विमान (देवेन्द्र १४४)। णंदी देखो णदि (महा, श्रौप ३२१ भा, परह १, १, श्रौप, सम १५२, एदि)। णंदी स्त्री ०दे गऊ, गाय, गैया (दे ४, १८, पाय)। णंदीसर पु ०नन्दीश्वर स्वनाम प्रसिद्ध एक द्वीप (राया १, ८, महा)। १ वर पु ०वर नन्दीश्वर-द्वीप (ठा ४, ३)। २ वरोद पुं ०वरोद समुद्र-विशेष (जीव ३)। णंदुत्तर पुं ०नन्दोत्तर देव-विशेष, नाग-कुमार के भूतानन्द-नामक इन्द्र के रथ-सैन्य का अधिपति देव (ठा ५, १, इक)। १ वडि-

सग न ०वतसक एक देव-विमान (सम २६)। णंदुत्तरा स्त्री ०नन्दोत्तरा १ पश्चिम रुक्क पर्वत पर रहनेवाली एक दिक्कुमारी देवी (ठा ८, इक)। २ कृष्णानामक इन्द्राणी की एक राजधानी (जीव ३)। ३ पुष्करिणी-विशेष (ठा ४, २)। ४ राजा श्रेणिक की एक पत्नी (अंत ७)। णकार पु ०णकार, नकार 'ण' या 'न' अक्षर (विसे २८६७)। णक्क पु ०नक्क १ जलजन्तु-विशेष, ग्राह, नाका (पराह १, १, कुमा)। २ रावण का एक स्वनाम ख्यात मुमट (पउम ५६, २८)। णक्क पुं ०दे नाक, नासिका (दे ४, ४६, विपा १, १, श्रौप)। २ वि. मूक, वाचा-वाचा-शक्ति में रहित, बूंगा (दे ४, ४६)। ३ सिरा स्त्री ०सिरा नाक का छिद्र (पाय)। णक्कचर पु ०नक्कचर १ राक्षस। २ चोर। ३ विडाल। ४ वि रात्रि में चलने फिरने-वाला (हे १ १७७)। णक्ख पुं ०नख नख, नाखून (हे २, ६६; प्राप्र)। ५ अ वि ०ज नख से उत्पन्न (गा ६७१)। ६ आउह पु ०आयुध सिंह, मृगारि (कुमा)। णक्खत्त पुन ०नक्षत्र कृत्तिका, अश्विनी, भरणी आदि ज्योतिष्क-विशेष (पाय, कप्प, इक, सुज १०)। ७ दमण पुं ०दमन राक्षस-वंश का एक राजा, एक लकेश (पउम ५, २६६)। ८ मास पु ०मास ज्योतिष-शास्त्र में प्रसिद्ध समय-मान-विशेष (धव १)। ९ मुह न ०मुख चंद्र, चांद (राज)। १० सवच्छर पु ०सवत्सर ज्योतिष-शास्त्र प्रसिद्ध वर्ष-विशेष (ठा ६)। णक्खत्त वि ०नक्षत्र १ क्षत्रिय-जाति के अयोग्य कार्य करनेवाला (धर्मवि २)। २ पुन एक देव-विमान (देवेन्द्र १४३)। णक्खत्त वि ०नाक्षत्र नक्षत्र-सम्बन्धी, नक्षत्र का (ज ७)। णक्खत्तणेमि पु ०दे नक्षत्रनेमि विष्णु, नारायण (दे ४, २२)। णक्खन्नण न ०दे नख और कण्टक निकासने का शस्त्र-विशेष (वृह १)।

टक्क पुं [दे] लकड़ी आदि के आघात की आवाज (कुप्र ३०६) ।
 टट्टइआ ली [दे] जवनिका, परदा (दे ४, १) ।
 टप्पर वि [दे] विकराल कणवाला, भयंकर कानवाला (दे ४, २, सुपा ५२०, कप्पू) ।
 टमर पुं [दे] केश-चय, बाल-समूह (दे ४, १) ।
 टयर देखो टगर (कुमा) ।
 टलटल अक [टलटलाय्] 'टल-टल' आवाज करना । वक्र. टलटलत (प्रासू १६३) ।
 टलटलिय वि [टलटलित] 'टल-टल' आवाज वाला (उप ६४८ टी) ।
 टलवल अक [दे] १ तहफडाना, तहपना । २ धवराना, हैरान होना । टलवलति (धर्मवि ३८) । वक्र. टलवलत (सरि ६०८) ।
 टलिअ वि [दे] टला हुआ, हटा हुआ (सरि ६८३) ।
 टसर न [दे] विमोहन, मोड़ना (दे ४, १) ।
 टसर पुं [टसर] टसर, एक प्रकार का सूता (हे १, २०५, कुमा) ।
 टसरोट्ट न [दे] शेखर, अवतंस (दे ४, १) ।
 टहरिय वि [दे] ऊँचा किया हुआ, 'टहरिय-कन्नो जाग्रो मिगुव' गीड़ कहें सोचें (धर्मवि १४७, सम्मत १५८) ।
 टार पु [दे] अघम, अश्व, हठी घोड़ा (दे ४, २), 'अइसिक्खिओवि न मुअइ, अणय टारव टारत' (आ २७) । २ टट्ट, छोटा घोड़ा (उप १५५) ।
 टाल न [दे] कोमल फल, गुल्ली उत्पन्न होने के पहले की अवस्था वाला फल (दस ७) ।
 टिटं } [दे] देखो टेंटा (भवि) । °साला
 टिटं } ली [°शाला] जुआखाना, जुआ खेलने का अड्डा (सुपा ४६५) ।
 टिवरु } पुन [दे] वृक्ष-विशेष, तेंदू का पेड़
 टिवरुअ } (दे ४, ३, उप १०३१ टी, पाप्र) ।

टिवरुणी ली [दे] ऊपर देखो (पि २१८) ।
 टिक्क न [दे] १ टीका, तिलक । २ सिर का स्तवक, मस्तक पर रक्खा जाता गुच्छा (दे ४, ३) ।
 टिक्किद (शौ) वि [दे] तिलक विभूषित (कप्पू) ।
 टिग्घर वि [दे] स्थविर, वृद्ध, बूढ़ा (दे ४, ३) ।
 टिट्ठिभ पु [टिट्ठिभ] १ पक्षि-विशेष, टिट्ठि-हरी, टिट्ठिहा । २ जल-जन्तु विशेष (सुर १०, १८५) । ली. °भी (विपा १, ३) ।
 टिट्ठियाव सक [दे] बोलने की प्रेरणा करना, 'टिट्ठि' आवाज करने को सिखलाना । टिट्ठियावेह (णाय १, ३) । कवक. टिट्ठिया-वेज्जमाण (णाय १, ३—पव ६४) ।
 टिप्पणय न [टिप्पनक] विवरण, छोटी टीका (सुपा ३२४) ।
 टिप्पी ली [दे] तिलक, टीका (दे ४, ३) ।
 टिरिटिल सक [भ्रम्] धूमना, फिरना, चलना । टिरिटिल्लइ (हे ४, १६१) । वक्र. टिरिटिल्लत (कुमा) ।
 टिल्लिकिय वि [दे] विभूषित (धर्मवि ५१) ।
 टिविडिक्क सक [मण्डय्] मण्डित करना, विभूषित करना । टिविडिक्कइ (हे ४, ११५, कुमा) । वक्र. टिविडिक्कत (सुपा २८) ।
 टिविडिक्किअ वि [मण्डित] विभूषित, अलंकृत (पाप्र) ।
 टुट वि [दे] छिन्न-हस्त, जिसका हाथ कटा हुआ हो वह (दे ४, ३, प्रासू १४२, १४३) ।
 टुटुण अक [टुण्डुणाय्] 'टुन टुन' आवाज करना । वक्र. टुटुणत (गा ६८५, काप्र ६६५) ।

टुवय पुं [दे] आघात-विशेष, गुजराती में 'ठुवो' (सुर १२, ६७) ।
 टुट्ट अक [टुट्ट] टूटना, कट जाना । टुट्टइ (पिंग) । वक्र. टुट्टत (से ६, ६३) ।
 टुप्परग न [दे] जैन साधु का एक छोटा पात्र (कुलक ११) ।
 टुवर पु [तुवर] १ जिसको दाढ़ी-मूँछ न उगी हो ऐसा चपरासी । २ जिसने दाढ़ी-मूँछ कटवा दी हो ऐसा प्रतिहार (हे १, २०९, कुमा) ।
 टेंट पुं [दे] १ मध्य-स्थित मणि-विशेष । वि. भोपण (कप्पू) ।
 टेंटा ली [दे] जुआखाना, जुआ खेलने का अड्डा (दे ४, ३) ।
 टेंटा ली [दे] १ अक्षि-गोलक । २ छाती का शुष्क व्रण (कप्पू) ।
 ठैवरुय न [दे] फल-विशेष (आचा २, १, ८, ६) ।
 टेक्कर न [दे] स्थल, प्रदेश (दे ४, ३) ।
 टोक्कण } न [दे] दाढ़ नापने का बरतन
 टोक्कणखड } (दे ४, ४) ।
 टोपिआ ली [दे] टोपी, सिर पर रखने का सिला हुआ एक प्रकार का वस्त्र (सुपा २६३) ।
 टोप्प पुं [दे] श्रेष्ठि-विशेष (स ४५१) ।
 टोप्पर पुं [दे] शिरज्जाण विशेष, टोपी (पिंग) ।
 टोल पु [दे] १ शलभ, जन्तु-विशेष । २ पिशाच (दे ४, ४, प्रासू १६२) । °गाइ ली [°गति] गुरु-वन्दन का एक दोष (पव २) । °गाइ ली [°कृति] प्रशस्त आकारवाला (राज) ।
 टोल पु [दे] १ टिहो, टिडी (पव २) । २ गूथ (कुप्र ५८) ।
 टोलव पुं [दे] मधूक, वृक्ष-विशेष, महुआ का पेड़ (दे ४, ४) ।

॥ अ सिरिपाइअसहमहणवम्मि टयाराइसहसकलणो

अट्टारुहो तरगो समत्तो ॥

णडी स्त्री [नटी] १ नट की स्त्री (गा ६, ठा ६)। २ लिपि विशेष (विसे ४६४ टी)। ३ नाचनेवाली स्त्री (बृह ३)।

णडुली स्त्री [दे] कच्छप, कछुआ (दे ४, २०)।

णडूल न [नडुल] १ नगर विशेष (मोह ८८)। २ पुं देश-विशेष (ती १५)।

णडूरी स्त्री [दे] भेक, मेढक, बेंग (दे ४, २०)।

णडूल न [दे] १ रत, मैथुन। २ दुर्दिन, मेघाच्छन्न दिवस (दे ४, ४७)।

णडुली देखो णडुली (दे ४, २०)।

णणदा स्त्री [ननान्द] पति की बहिन, ननद (षड्, हे ३, ३५)।

णणु अ [ननु] इन अर्थों का सूचक अव्यय—
१ अवधारण, निश्चय (प्रासू १६१, निवृ १)।
२ आशका। ३ वितर्क। ४ प्रश्न (उव, सण, प्रति ५५)।

णणण पुं [दे] १ कूप, कुआँ। २ दुर्जन, खल। ३ बड़ा भाई (दे ४, ४६)।

णत्त न [नक्त] रात्रि, रात (चद १०)।

णत्त देखो णत्तु, अकनिवेशियनियनियपुत्त-
पडिपुत्तनत्तपुत्तीय' (सुपा ६)।

णत्तचर देखो णक्कचर (कुमा, पि १७०)।

णत्तण न [नर्तन] नाच, नृत्य (नाट—शकु ८०)।

णत्ति स्त्री [ज्ञप्ति] ज्ञान (धर्मस ८२८, एदि ६७ टी)।

णत्तिअ पु [नप्पुत्त] १ पौत्र, पुत्र का पुत्र पोता। २ दौहित्र, पुत्री का पुत्र, नाती (हे १, १३७, कुमा)।

णत्तिआ } स्त्री [नप्पुत्ती] १ पुत्र की पुत्री,
णत्ती } पौत्री (कुमा)। २ पुत्री की पुत्री, नातिन, नतिनी (राज)।

णत्तु } पुं [नप्पुत्त, क] देखो णत्तिअ
णत्तुअ } (निर २, १, हे १, १३७, सुपा १६२, विपा १, ३)।

णत्तुआ देखो णत्तिआ (बृह १, विपा १, ३)।

णत्तुङ्गी स्त्री [नप्पुत्तिनी] १ पौत्र की स्त्री।
२ दौहित्र की स्त्री (विपा १, ३)।

णत्तुई देखो णत्ती (विपा १, ३, कप्प)।

णत्तुणिअ पु [नप्पुत्त] १ पौत्र, पोता। २ प्रपौत्र, परपोता (दस ७, १८)।

णत्तुणिआ देखो णत्तिआ (दस ७, १५)।

णत्थ वि [न्यस्त] स्थापित, निहित (णाय १, १, ३, विसे ६१६)।

णत्थण न [दे] नाक में छिद्र करना (सुर १४, ४१)।

णत्था स्त्री [दे] नासा-रज्जु, नाथा या नाथ (दे ४, १७, उवा)।

णत्थि अ [नास्ति] अभाव-सूचक अव्यय (कप्प, उवा, सम्म ३६)।

णत्थिअ वि [नास्तिक] १ परलोक आदि नहीं माननेवाला (प्रासू)। २ पुं नास्तिक-मत का प्रवर्तक, चार्वाक। °वाय पुं. [°वाद] नास्तिक-दर्शन (उप १३२ टी)।

णत्थियवाड वि [नास्तिकवादिन्] आत्मा आदि के अस्तित्व को नहीं माननेवाला (धर्मवि ४)।

णद सक [नद] नाद करना, आवाज करना।
वक्क णदत्त (सम ५०, नाट—मृच्छ १५५)।

णद पु [नद] नाद, आवाज, शब्द, 'गद्गहेव्व गवा मज्जे विस्सर नयई नद' (सम ५०)।

णदी देखो णई (से ६, ६५, पण ११)।

णद्दिअ वि [दे] दु खित (दे ४, २०)।

णद्दिअ न [नर्दित] घोष, आवाज, शब्द (राज)।

णद्ध वि [नद्ध] १ परिहित, आच्छादित (गा ५२०, पउम ७, ६२, सुपा ३५५)। २ नियन्त्रित, बँधा हुआ (सुपा ३५५)।

णद्ध वि [नद्ध] कवचित्त, वर्मित (धर्मवि ४)।

णद्ध वि [दे] आरुढ (दे ४, १८)।

णद्धववय न [दे] १ अघृणा, घृणा या घिन का अभाव। २ निन्दा (दे ४, ४७)।

णपहुत्त वि [अप्रभूत] अपर्याप्त, अपरिपूर्ण, यथेष्टरहित (गउड)।

णपहुत्तपत्त वि [अप्रभवत्] अपर्याप्त होता (गउड)।

णपुस पुं [नपुसक] नपुंसक, क्लीब,

णपुसग नामर्द, षड् (ओघ २१, आ १६,

णपुसय ठा ३, १, सम ३७, महा)। °वेय

पुं [°वेद] कर्म-विशेष, जिसके उदय से स्त्री और पुरुष दोनों के स्पर्श की वाञ्छा होती है (ठा ६)।

णप्प सक [ज्ञा] जानना। णप्पइ (प्राप्र)।

णभ देखो णह = नमस् (हे १, १८७, कुमा, वसु)।

णभसूरय पु [नभ शूरक] कृष्ण पुद्गल-विशेष, राहु (सुज २०)।

णम सक [नम्] नमन करना, प्रणाम करना।

णमामि (भग)। वक्क. णमत, णममाण (पि ३६७, आचा)। कवक्क. णमिज्जंत

(से ६, ३५)। सक णमिऊण, णमिऊण,

णमेऊण (जो १, पि ५८५, महा)। क.

णमणिज्ज, णमियव्व (रयण ४६, उप

२११ टी, पउम ६६, २१)। सक णमिअ

(कम्म ४, १)।

णमस सक [नमस्य्] नमन करना, नम-

स्कार करना। णमसइ (भग)। वक्क.

णमसमाण (णाय १, १, भग)। सक

णमसित्ता (ठा ३, १, भग)। हेक्क.

णमसित्तए (उवा)। क णमसणिज्ज,

णमसियव्व (ग्रौप, सुपा ६३८, पउम ३५,

४६)।

णमसण न [नमस्यन] नमन, नमस्कार

(अजि ५, भग)।

णमसणया } स्त्री [नमस्यना] प्रणाम,

णमसणा } नमस्कार (भग, सुपा ६०)।

णमसिय वि [नमस्यित] जिसको नमन किया

गया हो वह (पण २, ४)।

णमक्कार देखो णमोक्कार (गउड, पि ३०६)।

णमण न [नमन] प्रणति, प्रणाम, नमना (दे

७, १६, रयण ४६)।

णमसिअ न [दे] उपयाचितक, मनौती (दे

४, २२)।

णमि पु [नमि] १ स्वनाम-ख्यात एक्कीसवों

जिन-देव (सम ४३)। २ स्वनाम-प्रसिद्ध

राजर्षि (उत्त ३६)। भगवान् ऋषभदेव का

एक पौत्र (घण १४)।

णमिअ वि [नत] प्रणत, जिसने नमन किया

हो वह, 'पडिक्खरायाणो तस्स राइणो

नमिया' (महा)।

णमिअ वि [नमित] नमाया हुआ (गा

६६०)।

णमिअ देखो णम।

ठाणग न [स्थानक] शरीर की चेष्टा-विशेष (पंचा १८, १५)।

ठाणि वि [स्थानिन्] स्थानवाला, स्थान-युक्त (सूत्र १, २, उव)।

ठाणिज्ज देखो ठा।

ठाणिज्ज वि [दे] १ गौरवित, सम्मानित (दे ४, ५)। २ न. गौरव (पङ्)।

ठाणुकडिय १ वि [स्थानोत्कटुक] १ उत्क-ठाणुककुडिय १ टुक आसनवाला (परह २, १, भग)। २ न. आसन-विशेष (इक)।

ठाणु देखो खाणु। °खड न [°खण्ड] १ स्थाणु का अवयव। २ वि. स्थाणु की तरह ऊँचा और स्थिर रहा हुआ, स्तम्भित शरीर-वाला (गाया १, १—पत्र ६६)।

ठाम { (अप)। देखो ठाण (पिंग, सण)।

ठाय पुं [स्थाय] स्थान, आश्रय (सुख २, १७)।

ठाव सक [स्थापय] स्थापन करना, रखना। ठावइ, ठावेइ (पि ५५३, कप्प, महा)। वक्क ठावंत, ठावित (चउ २०, सुपा ८८)। सक. ठावइत्ता, ठावेत्ता (कस; महा) क. ठाएयव्व (सुपा ५४५)।

ठावण न [स्थापन] स्थापन, धारण (पंचा १३)।

ठावणया } देखो ठवणा (उप ६८६ टी, ठा
ठावणा } १, वृह ५)।

ठावय [स्थापक] स्थापन करनेवाला (गाया १, १८, सुपा २३४)।

ठावर वि [स्थावर] रहनेवाला, स्थायी (अचु १३)।

ठाविअ वि [स्थापित] स्थापित, रखा हुआ (ठा ३, १, आ १२, महा)।

ठावित्तु वि [स्थापयित्] ऊपर देखो (ठा ३, १)।

ठिअअ न [दे] ऊर्ध्व, ऊँचा (दे ४, ६)।

ठिइ स्त्री [स्थिति] १ व्यवस्था, क्रम, मर्यादा, नियम, 'ज्याहुई एस' (ठा ४, १, उप ७२८ टी)। २ स्थान, अवस्थान (सम २)। ३ अवस्था, दशा (जो ४८)। ४ आयु, उम्र, काल-मर्यादा (भग १४, ५, नव ३१, परण ४, औप)। °क्खय पु [°क्षय] आयु का क्षय, मरण (विपा २, १)। °पडिया देखो °वडिया (कप्प)। °वध पु [°वन्ध] कर्म-बन्ध की काल-मर्यादा (कम्म ४, ८२)। °वडिया स्त्री [°पतिता] पुत्र-जन्म-सम्बन्धी उत्सव-विशेष (गाया १, १)।

ठिक्क न [दे] पुरुष-चिह्न (दे ४, ५)।

ठिक्करीआ स्त्री [दे] ठिकरी, घडा का टुकड़ा (आ १४)।

ठिय वि [स्थित] १ अवस्थित (ठा २, ४)। २ व्यवस्थित, नियमित (सूत्र १, ६)। ३ खडा (भग ६, ३३)। ४ निपण, बैठा हुआ (निचू १, प्राप्र, कुमा)।

ठिर देखो थिर (अचु १, गा १३१ अ)।

ठिविअ न [दे] १ ऊर्ध्व, ऊँचा। २ निकट, समीप। ३ हिक्का, हिचकी (दे ४, ६)।

ठिअव सक [वि + घुट] मोड़ना। संकु. ठिअवऊण (सुपा १६)।

ठीण वि [स्त्यान] १ जमा हुआ (घुट आदि) (कुमा)। २ ध्वनि-कारक, आवाज करने-वाला। ३ न जमाव। ४ भालस्य। ५ प्रति-ध्वनि (हे १, ७४, २, ३३)।

ठुठ पुन [दे] हूँठा, हूँठ, स्थाणु (ज १)।

ठुक्क सक [हा] त्याग करना। ठुक्कइ (प्राक् ६३)।

ठेर पुस्त्री [स्थविर] वृद्ध, बूढ़ा (गा ८८३ अ, पि १६६)।

'पउरजुवाणो गामो, महमासो

जोअणं पई ठेरो।

जुएणसुरा साहीणा, असई

मा होउ कि मरउ ?'

(गा १६७)। स्त्री. °री (गा ६५४ अ)।

ठोड पुं [दे] १ जोतिषी, दैवज्ञ। २ पुरोहित (सुपा ५५२)।

॥ इय तिरिपाइअसद्महणवम्मि ठयाराइसद्मकलणो

एण्णवीसद्मो तरंगो समत्तो ॥

ड

ड पुं [ड] मूढ-स्थानीय व्यञ्जन वर्ण-विशेष (प्राप्ता, प्राप)।

डओयर न [दकोदर] पेट का रोग-विशेष, जलोदर (निचू १)।

डंक पु [दे] १ डक, दुष्टिक (विच्छू) आदि का काँटा (परह १, १)। २ दंश-स्थान, जहाँ पर

वृश्चिक आदि डसा हो; 'जह सव्वसरीरगयं विस निरभित्तु डंकमारणित्' (सुपा ६०६)।

डंकिय देखो डक्क = दण्ड (वे ८६)।

डंगा स्त्री [दे] डांग, लाठी, यष्टि (सुपा २३८, ३८८, ५४६)।

डंड देखो दड (हे १, १२७, प्राप्र)।

डड न [दे] वज्र के सीए हुए टुकड़े (दे ४, ७)।

डंडगा स्त्री [दण्डका] दक्षिण देश का एक प्रसिद्ध शरण—जंगल (सुख)।

डंडय पुं [दे] रथ्या, महल्ला (दे ४, ८)।

डडारण न [दण्डारण्य] दक्षिण का एक

णराच } पुं न [नाराच] १ लोहमय वाण ।
णराअ } २ संहनन-विशेष, शरीर की रचना
का एक प्रकार (हे १, ६७) । ३ छन्द-विशेष
(पिंग) ।

णरायण पुं [नारायण] श्रीकृष्ण, विष्णु
(पिंग) ।

णरिंद पुं [नरेन्द्र] १ राजा, नरेश (सम
१५३, प्रासू १०७, कप्प) । २ गार्हपत्य,
सर्प के विष को उतारनेवाला (स २१६) ।
°कन न [°कान्त] देव-विमान-विशेष (सम
२२) °पह पु [°पथ] राज-मार्ग, महापथ
(पउम ७६, ८) । °वसह पु [°वृषभ] श्रेष्ठ
राजा (उत्त ६) ।

णरिंदुत्तरवडिसग न [नरेन्द्रोत्तरावतंसक]
देव-विमान-विशेष (सम २२) ।

णरीस पु [नरेश] राजा, नरपति, 'सो भर-
हृदनरीसो होही पुरिसो न सदेहो' (सुर १२,
८०) ।

णरीसर पु [नरेश्वर] राजा, नरपति (अजि
११) ।

णरुत्तम पुं [नरोत्तम] श्रीकृष्ण (सिंरि
४२) ।

णरुत्तम पु [नरोत्तम] उत्तम पुरुष (पउम
४८, ७५) ।

णरेंद देखो णरिंद (पि १५६, पिंग) ।

णरेसर देखो णरीसर (उप ७२८ टी, सुपा
५५, ५६१) ।

णल न [नड] तृण-विशेष, भीतर से पोला
शराकार तृण (हे २, २०२, ठा ८) ।

णल न [नल] १ ऊपर देखो (परण १, उप
१०३१ टी, प्रासू ३३) । २ पुं राजा राम-
चन्द्र का एक सुमट (से ८, १८) । ३ वैश्रमण
का एक स्वनाम-ख्यात पुत्र (अत ५) ।
°कुन्वर, °कूवर पु [°कूवर] १ दुर्लभपुत्र
का एक स्वनाम-ख्यात राजा (पउम १२,
७२) । २ वैश्रमण का एक पुत्र (आवम) ।
°गिरि पु [°गिरि] चण्डप्रद्योत राजा का
एक स्वनाम-ख्यात हाथी (महा) ।

णलय न [दे] उशीर, खस का तृण (दे ४,
१६, पाप्र) ।

णलाड देखो णडाल (हे २, १२३, कुमा) ।

णलाडतव वि [ललाटन्तप] ललाट को
तपानेवाला (कुमा) ।

णलिअ न [दे] गृह, घर, मकान (दे ४,
२०, पड्) ।

णलिण न [नलिन] १ लगातार तेईस दिन का
उपवास (सवोष ५८) । २ पुन. एक देव-
विमान (देवेन्द्र १३२) ।

णलिण न [नलिन] १ रक्त कमल (राय,
चद १०, पाप्र) । २ महाविदेह वर्ष का एक
विजय, प्रदेश-विशेष (ठा २, ३) । ३
'नलिनाग' को चौरामी लाख में गुणने पर जो
सख्या लब्ध हो वह (ठा २, ४, इक) । ४
देव-विमान विशेष (सम ३३, ३५) । ५
रुचक पर्वत का एक शिखर (दीव) । °कूड
पु [°कूट] वसन्त-पर्वत-विशेष (ठा २,
३) । °गुम्म न [°गुल्म] १ देव-विमान-
विशेष (सम ३५) । २ वृष-विशेष (ठा ८) ।
३ अग्रयन-विशेष (आव ४) । ४ राजा
श्रेणिक का एक पुत्र (राज) । °वर्डे छो
[°वती] विदेह वर्ष का एक विजय, प्रदेश
विशेष (ठा २, ३) ।

णलिणग न [नलिनाङ्ग] सख्या-विशेष, पद्म
को चौरासी लाख से गुणने पर जो संख्या
लब्ध हो वह (ठा २, ४, इक) ।

णलिणि° } छो [नलिनी] कमलिनी, पद्मिनी
णलिणी } (पाप्र, लाया १, १) । °गुम्म
देखो णलिण-गुम्म (निर २, १, विने) ।
°वण न [°वन] उद्यान-विशेष (लाया २) ।

णलिणोदग पु [नलिनोदक] समुद्र-विशेष
(दीव) ।

णल्लय न [दे] १ वृत्ति विवर, वाड का छिद्र ।
२ प्रयोजन । ३ निमित्त, कारण । ४ वि
कर्दमित, कीचवाला (दे ४, ४६)

णव देखो गम । एवह (पड्, हे ४, १५८,
२२६) ।

णव वि [नव] नया, नूतन, नवीन (गउड,
प्रासू ७१) । °वहुया, °वहू छो [°वधू]
नवोद्भा, दुर्लभ (हंका ५१, सुर ३, ५२) ।

णव त्रि व [नवन्] सख्या-विशेष, नव, ६
(ठा ६) । °इ छो [°ति] सख्या-विशेष नव्हे,
६० (सण) । °ग न [°क] नव का समुदाय
(दे ३८) । °जोयणिय वि [°योजनिक]

नव योजन का परिमाणवाला (ठा ६) ।
°णउइ, °नउइ छो [°नवति] संख्या-विशेष,
नित्यानवे, ६६ (सम ६६, १००) । °नउय
वि [°नवत] ६६ वां (पउम ६६, ७५) ।
°नवइ देखो °णउइ (कम्म २, ३०) ।
°नवमिया छो [°नवमिका] जैन साधु का
व्रत-विशेष (सम ८८) । °म वि [°म]
नववा (उवा) । °मी छो [°मी] तिथि-विशेष,
पक्ष का नववां दिवस (सम २६) । °मीपक्ख
पु [°मीपक्ष] आठवां दिन, अष्टमी (ज ३) ।
णवकार देखो णमोकार (सट्ठि १, चैत्य ३०,
मण) ।

णवकारसी छो [नमस्कारसहित] प्रत्या-
ख्यान-विशेष, व्रत-विशेष (सवोष ५७) ।

णवग्व (अप) वि [नव] अनोखा, नूतन, नया
(हे ४, ४२२) । छो °खी (हे ४, ४२०) ।

णवणीअ पुन [नवनीत] नयन मक्खन, मसका
(कप्प औप, प्रामा), 'अणलहमोव नव-
णीओ' (पउम ११८, २३) ।

णवणीडया छो [नवनीतिका] वनस्पति-
विशेष (परण १) ।

णवपय न [नवपद] नमस्कार-मन्त्र (सिंरि
५७६) ।

णवमालिया छो [नवमालिका] पुष्प-प्रधान
वनस्पति-विशेष, वसती नेवारी, नेवार (कप्प) ।
णवमिया छो [नवमिका] १ रुचक पर्वत पर
रहनेवाली एक दिक्कुमारी देवी (ठा ८) ।
२ सत्पुरुष-नामक इन्द्र की एक अग्र-महिषी
(ठा ४, १) । ३ शक्रेन्द्र की एक पटरानी
(ठा ८) ।

णवय देखो णव-ग (पचा १७, ३०) ।

णवय देखो णवय (लाया १, १७) ।

णवयार देखो णवकार (पंचा १, पि ३०६) ।

णवर सक [कथ्] कहना । कर्म एवरिजइ
(प्राक ७७) ।

णवर } अ १ केवल, सिर्फ फल (हे २, १८७,
णवर } कुमा, पड् उवा; सुपा ८, जी २७,
गा १५) । २ अनन्तर, बाद में (हे २, १८८,
प्राप्र) ।

णवरग } पुं [नवरङ्ग, °क] १ नूतन रंग,
णवरंगय } नया वर्ण (सुर ३, ५२) । २
छन्द-विशेष (पिंग) । ३ कौमुम्भ रंग का
वस्त्र (गउड, गा २४१, सुर ३, ५२, पाप्र) ।

डाग पुंन [दे] भाजी, पत्राकार तरकारी (भग ७, १०२, दसा १, पव २)।

डाग न [दे] डाल, शाखा (आचा २, १०, २)।
डागिणी देखो डाइणी (१, ३, ४)।

डामर वि [डामर] भयंकर, 'डमडमियडमरुया-डोवडामरो' (सुपा १५१)। २ पुं. स्वनाम-ख्यात एक जैन मुनि (पउम २०, २१)।

डामरिय वि [डामरिक] लडाई करनेवाला, विग्रह-कारक (पएह १, २)।

डाय न [दे] देखो डाग (राज)।

डायाल न [दे] हर्म्य-तल, प्रासाद भूमि, छत (आचा २, २, १)।

डाल खोन [दे] १ डाल, शाखा, टहनी (सुपा १४०, पचा १६, हे ४, ४४५)। २ शाखा का एक देश (आचा २, १, १०)। खी. 'ला' (महा, पात्र, वजा २६), 'ली' (दे ४, ६, पच १०, सण, निचू १)।

डाव पु [दे] वाम हस्त, बाया हाथ, गुजराती मे 'दावो' (दे ४, ६)।

डाह देखो दाह (हे १, २१७, गा २२६, ५३५, कुमा)।

डाहर पु [दे] देश-विशेष (पिंग)।

डाहाल पु [दे] देश-विशेष (सुपा २६३)।

डाहिण देखो दाहिण (गा ७७७, पिंग)।

डिअली खी [दे] स्थूण, खमा: खूँटी (दे ४, ६)।

डिडव वि [दे] जल में पतित (पड)।

डिडि पुं [दिण्डिन्] राजकर्मचारी-विशिष्ट अधिकार-संपन्न (भव० दु० कथा पत्र-४७०, श्लोक ४)।

डिडिम न [दिण्डिम] डुगडुगी, डुगी, वाद्य-विशेष (सुर ६, १८१)।

डिडिम न [दिण्डिम] कांसे का पात्र (आचा २, १, ११, ३)।

डिडिअ न [दे] १ खल-खचित वस्त्र, तैल-किट्ट से व्याप्त कपड़ा। २ स्वलित हस्त (दे ४, १०)।

डिडि खी [दे] सिले हुए वस्त्र खण्ड (दे ४, ७)। 'वध पु [वन्ध] गर्भ-संभव (निचू ११)।

डिडीर पुंन [दिण्डीर] समुद्र का फेन, समुद्र-कफ (उप ७२८ टी, सुपा २२२)।

डिडुयाण न [दिण्डुयाण] नगर-विशेष (कुप्र १८)।

डिफिअ वि [दे] जल-पतित, पानी में गिरा हुआ (दे ४, ६)।

डिंघ पुंन [दिम्घ] १ भय, डर (से २, १६)। २ विघ्न, अन्तराय (गाया १, १—पत्र ६, औप)। ३ विप्लव, डमर (ज २)।

डिंघ पुं [दिम्घ] शत्रु-सैन्य का भय, पर-चक्र का भय (सूत्र २, १, १३)।

डिंभ अक [स्सस्] १ नीचे गिरना। २ ध्वस्त होना, नष्ट होना। डिंभइ (हे ४, १६७, पड)। वक्र डिंभंत (कुमा ७, ४२)।

डिंभ पुंन [दिम्भ] बालक, बच्चा, शिशु (पात्र, हे १, २०२, महा, सुपा १६), 'अह दुक्खियाइ तह भुक्खियाइजह चित्तियाई डिंमाइ' (विवे १११)।

डिंभिया खी [दिम्भिका] छोटी लडकी (गाया १, १८)।

डिक्क अक [गर्ज] सांड का गरजना। डिक्कइ (पड)।

डिडुर पुं [दे] मेक, मण्डक, मेढक, वेग (दे ४, ६)।

डिट्थ पुं [डिट्थ] १ काष्ठ का बना हुआ हाथी। २ पुरुष-विशेष, जो श्याम, विद्वान्, सुन्दर, युवा और देखने में प्रिय हो ऐसा पुरुष (भास ७७)।

डिप्प अक [दीप्] दोपना, चमकना। डिप्पइ, डिप्पए (पड)।

डिप्प अक [वि + गल्] १ गल जाना, सड़ जाना। २ गिर पड़ना। डिप्पइ, डिप्पए (पड)।

डिमिल न [दे] वाद्य-विशेष (विक्र ८७)।

डिल्ली खी [दे] जल-जन्तु-विशेष (जीव १)।

डिव सक [डिप्] उल्लंघन करना। डिव (वव १)।

डीण वि [दे] अवतीर्ण (दे ४, १०)।

डीणोवय न [दे] ऊपरि, ऊपर (दे ४, १०)।

डीर न [दे] कन्दल, नवीन अंकुर (दे ४, १०)।

डुंगर पुं [दे] शैल, पर्वत, गुजराती में 'हगर' (दे ४, ११, हे ४, ४४५, जं २)।

डुघ पु [दे] नारियल का बना हुआ पात्र-

विशेष, जो पानी निकालने के काम में आता है (दे ४, ११)।

डुडुअ पुं [दे] १ पुराना घण्टा (दे ४, ११)। २ बटा घण्टा (गा १७२)।

डुडुका खी [दे] वाद्य-विशेष (विक्र ८७)।

डुडुअ अक [भ्रम्] घूमना, फिरना, चक्कर लगाना। डु डुल्लइ (पड)।

डुंघ पुं [दे] डोम, चाण्डाल, अपच (दे ४, ११, २, ७३, ७, ७६)। देखो डोव (पव ६)।

डुजय न [दे] कपडे का छोटा गट्टा, वस्त्र-खण्ड, 'खिविअं वयणम्मि डुजय अहयं, वद्धा खस्सस्स धुडे' (सुपा ३६६)।

डुल अक [दोलय्] डोलना, काँपना, हिलना। डुलइ (पिंग)।

डुलि पु [दे] कच्छप, कछुआ (उप ४ १३६)।

डुहुडुहुडुह अक [डुहुडुहाय्] 'डुह-डुह' आवाज करना, नदी के वेग का खलखलाना। वक्र 'डुहुडुहुडुहंतनइसलिल' (पउम ६४, ४३)।

डेकुण पु [दे] मत्कुण, खटमल, क्षुद्र कीट-विशेष (पड)।

डेह् डुर पु [दे] दंडुर, मेक, मण्डक, मेढक, वेग (पड)।

डेर वि [दे] केकदाक्ष, नीची-ऊँची आँखवाला (पिंग)।

डेव सक [डिप्] उल्लंघन करना, क्रुद्ध जाना, अतिक्रमण करना। वक्र. डेवमाण (राज)।

डेवण न [डेपन] उल्लंघन, अतिक्रमण (शोध ३६)।

डोअ पु [दे] काष्ठ का हाथा, दाल, शाक आदि परोसने का काष्ठ पात्र-विशेष, गुजराती मे 'डोयो' (दे ४, ११, महा)।

डोअण न [दे] लोचन, आँख (दे ४, ६)।

डोंगर देखो डुंगर (शोधमा २० टी)।

डोंगिली खी [दे] १ ताम्बूल रखने का भाजन विशेष। २ ताम्बूलिनी, पान बेचनेवाले की खी, तमोलिन (दे ४, १२)।

डोंगी खी [दे] १ हस्तविम्ब, स्यासक। २ पान रखने का भाजन विशेष (दे ४, १३)।

डोंव पु [दे] १ म्नेच्छ देश-विशेष। २ एक

णाइ (अप) देखो इव (कुमा) ।

णाइ (अप) नीचे देखो (भवि) ।

णाइ देखो ण = न (हे २, १६०, उवा) ।

णाइणी (अप) स्त्री [नागी] नागिन, सर्पिणी (भवि) ।

णाइत्त } पुं [दे] जहाज द्वारा व्यापार
णाइत्तग } करनेवाला सौदागर (उप पृ १०१,
उप ५६२) ।

णाइय वि [नादित] १ उक्त, कथित,
पुकारा हुआ (गाया १, १, औप) । २ न
आवाज, शब्द (गाया १, १) । ३ प्रतिशब्द,
प्रतिध्वनि (राय) ।

णाइल पु [नागिल] १ स्वनाम-ख्यात एक
जैन मुनि (कप्प) । २ जैन मुनियों का एक
वश (पउम ११८ ११७) । ३ एक श्रेष्ठी
(महानि ४) ।

णाइला } स्त्री [नागिला] जैन मुनियों की
णाइली } एक शाखा (कप्प) ।

णाइल देखो णाइल (विचार ५३४) ।

णाइव वि [ज्ञातिमत्] स्वजन-युक्त,
नातेदार (उत्त ४) ।

णाड वि [ज्ञात्] जानकार, जाननेवाला
(द्र ६) ।

णाडहु पु [दे] १ सद्भाव, सन्निष्ठा । २
अभिप्राय । ३ मनोरथ, वाञ्छा (दे ४, ४७) ।

णाडल वि [दे] गोमान्, जिसके पास अनेक
गैया हो (दे ४, २३) ।

णाड }
णाऊण } देखो णा = ज्ञा ।
पाऊण }

णाग पुंन [नाक] स्वर्ग, देवलोक (उप ७१२) ।

णाग पु [नाग] १ सर्प, साँप (पउम ८,
१७८) । २ भवनपति देवों की एक अवान्तर
जाति, नाग-कुमार देव (एदि) । ३ हस्ती,
हाथी (औप) । ४ वृक्ष-विशेष (कप्प) । ५
स्वनाम-ख्यात एक गृहस्थ (अत ४) । ६ एक
प्रसिद्ध वश । ७ नाग-वश मे उत्पन्न (राज) ।
८ एक जैन आचार्य (कप्प) । ९ स्वनाम-
ख्यात एक द्वीप । १० एक समुद्र (सुज्ज १६) ।
११ वक्षस्कार-पर्वत विशेष (ठा २, ३) ।
१२ न. ज्योतिष-प्रसिद्ध एक स्थिर करण
(विसे ३३५०) । कुमार पुं [कुमार]

भवनपति देवों की एक अवान्तर जाति (सम
६६) । °केसर पु [°केसर] पुण्य-प्रधान
वनस्पति-विशेष (राज) । °ग्गह पुं [°ग्रह]
नाग देवता के अवेश से उत्पन्न ज्वर आदि
(जीव ३) । °जण्ण, °जन्न पु [°यज्ञ] नाग
पूजा, नाग देवता का उत्सव (गाया १,
८) । °जुण पु [°जुन] एक स्वनाम-
ख्यात जैन आचार्य (एदि) । °दंत पु [°दन्त]
खूंटी (जीव ३) । °दत्त पुं [°दत्त] १ एक
स्वनाम-ख्यात राज पुत्र (ठा ३, ४, सुपा
५३५) । २ एक श्रेष्ठ-पुत्र (आक) । °पड पुं
[°पति] नाग कुमार देवों का राजा, नागेन्द्र
(औप) । °पुर न [°पुर] नगर-विशेष
(पउम २०, १०) । °वाग पु [°वाण]
दिव्य अस्त्र-विशेष (जीव ३) । °भद्र पु
[°भद्र] नाग द्वीप का अधिष्ठाता देव (सुज्ज
१६) । °भूय न [°भूत] जैन मुनियों का
एक कुल (कप्प) । °महाभद्र पु [°महाभद्र]
नागद्वीप का एक अधिष्ठाता देव (सुज्ज १६) ।
°महावर पुं [°महावर] नाग समुद्र का
अधिपति देव (सुज्ज १६, इक) । °मित्त पु
[°मित्र] स्वनाम ख्यात एक जैन मुनि, जो
आर्य महागिरि के शिष्य थे (कप्प) । °राय
पु [°राज] नागकुमार देवों का स्वामी,
इन्द्र-विशेष (पउम ३, १४७) । °रुक्ख पु
[°वृक्ष] वृक्ष-विशेष (ठा ८) । °लया स्त्री
[°लता] वल्ली-विशेष, ताम्बूली लता (पएण
१) । °वर पु [°वर] १ श्रेष्ठ सर्प । २
उत्तम हाथी (औप) । ३ नाग समुद्र का
अधिपति देव (सुज्ज १६) । °वल्ली स्त्री
[°वल्ली] लता-विशेष (सण) । °सिरी स्त्री
[°श्री] द्वीपदी के पूर्व जन्म का नाम (उप
६४८ टी) । °सुहुम न [°सूक्ष्म] एक
जैनतर शास्त्र (अणु) । °सेण पु [°सेन]
एक स्वनाम ख्यात गृहस्थ (आवम) । °हत्थि
पुं [°हस्तिन्] एक प्राचीन जैन ऋषि
(एदि) ।

णागणिय न [नागन्य] नग्नता, नगापन
(सूत्र १, ७) ।

णागदत्ता स्त्री [नागदत्ता] चौदहवें जिनदेव
की दीक्षा-शिविका (विचार १२६) ।

णागपरियावणिया स्त्री [नागपरियापनिका]
एक जैन शास्त्र (एदि २०२) ।

णागर वि [नागर] १ नगर-सम्बन्धी । २
नगर का निवासी, नागरिक (सुर ३, ६६,
महा) ।

णागरिअ पुं [नागरिक] नगर का रहनेवाला
(रंभा) ।

णागरिआ स्त्री [नागरिका] नगर में
रहनेवाली स्त्री (महा) ।

णागरी स्त्री [नागरी] १ नगर में रहनेवाली
स्त्री । २ लिपि विशेष, हिन्दी लिपि (विसे
४६४ टी) ।

णागिद्र पुं [नागेन्द्र] १ नाग देवों का इन्द्र ।
२ शेषनाग (सुपा ७७, ६३६) ।

णागिणी स्त्री [नागी] १ नागिन । २ एक
वणिक-पुत्री (कुप्र ४०८) ।

णागिल देखो णाइल (राज) ।

णागी स्त्री [नागी] नागिन, सर्पिणी (आव ४) ।

णागेंद देखो णागिंद (गाया १, ८) ।

णागोद पु [नागोद] एक समुद्र (सुज्ज १६) ।

णाड देखो णट्ट = नाट्य (गाया १, १ टी—
पत्र ४३) ।

णाडइज्ज वि [नाटकीय] नाटक-सम्बन्धी,
नाटक में भाग लेनेवाला पात्र (गाया १,
१, कप्प) ।

णाडङ्गो स्त्री [नाटकिनी] १ नर्तकी,
नाचनेवाली स्त्री (वृह ३) ।

णाडग } न [नाटक] १ नाटक, अभिनय,
णाडय } नाट्य-क्रिया (वृह १, सुपा १, ३५६,
सार्ध ६५) । २ रंग-शाला में खेलने में उपयुक्त
काव्य (हे ४, २७०) ।

णाडाल देखो णडाल (गउड) ।

णाडि स्त्री [नाडि] १ रज्जु, वरग । २
नाडी, नख, सिरा (कुमा) ।

णाडी स्त्री [नाडी] ऊपर देखो (हे १, २०२) ।

णाडीअ पुं [नाडीक] वनस्पति-विशेष (सग
१०, ७) ।

णाण न [ज्ञान] ज्ञान, बोध, चैतन्य, बुद्धि
(अग ८, २, हे २, ४२, कुमा, प्रासू २८) ।

°धर वि [°धर] ज्ञानी, जानकार, विद्वान्
(सुपा ५०८) । °पवाय न [°प्रवाद]

ढढसिअ पु [दे] १ ग्राम का यक्ष । २ गाँव का वृक्ष (दे ४, १५) ।
 ढंढुल्ल देखो ढंढल्ल । ढढुल्लइ (सण) ।
 ढढोल सक [गवेपय्] खोजना, अन्वेषण करना । ढंढोलइ (हे ४, १८६) । सक्र. ढढोलिअ (कुमा) ।
 ढंढोल्ल देखो ढुंढुल्ल । संक्र ढढोल्लिवि (सण) ।
 ढस अक [वि + वृत्] घसना, घसकर रहना, गिर पडना । ढसइ (हे ४, ११८) । वक्र, ढसमाण (कुमा) ।
 ढंसय न [दे] अयश, अपकीर्ति (दे ४, १४) ।
 ढक्क मक [छादय्] १ ढकना, आच्छादन करना, बन्द करना । ढक्कइ (हे ४, २१) । भवि ढक्किस्स (गा ३१४) । कर्म 'ढक्कि-ज्जउ कूवाई' (सुर १२, १०२) । संक्र. 'तल्य ढक्किउं दार', ढक्किऊण, ढक्के-ऊण (सुपा ६४०, महा, पि २२१) । क. ढक्केयव्व (दस २) ।
 ढक्क पुं [ढक्क] १ देश-विशेष । २ देश-विशेष मे रहनेवाली एक जाति (भवि) । ३ भाट की एक जाति (उप पृ ११२) ।
 ढक्कय न [दे] तिलक (दे ४, १४) ।
 ढक्करि वि [दे] अद्भुत, आश्चर्य-जनक (हे ४, ४२२) ।
 ढक्कवत्थुल देखो ढंक्कवत्थुल (पव ४) ।
 ढक्का स्त्री [ढक्का] वाद्य-विशेष, ढका, नगाडा, डमरू (गा ५२६, कुमा, सुपा २४२) ।
 ढक्किअ वि [छादित] बन्द किया हुआ, आच्छादित (स ४६६, कुमा) ।
 ढक्किअ न [दे] बैल की गर्जना (अणु २१२, सुव ६, १) ।
 ढग्गढग्गा स्त्री [दे] 'ढग-ढग' आवाज, पानी वगैरह पीने की आवाज, 'सोरणियं ढग्गढग्गाए घोट्टयतो' (स २५७) ।
 ढज्जत देखो ढज्जत (पि २१२, २१६) ।
 ढड्ढ पु [दे] भेरी, वाद्य-विशेष (दे ४, १३) ।
 ढड्ढर पुं [दे] राहु (सुज्ज २०) ।
 ढड्ढर पुं [दे] १ बड़ी आवाज, महान् ध्वनि (ओघ १५६) । २ न. मुक्क-वन्दन का एक

दोष, बड़े स्वर से प्रणाम करना (गुभा २५) ।
 ३ वि. वृद्ध, वृद्धा, 'ढड्ढर-सङ्घाण मग्गेण' (साधं ३८) ।
 ढणिय वि [ध्वनिन] शब्दित, ध्वनित (सुर १३, ८४) ।
 ढमर न [दे] १ पिठर, स्थाली या थाली (दे ४, १७, पात्र) । २ गरम पानी, उष्ण जल (दे ४, १७) ।
 ढयर पु [दे] १ पिशाच (दे ४, १६, पात्र) । २ ईर्ष्या, द्वेष (दे ४, १६) ।
 ढल अक [दे] टपकना, नीचे पडना, गिरना । २ झुकना । वक्र ढलत (कुमा), 'ढलतसेयचामरूपीलो' (उप ६८६ टी) ।
 ढलिय वि [दे] झुका हुआ (उप पृ ११८) ।
 ढाल सक [दे] १ ढालना, नीचे गिराना । २ झुकाना, चामर वगैरह का चीजना । ढालए (सुपा ४७) ।
 ढलहल्य वि [दे] मृदु, कोमल, मुलायम (वज्जा ११४) ।
 ढलिय वि [दे] गिरा हुआ, खलित (वज्जा १००) ।
 ढालिअ वि [दे] नीचे गिराया हुआ, 'सीसाओ ढालिओ सूरौ' (सुर ३, २२८) ।
 ढाय पुं [दे] आग्रह, निर्वन्ध (कुमा) ।
 ढिंक् पु [ढिंक्] पक्षि-विशेष (पणह १, १—पत्र ८) ।
 ढिंक्ण पुं [दे] सुदृढ़ जन्तु-विशेष, गौ ढिंक्ण भादि को लगनेवाला कीट-विशेष (राज, जो १८) ।
 ढिंक्लीआ स्त्री [दे] पात्र-विशेष (सिरि ४२६) ।
 ढिंग देखो ढिंक् (राज) ।
 ढिंढय वि [दे] जल मे पतित (दे ४, १५) ।
 ढिक्क अक [गर्ज्] सौंड का गरजना । ढिक्कइ (हे ४, ६६) । वक्र ढिक्कमाण (कुमा) ।
 ढिक्कय न [दे] नित्य, हमेशा, सदा (दे ४, १५) ।
 ढिक्किय न [गर्जन] सौंड की गर्जना (महा) ।
 ढिंढिंढस न [ढिंढिंढस] देव-विमान-विशेष (इक) ।

ढिल्ल वि [दे] ढीला, शिथिल (पि १५०) ।
 ढिल्ली स्त्री [ढिल्ली] भारतवर्ष की प्राचीन और अद्यतन राज-धानी, दिल्ली शहर (पिंग) ।
 'नाह पुं [नाथ] दिल्ली का राजा (कुमा) ।
 ढुदुल सक [भ्रम्] घूमना, फिरना, चलना । ढुदुलइ (हे ४, १६१) । ढुदुलन्ति (कुमा) ।
 ढुदुल सक [गवेपय्] ढूँढना, खोजना, अन्वेषण करना । ढुदुलइ (हे ४, १८६) ।
 ढुदुलग न [गवेपय्] खोज, अन्वेषण (कुमा) ।
 ढुदुलिअ वि [गवेपित] अन्वेषित, ढूँढा हुआ (पात्र) ।
 ढुक्क सक [ढौक्] १ भेंट करना, अर्पण करना । २ उपस्थित करना । ३ अक लगना, प्रवृत्ति करना । ४ मिलना । वक्र. ढुक्कत (पिंग) । कवक्क ढुक्कत (उप ६८६ टी, पिंग) ।
 ढुक्क सक [प्र + विशा] ढुकना, घुसना, प्रवेश करना । ढुक्कइ (प्राक् ७४) ।
 ढुक्क वि [दे ढौकिन] १ उपस्थित, हाजिर (स २५१) । २ मिलित (पिंग) । ३ प्रवृत्त, 'चित्तिउं ढुक्को' (आ २७, सण, भवि) ।
 ढुक्कलुक्क न [दे] चमड़े से मढ़ा हुआ वाद्य विशेष (सिरि ४२६) ।
 ढुक्किअ वि [ढौकिंत] ऊपर देखो (पिंग) ।
 ढुम } सक [भ्रम्] भ्रमण करना, घूमना ।
 ढुस } ढुमइ, ढुसइ (हे ४, १६१, कुमा) ।
 ढुरुदुल देखो ढुदुल = भ्रम । वक्र ढुरुदुल्लत (वज्जा १२८) ।
 ढेरु पु [ढेक्क] एक जल पक्षी, पक्षि विशेष (वज्जा ३४) ।
 ढेंरा स्त्री [दे] १ हर्ष, खुशी । २ ढेंकुवा, ढेंकली, कूप-तुला (दे ४, १७) ।
 ढेंकिय देखो ढिंक्किय (राज) ।
 ढेंकी स्त्री [दे] बलाका, वक-पक्षि (दे ४, १५) ।
 ढेंकुण पुं [दे] मत्कुण, खटमल (दे ४, १४) ।
 ढेढिअ वि [दे] घूपित, घूप दिया हुआ (दे ४, १६) ।
 ढेणियालग पुं स्त्री [ढेणिमालक] पक्षि-ढेणियालय विशेष (पणह १, १) । स्त्री. 'लिया (अनु ४) ।
 ढेल वि [दे] निर्धन, दरिद्र (दे ४, १६) ।
 ढोअ देखो ढुक्क = ढौक । ढोएज्जह (महा) ।

णारग पुं [नारङ्ग] १ वृक्ष-विशेष, सतरे का वृक्ष । २ न. फल-विशेष, कमला नीबू, सतरा (पउम ४१, ६, सुपा २३०, ५६३, गउड, कुमा) ।

णारग देखो णारय = नारक (विसे १६००) ।

णारद देखो णारय (प्रयौ ५१) ।

णारदीअ वि [नारदीय] नारद-सम्बन्धी, नारद का (प्रयौ ५१) ।

णारय पु [नारद] १ मृत्ति-विशेष, नारद ऋषि (सम १५४ उप ६४८ टी) । २ गन्धर्व सैन्य का अधिपति देव-विशेष (ठा ७) ।

णारय वि [नारक] १ नरक में उत्पन्न, नरक-सम्बन्धी, नरक का, 'जायए नारय दुक्ख' (सुपा १६२) । २ पुं नरक में उत्पन्न प्राणी, नरक का जीव (भग) ।

णारसिह वि [नारसिंह] नरसिंह सम्बन्धी (उप ६४८ टी) ।

णाराय पु [नाराच] तौलने की छोटी तराजू, कांटा, 'नाराय निरक्खर लोहवत्त दोमुह य तुज्झ किं भणिमो । गुंजाए सम कणय तोलतो कह न लज्जे सि ?' (वज्ज १५८, १५९) ।

णाराय देखो णाराअ (हे १, ६७, उवा, सम १४६, अजि १४) । तुला, गुं ताजूडी (पुण्य-माला ४६, ८६) । 'वज्ज न [वज्ज] संहनन-विशेष (पउम ३, १०९) ।

णारायण पु [नारायण] १ विष्णु, श्रीकृष्ण (कुमा, स ६२२) । २ अर्ध-चक्रवर्ती राजा (पउम ५, १२२, ७३, २०) ।

णारायण पुं [नारायण] एक ऋषि (सूअ १, ३, ४, २) ।

णारायणी स्त्री [नारायणी] देवी-विशेष, गौरी, दुर्गा (गउड) ।

णारिं देखो णारी (कप्प, राज) । 'कंता स्त्री [कान्ता] नदी-विशेष (सम २७, ठा २, ३) ।

णारिएर पु [नारिकेल] १ नारियल का णारिएल पेड़ । २ न. नारियल या नरियर का फल (अभि १२७, पि १२८) । देखो णालिअर ।

णारिंग न [नारिङ्ग] नारंगी का फल, मीठा नीबू, कमला नीबू (कप्प) ।

णारी स्त्री [नारी] १ स्त्री, स्त्रीरत, जनाना, महिला (हेका २२८, प्रासू ६२, १५६) ।

२ नदी-विशेष (इक) । 'कतप्पवाय पुं [कान्ताप्रपात] द्रह-विशेष (ठा २, ३) । देखो णारिं ।

णारुट्ट पु [दे] कसार, गर्त्ताकार स्थान (पाअ) ।

णारोट्ट पुं [दे] १ विल, सॉप आदि का रहने का स्थान, विवर । २ कूसार, गर्त्ताकार स्थान (दे ४, २३) ।

णाल न [नाल] १ कमल-दण्ड (से १, २८) । २ गर्भ का आवरण (उप ६७४) ।

णालदइज्ज वि [नालन्दीय] १ नालन्दा-संबन्धी । न नालदा के समीप में प्रतिपादित अध्ययन-विशेष, 'सूत्रकृतांग' सूत्र का सातवाँ अध्ययन (सूअ २, ७) ।

णालदा स्त्री [नालन्दा] राजगृह नगर का एक मुहल्ला (कप्प, सूअ २, ७) ।

णालपिअ न [दे] आक्रन्दित, आक्रन्द-ध्वनि (दे ४, २४) ।

णालवि पुं [दे] कुन्तल, केश कलाप (दे ४, २४) ।

णालय न [नालक] द्यूत-विशेष (मोह ८६) ।

णाला स्त्री [नाडि] नाडी, नस, सिरा (से १, णालि २८, कुमा) ।

णालि स्त्री [नाल] परिमाण-विशेष, अजली (आवक ३५) ।

णालि वि [दे] तस्त, गिरा हुआ (पड्) ।

णालिअ वि [दे] मूढ, मूर्ख, अज्ञान (से ४, ४२२) ।

णालिअर देखो णारिएर (दे २, १०, पउम १, २०) । 'दीव पु [द्वीप] द्वीप-विशेष (कम्म १, १६) ।

णालिआ स्त्री [नालिका] १ नाल, डडी, णालिआ कमल की डडी (दस ५, २, १८) ।

२ परिमाण-विशेष, दंड, धनुष (अणु १५७) ।

३ अर्धं मुहूर्त का समय, 'दो नालिया मुहुत्तो' (तंडु ३२) । ४ नली, 'जह उ किर नालिगाए षणिय मिदुल्लयमोहभरियाए' (धर्मस ६८०) । 'खेड्ड न [खेल] द्यूत-विशेष (जं २ टी—पत्र १३६) ।

णालिआ स्त्री [नालिका] १ वल्ली-विशेष (दे २, ३) । २ घटिका, घड़ी, काल नापने का एक तरह का यन्त्र (पाअ, विसे ६२७) । ३ अपने शरीर में चार अंगुल लम्बी लाठी (ओष ३६) । ४ द्यूत-विशेष, एक तरह का

जुआ (ओष, भग ६, ७) । 'खेड्डा स्त्री [क्रीडा] एक तरह की द्यूत-क्रीडा (ओष) । णालिएर देखो णारिएर (खाया १, ६) ।

णालिएरी स्त्री [नारिकेली] नरियर का गच्छ (गउड, पि १२६) ।

णाली स्त्री [नाली] १ वनस्पति-विशेष, एक लता (पण १) । २ घटिका, घड़ी (जीव ३) ।

णाली स्त्री [नाली] १ द्यूत-विशेष (दस ३, ४) । २ तीन हाथ और सोलह अंगुल लंबी लट्टी या लग्गी (वसि) (पव ८१) ।

णाली स्त्री [नाडी] नाडी नस, सिरा (विपा १, १) ।

णालीय वि [नालीय] नाल-संबन्धी (आचा) ।

णालीया देखो णालिआ (सूअ १, ६, १८) ।

णावइ (अप) देखो इव (हे ४, ४४४, भवि) ।

णावण न [दे] दान, वितरण (पणह १, ३—पत्र ५३) ।

णावा स्त्री [दे] प्रसूति, अजली, परिमाण-विशेष (पव १०६ टी) ।

णावा स्त्री [नौ] नौका, जहाज, नाव (भग, उवा) । 'वाणिअ पुं [वाणिज] समुद्र मार्ग से व्यापार करनेवाला वणिक् (खाया १, ८) ।

णावापूरय पु [दे] चुलुक, चुल्लू; 'तिहि णावापूरएहि आयामइ' (वृह १) ।

णाविअ पु [नापित] नाई, हजाम (हे १, २३०, कुमा, पड्) । 'माला स्त्री [शाला] नाइयो का अट्ठा (आ १२) ।

णाविअ पु [नाचिक] जहाज चलानेवाला, नौका या नाव हांकनेवाला, मल्लाह, केवट, मॉंभी (खाया १, ६, सुर १३, ३१) ।

णास देखो णरस । णासइ (पड्, महा) । वक्र. णासत (सुर १, २०२, २, २५) । क. णासियव्व (सुर ७, १२६) ।

णास सक [नाशय्] नाश करना । णासइ (हे ४, ३१) । णासइ (महा, उव) ।

णास पुं [नाश] नाश, ध्वंस (प्रासू १५३, पाअ) । 'यर वि [कर] नाश-कारक (सुर १२, १६४) ।

णास पुं [न्यास] १ स्थापन (गा ६६, उप ३०२) । २ घरोहर या अमानत, रखने योग्य धन आदि (उप ७६८ टी, धर्म २) ।

णगअ वि [दे] रुद्ध, रोका हुआ (पङ्) ।
णगर पुं [दे] लंगर, जहाज को जल-स्थान में
थामने के लिए पानी में जो रस्सी आदि डाली
जाती है वह (उप ७२८ टी, सुर १३, १६३,
स २०२) ।

णगर } न [लाङ्गल] हल, जिसमें खेत जोता
णंगल } और बोया जाता है (पठम ७२, ७३,
पएह १, ४, पात्र) ।

णगल पुन [दे] चन्चु, चांच, चोच, 'जडाउणो
रुटो' । नहणगलेसु पहरइ, दसाणणं विउल-
वच्छयले (पठम ४४, ४०) ।

णगल पुन [लाङ्गल] एक देव-विमान (देवेन्द्र
१३३) ।

णगलि पु [लाङ्गलिन्] वलभद्र, हली (कुमा) ।
णगलिय पुं [लाङ्गलिक्र] हल के आकारवाले
शस्त्र-विशेष को धारण करने वाला सुभट
(कप्प, श्रौप) ।

णगूल न [लाङ्गूल] पुच्छ, पूँछ (ठा ४, २,
हे १, २५६) ।

णगूलि वि [लाङ्गूलिन्] १ लम्बी पूँछवाला
२ पु वानर, वन्दर (कुमा) ।

णगूलि देखो णगोलि (पव २६२) ।

णगोल देखो णगूल (गाया १, ३, पि १२७) ।

णंगोलि } पुं [लाङ्गूलिन्, °क] १ अन्त-
णंगोलिय } द्वीप-विशेष । २ उसका निवासी
मनुष्य (पि १२७, ठा ४, २) ।

णंतग न [दे] वज्र, कपडा (कस, श्राव ५) ।

णंद अक [नन्द] १ खुश होना, आनन्दित
होना । २ समृद्ध होना । एणदइ, एणदए (पङ्) ।
कवक णंदिज्जमाण (श्रौप) । क. णदि-
अव्व, णदेअव्व (पङ्) ।

णद पुं [नन्द] १ स्वनाम-प्रसिद्ध पाटलिपुत्र
नगर का एक राजा (मुद्रा १६८, एदि) ।
२ भरत-क्षेत्र के भावी प्रथम वासुदेव (सम
१५४) । ३ भरत-क्षेत्र में होने वाले नववें
तीर्थंकर का पूर्व-भवीय नाम (सम १५४) ।
४ स्वनाम-प्रसिद्ध एक जैन मुनि (पठम २०,
२०) । ५ स्वनाम-ख्यात एक श्रेष्ठी (सुपा
६३८) । ६ न. देव-विमान विशेष (सम २६) ।
७ लोहे का एक प्रकार का वृत्त आसन (गाया
१, १—पत्र ४३ टी) । ८ वि. समृद्ध होने

वाला (श्रौप) । °कंत न [°कान्त] देव-
विमान-विशेष (सम २६) । °कूड न [°कूट]
एक देव-विमान (सम २६) । °ज्मय न
[°ज्वज] एक देव-विमान (सम २६) ।
°प्पभ न [°प्रभ] देव-विमान-विशेष (सम
२६) । °मई स्त्री [°मती] एक अन्तकृत
साव्वी (अन्त २५, राज) । °मित्त पु [°मित्र]
भरतक्षेत्र में होने वाला द्वितीय वासुदेव (सम
१५४) । °लेस न [°लेश्य] एक देव-विमान
(सम २६) । °वई स्त्री [°वती] १ सातवें
वासुदेव की माता (पठम २०, १८६) । २
रतिकर पर्वत पर स्थित एक देव नगरी
(दीव) । °वण न [°वर्ण] देव-विमान-
विशेष (सम २६) । °सिंग न [°शृङ्ग] एक
देव-विमान (सम २६) । °सिद्ध न [°सृष्ट]
देव-विमान-विशेष (सम २६) । °सिरी स्त्री
[°श्री] स्वनाम-ख्यात एक श्रेष्ठि-कन्या (ती
३७) । °सेणिया स्त्री [°सेनिका] एक जैन
साव्वी (अन्त २५) ।

णद पुं [नन्द] गोप-विशेष, श्रीकृष्ण का पालक
गोपाल (वज्जा १२२) ।

णद पुस्त्री [नन्दा] पक्ष की पहली (प्रतिपदा),
पष्ठी और एकादशी तिथि (सुख १०, १५) ।

णद न [दे] १ ऊख पीलने या धेरने का
काण्ड । २ कुण्डा, पात्र-विशेष (दे ४, ४५) ।

णदग पुं [नन्दक] वासुदेव का खड्ग (पएह
१, ४) ।

णदण पुं [नन्दन] १ पुत्र, लडका (गा
६०२) । २ राम का एक स्वनाम-ख्यात सुभट
(पठम ६७, १०) । ३ स्वनाम-ख्यात एक
वलदेव (सम ६३) । ४ भरतक्षेत्र का भावी
सातवां वासुदेव (सम १५४) । ५ स्वनाम-
प्रसिद्ध एक श्रेष्ठी (उप ५५०) । ६ श्रेष्ठिक
राजा का एक पुत्र (निर १, २) । ७ मेरु पर्वत
पर स्थित एक प्रसिद्ध वन (ठा २, ३, इक) ।
८ एक चैत्य (भग ३, १) । ९ वृद्धि (पएह
१, ४) । १० नगर विशेष (उप ७२८ टी) ।
°कर वि [°कर] वृद्धि-कारक । °कूड न
[°कूट] नन्दन वन का शिखर (राज) । °भद
पुं [°भद्र] एक जैन मुनि (कप्प) । °वण न
[°वन] १ स्वनाम-ख्यात एक वन जो मेरु

पर्वत पर स्थित है (सम ६२) । २ उद्यान-
विशेष (निर १, ५) ।

णदण पुं [दे] भृत्य, नौकर, दास (दे ४,
१६) ।

णदण पुन [नन्दन] एक देव-विमान (देवेन्द्र
१४३) । २ न सतोष (एदि ४५) ।

णदणा स्त्री [नन्दना] लडकी, पुत्री (पात्र) ।
णदणी स्त्री [नन्दनी] पुत्री, लडकी (सिरि
१४०) ।

णदतणय पुं [नन्दतनय] श्रीकृष्ण (प्राक्
२७) ।

णदमाणग पु [नन्दमानक] पक्षी की एक
जाति (पएह १, १) ।

णदयावत्त } पुन [नन्दावर्त्त] १ एक देव-
णदावत्त } विमान (देवेन्द्र १३३) । २ पु
चतुरिन्द्रिय जीव की एक जाति (उत्त ३६,
१४८) । ३ न लगातार एककीस दिनों का
उपवास (सवोध ५८) ।

णदा स्त्री [नन्दा] १ भगवान् ऋषभदेव की
एक पत्नी (पठम ३, ११६) । २ राजा श्रेष्ठिक
की एक पत्नी और अश्वकुमार की माता
(गाया १, १) । ३ भगवान् श्री शीतलनाथ की
माता (सम १५१) । ४ भगवान् महावीर के
अचलभ्रातृ नामक गणधर की माता (श्रावम) ।
५ रावण की एक पत्नी (पठम ७४, १०) ।
६ पश्चिम रुचक-पर्वत पर रहनेवाली एक
दिवकुमारी देवी (ठा ८) । ७ ईशानेन्द्र की
एक अग्रमहिषी की राजधानी (ठा ४, २) ।
८ स्वनाम-ख्यात एक पुष्करिणी (ठा ४, ३) ।
९ ज्योतिष-शास्त्र में प्रसिद्ध तिथि विशेष—
प्रतिपदा, पष्ठी और एकादशी तिथि (चद १०) ।

णदा स्त्री [दे] गो, गैया (दे ४ १८) ।

णदावत्त पुं [नन्दावर्त्त] १ एक प्रकार का
स्वस्तिक (सुपा ५२) । २ क्षुद्र जन्तु की
एक जाति (जीव १) । ३ न देव-विमान-
विशेष (सम २६) ।

णंदि पुस्त्री [नन्दि] १ चारह प्रकार के वायों
का एक हो साथ आवाज (पएह २, ५,
एदि) । २ प्रमोद, हर्ष (ठा ५, २) । ३
मतिज्ञान आदि पाँचों ज्ञान (एदि) । ४
वाञ्छित अर्थ की प्राप्ति । ५ मंगल (वृह १,
अजि ३८) । ६ समृद्धि (अणु) । ७ जैन

णिअस सक [नि + वस्] पहनना। एण्य-
सइ (महा)। सक णियसित्ता (जीव ३,
पि ७४)। प्रयो. एण्यसावेइ (वि ७४)।

णिअसण न [दे निवसन्] वन्न, कपडा
(दे ४, ३८, गा ३५१, पाअ, गउड, परह
१, ३, सुपा १५१, हेका ३११)।

णअंसणि ओ [निवसन्ती] वन्न, कपडा
(पव ६२)।

णिअक सक [दृश्] देखना। एणअकइ
(प्राप्र)।

णिअकल वि [दे] वर्तुल, गोलाकार पदार्थ
(दे ४, ३६, पाअ)।

णिअग वि [निजक] आत्मीय, स्वकीय (उवा)।

णिअच्छ सक [दृश्] देखना। एणअच्छइ
(हे ४, १८१)। वक्क. णिअच्छन, णिअ-
च्छमाग (गा २३८, गउड, गा ५००)।
सक णिअच्छऊण, णिअच्छअ (सुर
१, १५७, कुमा)। क णिअच्छयव्व
(गउड)।

णिअच्छ सक [नि + यम्] १ नियमन
करना, नियन्त्रण करना। २ अवश्य प्राप्त
करना। ३ जोडना। सक णिअच्छइत्ता
(सूअ १, १, १, २)।

णिअच्छ अक [नि + गम्] १ सगत होना,
युक्त होना। २ सक अवश्य प्राप्त करना।
नियच्छइ (सूअ १, १, १, १०, १, १, २,
१७, १, १, २, १८)।

णिअच्छिअ वि [दृष्ट] देखा हुआ (पाअ)।

णिअट्ट अक [नि + वृत्] निवृत्त होना,
पीछे हटना, रुकना। एणअट्टइ (सण)। वक्क.
णियट्टमाण (आचा)।

णिअट्ट सक [निर् + वृत्] बनाना,
रचना, निर्माण करना (औप)।

णिअट्ट सक [नि + अर्द्ध] अनुसरण करना
(औप)।

णिअट्ट पुं [निवर्त्त] व्यावर्त्तन, निवृत्ति, 'अणि-
यट्टगामीण' (आचा)।

णिअट्ट वि [निवृत्त] व्यावृत्त, पीछे हटा हुआ
(धर्म २)।

णिअट्टि वि [निवर्त्तिन्] निवृत्त होनेवाला
(धर्मस ७६४)।

णिअट्टि ओ [निवृत्ति] १ निवर्त्तन, पीछे
हटना (आच १)। २ अव्यवसाय-विशेष
(सम २६)। ३ मोह-रहित अवस्था (सूअ
१, ११)। ४ बायर न [बादर] १ गुण-
स्थानक-विशेष (सम २६)। २ पु गुण-
स्थानक-विशेष में वर्त्तमान जीव (आव ४)।
णिअट्टिय वि [निवर्त्तिन्] व्यावर्त्तित, पीछे
हटाया हुआ (औप)।

णिअट्टिय वि [निर्वर्त्तित] रचित, निर्मित,
बनाया हुआ (औप)।

णिअट्टिय वि [न्यर्त्तित] अनुगत, अनुसृत
(औप)।

णिअड न [निकट] १ निकट, समीप, नज-
दीक, पास (गा ४०२, पाअ, सुपा ३५२)।
२ वि पास का, समीप का (पाअ)।

णिअडि वि [निकृतिन्] मायावी, कपटी
(दम ६, २३)।

णिअडि ओ [निकृति] की हुई ठगाई को
ढकना—छिपाना (राय ११४)।

णिअडि ओ [दे निकृति] माया, कपट
(दे ४, २६, परह १, २, सम ५१, भग
१२, ५, सूअ २, २, एणथा १, १८,
आव ५)।

णिअडिअ वि [निगडित] नियन्त्रित, जकडा
हुआ (गा ५५६, उप पृ ५२, सुपा ६३)।

णिअडिअ वि [निकटिक] समीप-वर्त्ती,
पार्श्व में स्थित (कप्पु)।

णिअडिअ वि [निकृतिमत्] कपटी, मायावी
(ठा ४, ८, औप, भग ८, ६)।

णिअड्ड सक [नि + कृप्] खीचना।
सक नियडिऊण (सम्मत् २२७)।

णिअण वि [नग्न] नगा, वन्न-रहित (पव
२७१)।

णिअत्त वि [निकृत्त] काटा हुआ, छिन्न
(भग ६, ३३)।

णिअत्त वि [नित्य] शाश्वत, अविनश्वर,
'सुख जमनियत्त' (तदु ३३, सूअ १, १,
१, १६)।

णिअत्त देखो णिअट्ट = नि + वृत् । एणअत्तइ
(महा, पि २८६)। वक्क णिअत्तन्त, णिअत्त-
माण (गा ७६, ५३७, से ५, ६७, नाट)।
प्रयो एणअत्तावेहि (पि २८६)।

णिअत्त देखो णिअट्ट = निवृत्त (पउम २२,
६२, गा ६५८, सुपा ३१७)।

णिअत्तण न [निवर्त्तन] १ भूमि का एक
नाप (उवा)। २ निवृत्ति, व्यावर्त्तन (आव ४)।

णिअत्तणिय वि [निवर्त्तनिक] निवर्त्तन
परिमाणवाला (भग ३, १)।

णिअत्ति देखो णिअट्टि (उत्त ३१)।

णिअत्थ वि [दे] १ परिहित, पहना हुआ
(दे ४, ३३, आवम, भवि)। २ परिष्ठापित,
जिसको वन्न आदि पहनाया गया हो वह,
'एण्यत्था तो गणियाए' (विसे २६०७)।

णिअद् सक [नि + गद्] कहना, बोलना।
एणअददि (शौ) (नाट—चैत् ४५)। वक्क
णिअंदत्त (नाट)।

णिअद्दिय देखो णिअट्टिय = न्यर्त्तित (राज)।
णिअद्दण न [दे] परिधान, पहनने का वन्न
(पड्)।

णिअम सक [नि + यमय्] नियन्त्रित
करना, नियम में रखना। संक्क. णिअमेऊण
(पि ५८६)।

णिअम सक [नि + यमय्] १ रोकना।
२ वचन से कराना। ३ शरीर से कराना।
निअमे (आचा २, १३, १)।

णिअम पु [नियम] १ निश्चय (जी १४)।
२ ली हुई प्रतिज्ञा, व्रत, 'परिवाविज्जइ
एणअमा एणअमसमत्ती तुमे मज्झ' (उप ७२८
टी)। ३ प्रायोपवेशन, सकल्प-पूर्वक अनशन-
मरण के लिए उद्यम (से ५, २)। ४ सा अ
[सात्] नियम से (औप)। ५ सो अ
[शस्] निश्चय से (आ १४)।

णिअमण न [नियमन] नियन्त्रण सयमन
(विसे १२५८)।

णिअमिय वि [नियमित] नियम में रखा
हुआ, नियन्त्रित (से ४, ३७)।

णिअय न [दे] १ रत्त, मैथुन। २ शयनीय,
शय्या। ३ घट, घडा, कलश (दे ४, ४८)।
४ वि शाश्वत, नित्य (दे ४, ४८, पाअ,
सूअ १, ८ राय)।

णिअय वि [निजक] निजका, स्वकीय,
आत्मीय, अपना (पाअ)।

णिअय वि [नियत] नियम-बद्ध, नियमानुसारी
(उवा)।

णक्खि वि [नखिन्] सुन्दर नखवाला (बृह १) ।

णख देखो णक्ख (कुप्र ५८) ।

णग देखो णय = नग (पण्ह १, ४, उप ३५६ टी, सुर ३, ३४) । °राय पुं [°राज] मेरु पर्वत (ठा ६) । [°वर] पु [°वर] श्रेष्ठ पर्वत (साया १, १) । °वरिण पु [°वरेन्द्र] मेरु-पर्वत (पउम ३, ७६) ।

णगर न [नगर, नगर] शहर, पुर (बृह १, कप्प, मुर ३, २०) °गुत्तिय, °गोत्तिय पु [°गुप्तिर] नगर रक्षक, कोटपाल, कोतवाल, दरोगा (साया १, १८, श्रौप, पण्ह १, २, साया १, २) । °घाय पु [°घात] शहर में लूट-पाट (साया १, १८) । °णिद्धमण न [°निर्धमन] नगर का पानी जाने का रास्ता, मोरी, खाल (साया १, २) । °रक्खिय पु [°रक्षिक] देखो °गुत्तिय (निचू ४) । °वास पु [°वाम] राजधानी, पाटनगर (ज १—पत्र ७४) ।

णगरी देखो णयरी (राज) ।

णगाणिआ लो [नगाणिका] छन्द-विशेष (पिग) ।

णगिठ पु [नगेन्द्र] १ श्रेष्ठ पर्वत (पउम ६७, २७) । २ मेरु पर्वत (सुप्र १, ६) ।

णगिण वि [नग्न] नगा, वस्त्र-रहित (आचा, उप ४ ३६३) ।

णग देखो णग (तदु ४५) ।

णग वि [नग्न] नगा, वस्त्र-रहित (प्राप्र, दे ४, २८) । °इ पु [°जित्] गन्धार देश का एक स्वनाम-ख्यात राजा (श्रौप, महा) ।

णगगठ वि [दे] निर्गत, बाहर निकला हुआ (पड्—पुष्ट १८१) ।

णगगोह पुं [न्यग्रोध] वृक्ष-विशेष, वड का पेड़ (पाप्र, सुर १, २०५) । °परिमंडल न [°परिमण्डल] सत्यान-विशेष, शरीर का आकार-विशेष (ठा ६) ।

णघुस पु [नघुप] स्वनाम-ख्यात एक राजा (पउम २२, ५५) ।

णचिरा देखो अइरा = अचिरात् (पि ३६५) ।

णच्च अक [नृत्] नाचना, नृत्य करना । एण्ड (पड्) वक्तृ णच्चंत, णच्चमाण (सुर

२, ७५, ३, ७७) । हेक. णच्चिउ (गा ३६१) कृ णच्चियव्व (पउम ८०, ३२) ।

प्रयो कवक्क णच्चविज्जंत (स २६) ।

णच्च न [ज्ञत्य] जानकारी, परिडताई (कुमा) ।

णच्च न [नृत्य] नाच, नृत्य (दे ५, ८) ।

णच्चग वि [नर्तक] १ नाचनेवाला । पु नट, नचवैया (वव ६) ।

णच्चण न [नर्तन] नाच, नृत्य (कप्पू) ।

णच्चणी लो [नर्तनी] नाचनेवाली लो (कुमा, कप्पू, सुपा १६६) ।

णच्चा } देखो णा = ज्ञा ।
णच्चाण }

णच्चाविअ वि [नर्त्तित] नचाया हुआ (शोध २६५, ठा ६) ।

णच्चासन्न न [नात्यासन्न] अति समीप में नहीं (साया १, १) ।

णच्चिर वि [नर्त्तितृ] नचवैया, नाचनेवाला, नर्तन-शील (गा ४२०, सुपा ५४, कुमा) ।

णच्चिर वि [दे] रमण-शील (दे ४, १८) ।

णच्चुण्ह वि [नात्युण] जो अति गरम न हो (ठा ५, ३) ।

णज्ज सक [ज्ञा] जानना । एण्ड (प्राप्र) ।

णज्ज वि [न्याय्य] न्याय-संगत (प्राकृ १६) ।

णज्जत } देखो णा = ज्ञा ।
णज्जमाण }

णज्जर वि [दे] मलिन, मैला (दे ४, १६) ।

णज्जर वि [दे] विमल, निर्मल (दे ४, १६) ।

णट्ठ अक [नट्] १ नाचना । २ सक. हिंसा करना । एण्ड (हे ४, २३०) ।

णट्ठ पु [नट] नर्तको की एक जाति, 'एणच्चति एण्डा पभणति विष्णा' (रभा, सण, कप्प) ।

णट्ठ न [नाट्य] नृत्य, गीत और वाद्य, नट-कर्म (साया १, ३, सम ८३) । °पाल पुं [°पाल] नाट्य-स्वामी, सूत्रधार (आचू १) । °मालय पु [°मालक] देव विशेष, खण्डप्रपात गुहा का अधिष्ठाया देव (ठा २ ३) । °अरिअ पुं [°आये] सूत्रधार (मा ४) ।

णट्ठ न [नृत्य] नाच, नृत्य (से १, ८, कप्पू) ।

णट्ठअ न [नाट्यक] देखो णट्ठ = नाट्य (मा ४) ।

णट्ठअ } वि [नर्त्तक] नाचनेवाला, नचवैया
णट्ठग } (प्राप्र, साया १, १, श्रौप) । लो.
°ठे (प्राप्र, हे २, ३०, कुमा) ।

णट्ठार पु [नाट्यकार] नाट्य करनेवाला (सण) ।

णट्ठायअ वि [नर्त्तक] नचावेवाला (कप्पू) ।

णट्ठिया लो [नर्त्तिका] नटी, नर्तकी, नाचने-वाली लो (महा) ।

णट्ठुमत्त पुं [नर्त्तुमत्त] स्वनाम-ख्यात एक विद्याधर (महा) ।

णट्ठ पु [नट] एक नरक स्थान (देवेन्द्र २८) । २ न पलायन (कुप्र ३७) ।

णट्ठ वि [नट] १ नट, अपगत, नाश-प्राप्त (सुप्र १, ३, ३, प्रासू ८६) । २ पुन अहो-रात्र का सतरहवां मुहूर्त (राज) । °सुइअ वि [°श्रुतिक] १ जो बचिर—बहिरा हुआ हो (साया १, १—पत्र ६३) । २ शास्त्र के वास्तविक ज्ञान से रहित (राज) ।

णट्ठव वि [नटवत्] १ नाश प्राप्त । २ न, अहोरात्र का एक मुहूर्त (राज) ।

णड अक [गुप्] १ व्याकुल होना । २ सक खिन्न करना । एण्ड, एण्डति (हे ४, १५०, कुमा) । कर्म एण्डिज्ज (गा ७७) । कवक्क णडिज्जत (सुपा ३३८) ।

णड देखो णट्ठ = नट । एण्ड (प्राकृ ६६) ।

णड देखो णल = नड (हे २, १०२) ।

णड पु [नट] १ नर्तको की एक जाति, नट (हे १, १६५, प्राप्र) । °खाइया लो [°खाडिता] दीक्षा-विशेष, नट की तरह कृत्रिम माधुपन (ठा ४, ४) ।

णडाल न [ललाट] भाल, कपाल (हे १, ४७, २५७, गउड) ।

णडालिआ लो [ललाटिका] ललाट-शोभा, कपाल में चन्दन आदि का विलेपन (कुमा) ।

णडाविअ वि [गोपित] १ व्याकुल किया हुआ । खिन्न किया हुआ (सुपा ३२५) ।

णडिअ वि [गुपिन] व्याकुल (से १०, ७०, सण) ।

णडिअ वि [दे] १ वञ्चित, विप्रतारित (दे ४, १६) । २ खेदित, खिन्न किया हुआ (दे ४, १६, पाप्र, साया १, ६) ।

णिउत्त वि [निवृत्त] विरत, उपरत, विमुख, विरक्त (प्राक् ङ)।

णिउत्त वि [निर्वृत्त] निष्पन्न, सिद्ध (उत्तर १०४)।

णिउत्तव्य देखो णिउज = नि + युज्।

णिउत्ति स्त्री [निवृत्ति] विराम (प्राक् ङ)।

णिउद्ध न [नियुद्ध] बाहु युद्ध, कुस्ती (उप २६२)।

णिउर पु [निकुर] वृक्ष-विशेष (णाय १, ६ पत्र १६०)।

णिउर न [नूपुर] स्त्री के पाव का एक आभरण, पंजनी, पायल (हे १, १२३, कुमा)।

णिउर वि [दे] १ छिन्न, काटा हुआ। २ जीर्ण, पुराना (पङ्)।

णिउरव न [निकुरम्ब] समूह, जत्या (पाथ, सुर १, ६१, गा ४६५, सुपा ४५४)।

णिउरव न [निकुरुम्ब] समूह, जत्या (स ४३७, गा ४६५ अ, पि १७७)।

णिउल पु [दे] गड, गठरी, 'एवं बहु भण्ड-ज्जण समप्पिओ दविणनिउलोत्ति' (महा)।

णिऊढ वि [निगूढ] गुप्त, प्रच्छन्न, छिपा हुआ (अञ्चु ४५)।

णिएअ वि [नियत] नियम-युक्त, 'अणिए-अचारी' (सूत्र १, ६, ६)।

णिएल्ल देखो णिअल्ल = निज (आवम)।

णिओअ सक [नि + योजय्] किसी कार्य में लगाना। णिओएदि (शौ) (नाट—विक्र ५)।

णिओअ देखो णिओग (से ङ, २६, अमि २७, सण, से ३४८)। १० आज्ञा, आदेश (स २१४)।

णिओइअ वि [नियोजित] नियुक्त किया हुआ, किसी कार्य में लगाया हुआ (स ४४२, अमि ६६)।

णिओइअ वि [नैयोगिक] नियोग-सम्बन्धी (प्राक् ङ)।

णिओग पु [नियोग] मोक्ष, मुक्ति (सूत्र १, १, १६, ५)।

णिओग पु [नियोग] १ नियम, आवश्यक कर्तव्य (विसे १८७६, पचव ४)। २ सम्बन्ध, नियोजन (वृह १)। ३ अनुयोग, सूत्र की

व्याख्या (विसे) ४ व्यापार, कार्य (वव २)।

५ अधिकार-प्रेरण (महा)। ६ राजा, नृप,

आज्ञा-विधाता (जीत)। ७ गाँव, ग्राम, ङ

क्षेत्र, भूमि (वृह १)। ८ समय, त्याग (सूत्र

१, १६)। देखो णिओअ। °पुर न [°पुर]

१ राजधानी। २ देश, राष्ट्र। ३ राज्य

(जीत)।

णिओगि वि [नियोगिन्] नियोग विशिष्ट,

नियुक्त आज्ञाप्राप्त, अधिकारी (मुपा ३७१)।

णिओजिय देखो णिओइअ (आवम)।

णित } देखो णी = गम्।

णितूण }

णिद सक [निन्द] निन्दा करना, बुराई करना,

जुगुप्सा करना। णिदामि (पङ्)। वक्तु णिदत

(आ ३६)। कवक्क णिदिज्जत (सुपा ३६३)।

संक्क णिदिता, णिदिअ (आचा २, ३, १,

१, आ ४०)। हेक्क णिदिड, णिदिताए

(महा, ठा २, १)। क्क णिदियव्व, णिद-

णिज्ज (पण्ह २, १, उप १०३१ टी, णाय १, ३)।

णिद वि [निन्द्य] निन्दा-योग्य, निन्दनीय

(आच १)।

णिद (अप) स्त्री [निद्रा] नीद निद्रा (भवि)।

णिदण न [निन्दन] निन्दा, घृणा, जुगुप्सा

(उप ४४६, ७२८ टी)।

णिदणया देखो णिदणा (उत्त २६, १)।

णिदणा स्त्री [निन्दना] निन्दा, जुगुप्सा

(औप, ओष ७६१, पण्ह २, १)।

णिदय वि [निन्दक] निन्दा करनेवाला (पउम

६०, २१)।

णिदा स्त्री [निन्दा] घृणा, जुगुप्सा (आव ४)।

णिदिअ वि [निन्दित] जिसकी निन्दा की

गई हो वह, बुरा (गा २६७, प्रासू १५८)।

णिदिणी स्त्री [दे] कुत्सित वृणो का उन्मूलन

(दे ४, ३५)।

णिदु स्त्री [निन्दु] मृन-वत्सा स्त्री, जिसके

वच्चे जीवित न रहते हो ऐसी स्त्री (अंत ७,

आ १६)।

णिव पु [निम्ब] नीम का पेड़ (हे १, २३०,

प्रासू २६)।

णिवोलिया स्त्री [निम्बगुलिका] नीम का

फल (णाय १, १६)।

णिकर पु [निकर] समूह, जत्या, राशि, ढेर, (कप्पु)।

णिकरण न [निकरण] १ निश्चय, निर्णय।

२ निकार, दुःख-उत्पादन (आचा)।

णिकरिय वि [निकरित] सारीकृत, सर्वथा

सशोधित (औप)।

णिकस देखो णिहस (अणु २१२)।

णिकडय वि [निकडित] १ व्यवस्थापित,

नियमित (एदि)। २ अत्यन्त निविड रूप से

हुआ (कर्म) (उव, सुपा ५७६)। न कर्मों

का निविड रूप से बन्धन (ठा ४, २)।

णिकाम सक [नि + कामय्] अभिलाष

करना। णिकामएजा (सूत्र १, १०, ११)।

वक्तु णिकामयत (सूत्र १, १०, ११)।

णिकाम न [निकाम] हमेशा परिमाण से

ज्यादा खाया जाता भोजन (पिड ६४५)।

णिकाम न [निकाम] १ निश्चय, निर्णय।

२ अत्यन्त, अतिशय (सूत्र १, १०)।

णिकाममीण वि [निकाममीण] अत्यन्त

प्रार्थी (सूत्र १, १०, ङ)।

णिकाय सक [नि + काचय्] १ नियमन

करना, नियन्त्रण करना। २ निविड रूप से

बाँधना। ३ निमन्त्रण देना। णिकाइति

(भग)। भूका णिकाइसु (भग; सूत्र २, १)।

भवि णिकाइस्सति (भग)। संक्क णिकाय

(आचा)।

णिकाय पु [निकाय] १ समूह, जत्या, ग्रह,

वर्ग, राशि (ओष ४०७, विसे ६००, ङ

२८)। २ मोक्ष, मुक्ति (आचा)। ३

आवश्यक, अवश्य करने योग्य अनुष्ठान-विशेष

(अणु)। °काय पु [°काय] जीव राशि,

छत्रों प्रकार के जीवों का समूह (दन ४)।

णिकाय पु [निकाच] निमन्त्रण, न्यौता

(सम २१)।

णिकाय देखो णिकाइय, जेण खमासहिणए

कएणा कम्माणवि निकायाण' (सिरि १२६२)।

णिकायण न [निकाचन] निमन्त्रण (पिड

४७५)।

णिकायणा स्त्री [निकाचना] १ कारण-

विशेष, जिससे कर्मों का निविड बन्ध होता

है (विसे २५१५ टी, भग)। २ निविड

बन्धन। ३ दापन, दिलाना (राज)।

णमिआ स्त्री [नमिता] १ स्वनाम-ख्यात एक स्त्री । २ 'ज्ञाताधर्मकथासूत्र' का एक अव्ययन (णाय २) ।

णमिर वि [नम्र] नमन करनेवाला (कुमा, सुपा २७, सण) ।

णमुइ पु [नमुचि] स्वनाम-ख्यात एक मन्त्री (महा) ।

णमुदय पु [नमुदय] आजीविक मत का एक उपासक (भग ७, १०) ।

णमेरु पुं [नमेरु] वृक्ष विशेष (सुर ७, १६, स ६३३) ।

णमो अ [नमस्] नमस्कार, नमन (भग, कुमा) ।

णमोक्कार पुं [नमस्कार] १ नमन, प्रणाम (हे १, ६२, २, ४) । २ जैन-शास्त्र में प्रसिद्ध एक सूत्र—मन्त्र-विशेष (विसे २८०५) । 'सहिय न [सहित] प्रत्याख्यान-विशेष, व्रत-विशेष (पडि) ।

णमोयार देखो णमोक्कार (चड) ।

णम्म पुं न [नर्मन्] १ हाँसी, उपहास । २ क्रीडा, केलि (हे १, ३२, आ १४, दे २, ६४, पात्र) ।

णम्मया स्त्री [नर्मदा] १ स्वनाम प्रसिद्ध नदी (सुपा ३८०) । २ स्वनाम-ख्यात एक राज-पत्नी (स ५) ।

णय देखो णद = नद, 'विस्सरं नयई नद' (सम ५०) ।

णय पु [नग] १ पहाड़, पर्वत (उप पु २५६, सुपा ३४८) । २ वृक्ष, पेड़ (हे १, १७७) । देखो णग ।

णय अ [नच] नही (उप ७६८ टी) ।

णय [नत] १ नमा हुआ, झुका हुआ, प्रणत, नम्र (णाय १, १) । २ जिसको नमस्कार किया गया हो वह, 'नीसेसवियडपडिवक्खनयक्कमो विक्कमो राया' (सुपा ५६६) । ३ न देवविमान-विशेष (सम ३७) । 'सच्च पु [सत्य] श्रीकृष्ण, नारायण (अच्छु ७) ।

णय पुं [नय] १ न्याय, नीति (विसे ३३६५, सुपा ३४८, स ५०१) । २ युक्ति (उप ७६८) । ३ प्रकार, रीति, 'जलणा वि घेप्पई पवणा भ्रूयणो य केणइ नएण' (स ४५४) । ४ वस्तु

के अनेक धर्मों में किसी एक को मुख्य रूप से स्वीकार कर अन्य धर्मों की उपेक्षा करनेवाला मत, एकाश-ग्राहक बोध (सम्म २१, विसे ६१४, ठा ३, ३) । ५ विधि (विसे ३३६५) । 'चद पुं [चन्द्र] स्वनाम-ख्यात एक जैन ग्रन्थकार (रंभा) । 'त्थि वि [त्थिन्] न्याय चाहनेवाला (आ १४) । 'व, 'वत वि [वत्] नीतिवाला, न्याय-परायण (सम ५०, सुपा ५४२) । 'विजय पुं [विजय] विक्रम की सतरहवीं शताब्दी के एक जैन मुनि, जो सुप्रसिद्ध विद्वान् श्री यशोविजयजी के गुरु थे (उवर २०२) ।

णयचक्र न [नयचक्र] एक प्राचीन जैन प्रमाण-ग्रन्थ (सम्मत् ११७) ।

णयण न [नयन] १ ले जाना, प्रापण (उप १३४) । २ जानना, ज्ञान । ३ निश्चय (विसे ६१४) । ४ वि ले जानेवाला, 'वयणाइ सुपहनयणाई' (सुपा ३७७) । ५ पुन, आँख, नेत्र, लोचन (हे १, ३३, पात्र) । 'जल न [जल] अश्रु, आँसू (पात्र) ।

णयय पु [दे नवत] ऊन का बना हुआ आस्तरण-विशेष (णाय १, १—पत्र १३) ।

णयर देखो णगर (हे १, १७७, सुर ३, २० औप, भग) ।

णयरगणा स्त्री [नगराङ्गना] वेश्या, गणिका (आ २७) ।

णयरी स्त्री [नगरी] शहर, पुरी (उपा, पउम ३६ १००) ।

णर पुं [नर] १ मनुष्य, मानुष, पुरुष (हे १, २२६, सूअ १, १ ३) । २ अर्जुन, मध्यम पाण्डव (कुमा) । 'उसभ पुं [वृषभ] श्रेष्ठ मनुष्य, असीद्धत कार्य का निर्वाहक पुरुष (औप) । 'कनप्पवाय पु [कान्तप्रपात] हृद-विशेष (ठा २, ३) । 'कता स्त्री [कान्ता] नदी-विशेष (ठा २, ३, सम २७) । 'कता-कूड न [कान्ताकूट] रुक्मि पर्वत का एक शिखर (ठा ८) । 'दत्ता स्त्री [दत्ता] १ मुनि-सुव्रत भगवान् की शासनदेवी (राज) २ विद्यादेवी-विशेष (संति ५) । 'देव पु [देव] चक्रवर्ती राजा (ठा ५, १) 'नायग पु [नायक] राजा, नरपति (उप २११ टी) । 'नाह पु

[नाथ] राजा, भूपाल (सुपा ६, सुर १, ६१) । 'पहु पुं [प्रभु] राजा, नरेश (उप ७२८ टी, सुर २, ८४) । 'पौरुसि पुं [पौरुपिन्] राज-विशेष (उप ७२८ टी) । 'लोअ पुं [लोक] मनुष्य लोक (जी २२, सुपा ४१३) । 'वइ पुं [पति] नरेश, राजा (सुर १, १०४) । 'वर पुं [वर] १ राजा, नरेश (सुर १, १३१, १५, १४) । २ उत्तम पुरुष (उप ७२८ टी) । 'वरिद पुं [वरेन्द्र] राजा, भूमि-पति (सुपा ५६, सुर २, १७६) । 'वरोसर पु [वरेश्वर] श्रेष्ठ राजा (उत्त १८) । 'वसभ, 'वसह पु [वृषभ] १ देखो 'उसभ (पएह १, ४, सम १५३) । २ राजा, नृपति (पउम ३, १४) । ३ पु. हरिवंश का एक स्वनाम-प्रसिद्ध राजा (पउम २२, ६७) । 'वाल पुं [पाल] राजा, भूपाल (सुपा २७३) । 'वाहण पु [वाहन] स्वनाम-ख्यात एक राजा (आक १, सण) । 'वेय पु [वेद] पुरुष वेद, पुरुष को स्त्री के स्पर्श की अभिलाषा (कम्म ४) । 'मिच, 'सिह, 'सीह पुं [सिह] १ उत्तम पुरुष, श्रेष्ठ मनुष्य (सम १५३, पउम १००, १६) । २ अर्ध भाग में पुरुष का और अर्ध भाग में सिंह का आकारवाला, श्रीकृष्ण, नारायण (णाय १, १६) 'सुदर पु [सुन्दर] स्वनाम-ख्यात एक राजा (धम्म) । 'हिच पुं [विप] राजा, नरेश (गा ३६४, सुपा २५) ।

णरडदय पु [नरकन्दक] नरक-स्यान-विशेष (देवेन्द्र १) ।

णरकठ पुं [नरकठ] रत्न की एक जाति (राय ६७) ।

णरसिह पु [नरसिह] १ बलदेव, 'ततो लोयम्मि बलदेवो नरसिहो त्ति पसिद्धो' (कुप्र १०३) । २ एक राजकुमार (कुप्र १०६) ।

णरग पु [नरक] नारक जीवो का स्थान णरय पु (विपा १, १, पउम १४, १६, आ ३, प्राप् २६, उव) । 'वाल, 'वाल्य पुं [पाल, 'क] परमाधामिक देव, जो नरक के जीवो को यातना (पीडा) देते हैं (पउम २६, ५१, ८, २३७) ।

णिक्किट्ट वि [निक्किट्ट] अघम, नीच, हीन, जघन्य, 'अइनिक्किट्टपाविट्टयावि अहा' (आ १४, २७, सुपा ५७१, सट्टि १५८) ।
 णिक्किण सक [निर् + क्री] निष्क्रय करना, खरीदना । णिक्किणासि (मृच्छ ६१) ।
 णिक्किन्तिम वि [निष्कृत्रिम] अकृत्रिम, असली, स्वाभाविक (उप ६८६ टी) ।
 णिक्किय वि [निष्क्रिय] क्रिया-रहित, अक्रिय (पएह १, २) ।
 णिक्किय वि [निष्कृप] कृपा-रहित, निर्दय (पाम्म, गा ३०, सुपा ४०६) ।
 णिक्कीलिय वि [निष्क्रीडित] गमन, गति (पव २७१) ।
 णिक्कुड पु [निष्कुट] तापन, तपाना (राज) ।
 णिक्कुइल छी [दे] जीता हुआ, विनिर्जित (दे १, ४) ।
 णिक्कोडण न [निष्कोटन] बन्धन-विशेष (पएह १, ३—पत्र ५३) ।
 णिक्कोर सक [निर् + कोरय्] १ दूर करना । २ पात्र वगैरह के मुँह का बन्द करना । ३ पात्र आदि का तक्षण करना । णिक्कारेड (बृह १) ।
 णिक्कोरण न [निष्कोरण] १ पात्र आदि के मुँह का बन्द करना । २ पात्र आदि का तक्षण (बृह १) ।
 णिक्ख पुं [दे] १ चोर । २ सुवर्ण, काञ्चन (दे २, ४७) ।
 णिक्ख पुंन [निष्क] दीनार, मोहर, मुद्रा, अशर्फी, रुपया (हे २, ४) ।
 णिक्खत देखो णिक्कत (सूअ १, ८, सम १५१, कस) ।
 णिक्खवि वि [नि स्कन्ध] स्कन्ध-रहित, डाली-रहित (गा ४६८ अ) ।
 णिक्खणण न [निखनन] गाढना (कुप्र १६१) ।
 णिक्खत्त वि [नि क्षत्र] क्षत्र-रहित, क्षत्रिय-रहित (पि ३१६) ।
 णिक्खम अक [निर् + क्रम्] १ बाहर निकलना । २ दीक्षा लेना, संन्यास लेना । णिक्खमइ (भग) । णिक्खमन्ति (कप्प) । भुक्का. णिक्खमिमु (कप्प) । भवि. णिक्ख-

मिस्सति (कप्प) । वक्क. णिक्खममाण (णाय १, ५, पउम २२, १७) । सक. णिक्खम्म (कप्प) । हेक्क. णिक्खमित्तए (कप्प, कस) ।
 णिक्खम पुंन [निष्क्रम] १ निर्गमन । २ दीक्षा-ग्रहण (ठा १०, दस १०) ।
 णिक्खमण न [निष्क्रमण] ऊपर देखो (सुज १३, णाय १, १६, पउम २३, ४) ।
 णिक्खय वि [निखात] गाढा हुआ (कुप्र २५) ।
 णिक्खय वि [दे. निक्षत] निहत, मारा हुआ (दे ४, ३२, पाम्म) ।
 णिक्खविअ वि [निक्षपित] नष्ट किया हुआ, विनाशित (अच्छु ३१) ।
 णिक्खसरिअ वि [दे] मुपित, जो लूट लिया गया हो, अपहृत-सार (दे ४, ४१) ।
 णिक्खाविअ वि [दे] शान्त, उपशम-प्राप्त (पह्) ।
 णिक्खित्त वि [निक्षिप्त] १ न्यस्त, स्थापित (पाम्म, पएह १, ३) । २ मुक्त, परित्यक्त (णाय १, १, वव २) । ३ पाक-भाजन में स्थित (पएह २, १) । ४ चर वि [चर] पाक-भाजन में स्थित वस्तु को मिला के लिए खोजनेवाला (पएह २, १, औप) ।
 णिक्किप्पमाण नीचे देखो ।
 णिक्खिव सक [नि + क्षिप्] १ स्थापन करना, स्वस्थान में रखना । २ परित्याग करना । णिक्खिवह (महा) । णिक्खिवत्त (निच् १६) । कवक्क. णिक्खिप्पमाण (आचा) । सक. णिक्खिवित्ता, णिक्खिविअ, णिक्खिविउ (कस, पि ३१६, नाट—विक्र १०३, वव १) । क. णिक्खिविअव्व, णिक्खेत्तव्व (पएह १, १, विसे ६१७) ।
 णिक्खिव सक [नि + क्षिप्] नाम आदि भेदों से वस्तु का निरूपण करना । निक्खिवे (अणु १०) । भवि. निक्खिविस्सामि (अणु १०) ।
 णिक्खिव पु [निक्षेप] १ स्थापन । २ न्यास-स्थापन, धरोहर, धन आदि जमा रखना (आ १४) ।
 णिक्खिवण न [निक्षेपण] १ स्थापन । २ डालना (सुपा ६२६, पडि) ।

णिक्खुड वि [दे] अकम्प, स्थिर (दे ४, २८) ।
 णिक्खुड पुंन [निष्कुट] १ कोटर, खोखला, विवर (तंदु २६) । २ पृथिवी-खण्ड (विसे १५३८, पंच २, ३२) । ३ गृहाराम, उपवन, घर के पास का बगीचा (राय २५) ।
 णिक्खुड पुं [निष्कुट] भूमि-खण्ड (विसे १५३८) ।
 णिक्खुत्त न [दे] निश्चित, नक्की, चोकस, अवश्य, 'पत्ते विणासकाले नासइ बुद्धी नराण निक्खुत्त' (पउम ५३, १३८), 'वत्ता दाहामि निक्खुत्त' (पउम १०, ८५) ।
 णिक्खुरिअ वि [दे] भट्ट, अस्थिर (दे ४, ४०) ।
 णिक्खेड पु [निष्खेड] अघमता, नीचता, दुष्टता (सुपा २७६) ।
 णिक्खेत्तव्व देखो णिक्खिव = नि + क्षिप् ।
 णिक्खेव पुं [निक्षेप] १ न्यास, स्थापन (अणु) । २ परित्याग, मोचन (आचा २, १, १, १) । ३ धरोहर, धन आदि जमा रखना (पउम ६२, ६) ।
 णिक्खेवण न [निक्षेपण] १ निक्षेप, स्थापन (पव ६) । २ व्यपस्थापन, नियमन (विसे ६१२) ।
 णिक्खेवणया } छी [निक्षेपणा] स्थापना,
 णिक्खेवणा } विन्यास (उवा, कप्प) ।
 णिक्खेवय पु [निक्षेपक] निगमन, उपसहार (बृह १) ।
 णिक्खेविय वि [निक्षिप्त] १ न्यस्त, स्थापित । २ मुक्त, परित्यक्त (अणु) ।
 णिक्खेविय वि [निक्षेपित] ऊपर देखो (भवि) ।
 णिक्खोभ } पुं [नि क्षोभ] क्षोभ-रहित,
 णिक्खोह } निष्कम्प (सम १०६, चउ ४७) ।
 णिक्खय देखो णिक्खय (कुप्र २२३) ।
 णिक्खव न [निखर्व] संख्या-विशेष, सौ खर्व, सौ अरब (राज) ।
 णिक्खिल वि [निखिल] सर्व, सकल, सब (अणु, नाट—महावीर ६७) ।
 णिगंठ देखो णिअठ (विसे १३३२) ।
 णिगड सक [निगडय्] नियन्त्रित करना, बाँधना । संक. निगडिऊण (कुप्र १८७) ।

गवरत्ति स्त्री [नवरात्रि] नव दिनों का श्रावण मास का एक पर्व (सङ्घि ७८)।
 गवरि अ [दे] शीघ्र, जल्दी, (प्राकृ ८१)।
 गवरि } देखो गवर (हे २, १८८, से १, गवरिअ } ३६, प्रामा, सुर, २६, पङ्, गा १७२)।
 गवरिअ न [दे] सहसा, जल्दी, तुरन्त (दे ४, २२, पाथ)।
 गवरु देखो गवर (चड)।
 गवलया स्त्री [दे] वह व्रत, जिसमें पति का नाम पूछने पर उसे नहीं बतावेवाली स्त्री पलाश की लता से ताड़ित की जाती है (हे ४, २१)।
 गवल्ल देखो गव = नव (हे २, १६५, कुमा, उप ७२८ टी)।
 गवसिअ न [दे] उपयाचितक, मनौती (दे ४, २२, पाथ, वजा ८६)।
 गवा स्त्री [नवा] १ नवोढा, दुलहिन। २ युवति स्त्री (सूप्र १, ३, २)। ३ जिसको दीक्षा लिए तीन वर्ष हुए हों ऐसी माव्वी (वव ४)। ४ अ प्रनार्थक अव्यय, अथवा नहीं ? (रयण ६७)।
 गवि अ. १ वैपरीत्य-सूचक अव्यय, 'एवि हा वणे' (हे २, १७८, कुमा)। २ निषेधार्थक अव्यय (गडड)।
 गविअ देखो गमिअ = नत (हे ३, १५६, भवि)।
 गविअ वि [नव्य] नूतन, नया (आचा २, २, ३)।
 गवीण वि [नवीन] नूतन, नया (मोह ८३, धर्मवि १३२)।
 गवुत्तरसय वि [नवोत्तरशततम] एक नौ नववाँ (पठम १०६, २७)।
 गवुल्लडय (अप) देखो गव = नव (कुमा)।
 गवोढा स्त्री [नवोढा] नव-विवाहिता स्त्री, दुलहिन (काप्र १६७)।
 गवोद्धरण न [दे] उच्छिष्ट, फूँटा (दे ४, २३)।
 गव्व पु [दे] आयुक्त, गाँव का मुखिया (दे ४, १७)।
 गव्व वि [नव्य] नूतन, नया, नवीन (आ २७)।

गव्वं देखो गा = जा।
 गव्वा त्त पुं [दे] १ ईश्वर, घनाश्रय, भोगी। २ नवागी का पुत्र, सूवेदार का लडका (दे ४, २२)।
 गस सक [नि + अस्] स्थापन करना। नमेज्ज (विसे ६४३)। कर्म. नस्सए (विसे ६७०)। सक नसिऊण (स ६०८)।
 गस अक [नश्] भागना, पलायन करना। एमइ (पिंग)।
 गम्मण न [न्यसन्] न्यास, स्थापन (जीव १)।
 गसा स्त्री [दे] नस, नाडी, 'असुईरसनिज्जरणे हड्डुक्करडम्मि चम्मनसनद्धे' (सुपा ३५५)।
 गसिअ वि [नष्ट] नाश-प्राप्त (कुमा)।
 गस्स देखो नस = नश्। एस्सइ, एस्सए, (पङ्, कुमा)। वक्क. नस्संत, नस्समाण (आ १६, सुपा २१५)।
 गस्सर वि [नश्चर] विनश्चर, भगुर, नाश पानेवाला, 'खणनस्मराड ह्वाइ' (सुपा २४३)।
 गस्सा स्त्री [नासा] नामिका, प्राणेन्द्रिय (नाट मृच्छ ६२)।
 गह देखो गक्ख (सम ६०, कुमा)।
 गह न [नभस्] १ आकाश, गगन (प्राप्र, हे १, ३२)। २ पु. भावण मास (दे २, १६)।
 °अर वि [°चर] १ आकाश में विचरनेवाला (से १४, ३८)। २ पु. विद्यावर, आकाश-विहारी मनुष्य (सुर ६, १८६)। °केउमडिय न [°केतुमण्डित] विद्यावरी का एक नगर (इक)। °गमा स्त्री [°गमा] आकाश-गामिनी विद्या (सुर १८, १८६)। °गामिणी स्त्री [°गामिनी] आकाश गामिनी विद्या (सुर ३, २८)। °जर देखो °अर (उप ५६७ टी)। °च्छेदणय न [°च्छेदनक] नख उतारने का शस्त्र (आचा २, १, ७, १)। °तिलय न [°तिलक] १ नगर-विशेष। २ सुभट-विशेष (पठम ५५, १७)। °वाहण पु [°वाहन] नृप-विशेष (सुर ६, २६)। °सिर न [°शिरस्] नख का अग्र भाग (भग ५, ४)। °सिहा स्त्री [°शिखा] नख का अग्र भाग (कप्प)। °सेण पु [°सेन] राजा उग्रसेन का एक पुत्र (राज)। °हरणी स्त्री [°हरणी] नख उतारने का शस्त्र (बृह ३)।

गहंसि वि [नखवत्] नखवाला (दस ६, ६५)।
 गहमुह पु [दे] घूक, उल्लू (दे ४, २०)।
 गहर पुं [नखर] नख, नाखून (सुपा ११, ६०६)।
 गहरण पुं [दे] नखी, नखवाला जन्तु, धापद (वज्जा १२)।
 गहरणी स्त्री [नखहरणी] नहरनी, नख उतारने का शस्त्र (पंचव ३)।
 गहराल पु [नखरिन्] नखवाला धापद जन्तु (उप ५३० टी)।
 गहरी स्त्री [दे] छुरिका, छुरी (दे ४, २०)।
 गहवल्ली स्त्री [दे] विद्युत्, विजली (दे ४, २२)।
 गहारु न [स्नायु] स्नायु, रग, नस, नाडी।
 गहि पुं [नखिन] नख-प्रधान जन्तु, श्वापद जन्तु (अणु)।
 गहि वि [नखिन्] ऊपर देखो (अणु १४२)।
 गहि अ [नहि] निषेधार्थक अव्यय, नहीं (स्वप्न ४१, पिंग, सण)।
 गहु अ [नखल्] ऊपर देखो (नाट—मृच्छ २६१, राया १, ६)।
 गा मक [ज्ञा] जानना, समझना। भवि. एहिइ (विसे १०१३)। गाहिनि (पि ५३४)। कर्म गुव्वइ, एज्जइ (हे ४, २५२)। क्वक्क गज्जत, गज्जमाण (से १३, ११, उप १००१ टी)। सक गाडं, गाऊण, गाऊण, गच्चा, गच्चाण (महा, पि ५८६, औप, सूय १, २, ३, पि ५८७)। कृ गायव्व, णेअ (भग, जी ६, सुर ४, ७०, द २, हे २, १६३, नव ३१)।
 गा अ [न] निषेध-सूचक अव्यय (गडड)।
 गाअअ } देखो गायग (प्राकृ २६)।
 गाअक }
 गाअक (अप) देखो गायग (पिंग)।
 गाइ पु [ज्ञाति] इस्वाकु वंश में उत्पन्न क्षत्रिय-विशेष। °पुत्त पुं [°पुत्र] भगवान् श्री महावीर (आचा)। °सुय पुं [°सुत] भगवान् श्री महावीर (आचा)।
 गाइ स्त्री [ज्ञा] १ नात, समान जाति (पठम १००, ११, औप, उवा)। २ माना-पिता आदि स्वजन, मना (राया १, १)। ३ ज्ञान, बोध (आचा; ठा ५, ३)।

णगिण्ह देखो णिगिण्ह । णिगिण्हामि
(विमे २४८२) ।

णिगिलिय वि [निर्गलित] वान्त, वमन
किया हुआ (स ३५८) ।

णिगुंडी स्त्री [निर्गुण्डी] औषधि-विशेष,
वनस्पति समालू (पण १) ।

णिगुण वि [निर्गुण] गुण-रहित, गुण-हीन
(गा २०३, उप, पण १, २, उप ७२८टी) ।

णिगुण्ण } न [नैर्गुण्य] गुण-रहितपन,
णिगुण्ण } गुण-हीनता, निगुणत्व (वसु,
भक्त १४) ।

णिगूढ वि [निर्गूढ] स्थिर रूप से स्थापित
(सूत्र २, ७) ।

णिगोह पु [न्यग्रोह] वृक्ष-विशेष, बरगद,
बड़ का पेड़ (पउम २०, ३६, पड्) । °परिमण्डल
न [°परिमण्डल] शरीर-संस्थान-विशेष,
बटाकार शरीर का आकार (सम १४६,
ठा ६) ।

णिग्घट } देखो णिघट्ट (कप्प) ।
णिग्घट्ट }

णिग्घट्ट वि [दे] कुशल, निपुण, चतुर (दे
४, ३४) ।

णिग्घण देखो णिग्घण (विक्र १०२) ।

णिग्घात्तअ वि [दे] क्षिप्त, फँका हुआ
(पाप्र) ।

णिग्घाड्य वि [निर्घातित] १ आघात-प्राप्त,
आहत । २ व्यापादित, विनाशित (णाय १,
१३) ।

णिग्घाय पुं [निर्घात] राक्षस-वश का एक
राजा (पउम ६, २२४) ।

णिग्घाय पु [निर्घात] १ आघात, 'रगिर-
तुगतुरगमखुरगनिग्घायविहरियं घरणि' (सुपा
३) । २ विजली का गिरना (स ३७५, जीव
१) । ३ व्यन्तर-कृत गर्जना (ठा १०) । ४
विनाश (सूत्र १, १५) ।

णिग्घायण न [निर्घातन] नाश, विनाश,
उच्छेदन (पडि, सुपा ५०३) ।

णिग्घण वि [निर्घण] निर्दय, करुणा-रहित
(गा ४५२, पण १, १, सुर २, ६१) ।

णिग्घेउं देखो णिगिण्ह ।

णिग्घोर वि [दे] निर्दय, दया-हीन (दे ४,
३७) ।

णिग्घोस पुं [निर्घोष] महान् अव्यक्त शब्द
(पण १, सम १५३) ।

णिवट्ट पुं [निघण्टु] शब्द-कोश, नाम संग्रह
(औप, भग) ।

णिघस पु [निकष] १ कसौटी का पत्थर
(अणु) । २ कसौटी पर की जाती सुवर्ण
की रेखा (सुपा ३६१) ।

णिचय पुं [निचय] संग्रह, सचय (सूत्र १,
१०, ६) ।

णिचय पुं [निचय] १ समूह, राशि । २
उपचय, पुष्टि (ओष ४०७, स ३६६, आचा,
महा) ।

णिचिअ वि [निचित] १ व्याप्त, भरपूर
(अजि ५) । २ निविड, पुष्ट (भग) ।

णिचुल पुं [निचुल] वृक्ष-विशेष, बजुल वृक्ष
(स १११, कुमा) ।

णिच्च वि [नित्य] १ अविनश्वर, शाश्वत
(आचा, औप) । २ न. निरन्तर, सर्वदा,
हमेशा (महा, प्रासू १४, १०१) । °च्छणिय
वि [°क्षणिक्] निरन्तर उत्सववाला (णाय १,
४) । °मंडिया स्त्री [°मण्डिता] जम्बू
वृक्ष-विशेष (इक) । °वाय पुं [°वाद]
पदार्थों को नित्य माननेवाला मत, 'सुहुदुक्ख-
सपमो गो न जुज्जइ निच्चवायपक्खम्मि' (सम
१८) । °सो अ [°शस्] सदा, सर्वदा,
निरन्तर (महा) । °लोअ, °लोग, °लोव
पु [°लोक] १ एक विद्याधर-राजा (पउम
६, ५२) । २ ग्रहाधिपत्यक देव-विशेष (ठा
२, ३) । ३ न. नगर-विशेष (पउम ६, ५२,
इक) । ४ वि. सर्वदा प्रकाशवाला (कप्प) ।

णिच्च देखो णीय = नीच (सम ५५) ।

णिच्चक्खु वि [निश्चक्षुस्] चक्षु-रहित,
नेत्र हीन, अन्धा (पउम ८२, ५१) ।

णिच्चट्ट (अप) वि [गाढ़] गाढ़, निविड (हे
४, ४२२) ।

णिच्चय देखो णिच्छय (प्रयो २१, पि ३०१) ।

णिच्चर देखो णिच्चर । णिच्चरइ (हे ४,
३ टि) ।

णिच्चल सक [क्षर्] झरना, टपकना, घूना ।
णिच्चलइ (हे ४, १७३) । प्रयो णिच्चलावेइ
(कुमा) ।

णिच्चल सक [मुच्] दुःख को छोड़ना,
दुःख का त्याग करना । णिच्चलइ (हे ४,
६२ टि) । भूका, णिच्चलीअ (कुमा) ।

णिच्चल वि [निश्चल] स्थिर, दृढ़, अचल
(हे २, २१, ७७) । °पय न [°पद] मुक्ति,
मोक्ष (पचव ४) ।

णिच्चित वि [निश्चिन्त] चिन्ता-रहित,
वेकिक्क (विक्र ४३, प्रासू २७, सुपा २२५) ।

णिच्चिट्ट वि [निश्चेष्ट] चेष्टा-रहित (सुपा
१४) ।

णिच्चिद (शौ) देखो णिच्छिदय (पि ३०१) ।

णिच्चुज्जोअ पुं [नित्योद्द्योत] नन्दीश्वर
द्वीप के मध्य की दक्षिण दिशा में स्थित एक
अजनगरि (पव २६६) ।

णिच्चुज्जोअ } वि [नित्योद्द्योत] १ सदा
णिच्चुज्जीव } प्रकाशयुक्त । २ पुं. ग्रह-विशेष
ज्योतिष्क देव-विशेष (ठा २, ३) । ३ न.
एक विद्याधर-नगर (इक) ।

णिच्चुद्ध वि [दे] १ उद्धृत, बाहर निकला
हुआ (पड्) । २ निर्दय, दया-हीन (पाप्र) ।

णिच्चुत्तिवग्ग वि [नित्योद्धिग्न] सदा विभ्र
(दस ५, २) ।

णिच्चेह देखो णिच्चिट्ट (णाय १, २, सुर
३, १७२) ।

णिच्चेयण वि [निश्चेतन] चेतना-रहित
(महा) ।

णिच्चोडया स्त्री [नित्योत्तुका] हमेशा रजस्वला
रहनेवाली स्त्री (ठा ५, २) ।

णिच्चोय सक [दे] निचोडना । निच्चोयइ
(कुप्र २१५) ।

णिच्चोरिक्क न [निश्चौर्य] १ चोरी का
अभाव । २ वि चोरी-रहित (उप १३६ टी) ।

णिच्छइय वि [नैश्चयिक] १ निश्चय-
सम्बन्धी । २ पुं. निश्चय नय, द्रव्याधिक नय,
परिणाम-वाद (विसे) ।

णिच्छउम वि [निश्छउम] १ कपट-रहित,
माया-वर्जित (गण ८, सुपा ३५०) । २
क्रि. विना कपट (सार्ध ५१) ।

णिच्छक वि [दे] १ निलंज, वेशरम, घृष्ट,
ढीठ (बृह १, वव ५) । २ अवसर को नहीं
जाननेवाला, असमयज्ञ (राज) ।

जैन ग्रन्थाश-विशेष, पाँचवों पूर्व (सम २६) ।
 °मायार देखो °यार (पडि) । °व, वंत वि
 [°वत्] ज्ञानी, विद्वान् (पि ३४८, आचा,
 अचु ४६) । °वि वि [°वित्] ज्ञान-वेत्ता
 (आचा) । °यार पु [°चार] ज्ञान-विषयक
 शास्त्रोक्त विधि (राज) । °वरण न [°वरण]
 ज्ञान का आच्छादक कर्म (घण ४४) ।
 °वरणिज्ज न [°वरणीय] अनन्तर उक्त
 अर्थ (सम ६६, औप) ।

पाणक } न [दे] सिका, मुद्रा (मृच्छ १७,
 पाणग } राज) ।

पाणत न [नानात्व] भेद, विशेष, अन्तर
 (शोध ६१८) ।

पाणता स्त्री [नानाता] ऊपर देखो (विसे
 २१६१) ।

पाणा अ [नाना] अनेक, जुदा-जुदा (उवा,
 भग, सुर १, ८६) । °विह वि [°विध]
 अनेक प्रकार का, विविध (जीव ३, सुर ४,
 २४५, दं १३) ।

पाणि वि [ज्ञानिन्] ज्ञानी, जानकार, विद्वान्
 (आचा, उव) ।

पादिय देखो पाइय (कप्प) ।

पाभि पु [नाभि] १ स्वनाम ह्यात एक
 कुलकर पुरुष, भगवान् ऋषभदेव का पिता
 (सम १५०) । २ पेट का मध्य भाग । ३
 गाड़ी का एक अवयव (दस ७) । °नदण पु
 [°नन्दन] भगवान् ऋषभदेव (पठम ४, ६८) ।

पाभ सक [नमय्] १ नमाना, नीचा
 करना । २ उपस्थित करना । ३ अर्पण
 करना । एणमेह (हेका ४६) । वक्क. पाभयंत
 (विसे २६६०) । संकृ पाभित्ता (निव्व १) ।

पाभ पुं [नाम] १ परिणाम, भाव (भग २५,
 ५) । २ नमन (विसे २१७६) ।

पाभ अ [नाम] सभावना सूचक अव्यय (सूत्र
 १, १२, ३) ।

पाभ अ [नाम] इन अर्थों का सूचक अव्यय—
 संभावना (से ५, ४) । २ आमन्त्रण, सवोधन
 (वृह ३, ज १) । ३ प्रसिद्धि, ह्याति (कप्प) ।
 ४ अनुज्ञा, अनुमति (विसे) । ५—६ वाक्या-
 लकार पाद-पूर्ति में भी इसका प्रयोग होता है
 (ठा ४, १, राज) ।

पाभ न [नामन्] नाम, आख्या, अभिधान
 (विपा १, १, विसे २५) । °कम्म न
 [°कर्मन्] कर्म-विशेष, विचित्र परिणाम का
 कारण-भूत कर्म (स ६७) । °धिज्ज, °धेज्ज
 °धेय न [°धेय] नाम, आख्या (कप्प, सम
 ७१, पठम ४, ८०) । °पुर न [°पुर] एक
 विद्याधर-नगर (इक) । °मुद्रा स्त्री [°मुद्रा]
 नाम से अंकित मुद्रा (पठम ५, ३२) ।
 °सच्च वि [°सत्य] नाम-मात्र से सच्चा, नाम-
 धारी (ठा १०) । °हेअ देखो °धेय (पठम
 २०, १७६, स्पन् ४३) ।

पाभण न [नमन] नमाना, नीचा करना
 (विसे ३००८) ।

पाभमतक्ख पु [दे] अपराध, गुनाह (गठड) ।
 पाभागोत्त न [नामगोत्र] १ यथार्थ नाम ।
 २ नाम तथा गोत्र (सुज १६) ।

पाभिय वि [नमित] नमाया हुआ (साधं
 ८०) ।

पाभिय न [नामिक] वाचक शब्द, पद (विसे
 १००३) ।

पाभुक्कसिअ } न [दे] कार्य, काम, काज
 पाभोक्कसिअ } (हे २, १७४, दे ४, २५) ।
 पाय वि [दे] गर्विष्ठ, अभिमानो (दे ४, २३) ।
 पाय देखो पाग (काप्र ७७७, कप्प, औप;
 गठड, वज्जा १४, सुपा ६३६, पठम २१,
 ४६) ।

पाय पु [नाद्] शब्द, आवाज, व्वनि (औप,
 पठम २२, ३८, स २१३) ।

पाय पुं [न्याय] १ अक्षपाद—प्रणीत न्याय-
 शास्त्र (सुख ३, १, धर्मवि ३८) । २ सामयिक
 आदि पट्-कर्म (अणु ३१) ।

पाय पुं [नाद्] अनुनासिक वर्ण, अर्धचन्द्राकार
 अक्षर-विशेष (सिंरि १६६) ।

पाय वि [न्याय्य] न्याय-युक्त (सूत्र १, १३,
 ६) ।

पाय पुं [न्याय] १ न्याय, नीति (औप,
 स १५६, आचा) । २ उपपत्ति, प्रमाण
 (पचा ४, विसे) । °कारि वि [°कारिन्]
 न्याय-कर्त्ता (आचू १) °गर वि [°कर]
 १ न्याय-कर्त्ता । पु. न्यायाधीश (आ १४) ।
 °ण वि [°ज्ञ] न्याय का जानकार (उप
 ३४६) ।

पाय पु [नाक] स्वर्ग, देव-लोक (पाभ) ।
 पाय पुं [ज्ञात] १ भगवान् महावीर (सूत्र १,
 २, २, ३१) । २ वि. प्रसिद्ध (सूत्र १, ६, २१) ।
 पाय वि [ज्ञात] १ जाना हुआ, विदित (उव,
 सुर २, ३६) । २ ज्ञाति संबन्धी, सगा, एक
 विरादरी का (कप्प, आउ ६) । ३ वश-
 विशेष में उत्पन्न (औप) । ४ पुं वश-
 विशेष (ठा ६) । ५ क्षत्रिय-विशेष (सूत्र १,
 ६, कप्प) । ६ न. उदाहरण, दृष्टान्त (उव,
 सुपा १२८) । °कुमार पुं [°कुमार] ज्ञात-
 वशीय राज-पुत्र (एया १, ८) । °कुल न
 [°कुल] वश-विशेष (परह १, ३) । °कुल-
 चद पु [°कुलचन्द्र] भगवान् श्री महावीर
 (आचा) । कुलनदण पुं [कुलनन्दन]
 भगवान् श्री महावीर (परह १, १) । °पुत्त पुं
 [°पुत्र] भगवान् श्री महावीर (आचा) ।
 °मुणि पुं [°मुनि] भगवान् श्री महावीर
 (परह २, १) । °विहि पुं स्त्री [°विधि] माता
 या पिता के द्वारा संबन्ध, संबन्धित (वव
 ६) । °सड न [°षण्ड] उद्यान-विशेष, जहाँ
 भगवान् श्रीमहावीर देव ने दीक्षा ली थी
 (आचा २, ३, १) । °सुय पुं [°सुत]
 भगवान् श्रीमहावीर । °सुय न [°श्रुत]
 'ज्ञाताधर्मकथा' नामक जैन आगम-ग्रन्थ (एया
 २, १) । °धम्मकहा स्त्री [°धर्मकथा]
 जैन आगम-ग्रन्थ-विशेष (सम १))

पायग पु [नायक] हार के बीच की मणि,
 सुमेरु (स ६८६) ।

पायग पु [नायक] नेता, मुखिया, अग्रग्रा
 (उप ६४८ टी. कप्प, सम १, सुपा २२) ।

पायत्त पु [दे] समुद्र मार्ग से व्यापार करने-
 वाला वणिक्, 'पवहणवाणिज्जपरा सुहंकरा
 आसि नाम नायत्ता' (उप ५६७ टी) ।

पायर देखो पागर (महा, सुपा १८८) ।

पायरिय देखो पागरिय (सुर १४, १३३) ।
 स्त्री. °या (भवि) ।

पायरी देखो पागरी (भवि) ।

पायव्व देखो पा = ज्ञा ।

णार पुं [नार] चतुर्थ नरक-पृथिवी का एक
 प्रस्तर (इक) ।

णारइअ वि [नारकि] १ नरक पृथिवी में
 उत्पन्न, नारकी । २ पु. नरक का जीव (हे
 १, ७६) ।

णिज्जाण न [निर्याण] १ बाहर निकलना, निर्गम (ठा ५, ३) । २ आवृत्ति-रहित गमन (औप) । ३ मोक्ष, मुक्ति (आव ४) ।

णिज्जाणिय वि [नैर्याणिक] निर्याण-सबन्धी, निर्गम-सबन्धी (भग १३, ६, निवू ८) ।

णिज्जामग पु [निर्यामक] कर्णधार, णिज्जामय } जहाज का नियन्ता (विसे २६५६, णाय १, १७, औप, सुर १३, ४८) ।

णिज्जामण न [निर्यापन] बदला चुकाना, 'वैरिणज्जामण' (वव १) ।

णिज्जामय पु [निर्यामक] १ बीमार की सेवा-शुश्रूषा करनेवाला मुनि (पव ७१) । २ वि. आराधना-कारक (पव-गाथा १७) ।

णिज्जामिय वि [निर्यामित] पार पहुँचाया हुआ, तारित (महा) ।

णिज्जाय पुं [दे] उपकार (दे ४, ३४) ।

णिज्जाय वि [निर्यात] निर्गत, निवृत्त (वसु, उप पृ २८६) ।

णिज्जायण न [निर्यातन] वैर-शुद्धि, बदला (महा) ।

णिज्जायणा स्त्री [निर्यातना] ऊपर देखो (उप ४३१ टी) ।

णिज्जावय देखो णिज्जामय (भवि) ।

णिज्जास पुं [निर्यास] बुझो का रस, गोद, (सूत्र २, १) ।

णिज्जिअ वि [निर्जित] जीता हुआ, पराभूत (ओघ १८ भा टी, सुर ६, ३६, औप) ।

णिज्जिण सक [निर् + जि] जीतना, पराभव करना । निविएइ (भवि) सक्र. निज्जिणिऊण, (महा) ।

णिज्जिणिय देखो णिज्जिअ (सुपा २६) ।

णिज्जिण } वि [निर्जीण] नाश-प्राप्त, णिज्जिन्न } क्षीण (भग, ठा ४, १) ।

णिज्जीव वि [निर्जीव] जीव-रहित, चैतन्य वर्जित (औप, आ २०, महा) ।

णिज्जुज [निर् + युज्] उपकार करना (पिड २६ टी) ।

णिज्जुत्त वि [निर्युक्त] १ संबद्ध, सयुक्त (विस् १०८५, ओघ १ भा) । २ खचित, जडित (औप) । ३ प्ररूपित, प्रतिपादित (आवम) ।

णिज्जुत्ति स्त्री [निर्युक्ति] व्याख्या, विवरण, टीका (विसे ६६५, ओघ २, सम १०७) ।

णिज्जुद्ध देखो णिउद्ध (स ४७०) ।

णिज्जूढ वि [निर्यूढ] १ निम्सारित, निष्कासित (णाय १, १—पत्र ६४) २ अमनोज्ञ, असुन्दर (ओघ ५४८) । ३ उद्धृत, ग्रन्थान्तर से अवतारित (दसनि १) ।

णिज्जूढ वि [निर्यूढ] रहित, 'निट्ठाण रस-निज्जूढ' (दस ८, २२) ।

णिज्जूह सक [निर् + यूह्] १ परित्याग करना । २ रचना, निर्माण करना । कर्म. णिज्जूहहिज्जूह (पि २२१) । हेतु णिज्जूहित्तए (वव २) । कृ णिज्जूहियन्व (कप्प) ।

णिज्जूह पु [दे निर्यूह] १ नौव, छदि, गृहच्छादन, पाटन (दे ४, २८, स १०६) । २ गवाक्ष, गोल, 'इय जाव चितए मंती णिज्जूहहिज्जूहो' (धम्म ६ टी, वव १) । ३ द्वार के पास का काष्ठ-विशेष (णाय १, १—पत्र १२, परह १, १) । ४ द्वा, दरवाजा (सुर २, ८३) ।

णिज्जूहग वि [निर्यूहक] ग्रन्थान्तर से उद्धृत करनेवाला (दसनि १, १४) ।

णिज्जूहण न [निर्यूहण] देखो णिज्जूहणा (उत्त ३६, २५१, पव २) ।

णिज्जूहणया स्त्री [निर्यूहणा] १ निस्सारण-णिज्जूहणा } रण, बाहर निकालना (वव १) । परित्याग (ठा ४, २) । ३ विरचना, निर्माण (विसे ५५१) ।

णिज्जूहिअ देखो णिज्जूढ (दसनि १, १५) ।

णिज्जूहिअ वि [निर्यूहित] रहित (पव १३४) ।

णिज्जोअ पु [दे] १ प्रकार, राशि । २ पुष्पो का अवकर (दे ४, ३३) ।

णिज्जोअ } पुं [नियोग] १ उपकरण, णिज्जोग } साधन (राय ४५, ४६, पिड २६) । २ उपकार (पिड २६) ।

णिज्जोअ } पुं [दे. निर्योग] परिकर, णिज्जोग } सामग्री, 'पायणिज्जोगो' (ओघ ६६८, णाय १, १—पत्र ५४) ।

णिज्जोमि पुं [दे] रज्जु, रस्सी (दे ४, ३१) ।

णिज्जम अक [स्निह्] स्नेह करना । णिज्जमइ (प्राकृ २८) ।

णिज्जमर अक [क्षि] क्षीण होना । णिज्जमरइ (हे ४, २०, पड्) । वक्र. णिज्जमरत (कुमा ६, १३) ।

णिज्जमर वि [दे] जीर्ण, पुराना (दे ४, २६) । णिज्जमर पुं [निर्मर] भरना, पहाड़ से गिरता पानी का प्रवाह (हे १, ६८, २, ६०) ।

णिज्जमरण न [निर्मरण] ऊपर देखो (पवम ६४, ५२, सुर ६, ६४, सुपा ३५५) ।

णिज्जमरणी स्त्री [निर्मरणी] नदी, तरंगिणी (कुमा) ।

णिज्जमा सक [नि + ध्यै] देखना, निरीक्षण करना । णिज्जमाइ, णिज्जमाप्रइ (हे ४, ६) । वक्र. णिज्जमाअंत, णिज्जमाएमाण (मा ४, आचा २, ३, १) । सक्र. णिज्जमाइऊण, णिज्जमाइत्ता (महा; आचा) ।

णिज्जमा सक [निर् + ध्यै] विशेष चिन्तन करना । संक्र. णिज्जमाइत्ता (आचा) ।

णिज्जमाइ वि [निध्यायिन्] देखनेवाला (आचा) ।

णिज्जमाइत्तु वि [निध्यात्] देखनेवाला, निरीक्षक (उत्त १६, सम १५) ।

णिज्जमाइत्तु वि [निध्यात्] अतिशय चिन्तन करनेवाला (ठा ६) ।

णिज्जमाइय वि [निध्यात] १ दृष्ट, विलोकित (स ३५२, घण ४५) । २ न. दर्शन, निरीक्षण (महा—श्रु ५८) ।

णिज्जमाडिय वि [निर्धाटित] विनाशित (उप ६४८ टी) ।

णिज्जमाय वि [दे] निर्दय, दया-रहित (दे ४, ३७) ।

णिज्जमाय वि [निध्यात] दृष्ट, विलोकित (सुर ६, १८८, सुपा ४४८) ।

णिज्जमूर वि [दे] जीर्ण, पुराना (दे ४, २६) ।

णिज्जमोड सक [छिद्] छेदना, काटना । णिज्जमाडइ (हे ४, १२४) ।

णिज्जमोडण न [छेदन] छेदन, कर्तन (कुमा) ।

णिज्जमोसइत्तु वि [निर्मोषयित्] क्षय करनेवाला, कर्मों का नाश करनेवाला (आचा) ।

णिट्ठक वि [दे] १ टक-च्छिन्न । २ विषम, असमान (४, ५०) ।

णिट्ठकिय वि [निष्टकित] निश्चित, अवधारित (सुपा २६०) ।

गासग वि [नाशक] नाश करनेवाला (सुर २, ५८)।

गासण न [नाशन] १ पलायन, अपक्रमण भागना (धर्म २)। २ वि नाश करनेवाला (से ३, २७; गण २२)। स्त्री णी (से ३, २७)।

गासग न [न्यासन] स्थापन, रखना, व्यवस्थापन (अणु)।

गासणा स्त्री [नासना] विनाश (विसे ६३६)।

गासव सक [नाशय] नाश करना। गामवइ (हे ४, ३१)।

गासविय वि [नाशिन] नष्ट किया हुआ, भगाया हुआ (उप ३५७ टी, कुमा)।

गासा स्त्री [नासा] नाक, घ्राणेन्द्रिय (गा २२, आचा, कुपा)।

गामि वि [नाशिन] विनश्वर, नष्ट होनेवाला (विने १६८१)।

गासिक देखो गासिक (गुदि १६५)।

गासिक न [नासिक्य] दक्षिण भारत का एक स्वनाम प्रसिद्ध नगर, जो आजकल भी 'नासिक' नाम से प्रसिद्ध है, जहाँ शृणुखों की नाक कटी थी, पचवटी (उप पृ २१३, १४१ टी)।

गासिगा स्त्री [नासिका] नाक, घ्राणेन्द्रिय (महा)।

गासिय वि [नाशित] नष्ट किया हुआ (महा)।

गासियव देखो गास = नशु।

गासिर वि [नशित] नष्ट होनेवाला, विनश्वर (कुमा)।

गासीक्य वि [न्यासीकृत] घरोहर या अमानत रूप से रखा हुआ (आ १४)।

गासेक देखो गासिक (उप १४१)।

गाह पुं [नाथ] स्वामी, मालिक (कुमा, प्रासू १२, ६६)।

गाहड पु [नाहट] एक राजा का नाम (ती १५)।

गाहल पुं [लाहल] म्लेच्छ की एक जाति (हे १, २५६, कुमा)।

गाहि देखो गाभि (कुमा; कप्पू)। °रूह पु [°रूह] ब्रह्मा, चतुर्मुख (अच्छ ३६)।

गाहि (भप) म [नहि] नहीं, नाही (हे ४, ४१६, कुमा, भवि)।

गाहिणाम न [दे] वितान के बीच की रस्सी (दे ४, २४)।

गाहिय वि [नास्तिन] १ परलोक आदि को नहीं माननेवाला। २ पुं नास्तिक मत का प्रवर्तक। °वाइ, °वादि वि [°वादिन] नास्तिक मत का अनुयायी (सुर ६, २०, स १६४)। °वाय पुं [°वाद] नास्तिक-दर्शन (गच्छ २)।

गाहिचिच्छेअ } पु [दे] जघन, कटी के
गाहीए-विच्छेअ } नीच का भाग (दे ४, २४)।

गि अ [नि] इन अर्थों का सूचक अव्यय—१ निश्चय (उत्त १)। २ नियतपन, नियम (ठा १०)। ३ आधिक्य, अतिशय (उत्त १, विपा १, ६)। ४ अवोभाग, नीचे (सण)। ५ नित्यपन। ६ सशय। ७ आदर। ८ उपरम, विराम। ९ अन्तर्भाव, समावेश। १० समीपता, निकटता। ११ क्षेप, निन्दा। १२ वन्धन। १३ निषेध। १४ दान। १५ राशि, समूह। १६ मुक्ति, मोक्ष (हे २, २१७, २१८)। १७ अमिषता, समुषता (सूत्र १, ६)। १८ अल्पता, लघुता (पणह १, ४)।

गि अ [निर] इन अर्थों का सूचक अव्यय—१ निश्चय (उत्त ६)। २ आधिक्य, अतिशय। (उत्त १)। ३ प्रतिषेध, निषेध (सम १३७, सुपा १६८)। ४ बहिर्भाव। ५ निर्गमन, निष्क्रमण (ठा ३, १, सुपा १३)।

गिअ सक [टश] देखना। गिअइ (पइ, हे ४, १८१)। वक्र गिअन (कुमा, महा, सुपा २६६)। सकु निएउ (भवि)।

गिअ वि [निज] आत्मीय, स्वकीय (गा १५०, कुमा, सुपा ११)।

गिअ वि [नीत] ले जाया गया (से ५, ६, सण)।

गिअ वि [नीच] नीच, जघन्य, निकृष्ट (कम्म ३, ३)।

गिअ देखो गिअ (सूत्र २, ६, ४५)।

गिअइ स्त्री [निकृति] माया, कपट, छल, धोखा (पणह १, २)।

गिअइ स्त्री [नियति] १ नियतपन, भवितव्यता, होनी, भाग्य, नियमितता (सूत्र १, १,

३)। २ अवश्य-भावित (ठा ४, ४, सूत्र १, १, २)। °पव्यय पु [°पर्वत] पर्वत विशेष (जीव ३)। °वाइ वि [°वादिन] 'सब कुछ भवितव्यता के अनुसार ही हुआ करता है, प्रयत्न वगैरह अकिञ्चिन्कर है' ऐसा माननेवाला, भाग्यवादी या दैववादी (राज)।

गिअटिअ वि [नियन्त्रित] १ नियमित। २ न. प्रत्याख्यान-विशेष, दृष्ट में या रोगी से अमुक दिन में अमुक तप करने का किया हुआ नियम (पव ४)।

गिअटिय वि [नियन्त्रित] १ बँधा हुआ, जकड़ा हुआ। २ न अवश्य-कर्तव्य नियम-विशेष (ठा १०)।

गिअंठ वि [निर्ग्रन्थ] १ धन रहित। २ पुं जैनमुनि, सयत, यति (भग, ठा ३, १, ५, ३)। ३ जिन भगवान् (सूत्र १, ६)।

गिअठ पु [निर्ग्रन्थ] भगवान् बुद्ध (कुप्र ४४२)।

गिअठि देखो °गिगथी। °पुत्त पु [°पुत्र] १ एक विद्यावर-पुत्र, जिसका दूसरा नाम सत्यकि था (ठा १०)। २ एक जैनमुनि, जो भगवान् महावीर का शिष्य था (भग ५, ८)।

गिअठिय वि [नैर्ग्रन्थिक] १ निर्ग्रन्थ-सबन्धी। २ जिन देव-सबन्धी। स्त्री. °या, 'ऐसा आराण्यिण्डिया' (सूत्र १, ६)।

गिअठी देखो गिगथी (ठा ६)।

गिअत वि [नियत] स्थिर (सूत्र १, ८, १२)।

गिअत वि [निर्यन्] बाहर निकलता (सम्मत्त १५६)।

गिअतिय वि [नियन्त्रित] सयमित, जकड़ा हुआ, बँधा हुआ (महा, सण)।

गिअवण न [दे] वक्र, कपड़ा (दे ४, २८)।

गिअव पु [नितम्ब] १ पर्वत का एक भाग, पर्वत का वर्तित-स्थान (घोष ४०)। २ स्त्री की कमर का पीछला भाग, कमर के नीचे का भाग, चूतड़ (कुमा, गठड)। ३ मूल भाग (से ८, १०१)। ४ कटी-प्रदेश, कमर (जं ४)।

गिअविणी स्त्री [नितम्बिनी] १ सुन्दर नितम्बवाली स्त्री। २ स्त्री, महिला (कप्पू, पास, सुपा ५३८)।

कर्म गिरहवीरुदि (शौ) (नाट—रत्ना ३६)। वक्रु णिण्हवत, णिण्हवेमाण (उप २११ टी, सुर ३, २०१)।
 णिण्हवग वि [निह्वाक] अपलाप करने-वाला (ओष ४८ भा)।
 णिण्हवण न [निह्वन] अपलाप (विपा १, २, उव)।
 णिण्हवण वि [निह्वन] अपलाप-कर्त्ता (सवोष ५)।
 णिण्हविद देखो णिण्हविद (नाट—शकु १२६)।
 णिण्हुय वि [निह्वुत] अपलपित (सुपा २६८)।
 णिण्हुव देखो णिण्हव = नि + ह्वु। कर्म, गिरह्विज्जति (पि ३३०)।
 णिण्हुविद (शौ) वि [नि + ह्वुत] अपलपित (पि ३३०)।
 णितिय देखो णिच्च (आचा, ठा १०)।
 णितुडिअ वि [नितुडित] दूटा हुआ, छिन्न (अचु ५४)।
 णित्त देखो णेत्त (पात्र, सुपा २६१, लहुअ १४)।
 णित्तम वि [निस्तमस्] १ अन्वकार-रहित। २ अज्ञान-रहित (अजि ८)।
 णित्तल वि [दे] अनिवृत्त (भग १५)।
 णित्ति (अप) देखो णाड् (भवि)।
 णित्तिस वि [निस्त्रिश] निर्दय, कसणा-हीन (सुपा ३१५)।
 णित्तिरडि वि [दे] निरन्तर, अव्यवहित (दे ४, ४०)।
 णित्तिरडिअ वि [दे] श्रुति, दूटा हुआ (दे ४, ४१)।
 णित्तुप्प वि [दे] स्नेह-रहित, घृत आदि से वर्जित (वृह १)।
 णित्तुल वि [निस्तुल] १ निरुपम, असाधारण (उप पृ ५३)। २ क्रि. असाधारण रूप से, 'अरणहा नित्तुलं मरसि' (सुपा ३४५)।
 णित्तुस वि [निस्तुप] तुष-रहित, भूसा से रहित, विशुद्ध (पणह २, ४, उप १७६ टी)।
 णित्तेय वि [निस्तेजस्] तेज-रहित (गाथा १, १)।

णित्थणण न [निस्तनन] विजय-सूचक ध्वनि (सुर २, २३३)।
 णित्थर सक [निर् + तृ] पार करना, पार उतरना। गित्थरेद (सुपा ४४६), 'गित्थरंति खलु कायरावि पायनिज्जामय-शुणेण महणणव' (स १६३)। कवक णित्थरिज्जंत (राज)। कृ णित्थरियव्व (गाथा १, ३, सुपा १२६)।
 णित्थरण न [निस्तरण] पार-गमन, पार-प्राप्ति (ठा ४, ४, उप १३४ टी)।
 णित्थरिअ देखो णित्थिण (उप १३४ टी)।
 णित्थाण वि [नि स्थान] स्थान-रहित, स्थान-अपृ (गाथा १, १८)।
 णित्थाम वि [नि स्थामन्] निर्बल, कमजोर, मन्द (पात्र, गडड, सुपा ४८६)।
 णित्थार सक [निर् + तारय] १ पार उतारना, तारना। २ वचाना, छुटकारा देना। गित्थारसु (काल)।
 णित्थार पुं [निस्तार] १ छुटकारा, मुक्ति। २ वचाव, रक्षा। ३ उद्धार (गाथा १, ६ टी—पत्र १६६, सुर २, ५१, ७, २०१, सुपा २६६)।
 णित्थारग वि [निस्तारक] पार जानेवाला, पार उतरनेवाला (स १८३)।
 णित्थारणा स्त्री [निस्तारण] पार-प्रापण, पार पहुँचाना (ज ३)।
 णित्थारिय वि [निस्तारित] वचाया हुआ, रक्षित, उद्घृत (भग, सुपा ४४६)।
 णित्थिण १ वि [निस्तीर्ण] १ उत्तीर्ण, पार-णिन्थिन्न १ प्राप्त, 'गित्थिणो समुद्धं' (स ३६७)। २ जिसको पार किया हो वह, 'गित्थिन्ना आवया गद्धं' (सुर ८, ८६), 'निन्थिणभवसमुद्धो' (स १३६)।
 णिदंस सक [नि + दर्शय] १ उदाहरण बतलाना, दृष्टान्त दिखाना। २ दिखाना। गिदंसेद (पिग)। वक्रु, णिदंसत (सुपा ८६)।
 णिदंसण न [निदर्शन] १ उदाहरण, दृष्टान्त (अभि २०३)। २ दिखाना (ठा १०)।
 णिदंसिअ वि [निदर्शित] प्रदर्शित, दिखाया हुआ; 'एव विचिचित्तरं निदंसिओ नियकरो

मए तीए' (सुर ६, ८२, उप ६६७, साध ४०)।
 णिदरिसण देखो णिदंसण (उव, उप ३८४)।
 णिदरिसिम वि [निदर्शित] उपदर्शित, बतलाया हुआ (धर्मस १०००)।
 णिदा स्त्री [दे] १ वेदना-विशेष, ज्ञान-युक्त वेदना (भग १६, ५)। २ जानते हुए भी की जाती प्राणि-हिंसा (पिड)।
 णिदाण देखो णिआण (विपा १, १, अत १५, नाट—वेणी ३३)।
 णिदाया देखो णिदा (पण ३५)।
 णिदाह पुं [निदाय] १ घर्म, घाम, उष्ण। २ ग्रीष्म-काल, गरमी का भीसिम। ३ जेठ मास (आव ५)।
 णिदाह पुं [निदाघ] तीसरा नरक का एक नरक-स्थान (देवेन्द्र ८)।
 णिदाह पुं [निदाह] असाधारण दाह (आव ५)।
 णिदेस पुं [निदेश] आज्ञा, हुक्म (कुप्र ४२६)।
 णिदेसिअ वि [निदेशित] १ प्रदर्शित। २ उक्त, कथित (पउम ५, १४५)।
 णिदोच्च न [दे] १ भय का अभाव। २ स्वास्थ्य, तंदुल्लेखी (पव २६८)।
 णिद्विआण न [निद्राध्यान] निद्रा में होता ध्यान, दुर्व्याप्त-विशेष (आउ)।
 णिद्वि वि [निर्द्वन्द्व] द्वन्द्व-रहित, क्लेश-वर्जित (सुपा ४५५)।
 णिदंभ वि [निर्दम्भ] दम्भ रहित, कपट-रहित (सुपा १४७)।
 णिद्वि (अप) देखो णिदा = निद्रा (पि ५६६)।
 णिद्विड वि [निर्दग्ध] १ जलाया हुआ, भस्म किया हुआ (सुर १४, २६, अंत १५)। २ पुं. नृप-विशेष (पउम ३२, २२)। ३ रत्न-प्रभा-नामक नरक-भूयित्री का एक नरकावास (ठा ६)। 'मज्झं पुं [मध्य] नरकावास-विशेष, एक नरक-प्रदेश (ठा ६)। 'वत्तं पुं [वर्त] नरकावास-विशेष (ठा ६)। 'ोसिद्ध पुं [वशिष्ट] नरक-प्रदेश-विशेष (ठा ६)।
 णिह्य वि [निर्दय] दया-हीन, कसणा-रहित, निष्ठुर (पणह १, १, गडड)।

णिअया स्त्री [नियता] जम्बू-वृक्ष विशेष,
जिममे यह जम्बू-द्वीप कहलाता है (इक) ।
णिअर पुं [निकर] राशि, समूह, जत्था, ढेर
(गा ५६६, पात्र गउड) ।
णिअरण न [दे] दण्ड, शिक्षा (स ४१६) ।
णिअरिअ वि [दे] राशि रूप में स्थित (दे
४, ३८) ।
णिअल न [दे] नूपुर, पैजनी या पावजेव,
स्त्री का पादाभरण-विशेष (दे ४, २८) ।
णिअल पुं [निगड] वेदी, सांकल (मे ३, ८,
विषा १, ६) । देखो णिगल ।
णिअलाइअ वि [निगडित] सांकल से
णिअलाविअ नियन्त्रित, जकड़ा हुआ (गा
णिअलिअ ४५४, ५००, पात्र, गउड, से
५, ४८) ।
णिअल पु [दे नियल] ग्रहाधिष्ठायक देव-
विशेष (ठा २, ३) ।
णिअल वि [निज] स्वकीय, आत्मीय (महा) ।
णिअस देखो णिअस । नियसह (सुपा ६२) ।
णिअसण देखो णिअंसण (हेका ५६, काप्र
२०१) ।
णिअसिय वि [निवसित] परिहित, पहना
हुआ (सुपा १५३) ।
णिअह देखो णियह (नाट—मालती १३८) ।
णिआ स्त्री [निदा] प्राणि-हिंसा (पिड १०३) ।
णिआ° देखो णिअय = (दे) । °वाइ वि
[°वादिन्] नित्यवादी, पदार्थ को नित्य
माननेवाला (ठा ८) ।
णिआइय देखो णिकाइय (सूत्र १, ६) ।
णिआग पु [नियाग] १ नियत योग । २
निश्चित पूजा । ३ मोक्ष, मुक्ति (आचा,
सूत्र १, १, २) । ४ न ग्रामन्याय देकर
जो भिक्षा दी जाय वह (दस ३) ।
णिआग देखो णाय = न्याय (आचा) ।
णिआण न [निदान] १ आरम्भ, सावध
व्यापार (सूत्र १, १०, १) । २ रोग-कारण,
रोग की पहचान (पिड ४५६) ।
णिआण न [निदान] १ कारण, हेतु;
‘अहो अण्ण नियाण महतो विवाओ’ (स
३६०, पात्र, णाया १, १३) । २ किसी
वस्तुनुष्ठान की फल-प्राप्ति का अभिलाष

संकल्प-विशेष (आ ३३, ठा १०) । ३
मूल कारण (आचा) । °कड वि [°कृन्]
जिसने अपने शुमानुष्ठान के फल का अभिलाष
किया हो वह (सम १५३) । °कारि वि
[°कारिन्] वही अनन्तर उक्त अर्थ (ठा ६) ।
णिआण न [निपान] कूप या तालाब के पाम
पशुओ के जल पीने के लिए बनाया हुआ जल-
कुण्ड, आहाव, हौदी, चरही, ‘पइभवण पइहट्टं
पइसगं पइसह पइनियाण’ (उप ७२८ टी) ।
णिआणिआ स्त्री [दे] खराब ठूणो का
उन्मूलन (दे ४, ३५) ।
णिआम देखो णिअम = नियमय । सकृ,
उवसग्गा णिआमित्ता ग्रामोक्खाए परिव्वए’
(सूत्र १, ३, ३) ।
णिआम देखो णिआम (सूत्र १, १०, ८) ।
णिआमग वि [नियामन] नियम-कर्त्ता,
णिआमय नियन्ता (सुपा ३१६) । २
निश्चायक, विनिगमक (विसे ३४७०, स
१७०) ।
णिआमिअ वि [नियमित] नियम में रखा
हुआ, नियन्त्रित (स २६३) ।
णिआय पुं [नियाग] प्रशस्त धर्म (सूत्र १,
१, २, २०) ।
णिआर सक [काणेक्षित कृ] काली नजर से
देखना । णिआरह (हे ४, ६६) ।
णिआरिअ वि [काणेक्षितीकृत] १ काली
नजर से देखा हुआ, आधी नजर से देखा
हुआ । २ न आधी नजर से निरीक्षण
(कुमा) ।
णिआह पुं [निदाघ] १ ग्रीष्म काल, ग्रीष्म
ऋतु । २ उष्ण, धर्म, गरमी (गउड) ।
णिइअ वि [नैत्यिक] नित्य का, ‘निइए
पिडे दिज्जइ’ (आचा २, १, १, ६) ।
णिइग वि [दे. नित्य, नैत्यिक] नित्य,
णिइय शाश्वत, अविनश्य (पएह २, ४—
पत्र १४१, सूत्र १, १, ४, २, ४, एदि,
आचा, सम १३२) ।
णिइव वि [निष्कृप] निर्दय, कठोर (आकृ २६) ।
णिउअ वि [निवृत्त] परिवेष्टित, परोक्षित
(हे १, १३१) ।
णिउअ वि [नियुत] सुसगत, सुष्ठिष्ट (णाय
१, १८) ।

णिउचिअ वि [निकुञ्चित] संकुचित, सकुचा
हुआ, थोड़ा मुड़ा हुआ (गा ५६३, मे ६,
१६, पात्र, म ३३५) ।
णिउज सक [नि + युज्] जोड़ना, संयुक्त
करना, किसी कार्य में लगाना । कर्म णिउ-
जीअमि (पि ५४६) । वकृ णिउजमाग
(सूत्र १, १०) । संकृ निउजिऊण, निउजिय
(स १०४, महा) । कृ. णिउजियव्व,
णिउत्तव्व (उप पृ १०, कुमा) ।
णिउज पुं [निङ्गज्] १ गहन, लता आदि
से निविड स्थान (कुमा, गा २१७) । २
गह्वर (दे ६, १२३) ।
णिउम पु [निकुम्भ] कुम्भकर्ण का एक
पुत्र (से १२, ६२) ।
णिउमिला स्त्री [निकुम्भिला] यज्ञ-स्थान
(से १५, ३६) ।
णिउक्क वि [दे] तूण्योक, मौन रहनेवाला
(दे ४, २७, पात्र) ।
णिउक्कण पुं [दे] १ वायस, काक, कौआ ।
२ वि मूक, वाक्-शक्ति से हीन (दे ४, ५१) ।
णिउज्ज न [न्युज्ज] आसन-विशेष (एदि
१२८ टी) ।
णिउज्जम वि [निरुद्धम] उद्यम-रहित,
आलसी (सूत्र २, २) ।
णिउड्ड अक [मस्ज्, नि + वुड्] मञ्जन
करना, झूबना । णिउड्ड (हे १, १०१) ।
वकृ णिउड्डमाण (कुमा) ।
णिउड्ड वि [मग्न, निवृद्धि] झूबा हुआ,
निमग्न (से १०, १५, १५, ७४) ।
णिउण वि [निपुण] १ दक्ष, चतुर, कुशल
(पात्र, स्वप्न ५३, प्रासू ११, जो ६) । २
सूक्ष्म, जो सूक्ष्म बुद्धि से जाना जा सके (जो
२, राय) । ३ क्रिबि दक्षता से, चतुराई से,
कुशलता से (जीव ३) ।
णिउण वि [निपुण] १ नियत गुणवाला । २
निश्चित गुण से युक्त (राज) । ३ सुनिश्चित,
विनिर्णीत (पचा ४) ।
णिउणिय वि [नैपुणिक] निपुण, दक्ष, चतुर
(ठा ६) ।
णिउत्त वि [नियुक्त] १ व्यापारित, कार्य में
लगाया हुआ (पचा ८) । २ निवद्ध (विसे
३८८) ।

णिद्धूय देखो णिद्धूय (जीव ३)।

णिद्धोअ वि [निधौत] १ घोया हुआ (गा ६३६, से १४, १६, स १६१)। २ निर्मल, स्वच्छ, 'निद्धोयउदयकखिर—' (वज्रा १५८)।

णिद्धोभास वि [स्निग्धावभास] चमकीला, स्निग्धपन से चमकता (गाथा १, १—पत्र ४)।

णिधण न [निधन] विनाश, मृत्यु, मौत (नाट—मृच्छ २५२)।

णिधत्त वि [निधत्त] निकाचित, निश्चित (ठा ८—पत्र ४३४)।

णिधत्त न [निधत्त] १ कर्मों का एक तरह का अवस्थान, बंधे हुए कर्मों का तप्त सूची-समूह की तरह अवस्थान। २ वि. निविड भाव को प्राप्त कर्म-मुद्गल (ठा ४, २)।

णिधत्ति स्त्री [निधत्ति] करण-विशेष, जिससे कर्म-मुद्गल निविड रूप से व्यवस्थापित होता है (पंच ५)।

णिधम्म देखो णिद्धम्म = निर्धम्मन् (श्लोक ३७ भा)।

णिधान देखो णिहाण (नाट—महावीर १२०)।

णिधूय देखो णिद्धुण।

णिन्नाम सक [निर् + नमय्] नमाना, झुकाना। णिन्नामए (सूत्र १, १३, १५)।

णिन्नीय देखो णिण्णीअ (धर्मवि ५)।

णिपट्ट न [दे] गाढ (प्राक ३८)।

णिपट्ठिय वि [निपत्तित] नीचे गिरा हुआ (सण)।

णिपा सक [नि + पा] पीना। सक. निपीय (सम्मत्त २३०)।

णिपाइ वि [निपात्तिन्] १ नीचे गिरने-वाला। २ सामने गिरनेवाला (सूत्र १, ५)।

णिपूर पुं [निपूर] नन्दीवृक्ष (आचा २, १, ८, ३)।

णिप्पअं प देखो णिप्पकंप (से ६, ७८)।

णिप्पएस वि [निष्प्रदेश] १ प्रदेश-रहित। २ पुं. परमाणु (विसे)।

णिप्पंक वि [निष्पङ्क] कदंभ-रहित, पौंक-रहित (सम १३७, भग)।

णिप्पकिय वि [निष्पङ्किन्] पंक-रहित (मवि)।

णिप्पख सक [निर् + पक्षय्] पक्ष-रहित

करना, पक्ष तोड़ना। णिप्पखेति (विपा १, ८)।

णिप्पंद वि [निप्पन्द] चलन-रहित, स्थिर (से २, ४२)।

णिप्पकंप वि [निष्प्रकम्प] कम्प-रहित, स्थिर (सम १०६, परह २, ४)।

णिप्पक्ख वि [निष्पक्ष] पक्ष-रहित (गउठ)।

णिप्पगल वि [निष्प्रगल] टपकनेवाला, झरने-वाला, झूनेवाला (श्लोक ३५, श्लोक ३४ भा)।

णिप्पच्चवाय वि [निष्प्रत्यवाय] १ प्रत्यवाय-रहित, निर्विघ्न (श्लोक २४ टी)। २ निर्दोष, विशुद्ध, पवित्र, 'णिप्पच्चवायचरणा कज्जं साहति' (सार्ध ११७)।

णिप्पच्छिम्म वि [निष्पश्चिम] १ अन्तिम, अन्त का (से १२, २१)। २ परिशिष्ट, अवशिष्ट, बाकी का, 'णिप्पच्छिमाईं असईं दुक्खालोआईं महुअपुप्फाई' (गा १०४)।

णिप्पट्ट वि [दे] अधिक (दे ४, ३१)।

णिप्पट्ट वि [नि स्पट्ट] अस्पष्ट, अव्यक्त। 'पसिणवागरण वि [प्रश्नव्याकरण] निरुत्तर किया हुआ (भग १५, गाथा १, ५, उवा)।

णिप्पट्ट वि [नि स्पट्ट] नहीं छूआ हुआ। 'पसिणवागरण वि [प्रश्नव्याकरण] निरुत्तर किया हुआ (भग १५)।

णिप्पडिक्कम्म वि [निष्प्रतिकर्मन्] संस्कार-रहित, परिष्कार-वर्जित, मलिन (सम ५७, सुपा ४८५)।

णिप्पट्टियार वि [निष्प्रतिकार] निरुपाय, प्रतिकार-वर्जित (परह २, ४)।

णिप्पणिअ वि [दे] जल-घौत, पानी से घोया हुआ (पड्)।

णिप्पण्ण देखो णिप्फण्ण (गा ६८६)।

णिप्पण्ण वि [निष्प्रज्ञ] बुद्धि-रहित, प्रज्ञा-शून्य (उप १७६ टी)।

णिप्पत्त वि [निष्पत्र] पत्र-रहित (गा ८८७, वव १)।

णिप्पत्ति } देखो णिप्फत्ति (पंचा १८, सखि णिप्पत्ति } ६)।

णिप्पन्न देखो णिप्पण्ण (कुप्र २०८)।

णिप्पभ वि [निष्प्रभ] निस्तेज, फीका (महा)।

णिप्परिग्गाह वि [निप्परिग्रह] परिग्रह-रहित (उत्त १४)।

णिप्पल्लिवयण वि [निष्प्रतिवचन] निरुत्तर, उत्तर देने में असमर्थ (सम ६०)।

णिप्पसर वि [निष्प्रसर] प्रसर-रहित, जिसका फैलाव न हो (पि ३०५)।

णिप्पह देखो णिप्पभ (से १०, १२, हे २, ५३)।

णिप्पाइय देखो णिप्पाइय (कुप्र १६६)।

णिप्पाण वि [निष्प्राण] प्राण-रहित, निर्जीव (गाथा १, २)।

णिप्पाल देखो णेपाल (धर्मवि ६६)।

णिप्पाव पुं [निष्पाप] एक दिन का उपवास (संवेध ५८)।

णिप्पाव देखो णिप्पाव (पि ३०५)।

णिप्पिच्छ वि [दे] १ ऋजु, सरल। २ दृढ, मजबूत (दे ४, ४६)।

णिप्पिट्ट वि [निष्पिट्ट] पीसा हुआ (दे ८, २०, सण)।

णिप्पिट्ट न [निष्पिट्ट] पेण की समाप्ति (पिड ६०२)।

णिप्पिवास वि [निष्पिपास] पिपासा-रहित, वृष्णा-वर्जित, नि स्पृह (परह १, १, गाथा १, १, सुर १, १३)।

णिप्पिवासा स्त्री [निष्पिपासा] स्पृहा का अभाव (वि १८)।

णिप्पिह वि [नि स्पृह] स्पृहा-रहित, निर्मम (हे २, २३, उप ३२० टी)।

णिप्पीडिअ वि [निष्पीडित] दबाया हुआ (से ५, २५)।

णिप्पीलण न [निष्पीडन] दबाव, दबाना (आचा)।

णिप्पील्लिय देखो णिप्पीडिअ। २ निचोटा हुआ, 'निप्पील्लियाईं पोत्ताई' (स ३३२)।

णिप्पुसण न [निष्पुंसन] १ पोछना, मार्जन। २ अभिमर्दन (हेर, ५३)।

णिप्पुज्ज वि [निष्पुण्य] पुण्य-रहित (कुप्र ३१८)।

णिप्पुज्जग वि [निष्पुण्यक] १ पुण्य-रहित। २ पु. स्वनाम-ख्यात एक कुलपुत्र (सुपा ५४५)।

णिप्पुलाय पुं [निष्पुलाक] आगामी चौबीसी में होनेवाले एक स्वनाम-ख्यात जिन-देव (सम १५३)।

गिर्कित सक [नि + कृत्] काटना, छेदना ।
 गिर्कितइ (पुष्प ३३७, उव) । गिर्कितए,
 (उव, काल) ।
 गिर्कितय वि [निर्कृतक] काट डालनेवाला
 (काल) ।
 गिर्कुट्ट सक [नि + कुट्ट] १ कूटना । २
 काटना । गिर्कुट्टइ, गिर्कुट्टेमि (उवा) ।
 गिर्कूणिय वि [निर्कूणित] टेढ़ा किया हुआ,
 बक्र किया हुआ (दे १, ८८) ।
 गिर्केय पुं [निकेत] गृह, आश्रय, निवास-
 स्थान (गुणाय १, १६, उत्त २, आचा) ।
 गिर्केयण न [निकेतन] ऊपर देखो (सुर
 १३, २१, महा) ।
 गिर्कोय पुं [निकोच] सकोच, सिमट (दे ७,
 १५) ।
 गिर्क वि [दे] सुनिर्मल, सर्वथा मल-रहित
 (गुणाय १, १) ।
 गिर्कक देखो गिर्कल = निष्क (प्राक् २१) ।
 गिर्कइअव वि [निष्कैतव] १ कपट-रहित,
 निर्माय (कुमा) । २ कपट का अभाव,
 निष्कपटपन (गा ८५) ।
 गिर्ककड वि [निष्ककड] १ आवरण-रहित
 (श्रौप) । २ उपधात-रहित (सम १३७) ।
 गिर्कखि वि [निष्काडिक्षन्] अभिलाषा-
 रहित (उत्त १६, ३४) ।
 गिर्कखिय न [निष्काडिक्षत] १ आकाशा
 का अभाव । २ दर्शनान्तर की अनिच्छा (उत्त
 २, पडि) ।
 गिर्कखिय वि [निष्काडिक्षत, °क] १
 आकाशा-रहित । २ दर्शनान्तर के पक्षपात से
 रहित (सूत्र २, ७, श्रौप, राय) ।
 गिर्कचण वि [निष्काञ्चन] सुवर्ण-रहित,
 धन-रहित, नि स्व, निर्धन (सुपा १६८) ।
 गिर्कटय वि [निष्कटक] कटक-रहित,
 बाधरहित, शत्रु-रहित (सुपा २०८) ।
 गिर्कड वि [निष्काण्ड] १ काण्ड रहित,
 स्कन्ध-वर्जित, २ अवसर-रहित (गा ४६८) ।
 गिर्कंत वि [निष्क्रान्त] १ निर्गत, बाहर
 निकला हुआ (से १, ५६) । २ जिसने दीक्षा
 ली हो वह, गृहस्थाश्रम से निर्गत (आचा) ।
 गिर्कतार वि [निष्क्रान्तार] अरण्य से निर्गत,
 (ठा ३, १) ।

गिर्कति स्त्री [निष्क्रान्ति] निष्क्रमण, बाहर
 निकलना (प्राक् २१) ।
 गिर्कतु वि [निष्क्रमित] बाहर निकलने-
 वाला (ठा ३, १) ।
 गिर्कद सक [नि + कन्द] उन्मूलन करना ।
 निक्कदइ (सम्मत १७४) ।
 गिर्कप वि [निष्कम्प] कम्प-रहित, स्थिर
 (हे २, ४, अग्नि २०१) ।
 गिर्कज वि [दे] अनवस्थित, चंचल (दे ४,
 ३३, पाय) ।
 गिर्कट्ट वि [निष्कट्ट] कुश, दुर्बल, क्षीण
 (ठा ४, ४—पत्र २७१) ।
 गिर्कड वि [दे] १ कठिन (दे ४, २६) ।
 २ पु. निश्चय, निर्णय (पड्) ।
 गिर्कडिडय वि [निष्कट्ट, निष्कर्षित] बाहर
 खींचा हुआ, बाहर निकाला हुआ (स ६०,
 २१५) ।
 गिर्कण वि [निष्कण] धान्य-कण-रहित,
 अत्यन्त गरीब (विपा १, ३) ।
 गिर्कम अक [निर् + क्रम्] १ बाहर
 निकलना । २ दीक्षा लेना, सन्यास लेना ।
 गिर्कमामि (पि ४८१) । वक्र. गिर्कमंत
 (हेका ३३२, मृदा, ८२) ।
 गिर्कम पु [निष्क्रम] नीचे देखो (नाट—
 मृदा २२४) ।
 गिर्कमण न [निष्क्रमण] १ निर्गमन, बाहर
 निकलना (मृदा २२४) । २ दीक्षा, सन्यास
 (आचा) ।
 गिर्कम्म वि [निष्कर्मन्] कर्मरहित, मुक्ति-
 प्राप्त, मुक्त (द्रव्य १४) ।
 गिर्कम्म वि [निष्कर्मन्] १ कार्य रहित,
 निष्कर्मा (गा १६६) । २ मोक्ष, मुक्ति । ३
 संवर, कर्मों का निरोध, (आचा) ।
 गिर्कय पु [निष्क्रय] १ बदला, उन्मूलन
 (सुपा ३४१, पउम ७, १२६) । २ श्रुति,
 वेतन, मज्जरी (हे २, ४) ।
 गिर्करण न [निर्करण] १ तिरस्कार । २
 परिभव । ३ विनाश (संबोध १६) ।
 गिर्करुण वि [निष्करुण] कर्षण-रहित,
 दया वर्जित (नाट—मालती ३२) ।
 गिर्कल वि [निष्कल] कला-रहित (सुपा १) ।

गिर्कल वि [दे] पोलापन से रहित (सुपा १,
 भग १५) ।
 गिर्कलंक वि [निष्कलङ्क] कलक-रहित,
 वेदाग (स ४१८, महा, सुपा २५३) ।
 गिर्कलुण देखो गिर्करुण (पणह १, १) ।
 गिर्कलुस वि [निष्कलुप] १ निर्दोष, निर्मल ।
 २ निरुपद्रव, उपद्रव-रहित (से १२, ३४) ।
 गिर्कवड वि [निष्कपट] कपट-रहित (उप
 पृ १६०) ।
 गिर्कवय वि [निष्कवच] कवच-रहित, वर्म-
 वर्जित (ठा ४, २) ।
 गिर्कस अक [निर् + कस्] बाहर निक-
 लना । गिर्कसे (सूत्र १, १४, ४) ।
 गिर्कस सक [निर् + कस्] निकासना,
 बाहर निकालना । कर्म गिर्कसिज्जइ
 (उत्त १) ।
 गिर्कसण न [निष्कसन] निर्गमन (राज) ।
 गिर्कसाय वि [निष्कपाय] १ कषाय-रहित,
 क्लोधादि वर्जित (आउ) । २ पु भरत-क्षेत्र के
 एक भावी तीर्थंकर-देव (सम १५३) ।
 गिर्का स्त्री [नीका] वाम-नामिका (कुमा) ।
 गिर्काम वि [निष्काम] अभिलाषा-रहित
 गिर्कारण वि [निष्कारण] १ कारण-रहित,
 अहेतुक (सुर २, ३६) । २ क्वि. विना
 कारण (आव ६) ।
 गिर्कारण वि [निष्कारण] निरुपद्रव, 'निस
 निक्कारणो दहो' (पिड ५१६) ।
 गिर्कारणिय वि [निष्कारणिक] कारण-
 रहित, हेतु-शून्य (श्रौष ५) ।
 गिर्कारिम वि [निष्कारण] विना कारण
 (आख्यानक० २३ अधिकार, भावादेयाकथा,
 पद्य ५२५) ।
 गिर्काल सक [निर् + कासय] बाहर
 निकालना । सक निक्कालेउ (सुपा १३) ।
 गिर्कालिअ देखो गिर्कासिय (तो १५) ।
 गिर्कास पु [निष्कास] निकास, बाहर निका-
 लना (धर्मवि १४६) ।
 गिर्कासिय वि [निष्कासित] बाहर निकाला
 हुआ (राज) ।
 गिर्किचण वि [निष्किञ्चन] निर्धन, धर-
 रहित, नि स्व, गरीब (आवम) ।

णिन्भच्छिअ वि [निर्भस्मित] अपमानित, अवहेलित (गा ८६८, सुपा ४७७) ।

णिन्भन्न वि [निर्भय] भय-रहित, निडर (गाया १, ४, महा) ।

णिन्भर सक [निर् + भृ] भरना, पूर्ण करना । कवक णिन्भरैत (से १५, ७४) ।

णिन्भर वि [निभर] १ पूर्ण, भरपूर (से १०, १७) । २ व्यापक, फेलनेवाला (कुमा) । ३ क्रि वि पूर्णरूप से 'मेघो य णिन्भर वरिसइ' (आवम) ।

णिन्भिद सक [निर् + भिद] ताडना, विदारण करना । कवक णिन्भिज्जन, णिन्भिज्जमाण (से १४, २६, भग १८, २, जीव ३) ।

णिन्भिच्च वि [निर्भीक] भय-रहित, निडर (सुपा १४३, २४६, २७५) ।

णिन्भिज्जन } देखो णिन्भिद ।
णिन्भिज्जमाण }

णिन्भिद वि [दे] आक्रान्त (भवि) ।

णिन्भिण वि [निर्भिन्न] १ विदारित, तोड़ा हुआ (पात्र) । २ विद्ध (से ५, ३४) ।

णिन्भीअ वि [निर्भीक] भय-रहित, निडर (से १३, ७०) ।

णिन्भुग्ग वि [दे] भग्न, खण्डित (दे ४, ३२) ।

णिन्भुय देखो णिन्भुअ (वेइय ५८६) ।

णिन्भेय पुं [निर्भेद] भेदन, विदारण (सुपा ३२७) ।

णिन्भेयण न [निर्भेदन] ऊपर देखो (सुर २, ६६) ।

णिन्भेरि वि [निर्भेरित] प्रसारित, फैलाया हुआ (उत्त १२, २६) ।

णिभ देखो णिह = निभ (उव, ज ३) ।

णिभच्छिअ देखो णिन्भच्छिअ (पिड २१०) ।
णिभग पु [निभङ्ग] भङ्गन, खण्डन, चोटन (राज) ।

णिभाल सक [नि + भालय] देखना, निरीक्षण करना । णिभालेहि (आवम) ।
कवक णिभालयंत (उप पृ ५३) । कवक णिभालिज्जन (उप ६८६ टी) ।

णिभालि वि [निभालिन] दृष्ट, निरीक्षित (उप पृ ५८) ।

णिभिअ } देखो णिहुअ (परह २, ३, गा
णिभुअ } ८००) ।

णिभेल सक [निर् + भेलय] बाहर करना ।
कवक णिभेल्लंत (परह १, ३—पत्र ४५) ।

णिभेल्लण न [दे] गृह, घर, स्थान (कप्प) ।

णिम सक [नि + अम] स्थापन करना ।
णिमइ (हे ४, १६६, पड) । णिमेइ (पि ११८) । कवक णिमेत (से १, ४१) ।

णिमन सक [नि + मन्त्रय] निमन्त्रण देना, न्यौना देना । णिमनेइ (महा) । कवक णिम-
तेमाण (आवा २, २ ३) । सक णिमनि-
ऊण (महा) ।

णिमतण न [निमन्त्रण] निमन्त्रण, न्यौता, बुलावा (उप पृ ११२) ।

णिमतणा छी [निमन्त्रणा] ऊपर देखो (पचा १२) ।

णिमतिय वि [निमन्त्रन] जिसको न्यौता दिया गया हो वह (महा) ।

णिमग्ग वि [निमग्न] डूबा हुआ (पउम १०६, ४, औप) । °जला छी [°जला] नदी-विशेष (ज ३) ।

णिमज्ज सक [नि + मज्ज] डूबना, निम-
जन करना । णिमज्जइ (पि ११८) । कवक
णिमज्जत (गा ६०६, सुपा ६४) ।

णिमज्जग वि [निमज्जक] १ निमजन करने-
वाला । पु वानप्रस्थाश्रमी तापम-विशेष, जो
स्नान के लिए थोड़े समय तक जलाशय में
निमग्न रहते हैं (औप) ।

णिमज्जण न [निमज्जन] डूबना, जल-प्रवेश (सुपा ३५४) ।

णिमाणिअ देखो णिम्माणिअ = निर्मानिअ (भवि) ।

णिमे सक [नि + युज] जोड़ना । णिमेइ (प्राकृ ६७) ।

णिमिअ वि [न्यस्त] स्थापित, निहित (कुमा, से १, ४२, म ६, ७६०, मण) ।

णिमिअ वि [दे] आघात, सूँघा हुआ (पड) ।

णिमिण देखो णिम्माण = निर्माण (कम्म १, २५) ।

णिमित्त न [निमित्त] १ कारण, हेतु (प्रासू १०४) । २ कारण-विशेष, महत्कारि कारण

(सूअ २, २) । ३ शास्त्र-विशेष, भविष्य आदि जानने का एक शास्त्र (श्रीघ १६, भा ८) ।
४ अतीन्द्रिय ज्ञान में कारण-भूत पदार्थ (ठा ८) । ५ जेन साधुओं की भिक्षा का एक दोष (ठा ३, ४) । °पिड पु [°पिण्ड] भविष्य आदि वतला कर प्राप्त की हुई भिक्षा (आवा २, १, ६) ।

णिमित्ति वि [निमित्तिन्] निमित्त-शास्त्र का जानकार (कुप्र ३७८) ।

णिमित्तिअ देखो णेमित्तिअ (सुपा ४०२) ।

णिमेइ सक [नि + मोल] घ्राँव मूँदना, आख मोचना । णिमिल्लइ (हे ४, २३२) ।

णिमिल्ल वि [निमालिन] जिसने नेत्र बंद किया हो, मुद्रित-नेत्र (से ६, ६१, ११, ५०) ।

णिमिल्लण देखो णिमिल्लण (राज) ।

णिमिस सक [नि + मिप्] घ्राँव मूँदना ।
निमिसति (तट्ट ५३) ।

णिमिस पु [निमिष] नेत्र-संकोच, अक्षि-
मीलन, पलक मारने भर का समय (गा ३८५,
सुपा २१६, गउड) ।

णिमीलण न [निमीलन] अक्षि-संकोच (गा ३६७, सूअ १, ५, १, १२ टी) ।

णिमीलिअ वि [निमीलित] मुद्रित (नेत्र)
(गा १३३, से ६, ८६, महा) ।

णिमीस न [निमिश्र] एक विद्यावर-नगर (इक) ।

णिमे सक [नि + मा] स्थापन करना ।
णिमेसि (गउड) ।

णिमेण न [दे] स्थान, जगह (दे ४, ३७) ।

णिमेल छीन [दे] दन्त-मांस (दे ४, ३०) ।
छी °ला (दे ४, ३०) ।

णिमेस पु [निमेप] निमीलन, अक्षि संकोच,
पलक का गिरना, पलक (आ १६, उव) ।

णिमेसि देखो णिमे ।

णिमेसि वि [निमेपिन्] घ्राँव मूँदनेवाला (सुपा ४४) ।

णिम्म सक [निर् + मा] बनाना, निर्माण करना । णिम्मइ (पड) । णिम्मेइ (वम्म १२ टी) । कवक णिम्माअत (नाट—
मालती ५४) ।

णिम्म पुछी [नैम] जमीन से ऊँचा निकलता प्रदेश (राय २७) ।

णिगडिय वि [निगडित] नियन्त्रित (हम्मोर ३०) ।
 णिगह पुं [दे] घमं, घाम, गरमी (दे ४, २७) ।
 णिगण वि [नम] नंगा, वस्त्र-रहित (सूत्र १, २, १, ६) ।
 णिगद् सक [नि + गद्] १ कहना । २ पढ़ना, अभ्यास करना । वक्र. णिगदमाण (विसे ८५०) ।
 णिगम पु [निगम] १ प्रकृष्ट बोध (विसे १२८७) । २ व्यापार-प्रधान स्थान, जहाँ व्यापारी, विशेष संख्या में रहते हो ऐसा शहर आदि (पण्ड १, ३, औप; आवा) । ३ व्यापारि-समूह (सम ५१) ।
 णिगमण न [निगमन] अनुमान प्रमाण का एक अवयव, उपसंहार (दसनि १) ।
 णिगमिअ वि [दे] निवामित (पह) ।
 णिगर पुं [निकर] समूह, राशि, जत्या (विपा १, ६, उवा) ।
 णिगरण न [निकरण] कारण, हेतु (भग ७, ७) ।
 णिगरिय वि [निकरित] सर्वथा शोधित (पण्ड १, ४) ।
 णिगल देखो णिअल । २ वेदी के आकार का सौवर्ण आभूषण-विशेष (औप) ।
 णिगलिय देखो णिगरिय (जं २) ।
 णिगाम देखो णिकाम = निकाम (पिंड ६४५) ।
 णिगाम न [निकाम] अत्यन्त, अतिशय (ठा ५, २, आ १६) ।
 णिगास पुं [निकर्ष] परस्पर संयोजन, मिलाना, जोड़ (भग २५, ७) ।
 णिगिडिम्य देखो णिगिण्ह ।
 णिगिट्ट देखो णिकिट्ट (सुपा १८३) ।
 णिगिण वि [नग्न] नग्न, नंगा (आवा २, २, ३, ७, १, पि १३३) ।
 णिगिण्ण न [नाग्न्य] नंगापन, नग्नता (उत्त ५, २१, सुख ५, २१) ।
 णिगिण्ह सक [नि + गह] १ निग्रह करना, दण्ड करना, शिक्षा करना । २ रोकना । ३ अक बैठना, स्थिति करना ।

सकृ. णिगिडिम्य, णिगघेडं (ठा ७, कप्प; राज) । कृ. णिगिण्हियच्च (उप पु २३) ।
 णिगुज अक [नि + गुज्] १ शूजना, अव्यक्त शब्द करना । २ नीचे नमना । वक्र. णिगुजमाण (णाय १, ६—पत्र १५७) ।
 णिगुज देखो णिउज्ज = निकुज्ज (आवम) ।
 णिगुण वि [निगुण] गुण-रहित (पण्ड १, २) ।
 णिगुरं व देखो णिउरं व (पण्ड १, ४) ।
 णिगूह वि [निगूह] १ गुप्त, प्रच्छन्न (कप्प) । २ मौनी, मौन रहनेवाला (राज) ।
 णिगूह सक [नि + गूह] छिपाना, गोपन करना । णिगूहह (उवा, महा) । णिगूहंति (सट्ठि ३२) । संकृ. णिगूहिऊण (स ३३५) ।
 णिगूहण न [निगूहन] गोपन, छिपाना (पचा १५) ।
 णिगूहिअ वि [निगूहित] छिपाया हुआ, गोपित (सुपा ५१८) ।
 णिगोअ पुं [निगोद] अनन्त जीवों का एक साधारण शरीर-विशेष (भग, पण्ड १) ।
 °जीव पुं [°जीव] निगोद का जीव (भग २५, ६, कम्म ४, ८५) ।
 णिग्ग देखो णिग्गम = निर् + गम् । वक्र. णिग्गंत (भवि) ।
 णिग्गठिद (शौ) वि [निग्रथित] शुष्कित, ग्रथित (पि ५१२) ।
 णिग्गतुं } देखो णिग्गम = निर् + गम् ।
 णिग्गतूण }
 णिग्गंथ देखो णिअंठ (औप, औघ ३२८, प्रासू १३६, ठा ५, ३) ।
 णिग्गथ वि [नैर्ग्रन्थ] निग्रन्थ-सम्बन्धी (णाय १, १३, उवा) ।
 णिग्गथी स्त्री [निर्ग्रन्थी] जैन साध्वी (णाय १, १, १४, उवा, कप्प, औप) ।
 णिग्गच्छ अक [निर् + गम्] बाहर निकलना । णिग्गच्छह (उवा, कप्प) । वक्र. णिग्गच्छंत, णिग्गच्छमाण, णिग्गममाण (सुपा ३३०, णाय १, १, सुपा ३५६) । संकृ. णिग्गच्छत्ता, णिग्गंतूण (कप्प, स १७) । हेक. णिग्गंतुं (उप ७२८ टी) ।
 णिग्गम पुं [निर्गम] १ उत्पत्ति, जन्म (विसे १५३६) । २ बाहर निकलना (से ६, ३६)

उप पु ३३२) । ३ द्वार, दरवाजा (से २, २) । ४ बाहर जाने का रास्ता (से ८, ३३) ।
 ५ प्रस्थान, प्रयाण (वृह १) ।
 णिग्गमण न [निर्गमन] १ नि सरण, बाहर निकलना (णाय १, २, सुपा ३३२, भग) । २ पलायन, भाग जाना । ३ अपक्रमण (वव १) ।
 णिग्गमिअ वि [निर्गमित] बाहर निकाला हुआ, निस्सारित (आ १६) ।
 णिग्गमिय वि [निर्गमित] गमाया हुआ, पसार किया हुआ (सम्मत्त १२३) ।
 णिग्गय वि [निर्गत] नि छूत, बाहर निकला हुआ (विसे १५४०, उवा) । °जस वि [°यशस्] जिसका यश बाहर में फैला हो (णाय १, १८) । °मोअ वि [°मोद] जिसकी सुगन्ध खूब फैली हो (पाअ) ।
 णिग्गय वि [निर्गज] हाथी-रहित (भवि) ।
 णिग्गह देखो णिगिण्ह । कृ. णिग्गहियच्च (सुपा ५८०) ।
 णिग्गह पुं [निग्रह] १ दण्ड, शिक्षा (प्रासू १७०, आव ६) । २ निरोध, अवरोध, रोकट (भग ७, ६) । ३ वश करना, काबू में रखना, नियमन (प्रासू ४८) । °ट्ठाण न [°स्थान] न्याय-शास्त्र-प्रसद्धि प्रतिज्ञा-हानि आदि पराजय-स्थान (ठा १, सूत्र १, १२) ।
 णिग्गहण न [निग्रहण] १ निग्रह, शिक्षा, दण्ड (सुर १६, ७) । २ दमन, नियमन, नियन्त्रण (प्रासू १३२) ।
 णिग्गहिय वि [निगृहीत] १ जिसका निग्रह किया गया हो वह (सं ११५) । २ पराजित पराभूत (आवम) ।
 णिग्गहीय देखो णिग्गहिय (सुख १, १) ।
 णिग्गा स्त्री [दे] हरिद्रा, हलदी (दे ४, २५) ।
 णिग्गाल पुं [निर्गाल] निचोड़, रस, 'सीस-घड़ीनिग्गाल' (तदु ४१) ।
 णिग्गालिय वि [निर्गालित] गलाया हुआ (उप पु ८४) ।
 णिग्गाहि वि [निग्गाहिन्] निग्रह करनेवाला (उत्त २५, २) ।
 णिग्गिण्ण वि [दे. निर्गीर्ण] १ निर्गत, बाहर निकला हुआ (दे ४, ३६, पाअ) । २ वान्त, वमन किया हुआ (से ५, २६) ।

गिम्मोहण न [निर्मोहन] विनाश (मै ६१)।
गिम्मोल्ल वि [निर्मूल्य] मूल्य-रहित
(कुमा)।

गिम्मोह वि [निर्मोह] मोह-रहित (कुमा;
आ १२)।

गिरट् श्री [निर्गट्] मूल-नशत्र का अधि-
ष्टायक देव (ठा २ ३)।

गिरट्गार वि [निरिन्चार] अनिचार-रहित
दूषण-वर्जित (मुपा १००)।

गिरट्सय वि [निरतिशय] अत्यन्त, सर्व-
धिक (काल)।

गिरट्आर देखो गिरट्गार (मुपा १००,
रयण १८)।

गिरकुम वि [निरकुश] अकुश-रहित, स्व-
च्छन्दी (कुमा आ २८)।

गिरगण वि [निरङ्गण] निर्लेप लेप-रहित
(श्रीप, उव, गाय १, ११—पत्र १७१)।

गिरगां श्री [दे] मिर का अवगुणन, घूँघट
(दे ४, ३१ २, २०)।

गिरजण वि [निरञ्जन] निर्लेप, लेप-रहित
(म ५८२, कप्प)।

गिरतय वि [निरन्तक] अन्त-रहित (उप
१०३१ टी)।

गिरतर वि [निरन्तर] अन्तर-रहित, व्यव-
धान-रहित (गडड, हे १, १४)।

गिररनराय वि [निरन्तराय] १ निर्विघ्न,
निर्बाध। २ व्यवधान-रहित, सतत, 'धम्म
करेह विमल च निरन्तराय' (पउम ४४,
६७)।

गिरंतरिय वि [निरन्तरित] अन्तर रहित,
व्यवधान-रहित (जीव ३)।

गिरव वि [निरन्त्र] उद्विग्न रहित (वक्र ६७)।

गिरवर वि [निरम्बर] वज्र-रहित, नग्न
(भावम)।

गिरभा श्री [निरम्भा] एक इन्द्राणी, विरोचन
इन्द्र की एक अग्र-महिषी (ठा ५, १ इक)।

गिरम वि [निरग] अग-रहित, अखण्ड,
सम्पूर्ण (विमे)।

गिरहं वि [निरहम्] निर्मल, पवित्र, 'मडयं
व बाहिमो सो निरहमा तेण जलपवाहेण'
(धमंवि १४६)।

गिरक्क पुं [दे] १ चोर, स्तेन। २ पुष्ट,
पीठ। ३ वि स्थित (दे ४, ४६)।

गिरक्किय वि [निराकृत] अपाकृत, निरस्त
(उत्त ६, ५६)।

गिरक्ख सक [निर् + ईच्छ] निरीक्षण
करना देखना। गिरक्खइ (हे ४, ४१८),
'तोवि ताव दिट्ठीए गिरक्खजा' (महा)।

गिरक्खर वि [निरक्षर] मूर्ख, ज्ञान-रहित
(कप्प, वज्जा १५८)।

गिरगार वि [निराकार] आकार-रहित,
'निरगारपच्चक्खाणेवि अरहंताईणमुज्झित्वा'
(सबाव ३८)।

गिरगाल वि [निरगल] १ श्कावट से रहित
(मुपा १६२, ४७१)। २ स्वच्छन्दी, स्वरी,
निरकुश (पाक्ष)।

गिरच्चण वि [निरर्चन] अर्चन-रहित
(उव)।

गिरट् } वि [निरर्थ, °क] १ निरर्थक,
गिरट्ग } निष्प्रयोजन, निकम्मा (उत्त २०)।

२ न. प्रयोजन का अभाव, 'गिरट्गम्मि
विरमो, मेहुणाओ सुसुवुडो' (उत्त २ ४२)।

गिरण वि [निर्गण] ऋण-रहित, करज से
मुक्त (मुपा ५६३, ५६६)।

गिरणास देखो गिरिणास = नश। गिर-
णासइ (हे ४, १७८)।

गिरणुकप वि [निरनुकम्प] अनुकम्पा-रहित,
निर्दय (गाय १, २, बृह १)।

गिरणुककोस वि [निरनुकोश] निर्दय,
दया-शून्य (गाय १, २, प्रासू ६८)।

गिरणुताव वि [निरनुताप] पश्चात्ताप-रहित
(गाय १, २)।

गिरणुतावि वि [निरनुतापिन] पश्चात्ताप-
वर्जित (पव २७४)।

गिरत्थ वि [निरस्त] अपान्त, निराकृत (वव
८)।

गिरत्थ वि [निरर्थ, °क] अनाथक, निकम्मा,
गिरत्थग निष्प्रयोजन (दे ४, १६, पउम
गिरत्थय ६५, ४, पएह १, २ उव, स
४१)।

गिरत्तय पुं [निरन्वय] अन्वय रहित (वर्मस
४६६)।

गिरप्प भक [स्था] बैठना। गिरप्पइ (हे
४, १६)। भूका, गिरप्पोम (कुमा)।

गिरप्प पुं [दे] १ पुष्ट, पीठ। २ वि. उद्दे-
ष्टित (दे ४, ४६)।

गिरप्पण वि [निरात्मीय] अस्वकीय, पर-
कीय (कुप्र ८६)।

गिरभिग्गह वि [निरभिग्रह] अभिग्रह-रहित
(भाव ६)।

गिरभिराम वि [निरभिराम] असुन्दर,
अचाह (पएह १, ३)।

गिरभिलप्प वि [निरभिलाप्य] अनिर्वच-
नीय, वाणी से बतलाने को अशक्य (विसे
८८८)।

गिरभिसंसंग वि [निरभिष्वङ्ग] आसक्ति-
रहित, नि स्पृह (पचा २ ६)।

गिरय पुं [निरय] १ नरक, पाप-भोग-स्थान
(ठा ४, १, आचा मुपा १४०)। २ नरक-
स्थित जीव, नारक (ठा १०) °पाल पु
[°पाल] देव-विशेष (ठा ८, १)। °वलिआ
श्री [°वलिका] १ जैन आगम-ग्रन्थ विशेष
(निर १, १)। २ नरक-विशेष (पएण २)।

गिरय वि [निरत] असक्त, तत्पर, तल्लीन
(उप ६७६ उव, मुपा २६)।

गिरय वि [नीरजम्] रजो-रहित, निर्मल
(भग, गा ८७८)।

गिरव सक [वुमुक्ष] खाने की इच्छा करना।
गिरवइ (पड्)।

गिरव सक [आ + क्षिप्] आक्षेप करना।
गिरवइ (पड्)।

गिरवड्कय वि [निरपेक्ष] अपेक्षा रहित
निरीह, नि स्पृह (विसे ७ टी)।

गिरवकय वि [निरयकाड्क्ष] स्पृहा रहित
नि स्पृह (श्रीप)।

गिरवकंखि वि [निरवकाड्क्षन] नि स्पृह
(गाय १ ६)।

गिरवगाह वि [निरवगाह] अवगाहन-रहित
(पड्)।

गिरवगाह वि [निरवग्रह] निरकुश, स्व-
च्छन्दी, स्वरी (पाक्ष)।

गिरवञ्ज वि [निरपत्य] अपत्य-रहित, नि संतान
(भग, सम १५०)।

गिरवज्ज वि [निरवद्य] निर्दोष, विशुद्ध (दय
५, १, मुर ८, १८३)।

णिच्छम् देखो णिच्छुम (उव, सार्धं १४५)।
णिच्छय सक [निर् + चि] निश्चय करना,
निर्णय करना। वक्तु णिच्छयमाण (उप
७२८ टी)।

णिच्छय पुं [निश्चय] १ निश्चय, निर्णय
(भग, प्रासू १७७)। २ नियम, अविनाभाव
(राज)। ३ नय-विशेष, द्रव्याधिक नय,
वास्तविक पदार्थ को ही माननेवाला मत,
परिणाम-वाद (बृह ४, पंचा १३)। ४ कहा
छी [कथा] अपवाद (निचू ५)।

णिच्छल्ल सक [छिद्] छेदना, काटना।
णिच्छल्लइ (हे ४, १२४)।

णिच्छल्लिअ वि [छिन्न] काटा हुआ (कुमा,
स २५८, गउड)।

णिच्छाय वि [निश्चय] कान्ति-रहित,
शोभा-हीन (पएह १, २)।

णिच्छारय वि [निस्सारक] सार-रहित,
'निच्छारयधारयवूलीण' (आ २७)।

णिच्छिद्ध वि [निश्छिद्र] छिद्र-रहित (गाया
१, ६, उप २११ टी)।

णिच्छिण्ण वि [निच्छिन्न] पृथक्-कृत, अलग
किया हुआ, काटा हुआ (विसे २७३)।

णिच्छिद् देखो णिच्छिद्ध (म ३५०)।

णिच्छिन्न देखो णिच्छिण्ण (पुष्प ४६३,
महा)।

णिच्छिय वि [निश्चित] निश्चित, निर्णीत,
असंदिग्ध (गाया १, १, महा)।

णिच्छीर वि [निक्षीर] क्षीर रहित, दुग्ध-
वर्जित (पएह १)।

णिच्छुड वि [दे] निर्दय, करुणा-रहित (दे
४, ३२)।

णिच्छुट्ट वि [निश्छुटित] निष्कुंठ, छूटा
हुआ (सुर ६, ७२)।

णिच्छुभ सक [नि + क्षिप्] १ बाहर
निकालना। फेंकना। णिच्छुमइ (भग)।
कर्म णिच्छुमइ (पि ६६)। कवक, णिच्छु-
वभमाण (विपा १, २)। संकृ णिच्छुभित्ता,
णिच्छुभिडं (भग, निर १, १)। प्रयो,
णिच्छुभावेइ (गाया १, ८)।

णिच्छुभ पुं [निक्षेप] निष्कासन (पिड
३७५)।

णिच्छुभण न [निक्षेपण] नि सारण,
निष्कासन (निचू १)।

णिच्छुभाविय वि [निक्षेपित] निस्सारित,
बाहर निकाला हुआ (गाया १, ८)।

णिच्छुह सक [नि + क्षिप्] डालना।
निच्छुहइ (सुख ७, ११)।

णिच्छुहणा छी [निक्षेपणा] बाहर निकलने
की आज्ञा, निर्भर्त्सना (गाया १, १६ टी—
पत्र २००)।

णिच्छूड वि [निक्षिप्त] १ उद्वृत्त, निर्गंत
(हे ४, २५८)। २ फेंका हुआ, निक्षिप्त
(प्राप्ता)। ३ निस्सारित, निष्कासित (गाया
१, ८—पत्र १४८, १, १६—पत्र १६६)।

णिच्छूड न [निष्ठयूत] शूक, खखार (विसे
५०१)।

णिच्छोड सक [निर् + छोट्य] १ बाहर
निकलने के लिए घमकाना। २ निर्भर्त्सन
करना। ३ छुड़वाना। णिच्छोडेइ, णिच्छोडेति
(गाया १, १६, १८)। णिच्छोडेजा (उवा)।
संकृ. णिश्छोडइत्ता (भग १५)।

णिच्छोडग न [निश्छोटन] निर्भर्त्सन, बाहर
निकालने की घमकी (उव)।

णिच्छोडणा छी [निश्छोटना] ऊपर देखो
(गाया १, १६—पत्र १६६)।

णिच्छोडिअ वि [निश्छोटित] सफा किया
हुआ (पिड २७६)।

णिच्छोल सक [निर् + तक्ष] छीलना,
छाल उतारना। निच्छोलेइ (निचू १)। वक्तु,
णिच्छोलत (निचू १)। संकृ. निच्छोलिऊण
(महा)।

णिजतय वि [नियन्त्रित] नियमित, अकुशित
(सुर ३, ४)।

णिजिण्ण देखो णिज्जिण्ण (ठा ४, १)।

णिजुंज देखो णिउज = नि + युज्। निजुंजइ
(कुप्र ३४८)।

णिजुद्ध देखो णिउद्ध (निचू १२)।

णिजोजण न [नियोजन] नियुक्ति, कार्य में
लगाना, भारग्रहण (उप १७६ टी)।

णिजोजिय देखो णिओइय (उप १७६ टी)।

णिज वि [दे] सुप्त, सोया हुआ (दे ४, २५,
पड्)।

णिजत देखो णी = नी।

णिज्जण वि [निर्जन] १ विजन, मनुष्य-
रहित, सुनसान। २ न एकान्त स्थान (गउड)।

णिज्जप्प वि [निर्याप्य] १ निर्वाह-कारक।
२ निर्बल, बल को नहीं बढ़ानेवाला, 'अरम-
विरससीयलुवखणिज्जप्पपाणभोयणाइ' (पएह
२, ५)।

णिज्जर सक [निर् + ज] १ क्षय करना,
नाश करना। २ कर्म-पुद्गल को आत्मा से
अलग करना। णिज्जरेइ, णिज्जरए, णिज्जरेति
(भग, ठा ४, १)। भूका, णिज्जरिसु, णिज्ज-
रेसु (पि ५७६, भग)। भवि, णिज्जरिस्सति
(ठा ४, १)। वक्तु, णिज्जरमाण (भग १८,
३)। कवक, णिज्जरिज्जमाण (ठा १०,
भग)।

णिज्जरण न [निर्जरण] नीचे देखो (औप)।

णिज्जरणा छी [निर्जरणा] १ नाश, क्षय।
२ कर्म-क्षय, कर्म-नाश। ३ जिससे कर्मा का
विनाश हो ऐसा तप (नव १, सुर १४, ६५)।

णिज्जरा छी [निर्जरा] कर्म-क्षय, कर्म-विनाश
(आचा, नव २४)।

णिज्जरिय वि [निर्जीर्ण] क्षीण, विनाश-
प्राप्त (तटु)।

णिज्जव वि [निर्याप] निर्वाह करानेवाला
(पचा १५, १४)।

णिज्जवग वि [निर्यापक] १ निर्वाह करने-
वाला। २ आराधक, आराधन करनेवाला
(ओघ २८ भा)। ३ पुं. जैनमुनि-विशेष,
जो शिष्य के भारी प्रायश्चित्त का भी ऐसी
तरह से विभाग कर दे कि जिससे वह उसे
निवाह सके (ठा ८, भग २५, ७)।

णिज्जवणा छी [निर्यापना] १ निगमन,
दर्शित अर्थ का प्रत्युच्चारण (विसे २६३२)।
२ हिंसा (पएह १, १)।

णिज्जवय देखो णिज्जवग (ओघ २८ भा टी,
द्र ४६)।

णिज्जविउ वि [निर्यापयित्] ऊपर देखो
(पव ६४)।

णिज्जा अक [निर् + या] बाहर निकालना।
णिज्जायति (भग)। भवि, णिज्जाइस्सामि
(औप)। वक्तु, णिज्जायमाण (ठा ५, ३)।

गिरालवण वि [निरालम्बन] आलम्बन-रहित (श्रौप, शाया १, ६) ।

गिरालवण वि [निरालम्बन] आशसा-रहित, संशय-रहित, प्रार्थना-रहित, इच्छारहित, अनुमान-रहित (आचा २, १६, १२) ।

गिरालय वि [निरालय] स्थान-रहित, एकत्र स्थिति नहीं करनेवाला (श्रौप) ।

गिरालोय वि [निरालोक] प्रकाश-रहित, (निर १, १) ।

गिरावकखि वि [निरवकाडिक्षन] आकाक्षा-रहित, नि स्पृह (सूत्र १, १०) ।

गिरावयवख वि [निरपेक्ष] अपेक्षा-रहित, निरीह (शाया १, १, ६, भक्त १४८) ।

गिरावरण वि [निरावरण] १ प्रतिवन्धक-रहित (श्रौप) । २ नग्न (सुर १४, १७८) ।

गिरावराह वि [निरपराध] अपराध-रहित (सुपा ४२३) ।

गिराविकख } देखो गिरावयवख, 'विसणसु
गिरावेकख } गिराविकखा तरति ससार-
कतार' (भक्त ४६, पउम ६, ८, १००, ११) ।

गिरास वि [निराश] १ आशा-रहित, हताश (पउम ४४, ५६, दे ४, ४८, संक्षि १६) ।
२ न आशा का अभाव (परह १, ३) ।

गिरास वि [दे] नृसश, क्रूर (पङ्) ।

गिरासस वि [निराशस] आकाक्षा-रहित, निरीह (सुपा ६२१) ।

गिरासय वि [निराश्रय] निराधार (वज्जा १५२) ।

गिरासव वि [निराश्रव] आश्रव-रहित, कर्म-बन्धन के कारणों से रहित (परह २, ३) ।

गिरासस देखो गिरासस (आचा २, १६, ६) ।

गिराह वि [दे] निर्दय, निष्करुण (दे ४, ३७) ।

गिरिअ वि [दे] अवशेषित, बाकी रखा हुआ (दे ४, ४८) ।

गिरिइ देखो गिरइ (सुज १०, १२) ।

गिरिक् वि [दे] नत, नमा हुआ (दे ४, ३०) ।

गिरिगी [दे] देखो गीरगी (गउड) ।

गिरिण्ण वि [निरिण्ण] इन्धन-रहित (भग ७, १) ।

गिरिक्ख सक [निर् + ईक्ष्] देखना, अवलोकन करना । गिरिक्खइ, गिरिक्खए

(सण, महा) । वक्क, गिरिक्खन, गिरिक्खमाण (सण, उप २११ टी) । सक, गिरिक्खिक्खऊण (सण) । कृ गिरिक्ख-णिउज (कप्पू) ।

गिरिक्खण न [निरिक्षण] अवलोकन (गा १५०) ।

गिरिक्खणा लो [निरिक्षणा] अवलोकन, प्रतिलेखना (श्रौष ३) ।

गिरिक्खिअ वि [निरिक्षित] आलोकित, दृष्ट (कप्पू, पउम ४८, ४८) ।

गिरिग्घ सक [नि + ली] १ आश्लेष करना, आलिंगन करना । २ अक छिपना । गिरिग्घइ (हे ४, ५५) ।

गिरिग्घिअ वि [निलीन] आच्छिष्ट, आलिंगित (कुमा) ।

गिरिण वि [निर्गृण] ऋण-मुक्त, उन्मृण (ठा ३, १, टी—पत्र १२०) ।

गिरिणास सक [गम्] गमन करना । गिरिणासइ (हे ४, १६२) ।

गिरिणास सक [पिप्] पीसना । गिरिणासइ (हे ४, १८५) ।

गिरिणास अक [नश्] पलायन करना । भागना । गिरिणामइ (हे ४ १७८, कुमा) ।

गिरिणासिअ वि [गत] गया हुआ, यात (कुमा) ।

गिरिणासिअ वि [पिष्ट] पीसा हुआ (कुमा) ।

गिरिणिज्ज सक [पिप्] पीसना । गिरि-णिज्जइ (हे ४, १८५) ।

गिरिणिज्जिअ वि [पिष्ट] पीसा हुआ (कुमा) ।

गिरित्ति लो [निरिति] एक रात्रि का नाम (कप्पू) ।

गिरीह वि [निरिह] निष्काम, नि स्पृह (कुमा, ४२१) ।

गिरु (अप) अ निश्चित, नक्की (हे ४, ३४४, सुपा ८६, मण, भवि) ।

गिरुअ देखो गिरुज (विसे १५८५, सुपा ४४६) ।

गिरुकय [निरुईजीकृत] नीरोग किया गया (उप ५६० टी) ।

गिरुभ सक [नि + रुध्] निरोध करना । गिरुभइ (श्रौप) । कवक गिरुभमाण, गिरुभत (स ५३१, महा) । सक, गिरु-

भइत्ता (सूत्र १, ४, २) । क. गिरुभियव्व, गिरुद्धव्व (सुपा ४०४, विसे ३०८१) ।

गिरुभण न [निरोधन] अटकाव, रुकावट (सूत्र १, ५, भवि) ।

गिरुकठ वि [निस्तकण्ठ] उत्कण्ठा-रहित, निस्तमाह (नाट) ।

गिरुग्घ देखो गिरिग्घ । गिरुग्घइ (पङ्) ।

गिरुच्चार वि [निस्चार] १ उच्चार—पुरी-पोतमंग के लिए लोगो के निर्गमन में वजित (शाया १, ८—पत्र १४६) । २ पाखाना जाने से जो रोका गया हो (परह १, ३) ।

गिरुच्छव वि [निस्तसव] उत्तम-रहित (अभि १८६) ।

गिरुच्छाह वि [निरुसाह] उत्साह-हीन (से १४, ३५) ।

गिरुज वि [निरुज] १ रोग-रहित । २ न. रोग का अभाव । 'सिख न [शिख] एक प्रकार की तपधर्या (पव २७१) ।

गिरुज्जम वि [निरुज्जम] उत्तम-रहित, आलसी (उव, स ३१०, सुपा ३८४) ।

गिरुट्ठाइ वि [निरुत्थायिन्] नहीं उठनेवाला (उत्त १, ३०) ।

निरुत्त वि [निरुत्त] १ उक्त, कथित (सत्त ७१) । २ न. निश्चित उक्ति (अणु) । ३ व्युत्पत्ति । (विसे २, ६६३) । ४ वेदाङ्ग शास्त्र-विशेष, जिसमें वैदिक शब्दों की व्याख्या है (श्रौप) ।

गिरुत्त वि [निरुत्त] १ अनुक्त, अकथित, दृष्टान्त 'किन्तु निरुत्तो भावो परस्स नजइ कवित्तेण' (सिरि ८४६) । २ व्युत्पत्ति-युक्त (सिरि ३१) ।

गिरुत्त क्रि वि [दे] १ निश्चित, नक्की, चोक्क (दे ४, ३०, पउम ३५, ३२, कुमा, (सण भवि), 'तहवि हु मरइ निरुत्त पुरिसो संपत्तिए काले' (पउम ११, ६१) । २ वि निश्चित, चिन्ता रहित (कुमा) ।

गिरुत्तत्त वि [निरुत्तत्त] विशेष ताप-युक्त, संतप्त (उव) ।

गिरुत्तम वि [निरुत्तम] अत्यन्त श्रेष्ठ (काल) ।

गिरुत्तर वि [निरुत्तर] उत्तर-रहित किया हुआ, परास्त (सुर १२, ६६) ।

गिरुत्त लो [निरुत्ति] व्युत्पत्ति (विसे ६६२) ।

णिट् दुअ अक [क्षर्] टपकना, चूना ।
 णिट् दुअइ (हे ४, १७३) ।
 णिट् दुअअ वि [क्षरित] टपका हुआ (पात्र) ।
 णिट् दुह अक [वि + गल्] गल जाना,
 नष्ट होना । णिट् दुहइ (हे ४, १७५) ।
 णिट् देखो णिट्ठा = नि + स्था । निट्ठइ (भवि) ।
 णिट्ठय } सक [नि + स्थापय] १ समाप्त
 णिट्ठव } करना, पूर्ण करना । २ अन्त करना,
 खतम करना । ३ विशेष रूप से स्थापन
 करना, स्थिर करना । भूका. णिट्ठवसु (भग
 २६. १) । संक्र. णिट्ठविअ (पिंग) । कृ
 णिट्ठयणिज्ज (उप ५६७ टी) ।
 णिट्ठवण न [निष्ठापन] १ अन्त करना,
 समाप्ति । २ वि नाश-कारक, खतम करने-
 वाला (मुपा १६१, गडड) । ३ समाप्त करने-
 वाला (जी ५) ।
 णिट्ठवय वि [निष्ठापक] समाप्त करनेवाला
 (आव ६) ।
 णिट्ठविअ वि [निष्ठापित] १ समाप्त किया
 हुआ (पंचव २) । २ विनाशित (से ६, १) ।
 णिट्ठा अक [नि + स्था] खतम होना,
 समाप्त होना । णिट्ठाइ (विसे ६२७) ।
 णिट्ठा स्त्री [निष्ठा] १ अन्त, अवसान, समाप्ति
 (विसे २८३३, सुपा १३) । २ सद्भाव (आव
 १) । ३ भासि वि [भापिन्] निष्ठा-पूर्वक
 बोलनेवाला, निश्चय-पूर्वक भाषण करनेवाला
 (आवा) ।
 णिट्ठाण न [निष्ठान] सर्व-गुण-युक्त भोजन
 (दम ८, २२) ।
 णिट्ठाण न [निष्ठान] १ दही वगैरह व्यञ्जन
 (ठा ४, २, परह २, ५) । २ समाप्ति (निचू
 १) । ३ कहा स्त्री [कथा] भक्त-कथा-विशेष,
 दही वगैरह व्यञ्जन की बात-चीत (ठा ४,
 २) ।
 णिट्ठावण देखो णिट्ठवण (सुपा ३५७) ।
 णिट्ठिय वि [निष्ठित] १ समाप्त किया हुआ,
 पूर्ण किया हुआ (उप १०३१ टी, कम्म ४,
 ७४) । २ नष्ट किया हुआ, विनाशित (सुपा
 ४४६) । ३ स्थिर (से ५, ७) । ४ निष्पन्न,
 सिद्ध (आवा २, १, ६) । ५ पु. मोक्ष, मुक्ति
 (मावा) । ६ वि [र्थ] कृतकृत्य (परण

३६) । ७ वि [र्थिन्] मुमुक्षु, मोक्ष का
 इच्छुक (आवा) ।
 णिट्ठिय वि [नेष्टिक] निष्ठा-युक्त, निष्ठावाला
 (परह २, ३) ।
 णिट्ठीव पुं [निष्ठीव] थूक, मुँह का पानी
 (रंभा) ।
 णिट्ठीवण स्त्री [निष्ठीवन] थूक, खखार ।
 २ थूकना (मट्ठि ७८ टी) । स्त्री णा (वव
 १) ।
 णिट् दुअ न [निष्ठयूत] थूक (कुलक ३०) ।
 णिट् दुभय वि [निष्ठीवक] थूकनेवाला (परह
 २, १, औप) ।
 णिट् दुयण देखो निट्ठीवण (चेइय ६३) ।
 णिट् ठुर } वि [निष्ठुर] निष्ठुर, परुष, कठिन
 णिट् ठुल } (आप्र. हे १, २५४, पात्र, गडड) ।
 णिट् ठुवण न [निष्ठीवन] १ थूक, खखार
 (वव १) । २ वि, थूकनेवाला (ठा ५, १) ।
 णिट् ठुइ अक [नि + स्तम्भ] निष्ठम्भ
 करना, निश्चेष्ट होना, स्तब्ध होना । णिट् ठु-
 हइ (हे ४, ६७, पड्) ।
 निट् ठुइ अक [नि + णीव्] थूकना
 निट् ठुही (तदु ४१) ।
 णिट् ठुइ वि [दे] स्तब्ध, निश्चेष्ट (दे ४,
 ३३) ।
 णिट् ठुहण न [दे निष्ठीवन] थूक, मुँह का
 पानी, खखार (महा) ।
 णिट् ठुहावण वि [निष्ठम्भक] निश्चेष्ट करने-
 वाला, स्तब्ध करनेवाला (कुमा) ।
 णिट् ठुहिअ न [दे] थूक, निष्ठीवन, खखार
 (दे ४, ४१) ।
 णिट् पुं [दे] पिशाच, राज्ञ्य (दे ४, २५) ।
 णिट् ठल } न [ललाट] भाल, ललाट (पि
 णिट् ठाल) २६०, पउम १००, ५७, सुपा
 २८) ।
 णिट्ठु न [नीड] पक्षि-गृह (पात्र) ।
 णिट्ठुहण न [निर्दहन] जला देना (उप ५६३
 टी) ।
 णिट् ठुइ देखो णिट् दुअ । णिट् ठुइइ (कुमा;
 पड्) ।
 णिगाय पु [निनाद] शब्द, आवाज, ध्वनि
 (गाया १, १, पउम २, १०३, से ६, ३०) ।

णिण्ण वि [निम्न] १ नीचा, अधस्तन (उत्त
 १२, उव १०३१ टी) । २ क्रिवि. नीचे, अध
 (हे २, ४२) ।
 णिण्णक्खु कि [निस्सारयति] बाहर निका-
 लता है, 'ठाणाया ठाण साहरति, वहिया वा
 गिएणक्खु' (आवा २, २, १) ।
 णिण्णगा स्त्री [निम्नगा] नदी, स्रोतस्त्रिनी
 (परण १, परह २, ४) ।
 णिण्णट्ठ वि [निर्नेष्ट] नाश-प्राप्त (सुर ६,
 ६२) ।
 णिण्णय पु [निर्णय] १ निश्चय, अवधारण
 (हे १, ६२) । २ फैसला (मुपा ६६) ।
 णिण्णया देखो णिण्णगा (पात्र) ।
 णिण्णार वि [निर्नेगर] नगर से निर्गत (भग
 १५) ।
 णिण्णाला स्त्री [दे] चञ्चु, चोच (दे ४,
 ३६) ।
 णिण्णास सक [निर + नाशय] विनाश
 करना । वक्र. निन्नासित (सुपा ६५४) ।
 णिण्णास पुं [निर्णाश] विनाश (भवि) ।
 णिण्णासिय वि [निर्णाशित] विनाशित
 (सुर ३, २३१, भवि) ।
 णिण्णिह वि [निर्निद्र] निद्रा-रहित (गा
 ६५६) ।
 णिण्णिमेस वि [निर्निमेप] १ निमेप-रहित,
 बिना पलक भ्रमकाये, एक-टक । २ चेष्टा-
 रहित । ३ अनुपयोगी (ठा ५, २) ।
 णिण्णी सक [निर + णी] निश्चय करना ।
 संक्र. निण्णइउ (धर्मवि १३६) ।
 णिण्णीअ वि [निर्णीत] निश्चित, नक्की
 किया हुआ (आ १२) ।
 णिण्णुणअ वि [निम्नोन्नत] ऊँचा-नीचा,
 विपम (अभि २०६) ।
 णिण्णेह वि [नि स्नेह] स्नेह-रहित (हे ४,
 ३६७, सुर ३, २२२, महा) ।
 णिण्हइया स्त्री [निह्विका] लिपि-विशेष
 (सम ३५) ।
 णिण्हग पुं [निह्व] १ सत्य का अपलाप
 णिण्हय , करनेवाला, मिथ्यावादी (धोष
 णिण्हव ०० भा, ठा ७, औप) २ अप-
 लाप (सर्व ४१) ।
 णिण्हय नक [नि + ह्नु] अपलाप करना ।
 गिएणहवइ (विसे २२६६, हे ४, २३६) ।

गिलिंन गिलिज्जमाण, गिलीअत, गिली-
अमाण (कप्प, सूअ २, २, कुमा, उप ४७४)।
गिलीइर वि [निलेत्त] आग्लेष करनेवाला,
भेंटनेवाला (कुमा)।

गिलुक्क देखो गिलीअ । गिलुकइ (हे ४,
५५, पड्) । वक्क गिलुक्कत (कुमा) ।

गिलुक्क सक [तुड्] तोड़ना । गिलुकइ
(हे ४, ११६) ।

गिलुक्क वि [दे. निलीन] १ निलीन, खूब
छिपा हुआ, प्रच्छन्न, गुप्त, तिरोहित (गाया
१, ८ से १५, २, गा ६४, मुर ६, ५, उव
सुपा ६४०) । २ लीन, आसक्त (विवे ६०) ।

गिलुक्कण न [निलयन] छिपना (कुप्र २५२) ।

गिलिक्क [दे] देखो गिलिक (दे ४, ३१) ।

गिलिक्कण न [निर्लाञ्छन] शरीर के किसी
अवयव का छेदन (उवा, पडि) ।

गिलिक्क देखो गेलिक्क (पि ६६) ।

गिलिक्कण वि [निर्लक्षण] १ मूर्ख, बेवकूफ
(उप ७६७ टी) । २ अपलक्षणवाला, खराब
(आ १२) ।

गिलिज्ज वि [निर्लेज्ज] लज्जा-रहित (हे २,
१६७, २००) ।

गिलिज्जिम पुत्री [निर्लेज्जिमन्] निर्लेज्जपन,
वेशरमी (हे १, ३५) । स्त्री मा (हे १,
३५) ।

गिलिअ सक [उत् + लस्] उल्लसना,
विकसना । गिलिअइ (हे ४, २०२) ।

गिलिअसज वि [उल्लसित] उल्लास-युक्त,
विकसित (कुमा) ।

गिलिअसअ वि [दे] निर्गत, नि छत, निर्यात
(दे ४, ३६) ।

गिलिअलिअ वि [निर्लाहित] नि मारित,
बाहर निकाला हुआ (गाया १, १, ८—
पत्र १३३, मुर १२, २३५, महा) ।

गिलिअ सक [निर् + लिख्] घिसना ।
गिलिअहिज्जा (आचा २, ३, २, ३) ।

गिलिअल्ल सक [मुच्] छोड़ना, त्याग
करना । गिलिअल्लइ (हे ४, ६१) ।

गिलिअल्लअ वि [मुक्त] त्यक्त, छोड़ा हुआ
(कुमा) ।

गिलिअल्ल वि [निर्लुप्त] विनाशित (विक्र २५) ।

गिल्लूर सक [छिद्] छेदन करना काटना ।
गिल्लूरइ (हे ४, १०४) । गिल्लूरइ (आरा
६८) ।

गिल्लूरण न [छेदन] छेद, विच्छेद (कुमा) ।

गिल्लूरिय वि [छिन्न] काटा हुआ,
विच्छिन्न, 'आवत्तविदुमाहयनिल्लूरियदविय-
सखल' (पउम ८, २५८) ।

गिल्लेव वि [निर्लेप] लेप-रहित (विमे ३०८३) ।

गिल्लेवग पु [निर्लेपक] रजक, घोषी (आच
४) ।

गिल्लेवण न [निर्लेपन] १ मल को दूर करना
(वव १) । २ वि निर्लेप, लेप-रहित (ओष
१६ भा) । ३ काल पु [काल] वह काल,
जिस समय नरक में एक भी नारक जीव न
हो (भग) ।

गिल्लेविअ वि [निर्लेपित] १ लेप-रहित
किया हुआ । २ विलकुल खूट गया हुआ
(भग) ।

गिल्लेवण न [निर्लेखन] उद्वर्तन, पोछना
(आचा २, ३, २) ।

गिल्लोभ } वि [निर्लोभ] लोभ-रहित, अ-
गिल्लोह } लुब्ध (सुपा ३६१, आ १२,
भवि) ।

गिव पुं [नृप] राजा, नरेश (कुमा, रयण
४७) । १ तणय वि [संवन्धिन्] राज-
संवन्धी, राजकीय (सुपा ५३६) ।

गिवइ पु [नृपति] ऊपर देखो (ठा ३, १,
पउम ३०, ६) । १ मग्ग पुं [मार्ग] राज-
मार्ग, जाहिर रास्ता (पउम ७६, १६) ।

गिवइअ वि [निपतित] १ नीचे गिरा हुआ
(गाया १, ७) । २ एक प्रकार का विप
(ठा ४, ४) ।

गिवइत्तु वि [निपतित] नीचे गिरनेवाला
(ठा ४, ४) ।

गिवअल्लण न [दे] अवतारण, उतारना (दे
४, ४०) ।

गिवअल्ल सक [निर + पन्] निष्पन्न होना,
नोपजना, बनना । गिवअल्लइ (पड्) ।

गिवअल्ल सक [नि + सद्] बैठना । गिवअल्लसु
(स ५०६) । वक्क. गिवअल्लमाण (स ५०३) ।
प्रयो. गिवअल्लवेइ (निर १, १) ।

गिवअल्ल सक [नि + सद्] सोना । गिवअल्लइ
(उत २७, ५) ।

गिवअल्ल सक [नि + वर्तय्] निवृत्त करना ।
निवअल्लण (सूअ १, १०, २१) ।

गिवअल्ल सक [नि + वृत्] १ निवृत्त होना,
लौटना, हटना । २ रुकना । वक्क. गिवअल्ल
(सुपा १६२) ।

गिवअल्ल वि [निवृत्त] १ निवृत्त हटा हुआ,
प्रवृत्ति-विमुख । २ न. निवृत्ति (हे ४, ३३२) ।

निवअल्लण न [निवर्तन] १ निवृत्ति, प्रवृत्ति-
निरोध । २ जहाँ रास्ता बन्द होता हो वह
स्थान (गाया १, २—पत्र ७६) ।

गिवअल्लि वि [निर्वर्तित] पका हुआ, फलित,
सिद्ध (आचा २, ४, २, ३) ।

गिवअल्ल सक [नि + पत्] नीचे पडना,
नीचे गिरना । गिवअल्लइ (उव, पड्,
महा) । वक्क. गिवअल्लत, गिवअल्लमाण (गा
३४, मुर ३, १२७) । संक्क. गिवअल्लिण,
गिवअल्लिअ (दस ३, महा) ।

गिवअल्लण न [निपतन] अधः पतन (राज) ।

गिवअल्लिअ वि [निपतित] नीचे गिरा हुआ
(से १४, ३४ गा २३४, उप पृ २६) ।

गिवअल्लि वि [निपतित] नीचे गिरनेवाला
(सुपा ४६, सण) ।

गिवअल्लण वि [निपण] १ बैठा हुआ (महा,
सथा ६५, ७३) । २ पुं. कायोत्सर्ग-विशेष,
जिसमें धर्म आदि किमी प्रकार का ध्यान न
किया जाता हो वह कायोत्सर्ग (भाव ५) ।
१ गिवअल्लण पु [निपण] जिसमें आर्त और
रौद्र ध्यान किया जाय वह कायोत्सर्ग (भाव
५) ।

गिवअल्लणस्सिय पु [निपणोत्सूत] कायोत्सर्ग-
विशेष, जिसमें धर्म ध्यान और शुक्ल ध्यान
किया जाता हो वह कायोत्सर्ग (भाव ५) ।

गिवअल्ल देखो गिवअल्ल = नि + वृत् । वक्क.
गिवअल्लमाण (वव १) । कृ. गिवअल्लणीअ
(नाट—शकु १०८) । प्रयो. गिवअल्लवेमि
(पि ५५२) ।

गिवअल्ल देखो गिवअल्ल = निवृत्त (पड्, कप्प) ।
गिवअल्लण देखो गिवअल्लण (महा; हे २, ३०,
कुमा) ।

णिहलण न [निर्दलन] १ मदन, विदारण (आवा)। २ वि. मदन करनेवाला (वज्रा ४२)।

णिहलिअ वि [निर्दलित] मदित, विदारित (पाम्म, सुर ५, २२२, साध ७६)।

णिहह सक [निर् + दह] जला देना, भस्म करना। निहह (महा, उप)। णिह-हेज्जा (पि २२२)।

णिहा अक [नि + द्रा] निद्रा लेना, नींद करना। णिहाइ (पड्)। वक्र. णिहाअंत (से १, ५६)।

णिहा औ [निद्रा] १ निद्रा, नींद (स्वप्न ५६, कण्ठ)। २ निद्रा-विशेष, वह निद्रा जिसमें एकाव आवाज देने पर ही आदमी जाग उठे (कम्म १, ११)। ३ अत वि [वत्] निद्रा-युक्त, निद्रित (से १, ५६)। ४ करी औ [करी] लता-विशेष (दे ७, ३४)। ५ णिहा औ [निद्रा] निद्रा-विशेष, वह निद्रा जिसमें बड़ी कठिनाई से आदमी उठाया जा सके (कम्म १, ११, सम १५)। ६ ल, लु वि [वत्] निद्रावाला (संक्षि २०, पि ५६५, आप्र)। ७ वअ वि [प्रद] निद्रा देनेवाला (से ६, ४३)।

णिहाअ वि [निद्रात] जो नींद में हो (से १, ५६)।

णिहाअ वि [निर्वा] अग्नि-रहित (से १, ५६)।

णिहाअ वि [निर्वाय] दाय-रहित, धैर्युक घन से वर्जित (से १, ५६)।

णिहाअ वि [निद्रित] निद्रा-युक्त (महा)।

णिहाणी औ [निद्राणी] विद्यादेवी-विशेष (पउम ७, १४४)।

णिहाया देखो णिदा (परण ३५)।

णिहारिअ वि [निर्दारित] खण्डित, विदारित (से ५, ८३, १३, ६५)।

णिहाव वि [निर्वा] १ दावनल-रहित। २ जंगल-रहित (से ६, ४३)।

णिहिट्ट वि [निर्दिष्ट] १ कथित, उक्त (भग)। २ प्रतिपादित, निरूपित (पचा ३, दंस)।

णिहिट्टु वि [निर्दिष्ट] निर्देश करनेवाला (विसे १५०४, विक्क ६४)।

णिहिस सक [निर् + दिश] १ उच्चारण करना, कथन करना। २ प्रतिपादन करना, निरूपण करना। निहिसइ (विसे १५२६)। कर्म णिहिमइ (नाट—मालवि ५३)। हेक्क. निहेट्टु (पि ५७६)। कृ णिहिस्स, णिहेस (विसे १५२३)।

णिदुदुक्ख वि [निर्दु ख] दुःख-रहित, सुखी (सुपा ५३७)।

णिदुदुर पुं [दे नेत्तर] देश-विशेष (इक)।

णिदुदूसण वि [निर्दूषण] निर्दोष (धर्मवि २०)।

णिहेस पु [निर्देश] १ लिग या अर्थ-मात्र का कथन (ठा ८—पय ४२७)। २ विशेष का अभिधान, 'अविसेसियमुद्देशो विसेसिओ होइ निहेसो' (विसे, १४६७, १५०३)। ३ निश्चय पूर्वक कथन (विसे १५२६)। ४ प्रतिपादन, निरूपण (उत्त १, एंदि)। ५ आज्ञा, हुकुम (पाम्म, दस ६, २)। ६ वि जिसको देश-निकाले की आज्ञा हुई हो वह (पउम ४, ८२)।

णिहेसग } वि [निर्देशक] निर्देश करने-
णिहेसय } वाला (विसे १५०८, १५००)।

णिहोत्थ न [निर्दो स्थ] १ दुःस्थता का अभाव (वव ४)। २ वि स्वस्थ, दुःस्थता-रहित (वव ७)।

णिहोस वि [निर्दोष] दोष-रहित, दूषण-वर्जित, विशुद्ध (गड्ड, मुर १, ७३)।

णिद्ध न [स्निग्ध] स्नेह, रस-विशेष (ठा १, अणु)। २ वि. स्नेह-युक्त, चिकना (हे २, १०६, उव, पड्)। ३ कान्ति-युक्त, तेजस्वी (वृह ३)।

णिद्धंत वि [निर्धाम] अग्नि-संयोग से विशो-धित, मल-रहित (परह १, ४, औप)।

णिद्धंस वि [दे] १ निर्दय, निष्ठुर (दे ४, ३७, ओघ ४४५, पाम्म, पुप्फ ४५४, सट्ठि २६, सुपा २४५, आ ३६)। २ निर्लज्ज, बेशरम (विसे १२८)।

णिद्धण वि [निर्धन] धन-रहित, अकिंचन (हे २, ६०, णाया १, १८, दे ४, ५, उप ७६ टी, महा)।

णिद्धण वि [निर्धान्य] धान्य-रहित (तंडु)।

णिद्धम वि [दे] अविभिन्न-गृह, एक ही घर में रहनेवाला (दे ४, ३८)।

णिद्धमण न [दे] खाल, मोरी, पानी जाने का रास्ता (दे ४, ३६, उर २, १०, ठा ५, १, आवम, तंडु, उव, णाया १, २)।

णिद्धमण न [निर्धामन] १ तिरकर, अव-हेलना (उप पृ ४६)। २ पुं. यज्ञ-विशेष (आव ४)।

णिद्धमाय वि [दे] अविभिन्न-गृह, एक ही घर में रहनेवाला (दे ४, ३८)।

णिद्धम्म वि [दे] एकमुख-यायी, एक ही तरफ जानेवाला (दे ४, ३५)।

णिद्धम्म वि [निर्धम्मन] धर्म-रहित, अवर्मा (आ २७)।

णिद्धय वि [दे] देखो णिद्धम (दे ४, ३८)।

णिद्धाइऊण देखो णिद्धाव।

णिद्धाड सक [निर् + धाट्य] बाहर निकाल देना। कर्म. निद्धाडिई (संवोच १६)।

णिद्धाडण न [निर्धाटन] निस्सारण, निष्का-सन, बाहर निकालना (परह १, १)।

णिद्धाडाविय वि [निर्धाटित] अन्य द्वारा बाहर निकलवाया हुआ, अन्य द्वारा निस्सारित (महा)।

णिद्धाडिय वि [निर्धाटित] निस्सारित, निष्कासित (पाम्म, भवि)।

णिद्धारण न [निर्धारण] १ गुण या जाति आदि को लेकर समुदाय से एक भाग का पृथक्करण। २ निश्चय, अवधारण (विसे ११६८)।

णिद्धाव सक [निर् + धाव] दौटना। संक्र. णिद्धाइऊण (महा)।

णिद्धाविय वि [निर्धावित] दौटा हुआ, धावित (महा)।

णिद्धुण सम्म [निर् + धू] १ विनाश करना। २ दूर करना। संक्र. निद्धुणे, णिधूय (दस ७, ५७, सूत्र १, ७)।

णिद्धुणिय } वि [निर्धूत] १ विनाशित,
णिद्धुय } नष्ट किया हुआ। २ अपनीत (सुपा ५६६; औप)।

णिद्धूम वि [निर्धूम] १ धूम-रहित (कप्प, पउम ५३, १०)। २ एक तरह का अपलसण (वव २)।

गिबुडिड स्त्री [निवृद्धि] १ वृद्धि का अभाव
(ठा २, ३) । २ दिन की छोटाई (भग) ।

गिबुण देखो गिउण (अच्छ ६६) ।

गिबुत्त देखो गिबट्ट = निवृत्त (स ५८८) ।

गिबुडि स्त्री [निवृत्ति] परिवर्णन (प्राक् १२) ।

गिबूढ देखो गिबूढ (सूत्र २, ७, ३८) ।

गिबेअ सक [नि + वेदय्] १ सम्मान-पूर्वक
ज्ञापन करना, अर्ज करना । २ अर्पण करना ।

३ मालूम करना । कर्म गिबेइजइ (निचू १) ।

सक गिबेइऊण (स ५६६) । हेक गिबेएड
(पंचा १५) । क गिबेयगीअ (स १२०) ।

गिबेअग वि [निवेदक] सम्मान पूर्वक ज्ञापन
करनेवाला, प्रार्थी (सुपा २६८) ।

गिबेअण } न [निवेदन] १ सम्मान-पूर्वक
गिबेअणय } ज्ञापन, विनय (पंचा १, निचू
११) । २ नैवेद्य, देवता को अर्पित अन्न आदि
(पञ्चम ३२, ८३) ।

गिबेअणा स्त्री [निवेदना] ऊपर देखो
(आया १, ५) । °पिड पुं [°पिण्ड]
देवता को अर्पित अन्न आदि, नैवेद्य (निचू
११) ।

गिबेअय देखो गिबेअग (सुपा २२५, स
५१६) ।

गिबेइय वि [निवेदित] सम्मान-पूर्वक ज्ञापित
(महा, भवि) ।

गिबेइत्तअ वि [निवेदयेत्] निवेदन
करनेवाला (अभि १३६) ।

गिबेस सक [नि + वेशय्] स्थापना
करना, बैठाना । गिबेसइ, गिबेसइ (सण,
कप्प) । सक गिबेसइत्ता, गिबेसिउ
गिबेअगऊण गिबेसित्ता, गिबेसिय
(उत्त ३२, महा, सण, कप्प, महा) । क
गिबेसियव (सुपा ३६४) ।

गिबेस पु [निवेश] १ स्थापन, आधान
(ठा ६ उप पृ २३०) । २ प्रवेश (निचू ४) ।
३ आवास-स्थान, डेरा (बृह १) ।

गिबेस पु [नृपेश] १ महान् राजा, चक्रवर्ती
राजा (सुपा ४६३) ।

गिबेसण न [निवेशन] १ स्थान, बैठना
(आचा) । २ एक ही दरवाजेवाले अनेक गृह
(आव ४) ।

गिबेसण न [निवेशन] गृह, घर (उत्त
१३, १८) ।

गिबेसाविय वि [निवेशित] बैठाया हुआ
(महा) ।

गिब्व न [नीव्र] छदि, पटल-प्रान्त (दे ४,
४८, पात्र) ।

गिब्व न [नीव्र] छप्पर के ऊपर का खपरैल
(एदि १५६) ।

गिब्व न [दे] १ ककुद, चिह्न । २ व्याज,
बहाना (दे ४, ४८) ।

गिब्वकर वि [दे] परिहाम-रहित, सत्य
(कुप्र १६७) ।

गिब्वकल वि [निर्वकल] वलकल-रहित,
(पि ६२) ।

गिब्वट्ट देखो गिब्वत्त = निर् + वत्तय् ।
सक गिब्वट्टित्ता (ठा २, ४) ।

गिब्वट्ट (अप) देखो गिब्वट्ट (हे ४, ४२२ टि) ।

गिब्वट्टग वि [निवर्तक] बनानेवाला, कर्ता
(आव ४) ।

गिब्वट्टिम देखो गिब्वट्टिम (दस ७, ३३) ।

गिब्वट्टिय वि [निर्वर्तित] निष्पादित,
बनाया हुआ (आचा २, ४, २) ।

गिब्वड सक [मुच्] दु ख को छोड़ना ।
गिब्वडइ (पड्) ।

गिब्वड अक [भू] १ पृथक् होना, जुदा
होना । २ स्पष्ट होना । गिब्वडइ (हे ४,
६२) ।

गिब्वड देखो गिब्वल = निर् + पड् (सुपा
१२२) ।

गिब्वडिअ वि [भूत] १ पृथक्-भूत, जो
जुदा हुआ हो (से ६, ८८) । २ स्पष्टीभूत,
जो व्यक्त हुआ हो (मुर ७, १०४) ।

गिब्वडिअ वि [निष्पन्न] मिद्ध, कृत, निवृत्त
(पात्र), 'सुकुलुप्पनी य गुणन्तुया य सम्मं
इमीए गिब्वडिया' (सुपा १२२) ।

गिब्वड वि [दे] नग्न, नंगा (दे ४, २८) ।

गिब्वण वि [निर्व्रण] व्रण-रहित, क्षत-
वर्जित, बिना घाव का (आया १, ३, औप) ।

गिब्वण सक [निर् + वर्णय्] १ श्लाघा
करना, प्रशंसा करना । २ देखना । वक्तु
गिब्वणत्त (से ३, ४४, उप १०३१ टी,
महा) ।

गिब्वत्त सक [निर् + वर्तय्] बनाना,
करना, मिद्ध करना । गिब्वत्तेइ (महा) ।
सक गिब्वत्तिऊण, गिब्वत्तेऊण (महा) ।

गिब्वत्त सक [निर् + वर्तय्] गोल
बनाना, वर्तुल करना । कवक गिब्वत्ति-
ज्जमाण (भग) ।

गिब्वत्त वि [निर्वत्त] निष्पन्न, रचित,
निर्मित (महा, औप) ।

गिब्वत्त वि [निर्वर्त्य] बनाने योग्य, साध्य
(प्राक् २०) ।

गिब्वत्तग न [निर्वर्त्तन] निष्पत्ति, रचना,
बनावट (उप पृ १८) । °धिअरगिया,
°धिगरगिया स्त्री [°धिकराणकी] शत्रु
बनाने की क्रिया (ठा २, १, भग ३, ३) ।

गिब्वत्तणया } स्त्री [निर्वर्त्तना] ऊपर देखो
गिब्वत्तणा } (पण्ण ३४, उत्त ३) ।

गिब्वत्तय वि [निर्वर्त्तक] निष्पन्न करनेवाला,
बनानेवाला (विमे ११४२, स ५६३, हे २,
३०) ।

गिब्वत्ति स्त्री [निर्वत्ति] निष्पत्ति, विनिर्माण
(विमे ३००२) । देखो गिब्वत्ति ।

गिब्वत्तिय वि [निर्वर्त्तित] निष्पादित, बनाया
हुआ (स ३३६, मुर १५, २२१, सति १०) ।

गिब्वत्तिय वि [निर्वर्त्तित] गोलाकार किया
हुआ (भग) ।

गिब्वमिअ वि [दे] परिभुक्त (दे ४, ३६) ।

गिब्वय अक [निर् + वृ] शान्त होना,
उपशान्त होना । क गिब्वयणिज्ज (स
३०१) ।

गिब्वय वि [निर्वृत्] १ उपशान्त, शम-प्राप्त
(सूत्र १, ४, २) । २ परिणत, परिणाम-
प्राप्त (दसनि १) ।

गिब्वय वि [निर्वृत्] व्रत-रहित, नियम
रहित (पञ्चम २, ८८, उप २६४ टी) ।

गिब्वयण न [निर्वचन] १ निरुक्ति, शब्दार्थ
कथन (आवम) । २ उत्तर, जवाब (ठा १०) ।

३ वि. निरुक्ति करनेवाला, निर्वाचक, जवाब
दविओवओगो, अपच्छिमविअणनिब्वयणो
(सम्म ८) ।

गिब्वयणिज्ज देखो गिब्वय = निर् + वृ ।

गिब्वर सक [कथय्] दु ख कहना ।

गिप्पुलाय वि [निप्पुलाय] चारित्र-दोष मे रहित (दस १०, १६)।

गिप्पद देखो गिप्पद (हे २, २२, राया १, २, सुर ३, १७२)।

गिप्पस वि [दे] निर्विश, निर्दय (पङ् १)।

गिप्पज्ज अक [निर + पट्] नीपज्जा, उपज्जा, सिद्ध होना। गिप्पज्जइ (म ६१६)।

वक्क गिप्पज्जमाण (परह १, ४)।

गिप्पडिअ वि [निस्फटित] १ विशीर्ण। २ जिसका मिजाज ठिकाने पर न हो। ३ अंकुश-रहित (उप १२८ टी)।

गिप्पण वि [निप्पन्न] नीपज्जा हुआ, बना हुआ, सिद्ध (से २, १२, महा)।

गिप्पत्ति वि [निप्पत्ति] निष्पादन, सिद्धि (उव, उप २८० टी, सार्ध १०६)।

गिप्पन्न देखो गिप्पण (कप्प राया १, १६)।

गिप्परिस वि [दे] निर्दय, दयाहीन (दे ४, ३७)।

गिप्पल वि [निप्पल] फल-रहित, निरर्थक (से १४, २६, गा १३६)।

गिप्पाअ देखो गिप्पाव (प्राप्र)।

गिप्पाइऊण देखो गिप्पाय।

गिप्पाडय वि [निप्पादिन] नीपजाया हुआ, बनाया हुआ, सिद्ध किया हुआ (विमे ७ टी, उप २११ टी, महा)।

गिप्पाय मक [निर + पाटय्] नीपजाना, बनाना, सिद्ध करना। सकृ गिप्पाइऊण (पचा ७)।

गिप्पायग वि [निप्पादक] नीपजानेवाला, बनानेवाला, सिद्ध करनेवाला (विमे ४८३, ठा ६, उप ८२८)।

गिप्पायण न [निष्पादन] नीपजाना, निर्माण, कृति (आव ४)।

गिप्पाव पु [निप्पाव] धान्य-विशेष, वल्ल (हे २, ५३, परण १, ठा ५, ३, आ १८)।

गिप्पाव पु [निप्पाव] एक माप, वांट-विशेष (अणु १५५)।

गिप्पड अक [नि + स्फिट्] बाहर निकलना। वक्क गिप्पडत (स ५७४)।

गिप्पडिअ वि [निस्फटित] निर्गत, बाहर निकला हुआ (पउम ६, २२७, ८०, ६०)।

गिप्पु पु [निम्पु] प्रभा, तेज (गउड)।

गिप्पेड पु [निम्पेड] निर्गमन, बाहर निकलना (उप मृ २५२)।

गिप्पेडय वि [निस्फेटक] बाहर निकालनेवाला (सूय २, २, ८५)।

गिप्पेडय वि [निस्फेटक] १ निम्मारित, निष्कामित (सूय २, २)। २ भगाया हुआ, नसाया हुआ (पुष्क १२५)। ३ अपहृत, छीना हुआ (ठा ३, ४)।

गिप्पेडिया खो [निम्पेटिका] अपहरण, चोरी, 'एसा पढमा सीमनिप्पेडिया' (मुख २, १३, पव १०७)।

गिप्पेम पु [दे] शब्द-निर्गम, आवाज निकलना (दे ४, २६)।

गिप्पेस पु [निप्पेस] १ पेपर, पीसना। २ सघर्ष (हे २, ५३)।

गिपध सक [नि + वन्ध्] १ बांधना। २ करना। निवधइ (भग)।

गिपध मक [नि + वन्ध्] उपाज्जन करना। गिपवति (पचा ७, २२)।

गिपध पुन [निवन्ध] १ सवन्ध, सयोग (विसे ६६८)। २ आप्रह, हठ (महा), 'गिपवन्धाणि' (पि ३५८)।

गिपयण न [निवंधन] कारण, प्रयोजन, निमित्त (पाअ, प्रासु ६६)।

गिपद्ध वि [निवद्ध] १ बँधा हुआ (महा)। २ सयुक्त, सबद्ध (से ६, ४४)।

गिपिड वि [निपिड] सान्द्र, घना, गाढ (गउड कुमा)।

गिपिडिअ वि [निपिडित] निपिड किया हुआ (गउड)।

गिपुक्क [दे] देखो गिपुक्क (परह १, ३—पत्र ४६)।

गिपुड्ड अक [नि + मस्ज्] निमज्जन करना ह्वना। वक्क गिपुड्डिज्जत, निपुड्डमाण (अचु ६३, उवा)।

गिपुड्ड वि [निमज्ज] हवा हुआ, निमग्न (गा ३७, सुर ३, ५१, ४, ८०)।

गिपुड्डण न [निमज्जन] ह्वना, निमज्जन (पउम १०, ४३)।

गिपुल देखो गिपुड्ड = नि + मस्ज्। वक्क गिपुलिज्जमाण (राज)।

गिपुह पु [निपुव] १ प्रकृत बाध, उत्तम जान। २ अनेक प्रकार का बोध (विमे २१८७)।

गिपुहण न [निपुवण] प्रबोध, समझाना (पउम १०२, ६२)।

गिप्वय पु [निर्वय] आग्रह (गा ६७५ महा मुर ३, ८)।

गिप्वयण न [निर्वयण] निवन्धन, हेतु, कारण, 'सारीरियवेगनिप्वयण वण' (बाल)।

गिप्वल देखो गिप्वल = निर + पट्। गिप्वलड (प्राक ६५)।

गिप्वल वि [निर्वल] बल रहित दुग्न (आचा)।

गिप्वहि अ [निर्वहिस्] अन्यन्त बाहर (ठा ६—पत्र ३५२)।

गिप्वहिर वि [निर्वाह्य] बाहर का, बाहर गया हुआ, 'संजमनिव्वहिरा जाया' (उवा)।

गिप्वुक्क वि [दे] १ निर्मूल, मूल रहित। २ क्रिवि, मूल से, 'गिप्वुक्कछिण्णय' (परह १, ३—पत्र ४५)।

गिप्वुड्ड देखो गिपुड्ड = निमग्न (स ३६०, गउड)।

गिम्भञ्जण देखो गिम्भञ्जण (उव ३०३)।

गिम्भज्ज न [दे] पक्वान्त के पकाने पर जो शेष घृत रहता है वह (पमा ३३)।

गिम्भत वि [निभ्रान्त] नि सदेह, सशय-रहित (ति १४)।

गिम्भग्ग न [दे] उद्यान, बगीचा (दे ४, ३४)।

गिम्भग्ग वि [निर्भाग्य] भाग्य रहित, कम-नसीब, अभागा (उप ७२८ टी, सुपा ३८५)।

गिम्भञ्छ सक [निर + भत्स] १ तिरस्कार करना, अपमान करना, अवहेलना करना आकोश-पूर्वक अपमान करना। गिम्भञ्छेइ, गिम्भञ्छेजा (राया १, १८, उवा)। सकृ गिम्भञ्छिअ (नाट—मालती १७१)।

गिम्भञ्जण न [निर्भर्मन] तिरस्कार, अपमान, पक्ष वचन से गद्गदना (परह १, ३ गउड)।

गिम्भञ्जणा खो [निर्भर्मना] ऊपर देखो (भग १५, राया १ १६)।

णिन्विइगिच्छा स्त्री [निर्विचक्रिता] फल-
प्राप्ति मे शका का अभाव (श्रीप, पडि) ।

णिन्विद नक [निर् + विद्] अच्छी तरह
विचारना । निन्विदण (दस ४ १६, १७) ।

णिन्विद सक [निर् + विद्] घृणा करना ।
णिन्विदेज्ज (सूअ १, २, ३, १२) ।

णिन्विदण्य } वि [निर्विकल्प] १ सन्देह-
णिन्विगण्य } रहित, नि सशय (कुमा, गच्छ
२) । २ भेद-रहित (सम्म ३३) ।

णिन्विगइय देखो णिन्विइय (सबोध ५८) ।

णिन्विगण्यग न [निर्विकल्प] बौद्ध-प्रसिद्ध
प्रत्यक्ष ज्ञान-विशेष (धम्मस ३१३) ।

णिन्विगिअ देखो णिन्विइअ (पव २) ।

णिन्विगघ वि [निर्विघ्न] विघ्न-रहित- वाधा-
वर्जित (सुपा १८७, सण) ।

णिन्विचित वि [निर्विचिन्त] चिन्ता-रहित,
निश्चिन्त (सुर ७, १२३) ।

णिन्विज्ज अक [निर् + विद्] निर्वेद पाना,
विरक्त होना । णिन्विज्जेज्जा (उव) ।

णिन्विज्ज वि [निर्विद्य] मूर्ख (उत्त ११, २) ।

णिन्विट्ठ वि [निर्वृट्ठ] उपाजित, 'नानिन्विट्ठ
लब्ध' (पिड ३७०) ।

णिन्विट्ठ वि [दे] उचित, योग्य (दे ४, ३४) ।

णिन्विट्ठ वि [निर्विष्ट] उपमुक्त, आसेवित,
परिपालित (पाअ, अणु) । °काइय न
[°कायिक] जैन शास्त्र मे प्रतिपादित एक
तरह का चारित्र्य (अणु, इक) ।

णिन्विण्ण वि [निर्विण्ण] निर्वेद-प्राप्त, विघ्न
(महा) ।

णिन्विण्ण वि [दे] सो कर उठा हुआ (दे ४,
३२) ।

णिन्विण्ण देखो णिन्विण्ण । २ इन्द्रिय का
आकार, द्रव्येन्द्रिय-विशेष (विसे २६६४) ।

णिन्विद देखो णिन्विद = निर् + विद् (सूअ
१, २, ३, १२) ।

णिन्विदुगुळ वि [निर्विजुगुप्स] घृणा-
रहित (धम्म १) ।

णिन्विन्न देखो णिन्विण्ण (उव) ।

णिन्विभाग वि [निर्विभाग] विभाग-रहित
(दंस ५) ।

णिन्विअ देखो णिन्विइअ (सबोध ५७, कुलक
१२) ।

णिन्विअ वि [निर्विजन] १ मनुष्य-रहित ।
२ न एकान्त स्थल (सुर ६, ४२) ।

णिन्विअ वि [दे] चिपट, वेठा हुआ, 'अइणि-
व्विरनामाए' (गा ७२८ टि) ।

णिन्विअराम वि [निर्विराम] विराम-रहित
(उप पृ १८३) ।

णिन्विलव क्वि [निर्विलम्ब] विलम्ब-रहित,
शीघ्र (सुपा २५५, कुप ५२) ।

णिन्विवेअ वि [निर्विवेक] विवेक-शून्य
(सुपा ३२३, ५००, गउड, सुर ८, १८१) ।

णिन्विस सक [निर् + विष्] त्याग करना ।
निन्विसेज्जा (कस) । वक्क णिन्विसत (राज) ।

णिन्विस सक [निर् + विष्] उपभोग
करना (पिड ११६ टी) ।

णिन्विस वि [निर्विष] विष-रहित (श्रीप) ।

णिन्विसक वि [निर्विशङ्क] शका-रहित,
निर्भय (सुर १२, १६) ।

णिन्विसमाण न [निर्विशमान] १ चारित्र्य-
विशेष (ठा ३, ४) । २ वि उस चारित्र्य को
पालनेवाला (ठा ६) । °कप्पट्टिइ स्त्री
[°कल्पस्थिति] चारित्र्य-विशेष की मर्यादा
(कम) ।

णिन्विसमाण न [निर्विशमान] १ चारित्र्य-
विशेष (ठा ३, ४) । २ वि उस चारित्र्य को
पालनेवाला (ठा ६) । °कप्पट्टिइ स्त्री
[°कल्पस्थिति] चारित्र्य-विशेष की मर्यादा
(कम) ।

णिन्विसय वि [निर्वेशक] उपभोग-कर्ता
(पिड ११६) ।

णिन्विसय वि [निर्विषय] १ विषयो को
अभिलाषा से रहित (उत्त १४) । २ अनर्थक,
निरर्थक (पचा १२, उप ६२५) । ३ देश मे
बाहर किया हुआ, जिसको देशनिकाले को
सजा हुई हो वह (सुर ६, ३६, सुपा ५६६) ।

णिन्विसिट्ठ वि [निर्विशिष्ट] विशेष-रहित,
समान, तुल्य (उप ५३० टी) ।

णिन्विसी स्त्री [निर्विषी] एक महौषधि
(ती ५) ।

णिन्विसेस वि [निर्विशेष] १ विशेष-रहित,
समान, साधारण (स २३, सम्म ६६, प्रासू
६८) । २ अभिन्न, जो जुदा न हो (से १५,
६५) ।

णिन्वी स्त्री [निर्विकृति] तप-विशेष (संबोध
५७) ।

णिन्वीय देखो णिन्विइअ (सबोध ५७) ।

णिन्वीरा स्त्री [निर्वीरा] पुत्र-रहित विधवा
स्त्री (मोह ४६) ।

णिन्वुअ वि [निर्वृत्त] निर्वृत्ति-प्राप्त (स
५६३, कप्प) ।

णिन्वुइ स्त्री [निर्वृति] १ निर्वाण, मात,
मुक्ति (कुमा, प्रासू १६४) । २ मन की
स्वस्थता, निश्चिन्तता (सुर ४, ८६) । ३
सुख, दुःख-निवृत्ति (भाव ४) । ४ जैन साधुओं
की एक शाखा (कप्प) । ५ एक राजकन्या
(उप ६३६) । °कर वि [°कर] निर्वृत्तिजनक
(पण १) । °जणय वि [°जनक] निर्वृत्ति
का उत्पादक (गा ४२१) ।

णिन्वुइकरा स्त्री [निर्वृत्तिकरा] भगवान्
सुमतिनाथ की दोहा-शिविका (विचार
१२६) ।

णिन्वुइ देखो णिन्वुअ (कुमा, आचा) ।

णिन्वुड वि [निर्वृत्त] अचित्त किया हुआ
(दस ३, ६, ७) ।

णिन्वुड देखो णिन्वुड = नि + मन्ज् । वक्क,
णिन्वुडमाण (राज) ।

णिन्वुड देखो णिन्वुड । वक्क, णिन्वुडदे-
माण (सुज ६—पत्र ८०) । संक, णिन्वु-
डदेत्ता (सुज ६) ।

णिन्वुड वि [निर्वृट्ठ] निर्वाहित, निमाया
हुआ (गा ३२) ।

णिन्वुत्त देखो णिन्वुत्त (गा १५५) ।

णिन्वुत्त देखो णिन्वुत्त = निर्वृत्त (पिग) ।

णिन्वुत्ति देखो णिन्वुत्ति (गा ८२८) ।

णिन्वुद देखो णिन्वुअ (संक्षि ६) ।

णिन्वुदि देखो णिन्वुइ (प्राक्क ८) ।

णिन्वुद्वं देखो णिन्वुह = निर् + वह् ।

णिन्वुड वि [निर्वृट्ठ] १ जिसका निर्वाह
किया गया हो वह । २ कृत, विहित निर्मित
(गा २५५, से १, ४६) । ३ जिसने निर्वाह
किया हो वह, पार-प्राप्त (विदे ४४) । ४
त्यक्त, परिमुक्त (से ५, ६२) । ५ बाहर
निकाला हुआ, निस्सारित, 'निन्वुडा य पएसा
तत्तो गाढप्पमोसमावप्पा' (उप १३१ टी) ।

णिन्वूढ वि [दे] १ स्तब्ध (दे ४, ३३) ।
न. घर का पश्चिम आंगन (दे ४, २६) ।

णिन्वूढ वि [निर्वृट्ठ] किसी ग्रंथ से
उद्धृत कर बनाया हुआ ग्रन्थ (दसनि १,
१२) ।

णिम्मइअ वि [निर्मित] रचित, कृत (गा ५००, ६०० अ) ।

णिम्मथण न [निर्मथन] १ विनाश । २ वि. विनाशक, 'तह य पयट्टमु सिग्वं शत्यनिम्मथणं तित्थ' (सुपा ७१) ।

णिम्मस वि [निर्मास] मान-रहित, शुष्क (साया १, १, भग) ।

णिम्मसा स्त्री [दे] देवी-विशेष, चामुण्डा (दे ४, ३५) ।

णिम्मसु वि [दे. नि ञ्मश्च] तदण, जवान, युवा (दे ४, ३२) ।

णिम्मक्खिअ देखो णिम्मच्छिअ = निर्मलिक (नाट) ।

णिम्मच्छ सक [नि + म्मक्ष] विलेपन करना । णिम्मच्छइ (भवि) ।

णिम्मच्छण न [निम्रक्षण] विलेपन (भवि) ।

णिम्मच्छर वि [निर्मात्सर्य] मात्सर्य-रहित, ईर्ष्या-शून्य (उप पृ ८४) ।

णिम्मच्छिय वि [निम्रक्षित] विलिप्त (भवि) ।

णिम्मच्छिअ न [निर्मलिक] १ मलिका का अभाव । २ विजय, निर्जनता (अभि ६८) ।

णिम्मज्जाय वि [निर्मर्याद] मर्यादा-रहित, बेहया (दे १, १३३) ।

णिम्मज्जिय वि [निर्माजित] उपलिप्त (स ७५) ।

णिम्मण वि [निर्मनस्] मन रहित (द्रव्य १२) ।

णिम्मणुय वि [निर्मनुज] मनुष्य-रहित (सण) ।

णिम्मद्दग वि [निर्मर्दक] १ निरन्तर मर्दन करनेवाला । २ पुं चोरो की एक जाति (परह १, ३) ।

णिम्मदिय वि [निर्मर्दित] जिसका मर्दन किया गया हो (परह १, ३) ।

णिम्मम वि [निर्मम] १ ममता-रहित, निस्पृह (अच्छु ६६, सुपा १४०) । २ पुं भारत-वर्ष के एक भावी जितदेव (सम १५४) ।

णिम्मय वि [दे] गत, गया हुआ (दे ४, ३४) ।

णिम्मल वि [निर्मल] मल-रहित, विशुद्ध (स्वप्न ७०, प्राप् १३१) । २ पु. ब्रह्म-देव-लोक का एक प्रस्तर (ठा ६) ।

णिम्मल्ल न [निर्माल्य] देव का उच्छिष्ट द्रव्य, देवता पर चढ़ाई हुई वस्तु का बचा-बुचा (हे १, ३८, पङ्) ।

णिम्मव सक [निर् + मा] बनाना, रचना, करना । णिम्मवइ (हे ४, १६, पङ्) । कर्म निम्मविज्जति (वज्जा १२२) ।

णिम्मव सक [निर् + मापय्] बनवाना, कराना (ठा ४, ४, कुमा) ।

णिम्मवडत्तु वि [निर्मापयित्] बनवानेवाला (ठा ४, ४) ।

णिम्मवण न [निर्माण] रचना, कृति (उप ६४८ टी, सुपा २३, ६५, ३०५) ।

णिम्मवण न [निर्माण] बनवाना, कराना (कप्प) ।

णिम्मविअ वि [निर्मित] बनाया हुआ, रचित (कुमा, गा १०१, सुर १६, ११) ।

णिम्मविअ वि [निर्मापित] बनवाया हुआ (कुमा) ।

णिम्मह सक [गम्] १ जाना, गमन करना । २ अक फेलना । णिम्महइ (हे ४, १६२) । वहु णिम्महन णिम्महमाण (से ७, ६२, १५, ५३, स १२६) ।

णिम्मह पु [निर्मथ] १ विनाश । २ वि विनाशक (भवि) ।

णिम्महण न [निर्मथन] १ विनाश । २ वि विनाश-कारक (सुपा ७५) स्त्री °णो (सुर १६, १८४) ।

णिम्महिअ वि [गत] गया हुआ (कुमा) ।

णिम्महिअ वि [निर्मथित] विनाशित (हेका ५०) ।

णिम्मा देखो णिम्म । णिम्माइ (प्राक् ६४) ।

णिम्माअंत देखो णिम्म ।

णिम्माइअ देखो णिम्माय (पि ५६१) ।

णिम्माण सक [निर् + मा] बनाना, करना, रचना णिम्माणइ (हे ४, १६, पङ्, प्राप्) ।

णिम्माण न [निर्माण] १ रचना, बनावट, कृति । २ कर्म-विशेष, शरीर के अंगोपांग के निर्माण में नियामक कर्म-विशेष (सम ६७) ।

णिम्माण वि [निर्माण] मान-रहित (से ३, ४५) ।

णिम्माणअ वि [निर्मायक] निर्माण-कर्ता, बनानेवाला (से ३, ४५) ।

णिम्माणिअ वि [निर्मित] रचित, बनाया हुआ (कुमा) ।

णिम्माणिअ वि [निर्मानित] अपमानित, तिरस्कृत (भवि) ।

णिम्माणुस वि [निर्मानुष] मनुष्य-रहित (सुपा ४४४) । स्त्री °सी (महा) ।

णिम्माय वि [निर्मात] १ रचित, विहित, कृत (उव, पाप्प, वज्जा ३४) । २ निपुण, अभ्यस्त, कुशल (औप, कप्प), 'नाहिमसत्थेनु निम्माया परिवादया' (सुर १२, ४२) ।

णिम्माय न [निर्माय] तप-विशेष, निर्विकृतिक तप (सवोव ५८) ।

णिम्माळअ देखो णिम्मल्ल (प्राक् १६) ।

णिम्माव सक [निर् + मापय्] बनवाना, करवाना । णिम्मावइ (मण) । कृ. णिम्मावित्त (सुअ २, १, २२) ।

णिम्माविय वि [निर्मापित] बनवाया हुआ, कारित, कराया हुआ (सुपा २६७) ।

णिम्मिअ वि [निर्मित] रचित, बनाया हुआ (ठा ८, प्राप् १२७) । °वाइ वि [°वादिन्] जगत् को ईश्वरादि कृत माननेवाला (ठा ८) ।

णिम्मिस्स वि [निर्मिश्र] १ मिला हुआ, मिश्रित । °वह्ठी स्त्री [°वह्ठी] अत्यन्त नजदीक का स्वजन, जैसे माता, पिता, भाई, भगिनी, पुत्र और पुत्री (वव १०) ।

णिम्मीस वि [निर्मिश्र] मिश्रण-रहित (देवेन्द्र २६०) ।

णिम्मीसुअ वि [दे] रमश्च-रहित, दाढी-मूँछ बजिन (पङ्) ।

णिम्मुक वि [निर्मुक्त] मुक्त किया गया (सुपा १७३) ।

णिम्मुक्ख पु [निर्माक्ष] मुक्ति, छुटकारा (विमे २४६८) ।

णिम्मूल वि [निर्मूल] मूल-रहित, जिसका मूल काटा गया हो वह (सुपा ५०५) ।

णिम्मेर वि [निर्मर्याद] मर्यादा-रहित, निर्लज (ठा ३, १, औप, सुपा ६) ।

णिम्मोअ पुं [निर्मोक] कञ्चुक, कँडुल, सपं को त्वचा (हे २, १८२, भत्त ११०, से १, ६०) ।

णिम्मोअणी स्त्री [निर्मोचनी] कञ्चुक, निर्मोक (उत्त १४, ३५) ।

णिसाम वि [नि श्याम] मालिन्य-रहित, निर्मल (से ६, ४७) ।

णिसामण देखो णिसमण (सुपा २३) ।

णिसामिअ वि [दे निशमित] १ श्रुत, आकर्णित (दे ४, २७, गा २६) । २ उप-शमित, दवाया हुआ । ३ सिमटाया हुआ, सकोचित, 'नस्सामिओ फणाभोओ' (स ३५८) ।

णिसामिर वि [निगमयित्] सुननेवाला (पु) ।

णिसाय वि [दे] प्रसुप्त (दे ४, ३५) ।

णिसाय वि [निशात] शान दिया हुआ, तीक्ष्ण (पात्र) ।

णिसाय पु [निपाद] १ चारुडाल, एक प्राचीन जाति (दे ४, ३५) । २ स्वर-विशेष (ठा ७) ।

णिसायत वि [निशातान्त] तीक्ष्ण धार-वाला (पात्र) ।

णिसास सक [निर् + आसय्] नि श्वाभ डालना । वक्तु णिस्सासएत (पउम ६१, ७३) ।

णिसास देखो णीसास (पिंग) ।

णिसि° देखो णिसा (हे १, ८, ७२, पड्, मुर १, २७) । °पालअ पु [°पालक] छन्द-विशेष (पिंग) । °भत न [°भक्त] रात्रि-भोजन (शोध ७८७) । °भुत्त न [°भुक्त] रात्रि भोजन (सुपा ४६१) ।

णिमिअ देखो णिसीअ णिसिअइ (सण, कप्प) । सकृ णिमिइत्ता (कप्प) ।

णिसिअ वि [निशित] शान दिया हुआ, तीक्ष्ण (से ५, ४६, महा, हे ४, ३३०) ।

णिसिअ सक [नि + सिच्] प्रक्षेप करना, डालना । सकृ णिसिअयि (आचा) ।

णिसिज्जा देखो णिसज्जा (कप्प, सम ३५, ठा ५, १) । ३ उपाश्रय, साधुओं का स्थान (पच ४) ।

णिसिज्जमाण देखो णिसेह = नि + षिव् ।

णिसिद्ध वि [निसृष्ट] १ बाहर निकाला हुआ (भास १०) । २ दत्त, प्रदत्त (आच) । ३ अनुज्ञात (बृह १) । ४ बनाया हुआ । किंवि 'आमयहगइ पउमो निहो निसिद्धं उवणमेइ' (उप ६८६ टी) ।

णिसिद्ध वि [निपिद्ध] प्रतिपिद्ध, निवारित (पचा १२) ।

णिसिय वि [न्यस्त] स्थापित (धर्म ७३) ।

णिसियण न [निपदन] उपवेशन (पव) ।

णिसिर सक [नि + सृज्] १ बाहर निका-लना । २ देना, त्याग करना । ३ करना । णिसिरइ (भास ५, भग), 'णिरवराहाण । निसिरति जे न दड, तेवि ह्वा पाविति निव्वारण' (मुर १५, २३४) । कर्म निसिरिज्जइ, निनिरिज्जए (विने ३५०) । कृ निसिरत (पि २३५) । कवक निसिरिज्जमाण (पि २३५) । सकृ णिसिरित्ता (पि २३५) । प्रयो निसिरावेनि (पि २३५) ।

णिसिरण न [निमर्जन] १ निस्सारण (भास २) । २ त्याग (गाया १, १६) ।

णिसिरणया } स्त्री [निसर्जना] १ त्याग,
णिसिरणा } दान (आचा २, १, १०) ।
२ निस्सारण, निष्कासन (भग) ।

णिसीअ सक [नि + पट्] बैठना । णिसीअइ (भग) । वक्तु णिसीअत, णिसीअमाण (भग १३, ६, सूत्र १, १, २) । सकृ णिसीइत्ता (कप्प) । हेकृ णिसीइत्तए (कस) । कृ णिसीइयव्व (गाया १, १, भग) ।

णिसीअण न [निपदन] उपवेशन, बैठना (उप २६४ टी, म १८०) ।

णिसीआवण न [निपादन] बैठाना (कम ४, २, टी) ।

णिसीढ देखो णिसीह = निशीय (हे १, २१६, कुमा) ।

णिसीदण देखो णिसीअण (श्रौप) ।

णिसीह पुंन [निशीथ] १ मव्य रात्रि (हे १, २१६, कुमा) । २ प्रकाश का अभाव (निच् ३) । ३ न जैन आगम-ग्रन्थ विशेष (एदि) । णिसीह पुं [नृसिंह] उत्तम पुरुष, श्रेष्ठ मनुष्य (कुमा) ।

णिनीहिअ वि [नैशीथिक] निज के लिए लाया गया है ऐसा नहीं जाना हुआ भोज-नादि पदार्थ (पिड ३३६) ।

णिसीहिआ स्त्री [नैपेधिकी] १ शव-परिष्ठा-पन-भूमि, श्मशान-भूमि (अणु २०) । २ बैठने की जगह (राय ६३) ।

णिसीहिआ स्त्री [निशीथिका] १ स्वाध्याय-भूमि, अध्ययन स्थान (आचा २, २, २) । २ थोड़े समय के लिए उपात्त स्थान (भग १४, १०) । ३ आचाराङ्ग सूत्र का एक अध्ययन (आचा २, २, २) ।

णिसीहिआ स्त्री [नेपेधिकी] १ स्वाध्याय-भूमि (मम ४०) । २ पाप-क्रिया का त्याग (पडि, कुमा) । ३ व्यापारान्तर के निषेध ह्य आचार (ठा १०) । देखो णिमेहिआ । णिसीहिणी स्त्री [निशीथिनी] रात्रि, रात (उप पृ १२७) । °नाह पुं [°नाथ] चन्द्रमा (कुमा) ।

णिसुअ वि [दे निश्रुत] श्रुत, आकर्णित (दे ४, २७, मुर १, १६६, २, २२६, महा, पात्र) ।

णिसुअ पु [निसुअ] रावण का एक सुभट (पउम ५६, २६) ।

णिसुअ सक [नि + शुम्भ्] मार डालना, व्यापादन करना । कवक णिसुअत, णिसुअभत (से ५, ६६, १४, ३, पि ५३५) ।

णिसुअ पु [निशुम्भ] १ स्वनाम द्यात एक राजा, एक प्रतिवासुदेव (पउम ५, १५६, पव २११) । २ दैत्य-विशेष (पिंग) ।

णिसुअण न [निशुम्भन] १ मर्दन, व्यापादन, विनाश । २ वि मार डालनेवाला (सूत्र १, ५, १) ।

णिसुआ स्त्री [निशुम्भा] स्वनाम-ख्यात एक इन्द्राणी (गाया २, इक) ।

णिसुअयि वि [निशुम्भित] निपातित, व्या-पादित (सुपा ४६०) ।

णिसुअ वि [दे] ऊपर देखो (हे ४, २५८, से १०, ३६) ।

णिसुअ देखो णिसुअ = नम् । निमुअइ (पड्) ।

णिसुअ देखो णिसुअ (हे ४, २५८ टी) ।

णिसुअ सक [नम्] भार से आक्रान्त होकर नीचे नमना, झुकना । णिसुअइ (हे ४, १५८) ।

णिसुअ सक [नि + शुम्भ्] मारना, मार कर गिराना । कवक, णिसुअज्जित (से ३, णिसुअिअ वि [नत्] भार से नमा हुआ (पात्र) ।

णिसुअिअ वि [निशुम्भित] निपातित (से १२, ६१) ।

गिरवणाम देखो गिरोणाम (उव) ।

गिरवयक्ख देखो गिरवइक्ख (णाय १, ६, पउम २ ६३) ।

गिरवयव वि [गिरवयव] अवयव-रहित, निर्गुण (विसे) ।

गिरवयाम वि [गिरवकाश] अवकाश-रहित (गउड) ।

गिरवराह वि [गिरपराध] अपराध रहित, वेगुनाह (महा) ।

गिरवराहि वि [गिरपराधिन्] ऊपर देखो (आव ६) ।

गिरवलव वि [गिरवलम्ब] सहारा रहित, असहाय (पएह १, ३) ।

गिरवलाव वि [गिरपलाप] १ अपलाप-रहित । गुप्त बात को प्रकट नहीं करनेवाला, दूसरे को नहीं कहनेवाला (सम ५७) ।

गिरवसंक वि [गिरपशङ्क] दुःशका-वर्जित (भवि) ।

गिरवसर वि [गिरवसर] अवसर-रहित (गउड) ।

गिरवसाण वि [गिरवसान] अन्त-रहित (गउड) ।

गिरवसेस वि [गिरवशेष] सब, सकल (हे १, १४, पट्, से १, ३७) ।

गिरवह सक [गिर + वह] निर्वाह करना, निवाहना । गिरवहेजा (सवोष ३६) ।

गिरवाय वि [गिरपाय] १ उपद्रव रहित, विघ्न वर्जित । २ निर्दोष, विशुद्ध (आ १६, सुपा २७५) ।

गिरविकख देखो गिरवइक्ख (आ ६, उव, गिरवेक्ख } पि ३४१, से ६, ७५, सूअ गिरवेच्छ १, ६, पचा ४, निचू २०, नाट—चैत २५७) ।

गिरस सक [गिर + अस] अपास्त करना । गिरसइ (सण) ।

गिरसण वि [गिरशन] आहार-रहित, उपोषित (उप, सुपा १८१) ।

गिरसन न [गिरसन] निराकरण, हटा देना, दूर करना, खंडन (वेदय ७२४) ।

गिरसि वि [गिरसि] खड्ग-रहित (गउड) ।

गिरसिअ वि [गिरस्त] परास्त, अपास्त (दे ५, ५६) ।

गिरस्माय वि [गिरास्वाद] स्वाद-रहित (उत्त १६, ३७) ।

गिरस्मावि वि [गिरास्माविन्] नहीं टपकने-वाला, छिद्र रहित । स्त्री णी (उत्त २३, ७१, मुख २३, ७१) ।

गिरहकार वि [गिरहकार] गर्व-रहित (उव) ।

गिरहारि वि [गिराहारिन्] आहार-रहित, उपोषित, 'हवउ व वक्कलधारी, गिरहारी वमचेरवयधारी' (सुपा २५२) ।

गिरहिगरण वि [गिरधिकरण] अधिकरण-रहित, हिंसा-रहित, निर्दोष (पचा १६) ।

गिरहिगणि वि [गिरधिगणिन्] ऊपर देखो (अग १६, १) ।

गिरहिलास वि [गिरभिलाप] इच्छा-रहित, निरीह (गउड) ।

गिरहेउ वि [गिरहेतु, °क] निष्कारण, गिरहेउग } कारणरहित (धर्मस ४४३, गिरहेतुग ४१७, ४००) ।

गिराइअ वि [गिरायत] लम्बा किया हुआ, विस्तारित (से ४, ५२, ७, ३६) ।

गिराउस वि [गिरायुप्] आयु-रहित (प्राकृ ३१) ।

गिराउह वि [गिरायुध] आयुध-वर्जित, नि शस्त्र (महा) ।

गिराकर } सक [गिरा + कृ] १ निषेध गिरागर } करना । २ दूर करना, हटाना । ३ विवाद का फैसला करना । गिराकरियो (कुप २१५) । सक गिराकिच्च (सूअ १, १, १, ३, ३, १, ११) ।

गिराकरिअ वि [गिराकृत] निषिद्ध (धर्मवि १४६) ।

गिरागरण न [गिराकरण] निरास, निवारण, निषेध, रोक (पंचा १७, १६) ।

गिरागरण न [गिराकरण] १ निषेध, प्रतिषेध (पंचा १७) । २ फैसला, निपटारा (स ४०६) ।

गिरागरिय वि [गिराकृत] हटाया हुआ, दूर किया हुआ (पउम ४६, ५१, ६१, ५६) ।

गिरागस वि [गिराकर्प] निर्धन, रक (निचू २) ।

गिरागार वि [गिराकार] १ आकृति-रहित २ अपवाद-रहित (धर्म २) ।

गिराणद वि [गिरानन्द] आनन्द-रहित, शोकातुर (महा) ।

गिराणिउ (अप) अ निश्चिन्त, नकी (कुमा) ।

गिराणुकप देखो गिरणुकप, 'गिण्णिकवणिराणुकपो आसुरिय भावण कुणइ' (ठा; ४, ४), 'अह सो गिराणु कपो (सथा ८४, पउम २६, २५) ।

गिराणुवत्ति वि [गिरनुवर्तिन्] १ अनुसरण नहीं करनेवाला । २ सेवा नहीं करनेवाला (उव) ।

गिराद वि [दे] नष्ट, विनाश-प्राप्त (दे ४, ३०) ।

गिराबाध } वि [गिराबाध] आबाध-रहित, गिराबाह } हरकत-रहित (अभि १११, सुपा २५३, ठा १० आव ४) ।

गिरामगध वि [गिरामगन्ध] दूषण रहित, निर्दोष चारित्रवाला (आचा, सूअ १, ६) ।

गिरामय वि [गिरामय] रोग-रहित, नोरोग (सुपा ५७५) ।

गिरामिस वि [गिरामिप] आसक्तिहीन, निरीह, निरभिषङ्ग, 'आमिसं सव्वमुज्झिता विहरिस्सामो गिरामिसा' (उत्त १४, ४६) ।

गिराय वि [दे] १ ऋजु, सरल । (दे ४, ५०, पाअ) । १ प्रकट, खुला । ३ पु. रिपु, शत्रु (दे ४, ५०) । ४ वि. लम्बा किया हुआ (से २, ५०) ।

गिराय वि [दे] अत्यन्त, प्रचुर, अधिक (मुख २, ७) ।

गिरायक वि [गिरातङ्क] आतङ्क रहित, नीरोग (अप) ।

गिरायरिय देखो गिरागरिय (पउम ६१, ४६) ।

गिरायव वि [गिरातप] आतप-रहित (गउड) ।

गिरायार देखो गिरागार (पउम ६, ११८) ।

गिरायास वि [गिरायास] परिश्रम-रहित (पएह २, ४) ।

गिरारभ वि [गिरारम्भ] आरम्भ-वर्जित (सुपा १४०, गउड) ।

गिरालव वि [गिरालम्ब] आलम्ब-रहित (गा ६५, आरा ८) ।

णिस्मार सक [निर + सारय] बाहर निकालना । निम्मारइ (कुप्र १५४) ।
 निस्सार १ वि [नि सार] १ सार-हीन, निस्सारग १ निरर्थक (अणु, सूत्र १, ७, आचा) । २ जीण, पुराना (आचा) ।
 निस्सारय वि [नि सारक] निकालनेवाला (उप २८० टी) ।
 निस्सारिय वि [नि सारित] १ निकाला हुआ । २ च्यावित, भ्रष्ट किया हुआ (सूत्र १, १४) ।
 निस्सास पु [नि श्वास] नि श्वास, नीचा श्वास (भग) । २ काल-मान-विशेष (इक) । ३ प्राण-वायु, प्रश्वास (प्राप्र) ।
 निम्साहार वि [नि स्वाधार] निराधार, आलम्बन-रहित (सण) ।
 निरिसंग वि [नि शृङ्ग] शृङ्ग-रहित (सुपा ३१३) ।
 निरिसिधिय न [नि शिद्धित] अव्यक्त शब्द-विशेष (विसे ५०१) ।
 निरिसच अक [निर + सिच्] प्रलेप करना, डालना, फेंकना । वकृ निरिसचमाण (राज) । सकृ निरिसचिया (दस ५, १) ।
 निरिसणेह वि [नि स्नेह] स्नेह-रहित (पि १४०) ।
 निरिसय वि [निश्रित] १ आश्रित, अवलम्बित (ठा १०, भास ३८) । २ आसक्त, अनुरक्त, तल्लीन (सूत्र १, १, १, ठा ५, २) । ३ न. राग, आसक्ति (ठा ५, २) ।
 निरिसय वि [निश्रित] १ निश्चय से बद्ध (सूत्र २, ६, २३) । २ पक्षपाती, रागी (वव १) ।
 निरिस्सय वि [नि.सृत] निर्गत, निर्यात (भास ३८) ।
 निरिस्सील वि [निःशील] सदाचार-रहित, दु शील (पठम २, ८८, ठा ३, २) ।
 निरिस्सुग वि [नि शूक] निर्दय, निष्करुण (आ १२) ।
 निरिस्सेज्जा देखो निरिस्सेज्जा (पव १२७) ।
 निरिस्सेणि वी [नि श्रेणि] सीढ़ी (पणह १, १, पाप्र) ।
 निरिस्सेयस न [नि श्रेयस] १ कल्याण, मंगल, क्षेम (ठा ४, ४, एया १, ८) ।

२ मुक्ति, मोक्ष, निर्वाण (औप, एदि) । ३ अमृदय, उन्नति (उत्त ८) ।
 निरिस्सेयसिय वि [नि श्रेयसिक] मुमुक्षु, मोक्षार्थी (भग १५) ।
 निरिस्सेस वि [नि शेष] सर्व, सब, सकल (उप २००) ।
 निह वि [निभ] १ समान, तुल्य, सदृश (से १, ५८, गा ११४, दे १, ५१) । २ न. बहाना, व्याज, छल (पाप्र) ।
 निह वि [निह] १ मायावी, कपटी (सूत्र १, ६) । २ पीडित (सूत्र १, २, १) । ३ न. आघात-स्थान (सूत्र १, ५, २) ।
 निह वि [स्निह] रागी, राग-युक्त (आचा) ।
 निहतव्य देखो निहण = नि + हन् ।
 निहस पु [निघर्ष] घर्षण (गडड) ।
 निहसण न [निघर्षण] घर्षण, रगड (से ५, ४६, गडड) ।
 निहट्टु अ. १ जुदा कर, घृयक् करके (आचा) । २ स्थापन कर (एया १, १६) ।
 निहट्टु वि [निघृष्ट] घिसा हुआ (हे २, १७४) ।
 निहण सक [नि + हन्] १ निहत करना, मारना । २ फेंकना । निहणामि (कुप्र २६२) । निहणाहि (कप्प) । भूका—निहणिसु (आचा) । वकृ. निहणंत (सण) । संकृ. निहणित्ता (पि ५८२) । कृ. निहंतव्य (पठम ६, १७) ।
 निहण सक [नि + खन्] गाडना । 'निहणंति घरा घरणीयलम्मि' (वज्जा ११८) । हेकृ 'चोरो दव्व निहणि उम् आरद्धो' (महा) ।
 निहण न [दे] कूल, तीर, किनारा (दे ४, २३) ।
 निहण त [निधन] १ मरण, विनाश (पाप्र, जी ४६) । २ पु रावण का एक सुभट (पठम ५६, ३२) ।
 निहणण न [निहनन] निहति, मारना (महा, स १६३) ।
 निहणिअ वि [निहत] मारा हुआ (सुपा १५८, सण) ।
 निहत्त सक [निधत्तय्] कर्म को निबिड रूप से बांधना । भूका निहत्तिसु (भग) । भवि निहत्तेस्संति (भग) ।

निहत्त देखो निधत्त (भग) ।
 निहत्तण न [निधत्तन] कर्म का निबिड बन्धन (भग) ।
 निहत्ति देखो निधत्ति (राज) ।
 निहम्म सक [नि + हम्म] जाना, गमन करना । निहम्मइ (हे ४, १६२) ।
 निहय वि [निहत] मारा हुआ (गा ११८, सुर ३, ४६) ।
 निहय वि [निखात] गाढा हुआ (स ७५६) ।
 निहर अक [नि + ह्] पाछाना जाना (प्राप्ता) ।
 निहर अक [आ + क्रन्द] चिल्लाना । निहरइ (पड्) ।
 निहर अक [निर + स्र] बाहर निकलना । निहरइ (पड्) ।
 निहरण देखो णीहरण (एया १, २—पत्र ८६) ।
 निहव देखो निहुव । निहवइ (नाट, पि ४१३) ।
 निहव वि [दे] सुप्त, सोया हुआ (पड्) ।
 निहव पुं [निवह] समूह (पड्) ।
 निहस सक [नि + घृप्] घिसना । संकृ. निहसिऊण (उव) ।
 निहस पु [निघर्ष] १ कपपट्टक, कसीटी का पत्थर (पाप्र) । २ कनौटी पर की जाती रेखा (हे १, १८६, २६०, प्राप्र) ।
 निहस पुं [निघर्ष] घर्षण, रगड (से ६, ३३) ।
 निहस पुं [दे] बल्मीक, सपं आदि का बिल (दे ४, २५) ।
 निहसण न [निघर्षण] घर्षण, रगड (से ६, १०, गा १२१, गडड, वज्जा ११८) ।
 निहसिय वि [निघर्षित] घिसा हुआ (वज्जा १५०) ।
 निहा वी [निहा] माया, कपट (सूत्र १, ८) ।
 निहा सक [नि + धा] स्थापना करना । निहेव (स ७३८) । कवकृ. निहिप्पंत (से ८, ६७) । संकृ. निहाय (सूत्र १, ७) ।
 निहा सक [नि + हा] त्याग करना । संकृ. निहाय (सूत्र १, १३) ।
 निहा १ सक [दृश्] देखना । निहाइ, निहाआ १ निहामाइ (पड्) ।

गिरुत्तिअ वि [नैरुत्तिक] व्युत्पत्ति के अनुसार जिसका अर्थ किया जाय वह शब्द (अणु) । गिरुत्तिय न [नैरुत्तिक] निरुत्ति, व्युत्पत्ति, 'नो क्त्वावि नारिण्ति निरुत्तिय वेइसइन्स' (संवाद—१२) ।

गिरुदर वि [निरुदर] छोटा पेटवाला, अनुदर । ओ. रा (परह १, ४) ।

गिरुद्ध वि [निरुद्ध] १ रोकना हुआ (गाया १, १) । २ आवृत, आच्छादित (सूय १, २, ३) । ३ पुं मत्स्य की एक जाति (कप्प) ।

गिरुद्ध वि [निरुद्ध] थोडा, सक्षिप्त (सूय १, १४, २३) ।

गिरुद्धव्य } देखो गिरुम ।
गिरुम्भन }

गिरुलि पुल्ली [दे] कुम्भीर—नरु की आकृति-वाला एक जन्तु (दे ४, २७) ।

गिरुवकिट्ट देखो गिरुवकिट्ट (भग) ।

गिरुवक्कम वि [निरुपक्कम] १ जो कम न किया जा सके वह (आयुष्य) (सुर २, १३२, मुपा २०४) । २ विघ्नरहित, अबाध, 'निय-निरुवक्कमविक्कमप्रवृत्तसमगारिउचक्को' (मुपा ३६) ।

गिरुवक्कय वि [दे] अकृत, नही किया हुआ (दे ४, ४१) ।

गिरुवकिट्ट वि [निरुपक्किट्ट] क्लेश-वर्जित, दुःखरहित (भग २५, ७) ।

गिरुवक्केस वि [निरुपक्केस] शोक आदि क्लेशों से रहित (ठा ७) ।

गिरुवक्कय वि [निरुपाय] शब्द से न कहा जा सके वह, अनिवर्चनीय (धम्मस २४१, १३००) ।

गिरुवग वि [निरुपक] प्रतिपादक (सम्मत् १६०) ।

गिरुवगारि वि [निरुपकारिन्] उपकार को नहीं माननेवाला, प्रत्युपकार नहीं करनेवाला (आवम) ।

गिरुवग्गाह वि [निरुपग्रह] उपकार नहीं करनेवाला (ठा ४, ३) ।

गिरुवट्ठाणि वि [निरुपस्थानिन्] निरुयमी, आलसी (आचा) ।

गिरुवद्वय वि [निरुपद्रव] उपद्रव-रहित, आवाधा वर्जित (ओप) ।

गिरुवम वि [निरुपम] अममान, असाधारण (ओप, महा) ।

गिरुवयरिय वि [निरुपचरित] वान्तविक, तथ्य (गाया १, ५) ।

गिरुवयार वि [निरुपकार] उपकार-रहित (उव) ।

गिरुवलेव वि [निरुपलेप] लेप वर्जित, अलिप्त (कप्प), 'रयणमिव गिरुवलेवा' (पठम १४, ६४) ।

गिरुवसग्ग वि [निरुपसर्ग] १ उपमर्ग-रहित, उपद्रव-वर्जित (मुपा २८७) । २ पु मोक्ष, मुक्ति (पडि, धर्म २) । ३ न. उपसर्ग का अभाव (वव ३) ।

गिरुवह्य वि [निरुपहत] १ उपघात-रहित, अक्षत (भग ७, १) । २ रुकावट से शून्य, अप्रतिहत (मुपा २६८) ।

गिरुवहि वि [निरुपधि] माया-रहित, निष्कपट (दसनि १) ।

गिरुवार सक [ग्रह] ग्रहण करना । गिरु-वारइ (हे ४, २०६) ।

गिरुवारिअ वि [गृहीत] उपात्त, गृहीत (कुमा) ।

गिरुवालभ वि [निरुपालम्भ] उपालम्भ-शून्य (गठड) ।

गिरुविवग्ग वि [निरुद्विगम] उद्वेग-रहित (गाया १, १—पत्र ६) ।

गिरुस्साह वि [निरुत्साह] उत्साह-हीन (सूय १, ४, १) ।

गिरुव सक [नि + रूपय] १ विचार कर कहना । २ विवेचन करना । ३ देखना । ४ दिखलाना । ५ तलाश करना । निरुवेइ (महा) । वक्क गिरुविन, निरुवमाण (सुर १५, २०५, कुप्र २७५) । सक गिरुविऊण (पचा ८) । क. गिरुवियन्व (पचा ११) । हेक्क. निरुवेउ (कुप्र २०८) ।

गिरुवण न [निरुपण] १ विलोकन, निरीक्षण (उप ३३७) । २ वि. दिखलानेवाला ओणी (पठम ११, २२) ।

गिरुवणया ओ [निरुपणा] निष्पण (उप ६३०) ।

गिरुवाविअ वि [निरुपित] गवेपित, जिस की खोज कराई गई हो वह (स ५३६.७४२) ।

गिरुविअ वि [निरुपित] १ देखा हुआ (मे १३, १३, मुपा ५२३) । २ आलोचना कर कहा हुआ । ३ विवेचित, प्रतिपादित (हे २, ४०) । ४ दिखलाया हुआ । ५ गवेपित (प्राहु) । गिरुसुअ वि [निरुसुक] उत्कण्ठा-रहित (गठड) ।

गिरुइ पु [निरुइ] अनुवामना-विशेष, एक तरह का विरेचन (गाया १, १३) ।

गिरिेय वि [निरिेजस्] निष्कम्प, स्थिर (भग २५, ४) ।

गिरिेयग वि [निरिेजन] निश्चल, स्थिर (कप्प, ओप) ।

गिरोणाम पु [निरवनाम] नम्रता-रहित, गर्वित उद्धत (उव) ।

गिरोय वि [नारोग] रोग-रहित (ओप, गाया १, १) ।

गिरोव पु [दे] आदेश, आज्ञा, रुक्का (मुपा २२४) ।

गिरोवयार वि [निरुपकार] उपकार को नहीं माननेवाला (ओप ११३ भा) ।

गिरोवयारि वि [निरुपकारिन्] ऊपर देखो (उव) ।

गिरोविअ देखो गिरुविअ (मुपा ४५६, महा) ।

गिरोह पु [निरोध] रुकावट, रोकना (ठा ४, १, ओप, पात्र) ।

गिरोहग वि [निरोधक] रोकनेवाला (रभा) । गिरोहण न [निरोधन] रुकावट (परह १, १) ।

गिलक पु [दे] पतद्ग्रह, पीकदान, छीवन-पात्र, धूकने का पात्र (दे ४, ३१) ।

गिलय पु [निलय] घर, स्थान, आश्रय (मे २, २, गा २२१, पात्र) ।

गिलयण न [निलयन] वसति, स्थान (विसे) ।

गिलिड न [लिलिट] भाल, कपाल (कुमा) ।

गिलिअ देखो गिलीअ । गिलिअइ (पड्) ।

गिलित नीचे देखो ।

गिलिज्ज } सक [नी + ली] १ आश्लेष करना, गिलीअ } मँटना, गले से लगाना । २ दूर करना । ३ अक. छिप जाना । गिलिज्जइ गिली-अइ (हे ४, ५५) । गिलिज्जिजा (कप्प) । वक्क.

णीजूह देखो णिजूह = दे. निर्यूह (राज) ।
 णीड देखो णिडू (गा १०२, हे १, १०६) ।
 णीण सक [गम्] जाना, गमन करना ।
 णीणइ (हे ४, १६२) । णीणति (कुमा) ।
 णीण सक [नी] १ ले जाना । २ बाहर ले जाना, बाहर निकालना, 'सारभंडारिणीणोइ, असार अउज्झइ' (उत्त १६, २२) । भवि नीणेहिइ (महा) । वकू णीणेमाण । कवकू नीणिज्जत णीणिज्जमाण (पि ६२, आचा) । सक णीणेऊण, णीणेत्ता (महा, उवा) ।
 णीणाविय वि [नायित] दूसरे द्वारा ले जाया गया, अन्य द्वारा आनीत (उप १३६ टी) ।
 णीणिअ वि [गन] गया हुआ (पाग्र) ।
 णीणिअ वि [नीत] १ ले जाया गया (उप ५६७ टी, सुपा २६१) । २ बाहर निकाला हुआ (गाया १, ४), 'उयरप्पविठुल्लुरिमाए नीणिमो अंतपम्मारो' (सुपा ३८१) ।
 णीणिआ छी [नीनिका] चतुरिन्द्रिय जन्तु की एक जाति (जीव १) ।
 णीम पुं [नीप] १ वृक्ष-विशेष, कदंब का पेड़ । २ न. फल-विशेष (दस ५, २, २१) ।
 णीम पुं [नीप] वृक्ष-विशेष, कदम्ब का पेड़ (परण १, औप, हे १, २३४) ।
 णीमम वि [निर्मम] ममत्व-रहित (अज्झ १०६) ।
 णीमी देखो णीवी (कुमा, पड्) ।
 णीय वि [नीच] १ नीच, अधम, जघन्य (उवा, सुपा १०७) । २ वि. अधस्तन (सुपा ६००) । ३ गोय न [गोत्र] १ क्षुद्र गोत्र । २ कर्म-विशेष, जो क्षुद्र जाति में जन्म होने का कारण है (ठा २, ४, आचा) । ३ वि नीच गोत्र में उत्पन्न (सुअ २, १) ।
 णीय वि [नीत] ले जाया गया (आचा, उव, सुपा ६) ।
 णीय देखो णिच्च = नित्य (उव) ।
 णीयगम वि [नीचंगम] नीचे जानेवाला (पुप्फ ४४३) ।
 णीयंगमा छी [नीचंगमा] नदी, तरंगिणी (भत्त ११६) ।

णीर न [नीर] जल, पानी (कुमा, प्रासू ६७) ।
 ०निहि पुं [०निधि] समुद्र, सागर (सुपा २०१) । ०रूह न [०रूह] कमल (ती ३) ।
 ०वाह पुं [०वाह] मेघ, अन्न (उप पृ ६२) ।
 ०हर पु [०गृह] समुद्र, सागर (उप पृ ११६) ।
 ०हि पुं [०धि] समुद्र (उप ६८६ टी) ।
 ०कर पु [०कर] समुद्र (उप ५३० टी) ।
 णीरगां छी [दे नीरङ्गा] सिर का अवगुण्ठन, शिरोवन्न, घूँघट (दे ४, ३१, पाग्र) ।
 णीरज सक [भञ्ज] तोड़ना, भंगना ।
 णीरजइ (हे ४, १०६) ।
 णीरजिअ वि [भग्न] तोड़ा हुआ, छिन्न (कुमा) ।
 णीरध वि [नीरन्ध्र] निश्छिद्र (कप्पु) ।
 णीरण न [दे] घास, चारा, 'विमलो पंजलमगं नीरिणणीनीरणाइसजुत्त' (सुपा ५०१) ।
 णीरय वि [नीरजस्] १ रजो-रहित, निर्मल, शुद्ध, सिद्धि गच्छइ णीरमो' (शु १६, परण ३६, सम १३७, पउम १०३, १३४, सार्ध ११२) । २ पुं. ब्रह्म-देवलोक का एक प्रस्तट (ठा ६) ।
 णीरव सक [आ + क्षिप्] आक्षेप करना ।
 णीरवइ (हे ४, १४५) ।
 णीरव सक [उमुक्ष्] खाने को चाहना ।
 णीरवइ (हे ४, ५) । भूका. णीरवीम (कुमा) ।
 णीरव वि [आक्षेपक] आक्षेप करनेवाला (कुमा) ।
 णीरस वि [नीरस] रम-रहति, शुष्क (गउड, महा) ।
 णीरसजल न [नीरसजल] आयविल तप (सवोष ५८) ।
 णीराग } वि [नीराग] राग-रहित, वीतराग
 णीराय } (गउड, कुप्र १२५, कुमा) ।
 णीरेणु वि [नीरेणु] रजो-रहित, धूल-रहित (गउड) ।
 णीरोग वि [नीरोग] रोग-रहित, तंदुरुस्त (जीव ३) ।
 णील अक [निर + सृ] बाहर निकलना ।
 णीलइ (हे ४, ७६) ।
 णील पुं [नील] १ हरा वण, नीला रंग (ठा १) । २ ग्रहाविष्टायक देव-विशेष (ठा २,

३) । ३ रामचन्द्र का एक सुमत्, वानर-विशेष (से ४, ५) । ४ छन्द-विशेष (पिग) ।
 ५ पर्वत-विशेष (ठा २, ३) । ६ न. रत्न की एक जाति, नीलम (गाया १, १) । ७ वि. हरा वणवाला (परण १, राय) । कठ पुं [कण्ठ] १ शक्रेन्द्र का एक सेनापति, शक्रेन्द्र के महिष-नैन्य का अधिपति देव-विशेष (ठा ५, १, इक) । २ मयूर, मोर (पाग्र, कुप्र २४७) । ३ महादेव, शिव (कुप्र २४७) । कणवीर पुं [०करवीर] हरे रंग के फूलवाला कनेर का पेड़ (राय) ।
 ०गुफा छी [०गुफा] उद्यान-विशेष (आवम) । ०गणि पुत्री [०गणि] रत्न विशेष, नीलम, मरकत (कुमा) । ०लेस वि [०लेदय] नील लेशवाला (परण १७) । ०लेसा छी [०लेदया] अशुभ अव्यवसाय-विशेष (सम ११, ठा १) । ०लेस्स देखो ०लेस (परण १७) । ०लेस्सा देखो ०लेसा (राज) । वत्त पुं [वत्त] १ पर्वत-विशेष (ठा २, ३, सम १२) । २ ब्रह्म-विशेष (ठा ५, २) । ३ न. शिखर-विशेष (ठा २, ३) ।
 णील वि [नील] कच्चा, भद्र (आचा २, ४, २, ३) । ०केसी छी [०केसी] तरुणी, युवति (वव ४) ।
 णीलकंठी छी [दे] वृक्ष-विशेष, बाण-वृक्ष (दे ४, ४२) ।
 णीला छी [नीला] १ लेश्या-विशेष, एक तरह का आत्मा का अशुभ परिणाम (कम्म ४, १३, भग) । २ नीलवणवाली छी (पड्) ।
 णील्लिअ वि [नि सून] निर्गत, निर्यात (कुमा) ।
 णील्लिअ वि [नीलित] नील वण का (उप पृ ३२) ।
 णील्लिआ देखो णीला (भग) ।
 णील्लिम पुत्री [नील्लिमन्] नीलत्व, नीलापन, हरापन (सुपा १३७) ।
 णीली छी [नीली] १ वनस्पति-विशेष, नील (परण १, उर ६, ५) । २ नील वणवाली छी (पड्) । ३ आंस का रोग (कुप्र २१३) ।
 णीलुल्ल सक [कु] १ निष्पतन करना । २ आच्छेदन करना । णीलुल्लइ (हे ४, ७१, पड्) । वकू णीलुल्लत (कुमा) ।

णिवत्तय वि [निवर्त्तक] १ वापस आने-
वाला, लौटनेवाला । २ लौटानेवाला, वापस
करनेवाला (हे २, ३०, प्राप्र) ।

णिवत्ति स्त्री [निवृत्ति] निवर्त्तन (उव) ।

णिवत्तिअ वि [निवर्त्तित] रोका हुआ, प्रति-
पिद्ध (स ३६४) ।

णिवत्तिअ वि [निवर्त्तित] निष्पादित, 'निव-
त्तिया सवपूया' (स ७६३) ।

णिवद्धि देखो णिवत्ति (संक्षि ६) ।

णिवन्न देखो णिवण्ण (स ७६०) ।

णिवय अक [नि + पत्] समाना, अन्तर्भूत
होना । निवयति (पव ८४ टी) ।

णिवय देखो णिवड । णिवइआ, णिवएआ
(कप्प, ठा ३, ४) । वक्क णिवयंत, णिवयमाण
(उप १४२ टी, सुर ४, ६५, कप्प) ।

णिवय पुं [निपात] नीचे गिरना, अव-पतन
(सुर १३, १६७) ।

णिवरुण पु [निवरुण] वृक्ष-विशेष (उप
१०३१ टी) ।

णिवस अक [नि + वस्] निवाम करना,
रहना । णिवसइ (महा) । वक्क णिवसत
(सुपा २२५) । हेक्क णिवसिउ (सुपा
४६३) ।

णिवसन न [निवसन] वक्क, कपडा (अभि
१३६, महा; सुपा २००) ।

णिवम्मिय वि [निवसित] जिसने निवास
किया हो वह (महा) ।

णिवसिर वि [निवसित] निवास करनेवाला
(गउड) ।

णिवह सक [गम्] जाना, गमन करना ।
णिवहइ (हे ४, १६२) ।

णिवह अक [नश्] भागना, पलायन करना ।
णिवहइ (हे ४, १७८) ।

णिवह सक [पिप्] पीसना । णिवहइ (हे
४, १८५; पड्) ।

णिवह पुन [निवह] समूह, राशि, जल्य (से
२, ४२, सुर ३, ३५, प्रासु १४४), 'अच्छउ
ता फलनिवह' (वजा १५२) ।

णिवह पुन [दे] समृद्धि, वैभव (दे ४, २६) ।
णिवहइ वि [नष्ट] नाश-प्राप्त (कुमा) ।

णिवहइ वि [पिट] पीसा हुआ (कुमा) ।

णिवाइ वि [निपातिन्] गिरनेवाला (आचा) ।

णिवाड सक [नि + पानय्] नीचे गिरना ।
निवाडइ (स ६६०) । वक्क. निवाडयंत (म
६८६) । संक. णिवाडेइत्ता (जीव ३) ।

णिवाडिय वि [निपातित] नीचे गिराया हुआ
(महा) ।

णिवाडिर वि [निपातयित्] नीचे गिराने-
वाला (सण) ।

णिवाण न [निपान] कूप या तालाब के पास
पशुओं के जल पीने के लिए बनाया हुआ
जल-कुण्ड, चरही (स ३१२) । 'साला स्त्री
[शाला] पशुओं का पानी पिलाने का स्थान
(महा) ।

णिवाय देखो णिवाड । णिवायइ (कुमा) ।
णिवाएआ (पि १३१) ।

णिवाय पु [दे] स्वेद, पसीना (दे ४, ३४,
सुर १२, ८) ।

णिवाय पु [निपात] १ पतन, अव-पतन,
गिरना (गा २२२, सुपा १०३) । २ संयोग,
सवन्व, 'दिट्ठिणिवाआ ससिमुहीए' (गा १४८,
उत्त २, गउड) । ३ च, प्र आदि व्याकरण-
प्रसिद्ध अव्यय (पणह २, २, सुपा २०३) ।
४ विनाश (पिड) ।

णिवाय वि [निवात] पवन-रहित, स्थिर
(पणह २, ३, स ४०३, ७४३) ।

णिवायण न [निपातन] १ गिराना, निपा-
तन, ढाहना (पणह १, २) । २ व्याकरण-
प्रसिद्ध शब्द-सिद्धि, प्रकृति आदि के विना
विभाग किये ही अखण्ड शब्द की निष्पत्ति
(विमे २३) ।

णिवार सक [नि + वारय्] निवारण करना,
निषेध करना, रोकना । णिवारेइ (उव, महा) ।
वक्क णिवारंत (महा) । कवक्क णिवारी-
अत्त, णिवारिज्जमाण (नाट—मूच्छ १५४,
१३५) । क. णिवारियन्व, णिवारेयन्व
(सुपा ४८२, महा) ।

णिवारग वि [निवारक] निषेध करनेवाला,
रोकनेवाला (सुर १, १२६, सुपा ६३६) ।

णिवारण न [निवारण] १ निषेध, रोकना
(भग ६, ३३) । २ शीत आदि को रोकनेवाला,
गृह, वक्क आदि, 'न मे निवारणं अत्थि,
छवित्ताण न विज्झइ' (उत्त २, ७) । ३ वि

निवारण करनेवाला, रोकनेवाला, 'उवसग्ग-
निवारणो एसो' (अजि ३८) ।

णिवारय देखो णिवारग (उप ५३० टी) ।

णिवारि वि [निवारिन्] निवारक, प्रतिषेधक ।
स्त्री 'रिणी (महा) ।

णिवारिय वि [निवारित] रोका हुआ, निषिद्ध
(भग, प्रासु १६६) ।

णिवास पु [निवाम] १ निवसन रहना ।
२ वास-स्थान, ढेरा (कुमा महा) ।

णिवसि वि [निवासिन्] निवास करनेवाला
रहनेवाला (महा) ।

णिविअ देखो णिमिअ = न्यम्त (नि १२ ३०) ।

णिविट् देखो णिवट् = निवृत्त (सण) ।

णिविट् वि [निविट्] १ स्थित, बंठा हुआ
(महा) । २ आसक्त, लीन (राज) ।

णिविट्ठि वि [निविट्ठि] लब्ध, उपात्त गृहीत
(ठा ५, २) । 'कप्पट्ठिइ स्त्री [कल्पस्थिति]
जैन साधुओं का एक तरह का आचार (ठा
५, २) ।

णिविड देखो णिविड (पड्, हे १, २४०) ।

णिविडिअ देखो णिविडिय (गउड, पि
२४०) ।

णिवित्ति स्त्री [निवृत्ति] १ निवर्त्तन उपरम,
प्रवृत्ति का अभाव (विमे २७६८, स १५४) ।
२ वापस लौटना, प्रत्यावर्त्तन (सुपा ३३२) ।

णिविद्ध वि [दे] १ सोकर उठा हुआ । २
निराश, हताश । ३ उड्डट । ४ नृशस, निर्दय
(दे ४, ४८) ।

णिविन्न वि [निर्विज्ञ] विशिष्ट ज्ञान से रहित
(तंडु ५५) ।

णिविस अक [नि + विश्] बैठना । वक्क,
णिविसत (आ १२) ।

णिविस (अप) देखो णिमिस (भवि) ।

णिविसिर वि [निवेष्ट] बैठनेवाला (सण) ।

णिवुज्जमाण वि [न्युज्जमान] नीयमान, जो
ले जाया जाता हो वह (आचा २, ११, ३) ।

णिवुट्ठि वि [निवृष्ट] बरसा हुआ (आचा २,
४, १, ४) ।

णिवुड्ड सक [नि + वर्धय्] १ त्याग
करना, छोड़ना । २ हानि करना । वक्क,
णिवुड्डमाण (सुज १, १) । संक. णिवु-
ड्डित्ता (सुज १) ।

गीहम्म अक [निर + हम्म] निकलना ।
गीहम्मइ (हे ४, १६२) ।

गीहम्मिअ वि [निर्हम्मित] निर्गत, निस्सृत
(दे ४, ४३) ।

गीहर अक [निर + ह्] वाहर निक-
लना । गीहरइ (हे ४, ७९) । वक्र. नीहरत
(सु. १ ४८२) । सक्र. गीहरिअ (निचू ९) ।
क. गीहरियव्व (सुपा ५९०) ।

गीहर अक [आ + क्रन्द] आक्रन्द करना,
चिलाना । गीहरइ (हे ४, १३१) ।

गीहर अक [निर + ह्] प्रतिव्वनि
करना । वक्र. गीहरत, गीहरित (से ५,
११, २, ३१) ।

गीहर मक [निर + सारय्] वाहर निका-
लना । हेक्क गीहरित्तए (भग ५, ४) । क.
गीह्मियव्व (सुपा ४८२) ।

गीहर अक [निर + ह्] पाखाना जाना,
पुरीपोत्सर्ग करना । नीहरइ (हे ४, २५९) ।

गीहरण न [निस्सरण, निर्हरण] १ निर्ग-
मन, निर्गम, बाहर निकालना (विपा १, ३;
गाया १, १४) । २ परित्याग (निचू १) ।
३ अपनयन (सूत्र २, २) ।

गीहरिअ देखो गीहर = निर + ह् ।

गीहरिअ वि [नि सृत] निर्गत, निर्यात (सुर
१, १५५, ३, ७५, पाप्म) ।

गीहरिअ वि [निर्हृदित] प्रतिव्वनित (से
११, १२२) ।

गीहरिअ न [दे] शब्द, आवाज, ध्वनि (दे
४, ४२) ।

गीहरिअन देखो गीहर = निर + ह् ।

गीहार पुं [नीहार] १ हिम, तुषार (अचु
७२, स्वप्न ५२, कुमा) । २ विष्ठा या मूत्र
का उत्सर्ग (सम ६०) ।

गीहारण न [निस्सारण] निष्कासन (ठा २,
४) ।

गीहारि वि [निर्हारिन्] १ निकलनेवाला ।
२ फैलनेवाला, 'जोयण्णीहारिणा सरेण'
(आवम, सम ६०) ।

गीहारि वि [निर्हृदिन्] घोष करनेवाला,
गू जनेवाला (ठा १०, पि ४०५) ।

गीहारिम देखो गिहारिम (ठा २, ४, औप,
गाया १, १) ।

गीहास वि [निर्हास] हास-रहित (उत्त २२,
२८) ।

गीहूय वि [दे] अकिञ्चित्कर, कुछ भी नहीं
कर सकनेवाला, 'पवयण्णीहूयाण' (आवनि
७८७) । देखो गिहुअ ।

गु अ [नु] इन अर्थों का सूचक अव्यय—१
व्यग्य ध्वनि । २ वक्रोक्ति (स ३८६) । ३
वितर्क (सण) । ४ प्रश्न । ५ विकल्प । ६
अनुनय । ७ हेतु, प्रयोजन । ८ अपमान । ९
अनुताप, श्रुशय । १० अपदेश, वहाना
(गठ, हे २, २१७, २१८) ।

गु अ [लु] १ निन्दामूचक अव्यय (दम २,
१) । २ विशेष (मिरि ६५१) ।

गुअ वि [झक] जानकार (गा २०५) ।

गुकार पुं [नुकार] 'नुक्' ऐसी आवाज
(राय) ।

गुज्जिय वि [दे] वन्द किया हुआ, मुद्रित,
'कट्ठिया रोण छुरिया, गुज्जियं से वयण,
छिन्ना य हत्या' (स ५८६) ।

गुत्त वि [नुत्त] १ प्रेरित । २ क्षिप्त, फँका
हुआ (से ३, १५) ।

गुम सक [नि + अस्] स्थापन करना ।
गुमइ (हे ४, १९९) ।

गुम सक [छादय्] ढकना, आच्छादन
करना । गुमइ (हे ४, २१) ।

गुमज्ज अक [नि + सट्] बैठना । गुमज्ज
(पड्) ।

गुमज्ज अक [नि + मस्ज्] हूबना ।
गुमज्जइ (हे १, ९४) ।

गुमज्ज अक [शी] सोना, मूतना । गुमज्जइ
(प्राक ७४) ।

गुमज्जण न [निमज्जन] हूबना (राज) ।

गुमण वि [निपण्ण] बैठा हुआ, उपविष्ट
(पड्, हे १, १७४) ।

गुमण } वि [निमग्न] हूबा हुआ, लीन
गुमन्न } (हे १, ९४, १७४) ।

गुमिअ वि [न्यस्त] स्थापित (कुमा) ।

गुमिअ वि [छादित] ढका हुआ (कुमा) ।

गुल्ल देखो णोल्ल । गुल्लइ (पि २४४) ।

गुवण वि [दे] सुप्त, सोया हुआ (दे ४,
२५) ।

गुवण वि [निपण्ण] बैठा हुआ, उपविष्ट
(गठ, गाया १, ५, स २४२), 'पासम्मि
नुवण्णा' (उप ६४८ टी) ।

गुव सक [प्र = काशय्] प्रकाशित
करना । गुवइ (हे ४, ४५) । वक्र. गुवत्त
(कुमा) ।

गुसा स्त्री [स्नुपा] पुत्र-वधू, पुत्र की भार्या
(प्रयी १०५) ।

गूउर देखो णिउर = तूउर (पड, हे १,
१२३) ।

गूण वि [न्यून] कम, ऊन (उप पृ ११९) ।

गूण } अ [नूनम्] इन अर्थों का सूचक
गूण } अव्यय—१ निश्चय, अवधारण । २
तर्क विचार । ३ हेतु, प्रयोजन । ४ उपमान ।
५ प्रश्न (हे १, २९, प्राप्र, कुमा, भग, प्रासू
१२, बृह १, आ १२) ।

गूतण वि [नूनन] नया, नवीन (मन ३०) ।

गूपुर देखो गूउर (चार ११) ।

गूम सक [छादय्] १ ढकना, छिपाना ।
गूमइ (हे ४, २१) । गूमति (गाया १,
१६) । वक्र. गूमत (गा ८५६) ।

गूम न [दे] १ प्रच्छादन, छिपाना । २
असत्य, झूठ (परह १, २) । ३ माया, कपट
(नम ७१) । ४ प्रच्छन्न स्थान, गुफा वगैरह
(सूत्र १, ३, ३, भग १२, ५) । ५ अन्वकार,
गाढ अन्वकार (राज) ।

गूम न [दे] कर्म (सूत्र १, ३, ३, २) ।
गूिह न [गूह] भूमि-गृह (आवा २, ३,
३, १) ।

गूमिअ वि [छादित] ढका हुआ, छिपाया
हुआ, (से १, २२, पाप्म, कुमा) ।

गूमिअ वि [दे] पोला किया हुआ (उप पृ
३९३) ।

गूला स्त्री [दे] शाखा, डाल (दे ४, ४३) ।

गे अ पाद-पूति में प्रयुक्त होता अव्यय (राज) ।

गेअ देखो गा = जा ।

गेअ देखो गी = नी ।

गेअ वि [नैक] अनेक, बहुत (पउम ९४,
५१) । विह वि [विध] अनेक प्रकार का
(पउम ११३, ५२) ।

गेअ अ [नैव] नहीं ही, कदापि नहीं, कभी
नहीं (से ४, ३०, गा १३९, गठ, सुर २,
१८६, सण) ।

गिन्वरइ (हे ४, ३)। भूका गिन्वरही (कुमा)। कर्म

‘कह तम्मि निव्वरिज्जइ,

दुक्ख कंहुज्जुएण हिअएण।

अद्वाए पडिदिवे व, जम्मि

दुक्का न संकमइ (स ३०६)।

गिन्वर सक [छिद्] छेदन करना, काटना।

गिन्वरइ (हे ४, १२४)।

गिन्वरण न [कथन] दु ख-निवेदन (गा २५५)।

गिन्वरिअ वि [छिन्न] काटा हुआ, खण्डित (कुमा)।

गिन्वल सक [मुच्] दु ख को छोड़ना। गिन्वलेइ (हे ४, ६२)।

गिन्वल अक [निर् + पद्] निष्पन्न होना, सिद्ध होना, बनना। गिन्वलइ (हे ४, १२८)।

गिन्वल देखो गिन्वल = क्षर्। गिन्वलइ (हे ४, १७३ टि)।

गिन्वल देखो गिन्वह = भू। वक्क गिन्वलउ, गिन्वलमाण (से १, ३६, ७, ४३)।

गन्वन्तिअ वि [दे] १ जल-धौत, पानी से धोया हुआ। २ प्रविगणित। ३ विघटित, विपुक्त (दे ४, ५१)।

गिन्वव सक [निर् + वापय्] ठंडा करना, बुझाना। गिन्ववेहि (स ४५५)। गिन्ववमु (काल)। वक्क गिन्ववत (सुपा २२५)। कृ गिन्ववियव्व (सुपा २६०)।

गिन्ववण न [निर्वापण] १ बुझाना, शान्त करना। २ वि शान्त करनेवाला, ताप को बुझानेवाला (सुर ३, २३७)।

गिन्वविअ वि [निर्वापित] बुझाया हुआ, ठंडा किया हुआ (गा ३१७, सुर २, ७४)।

गिन्वह अक [निर् + वह्] १ निभना, निर्वाह करना, पार पड़ना। २ आजीविका चलाना। गिन्वहइ (स १०५, वज्जा ६)। कर्म, गिन्वुइ (पि ५४१)। वक्क गिन्वहत (आ १२, कुप्र ३३)। कृ गिन्वहियव्व (कुप्र ३७५)।

गिन्वह सक [उद् + वह्] १ धारण करना। २ ऊपर उठाना। गिन्वहइ (पद्)।

गिन्वहण न [निर्वहण] निर्वाह, अन्त, नाटक की एक सवि (सुपा १७५, कुप्र ३७५)।

गिन्वहण न [दे] विवाह, शादी (दे ४, ३६)।

गिन्वा अक [वि + श्रम्] विश्राम करना।

गिन्वाइ (हे ४, १५६)। वक्क गिन्वाअन (मे ८, ८)।

गिन्वावाइम वि [निर्व्याघातिम] व्याघात-रहित, स्थलना-रहित (श्रौप)।

गिन्वावाय वि [निर्व्याघान] १ व्याघात-वर्जित (खाया १, १, भग, कप्प)। २ न व्याघात का अभाव (परण २)।

गिन्वावाया जी [निर्व्याघाता] एक विद्या-देवी (पउम ७ १४५)।

गिन्वाण न [निर्वाण] १ मुक्ति, मोक्ष, निवृत्ति (विसे १६७५)। २ सुख, चैन, शान्ति, दु ख-निवृत्ति, ‘निर्णमणो निव्वाण सुदरि निस्ससय कुणइ’ (उप ७२८ टी, पउम ४६, १६)। ३ बुझाना, विघ्यापन (आव ४)। ४ वि बुझा हुआ, ‘जह दीवो गिन्वाणो’ (विसे १६६१, कुप्र ५१)। ५ पुं ऐरवत वर्ष में होनेवाले एक जिन-देव का नाम (सम १५४)।

गिन्वाण न [निर्वाण] वृष्टि (दम ५, २, ३८)।

गिन्वाण न [दे] दु ख-कथन (दे ४, ३३)।

गिन्वाणि पु [निर्वाणिन्] भारतवर्ष में अतीत उत्पत्ति-काल में सजात एक जिन-देव (पव ७)।

गिन्वाणी जी [निर्वाणी] भगवान् श्री शान्तिनाथ की शासन-देवी (संति १, १०)।

गिन्वाय वि [निर्वाण] बीता हुआ, व्यतीत (से १४, १४)।

गिन्वाय वि [विश्रान्त] १ जिसने विश्राम किया हो वह (कुमा)। २ सुखित, निवृत्त (से १३, २३)।

गिन्वाय वि [निर्वात] वायु-रहित (खाया १, १, श्रौप)।

गिन्वायिअ वि [भाचित] वृथक् किया हुआ (से १४, ५४)।

गिन्वाव देखो गिन्वव। गिन्वावेमि (स ३५२)। संकृ गिन्वाविऊण (निच् १)।

गिन्वाव पु [निर्वाप] धी, शाक आदि का परिमाण (निच् १)। ‘कहा जी [कया] एक तरह की भोजन कथा (ठा ४, २)।

गिन्वावइत्तअ (शौ) वि [निर्वापयित्ठक] ठंडा करनेवाला (पि ६००)।

गिन्वावण न [निर्वापण] बुझाना, विघ्यापन (दस ४)।

गिन्वावणा न [निर्वापणा] बुझाना, ठंडा करना, उपशान्ति (गउड)।

गिन्वावय वि [निर्वापक] आग बुझानेवाला (सूअ १ ७, ५)।

गिन्वाविअ वि [निर्वापित] ठंडा किया हुआ (खाया १, १, दस ५, १)।

गिन्वासण न [निर्वासन] देश निकाला (स ५३४, कुप्र ३४३)।

गिन्वासणा जी [निर्वासना] ऊपर देखो (पउम ६६, ४१)।

गिन्वाह पुं [निर्वाह] १ निभाना, पार-प्राप्ति। २ आजीविका, जीवन-सामग्री, ‘निव्वाह किपि दाउ च’ (सुपा ४८८)।

गिन्वाहग वि [निर्वाहक] निर्वाह करने-वाला (रभा)।

गिन्वाहण न [निर्वाहण] १ निर्वाह, निभाना (सुपा ३६४)। २ निस्सार करना (राज)।

गिन्वाहिअ वि [निर्वाहित] अतिवाहित, विताया हुआ, गुजारा हुआ (मे ६, ४२)।

गिन्वाहिअ वि [निर्व्याधिक] व्याधि-रहित, नीरोग (से ६, ४२)।

गिन्विअप्प देखो गिन्विगप्प (सम्म ३३)।

गिन्विआर वि [निर्विकार] विकार-रहित (गा ५०६)।

गिन्विइअ वि [निर्विकृतिक] १ घृत आदि विकृति-जनक पदार्थों से रहित (श्रौप)। २ न प्रत्याख्यान-विशेष, जिसमें घृत आदि विकृतियों का त्याग किया जाता है (पव ४, पंचा ५)।

गिन्विङ्गिच्छ वि [निर्विचिकित्स] फल-प्राप्ति में शका-रहित (कस, धर्म २)।

गिन्विङ्गिच्छ न [निर्विचिकित्स्य] फल-प्राप्ति में सन्देह का अभाव (उत्त २८)।

गेवत्थ न [नेपथ्य] १ वस्त्र आदि की रचना, वेप की सजावट, नाटक आदि में परदे के भीतर का स्थान जिसमें नट-नटी नाना प्रकार का वेश सजाते हैं, रंगशाला, नाट्यशाला (गाथा १, १)। २ वेप (विसे २५८७, सुर ३, ६२, सण, सुपा १५३)।

गेवत्थण न [दे] निरुद्धन, उत्तरीय वस्त्र का अञ्चल (कुमा)।

गेवत्थिय वि [नेपथ्यत] जितने वेप-भूषा की हो वह, पुरिसनेवत्थिया (विपा १, ३)।

गेवाइय वि [नैपातिरु] निपात-निष्पन्न नाम, अव्यय आदि (विसे २८४०, भग)।

गेवाल पुं [नेपाल] १ एक भारतीय देश, नेपाल (उप पु ३६३, कुप्र ४५८)। २ वि नेपाल-देशीय, नेपाली (पउम ६६, ५५)।

गेविज्ज } न [नैवेद्य] देवता के आगे धरा
गेवेज्ज } हुआ अन्न आदि (स १२२, आ १६)।

गेव्वाण देखो । णव्वाण = निर्वाण (आचा, सुर ६, २०, स ७४४)।

गेव्वुअ देखो णिव्वुअ (उप ७३० टी)।

गेव्वुइ देखो णिव्वुइ (उप ४६८ टी)।

गेसांग्गय देखो णिसंग्गय (सुपा ६)।

गेसज्जि वि [नैपद्यिन्] आसन-विशेष से उपविष्ट (पव ६७, पंचा १८)।

गेसज्जिअ वि [नैपद्यिक] ऊपर देखो (ठा ५, १, औप, परह २, १, कस)।

गेसत्थि पु [दे] वणिग् मन्त्री, वणिक् प्रधान (दे४, ४४)।

गेसत्थिया } स्त्री [नैसृष्टिकी, नैशालिकी]
गेसर्था } १ निसर्जन, निक्षेपण। २ निसर्जन से होनेवाला कर्म-बन्ध (ठा २, १, नव १८)।

गेसप्प पुं [नैमर्प] निधि विशेष, चक्रवर्ती राजा का एक देवाधिष्ठित निधान (ठा ६, उप ६८६ टी)।

गेसर पु [दे] रवि, सूर्य (४, ४४)।

गेसाय देखो णिसाय = निपाद (राज)।

गेस पुन [दे] १ ओष्ठ, ओठ, होठ। २ पौंव; 'तह निक्खवतमता कूवम्मि निहत्तरोसुजुग' (उप ३२० टी)।

गेह पुं [स्नेह] १ राग, अनुराग, प्रेम (पाप्र)। २ तेल आदि चिकना रस-पदार्थ। ३ चिकनाई, चिकनाहट (हे २, ७७, ४, ४०६, प्राप्र)।

गेहर देखो गेहुर (परह १, १)।

गेहल पु [स्नेहल] छन्द-विशेष (पिंग)।

गेहल वि [स्नेहल] स्नेही, स्नेह युक्त, 'पियराइ नेहलाइ, अणुरत्ताओ गिहिणीओ' (धर्मवि १२५)।

गेहालु वि [स्नेहवन्] स्नेह-युक्त, स्निग्ध (हे २, १५६)।

गेहुर पु [नेहुर] १ देश-विशेष, एक अनार्य देश। २ उसमें बसनेवाली अनार्य जाति (परह १, १—पत्र १४)।

गो अ [नो] इन अर्थों का सूचक अव्यय—१ निषेध, प्रतिषेध, अभाव (ठा ६, कम, गउठ)। २ मिश्रण, मिश्रता, 'नोसद्दो मिस्सभावम्मि' (विसे ५०)। ३ देश, भाग, अश, हिस्सा (विसे ८८८)। ४ अवधारण, निश्चय (राज)।

°आगम पु [°आगम] १ आगम का अभाव। २ आगम के साथ मिश्रण। ३ आगम का एक अश (आवम, विसे ४६, ५०, ५१)। ४ पदार्थ का अपरिज्ञान (एदि)। °इन्दिय न [°इन्द्रिय] मन, अन्तःकरण, चित्त (ठा ६, सम ११, उप ५६७ टी)। °कमाय पुं [°कपाय] कपाय के उद्दीपक हास्य वगैरह नव पदार्थ, वे ये हैं—हास्य, रति, अरति, शोक, भय, जुगुप्सा, पुवेद, स्त्रीवेद और नपुंसकवेद (कम्म १, १७, ठा ६)। °केवलनाण न [°केवलज्ञान]

अवधि और मन पर्यन्त ज्ञान (ठा २, १)। °गार पु [°कार] 'नो' शब्द (राज)। °गुण वि [°गुण] अयथायर्थ, अवास्तविक (अणु)। °जीव पु [°जीव] १ जीव और अजीव से भिन्न पदार्थ, अवस्तु। २ अजीव, निर्जीव। ३ जीव का प्रदेश (विसे)। °तह वि [°तथ] जो वैसा ही न हो (ठा ४, २)।

गो अ [दे] इन अर्थों का सूचक अव्यय—१ खेद। २ आमन्त्रण। ३ विचित्रता। ४ वितर्क। ५ प्रकोप (प्राकृ ८०)।

गो° पुं [ज्] पुरुष, नर, 'गोवावाराभावम्मि अणणहा खम्मि चैव उवलद्धो' (धर्मसं १२५३, १२५६)।

गोअ [दे] इन अर्थों का सूचक अव्यय—१ खेद। २ आमन्त्रण। ३ विचित्रता। ४ वितर्क। ५ प्रकोप (प्राकृ ८०)।

गो° पुं [ज्] पुरुष, नर, 'गोवावाराभावम्मि अणणहा खम्मि चैव उवलद्धो' (धर्मसं १२५३, १२५६)।

गोअ [दे] इन अर्थों का सूचक अव्यय—१ खेद। २ आमन्त्रण। ३ विचित्रता। ४ वितर्क। ५ प्रकोप (प्राकृ ८०)।

गोअ [दे] इन अर्थों का सूचक अव्यय—१ खेद। २ आमन्त्रण। ३ विचित्रता। ४ वितर्क। ५ प्रकोप (प्राकृ ८०)।

गोअ [दे] इन अर्थों का सूचक अव्यय—१ खेद। २ आमन्त्रण। ३ विचित्रता। ४ वितर्क। ५ प्रकोप (प्राकृ ८०)।

गोजुग न [नोयुग] न्यून युग (सुज्ज ११)।

गोदिअ देखो गोदिअ (राज)।

गोमल्लिआ स्त्री [नवमल्लिका] सुगन्धि फूल-वाला वृक्ष-विशेष, नेवारी, वासंती (नाट, पि १५४)।

गोमालिआ स्त्री [नवमालिका] ऊपर देखो (हे १, १७०, गा २८१, षड्, कुमा, अभि २६)।

गोमि पु [दे] रस्ती, रज्जु (दे ४, ३१)।

गोलइआ } स्त्री [दे] चन्दु, चोच, चाँच (दे
गोलच्छा } ४, ३६)।

गोह सक [श्रिप्, नुद्] १ फँकना। प्रेरणा करना। गोल्लइ (हे ४, १४३, षड्)। गाल्लेइ (गा ८७५)। कवक, गोल्लिज्जंत (सुर १३, १६६)।

गोल्लिअ वि [नोदित] प्रेरित (से ६, ३२, गाथा १, ६, परह १, ३, स ३४०)।

गोव्व पु [दे] भायुक्त, सूवा या सूवेदार राज-प्रतिनिधि (दे ४, १७)।

गोहल पुं [लोहल] अव्यक्त शब्द-विशेष (षड् पि २६०, सज्जि ११)।

गोहलिआ स्त्री [नवफलिआ] १ ताजी फली, नवोत्पन्न फली (हे १, १७०)। २ नूतन फलवाली (कुमा)। ३ नूतन फल का उद्गम, 'गोहलिअमप्पणो किं ए मग्गसे, मग्गसे, कुरवअस्स' (गा ६)।

गोहा स्त्री [स्तुपा] पुत्र की भार्या, पुत्रवधू, पतोहू, वधू (पि १४८, सज्जि १५)।

°ण्णअ वि [ज्ञक] जानकार (गा २०३)।

°ण्णास देखो णास = न्यास (स्वप्न १३४)।

°ण्णुअ देखो °ण्णअ (गा ४०५)।

ण्हं अ. १-२ वाक्यालंकार और पादपूर्ति में प्रयुक्त किया जाता अव्यय (कप्प, कस)।

ण्हव सक [स्नपय्] नहलाना, स्नान कराना। राहवेइ (कुप्र ११७)। कवक, ण्हविज्जंत (सुपा ३३)। सकृ ण्हविऊण (पि २१३)।

ण्हवण न [स्नपन] स्नान कराना, नहलाना (कुमा)।

ण्हविअ वि [स्नपित] जिसको स्नान कराया गया हो वह (सुर २, ५८, भवि)।

ण्हा } अक [स्ना] स्नान करना, नहाना।

ण्हाण } रहाइ (हे ४, १४)। रहाण्णेइ, रहाण्णैति (पि ३१३)। भवि. रहाइस्सं

गिन्वेअ पु [निर्वेद] मुक्तिकी इच्छा (सम्मत १६६) ।

गिन्वेअ पु [निर्वेद] १ खेद, विरक्ति (कुमा, द्र ६२) । २ समार की नियुगता का अवधारण—निश्चय (ज्ञान) करना (उप ६८६) ।

गिन्वेअण न [निर्वेदन] १ खेद, वैराग्य । २ वि वैराग्यजनक । स्त्री ०णी (ठा ४, २) । गिन्वेद सक [निर् + वेष्टय्] १ नाश करना, क्षय करना । २ घेरना । ३ बांधना । वक्तु गिन्वेदुत (विसे २७४५, आचा २, ३, २) ।

गिन्वेद सक [निर् + वेष्टय्] त्याग करना । गिन्वेद (सुज २, १) ।

गिन्वेद सक [निर् + वेष्टय्] मजबूती से वेष्टन करना । गिन्वेदित्त, गिन्वेदित्त (आचा २, ३, २, पि ३०४) ।

गिन्वेद वि [दे] नग्न, नंगा (दे ४, २८) ।

गिन्वेद देवो गिन्वेअ (उत्त २६, २) ।

गिन्वेर वि [निर्वैर] वैर-रहित (अच्छ ५६) ।

गिन्वेरिस वि [दे] १ निर्दय, निष्कण । २ अत्यन्त, अधिक (दे ४, ३७) ।

गिन्वेह सक [निर् + वेह्] फुरना, सत्य उहटना, मावित होना । गिन्वेह (पि १०७) ।

गिन्वेह्तिअ वि [निर्वेहित] प्रस्फुरित, स्फूर्ति-युक्त (से ११, १६) ।

गिन्वेस वि [निर्वेप] द्वेप-रहित (से १५, ६५) ।

गिन्वेस पु [निर्वेश] १ लाभ, प्राप्ति (ठा ५, २) । २ व्यवस्था; 'कम्माण कप्पिआण काही कम्मतरेमु को गिन्वेस' (अच्छ १८) ।

गिन्वेह्णिया स्त्री [निर्वेधनिका] वनस्पति-विशेष (सुप्र २, ३, १६) ।

गिन्वेदव्य वि [निर्वोदव्य] निर्वाह-योग्य, वहन करने योग्य, निभाने लायक (आव ४) ।

गिन्वोल सक [कु] क्रोध से होठ को मलिन करना । गिन्वोलन (हे ४, ६६) ।

गिन्वोलण न [करण] क्रोध से होठ को मलिन करना (कुमा) ।

गिस° देखो गिसा (कुमा, पउम १२, ६५) ।

गिस सक [नि + अस्] म्यापन करना । गिमेइ (भीप) ।

गिसंत वि [निशान्त] १ श्रुत, सुना हुआ (राया १, १, ४, उवा) । २ अत्यन्त ठंडा (आवम) । ३ रात्रि का अवसान, प्रभात, 'जहा गिसते तवणच्चिमाली, पभासई केवल-मारहं तु' (दस ६, १, १४) ।

गिसस वि [नृशम] क्रूर, निर्दय (सुपा ४०६) ।

गिसग्ग पुं [निसर्ग] १ स्वभाव, प्रकृति (ठा २, १, कुप्र १४८) । २ निसर्जन, त्याग (विसे) ।

गिसग्ग वि [नैसर्ग] स्वभाव से होनेवाला, स्वामाविक (सुपा ६४८) ।

गिसग्ग न [नैसर्ग] जात्यन्व की तरह स्वभाव से ज्ञाता (सुप्र २, ३, १६) ।

गिसगिगय वि [नैसगिक] स्वामाविक (सण) ।

गिसज्ज पु. देखो गिसज्जा 'निसज्जे वियड-याए' (वव १) ।

गिसज्जा स्त्री [निपद्या] १ आसन (दस ६) । २ उपवेशन, बैठना (वव ४) । देखो गिसिज्जा ।

गिसट्ट वि [निसट्ट] १ निकाला हुआ, त्यक्त १, १६) । २ दत्त, दिया हुआ (राया १, १—पय ७१) ।

गिसट्ट वि [दे] प्रचुर, बहुत (ओष ८७) ।

गिसट्ट (अप) वि [निपण्ण] बैठा हुआ (सण) ।

गिसद पुं [निपध] १ हरिवर्ष क्षेत्र से उत्तर में स्थित एक पर्वत (ठा २, ३) । २ स्वनाम-ख्यात एक वानर, राम सैनिक (से ४, १०) । ३ बैल, साँढ (सुज ४) । ४ बलदेव का एक पुत्र (निर १, ५, कुप्र ३७२) । ५ देश-विशेष । ६ निपध देश का राजा (कुमा) । ७ स्वर-विशेष (हे १, २२६, प्राप्र) । °कूड न [°कूट]

निपध पर्वत का एक शिखर (ठा २, ३) । °दह पुं [°द्रह] द्रह-विशेष (ज १) ।

गिसण वि [निपण्ण] १ उपविष्ट, स्थित (गा १०८, ११६, उत्त २०) । २ कायोत्सर्ग का एक भेद (आव ५) ।

गिसण वि [नि°संज्ञ] सज्ञा-रहित । से ६, ३८) ।

गिसत्त वि [दे] मनुष्य मनाय-उक्त (दे ४, ३०) ।

गिसन्न देखो गिसण (उव, राया १, १) । गिमम सक [नि + ममय्] मुनता । वक्तु गिसमेत (आवम) । कवकु. गिमम्मत (गउड) मक्तु. गिसमिअ, गिसम्म (नाट. वेणी ६८, उवा, आचा) ।

गिसमण न [निगमन] श्रवण, आकर्णन (हे १, २६६, गउड) ।

गिसम्म अक [नि + सद्] १ बैठना । २ सोना, शयन करना । गिसम्मउ (मे ६, १७) । हेक्क गिसम्मिउ (से ५, ४२) ।

गिसर देखो गिसिर कवकु निसरिज्जमाण (भग) ।

गिसल्ल देखो गिस्सल्ल (आ ४०) ।

गिसह देखो गिनह (इक) ।

गिसह देखो गिस्सह (पड) ।

गिसह सक [नि + सह] सहन करना । गिस्सह (प्राक् ७२) ।

गिसा स्त्री [निशा] अन्धकारवाली नरक-भूमि (सुप्र १, ५, १, ५) ।

गिसा [निशा] १ रात्रि, रात (कुमा, प्राप् ५५) । २ पीसने का पत्थर, शिलौट, सिलवट (उवा) । °अर पु [°कर] चन्द्र, चाँद (हे १, ८, पड) । °अर पु [°चर] राक्षस (कप्पु, से १२, ६६) । °अरेद पुं [°चरेन्द्र] राक्षसों का नायक, राक्षस-पति (से ७, ५६) । °नाह पुं [°नाथ] चन्द्रमा (सुपा ४१६) । °लोड न [°लोष्ट] शिला-पुत्रक, पीसने का पत्थर, लोढा (उवा) । °वइ पु [°पति] चन्द्र, चाँद, चन्द्रमा (गउड) । देवो गिसि° ।

गिसाण सक [नि + शाणय्] शान पर चढ़ाना, पैनाना, लोक्षण करना । सक्तु निसा-णिऊण (म १४३) ।

गिसाण न [निशाण] शान, एक प्रकार का पत्थर, जिम पर हथियार तेज किया जाता है (गउड, सुपा २८) ।

गिसाणिय वि [निशाणित] शान दिया हुआ, पैनाया हुआ, लोक्षण किया हुआ, पैना, धारदार, नुकीला (सुपा ५६) ।

गिसाम देखो गिसम । गिसामेइ (महा) । वक्तु. गिसामेन (मुर ३, ७८) । सक्तु. गिसामिऊण, गिसामित्ता (महा, उत्त २) ।

त अ [तत्] इन अर्थों को बतलानेवाला
अव्यय—१ कारण, हेतु (भग १५)। २
वाक्य-उपन्यास, 'त तिम्रसवदिमोक्ख' (हे २,
१७६, पङ्), 'तं मरणमणारंभे वि होइ,
लच्छी उण न होइ' (गा ४२)। 'जहा अ
[यथा] उदाहरण-प्रदर्शक अव्यय (आचा,
अणु)।

तंआ देखो तया = तदा (गउड)।

तंट न [दे] पृष्ठ, पीठ (दे ५, १)।

तंड न [दे] लगाम में लगी हुई लार। २ वि.
मस्तक-रहित। ३ स्वर से अधिक (दे ५,
१६)।

तडव (अप) देखो तडुव। तडवहु (भवि)।

तडव अक [ताण्डव्य] नृत्य करना। तड-
वेंति (आवम)।

तंडव न [ताण्डव] १ नृत्य, उद्धत नाच (पाम्र,
जीव ३, सुपा ८६)। २ उद्धताई, 'पासंडितुं-
डअडडतडवाडवरेहि कि मुड' (धम्म ८ टी)।

तडविय वि [ताण्डवित] नचाया हुआ,
नर्तित (गउड)।

तंडविय (अप) देखो तडुविअ (भवि)।

तडुल पु [तण्डुल] चावल (गा ६६१)।
देखो तडुल।

तत न [तन्त्र] १ देश, राष्ट्र (सुर १६, ४८)।
२ शास्त्र, सिद्धान्त (उवर ५)। ३ दर्शन, मत
(उप ६२२)। ४ स्वदेश-चिन्ता। ५ विष का
श्रौषध विशेष (मुद्रा १०८)। ६ सूत्र, ग्रन्थाश-
विशेष, 'सुत्त भणियं तंत भणिज्जए तम्मि
व जमत्थो' (विसे)। ७ विद्या-विशेष (सुपा
४६६)। 'न्तु वि [ंज्ञ] तन्य का जानकार
(सुपा ५७६)। 'वाइ पुं [ंवादिन्] विद्या-
विशेष से रोग आदि को मिटानेवाला (सुपा
४६६)।

तत वि [तान्त] खिन्न, क्लान्त (णाय १, ४,
विपा १, १)।

ततडी छी [दे] करम्ब, दही और चावल का
बना भोजन-विशेष (दे ५, ४)।

ततवग } पुं [तान्त्रवक] चतुरिन्द्रिय जंतु
तंतवय } की एक जाति (सुख ३६, १४६,
उत्त ३६, १४६)।

ततिय पुं [तान्त्रिक] वीणा बजानेवाला
(अणु)।

ततिसम न [तन्त्रीसम] तन्त्री-शब्द के तुल्य
या उससे मिला हुआ गीत, गेय काव्य का
एक भेद (दसनि २, २३)।

तती छी [तन्त्री] १ वीणा, वाद्य-विशेष
(कप्प, श्रौप, सुर १६, ४८)। २ वीणा-
विशेष (परह २, ५)। ३ तांत, चमड़े की
रस्ती (विपा १, ६, सुर ३, १३७)।

तती छी [दे] चिन्ता, 'कामस्स तत्ततति'
(गा २)।

ततु पुं [तन्तु] सूत, तागा, धागा (पउम १,
१३)। 'अ, ग पुं [ंक] जलजन्तु-विशेष
(पउम १४, १७, कुप्र २०६)। 'ज, य न
[ंज] सूती कपडा (उत्त २, ३५)। 'वाय
पु [ंवाय] कपडा बुननेवाला, जुलाहा (आ
२३)। 'साला छी [ंशाला] कपडा बुनने
का घर, तांत-घर (भग १५)।

तंतुक्खोडी छी [दे] तन्तुवाय का एक उप-
करण (दे ५, ७)।

तंदुल देखो तडुल (पउम १२, १३८)। २
मत्स्य-विशेष (जीव १)। 'वेयालिय न
[ंवेचारिक] जैन ग्रन्थ-विशेष (एदि)।

तटुलेज्जग पुं [तटुलीयक] वनस्पति विशेष
(परण १)।

तंदूसय देखो तिटूसय (सुर १३, १६७)।

तव पुं [स्तम्ब] तृणादि का शुष्का (हे २,
४५, कुमा)।

तव न [ताम्र] १ धातु-विशेष, ताँबा (विपा
१, ६, हे २, ४५)। २ पु वणं-विशेष।
३ वि अरुण वणंवाला, लाल (परण १७,
श्रौप)। 'चूल पुं [चूड] कुक्कुट, मुर्गा (सुर ३,
६१)। 'वण्णी छी [ंपर्णी] एक नदी का
नाम (कप्प)। 'सिह पुं [ंशिख] कुक्कुट,
मुर्गा (पाम्र)।

तंवकरोड पुंन [दे] ताम्र वणंवाला द्रव्य-
विशेष (परण १७)।

तवकिमि पुं [दे] कीट-विशेष, इन्द्रगोप (दे
५, ६, पङ्)।

तवकुसुम पुन [दे] वृक्ष-विशेष, कुसुमक,
कटसरैया (दे ५, ६, पङ्)।

तंवक न [दे] वाद्य-विशेष, 'अणाहयतंवकेसु
वज्जतेसु' (ती १५)।

तंवच्छिवाडिया छी [दे] ताम्र वणं का
द्रव्य-विशेष (परण १७)।

तंवटकारी छी [दे] शेफालिका, पुष्प प्रधान
लता-विशेष (दे ५, ४)।

तवरत्ती छी [दे] गेहूं में कुंकुम की छाया (दे
५, ५)।

तंथा छी [दे] गौ, घेतु, गैया (दे ५, १, गा
४६०, पाम्र, वज्जा ३४)।

तथाय पुं [तामाक] भारतीय ग्राम-विशेष
(राज)।

तविम पुंछी [ताम्रत्व] अरुणता, ईपद् रक्तता
(गउड)।

तंविय न [ताम्रिक] परिव्राजक का पहनने
का एक उपकरण (श्रौप)।

तविर वि [दे] ताम्र वणंवाला (हे २, ५६,
गउड, भवि)।

तविरा [दे] देखो तंवरत्ती (दे ५, ५)।

तवुक्क न [दे] वाद्य-विशेष, 'वुक्कतंवुक्कसद्वुक्क'
(सुपा ५०)।

तंवरेम पुं [स्तम्बेरम] हस्ती, हाथी (उप ५
११७)।

तवेही छी [दे] पुष्प-प्रधान वृक्ष-विशेष,
शेफालिका (दे ५, ४)।

तवोल न [ताम्बूल] पान (हे १, १२४,
कुमा)।

तवोलिअ पुं [ताम्बूलिक] १ तमोली, पान
बेचनेवाला (आ १२)। २ पान में होनेवाला
तंबोलिआ नाग।

तवोली छी [ताम्बूली] पान का गाछ (पङ्,
जीव ३)।

तंभ देखो थभ (पङ्)।

तंस पुं [त्र्यश] तीसरा हिस्सा (पंच ५, ३७,
३६, कम्म ५, ३४)।

तंस वि [त्र्यस्] त्रि-कोण, तीन कोनवाला
(हे १, २६, गउड, ठा १, गा १०, पाम्र;
आचा)।

तक्क सक [तर्क] तर्क करना, अनुमान
करना, अटकल करना। तक्केमि (मै १३)।
संक्क, तक्कियाण (आचा)।

तक्क न [तक्र] मट्टा छाछ (भोष ८७, सुपा
५८३ उप ५ ११६)।

गिसुद्धि वि [नम्र] भार ने नमा हुआ (कुमा) ।

गिसुण सक [नि + शु] सुनना, श्रवण करना ।
निमुणइ, गिसुणेइ, गिसुणेमि (सण, महा, सट्ठि १२८) । वक्क, निसुणत, निसुणमाण मुपा १०६, सुर १२, १७४) । कवक्क, निमुणिज्जत (मुपा ४५, रयण ६४) । सक, निसुणिउ, निसुणिऊण, गिसुणिऊण (मुपा १४, महा, पि ५८५) ।

गिसुद्धि वि [दे] १ पातित, गिराया हुआ (दे ४, ३६, पात्र, से ५, ६८) ।

गिसुद्धन देखो गिसुंभ = नि + शुम्भ ।

गिसुद्ध देखो गिस्सुग (मुपा ३७०) ।

गिसुद्ध देखो । गिसुद्ध = नि + शुम्भ । हेक्क निसुद्धिउ (मुपा ३६६) ।

गिसुद्ध देखो गिस्सह = नि + सह । निसुद्ध (प्राक्क ७२) ।

गिसेग देखो गिसेय (पंच ५, ४६) ।

गिसेज्जा छी [निपद्या] वक्क, कपडा (पव १२७ टी) ।

गिमेज्जा देखो गिसज्जा (उव, पव ६७) ।

गिसेक्क वि [निपेय] निपेय-योग्य (धर्म-स ६६३) ।

गिसेणि देखो गिस्सेणि (सुर १३, १६०) ।

गिसेय पु [निपेक] १ कर्म पुद्गलो की रचना-विशेष (ठा ६) । २ तेचन, मीचन, 'ता सपइ जिणवरविबदनणामयनिणए पीणि-उज्जउ नियदिट्ठि' (मुपा २६६), 'काम्रावि कुणति निरिखडरमनिमेय' (मुपा २०) ।

गिमेव सक [नि + सेव] १ मेवा करना, आदर करना । २ आश्रय करना । निमेवइ, निमेवए (महा, उव) । वक्क गिसेवमाण (महा) । कवक्क गिसेविज्जत (श्रोध ५६) । क निसेवर्गज्ज (मुपा ३७) ।

गिसेव सक [नि + सेव] आचरना । गिसेवए (अज्ज १७६) ।

गिसेवग देखो गिसेवय (सूत्र २, ६, ५) ।

गिसेवणा छी [निपेवणा] सेवा, भजना (उत्त ३२, ३) ।

गिसेवय वि [निपेवक] १ सेवा करनेवाला, मेवक । २ आश्रय करनेवाला (पुष्प २५१) ।

गिसेवा छी [निपेवा] ऊपर देखो (सम्मत १५५, सत्रोध ३४) ।

गिसेवि वि [निपेविन्] ऊपर देखो (स १०) ।

गिसेविय वि [निपेवित] १ सेवित, आदृत (आचम) । २ आश्रित (उत्त २०) ।

गिसेह सक [नि + पिध्] निपेव करना, निवारण करना । निसेहइ (हे ४, १३४) । कवक्क, निसिज्जमाण (मुपा ५७२) । हेक्क निसेहिउ (म १६८) । क निसेहि-यज्जा सययपि माया' (सत ३५) ।

गिसेह पुं [निपेध] १ प्रतिपेध, निवारण (उव, प्रासू १८१) । २ अपवाद (श्रोध ५५) ।

गिसेहण न [निपेवन] निवारण (आचम) ।

गिसेहणा छी [निपेवना] निवारण (आव १) ।

गिसेहिया देखो गिसीहिआ = नैपेधिकी । १ मुक्ति, मोक्ष । २ श्मशान-भूमि । ३ बैठने का स्थान । ४ नितम्ब, द्वार के समीप का भाग (राज) ।

गिस्स वि [नि स्व] निर्धन, धन-रहित (पात्र) । १ यर वि [० कर] १ निर्धन-कारक । २ कर्म को दूर करनेवाला (आवा २, १६, ६) ।

गिस्सक पुं [दे] निर्मर (दे ४, ३२) ।

गिस्सक वि [नि शङ्क] १ शङ्का-रहित (सूत्र २, ७, महा) । २ न शङ्का का अभाव (पचा ६) ।

गिस्सकिअ वि [नि शङ्कित] १ शङ्का-रहित (श्रोध ५६ भा, ग्याया १, ३) । २ न शङ्का का अभाव (उत्त २८) ।

गिस्सग वि [नि सङ्ग] सङ्ग-रहित (मुपा १४०) ।

गिस्सचार वि [नि सचार] सचार-रहित, गमनागमन-वर्जित (ग्याया १, ८) ।

गिस्सज्जम वि [निस्सयम] समय-रहित (पउम २७, ५) ।

गिस्सत वि [नि शान्त] प्रशान्त, अतिशय शान्त (राय) ।

गिस्सद देखो गीसद (पएह १, १, नाट—मालती ५१) ।

गिस्सदेह वि [निस्सदेह] संदेह-रहित, निश्चय, नि सशय (काल) ।

गिस्सधि वि [निस्सन्धि] सन्धि-रहित, सांवा से रहित (पएह १, १) ।

गिस्सस वि [नृशस] क्रूर, निर्दय (महा) ।

गिस्संस वि [नि शस] श्लाघा-रहित (पएह १, १) ।

गिस्ससय वि [नि सशय] १ सशय-रहित । २ क्विवि नि सदेह, निश्चय (अभि १८४, आवम) ।

गिस्सक सक [नि + ष्वण्क्] कम करना, घटाना । सक, निस्सकिय (आवा २, १, ७, २) ।

गिस्सण पु [नि स्वन] शब्द आवाज (कुप्र २७) ।

गिस्सण वि [नि संज्ञ] संज्ञा-रहित (सूत्र १, ५, १) ।

गिस्सत्त वि [नि सत्त्व] वैयं-रहित, सत्त्व-हीन (मुपा ३५६) ।

गिस्सन्न देखो गिमण (रयण ५) ।

गिस्सम्म अक [निर + श्रम्] बैठना । वक्क गिस्सम्मत (से ६, ३८) ।

गिस्सय पु [निश्रय] देखो गिस्सा (सत्रोध १६) ।

गिस्सर अक [निर + स्] बाहर निकलना । गिस्सरइ (कप्प) । वक्क गिस्सरन (नाट—चेत ३८) ।

गिस्सरण वि [नि सरण] निर्गमन, बाहर निकलना (ठा ४, २) ।

गिस्सरण वि [नि शरण] शरण-रहित, आण-वर्जित (पउम ७३, ३२) ।

गिस्सरिअ वि [दे] वस्त, खिसका हुआ (दे ४, ४०) ।

गिस्सल वि [नि शल्य] शल्य-रहित (उप ३२० टी, द्र ५७) ।

गिस्सस अक [निर + श्वस्] नि श्वाम लेना । निस्ससइ, गिस्ससति (भग) । वक्क गिस्ससिज्जमाण (ठा १०) ।

गिस्सह वि [नि सह] मन्द, अशक्त (हे १, १३, ६३, कुमा) ।

गिस्सा छी [निश्रा] १ आलम्बन, आश्रय, सहारा (ठा ५, ३) । २ अवीनता (उप १३० टी) । ३ पक्षपात (वव ३) ।

गिस्साण न [निश्राण] निश्रा, अवलम्बन (पएह १, ३) । १ पग न [० पद] अपवाद (वृह १) ।

गिस्साण पुंन [दे] वाद्य-विशेष, निगान, 'वज्जिरनिस्साणतूररवगज्जो' (धर्मवि ५६) ।

तडकडिअ वि [दे] अनवस्थित (पड्) ।

तडकार पुं [तटकार] चमकारा, 'तडित-
डकारो' (सुपा १३३) ।

तडतडा अक [तडतडाय्] तड-तड आवाज
होना । वक्र. तडतडत, तडतडेत, तड-
तडयत (राज, गाय १, ६, सुपा १७६) ।

तडतडा स्त्री [तडतडा] तड-तड आवाज (स
२५७) ।

तडप्फड } अक [दे] तडफना, छटपटाना,
तडफड } तडफडाना, व्याकुल होना । तड-
प्फडइ (कुमा, हे ४, ३६६, विवे १०२) ।
तडफडसि (सुर २, १४८) । वक्र तडप्फडत,
डतफडत (उप ७६८ टी, सुर १२, १६४,
सुपा १७६, कुप्र २६) ।

तडफडिअ वि [दे] १ सब तरफ में चलित,
तडफडाय् हुमा, व्याकुल (दे ५, ६, स
५८६) ।

तडमड वि [दे] क्षुभित, क्षोभ प्राप्त (दे ५,
७) ।

तडयड वि [दे] क्रिया-शील, सदाचार-युक्त
(सट्टि १०७) ।

तडयडत देखो तडतडा ।

तडवडा स्त्री [दे] वृक्ष-विशेष, आउली का
पेड (दे ५, ५) ।

तडाअ } न [तडाग] तालाव, सरोवर (गा
तडाग } ११०, पि २३१, २४०) ।

तडि स्त्री [तडित्] विजली (पाम्म) । °डड
पु [°दण्ड] विद्युद्दंड (महा) । °केस पु
[°केश] राक्षस-वशीय एक राजा, एक नंका-
पति (पउम ६, ६६) । °वेअ पुं [°वेग]
विद्याधर वश का एक राजा (पउम ५,
१८) ।

तडिअ वि [तत] विस्तृत, फैला हुआ (पाम्म,
गाय १, ८—पत्र १३३) ।

तडिआ स्त्री [तडित्] बीजली (पाम्म) ।

तडिण वि [दे] विरल, अत्यल्प (से १३,
५०) ।

तडिणी स्त्री [तडिनी] नदी, तरंगिणी
(सण) ।

तडिम न [तडिम] १ भित्ति, भीत । २ कुट्टिम,
पाषाण आदि से बँचा हुआ भूमितल (से २,

२) । ३ द्वार के ऊपर का भाग (से १२,
६०) ।

तडी स्त्री [तटी] तट, किनारा (विपा १, १,
अनु ६) ।

तड्डु } सक [तन्] १ विस्तार करना । २
तड्डुव } करना । तड्डइ, तड्डवइ (हे ४, १३७) ।
भूका—तड्डुवोअ (कुमा) ।

तड्डुविअ } वि [नत] विस्तीर्ण, फैला हुआ
तड्डुअ } (पाम्म, महा, कुमा, सुर ३,
७२) ।

तड्डु स्त्री [तट्टु] काठ की करछी (प्राकृ
२०) ।

तण सक [तन्] १ विस्तार करना । २
करना । तणइ, तणए (पड्) । कर्म. तणि-
ज्जए (विसे १३८३) ।

तण न [दे] उत्पल, कमल (दे ५, १) ।

तण न [तृण] तृण, घास (पाम्म, उव) । °इल्ल
वि [°वत्] तृणवाला (गडड) । °जीवि
वि [°जीविन्] घास खाकर जीनेवाला (सुपा
३७०) °राय पु [°राज] ताल-वृक्ष, ताड
का पेड (गडड) । °विंटय, °वेंटय पुं
[°वृन्तक] एक क्षुद्र जंतु-जाति, श्रीन्द्रिय
जंतु-विशेष (राज) ।

तणग वि [तृणक] तृण का बना हुआ
(आवा २, २, ३, १४) ।

तणय पुं [तनय] पुत्र, लडका (सुपा २४७,
४२४) ।

तणय वि [दे] सबन्धी, 'मह तणए' (सुर ३,
८७, हे ४, ३६१) ।

तणयमुडिआ स्त्री [दे] अगुलीयक, अगुठी
(दे ५, ६) ।

तणया स्त्री [तनया] लडकी, पुत्री (कुमा) ।

तणरासि } वि [दे] प्रसारित फैलाया
तणरासिअ } हुआ (दे ५, ६) ।

तणवरडी स्त्री [दे] उडुप, डोगी, छोटी नौका
(दे ५, ७) ।

तणसोल्लि } स्त्री [दे] १ मल्लिका, पुष्प-
तणसोल्लिया } प्रधान वृक्ष-विशेष (दे ५, ६,
गाय १, १६) । २ वि. तृण-शून्य (पड्) ।

तणहार } पुं [तृणहार] १ श्रीन्द्रिय जंतु
तणहारय } की एक जाति (उत्त ३६,
१३८) । २ वि. घास काटकर बेचनेवाला,
घसियारा (अणु १४६) ।

तणिअ वि [तत] विस्तीर्ण, फैला हुआ
(कुमा) ।

तणु वि [तनु] १ पतला (जी ७) । २ कृश,
दुर्बल (पचा १६) । ३ अल्प, थोड़ा (दे ३,
५१) । ४ लघु, छोटा (जीव ३) । ५ सूक्ष्म
(कप्प) । ६ स्त्री शरीर, काय (दे २, ५६,
जी ८) । °तणुई, तणू स्त्री [°तन्वी]
ईषत्प्राग्भारा-नामक पृथ्वी (ठा ८, इक) ।
°पज्जन्ति स्त्री [°पर्याप्ति] उत्पन्न होते समय
जीव द्वारा ग्रहण किये हुए पुद्गलों को शरीर
रूप में परिणत करने की शक्ति (कम्म ३,
१२) । °वभव वि [°उद्भव] १ शरीर से
उत्पन्न । २ पुं लडका (भवि) । °वभवा स्त्री
[°उद्भव] लडकी (भवि) । °भू पुं स्त्री
[°भू] १ लडका । २ लडकी (आक) । °य
वि [°ज] देखो °वभव (उत्त १४) । °रूह
पुं [°रूह] १ केश, बाल (रंभा) । २ पु.
पुत्र, लडका (भवि) । °वाय पुं [°वाव]
सूक्ष्म वायु-विशेष (ठा ३, ४) ।

तणुअ वि [तनुक] ऊपर देखो (पउम १६,
७, आव ५, भग १५, पाम्म) ।

तणुअ सक [तनय्] १ पतला करना । २
कृश करना, दुर्बल करना । तणुअइ (गा ६१,
काप्र १७४) ।

तणुआ } अक [तनुकाय्] दुर्बल होना,
तणुआअ } कृश होना । तणुआइ, तणुआ-
अइ, तणुआअए (गा ३०, २६२, ५६) वक्र.
तणुआअत (गा २६८) ।

तणुआअरअ वि [तनुत्तकारक] कृशता
उपजानेवाला, दीर्घव्य-जनक (गा ३४८) ।

तणुअ वि [तनूकृत] दुर्बल किया हुआ,
कृश किया हुआ (गा १२२, पउम १६, ४) ।

नणुई स्त्री [तन्वी] १ पृथ्वी-विशेष, सिद्ध-
शिला (सम २२) । २ पतला शरीरवाली,
कृशागी, कोमलागी स्त्री (पड्) ।

तणुईकय वि [तनूकृत] पतला किया हुआ
(पाम्म) ।

तणुग देखो तणुअ (जं २, ३) ।

तणुज देखो तणु-य (धर्मवि १२८) ।

तणुजम्म पुं [तनुजन्मन्] पुत्र, लडका
(धर्मवि १४८) ।

तणुभव देखो तणु-वभव (धर्मवि १४२) ।

गिहाण न [निधान] वह स्थान जहाँ पर धन आदि गाढा गया हो, खजाना, भण्डार (उवा, गा ३१८, गउड) ।

गिहाय पुं [दे] १ स्वेद, पसीना (दे ४, ४६) । २ समूह, जल्य (दे ४, ४६, से ४, ३८, स ४४६, भवि, पाप्र, गउड, सुर ३, २३१) । गिहाय पुं [निघात] आघात, आस्फालन (से १५, ७०, महा) ।

गिहाय देखो गिहा = नि + घा, नि + हा । गिहाय पु [निहाद] अव्यक्त शब्द (सुख ४, ६) ।

गिहार पुं [निहार] निगम (परह १, ५, ठा ८) ।

गिहारिम न [निहारिम] जिसके मृतक शरीर को बाहर निकालकर सत्कार किया जाय उसका भरण (भग) । २ वि दूर जाने-वाला, दूर तक फैलनेवाला (परह २, ५) ।

गिहाल देखो गिभाल । गिहालेहि (स १००) । वक्र गिहालंत, गिहालयत (उप ६८८ टी, ६८६ टी) । संक्र. गिहालेउं (गच्छ १) । क. गिहालेयन्त्र (उप १००७) ।

गिहालगन [निभालन] निरीक्षण, अवलोकन (उप वृ ७२, सुर ११, १२, सुपा २३) ।

गिहालिअ वि [निभालित] निरीक्षित (पाप्र, स १००) ।

गिहि वि [निधि] १ खजाना, भण्डार (गाथा १, १३) । २ धन आदि से भरा हुआ पात्र । (हे १, ३५, ३, १६, ठा ५, ३), 'अच्छेरव गिहि विम सगे रज्ज व अमग्रपाणं व' (गा १२५) । ३ चक्रवर्ती राजा की संपत्ति-विशेष, नैसर्ग आदि नव निधि (ठा ६) । 'नाह पुं [नाथ] कुवेर, धनेश (पाप्र) ।

गिहि पुंछी [निधि] लगातार नव दिन का उपवास (संभोध ५८) ।

गिहिअ वि [निहित] स्थापित (हे २, ६६, प्राप्र) ।

गिहिण वि [निभिन्न] विदारित (अच्छु १६) ।

गिहित देखो गिहिअ (गा ५६५, काप्र ६०६, प्राप्र) ।

गिहिपंत देखो गिहा = नि + घा ।

गिहिल वि [निखिल] सब, सकल (अच्छु ६, आरा ५५) ।

गिहिल्य देखो गिहिअ (सुख २, ४३) ।

गिही स्त्री [दे] वनस्पति-विशेष (राज) ।

गिहीण वि [निहीन] न्यून (कुप्र ४५४) ।

गिहीण वि [निहीन] तुच्छ, खराब, हलका, सुद्र, 'अत्यि निहीणे देहे कि रागनिवधणं तुज्झ ?' (उप ७२८ टी) ।

गिहु स्त्री [स्निहु] औपधि-विशेष (जीव १) ।

गिहुअ वि [निभृत] १ गुप्त, प्रच्छन्न, छिपा हुआ (से १३, १५, महा) । २ विनीत, अनुदत (से ४, ५६) । ३ मन्द, धीमा (पाप्र, महा) । ४ निश्चल, स्थिर (उत्त १६) । ५ असन्तान्त, सन्तमरहित (दम ६) । ६ घृत, धारण किया हुआ । ७ निर्जन, एकान्त । ८ अस्त होने के लिए उपस्थित (हे १, १३१) । ९ उपशान्त (परह २, ५) ।

गिहुअ वि [दे] १ व्यापार रहित, अनुद्युक्त, निश्चेष्ट (दे ४, ५०, से ४, १, सूप्र १, ८, बृह ३) । २ तृष्णीक, मौन (दे ४, ५०, सुर ११, ८४) । ३ न सुरत, मैथुन (दे ४, ५०, पड) ।

गिहुअण देखो गिहुवण (गा ४८३) । गिहुआ स्त्री [दे] कामिता, संभोग के लिए प्रार्थित स्त्री (दे ४, २६) ।

गिहुण न [दे] व्यापार, धन्वा (दे ४, २६) ।

गिहुत्त वि [दे] निमग्न, डूबा हुआ (पडम १०२, १६७) ।

गिहुत्थिभगा स्त्री [दे] वनस्पति-विशेष (परण १—पत्र ३५) ।

गिहुव सक [कामय] संभोग का अभिलाष करना । गिहुवइ (हे ४, ४४) ।

गिहुवण न [निधुवन] सुरत, संभोग (कप्पू; काप्र १६४), 'गिहुवणचुविमणाहिक्विआ' (मै ४२) ।

गिहुअ न [दे] १ सुरत, मैथुन (दे ४, २६) । २ वि. अकिञ्चित्कर (विसे २६१७) । देखो गीहूय ।

गिहेलण न [दे] १ गृह, घर, मकान (दे ४, ५१, हे २, १७४, कुमा, उप ७२८ टी, स १८०, पाप्र; भवि) । २ जघन, स्त्री के कमर के नीचे का भाग (दे ४, ५१) ।

गिहो अ [न्यग्] नीचे (सूप्र १, ५, १, ५) । गिहोड सक [नि + वारय] निवारण करना, निषेध करना ।

गिहोडइ (हे ४, २२) । वक्र. गिहोडत (कुमा) ।

गिहोड सक [पातय] १ गिराना । २ नाश करना । गिहोडइ (हे ४, २२) ।

गिहोडिय वि [पातित] १ गिराया हुआ (दस ३) । २ विनाशित (उव ५६७ टी) ।

गी सक [गम्] जाना, गमन करना । गीइ (हे ४, १६२, गा ४६ अ) भवि गीहिमि (गा ७४६) । वक्र. गित, गेंत (से ३, २, गउड, गा ३३४, उप २६४ टी, गा ४२०) । संक्र. गितूण, नीउ (गउड, विसे २२२) ।

गी सक [नी] १ ले जाना । २ जानना । ३ ज्ञान कराना, बतलाना । गीइ, गीयइ (हे ४, ३३७, विसे ६१४) । वक्र, गेंत (गा ५०, कुमा) । कवक्र. गिज्जत, गीअमाण (गा ६८२ अ, से ६, ८१, सुपा ४७६) । सक. गइअ, गेउ, गेउआण, गेऊण (नाट—मृच्छ २६४, कुमा, पड, गा १७२) । हेक गेउ (गा ४६७, कुमा) । क. गेअ, गेअन्व (पडम ११६, १७, गा ३३६) । प्रयो. गेयावइ (सण) ।

गीअअ वि [दे] समीचीन, सुन्दर (पिंग) ।

गीआरण न [दे] बलि-घटी, बली रखने का छोटा कलश (दे ४, ४३) ।

गीइ स्त्री [नीति] १ न्याय, उचित व्यवहार, न्याय्य व्यवहार (उप १८६, महा) । २ नय, वस्तु के एक धर्म को मुख्यतया माननेवाला मत (ठा ७) । 'सत्थ न [शास्त्र] नीति-प्रतिपादक शास्त्र (सुर ६, ६५, सुपा ३४०, महा) ।

गीका स्त्री [नीका] कुल्या, नहर, सारणि (कुमा) ।

गीखय वि [निक्षत] निखिल, संपूर्ण, 'नय नीखयवक्खाण तीरइ काऊण सुत्तस्स' (विचार ८) ।

गीचअ न [नीचैस्] १ नीचे, अध (हे १, १५४) । २ वि. नीचा, अध-स्थित (कुमा) ।

गीछूढ देखो गिच्छूढ (एदि) ।

तवभव पु [तद्भव] वही जन्म, इस जन्म के समान पर-जन्म । 'मरण न [मरण] वह मरण, जिससे इस जन्म के समान हो परलोक में भी जन्म हो, यहाँ मनुष्य होने से आगामी जन्म में भी जिससे मनुष्य हो ऐसा मरण (भग २१, १) ।

तवभारिय पु [तद्भार्य] दास, नौकर, कर्म-चारी, कर्मकर (भग ३, ७) ।

तवभाग्य पु [तद्भारिक] ऊपर देखो (भग ३, ७) ।

तवभूम वि [तद्भूमि] उसी भूमि में उत्पन्न (बृह १) ।

तभक्त अ [तद्] शीघ्र, जल्दी (प्राकृ ८१) ।

तम अक [तम्] १ खेद करना । २ सक इच्छा करना । तमह (प्राकृ. ६६) ।

तम पुं [दे] शोक, अफसोस (दे ५, १) ।

तम पुन [तमस्] १ अन्वकार । २ अज्ञान (हे १, ३२, पि ४०६, औप, धर्म २) । 'तम पु [तम] सातवी नरक-भूयिवी का जीव (कम्म ५, पंच ५) । 'तमप्पभा औ [तमप्पभा] सातवी नरक-भूयिवी (अणु) । 'तमा औ [तमा] सातवी नरक-भूयिवी (सम ६६, ठा ५) । 'तिमिर न [तिमिर] १ अन्वकार (बृह ४) । २ अज्ञान (पडि) । ३ अन्वकार-समूह (बृह ४) । 'प्पभा औ [प्रभा] छठवी नरक-भूयिवी (पण १) ।

तमग पु [तमङ्ग] मतवारण, घर का वरणडा, छाजा (सुर १३, १५६) ।

तमधयार पु [तमोन्धकार] प्रवल अन्वकार (पठम १७, १०) ।

तमण न [दे] चूल्हा, जिसमें आग रखकर रमोई की जाती है वह (दे ५, २) ।

तमणि पुऔ [दे] १ भुज, हाथ । २ भूज, वृक्ष-विशेष की छाल, भोजपत्र (दे २, २०) ।

तमय पु [तमय] १ चौथा नरक का एक नरक-स्थान (देवेन्द्र १०) । २ पाँचवी नरक-भूमि का एक नरक-स्थान (देवेन्द्र ११) ।

तमस न [तमस्] अन्वकार, 'तमसाउ मे दिसा य' (पठम ३६, ८) ।

तमस वि [तामस] अन्वकारवाला (दस ५, १, २०) ।

तमस देखो तम = तमस्, 'अतरिओ वा तममे वा न वदई वदई उ दीसतो' (पव २) ।

तमस्सई औ [तमस्वती] घोर अन्वकारवाली रात (बृह १) ।

तमा औ [तमा] १ छठवी नरक-भूयिवी (सम ६६, ठा ७) । २ अधोदिशा (ठा १०) ।

तमाड नक [भ्रमय] घुमाना, फिराना । तमाडइ (हे ४, ३०) । वक्र. तमाडत (कुमा) ।

तमाल पु [तमाल] १ वृक्ष-विशेष (उप १०३१ टी; भत्त ४२) । २ न तमाल वृक्ष का फूल (से १, ६३) ।

तमिस पु [तमिस्] पाँचवाँ नरक का एक नरक-स्थान (देवेन्द्र ११) ।

तमिस न [तमिस्] १ अन्वकार (सूत्र १, ५, १) । 'गुहा औ [गुहा] गुफा-विशेष (इक) ।

तमिसंधयार पु [तमिस्सन्धकार] प्रवल अन्वकार, घोर अघेरा (सूत्र १, ५, १) ।

तमिस्स देखो तमिस (दे २, २६) ।

तमी औ [तमी] रात्रि, रात (गडड) ।

तमुकाय देखो तमुक्काय (भग ६, ५—पत्र २, ६८) ।

तमुक्काय पु [तमस्काय] अन्वकार-प्रचय (ठा ४, २) ।

तमुय वि [तमस्] १ जन्मान्ध, जात्यन्ध । २ अत्यन्त अज्ञानी (सूत्र २, २) ।

तमोकसिय वि [तम कापिक] प्रच्छन्न क्रिया करनेवाला (सूत्र २, २) ।

तम्म अक [तम्] खेद करना । (गा ४८३) ।

तम्म देखो तम = तम् । तम्मह (प्राकृ ६६) ।

तम्मण वि [तम्मस्] तल्लीन, तथित्त (विपा १, २) ।

तम्मय वि [तम्मय] १ तल्लीन, तत्पर । २ उसका विकार (पण १, १) ।

तम्मि न [दे] वक्र, कपडा (गडड) ।

तम्मिर वि [तमिन्] खेद करनेवाला (गा ५८६) ।

तय वि [तत] विस्तार-युक्त (दे १, ४६, से २, ३१, महा) । २ न वायु-विशेष (ठा २, २) ।

तय न [त्रय] तीन का समूह, त्रिक, 'काल-तए वि न मय' (चउ ४५, था २८) ।

तय° देखो तया = तदा । 'प्पभिइ अ [प्रभृति] तव से (स ३१:०) ।

तय° देखो तया = त्वच् । 'क्खाय वि [खाय] त्वचा को खानेवाला (ठा ४, १) ।

तया अ [तदा] उम समय (कुमा) ।

तया औ [त्यच्] १ त्वचा, छाल, चमड़ी (सम ३६) । २ दालचीनी (भत्त ४१) । 'भत्त वि [भत्त] त्वचा वाला (णाय १, १) । 'विस पुं [विप] सर्प की एक जाति (जीव १) ।

तयाणनर न [तदनन्तर] उमके बाद (औप) ।

तयाणि अ [तदानीम्] उस समय (पि तयाणि ३५८, हे १, १०१) ।

तयाणुग वि [तदनुग] उमका अनुसरण करनेवाला (सूत्र १, १, ४) ।

तर अक [तृ] कुशल रहना, नीरोग रहना । तरई (पिड ४१७) ।

तर अक [त्वर] त्वरा होना, जल्दी होना, तेज होना । तर (विमे २६०१) ।

तर अक [शक्] समर्थ होना, सकना । तरइ (हे ४, ८६) । वक्र. तरंत (ओष ३२४) ।

तर सक [तृ] तैरना, तरइ (हे ४, ८६) ।

कर्म तरिज्जइ, तीरइ (हे ४, २५०, गा ७१) । वक्र. तरंत, तरमाण (पात्र, सुपा १८२) । हेक तरिडं तरीडं (णाय १, १४, हे २, १६८) । कृ तरिअव्व (था १२, सुपा २७६) ।

तर न [तरस्] १ वेग । २ बल, पराक्रम । 'मल्लि वि [मल्लि] १ वेगवाला । २ बन-वाला । 'मल्लिहायण वि [मल्लिहायण] तरण, युवा (औप) ।

तरग पु [तरङ्ग] १ कल्लोल, वीचि, लहर (पण १३, औप) । 'णंदण न [नन्दन] नृप-विशेष (दंस ३) । 'मालि पुं [मालिन्] समुद्र, सागर (पात्र) । 'वई औ [वती] १ एक नायिका । २ कथा-ग्रन्थ-विशेष (दस ३) ।

तरगलोला औ [तरङ्गलोला] वष्पमट्टिसुरि-कृत एक अद्भुत प्राकृत जैन कथा-ग्रन्थ (सम्मत्त १३८) ।

जीलुक् सक [गम्] जाना, गमन करना ।
जीलुक्कइ (हे ४, १६२) ।

जीलुप्पल न [नीलोत्पल] नील रंग का कमल (हे १, ८४, कुमा) ।

जीलुय पुं [दे] अश्व की एक उत्तम जाति (सम्मत २१६) ।

जीलोभास पु [नीलावभास] १ ग्रहाविष्टायक देव-विशेष (ठा २, ३) । २ वि. नील-च्छाया, जो नीला मालूम देता हो (गाथा १, १) ।

जीव पुं [नीप] वृक्ष-विशेष, कदम्ब का पेड़ (हे १, २३४, कम्प गाथा १, ६) ।

जीवार पु [नीवार] वृक्ष-विशेष, तिस्ली का पेड़ (गुड्ड) ।

जीवार पुं [नीवार] ब्रीहि-विशेष (सूत्र १, ३, २, १६) ।

जीवी स्त्री [नीवी] मूल-घन, पूंजी । २ नारा, इजारबन्द (पड्, कुमा) ।

जीसक देखो गिस्सक = नि शंक (गा ३४५, कुमा) ।

जीसक पु [दे] वृषभ, बैल (पड्) ।
जीसकिअ देखो गिस्सकिअ (विसे ५६२, सुर ७, १५५) ।

जीसख वि [नि संख्य] सख्या-रहित, असख्य (सुपा ३५५) ।

जीसचार देखो गिस्सचार (पउम ३२, १) ।

जीसद पुं [निःप्यन्द] रस-स्तुति, रस का भरन (गुड्ड) ।

जीसदिअ वि [निःप्यन्दित] भरा हुआ, टपका हुआ (पात्र) ।

जीसदिर वि [निःप्यन्दित] भरनेवाला, टपकनेवाला (सुपा ५६) ।

जीसपाय वि [दे] जहाँ जनपद परिश्रान्त हुआ हो वह (दे ४, ४२) ।

जीसट्ट वि [नि सृष्ट] १ विमुक्त (परह १, १ - पत्र १८) । २ प्रदत्त (बृह २) । ३ क्रिवि. भर्तिशय, अत्यन्त, 'जीसट्टमचेयणो गु वा भरइ' (उव) ।

जीसण पुं [निःस्वन] आवाज, शब्द, ध्वनि (सुर १३, १८२, कुप्र ५६) ।

जीसणिआ स्त्री [दे] नि श्रेणि, सीढी (दे जीसणी ४, ४३) ।

जीसत्त वि [नि सत्त्व] सत्त्व-हीन, बल-रहित (पउम २१, ७५, कुमा) ।

जीसइ वि [नि शब्द] शब्द-रहित (दे ७, २८, भवि) ।

जीसर अक [रम्] क्रीडा करना, रमण करना ।
जीसरइ (हे ४, १६८) कृ जीसरणिज्ज (कुमा) ।

जीसर अक [निर् + सू] बाहर निकलना ।
जीसरइ (हे ४, ७६) । वक्र जीसरत (ओष ४५८ टी) ।

जीसरण न [नि ररण] फिसलन, रपटन (वव ४) ।

जीसरण न [नि सरण] निर्गमन (से ६, १८) ।

जीसरिअ वि [नि सूत] निर्गत, निर्यात (सुपा २४७) ।

जीसल वि [नि शल] १ निश्चल, स्थिर ।
२ वक्रता-रहित, उत्तान, सपाट, 'नीसलतड्डिय-चदायएहि मडियचउक्कियादेस' (सुर ३, ७२) ।

जीसल वि [नि शल्य] शल्य-रहित (भवि) ।

जीसव सक [नि + श्रावय] निर्जरा करना, क्षय करना । वक्र. नीसवमाण (विसे २७४६) ।

जीसवग देखो जीसवय (आवम) ।

जीमवत्त वि [नि सपत्त] शत्रु-रहित, विपक्ष-रहित (मुच्छ ८, पि २७६) ।

जीसवय वि [निःश्रावक] निर्जरा करनेवाला (विसे २७४६) ।

जीसस अक [निर् + श्वस्] नीसास लेना, श्वास को नीचा करना । जीससइ (पड्) ।

वक्र जीससत, जीससमाण (गा ३३, कुप्र ४३, आचा २, २, ३) । संक्र. जीससिअ, जीससिऊण (नाट, महा) ।

जीससण न [नि श्वसन] नि श्वास (कुमा) ।

जीससिअ न [नि श्वसित] नि श्वास (से १, ३८) ।

जीसइ वि [निःसह] मन्द, अशक्त (हे १, १३, कुमा) ।

जीसइ वि [निःशाख] शाखा-रहित (गा २३०) ।

जीसा स्त्री [दे] पीसने का पत्थर (दस ५, १) ।

जीमा देखो गिस्सा (कप्प) ।

जीसाइ वि [नि स्वादिन] स्वाद-रहित (प्रवि १०) ।

जीसाण देखो गिस्साण = (दे) धर्मवि ८०) ।

जीसामण्ण } वि [नि सामान्य] १ असा-
जीसामन्न } धारण (गुड्ड, सुपा ६१, हे २, २१२) । २ गुरु (पात्र) ।

जीसार सक [निर् + सारय] बाहर निकालना । जीसारइ (भवि) । कर्म नीमा-रिज्जइ (कुप्र १४०) ।

जीसार पु [दे] मण्डप (दे ४, ४९) ।

जीसार वि [नि सार] सार-रहित, फल्यु (मे ३, ४८) ।

जीसारण न [नि सारण] निष्कासन, बाहर निकालना (सुर १५, २०३) ।

जीसारय वि [नि सारक] बाहर निकालने वाला (से ३, ४८) ।

जीसारिच वि [नि सारित] निष्कासित (सुर ५, १८८) ।

जीसास देखो गिस्सास (हे १, ६३, कुमा, प्राप्र) ।

जीसास } वि [नि श्वास, °क] नि श्वास
जीसासय } लेनेवाला (विसे २७१५, २७१४) ।

जीसाहार देखो गिस्साहार, "नीसाहारा य पड्ड भूमीए" (सुर ७, २३) ।

जीसित्त वि [निष्पित्त] अत्यन्त सित्त (पड्) ।

जीसीमिअ वि [दि] निर्वासित, देश-बाहर किया हुआ (दे ४, ४२) ।

जीसेयस देखो गिस्सेयस (जीव ३) ।

जीसेणि स्त्री [नि श्रेणि] सीढी (सुर १३, १५५) ।

जीसेस देखो गिस्सेस (गुड्ड, उव) ।

जीहट्टु अ निकाल कर (आचा २, ६, २) ।

जीहट्टु अ [नि + सूत्य] बाहर निकल कर (आचा २, १, १०, ४) ।

जीहड वि [निहृत] १ निर्गत, निर्यात (आचा २, १, १) । २ बाहर निकाला हुआ (बृह १, कस) ।

जीहडिया स्त्री [निहृतिका] अन्य स्थान में ले जाया जाता द्रव्य (बृह २, सू० १८) ।
गु० भाणु ।

तलहट्ट सक [सिच्] सीचना । तलहट्टह, तलहट्टए (सुपा ३६३) । वकृ तलहट्टत (सुपा ३६३) ।

तलहट्टिया छी [दे] पवंत का मूल, पहाड क नीचे की भूमि, तलहटी, तराई, गुजराती में—‘तळेटी’ (सम्मत्त १३७) ।

तलहई छी [तड़ागिका] छोटा तालाव (कुमा) ।

तलाग } न [तड़ाग] तालाव, सरोवर (श्रौप, तलाय } हे १, २०३, प्राप्र, णाया १, ८, उप) ।

तलार पुं [दे] नगर-रक्षक, कोतवाल (दे ५, ३, सुपा २३३, ३६१, पड्, कुप्र १५५) ।

तलारकख पु [दे तलारक्ष] ऊपर देखो (श्रा १२) ।

तलाव देखो तलाग (उवा; पि २३१) ।

तलिअ वि [तलित] भूना हुआ, तला हुआ (विपा १, २) ।

तलिआ } न [दे] उपानह, जूता, (श्रौष तलिगा } ३६, ६८, वृह १) ।

तलिण वि [तलिन] १ प्रतल, सूक्ष्म, बारीक (पएह १, ४, श्रौप, दे ५, ६) । २ तुच्छ, छुद्र (से १०, ७) । ३ दुर्बल (पाम्र) ।

तलिम पुन [दे] १ शय्या, बिछौना (दे ५, २०, पाम्र, णाया १, १६—पत्र २०१, २०२, गडड) । २ कुट्टिम, फरस-बन्द जमीन (दे ५, २०, पाम्र) । ३ घर के ऊपर की भूमि । ४ वास-भवन, शय्या-गृह । ५ भ्राष्ट्र, भूतने का भाजन—वरतन (दे ५, २०) ।

तलिमा छी [तलिमा] वाद्य-विशेष (विसे ७८ टी, एदि टी) ।

तलुण देखो तरुण (णाया १, १६, राय; वा १५) ।

तलेर [दे] देखो तलार (भवि) ।

तल्ल न [दे] १ पल्ल, छोटा तालाव (दे ५, १६) । २ तृण-विशेष, बरु (दे ५, १६, पएह २, ३) । ३ शय्या, बिछौना (दे ५, १६, पड्) ।

तल्लक पुं [तल्लक] सुरा-विशेष (राज) ।

तल्लड न [दे] शय्या, बिछौना (दे ५, २) ।

तल्लिच्छ वि [दे] तत्पर, तल्लीन, (दे ५, ३, सुर १, १३, पाम्र) ।

तल्लेस } वि [तल्लेश्य] उमी में जिसका तल्लेरस } ग्रथवसाय हो, तल्लीन, तदासक्त (विपा १, २, राज) ।

तल्लोविल्लि छी [दे] तडफटना तडफना, व्याकुल होना, ‘थोडइ जलि जिम मच्छलिया तल्लोविल्लि करत’ (कुप्र ८६) ।

तव अक [तप्] १ तपना, गरम होना । २ सक, तपश्चर्या करना । तवइ (हे १, १३१, गा २२४) । भूका, तविमु (भग) । वकृ, तवमाण (श्रा २७) ।

तव मक [तापय्] गरम करना । तवेइ (भग) ।

तव पुन [तपस्] तपस्या, तपश्चर्या (मम ११, नव २६, प्रासू २८) । °गच्छ पु [गच्छ] जैन मुनियों की एक शाखा, गण-विशेष (संति १८) । °गग पु [गण] पूर्वोक्त ही अर्थ (द्र ७०) । °चरण, °चरण न [°चरण] १ तपश्चर्या, तप-करण (सूत्र १, ५, १, उप पृ ३६०, अमि १४७) । २ तप का फल, स्वर्ग का भोग (णाया १, ६) । °चरणि वि [°चरणिन्] तपस्या करनेवाला (ठा ५, ३) । देखो तयो° ।

तव देखो थव (हे २, ४६, पड्) ।

तव देखो थुण । तवइ (प्राकृ ६७) ।

तवग्ग पु [तवर्ग] ‘त’ से लेकर ‘न’ तक पाँच अक्षर । °पविभक्ति न [°प्रविभक्ति] नाट्य-विशेष (राय) ।

तवण पुं [तपन] १ मूयं सूरज (उप १०३१ टी, कुप्र २१५) । २ रावण का एक प्रधान सुमट (से १३, ८५) । ३ न. शिखर-विशेष (क्षीव) ।

तवण पुं [तपन] तीसरी नरक-भूमि का एक नरक-स्थान (देवेन्द्र ८) । °तणया छी [तनया] तापी नदी (हम्मीर १५) ।

तवणा छी [तपना] आतापना (सुपा ४१३) । तवर्णज्ज न [तपनीय] सुवर्ण, सोना (पएह १, ४, सुपा ३६) ।

तवर्णज्ज पुंन [तपनीय] एक देव-विमान (देवेन्द्र १३२) ।

तवणी छी [दे] १ भक्ष्य, भक्षण-योग्य कण आदि (दे ५, १, सुपा ५४८, वज्जा ६२) ।

२ धान्य को जेत में काटकर भक्षण योग्य बनाने की क्रिया (सुपा ५४६) । ३ तवा, पूमा आदि पकाने का पात्र (दे २, ५६) ।

तवणीय देखो तवणिज्ज (सुपा ४८) ।

तवमाण देखो तव = तप ।

तवय वि [दे] व्यावृत्त, किसी कार्य में लगा हुआ (दे ५, २) ।

तवय पु [तपक] तवा, नूनने का भाजन (विपा १, ३, सुपा ११८, पाम्र) ।

तवमि देखो तवरिस, ‘पयमित्तिपि न कप्पद इत्तो तवसीए ज गंतु’ (धर्मवि ५३, १६) ।

तवमिस् वि [तपस्विन्] १ तपस्या करनेवाला (सम ५१, उप ८३३ टी) । २ पृं साधु, मुनि, ऋषि (स्वप्न १८) ।

तविअ वि [तप्त] तपा हुआ, गरम (हे २, १०५, पाम्र) ।

तविअ वि [तापित] १ गरम किया हुआ ।

२ सतापित; ‘एयाए को न तविमो, जयमि लच्छोए मच्छंद’ (सुपा २०४, महा; पिग) ।

तविअ वि [तपित] तीसरी नरक-भूमि का एक नरक स्थान (देवेन्द्र ८) ।

तविआ छी [तापिका] तवा का हाथा (दे १, १६३) ।

तवु देखो तउ (पठम ११८, ८) ।

तयो देखो तओ (रंभा) ।

तयो° देखो तय = तपस् । °कम्म न [°कर्मन्] तप-करण (सम ११) । °धण पुं [°धन] ऋषि, मुनि (प्रासू) । °धर पुं [°धर] तपस्वी, मुनि (पठम २०, १६५, १०३, १०८) । °वण न [°वन] ऋषि का आश्रम (उप ७४५, स्वप्न १६) ।

तव्वणिग वि [दे] सौगत, बौद्ध, बुद्ध-दर्शन का अनुयायी, ‘तव्वणिगएण विर्यं विसयसुहं कुसल्यभावणाघणिय’ (विसे १०४१) ।

तव्वन्निग वि [दे] तृतीयवर्णिक] तृतीय आश्रम में स्थित (उप पृ २६८) ।

तव्विह वि [तद्विध] उसी प्रकार का (भग) ।

तस अक [त्रस्] डरना, घ्रास पाना । तसइ (हे ४, १६८) । कृ तसियव्व (उप ३३६ टी) ।

तस पुं [त्रस] १ स्पर्श-इन्द्रिय से अधिक इन्द्रियवाला जीव, द्वीन्द्रिय आदि प्राणी (जीव

गेअव्व देखो णी = नी ।

गेआइअ } वि [नैयायिक, न्याय्य] न्याय
गेआउअ } ने अवचित, न्यायानुगत, न्यायो-
चित, 'गेआइअस्म मग्गस्स दुट्ठे अवयरडं वहु'
(सम ५१, औप, पण्ह २, १) ।

गेआउय } वि [नेत्] १ ले जानेवाला
गेउ } (सूत्र १, ८, ११) । २ प्रणेता,
रचयिता (सूत्र १, ६, ७) ।

गेआवण न [नायन] अन्य-द्वारा नयन,
पहुँचाना (उप ७४६) ।

गेआविअ वि [नायित] अन्य द्वारा ले जाया
गया, पहुँचाया हुआ (स ४२, कुप्र २०७) ।

गेउ वि [नेत्] नेता, नायक (पउम १४,
६२, सूत्र १, ३, १) ।

गेउआण } देखो णी = नी ।
गेउ }

गेउड्ड पु [दे] मदभाव, शिष्टता (दे ४,
४४) ।

गेउण न [नैपुण] निपुणता, चतुराई (अभि
१३२) ।

गेउणिअ वि [नैपुणिक] १ निपुण, चतुर
(ठा ६) । २ न. अनुप्रवाद-नामक पूर्व-ग्रन्थ
की एक वस्तु (विसे २३६०) ।

गेउणिअ देखो गेउण्ण (दस ६, २, १३) ।

गेउण्ण } न [नैपुण्य] निपुणता, चतुराई
गेउन्न } (दस ६, २, सुपा २६३) ।

गेउर न [नूपुर] लो के पाँव का एक आभू-
षण, पायल (हे १, १२३, गा १८८) ।

गेउरिह वि [नूपुरवत्] नूपुरवाला (पि
१२६, गउड) ।

गेऊण } देखो णी = नी ।
गेँत }

गेँत देखो णी = गम् ।

गेकांत देखो णिकत (गा ११) ।

गेग देखो गेअ = नैक (कुमा, पण्ह १, ३) ।

गेगम पु [नैगम] १ वस्तु के एक अंश को
स्वीकारनेवाला पक्ष-विशेष, नय-विशेष (ठा
७) । २ वणिक्, व्यापारी, 'जिण्णधम्म-
भाविणं, न केवलं धम्मो घण्णो भोवि ।
नेगममहियसहसो, जेण कम्मो अप्पणो
सरिसो' (आ २७) । ३ न व्यापार का
स्थान (आचा २, १, २) ।

गेगुण न [नैगुण्य] निगुणता, नि नारता
(भत्त १६३) ।

गेचइय पुं [नैचयिक] धान्य आदि का
थोकवन्द व्यापारी (वव ४) ।

गेच्छइअ वि [नैश्चयिक] निश्चयनय-
सम्मत, निरुपचरित, शुद्ध (विसे २८२) ।

गेच्छत वि [नेच्छत्] नहीं चाहता हुआ
(हेका ३०६) ।

गेच्छिय वि [नैच्छित्त] इच्छा का अविविध,
अनभिलषित (जीव ३) ।

गेट्ठिअ वि [नैष्ठिक] पर्यन्त-वर्ती (पण्ह
२, ३) ।

गेड देखो णिड्ड (कुमा, हे १, १०६) ।

गेडाली ली [दे] सिर का भूषण-विशेष
(दे ४, ४३) ।

गेड्ड देखो णिड्ड (हे २, ६६, प्राप्र, पड्ड) ।

गेड्डरिआ ली [दे] माद्रपद मास की शुक्ल
दशमी का एक उत्सव (दे ४, ४५) ।

गेत्त पुन [नेत्र] नयन, आँख, चक्षु (हे १,
३३, आचा) ।

गेत्त पु [नेत्र] वृक्ष-विशेष (सूत्र २, २, १८) ।

गेहा देखो णिहा (पि १६२, नाट) ।

गेपाल देखो गेपाल (उप पृ ३६७) ।

गेम स [नेम] १ अर्थ, आवा (प्रामा) । २
न. मूल, जड (पण्ह १, ३, भग) ।

गेम न [दे] कार्य, काज (राज) ।

गेम पुन [दे] कार्य, काम, काज (पिंड ७०) ।

गेम देखो गेम्म = दे (पण्ह २, ४ टी—पत्र
१३३) ।

गेमाल पुं. व [नेपाल] एक भारतीय देश,
नेपाल (पउम ६८, ६४) ।

गेमि पु [निमि] १ स्वनाम-ख्यात एक जिन-
देव, वाइमवें तीर्थंकर (मम ४३, कण्) ।
२ चक्र की धारा (ठा ३, ३, सम ४३) । ३
चक्र परिधि, चक्के का घेरा (जीव ३) । ४
आचार्य हेमचन्द्र के मातुल—मामा का नाम
(कुप्र २०) । ५ चंद पुं [चन्द्र] एक जैना-
चार्य (सार्ध ६२) ।

गेमित्त देखो णिमित्त (आवम) ।

गेमित्ति वि [निमित्तिन्] निमित्त-शास्त्र
का जानकार (सुर १, १४४, सुपा १५४) ।

गेमित्तिअ } वि [नैमित्तिक] १ निमित्त-
गेमित्तिग } शास्त्र में सबन्ध रखनेवाला (सुर
६, १७७) । २ कारणिक, निमित्त से होने-
वाला, कारण से किया जाता, कदाचित्क,
'उववासो गेमित्तिगमो जम्मो भणिमो' (उप
६८३, उवर १०७) । ३ निमित्त शास्त्र का
जानकार (सुर १, २३८) । ४ न निमित्त
शास्त्र (ठा ६) ।

गेमी ली [नेमी] चक्र धारा (दे १, १०६) ।

गेम्म वि [दे निभ] तुल्य, सदृश, समान
(पण्ह २, ४—पत्र १३०) ।

गेम्म देखो गेम = नेम (पण्ह १, ५—पत्र
६४) ।

गेरइअ वि [नैरयिक] १ नरक-सबन्धी, नरक
में उत्पन्न (हे १, ७६) । २ पु. नरक का
जीव, नरक में उत्पन्न प्राणी (सम २, विपा
१, १०) ।

गेरइअ वि [नैर्ऋतिक] नैर्ऋत कोण, दक्षिण-
पश्चिम विदिशा (अणु २१५) ।

गेरई ली [नैर्ऋती] दक्षिण और पश्चिम के
बीच की दिशा (सुपा ६८, ठा १०) ।

गेरुत्त न [नैरुक्त] १ व्युत्पत्ति के अनुसार
अर्थ का वाचक शब्द (अणु) । २ वि निरुक्त
शास्त्र का जानकार (विसे २४) ।

गेरुत्तिय वि [नैरुक्तिक] व्युत्पत्ति-निष्पन्न
(विसे ३०३७) ।

गेरुत्ती ली [नैरुक्ति] व्युत्पत्ति (विसे २१८२) ।

गेल वि [नैल] नील का विकार (भग, औप) ।

गेलल्लण देखो णिल्लल्लण (स ६६६) ।

गेलच्छ पु [दे] नपुंसक, पड (दे ४, ४४,
पाप्र, हे २, १७४) । २ वृषभ, बैल (दे
४, ४४) ।

गेलय पु [दे नेलन] रुपया (पव १११) ।

गेलिच्छी ली [दे] कूपतुला, टेंकवा (दे
४, ४४) ।

गेल्लच्छ देखो गेलच्छ (पि ६६) ।

गेव देखो गेअ = नैव (उव, पि १७०) ।

गेवच्छ देखो गेवत्थ (से १२, ६७, प्रति
६, औप, कुमा, पि २८०) ।

गेवच्छण न [दे] अवतारण, नीचे उतारना
(दे ४, ४०) ।

गेवच्छिय देखो गेवत्थिय (पि २८०) ।

जिमका गुणाकार किया हो वह, 'इक्कासीई सा करणकारणाणुमइताडिआ होइ' (आ ६)।
 ताडिअय न [दे] रोदन, रोना (दे ५, १०)।
 ताडिज्जमाण देखो ताड = ताड्य।
 ताडी छो [ताडी] वृक्ष-विशेष (गउड)।
 ताडीअंत } देखो ताड = ताड्य
 ताडीअमाण }
 ताण न [त्राण] १ शरण, रक्षण कर्ता (सुपा ५७४)। २ रक्षण (सम ५१)।
 ताण पुं [नान] संगीत-प्रसिद्ध स्वर-विशेष, 'ताणा एण्णपरणास' (अणु)।
 ताणन न [तानय] कृता, दुर्बलता (किरात १५)।
 ताणिअ वि [तानित] ताना हुआ (ती १५)।
 ताद देखो ताअ = तात (प्राकृ १२)।
 तादथ न [तादथ्य] तदर्थभाव, उसके लिए (श्रावक १२४, १२७)।
 तादवथ न [तादवथ्य] स्वरूप का अपभ्रंश वही अवस्था, अभिन्नरूपता (धर्मसं ४०४, ४०५, ४१६)।
 तादिस देखो तारिस (गा ७३८, प्रासू ३४)।
 ताम देखो तम्म = तम्। तामइ (गा ८५३)।
 ताम (अप) देखो ताव = तावत् (हे ४, ४०६, भवि)।
 तामर वि [दे] रम्य, सुन्दर (दे ५, १०, पात्र)।
 तामरस न [तामरस] कमल, पद्म (दे ५, १०, पात्र)।
 तामरस न [दे] पानी में उत्पन्न होनेवाला पुष्प (दे ५, १०)।
 तामलि पुं [तामलि] स्वनाम-ख्यात एक तापस (भग ३, १, आ ६)।
 तामलित्ति छो [तामलित्ति] एक प्राचीन नगरी, बंग देश की प्राचीन राजधानी (उप ६८८, भग ३, १, पण १)।
 तामलित्तिया छो [तामलित्ति] जैनमुनि-वश की एक शाखा (कप्प)।
 तामस न [तामस] १ अन्धकार। २ अन्ध-कार-समूह (चैद्य ३२३)।
 तामस वि [तामस] तमोगुणवाला (पचम ८, ५०, कुप्र ४२८)। तथ न [ता] वृष्ण वर्ण का अन्न-विशेष (पचम ८, ५०)।

तामहि } (अप) देखो ताव = तावत् (पड ;
 तामहि } भवि, पि २६१, हे ४, ४०६)।
 तायण न [त्राण] रक्षण (धर्मवि १२८)।
 तायत्तीसग पुं [त्रायत्तिशक] गुरुस्थानीय देव-जाति (ठा ३, १, कप्प)।
 तायत्तीसा छो [त्रायत्तिशत्] १ सख्या-विशेष, तेत्तीस। २ तेत्तीस सख्यावाला, तेत्तीस, 'तायत्तीसा लोगपाला' (ठा, पि ४४७, कप्प)।
 तायन्व देखो ताअ = त्रै।
 तार पुं [तार] १ चौथी नरक का एक स्थान (देवेन्द्र १०)। २ शुद्ध मोती। ३ प्रणव, ओंकार। ४ मायाबीज, 'ह्री' अक्षर। ५ तरण, तैरना (हे १, १७७)।
 तार वि [तार] १ निर्मल, स्वच्छ (से ६, ४२)। २ चमकता, देदीप्यमान (पात्र)। ३ अति ऊँचा (से ६, ४)। ४ अति ऊँचा स्वर (राय, मा ४६४)। ५ न चाँदी (ती २)। ६ पुं वानर-विशेष (से १, ३४)।
 वई छो [वती] एक राज-कन्या (आचू ४)।
 तारंग न [तारङ्ग] तरंग-समूह (से ६, ४२)।
 तारग वि [तारक] तारनेवाला, पार उतारने-वाला (उप ४ ३२)। २ पुं. नृप-विशेष, द्वितीय प्रतिवासुदेव (पचम ५, १५६)। ३ सूर्य आदि नव ग्रह (ठा ६) देखो तारय।
 तारगा छो [तारका] १ नक्षत्र (सूत्र २, ६)। २ एक इन्द्राणी, पूर्णभद्र-नामक इन्द्र की एक पटरानी (ठा ४, १)। देखो तारया।
 तारण न [तारण] १ पार उतारना (सुपा २५७)। २ वि. तारनेवाला (सुपा ४१७)।
 तारत्तर पुं [दे] मूहत्तं (दे ५, १०)।
 तारय देखो तारग (सम १, प्रासू १०१)। ४ न. छन्द-विशेष (पिग)।
 तारया देखो तारगा। ३ आँख की तारा (गउड, गा १४८, २५४)।
 तारा छो [तारा] १ आँख की पुतली (गा ४११, ४३५)। २ नक्षत्र (ठा ५, १, से १, ३४)। ३ सुग्रीव की छो (से १, ३४)। ४ सुभूम चक्रवर्ती की माता (सम १५२)। ५ नदी-विशेष (ठा १०)। ६ बौद्धों की शासन-देवी (कुप्र ४४२)। ७ उर न [पुर] तारंग-स्थान (कुप्र ४४२)। ८ चद पुं [चन्द्र] एक राज-कुमार (धम्म ७२ टी)। ९ तणय पुं

[तनय] वानर-विशेष, अङ्गद (से १३, ६७)। १० पह पुं [पथ] आकाश, गगन (अणु)। ११ पहु पुं [प्रभु] चन्द्रमा (उप ३२० टी)। १२ मेत्ती छो [मैत्री] निस्वार्थ मित्रता (कप्प)। १३ यण न [यन] कनौनिका का चलना, आँख की पुतली का हिलना, 'भगं तारायणं नियइ' (सुपा १८७)। १४ वइ पुं [पति] चन्द्रमा (गउड)।
 तारि वि [तारिन्] तारनेवाला, तारक (सम्मत्त २३०)।
 तारिम वि [तारिम] तरणीय, तैरने योग्य (भास ६३)।
 तारिय वि [तारित] पार उतारा हुआ (भवि)।
 तारिया छो [तारिका] तार के आकार की एक प्रकार की विभूषा, टिकली, टिकिया; 'विचित्तलंवततारियाइन्' (सुर ३, ७१)।
 तारिस वि [ताइश] वैसा, उस तरह का (कप्प, प्राप्र, कुमा)। छो. सी (प्रासू १२५)।
 तारी छो [तारी] तारकजातीय देवी (पव १६, ४)।
 तारुअ वि [तारक] तारनेवाला (चैद्य ५२१)।
 तारुण्य न [तारुण्य] तरुणता; यौवन तारुण्य } (गउड, कप्प, कुमा, सुपा ३१६)।
 ताल देखो ताड = ताड्य। तालेइ (पि २४०)।
 वइ. तालेमाण (विपा १, १)। कवइ. तालिज्जत, तालिज्जमाण (पचम ११८, १०, पि २४०)।
 ताल सक [ताल्य] ताला लगाना, बन्द करना। सक तालेवि (सुपा ४२८)।
 ताल पुं [ताल] १ वृक्ष-विशेष (पणह १, ४)। २ वाद्य-विशेष, कसिका (पणह २, ५)। ३ ताली (दस २)। ४ चपेटा, तमाचा (से ६, ५६)। ५ वाद्य-समूह (राज)। ६ आजीवक मत का एक उपासक (भग ८, ५)। ७ न. ताला, द्वार बन्द करने की कल (उप ३३३)। ८ ताल वृक्ष का फल (दे ६, १०२)। ९ उइ न [पुट] तत्काल प्राण-नाशक विष-विशेष (राया १, १४; सुपा १३७, ३१६)। १० जंघ पुं [जङ्घ] १ नृप-विशेष (धर्म १)। २ वि.

(पि ३१३) । वक्र. पहायमाण (गाया १, १३) । संक्र. पहाइत्ता, पहाणित्ता (पि ३१३) ।

पहाण न [स्नान] नहाना, नहान (कप्प, प्राप्र) । °पीठ पुंन [°पीठ] स्नान करने का पट्टा (गाया १, १) ।

पहाणमहिया स्त्री [स्नानमहिका] स्नान-योग्य पुष्प-विशेष, मालती-पुष्प (राय ३४) ।

पहाणिआ स्त्री [स्नानिका] स्नान-क्रिया (पएह २, ४—पय १३१) ।

पहाणिय वि [स्नानित] जिसने स्नान किया हो वह (पव ३८) ।

पहाय वि [स्नात] जिसने स्नान किया हो वह, नहाया हुआ (कप्प, श्रीप) ।

पहायमाण देखो पहा

पहारु न [स्नायु] १ भस्त्रिय-वन्धनो मिरा, नस, धमनी (सम १४६, पएह १, १, ठा २, १, आचा) । २ अग्रदश श्रेणी मे की एक श्रेणी, कुम्हार, पटेल आदि (लोकप्रकाश ४६४ पय, मगं ३१) ।

पहाव देखो पहव । एहावइ, एहादेइ (भवि, पि ३१३) । वक्र. पहावअन (पि ३१३) ।

सक्र. पहाविऊण (महा) ।

पहाविअ वि [स्नपिन] नहलाया हुआ,

जिसको स्नान कराया गया हो सह (महा भवि) ।

पहाविअ पुं [नापित] हजाम, नाई (हे १, २३०, कुमा), 'धेतूण एहावियं प्राणएण मुडाविओ कुमरो' (उप ६ टी) । °पसेवय पुं [°प्रसेवर] नाई की अपने उपकरण रखने की थैली (उत्त २) ।

पहुअ [दे] निश्चय-सूचक अव्यय (जीवम १८०) ।

पहुसा स्त्री [स्तुपा] पुत्र वधू, पुत्र की भार्या, पत्नी (प्रावम, पि ३१३) ।

पहुहा देखो पहुसा (सिरि २५१) ।

॥ इअ मिरिपाइअसहमहण्णवे णप्राराइमहसंकलणो, अइएसेण

नप्राराइमहसंकलणो वाईसइमो तरगो समत्तो ॥

त

त पुं [त] दन्त-स्थानीय व्यञ्जन वर्ण-विशेष (प्राप्र, प्रामा) ।

त म [तन्] वह (ठा ३, १, हे १, ७, कप्प, कुमा) ।

तं स [त्वनं] तू । °कय वि [°कृत] तेरा किया हुआ (स ६८०) ।

तं देखो तथा = त्वच् । °होसि वि [°दोपिन्] १ चर्म-रोगी । २ कुष्ठो (पिठ ४७५) ।

तअ देखो तव = तपस् (हास्य १३५) । तइ वि [तनि] उतना (वव १) ।

तइ (अप) अ [तत्र] वहाँ, उसमें (पह्) ।

तइ अ [तदा] उस समय (प्राप्र) ।

तइअ नि [तृतीय] तीसरा (हे १, १०१, कुमा) ।

तइअ (अप) वि [त्वदीय] तुम्हारा (भवि) ।

तइअ अ [तदा] उस समय;

°भणिमो रत्ता मंती,

मइतागर तइय पव्वयतेण ।

ताएण अहं भणिमो,

भणिणी ठाणम्मि दायव्वा'
(सुर १, १२३) ।

तइअहा (अप) अ [तत्र] उस समय (भवि, सण) ।

तइआ अ [तदा] उन समय (हे ३, ६५, गा ६२) ।

तइआ स्त्री [तृतीया] तिसरी विभक्ति (सम २६) ।

तइया स्त्री [तृतीया] तीसरी विभक्ति (वेइय ६८३) ।

तइल देखो तेह (उप ६२६) ।

तइलोई स्त्री [त्रिलोकी] तीन लोक—स्वर्ग, मर्त्य और पाताल (सुपा ६८) ।

तइलोफ } न [त्रिलोक्य] ऊपर देखो

तइलोय } (पउम ३, १०५, ८, २०२, स ५७१, नुर ३, २०, सुपा २८२, ३५, ४४८) ।

तइस (अप) वि [तादृश] वैसा, उस तरह का (हे ४, ४०३, पड्) ।

तई स्त्री [त्रयो] तीन का समुदाय (सुपा ५८) ।

तईअ देखो तइअ = तृतीय (गा ४११, मग) ।

तउ } न [त्रपु] धातु-विशेष, सीसा, तउअ } रागा (सम १२५, श्रीप, उप ६८६ टी, महा) । °वट्टिआ स्त्री [°पट्टिका] कान का भ्रान्मूषण विशेष (दे ५, २३) ।

तउस न [त्रपुप] देखो तउसी (राज) ।

°मिजिया स्त्री [°मिजिका] सुद कीट-विशेष, श्रोत्रिय जन्तु की एक जाति (जीव १) ।

तउम न [त्रपुप] खोरा, ककड़ी (दे ८, ३५) ।

तउसी स्त्री [त्रपुपी] कर्कश-वृक्ष, गौरा का गाछ (गा ५३४) ।

तए अ [तनस्] उभरो, उम कारण मे । २ बाद मे (उत्त १, विपा १, १) ।

तण्यारिस वि [त्यादृग] तुम जैजा, तुम्हारे तरह का (स ५२) ।

तओ देखो तए (ठा ३, १, प्रासू ७८) ।

ति देखो तइअ = तृतीय (कम्म २, १६) ।
 °भाग, °भाय, °हाअ पु [°भाग] तृतीय
 भाग, तीसरा हिस्सा (कम्म २, गाय १,
 १६—पत्र २१८, कप्पु) ।

ति देखो थी, 'उल्लु गायंति भुणि सभत्तिपुत्ता
 तिमो चच्चरियाउदिति' (रभा) ।

ति त्रि व [त्रि] तीन, दो और एक (नव ४,
 महा) । °अणुअ न [°अणुक] तीन पर-
 माणुओ से बना हुआ द्रव्य, 'अणुअतएहि
 आरद्धदव्वे निअणुअ ति निहेसा' (सम्म
 १३६) । °उण वि [°गुण] १ तीनपुना ।
 °मत्व रजस् और तमस् गुणवाला (अचु
 ३०) । °उणय वि [°गुणित] तीनपुना
 (भवि) । °उत्तरसय वि [°उत्तरशततम]
 एक सौ तीसरा, १०३ वां (पउम १०३,
 १७६) । °उल वि [°तुल] १ तीन को
 जीतनेवाला । २ तीन को तीलनेवाला (गाय १,
 —पत्र ६४) । °ओय न [°ओजस्]
 विपम राशि-विशेष (ठा ४, ३) । °कड,
 °कडग वि [°काण्ड, °क] तीन काण्डवाला,
 तीन भागवाला (कप्पु, सूत्र १, ६) । °कडुअ
 न [°कडुक] सोठ, मरीच और पीपल
 (अणु) । °करण देखो °गरण (राज) ।
 °काल न [°काल] भूत, भविष्य और वत्त-
 मान काल (भग, सुपा ८८) । °काल देखो
 °काल (सुपा १६६) । °खड वि [°खण्ड]
 तीन खण्डवाला (उप ६८६ टी) । °खडा-
 हिव्व पुं [°खण्डावपति] अर्ध चक्रवर्ती
 राजा, वामुदेव (पउम ६१, २६) । °गडु,
 °गडुअ देखो °कडुअ (स २५८ २६३) ।
 °गरण न [°करण] मन, वचन और काया
 (द्र २०) । °गुण देखो °उण (अणु) ।
 °गुन वि [°गुप्त] मनोगुप्ति आदि तीन
 गुप्तिवाला, सयमी (स ८) । °गोण वि
 [°कोण] तीन कोनेवाला (राज) । °चत्ता
 ओ [°चत्वारिंशत्] तेतालीस (कम्म ४,
 ५५) । °जय न [°जगन्] स्वर्ग, मर्त्य
 और पाताल लोक (ति १) । °णयण पुं
 [°नयन] महादेव, शिव (से १५, ५८, सुपा
 १३८, ५६६, गउड) । °तुल देखो °उल
 (गाय १, १ टी—पत्र ६७) । °त्तिस
 (अप) देखो °त्तीस । °त्तीस ओन [त्रय-

खिंशत्] १ संख्या-विशेष, ३३ । २ तेतीस
 संख्यावाला, तेतीस (कप्प, जी ३६, सुर १२,
 १३६, दं २७) । °टड न [°टण्ड] १ दृषि-
 यार रखने का एक उपकरण (महा) । २ तीन
 दण्ड (औप) । °दडि पु [°दण्डिन्] सन्यासी,
 साह्य मत का अनुयायी साधु (उप १३६ टी,
 सुपा ४३६ महा) । °नवड ओ [°नवति] १
 संख्या विशेष, तिरानवे । २ तिरानवे संख्या-
 वाला (कम्म १, ३१) । °पच त्रि व.
 [°पञ्चन्] पंद्रह (ओष १४) । °पचासइम
 वि [°पञ्चाश] त्रिपनवां (पउम ५३, १५०) ।
 °पह न [°पथ] जहां तीन रास्ने एकत्रित
 होते हो वह स्थान (राज) । °पायण न
 [°पानन] १ शरीर, इन्द्रिय और प्राण इन
 तीनों का नाश । २ मन, वचन और काया
 का विनाश (पिंड) । °पुड न [°पुण्ड]
 तिलक-विशेष (स ६) । °पुर पुं [°पुर] १
 दानव-विशेष । २ न तीन नगर (राज) ।
 °पुरा ओ [°पुरा] विद्या-विशेष (सुपा
 ३६७) । °वभगा ओ [°भङ्गी] छन्द-विशेष
 (पिंग) । °महुर न [°मधुर] धी, गह्वर और
 मधु (अणु) । °नासिआ ओ [°त्रेमासिकी]
 जिसकी अवधि तीन मास की है ऐसी एक
 प्रतिमा, व्रत-विशेष (सम २१) । °मुह वि
 [°मुख] १ तीन मुखवाला (राज) । २ पुं
 भगवान् मभवनाथजी का शासन-देव (मति
 ७) । °रत्त न [°रात्र] तीन रात (स
 ३४२), 'धम्मपरस्स मुहुत्तोत्ति दुल्लहो किणुण
 तिरत्त' (कुप्र ११८) । °रस्ति न [°राशि]
 जीव, अजीव और नोजीव रूप तीन राशियाँ
 (राज) । °लोअ न [°लोकी] स्वर्ग, मर्त्य
 और पाताल लोक (कुमा, प्रासू ८६, स १) ।
 °लोअण पुं [°लोचन] महादेव, शिव
 (आ २८, पउम ५, १२२, पिंग) । °लोअ-
 पुज्ज पुं [°लोकपूज्य] घातकीपण्ड के विदेह
 में उत्पन्न एक जिनदेव (पउम ७५, ३१) ।
 °लोई ओ [°लोकी] देखो °लोअ (गउड,
 भत्त १५२) । °लोग देखो °लोअ (उप पु
 ३) °वई ओ [°पदी] १ तीन पदों का समूह ।
 २ भूमि में तीन बार पाँव का न्याम (औप) ।
 ३ गति-विशेष (अत १६) । °वग पुं
 [°वर्ग] १ धर्म, अर्थ और काम ये तीन

पुरुषार्थ (ठा ४, ४—पत्र २८३, स ७०३,
 उप पु २०७) । २ लोक, वेद और समय
 इन तीन का वर्ग । ३ सूत्र, अर्थ और उन
 दोनों का समूह (आचू १, आवम) । °वण
 पु [°पर्ण] पलाश वृक्ष (कुमा) । °वरिस वि
 [°वर्ष] तीन वर्षों की अवस्थावाला (वव
 ३) । °वलि ओ [°वलि] चमड़ी की तीन
 रेखाएँ (कप्पु) । °वलिय वि [°वलिक]
 तीन रेखावाला (राय) । °वली देखो °वलि
 (गा २७८, औप) । °वट्ट पुं [°पृष्ठ] भरत-
 क्षेत्र के भावी नवम वामुदेव (सम १५४) ।
 °वय न [°पट] तीन पाँववाला (दे ८, १) ।
 °वहआ ओ [°पथगा] गंगा नदी (से ६,
 ८, अचु ३) । °वायणा ओ [°पातना]
 देखो °पायग (पह १, १) । °विट्ट,
 °विट्टु पुं [°पृष्ठ, °विष्टु] भारतक्षेत्र में
 उत्पन्न प्रथम अर्ध-चक्रवर्ती राजा का नाम
 (सम ८८, पउम ५, १५५) । °विह वि
 [°विध] तीन प्रकार का (उवा, जी २०,
 नव ३) । °विहार पु [°विहार] राजा
 कुमारपाल का वनवाया हुआ पाटण का
 एक जैन मन्दिर (कुप्र १४४) । °सकु पु
 [°शङ्कु] सूर्यवशीय एक राजा (अभि ८२) ।
 °सम्भ न [°सन्धय] प्रभात, मध्याह्न और
 सायंकाल का समय (मुर ११, १०६) ।
 °सट्ट वि [°पट] तिरमठवाँ, ६३ वां (पउम
 ६३, ७३) । °सट्टि ओ [°षष्टि] तिरमठ,
 ६३ (भवि) । °सत्त त्रि व [°सप्तन]
 एकीम (आ ६) । °सत्तमुत्तो अ [°सप्त
 कृत्वस्] एकीम बार (गाय १, ६, सुपा
 ४४६) । °समइय वि [°सामयिक] तीन
 समय में उत्पन्न होनेवाला, तीन समय की
 अवधिवाला (ठा ३, ४) । °सरय न [°सरक]
 तीन सरा या लड़ीवाला हार (गाय १,
 १, औप, महा) । २ वाद्य-विशेष (पउम ६६,
 ४४) । °सरा ओ [°सरा] मच्छली पकड़ने
 का जाल-विशेष (विपा १, ८) । °सरिय न
 [°सरिक] १ तीन सरा या लड़ी वाला हार
 (कप्प) । २ वाद्य-विशेष (पउम ११३, ११) ।
 ३ वि. वाद्य-विशेष-संबन्धी (पउम १०२,
 १२३) । °सीस पु [°शीर्ष] देव-विशेष
 (दोव) । °सुल न [°शूल] शस्त्र-विशेष (पउम

तक पुं [तर्क] १ विमर्श, विचार, अटकल- ज्ञान (आ १२, ठा ६) । २ न्याय-शास्त्र (सुपा २८७) ।	तगरा स्त्री [तगरा] संनिवेश-विशेष (स ४६८)	पत्र ११) । कवकृ तजिज्जंत (उप्र पु १३४, उप १४६ टी) ।
तकणा स्त्री [दे] इच्छा, अभिलाष (दे ५, ४) ।	तगरा स्त्री [तगरा] एक नगरी का नाम (सुख २, ८) ।	तज्जण न [तर्जन] भर्त्सन, तिरस्कार (औप, उव, पउम ६५, ५३) ।
तकय वि [तर्कक] तर्क करनेवाला (पएह १, ३) ।	तग्ग न [दे] सूत्र-वर्कण, धागे का कंकण (दे ५, १, गउड) ।	तज्जणा स्त्री [तर्जना] ऊपर देखो (पएह २, १, सुपा १) ।
तकर पु [तस्कर] चोर (हे २, ४, औप) ।	तग्गंविथ वि [तद्गन्धिक] उसके समान गंधवाला (प्रासू ३४) ।	तज्जणी स्त्री [तर्जनी] दूसरी अंगुली, अँगूठे के पासवाली अंगुली, प्रदेशिनी (सुपा १, कुमा) ।
तकालि स्त्री [दे] कदली-वृक्ष, बेले का गाछ (आचा २, १, ८, ६) ।	तच्च वि [तृतीय] तीसरा (सम ८, उवा) ।	तज्जाय वि [तज्जात] समान जातिवाला, तुल्य-जातीय (आव ४) ।
तकालि स्त्री [दे] बलयाकार वृक्ष-विशेष तकली (पएण १) ।	तच्च न [तृत्व] सार, परमार्थ (आचा, आरा ११५) । १ वाय पु [वाद्] १ तत्त्व-वाद, परमार्थ-वर्चा । २ दृष्टिवाद, जैन अंग-ग्रंथ- विशेष (ठा १०) ।	तज्जाविज } वि [तर्जिन] तर्जिन, भर्त्सित तज्जिअ } (स १२२, सुग २६२, भवि) ।
तका स्त्री [तर्क] देखो न = तर्क (ठा १ सूय १, १३, आचा) ।	तच्च न [तृथ्य] १ सत्य, सचाई (हे २, २१, उत २८) । २ वि वास्तविक, सत्य (उत ३) । १०५ पुं [१०५] सत्य, हकीकत (पउम ३, १३) १ वाय पुं [वाद्] देखो ऊपर १ वाय (ठा १०) ।	तज्जित } देखो तज्ज । तज्जिज्जत } तज्जेमाण }
तकाल क्रि वि [तत्काल] उसी समय (कुमा) ।	तच्चं अ [त्रि.] तीन बार (भग, सुर २, २६) ।	तट्टवट्ट न [दे] आभरण, आभूषण, ‘सणियं सणियं बालत्तराओ तणुयाई तट्टवट्टाइ । अवहरि वि नियवराओ हारेइ रहम्मि खिलंतो’ (सुपा ३६६) ।
तकालि वि [तार्किक] तर्कशास्त्र का जानकार (अच्छु १०१) ।	तच्चित्त वि [तच्चित्त] उसी में जिसका मन लगा हो वह, तल्लीन (विपा १, २) ।	तट्टिगा स्त्री [दे तट्टिका] दिगवर जैन साधु का एक उपकरण (धर्मस १०४६, १०४८) ।
तकियाण देखो तक्क = तर्क ।	तच्छ सक [तक्ष्] छिलना, काटना । तच्छइ (हे ४, १६४, पड्) । सक तच्छिय (सूय १, ४, १) । कवकृ, तच्छिज्जंत (सुर १, २८) ।	तट्टी स्त्री [दे] वृत्ति, वाढ (दे ५, १) ।
तक्कु पुं [तर्कु] सूत बनाने का यन्त्र, तकुआ, तकला, चरखा (दे ३, १) ।	तच्छ वि [तष्ट] छिला हुआ, तनुकृत, तच्छिअ } ‘ते भिन्नदेहा फलगं तच्छा’ (सूय १, ५, २, १४, १, ४, १, २१, उत १६, ६६) ।	तट्ट वि [त्रस्त] १ डरा हुआ, भीत (हे २, १३६, कुमा) । २ न. मुहूर्त-विशेष (सम ५१) ।
तक्कुय पुं [दे] स्वजन-वर्ग, ‘सम्माणिया सामंता, अहिण्णदिया नायरया, परिओसिमा तक्कुयणणा ति’ (स ५२०) ।	तच्छण स्त्रीन [तक्षण] छिलना, कतन (पएह १, १) स्त्री णा (णाय १, १३) ।	तट्ट वि [तट्ट] छिला हुआ (सूय १, ७) ।
तक्ख सक [तक्ष्] छिलना, काटना । तक्खइ (पड्, हे ४, १६४) । कर्म तक्खि- जइ (कुप्र १७) । वकृ, तक्खमाण (अणु) ।	तच्छिज्जत देखो तच्छ ।	तट्टव न [त्रस्तप] मुहूर्त-विशेष (सम ५१) ।
तक्ख पुं [तक्ष्य] गूढ पक्षी (पाप्र) ।	तज्जा देखो तया = त्वच् (दे १, १११) ।	तट्टि वि [तट्टिन्] तनुकृत, कृशतावाला (सूय १, ७, ३०) ।
तक्ख पु [तक्षन्] १ लकड़ी काटनेवाला, वडई । २ विश्वकर्मा, शिल्पी-विशेष (हे ३, ५६, पड्) । १ सिला स्त्री [शिला] प्राचीन ऐतिहासिक नगर, जो पहले बाहुवालि की राजधानी थी, यह नगर पंजाब में है (पउम ४, ३८, कुप्र ५३) ।	तज्ज सक [तर्जय्] तर्जन करना, भर्त्सन करना । तज्जइ (भवि) । तज्जेइ (णाय १, १८) वकृ तज्जत, तज्जित तज्जयत, तज्जमाण, तज्जेमाण (भवि, सुर १२, २३३, णाय १, ८, राज, विपा १, १—	तट्टि } पु [त्वष्टृ] १ तक्षक, विश्वकर्मा तट्टु } (गउड) । २ नक्षत्र-विशेष का अवि- ष्टायक देव (ठा २, ३) ।
तक्खग पु [तक्षक] १-२ ऊपर देखो । ३ स्वनाम-प्रसिद्ध सर्प-राज (उप ६२५) ।	तज्जिज्जत देखो तज्ज ।	तट्टु पु [त्वष्टृ] ग्रहोरात्र का बारहवां मुहूर्त (सुज १०, १३) ।
तक्खण न [तत्क्षण] १ तत्काल, उसी समय (ठा ४, ४) । २ क्रि वि शीघ्र, तुरन्त (पाप्र) ।	तज्जिज्जत देखो तज्ज ।	तड सक [नन्] १ विस्तार करना । २ करना । तडइ (हे ४, १३७) ।
तक्खय देखो तक्खग (स २०६, कुप्र १३६) ।	तज्जिज्जत देखो तज्ज ।	तड पुंन [तट] किनारा, तीर (वाप्र, कुमा) ।
तक्खाण देखो तक्ख = तक्षन् (हे ३, ५६, पड्) ।	तज्जिज्जत देखो तज्ज ।	१०५ वि [स्थ] १ मध्यस्थ, पक्षपात-हीन । २ समीप स्थित (कुमा, दे ३, ६०) ।
तगर देखो टगर (पएह २, ५) ।	तज्जिज्जत देखो तज्ज ।	तडउडा [दे] देखो तडउडा (जीव ३, जं १) ।

तिंदूस पुन [तिंदूस, °क] १ वृक्ष विशेष
तिंदूसग (परण १) । २ कन्दुक, गेंद
तिंदूसय (खाया १, १८, सुपा ५३) ।
३ क्रीडा-विशेष (भावम) ।

तिकल न [त्रैकाल्य] तीनो काल का विषय
(पण्ह २, २) ।

तिकूड पु [त्रिकूट] १ लका के समीप का
एक पहाड़, सुवेल पर्वत (पठम ५, १२७) ।
२ शीता महानदी के दक्षिण किनारे पर
स्थित पर्वत-विशेष (ठा २, ३—पत्र ८०) ।
°सामिग पु [°स्वामिन्] सुवेल पर्वत का
स्वामी, रावण (पठम ६५, २१) ।

तिक्ख वि [तीक्ष्ण] १ तेज तीखा, पैना
(महा-गा ५०४) । २ सूक्ष्म । ३ चोखा,
शुद्ध (कुमा) । ४ परुष, निष्ठुर (भग १६,
३) । ५ वेग-युक्त, क्षिप्र-कारी (ज २) । ६
क्रोधी, गरम प्रकृतिवाला । ७ तीता, कड़ुवा
८ उत्साही । ९ आलस्य-रहित । १० चतुर,
दक्ष । ११ न. विष, जहर । १२ लोहा ।
१३ युद्ध, संग्राम । १४ शस्त्र, हथियार । १५
समुद्र का नोन । १६ यक्षार । १७ श्वेत-
कुष्ठ । १८ ज्योतिष-प्रसिद्ध तीक्ष्ण गण, यथा
अरलेषा, आर्द्रा, ज्येष्ठा और मूल नक्षत्र (हे
२, ७५, ८२) ।

तिक्ख सक [तीक्ष्णय्] तीक्ष्ण करना,
तेज करना । तिकखेइ (हे ४, ३४४) ।

तिक्खण न [तीक्ष्णन] तेज-करण, उत्तेजन
(कुमा) ।

तिग्गाल सक [तीक्ष्णय्] तीक्ष्ण करना ।
कर्म तिकखालिज्जति (सुर १२, १०६) ।

तिक्खालिअ वि [दे] तीक्ष्ण किया हुआ
(दे ५, १३, पाअ) ।

तिक्खुत्तो अ [त्रिस्] तीन बार (विपा
१, १, कप्प, औप, राय) ।

तिग देखो तिअ = त्रिक (जी ३२, सुपा ३१,
खाया १, १) । °वस्सि वि [°वशिन्]
मन, वचन और शरीर को काबू में रखनेवाला,
'नरस्स तिगवस्सिस्स विसं तालउड जहा',
(सुपा १६७) ।

तिगसपुण्ण न [त्रिकसपूर्ण] लगातार तीस
दिन का उपवास (सबोध ५८) ।

तिगिंछ पु [तिगिञ्छ] द्रह-विशेष (इक) ।
तिगिंछायण न [तिगिञ्छायन] गोत्र-विशेष
(सुज्ज १०, १६ टी) ।

तिगिंछि पु [तिगिञ्छि] १ पर्वत-विशेष
(ठा २, ३—पत्र ७०, इक, सम, ३३) ।
२ द्रह-विशेष, निषध पर्वत पर स्थित एक
हृद (ठा २, ३—पत्र ७२) ।

तिगिंछ्छ सक [चिकित्स] प्रतीकार करना,
इलाज करना, दवा करना । तिगिंछ्छइ (उत्त
१६, ७६, पि २१५, ५५५) ।

तिगिंछ्छ पुं [चिकित्स] वैद्य, हकीम
(वव ५) ।

तिगिंछ्छ पु [तिगिञ्छ] १ द्रह-विशेष,
निषध पर्वत पर स्थित एक द्रह (इक) । २
न देवविमान-विशेष (गम ३८) ।

तिगिंछ्छ न [चैकित्स] चिकित्सा-शास्त्र
(सिरि ५६) ।

तिगिंछ्छग वि [चिकित्सक] प्रतीकार
तिगिंछ्छय करनेवाला । २ पुं. वैद्य, हकीम
(ठा ४, ४, पि २१५, ३२७) ।

तिगिंछ्छण न [चिकित्सन] चिकित्सा
(पिंड १८८) ।

तिगिंछ्छय न [चैकित्स्य] चिकित्सा-कर्म
(ठा ६—पत्र ४५१) ।

तिगिंछ्छा ली [चिकित्सा] प्रतीकार, इलाज,
दवा (ठा ३, ४) । °सत्थ न [°शास्त्र]
आयुर्वेद, वैद्यकशास्त्र (राज) ।

तिगिंछ्छायण न [तिगिंछ्छायन] गोत्र-
विशेष (सुज्ज १०, १६) ।

तिगिंछ्छ देखो तिगिंछि (ठा २, ३—पत्र
८०, सम ८४, १०४, पि ३५४) ।

तिगिंछ्छि पुं [चैकित्सिक] वैद्य, चिकित्सक
(पठम ८, १२४) ।

तिग्ग वि [त्रिगम] तीक्ष्ण, तेज (हे २, ६२) ।

तिग्ग वि [त्रिगम] तिगुना, तीन-गुना (राज) ।

तिचूड पु [त्रिचूड] विद्याधर वंश का एक
राजा (पठम ५, ४५) ।

तिजड पु [त्रिजट] १ विद्याधर वंश के एक
राजा का नाम (पठम १०, २०) । २ राक्षस
वंश का एक राजा (पठम ५, २६२) ।

तिजामा } ली [त्रियामा] रात्रि, रात (कुप्र
तिजामी } २४७, २भा) ।

तिज्ज वि [तार्य] तेरने योग्य (भास ६३) ।
निड्ड पुत्री [दे] अन्न-नाश करनेवाला कीट,
टिड्डी (जी १८) । लो °ड्डो (सुपा ५८६) ।
तिड्डव मक [ताडय्] ताड़न करना ।
तिड्डवइ (प्राक ७६) ।

तिण न [तृण] तृण, घास (सुपा २३२,
अभि १७५, म १७६) । °सूय न [°शूक]
तृण का अग्र भाग (भग १५) । °हत्थय पु
[°हस्तक] घास का पूला (भग ३, ३) ।

तिणिस पुं [तिनिश] वृक्ष-विशेष, बेंत (ठा
४, २, कम्म १, १६, औप) ।

तिणिम न [दे] मधु-पाल, मधपुडा (दे ५,
११, ३, १२) ।

तिणिम वि [तेनिश] तिनिश-वृक्ष-संबंधी,
बेंत का (राय ७४) ।

तिणीक्य वि [तृणीकृत] तृण-मुल्य माना
हुआ (कुप्र ५) ।

तिण्ण } अक [तिम्] १ आद्र होना ।
तिण्णाअड } २ सक आद्र करना । तिण्णा-
अड (प्राक ७७) ।

तिण्ण वि [तीर्ण] १ पार पहुँचा हुआ (औप) ।
२ शक्त, समर्थ (से ११, २१) ।

तिण्ण न [स्तेन्य] चोरी, तिलतिण्णतप्परो
(उप ५६७ टी) ।

तिण्ण° देखो ति = वि । °भग वि [°भङ्ग]
वि-खण्ड, तीन खण्डवाला (अभि २२४) ।
°विह वि [°विध] तीन प्रकार का (नाट-
चैत ४३) ।

तिणिअ पु [तिन्निक] देखो तित्तिअ =
तित्तिक (इक) ।

तिण्ह देखो तिक्ख (हे २, ७५, ८२, पि
३१२) ।

तिण्हा देखो तण्हा (राज, वज्जा ६०) ।

तितउ पु [नितउ] चालनी या चलनी, छाला,
छाटा या मैदा छानने का पात्र (प्राभा) ।

तितय देखो तिअय (वव १) ।

तितिक्ख देखो तिइक्ख । तितिक्खइ,
तितिक्खए (कप्प, पि ४५७) । वक्र.
तितिक्खमाण (राज) ।

तितिक्खण न [तितिक्षण] सहन करना
(ठा ६) ।

तितिक्खया देखो तितिक्खा (पिंड ६६६) ।

तणुवी } देखो तणुई (हे २, ११३,
तणुवीआ } (कुमा) ।

तणू खी [तनू] शरीर काया (गा ७८,
पात्र, द ५) । २ ईपत्तामारा नामक पृथिवी
(ठा ८) । ३ अ वि [°ज] १ शरीर से
उत्पन्न । २ पुं. लहका, पुत्र (उप ६८६) ।
°अतरा खी [°कतरा] ईपत्तामारा-नामक
पृथिवी, जिसपर मुक्त जीव रहते हैं, सिद्ध-
शिला (सम २२) । °रुह पुन [°रुह] केश,
रोम, बाल (उप ५६७ टी) ।

तणूइय देखो तणुइअ (गठड) ।

तणेण (अप) अ लिए, वास्ते (हे ४, ४२५,
कुमा) ।

तणेसि पुं [दे] तृण-राशि (दे ५, ३, पङ्) ।
तण्णय पुं [तर्णक] बत्स, बछड़ा (पात्र, गा
१६, गठड) ।

तण्णाय वि [दे] भाद्र, गीला (दे ५, २,
पात्र, गठड; से १, ३१, ११, १२६) ।

तण्हा खी [तृष्णा] १ प्यास, पिपासा
(पात्र) । २ स्पृहा, वाग्छा, इच्छा (ठा २, ३,
औप) । °लु, °लुअ वि [°वत्] तृष्णा-
वाला, प्यासा, 'समरतएहालू' (पचम ८, ८७,
८, ४७) ।

तण्हाइअ वि [तृष्णित] तृषातुर, अति प्यासा
(धर्मवि १४१) ।

तत देखो तय = तत (ठा ४, ४) ।

तत्त न [तत्त्व] सत्य स्वरूप, तथ्य, परमार्थ
(उप ७२८ टी, पुष्प ३२०) । °ओ अ
[°तस्] वस्तुत (उप ६८६) । °णु वि
[°ज्ञ] तत्व का जानकार (पचा १) ।

तत्त पुं [तप्त] १ तीसरी नरक-भूमि का एक
नरक-स्थान (देवेन्द्र ८) । २ प्रथम नरक-
भूमि का एक नरक-स्थान (देवेन्द्र ४) ।

तत्त वि [तप्त] गरम किया हुआ (सम १२५,
विपा १, ६, दे १, १०५) । °जला खी
[°जला] नदी-विशेष (ठा २, ३) ।

तत्त अ [तत्र] वहाँ । °भव, °होत वि
[°भवत्] पूज्य ऐसे आप (पि २६३,
अमि ५६) ।

तत्तदुत्त न [तत्त्वार्थसूत्र] एक प्रसिद्ध जैन
दर्शन-ग्रन्थ (अज्ज ७७) ।

तत्तडिअ न [दे] रंगा हुआ कपड़ा (गच्छ
२, ४६) ।

तत्ति खी [तृप्ति] तृप्ति, सतोष (कुमा, कर
२६) । °ल वि [°मत्] तृप्ति-युक्त,
तृप्त, सतुष्ट (राज) ।

तत्ति खी [दे] १ आदेश, हुकुम (दे ५, २०,
सण) । २ तत्परता (दे २०) । ३ चिन्ता,
विचार (गा २, ५१, २७३ अ, सुपा २३७,
२८०) । ४ वार्ता, बात (गा २, वज्जा २) ।

५ कार्य, प्रयोजन (पण्ह १, २, वव १) ।

तत्तिय वि [तावत्] उतना (प्रासू १५६) ।

तत्तिल } वि [दे] तत्पर (पङ्, दे ५, ३,
तत्तिल } गा ५५७, प्रासू ५६) ।

तत्तु (अप) देखो तत्थ = तत्त (हे ४, ४०४,
कुमा) ।

तत्तुडिअ न [दे] सुरत, संभोग (दे ५, ६) ।

तत्तुरिअ वि [दे] रजित (पङ्) ।

तत्तो देखो तओ (कुमा, जी २६) । °मुह
वि [°मुख] जिसका मुँह उस तरफ हो वह
(सुर २, २३४) ।

तत्तोहुत्त न [दे] तदभिमुख, उसके सामने
(गठड) ।

तत्थ अ [तत्र] वहाँ, उसमें (हे २, १६१) ।

°भव वि [°भवत्] पूज्य ऐसे आप (पि
२६३) । °य वि [°त्य] वहाँ का रहनेवाला
(उप ५६७ टी) ।

तत्थ वि [त्रस्त] भीत, डरा हुआ (हे २, १६१,
कुमा) ।

तत्थ देखो तच्च = तथ्य (धर्मस ३०४, एंदि
५३) ।

तत्थरि पुं [त्रस्तरि] नय-विशेष, 'तत्थरिनएण
ठविआ सोहत्त मज्झ थुई' (अज्जु ४) ।

तदा देखो तया = तदा (गा ६६६) ।

तदीय वि [त्वदीय] तुम्हारा (महा) ।

तदो देखो तओ (हे २, १६०) ।

तद्दीअचय न [दे] नृत्य, नाच (दे ५, ८) ।

तद्दिअस } न [दे] प्रतिदिन, अनुदिन,
तद्दिअसिअ } हररोज (दे ५, ८, गठड,
तद्दिअह } पात्र) ।

तद्दोसि देखो त-द्दोसि = त्वदोपिन् ।

तद्धिय पुं [तद्धित] १ व्याकरण-प्रसिद्ध
प्रत्यय-विशेष (पण्ह २, २, विसे १००३) ।

२ तद्धित प्रत्यय की प्राप्ति का कारण-भूत
अर्थ (अणु) ।

तधा देखो तद्दा (ठा ३, १, ७) ।

तन्नय देखो तण्णय (सुर १४, १७४) ।

तन्हा देखो तण्हा (सुर १, २०३, कुमा) ।

तप देखो तव = तपस् (चड) ।

तप्प सक [तप्] १ तप करना । २ अक,
गरम होना । तप्पइ, तप्पति (पिंग, प्रासू
५:) ।

तप्प सक [तर्पय्] तृप्त करना । वक्तु
तप्पमाण (सुर १६, १६) । हेऊ 'न इमो
जीवो मक्को तप्पेउ कामभोगेहि' (आउ ५०) ।
ऊ तप्पेयव्व (सुपा २३२) ।

तप्प न [तल्प] शय्या, बिछौना (पात्र) ।
°अ वि [°ग] शय्या पर जानेवाला, सोने-
वाला (पण्ह १, २) ।

तप्प पुंन [तप्र] डोगी, छोटी नौका (पण्ह
१, १, विसे ७०६) ।

तप्प पुन [तप्र] नदी में दूर से बहकर आता
हुआ काष्ठ समूह (एदि ८८ टी) ।

तप्पक्खिअ वि [तत्पाक्षिक] उस पक्ष का
(आ १२) ।

तप्पज्ज न [तात्पर्य] तात्पर्य, मतलब (राज) ।

तप्पण न [तर्पण] १ शक्तु, सतुआ, सत्तू (पण्ह
२, ५) । २ खीन तृप्ति-करण, प्रीणन (सुपा
११३) । ३ स्निग्ध वस्तु से शरीर की मालिश
(णया १, १३) ।

तप्पणरा न [दे] जैन साधु का पात्र-विशेष,
तरपणी (कुलक १०) ।

तप्पणाहुआलिआ खी [दे] मत्तुमिश्रित
भोजन (दश वै० चू०, वसुदेवहिंडी, धम्मि-
लहिंडी) ।

तप्पभिड अ [तत्प्रभृति] तबसे, तबसे लेकर
(कप्प, णया १, १) ।

तप्पमाण देखो तप्प = तर्पय् ।

तप्पर वि [तत्पर] आसक्त (दे ५, २०) ।

तप्पुरिस पु [तत्पुरुष] व्याकरण-प्रसिद्ध
समास-विशेष (अणु) ।

तप्पेयव्व देखो तप्प = तर्पय् ।

तन्भक्तिय वि [तद्भाक्तक] उसका सेवक
(अग ५, ७) ।

तिम्म अक [स्तीम्] भोजना, आद्र होना ।

वक्क तिम्ममाण (पउम ३५, २०) ।

तिम्म सक [तिम्] १ आद्र करना । २

अक गोला होना । तिम्मइ (प्राकृ ७४) ।

सकृ. तिम्मोउ (पिड ३५०) ।

तिम्म देखो तिग्गा (हे २, ६२) ।

तिम्मिअ वि [स्तीमित] आद्र, गोला, (दे १, ३७) ।

तिया छी [स्त्रिका] छी, महिला, 'होही तुय तियवज्झा फुड जसो एत्थिमे जीय' (सुख ४, ६) ।

तियाल देखो ते-आलीस (कम्म ६, ६०) ।

तिरक्कर सक [तिरस् + कृ] तिरस्कार करना, अवधोरणा करना । कृ. तिरक्करणीअ (नाट) ।

तिरक्कार पु [तिरस्कार] तिरस्कार, अपमान, अवहेलना (प्रबो ४१, सुपा १४४) ।

तिरक्करिणी } छी [तिरस्करिणी] यवनिका,
तिरक्खरिणी } परदा (पि ३०६, अमि १८६) ।

तिरन्च देखो तिरिच्छ (प्राकृ १६, ३८) ।

तिरि } अ [तिर्यक्] तिरछा, टेढा (प्राकृ
तिरिअ } ८०, १६) ।

तिरिअ वि [तैरअ] तिर्यच का, 'तिरिया मणुया य दिव्वगा उवसग्गा तिबिहाहियासिया (सुअ १, २, २, १५) ।

तिरिअ } वि [तिर्यच] १ वक्र कुटिल,
तिरिअच } बाका (चद २, उप पु ३६६,
तिरिक्ख } सुर १३, १६३) । २ पु. पशु,
तिरिच्छ } पक्षी आदि प्राणी, देव, नारक

और मनुष्य से भिन्न योनि में उत्पन्न जन्तु (घण ४४, हे २, १४३, सुअ १, ३, १, उप पु १८६, प्रासू १७६, महा, आरा ४६, पउम २, ५६, जी २०) । ३ मर्त्यलोक, मध्य लोक (ठा ३, २) । ४ न. मध्य, बीच, (अणु, भग १४, ५), 'तिरिय असंखेजाण दीवसमुद्दण मज्झ मज्झेण जेणेव जवुदीवे दीवे' (कप्प) । °गइ छी [°गति] १ तिर्यग्-योनि (ठा ५, ३) । २ वक्र गति, टेढ़ी चाल, कुटिल गमन (चद २) । °जभग पु [°जम्भक] देवो की एक जाति (कप्प) । °जोणि छी [°योनि] पशु, पक्षी आदि का

उत्पत्ति-स्थान (महा) । °जोणिअ वि [°योनिक्] तिर्यग्-योनि में उत्पन्न (सम २, भग, जीव १, ठा ३, १) । °जोणिणी छी [°योनिक्] तिर्यग्-योनि में उत्पन्न छी जन्तु, तिर्यक् छी (पण १७—पत्र ५०३) । °दिसा °दिसि छी [°दिअ] पूर्व आदि दिशा (आवम, उवा) । °पव्वय पुं [°पर्वत] बीच में पड़ता पहाड़, मार्गविरोधक पर्वत (भग १४, ५) । °भित्ति छी [°भित्ति] बीच की भीत (आचा) । °लोग पु [°लोक] मर्त्य लोक, मध्य लोक (ठा ५, ३) । °वसइ छी [°वसति] तिर्यग्-योनि (पण १, १) । तिरिच्छ वि [तिरश्चोन] १ तिर्यग् गत टेढा गया हुआ (राज) । २ तिर्यग्-संबन्धी (उत्त २१, १६) ।

तिरिच्छ देखो तिरिअ (हे २, १४३, पड्) । तिरिच्छिय देखो तेरिच्छिय (आचा २, १५, ५) ।

तिरिच्छी छी [तिरश्ची] तिर्यक्-छी (कुमा) । तिरिड पुं [दे] एक जाति का पेड़, तिमिर वृक्ष (दे ५, ११) ।

तिरिडिअ वि [दे] १ तिमिर-युक्त । २ विचित्र (दे ५, २१) ।

तिरिडि पु [दे] उष्ण वात गरम पवन (दे ५, १२) ।

तिरिडि (मा) देखो तिरिच्छ (हे ४, २६५) । तिरीड पुन [किरीट] मुकुट, सिर का आभूषण (पण १, ४, सम १५३) ।

तिरीड पु [तिरीट] वृक्ष-विशेष (वृह २) । °पट्टय न [°पट्टक] वृक्ष-विशेष की छाल का बना हुआ कपड़ा (ठा ५, ३—पत्र ३३८) ।

तिरीडि वि [किरीटिन्] मुकुट-युक्त, मुकुट-विभूषित (उत्त ६, ६०) ।

तिरोभाव पु [तिरोभाव] लय, अन्तर्धान (विसे २६६६) ।

तिरोवइ वि [दे] वृत्ति से अन्तर्हित, बाह से व्यावृत्त (दे ५, १३) ।

तिरोहा सक [तिरस्+धा] अन्तर्हित करना, लोप करना, अदृश्य करना । तिरोहति (वर्मवि २४) ।

तिरोहिअ वि [तिरोहित] लुप्त, अन्तर्हित, अदृश्य, आच्छादित, ढका हुआ (राज) ।

तिल पु [तिल] १ स्वनाम प्रसिद्ध भक्षण-विशेष, तिल (गा ६६५, एणाया १, १, प्रासू ३४, १०८) । २ ज्योतिष्क देव-विशेष, ग्रह-विशेष (ठा २, ३) । °कुट्टी छी [°कुट्टी] तिल की बनी हुई एक भोज्य वस्तु, तिलकुट (धर्म २) । °पप्प-डिया छी [°पर्पटिका] तिल की बनी हुई एक खाद्य चीज, तिल पापड (पण १) । °पुप्फवण्ण पु [°पुप्फवर्ण] ज्योतिष्क देव-विशेष, ग्रह-विशेष (ठा २, ३) । °मल्ली छी [°मल्ली] एक खाद्य वस्तु (धर्म २) । °संगलिया छी [°संगलिका] तिल की फली (भग १५) । °सक्कुलिया छी [°शक्कुलिका] तिल की बनी हुई साधन वस्तु-विशेष, तिलसुजिया (राज) । तिलइअ वि [तिलकित] तिलक की तरह आचरित, विभूषित, 'जयजयसइतिलइओ मंगलज्झणी' (वर्मा ६) ।

तिलाग पु [तिलङ्ग] देश-विशेष, एक भारतीय दक्षिण देश, आध्र प्रात (कुमा, इक) ।

तिलागकरणी छी [तिलककरणी] १ तिलक करने की सलाई । २ गोरोचना, पीले रंग का एक सुगंधित द्रव्य, जो गाय के पित्तशय से निकलता है (सुअ १, ४, २, १०) ।

तिलग } पु [तिलक] १ वृक्ष-विशेष (सम
तिलय } १५२, औप, कप्प, एणाया १, ६, उप ६८६ टी, गा १६) । २ एक प्रतिवासु-देव राजा, भरतक्षेत्र में उत्पन्न पहला प्रति-वासुदेव (सम १५४) । ३ द्वीप-विशेष । ४ समुद्र-विशेष (राज) । ५ न पुष्प-विशेष (कुमा) । ६ टीका, ललाट में किया जाता चन्दन आदि का चिह्न (कुमा वर्मा ६) । ७ एक विद्याधर-नगर (इक) ।

तिलवट्टी छी [तिलपर्पटी] तिल की बनी हुई एक खाद्य वस्तु, तिलपट्टी (पव ४ टी) ।

तिलितिलय पुं [दे] जल-जन्तु विशेष (कप्प) ।

तिल्लिमी छीन [दे] वाद्य-विशेष (सुपा २४२, सण) । छी. °मा (सुर ३, ६८) ।

तिलुक्क न [त्रैलोक्य] स्वर्ग, मर्त्य और पाताल लोक (द २३) ।

तिलुत्तमा देखो तिलोत्तमा (सम्मत १८८) ।

तिलेल न [तिलतैल] तिल का तेल (कुमा) ।

तिलोक्क देखो तिलुक्क (सुर १, ६२) ।

तरंगि वि [तरङ्गिन्] तरंग-युक्त (गड्ड, कप्प) ।

तरंगिअ वि [तरङ्गित] तरंग-युक्त (गड्ड, से ८, ११, सुपा १५७) ।

तरंगिणी स्त्री [तरङ्गिणी] नदी, सरिता (प्रासू ६६, गड्ड, सुपा ५३८) ।

तरंगिणीनाह पुं [तरङ्गिणीनाथ] समुद्र, मागर (वज्जा १५६) ।

तरङ्ग } पुंन [तरण्ड, °क] डोगी, नोका
तरङ्गय } (मुपा २७२, ५००, मुर ८, १०६,
पुष्क १०५) ।

तरंग वि [तर, °क] तैरनेवाला, तैराक (ठा ४, ४) ।

तरच्छ पुत्री [तरक्ष] श्वापद जन्तु-विशेष,
व्याघ्र की एक जाति (परह १, १, ग्याया
१, १, स २५७) । स्त्री °च्छी (पि १२३) ।
°मल्ल पुत्री [°मल्ल] श्वापद जन्तु-विशेष
(पउम ४२, १२) ।

तरट्ट वि [दे] प्रगल्भ, धृष्ट, समर्थ, चतुर,
हानिरजवाव 'तरट्टो' (प्रासू ३८) ।

तरट्टा } स्त्री [दे] प्रगल्भ स्त्री, प्रौढा नायिका,
तरट्टा } होशियार स्त्री, 'भाणेण ट्टट्टदि चिरं
तरणी तरट्टी' (कप्प, काप्र ५६६), 'अट्टेव
आगयाओ तरणतट्टाओ एयाओ' (सुपा ४२) ।

तरण न [तरण] १ तैरना (आ १४ स
३५६, मुपा २६२) । २ जहाज, नौका
(विसे १-२७) ।

तरणि पु [तरणि] १ सूर्य, रवि (कुमा) ।
२ जहाज, नौका । ३ घृतकुमारी का पेड,
घोर्कुआर का पेड । ४ अकं वृक्ष, अकवन
वृक्ष (हे १, ३१) ।

तरतम वि [तरतम] न्यूनाधिक, 'तरतम-
जोगजुत्तेहि' (कप्प) ।

तरमाण देखो तर = तृ ।

तरल वि [तरल] चंचल, चपल (गड्ड, पाप्र,
कप्प, प्रासू ६६, सुपा २०४, मुर २, ८६) ।
तरल सक [तरलय्] चंचल करना, चलित
करना । तरलेह (गड्ड) । वृद्ध, तरलत
(सुपा ४७०) ।

तरलण न [तरलन] तरल करना, हिलाना,
'कण्णाडीणं कुरता कुरलतरलण' (कप्प) ।

तरलाविअ वि [तरलित] चंचल किया हुआ,
चलायमान किया हुआ (गड्ड, भवि) ।

तरलि वि [तरलिन्] हिलानेवाला (कप्प) ।

तरलिअ वि [तरलिन] चंचल किया हुआ
(गा ७८, उप पु ३३, साध ११५) ।

तरवट्ट पु [दे] वृक्ष-विशेष, चकवड, पमाड,
पवार (दे ५, ५, पाप्र) ।

तरस न [दे] माम (दे ५, ४) ।

तरसा अ [तरमा] शीघ्र, जल्दी (मुपा
५८२) ।

तरा स्त्री [तरा] जल्दी, शीघ्रता (पाप्र) ।

तरिअव्व देखो तर = तृ ।

तरिअव्व न [दे] उड्डप, एक तरह की छोटी
नौका (दे ५, ७) ।

तरिउ वि [तरीउ] तैरनेवाला (विसे १०२७) ।

तरिउ देखो तर = तृ ।

तरिया स्त्री [दे] दूध आदि का सार, मलाई
(प्रमा ३३) ।

तरिहि अ [तर्हि] तो, तब (मुर १, १३२,
११, ७१) ।

तरो स्त्री [तरो] नौका, डोगी (सुपा १११,
दे ६, ११०, प्रासू १४६) ।

तरु पु [तरु] वृक्ष, पेड, गाछ (जी १४,
प्रासू २६) ।

तरुण वि [तरुण] जवान, मव्य वयवाला
(पउम ५, १६८) ।

तरुणग } वि [तरुणक] बालक, किशोर
तरुणय } (सूअ १, ३, ४) । २ नवीन, नया
(मग १५) । स्त्री °णिगा, °णिया (आचा
२, १) ।

तरुणरहस पुन [दे] रोग, बीमारी (शोध
१३६) ।

तरुणिम पुत्री [तरुणिमन्] यौवन, जवानी
(कप्प) ।

तरुणी स्त्री [तरुणी] युवति स्त्री, जवान स्त्री
(गड्ड, स्वप्न ८२, महा) ।

तल सक [तल्] तलना, भुजना, तेल आदि
मे भूनना । तलेज्जा (पि ४६०) । वृद्ध, तलेत
(विपा १, ३) । हेक्क तल्लिज्जिं (स २५८) ।

तल न [दे] १ शय्या, बिछौना (दे ५, १६,
पड्) । २ पुं. आदेश, गाँव का मुखिया (दे
५, १६) ।

तल पु [तल] १ वृक्ष-विशेष, ताड का पेड
(गाया १, १ टी—पत्र ४३, पउम ५३,

७६) । २ न. स्वरूप, 'घरणिगतलसि' (कप्प),
'कासवितलमि' (कुमा) । ३ हथेली (जं १) ।
४ तला, भूमिका, 'सत्तले पासाए' (मुर
२, ८१) । ५ अवोसाग, नीचे (गाया १,
१) । ६ हाथ, हस्त (कप्प, परह २, ५) ।
७ मव्य खण्ड (ठा ८) । ८ तलवा, पानी के
नीचे का भाग या सतह (परह १, ३) । °ताल
पुन [°ताल] १ हस्त-ताल, ताली । २
वाद्य-विशेष (कप्प) । °पहार पुं [°प्रहार]
तमाचा, चपेटा (दे) । °भंगय न [°भङ्ग क]
हाथ का आभूषण-विशेष (श्रीप) । °वट्ट न
[°पट्ट] बिछौने की चद्दर (वज्जा १०४) ।
°वट्ट न [°पत्र] ताड वृक्ष का पत्ता (वज्जा
१०४) ।

तल पुन [तल] १ वाद्य-विशेष (राय ४६) ।
२ हथेली, 'अयमाउतो करतले' (सूअ २, १,
१६) । ताल वृक्ष की पत्ती (सूअ १, ५,
१२) । °वर पुं [°वर] राजा ने प्रसन्न होकर
जिसको रत्न जटित सोने का पट्टा दिया हो
वह (अणु २२) ।

तलअट सक [अभ] भ्रमण करना, घूमना,
फिरना । तलअट्टह (हे ४, १६१) ।

तलआगत्ति पु [दे] कूप, झनारा (दे ५, ८) ।

तलओडा स्त्री [दे] वनस्पति-विशेष (परह १) ।

तलग न [तलग] तलना, भर्जन (परह
१, १) ।

तलप्प अक [नप्] तपना, गरम होना ।
तलप्पइ (पिग) ।

तलप्पल पु [दे] शालि, ब्रीहि, धान (दे
५, ७) ।

तलयत्त पु [दे] १ कान का आभूषण-विशेष
(दे ५, २१, पाप्र) । २ वराग, उत्तमाग
(दे ५, २१) ।

तलवर पु [दे तलवर] नगर-रक्षक, कोतवाल
(गाया १, १, सुपा ३, ७३, श्रीप, महा,
ठा ६, कप्प, राय, अणु, उवा) ।

तलविट } न [तालवृत्त] व्यजन, पंखा (हे
तलवैट } १, ६७, प्राप्र) ।
तलवौट }

तलसारिअ वि [दे] १ गालित । २ मुग्ध,
मूर्ख (दे ५, ६) ।

तुंगिया स्त्री [तुङ्गिका] नगरी-विशेष (भग) ।
तुंगियायण न [तुङ्गिकायन] एक गोत्र का नाम (कप्प) ।

तुगी स्त्री [दे] १ रात्रि, रात (दे ५, १४) ।
१ आधुव-विशेष, 'असिपरसुकुंततुगीसघट्ट—' (काल) ।

तुगीय पु [तुङ्गीय] पर्वत-विशेष (सुर १, २००) ।

तुड स्त्री [तुण्ड] १ मुख, मुँह (गा ४०२) ।
२ अग्र-भाग (निच १) । स्त्री 'डी', 'कि कोवि जीनिग्लथी कडुयड अहिस्म तुनीए' (सुपा ३२२) ।

तुडीर न [दे] मधुर विम्बो-फल (दे ५, १४) ।

तुड्अ पुं [दे] जोरों घट, पुराना घडा (दे ५, १५) ।

तुतुखुडिअ वि [दे] त्वरा-युक्त (दे ५, १६) ।

तुद न [तुन्द] उदर, पेट (दे ५, १४; उप ७२८ टी) ।

तुदिल } वि [तुन्दिल] बडा पेटवाला, तोदैल
तुदिल } (कप्प, पि ५६५, उत्त ७) ।

तुव न [तुम्ब] तुम्बी, अलावू, लौकी (पडम २६, ३८; ओष ३८, कुप्र १३६) । २ गाडी की नाभि 'न हि तु वम्मि विण्णहे अरया साहारया हुति' (आवम) । ३ 'जाताधर्मकया' सूत्र का एक अव्ययन (सम) । 'वण न [वण] सनिवेश-विशेष, एक गाव का नाम (सार्ध २५) । 'वीण वि [वीण] वीणा-विशेष को बजानेवाला (जीव ३) । 'वीणिय वि [वीणिक्] वही पूर्वोक्त अर्थ (श्रौप, परह २, ४, राया १, १) ।

तुव न [तुम्ब] पहिए के बीच का गोल अव-यव (एदि ४३) । 'वीणा स्त्री [वीणा] वाद्य-विशेष (राय ४६) ।

तुवरु देखो तुंवरु (इक) ।

तुवा स्त्री [तुम्बा] लोकपाल देवों की एक अभ्यन्तर परिषद् (ठा ३, २) ।

तुंवाग पुन [तुम्बक] कद्दू, लौकी (दस ५, १ ७०) ।

तुविगी स्त्री [तुम्बिनी] बल्ली-विशेष (दे ४, ४२७; राज) ।

तुंविही स्त्री [दे] १ मधु पटल, मधपुडा ।
२ उद्वल, ऊपल (दे ५, २३) ।

तुवी स्त्री [तुम्बी] १ तुम्बी, अलावू, लौकी, कद्दू (दे ५, १४) । २ जैन साधुओं का एक पात्र, तपरनी (मुपा ६४१) ।

तुंवरु पु [तुन्वरु] १ वृक्ष-विशेष, टिंवरु का पेड (दे ४, ३) । २ गन्धर्व देवों की एक जाति (परण १, सुपा २६४) । ३ भगवान् मुमतिनाथ का शामनाधिष्ठायक देव (संति ७) । ४ शक्रेन्द्र के गन्धर्व-सैन्य का अधिपति देव-विशेष (ठा ७) ।

तुक्खार पु [दे] एक उत्तम जाति का अश्व या घोडा, 'अन्न च तस्य पत्ता तुक्खारतुरगमा बहुविहीया' (सुर ११, ४६; भवि) । देखो तोक्खार ।

तुच्छ पुत्री [तुच्छा] रिक्ता तिथि, चतुर्थी, नवमी तथा चतुर्दशी तिथि (सुज्ज १०, १५) ।

तुच्छ वि [दे] अवशुष्क, सूखा, नीरस (दे ५, १४) ।

तुच्छ वि [तुच्छ] १ हलका, जघन्य, निष्कृष्ट, होन (राया १, ५, प्रासू ६६) । २ अल्प, थोडा (भग ६, ३३) । ३ शून्य, रिक्त, खाली (आचा) । ४ असार, नि सार (भग १८, ३) । ५ अपूर्ण (ठा ४, ४) ।

तुच्छइअ } वि [दे] रज्जित, अनुराग-प्राप्त
तुच्छइअ } (दे ५, १५) ।

तुच्छिम पुत्री [तुच्छिव] तुच्छता (वज्जा १५६) ।

तुज्ज न [तूर्य] वाद्य, वाजा (सुज १०) ।

तुट्ट अक [तुट्ट, तुड] १ दृटना, छिन्न होना, खरिडत होना । २ छूटना, घटना, बीतना । तुट्टइ (महा, सण, हे ४, ११६), 'अणवरयं दंतस्सवि तुट्टंति न सायरे रयणाइ' (वज्जा १५६) । वक्क तुट्टत (सण) ।

तुट्ट वि [तुट्टि] दृष्टा हुआ, छिन्न, खरिडत (स ७१८, सूक्त १७, दे १, ६२) ।

तुट्टण न [त्रोटन] विच्छेद, प्रयत्नकरण (सूत्र १, १, १; वज्जा ११६) ।

तुट्टिअ वि [त्रुटित, तुडित] छिन्न, खरिडत (कुमा) ।

तुट्टिर वि [त्रुटिट्] दृष्टनेवाला (कुमा, सण) ।

तुट्ट वि [तुट्ट] तोप-प्राप्त, वृक्ष, सतुष्ट वृक्ष (सुर ३, ४१; उवा) ।

तुट्टि स्त्री [तुट्टि] १ खुशी, आनन्द, संतोष (स २००, सुर ३, २५, सुपा २४६, निर १, १) । २ कृपा, मेहरबानी (कुप्र १) ।

तुड अक [तुड्] दृष्टना, अलग होना । तुडइ (दे ४, ११६) ।

तुडि स्त्री [त्रुटि] १ न्यूनता, कमी । २ दोष, दूषण (हे ४, ३६०) । ३ सशय, सदेह (सुर ३, १६१) ।

तुडिअ न [तुट्टिअ] अन्त पुर, रत्नवास, 'तुट्टिकमन्न पुरमपदिश्यते' (जौवामि ० चू०) ।

तुडिअ न [तुट्टिक] अन्त पुर, जनानखाना (मुज १८—पत्र २६५) ।

तुडिअ वि [त्रुटिन] दृष्टा हुआ, विच्छिन्न (अचु ३३, दे १, १५६, सुपा ८५) ।

तुडिअ न [दे, त्रुटित] १ वाद्य, वादित्त, वाजा (श्रौप, राय, ज ३, परह २, ५) । २ बाहु-रक्षक, हाथ का आभरण-विशेष (श्रौप, ठा ८, पडम ८२, १०४, राय) । ३ सख्या-विशेष; 'तुडिअंग' को चौरासी लाख से गुणने पर जो संख्या लब्ध हो वह (इक, ठा २, ४) । ४ सांघा, फटे हुए वस्त्र आदि में लगायी जाती पट्टी, पेवन (निच २) ।

तुडिअग न [दे, त्रुटिताङ्ग] १ सख्या-विशेष, 'पूर्व' को चौरासी लाख से गुणने पर जो संख्या लब्ध हो वह (इक, ठा २, ४) । २ पुं वाद्य देनेवाला कल्प-वृक्ष (ठा १०; सम १७; पडम १०२, १२३) ।

तुडिआ स्त्री [तुडिता] लोकपाल देवों के अग्र महिषियों की मध्यम परिषद् (ठा ३, २) ।

तुडिआ स्त्री [दे, तुट्टिका] बाहु-रक्षिका, हाथ का आभरण-विशेष (परह १, ४; राया १, १, टी—पत्र ४३) ।

तुणय पुं [दे] वाद्य-विशेष (दे ५, १६) ।

तुण्णग देखो तुण्णग (राज) ।

तुण्णण न [तुन्नन] फटे हुए वस्त्र का सन्धान (उप पु ४१३) ।

तुण्णग पुं [तुन्नवाय] वस्त्र को साँवने-तुण्णाय } वाला, रफू करनेवाला, शिल्पी (एदि, उप पु २१०, महा) ।

१, जी २)। २ एक स्थान से दूसरे स्थान में जाने-आने की शक्तिवाला प्राणी (निचू १२)। °काइय पुं [°कायिक] जंगम प्राणी, द्वीन्द्रियादि जीव (पण्ह १, १)। °काय पुं [°काय] १ अस समूह (ठा २, १)। २ जगम प्राणी (आचा)। °णाम, °नाम न [°नामन्] कर्म-विशेष, जिसके प्रभाव से जीव असकाय में उत्पन्न होता है (कम्म १; सम ६७)। °रेणु पुं [°रेणु] परिमाण-विशेष, बत्तीस हजार सात सौ अड़सठ परमाणुओं का एक परिमाण (अणु, पव २५४)। °वाइया ओ [°पादिका] श्रोत्रिय जन्तु-विशेष (जीव)।

तसण न [त्रसन] १ स्पन्दन, चलन, हिलन (राज)। २ पलायन (सूअ १, ७)।

तसनाडी ओ [त्रसनाडी] अस जीवों के रहने का प्रदेश, जो ऊपर-नीचे मिलाकर चौदह रज्जु परिमित है (पव १४३)।

तसर देखो टसर (कप्पू)।

तसिअ वि [दे] शुष्क, सूखा (दे ५, २)।

तसिअ वि [वृषित] तृषातुर, पिपासित, प्यासा हुआ (रयण ८४)।

तसिअ वि [त्रस] भीत, डरा हुआ (जीव ३, महा)।

तसियच्च देखो तस = तसु।

तसेयर वि [त्रसेतर] एकेन्द्रिय जीव, स्थावर प्राणी (सुपा १६८)।

तह अ [तथा] १ उसी तरह (कुमा, प्रासू १६, स्वप्न १०)। २ और, तथा (हे १, ६७)। ३ पाद-भूति में प्रयुक्त किया जाता अव्यय (निचू १)। °कार पु [°कार] 'तथा' शब्द उच्चारण (उत्त २६)। °णाण वि [°ज्ञान] प्रश्न के उत्तर को जाननेवाला (ठा ६)। २ न सत्य ज्ञान (ठा १०)। °त्ति अ [इति] स्वीकार-द्योतक अव्यय—वैसा ही (जैसा आप फरमाते हैं) (णाय १, १)। °य अ [°च] १ उक्त अर्थ की दृढ़ता-सूचक अव्यय। २ समुच्चय-सूचक अव्यय (पंचा २)। °वि अ [°पि] तो भी (गउठ)। °विह वि [°विध] उस प्रकार का (सुपा ४५६)। देखो तहा।

तह वि [तथ्य] तथ्य, सत्य, सच्चा (सूअ १, १३)।

तह पुं [तथ] आज्ञाकारक, दास, नौकर (ठा ४, २—पत्र २१३)।

तह न [तथ्य] १ स्वभाव, स्वरूप तहीय } (सूअनि १२२)। २ सत्यवचन (सूअ १, १४, २१)।

तह देखो तह = तथा (औप)।

तहरी ओ [दे] पङ्कवाली सुरा (दे ५, २)।

तहल्लिआ ओ [दे] गो-वाट, गौओं का बाड़ा, गोशाला (दे ५, ८)।

तहा देखो तह = तथा (कुमा, गउठ, आचा, सुर ३, २७)। °गय पु [°गत] १ मुक्त आत्मा। २ सर्वज्ञ (आचा)। °भूय वि [°भूत] उस प्रकार का (पउम २२, ६५)।

°रूव वि [°रूप] उस प्रकार का (भग १५)। °वि वि [°विन्] १ निपुण, चतुर २ पु सर्वज्ञ (सूअ १, ४, १)। °हि अ [°हि] वह इस प्रकार (उप ६८६ टी)।

तहि देखो तह = तथा (गा ८७८, उत्त ६)।

तहि अ [तत्र] वहाँ, उसमें (गा २०६, तहि } प्राप्र, गा २३४, ऊरु १०५)।

तहिय वि [तथ्य] सत्य, सच्चा, वास्तविक (णाय १, १२)।

तहिय अ [तत्र] वहाँ, उसमें (विसे २७८)।

तहेय अ [तथैव] उसी तरह, उसी प्रकार तहेव } (कुमा, पड)।

ता अ [तद्] उससे, उस कारण से (हे ४, २७८, गा ४६, ६७, उव)।

ता देखो ताव = तावत् (हे १, २७१, गा १४१, २०१)।

ता अ [तदा] तब, उस समय (रंभा, कुमा, सण)।

ता अ [तहि] तो, तब (रंभा, कुमा)।

ता ओ [ता] लक्ष्मी (सुर १६, ४८)।

तां स [तद्] वह। °गंध पु [°गन्ध] १ उसका गन्ध। २ उसके गन्ध के समान गन्ध (पण १७)। °फास पुं [°स्पर्श] १ उसका स्पर्श। २ वैसा स्पर्श (पण १७)।

°रस पुं [°रस] १ वह स्पर्श। २ वैसा स्पर्श (पण १७)। °रूव न [°रूप] १ वह रूप। २ वैसा रूप (पण १७—पत्र ५२२)।

ताअ देखो ताव = ताप (गा ७६७, ८१४, हका ५०)।

ताअ पुं [तात] १ तात, पिता, बाप (सुर १, १२३, उत्त १४)। २ पुत्र, बत्स (सूअ १, ३, २)।

ताअ सक [त्रै] रक्षण करना। कृ तायव्व (आ १२)।

ताअप्प न [तादात्म्य] तद्रूपता, अभेद, अभिन्नता (प्राक २४)।

ताइ वि [त्यागिन्] त्याग करनेवाला (गा २३०)।

ताइ वि [तायिन्] रक्षक, परिपालक (उत्त ८)।

ताइ वि [तापिन्] ताप-युक्त (सूअ १, १५)।

ताइ वि [त्रायिन्] रक्षक, रक्षण करनेवाला (उत्त २१, २२)।

ताइ वि [तायिन्] उपकारी (सूअ १, २, २, १७)।

ताइ पुं [त्रायिन्] मुनि, साधु (दसनि २, ६)।

ताइअ वि [त्रात] रक्षित (उव)।

नाउ (अप) देखो ताव = तावत् (कुमा)।

ताठा (चूपै) देखो दाढा (हे ४, ३२५)।

ताड सक [ताडय्] १ ताडन करना, पीटना। २ प्रेरणा करना, आघात करना।

३ गुणाकार करना। ताडइ (हे ४, २७)। भवि ताडइस्सं (पि २४०)। वट्ट. ताडित्त (काल)। कवक. ताडिजमाण, ताडीअत, ताडीअमाण (सुपा २६, पि २४०, अमि १५१) हेकू ताडिउ (कप्पू)। क. ताडिअ (उत्त १६)।

ताड पु [ताल] ताड का पेड़ (स २५६)।

ताडंके पुं [ताडक] कान का आभूषण-विशेष, कुण्डल (दे ६, ६३, कप्पू; कुमा)।

ताडण न [ताडन] १ ताडन, पीटना (उप ६८६ टी, गा ५४६)। २ प्रेरणा, आघात (से १२, ८३)।

ताडाविय वि [ताडित] पिटवाया गया (सुपा २८८)।

ताडिअ देखो ताड = ताडय्।

ताडिअ वि [ताडित] १ जिसका ताडन किया गया हो वह, पीटा हुआ (पाम्म)। २

तुलगा स्त्री [दे] यहच्छा, स्वेरिता, स्वेच्छा, अपनी मशा (विक्र ३५) ।

तुलण न [तुलन] तौलना, तोलन (कप्पू, वजा १५७) ।

तुलणा स्त्री [तुलना] तौलना, तोलन (उप पृ २७८, स ६६२) ।

तुलणा स्त्री [तुलना] तौल, वजन (धर्मवि ६) ।

तुलय वि [तोलक] तौलनेवाला (मुपा १६७) ।

तुलसिआ स्त्री [तुलसिका] नीचे देखो (कुमा) ।

तुलसी स्त्री [दे तुलसी] लता-विशेष, तुलसी (दे ५, १४, परण १, ठा ८, पात्र) ।

तुला स्त्री [तुला] १ राशि-विशेष (मुपा ३६) । २ तराजू, तौलने का साधन (मुपा ३६०, गा १६१) । ३ उपमा, सादृश्य (सूत्र २, २) । ०सम वि [०सम] राग द्वेपसे रहित, मध्यस्थ (बृह ६) ।

तुला स्त्री [तुला] १०५ या ५०० पल का एक नाण (अणु १५४) ।

तुलिअ वि [तुलित] १ उठाया हुआ, ऊँचा किया हुआ (से ६, २०) । २ तौला हुआ (पात्र) । गुना हुआ (राज) ।

तुलेअव्व देखो तुल ।

तुल्ल वि [तुल्य] समान, सरीखा (भग, प्रासू १२, १४६) ।

तुवट्ट देखो तुयट्ट । तुवट्टे (वव ४) ।

तुवट्ट पु [त्वग्वर्त] शयन, लेटना (वव ४) ।

तुवर अक [त्वर] त्वरा होना, शीघ्र होना, तेज होना । तुवरइ (हे ४, १७०) । वक्क तुवरत (हे ४, १७०) । प्रयो वक्क तुवराअत (नाट—मालती ५०) ।

तुवर पुन [तुवर] १ रस-विशेष, कषाय रस (दे ५, १६) । २ वि कषाय रसवाला, कसैला (से ८, ५५) ।

तुवरा देखो तुरा (नाट—महावीर २७) ।

तुवरी स्त्री [तुवरी] अन्न-विशेष, अरहर (आ १८, गा ३५८) ।

तुस पु [तुष] १ कोदव—कोदव या कोदो आदि तुच्छ धान्य (ठा ८) । २ धान्य का छिलका, भूसी (दे २, ३६) ।

तुसणीअ वि [तूष्णीक] मौनी (अज्झ १७६) ।

तुसली स्त्री [दे] धान्य-विशेष, 'त तत्थवि तो तुसलि वावइ सो किणिवि घरवीयं' (मुपा ५४५), 'देवगिहे जतीए तुज्झ तुसली अणुएणाया' (मुपा १३ टि) ।

तुसार न [तुपार] हिम, वर्षा, पाला (पात्र) । ०कर पु [०कर] चन्द्र, चन्द्रमा (मुपा ३३) ।

तुसारअर देखो तुसार-कर (त्रि १०३) ।

तुसिण देखो तुमणीअ (सवोष १७) ।

तुसिणिय वि [तूष्णीक] मौनी, चुप, तुसिणीय वचन-रहित (गाया १, १—पत्र २८, ठा ३, ३) ।

तुसिणी अ [तूष्णीम्] मौन, चुप्पी, 'तइआ तुसिणीए भुजए पढमो' (पिड १२२, ३१३) ।

तुसिय पु [तुपित] लोकात्मिक देवो की एक जाति (गाया १, ८, सम ८५) ।

तुसेअजभ न [दे] दाढ़, लकड़ी, काष्ठ (दे ५, १६) ।

तुसोदग न [तुपोदक] ब्रीहि आदि का तुसोदय वीत-जल—घोवन (राज, कप्प) ।

तुस्स देखो तूस = तुप् । तुस्सइ (विमे ६३२) ।

तुहं स [त्वनं] तुम । ०तणय वि [०सवन्धिन्] तुम्हारा, तुमसे संबन्ध रखनेवाला (मुपा ५५३) ।

तुहग पु [तुहग] कन्द की एक जाति (उत्त ३६, ६६) ।

तुहार (अप) वि [त्वदीय] तुम्हारा (हे ४, ४३४) ।

तुहिण न [तुहिन] हिम, तुपार, वर्षा (पात्र) । ०इरि पु [०गिरि] हिमाचल पर्वत (गजड) । ०कर पु [०कर] चन्द्रमा (कप्पू) । ०गिरि देखो ०इरि (मुपा ६५८) । ०लय पु [०लय] हिमालय पर्वत (मुपा ८८) ।

तुहिणायल पु [तुहिनाचल] हिमालय पर्वत (धर्मवि २४) ।

तूअ पु [दे] ईश का काम करनेवाला (दे ५, १६) ।

तूण पुन [तूण] इपुधि, भाया, तरकस, तूणीर (हे १, १२५, षड्, कुमा) ।

तूणइल्ल पुं [तूणावत्] तूणा नामक वाद्य वजानेवाला (परह २, ४, श्रीप, कप्प) ।

तूणय पुं [तूणक] वाद्य-विशेष (अचा २, ११, १) ।

तूणा स्त्री [तूणा] १ वाद्य-विशेष (राय, तूणिं ० अणु) । २ इपुधि, भाया (ज ३, पि १२७) ।

तूयरी स्त्री [तूयरी] रहर, अरहर (पिड ६२३) । तूर देखो तुरव । तूरइ (हे ४, १७१, पड्) । वक्क, तूरत, तूरत, तूरमाण, तूरमाण (हे ४, १७१, मुपा २६१, पड्) ।

तूर पुन [तूर्य] वाद्य, वाजा, तुहो (हे २, ६३, पड्, प्राप्र) । ०वइ पु [०पति] नटों का नटों का मुखिया (बृह १) ।

तूरत तूरमाण देखो तूर = तुरव ।

तूरविअ वि [त्वरत] जिसको शीघ्रता कराई गई हो वह (मे १२, ८३) ।

तूरिय पुं [तूरियक] वाद्य वजानेवाला, वज-निया (स ७०५) ।

तूरी स्त्री [दे] एक प्रकार की मिट्टी (जी ४) ।

तूरत तूरमाण देखो तूर = तुरव ।

तूल न [तूल] रुई, रुआ, वीज-रहित कपास (श्रीप, पात्र भवि) ।

तूलिअ न. नीचे देखो, 'नणु विणासिज्जइ महग्घिय तूलिय गडुयमाइय' (महा) ।

तूलिआ स्त्री [तूलिका] १ रुई से भरा मोटा चिल्लौना, गद्दा, तोराक (दे ५, २२) । २ तस-वीर—चित्र बनाने की कलम (गाया १, ८) ।

तूलिणी स्त्री [दे] वृक्ष-विशेष, शालमली का पेड (दे ५, १७) ।

तूलिह वि [तूलिकावन्] तसवीर बनाने की कलमवाला, कूचिका-युक्त (गजड) ।

तूली स्त्री [तूली] देखो तूलिआ (सुर २, ८२, पउम ३५, २४, मुपा २६२) ।

तूवर देखो तुवर (विपा १, १—पत्र १६) ।

तूस अक [तुप्] खुश होना । तूसइ, तूणए (हे ४, २३६, सलि ३६, पड्) । कू. तूसियव्व (परह २, ५) ।

तूह देखो तिथ (हे १, १०४, २, ७२, कुमा, दे ५, १६) ।

ताल की तरह लम्बी जाँघवाला (गाया १, ८) । उक्तय पुं [°ध्वज] १ बलदेव (आवम) । २ नृप-विशेष (दंस १) । ३ शत्रुघ्नय पहाड (ती १) । °पलव पुं [°प्रलम्ब] गोशालक का एक उपासक (भा ८, ५) । °पिसाय पुं [°पिशाच] दीर्घ-काय राक्षस (पण १) । °पुड देखो °उड (भा १२) । °यर पु [°चर] एक मनुष्य-जाति, चारण (ओघ ७६६) । °वित, °वित, °वेट, °वोट न [°वृन्त] व्यजन, पखा (पि ५३, नाट—वेणी १०४, हे १, ६७, प्राप्र) । °सनुड पुं [°संपुट] ताल के पत्रों का सपुट, ताल-पत्र संचय (सूत्र १, ५, १) । °सम वि [°सम] ताल के अनुमार स्वर, स्वर-विशेष (ठा ७) ।

तालक पुं [ताडङ्क] १ कुरङ्गल, कान का आभूषण-विशेष । २ छन्द-विशेष (पिग) ।

तालकि पुत्री [तालकिन्] छन्द-विशेष ।

ताली °णी (पिग) ।

तालग न [तालक] ताला, द्वार बन्द करने का यन्त्र (उप ३३६ टी) ।

तालण देखो ताडण (औप) ।

तालणा स्त्री [ताडना] चपेटा आदि का प्रहार (पणह २, १, औप) ।

तालफली स्त्री [दे] दासी, नौकरानी (दे ५, १) ।

तालय देखो ताला (सुपा ४१४, कुप्र २५२) ।

तालसम न [तालसम] गेय काव्य का एक भेद (दसन २, २३) ।

तालहल पु [दे] शालि, श्रीहि (दे ५, ७) ।

ताला अ [तदा] उस समय, 'ताला जाअति गुणा, जाला ते सहिअएहि धिप्पति' (हे ३, ६५, काप्र ५२१) ।

ताला स्त्री [दे] लाजा, खोई, धान का लावा (दे ५, १०) ।

तालाचर पुं [तालचर] ताल (वाद्य) बजाने-वाला (निष् १५) ।

तालाचर } पु [तालाचर] १ प्रेक्षक-विशेष, तालायर } ताल देनेवाला प्रेक्षक (गाया १, १) । १ नट, नर्तक आदि मनुष्य-जाति (बृह ३) ।

तालिय वि [ताडित] आहत, पीटा हुआ (गाया १, ५) ।

नालिअट मक [भ्रमय] घुमाना, फिराना । तालिअटइ (हे ४, ३०) ।

तालियअट न [तालवृन्त] व्यजन, पखा (स ३८८) ।

नालिअंटर वि [भ्रमयितृ] घुमानेवाला (कुमा) ।

तालियजत देखो ताल = ताडय ।

तालिस देखो तारिस (उत्त ५, ३१) ।

ताली स्त्री [ताली] १ वृक्ष-विशेष (चार ६३) । = छन्द-विशेष (पिग) । °पत्त न [°पत्र] ताल-वृक्ष के पत्ता का बना हुआ पखा (चार ६३) ।

तालु } न [तालु, क] तालु, मुँह के अन्दर तालुअ } का ऊपरी भाग, तलुआ (सत्त ४६, गाया १, १६) ।

तालुग्घाडणी स्त्री [तालोद्घाटनी] विद्या-विशेष, ताला खोलने की विद्या (वमु) ।

तालुर पुं [दे] १ फेन, फीण । २ कपित्थ वृक्ष, कैय का पेड (दे ५, २१) । ३ पानी का आवर्त (दे ५, २१, गा ३७, पाप्र) । ४ पु पुष्प का मत्व (विक्र ३२) ।

तालेवि देखो ताल = तालय ।

ताव सक [तापय] १ तपाना, गरम करना । २ सताप करना, दुःख उपजाना । तार्वेति (गा ८५०) । कर्म. ताविज्जति (गा ७) । कृ. तावणिज्ज (भग १५) ।

ताव पुं [ताप] १ गरमी, ताप (सुपा ३८६, कप्पु) । २ सताप, दुःख (आव ४) । ३ सूर्य, रवि । °दिसा स्त्री [°दिश] सूर्य-तापित दिशा (राज) ।

ताव अ [तावत्] इन अर्थों का सूचक अव्यय । १ तवतक (पउम ६८, ५०) । २ प्रस्तुत अर्थ (आवम) । ३ अवधारण, निश्चय । ४ अवधि, हृद । ५ पक्षान्तर । ६ प्रशंसा । ७ वाक्य-श्रुता । ८ मान । ९ साकल्य, संपूर्णता । १० तव, उस समय (हे १, ११) ।

तावअ वि [तावरु] त्वदीय, तुम्हारा (अञ्चु ५३) ।

तावइअ वि [तावत्] उतना (सम १४४, भग) ।

ताव देखो ताव = तावत् (भग) ।

ताव } (अप) देखो ताव = तावत् तावहि } (कुमा) ।

तावण पुं [तापन] चौथी नरकभूमि का एक नरकस्थान (देवेन्द्र ८) । २ वि तपानेवाला (त्रि ६७) ।

तावण न [तापन] १ गरम करना, तपाना (निष् १) । २ पु. इक्ष्वाकु वंश का एक राजा (पउम ५, ५) ।

तावणिज्ज देखो ताव = तापय ।

तावत्तीस } देखो तावत्तीसय (औप, तावत्तीसय } पि ४४५, ४३८, काल) । तावत्तीसय } तावत्तीसा देखो तावत्तीसा (पि ४३८) ।

तावम पु [तापस] १ तपस्वी, योगी, सन्यासि-विशेष (औप) । २ एक जैनमुनि (कप्प) । °गेह न [°गेह] तापसों का मठ (पाप्र) ।

तावमा स्त्री [तापसा] जैन मुनियों की एक शाखा (कप्प) ।

तावसी स्त्री [तापसी] तपस्विनी, योगिनी (गउड) ।

ताविअ वि [तापित] तपाया हुआ, गरम किया हुआ (गा ५३, विपा १, ३, सुर ३, २२०) ।

ताविआ स्त्री [तापिका] तवा, पूआ आदि पकाने का पात्र (दे २, ५६) । २ कड़ाही, छोटा कड़ाह (आवम) ।

ताविच्छ पुंन [तापिच्छ] वृक्ष-विशेष, तमाल का पेड (कुमा, दे १, ३७, सुपा ५८) ।

तावी स्त्री [तापी] नदी-विशेष (पउम ३५, १, गा २३६) ।

तास पु [त्रास] १ भय, डर (उप ४ ३५) । २ उद्वेग, सताप (पणह १, १) ।

तासण वि [त्रासन] त्रास उपजानेवाला (पणह १, १) ।

तासि वि [त्रासिन्] १ त्रास-युक्त, त्रस्त । २ त्रास-जनक (ठा ४, २, कप्पु) ।

तासिअ वि [त्रासित] जिसको त्रास उप-जाया गया हो वह (भवि) ।

तादे अ [तदा] उस समय, तव (हे ३, ६५) ।

ति अ [त्रि] तीन बार (ओघ ५४२) ।

तेउ देखो तेअय (पव २३१) ।

तेहुअ न [दे] वृक्ष-विशेष, टीवरू का पेड (दे ५, १७) ।

तेहु पु [तिन्दुक] १ वृक्ष-विशेष, तेहु
तेहुअ का पेड (पण १, ठा ८, पउम
तेहुग ४२, ७) । २ गेंद, कन्दुक (पउम
१५, १३) ।

तेहुमय पु [दे] कन्दुक, गेंद (गाया १, ८) ।
तेवरु पु [दे] सुद्र कीट-विशेष, श्रीन्द्रिय जन्तु
की एक जाति (जीव १) ।

तेगिन्ख देखो तेइच्छ (सुर १२, २११) ।

तेगिन्ख वि [चिकित्सक] १ चिकित्सा
करनेवाला । २ पु. वैद्य, हकीम (उप ५६४) ।

तेगिच्छा देखो तेइच्छा (सुर १२, २११) ।

तेगिच्छायण देखो तिगिच्छायण (राज) ।

तेगिच्छि देखो तिगिच्छि (राज) ।

तेगिच्छिय वि [चैकित्सक] १ चिकित्सा
करनेवाला । २ पु. वैद्य, हकीम । ३ न.
चिकित्सा-कर्म, प्रतीकार-करण । ४ साला छो
[शाळा] दवाखाना, चिकित्सालय (गाया
१, १३—पत्र १७६) ।

तेचत्तारी देखो ते-आलीस (प्राक् ३१) ।

तेज देखो तेज = तेज्य । तेजई, (प्राक् ७५) ।

तेज पु [तेज] देश-विशेष (सम्मत् २१६) ।

तेजसि देखो तअसि (पि ७४) ।

तेजपाल पु [तेजपाल] गुजरात के राजा
वीरधवल का एक यशस्वी मंत्री (ती २) ।

तेजलपुर न [तेजलपुर] गिरनार पर्वत के
पास मंत्री तेजपाल का बसाया हुआ एक
नगर (ती २) ।

तेजसि देखो तेअसि (वव १) ।

तेज्ज (अप) देखो चय = त्यज् । तेज्ज (पिग) ।
सकृ. तेज्जिअ (पिग) ।

तेज्जिअ (अप) वि [त्यक्त] छोटा हुमा
(पिग) ।

तेड सक [दे] बुलाना । तेडति (सम्मत्
१६१) ।

तेहु पु [दे] १ शलम, अन्न-नाशक कीट,
टिड्डी । २ पिशाच, राक्षस (दे ५, २३) ।

तेण अ [तेन] १ लक्षण-सूचक अर्थय, 'अम-
रुअ तेण कमलवण' (हे २, १८३, कुमा) ।
२ उस तरफ (भग) ।

तेण पु [स्तेन] चोर, तस्कर (श्रीष
तेणग ११, कस, गच्छ ३, श्रीष ४०२) ।
तेणय १ अपओग पु [प्रयोग] १ चोर को

चोरी करने के लिए प्रेरणा करना । २ चोरी
के साधनों का दान या विक्रय (वमं २) ।

तेणिअ न [स्तैन्य] चोरी, अदत्त वस्तु
तेणिकक का ग्रहण (आ १४, श्रीष ५६६;
पण १, ३) ।

तेणिस वि [तैनिश] तिनिशकृष-सक्वो, चेंत
का (भग ७, ६) ।

तेणो छो [स्तेना] चोर छो (सम्मत् १६१) ।

तेण न [स्तैन्य] चोरी, पर द्रव्य का अपहरण
(निचू १) ।

तेण्हाइअ वि [तृणित] तृण-युक्त, प्यासा
(से १३, ३६) ।

तेतलि पुं [तेतलिन्] १ धरणेन्द्र के गन्धर्व-
सेना का नायक (इक) । २ देखो तेअलि
(गाया १, १४—पत्र १६०) ।

तेतिल देखो तीइल (ज ७) ।

तेत्तिअ वि [तावन्] उतना (प्राप्र, गउड,
गा ७१, कुमा) ।

तेत्तिक (शौ) देखो तेत्तिअ (प्राक् ६५) ।

तेत्तिर देखो तित्तिर (जीव १) ।

तेत्तिल वि [तावत्] उतना (हे २, १५७,
कुमा) ।

तेत्तिल न [तैतिल] ज्योतिष-प्रसिद्ध करण-
विशेष (सुप्रनि ११) ।

तेत्तुल } (अप) ऊपर देखो (हे ४, ४०७,
तेत्तुल } कुमा, हे ४, ४३५ टि) ।

तेत्थु (अप) देखो तत्थ = तथ (हे ४, ४०४,
कुमा) ।

तेइह देखो तेत्तिल (हे २, १५७, प्राप्र, पड्,
कुमा) ।

तेन्न देखो तेण (कस) ।

तेम (अप) देखो तह = तथा (पिग) ।

तेमासिअ वि [त्रैमासिक] १ तीन महीने में
होनेवाला (भग) । २ तीन मास-संबन्धी (सुर
६, २११, १४, २२८) ।

तेम्व देखो तेम (हे ४, ४१८) ।

तेर वि [त्रयोदश] तेरहवाँ (कम्म ६, १६) ।

तेर (अप) वि [त्वदीय] तेरा, तुम्हारा (प्राक्
१२०) ।

तेर } वि व [त्रयोदशन्] तेरह, दस
तेरस } और तीन (आ ४४, व २१, कम्म
२, २६, ३३) ।

तेरच्छ देखो तिरिच्छ = तिर्यच् (प्राक् १६) ।

तेरस देखो तेरसम (कम्म ६, १६, पव ४६) ।

तेरसम वि [त्रयोदश] तेरहवाँ (सम २५,
गाया १, १—पत्र ७२) ।

तेरसया छो [दे] जैन मुनिओ की एक शाखा
(कप्प) ।

तेरसी छो [त्रयोदशी] १ तेरहवाँ । २ तिर्य-
विशेष, तेरस (सम २६, सुर ३, १०५) ।

तेरसुत्तरसय वि [त्रयोदशोत्तरशततम]
एक सौ तेरहवाँ, ११३ वाँ (पउम ११३,
७२) ।

तेरह देखो तेरस (हे १, १६५, प्राप्र) ।

तेरासि पुं [त्रैराशिक] नपुंसक (पिड ५७३) ।

तेरासिअ वि [त्रैराशिक] १ मत विशेष का
अनुयायी, त्रैराशिक मत—जीव, अजीव और
नोजीव इन तीन राशियों को मानने वाला
(श्रीप; ठा ७) । २ न. मत विशेष (सम
४०, विमे २४५१, ठा ७) ।

तेरिच्छ देखो तिरिच्छ = तिर्यच् (पव ३८) ।

तेरिच्छ देखो तिरिच्छ = तिरिखीन; 'दिव्व
व मणुस्स वा तेरिच्छं वा सरागहिमएण'
(आप २१) ।

तेरिच्छ न [तिर्यकृत्य] तिर्यचपन, पशु-
पक्षिपन (उप १०३१ टी) ।

तेरिच्छिअ वि [तेरिच्छिक] तिर्यक्-संबन्धी
(श्रीष २६६, भग) ।

तेल न [तैल] १ गोत्र-विशेष, जो माण्डव्य
गोत्र की एक शाखा है (ठा ७) । २ तिन
का विकार, तेल (सक्षि १७) ।

तेलग पु. व [तैलङ्ग] १ देश-विशेष । २
पुत्री. देश-विशेष का निवासी मनुष्य, तैलगी
(पिग) ।

तेलाडी छो [तैलाटी] कीट-विशेष, गधोली
(दे ७, ८४) ।

तेलुक } न [त्रैलोक्य] तीन जगत—स्वर्ग,
तेल्लो } मर्त्य और पाताल लोक (प्राप् ६७,
तेल्लो } प्राप्र, गाया १, ४, पउम ८ ७६,
हे १, १४८, २, ६७, पड्, सक्षि १७) ।

०दसि वि [०दर्शिन] सर्वज्ञ, सर्वदर्शी

१२, ३४, स ६६६)। °शूलपाणि पु [°शूल-
पाणि] १ महादेव, शिव । २ त्रिशूल का
हाथ में रखनेवाला सुभट (पउम ५६, ३५) ।
°शूलिया स्त्री [°शूलिका] छोटा त्रिशूल
(सूअ १, ५, १) । °हत्तर वि [°सप्तत]
तिहन्तरदां, ७३ वीं (पउम ७, ५६) । °ह्वा
अ [°वा] तीन प्रकार से (पि ४५१, अणु) ।
°हुअण, °हुण, °हुवण न [°भुवन] १
तीन जगत्, स्वर्ग, मर्त्य और पाताल लोक
(कुमा, चुर १, ८, प्रासू ४६, अचु १६) ।
२ पु. राजा कुमारपाल के पिता का नाम
(कुप्र १४४) । °हुअणपाल पु [°भुवन-
पाल] राजा कुमारपाल का पिता (कुप्र
१४४) । °हुअणालकार पु [°भुवनालकार]
रावण के पट्टहस्ती का नाम (पउम ८१,
१२२) । °हुणविहार पुं [°भुवनविहार]
पाटण (गुजरात) में राजा कुमारपाल का वन-
वाया हुआ एक जैन मन्दिर (कुप्र १४४) ।
देखो ते° ।

°ति देखो इअ = इति (कुमा, कम्म २, १२,
२३) ।

तिअ (अप) अक [तिम्, स्तिम्] १ आद्रं
होना । २ सक आद्रं करना । तिअइ (प्राकृ
१२०) ।

तिअ न [त्रिक] १ तीन का समुदाय (आ १,
उप ७२८ टी) । २ वह जगह जहाँ तीन
रास्ते मिलते हो (सुर १, ६३) । °संजअ
पुं [°संयत] एक राजपि (पउम ५, ५१) ।
देखो तिग ।

तिअ वि [त्रिज] तीन से उत्पन्न होनेवाला
(राज) ।

तिअंकर पुं [त्रिकंकर] स्वनाम-ख्यात एक
जैनमुनि (राज) ।

तिअग न [त्रिकक] तीन का समुदाय (विसे
२६४३) ।

तिअहा स्त्री [त्रिजटा] स्वनाम-ख्यात एक
राक्षसी (से ११, ८७) ।

तिअभगी स्त्री [त्रिभङ्गी] छन्द-विशेष (पिंग) ।

तिअय न [त्रितय] तीन का समूह (विसे
१४३२) ।

तिअलुक, न [त्रैलोक्य] तीन जगत्—
तिअलोय } स्वर्ग, मर्त्य और पाताल लोक
(वर्मा ६०, लहुअ ६) ।

तिअस पु [त्रिदश] देव, देवता (कुमा, सुर १,
६) । °गअ पुं [°गज] ऐरावत या ऐरावण
हाथी, इन्द्र का हाथी (से ६, ६१) । °नाह पुं
[°नाथ] इन्द्र (उप ६८६ टी, सुपा ४४) ।
°पहु पु [°प्रभु] इन्द्र, देव-नायक (सुपा
४७, १७६) । °रिसि पुं [°ऋषि] नारद
मुनि (कुप्र ३७१) । °लो० पु [°लोक]
स्वर्ग (उप १०१६) । °विलया स्त्री
[°वनिता] देवी, स्त्री देवता (सुपा २६७) ।
°सरि स्त्री [°सारत्] गंगा नदी (कुप्र) ।
°सेल पु [°शैल] मेरु पर्वत (सुपा ४८) ।
°लय पुन [°लय] स्वर्ग (कुप्र १६, उप
७२८ टी; सुर १, १७२) । °हिंवि पुं
[°धिप] इन्द्र (सुपा ३४) । °हिंवि पु
[°धिपति] इन्द्र (सुपा ७६) ।

तिअससूरि पु [त्रिदशसूरि] बृहस्पति
(मम्मत् १२०) ।

तिअसिंद पु [त्रिदशेन्द्र] इन्द्र, देव-पति
(वज्जा १५४) ।

तिअसेंद देखो तिअसिंद (वेइय ६१०) ।

तिअसीस पु [त्रिदशेश] इन्द्र, देव-नायक
(हे १, १०) ।

तिआमा स्त्री [त्रियामा] रात्रि, रात (अचु
४६) ।

तिइक्ख सक [तितिक्ष्] सहन करना ।
तिइक्खए (आचा) । वक. तिइक्खमाण
(आचा) ।

तिइक्खा स्त्री [तितिक्षा] क्षमा, सहिष्णुता
(आचा) ।

तिइज्ज } वि [तृतीय] तीसरा पि ४४६,
तिइय } सक्ति २०) ।

तिउक्खर न [त्रिपुक्कर] वाद्य-विशेष
(अजि ३१) ।

तिउट्ट सक [त्रोटय्] १ तोटना । २ परि-
त्याग करना । तिउट्टिज्जा (सूअ १, १,
१, १) ।

तिउट्ट अक [त्रुट्] १ टूटना । २ भुक्त
होना, 'सब्बदुक्खा तिउट्टइ' (सूअ १,
१५, ५) ।

तिउट्ट वि [त्रुट्ट, त्रुटित्] १ टूटा हुआ । २
अपसृत (आचा) ।

तिउड पु [दे] कलाप, मोर-पिच्छ (पाअ) ।

तिउडग पुन [त्रिपुटक] वाच्य विशेष (दसनि
६, ८, पव १५६) ।

तिउडय न [दे] १ मालव देश में प्रसिद्ध वाच्य-
विशेष (आ १८) । २ लौंग, लवंग (आ पत्र
६६) ।

तिउर न [त्रिपुर] एक विद्याधर-नगर (इक) ।

तिउर पु [त्रिपुर] असुर-विशेष (त्रि ६४) ।

°णाह पु [°नाथ] वही (त्रि ८७) ।

तिउरा स्त्री [त्रिपुरी] नगरी-विशेष, चेदि देश
की राजधानी (कुमा) ।

तिउल वि [दे] मन, वचन और काया को
पीडा पहुँचानेवाला, दुःख का हेतु (उत्त २) ।

तिऊड देखो तिकूड (से ८, ८३, ११, ६८) ।

तिंगिआ स्त्री [दे] कमल-रज (दे ५, १२) ।

तिंगिन्छ देखो तिगिन्छ (इक) ।

तिंगिन्छायण न [चिकित्सायन] नक्षत्र-
गोत्र-विशेष (इक) ।

तिंगिच्छि स्त्री [दे] कमल-रज, पद्म का रज,
पराग (दे ५, १२, गउड, हे २, १७४, ज ४) ।

तिंत वि [तीमित] भोजा हुआ (स ३३२,
हे ४, ४३१) ।

तिंतिण } वि [दे] बड़बड़ करनेवाला,
तिंतिणिण्य } बड़बड़ानेवाला, वाद्विन्न लाभ
न होने पर खेद से मन में जो भावे सो बोलने-
वाला (वव १, ठा ६—पत्र ३७१, कस) ।

तिंतिणी स्त्री [तिन्निणी] १ चिचा, इमली
का पेड़ (अभि ७१) ।

तिंतिणी स्त्री [दे] बड़बड़ाना (वव ३) ।

तिंदुइणी स्त्री [तिन्दुकिनी] वृक्ष-विशेष (कुप्र
१०२) ।

तिंदुग } पु [तिन्दुक] १ वृक्ष-विशेष, तेंदू
तिंदुय } का पेड़ (पाअ, पउम २०, ३७, सम
१५२, पण १७) । २ न. फल-विशेष
(पण १७) । ३ श्रावस्ती नगरी का एक
उद्यान (विसे २३०७) ।

तिंदुग } पुं [तिन्दुक] श्रोत्रिय जन्तु की
तिंदुय } एक जाति (उत्त ३६, १३६, सुख
३६, १३६) ।

°पुत्त [°पुत्त] एक प्रक प्रसिद्ध जैन आचार्य (भावम) ।	°त्ति अ [इति] उपालम्भ-सूचक अव्यय (प्राक् ७८) ।	°त्थरु देखो थरु (पि ३२७) ।
तोसलिय पुं [तोसलिक] तोसलि-ग्राम का अधीश क्षत्रिय (भावम) ।	°त्ति देखो इअ = इति (कप्प, स्वप्न १०, सण) ।	°त्थल देखो थल (काप्र ८७) ।
तोसविअ } वि [तोषित] खुश किया हुआ, तोसिअ } संतोषित (हे ३, १५०, पसम ७७, ८८) ।	°त्थ देखो एत्थ (गा १३२) ।	°त्थली देखो थली (पि ३८७) ।
तोहार (अप) देखो तुहार (पिंग; पि ४३४) ।	°त्थ वि [°स्थ] स्थित, रहा हुआ (आचा) ।	°त्थव देखो थव = स्तु । वहु °त्थवंत (नाट) ।
°त्त वि [°त्र] त्राण-कर्ता, राक्षक, 'सकलत्तं संतुट्ठो सकल तो सो नरो होइ' (सुपा ३६६) ।	°त्थ देखो अत्थ (वाग्न १५) ।	°त्थवअ देखो थवय (से १, ४०, नाट) ।
°त्तण देखो तण (से १, ६१) ।	°त्थअ देखो थय = स्तुत (से १, १) ।	°त्थाण देखो थाण (नाट) ।
	°त्थउड देखो थउड (गउड) ।	°त्थाल देखो थाल (कुमा) ।
	°त्थव देखो थव (चारु २०) ।	°त्थिअ देखो थिअ (गा ४२१) ।
	°त्थभ देखो थभ (कुमा) ।	°त्थिर देखो थिर (कुमा) ।
	°त्थभण देखो थंभण (वा १०) ।	°त्थोअ देखो थोअ (नाट—वेणी २४) ।

॥ इअ सिरिपाइअसद्महणवम्मि तयाराइसद्सकलणो
तेवीसइमो तरगो समत्तो ॥

थ

थ पु [थ] दन्त-स्थानीय व्यञ्जन-विशेष (प्राप, प्रामा) ।	थउड न [स्थपुट] १ विपम और उन्नत प्रदेश (दे २, ७८) । २ वि नीचा-ऊँचा (गउड) ।	थंवि वि [दे] विपम, असम (दे ५, २४) ।
थ अ १-२ वाक्यालंकार और पाद-पूर्ति में प्रयुक्त किया जाता अव्यय, 'किं थ तय पम्हुट्टु जं थ तया भो जयंत पवरम्मि' (गाया १, १—पत्र १४८, पचा ११) ।	थउडिअ वि [स्थपुटित] १ विपम और उन्नत प्रदेशवाला । २ नीचा-ऊँचा प्रदेशवाला (गउड) ।	थंवि पुं [स्तम्भ] सृण आदि का गुच्छ (दे ८, ४६, शोध ७७१, कुप्र २२३) ।
°थ देखो एत्थ (गा १३१, १३२, सण) ।	थउडु न [दे] भल्लातक, वृक्ष-विशेष, मिलावा (दे ५, २६) ।	थंभ अक [स्तम्भ] १ रुकना, स्तब्ध होना, स्थिर होना, निश्चल होना । २ सक. क्रिया-निरोध करना, अटकाना, रोकना, निश्चल करना । थंभइ (भवि) । कर्म थंभिज्जइ (हे २, ६) । संकृ. थंभिउ (कुप्र ३८५) ।
थइअ वि [स्थगित] आच्छादित, ढका हुआ (से ५, ४३, गा ५७०) ।	थग सक [उद् + नामय्] ऊँचा करना, उन्नत करना । थंगइ (प्राक् ३५) ।	थंभ पुं [स्तम्भ] घेरा, 'थंभतित्थत्थंभत्थं एइ रोसप्पसरकलुसिअो नाह सगामसीहो' (हम्मीर २२) । °तित्थ न [°तीर्थ] एक जैन तीर्थ (हम्मीर २२) ।
थइअ } स्त्री [स्थगिका] पानदानी, पान थइआ } रखने का पात्र, पानदान (महा) । °इत्त पुं [°वन्] ताम्बूल-पात्र-वाहक नौकर (कुप्र ७१) । °वर पु [°धर] ताम्बूल-पात्र का वाहक नौकर (सुपा १०७) । °वाहक पु [°वाहक] पानदानी का वाहक नौकर (सुपा १०७) । देखो थगिय° ।	थंडिल न [स्थण्डिल] १ शुद्ध भूमि, जन्तु-रहित प्रदेश (कस, निचू ४) । २ क्रोध, गुस्सा (सूअ १, ६) ।	थंभ पु [स्तम्भ] घेरा, 'थंभतित्थत्थंभत्थं एइ रोसप्पसरकलुसिअो नाह सगामसीहो' (हम्मीर २२) । °तित्थ न [°तीर्थ] एक जैन तीर्थ (हम्मीर २२) ।
थइआ स्त्री [दे] धैली, थैली, कोथली या बसनी—कमर में बांधने की रूपयो की थैली 'संवलथइआसणहो', 'दसिया संवलथइई (?) इ' या' (कुप्र १२, ८०) ।	थंडिल पुं [स्थण्डिल] क्रोध, गुस्सा (सूअ १, ६, १३) ।	थंभ पु [स्तम्भ] १ स्तम्भ, यम्भा, खम्भा (हे २, ६, कुमा, प्रासू ३३) । २ अभिमान, गर्व, अहंकार (सूअ १, १३, उत्त ११) । °विज्जा स्त्री [°विद्या] स्तब्ध—बेहोश या निश्चेष्ट करने की विद्या (सुपा ४६३) ।
थइउं देखो थय = स्थगय् ।	थंडिल न [स्थण्डिल] शुद्ध भूमि (सुपा ५५८, आचा) ।	थंभण न [स्तम्भन] १ स्तब्ध-करण, थर्माना (विसे ३००७, सुपा ५६६) । २ स्तब्ध करने का मन्त्र (सुपा ५६६) । ३
	थंडिल न [दे] मण्डल, वृत्त प्रदेश (दे ५, २५) ।	
	थंत देखो था ।	

तिक्खि देवो तिक्खि (सम ५७) ।
 तित्त वि [वृत्त] वृत्त, संतुष्ट, खुश (विसे
 २४०६, श्रीप, दे १, १६, सुपा १६३) ।
 तित्त वि [तिक्त] १ तीता, कटुआ (खाया
 १६) । २ पुं तीता रस (ठा १) ।

तित्ति देखो तत्ति = दे (सिरि २७, संवोध ६) ।
 तित्ति स्त्री [वृत्ति] वृत्ति, सतोष (उप ५६७
 टी, दे १, ११७, सुपा ३७५, प्रासू १४०) ।
 तित्ति [दे] तात्पर्य, सार (दे ५, ११, पङ्) ।
 तित्तिअ वि [तावत्] उत्तना (हे २, १५६) ।
 तित्तिअ पुं [निक्कि] १ म्लेच्छ देश-विशेष ।
 २ उस देश में रहनेवाली म्लेच्छ जाति
 (पण्ह १, १) । देखो तिणिअ ।

तित्तिर पुं [तित्तिरि] पक्षि-विशेष, तीतर
 तित्तिर या तित्तिर (हे १, ६०, कुप्र ४२७) ।
 तित्तिरिअ वि [दे] स्नान से आद्र (दे ५,
 १२) ।

तित्तिल वि [तावत्] उत्तना (पङ्) ।
 तित्तिल पु [दे] द्वारपाज, प्रतीहार (गा
 ५५६) ।

तित्तुअ वि [दे] गुरु, भारी (दे ५, १२) ।
 तित्तुल (अप) देखो तित्तिल (हे ४, ४३५) ।
 तित्थ पुं [त्रिस्थ] साधु, साध्वी, श्रावक और
 श्राविका का समुदाय, जैनसंघ (विसे १०३५) ।

तित्थ पुं [त्र्यर्थ] ऊपर देखो (विसे १३०६) ।
 तित्थ न [तीर्थ] प्रथम गणवर (एदि
 १३० टी) ।

तित्थ न [तीर्थ] १ ऊपर देखो (विसे
 १०३३, ठा १) । २ दर्शन, मत (सम्म ८,
 विसे १०४०) । ३ यात्रा स्थान, पवित्र जगह
 (धर्म २, राय, अग्नि १२७) । ४ प्रवचन,
 शासन, जिन-देव प्रणीत द्वादशाङ्गी (धर्म
 ३) । ५ पुन अवतार, घाट, नदी वगैरह में
 उतरने का रास्ता (विसे १०२६, विक्क ३२,
 प्रति ८२, प्रासू ६०) । १. कर, १. गर देखो
 १. थर (सम ६७, कप्प; पडम २०, ८, हे
 १, १७७) । १. जत्ता स्त्री [यात्रा] तीर्थ-
 गमन (धर्म २) । १. णाह, १. नाह पुं [नाथ]
 जिन-देव (स ७६१, उप पृ ३५०, सुपा
 ६५६, सार्ध ४३, सं ३५) । १. थर वि [कर]
 १ तीर्थ का प्रवर्तक । २ पुं. जिन-देव, जिन भग-

वान् (खाया १, ८, हे १, १७७, सं १०१) स्त्री.
 री° (एदि) । १. थरणाम न [करनामन्]
 कर्म-विशेष, जिसके उदय से जीव तीर्थंकर
 होता है (ठा ६) । १. राय पुं [राज] जिन-
 देव (उप पृ ४००) । १. सिद्ध पु [सिद्ध]
 तीर्थ-प्रवृत्ति होने पर जो मुक्ति प्राप्त करे वह
 जीव (ठा १, १) । १. हिनायग पुं [धिना-
 यक] जिनदेव (उप ६८६ टी) । १. हिव पु
 [धिप] सघनायक, जिन-देव (उप १४२
 टी) । १. हिवइ पु [धिपति] जिनदेव,
 जिन भगवान् (पाम्म) ।

तित्थकर पु [तीर्थकर] देखो तित्थ-उर
 (चेदय ६५१) ।

तित्थि वि [तीर्थिन्] १ दार्शनिक, दर्शन-
 शास्त्र का विद्वान् । २ किसी दर्शन का अनु-
 यायी (गु ३) ।

तित्थिअ वि [तीर्थिक] ऊपर देखो (प्रबो
 ७४) ।

तित्थीय वि [तीर्थीय] ऊपर देखो (विसे
 ३१६६) ।

तित्थेसर पुं [तीर्थेश्वर] जिन-देव, जिन
 भगवान् (सुपा ५१, ८६, २६०) ।

तिदस देखो तिसस (नाट—विक्क २८) ।

तिदिव न [त्रिदिव] स्वर्ग, देवलोक (सुपा
 १४२, कुप्र ३२०) ।

तिध (अप) देखो तहा (हे ४, ४०१, कुमा) ।

तिन्न देखो तिण्ण (नम १) ।

तिन्न वि [दि] स्तोमित, आद्र, गोला (खाया
 १, ६) ।

तिपन्न देखो ते-वण्ण (पच ५, १८) ।

तिप्प सक [तिप्] देना । तिप्पइ (पिंड
 २६७) ।

तिप्प अक [वृप्] तृप्त होना । वक्क. तिप्पत
 (पिंड ६४७) ।

तिप्प सक [तर्पय] तृप्त करना, हेक्क 'न
 इमा जीवो सक्को तिप्पेअ काममोहेहि' (पच्च
 ५५) । क. तिप्पियव्व (पडम ११, ७३) ।

तिप्प अक [निप्] १ भरना, चूना । २
 अफसोस करना । ३ रोना । ४ सक, सुख-
 च्युत करना । तिप्पामि, तिप्पति (सूत्र २, १,
 २, २, ५५) । वक्क. तिप्पमाण (खाया १,

१—पत्र ४७) । प्रयो. वक्क. तिप्पयंत (सम
 ५१) ।

तिप्प पुंन [त्रेप] अपान आदि घटने की
 क्रिया, शौच (गच्छ २, ३२) ।

तिप्प वि [वृप्] संतुष्ट, खुश (हे १, १२८) ।

तिप्पण न [तपन] पीडन, हैरानी (सूत्र २,
 २, ५५) ।

तिप्पणया स्त्री [तपनता] अश्रु-विमोचन,
 रोदन (ठा ४, १, श्रीप) ।

तिप्पाय न [त्रिपाद] तप-विशेष, नीवी
 (संवोध ५८) ।

त्तिम (अप) देखो तहा (हे ४, ४०१, भवि,
 कम्म १) ।

तिमि पु [तिमि] मत्स्य की एक जाति (पण्ह
 १, १) ।

तिमिगिल पु [दे] मत्स्य, मछली, तिमि
 (मत्स्य) को निगलनेवाला मत्स्य (दे ५, १३) ।

तिमिगिल पु [तिमिगिल] मत्स्य की एक
 जाति (दे ५, १३, से ७, ८, पण्ह १, १) ।

गिल पु [गिल] एक प्रकार का महान्
 मत्स्य, बड़ी भारी मछली (सूत्र २, ६) ।

तिमिगिलि पु [तिमिगिलि] मत्स्य की एक
 जाति (पडम २२, ८३) ।

तिमिगिल देखो तिमिगिल = तिमिगिल (उप
 ५१७) ।

तिमिच्छय पुं [दे] पथिक, मुसाफिर (दे
 तिमिच्छाह ५, १३) ।

तिमिण न [दे] गोला काष्ठ (दे ५, ११) ।

तिमिर न [तिमिर] १ अन्धकार, अंधेरा
 (पडि, कप्प) । २ निकाचित कर्म (धर्म २) ।

३ अल्प ज्ञान । ४ अज्ञान (आहु ५) । ५ पुं.
 वृक्ष-विशेष (स २०६) ।

तिमिरिच्छ पुं [दे] वृक्ष विशेष, करज का
 पेड़ (दे ५, १३) ।

तिमिरिस पु [दे] वृक्ष विशेष (पण्ह १—
 पत्र ३३) ।

तिमिल स्त्री [तिमिल] वाद्य-विशेष (पडम
 ५७, २२) । स्त्री. ला (राज) ।

तिमिस पु [तिमिष] एक प्रकार का पौधा,
 पेड़ा, कुम्हड़ा (कप्प) ।

तिमिस्सा स्त्री [तिमिस्सा] वंतादय पर्वत
 तिमिस्सा की एक गुफा (ठा २, ३, पण्ह
 १, १—पत्र १४) ।

थर पु [दे] दही की तर, दही के ऊपर की मलाई (दे ५, २४) ।

थरथर } अक [दे] थरथरना, कांपना ।
थरथर } थरथरइ, थरथरेइ, थरहरइ (सट्ठि
थरहर } ६६, पि २०७, सुर ७, ६, गा
१६५) । वक्र. थरथरत, थरथ-
राअत, थरथराअमाण, थरथरैत (ओष
४७०, पि ५५८, नाट—मालती ५५, पउम
३१, ४४) ।

थरहरिअ वि [दे] कम्पित (दे ५, २७, भवि,
सुर १, ७, सुपा २१, जय १०) ।

थरु पु [दे त्सरु] खड्ग-मुष्टि, तलवार की मूठ (दे ५, २४) ।

थरुगिण पु [थरुक्किन] १ देश-विशेष । २ पुत्री उस देश का निवासी । स्त्री ° गिणिआ (इक) ।

थल न [स्थल] १ भूमि, जगह, सूखी जमीन (कुमा, उप ६८६ टी) । २ ग्रास लेते समय खुले हुए मुँह की फाँक, खुले हुए मुँह की खाली जगह (वव ७) । °इल वि [°वत्] स्थल-युक्त (गउड) । °कुक्कुडियड न [°कुक्कु-
ट्यण्ड] कवल प्रक्षेप के लिए खुला हुआ मुख (वव ७) । °चार पु [°चार] जमीन में चलना (आचा) । °नलिणी स्त्री [°नलिनी] जमीन में होनेवाला कमल का गाछ (कुमा) । °य वि [°ज] जमीन में उत्पन्न होनेवाला (परण १, पउम १२, ३७) । °यर वि [°चर] १ जमीन पर चलनेवाला । २ जमीन पर चलनेवाला पचेन्द्रिय तिर्यंच प्राणी (जीव ३, जी २०, औप) । स्त्री °री (जीव ३) ।

थलय पु [दे] मंडप, वृणादि-निर्मित गृह (दे ५, २५) ।

थलहिगा } स्त्री [दे] भृतक-स्मारक, शव को
थलहिया } गाढकर उस पर किया जाता एक प्रकार का चबूतरा (स ७५६, ७५७) ।

थली स्त्री [स्थली] जल शून्य भू-भाग (कुमा, पात्र) । °घोडय पु [°घोटक] पशु-विशेष (वव ७) ।

थली स्त्री [स्थली] ऊँची जमीन (उत्त ३०, १७, सुख ३०, १७) ।

थल्लिया स्त्री [दे स्थालिका] थलिया, छोटा थाल, भोजन करने का वस्तु (पउम २०, १६६) ।

थव सक [स्तु] स्तुति करना । वक्र. थवत (नाट) ।

थव देखो थय = स्तव (हे २, ४६, सुपा ४४६) ।

थव पुं [दे] पशु, जानवर (दे ५, २४) ।

थवइ पु [स्थपति] वर्धक, बढई (दे २, २२) ।

थवइय वि [स्तवकित] स्तवकवाला, गुच्छ-युक्त (गाया १ १ औप) ।

थवइल वि [दे] जाँघ फैलाकर बैठा हुआ (दे ५, २६) ।

थवक्क पु [दे] थोक, समूह, जत्था, 'लब्ध कुलबहुसुरए थवक्कओ सयलसोक्खाण' (वजा ६६) ।

थवण देखो थयण (आव २) ।

थवणिया स्त्री [स्थापनिका] न्यास, जमा रखी हुई वस्तु, कन्नगोभूमालियथवणियअव-
हारकूडसक्खिज्ज' (सुपा २७५) ।

थवय पुं [स्तवक] फूल आदि का गुच्छ (दे २, १०३, पात्र) ।

थविआ स्त्री [दे] प्रमेविका, वीरणा के अन्त में लगाया जाता छोटा काष्ठ-विशेष (दे २, २५) ।

थविय वि [स्थापित] न्यस्त, निहित (भवि) ।

थविय वि [स्तुत] जिसकी स्तुति की गई हो वह, श्लाघित (सुपा ३४३) ।

थविर वि [स्थविर] बृद्ध, बूढ़ा (धमंवि १३४) ।

थवी [दे] देखो थविआ (दे २, २५) ।

थस } वि [दे] विस्तीर्ण (दे ५, २५) ।
थसल }

थह पुं [दे] निलय, आश्रय, स्थान (दे ५, २५) ।

था देखो ठा । थाइ (भवि) । भवि. थाहिइ (पि ५२४) । वक्र. थत (पउम १४, १३४, भवि) । सक्र. थारुण (हे ४, १६) ।

थाइ वि [स्थायिन्] रहनेवाला । °णी स्त्री [°नी] वर्ष-वर्ष पर प्रसव करनेवाली घोड़ी (राज) ।

थागत न [दे] जहाज के भीतर घुसा हुआ पानी (सिरि ४, २५) ।

थाण देखो ठाण (हे ४, १६, विने १८५६, उप पु ३३२) ।

थाणय न [स्थानक] आलवाल, कियारी (दे ५, २७) ।

थाणय न [दे] १ चौकी, पहरा, 'भयाणया अडवि त्ति निविट्ठाई थाणयाई', 'तओ वहुवो-
लियाए रयणीए थाणयनिविट्ठा तुरियनुरिय मागया सवरपुरिमा' (स ५३७, ५४६) । २ पु. चौकीदार, चौकी करनेवाला आदमी, पहरेदार, 'पहायसमए य विससरिएसु थाण-
एसु' (स ५३७) ।

थाणज्ज वि [दे] गौरवित, सम्मानित (दे ४, ५) ।

थार्णाय वि [स्थानीय] स्थानापन्न (स ६६७) ।

थाणु पुं [स्थाणु] १ महादेव, शिव (हे २, ७, कुमा, पात्र) । २ लूना वृक्ष (गा २३२, पात्र), 'दवदड्ढयाणुसरिसं' (कुप्र १०२) । ३ खोला । ४ मत्स्य (राज) ।

थाणेसर न [स्थानेश्वर] समुद्र के किनारे पर का एक शहर (उप ७२८ टी, स १४८) ।

थाम वि [दे] विन्तीर्ण (दे ५, २५) ।

थाम न [स्थामन्] १ वल, वीर्य, पराक्रम (हे ४, २६७, ठा ३, १) । २ वि. वल-युक्त (निचू ११) । °व वि [°वत्] वलवान (उत्त २) ।

थाम पुंन [स्थामन्] १ वल । २ प्राण, 'था (१ था) मो वा परिहायइ गुणए (१ गुण-
एणु) पेहासु अ असत्तो' (पिड ६६४) ।

थाम न [दे स्थान] स्थान, जगह (सति ४७, स ४६, ७४३), 'सेवालियमूमितले फिन्नुसमाणा य थामथाम्मि' (सुर २, १०५) ।

थार पुं [दे] धन, मेघ (दे ५, २७) ।

थारुणय वि [थारुक्किन] देश-विशेष में उत्पन्न । स्त्री. °णिया (औप) । देखो थरुगिण ।

थाल पुंन [स्थाल] बड़ी थलिया, भोजन करने का पात्र (दे ६, १२, अंत ५, उप पु २५७) ।

थालइ वि [स्थालिकन्] १ थालवाला । २ पु. वानप्रस्थ का एक भेद (औप) ।

थाला स्त्री [दे] धारा (पड्) ।

तिलोत्तमा स्त्री [तिलोत्तमा] एक स्वर्गीय
अप्सरा (उप ७६८ टी, महा) ।

तिलोदग } न [तिलोदक] तिल का धोवन —
तिलोदय } जल (आचा, कण) ।

तिल्ल न [तैल] तैल, तेल (सूक्त ३५, कुप्र
२४०) ।

तिल्ल न [तिल्ल] छन्द-विशेष (पिंग) ।

तिल्लग वि [तैलक] तेल बेचनेवाला, तेली
(बृह १) ।

तिल्लहडी स्त्री [दे] गिलहरी, गु० खीसकोली
(नंदो टि पत्र. १३३ मुद्रिन) मारवाडी में
तालोडी, ताली ।

तिल्लोटा स्त्री [तैलोटा] नदी-विशेष (निचू १) ।
तिव्वे (अप) देखो तद्दा (हे ४, ३६७) ।

तिव्वणी स्त्री [त्रिव्वणी] एक महौपधि (ती
५) ।

तिवाय मक [त्रि+पातय्] मन, वचन
और काय से नष्ट करना, जान से मार
डालना । तिवायए (सूत्र १, १, १, ३) ।

तिविक्रम पु [त्रिविक्रम] जैनमुनि; 'गहिया
नियएहि (? तिपएहि) मही, तिविक्रमो
तेण विक्खाओ' (धर्मवि ८६) ।

तिविडा स्त्री [दे] सूची, सूई (दे ५, १२) ।
तिविडी स्त्री [दे] पुटिका, छोटा पुडवा (दे ५,
१२) ।

तिव्व वि [तीव्र] १ प्रबल, प्रचण्ड, उत्कट
(भग १५, आचा) । २ रौद्र, भयानक, डरावना
(सूत्र १, ५, १) । ३ गाढ़, निविड (पएह १,
१) । ४ तिक्त, कटु (भग ६, ३४) । ५
प्रकट, उत्तम, प्रकर्ष-युक्त (गाया १, १—
पत्र ४) ।

तिव्व वि [द तीव्र] १ दु सह, जो कठिना
से सहन हो सके (दे ५, ११, सूत्र १, ३,
३, १, ५, १, २, ६, आचा) । २ अत्यन्त
अधिक, अन्यर्थ (दे ५, ११, धर्म २, श्रीप,
पएह १, ३, पचा १५, आव ६, उवा) ।

तिसंथ वि [त्रिसंथ] तीन बार चुनने से
अच्छी तरह याद कर लेने की शक्तिवाला
(धर्मस १२०७) ।

तिसला स्त्री [त्रिशला] भगवान् महावीर की
माता का नाम (सम १५१) । 'सुअ पुं
[सुत] भगवान् महावीर (पउम १, ३३) ।

तिसा स्त्री [तृपा] प्यास, पिपासा (मुर ६,
२०६, पाप्र) ।

तिसाइय } वि [तृपित] तृपातुर, प्यासा
तिसिय } (महा, उव, पएह १, ४, मुर १,
१६६) ।

तिसिर पु व. [त्रिगिरस्] १ देश-विशेष
(पउम ६८, ६५) २ पु नृप-विशेष (पउम
६६, ४६) । ३ रावण का एक पुत्र (मे
१२, ५६) ।

तिस्सगुत्त देखो तीसगुत्त (राज) ।

तिह (अप) देखो तद्दा (कुमा) ।

तिहि पुं स्त्री [तिथि] पचदश चन्द्र-कला से
युक्त काल, दिन, तारोख (चंद १०, पि
१८०) ।

तीअ वि [तृतीय] तीसरा (सम १५०, सखि
२०) ।

तीअ नि [अतीत] १ गुजरा हुआ, बीता
हुआ (मुपा ४४६, भग) २ पुं भूतकाल (ठा
३, ४) ।

तीइल पु [नैतिल] ज्योतिष-प्रसिद्ध करण-
विशेष (विमे ३३४८) ।

तीमण न [तीमन] कडी, खाल-विशेष, ओर
(दे २, ३५, सण) ।

तीमिअ वि [तीमिन] आदर, गोला (कुप्र
३७३) ।

तीय वि [तैन] तीन (सूत्र, १, २, २,
२३) ।

तीर अक [शक्] समर्थ होना । तीरइ (हे
४, ८६) ।

तीर सक [तीरय्] समाप्त करना, परिपूर्ण
करना । तीरइ, तीरेइ (हे ४, ८६, भग) ।
संछु तीरित्ता (कण्प) ।

तीर पुन [तीर] किनारा, तट, पार (स्वप्न
११६, प्रासू ६०, ठा ४, १, कण्प) ।

तीरगम वि [तीरगम] पार-गामी, पार जाने-
वाला (आचा) ।

तीरट्ट पुं [तीरस्थ, तीरार्थ] साधु, मुनि,
भ्रमण (दसनि २, ६) ।

तीरिय वि [तारित] समापित, परिपूर्ण किया
हुआ (पव ५) ।

तीरिया स्त्री [दे] शर या तीर रखने का यैला,
तरकश, तूणोर, बाणधि (?), 'गहियमणेष
पासत्थं घणुवरं, सविआ तीरियासरो' (स
२६७) ।

तीस न [त्रिशन्] १ संख्या-विशेष, तीस,
३० । २ तीस-संख्यावाला (महा, भवि) ।

तीसआ } स्त्री [त्रिशन्] ऊपर देखो (सखि
तीमइ } २१) । 'वरिस वि [वर्प] तीम
वर्ष की उम्र का (पउम २, २८) ।

तीसइम वि [त्रिश] १ तीसवाँ (पउम ३०,
६८) । २ न लगातार चौदह दिनों का उप-
वाम (गाया १, १) ।

तीसग वि [त्रिशक] तीस वर्ष की उम्रवाला
(तदु १७) ।

तीमगुत्त पु [तिष्यगुत्त] एक प्राचीन आचार्य-
विशेष, जिसने अन्तिम प्रदेश में जीव की सत्ता
का पन्थ चलाया था (ठा ७) ।

तीसभइ पु [तिष्यभद्र] एक जैनमुनि
(कण्प) ।

तीसम वि [त्रिश] तीसवाँ (भवि) ।

तीमा स्त्री देखो तीस (हे १, ६२) ।

तीसिया स्त्री [त्रिशिका] तीस वर्ष के उम्र
की स्त्री (वव ७) ।

तु अ [तु] इन अर्थों का सूचक अव्यय—१
भिन्नता, भेद, विशेषण (आ २७, विसे
३०३५) । २ अवधारण, निश्चय (सूत्र १,
२, २) । ३ समुच्चय (सूत्र १, १, १) ।
४ कारण, हेतु (निचू १) । ५ पाद-पूरक
अव्यय (विसे ३०३५, पंचा ४) ।

तुअ सक [तुइ] व्यथा करना, पीडा करना ।
तुमइ (षड्) । प्रयो. सछु तुयावइत्ता (ठा
३, २) ।

तुअर पुं [तुवर] धान्य-विशेष, रहुर (जं
१) ।

तुअर अक [त्वर] त्वरा होना, शीघ्र होना,
जल्दी होना । तुअर (गा ६०६) ।

तुंग वि [तुङ्ग] १ ऊँचा, उच्च (गा २५६,
श्रीप) । २ पु छन्द-विशेष (पिंग) ।

तुंगार पु [तुङ्गार] अग्नि काण का पवन
(आवम) ।

तुगिम पु स्त्री [तुङ्गिमन्] ऊँचाई, उच्चत्व
(मुपा १२४, वजा १५०, कण्प, सण) ।

तुंगिय पु [तुङ्गिक] १ ग्राम-विशेष (आवम) ।
२ पर्वत-विशेष, 'तुंगे तुगियसिहरे गंतु तिग्ग
तव तवइ' (कुप्र १०२) । ३ पु स्त्री गान्ध-विशेष
में उत्पन्न, 'जसमइ तुगियं चैव' (एदि) ।

थुक्क अक [थूत् + कृ] १ थूकना । २ सक.
तिरस्कार करना, थुतकारना, अनादर के साथ
निकालना । थुक्केइ (वज्रा ४६) । संकृ.
थुक्किऊण (सुपा ३४६) ।

थुक्क न [थूत्कृत] थूक, कफ, खखार (दे ४,
४१) ।

थुक्कार पु [थूत्कार] तिरस्कार (राय) ।

थुक्कार सक [थूत्कारय्] तिरस्कार करना ।
कवक थुक्कारिज्जमाण (पि ५६३) ।

थुक्किअ वि [दे] उन्नत, ऊँचा (दे ५, २८) ।

थुक्किअ वि [थूत्कृत] थूका हुआ (दे ५, २८,
सुपा ३४६) ।

थुड न [दे स्थुड] वृद्ध का स्कन्ध, 'चीरीठ
करेऊण बद्धा ताण थुडेसु' (सुपा ५८४,
३६६) ।

थुडकिअय न [दे] रोष-युक्त वचन (पात्र) ।

थुडुकिअ न [दे] १ अल्प-कुपित भ्रूह का
संकोच, थोडा गुस्सा होने से होता भ्रूह का
संकोच । २ मौन, चुपकी (दे ५, ३१) ।

थुडुहीर न [दे] चामर (दे ५, २८) ।

थुण सक [स्तु] स्तुति करना, गुण-वर्णन
करना । थुणइ (हे ४, २४१) । कर्म, थुव्वइ,
थुण्णइ (हे ४, २४२) । वक्र. थुणंत
(भवि) । कवक. थुव्वत, थुव्वमाण (सुपा
८८, सुर ४, ६६, स ७०१) । सक. थोऊण
(काल) । हेक. थोत्तुं (मुणि १०८७५) ।
कृ थुव्व, थोअव्व (भवि, चैत्य ३५, से
७१०) ।

थुणण न [स्तवन] गुण-कीर्तन, स्तुति (सुपा
३७) ।

थुणिर वि [स्तोत्] स्तुति करनेवाला (काल) ।

थुण्ण वि [दे] हप्त, अमिमानी (दे ५, २७) ।

थुत्त न [स्तोत्र] स्तुति, स्तुति-पाठ (भवि) ।

थुत्थुक्कारिय वि [थुत्थुक्कारित] थुतकारा,
हुआ, तिरस्कृत, अपमानित (भवि) ।

थुथूकार पु [थुथूत्कार] तिरस्कार (प्रयौ
८१) ।

थुरुणुलणय न [दे] शय्या, बिछौना (दे ५,
२८) ।

थुलम् पु [दे] पट-कुटी, तबू, वख-गृह, कपड-
कोट, लेमा (दे ५, २८) ।

थुल वि [दे] परिवर्तित, बदला हुआ (दे ५,
२७) ।

थुल वि [स्थूल] मोटा (हे २, ६६, प्राप्ता) ।

थुल वि [स्थूल] मोटा, तगडा । स्त्री. °ल्ली
(पिंड ४२६) ।

थुव देखो थुण । थुवइ (प्राकृ ६७) ।

थुवअ वि [स्तावक] स्तुति करनेवाला (हे
१, ७५) ।

थुवण न [स्तवन] स्तुति, स्तव (कुप्र ३५१) ।

थुव्व } देखो थुण ।
थुव्वंत }

थू अ निन्दा-सूचक अव्यय, 'थू निल्लजो
लोओ' (हे २, २००, कुमा) ।

थूण पुं [दे] अश्व, घोडा (दे ५, २६) ।

थूण देखो तेण = स्तेन (हे २, १४७) ।

थूणा स्त्री [स्थूणा] खम्भा, खूँटी (पड,
परण १५) ।

थूणाग पु [स्थूणाक] सन्निवेश विशेष, ग्राम-
विशेष (आवम) ।

थूथू अ [दे] घृणा-सूचक अव्यय (चड) ।

थूभ पु [स्तूप] शूहा, डोला, दूह, स्मृति स्तम्भ
(विसे ६६८, सुपा २०६, कुप्र १६५, आवा
२, १, २) ।

थूभिया } स्त्री [स्तूपिका] १ छोटा स्तूप
थूभियागा } (श्रीघ ४३६, श्रीप) । २ छोटा
शिखर (सम १३७) ।

थूरी स्त्री [दे] तन्तुवाय का एक उपकरण (दे
५, २८) ।

थूल देखो थुल (पात्र, पउम १४, ११३,
उवा) । °भइ पुं [°भद्र] एक सुप्रसिद्ध जैन
महर्षि (हे १, २५५, पडि) ।

थूलघोण पुं [दे] सूकर, बराह (दे ५, २६) ।

थूव } देखो थूम (दे ७, ४०, सुर १,
थूह } ५८) ।

थूह पुं [दे] १ प्रासाद का शिखर (दे ५,
३२, पात्र) । २ चातक पक्षी । ३ वल्मीक,
दीमक (दे ५, ३२) ।

थेअ वि [स्थेय] १ रहने योग्य । २ जो रह
सकता हो । ३ पुं. फैसला करनेवाला, न्याया-
धीश (हे ४, २६७) ।

थेग पुं [दे] कन्द-विशेष (आ २०, जो ६) ।

थेज्ज न [स्थैर्य] स्थिरता (विसे १४) ।

थेज्ज देखो थेअ (वव ३) ।

थेण पु [स्तेन] चोर, तस्कर (हे १, १४७) ।
थेणिल्लिअ वि [दे] १ हत, छोना हुआ । २
भीत, डरा हुआ (दे ५, ३२) ।

थेप्प देखो थिप्प । थेप्पइ (पि २०७, संक्षि
३४) ।

थेर वि [स्वविर] १ वृद्ध, बूढ़ा (हे १, १६६,
२, ८६; भग ६, ३३) । २ पुं जैन साधु
(श्रीघ १७, कप्प) । °कप्प पुं [°कल्प] १

जैन मुनियों का आचार-विशेष, गच्छ में रहने-
वाले जैन मुनियों का अनुष्ठान । २ आचार-
विशेष का प्रतिपादक ग्रन्थ (ठा ३, ४; श्रीघ
६७०) । °कप्पिय पु [°कल्पिक] आचार-
विशेष का आश्रय करनेवाला, गच्छ में रहने-
वाला जैन मुनि (पव ७०) । °भूमि स्त्री

[°भूमि] स्वविर का पद (ठा ३, २) ।

°वलि वि [°वलि] १ जैन मुनियों का
समूह । २ क्रम से जैन मुनि-गण के चरित्र का
प्रतिपादक ग्रन्थ-विशेष (एदि, कप्प) ।

थेर पु [दे. स्थविर] ब्रह्मा, विधाता (दे ५,
२६, पात्र) ।

थेरासण न [दे. स्थविरासन] पद्म, कमल
(दे ५, २६) ।

थेरिअ न [स्थैर्य] स्थिरता (कुमा) ।

थेरिया } स्त्री [स्थविरा] १ वृद्धा, बुढ़िया
थेरी } (पात्र, श्रीघ २१ टी) । २ जैन
साध्वी (कप्प) ।

थेरोसण न [दे. स्थविरासन] अनुज, कमल,
पद्म (पड) ।

थेव पुं [दे] विन्दु (दे ५, २६, पात्र, पड) ।

थेव देखो थोव (हे २, १२५, पात्र, सुर १,
१८१) । °कालिय वि [°कालिक] अल
काल तक रहनेवाला (सुपा ३७५) ।

थेवरिअ न [दे] जन्म-समय में बजाया जाता
वाद्य (दे ५, २६) ।

थोअ देखो थोव (हे २, १२५, गा ४६, गउठ;
संक्षि १) ।

थोअ पुं [दे] १ रजक, घोड़ी । २ मूलक,
मूला, कन्द-विशेष (दे ५, ३२) ।

थोअव्व } देखो थुण ।
थोऊण }

थोअ देखो थोक्क (प्राकृ ३८) ।

थोक्क } देखो थोव (दे २, १२५, जो १) ।
थोग }

तुण्णिय वि [तुन्नित] रफू किया हुआ, सांघा हुआ (वृह १) ।

तुण्हि अ [तूण्णीम्] मौन, चुप्पी, चुपकी, चुपचाप, चुपकेसे, मौन होकर (भवि) ।

तुण्हि पुं [दे] सूकर, सूअर (दे ५, १४) ।

तुण्हि देखो तुण्हि = तूण्णीम् (प्राक ३२) ।

तुण्हिअ वि [तूण्णीक] मौन रहा हुआ, तुण्हिअ } मौन रहनेवाला, चुप रहनेवाला (प्राप्र, गा २२४, सुर ४, १४८) ।

तुण्हिअ वि [दे] मृदु-निश्चल (दे ५, १५) ।

तुण्हिअ देखो तुण्हिअ (स्वप्न ४२) ।

तुत्त देखो तोत्त (सुपा २३७) ।

तुद देखो तुअ । तुदए (पड्) । वहु तुदं (विमे १४७०) ।

तुद पु [तोद] प्रतोद, अरदार डहा, चाबुक (सूअ १, ५, २, ३) ।

तुन्नण न [तुन्नन] रफू करना (गच्छ ३, ७) ।

तुन्नाय देखो तुण्णाय (एदि १६४) ।

तुन्नार पु [तुन्नकार] रफू करनेवाला शिल्पी (धर्मवि ७३) ।

तुप्प पुं [दे] १ कौतुक । २ विवाह, शादी । ३ सपंय, सरसो, धान्य-विशेष । ४ कुतुप, धी आदि भरने का चर्म-पात्र (दे ५, २२) । ५ वि. अक्षित, चुपडा हुआ, धी आदि से लिप्त (दे ५, २२, कप्प, गा २२, २८६, हे १, २००) । ६ स्निग्ध, स्नेह-युक्त (दे ५, २२, ओघ ३०७ भा) । ७ न घृत, धी (से १५, ३८, सुपा ६३४, कुमा) ।

तुप्प वि [दे] वेष्टित (अणु २६) ।

तुप्पइअ वि [दे] धी से लिप्त (गा तुप्पलिअ वि [दे] धी से लिप्त (गा तुप्पविअ ५२० भा) ।

तुमतुम पुं [दे] क्रोध-कृत मनो-विकार विशेष (ठा ८—पत्र ४४१) ।

तुमतुम पुं [दे] १ तूकारवाला वचन, तिरप्कार वचन, तू, तू (सूअ १, ६, २७) । २ वाक्-कलह, 'अप्पतुमतुमे' (उत्त २६, ३६) । ३ वि. तूकारे से बात कहनेवाला (संघोष १७) ।

तुमुल पुं [तुमुल] १ लोम-हर्षण युद्ध, भयानक संग्राम (गच्छ १) । २ न, शोरगुल (पाप्र) ।

तुम्ह स [युष्मत्] तुम, आप (हे १, २४६) ।

तुम्हकेर वि [त्वदीय] तुम्हारा (कुमा) ।

तुम्हकेर वि [युष्मदीय] आपका, तुम्हारा (हे १, २४६, २, १४७) ।

तुम्हार (अप) ऊपर देखो (भवि) ।

तुम्हारिस वि [युष्मादृश] आपके जैसा, तुम्हारे जैसा (हे १, १४२, गच्छ, महा) ।

तुम्हेच्चय वि [यौष्माक] आपका, तुम्हारा (हे २, १४६, कुमा, पड्) ।

तुयट्ठ अक [त्वग् + वृत्] पार्श्व को घुमाना, करवट फिराना । तुयट्ठइ, (कप्प, भग) ।

तुयट्ठेज, तुयट्ठेजा (भग, औप) । हेऊ. तुयट्ठित्तए (आचा) । क. तुयट्ठियच्च (णाय १, १, भग, औप) ।

तुयट्ठण न [त्वग्वर्तन] पार्श्व-परिवर्तन, करवट फिराना (ओघ १५२ भा, औप) ।

तुयट्ठावण न [त्वग्वर्तन] करवट बदलवाना । (आचा) ।

तुयावइत्ता देखो तुअ ।

तुर अक [त्वर] त्वरा होना, जल्दी होना, शीघ्र होना । वहु तुरंत, तुरेत, तुरमाण, तुरेमाण (हे ४, १७२, प्रासू ५८, पड्) ।

तुरं } ओ [त्वरा] शीघ्रता, जल्दी (दे ५, तुरा १६) । १ वत वि [वत्] त्वरा-युक्त,

तुरग पु [तुरङ्ग] अश्व, घोडा (कुमा, प्रासू ११७) । २ रामचन्द्र का एक सुभट (पञ्च ५६, ३८) ।

तुरगम पु [तुरङ्गम] अश्व, घोडा (पाप्र, पिग) ।

तुरगिआ ओ [तुरङ्गिका] घोड़ी (पाप्र) ।

तुरत देखो तुर ।

तुरक्क पु [दे तुरुक्क] १ देश-विशेष, तुकिस्तान । २ अनार्य जाति-विशेष, तुर्क (ती १४) ।

तुरग देखो तुरय (भग ११, ११, राय) ।

मुह पु [मुख] अनार्य देश-विशेष (सूअ १, ५ टी) । १ मेदुग पु [मेदुक] अनार्य देश-विशेष (सूअ १, ५, १ टी) ।

तुरमणी देखो तुरमणी (सट्ठि ५७ टी) ।

तुरमाण देखो तुर ।

तुरय पु [तुरग] १ अश्व, घोडा (पणह १, ४) । २ छन्द-विशेष (पिग) । ३ देहपिजरण

न [देहापञ्जरण] अश्व को सिंगारना, सँवारना, शृंगार करना (पाप्र) । देखो तुरग ।

तुरयसुह देखो तुरग-मह (पव २७४) ।

त्वरावाला, जल्दवाज (से ४, ३०) ।

तुरिअ वि [त्वरित] १ त्वरा-युक्त, उतावला (पाप्र, हे ४, १७२, औप, प्राप्र) । २ क्रिवि. शीघ्र जल्दी (सुपा ४६४ भवि) । ३ गइ वि [गति] १ शीघ्र गतिवाला । २ पु अमितगति नामक इन्द्र का एक लोकपाल (ठा ४, १) ।

तुरिअ वि [तुर्य] चौथा, चतुर्थ (सुर ४, २५०, कम्म ४, ६६, सुपा ४६४) । १ निद्रा ओ [निद्रा] मरुतदशा (उप पु १४३) ।

तुरिअ न [तूर्य] वाद्य, वावित्र, वाजा, 'तुरियाण सनिनाएण, दिव्वेण गगणं पुं' (उत्त २२, १२) ।

तुरिमिणी देखो तुरमणी (राज) ।

तुरी ओ [दे] १ पीन, पुष्ट । २ शय्या का उपकरण (दे ५, २२) ।

तुरु न [दे] वाय-विशेष (विक्र ८७) ।

तुरुक्क न [तुरुक्क] सुगन्धि द्रव्य-विशेष, जो घूष करने में काम आता है, लोबान, सिल्हक (सम १३७, णाय १, १, पञ्च २, ११, औप) ।

तुरुक्क पु [तुरुक्क] १ देश-विशेष, तुकिस्तान । २ वि तुकिस्तान का (स १३) ।

तुरुक्की ओ [तुरुक्की] लिपि-विशेष (विसे ४६४ टी) ।

तुरुमणा ओ [दे] नगरी-विशेष (भत्त ६२) ।

तुरेत } देखो तुर ।

तुरेमाण }

तुल सक [तोलय्] १ तौलना । २ उठाना ।

३ ठीक-ठीक निश्चय करना । तुलइ, तुलेइ (हे ४, २५, उव, वज्जा १५८) । वहु. तुलत (पिग) । सक. तुलेऊण (वृह १) । क. तुलेअच्च (से ६, २६) ।

तुलं देखो तुला (सुपा ३६) ।

तुलगा देखो तुलगा (अण्डु ८०) ।

तुलगा न [दे] काकतालीय न्याय (दे ५, १५, से ४, २७) ।

[नायक] १ दण्ड-दाता, अपराधविचार-कर्ता । २ सेनापति, सेनानी, प्रतिनियत सैन्य का नायक (पण्ड १, ४, श्रौप, कण्, णाया १, १) । °णीड छी [नीति] नीति-विशेष, अनुशासन (ठा ६) । °पथ पुं [पथ] मार्ग-विशेष, सीधा मार्ग (सूत्र १, १३) । °पासि पु [पाश्विन्, पाशिन्] १ दण्ड दाता । २ कोतवाल (राज, आ २७) । °पुछण पु न [प्रोच्छन्नक] दण्डाकार फाड़ (ज ५) । °भी वि [भी] दण्ड से डरने-वाला, दण्ड-भीरु (आचा) । °लत्ति न नि [लान] दण्ड लेनेवाला (वव १) । °वड पुं [पति] सेनानी, सेनापति (सुपा ३२३) । °वामिग, °वामिय पु [वाण्डपाशिक] कोतवाल (कुप्र १५५, स २६५, उप १०३१ टी) । °व. रय पु [वीर्य] राजा भरत के वंश का एक राजा जिसको आदर्श-गृह में केवलज्ञान उत्पन्न हुआ था (ठा ८) । °रास पुं [राम] एक प्रकार का नाच (कण्) । इय वि [यत] दण्ड की तरह लम्बा (कस, श्रौप) । °यडय वि [यतिक] पैर को दण्ड की तरह लम्बा फैलानेवाला (श्रौप, कस, ठा ५, १) । °रक्खिग पु [रक्षिक] दण्डकारी प्रतीहार (निचू ६) । रण न [रण्य] दक्षिण भारत का एक प्रसिद्ध जंगल (पउम ४१, १, ७६, ५) । °सणिग वि [सनिक] दण्ड की तरह पैर फैला कर बैठनेवाला (कम) । देखो दडग, दडय ।

दड पु [दण्ड] १ दण्ड-नायक, सेनापति (वव १) । २ उवाल, उफान, 'उसिणोदग तिदडुक-लियं फासुयजलति जड कण्' (पत्र १३६, पिंड १८, विचार २५७) ।

दंडग } पु [दण्डक] १ कर्ण कुण्डल नगर
दडय } का एक राजा (पउम १, १६) ।
२ दण्डाकार वाक्य-पद्धति, ग्रन्थाश-विशेष (राज) । ३ मवनपति आदि चौबीस दण्डक पद-विशेष (द १) । ४ न दक्षिण भारत का एक प्रसिद्ध जंगल (पउम ३१, २५) । °गिरि पु [गिरि] पर्वत विशेष (पउम ४२, १४) । देखो दड (उप ८६१, वृह १, सूत्र २, २, पउम ४०, १३) ।

दंडण न [दण्डन] दण्ड-करण, शिक्षा (सूत्र २, २, ८२, ८३) ।

दडपासिग पुं [दाण्डपाशिक] कोतवाल (मोह १२७) ।

दंडलइअ वि [दण्डलातिक] दण्ड लेनेवाला, अपराधी (वव १) ।

दडावण न [दण्डन] सजा कराना, निग्रह कराना (आ १४) ।

दंडाविअ वि [दण्डित] जिसको दण्ड दिलाया गया हो वह (श्रीघ ५६७ टी) ।

दडि वि [दण्डिन] १ दण्ड-युक्त । २ पुं दण्डधारी प्रतीहार, दरवान (कुमा, ज ३) ।

दडि देखो दडी (कुप्र ४४) ।

दडिअ पु [दण्डिक] १ सामन्त राजा (पव २६८) । २ राज कुलानुगत पुरुष (पव ६१) । ३ दण्डपाशिक, कोतवाल (धर्मस ५६६) ।

दंडिअ वि [दण्डित] जिसको सजा दी गई हो वह, कैदी (सुपा ४६२) ।

दडिअ वि [दण्डिक] १ दण्डवाला । २ पुं राजा, नृप (वव ४) । ३ दण्ड-दाता, अपराध-विचार-कर्ता (वव १) ।

दंडिआ छी [दे] लेख पर लगाई जाती राज-मुद्रा, ठप्पा, मोहर (वृह १) ।

दंडिकिअ वि [दे] अपमानित, 'दडिकिओ समाणो तमवहारेण नीणेइ' (उप ६४८ टी) ।

दडिणी छी [दे दण्डिनी] रानी, राज-पत्नी (पिंड ५००) ।

दडिम वि [दण्डिम] १ दण्ड से निर्वृत्त । २ न नजा करके वसूल किया हुआ द्रव्य (णाया १, १—पत्र ३७) ।

दडी छी [दे] १ सूत्र-कनक । २ सांघा हुआ वस्त्र युग्म (दे ५, ३३) । ३ सांघा हुआ जीर्ण वस्त्र (णाया १, १६—पत्र १६६, पण्ड १, ३—पत्र ५३) ।

दत वि [दत्त] दान कर्ता, दाता (पिंड ५६४) ।

दंत पुं [दान्त] दो उपवास, बेला (संघोष ५८) ।

दंत वि [दान्त] दो उपवास (संघोष ५८) ।

दंत पुं [दे] पर्वत का एक देश (दे ५, ३३) ।

दत वि [दान्त] १ जिसका दमन किया गया हो वह, वंश में किया हुआ, 'दंतेण चित्तेण

चरति घीरा' (ग्राम् १६५) । २ जितेन्द्रिय (णाया १, १४, दस १०) ।

दंत पु [दन्त] दांत, दशन (कुमा, कण्) ।

°कुडी छी [कुटी] दण्ड, दाढ़ (तंडु) । °च्छअ पुं [च्छद] श्रोष्ठ, श्रोष्ठ, होठ (पात्र) ।

°वावण न [वावन] १ दांत साफ करना, दतवन करना । २ दांत साफ करने का काष्ठ, दतवन (पण्ड २, ४, निचू ३) । °पक्खवालण न [प्रक्षालन] वही पूर्वोक्त अर्थ (सूत्र १, ४, २) । °पात्र न [पात्र] दांत का बना हुआ पात्र (आचा २६, १) । °पुर न [पुर] नगर-विशेष (वव ६) । °पहोयण न [प्रयावन] देखो °धावण (धम ३) । °माल पु [माल] वृक्ष-विशेष (ज २) । °वक्क पु [वक्र] दन्तपुर नगर का एक राजा (वव १) ।

°वलहिया छी [वलभिका] उद्यान-विशेष (स ७०) । °वाणिज्ज न [वाणिज्य] हाथी-दांत वगैरह दांत का व्यापार (धर्म २) ।

°र पुं [कार] दंत का काम करनेवाला शिल्पी (पण्ड १) ।

दंतकार पुं [दन्तकार] दांत बनानेवाला शिल्पी (अणु १४६) ।

दंतकुंडो छी [दन्तकुण्डो] दाढ़, दण्ड (तंडु ४१) ।

दंतवक्क पुं [दान्तवाक्य] चक्रवर्ती राजा (सूत्र १, ६, २२) ।

दंतवण न [दे दन्तपवन] १ दन्त-शुद्धि । २ दतवन, दांत साफ करने का काष्ठ (दे २, १२, ठा ६—पत्र ४६०, उवा, पव ४) ।

दतवण पुन [दे दन्तपवन] दतवन (धम ३, ६) ।

दतसोहण न [दन्तशोधन] दतवन (उत्त १६, २७) ।

दताल पुत्री [दे] शस्त्र-विशेष, घास काटने का हथियार (सुपा ५२६) । छी °ली (कम्म १, ३६) ।

दति पु [दन्तिन] १ हस्ती, हाथी (पात्र) । २ पर्वत-विशेष (पउम १५, ६) ।

दतिअ पुं [दे] गशक, खरगोश, खरहा (दे ५, ३४) ।

दतिदिअ वि [दान्तेन्द्रिय] जितेन्द्रिय, इन्द्रिय-निग्रही (श्रीघ ४६ भा) ।

तूहण पुं [दे] पुरुष, आदमी (दे ५, १७) ।
 ते° देखो ति = त्रि । °आलीस छीन
 [°चत्वारिशत्] १ संख्या-विशेष, चालीस
 और तीन की संख्या । २ तेमालीस की
 संख्यावाला (सम ६८) । °आलीसइम वि
 [°चत्वारिश] तेमालीसवाँ, ४३वाँ (पउम ४३,
 ४६) । °आसी छी [°अशीति] १ संख्या-
 विशेष, अस्सी और तीन । २ तिरासी की
 संख्यावाला (पि ४४६) । °आसीइम वि
 [°अशीतितम] तिरासीवाँ (मम ८६, पउम
 ८३, १४) । °इंदिय पुं [°इन्द्रिय] स्पर्श,
 जोभ और नाक इन तीन इन्द्रियवाला प्राणी
 (ठा २, ४, जी १७) । °ओय पु
 [°ओजस्] विषम राशि-विशेष (ठा ४,
 ३) । °णउइ छी [°नवति] तिरानवे, नव्वे
 और तीन, ९३ (सम ६७) । °णउय वि
 [°नवत] तिरानवेवाँ, ९३ वाँ (कप्य, पउम
 ६३, ४०) । °णउइ देखो °णउइ (सुपा
 ६५४) । °तीस, °तीस छीन [त्रयस्त्रिं-
 शत्] तेतीस, तीस और तीन (भग, सम
 ५८) । °सा (हे १, १६५, पि ४४७) ।
 °तीसइम वि [त्रयस्त्रिंश] तेतीसवाँ (पउम
 ३३, १४८) । °वट्टि छी [पट्टि] तिरसठ,
 साठ और तीन, ६३ (पि २६५) । °वण्ण, °वन्न
 छीन [°पञ्चाशन्] त्रेपन, पचास और
 तीन, ५३ (हे २, १७४, पङ्, सम ७२) ।
 °वत्तरि छी [°सप्तति] तिहत्तर (पि २६५) ।
 °वीस छीन [त्रयोविंशति] तेइस, बीस और
 तीन, २३ (सम ४२, हे १, १६५) । °वीस,
 °वीसइम वि [त्रयोविंश] तेईसवाँ (पउम
 २०, ८२, २३, २६, ठा ६) । °सम्भ न
 [°सन्ध्य] प्रातः, मध्याह्न और सायकाल का
 समय (पउम ६६, ११) । °सट्टि छी
 [°पट्टि] देखो °वट्टि (सम ७७) । °सीइ
 छी [°अशीति] तिरासी, अस्सी और तीन
 (सम ८६, कप्य) । °सीइम वि [°अशीत]
 तिरासीवाँ (कप्य) ।
 तेअ सक [तेजय्] तेज करना, पैनाना, धार
 तेज करना, तीक्ष्ण करना । तेइय (पङ्) ।
 तेअ देखो तइअ = तृतीय (रंभा) ।
 तेअ पुं [तेजस्] १ कान्ति, दीप्ति, प्रकाश,
 प्रभा (उवा; भग, कुमा, ठा ८) । २ ताप,

अभिताप (कुमा, सूअ १, ५, १) । ३ प्रताप ।
 ४ माहात्म्य, प्रभाव । ५ बल, पराक्रम
 (कुमा) । °मत्त वि [°विन्] तेजवाला,
 प्रभा-युक्त (पएह २, ४) । °वीरिय पु
 [°वीर्य] भरत चक्रवर्ती के प्रपौत्र का पौत्र,
 जिसको आदर्श भवन में केवलज्ञान हुआ था
 (ठा ८) ।
 तेअ न [स्तेय] चोरी (भग २, ७) ।
 तेअ देखो तेअय (भग) ।
 तेअ पु [?] टैक, स्तम्भ ।
 तेअसि वि [तेजस्विन्] तेजवाला, तेज-युक्त
 (श्रीप, रयण ४, भग, महा, सम १५२,
 पउम १०२, १४१) ।
 तेअग देखो तेअय (जीव) ।
 तेअण न [तेजन] १ तेज करना, पैनाना ।
 २ उत्तेजन (हे ४, १०४) । ३ वि. उत्तेजित
 करनेवाला (कुमा) ।
 तेअय न [तैजस] शरीर-सहचारी सूक्ष्म
 शरीर-विशेष (ठा २, १, ५, १, भग) ।
 तेअलि पु [तेतलिन्] १ मनुष्य जाति-विशेष
 (जं १, इक) । २ एक मन्त्री के पिता का
 नाम (गाया १, १४) । °पुत्त पुं [°पुत्र]
 राजा कनकरथ का एक मन्त्री (गाया १,
 १४) । °पुर न [°पुर] नगर-विशेष (गाया
 १, १४) । °सुय पु [°सुत] देखो °पुत्त
 (राज) । देखो तेतलि ।
 तेअव अक [प्र+दीप्] १ दीपना,
 चमकना । २ जलना । तेअवइ (हे ४, १५२,
 पङ्) ।
 तेअवाल देखो तेजपाल (हम्मीर २७) ।
 तेअविय वि [प्रदीप्त] जला हुआ (कुमा) ।
 २ चमका हुआ, उद्दीप्त (पाअ) ।
 तेअविय वि [तेजित] तेज किया हुआ (दे
 ८, १३) ।
 तेअस्सि पुं [तेजस्विन्] इक्ष्वाकु वंश के
 एक राजा का नाम (पउम ५, ५) ।
 तेआ छी [तेजा] पक्ष की तेरहवी रात
 (सुज्ज १०, १४) ।
 तेआ छी [तेजस्] त्रयोदशी तिथि (जो
 ४, जं ७) ।

तेआ छी [त्रेता] युग-विशेष, दूसरा युग;
 'तेमाजुगे य दासरही रामो सीयालक्खण-
 सजुओवि' (तो २६) ।
 तेआ° देखो तेअय (सम १४२, पि ६४) ।
 तेआलि पु [दे] वृक्ष-विशेष (पएण १,
 १—पत्र ३४) ।
 तेइच्छ न [चैकित्स्य] चिकित्सा-कर्म,
 प्रतीकार (दस ३) ।
 तेइच्छा छी [चिकित्सा] प्रतीकार, इलाज,
 दवा (आचा, गाया १, १३) ।
 तेइच्छिय देखो तेगिच्छिय (विपा १, १) ।
 तेइच्छी छी [चिकित्सा, चैकित्सी]
 प्रतीकार, इलाज (कप्य) ।
 तेइज्जग वि [तार्तीयिक] १ तीसरा । २
 ज्वर-विशेष, जाड़ा देकर तीसरे-तीसरे दिन
 पर आनेवाला ज्वर, तिजारा (उत्तनि ३) ।
 तेइह देखो तेअसि (सुर ७, २१७, सुपा
 ३३) ।
 तेउ पुं [तेजस्] १ आग, अग्नि (भग, दं
 १३) । २ लेश्या-विशेष, तेजो-लेश्या (भग;
 कम्म ४, ५०) । ३ अग्निशिख नामक इन्द्र
 का एक लोकपाल (ठा ४, १) । ४ ताप,
 अभिताप (सूअ १, १, १) । ५ प्रकाश,
 उद्योद (सूअ २, १) । °आय देखो °काय
 (भग) । °कत पु [°कान्त] लोकपाल देव-
 विशेष (ठा ४, १) । °काइय पुं [°कायिक]
 अग्नि का जीव (ठा ३, १) । °काय पुं
 [°काय] अग्नि का जीव (पि ३५५) ।
 °क्काइय देखो °काइय (पएण १, जीव
 १) । °प्पभ पुं [°प्रभ] अग्निशिख नामक
 इन्द्र का एक लोकपाल (ठा ४, १) । °प्फास
 पुं [°स्पर्श] उष्ण स्पर्श (आचा) । °लेस
 वि [°लेश्य] तेजो-लेश्यावाला (भग) ।
 °लेसा छी [°लेश्या] तप विशेष के प्रभाव
 से होनेवाली शक्ति-विशेष से उत्पन्न होती
 तेज की ज्वाला (ठा ३, १, सम ११) ।
 °लेस्स देवो °लेस (पएण १७) । °लेस्सा
 देखो °लेसा (ठा ३, ३) । °सिह पु
 [°शिख] एक लोकपाल (ठा ४, १) ।
 °सोय न [शौच] भस्म आदि से किया
 जाता शौच (ठा ५, २) ।

कर्म का पारितोषिक, दान, भेंट (कप्पू, सूअ २, ५)। °कंखि वि [°काङ्क्षिन्] दक्षिणा का श्रमिलापी (पठम ३०, ६३)। °यण न [°यन] १ सूर्य का दक्षिण दिशा में गमन। २ कर्म की संक्रान्ति से घन की संक्रान्ति तक के छ मास का काल (जो १)। °वध, °वह पु [°पथ] दक्षिण देश (कप्पू, १४२ टी)।

दक्खिणापुव्वा देखो दक्खिण पुव्वा (पव १०६)।

दक्खिणिह वि [दाक्षिणात्य] दक्षिण दिशा में उत्पन्न या स्थित (मम १००, पठम ६, १५६)।

दक्खिणेय वि [दाक्षिणेय] जिसको दक्षिणा दी जाती हो वह (विमे ३२७१)।

दक्खिणण } न [दाक्षिण्य] १ मुलाहजा,
दक्खिन्न } मुखवत्, 'दक्षिणणेण वि एतो
सुहम सुहावेसि अम्ह हिअग्राइ' (गा ८५, स्वप्न ६८)। २ उदारता, औदार्य। ३ सरलता, मार्दव (सुर १, ६५, २, ६२, प्रासू ८)। ४ अनुकूलता (दस २)।

दक्खिय वि [दर्शित] दिखलाया हुआ (भवि)।
दक्खु देखो दक्ख = दृश्।

दक्खु देखो दक्ख = दक्ष (सूअ १, २, ३)।
दक्खु वि [पश्य, द्रष्टृ] १ देखनेवाला। २ पु सर्वज्ञ, जिन-देव (सूअ १, २, ३)।

दक्खु वि [दृष्ट] १ विलोकिता। २ पु सर्वज्ञ, जिन-देव (सूअ १, २, ३)।

दग न [दक] १ पानी, जल (स ५१, दं ३४, कप्प)। २ पुं ग्रह-विशेष, ग्रहाविघ्नायक देव-विशेष (ठा २, ३)। ३ लवण-समुद्र में स्थित एक आवास पर्वत (सम ६८)। °गम्भ पुं [°गर्भ] अन्न, वादल (ठा ४, ४)। °तुड पुं [°तुण्ड] पक्षि-विशेष (पण्ह १, १)। °पचवन्न पुं [°पञ्चवर्ण] ज्योतिष्क देव-विशेष, एक ग्रह का नाम (ठा २, ३)। °पासाय पुं [°प्रासाद] स्फटिक रत्न का बना हुआ महल (जं १)। °पिप्पली स्त्री [°पिप्पली] वनस्पति-विशेष (पण्ह १)। °भास पुं [°भास] वेलन्वर नागराज का एक आवास-पर्वत (सम ७३)। °मंचग पुं

[°मञ्चक] स्फटिक रत्न का मन्च (जं १)। °मडव पुं [°मण्डप] १ मण्डप-विशेष, जिसमें पानी टपकता हो (पण्ह २, ५)। २ स्फटिक रत्न का बनाया हुआ मण्डप (ज १)। °मट्टिया, °मट्टी स्त्री [°मृत्तिका] १ पानीवाली मिट्टी (वृह ४, पडि)। २ कला-विशेष (जं २)। °रक्खस पुं [°राक्षस] जल-मानुष के आकार का जंतु-विशेष (सूअ १, ७)। °रय पुंन [°रजस्] उदक-विन्दु, जल-कणिका (कप्प)। °वण्ण पुं [°वर्ण] ज्योतिष्क ग्रह-विशेष (सुज्ज २०)। °वारग, °वारय पु [°वारक] पानी का छोटा घटा (राय, राया १, २)। °सीम पु [°सीमन्] वेलंघर नागराज का एक आवास-पर्वत (राज)।

दग न [दक] स्फटिक रत्न (राय ७५)।
°सोयरिअ वि [°शौकरिक] साक्ष्य मत का अनुयायी (पिंड ३१४)।

दच्चा देखो दा।

दच्छ देखो दक्ख = दृश्। भवि. दच्छं, दच्छसि, दच्छिहिसि (प्राप्र, उत्त २२, ४४, गा ८१६)।

दच्छ देखो दक्ख = दक्ष, 'रोगसमदच्छ ओसहं' (उप ७२८ टी, पण्ह २, ३—पत्र ४५, हे २, १७)।

दच्छ वि [दे] तीक्ष्ण, तेज (दे ५, ३३)।

दडमन } देखो दृह = दह।
दडम्माण }

दट्ट वि [दट्ट] जिसको दाँत से काटा गया हो वह (पड, महा)।

दट्ट वि [दट्ट] देखा हुआ, विलोकिता (राज)।

दट्टतिय वि [दार्ष्टान्तिक] जिसपर दृष्टान्त दिया गया हो वह अर्थ (उप पृ १४३)।

दट्टव्व } देखो दक्ख = दृश्।
दट्टु }

दट्टु वि [द्रष्टृ] देखनेवाला, प्रेक्षक, दर्शक (विसे १८६५)।

दट्टुआण }

दट्टु }

दट्टण }

दट्टणं }

देखो दक्ख = दृश्।

दडवड पुं [दे] १ घाटी, दर्रा, भवस्कन्द (दे ५, ३५, हे ४, ४२२; भवि)। २ शीघ्र, जल्दी (चंड)।

दडि स्त्री [दे] वाद्य-विशेष (भवि)।

दड्ढ वि [दग्ध] जला हुआ (हे १, २१७, भग)।

दड्ढालि स्त्री [दे] दव-मागं (पड)।

दढ वि [दढ] १ मजवूत, बलवान्, पोढ (ग्रीप, मे ८, ६०)। २ निश्चल, स्थिर, निष्कम्प (सूअ १, ४, १, आ २८)। ३ समर्थ, क्षम (सूअ १, ३, १)। ४ अति-निविड, प्रगाढ (राय)। ५ कठोर, कठिन (पंचा ४)। ६ क्रिबि, अतिशय, अत्यन्त (गंचा १, ७)। °केड पुं [°केतु] ऐरवत क्षेत्र के एक भावी जिन-देव का नाम (पव ७)। °णेमि देखो °नेमि (राज)। °धणु [°धनुष] १ ऐरवत क्षेत्र के एक भावी कुलकर का नाम (सम १५३)। २ भरत-क्षेत्र के एक भावी कुलकर का नाम (राज)। °धम्म वि [°धर्मन्] १ जो धर्म में निश्चल हो (वृह १)। २ देव-विशेष का नाम (भावम)। °धिईय वि [°धृतिक] अतिशय धैर्यवाला (पठम २६, २२)। °नेमि पुं [°नेमि] राजा समुद्रविजय का एक पुत्र, जिसने भगवान् नेमिनाय के पास दीक्षा ली थी और सिद्धाचल पर्वत पर मुक्ति पाई थी (अत १४)। °पड्ण वि [°प्रतिज्ञ] १ स्थिर-प्रतिज्ञ, सत्य-प्रतिज्ञ। २ पुं. सूर्यास देव का आगामी जन्म में होनेवाला नाम (राय)। °प्पहारि वि [°प्रहारिन्] १ मजवूत प्रहार करनेवाला। २ पुं. जैनमुनि-विशेष, जो पहले चोरो का नायक था और पीछे से दीक्षा लेकर मुक्त हुआ था (राया १, १८, महा)। °भूमि स्त्री [°भूमि] एक गाँव का नाम (भावम)। °मूढ वि [°मूढ] नितान्त मूर्ख (दे १, ४)। °रह पुं [°रथ] १ एक कुलकर पुरुष का नाम (सम १५०)। २ भगवान् श्री शितलनाथजी के पिता का नाम (सम १५१)। °रहा स्त्री [°रथा] लोकपाल आदि देवों के अग्र-महिषियों की वाह्य परिपद (ठा ३, १—पत्र १२७)। °उ पुं [°युप्] भगवान् महावीर के समय

(भोष ५६६) । °णाह पु [°नाथ] तीनों जगत् का स्वामी, परमेश्वर (पद्) । °मडण न [°मण्डन] १ तीनों जगत् का भूषण । २ पु. रावण का पट्ट-हस्ती (पञ्च ८०, ६०) ।

तेल न [तैल] तेल, तिल का विकार, स्निग्ध द्रव्य विशेष (हे २, ६८, अणु पव ४) । °केला छी [°केला] मिट्टी का भाजन विशेष (राज) । °पल्ल न [°पल्य] तैल रखने का मिट्टी का भाजन-विशेष (दसा १०) । °पाइया छी [°पायिका] क्षुद्र जन्तु-विशेष (आवम) ।

तेल्लग न [तैलक] सुरा-विशेष (जीव ३) । तेल्लिअ पुं [तैलिक] तेल बेचनेवाला (वच ६) । तेल्लोअ } देखो तेल्लक (पि १६६, प्राप्र) । तेल्लोअ } तेल्ले } (अप) देखो तह = तथा (हे ४, तेल्ले } ३६७, कुमा) ।

तेवट्ट वि [टैपट्ट] तिरसठ की सख्यावाला, जिसमें तिरसठ अधिक हो ऐसी सख्या; 'तिस्त्रि तेवट्टाई पावादुयसयाइ' (पि २६५) ।

तेवड (अप) वि [तावत्] उतना (हे ४, ४०७, कुमा) ।

तेवण्णासा छी [त्रिपञ्चाशत्] त्रेपन, ५३ (प्राक ३१) ।

तेवीसइ छी [त्रयोविंशति] तेईस (प्राक ३१) ।

तेवुत्तरि देखो ते-वत्तरि (कम्म ५, ४) ।

तेह (अप) वि [तादृश्] उसके जैसा, वैसा (हे ४, ४०२, पद्) ।

तेहिं (अप) अ वास्ते, लिए (हे ४, ४२५, कुमा) ।

तेहिय वि [त्र्यादिक] तीन दिन का (जीवस ११६) ।

तेहुत्तरि देखो ते-वत्तरि (अणु १७६) ।

तो देखो तओ (आचा, कुमा) ।

तो अ [तदा] तब, उस समय (कुमा) ।

तोअय पु [दे] चातक पक्षी (दे ५, १८) ।

तौड देखो तुड (हे १, ११६, प्राप्र) ।

तौतडि छी [दे] कर्म, दही-भात की बनी हुई एक खाद्य वस्तु (दे ५, ४) ।

तोक्कय वि [दे] विना ही कारण तत्पर होने-वाला (दे ५, १८) ।

तोक्खार देखो तुक्खार, 'खुरखुरखयखोणीय-लअसखतोक्खारलखजुओ' (सुर १२, ६१) ।

तोडअ न [त्रोटक] छन्द-विशेष (पिंग) ।

तोड सक [तुड्] १ तोडना, भेदन करना ।

२ अक. टूटना । तोडइ (हे ४, ११६) । वक्र. तोडत (भवि) । सक. तोडिउ (भवि), तोडित्ता (ती ७) ।

तोड पुं [त्रोड] श्रुति (उप पृ १८) ।

तोडण वि [दे] असहन, असहिष्णु (दे ५, १८) ।

तोडण न [तोदन] व्यथा, पीडा-करण (राज) ।

तोडर न [दे] टोडर, माल्य-विशेष (सिरी १०२३) ।

तोडहिआ छी [दे] वाद्य-विशेष (आचा २, ११) ।

तोडिअ वि [त्रोटित] तोडा हुआ (महा, सण) ।

तोडु पु [दे] क्षुद्र कोट-विशेष, चतुरिन्द्रिय जीव की एक जाति (राज) ।

तोण पुंन [तूग] शरवि, भाया, तरकस, तूणीर (पाप्र, औप, हे १, १२५, विपा १, ३) ।

तोणीर पुंन [तूणीर] शरवि, भाया (पाप्र, हे १, १२४, भवि) ।

तोत्त न [तोत्र] प्रतोद, बैल को मारने या हाँकने का वाँस का आयुध-विशेष, पैना, सोटा, चाबुक (पाप्र, दे ३, १६, सुपा २३७, सुर १४, ५१) ।

तोत्तडि [दे] देखो तौतडि (पाप्र) ।

तोदग वि [तोदक] व्यथा उपजानेवाला, पीडा-कारक (उत्त २०) ।

तोमर पुंन [दे तोमर] मधपुडा, मधुमक्खी का घर या छत्ता, 'अह वड्डियाउ तोमर मुहाउ महुमक्खियाउ सब्वत्तो' (धर्मवि १२४) ।

तोमर पुं [तोमर] १ बाण-विशेष, एक प्रकार का बाण (परह १, १, सुर २, २८; औप) ।

२ न छन्द-विशेष (पिंग) ।

तोमरिअ पुं [दे] १ शस्त्र का प्रमाणन करने-वाला (दे ५, १८) । २ शस्त्र-माजंन (पद्) ।

तोमरिगुंडी छी [दे] बल्ली-विशेष (पाप्र) ।

तोमरी छी [दे] बल्ली, लता (दे ५, १७) ।

तोम्हार (अप) देखो तुम्हार (पि ४३४) ।

तोय न [तोय] पानी, जल (परह १, ३, वज्जा १४, दे २, ४७) । °धरा, धारा, छी [°यारा] एक दिक्कुमारी देवी (इक, ठा ८) ।

°पट्ट, °पिट्ट न [°पृष्ठ] पानी का उपरि-भाग (परह १, ३, औप) ।

तोय पुं [तोद] व्यथा, पीडा (ठा ४, ४) ।

तोरण न [तोरण] १ द्वार का अवयव-विशेष, बहिर्द्वार (गा २६२) । २ वन्दनवार, फूल या पत्ती की माला (भालर) जो उत्सव में लटकाई जाती है (औप) । °उर न [°पुर] नगर-विशेष (महा) ।

तोरविअ वि [दे] उत्तेजित (पाप्र, कुप्र १६२) ।

तोरांमदा छी [दे] नेत्र का रोग-विशेष (महानि ३) ।

तोल देखो तुल = तोलय् । तोलइ, तोलेइ (पिंग, महा) । वक्र. तोलत (वज्जा १५८) ।

कवक तोल्लिज्माण (सुर १५, ६४) । क. तोल्लियव्व (स १६२) ।

तोल पुंन [दे] मगव-देश प्रसिद्ध पल, परिमाण-विशेष (तंडु) ।

तोलण पुं [दे] पुरुष, आदमी (दे ५, १७) ।

तोलण न [तोलन] तौल करना, तौलना, नाप करना (राज) ।

तोलिय वि [तोलित] तौला हुआ (महा) ।

तोह न [तौल्य, तौल] तौल, वजन (कुप्र १४६) ।

तोवट्ट पु [दे] १ कान का आभूषण-विशेष । कमल की कणिका (दे ५, २३) ।

तोस सक [तोषय्] खुशी करना, सन्तुष्ट करना । तोसइ (उव) । कर्म तोसिज्जइ (गा ५०८) ।

तोस पुं [तोप] खुशी, आनन्द, संतोष (पाप्र, सुपा २७५) । °यर वि [°कर] संतोष-कारक (काल) ।

तोस न [दे] घन, दौलत (दे ५, १७) ।

तोसलि पुं [तोसलिन] १ ग्राम-विशेष । २ देश-विशेष । ३ एक जैन आचार्य (राज) ।

३) ४ पशुओ को दी जाति शिक्षा (पउम १०३, ७१)।

दमणक } पुन [दमनक] १ दौना, सुगन्धित
दमणग } पत्रवाली वनस्पति-विशेष (पणह
दमणय } २, ५, पण १, गउड)। छन्द-
विशेष (पिग)। ३ गन्ध-द्रव्य-विशेष (राज)।

दमदमा अक [दमदमाय्] आडम्बर
करना। दमदमाइ, दमदमाअइ (हे ३, १३८)।

दमय वि [दे द्रमक] दरिद्र, रक, गरीब
(दे ५, ३४, विसे २८४५)।

दमयती स्त्री [दमयन्ती] राजा नल की पत्नी
का नाम (पडि, कुप्र ५४, ५६)।

दमि वि [दमिन्] जितेन्द्रिय (उत्त २२)।

दमिअ वि [दमित] निगूहीत, रोका हुआ
(गा ८२३, कुप्र ४८)।

दमिल पु [द्रविड] १ एक भारतीय देश।
२ पुत्री उसके निवासी मनुष्य, द्राविड (कुप्र
१७२, इक, औप)। स्त्री °ली (गाया १,
१, इक, औप)।

दमेयव्व } देखो दम = दमय्।
दम्म }

दम्म पुं [द्रम्म] सोने का सिक्का, सोना-
मोहर (उप पृ ३८७, हे ४, ४२२)।

दम्मत देखो दम = दमय्।

दय सक [दय्] १ रक्षण करना। २ कृपा
करना। ३ चाहना। ४ देना। दयइ (आचा)।
वक्र दअत, दअमाण। (से १२, ६४, ३,
१२, अभि १२)।

दय न [दे दरु] जल, पानी (दे ५, ३३,
बृह १)। °सीम पुं [°सीमन्] लवण-समुद्र
में स्थित एक आवास-पर्वत (सम ६८)।

दय न [दे] शोक, अफसोस, दिलगिरी (दे ५,
३३)।

दय देखो दव = दव (से १, ५१, १२, ६५)।

°दय वि [°दय] देनेवाला (कप्प, पडि)।

दया स्त्री [दया] करुणा, अनुकम्पा, कृपा
(दस ६, १)। °वर वि [°पर] दयालु
(पउम २६, ४०, उप पृ १६१)।

दयाइअ वि [दे] रक्षित (दे ५, ३५)।

दयालु वि [दयालु] दयावाला, करुण (हे १,
१७७, १८०, पउम १६, ३१, सुपा ३४०,
आ १६)।

दयावण } वि [दे] दीन, गरीब, रक (दे
दयावन्न } ५, ३५, भवि, पउम ३३, ८६)।

दर सक [दर] आदर करना। दरइ (पड्)।

दर पुन [दर] भय, डर (कुमा)। २ अ-
ईपत, थोडा, अल्प (हे २, २१५)।

दर पुन [दर] १ गुफा, कन्दरा। २ गतं,
गङ्गा, गढा या गढहा, दरार, 'ते य दरा
मिठया ते य' (धर्मवि १४०)।

दर न [दे] अद्ध, आघा (दे ५, ३३, भवि,
हे २, २१५, बृह ३)।

दरदर पु [दे] उल्लास (दे ५, ३७)।

दरमत्ता स्त्री [दे] बलात्कार, जवरदस्ती
(दे ५, ३७)।

दरमल सक [मर्दय्] १ चूणं करना,
विदारना। २ आघात करना। दरमलद
(भवि)। वक्र. दरमलत (भवि)।

दरमलिय वि [मर्दित] आहत, चूणित
(भवि)।

दरवल्लिअ वि [दे] उपभुक्त (कुमा)।

दरवल्ल पुं [दे] ग्राम-स्वामी, गाँव का मुखिया
(दे ५, ३६)। °णिहेल्लग न [दे] शून्य
गृह, खाली घर (दे ५, ३७)। °वल्लह पुं
[वल्लभ] १ दयित, प्रिय (दे ५, ३७)। २
कातर, डरपोक (पड्)। °विंदर वि [दे]
१ दीर्घ, लम्बा। २ विरल (दे ५, ५२)।

दरस (शौ) देखो दरिस। दरसेदि (प्राकृ
६६)।

दरि न [दरी] कन्दरा, गुफा, 'दरीणि वा'
(आचा २, १०, २)।

दरि° देखो दरी। °अर पुं [°चर] किनर
(से ६, ४४)।

दरिअ वि [दर] गर्विष्ठ, अभिमानी (हे १,
१४४, पात्र)।

दरिअ वि [दीर्ण] १ डरा हुआ, भीत (कुमा,
सुपा ६४५)। २ फाटा हुआ, विदारित
(अत ७)।

दरिअ (अप) पुं [दरिद्र] छन्द विशेष (पिग)।
दरिआ स्त्री [दरिका] कन्दरा, गुफा (नाट—
विक्र ८४)।

दरिइ वि [दरिद्र] १ निर्धन, नि स्व, धन-
रहित। २ दीन, गरीब (पात्र, प्रासू २३,
कप्प)।

दरिइ } वि [दरिद्रिन्, °क] ऊपर देखो;
दरिइय } 'अम्हे दरिइणो, कह विवाहमंगलं
रन्नो य पूयं करेमो' (महा, सण, पि २५७)।

दरिइय वि [दरिद्रित] दु स्थित, जो धन-
रहित हुआ हो (महा, पि २५७)।

दरिइहीय वि [दरिद्रीभूत] जो निर्धन हुआ
हो (ठा ३, १)।

दरिस सक [दर्शय्] दिखलाना, बतलाना।

दरिसइ, दरिसेइ (हे ४, ३२, कुमा, महा)।

वक्र. दरिसत (सुपा २४)। कृ. दरिसणिज्ज,

दरिसणीय (औप, पि १३५, सुर १०, ६)।

दरिसण देखो दसण = दर्शन (हे २, १०५)।

°पुर न [°पुर] नगर-विशेष (इक)।

°आवरणी स्त्री [°वरणी] विद्या-विशेष
(पउम ५६, ४०)।

दरिसणिज्ज न [दर्शनीय] १ आकृति, रूप।

२ अवलोकन (तट्ट ३६)।

दरिसणिज्ज } देखो दरिस। २ न भेंट, उप-
दरिसणीय } हार, 'गहिअण दरिसणीय
संपत्तो राइणो मूल' (सुर १०, ६)।

दरिसाव देखो दरिस। वक्र. दरिसावत (उप
पृ १८८)।

दरिसाव पुं [दर्शन] दर्शन, साक्षात्कार
'एसो य महप्पा कइयधरेनु दरिसाव दाअण
पडिनियत्तइ' (महा), 'पईव इव दाउ खणमेग
दरिसाव पुणोवि अइसणोहोइ' (सुगा ११५)।

दरिसाव पुं [दर्शन] दिखाना (वव १)।

दरिसावण न [दर्शन] १ दर्शन, साक्षात्कार
(आव १)। २ वि. दर्शक, दिखलानेवाला
(भवि)।

दरिसि वि [दर्शिन्] देखनेवाला (उवा, पि
१३५, स ७२७)।

दरिसिअ वि [दर्शित] दिखलाया हुआ
(कुमा, उव)।

दरी स्त्री [दरी] गुफा, कन्दरा (गाया १, १,
से ६, ४४; उप पृ २६८, स ४१३)।

दरुम्मिल्ल वि [दे] धन, निविड (दे ५, ३७)।

दल सक [दा] देना, दान करना, अर्पण
करना। दलइ (कप्प; कस), 'ज तस्स मोल्लं
तमह दलामि' (उप २११ टी)। वक्र. दल-
माण, दलेमाण (कप्प, गाया १, १६—
पत्र २०४, ठा ४, २—पत्र २१६) सङ्ग.
दलित्ता (कप्प)।

गुजरात का एक नगर, जो आजकल 'खमात' नाम से प्रसिद्ध है (ती ५१)। 'पुर न [पुर] नगर-विशेष, खमात (सिंघ १)। थंभण्या छी [स्तम्भना] स्तब्ध-करण (ठा ४, ४)।

थंभण्या छी [स्तम्भनिका] विद्या-विशेष (धर्मवि १२४)।

थंभणी छी [स्तम्भनी] स्तम्भन करनेवाली विद्या-विशेष (रागा १, १६)।

थंभय देखो थभ = स्तम्भ (कुमा)।

थंभिय वि [स्तम्भित] १ स्तब्ध किया हुआ, थमाया हुआ (कुप्र १४१, कुमा, कप्प, औप)। २ जो स्तब्ध हुआ हो, अवपृव्व (स ४६४)।

थक्क अक [स्था] रहना, बैठना, स्थिर होना। थक्कइ (हे ४, १६, पिग)। भवि, थक्कम्सइ (पि ३०६)।

थक्क अक [फक्] नीचे जाना। थक्कइ (हे ४, ८७)।

थक्क अक [श्रम्] थकना, श्रान्त होना। थक्कंति (पिग)।

थक्क वि [स्थित] रहा हुआ (कुमा, वज्जा ३८, सुपा २३७, आरा ७७, सट्टि ६)।

थक्क पुं [दे] १ अवसर, प्रस्ताव, समय (दे ५, २४, वव ६, महा विमे २०६३)। २ वि. थका हुआ, श्रान्त, 'थक्क सव्वशरीर हियए सुलं सुदुसह एइ' (सुर ७, १८५, ४ १६५)।

थक्किअ वि [श्रान्त] थका हुआ (पिग)।

थक्कव सक [स्थापय] स्थापन करना, रखना। थक्कवइ (प्राक १२०)।

थग देखो थय = स्थग्य। भवि. थगइस्स (पि २२१)।

थगाण न [स्थगण] पिवान, ढकना, सवरण, आवरण, आच्छादन, पर्दा (दे २, ८३, ठा ४, ४)।

थगथग अक [थगथगाय] घडकना, काँपना। वक्क. थगथगिंत (महा)।

थगिय वि [स्थगित] पिहित, आच्छादित, आवृत (दस ५, १, आवम)।

थगियं देवो थइअं। गगाहि पुं [ग्राहिन्] ताम्बूल-वाहक नौकर (सुपा ३३६)।

थग्गया छी [दे] चड्ड, चीच (दे ५, २६)। थग्घ सक [स्ताघ्] जल की गहराई को नापना। कमं थग्घज्जए (पव ८१)।

थग्घ पु [दे] बाह, तला, पानी के नीचे की भूमि, गहराई का अन्त, सीमा (दे ५, २४)।

थग्घा छी [दे] ऊपर देखो (पाम्म)।

थट्ट पुन [दे] १ ठठ, मोड, झुण्ड, समूह, ग्रुथ, जत्था, 'दुद्धरतुरंगयट्टा' (सुपा २८८), 'विहडइ लहु दुट्टानिदुवोघट्टयट्ट' (लहुअ ४)। २ ठाठ, ठाट, तडक-भडक, सजधज, आडम्बर (भवि)।

थट्टि छी [दे] पशु, जानवर (दे ५, २४)। थड पुन [दे] ठठ, ग्रुथ, समूह (भवि)।

थड्ड वि [स्तब्ध] १ निश्चल। २ अभिमानी गर्वित (सुपा ४३७, ५८२)।

थड्डिअ वि [स्तम्भित] १ स्तब्ध किया हुआ। २ स्तब्ध, निश्चल। ३ न. गुरु-वन्दन का एक दोष, अकड कर गुरु को किया जाता प्रणाम (गुमा २३)।

थण अक [स्तन्] १ गरजना। २ आक्रन्द करना, चिल्लाना। ३ आक्रोश करना। ४ जोर से नौसास लेना। वक्क. थणत (गा २६०)।

थण पुं [स्तन] थन, कुच, पयोधर, चूची (आचा, कुमा, काप्र १६१)। 'जीवि वि [जीविन्] स्तन-पान पर निभनेवाला बालक (आ १४)। 'वई छी [वती] बड़े स्तनवाली (गडड)। 'विसारि वि [विसारिन्]। स्तन पर फैलनेवाला (गडड)। 'सुत्त न [सूत्र] जर-सूत्र (दे)। 'हर पु [भर] स्तन का भार या बोझ (हे १, १८६)।

थणंधय पुं [स्तनन्धय] स्तन-पान करनेवाला बालक, छोटा बच्चा, 'निययं थण धयतं थणंधयं हवि पिच्छति' (सुर १०, ३७, अञ्जु ६३)।

थणण न [स्तनन] १ गर्जन, गरजना (सूअ १, ५, २)। २ आक्रन्द, चिल्लाहट (सूअ १, ५, १)। ३ आक्रोश, अभिशाप (राज)। ४ आवाजवाला नौसास (सूअ १, २, ३)।

थणय पुं [स्तनक] दूसरी नरक-भूमि का एक नरक-स्थान (देवेन्द्र ६)।

थणोलुअ पु [स्तनोलुअ] दूसरी नरक-भूमि का एक नरक-स्थान (देवेन्द्र ७)।

थणिय पुं [स्तनित] एक नरक-स्थान (देवेन्द्र ६, २६)।

थणिय न [स्तनित] १ मेघ का गर्जन (वज्जा १२, दे ५, २७)। २ आक्रन्द, चिल्लाहट (सम १५३)। ३ पुं भवनपति देवों की एक जाति (औप, पएह १, ४)। 'कुमार पु [कुमार] भवनपति देवों की एक जाति (ठा १, १)।

थणिल्ल मक [चोरय] चुराना, चोरी करना। थणिल्लइ (प्राक ७२)।

थणिल्ल वि [स्तनवन्] स्तनवाला (कप्प)। थणुल्ल पु [स्तनक] छोटा स्तन (गडड)।

थणु देखो थाणु (गा ४२२)।

थत्तिअ न [दे] विग्राम (दे ५, २६)।

थट्ट देखो थड्ड (सम ५१, गा ३०४, वज्जा १०)।

थन्न न [स्तन्य] स्तन का दूध। 'जीवि वि [जीविन्] छोटा बच्चा (सुपा ६१६)।

थप्प सक [स्थापय] रखना, थप्पी करना। थप्पइ (सिरि ८६७)।

थप्पण न [स्थापन] न्यास, न्यसन (कुप्र ११७)।

थप्पिअ वि [स्थापित] रक्ता हुआ, न्यस्त (पिग)।

थव्व अक [स्तम्] अहंकार करना। थव्वइ (सूअ १, १३, १०)।

थव्वभर पु [दे] अयोध्या नागरी के समीप का एक द्रह-दइ या झील (ती ११)।

थमिअ वि [दे] विस्मृत (दे ५, २५)।

थय सक [स्थगय] आच्छादन करना, आवृत करना, ढकना। थएइ, थएसु (पि ३०६, गा ६०५)। भवि. थइस्सं (गा ३१४)। हेक्क थइउ (गा ३६४)।

थय वि [स्तृत] व्याप्त, भरपूर (से १, १)।

थय पु [स्तव] स्तुति, स्तवन, गुण-कीर्तन (अजि ३६, सं ४४)।

थयण न [स्तवन] ऊपर देखो, 'धुइययण-वंदणमसणाणि एगट्ठिआणि एयाइ' (आव २)।

पस, नय-विशेष, 'द्वयद्वयस्म सर्वं सया
अणुप्पन्नमविण्णु' (सम्म ११, विसे ४५७)।
°लिग न [°लिङ्ग] बाह्य वेप (पचा ४)।
°लिगि वि [°लिङ्गिन्] भेषधारी साधु (पु
१०)। °लेस्सा ली [°लेस्या] शरीर आदि
पौद्गलिक वस्तु का रंग, रूप (भग)। °वेय
पुं [°वेद] पुरुष आदि का बाह्य आकार
(राज)। °यिरिय पु. [°यार्य] अग्रधान
आचार्य, आचार्य के गुणो ने रहित आचार्य
(पचा ६)।

द्वय न [द्वय] योग्यता, 'ममयस्मि द्वय-
सद्वो पाय ज जोगयाए हठो त्ति, एिख्वच-
रित' (पचा ६, १०)।

द्वयहलिया ली [द्वयहलिका] वनस्पति-
विशेष (पण १—पत्र ३५)।

द्वयि° देखो द्वयी (पह)।

द्वयिदिअ न [द्वयेन्द्रिय] स्थूल इन्द्रिय
(भग)।

द्वयीली [द्वयी] १ कछी, कलछी, चमची, डोई
(पाम्र)। २ साँप की फन (दे ५, ३७)।
°अर °कर पुं [°कर] साँप, सर्प (दे ५,
३७, पण १)।

द्वयी ली [दे] वनस्पति-विशेष (पण १—
पत्र ३४)।

दस वि व [दशन्] दस, नो श्रीर एक (हे
१, १६२, ठा ३, १—पत्र ११६, सुपा
२६७)। °उर न [°पुर] नगर-विशेष
(विसे २३०३)। °कठ पुं [°कण्ठ] रावण,
एक लका-पति (से १५, ६१)। °कंधर पुं
[°कन्धर] राजा रावण (गउड) °कालिय
न [°कालिक] एक जैन आगम-ग्रन्थ (दसनि
१)। °न न [°क] दश का समूह (दं
३८, तव १२)। °गुण वि [°गुण] दस
गुना (ठा १०)। °गुणिअ वि [°गुणित]
दस-गुना (भग, आ १०)। °ग्गीव पु
[°ग्रीव] रावण (पउम ७३, ८)। °दस
मिया ली [°दशमिका] जैन साधु का
एक धार्मिक अनुष्ठान, प्रतिमा-विशेष (सम
१००)। °दिवसिय वि [°दिवसिक] दस
दिन का (राया १, १—पत्र ३७)। °छ
पुं [°छ] पाँच, ५ (सम ६०, राया १,

१)। °धणु पु [°धनुप्] ऐश्वर्य क्षेत्र के
एक भावी कुलकर पुरुष (मम १५३)।
°पएसिय वि [°प्रादेशिक] दस श्रम्यव-
वाला (ठा १०)। °पुर देखो °उर (महा)।
°पुडि वि [°पूर्विन्] दस पूर्व-ग्रन्थो का
ग्रन्थासी (श्रीष १)। °वल पु [°वल]
भगवान् बुद्ध (पाम्र, हे १ २६२)। °म वि
[°म] १ दसवाँ (राज)। २ चार दिनों का
लगातार उपवास (आचा, राया १, १, चुर
५, ५५)। °मभत्तिय वि [°मभक्तिक]
चार दिनों का लगातार उपवास करनेवाला
(पण २, ३)। °मासिअ वि [°मापिक]
दस मासे का तीलवाला, दस मासे का परि-
माणवाला (कप्प)। °मो ली [°मो] १
दसवाँ। २ तिथि-विशेष (सम २६)। °मुहि-
याणतग न [°मुद्रिकानन्तर] हाथ की
उगलियों की दस श्रृण्ठियाँ (श्रीप)। °मुह
पु [°मुख] रावण, राक्षस-पति (हे १,
२६२, प्राप्र, हेका ३३४)। °मुहसुअ पुं
[°मुखसुत] रावण का पुत्र, मेघनाद आदि
(से १३, ६०)। °य देखो °ग (ठा १०)।
°रत्त न [°रात्र] दस रात (विपा १, ३)।
°रह पु [°रथ] १ रामचन्द्रजी के पिता का
नाम (सम १५२, पउम २०, १८३)। २
अतीत उत्सर्पणी-काल में उत्पन्न एक कुलकर
पुरुष (ठा ६—पत्र ४४७)। °रहसुय पुं
[°रथसुत] राजा दशरथ का पुत्र—राम,
लक्ष्मण, भरत श्रीरशमुघ्न (पउम ५६, ८७)।
°वअण पु [°वदन] राजा रावण (मे १०,
५)। °वल देखो °वल (प्राप्र)। °विह वि
[°विध] दस प्रकार का (कुमा)। °वेआ-
लिअ न [°वैकालिक] जैन आगम-ग्रन्थ-
विशेष (दमनि १, एदि)। °हा अ [°धा]
दस प्रकार से (जी २४)। °णण पु [°नन]
राक्षसेश्वर रावण (से ३, ६३)। °हिआ
ली [°हिका] पुत्र-जन्म के उल्लेख में
किया जाता दस दिनों का एक उत्सव (कप्प)।

दसग वि [दशक] दस वर्ष की उम्र का
(तहु १७)।

दसण पुं [दशन] १ दाँत, दन्त (भग, कुमा)।
२ न. दश, काटना (पव ३८)। °च्छय पु
[°च्छद] होठ, अघर, मोठ (सुर १२, २३४)।

दसण पु [दशार्ण] देश-विशेष (उप २११
टी, कुमा)। °कूड न [°कूट] शिवर-विशेष
(आवम)। °पुर न [°पुर] नगर-विशेष
(ठा १०)। °भद पुं [°भद्र] दशाणुपुर
का एक विख्यात राजा, जो अद्वितीय घाटम्बर
से भगवान् महावीर को वन्दन करने गया था
श्री ग् जिमने भगवान् महावीर के पास दीक्षा
ली थी (पडि)। °वइ पु [°पति] दशाण
देश का राजा (कुमा)।

दसतीण न [दे] वान्य विशेष (पण १—
पत्र २४)।

दसन्न देखो दसण (सत्त ६७ टी)।

दमा ली [दशा] १ न्यति, भवत्या (गा
२२७; २८४, प्राप् ११०)। २ सौ वर्ष के
प्राणी की दस-दस वर्ष की भवत्या (दसनि
१)। ३ मृत या जल का छोटा श्रीर पनला
घागा (भोव ७२५)। ४ व. जैन आगम-
ग्रन्थ-विशेष (अणु)।

दसार पुं [दशार्ह] १ समुद्रविजय आदि दश
यादव (सम १२६; हे २, ८५, अत २,
राया १, ४—पत्र ६६)। २ वामुदेव,
श्रीकृष्ण (राया १, १६)। ३ वलदेव
(आवम)। ४ वामुदेव की संतति (राज)।
°णैउ पुं [°नेतृ] श्रीकृष्ण (उव)। °नाह
पुं [°नाथ] श्रीकृष्ण (पाम्र)। °वइ पु
[°पति] श्रीकृष्ण (कुमा)।

दमिया देखो दसा (सुपा ६४१)।

दसु पुं [दे] शोक, दिलगोरी (दे ५, ३४)।

दसुत्तरसय न [द्विजोत्तरशत] १ एक सौ
दस। २ वि एक सौ दसवाँ, ११० वां
(पउम ११०, ४५)।

दसुय पुं [दस्यु] लुटेरा, डाकू, चोर, तन्कर
(उत्त १०, १६)।

दसेर पु [दे] सूत्र-कनक (दे ५, ३३)।

दस्स देखो दस = दशय्। कृ. दस्सणीअ
(स्वप्न ६५)।

दस्सण देखो दसण (मै २१)।

दस्सु पु [दस्यु] चोर, तन्कर (आ २७)।

दह सक [दह] जलना, भस्म करना।
दहइ (महा)। कर्म. दहिइइ (हे ४, २५६),
दहइइ (आना)। वक. दहतं (आ २८)।

थाली स्त्री [स्याली] पाक पात्र, हाँडी, बटलोही (ठा ३, १, सुपा ४८७)। °पाग वि [°पाक] हाँडी में पकाया हुआ (ठा ३, १)।

थाव सक [स्थापय्] १ स्थिर करना। २ रखना। थावए (उत्त २, ३२)।

थावसा स्त्री [स्थापत्या] द्वारका-निवासी एक गृहस्थ स्त्री (गाया १, ५)। °पुत्त पु [°पुत्र] स्थापत्या का पुत्र, एक जैन मुनि (गाया १, ५, अंत)।

थावण न [स्थापन] न्याम, आधान (स २१३)।

थावय पु [स्थापक] समर्थ हेतु, स्वयंसाधक हेतु (ठा ४, ३—पत्र २५४)।

थावर वि [स्थावर] १ स्थिर रहनेवाला। २ पुं. एकेन्द्रिय प्राणी, केवल स्पर्शेन्द्रियवाला—पृथिवी, पानी और वनस्पति आदि का जीव (ठा ३, २, जो २)। ३ एक विशेष नाम, एक नौकर का नाम (उप २६७ टी)। °काय पु [°काय] एकेन्द्रिय जीव (ठा २, १)। °णाम, °नाम न [°नामन्] कर्म-विशेष, स्थावरत्व-प्राप्ति का कारण-भूत कर्म (पंच ३, सम ६७)।

थासग [दे] कुदाल (आव० टिप्पण—पत्र ५६, १)।

थासग पु [स्थासर] १ दर्पण, आदर्श, थासय } शोशा (विपा १, २—पत्र २४)।
२ दर्पण के आकार का पात्र-विशेष (भौप, अनु. गाया १, १ टी)। ३ अश्व का आभरण-विशेष (राज)।

थाह पु [दे] १ स्थान, जगह। २ वि. अस्ताव, गभीर जल-वाला। ३ विस्तीर्ण। ४ दीर्घ, लम्बा (दे ५, ३०)।

थाह पु [स्थाघ] थाह, तला, गहराई का अन्त, सीमा (प्राप्ति, विस १३३२, गाया १, ६, १४, से ८, ४०)।

थाहिअ पु [दे] आलाप, स्वर विशेष (सुपा १६)।

थिअ वि [स्थित] रखा हुआ (स २७०, विस १०३५, भवि)।

थिइ देखो ठिइ (से २, १८, गउड)।

थिदिणी स्त्री [दे] छन्द-विशेष, थिदिणिच्छन्द-रासेण (सम्मत १४१)।

थिप सक [टप्] ठुम होना, सतुष्ट होना। थिपइ (प्राप्र)। भवि थिपिहिंति (प्राप्र ८, २२ टी)। सक. थिपिअ (प्राप्र ८, २२ टी)।

थिगल न [दे] १ भित्ति-द्वार, भीत में किया हुआ दरवाजा (दस ५, १, १५)। २ फटे-फुटे वस्त्र में किया जाता सधान, वस्त्र आदि के खडित भाग में लगाई जाती जोड़ (परण १७, विस १४३६ टी)।

थिगल पुन [दे] १ छिद्र। २ गिरने के बाद दुष्ट (ठीक) किया हुआ गृह-भाग (आचा २, १, ६, २)।

थिज देखो थेज = स्थैय (सवोव ४६)।

थिण वि [स्थान] कठिन जमा हुआ (हे १, ७४, २, ६६, से २, ३०)। देखो थीण।

थिण वि [दे] १ स्नेह-रहित दयावाला। २ अभिमानी, गर्व-युक्त (दे ४, ३०)।

थिन्न वि [दे] गर्वित, अभिमानी (प्राप्र)।

थिप्प देखो थिप। थिप्पइ (हे ४, १३८)।

थिप्प सक [वि + गल्] गल जाना। थिप्पइ (हे ४, १७५)।

थिवुक पु [स्तिवुक] कन्द विशेष (सुख ३६, ६६)।

थिम सक [स्तिम्] आद्र करना, गोला करना। हेकु. थिमिउ (राज)।

थिमिअ वि [दे स्तिमित] स्थिर, निश्चल (दे ५, २७, से २, ४३, ८, ६१, गाया १, १, विपा १, १, परह १, ४, २, ५, भौप, सुज १, सुम १, ३, ४)। २ मन्यर, घीमा (प्राप्र)।

थिमिअ पु [स्तिमित] राजा अन्वकवृष्णि के एक पुत्र का नाम (अत ३)।

थिम्म सक [स्तिम्] १ आद्र करना। सक. आद्र होना। थिम्मइ (प्राक् १२०)।

थिर वि [स्थिर] १ निश्चल, निष्कम्प (विपा १, १, सम ११६, गाया १, ८)। २ निष्पन्न, संपन्न (दस ७, ३५)। °णाम, °नाम न [°नामन्] कर्म-विशेष, जिसके उदय से दन्त, हड्डी आदि अवयवों की स्थिरता होती है (कम्म १, ४६, सम ६७)। °वलिआ स्त्री [°वलिआ] जन्तु-विशेष, सर्प की एक जाति (जीव २)।

थिरणाम वि [दे] चल-चित्त, चंचल-मनस्क (दे ५, २७)।

थिरणोस वि [दे] अस्थिर, चंचल (पड्)। थिरसीस वि [दे] १ निर्भीक, निडर। २ निर्भर। ३ जिसने सिर पर कवच बाँधा हो वह (दे ५, ३१)।

थिरिम पु स्त्री [स्थैर्य] स्थिरता (सण)।

थिरीकण न [स्थिरीकरण] स्थिर करना, दृढ़ करना, जमाना (आ ६, रयण ६६)।

थिल्ल वि [दे] शुभ (चउपन्न० विवुवानद)।

थिल्लि स्त्री [दे] यान-विशेष—१ दो घोड़े की बग़ी। २ दो खच्चर आदि में बाह्य यान (सुम २, २, ६२, गाया १, १ टी—पत्र ४३, भौप)।

थिविथिव सक [थिविथिवाय्] 'थिव-थिव' आवाज करना। वकु. थिविथिवत (विपा १, ७)।

थिवुग पु [स्तिवुक] जल-विन्दु (विस ७०४, ७०५, सम १४६)। °सक्रम पु [°सक्रम] कर्म-प्रकृतियों का आपस में संक्रमण-विशेष (पचा ५)।

थीहु पु स्त्री [दे] कन्द-विशेष (उत्त ३६, ६६)।

थीहु पु [स्तिभु] वनस्पति-विशेष (राज)।

थी स्त्री [स्त्री] स्त्री, महिला, नारी, औरत (हे २, १३०, कुमा, प्राप्ति ६५)।

थीण देखो थिण (हे १, ७४, दे १, ६१, कुमा, प्राप्ति)। °गिद्धि स्त्री [°गृद्धि] निकृष्ट निद्रा-विशेष (ठा ६, विस २३४, उत्त ३३, ५)। °द्धि स्त्री [°द्धि] अवम निद्रा-विशेष (सम १५)। °द्धिय वि [°द्धिक] स्थानार्द्धि निद्रा वाला (विस २३५)।

थु अ. तिरस्कार-सूचक अव्यय (प्रति ८१)।

थुअ वि [स्तुत] जिसकी स्तुति की गई हो वह, प्रशंसित (दे ८, २७, वण ५०, अजि १८)।

थुअ देखो थुण। थुअइ (प्राक् ६७)।

थुइ स्त्री [स्तुति] स्तव, गुण-कीर्तन (कुमा, चैत्य १, मुर १०, १०३)।

थुइवाय पु [स्तुतिवाद] प्रशंसा-वचन (चैत्य ७४४)।

दाणव पु [दानव] दैत्य, असुर, दनुज (दे १, १७७, अञ्चु ४१, प्रासू ८६) ।

दाणदिद पु [दानवेन्द्र] अगुरो का स्वामी (गाथा १ ८, पठम ६२, ३६, प्रासू १०७) ।

दाणि छी [दे] शुल्क, जुगो (सुपा ३६०, ५४८) ।

दाणि | अ [इजानीम्] इस रामय, अनी
दाणि | (प्रति ३६, स्वप्न २०, हे १, २६,
दाणी | ४, २७७, अमि ३७, स्वप्न ३३) ।

दाय वि [द्वा स्थ] १ द्वार पर स्थित । २ पु प्रतीहार, द्वारपाल, चपरामी (दे ६, ७२) ।

दादलिआ छी [दे] अगुली, उगली (दे ५, ३८) ।

दापण न [दापन] दिलावा, 'अब्बुट्टाण अजलिकरण तहेवासणदापण' (सत्त २६ टी) ।

दाम न [दामन्] १ माला, सज् (पएह १, ४, कुमा) । २ रज्जु, रस्ती (गा १७२, हे १, ३२) । ३ पु वेलन्धर नागराज का एक आवास-पर्वत (राज) । ४ त वि [वत्] मालावाला (कुमा) ।

दामट्टि पु [दामस्थि] सौधमं देवलोक के इन्द्र के वृषम-सैन्य का अधिपति देव (इक) ।

दामड्डि पु [दामद्धि] ऊपर देखो (ठा ५, १—पत्र ३०३) ।

दामण न [दामन] बन्धन, पशुओं का रस्ती से नियन्त्रण (पव ३८) ।

दामण छीन [दामनी] पशु को बाधने की डोरी—रस्ती, पगहा (धर्मवि १४४) । छी. ०ण (सुज १०, ८) ।

दामणी छी [दामनी] १ पशुओं को बाधने की रस्ती (भग १६, ६) । २ भगवान् कुन्धुनाथ की मुख्य शिष्या (नित्य) । ३ छी श्रीर पुरुष का रज्जु के आकारवाला एक शुभ लक्षण (पएह २, ४ टी—पत्र ८४, पएह २, ४—पत्र ६८, ७६, ज २) ।

दामणा छी [दे] १ प्रसव, प्रभूति । २ नयन, आख (दे ५, ५२) ।

दामिय वि [दामित] सयमित, नियन्त्रित (सण) ।

दामिली छी [द्राविडी] द्रविड देश की लिपि में निबद्ध एक मन्त्र-विद्या (सुम २, २) ।

दामी छी [दामी] लिपि-विशेष (मम ३५) ।

दामोअर पु [दामोदर] १ श्रीकृष्ण वामुदेव (ती ४) । २ अतीत उत्तराणी काल में भरतक्षेत्र में उत्पन्न नववां जिनदेव (पव ७) ।

दायग वि [दायक] दाता, देनेवाला (उप ७२८ टी महा, सुर २, ४८, सुपा ३७८) ।

दायण न [दान] देना, 'दायणे अ निकाए अ अब्बुट्टाणेति आवरे' (मम २१), 'तवो-विहाण तह दाणदाप (? य) ए' (मत्त २६) ।

दायगा छी [दापना] वृष्ट अर्थ का व्याख्या (विसे २६३२) ।

दायय देखो दायग, 'अजिममतिपायया हुतु मे भिवसुहाण दायया' (अजि ३४) ।

दायव्व देखो दा = दा ।

दायाद पु [दायाद] पैतृक संपत्ति का भागीदार, पुत्र, सपिंड कुटुम्बी (प्राचा) ।

दायार वि [दायार] याचक, प्रार्थी (कप्प) ।

दार सक [दारय्] विदारना, तोड़ना, चूँए करना । वछ. दारत (कुमा) ।

दार पु [दे] कटी-सूय, कांची (दे ५, ३८) ।

दार पुंन [दार] कलय, छी, महिला (सम ५०, स १३७, सुर ७, २०१, प्रासू ६५), 'द्वेण अण्णकाल गहिया वेसावि होइ परदार' (सुपा २८०) ।

दार न [द्वार] दरवाजा, निकलने का मार्ग (औप, सुपा ३६७) । ०गला छी [०र्गला] दरवाजे का आगल (गा ३०२) । ०ट्ट, ०स्थ वि [०स्थ] १ द्वार पर स्थित । २ पुं. दरवान, प्रतीहार (वृह १, दे २, ५२) । ०पाल, ०वाल पुं [०पाल] दरवान, द्वार-रक्षक (उप ५३० टी, सुर १०, १३६, महा) । ०वालिय, ०वालिय पु [०पालक, पालिक] दरवान, प्रतीहार (पठम १७ १६ सुपा ४६६) ।

दार पु [दारक] शिशु, बालक, बच्चा

दारग } (उप पृ ३०८, सुर १५, ११६, कप्प) । देखो दारय ।

दारद्धता छी [दे] पेटी, सद्क (दे ५, ३८) ।

दारय वि [दारक] करनेवाला, विध्वंसक (कुप्र १३०) । २ देखो दामग (कप्प) ।

दारिअ वि [दारित] विदारित, फाड़ा हुआ (पाम्म) ।

दारिआ छी [दारिका] लकड़ी (स्वप्न १५, गाथा १, १६, महा) ।

दारिआ छी [द] देश्या, वाराणसा (दे ५, ३८) ।

दारिद न [दारिद्र्य] १ निर्धनता । २ दीनता (गा ६७१, महा, प्रासू १७३) । ३ प्रालस्य (पाम्मा) ।

दारिदिय वि [दारिद्रित] दरिद्रता-प्राप्त, दरिद्र (पठम ५५, २५) ।

दारु न [दारु] काष्ठ, लकड़ी (सम ३६, कुप्र १०५; स्वप्न ७०) । ०गाम पु [०ग्राम] ग्राम-विशेष (पठम ३०, ६०) । ०ठड्य पुन [०ठण्डक] काष्ठ दण्ड, साधुओं का एक उपकरण (कस) । ०पन्नय पु [०पर्वत] पर्वत-विशेष (जीव ३) । ०पाय न [०पात्र] काष्ठ का बना हुआ भाजन (ठा ३, ३) । ०पुत्तय पु [०पुत्रक] वठपुतला (अञ्चु ८२) । ०मड पु [०मड] भरतक्षेत्र के एक भावी जिन-देव के पूर्व जन्म का नाम (सम १५४) । ०सक्रम पुं [०सक्रम] काष्ठ का बना हुआ पुल, सेतु (प्राचा) ।

दारुअ पु [दारुक] १ श्रीकृष्ण वामुदेव का एक पुत्र, जिसने भगवान् नेमिनाथ के पास दीक्षा लेकर उत्तम गति प्राप्त की थी (अव ३) । २ श्रीकृष्ण का एक सारथि (गाथा १, १६) । ३ न काष्ठ, लकड़ी (पठम २६, ६) ।

दारुइज वि [दारुइज] काष्ठ-निर्मित लकड़ी का बना हुआ । ०पन्नय पु [०पर्वत] काष्ठ का बना हुआ मातृम पड़ता पर्वत (राय ७५) ।

दारुण वि [दारुण] १ विषम, भयंकर, भीषण (गाथा १, २, पाम्म, गउड) । २ क्रोध-युक्त रौद्र (वव १) । ३ न कट्ट, दुःख (स ३२२) । ४ दुर्मित, अकाल (उप १३६ टी) ।

दारुणी छी [दारुणी] विद्यादेवी-विशेष (पठम ७, १४०) ।

दालण न [दारण] विदारण, खण्डन (पएह १, १) ।

दालि छी [दे दालि] १ दाल, दला हुआ चना, अरहर, मूँग आदि अन्न (सुपा ११, सण) । २ राजि, रेखा, लकीर (भोष ३२३) ।

दालिअ न [दे] नेत्र, आँख (दे ५, ३८) ।

थोडेरुय देखो घाडेरुय (उप ७२८ टी) ।

थोणा देखो थूणा (हे १, १२५) ।

थोत्त न [स्तोत्र] स्तुति, स्तव (हे २, ४५, सुपा २६६) ।

थोत्तु देखो थुण ।

थोभ } पु [स्तोभ, 'क'] 'व', 'वे' आदि
थोभय } निरर्थक अव्यय का प्रयोग, 'उय-

वहकारा हति य अकारणा थोभया हति' (बृह १, विसे ६६६ टी) ।

थोर देखो थुल (हे १, २५५, २, ६६, पचम २, १६, से १०, ४२) ।

थोर वि [दे] क्रम से विस्तीर्ण अथ च गोल (दे ५, ३०, वज्जा ३६) ।

थोल पुं [दे] वज्र का एक देश (दे ५, ३०) ।

थोव } वि [स्तोक] १ अल्प, थोड़ा (हे
थोवाग } २, १२५, उव, आ २७, ओघ
२५६, विसे ३०३०) । २ पु. समय का एक
परिमाण (ठा २, ३, भग) ।

थोह न [दे] बल, पराक्रम (दे ५, ३०) ।

थोहर पुं [दे] वनस्पति-विशेष, थूहर का
पेड़, सेहुँह (सुपा २०३) । स्त्री. 'री' (उप
१०३१ टी, जी १०, धर्म ३) ।

॥ इम सिरिपाइअसदमहणवम्मि थयाराइसदसंकलणो

चउब्बीसहमो तरगो समत्तो ॥

द

द पुं [दे] दन्त स्थानीय व्यञ्जन-वर्ण विशेष
(प्राप, प्रामा) ।

दअच्छर पुं [दे] ग्राम-स्वामी, गाँव का
अधिपति (दे ५, ३६) ।

दअरी स्त्री [दे] सुरा, मदिरा, दाह (दे ५,
३४) ।

दइ स्त्री [हति] मशक, चर्म-निर्मित जल-पात्र
(भोष ३८) ।

दइअ वि [दे] रक्षित (दे ५, ३५) ।

दइअ पुं [हतिका] मशक, चर्म-निर्मित
जल-पात्र, चमड़े का बना हुआ वह बैला
जिसमें पानी भरकर लाते हैं, 'दइएण
वत्थिणा वा' (पिण्ड ४२) । स्त्री. 'आ' (अणु
१५२, पिण्डमा १४) ।

दइअ वि [दयित] १ प्रिय, प्रेम-पात्र;
'जाओ वरकामिणीदइओ' (सुर १, १८३) ।

२ अभीष्ट, वाञ्छित, 'अम्हाण मणोदइय
दंसणमवि दुल्लहं मन्ने' (सुर ३, २३८) ।

३ पुं पति, स्वामी, भर्ता (पात्र, कुमा) ।
'यम वि [तम] १ अत्यन्त प्रिय । २ पुं.
पति, भर्ता (पचम ७७, ६२) ।

दइआ स्त्री [दयिता] स्त्री, प्रिया, पत्नी
(कुमा, महा, सुर ४, १२६) ।

दइअ पुं [दैत्य] दानव, असुर (हे १, १५१,
कुमा, पात्र) । 'गुरु पुं [गुरु] शुक,
शुक्राचार्य (पात्र) ।

दइअ न [दैत्य] दीनता, गरीबपन, गरीबी
(हे १, १५१) ।

दइअ पुं [दैव] दैव, भाग्य, अदृष्ट, प्रारब्ध,
पूर्व-कृतकर्म (हे १, १५३, कुमा, महा;
पचम २८, ६०), 'अहवा कुविओ दइवो
पुरिसं कि हणइ लउणेण' (सुर ८, ३४) ।

'ज्ज, 'ण्णु पुं [ज्ञ] ज्योतिषी, ज्योति -
शास्त्र का विद्वान् (हे २, ८३, पङ्) । देखो
देव = दैव ।

दइवय न [दैवत] देव, देवता (पण्ह २, १,
हे १, १५१, कुमा) ।

दइविग वि [दैविक] देव-सवन्धी, दिव्य,
उत्तम (स ५०६) ।

दइव्य देखो दइव (हे १, १५३, २, ६६,
कुमा, पचम ६३, ४) ।

दउत्ति (शौ) अ [द्राग्] शीघ्र, जल्दी
(प्राक् ६५) ।

दउदर } न [दकोदर] रोग-विशेष,
दओदर } जलोदर, पानी से पेट का फूलना
(णाय १, १३, विपा १, १) ।

दओभास पुं [दकावभास] लवण-समुद्र
में स्थित वेलघर-नागराज का एक आवास-
पर्वत (इक) ।

दठा देखो दाढा (नाट—मालती ५६) ।

दठि वि [दंष्ट्रिन्] बड़े दाँतपाला, हिसक
जन्तु (नाट—वेणी २४) ।

दड सक [दण्डय्] सजा करना, निग्रह
करना । कवक दडिज्जत (प्रासू ६६) ।

दड पु [दण्ड] १ जीव-हिंसा, प्राण-नाश
(सम १, णाय १, १, ठा १) । २ अपराधी
को अपराध के अनुसार शारीरिक या आर्थिक

दण्ड, सजा, निग्रह, दमन (ठा ३, ३, प्रासू
६३, हे १, १२७) । ३ लाठी, यष्टि (उप
५३० टी, प्रासू ७४) । ४ दुःख-जनक,

परिताप-जनक (आचा) । ५ मन, वचन और
शरीर का अशुभ व्यापार (उत्त १६, द
४६) । ६ छन्द विशेष (पिंग) । ७ एक जैन

उपासक का नाम (संया ६१) । ८ पुं न.
परिमाण-विशेष, १६२ अंगुल का एक नाप

(इक) । ९ आज्ञा (ठा ५, ३) । १० पुं न.
सैन्य, लश्कर, फौज (पण्ह १०४, ठा ५, ३) ।

'अल पुं [कल] छन्द-विशेष (पिंग) । 'जुज्ज
न [युद्ध] यष्टि-युद्ध (आचा) । 'णायग पुं

दिअलिअ वि [दे] मूखं, अज्ञानी (दे ५, ३६) ।
 दिअली छी [दे] स्थूणा, खम्भा, खूँटी
 (पात्र) ।
 दिअस पुन [दिवस] दिन, दिवस (गउड,
 पि २६४) । °कर पु [°कर] सूर्य, रवि (से
 १, ५३) । °नाह पु [°नाथ] सूर्य, सूरज
 (पउम १४, ८३) । °यर देखो °कर (पात्र) ।
 देखो दिवस ।
 दिअमिअ न [दे] १ सदा-भोजन (दे ५,
 ४०) । २ अनुदिन, प्रतिदिन (दे ५, ४०,
 पात्र) ।
 दिअह देखो दिअस (प्राप्र, पात्र) ।
 दिअहुत्त न [दे] पूर्वाह्न का भोजन, दुपहर
 का भोजन (दे ५, ४०) ।
 दिआ अ [दिवा] दिन, दिवस (पात्र, गा
 ६६, सम १६, पउम २६, २६) । °णिस
 न [°निश] दिन-रात, सदा (पिग) । °राअ
 न [°रात्र] दिन-रान, सर्वदा (सुपा ३१८) ।
 देखो दिवा ।
 दिआहम पु [दे] भास पक्षी (दे ५, ३६) ।
 दिआइ देखो दुआइ (पात्र) ।
 दिइ छी [दिति] मशक, चमडे का जल-पात्र
 (अनु ५, कुप्र १४६) ।
 दिउण वि [दिगुण] दूना, दुगुना (पि २६८) ।
 दिंत देखो दा = दा ।
 दिक्काण पुं [द्रेष्काण] मेघ आदि लग्नो का
 दसवां हिम्मा (राज) ।
 दिक्ख मक [दीक्ष्] दीक्षा देना, प्रव्रज्या
 देना, सन्यास देना, शिष्य करना । दिक्खे
 (उव) । वक्क दिक्खत (सुपा ५२६) ।
 दिक्ख देखो देक्ख । दिक्खइ (पि ६६) ।
 दिक्खा छी [दीक्षा] १ प्रव्रज्या देना, दीक्षण
 (ओघ ७ भा) । २ प्रव्रज्या, सन्यास (धर्म २) ।
 दिक्खिअ वि [दीक्षित] जिसको प्रव्रज्या दी
 गई हो वह, जो साधु बनाया गया हो वह
 (उव) ।
 दिगळा देखो दिगिळा (पि ७४) ।
 दिगवर देखो दिअंवर (इक, आवम) ।
 दिगिळा छी [जिघत्सा] बुझा, भुख (सम
 ४०, विसे २५६४, उत्त २, आचू) ।
 दिगिच्छ मक [जिघत्स] खाने को चाहना ।
 वक्क दिगिच्छंत (आचा, पि ५५५) ।

दिगु पु [द्विगु] व्याकरण-प्रसिद्ध एक समास
 (अणु, पि २६८) ।
 दिगु देखो दिगु (अणु १४७) ।
 दिग्घ देखो दीह (हे २, ६१, प्राप्र, संक्षि
 १७, स्वप्न ६८, विमे ३४६७) । °णगूल,
 लंगूल वि [°लाङ्गूल] १ लम्बी पूँछवाला
 २ पु वानर (पड) ।
 दिग्घिआ छी [दीधिका] वापी, सीढ़ीवाला
 कूप-विशेष (स्वप्न ५६, विक्र १३६) ।
 दिन्छा छी [दिस्सा] देने की इच्छा (कुप्र
 २६६) ।
 दिज देखो दिअ = द्विज (कुमा) ।
 दिज्ज वि [देय] १ देने योग्य । २ जो दिया
 जा सके । ३ पुन कर-विशेष (विपा १, १) ।
 दिज्जत } देखो दा = दा ।
 दिज्जमाण }
 दिट्ठ वि [दिष्ट] कथित, प्रतिपादित, कहा
 हुआ (उप ७६८ टी) ।
 दिट्ठ वि [दृष्ट] १ देखा हुआ, विलोकित (ठा
 ४, ४, स्वप्न २८, प्रासू १११) । २ अभिमत
 (अणु) । ३ ज्ञात, प्रमाण से जाना हुआ (उप
 ८८२, बृह १) । ४ न दर्शन, विलोकन
 (ठा २, १) । °पाढि वि [°पाठिन्] चरक-
 सुश्रुतादि का जानकार (ओघ ७४) ।
 °लाभिय पु [°लाभिक] दृष्ट वस्तु को ही
 ग्रहण करनेवाला जैन साधु (परह २, १) ।
 दिट्ठ न [दृष्ट] प्रत्यक्ष या अनुमान प्रमाण
 से जानने योग्य वस्तु (धर्म सं ५१८, ५१९) ।
 °साहम्मव न [साधर्म्यवत्] अनुमान का
 एक भेद (अणु २१२) ।
 दिट्ठत पुं [दृष्टान्त] उदाहरण, निदर्शन
 (ठा ४, ४, महा) ।
 दिट्ठतिअ वि [द्वार्ष्टान्तिक] १ जिस पर
 उदाहरण दिया गया हो वह (विसे १००५
 टी) । २ न. अभिनय-विशेष (ठा ४, ४—
 पत्र २८५) ।
 दिट्ठव देखो दक्ख = दृश् ।
 दिट्ठि छी [दृष्टि] १ नेत्र, आँख, नजर (ठा
 ३, १, प्रासू १६, कुमा) । २ दर्शन, मत
 (परण १६, ठा ४, १) । ३ दर्शन, अव-
 लोकन, निरीक्षण (अणु) । ४ बुद्धि, मति
 (सम २५, उत्त २) । ५ विवेक, विचार

(सूत्र २, २) । °कीव पुं [°क्लीव] नपुंसक-
 विशेष (निचू ४) । °जुद्ध न [°युद्ध]
 युद्ध-विशेष, आँख की स्थिरता की लड़ाई
 (पउम ४, ४४) । °बंध पुं [°बन्ध] नजर
 बांधना (उप ७२८ टी) । °म, °मत वि
 [°मत्] प्रशस्त दृष्टिवाला, सम्यग्दर्शी
 (सूत्र १, ४, १, आचा) । °राय पुं [°राग]
 १ दर्शन-राग, अपने धर्म पर अनुराग (धर्म
 २) । २ चाक्षुष-स्नेह (अभि ७४) । °हृ वि
 [°मत्] प्रशस्त दृष्टिवाला (पउम २८,
 २२) । °वाय पुं [°पात] १ नजर डालना
 (से १०, ५) । २ बारहवाँ जैन अग ग्रथ (ठा
 १०—पत्र ४६१) । °वाय पु [°वाद]
 बारहवाँ जैन अग-ग्रन्थ (ठा १०, सम १) ।
 °विपरिआसिआ छी [°विपर्यासिका,
 °सिता] मति भ्रम (सम २५) । °विस पुं
 [°विप] जिसकी दृष्टि में विष हो ऐसा सर्प
 (से ४, ५०) । °सुल न [°शूल] नेत्र का
 रोग-विशेष (णया १, १३—पत्र १८१) ।
 दिट्ठि छी [दृष्टि] तारा, मित्रा आदि योग-दृष्टि
 (सिरि ६२३) ।
 दिट्ठिआ अ [दिष्ट्या] इन अर्थों का सूचक
 अव्यय—१ मगल । २ हर्ष, आनन्द, खुशी ।
 ३ भाग्य से (हे २, १०४, स्वप्न १६, अभि
 ६५, कुप्र ६५) ।
 दिट्ठिआ छी [दृष्टिका, °जा] १ क्रिया-
 विशेष—दर्शन के लिए गमन । २ दर्शन में
 कर्म का उदय होना (ठा २, १—पत्र ४०) ।
 दिट्ठिआ छी [दृष्टीया] ऊपर देखो (नव १८) ।
 दिट्ठिआओवएसिआ छी [दृष्टिवादो-
 पदेशिकी] सज्ञा-विशेष (दं ३३) ।
 दिट्ठेल्लय वि [दृष्ट] देखा हुआ, निरीक्षित
 (आवम) ।
 दिट्ठ } देखो दूढ (नाट—मालती १७, से
 दिट्ठ } १, १४, स्वप्न २०५, प्रासू ६२) ।
 दिण पुन [दिन] दिवस (सुपा ५६, द २७,
 जी ३५, प्रासू ६५) । °इद पुं [°इन्द्र]
 सूर्य, रवि (सण) । °कय पु [°कृत्]
 सूर्य, रवि (राज) । °कर पुं [°कर] सूर्य,
 सूरज (सुपा ३१२) । °नाह पुं [°नाथ]
 सूर्य, रवि (महा) । °वधु पुं [°वन्धु]
 सूर्य, रवि (पुष्क ३७) । °मणि पुं [°मणि]

दत्तिक न [दे] चावल का आटा (वृह १) ।
दत्तिकग न [दे] माम (धर्मसं ६६१) ।
दत्तिया स्त्री [दन्तिका] एक वृक्ष विशेष, वडी
सतावर (परण १—पत्र ३२) ।

दन्ती स्त्री [दन्ती] स्वनाम ख्यात वृक्ष (परण
१—पत्र ३६) ।

दंतुक्खलिय पु [दन्तोलूखलिक] तापस-
विशेष, जो दाँतो से ही ब्रीहि या धान बगैरह
को निम्नुप कर खाते है (निर १, ३) ।

दंतुर वि [दन्तुर] उन्नत दाँतवाला, जिसके
दाँत उभड़-खावड़ हो । २ ऊँचा-नीचा स्थान,
विषम स्थान (दे २, ७७) । ३ आगे आया
हुआ, आगे निकल आया हुआ (कप्पु) ।

दंतुरिय वि [दन्तुरित] ऊपर देखो, 'विवित्त-
पामायपत्तिदंतुरिय' (उप १०३? टी, सुपा
२००) ।

दद पु [दन्ट] १ व्याकरण-प्रसिद्ध उभयपद-
प्रधान समास (अणु) । २ न परस्पर-विरुद्ध
शीत-उष्ण, सुख-दुःख आदि युग्म । ३ कलह,
क्लेश । ४ युद्ध, संग्राम (सुपा १४७, कुमा) ।
दंपइ पु व [दम्पति] स्त्री पुरुष युगल—जोड़ा,
पति-पत्नी, 'ते दपईउ तह तह धम्ममि
समुबमा निज्ज' (मिरि २४८) ।

दंभ पुं [दम्भ] १ माया, कपट (हे १,
१२७) । २ छन्द-विशेष (पिण) । ३ ठगाई,
वञ्चना (पव २) ।

दंभग वि [दम्भग] दम्भी, पाखंडी, ठग, धूर्त,
'दंभगो त्ति निवमच्छिग्रो' (सुख २, १७) ।

दंभोलि पु [दम्भोलि] वज्र (कुप्र २७०) ।

दस सक [दर्शय] दिखलाना, बतलाना ।
दसइ (हे ४, ३२, महा) । वहु दसत, दसित,
दसअत (भग, सुपा ६२, अमि १८४) ।
कवहु दसिज्जत (सुर २, १६६) । सक
दसिअ (नाट) । कृ दंसियव्व (सुपा
४५४) ।

दस सक [दश] काटना, दाँत से काटना ।
दसइ (नाट—साहित्य ७३) । दसतु (आचा) ।
वहु. दसमाण (आचा) ।

दंस पु [दश] १ डाँस, बड़ा मच्छर (भग,
आचा) । २ दन्त-क्षत, सर्प या अन्य किसी
विपैले कीड़े से काटा हुआ घाव (हे १,
२६० टि) ।

दंस पु [दर्श] सम्यक्त्व, तत्त्व-श्रद्धा (आवम) ।
दंसग वि [दर्शक] दिखलानेवाला (स ४८१) ।

दंसण पुन [दर्शन] १ अवलोकन, निरीक्षण
(पुष्क १२४, स्वप्न २६) । २ चक्षु, नेत्र,
आँख (से १, १७) । ३ सम्यक्त्व, तत्त्व-
श्रद्धा (ठा १, ५३) । ४ सामान्य ज्ञान,
'जं मामन्तग्गहण दसणमेष' (सम्म ५५) ।

५ मत, धर्म । ६ शास्त्र-विशेष (ठा ७, ८,
पंचा १२) । १ मोह न [मोह] तत्त्व-श्रद्धा
का प्रतिबन्धक कर्म-विशेष (कम्म १, १४) ।

१ मोहणिज्ज न [मोहणीय] कर्म-विशेष
(ठा २, ४, भग) । १ वरण न [वरण]
कर्म-विशेष, मानान्य-ज्ञान का आवरण कर्म
(ठा ६) । १ वरणिज्ज न [वरणीय]

पूर्वोक्त ही अर्थ (सम १५) । देखो दरिसण ।
दसण न [दशन] दाँत से काटना (से १,
१७) ।

दंसणि वि [दर्शनिन्] १ किसी धर्म का
अनुयायी (सुपा ४६६) । २ दार्शनिक, दर्शन-
शास्त्र का जानकार (कुप्र २६, कुम्मा २१) ।
३ तत्व-श्रद्धालु (अणु) ।

दसणिआ स्त्री [दर्शनिआ] दर्शन, अवलोकन,
'चंदसूरदंसणिआ' (श्रीप, राया १, १) ।

दंसणिज्ज वि [दर्शनीय] देखने योग्य,
दसणीअ } दर्शन-योग्य (सूत्र २, ७, अमि
६८, महा) ।

दंसाव सक [दर्शय] दिखलाना । दसावेइ
(प्राक ७१) ।

दंमाण न [दर्शन] दिखाना (उप २११ टी) ।

दसाविअ वि [दर्शित] दिखलाया हुआ
(सुपा ३८६) ।
दसि वि [दर्शिन] देखनेवाला (आचा, कुप्र
४१, दं २३) ।

दसिअ वि [दर्शित] दिखलाया हुआ (पात्र) ।
दसिअ

दसित
दसिज्जत
दसियव्व
देखो दम = दर्शय ।

दक्क वि [दट्ट] जो दाँत से काटा गया हो वह
(पट्ट) ।

दक्ख सक [दृश] देखना, अवलोकन करना ।
दक्खामि, दक्खमो (अमि ११६, विक्क

२७) । प्रयो दक्खावइ (पि ५५४) ।
कमं दोसइ (उव) । कवहु दिस्समाण,
दीसंत, दीममाण (आव ५, गा ७३,
नाट—चैत ७७) । सक दक्खु, दट्टु,
दट्टुआण, दट्टुं, दट्टुग, दट्टुण,
दिस्स, दिस्स, दिस्सा (कप्प, पट्ट, कुमा,
महा, पि ५८५, सूत्र १, ३, २, १, पि
३३४) । हेहु दट्टुं (कुमा) । कृ दट्टव्व,
दिट्टव्व (महा, उत्तर १०७) ।

दक्ख सक [दर्शय] दिखलाना, 'सोवि हु
दक्खइ बहुकोउयमततताइ (सुपा २३२) ।

दक्ख वि [दर्श] १ निपुण, चतुर, होशियार
(कप्प, सुपा २८६, आ २८) । २ पु भूता-
नन्द नामक इन्द्र के पदाति-मैत्र्य का अधिपति
देव (ठा ५, १, इक) । ३ भगवान् मुनिमुव्रत-
स्वामी का एक पौत्र (पउम २१, २७) ।
दक्खं देखो दक्खा (पउम ५३, ७६, कुमा) ।

दक्खज्ज पु [दे] गृत्र, गोव, पक्षि-विशेष
(दे ५, ३४) ।

दक्खण न [दर्शन] १ अवलोकन, निरीक्षण ।
२ वि. देखनेवाला, निरीक्षक (कुमा) ।

दक्खव सक [दर्शय] दिखलाना, बतलाना ।
दक्खवइ (हे ४, ३२) ।

दक्खविअ वि [दर्शित] दिखलाया हुआ
(पात्र, कुमा) ।

दक्खा स्त्री [दाक्षा] १ वल्ली-विशेष, दाख
या अगूर का पेड़ । २ फल-विशेष, दाख, अगूर
(कप्प, सुपा २६७, ५३६) ।

दक्खायणी स्त्री [दाक्षायणी] गोरी, शिव-
पत्नी (पात्र) ।

दक्खिण वि [दक्षिण] १ दक्षिण दिशा मे
स्थिति (सुर ३, १८, गउड) । २ निपुण,
चतुर (प्राभा) । ३ हितकर, अनुकूल । ४
अपसव्य, वामेतर, दाहिना (कुमा, श्रीप) ।

१ पच्छिमा स्त्री [पश्चिमा] दक्षिण और
पश्चिम के बीच की दिशा, नैऋत कोण
(आवम) । १ पुत्रा स्त्री [पुत्रा] अग्नि-कोण
(चंद १) । देखो दाहिण ।

दक्खिणत्त वि [दाक्षिणात्त] दक्षिण दिशा
में उत्पन्न (राज) ।

दक्खिणा स्त्री [दक्षिणा] १ दक्षिण दिशा
(जो १) । २ दक्षिण देश (कप्पु) । ३ धर्म-

न [मानुप] देव और मनुष्य संवन्धी हकी-
कतो का जिसमे वरण हो ऐसी कथा-वस्तु
(स २)।

दिव्य न [दिव्य] १ तैला, तीन दिन का
लगातार उपवास (संवोध ५८)। २ वि देव-
सम्बन्धी, 'तिरिया मणुया य दिव्वगा, उव-
सग्गा तिविहाहियासिया' (सूत्र १, २, २,
१५)।

दिव्य देखो दइव (सुपा १६१)।

दिव्य देखो देव, 'अमोह दिव्वदसणति' (कुप
११२)।

दिव्वाग पु [दिव्याक] सर्प की एक जाति
(परण १)।

दिव्वासा ली [दे] चामुण्डा, देवी-विशेष
(दे ५, ३६)।

दिस सक [दिश] १ कहना। २ प्रतिपादन
करना। दिसइ (भवि)। कवकू दिससमाण
(राज)।

दिस पु [दिश] एक देव-विमान (देवेन्द्र
१३१)।

दिस वि [दिश्य] दिशा मे उत्पन्न (से ६,
५०)।

दिसथा ली [टपद्] पत्थर, पापाण (पड्)।

दिसाइ देखो दिसा-दि (सुज्ज ५ टी—पत्र
७८)।

दिसा } ली [दिश] १ दिशा, पूर्व आदि
दिसि } दस दिशाएँ (गड्ड, प्रासू ११३,
दिसी } महा, सुपा २६७, परह १, ४,

द ३१, भग)। २ प्रौढा ली (से १, १६)।

अक्क न [चक्र] दिशाओं का समूह (गा
५३०)। कुमरी ली [कुमारी] देवी-
विशेष (सुपा ४०)। कुमार पुं [कुमार]
भवनपति देवों की एक जाति (परण २;
श्रौप)। कुमारी देखो कुमरी (महा, सुपा
४१)। गअ पुं [गज] दिग्-हस्ती (से
२, ३, १०, ४६)। गइद पुं [गजेन्द्र]
दिग्-हस्ती (पि १३६)। चक्क देखो अक्क
(सुपा ५२३, महा)। चक्कवाल न [चक्र-
वाल] १ दिशाओं का समूह। २ तप-विशेष
(निर १, ३)। चर पुं [चर] देशाटन
करनेवाला भक्त (भग १५)। जत्ता देखो

यत्ता (उप ७६८ टी)। जत्तिय देखो
यत्तिय (उवा)। डाह पु [दाह]
दिशाओं मे होनेवाला एक तरह का प्रकाश,
जिसमें नीचे अन्धकार और ऊपर प्रकाश
दोखता है, यह भावी उपद्रवों का सूचक है
(भग ३, ७)। गुवाय पुं [अनुपात]
दिशा का अनुसरण (परण ३)। दति पुं
[दन्तिन्] दिग्-हस्ती (सुपा ४८)। दाह
देखो डाह (भग ३, ७)। दि पु [आदि]
मेरु पर्वत (सुज्ज ५)। देवया ली [देवता]
दिशा की अधिष्ठात्री देवी (रभा)। पोक्खि
पुं [प्रोक्षिन्] एक प्रकार का वानप्रस्थ
(श्रौप)। भाअ पुं [भाग] दिग्भाग
(भग, श्रौप, कप्प, विपा १, १)। मत्त न
[मात्र] अत्यल्प, सक्षिप्त (उप ७४६)।
मोह पुं [मोह] दिशा का भ्रम (निचू
१६)। यत्ता ली [यात्रा] देशाटन, भ्रम-
फिरो (स १६५)। यत्तिय वि [यात्रिक]
दिशाओं मे फिरनेवाला (उवा)। लोय पु
[आलोक] दिशा का प्रकाश (विपा १,
६)। वह पुं [पथ] दिशा-रूप मार्ग
(पठम २, १००)। वाल पु [पाल]
दिक्पाल, दिशा का अधिपति (म ३६६)।
वेरमण न [विरमण] जैन गृहस्थ को
पालने का एक नियम—दिशा मे जाने-आने
का परिमाण करना (धम्म २)। व्वय न
[व्रत] देखो वेरमण (श्रौप)। सोत्थिय
पु [स्वस्तिक] स्वस्तिक-विशेष (श्रौप)।
सोवत्थिय पु [सौवस्तिक] १ स्वस्तिक-
विशेष, दक्षिणावर्त स्वस्तिक (परह १, ४)।
२ न. एक देव-विमान (सम ३८)। रुचक
पर्वत का एक शिखर (ठा ८)। हत्थि पुं
[हस्तिन्] दिग्गज, दिशाओं मे स्थित ऐश्वर्य
आदि आठ हस्ती। हत्थिकूड पुन [हस्ति-
कूट] दिशा मे स्थित हस्ती के आकारवाला
शिखर-विशेष, वे आठ हैं—पद्मोत्तर, नील-
वन्त, सुहस्ती, अञ्जनगिरि, कुमुद, पलाश,
अवन्त और रोचनगिरि (जं ४)।

दिसेभ पुं [दिग्भि] दिग्गज, दिग्-हस्ती
(गड्ड)।

दिस्स वि [दृश्य] देखने योग्य, प्रत्यक्ष ज्ञान
का विषय (धम्मसं ४२८)।

दिस्स
दिस्स
दिस्समाण } देखो दक्ख = दृश्य।

दिस्समाण देखो दिस।

दिस्सा देखो दक्ख = दृश्य।

दिहा अ [द्विधा] दो प्रकार (हे १, ६७)।

दिहि ली [धृति] धैर्य, धीरज (हे २, १३१,
कुमा)। म वि [मत्] धैर्य-शाली,
धीर (कुमा)।

दीअ देखो दीव = दीप (गा १३५, ५४७)।

दीअअ देखो दीवय (गा १३५)।

दीअमाण देखो दा = दा।

दीण वि [दीन] १ रंक, गरीब (प्रासू २३)।

२ दु खित, दुःख (गाया १, १)। ३ हीन,
न्यून (ठा ४, २)। ४ शोक ग्रस्त, शोकातुर
(विपा १, २, भग)।

दीणार पुं [दीनार] सोने का एक सिक्का
(कप्प, उप पृ ६४, ५६७ टी)।

दीपऊ } (अप) पुंन [दीपक] छन्द-विशेष
दीपकू } (पिग)।

दीव देखो दिव = दिव्। वहु. 'अक्कोहि कुसु-
नेहि दीवय' (सूत्र १, २, २, २३)।

दीव सक [दीपय] १ दीपाना, शोभाना।

२ जलाना। ३ तेज करना। ४ प्रकट करना।

५ निवेदन करना। दीवइ (श्रौप ४३४)।

दीवइ (महा)। वहु दीवयत (कप्प)।

सहु दीवेत्ता (श्रौप ४३४, कस)। कू,
दीवणिज्ज (कप्प)।

दीव पु [दीप] १ प्रदीप, दिया चिराग, आलोक
(चार १६, गाया १, १)। २ कल्पवृक्ष की
एक जाति, प्रदीप का कार्य करनेवाला
कल्पवृक्ष (सम १७)। चंपय न [चम्पक]
दिया का ढकना, दीप-पिघान (भग ८, ६)।
ली ली [ली] १ दीप-पत्ति। २
दीवाली, पर्व-विशेष, कार्तिक वदी अमावस
(दे ३, ४३)। वली ली [वली]
पूर्वोक्त ही अर्थ (ती १६)।

दीव पुं [दीप] १ जिसके चारों ओर जल
भरा हो ऐसा भूमि-भाग (सम ५१, ठा १०)।
२ भवनपति देवों की एक जाति, द्वीपकुमार
देव (परह १, ४, श्रौप)। ३ व्याघ्र (जीव १)।

मे तीर्थकर-नामकर्म उपार्जन करने वाला एक मनुष्य (ठा ६—पत्र ४५५)। २ भरत-क्षेत्र के एक भावी कुलकर पुरुष का नाम (सम १५४)।

दढ़गालि स्त्री [दे] वस्त्र-विशेष, घोया हुआ सदश वस्त्र (पव ८४, दसनि १, ४६ टी) देखो दाढ़गालि।

दढ़िअ वि [दढ़िन] दढ़ किया हुआ (कुमा)।

दणु पु [दनुज] दैत्य, दानव (हे १, दणुअ २६७, कुमा, पड्)। १ इन्द्र, एद पुं [इन्द्र] १ दानवों का अधिपति (गउड, से १, २)। २ रावण, लंकापति (पउम ६६, १०)। ३ वड पुं [पति] देखो इन्द्र (पउम १, १, ७२, ६० सुपा ४५)।

दत्त वि [दत्त] १ दिया हुआ, दान किया हुआ, वितीय (हे १, ४६)। २ न्यस्त, स्थापित (जं १)। ३ पुं स्व नाम-ख्यात एक श्रेष्ठि-पुत्र (उप ५६२, ७६८ टी)। ४ भरत-वर्ष के एक भावी कुलकर पुरुष (सम १५३)। ५ चतुर्थ बलदेव के पूर्व-जन्म का नाम (सम १५३)। ६ भरत-क्षेत्र में उत्पन्न एक अर्ध-चक्रवर्ती राजा, एक वासुदेव (सम ६३)। ७ भरत-क्षेत्र में अतीत उत्सर्पणी काल में उत्पन्न एक जिन-देव (पव ७)। ८ एक जैनमुनि (भाक)। ९ नृप-विशेष (विपा १, ७)। १० एक जैन आचार्य (कुप्र ६)। ११ न. दान, उत्सर्ग (उत्त १)।

दत्त न [दात्र] दाँती, घास काटने का हँसिया (दे १, १४)।

दत्ति स्त्री [दत्ति] एक बार में जितना दान दिया जाय वह, अविच्छिन्न रूप से जितनी भिखा दी जाय वह (ठा ५, १, पंचा १८)।

दत्तिय पुत्री [दत्तिका] ऊपर देखो, 'सखो दत्तियस्व' (वव ६)।

दत्तिय पुं [दत्तिक] वायु पूर्ण चर्म (राज)।

दत्तिया स्त्री [दात्रिका] १ छोटी दाँती, घास काटने का शस्त्र-विशेष (राज)। २ देनेवाली स्त्री, दान करनेवाली स्त्री (चार २)।

दत्थर पुं [दे] हस्त-शाटक, कर-शाटक (दे ५, ३४)।

ददत्त देखो दा।

ददर पुं [दे. दर्दर] कुतुप आदि के मुँह पर बाँधा जाता कपड़ा (पिड ३४७, ३५६, राय ६८, १००)।

ददर वि [दे दर्दर] १ घना, प्रचुर, अत्यन्त, 'गोसीयसरसरत्तचदणददरदिएणपचंगुलितला' (सम १३७)। २ पुं. चपेटा, हस्त-तल का आघात (सम १३७, औप, राया १, ८)। ३ आघात, प्रहार, 'पायददरणं कपयतेव मेहणितल' (राया १, १)। ४ वचनाटोप (पणह १, ३—पत्र ४४)। ५ सोपान-बीथी, सीढ़ी (सम १३७)। ६ वाय-विशेष (ज २)।

ददरिगा देखो ददरिया (राय ४६)।

ददरिया स्त्री [दे दर्दरिका] १ प्रहार, आघात (राया १, १६)। २ वाय-विशेष (राय)।

दददु पुं [दद्रु] दाद, क्षुद्र कुष्ठ-रोग (भग ७, ६)।

दददुर पुं [ददुर] प्रहार, आघात (धर्मवि ८५)।

दददुर पुं [ददुर] १ भेक, भेडक, बेंग (सुर १०, १८७, प्रासू ४५)। २ चमड़े से अवनद्ध मुँहवाला कलश (पणह २, ५)। ३ देव-विशेष (राया १, १३)। ४ राहु, ग्रह-विशेष (सुज्ज १६)। ५ पर्वत-विशेष (राया १, १६)। ६ वाय-विशेष (दे ७, ६१, गउड)। ७ न ददुर देव का सिंहासन (राया १, १३)। ८ वडिसय न [वर्तसक] देव-विशेष, सौधर्म देवलोक का एक विमान (राया १, १३)।

दददुरी स्त्री [ददुरी] स्त्री-भेडक, मेकी (राया १, १३)।

दददुल वि [दद्रुमत] दाद-रोगवाला (सिरि ११६)।

दधि देखो दहि (सम ७७, पि ३७६)।

दद्ध देखो दद्ध (सुर २, ११२, पि २२२)।

दप्प पु [दर्प] १ अहंकार, अभिमान, गर्व (प्रासू १३२)। २ बल, पराक्रम, जोर (से ४, ३)। ३ घृष्टता, छिटाई (भग १२, ५)। ४ अरुचि से काम का आसेवन (निचू १)।

दप्पण पुं [दर्पण] १ काच, शीशा, आदर्श (राया १, १, प्रासू १६१)। २ वि. दर्प-जनक (पणह २, ४)।

दप्पणिज्ज वि [दर्पणीय] बल-जनक, पुष्टि-कारक (राया १, १, पणह १७, औप, कप्प)।

दप्पि वि [दर्पिन्] अभिमानो, गर्विष्ठ (कप्पू)। दप्पिअ वि [दर्पिक] दर्प-जनित (उवर १३१)।

दप्पिअ वि [दर्पित] अभिमानो, गर्वित (सुर ७, २००, पणह १, ४)।

दप्पिह वि [दर्पिह] अत्यन्त अहंकारी (सुपा २२)।

दप्पुल वि [दर्पवत्] अहंकारवाला (हे २, १५६, पड्)।

ददभ पुं [दर्भ] शृण विशेष, डाम, काश, कुशा (हे १, २१७)। १ पुष्क पु [पुष्प] साँप की एक जाति (पणह १, १—पत्र ८)।

ददभायण न [दार्भायन, दाभायन] दन्धिभायण विज्ञान-क्षेत्र का गोत्र (इक, सुज १०)।

ददभि न [दाभि] गोत्र-विशेष (सुज १०, १६ टी)।

दम सक [दमय] निग्रह करना, दमन करना, रोकना। दमेह (स २८६)। कर्म, दम्मह (उव)। कवक दम्मत (उव)। सक दमिऊण (कुप्र ३६३)। क दमियन्व, दम्म, दमेयन्व (काल, आचा २, ४, २, उव)।

दम पु [दम] १ दमन, निग्रह। २ इन्द्रिय-निग्रह, बाह्य वृत्ति का निरोध (पणह २, ४, एदि)। ३ घोस पु [घोप] चेदि देश के एक राजा का नाम (राया १, १६)। ४ दत्त पुं [दन्त] १ हस्तिशीर्षक नगर के एक राजा का नाम (उप ६४८ टी)। २ एक जैन मुनि (विसे २७६६)। ३ वर पुं [धर] एक जैन मुनि का नाम (पउम २०, १६३)।

दमग देखो दमय (राया १, १६, सुपा ३८५, वव ३, निचू १५, वृह १, उव)।

दमग वि [दमक] दमन करनेवाला (निचू ६)।

दमण देखो दमणक (राय ३४, १२१)।

दमण न [दमन] १ निग्रह, दान्ति। २ वश में करना, काबू में करना, 'पचिदियदमणपरा' (भाप ४०)। ३ उपताप, पीडा (पणह १,

दु देखो तु (दे २, २४) ।

दु देखो दव = दु । कर्म = दुयए (विमे २८) ।

दु वि व. [द्वि] दो, सख्या-विशेषवाला (हे १, ६४, कम्म १, उवा) ।

दु पु [दु] २ वृक्ष, पेड़, गाछ (उर ५) ।
२ मत्ता, सामान्य (विसे २८) ।

दु अ [द्वस्] दो बार, दो दफा (सुर १६, ५५) ।

दु अ [दुर] इन अर्थों का सूचक अव्यय—
१ अभाव । २ दुष्टता, खराबी । ३ मुश्किल, कठिनाई । ४ निन्दा (हे २, २१७, प्रासू १५८, मुना १४३, गाया १, १, उवा) ।

दु अ न [द्वत] अभिनय-विशेष (राय ५३) ।
दु अ न [द्विक] युग्म, युगल, जोड़ा (मे ६२१) ।

दु अ वि [द्वत] १ पीड़ित, हैरान किया हुआ (उप ३२० टी) । १ वेग-युक्त । ३ क्रिवि शीघ्र, जल्दी (सुर १०, १०१, अणु) । °विल-विअ न [विलम्बित] १ छन्द विशेष । २ अभिनय-विशेष (राय) ।

दु अक्खर पु [दे] पण्ड, नपुमक (दे ५, ४७) ।

दु अक्खर वि [द्वयक्षर] १ अज्ञान, मूर्ख, अल्पज्ञ (उप १२६ टी) । २ पुत्री, दास, नौकर (पिड) । स्त्री °रिया (आवम) ।

दु अणुअ पु [द्वयणुअ] दो परमाणुओं का स्कन्ध (विमे २१६२) ।

दु अर वि [दुअर] मुश्किल, कठिनाई में जो किया जा सके वह (प्राकृ २६) ।

दु अल्ल न [दुकूल] १ वस्त्र, कपड़ा । २ महिन वस्त्र, सूक्ष्मवस्त्र (हे १, ११६, प्राप्र) । देखो दुकूल ।

दु आइ पु [द्विजानि] ब्राह्मण, क्षत्रिय और वैश्य ये तीन वर्ण (हे १, ६४, २, ७६) ।

दु आइअख वि [दुराख्येय] दु ख से कहने योग्य (ठा ५, १—पत्र २६६) ।

दु आर न [द्वार] दरवाजा, प्रवेश-मार्ग (हे १, ७६) ।

दु आराह वि [दुराराध] जिसका आराधन कठिनाई से हो सके वह (पण्ड १, ४) ।

दु आरिआ स्त्री [द्वारिका] १ छोटा द्वार । २ गुप्त द्वार, अपद्वार (गाया १, २) ।

दु आवत्त न [द्वथावत्त] दृष्टिवाद का एक सूत्र (सम १४७) ।

दुइअ } वि [द्वितीय] दूसरा (हे १, १०१,
दुइल्ल } २०६, कुमा, कप्प, खण ४) ।
दुईअ }

दुइल्ल (अप) वि [द्विचतुर] दो-चार, दो या चार (प्राकृ १२०) ।

दुल्ल } सक [जुगुप्स] निन्दा करना,
दुउच्छ } घृणा करना । दुउच्छइ, दुउच्छइ (हे ४, ४) ।

दुउण वि [द्विगुण] दूना, दुगुना (दे ५, ५५, हे १, ६४) । °अर वि [°तर] दूने में भी विशेष, अत्यन्त (से ११, ४७) ।

दुउणिअ वि [द्विगुणन] ऊपर देखो (कुमा) ।

दुऊल्ल देखो दुअल्ल (प्राप्र, गा ५६६, पड्) ।

दुडुह } पु [दुन्दुभ] १ सर्प की एक जाति
दुडुभ } (दे ७, ५१) । २ ज्योतिष्क-विशेष,
एक महाग्रह (ठा २, ३—पत्र ७८) ।

दुडुभि देवो दुडुहि (मग ६, ३३) ।

दुडुमिअ न [द] गले की आवाज (दे ५, ४५, पड्) ।

दुडुमिर्ण। स्त्री [दे] रूपवाली स्त्री (दे ५, ४५) ।

दुं दुहि पुत्री [दुन्दुभि] नाच-विशेष (कप्प, सुर ३, ६८, गउड, कुप्र ११८) ।

दुववती स्त्री [दे] सरित्, नदी (दे ५, ४८) ।

दुकड देखो दुक्कड (द्र ४७) ।

दुकप्प देखो दुक्कप्प (पच्च) ।

दुकम्म न [दुक्कम्म] पाप, निन्दित काज या काम (आ २७, भवि) ।

दुकाळ पु [दुक्काल] अकाल, दुर्मिअ (सिरि ४१) ।

दुक्रिय देखो दुक्कय (भवि) ।

दुकूल पु [दुकूल] १ वृक्ष-विशेष । २ वि. दुकूल वृक्ष की छाल में बना हुआ वस्त्र आदि (गाया १, १ टी—पत्र ४३) ।

दुक्कान्दिर वि [दुक्कान्दिन्] अत्यन्त आक्रन्द करनेवाला (भवि) ।

दुक्कड न [दुक्कृत] पाप कर्म, निन्द्य आचरण (सम १२५, हे १, २०६, पडि) ।

दुक्कडि } वि [दुक्कृतिन्, °क] दुक्कृत
दुक्कडिय } करनेवाला, पापी (सूत्र १, ५, १, पि २१६) ।

दुक्कप्प पु [दुक्कल्प] शिथिल साधु का आचरण, पतित साधु का आचार (पचमा) ।
दुक्कम्म न [दुक्कम्म] दुष्ट कर्म भ्रमदाचरण (सुपा २८, १२०, ५००) ।

दुक्कय न [दुक्कृत] पाप-कर्म (पण्ड १, १, पि ४६) ।

दुक्कर वि [दुक्कर] जो दु ख से किया जा सके, मुश्किल, कष्ट-साध्य (हे ४, ४१४, पचा १३) । °आरअ वि [°कारक] मुश्किल कार्य को करनेवाला (गा १७६, हे २, १०४) । °करण न [°करण] कठिन कार्य को करना (द्र ५७) । °कारि वि [°कारिन्] देखो °आरअ (उप ५ १६०) ।

दुक्कर न [दे] माघ मास में रात्रि के चारों प्रहर में किया जाता स्नान (दे ५ ४२) ।

दुक्करकरण न [दुक्करकरण] पाँच दिन का लगातार उपवास (सवोष ५८) ।

दुक्कह वि [दे] अरुचिवाला, अरोचको (सुर १, ३६, जय २७) ।

दुकाळ पुं [दुक्काल] अकाल, दुर्मिअ (साध ३०) ।

दुक्रिय देखो दुक्कय (भवि) ।

दुक्कुक्किआ स्त्री [दे] पीकदान, पीकदानी (दे ५, ४८) ।

दुक्कुल न [दुक्कुल] निन्दित कुल (धर्म १) ।

दुक्कुह वि [दे] १ असहन, असहिष्णु, चिढ़-चिड़ा । २ रचि-रहित (दे ५, ४४) ।

दुक्ख पु न [दुक्ख] १ अमुख, कटु, पीड़ा, क्लेश, मन का क्षोभ (हे १, ३३), 'दुक्खा सारोरा माणसा व ससारं' (सया १०१, आचा, भग, स्वप्न ५१, ५८, प्रासू ६६, १५२, १८२) । २ क्रिवि. कष्ट से, मुश्किल से, कठिनाई से (वसु) । ३ वि दु खवाला, दु खित, दु खयुक्त (वै ३३) । स्त्री. °करा (भग) । °कर वि [°कर] दु ख जनक (सुपा १६५) । °त्त वि [°त्त] दु ख से पीड़ित (सुपा १६१, स ६४२, प्रासू १४४) । °त्तगवेसण न [°त्तगवेण] दु ख से पीड़ित की सेवा, आर्त्त शुश्रूषा (पचा १६) । °मज्जिय वि [अजितदु ख] जिसने दु ख उपार्जन किया हो वह (उत्त ६) । °राइ वि [°राध्य] दु ख से आराधन-योग्य (वज्जा

दल अक [दल्] १ विकसना । २ फटना, खण्डित होना, द्विधा होना, 'अहिसअरकि-रणणिरवञ्चु विमं दलइ कमलवण' (गा ४६५), 'कुहयं दलइ' (कुमा) । वक्क दलत (से १, ५८) ।

दल सक [दलय्] चूर्ण करना, टुकड़े-टुकड़े करना, विदारना । वक्क, 'निम्मूल दलमा गो सयलतरसत्तुसिधवल' (सुपा ८५) । कवक्क, दलिज्जत (से ६, ६२) । सक, दलिऊण (कुमा) ।

दल न [दल्] १ सैन्य, लश्कर, फौज (कुमा) । २ पत्र पत्ता, पंखड़ी या पँखुड़ी, 'तूहवल्लहस्स गोसम्मि आसि अहरो मिलाएकमलदलो' (हेका ५१, गा ८; १८०, २५७, ३६६, ५६२, ५६१, सुपा ६३) । ३ धन, सम्पत्ति । ४ समूह, समुदाय, गरोह (सुपा ६३८) । ५ खण्ड, भाग, अंश (से ६, ६२) । दलण न [दलन] १ पीसना, चूर्णन (सुपा १४, ६१६) । २ वि. चूर्ण करनेवाला (सुपा २३४, ४६७, कुप्र १३२, ३८३) ।

दलमाण देखो दल = दा ।

दलमाण देखो दल = दलय् ।

दलमल देखो दरमल । वक्क, दलमलत (भवि) । दलय देखो दल = दा । दलयइ (श्रीप) । भवि, दलइत्सति (श्रीप) । वक्क दलयमाण (गाया १, १—पत्र ३७, ठा ३, १—पत्र ११७) । सक, दलइत्ता (श्रीप) ।

दलय सक [दापय्] दिलाना दलयइ (कप्प) ।

दलवट्ट देखो दरमल । दलवट्टइ (भवि) ।

दलवट्टिय देखो दलमलिय (भवि) ।

दलाव सक [दापय्] दिलाना । दलावेइ (पि ५५२) । वक्क, दलावेमाण (ठा ४, २) ।

दलिअ वि [दलित] १ विकसित, खिला हुआ (से १२, १) । २ पीसा हुआ (पाभ) । 'दलिअनपसालितडुलधवलमि अकामु राईसु' (गा ६६१) । ३ विदारित, खण्डित (दे १, १५६, सुर ४, १५२) ।

दलिअ न [दलिक] १ चीज, वस्तु, द्रव्य (श्रीप ५५), 'जह जोगम्मिवि दलिए सव्वम्मि न कोरण पडिमा' (विसे १६३४) । २ परिणत (वृह० क० भा० ८० ४) ।

दलिअ वि [दे] १ निकृणितता, जिसने टेढ़ी नजर की हो वह । २ न रँगली (दे ५, ५२) । काष्ठ, लकड़ी (दे ५, ५२, पाभ) ।

दलिज्जत देखो दल = दलय् ।

दलिइ देखो दरिइ (हे १, २५४, गा २३०) ।

दलिहा अक [दरिद्रा] दुर्गंत होना, दरिद्र होना । दलिहाइ (हे १, २५४) । भुका, दलिहाईअ (संक्षि ३२) ।

दलिल वि [दलवत्] दल-युक्त, दलवाला (सण) ।

दलेमाण देखो दल = दा ।

दव सक [द्रु] १ गति करना । २ छोड़ना । दवए (विसे २८) ।

दव पुं [दव] १ जंगल का अग्नि, वन की आग (दे ५, ३३) । २ वन, जंगल । 'गिग पुं [गिगि] जंगल का अग्नि (हे १, १७७, प्राभ) ।

दव पु [द्रव] १ परिहास (दे ५, ३३) । २ पानी, जल (पचव २) । ३ पनीली वस्तु, रसीली चीज (विसे १७०७) । ४ वेग, 'दव-दवचारी' (सम ३७) । ५ समय, विरति (आचा) । 'कर वि [कर] परिहासकारक (भग ६, ३३) । 'कारी, 'गारी' छी [कारी] एक प्रकार की दासी, जिसका काम परिहास-जनक बातें कर जी बहलाना होता है (भग ११, ११, गाया १, १ टी पत्र ४३) ।

दवण न [दवन] यान, वाहन (सूअनि १०८) ।

दवणय देखो दमणय (भवि) ।

दवदव } अ [द्रवद्रवम्] शीघ्र, जल्दी;
दवदवस्स } 'दवदवचरा पमत्तजणा' (संघोष १४, उत १७, ८), 'दवदवस्स न गच्छेज्जा' (दस ५, १, १४), 'जह वणदवो वणं दवद-वस्स जलिअो खण्णे निहइइ' (धर्मवि ८६) । दवदवा छी [द्रवद्रवा] वेगवाली गति, 'नाऊण गय खुहिय नयरजणो धाविअो दव-दवाए' (पत्तम ८, १७३) ।

दवर पु [दे] १ तन्तु, डोरा, धागा (दे ५, ३५, आवम) । २ रज्जु, रस्ती (गाया १, ८) ।

दवरिया छी [दे] छोटी रस्ती (विसे) ।

दवहुत्त न [द्व] ग्रीष्म-मुख, ग्रीष्म काल का प्रारम्भ (दे ५, ३६) ।

दवाव सक [दापय्] दिलाना । दवावेइ (महा) । वक्क, दवावेमाण (गाया १, १४) । सक दवावेऊण (महा) । हेक्क दवावेत्तए (कप्प) ।

दवावण न [दापन] दिलाना (निचू २) ।

दवाविअ वि [दापित] दिलाया हुआ (सुपा १३०, स १६३, महा, उप पृ ३८५, ७२८ टी) ।

दविअ पुन [द्रव्य] १ अन्वयी वस्तु, जीव आदि मौलिक पदार्थ, मूल वस्तु (सम्म ६, विसे २०३१) । २ वस्तु, गुणाधार पदार्थ (श्रीप ५, आचा, कप्प) । ३ वि. भव्य, मुक्ति के योग्य (सूअ १, २, १) । ४ भव्य, सुन्दर, शुद्ध (सूअ १, १६) । ५ राग-द्वेष से विरहित, वीतराग (सूअ १, ८) । 'णुओग पुं [णुओग] पदार्थ विचार, वस्तु की मीमांसा (ठा १०) । देखो दव्व ।

दविअ वि [द्रविक] समय वाला, समय युक्त, संयमी (आचा) ।

दविअ वि [द्रवित] द्रव-युक्त, पनीली वस्तु (श्रीप) ।

दविइ देखो दविल (सुपा ५८०) ।

दविडी छी [द्राविडी] लिपि-विशेष, तामिल भाषा (विसे ४६४ टी) ।

दविण न [द्रविण] धन, पैसा, संपत्ति (पाभ, कप्प) ।

दविय न [द्रव्य] १ घास का जंगल, वन में घास के लिए सरकार से अवरुद्ध भूमि (आचा २, ३, ३, १) । २ तृण आदि द्रव्य-समुदाय (सूअ २, २, ८) ।

दविल पु [द्रविड] १ देश-विशेष, दक्षिण देश-विशेष, मद्रास प्रांत । पुंछी द्रविड देश का निवासी मनुष्य, द्राविड (पणह १, १—पत्र १४) ।

दव्व देखो दविअ = द्रव्य (सम्म १२, भग, विसे २८, अणु, उत २८) । ६ धन, पैसा, संपत्ति (पाभ, प्रासू १३१) । ७ भूत या भविष्य पदार्थ का कारण (विसे २८, पचा ६) । ८ गौण, अप्रधान । ९ वाह्य, अतथ्य (पचा ४, ६) । 'द्रिय पुं [द्रिय] 'स्थित, 'स्तिक' द्रव्य को ही प्रधान माननेवाला

दुग्गम्म' (सुर ६, १३५) । २ न कठिनाई, मुश्किल (ठा ५, १) ।

दुग्गाय वि [दुर्गत] १ दरिद्र, वन-हीन (ठा ३, ३ गा १८) । २ दुखी, विपत्ति ग्रस्त (पात्र, ठा ४, १—पत्र २०२) ।

दुग्गाय न [दुर्गत] १ दरिद्रता । २ दुःख, दोहती जिणदक्क दोहिच्चं दुग्गाय लहइ' (सवोच ४) ।

दुग्गाह वि [दुर्ग्रह] जिसका ग्रहण दु ख से हो सके वह (उप पृ ३६०) ।

दुग्गा स्त्री [दुर्गा] १ पावती, गौरी शिव-पत्नी (पात्र, सुपा १४८) । २ देवी-विशेष (चड) । ३ पक्षि-विशेष (आ १६) ।

दुग्गाई स्त्री [दुर्गादेवी] १ पावती, दुग्गादेवी शिव-पत्नी, गौरी । २ देवी-दुग्गादेई विशेष (पड, हे १ २७०, दुग्गावी कुमा) । ३ रमण पु [रमण] महादेव, शिव (पड) ।

दुग्गासन न [दुर्गास] दुर्मित्र अकाल (पिंड-भा ३३) ।

दुग्गाडम् वि [दुर्गाह्य, दुर्ग्रह] जिसका ग्रहण दु ख से हो सके वह (मुपा २५५) ।

दुग्गूढ वि [दुर्गूढ] अत्यन्त गुप्त, अति प्रच्छन्न (वव ७) ।

दुग्गेड्ढ देखो दुग्गाडम् (से १, ३) ।

दुग्घट्ट वि [दुर्घट्ट] जिसका आच्छादन दु ख से हो सके वह, पारदसी उग्रहतएहवेअणदुग्घ-ट्टाट्टया' (पएह १, ३—पत्र ५४) ।

दुग्घट्ट वि [दुर्घट्ट] जो दु ख से हो सके वह, कट्ट-साध्य (मुपा ६३, ३६५) ।

दुग्घड्ड वि [दुर्घट्ट] असगत (धर्मवि २७०) ।

दुग्घड्डिअ वि [दुर्घट्टिअ] १ दु ख से सयुक्त । २ खराब रीति मे वना हुआ, 'दुग्घड्डिअमच-अस्स व खणे खणे पाप्मपडणेणं' (गा ६१०) ।

दुग्घर न [दुर्घर] दुष्ट घर (भवि) ।

दुग्घास पुं [दुर्गास] दुर्मित्र, अकाल (वृह ३) ।

दुग्घट्ट पुं [दे] हस्ती, हाथी, करी (दे ५, दुग्घोट्ट ४४, पड, भवि) ।

दुघण पुं [दुघण] एक प्रकार का मुद्गर, मोंगरी, मुंगरा (पएह १, ३—पत्र ४४) ।

दुच्छक न [द्विचक्र] गाढी, शकट (श्रोष ३८३ भा) । १ वइ पु [पति] गाढी का अधिपति या मालिक (श्रोष ३८३ भा) ।

दुच्छिण देखो दुच्छिण (पि ३४०, श्रोप) । दुच्छ न [दौत्य] दूत-कर्म, समाचार पहुँचाने का कार्य (पात्र) ।

दुच्छ देखो दोक्ष = द्वितीय, द्विस् (कप्प) ।

दुच्छडिअ वि [दे] १ दुर्ललित । दुर्विदग्ध, दु शिक्षित (दे ५, ५५, पात्र) ।

दुच्छंवाल वि [दे] १ कलह-निरत, झगडाखोर । २ दुश्चरित, दुष्ट आचरणवाला । ३ परप-भापी, कडा बोलनेवाला (दे ५, ५४) ।

दुच्छज्ज } वि [दुस्सयज] दु ख मे त्यागने
दुस्सय } योग्य (कुमा, उप ७६८ टी) ।

दुच्छर } वि [दुश्चर] १ जिसमें दु ख से
दुच्छरिअ } जाया जाय वह (आचा) । २
दु ख से जो किया जाय वह (उप ६४८ टी,
पत्र २२, २०) । ३ लाढ पुं [लाढ] ऐसा
ग्राम या देश जिसमें दु ख से जाया जा सके
(आचा) ।

दुच्छरिअ न [दुश्चरित] १ खराब आचरण,
दुष्ट वर्तन (पत्र ३८, १२, उप पृ १११) ।
२ वि दुराचारी (दे ५, ४५) ।

दुच्चार वि [दुश्चार] दुराचारी (भवि) ।

दुच्चारि वि [दुश्चारिन्] दुराचारी, दुष्ट
आचरणवाला (स ५०३) । स्त्री. ०णी
(महा) ।

दुच्चित्तिय वि [दुश्चिन्तित] १ दुष्ट चिन्तित
(पत्र ११८, ६७) । २ न खराब चिन्तन
(पडि) ।

दुच्चिगिच्छ वि [दुश्चिन्तितम्] जिसका प्रती-
कार मुश्किल से हो वह (म ७६१) ।

दुच्छिण न [दुश्चरण] १ दुष्ट आचरण,
दुश्चरित । २ दुष्ट कर्म—हिमा आदि । ३ वि,
दुष्ट सचित, एकत्रित की हुई दुष्ट वस्तु (विपा
१, १, राया १, १६) ।

दुच्छेदिय न [दुश्चेष्टित] खराब चेष्टा, शारी-
रिक दुष्ट आचरण (पडि, सुर ६, २३२) ।

दुच्छक वि [द्विपट्क] बारह प्रकार का,
'मूल दारं पट्टाण, आहारो भायणं निही ।
दुच्छकस्तावि धम्मस्स, सम्मतं परिकित्तियं'
(आ ६) ।

दुच्छड्ड वि [दुश्छर्द] दुस्सयज, दु ख से
छोड़ने योग्य, 'दुच्छड्डा जीवियासा ज' (धर्मवि
१२४) ।

दुच्छेज्ज वि [दुश्छेद] जिसका छेदन
दु ख से हो सके वह (पत्र ३१, ५६) ।

दुच्छक देखो दुच्छक (धर्म २) ।

दुजडि पुं [दुजटिन्] ज्योतिष्क देव-विशेष,
एक महाग्रह (ठा २, ३) ।

दुजय देखो दुजय (महा) ।

दुज्जीह पुं [दुज्जिह्व] १ मण, संप । २
दुर्जन खल पुण्य (मट्टि ६३, कुमा) ।

दुज्जन देखो दुज्जित (राज) ।

दुज्जण पुं [दुजेन] खल, दुष्ट मनुष्य (प्राप्
२०, ४०, कुमा) ।

दुज्जय वि [दुर्जेय] जो कष्ट से जीता जा सके
(उप १०३१ टी, सुर १२, १३८, सुपा
२६) ।

दुज्जाय न [दे] व्यसन, कष्ट, दु ख, उपद्रव
(दे ५, ४४, से १२, ६३, पात्र) ।

दुज्जाय वि [दुर्जान] दु ख से निकलने योग्य
(से १२, ६३) ।

दुज्जाय न [दुर्जात] दुष्ट गमन, कुत्सित गति
(आचा) ।

दुज्जित पुं [दुर्जित] एक प्राचीन जैनमुनि
(कप्प) ।

दुज्जीव न [दुर्जीव] आजीविका का भय
(विसे ३४५२) ।

दुर्जाह देखो दुर्जाह (वजा १५०) ।

दुज्जेअ वि [दुर्जेय] दु ख से जीतने योग्य
(सुपा २४८, महा) ।

दुज्जोहण पुं [दुर्जोधन] धृतराष्ट्र का ज्येष्ठ
पुत्र (ठा ४, २) ।

दुज्ज वि [दोह] दोहने योग्य (दे १, ७) ।

दुज्जमाग न [दुर्ज्यान] दुष्ट चिन्तन (धर्म २) ।

दुज्जमाय वि [दुर्ज्यात] जिसके विषय में दुष्ट
चिन्तन किया गया हो वह (धर्म २) ।

दुज्जोसय वि [दुर्जोष] जिसकी सेवा कष्ट
से हो सके ऐसा (आचा) ।

दुज्जोसय वि [दुक्षप] जिसका नाश कष्ट-
साध्य हो वह (आचा) ।

दुज्जोसिअ वि [दुर्जोपित] दु ख से सेवित
(आचा) ।

कवक, दज्भंत, दज्भमाण (नाट—मालती ३०, पि २२२) ।

दह पुं [द्रह] हृद, बड़ा जलाशय, भील, सरोवर (भग; उवा, णाया १, ४—पत्र २६, सुपा १३७) । °फुल्लिया स्त्री [°फुल्लिका] बल्ली-विशेष (पण १) । °वई, °वई स्त्री [°वती] नदी-विशेष (ठा २, ३—पत्र ८०, जं ४) ।

दह देखो दस (हे १, २६२; दं १२, पि २६२, पत्र ७८, २५, से १३, ६४, प्राप्र; से १४, १६, ३, ११, १०, ४, पत्र ८, ४४, प्राप्र) ।

दहण न [दहन] १ दाह, भस्मीकरण । २ पु. अग्नि, वह्नि (पण १, १, उप पृ २२, सुपा ४७४, आ २८) ।

दहणी स्त्री [दहनी] विद्या-विशेष (पत्र ७ १३८) ।

दहयोल्ली स्त्री [दे] म्याली, थलिया, थरिया (दि ५, ३६) ।

दहावण वि [दाहक] जलानेवाला (मण) ।

दहि न [दधि] दही, दूध का विकार (ठा ३ १, णाया १, १, प्राप्र) । °घण पुं [°घन] दधि-पण्ड, अतिशय जमा हुआ दही (पण १७—पत्र ५२६) । °मुह पु [°मुख] १ द्वीप-विशेष (पत्र ५१, १) । २ एक नगर (पत्र ५१, ०) । ३ पर्वत-विशेष (राज) । °वण्ण, °वन्न पुं [°पर्ण] १ एक राजा, नृप-विशेष (कुप्र ६६) । २ वृक्ष-विशेष (औप, सम १५२, पण १—पत्र ३१) । °वासुया स्त्री [°वासुका] वनस्पति-विशेष (जीव ३) । °वाहण पु [°वाहन] नृप-विशेष (महा) । °सर पुं [°सर] खाद्य-द्रव्य-विशेष, मलाई, (दे ३, २६, ५, ३६) ।

दहि वि [दधि] १ दही, 'जुन्हादहीय महणेण' (धर्मवि ५५), 'अयं तु दही' (सूत्र ५, १, १६) । २ तेला, लगातार तीन दिन का उपवास (सवोष ५८) ।

दहिउप्फ न [दे] नवनीत, नैत्रं, मक्खन (दे ५, ३५) ।

दहिट्ट पुं [दे] वृक्ष विशेष, कपित्थ, कैथ या कैथ का पेठ (दे ५, ३५) ।

दहिण देखो दाहिण (नाट—वेणी ६७) ।

दह्तिथर } पु [दे] दधिसर, दही पर की दह्तिथार } मलाई, खाद्य-विशेष (दे ५, ३६) ।

दहिमुह पु [दे] कपि, वानर (दे ५, ४४) ।

दहिय पु [दे] पक्षि-विशेष, 'ज लावयत्ति-रिदहियमोरं मारति अद्दोस वि के वि घोर' (कुप्र ४२७) ।

दा सक [दा] देना, उत्सर्ग करना । दाइ, देइ (भवि, हे २, २०६, आचा, महा, कस) ।

भवि दाह, दाहामि, दाहिमि (हे ३, १७०, आचा) । कर्म दिज्जइ (हे ४, ४३८) । वक्क दित, दें, उदत्त, देयमाण (सुर १, २१२, गा २३, ४६४, हे ४, ३७६, बृह १, णाया १, १४—पत्र १८६) । कवक दिज्जत, दिज्जमाण, दीअमाण (गा १०१, सुर ३, ७६, १०, ५, सम ३६, सुपा ५०२, मा ३३) । सक. दच्चा, दाउ, दाऊण (विपा १, १, पि ५८७, कुमा, उव) । हेक्क दाउ (उवा) । क. दायव्व, देय (सुर १, ११०, सुपा २३३, ४४४, ५३२) । हेक्क देव (अप) (हे ४, ४४१) ।

दा° देखो दग । °थाला न [°स्थालक] जल से गोला थाल (भग १५—पत्र ६८०) ।

कलस पु [°कलश] पानी का छोटा घड़ा । °कुभ [°कुम्भ] जल का घड़ा । °वरग पु [°वारक] जल का पात्र-विशेष (भग १५—पत्र ६८०) ।

दा देखो ता = तावत् (से ३, १०) ।

दाअ देखो दाव = दशंय । दाएइ (विसे ८४४) । कर्म, दाइज्जइ (विसे ४६०) । कवक दाइ-ज्जमाण (कण्) ।

दाअ पुं [दे] प्रतिभू, जामिनदार, जमानत करनेवाला (दे ५, ३८) ।

दाअ पुं [दाय] दान, उत्सर्ग (णाया १, १—पत्र ३७) ।

दाइ वि [दायिन्] दाता, देनेवाला (उप पृ १६२) ।

दाइअ वि [दर्शित] दिखलाया हुआ (विसे १०१२) ।

दाइअ पु [दायिक] १ पैतृक संपत्ति का हिस्तेदार (उप पृ ४७, महा) । २ गोत्रिक, समान-गोत्रीय (कण्) ।

दाइज्जमाण देखो दाअ = दशंय ।

दइज्जय न [देयक] पाणिग्रहण = उभय वर-वधू को दिया जाता द्रव्य (सिरि ४६६) ।

दाउ वि [दाउ] दाता, देनेवाला (महा सं १, सुपा १६१) ।

दाउ देखो दा = दा ।

दाओयरिय वि [दाकोदरिक] जलोदर रोग-वाला (विपा १, ७) ।

दाक्खव (अप) देखो दक्खव । दाक्खवइ (प्राकृ ११६) ।

दाघ देखो दाह (हे १, २६४) ।

दाडिम न [दाडिम] फल-विशेष, अनार (महा) ।

दाडिमी स्त्री [दाडिमी] अनार का पेठ (पि २४०) ।

दाढगालि देखो दढगालि (दसनि १, ४६ टी) ।

दाढा स्त्री [दष्टा] बड़ा दांत, दन्त विशेष, चौभड़, चहू, दाढ (हे २, १३०, गउड) ।

दाढि वि [दष्टिन्] १ दाढावाला । २ पुं, हिंसक पशु (वेणी ४६) । सूअर, वराह, 'किं दाढीमयभीमो निययं गुहं केसरी गियइ' (पत्र ७, १८) ।

दाढिआ स्त्री [दे] दाढी, मुख के नीचे का भाग, श्मश्रु, ठुड्डी के नीचे या ठुड्डी पर के बाल (दे २, १०१) ।

दाढिआलि } स्त्री [दष्टिकावलि] १ दाढ़ा दाढिगालि } की पत्ति । २ वस्त्र-विशेष (बृह ३, जीत) ।

दाण पुं [दान] १ दान, उत्सर्ग, त्याग, 'एए हवति दाणा' (पत्र १४, ५४, कण्, प्रासु ४८, ६७, १७२) । २ हाथों का मद (पाय, पड, गउड) । ३ जो दिया जाय वह (गउड) । °विरय पु [°विरत] एक राजा (सुपा १००) । °साला स्त्री [°शाला] सत्रागार (तो ८) ।

दाणतराय न [दानान्तराय] कर्म-विशेष, जिसके उदय से दान देने की इच्छा नहीं होती है (राय) ।

दाणपारमिया स्त्री [दावपारमिता] दान, उत्सर्ग, समर्पण, 'देतस्स हिरन्नादी अग्मासा देहमादिय चव' । अणहविणिचित्ती जा सेट्ठा सा दाणपारमिया' (धर्मस ७३७) ।

दुद्धोअहि } पुं [दुग्धोदधि] समुद्र-विशेष,
दुद्धोदधि } जिसका पानी दूध की तरह
स्वाद्वि है, क्षीरसमुद्र (गा ४७५, उप २११
टी)।

दुद्धोलणी स्त्री [दे] गो-विशेष, जिसको एक
बार दोहने पर फिर भी दोहन किया जा सके
ऐसी गाय, कामधेनु (दे ५, ४६)।

दुधा देखो दुहा (अभि १६१)।

दुनिमित्त देखो दुण्णिमित्त (आ २७)।

दुन्नय पुं [दुर्नय] १ दुष्ट नीति, कुनीति। २
अनेक धर्मवाली वस्तु में किसी एक ही
धर्म को मानकर अन्य धर्म का प्रतिवाद करने-
वाला पक्ष (सम्म १५)। ३ वि दुष्ट नीति,
अन्याय-कारी (उप ७६८ टी)। °कारि वि
°कारिन्] अन्याय करनेवाला (सुपा ३४६)।

दुन्निकम देखो दोनिकम (भग ७, ६ टी—
पत्र ३०७)।

दुन्निग्गह वि [दुर्निग्रह] जिसका निग्रह दुःख
से हो सके वह, अनिवायं (उप पृ १५३)।

दुन्निवोह वि [दुर्निवोध] १ दुःख से जानने
योग्य। २ दुर्लभ (सूत्र १, १५, २५)।

दुन्निमित्त देखो दुण्णिमित्त (आ २७)।

दुन्निय न [दुर्नीत] दुष्ट कर्म, दुष्कृत, 'वधति
वेदति य दुन्नियाणि' (सूत्र १, ७, ४)।

दुन्नियत्थ वि [दे] विट का भेषवाला, निन्द-
नीय वेष को धारण करनेवाला, केवल जघन
पर ही वस्त्र-महिना हुआ, 'लोए वि कुसंसग्गी-
पिय जणं दुन्नियत्थमइवसणं निदइ' (उव)।

दुन्निरिक्ख वि [दुर्निरीक्ष्य] जो कठिनाई से
देखा जा सके वह (कप्प, भवि)।

दुन्निवार वि [दुर्निवार] रोकने के लिए
अशक्य, जिसका निवारण मुश्किल से हो
सके वह (सुपा १२३, महा)।

दुन्निवारणीअ वि [दुर्निवारणीय, दुर्निवार]
ऊपर देखो (स ३४३, ७४१)।

दुन्निषण्ण वि [दुर्निषण्ण] खराब रीति से
बैठा हुआ (ठा ५, २—पत्र ३१२)।

दुप देखो दिअ = द्विप (राज)।

दुपएस वि [द्विप्रदेश] १ दो भवयववाला।
२ पुं. द्वयणुक (उत्त १)।

दुपएसिय वि [द्विप्रदेशिक] दो प्रदेशवाला
(भग ५, ७)।

दुपक्ख पुं [दुप्पक्ष] दुष्ट पक्ष (सूत्र १, ३,
३)।

दुपक्ख न [द्विपक्ष] १ दो पक्ष (सूत्र १, २,
३)। २ वि. दो पक्षवाला (सूत्र १, १२, ५)।

दुपडिग्गह न [द्विप्रतिग्रह] दृष्टिवाद का
एक सूत्र (सम १५७)।

दुपडोआर वि [द्विपदावतार] दो स्थानों में
जिसका समावेश हो सके वह (ठा २, १)।

दुपडोआर वि [द्विप्रत्ययतार] ऊपर देखो
(ठा २, १)।

दुण्मज्जिय देखो दुप्पमज्जिय (सुपा ६२०)।

दुपय वि [द्विपद] १ दो पैरवाला। २ पुं
मनुष्य (गाया १, ८, सुपा ४०६)। ३ न
गादी, शकट (ओघ २०५ भा)।

दुपय पुं [द्रुपद] कापिल्यपुर का एक राजा
(गाया १, १६)।

दुपरिच्चय वि [दुप्परित्यज] दुस्त्यज, दुःख
से छोड़ने योग्य (उप ७६८ टी, रयण ३४)।

दुपरिच्चयणीय वि [दुप्परित्यजनीय,
दुप्परित्यज] ऊपर देखो (काल)।

दुपस्स देखो दुप्पस्स (ठा ५, १—पत्र
२६६)।

दुपुत्त पुं [दुप्पुत्र] कुपुत्र, अपुत्र (पजम २६,
२३)।

दुपेन्ध वि [दुप्पेक्ष] दुर्दर्श, अदर्शनीय
(भवि)।

दुप्पड पुं [दुप्पति] दुष्ट स्वामी (भवि)।

दुप्पउत्त वि [दुप्पयुक्त] १ दुरुपयोग करने-
वाला (ठा २, १—पत्र ३६)। २ जिसका
दुरुपयोग किया गया हो वह (भग ३, १)।

दुप्पउल्लिय } वि [दुप्पज्वल्लि] ठीक-ठीक
दुप्पउल्ल } नहीं पका हुआ, अवपका (उवा,
पचा १)।

दुप्पओग पुं [दुप्पयोग] दुरुपयोग (दस ४)।

दुप्पओगि वि [दुप्पयोगिन्] दुरुपयोग
करनेवाला (परह १, १—पत्र ७)।

दुप्पक्क वि [दुप्पक्क] देखो दुप्पउल्ल (सुपा
४७२)।

दुप्पक्खाल वि [दुप्पक्षाल] जिसका प्रक्षा-
लन कष्टसाध्य हो वह (सुपा ६०८)।

दुप्पमुप्पेक्खिय वि [दुप्पत्युत्प्रेक्षित] ठीक-
ठीक नहीं देखा हुआ (पव ६)।

दुप्पजीवि वि [दुप्पजीविन्] दुःख से जीने-
वाला (दस १)।

दुप्पडिक्कं वि [दुप्पप्रतिकान्त] जिसका
प्रायश्चित ठीक-ठीक न किया गया हो वह
(विपा १, १)।

दुप्पडिगार वि [दुप्पप्रतिगार] जिसका प्रतीकार
दुःख से किया जा सके (बृह ३)।

दुप्पडिपूर वि [दुप्पप्रतिपूर] पूरने के लिए
अशक्य (तटु)।

दुप्पडियाणंद वि [दुप्पप्रत्यानन्द] १ जो
किसी तरह सन्तुष्ट न किया जा सके। २ प्रति
कष्ट से तोषणीय (विपा १, १—पत्र ११,
ठा ४, ३)।

दुप्पडियार वि [दुप्पप्रतिकार] जिसका प्रती-
कार दुःख से हो सके वह (ठा ३, १—पत्र
११७, ११६, म १८४, उव)।

दुप्पडिलेह वि [दुप्पप्रतिलेख] जो ठीक-ठीक
न देखा जा सके वह (पव ८४)।

दुप्पडिलेहण न [दुप्पप्रतिलेखन] ठीक-ठीक
नहीं देखना (आव ४)।

दुप्पडिलेहिय वि [दुप्पप्रतिलेखित] ठीक से
नहीं देखा हुआ (सुपा ६१७)।

दुप्पडिवृह वि [दुप्पप्रतिवृह] १ बढ़ाने को
अशक्य। २ पालने को अशक्य (आचा)।

दुप्पडिवृहण वि [दुप्पप्रतिवृहण] ऊपर
देखो (आचा)।

दुप्पणिहाण न [दुप्पप्रणिधान] दुष्प्रयोग,
अशुभ प्रयोग, दुरुपयोग (ठा ३, १, सुपा
५४०)।

दुप्पणिहिय वि [दुप्पप्रणिहित] दुष्प्रयुक्त,
जिसका दुरुपयोग किया गया हो वह (सुपा
५५८)।

दुप्पणीहाण देखो दुप्पणिहाण, 'कयसामइ-
ओवि दुप्पणीहाण' (सुपा ५५३)।

दुप्पणोल्लिय वि [दुप्पप्रणोद्य] दुस्त्यज, छोड़ने
को अयोग्य (सूत्र १, ३, १)।

दुप्पणवणिज्ज वि [दुप्पप्रज्ञापनीय] कष्ट
से प्रवोधनीय (आचा २, ३, १)।

दुप्पतर वि [दुप्पतर] दुस्तर (सूत्र १,
५, १)।

दालिह देखो दारिह (हे १, २५४, प्रासू ७०)।

दालिहिय देखो दारिहिय (सुर १३, ११६, वजा १३८)।

दालिम देखो दालिम (प्राप्र)।

दालियव न [दालिकाम्ल] दाल का वना हुआ जाय-विशेष (परह २, ५)।

दालिया स्त्री [दालिका] देखो दालि (उवा)।

दाली देखो दालि (श्रोव ३२३)।

दाव सक [दव्यु] दिखाना, ननलाना। दावइ, दावेइ (ह ४, ३२, गा ३१५)। वहु. दावंत (गा ६२०)।

दाव सक [दापयु] दिलाना, दान करवाना। दावेइ (कम)। वहु दावेंन (पउम ११७, २६, सुपा ६१८)। हेऊ. दावेत्तए (कप)। दाव देखो ताव = तावत् (से ३, २६, म्पन १०, अमि ३६)।

दाव पु [दाव] १ वन, जंगल। २ देव, देवता (मे ६, ४३)। ३ जंगल का अग्नि (पाप्र)। ०ग्नि पुं [०ग्नि] जंगल की आग (हे १, ६७)। ०गल, ०नल पुं [०नल] जंगल की आग (सण, सुपा १६७, पडि)।

दावण न [दामन] छान, पशुओं को पेर में बाँधने की रस्मी (कुप्र ४३६)।

दावण न [दापन] दिलाना (सुपा ४६६)। दावणया स्त्री [दापना] दिलाना (स ५१, पडि)।

दावइव पु [दावद्रव] वृक्ष-विशेष (गाया १, ११—पत्र १७१)।

दावर पु [दापर] १ युग-विशेष, वीमरा युग। २ न द्विक, दो, 'नो तिय नो चेव दावर' (सूत्र १, २, २, २३)। ०जुम्म पु [०युग्म] राशि-विशेष (ठा ४, ३—पत्र २३७)।

दावाव सक [दापयु] दिलाना। संक्र. दावावेउ (महा)।

दाविअ वि [दाशित] दिखलाया हुआ, प्रदर्शित (पाप्र, मे २, ५३, ५, ८०)।

दाविअ वि [दापित] दिलाया हुआ (सुपा २४१)।

दाविअ वि [दावित] १ कराया हुआ, उप-काया हुआ। २ नरम किया हुआ (अच्छु ८८)।

दावेंत देखो दाव = दापयु।

दास पु [दर्श] दर्शन, अवलोकन (पड्)।

दास पु [दास] १ नौकर, कर्मकर (ह २, २०६, सुपा १२२, प्रासू १७५, स १८, कप्पु)। २ घोवर, मल्लाह, किचट्टो घोवरो दासो (पाप्र)। ०चेइ, ०चेटग पुं [०चेट] १ छोटी उन्न का नौकर। २ नौकर का लडका (महा, गाया १, २)। ०मच्च पु [०सत्य] श्रीकृष्ण (अच्छु १७)।

दासरहि पुं [दासरथि] राजा दशरथ का पुत्र रामचन्द्र (से १, १८)।

दासी स्त्री [दासी] नौकरानी (श्रीप, महा)।

दामीखच्चडिया स्त्री [दामीकचडिका] जैन मुनियों की एक शाखा (कप्प)।

दाइ पुं [दाह] १ ताप, जलन, गरमी। २ दहन, भस्मीकरण (हे १, २६४, प्रासू १८)। ३ रोग-विशेष (विपा १, १)। ०ज्वर पुं [०ज्वर] ज्वर-विशेष (सुपा ३११)। ०वक्क-तिय वि [०व्युत्क्रान्तिक] जिसको दाह उत्पन्न हुआ हो वह (गाया १, १—पत्र ६४)।

दाह देखो दा = दा।

दाहग वि [दाहक] जलानेवाला (उवर ८१)।

दाहण न [दाहन] जलाना, भस्म कराना (पउम १०२, १६१)।

दाहविय वि [दाहित] जलवाया हुआ, आग लगवाया हुआ (हम्मोर २७)।

दाहिण देखो दक्खिण (भग, कस, हे १, ४५, २, ७२, गा ४३३, ८१६)। ०दारिय वि [०द्वारिक] दक्षिण दिशा में जिमका द्वार हो वह। २ न अग्निनी-प्रमुख मात नसत्र (ठा ७)। ०पच्चरिथम वि [०पश्चिमीय] दक्षिण और पश्चिम दिशा के बीच का भाग, नैऋत कोण (भग)। ०पह पु [०पथ] १ दक्षिण देश की ओर का रास्ता। २ दक्षिण देश, 'गच्छामि दाहिणपह' (पउम ३२, १३)। ०पुरथिम वि [०पूर्वीय] दक्षिण और पूर्व दिशा के बीच का भाग, अग्नि-कोण (भग)। ०वत्त वि [०वर्त] दक्षिण में आवर्तवाला (शंख आदि) (ठा ४, २—पत्र २१६)।

दाहिणा देखो दक्खिणा (ठा ६, सुज्ज १०)।

दाहिणिल देखो दक्खिणिल (पउम ७, १७, विपा १, ७)।

दाहिणा स्त्री [दक्षिणा] दक्षिण दिशा (कुमा)। दि वि. व. [द्वि] दो, दो को सहायावाला (हे १, ६४, से ६, ५३)।

दि देखो दिसा (गा ८६६)। ०करि पुं [०करिन्] दिग्-हस्ती (कुमा)। ०गइंद पुं [०गजेन्द्र] दिग्-हस्ती (गउड)। ०गय पुं [०गज] दिग्-हस्ती (स ११३)। ०चक्रसार न [०चक्रसार] विद्याधरों का एक नगर (इक)। ०मोह पु [०मोह] दिशा-भ्रम (गा ८८६)। देखो दिसा।

दिअ पुं [दे] दिवस, दिन (दे ५, ३६), 'राडदिआइ' (कप्प)।

दिअ पु [द्विज] १ ब्राह्मण, विप्र (कुमा; पाप्र, उप ७६८ टी)। २ दन्त, दाँत। ३ ब्राह्मण आदि तीन वर्ण—ब्राह्मण, क्षत्रिय और वैश्य। ४ अण्डज, अण्डे से उत्पन्न होनेवाला प्राणी। ५ पक्षी। ६ वृक्ष-विशेष, टिकरू का पेड़ (हे १, ६४)। ०राय पुं [०राज] १ उत्तम द्विज। २ चन्द्रमा (सुपा ४१२, कुप्र १६)।

दिक पु [द्विक] काक, कौआ (उप ७६८ टी)।

दिअ पु [द्विप] हस्ती, हाथी (हे २, ७६)।

दिअ न [दिव] स्वर्ग, देवलोक (पिंग)। ०लोअ, ०योग पुं [०लोक] स्वर्ग, देवलोक (पउम २२, ४५, सुर ७, १)।

दिअ वि [दित] छिन्न, काटा हुआ (वम्मो १)।

दिअ वि [दित] हत, मार डाला हुआ, 'चंदेण व दियराएण जेण आणदिय भुवण' (कुप्र १६)।

दिअंन पु [दिगन्त] दिशा का प्रान्त भाग (महा)।

दिअवर वि [दिगम्बर] १ नग्न, नंगा, वस्त्र-रहित। २ पु. एक जैन संप्रदाय (भवि, उवर १२२, कुप्र ४४३)।

दिअउम पु [दे] सुवर्णकार, सोनार (दे ५, ३६)।

दिअधुत्त पुं [दे] काक, कौआ (दे ५, ४१)।

दिअर पु [देवर] पति का छोटा भाई (गा ३५, प्राप्र, पाप्र, हे १, १४६, सुपा ४८७)।

जस्स मुहं जोइज्जइ, सो पुरिसो महीयले विरलो' (रयण ३२) ।
 २ भिक्षा का अभाव (ठा ५, २) । ३ वि. जहाँ पर भिक्षा न मिल सके वह देश आदि (ठा ३, १—पत्र ११८) ।
 दुम्भिज्ज देखो दुम्भेज्ज (पञ्चम ८०, ६) ।
 दुम्भूड स्त्री [दुम्भूति] अशिव, अमंगल (वृह ३) ।
 दुम्भूय पुन [दुम्भूत] १ नुकसान करनेवाला जन्तु—टिड्डी वगैरह (मग ३, २) । २ न. अशिव, अमंगल (जीव ३) ।
 दुम्भूय वि [दुम्भूत] दुराचारी (उत्त १७, १७) ।
 दुम्भेज्ज वि [दुम्भेज्ज] तोड़ने को अशक्य (पि ८४, २८७, नाट—मृच्छ १३३) ।
 दुम्भेय वि [दुम्भेय] ऊपर देखो (राय) ।
 दुम्भग देखो दुम्भग (नव १५) ।
 दुम्भव न [दुम्भव] वर्तमान और आगामी जन्म, 'दुम्भवहसज्जो' (आ २७) ।
 दुम्भाग पुं [दुम्भाग] आधा, अर्ध (भग ७, १) ।
 दुम् सक [धवल्य] १ सफेद करना । २ चूना आदि से पोतना । दुम्ह (हे ४, २४) ।
 दुम्सु (गा ७४७) । वक्तु दुम्सु (कुमा) ।
 दुम् पुं [द्रुम] १ वृक्ष, पेड़, गाछ (कुमा, प्रासू ६, १४६) । २ चमरेन्द्र के पदाति-सैन्य का एक अधिपति (ठा ५, १—पत्र ३०२, इक) । ३ राजा श्रेणिक का एक पुत्र, जिसने भगवान् महावीर के पास दीक्षा लेकर अनुत्तर देवलोक की गति प्राप्त की थी (अनु २) । ४ न एक देव-विमान (सम ३५) । ५ कत न [कान्त] एक विद्याधर-नगर (इक) । ६ पत्त न [पत्र] १ वृक्ष का पत्ता । २ 'उत्तराध्ययन' सूत्र का एक अध्ययन (उत्त १०) । ३ पुण्ड्रिया स्त्री [पुण्ड्रिका] 'दशवैकालिक' सूत्र का पहला अध्ययन (दस १) । ४ राय पु [राज] उत्तम वृक्ष (ठा ४, ४) । ५ सेण पुं [सेन] १ राजा श्रेणिक का एक पुत्र, जिसने भगवान् महावीर के पास दीक्षा लेकर अनुत्तर देवलोक में गति प्राप्त की थी (अनु २) । २ नववें वसुदेव और वासुदेव के पूर्व-जन्म के धर्म-गुरु (सम १५३, पञ्चम २०, १७७) ।

दुम्मतय पु [दे] केश-वन्ध, धम्मिल्ल—वैधी चोटो, जूडा (दे ५, ४७) ।
 दुम्मण न [धवलन] चूना आदि से लेपन, सफेद करना (पण्ह २, ३) ।
 दुम्मणी स्त्री [दे] सुधा, मकान आदि पोतने का श्वेत द्रव्य-विशेष, चूना (दे ५, ४४) ।
 दुम्मत वि [द्विमात्र] दो मात्रावाला स्वर-वर्ण (हे १, ६४) ।
 दुम्मासिय वि [द्विमासिक] दो मास का, दो मास-सम्बन्धी (सण) ।
 दुम्मावि वि [धवलित] चूना आदि से पोता हुआ, सफेद किया हुआ (गा ७४५, सुज्ज २०) ।
 दुम्मिल देखो दुम्मिल (पिग) ।
 दुम्मुह पुं [द्विमुख] एक राजपि (उत्त ६) ।
 दुम्मुह देखो दुम्मुह = दुम्मुख (पि ३४०) ।
 दुम्मुहत्त पुंन [दुम्मुहत्त] खराब मुहूर्त, दुष्ट समय (सुपा २३७) ।
 दुम्मुक्ख वि [दुम्मुक्ख] जो दुःख से छोड़ा जा सके (सूअ १, १२) ।
 दुम्म देखो दूम = दावय । दुम्मइ (भवि) ।
 दुम्मेति, दुम्मेसि (गा १७७, ३४०) । कर्म. दुम्मिज्जइ (गा ३२०) ।
 दुम्मइ वि [दुम्मेति] दुब्बुद्धि, दुष्ट बुद्धिवाला (आ २७, सुपा २५१) ।
 दुम्मइणी स्त्री [दे] झगडाखोर स्त्री (दे ५, ४७, पड) ।
 दुम्मण वि [दुम्मेनस्] १ दुम्मेना, खिन्न-मनस्क, उद्विग्न-चित्त, उदास (विपा १, १, सुर ३, १४७) । २ दीन, दीनतायुक्त । ३ द्विष्ट, द्वेष-युक्त (ठा ३, २—पत्र १३०) ।
 दुम्मण अक [दुम्मेनाय] उद्विग्न होना, उदास होना । वक्तु दुम्मणाअत, दुम्मणा-यमाण (नाट—महावी ६६, मालती १२८, रयण ७६) ।
 दुम्मणिअ न [दुम्मेनस्य] उदासी, उद्वेग, चिन्ता, बेचैनी (दस ६, ३) ।
 दुम्मणिअ न [दुम्मेनस्य] दुष्ट मनो-भाव, मन का दुष्ट विकार, दुर्जनता (दस ६, ३, ८) ।
 दुम्मय पुं [द्रुमक] भिलारी, भोखमंगा (दस ७, १४) ।

दुम्महिंला स्त्री [दुम्मेहिंला] दुष्ट स्त्री (अधो ४६४ टी) ।
 दुम्माण पुं [दुम्मान] झूठा अभिमान, निन्दित गर्व (अञ्चु ५४) ।
 दुम्मार पु [दुम्मार] विपम मार, भयंकर ताड़न, 'दुम्मारोण मओ सोवि' (आ १२) ।
 दुम्मारि स्त्री [दुम्मारि] उत्कट मारी-रोग (सवोध २) ।
 दुम्मारुय पुं [दुम्मारुत] दुष्ट पवन (भवि) ।
 दुम्मावि वि [दुम्मावि] उपतापित, पीड़ित (गा ७४, २२४, ४३३, भवि, काप्र ३०) ।
 दुम्मिल स्त्रीन [दुम्मिल] छन्द-विशेष । स्त्री 'ला (पिग) ।
 दुम्मुह देखो दुम्मुह = द्विमुख (महा) ।
 दुम्मुह पु [दुम्मुख] बलदेव का धारणी देवी से उत्पन्न एक पुत्र, जिसने भगवान् नेमिनाथ के पाम दीक्षा लेकर मुक्ति पाई थी (अत ३, पण्ह १, ४) ।
 दुम्मुह पु [दे] मर्कट, वानर, बन्दर (दे ५, ४४) ।
 दुम्मेह वि [दुम्मेधस्] दुब्बुद्धि, दुर्मति (पण्ह ६, ३) ।
 दुम्मोअ वि [दुम्मेक] दुःख से छोड़ने योग्य (अभि २४४) ।
 दुयणु देखो दुअणुअ (धर्मसं ६४०) ।
 दुरइक्कम वि [दुरतिक्रम] दुर्लभ्य, जिसका उल्लंघन दुःख-साध्य हो वह (आचा) ।
 दुरइक्कमणिज्ज वि [दुरतिक्रमणीय] ऊपर देखो (आया १, ५) ।
 दुरत वि [दुरन्त] १ जिसका परिणाम—विपाक खराब हो वह, जिसका पर्यन्त दुष्ट हो वह (आया १, ८, पण्ह १, ४—पत्र ६५, स ७५०, उवा) । २ जिसका विनाश कष्ट-साध्य हो वह (तटु) ।
 दुरदर वि [दे] दुःख से उत्तीर्ण (दे ५, ४६) ।
 दुरक्ख वि [दुरक्ष] जिसकी रक्षा करना कठिन हो वह (सुपा १४३) ।
 दुरक्खर वि [दुरक्षर] पुरुष, कठोर, कडा (वचन) (भवि) ।
 दुरग्गाह पु [दुराग्रह] कदाग्रह (कुप्र ३७६) ।
 दुरज्जमवसिय न [दुरज्जमवसित] दुष्ट चिन्तन (सुपा ३७७) ।

सूर्य, दिवाकर (पात्र, से १, १८, मुपा २३) ।
 °मुह न [°मुख] प्रमात, प्रात काल
 (पात्र) । °यर देखो °कर (गठड, भवि) ।
 °रयणिफरि श्री [°रजनिफरी] विद्या-विशेष
 (पठम १३८) । °वइ पु [°पति] सूर्य,
 रवि (पि ३७६) ।

दिग्दि पु [दिग्दिनेन्द्र] सूर्य, रवि (मुपा २४०) ।
 दिग्दिसे पु [दिग्दिनेश] १ सूर्य, सूरज (कप्पू) ।
 २ वारह की संख्या (विवे १४४) ।

दिग्दि वि [दत्त] १ दिया हुआ, वित्तोर्ण
 (हे १, ४६, प्राप्, स्वप्न, प्रासू १६४) ।
 २ निवेशित, स्थापित (परह १, १) ।
 ३ पु. भगवान् पार्वनाथ के प्रथम गण-
 धर (सम १५२) । ४ भगवान् श्रेयासनाथ का
 पूर्वजन्मीय नाम (सम १५१) । ५ भगवान्
 चन्द्रप्रभ का प्रथम गणधर (सम १५२) ।
 ६ भगवान् नमिनाथ को प्रथम भिक्षा देनेवाला
 एक गृहस्थ (सम १५१) । देखो दिन्न ।

दिग्दि देखो दइन्न (राज) ।

दिग्दिणेल्य वि [दत्त] दिया हुआ (श्रीघ २२
 भा. टी) ।

दिग्दि वि [दीप्] १ ज्वलित, प्रकाशित (सम
 १५३, अजि १४, लहुअ ११) । २ कान्ति-
 युक्त, भास्वर, तेजस्वी (पठम ६४, ३५, सम
 १२२) । ३ तीक्ष्णभूत, निश्चित (सम १५३,
 लहुअ ११) । ४ उज्ज्वल, चमकीला (गदि) ।
 ५ पुष्ट, परिवृद्ध (उत्त ३४) । ६ प्रसिद्ध (भग
 २६, ३) । ७ मारनेवाला (श्रीघ ३०२) ।
 °चित्त वि [°चित्त] हर्ष के अतिरेक से
 जिसको चित्त-भ्रम हो गया हो वह (वह ३) ।

दिग्दि वि [द्विप्] १ गर्वित, गर्व-युक्त (श्रीप) ।
 २ मारनेवाला । ३ हानि-कारक (श्रीघ
 ३०२) । °इत्त वि [°चित्त] २ जिनके मन
 में गर्व हो । २ हर्ष के अतिरेक से जो पागल
 हो गया हो वह (ठा ५, ३—पत्र ३२७) ।

दिग्दि श्री [दीप्ति] कान्ति, तेज, प्रकाश (पात्र,
 सुर ३, ३२, १०, ४६, मुपा ३७८) । °म
 वि [°मत्] कान्ति-युक्त (गच्छ १) ।

दिग्दि श्री [दीप्ति] उद्दीपन (उत्त ३२, १०) ।
 °ल वि [°मत्] प्रकाशवाला (सम्मत्
 १५६) ।

दिग्दिक्खा } श्री [दिग्दिक्षा] देखने की इच्छा
 दिग्दिच्छा } (राज, मुपा २६४) ।

दिग्दि वि [दिग्दि] लिप्त (निद्र १) ।

दिग्दि देखो दिग्दिण (महा, प्रासू ५७) । ७ श्री
 गौतम स्वामी के पाम पांच सौ तापसों के
 साथ जैन दीक्षा लेनेवाला एक तापस (उप
 १४२ टी, कुप्र २६३) । ८ एक जैन आचार्य
 (कप्प) ।

दिग्दि पु [दत्त] गोद लिया हुआ पुत्र (ठा
 १०—पत्र ५१६) ।

दिग्दि अक [दीप्] १ चमकना । २ तेज
 होना । ३ जलना । दिग्दि (हे १, २२३) ।
 वक्र. दिग्दिपत, दिग्दिमाण (से ४, ८, सुर
 १४, ५६, महा, परह १, ४, मुपा २४०),
 'दिग्दिमाणे तवतेएण' (म ६७५) ।

दिग्दि अक [दीप्] तृप्त होना, सन्तुष्ट होना ।
 दिग्दि (पह) ।

दिग्दि वि [दीप्] चमकनेवाला, तेजस्वी (से
 १, ६१)

दिग्दि (अप) पुं [दीप्] १ दीपक । २ छन्द-
 विशेष (पिग) ।

दिग्दिपंत पुं [दे] अनर्थ (दे ५, ३६) ।

दिग्दिपंत } देखो दिग्दि = दीप् ।
 दिग्दिमाण }

दिग्दिपर देखो दिग्दि = दीप् (कुमा) ।

दिग्दिप सक [दा] देना । दियावेइ (पचा १३,
 १२) ।

दिग्दि पु [द्विद] हस्ती, हाथी (हे १, ६४) ।

दिग्दिदिलिअ [दे] देखो दिग्दिदिलिअ (गा
 ७४१) ।

दिग्दिदिलिअ अक [दिलिदिलिअ] 'दिल् दिल्'
 आवाज करना । वक्र. दिग्दिदिलित (पठम
 १०२, २१) ।

दिग्दिदिवेदय पुं [दिलिदिवेदय] एक प्रकार का
 ग्राह, जल-जन्तु की एक जाति (परह १, १) ।

दिग्दिदिलिअ पु [दे] बालक, शिशु, लडका
 (दे ५, ४०) । श्री. °आ, बाला, लडकी
 (गा ७४१) ।

दिग्दि उम [दिग्] १ क्रीडा करना । २
 जीतने की इच्छा करना । ३ लेन-देन करना ।
 ४ चाहना, वाछना । ५ आज्ञा करना ।
 दिग्दि, दिग्दि (पह) ।

दिग्दि न [दिग्] स्वर्ग, देवलोक (कुप्र ४३६,
 भवि) ।

दिग्दिड वि [द्विपार्थ] डेढ, एक और आधा
 (विसे ६६३, स ५५, सुर १०, २०८, मुपा
 ५८०, भवि, सम ६६, सुज्ज १, १०, ठा ६) ।

दिग्दि स } देखो दिग्दिअ (हे १, २६३, उव,
 दिग्दिह } प्रासू १२, मुपा ३०७, वेणी ४७) ।

°पुहुत्त न [°पृथक्त्व] दो से लेकर नव
 दिन तक का समय (भग) ।

दिग्दि देखो दिग्दि (गाया १, ४, प्रासू ६०) ।

°इत्ति पुं [°कीर्त्ति] चाण्डाल, भगी (दे
 ५, ४१) । °कर पुं [°कर] सूर्य, सूरज
 (उत्त ११) । °कित्ति पुं [°कीर्त्ति] नापित,
 हजाम (कुप्र २८८) । °गर देखो °कर (गाया
 १, १, कुप्र ४१५) । °मुह न [°मुख]
 प्रमात (गठड) । °यर देखो °कर (मुपा ३६,
 ३१४) । °यरत्थ न [°करात्थ] प्रकाश-
 कारक अन्न-विशेष (पठम ६१, ४४) ।

दिग्दिपर पुं [दिग्दिपर] १ सिद्धसेन नामक
 विख्यात जैन कवि और तार्किक । २ पूर्वधर
 मुनि (सम्मत् १४१) ।

दिग्दि देखो देव, 'दिविणावि काणपुरिसे-
 राव्व एसा दासी अहं च विप्पवरो एगया दिट्ठोए
 दिस्सामो' (रंभा) ।

दिग्दिअ पुं [द्विचिद्] वानर-विशेष (से ४, ८,
 १३, ८२) ।

दिग्दिज वि [द्विचिज] १ स्वर्ग में उत्पन्न । २
 पुं देव, देवता (अजि ७) ।

दिग्दिद्व देखो दुविदु (राज) ।

दिग्दि (अप) देखो दिग्दि (हे ४, ४१६, कुमा) ।

दिग्दि वि [दिग्दि] १ स्वर्ग-सम्बन्धी, स्वर्गीय
 (स २, ठा ३, ३) । २ उत्तम, सुन्दर, मनोहर
 (पठम ८, २६१, सुर २, २४२, प्रासू
 १२८) । ३ प्रधान, मुख्य (श्रीप) । ४ देव-
 सम्बन्धी (ठा ४, ४, सूअ १, २, २) । ५ न.
 शपथ-विशेष, आरोप की शुद्धि के लिए किया
 जाता अग्नि-प्रवेश आदि (उप ८०४) । ६
 प्राचीन काल में अपुत्रक राजा की मृत्यु हो
 जाने पर जिस चमत्कार-जनक घटना से राज-
 गद्दी के लिए किसी मनुष्य का निर्वाचन होता
 था वह हस्ति-नर्जन, अश्व-हेपा आदि अलौ-
 किक प्रमाण (उप १०३१ टी) । °माणस

दुलंघ देखो दुल्लघ (भवि) ।

दुलभ देखो दुल्लभ (भवि) ।

दुलह वि [दुल्लभ] १ जिसकी प्राप्ति दु ख में हो सके वह (कुमा, गडह, प्रासू १३६) । २ पुं. एक वरिष्क-पुत्र (सुपा ६१७) । देखो दुल्लह ।

दुलि पुत्री [दे] कच्छप, कछुआ (दे ५, ४२, उप पृ १३५) ।

दुल्ल न [दे] वस्त्र, कपडा (दे ५, ४१) ।

दुल्लघ वि [दुल्लघ] जिसका उल्लवण कठिनार्थ से हो सके वह अलघनीय (पउम १२, ३८, ४१, हेका ३१, सुर २, ७८) ।

दुल्लभ वि [दुल्लभ] दुराप, दुष्प्राप्य (उप पृ १३६, सुपा १६३, सण) ।

दुल्लक्ष्य वि [दुल्लक्ष] १ दुर्विज्ञेय, जो दु ख से जाना जा सके, अलक्ष्य (से ८, ५, स ६६, वजा १३६, आ २८) । २ जो कठि-नार्थ से देखा जा सके (कप्प) ।

दुल्लग वि [दे] अधमान, अयुक्त (दे ५, ४३) ।

दुल्लगा न [दुल्लग] दुष्ट लग्न, दुष्ट मुहूर्त (मुद्रा २१५) ।

दुल्लभ } देखो दुल्लह, 'कि दुल्लभ जणो
दुल्लभ } गुणगाही' (गा ६७५, निचू ११) ।

दुल्लिख वि [दुल्लिख] १ दुष्ट आदतवाला । २ दुष्ट इच्छावाला, विलसइ बेसाण गिहे विविहिलिगेहि दुल्लिखो, 'कीलइ दुल्लिख-वालकीलाए' (सुपा ४८५, ३२८) । ३ व्यमनी आदतवाला, वजा सा पुन्दुरिसनिम्मिया

तिहुयणेवि तुह जणणी ।

जोइ पसुगे मि तुम दीणुद्धरणिक्-

दुल्लिखो' (सुपा २१६) ।

४ दुर्विदग्ध, दु शिक्षित (पाअ) । ५ न दुरागा, दुर्लभ उस्तु की अभिलाषा (महानि ६) ।

दुल्लसिआ ली [दे] दानी, नौकरानी (दे ५, ४६) ।

दुल्लह नि [दुल्लभ] १ दुराप, जिसकी प्राप्ति कठिनार्थ से हो वह (स्वप्न ४६, कुमा, जो ५०, प्रासू ११, ४६, ४७) । २ विक्रम

की ग्यारहवीं शताब्दी का गुजरात का एक प्रसिद्ध राजा (गु १०) । 'राय पु [राज] वही अर्थ (सार्व ६६, कुप्र ४) । 'लंभ वि [लंभ] जिसकी प्राप्ति दु ख से हो सके वह (पउम ३५, ४७, सुर ४, २२६, वै ६८) ।

दुवई ली [दुपदी] छन्द-विशेष (म ७१) ।

दुवण न [दावन] उपताप, पीडन (पएह १, २) ।

दुवण्ण } वि [दुवर्ण] खराब रूपवाला (भग,
दुवन्न } ठा ८) ।

दुवय पु [दुपद] एक राजा, द्रौपदी का पिता (गाथा १, १६, उप ६४८ टी) । 'सुया ली [सुता] पाण्डव-पत्नी, द्रौपदी (उप ६४८ टी) ।

दुवयगया ली [दुपदाङ्गा] राजा दुपद की लडकी, द्रौपदी, पाण्डवों की पत्नी (उप ६४८ टी) ।

दुवयगरुहा ली [दुपदाङ्गरुहा] ऊपर देखो (उप ६४८ टी) ।

दुवयण न [दुवचन] खराब वचन, दुष्ट उक्ति (पउम ३५, ११) ।

दुवयण न [द्विवचन] दो का बोधक व्याकरण-प्रसिद्ध प्रत्यय, दो सख्या की वाचक विभक्ति (हे १, ६४, ठा ३, ४—पत्र १५८) ।

दुवार } देखो दुआर (हे २, ११२, प्रति
दुवाराय } ४१, सुपा ४८७), 'एगदुवाराए'
(कस) । 'पाल पुं [पाल] दरवान, प्रतोहार
(सुर १, १३४, २, १४८) । 'वाहा ली
[वाहा] द्वार-भाग (आचा २, १, ५) ।

दुवारि वि [द्वारिन्] १ द्वारवाला । २ पुं. दरवान, प्रतोहार, 'बहुपरिवारो पत्तो राय-दुवारी तहि वरुणो' (सुपा २६५) ।

दुवारिअ वि [द्वारिक] दरवानावाला, 'अव-गुयदुवारिए' (कस) ।

दुवारिअ पुं [द्वौवारिक] दरवान, द्वारपाल (हे १, १६०, सलि ६, सुपा २६०) ।

दुवालस वि [द्वादशन्] बारह, १२ (कप्प, कुमा) । 'मुहित्तअ वि [मौहूर्तिक] बारह मुहूर्तों का परिमाणवाला (सम २२) ।

'विह वि [विध] बारह प्रकार का (सम २१) । 'हा अ [वा] बारह प्रकार (सुर

१४, ६१) । 'वत्त न [वर्त] बारह आवर्तवाला वन्दन, प्रणाम-विशेष (सम २१) । दुवालसग लीन [द्वादशाङ्गी] बारह जैन आगम-ग्रन्थ, 'आचारण' आदि बारह सूत्र ग्रन्थ (सम १, हे १, २५४) । ली. 'गी (राज) । दुवालसंगि वि [द्वादशाङ्गिन्] बारह आग-ग्रन्थों का जानकार (कप्प) ।

दुवालसम वि [द्वादश] १ बारहवाँ । २ न, लगातार पाँच दिनों का उपवास (आचा-गाथा १.१, ठा ६, मण) । ली. 'मी (गाथा १, ६) ।

दुविह्ठ } पुं [द्विष्ट, द्विष्टप] १ भरत-
दुविट्ठु } क्षेत्र में इम अवसर्पिणी काल में उत्पन्न द्वितीय अर्ध-चक्री राजा (सम १५८ टी, पउम ५, १५५) । २ भरत-क्षेत्र में उत्पन्न होनेवाला आठवाँ अर्ध-चक्री राजा, एक वासु-देव (सम १५४) ।

दुविभज्ज वि [द्विभज्य] जिसका विभाग करना कठिन हो वह—परमाणु (ठा ५, १—पत्र २६६) ।

दुविभव देखो दुवियभव (ठा ५, १ टी) ।

दुवियड्ड वि [द्विदग्ध] दुश्शिक्षित, जान-कारी का झूठा अभिमान करनेवाला (उप ८३३ टी) ।

दुवियप्प पु [द्विकल्प] दुष्ट वितर्क (भवि) ।

दुविलय पुं [दुविलक] एक अनाय देश, 'दु (१ दु) विलय-लउसवुक्क—' (पव २७४) ।

दुविह वि [द्विविध] दो प्रकार का (हे १, ६४, तव ३) ।

दुवोस लीन [द्वाविंशति] बाईस, २२ (तव २०, पड) ।

दुव्वण्ण } देखो दुवण्ण (पउम ४१, १७,
दुव्वन्न } पएह १, ४) ।

दुव्वय न [दुव्वत] १ दुष्ट नियम । २ वि दुष्ट व्रत करनेवाला । ३ व्रत-रहित, नियम-वर्जित (ठा ४, ३, विपा १, १) ।

दुव्वयण न [दुव्वचन] दुष्ट उक्ति, खराब वचन (पउम ३३, १०६, वित्ते ५२०, उप गा २६०) ।

दुव्वल देखो दुव्वल (महा) ।

दुव्वसण न [दुव्वसन] खराब आदत, बुरे आदत (सुपा १८४, ४८६, भवि) ।

कुमार पुं [कुमार] एक देव-जाति (भग १६, १३)। ण्णु वि [ञ] द्वीप के मार्ग का जानकार (उप ५६५)। सागरपञ्चत्ति स्त्री [सागरप्रज्ञप्ति] जैन ग्रन्थ-विशेष, जिसमें द्वीपों और समुद्रों का वर्णन है (ठा ३, २—पत्र १२६)।

दीव पुं [द्वीप] सौराष्ट्र का एक नगर, दीव (पव १११)।

दीवअ पुं [दे] ढकलास, गिरगिट (दे ५, ४१)।

दीवअ पु [दीपक] १ प्रदीप, दिया, चिराग, आलोक (गा २२०, महा)। २ वि दीपक, प्रकाश, शोभा-कारक (कुमा)। ३ न छन्द-विशेष (अजि ०६)।

दीवरा पुं [दीपाङ्ग] प्रदीप का काम देनेवाले कल्पवृक्ष की एक जाति (ठा १०)।

दीवरा देखो दीवअ = दीपक (आ ६, आवम)।

दीवड पुं [दे] जलजन्तु-विशेष, 'फुरंतसिप्पि-सपुड भमतमोदीवड' (सुर १०, १८८)।

दीवण न [दीपन] प्रकाशन (ओष ७४)।

दीवणा स्त्री [दीपना] प्रकाश, 'शुभ्रो सतगुण-दीवणाहि' (स ६७५)।

दीवणिज्ज वि [दीपनीय] १ जठराग्नि को बढानेवाला (गाया १, १—पत्र १६)। २ शोभायमान, देदीप्यमान (पण १७)।

दीवयं देखो दीव = दिव्।

दीवयत देखो दीव = दीपय्।

दीवायण पुं [द्वीपायन, द्वैपायन] एक प्राचीन ऋषि, जिसने द्वारका नगरी जलाने का निदान किया था, और जो आगामी उत्सर्पणी काल में भरत-क्षेत्र में एक तीर्थंकर होगा (अत १५; सम १५४; कुप्र ६३)।

दीवि } पुं [द्वीपिन्] व्याघ्र की एक जाति,
दीविअ } चीता (गा ७६१, गाया १, १—
पत्र ६५, पण १, १)।

दीविअ वि [दीपित] १ जलाया हुआ (पचम २२, १७)। २ प्रकाशित (ओष)।

दीविअग पुं [दीपिकाङ्ग] कल्प-वृक्ष की एक जाति जो अन्धकार को दूर करता है (पचम १०२, १२५)।

दीविआ स्त्री [दे] १ उपदेहिका, शुद्र कीट-विशेष। २ व्याघ्र की हरिणी, जो दूसरे

हरिणों के आकर्षण करने के लिए रखी जाती है (दे ५, ५३)। ३ व्याघ्र-सबन्धी पिंजड़े में रखा हुआ तित्तिर पक्षी (गाया १, १७—पत्र २३२)।

दीविआ स्त्री [दीपिआ] छोटा दिया, लघु प्रदीप (जीव ३)।

दीविच्चग वि [द्वैच्य] द्वीप में उत्पन्न, द्वीप में पैदा हुआ (गाया १, ११—पत्र १७१)।

दीवी (अप) देखो देवी (रभा)।

दीवी स्त्री [दीपिका] लघु प्रदीप, छोटा दिया, 'दीवि ज्व तीड बुद्धी' (आ १६)।

दीवूसव पु [दीपोत्सव] कार्तिक वदी अमावस, दीवाली, दीपावली (ती १६)।

दीसत } देखो दक्ख = दृश्।
दीसमाण }

दीह वि [दीर्घ] १ आयत, लम्बा (ठा ४, २, प्राप्र, कुमा)। २ पुं दो मात्रावाला स्वर- (पिग)। ३ कोशल देश का एक राजा (उप ५८)। काय [काय] अग्निकाय (आचा०अध्य० १—१—४)। कालिगी स्त्री [कालिकी] सज्ञा-विशेष, वृद्धि-विशेष, जिससे सुदीर्घ भूतकाल की बातों का स्मरण और सुदीर्घ भविष्य का विचार किया जा सकता है (दं ३२, विमे ५०८)। कालिय वि [कालिक] १ दीर्घ काल से उत्पन्न, चिरतन; 'दीहकालिएण रोगातकेण' (ठा ३, १)। २ दीर्घकाल-सम्बन्धी (आवम)। जत्ता स्त्री [यात्रा] १ लम्बी सफर। २ मरण, मौत (स ७२६)। डक्क वि [दष्ट] जिसको साँप ने काटा हो वह (निचू १)। णिहा स्त्री [निद्रा] मरण, मौत (राज)। दंत पुं [दन्त] १ भारतवर्ष का एक भावी चक्रवर्ती राजा (सम १५४)। २ एक जैनमुनि (अंत)। दसि वि [दर्शिन] दूरदर्शी, दूरदेशी (सुर ३, ३, सं ३२)। दसा स्त्री व. [दशा] जैन ग्रन्थ-विशेष (ठा १०)। दिट्ठि वि [दृष्टि] १ दूरदर्शी, दूरदेशी। २ स्त्री दीर्घ-दर्शिता (धर्म १)। पट्ट पुं [पृष्ठ] १ सर्प, साँप (उप ५ २२)। २ यवराज का एक मन्त्री (बृह १)। पास पुं [पार्थ] ऐरवत क्षेत्र के सोलहवें भावी जिन-देव (पव ७)। पेहि वि [प्रेक्षिन्] दूर-

दर्शी (पचम २६, २२, ३१, १०६)। वाहु पुं [वाहु] १ भरत-क्षेत्र में होनेवाला तीसरा वासुदेव (सम १५४)। २ भगवान् चन्द्रप्रभ का पूर्व जन्मीय नाम (सम १५१)। भद्र पुं [भद्र] एक जैन मुनि (कप्प)। मद्ध वि [मध्य] लम्बा रास्तावाला (गाया १, १८, ठा २, १, ५, २—पत्र २४०)। मद्ध वि [मद्ध] दीर्घकाल से गम्य (ठा ५, २—पत्र २४०)। माड न [मायुप्] लम्बा आयुष्य (ठा १०)। रत्त, राय पुन [रात्र] १ लम्बी रात। २ बहु रात्रिवाला, चिर-काल (सहि १७ राज)। राय पु [राज] एक राजा (महा)। लोण पु [लोक] वनस्पति का जीव (आचा)। लोणसत्थ न [लोक-शस्त्र] अग्नि, वह्नि (आचा)। वेयड्ड पुं [वैताल्य] स्वनाम ह्यात पर्वत (ठा २, ३—पत्र ६६)। सुत्त न [सूत्र] १ बड़ा सूता (निचू ५)। २ आलस्य, 'मा कुणसु दीहसुत्त परकज्जं सीयल परिणत्तो' (पचम ३०, ६)। सेण पु [सेन] १ अनुत्तर-देवलोक-नामी मुनि-विशेष (अनु २)। २ इस अवमर्पिणी काल में उत्पन्न ऐरवत क्षेत्र के शत्रु जिन-देव (पव ७)। उड, उडय वि [युप्, युष्] लम्बी उन्नवाला, बड़ी आयुवाला, चिरंजीवी (हे १, २०, ठा ३, १, पचम १४, ३०)। सण न [सन्] शय्या (ज १)।

दीह देखो दिह (कुमा)।

दीहध वि [द्विसान्ध] दिन को देखने में असमर्थ, 'रत्तिधा दाहधा' (प्रासू १७६)।

दीहजीह पुं [दे] शख (दे ५, ४१)।

दीहपिट्ट देखो दीह-पट्ट (सिरि ६०५)।

दीहर देखो दीह = दीर्घ (हे २, १७१, सुर २, २१८, प्रासू ११३)। च्छ वि [क्ष] लम्बी आँखवाला, बड़े नेत्रवाला (सुपा १४७)।

दीहरिय वि [दीर्घित] लम्बा किया हुआ (गण्ड)।

दीहिया स्त्री [दीर्घिका] बापी, जलाशय-विशेष (सुर १, ६३, कप्प)।

दीहीकर सक [दीर्घा + कृ] लम्बा करना। दीहीकरंति (भग)।

दुस्सहिय वि [दुस्सोद] दु ख से सहन किया हुआ (सूत्र १, ३, १) ।

दुस्सासण पुं [दुशशासन] दुयोधन का एक छोटा भाई, कौरव-विशेष (चार १२, वेणी १०७) ।

दुस्साहड वि [दुस्सहड] दु ख से एकत्रित किया हुआ, 'दुस्साहड घण हिन्चा बहु सचिणिया रय' (उत्त ७, ८) ।

दुस्साहिअ वि [दौस्साधिक] दुस्साध्य कार्य को करनेवाला (पि ८४) ।

दुस्सिक्ख वि [दुशिक्ष] दुष्ट शिक्षावाला, दुशिक्षित, दुविदग्ध (उप १४६ टी, कुप्र २८३) ।

दुस्सिक्खअ पि [दुशिक्षित] ऊपर देखो (गा ६०२) ।

दुस्सिज्जा स्त्री [दुशशय्या] खराब शय्या (दस ८) ।

दुस्सिलिट्ठ वि [दुश्श्रुट] कुत्मित श्लेष-वाला (पि १३६) ।

दुस्सील वि [दुशील] दुष्ट स्वभाववाला । २ व्यभिचारी (पराह १, १, सुपा ११०) । स्त्री °ला (पाम्) ।

दुस्सुमिण पुन [दुस्सुप्पन] दुष्ट स्वप्न, खराब स्वप्न—मपना (पराह १, २) ।

दुस्सुय न [दुश्रुत] १ दुष्ट शास्त्र । २ वि. श्रुति-कट्ट (पराह १, २) ।

दुस्सेज्जा देखो दुस्सिज्जा (उव) ।

दुह सक [दुह] दूहना, दूध निकालना । दुहेज्जह (महा) । कर्म दुहिज्जइ, दुवभइ (हे ४, २४५) भवि दुहिहिइ, दुन्महिइ (हे ४, २४५) ।

दुह मक [दुह] द्रोह करना, द्वेष करना, वैर करना । दुहइ (विचार ६४७) ।

दुह देखो दोह = दोह (राज) ।

दुह देखो दुक्ख = दु ख (हे २, ७२, प्रासू २६, २८, १६२) । अ वि [द] दु ख देनेवाला, दु ख-जनक (सुपा ४३४) । दृ वि [र्त] दु ख से पीड़ित (विपा १, १, सुपा ३३८) । °द्विय वि [र्तित] दु ख से पीड़ित (श्रीप) । °दृ पु [र्त] नरक-स्थान (सूत्र १, ५, १) । °त्त देखो °दृ (उप ५

७६, ७२८ टी) । °फास पुं [°स्पर्श] दु ख-जनक स्पर्श (णाय १, १२) । °भाणि वि [°भागिन्] दु ख में भागीदार (सुपा ४३१) । °मन्चु पु [°मृत्यु] अपमृत्यु, अकाल मौत (सुर ८, ५३) । °विवाग पु [°विपाक] दु ख रूप कर्म-फल (विपा १, १) । °सिज्जा, °सेज्जा स्त्री [°शय्या] दु ख-जनक शय्या (ठा ४, ३) । °वह वि [°वह] दु ख-जनक (पउम ८२, ६१, सुर ८, १६२, प्रासू १६६) ।

दुह° देखो दुहा (भग ८, ८) ।

दुहअ वि [दे] ज्ञात, चूर-चूर किया हुआ (दे ५, ४५) ।

दुहअ वि [दुहत्] खराब रीति से मारा हुआ (आचा) ।

दुहअ वि [द्विहत] दो में मारा हुआ (आचा) ।

दुहअ देखो दुब्भग (पड्) ।

दुहओ अ [द्विधातस्] दोनों तरफ से, उभय प्रकार से (आचा, ठा ५, ३, कस, भग, पुष्क ४७८, आ २७) ।

दुहड वि [द्विखण्ड] दो टुकड़ेवाला, 'किन्त्वेव विव (१ णो) दुहड' (रभा) ।

दुहग देखो दुब्भग (कम्म ३, ३) ।

दुहट्ट वि [दुर्घट्ट] दुर्निरोध, दुर्वार (णाय १, ८) ।

दुहण देखो दुघण (पराह १, १—पय १८) ।

दुहण पु [दुहण] प्रहरण-विशेष. 'चम्मेदु-घणमोद्वियमोगगरवरफलिहजतपत्थरदुहणतोण-कुवेणी—' (पराह १, ३—पय ४४) ।

दुहण न [दोहन] दोह, दोहना (पराह १, २) ।

दुहदुहग पु [दुहदुहक] 'दुह-दुह' आवाज (राय १०१) ।

दुहव देखो दूहव (पि ३४०, हे १, ११५ टी) । स्त्री. वी° (पि २३१) ।

दुहा अ [द्विधा] दो प्रकार, दो तरफ, उभयथा (जी ८, प्रासू १४४) । °इअ वि [°कृत] जिसको दो खण्ड किये गये हो वह (प्राप्र, कुमा) ।

दुहाकर सक [द्विधा + कृ] दो खण्ड करना । कर्म दुहाइजइ, दुहाकिजइ (प्राप्र, हे १,

६७) । मय्क. °कज्जमाण, °किज्जमाण (पि ५४७, ४३६) । सक्र °काड (महा) ।

दुहाव सक [द्विद] छेदना, छेदा करना, खण्डित करना । दुहावइ (हे ४, १२४) ।

दुहाव मरु [दुग्गय] दु मी करना, दुसाना, दुजाना (प्रापा) ।

दुहावण वि [दुग्गन] दु मी करनेवाला (सण) ।

दुहाविअ वि [द्विज्ज] खण्डित (पाम्, कुमा) ।

दुहाविअ वि [दुग्गिन] दु मी किया हुआ (गण्ड) ।

दुहि वि [दु खिन्] दु मी, व्यपित, पीड़ित (उप ६८६ टी) । स्त्री °णो (कुमा) ।

दुहिअ नि [दु खिन] पीड़ित, दु खयुक्त (हे २, १६४, कुमा, महा) ।

दुहिअ वि [दुग्ध] जिसका दोहन किया गया हो वह (दे १, ७) । °दुब्भ वि [°दोह] एक बार दोहने पर फिर भी दोहने योग्य, फिर-फिर दोहने योग्य (दे १, ७, ५, ४६) ।

दुहिआ [दुहितृ] लडकी, पुत्री (सुपा १७६, हे २, ३५) । °दडअ पु [°दयित] जामाता (सुपा ४५७) ।

दुहिण पुं [दुहिण] ब्रह्मा, चतुर्मुख, 'अवि दुहिणप्पमुहेहि आणत्ती तुह मलघणिजपहावा' (मच्चु १६) ।

दुहित्त पुं [दोहित्र] लडकी का लडका, नाती (उप ५७४) ।

दुहित्तिया स्त्री [दौहित्रिका] लडकी की लडकी, नतिनी (उप ५७४) ।

दुहिती स्त्री [दौहित्री] लडकी की लडकी, नतिनी या नातिन, 'पुत्तो तह दुहिती होइ य भजा सक्की य' (श्रु ११७) ।

दुहिदिआ (शौ) स्त्री [दुहितृ] लडकी, कन्या (प्राक ६५) ।

दुहिल वि [दुहिल] द्रोही, द्रोह करनेवाला (विसे ६६६ टी) ।

दू सक [दू] १ उपताप करना । २ काटना । कर्म 'दुज्जतु उच्छ' (पराह १, २) ।

दूअ पु [दूत] दूत, संदेश-हारक (पाम्, पउम ५३, ४३, ४६) ।

११२)। 'वह वि [वह] दु ख-प्रद (पउम १५, १००)। 'सिया ली [सिका] वेदना, पीडा (ठा ३, ४)। देखो दुह = दु ख।
 दुक्ख न [दे] जघन, ली के कमर के पीछे का भाग चूतड़ (दे ५, ४२)।
 दुक्ख अक [दु खाय्] १ दुखना, दर्द होना। २ सक. दु खी करना, 'सिर' में दुखेह (स ३०४)। दुक्खामि (से ११, १२७)। दुक्खति (सूअ २, २, ५५)।
 दुक्खल देखो दुक्कर (चास २३)।
 दुक्खण न [दु खन] दुखना, दर्द होना (उप ७५१, सूअ २, २, ५५)।
 दुक्खम वि [दु क्षम] १ असमर्थ। २ अशक्य (उत्त २०, ३१)।
 दुक्खर देखो दुक्कर (स्वप्न ६६)।
 दुक्खरिय पुं [दुष्करिक] दास, नौकर (निबू १६)।
 दुक्खरिया ली [दुष्करिका] १ दासी, नौकरानी (निबू १६)। २ वेश्या, वाराङ्गना (निबू १)।
 दुक्खल्लिय (अप) वि [दु खित] दु ख-युक्त (अवि)।
 दुक्खविअ वि [दु खित] दु खी किया हुआ (उप ६३४, अवि)।
 दुक्खाव सक [दु खय्] दु ख उपजाना, दु खी करना। दुक्खावेह (पि ५५६)। वक्क दुक्खावेत्त (पउम ५८, १८)। कवक्क दुक्खाविज्जत (आवम)।
 दुक्खावणया ली [दु खना] दु खी करना, दर्द उपजाना (अग ३, ३)।
 दुक्खि वि [दु खिन्] दु खी, दु ख युक्त (आवा)।
 दुक्खिअ वि [दु खित] दु ख-युक्त, दुखिया (हे २, ७२, प्राप्र, प्रासू ६३, महा, सुर ३, १६१)।
 दुक्खुत्तर वि [दु खोत्तार] जो दु ख से पार किया जाय, जिसको पार करने में कठिनाई हो (पएह १, १)।
 दुक्खुत्तो अ [द्विस्] दो बार, दो दफा (ठा ५, २—पत्र ३०८)।

दुक्खुर देखो दुखुर (पि ४३६)।
 दुक्खुल देखो दुक्कुल (अवि २१)।
 दुक्खोह पुं [दुःखौघ] दु ख-राशि (पउम १०३, १५५, सुपा १६१)।
 दुक्खोह वि [दु क्षोभ] कष्ट-शोभ्य, सुस्थिर (सुपा १६१, ६२६)।
 दुखल वि [द्विखण्ड] दो टुकड़ेवाला (उप ६८६ टी, अवि)।
 दुखुत्तो देखो दुक्खुत्तो (कस)।
 दुखुर पुं [द्विखुर] दो खुरवाला प्राणी, गौ, भैंस आदि (पएण १)।
 दुग न [द्विक] दो, युग्म, युगल, जोड़ा (नव १०, सुर ३, १७, जो ३३)।
 दुगंख देखो दुगुंख। वक्क दुगंखमाण (उत्त ४, १३)। क दुगंखणिज्ज (उत्त १३, १६, पि ७४)।
 दुगंखणा ली [जुगुप्सना] घृणा, निन्दा (पउम ६५, ६५)।
 दुगंखा ली [जुगुप्सा] घृणा, निन्दा (पाअ; कुप्र ४०७)। देखो दुगुंखा।
 दुगंध देखो दुगंध (पउम ४१, १७)।
 दुगच्छ } सक [जुगुप्स्] घृणा करना,
 दुगुंख } निन्दा करना। दुगच्छह, दुगच्छह (पह, हे ४, ४)। वक्क दुगुच्छत, दुगुंख-माण (कुमा, पि ७४, २१५)। संक्क दुगुच्छिअ (धर्म २)। क दुगुंखणीय (पउम ४६, ६२)।
 दुगसंपुण्ण न [द्विगसपूर्ण] लगातार बीस दिन का उपवास (सवोष ५८)।
 दुगुंखग वि [जुगुप्सक] घृणा करनेवाला (अवि ३)।
 दुगुंखण न [जुगुप्सन] घृणा, निन्दा (पि ७४)।
 दुगुंखणा देखो दुगुंखणा (आवा)।
 दुगुंखा देखो दुगुंखा (अग)। 'कम्म न [कम्मन्] देखो पीछे का अर्थ (ठा १०)। 'मोहणीय न [मोहनीय] कर्म-विशेष, जिसके उदय से जीव को अशुभ वस्तु पर घृणा होती है (कम्म १)।
 दुगुंखि वि [जुगुप्सिन्] घृणा करनेवाला, नफरत करनेवाला (उत्त २, ४, ६, ८)।

दुगुंखिय वि [जुगुप्सित] घृणित, निन्दित (अग ३०२)।
 दुगुदुग पुं [दौगुन्दुक] एक समृद्धि शाली देव (सुपा ३२८)।
 दुगुच्छ देखो दुगुच्छ। दुगुच्छह (हे ४, ४, पह)। वक्क दुगुच्छत (पउम १०५, ७५)। क दुगुच्छणीय (पउम ८०, २०)।
 दुगुण देखो दुउण (ठा २, ४, एया १, १, दं ६, सुर ३, २१६)।
 दुगुण सक [द्विगुगय्] दुगुना करना। दुगुणेह (कुप्र २८५)।
 दुगुणिअ देखो दुउणिअ (कुमा)।
 दुगुल } देखो दुअल (हे १, ११६, कुमा,
 दुगूल } सुर २, ८०, जं २)।
 दुगोत्ता ली [द्विगोत्रा] बल्ली विशेष (पएण १)।
 दुग्ग न [दे] १ दु ख, कष्ट (दे ५, ५३, पह, पएह १, ३)। २ कटी, कमर (दे ५, ५३)। ३ रण, संग्राम, युद्ध, 'आहतं च ऐणिमं दुग्ग' (स ६३६)।
 दुग्ग वि [दुर्ग] १ जहाँ दु ख से प्रवेश किया जा सके वह, दुगंम स्थान (अग ७, ६ विपा १, ३)। २ जो दु ख से जाना जा सके (सूअ १, ५, १)। ३ पुन. किला, गढ़, कोट (सुपा १४८)। 'नायग पुं [नायक] किले का मालिक (सुपा ४६०)।
 दुग्गह ली [दुर्गति] १ कुगति, नरक आदि कुत्सित भोग (ठा ३, ३, ५, १, उत्त ७, १८, आवा)। २ विपत्ति, दु ख। ३ दुर्दशा, बुरी अवस्था। ४ कगालियत, दरिद्रता (पएह १, १, महा, ठा ३, ४, गच्छ २)।
 दुग्गंठि ली [दुर्गन्धि] दुष्टगन्धि, गिरह, कठिन गाठ (पि ३३३)।
 दुग्गंध पुं [दुर्गन्ध] १ खराब गन्ध। २ वि. खराब गन्धवाला, दुर्गन्धि (ठा ८—पत्र ४१८, सुपा २१, महा)।
 दुग्गधि वि [दुर्गन्धिन्] दुर्गन्धवाला (सुपा ४८७)।
 दुग्गम वि [दुर्गम] जो कठिनाई से जाना जा सके वह (धर्मवि ४)।
 दुग्गम } वि [दुर्गम] १ जहाँ दु ख से
 दुग्गम्भ } प्रवेश किया जा सके वह (पउम ४०, १३, अग ७५ भा), 'पडिक्खन्निद-

दूसिअ वि [दूषित] १ दूषण-युक्त, कलङ्क-युक्त (महा, भवि) । २ पु एक प्रकार का नपुंसक (वृह ४) ।

दूसिआ स्त्री [दूषिका] आँख का मैल (कुमा) ।

दूसुमिण देखो दुस्सुमिण (कुमा) ।

दूहअ वि [दु खक] दु ख-जनक, 'असईएणं दूहओ चंदो' (वज्जा ६८) ।

दूहट्ट वि [दे] लज्जा से उद्विग्न (दे ५, ४८) ।

दूहय देखो दोधअ (सिरि ६६१) ।

दूहल वि [दे] दुभंग, मन्दभाग्य (दे ५, ४३) ।

दूहव देखो दुग्भग (हे १, ११५, १६२; कुमा, सुपा ५६७, भवि) ।

दूहव सक [दु खय] दूमाना, दु खी करना । दूहवेइ (सिरि १६७) ।

दूहविअ वि [दु खित] दु खी किया हुआ दूमाया हुआ, 'कि वेणुवि दूहविया' (कुम्मा १२) ।

दूहिअ वि [दु खित] दु ख-युक्त (हे १, १३, संज्ञि १७) ।

दे अ इन अर्थों का सूचक अव्यय । १ समुख-करण । २ सखी को आमन्त्रण (हे २, १६२) ।

दे अ [दे] पाद-पूरक अव्यय (प्राक् ८१) ।

देअ देखो देव (मुद्रा १६१, चड) ।

देअर देखो दिअर (कुमा, काप्र २२४, महा) ।

देअराणी स्त्री [देवरपत्नी] देवरानी, पति के छोटे भाई की वहू (दे १, ५१) ।

देई देखो देवी (नाट—उत्त १८) ।

देउल न [देवकुल] देव-मन्दिर (हे १, १७१, कुमा) । °णाह पु [°नाथ] मन्दिर का स्वामी (पड्) । °वाडय पुन [°पाटक] मेवाड का एक गाँव, 'देउलवाडयपत्तं तुट्टण-सीलं च अइमहग्घ' (वज्जा ११६) ।

देउलिअ वि [देवकुलिक] देव स्थान का परिपालक (ओघ ४० भा) ।

देउलिआ स्त्री [देवकुलिका] छोटा देव-स्थान (उप पृ ३६६, ३२० टी) ।

देँत देखो दा = दा ।

देक्ख सक [दृश्] देखना, अवलोकन करना । देक्खइ (हे ४, १८१) । वहु

देक्खत (अभि १४१) । सकृ. देक्खिअ (अभि १६६) ।

देक्खालिअ वि [दर्शित] दिखाया हुआ, बतलाया हुआ (सुर १, १५२) ।

देख (अप) देखो देक्ख । देखइ (भवि) ।

देह देखो दिट्ठ = दृष्ट (प्रति ४०) ।

देण्ण देखो दइण्ण (गाया १, १—पत्र ३३) ।

देपाल पु [देवपाल] एक मंत्री का नाम (ती २) ।

देप्प देखो दिप्प = दीप् । वहु —देप्पमाण (कुप्र ३४४) ।

देय } देखो दा = दा ।
देयमाण }

देर देखो दार = द्वार (हे १, ७६, २, १७२; दे ६, ११०) ।

देव उभ [दिव्] १ जीतने की इच्छा करना । २ पण करना । ३ व्यवहार करना । ४ चाहना । ५ आज्ञा करना । ६ अव्यक्त शब्द करना । ७ हिसा करना । देवइ (संज्ञि ३३) ।

देव पुंन [देव] १ अमर, मुर, देवता, 'देवाणि, देवा' (हे १, ३४, जी १६, प्रास ८६) । २ मेघ । ३ आकाश । ४ राजा, नरपति, 'तहेव मेहं व नहं व माणव न देव देवत्ति गिर वएज्जा' (दस ७, ५२, भास ६६) । ५ पु. परमेश्वर, देवाधिदेव (भग १२, ६, दस ५, सुपा १३) । ६ साधु, मुनि, ऋषि (भग १२, ६) । ७ द्वीप-विशेष । ८ समुद्र विशेष (परण १५) । ९ स्वामी, नायक (आक् ५) । १० पूज्य, पूजनीय (पचा १) । °उत्त वि [°उत्त] देव से बोया हुआ । २ देव-कृत, 'देवउत्ते अय लोए' (सूअ १, १, ३) । °उत्त वि [°गुप्त] १ देव मे रक्षित (सूअ १, १, ३) । २ ऐरवत क्षेत्र के एक भावी जिनदेव (म १५४) । °उत्त पु [°पुत्र] देव-पुत्र (सूअ १, १, ३) । °उल न [°कुल] देव-गृह, देव-मन्दिर (हे १, २७१, सुपा २०१) । °उलिया स्त्री [°कुलिका] देहरी, छोटा देव-मन्दिर (कुप्र १४४) । °कन्ना स्त्री [°कन्या] देव-पुत्री (गाया १, ८) । °कहकहय पु [°कहकहक] देवताओं का कोलाहल (जीव ३) । °किच्चिअ

पु [°किल्विप] चारुडाल-स्थानीय देव-जाति (ठा ४, ४) । °किच्चिमिय पु [°किल्विपिक] एक अव्यय देव-जाति (भग ६, ३३) । °किच्चिसीया स्त्री [°किल्विपीया] देखो देवकिच्चिसिया (वृह १) । °कुरा स्त्री [°कुरा] क्षेत्र विशेष, वर्ष-विशेष (इक) । °कुरु पुं [°कुरु] वही अर्थ (परह १, ४, सम ७०, इक) । °कुल देखो °उल (पि १६८, कप्प) । °कुलिय पु [°कुलिक] पुजारी (आवम) । °कुलिया देखो °उलिआ (कुप्र १४४) । °गइ स्त्री [°गति] देवयोनि (ठा ५, ३) । °गणिया स्त्री [°गणिका] देव-वेश्या, अम्परा (गाया १, १६) । °गिह न [°गृह] देव-मन्दिर (सुपा, १३, ३४८) । °गुत्त पु [°गुप्त] १ एक परिव्राजक का नाम (ओप) । २ एक भावी जिनदेव (तिथ्य) । °चद पु [°चन्द्र] एक जैन उपासक का नाम (सुपा ६३२) । मुप्रसिद्ध श्री हेमचन्द्राचार्य के गुरु का नाम (कुप्र १६) । °च्चय वि [°चिक] १ देव की पूजा करनेवाला । २ पु मन्दिर का पुजारी (कुप्र ४४१, ती १५) । °च्छदग न [°च्छन्दक] जिनदेव का आसन (जीव ३, राय) । °जस पुं [°यशस्] एक जैन मुनि (अत ३, सुपा ३४२) । °जाण न [°यान्त] देव का वाहन (पचा २) । °जिण पु [°जित] एक भावी जिनदेव का नाम (पव ७) । °डिड् देखो देविडिड् (ठा ३, ३, राज) । °णाअअ पु [°नायक] नीचे देखो (अन्नु ३७) । °णाह पु [°नाथ] १ इन्द्र । २ परमेश्वर, परमात्मा (अन्नु ६७) । °तम न [°तमस्] एक प्रकार का अव्य-कार (ठा ४, २) । °त्थुइ, °थुइ स्त्री [°स्तुति] देव का गुणानुवाद (प्राप्र) । °दत्त पु [°दत्त] व्यक्तिवाचक नाम (उत्त ६, पिड, पि ५६६) । °दत्ता स्त्री [°दत्ता] व्यक्ति-वाचक नाम (विपा १, १, ठा १०) । °दच्च न [°द्रव्य] देव-सन्नवी द्रव्य (कम्म १, ५६) । °दार न [°द्वार] देव-गृह विशेष का पूर्वाय द्वार, सिद्धायतन का एक द्वार (ठा ४, २) । °दारु पुं [°दारु] वृक्ष-विशेष, देवदार का पेड़ (पउम ५३, ७६) । °दाली स्त्री [°दाली] वनस्पति-विशेष, रोहिणी

दुज्भोसिअ वि [दुक्षपित] कष्ट से नाशित (आचा) ।

दुष्ट वि [दुष्ट] दोष-युक्त, दूषित (श्लो १६२, पात्र, कुमा) । °पु पु [°त्मन्] दुष्ट जीव, पापी प्राणी (पउम ६, १३६, ७५, १२) ।

दुष्ट वि [दे. द्विष्ट] द्वेष-युक्त (श्लो ७५७, कस), 'अस्तदुष्टम्' (कुप्र ३७१) ।

दुष्टाण न [दु स्थान] दुष्ट जगह (भग १६, २) ।

दुष्टु अ [दुष्टु] खराब, असुन्दर (उप २० टी, निर १, १ सुपा २१८, हे ४, ४०१) ।

दुष्टय देवो दुष्टय (विक्र ३७, आवम) ।

दुष्टाण न [दुर्नामन्] १ अपकीर्ति, अपयश । २ दुष्ट नाम, खराब आख्या । ३ एक प्रकार का गर्व (भग १२, ५) ।

दुष्टिअ वि [दून्] पीडित, दु खित (गा ११) ।

दुष्टिअ देवो दुष्टिय (राज) ।

दुष्टिअत्थ न [दे] १ जघन पर स्थित वस्त्र । २ जघन, स्त्री के कमर के नीचे का भाग (दे ५, ५३) ।

दुष्टिअ वि [दे] दुश्चरित, दुराचारी (दे ५, ४५) ।

दुष्टिअकम वि [दुर्निष्कम] जहाँ से निकलना कष्ट-साध्य हो वह (राज ७, ६) ।

दुष्टिअक्खिअ वि [दे] १ दुराचारी । २ कष्ट से जो देखा जा सके (दे ५, ४५) ।

दुष्टिअक्खेअ वि [दुर्निक्षेप] दु ख से स्थापन करने योग्य (गा १५४) ।

दुष्टिअशोह देवो दुन्निशोह (राज) ।

दुष्टिअमिअ वि [दुनियोजित] दु ख से जोड़ा हुआ (मे १२, १६) ।

दुष्टिअमित्त न [दुर्निमित्त] खराब शकुन, अपशकुन (पउम ७०, ५) ।

दुष्टिअविट्ठ वि [दुर्निविष्ट] दुराग्रही, हठी, जिद्दी (निचू ११) ।

दुष्टिअसीहिया स्त्री [दुर्निपया] कष्ट-जनक स्वाध्याय-स्थान (पएह २, ५) ।

दुष्टिअय वि [दुर्ज्ञेय] जिसका ज्ञान कष्ट-साध्य हो वह (उवर १२८, उप ३२८) ।

दुस्तिअक्ख वि [दुस्तिअक्ख] दुस्सह, जो दु ख से सहन किया जा सके वह (ठा ५, १) ।

दुत्तर वि [दुस्तर] दुस्तरणीय, दुर्लभ्य (मुपा ४७, ११५, मार्व ६१) ।

दुत्तडी स्त्री [दुस्तटी] १ नदी । २ खराब किनारा वाली नदी (वम्म १२ टी) ।

दुत्तव वि [दुस्तव] कष्ट में तपने योग्य, दु ख से करने योग्य (तप) (धर्मा १७) ।

दुत्तार वि [दुस्तार] दु ख से पार करने योग्य, दुस्तर (से ३, २५, ६, १०) ।

दुत्ति अ [दे] शीघ्र, जल्दी (दे ५, ४१, पात्र) ।

दुत्तिअक्ख } देखो दुनितिअक्ख (आचा, दुत्तिअक्ख } राज) ।

दुत्तुअ पु [दुत्तुअ] दुग्ध, दुर्जन, (मुपा २८८) ।

दुत्तोस वि [दुस्तोप] जिसको संतुष्ट करना कठिन हो वह (दस ५) ।

दुत्थ न [दे] जघन, स्त्री की कमर के नीचे का भाग (दे ५, ४२) ।

दुत्थ वि [दुत्थ] दुर्गंत, दु स्थित (ठा ३, ३, भवि) ।

दुत्थ न [दौ स्थ्य] दुर्गति, दु स्थिता (मुपा २४४), 'नहि विधुरसहावा हति दुत्थेवि धोरा' (कुपा ५४) ।

दुत्थिअ वि [दुत्थित] १ दुर्गंत, विपत्ति-अस्त (खण ७५, भवि, सण) । २ निर्धन, गरीब (कुप्र १४६) ।

दुत्थुस्सुअ पुं स्त्री [दे] भगवाजोर, कलह-शील (दे ५, ४७) । स्त्री °डा (दे ५, ४७) ।

दुत्थोअ पु [दे] दुर्भंग, अभागा (दे ५, ४३) ।

दुत्त वि [दुर्दान्त] उद्धत, दमन करने की अशक्य, दुर्दम, 'विमययमत्ता दुत्तइदिया देहिणो वव्वे' (मुर ८, १३८, एया १, ५, सुपा ३८०, महा) ।

दुत्तस वि [दुर्दरा] दुरालोक, जो कठिनाई से देखा जा सके (उत्तर १४१) ।

दुत्तसण वि [दुर्देशेन] जिसका दर्शन दुर्लभ हो वह (गा ३०) ।

दुत्तम वि [दुर्दम] १ दुर्जय, दुर्निवार (मुपा २४), 'दुत्तमकद्वे' (आ १२) । २ पु राजा मत्थवीव का एक दूत (आक) ।

दुत्तम पु [दे] देवर, पति का छोटा भाई (दे ५, ४४) ।

दुद्धि वि [दुर्द्ध] १ बुरी तरह से देवा हुआ । २ वि. दुष्ट दर्शनवाला (पएह १, २-पत्र २६) ।

दुद्धि न [दुर्दिन] बादलों से व्याप्त दिवस (श्लो ३६०) ।

दुद्धेय वि [दुर्देय] दु ख में देने योग्य (उप ६२४) ।

दुद्धोलना स्त्री [दे] गौ, गैया (पड्) ।

दुद्धोली स्त्री [दे] वृद्ध-पत्नी, पेड़ों की कतार (दे ५, ४३, पात्र) ।

दुद्ध न [दुग्ध] दूध, क्षीर (विपा १, ७) । °जाइ स्त्री [°जाति] मदिरा-विशेष, जिसका स्वाद दूध के जैसा होता है (जीव ३) ।

°समुद्ध पु [°समुद्र] क्षीर-तमुद्र, जिसका पानी दूध की तरह स्वादिष्ट है (गा ३८८) ।

दुद्धस वि [दुर्धस] जिसका नाश मुश्किल से हो (सुर १, १२) ।

दुद्धगधिअमुह पु [दे] बाल, शिशु, छोटा लड़का (दे ५, ४०) ।

दुद्धगधिअमुही स्त्री [दे] छोटी लड़की (पात्र) ।

दुद्धट्टी स्त्री [दे] १ प्रसूति के बाद तीन दिन तक का गो-दुग्ध (पभा ३२) ।

२ खट्टी छाछ से मिश्रित दूध (पव ४—गा २२८) ।

दुद्धर वि [दुर्धर] १ दुर्बल, जिसका निर्वाह मुश्किल से हो सके वह (पएह १—पत्र ४, सुर १२, ५१) । २ गहन, विपम (ठा ६, भवि) । ३ दुर्जय (कुमा) । ४ पुं. रावण का एक सुभट (पउम ५६, ३०) ।

दुद्धरिस वि [दुर्धरि] १ जिसका सामना कठिनाई में हो सके, जीतने को अशक्य (पएह २, ५, कप्प) ।

दुद्धयलेही स्त्री [दे] चावल का आटा डालकर पकाया जाता दूध (पव ४—गाया २२८) ।

दुद्धसाडी स्त्री [दे] द्राक्षा मिलाकर पकाया जाता दूध (पव ४—गाया २२८) ।

दुद्धिअ न [दे] कद्दू, लोकी, उजराती में 'दूधो', (पात्र) ।

दुद्धिणिआ स्त्री [दे] १ तेल आदि रखने का भाजन । २ तुम्बी (दे ५, ५४) ।

देवकी देखो देवई । °णटण पु [°नन्दन]
श्रीकृष्ण (वेणी १८३) ।
देवय वि [देव्य] देव-सम्बन्धी (पव १२५) ।
देवय न [देवत] देव, देवता (सुपा १५७) ।
देवय देखो देव = देव (महा, राया १, १८) ।
देवया स्त्री [देवता] १ देव, अमर (अभि
११७, अणु) । २ परमेश्वर, परमात्मा (पचा
१) ।
देवर देखो दिअर (हे १, १८६ सुपा ४८५) ।
देवराणी देखो देअराणी (दे १, ५१) ।
देवमिय वि [देवमिअ] दिवस-सम्बन्धी (शेष
६२६, ६३६, सुपा ४१६) ।
देवसिआ स्त्री [देवसिका] एक पतिव्रता स्त्री,
जिमका दूसरा नाम देवसेना था (पुष्प ६७) ।
देविद पु [देवेन्द्र] १ देवो का स्वामी, इन्द्र
(हे ३, १६२, राया, १, ८, प्रासू १०७) ।
२ एक प्रसिद्ध जैनाचार्य और ग्रन्थकार (भाव
२१) । °सुरि पु [°सूरि] एक प्रसिद्ध जैना-
चार्य और ग्रन्थकार (कम्म ३, २४) ।
देविदय पुं [देवेन्द्रक] देवविमान-विशेष
(देवेन्द्र १२८) ।
देविडिठ स्त्री [देवट्टि] १ देव का वैभव ।
२ पु एक सुप्रसिद्ध जैन आचार्य और ग्रन्थकार
(कप्प) ।
देविय वि [देविक] देव-सम्बन्धी (सुर ४,
२३६) ।
देविल पु [देविल] एक प्राचीन ऋषि (सूअ
१, ३, ४, ३) ।
देवी स्त्री [देवी] १ देव-स्त्री (पचा २) । २
रानी, राज-पत्नी (विपा १, १, ५) । ३ दुर्गा,
पार्वती (कप्प) । ४ सातवें चक्रवर्ती और
अठारहवें जिन-देव की माता (मम १५१,
१५२) । ५ दशवें चक्रवर्ती की अग्र-महिषी
(मम १५२) । ६ एक विद्याधर-कन्या (पउम
६, ४) ।
देवीकय वि [देवीकृत] देवी से बनाया हुआ,
'अणिमिसणअणो सअलो जीए देवीकओ
लोओ' (गा ५६२) ।
देवुक्कलिआ स्त्री [देवोत्कलिका] देवो की
ठठ, देवो की भीड़ (ठा ४, ३) ।
देवेसर पु [देवेश्वर] इन्द्र, देवो का राजा
(कुमा) ।

देवोद पु [देवोद] समृद्ध-विशेष (जीव ३,
इक) ।
देवोववाय पुं [देवोवपात] भरतजेन मे
आगामी उत्तमपिणी काल मे होनेवाले तेईमवें
जिन-देव (सम १५४) ।
देव्व देखो दिव्व = दिव्य (उप ६८६ टी) ।
देव्व देखो दइव (गा १३२, महा, सुर ११,
४, अभि ११७), 'एमो य देव्वो एम
अणाराहणीओ विणएण' (म १२८) । °ज्ज,
°ण्ण, °ण्णु वि [°ज्ज] जोतिषी, ज्योतिष-
शास्त्र को जाननेवाला (पड्, कप्प) ।
देव्वजाणुअ } देखो देव्व-ज्ज (प्राकृ १८) ।
देव्वण्णुअ }
देस पु [देस] एक मौ हाथ परिमित जमीन,
'हृत्पसयं खलु देसो' (पिड ३४८) । °देस
पु [°देश] नौ हाथ मे कम जमीन (पिड
३४४) । °राग पु [°राग] देश-विशेष
(आचा २, ५, १, ७) ।
देस सक [देशय] १ कहना, उपदेश देना ।
२ वतलाना । वक्क. देसयत (सुपा ४८५,
सुर १५, २८८) । संक. देसित्ता (हे १,
८८) ।
देस पुं [देश] १ अंश, भाग (ठा २ २,
कप्प) । २ देश, जनपद (ठा ५, ३, कप्प,
प्रासू ४२) । ३ अवसर (विसे २०६३) ।
४ स्थान, जगह (ठा ३, ३) । °कहा स्त्री
[°कथा] जनपद-वार्ता (ठा ४, २) । °काल
देखो °याल (विसे २०६३) । °जइ पुं
[°यति] श्रावक, उपासक, जैन गृहस्थ
(कम्म २ टी, आउ) । °ण्णु वि [°ज्ज]
देश की स्थिति को जाननेवाला (उप १७६
टी) । °भासा स्त्री [°भाषा] देश की बोली
(वृह ६) । °भूमण पुं [°भूपण] एक
केवलज्ञानी महर्षि (पउम ३६, १२२) ।
°याल पुं [°काल] प्रसंग, अवसर, योग्य
समय (पउम ११, ६३) । °राय वि
[°राज] देश का राजा (सुपा ३५२) ।
°वगासिय देखो °वगासिय (सुपा ५६६) ।
°विरइ स्त्री [°विरति] श्रावक धर्म, जैन
गृहस्थ का व्रत, अणुव्रत, हिंसा आदि का
आशिक त्याग (पंचा १०) । °विरय वि
[°विरत] श्रावक, उपासक । २ न पाँचवों

गुण-स्थानक (पव २२) । °विराह्य वि
[°विरावक] व्रत आदि में आशिक दूषण
लगानेवाला (भग ८, ६) । °विराहि वि
[°विराविन्] वही अर्थ (राया १, ११—
पत्र १७१) । °वगास न [°वनाग]
श्रावक का एक व्रत (सुपा ५६२) । °वगा-
सिय न [°वकाशिक] वही अर्थ (श्रीप,
सुपा ५६६) । °हिंय पु [°विप] राजा
(पउम ६६ ५३) । °हिंयइ पु [°धि-
पति] राजा (वृह ४) ।
देस देखो वेस = द्वेप (रयण ३६) ।
देसतरिअ वि [देशान्तरिक] भिन्न देश का,
विदेशी (उप १०३१ टी, कुप्र ४१३) ।
देसग देखो देसय (द्र २६) ।
देसण न [देशान] कथन, उपदेश, प्रह्णण
(दं १) । २ वि. उपदेशक, प्रह्णक । स्त्री
°णा (दस ७) ।
देसणा स्त्री [देशाना] उपदेश, प्रह्णण
(राज) ।
देसय वि [देशक] १ उपदेशक, प्रह्णक
(मम १) । २ दिखलानेवाला, वतलानेवाला
(सुपा १८६) ।
देसराग वि [देशराग] 'देशराग' देश में
बना हुआ, 'देसरागाणि वा' (आचा २, ५,
१, ७) ।
देसि वि [द्वेपिन्] द्वेप करनेवाला (रयण
३६) ।
देमि } वि [देशिन्] १ अशी, आशिक,
देसिअ } भागवाला (विसे २२४७) । २
दिखलानेवाला । ३ उपदेशक (विसे १४२५,
भाम २८) ।
देसिअ वि [देश्य, देशिक] देश मे उत्पन्न,
देश सम्बन्धी (उप ७६८ टी; अन्नु ६) । °सइ
पु [°शब्द] देशीभाषा का शब्द (वजा ६) ।
देसिअ वि [देशित] १ कथित, उपदिष्ट ।
२ उपदिष्ट (दं २२, प्रासू ५२, १३३,
भवि) ।
देसिअ वि [देशिक] बृहत्सूत्र-व्यापी,
विस्तीर्ण (आचा २, १, ३, ७) ।
देसिअ वि [देशिक] १ पथिक, मुसाफिर
(पउम २४, १६, उप पृ ११५) । २ उप-
देष्टा, गुरु (विसे १४२५) । ३ प्रोपित, प्रवास

दुष्पधस वि [दुष्प्रधर्प] दुर्धर्प, दुर्जय (उत्त ६, पि ३०५) ।

दुष्पमज्जण न [दुष्प्रमार्जन] ठीक-ठीक सफा नही करना (धर्म ३) ।

दुष्पमज्जिय वि [दुष्प्रमार्जित] अच्छी तरह से सफा नही किया हुआ (सुपा ६१७) ।

दुष्पय देखो दुपय = द्विपद (सम ६०) ।

दुष्पयार वि [दुष्प्रचार] जिसका प्रचार दुष्ट माना जाता है वह, अन्याय-युक्त (कप्प) ।

दुष्परक्कन वि [दुष्परक्रान्त] बुरी तरह से आक्रान्त (आचा) ।

दुष्परिअल्ल वि [दे] १ अशक्य (दे ५, ५५, पाअ, से ४, २६, ६, १८, गा १२२) । २ द्विगुण, दुगुना । ३ अनम्यस्त, अभ्यास-रहित (दे ५, ५५) ।

दुष्परिइअ वि [दुष्परिचित] अपरिचित (से १३, १३) ।

दुष्परिच्चय देखो दुपरिच्चय (उत्त ८) ।

दुष्परिणाम वि [दुष्परिणाम] जिसका परिणाम खराब हो, दुर्विपाक (भवि) ।

दुष्परिमास वि [दुष्परिमर्ष] कष्ट-साध्य स्पर्शवाला (से ६, २४) ।

दुष्परियत्तण देखो दुष्परिवत्तण (तंदु) ।

दुष्परिल्ल वि [दे] दुराकर्ष, 'भालिहिअ दुष्परिल्लपि ऐह रणं धणु वाहो' (गा १२२) ।

दुष्परिवत्तण वि [दुष्परिवर्त्तन] १ जिसका परिवर्तन दुःख से हो मके वह । २ न दुःख से पीछे लौटना (तंदु) ।

दुष्पवंच पु [दुष्प्रपञ्च] दुष्ट प्रपञ्च (भवि) ।

दुष्पवण पुं [दुष्प्रवन] दुष्ट वायु (भवि) ।

दुष्पवेश वि [दुष्प्रवेश] जहाँ कष्ट से प्रवेश हो सके वह (णाय १, १, पउम ४३, १२, स २५, सुपा ४५५) । १ तर वि [तर] प्रवेश करने को अशक्य (पणह १, ३—पत्र ४५) ।

दुष्पसह पु [दुष्प्रसह] पञ्चम आरे के अन्त में होनेवाला एक जैन आचार्य, एक भावी जैन सूरि (उप ८०६) ।

दुष्पस्स वि [दुर्दर्श] जो मुश्किल से दिसलाया जा सके वह (ठा ५, १ टी—पत्र २६६) ।

दुष्पहस वि [दुष्प्रध्वंस्य] जिसका नाश कठिनाई से हो मके वह (णाय १, १८—पत्र २३६) ।

दुष्पहंस वि [दुष्प्रधृष्य] अजेय, दुर्जय (णाय १, १८) ।

दुष्पह वि [दुष्प्रभ] जो दुःख से सूरु सके वह, दुर्गम (मोह ७२) ।

दुष्पाय न [दुष्प्राप] तप-विशेष, आयविल तप (सवोष ५८) ।

दुष्पिउ पु [दुष्पितृ] दुष्ट पिता (सुपा ३८७, भवि) ।

दुष्पिच्छ देखो दुपेच्छ (सुर २, ५, मुपा ६२) ।

दुष्पिय वि [दुष्प्रिय] अप्रिय । १ 'अभासि वि [भापिन्] अप्रिय-वक्ता (सुपा ३१४) । दुष्पुत्त देखो दुपुत्त (पउम १०५, ७२, भवि, कुप्र ४०५) ।

दुष्पूर वि [दुष्पूर] जो कठिनाई से पूरा किया जा सके (स १२३) ।

दुप्पेक्ख देखो दुपेच्छ (सण) ।

दुप्पेक्खणिज्ज वि [दुष्प्रेक्षणोय] कष्ट से दर्शनीय (नाट—त्रेणी २५) ।

दुप्पेच्छ देखो दुपेच्छ (महा) ।

दुप्पोलिय देखो दुप्पउल्लिअ (आ २१) ।

दुप्फड वि [दुष्फट्] मुश्किल से फटने योग्य (त्रि ८३) ।

दुप्फरिस वि [दुस्पर्श] जिसका स्पर्श खराब दुष्फारस हो वह (पउम २६, ४६, १०१, दुफास ७१, ठा ८, भग) ।

दुफास वि [द्विस्पर्श] स्निग्ध और शीत आदि अविच्छेद दो स्पर्शों से युक्त (भग) ।

दुव्वद्ध वि [दुर्वद्ध] खराब रीति से बंधा हुआ (आचा २, ६, ३) ।

दुव्वल वि [दुर्वल] निर्वल, बल-हीन (विपा १, ७, सुपा ६०३, प्रासू २३) । १ 'पच्चव-मित्त पुन [प्रत्यवमित्त] दुर्वल को मदद करनेवाला (ठा ६) ।

दुव्वलिय वि [दुर्वलिकु] दुर्वल, निर्वल (भय १२, २) । १ 'पूसमित्त पुं [पुष्य-मित्त] स्वनाम प्रसिद्ध एक जैन आचार्य (ठा ७, ती ७) ।

दुव्वलिय न [दौर्वल्य] श्रम, धाक, यकावट (आचा २, ३, २, ३) ।

दुव्वुद्धि वि [दुर्वुद्धि] १ दुष्ट बुद्धिवाला, खराब नियतवाला (उप ७२८, सुपा ४४, ३७६) । २ बुरी खराब बुद्धि, दुष्ट नियत (आ १४) ।

दुव्वोल्ल पुं [दे] उपालम्भ उलहना या उलाहना (दे ५ ४२) ।

दुच्च वि [दुग्ध] दोहा हुआ । २ न दोहन (प्राकृ ७७) ।

दुच्च देखो दुह = दुह् ।

दुच्चग वि [दुर्भग] १ कमनसीब, अभाग्य । २ अप्रिय अनिष्ट (पणह १, २, प्रासू १४३) । १ 'णाम, १ 'नाम न [नामन] कर्म-विशेष जिसके उदय से उपकार करनेवाला भी लोगो को अप्रिय होता है (कम्म १, मम ६७) । १ 'करा ब्री [करा] दुर्भग बनानेवाली विद्या-विशेष (सूत्र २, २) ।

दुच्चगग न [दौर्भाग्य] दुर्भगता, लोक में अप्रियता (पिड ५०२) ।

दुच्चरणि ब्री [दुर्भरणि] दुःख से निर्वाह, 'होउ अजणणो तेसि दुच्चरणो पडउ तट्ट-वरस्तावि' (सुपा ३७०) ।

दुच्चभाव पुं [दुर्भाव] १ हेय पदार्थ (पउम ८६, ६६) । २ असद्-भाव, खराब-अमर, 'पिसुणेण व जेण कम्मो दुच्चभावो' (सुर ३, १६) ।

दुच्चभाव पुं [द्विभाव] विभाग, बूदाई (सुर ३, १६) ।

दुच्चभाव पुं [द्विर्भाव] द्वित्व, दुगुनापन (चैड्य ६६०) ।

दुच्चभासिय न [दुर्भापित] खराब वचन (पउम ११८, ६७, पडि) ।

दुच्चि पुंन [दुर्भि] १ खराब गन्ध (मम ४१) । २ वि अशुभ, खराब अमुन्दर (ठा १) । ३ वि खराब गन्धवाना, दुर्गन्धि (आचा) । १ 'गंध [गन्ध] पूर्वोक्त हो अर्थ (ठा १, आचा, णाय १, १२) । १ 'मह पुन. [शब्द] खराब शब्द (णाय १, १२) ।

दुच्चिक्ख पुन [दुर्भिक्ष] १ दुष्काल, अकाल, वृष्टि का अभाव (सम ६०, सुपा ३५८), 'आसन्ने रणरणे, मूढे खंते तदेव दुच्चिक्खे ।

दोमणसिय वि [दौर्मनस्यिक] खिल्ल, शोक-
ग्रस्त (ठा ५, २—पत्र ३१३) ।

दोमणस्स न [दौर्मनस्य] वैमनस्य, द्वेष,
मन की दुष्टता (सूत्र २, २, ८२, ८३) ।

दोमासिअ वि [द्वैमासिक] दो मास का
(भग. सुर १४, २२८) । श्री. °आ (सम
२१) ।

दोमिय (अप) देखो दूमिअ = दावित (भवि) ।

दोमिली श्री [दोमिली] लिपि-विशेष (राज) ।

दोमुह वि [द्विमुख] १ दो मुँहवाला । २
पुं नृप-विशेष (महा) । ३ दुर्जन (गा २५३) ।

दोर पु. [दे] १ डोरा, घागा, सूत (पउम ४,
५०, कुप्र २२६, सुर ३, १४१) । २ छोटी
रस्ती (श्रीघ २३२, ६४ भा) । ३ कटि-सूत्र
(दे ५, ३८) ।

दोरिया देखो दोरी (सिरि ६३) ।

दोरी श्री [दे] छोटी रस्ती (आ १६) ।

दोल अक [दोलय्] १ हिड़ना । २ झूलना ।
दोलइ (हे ४, ४८) । दोलति (कप्पू) ।

दोलेणय न [दोलनक] झूलन, झन्दोलन
(दे ८, ४३) ।

दोल्या } श्री [दोला] झूला, हिंडोला (सुपा
दोला } २८६, कुमा) ।

दोलाइय वि [दोलायित] १ हिला हुआ ।
२ सशयित (हेका ११६) ।

दोलायमाण वि [दोलायमान] १ हिलता
हुआ । २ संशय करता हुआ (सुपा ११७,
गउह) ।

दोलिया देखो दोला (सुर ३, ११६) ।

दोलिर वि [दोलयित्] झूलनेवाला (कुमा) ।

दोव पु [दोव] एक अनार्य जाति (राज) ।

दोवई श्री [द्वौपदी] राजा दुपद की कन्या,
पारइव-पत्नी (राया १, १६, उप ६४८ टी,
पडि) ।

दोवयण देखो दुवयण = द्विवचन (हे १,
६४, कुमा) ।

दोवार (अप) देखो दुवार (सण) ।

दोवारिअ } पु [दौवारिक] द्वारपाल, दर-
दोवारिय } वान, प्रतीहार (निचू ६, राया
१, १, भग ६, ५, सुपा ४२६) ।

दोविह देखो दुविह (उत्त २, नव ३) ।

दोवेली श्री [दे] सायकाल का भोजन (दे ५,
५०) ।

दोव्वल देखो दोव्वल (से ४, ४२, ८,
८७) ।

दोस देखो दूस = दूष्य (श्रीप, उप ७६८ टी) ।

दोस पुं [दोप] दूषण, दुशुंण, ऐव (श्रीप,
सुर १, ७३, स्पण ६०, प्रासू १३) । °नु
वि [°इ] दोप का जानकार, विद्वान् (पि
१०५) । °ह वि [°घ] दोप-नाशक, 'कुव्वति
पोसह दोसह सुद्ध' (सुपा ६२१) ।

दोस पुं [दे] १ अर्ध, आधा (दे ५, ५६) । २
कोप, क्रोध, गुस्सा (दे ५, ५६, पड्) । ३ द्वेष,
द्रोह (श्रीप, कप्प, ठा १, उत्त ६, सूत्र १,
१६, पण २३, सुर १, ३३, सण, भवि,
कुप्र ३७१) ।

दोस पुं [दोस] हाथ, हस्त, बाहु (से
२, १) ।

दोसणिज्जत पुं [दे] चन्द्र, चन्द्रमा, चांद (दे
५, ५१) ।

दोसा श्री [दोपा] रात्रि, रात (सुर १, २१) ।

दोसाकरण न [दे] कोप, क्रोध (दे ५, ५१) ।

दोसाणिअ वि [दे] निर्मल किया हुआ (दे
५, ५१) ।

दोसायर पु [दोपाकर] १ चन्द्र, चांद (उप
७२८, टी, सुपा २७५) । २ दोषों को खान,
दुष्ट (सुपा २७५) ।

दोसारअण पुं [दे दोपारत्त] चन्द्र, चाद
(पड्) ।

दोसासय पुं [दोपाश्रय] दोष-युक्त, दुष्ट
(पउम ११७, ४१) ।

दोसि वि [दोपिन्] दोषवाला, दोषी (कुप्र
४३८) ।

दोसिअ पु [दौष्यिक] वस्त्र का व्यापारी
(आ १२, वज्जा १६२) ।

दोसिण [दे] देखो दोसीण (पण २, ५) ।

दोसिणा [दे] नीच देखो (ठा २, ४—पत्र
८६) । °मा श्री [°भा] चन्द्र की एक पट-
रानी (ठा ४, १, इक, राया २) ।

दोसिणी श्री [दे दोषिणी] ज्योत्स्ना, चन्द्र-
प्रकाश (दे ५, ५०), 'ससिजुएहा दोसिणी
जत्थ' (कुप्र ४३८) ।

दोसियण न [दोपिकान्न] बासी अन्न
(राज) ।

दोसिह वि [दोपयत्] दोष-युक्त (धम्म
११ टी) ।

दोसिह वि [दे] द्वेष-युक्त, द्वेषी (विसे
१११०) ।

दोसीण न [दे] रात का बासी अन्न (पण २,
५, श्रीघ १४५) ।

दोसील वि [दुस्शील] दुष्ट स्वभाववाला (पव
७३) ।

दोसोलह वि व. [द्विपोडशन्] बत्तीस,
३२ (कप्पू) ।

दोह मक [द्रुह्] द्रोह करना । वक्क दोहंत
(संबोव ४) ।

दोह पं. [दोह] दोहन (दे २, ६४) ।

दोह वि [दोह] दोहने योग्य (भाम ८६) ।

दोह पुं [द्रोह] ईर्ष्या, द्वेष (प्राप्र, भवि) ।

दोहग्ग न [दौर्भाग्य] दुष्ट भाग्य, दुर्दृष्ट,
कमनसीवी (पण १, ४ सुर ३, १७४, गा
२१२) ।

दोहग्गि वि [दौर्भागिन्] दुष्ट भाग्यवाला,
कमनसीव, मन्द-भाग्य (आ १६) ।

दोहण न [दोहन] दोहना, दूष निकालना
(पण १, १) । °वाडण न [°पाटन]
दोहन-स्थान (निचू २) ।

दोहणहारी श्री [दे] १ दोहनेवाली श्री (दे
१, १०८, ५, ५६) । २ पनिहारी, पाली
भरनेवाली श्री, पनहारिन (दे ५, ५६) ।

दोहणी श्री [दे] पक, कादा, कदम (दे ५,
४८) ।

दोहय वि [दोहक] दोहनेवाला, (गा ४६२) ।

दोहय वि [द्रोहक] द्रोह करनेवाला, ईर्ष्यादु
(उप ३५७ टी, भवि) ।

दोहल पुं [दोहद] गर्मिणी श्री का मनोरथ
(हे १, २१७; २२१, कप्प) ।

दोहा अ [द्विधा] दो प्रकार (हे १, ६७) ।

दोहाइअ वि [द्विधाकृत] जिसका दो खण्ड
किया गया हो वह (हे १, ६७ कुमा) ।

दोहासल न [दे] कटी-तट, कमर (दे ५,
५०) ।

दोहि वि [दोहिन] भरनेवाला, ठपकनेवाला
(गा ६३६) ।

दुरणुचर वि [दुरनुचर] जिसका अनुष्ठान कठिनाता से हो सके वह, दुष्कर 'एमो जईण धम्मो दुरणुचरो मदसत्ताण' (सुर १४, ७५, ठा ५, १—पत्र २६६, णाया १, १)।

दुरणुपाल वि [दुरनुपाल] जिसका पालन कष्ट-साध्य हो (उत्त २३)।

दुरप्प पुं [दुरात्मन्] दुष्ट आत्मा, दुर्जन (उव, महा)।

दुरन्धास पुं [दुरध्यास] खराब आदत (सुपा १६७)।

दुरभि देखो दुब्धि (अणु, पउम २६, ५०, १०२, ४४, पणह २, ५, आचा)।

दुरभिगम वि [दुरभिगम] १ जहाँ दु ख से गमन हो सके वह, कष्ट-गम्य (ठा ३, ४)। २ दुर्बोध, कष्ट से जो जाना जा सके (राज)।

दुरमच्च पुं [दुरमात्य] दुष्ट मंत्री (कुप्र २६१)।

दुरवगम वि [दुरवगम] दुर्बोध (कुप्र ४८)।

दुरवगम देखो दुरवगम (चैदय २५६)।

दुरवगाह वि [दुरवगाह] दुष्प्रवेश, जहाँ प्रवेश करना कठिन हो वह (हे १, २६, सम १४५)।

दुरस वि [दूरस] खराब स्वादवाला (भग, णाया १, १२, ठा ८)।

दुरसन पु [द्विरसन] १ सर्प, साँप। २ दुर्जन, दुष्ट मनुष्य (सुपा ५६७)।

दुरहि देखो दुरभि (उप ७२८ टी, तदु)।

दुरहिगम देखो दुरभिगम (सम १४५, विसे ६०६)।

दुरहिगम वि [दुरभिगम्य] दु ख से जानने योग्य, दुर्बोध, 'अत्यगई वि अ नयवायगहण-लीणा दुरहिगम्या' (मम्म १६१)।

दुरहियास वि [दुरध्यास, दुरविसह] दुस्सह, जो कष्ट से सहन किया जा सके (णाया १, १, आचा, उप १०३१ टी, स ६५७)।

दुराणण पु [दुरानन] विद्याधर वंश का एक राजा (पउम ५, ४५)।

दुराणुवत्त वि [दुरनुवर्त] जिसका अनुवर्तन कष्ट-साध्य हो वह (वव ३)।

दुराय न [द्विरात्र] दो रात (ठा ५, २, कस)।

दुरायार वि [दुराचार] १ दुराचारी, दुष्ट आचरणवाला (सुर २, १६३, १२, २२६, वेणी १७१)। २ पुं. दुष्ट आचरण (भवि)।

दुरायारि वि [दुराचारिन्] ऊपर देखो (भवि)।

दुराराह वि [दुराराध] जिसका आराधन दु ख से हो सके वह (कप्प)।

दुरारोह वि [दुरारोह] जिस पर दु ख से चढ़ा जा सके वह, दुरध्यास (उत्त २३, गा ४६८)।

दुरालोअ पु [दे] तिमिर, अन्वकार (दे ५, ४६)।

दुरालोअ वि [दुरालोक] जो दु ख से देखा जा सके, देखने को अशक्य (से ४, ८, कुमा)।

दुरालोयण वि [दुरालोकन] ऊपर देखो, 'दुरालोयणो दुम्महो रत्तनेत्तो' (भवि)।

दुरावह वि [दुरावह] दुर्धर, दुर्बल (पउम ६८, ६)।

दुरास वि [दुराश] १ दुष्ट आशावाला। २ खराब इच्छावाला (भवि, सत्ति १६)।

दुरासय वि [दुराशय] दुष्ट आशयवाला (सुपा १३१)।

दुरासय वि [दुराश्रय] दु ख से जिसका आश्रय किया जा सके वह, आश्रय करने को अशक्य (पणह १, ३, उत्त १)।

दुरासय वि [दुरासद] १ दुष्प्राप्य, दुर्लभ। २ दुर्जन। ३ दु सह (दस २, ६, राज)।

दुरिअ न [दुरित] पाप (पाअ, सुपा २४३)।

दुरिअ न [दे] द्रुत, शीघ्र, जल्दी (पड्)।

दुरिआरि स्त्री [दुरितारि] भगवान् सभवनाय की शासनदेवी (सत्ति ६)।

दुरिक्ख वि [दुरीक्ष] देखने को अशक्य (कुमा)।

दुरिट्ट न [दुरिष्ट] खराब नक्षत्र (दसनि १, १०५)।

दुरिट्ट न [दुरिष्ट] खराब यजन—याग (दसनि १, १०५)।

दुरुक्क वि [दे] थोड़ा पीसा हुआ, ठीक ठीक नहीं पीसा हुआ (आचा २, १, ८)।

दुरुद्धल सक [भ्रम्] १ भ्रमण करना, धूमना। २ गँवाई हुई चीज की खोज में धूमना। वक्र. दुरुद्धलंत (सुर १५, २१२)।

दुरुत्त न [दुरुत्त] दुष्टोक्ति, दुष्ट वचन (सार्ध १०१)।

दुरुत्त वि [द्विरुत्त] १ दो बार कहा हुआ, पुनरुक्त। २ दो बार कहने योग्य (रभा)।

दुरुत्तर वि [दुरुत्तर] १ दुस्तर, दुर्लघ्य (सूत्र १, ३, २)। २ न. दुष्ट उत्तर, अयोग्य जवाब (हे १, १४)।

दुरुत्तर वि [द्वि-उत्तर] दो से अधिक। १ सय वि [शततम] एक सौ दो वा, १०२ वां (पउम १०२, २०४)।

दुरुत्तार वि [दुरुत्तार] दु ख से पार करने योग्य (सुपा २६७)।

दुरुद्धर वि [दुरुद्धर] जिसका उद्धार कठिनाई से हो वह (सूत्र १, २, २)।

दुरुवणीय वि [दुरुपनीत] जिसका उपनय दूषित हो ऐसा (उदाहरण) (दसनि १)।

दुरुवयार वि [दुरुपचार] जिसका उपचार कष्ट-साध्य हो वह (तदु)।

दुरुव्वा स्त्री [दूर्वा] तृण विशेष, दूब (स १२४, उप ३१८)।

दुरुह सक [आ + रुह्] आरुह होना, चटना। दुरुहह (पि ११८, १३६)। वक्र. दुरुहमाण (आचा २, ३, १)। सक. दुरुहित्ता, दुरुहित्ताण, दुरुहेत्ता (भग, महा, पि ५८३, ४८२)।

दुरुढ वि [आरुढ] अधिलुद्ध, ऊपर चढ़ा हुआ (णाया १, १, २, १, औप)।

दुरुव वि [दूरूप] १ खराब रूपवाला, कुरूप, कुडोल (ठा ८, आ १६)। २ मलमूल का कदम (सूत्रक० चूर्णी गा० ३१७)।

दुरुव वि [दूरूप] अशुचि आदि खराब वस्तु (सूत्र १, ५, १, २०)।

दुरुह देखो दुरुह। सक. दुरुहित्तु, दुरुहिया (सूत्र १, ५, २, १५), 'जहा आमाम-विणि नाव जाइअवो दुरुहिया' (सूत्र १, ११, ३०)।

दुरुहण न [आरोहण] अविरुहण, ऊपर चढ़ बैठना (स ५१)।

दुरेह पु [द्विरेफ] भ्रमर, भौरा (पाअ, हे १, ६४)।

दुरोअर न [दुरोदर] जुआ, घूत (पाअ)। दुरोदर देखो दुरोअर (कपूर २५)।

दव्व दुगुण घणणदी भएणइ' (दस १)।
 °णिहि पु [°निवि] खजाना, भण्डार (ठा ५ ३)। °त्थि वि [°त्थिन्] वन का अग्नि-
 लापो (रयण ३८)। °दत्त पु [°दत्त] १
 एक सार्थवाह। २ तृतीय वामुदेव के पूर्व-
 जन्म का नाम (सम १५३, एदि. आवम)।
 °देव पुं [°देव] १ एक सार्थवाह,
 मण्डिक-गणवर का पिता (आवम, आचू
 १)। २ धन्य सार्थवाह का एक पुत्र (गाया
 १, १८)। °पइ देखो °वइ (विपा २ १)।
 °पवर पु [°पवर] एक श्रेष्ठी (महा)।
 °पाल पु [°पाल] धन्य सार्थवाह का एक
 पुत्र (गाया १, १८)। देखो °वाल।
 °पभा स्त्री [°प्रभा] कुण्डलघर द्वीप की
 राजधानी (दीव)। °मत, °मग वि [°वत्]
 घनी, घनवान् (पिंग, हे २, १५६, चड)।
 °मित्त पु [°मित्र] एक जैनमुनि (पउम
 २०, १७१)। °य पु [°द] १ एक सार्थ-
 वाह (सुपा ५०६)। २ एक विद्यावर राजा,
 जो राजा रावण की मौसी का लडका था
 (पउम ८, १२४)। ३ कुवेर (महा)। ४
 वि घन देनेवाला, 'घणओ घणत्थिमाण'
 (रयण ३८)। °रक्खिण पु [°रक्षित]
 धन्य सार्थवाह का एक पुत्र (गाया १, १८)।
 °वइ पु [°पति] १ कुवेर (गाया १, ४—
 पत्र ६६, उप पृ १८०, सुपा ३८)। २ एक
 राजकुमार (विपा २, ६)। °वई स्त्री
 [°वता] एक सार्थवाह-पुत्री (दस १)।
 °वत्त, °वत्त देखो °मत (हे २, १५६,
 चड)। °वह पु [°वह] १ एक श्रेष्ठी (दस
 १)। २ एक राजा (विपा २, २)। °वाल
 देखो °पाल। २ राजा भाज के समकालिक
 एक जैन महाकवि (घण ५०)। °सच्चया
 स्त्री [°सचय] एक वणिग्-महिला (महा)।
 °मन्न पु [°शर्मन्] एक वणिक् (गच्छ
 ७)। °सिरी स्त्री [°श्री] एक वणिग्-महिला
 (आव ४)। °सेण पु [°सेन] एक राजा
 (दस ४)। °ल वि [°वत्] घनी (प्राप्र)।
 °वह वि [°वह] १ घन को धारण
 करनेवाला, घनी। २ पुं एक श्रेष्ठी (दस
 ४)। ३ एक राजा (विपा २, २)।

धणजय पु [धनजय] १ अजुंन, मध्यम

पाण्डव (वेणी ११०)। २ वह्नि, अग्नि।
 ३ सप-विशेष। ४ वायु-विशेष, शरीर-व्यापी
 पवन। ५ वृक्ष-विशेष (हे १, १७७, २,
 १८५, पइ)। ६ उत्तरा भाद्रपदा नक्षत्र का
 गोत्र (इक)। ७ पक्ष का नववा दिन (जो
 ४)। ८ श्रेष्ठि-विशेष (आव ४)। ९ एक
 राजा (आवम)।

धणि पुं [ध्वनि] शब्द, आवाज (विसे
 १५०)।

धणि स्त्री [ध्राणि] १ तृप्ति, सन्तोष (औप)।
 २ अश्रुति उत्पन्न करने की शक्ति, भूमिधणि-
 वित्तएह्याई (गिने १६५३)।

धणि वि [धनिन्] धनिक, धनवान् (हे २,
 १५६)।

धणिअ पुं [धनिक] यवन-मत का प्रवर्तक
 पुरुष-विशेष (मोह १०१, १०२)।

धणिअ वि [धनिक] १ पैसादार, घनी (दे
 १, १४८)। २ पु. मालिक, स्वामी (आ
 १४)।

धणिअ न [दे] अत्यन्त, गाढ, घतिशय (दे
 ५, ५८, औप, भग, महा, कप्प, मुर १,
 १७५, भत्त ७३, पच्च ८२, जीव ३, उत्त
 १, वव २, स ६६७)।

धणिअ वि [धन्य] धन्यवाद के योग्य,
 प्रशसनीय, स्तुतिपात्र, 'जाण घणियस्म
 पुरओ निवडति रणम्मि असिजाया' (पउम
 ५६ २५, अचु ४२)।

धणिआ स्त्री [दे] १ प्रिया, भार्या, पत्नी
 (दे ५, ५८, गा ५८२, भवि)। २ धन्या,
 स्तुति-पात्र स्त्री (पइ)।

धणिट्ठा स्त्री [धनिट्ठा] नक्षत्र-विशेष (सम
 १०, १३, सुर १६, २४६, इक)।

धणी स्त्री [दे] भार्या, पत्नी। २ पर्याप्ति।
 ३ जो वैधा हुआ होने पर भी भय-रहित हो
 वह (दे ५, ६२), 'मयमेव मकणीए घणीए
 तं कंकणी वद्धा' (कुप्र १८५)।

धणु पुं [धनुष्] १ धनुष, चाप, कामुक
 (पइ, हे १, २२)। २ चार हाथ का
 परिमाण (अणु, जो २६)। ३ पु. परमा-
 धार्मिक देवों की एक जाति (सम २६)।
 °कुडिल न [कुटिलधनुष्] वक्र धनुष
 (राय)। °ग्गह पुं [°ग्रह] वायु-विशेष (बह

३)। °द्वय पु [°ध्वज] नृप-विशेष (ठा
 ८)। °द्धर वि [°धर] धनुर्विद्या में निपुण,
 धानुष्क (राज, पउम ६, ८७)। °पिट्ट न
 [°पृष्ठ] १ धनुष का पृष्ठ-भाग। २ धनुष
 के पीठ के आकारवाला क्षेत्र (सम ७३)।
 °पुहत्तिया स्त्री [°पृथक्त्विका] दो कोस,
 गव्यूति (पण १)। °वेअ, °व्वेअ पु
 [°वेद] धनुर्विद्या बोधक शास्त्र इपु-शास्त्र
 (उप ६८६ टी, सुपा २७०, जं ७)। °हर
 देखो °वर (भवि)।

धणु पुन [धनुस्] ज्योतिष प्रसिद्ध एक
 राशि (विचार १०६, सबोव ५४)। °ल्ल वि
 [°मन्] धनुषवाला (प्राक ३५)।

धणुक्क } ऊपर देखो (एदि, अणु, हे १,
 धणुह } २२, कुमा)।

धणुही स्त्री [धनुष] कामुक, 'विसाओ व
 घणुहीओ गुणवद्धाओवि पयइकुडिलाओ'
 (कुप्र २७४, स ३८१)।

धणेसर पु [धनेश्वर] एक प्रसिद्ध जैनमुनि
 और ग्रन्थकार (सुर १, २४६, १६, २५०)।

धणग पु [धन्य] १ एक जैनमुनि। २
 'अनुत्तरोपपातिकदमा' सूत्र का एक अध्ययन
 (अनु २)। ३ यज्ञ-विशेष (विपा २, २)।
 ४ वि कृतार्थ। ५ धन-लाभ के योग्य। ६
 स्तुति-पात्र, प्रशमनीय। ७ भाग्यशाली,
 भाग्यवान् (गाया १, १, कप्प, औप)।

धण्ण देखो धन्न = धान्य (आ १८, ठा ५,
 ३, वव १)।

धण्णानरि पु [धन्वन्नरि] १ राजा कनकय
 का एक म्वनाम रूपात वय (विपा १, ८)।
 २ देव-वैद्य (जय २)।

धण्णाउम वि [दे] १ जिमको आशीर्वाद
 दिया जाता हो वह। २ पु आशीर्वाद (दे
 ५, ५८)।

धत्त वि [दे] १ निहित, स्थापित (आवम)।
 २ पु वनस्पति-विशेष (जीव १)।

धत्त वि [धात्त] निहित, स्थापित (राज)।

वत्तरट्ठग पु [धार्तराष्ट्रक] हंस की एक
 जाति, जिसके मुँह और पाँव काले होते हैं
 (पण १, १)।

दुव्वसु वि [दुर्वसु] अमव्य, खराब द्रव्य (आवा) । मुणि पुं [मुनि] मुक्ति के लिए अयोग्य साधु (आवा) ।

दुव्वह वि [दुर्वह] दुर्धर, जिसका वहन कठिनाई से हो सके वह (स १६१, सुर १, १४) ।

दुव्वा देखो दुरुव्वा (कुमा, सुर १, १३८) ।
दुव्वाइ वि [दुर्वादिन] अप्रियवक्ता (दस ६, २) ।

दुव्वाय पुं [दुर्वाक्] दुर्वचन, दुष्ट उक्ति; 'वयणेएवि दुव्वाओ न य कायव्वो परस्स पीढयरो' (पउम १०३, १४३) ।

दुव्वाय पु [दुर्वात] दुष्ट पवन (णमि ४) ।

दुव्वार वि [दुर्वार] दुःख से रोकने योग्य, अव्यय (स १२, ६३, उप ६८६ टी, सुपा १६७, ४७१, अमि ११६) ।

दुव्वारिअ देखो दुवारिअ = दौवारिक (प्राप्र) ।

दुव्वाली ली [दे] वृक्ष-पत्ति (पाप्र) ।

दुव्वास पुं [दुर्वासस्] एक ऋषि (अमि ११८) ।

दुव्विअड वि [दुर्विदृत] परिधान-वर्जित, नग्न, नगा (ठा ५, २—पत्र ३१२) ।

दुव्विअड्ड वि [दुर्विदग्ध] ज्ञान का झूठा दुव्विअड्ड } अभिमान करनेवाला, दुर्शिक्षित (पाप्र, गा ६५) ।

दुव्विजाणय वि [दुर्विज्ञेय] दुःख से जानने योग्य, जानने को अशक्य, 'अकुसलपरिणाम-मदुद्धिजणदुव्विजाणए' (पएह १, १) ।

दुव्विहप्प वि [दुर्वर्ज] दुःख से अर्जन करने योग्य, कठिनाई से कमाने योग्य (कुप्र २३८) ।

दुव्विणीअ वि [दुर्विनीत] अविनीत, उद्धत (पउम ६६, ३५, काल) ।

दुव्विण्णाय वि [दुर्विज्ञात] असत्य रीति से जाना हुआ (आवा) ।

दुव्विभज देखो दुविभज (राज) ।

दुव्विभव्व वि [दुर्विभाव्य] दुर्लभ्य, दुःख से जिसकी आलोचना हो सके वह (ठा ५, १ टी—पत्र २६६) ।

दुव्विभाव वि [दुर्विभाव] ऊपर देखो (विसे) ।

दुव्विअलसिय न [दुर्विलसित] १ स्वच्छन्दी विलास । २ निकृष्ट कार्य, जघन्य काम, नीच काम (उप १३६ टी) ।

दुव्विसह वि [दुर्वपह] अत्यन्त दुःसह, असह्य (गा १४८, सुर ३, १४४, १४, २१०) ।

दुव्विसोज्झ वि [दुर्विशोध्य] शुद्ध करने को अशक्य (पंचा १७) ।

दुव्विहिअ न [दुर्विहित] दुष्ट अनुष्ठान (दस १, १२) ।

दुव्विहिय वि [दुर्विहित] १ खराब रीति से किया हुआ, 'दुव्विहियविलासिय विहियो' (सुर ४, १५, ११, १४३) । २ अनुविहित, अयशस्वी (आव ३) ।

दुव्वोज्झ वि [दुर्वोद्ध] दुर्वह, दुःख से ढोने योग्य (स ३, ५, ४, ४४, १३, ६३, वजा ३८) ।

दुव्वोज्झ वि [दे] दुर्घात्य, दुःख से मारने योग्य (स ३, ५) ।

दुसंकड न [दुस्संकट] विपम विपत्ति (भवि) ।

दुसचर देखो दुस्संचर (भवि) ।

दुसथ वि [दुस्सथ] दो बार सुनने से ही उसे अच्छी तरह याद कर लेने की शक्तिवाला (धम्मस १२०७) ।

दुसन्नप्प वि [दुस्सज्ञाप्य] दुर्बोध्य (ठा ३, ४—पत्र १६५) ।

दुसमदुसमा देखो दुस्समदुस्समा (भग ६, ७) ।

दुसमसुसमा देखो दुस्समसुसमा (ठा १) ।

दुसमा देखो दुस्समा (भग ६, ७, भवि) ।

दुसह देखो दुस्सह (हे १, ११५, सुर १२, १३७, १३६) ।

दुसाह वि [दुस्साध] दुःसाध्य, कष्ट-साध्य (पउम ८६, २२) ।

दुसिक्खिअ वि [दुर्शिक्षित] दुर्विदग्ध (पउम २५, २१) ।

दुसुमिण देखो दुस्सुमिण (पडि) ।

दुसुरुल्लय न [दे] गले का आभूषण-विशेष (स ७६) ।

दुस्स सक [द्विप्] द्वेष करना । वक्तु, दुस्समाण (सूअ १, १२, २२) ।

दुस्सउण न [दुश्शकुन] अपशकुन (णमि २०) ।

दुस्संचर वि [दुस्संचर] जहाँ दुःख से जाया जा सके, दुर्गम (स २३१, सवि १७) ।

दुस्सचार वि [दुस्संचार] ऊपर देखो (सुर १, ६६) ।

दुस्संत पुं [दुष्प्रन्त] चन्द्रवशीय एक राजा, शकुन्तला का पति (पि ३२६) ।

दुस्सवोह वि [दुस्सवोध] दुर्बोध्य (आवा) ।
दुस्सज्झ वि [दुस्साध्य] दुष्कर (सुपा ८, ५६६) ।

दुस्सण्णप्प देखो दुस्सन्नप्प (वृह ५) ।

दुस्सन्त वि [दुस्सत्त्व] दुरात्मा, दुष्ट जीव (पउम ८७, ६) ।

दुस्सन्नप्प देखो दुस्सन्नप्प (कस) ।

दुस्समदुस्समा ली [दुष्पमदुष्पमा] काल-विशेष, सर्वाधम काल, अवसर्पिणी काल का छठवाँ और उत्सर्पिणी काल का पहला आरा, इसमें सब पदार्थों के गुणों की सर्वोत्कृष्ट हानि होती है, इसका परिमाण एककीम हजार वर्षों का है (ठा १, ६, इक) ।

दुस्समदुसुसमा ली [दुष्पमसुपमा] वेयालीस हजार कम एक कोटाकोटि सागरोपम का परिमाणवाला काल-विशेष, अवसर्पिणी काल का चतुर्थ और उत्सर्पिणी काल का तीसरा आरा (कप्प, इक) ।

दुस्समा ली [दुष्पमा] १ दुष्ट काल । २ एककीस हजार वर्षों के परिमाणवाला काल-विशेष, अवसर्पिणी-काल का पाँचवाँ और उत्सर्पिणी काल का द्वादशवाँ आरा (उप ६५८, ६५) ।

दुस्समाण देखो दुस्स ।

दुस्सर पुं [दुस्वर] १ खराब आवाज, कुत्मित करण । २ कर्म-विशेष, जिसके उदय से स्वर कर्ण कटु होता है (कम्म १, २७; नव १५) । °णाम, °नाम न [°नामन्] दुस्वर का कारण-भूत कर्म (पच, सम ६७) ।

दुस्सल वि [दुश्शल] दुर्विनीत, अविनीत (वृह १) ।

दुस्सह वि [दुस्सह] जो दुःख से नहन हो सके, असह्य (स्वप्न ७३, हे १, १३, ११५, पड्) ।

धुरा (गाथा १, ८) । °नायग देखो °णायग (भग) । °पडिमा स्त्री [°प्रतिमा] १ धर्म की प्रतिज्ञा । २ धर्म का साधन-भूत शरीर (ठा १) । °पण्णत्ति स्त्री [°प्रज्ञप्ति] धर्म की प्रवृत्तिका (उवा) । °पदिणी (शौ) स्त्री [°पत्नी] धर्म-पत्नी, स्त्री, भार्या (अभि २२२) । °पिवासय वि [°पिपासक] धर्म के लिए प्यासा (भग) । [°पिवासिय] वि [°पिपासित] धर्म की प्यासवाला (तदु) । °पुरिस पुं [°पुरुष] धर्म-प्रवर्तक पुरुष (ठा ३, १) । °पलज्जण वि [°प्ररञ्जन] धर्म में आसक्त (गाथा, १, १८) । °प्पवाइ वि [°प्रवादिन्] धर्मोपदेशक (आचानि १, ४, २) । °प्पह पु [°प्रभ] एक जैन आचार्य (रयण ५८) । °प्पावाउय वि [°प्रावाटुक] धर्म-प्रवादी, धर्मोपदेशक (आचानि १, १४, १) । °बुद्धि वि [°बुद्धि] धार्मिक, धर्म-मति । २ पु एक राजा का नाम (उप ७२८ टी) । °मित्त पु [°मित्र] भगवान् पद्मप्रभ का पूर्वभवीय नाम (सम १५१) । °य वि [°द] धर्म-दाता, धर्म देशक (सम १) । °रुइ स्त्री [°रुचि] १ धर्म-प्रीति (धर्म २) । २ वि धर्म में रुचि-वाला (ठा १०) । ३ पु. एक जैन मुनि (विपा १, १, उप ६४८ टी) । ४ वाराणसी का एक राजा (भावम) । °लाभ पुं [°लाभ] १ धर्म की प्राप्ति । २ जैन साधु द्वारा दिया जाता आशीर्वाद (सुर ८, १०६) । °लाभिअ वि [°लाभित] जिसको 'धर्मलाभ' रूप आशीर्वाद दिया गया हो वह (स ६६) । °लाह देखो °लाभ (स ३६) । °लाहण न [°लाभन] धर्मलाभ-रूप आशीर्वाद देना, 'कयं धम्मलाहण' (स ४६६) । °लाहिअ देखो °लाभिअ (स १४८) । °वत वि [°वत्] धर्मवाला (आचा) । °वय पुं [°व्यय] धर्मार्थ दान, धर्मादा (सुपा ६१७) । °वि, °विउ वि [°वित्] धर्म का जानकार (आचा) । °विज्ज पुं [°वैद्य] धर्माचार्य (पचव १) । °व्वय देखो °वय (सुपा ६१७) । °सद्दा स्त्री [°श्रद्धा] धर्म-विश्वास (उत्त २६) । °सण्णा देखो °सन्ना (भग ७,

६) । °सत्य न [°शास्त्र] धर्म प्रतिपादक शास्त्र (दस ४) । °सन्ना स्त्री [°संज्ञा] १ धर्म-विश्वास । २ धर्म-बुद्धि (पण्ह १, ३) । °सारहि पु [°सारथि] धर्मार्थ का प्रवर्तक, धर्म-देशक (वण २७, पडि) । °साला स्त्री [°शाला] धर्म-स्थान (कह ३३) । °सील वि [°शील] धार्मिक (सूय २, २) । °सीह पुं [°सिंह] १ भगवान् अभिनन्दन का पूर्वभवीय नाम (सम १५१) । २ एक जैन मुनि (संथा ६६) । °सेण पुं [°सेन] एक बलदेव का पूर्वभवीय नाम (सम १५३) । °इगर वि [°दिकर] धर्म का प्रथम प्रवर्तक । २ पु. जिन-देव (धर्म २) । °णुट्ठाण न [°णुष्ठान] धर्म का आचरण (धर्म १) । °णुण्ण वि [°णुज्ज] धर्म का अनुमोदन करनेवाला (सूय २, २, गाथा १, १८) । °णुय वि [°णुग] धर्म का अनुसरण करने-वाला (भौप) । °ययिण पु [°आचार्य] धर्म-दाता गुरु (सम १२०) । °वाय पु [°वाद] १ धर्म-चर्चा । २ वारहवां जैन अग-ग्रन्थ, दृष्टिवाद (ठा १०) । °हिगरणिय पुं [°धिकरणिक] न्यायाधीश, न्यायकर्त्ता (सुपा ११७) । °हिगारि वि [°धिका-रिन्] धर्म-ग्रहण के योग्य (धर्म १) ।

धम्म वि [धर्म्य] धर्म-युक्त धर्म-संगत, 'जं पुण तुम कहेसि तमेव धम्म' (महानि ४, द्र ४१) ।

धम्ममण पुं [दे] वृक्ष-विशेष (उप १०३१ टी, पउम ४२, ६) ।

धम्ममाण देखो धम ।

धम्मय पुं [दे] १ चार अंगुल का हस्त-व्रण । २ चण्डी देवी की नर-बलि (दे ५, ६३) ।

धम्मि वि [धर्मिन्] १ धर्म-युक्त, द्रव्य, पदार्थ । २ धार्मिक, धर्म-परायण (सुपा २६, ३३६, ५०६, वज्जा १०६) ।

धम्मि वि [धर्मिन्] तर्कशास्त्र-प्रसिद्ध पक्ष (धर्मसं ६१) ।

धम्मिअ वि [धार्मिक] १ धर्म-तत्पर, धर्म-धम्मिग परायण (गा १६७, उप ८६२, पण्ह २, ४) । २ धर्म-सम्बन्धी (उप २६४, पचा ६) । ३ धार्मिक-सम्बन्धी (ठा ३, ४) ।

धम्मिट्ट वि [धर्मिष्ठ] अतिशय धार्मिक (भौप सुपा १४०) ।

धम्मिट्ट वि [धर्मिष्ठ] धर्म-प्रिय (भौप) ।

धम्मिट्ट वि [धर्मिष्ठ] धार्मिक जन को प्रिय (भौप) ।

धम्मिल्ल पुं [धम्मिल्ल] १ संयत केश, धम्मेल्ल } वैवा हुआ केश, त्रियों के बांधे हुए वाल की 'पटिया या जूडा', बीच में फूल रखकर ऊपर से मोतियों की या अन्य किसी रत्न की लड्डियों से वैवा हुआ केश-कलाप (प्राप्र, वड्, ससि ३) । २ पु. एक जैन मुनि (भाव ६) ।

धम्मीसर पु [धर्मेश्वर] अतीत उत्सर्पणीकाल में भरतवर्ष में उत्पन्न एक जिन-देव (पव ७) । धम्मउत्तर वि [धर्मोत्तर] १ गुणी, गुणों से श्रेष्ठ (आचू ५) । २ न धर्म का प्राधान्य, 'धम्मउत्तर वड्डउ' (पडि) ।

धम्मोवएसग वि [धर्मोपदेशक] धर्म का धम्मोवएसय } उपदेश देनेवाला (गाथा १, १६, सुपा १७२, धर्म २) ।

धय सक [धे] पान करना, स्तन-पान करना । वड्ड धयंत (सुर १०, ३७) ।

धय पुं स्त्री [ध्वज] ध्वजा, पताका (हे २, २७, गाथा १, १६, पण्ह १, ४, गा ३४) । स्त्री. °या (पिंग) । °वड पु [°पट] ध्वजा का वड्ड (कुमा) ।

धय पु [दे] नर, पुरुष (दे ५, ५७) ।

धयण न [दे] गृह, घर (दे ५, ५७) ।

धयरट्ट पुं [धृतराष्ट्र] हंस पक्षी (पाप्र) ।

धर सक [धृ] १ धारण करना । २ पकड़ना । धरइ, धरेइ (हे ४, २३४, ३३६) । कर्म, धरिज्जइ (पि ५३७) । वड्ड धरत, धरमाण (सण, भवि, गा ७६१) । कवड्ड, धरत, धरेंत, धरिज्जत, धरिज्जमाण (से ११, १२७, १४, ८१, राज, पण्ह १, ४, भौप) । संकृ धरिं (कुप्र ७) । कृ. धरियव्व (सुपा २७२) ।

धर सक [धरय्] धृष्टिवादी का पालन करना । वड्ड, धरंत (सुर २, १३०) ।

धर न [दे] तूल, रूई (दे ५, ५७) ।

धर पु [धर] १ भगवान् पद्मप्रभ का पिता (सम १५०) । २ मधुरा नगरी का एक राजा (गाथा १, १६) । ३ पर्वत, पहाड़ (से ८, ६३, पाप्र) ।

°धर वि [°धर] धारण करनेवाला (कप्प) ।

दूआ देखो धूआ (पद्) ।

दूई देखो दूई । °पलासय न [°पलागक]
एक चैत्य (उवा) ।

दूइज सक [दु] गमन करना, विहरना,
जाना । दूइजइ (आचा) । वक्र दूइजत,
दूइजमाण (औप, राया १, १, भग,
आचा, महा) । हेक दूइजित्तए (कस) ।

दूइत्त न [दूतीत्य] दूती का कार्य, दूतीपन
(पठम ५३, ४५) ।

दूई खो [दूती] १ दूत के काम में नियुक्त की
हुई खो, समाचार-हारिणी, कुटनी (हे ४,
३६७) । २ जैन साधुओं के लिये मिखा का
एक दोष (ठा ३, ४—पत्र १६६) । °पिंड
पु [°पण्ड] समाचार पहुँचाने से मिली हुई
मिखा (आचा २, १, ६) । देखो दूई° ।

दूण वि [दून] हैरान किया हुआ, 'हा पिय-
वयस दूढो (? यो) मए तुम' (स ७६३) ।

दूण पुं [दे] हस्ती, हाथी (दे ५, ४४, षड्) ।
दूण (अप) देखो दुडण (पिंग) ।

दूणावेढ वि [दे] १ अशक्य । २ तडाग,
तलाव, तालाव (दे ५, ५६) ।

दूभ अक [दुखय्] दुभना, दु खित होना,
'तम्हा पुत्तोवि दूभिज्जा पहमिज्ज व दुज्जणो'
(आ १२) ।

दूभग देखो दुडभग (राया १, १६—पत्र
१६६) ।

दूभग न [दौर्भाग्य] दुष्ट भाग्य, खराब
नसीब (उप पृ ३१) ।

दूम सक [दू, दावय्] परिताप करना,
सताप करना । दूमइ, दूमेइ (सुपा ८, प्राप्र;
हे ४, २३) । कर्म दूमिज्जइ (भवि) ।
वक्र. दूमेत (से १०, ६३) । कवक्र. दूमि-
ज्जत (सुपा २६६) ।

दूम देखो दुम = धवलय् (हे ४, २४) ।

दूमक } वि [दावक] उपताप-जनक, पीडा-
दूमग } जनक (पणह १, ३, राज) ।

दूमण वि [दावक] उपताप करनेवाला (सूअ
१, २, २, २७) ।

दूमण न [द्वेन, दावन] परिताप, पीडा न
(पणह १, १) ।

दूमण न [धवलन] सफेद करना (वव ४) ।

दूमण देखो दुम्मण = दुर्मनस् (सूअ १,
२, २) ।

दूमणाइ वि [दुर्मनायित] जो उदास हुआ
हो, उद्विग्न-मनस्क (नाट—मालती ६६) ।

दूमिअ [दून, दावित] संतापित, पीडित
(सुपा १०, १३३, २३०) ।

दूमिअ वि [धवलन] सफेद किया हुआ (हे
४, २४, कप्प) ।

दूयाकार न [दे] कला-विशेष (स ६०३) ।

दूर न [दूर] १ अनिकट, असमीप, 'रुमेव
जस्स कित्तो गया दूर' (कुमा) । २ अतिशय,
अत्यन्त, 'दूरमहरं डसते' (कुमा) । ३ वि

दूरस्थित, असमीपवर्ती (सूअ १, २, २) ।
४ व्यवहित, अन्तरित (गडड) । °ग वि

[°ग] दूरवर्ती, असमीपस्थ (उप ६४८ टी,
कुमा) । °गइ, °गइअ वि [°गतिक] १

दूर जानेवाला । सौवर्म आदि देवलोक में
उत्पन्न होनेवाला (ठा ८) । °तराग वि

[°तर] अत्यन्त दूर (पणह १७) । °त्य वि
[°स्थ] दूरस्थित, दूरवर्ती (कुमा) । °भविय

पुं [°भव्य] दीर्घ काल में मुक्ति को प्राप्त
करने की योग्यतावाला जीव (उप ७२८

टी) । °य देखो °ग (सूअ १, ५, २) ।
°वत्ति वि [°वर्तिन्] दूर में रहनेवाला

(पि ६४) । °लइय वि [°लियिक] मुक्ति-
गामी (आचा) । °लिय पुं [°लय] १ दूर-

स्थित आश्रय । २ मोक्ष । ३ मुक्ति का मार्ग
(आचा) ।

दूरगइअ देखो दूर-गइअ (औप) ।

दूरतरिअ वि [दूरान्तरित] अत्यन्त व्यवहित
(गा ६५८) ।

दूरचर वि [दूरचर] दूर रहनेवाला (घम्मो
१०) ।

दूराय सक [दूराय्] दूरस्थित की तरह
मालूम होना, दूरवर्ती मालूम पड़ना । वक्र

दूरायमाण (गडड) ।

दूरीकय वि [दूरीकृत] दूर किया हुआ
(आ २८) ।

दूरीहूअ वि [दूरीभूत] जो दूर हुआ हो
(सुपा १५८) ।

दूरुल वि [दूरवत्] दूरस्थित, दूरवर्ती
(आव ४) ।

दूलह देखो दुल्लह (सक्ति १७) ।

दूस अक [दुप्] दूषित होना, विकृत होना ।
दूसइ (हे ४, २३५, सक्ति ३६) ।

दूस सक [दूपय्] दोषित करना, दूषण—
दोष लगाना । दूसइ (भवि), दूसेइ (वृह ४) ।

दूस न [दूपय्] १ वक्र, कपडा (सम १५१,
कप्प) । २ तंबू, पट-कुटी (दे ५, २८) ।

°गणि पुं [°गणिन्] एक जैन आचार्य
(एदि) । °मित्त पुं [°मित्र] मौर्यवंश के

नाश होने पर पाटलिपुत्र में अभिषिक्त एक
राजा (राज) । °हर न [°गृह] तंबू, पट-

कुटी (स २६७) ।

दूमअ वि [दूपक] दोष प्रकट करनेवाला
(वज्जा ६८) ।

दूसग वि [दूपक] दूषित करनेवाला (सुपा
२७५, सं १२४) ।

दूसग वि [दूपक] दूषण निकालनेवाला,
दोष देखनेवाला (घर्मवि ८५) ।

दूसण न [दूपण] दूषित करना (अज्ज ७३) ।

दूसण न [दूपण] १ दोष, अपराध । २
कलक, दाग (तदु) । ३ पुं. रावण की मौसी

का लडका (पठम १६, २५) । ४ वि. दूषित
करनेवाला (स ५२८) ।

दूसम वि [दुष्पम] १ खराब, दुष्ट । २ पु.
काल-विशेष, पाँचवाँ आरा, 'दूसमे काले'

(सद्धि १५६) । °दूसमा देखो दुस्सम-
दुस्समा (सम ३६, ठा १, ६) । °सुसमा

देखो दुस्समसुसमा (ठा २, ३, सम ६४) ।
दूसमा देखो दुस्समा (सम ३६, उप ८३३

टी, सं ३४) ।

दूमर देखो दुस्सर (राज) ।

दूसल वि [दे] दुभंग, अभागा (दे ५, ४३,
पद्) ।

दूसह देखो दुस्सह (हे १, १३, ११५) ।

दूसहणीअ वि [दुस्सहनीय] दुस्सह, असह्य
(पि ५७१) ।

दूसासण देखो दुस्सासण (हे १, ४३) ।

दूसाहिअ वि [दौस्साधिक] दुसाध जाति
में उत्पन्न, अस्पृश्य जाति का (प्राकृ १०) ।
दूसि पुं [दूपिन्] नपुंसक का एक भेद,
'दोसुवि वेएसु सज्जए दूसी' (वृह ४) ।

धसिअ वि [धसित] धसा हुआ (हम्मीर १२) ।

धा [धा] धारण करना । धाइ, धाम्मइ धाम्मए (पड्) । कम, धीयए (पिड) ।

धा सक [धै] ध्यान करना, चिन्तन करना । धाम्मति (ससि ७६) ।

धा सक [धाव्] १ दौटना । २ शुद्ध करना, धोना । धाइ, धाम्मइ (हे ४, २४०) । भवि वाहिड (पड्) ।

धाइअ वि [धाविन] दौटा हुआ (से ८, ६८, भवि) ।

धाइअसह देखो धायइ-सह, (महा) ।

धाई देखो धत्ती (हे २, ८१, पव ६७) । ४ धाई का काम करने से प्राप्त की हुई मिला (ठा ३, ४) । ५ छन्द-विशेष (पिंग) । १° पिंड पुं [पिण्ड] धाई का काम कर प्राप्त की हुई मिला (पव ६७) ।

धाई देखो धायई, (उप ६४८ टी) ।

धाउ पुं [धातु] १ सोना, चांदी, तावा, लोहा, रंगा, सीमा और जस्ता ये सात वस्तु (जी ३) । २ गेह, मनसिल आदि पदार्थ (से ४, ४, परह १, २) । ३ शरीर-धारक वस्तु—कफ, वात, पित्त, रस, रक्त, मांस, मेद, अस्थि, मज्जा और शुक्र (भौप, कुप्र १५८) । ४ पृथिवी, जल, तेज और वायु ये चार महाभूत (सूप्र १, १, १) । ५ व्याकरण प्रसिद्ध शब्द-योनि, 'भू', 'पच्' आदि (अणु) । ६ स्वभाव, प्रकृति (स २४१) । ७ नाट्य-शास्त्र-प्रसिद्ध आलतिका-विशेष (कुमा २, ६६) । १° य वि [°ज] १ धातु से उत्पन्न । २ वस्त्र-विशेष (पचभा) । ३ नाम, शब्द (अणु) । १° वाइअ वि [°वादिक] भौपधि आदि के योग से ताम्र आदि को सोना वगैरह बनानेवाला, किमियागर (कुप्र ३६७) ।

धाउ पु [धातृ] पणपन्नि नामक व्यन्तर देवो का एक इन्द्र (ठा २, ३) ।

धाउसोसण न [धातुशोपण] आयबिल तप (सबोध ५८) ।

धाड सक [निर + स] बाहर निकलना । धाडइ (हे ४, ७६) ।

धाड सक [निर + सारय्] बाहर निकालना । सक धाडिऊण (कुप्र ८३) । कवकू.

धाडिऊण (पचम १७, २८, ३१, ११६) ।

धाड सक [धाट्] प्रेरणा करना । २ नाश करना । धाडैति (सूप्रनि ७०) । कवकू. धाडोयत (परह १, ३—पत्र ५४) ।

धाडण न [धाटन] बाहर निकालना (वव ४) ।

धाडण न [धाटन] १ प्रेरणा । २ नाश (भौप) ।

धाडय वि [दे धाटक] डाका डालनेवाला, 'धाडयपुरिसा हया तत्थ' (सिरि ११४६) ।

धाडाविअ वि [निस्सारित] बाहर निकाली हुआ, निर्वासित (पचम २२, ८) ।

धाडि वि [दे] निरस्त, निराकृत (दे ५, ५६) ।

धाडिअ वि [नि सूत] बाहर निकला हुआ (कुमा) ।

धाडिअ पुं [दे] आराम, वगीचा (दे ५, ५६) ।

धाडिअ वि [निस्सारित] निर्वासित, बाहर निकाला हुआ (पचम १०१, ६०, स २६८, उप ७२८ टी) ।

धाडी स्त्री [धाटी] १ डाकुओ का दल (सुर २, ४, प्राह) । २ हमला. आक्रमण, धावा (कप्पू) ।

धाण देखो धण्ण = धन्य (वज्जा ६०) ।

धणा स्त्री [धाना] धनिया, एक प्रकार का मसाला (दे ७, ६६, प्राह) ।

धाणुक्क वि [धानुक्क] धनुर्वर, धनुर्विद्या में निपुण (उप पृ ८६, सुर १३, १६२, वेणी ११४, कुप्र ४५२) ।

धाणूरिअ न [दे] फल-भेद (दे ५, ६०) ।

धाम पुन [धामन्] अहंकार, गर्व । २ रस आदि में लम्पटता । ३ वि. गर्व-युक्त । ४ रस आदि में लम्पट (सबोध १६) ।

धाम न [धामन्] वल, पराक्रम (आरा ६३, सण) ।

धाय वि [धात] १ दृप्त, संतुष्ट (भोध ७७ भा. सुर २, ६७) । २ न. सुमिक्ष, सुकाल (बृह ५) ।

धामउ° } स्त्री [धातकी] वृक्ष-विशेष, धाय
धायई } का पेड (परण १, पचम ५३, ७६, ठा २, ३, सम १५२) । १° खण्ड पुं [खण्ड] स्वनाम-ख्यात एक द्वीप (ठा २, ३, अणु) । १° संड पुं [पण्ड] स्वनाम-ख्यात एक द्वीप (जीव ३, ठा ८, इक) ।

धार सक [धारय्] १ धारण करना । २ करजा रखना । धारेइ (महा) । कव. धारंत, धारअंत, धारेमाण, धारयमाण, धारित (सुर ३, १८६, नाट—विक्र १०६, भग, सुपा २५४, २६४) । हेकू. धारिउ, धारेत्तए, धारित्तए, (पि ५७३, कम, ठा ५, ३) । क. धारणिज्ज, धारणीय, धारे-यन्व (णाय १, १, भग ७, ६, सुर १४, ७७, सुपा ४८२) ।

धार न [धार] १ धारा-सवन्वी जल । २ वि धारण करनेवाला (राज) ।

धार वि [दे] लघु, छोटा (दे ५, ५६) ।

धारग वि [धारक] धारण करनेवाला (कप्प; उप पृ ७५, सुपा २५४) ।

धारण न [वारण] १ धारने की अवस्था । २ ग्रहण । ३ रक्षण, रखना । ४ परिवान करना । ५ अवबन्धन (भौप, ठा ३, ३) ।

धारणा स्त्री [धारणा] १ मर्यादा, स्थिति (आवम) । २ विषय ग्रहण करनेवाली बुद्धि (ठा ८, दस ५) । ३ ज्ञात विषय का अविस्मरण (विसे २६१) । ४ अवधारण, निश्चय (आवम) । ५ मन की स्थिरता । ६ धर का एक अवयव, धरती या धरन (भग ८, २) । १° वचहार पुं [व्यवहार] व्यवहार-विशेष (ठा ५, २) ।

धारणा स्त्री [धारणा] मकान का खमा, धरन (आचा २, २, ३, १ टी. पव १३३) ।

धारणिज्ज देखो धार = धारय् ।

धारणी स्त्री [धारणी] १ धारण करनेवाली (भौप) । २ ग्यारहवें जिनदेव की प्रथम शिष्या (सम १५२) । ३ वसुदेव आदि अनेक राजाओ की रानी का नाम (अंत. आचू; १; विपा २, १, णाय १, १) ।

धारणीय देखो धार = धारय् ।

धारय देखो धारग (भोध १, भवि) ।

धारयमाण देखो धार = धारय् ।

(परण १७—पत्र ५३०) । °दिण्ण, °दिन्न पु [°दत्त] व्यक्ति-वाचक नाम, एक सार्यवाह-पुत्र (राज, णाया १, २—पत्र ८३) । °दीव पु [°द्वीप] द्वीप-विशेष (जीव ३) । °दूस न [°दूय] देवता का वस्त्र, दिव्य वस्त्र (जीव ३) । °देव पुं [°देव] १ परमेश्वर, परमात्मा, (मुपा ५००) । २ इन्द्र, देवों का स्वामी (आचा ५) । °नट्टिया ली [°नर्तिका] नाचनेवाली देवी, देव-नटी (अजि ३१) । °नयरी ली [°नगरी] अमरावती, स्वर्ग-पुरी (पठम ३२, ३५) । °पडिक्खोभ पुं [°प्रति-क्षोभ] तमस्काय अन्वकार (भग ६, ५) । °पल्लिक्खोभ पु [°परिक्षोभ] कृष्ण-राजि (भग ६, ५) । °पव्वय पु [°पर्वत] पर्वत-विशेष (ठा २, ३—पत्र ८०) । °प्पसाय पु [°प्रसाद] राजा कुमारपाल के पितामह का नाम (कुप्र ५) । °फलिह पुं [°परिध] तमस्काय, अन्वकार (भग ६, ५) । °भद् पुं [°भट्ट] १ देव-द्वीप का अधिष्ठाता देव (जीव ३) । २ एक प्रसिद्ध जैनाचार्य (सार्ध ८३) । °भूमि ली [°भूमि] १ स्वर्ग, देवलोक । २ मरण, मृत्यु, 'अह अन्नया य सिद्धी यिरदेवो देवभूमिमणुपतो' (मुपा ५८२) । °महाभद् पु [°महाभट्ट] देव-द्वीप का अधिष्ठाता देव (जीव ३) । °महावर पु [°महावर] देव नामक समुद्र का अधिष्ठातृक देव-विशेष (जीव ३, इक) । °रड पु [°रति] एक राजा (भन १२२) । °रज्ज पु [°रक्ष] राजसन्वशीय एक राज-कुमार (पाठम ५, १६६) । °रण न [°रण्य] तम काय, अन्वकार (ठा ४, २) । °रमण न [°रमण] १ सौभाग्यो नगरी का एक उद्यान (विपा १, ४) । २ रात्रि का एक उद्यान (उठम ४६, १७) । °राय पु [°राज] इन्द्र (पठम २, ३८, ४६, ३६) । °रिसि पु [°रक्षि] नारद मुनि (पठम ११, ६८, ७८, १०) । °लोअ, °लोग पु [°लोक] १ स्वर्ग (भग, णाया १, ४, मुपा ६१५, आ १६) । २ देव-जाति, 'कइविहा ए भते देवलोणा परणत्ता ? गोयमा चउविहा देवलोगा परणत्ता, तं जहा—भवणवामी, वाणमंतरा, जोइसिया, वेमारिया' (भग ५, ६) ।

°लोगगमण न [°लोकगमन] स्वर्ग में उत्पत्ति, 'पाओवगमणाइ देवलोगगमणाइ कुसु-लपच्चायाया पुणो वोहिलाभा' (मम १४२) । °वर पु [°वर] देव-नामक समुद्र का अधिष्ठा-यक एक देव (जीव ३) । °वहू ली [°वधू] देवागना, देवी (अजि ३०) । °सणत्ती ली [°संज्ञति] १ देव-कृत प्रतिवोध । २ देवता के प्रतिवोध से ली हुई दीक्षा (ठा १०—पत्र ४७३) । °सणियाय पुं [°सन्निपात] १ देव-समागम (ठा ३, १) । २ देव-समूह । ३ देवों की भीड़ (राय) । °मम्म पुं [°शर्मन्] १ इस नाम का एक ब्राह्मण (महा) । २ ऐरवत क्षेत्र में उत्पन्न एक जिनदेव (सम १५३) । °साल न [°शाल] एक नगर का नाम (उप ७६८ टी) । °सुदरी ली [°सुन्दरी] देवागना, देवी (अजि २८) । °सुय देखो °स्सुय (पत्र ७) । °सेण पु [°सेन] १ शतद्वार नगर का एक राजा, जिसका दूसरा नाम महापय था (ठा ६—पत्र ४५६) । २ ऐरवत क्षेत्र के एक जिनदेव (पत्र ७) । ३ भरत-क्षेत्र के एक भावी जिनदेव के पूर्वभव का नाम (ती १६) । ४ भगवान् नेमिनाथ का एक शिष्य, एक अन्तकृद् मुनि (अत) । °स्स न [°स्व] देव-द्रव्य, जिन-मन्दिर-सबन्धी धन (पचा ५) । °स्सुय पु [°श्रुत] भरत-क्षेत्र के छठवें भावी जिन-देव (सम १५३) । °हूर न [°गृह] देव-मन्दिर (उप ४११) । °इदेव पुं [°तिदेव] अर्हन् देव, जिन भगवान् (भग १२, ६) । °णद् पु [°नन्द] ऐरवत क्षेत्र में आगामी उत्सर्पणी काल में उत्पन्न होनेवाले चौबीसवें जिनदेव (सम १५४) । °णद्दा ली [°नन्दा] १ भगवान् महावीर की प्रथम माता (आचा २, १५, १) । २ पक्ष की पनरहवी रात्रि का नाम (कप्प) । °णुप्पिय पु [°नुप्रिय] भद्र, महाशय, महानुभाव, सरल-प्रकृति (औप, विपा १, १, महा) । °यरिअ पु [°चार्य] एक सुप्रसिद्ध जैन आचार्य (शु ७) । °रन्न देखो °रण (भग ६, ५) । २ देवों का क्रीडा-स्थान (जो ६) । °लिय पुन [°लिय] स्वर्ग (उप २६४ टी) । °हिदेव पुं [°धिदेव] परमेश्वर, परमात्मा, जिनदेव (सम ४३, स

५) । °हिदिइ पु [°धिपति] इन्द्र, देव-नायक (सूअ १, ६) । देव पुन [°दव] एक देव-विमान (देवेन्द्र १३३) । °कुरु ली [°कुरु] भगवान् मुनि-सुव्रत स्वामी की दीक्षा-शिषिका का नाम (विचार १२६) । °च्छदय पुन [°च्छन्दक] कमानदार घूमटवाला दिव्य आसन-स्थान (आचा २, १५, ५) । °तमिस्स पुन [°तमिस्स] अन्वकार-राशि, तमस्काय (भग ६, ५—पत्र २६८) । दिन्ना ली [°दत्ता] भगवान् वासुपूज्य की दीक्षा-शिषिका (विचार १२६) । °पल्लिक्खोभ पुं [°परिक्षोभ] कृष्णराजि, कृष्णवर्ण पुद्गलो की रेखा (भग ६, ५—पत्र २७०) । °रमण पु [°रमण] नन्दीश्वर द्वीप के मध्य में पूर्व-दिशा स्थित एक अजनगिरि (पत्र २६६ टी) । °वूह पु [°व्यूह] तमस्काय (भग ६, ५—पत्र २६८) । देव देखो दडव (उप ३५६ टी, महा, हे १, १५३ टी) । °न्नु वि [°ज्ञ] जौतिष-शास्त्र का जानकार (मुपा २०१) । °पर वि [°पर] भाग्य पर ही श्रद्धा रखनेवाला (पड्) । देवड ली [°देवकी] श्रीकृष्ण की माता, आगामी उत्सर्पणी काल में होनेवाले एक तीर्थंकर-देव का पूर्व भव (पठम २०, १८५, सम १५२, १५४) । देखो देवकी । देवउप्प न [°दे] पक्व पुष्प, पका हुआ फल (दे ५, ४६) । देव देखो दा = दा । देवरा न [°द दिव्याङ्ग] देवदूष्य वस्त्र (उप ७३८) । देवगण न [°देवाङ्गण] स्वर्ग, 'दिक्खं गहिउ च देवगणे रमइ' (सम्मत्त १६०) । देवधकार देखो देवधगार (भग ६, ५—पत्र २६८) । देवधगार पु [°देवान्धकार] तिमिर-निचय, अन्वकार का समूह (ठा ४, २) । देवकिञ्चिस पु [°देवकिञ्चिप] एक अधम देव जाति (ठा ४, ४—पत्र २७४) । देवकिञ्चिसिया ली [°देवकिञ्चिपकी] भावना-विशेष, जो अधम देव-योनि में उत्पत्ति का कारण है (ठा ४, ४) ।

धी छी [धी] बुद्धि, मति (पात्र, गाय १, १६, कुप्र ११६, २४७, प्रासू २०) । °धण वि [°धन] १ बुद्धिमान, विद्वान् । २ पु एक मन्त्री का नाम (उप ७:८ टी) । °म, °मन वि [°मत्] बुद्धिशाली, विद्वान् (उप ७:२८ टी, कप्प, राज) ।

धीअ [विक] धिक्कार, छी (उव, वै ५५) ।

धीआ छी [दुहितृ] लडकी, पुत्री (मृच्छ १०६, पि ३६२, महा, भवि, पच्च ४२) ।

धीइ देखो विइ, 'तुच्छा गारवकलिया चलि-दिया दुव्वला य धीईए' (पव ६२ टी) ।

धीउल्लिया छी [दे] पुतली (म ७३७) ।

धीमल न [धिङ्मल] निन्दनीय मैल (तदु ३८) ।

धीर अक [धीर्य] १ धीरज धरना । २ सक धीरज देना, आश्वासन देना । धीरैत (गउठ) ।

धीर वि [धीर] १ धैर्यवाला, सुत्थिर, अ-चञ्चल (मे ४, ३०, गा ३६७, ठा ४, २) । २ बुद्धिमान, परिणत, विद्वान् (उप ७६८ टी, धर्म २) । ३ विवेकी, शिष्ट (सूअ १, ७) । ४ सहिष्णु (सूअ १, ३, ४) । ५ पु. परमेश्वर, परमात्मा, जिन-देव । ६ गणधर-देव (आचा, आव ४) ।

धीर न [धैर्य] धीरज, धीरता (हे २, ६४, कुमा) ।

धीरव सक [धीर्य] सान्त्वना देना, दिलासा देना । कर्म धीरविज्जति (कुप्र २७३) ।

धीरवण न [धीरण] धीरज देना, सान्त्वना (वव १) ।

धीरविय वि [धीरित] जिसको सान्त्वना दी गई हो वह, आश्वासित (स ६०४) ।

धीराअ अक [धीराय] धीर होना, धीरज धरना । वक्क धीराअत (से १२, ७०) ।

धीराविअ देखो धीरविय (पि ५५६) ।

धीरिअ देखो धीर = धैर्य (हे २, १०७) ।

धीरिअ देखो धीरविय (भवि) ।

धीरिम पुत्री [धीरत्व] धैर्य, धीरज (उप पु ६२, सुपा १०६, भवि, कुप्र १५०) ।

धीवर पु [धीवर] १ मछलीमार, अछुआ, मल्लाह, जालजीवी (कुमा, कुप्र २४७) । २ वि. उत्तम बुद्धिवाला (उप ७:८ टी, कुप्र २४७) । धुअ देखो धुव = धाव । धुअइ (गा १३०) । धुअ सक [धु] १ कँपाना । २ फँकना । ३ त्याग करना । वक्क धुअमाण (से १४, ६६) ।

धुअ वि धुव = ध्रुव (भवि) । छन्द-विशेष (पिंग) ।

धुअ वि [धूत] १ कम्पित । २ न. कम्प (प्राकृ ७०) ।

धुअ वि [धुत] १ कम्पित (गा ७८, दे १, ६७३) । २ त्यक्त (श्रौप) । ३ उच्छलित (से ४, ४) । ४ न कर्म (सूअ २, २) । ५ मोक्ष, मुक्ति (सूअ १, ७) । ६ त्याग, संग त्याग, समय (सूअ १, २, २, आचा) । °वाय पु [°वाद] कर्म-नाश का उपदेश (आचा) ।

धुअगाय पु [दे] अमर, भौरा, भमरा (दे ५, ५७, पात्र) ।

धुअण देखो धुवण (पव १०१) ।

धुअराय पु [दे] ऊपर देखो (पड्) ।

धुधुमार पुं [धुधुमार] नृप-विशेष (कुप्र २६३) ।

धुधुमारा छी [दे] इन्द्राणी, शची (दे ५, ६०) ।

धुक्क अक [धुक्] भूख लगना । धुक्कइ (प्राकृ ६३) ।

धुक्काधुक्क अक [कम्प] कांपना, 'धुक् धुक्' होना । धुक्काधुक्कइ (गा ५८३) ।

धुक्कुद्धुअ } वि [दे] उल्लसित, उल्लास-धुक्कुद्धुगिअ } युक्त (दे ५, ६०) ।

धुक्कुधुअ देखो धुक्काधुक्क । वक्क धुक्कु-धुअत (भवि) ।

धुक्कोडिअ न [दे] संशय, संदेह (वजा ६०) ।

धुगुधुग अक [धुगधुगाय] 'धुग् धुग्' आवाज करना । वक्क धुगुधुगंत (परह १, ३—पत्र ४५) ।

धुट्ठुअ देखो धुट्ठुअ । धुट्ठुअइ (हे ४, ३६५) ।

धुण सक [धू] १ कँपाना, हिलाना । २ दूर करना, हटाना । ३ नाश करना । धुणइ, धुणाइ

(हे ४, ५६, आचा, पि १२०) । कर्म. धुवइ, धुणिअइ (हे ४, २४२) । वक्क. धुणत (सुपा १८५) । संकृ. धुणिऊण, धुणिआ, धुणेऊण (पड्; दस ६ ३) । हेकृ धुणित्तए (सूअ १, २, २) । कृ धुणेज्ज (आच १) ।

धुणण न [धूनन] १ अपनयन । २ परित्याग, छोटना (राज) ।

धुणणा छी [धूनना] कम्पन, हिलना (श्रोघ १६५ भा) ।

धुणा देखो धुणगा (उत्त २६, २७) ।

धुणाव सक [धूनय] कँपाना, हिलाना । धुणावइ (वजा ६) ।

धुणाविअ वि [धूनित] कँपाया हुआ (उप ७६८ टी) ।

धुणि देखो झुणि (पड्) ।

धुणिऊण } देखो धुण ।
धुणित्तए }

धुणिय वि [धूत] कम्पित, हिलाया हुआ, 'मत्ययं धुरिय' (सुपा ३२०, २०१) ।

धुणिया } देखो धुण ।
धुणेज्ज }

धुण्ण वि [धाव्य] १ दूर करने योग्य । २ न. पाप । ३ कर्म (दस ६, १, दसा ६) ।

धुत्त वि [धूर्त] १ ठग, वल्चक, प्रतारक (प्रासू ४०, आ १२) । २ जुआ खेलनेवाला । ३ पुं धतूरे का पेड़ । ४ लोहे की काट—मैल । ५ लवण-विशेष, एक प्रकार का नोन (हे २, ३०) ।

धुत्त वि [दे] १ विस्तीर्ण (दे ५, ५८) । २ आक्रान्त (पड्) ।

धुत्त } सक [धूर्तय] ठगना । धुत्तारसि
धुत्तार } (सुपा ११४) । वक्क धुत्तयत (आ १२) ।

धुत्तारिअ वि [धूर्तित] ठगा हुआ, वन्चित (उप ७:२८ टी) ।

धुत्ति छी [धूर्ति] जरा, बुढ़ापा (राज) ।

धुत्तिअ वि [धूर्तित] वन्चित, प्रतारित (सुपा ३२४, आ १२) ।

धुत्तिम पुत्री [धूर्तत्व] धूर्तता, धूर्तपन, ठगई (हे १, ३५, कुमा, आ १२) ।

धुत्ती छी [धूर्ता] धूर्त छी (वजा १०६) ।

मे गया हुआ (सुर १० १६२) । °सहा ली
[°सभा] धर्मशाला (उप पृ ११५) ।
देसिअ देखो देन्मिअ, 'पडिक्के देसिअं मन्व'
(पडि, आ ६) ।
देसिअव वि [देशितवत्] जिसने उपदेश
दिया हो वह (सूत्र १, ६, २४) ।
देसिअग देखो देसिअ = देश्य (बृह ३) ।
देसी ली [देशी] भाषाविशेष, अत्यन्त प्राचीन
प्राकृत भाषा का एक भेद (दे १, ४) ।
°भामा ली [°भाषा] वही अर्थ (गाथा १,
१, श्रौप) ।
देसुण वि [देशोन] कुछ कम, अश की कमी-
वाला (सम २, १०३, दं २८) ।
देस्स वि [दृश्य] १ देखने योग्य । २ देखने
को शक्य (स १६६) ।
देह देखो देक्ख । देहई, देहए (उत्त १६, ६,
पि ६६) । वक्क देहमाण (भग ६, ३२) ।
देह पुं [देह] १ शरीर, काय (जी २८, कुप्र
१५३ प्राप्त ६५) । २ पुं पिशाच-विशेष
(इक, पण १) । °रय न [°रत] मैथुन
(वजा १०८) ।
देहवल्लिया ली [देहवलिक्का] भिक्षा-वृत्ति,
भिक्ष की आजीविका (गाथा १, १६—पत्र
१६६) ।
देहणी ली [दे] पंक, कंदम, कादा, कांदो
(दे ५, ४८) ।
देहरय (अप) न [देवगृहक] देव-मन्दिर
(वजा १०८) ।
देहली ली [देहली] चौखट, द्वार के नीचे की
लकड़ी (गा ५२५, दे १, ६५, कुप्र १८३) ।
देहि पु [देहिन्] आत्मा, जीव (स १६५) ।
देहुर (अप) न [देवकुल] देव-स्थान, मन्दिर
(भवि) ।
दो अ [द्विधा] दो प्रकार से, दो तरह (सुपा
२३३, ३१२) ।
दो वि. व. [द्वि] दो, उभय, युग्म (दे १,
६४) ।
दो पुं [दोस्] हाथ, वाह (विक्र ११३,
रंभा, कप्पू) ।
दोअई ली [द्विपदी] छन्द-विशेष (पिंग) ।
दोआल पुं [दे] वृषभ, बैल (दे ५, ४६) ।

दोइ देखो दो = द्विधा (बृह ३) ।
दोवुर [दे] देखो दोवुर (पड्) ।
दोक्रिय वि [द्विक्रिय] एक ही समय में दो
क्रियाओं के अनुभव को माननेवाला (ठा ७) ।
दोकर देखो दुकर (भवि) ।
दोक्खर पुं [द्वि-अक्षर] पण्ड, नपुसक
(बृह ४) ।
दोखड देखो दुखंड (भवि) ।
दोखंडअ वि [द्विखण्डित] जिसके दो टुकड़े
किए गए हो वह (भवि) ।
दोर्गाछ वि [जुगुप्सिन्] घृणा करनेवाला
(पि ७४) ।
दोगच्च न [दुर्गत्य] १ दुर्गति, दुर्दशा (पचव
४) । २ वाच्य, निर्बलता (सुपा २३०) ।
दोगुछि देखो दोगुछि (पि २१५) ।
दोगुदय पुन [दोगुन्दक] एक देव-विमान
(देवेन्द्र १४५) ।
दोगुंदय पुं [दौगुन्दक] उत्तम-जातीय देव-
विशेष (सुपा ३३) ।
दोगा न [दे] युग्म, युगल (दे ५, ४६, पड्) ।
दोगाइ देखो दुगइ (सुर ८, १११) । °कर
वि [°कर] दुर्गति जनक (पउम ७३, १०) ।
दोगाच्च देखो दोगाच्च (गा ७६) ।
दोगघट्ट } पु [दे] हाथी, हस्ती (पि ४३६,
दोगघोट्ट } पड्, पाप्प, महा, लहुअ ४, स
दोघट्ट } ४६१) ।
दोचूड पु [द्विचूड] विद्याधर वंश के एक
राजा का नाम (पउम ५, ४५) ।
दोच्च वि [द्वितीय] दूसरा (सम २, ८, विपा
१, २) ।
दोच्च न [दोत्य] दूतपत्र, दूत-कर्म (गाथा १,
८, गा ८४) ।
दोच्च अ [द्विस्] दो बार, दो वक्त, एवं
'निसामित्ता दोच्चं तच्चं समुल्लवत्तस्स' (सुर
२, २६) ।
दोच्चग न [द्वितीयाङ्ग] १ दूसरा अंग । २
पकाया हुआ शाक (बृह १) । ३ तीमन,
कढ़ी (श्लो २६७ भा) ।
दोजीह पुं [द्विजिह्व] १ दुर्जन । २ साँप
(सुर १, २०) ।
दोच्च वि [दोह्य] दोहने योग्य (आचा २,
४, २) ।

दोण पु [द्वोण] १ धनुर्वेद के एक सुप्रसिद्ध
आचार्य, जो पाण्डव और कौरवों के गुरु थे
(गाथा १ १६ वेणी १०४) । २ एक
प्रकार का परिमाण (जो २) । °रह न
[°मुख] नगर, जल और स्थल के मार्गवाला
शहर (पण्ड १, ३, कप्प, श्रौग) । °नेह पुं
[°मेघ] मेघ-विशेष, जिसकी धारा से बड़ी
कलशी भर जाय वह वर्षा (विसे १४५८) ।
°सुया ली [°सुता] लक्ष्मण की ली का
नाम, विशल्या (पउम ६४, ४४) ।
दोगअ पु [दे] १ आयुक्त, गाँव का मुखिया ।
२ हालिक हलवाह, हल जोतनेवाला, हरवाता
(दे ५, ५१) ।
दोणक्का ली [दे] सरघा, मधुमक्खी (दे ५,
५१) ।
दोणी ली [द्वोणी] १ नौका, छोटा जहाज
(पण्ड १, १, दे २, ४७, धम्म १२ टी) ।
२ पानी का बड़ा कुँडा (अणु, कुप्र ४४१) ।
दोत्तडी ली [दुत्तगी] दुष्ट नदी, 'एकत्तो
सहलो अन्नत्तो दोत्तडी वियडा' (उप ५३०
टी, सुपा ४६३) ।
दोत्थ न [दौत्स्थ्य] दुस्स्थता, दुर्दशा, दुर्गति
(वव ४, ७) ।
दोहाण वि [दुर्दान] दुःख से देने योग्य
(संक्षि ४) ।
दोहिए पु [दे] चर्म-कूप, चमड़े का दना
हुआ भाजन-विशेष (दे ५, ४६) ।
दोहु वि [दोगृ] दोहन-कर्ता (दस १, १ टी) ।
दोधअ } न [दोधरु] छन्द-विशेष
दोधक } (पिंग) ।
दोधार पु [द्विधाकार] द्विधाकरण, दो भाग
करना (ठा ५, ३—पत्र ३४६) ।
दोनिक्कम वि [दुर्निक्कम] अत्यन्त कष्ट से
चलने योग्य (भग ७, ६—पत्र ३०५) ।
दोवुर पुं [द] तुम्बुक, स्वर्ग-गायक (पड्) ।
दोव्वलिय देखो दुव्वलिय (आचा २, ३,
२, ३) ।
दोव्वल न [दौर्वल्य] दुर्बलता (पि २८७,
काप्र ८५) ।
दोभाय वि [द्विभाग] दो भागवाला, दो
खण्डवाला (उप १४७ टी) ।

धूमाभ्रंति (से ८, १६, गउड) । वक्र धूमायत (गउड, से १, ८) ।

धूमाभा स्त्री [धूमाभा] पाँचवी नरक पृथिवी (पउम ७५, ४७) ।

धूमिअ वि [धूमित] १ धूमयुक्त (पिंड) । २ छौंका हुआ (शक आदि) (दे ६, ८८) ।

धूमिआ स्त्री [दे] नोहार, कुहासा (दे ५, ६१, पात्र, ठा १०, भग ३, ७, अणु) ।

धूरारा देखो धूरा (सूअ १, ८, १, ३) ।

धूरिअ वि [दे] दीर्घ, लम्बा (दे ५, ६२) ।

धूरिअवट्ट पु [दे] अश्व, घोडा (दे ५, ६१) ।

धूलडिआ (अप) देखो धूलि (हे ४, ४३२) ।

धूलि } स्त्री [वृलि, °ला] धूल, रज, रेणु
धूली } (गउड, प्रासू २८, ८४) । °कंव,
°कंलव पु [°कदम्ब] ग्रीष्म ऋतु मे विक-
सनेवाला कदम्ब-वृक्ष (कुमा) । °जघ वि
[°जङ्घ] जिसके पाँव में धूल लगी हो वह
(वव १०) । °धूसर वि [°धूसर] धूल से
लित (गा ७७४, ८२६) । °धोउ वि
[°वोत] धूल को साफ करनेवाला (सुपा
३३६) । °पथ पु [°पथ] धूलि-बहुल मार्ग
(ओघ २४ टी) । °वरिस पु [°वर्ष] धूल
की वर्षा (त्रावम) । °हर न [°गृह] वर्षा ऋतु
मे लडके लोग जो धूल का घर बनाते हैं वह
(उप ५६७ टी) ।

धूलिहडी स्त्री [दे] पर्व-विशेष, होली, धूलि-
हडीरायनरासरिसा मन्वेमि हसणिज्जा'
(कुलक ५) ।

धूलीवट्ट पु [दे] अश्व, घोडा (दे ५, ६१) ।

धूव सक [धूपय्] धूप करना । धूवेज
(आचा २, १३) । वक्र धूवेन (पि ३६७) ।

धूव पुं [धूप] १ सुगन्धि द्रव्य से उत्पन्न
धूम । २ सुगन्धि द्रव्य-विशेष, जो देव-पूजा
आदि में जलाया जाता है (गाया १, १,
सुर ३, ६५) । °घट्टा स्त्री [°घटी] धूप-
पात्र, धूप से भरी हुई कलशी (जं १) । जत
न [°यन्त्र] धूप-पात्र (दे ३, ३५) ।

धूवण न [धूपन] १ धूप देना । २ धूम-पान,
रोग की निवृत्ति के लिए किया जाता धूम का
पान 'धूवणे त्ति वमणे य व त्थीकम्मविरेयेणे'
(दस ३, ६) । °वट्टि स्त्री [°वत्ति] धूप की
बनी हुई वत्तिका, अगारवत्ती (कप्पू) ।

धूविअ वि [धूपित] १ तापित, गरम किया
हुआ । २ हींग आदि से छौंका हुआ (चारु
६) । ३ धूप दिया हुआ (श्रीप, गच्छ १) ।

धूसर पु [धूसर] १ हलका पीला रंग, ईषत्
पाण्डु वर्ण । २ वि धूसर रंगवाला, ईषत्
पाण्डु वर्णवाला (प्रासू ८४, गा ७७४, से ६,
८२) ।

धूसरिअ वि [धूसरित] धूसर वर्णवाला
(पात्र, भवि) ।

धे सक [धा] धारण करना । वेद (सलि
३३), 'धेहि धीरत्त' (कुप्र १००) ।

धेअ } वि [धेय] ध्यान योग्य (अजि
धेज्ज } १४, गाया १, १) ।

धेउल्लिया देखो धीउल्लिया (सुख ३, १) ।

धेज्ज वि [धेय] धारण करने योग्य (गाया
१, १) ।

धेज्ज न [धेय] धीरज, धीरता (पण्ह २,
२) ।

धेणु स्त्री [धेनु] १ नव-प्रसूता गौ । २ सवत्सा
गौ । ३ दूधार गाय (हे ३, २६, चंड) ।

धेर देखो धीर = धैर्य (विक्र १७) ।

धेवय पु [धैवत] स्वर-विशेष, वेवयस्तरस-
पण्णा भवति कलहप्पिया' (ठा ७—पत्र
३६३) ।

धोअ सक [धाव्] घोना, शुद्ध करना,
पखारना । धोएजा (आचा) । वक्र धोयत
(सुपा ८५) ।

धोअ वि [वौत] धोया हुआ, प्रक्षालित (से
१, २५, ७, २०, गा ३६६) ।

धोअग वि [धावक] १ घोनेवाला । २ पु.
घोवी (उप पृ ३३३) ।

धोअण वि [धावन] घोना, प्रक्षालन (आ
२०, रयण १८ ओघ ३४७) ।

धोइअ देखो धोअ = धौत (गा १८) ।

धोज्ज वि [धुर्य] १ धुरीण, भार-वाहक । २
अगुआ, नेता धुरन्धर (वव १) ।

धोरण न [दे] गति-चातुर्य (श्रीप) ।

धोरणि } स्त्री [धोरणि, °णी] पक्ति, कतार
धोरणी } (सुपा ४६, भवि, पङ्) ।

धोरिय देखो धोज्ज (सुपा २८२) ।

धोरुगिणी स्त्री [धोरुकिनिका] देश-विशेष
में उत्पन्न स्त्री (गाया १, १—पत्र ३७) ।

धोरेय वि [धौरेय] देखो धोज्ज (सुपा
६५०) ।

धोव देखो धेअ = धाव् । धोवइ (स १५७,
पि ७८) । धोवेजा (आचा) । वक्र धोवत
(भवि) । कवक, धोव्यत, धोवमाण (पउम
१०, ४४, गाया १, ८) । कृ धोवणिय
(गाया १, १६) ।

धोवण देखो धोअण (पिंड २३) ।

धोवय देखो धोवग (दे ८, ३६) ।

ध्रुव (अप) अ [ध्रुवम्] अठन, स्थिर (हि
४, ४१८) ।

॥ इअ सिरिपाइअमहमहणवम्मि धआराइसदसकलणो

द्वीसइमो तरगो समत्तो ॥

दोहि वि [द्रोहिन्] द्रोह करनेवाला (भवि) ।
दोहिण वि [द्विभिन्न] द्विखण्ड, जिसका दो टुकड़ा किया गया हो वह (प्राक् ५१) ।
दोहित पुं [दौहित्र] लड़की का लड़का, नाती (दे ६, १०६, सुपा ३६४) ।

दोहिती स्त्री [दौहित्री] लड़की की लड़की, नतिनी (महा) ।
दोहूअ पु [दे] शव, मृतक मुरदा (दे ५, ४६) ।
दोम देखो दोस = (दे), 'वज्रियरागदोसो' (कुप्र ३०) ।

द्रवक्क (अप) न [दे. भय] भय, डर, भीति (हे ४, ४२२) ।
द्रह पु [हृद] बड़ा जलाशय, सरोवर, झील (हे २, ८०, कुमा) ।
द्रेहि (अप) स्त्री [दृष्टि] नजर (हे ४, ४२२) ।
द्रोह देखो दोह = द्रोह (पि २६८) ।

॥ इय सिरिपाइअसहमहणवम्मि दम्माराइसदसकलणो

पंचवीसइमो तरंगो समत्तो ॥

ध

ध पुं [ध] दन्त-स्थानीय व्यञ्जन वर्ण-विशेष (प्राप, प्रामा) ।
धअ देखो धव (गा २०) ।
धख पु [ध्वाङ्क्ष] काक, कौआ (उप ८२३, पंचा ११) ।
धंग पु [दे] भौंरा, अमर, भमरा (दे ५, ५७) ।
धंत न [ध्वान्त] अन्वकार, अँवेरा (सुर १, १२, कव ११) ।
धत न [ध्वान्त] अज्ञान (देवेन्द्र १) ।
धत न [दे] अति, अतिशय, अत्यन्त, 'धतं-पि सुप्रसमिद्धा' (पञ्च २६, विसे ३०१६, वृह १) ।
धत वि [ध्मात] १ अग्नि में तपाया हुआ (शाया १, १, श्रौप, पण १, ५७, विसे ३०२६, अजि १४) । २ शब्द-युक्त, शब्दित (पिंड) ।
धघा स्त्री [दे] लज्जा, शरम (दे ५, ५७) ।
धंधुकय न [धन्धुकय] गुजरात का एक नगर, जो आज कल 'धधुका' नाम से प्रसिद्ध है (सुपा ६५८, कुप्र २०) ।
धधोलिय (अप) वि [अमित] घुमाया हुआ (सण) ।
धंस प्रक [ध्वंस्] नष्ट होना । धंसइ, धंसए (पङ्) ।

धस सक [धसय्] १ नाश करना । २ दूर करना । धसइ (सूत्र १, २, १) । धसेइ (सम ५०) ।
धसाड सक [मुच्] त्याग करना, छोड़ना । धंसाडइ (हे ४, ६१) ।
धसाडिअ वि [मुक्त] परित्यक्त, छोड़ा हुआ (कुमा) ।
धंसाडिअ वि [दे] व्यपगत, नष्ट (दे ५, ५६) ।
धगधग प्रक [धगधगाय्] १ 'धग्-धग्' आवाज करना । २ जलना, अतिशय जलना । वक्तु धगधगत (शाया १, १, पठम १२, ५१, भवि) ।
धगधगाइअ वि [धगधगायित] 'धग्-धग्' आवाजवाला (कप्प) ।
धगधगा देखो धगधग । वक्तु धगधगाअ-माण (पि ५५८) ।
धग्गीकय वि [दे] जलाया हुआ, अत्यन्त प्रदीपित, 'अग्गी धग्गीकमो व्व पवणेण' (आ १४) ।
धज देखो धय = ध्वज (कुमा) ।
धट्ट देखो धिट्ट (हे १, १३०, पठम ४६, २६, कुमा १, ८२) ।

धट्टज्जुण } पु [धृष्टद्युम्न] राजा दुपद का
धट्टज्जुण } एक पुत्र (हे २, ६४, शाया १, १६, कुमा, पङ्, पि २७८) ।
धड न [दे] घड, गले से नीचे का शरीर (सुपा २४१) ।
धडहडिय न [दे] गर्जना, गर्जारव (सुपा १७६) ।
धण न [धन] १ वित्त, विभव, स्थावर-जगम सम्पत्ति (उत्त ६, सूत्र २, १, प्रासू ५१, ७६, कुमा) । २ गणित, धरित, मेय, या परिच्छेद्य द्रव्य—गिनती से और नाप आदि से क्रय-विक्रय योग्य पदार्थ (कप्प) । ३ पुं कुवेर, धन-पति, 'सुव शो सिट्ठी धणोव्व धणकलिओ' (सुपा ३१०) । ४ स्वनाम-ख्यात एक श्रेष्ठी (उप ५५२) । ५ धन्य साधुवाह का एक पुत्र (शाया १, १८) । 'इत्त, इल्ल वि [वत्] धनी, धनवाला (कुप्र २४५, पि ५६५, संक्षि ३०) । 'गरि पु [गार] एक जैन महर्षि, जो वज्रस्वामी के पिता थे (कप्प, उप १४२ टी) । 'गुत्त पु [गुम्] एक जैन मुनि (भावम) । 'गोव पुं [गोप] धन्य साधुवाह का एक पुत्र (शाया १, १८) । 'ड्ड पुं [ड्ड] एक जैनमुनि (कप्प) । 'णंदि पुत्री [नन्दि] दुगुना देव-द्रव्य, 'देव-

पइट्टा लो [प्रतिष्ठा] १ आदर, सम्मान । २ कीर्ति, यश । ३ व्यवस्था (हे १, २०६) । ४ स्थापना, संस्थापन (एदि) । ५ अवस्थान, स्थिति (पंचा ८) । ६ मूर्ति मे ईश्वर के गुणों का आरोपण, 'जिणविवाण पइट्ट कइया वि हु आइसतस्स' (सुर १६, १३) । ७ आश्रय, आधार (औप) ।

पइट्टा लो [प्रतिष्ठा] १ धारणा, वासना (एदि १७६) । २ समाधान, शका निरास-पूर्वक स्वपक्ष-स्थापन (चेइय ५३५) ।

पइट्टाण पु [प्रतिष्ठान] मूल प्रदेश (राय २७) ।

पइट्टाण न [प्रतिष्ठान] १ स्थिति, अवस्थान, 'काऊण पइट्टाण रमणिज्जे एत्थ अच्छामो' (पउम ४२, २७, ठा ६) । २ आधार, आश्रय (भग) । ३ महल आदि की नीव (पव १४८) । ४ नगर-विशेष (आक २१) ।

पइट्टाण न [दे] नगर, शहर (दे ६, २६) । पइट्टावक } देखो पइट्टावय (आया १, १६ पइट्टावग } राज) ।

पइट्टावण न [प्रतिष्ठापन] १ संस्थापन (पचा ७) । २ व्यवस्थापन (पचा ७) ।

पइट्टावय वि [प्रतिष्ठापक] प्रतिष्ठा करने-वाला (औप, पि २२०) ।

पइट्टाविय वि [प्रतिष्ठापित] संस्थापित (स ६२, ७०५) ।

पइट्टिअ वि [प्रतिष्ठित] प्रतिबद्ध, रुका हुआ (आचा २, १६, १२) ।

पइट्टिय वि [प्रतिष्ठित] १ स्थित, अवस्थित (उवा) । २ आश्रित, 'रयणायरतीरपइट्टियाण पुरिसाण ज च दालिइं' (प्रासू ७०) । ३ व्यवस्थित (आचा २, १, ७) । ४ गौरवान्वित (हे १, ३८) ।

पइणियय वि [प्रतिनियत] नियम-संगत, नियमित (वर्मवि २६६) ।

पइण्ण जि [दे] विपुल, विस्तृत (दे ६, ७) ।

पइण्ण वि [प्रतीर्ण] प्रकर्ष से तीर्ण (आचा) ।

पइण्ण } वि [प्रकीर्ण, 'क'] १ विक्षिप्त पइण्णग } फेंका हुआ, 'रत्थापइएणअणु-पला तुम सा पडिच्छए एत' (गा १४०) ।

२ अनेक प्रकार से मिश्रित (पंचु) । ३ विखरा हुआ (ठा ६) । ४ विस्तारित (वृह १) । ५ न. ग्रन्थ-विशेष, तीर्थकर-देव के

सामान्य शिष्य द्वारा बनाया हुआ ग्रंथ (एदि) । 'कहा लो [कथा] उत्सर्ग, सामान्य नियम, 'उत्सर्गो पइएणकहा भएणइ अववादो नियच्छकहा भएणइ' (निचू ५) । 'तव पु [तपस्] तपरचर्या-विशेष (पचा १६) । पइण्णा लो [प्रतिज्ञा] १ प्रण, शपथ (नाट-मालती १०६) । २ नियम (औप, पचा १८) । ३ तर्कशास्त्र प्रसिद्ध अनुमान-प्रमाण का एक अवयव, साध्य वचन का निर्देश (दसनि १) ।

पइण्णाद (शौ) वि [प्रतिज्ञान] जन्मकी प्रतिज्ञा की गई हो वह (मा १५) ।

पइण्णि वि [प्रतिज्ञावन्] प्रतिज्ञावाला, 'वघमोक्खपइण्णिणो' (उत्त ८, १०, सुप, १०) ।

पइत्त देखो पउत्त = प्रवृत्त (भवि) ।

पइत्त वि [प्रदीप्त] जला हुआ, प्रज्वलित (से १५ ७३) ।

पइत्त देखो पवित्त = पवित्र (सुपा ७४) ।

पइदि (शौ) देखो पगड (नाट—शकु ६१) ।

पइदिण न [प्रतिदिन] हर रोज (काल) ।

पइद्विय वि [प्रदिग्ध] विलिप्त (सूअ १, ५, १) ।

पइद्वियह न [प्रतिद्विस] प्रतिदिन, हर रोज (सुर १, ५०) ।

पइनियय वि [प्रतिनियत] मुकरंर किया हुआ, नियुक्त किया हुआ (आवम) ।

पइन्न देखो पइण्ण = प्रतीर्ण (पएह २, १ टी—पत्र १०५) ।

पइन्न } देखो पइण्ण (उव, भवि, आ ६) । पइन्नग }

पइन्नय देखो पइन्नग (चेइय १६) ।

पइन्ना देखो पइण्णा (सुर १, १) ।

पइप्प देखो पलिप्प । वक्र पइप्पमाण (गा ४१६) ।

पइप्पईय न [प्रतिप्रतीक] प्रत्यंग, हर अंग (रमा) ।

पइभय वि [प्रतिभय] प्रत्येक प्राणी को भय उपजातेवाला (आया १, २, पएह १, १, औप) ।

पइभा लो [प्रतिभा] बुद्धि-विशेष, प्रत्युत्पन्न-मति (पुफ ३३१) ।

पइभाणाण न [प्रतिभाजान] प्रतिभा से उत्पन्न होता ज्ञान, प्रातिभ प्रत्यक्ष (वर्मस १२०६) ।

पइमुह वि [प्रतिमुख] समुल (उप ७४४) ।

पइर सक [वप्] बोना, वपन करना । पइरिति (आचा २, १०, २) । नूका पइरिनु (आचा २, १०, २) । भवि. पइरिम्संति (आचा २, १०, २) । कर्म. पइरिज्जति (स ७१३) ।

पइरिक्क वि [दे प्रतिरिक्त] १ शून्य, रहित (दे ६, ७१, से २, १५) । २ विशाल, विस्तीर्ण (दे ६, ७१) । ३ तुच्छ, हलका (से १, ५८) । ४ प्रचुर, विपुल (भोष २४६—पत्र १०३) । ५ नितान्त, अत्यन्त 'पइरिक्कनुहाए मणाणुकूलाए विहारभूमीए' (वप्प) । ६ न एकान्त स्थान, विजन स्थान, निर्जन जगह (दे ६, ७१, स २३५, ७५५, गा ८८, उप २६३) ।

पइल (अप) देखो पढम (पि ४४६) ।

पइल्लाइया लो [प्रतिलाटिका] हाथ के बल चलनेवाली सर्प की एक जाति (राज) ।

पइह पु [दे पदिक] १ ग्रह-विशेष, ग्रहाधिष्ठायक देव-विशेष (ठा २, ३) । २ रोग-विशेष, श्लेपद (पएह २, ५) ।

पइव पुं [प्रतिव] एक यादव का नाम (राज) ।

पइवरिस न [प्रतिवर्ष] हरएक वर्ष (पि २२०) ।

पइवाइ वि [प्रतिवादिन्] प्रतिवादी, प्रतिपक्षी (वित्ते २४८८) ।

पइविसिद्ध वि [प्रतिविशिष्ट] विशेष-युक्त, विशिष्ट (उवा) ।

पइविसेस पुं [प्रतिविशेष] विशेष, भेद, भिन्नता (वित्ते ५२) ।

पइस देखो पविस । पइसइ (भवि) । पइसति (दे १, ६४ टि) । कर्म. पइसिज्जइ (भवि) । वक्र. पइसंत (भवि) । कृ पइसियव्व (स २३४) ।

पइसमय न [प्रतिसमय] हर समय, प्रतिक्षण (पि २२०) ।

पइसर देखो पविस । पइसरइ (भवि) ।

धत्ती स्त्री [यात्री] १ धाई, वपमाता, दाई (स्वप्न १२२)। २ पृथिवी, भूमि। ३ ग्राम-लकी-वृक्ष, आंवले का पेड़ (हे २, ८१)। देखो धाई।

धत्तूर पुं [धत्तूर] १ वृक्ष-विशेष, धतूरा। २ न धतूरा का पुष्प (सुपा १२४)।

धत्तूरिअ वि [धात्तूरिक] जिसने धतूरा का नशा किया हो वह (सुपा १२४, १७६)।

धत्थ वि [ध्वस्त] ध्वस-प्राप्त, नष्ट, नाश हुआ (हे २, ७६, मण)।

धन्न देखो धण्ण = धन्य (कुमा, प्रासू ५३, ८४ १५५, उवा)।

धन्न न [धान्य] १ धान अनाज, अन्न (उवा, सुर १, ४६)। २ धान्य विशेष, 'कुलथ तह धन्नय कलाया' (पव १५६)। ३ धनिया (दसनि ६)। ४ कीट पुं [कीट] नाज में होनेवाला कीट, कीट-विशेष (जी १७)।

०णिहि पुत्री [निधि] धान रखने का घर, कोष्ठागार, भंडार (ठा ५, ३)। ०पत्थय पुं [प्रस्थक] धान का एक नाप (वव १)।

०पिडग न [पिटक] नाज का एक नाप (वव १)। ०पुजिय न [पुजितधान्य] इकट्ठा किया हुआ अनाज (ठा ४, ४)।

०विक्रियत्त न [विक्रियधान्य] विक्रीण अनाज (ठा ४, ४)। ०विरहिय न [विरहित-धान्य] वायु से इकट्ठा किया हुआ अनाज (ठा ४, ४)।

०सकटिद्धय न [संकटितधान्य] खेत में काटकर खले—खलिहान में लाया गया धान्य (ठा ४, ४)। ०गार न [गार] कोष्ठागार, धान रखने का गृह (निबू ८)।

धन्ना स्त्री [धान्य] अन्न, अनाज, 'सालिज-वाइयाआ धन्नाओ सव्वजाईओ' (उप ६८६ टी)।

धन्ना स्त्री [धन्ना] एक स्त्री का नाम (उवा)।

धम मक [धमा] १ धमना, धौकना, आग में तपाना। २ शब्द करना। ३ वायु पूरना। धमइ (महा)। धमेइ (कुप्र १४६)। वक्क धमन (निबू १)। कवक्क, धम्ममाग (उवा, राया १, ६)।

धमग वि [ध्मायक] धमनेवाला (श्रीप)।

धमण न [धमन] १ आग में तपाना (आचानि १, १, ७)। २ वायु-पूरण (पण्ह १, १)। ३ वि. भन्ना, धमनी, भाथी (राज)।

धमणि स्त्री [धमनि, नी] १ भन्ना, धमणी, धौकनी। २ नाडी, सिरा (विपा १, १, उवा, अत २७)।

धमधम अक [धमधमाय] 'धम-धम' आवाज करना, 'धमधमइ सिरं धणिय जायइ' (सुपा ६०३)। वक्क धमधमत, धमधमाअत, धमधमैन (सुपा ११४ नाट—मालती ११६, राया १, ८)।

धमास पु [धमास] वृक्ष-विशेष (पण्ह १७)।

धमिअ वि [ध्मात] जिसमें वायु भर दिया गया हो वह, 'धमिओ सखो' (कुप्र १४६)।

धमिय वि [ध्मात] आग में तपाया हुआ, 'धमियकणय फु काए हारविदं हुज्ज' (मोह ४७)।

धम्म पु [धर्म] १ एक देव-विमान (देवेन्द्र १४३)। २ एक दिन का उपवास (सवोव ५८)।

धम्म पुन [धर्म] १ शुभ कर्म, कुशल-जनक अनुष्ठान, सदाचार (ठा १, सम १, २, आचा, सूअ १, ६, प्रासू ५२, ११४, स ५७)। २ पुण्य सुकृत (सुर १, ५४, आव ४)। ३ स्वभाव, प्रकृति (निबू २०)। ४ गुण, पर्याय (ठा २, १)। ५ एक अरूपी पदार्थ, जो जीव को गति क्रिया में सहायता पहुँचाता है (नव ५)। ६ वर्तमान अवमपिणी काल में उत्पन्न पनहरवें जिन-देव (सम ४३, पडि)। ७ एक वणिक् (उप ७२८ टी)। ८ स्थिति, मर्यादा (आचू २)। ९ धनुष, कामुक (सुर १, ५४, पात्र)। १० एक जैन मुनि (कप्प)। ११ 'सूयकृताङ्ग' सूय का एक अव्ययन (सम ४२)। १२ आचार, रीति, व्यवहार (कप्प)। १३ उच्च पुं [पुत्र] शिष्य (प्राहू)। १४ उर न [पुर] नगर-विशेष (दस १)। १५ कखिअ वि [कखिअत] धर्म की चाहवाला (भग)। १६ कहा स्त्री [कथा] धर्म-सम्बन्धी बात (भग, सम १२०, राया २)। १७ कहि वि [कथिन्] धर्म कथा कहनेवाला, धर्म का उपदेशक (श्रीप ११५ भा, आ ६)। १८ कामय वि [कामक] धर्म की चाहवाला (भग)। १९ काय पुं [काय] धर्म का साधन-भूत शरीर (पचा १८)। २० कखाइ वि [कख्यायिन्] धर्म-प्रतिपादक (श्रीप)। २१ कखाइ वि

[कख्याति] धर्म से ख्यातिवाला, धर्मात्मा (श्रीप)। २२ गुरु पुं [गुरु] धर्म-दर्शक गुरु, धर्माचार्य (द्र १)। २३ गुव वि [गुप्] धर्म-रक्षक (पह)। २४ घोस पुं [घोष] कई-एक जैन मुनि और आचार्यों का नाम (भाचू १, ती ७, आव ४, भग ११, ११)। २५ चक्क न [चक्र] जिनदेव का धर्म-प्रकाशक चक्र (पव ४०, सुपा ६२)। २६ चक्कवट्टि पुं [चक्र-वर्तिन्] जिन-देव (आचू १)। २७ चक्कि पुं [चक्रिन्] जिन भगवान् (कुम्मा ३०)। २८ जणणी स्त्री [जननी] धर्म की प्राप्ति करानेवाली स्त्री, धर्म-देशिका (पंचा १६)। २९ जस पुं [यशस्] जैनमुनि-विशेष का नाम (आव ४)। ३० जागरिया स्त्री [जागर्या] १ धर्म-चिन्तन के लिए किया जाता जागरण (भग १२, १)। २ जन्म से छठवें दिन में किया जाता एक उत्सव (कप्प)। ३१ उम्माय पुं [ध्वज] १ धर्म-द्योतक ध्वज, इन्द्र-ध्वज (राय)। २ ऐरवत क्षेत्र के पाँचवें भावी जिन-देव (सम १५४)। ३ उम्माण न [ध्यान] धर्म-चिन्तन, शुभ ध्यान-विशेष (सम ६)। ४ उम्माणि वि [ध्यानिन्] धर्म ध्यान से युक्त (आव ४)। ५ ट्टि वि [धर्धिन] धर्म का अभिलाषी (सूअ १, २, २)। ६ णायग वि [नायक] १ धर्म का नेता (सन १, पडि)। ७ ण्णु वि [ज्ञ] धर्म का ज्ञाता (दस ४)। ८ नित्थयर पुं [तीर्थंकर] जिनभगवान् (उत्त २३, पडि)। ९ त्थ न [त्थ] अन्न-विशेष, एक प्रकार का हृषियार (पउम ७१, ६३)। १० त्थि देखो ट्टि (पचव ४)। ११ त्थिक्काय पुं [स्तिक्राय] गति-क्रिया में सहायता पहुँचाने वाला एक अरूपी पदार्थ (भग)। १२ दय वि [जय] धर्म की प्राप्ति करानेवाला, धर्म-देशक (भग)। १३ दार न [द्वार] धर्म का उपाय (ठा ४, ४)। १४ दार पुं व [दार] धर्म-पत्नी (कप्प)। १५ दास पुं [दास] भगवान् महावीर का एक शिष्य और उपदेशमाला का कर्ता (उव)। १६ दव पुं [दय] एक प्रसिद्ध जैन (आचार्य (साधं ७८)। १७ देसग, दस वि [देशक] धर्म का उपदेश करनेवाला (राज, भग, पडि)। १८ धुरा स्त्री [धुरा] धर्मरूप

(ठा २, ४, इक) । ४ गन्व द्रव्य-विशेष (श्रीप, जीव ३) । ५ सुधर्मा सभा का एक सिंहासन (गाथा २) । ६ दिन का नववाँ मुहूर्त (जो २) । ७ दक्षिण रुचक-पर्वत का एक शिखर (ठा ८) । ८ पु. राजा रामचन्द्र, सीता-पति (पडम १, ५, २५, ८) । ९ आठवाँ बलदेव, श्रीकृष्ण के बड़े भाई । १० इस अवसर्पिणीकाल में उत्पन्न नववाँ चक्रवर्ती राजा राजा पद्मोत्तर का पुत्र (पडम ५, १५३, १५४) । ११ एक राजा का नाम (उप ६४८ टी) । १२ मालव्य नामक पर्वत का अधिष्ठाता देव (ठा २, ३) । १३ भरतक्षेत्र में आगामी उत्सर्पिणी में उत्पन्न होनेवाला आठवाँ चक्रवर्ती राजा (सम १५४) । १४ भरत क्षेत्र का भावी आठवाँ बलदेव (सम १५४) । १५ चक्रवर्ती राजा का निधि, जो रोग-नाशक सुन्दर वृक्षों की पूर्ति करता है (उप ६८६ टी) । १६ राजा श्रेणिक का एक पौत्र (निर २, १) । १७ एक जैन मुनि का नाम (कप्प) । १८ एक हृद (कप्प) । १९ पद्म-वृक्ष का अधिष्ठाता देव (ठा २, ३) । २० महापद्म नामक जिनदेव के पास दीक्षा लेनेवाला एक राजा, एक भावी राजर्षि (ठा ८) । १. गुम्भ न [गुल्म] १ आठवें देव-लोक में स्थित एक देव-विमान का नाम (सम ३५) । २ प्रथम देवलोक में स्थित एक देव-विमान का नाम (महा) । ३ पु. राजा श्रेणिक का एक पौत्र (निर २, १) । ४ एक भावी राजर्षि, महापद्म नामक जिनदेव के पास दीक्षा लेनेवाला एक राजा (ठा ८) । ५ चरिय न [चरित] १ राजा रामचन्द्र की जीवनो—चरित्र । २ प्राकृत भाषा का एक प्राचीन ग्रन्थ, जैन रामायण (पडम ११८, १२१) । ६ णाभ पु [नाभ] १ वासुदेव, विष्णु (पडम ४०, १) २ आगामी उत्सर्पिणी-काल में भरतक्षेत्र में होनेवाला प्रथम जिन-देव का नाम (पव ४६) । ३ कपिल-वासुदेव के एक मारुडलिक राजा का नाम (गाथा १, १६—पत्र २१३) । ७ दल न [दल] कमल-पत्र (प्राकृ) । ८ दह पु [द्रह] विविध प्रकार के कमलो से परिपूर्ण एक महान् हृद का नाम (सम १०४, कप्प, पडम १०२,

३०) । ९ द्वय पु [ध्वज] एक भावी राजर्षि, जो महापद्म नामक जिनदेव के पास दीक्षा लेगा (ठा ८) । १० नाह देखो १ णाभ (उप ६४८ टी) । ११ पुर न [पुर] एक दक्षिणात्य नगर, जो आजकल 'नासिक' नाम से प्रसिद्ध है (राज) । १२ प्पभ पु [प्रभ] इस अव-सर्पिणी काल में उत्पन्न पष्ठ जिन-देव का नाम (कप्प) । १३ प्पभा स्त्री [प्रभा] एक पुष्करिणी का नाम (इक) । १४ प्पह देखो १ प्पभ (ठा ५, १, सम ४३, पडि) । १५ भद्र पु [भद्र] राजा श्रेणिक का एक पौत्र (निर २, १) । १६ मालि पु [मालिन्] विद्याधर-वश के एक राजा का नाम (पडम ५, ४२) । १७ मुह देखो पडमाणण (पड्) । १८ रह पु [रथ] १ विद्याधर-वश का एक राजा (पडम ५, ४३) । २ मथुरा नगरी के राजा जयसेन का पुत्र (महा) । १९ राय पु [राग] रक्त-वर्ण मणि-विशेष (१३६, १६६) । २० राय पु [राज] घातकीन्वण्ड की अपर-कका नगरी का एक राजा, जिसने द्रौपदी का अपहरण किया था (ठा १०) । २१ स्तस्व पु [वृक्ष] १ उत्तर-कुक्षेत्र में स्थित एक वृक्ष (ठा २, ३) । २ वृक्ष सदृश बड़ा कमल (जीव ३) । ३ लत्या स्त्री [लता] १ कमलिनी, पद्मिनी (जीव ३, भग, कप्प) । २ कमल के आकारवाली बल्ली (गाथा १, १) । ४ वडिसय, ५ वडेंसय न [वितसक] पद्मावती देवी का सौधर्म नामक देवलोक में स्थित एक विमान (राज, गाथा २—पत्र २५३) । ६ वरवेइया स्त्री [वरवेदिना] १ कमलो की श्रेष्ठ वेदिका (भग) ३ जम्बू द्वीप की जगती के ऊपर रही हुई देवी की एक भोग-भूमि (जीव ३) । ७ वूह पु [व्यूह] मैथ्य की पद्माकार रचना (पह १, ३) । ८ सग पु [सरस्] कमलो से युक्त सरोवर (गाथा १, १, कप्प, महा) । ९ सिरि स्त्री [श्री] १ अष्टम चक्र-वर्ती सुभूमराज की पटरानी (सम १५२) । २ एक स्त्री का नाम (कुमा) । ३ सेण पु [सेन] १ राजा श्रेणिक के एक पौत्र का नाम, जिसने भगवान् महावीर के पास दीक्षा ली थी (निर १, २) । २ नागकुमार-जातीय एक देव का नाम (दीव) । ३ सेहर पु

[जेरर] पृथ्वीपुर नगर के एक राजा का नाम (धम्म ७) । ४ णार पु [णार] १ कमलो का मूह । २ सरोवर (उप १३३ टी) । ३ सण न [सन] पद्माकार आसन (ज १) ।

पडमग पुन [पद्मरु] केसर (दस ६, ६४) ।

पडमप्पह पु [पद्मप्रभ] विक्रम की तेरहवीं शताब्दी का एक जैन आचार्य (विषा ३) ।

पडमा स्त्री [पद्मा] १ लक्ष्मी । २ देवी-विशेष । ३ लंग, लवंग । ४ पुष्प-विशेष, कुमुम्भ-पुष्प (प्राकृ २८) ।

पडमा स्त्री [पद्मा] १ वीमवें तीर्थंकर श्री मुनिमुव्रतस्वामी की माता का नाम (सम १५१) । २ सौधर्म देवलोक के इन्द्र की एक पटरानी का नाम (ठा ८—पत्र ४२६, पडम १०२, १५६) । ३ भीम नामक राजसेन्द्र की एक पटरानी (ठा ४, १—पत्र २०४) । ४ एक विद्याधर कन्या का नाम (पडम ६, २४) । ५ रावण की एक पत्नी (पडम ७४, १०) । ६ लक्ष्मी (राज) । ७ वनस्पति-विशेष (परण १—पत्र ३६) । ८ चौदहवें तीर्थंकर श्रीअनन्तनाथ की मुख्य शिष्या का नाम (पव ६) । ९ सुदर्शना-जम्बू की उत्तर दिशा में स्थित एक पुष्करिणी (इक) । १० दूसरे बलदेव और वासुदेव की माता का नाम । ११ लेश्या-विशेष (राज) ।

पडमाड पुं [दे] वृक्ष विशेष, पमाड का पेड़ चकवड (दे ५, ५) ।

पडमाणण पुं [पद्मानन] एक राजा का नाम (उप १०३१ टी) ।

पडमाभ पुं [पद्माभ] पष्ठ तीर्थंकर का नाम (पडम १, २) ।

पडमार [दे] देखो पडमाड (दे ५ ५ टि) ।

पडमावई स्त्री [पद्मावती] १ जम्बूद्वीप के सुमेरु पर्वत के पूर्व तरफ के रुचक पर्वत पर रहनेवाली एक दिक्कुमारी-देवी (ठा ८) । २ भगवान् पार्श्वनाथ की शासन-देवी, जो नाग-राज धरणेन्द्र की पटरानी है (सति १०) । ३ श्रीकृष्ण की एक पत्नी का नाम (अत १५) । ४ भीम-नामक राजसेन्द्र की एक पटरानी (भग १०, ५) । ५ शक्रेन्द्र की एक

धरगा पुं [दे] कपास (दे ५, ५८) ।

धरण पु [वरण] १ नाग-कुमार देवों का दक्षिण दिशा का इन्द्र (ठा २, ३, औप) । २ यदुवशीय राजा अन्वक-वृष्णि का एक पुत्र (अत ३) । ३ श्रेष्ठि-विशेष (उप ७२८ टी, सुपा ५५६) । ४ न. धारण करना (से ३, ३, सार्ध ६, वजा ४८) । ५ सोलह तोले का एक परिमाण (जो २) । ६ धरना देना, लंघन-पूर्वक उपवेशन (पव ३८) । ७ सोलहने का साधन (जो २) । ८ वि धारण करनेवाला (कुमा) । ९ पप्रभ पुं [प्रभ] धरणेन्द्र का उत्पात-पर्वत (ठा १०) ।

धरणा स्त्री [धरणा] देखो धारणा (एदि) ।

धरणि स्त्री [वरणि] १ भूमि, पृथिवी (औप, कुमा) । २ भगवान् भरनाथ की शासन-देवी (संति १०) । ३ भगवान् वासुपूज्य की प्रथम शिष्या (सम १५२, पव ६) । ४ स्त्रील पुं [कील] मेरु पर्वत (सुज ५) । ५ चर पुं [चर] मनुष्य (पठम १०१, ४७) । ६ धर पु [धर] १ पर्वत, पहाड़ (अजि १७) । २ अयोध्या नगरी का एक सूर्य-वंशीय राजा (पठम ५, ५०) । ३ धरप्पवर पुं [धरप्पवर] मेरु पर्वत (अजि १५) । ४ धरवइ पुं [धर-पति] मेरु पर्वत (अजि १७) । ५ धरा स्त्री [वरा] भगवान् विमलनाथ की प्रथम शिष्या (सम १५२) । ६ यल न [तल] भूमि-तल, भू-तल (गाया १, २) । ७ वइ पु [पति] भू-पति, राजा (सुपा ३३४) । ८ वट्ट न [पृष्ठ] मही-पीठ, भूमि-तल (महा) । हर देखो धर (से ६, ३६) ।

धरणिंद पु [धरणेन्द्र] नाग-कुमारो की दक्षिण दिशा का इन्द्र (पठम ५, ३८) ।

धरणिंसिग पु [वरणिशृङ्ग] मेरु पर्वत (सुज ५) ।

धरणी देखा धरणि (प्रासू २३, पि ५३, से २, २४, कुप्र २२) ।

धरा स्त्री [धरा] पृथिवी, भूमि (गड्ड, सुपा २०१) । १ धर, २ हर पुं [धर] पर्वत, पहाड़ (से ६, ७६, ३८, स २६६, ७०३, उप ७६८ टी) ।

धराधीस पु [धराधीश] राजा (मोह ४३) ।

धराविअ वि [धारित] पकड़ा हुआ (स २०६, सुपा ३२५, ससि ३४) । २ स्थापित, 'धराविअ मडय' (कुप्र १४०) ।

धरिअ वि [धृत] १ धारण किया हुआ (गा १०१, सुपा १२२) । २ रोका हुआ (म २०६) ।

धरिज्जत } देखो धर = धृ ।
धरिज्जमाण }

धरिणी स्त्री [धरिणी] पृथिवी, भूमि (पाप्र) ।

धरिन्ती स्त्री [धरिन्ती] पृथिवी, भूमि (श्रु १२७, सम्पत्त २२६) ।

धरिम न [धरिम] १ जो तराजू में तौल कर बेचा जाय वह (आ १८, गाया १, ८) । २ ऋण, करजा (गाया १, १) । ३ एक तरह की नाप, तौल (जो २) ।

धरियव्व देखो धर = धृ ।

धरिस अक [धृप्] १ सहित होना, एकत्रित होना । २ प्रगल्भता करना, ढीठाई करना । ३ मिलना, सबद्ध होना । ४ सक हिसा करना, मारना । ५ अमर्प करना, सहन नहीं करना । धरिसइ (राज) ।

धरिस सक [वर्पय] क्षुब्ध करना, विचलित करना । धरिसइ (उत्त ३२, १२) ।

धरिसण न [धर्पण] १ परिभव, अभिभव । २ सहति, समूह । ३ अमर्प, असहिष्णुता । ४ हिसा, ५ वन्धन, योजन (निबू १, राज) । ६ प्रगल्भता, घृष्टता, ढीठाई (औप) ।

धरेंत देखो धर = धृ ।

वव पुं [धव] १ पति, स्वामी (गाया १, १, वव ७) । २ वृक्ष-विशेष (परण १, उप १०३१ टी, औप) ।

धवक अक [दे] धडकना, भय से व्याकुल होना, धुकधुकाना । धवकइ (सण) ।

धवक्किय वि [दे] धडका हुआ, भयसे व्याकुल बना हुआ (सण) ।

धवण न [धावन] धौन, चावल आदि का धावन-जल (सूक्त ८८) ।

धवल पु [दे] स्व-जाति में उत्तम (दे ५, ५७) ।

धवल न [ववल] लगातार सोलह दिन का उपवास (संबोध ५८) ।

धवल वि [धवल] १ सफेद, श्वेत (पाप्र, सुपा २८५) । २ पुं. उत्तम वैल (गा ६३८) । ३ पुं. छन्द-विशेष (पिंग) । ४ गिरि पुं [गिरि] कैलास पर्वत (ती ४६) । ५ गेह न [गेह] प्रासाद, महल (कुमा) । ६ चंद पु [चन्द्र] एक जैन मुनि (दं ४७) । ७ रव पु [रव] मंगलगीत (सुपा २६५) । ८ हर न [गृह] प्रासाद, महल (आ १२, महा) ।

धवल सक [धवल्य] सफेद करना । धवलइ (पि ५५७) । कवक धवलज्जत (गड्ड) । धवलक न [धवलक] ग्राम-विशेष, जो आजकल 'धोलका' नाम से गुजरात में प्रसिद्ध है (ती ३) ।

धवलण न [धवलन] सफेद करना, श्वेतीकरण (कुमा) ।

धवलसण पुं [दे] हस (दे ५, ५६, पाप्र) ।

धवला स्त्री [धवला] गौ, गैया (गा ६३८) ।

धवलाअ अक [धवलाय] सफेद होना । धवलाअत (गा ६) ।

धवलाइअ वि [धवलायित] १ उत्तम बल की तरह जिसने कार्य किया हो वह । २ न. उत्तम वृषभ की तरह आचरण (सार्ध ६) ।

धवलिम पुत्री [ववलिमन्] सफेदपन, शुक्लता, सफेदी (सुपा ७४) ।

धवलिय वि [धवलित] सफेद किया हुआ (भवि) ।

धवली स्त्री [धवली] उत्तम गौ, श्रेष्ठ गैया (गड्ड) ।

धव्व पु [दे] वेग (दे ५, ५७) ।

धस अक [धस्] १ धसना । २ नीचे जाना । ३ प्रवेश करना । धसइ, धसउ (पिंग) ।

धस पुं [धस्] 'धस्' ऐसा आवाज, गिरने की आवाज, 'धसत्ति महिमडले पडिओ' (महा, गाया १, १—पत्र ४७) ।

धसक पुं [दे] हृदय की धवराहट की आवाज, गुजराती में 'धासको', 'तो जायहिभवसका' (आ १४, कुप्र ४३५) ।

धसक्किय वि [दे] खूब धवड़ाया हुआ (आ १४) ।

धसल वि [दे] विस्तोर्ण, फैला हुआ (दे ५, ५८) ।

पओग पुं [प्रयोग] १ शब्द-योजना (भास ६३)। २ जीव का व्यापार, चेतन का प्रयत्न, 'उष्पाओ दुविगणो पओगजणिओ य विस्सो चैव' (सम २५, ठा ३, १, मम्म १२६, म ५२४)। ३ प्रेरणा (आ १४)। ४ उपाय (आच १)। ५ जीव के प्रयत्न में कारण-भूत मन आदि (ठा ३, ३)। ६ वाद-विवाद, शास्त्रार्थ (दसा ४)। °कम्म न [°कर्मन्] मन आदि की चेष्टा से आत्म-प्रदेशो के साथ बँधनेवाला कर्म (राज)। °करण न [°करण] जीव के व्यापार द्वारा होनेवाला किंती वस्तु का निर्माण, 'होइ उ एगो जीववावरो तेण ज विणम्मण पओगकरण तय बहुहो' (विसे)। °किरिया ओ [°क्रिया] मन आदि की चेष्टा (ठा ३, ३)। °फड्डय न [°स्पर्धक] मन आदि के व्यापार-स्थान की वृद्धि द्वारा कर्म-परमाणुओ में बढ़नेवाला रस (कम्मप २३)। °वघ पु [°वन्ध] जीव-प्रयत्न द्वारा होनेवाला बन्धन (भग १८, ३)। °मइ ओ [°मति] वाद-विषयक-परिज्ञान (दसा ४)। °सपया ओ [°संपत्] आचार्य का वाद-विषयक सामर्थ्य (ठा ८)। °सा अ [प्रयोगेण] जीव-प्रयत्न से (पि ३६४)।

पओज देखो पउज = प्र + युज्। पओजए (पव ६४)।

पओजग वि [प्रयोजक] विनिश्चायक, निर्णायक, गमक (धर्मस १२२३)।

पओट्ट देखो पउट्ट = प्रकोष्ठ (प्राप्र, औप, पि ८४)।

पओत्त न [प्रतोत्त] प्रतोद, प्राजन-यष्टि, पेना। °वर पु [°धर] दैलगाडी होकनेवाला, वहल-वान या गाडीवान (गाया १, १)।

पओद पु [प्रतोद] ऊपर देखो (औप)।

पओप्पय पु [प्रपौत्रक] १ प्रपौत्र, पौत्र का पुत्र। २ प्रशिष्य का शिष्य, 'तेण कालेण तेण समएण विमलस्म अरहओ पओप्पए वम्मघासे नाम अणगारे' (भग ११, ११—पत्र ५४८)।

पओप्पिय पुं [दे प्रपौत्रिक] १ वंश-परम्परा। २ शिष्य-सत्ति, शिष्य-सत्तान (भग ११, ११—पत्र ५४८ टी)।

पओरासि पुं [पयोराशि] नमुद्र (सम्मत्त १७४)।

पओल पु [पटोल] पटोल, परवर, परोरा (पण १)।

पओली ओ [प्रतोली] १ नगर के भीतर का रास्ता (अणु)। २ नगर का दरवाजा, 'गोउर पओली य' (पाप्र, सुपा २६१, आ १२, उप पृ ८५, भवि)।

पओवट्टाव देखो पज्जत्तयाव। पओवट्टावेहि (पि २८४)।

पओवाह पु [पगोवाह] मेघ बादल (पउम ८, ४६, से १, २८, मुर २, ८५)।

पओस सक [प्र + द्विप्] द्वेप करना, बैर करना। पओमइ (मुत्त १, १४)।

पओस पु [दे प्रद्वेप] प्रद्वेप, प्रकृष्ट द्वेप (ठा १०, अंत, राय, आव ४, मुर १५, ५८, पुष्प ४६५, कम्म १, महानि ४, कुप्र १०, स ६६६)।

पओस पुंन [प्रदोष] १ सन्ध्याकाल, दिन और रात्रि का सन्धि-काल (म १, ३४, कुमा)। २ वि प्रभूत दोषो से युक्त (से २, ११)।

पओहण (अप) देखो पवहण (भवि)।

पओहर पुं [पयोधर] १ स्तन, धन (पाप्र, से १, २८, गउड, मुर २, ८५)। २ मेघ, बादल (वजा १००)। ३ छन्द-विशेष (पिग)।

पक पुन [पक्क] १ कर्म, कीचट, कादा, कादो, कीच, 'धम्ममितपि नो लग्ग पकव गयणगणे' (आ २८, हे १, ३०, ४, ३५७, प्रासू २५), 'सुसइ व पक' (वजा १३४)। २ पाप (सूअ २, २)। ३ असयम, इन्द्रिय वगैरह का अतिग्रह (निच् १)। °आवलिआ ओ [°वलिका] छन्द-विशेष (पिग)। °प्पभा ओ [°प्रभा] चौथी नरक-भूमि (ठा ७, इक)। °वहुल वि [°वहुल] १ कर्म-प्रचुर (सम ६०)। २ पाप-प्रचुर (सूअ २, २)। ३ पुन-रत्तप्रभा नामक नरक-भूमि का प्रथम काण्ड (जीव ३)। °य न [°ज] कमल, पद्म (हे ३, २६, गउड, कुमा)। °वई ओ [°वती] नदी-विशेष (ठा २, ३—पत्र ८०)।

पकज देखो पंक-य (सम्मत्त ११८)।

पंका ओ [पट्टा] चौथी नरक-भूमि (इक, कम्म ३, ५)।

पकाभा ओ [पट्टाभा] चौथी नरक-भूमि (उत्त ३६, १५८)।

पंकावई ओ [पट्टावती] पुष्कल नामक विजय के पश्चिम तरफ की एक नदी (इक, ज ४)।

पंकिय वि [पट्टित] पक-युक्त, कीचवाला (भग ६, ३, भवि)।

पंकिल वि [पट्टिल] कर्मवाला (आ २८, गा ७६६, कप्पू, कुप्र १८७)।

पकेरुह न [पट्टेरुह] कमल, पद्म (कप्पू, कुप्र १४१)।

पख पुंओ [पक्ष] १ पक्ष, पालि, पाल, पक्ष (पि ७४, राय, पउम ११, ११८, आ १८)।

२ पनरह दिन, पखवाढा (राज)। °सण न [°सन] ग्रामन विशेष (राय)।

पखि पुंओ [पक्षिन्] पक्षी, चिडिया, पक्षी (आ १४)। ओ °णी (पि ७४)।

पंखुडिआ } ओ [दे] पख, पत्र (कुप्र २६, पखुडी } दे ६, ८)।

पंग मक [प्रह्] ग्रहण करना। पगइ (हे ४, ४०६)।

पगण न [प्राङ्गण] आंगन (कुप्र २५०)।

पगु वि [पङ्गु] पाद विकल, खड्ग, लंगडा, लूला, खोडा (पाप्र, पि ३८०, पिग)।

पगुर सक [प्रा + वृ] ढकना, आच्छादन करना। पगुरइ (भवि)। सक पगुरिनि (भवि)।

पगुरण न [प्रावरण] वस्त्र, कपडा (हे १, १७५, कुमा, गा ७८२)।

पगुल वि [पङ्गुल] देखो पगु (विपा १ १, स ७५, पाप्र)।

पच नि व [पच्चन्] पांच, ५ (हे ३ १२३, कप्प, कुमा)। °उल न [°कुल] पंचायत (म २२२)। °उलिय पुं [°कुलिक] पंचायत में बैठ कर विचार करनेवाला (स २२२)। °कत्तिय पुं [°कृत्तिक] भगवान् कुन्धुनाय, जिनके पाँचों कल्याणक कृतिका नक्षत्र में हुए थे (ठा ५, १)। °कप्प पु [°कल्प] श्रीमद्रवाहुस्वामि-कृत प्राचीन ग्रन्थ का नाम (पचभा)। °कल्लणय न [°कल्याणक] १ तीर्थकर का च्यवन, जन्म, दीक्षा,

धारा स्त्री [दे] रण-मुख, रण-भूमि का अग्रभाग (दे ५, ५६)।
 धारा स्त्री [धारा] १ अन्न के आगे का भाग, धार (गड्ड, प्रासू ६२)। २ प्रवाह, राली (महा)। ३ अश्व की गति-विशेष (कुमा, महा)। ४ जल धारा, पानी की वाह। ५ वर्षा, वृष्टि। ६ द्रव पदार्थों का प्रवाह रूप से पतन (गड्ड)। ७ एक राज-पत्नी (आवम)।
 °कयव पु [°कदम्ब] कदम्ब की एक जाति, जो वर्षा ने फलती-फूलती है (कुमा)।
 °धर पु [°धर] मेघ (सुपा २०१)। °वारि न [°वारि] धारा से गिरता जल (भग १३६)। °धारिय वि [°धारिक] जहाँ धारा ने पानी गिरता हो वह (भग १३, ६)। °ह्य वि [°हत] वर्षा से सिक्त (कप्प)। °हर देखो °धर (सुर १३, १६५)।
 धारा स्त्री [धारा] मालव देश की एक नगरी (मोह ८८)।
 धारावास पु [दे] १ भेक, भेडक, बेंग (दे ५, ६३, पड्)। २ मेघ (दे ५, ६३)।
 धारि वि [धारिन्] धारण करनेवाला (श्रौप, कप्प)।
 धारित देखो धार = धारय्।
 धारिट्ट न [धाट्टर्थ] धृष्टता, उद्वेगता, गर्व, साहस (आख्या० म० कोश० अ० २३ भावटीका कथा पद्य ५२६)।
 धारिणी देखो धारणी (श्रौप)।
 धारित्तए देखो धार = धारय्।
 धारिय वि [धारित] धारण किया हुआ (भवि, आचा)।
 धारी देखो धत्ती (हे २, ८१)।
 धारी देखो धारा (कुमा)।
 धारेत्तए } देखो धार = धारय्।
 धारेयन्व }

धाव सक [वाव] १ दौटना। २ शुद्ध करना, बोना। धावइ (हे ४, २२८, २३८)। वक्र धावन्त, धावमाण (प्रासू ८४, महा, कप्प)। संक्र. धाविऊण (महा)।
 धावण न [धावन] १ वेग से गमन, दौटना। (सूत्र १, ७)। २ प्रक्षालन, धोना, (कुप्र १६४)।

धावणय पु [धावनक] दोहते हुए समाचार पहुँचाने का काम करनेवाला, हरकारा, सदेसिया (सुपा १०५, २६५)।
 धावणया स्त्री [धान] स्तन-पान करना (उप, ८३३)।
 धावमाण देखो धाव।
 धाविअ वि [धाविन] दौड़ा हुआ (भवि)।
 वाविर वि [धावित्] दौड़नेवाला (सण, सुपा ५४)।
 धावी देखो वाई = वात्री (उप १३६ टी, न ६६, सुर २, ११२, १६, ६८)।
 धाहा स्त्री [दे] बाह, पुकार, चिल्लाहट (पउम ५३, ८८ सुपा ३१७, ३४०)।
 धाहाविय न [दे] बाह, पुकार, चिल्लाहट (स ३७०, सुपा ३८०, ४६६, महा)।
 धाहिय वि [दे] पलायित, भागा हुआ (धम्म ११ टी)।
 धि अ [धिक्] धिक्कार, छो (रभा)।
 धिइ स्त्री [धृति] १ धैर्य, धीरज (सूत्र १, ८, पड्)। २ धारण (आवम)। ३ धारणा, ज्ञात विषय का अविस्मरण (विसे)। ४ धरण, अवलोकन (सूत्र १, ११)। ५ अहिंसा (पण्ड २, १)। ६ धैर्य की अधिष्ठायिका देवी। ७ देवी की प्रतिमा-विशेष (राज, णाया १, १ टी—पत्र ४३)। ८ तिगिच्छि-ब्रह्म की अधिष्ठायिका देवी (इक, ठा २३)।
 °कूड न [°कूट] धृति-देवी का अधिष्ठित शिखर-विशेष (ज ४)। °धर पु [°धर] १ एक अन्तर्कूट महर्षि। २ 'अतगड-दसा' सूत्र का एक अव्ययन (अत १८)। °म, °मंत वि [°मन्] धीरजवाला (ठा ८, पण्ड २, ४)।
 धिइ स्त्री [धृति] तैला, लगातार तीन दिन का उपवास (सरोध्र ५८)।
 धिक्कय वि [धिक्कृत] १ धिक्कारा हुआ (वव १)। २ न धिक्कार, तिरस्कार (वह ६)।
 धिक्करण न [धिक्करण] तिरस्कार, धिक्कार (णाया १, १६)।
 धिक्करिअ वि [धिक्कृत] धिक्कारा हुआ (कुप्र १५७)।

धिक्कार पु [धिक्कार] १ धिक्कार, तिरस्कार (पण्ड १, ३, द्र २६)। २ युगलिक मनुष्यों के समय की एक दरज-नीति (ठा ७—पत्र ३६८)।
 धिक्कार सक [धिक् + कारय्] धिक्कारना, तिरस्कार करना। कवक धिक्कारिजमाण (पि ५६३)।
 धिज्ज न [धैर्य] धीरज, धृति (हे २, ६४)।
 धिज्ज वि [धैर्य] धारण करने योग्य (णाया १, १)।
 धिज्ज वि [धैर्य] ध्यान योग्य, चिन्तनीय (णाया १, १)।
 धिज्जाइ पु स्त्री [द्विजाति, विगजाति] ब्राह्मण, विप्र। स्त्री. 'तत्थ भद्दा नाम धिज्जाइणी' (आवम)।
 धिज्जाइय पु स्त्री [द्विजातिक, धिगजा-धिज्जाइय] नैय ब्राह्मण, विप्र (महा, उप १२६, आव ३)।
 धिज्जाधिय न [धिग्जीवित] निन्दनीय जीवन (सूत्र २, २)।
 धिट्ट वि [धृष्ट] ढोठ, प्रगल्भ। २ निलज्ज, बेशरम (हे १, १३०, सुर २, ६, गा ६२७, आ १४)।
 धिट्टजुण्ण देखो धट्टजुण्ण (पि २७८)।
 धिट्टिम पु स्त्री [धृष्टत्व] धृष्टता, ढोठाई (सुपा १२०)।
 धिट्ठी अ [धिक् धिक्] छो छो (उव, धिवी } व ६१, रभा)।
 धिप्प अक [दीप्] दीपना, चमकना। धिप्पइ (हे १, २२३)।
 धिप्पिर वि [दीप्] देदीप्यमान, चमकीला (कुमा)।
 धिय अ [धिक्] धिक्कार, छो, 'वेइ गिरं धिय म्मडिय' (उप ६३४)।
 धिरत्थु अ [धिगस्तु] धिक्कार हो (णाया १, १६, महा, प्रासू)।
 धिसण पु [धिपण] बृहस्पति, मुर-गुह (पाम)।
 धिसि अ [धिक्] धिक्कार, छो (सुपा ३६५, सण)।
 धी देखो धीआ, 'ज मगल कुंमनिवस्स धीए मल्लीइ राईसरवदि आए' (मगल १२, २०)।

पंचगुलिआ ली [पञ्चाङ्गुलिका] वल्ली-विशेष (परण १—पत्र ३३) ।

पंचग वि [पञ्चक] पाँच (रुपया आदि) की कीमत का (दमनि ३, १३) ।

पंचग न [पञ्चक] पाँच का समूह (आचा) ।

पंचजण पुं [पाञ्चजन्य] श्रीकृष्ण का शस्त्र (काप्र ८६२, गा ६७४) ।

पंचत्त न [पञ्चत्व] १ पाँचपन, पञ्च-पंचत्तण स्था (सुर १, ५) । २ मरण, मौत (सुर १, ५, सण, उप पु १२४) ।

पचपुड वि [पञ्चपुण्ड्र] पाँच स्थानों में पुरण्ड-चिह्न (सफेदी) वाला (पिंड भा ४३) ।

पंचपुल पुन [दे] मत्स्य-वन्दन विशेष, मछली पकड़ने का जाल-विशेष (विपा १, ८—पत्र ८५ टी) ।

पचम वि [पञ्चम] १ पाँचवाँ (उवा) । २ पु. स्वर-विशेष (ठा ७) । ३ धारा ली [धारा] अश्व की एक तरह की गति (महा) ।

पंचमहभूइअ वि [पाञ्चमहाभूतिक] पाँच महाभूतों को माननेवाला, साध्यमत का अनुयायी (सूत्र २, १, २०) ।

पंचमासिअ वि [पाञ्चमासिक] १ पाँच मास की उन्न का । २ पाँच मास में पूर्ण होनेवाला (अभिग्रह आदि) । ली. °आ (सम २१) ।

पचमिय वि [पाञ्चमिक] पाँचवाँ, पचम (ओघ ६१) ।

पचमी ली [पञ्चमी] १ पाँचवी (ग्रामा) । २ तिथि-विशेष, पचमी तिथि (सम २६, आ २८) । ३ व्याकरण-प्रसिद्ध अपादान विभक्ति (अणु) ।

पंचयन्न देखो पञ्चजण (राया १, १६, सुपा २६४) ।

पंचलोइया ली [पञ्चलौकिका] भुजपरिसर्प-विशेष, हाथ से चलनेवाले सर्प-जातीय प्राणी की एक जाति (जीव २) ।

पंचवडी ली [पञ्चवटी] पाँच वट-वृक्षवाला एक स्थान, जहाँ श्रीरामचन्द्रजी ने अपने वनवास के समय आवास किया था, इस स्थान का अस्तित्व कई लोग 'नासिक' नगर के

पास गोदावरी नदी के किनारे मानते हैं, जब कि आधुनिक गवेषक लोग वस्तर रजवाड़े के दक्षिणी छोर पर, गोदावरी के किनारे, इसका होना सिद्ध करते हैं (उत्तर ८१) ।

पंचवयण पुं [पञ्चवदन] सिंह, मृगराज (सम्मत १३८) ।

पचामय न [पञ्चामृत] ये पाँच वस्तु—दही, दूध, घी, मधु तथा शक्कर (सिरि २१८) ।

पंचाल पुं [पाञ्चाल] कामशास्त्र-प्रणेता एक ऋषि (सम्मत १३७) ।

पञ्चाल पुं. व [पञ्चाल, पाञ्चाल] १ देश-विशेष, पञ्जाब देश (राया १, ८, महा, परण १) । २ पुं. पञ्जाब देश का राजा (भवि) । ३ छन्द-विशेष (पिंग) ।

पंचालिआ ली [पञ्चालिका] पुतली, काष्ठादि-निर्मित छोटी प्रतिमा (कप्पु) ।

पंचालिआ ली [पाञ्चालिका] १ वृषद-राज की कन्या, द्रौपदी (वेणी १५८) । २ गान का एक भेद (कप्पु) ।

पंचावण } लीन [दे. पञ्चपञ्चाशत्] १ पंचावन्न } सख्या-विशेष, पचपन, ५५ । २ जिनकी सख्या पचपन होवे (हे २, १७४, दे २, २७, दे २, २७ टि) ।

पचावन्न वि [दे. पञ्चवञ्चाश] पचपनवाँ (पउम ५५, ६१) ।

पचिंदिय } वि [पञ्चेन्द्रिय] १ वह जीव पचिंद्रिय } जिसको त्वचा, जीभ, नाक, श्रोत्र और कान ये पाँचो इन्द्रियाँ हो (परण १, कप्प, जीव १, भवि) । २ न. त्वचा आदि पाँच इन्द्रियाँ (धर्म ३) ।

पंचिया ली [पञ्चिका] १ पाँच की संख्या-वाला । २ पाँच दिन का (वव १) ।

पंचुबर लीन [पञ्चोदुम्बर] वट, पीपल, उदुम्बर, प्लक्ष और काकोदुम्बरी का फल (भवि) । ली. °री (आ २०) ।

पचुत्तरसय वि [पञ्चोत्तरशततम] एक सौ पाँचवाँ, १०५ वाँ (पउम १०५, ११५) ।

पचेडिय वि [दे] विनाशित, 'जेण लोयस्स लोहत्तरं फेडियं दुट्ठकंदप्पदप्पं च पचेडियं' (भवि) ।

पंचेसु पुं [पञ्चेषु] कामदेव, कंदर्प (कप्पु, रंगा) ।

पछि पु [पक्षिन्] पछी, पछो, पखेरू, चिड़िया (उप १०३१ टी) ।

पंजर पुन [पञ्जर] १ आचार्य, उपाध्याय, प्रवर्तक आदि मुनि-गण । २ उन्मार्ग-गमन-निषेध, सन्मार्ग-प्रवर्तन । ३ स्वच्छन्दता-प्रति-पेव (वव १) ।

पजर न [पञ्जर] पिजरा, पिजड़ा (गठ, कप्पु, अचु २) ।

पजरिअ पु [दे] जहाज का कर्मचारी-विशेष (सिरि ४२७) ।

पंजरिय वि [पञ्जरित] पिजरे में बंद किया हुआ (गठ) ।

पंजल वि [प्राञ्जल] सरन, सीधा, ऋतु (सुपा ३६४, वजा ३०) ।

पञ्जलि पुंली [प्राञ्जलि] प्रमाण करने के लिए जोड़ा हुआ कर-सपुट, हस्त न्यास-विशेष, सयुक्त कर-द्वय (उवा) । °उड पुं [पुट] अञ्जलि-पुट, सयुक्त कर-द्वय (सम १५१, श्रौप) । °उड, °कड वि [कृतप्राञ्जलि] जिसने प्रणाम के लिए हाथ जोड़ा हो वह (भग, श्रौप) ।

पंजिअ न [दे] यथेच्छ दान, मुँह-मांगा दान; 'रायकुलेषु भमंतो पजिअदाण पगिएहेइ' (सिरि ११८) ।

पंड वि [पाण्ड्य] देश-विशेष में उत्पन्न । ली. °डी, 'पंडीणं गडवालीपुलमणचवला' (कप्पु) ।

पंड } पुं [पण्ड, °क] १ नपुंसक, क्लृप्त पंडग } (श्रौष ४६७, सम १५, पाप्म) । २ पंडय } न. मेरु पर्वत का एक वन (ठा २, ३, इक) ।

पंडय देखो पंडव (हे १, ७०) ।

पंडर पु [पाण्डर] १ क्षीरवर नामक द्वीप का अधिष्ठाता देव (राज) । २ श्वेत वर्ण, सफेद रंग । ३ वि. श्वेतवर्णवाला, सफेद (कप्पु) । °भिक्खु पुं [भिक्षु] श्वेताम्बर जैन सप्रदाय का मुनि (स ५५२) ।

पंडर देखो पंडुर (स्वप्न ७१) ।

पंडरंग पुं [दे] रुद्र, महादेव, शिव (दे ६, २३) ।

पंडरंगु पुं [दे] ग्रामेश, गाँव का अधिपति (षड्) ।

पंढरिय देखो पंढुरिअ (भवि) ।

धुत्तीरय न [धत्तूरक] धतूरे का पुष्प (वज्रा १०६)।

धुद्धुअ (अप) अक [शब्दाय्] आवाज करना। धुद्धुअइ (हे ४, ३६५)।

धुप्प देखो धिप्प। धुप्पइ (प्राकृ ७०)।

धुम्म पु [धूम] १ धूम, धुमा। २ वर्ण-विशेष, कपोत-वर्ण। ३ वि कपोत वर्ण-वाला। °क्ख पु [°क्ष] एक राक्षस (मे १२, ६०)।

धुर न देखो धुरा (उप पृ ६३)।

धुर पुं [धुर] १ ज्योतिष्क ग्रह-विशेष (ठा २, ३)। २ कजंदाउ, ऋणी, 'जस्म कल-सम्मि वहियाखडाई तस्म धुरधण लब्भं, पुणरवि देउ धुराण' (सुपा ४२६)।

धुरंधर वि [धुरन्धर] १ भार को वहन करने में समर्थ, किसी कार्य को पार पहुँचाने में शक्तिमान्, भार-वाहक (से ३, ३६)। २ नेता, मुखिया, अगुआ (सण, उत्तर २०)। ३ पु गाढी, हल आदि खींचनेवाला वेल (दे ८, ४४)।

धुरा स्त्री [धुर] १ गाढी वगैरह का अग्र भाग, धुरी (उव)। २ भार, बोझ। ३ चिता (हे १, १६)। °धार वि [°धार] धुरा को वहन करनेवाला, धुरन्धर (पउम ७, १७१)।

धुरी स्त्री [धुरी] अक्ष, धुरा, गाढी का झुआ (अणु)।

धुरीण वि [धुरीण] धुरन्धर, मुखिया, अगुआ (धर्मवि १३६, सम्मत्त ११८)।

धुव सक [धाव्] घोना, शुद्ध करना। धुवइ, धुवति (हे ४, २३८, गा ४३३, पिड २८)। वक्र. धुवंत (से ८, १०२)। कवक धुवंत, धुवमाण (गा ५६३, से ६, ४५, वजा २४, पि ५३८)।

धुव सक [धु] कँपाना, हिलाना। धुवइ (हे ४, ५६, पड्)। कर्म. धुवइ (कुमा)। कवक धुवत (कुमा)।

धुव वि [ध्रुव] १ निश्चल, स्थिर (जीव ३)। २ नित्य, शाश्वत, सर्वदा-स्थायी (ठा ५, ३, सूत्र २, ४)। ३ अवश्यमावी (सूत्र २, १)। ४ निश्चित, नियत (आचा)। ५ पु. अश्व के शरीर का आवर्त (कुमा)। ६ मोक्ष,

मुक्ति। ७ सयम, इन्द्रियादि-निग्रह (सूत्र १, २, १)। ८ ससार (अणु)। ९ न मुक्ति का कारण, मोक्ष-मार्ग (आचा)। १० कर्म (अणु)। ११ अत्यन्त, अतिशय, 'धुवमो-गिएहइ' (ठा ६)। °कम्मिय पुं [°कर्मिक] लोहार आदि शिल्पी (वव १) °चारि वि [°चारिन्] मुमुक्षु, मुक्ति का अभिलाषी (आचा)। °णिग्गह पुं [°निग्रह] आव-श्यक, अवश्य करने योग्य अनुष्ठान-विशेष (अणु)। °मग्ग पुं [°मार्ग] मुक्ति-मार्ग, मोक्ष-मार्ग (सूत्र १, ४, १)। °राहु पुं [°राहु] राहु-विशेष (मम २६)। °वण्ण पुं [°वर्ण] १ सयम। २ मोक्ष, मुक्ति। ३ शाश्वत यश (आचा)। देखो धुअ = ध्रुव।

धुवण न [धावन] १ प्रक्षालन (अध ७२, ३४७, स २७२)। २ वि कँपानेवाला, हिलानेवाला। स्त्री °णी (कुमा)।

धुवण पुन [धूपन] १ धूप देना। धूम-पान (दस ३, ६)।

धुविया स्त्री [ध्रुविता] कर्म-विशेष, ध्रुव-वन्विनी कर्म-प्रकृति (पच ५, ६६)।

धुव्व देखो धुव = धाव्। धुव्वइ (सक्ति ३६)।

धुव्वत देखो वव = ध्रु।

धुव्वत } देखो धुव = धाव्।
धुव्वमाण }

धुइअ वि [दे] पुरस्कृत, आगे किया हुआ (पड्)।

धूअ वि [धूत] देखो धुअ = ध्रुत (आचा, दस ३, १३, पि ३१२, ३६२, सूत्र १, ४, २)।

धूअ देखो धूव = धूप (सुपा ६५७)।

धूअ न [धूत] पहले बँधा हुआ कर्म, पूर्व-कर्म (सूत्र २, २, ६५)।

धूआ स्त्री [दुहिरु] लट्की, पुत्री (हे २, १२६, प्रासू ६४)।

धूण पुं [दे] गज, हाथी (दे ५, ६०)।

धूणिय वि [धूणित] कम्पित (कुप्र ६८)।

धूम पुं [धूम] १ हींग आदि वधार (पिड २५०)। २ क्रोध, गुस्सा। ३ वि. क्रोधी (संबोध १६)।

धूम पु [धूम] १ धूम, धुआँ, अग्नि-चिह्न (गउड)। २ द्वेष, अप्रीति (पएह २, १)। °इग्गाल पुं व [°इग्गार] द्वेष और राग (अध २८८ भा)। °केउ पुं [°केतु] १ ज्योतिष्क ग्रह-विशेष (ठा २, ३, पएह १, ५, औप)। २ वहि, अग्नि, आग (उत्तर २२)। ३ अशुभ उत्पात का सूचक तारा-पुञ्ज (गउड)। °चारण पुं [°चारण] धूम के अवलम्बन से आकाश में गमन करने की शक्तिवाला मुनि-विशेष (गच्छ २)। °जोणि पु [°योनि] बादल, मेघ (पाग्र)। °उम्मय देखो °द्धय (राज)। °दोस पु [°दोष] भिक्षा का एक दोष, द्वेष से भोजन करना (आचा २, १, ३)। °द्धय पु [°ध्वज] वहि, अग्नि (पाग्र, उप १०३१टी)। °प्पभा, °प्पहा स्त्री [°प्रभा] पाचवी नरक-पृथिवी (ठा ७, प्राह)। °ल वि [°ल] धुआँ वाला (उप २६४ टी)। °वडल पुं [°पटल] धूम-समूह (हे २, १६८)। °वण्ण वि [°वर्ण] पाण्डुर वर्णवाला (णाय १, १७)। °सिहा स्त्री [°शिखा] धुएँ का अग्रभाग (ठा ४, २)।

धूमग पु [दे] अमर, भौरा, भमरा (दे ५, ५७)।

धूमण न [धूमन] धूम-पान (सूत्र २, १)।

धूमहार न [दे] गवाक्ष, वातायन, झरोखा (दे ५)।

धूमद्धय पुं [दे] १ तडाग, तलाव, तालाव २ महिष, भैंसा (दे ५, ६३)।

धूमद्धयमहिस्सी स्त्री व [दे] कृत्तिका नक्षत्र (दे ५ ६२)।

धूमपालियाम वि [दे] गर्त में डालकर आग लगाने पर भी जो कच्चा रह जाय वह (निच्च १५)।

धूममहिस्सी स्त्री [दे] नीहार, कुहरा, कुहासा (दे ५ ६१, पाग्र)।

धूमरी स्त्री [दे] १ नीहार, कुहासा (दे ५, ६१)। २ तुहिन, हिम (पड्)।

धूमसिहा } स्त्री [दे] नीहार, कुहासा (दे ५, धूमा } ६१, ठा १०)।

धूमा देखो धूमाअ। धूमाइ (प्राकृ ७१)।

धूमाअ अक [धूमाय्] १ धुआँ करना। २ जलाना। ३ धूम की तरह आचरना।

पंथाण देखो पंथ = पन्थ, पथिन्, 'पंथभाणे पथाणंभाणे' (आउ ११) ।

पंथिअ पुं [पन्थिक, पथिक] मुसाफिर, पान्थ, 'पथिअ एणं एत्थ संथर' (काप्र १५८, महा, कुमा, राया १, ८, वजा ६०, १५८) ।

पंथुच्छुहणी छी [दे] श्वशुर-गृह से पहली बार आनीत छी (दे ६, ३५) ।

पंपुअ वि [दे] दीर्घ, लम्बा (दे ६, १२) ।

पफुल्ल वि [प्रफुल्ल] विकसित (पिंग) ।

पफुल्लिअ वि [दे] गवेपित, जिसकी खोज की गई हो वह (दे ६, १७) ।

पस सक [पासय्] मलिन करना । पसेई (विसे ३०५२) ।

पंसण वि [पांसन] कलकित करनेवाला, दूषण लगानेवाला (हे १, ७०, सुपा ३४५) ।

पसु पुं [पासु, पांशु] धूली, रज, रेणु (हे २६, पाप्र, आचा) । °कीलिय, °कीलिय वि [°कीलित] जिसके साथ बचपन में पाशु-क्रीडा की गई हो वह, बचपन का दोस्त (महा, सण) । °पिसाय पुत्री [°पिशाच] जो रेणु-लिप्त होने के कारण पिशाच के तुल्य मालूम पड़ता हो वह (उत्त १२) । °मूलिय पुं [°मूलिक] विद्याधर, मनुष्य-विशेष (राज) ।

पंसु पुं [पशु] कुठार, फरसा (हे १, २६) ।

पंसु देखो पसु (षड्) ।

पसुखार पु [पाशुक्षार] एक तरह का नोन, ऊपर लवण (दस ३, ८) ।

पसुल पु [दे] १ कोकिल, कोयल । २ जार, उपपति (दे ६, ६६) । ३ वि रुद्ध, रोका हुआ (षड्) ।

पंसुल पुं [पांसुल] १ पुष्पल, परली-लम्पट (गा ५१०, ५६६) । २ वि. धूलि-युक्त (गच्छ) ।

पंसुल छी [पांसुल] कुलटा, व्यभिचारिणी छी (कुमा) ।

पंसुलिअ वि [पांसुलित] धूलि-युक्त किया हुआ, 'पसुलिअकरेण' (गच्छ) ।

पंसुलिआ छी [दे. पांशुलिका] पार्श्व की हड्डी (पव २५३) ।

पंसुली छी [पांसुली] कुलटा, व्यभिचारिणी छी (पाप्र, सुर १५, २, हे २, १७६) ।

पकंथ देखो पगथ (आचा १, ६, २) ।

पकंथग पु [प्रकन्थक] अश्व विशेष, एक प्रकार का घोड़ा (ठा ४, ३—पत्र २४८) ।

पकप पुं [प्रकम्प] कम्प, कांपना (आव ४) ।

पकपण न [प्रकम्पन] ऊपर देखो (सुपा ६५१) ।

पकंपिअ वि [प्रकम्पित] प्रकम्प-युक्त, काँपा हुआ (आव २) ।

पकपिर वि [प्रकम्पित्] काँपनेवाला (उप पु १३२) । छी. °री (रंभा) ।

पकड वि [प्रकृत] १ प्रस्तुत, प्रक्रान्त, उप-स्थित, असली, सच्चा (भग ७, १०—पत्र ३२४, १८, ७—पत्र ३५०) । २ कृत, निर्मित (भग १८, ७) ।

पकड देखो पगड = प्रकट (भग ७, १०) ।

पकड्ड देखो पगडड । कवक. पकड्डज्ज-माण (औप) ।

पकड्ड वि [प्रकृष्ट] १ प्रकर्ष-युक्त । २ खींचा हुआ (औप) ।

पकड्डण न [प्रकर्षण] आकर्षण, खींचाव (निचू २०) ।

पकत्थ सक [प्र + कत्थ्] श्लाघा करना, प्रशंसा करना । पकत्थइ (सुस १, ४, १, १६, पि ५४३) ।

पकप्प अक [प्र + क्लृप्] १ काम में आना, उपयोग में आना । २ काटना, छेदना । कृ पकप्प (ठा ५, १—पत्र ३००) । देखो पगप्प = प्र + क्लृप् ।

पकप्प सक [प्र + कल्पय्] १ करना, बनाना । २ संकल्प करना; 'वासं वयं वित्ति पकप्पयामो' (सुस २, ६, ५२) ।

पकप्प पु [प्रकल्प] १ उत्कृष्ट आचार, उत्तम आचरण (ठा ४, ३) । २ अपवाद, वाचक नियम (उप ६७७ टी, निचू १) । ३ अध्ययन-विशेष, 'आचाराण' सूत्र का एक अध्ययन । ४ व्यवस्थापन 'अट्ठावीसविहे आयापकप्पे' (सम २८) । ५ कल्पना । ६ प्ररूपणा । ७ विच्छेद, प्रकृष्ट छेदन (निचू १) । ८ जैन साधुओं का एक प्रकार का आचार, स्थविर-

कल्प (पचभा) । ९ एक महाग्रह, ज्योतिष देव-विशेष (सुज २०) । °गंथ पुं [°ग्रन्थ] एक प्राचीन जैन ग्रन्थ, 'निशीय' सूत्र (जीव १) । °जइ पुं [°यति] 'निशीय' अध्ययन का जानकार साधु, 'धम्मो जिणपन्नतो पकप्पजइणा कहेयव्वो' (धर्म १) । °धर वि [°धर] 'निशीय' अध्ययन का जानकार (निचू २०) । देखो पगप्प = प्रकल्प ।

पकप्पणा छी [प्रकल्पना] प्ररूपणा, व्याख्या; 'परुवरणं ति वा पकप्पणं ति वा एगट्ठा' (निचू १) ।

पकप्पणा छी [प्रकल्पना] कल्पना (चेइय १४१, अज्झ १४२) ।

पकप्पधारि वि [प्रकल्पधारिन्] 'निशीय' सूत्र का जानकार (वव १) ।

पकप्पि वि [प्रकल्पिन्] ऊपर देखो (वव १) ।

पकप्पिअ वि [प्रकल्पित] काटा हुआ, 'एसा परजुत्तिलया एएण पकपि (?) कप्पि' । आ एओआ' (अज्झ १०२) ।

पकप्पिअ वि [प्रकल्पित] १ संकल्पित (द्र २) । २ निर्मित (महा) । ३ न. पूर्वोपार्जित द्रव्य, 'एण एओ अत्थि पकप्पिय' (सुस १, ३, ३, ४) । देखो पगप्पिअ ।

पकय वि [प्रकृत] प्रवृत्त, कार्य में लगा हुआ (उप ६२०) ।

पकर सक [प्र + कृ] १ करने का प्रारम्भ करना । २ प्रकर्ष से करना । ३ करना । पकरेइ, पकरेंति, पकरेंति (भग, पि ५०६) । वकृ पकरेमाण (भग) । संकृ. पकरित्ता (भग) ।

पकर देखो पयर = प्रकर (नाट—वेणी ७२) ।

पकरणया छी [प्रकरणता] करण, कृति (भग) ।

पकहिअ वि [प्रकथित] जिसने कहने का प्रारम्भ किया हो वह (उप १०३१ टी, वसु) ।

पकाम न [प्रकाम] १ अत्यर्थ, अत्यन्त (राया १, १, महा, नाट—शकु २७) । २ पु. प्रकृष्ट अभिलाष (भग ७, ७) ।

पकाव (अप) सक [पच्] पकाना । पकावड (पिंग, पि ४५४) ।

न देखो ए

१ प्राकृत भाषा में नकारादि सब शब्द एकारादि होते हैं, अर्थात् आदि के नकार के स्थान में नित्य या विकल्प से 'ए' होनेका व्याकरणो का सामान्य नियम है (प्राप्र २, ४२, दे ५, ६३ टी, हे १, २२६, पड् १, ३, ५३), और प्राकृत-साहित्य-ग्रन्थों में दोनों तरह के प्रयोग पाए जाते हैं। इससे ऐसे सब शब्द एकार के प्रकरण में आ जाने से यहाँ पर पुनरावृत्ति कर व्यर्थ में पुस्तक का कलेवर बढ़ाना उचित नहीं समझा गया है। पाठकगण एकार के प्रकरण में आदि के 'ए' के स्थान में सर्वत्र 'न' समझ लें। यही कारण है कि नकारादि शब्दों के भी प्रमाण एकारादि शब्दों में ही दिए गए हैं।

प

प पुं [प] १ ओष्ठ-स्थानीय व्यञ्जन वर्ण-विशेष (प्राप)। २ पाप-त्याग, 'पत्ति य पाववज्जणे' (आवम)।

प अ [प्र] इन अर्थों का सूचक अव्यय—१ प्रकर्ष, 'पओस' (से २, ११)। २ प्रारम्भ, 'पणमिअ', 'पकरेइ' (ज १, भग १, १)। ३ उत्पत्ति। ४ ख्याति, प्रसिद्धि। ५ व्यवहार। ६ चारों ओर से (निचू १, हे २, २१७)। ७ प्रत्यय, मूत्र (विसे ७८१)। ८ फिर-फिर (निचू ३, १७)। ९ गुजरा हुआ, विनष्ट, 'पासुअ' (ठा ४, २—पत्र २१३ टी)।

पं वि [प्राच्] पूर्वं तरफ स्थित (भवि)। पअंगम पु [पल्लवङ्गम] छन्द-विशेष (पिंग)। पअंघ पु [प्रजङ्घ] राक्षस-विशेष (से १२, ८३)।

पअट्ठ देखो पगट्ठ = प्रगल्भ (प्राकृ ७८)। पइ अ [प्रति] १ अपेक्षा-सूचक (इसनि ३, १)। २ लक्ष्य, तरफ, और, 'भय्यच्छ पइ चलियं' (सम्मत्त १४१, धर्मवि ५६)।

पइ पु [पति] १ धव, भर्ता, परवरिष करने-वाला (पाप्र, गा १५६, कप्प)। २ मालिक।

३ रक्षक, 'भूवई', 'तिअसगणवई', 'नरवई' (सुपा ३६, अजि १७, १६)। ४ ओष्ठ, उत्तम, धर्माणधरवई (अजि १७)। ५ घर न [गृह] ससुराल (पड्)। ६ वध्या, वध्या स्त्री [त्रिणा] पति-सेवा-परायण स्त्री, कुलवती स्त्री, सती (गा ४१७, सुर ६, ६७)। ७ घर देखो घर (हे १, ४)।

पइ देखो पडि (ठा २, १, काल, उवर २१)। पइअ वि [दे] १ भत्तिसत, तिरस्कृत। २ न. पहिया, रथ चक्र (दे ६, ६४)।

पइइ देखो पगइ = प्रकृति (से २, ४५)।

पइउ देखो पव = पच्।

पइउवचरण न [प्रत्युपचरण] प्रत्युपचार, प्रति-सेवा (रंभा)।

पइऊल देखो पडिऊल (नाट—विक्र ४५)।

पइवया देखो पइ-वया (णापा १, १६—पत्र २०४)।

पइक (अप) देखो पाइक (पिंग)।

पइकिदि देखो पडिकिदि (नाट—शकु ११६)।

पइक देखो पाइक (पिंग, पि १६४)।

पइगिइ देखो पडिकिदि (स ६२५)।

पइच्छन्न पु [प्रतिच्छन्न] भूत-विशेष (राज)।

पइज्ज (अप) वि [पतिन] गिरा हुआ (पिंग)।

पइज्ज (अप) वि [प्राप्त] मिला हुआ, लब्ध (पिंग)।

पइज्जा देखो पइण्णा (भवि, सण)।

पइट्ट वि [दे] १ जिसने रम को जाना हो वह। २ विरल। ३ पुं, मार्ग, रास्ता (दे ६, ६६)।

पइट्ट देखो पगिट्ट (सट्टि ५ टी)।

पइट्ट वि [दे] प्रेषित, भेजा हुआ, 'जह अइ-कुमार मिच्छो अभयपइट्ट जिणस्स पडिज्जि' (सबोध ३)।

पइट्ट पु [प्रतिष्ठ] भगवान् सुपार्श्वनाथ के पिता का नाम (सम १५०)।

पइट्ट वि [प्रविष्ट] जिसने प्रवेश किया हो वह (स ४२६)।

पइट्टव सक [प्रति-स्थापय्] मूर्ति आदि की विधि-पूर्वक स्थापना करना। पइट्टवेज्जा (पंचा ७, ४३)।

पइट्टवण देखो पइट्टावण (राज)।

पक्खंतर न [पक्षान्तर] अन्य पक्ष, भिन्न पक्ष, दूसरा पक्ष (नाट—महावी २५) ।

पक्खद सक [प्र + स्कन्द] १ आक्रमण करना । २ दौड़कर गिरना । ३ अध्यवसाय करना 'पक्खदे जलियं जोइ धूमकेरुं दुरासयं' (राज), 'अगरिणं व पक्खदं पर्यगसेणा' (उत्त १२, २७) ।

पक्खदण न [प्रस्कन्दन] १ आक्रमण । २ अध्यवसाय । ३ दौड़कर गिरना (निच्च ११) ।

पक्खदोल्लग पु [पक्ष्यन्दोलक] पक्षी का हिडोला, झूला (राय ७५) ।

पक्खज्जमाण वि [प्रखाद्यमान] जो खाया जाता हो वह (सूत्र १, ५, २) ।

पक्खडिअ वि [दे] प्रस्फुरित, विजृम्भित, समुत्पन्न, 'पक्खडिअ सिहिपडित्थिरे विरहे' (दे ६, २०) ।

पक्खर सक [सं + नाह्य] संनद्ध करना, अश्व की कवच से सज्जित करना । पक्खरेह (सुपा २८८) । संकृ पक्खरिअ (पिंग) ।

पक्खर पुं [प्रक्षर] क्षरण, टपकना (कर्पूर २६) ।

पक्खर पुं [दे] जहाज की रक्षा का एक उपकरण, सामग्री (सिरि ३८७) ।

पक्खर न [दे] पाखर, अश्व-सनाह, घोड़े का कवच (कुप्र ४४६, पिंग) ।

पक्खरा स्त्री [दे] पाखर, अश्व-सनाह (दे ६, १०), 'ओसारिअपक्खरे' (विपा १, २) ।

पक्खरिअ वि [संनद्ध] कवचित, सनद्ध, कवच से सज्जित (अश्व) (सुपा ५०२, कुप्र १२०, भवि) ।

पक्खल अक [प्र + स्खल्] गिरना, पड़ना, स्थलित होना । पक्खलइ (कस) । वक्क. पक्खलत्त, पक्खलमाण (दस ५, १, पि ३०६, नाट—मृच्छ १७, बृह ६) ।

पक्खाउज्ज न [पक्षातोद्य] पक्षाउज, पक्षावज, एक प्रकार का वाजा, मृदंग (कप्पु) ।

पक्खाय वि [प्रख्यात] प्रसिद्ध, विश्रुत (प्राह) ।

पक्खारिण पुं [प्रक्षारिण] १ अनार्य-देश विशेष । २ पुंस्त्री. उस देश का निवासी मनुष्य । स्त्री. °णी (राय) ।

पक्खाल सक [प्र + क्षालय्] पखारना, शुद्ध करना, धोना । कवक. पक्खालिज्जमाण (राया १, ५) । संकृ पक्खालिअ, पक्खालिऊण (नाट—चैत ४०, महा) ।

पक्खालण न [प्रक्षालन] पखारना, धोना (स ५२, औप) ।

पक्खालिअ वि [प्रक्षालित] पखारा हुआ, धोया हुआ (औप, भवि) ।

पक्खासण न [पक्ष्यामन] आसन-विशेष, जिसके नीचे अनेक प्रकार के पक्षियों का चित्र हो ऐसा आसन (जीव ३) ।

पक्ख पुंस्त्री [पक्षिन्] पाखी, पक्षी (ठा ४, ४, आवा, सुपा ५६२) । स्त्री. °णी (आ १४) । विराल पुंस्त्री [विराल] पक्षि-विशेष (भग १३, ६) । स्त्री. °ली (जीव १) । °राय पुं [°राज] गरुड (सुपा २१०) । नीचे देखो ।

पक्खिअ पुंस्त्री [पक्षिक] १ ऊपर देखो (आ २८) । २ वि. पक्षपाती, तरफदारी करनेवाला, 'तप्पक्खिअो पुणो अणणो' (आ १२) ।

पक्खिअ वि [पाक्षिक] स्वजन, जाति का (पव २६८) ।

पक्खिअ वि [पाक्षिक] १ पाख में होनेवाला । २ पक्ष से सम्बन्ध रखनेवाला, अर्ध-मास-सम्बन्धी (कप्प, धर्म २) । ३ न. पूर्व-विशेष, चतुर्दशी (लहुष १६, द्र ४५) । °पक्खिअ पुं [°पक्षिक] नपुसक-विशेष, जिसको एक पाख में तीव्र विषयामिलाप होता हो और एक पक्ष में अल्प, ऐसा नपुसक (पुप्फ १२७) ।

पक्खिकायण न [पाक्षिकायन] गोत्र विशेष, जो कौशिक गोत्र की एक शाखा है (ठा ७) ।

पक्खिण देखो पक्खि; 'जह पक्खिणण गरुहो' (पद्म १४, १०४) ।

पक्खिणी देखो पक्खि ।

पक्खित्त वि [प्रक्षिप्त] फेंका हुआ (महा, पि १८२) ।

पक्खिनाह पुं [पक्षिनाथ] गरुड पक्षी (धर्मवि ८४) ।

पक्खिप्प } देखो पक्खि ।
पक्खिप्पमाण }

पक्खि व सक [प्र + क्षिप्] १ फेंकना, फेंक देना । २ छोड़ना, त्यागना । ३ डालना । पक्खि वइ (महा, कप्प) । पक्खि वइ (महा, कप्प) । पक्खि वइ, पक्खि वेज्जा (आवा २, ३, २, ३) । कवक. पक्खिप्पमाण (राया १, ८—पत्र १२६, १४७) । संकृ. पक्खिऊण, पक्खिप्प (महा, सूत्र १, ५, १, पि ३१६) । कृ. पक्खि वेयव्व (उप ६४८ टी) । प्रयो. वक्क. पक्खिवावेमाण (राया १, १२) ।

पक्खीण वि [प्रक्षीण] अत्यन्त क्षीण, 'अहं पक्खीणविभवो' (महा) ।

पक्खुडिअ वि [प्रखण्डित] खण्डित, असंपूर्ण (सुपा ११६) ।

पक्खुच्च भक [प्र + क्षुम्] १ क्षोभ पाना । २ वृद्ध होना, बढना । वक्क. पक्खुच्चमंत (से २, २४) ।

पक्खुच्चमंत देखो पक्खोभ ।

पक्खुभिय वि [प्रक्षुभित] क्षोभ प्राप्त, प्रक्षुब्ध (औप) ।

पक्खेव पु [प्रक्षेप] शास्त्र में पीछे से किसी के द्वारा डाला या मिलाया हुआ वाक्य (धर्मसं १०११) । °हार पुं [°हार] कवलाहार (सूत्रनि १७१) ।

पक्खेव पुं [प्रक्षेप, °क] १ क्षेपण, पक्खेवरा } फेंकना, 'वहिया पोग्गलपक्खेव' (उवा) । २ पूति कग्नेवाला द्रव्य, पूति के लिए पीछे से डाली जाती वस्तु, 'अपक्खेव-गस्स पक्खेवं दलयइ' (राया १, १५—पत्र १६३) ।

पक्खेवण न [प्रक्षेपण] क्षेपण, प्रक्षेप (औप) ।

पक्खेवय देखो पक्खेवरा (बृह १) ।

पक्खोड सक [वि + कोशय्] १ खोलना । २ फैलाना । पक्खोडइ (हे ४, ४२) । संकृ. पक्खोडिऊण (सुपा ३३८) ।

पक्खोड सक [शद्] १ कपाना । २ झाड़ कर गिराना । पक्खोडइ (हे ४, १३०) । संकृ. पक्खोडिय (उप ५८४) ।

पइसार सक [प्र + वेश्] प्रवेश कराना ।
पइसारइ (भवि) ।

पइसारिय वि [प्रवेशित] जिसका प्रवेश
कराया गया हो वह, 'पइसारिओ य नयरि'
(महा, भवि) ।

पइहत पुं [दे] जयन्त, इन्द्र का एक पुत्र
(दे ६, १६) ।

पइहा सक [प्रति + हा] त्याग करना ।
संकु पइहिऊण (उव) ।

पई° देखो पइ = पति (पइ, है १, ४, सुर
१, १७६) ।

पईअ वि [प्रतीत] १ विज्ञात । २ विश्वस्त ।
३ प्रसिद्ध, विख्यात (विसे ७०६) ।

पईअ न [प्रतीक] अग, अवयव (रंभा) ।

पईइ ली [प्रतीति] १ विश्वास । २ प्रसिद्धि
(राज) ।

पईव देखो पलीव । पईवेइ (कस) ।

पईव पु [प्रदीप] दीपक, दिया (पाअ,
जी १) ।

पईव वि [प्रतीप] १ प्रतिकूल (हे १,
२०६) । २ पुं शत्रु, दुश्मन (उप ६४८ टी;
हे १, २३१) ।

पईस (अप) देखो पइस । पईसइ (भवि) ।

पउ (अप) वि [पतित] गिरा हुआ (पिग) ।

पउअ देखो पागय = प्राकृत (प्राकृ ५) ।

पाउअ पु [दे] दिन, दिवस (दे ६, ५) ।

पउअ न [प्रयुत] सख्या-विशेष, 'प्रयुताङ्ग'
को चौरासी लाख से गुणने पर जो सख्या
लब्ध हो वह (इक, ठा २, ४) ।

पउअग न [प्रयुताङ्ग] सख्या-विशेष, 'अयुत'
को चौरासी लाख से गुणने पर जो सख्या
लब्ध हो वह (ठा २, ४) ।

पउंज सक [प्र + युज्] १ जोड़ना, युक्त
करना । २ उच्चारण करना । ३ प्रवृत्त
करना । ४ प्रेरणा करना । ५ व्यवहार
करना । ६ करना । पउंजइ (महा, भवि; पि
५०७) । पउंजति (कप्प) । वकु. पउंजंत,
पउंजमाण (अप, पउम ३५, ३६) । कवकु
पउंजमाण (प्रयौ २३) । कृ पउंजिअव्व,
पउंज (पइह २, ३, उप ७२८ टी, विसे
३३८४), पउइव्व (अप) (कुमा) ।

पउजग वि [प्रयोजक] प्रेरक, प्रेरणा करने-
वाला (पचव १) ।

पउजग वि [प्रयोजन] प्रयोग करनेवाला
(पउम १४, १०) । देखो पओअण ।

पउजणया } ली [प्रयोजना] प्रयोग (ओघ
पउजणा } ११४), 'दुक्ख कीरइ कइव'
कवम्मि कए पउंजणा दुक्ख' (वज्जा २) ।

पउजिअ वि [प्रयुक्त] जिसका प्रयोग किया
गया हो वह (सुपा १४०, ४४७) ।

पउजित्तु वि [प्रयोजकृ] प्रवृत्ति करनेवाला
(ठा ५, १) ।

पउजित्तु वि [प्रयोजयितृ] प्रवृत्ति करनेवाला
(ठा ५, १) ।

पउज्ज } देखो पउज ।
पउज्जमाण }

पउट्ट अ [परिवृत्य] मार कर । 'परिहार पुं'
[परिहार] मर कर फिर उसी शरीर में
उत्पन्न होकर उस शरीर का परिभोग करना,
'एव खलु गोसाला ! वणस्मइ-काइयाओ पउट्ट-
परिहार परिहरति' (भग १५—पत्र ६६७) ।

पउट्ट वि [परिवर्त] १ परिवर्त, मर कर
फिर उसी शरीर में उत्पन्न होना । २ परिवर्त-
वाद, 'एस एं गोयमा । गोसालस्स मखलि-
पुत्तस्स पउट्ट' (भग १५—पत्र ६६७) ।

पउट्ट वि [प्रवृष्ट] बरसा हुआ (हे १,
१३१) ।

पउट्ट पुं [प्रकोष्ठ] हाथ का पट्टा, कलाई और
केहूनी के बीच का भाग (पइह १, ४—पत्र
७८, कप्प, कुमा) ।

पउट्ट वि [प्रजुष्ट] १ विशेष सेवित । २ न
अति उच्छिष्ट (चंड) ।

पउट्ट वि [प्रद्विष्ट] द्वेष-युक्त, 'तो सो पउट्ट-
चित्तो' (सुपा ४७५) ।

पउठ न [दे] १ गृह, घर । २ पुं घर का
पश्चिम प्रदेश (दे ६, ४) ।

पउण अक [प्रगुणय्] तन्दुरुस्त होना,
नीरोग होना, 'अन्नस्स चिगिक्खाए पउणइ
अन्नो न लोगम्मि' (धम्मसं ११८४) ।

पउण पुं [दे] १ व्रण-प्ररोह । २ नियम-
विशेष (दे ६, ६५) ।

पउण वि [प्रगुण] १ पट्ट, निर्दोष, 'कह

सच्चरणविहारं जायइ पउणिदियारं' (सुपा
४७२, महा) । २ तैयार, तय्यार (दस ३) ।

पउणाड पु [प्रपुनाट] वृक्ष-विशेष, पमाड
का पेड़, चकवड (दे ५, ५ टि) ।

पउन्न अक [प्र + वृत्] प्रवृत्ति करना । कृ.
पउत्तिदव्व (शौ) (नाट—शकु ८७) ।

पउत्त वि [प्रयुक्त] जिसका प्रयोग किया
गया हो वह (महा, भवि) । २ न. प्रयोग
(खाया १ १) ।

पउत्त पु [पौत्र] लड़के का लड़का, पोता
(प्राकृ १०, अ ११७) ।

पउत्त न [प्रतोत्र] प्रतोद, प्राजन, चाबुक, पैना
(दसा १०) ।

पउत्त वि [प्रवृत्त] जिसने प्रवृत्ति की हो वह
(उवा) ।

पउत्ति ली [प्रवृत्ति] १ प्रवर्तन (भग १५) ।
२ समाचार, वृत्तान्त (पाअ, सुर २, ४८,
३, ८४) । ३ कार्य, काज, काम । 'वाउय वि
[व्यापृत] कार्य में लगा हुआ (अप) ।

पउत्ति ली [प्रयुक्ति] बात, हकीकत (उप
पु २२८, राज) ।

पउत्तिदव्व देखो पउत्त = प्र + वृत् ।

पउत्तु [प्रयोजकृ] १ प्रयोग-कर्ता । २ प्रेरणा
कर्ता । ३ कर्ता, निर्माता । ली 'त्ती' (तडु
४५) ।

पउत्थ न [दे] १ गृह, घर (दे ६, ६६) ।

२ वि प्रोषित, प्रवास में गया हुआ, 'एहिइ
सोवि पउत्थो अह अ कुप्पेज्ज सोवि अणुणेज्ज'
(गा १७, ६६७, हेका ३०, पउम १७, ३,
वज्जा ७६, विवे १३२, उव, दे ६, ६६,
भवि) । 'वइया ली [पतिक्का] जिसका
पति देशान्तर गया हो वह ली (ओघ ४१३,
सुपा ५०८) ।

पउइव्व देखो पउज ।

पउप्पय देखो पओप्पय (भग ११, ११ टी) ।

पउप्पय देखो पओप्पय = प्रयौत्रिक (भग
११, ११ टी) ।

पउम न [पद्म] १ सूर्य-विकासी कमल (हे
२, ११३, पइह १, ३, कप्प, अप, प्रासू
११३) । २ देव-विमान-विशेष (सम ३३,
३५) । ३ सख्या-विशेष, 'पघाग' को चौरासी
लाख से गुणने पर जो सख्या लब्ध हो वह

पगामसो अ [प्रकामम्] अत्यन्त, अतिशय,
'पगामसो भुच्चा' (उत्त १७, ३)।

पगार पु [प्रकार] १ भेद (आचू १)। २
रोति, 'एएण पगारेण सव्वं, दव्व दवाविओ'
(महा)। ३ आदि, वगैरह, प्रभृति (सूत्र १,
१३)।

पगाम देखो पयास = प्र + काशय्। वहु
पगासैंत (महा)।

पगास पुं [प्रकाश] १ प्रभा, दीप्ति, चमक
(णाय १, १), 'एग मह नीलुप्पलगवलगुलि-
यग्रयसिक्कुसुमप्पगास असि सुरधार गहाय'
(उवा)। २ प्रसिद्धि, ख्याति (सूत्र १, ६)।
३ आविर्भाव, प्रादुर्भाव। ४ उद्द्योत, आतप
(राज)। ५ क्रोध, गुस्सा, 'छल्ल च पसस
णो करे न य उक्कोस पगास माहणे' (सूत्र
१, २, २६)। ६ वि प्रकट, व्यक्त (निचू
१)।

पगासग देखो पगासय (राज)।

पगासण देखो पयासण (श्रौप)।

पगासणया ली [प्रकाशनता] प्रकाश,
श्रालोक (श्लो ५५०)।

पगासणा ली [प्रकाशना] प्रकटीकरण
(उत्त ३२, २)।

पगासय वि [प्रकाशक] प्रकाश करनेवाला
(विसे ११५५)।

पगासिय वि [प्रकाशित] उद्द्योतित, दीप्त,
'से मूरियस्स अब्भुगमेण मग्ग वियाणाइ
पगासियसि' (सूत्र १, १४, १२)।

पगिइ देखो पगइ (संवोध ३६)।

पगिउम अक [प्र + गृध्] आसक्ति का
प्रारम्भ होना। पगिउमिजा (उत्त ८, १६,
सुख ८, १६)।

पगिउमिय देखो पगिण्ह (कम, श्रौप, पि
५६१)।

पगिट्ट वि [प्रकृष्ट] १ प्रवान, मुख्य (सुपा
७७)। २ उत्तम, श्रेष्ठ (कुप्र २०, सुपा
२२६)।

पगिण्ह सक [प्र + ग्रह्] १ ग्रहण करना।
२ उठाना। ३ धारण करना। ४ करना।
सकृ. पगिण्हत्ता, पगिण्हत्ताण, पगि-
उमिय (पि ५८२, ५८३, श्रौप, आचा २,
३, ४, १, कम)।

पगीअ वि [प्रगीत] १ गाया हुआ (पउम
३७, ४८)। २ जिसकी गीत गाई गई हो
वह (उप २११ टी)।

पगीय वि [प्रगीत] जिसने गाने का प्रारम्भ
किया हो वह (राय ४६)।

पगुण देखो पउण (सूत्र १, १, २)।

पगुणीकर सक [प्रगुणी + कृ] प्रगुण करना,
तय्यार करना, सज्ज करना। कवकृ पगु-
णीकीरंत (सुर १३, ३१)।

पगे अ [प्रगे] सुबह, प्रभात काल (सुर ७,
७८, कुप्र १५५)।

पग्ग सक [ग्रह्] ग्रहण करना। पग्गइ
(पड्)।

पग्गल वि [दे] पागल, उन्नत (प्राकृ.
१०३)।

पग्गह पुं [प्रग्रह] खाने के लिए उठाया
हुआ भोजन-पान (सूत्र २, २, ७३)।

पग्गह पुं [प्रग्रह] १ उपधि, उपकरण
(श्लो ६६६)। २ लगाम (मे ६, २७, १२,
६६)। ३ पशुओं को नाक में लगाई जाती
डोरी, नाक की रस्सी, नाथ। ४ पशुओं को
बाँधने की डोरी, रस्सी, पगहा (णाय १ ३,
उवा)। ५ नायक, मुखिया (ठा १)। ६ ग्रहण,
उपादान। ७ योजन, जोड़ना, 'अंजलिपग्ग-
हेण' (भग)।

पग्गहिअ वि [प्रगृहीत] १ अभ्युपगत,
सम्यक् स्वीकृत (अनु ३)। २ प्रकर्ष से गृहीत
(भग, श्रौप)। ३ उठाया हुआ (धर्म ३,
ठा ६)।

पग्गहिय वि [प्रग्रहिक] ऊपर देखो (उवा)।

पग्गिम } (अप) अ [प्रायस्] प्राय
पग्गिम्व } बहुधा (पड्, हे ४, ४१४,
कुमा)।

पग्गेज्ज पुं [दे] निकर, समूह (दे ६, १५)।

पघस सक [प्र + घृप्] फिर-फिर घिसना।
पघसेज्ज (निचू १७)। प्रयो. वहु पघ सावत
(निचू १७)।

पघसण न [प्रघर्षण] पुन पुन घर्षण,
'एक दिण आघसण, दिणे दिणे पघसण'
(निचू ३)।

पघोल अक [प्र + घूर्णय्] मिलना, सगत
होना। वहु 'कठपघोलंतपचमुग्गारो' (कुप्र
२२६)।

पघोस पुं [प्रघोष] उच्चै शब्द-प्रकाश,
उद्घोषणा (भवि)।

पघोसिय वि [प्रघोषित] घोषित किया
हुआ, उच्च स्वर से प्रकाशित किया हुआ
(भवि)।

पच सक [पच्] पकाना। पचइ, पचए,
पचंति, पचसि, पचसे, पचह, पचत्थ, पचामि,
पचामो, पचामु, पचाम, पचिमो, पचिमु
(सक्ति ३०, पि ४३६, ४५५)। कवकृ
पच्चमाण, 'नरए नेरइयाण अहोनिंसि पच्च-
माणाण' (सुर १४, ४६, सुपा ३२८)।

पच (अप) देखो पच। °आलीस, °तालीस
लीन [°चत्वारिंशत्] १ सख्या-विशेष,
पैतालीस, ४५। २ पैतालीस सख्या जिनकी
हो वे (पि २७३, ४४५, पिग)।

पचक्रमणग न [प्रचङ्क्रमण, °क] पाँव से
चलना (श्रौप)।

पचक्रमावण न [प्रचङ्क्रमण] पाँव से
संचारण, पाँव से चलाना (श्रौप १०५ टि)।

पचंड देखो पयंड (वव ८)।

पचलिय देखो पयलिय = प्रचलित (श्रौप)।

पचार सक [प्र + चारय्] चलाना। पचा-
रेइ (सिरि ४३५)।

पचार पु [प्रचार] विस्तार, फैलाव (मोह
२०)। देखो पयार = प्रचार।

पचाल सक [प्र + चालय्] अतिशय
चलाना, खूब चलाना। वहु पचालेमाण
(भग १७, १)।

पचिय वि [प्रचित] समृद्ध (स्वप्न ६६)।

पचीस (अप) लीन [पञ्चविंशति] १ पचीस,
सख्या-विशेष, बीस और पाँच, २५। २
जिनकी सख्या पचीस हो वे (पिग; पि २७३)।

पचुन्निय वि [प्रचूर्णित] चूर-चूर किया
हुआ (सुर २, ८७)।

पचेलिम वि [पचेलिम] पक्व, पका हुआ,
'सइमहुरपचेलिमफलेहि' (सुपा ८३)।

पचोइअ वि [प्रचोदित] प्रेरित (सूत्र १,
२, ३)।

पचइग देखो पञ्चइय = प्रत्ययिक (सुख २,
१७)।

पटरानी (राया २—पत्र २५३) । ६ चम्पे-
श्वर राजा दधिवाहन की एक स्त्री का नाम
(भात्र ४) । ७ राजा कृणिक की एक पत्नी
(भग ७, ६) । ८ अयोध्या के राजा हरिसिंह
की एक पत्नी (धम्म ८) । ९ तेलिपुर के
राजा कलककेतु की पत्नी (दंस १) । १०
कौशाम्बी नगरी के राजा शतानीक के पुत्र
उदयन की पत्नी (विपा १, ५) । ११ शैलक-
पुर के राजा शैलक की पत्नी (राया १, ५) ।
१२ राजा कृणिक के पुत्र कालकुमार की
भार्या का नाम । १३ राजा महावल की भार्या
का नाम (निर १, १, ५, पि १३६) । १४
वीमवें तीर्थंकर श्रीमुनिसुव्रतस्वामी की माता
का नाम (पव ११) । १५ पुण्डरीकिणी
नगरी के राजा महापद्म की पटरानी (भात्र
१) । १६ रम्यनामक विजय की राजधानी
(जं ४) ।

पडमावत्ती (अप) स्त्री [पडमावत्ती] छन्द-
विशेष (पिंग) ।

पडमिणी स्त्री [पडिमनी] १ कमलिनी,
कमल-लता (कप्प, सुपा १५५) । २ एक खेती
की स्त्री का नाम (उप ७१८ टी) ।

पडमुत्तर पुं [पड्मोत्तर] १ नववें चक्रवर्ती
श्रीमहापद्मराज के पिता का नाम (सम
१५२) । २ मन्दर पर्वत के भद्रशाल वन का
एक दिग्हस्ती पर्वत (इक) ।

पडमुत्तरा स्त्री [पड्मोत्तरा] एक प्रकार की
शकर, खंडि, चीनी (राया १, १७—पत्र
पण २२६, १७) ।

पडर वि [प्रचुर] प्रभूत, बहुत (हे १, १८०,
कुमा, सुर ४, ७४) ।

पडर वि [पौर] १ पुर-संरक्षी, नगर से सन्ध
रखनेवाला । २ नगर में रहनेवाला (हे १,
१६२) ।

पडरव पुं [पौरव] पुष्पात्मक चन्द्र-वंशीय
रूप का पुत्र (संसि ६) ।

पडराण (अप) देखो पुराण (भवि) ।

पडरिस वि [पौरुपेय] पुरुष-कृत, पुरुष का
बनाया हुआ, 'वेदस्स तह यापडरिसभावा'
(धम्मसं ८६२) ।

पडरिस पुं [पौरुष] पुरुषत्व, पुरुषार्थ
पडरुस } वीरता, मरदानी (हे १, १११,
१६२), 'पडरुसा' (प्राप्र), 'पडरुस' (संसि
६) ।

पडल सक [पच्] पकाना । पडलइ (हे
४, ६०, दे ६, २६) ।

पडलण न [पचन] पकाना, पाक (पणह १,
१) ।

पडलिअ वि [पक्] पका हुआ (पाप्र) ।

पडलिअ वि [प्रज्वलित] दग्ध, जला हुआ
(उवा) ।

पडल्ल देखो पडल । पडल्लइ (पड्, हे ४, ६०
टि) ।

पडल्ल वि [पक्] पका हुआ (पंचा १) ।

पडल्लण न [पचनरु] रसोई का पात्र (दशवै०
वृ० हारि० पत्र ६७, २) ।

पडविय वि [प्रकुपित] विशेष कुपित, क्रुद्ध
(महा) ।

पडस सक [प्र + द्विप्] द्वेष करना । पड-
सेवा (ओष २५ भा) ।

पडसय वि [दे] देश-विशेष में उत्पन्न । स्त्री.
'सिया (भौप) ।

पडस्स देखो पडस । पडस्ससि (कुप्र ३७७) ।
वक्र पडस्सत, पडस्समाण (राज, श्रंत
२२) । सकृ पडस्सिऊण (स ५१३) ।

पडहण (अप) देखो पवहण (भवि) ।

पऊढ न [दे] गृह, घर (दे ६, ४) ।

पए अ [प्रगे] पहले, पूर्व, 'तित्थगरवयण-
करणे भायरिमाणं कयं पए होइ' (ओष
४७ भा), 'जइ पुण वियालपत्ता पए व पत्ता
उवस्सयं न लमे' (ओष १६८) ।

पएणियार पुं [प्रैणीचार] व्याघ्र की एक
जाति, जो हरिणों को पकड़ने के लिए
हरिणी-समूह को चराते एवं पालते हैं (पणह
१, १—पत्र १४) ।

पएर पुं [दे] १ बुद्धि-विवर, वाढ का छिद्र ।
२ मार्ग, रास्ता । ३ कंठदीनार नामक भुषण-
विशेष । ४ गले का छिद्र । ५ दीननाद, भ्रातृ-
स्वर । ६ वि. दुश्शील, दुराचारी (दे ६,
६७) ।

पएस पुं [दे] प्रातिवेशिक, पड़ोसी (दे ६,
३) ।

पएस पुं [प्रदेश] १ जिसका विभाग न हो
सके ऐसा सूक्ष्म अवयव (ठा १, १) । २
कर्म दल का संचय (नव ३१) । ३ स्थान,
जगह (कुमा ६, ५६) । ४ देश का एक भाग,
प्रान्त (कुमा ६) । ५ परिमाण-विशेष, निरंश-
अवयव-परिमित माप । ६ छोटा माग । ७
परमाणु । ८ द्व्यणुक । ९ त्र्यणुक, तीन
परमाणुओं का समूह (राज) । 'कम्म न
[कम्मन्] कर्म-विशेष, प्रदेश-रूप कर्म
(भग) । 'ग्ग न [ग्न] कर्मों के दलिकों का
परिमाण (भग) । 'घण वि [घन] निविड
प्रदेश (भौप) । 'णाम न [नामन्] कर्म-
विशेष (ठा ६) । 'णाम पुं [नाम] कर्म-
द्रव्यों का परिणाम (ठा ६) । 'दध पुं
[वन्ध] कर्म-दलो का आत्म-प्रदेशों के साथ
सम्बन्ध (सम ६) । 'संकम पुं [सक्रम]
कर्म-द्रव्यों को भिन्न स्वभाव वाले कर्मों के रूप
में परिणत करना (ठा ४, २) ।

पएसण न [प्रदेशान] उपदेश, 'पएसणाय
णाम उवएसो' (भात्र १) ।

पएसय वि [प्रदेशक] उपदेशक, प्रदर्शक,
'सिद्धिपहपएसए वंदे' (विसे १०२५) ।

पएसि पुं [प्रदेशिन्] स्वनाम-ख्यात एक
राजा, जो श्री पार्श्वनाथ भगवान् के केशि-
नामक गणधर से प्रबुद्ध हुआ था (राय, कुप्र
१५५, आ ६) ।

पएसिणी स्त्री [दे] पड़ोस में रहनेवाली स्त्री,
पड़ोसिनी (दे ६, ३ टी) ।

पएसिणी स्त्री [प्रदेशिनी] भ्रंशुष्ठ के पास
की गंगली, तर्जनी (ओष ३६०) ।

पएसिय देखो पदेसिय (राज) ।

पओअ पु [पयोद] मेघ (दस ७, ५२) ।

पओअ देखो पओग (हे १, २४५, भमि ६;
सण, पि ८५) ।

पओअण न [प्रयोजन] १ हेतु, निमित्त,
कारण (सूप्र १, १२) । २ कार्य, काम ।
३ मतलब (महा, उत २३; स्वप्न ४८) ।

पओइद (गौ) वि [प्रयोजित] जिसका
प्रयोग कराया गया हो वह (नाट—विक्र
१०३) ।

पओग पु [प्रयोग] प्रयोजन (सूप्र २, ७, २) ।

पञ्चवलोक्क वि [दे] आसक्त-चित्त, तल्लीन-मनस्क (दे ६, ३४) ।

पञ्चवभास पुं [प्रत्याभास] निगमन, प्रत्युच्चारण (विसे २६३२) ।

पञ्चभिआण देखो पञ्चभिजाण । ए-अ-आणादि (शौ) (पि १७०, ५१०) ।

पञ्चभिआणिद (शौ) देखो पञ्चभिजाणिअ (पि ५६५) ।

पञ्चभिजाण सक [प्रत्यभि + ज्ञा] पहि-चानना, पहिचान लेना । पञ्चभिजाणइ (महा) । वक्र पञ्चभिजाणमाण (गाया १, १६) । सक पञ्चभिजाणिऊण (महा) ।

पञ्चभिजाणिअ वि [प्रत्यभिज्ञात] पहि-चाना हुआ (स ३६०) ।

पञ्चभिजाण न [प्रत्यभिज्ञान] पहिचान (स २१२, नाट—शकु ८४) ।

पञ्चभिजाय देखो पञ्चभिजाणिअ (स १००, सुर ६, ७६, महा) ।

पञ्चमाण देखो पञ्च = पच् ।

पञ्चय पु [प्रत्यय] १ प्रतीति, ज्ञान, बोध (उव, ठा १, विसे २१४०) । २ निर्णय, निश्चय (विसे २१३२) । ३ हेतु, कारण (ठा २, ४) । ४ शपथ, विश्वास उत्पन्न करने के लिए किया या कराया जाता तप्त माप आदि का चवण वगैरह (विसे २१३१) । ५ ज्ञान का कारण । ६ ज्ञान का विषय, ज्ञेय पदार्थ (राज) । ७ प्रत्यय-जनक, प्रतीति का उत्पाक (विसे २१३१, आवम) । ८ विश्वास, श्रद्धा । ९ शब्द, आवाज । १० छिद्र, विवर । ११ आचार, आश्रय । १२ व्याकरण-प्रसिद्ध प्रकृति में लगता शब्द-विशेष (हे २, १३) ।

पञ्चल वि [दे] १ पक्का, समर्थ, पहुँचा हुआ (दे ६, ६६, सुपा ३४, सुर १, १४, कुप्र ६६, पाप्र) । २ असहन, असहिष्णु (दे ६, ६६) ।

पञ्चलिउ } (अप) अ [प्रत्युत] वैपरीत्य,
पञ्चल्लिउ } वरवच, वरत्त (हे ४, ४२०) ।

पञ्चवणद (शौ) वि [प्रत्यवनत] नमा हुआ, 'एस म कोवि पञ्चवणदसिरोहरं उच्छु' विप्र तिण (१) भग करेदि' (अभि २२४) ।

पञ्चवत्थय वि [प्रत्यवस्तुत] १ विद्याया हुआ । २ आच्छादित (आवम) ।

पञ्चवत्थाण न [प्रत्यवस्थान] १ शङ्का-परिहार, समाधान (विसे १००७) । २ प्रतिवचन, खण्डन (वृह १) ।

पञ्चवर न [दे] मुसल, एक प्रकार की मोटी लकड़ी जिससे चावल आदि अन्न कूटे जाते हैं (दे ६, १५) ।

पञ्चवाय पुं [प्रत्यवाय] १ वाघा, विघ्न, व्याघात (गाया १, ६, महा, स २०६) । २ दोष, दूषण (पउम ६५, १२, अचु ७०, ओष २४) । ३ पाप, 'बहुपञ्चवायमरिओ गिहवासो' (सुपा १६२) । ४ दुःख, पीडा (कुप्र ५५२) ।

पञ्चवाय पु [प्रत्यवाय] १ उपघात-हेतु, नाश का कारण (उत्त १०, ३) । २ अनर्थ (पचा ७, ३६) ।

पञ्चवेक्खिद (शौ) वि [प्रत्यवेक्षित] निरीक्षित (नाट—शकु १३०) ।

पञ्चह न [प्रत्यह] हररोज, प्रतिदिन (अभि ६०) ।

पञ्चहिजाण } देखो पञ्चभिजाण । पञ्च-
पञ्चहियाण } हिजाणेदि (पि ५१०) । पञ्च-
हियाणइ (स ४२) । संक्र. पञ्चहियाणिऊण (स ४४०) ।

पञ्चा व्री [दे] तृण-विशेष, बल्वज (ठा ५, ३) ।
°पिञ्चिय न [दे] बल्वज तृण की कूटी हुई छाल का बना हुआ रजोहरण—जैन साधु का एक उपकरण (ठा ५, ३—पत्र ३३८) ।

पञ्चा देखो पच्छा (प्रयौ ३६, नाट—रत्ना ७) ।

पञ्चाअच्छ सक [प्रत्या + गम्] पीछे लौटना, वापस आना । पञ्चाअच्छइ (पड्) ।

पञ्चाअद (शौ) देखो पञ्चागय (प्रयौ २५) ।

पञ्चाइक्ख देखो पञ्चक्ख = प्रत्या + ख्या ।

पञ्चाइक्खामि (आचा २, १५, ५, १) ।

भवि पञ्चाइक्खिस्सामि (पि ५२६) । वक्र

पञ्चाइक्खमाण (पि ४६२) ।

पञ्चाउट्टणया व्री [प्रत्यावर्त्तनता] श्रवाय—

सशय रहित निश्चयात्मक ज्ञान-विशेष, निश्च-

यात्मक मति-ज्ञान (एदि १७६) ।

पञ्चाएस पुंन [प्रत्यादेश] दृष्टान्त, निदर्शन, उदाहरण, 'पञ्चाएसोव घम्मनिरयाण' (स

३५, उव, कुप्र ५०), 'पञ्चाएसं दिट्ठं' (पाप्र) । देखो पञ्चादेस ।

पञ्चागय वि [प्रत्यागत] १ वापस आया हुआ (गा ६३३, दे १, ३१, महा) । २ न, प्रत्यागमन (ठा ६—पत्र ३६५) ।

पञ्चाचक्ख सक [प्रत्या + चक्ष्] परित्याग करना । हेक्क. पञ्चाचक्खिदु (शौ) (पि ४६६, ५७४) ।

पञ्चाणयण न [प्रत्यानयन] वापस ले आना (मुद्रा २७०) ।

पञ्चाणि° } सक [प्रत्या + णी] वापस ले
पञ्चाणी } आना । वक्र. पञ्चाणिज्जत (सि ११, १३५) ।

पञ्चाणीद (शौ) वि [प्रत्यानीत] वापस लाया हुआ (पि ८१, नाट—विक्र १०) ।

पञ्चाथरण न [प्रत्यास्तरण] सामने होकर लडना (राज) ।

पञ्चादिट्ठ वि [प्रत्यादिष्ट] निरस्त, निराकृत (पि १४५, मृच्छ ६) ।

पञ्चादेस पुं [प्रत्यादेश] निराकरण (अभि ७२, १७८, नाट—विक्र ३) । देखो पञ्चाएस ।

पञ्चापड अक [प्रत्या + पत्] वापस आना, लौटकर आ पडना । वक्र. 'अगपडि-हयपुणरविपञ्चापडतचंचलमिरिद्धकवयं (श्रौप) ।

पञ्चामित्त पुंन [प्रत्यमित्र] मित्र, दुश्मन (गाया १, २—पत्र ८७, श्रौप) ।

पञ्चाय सक [ति + आयय्] १ प्रतीति कराना । २ विश्वास कराना । पञ्चाग्रइ (गा ७१२) । पञ्चाएमो (स ३२४) ।

पञ्चाय° देखो पञ्चाया ।

पञ्चायण न [प्रत्यायन] ज्ञान कराना, प्रतीति-जनन (विसे २१३६) ।

पञ्चायय वि [प्रत्यायक] १ निर्णय-जनक । २ विश्वास-जनक (विक्र ११३) ।

पञ्चाया अक [प्रत्या + जन्] उत्पन्न होना, जन्म लेना । पञ्चायति (श्रौप) । भवि,

पञ्चायाहिद (श्रौप, पि ५२७) ।

पञ्चाया अक [प्रत्या + या] ऊपर देखो । पञ्चायंति (पि ५२७) ।

पञ्चायाइ व्री [प्रत्याजाति, प्रत्यायाति] उत्पत्ति, जन्म-ग्रहण (ठा ३, ३—पत्र १४४) ।

पञ्चायाय वि [प्रत्यायात] उत्पन्न (भग) ।

केवलज्ञान और निर्वाण । २ काम्पित्यपुर, जहाँ तेरहवें जिन-देव श्रीविमलनाथ के पाँचों कल्याणक हुए थे (ती २४) । ३ तप-विशेष (जीत) । ४ कोट्टग वि [कोट्टक] १ पाँच कोष्ठो मे युक्त । २ पु. पुरुष (तंडु) । ५ गव्व न [गव्य] गाय के ये पाँच पदार्थ—दूध, दही, घृत, गोमय और मूत्र, पचगव्य (कप्प) । ६ गाह न [गाथ] गाथाछन्द वाले पाँच पद्य (कस) । ७ गुण वि [गुण] पाँचगुना (ठा ५, ३) । ८ चित्त पुं [चित्त] षष्ठ जिन-देव श्रीपद्मप्रभ, जिनके पाँचों कल्याणक चित्रा नक्षत्र मे हुए थे (ठा ५, १. कप्प) । ९ जाम न [याम] १ अहिंसा, सत्य, अचौर्य, ब्रह्मचर्य और त्याग ये पाँच महाव्रत । २ वि. जिसमे इन पाँच महाव्रतों का निरूपण हो वह (ठा ६) । १० णड्ढि वी [नवति] पंचानवे, ६५ (काल) । ११ णड्ड वि [नवत] ६५ वां (काल) । १२ तालीस (अप) छीन [चत्वारिंशत्] पैतालीस, ४५ (पिग, पि ४४५) । १३ तित्थी वी [तीर्थी] पाँच तीर्थों का समुदाय (धर्म २) । १४ तीसइम वि [त्रिंशत्तम] पैतीसवाँ ३५ वां (परण ३५) । १५ दस वि व. [दशन्] पनरह, १० (कप्प) । १६ दसम वि [दशम] पनरहवाँ, १५ वां (राया १, १) । १७ दसी वी [दशी] १ पनरहवी, १५ वी (विसे ५७६) । २ पूर्णिमा । ३ अमावास्या (सुज १०) । ४ दसुत्तरसय वि [दशोत्तरशत-तम] एक सौ पनरहवाँ, ११५ वां (पउम ११५, २४) । ५ नड्डि देखो णड्डि (पि ४४७), नाणि वि [ज्ञानिन्] मति, श्रुत, अवधि, मन पर्यंत और केवल इन पाँचों ज्ञानों से युक्त, सर्वज्ञ (सम्म ६६) । ६ पव्वी वी [पर्वी] मास की दो अष्टमी, दो चतुर्दशी और शुक्ल पंचमी ये पाँच तिथियाँ (रयण २६) । ७ पुव्वासाढ पुं [पूर्वाषाढ] दसवें जिनदेव श्रीशीतलनाथ, जिनके पाँचों कल्याणक पूर्वाषाढा नक्षत्र में हुए थे (ठा ५, १) । ८ पूस पु [पुष्य] पनरहवें जिनदेव श्रीषम-नाथ (ठा ५, १) । ९ बाण पुं [बाण] कामदेव (सुर ४, २४६, कुमा) । १० भूय न [भूत] पृथिवी, जल, अग्नि, वायु और

आकाश ये पाँच पदार्थ (सूअ १, १, १) । ११ भूयवाइ वि [भूतवादिन्] आत्मा आदि पदार्थों को न मान कर केवल पाँच भूतों को ही माननेवाला, नास्तिक (सूअ १, १, १) । १२ महव्वइय वि [महान्नतिक] पाँच महा-व्रतोवाला (सूअ २, ७) । १३ महव्वय न [महान्नत] हिंसा, असत्य, चोरी, मैथुन, और परिग्रह का सर्वथा परित्याग (परह २, ५) । १४ महाभूय न [महाभूत] पृथिवी, जल, अग्नि, वायु और आकाश ये पाँच पदार्थ (विसे) । १५ मुट्ठिय वि [मुष्टिक] पाँच मुष्टियों का पाँच मुष्टियों से पूर्ण किया जाता (लाच) (राया १, १, कप्प, महा) । १६ मुह पुं [मुख] सिंह, पंचानन (उप १०३१ टी) । १७ यसी देखो दसी (पउम ६६, १४) । १८ रत्त, राय पुं [रात्र] पाँच रात (मा ४३, परह २, ५—पत्र १४६) । १९ रासिय न [राशिक] गणित-विशेष (ठा ४, ३) । २० रूविय वि [रूपिक] पाँच प्रकार के वर्णवाला (ठा ४, ४) । २१ वत्थुग न [वस्तुक] आचार्य हरि-भद्रसूरि-रचित ग्रन्थ-विशेष (पंचव १, १) । २२ वरिस वि [वर्ष] पाँच वर्ष की अवस्था-वाला (सुर २, ७३) । २३ विह वि [विध] पाँच प्रकार का (अणु) । २४ वीसइम वि [विंशतितम] पचीसवाँ (पउम २५, २६) । २५ सगह पुं [सग्रह] आचार्य श्रीहरिभद्रसूरि-कृत एक जैन ग्रन्थ (पच १) । २६ संवच्छरिय वि [सांवत्सरिक] पाँच वर्ष परिमाण-वाला, पाँच वर्ष की आयुवाला (सम ७५) । २७ सट्ट वि [षट्] पैसठवाँ, ६५ वां (पउम ६५, ५१) । २८ सट्ठि वी [षष्टि] पैसठ, ६५ (कप्प) । २९ समिय वि [समित] पाँच समितियों का पालन करनेवाला (सं ८) । ३० सर पुं [शर] कामदेव (पाम, सुर २, ६३; सुपा ६०, रंभा) । ३१ सीस पुं [शीर्ष] देव-विशेष (क्षीव) । ३२ सुण्ण न [शून्य] पाँच प्राणिवध-स्थान (सूअ १, १, ४) । ३३ सुत्तग न [सुत्रक] आचार्य-श्रीहरिभद्रसूरि-निर्मित एक जैन ग्रन्थ (पसू १) । ३४ सेल, सेल्ला, सेलय पुं [शैल, क] लवणोदधि में स्थित और पाँच पर्वतों

से विभूषित एक छोटा द्वीप (महा, बृह ४) । ३५ सोगधिअ वि [सौगन्धिक] इलायची, लवंग, कपूर, ककूल और जातीफल—जायफल इन पाँच सुगन्धित वस्तुओं से संस्कृत, 'नन्नत्थ पञ्चसोगधिअणं तवोलेणं, भवसेसमुहं वासविहि पच्चक्खामि' (उवा) । ३६ हत्तर वि [सप्तत] पचहत्तरवाँ, ७५ वां (पउम ७५, ८६) । ३७ हत्तरि वी [सप्तति] १ संख्या विशेष, ७५ । २ जिनकी संख्या पचहत्तर हो वे (पि २६४, कप्प) । ३८ हत्थुत्तर पुं [हस्तोत्तर] भगवान् महावीर, जिनके पाँचों कल्याणक उत्तराफाल्गुनी-नक्षत्र मे हुए थे (कप्प) । ३९ उड्ड पुं [युव] कामदेव (सण) । ४० णड्डि वी [नवति] १ संख्या-विशेष, पंचानवे, ६५ । २ जिनकी संख्या पंचानवे हो वे (सम ६७, पउम २०, १०३, पि ४४०) । ४१ णड्डि वि [नवत] पंचानवाँ, ६५ वां (पउम ६५, ६६) । ४२ णण पुं [नन] सिंह, गजेन्द्र (सुपा १७६, भवि) । ४३ णुव्वइय वि [णुव्वतिक] हिंसा, असत्य, चोरी, मैथुन और परिग्रह का आशिक त्यागवाला (उवा, औप, राया १, १२) । ४४ याम देखो जाम (बृह ६) । ४५ स वी [शत] १ संख्या-विशेष, पचास, ५० । २ जिनकी संख्या पचीस हो वे, 'पचास अज्जियासाहस्सीओ' (सम ७०) । ४६ सग न [शक] आचार्य श्रीहरिभद्रसूरि-कृत एक जैन ग्रन्थ (पचा) । ४७ सीइ वी [शीति] १ संख्या विशेष, अस्सी और पाँच, ८५ । २ जिनकी संख्या पचासी हो वे (सम ६२, पि ४४६) । ४८ सीइम वि [शीतितम] पचासीवाँ, ८५ वां (पउम ८५, ३१, कप्प, पि ४४६) । पंचअण्ण देखो पचजण्ण (गउठ) । पचग न [पञ्चाङ्ग] १ दो हाथ, दो जानु और मस्तक ये पाँच शरीरावयव । २ वि. पूर्वोक्त पाँच अंगवाला (प्रणाम आदि), 'पचगं करिय ताहे परिणाय' (सुर ४, ६८) । पंचगुलि पुं [दे] एरएड-बुद्ध, रेंडो का गाल (दे ६, १७) । पंचगुलि पु [पञ्चागुलि] हस्त, हाथ (राया १, १, कप्प) ।

पच्चोणियत्त वि [प्रत्यवनिवृत्त] ऊँचा उछल कर नीचे गिरा हुआ (पएह १, ३—पत्र ४५)।

पच्चोणिवय अक [प्रत्यवनि + पत्] उछल कर नीचे गिरना। वक्र. पच्चोणिवयत्त (श्रौप)।

पच्चोणी [दे] देखो पच्चोवणी (स २३५, ३०२, सुपा ६१, २२४, २७६)।

पच्चोयड न [दे] १ तट के समीप का ऊँचा प्रदेश (जीव ३)। २ वि आच्छादित (राय)।

पच्चोयर सक [प्रत्यव + तृ] नीचे उतरना। पच्चोयरइ (आचा २, १५, २८)। सक. पच्चोयरित्ता (आचा २, १५, २८)।

पच्चोरुभ } सक [प्रत्यव + रुह्] नीचे
पच्चोरुह् } उतरना। पच्चोरुभइ (राया १, १)। पच्चोरुहइ (कप्प)। संक्र. पच्चोरुहित्ता (कप्प)।

पच्चोवणिअ वि [दे] समुख आया हुआ (दे ६, २४)।

पच्चोवणी छी [दे] समुख आगमन (दे ६, २४)।

पचोसक अक [प्रत्यव + ष्वष्क्] १ नीचे उतरना। २ पीछे हटना। पचोसकइ, पचो-सकंति (उवा. पि ३०२, भग)। संक्र. पच्चो-सकित्ता (उवा, भग)।

पच्छ सक [प्र + अर्थय्] प्रार्थना करना। कवक. पच्छिजमाण (कप्प, श्रौप)।

पच्छ वि [पथ्य] १ रोगी का हितकारी आहार (हे २, २१, प्राप्र; कुमा, स ७२४, सुपा ५७६)। २ हितकारक, हितकारी, 'पच्छा वाया' (राया १, ११—पत्र १७१)।

पच्छ न [पश्चात्] १ चरम, शेष (चद १)। २ पीछे, पृष्ठ भाग। ३ पश्चिम दिशा, 'पुव्वेण सणं पच्छेण वंजुला दाहिणेण वडविडओ' (वजा ६६)। ओ अ [तस्] पीछे, पीठ की ओर, 'हत्थी वेगेण पच्छओ लग्गो' (महा), 'वहइ व महीअलमरिओ गोल्लेइ व पच्छओ घरेइ व पुरओ' (से १०, ३०), 'तो चेडयाओ तक्खणमाणावेअण पच्छओ वाहं वदं दसइ' (सुपा २२१)। °कम्म न [°कर्मन्] १ अनन्तर का कर्म,

वाद की क्रिया। २ यतियों की भिक्षा का एक दोष, दातृ-वृत्तक दान देने के बाद की पात्र को साफ करने आदि क्रिया (ओघ ५१६)। °त्ताअ पुं [°ताप] अनुताप (वजा १४२)। °द्ध न [°अर्ध] पीछला आधा, उत्तरार्ध (गउड, महा)। °वत्थुक्क न [°वास्तुक] पिछला घर, घर का पिछला हिस्सा (पएह २, ४—पत्र १३१)। °याव पु [°ताप] पश्चात्ताप, अनुताप (आवम)। देखो पच्छा = पश्चात्।

पच्छइ } (अप) अ [पश्चात्] ऊपर देखो
पच्छए } (हे ४, ४२०; पड्, भवि)। °ताव पुं [°ताप] अनुताप, अनुशय (कुमा)।

पच्छइ सक [गम्] जाना, गमन करना। पच्छइइ (हे ४, १६२)।

पच्छंदि वि [गन्तृ] गमन करनेवाला (कुमा)। पच्छभाग पु [पश्चाद्भाग] १ दिवस का पिछला भाग (राज)। २ पुन नक्षत्र-विशेष, चन्द्र पृष्ठ देकर जिसका भोग करता है वह नक्षत्र (ठा ६)।

पच्छण छीन [प्रतक्षण] त्वक् का वारीक विदारण, चाकू आदि से पतली छाल निकालना, 'तच्छणेहि य पच्छणेहि य' (विपा १, १), 'तच्छणाहि य पच्छणाहि य' (राया १, १३)।

पच्छण्ण वि [प्रच्छन्न] गुप्त, अप्रकट, (गा १८३)। °पइ पुं [°पति] जार, उपपति, यार (सूअ १, ४, १)।

पच्छद देखो पच्छय (श्रौप)।

पच्छदण न [प्रच्छदन] आस्तरण, चादर—शय्या के ऊपर का आच्छादन-वस्त्र, 'सुप्पच्छद-णाए सय्याए णिइं ण लभामि' (स्वप्न ६०)। पच्छन्न देखो पच्छण्ण (उव, सुर २, १८४)। पच्छय पुं [प्रच्छद] वस्त्र-विशेष, दुपट्टा, पिछौरी (राया १, १६)।

पच्छयण देखो पत्थयण (°°°)।

पच्छयण देखो पत्थयण (मोह ८०)।

पच्छलिउ (अप) देखो पच्चलिउ (पड्)। पच्छा अ [पश्चात्] १ अनन्तर, बाद, पीछे (सुर २, २४४, पाअ, प्रासू ५७), 'पच्छा तस्स विवागे अंति कलुण महादुक्खा' (प्रासू १२६)। २ परलोक, परजन्म, 'पच्छा

कडुअविवागो' (राज)। ३ पिछला भाग, पृष्ठ। ४ चरम, शेष (हे २, २१)। ५ पश्चिम दिशा (राया १, ११)। °उत्त वि [°आयुत्त] जिसका आयोजन पीछे में किया गया हो वह (कप्प)। °कड पु [°कृत] साधुपन को छोड़कर फिर गृहस्थ बना हुआ (द्र ५०, बृह १)। °कम्म देखो °पच्छ-कम्म (पि ११२)। °णिवाइ देखो °निवाइ (राज)। °णुताव पुं [°अनुताप] पश्चात्ताप, अनुताप, 'पच्छाणुतावेण सुमज्जवसाणेण' (आवम)। °णुपुव्वी छी [°आनुपूर्वी] उलटा क्रम (अणु, कम्म ४, ४३)। °ताव पु [°ताप] अनुताप (आव ४)। °ताविय वि [°तापिक] पश्चात्तापवाला (पएह २, ३)। °निवाइ वि [°निपातिन्] १ पीछे से गिर जानेवाला। २ चारित्र ग्रहण कर बाद में उससे च्युत होनेवाला (आचा)। °भाग पुं [°भाग] पिछला हिस्सा (राया १, १)। °मुइ वि [°मुख] परामुख, जिसने मुँह पीछे की तरफ फेर लिया हो वह (आ १२)। °यव, °याव देखो °ताव (पउम ६५, ६६, सुर १५, १४५, सुपा १२१, महा)। °यावि वि [°तापिन्] पश्चात्ताप करनेवाला (उप ७२८ टी)। °वाय पुं [°वात] पश्चिम दिशा का पवन। २ पीछे का पवन (राया १, ११)। °सखडि छी [दे सस्कृति] १ पिछला संस्कार। २ मरण के उपलक्ष्य में जाति—कुटुंबी वगैरह प्रभूत मनुष्यों के लिए पकायी जाती रसोई (आचा २, १, ३, २)। °सथव पु [°संस्तव] १ पिछला सबन्ध, छी, पुत्री वगैरह का सबन्ध। २ जैन मुनियों के लिए भिक्षा का एक दोष, भ्रशुर आदि पक्ष में अच्छी भिक्षा मिलने की लालच से पहले भिक्षायें जाना (ठा ३, ४)। °सथुय वि [°संस्तुत] पिछले संबन्ध से परिचित (आचा २, १, ४, ५)। °हुत्त वि [°दे] पीछे की तरफ का, 'थलमत्थयम्मि पच्छा-हुत्ताइ पयाइं तीए दट्ठूण' (सुपा २८१)। पच्छा छी [पथ्या] हरे, हरीतकी (हे २, २१)।

पच्छाअ सक [प्र + छदय्] १ ढकना। २ छिपाना। वक्र. पच्छाअंत (से ६, ४६, ११, ६)। क. पच्छाइज्ज (वसु)।

पंडव पुं [पाण्डव] राजा पाण्डु का पुत्र—१ युधिष्ठिर, २ भीम, ३ अर्जुन, ४ सहदेव और ५ नकुल (गाथा १, १६, उप ६४८ टी)। पंडव पु [दे] अश्व-रक्षक (?), 'सिद्धि सुहर्देहि तासियपंडववयोहि नरवरो रुद्रो' (सम्मत्त २१६)।

पंडविअ वि [दे] जलाद्र, पानी से भीजा हुआ (दे ६, २०)।

पण्डिअ वि [पण्डित] १ विद्वान् शास्त्रो के मर्म को जाननेवाला, बुद्धिमान्, तत्त्वज्ञ, 'कामज्मया एगमं गरिया होत्या वाक्त्तरी-कलापडिया' (विपा १, २, प्राप् ७४, १२६)। २ सयत, साधु (सुअ १, ८, ६)। ३ मरण न [मरण] साधु का मरण, शुभ मरण-विशेष (भग, पञ्च ४६)। ४ भाण वि [म्मन्य] विद्याभिमानी, निज को परिहृत माननेवाला, दुर्विद्वध, भ्रष्टपका, मूर्ख, अनाडी (श्लो २७ भा)। ५ भाणि वि [मानिन्] देखो पूर्वोक्त अर्थ (पउम १०५, २१, उप १३४ टी)। ६ वीरिअ न [वीर्य] संयत का आत्म-बल (भग)।

पण्डिअमाणि वि [पाण्डित्यमानिन्] पण्डिताई का अभिमान रखनेवाला, विद्वत्ता का धर्मद रखनेवाला (वेद १६)।

पण्डिअ } न [पाण्डित्य] परिहृताई,
पण्डित्त } विद्वत्ता, वैदुष्य (उव, सुर १२, ६८, सुपा २६, रंभा, सं ५७)।

पंडी देखो पंड = पाण्ड्य।

पंडीअ (अप) देखो पंडिअ (पिंग)।

पण्डु पुं [पाण्डु] १ नृप-विशेष, पाण्डवो का पिता (उप ६४८ टी, सुपा २७०)। २ रोग-विशेष, पाण्डु-रोग (जं १)। ३ वर्ण-विशेष, शुक्ल और पीत वर्ण। ४ श्वेत वर्ण। ५ वि शुक्ल और पीतवर्णवाला (कप्प, गउड)। ६ सफेद, श्वेत, 'सैअ सिअं वलक्खं अवदाय पण्डु धवलं च' (पाम्, गउड)। ७ शिला-विशेष, पाण्डुकम्बला नामक शिला (जं ४, इक)। कम्बलसिला स्त्री [कम्बलशिला] मेरु पर्वत के पाण्डक वन के दक्षिण छोर पर स्थित एक शिला, जिस पर जिन-देवो का जन्मानिपेक किया जाता है (जं ४)।

'कम्बला स्त्री [कम्बला] वही पूर्वोक्त अर्थ (ठा २, ३)। ८ तणय पुं [तनय] पाण्डु-राज का पुत्र, पाण्डव (गउड ४८५)। ९ भद्र पुं [भद्र] एक जैन मुनि, जो आर्यं समूति-विजय के शिष्य थे (कप्प)। १० मट्टिया, मत्तिया स्त्री [मृत्तिका] एक प्रकार की सफेद मिट्टी (जीव १, परण १—पत्र २५)। ११ महुरा स्त्री [मथुरा] स्वनाम-ख्यात एक नगरी, पाण्डवों द्वारा बनाई हुई भारतवर्ष के दक्षिण तरफ की एक नगरी का नाम (गाथा १, १६—पत्र २२५, अत)। १२ राय पुं [राज] राजा पाण्डु, पाण्डवो का पिता (गाथा १, १६)। १३ सुय पुं [सुत] पाण्डव (उप ६४८ टी)। १४ सेण पुं [सेन] पाण्डवो का द्रौपदी से उत्पन्न एक पुत्र (गाथा १, १६, उप ६४८ टी)।

पण्डुइय वि [पाण्डुकित] १ श्वेत रंग का किया हुआ (गाथा १, १—पत्र २८)।

पण्डुग } पु [पाण्डु] १ चक्रवर्ती का धान्यो
पण्डुय } की पूति करनेवाला एक निधि (राज, ठा २, १—पत्र ४४, उप ६८६ टी)। २ सर्प की एक जाति (भाचू १)। ३ न, मेरु पर्वत पर स्थित एक वन, पाण्डक-वन (सम ६६)।

पण्डुर पुं [पाण्डुर] १ श्वेत वर्ण, सफेद रंग। २ पीत-मिश्रित श्वेत वर्ण। ३ वि. सफेद वर्ण-वाला। ४ श्वेत-मिश्रित पीत वर्णवाला (कप्प; उव, से ८, ४६)। ५ ज्ञा स्त्री [या] एक जैन साध्वी का नाम (भावम)। ६ स्थिय [स्थिक] एक गवि का नाम (भाचू १)।

पण्डुरग पुं [पाण्डुराङ्ग] सन्यासी की एक जाति, भस्म लगानेवाला सन्यासी (अणु २४)।

पण्डुरग } पु [पाण्डुरक] १ शिव-भक्त
पण्डुरय } सन्यासियो की एक जाति (गाथा १, १५—पत्र १६३)। २ देखो पण्डुर; 'केसा पण्डुरया हवंति ते' (उत्त ३)।

पण्डुरिअ } वि [पाण्डुरित] पाण्डुर वर्ण-
पण्डुइय } वाला बना हुआ (गा ३८८, विपा १, २—पत्र २७)।

पंत वि [प्रान्त] १ अन्तवर्ती, अन्तिम (भग ६, ३३)। २ अशोभन, अमुन्दर (भाचा,

श्लो १७ भा)। ३ इन्द्रियो के अननुकूल, इन्द्रिय-प्रतिकूल (परह २, ५)। ४ अमद्र, असम्य, अशिष्ट (श्लो ३६ टी)। ५ अपसद, नीच, दुष्ट (गाथा १, ८)। ६ दखि, निर्धन (श्लो ६१)। ७ जोणं, फटा-टूटा, पत-वत्य—' (वृह २)। ८ व्यापन्न, विनष्ट, 'एण्णवचणमाई अत, पतं च होइ वावन्न' (वृह १, आचा)। ९ नीरस, सूखा (उत्त ८)। १० भुक्तावशिष्ट, खा लेने पर बचा हुआ। ११ पयुं पित, वासी (गाथा १, ५—पत्र १११)। १२ कुल न [कुल] नीच कुल, जघन्य जाति। (ठा ८)। १३ चर वि [चर] नीरस आहार की खोज करनेवाला तपस्वी (परह २, १)। १४ जीवि वि [जीविन्] नीरस आहार से शरीर-निर्वाह करनेवाला (ठा ५, १)। १५ हार वि [हार] रुखा-सूखा आहार करनेवाला (ठा ५, १)।

पताव सक [दे] ताडन करना, मारना। पतावे (पिड ३२५)।

पंति स्त्री [पङ्क्ति] १ पक्ति, श्रेणी, कतार (हे १, २५, कुमा, कप्प)। २ सेना-विशेष, जिसमें एक हाथी, एक रथ, तीन घोड़े और पाँच पदाती हो ऐसी सेना (पउम ५६, ४)।

पंति स्त्री [दे] वेणी, केश-रचना (दे ६, २)।

पंतिय स्त्री [पङ्क्ति] पक्ति, श्रेणी, 'सरणि वा सरपतियाणि वा सरसरपतियाणि वा' (भाचा २, ३, ३, २)। स्त्री. 'पतियाओ' (अणु)।

पंथ पुं [पन्थ, पथिन्] मार्ग, रास्ता, 'पथ किर देसित्ता' (हे १, ८८), 'पंथम्मि पण्ड-परिबद्ध' (सुपा ५५०, हेका ५४, प्राप् १७३)।

पंथ पुं [पान्थ] पथिक, मुसाफिर (हे १, ३०, अणु ७४)। १ कुट्टण न [कुट्टन] मार-पीटकर मुसाफिरो को लूटना (गाथा १, १८)। २ कोट्ट पुं [कुट्ट] वही अर्थ (विपा १, १—पत्र ११)। ३ कोट्टि स्त्री [कुट्टि] वही अर्थ, 'से चोरसेणाई गामघाय वा जाव पंथकोट्टि वा काउ वच्चति' (गाथा १, १८)। पंथग पुं [पान्थक] एक जैन मुनि (गाथा १, ५, वम्म ६ टी)।

[°नामन्] अनन्तर उक्त कर्म-विशेष (राज, सम ६७)।

पज्जत्त न [पर्याप्त] लगातार चौतीस दिन का उपवास (सबोध ५८)।

पज्जत्तर [दे] देखो पज्जत्तर (पट्—पत्र २१०)।

पज्जत्ति स्त्री [पर्याप्ति] १ शक्ति, सामर्थ्य (सूत्र १, १, ४)। २ जीव की वह शक्ति, जिसके द्वारा पुद्गलो को ग्रहण करने तथा उनको आहार, शरीर आदि के रूप में बदल देने का काम होता है, जीव की पुद्गलो को ग्रहण करने तथा परिणामाने या पचाने की शक्ति (भग, कम्म १, ४६, नव ४, द ४)। ३ प्राप्ति, पूर्ण प्राप्ति (दे ५, ६२)। ४ वृत्ति; 'पियदसणधणजीवियाण को लहइ पज्जत्ति ?' (उप ७६८ टी)।

पज्जत्ति स्त्री [पर्याप्ति] १ पूर्ति, पूर्णता (धर्मवि ३८)। २ अन्त, अवसान (सुख २, ८)।

पज्जन्न पुं [पर्जन्य] मेघ-विशेष, जिसके एक बार बरसने से भूमि में एक हजार वर्ष तक चिकनाहट रहती है, 'पज्जु - (७ज) न्ने णं महामेहं एगे णं वासेणं दस वाससयाहं भावेति' (ठा ४, ४—पत्र २७०)।

पज्जय पु [दे. प्रार्थक] प्रपितामह, पितामह का पिता, परदादा (भग ६, ३, दस ७, सुर १, १७४, २२०)।

पज्जय पु [पर्यय] १ श्रुत-ज्ञान का एक भेद, उत्पत्ति के प्रथम समय में सूक्ष्म निगोद के लब्ध-अपर्याप्त जीव को जो कुश्रुत का अश होता है उससे दूसरे समय में ज्ञान का जितना अश बढ़ता है वह श्रुतज्ञान (कम्म १, ७)। २—देखो पज्जाय (सम्म १०३, रांदि, विसे ४७८, ४८८, ४९०, ४९१)। ३ समास पु [°समास] श्रुतज्ञान का एक भेद, अनन्तर उक्त पर्यय-श्रुत का समुदाय (कम्म १, ७)।

पज्जयण न [पर्ययन] निश्चय, अवधारण (विसे ८३)।

पज्जर सक [कथय] कहना, बोलना। पज्जरइ, पज्जर (हे ४, २, दे ६, २६, कुमा)।

पज्जरय पु [प्रजरक] रत्नप्रभा-नामक नरक-पृथिवी का एक नरकावास (ठा ६—पत्र ३६५)। १ मज्झ पु [°मध्य] एक नरकावास (ठा ६—पत्र ३६७ टी)। १ वट्ट पु [°वर्त्त] नरकावास-विशेष (ठा ६)। १ सिट्ट पु [°विशिष्ट] एक नरकावास, नरक-स्थान-विशेष (ठा ६)।

पज्जल देखो पजल। पज्जलेइ (महा)। वकृ. पज्जलत (कप्प)।

पज्जलण वि [प्रज्वलन] जलानेवाला (ठा ४, १)।

पज्जलिअ पु [प्रज्वलित] तीमरी नरक-भूमि का एक नरक-स्थान (देवेन्द्र ८)।

पज्जलिय वि [प्रज्वलित] १ जलाया हुआ, दग्ध (महा)। २ खूब चमकनेवाला, देदीप्यमान (गच्छ २)।

पज्जलिर वि [प्रज्वलित] १ जलनेवाला। २ खूब चमकनेवाला (सुपा ६३८, सण)।

पज्जलीढ वि [पर्यवलीढ] भक्षित (विचार ३२६)।

पज्जव पुं [पर्यव] १ परिच्छेद, निर्णय (विसे ८३, आवम)। २ देखो पज्जाय (आचा, भग, विसे २७५२, सम्म ३२)। १ कसिण न [°कृत्स्न] चतुर्दश पूर्व-अथ तक का ज्ञान, श्रुतज्ञान-विशेष (पंचभा)। १ जाय वि [°जात] १ भिन्न अवस्था को प्राप्त (परह २, ५)। २ ज्ञान आदि गुणोवाला (ठा १)। ३ न. विषयोपभोग का अनुष्ठान (आचा)। १ जाय वि [°यात] ज्ञान-प्राप्त (ठा १)। १ द्विय पु [स्थित, °र्थिक, °स्तिक] नय-विशेष, द्रव्य को छोड़कर केवल पर्यायो को ही मुख्य माननेवाला पक्ष (सम्म ६)। १ णय, °नय पु [°नय] वही अनन्तर उक्त अर्थ (राज, विसे ७५), उपपज्जति वयति अ भावा नियमेण पज्जवनयस्स' (सम्म ११)।

पज्जवण न [पर्यवन] परिच्छेद, निश्चय (विसे ८३)।

पज्जवत्थाव सक [पर्यव + स्थापय] १ अच्छी अवस्था में रखना। २ विरोध करना। ३ प्रतिपक्ष के साथ वाद करना। पज्जवत्थावेदु

(श्री). (मा ३६)। पज्जवत्थावेहि (पि ५५१)।

पज्जवसाण न [पर्यवसान] अन्त, अवसान (भग)।

पज्जवमिअ न [पर्यवसित] अवसान, अन्त, 'अपज्जवमिए लोए' (आचा)।

पज्जा देखो पण्णा (हे २, ८३)।

पज्जा स्त्री [पद्या] मार्ग, रास्ता. 'भेअ व पडुअ समा भावाए पन्नवणपज्जा' (सम्म १५७, दे ६, १, कुप्र १७६)।

पज्जा स्त्री [दे] नि श्रेणि, सीढ़ी (दे ६, १)।

पज्जा स्त्री [पर्याय] अधिकार, प्रबन्ध भेद (दे ६, १, पात्र)।

पज्जा देखो पया, 'अण्णिज्जति नामे विज्जा दडिज्जती नासे पज्जा' प्रासू ६६)।

पज्जाअर पु [प्रजागर] जागरण, निद्रा का अभाव (अभि ६६)।

पज्जाउल वि [पर्याकुल] विशेष आकुल, व्याकुल (स ७२, ६७३, हे ४, २६६)।

पज्जाभाय सक [पर्या + भाजय] भाग करना। सकृ पज्जाभाइत्ता (राज)।

पज्जाय पुं [पर्याय] १ समान अर्थ का वाक्य शब्द (विसे २५)। २ पूर्ण प्राप्ति (विसे ८३)। ३ पदार्थ-धर्म, वस्तु-गुण। ४ पदार्थ का सूक्ष्म या स्थूल रूपान्तर (विसे ३२१, ४७६, ४८०, ४८१, ४८२, ४८३, ठा १, १०)। ५ क्रम, परिपाटी (एया १, १)। ६ प्रकार, भेद (आवम)। ७ अवसर। ८ निर्माण (हे २, २४)। देखो पज्जय तथा पज्जव।

पज्जाय पु [पर्याय] तात्पर्य, भावार्थ, रहस्य (सूत्रनि १३६)।

पज्जाल सक [प्र + ज्वालय] जलाना, सुलगाना। पज्जालइ (भवि)। सकृ पज्जालिअ, पज्जालिऊण (दस ५, १, महा)।

पज्जालण न [प्रज्वालन] सुलगाना (उप ५६७ टी)।

पज्जालिअ वि [प्रज्वालित] जलाया हुआ, सुलगाया हुआ (सुपा १५१, प्रासू १८)।

पज्जिआ स्त्री [दे. प्रार्थिका] १ माता की मातामही, परनानी। २ पिता की मातामही, परदादी (दस ७, हे ३, ४१)।

पकास देखो पयास = प्रकाश (पिंग) ।

पकिट्ट देखो पगिट्ट (राज) ।

पकिण्ण वि [प्रकीर्ण] १ उत्त, वोया हुआ ।

२ दत्त, दिया हुआ, 'जहिं पकिण्णा (घा) विरुहति पुण्णा' (उत्त १२, १३) । देखो पइण्ण = प्रकीर्ण ।

पकित्तिअ वि [प्रकीर्त्तिन] वर्णित, कथित (श्रु १०८) ।

पकिट्ठि देखो पगइ = प्रकृति (प्राक् १२) ।

पकिट्ठि (शौ) देवो पइइ = प्रकृति (स्वप्न ६०, अग्नि ६५) ।

पकिन्न देखा पकिण्ण (उत्त १२, १३) ।

पकिरण न [प्रकिरण] देने के लिए फेंकना (वव १) ।

पकुण देखो पकर = प्र + कृ । पकुणइ (कम्म १, ६०) ।

पकुप्प अक [प्र + कुप्] क्रोध करना, गुस्सा करना । पकुप्पति (महानि ४) ।

पकुप्पित (वृषे) वि [प्रकुपित] क्रुद्ध, कुपित, गुस्साया हुआ (हे ४, ३२६) ।

पकुविअ ऊपर देखो (महानि ४) ।

पकुव्व सक [प्र + कृ, प्र + कुर्व] १ करने का प्रारम्भ करना । २ प्रकर्ष से करना ।

३ करना । पकुव्वइ (पि ५०८) । वक्क, पकुव्वमाण (सुर १६, २४, पि ५०८) ।

पकुव्वि वि [प्रकारिन, प्रकुर्विन्] १ करने-वाला, कर्ता । २ पु प्रायश्चित्त देकर शुद्धि कराने में समर्थ गुह (द्र ४६, ठा ८, पुष्प ३५६) ।

पकुविअ वि [प्रकृजित] ऊँचे स्वर से चिल्लाया हुआ (उप पृ ३३२) ।

पकोट्ट देखो पओट्ट (राज) ।

पकोय पु [प्रकोप] गुस्सा, क्रोध (आ १४) ।

पक वि [पक] पका हुआ (हे १, ४७, २, ७६, पाय) ।

पक वि [दे] १ तृप्त, गवित । २ समर्थ, पक्का, पहुँचा हुआ (दे ६, ६४, पाय) ।

पकत वि [प्रकान्त] प्रस्तुत, प्रकृत (कुमा २७) ।

पकग्गाह पु [दे] १ मकर, मगरमच्छ (दे ६, २३) । २ पानी में बसनेवाला सिंहाकार जल-जन्तु (से ५, ५७) ।

पक्कग वि [दे] १ असहन, असहिष्णु । २ समर्थ, शक्त (दे ६, ६६) । ३ पुं चारुडाल (स ६३) । ४ एक अनार्य देश । ५ पुत्री अनार्य देश-विशेष में रहनेवाली एक मनुष्य-जाति (श्रीप, राज) । स्त्री. °णी (गाया १, १, श्रीप, इक) । ६ पु एक नीच जाति का घर, शवर-गृह (परा ५२) । °उल न [कुल] १ चारुडाल का घर (वृह ३) । २ एक गहिँत कुल, 'पक्काणउले वसतो सउणी इयरोवि गराहो होइ' (आव ३) ।

पक्कगि वि [दे] १ अतिशय शोभमान, खूब शोभता हुआ । २ भग्न, भाँगा हुआ । ३ प्रिववद, प्रियभाषी (दे ६, ६५) ।

पक्कणिय पुत्री [दे] एक अनार्य देश में रहनेवाली मनुष्य जाति (पराह १, १—पत्र १४, इक) ।

पक्कन्न न [पक्कन्न] केवल धी मे बनी हुई वस्तु, मिठाई आदि (सुपा ३८७) ।

पक्कम सक [प्र + क्रम्] प्रकर्ष से समर्थ होना । पक्कमइ (भग १५—पत्र ६७८) ।

पक्कम सक [प्र + क्रम्] १ प्रकर्ष से जाना, चला जाना गमन करना । २ अक, प्रयत्न होना । प्रवृत्ति होना । पक्कमई (उत्त ३, १३) । पक्कमति (उत्त २७, १४, दम ३, १३), 'अणुमानणमेव पक्कमे' (सूअ १, २, १, ११) ।

पक्कम पुं [प्रक्रम] प्रन्ताव, प्रसंग (सुपा ३७४) ।

पक्कमणी स्त्री [प्रक्रमणी] विद्या-विशेष (सूअ २, २, २७) ।

पकल वि [दे] १ समर्थ, शक्त (हे २, १७४, पाय, सुर ११, १०४, वज्जा ३४) । १ दर्प-युक्त, गवित (सुर ११, १०४; गा ११८) । ३ प्रौढ, 'चत्तारि पक्कलवइल्ला' (गा ८१२, पि ४३६) ।

पकस देखो वकस (भावा) ।

पक्कसावअ पु [दे] १ शरभ । २ व्याघ्र (दे ६, ७५) ।

पक्काइय वि [पक्काइय] पकाया हुआ, 'पक्काइयमारलिगसारिच्छा' (वज्जा ६२) ।

पकिर सक [प्र + कृ] फेंकना । वक्क, 'छारं च धूलिं च कयवरं च उवरिं पकिर-माणा' (गाया १ २) ।

पक्कीलिय वि [प्रकीर्त्तित] जिसने क्रीडा का प्रारम्भ किया हो वह (गाया १, १, कप्प) ।

पक्कल्लय वि [पक] पका हुआ (उवा) ।

पक्ख पुं [पक्ष] वेदिका का एक भाग (राय ८२) ।

पक्ख पु [पक्ष] १ पाख, पखवारा, आवा महीना, पन्द्रह दिन-रात (ठा २, ४—पत्र ८६ कुमा) । २ शुक्ल और कृष्ण पक्ष, उजैला और अँवेरा पाख (जीव २, हे २ १०६) । ३ पार्व, पजिर, कन्वा के नीचे का भाग । ४ पक्षियों का अवयव-विशेष, पख, पर, पतत्र (कुमा) । ५ तर्कशास्त्र-प्रसिद्ध अनुमान-प्रमाण का एक अवयव, साध्यवाली वस्तु (विसे २८२४) । ६ तरफ, ओर । ७ जत्था, दल, टोली । ८ मित्र, सखा । ९ शरीर का आघा भाग । १० तरफदार । ११ तीर का पख (हे २, १४७) । १२ तरफदारी (वव १) । °ग वि [°ग] पक्ष-गामी, पक्ष पर्यन्त स्थायी (कम्म १, १८) । °पिंड पुं [°पिण्ड] आसन-विशेष—१ जानु और जाँघ पर बन्न बाँध कर बैठना । २ दोनों हाथों से शरीर का बन्धन कर बैठना (उत्त १, १६) । °य पुं [°य] पखा, ताल-वृत्त (कप्प) । °वत वि [°वत्] तरफ-दारीवाला (वव १) । °वाइल्ल वि [°पातिन्] पक्षपात करनेवाला, तरफदारी करनेवाला (उप ७२८ टी, घम्म १ टी) । °वाद पुं [°पात] तरफदारी (उप ६७०, स्वप्न ४५) । °वादि (शौ) देखो °वाडल (नाट—विक्र २, मालती ६५) । °वाय देखो °वाद (मुपा २०६, २६३) । °वाय पु [°वाड] पक्ष-सम्बन्धी विवाद (उप पृ ३१२) । °वाह पु [°वाह] वेदिका का एक देश-विशेष (ज १) । °वाडिअ वि [°पतिन्] पक्ष-पाती (हे ४, ४०१) । °वाइया स्त्री [°वापिका] होम-विशेष (स ७५७) । पक्खत न [पक्षान्त] अन्यतर इन्द्रिय-जात, 'अन्नयरं इन्द्रियजाय पक्खत भएणइ' (निच्च ६) ।

पट्टा, चकनामा, किसी प्रकार का अधिकार-
पत्र (कुप्र ११, जं ३) । ६ रेशम । ७ पाट,
सन (गा ५२०, कप्प) । ८ रेशमी कपडा ।
९ सन का कपडा (कप्प, औप) । १०
सिंहासन, गद्दी, पाट (कुप्र २८, सुपा २८५) ।
१२ कलावत् (राज) । १३ पट्टी, फोडा
आदि पर बाँधा जाता लम्बा वस्त्राश,
पाटा, 'चउरगुलपमाणपट्टववेण मिरिवच्छालं-
किय छाड्य वच्छत्यल' (महा, विपा १, १) ।
१३ शाक-विशेष (सुज्ज २०) । 'इल्ल पुं
[वन] पटेल, गाँव का मुखिया (ज ३) ।
'उडी छी [कुटी] तंबू, वस्त्र-गृह (सुर १३,
१५७) । 'करि पु [करिन्] प्रधान हस्ती
(सुपा ३७३) । 'कार पु [कार] तन्तुवाय,
वस्त्र बुननेवाला, जुलाहा (परण १) । 'वासिआ
छी [वासिता] एक शिरो-भूषण (दे ४,
४३) । 'साला छी [शाला] उपास्य, जैन
मुनि के रहने का स्थान (सुपा २८५) । 'सुत्त
न [भूत्र] रेशमी सूता (आवम) । 'हस्ति
पु [हस्तिन] प्रधान हाथी (सुपा ३७२) ।
पट्टइल्ल } पु [दे] पटेल, गाँव का मुखिया
पट्टइल्ल } (सुपा २७३, ३६१) ।
पट्टसुअ न [पट्टाशुक] १ रेशमी वस्त्र । २
सन का वस्त्र (गा ५२०, कप्प) ।
पट्टग देखो पट्ट (कम) ।
पट्टण न [पत्तन] नगर, शहर (भग, औप,
प्राप्र कुमा) ।
पट्टदेवां छी [पट्टदेवी] पटरानी (सिरि
१२१२) ।
पट्टय देखो पट्ट (उवा, णाया १, १६) ।
पट्टसुत्त न [पट्टसूत्र] रेशमी वस्त्र (धर्मवि
७२) ।
पट्टाडा छी [दे] पट्टा, घोड़े की पेटी, कसन,
'छोडिया पट्टाडा, ऊसारिय पल्लाण' (महा;
सुख १८, ३७) ।
पट्टिय वि [पट्टिक] पट्टे पर दिया जाता
गाँव वगैरह, 'पुविं पट्टियगामम्मि तुट्टदन्वत्थं
पट्टइलो नरवालो पुविं जो आसि शुत्तीए
वित्तो' (सुपा २७३) ।
पट्टिया छी [पट्टिका] १ छोटा तल्ला, पाटी,
'चित्तपट्टिया' (सुर १, ८८) । २ देखो
पट्टी, 'सरामणपट्टिया' (राज—ज ३) ।

पट्टिस पु [दे पट्टिश] प्रहरण-विशेष, एक
प्रकार का हथियार (परह १, १, पउम ८,
४५) ।
पट्टी छी [पट्टी] १ धनुर्बन्ध । २ हस्तपट्टिका,
हाथ पर की पट्टी, 'उप्पीडियसरामणपट्टिए'
(विपा १, १—पत्र २४) ।
पट्टुअ पुन देखो पट्टुया, 'पट्टुएहि'
(मुख ६, १) ।
पट्टुया छी [दे] पाद-प्रहार, लात, गुजराती
में 'पाट्ट' सिरिवच्छो गोणेण तहाहभो
पट्टुयाए हिययम्मि' (सुपा २३७) । देखो
पट्टुआ ।
पट्टुहिय न [दे] कनुपित जल, गदा जल,
'पट्टुहियं जाण कलुमजत्त' (पाप्र) ।
पट्ट वि [प्रष्ट] १ अग्रगामी, अग्रसर, अग्रग्रा
(णाया १, १—पत्र १६) । २ कृशल, निपुण ।
३ प्रधान, मुखिया (औप, राज) ।
पट्ट वि [स्पष्ट] जिसका स्पर्श किया गया हो
वह (औप) ।
पट्ट न [पृष्ट] १ पीठ, शरीर के पीछे का
भाग (णाया १, ६, कुमा) । २ तल, ऊपर
का भाग, 'तलिम पट्ट च तल' (पाप्र) ।
'चर वि [चर] अनुयायी, अनुगामी (कुमा) ।
पट्ट वि [पृष्ट] १ जिसको पूछा गया हो
वह । २ न. प्रश्न, सवाल, 'छविंहे पट्टे
परणत्ते' (ठा ६—पत्र ३७५) ।
पट्टव सक [प्र+स्थापय] १ प्रस्थान
कराना, भेजना । २ प्रवृत्ति कराना । ३
प्रारम्भ करना । ४ प्रकल्प से स्थापना करना ।
५ प्रायश्चित्त देना । पट्टवइ (हे ४, ३७) ।
भूका पट्टवइसु (कप्प) । कृ पट्टवियन्त्र
(कस, सुपा ६२७) ।
पट्टवग देखो पट्टवय (कम्म ६, ६६ टी) ।
पट्टवण न [प्रस्थापन] १ प्रकृष्ट स्थापन ।
२ प्रारम्भ, 'इम पुण पट्टवण पट्टुच' (अणु) ।
पट्टवणा छी [प्रस्थापना] १ प्रकृष्ट स्थापना ।
२ प्रायश्चित्तप्रदान, 'दुविहा पट्टवणा खलु'
(वव १) ।
पट्टवय वि [प्रस्थापक] १ प्रवर्तक, प्रवृत्ति
करानेवाला (णाया १, १—पत्र ६३) । २
प्रारम्भ करनेवाला (विसे ६२७) ।

पट्टविअ वि [प्रस्थापत] भेजा हुआ (पाप्र,
कुमा) । २ प्रवृत्ति (निचू २०) । ३ स्थिर
किया हुआ (भग १२, ४) । ४ प्रकल्प से
स्थापित, व्यवस्थापित (परण २१) ।
पट्टविडया } छी [प्रस्थापिता] प्रायश्चित्त-
पट्टविया } विशेष, अनेक प्रायश्चित्तों में
जिसका पहले प्रारम्भ किया जाय वह (ठा
५, २, निचू २०) ।
पट्टाअ देखो पट्टाव । वकृ पट्टाएत्त (गा
४४०) ।
पट्टाण न [प्रस्थान] प्रयाण (सुपा १४२) ।
पट्टाव देखो पट्टव । पट्टावइ (हे ४, ३७) ।
पट्टावइ (वि ५५३) ।
पट्टाविअ देखो पट्टविअ (हे ४, १६, कुमा,
पि ३०६) ।
पट्टि छी देखो पट्ट = पृष्ठ (गउड, सण) । 'मस
न [मांस] पीठ का मांस (परह १, २) ।
पट्टिअ वि [प्रस्थित] जिसने प्रस्थान किया
हो वह, प्रयात (दे ४, १६, ओष ८१ भा,
सुपा ७८) ।
पट्टिअ वि [दे] अलङ्कृत, विभूषित (पट्ट) ।
पट्टिउकाम वि [प्रस्थातुकाम] प्रयाण का
इच्छुक (आ १४) ।
पट्टिसग न [दे] ककुद, बैल के कंधे पर
का कूबड़, डिल्ला (दे ६, २३) ।
पट्टी देखो पट्टि (महा, काल) ।
पट्टीवस पु [पृष्टवश] घर के मूल दो खमों
पर तिरछा रखा जाता बड़ा खम्भा (वव
१३३) ।
पठ देखो पठ । पठदि (शौ) (नाट—मृच्छ
१४०) । पठति (पिग) । कर्म पठाविअइ
(पि ३०६, ५५१) ।
पठग देखो पाठग (कप्प) ।
पड अक [पन्] पडना, गिरना । पडइ
(उव, पि २१८, २४४) । वकृ पडत,
पडमाण (गा २६४, महा, भवि, वृह ६) ।
सकृ. पडिअ (नाट—शकु ६७) । कृ.
पडणीअ (काल) ।
पड पु [पट] वस्त्र, कपडा (औप, उव, स्वप्न
८५, स ३२६, गा १८) 'कार देखो गार
(राज) । 'कुंडी छी [कुटी] तंबू, वस्त्र-गृह
(दे ६, ६, ती ३) । 'गार पुं [कार]

पक्खोड सक [प्र + छादय्] ढकना, आच्छादन करना। सकृ पक्खोडिय (उप ५८४)।

पक्खोड सक [प्र + स्फोटय] १ खूब झाडना। २ बारम्बार झाडना। पक्खोडिजा, वक्त पक्खोडंत (दस ४, १)। प्रयो. पक्खोडा-विजा (दम ४, १)।

पक्खोड पु [प्रस्फोट] प्रमाजंन, प्रतिलेखन की क्रिया-विशेष (पव २)।

पक्खोडण न [शदन] धूनन, बँपाना (कुमा)। पक्खोडिअ वि [शदित] निर्मादित झाड कर गिराया हुआ (दे ६, २७, पात्र)।

पक्खोडिय देखो पक्खोड = शद, प्र + छादय्।

पक्खोभ सक [प्र + क्षोभय्] क्षुब्ध करना, क्षोभ उत्पन्न कर हिला देना। कवक पक्खुवभत (से २, २४)।

पक्खोलण न [शदन] १ स्थलित होनेवाला। २ वि रुट होनेवाला (राज)।

पक्खम (पै) देखो = पक्खमन्, 'पक्खमलणमण' (प्राक् १२४)।

पक्खोड देखो पक्खोड = प्रस्फोट (पव २)।

पक्खल वि [प्रखर] प्रचण्ड, तीव्र, तेज (प्राप्र)।

पगइ बी [प्रकृति] १ प्रकृति, स्वभाव (भग, कम्म १, २, सुर १४, ६६, सुपा ११०)।

२ प्रकृत अर्थ, प्रस्तुत अर्थ, 'पडिसेहुदुग पगइ गमेइ' (विसे २५०२)। ३ प्राकृत लोक, साधारण जन-समूह, 'दिग्गमुद्धारे बहुदव्वं पगईण' (सुपा ५६७)। ४ कुम्भकार आदि अठारह मनुष्य जातियाँ, अट्टारसपगइवर्मतराण को सो न जो एइ' (आक १२)। ५ कर्मों का भेद (सम ६)। ६ सत्त्व, रज और तम की साम्या-वस्था। ७ वलदेव के एक पुत्र का नाम (राज)।

'वध पु [वन्ध] कर्म पुद्गलो में मिश्र-शक्तियों का पैदा होना (कम्म १, २)। देखो पगडि।

पगठ पु [प्रकण्ठ] १ पीठ-विशेष। २ अन्त का अवनत प्रदेश (जीव ३)।

पगथ सक [प्र + कथय्] निन्दा करना, 'अलियं पग(कं)ये अदुवा पग(कं)ये' (आचा)।

पगड वि [प्रकट] व्यक्त, खुला, स्पष्ट, प्रत्यक्ष, (पि २१६)।

६४

पगड वि [प्रकृत] प्रविहित, विनिर्मित (उत्त १३)।

पगड पु [प्रगर्त्त] बड़ा गड्ढा या गड्ढा (आचा २, १०, २)।

पगडण न [प्रकटन] प्रकाश करना, खुला करना (एदि)।

पगडि बी [प्रकृति] १ भेद, प्रकार (भग)। २—देखो पगइ (सम ५६, सुर १४, ६८)।

पगडीकय वि [प्रकटीकृत] व्यक्त किया हुआ, स्पष्ट किया हुआ (सुपा १८१)।

पगड्ह सक [प्र + कृप्] खीचना। कवक पगड्हज्जमाण (विपा १, १)।

पगप्प देखो पक्कप्प = प्र + कल्पय्। संकृ. पगप्पएत्ता (सूत्र २, ६, ३७)।

पगप्प देखो पक्कप्प = प्र + कल्प (सूत्र १, ८, ५)।

पगप्प वि. [प्रकल्प] १ उत्पन्न होनेवाला, प्रादुर्भूत होनेवाला, 'बहुगुणपगप्पाइं कुब्जा अत्तसमाहिण' (सूत्र १, ३, ३, १६)। देखो पक्कप्प = प्रकल्प (आचा)।

पगप्पिअ वि [प्रकल्पित] प्ररूपित, कथित, 'ए उ एयाहिं विट्ठीहिं पुव्वमासि पगप्पिय' (सूत्र १, ३, ३, १६)। देखो पक्कप्पिअ।

पगप्पिअ वि [प्रकल्पयित्, प्रकर्त्तयित्] काटनेवाला, कतरनेवाला, 'हता छेत्ता पगप्पि- (पिप्पि)त्ता आयसायाणुगामिणो' (सूत्र १, ८, ५)।

पगटभ अक [प्र + गल्भ] १ घृष्टता करना, घृष्ट होना। २ समर्थ होना। पगटभइ, पगटभई (आचा, सूत्र १, २, २, २१, १, २, ३, १०, उत्त ५, ७)।

पगटभ वि [प्रगल्भ] घृष्ट, ढीठ (पल्ल ३३, ६६)। २ समर्थ (उप २६४ टी)।

पगटभ न [प्रगल्भ्य] घृष्टता, ढीठाई, 'पगप्पि पाणे बहुणतिवातो' (सूत्र १, ७, ८)।

पगटभणा बी [प्रगल्भना] प्रगल्भता, घृष्टता (सूत्र १, १०, १७)।

पगटभा बी [प्रगल्भा] भगवान् पार्श्वनाथ की एक शिष्या (आवम)।

पगटिअ वि [प्रगल्भित] घृष्टता-युक्त (सूत्र १, १, १, १३, १, २, ३, ४)।

पगटिअत्तु वि [प्रगल्भित्] काटनेवाला, 'हता छेत्ता पगप्पि' (सूत्र १, ८, ५)।

पगय न [प्रकृत] १ प्रस्ताव, प्रसंग (सूत्रनि ४७)। २ पुं. गाँव का अधिकारी (पव २६८)।

पगय वि [प्रगत] सगत (आवक १८६)।

पगय वि [प्रकृत] प्रस्तुत, अधिकृत (विसे ८३३, उप ४७६)।

पगय वि [प्रगत] १ प्राप्त (राज)। २ जिसने गमन करने का प्रारम्भ किया हो वह, 'मुणि- एोवि जहामिमय पगया पगएण कज्जेण' (सुपा २३५)। ३ न प्रस्ताव, अधिकार (सूत्र १, ११, १५)।

पगय न [दे] पग, पाँव, पैर, 'एत्थतरम्मि लग्गो चडमान्छो'। तेण भग्गो तुरयपगयमग्गो' (महा)।

पगर पु [प्रकर] समूह, राशि (सुपा ६५५)।

पगरण न [प्रकरण] १ अधिकार, प्रस्ताव। २ ग्रन्थ खण्ड-विशेष, ग्रन्थांश-विशेष (विसे १११५)। ३ किसी एक विषय को लेकर बनाया हुआ छोटा ग्रन्थ (उव)।

पगरिअ वि [प्रगलित] गलित्कुष्ठ, कुष्ठ-विशेष की बीमारीवाला (पिड ५७२)।

पगरिस पु [प्रकर्ष] १ उत्कर्ष, श्रेष्ठता (सुपा १०६)। २ आधिक्य, अतिशय (सुर ४, १६६)।

पगरिसण न [प्रकर्षण] ऊपर देखो (यति १६)।

पगल अक [प्र + गल्] भरना, टपकना। वक्त पगलत (विपा १, ७, महा)।

पगहिय वि [प्रगृहीत] ग्रहण किया हुआ, उपात्त (सुर ३, १६७)।

पगाइय वि [प्रगीत] जिसने गाने का प्रारंभ किया हो वह, 'पगाइयाइं मगलमठेउराइ' (स ७३६)।

पगाड वि [प्रगाड] अत्यन्त गाढ (विपा १, १, सुपा ५३०)।

पगाम देखो पकाम (आचा, आ १४, सुर ३, ८७, कुप्र ३१५)।

पडिअग सक [प्रति + जाग] १ सम्हालना । २ सेवा करना, भक्ति करना । ३ शुश्रूषा करना, 'वच्छ । पडियगेहि मरिमोत्तियाइय सारदव्व' (म २८८), पडियगह (स ५४८) ।

पडिअग्गिअ नि [दे] १ परिभुक्त, जिसका परिभोग किया गया हो वह । २ जिसकी वधाई दी गई हो वह । ३ पालन, रक्षित (दे ६, ७४) ।

पडिअग्गिअ वि [अनुव्रजित] अनुसृत (दे ६, ७४) ।

पडिअग्गिअ वि [प्रतिजागृत] भक्ति में आहत (म २१) ।

पडिअग्गर वि [अनुव्रजिन] अनुसरण करने की आहत वाला (कुमा) ।

पडिअज्झअ पु [दे] उपाध्याय, विद्या-दाता गुरु (दे ६, ३१) ।

पडिअट्ठलिअ वि [दे] घृष्ट, घिसा हुआ (मे ६, ३१) ।

पडिअत्त देखो परि + वत्त = परि + वृत् । सक पडिअत्तिअ (नाट) ।

पडिअत्तण न [परिवर्त्तन] फेरफार, हेरफेर (से ५, ६६) ।

पडिअमिअ पु [प्रत्यमित्र] मित्र-शत्रु, मित्र होकर पीछे में जो शत्रु हुआ हो वह (राज) ।

पडिअम्मिय वि [प्रतिकर्मित] मरिडत, विभूषित (दे ६, ३५) ।

पडिअर सक [प्रति + चर] १ वीमार की सेवा करना । २ आदर करना । ३ निरीक्षण करना । ४ परिहार करना । संक पडियरिऊण (निचू १) ।

पडिअर सक [प्रति + कृ] १ बदला चुकाना । २ इलाज करना । ३ स्वीकार करना । हेऊ पडिऊअ (गा ३२०) । मक, 'तहत्ति पडिकाऊण ठाविओ एसो' (कुप्र ४०) ।

पडिअर पु [दे] चुल्लो-मूल, चुल्हे का मूल भाग (दे ६, १७) ।

पडिअर पु [परिकर] परिवार, 'पडियरि (?) रथो पुरिसो व्व निपत्तो तेहि चेव पएहि नलो' (कुप्र ५७) ।

पडिअरग वि [प्रतिचारक] सेवा-शुश्रूषा करनेवाला (निचू १, वव १) ।

पडिअरण न [प्रतिचरण] सेवा, शुश्रूषा (श्रोष ३६ भा, था १, सुपा २६) ।

पडिअरणा स्त्री [प्रतिचरणा] १ वीमार की सेवा-शुश्रूषा (श्रोष ८३) । २ भक्ति, आदर, सत्कार (उप १३६ टी) । ३ आलोचना, निरीक्षण (श्रोष ८३) । ४ प्रतिक्रमण, पाप-कर्म से निवृत्ति । ५ मत्-कार्य में प्रवृत्ति (आव ४) ।

पडिअलि वि [दे] त्वरित, वेग-युक्त (दे ६, २८) ।

पडिआडय मक [प्रत्या + पा] फिर में पान करना । पडिआडयइ (दम १०, १) ।

पडिआडय सक [प्रत्या + दा] फिर में ग्रहण करना । पडिआडयइ (दम १०, १) ।

पडिआगय वि [प्रत्यागत] १ वापम आया हुआ, लौटा हुआ (पठम १६, २६) । २ न. प्रत्यागमन, वापम आना (आचू १) ।

पडिआयण न [प्रत्यापन] फिर में पान, 'वतस्स य पडिआयण' (दमवू १, १) ।

पडिआयण न [प्रत्यादान] फिर में ग्रहण (दमवू १, १) ।

पडिआर पुं [प्रतिकार] १ चिकित्सा, उपाय, इलाज (आव ४, कुमा) । २ बदला, शोध (आचा) । ३ पूर्वचरित कर्म का अनुभव (सूअ १, ३, १, ६) ।

पडिआर पु [प्रत्याहार] तलवार की म्यान (दे २, ५, स २१५), 'न एकम्मि पडियारे दोन्नि करवालाइ मायति' (महा) ।

पडिआर पु [प्रतिचार] सेवा-शुश्रूषा (णाय १, १३—पत्र १७६) ।

पडिआरय वि [प्रतिचारक] सेवा-शुश्रूषा करनेवाला (णाय १, १३ टी—पत्र १८१) ।

स्त्री. 'रिया (णाय १, १—पत्र २८) ।

पडिआरि वि [प्रतिचारिन्] ऊपर देखो (वव १) ।

पडिइ सक [यति + इ] पीछे लोटना, वापम आना । वक, पडिइत (उप ५६७ टी) । हेऊ. पडिएत्तए (कस) ।

पडिइ स्त्री [प्रति] पतन, पात (वव ५) ।

पडिइद पु [प्रतीन्द्र] १ इन्द्र, देव-राज (पठम १०५, ६) । २ इन्द्र का सामानिक-देव, इन्द्र के तुल्य वैभववाला देव (पठम

१०५, १११) । ३ वानर-वंश के एक राजा का नाम (पठम ६, १५२) ।

पडिइंधण न [प्रतीन्वन] अन्न-विशेष, इन्ध-नाम का प्रतिपत्ती अन्न (पठम ७१, ६४) ।

पडिइक्क देखो पडिक्क (आचा) ।

पडिउच्चण न [दे] अपकार का बदला (पठम ११, ३८, ४४, १६) ।

पडिउच्चण न [परिचुम्बन] सगम, संयोग (से २, २७) ।

पडिउच्चार सक [प्रत्युत् + चारय्] उच्चारण करना बोलना (भग, उवा) ।

पडिउज्जम अक [प्रत्युद् + यम्] सम्पूर्ण प्रयत्न करना । पडिउज्जमति (चैद्व ७८२) ।

पडिउट्ठिअ वि [प्रत्युरित्त] जो फिर से खड़ा हुआ हो वह (मे १५, ८०, पठम ६१, ४०) ।

पडिउण्ण देखो परिपुण्ण (से ५, १६) ।

पडिउत्तर न [प्रत्युत्तर] जवाब, उत्तर (सुर २, १५८, भवि) ।

पडिउत्तरण न [प्रत्युत्तरण] पार जाना, पार उतरना (निचू १) ।

पडिउत्ति स्त्री [दे] खबर, समाचार, 'अम्मा-पियरस्स कुसलपडिउत्तो ससिएह पणिउठा' (महा) ।

पडिउत्थ वि [पर्युपित] सपूर्ण रूप से अवस्थित (से ४, ५०) ।

पडिउद्ध वि [प्रतिवुद्ध] १ जागृत, जगा हुआ (से १२, २२) । २ प्रकाश-युक्त, 'जल-णिट्ठिहपडिउद्ध आअण्णाअडिअ विअमइ व घणु' (मे ५, २७) ।

पडिउवयार पुं [प्रत्युपकार] उपकार का बदला, प्रतिफल (पठम ४८, ७२, सुपा ११५) ।

पडिउस्सस अक [प्रत्युन् + श्वस्] पुनर्जीवित होना, फिर से जीना । वक, पडिउस्ससत (से ६, १२) ।

पडिऊल देखो पडिऊल (अन्नु ८०, से ३, ३५) ।

पडिएत्तए देखो पडिइ ।

पडिएल्लिअ वि [दे] कृतार्थ, कृत-कृत्य (दे ६, ३२) ।

पञ्चडय वि [प्रत्ययिक] १ विश्वासी, विश्वा-
वाला (गाथा १, १२) । २ ज्ञानवाला,
प्रत्ययवाला । ३ न. श्रुत-ज्ञान, आगम-ज्ञान
(विमे २१३६) ।

पञ्चडय वि [प्रत्ययित] विश्वासवाला, विश्व-
स्त (महा सुर १६, १६६) ।

पञ्चडय वि [प्रात्ययिक] प्रत्यय से उत्पन्न,
प्रतीति से सजात (ठा ३, ३—पत्र १५१) ।

पञ्चग न [प्रत्यङ्ग] हर एक अवयव (गुण
१५, कप्पु) ।

पञ्चंगिरा स्त्री [प्रत्यङ्गिरा] विद्यादेवी-विशेष,
‘ईमिवियसतवयणा पमणइ पञ्चंगिरा ग्रह
विज्ञा’ (सुपा ३०६) ।

पञ्चंत पुं [प्रत्यन्त] १ अनायदेश (प्रयौ
१६) । २ वि. समीपस्थ देश, सनिकुट्ट प्रान्त
भाग (सुर २, २००) ।

पञ्चतिग देखो पञ्चतिय = प्रत्यन्तिक (आचा
२, ३, १, ५) ।

पञ्चतिय वि [प्रत्यन्तिक] समीप-देश में
स्थित (उप २११ टी) ।

पञ्चतिय वि [प्रात्यन्तिक] प्रत्यन्त देश से
आया हुआ (धम्म ६ टी) ।

पञ्चक्ख न [प्रत्यक्ष] १ इन्द्रिय आदि की
सहायता के बिना ही उत्पन्न होनेवाला ज्ञान
(विमे ८६) । २ इन्द्रियो ने उत्पन्न होनेवाला
ज्ञान (ठा ४, ३) । ३ वि प्रत्यक्ष ज्ञान का
विषय, ‘पञ्चक्खाओ अणुणो एणो तहणो
महाभागो’ (सुर ३, १७१) ।

पञ्चक्ख } सक [प्रत्या + ख्या] त्याग
पञ्चक्खा } करना, त्याग करने का नियम
करना । पञ्चक्खाइ (भग) । वक्र पञ्चक्ख-
माण, पञ्चक्खाएमाण (पि ५६१, उवा ।
सकृ. पञ्चक्खाडत्ता (पि ५८२) । कृ.
पञ्चक्खेय (आव ६) ।

पञ्चक्खाण न [प्रत्याख्यान] १ परियाग
करने की प्रतिज्ञा (भग, उवा) । २ जैन
ग्रन्थाश-विशेष, नववर्ष पूर्व-ग्रन्थ (सम २६) । ३
सर्व मावद्य—निश्र कर्मों से निवृत्ति (कम्म १,
१७) । ४ विरण पुं [विरण] कषाय-विशेष,
सावद्य-विरति का प्रतिवन्धक क्रोध-आदि
(कम्म १, १७) ।

पञ्चक्खाणि वि [प्रत्याख्यानिन्] त्याग की
प्रतिज्ञा करनेवाला (भग ६, ४) ।

पञ्चक्खाणी स्त्री [प्रत्याख्यानी] भाषा-विशेष,
प्रतिपेववचन (भग १०, ३) ।

पञ्चक्खाय वि [प्रत्याख्यात] त्यक्त, छोड़
दिया हुआ (गाथा १, १, भग, कप्पु) ।

पञ्चक्खायय वि [प्रत्याख्यायक] त्याग
करनेवाला, ‘मत्तपञ्चक्खायए’ (भग १४, ७) ।

पञ्चक्खाव सक [प्रत्या + ख्यापय्] त्याग
कराना किसी विषय का त्याग करने
की प्रतिज्ञा कराना । वक्र. पञ्चक्खावित
(आव ६) ।

पञ्चक्खि वि [प्रत्यक्षिन्] प्रत्यक्ष ज्ञानवाला
(वव १) ।

पञ्चक्खिय देखो पञ्चक्खाय (सुपा ६२४) ।

पञ्चक्खीकर सक [प्रत्यक्षी + कृ] प्रत्यक्ष
करना, साक्षात् करना । भवि. पञ्चक्खीक-
रिस्सं (अभि १८८) ।

पञ्चक्खीकिद् (शौ) वि [प्रत्यक्षीकृत] प्रत्यक्ष
किया हुआ, साक्षात् जाना हुआ (पि ४६) ।

पञ्चक्खीभू अक [प्रत्यक्षी + भू] प्रत्यक्ष
होना, साक्षात् होना । संकृ. पञ्चक्खीभूय
(आवम) ।

पञ्चक्खेय देखो पञ्चक्खा ।

पञ्चग्ग वि [प्रत्यग्र] १ प्रवान, मुख्य (स
२४) । २ अष्ट, सुन्दर (उप ६८६ टी, सुर
१०, १५२) । ३ नवीन, नया (पात्र) ।

पञ्चच्छिम देखो पञ्चत्थिम (राज, ठा २,
३—पत्र ७६) ।

पञ्चच्छिमा देखो पञ्चत्थिमा (राज) ।

पञ्चच्छिमिल्ल वि [पाश्चात्य] पश्चिम दिशा
में उत्पन्न, पश्चिम दिशा-सम्बन्धी (सम ६६,
पि ३६५) ।

पञ्चच्छिमुत्तरा देखो पञ्चत्थिमुत्तरा (राज) ।

पञ्चह अक [क्षर] करना, टपकना । पञ्चहइ
(हे ४, १७३) । वक्र. पञ्चहमाण (कुमा) ।

पञ्चहु सक [गम्] जाना, गमन करना ।
पञ्चहुइ (हे ४, १६२) ।

पञ्चड्डिअ वि [क्षरित] भरा हुआ, टपका
हुआ (हे २, १७४) ।

पञ्चड्डिया स्त्री [दे. प्रत्यङ्घिका] मल्लों का एक
प्रकार का करण (विसे ३३५७) ।

पञ्चणीय वि [प्रत्यनीक] विरोधी, प्रतिपक्षी,
दुश्मन (उप १४६ टी, सुपा ३०७) ।

पञ्चणुभव सक [प्रत्यनु + भू] अनुभव
करना । वक्र. पञ्चणुभवमाण (गाथा १,
२) ।

पञ्चणुहो देखो पञ्चणुभव । पञ्चणुहोइ (उत्त
१३, २३) ।

पञ्चत्त वि [प्रत्यक्त] जिसका त्याग करने का
प्रारम्भ किया गया हो वह (उप ८२८) ।

पञ्चत्तर न [दे] चाट्ट, खुशामद (दे ६, २१) ।

पञ्चत्थरण न [प्रत्यास्तरण] विछोना (पि
२८५) । देखो पल्लत्थरण ।

पञ्चत्थि वि [प्रत्यथिन्] प्रतिपक्षी, विरोधी,
दुश्मन (उप १०३१ टी, पात्र, कुप्र १४१) ।

पञ्चत्थिम वि [पाश्चात्य, पश्चिम] १ पश्चिम
दिशा तरफ का, पश्चिम का । २ न. पश्चिम
दिशा, ‘पुरत्थिमेण तवणसमुदे जोयणसाह-
स्सियं खेतं जाणइ, पासइ, एवं दक्खिणेण,
पञ्चत्थिमेण’ (उवा, भग, आचा, ठा २, ३) ।

पञ्चत्थिमा स्त्री [पश्चिमा] पश्चिम दिशा
(ठा १०—पत्र ४७८, आचा) ।

पञ्चत्थिमिल्ल वि [पाश्चात्य] पश्चिम दिशा
का (विपा १, ७, पि ५६५, ६०२) ।

पञ्चत्थिमुत्तरा स्त्री [पश्चिमोत्तरा] पश्चिमोत्तर
दिशा, वायव्य कोण (ठा १०—पत्र ४७८) ।

पञ्चत्थुय वि [प्रत्यास्तुत] आच्छादित, ढका
हुआ (पठम ६४, ६६, जीव ३) । २
विख्याता हुआ (उप ६४८ टी) ।

पञ्चद्ध न [पश्चार्ध] पिछला आधा, उत्तरार्ध
(गउड) ।

पञ्चद्धचक्कट्टि पुं [प्रत्यर्धचक्रवर्तिन्] वासु-
देव का प्रतिपक्षी राजा, प्रतिवामुदेव (ती
३) ।

पञ्चप्पण न [प्रत्यर्पण] वापस देना, लौटा
देना (विसे ३०५७) ।

पञ्चचपिण सक [प्रति + अपर्पय्] १
वापस देना, लौटाना । २ सौंपे हुए कार्य को
करके निवेदन करना । पञ्चचपिणइ (कप्पु) ।
कर्म. पञ्चचपिणइ (पि ५५७) । वक्र.
पञ्चचपिणमाण (ठा ५, २—पत्र ३११) ।
सकृ. पञ्चचपिणत्ता (पि ५५७) ।

पडिक्खाविअ वि [प्रतीक्षित] १ स्थापित।
२ कृत, 'विरमालिअ संसारे जेण पडिक्खा-
विआ समयसत्था' (कुमा)।

पडिक्खिअ वि [प्रतीक्षित] जिसकी प्रतीक्षा
की गई हो वह (दे ८, १३)।

पडिक्खित्त वि [परिक्षिप्त] विस्तारित
(अंत ७)।

पडिखध न [दे] १ जल-वहन जल भरने
का दृति आदि पात्र। २ जलवाह, मेघ, बादल
(दे ६, २८)।

पडिखधी लो [दे] ऊपर देखो (दे ६, २८)।

पडिखद्ध वि [दे] हत, मारा हुआ (?),
'किमेइणा सुणहपाएण पडिखद्धेण' (महा)।

पडिखल देखो पडिक्खल (भवि)। कर्म
पडिखलियइ (कुप २०५)।

पडिखलण देखो पडिक्खलण (धर्मवि ५६)।

पडिखलिअ वि [प्रतिस्खलित] १ रुका
हुआ (भवि)। २ रोका हुआ, 'सहसा ततो
पडिखलिअो अगर्कखेण' (सुपा ५२७)।
देखो पडिक्खलिअ।

पडिखिज्ज अक [परि + खिद्] खिन्न होना,
क्लान्त होना। पडिखिज्जिदि (शौ) (नाट—
मालती ३१)।

पडिगमण न [प्रतिगमन] व्यावर्तन, पीछे
लौटना (वव १०)।

पडिगय पु [प्रतिगज] प्रतिपक्षी हाथी (गउड)।

पडिगय पुं [प्रतिगत] पीछे लौटा हुआ,
वापस गया हुआ (विपा १, १, भग श्रीप,
महा, सुर १, १४६)।

पडिगह देखो पडिग्गह (दे ४, ३१)।

पडिगाह सक [प्रति + ग्रह] ग्रहण
करना, स्वीकार करना। पडिगाहइ (भवि)।
पडिगाह, पडिगाहेहि (कप्प)। सक पडिगा-
हिया, पडिगाहित्ता, पडिगाहेत्ता (कप्प,
आचा २, १, ३, ३)। हेक पडिगाहित्ताए
(कप्प)।

पडिगाहग वि [प्रतिग्राहक] ग्रहण करने
वाला (गाया १, १—पत्र ५३, उप ५
२६३)।

पडिगाहिय वि [प्रतिगृहित] लिया हुआ,
उपात्त (सुपा १४३)।

पडिग्गह पु [पतद्ग्रह, प्रतिग्रह] १ पात्र,
भाजन (पएह २, ५, श्रीप, श्रीव ३६, २५१,
दे ५, ४८, कप्प)। २ कर्म प्रकृति-विशेष, वह
प्रकृति जिनमें दूसरी प्रकृति का कर्म दल
परिणत होता है (कम्मप)। ३ धारि वि
[धारिन्] पात्र रखनेवाला (कप्प)।

पडिग्गहिअ वि [प्रतिग्रहिन्, पतद्ग्रहिन्]
पात्रवाला, 'समणे भगवं महावीरे सवच्छरं
साहिय मास जाव चीवरवारी होत्था,
तेण पर अचेनए पाणिपडिग्गहिए' (कप्प)।

पडिग्गहिद (शौ) वि [प्रतिगृहिन्, परि-
गृहीत] स्वीकृत (नाट—मुच्छ ११०, रत्ना
१२)।

पडिग्गाह देखो पडिगाह। पडिग्गाहेइ
(उवा)। सक पडिग्गाहेत्ता (उवा)। हेक.
पडिग्गाहेत्ताए (कस, श्रीप)।

पडिग्गाह सक [प्रति + ग्राह्य] ग्रहण
करना। क. पडिग्गाहिद्व (शौ) (नाट)।

पडिग्गाह्य वि [प्रतिग्राहक] प्रत्यादाता,
वापस लेनेवाला (दे ७, ५६)।

पडिग्घाय पुं [प्रतिघात] १ निरोध, अटकव
(दस ६, ५८)। २ विनाश (धर्मवि ५४)।

पडिघाय पुं [प्रतिघात] १ नाश, विनाश।
२ निराकरण, निरसन, 'दुक्खपडिघायहेउ'
(आचा, सुर ७, २३४)।

पडिघायग वि [प्रतिघातक] प्रतिघात करने-
वाला (उप २६४ टी)।

पडिघोलि वि [प्रतिघूर्णित] डोलनेवाला,
हिलनेवाला (से ६, ५१)।

पडिचत पुं [प्रतिचन्द] द्वितीय चन्द्र, जो
उत्पात आदि का सूचक है (अणु)।

पडिचक न [प्रतिचक्र] अनुरूप चक्र—समु-
दाय (राज)। देखो पडियक = प्रतिचक्र।

पडिचर देखो पडिअर = प्रति = चर। संक.
पडिचरिय (दस ६, ३)। क. 'संजमो
पडिचरियवो' (आव ४)।

पडिचर सक [प्रति + चर] परिभ्रमण
करना। पडिचरइ (सुज्ज १, ३)।

पडिचरग पुं [प्रतिचरक] जासूस, चर पुरुष
(वृह १)।

पडिचरणा देखो पडिअरणा (राज)।

पडिचार पुं [प्रतिचार] कला विशेष—१
ग्रह आदि की गति का परिज्ञान। २ रोगी
की सेवा-शुद्धा का ज्ञान (ज २, श्रीप, स
६०३)।

पडिचारय पृथ्वी [प्रतिचारक] नीकर,
कर्मकर। लो. रिया (मुपा ३०४)।

पडिचोइज्जमाण देखो परिचोय।

पडिचोइय वि [प्रतिचोदित] १ प्रेरित (उप
पु ३६४)। २ प्रतिभणित, जिसकी उत्तर
दिया गया हो वह (पउम ४४, ४६)।

पडिचोइत्तु वि [प्रतिचोदयितृ] प्रेरक (ठा
३, ३)।

पडिचोय मक [प्रति + चोदय] प्रेरण
करना। पडिचोएति (भग १५)। कवक
पडिचोइज्जमाण (भग १५—पत्र ६७६)।

पडिचोयणा लो [प्रतिचोदना] प्रेरण
(ठा ३, ३, भग १५—पत्र ६७६)।

पडिचोयणा लो [प्रतिचोदना] निमंत्सना,
निष्ठुरता से प्रेरणा (विचार २३८)।

पडिच्छारग देखो पडिचारय (उप ६८६
टी)।

पडिच्छ देखो पडिक्ख। वक. पडिच्छत,
'अहिनेयदिण पडिच्छमाणो चिट्ठइ' (उव
स १२५, महा)। क. पडिच्छियव्व
(महा)।

पडिच्छ सक [प्रति + छप्] ग्रहण करना।
पडिच्छइ, पडिच्छति (कप्प, सुपा ३६)।
वक. पडिच्छमाण, पडिच्छेमाण (श्रीप,
कप्प, गाया १, १)। सक. पडिच्छइत्ता,
पडिच्छिअ, पडिच्छिउ, पडिच्छिऊण
(कप्प, अमि १८५, सुपा ८७, निवू २०)।
हेक. पडिच्छिउं (सुपा ७२)। क. पडि-
च्छियव्व (सुपा १२५, सुर ४, १८६)।
प्रयो. कर्म. पडिच्छावीअदि (शौ) (पि
५५२, नाट)। वक. पडिच्छावेमाण
(कप्प)।

पडिच्छद पुंन [प्रतिच्छन्द] १ मूर्ति, प्रति-
विम्ब (उप ७२८ टी, स १६१, ६०६)।
२ तुल्य, समान (से ८, ४६)। ३ कय वि
[कीकृत] समान किया हुआ (कुमा)।

पञ्चार सक [उपा + लम्भ] उपालम्भ देना, उलाहना देना । पचारइ, पचारंति (हे ४, १५६, कुमा) ।

पञ्चारण न [उपालम्भन] प्रतिभेद (पात्र) ।

पञ्चारिअ वि [प्रचारित] चलाया हुआ (सिरि ४३६) ।

पञ्चारिय वि [उपालब्ध] जिसको उलाहना दिया गया हो वह (भवि) ।

पञ्चालिय वि [दे प्रत्यार्दित] आद्र किया हुआ, गीना किया हुआ, 'पञ्चालिया य से अहिययरं वाहसलिलेण दिट्ठी' (स ३०८) ।

पञ्चालीठ न [प्रत्यालैठ] वाम पाद को पीछे हटा कर और दक्षिण पाँव को आगे रखकर खड़े रहनेवाले बानुष्क की स्थिति धनुषधारियों का पैतरा (वव १) ।

पञ्चावड पुं [प्रत्यावर्त्त] आवर्त्त के सामने का आवर्त्त, पानी का मँवर (राय ३०) ।

पञ्चावरण पु [प्रत्यापराह] मध्याह्न के बाद समय, तीसरा पहर (विपा १, ३ टि, पि ३३०) ।

पञ्चासण वि [प्रत्यासन्न] समीप में स्थित, सन्निकट, बहुत पास (विसे २६३१) ।

पञ्चासत्ति स्त्री [प्रत्यासत्ति] समीपता, सामीप्य (मुद्रा १६१) ।

पञ्चासन्न देखो पञ्चासण, 'निबं पञ्चासन्नो परिसक्कइ सव्वओ मच्चू' (उप ६ टी) ।

पञ्चासा स्त्री [प्रत्याशा] १ आकांक्षा, वांछा, अभिलाषा । २ निराशा के बाद की आशा (स ३६८) । ३ लोभ, लालच (उप ४७६) ।

पञ्चासि वि [प्रत्याशिन] वान्त या कय किया हुआ वस्तु का भक्षण करनेवाला (आचा) ।

पञ्चाह सक [प्रति + ब्रू] उत्तर देना । पञ्चाह (पिंड ३७८) ।

पञ्चाहर सक [प्रत्या + ह] उपदेश देना । वक्र. 'पञ्चाहरओ वि ए हिययगमणीओ जोयएनीहारी सरो' (सम ६०) ।

पञ्चाहुत्त क्रिवि [पञ्चान्मुख] पीछे, पीछे की तरफ, 'जाव न सत्तहु पए पञ्चाहुत्तं नियत्तो सि' (धर्मवि ५४) ।

पञ्चिम देखो पञ्चिम (पिंग, पि ३०१) ।

पञ्चुअ (दे) देखो पञ्चुहिअ (दे ६, २५) ।

पञ्चुअआर देखो पञ्चुवयार (चार ३६, नाट—मृच्छ ५७) ।

पञ्चुगच्छणया स्त्री [प्रत्युद्गमनता] अभिमुख गमन, (भग १४, ३) ।

पञ्चुञ्चार पु [प्रत्युञ्चार] अनुवाद, अनुभाषण (स १८४) ।

पञ्छुच्छुहणी स्त्री [दे] नूतन सुरा, ताजा दाह (दे २, ३५) ।

पञ्चुज्जीविअ वि [प्रत्युज्जीवित] पुनर्जीवित (गा ६३१, कुप्र ३१) ।

पञ्चुञ्जिअ वि [प्रत्युञ्जित] जो सामने खड़ा हुआ हो वह (सुर १, १३४) ।

पञ्चुणम अक [प्रत्युद् + नम्] थोड़ा ऊँचा होना । पञ्चुणमइ (कप्प) । संकृ पञ्चुणमित्ता (कप्प, औप) ।

पञ्चुत्त वि [प्रत्युत्त] फिर से बोया हुआ (दे ७, ७७, गा ६१८) ।

पञ्चुत्तर सक [प्रत्यव + तृ] नीचे आना । पञ्चुतरइ (पि ४४७) । संकृ पञ्चुत्तरित्ता (राज) ।

पञ्चुत्तर न [प्रत्युत्तर] जवाब, उत्तर (आ १२, सुपा २१, १०४) ।

पञ्चुत्थ वि [दे] प्रत्युत्थ, फिर से बोया हुआ (दे ६, १३) ।

पञ्चुत्थय } वि [प्रत्यवस्तृत] आच्छादित
पञ्चुत्थय } (गाया १, १—पत्र १३, २०, कप्प) ।

पञ्चुद्धरिअ वि [दे] समुखागत, सामने आया हुआ (दे ६, २४) ।

पञ्चुद्धार पुं [दे] समुख आगमन (दे ६, २४) ।

पञ्चुप्पण } वि [प्रत्युत्पन्न] वर्तमान काल-
पञ्चुप्पण } संवत्ती (पि ५१६, भग, गाया १, ८, सम्म १०३) । 'नय पु [नय] वर्तमान वस्तु को ही सत्य माननेवाला पक्ष, निश्चय नय (विसे ३१६१) ।

पञ्चुप्पन्न पु [प्रत्युत्पन्न] वर्तमान काल (सूत्र १, २, ३, १०) ।

पञ्चुप्फलिअ वि [प्रत्युत्फलित] वापस आया हुआ (से १४, ८१) ।

पञ्चुब्भइ वि [प्रत्युद्भट] अतिशय प्रवल (संवीध ५३) ।

पञ्चुरस न [प्रत्युरस] हृदय के सामने (राज) ।

पञ्चुल्लं अ [दे. प्रत्युत्] प्रत्युत्, उलटा, 'न तुमं रुट्ठो, पञ्चुल्लं ममं पूएसि' (वव १) ।

पञ्चुवयार देखो पञ्चुवयार (नाट—मृच्छ २५५) ।

पञ्चुवगच्छ मक [प्रत्युप + गम्] सामने जाना । पञ्चुवगच्छइ (भग) ।

पञ्चुवगार पुं [प्रत्युपकार] उपकार के पञ्चुवयार } बदले उपकार (ठा ४, ४, पउम ४६, ३६, स ४४०, प्राह) ।

पञ्चुवयारि वि [प्रत्युपकारिन्] प्रत्युपकार करनेवाला (सुपा ५६५) ।

पञ्चुवेक्ख सक [प्रत्युप + ईक्ष्] निरीक्षण करना । पञ्चुवेक्खइ (औप) । संकृ. पञ्चुवेक्खित्ता (औप) ।

पञ्चुवेक्खिय वि [प्रत्युपेक्षित] अवलोकित, निरीक्षित (स ४४१) ।

पञ्चुहिअ वि [दे] प्रस्तुत, प्रसारित, अच्छी तरह चूने या टपकनेवाला (दे ६, २५) ।

पञ्चूढ न [दे] थाल, थार, भोजन करने का पात्र, बड़ी धाली (दे ६, १२) ।

पञ्चूस [दे] देखो पञ्चूह = (दे), 'किइएहि पयत्तेएवि छाइज्जइ कह ए पञ्चूसो ?' (सुर ३, १३४) ।

पञ्चूस पु [प्रत्युप] प्रभात काल (हे २ पञ्चूह } १४, गाया १, १, गा ६०४) ।

पञ्चूह पुं [प्रत्यूह] विघ्न, अन्तराय (पात्र, कुप्र ५२) ।

पञ्चूह पुं [दे] सूर्य, रवि (दे ६, ५, गा ६०४, पात्र) ।

पञ्चेअन [प्रत्येक] प्रत्येक, हर एक (पइ) ।

पञ्चेड न [दे] मुसल (दे ६, १५) ।

पञ्चेल्लिउ (अप) देखो पञ्चल्लिउ (भवि) ।

पञ्चोगिल सक [प्रत्यव + गिल्] आस्वादन करना, रस या म्याद लेना । वक्र. पञ्चोगिल-माण (कस ५, १०) ।

पञ्चोणामिणी स्त्री [प्रत्यवनामिनी] विद्या-विशेष, जिसके प्रभाव से वृक्ष आदि फल देने के लिए स्वयं नीचे नमते हैं (उप ४ १५५) ।

पडिणिवुत्त देखो पडिणिअत्त = प्रतिनि + वृत् । वृत् पडिणिवुत्तमाण (वेणी २३) ।
पडिणिवुत्त देखो पडिणिअत्त = प्रतिनिवृत्त (अभि ११८) ।

पडिणिवेस देखो पडिनिवेस (राज) ।

पडिणिव्यत्त देखो पडिणिअत्त = प्रतिनि + वृत् । वृत्, पडिणिव्यत्तन (हेका ३३२) ।

पडिणिसत्त वि [प्रतिनिश्रान्त] १ विश्रान्त ।
२ निलीन (गाथा १, ४—पत्र ९७) ।

पडिणाय न [प्रत्यनीक] १ प्रतिसैन्य, प्रति पक्ष की सेना (भग ८, ८) । २ वि प्रतिकूल, विपक्षी, विपरीत आचरण करनेवाला (भग ८, ८, गाथा १, २, सम्म १६३, औप, ओघ ६३, द्र ३३) ।

पडिणत्त वि [प्रतिज्ञा] उक्त, कथित, 'जस्स ए भिक्खुस्स अय पणप्पे, अहं च खलु पडिणत्त (अ) तो अपडिणत्त (न) तेहि' (आचा १, ८, ५, ४) ।

पडिण्णा देखो पडिण्णा (स्वप्न २०७, सूअ १, २, २, २०) ।

पडिण्णाद देखो पडिण्णाद (पि २७६, ५६५, नाट—मालवि १२) ।

पडित्त वि [प्रतितत्त्व] स्व-शास्त्र ही मे प्रसिद्ध अर्थ, 'जो खलु सततसिद्धो न य पर-तत्तेषु सो उ पडित्तो' (बृह १) ।

पडित्तु लो [प्रतितनु] प्रतिमा, प्रतिविम्ब (वेइय ७५) ।

पडित्तप सक [प्रतितर्पय] भोजनादि से वृत्त करना । पडित्तपह (ओघ ५३५) ।

पडित्तप अक [प्रति + तप्] १ चिन्ता करना । २ खबर रखना । पडित्तपई (उत्त १७, ५) ।

पडित्तपिण्य वि [प्रतितपित] भोजन आदि से वृत्त किया हुआ (वव १) ।

पडित्तु देखो परितुट्ट (नाट—मृच्छ ८१) ।

पडित्तु वि [प्रतितुल्य] समान, सदृश (पउम ५, १४६) ।

पडित्त देखो पडित्त = प्रदीप्त (से १, ५, ५, ८७) ।

पडित्ताण देखो परित्ताण (नाट—शकु १४) ।

पडित्थिर वि [दे] समान, सदृश (दे ६, २०) ।

पडित्थिर वि [परिस्थिर] स्थिर, 'गुप्पंत-पडित्थिरे' (मे २, ४) ।

पडित्थि वि [प्रतिस्तब्ध] गर्वित (उत्त १२, ५) ।

पडिडड पु [प्रतिदण्ड] मुख्य दण्ड के समान दूसरा दण्ड, 'सपडिदडेण धरिज्जमाणेण आयवत्तेण विरायते (औप) ।

पडिदस सक [प्रति + दर्शय] दिखलाना । पडिदसेइ (भग, उवा) । सक, पडिदसेत्ता (उवा) ।

पडिदा सक [प्रति + दा] पीछे देना, दान का बदला देना । पडिदेड (विमे ३२४१) । कृ पडिदायव्य (कस) ।

पडिदाण न [प्रतिदान] दान के बदले में दान, 'दाणपटिदाणवचियं' (उप ५६७ टी) ।

पडिदासिया लो [प्रतिदासिका] दासी (दस ३, १ टी) ।

पडिदिसा } लो [प्रतिदिश] विदिशा,
पडिदिसि } विदिक् (राज, पि ४१३) ।

पडिदुगंळि वि [प्रतिजुगुप्तिन्] १ निन्दा करनेवाला । २ परिहार करनेवाला, 'सीओ-दगपडिदुगंळिणो' । (सूअ १, २, २२०) ।

पडिदुवार न [प्रतिद्वार] १ हर एक द्वार (पणह १, ३) । २ छोटा द्वार (कप्प, पण २) ।

पडिधि देखो परिहि, 'सूरियपडिधीतो वहित्ता' (सूअ ६) ।

पडिनमुक्कार पुं [प्रतिनमस्कार] नमस्कार के बदले में नमस्कार—प्रणाम (रंभा) ।

पडिनिकम्बत वि [प्रतिनिष्क्रान्त] बाहर निकला हुआ (गाथा १, १३) ।

पडिनिकखम देखो पडिणिक्खम । पडिनि-क्खमइ (कप्प) । सक पडिनिक्खमिच्चा, (कप्प, भग) ।

पडिनिग्गच्छ देखो पडिणिग्गच्छ । पडिनि-ग्गच्छइ (उवा) । पडिनिग्गच्छति (भग) ।

संक पडिनिग्गच्छत्ता (उवा, पि ५८२) ।

पडिनिभ देखो पडिणिभ (दसनि १) ।

पडिनियत्त देखो पडिणिअत्त = प्रतिनि + वृत् । पडिनियत्तइ (महा) । हेक, पडिनियत्तए (कप्प) ।

पडिनियत्त देखो पडिणिअत्त = प्रतिनिवृत्त (गाथा १, १४, महा) ।

पडिनियत्ति लो [प्रतिनिवृत्ति] वापस लौटना प्रत्यावर्तन (मोह ६३) ।

पडिनिवेस पुं [प्रतिनिवेश] १ आग्रह, कदाग्रह, दुराग्रह, अनुचित हठ (पघ ६) । २ गाढ अनुशय, पश्चात्ताप (विसे २२६६) ।

पडिनिषिद्ध वि [प्रतिनिषिद्ध] निवारित, हटाया हुआ (उप पृ ३३३) ।

पडिन्नत्त देखो पडिणत्त (आचा १, ८, ५, ४) ।

पडिन्नव सक [प्रति + ज्ञपय] कहना । सक पडिन्नविच्चा (कप्प) ।

पडिन्नव सक [प्रति + ज्ञापय] १ प्रतिज्ञा कराना । २ नियम दिलाना । पडिन्नविच्चा, पडिन्नवेज्जा (दसचू २, ८) ।

पडिन्ना देखो पडिण्णा (आचा) ।

पडिपथ पुं [प्रतिपथ] १ उलटा मार्ग विपरीत मार्ग । २ प्रतिकूलता (सूअ १, ३, १, ६) ।

पडिपथि वि [प्रतिपथिन्] प्रतिकूल, विरोधी, 'अपेगे पडिभासति पडिपथियमागता' (सूअ १, ३, १, ६) ।

पडिपक्ख देखो पडिक्ख (ओघ १३) ।

पडिपडिय वि [प्रतिपतित] फिर से गिरा हुआ, 'सत्थो निववियणो चालियावि पडिपडिया भवारणो' (साधं ६४) ।

पडिपत्ति } देखो पडिपत्ति (नाट—चैत
पडिपदि } ३४, सजि ६) ।

पडिपह पुं [प्रतिपथ] १ उन्मार्ग, विपरीत रास्ता (स १४७, पि ३६६ ए) । २ न अभिमुख, संमुख (सूअ २, २, ३१ टी) ।

पडिपहिअ वि [प्रतिपथिक] समुख आने-वाला (सूअ २, २, २८) ।

पडिपाअ सक [प्रति + पादय] प्रतिपादन करना, कथन करना । कृ, पडिपाअणीअ (नाट—शकु ६५) ।

पडिपाय पुं [प्रतिपाद] मुख्य पाद को सहायता पहुँचानेवाला पाद (राय) ।

पच्छाअ वि [प्रच्छाय] प्रचुर छायावाला (अभि ३६) ।

पच्छाइअ वि [प्रच्छादित] १ ढका हुआ, आच्छादित । २ छिपाया हुआ (पाप्र, भवि) ।

पच्छाइज्ज देखो पच्छाअ = प्र + छादय् ।

पच्छाग पुं [प्रच्छादक] पात्र बांधने का कपडा (ओप २६५ भा) ।

पच्छाडिड (शौ) वि [प्रक्षालित] धोया हुआ (नाट—पृच्छ २५५) ।

पच्छाणिअ [दे] देखो पच्चोवणिअ (पड्) ।

पच्छाणुताविअ वि [पश्चादनुतापिक] पश्चात्ताप-युक्त, पछतावा करनेवाला (राय १४१) ।

पच्छादो (शौ) देखो पच्छा = पश्चात् (पि ६६) ।

पच्छायण न [पश्यदन] पाषेय, रान्ने मे खाने का भोजन, 'बहुणं करिय पच्छायणस्स भारिय' (महा) ।

पच्छायण न [प्रच्छादन] १ आच्छादन, ढकना । २ वि आच्छादन करनेवाला । 'या लो [ंता] आच्छादन, 'परगुणपच्छायणया' (उव) ।

पच्छाल देखो पक्खाल । पच्छनेइ (काल) ।

पच्छि ली [दे] पिटिका, पिटारी, वेत्रादि-रचित भाजन-विशेष (दे ६, १) । 'पिडय न [ंपिटक] 'पच्छी' रूप पिटारी (भग ७, ८ टी—पत्र ३१३) ।

पच्छि (आप) देखो पच्छड (हे ८, ३८८) ।

पच्छिज्जमाग देखो पच्छ = प्र + अर्थय् ।

पच्छित्त न [प्रायश्चित्त] १ पाप की शुद्धि करनेवाला कर्म, पाप का क्षय करनेवाला कर्म (उव सुपा ३६६, द्र ५२) । २ मन को शुद्ध करनेवाला कर्म (पंचा १६, ३) ।

पच्छित्ति वि [प्रायश्चित्तिन्] प्रायश्चित्त का भागी, दोषी (उप ३७६) ।

पच्छिम न [पश्चिम] १ पश्चिम दिशा (उपा ७४ टि) । २ वि पश्चिम दिशा का, पाश्चात्य (महा, हे २, २१, प्राप्र) । ३ पिछला, वाद का, 'दियसस्स पच्छिमे भाए' (कप्प) । ४ अन्तिम, चरम, 'पुरिमपच्छिमगाए तित्थ-गएण' (सम ४४) । 'द्ध न [ंधं]

उत्तराधं, उत्तरी आवा हिस्सा (महा, ठा २, ३—पत्र ८१) । 'सेल पुं [ंशैल] अस्ताचल पर्वत (गउड) ।

पच्छिमा ली [पश्चिमा] पश्चिम दिशा (कुमा, महा) ।

पच्छिमिल वि [पाश्चात्य] पीछे से उत्पन्न, पीछे का (विमे १७६५) ।

पच्छियापिडय देखो पच्छि-पिडय (राय १४०) ।

पच्छिल (अप) देखो पच्छिम (भवि) ।

पच्छिल १ वि [पश्चिम, पाश्चात्य] १ पच्छिलय १ पश्चिम दिशा का । २ पिछला, पृष्ठवर्ती (पि ५६५, ५६५ टि ४) ।

पच्छुत्ताव पुं [पश्चादुत्ताप] पछतावा, पश्चात्ताप (सम्मत् १६०, धर्मवि ३५, १२२, १३०) ।

पच्छुत्ताविअ (अप) वि [पश्चात्तापित] जिसको पश्चात्ताप हुआ हो वह (भवि) ।

पच्छेक्कम्म देखो पच्छ-क्कम्म (हे १, ७६) ।

पच्छेणय न [दे] पाषेय, रास्ते मे निर्वाह करने की भोजन सामग्री, कलेवा (दे ६, २४) ।

पच्छोववण्णग १ वि [पश्चादुपपन्न] पीछे पच्छोववन्नक १ से उत्पन्न (भग) ।

पजप सक [प्र + जल्प्] बोलना, कहना । पजपह (पि २६६) ।

पज्जावण न [प्रजल्पन] बोलाना, कथन कराना (ओप, पि २६६) ।

पजपिअ वि [प्रजल्पित] कथित, उक्त, कहा हुआ (गा ६४६) ।

पजणण वि [प्रजनन] उत्पादक, उत्पन्न करनेवाला (राय ११४) ।

पजगण न [प्रजनन] लिंग, पुरुष-चिह्न (विसे २५७६ टी, ओघ ७२२) ।

पजल अक [प्र + ज्वल्] १ विशेष जलना, अतिशय दग्ध होना । २ चमकना । वक्र, पजलत (भवि) ।

पजलिर वि [प्रज्वलितृ] अत्यन्त जलनेवाला, 'मियज्झाणानलपजलिरक्कम्मकतारवूमलइउव' (सुपा १) ।

पजह सक [प्र + ह] त्याग करना । पजहामि (पि ५००) । कृ. पजहियव्व (आचा) ।

पजाला ली [प्रजाला] अग्नि-शिखा, आग की लो या लपट (कुप्र ११७) ।

पजीवग न [प्रजीवन] आजीविका, जीवनो-पाय, रोजी (पिड ४७८) ।

पजुत्त देखो पज्जत = प्रयुक्त (चड) ।

पजूहिअ वि [प्रयूयिअ] दूध या समूह को दिया हुआ, याचक गण को अर्पित (आचा २, १, ४, २) ।

पजेमण न [प्रजेमन] भोजन-ग्रहण, भोजन लेना (राय १४६) ।

पज्ज सक [पायय्] पिलाना, पान कराना । पज्जेइ (विपा १, ६) । कवकृ. 'तएहाइया ते तउ तंव तत्ता पज्जिज्जमाणाट्टतर रसति' (सुम १, ५, १, २५) । कृ. पज्जेयव्व (भत्त ४०) ।

पज्ज न [पद्य] छन्दो-बद्ध वाक्य (ठा ४, ४—पत्र २८७) ।

पज्ज न [पाद्य] पाद-प्रक्षालन जल, 'अग्घ च पज्जं च गहाय' (गाया १, १६—पत्र २०६) ।

पज्ज देखो पज्जत्त (द ३३, कम्म ३, ७) ।

पज्जत्त पुं [पर्यन्त] अन्त, सीमा, प्रान्त भाग (हे १, ५८, २, ६५, सुर ४, २१६) ।

पज्जण न [दे] पान, पीना (दे ६, ११) ।

पज्जण न [पायन] पिलाना, पान कराना (भग १४, ७) ।

पज्जणण देखो पज्जणण (सूअनि ५७) ।

पज्जणुओग १ पु [पर्यनुयोग] प्रश्न (धर्मस पज्जणुओग १७६, २६२) ।

पज्जण पु [पज्जन्य] मेघ, बादल (भग १४, २, नाट पृच्छ १७५) । देखो पज्जज्ज ।

पज्जतर वि [दे] दलित, विदारित (पड्) ।

पज्जत्त वि [पर्याप्ति] १ 'पर्याप्ति' मे युक्त, 'पर्याप्ति' वाला (ठा २, १, परह १, १, कम्म १, ४६) । २ समर्थ, शक्तिमान् । ३ लब्ध, प्राप्त । ४ काफी, यथेष्ट, उतना जितने से काम चल जाय । ५ न. तृप्ति । ६ सामर्थ्य । ७ निवारण । ८ योग्यता (हे २, २४, प्राप्र) । ९ कर्म-विशेष, जिसके उदय से जीव अपनी अपनी 'पर्याप्तियों' से युक्त होता है वह कर्म (कम्म १, २६) । 'णाम, नाम न

पडवोधिअ देखो पडिवोहिय (अभि ५६) ।
 पडिवोह सक [प्रति + वोधय्] १ जगाना ।
 २ वोध देना, ममभाना, ज्ञान प्राप्त कराना ।
 पडिवोहेइ (कण्, महा) । कवक. पडि-
 वोहिज्जत (अभि ५६) । मंक्. पडिवोहिअ
 (नाट—मालती १३६) । हेक्क पडिवोहिउ
 (महा) । कृ पडिवोहियव्व (स ७०७) ।
 पडिवोह पु [प्रतिवोध] १ वोध, समझ ।
 २ जागृति, जागरण (गउड, पि १७१) ।
 पडिवोहग वि [प्रतिवोधक] १ वोध देने-
 वाला । २ जगानेवाला (विसे २४७ टी) ।
 पडिवोहण न [प्रतिवोधन] देखो पडि-
 वोह = प्रतिवोध (काल, स ७०८) ।
 पडिवोहि वि [प्रतिवोधिन्] प्रतिवोध प्राप्त
 करनेवाला (आचा २, ३, १, ८) ।
 पडिवोहिय वि [प्रतिवोधित] जिसको प्रति-
 वोध किया गया हो वह (एया १, १, काल) ।
 पडिभग पु [प्रतिभंग] भग, विनाश (मे ५, १६) ।
 पडिभज अक [प्रति + भज्] भागना,
 टूटना । हेक्क पडिभजिउ (वव ४) ।
 पडिभड न [प्रतिभाण्ड] एक वस्तु को
 बेचकर उसके बदले में खरीदी जाती चीज
 (स २०५, सुर ६, १५८) ।
 पडिभस सक [प्रति + भ्र शय्] भ्रष्ट करना
 श्रुत करना, 'पथाओ य पडिभसइ' (म ३६३) ।
 पडिभग्ग वि [प्रतिभग्न] भागा हुआ,
 पलायित (ओघ ५३३) ।
 पडिभड पुं [प्रतिभट] प्रतिपक्षी बोद्धा (से
 १३, ७२, आरा ५६, भवि) ।
 पडिभण सक [प्रति + भण्] उत्तर देना,
 जवाब देना । पडिभणइ (महा, उवा, सुपा
 २१५), पडिभणामि (महानि ४) ।
 पडिभणिय वि [प्रतिभणित] प्रत्युत्तरित,
 जिसका उत्तर दिया गया हो वह (महा, सुपा
 ६०) ।
 पडिभणिय वि [प्रतिभणित] १ निराकृत
 (धर्मसं ६५०) । २ न. प्रत्युत्तर, निराकरण
 (धर्मसं ६१) ।
 पडिभम सक [प्रति, परि + भ्रम्] धूमना,
 पर्यटन करना । संक्क 'कत्यइ कडुमाविय गयह

पति पडिभमिय सुहडसीसई दलति' (भवि) ।
 पडिभमिय वि [प्रतिभ्रान्त, परिभ्रान्त]
 धूमा हुआ (भवि) ।
 पडिभय न [प्रतिभय] भय, डर (पउम ७३,
 १२) ।
 पडिभा अक [प्रतिभा] मालूम होना । पडि-
 भादि (शौ) (नाट—रत्ना ३) ।
 पडिभाग पु [प्रतिभाग] १ अंग, भाग
 (भग २५, ७) । २ प्रतिविम्ब (राज) ।
 पडिभास अक [प्रति + भास्] मालूम
 होना । पडिभासदि (जो) (नाट—मृच्छ
 १४१) ।
 पडिभास मक [प्रति + भाप्] १ उत्तर
 देना । २ बोलना, कहना, 'अप्पेगे पडिभा-
 संति' (सूअ १, ३, १, ६) ।
 पडिभिण्ण वि [प्रतिभिन्न] सबद्ध, सलग्न
 (से ४, ५) ।
 पडिभिन्न वि [प्रतिभिन्न] भेद-प्राप्त
 (पव—गाथा १६, चेइय ६४२) ।
 पडिभुअ पुं [प्रतिभुज्ज] प्रतिपक्षी
 भुजंग—वेइया लपट (कपूर २७) ।
 पडिभू पु [प्रतिभू] जामिनदार, जमानत
 करनेवाला, मनीतिया (नाट—चैत ७५) ।
 पडिभेअ पु [दे प्रतिभेद] उपालम्भ, निंदा,
 'पडिभेओ पचारण' (पाअ) ।
 पडिभोइ वि [प्रतिभोगिन्] परिभोग करने-
 वाला, 'अकालपडिभोइणि' (आचा २, ३,
 १, ८, पि ४०५) ।
 पडिम वि [प्रतिम] समान, तुल्य (मोह
 ३५) ।
 पडिमं देखो पडिमा । °ट्टाड वि [°स्थायिन्]
 १ कायोत्सर्ग में रहनेवाला । २ नियम विशेष
 में स्थित (परह २, १—पत्र १००, ठा ५,
 १—पत्र २६६) ।
 पडिमंत सक [प्रति + मन्त्रय्] उत्तर
 देना । पडिमंतेइ (उत्त १८, ६) ।
 पडिमल्ल पुं [प्रतिमल्ल] प्रतिपक्षी मल्ल
 (भवि) ।
 पडिमा स्त्री [प्रतिमा] १ मूर्ति, प्रतिविम्ब,
 'जिणपडिमादंसणेण पडिवुद्ध' (दसनि १,
 पाअ, गा १, ११४) । २ कायोत्सर्ग । ३
 जैन-शास्त्रोक्त नियम-विशेष (परण २, १,

मम १६, ठा २, ३, ५, १) । °गिह न
 [°गृह] मन्दिर (निचू १२) । देखो पडिमं ।
 पडिमाण न [प्रतिमान] जिससे सुवर्ण आदि
 का तीन किया जाता है वह रत्ती, माया
 आदि परिमाण (अणु) ।
 पडिमाण न [प्रतिमान] प्रतिमा, प्रतिविम्ब
 (चेइय ७५) ।
 पडिमि १ सक [प्रति + मा] १ तीन
 पडिमिग १ करना, माप करना । २ गिनती
 करना । कर्म, पडिमिणिअइ (अणु) । कवक.
 पडिमिज्जमाण (राज) ।
 पडिमुच नक [प्रति + मुच्] छोटना ।
 हेक्क. पडिमुचिउ (से १४, २) ।
 पडिमुडगा स्त्री [प्रतिमुण्डना] निषेध,
 निवारण (वृह १) ।
 पडिमुक्क वि [प्रतिमुक्त] छोड़ा हुआ (से ३,
 १२) ।
 पडिमोअणा स्त्री [प्रतिमोचना] छुटकारा
 (से १, ४६) ।
 पडिमोक्खग न [प्रतिमोचन] छुटकारा (स
 ४१) ।
 पडिमोयग वि [प्रतिमोचक] छुटकारा करने-
 वाला (राज) ।
 पडिमोयण देखो पडिमोक्खण (भौप) ।
 पडियक्क देखो पडिक्क (आचा) ।
 पडियक्क न [प्रतिचक्र] युद्धकला-विशेष,
 'तेण पुनो विव निष्पाइतो ईसत्ये पडियक्के
 जन्तुमुक्के य अन्नासुवि कलासु' (महा) ।
 पडियग्गग न [प्रतिजागरण] सप्ताल,
 खबर (धर्मसं १०१३) ।
 पडियज्ज देखो पत्तिअ = प्रति + ज् ।
 पडियरण न [प्रतिकरण] प्रतीकार, इलाज
 (पिड ३६६) ।
 पडियरिअ वि [प्रतिचरित] सेवित, सेवा
 किया हुआ (मोह १०५) ।
 पडिया स्त्री [प्रतिजा] १ उद्देश्य, 'पिडवाय-
 पडियाए' (कस, आचा) । २ अग्निप्राय (ठा ५,
 २—पत्र ३१४) ।
 पडिया स्त्री [पटिका] वक्त्र-विशेष,
 'सुपमाणा य सुमुत्ता,
 बह्वल्वा तह य कोमला सिसिरे ।

पञ्जिज्जमाण देखो पज्ज = पायय् ।

पज्जुद्ध वि [पर्युष्ट] फडफडाया हुआ (?),
'मिठ्ठी रण कथा, कहुअ गालविअं अहरअं रण
पज्जुद्ध' (गा ६२१) ।

पज्जुच्छुअ वि पर्युत्सुक] अति उत्सुक
(नाट) ।

पज्जुणसर न [दे] ऊख के तुल्य एक प्रकार
का ठूण (दे ६, ३२) ।

पज्जुण पु [प्रद्युम्न] १ श्रीकृष्ण के एक पुत्र
का नाम (अत) । २ कामदेव (कुमा) । ३
वैष्णव शास्त्र में प्रतिपादित चतुर्व्यूह रूप
विष्णु का एक अंश (हे २, ४२) । ४ एक
जैनमूर्ति (निबू १) । देखो पज्जुन्न ।

पज्जुत्त वि [प्रयुक्त] जडित, खचित, 'माणिक-
पज्जुत्तकणायकडयसणाहेहि' (स ३१२), 'दिव्व-
खग्गचामरपज्जुत्तकुडतरालाहं' (स ५६, भवि) ।
देखो प्रज्जुत्त ।

पज्जुदास पु [पर्युदास] निषेध, प्रतिषेध
(विसे १८३) ।

पज्जुन्न देखो पज्जुण (गाया १, ५, अत
१४, कुप्र १८, सुपा ३२) । ५ वि धनी,
श्रीमन्त, प्रभूत धनवाला, 'पज्जुल्लओवि
पडिपुन्नसयलगो' (सुपा ३२) ।

पज्जुवट्ठा सक [पर्युप + स्था] उपस्थित
होना । हेक्क पज्जुवट्ठादुं (शौ) (नाट—
वेणी २५) ।

पज्जुवट्ठिय वि [पर्युपस्थित] उपस्थित,
मौजूद, हाजिर, तत्पर (उत्त १८, ४५) ।

पज्जुवास सक [पर्युप + आस्] सेवा
करना, भक्ति करना । पज्जुवासइ, पज्जु-
वासति (उव, भग) । वक्क पज्जुवासमाण
(गाया १, १, २) । कवक्क पज्जुवासिज्ज-
माण (सुपा ३७८) । संक्क पज्जुवासित्ता
(भग) । क्क पज्जुवासणिज्ज (गाया १,
१, औप) ।

पज्जुवासण न [पर्युपासन] सेवा, भक्ति,
उपासना (भग, स ११६, उप ३५७ टी,
अभि ३८) ।

पज्जुवात्तणना } औ [पर्युपासना] ऊपर
पज्जुवासणा } देखो (ठा ३, ३, भग,
गाया १, १३, औप) ।

पज्जुवासय वि [पर्युपासक] सेवा करनेवाला
(काल) ।

पज्जुसण } न देखो पज्जुसणा (धर्मवि
पज्जुसवण } २१, विचार ५३१) ।
पज्जूसण

पज्जुसणा औ [पर्युषणा] देखो पज्जोसवणा,
'परिवसणा पज्जुसणा पज्जोसवणा य वास-
वासोय' (निबू १०) ।

पज्जुम्मुअ } वि [पर्युत्सुक] अति उत्सुक,
पज्जूसुअ } विशेष उत्कण्ठित (अभि १०६,
पि ३२७ ए) ।

पज्जोअ पु [प्रद्योत] १ प्रकाश, उद्योत ।
२ उज्जयिनी नगरी का एक राजा (उव) ।
गर वि [कर] प्रकाश-कर्ता (मम १,
(कप्प, औप) ।

पज्जोइय वि [प्रद्योतित] प्रकाशित (उप
७२८ टी) ।

पज्जोय सक [प्र + द्योतय्] प्रकाशित
करना । वक्क पज्जोयत (चेइय ३२४) ।

पज्जोयण पु [प्रद्योतन] एक जैन आचार्य
(राज) ।

पज्जोमव अक [परि + वस्] १ वास
करना, रहना । २ जैनागम-प्रोक्त पर्युपणा-
पर्व मनाना । पज्जोसवेह, पज्जोसविति,
पज्जोसवेंति (कप्प) । वक्क पज्जोसवंत,
पज्जोसवेमाण (निबू १०, कप्प) । हेक्क
पज्जोसवित्तए, पज्जोसवेत्तए (कप्प,
कम) ।

पज्जोसवण न देखो पज्जोसवणा (पचा
१७, ६) ।

पज्जोसवणा औ [पर्युषणा] १ एक ही
स्थान में वर्षा-काल व्यतीत करना (ठा १०,
कप्प) । २ वर्षा-काल (निबू १०) । ३ पर्व-
विशेष, भाद्रपद के आठ दिनों का एक प्रसिद्ध
जैन पर्व, 'काराविओ अमारि पज्जोसवणासु
तिहीसु' (मुणि १०६००, सुर १६, १६१) ।

'कप्प पु' [कल्प] पर्युपणा में करने योग्य
शास्त्र-विहित आचार, वर्षाकल्प (ठा ५, २) ।

पज्जोसवणा औ [पर्योसवना पर्युपशमना]
ऊपर देखो (ठा १०—पत्र ५०६) ।

पज्जोसविय वि [पर्युपित] स्थित, रहा हुआ
(कप्प) ।

पज्जमक अक [प्र + भज्जम्] शब्द करना,
आवाज करना । वक्क पज्जमकमाण (राज) ।

पज्जमट्ठिआ औ [पज्जमट्ठिका] छन्द-विशेष
(पिंग) ।

पज्जमर अक [क्षर, प्र + क्षर] भरना,
टपकना । पज्जमरड (हे ४, १७३) ।

पज्जमर पु [प्रक्षर] प्रवाह-विशेष (परण २) ।

पज्जमरण न [प्रक्षरण] टपकना (वज्जा
१०८) ।

पज्जमरि-वि [प्रक्षरित] टपका हुआ (पाय,
कुमा महा, संक्षि १५) ।

पज्जमल देखो पज्जमर = क्षर । पज्जमलइ (पिंग) ।

पज्जमलआ देखो पज्जमट्ठिआ (पिंग) ।

पज्जमाय न [प्रध्यात] अतिशय चिन्तन (अणु
१३६) ।

पज्जमाय वि [प्रध्यात] चिन्तित, मोचा हुआ
(अणु) ।

पज्जमुत्त वि [दे] खचित, जडित, जडा हुआ
(पाय) । देखो पज्जुत्त

पज्जुम्मा देखो पज्जुम्मा । वक्क पज्जुम्माण
(राय ८३) ।

पटउडी औ [पटकुटी] तंबू, वस्त्र-गृह, कपड-
कोट (सुर १३, ६) ।

पटल देखो पडल = पटल (कुमा) ।

पटह देखो पडह (प्रति १०) ।

पटिमा (पे चूपे) देखो पडिमा (पड्, पि
१६१) ।

पटोला औ [पटोला] बल्ली-विशेष, कोशतकी,
सारबल्ली (सिरि ६६६) ।

पट्ट सक [पा] पीना, पान करना । पट्टइ
(हे ४, १०) । भूका पट्टीअ (कुमा) ।

पट्ट पु [पट्ट] १ पहनने का कपडा, 'पट्टो वि
होइ इको देहपमाणेण मो य भइयध्वो' (वृह
३, औष ३४) । २ रथ्या, मुहल्ला, 'तेणवि
मानियपट्टे गतूण करे कया माला' (सुपा
३७३) । ३ पापाण आदि का तस्ता, फलक,
'मणिसिलापट्टअसणाहो माहवीमडवो' (अभि
२००), 'पिअगुसिलापट्टए उवविट्ठा' (स्वप्न
५२), 'पट्टसठियपसत्थविअणएणपिहुलसोलीयो'
(जी ३) । ४ ललाट पर से बँधी जाती एक
प्रकार की पगड़ी, 'तप्पमिइ पट्टवद्धा गयालो
जाया पुव्व मडवद्धा आसी' (महा) । ५

पडिलेहिय वि [प्रतिलेखित] निरोक्षित,
देखा हुआ (उवा) ।

पडिलेहियव्य देखो पडिलेह ।

पडिलोम वि [प्रतिलोम] प्रतिकूल (भग) ।

२ विपरीत, उलटा (आचा २, २, २) । ३

न पश्चादानुपूर्वी, उलटा क्रम, 'वत्थ दुहाणुलो-
मेण तह य पडिलोमओ भवे वत्थ' (सुर

१६, ४८, निवू १) । ४ उदाहरण का एक
दोष (दसति १) । ५ अपवाद (राज) ।

पडिलोमइत्ता अ [प्रतिलोमयित्वा] वाद-
विशेष वादसभा के सदस्य या प्रतिवादी को
प्रतिकूल बनाकर किया जाता वाद—शास्त्रार्थ
(ठा ६) ।

पडिही छो [दे] १ वृत्ति, वाड । २ यवनिका,
परदा (दे ६, ६५) ।

पडिव देखो पलीव = प्र + दीपय् । पडिवेह
(से ५, ६७) ।

पडिवइर न [प्रतिवैर] वैर का बदला (भवि) ।

पडिवई देखो पडिवया (पव २७१) ।

पडिवंचण न [प्रतिवचन] बदला, 'वेर-
पडिवचणट्ट' (पउम २६, ७३) ।

पडिवथ देखो पडिपथ (से २, ४६) ।

पडिवय देखो पडिवय (भवि) ।

पडिवम पु [प्रतिवश] छोटा वास (राय) ।

पडिवक्क सक [प्रति + वच्] प्रत्युत्तर देना,
जवाब देना । पडिवक्कइ (भवि) ।

पडिवक्ख पु [प्रतिपक्ष] १ रिपु, दुश्मन,
विरोधी (पात्र, गा १५२, सुर १, ५६, २,

१२६, से ३, १५) । २ छन्द-विशेष (पिंग) ।

३ विपर्यय, वैपरोध्य (सण) ।

पडिवक्खिय वि [प्रतिपक्षिण] विरुद्ध पक्ष-
वाला विरोधी (सण) ।

पडिवच्च सक [प्रति + व्रज्] वापस जाना ।
पडिवच्चइ (पि ५६०) ।

पडिवच्च देखो पडिवक्ख, 'अह एवरमस्स
दोसो पडिवच्चैहिपि पडिवणो' (गा ६७६) ।

पडिवज्ज सक [प्रति + पद्] स्वीकार
करना, अंगीकार करना । पडिवज्जइ, पडि-

वज्जण (उव, महा, प्रासू १४१) । भवि,
पडिवज्जिस्सामि, पडिवज्जिस्सामो (पि ५२७,

औप) । वक्क, पडिवज्जमाण (पि ५६२) ।

संक, पडिवज्जिऊण, पडिवज्जित्ताण,

पडिवज्जिय (पि ५८६, ५८३, महा,
रभा) । हेक्क, पडिवज्जिउं, पडिवज्जित्तए,
पडिवत्तुं (पंचा १८, ठा २, १, कस,
रभा) । क्क पडिवज्जियव्व, पडिवज्जेयव्व
(उत्त ३२, उप ६८४, १००१) ।

पडिवज्जण न [प्रतिपदन] स्वीकार, अंगी-
कार (कुप्र १४७) ।

पडिवज्जण न [प्रतिपादन] अंगीकारण,
स्वीकार करवाना (कुप्र १४७, ३८६) ।

पडिवज्जणया छो [प्रतिपदना] स्वीकार
(एदि २३२) ।

पडिवज्जणया छो [प्रतिपादना] प्रतिपादन
(एदि २३२) ।

पडिवज्जय वि [प्रतिपादक] स्वीकार करने-
वाला, 'एम ताव कसणववलपडिवज्जयो ति'
(स ५०५) ।

पडिवज्जावण न [प्रतिपादन] स्वीकारण,
स्वीकार कराना (कुप्र ६६) ।

पडिवज्जाविय वि [प्रतिपादित] स्वीकार
कराया हुआ (महा) ।

पडिवज्जिय वि [प्रतिपन्न] स्वीकृत (भवि) ।

पडिवट्टअ न [प्रतिपट्टक] एक प्रकार का
रेशमी कपडा (कप्पू) ।

पडिवट्टावअ वि [प्रतिवर्धापक] १ ववाई
देने पर उसे स्वीकार कर धन्यवाद देनेवाला ।

२ ववाई के बदले में ववाई देनेवाला । छो.
विभा (कप्पू) ।

पडिवण वि [प्रतिपन्न] १ प्राप्त, (भग) ।

२ स्वीकृत, अंगीकृत (पड्) । ३ आश्रित
(औप, ठा ७) । ४ जिसने स्वीकार किया हो

वह (ठा ४, १) ।

पडिवत्त पु [परिवर्त्त] परिवर्त्तन (नाट, मृच्छ
३१८) ।

पडिवत्तण देखो पडिअत्तण (नाट) ।

पडिवत्ति छो [प्रतिपत्ति] १ परिच्छिन्ति ।

२ प्रकृति, प्रकार (विसे ५७८) । ३ प्रवृत्ति,
खबर (पउम ४७, ३०, ३१) । ४ ज्ञान
(सुर १४, ७४) । ५ आदर, गौरव (महा) ।

६ स्वीकार, अंगीकार (एदि) । ७ लाभ,
प्राप्ति, 'धम्मपडिवत्तिहेउत्तणेण' (महा) ।

८ मतान्तर । ९ अभिग्रह-विशेष (सम १०६) ।

१० भक्ति, सेवा (कुमा, महा) । ११ परि-
पाटी, क्रम (आव ४) । १२ श्रुत विशेष, गति,
इन्द्रिय आदि द्वारों में से किसी एक द्वार के
जरिये समस्त समार के जीवा को जानना
(कम्म २, ७) । 'समास पु [समास]
श्रुत-ज्ञान विशेष—गति आदि दो चार
द्वारों के जरिये जीवों का ज्ञान (कम्म १, ७) ।

पडिवत्तुं देखो पांडवज्ज ।

पडिवत्ति देखो पडिवत्ति (प्राप्र) ।

पडिवट्टावअ देखो पडिवट्टावअ । छो.
विभा (रभा) ।

पडिवन्न देखो पडिवण्ण, 'पडिवन्नपालो
सुगुरिणाण ज होइ त होउ' (प्रासू ३, राया

१, ५, उवा, नुर ४, ५७, स ६५६, हे २,
२०६, पात्र) ।

पडिवन्निय (अप) देखो पडिवण्ण (भवि) ।

पडिवय अक [प्रति + पत्] ऊँचे जाकर
गिरना । वक्क, पडिवयमाण (आचा) ।

पडिवय सक [प्रति + वच्] उत्तर देना ।
भवि, पडिवक्खामि (सूअ १, ११, ६) ।

पडिवयण न [प्रतिवचन] १ प्रत्युत्तर,
जवाब (गा ४१६, सुर २, १२३, भवि) ।

२ आदेश, आज्ञा, 'देहि मे पडिवयण'
(आवम) । ३ पु. हरिवंश के एक राजा का

नाम (पउम २२, ६७) ।

पडिवया छो [प्रतिपन्न] पडवा, पक्ष की
पक्षी तिथि (हे १, ४४, २०६, पड्) ।

पडिवयिय वि [प्रत्युत्त] फिर से बोया हुआ
(दे ६, १३) ।

पडिवस अक [प्रति + वस्] निवास करना ।
वक्क पडिवसंत (पि ३६७, नाट—मृच्छ

३२१) ।

पडिवसभ पु [प्रतिवृपभ] मूल स्थान से
दो कोन की दूरी पर स्थित गांव (पव ७०) ।

पडिवह सक [प्रति + वह्] वहन करना,
ढोना । कवक्क, पडिवुज्जमाण (कप्प) ।

पडिवह देखो पडिपह (से ३, २४, ८, ३३,
पउम ७३, २४) ।

पडिवह पुं [प्रतिवध, परिवध] वध, हत्या
(पउम ७३, २४) ।

पडिवा देखो पडिवया (सुअ १०, १४) ।

तनुवाय, कपडा दुननेवाला (पएह १, २—पत्र २८)। °बुद्धि वि [°बुद्धि] प्रभून सूत्रायों को ग्रहण करने में समर्थ बुद्धिवाला (श्रीप)। °मडव पुं [°मण्डप] तट्ट, वज्र-मण्डप (आक)। °मा वि [°वत्] पटवाला, वज्रवाला (पड)। °वास पु [°वास] वज्र में डाला जाता कुकुम-चूर्ण आदि सुगन्धित पदार्थ (गउड, स ७३-)। °माडय पुं [°शाटक] १ वज्र, कपडा। २ घोती, पहनने का लम्बा वज्र (भग ६, ३३)। ३ घोती और दुपट्टा (खाया १, १—पत्र ५३)। पडन्ना श्री [दे. प्रत्यङ्गा] ज्या, धनुष का चिह्न या डोरी (दे ६, १४ पात्र)। पडसुअ देखो पडिसुद (पि ११५)। पडसुआ श्री [प्रतिश्रुत्] १ प्रतिशब्द, प्रतिव्वनि (हे १, ८८)। २ प्रतिज्ञा (कुमा)। पडंसुआ श्री [दे] ज्या, धनुष का चिल्ला (दे ६, १४)। पडंसुत्त देखो पडिसुद (प्राक ३२)। पडश्चर पुं [दे] साला जैसा विद्रूपक आदि (दे ६, २५)। पडश्चर पुं [पटश्चर] चोर, तस्कर (नाट—मृच्छ १३८)। पडञ्जमाण देखो पडह = प्र + दह् । पडण न [पतन] पात, गिरना (खाया १, १, प्रासू १०१)। पडणीअ वि [प्रत्यनीक] विरोधी, प्रतिपक्षी, बैरी (स ४६६)। पडणीअ देखो पड = पत् । पडपुत्तिया श्री [पटपुत्रिका] छोटा वज्र, रमाल (संशोध ५)। पडम देखो पडम (पि १०४, नाट—शकु ६८)। पडल न [पटल] १ समूह, सघात, वृन्द (कुमा)। २ जैन साधुओं का एक उपकरण, भिक्षा के समय पात्र पर ढका जाता वज्र-खण्ड (पएह २, ५—पत्र १४८)। पडल न [दे] नौकर, नरिया, मिट्टी का बना हुआ एक प्रकार का खपडा जिसमें मकान छापे जाते हैं (दे ६, ५, पात्र)। पडल्ला १ श्रीन [दे. पटलक] गठरी, गाँठ, पडल्लय १ गुजराती में 'पोटलु', 'पोटली',

'पुष्पपडलगहल्याओ' (खाया १, ८)। श्री. °ल्लिया, °ल्लिया (स २१३, सुपा ६)। पडवा श्री [दे] पट-कुटी, पट-मण्डप, वज्र-गृह, तट्ट (दे ६, ६)। पडह सक [प्र + दह्] जलाना, दग्ध करना। कवक पडञ्जमाण (पएह १, २)। पडह पुं [पटह] वाद्य-विशेष, नगाडा, ढोल (श्रीप, एदि, महा)। पडहत्थ वि [दे] पूर्ण भरा हुआ (स १८०)। पडहिय पुं [पाटहिक] ढोल बजानेवाला, ढोली, ढोलकिया (पउम ४८, ८६)। पडहिया श्री [पटहिका] छोटा ढोल (गुर ३, ११५)। पडाअ देखो पलाय = परा + अय् । कृ. पडाइअव्व (से १४, १२)। पडाइअ वि [पलायित] जिसने पलायन किया हो वह, भागा हुआ (से १५, १५)। पडाइअव्व देखो पडाअ। पडाइया श्री [पताकिका] छोटी पताका, अन्तर-पताका (कुप्र १४५)। पडाग पुं [पटाक, पताक] पताका, ध्वजा (कप्प, श्रीप)। पडागा १ श्री [पताका] ध्वजा, ध्वज (महा, पडाया १ पात्र, हे १, २०६, प्राप्र, गउड)। °डपडाग पुं [°तिपताक] १ मत्स्य की एक जाति (विपा १, ८—पत्र ८३)। २ पताका के ऊपर की पताका (श्रीप)। °हरण न [°हरण] विजय-प्राप्ति (संथा)। पडागार न [] नौका में लगने-वाला वज्र (दशवै० नृ० १ प्रारम्भ और अग० १११)। पडायाण देखो पड्ढाण (हे १, २५२)। पडायाणिय वि [पर्याणित] जिस पर पर्याण बाँधा गया हो वह (कुमा २, ६३)। पडाली श्री [दे] १ पत्ति, श्रेणी (दे ६, ६)। २ घर के ऊपर की चटाई आदि की फच्ची छत (वव ७)। पडास देखो पलास (नाट—मृच्छ २४३)। पडि वि [पटिन्] वज्रवाला (अणु १४४)। पडि अ [प्रति] इन अर्थों का सूचक अव्यय— १ प्रकर्ष (वव १)। २ सम्पूर्णता (वेइय ७८२)।

पडि अ [प्रति] इन अर्थों का सूचक अव्यय— १ विरोध, 'पडिवक्ख', 'पडिवामुदेव' (गउड, पउम २०, २०२)। २ विशेष, विशिष्टता, 'पडिमंजरिर्वडिसय' (श्रीप)। ३ वीष्मा, व्याप्ति, 'पडिदुवार', 'पडिपेल्लण' (पएह १, ३, से ६, ३२)। ४ वापस, पीछे, 'पडिगय' (विपा १, १, भग, मुर १, १४६)। ५ आभिमुख्य, समुत्पत्ता, 'पडिविरद', 'पडिवद' (पएह २, २, गउड)। ६ प्रतिदान, बदला, 'पडिदेइ' (विमे ३२४१)। ७ फिर से, 'पडिपडिय', 'पडिवविय' (साधं ६४, दे ६, १३)। ८ प्रनिनिविग्न, पडिच्छेद (उप ७७८ टी)। ९ प्रतिषेध, निषेध, 'पडियादक्खिय' (भग, सम ५६)। १० प्रतिकूलता, विपरीतता, 'पडिवय' (से २, ४६)। ११ स्वभाव, 'पडिवाइ' (ठा २, १)। १२ सामीप्य, निकटता, 'पडिवेसिअ' (सुपा ५५२)। १३ आधिक्य, अतिशय, 'पडियाणद' (श्रीप)। १४, सादृश्य, तुल्यता, 'पडिइद' (पउम १०५, १११)। १५ लघुता, छोटाई, 'पडिदुवार' (कप्प, पएण २)। १६ प्रशस्तता, श्लाघा, 'पडिस्व' (जीव ३)। १७ साप्रतिकता, वर्तमानता (ठा ३, ४—पत्र १५८)। १८ निरर्थक भी इसका प्रयोग होता है, 'पडिइद' (पउम १०५, ६), 'पडिउच्चारयेव्व' (भग)। पडि देखो परि (से ४, ५०, ५, १६, ६६, अंत ७)।

पडिअ वि [दे] विघटित, विद्युत् (दे ६ १२)। पडिअ वि [पतित] १ गिरा हुआ (गा ११, प्रासू ५, १०१)। २ जिसने चलन को प्रारम्भ किया हो वह, 'आगयमग्गण य पडिओ' (वसु)। पडिअ देखो पड = पत् । पडिअकिअ वि [प्रत्यङ्कित] १ विभूषित। २ उपलिप्त, 'वहुघणवुसिएपकि पडियकिओ' (भवि)। पडिअतअ पुं [दे] कर्मकर, नौकर (दे ६, ३२)। पडिअग सक [अनु + व्रज्] अनुसरण करना, पीछे जाना। पडिअगइ (हे ४, १०७, वड्)।

३ अनुकूल करना। पडिसंधए (उत्त २७, १)। पडिसंधयाइ (सूत्र २, ६, ३)। संक्र. पडिसंधाय (सूत्र २, २, २६)।

पडिसंध १ सक [प्रतिस + धा] १ आदर पडिसंधा १ करना। २ स्वीकार करना। पडिसंधए (पञ्च ७)। संक्र. पडिसंधाय (सूत्र २, २, ३१, ३२, ३३, ३४, ३५)।

पडिसमुह न [प्रतिसंमुख] समुख, सामने, 'गम्रो पडिसंमुह पज्जोयस्स' (महा)।

पडिसलाय पु [प्रतिसंलाप] प्रत्युत्तर, जवाब (से १, २६, ११, ३४)।

पडिसलीण वि [प्रतिसंलीन] १ सम्यक् लीन, अच्छी तरह लीन। २ निरोध करने-वाला (ठा ४, २, औप)। 'पडिया लो [प्रतिमा] क्रोध आदि के निरोध करने की प्रतिज्ञा (औप)।

पडिसविक्रव सक [प्रतिसवि + ईच्] विचार करना। पडिसविक्रवे (उत्त २, ३१)।

पडिसंवेद १ सक [प्रतिस + वेदय] पडिसंवेय १ अनुभव करना। पडिसवेदेइ, पडिसवेययति (भग, पि ४६०)।

पडिसंसाहणया लो [प्रतिससाधना] अनुव्रजन, अनुगमन (औप, भग १४, ३, २५, ७)।

पडिसहर सक [प्रतिस + हृ] १ निवृत्त करना। २ निरोध करना। पडिसहरेज्जा (सूत्र १, ७, २०)।

पडिसक्क देखो परिसक्क। पडिसक्कइ (भवि)।

पडिसडण न [प्रतिशदन, परिशदन] १ सब जाना। २ विनाश, 'निरन्तरपडिसडण-सीलाणि आउदलाणि' (काल)।

पडिसडिय वि [परिशटित] जो सब गया हो, जो विशेष जीणं हुआ हो वह (पिड ५१७)।

पडिसत्तु पुं [प्रतिशान्तु] प्रतिपक्षी, दुश्मन, वैरी (सम १५३, पचम ५, १५६)।

पडिसत्थ पु [प्रतिसार्थ] प्रतिकूल यूथ (निच्च ११)।

पडिसद पु [प्रतिशब्द] १ प्रतिव्वनि (पचम १६, ५३, भवि)। २ उत्तर, प्रत्युत्तर, जवाब (पचम ६, ३५)।

पडिसदिय वि [प्रतिशब्दित] प्रतिव्वनि-युक्त (सम्मत २१८)।

पडिमम अक [प्रति + शम्] विस्त होना। पडिसमइ (से ६, ४४)।

पडिसमाहर सक [प्रतिसमा + हृ] पीछे खींच लेना 'दिट्ठि पडिसमाहरे' (दस ८, ५५)।

पडिसय पु [प्रतिश्रय] उपाश्रय, साधु का निवास-स्थान (दम २, १, टी)।

पडिमर पु [प्रतिसर] १ मेन्य का पथाद्भाग (प्राप्र)। २ हस्त-सूत्र, वह घागा जो विवाह से पहले वर-वधू के हाथ में रखार्य बांधते हैं, ककण (धर्म २)।

पडिसरण न [प्रतिसरण] ककण (पंचा ८, १५)।

पडिसरीर न [प्रतिशरीर] प्रतिमूर्ति, 'पट्ट-विग्रो पडिमरीरं व' (धर्मवि ३)।

पडिसलागा लो [प्रतिशलाका] पत्य-विशेष (कम्म ४, ७३)।

पडिसव सक [प्रति + शप्] शाप के बदले में शाप देना, 'अहमाहमो त्ति न य पडि-हणति सत्तावि न य पडिसवंति' (जव)।

पडिसव सक [प्रति + श्रु] १ प्रतिज्ञा करना। २ स्वीकार करना। ३ आदर करना। क पडिसवणीय (सण)।

पडिमवत्त वि [प्रतिसपत्त] विरोधी शत्रु (दसनि ६, १८)।

पडिसा अक [शम्] शान्त होना। पडिसाइ (हे ४, १६७)।

पडिसा अक [नश्] भागना, पलायन होना। पडिसाइ, पडिवति (हे ४, १७८, कुमा)।

पडिसाइल वि [दे] जिसका गला बैठ गया हो, घर्ष करणवाला (दे ६, १७)।

पडिसाइ सक [प्रति + शादय, परि-शाटय] १ सडाना। २ पलटाना। ३ नाश करना। पडिसाइंति (आचा २, १५, १८)। संक्र. पडिसाइत्ता (आचा २, १५, १८)।

पडिसाइणा लो [परिशाटना] च्युत करना, अष्ट करना (वव १)।

पडिसाम अक [शम्] शान्त होना। पडिसा-मइ (हे ४, १६७, पड्)।

पडिसाय वि [शान्त] शान्त, शम-प्राप्त (कुमा)।

पडिसाय पुं [दे] घर्ष करण, बैठा हुआ गला (दे ६, १७)।

पडिसार मक [प्रतिस्मारय] याद दिलाना। पडिसारेउ (भग १५)।

पडिसार सक [प्रति + सारय] सजाना, सजावट करना। पडिसारेदि (शौ), कर्म. पडिसारीअदि (शौ) (कप्प)।

पडिमार सक [प्रति + सारय] खिसकाना, हटाना, अन्य स्थान में ले जाना। पडिसारेइ (से १०, ७०)।

पडिसार पु [दे] १ पटुता। २ वि. निपुण, पटु, चतुर (दे ६, १६)।

पडिसार पुं [प्रतिसार] १ सजावट। २ अपसरण। ३ विनाश। ४ पराङ्मुखता (हे १, २०६, दे ६, ७६)।

पडिसार पुं [प्रतिसार] अपसारण (हे १, २०६)।

प्रडिसारण न [प्रतिस्मारण] याद दिलाना (वव १)।

पडिसारणा लो [प्रतिस्मारणा] सत्मारण (भग १५)।

पडिसारिअ वि [दे] स्मृत, याद किया हुआ (दे ६, ३३)।

पडिसारिअ वि [प्रतिसारित] १ दूर किया हुआ, अपसारित (से ११, १)। २ विनाशित (से १४, ५८)। ३ पराङ्मुख (से १३, ३२)।

पडिसारी लो [दे] जवतिका, परदा (दे ६, २२)।

पडिसाइ सक [प्रति + कथय] उत्तर देना। पडिसाइज्जा (सूत्र १, ११, ४)।

पडिसाइर सक [प्रतिस + हृ] निवृत्त करना। पडिसाइरेज्जा (सूत्र २, २, ८५)।

पडिसाइर सक [प्रतिस + हृ] १ सकेलना, समेटना। २ वापस ले लेना। ३ ऊँचे ले जाना। पडिसाइरइ (औप, णाय १, १—पत्र ३३)। संक्र. पडिसाइरित्ता, पडिसाइरिय (णाय १, १, भग १४, ७)।

पडिसाइरण न [प्रतिसंहरण] १ समेट, सकोच। २ विनाश, 'सोयतेयलेस्सापडिसाइर-णट्ठयाए' (भग १५—पत्र ६६६)।

पडिओमह न [प्रत्यौपध] एक औपध का प्रतिपक्षी औपध (सम्मत्त १४२)।
 पडिमुआ देखो पडसुआ = प्रतिश्रुत (औप)।
 पडिसुद वि [प्रतिश्रुत] अगीकृत, स्वीकृत (प्राप्र, पि ११५)।
 पडिकटय वि [प्रतिरुण्टरु] प्रतिस्यधीं (राय)।
 पडिकन देखो पडिकंत (उप २२० टी)।
 पडिकरुत्तु वि [प्रतिकर्तृ] इलाज करनेवाला (ठा ४, ४)।
 पडिकरुप मक [प्रति + कृप्] १ सजाना, सजावट करना, 'खिप्पामेव भो देवराणुप्पिया। कूणियस्स ररणो भिभिन्नारुत्तस्स आभिसेक्क हत्थिरयण पडिकप्पेहि' (औप), पडिकप्पेइ (औप)।
 पडिकरुपिअ वि [प्रतिक्लृप्] सजाया हुआ (विपा १, २—पत्र २३, महा, औप)।
 पडिकम देखो पडिकम। कृ 'पडिकमण पडिकमओ पडिकमिअव्वं च आणुपुब्बीए' (आनि ४)।
 पडिकमय न देखो पडिकमय (आनि ४)।
 पडिकम्म न [प्रतिकर्मन्, परिकर्मन्] देखो परिकम्म (औप, सण)।
 पडिकय वि [प्रतिकृत] १ जिसका बदला चुकाया गया हो वह। २ न. प्रतिकार, बदला (ठा ४, ४)।
 पडिकाउ } देखो पडिअर = प्रति + वृ।
 पडिकाऊण }
 पडिकामणा देखो पडिकामणा (ओधभा ३६ टी)।
 पडिकाय पु [प्रतिकाय] प्रतिविम्ब, प्रतिमा (वेइय ७५)।
 पडिकिदि लो [प्रतिकृति] १ प्रतिकार, इलाज। २ बदला (दे ६, १६)। ३ प्रतिविम्ब, मूर्ति (अभि १६६)।
 पडिकिय न [प्रतिकृत] ऊपर देखो (वेइय ७५)।
 पडिकिरिया लो [प्रतिक्रिया] प्रतीकार, बदला, 'कयपडिकिरिया' (औप)।
 पडिकुट्ट वि [प्रतिकुट्ट] १ निपिद्ध, पडिकुट्टिल्लग } प्रतिपिद्ध (ओध ४०३, पच ८, सुपा २०७), 'पडिकुट्टिल्लगविसे वज्जेवा

अट्ठमि च नवमि च' (वव १)। २ प्रतिकूल (स २७०), 'अन्नोन्न पडिकुट्टा वोज्जिवि एए असव्याया' (सम्म १५३)।
 पडिकुट्टेल्लग देखो पडिकुट्टिल्लग (वव १)।
 पडिकूड देखो पडिकूल = प्रतिकूल (सुर ११, २०१)।
 पडिकूल सक [प्रतिकूलय्] प्रतिकूल आचरण करना। वक्तु 'पडिकूलतम्म मज्जक जिणवयण' (सुपा २०७, २०६)। कृ पडिकूलेयव्व (कुप्र २४२)।
 पडिकूल वि [प्रतिकूल] १ विपरीत, उलटा (उत्त १२)। २ अनिष्ट, अनिमित्त (आवा)। ३ विरोधी, विपक्ष (हे २, ६७)।
 पडिकूलणा लो [प्रतिकूलना] १ प्रतिकूल आचरण। २ प्रतिकूलता, विरोध (धर्मवि ५८)।
 पडिकूलिय वि [प्रतिकूलिन] प्रतिकूल किया हुआ (राज)।
 पडिकूवग पुं [प्रतिकूपक] कूप के समीप का छोटा कूप (स १००)।
 पडिकेसव पु [प्रतिकेशव] वामुदेव का प्रतिपक्षी राजा, प्रतिवामुदेव (पउम २०, २०४)।
 पडिकोस मक [प्रति + क्रुश] आक्रोश करना, कोसना, शाप या गाली देना। पडिकोसह (सूय २, ७, ६)।
 पडिकोह पु [प्रतिकोव] उस्मा (दस ६, ५८)।
 पडिक न [प्रत्येक] प्रत्येक, हर एक (आचा)।
 पडिकत वि [प्रतिकान्त] पीछे हटा हुआ, निवृत्त (उवा, परह २, १, आ ४३, स १०६)।
 पडिकम अक [प्रति+क्रम्] निवृत्त होना, पीछे हटना। पडिकमह (उव, महा)।
 पडिकमे (आ ३, ५, पच १७)। हेक. पडिकममिउं, पडिकममित्तए (धर्म २, कस, ठा २, १)। सक्त पडिकममित्ता (आचा २, १५)। कृ पडिकमनव्य, पडिकमियव्य (आवम, ओध ८००)।
 पडिकम पु [प्रतिक्रम] देखो पडिकमण, 'गिहिपडिकमाइयाराण' (पव—गाथा २)।

पडिकमण न [प्रतिक्रमण] १ निवृत्ति, व्यावर्तन। २ प्रमाद-वश शुभ योग से गिरकर अशुभ योग को प्राप्त करने के बाद फिर से शुभ योग को प्राप्त करना। ३ अशुभ व्यापार से निवृत्त होकर उत्तरोत्तर शुद्ध योग में वर्तन (परह २, १, औप, चउ ५, पडि)। ४ मिथ्या-दुष्कृत-प्रदान, किए हुए पाप का पश्चात्ताप (ठा ६०)। ५ जैन साधु और गृहस्थों का सुबह और शाम को करने का एक आवश्यक अनुष्ठान (आ ४८)।
 पडिकमय वि [प्रतिक्रामक] प्रतिक्रमण करनेवाला, 'जोवो उ पडिकमओ असुहाणं पावकम्मजोगाण' (आनि ४)।
 पडिकमिउं देखो पडिकम। 'काम वि [काम] प्रतिक्रमण करने की इच्छावाला (आया १, ५)।
 पडिकय पु [दे] प्रतिक्रिया, प्रतीकार (दे ६, १६)।
 पडिकामणा लो [प्रतिक्रमणा] देखो पडिकमण (ओध ३६ भा)।
 पडिकूल देखो पडिकूल (हे २, ६७, पड्)।
 पडिकख मक [प्रति + ईक्ष्] १ प्रतीक्षा करना, वाट देखना, वाट जोहना। २ अक स्थिति करना। पडिकखइ (पड्, महा)। वक्तु, पडिकखन (पउम ५, ७२)।
 पडिकखअ वि [प्रतीक्षक] प्रतीक्षा करनेवाला, वाट जोहनेवाला (गा ५५७ अ)।
 पडिकखभ पु [प्रतिस्तम्भ] अर्गला, अरगला, आगल, अगरी, व्योडा (से ६, ३३)।
 पडिकखण न [प्रतीक्षण] प्रतीक्षा, वाट, राह (दे १, ३४, कुमा)।
 पडिकखर वि [दे] १ क्रूर, निर्दय (दे ६, २५)। २ प्रतिकूल (पड्)।
 पडिकखल अक [प्रति + खल] १ हटना। २ गिरना। ३ रुकना। ४ सक रोकना। वक्तु पडिकखलत (भवि)।
 पडिकखलण न [प्रतिखलन] १ पतन। २ अवरोध (आवम)।
 पडिकखलिअ वि [प्रतिखलिन] १ परावृत्त, पीछे हटा हुआ (से १, ७)। २ रुका हुआ (से १, ७, भवि)। देखो पडिखलिअ।

पडिस्सुया देखो पडंसुआ (गाया १, ५) ।
पडिस्सुया देखो पडिस्सुया = प्रतिश्रुता (ठा १०—पत्र ४७३) ।

पडिहच्छ वि [दे] पूर्ण (सण) । देखो पडिहत्थ ।

पडिहट्टु अ [प्रतिहृत्य] अपंग करके (कस, बृह ३) ।

पडिहड पु [प्रतिभट] प्रतिपक्षी योद्धा (से ३, ५३) ।

पडिहण सक [प्रति + हन्] प्रतिघात करना, प्रतिहिंसा करना । पडिहणति (उव) ।

पडिहणन न [प्रतिहन्न] १ प्रतिघात । २ वि. प्रतिघातक (कुप्र ३७) ।

पडिहणणा स्त्री [प्रतिहन्न] प्रतिघात (श्रौष ११०) ।

पडिहणिय देखो पडिह्य (सुपा २३) ।

पडिहणिय देखो पडिभणिय (धर्मस ७०८) ।

पडिहत्थ वि [दे] १ पूर्ण, भरा हुआ (दे ६, २८, पात्र, कुप्र ३४, वज्जा १२६; उप पृ १८१, सुर ४, २३६, सुपा ४८८), 'पडिहत्थाविगहवइअणे ता वज्ज उज्जाए' (वाय १५) । २ प्रतिक्रिया, प्रतिकार, बदला । ३ वचन, वाणी (दे ६, १६) । ४ अतिप्रभूत (जीव ३) । ५ अपूर्व, अद्वितीय (पड्) ।

पडिहत्थ सक [दे] प्रत्युपकार करना, उपकार का बदला चुकाना । पडिहत्थेइ (से १२, ६६) ।

पडिहत्थ वि [प्रतिहस्त] तिरस्कृत (चड) ।

पडिहत्था स्त्री [दे] बुद्धि (दे ६, १७) ।

पडिहम्म देखो पडिहण । पडिहम्मज्जा (पि ५४०) । भवि. पडिहम्महिइ (पि ५४६) ।

डिह्य वि [प्रतिहत्त] प्रतिघात-प्राप्त (श्रौष, कुमा, महा, सण) ।

पडिहर सक [प्रति + ह्] फिर से पूर्ण करना । पडिहरइ (हे ४, २५६) ।

पडिहा अक [प्रति + भा] मालूम होना, लगना । पडिहाइ (वज्जा १६२, पि ४८७) ।

पडिहा स्त्री [प्रतिभा] बुद्धि-विशेष, नूतन-नूतन उल्लेख करने में समर्थ बुद्धि (कुमा) ।

पडिहा देखो पडिहाय = प्रतिघात, 'पचविहा पडिहा पन्नत्ता, तं जहा, गतिपडिहा' (ठा ५, १—पत्र ३०३) ।

पडिहाण देखो पणिहाण, 'मणदुप्पडिहाणे' (उवा) ।

पडिहाण न [प्रतिभान] प्रतिभा, बुद्धि-विशेष । °व वि [°वत्] प्रतिभावाला (सूत्र १, १३, १४) ।

पडिहाय देखो पडिहा = प्रति + भा । पडिहायइ (स ४६१, स ७५६) ।

पडिहाय पु [प्रतिघात] १ प्रतिहनन, घात का बदला । २ निरोध, अटकाव, रोक (पत्रम ६, ५३) ।

पडिहार पु [प्रतिहार] इन्द्र-नियुक्त देव (पव ३६) ।

पडिहार पुष्पी [प्रतिहार] द्वारपाल, दरवान (हे १, २०६, गाया १, ५; स्वप्न २२८, अमि ७७) । स्त्री, °री (बृह १) ।

पडिहारिय देखो पाडिहारिय (कस, आचा २, २, ३, १७ १८) ।

पडिहारिय वि [प्रतिहारित] अवरुद्ध, रोका हुआ (स ५४६) ।

पडिहास अक [प्रति + भास्] मालूम होना, लगना । पडिहासेदि (शौ) (नाट) ।

पडिहास पु [प्रतिभास] प्रतिभास, प्रतिभान (हे १, २०६ पड्) ।

पडिहासिय वि [प्रतिभासित] जिसका प्रतिभास हुआ हो वह (उप ६८६ टी) ।

पडिहुअ पु [प्रतिभू] जामीन, जामीन-पडिहू } दार, मनौतिया (पात्र, दे ५, ३८) ।

पडिहू अक [परि + भू] पराभव करना, हराना । कवक. पडिहूअमाण (अमि ३६) ।

पडी स्त्री [पटी] वस्त्र, कपड़ा (गच्छ, सुर ३, ४१) ।

पडीआर पु [प्रतीकार] देखो पडिआर = प्रतिकार (वेणी १७७, कुप्र ६१) ।

पडीकर सक [प्रति + कृ] प्रतिकार करना । पडीकरेमि (मै ६६) ।

पडीकार देखो पडिआर (परह १, १) ।

पडीछ देखो पडिच्छ = प्रति = इप् । पडीछति (पि २७५) ।

पडीण वि [प्रतीचीन] पश्चिम दिशा से संबन्ध रखनेवाला (आचा, श्रौष, ठा ५, ३) । °वाय पुं [°वात] पश्चिम का वायु (ठा ७) ।

पडीणा स्त्री [प्रतीची] पश्चिम दिशा (ठा ६—पत्र ३५६, सूत्र २, २, ५८) ।

पडीर पुं [दे] चोर-समूह, चोरो का बूय (दे ६, ८) ।

पडीव वि [प्रतीप] प्रतिकूल, प्रतिपक्षी, विरावी (भवि) ।

पडू वि [पटु] निपुण, चतुर, कुशल (श्रौष, कुमा, सुर २, १४५) ।

पडु (अप) देखो पडिअ = पतिन (विग) ।

पडुआल्लिअ वि [दे] १ निपुण बनाया हुआ । २ ताडित, पिटा हुआ । ३ चारित (दे ६, ७३) ।

पडुक्खेव पु [प्रत्युत्तेप] १ वायु ध्वनि । २ उत्थापन, उठान (अणु १३१) ।

पडुक्खेव पुं [प्रत्युत्थेप, प्रतिक्षेप] १ वायु-ध्वनि । क्षेपण, फेंकना; 'समतालपडुक्खेव' (ठा ७—पत्र ३६४) ।

पडुच्च अ [प्रतीत्य] १ आश्रय करके (आचा; सूत्र १, ७, सम ३६, नव ३६) । २ अपेक्षा करके (भग) । ३ अधिकार करके, 'पडुच्च त्ति वा पप्प त्ति वा अहिकिच्च त्ति वा एगट्ठा' (आचू १, अणु) । °करण न [°करण] किसी की अपेक्षा में जो कुछ करना, आपेक्षिक कृति (बृह १) । °भाव पु [°भाव] संप्रतियोगिक पदार्थ, आपेक्षिक वस्तु (भास २८) । °वयण न [°वचन] आपेक्षिक वचन (सम्म १००) । °सच्चा स्त्री [°सत्या] सत्य भाषा का एक भेद, अपेक्षा-कृत सत्य वचन (परण ११) ।

पडुच्चा ऊपर देखो, 'जे हिसति आयसुह पडुच्चा' (सूत्र १, ५, १, ४) ।

पडुजुवइ स्त्री [दे] युवति, तरुणी (दे ६, ३१) ।

पडुत्तिया स्त्री [प्रत्युक्ति] प्रत्युत्तर, जवाब (भवि) ।

पडुप्पण पुं [प्रत्युत्पन्न] १ वर्तमान पडुप्पन्न } काल (ठा ३, ४) । २ वि-
वात्तमानिक, वर्तमान काल में विद्यमान (ठा १०, भग ८, ५, सम १३२; उवा) । ३ प्राप्त, लब्ध (ठा ४, २), 'न पडुप्पन्नो य से जहोचिन्नो आहारो' (स २६१) । ४ उत्पन्न,

पडिच्छद पुं [दे] मुख, मुँह (दे ६, २४) ।
पडिच्छग वि [प्रत्येपक] ग्रहण करनेवाला
(निबू ११) ।

पडिच्छण न [प्रतीक्षण] प्रतीक्षा, वाट, राह
(उप २७८) ।

पडिच्छण न [प्रत्येषण] १ ग्रहण, आदान,
लेना । २ उत्सारण, विनिवारण, 'कुलिसपडि-
च्छणजोग्गा पच्छा कडया महिहराण' (गठड) ।
पडिच्छणा [प्रत्येषणा] ग्रहण, आदान
(निबू १६) ।

पडिच्छण वि [प्रतिच्छन्न] आच्छादित,
पडिच्छन्न } दका हुमा (गाया १, १—पत्र
१३, कप्प) ।

पडिच्छय पुं [दे] समय, काल (दे ६, १६) ।
पडिच्छय देवो पडिच्छग (औप) ।

पडिच्छयण न [प्रतिच्छदन] देखो पडि-
च्छायण (राज) ।

पडिच्छा स्त्री [प्रतीच्छा] ग्रहण, अंगीकार
(द्र ३३, मण) ।

पडिच्छायण न [प्रतिच्छादन] आच्छादन-
वन्न, प्रच्छादन-पट, 'हिरिपडिच्छायण च नो
सचाएमि महियामित्तए' (आचा, गाया १,
१—पत्र १५ टी) ।

पडिच्छायण न [प्रतिच्छादन] आच्छादन,
आवरण (मुज २०) ।

पडिच्छाया स्त्री [प्रतिच्छाया] प्रतिविम्ब,
परछाई (उप ५६३ टी) ।

पडिच्छावेमाण देखो पडिच्छ = प्रति + इप् ।
पडिच्छिअ वि [प्रतीष्ट, प्रतीप्सित] १
गृहीत, स्वीकृत (म ७, ५४, उवा, औप, सुपा
८४) । २ विशेष रूप से वाञ्छित (मग) ।

पडिच्छिअ देखो पडिच्छ = प्रति + इप् ।
पडिच्छिआ स्त्री [दे] १ प्रतिहारो । २ चिर-
काल से व्याप्यो हुई भैस (दे ६, २१) ।

पडिच्छिउं
पडिच्छिऊण देखो पडिच्छ = प्रति + इप् ।
पडिच्छियन्न ।

पडिच्छिर वि [प्रतीक्षित] प्रतीक्षा करने-
वाला, वाट देखनेवाला (वज्जा ३६) ।

पडिच्छिय वि [प्रतीच्छिक] अपने दोसा-
गुह की आज्ञा लेकर दूसरे गच्छ के आचार्य
के पास उनकी अनुमति से शास्त्र पढ़नेवाला
मुनि (एदि ५४) ।

पडिच्छिर वि [दे] सदृश, समान (हे २,
१७४) ।

पडिच्छद देखो पडिच्छद, 'वडिय निपयडिच्छद'
(उप ७२८ टी) ।

पडिच्छा स्त्री [प्रतीक्षा] प्रतीक्षण, वाट (ओघ
१७५) ।

पडिच्छाया देखो पडिच्छाया (चेइय ७५) ।

पडिजंप मक [प्रति + जरप्] उत्तर देना ।
पडिजपइ (भवि) ।

पडिजग्ग देखो पडिजागर = प्रति + जागृ ।

पडिजग्गइ (वृह ३) ।

पडिजग्गय वि [प्रतिजागरक] सेवा-शुश्रूषा
करनेवाला (उप ७६८ टी) ।

पडिजग्गय वि [प्रतिजागृत] जिनकी सेवा-
शुश्रूषा की गई हो वह (सुर ११, २४) ।

पडिजागर सक [प्रति + जागृ] १ मेवा-
शुश्रूषा करना, निर्वाह करना, निभाना । २
गवेषणा करना । पडिजागरंति (कप्प) । वकृ
पडिजागरमाण (विपा १, १, उवा, महा) ।

पडिजागर पु [प्रतिजागर] १ सेवा-शुश्रूषा ।
२ चिकित्सा, 'मणिमो निट्टो आणसु विज
पडिजागरट्टाए' (सुपा ५७६) ।

पडिजागरण न [प्रतिजागरण] ऊपर देखो
(वव ६) ।

पडिजागरय देखो पडिजग्गय (दे १,
४१) ।

पडिजायणा स्त्री [प्रतियातना] प्रतिविम्ब,
प्रतिमा, परछाई (चेइय ७५) ।

पडिजुवइ स्त्री [प्रतियुवति] १ स्व-ममान
अन्य युवति । २ सपत्नी (कुप्र ४) ।

पडिजोग पु [प्रतियोग] कामंण आदि योग
का प्रतिपातक योग, चरण-विशेष (सुर ८,
२०४) ।

पडिट्ट वि [पटिष्ट] अत्यन्त निपुण, वदूत
चतुर (सुर १, १३५, १३, ६६) ।

पडिट्टविअ वि [परिस्थापित] सस्थापित (से
५, ५२) ।

पडिट्टविअ वि [प्रतिष्ठापित] जिनकी
प्रतिष्ठा की गई हो वह (अच्छु ६४) ।

पडिट्टा देखो पडिट्टा (नाट—मालती ७०) ।

पडिट्टाव सक [प्रति + स्थापय्] प्रतिष्ठित
करना । पडिट्टावेहि (पि २२०, ५५१) ।

पडिट्टावअ देखा पडिट्टावय (नाट—वेणी
११२) ।

पडिट्टाविट (रौ) देखो पडिट्टाविय (अग्नि
१८७) ।

पडिट्टिअ देखो पडिट्टिय (पट्, पि २२०) ।

पडिठाण न [प्रतिस्थान] हर जगह (धम्मवि
४) ।

पडिण देखो पडिण (पि ८२, ६६) ।

पडिणव वि [प्रतिनव] नया, नूतन, 'तुरम-
पडिणववुरवाद गिरतरखंडि' (विक्र २६) ।

पडिणिअसण न [दे] रात में पहनने का
वस्त्र (दे ६, ३६) ।

पडिणिअत्त अक [प्रतिनि + वृत्] पीछे
लौटना, पीछे वापस जाना । पडिणियत्तई
(औप) । वकृ पडिणिअत्तंन, पडिणिअत्त-
माण (से १३, ७५, नाट—मालती २६) ।

सकृ, पडिणियत्तित्ता (औप) ।

पडिणिअत्त } वि [प्रतिनिवृत्त] पीछे लौटा
पडिणिउत्त } हुमा (गा ६८ अ, विपा १, ५,
उवा, मे १, २६, अग्नि १२४) ।

पडिणिआस वि [प्रतिनिकाश] समान,
तुल्य (राय ६७) ।

पडिणिक्खम अक [प्रतिनिर + क्रम्]
बाहर निकलना । पडिणिक्खमइ (उवा) ।

सकृ, पडिणिक्खमित्ता (उवा) ।

पडिणिग्गच्छ अक [प्रतिनिर + गम्]
बाहर निकलना । पडिणिग्गच्छइ (उवा) ।

सकृ, पडिणिग्गच्छित्ता (उवा) ।

पडिणिजाय नक [प्रतिनिर + यापय्]
अपण करना । पडिणिजायमि (गाया १,
७—पत्र ११८) ।

पडिणिभ वि [प्रतिनिभ] १ महेश, तुल्य,
वरावर । २ हेतु-विशेष, वादो की प्रतिज्ञा का
खटन करने के लिए प्रतिवादो की तरफ से
प्रयुक्त समान हेतु—युक्ति (ठा ४, ३) ।

पडिणिवत्त देखो पडिणिअत्त = प्रतिनि +
वृत् । वकृ, पडिणिवत्तमाण (नाट रत्ना
५४) ।

पडिणिवत्त देखो पडिणिअत्त = प्रतिनिवृत्त
(काल) ।

पडिणिविट्ट वि [प्रतिनिविष्ट] द्विष्ट, द्वैप-
युक्त (पण्ह १, १—पत्र ७) ।

पण देखो पच (सुपा १, नव १०, कम्म २, ६, २६, ३१)। °णउइ छो [°नवति] पचानवे, नव्वे और पांच (पि ४४६)। °तीस छो [°त्रिंशत्] पैतीस, तीस और पांच (औप, कम्म ४, ५३, पि २७३, ४४५)। °नुवइ देखो °णउइ (सुपा ६७)। °रस त्रि व [°दशन्] पनरह (सण)। °वन्निय वि [°वर्णिक] पांच रग का (सुपा ४०२)। °वीस छो [°विंशति] पचीस, बीस और पांच (सम ४४; नव १३, कम्म २)। °वीसइ छो [°विंशति] वही अर्थ (पि ४४५)। °सट्ठि छो [°पष्टि] पैसठ, साठ और पांच (सम ७८, पि २७३)। °सय न [°शत] पांच सौ (दं ६)। °सीइ छो [°शीति] पचासी, अस्सी और पांच (कम्म २)। °सुन्न न [°सुन] पाँच हिंसा-स्थान (राज)।

पण पुं [पण] १ शत, होड, 'लक्खपणेण जुज्झावैतस्स' (महा)। २ प्रतिज्ञा (आक)। ३ घन। ४ विक्रय वस्तु, क्रयाणक, 'तत्थ विडप्पिअ पणण' (तो ३)

पण पुं [प्रण] पन, प्रतिज्ञा (नाट—मालती १२४)।

पण } न [पञ्चक] १ पाँच का समूह (पंच पणग } ३, १६)। २ तप-विशेष, नीवी तप (सवोष ५७)।

पणअत्तिअ वि [दे] प्रकटित, व्यक्त किया हुआ (दे ६, ३०)।

पणअन्न देखो पणपन्न (हे २, १७४ टि, राज)।

पणइ छो [प्रणति] प्रणाम, नमस्कार (पचम ६६, ६६, सुर १२, १३३, कुमा)।

पणइ वि [प्रणयिन्] १ प्रणयवाला, स्नेही, प्रेमी। २ पु पति, स्वामी (पाअ; गउड ८३७)। ३ याचक, अर्थी, प्रार्थी (गउड २४६, २५१, सुर १, १०८)। ४ भृत्य, दाम, 'वप्पइराओत्ति पणइलवो' (गउड ७६७)।

पणइणी छो [प्रणयिनी] पत्नी, भार्या, प्रिया, जोरू (सुपा २१६)।

पणइय वि [प्रणयिक, प्रणयिन्] देखो पणइ=प्रणयिन् (सण)।

पणगणा छो [पणाङ्गना] वेश्या, वाराणना (उप १०३१ टी, सुपा ४६०, कुप्र ५)।

पणग न [पञ्चक] पाँच का समूह (सुर ६, ११२, सुपा ६३६, जी ६; द ३१, कम्म २, ११)।

पणग पु [दे पनक] १ शैवाल, सेवार या सिवार, तृण-विशेष जो जल में उत्पन्न होता है (वृह ४, दस ८, परण १ एदि)। २ कोई वर्षा-काल में भूमि, काष्ठ आदि में उत्पन्न होने-वाला एक प्रकार का जल-मैल (आचा, पडि, ठा ८—पत्र ४२६; कण्)। ३ कर्दम-विशेष, सूक्ष्म पंक (वृह ६, भग ७ ६)। देखो पणय (दे)। °भट्ठिया; °भत्तिया छो [°मृत्तिका] नदी आदि के पूर के खतम होने पर रह जाती कोमल चिकनी मिट्टी (जीव १, परण १—पत्र २५)।

पणच्च अक [प्र + नृन्] नाचना, नृत्य करना। वक्र 'पणच्चमाण' (राया १, ८—पत्र १३३, सुपा ४७२)। छो °णी (सुपा २४२)।

पणच्चण न [प्रनर्तन] नृत्य, नाच (सुपा १५४)। पणच्चिअ वि [प्रनृत्तित] नाचा हुआ, जिसका नाच हुआ हो वह (राया १, १—पत्र २५)।

पणच्चिअ वि [प्रनृत्त] नाचा हुआ, 'अन्नया रायपुरओ पणच्चिया देवदत्ता' (महा, कुप्र १०)।

पणच्चिअ वि [प्रनृत्तित] नचाया हुआ (भवि)। पणठु वि [प्रनष्ट] प्रकर्ष से नाश को प्राप्त (सूअ १, १, २, से ७, ८, सुर २, २४७, ३, ६६, भवि, उव)।

पणद्ध वि [प्रणद्ध] परिणत (औप)।

पणपण देखो पणपन्न (कण् १४७ टि)।

पणपणइम देखो पणपन्नइम (कण् १७४ टि, पि २७३)।

पणपन्न छो [दे. पञ्चपञ्चाशत्] पचपन, पचास और पाँच (हे २, १७४, कण्, सम ७२, कम्म ४, ५४, ५५, ति ५)।

पणपन्नइम वि [दे. पञ्चपञ्चाश] पचपनवा, ५५ वाँ (कण्)।

पणपन्निय देखो पणवन्निय (इक)।

पणपन्निय पुं [पंचप्रज्ञप्तिक] व्यन्तर देवों की एक जाति (पव १६४)।

पणम सक [प्र + नम्] प्रणाम करना, नमन करना। पणमइ, पणमए (स ३४४; भग)। वक्र. पणमत (सण)। कवक. पणमिज्जत (सुपा ८८)। सक. पणमिअ, पणमिऊण पणमिऊण, पणमिन्ता, पणमिन्तु (अभि ११८, प्राक् पि ५६०, भग, काल)।

पणमण न [प्रणमन] प्रणाम, नमस्कार (उव, सुपा २७, ५६१)।

पणमिअ देखो पणम।

पणमिअ वि [प्रगन्] १ नमा हुआ (भग, औप)। २ जिसने नमने का प्रारम्भ किया हो वह (राया १, १—पत्र ५)। ३ जिसको नमन किया गया हो वह, 'पणमिओ एणेण राया' (स ७३०)।

पणमिअ वि [प्रगमित] नमाया हुआ (भवि)।

पणमिर वि [प्रगन्न] प्रणाम करनेवाला, नमनेवाला (कुमा-कुप्र-३५०; सण)।

पणय सक [प्र + णी] १ स्नेह करना, प्रेम करना। २ प्रार्थना करना। वक्र. पणअंत (से २, ६)।

पणय वि [प्रणत] १ जिसको प्रणाम किया गया हो वह, 'नरनाहपणयपयकमल' (सुपा २४०)। २ जिसने नमस्कार किया हो वह, 'पणयपडिक्ख' (सुर १, ११२, सुपा ३६१)। ३ प्राप्त (सूअ १, ४, १)। ४ निम्न, नीचा (जीव ३, राय)।

पणय पु [प्रणय] १ स्नेह, प्रेम (राया १, ६, महा, गा २७)। २ प्रार्थना (गउड)। °वत वि [°वन्] स्नेहवाला, प्रेमी (उप १३१)।

पणय पुं [दे] पंक, कर्दम (दे ६, ७)।

पणय पु [दे पनक] १ शैवाल, सेवार, तृण-विशेष। २ कोई जल-मैल (औप ३४६)। ३ सूक्ष्म-कर्दम (परह १, ४)।

पणयाल वि [दे. पञ्चचत्वारिंश] पैतालीसवाँ, ४५ वाँ (पचम ४५, ४६)।

पणयाल छो [दे. पञ्चचत्वारिंशत्] पणयालीस } पैतालीस, चालीस और पाँच, ४५ (सम ६६, कम्म २, २७७ टि, ३, भग, सम ६८, औप, पि ४४५)।

पडिपाहुड न [प्रतिप्राभृत] बदले की भेंट (सुपा १४५)।

पडिपिडिअ वि [दे] प्रवृद्ध, बड़ा हुआ (दे ६, ३४)।

पडिपिल्ल सक [प्रति + क्षिप्, प्रतिप्र + ईरय्] प्रेरणा करना। पडिपिल्लइ (भवि)।

पडिपिल्लण न [प्रतिप्रेरण] १ प्रेरणा (सुर १५, १४१)। २ ढक्कन, पिघान। ३ वि. प्रेरणा करनेवाला, 'दीवसिहापडिपिल्लणमल्ले मिल्लति नीसासे' (कुप्र १३१)।

पडिपिहा देखो पडिपेहा। संकृ पडिपिहिता (पि ५८२)।

पडिपीलण न [प्रतिपीडन] विशेष पीडन, अधिक दबाव (गउड)।

पडिपुच्छ सक [प्रति + प्रच्छ] १ पृच्छा करना, पूछना। २ फिर से पूछना। ३ प्रश्न का जवाब देना। पडिपुच्छइ (उवा)। वकृ. पडिपुच्छमाण (कप्प)। कृ पडिपुच्छ-णिज्ज, पडिपुच्छणीय (उवा, णाया १, १, राय)।

पडिपुच्छण न [प्रतिप्रच्छन] नीचे देखो (भग, उवा)।

पडिपुच्छणया } श्री [प्रतिप्रच्छना] १
पडिपुच्छणा } पूछना, पृच्छा। २ फिर से पृच्छा (उत्त २६, २०, औप)। ३ उत्तर, प्रश्न का जवाब (बृह ४, उप पृ ३६८)।

पडिपुच्छणिज्ज } देखो पडिपुच्छ।
पडिपुच्छणीय }

पडिपुच्छा श्री [प्रतिपृच्छा] देखो पडिपुच्छणा (पचा २, वव २, बृह १)।

पडिपुच्छिअ वि [प्रतिपृष्ट] जिससे प्रश्न किया गया हो वह (गा २८६)।

पडिपुज्जिय वि [प्रतिपूजित] पूजित, अर्चित, 'वदएवरकएगकलससुविणिम्मियपडिपुजि (१ पुज्जि, पूइ) यससपठमसोहतदारभाए' (णाया १, १—पत्र १२)।

पडिपुण्ण देखो पडिपुन्न (उवा, पि २१८)।

पडिपुत्त पुं. [प्रतिपुत्र] प्रपुत्र, पुत्र का पुत्र, पोता, 'अकनिवेसियनियनियपुत्तयपडिपुत्तनत्त-पुत्तीय' (सुपा ६)। देखो पडिपोत्तय।

पडिपुत्त वि [प्रतिपूर्णा] परिपूर्ण, सपूर्ण (णाया १, १, सुर ३, १८, ११४)।

पडिपूइय देखो पडिपुज्जिय (राज)।

पडिपूयग } वि [प्रतिपूजक] पूजा करने-
पडिपूयय } वाला (राज, सम ५१)।

पडिपूयय वि [प्रतिपूजक] प्रत्युपकार-कर्ता (उत्त १७, ५)।

पडिपूरिय वि [प्रतिपूरित] पूर्ण किया हुआ (पठम १००, ५०, ११५, ७)।

पडिपेण्ण देखो पडिपिण्ण (गउड, से ६, ३२)।

पडिपेण्ण न [परिप्रेरण] देखो पडिपिण्ण (से २, २४)।

पडिपेण्णिय वि [प्रतिप्रेरित] प्रेरित, जिमको, प्रेरणा की गई हो वह (सुर १५, १८०, महा)।

पडिपेहा सक [प्रतिपि + धा] ढक्कना, आच्छादन करना। सकृ. पडिपेहिता (सूअ २, २, ५१)।

पडिपोत्तय पु [प्रतिपुत्रक] नप्ता, कन्या का पुत्र, लडकी का लडका, नाती (सुपा १६२)। देखो पडिपुत्तय।

पडिप्पह देखो पडिपह (उप ७२८ टी)।

पडिप्फद्धि वि [प्रतिस्पर्धिन] स्पर्धा करने-वाला (हे १, ४४, २, ५३, प्राप्र, संसि १६)।

पडिप्फलणा श्री [प्रतिफलना] १ स्वलना। २ संक्रमण, 'पडिसहपडिप्फलणावजिरनीसे-ससुरघंट' (सुपा ८७)।

पडिप्फलिअ } वि [प्रतिफलित] १ प्रति-
पडिफलिअ } विम्बित, सक्रान्त (से १५, ३१, दे १, २७)। २ स्वलित (पाअ)।

पडिबध सक [प्रति + बन्ध] रोकना, अट-काना। पडिबधइ (पि ५१३)। कृ. पडि-बधेयव्व (वसु)।

पडिवध सक [प्रति + बन्ध] १ वेष्टन करना। २ सेकना। पडिवंधइ, पडिवंधंति (सूअ १, ३, २, १०)।

पडिवध पुं [प्रतिबन्ध] व्याप्ति, नियम (धर्मस १११)।

पडिवध पुं [प्रतिबन्ध] १ रुकावट (उवा, कप्प)। २ विघ्न, अन्तराय (उप ८८७)।

३ अत्यादर, बहुमान (उप ७७६, उवर १४६)। ४ स्नेह, प्रीति, राग (ठा ६, पचा १७)। ५ आसक्ति, अभिष्वग (णाया १, ५, कप्प)। ६ वेष्टन (सूअ १, ३, २)।

पडिवंधअ } वि [प्रतिबन्धक] प्रतिबन्ध
पडिवंधग } करनेवाला, रोकनेवाला (अभि २५३, उप ६४५)।

पडिवंधण न [प्रतिबन्धन] प्रतिबन्ध, रुकावट (पि २१८)।

पडिवंधेयव्व देखो पडिवध = प्रति + बन्ध।

पडिवद्ध वि [प्रतिवद्ध] १ रोका हुआ, सद्ध, 'वायुरिव अप्पडिवद्धे' (कप्प, पण्ह १, ३)। २ उपजनित, उत्पादित (गउड १८२)। ३ ससक्त, सबद्ध, सलग्न, 'नरिआण तरणियपकवडलपडिवद्धवाजुयामसिणा

पुलिणविद्वारा' (गउड, कुप्र ११५, उवा)।

४ सामने बंधा हुआ, 'पडिवद्ध नर तुमे नरिदचक्क पयाववियडपि' (गउड)। ५ व्यव-

स्थित (पचा १३)। ६ वेष्टित (गउड)। ७ समीप में स्थित, 'तं चेव य सागरिय जस्स अदूरे स पडिवद्धो' (बृह १)।

पडिवद्ध वि [प्रतिवद्ध] नियत, व्याप्त (पचा ७, २)।

पडिवाह सक [प्रति + वाध] रोकना। हेकृ. पडिवाहिटु (शौ) (नाट—महावी ६६)।

पडिवाहिर वि [प्रतिवाह्य] अनधिकारी, अयोग्य (सम ५०)।

पडिविंय न [प्रतिविम्ब] १ परछांही, प्रति-च्छाया (सुपा २६६)। २ प्रतिमा, प्रतिमूर्ति (पाअ, प्रामा)।

पडिविंविअ वि [प्रतिविम्बित] जिमका प्रतिविम्ब पडा हो वह (कुमा)।

पडिवुज्झ अक [प्रति + बुध्] १ बोध पाना। २ जागृत होना। पडिवुज्झइ (उवा)।

वकृ पडिवुज्झत, पडिवुज्झमाण (कप्प)।

पडिवुज्झणया } श्री [प्रतिबोधना] १ बोध,
पडिवुज्झणा } समकृ। २ जागृति (स १५६, औप)।

पडिवुद्ध वि [प्रतिबुद्ध] १ बोध-प्राप्त (प्राभू १३५, उवा)। २ जागृत (णाया १, १)।

३ न प्रतिबोध (आचा)। ४ पु एक राजा का नाम (णाया १, ८)।

पडिवूहणया श्री [प्रतिबूहणा] उपचय, पुष्टि (सूअ २, २, ८)।

पडिवोध देखो पडिवोह = प्रतिबोध (नाट—मालती ५६)।

‘संकाथाणाणि सव्वाणि वज्जेज्जा पणिहाणव’
(उत्त १६, १४)।

पणिहाय देखो पणिहा ।

पणिहि पुंस्त्री [प्रणिधि] १ एकाग्रता, अवधान
(परह २, ५)। २ कामना, अभिलाष (स
८७)। ३ पु. चरपुरुष, दूत (परह १, ३,
पाय, सुर ३, ४, सुपा ४६२)। ४ चेष्टा,
व्यापार (दसनि १)। ५ माया, कपट (आव
४)। ६ व्यवस्थापन (राज)।

पणिहि पुस्त्री [प्रणिधि] बड़ा निधि (दस
८, १)।

पणिहिय वि [प्रणिहित] १ प्रयुक्त, व्यापृत
(दसनि ८)। २ व्यवस्थित (आव ४)।

पणीय वि [प्रणित] १ निर्मित, कृत, रचित,
‘वइसेसिय पणीय’ (विसे २५०७, सुर १२,
६२, सुपा २८, १६७)। २ स्निग्ध, घृत
आदि स्नेह की प्रचुरतावाला, ‘विभूसा इत्थी-
समग्गी पणीयरमभोयण’ (दस ८, ५७, उत्त
१६, ७, ओष १५० भा, औप, बृह ५)। ३
निरूपित, प्ररूपित, आख्यात (अणु, आव
३)। ४ मनोज्ञ, मुन्दर (भग ५, ४)। ५
सम्यग् आचरित (सूत्र १, ११)।

पणीहाण देखो पणिहाण (आत्म ८, हित
१५)।

पणुं देखो पणोल्ल। वक्र पणुल्लेमाण (पि
२२४)।

पणुल्लिअ देखो पणोल्लिअ (पाय, सुपा २४,
प्रासू १६६)।

पणुवीस स्त्रीन [पञ्चविंशति] सख्या-विशेष,
पचीस, बीस और पाँच। २ जिनकी सख्या
पचीस हो ते (स १०६, पि १०४, २७३)।

पणुर्व सङ्गम वि [पञ्चविंशतितम] पचीसवाँ,
२५ वाँ (विसे ३१२०)।

पणोल्ल सक [प्र + णुल्] १ प्रेरणा करना।
२ फेंकना। ३ नाश करना। पणोल्लिअ
(प्राप्र), ‘पावाई कम्माई पणोल्लयामो’ (उत्त
१२, ४०)। कवक. पणोल्लिजमाण (णाय
१, १, परह १, ३)। सक. पणोल्ल (सूत्र
१, ८)।

पणोल्लण न [प्रणोदन] प्रेरणा (ठा ८, उप
पृ ३४१)।

पणोल्लय वि [प्रणोदक] प्रेरक (आचा)।

पणोल्लि वि [प्रणोदिन्] १ प्रेरणा करनेवाला।
२ पु. प्राजन दण्ड, बैल इत्यादि हाँकने की
लडकी (परह १, ३—पत्र ५४)।

पणोल्लिअ वि [प्रणोदित] प्रेरित (औप, पि
२४४)।

पण्ण वि [प्रज्ञ] जानकार, दक्ष, निपुण (उत्त
१, ८, सूत्र १, ६)।

पण्ण वि [प्राज्ञ] १ प्रज्ञावाला, बुद्धिमान्, दक्ष
(हे १, ५६, उप ६२३)। २ वि. प्राज्ञ-
सम्बन्धी (सूत्र २, १)।

पण्ण न [पर्ण] पत्र पत्ता, पत्तो (कुमा)।

पण्ण देखो पणिअ = पणय (नाट)।

पण्ण स्त्रीन [दे] पचास, ५०। स्त्री. °ण्णा
(पड्)।

पण्ण देखो पच, पण (पि २७३, ४४०,
४४५)। °रस वि. व. [°दशन्] पनरह,
१५ (सम २६, उवा)। °रसम वि [°दश]
पनरहवा (उवा)। °रसी स्त्री [°दशी] १
पनरहवी। २ तिथि-विशेष (पि २७३, कण्)।
°रह देखो °रस (प्राप्र)। °रह वि [°दश]
पनरहवाँ, १५ वाँ (प्राप्र)। देखो पन्न =
पच।

पण्ण वि [पार्ण] पर्ण सम्बन्धी, पत्ते का,
पत्ती से सबन्ध रखनेवाला (राज)।

पण्ण° देखो पण्णा°। °व वि [°वन्] प्रज्ञा-
वाला (उप ६१२ टी)।

पण्णई [पन्नगा] भगवान् धर्मनाथ की शासन-
देवी (पव २७)।

पण्णग पु [पन्नग] सर्प, साँप (उप ७२८
टी)। °सन पुं [°शन] गरुड पक्षी (पिंग)।
देखो पन्नय।

पण्णग वि [दे पन्नक] दुर्गन्धी। °तिल पु
[°तिल] दुर्गन्धी तिल (राज)।

पण्णट्ठि स्त्री [पञ्चपट्टि] पैंसठ, साठ और
पाँच, ६५ (कण्)।

पण्णत्त वि [प्रज्ञप्त] निरूपित, उपदिष्ट, कथित
(औप, उवा, ठा ३, १, ४, १, २, विपा
१, १, प्रासू १२१)। २ प्रणीत, रचित
(आवम, चंद २०, भग ११, ११, औप)।

पण्णत्ति स्त्री [प्रज्ञप्ति] १ विद्यादेवी-विशेष
(ज १)। २ जैन आगम ग्रंथ विशेष, सूयं-
प्रज्ञप्ति आदि उपाग-ग्रंथ (ठा ३, १, ४, १)।

३ विद्या-विशेष (आचू १)। ४ प्रह्मण,
प्रतिपादन (उवा, वव ३)। °खेवणी स्त्री
[°क्षेपणी] कथा का एक भेद (ठा ४, २)।
°पक्खेवणी स्त्री [°प्रक्षेपणी] कथा का एक
भेद (राज)।

पण्णपणिणय पु [पण्णपणि] व्यन्तर देवो
की एक जाति (इक)।

पण्णय देखो पण्णग (से ४, ४)।

पण्णव सक [प्र + ज्ञापय] प्ररूपण करना,
उपदेश करना, प्रतिपादन करना। परणवेइ,
परणवेंति (उवा, भग)। वक्र. पण्णवयत्त
पण्णवेमाण (भग, पि ५५१)। कृ. पण्ण-
वणिज्ज (द्र ७)।

पण्णवग वि [प्रज्ञापक] प्ररूपक, प्रतिपादक
(विमे ५४६)।

पण्णवण न [प्रज्ञापन] १ प्ररूपण, प्रति-
पादन। २ शास्त्र, सिद्धान्त (विसे ८६४)।

पण्णवण वि [प्रज्ञापन] ज्ञापक, निरूपक
(सबोध ५)।

पण्णवणा स्त्री [प्रज्ञापना] १ प्ररूपणा, प्रति-
पादन (णाय १, ६, उवा)। २ एक जैन
आगम ग्रंथ, ‘प्रज्ञापना’ सूत्र (भग)।

पण्णवणिज्ज देखो पण्णव।

पण्णवणी स्त्री [प्रज्ञापनी] भाषा विशेष, ग्रंथ-
बोधक भाषा (भग १०, ३)।

पण्णवण स्त्रीन [दे. पञ्चपञ्चाशत्] पच-
पन, पचास और पाँच (दे ६, २७, पड्)।

पण्णवय देखो पण्णवग (विसे ५४७)।

पण्णवयत्त देखो पण्णव।

पण्णविय वि [प्रज्ञापित] प्रतिपादित, प्ररू-
पित (अणु, उत्त २६)।

पण्णवेत्तु वि [प्रज्ञापयितृ] प्रतिपादक, प्ररू-
पण करनेवाला (ठा ७)।

पण्णवेमाण देखो पण्णव।

पण्णा सक [प्र + ज्ञा] १ प्रकर्ष में जानना।
२ अच्छी तरह जानना। कर्म. परणायंति
(भग)।

पण्णा देखो पण्ण (दे)।

पण्णा स्त्री [प्रज्ञा] मनुष्य की दस अवस्थायो
में पाँचवी अवस्था (तंदु १६)।

पण्णा स्त्री [प्रज्ञा] १ बुद्धि, मति (उप १५४,
७२८ टी; निचू १)। २ ज्ञान (सूत्र १,

कत्तो पुण्णेहि विणा,

वेसा पडियव्व संपदद्द,
(वजा ११६)।

पडियाइक्ख सक [प्रत्या + ख्या] त्याग
करना। पडियाइक्खे (पि १६६)।

पडियाइक्खिय वि [प्रत्याख्यात] त्यक्त,
परित्यक्त, छोड़ा हुआ, (ठा २, १, भग, उवा
कस; विपा १, १, औप)।

पडियाणय न [दे. पर्याणक] पर्याण के
नीचे दिया जाता चर्म आदि का एक उपकरण
(णाय १, १७—पत्र २३०)।

पडियाणंद पुं [प्रत्यानन्द] विशेष आनन्द,
प्रभूत आह्लाद, बहुत आनन्द (औप)।

पडियाणय न [दे. पटतानक, पर्याणक]
पर्याण के नीचे रखा जाता वस्त्र आदि का
एक घुबसवारी का उपकरण (णाय १,
१७—पत्र २३२ टी)।

पडियारणा श्री [प्रतिवारणा] निषेध (पचा
१७, ३४)।

पडियासूर अक [दे] चिहना, गुस्सा होना।
कृ 'पडियासूरेयव्वं न कयाइवि पाण-
चाएवि' (आक २५, १४)।

पडिर वि [पटित्] गिरनेवाला (कुमा)।

पडिरअ देखो पडिरव (गा ५५ अ, मे ७,
१६)।

पडिरजिअ वि [दे] भग्न, टूटा हुआ (दे
६, ३२)।

पडिरक्खिय वि [प्रतिरक्षित] जिमकी रक्षा
की गई हो वह (मवि)।

पडिरव पु [प्रतिरव] प्रतिध्वनि, प्रतिशब्द
(गउड, गा ५५, सुर १, २४४)।

पडिराय पु [प्रतिराय] लाली, रक्तपन,
'उव्वहद्द दइयगहियाहरोडुमिज्जतरोसपडिराय।
पाणोसरतमइर व फलिहचमय इमा वयण'
(गउड)।

पडिरिगअ [दे] देखो पडिरजिअ (पड्)।

पडिरु अक [प्रति + रु] प्रतिध्वनि करना,
प्रतिशब्द करना। वक्र. पडिरुअ न (से १२
६, पि ४७३)।

पडिरुध } सक [प्रति + रुध्] १ रोकना,
पडिरुभ } अटकाना। २ व्याप्त करना। पडि-

रुमइ (से ८, ३६)। वक्र. पडिरुधंत (से
११, ५)।

पडिरुद्ध वि [प्रतिरुद्ध] रोकना हुआ, अटकाया
हुआ (मुपा ८५, वजा ५०)।

पडिरुअ } वि [प्रतिरूप] १ रम्य, सुन्दर,
पडिरुव } चारु, मनोहर (सम १३७, उवा,
औप)। २ रूपवान्, प्रशस्त रूपवाला, श्रेष्ठ
आकृतिवाला (औप)। ३ असाधारण रूपवाला।
४ नूतन रूपवाला (जीव ३)। ५ योग्य,
उचित (स ८७, भग १५, दम ६, १)।

६ सदृश, समान (णाय १, १—पत्र ६१)।
७ समान रूपवाला, सदृश आकारवाला (उत्त
२६, ४२)। ८ न प्रतिविम्ब, प्रतिमूर्ति,

'कइयावि चित्तफलए कइया वि पडिम्म तस्म
पडिरुव लिहिरुए' (सुर ११, २३८, राय)।

९ समान रूप, समान आकृति, 'तुम्हपडिरुव-
धारि पासइ विज्जाहरमुदाढ' (मुपा २६८)।

१० पुं. इन्द्र-विशेष, भूत-निकाय का उत्तर
दिशा का इन्द्र (ठा २, ३—पत्र ८५)। ११
विनय का एक भेद (वव १)।

पडिरुवसि वि [प्रतिरूपिन्] रमणीय,
सुन्दर (आचा २, ४, २, १)।

पडिरुवग पुन [प्रतिरूपक] प्रतिविम्ब,
प्रतिमा, 'तिदिस्सि पडिरुवगा यदेवकया' (आव,
वृह)।

पडिरुवणया श्री [प्रतिरूपणता] १ ममा-
नता, सदृशता या सादृश्य। २ समान वेप-
धारण (उत्त २६, १)।

पडिरुवा श्री [प्रतिरूपा] एक कुलकर पुरुष
की पत्नी का नाम (सम १५०)।

पडिरोव पुं [प्रतिरोप] पुनरारोपण (कुप्र
५५)।

पडिरोह पुं [प्रतिरोध] रकावट (गउड,
गा ७२४)।

पडिरोहि वि [प्रतिरोधिन्] रोकनेवाला
(गउड)।

पडिलंभ सक [प्रति + लभ्] प्राप्त करना।
सकृ. पडिलंभय (सूत्र १, १३)।

पडिलंभ पु [प्रतिलम्भ] प्राप्ति, लाभ (सूत्र
२, ५)।

पडिलग्ग वि [प्रतिलग्न] लगा हुआ, सम्बद्ध
(से ६, ८६)।

पडिलग्गल न [दे] बल्मीक, कीट-विशेष-कृत
मृत्तिका-स्तूप (दे ६, ३३)।

पडिलभ सक [प्रति + लभ्] प्राप्त करना।
पडिलभेज (उत्त १, ७)। संक्र. पडिलम्भ
(सूत्र १, १३, २)।

पडिलाभ } सक [प्रति + लाभ्य् लभ्य]
पडिलाह } साधु आदि को दान देना। पडि-
लाहेज्जह (काल)। वक्र. पडिलाभमाण
(णाय १, ५, भग उवा)। मक्र. पडिला-
भित्ता (भग ८, ५)।

पडिलाहण न [प्रतिलाभन] दान देना
(रमा)।

पडिलिहिअ वि [प्रतिलिखि] लिखा हुआ,
'सम्म मत दुवारि पडिलिहिअ' (ति १४)।

पडिलीण वि [प्रतिलीन] अत्यन्त लीन
(धर्मवि ५३)।

पडिलेह सक [प्रति + लेख्य्] १ निरीक्षण
करना, देखना। २ विचार करना। पडिलेहेइ
उव, कस, भग), 'एतेमु जाणे पडिलेह साय,
एतेण काएण य थायदडे' (सूत्र १, ७, २)।

सकृ. भूएहि जाणं पडिलेह साय' (सूत्र १,
७, १६), पडिलेहिता (भग)। हेकृ. पडि-
लेहित्तए, पडिलेहेत्तए (कप्प)। कृ. पडि-
लेहियव्व (औघ ४, कप्प)।

पडिलेह पुं [प्रतिलेख] देखो पडिलेहा
(चैइय, २६६)।

पडिलेहग देखो पडिलेहय (राज)।

पडिलेहण न [प्रतिलेखन] निरीक्षण (औघ
३ भा, अत)।

पडिलेहणया देखो पडिलेहणा (उत्त २६,
१)।

पडिलेहणा श्री [प्रतिलेखना] निरीक्षण,
निरूपण (भग)।

पडिलेहणी श्री [प्रतिलेखनी] साधु का एक
उपकरण, 'पुजणी' (पव ६१)।

पडिलेहय वि [प्रतिलेखक] निरीक्षण,
देखनेवाला (औघ ४)।

पडिलेहा श्री [प्रतिलेखा] निरीक्षण, अव-
लोकन (औघ ३, ठा ५, ३, कप्प)।

पडिलेहि वि [प्रतिलेखिन्] निरीक्षक
(सूत्र १, ३, ३, ५)।

८१, सुपा १२६, भग १४, १, पात्र)। २ समर्थ (जीवसः २८५)। पत्तट्ट वि [दे] सुन्दर मनोहर (दे ६, ६८)। पत्तण देखो पट्टण (राज)। पत्तण न [दे] पत्त्रण १ हनु-फलक, बाण का फलक। २ पुख, बाण का मूल भाग (दे ६, ६४, गा १०००)। पत्तणा की [दे] पत्त्रणा १-२ ऊपर देखो (गउड, से १५, ७३)। ३ पुख में की जाती रचना-विशेष (से ७, ५२)। पत्तणा की [प्रापणा]-प्राप्ति (पत्र ४)। पत्तपसाइया की [दे] पत्तियों की एक की पगडी, जिसे भील लोग पहनते हैं (दे ६, २)। पत्तपिसालस न [दे] ऊपर देखो (दे ६, २)। पत्तय न [पत्रक] एक प्रकार का गेय (ठा ४, ४)। पत्तय देखो पत्त (महा)। पत्तरक न [दे] प्रतरक] आभूषण-विशेष (पह २, ४-पत्र १४६)। पत्तल वि [दे] १ तीक्ष्ण, तेज (दे ६, १४), 'नयणां समाण्यपत्तलाहं परपुरिसजीवहरणाहं। असियसियाहं व मुद्ध खग्गा इव के न मारति?' (वज्जा ६०)। २ पतला, कुश (दे ६, १४, वज्जा ४६)। पत्तल वि [पत्रल] १ पत्र समूह, बहुत पत्ती-वाला (पात्र, से १, ६२, गा ५३२; ६३५, दे ६, १४)। २ पक्ष्मवाला (भौप, जे २)। पत्तल न [पत्र] पत्ती, पण (दे २, १७३, प्राभा, सण, हे ४, ३८७)। पत्तलण न [पत्रलण] पत्र-समूह होना, पत्र-बहुल होना, 'वाजलिआपरिसोसणकुडंगपत्तलणमुलहसकेअ' (गा ६२६)। पत्तली की [दे] कर-विशेष, एक प्रकार का राज-देय, 'गिएहह तदेसपत्तलि भक्ति' (सुपा ४६३)। पत्तहारय वि [पत्रहारक] पत्ती को बेचने का काम करनेवाला (भणु, १४६)।

पत्ताण सक [दे] पताना मिटाना, 'पुच्छव अन्नु कोवि जो जाणइ सो, सुम्हह विवाउ प्रताणइ', (भवि), पत्ताणहि (भवि)। पत्तामोड पुन [आमोटपत्र] तोडा हुआ पत्र, 'दम्मे य कुसे य पत्तामोड च गेएहइ' (अंत ११)। पत्ति की [प्राप्ति] लाभ (दे १, ४२, उप २२६, चेइय ६६४)। पत्ति पुं [पत्ति] १ सेना-विशेष, जिसमें एक रथ, एक हाथी, तीन घोड़े और पाँच पैदल हो। २ पैदल चलनेवाली सेना (उप ७२८ टी)। पत्ति सक [प्रति + इ] १ जानना। २ पत्तिअ] विश्वास करना। ३ आश्रय करना। पत्तिअइ, पत्तियति, पत्तिअसि, पत्तिआमि (से १३, ४४; पि ४८७, से ११, ६०, भाग)। पत्तिआइ, पत्तिअ, पत्तिहि, पत्तिसु (राय, गा २१६, ६६६; मि ४८७)। वक्त. पत्तिअंत, पत्तियमाण (गा २१६, ६७८, आचा २, ३, २, १०)। सक्र मडियच्च, पत्तियाइत्ता (सुस १, ६, २७; उत २२६, १)। पत्तिअ वि [पत्रित] सजात-पत्र, जिसमें पत्र उत्पन्न हुए हो वह (गाया-१, ७, ११-पत्र १७१)। पत्तिअ वि [प्रतीति, प्रत्ययित] प्रतीति-वाला, विश्वस्त (ठा ६, पत्र ३४५, कण, कस)। पत्तिअ न [प्रीतिक] प्रीति, स्नेह (ठा ४, ३, ठा ६-पत्र ३४५)। पत्तिअ पुन [प्रत्यय] प्रत्यय, विश्वास (ठा ४, ३-पत्र २३५, धर्म २)। पत्तिअ न [पत्रिक] मरकत-पत्र (कण)। पत्तिआ की [पत्रिका] पत्र; पण, पत्ती (कुमा)। पत्तिआअ देखो, पत्तिअ = प्रति + इ। पत्तिआअइ (प्राक ७५), पत्तिआअति (पि ४८७)। पत्तिआव सक [प्रति + आयय] विश्वास कराना, प्रतीति कराना। पत्तिआवेइ (भास ६२३)।

पत्तिगे देखो, पत्तिअ = प्रीतिक (पचा, ७, १०)। पत्तिअ देखो पत्तिअ = प्रति + इ। पत्तिअसि, पत्तिआमि (पि ४८७)। पत्तिआव देखो, पत्तिआव। पत्तिआवेइ (सुपा ३०२)। पत्तिआवेमि (धर्मवि १३४)। पत्तिसमिद्ध वि [दे] तीक्ष्ण (दे ६, १४)। पत्ती की [दे] पत्ती की बनी हुई एक तरह की पगडी जिसे भील लोग सिर पर पहनते हैं (दे ६, २)। पत्ती की [पत्ती] की, भार्या (उप १६३, प्राप ६६, महा, पात्र)। पत्ती की [पात्री] भाजन, पात्र (उप ६३२, महा, धर्मवि १२६)। पत्तुं देखो पाव = प्र + आप। पत्तुवगद-(शौ), वि [प्रत्युपागत] १ सामने गया हुआ। २ वापस गया हुआ (नाट, विक ०२३)। पत्तेअ न [प्रत्येक] १ हर एक, एक-एक पत्तेग (हे २, १०, कुमा, निच १, पि ३४६)। २ एक की तरफ, एक के सामने, 'पत्तेय पत्तेय वणसवपरिक्खितामो' (जीव ३)। ३ न कर्म-विशेष, जिसके उदय से एक जीव का एक अलग शरीर होता है, 'पत्तेयतण पत्तेउदण' (कम्म १, ५०)। ४ पुयक् पुयक्, अलग अलग (कम्म १, ५०)। ५ पुं वह जीव जिसका शरीर अलग हो, एक स्वतन्त्र शरीरवाला जीव, 'साहारणपत्तेआ वणसइ जीवा दुहा सुए भणिया' (जी ८)। ६ नाम न [नामन्] देखो ऊपर का तीसरा अर्थ (राज)। ७ निगोयय पु [निगोदक] जीव-विशेष (कम्म ४, ६२)। ८ बुद्ध पु [बुद्ध] अनित्यतादि भावना के कारणभूत किसी एक वस्तु से परमार्थ का ज्ञान जिसको उत्पन्न हुआ हो ऐसा जैन मुनि (महा, नव ४३)। ९ बुद्धसिद्ध पु [बुद्धसिद्ध] प्रत्येक बुद्ध होकर मुक्ति को प्राप्त जीव (धर्म २)। १० रस वि [रस] विभिन्न रसवाला (ठा ४, ४)। ११ शरीर वि [शरीर] १ विभिन्न शरीरवाला; 'पत्तेयसरीराणं वह होति सरीर-संघाया' (पच ३)। २ न. कर्म-विशेष, जिसके उदय से एक जीव का एक विभिन्न शरीर

पडिवाइ वि [प्रतिवादिन्] प्रतिवाद करने-
वाला, वादी का विपक्षी (भवि ५१, ३)।

पडिवाइ वि [प्रतिपादिन्] प्रतिपादन करने-
वाला (भवि ५१, ३)।

पडिवाइ वि [प्रतिपातिन्] १ विनश्वर, नष्ट
होने के स्वभाववाला (ठा २, १, श्लो ५३२, उ० पृ ३५८)। २ अवधिज्ञान का
एक भेद, फूँक से दीपक के प्रकाश के समान
एकाएक नष्ट होनेवाला अवधिज्ञान (ठा ६,
कम्म १, ८)।

पडिवाइअ वि [प्रतिपातित] १ फिर ने
गिराया हुआ। २ नष्ट किया हुआ (भवि)।

पडिवाइअ वि [प्रतिपादित] जिसका प्रति-
पादन किया हो वह, निरूपित (अचु ५,
स ४६, ५४३)।

पडिवाइअ वि [प्रतिवाचित] १ लिखने के
बाद पढ़ा हुआ। २ फिर ने वाँचा हुआ
(कुप्र १६७)।

पडिवाइऊण } देखो पडिवाय = प्रति +
पडिवाइयन्त्र } वाचय्।

पडिवाइय देखो पडिवाइ = प्रतिपातिन् (एदि
८१)।

पडिवाडि देखो परिवाडि (गा ५३०)।

पडिवाड (शौ) सक [प्रति + पाडय्] प्रति-
पादन करना निरूपण करना। पडिवादेदि
(नाट—रत्ना ५७)। कृ पडिवाडणिञ्ज
(अभि ११७)।

पडिवाडय वि [प्रतिपादक] प्रतिपादन
करनेवाला। स्त्री, °दिआ (नाट—चैत ३४)।

पडिवाय सक [प्रति + वाचय्] १ लिखने
के बाद उमे पढ़ लेना। २ फिर से पढ़ लेना।
संक्र. पडिवाइऊण (कुप्र १६७)। कृ,
पडिवाइयन्त्र (कुप्र १६७)।

पडिवाय नक [प्रति + पाडय्] प्रतिपादन
करना, निरूपण करना। पडिवाययति (सूअ
१, १४, २६)।

पडिवाय पु [प्रतिपात] १ पुन-पतन, फिर
से गिरना (नव ३६)। २ नाश, ध्वंस
(विसे ५७७)।

पडिवाय पु [प्रतिवाद] विरोध (भवि)।

पडिवाय पुं [प्रतिवात] प्रतिकूल पवन
(आवम)।

पडिवायण न [प्रतिपादन] निरूपण (कुप्र
११६)।

पडिवारय देखो परिवार, 'पडिवारयपरि-
यरिओ' (महा)।

पडिवाल सक [प्रति + पालय्] १ प्रतीक्षा
करना, बाट जोहना। २ रक्षण करना।
पडिवालेइ (हे ४, २४६)। पडिवालेदु (शौ),
(स्वप्न १००)। पडिवालह (अभि १८५)।
वक्र पडिवालअत, पडिवालेमाण (नाट—
रत्ना ४८, गाया १, ३)।

पडिवालण न [प्रतिपालन] १ रक्षण। २
प्रतीक्षा, बाट (नाट—महा ११८, उप
६६६)।

पडिवालिअ वि [प्रतिपालित] १ रक्षित।
२ प्रतीक्षित, जिसकी बाट देखी गई हो वह
(महा)।

पडिवास पुं [प्रतिवास] औपव आदि को
विशेष उत्कट बनानेवाला चूर्ण आदि (उर
८, ५, मुपा ६७)।

पडिवासर न [प्रतिवासर] प्रतिदिन, हर
रोज (गउड)।

पडिवासुदेव पु [प्रतिवासुदेव] वासुदेव का
प्रतिपक्षी राजा (पउम २०, २०२)।

पडिविक्रिण सक [प्रतिवि + क्री] वेचना।
पडिविक्रिणइ (आक ३३, पि ५११)।

पडिविज्जा स्त्री [प्रतिविद्या] प्रतिपक्षी विद्या,
विरोधी विद्या (पिंड ४६७)।

पडिवित्थर पु [प्रतिविस्तर] परिकर, विस्तार
(सूअ २, २, ६२ टी, राज)।

पडिविद्धंसण न [प्रतिविध्वसन] विनाश,
ध्वंस (राज)।

पडिविप्पिय न [प्रतिविप्रिय] अपकार का
वदला, बदले के रूप में किया जाता अनिष्ट
(महा)।

पडिविरइ स्त्री [प्रतिविरति] निवृत्ति (पएह
२, ३)।

पडिविरय वि [प्रतिविरत] निवृत्त (सम
५१, सूअ २, २, ७५, औप, उव)।

पडिविसज्ज सक [प्रतिवि + सर्जय्] वि-
सर्जन करना, विदा करना। पडिविसज्जेह
(कण, औप)। भावि पडिविसज्जेहति
(औप)।

पडिविसज्जिय वि [प्रतिविसर्जित] विदा
किया हुआ, विसर्जित (गाया १, १—उर
३८)।

पडिविहाण न [प्रतिविधान] प्रतीकार (स
५६७)।

पडिवुज्जमाण देखो पडिवह = प्रति + वह्।
पडिवुत्त वि [प्रत्युत्त] १ जिसका उत्तर
दिया गया हो वह (अनु ३, उप ७२८ टी)।
२ न प्रत्युत्तर (उप ७२८ टी)।

पडिवुद (शौ) वि [परिवृत्त] परिकरित
(अभि ५७, नाट—मृच्छ २०५)।

पडिवूह पुं [प्रतिव्यूह] व्यूह का प्रतिपक्षी
व्यूह, नैय-रचना-विशेष (औप)।

पडिवूहण वि [प्रतिवृहण] १ बढ़नेवाला
(आचा १, २, ५, ५)। २ न वृद्धि, पुष्टि
(आचा १, २, ५, ४)।

पडिवेस पु [दे] विसेप, फँकना (दे ६, २१)।

पडिवेसिअ वि [प्रतिवेसिम] पडोसी,
पडोस में रहनेवाला (दे ६, ३, सुपा ५५२)।

पडिवोह देखो पडिवोह (सण)।

पडिसका स्त्री [प्रतिशङ्का] भय, शका
(पउम ६७, १५)।

पडिसखा सक [प्रतिसं + ख्या] व्यवहार
करना, व्यपदेश करना। पडिसखाए (आचा)।

पडिसखिय सक [प्रतिसं + क्षिप्] संक्षेप
करना। सकृ पडिसखिविय (मग १४, ७)।

पडिसखेव सक [प्रतिसं + क्षेपय्] संक्षेप
करना, समेटना। वक्र. पडिसखेवेमाण
(राय ४२)।

पडिसचिक्ख सक [प्रतिसम् + ईक्ष्] वि-
चिन्तन करना। पडिसचिक्खे (उत्त २, ३१)।

पडिसंजल सक [प्रतिस + ज्वालय्] उद्दीपित
करना। पडिसंजलेज्जामि (आचा)।

पडिसत वि [परिशान्त] शान्त, उपशान्त
(से ६, ६१)।

पडिसंत वि [प्रतिशान्त] विश्रान्त (वृह १)।

पडिसंत वि [दे] १ प्रतिकूल। २ अस्तमित,
अस्त-प्राप्त (दे ६, १६)।

पडिसंध } सक [प्रतिस + धा] १ फिर
पडिसंधया } से संधिना। २ उत्तर देना।

पत्थोउ वि [प्रस्तोउ] १ प्रस्ताव करनेवाला।
२ प्रवर्तक। स्त्री. 'पत्थोई' (पएह १, ३—
पत्र ४२)।

पथम (पै) देखो पढम (पि १६०)।

पद देखो पय = पद (भग, स्वप्न १५, हे ४,
२७०, पएह २, १, नाट—शकु ८१)।

पदअ सक [गम्] जाना, गमन करना।
पदअइ (हे ४, १६२)। पदअति (कुमा)।

पदसिअ वि [प्रदर्शित] दिखलाया हुआ,
बतलाया हुआ (आ ३०)।

पदक्खिण वि [प्रदक्षिण] १ जिमने दक्षिण
की तरफ मे लेकर मण्डलाकार भ्रमण किया
हो वह। २ न दक्षिणावर्त्त भ्रमण, 'पदक्खि-
णीकरअतो भट्टार' (प्रयौ ३५)। देखो
पदाहिण।

पदक्खिण सक [प्रदक्षिणय्] प्रदक्षिणा
करना, दक्षिण से लेकर मण्डलाकार भ्रमण
करना। हे. पदक्खिणेउ (पउम ४८,
१११)।

पदक्खिणा स्त्री [प्रदक्षिणा] दक्षिण की
शोर से मण्डलाकार भ्रमण (नाट—चैत
३८)।

पदण न [पठन] प्रत्यायन, प्रतीति कराना
(उप ८८३)।

पदण (शौ) न [पतन] गिरना (नाट—
मालती ३७)।

पदम (शौ) देखो पउम (नाट—मृच्छ १३६)।

पदय देखो पयय = पदग, पदक, पतग, पतंग
(इक)।

पदरिसिय देखो पदसिअ (भवि)।

पदहण न [प्रदहन] संताप, गरमी (कुमा)।

पदाइ वि [प्रदायिन्] देनेवाला (नाट—
विक्र ८)।

पदाण न [प्रदान] दान, वितरण (श्रौप,
अभि ४५)।

पदादि (शौ) पु [पदाति] पैदल चलनेवाला
मैनिक (प्रयौ १७, नाट—वेणी ६६)।

पदायग वि [प्रदायक] देनेवाला (विसे
३२००)।

पदाव देखो पयाव (गा ३२६)।

पदाहिण वि [प्रदक्षिण] प्रकृष्ट दक्षिण,
प्रकर्ष से दक्षिण दिशा मे स्थित (जीव ३)।
देखो पदक्खिण।

पदिकिदि (शौ) देखो पडिकिदि (मा १०,
नाट—विक्र २१)।

पदित्त देखो पलित्त (राज)।

पदिसं स्त्री [प्रदिग्] विदिशा, ईशान आदि
कोण, 'तसति पाणा पदिसो दिसासु य'
(आचा)।

पदिस्सा देखो पदेक्ख।

पदीव सक [प्र + दीपय्] १ जलाना। २
प्रकाश करना। पदीवेति (पि २४८)। वहु
पदीवेत (पउम १०२, १०)।

पदीव देखो पईव = प्रदीप (नाट—मृच्छ
३०)।

पदीविआ स्त्री [प्रदीपिका] छोटा दिया
(नाट—मृच्छ ५१)।

पटुग पुन [प्रटुर्ग] कोट, किला (आचा,
२, १०, २)।

पटुठ वि [प्रट्टिष्ट, प्रट्टुष्ट] विशेष द्वेप को
प्राप्त (उत्त ३२, वृह ३)।

पटुच्चेइय न [पटोच्चेदक] पद-विभाग और
शब्दार्थ मात्र का पारायण (राज)।

पदूमिय वि [प्रदावित, प्रदून] अत्यन्त
पीडित (वृह ३)।

पदूस सक [प्र + द्विप्] द्वेप करना।
पदूसति (पचा २, ३५)।

पदूसणया स्त्री [प्रद्वेपणा, प्रदूपणा] द्वेप,
मात्मर्य (उप ४८६)।

पदेक्ख सक [प्र + हृण्] प्रकर्ष से देखना।
पदेक्खइ (भवि)। सं. 'पदिस्सा य दिस्सा
वयमाणा' (भग १८, ८, पि ३३४)।

पदेस देखो पएस = प्रदेश (भग)।

पदेस पुं [प्रद्वेप] द्वेप (धर्मसं ६७)।

पदेसिअ वि [प्रदेशित] प्ररूपित, प्रतिपादित
(आचा)।

पदोस देखो पओस = दे, प्रद्वेप (अंत १३,
निच १)।

पदोस देखो पओस = प्रदोष (राज)।

पद् न [दे] १ ग्राम-स्थान (दे ६, १)। २
छोटा गाँव (पाण)।

पद् न [पद्य] श्लोक, वृत्त, काव्य (प्राकृ
२१)।

पदेस देखो पदेस = प्रद्वेप (सूम १, १६, ३)।

पदइ स्त्री [पद्वति] १ मार्ग, रास्ता (सुपा
१८६)। २ पक्ति, श्रेणी (ठा २, ४)। ३
परिपाटी, क्रम (आवम)। ४ प्रक्रिया, प्रकरण
(वला २)।

पद्वंस पु [प्रध्वंस] ध्वंस, नाश। 'भावा पु
[भावा] अभाव-विशेष, वस्तु के नाश होने
पर उसका जो अभाव होता है वह (विसे
१८३७)।

पद्वर वि [दे] ऋजु, मरल, सीधा (दे ६,
१०)। २ शीघ्र, गुजराती में 'पावर्', 'पद्वर-
पएहि मुड्डे पचारेइ' (सिरि ४३५)।

पद्वल वि [दे] दोनों पार्श्वों में अप्रवृत्त
(पड्)।

पद्वार वि [दे] जिसका पूँछ कट गया हो वह,
पूँछ-कटा (दे ६, १३)।

पधाइय देखो पधाविय (भवि)।

पधाण देखो पहाण (नाट—मृच्छ २०५)।

पधार देखो पहार = प्र + धारय्। भूका
पधारेत्य (श्रौप, लाया १, २—पत्र ८८)।

पधाव सक [प्र + धाव्] दौडना, अविक
वेग से जाना। स. पधाविअ (नाट)।

पधावण न [प्रधावन] १ दौड, वेग से
गमन। २ कार्य की शीघ्र सिद्धि (आ १)।
३ प्रक्षालन (धर्मसं १०७८)।

पधाविअ वि [प्रधावित] १ दौडा हुआ
(महा, पएह १, ४)। २ गति-रहित (राज)।
पधाविर वि [प्रधावितृ] दौडनेवाला (आ
२८)।

पधूवण न [प्रधूपन] १ धूप देना। २ एक
प्रकार का आलेपन द्रव्य (कस)।

पधूविय वि [प्रधूपित] जिसको धूप दिया
गया हो वह (राज)।

पधोअ सक [प्र + धाव्] धोना। स. पधोइत्ता
(आचा २, १, ६, ३)।

पधोअ वि [प्रधौत] धोया हुआ (श्रौप)।

पधोव सक [प्र + धाव्] धोना। पधोवैति
(पि ४८२)।

पडिमिद्ध वि [दे] १ भीत, डरा हुआ । २ भग्न, वृद्धि (दे ६, ७१) ।

पडिसिद्ध वि [प्रतिषिद्ध] निषिद्ध, निवारित (पात्र, उव, श्रोघ १ टी, सण) ।

पडिसिद्धि स्त्री [दे] प्रतिस्पर्धा (पड्) ।

पडिसिद्धि स्त्री [प्रतिसिद्धि] १ अनुसूच सिद्धि । २ प्रतिकूल सिद्धि (हे १, ४४, पड्) ।

पडिसिद्धि देखो पडिप्फट्ठि (सखि १६) ।

पडिसिल्लेग पु [प्रतिश्लोक] श्लोक के उत्तर में कहा गया श्लोक (सम्मत्त १४६) ।

पडिसिक्खिणअ पु [प्रतिस्वप्नक] एक स्वप्न का विरोधी स्वप्न, स्वप्न का प्रतिकूल स्वप्न (कप्प) ।

पडिसीसअ } न [प्रतिशीर्षक] १ शिरो-
पडिसीसक } वेष्टन, पगड़ी (कप्प) । २ मिर के प्रातरूप सिर, पिसान (आटा) आदि का बनाया हुआ सिर (परह १, २—पत्र ३०) ।

पडिसुइ पु [प्रतिश्रुति] १ ऐश्वर्य वर्ष के एक भावी कुलकर (सम १५३) । २ भरतक्षेत्र में उत्पन्न एक कुलकर पुरुष का नाम (पसम ३, ५०) ।

पडिसुण सक [प्रति + श्रु] १ प्रतिज्ञा करना । २ स्वीकार करना । पडिनुणइ, पडिसुणेइ (श्रौप, कप्प, उवा) । वहु पडिसुणमाण (वव १, पि ५०३) । सक पडिसुणिन्ता, पडिसुणेत्ता (माव ४, कप्प) । हेह्, पडिसुणेत्तए (पि ५७८) ।

पडिसुणण न [प्रतिश्रवण] अगीकार (उप ४६३) ।

पडिसुणण स्त्री न [प्रतिश्रवण] १ सुनाना, सुनकर उसको जवाब देना, प्रत्युत्तर (पव २) । स्त्री णा (पव २) । २ श्रवण (पचा १२, १५) ।

पडिसुणणा स्त्री [प्रतिश्रवण] १ अगीकार, स्वीकार । २ मुनि-भिक्षा का एक दोष, आवाकर्म-दोषवाली भिक्षा लाने पर उमका स्वीकार और अनुमोदन (धर्म ३) ।

पडिसुण्ण वि [प्रतिशून्य] खाली, रिक्त, शून्य, 'नय निलया निचपडिनुणणा' (ठा १ टी—पत्र २६) ।

पडिसुत्ति वि [दे] प्रतिकूल (दे ६, १८) ।

पडिसुद्ध वि [परिशुद्ध] अत्यन्त शुद्ध (चिद्धय ८०७) ।

पडिसुय वि [प्रांश्रुत] १ स्वीकृत, अंगीकृत (उप पृ १८४) । २ न अगीकार, स्वीकार (उत्त २६) । देखो पडिस्सुय ।

पडिसुया देखो पडसुआ = प्रतिश्रुत (परह १, १—पत्र १८) ।

पडिसुया स्त्री [प्रतिश्रुता] प्रवक्ष्या-विशेष, एक प्रकार की दीक्षा (ठा १० टी—पत्र ४७४) ।

पडिसुहड पुं [प्रतिसुभट] प्रतिपक्षी योद्धा (काल) ।

पडिसूयग पुं [प्रतिस्मूचक] गुप्तचरों की एक श्रेणी; नगर-द्वार पर रहनेवाला जासूस (वव १) ।

पडिसूर वि [दे] प्रतिकूल (दे ६, १६, भवि) ।

पडिसूर पु [प्रतिसूर्य] सूर्य के नामने देखा जाता उत्पातादि सूचक द्वितीय सूर्य (अणु १२०) ।

पडिसूर पुं [प्रतिसूर्य] इन्द्र-वनुप (राज) ।

पडिसेज्जा स्त्री [प्रांश्रुत] शय्या-विशेष, उत्तर-शय्या (भग ११, ११, पि १०१) ।

पडिसेग पुं [प्रतिपेक] नख के नीचे का भाग (राय ६४) ।

पडिसेव सक [प्रति + सेव] १ प्रतिकूल सेवा करना, निषिद्ध वस्तु की सेवा करना । २ सहन करना । ३ सेवा करना । पडिसेवइ, पडिसेवए, पडिसेवति (कस, वव ३, उव) । वहु पडिसेवंत, पडिसेवमाण (पचू ५, सम ३६, पि १७), 'पडिमेवमाणो फरसाईं अचले भगवं रीइत्था' (आचा) । क पडिसेवियन्व (वव १) ।

पडिसेवग देखो पडिसेवय (निचू १) ।

पडिसेवण न [प्रतिपेवण] निषिद्ध वस्तु का सेवन (कस) ।

पडिसेवणा स्त्री [प्रतिपेवणा] ऊपर देखो (भग २५, ७, उव, श्रोघ २) ।

पडिसेवय वि [प्रतिपेवक] प्रतिकूल सेवा करनेवाला, निषिद्ध वस्तु का सेवन करनेवाला (भग २५, ७) ।

पडिसेवा स्त्री [प्रतिपेवा] १ निषिद्ध वस्तु का आसेवन (उप ८०१) । २ सेवा (कुप्र ५२) ।

पडिसेवि वि [प्रतिपेविन्] शास्त्र-प्रतिषिद्ध वस्तु का सेवन करनेवाला (उव, पसम ५, २८) ।

पडिसेविअ वि [प्रतिपेवित] जिस निषिद्ध वस्तु का आसेवन किया गया हो वह (कप्प, श्रौप) ।

पडिसेवेत्तु वि [प्रतिपेवित्] प्रतिषिद्ध वस्तु की सेवा करनेवाला (ठा ७) ।

पडिसेह मक [प्रति + सिध्] निषेध करना, निवारण करना । क. पडिसेहेअव्व (भग) ।

पडिसेह पुं [प्रतिपेध] निषेध, निवारण, रोक (श्रोघ ६ भा, पचा ६) ।

पडिसेहग वि [प्रतिपेधक] निषेध-कर्ता (धर्मस ४०, ६१२) ।

पडिसेहण न [प्रतिपेधन] ऊपर देखो (विसे २७५१, आ २७) ।

पडिसेहिय वि [प्रतिपेधित] जिसका प्रतिपेध किया गया हो वह, निवारित (विपा १, ३) ।

पडिसेहेअव्व देखो पडिसेह = प्रति + सिध् ।

पडिमोअ } पुं [प्रतिस्त्रोतस्] प्रतिकूल
पडिसोत्त } प्रवाह, उलटा प्रवाह (ठा ४, ४, हे, २, ६८, उप २५२, पि ६१) ।

पडिसोत्त वि [दे] प्रतिकूल (पड्) ।

पडिस्सत देखो परिस्संत (नाट—मृच्छ १८८) ।

पडिस्संति स्त्री [परिश्रान्ति] परिश्रम (नाट—मृच्छ ३२१) ।

पडिस्सय पु [प्रतिश्रय] जैन साधुओं को रहने का स्थान, उपाश्रय (श्रोघ ८७ भा, उप ५७१, स ६८७) ।

पडिस्सर देखो पडिसर (पंचा ८, ४६) ।

पडिस्साव सक [प्रति + श्रावय्] १ प्रतिज्ञा कराना । २ स्वीकार कराना । वहु पडिस्सावअन्त (नाट—वेणी १८) ।

पडिस्सावि वि [प्रतिस्त्राविन्] भरनेवाला, उपकनेवाला (राज) ।

पडिस्सुण सक [प्रति + श्रु] १ सुनना । २ अगीकार करना । पडिस्सुणति (सूअ २, ६, ३०) । पडिस्सुणेज्जा (सूअ १, १४, ६) । पडिस्सुणे (उत्त १, २१) ।

पडिस्सुय वि [प्रतिश्रुत] १ प्रतिज्ञात । २ स्वीकृत (महा, ठा १०) । देखो पडिस्सुय ।

‘इअ भणिण्ण राअंगी पफुल्लविलोअणा जाअ’
(काप्र १६१)।

पफुल्लिअ वि [प्रफुल्लित] ऊपर देखो (सम्मत्त
१८६, भवि)।

पफुल्लिआ वी [प्रफुल्लिका] देखो उपफु-
ल्लिआ (गा १६६ अ)।

पफुसिय न [प्रस्यूष्ट] उत्तम स्पर्श (राय
१८)।

पफोड देखो पफुट्ट। पफोडइ, फफोडए
(धात्वा १४३)।

पफोड सक [प्र + स्फोटय्] १ भाडना,
भाडकर गिराना। २ आस्फालन करना। ३
प्रक्षेपण करना। पफोडइ (गा ४३३)।
पफोडे (उत्त २६, २४) वहु पफोडत,
पफोडयंत, पफोडेमाण (गा १४५, पि
४६१, ठा ६)। संक्र. ‘पफोडेऊण सेसयं
कम्म’ (आठ ६७)।

पफोडण न [प्रफोटन] १ भाडना, प्रकृष्ट
ध्वनन (ओघ भा १६३)। २ आस्फोटन,
आस्फालन (पणह २, ५—पत्र १४८, पिड
२६३)।

पफोडगा वी [प्रस्फोटना] ऊपर देखो
(ओघ २६६, उत्त २६, २६)।

पफोडिअ वि [दे. प्रस्फोटित] निर्भाटित,
भाड कर गिराया हुआ (दे ६, २७, पाअ),
‘पफोडिअमोहजालस्स’ (पिड)। २ फोडा
हुआ, तोडा हुआ, ‘पफोडिअसरणिअडगं व
ते वुत्ति निस्सारा’ (सवोध १७)।

पफोडेमाण देखो पफोड = प्र + स्फोटय्।
पफुल्ल देखो पफुल्ल (पड)।

पफुल्लिअ देखो पफुल्लिअ (हे ४, ३६६,
पिग)।

पवध मक [प्र + वन्ध्] प्रबन्ध रूप से
कहना, विस्तार से कहना। पवधिआ (दस
५, २, ८)।

पवंध पुं [प्रवन्ध] १ सन्दर्भ, ग्रन्थ, परस्पर
अन्वित वाक्य-समूह (रंभा ८)। २ अविच्छेद,
निरन्तरता (उत्त ११, ७)।

पवधण न [प्रवन्धन] प्रबन्ध, सन्दर्भ, अन्वित
वाक्य-समूह की रचना, ‘कहाए य पवधणे’
(सम २१)।

पवल वि [प्रवल] वलिष्ठ, प्रचण्ड, प्रखर
(कुमा)।

पवाहा वी [प्रवाधा] प्रकृष्ट वाधा, विशेष
पीडा (गाया १, ४)।

पवुद्ध वि [प्रवुद्ध] १ प्रवीण, निपुण (से
१२, ३४)। २ जागा हुआ (सुर ५, २२६)।
३ जिसने अच्छी तरह जानकारी प्राप्त की हो
वह (आचा)।

पवोध सक [प्र + बोध्य] १ जागृत करना।
२ ज्ञान कराना। कर्म पवोधीआमि (पि
५४३)।

पवोधण न [प्रवोधन] प्रकृष्ट बोधन (राज)।
पवोह देखो पवोध। कृ. पवोहर्णाय (पत्रम
७०, २८)।

पवोह पुं [प्रबोध] १ जागरण। २ ज्ञान,
समझ (चार ५४, पि १६०)।

पवोहण देखो पवोधण (राज)।

पवोहय वि [प्रवोधक] प्रवोध-कर्ता (विसे
१७३)।

पवोहिअ वि [प्रवोधित] १ जगाया हुआ।
२ जिसको ज्ञान न कराया गया हो वह (सुपा
३१३)।

पव्वल देखो पवल (से ४, २५, ६, ३३)।

पव्वाल देखो पव्वाल = छादय्। पव्वालइ
(हे ४, २१)।

पव्वाल देखो पव्वाल = प्लावय्। पव्वालइ
(हे ४, ४१)।

पवुद्ध देखो पवुद्ध (पि १६६)।

पव्व वि [प्रह्व] नम्र (औप, प्राकृ २४)।

पव्वट्ट } वि [प्रव्रष्ट] १ परिव्रष्ट,
पव्वसिअ } प्रखलित, चूका हुआ (पणह
१, ३, अमि ११६, गा ३१८, सुर ३,
१२३, गा ३३, ६५)। २ विस्मृत (से १४,
४२)। ३ पु नरकावास विशेष (देवेन्द्र २८)।

पव्वमार पु [दे प्राग्भार] १ संचात, समूह,
जत्या (दे ६, ६६, से ४, २०, सुर १,
२२३ कप्पू, गड्ड, कुलक २१)।

पव्वमार पुं [दे] गिरि-गुफा, पर्वत-कन्दरा (दे
६, ६६), ‘पव्वमारकदरगया साहती अप्पणो
अट्ट’ (पञ्च ८१)।

पव्वमार पुं [प्राग्भार] १ प्रकृष्ट भार, ‘कुमरे
सकमियरज्जपव्वमारो’ (धम्म ८ टी)। २ ऊपर

का भाग (से ४, २०)। ३ थोडा नमा हुआ
पर्वत का भाग (गाया १, १—पत्र ६३, भग
५, ७)। ४ एक देश, एक भाग (से १, ५८)। ५
उत्कर्ष, परभाग (गड्ड)। ६ पुंन. पर्वत के
ऊपर का भाग (एदि)। ७ वि थोडा नमा
हुआ, ईषदवनत (अत ११, ठा १०)।

पव्वमारा वी [प्राग्भारा] दशा-विशेष, पुरुष
की सत्तर से अस्सी वर्ष तक की अवस्था (ठा
१०—पत्र ५१६, तदु १६)।

पव्वभूअ वि [प्रभूत] उत्पन्न, ‘महुवकीए गम्मे,
पव्वभूओ ददुत्तेण’ (धर्मवि ३५)।

पव्वभूअ पु [दे प्रभोग] भोग, विलास (दे
६, १०)।

पभ पुं [प्रभ] १ हरिकान्त नामक इन्द्र का
एक लोकपाल (ठा ४, १, इक)। २ द्वीप-
विशेष और समुद्र-विशेष का अधिपति देव
(राज)।

पभ वि [प्रभ] सदृश, तुल्य (कप्प, उवा)।

पभइ देखो पभिइ, ‘चड्ढाणं चड्ढपभइण’
(अज्झ १४१)।

पभंकर पुं [प्रभङ्कर] १ ग्रह विशेष, ज्योतिष-
देव-विशेष (ठा २, ३)। २ पुंन. देव-विमान
(सम ८, १४, पव २६७)।

पभंकर वि [प्रभाकर] प्रकाशक, ‘सव्वलोक-
पभंकरो’ (उत्त २३, ७६)।

पभंकरा वी [प्रभङ्करा] १ विदेह-वर्ष की
एक नगरी का नाम (ठा २, ३)। २ चन्द्र
की एक अग्रमहिषी का नाम (ठा ४, १)।
३ सूर्य की एक अग्रमहिषी का नाम (भग
१०, ५)।

पभंकरावई वी [प्रभङ्करावती] विदेह वर्ष
की एक नगरी (आचू १)।

पभगुर वि [प्रभङ्गुर] अति विनश्वर
(आचा)।

पभंजण पुं [प्रभञ्जन] १ वायुकुमार-निकाय
के उत्तर दिशा का इन्द्र (ठा २, ३, ४, १,
सम ६६)। २ लवण-समुद्र के एक पाताल-
कलश का अधिष्ठातक देव (ठा ४, २)।
३ वायु, पवन (से १४, ६६)। ४ मानुषोत्तर
पर्वत के एक शिखर का अधिपति देव (गज)।
‘तणअ पुं [तनय] हत्तेमान् (से १४, ६६)।

जात (ठा ४, २), 'होति य पडुप्पन्नविणास-
णम्मि गवव्विया उदाहरण' (दसनि १)।
पड्ड न [दे] १ लघु पिठर, छोटी थाली। २
वि चिरप्रसूत (दे ६, ६८)।
पडुवइअ वि [दे] तीक्ष्ण, तेज (दे ६, १४)।
पडुवत्ती ली [दे] जवनिका, परदा (दे ६,
२२)।
पड्ड देखो पड्डुह। पड्डुह (हे ४, १५४
टि)।
पडोअ वि [दे] बाल, लघु छोटा (दे ६, ६)।
पडोच्छन्न वि [प्रत्ययच्छन्न] आच्छादित,
आवृत, 'अट्टविहकम्मतमपडलपडोच्छन्ने' (उवा)।
पडोयार मक [प्रत्युप + चारय] प्रतिकूल
उपचार करना। पडोयारेंति, पडोयारेह (भग
१५—पत्र ६७६)। पडोयारेउ (भग १५—
पत्र ६७१)। पडोयारे (पि १५५)। कवक
पडोय (?) या रिज्जमाण, पडोयारेज्ज-
माण (पि १६३, भग १५—पत्र ६७६)।
पडोयार पुं [दे] उपकरण (पिड २८)।
पडोयार पु [प्रत्युपचार] प्रतिकूल उपचार
(भग १५—पत्र ६७१, ६७६)।
पडोयार पुं [प्रत्यवतार] १ अवतरण। २
आविर्भाव, 'मरहस्स वासस्स केरिसए आगार-
भावपडोयारे होत्या' (भग ६, ७—पत्र २७६,
७, ६—पत्र ३०५, औप)।
पडोयार पुं [पदावतार] किसी वस्तु का
पदों में विचार के लिए अवतरण (ठा ४,
१—पत्र १८८)।
पडोयार पुं [प्रत्युपकार] उपकार का उपकार
(राज)।
पडोयार पुं [दे] १ सामग्री। २ परिकर,
'पायस्स पडोयार' (ओघ ३५२)।
पडोल पुं [पटोल] लता विशेष, परवल
का गाछ (परण १—पत्र ३२)।
पडोहर न [दे] घर का पीछला आंगन (दे
६, ३२, गा ३१३, काप्र २२४)।
पड्ड वि [दे] धवल, सफेद (दे ६, १)।
पड्डुस पुं [दे] गिरि गुहा, पहाड की गुफा (दे
६, २)।
पड्डुच्छी ली [दे] भैंस, 'पड्डुच्छीली' (ओघ
८७)।
पड्डुथी ली [दे] १ बहुत दूधवाली। २
दोहनेवाली (दे ६, ७०)।

पड्डुय पुं [दे] भैंसा, पाटा, गुजराती मे
'पाडो', 'सो चेव इमो वसमो पड्डुपरिहट्टणं
सहइ' (महा)।
पड्डुला ली [दे] चरण-घात, पाद-प्रहार (दे
६, ८)।
पड्डुस वि [दे] सुसयमित, अच्छी तरह से
सयमित (दे ६, ६)।
पड्डुविअ वि [दे] समापित, समाप्त कराया
हुआ (पड)।
पड्डिया ली [दे] १ छोटी भैंस, पाडी। २,
छोटी गौ, बछिया (विपा १, २—पत्र २६)।
३ प्रथमप्रसूता गौ। ४ नव-प्रसूता महिषी
(वव ३)। पड्डु ली [दे] प्रथम-प्रसूता (दे
६, १)।
पड्डुआ ली [दे] चरण-घात, पाद-प्रहार
(दे ६, ८)।
पड्डुह अक [धुम्] सुब्ब होना। पड्डु-
हइ (हे ५, १५४, कुमा)।
पड सक [पठ] १ पढ़ना, अभ्यास करना।
२ बोलना, कहना। पडइ (हे १, १६६,
२३१)। कर्म पडोअइ, पडिअइ (हे ३,
१६०)। वक, पडंत (सुर १०, १०३)।
कवक पडिज्जत, पडिज्जमाण (सुपा २६७,
उप ५३० टी)। सक, पडित्ता (हे ४,
२७१, पड), पडिअ, पडिऊण (शी) (हे
४, २७१), पडि (अप) (पिंग)। हेक,
पडिड (गा २, कुमा)। क पडियव्व,
पडियव्व (पसू १, वळा ६)। प्रयो पडावइ
(कुप्र १८२)।
पड पु [पड] भारतीय देश-विशेष (इक)।
पडग वि [पाठक] पढ़नेवाला (कप्प)।
पडण न [पठन] पाठ, अभ्यास (विसे
१३८४, कप्प)।
पडम वि [प्रथम] १ पहला, आद्य (हे १,
५५, कप्प, उवा, मग, कुमा, प्रासू ४८,
६८)। २ नूतन, नया (दे)। ३ प्रधान, मुख्य
(कप्प)। 'करण न [करण] आत्मा का
परिणाम-विशेष (पचा ३)। 'कसाय पुं
[कपाय] कपाय-विशेष, अनन्तानुबन्धी
कपाय (कम्मप)। 'ठाणि, 'ठाणि वि
[स्थानिन्] अव्युत्पन्न-बुद्धि, अनिष्णात
(पंचा १६)। 'पाउस पुं [प्रावृप्]
आपाठ मास (निचू १०)। 'समोसरण न

[समवसरण] वर्षा-काल, 'विइयसमोसरण
उदुवदं तं पड्डुव वासावासोग्गहो पड्डमसमो-
सरण भणणइ' (निचू १)। 'सरय पु
[शरत्] मार्गशीर्ष मास (भग १५)।
'सुरा ली [सुरा] नया दाह, शराव (दे)।
पडमा ली [प्रथमा] १ प्रतिपदा तिथि, पडवा
(मम २६)। २ व्याकरण-प्रसिद्ध पहली
विभक्ति, 'णिहेसे पडमा होइ' (अणु)।
पडमालिआ ली [दे प्रथमालिका] प्रथम
भोजन (ओघ ४७ भा, धर्म ३)।
पडमिल्ल वि [प्रथम] पहला आद्य
पडमिल्लुअ (भग, आ २८, सुपा ५७, पि
पडमिल्लुग ४४६, ५६५, विसे १२२६,
पडमुल्लअ (णाय १, ६—पत्र १४४,
पडमेल्लुय वृह १, पडम ६२, ११, धण
१६, सण)।
पडाइद [शो] नीचे देखो (नाट—चैत ८६)।
पडाव सक [पाठय] पढ़ाना। पडावेइ (प्राक
६०)। सक पडाविऊण, पडावेऊण (प्राक
६१)। हेक, पडाविउ, पडावेउ (प्राक
६१)। क पडावणिज्ज, पडाविअव्व
(प्राक ६१)।
पडावअ वि [पाठक] अध्यापक (प्राक ६०)।
पडावण न [पाठन] पढ़ाना (कुप्र ६०)।
पडाविअ वि [पाठित] पढ़ाया हुआ (सुपा
४५३, कुप्र ६१)।
पडाविअवत वि [पाठितवन्] जिसने
पढ़ाया हो वह (प्राक ६१)।
पडाविउ वि [पाठयितृ] अध्यापक (प्राक
पडाविर ६०)।
पडि पडिअ } देखो पड = पठ्।
पडिअ वि [पठित] पढ़ा हुआ (कुमा, प्रासू
१०८)।
पडिज्जत } देखो पड = पठ्।
पडिज्जमाण }
पडिर वि [पठितृ] पढ़नेवाला (मण)।
पडुक्क वि [प्रदौकित] मेट के लिए उपस्था-
पित (भवि)।
पडुम देखो पडम (हे १, ५५, नाट—विक्र
२६)।
पडियव्व देखो पड = पठ्।
पडे देखो पडाव। पडेइ (प्राक ६०)।

उवा)। पमजिया (आचा)। वक्र. पमज्जेमाण (ठा ७)। सकृ पमजित्ता (भग, उवा)। हेकृ. पमजित्तु (पि ५७७)। पमज्जण न [प्रमार्जन] मार्जन, भूमि-शुद्धि (अत)।

पमज्जणिया } स्त्री [प्रमार्जनी] भाहू, भूमि पमज्जर्ण। } साफ करने का उपकरण (खाया १, ७, धर्म ३)।

पमज्जय वि [प्रमार्जक] प्रमार्जन करनेवाला (दै ५, १८)।

पमज्जिअ वि [प्रमृष्ट, प्रमार्जित] साफ किया हुआ (उवा, महा)।

पमत्त वि [प्रमत्त] १ प्रमाद-युक्त, असावधान, प्रमादी, वेदरकार (उव, अभि १८५, प्रासू ६८)। २ न छठवाँ गुण-न्यायक (कम्म ४, ४७, ५६)। ३ प्रमाद (कम्म २)। ४ जोग पु [योग] प्रमाद-युक्त चेष्टा (भग)। ५ सजय पु [सयत] प्रमादी माधु, प्रमाद-युक्त मुनि (भग ३, ३)।

पमद देखो पमय (स्वप्न ५१, कप्पू)।

पमदा देखो पमया (नाट—शकु २)।

पमद सक [प्र + मृद्] १ मर्दन करना। २ विनाश करना। ३ कम करना। ४ चूर्ण करना। ५ रुई की पूणी—पूनी बनाना। वक्र पमदमाण (पिड ५७४)।

पमद पु [प्रमर्द] १ ज्योतिष शास्त्र में प्रसिद्ध एक योग (मम १३, सुज १०, ११)। २ सघर्ष, समर्द (राज)। ३ वि मर्दन करनेवाला। ४ विनाशक, 'सारं मरणं सत्त्वं पञ्चक्खणं खु भवदुहपमद' (सवोध ३७)।

पमदग न [प्रमर्दन] १ चूरना, चूर्ण करना (राय)। २ नाश करना। ३ कम करना (सम १२२)। ४ रुई की पूणी करना (पिड ६०३)। ५ वि विनाश करनेवाला (पचा १४, ४२)।

पमदय वि [प्रमर्दक] प्रमर्दन-कर्त्ता (दसनि १०, ३०)।

पमदि वि [प्रमर्दिन्] प्रमर्दन करनेवाला (श्रौप, पि २६१)।

पमय पुं [प्रमद] १ आनन्द, हर्ष (काल, आ २७)। २ न, घटूरे का फल। ३ च्छी स्त्री [क्षी] स्त्री, महिला (सुपा २३०)। ४ वण

न [वन] राजा का अन्त पुर-स्थित वह वन या वागीचा जहाँ राजा रानियो के साथ क्रीडा करे (सि ११, ३७, खाया १, ८, १३)।

पमया स्त्री [प्रमदा] उत्तम स्त्री, श्रेष्ठ महिला (उव, वृह ४)।

पमह पु [प्रमथ] शिव का अनुचर (पाअ)। १ णाह पु [नाथ] महादेव (ममु १५०)। २ हिंवि पु [विप] शिव, महादेव (गा ४४८)।

पमा सक [प्र + मा] सत्य-सत्य ज्ञान करना। कर्म पमीयए (विसे ६४८)।

पमा स्त्री [प्रमा] १ प्रमाण, परिमाण, 'पीअलघाउविणिम्मिअविहत्थियमपाट्टुलिआहरण' (कुमा)। २ प्रमाण, न्याय, 'अतिपत्तगो पमामिद्धो' (धर्मस ६८१)।

पमा देखो पमाय = प्रमाद (वव १)।

पमाइ वि [प्रमादिन्] प्रमादी, वेदरकार (सुपा ५४३, उव, आचा)।

पमाइअव्व देखो पमाय = प्र + मद्।

पमाइल्ल देखो पमाड, 'धम्मपमाइल्ले' (उप ७२८ टी)।

पमाण सक [प्र + मानय] विशेष रीति से मानना, आदर करना। कृ पमाणणिज्ज (आ २७)।

पमाण न [प्रमाण] १ यथार्थ ज्ञान, सत्य ज्ञान। २ जिससे वस्तु का सत्य-सत्य ज्ञान हो वह, सत्य ज्ञान का साधन (अणु)। ३ जिससे नाप किया जाय वह, 'अणुपमाणपि' (आ २७, भग, अणु)। ४ नाप, माप, परिमाण (विचार ५४४, ठा ५, ३; जीवस ६४, भग, विपा १, २)। ५ सख्या (अणु, जी २६)। ६ प्रमाण शास्त्र, न्याय-शास्त्र, तर्क-शास्त्र, 'लक्खणसाहित्तपमाणजोइसाईणि सा पढइ' (सुपा १०३)। ७ पुंन. सत्य रूप से जिसका स्वीकार किया जाय वह। ८ मान-नीय, आदरणीय। ९ सच्चा, सही, ठीक-ठीक, यथार्थ, 'कमागमो जो य जेसि किल धम्मो सो य पमाणो तेसि' (सुपा ११०, आ १४), 'सुचिरपि अच्छमाणो नलथमो पिच्छ इच्छुवाडम्मि।

कीस न जायइ महुरो जइ सेसगी पमाण ते' (प्रासू ३३)।

१ वाय पुं [वाद] न्याय-शास्त्र, तर्क-शास्त्र

(सम्मत्त ११७)। १ सवच्छर पु [सवत्सर] वर्ष-विशेष (सुज १०, २०)।

पमाण सक [प्रमाणय] प्रमाण रूप से स्वीकार करना। पमाण, पमाणह (विग)। वक्र. पमाणत (उवर १८६)। कृ पमाणियव्व (मिरि ६१)।

पमाणिअ वि [प्रमाणिन] प्रमाण रूप में स्वीकृत (सुपा ११०, आ १२)।

पमाणिआ } स्त्री [प्रमाणिका, प्रमाणी] पमाणी } छन्द विशेष (पिग)।

पमाणीकर अक [प्रमाणी + कृ] प्रमाण करना, सत्य रूप में स्वीकार करना। कर्म पमाणीकरीअदि (शौ) (पि ३२४)। संक्र. पमाणीकिअ (नाट—मालवि ४०)।

पमाद देखो पमाय = प्र + मद्। कृ पमादेयव्व (खाया १, १—पत्र ६०)।

पमाद देखो पमाय = प्रमाद (भग, श्रौप, स्वप्न १०३)।

पमाय अक [प्र + मद्] प्रमाद करना, वेदरकारी करना। पमायइ, पमायए (उव, पि ४६०)। वक्र पमायत (सुपा १०)। कृ पमाइअव्व (भग)।

पमाय पुं [प्रमाद] १ कर्तव्य कार्य में अप्रवृत्ति और अकर्तव्य कार्य में प्रवृत्ति का असावधानता, वेदरकारी (आचा, उत ४, ३२, महा, प्रासू ३८, १३४)। २ दुःख, कष्ट, 'समगलोवाण वि जा विमायासमा समुप्पाइयसुप्पमाया' (सत्त ३५)।

पमार पुं [प्रमार] १ मरण का प्रारम्भ (भग १५)। २ बुरी तरह मारना (ठा ५, १)।

पमारणा स्त्री [प्रमारणा] बुरी तरह मारना (वव ३)।

पमिय वि [प्रमित] परिमित, नापा हुआ 'अंगुलमूलासंखिअभागपमिया उहोति सेटीमो' (पंच २, २०)।

पमिलाय वि [प्रम्लान] अतिशय मुरझाया हुआ (ठा ३, १, धर्मवि ५५)।

पमिलाय अक [प्र + म्लै] मुरझाना, 'पण-पन्नाय परेण जोणी पमिलायए महिलियाए' (तदु ४)।

पणव देखो पणम । पणवइ (भवि) । पणवह (हे २, १६५) । वहु पणवत (भवि) ।

पणव पु [पणव] ओकार, ओ प्रसर (सिरि १६६) ।

पणव पुं [पणव] पटह, ढोल, बाद्य-विशेष (ओप, कप्प, अत) ।

पणवणिय देखो पणवन्निय (ओप) ।

पणवण्ण देखो पणपन्न (वि २६५, २७३; पणवन्न) भा, हे २, १७४ टि) ।

पणवन्निय पुं [पणपन्निक] व्यन्तर देवो को एकजाति (पणह १, ४) ।

पणविय देखो पणभिय = प्रणत (भवि) ।

पणवीसी ओ [पञ्चविंशतिका] पचीस का समूह (संबोध २५) ।

पणस पुं [पनस] वृक्ष-विशेष, कटहल या कटहर (पि २०८, नाट—मुच्छ २१८) ।

पणसुंदरी ओ [पणसुन्दरी] वेश्या (धर्मवि १२७) ।

पणाम सक [अर्पय] अर्पण करना, देने के लिए उपस्थित करना । पणामइ (हे ४, ३६), वदिओ य पणायण कल्लायाइ पणामइ (सुपा ३६३) ।

पणाम सक [प्र + नमय] नमना । पणामइ (महा) ।

पणाम सक [उप + नी] उपस्थित करना । पणामइ (प्राक् ७१) ।

पणाम पुं [प्रणाम] नमस्कार, नमन (दे ७, ६, भवि) ।

पणामणिआ ओ [दे] छीविपयक प्रणय (दे ६, ३०) ।

पणामय वि [अर्पक] देनेवाला (सूय १, २, २) ।

पणामय वि [प्रणामक] १ नमानेवाला । २ शब्द आदि विषय (सूय १, २, २, २७) ।

पणामिअ वि [अर्पित] समर्पित, देने के लिए धरा हुआ (पात्र, कुमा), 'अपणामि-यपि गहिअ कुसुमसरेण महमासलच्छीए मुह' (हेका ५०) ।

पणामिअ वि [प्रणामित] नमाया हुआ (से ४, ३१, गा २२) ।

पणामिअ वि [प्रणामित] नत, नमा हुआ, 'पणामियासायर' (स ३१६) ।

पणायक वि [प्रणायक] ले, जानेवाला, पणायग 'निव्वाणगमणसगगणायकाई' (पणह २, १, पणह २, १ टी; वव १) ।

पणाल पुं [प्रणाल] मोरो, पानी आदि जाने का रास्ता (से १३, ५४, उर १, ५, ६) ।

पणालिआ ओ [प्रणालिका] १ परम्परा (सूय १, १३) । २ पानी जाने का रास्ता (कुमा) ।

पणाली ओ [प्रणाली] मोरो, पानी जाने का रास्ता (गडड) ।

पणाली ओ [प्रणाली] शरीर-प्रमाण लम्बी लाठी (पणह १, ३—पत्र ५४) ।

पणास सक [प्र + नाशय] विनाश करना । पणासेइ, पणासए (महा) ।

पणास पु [प्रणाश] विनाश, उच्छेदन (भावम) ।

पणासण वि [प्रणाशन] विनाश करने वाला; 'सव्वपावप्पणासणो' (पडि, कप्प) । ओ. गो (आ ४६) ।

पणासिय वि [प्रणाशित] जिसका विनाश किया गया हो वह (कप्प, भवि) ।

पणिअ वि [दे] प्रकट, व्यक्त (दे ६, ७) ।

पणिअ वि [प्रणीत] रचित (सूयनि ३१२) ।

पणिअ न [पणित] १ देवते, योग्य वस्तु (दे १, ७४, ६, ७, रायो १, ११) । २ व्यवहार, लेन-देन, क्रय-विक्रय (भग १५, राया १, ३—पत्र ६५) । ३ शते, होड, एक तरह का जुआ (भास ६२) । भूमि, भूमी ओ [भूमि, भूमी] १ अनार्य

देश-विशेष, जहाँ भगवान् महावीर ने एक चौमासा बिताया था (राज, कप्प) । २ विक्रय वस्तु रखने का स्थान (भग १५) । साला ओ [शाला] हाट, दूकान (बह २, निव्व १६) ।

पणिअ न [पण्य] विक्रय वस्तु (सुपा २७५, ओप, आचा) । गिह, घर न [गृह] दूकान, हाट (निव्व १२, आचा २, २, २) ।

साला ओ [शाला] हाट, दूकान (आचा) ।

विण पुं [पण] दूकान, हाट (आचा) ।

पणिअ वि [प्रणीत] सुन्दर, मनोहर । भूमि ओ [भूमि] मनोज्ञ भूमि (भग १५) ।

पणिअट्ट वि [पणितार्थ] जोर (दस ७, ३७) ।

पणिअसाला ओ [पण्यशाला] बजार, अथवा माल रखने का घिरा हुआ स्थान; गोदाम (आचा २, २, २, १०) ।

पणिआ ओ [दे] करोटिका, सिरकी हड्डी, खोपड़ी (दे ६, ३) ।

पणिदि वि [पञ्चेन्द्रिय] त्वक्, जीम, पणिदिय नाक, श्रोत्र और कान इन पाँचो इन्द्रियोवाला प्राणी (कम्म २, ४, १०, १८, १६) ।

पणिद्ध वि [प्रस्निग्ध] विशेष स्निग्ध (अणु २१५) ।

पणिघाण देखो पडिहाण (भमि १८६, नाट—विक्र ७२) ।

पणिधि पुं ओ [प्रणिधि] माया, छल, 'पुणो पुणो पणिधि (१ वी) ए हरित्ता उवहसे जण' (सम ५०) । देखो पणिहि ।

पणियत्थ वि [प्रणिवसित] पहना हुआ (ओप) ।

पणिलिअ वि [दे] हत, मारा हुआ (पह) ।

पणिवइअ वि [प्रणिपतित] नत, नमा हुआ, 'पणिवइयवच्छला ए देवाणुप्पिया । उत्तम-पुरिसा' (राया १, १६—पत्र २१६, स ११, उप ७६८, टी) ।

पणिवइअ वि [प्रणिपतित] जिसको नमस्कार किया गया हो वह, 'नरपहूहि पणिवइओ, वीरो' (धर्मवि ३७) ।

पणिवयसक [प्रणि + पत्त] नमन करना, वन्दन करना । पणिवयामि (कप्प, सार्ध ६१) ।

पणिवाय पुं [प्रणिपात्त] वन्दन, नमस्कार (सुर ४, ६८, सुपा २८, २२२, महा) ।

पणिहा सक [प्रणि + धा] १ एकाग्र चिन्तन करना, ध्यान करना । २ अपेक्षा करना । ३ अभिलाषा करना । ४ चेष्टा करना, प्रयत्न करना । संक्षु, पणिहाय (राया १, १०, भग १५) ।

पणिहाण न [प्रणिघान] १ एकाग्र ध्यान, मनो-निर्योग, अवधान (उत्त १६, १४, स ८७, प्राप्ता) । २ प्रयोग, व्यापार, चेष्टा, 'तिविहे पणिहाणे पणेतै; तं जहा—मणपणिहाणे, वयपणिहाणे, कायपणिहाणे' (ठा ३, १, ४, १, भा १८—उवा) । ३, अभिलाषा, कामना;

पम्हस सक [वि + स्मृ] विस्मरण करना, भूल जाना। पम्हसइ (पड़), पम्हसिज्जासु (गा ३४८)।

पम्हसाविय वि [विस्मारित] भूलाया हुआ, विस्मृत कराया हुआ (सुख २, ५)।

पम्हा स्त्री [पद्मा] १ लेश्या-विशेष, पद्म-लेश्या, आत्मा का शुभतर परिणाम-विशेष (कम्म ३, २२, आ २६)। २ विजय-क्षेत्र विशेष (राज)।

पम्हार पु [दे] अपमृत्यु, वैमौत मरण (दे ६, ३)।

पम्हावई स्त्री [पक्षमावती] १ विजय-विशेष की एक नगरी (ठा २, ३-इक)। २ पर्वत-विशेष (ठा २, ३—पत्र-८०)।

पम्हुट्ट वि [दे] १ नष्ट, नाश प्राप्त (हे ४, २५८)। २ विस्मृत, 'पम्हुट्ट' विस्मृति (पात्र), 'किं थ तय पम्हुट्ट' (गाया १, ८—पत्र १४८, विचार २३८)।

पम्हुत्तरवडिसग न [पक्ष्मोत्तरावतसक] ब्रह्मलोक में स्थित एक देव-विमान (सम १५)।

पम्हुस सक [वि + स्मृ] भूलना, विस्मरण करना। पम्हुसइ (हे ४, ७५)।

पम्हुस सक [प्र + मृश] स्पर्श करना। पम्हुमेइ, पम्हुस (हे ४, १८४, कुमा ७, २६)।

पम्हुस सक [प्र + मुप्] चोराना, चोरी करना। पम्हुसइ, पम्हुमेइ, पम्हुसति (हे ४, १८४, सुपा १३७, कुमा ७, २६)।

पम्हुसण न [विस्मरण] विस्मृति (पचा १५, ११)।

पम्हुसिअ वि [विस्मृत] जिसका विस्मरण हुआ हो वह (कुमा, उप ७६८ टी)।

पम्हुह सक [स्मृ] स्मरण करना, याद करना। पम्हुहइ (हे ४, ७४)।

पम्हुहण वि [स्मर्तृ] स्मरण करनेवाला (कुमा)।

पय सक [पच्] पकाना, पक करना। पयइ (हे ४, ६०)। वक्क पयत (कप्प)। सक, पइउ (कुप्र २६६)।

पय सक [पद्] १ जाना। २ जानना। ३ विचारना। पयइ (विसे ४०८)।

पय पुंन [पयस्] १ क्षीर, दूध, 'पयो' (हे १, ३२, ओष १२, पात्र)। २ पानी, जल (सुपा १३६, पात्र)। ३ हर देखो पओहर (पिंग)।

पय पु [प्रज] प्राणी, जन्तु (आचा)।

पय पुंन [पद्] १ विभक्ति के साथ का शब्द, 'पयमत्यवायग जोयग च' 'तं' नामियाइ पचविह (विसे १००३, प्रास १३८, आ २३)। २ शब्द-ममूह, वाक्य, 'उवएसपया इह समक्खाया' (उप १०३८, आ २३)। ३ पैर, पाँव, चरण, 'जाणं च तज्जातजणीइ' लरणो ठवेमि मंदपए, कंक्वपहे वालो इव, 'जाव न सत्तट्ट पए पच्चाहुत्त नियत्तो सि' (सुपा १, धर्मवि ५४, सुर ३, १०७, आ २३)। ४ पाद-चिह्न, पदाङ्क (सुर २, २३२, सुपा ३५४, आ २३, प्रास ५०)। ५ पय का चौथा हिस्सा (अणु)। ६ निमित्त, कारण (आचा)। ७ स्थान, 'अवमाणपयं हि सेव ति' (सुर २, १६७, आ २३)। ८ पदवी, अधिकार, 'जुवरायपए किं नवि अहिस्सिच्च देव मे पुत्तो?' (सुर २, १७५, महा)। ९ त्राण, शरण। १० प्रदेश। ११ व्यवसाय (आ २३)। १२ कूट, जाल-विशेष (सूम १, १, २, ८)। १३ खेम न [क्षेम] शिव, कल्याण, 'कुव्वइ अ सो पयखेममण्णो' (दस ६, ४, ६)। १४ स्थ पु [स्थ] पदाति, पैदल, प्यादा, 'तुरएण सह तुरंगो पाइस्सो सह पयत्थेण' (पउम - ६, १८२)। १५ पास पुं [पाश] बाणुग, जाल आदि बन्धन (सूम १, १, २, ८, ६)। १६ रक्ख पुं [रक्ष] पदाति, प्यादा (भवि, हे ४, ४१८)। १७ वेग्गह पु [विग्रह] पदविच्छेद (विसे १००६)। १८ विभाग पु [विभाग] उत्सर्ग और अपवाद का, यथा-स्थान निवेश, सामा-चारी-विशेष (आव १)। १९ वीढ देखो पाय-वीढ (पुव ४०, सुपा ६५६)। २० समास पुं [समास] पदों का समुदाय (कम्म १, ७)। २१ णुसारि वि [नुसारि] एक पद में अनेक अनुक्त पदों का भी अनुसंधान करने की शक्तिवाला (औप, बृह १)। २२ णुसारिणी स्त्री [नुसारिणी] बुद्धि-विशेष, एक पद के श्रवण से दूसरे श्रुत पदों का स्वयं पता लगानेवाली बुद्धि (परए २१)।

पय (अप) देखो पत्त = प्राप्त (पिंग)।

पय देखो पया = प्रजा। १ पाल वि [पाल] १ प्रजा का पालक। २ पुं नृप-विशेष (तिरि ४५)।

पय वि [प्रद] देनेवाला, 'पीडप्पय' (रमा)। पयइ स्त्री [प्रकृति] सधि का अभाव (अणु १, १२)।

पयइ देखो पगइ (गा ३१७, गउड, महा; नव ३१, भत्त ११४; कप्प; कुप्र ३४६)।

पयइंद पुं [पतगेन्द्र, पदकेन्द्र] वानव्यन्तर-जातीय देवों का इन्द्र (ठा २, ३)।

पयई देखो पयवी (गउड)।

पयग पुं [पनङ्ग] १ सूर्य, रवि (पात्र), 'तो हरिसुपुलइयंगो चक्को इव दिट्ठउगयपयगो' (उव ७२८ टी)। २ रग-विशेष, रजन-द्रव्य-विशेष (उर ६, ४, तिरि १०५७)। ३ शनभ, फतिगा, उड़नेवाला छोटा कौट (गाया १, १७; पात्र)। ४—५ देखो पयय = पतग, पदक, पदग (परह १, ४—पत्र ६८, राज)। ६ वीहिया स्त्री [वीथिका] १ शलभ का उड़ना। २ भिक्षा के लिए पतग की तरह चलना, बीच में दो चार घरों को छोड़ते हुए भिक्षा लेना (उत्त ३०, १६)। ३ वीही स्त्री [वीथी] वही पूर्वोक्त अर्थ (उत्त ३०, १६)।

पर्यंचुल पुं [प्रपञ्चुल] मत्स्यबन्धन-विशेष, मछली पकड़ने का एक प्रकार का जाल (विपा १, ८—पत्र ८५)।

पयड वि [प्रचण्ड] १ अत्युग्र, तीव्र, प्रखर। २ भयानक, भयकर (परह १, १, ३, ४; उव)।

पयड वि [प्रकाण्ड] अत्युग्र, उत्कट (परह १, ४)।

पयत देखो पय = पच्।

पयप अक [प्र + कप्प] अतिशय कपना। वक्क पयपमाण (स ५६६)।

पयप सक [प्र + जल्प] १ कहना, बोलना। २ बकवाद करना। पयपए (महा)। सक पयपिऊण, पयपिऊण (महा, पि ५८५)। क पयपिअव्व (गा ४५०, सुपा ५५२)।

१२) । °परिसह, °परीसह पु [°परिषह, °परीषह] १ बुद्धि का गवं न करना । २ बुद्धि के अभाव में खेद न करना (भग ८, ८, पव ८६) । °मय पु [°मद्] बुद्धि का अस्मिमान (सूत्र १, १३) । °वंत वि [°वत्] ज्ञानवान् (राज) ।

पण्णाग वि [प्रज्ञ] विद्वान् (पचा १७, २७) ।

पण्णाड देखो पन्नाड परणाडइ (दे ६, २६) ।

पण्णाण न [प्रज्ञान] १ प्रकृत ज्ञान । २ सम्यग् ज्ञान (सम ५१) । ३ आगम, शास्त्र (आचा) । °व वि [°वत्] १ ज्ञानवान् । २ शास्त्र (आचा) ।

पण्णाराह (अप) वि व [पञ्चदशन्] पनरह (पिंग) ।

पण्णावीसा स्त्री [पञ्चविंशति] पचीस, बीस और पाँच, २५ (पड्) ।

पण्णास स्त्रीन [दे पञ्चाशत्] पचास, ५० (दे ६, २७, पड्, पि २७३, ४४५, कुमा) । देखो पन्नास ।

पण्णासग वि [पञ्चाशक] पचास वर्ष की उम्र का (तंदु १७) ।

पण्णुवीस देखो पणुवीस (स १४६) ।

पण्ह पुंस्त्री [प्रश्न] प्रश्न, पृच्छा (हे १, ३५, कुमा) । स्त्री °ण्हा (हे १, ३५) । (हे १, ३५) । °वाहण न [°वाहन] जैन मुनि-गण का एक कुल (ती ३८) । °वागरण न [°व्याकरण] ग्यारहवाँ जैन अगम-ग्रन्थ (परह २, ५, ठा १०, विपा १, १, सम १) । देखो पसिण ।

पण्हअ अक [प्र + स्तु] करना, टपकना, 'एक्को परहप्रइ यणो' (गा ४०६, ४६२ अ) ।

पण्हअ पु [दे प्रस्तव] १ स्तन-धारा, पण्हव स्तन से दूध का करना (दे ६, ३, पि २३१, राज, अत ७, पड् । २ करना, टपकना, 'दिट्ठिपरहव' (पिड ४८७) ।

पण्हव पु [पहव] १ अनार्य देश-विशेष । २ वि उस देश का निवासी (परह १, १—पत्र १४) ।

पण्हवण न [प्रस्नवन] क्षरण, करना (विपा १, २) ।

पण्हविअ देखो पणहुअ (दे ६, २५) ।

पण्हा देखो पण्ह ।

पण्ह पुंस्त्री [पार्णिग] फीली का अधोभाग, गुल्फ की नीचला हिस्सा, एडी (परह १, ३, दे ७, ६२) ।

पण्हिया स्त्री [प्रश्निका] एडी, गुल्फ का अधोभाग, 'भेलित्तु परहियाओ चरणे वित्थारिक्क वाहिरओ' (चैय ४८६) ।

पण्हुअ वि [प्रस्तुत] १ क्षरित, झरा हुआ । २ जिसने भरने का प्रारम्भ किया हो वह, 'परहुयपयोहराओ' (पउम ७६, २०, हे २, ७५) ।

पण्हुदर वि [प्रस्तोत्] करनेवाला, 'हृदयप्फसेण जरगगोवि परहमइ दोहमणुणेण । अवलोअणपरहुइरि पुत्तम पुण्णेहि पाविहिंसि' (गा ४६२) ।

पण्होत्तर न [प्रश्नोत्तर] सवाल-जवाब (सुर १६, ४१, कप्पू) ।

पतणु देखो पयणु (राज) ।

पतार सक [प्र + तारय्] ठगना । संकृ पतारिअ (अभि १७१) ।

पतारग वि [प्रतारक] वचक, ठग (धर्मसं १४७) ।

पतिण्ण १ वि [प्रतीर्ण] पार पहुँचा हुआ, पतिन्न १ निस्तीर्ण (राज, परह २, १—पत्र ६६) ।

पतुण्ण १ न [प्रतुन्न] वल्कल का बना हुआ पतुन्न १ वस्त्र (आचा २, ५, १, ७) ।

पतेरस १ वि [प्रत्रयोदश] प्रकृत तेरहवाँ । पतेलस १ °वास न [°वर्ष] १ प्रकृत तेरहवाँ वर्ष । २ प्रकृत तेरहवाँ वर्ष । ३ प्रस्थित तेरहवाँ वर्ष (आचा) ।

पत्त वि [प्राप्त] मिला हुआ, पाया हुआ (कप्प, सुर ४, ७०, सुपा ३५७, जी ४४, द ४६, प्रासू ३१, १६२, १८२, गा २४१) । °काल, °याल न [°काल] १ चैत्य-विशेष (राज) । २ वि अवसरोचित (स ४६०) ।

पत्त न [पत्र] १ पत्ती, पत्ता, दल, पर्ण (कप्प, सुर १, ७२, जी १०, प्रासू ६२) । २ पक्ष पंख, पाँख (राया १, १—पत्र २४) । ३ जिसपर लिखा जाता है वह, कागज, पन्ना

(स ६२, सुर १, ७२, से २, १७३) । °च्छेज्ज न [°च्छेद्य] कला-विशेष (म्रीप, स ६५) । °मत वि [°वत्] पत्रवाला (राया १, १) । °रह पुं [°रथ] पत्ती (पाम्म) । °लेहा स्त्री [°लेखा] चन्दनादि से पत्र के आकृतिवाली रचना-विशेष, मूपा का एक प्रकार (अजि २८) । °वल्ली स्त्री [°वल्ली] १ पत्रवाली लता । २ मुँह पर चन्दन आदि से की जाती पत्र-श्रेणी-तुल्य रचना (कुप्र ३६५) । °विट न [°वृन्त] पत्र का वन्धन (पि ५३) । °विटिय वि [°वृन्तक, °वृन्तीय] श्रीन्द्रिय जन्तु-विशेष पत्र वृन्त में उत्पन्न होता एक प्रकार का श्रीन्द्रिय जन्तु (परण १—पत्र ४५) । °विच्छुय पु [°वृश्चिक] जीव-विशेष, एक तरह का वृश्चिक, चतुरिन्द्रिय जीवों की एक जाति (जीव १) । °वेंट देखो °विट (पि ५३) । °सगडिआ स्त्री [°शकटिका] पत्ती से भरी हुई गाड़ी (भग) । °समिद्ध वि [°समृद्ध] प्रभूत पत्तेवाला (पाम्म) । °हार पुं [°हार] श्रीन्द्रिय जन्तु-विशेष (परण १—पत्र ४५, उत ३६, १३८) । °हार पु [°हार] पत्ती पर निर्वाह करनेवाला वानप्रस्थ (म्रीप) ।

पत्त न [पात्र] १ भाजन (कुमा, प्रासू ३६) । २ आचार, आश्रय, स्थान (कुमा) । ३ दान देने योग्य गुणी लोक (उप ६४८ टी, महा) । ४ लगातार बतीस उपवास (सवोच ५८) । °वध पु [°वन्ध] पात्रों को बाँधने का कपडा (भोच ६६८) । देखो पाय = पात्र ।

पत्त वि [प्राप्त] प्रसारित (कप्प) ।

पत्तइअ वि [प्रत्ययित] विश्वस्त (भग) ।

पत्तइअ वि [पत्रकित] १ अल्प पत्रवाला । २ कुत्तित पत्रवाला (राया १, ७—पत्र ११६) ।

पत्तउर पुं [दे] वनस्पति-विशेष, एक प्रकार का गाछ (परण १—पत्र ३१) ।

पत्तच्छेज्ज न [पत्रच्छेद्य] बाण से पत्ती वेधने की कला (जं २ टी पत्र १३७) । २ नक्काशी का काम, खोदने का काम (आचा २, १२, १) ।

पत्तट्ट वि [दे प्राप्तार्थ] १ बहु-शिक्षित, विद्वान्, अति कुशल (दे ६, ६८, सुर १,

[^०तीर्थिक] भिन्न दर्शनवाला (भग) । ^०एस पु [^०देश] विदेश, भिन्न, अन्य देश (भवि) । ^०ओ अ [^०तम्] १ वाद मे, परली—दूसरी तरफ, 'अडवोए परओ' (महा) । २ भिन्न मे, इतर मे (कुमा) । ३ इतर से, अन्य से (सूअ १, १२) । ^०गणिच्चय वि [^०गणीय] भिन्न गण से संवन्व रखनेवाला । स्त्री ^०च्चिया (निचू ८) । ^०गरिहभाण न [^०गर्हाध्यान] इतर की निन्दा का विचार (आउ) । ^०वाय पु [^०वात] १ दूसरे को आवात पहुँचाना । २ पुन कर्म-विशेष जिसके उदय मे जीव अन्य बलवानो को भी दृष्टि मे अजेय समझा जाता है वह कर्म, 'परघाउदया पाणी परेसि बलीएणि होइ दुद्धरिसो' (कम्म १०. ४४) । ^०चित्तणु वि [^०चित्तज] अन्य के मन के भाव को जाननेवाला (उप १७६ टी) । ^०च्छद, ^०छद पु [^०च्छन्द] १ पर का अभिप्राय, अन्य का आशय (ठा ४, ४; भग २५, ७) । २ पराधीन, परतन्त्र (राज, पाअ) । ^०जाणुअ वि [^०ज] १ पर को जाननेवाला । २ प्रकट जानकार (प्राक १८) । ^०ट्ट पु [^०ट्ट] परोपकार (राज) । ^०ट्टा स्त्री [^०ट्ट] हमारे के लिए, 'कड परट्टाए' (आचा) । ^०णिदभाण न [^०निन्दाध्यान] अन्य की निन्दा का चिन्तन (आउ) । ^०णुअ देखो ^०जाणुअ (प्राक १८) । ^०तत वि [^०तन्त्र] पराधीन, परायत्त (सुपा २३३) । ^०तिट्ठिअ देखो ^०ट्ठिअ (भग, सम्म ८५) । ^०तीर न [^०तीर] सामनेवाला किनारा (पाअ) । ^०त्त न [^०त्त्व] १ भिन्नत्व, पार्थक्य । २ वैशेषिक दर्शन मे प्रमिद्ध गुण-विशेष (विमे २४६१) । ^०त्त अ [^०त्र] १ जन्मान्तर मे, परलोक मे (सुपा ५०८) । २ न जन्मान्तर, 'ते इहअपि परत्ते नरयगइ जति नियमेण' (सुपा ५२१), 'इह लोए चिय दीसइ सग्गो नरओ य कि परत्तेण' (वज्जा १३८) । ^०त्थ अ [^०त्र] जन्मान्तर मे, 'इहं परत्थावि य ज विस्सं न किज्जे तपि सया निमिद्ध' (सत्त ३७, सुर १४, ३३, उव) । ^०त्थ देखो ^०ट्ट (सुर ४, ७३) । ^०त्थी स्त्री [^०स्त्री] परकीय स्त्री (प्रासू १५५) । ^०दार पुन [^०दार] परकीय स्त्री (पडि), 'जो वज्जइ परदार मो सेवइ नो कयाइ

परदार' (सुपा ३६६), 'दव्वेण अण्णकालं गहिया वेसावि होइ परदार' (सुपा ३८०) । ^०दारि वि [^०दारिन्] परस्त्री-लम्पट, 'ता एस वसुमईए कएण परदारियाए आयाओ' (सुर ६, १७६) । ^०पक्ख वि [^०पक्ष] वैधर्मिक, भिन्न धर्म का अनुयायी (द्र १७) । ^०परिवाइय वि [^०परिवादिक] इतर के दोषो को बोलनेवाला, पर-निन्दक (श्रीप) । ^०परिवाय पु [^०परिवाद] १ पर के गुण-दोषो का विप्रकीर्ण वचन (श्रीप, कप्प) । २ पर-निन्दा, इतर के दोषो का परिकीर्तन (ठा १, ४, ४) । ३ अन्य के मद्गुणो का अपलाप (पचू) । ^०परिवाय पु [^०परिपात] अन्य का पातन, दोषोद्घाटन-द्वारा दूसरे को गिराना (भग १२, ५) । ^०पुट्ट देखो ^०उट्ट (पएण १७, स ४१६) । ^०भव पु [^०भव] आगामी जन्म (श्रीप, पएह १, १) । ^०भविअ वि [^०भविक] आगामी जन्म से मन्व्य रखनेवाला (भग, ठा ६) । ^०भाग पुं [^०भाग] १ श्रेष्ठ अश । २ अन्य का हिस्सा । ३ अत्यन्त उत्कर्ष (उप पृ ६७) । ^०महेला स्त्री [^०महेला] १ उत्तम स्त्री । २ परकीय स्त्री (सुपा ४७०) । ^०यत्त देखो ^०यत्त, 'परयत्तो परछो' (पाअ) । ^०लोअ, ^०लोग पु [^०लोक] १ इतर जन, स्वजन से भिन्न (उप ६८६ टी) । २ जन्मान्तर (पएह १, २, विसे १६५१, महा, प्रासू ७५, सएण) । ^०वस वि [^०वश] पराधीन, परतन्त्र (कुमा, सुपा २३७) । ^०वाइ पुं [^०वादिन्] इतर दाश-निक (श्रीप) । ^०वाय पुं [^०वाद] १ इतर दर्शन, भिन्न मत (श्रीप) । २ श्रेष्ठ वादी (आ २३) । ^०वाय पु [^०वाच्] १ सज्जन, सुजन । २ वि श्रेष्ठ वाणीवाला (आ २३) । ^०वाय वि [^०वाज] १ श्रेष्ठ गतिवाला । २ पुं श्रेष्ठ अश्व (आ २३) । ^०वाय वि [^०वाय] जानकार, ज्ञानी (आ २३) । ^०वाय वि [^०पाक] १ सुन्दर रसोई बनाने-वाला । २ पुं. रसोइया (आ २३) । ^०वाय पु [^०पात] १ जुआड़ी, जुए का खेलाड़ी । २ अशुभ समय (आ २३) । ^०वाय पुं [^०व्याद्] ब्राह्मण, विप्र (आ २३) । ^०वाय पुं [^०वाय] धनी जुलाहा, धनाढ्य तन्तुवाय

(आ २३) । ^०वाय वि [^०वात] १ प्रकट समूहवाला । २ न. सुभिक्ष समय का धान्य (आ २३) । ^०वाय पुं [^०वात] श्रोम समय का जलधि-तट (आ २३) । ^०वाय पु [^०व्याच] घूत्तं, ठग (आ २३) । ^०वाय वि [^०पाय] अनीतिवाला (आ २३) । ^०वाय वि [^०वाक] वेदज्ञ, वेदविद् (आ २३) । ^०वाय वि [^०पात] १ दयालु, कारुणिक । २ सूत्र पान करनेवाला । ३ सूत्र मूवने-वाला । ४ पु पावट् काल का यवास वृज । ५ मन्त्र-व्यसनी (आ २३) । ^०वाय वि [^०वाद] सुत्थिर (आ २३) । ^०वाय वि [^०व्यात्] १ श्रेष्ठ आच्छादक । २ पु वत्त, कपडा (आ २३) । ^०वाय वि [^०वात्] १ प्रकट वहन करनेवाला । २ पु. श्रेष्ठ तन्तु-वाय, उत्तम जुलाहा । ३ महान् पवन (आ २३) । ^०वाय वि [^०व्यागस्] १ अति बड़ा अपराधी, गुस्तर अपराधी (आ २३) । ^०वाय वि [^०व्याप] प्रकट विस्तारवाला (आ २३) । ^०वाय वि [^०वाक] १ जहाँ पर प्रकट बक-गमूह हो वह स्थान । २ न. मन्त्र-परिपूर्ण सरोवर (आ २३) । ^०वाय वि [^०व्याय] १ श्रेष्ठ वायुवाला । २ जहाँ पर पक्षियों का विशेष आगमन होता हो वह । ३ पु. अनुकूल पवन से चलता जहाज । ४ सुन्दर घर । ५ वनोद्देश, वन प्रदेश (आ २३) । ^०वाय वि [^०वाय] १ जहाँ पानी का प्रकट आगमन हो वह । २ न जलधि मुख, समुद्र का मुँह । ३ पु महासमुद्र, महा सागर (आ १३) । ^०वाय वि [^०व्याज] अन्य के पास-विशेष गमन करनेवाला । २ प्रार्थना-परायण (आ २३) । ^०वाय वि [^०पाय] १ अत्यन्त हीन-भाग्य । २ नित्य-दरिद्र (आ २३) । ^०वाय वि [^०वाप] १ प्रकट वपनवाला । २ पु. कृषक (आ २३) । ^०वाय वि [^०पाप] १ महापापी । २ हत्या करनेवाला (आ २३) । ^०वाय पु [^०पाक] १ कुम्भकार, कुम्हार । २ मुक्त जीव । ३ पहली तीन नरक-भूमि (आ २३) । ^०वाय वि [^०पाग] वृक्ष-रहित, वृक्ष-वर्जित (आ २३) । ^०वाय वि [^०वाज्] शत्रु-नाशक (आ २३) । ^०वाय पु [^०पाद] महान् वृक्ष,

होता है (पह १, १)। °सरीरनाम न
[°शरीरनामन्] वही पूर्वोक्त अर्थ (सम
६७)।

पत्तेय वि [प्रत्येक] बाह्य कारण (एदि
१३०, १३१ टी)।

पत्थ सक [प्र + अर्थय] १ प्रार्थना करना।
२ अभिलाषा करना। ३ भटकाना, रोकना।
पत्थेह, पत्थेंति (उव, औप)। कर्म पत्थिजसि
(महा)। वक्र-पत्थत, पत्थित, पत्थेअमाण
(नाट—मालवि- २५, सुपा २१३, प्रासू
१२०), 'कामे पत्थेमाणा अकामा जति
दुग्गड' (उप ३५७ टी)। कवक, पत्थिज्जत,
पत्थिज्जमाण (गा ४००, सुर १, २०, से
३, ३३, कप्प)। ४. पत्थ, पत्थणिज्ज,
पत्थेयञ्च (सुपा ३७०, सुर १, ११६, सुपा
१४८, पह २, ४)।

पत्थ पुं [पार्थ] १ अर्जुन, मध्यम-पाण्डव
(स ६१२, वेणी १२६, कुमा)। २ पाञ्चाल
देश के एक राजा का नाम (पठम ३७, ८)।
३ भद्विलपुर नगर का एक राजा (सुपा
६२६)।

पत्थ पुं [पार्थ] १ प्रार्थन, प्रार्थना (राय)।
२ दो दिनों का उपवास (संबोध ५८)।

पत्थ देखो पत्थ = प्र + अर्थय (गा ८१४, पठम
१७, ६४, राज)।

पत्थ देखो पत्थ = प्र + अर्थय।

पत्थ पु [प्रस्थ] १ कुडव का एक परिमाण
(घृह ३, जीवस ८८, तटु २६)। २ सेतिका,
एक कुडव का परिमाण (उप घृ ६६),
'पत्थगा उ जे पुरा आसी हीणमाण उ तेधुणा'
(वव १)।

पत्थत देखो पत्थ = प्र + अर्थय।

पत्थत देखो पत्था।

पत्थग देखो पत्थय (राज)।

पत्थड पुं [प्रस्तर] १ रचना-विशेषवाला
समूह (ठा ३, ४—पत्र १७६)। २ भवनो
क बीच का अन्तराल भाग (पण २, सम
२५)।

पत्थड वि [प्रस्तुत] १ विद्याया हुआ। २
फैला हुआ (भग ६, ८)।

पत्थण न [प्रार्थन] प्रार्थना (महा, भवि)।

पत्थणया स्त्री [प्रार्थना] १ अभिलाषा,
पत्थणा वाञ्छा (भाव ४)। २ याचना,
माँग। ३ विज्ञप्ति, निवेदन (भग १२, ५,
सुर १, २, सुपा २६६, प्रासू २१)।

पत्थय देखो पत्थ = पत्थ (गाया १, १)।

पत्थय वि [प्रार्थक] अभिलाषा करनेवाला
(सूय १, २, २, १६, स २५३)।

पत्थय देखो पत्थ = प्रथ्य (उप १७६ टी,
औप)।

पत्थयण न [पथ्यदन] शम्भल, पाण्य, मार्ग
में खाने का खुराक, कलेवा (गाया १, १५,
स १३०, उर ८, ७, सुपा ६२४)।

पत्थर सक [प्र + स्तृ] १ विछाना। २
फैलाना। सक पत्थरेता (कस, ठा ६)।

पत्थर पुं [प्रस्तर] पत्थर, पापाण (औप,
उव, पठम १७, ३६, सिरि ३३२),

'पत्थरेणाहमो कीवो पत्थरं डक्कुमिच्छई'
मिगारिओ सरं पप्प सत्थत्ति विमरगई'
(सुर ६, २०७)।

पत्थर न [दे] पाद-ताडन, लात (पड)।

पत्थर देखो पत्थार (प्राप्र, सलि २)।

पत्थरण न [प्रस्तरण] विछाना, 'खट्वापत्थर-
ण्यं तथा एग' (धर्मवि १४७)।

पत्थरभल्लिअ न [दे] कीलाहल करना (दे ६,
३६)।

पत्थरा स्त्री [दे] चरण-घात, लात (दे ६,
८)।

पत्थरिअ पुं [दे] पल्लव, कोपल (दे ६, २०)।

पत्थरिअ वि [प्रस्तुत] विद्याया हुआ,
'पत्थरिअं अत्थुअ' (प्राप्र)।

पत्थय देखो पत्थाव (हे १, ६८, कुमा, पठम
५, २१६)।

पत्था सक [प्र + स्था] प्रस्थान करना,
प्रवास करना। वक्र, पत्थत (से ३, ५७)।

पत्थाण न [प्रस्थान] प्रयाण, गमन (अभि
८१, अजि ६)।

पत्थार पुं [प्रस्तार] १ विस्तार (उवर ६६)।

२ सुखवन। ३ पल्लवादि-निर्मित शय्या। ४

पिगल-प्रसिद्ध प्रक्रिया-विशेष (प्राप्र)। ५

प्रायश्चित्त की रचना विशेष (ठा ६—पत्र
३७१, कस)। ६ विनाश (पिड ५०१,
५११)।

पत्थारी स्त्री [दे] १ निकर, समूह (दे ६,
६६)। २ शय्या, विछाना, गुजराती में
'पथारी' (दे ६, ६६, प्राप्र, सुपा ३२०)।

पत्थाव सक [प्र + स्तावय] प्रारंभ
करना। वक्र, पत्थावअन (होस्य १२२)।

पत्थाव पु [प्रस्ताव] १ अवसर। २-प्रसंग
प्रकरण (हे १, ६८, कुमा)।

पत्थिअ वि [प्रस्थित] १-जिसने प्रयाण
किया हो वह (से २, १६, सुर ४, १६८)।

२ न. प्रस्थान, गति, चाल (अजि ६)।

पत्थिअ वि [प्रार्थित] १ जिसके पाम प्रार्थना
की गई हो वह। २ जिस चीज की प्रार्थना
की गई हो वह (भग, सुर ६, १८, १६,
६, उव)।

पत्थिअ वि [दे] शीघ्र, जल्दी करनेवाला (दे
६, १०)।

पत्थिअ वि [प्रार्थिक] प्रार्थी, प्रार्थना करने-
वाला (उव)।

पत्थिअ वि [प्रार्थित] विशेष, आस्थावाला,
प्रकृष्ट श्रद्धावाला (उव)।

पत्थिअ, स्त्री [दे] वाँस का बना हुआ
पत्थिआ भाजन-विशेष (औष ४७६)।

पिडगा, पिडय न [पिटक] वाँस का
बना हुआ भाजन-विशेष (विपा १, ३)।

पत्थिअ देखो पत्थिअ = प्रस्थित, प्रार्थित
(प्राप्र २५)।

पत्थिव पुं [पार्थिव] १ राजा, नरेश (गाया
१, १६, प्राप्र)। २ वि. पृथिवी का विकार
(राजा)।

पत्थी स्त्री [दे पात्री] पात्र, भाजन, 'अंव-
कखोरपत्थि व माउआ मह पई विजुपति'
(गा २४० अ)।

पत्थीण न [दे] १ स्थूल वक्र, मोटा कपड़ा।
२ वि. स्थूल, मोटा (दे ६, ११)।

पत्थुय वि [प्रस्तुत] १ प्रकरण-प्राप्त, प्राकर-
णिक (सुर ३, १६६, महा)। २ प्राप्त,
लब्ध (सूय १, ४, १, १७)।

पत्थुर देखो पत्थर = प्र + स्तृ। संक्र. पत्थु-
रेत्ता (कस)।

पत्थेअमाण
पत्थेंत
पत्थेमाण
पत्थेयञ्च } देखो पत्थ = प्र + अर्थय।

परग न [दे. परक] १ तृण-विशेष, जिससे फूल गूँथे जाते हैं (आचा २, २, ३, २०, सूत्र २, २, ७)। २ धान्य-विशेष (सूत्र २, २, ११)।

परग वि [पारग] परग तृण का बना हुआ (आचा २, १, ११, ३, २, २, ३, १४)।

परगासय वि [प्रकाशक] प्रकाश करनेवाला (तंदु ४६)।

परगध वि [परार्ध] महधं, महंगा, बहुमूल्य (दस ७, ४३)।

परज्ज (अप) सक [परा + जि] पराजय करना, हराना। परज्जइ (भवि)।

परज्जिय (अप) वि [पराजित] पराजय-प्राप्त, हराया हुआ (भवि)।

परज्झ वि [दे] १ पर-वश, पराधीन, परतन्त्र, 'जिसखया, तुच्छपरप्पवाई ते पेज्ज-दोसाणुगया परज्झा' (उत्त ४, १३ वृह ४)। २ पुन, परतन्त्रता, पराधीनता (ठा १०—पत्र ५०५, भग ७, ८—पत्र ३१४)।

परट्ट देखो परिअट्ट = परिवर्त (जीवस २५२, पव १६२, कम्म ५, ५६)।

परडा लो [दे] सर्व-विशेष (दे ६, ५), 'उच्चारं कुणामाणो अपाणदेनम्मि गस्य-परडाए, दट्ठो पीडाए मग्गो' (सुपा ६२०)।

परदारिअ पु [पारदारिक] परलो-लम्पट (पउम १०५, १०७)।

परद्ध वि [दे] १ पीडित, दुःखित (दे ६, ७०, पात्र, सुर ७, ४, १६, १४४, उप पु २२०, महा)। २ पतित। ३ भीरु, डरपोक (दे ६, ७०)। ४ व्याप्त, 'जीइ परद्धा जीवा न दोसणुणदमिणो होति' (धम्मो १४)।

परप्पर देखो परोप्पर (पि ३११, नाट—मालती १६८)।

परवभवमाण देखो परामव = परा + भू।

परभत्त वि [दे] भीरु, डरपोक (पह)।

परभाअ पुं [दे] सुरत, मैथुन (दे ६, २७)।

परम वि [परम] १ उत्कृष्ट, सर्वाधिक (सूत्र १, ६, जी ३७)। २ उत्तम, सर्वोत्तम, श्रेष्ठ (पचव ४, धर्म ३, कुमा)। ३ अत्यर्थ, अत्यन्त (पह १, ३, भग, श्रौप)। ४ प्रधान, मुख्य (आचा, दस ६, ३)। ५ पु.

मोक्ष, मुक्ति। ६ समय, चारित्र्य (आचा, सूत्र १, ६)। ७ न. सुख (दस ४)। ८ लगातार पाँच दिनों का उपवास (संघोष ५८)। ९ पुं [१र्थ] १ सत्य पदार्थ, वास्तविक चीज, 'अयं परमट्ठे सेसे अणट्ठे' (भग, धर्म १)। २ मोक्ष, मुक्ति (उत्त १८, पह १, ३)। ३ समय, चारित्र्य (सूत्र १, ६)। ४ पुन. देखो नीचे 'त्य = अर्थ, 'पर-मट्ठनिट्ठिअट्ठ' (पडि, धर्म २)। ५ पुन देखो 'न्न (सम १५१)। ६ पुन [१र्थ] १ तत्त्व, सत्य, 'तत्त परमत्थ' (पात्र), 'परम-त्थदो' (अभि ६१)। २—४ देखो 'ट्ट (सुपा २४, ११०, सण, प्रास १६४, महा)। ६ न [१र्थ] सर्वोत्तम हथियार, अमोघ अस्त्र (से १, १)। ७ टसि कि [०दर्शिन] १ मोक्ष देखनेवाला। २ मोक्ष-मार्ग का जानकार (आचा)। ३ न [३] १ खीर, दुग्ध-प्रधान मिष्ट भोजन (सुपा ३६०)। २ एक दिन का उपवास (संघोष ५८)। ३ पुन [०पट] मोक्ष, निर्वाण, मुक्ति (पात्र, भवि, अजि ४०, पंचा १४)। ४ पुन [०त्मन्] सर्वोत्तम आत्मा, परमेश्वर (कुमा, सुपा ८३, रण ४३)। ५ पुन देखो 'पय (सुपा १२७)। ६ पुन देखो 'पय (भवि)। ७ पुन लो [०त्मता] मुक्ति, मोक्ष, 'सेलेसि आरुहिउ अरिकेसरिसूरी परमपयं पतो' (सुपा १२७)। ८ पुन [०बोधिसत्त्व] परमाहंत, अहंत देव का परम भक्त (मोह ३)। ९ सखिज्ज न [०सख्येय] सख्या-विशेष (कम्म ४, ७१)। १० सोमणस्सिय वि [०सौमनस्यित] सर्वोत्तम मनवाला, सतुष्ट मनवाला (श्रौप, कप्प)। ११ सोमणस्सिय वि [०सौमनस्यिक] वही अर्थ (श्रौप, कप्प)। १२ हेला लो [०हेला] उत्कृष्ट तिरस्कार (सुपा ४७०)। १३ उ न [०युस्] १ लम्बा आयुष्य, बड़ी उमर (पउम १०, ७)। २ जीवित काल, उमर (विपा १, १)। ३ पुन पु [०णु] सर्व-सूक्ष्म वस्तु (भग, गउड)। ४ हिम्मिय [०धार्मिक] असुर-विशेष, नारक जीवों को दुःख देनेवाले देवों की एक जाति (सम २८)। ५ होहिअ वि [०धोवधिक] अवधिज्ञान-विशेषवाला, ज्ञान-विशेष (भग)।

परमाहिम्मिय वि [परमधार्मिक] सुख का आभिलाषी (दस ४, १)।

परमिट्ठि पु [परमेष्टिन] १ ब्रह्मा, चतुरानन (पात्र, मम्मत्त ७८)। २ अहंत, सिद्ध, आचार्य, उपाध्याय श्रीर मुनि (सुपा ६५, आप ६८, गण ६, निता २०)।

परमुक्क वि [परामुक्क] परित्यक्त (पउम ७१, २६)।

परमुवगारि } वि [परमोपकारिन] बड़ा
परमुवयारि } उपकार करनेवाला (सुर २, ४२, २, ३७)।

परमुह देखो परम्मुह (से २, १६)।

परमेट्ठि देखो परमिट्ठि (कुमा, भवि, चैद्व ४६६)।

परमेसर पु [परमेश्वर] सर्वेश्वर-सपत्न, परमात्मा (सम्मत्त १४४, भवि)।

परम्मुह वि [पराड्मुख] विमुख, मुँह-फिरा, उदासीन (णाय १, २, काप्र ७२३, गा ६८८)।

परय न [परक] आधिक्य, अतिशय (उत्त ३४, १४)।

परलोइअ वि [पारलौकिक] जन्मान्तर-सन्ध्या (आचा, सम ११६, पह १, ५)।

परवाय वि [प्रवाज] १ प्रकृष्ट शब्द से प्रेरणा करनेवाला। २ पुं. सारथि, रथ हाँकनेवाला (आ २३)।

परवाय वि [प्रारवाय] १ श्रेष्ठ गाना गाने-वाला। २ पुं. उत्तम गवैया (आ २३)।

परवाय पुं [प्ररपाज] नाज (अन्न) भरने का कोठा, वह घर जहाँ नाज संगृहीत किया जाता है, कोठार, बखार (आ २३)।

परवाया लो [प्ररवाप्] गिरि-नदी, पहाड़ी नदी (आ २३)।

परस (अप) देखो फास = स्पर्श (पिंग, भवि)।
मणि पु [०मणि] रत्न-विशेष, जिसके स्पर्श से लोहा सुवर्ण होता है (पिंग)।

परसण (अप) देखो पसण (पिंग)।

परसु पुं [परशु] अस्त्र-विशेष, परश्व, कुठार, कुल्हाड़ी (भग ६, ३३, प्रास ६, ६२, काल)। राम पु [राम] जमदग्नि ऋषि का पुत्र, जिसने षष्ठीस बार निःशस्त्रिय पृथिवी की थी (कुमा, पि २०८)।

पन देखो पच । ०र, ०रस वि. व. [०दशान्] पनरह, दस और पांच, १५ (कम्म १, ४, ५२, ६८, जी २५) ।

पनय (पै चूपै) देखो पणय = प्रणय (हे ४, ३२६) ।

पन्न देखो पण्ण = पर्ण (सुपा ३३६, कुप्र ४०८) ।

पन्न देखो पण्ण = दे (भग, कम्म ४, ५४) ।

पन्न देखो पण्ण = प्रज्ञ (आचा, कुप्र ४०८) ।

पन्न वि [प्राज्ञ] १ पंडित, जानकार, विद्वान् (ठा ७, उप १५१, धर्मसं ४५२) । २ वि प्रज्ञ-सवन्वी (सूय २, १, ५६) ।

पन्न देखो पंच । ०र, ०रस वि व [०दशन] पनरह, १५ (दं २२, सम २६, भग, मण) । ०रस, ०रसम वि [०दश] पनरहवां, १५ वां (नुर १५, २५०, पडम १५, १००) । ०रसी स्त्री [०दशी] १ पनरहवी । २ पनरहवी तिथि (कप्प) ।

पन्न देखो पणिअ = पण्य (उप १०३१ टी) ।

पन्नगणा स्त्री [पण्याङ्गना] वेश्या, बाराङ्गना (उप १०३१ टी) ।

पन्नग देखो पण्णग = पन्नग (विपा १, ७, सुर २, २३८) ।

पन्नट्टि देखो पण्णट्टि (कप्प) ।

पन्नत्त देखो पण्णत्त (णाय १ १, नग, सम १) ।

पन्नत्तरि स्त्री [पञ्चसप्तति] पचहत्तर, ७५ (सम ८५, ति ३) ।

पन्नत्ति देखो पण्णत्ति (सुपा १५३, सति ५, महा) । ५ प्रकृष्ट ज्ञान । जिसने प्ररूपण किया जाय वह (तदु ५४) । ७ पाँचवां भ्रंग-ग्रन्थ, भगवतोसूत्र (आवक ३३३) ।

पन्नत्तु वि [पन्नापयित्] आख्याता, प्रतिपादक (पि ३६०) ।

पन्नपत्तिया स्त्री [पन्नप्रत्यया] देखो पुन्नपत्तिया (कप्प) ।

पन्नपन्नडम देखो पणपन्नडम (पि ४४६) ।

पन्नय देखो पण्णग (पाप्र) । ०रिड पुं [०रिपु] गह्वर पत्नी (पाप्र) ।

पन्नया स्त्री [पन्नगा] भगवान् धर्मनायकी की शासन-देवी (सति १०) ।

पन्नय देखो पण्णय । पन्नवेइ (उव) । कर्म. पन्नविज्ज (उव) । वक्तृ पन्नवयत्त (सम्म १३४) । मक्तृ पन्नवेऊण (पि ५८५) ।

पन्नवग वि [पन्नापक] प्रतिपादक, प्ररूपक (कम्म ५, ८५ टी) ।

पन्नवण देखो पण्णवण (सुपा २६६) ।

पन्नवणा देखो पण्णवणा (भग, पण्ण १, ठा ३, ४) ।

पन्नवय देखो पण्णवय (सम्म १६) ।

पन्नवयत्त देखो पन्नय ।

पन्ना देखो पण्णा = प्रज्ञा (आचा, ठा ४, १, १०) ।

पन्ना देखो पण्णा = दे (पव ५०) ।

पन्नाड मक [मट्ट] मर्दन करना । पन्नाडइ (हे ४, १२६) ।

पन्नाडिअ वि [मृदित] जिनका मर्दन किया गया हो वह (पाप्र, कुमा) ।

पन्नाण देखो पण्णाण (आचा, पि ६०१) ।

पन्नारम (अप) वि. व. [पन्नचदशान्] पनरह, १५ (भवि) ।

पन्नास देखो पण्णास (सम ७०, कुमा) । स्त्री ०सा (कप्प) । ०डम वि [०तम] पचासवां, ५० वां, (पडम ५०, २३) ।

पन्ह देखो पण्ह (कप्प) ।

पन्हट्ट (अप) देखो पण्हअ = दे प्रस्तव (भवि) ।

पपच देखो पडच (सुपा २३५) ।

पपलीण वि [प्रपल्लयित्] भागा हुआ (पि ३४६, ३६७, नाट—मृच्छ ५८) ।

पपिआमह पुं [प्रपिनामह] १ ब्रह्मा, विवाता (राज) । २ पितामह का पिता, परदादा (धर्मसं १४६) ।

पपुत्त पु [प्रपुत्र] पौत्र, पुत्र का पुत्र, पोता (सुपा ४०७) ।

पपुत्त पु [प्रपौत्र] पौत्र का पुत्र, पोते पपोत्त का पुत्र, परपोता (विसे ८६२, राज) ।

पप्प तक [प्र + आप्] प्राप्त करना । पप्पोइ, पप्पोति (पि ५०४, उत १४, १४) ।

पप्पोदि (शौ) (पि ५०४) । मक्तृ पप्प (पण्ण १७, श्रौव ५५, विमे ५५१) । कृ पप्प (विमे २६८७) ।

पप्पग न [दे. पर्पक] वनस्पति । २, २, ६) ।

पप्पड पुत्री [पर्पट] १ पापड, मूँग या पप्पडग उद की बहुत पतली एक प्रकार की रोटी (पव ३७, भवि) । २ पापड के आकारवाला शुष्क मृत्खण्ड (निचू १) । ०पायय पुं [०पाचक] नरकावाम-विशेष (देवेन्द्र ३०) । ०मोदय पुं [०मादक] एक प्रकार की मिट्ट वस्तु (पण्ण १७—पव ५३३) ।

पप्पडिया स्त्री [पर्पटिका] तिल आदि की बनी हुई एक प्रकार की खाद्य वस्तु (पण्ण १, पिड ५५) ।

पप्पल देखो पप्पड (नाट—विक्र २१) ।

पप्पोअ पु [दे] चातक पत्ती, पपीहा या पपीहरा (दे ६, १२) ।

पप्पुअ वि [प्रानुत] १ जलाद्र, पानी से भीजा हुआ (पण्ह १, १, णाय १, ८) । २ व्याप्त, 'धम्मपण्यवज्जणाई च' (पव ४ टी) । ३ न कूटना, लाधना (गठड १२८) ।

पप्पोड } देखो पप्प ।
पप्पोति }

पप्फटण न [प्रस्पन्दन] प्रचलन, फरकना (राज) ।

पप्फाड पुं [दे] अग्नि-विशेष (दे ६, ६) ।

पप्फिडिअ वि [दे] प्रतिफलित (दे ६, २२) ।

पप्फुअ वि [दे] १ दीर्घ, लम्बा । २ उद्दीयमान, उड़ता (दे ६, ६४) ।

पप्फुइ अक [प्र + स्फुट्] १ गिलना । २ फटना । पप्फुइइ (प्राकृ ७४) ।

पप्फुडिअ पु [प्रस्फुटित] नरकावाम-विशेष (देवेन्द्र २६) ।

पप्फुय देखो पप्पुअ, 'बाहपप्फुयच्छो' (सुख २, २६) ।

पप्फुर अक [प्र + स्फुर] १ फरकना, हिलना । २ कपिना । पप्फुरइ (पि १५, ७७, गा ६४७) ।

पप्फुरिअ वि [प्रस्फुरित] फरका हुआ (दे ६, १६) ।

पप्फुइ अक [प्र + स्फुट्] विकसना । वक्तृ पप्फुइइ (रंभा) ।

पप्फुइ वि [प्रस्फुट] विकसित, खिला हुआ (णाय १, १३, उप ४ ११४, पडम ३, ६६, सुर २, ७६, पड ; गा ६३६, ६३६, ६३६) ।

पराहुत्त } वि [पराभूत] अभिभूत, हराया
पराहुअ } हुआ (उप ६४८ टी, पाअ) ।

परि अ [परि] इन अर्थों का सूचक अव्यय—
१ सर्वतोभाव, समंतात्, चारो ओर (गा २२, सूअ १, ६) । २ परिपाटी, क्रम (पिंग) । ३ पुन पुन, फिर फिर (पएह १, १, श्रावक २८४) । ४ सामीप्य, समीपता, (गउड ७७६) । ५ विनिमय, बदला, 'परि-याण' = परिदान (भवि) । ६ अतिशय, विशेष (स ७३४) । ७ सपूर्णता, 'परिट्ठिअ' (पव ६६) । ८ बाहरपन (श्रावक २८४) । ९ ऊपर (हे २, २११, सुपा २६६) । १० शेष, बाकी । ११ पूजा । १२ व्यापकता । १३ उपरम, निवृत्ति । १४ शोक । १५ किसी प्रकार की प्राप्ति । १६ आख्यान । १७ सतोष-भाषण । १८ भूषण, अलकरण । १९ आलिंगन । २० नियम । २१ वर्जन, प्रतिषेध (हे २, २१७, भवि, गउड) । २२ निरर्थक भी इसका प्रयोग होता है (गउड १०, सण) ।

परि देखो पडि = प्रति (ठा ५, १—पत्र ३०२, पएण १६—पत्र ७७४, ७८१) ।

परि स्त्री [दे] गीति, गीत (कुमा) ।

परि सक [क्षिप्] फेंकना । परिइ (पड्) ।

परिअज सक [परि + भञ्ज्] भांगना, तोड़ना । परिअजइ (घात्वा १४३) ।

परिअत सक [श्लिप्] १ आलिंगन करना । २ ससर्ग करना । परिअतइ (हे ४, १६०) ।

परिअत देखो पज्जत (पएह १, ३, पउम ६५, १६, सूअ २, १, १५) ।

परिअतणा स्त्री [परियन्त्रगा] अतिशय यन्त्रणा (नाट—मालती २८) ।

परिअनिअ वि [श्लिष्ट] आलिंगित (कुमा) ।
परिअभिअ वि [परिजृम्भित] विकसित (से २, २०) ।

परिअट्ट अक [परि + वृत्] पलटना, बदलना । वक, 'दिट्ठो अपरिअट्टंतीए सह्या-रच्छायाए एसो' (कुप्र ४५, महा), परियट्ट-माण (महा) ।

परिअट्ट सक [परि + वर्तय्] १ पलटाना, बदलाना । २ आवृत्ति करना, पठित पाठ को

याद करना । ३ फिराना, घुमाना । परियट्टइ, परियट्टेइ (भवि, उव) । हेक, 'परियट्टिउ-माडत्तो नलिणीगुम्म ति अज्झयण' (कुप्र १७३) ।

परिअट्ट सक [परि + अट्] परिभ्रमण करना, घूमना । परिअट्टइ (हे ४, २३०) । संक, परियट्टिवि (अप) (भवि) ।

परिअट्ट पु [दे] रजक, घोड़ी (दे ६, १५) ।

परिअट्ट पु [परिवर्त] १ पलटाव, बदला ।

२ समय का परिणाम-विशेष, अनन्त उत्सर्पिणी और अवसर्पिणी काल (विपा १, १, सुर १६, १४५, पव १६२) ।

परिअट्टग वि [परिवर्तक] परिवर्तन करने-वाला (निच् १०) ।

परिअट्टण न [परिवर्तन] १ पलटाव, बदला करना (पिंड ३२४, वै ६७) । २ द्विगुण, त्रिगुण आदि उपकरण (आचा १, २, १, १) ।

परिअट्टणा स्त्री [परिवर्तना] १ फिर फिर होना (पएह १, १) । २ आवृत्ति, पठित पाठ का आवर्तन (आचा २, १, ४, २, उत्त २६, १, ३०, ३४, औप, ठा ५, ३) । ३ द्विगुण आदि उपकरण (पि २८६) । ४ बदला करना (पिंड ३२५) ।

परिअट्टय वि [पर्यटक] परिभ्रमण करने-वाला, 'मेगगिरिसयपरियट्टय' (कप्प ३६) ।

परिअट्टिअ वि [दे] परिच्छिन्न (दे ६, ६६) ।

परिअट्टविअ वि [दे] परिच्छिन्न (पड्) ।

परिअट्टिय वि [परिवर्तित] बदलाया हुआ (ठा ३, ४, पिंड ३२३, पचा १३, १२) । देखो परिअत्तिअ ।

परिअड सक [परि + अट्] परिभ्रमण करना । परिअडति (श्रावक १३३) । वक, परियडत (सुर २, २) ।

परिअडण न [पर्यटन] परिभ्रमण (स ११४) ।

परिअडि स्त्री [दे] १ वृत्ति, वाड । २ वि. मूर्ख, बेवकूफ (दे ६, ७३) ।

परिअडिअ वि [पर्यटित] परिभ्रान्त, भटका हुआ (सिक्खा १७) ।

परिअडिअ वि [दे] प्रकटित, व्यक्त किया हुआ (पड्) ।

परिअड्ठ अक [परि + वृध्] बढ़ना, 'परिअड्ठइ लायण' (हे ८, २२०) ।

परिअड्ठ सक [परि + वर्धय्] बढ़ाना (हे ४, २२०) ।

परिअडिठ स्त्री [परिवृद्धि] विशेष वृद्धि (प्राक २१) ।

परिअडिठअ वि [परिवर्धिन, °क] बढ़ाने-वाला, 'समणगणवदपरियडिठ' (औप) ।

परिअडिठअ वि [पर्याढ्यक] परिपूर्ण (औप) ।

परिअडिठअ वि [परिकर्षिन, °क] खींचने-वाला, आकर्षक (औप) ।

परिअडिठअ वि [परिकृष्ट] खींचा हुआ, आकृष्ट, 'जस्स समरेसु रेहइ हयगयमयमिलिय-परिमलुगारा । दढपरियडिठियजयसिरिकेस-कलावो व्व खगलया' (सुपा ३१) ।

परिअण पुं [परिजन] १ परिवार, कुटुम्ब, पुत्र-कलत्र आदि पालनीय वर्ग । २ अनुचर, अनुगामी (गा २८३, गउड, पि ३५०) ।

परिअत्त देखो परिअत = श्लिप् । परिअत्तइ (हे ४, १६० टी) ।

परिअत्त देखो परिअट्ट = परि + वृत् । परि-यत्तइ (भवि), 'नडुव्व परिअत्तए जीवो' (वै ६०), परियत्तए (उवा) । वक, परिय-त्तमाण (महा) ।

परिअत्त देखो परिअट्ट = परि + वर्तय् । संक, परियत्तेउ (तदु ३८) ।

परिअत्त देखो परिअट्ट = परिवर्त (औप) ।

परिअत्त वि [दे] प्रसूत, फैला हुआ, 'सव्वा-सणखिसंभवहो करपरिअत्ता ताव' (हे ४, ३६५) ।

परिअत्त वि [परिवृत्त] पलटा हुआ (भवि) ।

परिअत्तण देखो परिअट्टण (गउड) ।

'चाइयणकरपरंपरपरियत्तणखेयवसपरिस्सता । अत्था किविणघरत्था सुत्थावत्था सुयति व्व' (सुपा ६३३) ।

परिअत्तणा देखो परिअट्टणा (राज) ।

परिअत्तमाण देखो परिअत्त ।

परिअत्तमाणी स्त्री [परिवर्तमाना] कर्म-प्रकृति-विशेष, वह कर्म-प्रकृति जो अन्य प्रकृति

पभसण व [प्रभ्रंशत] स्वलना (धर्मस १०७६)।

पभक्त पु [प्रभक्तान्त] १—२ विद्युत्कुमार देवो के हरिकान्त और हरिस्सह नामक दोनों इन्द्रो के लोकपालो के नाम (ठा ४, १—पत्र १६७, इक)।

पभण सक [प्र + भण] कहना, बोलना। पभणइ (महा, सण)।

पभणिय वि [प्रभणित] उक्त, कथित (मण)।

पभम सक [प्र + भ्रम्] भ्रमण करना, भटकना। पभमेसि (श्रु १५३)।

पभव अक [प्र + भू] १ समय होना, पहुँचना। २ होना, उत्पन्न होना। पभवइ (पि ४७५)। वहु पभवंत (सुपा ८६, नोट—विक्र ४५)।

पभव पु [प्रभव] १ उत्पत्ति, जन्म, प्रसूति, प्रसव (ठा ६, वसु)। २ प्रथम उत्पत्ति का कारण (णदि)। ३ एक जैनमुनि, जम्बु-स्वामी का शिष्य (कप्प, वसु, णदि)।

पभवां वी [प्रभया] तृतीय वासुदेव की पटरानी (पउम २०, १८६)।

पभविश वि [प्रभूत] जो समय हुआ हो, 'सा विज्जा सिद्धमुए उदग्गपुसम्मि पभविया नेव' (धर्मवि १२३)।

पभा वी [प्रभा] १ कान्ति, तेज (महा, धर्मस १३३३)। २ प्रभाव, 'निच्छुज्जोया रम्मा, सयंपभा ते विरायति' (देवेन्द्र ३२०)।

पभाइअ पुंन [प्रभात] १ प्रातःकाल, मुबह पभाय (पउम ७०, ५६; सुर ३, ६६, महा, सं २४४)। २ वि प्रकाशित, खणीए पभायाए (उप ६४८ टी)। 'तणय वि [सवन्धिन्] प्रामात्तिक, प्रमात-सम्बन्धी, मुबह का (सुर ३, २४८)।

पभार पुंन [प्रभार] प्रकट भार (सम १५३)।

पभाव देखो पहाव = प्र + भाव्य। पभावेइ, पभावति (उव, पव १४८)। वहु पभावित (सुपा ३७६)।

पभाव देखो पहाव—प्रभाव (स्वप्न ६८)।

पभावई वी [प्रभावती] १ उन्नोसवे-जिन-देव की माता का नाम (सम १५१)। २ रावण की एक पत्नी का नाम (पउम-७४,

११)। ३ उदायन राजपि की पटरानी और चेढा नरेश की पुत्री का नाम (पदि)। ४ वलदेव के पुत्र निषव की भार्या (आचू १)। ५ राजा वल की पत्नी (भग ११, ११)।

पभावग वि [प्रभावक] प्रभाव बढ़ानेवाला, शोभा की वृद्धि करनेवाला (आ ६, द्र २३)।

२ उत्पत्ति-कारक। ३ गौरव जनक (कुप्र १६८)।

पभावण न [प्रभावन] नीचे देखो (श्रु-९)।

पभावणां वी [प्रभावंना] १ महात्म्य, गौरव। २ प्रसिद्धि, प्रख्याति (णाय १, १६—पत्र १२२, आ ६, महा)।

पभावय वि [प्रभावक] गौरव बढ़ानेवाला (सवोध ३१)।

पभावाल पुंन [प्रभावाल] वृत्त-विशेष (राज)।

पभावित देखो पभाव = प्र + भाव्य।

पभास सक [प्र + भाए] बोलना, मापण करना। पभासति (विसे-४६६ टी)। वहु पभासत, पभासयत, पभासमाण (उप-पृ २३, पउम ५५, १८, ८६, १०)।

पभास अक [प्र + भास] प्रकाशित होना। पभासति (सुज १६)। भूका—पभासिसु (भग, सुज १६)। भवि. पभासिस्सति (सुज १६)। वहु. पभासमाण (कप्प)।

पभास सक [प्र + भासय] प्रकाशित करना। प्रभासेइ (भग)। पभासति (सुज ३—पत्र ६४)। वहु पभासयत, पभासे-माण (पउम १०८, ३३, खण ७५, कप्प, उवा, औप, भग)।

पभास पु [प्रभास] १ भगवान् महावीर के एक गणधर का नाम (सम १६, कप्प)। २ एक विकटापातो पर्वत का अधिष्ठाता देव (ठा २, ३—पत्र ६६)। ३ एक जैन मुनि का नाम (धर्म ३)। ४ एक चित्रकार का नाम (धम्म ३१ टी)। ५ न. तीर्थ-विशेष (जं ३, महा)। ६ देव-विमान-विशेष (सम १३, ४१)। 'तित्थ न [तीर्थ] तीर्थ-विशेष, भारतवर्ष की पश्चिम दिशा में स्थित एक तीर्थ (इक)।

पभासा वी [प्रभासा] अहिंसा, दया (पण्ह २, १)।

पभासिय वि [प्रभावित] उक्त, कथित (सुम १, १, १, १६)।

पभासेमाण देखो पभास = प्र + भासय।

पभिइ देखो पभिइ (द्र ५५)।

पभिइ विव. [प्रभृति] इत्यादि, वगैरह (भग, उवा, महा)।

पभिइ अ [प्रभृति] प्रारम्भ कर, (वहा पभिई से) शुरू कर, लेकर, 'वालभावाओ पभिइ' (सुर ४, १६७, कप्प, पभीइ महा, स ७३६, २७५ टि)।

पभीय वि [प्रभीत] अति भीत, अत्यन्त डरा हुआ (उत्त ५, ११)।

पभु पुंन [प्रभु] १ इक्ष्वाकु वंश के एक राजा का नाम (पउम ५, ७)। २ स्वामी, मालिक (पउम ६३, २६, बृह २)। ३ राजा, नृप, 'पभू राया अणुप्पभू जुवराया' (निचू २)।

४. वि. समय, शक्तिमान् (आ २७, भग १५, उवा, ठा ४, ४)। ५ योग्य, लायक, 'पभुत्ति वा जोग्गोत्ति वा एण्ढा' (निचू २०)।

पभुज सक [प्र + भुज] भोग करना। पभुजेदि (शौ) (द्रव्य ६)।

पभुत्ति (पै) देखो पभिइ (कुमा)।

पभुत्त वि [प्रभुत्त] १ जिसने खाने का प्रारम्भ किया हो वह (सुर १०, ५८)। २ जिसने भोजन किया हो वह (स १०४)।

पभुइ देखो पभिइ (पउम ६, ७६, स पभुइ २७५)।

पभूय वि [प्रभूत] प्रचुर, बहुत (भग, पउम ५, ५; णाय १, १, सुर ३, ८१, महा)।

पभोय (अप) देखो उवभोग, 'भोय-पभोयमाण ज किब्बह' (मवि)।

पमइल वि [प्रमलित] अति मलिन (णाय १, १)।

पमक्खण न [प्रमक्ष्ण] १ अभ्यञ्जन, विलेपन। २ विवाह के समय किया जाता एक तरह का उवटन (स ७४)।

पमक्खिअ वि [प्रमक्षित] १ विलिप्त। २ विवाह के समय जिसको उवटन किया गया हो वह (वसु, सम ७५)।

पमज्ज सक [प्र + मृज्, मार्ज] मार्जन करना, साफ-सुथरा करना, भाइ आदि से घुलि वगैरह को दूर करना। पमज्जइ (उव,

परिणामी' (विसे ६२३, सुर १३, १२४),
'तेवि पयट्टा काउ सरीरपरिक्रमण एव'
(कुप्र २७१, कप्प, उअ) । २ सस्कार का
कारण-भूत शास्त्र (णादि) । ३ गणित-
विशेष । ४ सख्यान विशेष एउ तरह की
गणना (ठा १०—पत्र ४६६) । ५ निष्पादन
(पव १३३) ।

परिक्रमणा स्त्री ऊपर देखो, 'तत्तमल्लव
निच्च न तत्स परिक्रमणा नय विणासो'
(विसे ६२४, सम्म ५४, सवोध ५३,
उपप ३४) ।

परिक्रमिय वि [परिक्रमित] परिक्रम-
विशिष्ट, संस्कारित (कप्प) ।

परिकर देखो परिअर = परिकर (पिंग) ।

परिकलण न [परिकलन] उपभोग, 'भमर-
परिकलणखमकमलभूसियसरो' (सुपा ३) ।

परिकलित वि [परिकलित] १ युक्त, सहित
(सिरि ३८१) । २ व्याप्त (मम्मत्त २१५) ।

३ प्राप्त, 'अजलिपरिकलियजलं व गलइ इह
जोय' (धर्मवि २५) ।

परिकवलणा स्त्री [परिकवलना] भक्षणा,
हरियपरिकवलणापुट्टगोसकुला' (सुपा ३) ।

परिकविल वि [परिकविल] सर्वतोभावे से
कविल वणवाला (गडड) ।

परिकविस वि [परिकविश] अतिशय कपिश
रंगवाला (गडड) ।

परिकसण न [परिक^रण] स्त्रीचाव (गडड) ।

परिकह सक [परि + कथय्] प्ररूपण
करना, कहना । परिकहेइ (उवा), परिकहनु
(कम्म ६, ७५) । कर्म परिकहिज्जइ (पि
५४३) । हेइ परिकहेइ (श्रीप) ।

परिकहण न [परिकवन] आख्यात, प्ररूपण
(सुपा २) ।

परिकहणा स्त्री [परिकथना] ऊपर देखो
(आवम) ।

परिकहा स्त्री [परिकथा] १ वाचनी । २
वर्णन (पिड १२६) ।

परिकहिय वि [परिकथित] प्ररूपित,
आख्यात (महा) ।

परिकिण्ण देखो परिकिन्न, 'वेडियाचककवाल-
परिकिण्णा' (उवा) ।

परिकित्तिअ वि [परिकीर्त्तित] व्यावर्णित,
श्लाघित (थु ११०) ।

परिकिन्न वि [परिकीर्ण] १ परिवृत, वेष्टित,
'नियपरियणपरिनिन्नो' (धर्मवि ७४) । २
व्याप्त (गुर १, ५६) ।

परिकिलन वि [परिक्रान्त] विशेष छिन्न
(उप २६४ टी) ।

परिकिलेम सक [परि + क्लेशय्] दुःखी
करना, हैरान करना । परिकिलेसंति (भग) ।
सक परिकिलेमिन्ता (भग) ।

परिकिलेम पु [परिक्लेश] दुःख, याचा,
हैरानी (सूअ २, २, ७५, श्रीप, ग ६७७,
धर्मम १००४) ।

परिकीलिर वि [परिकीर्णित] अतिशय गीउ
करनेवाला (महा) ।

परिकुठिय वि [परिकुण्ठित] जलीन
(विसे १८३) ।

परिकुटिल वि [परिकुटिल] विशेष वक्र
(सुर १, १) ।

परिकुट्ट वि [परिकुट्ट] अत्यन्त गुपित
(धर्मवि १२४) ।

परिकुविय वि [परिकुपित] अतिशय क्रुद्ध
(णाया १, ८, उअ, सण) ।

परिकोमल वि [परिकोमल] नवया कोमल
(गडड) ।

परिकत वि [पराक्रान्त] पराक्रम-युक्त (सूअ
१, ३, ४, १५) ।

परिक्रम सक [परि + क्रम्] १ पाव से
चलना । २ समीप से जाना । ३ पराभव
करना । ४ अक्र पराक्रम करना । परिक्रमदि
(रक्मि ४६) । परिषमसि (रक्मि ५७) ।
परिषमेव (शौ) (पि ४८१) । वक्र परिक्रमत
(नाट) । कृ परिक्रमियव्व (णाया १,
५—पत्र १०३) । सक परिक्रम्म (सूअ १,
४, १, २) ।

परिक्रम देखो परिक्रम = पराक्रम (णाया १,
१, सण, उअ १८, २४) ।

परिक्रहिअ देखो परिकहिय (सुपा २०८) ।

परिक्राम देखो परिक्रम = परि + क्रम् ।
परिक्रामदि (पि ४८१, वि ८७) ।

परिक्रव सक [परि + ईक्ष] परखना,
परीक्षा करना । परिक्रवइ, परिक्रवण, परिक्रवति,

परिक्रवउ (भवि, महा, वज्जा १५८, स
४७७) । वक्र, परिक्रवत, परिक्रमाण
(श्रोत्र ८० ना, आ १४) । सक, परिक्रमय
(उअ) । कृ, परिक्रमयव्व (कान) ।

परिक्रयअ वि [परीक्षक] परीक्षा करनेवाला
(सुपा ४२७, आ १४) ।

परिक्रवअ वि [परिक्रवत] घावत, जिसको
घाव हुआ हो वह (मे ८, ७३) ।

परिक्रयअ पु [परिक्रय] १ क्रमशः हानि,
'बहुनपक्कनदग्ग जोएटापरिक्रवथो विम'
(चाह ८) । २ क्षय, नाश (गडड) ।

परिक्रयण न [परीक्षण] परीक्षा (स ४६६,
कप्प, सुपा ४४६, णाया १, ७ भवि) ।

परिक्रयणा स्त्री [परीक्षणा] परीक्षा (पट्टम
६१, ३३) ।

परिक्रयमाण देतो परिक्रम ।

परिक्रवल अक्र [परि + स्खल्] स्वलित
होना । वक्र, परिक्रवलत (से ४, १७) ।

परिक्रवलित वि [परिस्खलित] स्वलना-
प्राप्त (पि ३०६) ।

परिक्रवा स्त्री [परीक्षा] परा, जाव (नाट—
मालवि २२) ।

परिक्रवाडअ वि [दे] परिक्रीण (पड्) ।

परिक्रवाम वि [परिश्राम] अतिशय कृश
(उत्तर ७२, नाट—रत्ना ३) ।

परिक्रव वि [परिक्रवण] परखनेवाला,
परीक्षक (आ १४) ।

परिक्रवत्त वि [परिक्रवत्त] १ वेष्टित, घेरा
हुआ (श्रीप, पाअ, मे १, ५२, वसु) । २ नवया
क्षिप्त (आवम) । ३ चारो घोर से व्याप्त
(राय) ।

परिक्रवित वि [परीक्षित] जिसकी परीक्षा
की गई हो वह (प्रासु १५) ।

परिक्रवित सक [परि + क्षिप्] १ वेष्टन
करना । २ तिरस्कार करना । ३ व्याप्त
करना । ४ फेंकना, 'एयं खु जरामरणं
परिक्रवितइ वग्गुरा व मयज्जह' (तदु ३३,
जीवम १८६) । कर्म परिक्रवितवामो (पि
३१६) ।

परिक्रवित वि [परिक्रवित] फेंका हुआ
(हम्मोर ३२) ।

परिक्रवित वि [परिक्रवित] फेंका हुआ
(हम्मोर ३२) ।

परिक्रवेव वि [परिक्रवेव] घेरा, परिवि (भग,
सम ५६, कस, श्रीप) ।

पमिल्ल अक [प्र + मील] विशेष संकोच करना, सकुचना । पमिल्लइ (हे ४, २३२, प्राप्र) ।

पमीय° देयो पसा = प्र + मा ।

पमील देवो पमिल्ल । पमीलइ (हे ४, २३२) ।

पमुइअ वि [प्रमुदित] हर्ष-प्राप्त, हर्षित (औप, जीव ३) ।

पमुच सक [प्र + मुच्] छोड़ना, परित्याग करना । पमुचति (उव) । कर्म पमुच्चइ (पि ५४२) । भवि. पमोक्खसि (आचा) । वक्र. पमुंचमाण (राज) ।

पमुक्क वि [प्रमुक्त] परित्यक्त (हे २, ६७, पड्) ।

°पमुक्ख देखो °पमुह (मुपा १०, गु ११, जी १०) ।

पमुच्छिय पुं [प्रमुच्छित] नरकावाप्त-विशेष (देवेन्द्र २७) ।

पमुत्त देखो पमुत्त (पि ५६६) ।

पमुदिय देखो पमुइअ (सुर ३, २०) ।

पमुद वि [प्रमुग्ध] अत्यन्त मुग्ध (नाट—मालती ४४) ।

पमुह वि [प्रमुह] १ तल्लो न दृष्टिवाला, 'एणप्पमुहे' (आचा) । २ पुं. ग्रह-विशेष, ज्योतिष्क देव-विशेष (ठा २, ३) । ३ न प्रकृष्ट आरम्भ, आदि, आपात, 'किपागफल-सरिच्चो भोगा पमुहे हवति पुणमहुअ' (पठम १०८, ३१, पाप्र) ।

°पमुह वि व [°प्रमुख] १ वगैरह, आदि । २ प्रधान, श्रेष्ठ, मुख्य (औप, प्रासू १६६) ।

पमुहर वि [प्रमुहर] वाचाल, वकवादी (उत्त १७, ११) ।

पमेइल वि [प्रमेदस्विन्] जिसके शरीर में चर्बी बहुत हो वह, 'धुले पमेइले वज्जे पाइमेत्ति य नो वर्ण' (दस ७, २२) ।

पमेय वि [प्रमेय] प्रमाण-विषय, सत्य-पदार्थ (धर्मस ११६०) ।

पमेह पुं [प्रमेह] रोग-विशेष, मेह रोग, मूत्र-दोष, बहुपूरता (निच्च १) ।

पमोअ पुं [प्रमोद] १ आनन्द, खुशी, हर्ष (सुर १, ७८, महा, एदि) । २ राक्षस-वंश के एक राजा का नाम, एक लंका-पति (पठम ५, २६३) ।

पमोक्ख° देखो पमुंच ।

पमोक्ख पुन [प्रमोक्ष] १ मुक्ति, निर्वाण (सूय १, १०, १२) । २ प्रत्युत्तर, जवाब, 'नो सचाएइ किंचिवि पमोक्खमक्खाइउं' (भग) ।

पमोक्खण न [प्रमोचन] परित्याग, 'कठा-कंठिय अवासाय वाहपमोक्खण करेइ' (रागा १, २—पत्र ८८) ।

पमोयणा स्त्री [प्रमोदना] प्रमोदन, प्रमोद, आह्लाद, आनंद (चेइय ४११) ।

पम्मलाअ अक [प्र + म्लै] अधिक म्लान होना । पम्मलाअदि (शौ), (पि १३६, नाट—मालती ५३) ।

पम्माअ १ वि [प्रम्लान] १ विशेष म्लान, पम्माअअ २ अत्यन्त मुरझाया हुआ, 'पम्माअ-मिरोमाई व । जह से जायाइ अगाइ' (गा ५६, गा ५६ टि) । २ शुष्क, 'वसहा य जायथामा, गामा पम्मायविकखल्ला' (धर्मवि ५३) ।

पम्माण वि [प्रम्लान] १ निस्तेज, मुरझाया हुआ । २ न. फीकापन, मुरझाना, 'पम्हा (? म्मा) एणएणजिगो' (अणु १३६) ।

पम्मि पु [दे] पाणि, हाथ, कर (पड्) ।

पम्मुक्क देखो पमुक्क (हे २, ६७, पड्, कुमा) ।

पम्मुह वि [प्राइमुख] पूर्वं की ओर जिसका मुंह हो वह (भवि, वज्जा १६४) ।

पम्ह पुन [पटमन्] १ अक्षि-लोम, वरवनी, आंख के बाल (पाप्र) । ३ पद्म आदि का केसर, किजल्क (उवा, भग, विपा १, १) ।

३ सूत्र आदि का अत्यल्प भाग । ४ पल, पाँच (हे २, ७४, प्राप्र) । ५ केश का अग्र-भाग (से ६, २०) । ६ अग्र-भाग, 'यग्रणहु-आसणपइत्तपत्तणपम्ह' (से १५, ७३) ।

७ महाविदेह वर्ष का एक विजय—प्रदेश (ठा २, ३, इक) । ८ न. एक देव-विमान (सम १५) । °कन न [°कान्त] एक देव-विमान का नाम (सम १५) । °कूड पुं [°कूट] १ पर्वत-विशेष (राज) । २ न

ब्रह्मलोक नामक देवलोक का एक देव-विमान (सम १५) । ३ पर्वत-विशेष का एक शिखर (ठा २, ३, ६) । °ज्झय न [°ध्वज]

देव-विमान-विशेष (सम १५) । °प्पभ न [°प्रभ] ब्रह्मलोक का एक देवविमान (नम १५) । °लेस, °लेस्स न [°लेस्य] ब्रह्मलोक-स्थित एक देव-विमान (सम १५, राज) । °वण्ण न [°वर्ण] वही पूर्वोक्त अर्थ (सम १५) । °सिंग न [°शृङ्ग] वही अर्थ (सम १५) । °सिट्ठ न [°सृष्ट] वही पूर्वोक्त अर्थ (सम १५) । °वत्त न [°वर्त्त] वही अर्थ (सम १५) ।

पम्ह देखो पटम (पएह १, ४—पत्र ६७; ७८, जीव ३) । °गव वि [°गन्ध] १ कमल की गन्ध । २ वि कमल के समान गन्धवाना (नग ६, ७) । °लेस वि [°लेस्य] पद्मा नामक लेशवाला (भग) । °लेसा स्त्री [°लेश्या] लेश्या-विशेष, पाँचवी लेश्या, आत्मा का शुभतर परिणाम-विशेष (ठा ३, १, सम ११) । °लेस्स देखो °लेस (पएण १७—पत्र ५११) ।

पम्हअ सक [प्र + स्मृ] भूल जाना, विस्मरण होना । पम्हअइ (प्राक ६१) ।

पम्हगावई स्त्री [पद्मकावती] महाविदेह वर्ष का एक विजय, प्रदेश-विशेष (ठा २, ३, इक) ।

पम्हट्ट वि [प्रस्मृत्] १ विस्मृत (मे ४, ४२) । २ जिसको विस्मरण हुआ हो वह, 'कि पम्हट्ट म्हि अह तुइ चलणुप्पएणतिवह-आपडिजएण' (मे ६, १२) ।

पम्हट्ट वि [दे] १ प्रभ्रष्ट, विरुप्त (मे ४, ४२) । २ फँका हुआ, प्रक्षिप्त, 'पम्हट्ट' वा परिदृष्टि वि ति वा एणट्ट' (वव १) ।

पम्हय वि [पटमन्] १ पद्म से उत्पन्न । २ न एक प्रकार का सूता (पंचमा) ।

पम्हर पुं [दे] आमृत्तु, अकाल-मरण (दे ६, ३) ।

पम्हल वि [पटमल] पद्म युक्त, मुदर अक्षि-लोमवाला (हे २, ७४, कुमा, पड्, औप, गड्ड, मुर ३, १३६, पाप्र) ।

पम्हल पु [दे] किजल्क, पद्म आदि का केसर (दे ६, १३, पड्) ।

पम्हलिय वि [दे पद्मलित] धवलित, सफेद किया हुआ, 'लायएणजेन्हापवाहपम्ह-लियचउद्दिसानोभो' (स ३६) ।

परिघट्ट सक [परि + घट्ट] आघात करना ।
 कवक. परिघट्टिज्जंत (महा) ।
 परिघट्टण न [परिघट्टन] आघात (वजा ३८) ।
 परिघट्टण न [परिघट्टन] निर्माण, रचना (निबू १) ।
 परिघट्टिय वि [परिघट्टित] आहत, ताडित (जीव ३) ।
 परिघट्ट वि [परिघट्ट] १ जिसका घर्षण किया गया हो वह, घिसा हुआ, 'मंदरयडपरि-घट्ट' (हे २, १७४) ।
 परिघाय देखो परीघाय (राज) ।
 परिघास सक [परि + घासय्] जिमाना, भोजन कराना । हेकू परिघासेउ (आचा) ।
 परिघासिय वि [परिघासित] परिघर्ष युक्त, 'रयसा वा परिघासियपुन्वे भवति' (आचा २, १, ३, ५) ।
 परिघुम्मिर वि [परिघूर्णित्] शनै शनै कौपता हिलता, डोलता (पठम ८, २८३, गा १४८) ।
 परिघेतव्व
 परिघेतव्व
 परिघेतु
 परिघेतुण } देखो परिगेण्ह ।
 परिघोल सक [परि + घूर्ण्] १ डोलना ।
 २ परिभ्रमण करना । वकू परिघोलंत, परिघोलेमाण (से १, ३३, औप, णाया १, ४—पत्र ६७) ।
 परिघोलण न [दे. परिघोलन] विचार (ठा ४, ४—पत्र २८३) ।
 परिघोलि वि [परिघूर्णित्] डोलनेवाला (गउड) ।
 परिचअ देखो परियय = परिचय (नाट—शकु ७७) ।
 परिचअ देखो परिच्चअ । मंकू परिचइऊण, परिचइय (महा) ।
 परिचचल वि [परिचच्चल] अतिशय चपल (वे १४) ।
 परिचत्त देखो परिच्चत्त (महा, औप) ।
 परिचरणा स्त्री [परिचरणा] सेवा, भक्ति (सुपा १५६) ।

परिचल सक [परि + चल्] विशेष चलना ।
 परिचलइ (पिंग) ।
 परिचलिअ वि [परिचलित] विशेष चला हुआ (दे ५, ६) ।
 परिचारअ वि [परिचारक] सेवा करनेवाला, सेवक (नाट—मालवि ६) । स्त्री 'रिआ (नाट) ।
 परिचारणा स्त्री [परिचारणा] मैथुन प्रवृत्ति (ठा ५, १) ।
 परिचित सक [परि + चिन्तय्] चिन्तन करना, विचार करना । परिचितइ, परिचितेइ (सण, उव) । कर्म परिचितियइ (अप) (सण) ।
 वकू परिचितत, परिचितयत (सण, पउम ६६, ४) ।
 परिचितिय वि [परिचिन्तित] जिसका चिन्तन किया गया हो वह (सण) ।
 परिचितिर वि [परिचिन्तयित्] चिन्तन करनेवाला (सण) ।
 परिचिट्ट अक [परि + स्था] रहना, स्थिति करना । परिचिट्टइ (सण) ।
 परिचिय वि [परिचित] ज्ञात, जाना हुआ, चिन्हा हुआ, पहिचाना हुआ (औप) ।
 परिचुव देखो परिउव । परिचुविज्जमाण (औप) । सकू परिचुंविअ (अभि १५०) ।
 परिचुंवण देखो परिउंवण (पठम १६, ७६) ।
 परिचुगिय वि [परिचुम्भित] जिसका चुम्बन किया गया हो वह, 'परिचुगियनहगं' (उप ५६७ टी) ।
 परिच्चअ सक [परि + त्यज्] परित्याग करना, छोड़ देना । परिच्चयइ, परिच्चअह (महा, अभि १७७) । वकू परिच्चअत (अभि १३७) । सकू परिच्चइअ, परिच्चज्ज, परिच्चइऊण (पि ५६०, उत्त ३५, २, राज) । हेकू परिच्चइत्तए, परिच्चत्तुं (उवा, नाट) ।
 परिच्चत्त वि [परित्यक्त] जिसका परित्याग किया गया हो वह (से ८, २०, सुर २, १२०, सुपा ४१८, नाट—शकु १३२) ।
 परिच्चयण न [परित्यजन] परित्याग (स ३३) ।
 परिच्चाइ वि [परित्यागिन्] परित्याग करने-वाला (औप, अभि १४०) ।

परिच्चाग पुं [परित्याग] त्याग, मोचन
 परिच्चाय } (पंचा ११, १४, उप ७६२, औप, भग) ।
 परिच्चाय वि [परित्याज्य] त्याग करने लायक, 'अरणोवि अमुहजोगा सोहिपयाणे परिच्चाया' (सवोच ५४) ।
 परिच्चिअ वि [दे.] उत्क्षिप्त, ऊपर फेंका हुआ (पड्) ।
 परिच्चिअ देखो परिचिय (उप १४२ टी) ।
 परिच्छ देखो परिक्ख, 'मणवयणकाययुतो सज्जो मरण परिच्छिज्जा' (पच्च ६८, पिड ३०), परिच्छति (पिड ३१) ।
 परिच्छग वि [परीक्षक] परीक्षा-कर्ता (धम्मस ५१६) ।
 परिच्छण्ण } वि [परिच्छन्न] १ आच्छादित,
 परिच्छन्न } ढका हुआ (महा) । २ परिच्छद-युक्त, परिवार-सहित (वव ४) ।
 परिच्छय वि [परीक्षक] परीक्षा करनेवाला (सम्म १५६) ।
 परिच्छा स्त्री [परीक्षा] परख, जांच, आजमाइश (ओघ ३१ भा, विसे ८४८, उप पु १०८) ।
 परिच्छिअ देखो परिक्खिय (आ १६) ।
 परिच्छिद सक [परि + छिद्] १ निश्चय करना, निर्णय करना । २ काटना, काट डालना । परिच्छिदइ (धम्मसं ३७१) । सकू, 'परिच्छिदिय वाहिरग च साय निक्कम्मदसी इह मच्चिएहि' (आचा—टि, पि ५०६, ५६१) ।
 परिच्छिण्ण वि [परिच्छिन्न] १ काटा हुआ, 'नय सुहतएहा परिच्छिण्णा' (पच्च ६५) । २ निर्णीत, निश्चित (आव ४) ।
 परिच्छित्ति स्त्री [परिच्छित्ति] १ परिच्छद, निर्णय । २ परीक्षा, जांच (उप ८६५) ।
 परिच्छिन्न देखो परिच्छिण्ण (स ५६६, सम्मत्त १४२) ।
 परिच्छूढ वि [दे. परिक्षिप्त] १ उत्क्षिप्त, फेंका हुआ (दे ६, २५, नमि ६) । २ परि-त्यक्त (से १३, १७) ।
 परिच्छेअ पुं [परिच्छेद] निर्णय, निश्चय (विसे २२४४, स ६६७) ।
 परिच्छेअ वि [दे. परिच्छेक] लघु, छोटा (औप) ।

पर्यपण न [प्रजल्पन] कथन, उक्ति (उप
पृ २१७) ।

पर्यपिय वि [प्रकम्पित] अति काँपा हुआ
(स ३७७) ।

पर्यपिय वि [प्रजल्पित] १ कथित, उक्त ।
२ न. कथन, उक्ति । ३ वक्ता, व्यर्थ
जल्पन (विपा १, ७) ।

पर्यपिर वि [प्रजल्पितृ] १ बोलनेवाला ।
२ वाचाट, वक्ता (सुर १६, ५८, सुपा
४१५, आ २७) ।

पर्यस सक [प्र + दर्शय] दिखलाना ।
पर्यसेति (विसे ६३२) ।

पर्यसण न [प्रदर्शन] दिखलाना (स ६१३) ।

पर्यसिअ वि [प्रदर्शित] दिखलाया हुआ
(सुर १, १०१, १२, ३२) ।

पर्यक देखो पाइक () ।

पर्यक्ख सक [प्रत्या + ख्या] प्रत्याख्यान
करना, प्रतिज्ञा करना । पर्यक्खे (विचार
७५५) ।

पर्यक्खण देखो पदक्खण = प्रदक्षिण (गाथा
१, १६) ।

पर्यक्खण देखो पदक्खण = प्रदक्षिण्य ।
सक, पर्यक्खणिऊण (सुर ८, १०५) ।

पर्यक्खणा देखो पदक्खणा (उप १४२ टी;
सुर १४ ३०) ।

पर्यग देखो पर्यय = पतंग, पदक, पदग (राज,
पव १६४) ।

पर्यच्छ सक [प्र + यम्] देना, अर्पण
करना । पर्यच्छ (महा) । सक पर्यच्छिऊण
(राज) ।

पर्यच्छण न [प्रदान] १ दान, अर्पण (सुर
२, १५१) । २ वि. देनेवाला (सण) ।

पर्यट्ठ सक [प्र + वृत्] प्रवृत्ति करना ।

पर्यट्ठ (हे २, ३०, ४, ३४७, महा) । क.

पर्यट्ठिअव्व (सुपा १२६) । प्रयो पर्यट्ठवेह
(स २२) सक पर्यट्ठाविडं (स ७१५) ।

पर्यट्ठ वि [प्रवृत्त] १ जिसने प्रवृत्ति की हो
वह (हे २, २६, महा) । २ चलित, 'पर्यट्ठय
चलिय' (पाग) ।

पर्यट्ठय वि [प्रवर्त्तक] प्रवृत्ति करनेवाला
(पणह १, १) ।

पर्यट्ठावअ वि [प्रवर्त्तक] प्रवृत्ति करानेवाला
(कप्प) ।

पर्यट्ठाविअ वि [प्रवर्त्तित] प्रवृत्त किया हुआ,
किसी कार्य में लगाया हुआ (महा) ।

पर्यट्ठिअ वि [दे. प्रवर्त्तित] ऊपर देखो (दे
६, २६) ।

पर्यट्ठिअ वि [प्रवृत्त] प्रवृत्ति-युक्त (उत्त ४,
२, सुख ४, २) ।

पर्यट्ठाण देखो पइट्ठाण (काल, पि २२०) ।

पर्यड सक [प्र + कटय] प्रकट करना,
व्यक्त करना । पर्यड्ड, पर्यडेइ (मण, महा) ।
वह पर्यड्डत (सुपा १, गा ४०६, भवि) ।
हेह पर्यड्डित्तु (पि ५७७) । प्रयो. पर्यडा-
वड्ड (भवि) ।

पर्यड वि [प्रकट] १ व्यक्त, खुला (कुमा,
महा) । २ विख्यात, विस्तृत, प्रसिद्ध,
'विक्रान्तो विस्तुमो पर्यडो' (पाग) ।

पर्यडण न [प्रकटन] १ व्यक्त करना, खुला
करना (सण) । २ वि. प्रकट करनेवाला, 'जे
तुज्झ गुणा बहुनेहपयडणा' (धर्मवि ६६) ।

पर्यडावण न [प्रकटन] प्रकट कराना (भवि) ।

पर्यडाविय वि [प्रकटित] प्रकट कराया हुआ
(काल, भवि) ।

पर्यडि देखो पगइ (पण २३, पि २१६) ।

पर्यडि स्त्री [दे] मार्ग, रास्ता, 'जे पुण
सम्महिट्ठी तेसि मणो चडणपयडोए' (सट्ठि
१४२) ।

पर्यडिय वि [प्रकटित] प्रकट किया हुआ
(सुर ३, ४८, आ २) ।

पर्यडिय वि [प्रपत्तित] गिरा हुआ (गाथा
१, ८—पत्र १३३) ।

पर्यडोकर वि [प्रकटीकृत] प्रकट किया
हुआ (महा) ।

पर्यडोकर सक [प्रकटी + कृ] प्रकट करना ।
प्रयो. पर्यडोकरावेमि (महा) ।

पर्यडोभूअ } वि [प्रकटीभूत] जो प्रकट
पर्यडोहूअ } हुआ हो (सुर ६, १८४, आ
१६, महा; सण) ।

पर्यड्ढणी स्त्री [दे] १ प्रतिहारी । २ आकृष्ट,
आकर्षण । ३ महिषी (दे ६, ७२) ।

पर्यण देखो पवण (गा ७७७) ।

पर्यण देखो पडण (विसे १५६) ।

पर्यण } न [पचन, °क] १ पाक, पकाना
पर्यणग } (श्रीप, कुमा) । २ पात्र-विशेष,
पकाने का पात्र (सूर्यानि ८०, जीव ३) ।

°साला स्त्री [°शाला] एक-स्थान (बृह २) ।

पर्यणु } वि [प्रतनु] १ कृश, पतला । २
पर्यणुअ } सूक्ष्म, वारीक । अल्प, थोड़ा (स
२४६, सुर ८, १६५, भग ३, ४, जं २;
पठम ३०, ६६, से ११, ५६, गा ६८२,
गउड) ।

पर्यणय देखो पडणग (तंदु १) ।

पर्यत्त सक [प्र + यत्] प्रयत्न करना ।
पर्यत्तघ (शौ) (पि ४७१) ।

पर्यत्त देखो पर्यट्ठ = प्र + वृत् (काल) ।

पर्यत्त पुं [प्रयत्न] चेष्टा, उद्यम, उद्योग (सुपा,
उव, सुर १, ६, २, १८२, ४, ८१) ।

पर्यत्त वि [प्रदत्त, प्रत्त] १ दिया हुआ
(भग) । २ अनुज्ञात, संमत (अनु ३) ।

पर्यत्त देखो पर्यट्ठ = प्रवृत्त (सुर २, १५६,
३, २४८, से ३, २४, ८, ३, गा ४३६) ।

पर्यत्ताविअ वि [प्रवर्त्तित] प्रवृत्त किया हुआ
(काल) ।

पर्यत्थ पु [पदार्थ] - १ शब्द का प्रतिपाद्य,
पद का अर्थ (विसे १००३, लेइअ २७१) ।
२ तत्त्व (सम १०६, सुपा २०५) । ३ वस्तु,
चीज (पाग) ।

पर्यन्न देखो पइण्ण = प्रकीर्ण (भवि) ।

पर्यन्ना देखो पइण्णा (उप १४२ टी) ।

पर्यप्पण न [प्रकल्पन] कल्पना, विचार
(धर्मस ३०७) ।

पर्यय देखो पायय = प्राकृत (हे १, ६७,
गउड) ।

पर्यय वि [प्रयन] प्रयत्न शील, सतत प्रयत्न
करनेवाला (श्रीप, पठम ३, ६५, सुर १, ४,
उव), 'इच्छिज्ज न इच्छिज्ज व तहवि पर्ययो
निमतए साहु' (पुप्फ ४२६, पडि) ।

पर्यय पु [पतंग, पदक, पदग] १ वान-
व्यन्तर देवों की एक जाति (ठा २, ३, पण १,
इक) । २ पतंग देवों का दक्षिण दिशा का
इन्द्र (ठा २, ३) । °वड पु [°पति] पतंग देवों
का उत्तर दिशा का इन्द्र (ठा २, ३—पत्र
८५) ।

पर्यय न [दे] अनिश, निरन्तर (दे ६, ६) ।

परिणममाण (ठा ७, णाया १, १—पत्र ३१) ।

परिणमण न [परिणमन] परिणाम (धर्मसं ४७२, उप ८६८) ।

परिणमिअ } वि [परिणत] १ परिपक्व
परिणय } (पात्र) । २ बुद्धि-प्राप्त, 'तह
परिणमिओ धम्मो जह त खोभति न सुरावि'
(धर्मवि ८) । ३ अवस्थान्तर को प्राप्त (ठा
२, १—पत्र ५३, पिड २६५) । 'वय वि
[°वयस्] १ वृद्ध, वृद्धा (णाया १, १—
पत्र ४८) ।

परिणयण न [परिणयन] विवाह (उप
१०१४, सुपा २७१) ।

परिणयणा स्त्री ऊपर देखो (धर्मवि १२६) ।

परिणव देखो परिणम । परिणवइ (आरा
३१, महा) ।

परिणाइ पु [परिज्ञाति] परिचय, 'कह तुज्झ
तेण समय परिणाई तक्खणेण उप्पनो'
(पउम ५३, २५) ।

परिणाम सक [परि + णमय्] परिणत
करना । परिणामेइ (ठा २, २) । कवक
परिणामिज्जमाण, परिणामेज्जमाण (भग,
ठा १०) । हेक परिणामित्तए (भग ३,
४) ।

परिणाम पुं [परिणाम] १ अवस्थान्तर-प्राप्ति,
रूपान्तरलाभ (धर्मसं ४७२) । २ दीर्घ काल
के अनुभव से उत्पन्न होनेवाला आत्म-धर्म
विशेष (ठा ४, ४—पत्र २८३) । ३ स्वभाव,
धर्म (ठा ६) । ४ अध्यवसाय, मनो-भाव
(निबू २०) । ५ वि परिणत करनेवाला,
'दिट्ठता परिणामे' (वव १०, बृह १) ।

परिणामणया } स्त्री [परिणामना] परिण-
परिणामणा } माना, रूपान्तरकरण (पएण
३४—पत्र ७७४, विसे २२७८) ।

परिणामय वि [परिणामक] परिणत करने-
वाला (बृह १) ।

परिणामि वि [परिणामिन्] परिणत होमे-
वाला (दे १, १, आचक १८३) । 'कारण
न [°कारण] कार्य-रूप में परिणत होनेवाला
कारण, उपादान कारण (उवर २७) ।

परिणामिअ वि [परिणामिक] १ परिणाम-
जन्य, परिणाम से उत्पन्न । २ परिणाम-
संबन्धी । ३ पुं. परिणाम । ४ भाव-विशेष,

'सव्वदन्वपरिणद्धवो परिणामिओ सव्वो'
(विसे २१७६, ३४६५) ।

परिणामिअ वि [परिणमित] परिणत किया
हुआ (पिड ६१२, भग) ।

परिणामिआ स्त्री [परिणामिणी] बुद्धि-
विशेष, दीर्घ काल के अनुभव से उत्पन्न होने-
वाली बुद्धि (ठा ४, ४) ।

परिणाय वि [परिजात] जाना हुआ, परिचित
(पउम ११, २७) ।

परिणाव सक [परि + णायय्] विवाह
कराना । परिणावसु (कुप्र ११६) । क.
परिणावियव्व, परिणावेयव्व (कुप्र ३३०,
१५४) ।

परिणावण न [परिणायन] विवाह कराना
(सुपा ३६८) ।

परिणाविअ वि [परिणावित] जिसका विवाह
कराया गया हो वह (सुपा १६५, धर्मवि
१३६, कुप्र १४) ।

परिणाह पु [परिणाह] १ लम्बाई, विस्तार
(पात्र, से ११, १२) । २ परिधि (स ३१२;
ठा २, २) ।

परिणिऊण देखो परिण ।

परिणित देखो परिणी = परि + गम् ।

परिणिज्जंत देखो परिणी = परि + णी ।

परिणिज्जरा स्त्री [परिनिर्जरा] विनाश, क्षय
(पउम ३१, ६) ।

परिणिज्जिय वि [परिनिर्जित] पराभूत,
पराजय-प्राप्त (पउम ५२, २१) ।

परिणिट्ठा स्त्री [परिनिट्ठा] सपूर्णता, समाप्ति
(उवर १२५) ।

परिणिट्ठान न [परिनिट्ठान] अवसान, अन्त
(विसे ६२६) ।

परिणिट्ठिअ वि [परिनिष्ठित] १ पूर्ण किया
हुआ, समाप्त किया हुआ (खण २५) ।
२ पार-प्राप्त (णाया १, ८, भास ६८,
पचा १२, १४) । ३ परिज्ञात (वव १०) ।

परिणिट्ठिया स्त्री [परिनिष्ठिता] १ कृपि-
विशेष, जिसमें दो या तीन बार तुण-शोधन
किया गया हो वह कृपि, अर्थात् दो या तीन
बार की सोहनी (निराई) की हुई खेत । २
दीक्षा-विशेष, जिसमें बारबार अतिचारों की
आलोचना की जाती हो वह दीक्षा (राज) ।

परिणिय वि [परिणीत] जिसका विवाह
हुआ हो वह (सण, भवि) ।

परिणिञ्चय सक [परिनिर् + चापय्]
सर्व प्रकार से प्रतिशय परिणत करना ।
संकु. परिणिञ्चयिय (कस) ।

परिणिञ्चा अक [परिनिर् + वा] १ शान्त
होना । २ मुक्ति पाना, मोक्ष को प्राप्त
करना । परिणिञ्चायति (भग) । भूका
परिणिञ्चाइमु (पि २१६) । भाव परि-
णिञ्चाहिंति (भग) ।

परिणिञ्चाण न [परिनिर्वाण] मुक्ति, मोक्ष
(आचा, कप्प) ।

परिणिञ्चुड स्त्री [परिनिर्वृत्ति] ऊपर देखो
(राज) ।

परिणिञ्चुय देखो परिनिञ्चुअ (भौप) ।

परिणी सक [परि + णी] १ विवाह करना ।
२ ले जाना । कवक. परिणिज्जत, परिणीय-
माण (कुप्र १२७, आचा) ।

परिणी अक [परि + गम्] बाहर निकलना ।
वक. परिणित (न ६६१) ।

परिणीअ वि [परिणीत] जिसका विवाह
किया गया हो वह (महा, प्रासू ६३, सण) ।

परिणील वि [परिणील] सर्वथा हरा रंग
का (गड्ड) ।

परिणे देखो परिणी । परिणेइ (महा, पि
४७४) । हेक. परिणेडं (कुप्र ५०) । क.
परिणेत्यव्व (सुपा ४५५, कुप्र १३८) ।

परिणेचिय (अप) वि [परिणायित] जिसका
विवाह कराया गया हो वह (सण) ।

परिणेव्वुय देखो परिनिव्वुअ (उत्त १८,
३५) ।

परिण वि [परिज्ञ] ज्ञाता, जानकार (आचा
१, ५, ६, ४) ।

परिण° देखो परिण्णा° (आचा १, २,
६, ५) ।

परिण्णा सक [परि + ज्ञा] जानना । सक
परिण्णाय (आचा, भग) । हेक. परिण्णाडु
(शौ) (अभि १८६) ।

परिण्णा स्त्री [परिज्ञा] १ ज्ञान, जानकारी
(आचा, वसु, पंचा ६, २५) । २ विवेक
(आचा) । ३ पर्यालोचन, विचार (सुप्र १,

वडा पेढ (आ २३)। °वाय वि [°पात्] प्रकृष्ट पेरवाला (आ २३)। °वाय वि [°वाच] फलित शालि (आ २३)। °वाय वि [°वाप] १ विशेष भाव से शत्रु की चिन्ता करनेवाला। २ पु मन्त्री, ग्रामात्य। ३ सुमट, योद्धा (आ २३)। °वाय वि [°पात] आपात-सुन्दर, जो प्रारम्भ में ही सुन्दर हो वह (आ २३)। °वाय वि [°वाय] श्रेष्ठ विवाहवाला (आ २३)। °वाय वि [°पाय] श्रेष्ठ रक्षावाला, जिसकी रक्षा का उत्तम प्रबन्ध हो वह। २ अत्यन्त प्यासा। ३ पु राजा, नरेश (आ २३)। °वाय वि [°व्यात] १ इतर के पास विशेष वमन करनेवाला। २ पु. मिथुन, याचक (आ २३)। °वाय वि [°पायस्] १ दूसरे की रक्षा के लिए हथियार रखनेवाला। २ पु. सुमट, योद्धा (आ २३)। °वाया स्त्री [°व्याजा] वेश्या, वारागना (आ २३)। °वाया स्त्री [°व्यागस्] असती, कुलटा (आ २३)। °वाया स्त्री [°व्यापा] अन्तिम समृद्ध की स्थिति (आ २३)। °वाया स्त्री [°पाता] धूर्त-मैत्री (आ २३)। °वाया स्त्री [°त्राया] नृप-कन्या (आ २३)। °वाया स्त्री [°पागा] मरु-भूमि (आ २३)। °वाया स्त्री [°वाच्] कश्मीर-भूमि (आ २३)। °वाया स्त्री [°वाज्] नृप-स्थिति (आ २३)। °वाया स्त्री [°पात्] शतपदी, जन्तु-विशेष (आ २३)। °वाया स्त्री [°व्यावा] मेरी, वाद्य-विशेष (आ २३)। °विएस पु [°विदेश] परदेश, विदेश (पृष्ठ ३२, ३६)। °व्यस देखो °वस (पङ्, गा २६५, भवि)। °सतिग वि [°सत्क] पर-संवन्धी, परकीय (पृष्ठ १३)। °ममय पुं [°समय] इतर दर्शन का निदान्त, 'जावइया नयवाया तावइया चैव परसमया' (सम्म १४४)। °हुअ वि [°श्रुत] १ दूसरे से पृष्ठ, अन्य से पालित (प्राप्र)। २ पुत्री. कोयल, पिक पक्षी (कप्प)। स्त्री. °आ (सुर ३, ५४, पाप्र)। °घाय देखो °घाय (प्रासू १०४, सम ६७)। °धीण देखो °हीण (धर्मवि १३६)। °यत्त वि [°यत्त] पराधीन, परतन्त्र (पृष्ठ ६४,

३४, उप पृ १८२, महा)। °हीण वि [°धीन] परतन्त्र, परायत्त (नाट—मालवि २०)।

परं देखो परा = अ (आ २३, पृष्ठ ६१, ८)।

पर अ [परम्] १ परन्तु किन्तु, 'जं तुमं आणवेसित्ति, परं तुह दूरे नयरं' (महा)। २ उपरान्त, 'नो से कप्पइ एत्तो बाहि, तेण परं, जत्थ नाणदसणचरित्ताइं उस्सप्पत्ति त्ति वेमि' (कस १, ५१, २, ४—७, ४, १२—२६)। ३ केवल, फक्त, 'एस मह सतावो, पर माणससरमज्जणेण जइ अवगच्छइत्ति' (महा)।

परं अ [परन्] आगामी वर्ष, 'अज्ज कल्ल परं परारि' (वै २), 'अज्ज पर परारि पुरिसा चित्ति अत्यसर्पत्ति' (प्रासू ११०)।

परग सक [परि + अङ्ग] चलना, गति करना। कवक परगिज्जमाण (औप)।

परगमण न [पर्यङ्गन] पाँव में चलना, चक्रमण (औप)।

परंगमण न [पर्यङ्गन] चलाना, चक्रमण कराना (भग ११, ११—पत्र ५४४)।

परंतम वि [परतम] अन्य को हैरान करनेवाला (ठा ४, २—पत्र २१६)।

परतम वि [परतमम्] १ अन्य पर क्रोध करनेवाला। २ अन्य-विषयक अज्ञान रखनेवाला (ठा ४, २—पत्र २१६)।

परतु अ [परन्तु] किन्तु (मुपा ४६६)।

परदम वि [परन्दम] १ अन्य को पीडा पहुँचाने वाला (उत्त ७, ६)। २ अन्य को शान्त करनेवाला। ३ अश्व आदि को सिखानेवाला (ठा ४, २—पत्र २१३)।

परपर } वि [परम्पर] १ मिन-मिन परंपरग } (रादि)। २ व्यवहित, 'परंपर-परंपरय' सिद्ध—(परेण १, ठा २, १, १०)। ३ पुन परम्परा, अविच्छिन्न धारा (उप ७३३), 'पुरिसपरंपरेण तेहिं इट्ठगा आणिया', 'एस दव्वपरंपरगो' (आव १), 'परंपरेण' (कप्प, धर्मसं ५३१, १३०६)।

परपरा स्त्री [परम्परा] १ अनुक्रम, परिपाटी (भग, औप, पाप्र)। २ अविविच्छिन्न धारा, प्रवाह (गाया १, १)। ३ निरन्तरता, अव्यवधान (भग ६, १)। ४ व्यवधान, अन्तर,

'अणतरोववणगा चैव परपरोववणगा चैव' (ठा २, २, भग १३, १)।

परभार वि [परम्भरि] दूसरे का पेट भरनेवाला (ठा ४, ३—पत्र २४७)।

परमुह वि [पराङ्मुख] मुँह-फिरा, विमुख (पि २६७)।

परकीअ } वि [परकीय] अन्य-सम्बन्धी, इतर परकेर } से सम्बन्ध रखनेवाला (विसे ४१, परक } सुपा ३४६, अभि १५१, पङ्; स्वप्न ४०, म २०७, पङ्), 'न सेवियव्वा पमया परक्का' (गोय १३)।

परक न [दे] छोटा प्रवाह (दे ६, ८)।

परकत वि [पराक्रान्त] १ जिसने पराक्रम किया हो वह। २ अन्य से आक्रान्त, 'गामा-गुगाम दूइज्जमाणस्स दुज्जाय दुप्परककंत भवइ' (आचा)। ३ न पराक्रम, बल। ४ उद्यम, प्रयत्न। ५ अनुष्ठान, 'जे अवुद्धा महामागा वीरा असम्मत्तदमिणो, असुद्ध तेसि परकत' (सूअ १, ८, २२)।

परकम अक [परा + क्रम्] पराक्रम करना। परकमे परकमेज्जा, परकमेज्जासि (आचा)। वक परकमत, परकममाण (आचा)। क परकमियव्व, परकम्म (गाया १, १, सूअ १, १, १)।

परकम सक [परा + क्रम्] १ जाना। २ आनेवन करना। ३ अक. प्रवृत्ति करना। परकमे (दस ५, १, ६)। परकमिज्जा (दस ८, ४१)। सक. परकम्म (दस ८, ३२)।

परकम पु [पराक्रम] गतं आदि से मिल मागं (दस ५, १, ४)।

परकम पुंन [पराक्रम] १ वीर्य, बल, शक्ति, सामर्थ्य (विसे १०४६, ठा ३, १, कुमा), 'तस्स परक्कम गोयमाण न तए सुय' (मम्मत्त १७६)। २ उत्साह। ३ चेष्टा, प्रयत्न (आचू १, प्रासू ६३, आचा)। ४ शत्रु का नाश करने की शक्ति (ज ३)। ५ पर-आक्रमण, पर-पराजय (ठा ४, १, आवम)। ६ गमन, गति (सूअ २, १, ६)। ७ मागं (दश० अ० वृ० सू० ८६)।

परकमि वि [पराक्रमिन्] पराक्रम-संपन्न (धर्मवि १६, १२०)।

परिदेवणया स्त्री [परिदेवना] ऊपर देखो
(ठा ४, १—पत्र १८८) ।

परिदेवि वि [परिदेविन्] विलाप करनेवाला
(नाट—शकु १०१) ।

परिदेविअ न [परिदेवित] विलाप (पात्र,
से ११, ६६, सुर २, २४१) ।

परिदो अ [परितस्] चारो ओर से (गा
४५४ अ) ।

परिधम्म पुं [परिधर्म] छन्द-विशेष (पिंग) ।

परिधवलिय वि [परिधवलित] खूब सफेद
किया हुआ (सण) ।

परिधाम पुंन [परिधामन्] स्थान (सुपा
४६३) ।

परिधाविअ वि [परिधावित] दौड़ा हुआ
(हम्मीर ३२) ।

परिधाविर वि [परिधावित्] दौड़नेवाला
(सण) ।

परिधूणिय वि [परिधूणित] अत्यन्त कँपाया
हुआ (सम्मत १३६) ।

परिधूमर वि [परिधूसर] धूसर वर्णवाला
(वज्जा १२८, गडड) ।

परिनिट्ट वि [परिनिट्ट] चित्त (महा) ।

परिनिक्खम देखो परिनिक्खम । परिनिक्ख-
मेड (कप्प) ।

परिनिट्ठिय देखो परिणिट्ठिय (कप्प, रंभा
३०) ।

परिनिय सक [परि + न्ति] देखना, श्रव-
लोकन करना । वहु परिनियत (सुपा
५२२) ।

परिनिविट्ट वि [परिनिविट्ट] ऊपर बैठा
हुआ (सुपा २६६) ।

परिनिविड वि [परिनिविड] विशेष निविड
या घना (महा) ।

परिनिव्वा देखो परिणिव्वा । परिनिव्वाइ
(भग), परिनिव्वाइति (कप्प) । भवि परि-
निव्वाइस्सति (भग) ।

परिनिव्वाण देखो परिणिव्वाण (एया १,
८, ठा १, १, भग, कप्प, पव १३८ टी) ।

परिनिव्वुअ } वि [परिनिव्वुत्] १ मुक्त,
परिनिव्वुड } मोक्ष को प्राप्त (ठा १, १;
पउम २०, ८४, कप्प) । २ शान्त, ठंडा

(सुअ १, ३, ३, २१) । ३ स्वस्थ (सुपा
१८३) ।

परिन्न देखो परिण (आचा) ।

परिन्न° देखो परिण° (आचा) ।

परिन्ना देखो परिण्णा (उप ५२५) ।

परिन्नाण देखो परिण्णाण (आन्ना) ।

परिन्नाय देखो परिण्णाय = परिज्ञात (सुपा
२६२) ।

परिन्नाय वि [प्रतिज्ञात] जिमको प्रतिज्ञा की
गई हो वह (पिड २८१) ।

परिपटुर } वि [परिपाण्टुर] विशेष
परिपटुल } पाण्टुर—बूझर वर्ण वाला (सुपा
२५६, कप्प, गडड, से १०, ३३) ।

परिपथग वि [प्रतिपथक] दुश्मन, विरोधी,
प्रतिकूल (म १०५) ।

परिपथिअ } वि [परिपथिक] ऊपर देखो
परिपथिग } (स ७४६, उप ६३६) ।

परिपक्क वि [परिपक्क] पका हुआ (पत्र
४, भवि) ।

परिपलिअ (अप) वि [परिपलित] गिरा
हुआ (पिंग) ।

परिपाग पु [परिपाक] विपाक, फल, 'पुव्व-
भवविहिन्नुचिरिअपरिपागो एत्त उदयसत्तो'
(रयण ५२, आचा) ।

परिपाडल वि [परिपाटल] सामान्य लाल
रंगवाला, गुलाबी रंग का (गडड) ।

परिपाडिअ वि [परिपाटित] फाड़ा हुआ,
विदारित (दे ७, ६१) ।

परिपाल सक [परि + पालय्] रक्षण
करना । परिपालइ (भवि) । क परि-
पालणीअ (स्वप्न २६) । सक. परिपालिड
(सुपा ३४२) ।

परिपालण न [परिपालन] रक्षण (कुप्र
२२६, सुपा ३०८) ।

परिपालिय वि [परिपालित] रक्षित (भवि) ।
परिपासय [दे] देखो परिवास (दे)
(पात्र) ।

परिपिअ सक [परि + पा] पीना, पान
करना । कवक. परिपिज्जत (नाट—
चैत ४०) ।

परिपिज्जर वि [परिपिज्जर] विशेष पीत-
रक्त वर्णवाला (गडड) ।

परिपिडिय वि [परिपिडित] १ एकत्र
समुदित, इकट्ठा किया हुआ (पिड ४६७) ।

२ न. गुण-वन्दन का एक दोष (धर्म २) ।

परिपिक्क देवो परिपक्क (पि १०१) ।

परिपिज्जंत देखो परिपिअ ।

परिपिट्ठण न [परिपिट्ठन] पीटना, ताड़न
(वव १) ।

परिपिरिया स्त्री [दे] वाय-विशेष (भग ५,
४—पत्र २१६) ।

परिपिल्ल सक [परिप्र + ईरय्] प्रेरणा ।
परिपिल्लइ (सुपा ६४) ।

परिपिहा सक [परिपि + धा] ढकना,
आच्छादन करना । सक. परिपिहिता,
परिपिहेत्ता (कप्प, पि ५८२) ।

परिपीडिय वि [परिपीडित] जिसको पीड़ा
पहुँचाई गई हो वह (भवि) ।

परिपील सक [परि + पीडय्] १ पीड़ना ।
२ पीलना, दबाना । परिपीलेज्जा (पि
२४०) । सक. परिपीलइत्ता, परिपीलिय,
परिपीलियाण (भग, राज, आचा २, १,
८, १) ।

परिपीलिअ देखो परिपीडिअ (राज) ।

परिपुंगल वि [दे] अष्ट, उत्तम (?) 'जंपड
भविसयतु परिपुगलु होसः रिद्धिविद्धिसुह-
मगलु' (भवि) ।

परिपुच्छ सक [परि + प्रच्छ] प्रश्न
करना । परिपुच्छइ (भवि) ।

परिपुच्छण न [परिप्रच्छन] प्रश्न, पृच्छा
(भवि) ।

परिपुच्छिअ } वि [परिपृष्ट] पूछा हुआ,
परिपुष्ट } जिज्ञासित (गा ६२३, भवि,
सुपा ३८७) ।

परिपुण्ण } वि [परिपूर्ण] संपूर्ण (भग;
परिपुण्ण } भवि) ।

परिपुस सक [परि + स्पृश्] सरस्य
करना । परिपुसइ (से ४, ५) ।

परिपूज सक [परि + पूजय्] पूजना ।
परिपूजअ (अप) (पिंग) ।

परिपूणग पुं [दे परिपूर्णक] पक्षि-विशेष
का नीड, सुघरी नामक पक्षी का घोंसला
(विसे १४५४, १४६५) ।

परिपूणग पुं [दे, परिपूर्णक] धी-दूध गालने
का कपड़ा, छानना (एदि ५४) ।

परसुहृत् पुं [दे] वृक्ष, पेड, दरख्त (दे ६, २६) ।

परस्सर पुं [दे पराशर] गेंडा, पशु-विशेष (पराण १, राज) । स्त्री 'री' (पराण ११) ।

परहुत् वि [पराभूत] पराजित, हराया गया (पञ्च ६१, ८) ।

परा अ [परा] इन अर्थों का सूचक अव्यय—
१ आभिमुख्य, संमुखता । २ त्याग । ३ धर्षण । ४ प्राधान्य, मुख्यता । ५ विक्रम । ६ गति, गमन । ७ मङ्ग । ८ अनादर । ९ तिरस्कार । १० प्रत्यावर्तन (हे २, २१७) । ११ भृश, अत्यन्त (ठा ३, २, आ २३) ।

परा स्त्री [दे परा] वृण विशेष (पराह २, ३—पत्र १२३) ।

पराइ सक [परा + जि] हराना, पराजय करना । सक्र. पराइइत्ता (सूत्रनि १६६) । पराइअ वि [पराजित] पराभव-प्राप्त (पञ्च २, ८६, श्रौप, स ६३४, सुर ६, २५, १३, १७१, उत्त ३२, १२) ।

पराइअ (अप) वि [परागत] गया हुआ (भवि) ।

पराइण देखो पराजिण । पराइणइ (पि ४७३, भग) ।

पराई स्त्री [परकीया] इतर से संबन्ध रखने-वाली, वह नायिका जो परपुरुष से प्रेम करे (हे ४, ३५०, ३६७) । देखो पराय = परकीय ।

पराकम देखो परक्रम (सूत्र २, १, ६) ।

पराकय वि [पराकृत] निराकृत, निरस्त (अञ्क ३०) ।

पराकर सक [परा + कृ] निराकरण करना । पराकरोदि (शौ) (नाट—चैत ३५) ।

पराजय पुं [पराजय] परिभव, अभिभव, हार (राज) ।

पराजय } सक [परा + जि] पराजय
पराजिण } करना, हराना । भूका. पराज-
यित्या (पि ५१७) । भवि पराजिणित्सइ
(पि ५२१) । संक्र. पराजिणित्ता (ठा ४, २) । हेक पराजिणित्तए (भग ७, ६) ।

पराजिणअ } देखो पराइअ = पराजित
पराजिय } (उप पृ ५२, महा) ।

पराण देखो पाण = प्राण (नाट—चैत ५४, पि १३२) ।

पराणग वि [परकीय] अन्य का, दूसरे का, 'जत्थ हिरणसुवणण हत्थेण पराणगं पि नो छिप्पे' (गच्छ २, ५०) ।

पराणिय वि [पराणीत] पहुँचा हुआ (भवि) ।

पराणी सक [परा + णी] पहुँचाना । पराणए (भवि) । पराणेमि (स २३४), 'जइ भणसि ता निमेषमित्तेण तुमं तायमदिर पराणेमि' (कुप्र ६०) ।

पराणयण न [पराणयन] पहुँचाना, नियम-गिणीपराणयणे का लज्जा, अवि य ऊसवो एम' (उप ७२८ टी) ।

पराभव सक [परा + भू] हराना । कवक. पराभविज्जत, पराभवमाण (उप ३२० टी, राया १, २, १८) ।

पराभव पु [पराभव] पराजय, हार (विपा १, १) ।

पराभविअ वि [पराभूत] अभिभूत, हराया हुआ (धर्मवि ६८) ।

परामट्ट देखो परामुट्ट (पञ्च ६८, ७३) ।

परामरिस सक [परा + मृश] १ विचार करना, विवेचन करना । २ स्पर्श करना । परामरिसइ (भवि) । वक्र. परामरिसंत (भवि) । सक्र. परामरिसिअ (नाट—मृच्छ ८७) ।

परामरिस पु [परामर्श] १ विवेचन, विचार (प्राप्ता) । २ युक्ति, उपपत्ति । ३ स्पर्श । ४ न्याय-शास्त्रोक्त व्याप्ति-विशिष्ट रूप में पक्ष का ज्ञान (हे २, १०५) ।

परामिट्ट } वि [परामृष्ट] १ विचारित,
परामुट्ट } विवेचित । २ स्पृष्ट, छुआ हुआ
(नाट—मृच्छ ३३, हे १ १३१, स १००, कुप्र ५१) ।

परामुस सक [परा + मृश] १ स्पर्श करना, छूना । २ विचार करना, विवेचन करना । ३ आच्छादित करना । ४ पोछना । ५ लोप करना । परामुसइ (कस) । कर्म 'सूरो परामुमिज्जइ णामिडुक्खित्तपुलिहि' (उवर १२३) । वक्र. 'नियत्ततिरिज्जेण नयणाई परामुसतेण भणिय' (कुप्र ६६) । कवक. परामुसिज्जमाण (स ३४६) ।

परामुसिय देखो परामुट्ट (महा, पात्र) ।

पराय अक [प्र + राज्] विशेष शोभना । वक्र. परायत (कप्प) ।

पराय पुं [पराग] १ धूली, रज, रिंगू पंसू रओ पराओ य' (पात्र) । २ पुष्प-रज (कुमा, गउड) ।

पराय } वि [परकीय] पर-संबन्धी, इतर
परायग } से संबन्ध रखनेवाला, 'नो अण्णया पराया गुणो कइयावि हुंति सुद्धाण' (सट्ठि १०५, हे ४, ३७६, भग ८, ५) ।

परायण वि [परायण] तत्पर (कम्म १, ६१) ।

परारि अ [परारि] आगामी तीसरा वर्ष (प्रासू ११०, वै २) ।

पराळ देखो पलाल (प्रासू १३८) ।

पराव (अप) सक [प्र + आप्] प्राप्त करना । परावहि (हे ४, ४४२) ।

परावत्त अक [परा + वृत्] १ बदलना, पलटना । २ पीछे लौटना । परावत्तइ (उवर ८८) । वक्र. परावत्तमाण (राज) ।

परावत्त सक [परा + वर्तय] १ फिराना । २ आवृत्ति करना । परावत्तति (पव ७१), परावत्तेसि (मोह ४७) । सक्र. 'तो सागरेण भणिय अरे परावत्तिऊण निययरह' (कुप्र ३७८) ।

परावत्त पुं [परावर्त] परिवर्तन, हेरफेर, हेराफेरी (स ६२, उप पृ २७, महा) ।

परावत्ति वि [परावर्तिन्] परिवर्तन करने-वाला, 'वैसपरावत्तिणी गुलिया' (महा) ।

परावत्ति स्त्री [परावृत्ति] परिवर्तन, हेराफेरी (उप १०३१ टी) ।

परावत्तिय वि [परावर्तित] परिवर्तित, बदला हुआ (महा) ।

परासर पु [पराशर] १ पशु-विशेष (राज) । २ ऋषि-विशेष (श्रौप, गा ८६२) ।

परासु वि [परासु] प्राण-रहित, मृत (आ १४, धर्मस ६७) ।

पराहव देखो पराभव = पराभव (गुण ६) ।

पराहुत्त वि [दे पराइमुख] विमुख, मुँह-फिरा (ग २४५, से १०, ६४, उप पृ ३८८, श्रौष ५१४, वज्जा २६), 'महविणयपराहुत्तो' (पञ्च ३३, ७४, सुख २, १७) ।

माण (राज) । संवृ परिभाइत्ता, परिभाइत्ता (कप्प, औप) । हेक परिभाएउ (पि ५७३) ।

परिभाइय वि [परिभाजित] विभक्त किया हुआ (आचा २, २, ३, २) ।

परिभायत देखो परिभाअ ।

परिभायण न [परिभाजन] बँटवा देना (पिड १६३) ।

परिभाव सक [परि + भावय्] १ पर्यालोचन करना । २ उन्नत करना । परिभावइ (महा) । सक परिभावज्जण (महा) । क. परिभावणीय (राज) ।

परिभावइत्तु वि [परिभावयित्] प्रभावक, उन्नति-कर्ता (ठा ४, ४—पत्र २६५) ।

परिभावि वि [परिभाविन्] परिवर्तन करने वाला (अभि ७१) ।

परिभास सक [परि + भाप्] १ प्रतिपादन करना, कहना । २ निन्दा करना । परिभासइ, परिभासति, परिभासेइ, परिभासए (उत्त १८, २०, सूअ १, ३, ३, ८, २, ७, ३६, विमे १४४३) । व. परिभासमाग (पउम ५३, ६७) ।

परिभासा स्त्री [परिभापा] १ सकंत (सबोध ५८, भास १६) । २ तिरस्कार । ३ चूर्ण, टीका-विशेष (राज) ।

परिभासि वि [परिभापिन्] परिभव-कर्ता, 'राइणियपरिभासी' (सम ३७) ।

परिभासिय वि [परिभापित] प्रतिपादित (सूअनि ८८, भास २१) ।

परिभिद सक [परि + भिद] भेदन करना । क. परिभिज्जमाण (उप पृ ६७) ।

परिभीय वि [परिभीत] डरा हुआ (उव) ।

परिभुज सक [परि + भुज्] १ खाना, भोजन करना । सेवन करना, सेवना । ३ बारवार उपभोग मे लेना । कर्म परिभुजिज्जइ परिभुज्जइ (पि ५४६, गच्छ २, ५१) । व. परिभुंजत, परिभुजमाण (निचू १, णाया १, १, कप्प) । क. परिभुजमाण (औप, उप पृ ६७, णाया १, १—पत्र ३७) । हेक परिभोत्तु (दस ५, १) । क. परिभोग, परिभोत्तव (पिड ३४, कस) ।

परिभुंजण न [परिभोजन] परिभोग (उप १३४ टी) ।

परिभुंजणया स्त्री [परिभोजना] ऊपर देखो (सम ४४) ।

परिभुत्त वि [परिभुत्त] जिसका परिभोग किया गया हो वह (सुपा ३००) ।

परिभुत्त } वि [परिवृत्त] वेष्टित, परिकरित, परिभुय } लपेटा हुआ, घेरा हुआ (आचा २, ११, ३, २, ११, १६) ।

परिभूअ वि [परिभूत] अभिभूत, तिरस्कृत (सूअ २, ७, २, सुर १६, १२६, चेइय ७१४, महा) ।

परिभोअ देखो परिभोग (अभि १११) ।

परिभोइ वि [परिभोगिन्] परिभोग करने वाला (पि ४०५, नाट—शकु ३५) ।

परिभोग पुं [परिभोग] १ बारवार भोग (ठा ५, ३ टी, आव ६) । २ जिसका बारवार भोग किया जाय वह वस्त्र आदि (औप) । ३ जिसका एक ही बार भोग किया जाय—जो एक ही बार काम मे लाया जाय वह—आहार, पान आदि (उवा) । ४ बाह्य वस्तु का भोग (आव ६) । ५ आसेवन (परह १, ३) ।

परिभोग } देखो परिभुज ।

परिभोत्तु

परिमइल सक [परि + मृज्] मार्जन करना (ससि ३५) ।

परिमउअ वि [परिमृदुक] १ विशेष कोमल । २ अत्यन्त सुकर, सरल (धर्मस ७६१, ७६२) । स्त्री 'उई' (विसे ११६६) ।

परिमउलिअ वि [परिमकुलित] चारो ओर मे सकुचित (सण) ।

परिमंडण न [परिमण्डन] अलकरण, विभूषा (उत्त १६, ६) ।

परिमडल वि [परिमण्डल] वृत्त, गोलाकार (सूअ २, १, १५, उत्त ३६, २२, स ३१२, पाअ, औप, पण १, ठा १, १) ।

परिमडिय वि [परिमण्डित] विभूषित, सुशोभित (कप्प, औप, सुर ३, १२) ।

परिमथर वि [परिमन्थर] मन्द, धीमा (गउड, स ७१६) ।

परिमथिअ वि [परिमथित] अत्यन्त आलोडित (सम्मत २२६) ।

परिमंद वि [परिमन्द] मन्द, मशक (सुर ४, २४०) ।

परिमग्ग सक [परि + मार्गय्] १ अन्वेषण करना, खोजना । २ मार्गना, प्रार्थना करना । व. परिमग्गमाण (नाट—विक्र ३०) । सक. परिमग्गेउ (महा) ।

परिमग्गि वि [परिमार्गिन्] खोज करने वाला (गा २६१) ।

परिमज्जिर वि [परिमज्जित्] हूने वाला (सुपा ६) ।

परिमट्ट वि [परिमृष्ट] १ घिसा हुआ (से ६, २, ८, ४३) । २ आस्फालित, 'परिमट्टमेहसिहरो' (से ४, ३७) । ३ मार्जित, शोषित (कप्प) ।

परिमद सक [परि + मर्दय्] मर्दन करना । व. परिमदयत (सुर १२, १७२) ।

परिमदण न [परिमर्दन] मर्दन, मालिश (कप्प, औप) ।

परिमदा स्त्री [परिमर्दा] सवाधन, दवाना, पैचण्णी—पैर दवाना आदि (निचू ३) ।

परिमन्न सक [परि + मन्] आदर करना । परिमन्नइ (भवि) ।

परिमल सक [परि + मल्, मृद] १ घिसना । २ मर्दन करना, 'जो मरणयालि परिमलइ हत्थु' (कुप्र ४५२),

'एलिणीसु भमसि परिमलसि सत्तल मालइपि णो मुअसि ।

तरलत्तण तुह अहो महुअर

जइ पाडला हरइ ॥'

(गा ६१६) ।

परिमल पुं [परिमल] १ कुकुम-चन्दनादि का मर्दन (से १, ६४) । २ सुगन्ध (कुमा, पाअ) ।

परिमलण न [परिमलन] १ परिमर्दन । २ विचार (गा ४२८, गउड) ।

परिमलिअ वि [परिमलित, परिमृदित] जिसका मर्दन किया गया हो वह (गा ६३७, से ७, ६२, महा, वज्जा ११८) ।

परिमहिय वि [परिमहित] पूजित (पउम १, १) ।

के वन्ध या उदय को रोक कर स्वयं वन्ध या उदय को प्राप्त होती है (पच ३, १४, ३, ४३, कम्म ५, १ टी) ।

परिअत्ता ओ [परिवर्ता] ऊपर देखो (कम्म ५, १) ।

परिअत्तिअ वि [परिवर्तित] १ मोडा हुआ, 'वाल्लिअयं परिअत्तिअ' (पाथ) । २ देखो परिअट्टिय (भवि) ।

परिअर सक [परि + चर्] सेवा करना । वक्क परिअरत (नाट—शकु १५८) ।

परिअर वि [दे] लीन, निमग्न (दे ६, २४) ।

परिअर पुं [परिकर] १ कटि-कन्धन, 'सल्ल-वद्धपरियरभवेहि' (भवि) । २ परिवार, 'किरण-किलामियपरियरभुयंगविजलणधूमतिमिरेहि' (गउड, चेइय ६४) ।

परिअर पुं [परिचर] सेवक, भृत्य, 'अणु-णिज्जंतं रक्खापरिअरधुअधवलचामरणिहेण' (गउड) ।

परिअरण न [परिचरण] सेवा (संबोध ३६) ।

परिअरणा ओ [परिचरणा] सेवा (सम्मत्त २१५) ।

परिअरिय वि [परिकरित, परिघृत] १ परिवार-युक्त; 'हयगयरहजोहसुहडपरियरिओ' (महा, भवि, सण) । २ परिवेष्टित, 'तत्रो तं समायणिएऊण सुइसुहं तारण गेय समतयो परियरिया सब्बलोणेण' (महा, सिरि १२८२) ।

परिअल सक [गम्] जाना, गमन करना । परिअलइ (हे ४, १६२) ।

परिअल } पुखी [दे] थाल, थलिया, भोजन-परिअलि } पात्र (भवि, दे ६, १२) ।

परिअलिअ वि [गत] गया हुआ (कुमा) ।

परिअल्ल देखो परिअल । परिअल्लइ (हे ४, १६२) । संकू परिअल्लिऊण (कुमा) ।

परिआरअ वि [परिचारक] सेवक, भृत्य (चार ५३) । ओ रिआ (अभि १६६) ।

परिआल सक [वेष्टय्] वेष्टन करना, लपेटना । परिआलेइ (हे ४, ५१) ।

परिआल वि [दे] परिवृत, परिवेष्टित, 'सो जयइ जामइल्लायमाण-

मुहलालिवलयपरिआलं ।

लच्छिनिवेसंतेउरवई व

जो वहइ वणमालं' (गउड) ।

परिआल देखो परिवार (णाय १, ८; ठा ४, २, औप) ।

परिआलिअ वि [वेष्टित] लपेटा हुआ, वेढा हुआ (कुमा, पाथ) ।

परिआव देखो परिताव (दम ६, २, १४) ।

परिआविअ सक [पर्या + पा] पीना । परिआविण्वा (सूअ २, १, ४६) ।

परिआसमंत (अप) अ [पर्यासमन्तात्] चारो ओर से (भवि) ।

परिड सक [परि + इ] पर्यटन करना । परियति (उत्त २७, १३) ।

परिडण वि [परिकीर्ण] व्याप्त (सम्मत्त १५६) ।

परिडइ (औ) वि [परिचित] परिचय-विशिष्ट, ज्ञात, पहचाना हुआ (अभि २४५) ।

परिडव सक [परि + चुम्ब] चुम्बन करना । परिडवइ (भवि) ।

परिडवण न [परिचुम्बन] संवत चुम्बन (गा २२, हास्य १३४) ।

परिडवणा ओ [परिचुम्बना] ऊपर देखो, 'मंडपरिडवणापुलइअण ण पुणो चिराइस्स' (गा २०) ।

परिडडिअ वि [पर्युज्झित] सर्वथा त्यक्त (सण) ।

परिडट्ट वि [परितुष्ट] विशेष तुष्ट (स ७३४) ।

परिडत्थ वि [दे] प्रोषित, प्रवास में गया हुआ (दे ६, १३) ।

परिडसिअ वि [पर्युषित] वासी, ठहरा, भाग निकला हुआ (भोजन) (दे १, ३७) ।

परिऊड वि [दे परिगूढ] क्षाम, कृश, पतला, 'उण्णुल्लिआइ खेळउ मा

एणं वारेहि होउ परिऊडा ।

मा जहणभारगहई पुरिसाअती

किलिम्मिहिइ' (गा १६६) ।

परिऊरण न [परिपूरण] परिपूर्ति (नाट—शकु ८) ।

परिएस देखो परिवेस = परि + विप् । कवकू,

परिएसिज्जमाण (आचा २, १, २, १) ।

परिएस देखो परिवेस = परिवेश (स ३१२) । परिओन्न सक [परि + तोषय्] मंतुष्ट करना, खुशी करना । परिओसइ (भवि, सण) ।

परिओस पु [परितोष] आनन्द, सतोष, खुशी (से ११, ३, गा ६८, २०६, स ६, सुपा ३७०) ।

परिओस पुं [दे. परिद्वेष] विशेष द्वेष (भवि) ।

परिओसिय वि [परितोषित] सतुष्ट किया हुआ (से १३, २५, भवि) ।

परित देखो परी = परि + इ ।

परिकख सक [परि + काङ्क्ष] १ विशेष अभिलाषा करना । २ प्रतीक्षा करना ।

परिकखण (उत्त ७, २) ।

परिकइ पु [परिकन्द] आक्रन्द, चिल्लाहट (हम्मोर ३०) ।

परिकपि वि [परिकम्पिन्] अतिशय कंपानेवाला (गउड) ।

परिकपिर वि [परिकम्पित्] विशेष कंपनेवाला (सण) ।

परिकन्धिअ वि [परिकक्षित] परिगृहीत (राय) ।

परिकट्टलिअ वि [दे] एकत्र पिएडीकृत (पिंड २३६) ।

परिकड्ड सक [परि + कृप्] १ पारव भाग में खींचना । २ प्रारम्भ करना । वक्क, परिकड्डेमाण (गज) । संकू परिकड्डिऊण (पचव २) ।

परिकडिण वि [परिकठिन] अत्यन्त कठिन (गउड) ।

परिकप्प सक [परि + कल्पय्] १ निष्पादन करना । २ कल्पना करना ।

परिकप्पयति (सूअ १, ७, १३) । सकू परिकप्पिऊण (चेइय १४) ।

परिकप्पिय वि [परिकल्पित] छिन्न, काटा हुआ (पण १, ३) । देखो परिगप्पिय ।

परिकवुर वि [परिकवुर] विशेष कवरा—चितकवरा (गउड) ।

परिकम्म } न [परिकर्मन्] १ गुण-विशेष
परिकम्मण } का आधान, संस्कार-करण,
'परिकम्म किरियाए वत्थूणं गुणविसेन-

परियाणिअ पुन [परिगानिक] १ यान, वाहन । २ विमान विशेष (ठा ८) ।

परियादि देखो परियाड । परियादियति (कप्प) । सकृ परियादित्ता (कप्प) ।

परियाय देखो पज्जाय (ठा ४, ४, मुपा १६, विसे २७६१, औप, आचा, उवा) । ६ अभिप्राय, मत, 'सर्पहि परियाएहि लोय वूया कडैति य' (सूय १, १, ३, ६) । १० प्रव्रज्या दीक्षा (ठा ३, २—पत्र १०६) । ११ ब्रह्मचर्य (आव ४) । १२ जिन-देव के केवल-ज्ञान की उत्पत्ति का समय (साया १, ८) । १३ पु [स्थाय] दीक्षा की अपेक्षा से वृद्ध (ठा ३, २) ।

परियायतकरभूमि स्त्री [पर्यायान्तकृद्-भूमि] जिन देव के केवल ज्ञान की उत्पत्ति के समय से लेकर तदनन्तर सर्व प्रथम मुक्ति पानेवाले के बीच के समय का आन्तर (साया १, ८—पत्र १५५) ।

परियार सक [परि + चारय्] १ मेवा-शुश्रूषा करना । २ सभोग करना, विषय-सेवन करना । परियारेड (ठा ३, १, भग) । वक्र. परियारेमाण (राज) । कवकृ परियारिजमाण (ठा १०) ।

परियार पु [परिचार] मैथुन, विषय-सेवन (पण ३४—पत्र ७८०, ठा ३, १) ।

परियारग वि [परिचारक] १ विषय-सेवन करनेवाला (पण २, ठा २, ४) । २ सेवा-शुश्रूषा करनेवाला (विपा १, १) ।

परियारण न [परिचारण] १ मेवा-शुश्रूषा (सुज १८—पत्र २६५) । २ काम-भोग (पण ३४) ।

परियारणया स्त्री [परिचारणा] ऊपर परियारणा देखो (पण ३४, ठा ५, १) । १ सह पु [शब्द] विषय-सेवन के समय का स्त्री का शब्द (निचू १) ।

परियाल देखो परिवार (राय ५४) ।

परियालोयण न [पर्यालोचन] विचार, चिन्तन (सुपा ५००) ।

परियाव देखो परिताव = परिताप (आचा, औप १५४) ।

परियावज्ज अक [पर्या + पड्] १ पीडित होना । २ रूपान्तर में परिणत होना । ३

सक, मेवना । परियावज्जइ परियावज्जति (कप्प, आचा) ।

परियावज्जण न [पर्यापादन] रूपान्तर-प्राप्ति (पिड २८०) ।

परियावज्जणा स्त्री [पर्यापादन] आयेवन (ठा ३, ४—पत्र १७८) ।

परियावण देखो परितावण (सूय २, २, ६२) ।

परियावणा स्त्री [परिनापना] पग्गिताप, मताप (औप) ।

परियावणिया स्त्री [परियापनिका] कानान्तर तक अवस्थान, स्थिति (साया १, १४—पत्र १८६) ।

परियावण्ण वि [पर्यापन्न] स्थित, अव-परियावन्न स्थित (आचा २, १, ११, ७, ८, भग ३४, २, वस) ।

परियावन्न वि [पर्यापन्न] लब्ध, प्राप्त (आचा २, १, ६, ६) ।

परियावस सक [पर्या + वासय्] आवास कराना । परियावसे (उत १८, ५४, मुन १८, ५४) ।

परियावसह पु [पर्यावसय] मठ, मन्यासी का स्थान (आचा २, १, ८, २) ।

परियाविय वि [परितापिन] पीडित (पडि) ।

परियासिय वि [परिवासित] वासी रहता हुआ (वम) ।

परिरंज सक [भञ्ज्] भांगना, तोड़ना । परिरंजइ (प्राकृ ७४) ।

परिरभ सक [परि + रभ्] आलिगन करना । परिरभस्तु (शौ) (पि ४६७) । सकृ. परिरंभिड (कुप्र २४२) ।

परिरभण न [परिरम्भन] आलिङ्गन (पाप्र, गा ८३५; सुपा २, ३६६) ।

परिरक्ख सक [परि + रक्ख्] परिपालन करना । परिरक्खइ (भवि) । कृ परिरक्खणीअ (सिक्खा ३१) ।

परिरक्खण न [परिरक्षण] परिपालन (गा ६०१, भवि) ।

परिरक्खा स्त्री [परिरक्षा] ऊपर देखो (पउम ५६, ५३, वमवि ५३, गउड) ।

परिरक्खवि वि [परिरक्षित] परिपालित (भवि) ।

परिग्ग वि [परिग्ग] आलिङ्गित (गा ३६८) ।

परिरय पु [परिरय] १ परिधि, परिपे (उत ३६, ५६, पउम ८६, ६१; पत्र १५८, औप) । २ पर्याय, समानार्थक शब्द, 'एगपरिय ति वा एगपज्जाय ति वा एगणाममेद ति वा एगट्टा' (आचू १) । ३ परित्रमण, फिर कर जाना, 'ग्रहया वेरो, तस्स य अतरा आ टांगय वा जे ममत्या ते टग्गुण वयति जो अममत्या मो परिरण्ण—ममा-डेण ववइ' (ओपमा २० टी) ।

परिराग अक [परि + राज्] विराजना, शोभना । वक्र. परिरायमाण (कप्प) ।

परिरिञ्च नक [परि + रिञ्च] चलना, फरवना, हिलना । वक्र. परिरिञ्चमाण (उप ५३० टी) ।

परिस्म सक [परि + रुध्] रोकना, अटकाना । कर्म परिरिज्जइ (गउड ४३४) । संक्र. परिरिभिज्जण (उवकु १) ।

परिलवि वि [परिलङ्घिन्] लपन करनेवाला (गउड) ।

परिलवि वि [परिलम्बिन्] लटकनेवाला (गउड) ।

परिलभिअ वि [परिलम्भित] प्राप्त करवा हुआ, 'सो गयवरो मुणीण (मुणीहि) वयाणि परिलभिप्रो पमन्त्तप्पा' (पउम ८४, १) ।

परिलग्ग वि [परिलग्न] लगा हुआ, व्यापृत (उप ३५६ टी) ।

परिलिअ वि [दे] लीन, तन्मय (दे ६, २४) ।

परिली अक [परि + ली] लीन होना । वक्र. परिलित्त, परिलेत, परिलीयमाण (साया १, १—पत्र ५, औप, से ६, ४८, पण १, ३, राय) ।

परिली स्त्री [दे] आतोद्य-विशेष, एक तरह का बाजा (राज) ।

परिलीण वि [परिलीन] निलीन (पाप्र) ।

परिलुं प सक [परि + लुप्] लुप्त करना, अदृष्ट करना । कवकृ परिलुप्पमाण (महा) ।

परिल्लेन देखो परिल्ली = परि + ली ।

परिलोयण न [परिलोचन, परिलोकन] अवलोकन, निरीक्षण । २ वि देखनेवाला 'जुगतपरिलोयणाए दिट्ठीए' (उवा) ।

परिक्खेवि वि [परिक्षेपिन्] तिरस्कार करनेवाला (उत्त ११, ८) ।
 परिखव्व पुं [दे] काहार, कहार, जलादि-वाहक, नोकर (दे २, २७) ।
 परिखज्ज सक [परि + खज्ज] खुजाना, खुजलाना । कवक 'परिखज्जमाणमत्थयदेसो' (उप ६८६ टि) ।
 परिखण न [परीक्षण] परीक्षा-करण, परीक्षा लेने, परखने या जाँच करने का काम (पव ३८) ।
 परिखविय वि [परिक्षपित] परिक्षीण, 'गुरुअट्टकाणपरिखवियसरीरो' (महा) ।
 परिखाम वि [परिक्षाम] अति दुर्बल, विशेष कृश (गा १६६) ।
 परिखित्ते देखो परिक्खित्त (सण) ।
 परिखिव देखो परिक्खिव । परिखिवइ (भवि), 'राया त परिखिवई दोहगवईण मज्झमि' (सम्मत्त २१७, चेइय ६५५) ।
 परिखिविय देखो परिखित्त (सण) ।
 परिखुहिय वि [परिक्षुब्ध] अतिशय क्षोभ को प्राप्त (भवि) ।
 परिखेइय वि [परिखेदित] विशेष खिन्न किया हुआ (सण) ।
 परिखेद (शौ) पुं [परिखेद] विशेष खेद (स्वप्न १०, ८०) ।
 परिखेय सक [परि + खेदय] अतिशय खिन्न करना । परिखेवइ (सण) । सक. परिखेइवि (अप) (सण) ।
 परिखेविय (अप) देखो परिखिविय (सण) ।
 परिगतु देखो परिगम ।
 परिगण सक [परि + गणय] १ गणना करना । २ चिन्तन करना, विचार करना । वक-‘एस थक्का मम गमणस्स त्ति परिगणतेण विण्णविमो राया’ (महा) ।
 परिगप्पण न [परिकल्पन] कल्पना (धर्मस ६८१) ।
 परिगप्पणा स्त्री [परिकल्पना] ऊपर देखो (धर्मस ३०५) ।
 परिगप्पिय वि [परिकल्पित] जिसकी कल्पना की गई हो वह (स ११३, धर्मस ६६६) । देखो परिकप्पिय ।
 परिगम सक [परि + गम्] १ जाना,

गमन करना । २ चारो ओर से वेष्टन करना । ३ व्याप्त करना । संकृ. परिगतु (सण) ।
 परिगपण न [परिगमन] १ गुण, पर्याय, 'परिगमण पज्जाओ अणेकरणगुणोत्ति एगत्था' (सम्म १०६) । २ समन्ताद् गमन (निचू ३) ।
 परिगमिर वि [परिगन्तृ] जानेवाला (सण) ।
 परिगय वि [परिगत] १ परिवेष्टित, 'मणु-स्सवग्गुरापरिगय' (उवा, गा ६६), 'वहुपरि-यणपरिगया' (सम्मत्त २१७) । २ व्याप्त, 'विसपरिगयाहि दाढाहि' (उवा) ।
 परिगर पुं [परिकर] परिवार, 'सेसाण तु हरियव्व परिगरविहवकालमादीणि णाउ' (धर्मस ६२६) ।
 परिगरिय वि [परिकरित] देखो परिअरिय (सुपा १२७) ।
 परिगल अक [परि + गल्] १ गल जाना, क्षीण होना । २ भ्रना, टपकना । परिगलइ (काल) । वक. परिगलंत (पठम ११२, १५, तदु ४४) ।
 परिगलिय वि [परिगलित] गला हुआ, परिक्षीण (कुप्र ७, महा, सुपा ८७, ३६२) ।
 परिगलिर वि [परिगलितृ] गल जानेवाला, क्षीण होनेवाला (सण) ।
 परिगह देखो परिगेण्ह । सक. परिगहिअ (मा ४८) ।
 परिगह देखो परिग्माह (कुमा) ।
 परिगहिय देखो परिग्माहिय (वृह १) ।
 परिगा सक [परि + गै] गान करना । कवक. परिगिज्जमाण (णाया १, १) ।
 परिगालण न [परिगालन] गालन, छानन (पण्ह १, १) ।
 परिगिज्जमाण देखो परिगा ।
 परिगिज्ज } देखो परिगेण्ह ।
 परिगिज्झय }
 परिगिण्ह देखो परिगेण्ह । परिगिण्हइ (आचू १) । वक. परिगिण्हत, परिगिण्हमाण (सूअ २, १, ४४, ठा ७—पत्र ३८३) ।
 परिगिला अक [परि + ग्लै] ग्लान होना । वक. परिगिलायमाण (आचा) ।

परिगुण सक [परि + गुणय] परिगणन करना, गिनती करना । परिगुणहु (अप) (पिग) ।
 परिगुणण न [परिगुणन] स्वाध्याय (ओघ ६२) ।
 परिगुव अक [परि + गुप्] १ व्याकुल होना । २ सक सतत भ्रमण करना । वक. परिगुवत (राज) ।
 परिगुव सक [परि + गु] शब्द करना । वक. परिगुवत (राज) ।
 परिगुव्व अक [परि + गुप्] १ व्याकुल होना । २ सक. सतत भ्रमण करना । वक. परिगुव्वत (ठा १०—पत्र ५००) ।
 परिगू सक [परि + गू] शब्द करना । कवक. परिगुव्वत (ठा १०—पत्र ५००) ।
 परिगेण्ह } सक [परि + ग्रह्] ग्रहण
 परिग्माह } करना, स्वीकार करना (प्राप्ता) ।
 वक. परिग्माहमाण (आचा १, ८, ३, १) ।
 सक. परिगिज्झय, परिघेत्तुण (राज, पि ५८६) । हेक. परिघेत्तु (पि ५७६) । क. परिगिज्झ, परिघेतव्व, परिघेत्तव्व (उत्त १, ४३, सुपा ३३, सूअ २, १, ४८, पि ५७०) ।
 परिग्माय देखो परिगय (दस ६, २, ८) ।
 परिग्माह पु [परिग्रह] १ ग्रहण, स्वीकार । २ घन आदि का सग्रह (पण्ह १, ५, औप) । ३ ममत्व, मूर्च्छा (ठा १) । ४ ममत्व पूर्वक जिसका सग्रह किया जाय वह (आचा, ठा ३, १, धर्म २) । 'वेरमण न [विरमण] परिग्रह से निवृत्ति (ठा १, पण्ह २, ५) । 'वत्त वि [वत्] परिग्रह-युक्त (आचा, पि ३६६) ।
 परिग्माहि वि [परिग्रहिन्] परिग्रह-युक्त (सूअ १, ६) ।
 परिग्माहिय वि [परिग्रहीत] स्वीकृत (उवा, औप) ।
 परिग्माहिया स्त्री [परिग्रहिनी] परिग्रह-सम्बन्धी क्रिया (ठा २, १, नव १७) ।
 परिघघर वि [परिघर्घर] बैठे हुई (आवाज), 'हरिणो जयइ चिरं विहयसहपरि-घघरा वाणी' (गउठ) ।

परिवाडय वि [परिवाचिन] पढा हुआ (पठम ३७, १५)।

परिवाई छी [परिवाड] कलक-वार्ता, 'दद-यम्म ताव वत्ता जणपरिवाई लहु पत्ता' (पठम ६५, ४१)।

परिवाड मरु [घटय] १ घटाना, मगत करना। २ रचना, निर्माण करना। परिवाडेइ (हे ४, ५०)।

परिवाडल देखो पारपाडल (गउड)।

परिवाड छी [परिपाटि] १ पद्धति, रीति (विमे १-८)। २ पक्ति श्रेणि (उत्त १ ३२)। ३ क्रम परपरा (सने ६)। ४ मूलार्थ-वाचना, अध्ययन 'यिपरिवाडी न्हियवको' (धर्मवि ३६), 'एगल्योहि वत्ति न करे परिवाडिदामनि तामि' (कुलक ११)।

परिवाडिअ वि [घटित] रचित (कुमा)।

परिवाडा देखो परिवाडि, 'परिवाडीआगय हवइ रज्ज' (पठम ३१, १०६, पात्र)।

परिवाड पुं [परिवाड] निन्दा, दोष-कीर्तन (धर्मस ६५६)।

परिवाडिणी छी [परिवादिनी] वीणा-विशेष (राज)।

परिवाय देखो परिवाद (कप्य, औप, पठम ६५, ६०, राया १, १, स ३२, आत्महि १५)।

परिवायग पुं [परिवाजक] सन्यासी, परिवायग वावा, (सण, मुर १५, ५)।

परिवायणी छी [परिवादनी] मात तर्तवाली वीणा (राय ४६)।

परिवार नक [परि + वारय] १ वेष्टन करना। २ कुटुम्ब करना। वहु परिवारयन (उत्त १३, १८)। महु परिवारिया (सूय १, ३, २, २)।

परिवार पुं [परिवार] गृह-लोक, घर के मनुष्य (औप महा, कुमा)। २ न. म्यान (पात्र)।

परिवारग न [परिवारण] १ निराकरण (पण्ह १, १-पत्र १६)। २ आच्छादन, ढकना (दे १, ८६)।

परिवारिअ वि [दे] घटित, रचित (दे ६, ३०)।

परिवारिअ वि [परिवारिन] १ परिवार-सपन्न। २ वेष्टित, 'जहा से उडुवई चदे नकवत्तपरिवारिए' (उत्त ११, २५, काल)।

परिवाल देखो परिआल। परिवालइ (दे ६, ३५ टी)।

परिवाल सक [परि + पालय] पालन करना। परिवालइ, परिवालेइ (भवि, महा)। वहु परिवालयत (मुर १, १७१)। संकु. परिवालिय (राज)।

परिवाल देखो परिवार = परिवार (राया १, ८-११ १३८)।

परिवाविय वि [परिवापित] उखाड कर फिर से बोया हुआ (ठा ४, ४)।

परिवाविया छी [परिवापिता] दीक्षा-विशेष फिर से महाश्रतो का आरोपण (ठा ४, ४)।

परिवाम पु [दे] लेन मे मोनेवाला पुरुष (दे ६, २६)।

परिवास न [परिवामस] वस्त्र, कपडा, 'जगोख्यगुञ्जनरपामई मुनियत्यई मि भीण-परिवामई' (भवि)।

परिवासि वि [परिवाभिन्] बमनेवाला (सुपा ४२)।

परिवासिय वि [परिवामित] सुवासित, मुगल्य-युक्त, 'मयपरिमलपरिवासियदूरे' (भवि)।

परिवाह सक [परि + वाहय] १ बहन कराना। २ अश्वदि नेलाना, अश्वदि क्रीडा करना, 'विवरोयमिक्कवुरय परिवाहइ वाहियालीए' (महा)।

परिवाह पु [परिवाह] जल का उछाल, बहाव,

'भरिउच्चरंतपसरिअपिअम भरणपिनुणो वराईए। परिवाहो विअ दुक्कवस्म वहइ गुअणदुिओ वाहो' (गा ३७७)।

परिवाह पुं [दे] दुविनय, अविनय (दे ६, २३)।

परिवाहण न [परिवाहन] अश्वदि-खेनन, 'आसपरिवाहणनिमित्त गएण' (स ८१, महा)।

परिविआल सक [परि + विअ] वेष्टन करना। परिविआलइ (प्राक ७५, वात्वा १४४)।

परिविचिअ अक [परिवि + स्था] १ उत्पन्न होना। २ रहना। परिविचिअइ (आचा १, ४, २ २, पि ४८३)।

परिविचिअ वि [परिविअत] सर्वथा छिन्न-हृत (सूय १ ३ १ २)।

परिविचि वि [परिविष्ट] परोसा हुआ (स १८६, मुपा ६२३)।

परिवित्तस अक [परिवि + त्स] डरना। परिवित्तसंति परिवित्तमेज्जा 'आचा १, ६, ५ ५)।

परिवित्ति छी [परिवृत्ति] परिवर्तन (मुपा ५८७)।

परिविद्ध वि [परिविद्ध] जो बिषा गया हो वह (मुपा २७०)।

परिविद्धस सक [परिवि + ध्वसय] १ विनाश करना। २ परित्याग उपनान। संकु परिविद्धमित्ता (भग)।

परिविद्धय वि [परिविद्धयस्त] १ विनष्ट। २ परित्यागित (सूय २, ३, १)।

परिविष्फुरिय वि [परिविस्फुरित] स्फूर्ति-युक्त (सण)।

परिवियलिय वि [परिविगलित] डुआ हुआ, टपका हुआ (मण)।

परिवियलिर वि [परिविगलित] करनेवाला, चूनेवाला (सण)।

परिविरल वि [परिविरल] विशेष विल (गउड, गा ३२६)।

परिविलसिर वि [परिविलसित] विलापी (सण)।

परिविस सक [परि + विश] वेष्टन करना। परिविसइ (प्राक ७५)।

परिविस नक [परि + विप्] परोसना, खिलाना। नहु परिविसस (उत्त १४, ६)।

परिवियास पु [परिविवाद] समन्तात् वेद (धर्मवि १२६)।

परिविहुरिय वि [परिविधुरित] अति पीठित, 'मणिसज्जयदेविकरपरिविहुरिओ गय मातु' (मुर १५, १५)।

परिवीअ सक [परि + वीजय] पंखा करना, हवा करना। परिवीएमि (स ६७)।

परिवाडअ वि [परिवाजित] जिसको हवा की गई हो वह (उप २११ टी)।

परिच्छेदग वि [परिच्छेदक] निश्चय करने-
वाला (उप ८५३ टी) ।
परिच्छेज्ज वि [परिच्छेद्य] वह वस्तु जिसका
क्रय-विक्रय परिच्छेद पर निर्भर रहता है—
रत्न, वस्त्र आदि द्रव्य (आ १८) ।
परिच्छेद देखो परिच्छेअ = परिच्छेद (धर्मसं
१२३१) ।
परिच्छेदग देखो परिच्छेअग (धर्मसं ५०) ।
परिच्छेद्य वि [परिस्तोक] थोड़ा, अल्प
(औप) ।
परिच्छेज्ज देखो परिच्छेज्ज (आ १८) ।
परिजपिय वि [परिजल्पित] उक्त, कथित
(सुपा ३६४) ।
परिजजर वि [परिजर्जर] अतिजीर्ण (उप
२६४ टी, ६८६ टी) ।
परिजडिल वि [परिजटिल] अतिशय जटिल
(गण्ड) ।
परिजण देखो परिअण (उवा) ।
परिजय सक [परि + विच्] पृथक् करना,
अलग करना । संक. परिजविय (सूअ २,
२, ४०) ।
परिजय सक [परि + जप्] १ जाप करना ।
२ बहुत बोलना, वक्तावद करना । संक. 'स
भिक्षू वा भिक्षुणी वा गामाणुगामं दूइज्ज-
माणे एो पोहि सद्धि परिजविया २ गामा-
णुगाम दूइज्जेजा' (आचा २, ३, २, ८) ।
परिजवण न [परिजपन] जाप, जपन, मन्त्र
आदिका पुन पुन उच्चारण (विसे ११४०,
सुर १२, २०१) ।
परिजाइय वि [परियाचित] मांगा हुआ
(धर्मसं १०४५) ।
परिजाण सक [परि + ज्ञा] अच्छी तरह
जानना । परिजाणइ (उवा) । वक्क परिजा-
णमाण (कुमा) । कवक्क परिजाणिज्जमाण
(राया १, १, कुमा) । संक. परिजाणिया
(सूअ १, १, १, १, १, ६, ६, १, ६,
१०) । क. परिजाणियव्व (आचा, पि
५७०) ।
परिजिअ वि [परिजित] सर्वथा जीत, जिस-
पर पूरा काबू किया गया हो वह (विसे
८५१) ।

परिजुण वि [परिजीर्ण] १ फटा-टूटा,
अत्यन्त जीर्ण (आचा) । २ दुर्बल (उत्त २,
१२) । ३ दरिद्र, निर्धन, 'परिजुणो च
दरिद्रो' (वव ४) ।
परिजुणा देखो परिजुन्ना (ठा १०—पत्र
४७४ टी) ।
परिजुत्त वि [परियुक्त] सहित (सवोष १) ।
परिजुन्न देखो परिजुण (उप २६४ टी) ।
परिजुन्ना स्त्री [परिजीर्णा, परिजुन्ना] पत्रज्या,
विशेष, दरिद्रता के कारण ली हुई दीक्षा
(ठा १०—पत्र ४७३) ।
परिजुसिय देखो परिभुसिय (ठा ४, १—
पत्र १८७, औप) ।
परिजुसिय न [पर्युपित] रात्रि-परिवसन,
रात का वासी रहना, वासी (ठा ४, २—पत्र
२१६) । देखो परिउसिअ ।
परिजूर अक [परि + जू] सर्वथा जीर्ण होना,
'परिजूरइ ते सरीरय' (उत्त १०, २६) ।
परिजूरिय वि [परिजीर्ण] अतिजीर्ण (अणु) ।
परिजय पु [दे] कृष्ण पुद्गल-विशेष (सुज्ज
२०) ।
परिज्जुन्न देखो परिजूरिय (दस ६, २, ८) ।
परिज्जामिय वि [परिज्यामित] श्याम
(काला) किया हुआ (निच् १) ।
परिज्जुसिय वि [परिजुष्ट] १ सेवित ।
परिज्जुसिय } २ प्रीत, 'परिज्जुसियकामभो-
परिज्जुसिय } गसपन्नोगसंपउत्ते' (भग २५,
७—पत्र ६२३, ६२५ टी) । ३ परोक्षण,
ठा ४, १—पत्र १८८ टी, पि २०६) ।
परिट्व सक [परि + स्थापय] १ परि-
त्याग करना । २ सस्थापन करना । परिट्वेइ,
परिट्वेज्जा (आचा २, १, ६, ५, उवा) ।
संक. परिट्वेऊण, परिट्वेत्ता (वृह ४,
कस) । हेक्क परिट्वेत्तए (कस) । वक्क
परिट्ववत्त (निच् २) । क. परिट्वट्प,
परिट्वेयव्व (उत्त १४, ६, कस) ।
परिट्वण न [प्रतिष्ठापन] प्रतिष्ठा कराना
(चेइय ७७६) ।
परिट्वण न [परिष्ठापन] परित्याग (उव,
पव १५२) ।
परिट्वणा स्त्री [परिष्ठापना] ऊपर देखो,
'अविहिपरिट्वणाए काउस्सगो य गुत्समी-
वम्मि' (वृह ४) ।

परिट्वणा स्त्री [प्रतिष्ठापना] प्रतिष्ठा कराना,
'वेयावच्च जिणगिहरस्सएणपरिट्वणाइजिण-
किच्च' (चेइय ७७६) ।
परिट्विय स्त्री [प्रतिष्ठापित] सस्थापित
(भवि) ।
परिट्ठा देखो पइट्ठा (हे १, ३८) ।
परिट्ठाइ वि [परिष्ठापिन] परित्यागी (नाट—
साहि १६२) ।
परिट्ठाण न [परिस्थान] परित्याग (नाट) ।
परिट्ठाव देखो परिट्व हेक्क परिट्ठावित्तए
(कप्प, पि ५७८) ।
परिट्ठावअ वि [परिस्थापक] परित्याग
करनेवाला (नाट) ।
परिट्ठिअ वि [परिस्थित] सपूर्ण रूप से
स्थित (पव ६६) ।
परिट्ठिअ देखो पड्डिअ (हे १, ३८, २,
२११, पड, महा, सुर ३, १३) ।
परिठव देखो परिट्व । परिठवहु (अप)
(पिग) ।
परिठवण देखो परिट्वण = परिष्ठापन (पव—
गाथा २४) ।
परिण देखो परिणी, 'परिणइ बहुयाउ खयर-
कन्नामो' (धर्मवि ८२) । वक्क, परिणंत
(भवि) । संक. परिणिऊण (महा, कुप्र ७६,
१२७) ।
परिणइ स्त्री [परिणति] परिणाम, (गा ५६८,
धर्मसं ६२३) ।
परिणत देखो परिण ।
परिणतु वि [परिणन्तु] परिणाम को प्राप्त
होनेवाला, परिणत होनेवाला (विसे ३५३४) ।
परिणद सक [परि + नन्द] वरान करना,
श्लाघा करना, 'ताए परिणदता (? ति)
(तंडु ४०) ।
परिणद्ध वि [परिणद्ध] १ परिणत, वेष्टित,
'उंदुरमालापरिणद्धसुकयचिधे' (उवा, राया
१, ८—पत्र १३३) । २ न वेष्टन (राया
१, ८) ।
परिणम सक [परि + णम्] १ प्राप्त करना ।
२ अक रूपान्तर को प्राप्त होना । ३ पूर्ण
होना, पुरा होना, 'किण्हलेसं तु परिणमे'
(उत्त ३४, २२), 'परिणमइ अय्यमाप्नो'
(स ६८४ भग १२, ५) । वक्क, परिणमंत,

परिसड अक [परि + शट्] उपयुक्त होना ।
 परिसडइ (आचा २, १, ६, ६) ।
 परिसडिय वि [परिशटित] सडा हुआ,
 विनष्ट (आया १, २, औप) ।
 परिसणह वि [परिशृङ्खण] सूक्ष्म, छोटा (से
 १, १, १) ।
 परिसन्न वि [परिपण] जो हैरान हुआ हो,
 पीडित (पउम १७, ३०) ।
 परिसप्प सक [परि + सप्] चलना ।
 परिसप्पेड (नाट—विक्र ६१) ।
 परिसप्पि वि [परिसर्पिन्] १ चलनेवाला
 (कप्प) । २ पुत्री. हाथ और पैर से चलने-
 वाला जन्तु—नकुल, सर्प आदि प्राणि-
 गण । स्त्री ०णी (जीव २) ।
 परिसम देखो परिस्सम (महा) ।
 परिसमत्त वि [परिसमाप्त] सम्पूर्ण, जो पूरा
 हुआ हो वह (से १५, ६५; सुर १५,
 २५०) ।
 परिसमत्ति स्त्री [परिसमाप्ति] समाप्ति
 पूर्णता (उप ३५७, स ५२) ।
 परिसमापिय वि [परिसमापित] जो समाप्त
 किया गया हो, पूरा किया हुआ (विसे
 ३६०२) ।
 परिसमाव सक [परिमम् + आप्] पूर्ण
 करना । सकृ. परिसमाविअ (अभि ११६) ।
 परिसर पुं [परिसर] नगर आदि के समीप
 का स्थान (औप, सुपा १३०, मोह ७६) ।
 परिसहिय वि [परिशाल्यित] शल्य-युक्त
 (सण) ।
 परिसव सक [परि + त्तु] भरना, टपकना ।
 वक्र. परिसवत (तट्ट ३६, ४१) ।
 परिसह पु [परिपह] देखो परीसह (भग) ।
 परिसा स्त्री [परिषट्] १ सभा, पर्षद (पात्र,
 औप, उवा, विपा १, १) । २ परिवार (ठा
 ३, २—पत्र १२७) ।
 परिसाइ देखो परिस्साइ (राज) ।
 परिसाइयाण देखो परिसाव ।
 परिसाइ सक [परि + शाट्य] १ ध्याग
 करना । २ अलग करना । परिसाइइ (कप्प,
 भग) । सकृ. परिसाइइत्ता (भग) ।

परिसाइ सक [परि + शाट्य] १ धर-
 उधर फेंकना । २ भरना । ३ रखना, 'परिमा-
 ङ्गिज भोग्गण' (दस ५, १, २८) । परिसा-
 ङ्गिति, भूवा. परिमाङ्गिमु, भवि. परिमाङ्गिस्सति
 (आचा २, १०, २) ।
 परिमाङ्गणा स्त्री [परिशाटना] वपन, वोना
 (वव १) ।
 परिमाङ्गणा स्त्री [परिशाटना] वृक्षकरण
 (सुअनि ७, २०) ।
 परिसाङ्गि वि [परिशाटिन्] परिशाटन युक्त
 (ओष ३१) ।
 परिसाङ्गि वि [परिशाटि] परिशाटन, वृक्ष-
 करण (पिड ५५२) ।
 परिसाङ्गिय स्त्री [परिशातित] गिराया हुआ
 (दस ५, १, ६६) ।
 परिसाम अक [शम्] शान्त होना । परि-
 सामड (हे ४, १६७) ।
 परिमाम वि [परिइयाम] नीचे देखो
 (गडड) ।
 परिसामल वि [परिइयामल] कृष्ण, काला
 (गडड) ।
 परिसामिअ वि [शान्त] शान्त, शम युक्त
 (कुमा) ।
 परिसामिअ वि [परिइयामित] कृष्ण किया
 हुआ (आया १, १) ।
 परिसाव सक [परि + स्त्राव्य] १ निचो-
 टना । २ गालना । सकृ. परिसावियाण
 (आचा २, १, ८, १) ।
 परिसावि देखो परिस्सावि (वृह १) ।
 परिसाहिय वि [परिकथित] प्रतिपादित,
 उक्त (सण) ।
 परिसिच सक [परि + सिच्] सीचना ।
 परिसिचिजा (उत्त २, ६) । वक्र. परिसिच-
 माण (आया १, १) । कवक. परिसिचमाण
 (कप्प, पि ५४२) ।
 परिसिट्ट वि [परिशिट्ट] अवशिष्ट, बाकी
 बचा हुआ (आचा १, २, ३, ५) ।
 परिसिट्टिल वि [परिशिट्टिल] विशेष शिथिल,
 ढीला (गडड) ।
 परिसित्त वि [परिपित्त] १ सीचा हुआ
 (गा १८५; सण) । २ न. परिपेक, सेचन
 (पह १, १) ।

परिमिद्ध वि [पर्पद्धन्] परिपद वाला
 (वृह ३) ।
 परिमील सक [परि + शील्य] अभ्यास
 करना, आदत डालना । सकृ. परिमीलिवि
 (अप) (नण) ।
 परिमीलण न [परिशीलन] अभ्यास, आदत
 (रभा, सण) ।
 परिमीलिय वि [परिशीलित] अभ्यास
 (सण) ।
 परिमीमग देखो पटिमीमअ (राज) ।
 परिमुक्क वि [परिशुक्क] मृत्र सूना हुआ
 (विपा १, २, गडड) ।
 परिमुण्ण वि [परिशून्य] गान्धी, रिक्त, मुद्र
 (से ११, ८७) ।
 परिमुत्त वि [परिमुत्त] सर्वथा सोया हुआ
 (नाट—उत्तर २३) ।
 परिमुद्ध वि [परिशुद्ध] निर्मल, निर्दोष (उव,
 गडड) ।
 परिमुद्धि स्त्री [परिशुद्धि] विशुद्धि, निर्मलता
 (गडड, द्र ६५) ।
 परिसुन्न देखो परिसुण्ण (विसे २८५०,
 सण) ।
 परिसुस (अप) सक [परि + शोप्य]
 सुलाना । सकृ. परिसुमिवि (अप) (सण) ।
 परिसूअणा स्त्री [परिसूचना] सूचना (सुपा
 ३०) ।
 परिसेय पुं [परिपेक] सेचन (ओष ३४७) ।
 परिसेस पु [परिशेष] १ बाकी बचा हुआ,
 अवशिष्ट (से १०, २३, पउम ३५, ४०, गा
 ८८, कम्म ६, ६०) । २ अनुमान-प्रमाण का
 एक भेद, पारिशेषानुमान (धम्मसं ६८, ६९) ।
 परिसेसिअ वि [परिशेषित] १ बाकी बचा
 हुआ (भग) । २ परिच्छिन्न, निर्णीत,
 'उज्झसि उज्झमु कडुसि
 कडुमु अह फुडसि हिअस ता फुडसु ।
 तहवि परिसेसिअो च्चिअ
 सो ह्म मए गलिससव्मावो' (गा ४०१) ।
 परिसेह पुं [परिपेध] प्रतिषेध, निवारण;
 'पावट्ठाणाण जो उ परिसेहो, भाणज्जमयणा'
 ईण जो य विही, एस धम्मकसो' (काल) ।

परिणगाण—परिदेवण

१, १)। ४ ज्ञान-पूर्वक प्रत्याख्यान (ठा ५, २)।
 परिणगाण वि [परिज्ञान] ज्ञान, जानकारी (धर्मसं १२५३, उप पृ २७४)।
 परिणगाय देखो परिणगा = परि + जा।
 परिणगाय वि [परिज्ञात] विदित, जाना हुआ (सम १६, आचा)।
 परिणि वि [परिजिन्] परिज्ञा युक्त, 'गीय-जुओ उ परिणो तह जिणइ परीसहाणीय' (वव १)।
 परितन वि [परितान्त] संबंध खिन्न, निर्विण (गाया १, ४—पत्र ६७, विपा १, १, उव)।
 परितविर वि [परिताम्र] विशेष ताम्र—अरुण वर्णवाला (गडड)।
 परितज्ज सक [परि + तर्जय्] तिरस्कार करना। वक्र परितज्जयन (पउम ४८, १०)।
 परितडुविय वि [परितत] खूब फैलाया हुआ (मण)।
 परितणु वि [परितनु] अत्यन्त पतला (सुपा ५८)।
 परितप्प अक [परि + तप्] १ सतप्त होना, गरम होना। २ पश्चात्ताप करना। ३ दु खी होना। परितप्पइ (महा, उव), परितप्पति (सूत्र २, २, ५५), 'ता लोहमारवाहगनरुव परितप्पमे पच्छा' (धर्मवि ६)। संक्रु परित-प्पिऊण (महा)।
 परितप्प सक [परि + तापय्] परिताप उपजाना। परितप्पति (सूत्र २, २, ५५)।
 परितप्पण न [परितपन] परितप्त होना (सूत्र २, २, ५५)।
 परितप्पण, न [परितापन] परिताप उपजाना (सूत्र २, २, ५५)।
 परितलिअ वि [परितलित] तला हुआ (ओघ ८८)।
 परितविय वि [परितप्त] परिताप युक्त (सण)।
 परिताण न [परित्राण] १ रक्षण। २ वागुरादि बन्धन (सूत्र १, १, २, ६)।
 परिताव देखो परितप्प = परि + तापय्।
 कृ परितावेयव्य (पि ५७०)।

परिताव पुं [परिताप] १ सताप, दाह। २ पश्चात्ताप। ३ दुःख, पीडा (महा, ओप)।
 ०यर वि [०कर] दु खोलादक (पउम ११०, ६)।
 परितावण देखो परितप्पण = परितापन (ओप)।
 परिताविअ वि [परितापित] १ सतापित (ओप)। २ तला हुआ (ओघ १४७)।
 परितास पुं [परित्रास] अकस्मात् होनेवाला भय (गाया १, १—पत्र ३३)।
 परितुट्टि वि [परितुट्टि] दूझेवाला (सण)।
 परितुट्ट वि [परितुट्ट] तोप-प्राप्त, सतुट्ट (उव, चेइय ७०१)।
 परितुलिय वि [परितुलिन] तौला हुआ (मण)।
 परितेज्जि देखो परित्तज।
 परितोल सक [परि + तोलय्] उठाना। वक्र, 'जुगवं परितोलंता खगं समरंगणम्मि तो दोवि' (सुपा ५७२)।
 परितोस सक [परि + तोपय्] सतुट्ट करना। भवि, परितोसइस्सं (कपूर ३२)।
 परितोस पुं [परितोप] आनन्द, खुशी (नाट—मालवि २३)।
 परितोसिय वि [परितोपित] सतुट्ट किया हुआ (मण)।
 परित्त वि [परीत] १ व्याप्त (तिरि १८३)। २ प्रत्रट्ट (सूत्र २, ६, १८)। ३ सख्येय, जिमकी गिनती हो सके ऐसा (सम १०६)।
 ४ परिमित, नियत परिमाणवाला (उप ४१७)। ५ लघु, छोटा। ६ तुच्छ हलका (उप २७०, ६६४)। ७ एक से लेकर असंख्येय जीवों का आश्रय, एक से लेकर असंख्येय जीववाला (ओघ ४१)। ८ एक जीववाला (परण १)। ०करण न [०करण] लघुकरण (उप २७०)। ०जीव पुं [०जीव] एक शरीर मे एकाकी रहनेवाला जीव (परण १)। ०णंत न [०नन्त] सख्या-विशेष (कम्म ४, ७१, ८३)। ०संसारिअ वि [०ससारिक] परिमित संसारवाला (उप ४१७)। ०सख न [०सख्यात] सख्या-विशेष (कम्म ४, ७१, ७८)।

परित्तज देखो परिच्चय। संक्रु, परिच्चिअ (स्वप्न ५१), परित्तेज्जि (अप)। (पिण)।
 परित्ता } सक [परि + त्रै] रक्षण करना।
 परित्ताअ } परित्ताइ, परित्ताअसु, परित्ताहि, परित्तायह (प्राकृ ७०, पि ४७६, हे ४, २६८)।
 परित्ताइ वि [परित्रायिन्] रक्षण-कर्ता (सुपा ४०५)।
 परित्ताण न [परित्राण] रक्षण (से १४, ३५, सुपा ७१, आत्मानु ८, सण)।
 परित्ताणतय पुन [परीतानन्तक] संख्या-विशेष (अणु २३४)।
 परित्तास देखो परितास (कप)।
 परित्तासखेज्जय पुन [परीतासंख्येयक] संख्या-विशेष (अणु २३४)।
 परित्तीकय वि [परीतीकृत] सक्षिप्त किया हुआ, लघुकृत (गाया १, १—पत्र ६६)।
 परित्तीकर सक [परीती + कृ] लघु करना, छोटा करना। परित्तीकरंति (भग)।
 परित्थोम न [परिस्तोम] १ मस्तक। २ वि वक्र, 'चित्परित्थोमपच्छद' (ओप)।
 परिथंभिअ वि [परित्तभिभत] स्तव्व किया हुआ (सुपा ४७५)।
 परिथु सक [परि + स्तु] स्तुति करना। कवक परिथुवत्त (सुपा ६०७)।
 परिथूर } वि [परिस्थूर] विशेष स्थूल,
 परिथूल } खूब मोटा (धर्मसं ८३८, चेइय ८५४, आ ११)।
 परिदा सक [परि + दा] देना। कर्म, परि-दिज्जसु (अप), (पिण)।
 परिदाह पुं [परिदाह] सताप (उत्त २, ८, भग)।
 परिदिण वि [परित्त] दिया हुआ (अभि १२५)।
 परिदिह वि [परिदिह] उपलिप्त (सुख २, ३७)।
 परिदिन्न देखो परिदिण (सुपा २२)।
 परिदेव अक [परि + देव] विलाप करना। परिदेव (उत्त २, १३)। वक्र, परिदेवत (पउम २६, ६२, ४५, ३६)।
 परिदेवण न [परिदेवन] विलाप, 'तस्स कदणुसोयणपरिदेवणताडणाई लिगाई' (संवेध ४६, संवे ८)।

परिहिऊण, परिहित्ता (कुप्र ७२, सूत्र १, ४, १, २५) । कृ परिहियन्व (स ३१५) ।
परिहा स्त्री [परिग्या] खाई (उर ४, २, पात्र) ।

परिहाइअ वि [दे] परिक्षीण (पड्) ।

परिहाइवि देखो परिहाव = परि + धापय् ।

परिहाण न [परिधान] १ वस्त्र, कपडा, (कुप्र ५६, सुपा ५५) । २ वि पहिरनेवाला, पहननेवाला, 'महिबिलया सनिलवत्यपरिहाणी' (पउम ११ ११६) ।

परिहारण स्त्री [परिहाणि] हाम, मुक्सान, क्षति (मम ६७, उप ३०६ जो ३३, प्रासू ३६) ।

परिहाय वि [दे] क्षीण, दुर्बल (दे ६, २५, पात्र) ।

परिहायंत } देखो परिहा = परि + हा ।
परिहायमाण }

परिहार पु [परिहार] करण, कृति (वव १) ।

परिहार पु [परिहार] १ परित्याग, वर्जन (गउड) । २ परिभोग, आनेवन, 'एव खलु गोसाला । वरास्मइकाइयाओ पउट्टपरिहार परिहरति' (भग १५) । ३ परिहार विशुद्धि नामक समय-विशेष (कम्म ४, १२, २१) । ४ विषय (वव १) । ५ तप-विशेष (ठा ५, २, वव १) । 'विशुद्धिअ, 'विसुद्धीअ न [विशुद्धिक] चारित्र-विशेष, समय-विशेष (ठा ५ २, नव २६) ।

परिहारि वि [परिहारिन] परिहार करने-वाला (वृह ४) ।

परिहारिअ वि [पारिहारिक] आचारवान् मुनि, उद्युक्त विहारी जैन साधु (आचा २, १, १, ४) ।

परिहारिणी स्त्री [दे] देर से व्याई हुई मैस (दे ६, ३१) ।

परिहारिय वि [पारिहारिक] १ परित्याग के योग्य (वृह २) । २ परिहार नामक तप का पालक (पव ६६) ।

परिहाल पुं [दे] जल-निगम, मोरी (दे ६, २६) ।

परिहाव सक [परि + धापय्] पहिराना । सकृ. परिहाइवि (अप) (भवि) ।

परिहाव सक [परि + धापय्] ह्रास करना, कम करना, हीन करना । वक्तृ. परिहावेमाण (खाया १, १—पत्र २८) ।

परिहाविअ वि [परिहापित] हीन किया हुआ (वव ४) ।

परिहाविअ वि [परिधापित] पहिराया हुआ (महा, मुर १०, १७, म ५२६, कुप्र ६) ।

परिहाम पु [परिहास] उपहाम, हँसी (गा ७७१, पात्र) ।

परिहामणा स्त्री [परिभापणा] उपालम्भ (आव १) ।

परिहि पुस्त्री [परिवि] १ परिवेष, 'ससिविं व परिहिणा रुद्ध सिल्लेण तस्स रायणिह' (पव २५५) । २ परिणह, विन्तार (राज) ।

परिहिअ वि [परिहित] पहिरा हुआ (उवा, भग, कण, औप, पात्र, मुर २, ८) ।

परिहिऊण देखो परिहा = परि + धा ।

परिहिड सक [परि + हिण्ड्] परिभ्रमण करना । परिहिण्ड (ठा ४, १ टी—पत्र १६२) । वक्तृ. परिहिण्डत, परिहिण्डमाण (पउम ८, १६८, ६०, ५, १५५, औप) ।

परिहिण्डिय वि [परिहिण्डित] परिभ्रान्त, भटका हुआ (पउम ६, १३१) ।

परिहित्ता } देखो परिहा = + धा ।
परिहियन्व }

परिहीअमाण देखो परिहा = परि + हा ।

परिहीण वि [परिहीन] १ कम, न्यून (औप) ।

२ क्षीण, विनष्ट (मुज्ज १) । ३ रहित, वर्जित (उव) । ४ न हाम, अपचय (राय) ।

परिहुत्त वि [परिभुक्त] जिसका भोग किया गया हो वह (मे १, ६४, दे ४, ३६) ।

परिहूअ वि [परिभूत] पराजित, अभिभूत (गा १३४, पउम ३, ६, से २८) ।

परिहेरग न [दे परिहार्यक] आभूषण-विशेष (औप) ।

परिहो सक [परि + भू] पराभव करना । परिहोइ (भवि) ।

परिहोअ देखो परिभोग (गउड) ।

परिह्लस (अप) अक [परि + हल्स्] कम होना । परिह्लसइ (पिंग) ।

परी सक [परि + इ] जाना, गमन करना ।

परिति (पि ४६३) । वक्तृ. परित (पि ४६३) ।

परी सक [क्षिप्] फेंकना । परीइ (हे ४, १४३) । परीमि (कुमा) ।

परी सक [भ्रम्] भ्रमण करना, घूमना । परीइ (हे ४, १६१) । परेंति (पएह १, ३—पत्र ४६) ।

परीयाय पु [परिघात] निर्वात, विनाश (पव ६४) ।

परीणम देवो परिणम = परि + णम्, 'सस-ग्गओ पएणवणागुणाओ लोउत्तरत्तेण परी-णमति' (उपप ३५) ।

परीभोग देखो परिभोग (मुपा ४६७, धावक २८८, पचा ८ ६) ।

परीमाण देखो परिमाण (जीवस १२३, १२२, पव १५६) ।

परीय देखो परिन्त (राज) ।

परीयल्ल पु [दे. परिवर्त] वेष्टन, 'तिपरी-यल्लमणिस्मट्ठं खयरण धारण एग' (प्रोव ७०६) ।

परीरभ पुं [परीरम्भ] आनिगत (कुमा) ।

परीवज्ज वि [परिवर्ज्य] वर्जनीय (कम्म ६, ६ टी) ।

परीवाय देखो परिवाय = परिवाद (पउम १०१, ३, पव २३७) ।

परीवार देखो परिवार = परिवार (कुमा, चेइय ४८) ।

परीसण न [परिवेषण] परोसना (दे २, १४) ।

परीमम देखो परिस्सम (भवि) ।

परीसह पुं [परीसह] भूत आदि मे होनेवाली पीडा (आचा, औप उव) ।

परुइय वि [प्रसूदित] जो रोने लगा हो वह (म ७५५) ।

परुक्ख देखो परोक्ख (विसे १४०३ टी, सुपा १३३, आ १, कुप्र २५) ।

परुण्ण } देखो परुइय (से १, ३५, १०,
परुन्न } ६८, गा ३५४, ८३८, महा
स २०४) ।

परुप्पर देखो परोप्पर (कुप्र ५) ।

परुब्भासिद (शौ) वि [प्रोद्भासित] प्रकाशित (प्रयी २०) ।

परुस वि [परुप] कठोर (गा ३४४) ।

परुड वि [परुड] १ उत्पन्न (धर्मावि १२१) । २ बढा हुआ (औप, पि ४०२) ।

परिपूय वि [परिपूत] छाया हुआ (कप्, तद् ३२) ।
 परिपूर सक [परि + पूर्य्] पूर्ण करना, भरपूर करना । वक्तु परिपूरत (पि ५३७) ।
 संकृ परिपूरिअ (नाट—मालवि १५) ।
 परिपूरिय वि [परिपूरित] भरपूर, व्याप्त (मुर २, ११) ।
 परिपेच्छ सक [परिप्र + ईक्ष्] देखना । वक्तु परिपेच्छंत (अन्वु ६३) ।
 परिपेरत पुं [परिपर्यन्त] प्रान्त भाग (खाया १, ४, १३, मुर १५, २०२) ।
 परिपेरिय वि [परिप्रेरित] जिसको प्रेरणा की गई हो वह (मुपा १६६) ।
 परिपेलव वि [परिपेलव] १ सुकर, सहज, सहल, आसान (मे ३, १३) । २ अट्ट ३ नि सार । ४ बराक, दीन (राज) ।
 परिपेहिअ देखो परिपेरिय (गा ५७७) ।
 परिपेस सक [परिप्र + इप्] भोजना । परिपेसइ (भवि) ।
 परिपेसण न [परिप्रेषण] भोजना (भवि) ।
 परिपेसल वि [परिपेशल] सुन्दर, मनोहर (मुपा १०६) ।
 परिपेसिय वि [परिप्रेषिन] भेजा हुआ (भवि) ।
 परिपोस सक [परि + पोप्य्] पुष्ट करना । वक्तु परिपोसिज्जत (राज) ।
 परिप्पमाण न [परिप्रमाण] परिमाण (भवि) ।
 परिप्पव सक [परि + प्लु] तैरना, गोता लगाना । वक्तु परिप्पवत (से २, २८, १०, १३, पाप्प) ।
 परिप्पुय वि [परिप्लुत] आप्नुत, व्याप्त (राज) ।
 परिप्पुया लो [परिप्लुता] दीक्षा-विशेष (राज) ।
 परिप्फड पु [परिस्पन्द] १ रचना-विशेष, 'जयइ वायापरिप्फदो' (गडड) । २ समन्तात् चलन (चार ४५) । ३ चेष्टा, प्रयत्न, 'योया रंभेवि विहिम्मि आयमगे व्व खडणमुव्वेत्ति । स-परिप्फदेणं चिय एओम्मा भमिदासयल व' (गडड) ।
 परिप्फुड वि [परिस्फुट] अत्यन्त स्पष्ट (से ११, ६०, मुर ४, २१४, भवि) ।

परिप्फुड पुं [परिस्फोट] १ प्रस्फोटन, भेदन । २ वि. फोडनेवाला, विभेदक, 'तमपडल-परिप्फुडं खेव तेअसा पज्जलतत्तुवं' (कप्) ।
 परिप्फुर अक [परि + स्फुर्] चलना । परिप्फुरिदि (शौ) (नाट—उत्तर २८) ।
 परिप्फुरण न [परिस्फुरण] हिलन, चलन (सण) ।
 परिप्फुरिअ वि [परिस्फुरित] स्फूर्ति-युक्त, 'वयणु परिप्फुरिअ' (भवि) ।
 परिफंस पुं [परिस्पर्श] स्पर्श, छूना (पि ७४, ३११) ।
 परिफसण न [परिस्पर्शन] ऊपर देखो (उप ६८६ टी) ।
 परिफग्गु वि [परिफल्गु] निस्तार, असार (धम्मस ६५३) ।
 परिफासिय वि [परिस्पृष्ट] व्याप्त (दस ५, १, ७२) ।
 परिफुड देखो परिप्फुड = परिस्फुट (पउम ३, ८, प्रासू ११६) ।
 परिफुडिय वि [परिस्फुटित] फूटा हुआ, भग्न (पउम ६८, १०) ।
 परिफुर देखो परिप्फुर । परिफुरइ (सण) । वक्तु परिफुरंत (सण) ।
 परिफुरिअ देखो परिप्फुरिय (सण) ।
 परिफुलिअ वि [परिफुलित] फूला हुआ, कुमुमित (पिंग) ।
 परिफुस सक [परि + स्पृश] स्पर्श करना, छूना । वक्तु परिफुसंत (धम्मवि १२६, १३६) ।
 परिफुसिय वि [परिप्रोञ्छित] पोछा हुआ (उप पृ ६४) ।
 परिफोसिय वि [परिस्पृष्ट] छूना हुआ, 'उदगपरिफोसियाए दव्वोवरिपच्चत्थुयाए भिसियाए णिसीयति' (खाया १, १६, उप ६४८ टी) ।
 परिवूहण न [परिवृहण] वृद्धि, उपचय (सूअ २, २, ६) ।
 परिवभंत वि [दे] १ निषिद्ध, निवारित । २ ओर, डरपोक (दे ६, ७२) ।
 परिवभमिद (शौ) नीचे देखो (मा ५०) ।
 परिवभट्ट वि [परिभ्रष्ट] पतित, न्वलित (खाया १, १३, मुपा ५०६, अमि १४४) ।

परिवभम सक [परि + भ्रम्] पयंटन करना, भटकना । परिवभमइ (प्राक ७६, भवि, उव) । वक्तु परिवभमंत (मुर २, ८७, ३, ४, ४, ७१, भवि) ।
 परिवभमण न [परिभ्रमण] पयंटन (महा) ।
 परिवभमिअ वि [परिभ्रान्त] भटका हुआ (वे ६३, सण, भवि) ।
 परिवभोअ वि [परिभोत] भय-प्राप्त (पउम ५३, ३६) ।
 परिवभूअ वि [परिभूत] पराभव प्राप्त (मुपा २५८) ।
 परिभग्ग वि [परिभग्न] भांगा हुआ (आत्मानु १४) ।
 परिभट्ट देखो परिवभट्ट (महा, पि ८४) ।
 परिभणिर वि [परि + भणितृ] कहनेवाला (सण) ।
 परिभम देखो परिवभम । परिभमइ (महा) । वक्तु परिभमत, परिभममाण (महा, सण, भवि, सवेग १४) । सक्तु परिभमिऊणं (पि ५८५) । हेतु परिभमिउ (महा) ।
 परिभमिअ देखो परिवभमिअ (भवि) ।
 परिभमिर वि [परिभ्रमितृ] पयंटन करनेवाला (मुपा २६६) ।
 परिभव सक [परि + भू] पराजय करना, तिरस्कारना । परिभवइ (उव) । कर्म परिभविज्जामि (मोह १०८) । क्त. परिभवणिज्ज (खाया १०३) ।
 परिभव पु [परिभव] पराभव, तिरस्कार (श्रौप, स्वप्न १०, प्रासू १७३) ।
 परिवभंत पु [परिभवन्] पार्श्वस्थ साधु, शिथिलाचारी मुनि (वव १) ।
 परिभवण न [परिभवन] ऊपर देखो (राज) ।
 परिभवणा लो [परिभवन] ऊपर देखो (श्रौप) ।
 परिभविअ वि [परिभूत] अभिभूत (धम्मवि ३६) ।
 परिभाअ सक [परि + भाज्य] बांटना, विभाग करना । परिभाअइ (कप्) । वक्तु परिभाइत, परिभायन. परिभाणमाण (आवा २, ११, १८, खाया १, ७—पय ११७, १, १, वप्प) । वक्तु परिभाज्ज-

पलविअ } वि [प्रलपित] १ अनर्थक कहा
पलवित } हुआ । २ न. अनर्थक भाषण (चड,
पएह १, २) ।

पलविर वि [प्रलपितृ] वकवादी (दे ७,
५६) ।

पलस न [दे] १ कार्पास-फल । २ स्वेद,
पसीना (दे ६, ७०) ।

पलस (अप) न [पलाश] पत्र, पत्ती (भवि) ।

पलसु स्त्री [दे] मेवा, पूजा, भक्ति (दे
६, ३) ।

पलहि पुंस्त्री [ने] कपाम (दे ६, ४ पात्र,
वज्जा १८६, हे २ १७४) ।

पलहिअ वि [दे] १ विषम, असम । २ पुन.
आवृत्त जमीन का वास्तु (दे ६, १५) ।

पलहिअअ वि [दे उपलहृदय] मूलं,
पापाण-हृदय (षड्) ।

पलहुअ वि [प्रलघु] १ स्वल्प, थोडा । २
छोटा (से १, ३३, गडड) ।

पला देखो पलाय = परा + अय्, 'जं ज
भणामि अहयं सयलपि वहि पलाइ त तुज्ज'
(आत्मा २३), पलासि, पलामि (नि
५६७) ।

पलाअत } देखो पलाय = परा + अय् ।
पलाइअ }

पलाइअ } वि [पलायित] १ भागा हुआ,
पलाण } नट, 'पलाइए हलिये' (गा ३६०),
'रिडणो सिन्न जह पलाए' (धर्मवि ५६,
५१, पउम ५३, ८४, ओघ ४६७, उप १३६
टी, सुपा २२, ५०३, ती १५, सण, महा) ।
२ न पलायन (दस ४, ३) ।

पलाण न [पलायन] भागना (सुपा ४६४) ।

पलाणिअ वि [पलायनित] जिसने पलायन
किया हो वह, भागा हुआ, 'तेणवि आगच्छतो
विन्नाओ तो पलाणिओ दूर' (सुपा ४६४) ।

पलात वि [पलात] गृहीत (चड) ।

पलाय अक [परा + अय्] भाग जाना,
नासना । पलायइ, पलाअसि (महा, पि
५६७) । भवि पलाइस्स (पि ५६७) । वक्क
पलाअत, पलायमाण (गा २६१, णाया
१८, आक १८, उप पृ २६) । सक्क. पलाइअ
(नाट, पि ५६७) । हेक्क. पलाइउ (आक
१६, सुपा ४६४) । क पलाइअव्व (पि
५६७) ।

पलाय पु [दे] चोर, तस्कर (दे २, ८) ।

पलाय देखो पलाइअ = पलायित (णाया १,
३, स १३१, उप पृ २५७, घण ४८) ।

पलायण न [पलायन] भागना (ओघ २६,
सुर २, १४) ।

पलायणया स्त्री ऊपर देखो (चिइय ४४६) ।

पलायमाण देखो पलाय = परा + अय् ।

पलाल वि [प्रलाल] प्रकृत लालावाना (अणु
१४१) ।

पलाल न [पलाल] तृण-विशेष, पुआल (पएह
२, ३, पात्र, आचा) । °पीठय न [°पीठक]
पलाल का आसन (निचू १२) ।

पलाला वि [पलालक] पलाल—पुआल का
बना हुआ (आचा २, २, ३, १४) ।

पलाव सक [नाशय्] भगाना, नष्ट करना ।
पलावइ (हे ४, ३१) ।

पलाव पु [प्लाव] पानी की बाढ (तट्ट ५०
टी) ।

पलाव पुं [प्रलाप] अनर्थक भाषण, वकवाद
(महा) ।

पलावण न [नाशन] नष्ट करना, भगाना
(कुमा) ।

पलावि वि [प्रलापिन्] वकवादी, 'असवद्ध-
पलाविणी एस' (कुप्र २२२, सबोध ४७,
अभि ४६) ।

पलाविअ वि [प्लावित] डुबाया हुआ,
भिगाया हुआ (सुर १३, २०४, कुप्र ६०,
६७, सण) ।

पलाविअ वि [प्रलापित] अनर्थक घोषित
करवाया हुआ, 'मछुडु कि दुच्चरिउ पलाविउ
सज्जणजणहो नाउ लज्जाविउ' (भवि) ।

पलाविर वि [प्रलपितृ] वकवाद करनेवाला,
'अहह असवद्धपलाविरस्स बडुयस्स पेच्छ मह
पुरओ' (सुपा २०१), 'दिव्वनाणीव जंपेइ,
एसो एव पलाविरो' (सुपा २७७) ।

पलास पुं [पलाश] १ वृक्ष-विशेष, किशुक
का वृक्ष, ढाक (वज्जा १५२, गा ३११) । २
राक्षस (वज्जा १३०, गा ३११) । ३ पुन.
पत्र, पत्ता (पात्र, वज्जा १५२) । ४ अद्रशाल
वन का एक दिहस्ती कूट (ठा ८—पत्र ४३६,
इक) ।

पलासि स्त्री [दे] भल्ली, छोटा भाला, शस्त्र-
विशेष (दे ६ १४) ।

पलासिया स्त्री [दे पलाशिका] त्वक्काष्ठिका,
छाल की बनी हुई लकड़ी (सूत्र १, ४,
२, ७) ।

पलाह देखो पलास (संक्षि १६, पि २६२) ।

पलि देखो परि (सूत्र १, ६, ११, २, ७,
३६, उत्त २६, ३४, पि २५७) ।

पलिअ न [पलित] १ वृद्ध अवस्था के कारण
वालो का पकना, केशो की श्वेतता । २ बदन
की झुर्रियाँ (हे १, २१२) । ३ कर्म, कम-
पुद्गल, 'जे केइ मत्ता पलिय चर्यति' (आचा
१, ४, ३, १) । ४ घृणित अनुष्ठान, 'सि
आकुट्टे वा हए वा लु चिए वा पलिय पकंथे'
(आचा १, ६, २, २) । ५ कर्म, काम
(आचा १, ६, २, २) । ६ ताप । ७ पक,
कादा । ८ वि. शिथिल । ९ बृद्ध, बूढा (हे
१, २१२) । १० पका हुआ, पक्व (धर्म २,
निचू १५) । ११ जरा-ग्रस्त, 'न हि दिज्जइ
आहरण पलियत्तयकरणहत्थस्स' (राज) ।
°ढाण, °ठाण न [°स्थान] कर्म-स्थान,
कारखाना (आचा १, ६, २, २) ।

पलिअ न [पल] चार कर्ष या तीन सौ बीस
गुब्बा की नाप (तट्ट २६) ।

पलिअ देखो पल्ल = पल्य (पव १५८, भग,
जो २६, नव ६, दं २७) ।

पलिअ (अप) देखो पडिअ (पिंग) ।

पलिअक पुं [पर्यङ्क] पलंग, खाट (हे २,
६८, सम ३५, औप) । °आसण न
[°आसन] आसन-विशेष (सुपा ६५५) ।

पलिअका स्त्री [पर्यङ्का] पयासन, आसन-
विशेष (ठा ५, १—पत्र ३००) ।

पलिउच सक [परि + कुञ्च] १ अपलाप
करना । २ ठगना । ३ छिपाना, गोपन
करना । पलिउचत्ति, पलिउचर्यति (उत्त २७,
१३, सूत्र १, १३, ४) । सक्क पलिउचिय
(आचा २, १, ११, १) । वक्क. पलिउचमाण
(आचा १, ७, ४, १, २, ५, २, १) ।

पलिउचण न [परिकुञ्चन] माया, कपट
(सूत्र १, ६, ११) ।

पलिउचणा स्त्री [परिकुञ्चना] १ सच्ची
बात को छिपाना । २ माया (ठा ४, १

परिमा (अप) देखो पडिमा (भवि) ।
 परिमाइ छी [परिमाति] परिमाण, 'जिए-
 सासणि छज्जीवदयाड व पडियमरणि सुगइ-
 परिमाड व' (भवि) ।
 परिमाण न [परिमाण] मान, माप, नाप
 (श्रीप, स्वप्न ४२, प्रानू ८७) ।
 परिमाम पु [परिमर्श] नशं (गाथा १, ६,
 गडड, मे ६, ४८, ६ ७६) ।
 परिमास पु [दे] नौका का काहु-विशेष
 (गाथा १, ६—पत्र १५७) ।
 परिमासि वि [परिमर्शिन] स्पर्श करनेवाला
 (पि ६२) ।
 परिमिज्ज नीचे देखो ।
 परिमिण सक [परि + मा] नापना, चीन्ना ।
 वहु परिमिणत (मुपा ७७) । कृ परिमिज्ज,
 परिमेय (पत्र ५६, पडम ४६, २२) ।
 परिमिअ वि [परिमिन] परिमाण-युक्त
 (कप्प, ठा ५, १, श्रीप, पण्ह २, १) ।
 परिमिअ वि [परिवृत्त] परिकरित, वेष्टित
 (पडम १०१, भवि) ।
 परिमिला अक [परि + म्लै] म्लान होना ।
 परिमिलादि (शौ) (पि १३६, ४७६) ।
 परिमिलाण वि [परिम्लान] म्लान, विच्छाद्य,
 निम्तेज (महा) ।
 परिमिहिर वि [परिमोक्त] परित्याग करने-
 वाला (मण) ।
 परिमुअ सक [परि + मुच्] परित्याग
 करना । परिमुअइ (सण) ।
 परिमुक्क वि [परिमुक्त] परित्यक्त (मुपा
 २५२, महा, सण) ।
 परिमुट्ट वि [परिमृष्ट] स्पृष्ट (मा ४४) ।
 परिमुण सक [परि + ज्ञा] जानना । परि-
 मुणमि (वज्जा १०४) ।
 परिमुणिअ वि [परिज्ञात] जाना हुआ
 (पडम १६, ६१, सण) ।
 परिमुम सक [परि + मुप्] चोरी करना ।
 वहु परिमुसत (श्रा २७) । संकृ. परिमु-
 सिऊण (कपूर २६) ।
 परिमुस सक [परि + मृडा] स्पर्श करना,
 छूना । परिमुसइ (भवि) ।
 परिमुसण न [परिमोषण] १ चोरी । २
 वञ्चना, ठगई (गा २६) ।

परिमुसिअ वि [परिमृष्ट] स्पृष्ट (महानि ४,
 भवि) ।
 परिमुसण देखो परिमुसण (गा २६) ।
 परिमेय देखो परिमिण ।
 परिमोक्कल वि [दे परिमुक्त] स्वैर,
 स्वच्छन्दी (भवि) ।
 परिमोक्कप पुं [परिमोक्ष] १ मोक्ष, मुक्ति
 (आचा) । २ परित्याग (सूत्र १, १२, १०१) ।
 परिमोय सक [परि + माचय्] छोड़ाना,
 छुटकारा कराना । परिमोयह (सूत्र २, १,
 ३६) ।
 परिमोयण न [परिमोचन] मोक्ष, छुटकारा
 (मुर ४, २५०, श्रीप) ।
 परिमोस पु [परिमोप] चोरी (महा) ।
 परियच सक [परि + अच्] १ पास में
 जाना । २ स्पर्श करना । ३ विभूषित करना ।
 सकृ परिअचिवि (अप) (भवि) ।
 परियच सक [परि + अच्] पूजना । सकृ
 परिअचिवि (अप) (भवि) ।
 परियचण न [पर्यञ्चन] स्पर्श करना (मुख
 ३, १) । देखो पलियचण ।
 परियचिअ वि [पर्यञ्चित] विभूषित, 'पव-
 रारामगामपरियञ्चित' (भवि) ।
 परियचिअ वि [पर्यचित] पूजित (भवि) ।
 परियद सक [परि + वन्द्] वन्दन करना,
 स्तुति करना । कवहु. परियद्विज्जमाण
 (श्रीप) ।
 परियदण न [परिवन्दन] वन्दन, स्तुति
 (आचा) ।
 परियन्ध सक [दृग्] १ देखना । २
 जानना । परियन्धइ (भवि, उव), परियन्धति
 (उव) ।
 परियन्धिय देखो परिकन्धिय (राज) ।
 परियच्छी छी [परिच्छी] परदा (धर्मरत्न
 वृ० गा० ३१ पत्र २५, २) ।
 परियत्थि छी [पर्यत्थि] देखो पल्लत्थिया,
 'जत्तो वायइ पवणो परियत्थी दिज्जए ततो'
 (वेइय १३०) ।
 परियप्प सक [परि + कल्पय्] कल्पना
 करना, चिन्तन करना । वहु. परियप्पमाण
 (आचा १, २, १, २) ।

परियप्पण न [परिकल्पन] कल्पना (धर्मसं
 १२०८) ।
 परायय पु [परिचय] जान-पहचान, विशेष
 रूप से ज्ञान (गडड, से १५, ६६, अग्नि
 १३१) ।
 परियय वि [परिगत] अन्वित युक्त (म
 २२) ।
 परियाड सक [पर्या + दा] १ समन्ताद्
 ग्रहण करना । २ विभाग से ग्रहण करना ।
 परियाइयह (सूत्र २, १, ३७) । संकृ
 परियाइत्ता (ठा ७) ।
 परियाइअ वि [पर्यात्त] मपूर्ण रूप से गृहीत
 (ठा २ ३—पत्र ६३) ।
 परियाइअ देखो परियाइअ (ठा २, ३—पत्र
 ६३) ।
 परियाइणया छी [पर्यादान] समन्ताद्
 ग्रहण (पण्ह ३४—पत्र ७७४) ।
 परियाइत्त वि [पर्यात्] काफी (राज) ।
 परियाइय वि [पर्यायातीत] पर्याय को
 अनिक्रान्त (राज) ।
 परियाग देखो पज्जाय (श्रीप, उवा महा,
 वण) ।
 परियागय वि [पर्यागन] १ पर्याय से
 आगत (उत्त ५, २१, मुख ५, २१, गाथा
 १, ३) । २ मर्दया निषय (गाथा १, ७—
 पत्र ११६) ।
 परियाग सक [परि + ज्ञा] जानना ।
 पणियाणइ, परियाणाइ (पि १७, उवा) ।
 परियाण न [परिज्ञाण] रक्षण (सूत्र १, १,
 २, ६, ७) ।
 परियाण न [परिदान] १ त्रिभिन्न, बदला
 लेनदेन । २ समन्ताद् दान (भवि) ।
 परियाण न [परियान] १ गमन (ठा १०) ।
 २ वाहन, यान (ठा ८) । ३ श्रवतरण (ठा
 ३, ३) ।
 परियाणण न [परिज्ञान] जानकारी (स
 १३) ।
 परियाणिअ वि [परिज्ञाणित] परित्राण-
 युक्त (सूत्र १, १, २, ७) ।
 परियाणिअ वि [परिज्ञात] जाना हुआ,
 विदित (पडम ८८, ३३, रत्न १८, भवि) ।

पलीव पु [प्रदीप] दीपक, दीया (प्राक् १२, पड) ।
 पलीवग वि [प्रदीपक] आग लगानेवाला (पएह १, १) ।
 पलीवण न [प्रदीपन] आग लगाना (आ २८ कुप्र २६) ।
 पलीवणया स्त्री ऊपर देखो (निचू १६) ।
 पलीविअ देखो पलीव = प्र + दीपय् ।
 पलीजिअ वि [प्रजीन] प्रज्वलित (पाय) ।
 पलीविअ वि [प्रदीपित] जलाया हुआ (उव) ।
 पलुपण न [प्रलोपन] प्रलोप (श्रौप) ।
 पलुट्ट वि [प्रलुठित] लेटा हुआ (दे १, ११६) ।
 पलुट्ट देखो पलोट्ट = पर्यस्त (हे ४, ४२२) ।
 पलुट्टिअ देखो पलोट्टिअ = पर्यस्त (कुमा ४, ७५) ।
 पलुट्ट वि [प्लुट्ट] दग्ध, जला हुआ (सुर ६, २०६, सुपा ४) ।
 पलेमाण देखो पली = प्र + ली ।
 पलेव पु [प्रलेप] एक जाति का पत्थर, पाषाण-विशेष (जी ३) ।
 पलोअ सक [प्र + लोक, लोक्य] देखना, निरीक्षण करना । पलोयइ, पलोअए, पलोएइ (सण, महा) । कर्म, पलोइज्जइ (कप्प) । वक्तृ पलोअन, पलोअअंत पलोएत, पलोएमाण, पलोयमाण (रयण १४, नाट—मात्ती ३२, महा, पि २६३, सुपा ४४, ३५१) ।
 पलोअण न [प्रलोकन] अवलोकन (मे १४, ३५, गा ३२२) ।
 पलोअणा स्त्री [प्रलोकना] निरीक्षण (श्रोघ ३) ।
 पलोइ वि [प्रलोकिन्] प्रेक्षक (श्रौप) ।
 पलोइअ वि [प्रलोकित] देखा हुआ (गा ११८, महा) ।
 पलोइर वि [प्रलोकिन्] प्रेक्षक (गा १८०, भवि) ।
 पलोअत } देखो पलोअ ।
 पलोएमाण }
 पलोघर [दे] देखो परोहड (गा ३१३ अ) ।

पलोट्ट सक [प्रत्या + गम्] लौटना, वापस आना । पलोट्टइ (हे ४, १६६) ।
 पलोट्ट सक [परि + अस्] १ फेंकना । २ मार गिराना । ३ अक पलटना, विपरीत होना । ४ प्रवृत्ति करना । ५ गिरना । पलोट्टइ, पलोट्टेइ (हे ४, २००, भग, कुमा) । वक्तृ, पलोट्टत (वजा ६६, गा २२२) ।
 पलोट्ट भक [प्र + लुट्] जमीन पर लोटना । वक्तृ पलोट्टत (से ५, ५८) ।
 पलोट्ट वि [पर्यस्न] १ क्षिप्त, फेंका हुआ । २ हत । ३ विक्षिप्त (ह ४, २५८) । ४ पतित, गिरा हुआ (गा १७०) । ५ प्रवृत्त, 'रेखता वणभागा तओ पलोट्टा जवा जला-णोषा' (कुमा) ।
 पलोट्टजीह वि [दे] रहस्य-भेदी, बात को प्रकट करनेवाला (दे ५, ३५) ।
 पलोट्टण न [प्रलोठन] कुलकाना, लुढकाना, गिराना (उप पृ ११०) ।
 पलोट्टिअ देखो पलोट्ट = पर्यस्त (कुमा) ।
 पलोभ सक [प्र + लोभय्] लुभाना, लालच देना । पलोभेदि (शो) (नाट—मृच्छ ३१३) ।
 पलोभविअ वि [प्रलोभित] लुभाया हुआ (धर्मवि ११२) ।
 पलोभि वि [प्रलोभिन्] विशेष लोभी (धर्मवि ७) ।
 पलोभिअ देखो पलोभविअ (सुपा ३४३) ।
 पलोव (अप) देखो पलोअ । पलोवइ (भवि) ।
 पलोहर [दे] देखो परोहड (गा ६८५ अ) ।
 पलोहिद (शौ) देखो पलोभिअ (नाट) ।
 पल पुंन [पल्य] १ गोल आकार का एक धान्य रखने का पात्र (पव १५८, ठा ३, १) । २ काल-परिमाण विशेष, पल्योपम (पउम २०, ६७, द २७) । ३ सस्थान-विशेष, पल्यक सस्थान, 'पल्लासठाणसठिया' (सम ७७) ।
 पल पु [पल] धान्य भरने का बड़ा कोठा, 'बहवे पल्ला सालीण पडिपुएणा चिट्ठ' (राया १, ७—पत्र ११५) ।
 पल्लक देखो पलिअक (हे २, ६८, पड) ।
 पल्लक पुं [पल्यङ्क] शाक-विशेष, कन्द विशेष (आ २०, जी ६, पव ४, सबोध ४४) ।

पल्लवण न [प्रलङ्घन] १ अतिक्रमण (ठा ७) । २ गमन, गति (उत २४, ४) ।
 पल्लग देखो पल्ल = पल्ल (विसे ७०६) ।
 पल्लट्ट देखो पल्लट्ट = परि + अस् । पल्लट्टइ (हे ४, २००, भवि) । वक्तृ पल्लट्टिअ (पवा १३, १२) ।
 पल्लट्ट पुं [दे] पर्वत-विशेष (पएह १, ४) ।
 पल्लट्ट पुं [दे परिवर्त] काल-विशेष, अनन्त काल चक्रो का समय (घण ४७) ।
 पल्लट्ट } देखो पलोट्ट = पर्यस्त (हे २, ४७, पल्लट्ट ६८) ।
 पल्लट्थ स्त्री [पर्यस्ति] ग्रामन-विशेष, पलथी, 'पायपसारण पल्लट्थिववणं विवपट्ठिदाण च । उच्चासणमेवणया जिणपुरओ भन्नइ भवन्ता ॥' (चैइय ६०) । देखो पल्लट्थिया ।
 पल्लल न [पल्लल] छोटा तलाव (प्राक् १७, राया १, १, सुपा ६४६, स ४२०) ।
 पल्लव पुं [पल्लव] १ किमलय, अंकुर (पाम, श्रौप) । २ पत्र, पत्ता (से २६) । ३ देश-विशेष (भवि) । ४ विस्तार (कप्प) ।
 पल्लव देखो पज्जव (सम ११३) ।
 पल्लवाय न [दे] क्षेत्र, खेत (दे ६, २६) ।
 पल्लविअ वि [दे] लाक्षा-रक्त (दे ६, १६, पाम) ।
 पल्लविअ वि [पल्लवित] १ पल्लवाकार (दे ६, १६) । २ अक्रुरित, प्रादुर्भूत, उत्पन्न (दे १, १) । ३ पल्लव-युक्त (रंभा) ।
 पल्लविल्ल वि [पल्लववत्] पल्लव-युक्त (सुपा ५, घण २४) ।
 पल्लविल्ल देखो पल्लव (हे २, १६४) ।
 पल्लस्स देखो पलोट्ट = परि + अस् । पल्लस्सइ (प्राक् ७२) ।
 पल्लाण न [पर्याण] अश्व आदि का साज, 'किं करिणो पल्लाण उव्वोद्धु रासभो तरइ' (प्रवि १७, प्राप्र) ।
 पल्लाण सक [पर्याणय्] अश्व आदि को सजाना । पल्लाणेह (स २२) ।
 पल्लाणिअ वि [पर्याणित] पर्याण-युक्त (कुमा) ।
 पल्लि स्त्री [पल्लि] १ छोटा गांव । २ चोरो के निवास का गहन स्थान (उप ७२८ टी) ।

परिल्ल—परिवाइ

परिल्ल देखो पर = पर (से ६, १७) ।
 परिह्वास वि [दे] अज्ञात-गति (दे ६, ३३) ।
 परिह्नी देखो परिह्नी = दे (राय ४६) ।
 परिह्नी देखो परिह्नी । वक्र. परिह्णित,
 परिह्णेत (श्रौप) ।
 परिह्णस अक [परि + स्तस्] गिर पढना,
 सरक जाना । परिह्णसइ (हे ४, १६७) ।
 परिवइत्तु वि [परिव्रजित्] गमन करने मे
 समर्थ (ठा ४, ४—पत्र २७१) ।
 परिवकड (अप) वि [परिवक्र] सर्वथा टेढा
 (भवि) ।
 परिवच सक [परिवच्य] ठगना । सक
 परिवचिऊण (सम्मत ११८) ।
 परिवचिअ वि [परिवचिअ] जो ठगा गया
 हो (दे ४, १८) ।
 परिवन्धि वि [परिपन्थिन्] विरोधी, दुरमन
 (पि ४०५, नाट—विक्र ७) ।
 परिवदण न [परिवन्दन] स्तुति, प्रशंसा
 (आचा) ।
 परिवदिय वि [परिवन्दित] स्तुत, पूजित
 (पउम १, ६) ।
 परिवक्खिय देखो परिवच्छिय (श्रौप) ।
 परिवग्ग पुं [परिवर्ग] परिजन-वर्ग (पउम
 २३, २४) ।
 परिवच्छ न [दे] अवधारण, निश्चय, 'साम-
 गत्य परिवच्छे' (कल्पगा० २१४२) ।
 परिवच्छिय देखो परिकच्छिय, 'उज्जलनेवत्य-
 ह्वपरिवच्छिय' (गाया १, १६ टी—पत्र
 २२१, श्रौप) । देखो परिवस्थिय ।
 परिवज्ज सक [प्रति + पद्] स्वीकार करना ।
 परिवज्जइ (भवि) ।
 परिवज्ज सक [परि + वर्जय्] परिहार
 करना, परित्याग करना । परिवज्जइ (भवि) ।
 सक. परिवज्जिय, परिवज्जियाण (आचा,
 पि ५६२) ।
 परिवज्जन न [परिवर्जन] परित्याग (धर्मसं
 ११२०) ।
 परिवज्जणा स्त्री [परिवर्जना] ऊपर देखो
 (उव) ।
 परिवज्जिय वि [परिवर्जित] परित्यक्त (उवा,
 भग, भवि) ।

परिवट्ट देखो परिवत्त = परि + वर्तय् । परि-
 वट्टइ (भवि) । सक. परिवट्टिवि (अप)
 (भवि) ।
 परिवट्टण न [परिवर्तन] आवर्तन, आवृत्ति,
 'आगमपरिवट्टण' (सवोच ३६) ।
 परिवट्टि देखो परिवत्ति (मा ५२) ।
 परिवट्टिय देखो परिवत्तिय (भवि) ।
 परिवट्टुल वि [परिवर्तुल] गोलाकार (स
 ६८) ।
 परिवड अक [परि + पत्] पढना । वक्र.
 परिवडत, परिवडमाण (पंच ५, ६२, ६७,
 उप पृ ३) ।
 परिवडिअ वि [परिपतित] गिरा हुआ (सुपा
 ३६०, वसु, यति २३, हम्मोर ३०, पचा
 ३, २४) ।
 परिवडढ अक [परि + वृध्] बढना ।
 परिवड्डइ (महा, भवि) । भवि. परिवड्डिस्सइ
 (श्रौप) । कृ परिवड्डंत, परिवड्डमाण,
 परिवड्डेमाण (गा ३४६, गाया १, १३,
 महा, गाया १, १०) ।
 परिवड्डण न [परिवर्धन] परिवृद्धि, बढ़ाव
 (गठड, धर्मस ८७५) ।
 परिवड्डि स्त्री [परिवृद्धि] ऊपर देखो (से
 ५, २) ।
 परिवड्डिअ देखो परिअड्डिअ = परिवर्धित
 (श्रौप १६ टि) ।
 परिवड्डिअ वि [परिवर्धित] बढ़ाया हुआ
 (गा १४२, ४३१) ।
 परिवड्डेमाण देखो परिवड्ड ।
 परिवण सक [परि + वर्णय्] वर्णन
 करना । कृ. परिवण्णेअव्व (भग) ।
 परिवणिअ वि [परिवर्णित] जिसका वर्णन
 किया गया हो वह (आत्म ७) ।
 परिवत्त देखो परिअट्ट = परि + वर्त । परि-
 त्तई (उत्त ३३, १) । परिवत्तसु (गा ८०७) ।
 वक्र. परिवत्तत (गा २८३) ।
 परिवत्त देखो परिअट्ट = परि + वर्तय् । वक्र.
 परिवत्तंत, परिवत्तयत (स ६, सूप्र १, ५,
 १, १५) । सक. परिवत्तिऊण (काल) ।
 परिवत्त देखो परिअट्ट = परिवर्तन; 'विहियल्ल-
 परिवत्तो' (कुप्र १३४) । २ संचरण, भ्रमण
 (राज) ।

परिवत्त देखो परिअत्त = परिवृत्त (काल) ।
 परिवत्तण देखो पडिअत्तण (पि २८६;
 नाट—विक्र ८३) ।
 परिवत्तर (अप) वि [परिपक्वित्तम] पकाया
 गया, गरम किया गया, 'अयु मलेवि सुअवा-
 मोए निमज्जित्त परिवत्तरतोए' (भवि) ।
 परिवत्ति वि [परिवर्तिन्] बदलानेवाला,
 'ल्लवपरिवत्तिणी विज्जा' (कुप्र १२६, महा) ।
 परिवत्तिय देखो परिअट्टिय (सुपा २६२) ।
 परिवत्थ न [परिवत्थ] वक्र, कपडा (भवि) ।
 परिवत्थिय वि [परिवत्थित] आच्छादित,
 'उज्जलनेवच्छहत्थ (१००) परिवत्थिय' (श्रौप) ।
 देखो परिवन्च्छिय ।
 परिवद्ध देखो परिवड्ड । वक्र. परिवद्धमाण
 (राज) ।
 परिवन्न देखो पडिवन्न (उप १३६ टी) ।
 परिवय अक [परि + वत्] तिर्यक् गिरना ।
 परिवयति (राय १०१) ।
 परिवय सक [परि + वद्] निन्दा करना ।
 परिवएज्जा, परिवयति (आचा) । वक्र.
 परिवयत (पएह १, ३) ।
 परिवरिअ वि [परिवृत्त] परिकरित, वेष्टित
 (सुपा १२५) ।
 परिवलइअ वि [परिवलयित] वेष्टित (सुख
 १०, १) ।
 परिवस अक [परि + वस्] वसना, रहना ।
 परिवसइ, परिवसति (भग, महा, पि ४१७) ।
 परिवसण न [परिवसन] आवास (राज) ।
 परिवसणा स्त्री [परिवसना] पयुंवरणा पर्व
 (निचू १०) ।
 परिवसिअ वि [पर्युपित] रहा हुआ, वास
 किया हुआ (सण) ।
 परिवह सक [परि + वह्] वहन करना,
 ढोना । २ अक चालू रहना । परिवहइ
 (कप्प) । परिवहति (गठड) । वक्र. परिवहत
 (पिठ ३५६) ।
 परिवहण न [परिवहन] ढोना (राज) ।
 परिवा अक [परि + वा] सूखना । परिवायइ
 (गठड) ।
 परिवाइ वि [परिवादिन्] निन्दा करनेवाला
 (उव) ।

पवट्ट वि [प्रवृत्त] जिसने प्रवृत्ति की हो वह (पड्, हे २, २६ टि)।

पवट्टय वि [प्रवर्त्तक] प्रवृत्ति करानेवाला (राज)।

पवट्टि स्त्री [प्रवृत्ति] प्रवर्त्तन (हम्मीर १५)।

पवट्टिअ वि [प्रवर्त्तित] प्रवृत्त किया हुआ (भवि, दे)।

पवट्ट देखो पउट्ट = प्रकोष्ठ (हे १, १५६)।

पवड अक [प्र + पन्] पडना, गिरना।

पवडइ, पवडिज्ज, पवडेज्ज (भग, कप्प, आचा २, २, ३, ३)। वक्क, पवडत, पवडेमाण (णाय १, १, सिरि ६८६, आचा २, २, ३, ३)।

पवडग न [प्रपतन] अध पात (वृह ६)।

पवडणया स्त्री [प्रपतना] ऊपर देखो (ठा पवडणा ४, ४—पत्र २८०, राज)।

पवडेमाण देखो पवड।

पवड्ठ अक [दे] पोडना, सोना, 'जाव राया पवड्ठ ताव कहेहि किचि अक्खारण्य' (सुख ६, १)।

पवड्ठ अक [प्र + वृथ] वडना। पवड्ठइ (उव)। वक्क पवड्ठमाण (कप्प, सुर १, १८१, श्रु १२४)।

पवड्ठ वि [प्रवृद्ध] बढा हुआ (अज्ज ७०)।

पवड्ठण न [प्रवर्धन] १ बढाव, प्रवृद्धि (सवोव ११)। २ वि. बढानेवाला, 'संसारस्स पवड्ठण' (सूत्र १, १, २, २४)।

पवड्ठिय वि [प्रवर्धित] बढाया हुआ (भवि)।

पवण वि [प्रवण] १ तत्पर (कुप्र १३४)। २ तदुस्त, स्वस्थ, सुस्थ, 'पडियरिओ तह, पवणो पुव्व व जहा स सजाओ' (उप ५६७ टी, कुप्र ४१८)।

पवण न [प्लवन] १ उछल कर गमन (जीव ३)। २ तरण, 'तरिउकामस्स पवहणं (?) वण' किच्च' (णाय १, १४—पत्र १६१)। ३ कृत्वि पुं [कृत्य] नौका, नाव, डोगी (णाय १, १४)।

पवण पुं [पवन] १ पवन, वायु (पात्र, प्रासू १०२)। २ देव-जाति विशेष, भवनपति देवों की एक अवान्तर जाति, पवनकुमार (श्रीप, पणह १, ४)। ३ हनुमान का पिता (से १,

४८)। ४ गड पुं [गति] हनुमान का पिता (पउम १५, ३७), वानरद्वीप के राजा मन्दर का पुत्र (पउम ६, ६८)। ५ चड पु [चण्ड] व्यक्ति-वाचक नाम (महा)। ६ तणअ पुं [तनय] हनुमान (से १, ४८)। ७ नदण पु [नन्दन] हनुमान (पउम १६, २७, सम्मत १२३)। ८ पुत्त पुं [पुत्र] हनुमान (पउम ५२, २८)। ९ वेग पु [वेग] १ हनुमान का पिता (पउम १५, ६५)। २ एक जैन मुनि (पउम २०, १६०)। १० सुअ पुं [सुत] हनुमान (पउम ४६, १३, से ४, १३, ७, ४६)। ११ णंद पु [नन्द] हनुमान (पउम ५२, १)।

पवणजअ पुं [पवनजय] १ हनुमान का पिता (पउम १५, ६)। २ एक श्रेष्ठि-पुत्र (कुप्र ३७७)।

पवणिय वि [प्रवणित] सुस्थ किया हुआ, तदुरस्त किया हुआ (उप ७६८ टी)।

पवण्ण देखो पवन्न (सण)।

पवत्त देखो पवट्ट = प्र + वृत्। पवत्तइ, पवत्तए (पव २४७, उव)।

पवत्त सक [प्र + वर्त्तय्] प्रवृत्त करना। पवत्तइ, पवत्तेहि (वव १, कप्प)।

पवत्त देखो पवट्ट = प्रवृत्त (पउम ३२, ७०, स ३७६, रंभा)।

पवत्तग वि [प्रवर्त्तक] प्रवृत्ति करानेवाला (उप ३३६ टी, धर्मवि १३२)।

पवत्तण न [प्रवर्त्तन] १ प्रवृत्ति (हे २, ३०, उत ३१, २)। २ वि. प्रवृत्ति करानेवाला (उत ३१, ३, पणह १, ५)।

पवत्तय वि [प्रवर्त्तक] १ प्रवृत्ति करनेवाला (हे २, ३०)। वि. प्रवृत्त करानेवाला, 'तित्थवरप्पवत्तयं' (अजि १८, गच्छ १, १०)।

पवत्ति स्त्री [प्रवृत्ति] प्रवर्त्तन। १ वाउय वि [व्यापृत] प्रवृत्ति में लगा हुआ (श्रीप)।

पवत्ति वि [प्रवत्तिन्] प्रवृत्ति करानेवाला (ठा ३, ३, कस, कप्प)।

पवत्तिणी स्त्री [प्रवत्तिनी] साध्वियों की अध्यक्षा, मुख्य जैन साध्वी (सुर १, ४१, महा)।

पवत्तिय देखो पवट्टिअ (काल)।

पवत्तिया स्त्री [दे] संन्यासी का एक उपकरण (कुप्र ३७२)।

पवट्ट देखो पवय = प्र + वट्। वक्क पवट्टमाण (आचा)।

पवट्टि स्त्री [प्रवृत्ति] ढकना, आच्छादन (सलि ६)।

पवट्ट देखो पवट्टइ = प्र + वृष्। वक्क, पवट्टमाण (चेइय ६१६)।

पवट्ट पुं [दे] धन, हथौड़ा (दे ६, ११)।

पवट्टिय देखो पवट्टिइय (महा)।

पवन्न वि [प्रपन्न] १ स्वीकृत, अंगीकृत (चेइय ११२, प्रासू २१)। २ प्राप्, 'गुरुयणगुरुविणयपवन्नमाणसो' (महा)।

पवमाण देखो पव = प्लु।

पवमाण पुं [पवमान] पवन, वायु (कुप्र ४४४, सुपा ८६)।

पवय सक [प्र + वट्] १ वकवाद करना। २ वाद-विवाद करना। वक्क पवयमाण (आचा १, ५, १, ३)।

पवय सक [प्र + वच्] बोलना, कहना। भवि, कवक्क, पवक्खमाण (धर्मसं ६१)। कर्म, पवुच्चइ, पवुच्चई, पवुच्चि (कप्प, पि ५४४, भग)।

पवय देखो पवक्क = प्लवक (उप प्र २१०)।

पवय पु [प्लवग] वानर, कपि (पउम ६५, ५०, हे ४, २२०, पात्र, से २, ३७, १५, १७)। १ वड पुं [पति] वानरों का राजा सुग्रीव (से २, ३६)। २ हिच पुं [धिपि] वही पूर्वोक्त अर्थ (से २, ४०, १२, ७०)। पवयण पुं [प्राजन] कोडा, चात्रुक (दि २, ६७)।

पवयण न [प्रवचन] १ जिनदेव-प्रणीत सिद्धान्त, जैन शास्त्र (भग २०, ८, प्रासू १८२)। २ जैन संघ, 'गुणसमुदायो संघो पवयण तित्थं ति होइ एगट्ठा' (पचा ८, ३६, विसे १११२, उप ४२३ टी, श्रीप)। ३ आगम-ज्ञान (विसे १११२)। ४ माया स्त्री [माता] पाँच समिति और तीन गुप्ति रूप धर्म (सम १३)।

पवर वि [प्रवर] श्रेष्ठ, उत्तम (उवा, सुपा ३१६, ३४१, प्रासू १२६, १५४)।

परिवीढ न [परिपीठ] श्रामन-विशेष (भवि) ।
 परिवील मक [परि-पीडय] दवाला ।
 सक्र. परिवीलियाण (आचा २, १, ८, १) ।
 परिवुड वि [परिवृत्त] परिकरित, वेष्टित
 (आया १, १४, धर्मवि २४, औप, महा) ।
 परिवुत्थ वि [पर्युत्पित] १ रहा हुआ । २
 न, वास, निवास (गड ५४०) । देखो
 परिवुत्थिअ ।
 परिवुत्थ देखो परिवुत्थ (प्राक् १२) ।
 परिवुत्थि स्त्री [परिवृत्ति] वेष्टन (प्राक् १२) ।
 परिवुत्थेअ वि [पर्युत्पित] स्थित, रहा हुआ,
 'जे भिक्खू अचेले परिवुत्थिए' (आचा १, ८,
 ७, १, १, ६, २, २) । देखो परिवुत्थ ।
 परिवुत्थिअ वि [पर्युत्पित] गत, गुजरा हुआ
 (आचा २, ३, १, ३) ।
 परिवृढ वि [परिवृद्ध] समर्थ (उत्त ७, २) ।
 परिवृढ वि [परिवृद्ध] स्थूल (भास ८६,
 उत्त ७, ६) ।
 परिवृढ वि [परिवृद्ध] १ बलवान्, बलिष्ठ
 (दस ७, २३) । २ मत्सल, पुष्ट (आचा २,
 ४, २, ३) ।
 परिवृढ वि [परिवृद्ध] बहन किया हुआ,
 ढोया हुआ, 'न चइस्सामि अहं पुण चिरपरि-
 वृढं इम लोह' (धर्मवि ७) ।
 परिवूहण देखो परिवूहण (राज) ।
 परिवेढ सक [परि + वेष्ट] वेढना,
 लपेटना । परिवेढइ (भवि) । संकृ परिवेढिय
 (निक्ख १) ।
 परिवेढ पु [परिवेष्ट] वेष्टन, घेरा, 'जा जगइ
 तो पिच्छइ सेवापरसुहइपरिवेढ' (तिरि
 ६३८) ।
 परिवेढाविय वि [परिवेष्टित] वेष्टित कराया
 हुआ (पि ३०४) ।
 परिवेष्टिय वि [परिवेष्टित] वेढा हुआ, घेरा
 हुआ, लपेटा हुआ (उप ७३८ टी, धण २०,
 पि ३०४) ।
 परिवेय अक [परि + वेप्] कपिना,
 'कायरपरिणि परिवेयइ' (भवि) ।
 परिवेष्टिर वि [परिवेष्टित] कम्पन-शील
 (गड ७) ।
 परिवेय अक [परि + वेप्] कपिना । वक्र
 परिवेयमाण (आचा) ।

परिवेस मक [परि + विप्] परोम्ना ।
 परिवेसइ (सुपा ३८६) । कर्म परिवेसिज्जइ
 (आया १, ८) । वक्र. परिवेसत, परि-
 वेसयत (पिंड १२०, सुपा ११, आया
 १, ७) ।
 परिवेस पु [परिवेश, 'प'] १ वेष्टन, (गड ७) ।
 २ मडल, मेघादि मे सूर्य-चन्द्र का वेष्टनाकार
 मडल, 'परिवेसो अवरे फलमवणो' (पउम
 ६६, ४७, म ३१२ टी, गड ७) ।
 परिवेसण न [परिवेपण] परोम्ना (म
 १८७, पिंड ११६) ।
 परिवेसणा स्त्री [परिवेपणा] ऊपर देखो
 (पिंड ४४५) ।
 परिवेसि [परिवेशिन्] समीप मे रहने-
 वाला (गड ७) ।
 परिव्वअ सक [परि + व्रज] १ समताद्
 गमन करना । २ दीक्षा लेना । परिव्वए,
 परिव्वएज्जासि (सुम १, १, ४, ३, पि
 ४६०) ।
 परिव्वअ वि [परिवृत्त] परिवेष्टित, 'तारा-
 परिव्वओ विव सरयपुरिणमाचदो' (वमु) ।
 परिव्वअ वि [परिव्यय] विशेष व्यय
 (नाट—मृच्छ ७) ।
 परिव्वय पु [परिव्यय] खर्चा, खर्च करने
 का घन (दस ३, १ टी) ।
 परिव्वइ सक [परि + वह] बहन करना,
 धारण करना । परिव्वइइ (सवोष २२) ।
 परिव्वाइया स्त्री [परिव्राजिका] सन्यासिनी
 (आया १, ८, महा) ।
 परिव्वज (शौ) पु [परि + व्राज्] सन्यासी
 (चार ४३) ।
 परिव्वजअ (शौ) पु [परिव्राजक] सन्यासी
 (पि २८७, नाट—मृच्छ ८७) ।
 परिव्वजिआ (शौ) देखो परिव्वाइया
 (मा २०) ।
 परिव्वाय देखो परिव्वज (सुमनि ११२,
 औप) ।
 परिव्वायग पु [परिव्राजक] सन्यासी,
 परिव्वायय माधु (भग) ।
 परिव्वायय वि [परिव्राजक] परिव्वजक-
 सम्बन्धी (कप्प) ।
 परिस देखो फरिस = स्पर्श (गड ७, चार ४२) ।

परिसंअ अक [परि + शङ्क] भय करना,
 डरना । वक्र परिसकमाण (सुम १, १०,
 २०) ।
 परिसंक्रिय वि [परिशङ्कित] भीत (परह
 १, ३) ।
 परिसंख्या सक [परिस + ख्या] १ अच्छी
 तरह जानना । २ गिनती करना । संकृ
 परिसंख्याय (दम ७, ६) ।
 परिसंख्या स्त्री [परिसंख्या] सत्या गिनती
 (पउम २, ४६, जीवन ४०, पत्र—गाथा
 १३ तद् ४, मण) ।
 परिसंग पु [परिपङ्ग] संग, मोहवग (हम्मोर
 १६) ।
 परिसंग पुं [परिपङ्ग] आलिङ्गन (पउम
 २१, ५२) ।
 परिसंगय वि [परिसंगत] युक्त, गहित
 (धर्मवि १३) ।
 परिसंठय सक [परिसं + स्थापय]
 सम्यापन करना । परिसंठवट्ट (अप) (पिग) ।
 वक्र परिसंठवित (उपपं ४३) ।
 परिसंठविय वि [परिसंस्थापित] नस्थापित
 (तदु ३८) ।
 परिसंठिय वि [परिसंस्थित] स्थित, रहा
 हुआ (महा) ।
 परिसत वि [परिश्रान्त] थका हुआ (महा) ।
 परिसंयविय वि [परिसंस्थापित] आश्वासित
 (स ५६६) ।
 परिसक सक [परि + प्वाक्] चनना,
 गमन करना, इयर-उयर धूमना । परिसकइ
 (उप ६ टी, कुप्र १७५) । वक्र परिसकत,
 परिसकमाण (काप्र ६१७, स ४१, १३६) ।
 सकृ परिसकियण (मुपा ३१३) । कृ
 परिसकियव्व (स १६२) ।
 परिसकण न [परिपङ्कण] परिभ्रमण (मे
 ५, ५५, १३, ५६, सुपा २०१) ।
 परिसक्खिअ वि [परिपङ्कित] १ गत
 (भवि) । २ न परिक्रमण, परिभ्रमण (गा
 ६०६) ।
 परिसंकर वि [परिपङ्कित] गमन करने-
 वाला (आया १, १, वि ५६६) ।
 परिनाज्जिअ (अप) वि [परिपङ्क] आर्तिगित
 (सण) ।

पविजल वि [प्रविज्वल] १ प्रज्वलित (सूत्र १, ५, २, ५) । २ खिरादि से पिच्छल—व्याप्त (सूत्र १, ५, २, १६, २१) ।

पविठ वि [प्रविष्ट] घुमा हुआ (उवा, सुर ३, १३६) ।

पविणी सक [प्रवि + णी] दूर करना । पविरोति (भग) ।

पवित्त पुं [पवित्र] १ दर्भ, कुशा, सुण-विशेष (दे ६, १४) । २ वि निर्दोष, निष्कलङ्क, शुद्ध, स्वच्छ (कुमा, भग, उत्तर ४५) ।

पवित्त देखो पवट्ट = प्रवृत्त (से ६, ५७) । पवित्त सक [पवित्रय] पवित्र करना । वक्क पवित्रयत (सुपा ८५) । कृ. पवित्तिव्यञ्ज (सुपा ५८४) ।

पवित्तय न [पवित्रक] अण्ठी, अंगुलीयक (णाया १, ५, औप) ।

पवित्ताविय वि [प्रवर्त्तन] प्रवृत्त किया हुआ (भवि) ।

पवित्ति देखो पवत्ति = प्रवृत्ति (सुपा २, ओघ ६३, औप) ।

पवित्तिणी देखो पवत्तिणी (कस) ।

पवित्थर अक [प्रवि + स्त्] फैलाना । वक्क पवित्थरमाण (पव २५५) ।

पवित्थर पुं [प्रविस्तर] विस्तार (उवा, सूत्र २, २, ६२) ।

पवित्थरिअ वि [प्रविस्तृत] विस्तीर्ण (स ७५२) ।

पवित्थरिल्ल वि [प्रविस्तरिन्] विस्तारवाला (राज—पण्ह १, ५) । देखो पविरल्लिय ।

पवित्थारि वि [प्रविस्तारिन्] फैलनेवाला (गडड) ।

पविट्ट देखो पव्विट्ट (पव २) ।

पविट्टस अक [प्रवि + ध्वस्] १ विनाशाभिमुख होना । २ विनष्ट होना, 'तेण पर जोणी पविट्टमइ, तेण परं जोणी विट्टंसइ' (ठा ३, १—पत्र १२३) ।

पविट्ठत्थ वि [प्रविध्वस्त] विनष्ट (जीव ३) ।

पविभत्ति स्त्री [प्रविभक्ति] पृथक्-पृथक् विभाग (उत्त २, १) ।

पविभाग पु [प्रविभाग] ऊपर देखो (विसे १६४२) ।

पविमुक्क वि [प्रविमुक्त] परित्यक्त (सुर ३, १३६) ।

पविमोयण न [प्रविमोचन] परित्याग (औप) ।

पविय वि [प्राप्त] प्राप्त, 'भुवि उवहासं पविया दुक्खाण हुति ते णिलया' (आरा ४४) ।

पवियभिर वि [प्रविजृम्भित्] १ उल्लसित होनेवाला । २ उत्पन्न होनेवाला (मण) ।

पवियक्किय न [प्रवितर्कित] विकल्प, वितर्क (उत्त २३, १४) ।

पवियक्खण वि [प्रविचक्षण] विशेष प्रवीण (उत्त ६, ६३) ।

पवियार पु [प्रवीचार] १ काया और वचन की चेष्टा-विशेष (उप ६०२) । २ काम-क्रीडा, मैथुन (देवेन्द्र ३४७, पव २६६) ।

पवियारण न [प्रविचारण] सचार, 'वाउप-वियारणहु छम्माय ऊणय कुज्जा' (पिड ६५०) ।

पवियारणा स्त्री [प्रविचारणा] काम-क्रीडा, मैथुन (देवेन्द्र ३४७) ।

पवियाम सक [प्रवि + काशय्] फाड़ना, खोलना, 'पवियासइ नियवयण' (धर्मवि १२४) ।

पवियासिय वि [प्रविकासित] विकसित किया हुआ, 'पवियासियकमलवण खण निहालेड दिण्णाह' (सुपा ३४) ।

पविरइअ वि [दे] त्वरित, शीघ्रता-युक्त (दे ६, २८) ।

पविरंज सक [भञ्ज] भौंगना, तोड़ना । पविरजइ (हे ४, १०६) ।

पविरजव वि [दे] स्निग्ध, स्नेह-युक्त (पड्) ।

पविरजिअ वि [भञ्ज] भौंगा हुआ (कुमा, दे ६, ७४) ।

पविरजिअ वि [दे] १ स्निग्ध, स्नेह-युक्त । २ कृत-निषेध, निवारित (दे ६, ७४) ।

पविरल वि [प्रविरल] १ अतिविड । २ विच्छिन्न (गडड) । ३ अत्यन्त थोड़ा, बहुत ही कम, 'परकज्जकरणरसिया दोसति महीए पविरलनरिदा' (सुपा २४०) ।

पविरल्लिय वि [दे] विस्तारवाला (पण्ह १, ५—पत्र ६१) । देखो पवित्थरिल्ल ।

पविरिक्क वि [प्रविरिक्त] एकदम शून्य, विलकुल खाली (गडड ६८५) ।

पविरेल्लिय [दे] देखो पविरल्लिय (पण्ह १, ५ टी—पत्र ६२) ।

पविलुप सक [प्रवि + लुप्] विलकुल नष्ट करना । कवक्क पविलुप्पमाण (महा) ।

पविलुत्त वि [प्रविलुप्त] विलकुल नष्ट (उप ५६७ टी) ।

पविलुप्पमाण देखो पविलुप ।

पविस सक [प्र + विष्] प्रवेश करना, घुसना । पविमइ (उव, महा) । भवि पविसिस्सामि, पविसिहिइ (पि ५२६) ।

वक्क पविसत, पविसमाण (पठम ७६, १६, सुपा ४४८, विपा १, ५, कप्प) । सक पविसत्ता, पविमित्तु, पविसिअ, पविसिऊण (कप्प, महा, अमि ११६, काल) । हेक्क पविमित्तए, पवेट्ठु (कस; कप्प, पि ३०३) । कृ पविमिअव्व

(ओघ ६१, सुपा ३८१) ।

पविसण न [प्रवेशन] प्रवेश, पैठ (पिड ३१७) ।

पविसु सक [प्रवि + सू] उत्पन्न करना । सक पविसुइत्ता (सूत्र २, २, ६५) ।

पविस्स देखो पविस । पविस्सइ (महा) । वक्क पविरममाण (भवि) ।

पविहर सक [प्रवि + हृ] विहार करना, विचरना । पविहरंति (उव) ।

पविहम्म अक [प्रवि + हस्] हसना, हास्य करना । वक्क पविहम्मत (पठम ५६, १७) ।

पवीडय वि [प्रवीजित] हवा के लिए चलाया हुआ (औप) ।

पवीण वि [प्रवीण] निपुण, दक्ष (उप ६८६ टी) ।

पवीणी देखो पविणी । पवीणेइ (औप) ।

पवील सक [प्र + पीडय्] पीडना, दमन करना । पवीलए (आचा १, ४, ४, १) ।

पवुच्चं देखो पवय = प्र + वच् ।

पवुट्ट वि [प्रवृष्ट] १ खूब बरसा हुआ, जिसने प्रभूत वृष्टि की हो वह (आचा २, ४, १, १३) । २ न प्रभूत वृष्टि, वर्षण, 'काले पवुट्ट' विअ अहिणंदिदं देवस्स सासण' (अमि २२०) ।

परिसोण वि [परिशोण] लाल रंग का (गण्ड)।
 परिसोसण न [परिशोषण] सुखाना (गा ६२८)।
 परिसोसिअ वि [परिशोपित] सुखाया हुआ (सण)।
 परिमोह सक [परि + शोधय्] शुद्ध करना। कवक. परिसोहिज्जत (सण)।
 परिस्सअ नक [परि + स्वअ] आलिगन करना। परिस्सअदि (शौ) (पि ३१५)। संट परिस्सअ (पि ३१५, नाट—शकु ७२)।
 परिस्सत देखो परिसंत (णाय १, १. स्वप्न ४०, अमि २१०)।
 परिस्सज (शौ) देखो परिस्सअ। परिस्सजह (उत्तर १७६)। वक परिस्सजत (अमि १३३)। सक. परिस्सजिअ (अमि १२५)।
 परिस्सम पुं [परिश्रम] मेहनत (धर्मसं ७८८, स्वप्न १०, अमि ३६)।
 परिस्सम्म अक [परि + श्रम्] १ मेहनत करना। २ विश्राम लेना। परिस्सम्मइ (विसे ११६७, धर्मसं ७८६)।
 परिस्सव सक [परि + स्तु] चूना, भरना, टपकना। वक परिस्सवमाण (विपा १, १)।
 परिस्सव पुं [परिस्सव] आस्रव, कर्म-बन्ध का कारण (आचा)।
 परिस्सह देखो परोसह (आचा)।
 परिस्साइ देखो परिस्सावि = परिस्साविन् (ठा ४, ४—पत्र २७६)।
 परिस्साव देखो परिसाव। संक. परिस्सावि-याण (पि ५६२)।
 परिस्सावि वि [परिस्साविन्] १ कर्म-बन्ध करनेवाला (भग २५, ६)। २ चूनेवाला, टपकनेवाला। ३ गुह्य बात को प्रकट कर देनेवाला (गच्छ १, २२, पंचा १५, १४)।
 परिस्सावि वि [परिश्राविन्] सुनानेवाला (द्रव्य ४६)।
 परिह सक [पार + धा] पहिरना, पहनना। परिहइ (धर्मवि १५०, भवि), 'सर्वंगीणोपि परिहए जंतु रयणमयालकारे' (धर्मवि १४६)।

परिह पुं [दे] रोप, गुस्सा (दे ६ ७)।
 परिह पु [परिच] अंगला, आगल (अणु)।
 परिहच्छ वि [दे] १ पट्ट, दस्त, निपुण (दे ६, ७६, भवि)। २ पुं. मन्थु, रोप, गुस्सा (दे ६, ७१)। देखो परिहत्थ।
 परिहच्छ देखो पडिहच्छ (श्रौप)।
 परिहट्ट सक [मृद्, परि + घट्टय्] मर्दन करना, चूर करना, कचरना, कुचलना। परिहट्टइ (हे ४, १२६, नाट—नाहित्य ११६)।
 परिहट्ट सक [वि + लुल्] १ मारना, मार कर गिरा देना। २ सामना करना। ३ लूट लेना। ४ अक. जमीन पर लोटना। परिहट्टइ (प्राक ७३)।
 परिहट्टण न [परिघट्टन] १ श्रमिघात, आघात (से १०, ४१)। २ धर्पण, घिसना (मे ८, ४३)।
 परिहट्टि व्री [दे] आकृष्टि, आकर्षण, खींचाव (दे ६, २१)।
 परिहट्टिअ वि [मृदित] जिसका मर्दन किया गया हो वह, 'परिहट्टिओ माणो' (कुमा, पात्र)।
 परिहण न [दे. परिवान] वज्र, कपडा (दे ६, २१, पात्र, हे ४, ३४१, सुर १, २५, भवि)।
 परिहत्थ पुं [दे] १ जलजन्तु-विशेष, 'परिहत्थमच्छपुच्छइअच्छोडणपोच्छनतसलिलोह' (मुर १३, ४१) 'पोकवरिणी' परिहत्थममतमच्छप्यअणोसठणगणमिहुणवि-यरियसदुन्नइयमहुरसरनाइया पासाईया' (णाय १, १३—पत्र १७६)। २ वि. दस्त, निपुण, 'अन्ने रणपरिहत्था सूर' (पउम ६१, १, पएह १, ३—पत्र ५५, पात्र, आव ४)। ३ परिपूर्ण (श्रौप; कप्प)। देखो परिहच्छ, पडिहत्थ।
 परिहर सक [परि + धृ] धारण करना। संक. परिहरिअ (उत्त १२, ८)।
 परिहर सक [परि + हृ] १ त्याग करना, छोड़ना। २ करना। ३ परिभोग करना, आसेवन करना। परिहरइ (हे ४, २५६, उव, महा)। परिहरति (भग १५—पत्र ६६७)। वक. परिहरत, परिहरमाण (गा १६६, राज)। सक. परिहरिअ (पिंग)।

हेक परिहरिअ, परिहरिअ (ठा ५ ३, काप्र ४०८)। क. परिहरणीअ, परिहरि-अव्व (पि ५७१, गा २२७, ओघ ५६, सुर १४, ८३, सुपा ३६६, ५८८, पएह २, ५)।
 परिहरण न [परिवरण] धारण करना (वव १)।
 परिहरण न [परिहरण] १ परित्याग, वर्जन (महा)। २ आसेवन, परिभोग (ठा १०)।
 परिहरणा व्री [परिहरणा] ऊपर देखो (पिड १६७), 'परिहरणा होइ परिभोगो' (ठा ५, ३ टी—पत्र ३३८)।
 परिहरिअ वि [परिहृत्] परित्यक्त, वर्जित (महा, सण, भवि)।
 परिहरिअ देखो परिहर = परि + धृ, हृ।
 परिहरिअ वि [परिधृत] धारण किया हुआ, 'परिहरिअकणअकुंडलगडथलमणहरेसु सव-णेसु। अणुअ। समअवसेण परिहिज्जइ तालवेटजुअ' (गा ३६८ अ)।
 परिहलाविअ पुं [दे] जल-निगम, मोरी, पनाला (दे ६, २६)।
 परिहव सक [परि + भू] परामव करना। वक परिहवत (वव १)। क. परिहवियव्व (उप १०३६)।
 परिहव पुं [परिभव] परामव, तिरस्कार (मे १३, ४६, गा ३६६, हे ३, १८०)।
 परिहवण न [परिभवन] ऊपर देखो (स ५७२)।
 परिहविय वि [परिभूत] पराजित, तिरस्कृत (उप पृ १८०)।
 परिहस सक [परि + हस्] उपहास करना, हँसी करना। परिहसइ (नाट)। कर्म परिह-सोअदि (शौ) (नाट—शकु २)।
 परिहस्स वि [परिहस्व] अत्यन्त लघु (स ८)।
 परिहा अक [परि + हा] होन होना, कम होना। परिहाइ, परिहायइ (उव, सुख २, ३०)। भवि परिहाइसदि (शौ) (अमि ६)। कवक. परिहायन, परिहायमाण (सुर १०, ६, १२, १४, णाय १, १३, श्रौप, ठा ३, ३), पारहीअमाण (पि ५४५)।
 परिहा सक [परि + धा] पहिरना। भवि, परिहस्सामि (आचा १, ६, ३, १)। सक.

कक्क पव्वहिजमाण (गाथा १, १६—
पत्र १६६)।

पव्वहणा स्त्री [प्रव्यथना] व्यथा, पीडा
(श्रौप)।

पव्वहिय वि [प्रव्यथित] अति दुःखित
(आचा १, २, ६, १)।

पव्वा स्त्री [पर्वा] लोकपालो की एक वाद्य
परिपद (ठा ३, २—पत्र १२७)।

पव्वाअं देखो पव्वाअ = स्मै।

पव्वाइअ वि [प्रव्राजित] १ जिमको दीक्षा
दी गई हो वह (सुपा ५६६)। २ न दीक्षा
देना (राज)।

पव्वाइअ वि [स्नान] विच्छाद्य, शुष्क (कुमा
६, १२)।

पव्वाइआ स्त्री [प्रव्राजिका] परिव्राजिका,
सन्वासिनी (महा)।

पव्वाइअ देखो पव्वालिअ = प्लावित (से
५, ४१)।

पव्वाण वि [स्नान] शुष्क, सूखा (श्रोघ
४८८)।

पव्वाय देखो पवाय = प्र + वा। पव्वाअइ
(प्राकृ ७६)।

पव्वाय सक [प्र + व्राजय्] दीक्षित करना
(सुपा ५६६)।

पव्वाय अक [स्नान] सूचना। पव्वायइ (हे ४,
१८)। वक्तु. पव्वाअत (मे ७, ६७)।

पव्वाय वि [स्नान, प्रवाण] शुष्क, सूखा
हुआ (पाम्र, आघ ३६३, स २०३, से ४८,
६ ६३, पिड ४४)।

पव्वाय पु [प्रवात] प्रकृत पवन (गा ६२३)।

पव्वाल मक [छादय] ढकना, आच्छादन
करना। पव्वालइ (हे ४, २१)।

पव्वाल मक [प्लावय्] खूब भिजाना,
तरावोर करना। पव्वालइ (हे ४ ४१)।

पव्वालण न [प्लावन] तरावोर करना (से
६, १५)।

पव्वालिअ वि [प्लावित] जल-व्याप्त, सरा-
वोर किया हुआ (पाम्र कुमा, से ६, १०)।

पव्वालिअ वि [छादित] ढका हुआ (कुमा)।

पव्वाव मक [प्र + व्राजय्] दीक्षित करना,
संन्यास देना। पव्वावेइ (भग)। संकृ पव्वा-

वेऊण (पचव २)। हेऊ पव्वावित्तए,
पव्वावेत्तए, पव्वावेउ (ठा २, १, कस,
पचमा)।

पव्वावण न [प्रव्राजन] दीक्षा देना (उव,
श्रोघ ४४२ टी)।

पव्वावण न [दे] प्रयोजन (पिड ५१)।

पव्वावणा स्त्री [प्रव्राजना] दीक्षा देना (श्रोघ
४४३, पव २५, सूअनि १२७)।

पव्वाविय वि [प्रव्राजित] दीक्षित, साधु
बनाया हुआ (गाथा १, १—पत्र ६०)।

पव्वाइ सक [प्र + वाट्] बहाना, जवाह
मे डालना। वक्तु पव्वाहमाण (भग ५, ४)।

पव्विद्ध वि [दे] प्रेरित (दे ६, ११)।

पव्विद्ध वि [प्रवृद्ध] महान्, बड़ा (मे १४,
५१)।

पव्विद्ध न [प्रविद्ध] गुरु-वन्दन का एक दोष,
वन्दन को समाप्त किने बिना ही भागना
(पव २)।

पव्वीसग न [दे पव्वीसग] वाद्य-विशेष
(पराह १, ४—पत्र ६८)।

पसइ स्त्री [प्रसृति] १ नाप-विशेष, दो प्रवृत्ति—
पसर का एक परिमाण (तदु २६)। २ पूर्ण
अञ्जलि, दो हस्त-तल—अञ्जुरी मिला कर
भरी हुई चीज (कुप्र ३७४)।

पसग पुन [प्रसङ्ग] १ परिचय, उपलक्ष (स
३०५)। २ सगति, सवन्ध, 'लोए पलीवण
पिव पलालपूलप्पसणेण' (ठा ४, ४, कुप्र
२६),

'वर दिट्ठिविसो सप्पो वर हालाहल विस।
हीणायारागीयवयणसग खु णो भइ'
(सवोष ३६)। ३ आपत्ति, अनिष्ट-प्राप्ति
(स १७४)। ४ मैथुन, काम-क्रोडा (पराह १,
४)। ५ आसक्ति। ६ प्रस्ताव, अधिकार
(गडड, भवि, पचा ६, २६)।

पसगि वि [प्रसङ्गिन्] प्रसग करनेवाला,
आसक्त, 'जुयप्पसगी' (महा, गाथा १, २)।

पसज अक [प्र + सज्ज] १ आसक्ति करना।
२ आपत्ति होना, अनिष्ट-प्राप्ति होना। पसजइ
(उव), 'अणिच्चे जीवलोग्गि कि हिंसाए
पसजसि' (उत्त १८, ११, १२)। पसजेज्जा
(विसे २६६)।

पसंदि न [दे] कनक, सुवर्ण (दे ६, १०)।

पसत वि [प्रशान्त] १ प्रकृत शान्त, शम-
प्राप्त (कप्प, स ४०३, कुप्र)। २ साहित्य-
शास्त्र-प्रसिद्ध रस-विशेष, शान्त रस (अणु)।
पसति स्त्री [प्रशान्ति] नाश, विनाश, 'सव्व-
दुक्खप्पसतीण' (प्रजि ३)।

पसंधण न [प्रसन्धान] सतत प्रवर्तन (पिड
४६०)।

पसस सक [प्रशंस] श्लाघा करना। पसं-
सइ (महा, भवि)। वक्तु पससत, पसंम-
माण (पउम २८, १५, २२, ६८)। वक्तु
पससिज्जमाण (वमु)। सक्तु. पससिऊण
(महा)। क्तु. पससणिज्ज, पसस्स, पस-
सियव्व (सुपा ४७, ६४५, मुर १, २१६,
पउम ७५, ८), देखो पसंस।

पसंस वि [प्रशस्य] १ प्रशंसा-योग्य। २
पुं. लोभ (सूप्र १, २, २, २६)।

पससण न [प्रशमन] प्रशंसा, श्लाघा (उप
१४२ टी, सुपा २०६, उप प १७)।

पससय वि [प्रशसक] प्रशंसा करनेवाला
(था ६, भवि)।

पससा स्त्री [प्रशसा] श्लाघा, स्तुति, वर्णन
(प्रासू १६७, कुमा)।

पसंसिअ वि [प्रशंसित] श्लाघित (उत्त १४,
३८)।

पसज्जं देखो पसंज।

पसज्ज अ [प्रसह्य] १ खुले तौर से, प्रकट
पसज्ज अ [रीति से (सूप्र १, २, २, १६)।
२ हठात्, बलात्कार से (स ३१)।

पसज्जचेय न [प्रसह्यचेतस्] धर्म-निरपेक्ष
चित्त, कदाग्रही मन (दसन्न १, १४)।

पसठ वि [प्रसह्य] अनेक दिन रखकर बुला
किया हुआ (दम ५, १, ७२)।

पसठ वि [प्रशठ] अत्यन्त शठ (सूप्र २,
४, ३)।

पसठ देखो पसज्ज (दस ५, १, ७२)।

पसठिल वि [प्रशिथिल] विशेष ढीला (हे
१, ८६)।

पसण्य वि [प्रसन्न] १ खुश, स्वस्थ (से ५,
४१, गा ८६५)। २ स्वच्छ, निर्मल (श्रौप,
श्रोघ ३४५)। चंद पु [चन्द्र] भगवान्
महावीर के समय का एक राजर्षि (उव,
पिड)।

परुव सक [प्र + रूप्य] प्रतिपादन करना ।
परुवेइ, परुवेति (श्रीप, कप्प, भग) । संक
परुवइत्ता (ठा ३, १) ।

परुवग वि [परुपक] प्रतिपादक (उव, कुप्र
१८१) ।

परुवण न [परुपण] प्रतिपादन (अणु) ।
परुवणा श्री [परुपणा] ऊपर देखो (आचू
१) ।

परुविअ वि [परुपित] १ प्रतिपादित,
निरूपित (पण्ड २, १) । २ प्रकाशित,
'उत्तमकचणरयणपरुविअमामुरमूनणमासुरि -
अगा' (प्रजि २३) ।

परेअ पुं [दे] पिशाच (दे ६, १२, पाम,
पड) ।

परेण अ [परेण] वाद, अनन्तर (महा) ।

परेयम्मण देखो परिकम्मण (कप्प) ।

परेवय न [दे] पाद-पतन (दे ६, १६) ।

परेव्व वि [परेव्वुम्तन] परसो का, परसो
होनेवाला (पिड २४१) ।

परो° प्र [पर] उल्लङ्घ, 'परोसतेहि तचेहि'
(उवा) ।

परोइय देखो परुइय (उप ७६८ टी) ।

परोक्ख न [परोक्ष] १ प्रत्यक्ष-भिन्न प्रमाण,
'पच्चत्तपराक्खाइ दुल्लेव जओ पमाणाइ' (सुर
१२, ६०, एदि) । २ वि. परोक्ष-प्रमाण का
विषय, अप्रत्यक्ष (सुपा ६४७, हे ४, ४१८) ।
३ न. पीछे, आखों की ओट में, 'मम परोक्खे
कि तए अणुभूय ?' (महा) ।

परोट्ट देखो पलोट्ट = पर्यस्त (पड) ।

परोपर } वि [परस्पर] आपस में (हे १,
परोप्पर } ६२, कुमा, कप्प, पड) ।

परोवआर पु [परोपकार] दूसरे की भलाई
(नाट—मृच्छ १६८) ।

परोवयारि वि [परोपकारिन्] दूसरे की
भलाई करनेवाला (पउम ५०, १) ।

परोवर देखो परोप्पर (प्राक २६, ३०) ।

परोविय देखो परुइय (उप ७२८ टी, स
४८०) ।

परोह अक [प्र + रुह] १ उत्पन्न होना ।
२ बटना । परोहदि (शौ) (नाट) ।

परोह पु [परोह] १ उत्पत्ति (कुमा) । २
बुद्धि । ३ अंकुर, बीजोद्भेद (हे १, ४४),
७२

'पुअलयाण परोहे रेहइ आवालपतिव्व' (धर्मवि
१६८) ।

परोहड न [दे] घर का पिछला आँगन, घर
के पीछे का भाग (शोध ४१७, पाम, गा
६८५ अ, वज्जा १०६, १०८) ।

पल अक [पल] १ जीना । २ खाना । पलइ
(पड) । देखो वल = वल् ।

पल (अप) अक [पन्] पडना, गिरना ।

पलइ (पिंग) । वक्र. पलन (पिंग) ।

पल (अप) सक [प्र + रुट्य] प्रकट करना ।
पल (पिंग) ।

पल अक [परा + अय] भागना,

'चोराण कामुयाण य

पामरपहियाण कुक्कुडो रडइ ।

रे पलह रमह वाहयह,

वहह तणुइज्जए रयणी' (वज्जा
१३४) ।

पल न [दे] स्वेद, पसीना (दे ६, १) ।

पल न [पल] १ एक बहुत छोटी तोल, चार
तोला (ठा ३, १, सुपा ४३७, वज्जा ६८,
कुप्र ४१६) । २ मास (कुप्र १८६) ।

पलघ सक [प्र + लङ्घ] अतिक्रमण
करना । पलजेज्जा (श्रीप) ।

पलनण न [पलङ्गन] उल्लघन (श्रीप) ।

पलंड पु [पलगण्ड] राज, चूना पीतने का
काम करनेवाला कारीगर, 'पलगडे पलंडो'
(प्राक ३०) ।

पलडु पु [पलाण्डु] प्याज (उत्त ३६,
६८) ।

पलव अक [प्र + लम्ब] लटकना । पलवए
(पि ४५७) । वक्र. पलवमाण (श्रीप, महा) ।

पलव वि [प्रलम्ब] १ लटकनेवाला, लटकता
(पण्ड १, ४, राय) । २ लम्बा, दीर्घ (से
१२, ५६, कुमा) । ३ पु ग्रह-विशेष, एक
महाग्रह (ठा २, ३) । ४ मुहूर्त-विशेष, ग्रहो-
रात्र का आठवाँ मुहूर्त (सम ५१) । ५ पुन.
आभरण-विशेष (श्रीप) । ६ एक तरह का
घान का कोठा (बृह २) । ७ मूल (कस,
बृह १) । ८ रुचक पर्वत का एक शिखर
(ठा ८—पत्र ४३६) । ९ पुन फल (बृह
१, ठा ४, १—पत्र १८५) । १० देव-विमान-
विशेष (सम ३८) ।

पलविअ वि [प्रलम्बित] लटका हुआ (कप्प,
भवि, स्वप्न १०) ।

पलंविअ वि [प्रलम्बित] लटकनेवाला, लट-
कता (सुपा ११, सुर १, २४८) ।

पलक्क वि [दे] लम्पट, 'इय विमयपलाक्कओ'
(कुप्र ४२७, नाट) ।

पलम्ब पुं [प्लम्ब] बड का पेट (कुमा, पि
१३२) ।

पलग न [पलक] फल-विशेष (आचा २, १,
८, ६) ।

पलज्जण वि [प्ररज्जन] रागी, अनुराग वाला,
'अवम्मपलज्जण —' (गाया १, १८, श्रीप) ।

पलट्ट अक [परि + अम्] १ पलटना,
बदलना । २ सक पलटाना, बदलाना । पलट्टइ
(पिंग), 'कोहाइकारणेवि हु नो वयएसिरि
पलट्टति' (सवौष १८) । सक्क पलट्टि (अप)
(पिंग) । देखो पलट्ट ।

पलत्त वि [प्रलपित] १ कथित, उक्त, प्रनाप-
युक्त (सुपा ११४, मे ११, ७६) । २ न
प्रलाप, कथन (श्रीप) ।

पलय पु [प्रलय] १ युगान्त, कल्पान्त-काल ।
२ जगत् का अपने कारण में लय (ते २,
२, पउम ७२, ३१) । ३ विनाश, 'जायवजाइ-
पलए' (ती ३) । ४ चैष्ट-क्षय । ५ छिपना
(हे १, ६८७) । ६ पु [पल] प्रलय-काल
का सूर्य (पउम ७२, ३१) । ७ घण पु [घन]
प्रलय का मेघ (सण) । ८ लण पु [लण]
प्रलय काल की आग (सण) ।

पलल न [पलल] १ तिल-चूर्ण, तिल-शोद
(पण्ड २, ५, पिड १६५) । २ माम (कुप्र
१८७) ।

पललिअ न [प्रललित] १ प्रकीर्णित (गाया
१, १—पत्र ६२) । २ अंग-विन्यास (पण्ड
२, ४) ।

पलव तक [प्र + लप्] प्रलाप करना, वक-
वाद करना । पलवदि (शौ) (नाट—वेणी
१७) । वक्र. पलवत, पलवमाण (काल,
सुर २, १२५, सुपा २५०, ६४१) ।

पलवण न [प्लवण] उल्लाना, उच्छलन,
'सपाइमवाउवहो पलवण आऊवघाओ य'
(शोध ३४८) ।

पसाह सक [प्र + मा + य] १ वम मे करना । २ मिद करना । पसाहेइ (नाट, भवि) । वहु. पसाहेमाण (श्रीप) ।

पसाहण वि [प्रसाधक] साधक, सिद्ध करनेवाला (धर्मस २६) । १ तम वि [१ तम] १ उत्कृष्ट साधक । २ न व्याकरण-प्रसिद्ध कारक-विशेष, करण-कारक (विसे २११२) । देखो पसाह्य ।

पसाहण न [प्रसाधन] १ मिद करना, साधना, 'विज्जापसाहणज्जयविज्जाहर-सनिच्छत्तो' (मुर ३, १०) । २ उत्कृष्ट साधन 'मवुत्तम माणुत्त दुल्लह भवममुहे पसाहण नेवाणस्स न निउजेति धम्म' (स ७४४) । ३ श्रलकार, भूपण (णाय १, ३, से ३, ४८) । ४ भूपण आदि की सजावट, भूषणपसाहणउवोहि' (वज्जा ११८, मुपा ६६) ।

पसाह्य देखो पसाहण (काल) । २ मजने-वाला (मग ११, ११) ।

पसाहा श्री [प्रसाखा] गाथा की शाखा, छोटी शाखा (णाय १, १, श्रीप महा) ।

पसाहायि वि [प्रसाधित] विभूषित कराया गया, 'पसाया हुआ (भवि) ।

पसाहि वि [प्रसाधिन] सिद्ध करनेवाला, 'अममयपसाहिणी' (मन्वोच ८, ५८) ।

पसाहिज नि [प्रसाधित] अलकृत किया हुआ, मजाया हुआ (से ४, ६१, पाप्र) ।

पसाहिह नि [प्रसाधित] प्रसाखा-युक्त (मुर ८, १०८) ।

पसिअ सक [प्र + सद्] प्रसन्न होना । पसिअ (गा ३८८, ४६६, हे १, ६०१) । पसियद (मण) । सक पसिऊण, पसिऊण (मण, सुपा ७) ।

पसिअ वि [प्रसन्न] फैला हुआ, विस्तीर्ण, 'पसिअच्छि' (गा ६२०, ६२३) ।

पसिअ न [दे] पूग-फल, मुपारी (दे ६, ६) ।

पसिच सक [प्र + मिच्] सेचन करना । वहु पसिचमाण (मुर १२, १७२) ।

पसिडि (दे) देखो पसडि (पाप्र) ।

पसिक्खअ वि [प्रशिक्षक] सीखनेवाला (गा ६२६ अ) ।

पसिज्जण न [प्रमदन] प्रमन्न होना, 'अय-कल्याण खणपसिज्जण अलिप्रवमणणिबंधो' (गा ६७५) ।

पसिडिल देखो पसडिल (हे १, ८६, गा १२३, गउड) ।

पसिण पुंन [प्रश्न] १ पृच्छा, प्रश्न (मुपा ११, ४५३) । २ दर्पण आदि में देवता का आह्वान, मन्त्रविद्या-विशेष (मम १२३, वृह १) । ३ विज्ञा श्री [विज्ञा] मन्त्रविद्या-विशेष (ठा १०) । ४ पमिण न [प्रश्न] मन्त्रविद्या के वन में स्वप्न आदि में देवता के आह्वान द्वारा जाना हुआ शुभाशुभ फल का कथन (पम २ वृह १) ।

पसिणिय वि [प्रश्नन] पूछा हुआ (मुपा १६, ६२५) ।

पसिद्ध वि [प्रसिद्ध] १ विख्यात, विश्रुत (महा) । २ प्राप ने मुक्ति को प्राप्त, मुक्त (मिरि ५६५) ।

पसिद्धि श्री [प्रसिद्धि] १ क्पाति (हे १, ४४) । २ गता का समाधान, आनेप का परिहार (अणु, वेइय ४६) ।

पसिस्स देखो पमीस (विने १४) ।

पमीअ देखो पसिअ = प्र + सद् । पमीयड, पमीयड (कुप्र १) । संकृ. पसीऊण (मण) ।

पसीम पु [प्रशिष्य] शिष्य का शिष्य (पठम ४, ८६) ।

पसु पुं [पशु] १ जन्तु-विशेष, सोग पूँछवाना प्राणी, चतुष्पाद प्राणि-माय (कुमा, श्रीप) । २ अज, वकरा (अण) । ३ भूय वि [भूय] पशु-तुल्य (सूअ १, ४, २) । ४ मेह पुं [मेध] जिममें पशु का भोग दिया जाता हो वह यज्ञ (पठम ११, १२) । ५ वइ पुं [पति] महादेव, शिव (गा १, सुपा ३१) ।

पसुत्त वि [प्रसुत्त] मोया हुआ (हे १, ४४, प्राप्र, णाय १, १६) ।

पसुत्ति श्री [प्रसुत्ति] कुछ रोग विशेष, नखादि-विदारण होने पर भी अचेतनता (राज) । देखो पसुइ ।

पसुव (अप) देखो पसु (भवि) ।

पसुहत्त पु [दे] वृक्ष, पेठ (दे ६, २६) ।

पसु सक [प्र + सू] जन्म देना, प्रसव करना । वहु. पसूअमाण (गा १२१) । संकृ. पसुइत्ता (राज) ।

पसु वि [प्रसु] प्रसव-वर्ता, जन्म-दाता (मोह २६) ।

पसुअ न [दे] पुण्य, फल (दे ६, ६, पाप्र, भवि) ।

पसुअ वि [प्रसूत] १ उत्पन्न, जो पैदा हुआ हो (णाय १, ७, उव, प्रासू १५६) । २ देगो पसविय (महा) ।

पसुअण न [प्रसवन] जन्म-दान (मुपा ४०३) ।

पसुइ श्री [प्रसूति] १ प्रसव, जन्म, उत्पत्ति (पठम २१, ३४, प्रासू १२८) । २ एक प्रकार का कुछ रोग, नखादिसे विदारण करने पर भी दुख का असवेदन, चमड़ी का मर जाना (पिड ६००) । ३ रोग पुं [रोग] रोग-विशेष (मम्मत्त ५८) ।

पसुइय पु [प्रसूतिरु] बाढरोग-विशेष (मिरि ११७) ।

पसुण न [प्रसून] फूल, पुष्प (कुमा, सण) ।

पसेअ पु [प्रत्वेद] पसीना (दे ६, १) ।

पसेडि श्री [प्रश्रेणि] अवान्तर श्रेणि—पकि (पि ६६, राय) ।

पसेण पुं [प्रसेन] भगवान् पारवनाप के प्रथम श्रावक का नाम (विचार ३७८) ।

पसेणइ पुं [प्रसेनजित्] १ कुत्तर-मुख विशेष (पठम ३, ५५, सम १५०) । २ यदुवंश के राजा अन्धकवृष्णि का एक पुत्र (अंत ३) ।

पसेणि श्री [प्रश्रेणि] अवान्तर जाति, 'भट्टारससेणिपसेणीमो सहावेइ' (णाय १, १—पत्र ३७) ।

पसेयग देखो पसेवय (राज) ।

पसेव सक [प्र + सेव्] विशेष सेवा करना । वहु पसेवमाण (श्रु ५५) ।

पसेवय पुं [प्रसेवक] कोपला, यैला; 'एहावि-यपसेवमोव्व उरसि लंबति दोवि तस्स यणया' (उवा) ।

पसेविआ श्री [प्रसेविका] यैली, कोपली (दे ५, २५) ।

टी—पत्र २००)। ३ प्रायश्चित्त-विशेष (ठा ४, १)।

पलिउंचि वि [परिकुञ्चिन्] मायावी, कपटी (वव १)।

पलिउंचिय वि [परिकुञ्चित] १ वञ्चित। २ न माया, कुटिलता (वव १)। ३ गुरु-वन्दन का एक दोष, पूरा वन्दन न करके ही गुरु के साथ बातें करने लग जाना (पव २)।

पलिउञ्जिय देखो परिउञ्जिय (भग)।

पलिउच्छन्न देखो पलिओच्छन्न (आचा १, ५, १, ३)।

पलिउच्छूढ देखो पलिओच्छूढ (ओप—पृ ३० टि)।

पलिउञ्जिय वि [परियोगिक] परिज्ञानी, जानकार (भग २, ५)।

पलिऊल देखो पडिऊल (नाट—विक्र १८)।

पलिओच्छन्न वि [पलितावच्छन्न] कर्मा-वृष्टव, कुकर्मी (आचा, १, ५, १, ३)।

पलिओच्छिन्न वि [पर्यवच्छिन्न] ऊपर देखो (आचा, पि २५७)।

पलिओच्छूढ वि [पर्यवक्षिप्त] प्रसारित (ओप)।

पलिओवम पुन [पल्योपम] समय-मान-विशेष, काल का एक दीर्घ परिमाण (ठा २, ४, भग, महा)।

पलिचा (शी) देखो पडिण्णा (पि २७६)।

पलिकुचणया देखो पलिउचणा (मम ७१)।

पलिक्खीण वि [परिक्षीण] क्षय-प्राप्त (सूत्र २, ७, ११, औप)।

पलिगोव पु [परिगोप] १ पङ्क, कादा, कादी। २ आसक्ति (सूत्र १, २, २, ११)।

पलिच्छण्ण वि [परिच्छन्न] १ समन्ताद् पलिच्छन्न व्याप्त (गाया १, २—पत्र ७८, १, ४)। २ निरुद्ध, रोका हुआ, 'ऐतैहि पलिच्छन्नेहि' (आचा १, ४, ४, २)।

पलिच्छाअ सक [परि + छादय्] ढकना, आच्छादन करना। पलिच्छाएइ (आचा २, १, १०, ६)।

पलिच्छिद सक [परि + छिद्] छेदन करना, काटना। सक पलिच्छिदिय, पलि-च्छिदियाणं (आचा १, ४, ४, ३, १, ३, २, १)।

पलिच्छिन्न वि [परिच्छिन्न] विच्छिन्न, काटा हुआ (सूत्र १, १६, ५, उप ५८५, सुर ६, २०६)।

पलित्त वि [प्रदीप्त] ज्वलित (कुप्र ११६, सं ७७, भग)।

पलिपाग देखो परिपाग (सूत्र २, ३, २१, आचा)।

पलिप्प अक [प्र + दीप्] जलना। पलिप्पइ (पड्, प्राकृ १२)। वकृ, पलिप्पमाण (पि २४४)।

पलिवाहर वि [परिवाह्य] हमेशा बाहर पलिवाहिर होनेवाला (आचा)।

पलिभाग पुं [परिभाग, प्रतिभाग] १ निर्विभागो अंश (कम्म ४, ८२)। २ प्रति-नियत अंश (जीवस १५४)। ३ सादृश्य, समानता (राज)।

पलिभिद सक [परि + भिद्] १ जानना। २ बोलना। ३ भेदन करना, तोड़ना। मकृ, पलिभिदियाण (सूत्र १, ४, २, २)।

पलिभेय पु [परिभेद] चूरना (निचू ५)।

पलिमंथ सक [परि + मन्थ्] बौधना। पलिमंथए (उत्त ६, २२)।

पलिमथ पुं [परिमन्थ] १ विनाश (सूत्र २, ७, २६, विसे १४५७)। २ स्वाध्याय व्याघात (उत्त २६, ३४, धम्मस १०१७)। ३ विघ्न, बाधा (सूत्र १, २, २, ११ टी)। ४ मुचा व्यापार, व्यर्थ क्रिया (आवक १०६, ११२)।

पलिमथग पुं [परिमन्थक] १ वान्य-विशेष, काला चना (सूत्र २, २, ६३)। २ गोल चना। ३ विलव (राज)।

पलिमथु वि [परिमन्थु] सर्वथा घातक (ठा ६—पत्र ३७१, कस)।

पलिमद् देखो परिमद्। परिमद्देज्जा (पि २५७)।

पलिमद् वि [परिमर्द] मालिश करनेवाला (निचू ६)।

पलिमोक्ख देखो परिमोक्ख (आचा)।

पलियचण न [पर्यञ्चन] परिभ्रमण (सुर ७, २४३)। देखो परियचण।

पलियत पु [पर्यन्त] १ अन्त भाग (सूत्र १, ३, १, १५)। २ वि. श्रवसानवाला, अन्त-

वाला, 'पलियंत मणुयाण जीविय' (सूत्र १, २, १, १०)।

पलियंत न [पल्यान्तर] पल्योपम के भीतर (सूत्र १, २, १, १०)।

पलियस्स न [परिपार्थ] समीप, पास, निकट (भग ६, ५—पत्र २६८)।

पलिल देखो पलिअ = पलित (हे १, २१२)।

पलिव देखो पलीव। पलिवेइ (पि २४४)।

पलिवग देखो पलीवग (राज)।

पलिविअ वि [प्रदीपित] जलाया हुआ (पड्, हे १, १०१)।

पलिविद्धस अक [परिवि + ध्वस्] नष्ट होना। पलिविद्धसिज्जा (अणु १८०)।

पलिसय सक [परि + स्यञ्] आलिंगन पलिस्सय करना, स्पर्श करना, छूना।

पलिस्सएज्जा (वृह ४)। वकृ पलिसयमाणे गुरुगा दो लहुगा आणमाईणि' (वृह ४)। हेक पलिस्सइड (वृह ४)।

पलिइ देखो परिइ = परिव (राज)।

पलिहअ वि [दे] मूखं, वेवकूफ (दे ६, २०)।

पलिहइ ली [दे] क्षेत्र, खेत, 'नियपलिहईइ दोहि वि किसिकम्मं काठमाढत्त' (सुर १५, २०१)।

पलिहस्स न [दे] ऊर्ध्व दाह, काष्ठ-विशेष (दे ६, १६)।

पलिहाय पुं [दे] ऊपर देखो (दे ६, १६)।

पली सक [परि + ड] पर्यटन करना, भ्रमण करना। पलेइ (सूत्र १, १३, ६), पलित्ति (सूत्र १, १, ४, ६)।

पली अक [प्र + ली] लीन होना, आसक्ति करना। पलित्ति (सूत्र १, २, २, २२)। वकृ पलेमाण (आचा १, ४, १, ३)।

पलीण वि [प्रलीन] १ अति लीन (भग २५, ७)। २ सवद्ध (सूत्र १, १, ४, २)। ३ प्रलय-प्राप्त, नष्ट (सुर ४, १५४)। ४ छिपा हुआ, निलीन (सुर ६, २८)।

पलीमथ देखो पलिमथ (सूत्र १, ६ १२)।

पलीव अक [प्र + दीप्] जलना। पलीवइ (हे ४, १५२, पड्)।

पलीव सक [प्र + दीपय्] जलाना, सुलगाना। पलीवइ, पलीवेइ (महा, हे १, २२१)। सकृ, पलीविऊण, पलीविअ (कुप्र १६०, गा ३३)।

[वती] आठवें वासुदेव की पटरानी (पउम २०, १८७)।

पहाड सक [प्र + धाटय्] इधर उधर भ्रमाना, घुमाना। पहाडेंति (सूत्रनि ७० टी)।

पहाण वि [प्रयान] १ नायक, मुखिया, मुख्य, 'अवगन्तइ सव्वेवि हु पुरप्पहाणेवि' (सुपा ३०८), 'तत्थत्थि वणिप्पहाणो सेट्ठी वेसमणनामओ' (सुपा ६१७)। २ उत्तम, प्रशस्त, श्रेष्ठ, शोभन (सुर १ ४८, महा, कुमा, पचा ६, १२)। ३ छीन प्रकृति—सत्त्व, रज और तमोगुण की साम्यावस्था, 'ईमरेण कडे लोए पहाणाइ तहावरे' (सूत्र १, १, ३, ६)। ४ पु मंचिव, मन्त्री (भवि)।

पहाण पु [पागाग] पत्थर (चउप्पन्न०)।

पहाण न [प्रहाण] अपगम, विनाश (धर्मस ८७५)।

पहाणि स्त्री [प्रहाणि] ऊपर देखो (उत्त ३, ७, उप ६८६ टी)।

पहाम सक [प्र + भ्रमय्] फिराना, घुमाना। कवक्क पहामिज्जत (मे ७, ६६)।

पहाय देखो पहा = प्र + हा।

पहाय न [प्रभात] १ प्रातःकाल, मवेरा (गउड, सुपा ३६, ६०२)। २ वि प्रभाव-युक्त (से ६, ४४)।

पहाय देखो पहाय = प्रभाव (हे ४, ३४१, हास्य १३२, भवि)।

पहाया देखो वाहाया (अनु)।

पहार सक [प्र + वारय्] १ चिन्तन करना, विचार करना। २ निश्चय करना। भूका पहारेत्थ, पहारेत्था, पहारिमु (सूत्र २, ७, ३६, औप, पि ५१७, सूत्र २, १, २०)। वक्क पहारेमाण (सूत्र २, ४, ४)।

पहार देखो पहर = प्रहार (पात्र हे १, ६८)।

पहाराडया स्त्री [प्रहारातिगा] लिपि-विशेष (मम ३५)।

पहारि वि [प्रहारिन्] प्रहार करनेवाला (सुपा २१५, प्रासू ६८)।

पहारिय वि [प्रहारित] जिन पर प्रहार किया गया हो वह (स ५६८)।

पहारिय वि [प्रवारित] विकल्पित, चिन्तित (राज)।

पहारेत्तु वि [प्रधारयित्] चिन्तन करनेवाला, 'अहाकम्मे अणुवज्जेत्ति मण पहारेत्ता भवति' (भग ५, ६)।

पहाव सक [प्र + भावय्] प्रभाव-युक्त करना, गौरवित करना। पहावइ (सण)। सक्र. पहाविऊण (मण)।

पहाव (अप) अक [प्र + भू] समय होना। पहावइ (भवि)।

पहाव पु [प्रभाव] १ शक्ति, सामर्थ्य, 'तुम च तेतलिपुत्तस्स पहावेण' (णया १, १४, अभि ३८)। २ कोप और दण्ड का तेज। ३ माहात्म्य, 'तायपहावओ चेव मे अविग्घं भविस्सइ ति' (स २६८, गउड)।

पहावणा देखो पभावणा (कुप्र २८४)।

पहाविअ वि [प्रधाविन] दोडा हुआ (स ५८४, गा ५३५, गउड)।

पहाविर वि [प्रधावित्] दौडनेवाला (वजा ६२, गा २०२)।

पहास सक [प्र + भाप्] बोलना। पहासई (सुख ४, ६), 'नाऊण चुन्निय त पहिट्ठहियया पहासई पावा' (महा)।

पहास अक [प्र + भास्] चमकना, प्रकाशना। वक्क पहासंन (सार्ध ५६)।

पहास पुं [प्रहास] अट्टहास आदि विशेष हास्य (दस १०, ११)।

पहासा स्त्री [प्रहासा] देवी-विशेष (महा)।

पहिअ वि [पान्थ, पथिक] मुसाफिर (हे २, १५२, कुमा, पड्, उव, गउड)। 'साला स्त्री [शाला] मुसाफिरखाना, धर्मशाला (धर्मवि ७०, महा)।

पहिअ वि [प्रथित] १ विस्तृत। २ प्रसिद्ध, विख्यात (ओप)। ३ राक्षस-वंश का एक राजा एक लका-पति (पउम ५, २६२)।

पहिअ वि [प्रहित] भेजा हुआ, प्रेषित (उप पु ४५, ७६८ टी, धम्म ६ टी)।

पहिअ वि [दे] मथित, विलोडित (दे ६, ६)।

पहिऊण देखो पहा = प्र + हा।

पहिसय वि [प्रहिमक] हिंसा करनेवाला (ओध ७५३)।

पहिज्जमाण देखो पहा = प्र + हा।

पहिट्ठ देखो पहट्ठ = प्रहट्ठ (ओप; सुर ३, २४८, सुपा ६३, ४३७)।

पहिर सक [परि + धा] पहिरना, पहनना।

पहिरइ, पहिरति (भवि, धर्मवि ७)। कमं. पहिरिज्जइ (सवोष १४)। वक्क. पहिरत (सिरि ६८)। सक्र. पहिरिउ (धम्मवि १५)। प्रयो., संक्र. पहिरावेऊण, पहिराविऊण (सिरि ४५६, ७७०)।

पहिरावण न [परिधापन] १ पहिराना। २ पहिरावन, भेंट में—इनाम में दिया जाता वस्त्रादि, गुजरानी में—'पहिरामणी' (आ २८)।

पहिराविय वि [परिधापित] पहिराया हुआ (महा, भवि)।

पहिरिय वि [परिहित] पहिरा हुआ, पहना हुआ (सम्मत्त २१८)।

पहिल वि [दे] पहला, प्रथम (सत्ति ४७, भवि, पि ४४६)। स्त्री °ली (पि ४४६)।

पहिल्ल अक [द्] पहल करना, आगे करना। पहिल्लइ (पिंग)। मक्र. पहिल्लिअ (पिंग)।

पहिल्लिर वि [प्रघूर्णित्] खूब हिलनेवाला, अत्यन्त हिलता (सम्मत्त १८७)।

पहिवी देखो पुहवी = पृथिवी (नाट)।

पहीण वि [प्रहीण] १ परिशील (पिंड ६३१, भग)। २ भ्रष्ट, स्तलित (सूत्र २, १, ६)।

पहु पु [प्रभु] १ परमेश्वर, परमात्मा (कुमा)। २ एक राज-पुत्र, जयपुर के विन्ध्यराज का एक पुत्र (वसु)। ३ स्वामी, मालिक (सुर ४, १५६)। ४ वि समय, शक्तिमान, 'दाण दरिदस्स पहुस्स खतो' (प्रासू ४८)। ५ अवि-पति, मुखिया, नायक (हे ३, ३८)।

°पहुइ देखो °पभिड (कप्पू)।

पहुई देखो पुहुवी (पड्)।

पहुक पु [पृथुक] साय पदार्थ विशेष, चिठ्ठा (दे ६, ४४)।

पहुच्च अक [प्र + भू] पहुँचना। पहुँचइ (हे ४, ३६०)। वक्क. पहुच्चमाण (ओध ५०५)।

पहुट्ट देखो पप्फुट्ट। पहुट्टइ (कप्पू)।

पहुडि देखो पांभइ (हे १, १३१, ती १०, पड्)।

पहुण पु [प्राघुण] अतिथि मेहमान (उप ६०२)।

°नाह पु [°नाथ] पल्ली का स्वामी (मुपा ३५१, सुर २, ३६)। °वड पु [°पति] वही अर्थ (सुर १, १६१, मुपा ३५१)।

पल्लिअ वि [दे] १ आक्रान्त (निचू २)। २ ग्रस्त (निचू १)। ३ प्रेरित, 'पल्लिट्टा पल्लि-आरुट्टव' (वण ४७)।

पल्लित्त वि [दे] पर्यन्त (पड्)।

पल्ली देखो पल्लि (गड्ड, पचा १०, ३६, सुर २, २०४)।

पल्लीण वि [प्रलीन] विगेष लीन, 'गुत्तिदिण अल्लीणे पल्लीणे चिट्ट' (भग २५, ७, कप्प)।

पल्लोट्टजीह [दे] देखो पल्लोट्टजीह (पड्)।

पल्लुत्थ देखो पल्लोट्ट + परि + अस्। पल्लुत्थइ (हे ४, २००)। वक्तु पल्लुत्थत (से १०, १०, २, ५)। कवक्तु पल्लुत्थत (से ८, ८३, ११, ६६)।

पल्लुत्थ सक [वि + रेचय्] बाहर निकालना। पल्लुत्थइ (हे ४, २-)।

पल्लुत्थ देखो पल्लोट्ट = पर्यस्त, 'करतल-पल्लुत्थपुहे' (सुप्र २, २, १६, हे ४, २५८)।

पल्लुत्थण न [पर्यस्तन] फँक देना, प्रओ ए, 'अन्नदा भुवणपल्लुत्थणपवणो समुट्टिदो डुड-पवणो (मोह ६२)।

पल्लुत्थरण देखो पल्लुत्थरण (से ११, १०८)।

पल्लुत्थाविअ वि [विरेचित] बाहर निकालना। वृथा (कुमा)।

पल्लुत्थिअ देखो पल्लोट्ट = पर्यस्त (से ७, २०, एया १, ४६—पत्र २१६, सुपा ७६)।

पल्लुत्थिया ली [पर्यस्ति का] आसन-विशेष— १ दोनों जानु खड़ा कर पीठ के साथ चादर लपेटकर बैठना (पव ३८)। २ जघा पर वस्त्र लपेटकर बैठना। ३ जघा पर पाँव रखकर बैठना (उत्त १, १६)। °पट्ट पु [°पट्ट] योग-पट्ट (राज)।

पल्लुय } पु [पल्लुय] १ अनार्य देश-
पल्लुय } विशेष (कप्प, कुप्र ६७)। २ पुत्री
पल्लुय देश का निवासी (भग ३, २—पत्र १७०, अत)। ली °वाँ, °विया (पि ३३०, मौप, एया १, १—पत्र ३७, इक)।

पल्लुवि पुंल्लो [दे पल्लुवि] हाथी की पीठ पर बिछाया जाता एक तरह का कपडा, 'पल्लुवि इत्यत्तरण' (पव ८४)।

पल्लुविया } देखो पल्लुव।
पल्लुवी }

पल्लुय सक [प्र = हल्यद्] आनन्दित करना, खुशी करना। पल्लुयइ (संवोध १२)। वक्तु पल्लुयन (उव, सुर ३, १२१)। कृ. देखो पल्लुयणिज्ज।

पल्लुय पुं [प्रह्लाद] १ आनन्द, खुशी (कुमा)। २ हिरण्यकशिपु नामक दैत्य का पुत्र (हे २, ७६)। ३ आठवाँ प्रतिवामुदेव राजा (पउम ५, १५६)। ४ एक विद्यावर नरेय (पउम १५, ५)।

पल्लुयण न [प्रह्लादन] १ चित्त-प्रमत्तता, खुशी (उत्त २६, १७)। २ वि आनन्द-दायक (मुपा ५०७)। ३ पु. रावण का एक मुभट (पउम ५६, ३६)।

पल्लुयणिज्ज वि [प्रह्लादनीय] आनन्द-जनक (एया १, १—पत्र १३)।

पल्लुय पुं. व [प्रहल्लीक] देश-विशेष (पउम ६८, ६६)।

पव सक [पा] पीना। कृ 'अरसमेहा अ-पवणिज्जो दगा वास वासिंहिति' (भग ७, ६—पत्र ३०५)।

पव अक [प्लु] १ फरकना। २ सक. उछल कर जाना। ३ तेरना। पवेज (सुप्र १, १, २, ८)। वक्तु पवत, पवमाण (से ५, ३७, आचा २, ३, २, ४)। हेक्तु पविउ (सुप्र १, १, ४, २)।

पव पु [प्लव] १ पूर (कुमा)। २ उछलन, कूदना। ३ तरण, तेरना। ४ भेक, मेढक। ५ वानर, वन्दर। ६ घाएउल, डोम। ७ जल-काक। ८ पाकुड का पेठ। ९ कारएडव पक्षी। १० शब्द, आवाज। ११ रिपु, दुश्मन। १२ मेप, मेंढा। १३ जल-कुक्कुट। १४ जल, पानी। १५ जलचर पक्षी। १६ नोका, नाव (हे २, १०६)।

पव लीन [प्रपा] पानीयशाला, प्याऊ, 'महाणि वा पवाणि वा' (आचा २, २, २, १०)।

पवग पु [प्लवङ्ग] १ वानर (से २, ४६, ४, ४७)। २ वानर-वशीय मनुष्य। °नाह पु

[°नाथ] वानर-वशीय राजा, वानी (पउम ६, २६)। °वड पु [°पति] वानरराज (पि ३७६)।

पवगम पुं [प्लवगम] १ वानर (पाअ, से ६, १६)। २ छन्द-विशेष (पिग)।

पवच पुं [प्रपञ्च] १ विस्तार (उप ५३० टी, औप)। २ समार (सुप्र १, ७, उव)। ३ प्रतारण, ठगाई (उव)।

पवचण न [प्रपञ्चन] विप्रतारण, वञ्चना, ठगाई (परह १, १—पत्र १४)।

पवचा ली [प्रपञ्चा] मनुष्य की दश दशाओं में सातवीं दशा—६० से ७० वर्ष की अवस्था (ठा १०, तदु १६)।

पवचिअ वि [प्रपञ्चित] विस्तारित (आ १४, कुप्र ११८)।

पवळ सक [प्र + वाळ्] वाञ्छना, अभिलाषा करना। वक्तु पवळमाण (उप पु १८०)।

पवत देणो पव = प्लु।

पवंपुल पुन [दे] मच्छी पकड़ने का जाल-विशेष (विपा १, ८—पत्र ८५)।

पवक वि [प्लवक] १ उछल-कूद करनेवाला। २ तेरनेवाला (परह १, १ टी—पत्र २)। ३ पुं. पक्षी। ४ देवजाति-विशेष, सुपर्णकुमार नामक देव-जाति (परह २, ४—पत्र १३०)।

पवकस्वमाण देखो पवय = प्र + वच्।

पवग देखो पवक (परह २, ४, कप्प, औप)।

पवज सक [प्र + पट्] स्वीकार करना।

पवज्जइ, पवज्जिजा (भवि, हिन २०)। भवि पवज्जिहिसि (गा ६६१)। वक्तु, पवज्जत (आ २७)। सक्तु, पवज्जिय (मोह १०)। कृ पवज्जियव्व (पंचा १६)।

पवज्जण न [प्रपटन] स्वीकार, अंगीकार (स २७१, पचा १४, ८, आवक १११)।

पवज्जा देखो पवज्जजा (महानि ४)।

पवज्जिय वि [प्रपट्] स्वीकृत, अंगीकृत (वर्मवि ५३, कुप्र २६५, सुपा ४०७)।

पवज्जिय वि [प्रवादिन] जो बजने लगा हो (स ७५६)।

पवज्जिय देखो पवज्ज।

पवट्ट अक [प्र + वृत्] प्रवृत्ति करना। पवट्टइ (महा)।

पाउंछण } न [प्रादप्रोच्छन, °क] जेन
पाउंछणग } मुनि का एक उपकरण, रजोहरण
(पव ११२ टी, श्लो ६३०, पंचा १७,
१२)।

पाउंकर मक [प्रादुम् + कृ] प्रकट करना।
भवि पाउंकरिस्सामि (उत्त ११. १)।

पाउंकर वि [प्रादुंकर] प्रादुर्भावक (सूत्र १,
१५, २५)।

पाउंकरण न [प्रादुंकरण] १ प्रादुर्भाव। २
वि जो प्रकाशित किया जाय वह। ३ जैन
मुनि के लिए एक भिक्षा-दोष, प्रकाश कर दी
हुई भिक्षा 'पकिरणपाउंकरणपामिच्च' (परह
२, ५—पत्र १८८)।

पाउंकरि नि [प्रादुंकरि] पीने की इच्छा
वाला, 'त जो रा रावियाए माउणए दुद्धं
पाउंकरि मे रा निगच्छउ' (राया १ १८)।

पाउंकर वि [दे] मार्गीकृत मार्गित (दे ६
४१)।

पाउंकरण देखो पाउंकरण (राज)।

पाउंकरालय न [दे पायुंकरालय] १
पाखाना, टट्टी मलोत्सर्ग-स्थान, 'ठाउं चैव
एसा पाउंकरालयमि रयणी' (म २०५,
भत ११२)। २ मलोत्सर्ग-क्रिया 'रयणीए
पाउंकरालयनिमिन्नुद्विओ' (म २०५)।

पाउंकर वि [दे] सम्य नभानद (दे ६, ४१,
सण)।

पाउंकर वि [श्रायोग्य] उचित, लायक (सुर
१५, २३३)।

पाउंकरह पुं [पनदग्रह] पात्र (आचानि
२८८)।

पाउंकरज वि [दे] १ जुआ खेलानेवाला।
२ माद, सहन विया हुआ (दे ६, ४१
पाग)।

पाउंकर देखो पागय (प्राकृ १२, मुद्रा १२०)।

पाउंकर वि [प्रावृत्त] १ आच्छादित, ढका हुआ
(सूत्र १, २, २, २२)। २ वस्त्र, कपडा
(ठा ५, १)।

पाउंकर सक [प्रा + वृ] आच्छादित करना,
पहिरना। पाउंकरह (पिड ३५)। सकृ. 'पडं
पाउंकरिउण रति गिगगओ' (महा)।

पाउंकर मक [प्रा + आप] प्राप्त करना।
पाउंकर (भग)। पाउंकरति (श्रौच सूत्र १,

११, २१)। पाउंकरिजा (आचा २, ३, १, ११)
भवि पाउंकरिस्सामि, पाउंकरिहिइ (पि ५३१,
उवा)। सकृ. पाउंकरिजा (श्रौच, राया १,
१, विपा २, १, कप्प, उवा)। हेकृ. पाउंकरि-
जा (आचा २ ३, २, ११)।

पाउंकर (अप) देखो पावण = पावन (पिग)।

पाउंकर देखो पउंकर = प्रयुक्त (श्रौच)।

पाउंकरभाय वि [प्रादुंकरभाय] प्रभा-युक्त,
प्रकाश-युक्त 'करन पाउंकरभायए रयणीए'
(राया १, १ भग)।

पाउंकरभव श्रक [प्रादुंकर + भू] प्रकट
होना। पाउंकरभव (पव ४०)। भूका
पाउंकरवित्था (उवा)। वकृ. पाउंकरभवत,
पाउंकरभवमाण (मुपा ६, कुप्र २६, राया
१, ५)। सकृ. पाउंकरवित्थाण (उवा,
श्रौच)। हेकृ. पाउंकरवित्थाए (पि ५७८)।

पाउंकरभव वि [पापोद्वय] पाप से उत्पन्न
(उप ७६८ टी)।

पाउंकरभवा श्री [प्रादुंकरभवन] प्रादुर्भाव (भग
३, १)।

पाउंकरभुय (अप) नीचे देखो (उण)।

पाउंकरभूय वि [प्रादुंकरभूय] १ उत्पन्न, सजात।
२ प्रकटित (श्रौच, भग, उवा, विपा १, १)।
पाउंकरण न [पाउंकरण] वस्त्र, कपडा (सूत्रनि
८६, हे १, १७५, पंचा ५, १०, पव ४,
पड)।

पाउंकरण न [दे] कवच, वस्त्र (पड)।

पाउंकरणी श्री [दे] कवच, वस्त्र (दे ६, ४३)।

पाउंकरिअ देखो पाउंकर = प्रावृत्त (कुप्र ४५२)।

पाउंकर वि [पापकुल] हलके कुल का, जघन्य
कुल में उत्पन्न, 'दवाधिय पाउंकराण दविण-
जाय' (स ६२६), कलसहपउंकरपाउंकरमगल-
सगोयपवरवेक्खण्य' (सुर १०, ५)।

पाउंकर न देखो पाउंकर, 'पाउंकराई संकमट्टाए'
(सूत्र १, ४, २, १५)।

पाउंकर न [पाउंकर] पाद-प्रक्षालन-जल,
'पाउंकराई च एहाणुवदाई च' (राया १,
७—पत्र ११७)।

पाउंकर पुं [प्रावृत्] वर्षा ऋतु (हे १,
१६, प्राप्र, महा)। °कीड पुं [°कीट]
वर्षा ऋतु में उत्पन्न होनेवाला कीट-विशेष

(दे)। °गम पुं [°गम] वर्षा प्रारम्भ
(पाम)।

पाउंकरिअ वि [प्रावृत्तिक] वर्षा-सम्बन्धी
(राज)।

पाउंकरिअ वि [प्रोपित, प्रवासिन्] प्रवास
में गया हुआ,
'तह मेहागमससियप्रागमणाए पईए मुद्राओ।
मग्गमवलोयमाणीउ नियइ पाउंकरिअदइयाओ।'
(मुपा ७०)।

पाउंकरिआ श्री [प्राद्वेपिकी] द्वेप—मत्सर
से होनेवाला कर्म-बन्ध (सम १०, ठा २, १,
भग, नव १७)।

पाउंकरि श्री [दे. पाउंकरि] भक्त को
लानेवाली, भात-पानी ले आनेवाली (गा
६६४ श्र)।

पाउंकरि श्री [दे. पाउंकरि] भक्त को
लानेवाली, भात-पानी ले आनेवाली (गा
६६४ श्र)।

पाउंकर [दे] प्रभृति, (वहा से) शुरू करके
(श्लो १६६, वृह १)।

पाउंकर सक [पायय] पिलाना। पाउंकर (हे
३, १४६)। पाउंकराह (महा)। वकृ. पाउंकर,
पाययंत (सुर १३, १३४, १२, १७१)।
सकृ. पाउंकरा (श्रक ३०)।

पाउंकर सक [पादय] गति कराना। पाउंकर
(हे ३, १४६)।

पाउंकर सक [पाचय] पकवाना। पाउंकर
(हे ३, १४६)। कर्म. पाउंकर (श्रावक
२००)।

पाउंकर } श्र [प्रायेण] बहुत करके, प्राय
पाउंकर } (विज ११६६, काल, कप्प, प्रासू
४३)।

पाओ श्र [प्रायम्] ऊपर देखो (श्रा २७)।

पाओ श्र [प्रातम्] प्रात काल, प्रभात
(सुज्ज १, ६, कप्प)।

पाओकरण देखो पाउंकरण (पिड २६८)।

पाओग देखो पाउंकर (सूत्रनि ६५)।

पाओगिय वि [प्रायोगिक] प्रयत्न-जनित,
अस्वाभाविक (चिइय ३५३)।

पाओग देखो पाउंकर (भास १०, धर्मसं
११८०)।

पाओपगम न [पादपोपगम] देखो पाओ-
वगमण (वव १०)।

पाओयर पुं [प्रादुंकर] देखो पाउंकरण
(ठा ३, ४, पंचा १३, ५)।

पवरग न [दे. प्रवराङ्ग] सिर, मस्तक (दे ६, २८) ।

पवरपुडरीय पुंन [प्रवरपुण्डरीक] एक देव-विमान (आवा २, १५, २) ।

पवरा स्त्री [प्रवरा] भगवान् वासुपूज्य की शासनदेवी (पव २७) ।

पवरिस सक [प्र + वृष्] वरसना, वृष्टि करना । पवरिसइ (भवि) ।

पवल देखो पवल (कप्प, कुप्र २४७) ।

पवस अक [प्र + वस] प्रयाण करना, विदेश जाना । वक्क. पवसंत (से १, २४, गा ६४) ।

पवसण न [प्रवसन] प्रवास, विदेश यात्रा, मुसाफिरी (स १६६, उप १०३१ टी) ।

पवसिअ वि [प्रोषित] प्रवास में गया हुआ (गा ४५, ८४०, सुर ५, २११, सुपा ४७३) ।

पवह अक [प्र + वह] १ वहना । २ सक टपकना, झरना । पवहइ (भवि, पिग) । वक्क. पवहंत (सुर २, ७५) । संक. पवहिता (सम ८४) ।

पवह सक [प्र + हन्] मार डालना । वक्क. 'पिच्छउ पवहत मज्झ करयल कलिय-करवाल' (सुपा ५७२) ।

पवह वि [प्रवह] १ बहनेवाला । २ टपकने-वाला, चूनेवाला, 'अट्टु गालीओ अठ्ठतरप्प-वहाओ' (विपा १, १—पत्र १६) ।

पवह पु [प्रवाह] १ स्रोत, बहाव, जल-धारा (गा ३६६, ५४१, कुमा) । २ प्रवृत्ति । ३ व्यवहार । ४ उत्तम अश्व (हे १, ६८) । ५ प्रभाव (राज) ।

पवहण पुन [प्रवहण] १ नौका, जहाज (गाया १, ३, पि ३५७) । २ गाड़ी आदि वाहन, 'जुगगया गिल्लिगया थिल्लिगया पवहणगया' (औप; वसु; चाव ७०) ।

पवहाइअ वि [दे] प्रवृत्त (दे ६, ३४) ।

पवहाविय वि [प्रवाहित] बहाया हुआ (भवि) ।

पवा स्त्री [प्रपा] जलदान-स्थान, पानी-शाला, प्याऊ (औप; परह १, ३, महा) ।

पवाइ वि [प्रवादन्] १ वाद करनेवाला, वादी । २ दार्शनिक (सूअ १, १, १, चउ ४७) ।

पवाइअ वि [प्रवात] बहा हुआ (वायु), 'पवाइया कलंबवाया' (स ६८६, पउम ५७, २७, गाया १, ८, स ३६) ।

पवाइअ वि [प्रवादित] बजाया हुआ (कप्प, औप) ।

पवाण (अप) देखो पमाण = प्रमाण (कुमा, पि २५१, भवि) ।

पवाड सक [प्र + पातय] गिराना । वक्क. पवाडेमाण (भग १७, १—पत्र ७२०) ।

पवादि देखो पवाइ (धर्मसं १३३) ।

पवाय अक [प्र + वा] १ सुख पाना । २ वहना (हवा का) । ३ सक. गमन करना । ४ हिंसा करना । पवायइ (प्राकृ ७६) । वक्क. पवायत (आवा) ।

पवाय पुं [प्रवाद] १ किंवदन्ती, जनश्रुति (सुपा ३००, उप पृ २६) । २ परंपरा-प्राप्त उपदेश । २ मत, दर्शन, 'पवाएण पवायं जाणेजा' (आवा) ।

पवाय पुं [प्रपात] १ गर्त, गड्ढा (गाया १, १४—पत्र १६१, दे १, २२) । २ ऊँचे स्थान से गिरता जल-समूह (सम ८४) । ३ तट-रहित निराधार पर्वत-स्थान । ४ रात में पडनेवाली वाह, धारा (राज) । ५ पतन (ठा २, ३) । 'दह पुं [द्रह] वह कुएड, जहाँ पर्वत पर से नदी गिरती हो (ठा २, ३—पत्र ७३) ।

पवाय पुं [प्रवात] १ प्रकट पवन (परह २, ३) । २ वि. बहा हुआ (पवन) (सक्षि ७) । ३ पवन-रहित (वृह १) ।

पवायग वि [प्रवाचक] पाठक, अध्यापक (विसे १०६२) ।

पवायण न [प्रवाचन] प्रपठन, अध्ययन (सम्मत् ११७) ।

पवायणा स्त्री [प्रवाचना] ऊपर देखो (विसे २८३५) ।

पवायय देखो पवायग (विसे १०६२) ।

पवाल पुन [प्रवाल] १ नवाकुर, किसलय (पाअ ३४१, गाया १, १, सुपा १२६) । २ मृगा, विद्रुम (पाअ, कप्प) । 'मत, वत वि [वत्] प्रवालवाला (गाया १, १, औप) ।

पवाल्लिअ वि [प्रपालित] जो पालने लगा हो वह (उप ७२८ टी) ।

पवास पुं [प्रवास] विदेश गमन, परदेश-यात्रा (सुपा ६५७, हेका ३७, सिरि ३५६) ।

पवासि } वि [प्रवासिन्] मुसाफिर (गा पवासु } ६८, पड, पि ११८, हे ४, ३६५) ।

पवाह सक [प्र + वाहय] बहाना, चलाना । पवाहइ (भवि) । भवि पवाहहिंति (विसे २४६ टी) ।

पवाह देखो पवह = प्रवाह (हे १, ६८, ८२, कुमा, गाया १, १४) ।

पवाह पु [प्रवाध] प्रकट पीडा (विपा १, ६—पत्र ६०) ।

पवाहण न [प्रवाहन] १ जल, पानी (आवम) । २ बहाना, बहन कराना (चेइय ५२३) ।

पवि पु [पवि] वज्र, इन्द्र का अस्त्र-विशेष (उप २११ टी, सुपा ४६७, कुमा, धर्मवि ८०) ।

पविअभिअ वि [प्रविजृम्भित] प्रोल्लसित, समुत्पन्न (गा ५३६ अ) ।

पविआ स्त्री [दे] पक्षी का पान-पात्र (दे ६, ४, ८, ३२, पाअ) ।

पविइण वि [प्रवितीर्ण] दिया हुआ (औप) ।

पविइण } वि [प्रविकीर्ण] १ व्याप्त पविइज्ज } (औप, गाया १, १ टी—पत्र ३) । २ विक्षिप्त, निरस्त (गाया १, १) ।

पविअथ सक [प्रवि + कथ] आत्म-श्लाघा करना । पविकथई (सम ५१) ।

पविकसिय वि [प्रविकसित] प्रकर्ष से विक-सित (राज) ।

पविकिर सक [प्रवि + कृ] फँकना । वक्क. पविकिरमाण (ठा ८) ।

पविकिखअ वि [प्रवीक्षित] निरीक्षित, अवलोकित (स ७४६) ।

पविकिखर देखो पविकिर, 'नाविअजलो य भडं पविकिखरंते समुद्धम्मि' (सुर १३, २०६) ।

पविग्व वि [दे] विस्मृत (पड) ।

पविचरिय वि [प्रविचरित] गमन-द्वारा सर्वत्र व्याप्त (राय) ।

पाडहिग } वि [पाटहिक्] ढोल बजनेवाला,
पाडहिय } ढोलिया, ढोलकिया (स २१६) ।
पाडहुक् वि [दे] प्रतिभू, मनौतिया,
जामिनदार (पड्) ।
पाडिअ वि [पाटित] फाढा हुआ, विदारित
(स ६६६) ।
पाडिअ वि [पातित] गिराया हुआ (पात्र,
प्रासू २, भवि) ।
पाडिअग्ग पु [दे] विश्राम (दे ६, ४४) ।
पाडिअन्म पु [दे] पिना के घर से बधू को
पति के घर ले जानेवाला (दे ६, ४३) ।
पाडिआ देखो पाडय = पातक ।
पाडिअक्क } न [प्रत्येक] हर एक (हे २,
पाडिक्क } २१०, कप्प, पात्र, राया १,
१६, २, १, सूत्र १२१ टी, कुमा), 'एगे
जीवे पाडिक्कएण सरीरण' (ठा १—पत्र
१६) ।
पाडितिय न [प्रात्यन्तिक] अभिनय-विशेष
(राय ५४) ।
पाडिचरण न [प्रतिचरण] सेवा, उपासना
(उप पृ ३४६) ।
पाडिच्छय वि [प्रतीप्सक] ग्रहण करनेवाला
(सुख २, १३) ।
पाडिज्जत देखो पाड = पातय् ।
पाडिपह न [प्रतिपथ] अमिमुख, सामने
(सूत्र २, २, ३१) ।
पाडिपहिअ देखो पडिपहिअ (सूत्र २, २,
३१) ।
पाडिपिद्धि स्त्री [दे] प्रतिस्पर्धा (पड्) ।
पाडिपवग पु [पारिप्लवक] पक्षि-विशेष
(पठम १४, १८) ।
पाडिप्फाद्धि वि [प्रतिस्पर्धित] स्पर्धा करने-
वाला (हे १, ४४, २०६) ।
पाडियतिय न [प्रात्यन्तिक] अभिनय-विशेष
(राज) ।
पाडियक्क देखो पाडिक्क (श्रौप) ।
पाडिवय वि [प्रातिपद्] १ प्रतिपत्-सवन्धी,
पडवा तिथि का, 'जह चढो पाडिवओ पडिपुओ
सुक्कपक्खम्मि' (उवर ६०) । २ पुं एक
भावी जैन आचार्य (विचार ५०६) ।
पाडिवया स्त्री [प्रतिपत्] तिथि-विशेष, पक्ष
की पहली तिथि, पडवा (सम २६, राया १,
१०, हे १, १५, ४४) ।

पाडिवेसिय वि [प्रातिवेसिमक्] पडोसी
स्त्री, 'या (सुपा ३६४) ।
पाडिसार पुं [दे] १ पडुता, निपुणता । २
वि. पटु, निपुण (दे ६, १६) ।
पाडिसिद्धि देखो पडिसिद्धि = प्रतिसिद्धि (हे
१, ४४, प्राप्र) ।
पाडिसिद्धि स्त्री [दे] १ स्पर्धा (दे ६, ७७,
कप्प, कुप्र ४६) । २ समुदाचार । ३ वि.
सदृश, तुल्य (दे ६, ७७) ।
पाडिसिरा स्त्री [दे] खलीन-युक्ता (दे ६, ४२) ।
पाडिस्सुइय न [प्रातिश्रुतिक] अभिनय का
एक भेद (राज) ।
पाडिहन्द्धा } स्त्री [दे] शिरो-माल्य, मस्तक-
पाडिहत्थी } स्थित पुष्पमाला (दे ६, ४२,
राज) ।
पाडिहारिय वि [प्रातिहारिक] वापस देने
योग्य वस्तु (विसे ३०४७, श्रौप, उवा) ।
पाडिहेर न [प्रातिहार्य] १ देवता-कृत प्रती-
हार-कर्म, देवकृत पूजा-विशेष (श्रौप, पव
३६), 'इय सामइए भावा इहइपि नागदत्त-
नरनाहो । जाम्रो सपाडिहेरो' (सुपा ५४४) ।
२ देव-सान्निध्य (भक्त ६६), 'बहूण सुरेहि
कयं पाडिहेर' (श्रु ६४, महा) ।
पाडो स्त्री [दे] भैंस की बछिया; पाडो या
पडिया गुजराती में 'पाडो' (गा ६५) ।
पाडुंकी स्त्री [दे] ब्रणी—जखमवाले की
पालकी (दे ६, ३६) ।
पाडुगोरि वि [दे] १ विपुण, गुण-रहित ।
२ मद्य में आसक्त । ३ स्त्री मजबूत वेष्टन-
वाली बाढ, 'पाडु गोरि च वृत्तिर्दोषं यस्या
विवेचन परित' (दे ६, ७८) ।
पाडुक्क पु [दे] समालम्भन, चन्दन आदि का
शरीर में उपलेप । २ वि. पटु, निपुण (दे ६,
७६) ।
पाडुच्चिय वि [प्रातीतिक] किसी के आश्रय
से होनेवाला, आपेक्षिक । स्त्री 'या (ठा २,
१, नव १८) ।
पाडुष्ठी स्त्री [दे] तुरग-मण्डन, घोड़े का
मिगार (दे ६, ३६, पात्र) ।
पाडुहुअ वि [दे] प्रतिभू, मनौतिया, जामिन-
दार (दे ६, ४२) ।
पाडेक्क देखो पाडिक्क (सम्म ५५) ।

पाडोस पु [दे] पडोम, प्रातिवेसिमक्ता (था
२७) ।
पाडोसिअ वि [दे] पडोमी, पडोसिया (सिरि
३१२, था २७, सुपा ५५०) ।
पाड सक [पाठय्] पढाना, अध्ययन कराना ।
पाडइ, पाटेइ (प्राक् ६०, प्राप्र) । कर्म पाडिक्क
(प्राप्र) । सक्र. पाडिऊण, पाडेऊण (प्राक्
६१) । हेक्क. पाडिउ, पाडेउ (प्राक् ६१) ।
कृ. पाडणिज्ज, पाडिअन्व, पाडेअन्व
(प्राक् ६१) ।
पाड पु [पाठ] १ अध्ययन, पठन (श्रीधमा
७१, विसे १३८४, सम्मत् १४०) । २ शास्त्र,
आगम । ३ शास्त्र का उल्लेख, 'पाडो ति वा
सत्य ति वा एगट्ठा' (आचू १) । ४ अध्यापन,
शिक्षा (उप पृ ३०८, विसे १३८४) ।
पाड देखो पाडय = पातक (था ६३ टी) ।
पाडतर न [पाठान्तर] भिन्न पाठ (आवक
३११) ।
पाडग वि [पाठक] १ उच्चारण करनेवाला,
'पडिय मगलपाडगेहि' (कुप्र ३२) । २
अभ्यासी, अध्ययन करनेवाला । ३ अध्यापन
करनेवाला, अध्यापक, 'वत्थुपाडगा', 'सुमिण-
पाडगाण', 'लक्खणसुमिणपाडगाण' (धर्मवि
३३, राया १, १, कप्प) ।
पाडण न [पाठन] अध्यापन (उप पृ १२८,
प्राक् ६१, सम्मत् १४२) ।
पाडणया स्त्री [पाठना] ऊपर देखो (पचमा
४) ।
पाडय देखो पाडग (कप्प, स ७, राया १,
१—पत्र २०, महा) ।
पाडव वि [पाथिव] पृथिवी का विकार,
पृथिवी का, 'पाडव सरीरं हिंसा' (उत्त २,
१३) ।
पाडा स्त्री [पाठा] वनस्पति-विशेष, पाड, पाठ
का गाछ (परण १७) ।
पाडाव सक [पाठय्] पढाना, अध्यापन
करना । पाडावेइ (प्राप्र) । सक्र. पाडाविऊण,
पाडावेऊण (प्राक् ६१) । हेक्क. पाडाविउ,
पाडावेउ (प्राक् ६१) । कृ. पाडावणिज्ज,
पाडावअन्व (प्राक् ६१) ।
पाडावअ वि [पाठक] अध्यापक (प्राक् ६०) ।
पाडावण न [पाठन] अध्यापन (प्राक् ६१) ।

पुवुद्ध वि [प्रवृद्ध] बड़ा हुआ, विशेष वृद्ध (दे १, ६)।

पुवुद्धि स्त्री [प्रवृद्धि] बढ़ाव (पंच ५, ३३)।

पुवुत्त वि [प्रोक्त] १ जो कहने लगा हो, जिसने बोलना आरम्भ किया हो वह (पउम २७, १६, ६४, २१)। २ उक्त, कथित (धर्मवि ८२)।

पुवुत्थ [दे] देखो पउत्थ, 'खुडुयं पुत्तं धेतुं गामे पुवुत्था' (आक २३, २५)।

पुवुद वि [प्रवृत्त] प्रकर्ष से आच्छादित (प्राक १२)।

पवूढ वि [प्रव्यूढ] १ धारण किया हुआ (स ५११)। २ निर्गत (राज)।

पवेइय वि [प्रवेदिन] १ निवेदित, प्रतिपादित, 'तमेव सच्चं नोसक जं जिणेहि पवेइयं' (उप ३७४ टी, भग)। २ विज्ञात, विदित (राज)। ३ भेंट किया हुआ (उत्त १३, १३, सुख १३, १३)।

पवेइय वि [प्रवेपित] कम्पित (पउम ५, ७८)।

पवेज्ज सक [प्र + वेदय्] १ विदित करना। २ भेंट करना। ३ अनुभव करना। पवेज्ज (सूत्र १, ८, २४)।

पवेडिय वि [प्रवेष्टित] घिरा हुआ, वेड़ा हुआ (सुर १२, १०४)।

पवेय देखो पवेज्ज। पवेयति (आचा १, ६, २, १२)। हेऊ. पवेइत्तए (कस)।

पवेयण न [प्रवेदन] १ प्ररूपण, प्रतिपादन। २ ज्ञान, निर्णय। ३ अनुभावन (राज)।

पवेविय वि [प्रवेपित] प्रकम्पित (गाया १, १—पत्र ४७, उत्त २२, ३६)।

पवेचिर वि [प्रवेपित] कांपनेवाला (पउम ८०, ६४)।

पवेस सक [प्र + वेशय्] घुसाना। पवेसेइ (महा)। पवेसमामि (पि ४६०)।

पवेस पुं [प्रवेश] भीत की स्थूलता (ठा ४, २—पत्र २२५)।

पवेस पुं [प्रवेश] १ पैठ, घुसना (कुमा, गउड, प्रासू २२)। २ नाटक का एक हिस्सा (कप्पू)।

पवेस पुं [प्रद्वेष] अधिक द्वेष (भवि)।

पवेसण पुंन [प्रवेशन, °क] १ प्रवेश, पवेसणग } पैठ (पएह १, १, प्रासू ३८, पवेसणय } द्रव्य ३२)। २ विजातीय जन्मान्तर में उत्पत्ति, विजातीय योनि में प्रवेश (भग ६, ३२)।

पवेसि वि [प्रवेशिन्] प्रवेश करनेवाला (श्रीप)।

पवेसिय वि [प्रवेशित] घुसाया हुआ (सण)।

पवेत्त पु [प्रपौत्र] पौत्र का पुत्र (आक ८)।

पव्व पुंन [पर्वन्] १ ग्रन्थि, गाँठ (शोध ४८६, जो १२, सुपा ५०७)। २ उत्सव, त्यौहार (सुपा ५०७, आ २८)। ३ पूर्णिमा और अमावास्या तिथि। ४ पूर्णिमा और अमावास्यावाला पक्ष (ठा ६—पत्र ३७०, सुज्ज १०)। ५ अष्टमी, चतुर्दशी, पूर्णिमा और अमावास्या का दिन,

'अट्टमी चउदसी पुणिणमा य

तहमावसा हवइ पव्व।

मासम्मि पव्वइक्क तिस्सि य

पव्वाइ पक्खम्मि' (धर्म २)।

६ मेखला, गिरिमेखला। ७ दष्टा-पर्वत (सूत्र १, ६, १२)। ८ सख्या-विशेष (इक)। °वीय पुं [°वीज] इक्षु-आदि वृक्ष, जिसका पर्व—ग्रन्थि—ही उत्पत्ति का कारण होता है (राज)। °राहु पुं [°राहु] राहु विशेष, जो पूर्णिमा और अमावास्या में क्रमशः चन्द्र और सूर्य का ग्रहण करता है (सुज्ज १६)।

पव्वइ न [पर्वतिन्] १ गोत्र-विशेष, काश्यप गोत्र की एक शाखा। २ पुंजी. उस गोत्र में उत्पन्न (राज)। देखो पव्वपेच्छइ।

पव्वइ° देखो पव्वई (गा ५५)।

पव्वइअ वि [प्रव्रजित] १ दीक्षित, संन्यस्त (श्रीप, दसन २—गाथा १६४)। २ गत, प्राप्त, 'अगारामो अणुगारियं पव्वइया' (श्रीप, सम, कप्प)। ३ न. दीक्षा, संन्यास (वव १)।

पव्वइद पुं [पर्वतेन्द्र] मेघ पर्वत (सुज्ज ५ टी)।

पव्वइगा देखो पव्वइअ (उप पु ३३५)। स्त्री. °गा (उप पु ५४)।

पव्वइसेल न [दे] बाल-मय कंडक—तावीज (दे ६, ३१)।

पव्वई स्त्री [पार्वती] गौरी, शिव-पत्नी (पाम)।

पव्वंग पुंन [पर्वङ्ग] सख्या-विशेष (इक)।

पव्वक पुंन [पर्वक] १ वायु विशेष (पएह पव्वग } २, ५—पत्र १४६)। २ ईख जैसी ग्रन्थिवाली वनस्पति (पएण १)। ३ सुण-विशेष (निचू १)।

पव्वग वि [पार्वक] पर्व—ग्रन्थि—गाँठ का बना हुआ (आचा २, २, ३, २०)।

पव्वज्ज पुं [दे] १ नाव। २ शर, बाण। ३ बाल-मृग (दे ६, ६६)।

पव्वज्जा स्त्री [प्रव्रज्जा] १ गमन, गति। २ दीक्षा, सन्यास (ठा ३, २, ४, ८, प्रासू १६७)।

पव्वणी स्त्री [पर्वणी] कार्तिकी आदि पर्व-तिथि (गाया १, १—पत्र ५३)।

पव्वपेच्छइ न [पर्वप्रेक्षकिन्] देखो पव्वइ (ठा ७—पत्र ३६०)।

पव्वय सक [प्र + व्रज्] १ जाना, गति करना। २ दीक्षा लेना, संन्यास लेना। पव्वयइ (महा)। भवि. पव्वइस्सामो, पव्वइहिति (श्रीप)। वहु. पव्वययत्त, पव्वयमाअ (सुर १, १२३, ठा ३, १)। हेऊ. पव्वइत्तए, पव्वइउ (श्रीप, भग, सुपा २०६)।

पव्वय देखो पव्वग (पएण १—पत्र ३३)।

पव्वय देखो पव्वइअ, 'अगारमादसतावि अरएणा वावि पव्वया' (सूत्र १, १, १६)।

पव्वय पुंन [पर्वत, °क] १ गिरि, पहाड़ पव्वयय } (ठा ३, ४, प्रासू १५४, उवा), 'पव्वयाणि वणाणि य' (दम ७, २६ ३०)।

२ पु द्वितीय वासुदेव का पूर्व-भनीय नाम (सम १५३, पउम २०, १७१)। ३ एक ब्राह्मण-पुत्र का नाम (पउम ११, ६)। ४ एक राजा (भवि)। ५ एक राज-कुमार (उप ६३७)। °राय पुं [°राज] मेघ पर्वत (सुज्ज ५)। °विदुग्ग पुं [°विदुर्ग] पर्वतीय देश, पहाड़वाला प्रदेश (भग)।

पव्वयगिह न [पर्वतगृह] पर्वत की गुफा (आचा २, ३, ३, १)।

पव्वह सक [प्र + वयथ्] पीटना, दुख देना। पव्वहेजा (सूत्र १, १, ४, ६)।

पात } देखो पाय = पात्र (सूत्र १, ४, २,
पाद } परह २, ५—पत्र १४८) । °बंधन न
[°बन्धन] पात्र बाँधने का वस्त्र-खण्ड, जैन-
मुनि का एक उपकरण (परह २, ५) ।

पाद देखो पाय = पाद (विपा १, ३) । °सम
वि [°सम] गेय-विशेष (ठा ७—पत्र
३६४) । °दृष्टय न [°दृष्टपद] दृष्टिवाद
नामक बारहवें जैन आगम-ग्रन्थ का एक
प्रतिपाद्य विषय (सम १२८) ।

पादु° देखो पाद = पादुस् । पादुरेसए (पि
३४१) । पादुरकासि (सूत्र १, २, २, ७) ।

पादो देखो पाओ = प्रातस् (सुज १, ६) ।

पादोसिय वि [प्रादोपिक] प्रदोष-काल का,
प्रदोष-संबन्धी (श्रीघ ६५८) ।

पादव देखो पायव (गा ५३७ अ) ।

पाधन्न देखो पाहन्न (धर्मस ७८६) ।

पाधार सक [स्वा + गम्, पाद + धारय्]
पधारना, 'पाधारह निमगेहे' (आ १६) ।

पावद्ध वि [पावद्ध] विशेष बँधा हुआ,
पाशित (निचू १६) ।

पाभाइय } वि [प्राभातिक] प्रभात-
पाभातिय } सबन्धी (श्रीघमा ३११, अनु
६, धर्मवि ५८) ।

पाम सक [प्र + आप्] प्राप्त करना,
गुजराती में 'पामबु' ।

'कारावेइ पडिम जिणएण जिमरोगदोसमोहाणं ।
सो अन्नभवे पामइ भवमलण धम्मवररयणं ॥'
(रयण १२) । कर्म, पामिजइ (सम्मत्त
१४२) ।

पामण न [प्रामाण्य] प्रमाणता, प्रमाणपन
(धर्मस ७५) ।

पामदा श्री [दे] दोनो पैर से धान्य-मर्दन (दे
६, ४०) ।

पामन्न देखो पामण (विसे १४६६, चेइय
१२४) ।

पामर पु [पामर] कृपोवल, कर्पक, खेती का
काम करनेवाला गृहस्थ, 'पामरणहवइसेआण-
कासया दोणया हलिमा' (पाम, वजा १३४,
गउड, दे ६, ४१, सुर १६, ५३) । २ हलकी
जाति का मनुष्य (कप्पू, गा २३८) । ३ मूख
शेवकूफ, भजानी (गा १६४), 'को नाम
पामरं मुत्तुं वच्चइ दुद्धमकइमे' (आ १२) ।

पामा श्री [पामा] रोग-विशेष, खुगली, खाज
(सुपा २२७) ।

पामाड पुं [पद्माट] पमाड, पमार, पवाड,
चकवड, वृक्ष-विशेष (पाम) ।

पामिच्च सक [दे] उधार लेना । पामिच्चेज
(आचा २, २, २, ३) ।

पामिच्च न [दे-अपमित्य] १ धार लेना,
वापस देने का वादा कर ग्रहण करना । २
वि जो उधार लिया जाय वह (पिड ६२,
३१६, आचा; ठा ३, ४, ६, श्रीप, परह २,
५, पव १२५, पचा १३, ५, सुपा ६४३) ।

पामिच्चिय वि [दे] उधार लिया हुआ (आचा
१, १०, १) ।

पामुक्क वि [प्रमुक्त] परित्यक्त (पाम. स
६५७) ।

पामूल न [पादमूल] पैर का मूल भाग, पांव
का अग्र भाग (पठम ३, ६, सुर ८, १६६,
पिड ३२८) । देखो पायमूल = पादमूल ।

पामोक्ख देखो पमुह = प्रमुख (गाया १, ५,
८ महा) ।

पामोक्ख पुं [प्रमोक्ष] मुक्ति, छुटकारा (उप
६४८ टी) ।

पाय पुं [दे] १ रय-चक्र, रय का पहिया (दे
६, ३७) । २ फणी, साँप (पड्) ।

पाय पुं [पाक] १ पाचन-क्रिया । २ रसोई
(प्राकृ १६, उप ७२८ टी) ।

पाय वि [पाक्य] पाक-योग्य (दस ७, २२) ।
पाय देखो पाव (चंड) ।

पाय पु [पात] १ पतन (पंचा २, २५, से
१, १६) । २ सबन्ध, 'पुणो पुणो तरलदिट्ठि-
पाएहि' (सुर ३, १३८) ।

पाय पुं [पाय] पान, पीने की क्रिया (आ
२३) ।

पाय पु [पाद] १ गमन, गति (आ २३) ।
२ पैर, चरण, पांव, 'चलणा कमा य पायो'
(पाम, गाया १, १) । ३ पद का चौथा
हिस्सा (हे ३, १३४, पिग) । ४ किरण,
'अंसु रस्सो पाया' (पाम, अजि २८) । ५

सानु, पर्वत का कटक (पाम) । ६ एकाशन
तप (संबोध ५८) । ७ छ अंगुली का एक
नाप (इक) । 'कंचणिआ श्री [काञ्चनिका]
पैर प्रक्षालन का एक सुवर्ण-पात्र (राज) ।

'कंचल पुंन [°कंचल] पैर पोछने का वस्त्र
खण्ड (उत्त १७, ७) । °कुक्कुड पु
[°कुक्कुट] कुक्कुट-विशेष (गाया १, १७
टी—पत्र २३०) । °घाय पुं [°घात] चरण-
प्रहार (पिग) । °चार पुं [°चार] पैर से
गमन (गाया १, १) । °चारि वि [°चारिन्]
पैर से यातायात करनेवाला, पाद विहाय
(पठम ६१, १६) । °जाल, °नालम न
[°जाल, °क] पैर का आसूषण-विशेष (श्रीप,
अजि ३१, परह २, ५) । °त्ताण न [°त्राण]
जूता, पगरखी (दे १, ३३) । °पलंब पु
[°प्रलम्ब] पैर तक लटकनेवाला एक आसू-
षण (गाया १, १—पत्र ५३) । °पीठ देखो
°वीठ (गाया १, १; महा) । °पुच्छण न
[°प्रोच्छन्न] रजोहरण, जैन साधु का एक
उपकरण (आचा, श्रीघ ५११, ७०६, भग,
उवा) । °पडण न [°पतन] पैर पर गिरना,
प्रणाम-विशेष (पठम ६३, १८) । °मूल न
[°मूल] १ देखो पामूल (कस) । २ मनुष्यों
की एक साधारण जाति, नर्तकी की एक
जाति: 'समागयाइ पायमूलाइ', 'पुलइज्जमाणो
पायमूलेहि पत्तो रहसमीवे', 'पणच्चियाइ
पायमूलाइ', 'सहावियाइ पायमूलाइ', 'पण-
च्चतेहि पायमूलेहि' (स ७२१, ७२२, ७३४) ।
°लेहणिआ श्री [°लेखनिका] पैर पोछने
का जैन साधु का एक काष्ठमय उपकरण
(श्रीघ ३६) । °वदय वि [°वन्दक] पैर पर
गिरकर प्रणाम करनेवाला (गाया १, १३) ।
°वडण न [°पतन] पैर पर गिरना, प्रणाम-
विशेष (ह १, २७०, कुमा, सुर २, १०६) ।
°वडिया श्री [°वृत्ति] पाद पतन, पैर छूना,
प्रणाम-विशेष, 'पायवडियाए खेमकुसल
पुच्छति' (गाया १, २, सुपा २५) । °विहार
पुं [°विहार] पैर से गति (भग) । °वीठ
न [°पीठ] पैर रखने का आसन (हे १,
२७०, कुमा, सुपा ६८) । °सीसग न
[°शीर्षक] पैर के ऊपर का भाग (राय) ।
°उलअ न [°कुलरु] छन्द-विशेष (पिग) ।

पाय देखो पत्त = पात्र (आचा, श्रीप, श्रीघमा
३६, १७४) । °केसरिआ श्री [°केसरिका]
जैन साधुओं का एक उपकरण, पात्र-प्रमार्जन
का कपडा (श्रीघ ६६८, विसे २५५२ टी) ।

पसण्णा स्त्री [प्रसन्ना] मदिरा, दारु (गाथा १, १६, विपा १, २) ।

पसत्त वि [प्रसक्त] १ चिपका हुआ (गउड ५१) । २ आसक्त (गउड ५३१, उव) । ३ आपत्ति-ग्रस्त, अनिष्ट-प्राप्ति के दोष से युक्त (विसे १८५६) ।

पसत्ति स्त्री [प्रसक्ति] १ आसक्ति, अभिषङ्ग (उप १३१) । २ आपत्ति-दोष (अज्म ११६) ।

पसत्थि वि [प्रशस्त] १ प्रशमनीय, श्लाघनीय । २ श्रेष्ठ, अच्छा (हे २, ४५, कुमा) ।

पसत्थि स्त्री [प्रशस्ति] वंशोत्कीर्तन, वश-वर्णन (गउड, सम्मत ८३) ।

पसत्थु पु [प्रशास्त] १ लेखाचार्य, गणित का अध्यापक (ठा ३, १) । २ धर्म-शास्त्र का पाठक (ठा ३, १, औप) । ३ मन्त्री, अमात्य (सूअ २, १, १३) ।

पसन्न देखो पसण्ण (महा, भवि, सुपा ६१४) ।

पसन्ना देखो पसण्णा (पाअ, पउम १०२, १२२, सुख २, २६) ।

पसप्प पुं [प्रसर्प] विस्तार, फैलाव (द्रव्य १०) ।

पसप्पग वि [प्रसर्पक] १ प्रकर्ष से जाने-वाला, मुसाफिरी करनेवाला । २ विस्तार को प्राप्त करनेवाला (ठा ४, ४—पत्र २६४) ।

पसम अक [प्र + शम्] अच्छी तरह शान्त होना । पसमति (आक १६) ।

पसम पु [प्रशम] १ प्रशान्ति, शान्ति (कुमा) । २ लगातार दो उपवास (संघोष ५८) ।

पसम पु [प्रश्रम] विशेष मेहनत—खेद (आव ४) ।

पसमण न [प्रशमन] १ प्रकृष्ट शमन (पिठ ६६३, सुर १, २४६) । २ वि प्रशान्त करने वाला (स ६६५) । स्त्री. °णी (कुमा) ।

पसमाविअ वि [प्रशमित] प्रशान्त किया हुआ (स ६२) ।

पसमिक्ख सक [प्रसम् + ईक्ष्] प्रकर्ष से देखना । संक. पसमिक्ख (उत्त १४, ११) ।

पसमिण वि [प्रशमिन्] प्रशान्त करनेवाला, नाश करनेवाला, 'पावति, पावपसमिण पास-जिण तुह प्पमावेण' (गमि १७) ।

पसम्म देखो पसम = प्र + शम् । पसम्मइ (गउड) । वकृ पसम्मत्त (से १०, २२, गउड) ।

पसय पु [दे] १ मृग-विशेष (दे ६, ४, परह १, १, भवि, मण, महा) । २ मृग-शिशु (विपा १, ४) ।

पसय वि [प्रसृत] फैला हुआ, 'पसयच्छि' (वजा ११२, १४४) । देखो पसिअ = प्रसृत ।

पसर अक [प्र + सृ] फैलना । पसरइ (पि ४७७, भवि) । वकृ पसरत्त (सुर १, ८६; भवि) ।

पसर पु [प्रसर] विस्तार, फैलाव (हे ४, १५७, कुमा) ।

पसरण न [प्रसरण] ऊपर देखो (वप्पू) । पसरिअ वि [प्रसृत] फैला हुआ, विस्तृत (औप, गा ४, भवि, गाथा १, १) ।

पसरेह पु [दे] किजल्क (दे ६, १३) ।

पसह्मिअ वि [दे] प्रेरित (पड्) ।

पसव सक [प्र + सू] जन्म देना, उत्पन्न करना । पसवइ (हे ४, २३३) । पसवति (उव) । वकृ. पसवमाण (सुपा ४३४) ।

पसव (अप) सक [प्र + विष्] प्रवेश करना । पसवइ (प्राकृ ११६) ।

पसव पुं [प्रसव] १ जन्म, उत्पत्ति (कुमा) । २ न पुष्प, फूल, 'कुसुम पसव पसूअ च' (पाअ), 'पुष्पाणि अ कुसुमाणि अ कुल्लाणि तहेव होति पसवाणि' (दसनि १, ३६) ।

पसव [दे] देखो पसय । 'पसवा हवति ए' (पउम ११, ७७) । °नाह पुं [°नाथ] मृग-राज, सिंह (स ६५७) । °राय पु [°राज] सिंह (स ६५७) ।

पसवड्ढक न [दे] विलोकन (दे ६, ३०) ।

पसवण न [प्रसवन] प्रसूति, जन्म दान (भग, उप ७४४, सुर ६, २४८) ।

पसवि वि [प्रसविन्] जन्म देनेवाला (नाट—शकु ७४) ।

पसविय वि [प्रसूत] जो जन्म देने लगा हो, जिसने जन्म दिया हो वह, 'सयमेव पसविया

ह महाकिलेसेण नरनाह' (सुर १०, २३०; सुपा ३६) । देखो पसूअ = प्रसूत ।

पसविर वि [प्रसवितृ] जन्म देनेवाला (नाट) ।

पसस्स देखो पसस ।

पसस्स वि [प्रशस्य] प्रभूत शस्यवाला (सुपा ६४५) ।

पसाइअ वि [प्रसादित] १ प्रसन्न किया हुआ (स ३८६, ५७६) । २ प्रसन्न होने के कारण दिया हुआ, 'अगविलगममेस पसाइयं कडयवत्थाइ' (सुर १, १६३) ।

पसाइआ स्त्री [दे] भिल्ल के निर पर का पण-मुट, भिल्लो की पगड़ी (दे ६, २) ।

पसाइयव्व देखो पसाय = प्र + सादय् ।

पसाम वि [प्रशाम्] शान्त होनेवाला (पड्) ।

पसाय सक [प्र + सादय्] प्रमन्न करना, खुश करना । पसायति, पसायमि (गा ६१, सिक्खा ६१) । वकृ. पसाअमाण (गा ७४५) । हेकृ पसाइउ, पसाअड (महा, गा ५०४) । कृ. पसाइयव्व (सुपा ३६५) ।

पसाय पु [प्रसाद] १ प्रसन्न, प्रमन्नता, खुशी, 'जणमणपसायजणणो' (वसु) । २ कृपा, मेहरबानी (कुमा) । ३ प्रणय (गा ७१) ।

पसायण न [प्रसादन] प्रसन्न करना, देव-पसायणपहाणमणो' (कुप्र ५, सुपा ७, महा) ।

पसार सक [प्र + सारय्] पसारना, फैलाना । पसारेइ (महा) । वकृ. पसारेमाण (गाथा १, १, आचा) । संकृ पसारिअ (नाट—मृच्छ २५५) ।

पसार पुं [प्रसार] विस्तार फैलाव (वप्पू) ।

पसारण न [प्रसारण] ऊपर देखो (सुपा ५८३) ।

पसारिअ वि [प्रसारिन्] १ फैलाया हुआ (सण, नाट—वेणी २३) । २ न प्रसारण (सम्मत १३३, दस ४ ३) ।

पसास सक [प्र + शामय्] १ शासन करना, हुकूमत करना । २ शिक्षा देना । ३ पालन करना । वकृ 'रज्ज पसासेमाणे विहरइ' (गाथा १, १ टी—पत्र ६, १ १४—पत्र १८६, औप, महा) ।

पार देखो पायार (हे १, २६८, कुमा)।
पारक न [दे] मदिरा नापने का पात्र (दे ६, ४१)।

पारगम वि [पारगम] १ पार जानेवाला।
२ पार-नामन (आचा)।

पारंगय वि [पारगत] पार-प्राप्त (कुप्र २१)।
पारंवि वि [पारास्त्रि] सर्वोत्कृष्ट—दशम प्रायश्चित्त करनेवाला, 'पारंवीणां दोएहवि' (वृह ४)।

पारचिय न [पारास्त्रिक] १ सर्वोत्कृष्ट प्राय-श्चित्त, तप-विशेष से श्रुतिचारो की पार-प्राप्ति (ठा ३, ४—पत्र १६२, औप)। २ वि सर्वोत्कृष्ट प्रायश्चित्त करनेवाला (ठा ३, ४)।

पारंचिय [पारास्त्रित] ऊपर देखो (कस, वृह ४)।

पारपज्ज न [पारम्पर्य] परम्परा (रभा १५)।

पारपर पुं [दे] राक्षस (दे ६, ४४)।

पारपर } न [पारम्पर्य] परम्परा (पठम पारपरिय } २१, ८०, आरा १६, धर्मस १११८, १३१७), 'आयरियपारंपर्ये' (?) रिण) ए आगय' (सूत्रनि १२७—पृष्ठ ४८७)।

पारपरिय वि [पारम्परिक] परंपरा से चला आता (उप ७२८ टी)।

पारंभ सक [प्रा + रम्भ] १ आरम्भ करना, शुरू करना। २ हिंसा करना, मारना। ३ पीडा करना। पारभेमि (कुप्र ७०)। कवक, 'तएहाए पारज्झमाणा' (औप)।

पारंभ पुं [प्रारम्भ] शुरू, उपक्रम (विसे १०२०, पव १६३)।

पारभिय वि [प्रारब्ध] आरब्ध, उपक्रान्त (धर्मवि १४४, सुर २, ७७, १२, १५६, सुपा ५५)।

पारकेर } वि [परकीय] पर का, अन्यदीय पारक } (हे १, ४४, २१४८, कुमा)।

पारक्किअ देखो पारक (माल १६२)।

पारज्झमाण देखो पारभ = प्रा + रम्भ।

पारण } न [पारण, क] व्रत के दूसरे दिन पारणग } का भोजन, तप की समाप्ति के अनन्तर पारणय } का भोजन (सण, उवा, महा)।

पारणा स्त्री [पारणा] ऊपर देखो। 'इत्त वि [वत्त] पारणवाला (पंचा १२, ३५)।

पागतत न [पारतन्त्र्य] परतन्त्रता, पराधीनता (उप २५२, पचा ६, ४१, ११, ७)।

पारत्त अ [परत्र] परलोक में, आगामी जन्म में, 'पारत्त विइज्जमो धम्मो' (पठम ५, १६३)।

पारत्त वि [पारत्र, पारत्रिक] पारलौकिक, आगामी जन्म से संबन्ध रखनेवाला, 'इत्तो पारत्तहिय ता कीरउ देव। वकच्चुलित्त' (धर्मवि ६०, श्रोध ६२, स २४६)।

पारत्ति स्त्री [दे] कुमुम-विशेष (गउड, कुमा)।

पारत्तिय वि [पारत्रिक] देखो पारत्त = पारत्र (स ७०७)।

पारदारिय वि [पारदारिक] परस्त्री-लम्पट (गाया १, १८—पत्र २३६)।

पारद्ध वि [प्रारब्ध] १ जिसका प्रारम्भ किया गया हो वह, 'पारद्धा य विवाहनिमित्त सयला सामग्गो' (महा)। २ जो प्रारम्भ करने लगा हो वह, 'तस्यो अवरणहसमए पारद्धो नच्चिउ' (महा)।

पारद्ध न [दे] पूर्व-कृत कर्म का परिणाम, प्रारब्ध। २ वि आखेटक, शिकारी। ३ पीडित (दे ६, ७७)।

पारद्धि स्त्री [पापद्धि] शिकार, मृगया (हे १, २३५, कुमा, उप पृ २५७, सुपा २१६)।

पारद्धिअ वि [पापद्धिक] शिकारी, शिकार करनेवाला, गुजराती में 'पारघी', 'मयणमहा-पारद्धियनिसायवाणालोविद्धा' (सुपा ७१, मोह ७६)।

पारमिया स्त्री [पारमिता] बौद्ध-शास्त्र-परि-भाषित प्राणातिपात-विरमणादि शिक्षा-व्रत, अहिंसा आदि व्रत (धर्मस ६८८)।

पारम्म न [पारम्य] परमता, उत्कृष्टता (अज्झ ११४)।

पारय वि [पारग] समर्थ (आचा २, ३, २, ३)।

पारय पु [पारद] धातु-विशेष, पारा, रस-धातु। 'महण न [मर्दन] आणुवेद-विहित रीति से पारा का मारण, रसायन-विशेष, 'अंग-कढिणयाहेउं च सेवति पारयमहणं' (स २८६)। २ वि. पार-प्रापक (श्रु १०६)।

पारय न [दे] सुरा-भाण्ड, दारु रखने का पात्र (दे ६, ३८)।

पारय देखो पार-ग (कप्प, भग, अत)।

पारय पु [प्रावारक] १ पट, वस्त्र। २ वि. आच्छादक (हे १, २७१, कुमा)।

पारलोइअ वि [पारलौकिक] परलोक सबन्धी, आगामी जन्म से संबन्ध रखनेवाला (पएह १, ३, ४, सूत्र २, ७, २३, कुप्र ३८१, सुपा ४६१)।

पारवस्स न [पारवदय] परवशता, पराधीनता (रयण ८१)।

पारस पु [पारम] १ अनायं देश-विशेष, फारम देश, ईरान (इक)। २ मणि विशेष, जिसके स्पर्श से लोहा सुवर्ण हो जाता है (सवोध ५३)। ३ पारस देश में रहनेवाली मनुष्य-जाति (पएह १, १)। 'उल न [कुल] १ ईरान देश, 'अरिक्ख भड्डम वहणाइ पत्तो पारमउल', 'इमो य सो अयलो पारसवले विदविय बहुय दव्व' (महा)। २ वि. पारस देश का, ईरान का निवासी, 'मागहयपारसवला कालिगा सीहला य तहा' (पठम ६६, ५५)। 'कूल न [कूल] ईरान का किनारा, ईरान देश की सीमा (आवम)।

पारसिय वि [पारसिक] फारम देश का, 'महसा पारसियमुओ समागओ रायपयमूले', 'पारसियकीरमिहुए' (सुपा २६७, ३६०)।

पारसी स्त्री [पारसी] १ फारम देश की स्त्री (औप, गाया १, १—पत्र ३७, इक)। २ लिपि-विशेष, फारसी लिपि (विने ४६४ टी)।

पारसीअ वि [पारसीक] फारस देश का निवासी (गउड)।

पाराई स्त्री [दे] लोह-कुशी-विशेष, लोहे की दडाकार छोटी वस्तु, 'चउवेलावज्झपट्टपाराई (? ई) छिवकमलयवरत्तनेत्तप्पहारसयतालिय-गमगा' (पएह २, ३)।

पाराय देखो पारावय (प्राप्र)।

पारायण न [पारायण] १ पार-प्राप्ति (विसे ५६५)। २ पुराण-पाठ-विशेष, 'अवीउ (? य) समत्तपरायणो साखापारओ जामो' (सुख २, १३)।

पारावय देखो पारेवय (पाम, प्राप्र, गा ६४, कप्प ५६ टि)।

पस्स सक [टश्] देखना । पस्सइ (पड्, प्राकृ ७१) । वक्र. पस्समाण (भाचा, श्रीप, वसु, विपा १, १) । कृ. पस्स (ठा ४, ३) । पस्स (शौ) देखो पास = पार्वं (अभि १८६, भवि २६, स्वप्न ३६) ।

पस्स देखो पस्स = दृश् ।

पस्सओहर वि [पश्यतोहर] देखते हुए चोरी करनेवाला, सुनार, उचका; 'नणु एसो पस्सओहरो तेणो' (उप ७२८ टी) ।

पस्सि वि [दर्शिन्] देखनेवाला (पण ३०) ।

पस्सेय देखो पसेअ (मुख २, ८) ।

पह वि [प्रह] १ नम्र । २ विनीत । ३ आसक्त (प्राकृ २४) ।

पह पुं [पथिन्] मार्ग, रास्ता (हे १, ८८, पात्र; कुमा, आ २८, विसे १०५२, कप्प, श्रीप) । 'देसय वि [देशक] मार्ग-दर्शक (पउम ६८, १७) ।

पहएल्ल पुं [दे] अपूप, पूमा, खाद्य-विशेष (दे ६, १८) ।

पहकर देखो पभकर (उत्त २३, ७६, मुख २३, ७८, इक) ।

पहंकरा देखो पभंकरा (इक) ।

पहंजण पु [प्रभञ्जन] १ वायु, पवन (पात्र) । २ देव-जाति-विशेष, भवनपति देवो की एक भवान्तर जाति (सुपा ४०) । ३ एक राजा (भवि) ।

पहकर [दे] देखो पहयर (गाया १, १, कप्प, श्रीप, उप पृ ४७, विपा १, १, राय, भग ६, ३३) ।

पहट्ट वि [दे] १ दृप्त, उद्धत (दे ६, ६, पड्) । २ अचिरतर दृष्ट, थोड़े ही समय के पूर्व देखा हुआ (पड्) ।

पहट्ट वि [प्रहट्ट] आनन्दित, हर्ष-प्राप्त (श्रीप, भग) ।

पहण सक [प्र + हन्] मार डालना । पहणइ, पहणे (महा; उत्त १८, ४६) । कर्म. पहणिजइ (महा) । वक्र. पहणत (पउम १०५, ६५) । कवक. पहम्मत्त, पहम्ममाण (पि ५४०, सुर २, १४) । हेक पहणिउं, पहणेउं (कुप्र २५, महा) । पहण न [दे] कुल, वश (दे ६, ५) ।

पहणि लो [दे] संमुखागत का निरोध, सामने आए हुए का अटकव (दे ६, ५) ।

पहणिय देखो पहय = प्रहत (सुपा ४) ।

पहत्थ पुं [प्रहस्त] रावण का मामा (से १२, ५५) ।

पहद वि [दे] मदा दृष्ट (दे ६, १०) ।

पहम्म सक [प्र + हम्म] प्रकर्ष से गति करना । प्हम्मइ (हे ४, १६२) ।

पहम्म न [दे] १ सुर-खात, देव-कुण्ड (दे ६, ११) । २ खात-जल, कुण्ड । ३ विवर, छिद्र (से ६, ४३) ।

पहम्मत्त } देखो पहण = प्र + हन् ।
पहम्ममाण }

पहय वि [प्रहत] १ घृष्ट, घिसा हुआ (से १, ५८, वृह १) । २ मार डाला गया, निहत (महा) ।

पहय वि [प्रहत] जिस पर प्रहार किया गया हो वह, 'पहया अहिमतियजलेण' (महा) ।

पहयर पु [दे] निकर समूह, वृय (दे ६, १५, जय १३, पात्र) ।

पहर सक [प्र + ह] प्रहार करना । पहरइ (उव) । वक्र. पहरन (महा) । सक. पहरिऊण (महा) । हेक पहरिउ (महा) ।

पहर पुं [प्रहार] १ मार, प्रहार (हे १, ६८, पड्, प्राप्र, सक्ति २) । २ जहाँ पर प्रहार किया हो वह स्थान (से २, ४) ।

पहर पु [प्रहर] तीन घटे का समय (गा २८, ३१, पात्र) ।

पहरण न [प्रहरण] १ अन्न, आयुध (भाचा, श्रीप, विपा १, १, गउड) । २ प्रहार-क्रिया (से ३, ३८) ।

पहराइया देखो पहाराइया (पण १—पत्र ६४) ।

पहराय पुं [प्रभराज] भरतक्षेत्र का छत्रवां प्रतिवासुदेव (सम १५४) ।

पहरिअ वि [प्रहत] १ प्रहार करने के लिए उद्यत (सुर ६, १२६) । २ जिम पर प्रहार किया गया हो वह (भवि) ।

पहरिस पु [प्रहर्ष] आनन्द, खुशी, 'आमोओ पहरिसो तोसो' (पात्र, मुर ३, ४०) ।

पहलादिद / शौ वि [प्रह्लादित] आनन्दित (स्वप्न १०६) ।

पहल्ल अक [धूर्ण] धूमना, कांपना, डोलना, हिलना । पहल्लइ (हे ४, ११७, पड्) । वक्र. पहल्लन (सुर १, ६६) ।

पहल्लि वि [प्रधूर्णिस्तु] धूमनेवाला, डोलता (कुमा, सुपा २०४) ।

पहव अक [प्र + भू] १ उत्पन्न होना । २ समर्थ होना । पहवइ (पचा १०, १०, स ७०, सक्ति ३६) । भवि. पहविस्स (पि ५२१) । वक्र. पहवत (नाट—नाटो, ७९, १) ।

पद्व पु [प्रभव] उत्पत्ति-स्थान (अभि ४१) ।

पहव देखो पहाव = प्रभाव (स ६३७) ।

पहव देखो पह = प्रह्व (विसे ३००८) ।

पहय पु [प्रभव] एक जैन महर्षि (कुमा) ।

पहविय वि [प्रभूत] जो समर्थ हुआ हो, 'मणिकुंटलाणुभावा सत्थ नो पहविय नरिदस्म' (सुपा ६१५) ।

पहस अक [प्र + हस्] १ हसना । २ उपहान करना । पहसइ (भवि, सण) । वक्र. पहसुत (सण) ।

पहम्मण न [प्रहसन] १ उपहास, परिहास । २ नाटक का एक भेद, हास्य-रस प्रधान नाटक रूपक-विशेष, पहसणुपाय कामसत्य-वयण' (स ७१३, १७७, हास्य ११६) ।

पहसिय वि [प्रहसित] १ जो हसने लगा हो (भग) । २ जिसका उपहास किया हो वह (भवि) । ३ न हास्य (वृह १) । ४ पुं पवनजय का एक विद्याधर-मित्र (पउम १५, ५६) ।

पहा सक [प्र + हा] १ त्याग करना । २ अक कम होना, क्षीण होना, 'पहेज लोह' (उत्त ४, १२, पि ५६६) । वक्र. पहिजमाण, पहेजमाण (भग, राज) । सङ्क. पहाय, पहिऊण (भाचा १, ६, १, १, वद ३) ।

पहा लो [प्रथा] १ रीति, व्यवहार । २ ख्याति, प्रसिद्धि (पड्) ।

पहा लो [प्रभा] कान्ति, तेज, आलोक, दीप्ति (श्रीप, पात्र, सुर २, २३५, कुमा, चेइय ५१४) । 'मंडल देखो भामंडल' (पउम ३०, ३२) । 'यर पु [कर] १ सूर्य, रवि । २ रामचन्द्र के भाई भरत से साथ दीक्षा लेनेवाला एक राजर्षि (पउम ८५, ५) । 'वई लो

पालक न [पालङ्क्य] तरकारी-विशेष,
पालक का शाक (वृह १)।

पालंगा स्त्री [पालङ्क्या] ऊपर देखो (उवा)।
पालंत देखो पाल = पालय्।

पालंव पुं [पालम्ब] १ अवलम्बन, सहारा,
'पावइ तडविडविपालव' (सुपा ६३५)। २
गले का आभूषण-विशेष (श्रौप, कप्प)। ३
दीर्घ, लम्बा (श्रौप, राय)। ४ पुंन. ध्वजा
के नीचे लटकता वस्त्राञ्चल, 'ओऊलं पालवं'
(पाप्र)।

पालका स्त्री [पालक्या] देखो पालंगा,
'वत्थुलपोरगमज्जारपोइवल्ली य पालका'
(परण १—पत्र ३४)।

पालग देखो पालय (कप्प, श्रौप, विसे
२८५६, संति १, सुर १११, १०८)।

पालण न [पालन] १ रक्षण (महा, प्रासू
३)। २ वि. रक्षण-कर्ता, धम्मस्स पालणी
चेव' (सबोध १६, सं ६७)।

पालदुह पु [दे] वृक्ष-विशेष (उप
१०३१ टी)।

पालप्य पु [दे] १ प्रतिसार। २ वि. विप्पुत
(दे ६, ७६)।

पालय वि [पालक] रक्षक, रक्षण-कर्ता (सुपा
२७६, सार्व १०)। २ पुं. सौवमंन्द्र का
एक आभियौगिक देव (ठा ८)। ३ श्रीकृष्ण
का एक पुत्र (पव २)। ४ भगवान् महावीर
के निर्वाण के दिन अभिषिक्त भवती (उजैन)
का एक राजा (विचार ४६२)। ५ देव-
विमान-विशेष (सम २)।

पालास पुं [पालाश] पलाश-सम्बन्धी। २
न. पलाश वृक्ष का फल, किशुक-फल (गउड)।

पालि स्त्री [पालि] १ तालाव आदि का वन्य
(सुर १३, ३२, अत १२, महा)। २ प्रान्त
भाग (गा ६४६)। देखो पाली = पाली।

पालि स्त्री [दे] १ धान्य मापने की नाप।
२ पत्न्योपम, समय का सुदीर्घ परिमाण-विशेष
(उत्त १८, २८, सुख १८, २८)।

पालिआ स्त्री [दे] खड्ग-मुष्टि, तलवार की
मूठ (पाप्र)।

पालिआ देखो पाली = पाली, उज्जाणपालि-
याहि कविउत्तोहि व बहुरसह्वाहि' (धर्मवि
१३)।

पालित्त पुं [पादलिप्त] एक प्रसिद्ध जैनाचार्य
(पिंड ४६८, कुप्र १७८)।

पालित्ताण न [पादलिप्तीय] सौराष्ट्र देश का
एक प्राचीन नगर, जो आजकल भी
'पालिताणा' नाम से प्रसिद्ध है (कुप्र १७६)।
पालित्तिआ स्त्री [दे] १ राजधानी। २ मूल-
नीवी। ३ भण्डार, निधि। ४ भंगी, प्रकार
(कप्प)।

पालिय वि [पालित] रक्षित (ठा १०, महा)।
पालियाय देखो पारिय = पारिजात (राय
३०)।

पाली स्त्री [पाली] पंक्ति, श्रेणि (गउड)।
देखो पालि।

पाली स्त्री [दे] दिशा (दे ६, ३७)।

पालीवध पुं [दे] तालाव, सरोवर (दे ६,
४५)।

पालीहम्म न [दे] वृत्ति, बाढ (दे ६, ४५)।

पालेव पुं [पादलेप] पैर में किया हुआ लेप
(पिंड ५०३)।

पाव सक [प्र + आप] प्राप्त करना।
पावइ (हे ४, २३६)। भवि पाविहिंसि
(पि ५३१)। कर्म पाविब्बइ (उव)। वक्क-
पावत, पावेंत (पिंग; पउम १४, ३७)।
कवक्क. पावियंत, पावेज्जमाण (परह १,
१, अंत २०)। संक्क. पाविऊण (पि ५८६)।
हेक्क. पत्तुं, पावेउं (हास्य ११६, महा)।
क. पावणिज्ज, पाविअच्च (सुर ६, १४२;
स ६८६)।

पाव देखो पव्वाल = प्लावय्। पावेइ (हे ४,
४१)।

पाव पुंन [पाप] १ अशुभ कर्म-पुद्गल, कुकर्म
(भावा, कुमा; ठा १, प्रासू २५), जन्मंतरकए
पावे पाणी मुहुत्तेण निह्हे' (गच्छ १, ६)। २
पापी, अधर्मी, कुकर्मी (परह १, १; कुमा
७, ६)। ३ कम्म न [कर्मन्] अशुभ कर्म
(भावा)। ४ कम्मि वि [कर्मिन्] कुकर्म
करनेवाला (ठा ७)। ५ दंड पुं [दण्ड]
नरकावास-विशेष (देवेन्द्र २६)। ६ पगइ स्त्री
[प्रकृति] अशुभ कर्म-प्रकृति (राज)। ७ यारि
वि [कारिन्] दुराचारी (पउम ६३, ४३,
महा)। ८ समण पुं [श्रमण] दुष्ट साधु
(उत्त १७, ३, ४)। ९ सुमिण पुंन [स्वप्न]

दुष्ट स्वप्न (कप्प)। १० सुय न [श्रुत] दुष्ट
शास्त्र (ठा ६)।

पाव पुं [दे] सपं, सोंप (दे ६, ३८)।

पाव (भप) देखो पत्त = प्राप्त (पिंग)।

पावस वि [पापीयस्] पापी, कुकर्मी (ठा
४, ४—पत्र २६५)।

पावक्खालय न [दे. पापक्षालक] देखो
पाठक्खालय (स ७४१)।

पावग वि [पावक] १ पवित्र करनेवाला
(राज)। २ पुं. अग्नि, वहि (सुपा १४२)।

पावग वि [प्रापक] पहुँचानेवाला (सुपा
५००)।

पावग देखो पाव = पाप (भावा; धर्मस ५४३)।

पावज्जा (भप) देखो पव्वज्जा (भवि)।

पावडण देखो पाय-वडण = पाद-पतन (प्राप्र;
कुमा)।

पावडिह देखो पारडिह (सिरि ११०८,
१११०)।

पावण वि [पावन] पवित्र करनेवाला (अन्नु
४७, समु १५०)।

पावण न [प्लावन] १ पानी का प्रवाह।
२ सराबोर करना (पिंड २४)।

पावण न [प्रापण] १ प्राप्ति, लाभ (सुर ४,
१११; उपपं ७)। २ योग की एक सिद्धि
'पावणसत्तीए छिवइ मेरुसिरमणुनीए मुणी'
(कुप्र २७७)।

पावडि देखो पारडिह (धर्मवि १४८)।

पावय देखो पाव = पाप (प्रासू ७५)।

पावय वि [प्रावृत] आच्छादित, ढका हुआ
(सूम २, ७, ३)।

पावय पुन [दे] वाद्य-विशेष, गुजराती में
'पावो' (पउम ५७, २३)।

पावय देखो पावरा = पावक (उप ७२८ टी,
कुप्र २८३, सुपा ४, पाप्र)।

पावयण देखो पवयण (हे १, ४४, उवा
णया १, १३)।

पावयणि वि [प्रवचनिन्] सिद्धान्त का
जानकार, सैदान्तिक (वेदय १२८)।

पावयणिय वि [प्रावचनिक] ऊपर देखो
(सम ६०)।

पावरअ देखो पावारय (स्वप्न १०४)।

पहुणाइय न [प्राघुण्य] आतिव्य, अतिवि-
सत्कार, 'न्हाणभोयणवत्याहरणदाणाइण्ड-
णाडि (१ इ)यं सपाडेइ' (रंभा)।

पहुत्त वि [प्रभूत] १ पर्याप्त, काफी, 'पवत्तं
च पहुत्तं' (पात्र, गउड, गा २७७)। २
समर्थ (से २, ६)। ३ पहुँचा हुआ (ती
१५)।

पहुदि देखो पभिड (संक्षि ४, प्राकृ १२)।
पहुप्प } अक [प्र + भू] १ समर्थ होना,
पहुव } मकना। २ पहुँचना। पहुप्पइ (हे
४, ६३ प्राकृ ६२), 'एयाओ बालियाओ निय-
नियगेहेसु जह पहुप्पति तह कुण्ह' (मुपा
२५०)। पहुप्पामो (काल), पहुप्पिरे (हे ३,
१४२)। वकृ 'कि सहइ कोवि कम्सवि पात्र-
पहारं पहुपतो', पहुप्पमाण (गा ७, घोव
५०५, किरात १६)। कवकृ, पहुव्वत (से
१४, २५, वव १०)। हेकृ, पहुविउ
(महा)।

पहुवी लो [पृथिवी] भूमि, धरती (नाट—
मालती ७२)। °पहु पु [°प्रभु] राजा
(हम्मीर १७)। °वइ पु [°पति] वही अर्थ
(हम्मीर १३)।

पहुव्वत देखो पहुव।

पहुअ वि [प्रभूत] १ वहुत, प्रचुर (स
४५६)। २ उद्गत। ३ भूत। ४ उन्नत
(प्राकृ ६२)।

पहेजमाण देखो पहा = प्र + हा।

पहेण न [दे] वधू को ले जाने पर पिता के
घर दो जाती जमीन (आचा २, १, ४, १)।

पहेण | न [दे] १ भोजनोपायन, खाद्य
पहेणग | वन्नु की भेंट (आचा: सूत्र २, १,
पहेणय | ५६, गा ३२८, ६०३, पिड ३३५,
पात्र, दे ६, ७३)। २ उत्सव (दे ६, ७३)।

पहेरक न [पहेरक] आभरण-विशेष (पएह
२, ५—पत्र १४६)।

पहेलिया लो [पहेलिका] गूढ़ आशयवाली
कविता (मुपा १५५, श्रौप)।

पहोअ सक [प्र + वाव] प्रक्षालन करना,
धोना। पहोएज्ज (आचा २, २, १, ११)।

पहोड वि [प्रधाविन्] धोनेवाला (दम ४,
२६)।

पहोइअ वि [दे] १ प्रवर्तित। २ प्रभुत्व
(दे ६, २६)।

पहोड सक [वि + लुल्] हिलोरना, अन्दो-
लना। पहोडइ (धात्वा १४४)।

पहोयण लीन [प्रधावन] प्रक्षालन, 'दंतपहो-
यण य' (दम ३, ३)।

पहोलिर वि [प्रघूर्णितृ] हिलनेवाला, डोलता
(गा ७८, ६६६, से ३, ४६, पात्र)।

पहोव देखो पधोव। पहोवाहि (आचा २, १,
६, ३)।

पा मक [पा] पीना, पान करना। मवि
पाहिसि, पाहामि, पाहामो (कण, पि ३१५,
कन)। कर्म पिजइ (उव), पीमंति (पि
५३६)। कवकृ पिज्जत (गउड, कुप्र १२०)।
पीयमाण (स ३८०), पेंत (अप) (मण)।
मकृ पाऊण, पाऊण (नाट—मुद्रा ३६,
गउड, कुप्र ६२)। हेकृ पाउ, पायण (आचा)।
कृ पायव्व, पिज्ज (मुपा ४३८, पएह १,
२, कुमा २, ६), पेअ, पेयव्व (कुमा,
रयण ६०), पेज्ज (गाया १, १, १७,
उवा)।

पा सक [पा] रक्षण करना। पाइ, पाइइ
(विसे ३०२५, हे ४, २४०), पाउ (पिंग)।

पा सक [त्रा] सूँघना, गन्ध लेना। पाइ,
पाइइ (प्राप्र ८, २०)।

पाड वि [पातिन्] गिरनेवाला (पचा ५,
२०)।

पाइ वि [पायिन्] पीनेवाला (गा ५६७,
हि ६)।

पाइअ न [दे] वदन विस्तार, मुँह का फैलाव
(दे ६, ३६)।

पाइअ देखो पागय = प्रकृत (दे १, ४, प्राकृ
८, प्रासू १, वला ८, पात्र, पि ५३), 'अह
पाइआओ भासाओ' (कुमा १, १)।

पाइअ वि [पायिन्] पिलाया हुआ, पान
कराया हुआ (कुप्र ७६, मुपा १३०, स
४५४)।

पाइत देखो पाय = पायय्।

पाइक पुं [पटाति] प्यादा, पैर से चलनेवाला
मैनिक (हे २, १३८, कुमा)।

पाइडि लो [प्रावृति] प्रावरण, वस्त्र (गा
२३८)।

पाइण देखो पाईण (पि २१५ टि)।

पाइत्ता (अप) लो [पवित्रा] छन्द-विशेष
(पिंग)।

पाइड [गौ] वि [पाचिन] पकवाया हुआ
(नाट—चैत १२६)।

पाइन्न देखो पाईण (एदि ४६)।

पइभ न [प्रातिभ] प्रतिभा, बुद्धि-विशेष (कुप्र
१५५)।

पाइम वि [पाकय] १ पकाने योग्य। २
काल-प्राप्त, मृत (दस ७, २२)।

पाइम वि [पात्य] गिराने योग्य (आचा २,
४, २, ७)।

पाई लो [पात्री] १ भाजन विशेष (गाया १,
१ टी)। २ छोटा पात्र (सूत्र २, २, ७८)।

पाईण वि [प्राचीन] १ पूर्वदिशा-संबन्धी,
'ववहार-पाइणार्इ (? ईणाइ)' (पिड ३६,
कण मम १०४)। २ न गोत्र विशेष। ३
पुत्री उस गोत्र में उत्पन्न, 'धेर अज्जमह-
वाहू पाईणसगोत्ते (कण)।

पाईणा लो [प्राचीना] पूर्व दिशा (सूत्र २,
२, ५८, ठा ६—पत्र ३५६)।

पाउ देखो पाउ = प्राडुम् (सूत्र २, ६, ११,
उवा)।

पाउ पुं [पायु] गुदा, गाँठ (ठा ६—पत्र
४५०, सण)।

पाउ पुत्री [दे] १ भक्त, भात, भोजन। २
इशु, ऊख (दे ६, ७५)।

पाउअ न [दे] १ हिम, अवश्याय (दे ६,
३८)। २ भक्त। ३ इशु (दे ६, ७५)।

पाउअ देखो पाउड = प्रावृत्त (गा ५२०, न
३५०, श्रौप, मुर ६, ८, पात्र, हे १
१३१)।

पाउअ देखो पागय (गा २, ६६८, पात्र,
कणू, पिंग)।

पाउआ लो [पाडुका] १ खन्ना, काष्ठ का
जूता (भग, सुव २ २६, पिड ५७२)। २
जूता, पगरखी (मुपा २५४, श्रौप)।

पाउ देखो पा = पा।

पाउ अ [प्राडुस्] प्रकट व्यक्त, 'त्तिनि
अमंति करिस्सामि पाउं' (सूत्र १, १, २,
१)।

पासाण पुं [पाषाण] पत्थर (हे १, २६२, कुमा)।

पासाणअ वि [दे] साशी (दे ६, ४१)।

पासाद देखो पासाय (ग्रीप, स्वप्न ५६)।

पासादिय वि [प्रसादित] १ प्रसन्न किया हुआ। २ न. प्रसन्न करना (गाथा १, ६—पत्र १६५)।

पासादीय वि [प्रासादीय] प्रसन्नता-जनक (उवा, ग्रीप)।

पासादीय वि [प्रासादित] महलवाला, प्रासाद-युक्त (सूत्र २, ७, १ टी)।

पासाय पुन [प्रासाद] महल हम्यं (पाप, पठम ८०, ४)। वडिसय पुं [वितसक] श्रेष्ठ महल (अग, ग्रीप)।

पासायवडेंसग पु [प्रासादावतंसक] श्रेष्ठतम महल, प्रासाद-विशेष (राय ६६)।

पासासा स्त्री [दे] भल्ली, छोटा माला (दे ६, १४)।

पासाव पुं [दे] गवाक्ष, वातायन, झरोखा पासावय (वड, दे ६, ४३)।

पासि वि [पार्श्विन्] पार्श्वस्थ, शिथिलाचारी साधु, 'पासिसारिच्छो' (संघोष ३५)।

पासिद्ध देखो पसिद्धि (हे १, ४४)।

पासिम वि [दृश्य] दर्शनीय, जैय (आचा)।

पासिम देखो पास = दृश्।

पासिय वि [पाशिक] फांसे में फँसानेवाला (परह १, २)।

पासिय वि [स्पृष्ट] छुआ हुआ (आचा—पासिम)।

पासिय वि [पाशित] पाश युक्त (राज)।

पासिया स्त्री [पाशिका] छोटा पाश (महा)।

पासिया देखो पास = दृश्।

पासिह वि [पार्श्विक] १ पास में रहनेवाला। २ पार्श्वशायी (पव ५४, तदु १३, अग)।

पासी स्त्री [दे] बूढ़ा, चोटी (दे ६, ३७)।

पासु देखो पसु (हे १, २६, ७०)।

पासुत्त देखो पसुत्त (गा ३२४, सुर २, ८२, ६, १६८, हे १, ४४, कुप्र २५०)।

पासेइय वि [प्रस्वेदित] प्रस्वेद-युक्त, पसीना-वाला (भवि)।

पासेलिय वि [पार्श्ववत्] पार्श्व-शायी, बगल में सोनेवाला (राज)।

पासोअल देखो पासल = तिर्यक्। वक्र, पासोअल्लंत (से ६, ४७)।

पाह (अप) सक [प्र + अथेय] प्रार्थना करना। पाहसि (पि ३५६)।

पाहंड देखो पासंड (पि २६५)।

पाहण देखो पाहाण, 'महंतं पाहणं तय' (आ १२), 'चउकोणा समतीरा पाहणवद्धा य निम्माविया' (धर्मवि ३३, महा, भवि)।

पाहणा देखो पाणहा, 'तेगिच्छं पाहणा पाए' (दस ३, ४)।

पाहण्ण १ न [प्राधान्य] प्रधानता, प्रधानपन पाहण्ण २ (प्रासू ३२, ओघ ७७२)।

पाहर सक [प्रा + ह] प्रकर्ष से लाना, ले आना। पाहराहि (सूत्र, ४, २, ६)।

पाहरिय वि [प्राहरिक] पहरेंदार (स ५२५, सुपा ३१२, ४५५)।

पाहाउय देखो पाभाइय (सुपा ३५, ५५६)।

पाहाण पुं [पापाण] पत्थर (हे १, २६२, महा)।

पाहिज्ज देखो पाहेज्ज (पाप्र)।

पाहुड न [प्राभृत] १ उपहार, पाहुर, भेंट (हे १, १३१, २०६, विपा १, ३, कपूर २७, कप्पू, महा, कुमा)। २ जैन ग्रन्थाश-विशेष, परिच्छेद, अध्ययन (मुज १, २, ३)। ३ प्राभृत का ज्ञान (कम्म १, ७)।

पाहुड न [प्राभृत] १ ग्रन्थाश-विशेष, प्राभृत का भी एक अर्थ (मुज १, १, २)। २ प्राभृत-प्राभृत का ज्ञान (कम्म १, ७)।

पाहुडस-मास पुन [प्राभृतसमास] अनेक प्राभृत-प्राभृतों का ज्ञान (कम्म १, ७)।

पाहुडस-पुन [समास] अनेक प्राभृतों का ज्ञान (कम्म १, ७)।

पाहुड न [प्राभृत] १ क्लेश, कलह (कस, बृह १)। २ दृष्टिवाद के पूर्वों का अध्यय-विशेष (अणु २३४)। ३ सावय कर्म, पाप-क्रिया (आचा २, २, ३, १, वव १)।

पाहुड न [प्राभृत] १ क्लेश, कलह (कस, बृह १)। २ दृष्टिवाद के पूर्वों का अध्यय-विशेष (अणु २३४)। ३ सावय कर्म, पाप-क्रिया (आचा २, २, ३, १, वव १)।

पाहुड न [प्राभृत] १ क्लेश, कलह (कस, बृह १)। २ दृष्टिवाद के पूर्वों का अध्यय-विशेष (अणु २३४)। ३ सावय कर्म, पाप-क्रिया (आचा २, २, ३, १, वव १)।

पाहुड न [प्राभृत] १ क्लेश, कलह (कस, बृह १)। २ दृष्टिवाद के पूर्वों का अध्यय-विशेष (अणु २३४)। ३ सावय कर्म, पाप-क्रिया (आचा २, २, ३, १, वव १)।

पाहुड न [प्राभृत] १ क्लेश, कलह (कस, बृह १)। २ दृष्टिवाद के पूर्वों का अध्यय-विशेष (अणु २३४)। ३ सावय कर्म, पाप-क्रिया (आचा २, २, ३, १, वव १)।

पाहुड न [प्राभृत] १ क्लेश, कलह (कस, बृह १)। २ दृष्टिवाद के पूर्वों का अध्यय-विशेष (अणु २३४)। ३ सावय कर्म, पाप-क्रिया (आचा २, २, ३, १, वव १)।

पाहुड न [प्राभृत] १ क्लेश, कलह (कस, बृह १)। २ दृष्टिवाद के पूर्वों का अध्यय-विशेष (अणु २३४)। ३ सावय कर्म, पाप-क्रिया (आचा २, २, ३, १, वव १)।

पाहुडिआ स्त्री [प्राभृतिका] १ भेंट, उपहार (पव ६७)। २ जैन मुनि की भिक्षा का एक दोष, विवक्षित समय से पहले—मन में संकल्पित भिक्षा, उपहार रूप से दी जाती भिक्षा (पंचा १३, ५, पव ६७, ठा ३, ४—पत्र १५६)।

पाहुण वि [दे] विक्रय, बेचने की वस्तु (दे ६, ४०)।

पाहुण पुं [प्राघुण, °क] भूतिपि, पट्टना, पाहुणग } मेहमान (ओघभा ५३, सुर ३, ८५, पाहुणय } महा; सुपा १३, कुप्र ४२, ग्रीप; काल)।

पाहुणग } मेहमान (ओघभा ५३, सुर ३, ८५, पाहुणय } महा; सुपा १३, कुप्र ४२, ग्रीप; काल)।

पाहुणिअ पुं [प्राघुणिक] भूतिपि, पट्टना, मेहमान (काप्र २२४)।

पाहुणिअ पुं [प्राघुणिक] ग्रह-विशेष, ग्रहा-विधायक देव-विशेष (ठा २, ३)।

पाहुणिज्ज वि [प्राहवनीय] प्रकृष्ट संप्रदान, जिसको दान दिया जाय वह (गाथा १, १ टी—पत्र ४)।

पाहुण्ण पुं [प्राघुण्य, °क] भूतिपि, पट्टना, पाहुणग } भूतिपि का सत्कार, पट्टनाई; पाहुणय } 'कयं मंजरीए पाहुण(एण)म' (कुप्र ४२, उप १०३१ टी)।

पाहुणग } भूतिपि का सत्कार, पट्टनाई; पाहुणय } 'कयं मंजरीए पाहुण(एण)म' (कुप्र ४२, उप १०३१ टी)।

पाहुणय } 'कयं मंजरीए पाहुण(एण)म' (कुप्र ४२, उप १०३१ टी)।

पाहेअ न [पाथेय] रास्ते में व्यय करने की सामग्री, मुसाफिरी में खाने का भोजन (उत्त १६, १८, महा; अमि ७६, स ६८, सुपा ४२४)।

पाहेअ न [पाथेय] रास्ते में व्यय करने की सामग्री, मुसाफिरी में खाने का भोजन (उत्त १६, १८, महा; अमि ७६, स ६८, सुपा ४२४)।

पाहेज्ज न [दे पाथेय] ऊपर देखो (दे ६, २४)।

पाहेणग (दे) देखो पहेणग (पिंड २८८)।

पि देखो अवि (हे २, २१८, स्वप्न ३७, कुमा, भवि)।

पिअ सक [पा] पीना। पिअइ (हे ४, १०, ४१६, गा १६१)। भूका, अपिइय (आचा)। वक्र, पिअंत, पियमाण (गा १३ अ, २४६, से २, ५; विपा १, १)।

पिअइ (हे ४, १०, ४१६, गा १६१)। भूका, अपिइय (आचा)। वक्र, पिअंत, पियमाण (गा १३ अ, २४६, से २, ५; विपा १, १)।

पिअइ (हे ४, १०, ४१६, गा १६१)। भूका, अपिइय (आचा)। वक्र, पिअंत, पियमाण (गा १३ अ, २४६, से २, ५; विपा १, १)।

पिअइ (हे ४, १०, ४१६, गा १६१)। भूका, अपिइय (आचा)। वक्र, पिअंत, पियमाण (गा १३ अ, २४६, से २, ५; विपा १, १)।

पिअइ (हे ४, १०, ४१६, गा १६१)। भूका, अपिइय (आचा)। वक्र, पिअंत, पियमाण (गा १३ अ, २४६, से २, ५; विपा १, १)।

पाअ वगमण न [पादपोपगमन] अनशन-विशेष, मरण विशेष (सम ३३, औप, कप्प, भग) ।

पाओवगय वि [पाठपोपगत] अनशन-विशेष से मृत (औप, कप्प, अंत) ।

पाओस पुं [दे. प्रद्वेप] मत्सर, द्वेष (ठा ४, ४—पत्र २८०) ।

पाओसिय देखो पादोसिय (ओष ६६२) ।

पाओसिया देखो पाउसिया (धर्म ३) ।

पांडविअ वि [दे.] जलाद्र, पानी से गीला (दे ६, २०) ।

पाडु देखो पंडु (पत्र २४७) । सुअ पुं [सुत] श्रमिनय का एक भेद (ठा ४, ४—पत्र २८५) ।

पाक देखो पाग (कप्प) ।

पाकम्म न [प्राकाम्य] योग की आठ सिद्धियों में एक सिद्धि, 'पाकम्मणुणेण सुणी भुवि व्व नीरे जलि व्व भुवि चरह' (कुप्र २७७) ।

पाकार पुं [प्राकार] किला, दुर्ग (उप ४८४) ।

पाकिद (शौ) देखो पागय (प्रयो २४, नाट—वेणी ३८, पि ५३, ८२) ।

पाखड देखो पासंड (पि २६५) ।

पाग पुं [पाक] १ पचन-क्रिया (औप, उवा, सुपा ३७४) । २ दैत्य-विशेष (गडड) । ३ विपाक, परिणाम (धर्मसं ६६५) । ४ बलवान् दुश्मन (आवम) । सासण पुं [शासन] इन्द्र, देव-पति (हे ४, २६५, गडड, पि २०२) । सासणी स्त्री [शासनी] इन्द्रजाल-विद्या (सूत्र २, २, २७) ।

पागइअ वि [प्राकृतिक] १ स्वभाविक । २ पुं. साधारण मनुष्य, प्राकृत लोक (पव ६१) ।

पागह सक [प्र + कटय्] प्रकट करना, खुला करना, व्यक्त करना । वक्क. पागडेमाण (ठा ३, ४—पत्र १७१) ।

पागह वि [प्रकट] व्यक्त, खुला (उत्त ३६, ४२, औप, उव) ।

पागहण न [प्रकटन] १ प्रकट करना । २ वि. प्रकट करनेवाला (धर्मसं ८२६) ।

पागडिअ वि [प्रकटित] व्यक्त किया हुआ (उव, औप) ।

पागडिड } वि [प्राकर्पिन्, क] १ अग्र-पागडिडक } गामी, 'पागट्टी (?) डूँ' पट्टवए जूहवई (एग्या १, १) । २ प्रवर्तक, प्रवृत्ति करानेवाला (पएह १, ३—पत्र ४५) ।

पागन्भ न [प्रागल्भ्य] वृष्टता, ठिठाई (सूत्र १, ५, १, ५) ।

पागन्भि } वि [प्रागल्भिन्, क] वृष्टता-पागन्भिभ्य } वाला, घुट, ढीठ (सूत्र १, ५, १, ५, २, १, १८) ।

पागय वि [प्राकृत] १ स्वभाविक, स्वभाव-सिद्ध । २ आर्यावर्त की प्राचीन लोक-भाषा, 'मक्कया पागया चैव' (ठा ७—पत्र ३६३, वित्ते १४६६ टी, रयण ६४, सुपा १) । ३ पुं. साधारण बुद्धिवाला मनुष्य, सामान्य लोग, 'जेसि एगामागोत्त न पागता पएणवेहिंति' (सुज्ज १६), 'किंतु महामइगम्मो दुरवगम्मो पागयजणस्स' (वेइय २५६, सुर २, १३०) । भासा स्त्री [भाषा] प्राकृत भाषा (आ २३) । वागरण न [व्याकरण] प्राकृत भाषा का व्याकरण (वित्ते ३४५५) ।

पागार पुं [प्राकार] किला, दुर्ग (उव, सुर ३, ११४) ।

पाजावक्ख पु [प्राजापत्य] १ वनस्पति का श्रियिष्ठाता देव । २ वनस्पति (ठा ५, १—पत्र २६२) ।

पाटप (चूपै) देखो वाडव (पड्) ।

पाठीण देखो पाढाण (पएह १, १—पत्र ७) ।

पाड देखो फाड = पाट्य, 'असिपत्तघणूहि पाडति' (सूत्रनि ७६) ।

पाड सक [पातय्] गिराना । पाडेइ (उव) । संक्र. पाडिअ, पाडिऊण (काप्र १६६, कुप्र ४६) । कवक्क. पाडिळित (उप ३२० टी) ।

पाड देखो पाडय = पाटक, 'तो सो दिट्ठुएणे सय गओ वेसपाडम्मि' (सुपा ५३०) ।

पाडश्चर वि [दे] आसक्त चित्तवाला (दे ६, ३४) ।

पाडश्चर पुं [पाटश्चर] चोर, तस्कर (पाप्र, दे ६, ३४) ।

पाडण न [पातन] विदारण (भाव ६) ।

पाडण न [पातन] १ गिराना, पाडना (सूत्रनि ७२) । २ परिभ्रमण, इधर-उधर घूमना, 'लहुजडरपिडरपडियारपाडणुत्ताए कयकीलो' (कुमा २, ३७) ।

पाडणा स्त्री [पातना] ऊपर देखो (विपा १, १—पत्र १६) ।

पाडय पुं [पाटक] मुहल्ला, रय्या, 'बडाल-पाडए गतु' (धर्मवि १३८, विपा १, ८, महा) ।

पाडय वि [पातक] गिरानेवाला । स्त्री. डिआ (मृच्छ २४५) ।

पाडल पुं [पाटल] १ वर्ण-विशेष, श्वेत और रक्त वर्ण, गुलाबी रंग । २ वि. श्वेत-रक्त वर्णवाला (पाप्र) । ३ न पाटलिका-पुष्प, गुलाब का फूल (गा ४६६, सुर ३, ५२, कुमा) । ४ पाटला वृक्ष का पुष्प, पाडल का फूल (गा ३०) ।

पाडल पुं [दे] १ हंस, पक्षि-विशेष । २ वृषभ वैल । कमल (दे ६, ७६) ।

पाडलसउण पु [दे] हंस, पक्षि-विशेष (दे ६, ४६) ।

पाडला स्त्री [पाटला] वृक्ष-विशेष, पाडल का पेड़, पाडरि (गा ४५६, सुर ३, ५२, सम १५२), 'चंपा य पाडलम्बलो जया य वसु-पुज्जपत्तियवो होइ' (पउम २०, ३८) ।

पाडलि स्त्री [पाटलि] ऊपर देखो (गा ४६८) । उत्त, पुत्त न [पुत्र] नगर-विशेष, पटना, जो आजकन बिहार प्रदेश का प्रान नगर है (हे २, १५०, महा, पि २६२, चार ३६) । पुत्त वि [पुत्र] पाटलिपुत्र-संबन्धी, पटना का (पत्र १११) । सड न [पण्ड] नगर-विशेष (विपा १, ७, सुपा ८३) । देखो पाडला ।

पाडलिय वि [पाटलिन] श्वेत-रक्त वर्णवाला किया हुआ (गडड) ।

पाडलो देखो पाडल (उप ४ ३६०) । पु्र न [पु्र] पटना नगर (धर्मवि ८) । पुत्त न [पुत्र] पटना नगर (पड्) ।

पाडव न [पाटव] पटुता, निपुणता (धम्म १० टी) ।

पाडवण न [दे] पाद-पतन, पैर पर गिरना, प्रणाम-विशेष (दे ६, १८) ।

२, १४२, कुमा) °सेणरुण्हा लो [°सेन-
कृष्णा] राजा श्रेणिक की एक पत्नी (अंत
२५)। °सिराया देखो °सिआ (विपा १,
३—पत्र ४१)। °हर देखो °घर (सुर १०,
१६, भवि)।

पिउअ देखो पिउय (राज)।

पिउआ लो [दे पिउष्वस्] फूफी, पिता की
बहिन (पह)।

पिउआ } लो [दे] सखी, वयस्या (पड १७५,
पिउच्छा } २१०)।

पिउली लो [दे] १ कपास, कपास। २ तूल-
लतिका, रुई की पूनी (दे ६, ७८)।

पिउल देखो पिउ (हे २, १६४)।

पिउकार पु [अपिउकार] १ 'अपि' शब्द। २
अपि शब्द की व्याख्या (ठा १०—पत्र
४६५)।

पिउला लो [प्रेह्ला] हिडोला, डोला (पात्र)।

पिउलो सक [प्रेह्लोय] झूलना। वहु.
पिउलमाण (राज)।

पिंग देखो पंग = ग्रह (कुमा ७, ४६)।

पिंग पु [पिङ्ग] १ कपिश वण, पीत वण।
२ वि पीला, पीत रंग का (पात्र, कुमा,
रामि १४)। ३ पुंछी कपिजल पक्षी। लो
°गा (सूत्र १, ३, ४, १२)।

पिंगग पुं [दे] मकंट, बन्दर (दे ६, ४८)।

पिंगल पु [पिङ्गल] १ नील-पीत वण। २
वि नील-मिश्रित पीत-वर्णवाला (कुमा, ठा
४, २, श्रौप)। ३ पु ग्रह विशेष (ठा २,
३)। ४ एक यक्ष (सिरि ६६६)। ५ चक्र-
वर्ती का एक निधि: आभूषणों की पूर्ति करने-
वाला एक निधान (ठा ६, उप ६८६ टी)। ६ कृष्ण
पुद्गल-विशेष (सुज २०)। ७ प्राकृत-पिंगल का कर्ता एक कवि (पिंग)। ८
एक जैन उपासक (भग)। ९ न. प्राकृत का
एक छन्द-ग्रन्थ (पिंग)। °कुमार पुं [°कुमार]
एक राजकुमार, जिसने भगवान् सुपार्श्वनाथ
के समीप दीक्षा ली थी (सुपा ६६)। °कख
नि [°कख] १ नीली-पीली आँखवाला (ठा
४, २—पत्र २०८)। २ पु. पक्षि-विशेष
(पह १, १, श्रौप)।

पिंगलायण न [पिङ्गलायण] १ गोत्र-विशेष,
जो कौत्स गोत्र की एक शाखा है। २ पुंछी.
उस गोत्र में उत्पन्न (ठा ७)।

पिंगलिअ वि [पिङ्गलित] नीला-पीला किया
हुआ (से ४, १८, गउड, सुपा ८०)।

पिंगलिअ वि [पैङ्गलिक] पिंगल-संवन्धी
(पिंग)।

पिंगा देखो पिंग।

पिंगायण न [पिङ्गयण] मघा-नक्षत्र का गोत्र
(इक)।

पिंगिअ वि [गृहीत] ग्रहण किया हुआ
(कुमा)।

पिंगिम पुंछी [पिङ्गिमन्] पिंगता, पीलापन
(गउड)।

पिंगीकय वि [पिङ्गीकृत] पीला किया हुआ,
'घणथणघुसिणिक्कुपंकपिंगीकय व्व' (लहुप्र
७)।

पिंगुल पुं [पिङ्गुल] पक्षि-विशेष (पह १,
१—पत्र ८)।

पिचु पुंछी [दे] पक्व करीर, पक्का करील
(दे ६, ४६)।

पिछ } देखो पिच्छ (आचा, गउड, सुपा
पिछड } ६४१)।

पिछी लो [पिच्छी] साधु का एक उपकरण,
'नवि लेइ जिणा पिछी (?छि)' (विचार
१२८)।

पिछोली लो [दे] भूँह के पवन से बजाया
जाता तुरण-मय वाद्य-विशेष (दे ६, ४७)।

पिंज सक [पिंज्] पीजना, रुई का धुनना।
वहु. पिंजंत (पिड ५७४, श्रौष ४६८)।

पिंजण न [पिंजण] पीजना (पिड ६०२,
दे ७, ६३)।

पिंजर पुं [पिंजर] १ पीत-रक्त वण, रक्त-
पीत मिश्रित रंग। २ वि रक्त-पीत वर्ण-
वाला (गउड, कुप्र ३०७)।

पिंजर सक [पिंजरय्] रक्त-मिश्रित पीत-
वर्ण-युक्त करना। वहु. पिंजरयत (पउम
६२, ६)।

पिंजरण न [पिंजरण] रक्त-मिश्रित पीत-
वर्णवाला करना (सण)।

पिंजरिअ वि [पिंजरित] पिंजर वर्णवाला
किया हुआ (हम्मीर १२, गउड, सुपा
५२४)।

पिंजरुड पुं [दे] पक्षि-विशेष, मासुड पक्षी,
जिसके दो मुँह होते हैं (दे ६, ५०)।

पिंजिअ वि [पिंजित] पीजा हुआ (दे ७,
६४)।

पिंजिअ वि [दे] विधुत (दे ६, ४६)।

पिड सक [पिण्डय्] १ एकत्रित करना,
संश्लिष्ट करना। २ अक. एकत्रित होना,
मिलना। पिडेइ, पिडयए (उव, पिड ६६)।
संकु पिण्डिरुण (कुमा)।

पिंड पु [पिण्ड] १ कठिन द्रव्यो का संश्लेष
(पिण्डभा २)। २ समूह, सघात (श्रौष
४०७ त्रिसे ६००)। ३ गुड वगैरह की बनी
हुई गोल वस्तु, वतुंलाकार पदार्थ (पह २,
५)। ४ मिश्रा में मिलता आहार, मिश्रा
(उव, ठा ७)। ५ देह का एक देश। ६ देह,
शरीर। ७ घर का एक देश। ८ अन्न का
गोला जो पितरो के उद्देश से दिया जाता है।
९ गन्ध-द्रव्य विशेष, सिहक। १० जपा
पुष्प। ११ कवल, आस। १२ गज-कुम्भ।
१३ मदनक वृक्ष, दमनक का पेड़। १४ न.
आजीविका। १५ लोहा। १६ आद्व, पितरों
को दिया जाता दान। १७ वि, संहत। १८
घन, निबिड (हे १, ८५)। °कपिअ वि
[°कल्पिक] सर्वथा निर्दोष मिश्रा लेनेवाला
(वव ३)। °गुला लो [°गुला] गुड-विशेष,
इक्षुरस का विकार-विशेष, शक्कर बनने के
पहले की अवस्था-विशेष (पिड २८३)। °घर
न [°गृह] कदम से बना हुआ घर (वव ४)।
°स्थ पुं [°स्थ] जिन भगवान् की अवस्था-
विशेष, 'न पिडत्यपयत्यावत्थतरभावणा सम्म'
(संवोध २)। °स्थ पुं [°स्थ] समुदायार्थ
(राज)। °दाण न [°दान] पिण्ड देने की
क्रिया, आद्व (धर्मवि २६)। °पयडि लो
[°प्रकृति] अवान्तर मेदवाली प्रकृति (कम्म
१, २५)। °वद्वण न [°वर्धन] आहार-वृद्धि,
कवल-वृद्धि, अन्न-प्राशन (अंत)। वद्व-
वण न [°वर्धन] आहार बढ़ाना (श्रौष)
°वाय पुं [°पात] मिश्रा-लाभ, आहार-प्राप्ति
(ठा ५, १, कस)। °वास पु [°वास]
सुहृन्वन (भवि)। °विसुद्धि, °विसोहि लो
[°विशुद्धि] मिश्रा की निर्दोषता (अंत
श्रौषभा ३)।

पाठाविअ वि [पाठित] ग्रव्यापित (प्राकृ ६१) ।
 पाठाविअवंत वि [पाठितवत्] जिसने पढ़ाया हो वह (प्राकृ ६१) ।
 पाठाविउ } वि [पाठयितृ] पढ़ानेवाला
 पाठाविर } (प्राकृ ६१, ६०) ।
 पाठिअ वि [पाठित] पढ़ाया हुआ, ग्रव्यापित (प्राप्र) ।
 पाठिअवत देखो पाठाविअवन (प्राकृ ६१) ।
 पाठिआ की [पाठिका] पढ़नेवाली की (कप्प) ।
 पाठिउ } वि [पाठयितृ] ग्रव्यापक, पढ़ाने-
 पाठिर } वाला (प्राकृ ६१) ।
 पाठीण पुं [पाठीन] मत्स्य-विशेष, 'पोठिया' मछली, मत्स्य की एक जाति (गा ४१४, विक्र ३२) ।
 पाठोआमास पु [पृथगामर्श] वारहवें अग-ग्रय का एक भाग (एादि २३५) ।
 पाण सक [प्र + आनय्] जिलाना । वक्र. पाणअंत (नाट—मालती ५) ।
 पाण पुं [दे] श्वपच, चण्डाल (दे ६, ३८, उप पृ १५४, महा, पात्र, ठा ४, ४, वव १) । श्री ०णी (सुख ६, १, महा) । ०उडी की [कुटी] चण्डाल की झोपडी (गा २२७) । ०विलया की [०वनिता] चण्डाली (उप ७६८ टी) । ०डवर पुं [०डम्बर] यक्ष-विशेष (वव ७) । ०हिवइ पु [०धि-पति] चण्डाल-नायक (महा) ।
 पाण न [पान] १ पीना, पीने की क्रिया (सुर ३, १०) । २ पीने की चीज, पानी आदि (सुख २० टी, पडि; महा, आचा) । ३ पुं. शुद्ध-विशेष, 'सणपाणकासमद्गग्रघाडगसा-मसिदुवारे य' (परण १) । ०पत्त न [०पात्र] पीने का भोजन, प्याला (दे) ०गार न [०गार] मद्य-गृह (एाया १, २, महा) । ०हार पु [०हार] एकाशन तप (सबोध ५८) ।
 पाण पुन [प्राण] १ जीवन के आधार-भूत ये दश पदार्थ—पाँच इन्द्रियाँ, मन, वचन और शरीर का बल, उच्छ्वास तथा निश्वास (जी २६, १, ६) । २ समय-

'पाणाणि चेवं विणिहंति मदा' (सूत्र १, ७, १६, ठा ६, आचा, कप्प) । ४ जीवित, जीवन (सुपा २६२, ५३३, कप्प) । ०इत्त वि [०वन्] प्राणवाला, प्राणी (पि ६००) । ०श्चय पु [०त्यय] प्राण-नाश (सुपा २६८, ६१६) ०चाय पु [०त्याग] मरण, मौत (सुर ४, १७०) । ०जाइय वि [०जातिरु] प्राणी, जीव, जन्तु (आचा १, ६, १, १) । ०नाह पुं [०नाथ] प्राणनाथ, पति, स्वामी (रंभा) । ०पिया की [०प्रिया] की, पत्नी (सुर १, १०८) । ०वह पु [०वध] हिंसा (परह १, १) । ०वित्ति की [०वृत्ति] जीवन-निर्वाह (महा) । ०सम पु [०सम] पति, स्वामी (पात्र) । ०सुहुम न [०सूक्ष्म] सूक्ष्म जन्तु (कप्प) । ०हिय वि [०हत्] प्राण-नाशक (रंभा) । ०इत्त वि [०वन्] प्राणवाला, प्राणी (प्राप्र) । ०इवाइया की [०तिपातिरु] क्रिया-विशेष, हिंसा से होने-वाला कर्म-बन्ध (नव १७) । ०इवाय पु [०तिपात] हिंसा (उवा) । ०उ पुन [०युस्] ग्रन्थाश विशेष, वारहवाँ पूर्व (सम २५, २६) । ०पाण, ०पाणु पुंन [०पान] उच्छ्वास और निश्वास (धर्मसं १०८, ६८) । ०याम पु [०याम] योगाङ्ग-विशेष—रेचक, कुम्भक और पूरक नामक प्राणों को दमने का उपाय (गउड) ।
 पाणतकर वि [प्राणान्तकर] प्राण-नाशक (सुपा ६१४) ।
 पाणतिय वि [प्राणान्तिरु] प्राण-नाशवाला, 'पाणतियावई पट्टु !' (मुपा ४५२) ।
 पाणग पुन [पानक] १ पेय-द्रव्य-विशेष (पचमा १, सुख २० टी, कप्प) । २ वि. पान करनेवाला (?), 'ए पाणगो ज ततो अणो' (धर्मसं ८२, ७८) ।
 पाणद्धि की [दे] रथ्या, मुहल्ला (दे ६, ३६) ।
 पाणम अक [प्र + अण्] निश्वास लेना-नीचे सासना । पाणमति (सम २, भग) ।
 पाणय न [पानरु] देखो पाण = पान (विसे २५७८) ।
 पाणय पु [प्राणन] स्वर्ग-विशेष, दसवाँ देव-लोक (सम ३७, भग, कप्प) । २ विमानेन्द्रक, देवविमान-विशेष (देवेन्द्र १३५) । ३ प्राणत

स्वर्ग का इन्द्र (ठा ४, ४) । ४ प्राणत देव-लोक में रहनेवाला देव (अणु) ।
 पाणहा की [उपानह] जूता, 'पाणहाओ य छत्त च एालीय बालवीयए' (सूत्र १, ६, १८) ।
 पाणाअअ पुं [दे] श्वपच, चण्डाल (दे ६, ३८) ।
 पाणाम पु [प्राण] निश्वास (भग) ।
 पाणामा की [प्राणामी] दीक्षा-विशेष (भग ३, १) ।
 पाणाली की [दे] दो हाथों का प्रहार (दे ६, ४०) ।
 पाणि पुं [प्राणिन्] जीव, आत्मा, चेतन (आचा, प्रासू १३६, १४४) ।
 पाणि पु [पाणि] हस्त, हाथ (कुमा, स्वप्न ५३, ६०) । ०गहण देखो ०ग्गहण (भवि) । ०ग्गह पुं [०ग्रह] विवाह (सुपा ३७३, धर्मवि १२३) । ०ग्गहण न [०ग्रहण] विवाह, शादी (विपा १, ६, स्वप्न ६३, भवि) ।
 पाणिअ न [पानीय] पानी, जल (हे १, १०१, प्राप्र, परह १, ३, कुमा) । ०धारिया की [०वरिका] पतिहारी, 'जियसत्तुस्स रणो पाणियघ(१) चरियं सदावेइ' (एाया १, १२—पत्र १७५) । ०हारी की [०हारी] पतिहारी (दे ६, ५६, भवि) । देखो पाणीअ ।
 पाणिणि पुं [पाणिनि] एक प्रसिद्ध व्याकरण-कार ऋषि (हे २, १४७) ।
 पाणिणीअ वि [पाणिनीय] पाणिनि सबन्धी, पाणिनि का (हे २, १४७) ।
 पाणी देखो पाण = (दे) ।
 पाणी की [पानी] वल्ली-विशेष, 'पाणी सामा-वल्ली गु जावल्ली य वत्पाणी' (परण १—पत्र ३३) ।
 पणीअ देखो पाणिअ (हे १, १०१, प्रासू १०५) । ०धरी की [०धरी] पतिहारी (एाया १, १ टी—पत्र ४३) ।
 पाणु पुन [प्राण] १ प्राण वायु । २ श्वासो-च्छ्वास (कम्म ५, ४०, श्रीप, कप्प) । ३ समय-परिमाण-विशेष, 'एगे ऊसासनीसासे एस पाणुत्ति वुच्चइ । सत्त पाणूणि से थोवे' (तट्टु ३२) ।

पिट्ट सक [पिट्ट्य] पीटना, ताडन करना।
 पिट्टइ, पिट्टइ (आचा, पिग, गा १७१, सिरि ६५५)। वक्र पिट्टित (पिग)।
 पिट्ट न [दे] पेट, उदर (पचा ३, १६, धर्मवि ६६, चेइय २३८, कर २६, सुपा ५६३, सं २१)।
 पिट्टन न [पिट्टन] ताडन, आघात (सूअ २, २, ६२, पिड ३४, परह १, १, ओष ५६६, उप ५०६)।
 पिट्टन न [पीडन] पीडा, क्लेश (सूअ २, २, ५५)।
 पिट्टणा छी [पिट्टना] ताडन (ओष ३५७)।
 पिट्टावणया छी [पिट्टना] ताडन कराना (भग ३, ३—पत्र १८२)।
 पिट्टिय वि [पिट्टित] पीटा हुआ, ताडित (सुख २, १५)।
 पिट्ट न [पिट्ट] तण्डुल आदि का आटा, चूर्ण (णाय १, १, ३, दे १, ७८, गा ३८८)।
 पिट्ट न [पृष्ठ] पीठ, शरीर के पीछे का हिस्सा (औप, उव)।
 ओ अ [तस्] पीछे से, पृष्ठ भाग से (उवा, विपा १, १, औप)। °करंडग न [°करण्डक] पृष्ठ-वश, पीठ की बड़ी हड्डी (तंडु ३५)। °चर वि [°चर] पृष्ठ-गामी, अनुयायी (कुमा)। देखो पिट्टि।
 पिट्ट वि [स्पृष्ट] १ छुआ हुआ। २ न स्पर्श (पव १५७)।
 पिट्ट वि [पृष्ठ] १ पूछा हुआ। २ न प्रश्न, पृच्छा, 'जपसि विणअं ए जपसे पिट्ट' (गा ६४३)।
 पिट्टत न [दे पृष्ठान्त] गुदा, गाँड (दे ६, ४६)।
 पिट्टखउरा छी [दे] पङ्कसुरा, कलुष मदिरा (दे ६, ५०)।
 पिट्टखउरिआ छी [दे] मदिरा, दारु (पाम)।
 पिट्टव्व वि [प्रष्टव्य] पूछने योग्य, 'नियक-रकीदीवि किकरी कि पिट्टि (ठु) व्वा' (रंभा)।
 पिट्टायय पुंन [पिष्टातक] केसर आदि गन्ध-द्रव्य (गउड, स ७३४)।
 पिट्टि छी [पृष्ठ] पीठ, शरीर के पीछे का भाग (हे १, १२६, णाय १, ६, रभा,

कुमा, पड्)। °ग वि [°ग] पीछे चलनेवाला (आ १२)। °चम्पा छी [°चम्पा] चम्पा नगरी के पास की एक नगरी (कप्प)। °मंस न [°मांस] परोक्ष में अन्य के दोष का कीर्तन, 'पिट्टिमस न खाइजा' (दस ८, ४७)। °मसिय वि [°मांसिक] परोक्ष में दोष बोलनेवाला, पीछे निन्दा करनेवाला (सम ३७)। °माइया छी [°मातृका] एक अनुत्तर-गामिनी छी, 'चदिमा पिट्टिमाइया' (अनु २)। देखो पिट्ट = पृष्ठ।
 पिट्टी छी [पैट्टी] आटा की बनी हुई मदिरा (वृह २)।
 पिड पुं [पिट] १ वश-पत्र आदि का बना हुआ पात्र-विशेष। २ कज्जा, अधीनता, 'जा ताव तेणं भणिय रे रे रे वाल मह पिडे पडिओ' (सुपा १७६)।
 पिडग देखो पिडय = पिटक (औप, उवा, सुज्ज १६)।
 पिडच्छा छी [दे] सखी (दे ६, ४६)।
 पिडय न [पिटक] १ वशमय पात्र-विशेष, 'भोयणंपि (? पि) डयं करेति' (णाय १, १—पत्र ८६)। २ दो चन्द्र और दो सूर्यो का समूह (सुज्ज १६)।
 पिडय वि [दे] आविन्न (पड्)।
 पिडव सक [अर्ज] पैदा करना, उपाजन करना। पिडवइ (पड्)।
 पिडिआ छी [पिटिका] १ वंश-भय भाजन-विशेष (दे ४, ७, ६, १)। २ छोटी मजूषा पेटो, पिटारी (उप ५८७, ५६७ दो)।
 पिड्ड सक [पीड्य] पीडना। पिड्डइ (आचा, पि २७६)।
 पिड्ड अक [अंश] नीचे गिरना। पिड्डइ (पड्)।
 पिड्डइअ वि [दे] प्रशान्त (पड्)।
 पिड अ [पृथक्] अलग, जुदा (पड्)।
 पिडर पुन [पिठर] १ भाजन-विशेष, स्थाली (पाम, आचा, कुमा)। २ गृह-विशेष। ३ मुस्ता, मोथा। ४ मन्थान दण्ड, मथनिया (हे १, २०१, पड्)।
 पिण्ड सक [पि + नह, पिनि + धा] १ बकना। २ पहिनना। ३ पहिराना। ४

बाँधना। पिण्डइ, पिण्डइ (पि ५५६)। हेऊ, पिण्डधु, पिण्डित्तए (अभि १८५, राज)।
 पिण्ड वि [पिनड] १ पहना हुआ (पाम; औप, गा ३२८)। २ वद्ध, यन्त्रित (राय)। ३ पहनाया हुआ, 'निगमउडोवि पिण्डो तस्स सिरे रयणचिचइओ' (सुपा १२५)।
 पिण्डाविद (शौ) वि [पिनिधापित] पहनाया हुआ (नाट—शकु ६८)।
 पिणाइ पुं [पिनाकिन] महादेव, शिव (पाम; गउड)।
 पिणाई छी [दे] भाजा, आदेश (दे ६, ४८)।
 पिणाग पुन [पिनाक] १ शिव-धनुष। २ महादेव का शूलास्त्र (धर्मवि ३१)।
 पिणागि देखो पिणाइ (धर्मवि ३१)।
 पिणाय देखो पिणाग (गउड)।
 पिणाय पु [दे] बलात्कार (दे ६, ४६)।
 पिणिद्ध वि [पिनद्ध, पिनिहित] देखो पिणद्ध = पिनद्ध; (परह २, ४—पत्र १३०, कप्प, औप)।
 पिणिधा सक [पिनि + धा] देखो पिणद्ध = पि + नह। हेऊ, पिणिधत्तए (औप; पि ५७८)।
 पिण्णाग देखो पिन्नाग (राज)।
 पिण्णिआ छी [दे पिण्यिका] गन्ध द्रव्य विशेष, घ्यामक, गन्ध-चुण (उत्ति ३)।
 पिण्ही छी [दे] क्षामा, कृश छी (दे ६, ४६)।
 पित्त पुंन [पित्त] शरीर-स्थित धातु-विशेष, तिक्त धातु (भग, उव)। °ज्जर पुं [°ज्जर] पित्त से होता बृक्षार (णाय १, १)। °मुच्छा छी [°मूच्छा] पित्त की प्रवृत्ता से होनेवाली वेहोशी (पडि)।
 पित्तल न [पित्तल] धातु-विशेष, पीतल (कुप्र १४४)।
 पित्तिज्ज } पुं [पित्तव्य] चाचा, पिता का पित्तिय } भाई (कप्प, सम्मत १७२, सिरि २६३, धर्मवि १२७, स ४६५, सुपा ३३४)।
 पित्तिय वि [पैत्तिक] पित्त का, पित्त-संबन्धी (तंडु १६, णाय १, १, औप)।
 पिधं अ [पृथक्] अलग, जुदा (हे १, १८८, कुमा)।
 पिघाण देखो पिहाण (नाट—विक्र १०३)।
 पिन्नाग } पुं [पिण्याक] खली, तिल आदि पिन्नाय } का तेल निकाल लेने पर जो उसका

°ट्टवण, °ठवण न [°स्थापन] जैन मुनियों का एक उपकरण, पात्र रखने का वल्ल-खण्ड (विसे २५५२ टी, श्लोक ६६८)। °णिज्जोग, °निज्जोग पुं [°निर्योग] जैन माधु का यह उपकरण-समूह—पात्र, पात्रदन्त, पात्रस्थापन, पात्रकेशरिका, पटल, रज्ज्वाण और गुच्छक (पिंड २६, बृह ३, विसे २५५२ टी)। °पट्टिमा स्त्री [°प्रतिमा] पात्र-संबन्धी अभिग्रह—प्रतिज्ञा-विशेष (ठा ४, ३)। देखो पाद = पात्र।

पाय (अप) देखो पत्त = प्राप्त (पिण)।

पाय° अ [प्रायस्] प्राय, बहुत करके; 'पायप्पारणं वल्लेह ति' (पिंड ४४३)।

°पाय पुं, व. [°पाद] पूज्य, 'सद्युष्मा भजिष्म-सत्तिपायया' (अजि ३४)।

पायए देखो पा = पा।

पापं देखो पाय° (स ७६१, सुपा २८, ५६६, श्रावक ७३)।

पाय अ [प्रातस्] प्रभात (सूत्र १, ७, १४)।

पायंगुष्ठ पुं [पादाङ्गुष्ठ] पैर का अंगूठा (णाय १, ८)।

पायंजलि पुं [पातञ्जल] पतञ्जलिकृत शास्त्र, पातञ्जल योग-सूत्र (एदि १६४)।

पायत न [पादान्त] गीत का एक भेद, पाद-वृद्धगीत (राय ५४)।

पायदुय पुं [पादान्दुक] पैर बाँधने का काष्ठमय उपकरण (विपा १, ६—पत्र ६६)।

पायक देखो पायय = पातक (वव १)।

पायक देखो पाइक (सम्मत १७६)।

पायक्खिण्ण न [प्रादक्षिण्य] प्रदक्षिणा (पउस ३२, ६२)।

पायग न [पातक] पाप (श्रावक २४८)।

पायच्छित्त पुंन [प्रायश्चित्त] पाप-नाशन कर्म, पाप-सय करनेवाला कर्म, 'पारचिम्भो नाम पायच्छित्तो सवुत्तो' (सम्मत १४४, उवा, श्लोक, नव २६)।

पायड देखो पागड = प्र + कटय्। पायडड (भवि)। वक्र. पायडंत (सुपा २५६)। कवक्र. पायडिजंत (गा ६८५)। हेक पायडिडं (कुप्र १)।

पायड न [दे] अण, आंन (दे ६, ४०)।

पायड देखो पागड = प्रकट (हे १, ४४, प्राप्र, श्लोक ७३, जी २२, प्रासू ६४)।

पायड देखो पागड = प्राकृत, 'अहपि दाव दिमसे एअरं परिम्ममिअ अलद्धभोअ पाअ-ङ्गणिअ विअ रत्ति पस्सदो सइदु अअच्छामि' (भवि २६)।

पायड वि [प्रावृत] आच्छादित (विसे २५७६ टी)।

पायडिअ वि [प्रकटित] व्यक्त किया हुआ (कुप्र ४, से १, ५३, गा १६६, २६०, गठड, स ४६८)।

पायडिल्ल वि [प्रकट] खुला (वज्जा १०८)।

पायण न [पायन] पिलाना, पान कराना (णाय १, ७)।

पायत्त न [पादात्] पदाति-समूह, व्यादो का लश्कर (उत्त १८, २; श्लोक, कप्प)। °णिअ न [°नीक] पदाति सैन्य (पि ८०)।

पायपुञ्ज न [पादपुञ्जन] पात्र-विशेष, शराव, सकोरा।

पायप्पहण पुं [दे] कुक्कुट, मुर्गा (दे ६, ४५)।

पायय न [पातक] पाप (अच्छु ४३)।

पायय देखो पाव = पाप (पाप्र)।

पायय देखो पागय (हे १, ६७)।

पायय देखो पायव (से ६, ७)।

पायय देखो पावय = पावक (अभि १२५)।

पावय देखो पाय = पाद (कप्प)।

पायरास पु [प्रातराश] प्रातःकाल का भोजन, जलपान, जलखवा (आचा, णाय १ ८)।

पायल न [दे] चक्षु, आंख (दे ६, ३८)।

पायव पुं [पादप] वृक्ष, पेड़ (पाप्र)।

पायव्व देखो पा = पा।

पायस पुन [पायस] दूध का मिष्ठान्न, खीर, 'पायसो लोरी' (पाप्र, सुपा ४३८)।

पायसो अ [प्रायशस्] प्राय, बहुत कर (उप ४४६, पंचा ३, २७)।

पायार पुं [प्राकार] किला, कोट, दुर्ग (पाप्र, हे १, २६८, कुमा)।

पायाल न [पाताल] रसा-सल, अधो भुवन (हे १, १८०, पाप्र)। °कलश पुं [°कलश]

समुद्र के मध्य में स्थित कलशाकार वस्तु (अणु)। °पुर न [°पुर] नगर-विशेष (पउस ४५, ३६)। °मदिर न [°मन्दिर] पाताल-स्थित गृह (महा)। °हर न [°गृह] वही अर्थ (महा)।

पायाल न [पाददल] पादात्य सैन्य, पैदल सैनिक (चउप्पन्न० पत्र० १८५)।

पायालकारपुर न [पाताललङ्कापुर] पाताल-लका, रावण की राजधानी, 'पायालंकारपुरं सिग्घ पत्ता मउव्विग्गा' (पउस ६, २०१)।

पायावक्ख न [प्राजापत्य] महोरात्र का चौद-हवां मुहूर्त (सम ५१)।

पायाविय वि [पायित] पिलाया हुआ (पउस ११, ४१)।

पायाहिण न [प्रादक्षिण्य] १ वेष्टन (पव ६१)। २ दक्षिण की ओर, 'पायाहिणेण तिहि पतिआहिं भाएह लद्धिपए' (सिदि १६६)।

पायाहिणा देखो पयाहिणा, 'पायाहिणं करित्तो' (उत्त ६, ५६, सुख ६, ५६)।

पार अक [शक्] सकना, करने में समर्थ होना। पारइ, पारेइ (हे ४, ८६, पाप्र)। वक्र. पारत (कुमा)।

पार सक [पारय्] पार पहुँचना, पूर्ण करना। पारेइ (हे ४, ८६, पाप्र) हेक. पारित्तए (भग १२, १)।

पार पुन [पार] १ तट, किनारा (आचा)। २ पर्ला, किनारा, 'परतीरं पारं' (पाप्र), 'किह म्हु होही भवजलहिपारं' (निसा ५)। ३ परलोक, आगामी जन्म। ४ मनुष्य-लोक-मित्र नरक आदि (सूत्र १, ६, २८)। ५ मोक्ष, मृत्ति, निर्वाण, 'पार पुणणुत्तरं बुहा वित्ति' (बृह ४)। °ग वि [°ग] पार जाने-वाला (श्लोक, सुपा २५४)। °गय वि [°गत] १ पार-प्राप्त (भग, श्लोक)। २ पुं. जिन-देव, भगवान् महेंद्र (उप १३२ टी)। °गामि वि [°गामिन्] पर पहुँचनेवाला (आचा, कप्प, श्लोक)। °पाणग न [°पानक] पेय द्रव्य-विशेष (णाय १, १७)। °विठ वि [°विट्] पार को जाननेवाला (सूत्र २, १, ६०)। °भोय वि [°भोग] पार-आपक (कप्प)।

पिसुणिअ वि [कथित] १ कहा हुआ । २ सूचित (सुपा २३, पात्र, कुप्र २७८) ।
पिसुमय (पै) पु [विस्मय] आश्चर्य (प्राकृ १२४) ।

पिह सक [स्पृह्] इच्छा करना, चाहना ।
पिहाइ (भग ३, २—पत्र १७३) । संकृ.
पिहाइत्ता (भग ३, २) ।

पिह वि [पृथक्] भिन्न, जुदा, 'पिहपिहाए' (विसे ८४८) ।

पिह अ [पृथक्] अलग (हे १, १३७, पड) ।

पिहड पुं [दे] १ वायु-विशेष । २ वि. विवरण (दे ६, ७६) ।

पिहड देखो पिढर (हे १, २०१, कुमा, उवा) ।

पिहण न [पिधान] १ ढक्कन, पिधान (सुर १६, १६५) । २ ढकना, आच्छादन (पचा १, ३२, सवोष ४६, सुपा १२१) ।

पिहणया स्त्री [पिधान] आच्छादन, ढकना (स ५१) ।

पिहय देखो पिह = पृथक् (कुमा) ।

पिहा सक [पि + धा] १ ढकना । २ बंद करना । पिहाइ (भग ३, २) । संकृ. पिहाइत्ता, पिहिऊण (भग ३, २, महा) ।

पिहाण देखो पिहण (ठा ४, ४, रत्न २५, कप्प) ।

पिहाणिआ स्त्री [पिधानिका] ढकनी (पात्र) ।

पिहाणी स्त्री [पिधानी] ऊपर देखो (दे) ।

पिहिअ वि [पिहित] १ ढका हुआ । २ बंद किया हुआ (पात्र, कस, ठा २, ४—पत्र ६६, सुपा ६३०) । 'मव वि [मस्व] १ जिसने आसन्न को रोका हो (दस ४) । २ पु. एक जैन मुनि का नाम (पउम २०, १८) ।

पिहिण देखो पिहण, 'आणवणे पेसवणे पिहिणे ववएस मच्छरे चेव' (आ ३०, पडि) ।

पिहिमिं (अप) स्त्री [पृथिवी] भूमि, धरती ।
'पाल पुं [पाल] राजा (भवि) ।

पिहीकय वि [पृथक्कृत] अलग किया हुआ (पिड ३६१) ।

पिहु वि [पृथु] १ विस्तीर्ण (कुमा) । २ पुं. एक राजा का नाम (पउम ६८, ३४) ।

'रोम पुं [रोम] मीन, मत्स्य (दे ६, ५० टी) ।

पिहु देखो पिह = पृथक् (सुर १३, ३६, सण) ।

पिटुं देखो पिहुय, 'पिटुलज्ज ति नो वए' (दस ७, ३४) ।

पिटुंड न [पिटुण्ड] नगर-विशेष (उत्त ३१, २) ।

पिटुण [दे] देमो पेहुण (आचा २, १, ७, ६) । 'हत्थ पु [हस्त] मयूर-पिच्छ का किया हुआ पैला (आचा २, १, ७, ६) ।

पिटुत्त देखो पुहुत्त (तंडु ४) ।

पिटुय पुन [पृथुय] गाय-विशेष, चिठडा (आचा २, १, १, ३, ४) ।

पिहुल वि [पृथुल] विस्तीर्ण (पएह १, ४, श्रीप, दे ६, १४३, कुमा) ।

पिहुल न [दे] मुंह के वायु से बजाया जाता हुण-वायु (दे ६, ४७) ।

पिहे देखो पिहा । पिहेइ, पिहे (उत्त २६, ११, सूम १, २, २, १३) । संकृ. पिहेऊण (पि ५८३) ।

पिहो अ [पृथक्] अलग, भिन्न (विसे १०) ।
पिहोअर वि [दे] तनु, कृश, दुबल (दे ६, ५०) ।

पी सक [पी] पान करना । वकु. 'तम्मुहस-संककतिपीऊसपूरं पीयमाणी' (रयण ५१) ।

पीअ पु [पीत] १ पीत वर्ण, पीला रंग । २ वि. पीत वर्णवाला, पीला (हे २, १७३, कुमा, प्राप्र) । ३ जिसका पान किया गया हो वह (से १, ४०, दे ६, १४४) । ४ जिसने पान किया हो वह (प्राप्र) ।

पीअ वि [पीत] प्रीति-युक्त, संतुष्ट (श्रीप) ।

पीअर (अप) नीचे देखो (पिंग) ।

पीअल देखो पीअ = पीत (हे २, १७३, प्राप्र) ।

पीअसी स्त्री [प्रेयसी] प्रेम-पात्र स्त्री (कुमा) ।

पीइ पुं [दे] अश्व, घोडा (दे ६, ५१) ।

पीइ स्त्री [प्रीति] १ प्रेम, अनुराग (कप्प; पीईं) महा) । २ रावण की एक पत्नी का नाम (पउम ७४, ११) । 'कर पुं [कर] एक विमानावास, आठवां प्रैवेयक-विमान (देवेन्द्र १३७, पव १६४) । 'गम न [गम] महाशुक्र देवेन्द्र का एक यान-विमान (इक, श्रीप) । 'दान न [दान] हर्ष होने के

कारण दिया जाता दान, पारितोषिक (श्रीप; सुर ४, ६१) । 'धम्मिय न [धार्मिक] जैन मुनियों का एक कुल (कप्प) । 'मण वि [मनम्] १ प्रीति-युक्त चित्तवाना (भग) । २ पु. महाशुक्र देवलोक का एक यान विमान (ठा ८—पत्र ४३७) । 'वद्धण पु [वर्धन] कार्तिक मास का लोकोत्तर नाम (मुज्ज १०, १६; कप्प) ।

पीठय पुं [दे] वृक्ष-विशेष, गुन्म का एक भेद, 'पीईयणाणकणइरकुज्जय तह सिन्दुवारे य' (पएण १) ।

पीऊस न [पीयूष] अमृत, सुधा (पात्र) ।

पीड सक [पीडय] १ हैरान करना । २ दवाना । पीडइ, पीडनु (पिंग, हे ४, ३८५) ।

कर्म. पीडिज्जइ (पिंग) । कवक. पीडिज्जंत, पीडिज्जमाण (मे ११, १०२, गा ५४१, मण) ।

पीडं देखो पीडा । 'यर वि [कर] पीडा-कारक (पउम १०३, १४३) ।

पीडरइ स्त्री [दे] चोर की स्त्री (दे ६, ५१) ।

पीडा स्त्री [पीडा] पीडन, हैरानी, वेदना (पात्र) । 'कर वि [कर] पीडा-कारक 'मलिअम भासियव्वंअतियहुसच्चंपिज न वत्तव सच्चपि तं न सच्च ज परपीडाकरं वयण' (आ ११, प्रासू १५०) ।

पीडिअ वि [पीडित] १ पीडा से जो दु हो हो वह, अभिभूत, पराजित, व्याकुल, दुःखित । २ दबाया गया (हे १, २०३, महा, पात्र) ।

पीड पुन [पीठ] १ आसन, पीडा, 'पीड विट्ठरं आसण' (पात्र; रयण ६३) । २ आसन विशेष, व्रती का आसन (चड, हे १, १०६, उवा, श्रीप) । ३ तल; 'चत्तूण नेडपीड' (कुमा) । ४ पुं एक जैन महर्षि (सट्ठि ८१ टी) । 'वध पुं [वन्ध] ग्रंथ की अवतरणिका, भूमिका, 'नय पीडवन्ध-रहियं कहिज्जमाणपि देइ भावत्य' (पउम ३, १६) । 'मह, 'महअ पुत्री [मर्दक] काम-पुरुषार्थ में सहायक नायक का समीपवर्ती पुरुष, राजा आदि का वयस्य विशेष (राणा १, १—पत्र १६, कप्प) । स्त्री. 'महिआ (मा १६) । 'सपि वि [सर्पिन्] पशु-विशेष (आचा) ।

पारावर पुं [दे] गवाक्ष, वातायन (दे ६, ४३)।
 पारावार पुं [पारावार] समुद्र सागर (प्राश्न-
 कुप्र ३७८)।
 पाराविअ वि [पारित] जिसको पारण कराया
 गया हो वह (कुप्र २१२)।
 पारामर पुं [पाराशर] १ ऋषि-विशेष (सूत्र
 १, २, ४, ३)। २ न गोत्र-विशेष, जो
 वशिष्ठ गोत्र की एक शाखा है। ३ वि. उम
 गोत्र ने उत्पन्न (ठा ७—पत्र ३६०)। ४
 पु भिक्षुक। ५ कर्म-त्यागी सन्यासी, 'अतेवि
 पारामरा अत्यि' (सुत्र २, ३१)।
 पारिओसिय वि [पारितोपिक] तुष्टि-जनक
 दान, प्रमन्नता-सूचक दान, पुरस्कार (सम्मत्त
 १२२, स १६३, सुर १६, १८२, विचार
 १७१)।
 पारिच्छा देखो परिच्छा, 'वयपरिणामे चित्ता
 गिह समप्येति तामि पारिच्छा' (उप १७३,
 उप पृ २७५)।
 पारिच्छेज्ज देखो परिच्छेज्ज (एया १,
 ८—पत्र १३२)।
 पारिजाय देखो पारिजय = पारिजात (कुमा)।
 पारिट्टावणिया स्त्री [पारिट्टापनिकी] समिति-
 विशेष, मल आदि के उत्सर्ग में मम्यक् प्रवृत्ति
 (सम १०, श्रौप, कप्प)।
 पारिडि स्त्री [प्रावृत्ति] प्रावरण, वस्त्र, कपडा,
 'विक्खिण्ड माहमासम्मि पामरो पारिडि वड्ड-
 ह्मेण' (गा २३८)।
 पारिणामिअ देखो परिणामिअ = पारिणामिक
 (श्रणु, वम्म ४, ६६)।
 पारिणामिआ } देखो परिणामिआ (आव
 पारिणामिगी } १, एया १, १—पत्र ११)।
 पारितावणिया स्त्री [पारितापनिकी] दूसरे
 को परिताप—दुःख उपजाने से होनेवाला
 कर्म-बन्ध (सम १०)।
 पारितावणी स्त्री [पारितापनी] ऊपर देखो
 (नव १७)।
 पारितोसिअ देखो पारिओसिय (नाट, सुपा
 २७, प्रामा)।
 पारित्त देखो पारत्त = परत्त, 'पारित्त विज्झमो
 धम्मो' (तटु ५६)।
 पारिप्पव पु [पारिप्पव] पक्षि-विशेष (पणह
 १, १—पत्र ८)।

पारिभद् पुं [पारिभद्र] वृक्ष-विशेष, फरहद
 का पेठ (कप्प)।
 पारिय वि [पारित] पूर्ण किया हुआ (रयण
 १६)।
 पारिय पु [पारिजात] १ देव-वृक्ष-विशेष,
 कल्प तरु-विशेष। २ फरहद का पेठ, 'कप्पूर-
 पारियाण य अहिअयरो मालईगंधो' (कुमा
 ५, १३)। ३ न पुष्प-विशेष, फरहद का
 फूल जो रक्त वर्ण का और अत्यन्त शोभाय-
 मान होता है, 'मुहिण ए विट्ठप्पइ पारियच्छि
 सुदीरह सड्ड वसइ लच्छि' (भवि)।
 पारियत्त पुं [पारियात्त] देश-विशेष, 'परि-
 व्ममतो पत्तो पारियत्तविमय' (कुप्र ३६६)।
 पारियल्ल न [दे परिवर्त] पहिए के पृष्ठ
 भाग की वाह्य परिवि (एदि ४३)।
 पारियाय देखो पारिय = पारिजात (सुपा
 ७६, से ६, ५८, महा, स ७५६)।
 पारियावणिया देखो पारिनावणिया (ठा २,
 १—पत्र ३६)।
 पारियावणिया देखो पारियावणिया (स
 ५५१)।
 पारियासिय वि [पारिवासित] वासी रखा
 हुआ (कम)।
 पारिव्वज्ज न [पारिव्राज्य] सन्यासिपन,
 संन्यास (पच्चम ८२, २४)।
 पारिव्वाइ स्त्री [पारिव्राजी, पारिव्राजिका]
 सन्यासिनी (उप पृ २७६)।
 पारिव्वाय वि [पारिव्राज] सन्यासि-सबन्धी
 (राज)।
 पारिसज्ज वि [पारिपद्य] सम्य, सभासद
 (धर्मवि ६)।
 पारिसाडणिया स्त्री [पारिशाटनिकी] परि-
 शाटन—परित्याग से होनेवाला कर्म-बन्ध
 (आव ४)।
 पारिहच्छी स्त्री [दे] माला (दे ६, ४२)।
 पारिहट्ठी स्त्री [दे] १ प्रतिहारो। २ आकृष्टि,
 आकर्षण। ३ चिर-प्रसूता महिषी, बहुत देर
 से व्यायी हुई भैंस (दे ६, ७२)।
 पारिहत्थिय वि [पारिहस्तिक] स्वभाव से
 निपुण (ठा ६—पत्र ४५१)।
 पारिहारिय वि [पारिहारिक] तपस्वी-विशेष,
 परिहार नामक व्रत करनेवाला (कस)।

पारिहासय न [पारिहासरु] कुल-विशेष,
 जैन मुनियों के एक कुल का नाम (कप्प)।
 पारी स्त्री [दे] दोहन-भाण्ड, जिसमें दोहन
 किया जाता है वह पात्र-विशेष (दे ६, ३७,
 गउड ५७७)।
 पारीण वि [पारीण] पार-प्राप्त, 'धीवर-
 सत्थाण पारीणो' (धर्मवि १३, सिरि ४८६,
 सम्मत्त ७५)।
 पारुअग्ग पु [दे] विश्राम (दे ६, ४४)।
 पारुअल्ल पुं [दे] पृथुक, चिउडा (दे ६, ४४)।
 पारुसिय देखो फारुसिय (आचा १, ६,
 ४, १ टि)।
 पारुहल्ल वि [दे] मालीकृत, श्रेणी रूप से
 स्थापित, 'पालीवधं च पारुहल्लोम्मि' (दे
 ६, ४५)।
 पारेवई स्त्री [पारापती] कन्नतरी, कन्नतर
 की मादा (विपा १, ३)।
 पारेवय पुं [पारापत] १ पक्षि-विशेष, कन्नतर
 (हे १, ८०, कुमा, सुपा ३२८)। २ वृक्ष-
 विशेष। ३ न फल-विशेष (पण १७)।
 पारोक्ख वि [पारोक्ष] परोक्ष-विषयक,
 परोक्ष-संबन्धी (धर्मस ५०२)।
 पारोह देखो परोह (हे १, ४४, गा ५७५,
 गउड)।
 पारोहि वि [प्ररोहिन्] प्ररोहवाला, श्रकुर-
 वाला (गउड)।
 पाल मक [पालय्] पालन करना, रक्षण
 करना। पालेइ (भग, महा)। वक्र. पालय्यत,
 पालत्त, पालित, पालेमाण (सुर २, ७१,
 स ४६, महा, श्रौप, कप्प)। सक. पालइत्ता,
 पालित्ता, पालेऊण (कप्प, मत्ति), पालेवि
 (अप) (हे ४, ४४१)। कृ पालियव्व,
 पालेयव्व (सुपा ४३५, ३७६, महा)।
 पाल देखो पार = पारय्। सकृ पालइत्ता
 (कप्प)।
 पाल पु [दे] १ कलवार, शराव देवनेवाला।
 २ वि. जीण, फटा-टूटा (दे ६, ७५)।
 पाल पुं [पाल] माभूषण-विशेष, 'पुरवि वा
 पाल वा तिसरय वा कडिमुत्तगं वा' (श्रौप)।
 २ वि. पालक पालन-कर्ता, 'जो समयसिधु-
 सायरहो पाउ' (भवि)। स्त्री. 'ला (वव ४)।

पुछ पुंन [पुच्छ] पूँछ, लागल (प्राक् १२, हे १, २६)।

पुछण न [प्रोच्छन] १ मार्जन (कप्प, उवा, सुपा २६०)। २ रजोहरण, जैन मुनि का एक उपकरण (बृह १)।

पुछणीं ली [प्रोच्छनी] पोछने का एक छोटा कृण्मय उपकरण (राय)।

पुछिअ वि [प्रोच्छित] पोछा हुआ, मृष्ट (पात्र; कुमा, भवि)।

पुज सक [पुज्ज, पुज्य] १ झकड़ा करना। २ फैलाना, विस्तार करना। पुजइ (हे ४, १०२, भवि)। कर्म, पुजिज्जइ (कप्प)। कवक्क, पुंजइज्जमाण (से १२, ८६)।

पुंज पुन [पुञ्ज] ढेर, राशि (कप्प, कस, कुमा), 'खारिकपुंजयाइ ठावइ' (सिरि ११६६)।

पुंजइअ वि [पुञ्जित] १ एकत्रित (से ६, ६३, पउम ८, २६१)। २ व्याप्त, भरपूर (पउम ८, २६१)।

पुंजइज्जमाण देखो पुज = पुज्ज।

पुजक } वि [पुञ्जक] १ राशि रूप से
पुजय } स्थित, 'न उण पुंजकपुंजका' (पिंड ८२)। २ देखो पुज = पुज्ज।

पुंजय पुन [दे] क्तवार, गुजराती में 'पूजो', 'कामोवि तहि पुंजयपुंछण-

छउमेण निययपावरय।

अवर्णितीओ इव

सारविंति जिणमंदिरंगणय'
(सुपा २६०)।

पुजाय वि [दे] पिएडाकार किया हुआ, 'पुजाय पिंडलइय' (पात्र)।

पुंजाविय वि [पुञ्जिन] एकत्रित कराया हुआ (काल)।

पुंजिअ वि [पुञ्जित] एकत्रित (से ५, ७२, कुमा; कप्प)।

पुंढ पुं [पुण्ड] १ देश-विशेष, विन्ध्याचल के समीप का भू-भाग (स २२५, मग १५)। २ हस्त-विशेष (पउम ४२, ११, गा ७४०)।

३ वि. पुण्ड्र-देशीय (पउम ६६, ५५)। ४ घवल, श्वेत, सफेद (गाया १, १७ टी—पत्र

२३१)। ५ पुंन. तिलक (स ६, पिंडमा ४३; कुप्र २६४)। ६ देव-विमान विशेष (सम २२)। 'वद्धण न [वर्धन] नगर-विशेष (स २२५)। देखो पोंड।

पुडइअ वि [दे] पिएडीकृत, पिएडाकार किया हुआ (दे ६, ५४)।

पुंडरिअ देखो पुंडरीअ (सूअ २, १, १)।

पुंडरिअ वि [पुण्डरीकिन] पुण्डरीकवाला (सूअ २, १, १)।

पुंडरिगिणी ली [पुण्डरीकिणी] पुण्डरीकवाती विजय की एक नगरी (गाया १, १६, इक, कुप्र २६५)।

पुंडरिय देखो पुंडरीअ = पुण्डरीक, पौण्डरीक (उव, काल, पि ३५४)।

पुंडरीअ पुं [पुण्डरीक] १ ग्यारह रुद्र पुरुषों में सातवाँ रुद्र (विचार ४७३)। २ एक राजा, महापद्म राजा का एक पुत्र (कुप्र २६५, गाया १, १६)। ३ व्याघ्र, शार्ङ्गल (पात्र)। ४ पुंन. तप-विशेष (पव २७१)। ५ श्वेत पद्म, सफेद कमल (सूअनि १४५)।

६ कमल, पद्म, 'अंबुरुह सयवत्तं सरोरुहं पुंडरीअमरविंद' (पात्र, सम १, कप्प)। ६ देव-विमान विशेष (सम ३५)। ७ वि. श्वेत, सफेद (संग १३२)। 'गुम्म न [गुल्म] देव-विमान-विशेष (सम ३५)। 'दह, 'दह पु [द्रह] शिली पर्वत पर का एक महा-हृद (ठा २, ३, सम १०४)।

पुंडरीअ वि [पौण्डरीक] १ श्वेत पद्म का, श्वेत-पद्म-संवन्धी (सूअनि १४५)। २ प्रधान, मुख्य। ३ कान्त, श्रेष्ठ, उत्तम (सूअनि १४७, १४८)। ४ न. सूत्रकृतांग सूत्र के द्वितीय श्रुतस्कन्व का पहला अव्ययन (सूअनि १५७)। देखो पोंडरीग।

पुंडरीया ली [पुण्डरीका] देखो पोंडरी (राज)।

पुडे अ [दे] जाओ (दे ६, ५२)।

पुढ देखो पुढ (उप ७६५)।

पुढ पुं [दे] गतं, गडहा, गडा (दे ६, ५२)।

पुंनाग पुं [पुन्नाग] १ वृक्ष-विशेष, पुण्य-प्रधान एक वृक्ष-जाति, पुन्नाग, पुलाक, सुल-तान चम्पक, पाटल का गाछ (उप पु १८, ७६८ टी, सम्मत १७५)। २ श्रेष्ठ पुरुष,

उत्तम मर्द (धम्म १२ टी, सम्मत १७५)। देखो पुन्नाम।

पुंनुअ पुं [दे] संगम (दे ६, ५२)।

पुम पुन [दे] नीरस, दाढिम का छिलका (?), 'मग्गइ अलत्तयं जा निपीलिय पुम-मप्पए ताव' (धर्मवि ६७), [अलत्तए मग्गिए नीरस पणामेइ' (महा ५६)]।

पुंवउ पुंन [पुवचस्] व्याकरणोक्त सकार-युक्त शब्द-विशेष, पुलिग शब्द (पण ११—पत्र ३६३)।

पुवेय पुं [पुवेद] १ पुरुष को ओ-स्पर्श का अभिलाष। २ उसका कारण-भूत कर्म (पि ४१२)।

पुस सक [पुंस्, मृज्] मार्जन करना, पोछना। पुंसइ (हे ४, १०५)।

पुंस° देखो पुं। कोइल, 'कोइल्ला पुं [कोकिल] मरदाना कोयल, पिक (ठा १०—पत्र ५६६, पि ४१२)।

पुसण न [पुसन] मार्जन (कुमा)।

पुसइ पुं [पुशब्द] 'पुरुष' ऐसा नाम (कुमा)।

पुसली ली [पुंशली] कुलटा, अभिचारिणी ली (वज्जा ६८, धर्मवि १३७)।

पुंसिअ वि [पुंसित] पोछा हुआ (दे १, ६६)।

पुक्क } सक [पूत् + कृ] पुकारना, डाँकना,
पुक्कर } आह्वान करना। पुक्करेइ (धम्म ११ टी)। वक्क पुक्कत, पुक्करंत (पण १, ३—पत्र ४५, आ १२)। देखो पोक्क।

पुक्करिय वि [पूत्कृत] पुकारा हुआ (सुपा ३८१)।

पुक्कल देखो पुक्कवल (पण २, ५—पत्र १५१)।

पुक्का ली. देखो पुक्कार = पूत्कार (पात्र, सुपा ५१७)।

पुक्कार देखो पुक्कर। पुक्कारेंति (राय)। वक्क, पुक्कारंत, पुक्कारित, पुक्कारेमाण (सुपा ४१५, ३८१, २४८, गाया १, १८)।

पुक्कार पुं [पूत्कार] पुकार, डाँक, आह्वान (सुपा ५१७, महा, सण)।

पुक्खर देखो पोक्खर = पूक्कर (कप्प; महा, पि १२५)। 'कणिगया ली [कर्णिक]

पावरण पु [प्रावरण] एक म्लेच्छ जाति (मृच्छ १५२) ।
 पावरण न [प्रावरण] वस्त्र, कपडा (हे १, १७५) ।
 पावरिय वि [प्रावृत] आच्छादित (कुप्र ३८) ।
 पावस देखो पाउस (कुप्र ११७) ।
 पावा ली [पापा] नगरी निशेष, जो आजकल भी विहार के पास पावापुरी के नाम से प्रसिद्ध है (कप्प, ती ३, पंचा १६, १७, पव ३४, विचार ४६) ।
 पावाइ वि [प्रवादिन्] वाचाट, दार्शनिक (सूत्र २, ६, ११) ।
 पावाइअ वि [प्रात्राजिक] संन्यासी (रयण २२) ।
 पावाइअ दि [प्रावादिक] देखो पावाइ (आचा) ।
 पावाइअ } वि [प्रावादुक] वाचाट, दार्शनिक
 पावादुय } निक (सूत्र १, १, ३, १३, २, २, ८०, पि २६५) ।
 पावार पु [प्रावार] १ छँदावाला कपडा । २ मोटा कम्बल (पव ८४) ।
 पावारय देखो पारय = प्रावारक (हे १ २७१, कुमा) ।
 पावालिया ली [प्रपापालिका] प्रपा या प्याऊ पर नियुक्त ली (गा १६१) ।
 पावासु } वि [प्रवासिन्, क] प्रवास
 पावासुअ } करनेवाला (पि १०५, हे १, ६५, कुमा) ।
 पाविअ वि [प्राप्त] लब्ध, मिला हुआ (सुर ३, १६, स ६८६) ।
 पाविअ वि [प्रापित] प्राप्त करवाया हुआ (सण, नाट—मृच्छ २७) ।
 पाविअ वि [प्लावित] सराबोर किया हुआ, खूब भिजाया हुआ (कुमा) ।
 पाविट्ट वि [पापिष्ठ] अत्यन्त पापी (उव ७२८ टी, सुर १, २१३, २, २०५, सुपा १६६, आ १४) ।
 पावीढ देखो पाय-वीढ (पञ्च ३, १, हे १, २७०, कुमा) ।
 पावीयंस देखो पावस (पि ४०६, ४१४) ।
 पावुअ वि [प्रावृत] आच्छादित (सस्ति ४) ।
 पावेज्जमाण देखो पाव = प्र + आप ।

पावेस वि [प्रावेश्य] प्रवेशोचित, प्रवेश के लायक (औप) ।
 पावेस पुं [प्रावेश] वस्त्र के दोनों तरफ लटकता रँछा (गाथा १, १) ।
 पास सक [दृश] १ देखना । २ जानना । पासइ, पासेइ (कप्प) । पासिम = 'पर्य' (आचा १, ३, ३, ५) । कर्म. पासिजइ (पि ७०) । वक्र. पासत, पासमाण (स ७५, कप्प) । सक्र पासिउ, पासित्ता, पासित्ताण, पासिया (पि ४६५, कप्प, पि ५८३, महा) । हेक. पासित्तए, पासिउं (पि ५७८, ५७७) । कृ. पासियव्व (कप्प) ।
 पास पुं [पार्श्व] १ वर्तमान अवसर्पिणी-काल के तेईसवें जिन-देव (सम १३, ४३) । २ भगवान् पार्श्वनाथ का अधिष्ठायक यक्ष (सति ८) । ३ न. कन्वा के नीचे का भाग, पौजर (गाथा १, १६) । ४ समीप, निकट (सुर ४, १७६) । १ वञ्चिज्ज वि [पार्थीय] भगवान् पार्श्वनाथ की परम्परा में संजात (भग) ।
 पास पुं [पाश] फाँसा, बन्धन-रज्जु (सुर ४, ३३७; औप, कुमा) ।
 पास न [दे] १ आँख । २ दाँत । ३ कुन्त, प्रास । ४ वि विशोम, कुडौल, शोभाहीन (दे ६, ७५) । ५ पुन अन्य वस्तु का अल्प-मिश्रण, 'निञ्चुलो तंवोलो पासेण विणा न होइ जह रंगो' (भाव २) ।
 पास वि [पाश] अपसद, निकृष्ट, जघन्य, कुत्सित, 'एस पासंडियपासो किं करिस्सइ' (सम्मत्त १०२) ।
 पासंगिअ वि [प्रासङ्गिक] प्रसंग-संबन्धी, आनुपंगिक (कुम्मा २७) ।
 पासंड न [पासण्ड] १ पाखण्ड, असत्य धर्म, धर्म का ढोंग (ठा १०, गाथा १, ८, उवा, भाव ६) । २ व्रत (अणु) ।
 पासंडि } वि [पासण्डिन्, क] १
 पासण्डिय } पाखंडी, लोक में पूजा पाने के लिए धर्म का ढोंग रचनेवाला (महानि ४, कुप्र २७६, सुपा ६६, १०६, १६२) । २ पुं व्रती, साधु, मुनि, 'पव्वइए अणगारे पासडे (? डी) चरण तावसे भिक्खु । परिवाइए य समणे' (दसनि २—गाथा १६४) ।

पासंदण न [प्रस्यन्दन] भरन, टपकना (वृह १) ।
 पासग वि [दर्शक] देखनेवाला (आचा) ।
 पासग पुं [पाशक] १ फाँसा, बन्धन-रज्जु (उप पु १३, सुर ४, २५०) । २ पासा, जुआ खेलने का उपकरण-विशेष (जं ३) ।
 पासग न [प्राशक] कला-विशेष (औप) ।
 पासण न [दर्शन] अवलोकन, निरीक्षण (पिंड ४७५, उप ६७७, ओघ ५४, सुपा ३७) ।
 पासणया ली. ऊपर देखो (ओघ ६३, उप १४८, गाथा १, १) ।
 पासणिअ वि [दे] साक्षी (दे ६, ४१) ।
 पासणिअ वि [प्राशिनक] प्रश्न-कर्ता (सूत्र १, २, २, २८, आचा) ।
 पासत्थ वि [पार्श्वस्थ] १ पार्श्व में स्थित, निकट-स्थित (पञ्च ६८, १८, स २६७, सूत्र १, १, २, ५) । २ शिथिलाचारी साधु (उप ८३३ टी, गाथा १, ५, ६,—पञ्च २०६, सार्व ८८) ।
 पासत्थ वि [पाशत्थ] पाश में फँसा हुआ, पाशित (सूत्र १, १, २, ५) ।
 पासल न [दे] १ द्वार (दे ६, ७६) । २ वि. तिर्यक्, वक्र (दे ६, ७६, से ६, ६२, गउड) ।
 पासल देखो पास = पार्श्व (से ६, ३८, गउड) ।
 पासल अक [तिर्यञ्च, पार्श्वार्थ] १ वक्र होना । २ पार्श्व धुमाना, 'पासल्लति महिहरा' (से ६, ४५) । वक्र पासल्लंत (से ६, ४१) ।
 पासल्लइअ देखो पासल्लिअ (से ६, ७७) ।
 पासल्लि वि [पार्थिन्] पार्श्व-स्थित, 'उत्ताण-गपासल्ली नेसजी वावि ठाण ठाइत्ता' (पव ६७, पचा १८, १५) ।
 पासल्लिअ वि [पार्थित, तिर्यक्त] १ पार्श्व में किया हुआ । २ टेढ़ा किया हुआ (गउड, पि ५६५) ।
 पासवण न [प्रस्रवण] मूत्र, पेशाब (सम १०, कस, कप्प, उवा, सुपा ६२०) ।
 पासाईय देखो पासादीय (सम १३७, उवा) ।
 पासाकुसुम न [पाशाकुसुम] पुष्प-विशेष, 'छप्पम गम्मसु सिंसिरे पासाकुसुमेहि ताव, मा मरसु' (गा ८१६) ।

पुढ वि [पुष्ट] उपचित (खाया १, ३, स ४१६) ।

पुढ देखो पिढ = पृष्ठ (प्राप्र, संक्षि १६) ।

पुढव वि [स्पृष्टवत्] जिसने स्पर्श किया हो वह (आचा १, ७, ८, ८) ।

पुढवई देखो पोढवई (सुज १०, ६) ।

पुढवया लो [प्रोष्टपदा] नक्षत्र-विशेष (सुज १०, ५) ।

पुढि ली [पुष्ट] पोषण, उपचय (विसे २२१, चैद्य ८) । २ अहिंसा, दया (परह २, १—पत्र ६६) । ३ म वि [मत्] १ पुष्टिवाला ।

२ पु भगवान् महावीर का एक शिष्य (अनु) ।

पुढि देखो पिढि = पृष्ठ, 'पात्रपडिअस्स पइणो पुढि पुते समारहतम्मि' (गा ११, ३३, ८७, प्राप्र, संक्षि १६) ।

पुढि ली [पुष्टि] वृद्धा, प्रश्न । १ य वि [ज] प्रश्न-जनित (ठा २, १—पत्र ४०) ।

पुढि ली [स्पृष्टि] स्पर्श । १ य वि [ज] स्पर्श-जनित (ठा २, १) ।

पुढिया ली [पृष्टिका] प्रश्न से होनेवाली क्रिया—कर्मवन्ध (ठा २, १) ।

पुढिया ली [स्पृष्टिका] स्पर्श से होनेवाली क्रिया—कर्मवन्ध (ठा २, १) ।

पुढिल देखो पोढिल (अनु २) ।

पुढीया ली [स्पृष्टीया] देखो पुढिया = स्पृष्टिका (नव १८) ।

पुढीया ली [पृष्टीया] वृद्धा से होनेवाली क्रिया—कर्मवन्ध (नव १८) ।

पुढ पुं [पुट] १ परिमाण-विशेष । २ पुट-परिमित वस्तु (राय ३४) ।

पुढ पुन [पुट] १ मिथ सबन्ध, परस्पर जोड़ान, मिलाव, मिलान, 'अजलिपुढ—', 'ताहे करयलपुढेण नीओ सो' (श्रौप, महा) । २ खाल, ढोल आदि का चमड़ा, 'हुरव्वपुढ-सठाणसठिया' (उवा ६४ टी, गउड ११६७, कुमा) । ३ सबद्ध दलद्वय, मिला हुआ दो दल, 'सिप्पपुढसठिया' (उवा, गउड ५७६) । ४ श्रौषधि पकाने का पात्र-विशेष (खाया १, १३) । ५ पत्रादि-रचित पात्र, दोना (रंभा) । ६ आच्छादन, ढक्कन (उवा, गउड) । ७ कमल, पद्म, 'पुढइणी' (विक्र २३) । ८ भेयण

न [भेदन] नगर, शहर (कस) । १ वाय पुं [पाक] १ पुट-पात्रो से श्रौषधि का पाक-विशेष । २ पाक-निष्पन्न श्रौषध-विशेष, 'पुढ (? ड) वाएहि' (खाया १, १३—पत्र १८१) ।

पुढ (शौ) देखो पुत्त = पुत्र (पि २६२, प्राप्र) ।

पुढइअ वि [दे] पिण्डीकृत, एकत्रित (दे ६, ५४) ।

पुढइणी ली [दे पुटकिनी] नलिनी, कम-लिनी (दे ६, ५५, विक्र २३) ।

पुढग पुंन [पुटक] देखो पुट = पुट (उवा) ।

पुढपुढी ली [दे] मुंह से सीटी बजाना, एक प्रकार की अव्यक्त आवाज (पत्र ३८) ।

पुढम देखो पुढम (प्रति ७१, पि १०४) ।

पुडय देखो पुडग (उवा, सुपा ६५६) ।

पुडिंग न [दे] मुंह, वदन । २ विन्दु (दे ६, ८०) ।

पुडिया ली [पुटिका] पुढी, पुडिया (दे ५, १२) ।

पुड्ड (शौ) देखो पुत्त = पुत्र (प्राप्र) ।

पुढ देखो पिहं (पड) ।

पुढम वि [प्रथम] पहला (हे १, ५५, कुमा, स्वप्न २३१) ।

पुढविं देखो पुढवी (आचानि १, १, २, भग १६, ३, पि ६७) । १ काइय, १ काइय वि [कायिक] पृथिवी शरीरवाला (जीव), (परण १, भग १६, ३, ठा १, आचानि १, १, २) । १ काय देखो पुढवी-काय (आचानि १, १, २) ।

पुढवी ली [पृथिवी] १ पृथिवी, धरती, भूमि (हे १, ८८, १३१, ठा ३, ४) । २ काठि-न्यादि गुणवाला पदार्थ, द्रव्य-विशेष—मृत्तिका पाषाण, चातु आदि (परण १) । ३ पृथिवीकाय का जीव (जी २) । ४ ईशानेन्द्र के एक लोकपाल की अग्र-महिषी (ठा ४, १—पत्र २०४) । ५ एक दिक्कुमारी देवी (ठा ८—पत्र ४३६) । ६ भगवान् सुपाशर्वनाथ की माता का नाम (राज) । १ काइय देखो पुढवि-काइय (राज) । १ काय वि [काय] पृथिवी शरीरवाला (जीव), (आचानि १, १, २) । १ वइ पुं [पति]

राजा (ठा ७) । १ सत्य न [शस्त्र] १ पृथिवी रूप शस्त्र । २ पृथिवी का शस्त्र, हल, कुटाल आदि (आचा) । देखो पुहई, पुहवी ।

पुढीभूय वि [पृथग्भूत] जो अलग हुआ हो (सुपा २३६) ।

पुढुम वि [प्रथम] पहला, आद्य (हे १, ५५, कुमा) ।

पुढो अ [पृथग्] अलग, भिन्न (सुपा ३६२, खण ३०, आवक ४०, आचा) । १ छंद वि [छन्द] विभिन्न अभिप्रायवाला (आचा, पि ७८) । १ जण पुं [जन] प्राकृत मनुष्य, माधारण लोक (सूत्र १, ३, १, ६) । १ जिय पुं [जीव] विभिन्न प्राणी (सूत्र १, १, २, ३) । १ विमाय, १ वेमाय वि [विमात्र] अनेक प्रकार का, बहुविध (राज, ठा ४, ४—पत्र २८०) ।

पुढोजग वि [दे पृथग्जक] पृथग्भूत, भिन्न व्यस्तित, 'जमिण जगती पुढोजगा' (सूत्र १, २, १, ४) ।

पुढोवम वि [पृथिव्युपम] पृथिवी की तरह सब सहन करनेवाला (सूत्र १, ६, २६) ।

पुढोसिय वि [पृथिवीश्रित] पृथिवी के आश्रय में रहा हुआ (सूत्र १, १२, १३, आचा) ।

पुण सक [पू] १ पवित्र करना । २ धान्य आदि को तुपरहित करना, साफ करना । पुणइ (हे ४, २४१) । पुणति (खाया १, ७) । कर्म, पुण्णइ, पुवइ (हे ४, २४२) ।

पुण अ [पुनर] इन अर्थों का सूचक अव्यय—१ भेद विशेष (विसे ८११) । २ अवधारण, निश्चय । ३ अधिकार, प्रस्ताव । ४ द्वितीय बार, बारान्तर । ५ पक्षान्तर । ६ समुच्चय (परह २, ३, गउड, कुमा, श्रौप, जी ३७, प्राप् ६, ५२, १६८, स्वप्न ७२, पिण) । ७ पादपूर्ति में भी इसका प्रयोग होता है (निचू १) । ८ करण न [करण] फिर से बनाना । २ वि, जिसकी फिर से बनावट की जाय वह, 'मिभं सख न होइ पुणकरण' (उवा) । १ णव वि [नव] फिर से नया बना हुआ, ताजा (उप ७६८ टी, कप्पू) । १ पुण अ [पुनर] फिर-फिर, बारंवार । १ पुणकरण न [पुन करण] फिर फिर बनाना, बारंवार निर्माण (दे १,

कुमा)। °अमा स्त्री [°तमा] पत्नी, भार्य (कुमा)। °अर वि [°कर] प्रीति-जनक (नाट—पिंग)। °कारिणी स्त्री [°कारिणी] भगवान् महावीर की माता का नाम, प्रिशला देवी (कप्प)। °गय पु [°ग्रन्थ] एक प्राचीन जैन मुनि, आचार्य सुस्थित और सुप्रतिबद्ध का एक शिष्य (कप्प)। °जाअ वि [°जाय] जिसको पत्नी प्रिय हो वह (गा ५१८)। °जाआ स्त्री [°जाया] प्रेम-पात्र पत्नी (गा १६६)। °दसण वि [°दर्शन] १ जिसका दर्शन प्रिय—प्रीतिकर हो वह (णाय १, १—पत्र १६, श्रौप)। २ पुं. देव-विशेष (ठा २, ३—पत्र ७६)। °दंसणा स्त्री [°दर्शना] भगवान् महावीर की पुत्री का नाम (आवम)। °धम्म वि [°धर्मन्] १ धर्म की श्रद्धावाला (णाय १, ८)। २ पुं. श्री रामचन्द्र के साथ जैन दीक्षा लेनेवाला एक राजा (पउम ८५, ५)। °भाउग पुं [°भ्रातृ] पति का भाई (उप ६४८ टी)। °भासि वि [°भाषिन्] प्रिय-वक्ता (महा ५८)। °मित्त पुं [°मित्र] १ एक जैन मुनि, जो अपने पीछले भव में पाँचवाँ वामदेव हुआ था (पउम २०, १७१)। °मेलय वि [°मेलक] १ प्रिय का मेल—संयोग करानेवाला। २ न. एक तीर्थ (स ५५१)। °उय वि [°युष्क] जीवित-प्रिय (आचा)। °यग वि [°यत, °त्मक] आत्म-प्रिय (आचा)।

पिअ देखो पीअ, 'पीआपोअ पिमापिअ' (प्राप्रः सण, भवि)।

पिअ° देखो पिउ (प्रासू ७६, १०८)। °हर न [°गृह] पिता का घर, पीहर, नैहर, मैका (पउम १७, ७)।

पिअआ देखो पिआ (आ १६)।

पिअइउ (अप) वि [प्रीणयितृ] प्रीति उप-जानेवाला, खुश करनेवाला (भवि)।

पिअउहिय (अप) देखो पिआ (भवि)।

पिअकर वि [प्रियंकर] १ अमीष्ट-कर्ता, इष्ट-जनक (उत्त ११, १४)। २ पु. एक चक्रवर्ती राजा (उप ६७२)। ३ रामचन्द्र के पुत्र लव का पूर्व जन्म का नाम (पउम १०४, २६)।

पिअंगु पुं [प्रियङ्ग] १ वृक्ष-विशेष, प्रियगु, ककू दनी का पेड़ (पाम्र, श्रौप, सम १५२)। २ वृक्ष, मालकौंगनी का पेड़, 'पियंगुणो कंगू' (पाम्र)। ३ स्त्री. एक स्त्री का नाम (विवा १, १०)। °लइया स्त्री [°लतिका] एक स्त्री का नाम (महा)।

पिअंवय वि [प्रियंवद] मधुर-भाषी (सुर १, ६५, ४, ११८, महा)।

पिअंवाइ वि [प्रियवादिन्] ऊपर देखो (उत्त ११, १४, सुख ११, १४)।

पिअण न [दे] दुग्ध, दूध (दे ६, ४८)।

पिअण न [पान] पीना, 'तुहयन्नपियणनिरय' (धर्मवि १२५, सुख ३, १, उप १३६ टी; स २६३, सुपा २४५, चैद्य ५७०)।

पिअणा स्त्री [पृतना] सेना विशेष, जिसमें २४३ हाथी, २४३ रथ, ७२६ घोड़े और १२१५ प्यादे हो वह लश्कर (पउम ५६, ६)।

पिअमा स्त्री [दे] प्रियंगु वृक्ष (दे ६, ४६, पाम्र)।

पिअमाहवी स्त्री [दे] कोकिला, पिकी (दे ६, ५१, पाम्र)।

पिअय पु [प्रियक] वृक्ष-विशेष, विजयमार का पेड़ (श्रौप)।

पिअर पुंन [पितृ] १ माता-पिता, मा-बाप, 'सुणुत्तु निणणयमिमं पियरा', 'पियराइ क्य-ताइ' (धर्मवि १२२)। २ पुं. पिता, बाप (प्राप्र)।

पिअरज सक [भञ्ज] भांगना, तोड़ना। पिअरंजइ (प्राकृ. ७४)।

पिअल (अप) देखो पिअ = प्रिय (पिंग)।

पिआ स्त्री [प्रिया] पत्नी, कान्ता, भार्य (कुमा, हेका ६६)।

पिआमह पुं [पितामह] १ ब्रह्मा, चतुरानन (से १, १७, पाम्र, उप ५६७ टी, स २३१)। २ पिता का पिता, दादा (उव)। °तणअ पु [°तनय] जाम्बवान्, वानर-विशेष (से ४, ३७)। °त्य न [°स्त्र] भ्रज-विशेष, ब्रह्माक्ष (से १५, ३७)।

पिआमही स्त्री [पितामही] पिता की माता, दादी (सुपा ४७२)।

पिआर (अप)। वि [प्रियतर] प्यारा (कुप्र ३२, भवि)।

पिआरी (अप) स्त्री [प्रियतरा] प्यारी, प्रिया, पत्नी (पिंग)।

पिआल पु [प्रियाल] वृक्ष-विशेष, पियाल, चिरीजी का पेड़ (कुमा, पाम्र, दे ३, २१; परण १)।

पिआलु पुं [प्रियालु] वृक्ष-विशेष, विद्रो, तिरनी का गाछ (उर २, १३)।

पियासा देखो पिवासा (गा ८१४)।

पिइ देखो पीइ, 'तेण पिइए सिट्ठ' (पउम ११, १४)।

पिड पुं [पितृ] १ पिता, बाप (उप ७२८ टी)। २ मघा-नक्षत्र का अविषायक देव (सुज १०, १२, पि ३६१)। °मेह पुं [°मेध] यज्ञ-विशेष, जिसमें बाप का होम किया जाय ऋ यज्ञ (पउम ११, ४२)। °वण न [°वत्त] श्मशान (सुपा ३५६)। °हर न [°गृह] पिता का घर, पीहर (पउम १८, ७, सुर ६, २३६)। देखो पिंड।

पिइज्ज पुं [पितृज्य] चाचा, बाप का भाई, 'सुपासो वीरजिणपिइज्जो (? ज्ज)' (विचार ४७८)।

पिइय वि [पैतृक] पिता का, पितृ-संबन्धी (अप)।

पिउ } पुं [पितृ] १ बाप पिता (सुर १, पिउअ } १७६, श्रौप, उव, हे १, १३१)।

२ पुंन मां बाप, माता-पिता, 'अन्नया मह पिअणि गामं पत्ताइ' (धर्मवि १४७ सुपा ३२६)। °कम्म पुं [°कम्म] पितृ-वरा, पितृ-कुल (कुमा)। °कुल न [°कुल] पिता का वंश (पड्)। °घर न [°गृह] पिता का घर, पीहर (सुपा ६०१)। °च्छा, °च्छी स्त्री [°प्वस्] पितृ की बहिन, फूमा, वूमा, फूफू (गा ११०, हे २, १४२, पाम्र, णाय १, १६), 'कोति पिउत्थि (? च्छि) सक्कारेइ' (णाय १, १६—पत्र २१६)। °पिंड पु [°पिण्ड] मृतक-भोजन, श्राद्ध में दिया जाता भोजन (आचा २, १, २)। °अगिणी स्त्री [°अगिनी] फूफी, पिता की बहिन (सुर ३, ८२)। °वइ पु [°पति] यम, यमराज (हे १, १३४)। °वण न [°वत्त] श्मशान (पउम १०५, ५१, पाम्र, हे १, १३४)। °सिआ स्त्री [°प्वस्] फूफी (हे

पुष्पी स्त्री [पोती] १ वज्र-खण्ड, मुख-वज्रिका (पत्र ६०, संबोध ५४)। २ साठी, कटी-वज्र (धर्मवि १७)। देखो पोत्ती।

पुच्छल पु [पुत्र] पुत्र, लडका (प्राक् ३५)।

पुत्थ वि [दे] मृदु, कोमल (दे ६, ५२)।

पुत्थ } पुंन [पुस्त, 'क'] १ लेप्यादि कर्म
पुत्थय } (आ १)। २ पुस्तक, पोथी,
किताब, 'पुत्थए लिहावेइ' (कुप्र ३४८),
'अवहरिओ पुत्थओ सहसा' (सम्मत्त ११८)।
देखो पोत्थ।

पुथवी देखो पुढवी (चढ)।

पुथुणी } (पै) देखो पुढवी (प्राक् १२४,
पुथुवी } पि १६०)। नाथ (पै) पु [नाथ]
राजा (प्राक् १२४)।

पुध देखो पिह = पृथक् (ठा १०)।

पुधं देखो पिध (हे १, १८६)।

पुधम } (पै) देखो पुढम, पुढुम (पि
पुधुम } १०४, हे ४, ३१६)।

पुन्न देखो पुण्ण = पुत्त, 'कह मह इत्तियापुत्ता
जं सो दीसिज पच्चक्ख' (सुर १२, ११८, उप
७६८ टी; कुमा)। 'कंखिअ वि [काङ्क्षित,
'काङ्क्षन्' पुण्य की चाहवाला (भग)।
'कलस पु [कलश] एक राजा का नाम
(उप ७६८ टी)। 'जसा स्त्री [यशस्]
एक स्त्री का नाम (उप ७२८ टी)। 'पत्तिया
स्त्री [प्रत्यया] एक जैन मुनि-शाखा (कप्प)।
'पिवासय वि [पिपासक] पुण्य का
प्यासा, पुण्य की चाहवाला (भग)। 'भागि
वि [भागिन] पुण्य का भागी, पुण्य-शाली
(सुपा ६४१)। 'सम्म पु [शर्मन्] एक
ब्राह्मण का नाम (उप ७२८ टी)। 'सार पुं
[सार] एक स्वनाम-ख्यात श्रेष्ठी (उप
७२८ टी)।

पुन्न देखो पुण्ण = पूर्ण (सुर २, ६७, उप
७६८ टी; ठा २, ३, अनु २)। 'तल्ल पुं
[तल] एक जैन मुनि-गच्छ (कुप्र ६)।
'पाय वि [प्राय] करीब-करीब संपूर्ण,
कुछ कम पूर्ण (उप ७२८ टी)। 'भद्द पुं
[भद्र] १ यक्ष-विशेष (सिरि ६६६)। २
यक्ष-निकाय एक इन्द्र (ठा २, ३)। ३ एक
अन्तकृद् मुनि (अंत १८)। ४ एक जैन मुनि,

आर्य श्री सभूतविजय का एक शिष्य (कप्प)।
पुन्नयण पुं [पुण्यजन] यक्ष, एक देव-जाति
(पाग)।

पुन्नाग } देखो पुंनाग (कप्प, कुमा, पउम
पुन्नाम } २१, ४६, पाग)। ३ न. पुन्नाग का
पुन्नाय } फूल (कुमा, हे १, १६०)।

पुन्नालिया } [दे] देखो पुण्णाली (सुपा
पुन्नाली } ५६६, ५६७)।

पुन्निमा देखो पुण्णिमा (रंभा)।

पुप्पुअ वि [दे] पीन, पुष्ट, उपचित (दे ६,
५२)।

पुप्फ न [पुष्प] १ फूल, कुसुम (गाया १, १;
कप्प, सुर ३, ६५, कुमा)। एक विमानावास,
देवविमान-विशेष (देवेन्द्र १३५, सम ३८)।

३ स्त्री का रज। ४ विकास। ५ ग्रंथ का
एक रोग। ६ कुवेर का विमान (हे १,
२३६, २, ५३, ६०, १५४)। 'इरि पुं
[गिरि] एक पर्वत का नाम (पउम ७६, १०)।

'कंत न [कान्त] एक देव-विमान, 'पुप्फ-
कंत' (सम ३८)। 'करडय पु [करण्डक]
हस्तिशोष नगर का एक उद्यान, 'पुप्फकरडए
उज्जाणे' (विपा २, १)। 'केउ पुं [केतु]

१ ऐरवत क्षेत्र का सातवां भावी तीर्थंकर—
जिनदेव (सम १५४)। २ ग्रह-विशेष, ग्रहा-
विधायक देव-विशेष (ठा २, ३)। 'ग न
[क] १ मूल भाग, 'भाणस्स पुप्फगतो इमेहि
कज्जेहि पडिलेहे' (श्रीप २८६)। २ पुष्प,
फूल (कप्प)। ३ देखो नीचे 'य (श्रीप)।

'चूला स्त्री [चूला] १ भगवान् पार्श्वनाथ
की मुख्य शिष्या का नाम (सम १५२,
कप्प)। २ एक महासती, अन्निकाचार्य की
सुयोग्य शिष्या (पडि)। ३ सुवाहुकुमार की
मुख्य पत्नी का नाम (विपा २, १)। 'चूलिया

स्त्री [चूलिका] एक जैन ग्रन्थ (निर १,
४)। 'क्षणिग्या स्त्री [चर्चनिका] पुष्पो से
पूजा (गाया १, २)। 'क्षणिग्या स्त्री
[चायिनी] फूल विननेवाली स्त्री (पाग)।

'छल्लिया स्त्री [छादिका] पुष्प-यात्र-विशेष
(राज)। 'उम्भय न [ध्वज] एक देव-
विमान (सम ३८)। 'णदि पुं [नन्दिन्]
एक राजा का नाम (ठा १०)। 'णालिया

देखो 'नालिया (तंदु)। 'दत्त पुं [दन्त]
१ नववां जिनदेव, श्री सुविधिनाथ (सम ६२,

ठा २, ४)। २ ईशानेन्द्र के हस्ति-सैन्य का
अधिपति देव (ठा ५, १; इक)। ३ देव-
विशेष (मिरि ६६७)। 'दंती स्त्री [दन्ती]
दमयन्ती की माता का नाम, एक रानी
(कुप्र ४८)। 'नालिया स्त्री [नालिका]
पुष्प का बेंट—डंठल (तंदु ४)। 'निज्जास पुं
[निर्यास] पुष्प-रस (जीव ३)। 'पुर न
[पुर] पाटलिपुत्र, पटना शहर (राज)।

'पूरय पु [पूरक] पुष्प की रचना-विशेष
(गाया १, १६)। 'प्पभ न [प्रभ] एक
देव-विमान (सम ३८)। 'वलि पुं [वलि]
उपचार, पुष्प-पूजा (पाग)। 'वाण पुं
[वाण] कामदेव (रंभा)। 'भद्द स्त्री
[भद्र] नगर-विशेष, पटना शहर (राज)।

'मंत वि [वत्] पुष्पवाला (गाया १, १)।

'माल न [माल] वैताव्य की उत्तर श्रेणि

का एक नगर (इक)। 'माला स्त्री [माल]
ऊर्ध्व लोक में रहनेवाली एक दिक्कुमारी
देवी (ठा ८—पत्र ४३७)। 'य पुं [क]
१ फेन, डिएडीर (पाग)। २ न. ईशानेन्द्र
का एक पारियायनिक विमान, देव-विमान-
विशेष (ठा ८, इक, पउम ७६, २८, भौप)।
३ पुष्प, फूल (कप्प)। ४ ललाट का एक
पुष्पाकार आभूषण (जं २)। देखो ऊपर
'ग। 'लाई, 'लावी स्त्री [लावी] फूल
विननेवाली स्त्री (पाग दे १, ६)। 'लेस
न [लेदय] एक देव-विमान (सम ३८)।
'वई स्त्री [वती] १ ऋतुमती स्त्री (दे ६,
६४, गा ४८०)। २ सत्पुरुष नामक किपुरु-
षेन्द्र की एक अग्र-महिषी (ठा ४, १, गाया
२)। ३ बीसवें जिनदेव की प्रवर्तिनी—
प्रमुख साध्वी का नाम (सम १५२, पत्र
६)। ४ चैत्य-विशेष (भग)। 'वण्ण न
[वर्ण] एक देव-विमान (सम ३८)। 'सिंग
न [शृङ्ग] एक देव-विमान (सम ३८)।
'सिद्ध न [सिद्ध] देव-विमान-विशेष
(सम ३८)। 'सुय पुं [शुक] व्यक्ति-
वाचक नाम (उप)। 'वत्त न [वर्त्त]
एक देव-विमान (सम ३८)।

पुप्फस न [दे] फेफसा, शरीर का एक

भीतरी अंग (पउम १०५, ५५)।

पुप्फा स्त्री [दे] फूफी, पिता की बहिन
(दे ६, ५२)।

ठा २, ४)। २ ईशानेन्द्र के हस्ति-सैन्य का
अधिपति देव (ठा ५, १; इक)। ३ देव-
विशेष (मिरि ६६७)। 'दंती स्त्री [दन्ती]
दमयन्ती की माता का नाम, एक रानी
(कुप्र ४८)। 'नालिया स्त्री [नालिका]
पुष्प का बेंट—डंठल (तंदु ४)। 'निज्जास पुं
[निर्यास] पुष्प-रस (जीव ३)। 'पुर न
[पुर] पाटलिपुत्र, पटना शहर (राज)।

'पूरय पु [पूरक] पुष्प की रचना-विशेष
(गाया १, १६)। 'प्पभ न [प्रभ] एक
देव-विमान (सम ३८)। 'वलि पुं [वलि]
उपचार, पुष्प-पूजा (पाग)। 'वाण पुं
[वाण] कामदेव (रंभा)। 'भद्द स्त्री
[भद्र] नगर-विशेष, पटना शहर (राज)।

'मंत वि [वत्] पुष्पवाला (गाया १, १)।
'माल न [माल] वैताव्य की उत्तर श्रेणि
का एक नगर (इक)। 'माला स्त्री [माल]
ऊर्ध्व लोक में रहनेवाली एक दिक्कुमारी
देवी (ठा ८—पत्र ४३७)। 'य पुं [क]
१ फेन, डिएडीर (पाग)। २ न. ईशानेन्द्र
का एक पारियायनिक विमान, देव-विमान-
विशेष (ठा ८, इक, पउम ७६, २८, भौप)।

३ पुष्प, फूल (कप्प)। ४ ललाट का एक
पुष्पाकार आभूषण (जं २)। देखो ऊपर
'ग। 'लाई, 'लावी स्त्री [लावी] फूल
विननेवाली स्त्री (पाग दे १, ६)। 'लेस
न [लेदय] एक देव-विमान (सम ३८)।

'वई स्त्री [वती] १ ऋतुमती स्त्री (दे ६,
६४, गा ४८०)। २ सत्पुरुष नामक किपुरु-
षेन्द्र की एक अग्र-महिषी (ठा ४, १, गाया
२)। ३ बीसवें जिनदेव की प्रवर्तिनी—
प्रमुख साध्वी का नाम (सम १५२, पत्र
६)। ४ चैत्य-विशेष (भग)। 'वण्ण न
[वर्ण] एक देव-विमान (सम ३८)। 'सिंग
न [शृङ्ग] एक देव-विमान (सम ३८)।

'सिद्ध न [सिद्ध] देव-विमान-विशेष
(सम ३८)। 'सुय पुं [शुक] व्यक्ति-
वाचक नाम (उप)। 'वत्त न [वर्त्त]
एक देव-विमान (सम ३८)।

पुप्फस न [दे] फेफसा, शरीर का एक
भीतरी अंग (पउम १०५, ५५)।

पुप्फा स्त्री [दे] फूफी, पिता की बहिन
(दे ६, ५२)।

ठा २, ४)। २ ईशानेन्द्र के हस्ति-सैन्य का
अधिपति देव (ठा ५, १; इक)। ३ देव-
विशेष (मिरि ६६७)। 'दंती स्त्री [दन्ती]
दमयन्ती की माता का नाम, एक रानी
(कुप्र ४८)। 'नालिया स्त्री [नालिका]
पुष्प का बेंट—डंठल (तंदु ४)। 'निज्जास पुं
[निर्यास] पुष्प-रस (जीव ३)। 'पुर न
[पुर] पाटलिपुत्र, पटना शहर (राज)।

'पूरय पु [पूरक] पुष्प की रचना-विशेष
(गाया १, १६)। 'प्पभ न [प्रभ] एक
देव-विमान (सम ३८)। 'वलि पुं [वलि]
उपचार, पुष्प-पूजा (पाग)। 'वाण पुं
[वाण] कामदेव (रंभा)। 'भद्द स्त्री
[भद्र] नगर-विशेष, पटना शहर (राज)।

'मंत वि [वत्] पुष्पवाला (गाया १, १)।
'माल न [माल] वैताव्य की उत्तर श्रेणि
का एक नगर (इक)। 'माला स्त्री [माल]
ऊर्ध्व लोक में रहनेवाली एक दिक्कुमारी
देवी (ठा ८—पत्र ४३७)। 'य पुं [क]
१ फेन, डिएडीर (पाग)। २ न. ईशानेन्द्र
का एक पारियायनिक विमान, देव-विमान-
विशेष (ठा ८, इक, पउम ७६, २८, भौप)।

३ पुष्प, फूल (कप्प)। ४ ललाट का एक
पुष्पाकार आभूषण (जं २)। देखो ऊपर
'ग। 'लाई, 'लावी स्त्री [लावी] फूल
विननेवाली स्त्री (पाग दे १, ६)। 'लेस
न [लेदय] एक देव-विमान (सम ३८)।

'वई स्त्री [वती] १ ऋतुमती स्त्री (दे ६,
६४, गा ४८०)। २ सत्पुरुष नामक किपुरु-
षेन्द्र की एक अग्र-महिषी (ठा ४, १, गाया
२)। ३ बीसवें जिनदेव की प्रवर्तिनी—
प्रमुख साध्वी का नाम (सम १५२, पत्र
६)। ४ चैत्य-विशेष (भग)। 'वण्ण न
[वर्ण] एक देव-विमान (सम ३८)। 'सिंग
न [शृङ्ग] एक देव-विमान (सम ३८)।

'सिद्ध न [सिद्ध] देव-विमान-विशेष
(सम ३८)। 'सुय पुं [शुक] व्यक्ति-
वाचक नाम (उप)। 'वत्त न [वर्त्त]
एक देव-विमान (सम ३८)।

पुप्फस न [दे] फेफसा, शरीर का एक

भीतरी अंग (पउम १०५, ५५)।

पुप्फा स्त्री [दे] फूफी, पिता की बहिन
(दे ६, ५२)।

पिंडा पुं [पिण्डक] ऊपर देखो (कस) ।
 पिंडण न [पिण्डन] १ द्रव्यो का एकत्र
 सरलेप (पिंडभा २) । २ ज्ञानावरणीयादि
 कर्म (पिंड ६६) ।
 पिंडणा स्त्री [पिण्डना] १ समूह (श्रीप
 ४०७) । २ द्रव्यो का परस्पर संयोजन (पिंड
 २) ।
 पिंडय देखो पिंड (श्रीपभा ३३) ।
 पिंडरय न [दे] दाहिम, अनार (दे ६, ४८) ।
 पिंडलइय वि [दे] पिएडीकृत, पिएडाकार
 किया हुआ (दे ६, ५४, पात्र) ।
 पिंडलग न [दे] पटलक, पुष्प का भाजन
 (ठा ७) ।
 पिंडवाइअवि [पिण्डपातिक, पैण्डपातिक]
 भक्त-लामवाला, जिसको भिक्षा में आहार
 की प्राप्ति हो वह (ठा ५, १, कस, श्रीप,
 प्राकृ ६) ।
 पिंडार पुं [पिण्डार] गोप, ग्वाला (गा
 ७३१) ।
 पिंडाल पु [पिण्डाल] कन्द-विशेष (आ २०) ।
 पिंडिं देखो पिंडी (भग, राया १, १ टी—
 पत्र ५) ।
 पिण्डिम वि [पिण्डिम] १ पिएड से बना
 हुआ, वहल (प्राह २, ५—पत्र १५०) ।
 २ पूद्गल-समूहस्थ, संघाताकार (राया १, १
 टी—पत्र ५, श्रीप) ।
 पिण्डिय वि [पिण्डित] १ एकत्रित, इकट्ठा
 किया हुआ (सूअनि १४०, पंचा १४, ७,
 महा) । २ गुणित (श्रीप) ।
 पिण्डिया स्त्री [पिण्डिका] १ पिएडी, पिंडली,
 जानू के नीचे का मांसल अवयव (महा) ।
 २ वतुंलाकार वस्तु (श्रीप) । देखो पिंडी ।
 पिंडी स्त्री [पिण्डी] १ लुम्बी, गुच्छा (श्रीप,
 भग, राया १, १, उप पृ ३६) । २ घर
 का आचार-भूत काष्ठ विशेष, पीढा, 'विघडि-
 यपिंडीवधसविपरिल विवालगिम्भोमा' (गउड) ।
 ३ वतुंलाकार वस्तु, गोला, 'पिन्नागपिंडी'
 (सूअ २, ६, २६) । ४ खजूर-विशेष (नाट-
 शकु ३५) । देखो पिण्डिया ।
 पिंडी स्त्री [दे] मज्जरी (दे ६, ४७) ।
 पिंडीर न [दे. पिण्डीर] दाहिम, अनार (दे
 ६, ४८) ।

पिंडेसणा स्त्री [पिण्डैपणा] भिक्षा ग्रहण
 करने की रीति (ठा ७) ।
 पिंडेसिय वि [पिण्डैषिक] भिक्षा की खोज
 करनेवाला (भग ६, ३३) ।
 पिंडोलग वि [पिण्डावलगाक] भिक्षा से
 पिंडोलगाय निर्वह करनेवाला, भिक्षा का
 पिंडोलय प्रार्थी, भिक्षु (आचा. उत्त ५, २२,
 सुख ५, २२, सूअ १, ३, १, १०) ।
 पिंध (अप) सक [पि + धा] ढकना । पिंधत
 (पिंग) । सकृ पिंधत (पिंग) ।
 पिंधण (अप) न [पिधान] ढकना (पिंग) ।
 पिंसुली स्त्री [दे] मुँह से पवन भरकर बजाया
 जाता एक प्रकार का तुरण-वाद्य (दे ६, ४७) ।
 पिक पुं स्त्री [पिक] कोकिल पक्षी (पिंग) ।
 स्त्री. 'की (दे ६, ५१) ।
 पिक देखो पक्त = पक्व (हे १, ४७, पात्र,
 गा ५६५) ।
 पिकख सक [प्र + ईक्ष्] देखना । पिकखइ
 (भवि) । वक्तृ पिकखत (भवि) । कृ
 पिकखेयव्य (सुर ११, १३३) ।
 पिकखग वि [प्रेक्षक] निरीक्षक, द्रष्टा (ती
 १०, धर्मवि १५) ।
 पिकखण न [प्रेक्षण] निरीक्षण (राज) ।
 पिकिखय वि [प्रेक्षित] दृष्ट (पि ३६०) ।
 पिंग देखो पिक (कुमा) ।
 पिचु पुं [पिचु] कार्पास, रुई (दे ६, ७८) ।
 'लया स्त्री [लना] पूनी, रुई की पूनी (दे
 ६, ५६) ।
 पिचुमद पु [पिचुमन्द] निम्ब वृक्ष, नोम
 का पेड़ (मोह १०३) ।
 पिच } अ [प्रेत्य] पर-लोक, आगामी जन्म
 पिचा } (आ १४, सुपा ५०६, सूअ १, १,
 १, ११) । देखो पेच्च ।
 पिष्ठा देखो पिअ = पा ।
 पिष्ठिय वि [दे पिष्ठित] कूटी हुई छान
 (ठा ५, ३—पत्र ३३८) ।
 पिच्छ सक [हश्, प्र + ईक्ष्] देखना ।
 पिच्छइ, पिच्छति, पिच्छ (कप्प, प्रासू १६०,
 ३३) । वक्तृ. पिच्छत, पिच्छमाण (सुपा
 ३४६, भवि) । कवक्तृ. पिच्छजमाण (सुपा
 ६२) । सकृ पिच्छउ, पिच्छऊग (प्रासू
 ६१, भवि) । कृ. पिच्छणिज्ज (कप्प, सुर
 १३, २२३, रयण ११) ।

पिच्छ न [पिच्छ] १ पक्ष का अवयव, पंख
 का हिस्सा (उवा, पात्र) । २ मयूर-पिच्छ,
 शिखर (राया १, ३) । ३ पक्ष, पंख
 (उप ७६८ टी, गउड) । ४ पूँछ, लागूल
 (गउड) ।
 पिच्छण न [प्रेक्षण] १ दर्शन, अवलोकन
 (आ १४, सुपा ५५) ।
 पिच्छण } न [प्रेक्षण, 'क] तमाशा, खेल,
 पिच्छणय } नाटक, 'पारद पिच्छण तहि
 ताव' (सुपा ४८५), 'तो जवणियछिड्ढेहि
 पिच्छइ अतेउरपि पिच्छणय' (सुपा २००) ।
 पिच्छल वि [पिच्छल] १ स्निग्ध, स्नेह-
 युक्त । २ मछण (सण) ।
 पिच्छा स्त्री [प्रेक्षा] निरीक्षण । 'भूमि स्त्री
 [भूमि] रग-मण्डप, रंगमंच (पात्र) ।
 पिच्छि वि [पिच्छिन्] पिच्छवाला (श्रीप) ।
 पिच्छिर वि [प्रेक्षित] प्रेक्षक, द्रष्टा, देखने-
 वाला (सुपा ७८, कुमा) ।
 पिच्छिल वि [पिच्छिल] १ स्नेह-युक्त,
 स्निग्ध । २ मछण, चिकना (गउड, हास्य
 १४०, दे ६, ४६) ।
 पिच्छिली स्त्री [दे] लज्जा, शरम (दे ६ ४७) ।
 पिच्छी स्त्री [दे] चूडा, चोटी (दे ६, ३७) ।
 पिच्छी स्त्री [पिच्छिका] पोछी (गा ५७२) ।
 पिच्छी स्त्री [पृथ्वी] १ पृथ्वी, धरित्री,
 धरती (कुमा) । २ बड़ी इलायची । ३
 पुनर्नवा । ४ कृष्ण जीरक । ५ हिणुपत्री (हे
 १, १२८) ।
 पिच्छोला स्त्री [दे] वीन बजाने की कविका
 (सूअ कृ० चू० पत्र १४६) ।
 पिज सक [पा] पीना । पिज्जइ (हे ४,
 १०) । कृ पिज्जणिज्ज (कुमा) ।
 पिज पुन [प्रेमन्] प्रेम, अनुराग (सूअ १,
 १६, २, कप्प) ।
 पिज्ज } देखो पा = पा ।
 पिज्जत }
 पिज्जा स्त्री [पेया] यवाम्र (पिंड ६२४) ।
 पिज्जाविअ वि [पायित] जिसको पान कराया
 गया हो वह (सुख २, १७) ।
 पिटृ सक [पीडय्] पीडा करना । पिटृ ति
 (सूअ २, २, ५५) ।
 पिटृ भक [भ्रश्] नीचे गिरना । पिटृइ
 (पह) ।

पुराअण वि [पुरातन] पुराना, प्राचीन ।
 स्त्री. °णी (नाट—चैत १३१) ।
 पुराकर सक [पुरा + कृ] आगे करना ।
 पुराकरति (सूत्र १, ५, २, ५) ।
 पुराण वि [पुराण] १ पुराना, पुरातन
 (गउड, उत ८, १२) । २ न. व्यासादि-
 मुनि-प्रणीत ग्रन्थ-विशेष, पुरातन इतिहास के
 द्वारा जिसमें धर्म-तत्त्व निरूपित किया जाता
 हो वह शास्त्र (धर्मवि ३८, भवि) । °पुरिस
 पुं [°पुरुष] श्रीकृष्ण (वजा १२२) ।
 पुरिकोवेर पु. व. [पुरीकौवेर] देश-विशेष
 (पउम ६८, ६७) ।
 पुरित्थिमा देखो पुरत्थिमा (सूत्र २, १, ६) ।
 पुरिम देखो पुव्व = पूर्व (हे २, १३५, प्राकृ
 २८, भग; कुमा), 'पचवओ खलु धम्मो
 पुरिमस्स य पच्छिमस्स य जिणस्स' (पव
 ७४, पचा १७, १) । °ड्ड पुन [°धि]
 १ पूर्वार्ध । २ प्रत्याख्यान-विशेष (पंचा ५,
 पडि) । ३ तप-विशेष, निर्विकृतिक तप
 (संबोध ५७) । °ड्डिय वि [°धिक]
 'पुरिमड्ड' प्रत्याख्यान करनेवाला (पएह २,
 १, ठा ५, १) ।
 पुरिम वि [पौरस्त्य] अग्र-भव, अग्रेतन, आगे
 का, 'इय पुव्वुत्तचउक्के आणेसु पढमदुगि खु
 मिच्छत्तं । पुरिमदुगे सम्मत्त' (संबोध ५२) ।
 पुरिम पुं [दे] प्रस्फोटन, प्रतिलेखन की क्रिया-
 विशेष, 'छ पुरिमानव खोढा' (ओष २६५) ।
 पुरिमताल न [पुरिमताल] नगर-विशेष
 (विपा १, ३, औप) ।
 पुरिमिल्ल वि [पूर्वीय] पहले का, पुरातन,
 प्राचीन, 'आसि नरा पुरिमिल्ला, ता कि
 अन्हेवि वह होमो' (वेइय ११५) ।
 पुरिल पुं [दे] दैत्य, दानव (षड्) ।
 पुरिल वि [पुरातन] पुरा-भव, पहले का,
 पूर्ववर्ती (विसे १३२६, हे २, १६३) ।
 पुरिल वि [पौरस्त्य] पुरो-भव, पुरो-वर्ती,
 अग्र-गामी (से १३, २, हे २, १६३, प्राप्र,
 षड्) ।
 पुरिल वि [पौर] पुर-भव, नागरिक (प्राकृ
 ३५, हे २, १६३) ।
 पुरिल वि [दे] प्रवर, श्रेष्ठ (दे ६, ५३) ।

पुरिल देखो पुरिल्ला = पुरा, पुरस्, 'पुरिल्लो'
 (हे २, १६४ टि. पड्) ।
 पुरिलदेव पु [दे] असुर, दानव (दे ६, ५५) ।
 पुरिलपहाणा स्त्री [दे] सांप की दाढ़ (दे ६,
 ५६) ।
 पुरिल्ला अ [पुरा] १ निरन्तर क्रिया-करण,
 विच्छेद-रहित क्रिया करना । २ प्राचीन,
 पुराना । ३ पुराने समय में । ४ भावी । ५
 निकट, सन्निकट । ६ इतिहास, पुरावृत्त (हे
 २, १६४) ।
 पुरिल्ला अ [पुरस] आगे, अग्रत. (हे २,
 १६४) ।
 पुरिस पुंन [पुरुष] १ पुमान्, नर, मर्द (हे
 १, १२४, भग; कुमा, प्रासू १२६), 'इत्थीणि
 वा पुरिसाणि वा' (आचा २, ११, १८) ।
 २ जीव, जीवात्मा (विसे २०६०, सूत्र २,
 १, २६) । ३ ईश्वर (सूत्र २, १, २६) ।
 ४ शङ्कु, छाया नापने का काष्ठादि-निमित्त
 कीलक । ५ पुरुष-शरीर (एदि) । °कार,
 °कार, °गार पु [°कार] १ पौरुष, पुरुषपन,
 पुरुष-चेष्टा, पुरुष-प्रयत्न (प्रासू ४३, उवा, सुर
 २, ३५, उवर ४७) । २ पुरुषत्व का
 अभिमान (औप) । °जाय पुं [°जात] १
 पुरुष । २ पुरुष-जातीय (सूत्र २, १, ६; ७,
 ठा ३, १, २, ४, १) । °जुग न [°युग]
 क्रम स्थित पुरुष (सम ६८) । °जेट्ट पु
 [°ज्येष्ठ] प्रशस्त पुरुष (पचा १७, १०) ।
 °त्त, °त्तण न [°त्त्व] पौरुष, पुरुषपन, 'नहि
 नियजुवइसलहिया पुरिसा पुरिसत्तणमुविंति'
 (सुर २, २४, महा; सुपा ८४) । °त्थ पुं
 [°र्थ] धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष रूप पुरुष-
 प्रयोजन, 'सयलपुरिसत्थकारणमइदुलहो
 माणुसो भवो एमो' (धर्मवि ८२, कुमा,
 सुपा १२६) । °पुडरीअ पु [°पुण्डरीक]
 इस अवसर्पिणी काल में उत्पन्न पष्ठ वासुदेव
 (पव २१०) । °प्पणीय वि [°प्रणीत] १
 ईश्वर-निर्मित । २ जीव-रचित (सूत्र २, १,
 २६) । °मेह पु [°मेध] यज्ञ विशेष, जिसमें
 पुरुष का होम किया जाय वह यज्ञ (राज) ।
 °यार देखो °कार (गउड, सुर २, १६, सुपा
 २७१) । °लक्खण न [°लक्षण] कला-
 विशेष, पुरुष के शुभाशुभ चिह्न पहचानने की

एक सामुद्रिक कला (जं २) । °लिं, न
 [°लिङ्ग] पुरुष-चिह्न । °लिंगमिद्ध पुं
 [°लिङ्गसिद्ध] पुरुष-शरीर से जो मुक्त हुआ
 हो वह (एदि) । °वयण न [°वचन]
 पुल्लिङ्ग शब्द (आचा २, ४, १, ३) । °वर पुं
 [°वर] श्रेष्ठ पुरुष (औप) । °वरगधहत्थि पुं
 [°वरगन्धहस्तिन्] १ पुरुषों में श्रेष्ठ
 गन्धहस्ती के तुल्य । २ जिन-देव (भग, पडि) ।
 °वरपुडरीय पुं [°वरपुण्डरीक] १ पुरुषों
 में श्रेष्ठ पक्ष के समान । २ जिन-देव, अहंन्
 (भग, पडि) । °विजय पुं [°विचय,
 °विजय] ज्ञान-विशेष (सूत्र २, २, २७) ।
 °वेय पुं [°वेद] १ कर्म विशेष, जिसके
 उदय से पुरुष को स्त्री-संभोग की इच्छा होती
 है वह कर्म । २ पुरुष को स्त्री-भोग की अभि-
 लाषा (पएण २३, सम १५०) । °सिंह,
 °सीह पु [°सिंह] १ पुरुषों में सिंह के
 समान, श्रेष्ठ पुरुष । २ पुं जिनदेव, जिन
 भगवान् (भग, पडि) । ३ भगवान् धर्मनाथ
 के प्रथम श्रावक का नाम (विचार ३७८) ।
 ४ इस अवसर्पिणी काल में उत्पन्न पाँचवाँ
 वासुदेव (सम १०५, पउम ५, १५५, पव
 २१०) । °सेण पुं [°सेन] १ भगवान्
 नेमिनाथ के पास दीक्षा लेकर मोक्ष जानेवाला
 एक अन्तर्कृद् महर्षि, जो वासुदेव के अन्यतम
 पुत्र थे (अत १४) । २ भगवान् महावीर के
 पास दीक्षा लेकर अनुत्तर विमान में उत्पन्न
 होनेवाले एक मुनि, जो राजा श्रेणिक के
 पुत्र थे (अनु १) । °दाणिअ, °दाणीय पुं
 [°दानीय] उपादेय पुरुष, आप्त पुरुष (सम
 १३, कप्प) ।

पुरिसकारिआ स्त्री [पुरुषकारिका, °ता]
 पुरुषार्थ, प्रयत्न (दस, ५, २, ६) ।
 पुरिसाअ अक [पुरुषाय] विपरीत मैथुन
 करना । वक्र. पुरिसाअत (गा १६६-३६१) ।
 पुरिसाइअ न [पुरुषायित] विपरीत मैथुन
 (दे १, ४२) ।
 पुरिसाइर वि [पुरुषायित] विपरीत रत्न
 करनेवाला, 'वरपुरिसाइर विसमिर सुजाण
 पुरिसाण जं दुक्ख' (गा ५२, ४४६) ।
 पुरिसुत्तम पुं [पुरुषोत्तम] १ उत्तम
 पुरिसोत्तम पुं पुरुष, श्रेष्ठ पुमान् । २ जिन-

भाग वचता है वह (सूत्र २, ६, २६, २, १, १६, २, ६, २८) ।

पिपीलिअ पुं [पिपीलक] कीट-विशेष, चीकड़ा (कम्प) ।

पिपीलिआ } स्त्री [पिपीलिका] चीटी,
पिपीलिका } चीकड़ा (परह १, ६, जो १६, छाया १, १६) ।

पिप्पड सक [दे] बड़बड़ाना, जो मन में आये सो बकना । पिप्पडइ (दे ६, ५० टी) ।

पिप्पडा स्त्री [दे] ऊर्णा-पिपीलिका (दे ६, ४८) ।

पिप्पडिअ वि [दे] १ जो बड़बड़ाया हो । २ न बड़बड़ाना, निरर्थक उल्लाप, बकवाद (दे ६, ५०) ।

पिप्पय पु [दे] १ मशक (दे ६, ७८) । २ पिशाच, भूत (पात्र) । ३ वि. उन्मत्त (दे ६, ७८) ।

पिप्पर पु [दे] १ हंस । २ वृषभ (दे ६, ७६) ।

पिप्परी स्त्री [पिप्पली] पीपर का गाछ (परह १) ।

पिप्पल पुंन [पिप्पल] १ पीपल वृक्ष, अश्वत्थ (उप १०३१ टी, पात्र, हि १०) । २ छुरा, क्षुरक (विपा १, ६—पत्र ६६, शोध ३५६) ।

पिप्पला वि [पैप्पलक] पीपल के पान का बना हुआ (आचा २, २, ३, १४) ।

पिप्पलि } स्त्री [पिप्पलि, °ली] श्लोष-
पिप्पली } विशेष, पीपर, 'महुपिप्पलिसुंठाई अणोहा साइम होई' (पंचा ५, ३०, परह १७) ।

पिप्पिडिअ देखो पिप्पडिअ (पड्) ।

पिप्पिया स्त्री [दे] दांत का मेल (एंदि) ।

पिव देखो पिअ = पा । पिबामो (पि ४८३) । संक्र. पिवित्ता (आचा) ।

पिव्व न [दे] जल, पानी (दे ६, ४६) ।

पिम्म पुं [प्रेमन्] प्रेम, प्रीति, अनुराग (पात्र, सुर २, १७२, रंमा) ।

पियाल पु [प्रियाल] १ वृक्ष-विशेष, खिरनी का पेड़ । २ न फल-विशेष, खिरनी, खिनी (वस ५, २, २४) ।

पियास (अप) स्त्री [पिपासा] व्यास (भवि) । पिरिडी स्त्री [दे] शकुनिका, चिडिया (दे ६, ४७) ।

परिपिरिया देखो परिपिरिया (राज) ।

पिरिली स्त्री [पिरिली] १ गुच्छ-विशेष, वनस्पति-विशेष (परह १) । २ वाद्य-विशेष (राज) ।

पिल देखो पील । कर्म पिलजइ (नाट) ।

पिलखु } पुं [प्लक्ष] १ वृक्ष-विशेष,
पिलखु } पिलखन, पाकड़ का पेड़ (सम १५२, शोध २६, पि ७४) । २ एक तरह का पीपल वृक्ष, 'पिलखू पिप्पलभेदो' (निचू ३) ।

पिलण न [दे] पिच्छल देश, चिकनी जगह (दे ६, ४६) ।

पिला देखो पीला (पि २२६) ।

पिलाग न [पिटक] फोडा, फुन्सी (सूत्र १, ३, ४, १०) ।

पिल्लिखु देखो पिल्लिखु (विचार १४८) ।

पिलिहा स्त्री [प्लोहा] अग-विशेष, पिलही, तिल्ली (तंडु ३६) ।

पिलुअ न [दे] क्षुत्, छोकर (पड्) ।

पिलुक } देखो पिलखु (पि ७४, परह
पिलुक्ख } १—पत्र ३१) ।

पिलुखु देखो पिलखु (आचा २, १, ८, ३) ।

पिलुट्ट वि [प्लुट्ट] दग्ध (हे २, १०६) ।

पिलोस पुं [प्लोष] दाह, दहन (हे २, १०६) ।

पिल देखो पेड़ = क्षिप् । पिल्लइ (भवि) ।

पिल सक [प्र + ईरय्] १ प्रेरणा करना । २ प्रवृत्त करना । पिल्लेइ (वव १) ।

पिल्लग न [दे] पक्षी का वच्चा ।

पिल्लण न [प्रेरण] प्रेरणा (जं ३) ।

पिल्लणा स्त्री [प्रेरणा] प्रेरणा (कम्प) ।

पिल्लि स्त्री [दे] यान-विशेष (दसा ६) ।

पिल्लिअ वि [क्षिप्] फेंका हुआ (पात्र, भवि, कुमा) ।

पिल्लिअ वि [प्रेरित] जिसको प्रेरणा की गई हो वह (सुपा ३६१) ।

पिल्लिरी स्त्री [दे] १ तृण-विशेष, गण्डुव तृण । २ चीरो, कीट-विशेष । ३ घर्म, पसीना (दे ६, ७६) ।

पिल्लुग (दे) देखो पिलुअ (वव २) ।

पिल्लह न [दे] छोटे पक्षी के तुल्य (हे ६, ४६) ।

पिव देखो इव (हे २, १८२, कुमा, महा) ।

पिव सक [पा] पीना । पिवइ (पिग) । भूका. अपिवित्ता (आचा) । कर्म पिवोमंति (पि ५३६) । सकृ पिविअ, पिविइत्ता, पिवित्ता (नाट, ठा ३, २, महा) । हेक. पिविउं, पिवित्तर (आफ ४२, श्रौप) ।

पिवण देखो पिअण = (दे) (भवि) ।

पिवासय वि [पिपासक] पीने की इच्छा-वाला (भग—अत्य) ।

पिवासा स्त्री [पिपासा] व्यास, पीने की इच्छा (भग, पात्र) ।

पिवासिय वि [पिपासित] तृप्ति (उवा, वै. -) ।

पिवीलिआ देखो पिपीलिआ (उव, स ४२०, भा ४६) ।

पिव्व देखो पिन्न (पड्) ।

पिस सक [पिप्] पीसना । पिसइ (पड्) ।

पिसग पुं [पिशङ्ग] १ पिगल वण, नठियारा रंग । २ वि पिगल वणवाला (पात्र, कुप्र १०५, ३०६) ।

पिसंडि [दे] देखो पसंडि (सुपा ६०७, कुप्र ६२, १४५) ।

पिसल्ल पुं [पिशाच] पिशाच, व्यन्तर-योनिक देवी की एक जाति (हे १, १६३, कुमा, पात्र, उप २६४ टी, ७६८ टी) ।

पिसाजि वि [पिशाचिन्] भूताविष्ट (हे १, १७७, कुमा, पड्, चड) ।

पिसाय देखो पिसल्ल (हे १, १६३, परह १, ४, महा, इक) ।

पिसिअ न [पिशित] मांस (पात्र, महा) ।

पिसुअ पुत्री [पिशुक] शुद्र कीट-विशेष । स्त्री °या (राज) ।

पिसुण सक [कथय्] कहना । पिसुणइ, पिसुणोइ, पिसुणति, पिसुणेंति, पिसुणसु (हे ४, २, गा ६८५, सुर ६, १६३, गा ५५६; कुमा) ।

पिसुण पुं [पिशुन] खल, दुर्जन, पर-निन्दक, चुगलखोर (सुर ३, १६, प्रासू १८, गा ३७७, पात्र) ।

पुलासिअ पु [दे] अग्नि-करण (दे ६, ५५) ।
पुलिंद पु [पुलिन्द] १ अनायं देश-विशेष
(इक) । २ पुत्री उस देश, मे रहनेवाला मनुष्य
(पएह १, १, अं, व, उव) । स्त्री. 'दी
(गाया १, १, औ.)

पुलिण न [पुलिण] तट, किनारा, 'प्रोहणो
नहपुलिणो' (पउम १०, ५४) । २ लगातार
बाईस दिनों का उपवास (सवोध ९८) ।

पुलिय न [पुलिण] गति-विशेष (श्रीप) ।

पुलुट वि [पुलुट] दग्ध (पाप्र) ।

पुलोअ सक [दृश, प्र + लोक्] देखना ।
पुसोए (हे ४, १८१, सुर १, ८६) । चक्र ।
पुलअत, पुलोएत (पि १०४, सुर ३,
११८) ।

उलोअण न [दर्शन, प्रलोकन] विलोकन (दे
६, ३०, गा ३२२) ।

पुलोइअ वि [दृष्ट, प्रलोकित] १ देखा हुआ
(सुर ३, १६४) । २ न. अवलोकन (से ७,
५६) ।

पुलोएत देखो पुलोअ ।

पुलोम पुं [पुलोमन्] दैत्य विशेष । 'तणया
स्त्री [तनया] शची, इन्द्राणी (पाप्र) ।

पुलोमी स्त्री [पौलोमी] इन्द्राणी (प्राकृ १०,
हे १, १६०) ।

पुलोव देखो पुलोअ । पुलोवेदि (शौ) (पि
१०४) ।

पुलोस पुं [पुलोप] दाह, वहन (गउड) ।

पुल्ल [दे] देखो पोल्ल (सुख ६, १) ।

पुल्लि पुं स्त्री [दे] १ व्याघ्र, शेर (दे ६, ७६,
पाप्र) । २ सिंह, पञ्चानन, मृगेन्द्र (दे ६,
७६) । स्त्री 'को पियइ पय च पुल्लोए' (सुपा
३१२) ।

पुव } सक [प्लु] गति करना, चलना ।
पुव्व } पुवति (पि ४७३), पुव्वति (भग
१५—पत्र ६७०, टी—पत्र ६७३) ।

पुव्वं देखो पुण = पू ।

पुव्व वि [पूर्व] १ दिशा, देश और काल की
अपेक्षा से पहले का, आद्य, प्रथम (ठा ४, ४,
जी १, प्राप् १२२) । २ समस्त, सकल ।
३ ज्येष्ठ भ्राता (हे २, १३५, पड्) । ४ पुंन.
काल-मान विशेष, चौरासी लाख को चौरासी

लाख से गुणने पर जो सख्या लब्ध हो उतने
वर्ष (ठा २, ४, सम ७४, जी ३७, इक) ।
५ जैन ग्रन्थाश-विशेष, बारहवें अंग ग्रन्थ का
एक विशाल विभाग, अव्ययन, परिच्छेद,
'चोइसपुव्वी' (विपा १, १) । ६ इन्द्र,
वधू-वर आदि युग्म, 'पुव्वट्टाणणि' (आचा
२, ११, १३) । ७ पूर्व-ग्रन्थ का ज्ञान (कम्म
१, ७) । ८ कारण, हेतु (एदि) । 'कालियं
वि [कालिक] पूर्वं काल का, पूर्व काल से
संबन्ध रखनेवाला (पएह १, २—यत्र २ ; ।
'गय न [गत] जैन शास्त्राश-विशेष, बारहवें
अंग का विभाग-विशेष (ठा १०—पत्र ४६१) ।
'ण्ह पुं [ण्हण] २ दिन का पूर्व भाग,
सुबह से दो पहर तक का समय (हे १,
६७) । २ तप-विशेष, 'पुरिमड्ड' तप (संशोध
५८) । 'तव पुंन [तपस्] वीतराग
अवस्था के पहले का—सराग अवस्था का
तप (भग) । 'दारिअ वि [दारिक] पूर्व
दिशा में गमन करने में कल्याण-कारी (नक्षत्र)
(सम १२) । 'द्ध पुंन [र्ध] पहला आवा
(नाट) । 'धर वि [धर] पूर्व-ग्रन्थ का ज्ञान-
वाला (पएह २, १) । 'पय न [पद]
उत्सर्ग-स्थान (निबू १) । 'पुट्टवया स्त्री
[प्रोष्टपदा] नक्षत्र-विशेष (सुख १०, ५) ।
'पुरिस पु [पुरुष] पूर्वज, पुरखा (सुर २,
१६४) । 'प्पओग पुं [प्रयोग] पहले की
क्रिया, पूर्व काल का प्रयत्न (भग ८, ६) ।
'फग्गुणी स्त्री [फाल्गुनी] नक्षत्र-विशेष
(राज) । 'भद्वया स्त्री [भाद्रपदा] नक्षत्र-
विशेष (राज) । 'भव पुं [भव] गत जन्म,
अतीत जन्म (गाया १, १) । 'भविय वि
[भविक] पूर्वजन्म सवधी (भवि) । 'य पुं
[ज] पूर्व पुरुष, पुरखा (पुपा २३२) ।
'रत्त पु [रात्र] रात्रि का पूर्व भाग (भग,
महा) । 'व न [वन्] अनुमान प्रमाण
का एक भेद (अणु) । 'विदेह पुं [विदेह]
महाविदेह वर्ष का पूर्वीय हिस्सा (ठा २, ३,
इक) । 'समास पुन [समास] एक से
ज्यादा पूर्व-शास्त्रों का ज्ञान (कम्म १, ७) ।
'सुय न [श्रुत] पूर्व का ज्ञान (राज) ।
'सूरि पुं [सूरि] पूर्वाचार्य, प्राचीन आचार्य
(जीव १) । 'हर देखो 'धर (पउम ११८,

१२१) । 'णुपुव्वी स्त्री [णुपूर्वी] कम्म,
परिपाटी (भग, विपा १, १, श्रीप, महा) ।
'णह देखो 'ण्ह (हे १, ६७, पड्) ।
'फग्गुणी देखो 'फग्गुणी (सम ७, इक) ।
'भद्वया देखो 'भद्वया (सम ७) ।
'साढा स्त्री [पाढा] नक्षत्र-विशेष (सम
६) ।

पुव्वंग पुंन [पूर्वाङ्ग] १ समय-परिमाण-
विशेष, चौरासी लाख वर्ष (ठा २, ४, इक) ।
२ पक्ष के पहले दिन का नाम, प्रतिपत् (सुख
१०, १४) ।

पुव्वंग वि [दे] श्रुण्डित (पड्) ।

पुव्वी स्त्री [पूर्वा] पूर्व दिशा (कुमा) ।

पुव्वी वि [दे] पीन, मांसल, पुष्ट (दे १,
५२) ।

पुव्वामेव अ [पूर्वमेव] पहले ही (कल) ।

पुव्ववईणय न [पूर्वावकीर्णक] नगर-विशेष
(इक) ।

पुव्वि वि [पूर्विन्] पूर्व-शास्त्र का जानकार
(विपा १, १, राज) ।

पुव्वि, क्वि वि [पूर्वम्] पहिले, पूर्व में
पुव्वि } (सण, उवा, सुर १, १६४; ४,
१११; श्रीप) । 'संयव पुं [संस्तव] पूर्व
में की जाती स्तुति, जैन मुनि की मिला का
एक दोष, मिला-प्राप्ति के पहले दायक की
स्तुति करना (ठा ३, ४) ।

पुव्विम पुं स्त्री [पूर्वत्व] पहिलापन, प्रथमता
(पड्) ।

पुव्वि वि [पूर्व, पूर्वीय] पहले का, पूर्व
का, 'पुव्विस्समं करणं' (चैदय ८८६),
'पुव्विस्सए किचिवि दुट्ठकम्मे' (निसा ४, सुपा
३४६, सण) ।

पुव्वुत्त वि [पूर्वोक्त] पहले कहा हुआ, पूर्व
में उक्त (सुर २, २४८) ।

पुव्वुत्तरा स्त्री [पूर्वोत्तरा] ईशान कोण
(राज) ।

पुस सक [प्र + उच्छृ, मृज्] साफ
करना, शुद्ध करना, पोंछना । पुसइ (प्राकृ
६६, हे ४, १०५, गा ४३३) । कवक ।
पुसिज्जंत (गा २०६) ।

पुस देखो पुसस (प्राकृ २६, पाप्र) ।

पीठ न [दे] १ ईस पेरेने का यन्त्र (दे ६, ५१)। २ समूह, ग्रुप, 'उद्विग्नं वरुणईदपीठं, पण्डा दिसो दिसो (१सि) कण्डिया' (स २३३)। ३ पीठ, शरीर के पीछे का भाग, 'हृत्पिपीठसमाख्यो' (त्रि ६६)।

पीठग न [पीठक] देखो पीठ = पीठ पीठय (कस, गच्छ १, १०, दस ७, २८)। पीठरखड न [पीठरखण्ड] नर्मदा-तीर पर स्थित एक प्राचीन जैन तीर्थ (पञ्च ७७, ६४)।

पीठाणिय न [पीठानीक] अश्व-सेना (ठा ५, १—पत्र ३०२)।

पीठिया बी [पीठिका] आसन-विशेष, मन्त्र, 'आसदो पीठिया' (पात्र)। देखो पेठिया।

पीठी बी [दे पीठिका] काष्ठ-विशेष, घर का एक आधार-काष्ठ, गुजराती में 'पीठिरे', 'तत्तो नियत्तिऊणं सत्तट्ट पयाई जाव पहरेइ। ता उवरिपीठिलखे खण्णे खडक्किय तत्य' (धर्मवि ५६)।

पीण सक [पीनय्] पृष्ट करना। पीणति (राय १०१)।

पीण सक [पीणय्] खुश करना। कृ देखो पीणणिज्ज।

पीण वि [दे] चतुरस्र, चतुष्कोण (दे ६, ५१)।

पीण वि [पीन] पृष्ट, मासल, उपचित (हे २, १५४, पात्र, कुमा)।

पीणण न [पीणन] खुश करना (धर्मवि १४८)।

पीणणिज्ज वि [पीणनीय] प्रीति-जनक (श्रौप, कप्प; पण १७)।

पीणाइय वि [दे. पैनायिक] गर्व से निर्वृत्त, गर्व से किया हुआ, 'पीणाइयविरसरडियसइणं फोडयते व अवरत्तल' (णाय १, १—पत्र ६३)।

पीणाया बी [दे पीनाया] गर्व, अहंकार (णाय १, १)।

पीणिअ वि [पीणित] १ तोपित (सण)। २ उपचित, परिबृद्ध (दस ७, २३)। ३ पुं ज्योतिष-प्रसिद्ध योग-विशेष, जो पहले सूर्य या चन्द्र का किसी ग्रह या नक्षत्र के साथ होकर बाद में दूसरे सूर्य आदिके साथ उपचय को प्राप्त हुआ हो वह योग (सुज्ज १२)।

पीणिम पुंजी [पीनता] पुष्टता, मासलता (हे २, १५४)।

पीयमाण देखो पा = पा।

पीयमाण देखो पी = पी।

पीरिपीरिया बी [दे] वाद्य विशेष (राय ४५)।

पील सक [पीडय्] १ पीलना, पेरना, दवाना। २ पीछा करना, हैरान करना। पीलइ, पीलेइ (धात्वा १४५, पि २४०)। कवक, पीलिज्जत (आ ६)।

पीलण न [पीलन] दवाव, पीलन, पेरना, 'माणंसिणोण माणो पीलणभीअ ध्व हिअआहि' (काप्र १६६), 'जंतपीलणकम्म' (उवा)।

पीला देखो पीछा (उप ४३६, सुपा ३५८)।

पीलावय वि [पीडक] १ पेरनेवाला। २ पुं. तेली, यत्र से तेल निकालनेवाला (वज्जा ११०)।

पीलिअ वि [पीडित] पीला या पेटा हुआ (श्रौप, ठा ५, ३, उव)।

पीलिम वि [पीडावत्] दाववाला, दावने से बना हुआ (वज्ज आदि की आकृति) (दसनि २, १७)।

पीलु पुं [पीलु] १ वृक्ष-विशेष, पीलु का पेड़ (पण १, वज्जा ४६)। २ हाथी (पात्र, स ७३५)। ३ न. दूध; 'एगट्टं बहुनामं दुद्ध पम्मो पीलु खीरं च' (पिठ १३१)।

पीलुअ पुं [दे. पीलुक] शावक, बच्चा, 'तडसठिअणीदेक्कतपीलुआरक्खणेक्कदिएणमणा' (गा १०२)।

पीलुट्ट वि [दे. प्लुष्ट] देखो पिलुट्ट (दे ६, ५१)।

पीवर वि [पीवर] उपचित, पृष्ट (णाय १, १, पात्र, सुपा २६१)। 'गव्भा बी [गर्भा] जो निकट भविष्य में ही प्रसव करनेवाली हो वह बी (श्रोधभा ८३)।

पीवल देखो पीअ = पीत (हे १, २१३, २, १७३, कुमा)।

पीस सक [पिष्] पीसना। पीसइ (पि ७६)। वक. पीसंत (पिठ ५७४, णाय १, ७)। सक. पीसिऊण (कुप्र ४५)।

पीसण न [पेषण] १ पीसना, दलना (पण १, १; उप पृ १४०, खण १८)। २ वि. पीसनेवाला (सुप्र १, २, १; १२)।

पीसय वि [पेषक] पीसनेवाला (सुपा ६३)।

पीह सक [स्पृह्, प्र + ईह्] अभिलाषा करना, चाहना। पीहित, पीहेज्जा (श्रौप, ठा ३, ३—पत्र १४४)।

पीहग पुं [पीठक] नवजात शिशु को पीलाइ जाती एक वस्तु (उप ३११)।

पुं बी [पुर] शरीर (विसे २०६५)।

पुअ न [प्लुत] १ तिर्यग् गति। २ झोंपना, झम्प-गति, 'जुज्जामो पू (? पु) यघाएहि' (विसे १४३६ टी)। 'जुद्ध न [युद्ध] अवम युद्ध का एक प्रकार (विसे १४७७)।

पुअंड पुं [दे] तच्छा, युवा (दे ६, ५३, पात्र)।

पुआइ वि. [दे] १ तरुण, युवा (दे ६, ८०)। २ उन्मत्त (दे ६, ८०, षड्)। ३ पु पिशाच (दे ६, ८०, पात्र, षड्)।

पुआइणी बी [दे] १ पिशाच-गृहीत बी, भूताविष्ट महिला। २ उन्मत्त बी। ३ कुलटा, व्यभिचारिणी (दे ६, ५४)।

पुआव सक [प्लवय्] ले जाना। सक पुयावइत्ता (ठा ३, २)।

पुं पुं [पुंस्] पुरुष, मर्द (पि ४१२, धम्म १२ टी)। देखो पुंगव, पुंनाग, पुवउ आदि।

पुख पुं [पुद्ध] १ बाण का अग्र भाग, 'तस्स य सरस्स पुखं विद्धइ अन्नेण तिक्खवाणेण' (धर्मवि ६७, उप पृ ३६५)। २ न. देव-विमान-विशेष (सम २२)।

पुंखणग न [दे प्रोङ्खणक] चुमाना, विवाह की एक रीति, गुजराती में 'पोखणु' (सुपा ६५)।

पुखिअ वि [पुद्धित] पुख-युक्त किया हुआ, 'धणुहे तिक्खो सरो पुखिओ' (कप्प)।

पुंगल पुं [दे] श्रेष्ठ, उत्तम (भवि)।

पुगव वि [पुङ्गव] श्रेष्ठ, उत्तम (सुपा ५, ८०, शु ४१, गठ)।

पुछ सक [प्र + उच्छ्] पोछना, सफा करना। पुछइ (प्राक ६७, हे ४, १०५)। क. पुंछणीअ (पि १८२)।

पूइकरणी' (उत्त १, ४) । ८ वृक्ष-विशेष, एकास्थिक वृक्ष की एक जाति, 'पूई य निव-करण' (परण १—पत्र ३१) । ९ 'कम्म पुन [कम्मन्] मुनि-भिक्षा का एक दोष, पवित्र वस्तु में अपवित्र वस्तु को मिलाकर दी जाती भिक्षा का ग्रहण (ठा ३, ४ टी, औप, पचा १३, ५) । १० 'म वि [मन्] १ दुर्गन्धी । २ अपवित्र (तदु ३८) ।

पूइ वि [पूति] कुपित, सडा हुआ (आचा २, १, ८, ४) । १ 'पिन्नाग पुन [पिण्याक] सर्प-खल, सरसों की खली (दस ५, २, २२) ।

पूइअ वि [पूयित] ऊपर देखो (राय १८) । पूइआलुग न [दे पूत्यालुक] जल में होने-वाली वनस्पति-विशेष (आचा २, १, ८—सूत्र ४७) ।

पूइज्जत देखो पूअ = पूजय् ।

पूइम वि [पूज्य] पूजा योग्य, सम्माननीय, 'जया य पूइमो होइ पच्छा होइ अपूइमो' (दस १, ४) ।

पूइय वि [पूजित] अर्चित, सेवित (औप, उव) ।

पूइय वि [पूतिक] १ अपवित्र, अशुद्ध, दूषित (परह २, ५, उप पृ २१०) । २ दुर्गन्धी, दुष्ट गन्धवाला (राया १, ८, तदु ४१) । ३ पूति नामक भिक्षा-दोष से युक्त (पिंड २६८) ।

पूइय देखो पोइय = (दे), 'बलो गमो पूइया-वण (सुख २, २६, उप) ।

पूअअव्व देखो पूअ = पूजय् ।

पूअरिअ न [दे] कार्य, काम, काज, प्रयोजन (दे ६, ५७) ।

पूग पु [पूग] १ समूह, सघात (मोह २८) । २ देखो पूअ = पूग (स ७०, ७१) ।

पूगी छी [पूगी] सुपारी का पेड़ । १ 'फल न [फल] सुपारी, कसैली (रयण ५५) ।

पूज देखो पूअ = पूजय् । कर्म, पूजए (उव) । वक्र. पूजयंत (विसे २८८८) । कृ. पूज्ज, पूज (पउम ११, ६७, सुपा १८०, सुर १, १७, उवर १६६, उव, उप ५६८) ।

पूजग देखो पूअय (पचा ४, ४४) ।

पूजण देखो पूअण (पचा ६, ३८) ।

पूजा देखो पूआ = पूजा (उप १०१६) ।

पूजिय देखो पूइय = पूजित (औप) ।

पूण पु [दे] हस्ती, हाथी (दे ६, ५६) ।

पूणिआ } छी [दे] पूणी, पूनी, रूई की
पूणी } पहल (दे ६, ७८, ६, ५६) ।

पूप देखो पूअल (पिंड ५५७) ।

पूयइ पुं [पूपकिन्] हलवाई (एदि १६४) ।

पूयंत देखो पूअ = पूजय् ।

पूयली छी [दे] रोटी (आचा २, १ ८, ६) ।

पूयावणा छी [पूजना] पूजा कराना (संघोष १५) ।

पूर सक [पूरय्] पूति करना, भरना । पूरइ, पूरए (हे ४, १६६, औप, भग, महा, पि ४६२) । वक्र. पूरंत, पूरयंत (कुमा, कप्प, औप) । कवक पुज्जंत, पुज्जमाण, पूरिज्जत, पूरत, पूरमाण (उप पृ १५४, सुपा ६८, उप १३६ टी, भवि, गा ११६, से ११, ६३, ६, ६७) । संक पूरित्ता (भग), पूरि (अप), (पिग) । हेक पूरिइत्तए (पि ५७८) । क पूरिअव्व (से ११, ४४) ।

पूर पुं [पूर] १ जल समूह, जल-प्रवाह, जल-धारा (कुमा) । २ खाद्य-विशेष, 'कप्परपूरसहिण तबोले' (सुर २, ६०) । ३ वि. पूरा, पूरां, 'पूराणि य से समं पणइमणोरहेहि अज्जेव सत्त राइदियाइं, भविस्सइ य सुए सामिणी विज्जासिद्धी' (स ३६३) ।

पूरइत्तअ (शौ) वि [पूरयित्] पूरा करनेवाला (मा ४३) ।

पूरतिया छी [पूरयन्तिका] राजा की एक परिपत्—परिवार (राज) ।

पूरग वि [पूरक] पूति करनेवाला (कप्प, औप, रयण ७७) ।

पूरण न [पूरण] शूण, सूप, सिरकी का बना एक पात्र जिससे अन्न पछोरा जाता है (दे ६, ५६) ।

पूरण न [पूरण] १ पूति, 'समस्सापूरण' (सिरि ८६८) । २ पालन (आच ५) । ३ पु यदुवश के राजा अन्धकवृष्णि का एक पुत्र (अत ३) । ४ एक गृह-पति का नाम (उवा) । ५ वि. पूति करनेवाला (राज) ।

पूरमाण देखो पूर = पूरय् ।

पूरय देखो पूरग, 'वतीस किर कवला ग्राहारे कुच्छिपूरओ भणिमो' (पिंड ६४२) ।

पूरयत } देखो पूर = पूरय् ।
पूरिअव्व }

पूरिगा छी [पूरिका] मोटा कपड़ा (राज) ।

पूरिम वि [पूरिम] पूरने से—भरने से होनेवाला (राया १, १३, परह २, ५, औप) ।

पूरिमा छी [पूरिमा] गान्धार ग्राम की एक मूर्च्छता (ठा ७—पत्र ३६३) ।

पूरिय वि [पूरित] भरा हुआ (गठड, सण, भवि) ।

पूरी छी [पूरी] तन्तुवाय का एक उपकरण (दे ६ ५६) ।

पूरंत देखो पूर = पूरय् ।

पूरोटी छी [दे] अवकर, कतवार, कूडा (दे ६, ५७) ।

पूल पुं [पूल] पूला, घास की अँटिया (उप ३२० टी, कुप्र २१५) ।

पूव } देखो पूअल (कस, दे ६, ११७,
पूवल } निव १) ।

पूवलिया } देखो पूअलिया (वृह १, निव
पूविगा } १६) ।

पूस अक [पुप्] पुष्ट होना । पूसइ (हे ४, २३६, प्राक ६८) ।

पूस देखो पुस्स = पूष्य (राया १, ८, हे १, ४३) । १ 'गिरि पुं [गिरि] एक जैन मुनि (कप्प) । १ 'फली छी [फली] बल्ली-विशेष (परण १) । २ 'माण, 'माणग पुं [माण, 'मानव] मागध, मङ्गल-पाठक, '—वद्धमाण-पूसमाणघटियगरोहि' (कप्प, औप) । ३ 'माणग पुं [मानक] ज्योतिर्देवता-विशेष, ग्रहाधि-ष्टायक देव-विशेष (ठा २, ३) । ४ 'माणय देखो 'माण (औप) । ५ 'मित्त पुं [मित्त] १ स्वनाम-प्रसिद्ध जैन मुनि-त्रय—१ श्व-पुष्यमित्र, २ वज्रपुष्यमित्र, ३ दुर्बलिका-पुष्यमित्र, जो आर्य रक्षितसूरि के शिष्य थे (विसे २५१०, २२८६) । २ एक राजा (विचार ४६३) । ३ 'मित्तिय न [मित्रीय] एक जैन मुनि-कुल (कप्प) ।

पेच्छय वि [दे] जो देखे उसी को चाहनेवाला, दृष्ट-मात्र का अभिलाषी (दे ६, ५८) ।

पेच्छा स्त्री [प्रेक्षा] प्रेक्षणक, तमाशा, खेल, नाटक, 'पेच्छाछणो सिएणविलोअणाण जहा सुचोक्खोवि न किंचिदेव' (उपपं ३७, सुर १३, ३७, श्रौप) । देखो पेक्खा । 'घर न [गृह] देखो हर (ठा ४, २) । 'मंडव पुं [मण्डप] नाट्य-गृह, खेल आदि में प्रेक्षकों के बैठने का स्थान (पव २६६) । 'हर न [गृह] नाटक-गृह, खेल-तमाशा का स्थान (पञ्चम ८०, ५) ।

पेच्छि वि [प्रेक्षिन्] प्रेक्षक, द्रष्टा (वेद्य १०६, गा २१४) ।

पेच्छिअ वि [प्रेक्षित] १ निरीक्षित, अवलोकित (कुमा) । २ न. निरीक्षण, अवलोकन (सुर १२, १८३, गा २२५) ।

पेच्छिर वि [प्रेक्षित्] निरीक्षक, द्रष्टा (गा १७४, ३७१) ।

पेज देखो पा = पा ।

पेज पुन [प्रेमन्] प्रेम अनुराग (सूत्र २, ५, २२, आचा, भग, ठा १, वेद्य ६३४) ।

'दसि वि [दर्शिन्] अनुरागी (आचा) ।

पेज वि [प्रेयस्] अत्यन्त प्रिय (श्रौप) ।

पेज वि [प्रेय्य] पूज्य, पूजनीय (राज) ।

पेज देखो पेर = प्र + ईर्य् ।

पेजल न [दे] प्रमाण (दे ६, ५७) ।

पेजलिअ वि [दे] सघटित (पड्) ।

पेज्जा देखो पेआ (श्लो १४६, हे १, २४८) ।

पेज्जाल वि [दे] विपुल, विशाल (दे ६, ७) ।

पेट न [दे] पेट, उदर (पिंग, पव १) ।

पेट्ट

पेट्ट देखो पिट्ट = पिट्ट (सक्ति ३, प्राक ५, प्राप्र) ।

पेड देखो पेडय, 'नडपेडनिहा' (सबोध १८) ।

पेडइअ पु [दे] धान्य आदि बेचनेवाला बणिक् (दे ६, ५६) ।

पेडक न [पेटक] समूह, ग्रथ, 'नडपेडक-पेडय' सनिहा जाण' (सबोध १५, सुपा ५४६, सिरि १६३, महा) ।

पेडा स्त्री [पेटा] १ मञ्जूषा, पेटी (दे ५, ३८, महा) । २ पेटाकार चतुष्कोण गृह-पंक्ति में भिक्षार्थ-भ्रमण (उत्त ३०, १६) ।

पेडाल पुं [दे. पेटाल] बड़ी मञ्जूषा, बड़ी पेटी (मुद्रा ११०) ।

पेडावइ पुं [पेटकपति] ग्रथ का नायक (सुपा ५४६) ।

पेडिआ स्त्री [पेटिका] मञ्जूषा (मुद्रा २४०) ।

पेड्ढ स्त्री पु [दे] महिष, भैंसा (दे ६, ८०) ।

पेड्ढा स्त्री [दे] १ भित्ति, भीत । २ द्वार, दरवाजा । ३ महिषी, भैंस (दे ६, ८०) ।

पेड्ढ देखो पीठ = पीठ (हे १, १०६, कुमा), 'काळण पेडं टविया तत्थ एसा पडिमा' (कुप्र ११७) ।

पेडाल वि [दे] १ विपुल (दे ६, ७, गडड) ।

२ चतुर्ल, गोलाकार (दे ६, ७, गडड, पाप्र) ।

पेडाल वि [पीठवत्] पीठ-युक्त (गडड) ।

पेडाल पु [पेडाल] १ भारत वर्ष का आठवाँ भावी जिनदेव, 'पेडालं अठ्ठमयं आणंदजिय नमसामि' (पव ४६) । २ ग्यारह रुद्र पुरुषों में दसवाँ (विचार ४७३) । ३ एक ग्राम,

जहाँ भगवान् महावीर का विचरण हुआ था, 'पेडालग्गाममागमो भयव' (भावम) । ४ न.

एक उद्यान, 'तप्पो सामी दड्ढुमि गमो, तीसे बाहि पेडाल नाम उजाण' (भाव १) । 'पुत्त पुं [पुत्र] १ भारतवर्ष का आठवाँ भावी

जिनदेव, 'उदए पेडालपुत्ते य' (सम १५३) । २ भगवान् पार्श्वनाथ के संतान में उत्पन्न एक

जैन मुनि; 'अहे एं उदए पेडालपुत्ते भगवं पासावक्खिजे नियंते मेयज्जे गोत्तेण' (सूत्र २,

७, ५, ८, ६) । ३ भगवान् महावीर के पास दीक्षा लेकर अनुत्तर विमान में उत्पन्न एक

जैन मुनि (अनु २) ।

पेडिया देखो पीडिआ, 'चत्तारि मणिपीडि-याओ' (ठा ४, २—पत्र २३०) । २ ग्रन्थ की भूमिका, प्रस्तावना (वसु) ।

पेडी देखो पीडी (जीव ३) ।

पेणी स्त्री [प्रेणी] हरिणी का एक भेद (पराह १, ४—पत्र ६८) ।

पेदइ वि [दे] लुप्त-दण्डक, जुए में जो हार गया हो वह, जिसका दाव चला गया हो वह (मृच्छ ४६) ।

पेम पुन [प्रेमन्] प्रेम, अनुराग, प्रीति, स्नेह (उवा, श्रौप, सं ५, सुपा २०४, खण ४२) ।

पेमालुअ वि [प्रेमिन्] प्रेमी, अनुरागी (उप ६८६ टी) ।

पेम्म देखो पेम (हे २, ६८, ३, २५, कुमा, गा १२६, प्रासू ११६) ।

पेम्मा स्त्री [प्रेमा] छन्द-विरोध (पिंग) ।

पेया स्त्री [पेया] वाद्य-विशेष, बड़ी काहना (राय ४५) ।

पेर सक [प्र + ईर्य्] १ पठाना, भेजना, प्रेषण करना । २ बहाना लगाना, आवाज करना । ३ आदेश करना । ४ किसी कार्य में जोड़ना—लगाना । ५ पूर्वपक्ष करना, प्ररत करना, सिद्धान्त का विरोध करना । ६ गिराना । पेरइ (वर्मसं ५६०; मवि) । बड्ढ.

पेरंत (कुप्र ७०, पिंग) । क्वकू. पेरिअंत (सुपा २५१, महा) । कू. पेज (राज) ।

पेरंत देखो पजंत (हे १, ५८, ६३, प्राप्र, श्रौप, गडड) । 'चक्रवाल न [चक्रवाल] बाह्य परिभि, बाहुर का घेराव (पराह १, ३) ।

'बच्च न [बर्चस्] मण्डप, सुखादि-निमित्त गृह (राज) ।

पेरग वि [प्रेरक] प्रेरणा करनेवाला, पूर्वपक्षी (धर्मसं ५८७) ।

पेरण न [दे] १ ऊर्ध्व स्थान (दे ६, ५६) । २ खेल, तमाशा (स ७२३, ७२५) ।

पेरण न [प्रेरण] प्रेरणा (कुप्र ७०) ।

पेरणा स्त्री [प्रेरणा] ऊपर देखो (सम्मत १५७) ।

पेरिअ वि [प्रेरित] जिसको प्रेरणा की गई हो वह (दे ८, १२; मवि) ।

पेरिअ न [दे] साहाय्य, सहायता, मदद (दे ६, ५८) ।

पेरिअत देखो पेर = प्र + ईर्य् ।

पेरुलि वि [दे] पिरडीकृत, पिरडाकार किया (दे ६, ५४) ।

पेलय वि [पेलय] १ कोमल, सुकुमार, मुड (पाप्र, सं २, २७, अमि २६, श्रौप) । २ पतला, कृश । ३ सूक्ष्म, लघु (लाया १, १—पत्र २५, हे १, २३८) ।

पेलु स्त्री [पेलु] पूणी, रुई की पहल; 'कंतामि ताव पेलु' (पिडमा ३५) । 'करण म [करण] पूणी—पूनी बनाने का उपकरण, शलाका आदि (विसे ३३०५) ।

३२) । °भव पुं [°भव] फिर से उत्पत्ति, फिर से जन्म-ग्रहण (चैड्य ३५७; श्रौप) । °भू स्त्री [°भू] फिर से विवाहित स्त्री, जिसका पुनर्लंगन हुआ हो वह महिला, 'अस्थि पुण्वभूकण्यो त्ति विवाहिया पच्छन्' (कुप्र २०८; २०९) । °रवि, °रावि अ [°अपि] फिर भी (उवा; उक्त १०, १६, १९) । °रावित्ति स्त्री [°आवृत्ति] पुन आवृत्तन (पडि) । °रुत्त वि [°उत्त] फिर से कहा हुआ । २ न पुनश्च (चैड्य ५३८) । °वि अ [°अपि] फिर भी (संक्षि १९, प्राकृ ८७) । °वसु पुं [°वसु] १ नक्षत्र-विशेष (सम १०, ६९) । २ आठवें वासुदेव के पूर्व जन्म का नाम (सम १५३, पउम २०, १७२) ।

पुण (अप) देखो पुण्ण = पुण्य । °मंत वि [°मन्] पुण्यशाली (पिंग) ।

पुणअ सक [दृश्] देखना । पुणअइ (धात्वा १४५) ।

पुणइ पुं [दे] शपच, चारडाल (दे ६, ३८) ।

पुणण वि [पवन] पवित्र करनेवाला । स्त्री °णी (कुमा) ।

पुणरुत्त } अ कृत-करण, बारंबार, फिर-फिर-
पुणरुत्त } 'अइ सुप्पइ पसुलि णीसहेहि अगेहि
पुणरुत्त' (हे १, १७९, कुमा), 'ए वि तह
छेअरआईवि हरंति पुणरुत्तराअरसिआइ'
(गा २७४) ।

पुणा अ. देखो पुण = पुनर् (पि ३४३,
पुणाइ हे १, ६५, कुमा; पउम ६, ९७,
पुणाइ उवा) ।

पुणु (अप) देखो पुण = पुनर् (कुमा; पि ३४२) ।

पुणो देखो पुण = पुनर् (श्रौप; कुमा; प्राकृ ८७) ।

पुणोत्त देखो पुण-रुत्त, पुणरुत्त (प्राकृ ३०) ।

पुणोह सक [प्र + नोदय्] १ प्रेरणा करना । २ अत्यन्त दूर करना । पुणोहयामो (उत्त १२, ४०) ।

पुण्ण पुन [पुण्य] १ शुभ कर्म, सुकृत (श्रौप; महा; प्रासू ७५, पाप्र) । २ दो उपवास, बेला, 'मइ पुणं (? एणं) गुही (? हिय

छट्ठमत्तस्स एणट्ठा' (संबोध ५८) । ३ वि पवित्र, 'धारुपियाजलपुण्णं' (कुमा) । कलसा स्त्री [°कलशा] लाट देश के एक गाँव का नाम (राज) । °घण पुं [°घन] विद्याधरों का एक स्वनाम ख्यात राजा (पउम ५, ६५) । °मत, °मत्त वि [°वन्] पुण्यवाला, भाग्यवान् (हे २, १५९, चड) । देखो पुन्न = पुण्य ।

पुण्ण वि [पूर्ण] १ सपूर्ण भरपूर, पूरा (श्रौप; भग, उवा) । २ पु. द्वीपकुमार देवो का दाक्षिणात्य इन्द्र (इक) । ३ इसुवर समुद्र का अधिष्ठायाक देव (राज) । ४ तिथि-विशेष, पक्ष की पाँचवीं, दसवीं और पनरहवीं तिथि (सुज १०, १५) । ५ पुंन. शिखर विशेष (इक) । °कलस पुं [°कलश] सपूर्ण घट (जं १) । °घोस पुं [°घोष] ऐरवत वर्ष का एक भावी जिन-देव (सम १५४) । °चंद पुं [°चन्द्र] १ सपूर्ण चन्द्रमा । २ विद्याधर वंश के एक राजा का नाम (पउम ५, ४४) । °प्पभ पुं [°प्रभ] इसुवर द्वीप का अधिपति देव (राज) । °भइ पुं [°भद्र] १ स्वनाम-ख्यात एक गृह-पति, जिसने भगवान् महावीर के पास दीक्षा लेकर मुक्ति पाई थी (अत) । २ यक्ष-निकाय का एक इन्द्र (४, १) । ३ पुन. अनेक कूट-शिखरों का नाम (इक) । ४ यक्ष का चैत्य-विशेष (श्रौप, विपा १, १, उवा) । °मासी स्त्री [°मासी] पूर्णिमा तिथि (दे) । °सेण पुं [°सेन] राजा श्रेणिक का पुत्र, जिसने भगवान् महावीर के पास दीक्षा ली थी (अनु) । देखो पुन्न = पूर्ण ।

पुण्णमासिणी स्त्री [पौर्णमासी] तिथि-विशेष, पूर्णिमा (श्रौप; भग) ।

पुण्णवत्त न [दे] आनन्द से हृत वस्त्र (दे ६, ५३, पाप्र) ।

पुण्णा स्त्री [पूर्णा] १ तिथि-विशेष, पक्ष की ५, १० और १५ वी तिथि (संबोध ५४, सुज १०, १५) । २ पूर्णमास और मणिमास इन्द्र की एक महादेवी—अम-महिषी (इक, राया २), 'पुण्णमहस्स ए जम्बिदस्स जम्बुखरक्षो चत्तारि अगमहिसीयो परएणत्ताओ तं जहा—पुत्ता(? एण) बहुपुत्तिमा उत्तमा

तारणा, एवं माणिमहस्सवि' (ठा ४, १—पत्र २०४) ।

पुण्णाग } देखो पुन्नाग (पउम ४३, ३९, से
पुण्णाम } ६, ५९, हे १, १९०, पि २३१) ।

पुण्णाली स्त्री [दे] असती, कुलटा, पृथ्वी (दे ६, ५३, पड) ।

पुण्णाह पुन [पुण्यह] १ पुण्य दिन, शुभ दिवस (गा १६५, गउड) । २ वाद्य-विशेष, 'पुण्णाहत्तरेण' (स ४०१, ७३४) ।

पुण्णमसी स्त्री [पूर्णमासी] पूर्णिमा (संबोध ३६) ।

पुण्णिमा स्त्री [पूर्णिमा] तिथि-विशेष, पूर्ण-मासी (काप्र १९४) । °यद पुं [°चन्द्र] पूर्णिमा का चन्द्र (महा, हेका ४८) ।

पुण्णिमासिणी देखो पुण्णमासिणी (नम ६६, आ २९, सुज १०, ६) ।

पुत्त पुं [पुत्र] लडका (ठा १०, कुमा; सुपा ६९, ३३४, प्रासू २७, ७७, राया १, २) । °वई स्त्री [°वती] लडकावाली स्त्री (सुपा २८१) ।

पुत्तजीवय पु [पुत्रजीवक] वृक्ष-विशेष, पुत्रजीया, जियापोता का पेड़, 'पुत्तजीवअरिट्ठे' (परण १—पत्र ३१) । २ न जियापोता का बीज, 'पुत्तजीवयमालालकिण' (स ३३७) ।

पुत्तय पुं [पुत्रक] देखो पुत्त (महा) ।

पुत्तरे पुत्री [दे] योनि, उत्पत्ति-स्थान, 'पुत्तरे योनौ' (संक्षि ४७) ।

पुत्तलय पु [पुत्रक] पूतला (सिरि ८६१, ६२, ६४) ।

पुत्तलिया } स्त्री [पुत्रिका] शालमज्जिका, पूतली
पुत्तली } (पाप्र, कुम्मा ६, प्रवि १३, सुपा २६९, सिरि ८१५) ।

पुत्तह देखो पुत्त (प्राकृ ३५) ।

पुत्ताणुपुत्तिय वि [पौत्रानुपुत्रिक] पुत्र-पौत्रादि के योग्य, 'पुत्ताणुपुत्तियं वित्ति कप्पेति' (राया १, १—पत्र ३७) ।

पुत्तिआ स्त्री [पुत्रिका] १ पुत्री, लडकी (अभि १७८) । २ पूतली (दे ६, ९२, कुमा) ।

पुत्तिह देखो पुत्त (प्राकृ ३५) ।

पुत्ती स्त्री [पुत्री] लडकी (कप्पू) ।

पोअ पुं [दे] १ धव वृक्ष, बाय, घों का पेड़ ।
२ छोटा सोंप (दे ६, ८१) ।

पोअइआ स्त्री [दे] निद्राकारी लता, लता-
विशेष (दे ६, ६३, पात्र) ।

पोअड वि [दे] १ भय-रहित, निडर । २
पण्ड, नामर् (दे ६, ६१) ।

पोअत पुं [दे] शपथ, सौगन (दे ६, ६२) ।
पोअण न [प्रवयन, प्रोतन] पिरोना, गुम्फन,
गुंथना (भावम) ।

पोअणपुर न [पोतनपुर] नगर-विशेष (सुपा
५०६, भवि) ।

पोअणा स्त्री [प्रवयना, प्रोतना] पिरोना
(उप ३५६) ।

पोअय वि [पोतज] पोत से उत्पन्न होनेवाला
प्राणी—हस्ती आदि (ठा ३, १) ।

पोअय पु [पोतक] देखो पोअ = पोत (उवा,
श्रीप) ।

पोअलय पुं [दे] १ आश्विन मास का एक
उत्सव, जिसमें पत्नी के हाथ से लेकर पति
अपूप को खाता है । २ एक प्रकार का
अपूप—खाद्य-विशेष, पूआ । ३ बाल वसन्त
(दे ६, ८१) ।

पोआई स्त्री [पोताकी] १ शकुनि को उत्पन्न
करनेवाली विद्या-विशेष २ शकुनिका, पक्षि-
विशेष (विसे २४५३) ।

पोआउय वि [पोतायुज, पोतज] देखो
पोअय (पत्रम १०२, ६७) ।

पोआय पुं [दे] ग्राम-प्रधान, गाँव का मुखिया
(दे ६, ६०) ।

पोआल पुं [दे] वृषभ, बलीवर्द (दे ६, ६२) ।

पोआल [दे पोतक] वच्चा, शिशु, बालक
(शोध ४४७) ।

पोइय पु [दे] १ हलवाई, मिठाई बेचनेवाला ।
२ खद्योत (दे ६, ६३) । ३ निमग्न, डूबा
हुआ (शोध १३६) । ४ स्पन्दित (बृह १) ।

पोइअ वि [प्रोत] पिरोया हुआ (दे ७, ४४,
उप पृ १०६, पात्र) ।

पोइअल्य देखो पोइअ = प्रोत (शोध ५३६
टी) ।

पोइआ स्त्री [दे] निद्राकारी लता, बल्ली-
पोई } विशेष (दे ६, ६३, परण १—
पत्र ३४) ।

पोउआ स्त्री [दे] करीप—सूखा गोबर (गोडेंठा)
का अग्नि (दे ६, ६१) ।

पोंग पुं [दे] पाक, पकना (म १८०) ।

पोंगिल वि [दे] पका हुआ, परिपक्व, परि-
पाक-युक्त, कच्छी भापा में 'पोंगेल',
'अन्नेवि सद्महियलनिमीय-

गुण्णन्किणियपोगिला ।

मल्लिणजरकण्डोच्छ्रय-

विग्गहा कहवि हिंढति ॥'

(म १८०) ।

पोंड न [दे] फूल, पुष्प, 'एगं सालियपोड'
बद्धो आमेलगो होई' (उत्तनि ३) ।

पोंड देखो पुड । 'वद्धण न [वर्धन] नगर-
विशेष (महा) । 'वद्धणिया स्त्री [वर्धनिहा]
जैन मुनि-गण की एक शाखा (कप्प) ।

पोंड } पुं [दे] वृष का भविष्यति (दे ६,
पोंडय } ६०) । २ फन (परह १, ४—पत्र
७८) । ३ अविकसित अवस्थावाला कमल
(विसे १४२५) । ४ कपास का सूता, 'दव्वं
तु पोड्यादी भावे सुत्तमिह सूयगं नाए'
(सूअनि ३) ।

पोंडरिगिणी देखो पुडरिगिणी (ठा २, ३) ।
पोंडरिय देखो पुडरीअ = पुण्डरीक (स
४३६) ।

पोंडरी स्त्री [पौण्ड्री, पुण्डरीका] जम्बूद्वीप के
मेरु के उत्तर रुचक पर रहनेवाली एक
दिक्कुमारी देवी (ठा ८) ।

पोंडरीअ देखो पुंढरीअ = पुण्डरीक (श्रीप,
गाया १, ५, १६, सम ३३, देवेन्द्र ३१८,
सूअनि १४६) ।

पोंडरीअ } न [पौण्डरीक] १ गणित-
पोंडरीग } विशेष, रज्जु-गणित (सूअनि
१५४) । २ देखो पुडरीअ = पौण्डरीक (सूअ
२, १, १, सूअनि १४६, १५१) ।

पोक सक [व्या + कृ, पत् + कृ] पुका-
रना, आह्वान करना । पोकाइ (हे ४,
७६) ।

पोक वि [दे] आगे स्थूल और उन्नत तथा
बीच में निम्न (नासिका), 'पोकनासे' (उत्त
१२, ६) ।

पोकण पु [पोकण] १ अनार्य देश-विशेष ।
२ उस देश में वमनेवाली म्लेच्छ जाति (परह
१, १) ।

पोकण न [व्याहरण, पूत्तरण] १ पुकार,
आह्वान । २ वि, पुकारनेवाला (कुमा) ।

पोकर देखो पुकर : पोकरंति (महा) । वहु,
पोकरंत (सुपा ३८०) ।

पोकरिय वि [पूत्तर] १ पुकारा हुआ (सुर
६, १६४) । २ न पुकार (दंस ३) ।

पोकार देखो पुकार = पूत्कार (उप पृ १८५) ।

पोकिअ देखो पोकरिय (उप १०३१ टी) ।

पोक्खर न [पुक्कर] १ जल, पानी । २
पद्म, कमल । ३ पद्म-कोप । ४ एक तीर्थ,
अजमेर-नगर के पास का एक जलाशय—
तीर्थ । ५ हाथी की सूँठ का अग्र भाग । ६
वाय-भाण्ड । ७ आपण, दूकान । ८ अस्ति-
कोप, तलवार की म्यान । ९ मुख, मुँह ।
१० कुछ रोग की ओपवि । ११ द्वीप-विशेष ।
१२ युद्ध, लड़ाई । १३ शर, बाण । १४
आकाश, 'पोक्खर' (हे १, ११६, २, ४;
सस्ति ४) । १५ पु, नाग-विशेष । १६ रोग-
विशेष । १७ सारस पक्षी । १८ एक राजा
का नाम । १९ पर्वत विशेष । २० वरुण
पुत्र, 'पोक्खरो' (प्राप्र) । देखो पुक्खर ।

पोक्खर वि [पौक्कर] १ पुक्कर-सम्बन्धी ।
३ पद्माकार रचनावाला, 'पोक्खर पवहण'
(चार ७०) ।

पोक्खरिणी स्त्री [पुक्करिणी] १ जलाशय-
विशेष, वनंज वापी (गाया १, १—पत्र
६३) । २ पक्षिनी, कमलिनी, पद्म-मता,
'जलेण वा पोक्खरिणीपलास' (उत्त ३२,
६०) । ३ वापी (कुमा) । ४ पद्म-समूह । ५
पुक्कर-मूल (हे २, ४) । ६ चौकोना जला-
शय, पोखरी, वापी (परह १, १, हे २, ४) ।
पोक्खल देखो पुक्खल (परण १—पत्र ३५,
आचा २, १, ८, ११) ।

पोक्खलच्छिद्रलय } देखो पुक्खलच्छि-
पोक्खलच्छिलय } भय (परण १—पत्र
३५, राज) ।

पोक्खलि पुं [पुक्कलिन्] एक जैन उपा-
सक, जिसका दूसरा नाम शतक था (राज) ।

पोगगर पुं [पुद्गल] १ स्थादि-विशिष्ट
पोगगल } द्रव्य, मूर्त द्रव्य, रूपवाला पदार्थ
'पोगगल' (भग ८, १, ठा २, ४, ४, ४;

पुष्पिअ वि [पुष्पित] कुसुमित, संजात-
पुष्प (धर्मवि १४८; कुमा, राया १, ११;
सुपा ५८) ।

पुष्पिआ छो [दे] देखो पुष्पा (पात्र) ।
पुष्पिआ छो [पुष्पिता] एक जैन आगम-
ग्रन्थ (निर १, ३) ।

पुष्पिम पुंछी [पुष्पत्व] पुष्पपन (हे २,
१५४) ।

पुष्पी [दे] देखो पुष्पा (पद्) ।

पुष्फुआ छो [दे] करीप (गोयठा) का अग्नि,
'सृष्टज्ज हेमत्तम्म दुग्गमो पुष्फुआसुअवेण'
(गा ३२६) ।

पुष्फुत्तर न [पुष्पोत्तर] एक विमान (कप्प) ।
'वडिसग न [वितसक] एक देव-विमान
(सम ३८) ।

पुष्फुत्तरा } छो [पुष्पोत्तरा] शक्कर की
पुष्फोत्तरा } एक जाति (राया १, १७—
पत्र २२६; पराण १७—पत्र ५३३) ।

पुष्फोदय न [पुष्फोदक] पुष्प-रस से मिश्रित
जल (राया १, १—पत्र १६) ।

पुष्फोवय } वि [पुष्फोपग] पुष्प प्राप्त
पुष्फोवा } करनेवाला, फूलनेवाला (बुल)
(ठा ३, १—पत्र ११३) ।

पुम पुं [पुस्] १ पुरुष, नर, 'थीअपुमाणं
विसुज्झता' (पंच ५, ७२), 'पुमत्तमागम्म
कुमार दोवि' (उत्त १४, ३, ठा ८, औप) ।
२ पुरुष-वेद (कम्म ५, ६०) । 'आणमणी
छो [आज्ञापनी] पुरुष को आज्ञा देनेवाली
भाषा, भाषा-विशेष (पराण ११) । 'पन्नावणी
छो [प्रज्ञापनी] भाषा-विशेष, पुरुष के
लक्षणों का प्रतिपादन करनेवाली भाषा
(पराण ११—पत्र ३६४) । 'वयण न
[वचन] पुल्लिङ्ग शब्द का उच्चारण (पराण
११—पत्र ३७०) ।

पुम्म (अप) सक [दृश्] देखना । पुम्मद
(प्राक् ११६) ।

पुयली छो [दे] पुत-प्रदेश, कमर के नीचे
का भाग, 'पुयलि पप्फोहेमाणे' (मग १५—
पत्र ६७६) ।

पुयावइत्ता देखो पुआव ।

पुर (अप) देखो पूर = पूरय् । पूरह (पिंग) ।

पुर न [पुर] १ नगर, शहर (कुमा, कुप्र
४३८) । २ शरीर, देह (कुप्र ४३८) । 'चद्
पुं [चन्द्र] विद्याधर वंश का एक राजा
(पचम ५, ४४) । 'भेयण वि [भेदन]
नगर का भेदन करनेवाला । छो—'णी
(उत्त २०, १८) । 'वइ पुं [पति] नगर
का अधिपति (भवि) । 'वर न [वर]
श्रेष्ठ नगर, (उवा, पराह १, ४) । 'वरी छो
[वरा] श्रेष्ठ नगरी (राया १, ६, उवा,
सुर २, १५२) । 'वाल पुं [पाल] नगर-
रक्षक, राजा (भवि) ।

पुर देखो पुरं, 'पुरकम्मम्मि यपुच्छा' (वृह १) ।

पुरएअ } देखो पुरदेव (भवि) ।
पुरएव }

पुरओ अ [पुरतस्] १ अग्रत, आगे (सम
१५१, ठा ४, २, गा ३५०, कुमा, औप) ।
२ पहले, पूर्व में, 'पुरओ कयं जं तु तं
पुरेकम्म' (मोघ ४८६) ।

पुरं अ [पुरस्] १ पहले, पूर्व में । २
समस्त, 'तए ए से दरिद्रे समुक्किडे समाणे
पच्छा पुर च ए विउलभोगसमितिसमन्नागते
यावि विहरिज्जा' (ठा २, १—पत्र ११७) ।
३ अग्रे, आगे । 'गम वि [गम] अग्र-
गामी, पुरोवर्ती (सूत्र १, ३, ३, ६) । देखो
पुरे, पुरो ।

पुरजय पुं [पुरजय] एक विद्याधर राजा ।
'पुर न [पुर] एक विद्याधर-नगर (इक) ।

पुरदर पुं [पुरन्दर] १ इन्द्र, देवराज । २
गन्ध-द्रव्य-विशेष (हे १, १७७) । ३ वृक्ष-
विशेष, चव्य जा पेड़; 'पुरदरकुसुमदाम-
सुविणेण सूइया जाया' (उप ६८६ टी) ।
४ एक राजपि (पचम २१, ८०) । ५ मन्दर-
कुब्ज नगर का एक विद्याधर राजा (पचम
६, १७०) । 'जसा छो [यशस्] एक
राज-कन्या का नाम (उप ६७३) । 'दिसि
छो [दिश्] पूर्व दिशा (उप १४२ टी) ।

पुरंधि } छो [पुरन्धी] १ बहु कुटुम्बवाली
पुरधी } छो । २ पति और पुत्रवाली छो
(कुमा, कुप्र १०७, सुपा २६, पात्र) । ३
अनेक काल पहले व्याही हुई छो (कप्प) ।

पुरकह देखो पुरकखड (सूत्र २, २, १८) ।

पुरकार पुं [पुरस्कार] १ आगे करना, अग्रत.
स्थापन (आचा) । २ सम्मान, आदर
(सम ४०) ।

पुरकखड वि [पुरस्कृत] १ आगे किया हुआ
(आ ६) । २ पुरोवर्ती, आगामी, 'गहण-
समयपुरकखडे पोगगले उदीरेंति' (मग १, १) ।

पुरच्छा देखो पुरत्था (राज) ।

पुरच्छिम देखो पुरत्थिम (ठा २, ३—पत्र
६७, सुज २०—पत्र २८७, पि ५६५) ।

'दाहिणा छो [दक्षिणा] पूर्व-दक्षिण
दिशा, अग्निकोण (ठा १०—पत्र ४७८) ।

पुरच्छिमा देखो पुरत्थिमा (ठा १०—पत्र
४७८) ।

पुरच्छिमिल देखो पुरत्थिमिल (सम ६६) ।

पुरत्थ वि [पुर.स्थ] आगे रहा हुआ, अग्र-
वर्ती, पुरस्सर, 'पुरत्थ होइ सहायं रणे समं
तेण' (उप १०३१ टी), 'जेण गहिण्णएणत्था
इत्थ परत्थावि हू पुरत्था' (आ १४) ।

पुरत्थ } अ [पुरस्तात्] १ पहले, काल
पुरत्थओ } या देश की अपेक्षा से आगे, 'तपुर-
पुरत्था 'पुरत्थमाए' (सुपा ३६०), 'मोसस्त
पच्छा य पुरत्थओ य' (उत्त ३२, ३१),
'आदीणियं दुक्कडियं पुरत्था' (सूत्र १, ५,
१, २) । २ पूर्वदिशा, 'पुरत्थामिमुहे' (कप्प,
औप, मग, राया १, १—पत्र १६) ।

पुरत्थिम वि [पौरस्त्य, पूर्व] १ पूर्व की
तरफ का, 'उत्तर-पुरत्थिमे दिसिमाए' (कप्प;
औप) । २ न. पूर्व दिशा, 'पुरतो पुरत्थिमेण'
(राया १, १—पत्र ५४, उवा) ।

पुरत्थिमा छो [पूर्वा] पूर्व दिशा, 'पुरत्थिमाओ
वा दिसाओ आगमो' (आचा, मुच्छ १५८ टि) ।

पुरत्थिमिल वि [पौरस्त्य] पूर्व दिशा का,
पूर्व दिशा में स्थित (विपा १, ७, पि ५६५) ।

पुरदेव पु [पुरादेव] भगवान् आदिनाथ,
'पुरदेवजिणस्स निव्वाण' (पचम ४, ८७) ।

पुरव देखो पुन्न (गड, हे ४, २७०, ३२३) ।

पुरस्सर वि [पुरस्सर] अग्रगामी (कप्प) ।

पुरा छो [पुर] नगरी, शहर (हे १, १६) ।

पुरा देखो पुरिहा = पुरा (सूत्र १, १, २,
२४, विपा १, १) । 'इय, कय वि [कृत]
पूर्व काल में किया हुआ (भवि, कुप्र ३१६) ।

'भव पुं [भव] पूर्व जन्म (कुप्र ४०६) ।

पोथिया स्त्री [पुस्तिका] पोथी, पुस्तक; 'सरस्वत्यै पोथियावसङ्गहत्या' (कास) ।
 पोपय पुंन [दे] हस्त-परिमण, हाथ फिराना (उप पु ३५३) ।
 पोपफल न [पूगफल] सुपारी (हे १, १७०, कुमा) ।
 पोपफली स्त्री [पूगफली] सुपारी का पेड़ (हे १, १७०, कुमा) ।
 पोम देखो पडम, 'जहा पोम जले जाय' (उत्त २५, २७, सुत २५, २७, पतम ५३, ७६) ।
 पोमर न [दे] कुसुम-रक्त वस्त्र (दे ९, ६३) ।
 पोमाड पुं [दे. पमाट] पमार, पमार, चक्रवर्त का पेड़ (स १४४) । देखो पडमाड ।
 पोमावई स्त्री [पद्मावती] छन्द-विशेष (पिंग) ।
 पोमिणी देखो पडमिणी (सुपा ६४६, सम्मत १७१) ।
 पोम्म देखो पडम (हे १, ६१; १, २, ११२; गा ७५, कुमा, प्राक २८, कप्पू; पि १६६) ।
 पोम्मा देखो पडमा (प्राक २८, गा ४७१; पि १६६) ।
 पोम्ह देखो पम्ह = पम्हन्; 'जह उ किर गुलिगाए मणिय मिदुस्यपोम्हमरियाए' (बर्मसं ६८०) ।
 पोर पुं [पूतर] जल में होनेवाला क्षुद्र जन्तु (हे १, १७०, कुमा) ।
 पोर वि [पौर] पुर में—नगर में उत्पन्न, नागरिक (प्राक ३५) ।
 पोर देखो पुर = पुरस् । 'कञ्च न [कञ्चय] शीघ्रकवित्व (राज) ।
 पोर पुंन [दे पर्वन्] ग्रंथि, गाँठ (ठा ४, १, मनु) । 'बीज वि [बीज] पर्व-बीज से उगनेवाली वनस्पति, इसु प्रादि (ठा ४, १) ।
 पोरग पुंन [पर्वक] वनस्पति का एक भेद, पर्ववाली वनस्पति (पण १—पत्र ३३) ।
 पोरच्छ पुं [दे] कुर्जन, कल (दे ६, ६२ पाष) ।
 पोरच्छिम देखो पुरच्छिम (सुपा ४१) ।
 पोरस्थ वि [दे] मसरी, ईप्सलु, ईषी (पह) ।
 पोरय न [दे] क्षेत्र (दे ६, २६) ।

पोरव पुं [पौरव] राजा पुर की सत्ता (अभि ६५) ।
 पोरवाड पुं [पौरवाट] एक जैन आचक-कुल (सी २) ।
 पोराण देखो पुराण (पण २८; श्रीप, मन्, हे ४, २८७, उव, गा ३४) ।
 पोराण वि [पौराण] १ पुराण-सम्बन्धी (राय) । २ पुराण शास्त्र का ज्ञाता (राज) ।
 पोराणिय वि [पौराणिक] पुराण-शास्त्र-सम्बन्धी (स ३४४) ।
 पोरिस न [पौरुष] १ पुरुषत्व, पुरुषार्थ (प्राक १७) । २ पराक्रम (कुमा) ।
 पोरिस वि [पौरुषेय] पुरुष-वन्ध, पुरुष-प्रणीत (बर्मसं ८६२ टी) ।
 पोरिसिमंडल न [पौरुषीमण्डल] एक जैन शास्त्र (एदि २०२) ।
 पोरिसिय देखो पोरिसीय, 'मत्पाहमतारम-पोरिसियसि जगंसि मण्यण बुयसि' (छाया १, १४—पत्र १६०) ।
 पोरिसी स्त्री [पौरुषी] १ पुरुष-शरीर-प्रमाण छाया । २ जो समय में पुरुष-परिमाण छाया हो वह काल, प्रहर (उवा, विपा २, १, आभा; कप्प, पव ४) । ३ प्रथम प्रहर तक मोहन आदि का त्याग, प्रयाग्याम-विशेष, तप-विशेष (पव ४; संशोध ५७) ।
 पोरिसीय वि [पौरुषिक] पुरुष-प्रमाण, पुरुष-परिमित; 'कुंभी महताहियपोरिसीया' (सूय १, ५, १, २४) ।
 पोरुस पुं [पुरुष] मय्यन्त वृद्ध पुरुष (सूय १, ७, १०) ।
 पोरुस देखो पोरिस (स २०४; उप ७२८ टी; महा) ।
 पोरेकब न [पौरस्त्य] पुरस्कार, क्सा-पोदेगाब विशेष (श्रीप, राय, श्रीप १०७ टि) ।
 पोरेवब न [पौरुवृत्त्य] पुरोवर्तित्व, अग्रेसरता (श्रीप; सम ८६, विपा १, १, कप्प) ।
 पोरेव सक [प्रोत + लङ्घ] विशेष उत्सर्जन करना । पोसदेह (छाया १, १—पत्र ६१) ।
 पोलेबा स्त्री [दे] लेटित भूमि, कृष्ट जमीन (दे ६, ६३) ।

पोलास न [पोलस] १ नगर-विशेष, पोलासपुर (उवा) । २ उद्यान-विशेष (राज) ।
 'पुर न [पुर] नगर-विशेष (उवा, मंत्र) ।
 पोलासाड न [पोलसाड] श्वेतविक्रम नगरी का एक चैत्य (विशे २३५७) ।
 पोलिअ पुं [दे] लौकिक, कर्माई (दे ६, ६२) ।
 पोलिआ स्त्री [दे. पोलिआ] बाध-विशेष, पूरी (?) ; 'कुलपोइय पोसियास्ततो' (उप ७२८ टी, राज) ।
 पोली देखो पओली; 'बडेसु पोसिबारेसु, गवेसंतो म पुत्तय' (भा १२, उप पु ८४; बर्मसि ७७) ।
 पोस वि [दे] पोसा, शूषिर, बाली, रिक्त; 'पोसो म्म मूट्टी जह से मसारे' (उत्त २०, ४२; छाया १, १—पत्र ६३; पव ८१) ; 'बंका कीडमब्रया चित्तमया पोसका व बडा य' (महा) ।
 पोसवि वि [दे] ऊपर देखो; 'बंका कीडमब्रया चित्तमया पोसका व बडा य' (श्रीप ७१५, विचार ३३६) ।
 पोहर न [दे] तप-विशेष, निर्विकृतिक तप (संशोध ५८) ।
 पोस अक [पुप्] पुष्ट होना । पोसह (बात्वा १४५, अवि) ।
 पोस सक [पोयय] १ पुष्ट करना । २ पालन करना । पोसेह (पंचा १०, १४), 'मावर पियरं पोस' (सूय १, १, २, ४), पोसाहि (सूय १, २, १, १६) । कचक, पोसिअव (गा १३५) ।
 पोस वि [पोय] १ पोषक, पुष्टि-कारक; 'अभिरुक्कणं पोसवत्थं परिहितं' (सूय १, ४, १, ३) । २ पुं. पोषण, पुष्टि (संशोध ३६) ।
 पोस पुं [पोस] १ अद्याम-देख, गुदा (पण १, ४—पत्र ७८, श्लोक ५५६, श्रीप) । २ योनि (निष् ६) । ३ लिंग, उत्पत्ति, 'एवमो-तपरिस्सवा बोदी पणुत्ता, तं जहा, बो सोत्ता, बो रोत्ता, बो बात्ता, मुहं, पोस पाप्म' (छा ६—पत्र ४५०) ।
 पोस पुं [पोय] पोष मास (सम ३५) ।
 पोसग वि [पोषक] १ पुष्टि-कारक । २ पालन-कर्ता (पण १, २) ।

देव, ग्रहं (सम १, भग, पडि) । ३ चौथा त्रिखण्डाधिपति, चतुर्थ वासुदेव (सम ७०, पठम ५, १५५) । ४ भगवान् अनन्तनाथ का प्रथम श्रावक (विचार ३७८) । ५ श्रीकृष्ण (सम्मत २२६) ।

पुरी स्त्री [पुरी] नगरी, शहर (कुमा) । °नाह पु [°नाथ] नगरी का अधिपति, राजा (उप ७२८ टी) ।

पुरीस पुन [पुरीप] विष्ठा (गाया १, ८, उप १३६ टी, ३२० टी, पाम्म), 'मुत्तपुरीसे य पिक्खति' (धर्मवि १६) ।

पुरु पुं [पुरु] १ स्व-नाम-ख्यात एक राजा (अभि १७६) । २ वि प्रचुर, प्रभूत । स्त्री. °ई (प्राक् २८) ।

पुरुपुरिआ स्त्री [दे] उत्कण्ठा, उत्सुकता (दे ६, ५) ।

पुरुमिल्ल देखो पुरिमिल्ल (गड) ।

पुरुव } देखो पुव्व = पूर्व; 'ए ईरिसो पुरुव्व' दिट्ठपुरुव्वो' (स्वप्न ५५), 'अमद-आणदु दलपुरुव्व' (सुपा २२, नाट—मृच्छ १२१, पि १२५) ।

पुरस (शौ) देखो पुरिस (प्राक् ८३, स्वप्न २६, अवि ८५, प्रयी ६६) ।

पुरसोत्तम (शौ) देखो पुरिसोत्तम (पि १२४) ।

पुरुहूअ पुं [दे] धूक, उल्लू (दे ६, ५५) ।

पुरुहूअ पुं [पुरुहूत] इन्द्र, देव-राज (गड) ।

पुरुवर पुं [पुरुवरस्] एक चद्र-वंशीय राजा (पि ४०८, ४०९) ।

पुरे देखो पुर, 'जस्स नत्थि पुरे पच्छा मज्जे वस्स कुम्भो सिया' (आचा) । °कड वि [°कृत] आगे किया हुआ, पूर्व में किया हुआ (श्रीप, सूत्र १, ५, २, १, उत्त १०, ३) । °कम्म न [°कर्मन्] पहले करने का काम, पूर्व में की जाती क्रिया; 'पुरोकोय ज तु तं पुरेकम्म' (पौष ४८६, हे १, ५७) । °कार पुं [°कार] सम्मान, आदर (उत्त २६, ७, सुख २६, ७) । °क्खड देखो °कड (पण ३६—पत्र ७६६, पण १, १) । °वाय पुं [°वात] १ सस्नेह वायु । २ पूर्व दिशा का पवन (गाया १, ११—पत्र १७१) । °संखडि स्त्री [दे.

संस्कृति] पहले ही किया जाता जिननवार—भोजनोत्सव, (आचा २, १, २, ६, २, १ ४, १) । °मथुय वि [°सस्तुत] १ पूर्व-परिचित । २ स्व-पक्ष का सगा (आचा २, १, ४, ५) ।

पुरेस पुं [पुरेश] नगर-स्वामी (भवि) ।

पुरो देखो पुर (मोह ४६, कुमा) । °अ, °ग वि [°ग] अग्रगामी, अग्रेसर (प्रति ४०, विसे २५४८) । °गम वि [°गम] वही अर्थ (उप पृ ३५१) । °भाइ वि [°भागिन्] दोष को छोड़ कर पुण-मात्र को ग्रहण करने वाला (नाट—विक्र ६७) ।

पुरोकर सक [पुरस् + कृ] १ आगे करना । २ स्वीकार करना । ३ सम्मान करना । सक पुरोकरिअ, पुरोकाड (मा १६, सूत्र १, १, ३, १५) ।

पुरोत्तमपुर न [पुरोत्तमपुर] एक विद्यावर-नगर का नाम (इक) ।

पुरोवग पुं [पुरोपक] वृक्ष-विशेष (श्रीप) ।

पुरोह पुं [पुरोधस्] पुरोहित (उप ७२८ टी, धर्मवि १४६) ।

पुरोहड वि [दे] १ विषम, असम । २ पच्छोकड (?) (दे ६, १५) । ३ पुंन. आवृत भूमि का वास्तु (दे ६, १५) । ४ अग्रद्वार, दरवाजा का अग्रभाग (पौष ६२२) । ५ बाढा, वाटक; 'समासमए पत्ते मज्झ बलहा पुरोहडस्सतो । मह दिट्ठिए दसवि ठायव्वा' (सुपा ५४५, बृह २) ।

पुरोहिअ पु [पुरोहित] पुरोधा, याजक, होम आदि से शान्ति-कर्म करनेवाला ब्राह्मण (कुमा, काल) ।

पुल पु [दे. पुल] छोटा फोडा, फुनसी, 'ते पुला भिज्जति' (ठा १०—पत्र ५२१) ।

पुल वि [पुल] समृद्धित, उन्नत, 'पुलनिपुलाए' (दस १०, १६) ।

पुल अक [पुल] उन्नत होना (दस १०, १६) ।

पुल } सक [दृश] देखना । पुलइ, पुलअइ पुलअ } (प्राक् ७१, हे ४, १८१, प्राप् ८, ६६) । पुलएइ (गड १०६३), पुलएमि (गा ५३१) । वक्र. पुलंन, पुलअंत, पुलअंत (कप्प, नाट—मालवि ६, पठम ३, ७७, ८, १६०, सुर ११, १२०, १२, २०४, ७, २१२) । सक. पुलइअ (स ६८६) ।

पुलअ पु [पुलक] १ रोमाञ्च (कुमा) । २ रत्न-विशेष, मणि की एक जाति (पण १, उत्त ३६, ७७, कप्प) । ३ जलचर जन्तु-विशेष, ग्राह का एक भेद, 'सोमागारपुलु(?) ल-यसुमार—' (पण १, १—पत्र ७) । °कड पुन [°काण्ड] रत्नप्रभा नरक-पृथिवी का एक काण्ड (ठा १०) ।

पुलअण वि [दर्शन] देखनेवाला, प्रेक्षक (कुमा) ।

पुलअण न [पुलकन] पुलकित होना (कप्प) ।

पुलआअ अक [उत् + लस्] उल्लसित होना, उल्लास पाना । पुलआअइ (हे ४, २०२) । वक्र. पुलआअमाण (कुमा) ।

पुलइअ वि [दृष्ट] देखा हुआ (गा ११८, सुर १४, ११, पाम्म) ।

पुलइअ वि [पुलकित] रोमाञ्चित (पाम्म, कुमा ४, १६, कप्प, महा, गा २०) ।

पुलइज्ज अक [पुलकाय्] रोमाञ्चित होना । वक्र. पुलइज्जत (सण) ।

पुलइल वि [पुलकिन्] रोमाञ्च-युक्त, रोमाञ्चित (वजा १६४) ।

पुलएत देखो पुलअ = दृश् ।

पुलधअ पु [दे] अमर, भौरा (पह) ।

पुलपुल न [दे] अनवरत, निरन्तर (पण १, ३—पत्र ४४, श्रीप) ।

पुलक } देखो पुलअ = पुलक (पि २०३ टि; पुलग } गाया १, १, सम १०४, कप्प) ।

पुलय पुंन [पुलक] कीट-विशेष (आचा २, १३, १) ।

पुलाग } पुन [पुलाक] १ असार अन्न, 'घन्न-पुलाय' मसारं भन्नइ पुलायसहेण' (संवोध २८, पव ६३), 'निस्सारए होइ जहा पुलाए' (सूत्र १, ७, २६) । २ चना आदि शुष्क अन्न (उत्त ८, १२, सुख ८, १२) । ३ लह-सुन आदि दुर्गन्ध द्रव्य । ४ दुष्ट रसवाला द्रव्य, 'तिविह होइ पुलाग घण्णे गघे यरस-पुलाए य' (बृह ५) । ५ पु अपने समय को निस्सार बनानेवाला मुनि, शिथिलाचारी साधुओं का एक भेद (ठा ३, २, ५, ३; संवोध २८, पव ६३) ।

°फालग न [स्फालन] आघात (गठ, गा ५४६) ।

°फुड देखो फुड (कुमा, रंभा) ।

°फोडण देखो फोडण (गा ३८१) ।

प्रस्स (अप) देखो परस्स = दृश् । प्रस्सदि (हे ४, ३६३) ।

प्राइम्ब } (अप) देखो पाय = प्रायस् (हे ४,
प्राइव } ४१४, कुमा) ।
प्राउ }

प्रिय (अप) देखो पिअ = प्रिय (हे ४, ३६८; कुमा) ।

प्रेकिअ न [दे] वृष रट्टि, वैल की चिल्लाहट (पड्) ।

प्रेयंड वि [दे] धूर्त्त, ठग (दे १, ४) ।

॥ इअ सिरिपाइअसहमहणवम्मि पआराइसहसंकलणो

सत्तावीसहमो तरंगो परिसमतो ॥

फ

फ पुं [फ] श्रोष्ठ-स्थानीय व्यञ्जन वर्ण-विशेष (आप्र) ।

फंद अक [स्पन्द] थोडा हिलना, फरकना ।
फंदइ, फंदति (हे ४, १२७, उत १४, ४५) ।
वहु फदत, फदमाण (सूअ १, ४, १, ६,
ठा ७—पत्र ३८३, कप्प) ।

फंद पुं [स्पन्द] किञ्चित् चलन (पड्, सरा) ।
फदण न [स्पन्दन] ऊपर देखो (विसे १८४७,
हे २, ५३, प्राप्र) ।

फदणा छो [स्पन्दना] ऊपर देखो (सूअनि
८ दे) ।

फदिअ वि [स्पन्दित] १ कुछ हिला हुआ,
फरका हुआ (पाय) । २ हिलाया हुआ, ईपत्
चालित (जीव ३) ।

फफ (अप) अक [उद् + गम्] उछलना ।
फंफाइ (पिंग १८४, ५) ।

फंफसय पु [दे] लता-भेद, वल्ली-विशेष (दे
६, ८३) ।

फफाइ (अप) वि [कम्पायित, कम्पित]
कँपाया हुआ, कम्प-प्राप्त (पिंग) ।

फंस अक [विसम् + वद्] असत्य प्रमाणित
होना, प्रमाण-विरुद्ध होना, अप्रमाण सावित
होना । फंसइ (हे ४, १२६) । प्रयो, भुका,
फंसाविही (कुमा) ।

फंस सक [स्पृश्] छूना । फंसइ, फंसेइ (हे
४, १८२, प्राकृ २७) । फमं. फसिअइ
(कुमा) ।

फंस पु [स्पर्श] स्पर्श, छूना (पाम्म; प्राप्र,
प्राकृ २७, गा २३६) ।

फंसण न [स्पर्शन] छूना, स्पर्श करना (उप
३३० टी; धर्मवि ४३, मोह २६) ।

फंसग वि [पांसन] अपसद, अधम, 'कुल-
फंसणो' (सुख २, ६, स १६८, भवि) ।

फंसण वि [दे] १ युक्त, संयत । २ मलिन,
मैला (दे ६, ८७) ।

फंसुल वि [दे] युक्त, व्यक्त (दे ६, ८२) ।

फसुली छो [दे] नवमालिका, पुष्प-प्रधान
वृक्ष-विशेष (दे ६, ८२) ।

फक्किया छो [फक्किआ] अन्य का विपम
स्थान, कठिन स्थान (सुर १६, २४७) ।

फग्गु वि [फल्गु] १ असार, निरर्थक, तुच्छ
(सुर ८, ३, संवोध १६; गा ३६६ अ) ।
२ छो. भगवान् अजितनाथ की प्रथम शिष्या
(सम १५२) । °मित्त पुं [°मित्र] स्वनाम-
ख्यात एक जैन मुनि (कप्प) । °रक्खिय पुं
[°रक्षित] एक जैन मुनि (आव १) । °सिरी
छो [°श्री] इस अवसर्पिणी काल के पंचम
भारे में होनेवाली अन्तिम जैन साध्वी (विचार
५३४) ।

फग्गु पुं [दे. फल्गु] वसन्त का उत्सव,
फगुआ (दे ६, ८२) ।

फग्गुण पुं [फाल्गुन] १ मास-विशेष,
फागुन का महिना (पाम्म, कप्प) । २ अर्जुन,
मध्यम पराङ्मुत्र (वज्रा १३०) ।

फागुणी छो [फाल्गुनी] १ फागुन मास की
पूर्णिमा (इक, सुख १०, ६) । २ फागुन मास
की अमावस्या (सुख १०, ६) । ३ एक गृह-
पति की छो (उवा) ।

फग्गुणी छो [फल्गुनी] नक्षत्र-विशेष (ठा
२, ३) ।

फट्ट अक [स्फट्] फटना, हटना । फट्टइ
(भवि) ।

फड सक [स्फट्] १ खोदना । २ शोधना ।
वहु. 'गतं फडमाणीओ' (सुपा ६१३) ।
हेहु. फडिउं (सुपा ६१३) ।

फड न [दे] साँप का सर्व शरीर (दे ६,
८६) ।

फड पुंन [दे. फट] साँप की फण (दे ६,
८६, कुप्र ४७२) ।

फडही [दे] देखो फलही (गा ५५० अ) ।

फडा छो [फटा] साँप की फन, सर्प-फण
(गाया १, ६, पउम ५२, ५, पाम्म, मीप) ।
°ल वि [°वत्] फनवाला (हे २, १५६,
चंड) ।

पुस पुं [पौष] मास-विशेष, पौष मास, 'पुसो' (प्राक १०)।

पुसिअ वि [प्रोचिअत, मृष्ट] पोछा हुमा (गठ; से १०, ४२; गा ५४)।

पुसिअ पुं [पुषत] मृग-विशेष (गा ६२६)।

पुस्त पु [पुष्ट्य] १ नक्षत्र-विशेष, कृतिका से आठवाँ नक्षत्र (प्राक २६; प्राप्र, सम ८, १७, ठा २ ३)। २ रेवती नक्षत्र का अधिपति देव (सुख १०, १२)। ३ ऋषि-विशेष (राज)। *माणअ, *माणव पुं [*मानव] नागव, स्तुति-पाठक, भाट-चारण आदि (गाया १, ८—पत्र १३३, टी—पत्र १३६)। देखो पृस = पुष्य।

पुस्तदेवय न [पुष्ट्यदेवत] जैनतर शास्त्र-विशेष (एदि १५४)।

पुस्तायण न [पुष्ट्यायण] गोत्र-विशेष (सुख १०, १६)।

पुह } देखो पिह = पुषक् (हे १, १८८)।
पुह } *भूय वि [*भूते] भलग, जो जुदा हुमा हो (अजक ६०)।

पुहइ } श्री [पृथिवी] १ स्तुतिय वासुदेव की
पुहई } माता का नाम (पत्रम २०, १८४)।
२ एक नगरी का नाम (पत्रम २०, १८८)।
३ भगवान् सुपार्शनाय की माता का नाम (सुपा ३६)। ४—देखो पुढवी, पुहवी (कुमा, हे १, ८८, १३१)। *धर पुं [*धर] राजा (पत्रम; ८५, ४)। *नाह पुं [*नाथ] राजा (सुपा १२२)। *पहु पुं [*प्रभु] राजा (उप ७२८ टी)। *पाल पुं [*पाल] राजा (सुर १, २४३)। *राय पुं [*राज] विक्रम की बारहवीं शताब्दी का शाकम्बरी देश का एक राजा, 'पुहईराएण सयंभरीनरिदेण' (मुशि १०६०१)। *वइ पुं [*पति] राजा (सुपा २०१, २४८; ५१६)। *वाल देखो *पाल (उप ६४८ टी)।

पुहईसर पु [पृथिवीभर] राजा (सुपा १०७; २४१)।

पुहल न [पृथक्त्व] १ भेद, पार्थक्य (अणु)। २ विस्तार (राज)। ३ बहुत्व (भग १, २, ठा १०)। ४ वि. निम्न, भलग, 'भत्यपुहलस्स' (विसे १०६६)। *वियक न [*वितर्क]

शुक्ल ध्यान का एक भेद (संबोध ५१)। देखो पुहुत्त, पोहत्त।

पुहत्तिय देखो पोहत्तिय (भग)।

पुहय देखो पिह = पुषक्, 'पुहय देवीण' (कुमा)।

पुहवि } देखो पुढवी, पुहई (वि ३८६, आ
पुहवी } १४, प्राप्र, प्रासू ५, ११३; सम १५१, स १५२)। ६ भगवान् श्रेयासनाय की दोसा-शिषिका (विचार १२६)। १० एक छन्द का नाम (पिंग)। *चंद पुं [*चन्द्र] एक राजा (यति ५०)। *पाल पुं [*पाल] १ एक राजकुमार (उप ६८६ टी)। २ देखो पुहई-पाल (सिरि ४५)। *पुर न [*पुर] एक नगर का नाम (उप ८४४)।

पुहवीस पुं [पृथिवीश] राजा (हे १, ६)। पुहु वि [पृथु] विशाल, विस्तीर्ण। श्री. *ई (प्राक २८)।

पुहुत्त न [पृथक्त्व] १ दो से नव तक की सख्या (सम ४४, जी ३०, भग)। २—देखो पुहत्त (ठा १०—पत्र ४७१, ४६५)।

पुहुवी देखो पुहु-ई (हे २, ११३)।

पू देखो पुं। *सुअ पुं [*शुक] तोता, मवं पिक-पलि (गा ५६३ म)।

पूअ सक [पूजय] पूजा करना। पूएइ (महा)। कर्म. पूइअसि (गठ)। वकृ. पूयंत (सुपा २२४)। कवकृ. पूइजंत (पत्रम ३२, ६)। कृ. पूअणीअ, पूएअन्व, पूअणिज्ज (नाट—मृच्छ १६५, उवर १६६, औप, गाया १, १ टी, पचा २, ८, उप ३२० टी)। सकृ. पूइऊण (महा)।

पूअ न [दे] दधि, दही (दे ६, ५६)।

पूअ पुं [पूरा] १ वृक्ष-विशेष, सुपारी का गाछ (गठ)। २ न. फल-विशेष, सुपारी (स ३४५)। देखो पूग। *फली *फली श्री [*फली] सुपारी का पेड़ (पत्रम ५३, ७६, पएण १)।

पूअ न [पूर्त] तालाब, कुर्मा आदि खुदवाना, भग्न-दान करना, देव-मन्दिर बनाना आदि जन-समूह के हित का कार्य, 'गरहियाणि इट्ठपूयाणि' (स ७१३)।

पूअ वि [पूत] १ पवित्र, शुद्ध (गाया १, ५, औप)। २ न. लगातार छ दिनों का

उपवास (संबोध ५८)। ३ वि. सूप आदि से साफ—सुप-रहित किया हुआ (गाया १, ७—पत्र ११६)।

पूअ न [पूय] पीब, दुर्गन्ध रक्त, मण से निकला हुआ गन्दा सफेद बिगडा हुआ लून (पएइ १, १, गाया ३, ८)।

पूअण न [पूजन] पूजा, सेवा (कुमा, औप, सुपा ५८४, महा)।

पूअणा श्री [पूजना] १ ऊपर देखो (पएइ २, १, से ७६३, संबोध ६)। २ काम-विभूषा (सूत्र १, ३, ४, १७)।

पूअणा } श्री [पूतना] १ दुष्ट व्यन्तरी, डाहन,
पूअणी } डाकिनी (सूत्र १, ३, ४, १३,
पिडमा ४१, सुपा २६, पएइ १, ४)। २ गाढर, भेडी, मेवी (सूत्र १, ३, ४, १३)।

पूअय वि [पूजक] पूजा करनेवाला (सुर १३, १४३)।

पूअर देखो पोर = पूतर (आ १४, जी १५)।

पूअल पुं [पूप] अपूप, पूमा, स्नाय-विशेष (दे ६, १८)।

पूअलिया श्री [पूपिका] ऊपर देखो (पव ४)।

पूआ श्री [दे] पिशाच-गृहीता, भूताविष्ट श्री (दे ६, ५४)।

पूआ श्री [पूजा] पूजन, भर्त्ता, सेवा (कुमा)। *भत्त न [*भक्त] पूज्य के लिए निष्पादित भोजन (इह २, १)। *मह पुं [*मह] पूजोत्सव (कुप्र ८५)। *रह पुं [*रय] रासस-वंश में उत्पन्न एक राजा का नाम, एक लका-पति (पत्रम ५, २५६)। *रिह, *रुह वि [*ई] पूजा-योग्य (सुपा ४६१, भमि ११८)।

पूआहिज्ज वि [पूजाहार्य] पूजित-पूजक (ठा ५, ३ टी—पत्र ३४२)।

पूइ वि [पूति] १ दुर्गन्धो, दुर्गन्धवाला (पत्रम ४४, ५४) उप ७२८ टी, तदु ४१) २। अप-वित्र (पचा १३, ५)। ३ श्री. दुर्गन्ध। ४ अपवित्रता (तदु ३८)। ५ मित्र का एक दोष, पूति-कर्म (पिड २६८)। ६ रोग विशेष, एक नासिका-रोग, नासा-कोष (विसे २०८)। ७ पूय, पीब, 'गसंतपूइनिवह' (महा), 'पूइ-नसहरिपुत्त' (सुर १४, ४६), 'जहा सुणो

कुंसाइफलेणं (भावा १, ६, ३, १०) ।
‘अंत, व वि [‘वत्] फलवाता (णाया
१, ४, पंथा ४) । ‘बडिहय, बडिय न
[‘बडिक] १ नगर-विशेष, फलोभि-नामक
मन्त्रेशीय नगर । २ वहाँ का एक जैन मन्दिर
(ती ५२) ।

फलअ १ पुंन [फलक] १ काष्ठ आदि का
फलग १ तस्ता (भावा; गा ६५६; तंदु
२६, सुर १०, १६१, ग्रीप) । २ पुण का
एक उपकरण (ग्रीप, भण ३२) । ३ डाल;
‘भरिएहि फलएहि’ (विपा १, ३, कुमा,
सार्ध १०१) । ४ देखो फल (भावा) ।
‘सज्जा की [‘शय्या] काष्ठ का तस्ता
जिसपर सोया जाय (भग) ।

फलण न [फलन] फलना (सुपा ६) ।

फलह १ पुंन [फलह, ‘क] फलक, काठ
फलह १ आदि का तस्ता; ‘अस्तंजए मिक्कु-
पडियाए पीठ वा फलहर्ग वा एिस्तेण वा
उडूहर्ग वा आहट्ट उस्सविय दुवहेज्जा’
(भावा २, १, ६, १), ‘भूमिसेज्जा फलह-
सेज्जा’ (ग्रीप), ‘वरफलहे’ (दे १, ८; पि
२०६), ‘पेन्नाइ मन्दिराई फलहदुग्घाडिय-
जालगवक्काइ’, ‘अह फलहतरेण दरिसिय-
गुण्णतरदेसई’ (भवि),

‘पिहुपसासयमयलं गुणमियरनिबद्धफलहसंघायं ।
संजमियसयलजोगं बोहिरयं भुणिवरसरिण्णई’
(सुर १३, ३६) ।

फलहिआ १ श्री [फलहिआ, फलही] काठ
फलही १ आदि का तस्ता, ‘सूरिए अत्थमिए
फलहिमं भडेउमाठवई’, ‘इत्थ पहाणफलही
चिट्ठई’ (ती ११), ‘कलावईए रुवं सिग्घं
आलिहसु चित्तफलहीए’ (सुर १, १५१) ।

फलही की [दे] १ कपसि, कपास (दे ६,
८२, गा १६५, ३५६) । २ कपास की
तता; ‘दरकुडिअव्वेठमारोणमाइ हसिमं व
फलहीए’ (गा ३६०) ।

फलाव सक [फलाव] फलवान बनाना,
सफल करना; ‘ततोवि अ भएणतमा निअय-
फलेणं फलावति’ (रत्न २६) ।

फलावह वि [फलावह] फलप्रद, फल की
प्रदान करनेवाला (पञ्च १४, ४४) ।

फलासव पुं [फलासव] मद्य-विशेष (पण
१७) ।

फलि पुं [दे] १ लिग, पिड । २ बुधन,
जैन (दे ६, ८६) ।

फलिअ वि [फलित] १ विकसित, ‘कुडिमं
फलिअं व दसिमपुहिरिमं (पाम) । २ फल-
युक्त, जिसको फल हुआ हो वह (णाया
१, ११) ।

फलिअ न [दे] वामन, वायन, भोजन आदि का
बाँटा जाता उपहार (ठा ३, ३—पत्र १४७) ।
फलिआरी की [दे] कुर्वा, कुरा पुण (दे
६, ८३) ।

फलिणी की [फलिनी] प्रियपु-भुल (दे १,
३२; ६, ४६; पाम, कुमा, गा ६६३) ।

फलिह पुं [परिष] १ भर्गसा, भगल;
‘भगसा फलिहो’ (पाम, ग्रीप), ‘ऊत्थिम-
फलिहा’ (भग २, ५—पत्र १३४) । २
भस्म-विशेष, सोहे का मुहर आदि भस्म । ३
गृह, घर । ४ काच-बट । ५ ज्योतिष-शास्त्र-
प्रसिद्ध एक योग (दे १, २३२, आत्र) ।

फलिह पुं [स्फटिक] १ मणि-विशेष, स्फटिक
मणि (जी ३, हे १, १६०; कप्पू) । २ एक
विमानावास, देव-विमान-विशेष (देवेन्द्र १३२;
इक) । ३ रत्नप्रभा पृथिवी का एक स्फटिक-
मय काण्ड (ठा १०) । ४ गन्धमादन पर्वत
का एक कूट (इक) । ५ कुण्डल पर्वत का
एक कूट । ६ रुक्म पर्वत का एक शिखर
(राम) । ‘गिरि पुं [‘गिरि] कैसात पर्वत
(पाम) ।

फलिह पुं [फलिह] फलक, काठ आदि का
तस्ता, ‘अवेसिणो फलिहा’ (पाम), ‘नाणो-
भगरणभूयाणं कवलियाफलिहपुत्थियाईए’
(भाप ८) ।

फलिह पुंन [स्फटिक] आकार (भग २०,
२) ।

फलिह न [दे] कपास का टेंटा, टेंट या
ढेड़ी (भणु ३५ टी) ।

फलिहंस पुं [फलिहंसक] बुल-विशेष (दे
४, १२) ।

फलिहा की [परिहा] आई, किले या नगर
के चारो ओर की महार (ग्रीप; दे १, २३२;
कुमा) ।

फलिहि देखो परिहि (प्राष्ठ १५) ।

फलिही देखो फलही = दे (भणु ३५ टी) ।

फली की [फली] कण्ड आदि की छोटी
तल्ली; ‘ततो भएणफलीव वलिहहूमि
विमिकई कहवि (सुपा ३८५) ।

फलोवय १ वि [फलोवय] फल-प्राप्त, फल-
फलोवा १ सहित (ठा ३, १ पत्र—११३) ।

फल वि [फल्य] सूते का वस्त्र, सूती कपड़ा
(इह १) ।

फल्मीह सक [लम्] मयेट नाम प्राप्त
करना, गुजराती में ‘कावडु’ । फल्मीहानो
(इह १) । कम्ब (परा० अमरम० बु०
३०३) ।

फसल वि [दे] १ सार, चितकबरा; ‘फसलं
खलं सारं किम्मीरं चित्तल व बोक्कल’
(पाम, दे ६, ८७) । २ स्वासक (दे ६, ८७) ।

फसलाणिअ १ वि [दे] कृत-विभूष, जिसने
फसलिअ १ विभूषा की हो वह, मृत्प्राप्ति
(दे ६, ८३); ‘फसलियाणि कुंकुमराण’
(स ३६०) ।

फसुल वि [दे] मुक्त (दे ६, ८२) ।

फाई की [स्फाति] बुद्धि (भोच ४७) ।

फाईकय वि [स्फोतीकृत] १ फैलाया हुआ ।
२ प्रसिद्ध किया हुआ, ‘अइसेसियं पणीयं
फाईकयमएणमएणेई’ (विसे २५०७) ।

फागुण देखो फग्गुण (पि ६२) ।

फाड सक [पाटय्, स्फाटय्] काटना ।
फाडेह (हे १, १६८; २३२) । बहु. फाडंत
(कुमा) ।

फाडिय वि [फाटित, स्फाटित] विदारित
(भवि) ।

फाणिअ पुंन [फाणित] १ गुड़, ‘फाणिओ
गुयो भएणति’ (निह ४) । २ गुड़ का
विकार-विशेष, आद्रं गुड़, पानी से श्रावित
गुड़ (ग्रीप; कस, पिड २३६; ६२५, पत्र
४) । ३ क्वाथ (पणु १७—पत्र ५३०) ।

फाय वि [स्फोत] १ बुद्ध । २ विस्तीर्ण । ३
स्वात (विसे २५०७) ।

फार वि [स्फार] १ प्रचुर, बहुत; ‘फारफल-
मारमचिरसाहासयसंकुलो महासाही’ (भर्मवि
५५) । २ विद्यात, विदुष । ३ विदुष,

पूस पुं [दे] १ राजा सातवाहन (दे ६, ८०)। २ शुक, तोता (दे ६, ८०, गा २६३, वज्जा १३४; पात्र)।

पूस पुं [पूप्] १ सूर्य, रवि (हे ३, ५६)। २ मणि विशेष (पत्र ६, ३६)।

पूसा स्त्री [पुष्या] व्यक्ति-वाचक नाम, कुण्ड-कोलिक श्रावक की पत्नी (उवा)।

पूसाण देखो पूस = पूप् (हे ३, ५६)।

पूह पुं [अपोह] विचार, मीमांसा, 'ईहापूह-मगाणवेसणं करेमाणस्स' (औप, पि १४२, २८६)। देखो अपोह = अपोह।

पृथुम (पै) देखो पठम, 'पृथुमसिनेहो' (प्राक् १२४)।

पेअ पु [प्रेत] १ व्यन्तर-भेद, एक देव-जाति (सुपा ४६१, ४६२, जय २६)। २ मृतक (पत्र ५, ६०)। °कम्म न [°कम्मन्] अन्त्येष्टि क्रिया, मृत का दाहादि कार्य (पत्र २३, २४)। °करणिज्ज न [°करणीय] अन्त्येष्टि क्रिया (पत्र ७५, १)। °काइय वि [°कायिक] प्रेत योनि में उत्पन्न, व्यन्तर-विशेष (भग ३, ७)। °देवयकाइय वि [°देवताकायिक] प्रेत-देवता का, प्रेत-सम्बन्धी (भग ३, ७)। °नाह पुं [°नाथ] यमराज, जम (स ३१६)। °भूमि, °भूमी स्त्री [°भूमि, °मी] श्मशान (सुपा २६५)। °लोय पुं [°लोक] श्मशान (पत्र ८६, ४३)। °वइ पुं [°पति] यम (उप ७२८ टी)। °वण न [°वन] श्मशान (पात्र, सुर १६, २०४, वज्जा २, सुपा ५१२)। °हिंवि पु [°धिप] यम, जमराज (पात्र)।

पेअ वि [प्रेयस] अतिशय प्रिय। स्त्री. °सी (सम्मत १७५)।

पेअ } देखो पा = पा।
पेअव्व }

पेआ स्त्री [पेया] यवाण, पीने की वस्तु-विशेष (हे १, २४८)।

पेआल न [दे] १ प्रमाण (दे ६, ५७, विसे १६६ टी, एंदि, उव)। २ विचार (विसे १३६१)। ३ सार, रहस्य (ठा ४, ४ टी—पत्र २८३, उप पृ २०७)। ४ प्रधान, मुख्य (उवा)।

पेआलणा स्त्री [दे] प्रमाण-करण, 'पञ्जव-पेयालणा पिंडो' (पिंड ६५)।

पेआलुय वि [दे] विचारित (विसे १४८२)।

पेइअ वि [पैत्तक] १ पिता से भाया हुआ, पितृ-कर्म-प्राप्त, 'पेइओ धम्मो' (पत्र ८२, ३३, सिरि ३४८, स ५६६)। २ न स्त्री के पिता का घर, पीहर, नैहर, मैका, 'ता जा कुले कलंकं नो पयइइ ताव पेइए एयं पेयमि', 'विमलेण तओ भणियं गच्छ पिण पेइयमियाणि' (सुपा ६००)।

पेईहर न [पितृगृह, पैत्तकगृह] पीहर, स्त्री के पिता का घर, 'इय चित्तिअण मिग्घं वणसिरिपेईहरम्मि सचलियो' (सुपा ६०३)।

पेऊस न [पीयूष] अमृत, सुधा (हे १, १०५, गा ६५, कप्पू)। °सण पुं [°शान] देव, सुर (कुमा)।

पेखिअ वि [प्रेक्षित] कम्पित (कप्पू)।

पेखोल अक [प्रेक्षोलय] झूलना, हिलना। वक्क पेखोलमाण (गाया १, १—पत्र ३१)।

पेड देखो पिंड = पिण्ड (हे १, ८५, प्राक् ५, प्राप्र, कुमा)।

पेड न [दे] १ छत्र, टुकड़ा। २ वलय (दे ६, ८)।

पेडधव पुं [दे] खड्ग, तलवार (दे ६, ५६)।

पेडवाल वि [दे] देखो पेडलिअ (दे ६, ५४)।

पेडय पुं [दे] १ तरण, युवा। २ पराह, नपुंसक (दे ६, ५३)।

पेडल पुं [दे] रस (दे ६, ५८)।

पेडलिअ वि [दे] पिण्डकृत, पिण्डाकार किया हुआ (दे ६, ५४)।

पेडव सक [प्र+स्थापय्] १ रखना, स्थापन करना। २ प्रस्थान कराना। पेडवइ (हे ४, ३७)।

पेडविर वि [प्रस्थापयित्] प्रस्थापन करने-वाला (कुमा)।

पेडार पु [दे] १ गोप, गो-पाल, ग्वाला। २ महिषी-पाल (दे ६, ५८)।

पेडोली स्त्री [दे] क्रीडा (दे ६, ५६)।

पेडा स्त्री [दे] कलुप सुरा, पकवाली मदिरा (दे ६, ५०)।

पेत देखो पा = पा।

पेक्ख सक [प्र + ईक्ष्] देखना, अवलोकन करना। पेक्खइ, पेक्खए (सण, पिण)। वक्क, पेक्खत (पि ३६७)। कवक्क पेक्खिज्जंत (से १५, ६३)। सक्क, पेक्खिअ, पेक्खिऊण (अभि ४२, काप्र १५८)। क्क, पेक्खणिज्ज (नाट—वेणी ७३)।

पेक्खिअ } वि [प्रेक्षक] देखनेवाला, निरीक्षक,
पेक्खिअ } द्रष्टा (सुर ७, ८०, स ३७६, महा)।

पेक्खिअ न [प्रेक्षण] निरीक्षण, अवलोकन (सुपा १६६, अभि ५३)।

पेक्खिअण } न [प्रेक्षण] खेल, तमाशा,
पेक्खिअण } नाटक (सुर ७, १८२, कुप्र ३०)।

पेक्खिअ स्त्री [प्रेक्षणा] निरीक्षण, अवलोकन (श्री ३)।

पेक्खिअ स्त्री [प्रेक्षा] ऊपर देखो (पत्र ७२, २६)। देखो पेक्खिअ।

पेक्खिअ देखो पेक्खिअ (राज)।

पेक्खिअ (अप) वि [प्रेक्षित] दृष्ट (रभा)।

पेक्क } अ [प्रेत्य] परलोक, आगामी जन्म
पेक्क } (भग, औप), 'सबोही खलु पेक्क दुल्लाहा' (वे ७३)। °भव पु [°भव] आगामी जन्म, परलोक (औप)। °भाविअ वि [°भाविक] जन्मातर-सम्बन्धी (पराह २, २)।

पेक्क देखो पिअ = पा।

पेक्क सक [दृश्, प्र + ईक्ष्] देखना। पेक्कइ, पेक्कए (ह ४, १८१, उव, महा, पि ४५७)। भवि पेक्कहिंति (पि ५२२)। वक्क पेक्कत (गा ३७३, महा)। सक्क, पेक्किऊण (पि ५८५)। हेक्क पेक्किऊ, पेक्कित्तए (उप ७२८ टी, औप)। क्क पेक्कणिज्ज, पेक्किअऊव (गा ६६, औप, पराह १, ४, से ३, ३३)।

पेक्क वि [प्रेक्ष] द्रष्टा, दर्शक, 'अपरमत्थपेक्को' (स ७१५)।

पेक्कग देखो पेक्खिअ (भास ४७, धर्मस ७४३)।

पेक्कण देखो पेक्खिअ (सुपा ३७)।

पेक्कणग } देखो पेक्खिअ (पचा ६, ११,
पेक्कणग } महा)।

पेक्कय वि [प्रेक्षक] द्रष्टा, निरीक्षक (पत्र ८६, ७१, स ३६१, गा ४६८)।

फिरक पुंन [दे] खाली गाड़ी, भार ढोने-
वाली खाली गाड़ी, 'समचित्ता दुवि वसहा
सगड कड्दंति उवलभरियपि । अट्टवि विभि-
न्नचित्ता फिरकजुत्तावि तम्मनि' (सुपा
४२४) ।

फिरिय वि [गत] गया हुआ,
'गोधणालणहेउं पुरिसा इह
केवि अगगयो फिरिया ।

जं सुम्मइ आसन्तो
सुन्नेवि ह् एस संखरयो'
(धर्मवि १३६) ।

फिलिअ देखो फिडिअ (से ८, ६८) ।

फिल्लुस अक [दे] फिल्लना, खिसकना,
गिरना । वक्क. 'सेवालियभूमितले फिल्लुस-
माणा य थामथामम्मि' (सुर २, १०५) ।
देखो फेल्लुस ।

फीअ देखो फाय (सूत्र २, ७, १) ।

फीणिया स्त्री [दे] एक जात की मीठाई,
गुजराती में 'फेणी', (सम्मत्त ५७) ।

फुका स्त्री [दे] फूँक, मुँह से हवा निकालना
(मोह ६७) ।

फुंकार पुं [फुंकार] फुफकार, कुमित सपं
आदि की आवाज (सुर २, २३७) ।

फुटा स्त्री [दे] केश-वन्ध (दे ६, ८४) ।

फुद देखो फद = स्पन्द । फुंदइ (से १५, ७७) ।

फुफमा स्त्री [दे] करोपाग्नि, वनकण्डे
फुंफुआ की आग (पात्र, दे ६, ८४, तहु
फुफुगा ४५, जीव २, बृह १, कम्म १,
२२) ।

फुफुमा स्त्री [दे] १ करोपाग्नि, 'अहवा डग्गळ
निह्य निह्मं फुंफुम अ चिरमेसो' (उप
७२८ टी) । २ कचवर-बहि, कूडा करकट
की आग (सुख १, ८) ।

फुंफुल } सक [दे] १ उत्पादन करना ।
फुफुल } २ कहना । फु फुलइ (हे २, १७४) ।
फुत्त सक [मृज्, प्र + उज्ज्] पोछना,
साफ करना । फुंसदि (प्राक् ६३) ।

फुसण देखो फासण (उप ४ ३४) ।

फुक्क अक [फूत् + कृ] १ फुफकारना, फूँ
फूँ आवाज करना । २ सक, मुँह से हवा
निकालना, फूँकना । फुक्कइ (पिंग) । वक्क.
फुक्कत (गा १७६), फुक्कज्जत (अ) (हे
४, ४२२) ।

फुक्का स्त्री [दे] १ मिथ्या (दे ६, ८३) । २
फूँक (कुप्र १५०) ।

फुक्कार पुं [फूत्कार] फुफकार, फूँ फूँ की
आवाज (कुप्र ५८, सण) ।

फुक्किय वि [फूत्कृत] फुफकारा हुआ (भाव
४) ।

फुक्की स्त्री [दे] रजकी, घोविन (दे ६, ८४) ।

फुग्ग स्त्री [दे. स्फिच्] शरीर का अवयव-
विशेष, कटि-प्रोथ (सूत्रनि ७६) ।

फुग्गफुग्ग वि [दे] विकीर्ण रोमवाला,
परस्पर असंबद्ध—बिखरे हुए केशवाला, 'तस्स
भुमगायो फुग्गफुग्गायो' (उवा) ।

फुट् } अक [स्फुट्, अश] १ विकसना,
फुट्ट } खिलना । २ प्रकट होना । ३ फूटना,
फटना, टूटना । ४ नष्ट होना । फुटइ, फुट्टइ,
फुट्टइ, फुट्टउ (ससि ३६, प्राक् ६६; हे ४,
१७७, २३१, उव, भवि, पिंग, गा २२८) ।

भवि, 'फुट्टिस्सइ वोहित्थं महिलाजणकहियमत
वा' (धर्मवि १३), फुट्टिहिइ (पि ५२६) । वक्क.
फुट्टंत, फुट्टमाण (पणह १, ३, गा २०४,
सुर ४, १५१, णाया १, १—पत्र ३६) ।

फुट्ट वि [स्फुटित, अष्ट] १ फूटा हुआ, टूटा
हुआ, विदीर्ण (उप ७२८ टी, सम्मत्त १४५,
सुर २, ६०, ३, २४३, १३, २१०) । २
अष्ट, पतित (कुमा) । ३ विनष्ट; 'फुट्टहडा-
हडसीसं' (णाया १, १६, विपा १, १) ।

फुट्टण न [स्फुटन] १ फूटना, टूटना (कुप्र
४१७) । २ वि फूटनेवाला, विदीर्ण होनेवाला
(हे ४, ४२२) ।

फुट्टिअ वि [स्फुटित] विदारित, 'फुट्टिअमोहो'
(कुमा ७, ६४) ।

फुट्टिर वि [स्फुटितृ] फूटनेवाला (सण) ।

फुट्ट देखो फुट्ट = स्पष्ट (पि ३११) ।

फुड देखो फुट्ट = स्फुट, अश । फुडइ (हे ४,
१७७, २३१, प्राक् ६६), 'फुडंति सव्वंग-
संघोओ' (उप ७२८ टी) । वक्क. फुडमाण
(सुर ३, २४३) ।

फुड देखो फुट्ट = स्पष्ट (पणह ३६, ठा ७—
पत्र ३८३, जीवस २००, भग) ।

फुड वि [स्फुट] स्पष्ट, व्यक्त, साफ, विशद
(पात्र, हे ४, २५८, उवा) ।

फुडण न [स्फुटन] टूटना, खरिडत होना
(पणह १, १—पत्र २३) ।

फुडा स्त्री [स्फुटा] अतिकाय-नामक महोत्सेद
की एक पटरानी, इन्द्राणी-विशेष (ठा ४,
१, इक) ।

फुडा स्त्री [फटा] साँप की फन, 'उक्कडकु-
डकुडिलजडिलककमवियडफुडाडोवरणदच्छं'
(उवा) ।

फुडिअ वि [स्फुटित] १ विकसित, खिला
हुआ (पात्र, गा २६०) । २ फूटा हुआ,
विदीर्ण (स ३८१) । ३ विकृत (पणह १,
२—पत्र ४०) ।

फुडिअ (अप) देखो फुरिअ (भवि) ।

फुडिआ स्त्री [स्फोटिआ] छोटा कोडा,
फुनमी (सुपा १३८) ।

फुड् देखो फुट्ट । फुड्ड (पड्) ।

फुन्न वि [दे स्पष्ट] छूआ हुआ (पव १५८
टी, कम्म ५, ८५ टी) ।

फुण्फुस न [दे] उदरवर्ती अन्न-विशेष,
फेकवा (सूत्रनि ७३, पउम २६, ५४) ।

फुम सक [अम्] भ्रमण करना । फुमइ
(हे ४, १६१) । प्रयो. फुमावइ (कुमा) ।

फुम सक [दे. फूत् + कृ] फूँक मारना,
मुँह से हवा करना । फुमेजा (दस ४, १०) ।
वक्क. फुमत (दस ४, १०) । प्रयो. फुमावेजा
(दस ४, १०) ।

फुर अक [स्फुर] १ फरकना, हिलना ।
२ तडफटना । ३ विकसना, खिलना । ४
प्रकाशित होना, प्रकट होना; 'फुरइ अ
सीताइ तक्खण वामच्छं' (से १५, ७६,
पिंग) । वक्क. फुरत, फुरमाण (गा १६२,
सुर २, २२१, महा, पिंग, से ६, २५, १२,
२६) । सक. फुरित्ता (ठा ७) ।

फुर सक [अप + ह] अपहरण करना,
छोना । प्रयो. फुराविति (वव ३) ।

फुर पुं [स्फुर] शब्द-विशेष, फुरफलावरण-
गहिय—' (पणह १, ३—पत्र ४६) ।

फुर (अप) देखो फुड = स्फुट (पिंग) ।

फुरण न [स्फुरण] १ फरकना, कुछ हिलना,
झपट कम्पन, 'ज पुरा अचिच्छफुरण मह होही
भारिया तेण' (सुर १३, १२७) । २ स्फूर्ति
(सुपा ६, वजा ३४, सम्मत्त १६१) ।

पेह सक [क्षिप्] फँकना । पेहद (हे ४, १४३) । कर्म. पेहजद (उव) । वक्र. पेहंत (कुमा) । संक्र. पेह्लिऊण (महा) ।

पेह देखो पेर = प्र + ईर्य । पेह्लेद (प्राकृ ६०) । कवक. पेह्लिजंत (से ६, २५) । संक्र. पेह्लि (भप), पेह्लिअ (पिग) । कृ. पेह्लेयव्व (भोपमा १८ टी) ।

पेह सक [पीडय] पीसना, दबाना, पीड़ना । पेह्लेसि, पेह्लिसि (स ५७४ टि) ।

पेह सक [पूरय] पूरना, भरना । कवक. पेह्लिजंत (से ६, २५) ।

पेह पुन [दे] बच्चा, शिशु, बालक (उव पेह्ला २१६), 'बीयम्मि पेह्लागइ' (उप २२० टी) ।

पेह्ला देखो पेरग (निबू १६) ।

पेह्लण देखो पेरण (पएह १, ३, गउड) ।

पेह्लण न [क्षेपण] फँकना (धर्म २) ।

पेह्लय पुं [दे] देखो पेह्ल = (दे) (विपा १, २—पत्र ३६), 'सपेह्लियं सियालि' (सुल २, ३३) ।

पेह्लय देखो पेरग (बृह १) ।

पेह्लय पुं [पेह्लक] भगवान् महावीर के पास दीक्षा लेकर अनुसर विमान में उत्पन्न एक जैन मुनि (भनु २) ।

पेह्लय देखो पेर । पेह्लवद, पेह्लावद (प्राकृ पेह्लाव ६०) ।

पेह्लिअ वि [दे. पीडित] पीडित (दे ६, ५७), 'बलियदाइयपेह्लिअ' (महा) ।

पेह्लिअ देखो पेरिअ (गा २२१, विपा १, १) ।

पेह्लेयव्व देखो पेह्ल = प्र + ईर्य ।

पेह्लेवे भ्र. भ्रामन्त्रण-सूचक भ्रम्यय (पह्) ।

पेस सक [प्र + एषय] भेजना, पठाना ।

पेसद, पेसेद (भवि, महा) । वक्र. पेसअत (पि ४६०, रंभा) । संक्र. पेसिअ, पेसिअं (भा ४०, महा) । कृ. पेसइयव्व, पेसिअव्व, पेसेयव्व (सुपा ३००, २७८, ६३०, उप १३६ टी) ।

पेस देखो पीस । वक्र. पेसयंत (राज) ।

पेस पुंजी [प्रेष्य] १ कर्मकर, नौकर, दास, चाकर (सम १६, सूत्र १, २, २, ३, उवा) । २ वि. भेजने योग्य (हे २, ६२) ।

पेस पुं [दे. पेश] १ सिन्ध देश में होनेवाली एक पशु-जाति (प्राचा २, ५, १, ८) ।

पेस वि [दे. पेश] पेश नामक जानवर के चमड़े का बना हुमा (वक्र) (प्राचा २, ५, १, ८) ।

पेसण न [दे] कार्य, काज, प्रयोजन (दे ६, ५७, भवि, एया १, ७—पत्र ११७, पत्रम १०३, २६) ।

पेसण न [प्रेषण] १ पठाना, भेजना । २ नियोजन, व्यापारण (कुमा, गउड) । ३ आज्ञा, आदेश (से ३, ५४) ।

पेसणआरी } श्री [दे] दूती, दूत-कर्म करने-
पेसणआली } वाली श्री (दे ६, ५६, पद्) ।

पेसणा श्री [पेषण] पीसना, पेषण, 'सिलाए जवगोहूमपेसणाए देऊए' (उप ५६७ टी) ।

पेसल वि [पेशल] १ सुन्दर, मनोज्ञ (प्राचा, गउड) । २ मधुर, मज्जु (पाभ) । ३ कोमल (गउड) ।

पेसल } न [दे] सिन्ध देश के पेश नामक
पेसलेस } पशु के चर्म के सूक्ष्म पक्ष से
निष्पन्न वस्त्र, 'पेसाणि वा पेसलाणि वा'
(२ प्राचा २, ५, १—सूत्र १४५), 'पेसाणि
वा पेसलेसाणि वा' (३ प्राचा २, ५, १, ८,
(राज) ।

पेसव सक [प्र + एषय] भेजवाना । कृ.
पेसवेयव्व (उप १३६ टी) ।

पेसघण न [प्रेषण] भेजवाना, दूसरे के द्वारा प्रेषण (उवा, पडि) ।

पेसविअ वि [प्रेषित] भेजवाया हुमा, प्रस्था-
पित (पाभ, उप पृ ५८) ।

पेसाय वि [पेशाच] पिशाच-सवन्धी (बृह २) ।

पेसि श्री [पेशि] देखो पेसी (सुपा ४८७) ।

पेसिअ वि [प्रेषित] १ भेजा हुमा, प्रहित (गा ११२, भवि, काल) । २ प्रेषण (पत्रम ६, ३५) ।

पेसिआ श्री [पेशिका] खण्ड, टुकड़ा, 'श्रव-
पेसिया ति वा अनाडगपेसिया ति वा' (भनु ६, प्राचा २, ७, २, ७, ८, ६) ।

पेसिआर पुं [प्रेषितकार] नौकर, भृत्य,
कर्मकर (पत्रम ६, ३५) ।

पेसिदवत (शौ) वि [प्रेषितवत्] जिसने
भेजा हो वह (पि ५६६) ।

पेसी श्री [पेशी] मास-खण्ड, मास-पिण्ड
(तदु ७) । देखो पेसिआ ।

पेसुण्ण } न [पैशुन्य] परोक्ष मे दोष-
पेसुन्न } कीर्तन, चुगली (भौप, सूत्र १,
१६, २, एया १, १, भग-सुपा ४२१) ।

पेसेयव्व देखो पेस = प्र + एषय ।

पेस्मिदवत देखो पेस्मिदवत (पि ५६६) ।

पेह सक [प्र + ईह] १ देखना, निरीक्षण
करना, ध्यान-पूर्वक देखना । २ चिन्तन करना ।
पेहद, पेहए (पि ८७, उव), पेहति (कुप्र
१६२) । भवि पेहिस्सामि (पि ५३०) । वक्र.
पेहत्, पेहमाण (उप पृ १५४, चैड्य २५०,
पि ३२३) । सक्र पेहाए, पेहिया (कस,
पि ३२३) ।

पेह सक [प्र + ईह] १ इच्छा करना,
चाहना । २ प्रार्थना करना । पेहेइ (दस ६,
४, २) ।

पेहण न [प्रेक्षण] निरीक्षण (पंचा ४, ११) ।

पेहा श्री [प्रेक्षण] १ निरीक्षण (उव, सम
३२) । २ कायोत्सर्ग का एक दोष, कायोत्सर्ग
मे बन्दर की तरह ओष्ठ-पुट को हिलाते रहना
(पव ५) । ३ पर्यालोचन, चिन्तन (भाव ४) ।
४ बुद्धि, मति (उत्त १, २७) ।

पेहाविय वि [प्रेक्षित] दर्शन, दिखलाया
हुमा (उप पृ ३८८) ।

पेहि वि [प्रेक्षित] निरीक्षक (प्राचा, उव) ।
श्री. 'णी (पि ३२३) ।

पेहिय वि [प्रेक्षित] निरीक्षित (महा) ।

पेहुण न [दे] १ पिच्छ, पंख (दे ६, ५८,
पाभ, गा १७३, ७६५, वजा ४४, भत
१४१, गउड) । २ मयूर पिच्छ, मयूर-
पंख, शिखण्ड (पएह १, १, २, ५, ज १,
एया १, ३) देखो पिहुण ।

पोअ सक [प्र + वे] पिरोना, शूथना ।
पोअति (गच्छ ३, १८, सूत्रनि ७४) । वक्र.
पोयमाण (स ५१२) । संक्र. पोइऊण
(धर्मवि ६७) ।

पोअ वि [प्रोत] पिराया हुमा (दे १, ७६) ।

पोअ पुं [पोत] १ जहाज, प्रवहण, नौका
(पाभ, सुपा ८८, ३६६) । २ बालक, शिशु,
बच्चा (दे ६, ८१, पाभ, सुपा ३६६) । ३
न. वक्र, कपडा (ठा ३, १—पत्र ११४)

फेफस } न [दे] देखो फिफिम,
फेफम } फुफुस (राज तदु ३६) ।

फेण न [दे] फेरना, घुमाना, 'घु फणफेरण-
सुंकारएहि' (सुर २, ८) ।

फेल सक [क्षिप्] १ फेंकना । २ दूर
करना । फेलि (शौ) (नाट) । सक
फेलिअ (नाट) ।

फेला छी [दे] झूठन-झूठन, झूठन, भोजन
से बचा-बुचा, सन्धिष्ट,

'तस्स य अणुं पाए देवी

दासी य तम्मि कूवम्मि ।

निच खिवति फेलं तीए

सो जियइ सुणउव्व ।'

'दुग्गघकूववासो गव्भो,

जणणीइ चावियरमेहि ।

ज गव्भपोसण पुण त फेलाहारसंकास ।'

(धम्मवि १४६) ।

फेलाया छी [दे] मातुलानी, मामी (दे ६,
८५) ।

फेल पुं [दे] बरिद्ध, निर्धन (दे ६, ८५) ।

फेल्लुअ सक [दे] फिसलना, खिसकना,
खिसककर गिरना । फेल्लुसइ (दे ६, ८६) ।

सक, फेल्लुसिअण (दे ६, ८६, स ३५५) ।

फेल्लुसण न [दे] १ फिसलन, पतन । २
पिच्छिल जमीन, वह जगह जहाँ पाँव फिसल
पड़े (दे ६, ८६) ।

फेल्लुसण देखो फेल्लुसण (वव ४ टी) ।

फेस पुं [दे] १ ग्राम, डर । २ सद्भाव (दे
६, ८७) ।

फोअ पुं [दे] उद्गम (दे ६, ८६) ।

फोइअय वि [दे] १ मुक्त । २ विस्तारित
(दे ६, ८७) ।

फोफा छी [दे] डराने की आवाज, भयोत्पादक
शब्द (दे ६, ८६) ।

फोड सक [स्फोटय्] १ फोडना, विदारण
करना । २ राई आदि से शाक आदि को
बघारना । फोडेज (कुप्र ६७) । वहु फोडंत,
फोडेमाण (मुपा २०१, ५६३, औप) ।

फोड पु [स्फोट] १ फोडा, द्रव्य-विशेष (ठा
१०—पत्र ५२०) । २ वर्ण-विशेष, शब्द-
भेद (राज) । ३ वि. भक्षक, 'बहुफोडो'
(औपभा १६१) ।

फोडअ (शौ) पु [स्फोटक] ऊपर देखो (प्राक
८६) ।

फोडग न [स्फोटन] १ विदारण (पव ६
टी, गउड) । २ राई आदि से शाक आदि को
बघारना (पिड २५०) । ३ राई आदि
संस्कारक पदार्थ (पिड २५५) । ४ वि.
फोडनेवाला, विदारण करनेवाला, 'कायर-
जणहिययफोडण' (गाया १, ८), 'अम्हं
मअणसराहअहिअअव्वणफाडणं गोअ' (गा
३८१) ।

फोडव देखो फोडज (पठम ६३, २६) ।

फोडाव सक [स्फोटय्] १ फोडवाना ।
तोडवाना । २ खुनवाना । संकृ फोडाविअण
(स ४६०) ।

फोडानिय वि [स्फोटित] १ तोडवाया
हुआ । २ खुलवाया हुआ, 'फोडाविया सपुडा'
(स ४६०) ।

फोड छी [स्फोटि] विदारण, भेदन, 'भाटो-
फोडोसु वजए कम्म' (पडि) । 'कम्म न
[कर्मन्] १ जमीन आदि का विदारण करने
का काम, हल आदि से भूमि-दारण, कृष,
तडाग आदि खोदने का काम । २ उक्त काम
कर आजीविका चलाना (पडि) ।

फोडिअ वि [स्फोटित] १ फोडा हुआ,
विदारित (गाया १, ७, स ४७२) । २
राई आदि से बघारा हुआ (वव १) ।

फोडिअय वि [दे. स्फोटित, 'क'] राई से
बघारा हुआ शाकादि (दे ६, ८८) ।

फोडिअय न [दे] रात के समय जगन में
सिंहादि से रक्षा का एक प्रकार (दे ६, ८८) ।

फोडिया छी [स्फोटिका] छोटा फोडा (उ
७६८ टी) ।

फोडी छी [स्फोटी, स्फौटी] देखो फोडि
(उवा, पव ६, पडि) ।

फोफम न [दे] शरीर का अवयव-विशेष,
'कालिज्जयअतपित्तजरहिययफोफसफेफमपि-
लिहोदर—' (तदु ३६) ।

फोफल न [दे] गन्ध द्रव्य विशेष, एक प्रकार
की औषधि, 'महुरविरेयणमेमो दायव्वो
फोफनाइदव्वेहि' (भत्त ४२) ।

फोफस देखो फोफस (पणह १, १—
पत्र ८) ।

फोरण न [स्फोरण] निरन्तर प्रवर्तन,
'विसयम्मि अपत्तेवि हु णियसत्तिफोरणेण
फलमिद्धो' (उवर ७४) ।

फोरविअ वि [स्फोरित] निरन्तर प्रवृत्त
किया हुआ, 'तेहिणि नियनियसत्ती फोरवीया'
(सम्मत्त २२७, हम्मो १४) ।

फोस देखो फुम = स्पृश, 'सव्व फोसति
जगं' (जीवस १६६) ।

फोस पुं [दे] उद्गम (दे ६, ८६) ।

फोस पु [दे. पोस] अपान-देश, पुदा
(तदु २०) ।

फोसणा छी [स्पर्शना] स्पर्श-क्रिया (जीवम
१६६) ।

॥ इय सिरिपाइअसहमहणवे फअराइसहसंकलणो

अट्ठावीसइमो तरंगो समत्तो ॥

५, ३; ८), 'पोग्गलाइ' (सुज्ज ६, पंच ३, ४६) । २ न. मास (पव २६८, हे १, ११६) । °स्थिआय पुं [°स्थिकाय] पुद्गल-स्कन्व, पुद्गल-राशि (गग, ठा ५, ३) । °परट्ट, °परियट्ट पुं [°परिवर्त] १ समस्त पुद्गल-द्रव्यो के साथ एक-एक परमाणु का संयोग-वियोग । २ समय का उत्कृष्टतम परिमाण-विशेष, अनन्त कालचक्र-परिमित समय (कम्म ५, ८६, भग १२, ४, ठा ३, ४) ।

पोग्गलि वि [पुद्गलिन्] पुद्गलवाला, पुद्गल-युक्त (भग ८, १०—पत्र ४२३) ।

पोग्गलिय वि [पौद्गलिक] पुद्गल-मय, पुद्गल-संन्वी, पुद्गल का (पिडमा ३२४) ।

पोच्च वि [दे] सुकुमार, कोमल, गुजराती में 'पोचु' (दे ६, ६०) ।

पोच्चड वि [दे] १ असार, निस्सार (णाय १, ३—पत्र ६४) । २ अतिनिविड (पण्ह १, १—पत्र १४) । ३ मलिन (निचू ११) ।

पोच्छल भक [प्रोत् + शल्] उछलना, ऊँचा जाना । वक्र. पोच्छलंत (सुर १३, ४१) ।

पोच्छाहण न [प्रोत्साहन] उत्तेजन (वेणी १०५) ।

पोच्छाहिअ वि [प्रोत्साहित] विशेष उत्साहित किया हुआ, उत्तेजित (सुर १३, २६) ।

पोट्ट पुं [पुत्र] लडका, 'एक्केण चारभड-पोट्टेण' (वव १, टी) ।

पोट्ट न [दे] पेट, उदर, मराठी में 'पोट' (दे ६, ६०, णाय १, १—पत्र ६१, ओघमा ७६, गा ८३, १७१, २८५, स ११६, ७३८, उवा, सुख २, १५; सुपा ५४३, प्राक् ३७, पव १३५, जं २) । °साल पु [°शाल] एक परिव्राजक का नाम (विसे २४५२, ५५) । °सारणी स्त्री [°सारणी] अतीसार रोग (प्राव ४) ।

पोट्ट न [दे] पोटला, गठुर, गठरी, पोट्टल } 'कामिणिनिर्बन्धविबं कदम्पविलासराय-हाणित्ति । न मुणह्म अमेज्जपोट्ट' (सुपा ३५५, दे २, २४, स १००) ।

पोट्टलिगा स्त्री [दे] पोटली, गठरी (सुख २, १७) ।

पोट्टलिय वि [दे] पोटली उठानेवाला, गठरी-वाहक (निचू १६) ।

पोट्टलिया [दे] देखो पोट्टलिगा (उप पु ३८७, मुर १२, ११, सुख २, १७) ।

पोट्टि स्त्री [दे] उदर पेशी (मृच्छ २००) ।

पोट्टिल पुं [पोट्टिल] १ भारतवर्ष का भावी नववाँ तीर्थंकर—जिन देव (सम १५३) ।

२ भारतवर्ष के चौथे भावी जिन-देव का पूर्वमवीय नाम (सम १५४) । ३ भगवान् महावीर का व्युत्क्रम से छठवें भव का नाम (सम १०५) । ४ एक जैन मुनि, जिसने भगवान् महावीर के समय में तीर्थंकर-नाम-कर्म वैवा था (ठा ६) । ५ एक जैन मुनि (पठम २०, २१) । ६ देव-विशेष (णाय १, १४) । ७ देखो पोट्टिल (राज) ।

पोट्टिला स्त्री [पोट्टिला] व्यक्ति-वाचक नाम, एक स्त्री का नाम (णाय १, १४) ।

पोट्टिस पु [पोट्टिस] एक कवि का नाम (कप्पू) ।

पोट्टवई स्त्री [प्रौष्टपदी] १ भाद्रपद मास की पूर्णिमा । २ भादो की अमावस्या (सुज्ज १०, ६) ।

पोट्टिल पुं [पुष्टिल] भगवान् महावीर के पास दीक्षा लेकर अनुत्तर-विमान में उत्पन्न एक जैन मुनि (अनु) ।

पोडइल न [दे] सृण-विशेष (पण्ह १—पत्र ३३) ।

पोड वि [प्रौड] १ समर्थ (पात्र) । २ निपुण, चतुर । ३ प्रगल्भ । ४ प्रवृद्ध, यौवन के बाद की अवस्थावाला (उप पु ८६, सुपा २२४, रंभा, नाट—मालती १३६) । °वाय पु [°वाद] प्रतिज्ञा-पूर्वक प्रत्याख्यान (गा ५२२) ।

पोडा स्त्री [प्रौडा] १ तीस से पचपन वर्ष तक की स्त्री (कुप्र १८५) । २ नायिका का एक भेद, शृङ्गार रस में काम-कला आदि अच्छी तरह जाननेवाली (प्राक् १०) ।

पोडिम पुं स्त्री [प्रौडमन्] प्रौढता, प्रौढपन (मोह २) ।

पोढी स्त्री [प्रौढी] ऊपर देखो (कुप्र ४०७) ।

पोणिअ वि [दे] पूर्ण (दे ६, २८) ।

पोणिआ स्त्री [दे] सूते से भरा हुआ तकुवा (दे ६, ६१) ।

पोत देखो पोअ = पोत (औप, बृह १, णाय १, ८) ।

पोतणया देखो पोअणा (उप पु ८१२) ।

पोत्त पुं [पौत्त] पुत्र का पुत्र, पोता (दे २, ७२, आ १४) ।

पोत्त न [पोत्त] प्रवहण, नौका, 'विसाजलम्मि ओयारियाणि सन्वाणि तेण पोत्ताणि' (उप ५६७ टी) ।

पोत्त न [पोत्त] १ वस्त्र, कपडा (आ गेन्म १२, ओघ १६८ कप्पू, म ३३०) ।

२ घोटी, कटी-वस्त्र (गच्छ ३, १८, कस, वव ८४, आवक ६३ टी, महा) । ३ वस्त्र-खण्ड (पिड ३०८) ।

पोत्तय पु [दे] फोता, वृषण, अण्डकोश (दे ६, ६२) ।

पोत्तिअ न [पौत्तिक] वस्त्र, सूती कपडा (ठा ५, ३—पत्र ३३८, कस २, २६ टि) ।

पोत्तिअ वि [पोत्तिक] १ वस्त्र-धारी । २ पुं वानप्रस्थो का एक भेद (औप) ।

पोत्तिआ स्त्री [पौत्त्रिका] पुत्र की लडकी (रंभा) ।

पोत्तिआ स्त्री [दे] चतुरिन्द्रिय जन्तु की एक जाति (उत्त ३६, १४७) ।

पोत्तिआ स्त्री [पोत्तिका, पोती] १ घोटी, पोत्ती } पहनने का वस्त्र, साडी (विसे २६०१) । २ छोटा वस्त्र, वस्त्र-खण्ड, 'चउ-प्फालयाए पोत्तीए मुह वंवेत्ता' (णाय १, १—पत्र ५३, पिडमा ६), 'मुहपोत्तियाए' (विपा १, १) ।

पोत्ती स्त्री [दे] काच, शीशा (दे ६, ६०) ।

पोत्तुल्लया देखो पोत्तिआ (णाय १, १८—पत्र २३५) ।

पोत्थ पुं [पुत्त, °क] १ वस्त्र, कपडा पोत्थग (णाय १, १३—पत्र १७६) । २-पोत्थय ३ देखो पुत्थ, 'पोत्थकम्मजक्खा विव निच्छिद्धा' (वसु, आ १२, सुपा २८६, विसे १४२५, बृह ३, प्राप्र, औप) ।

पोत्था स्त्री [प्रोत्था] प्रोत्थान, मूलोत्पत्ति (उत्त २०, १६) ।

पोत्थार पुं [पुत्तकार] पोथी लिखनेवाला, पोथी बनाने का काम करनेवाला शिल्पी, दफ्तरी, जिल्दसाज (जीव ३) ।

बंधण य छी [बन्धन] बन्धन (भग) ।
बंधण. ली [बन्धनी] विद्या-विशेष (पउम
७ १४१) ।

बंधय देखो बंधग (एदि ४२) ।

बंधव पुं [बन्धव] १ भाई, भ्राता । २ मित्र वयस्य दोस्त । ३ नातेदार, संबंधी, नतेत । ४ माता । ५ पिता । ६ माता-पिता का सम्बन्धी मामा, चाचा आदि (हे १, ३०, प्रासू ७६, उक्त १८, १४) ।

बंधाप (अज्ञो.) मक [बन्धन्] बंधाना, बंधवाना । बंधापयति (पि ७) ।

बंधाविअ वि [बन्धित] बंधाया हुआ (सुपा ३२५) ।

बंधअ देखो बद्ध (सूय १, २, १, १८, बमंवि २३) ।

बंधु पु [बन्धु] १ भाई, भ्राता । २ माता । ३ पिता । ४ मित्र, दोस्त । ५ स्वजन, नातेदार, नतेत (कुमा, महा, प्रासू १०८, सुपा १६८, २४१) । ६ छन्द विशेष (पिंग) । °जीव पुं [°जीव] वृक्ष-विशेष, दुपहरिया का पेड़ (स्वप्न ६६, कुमा) । °जीवग पुं [°जीवग] वही अर्थ (णाय १, १, कप्प, भग) । °दत्त पु [°दत्त] १ एक श्रेष्ठी का नाम (महा) । २ एक जैन मुनि का नाम (राज) । °मई, °वई ली [°मती] १ भगवान् मल्लिनाथ की मुख्य साध्वी का नाम (णाय १, ८, पव ६, सम १५२) । २ स्वनाम-न्याय ली-विशेष (महा, राज) । °सिरी ली [°सी] श्रीदाम राजा की पत्नी (विपा १, ६) ।

बंधुर ति [बन्धुर] १ सुन्दर, रम्य (पाय) । २ नम्र, श्रवणत (गउड २०५) ।

बंधुरिय वि [बन्धुरित] १ पिंडीकृत (गउड ३८३) । २ नम्रीभूत, नगा हुआ (गउड ५५६) । ३ मुकुटित, मुकुटयुक्त । ४ विभूषित (गउड ५३३) ।

बंधुल पु [बन्धुल] वेश्या-पुत्र, असती-पुत्र (मृच्छ २००) ।

बंधू पु [बन्धू] वृक्ष-विशेष, दुपहरिया का पेड़ (स ३१२) ।

बंधोल्ल पु [दे] मेलक, मेल, सगति (दे ६, ८६, पड) ।

बंध पु [ब्रह्मन्] १ ब्रह्मा विधाता (उप १०३१ टी, दे ६, २२, कुप्र २०३) । २ भगवान् शान्तिनाथ का शासनाधिष्ठायक यक्ष (सति ७) । ३ अफ्काय का अविष्ठायक देव (आ ५, १—पत्र २६२) । ४ पांचवे देवलोक का इन्द्र (ठा २, ३—पत्र ८५) । ५ बारहवें चक्रवर्ती का पिता (सम १५२) । ६ द्वितीय बलदेव और वामुदेव का पिता (सम १५२, ठा ६—पत्र ४४७) । ७ ज्योतिष-शास्त्र प्रसिद्ध एक योग (पउम १७, १०) । ८ ब्राह्मण, विप्र (कुलक ३१) । ९ चक्रवर्ती राजा का एक देव-कृत प्रासाद (उक्त १०, १३) । १० दिन का नववां मुहूर्त (मम ५१) । ११ छन्द-विशेष (पिंग) । १२ ईषत्प्राग्भारा पृथिवी (सम २२) । १३ एक जैन मुनि का नाम (कप्प) । १४ पुन. एक विमानावास, देव-विमान-विशेष (देवेन्द्र १३१, १३४, सम १६) । १५ मोक्ष, अपवर्ग (सूय २, ६, २०) । १६ ब्रह्मचर्य (सम १८, ओषभा २) । १७ सत्य अनुष्ठान (सूय २, ५, १) । १८ निर्विकल्प मुख (आचा १, ३, १, २) । १९ योगशास्त्र-प्रसिद्ध दशम द्वार (कुमा) । °कृत न [°कान्त] एक देव-विमान (सम १६) । °कूड पु [°कूट] १ महाविदेह वर्ष का एक वक्षस्कार पर्वत (ज ४) । २ न एक देव-विमान (सम १६) । °चरग न [°चरण] ब्रह्मचर्य (कुप्र १६१) । °चारि वि [°चारिन्] १ ब्रह्मचर्य पालन करनेवाला (णाय १, १, उवा । २ पुं भगवान् पार्श्व नाथ का एक गणधर प्रमुख मुनि (ठा ८—पत्र ४२६) । °चेर, °चेर न [°चर्य] १ मैथुन-विरति (आचा, परह २, ४, हे २, ७४, कुमा, भग, स ११, उप पृ ३४३) । २ जिनेन्द्र-शासन, जिन-प्रवचन (सूय २, ५, १) । °ज्मय न [°ज्मज] एक देव-विमान (सम १६) । °दत्त पुं [°दत्त] भारतवर्ष में उत्पन्न बारहवां चक्रवर्ती राजा (ठा २, ४, सम १५२, उवा) । °दीव पु [°द्वीप] द्वीप-विशेष (राज) । °दीविया ली [°द्वीपिका] जैन-मुनि गण की एक शाखा (कप्प) । °प्पभ

न [°प्रभ] एक देव-विमान (सम १६) । °भूद पुं [°भूति] एक राजा, द्वितीय वामु-देव का पिता (पउम २०, १८२) । °यारि देखो °चारि (णाय १, १, सम १३, कप्प, सुपा २७१, महा, राज) । ली. °णी (णाय १, १४) । °रुड पुं [°रुचि] स्वनाम-प्रसिद्ध एक ब्राह्मण, नारद का पिता (पउम ११, ५२) । °लेरा न [°लोश्य] एक देव-विमान (सम १६) । °लोअ, लोग पुं [°लोअ] एक स्वर्ग, पांचवां देवलोक (भग; अनु सम १३) । °लोगअडिसय न [°लोकागतसक] एक देव-विमान (सम १७) । °व °वत वि [°वन्] ब्रह्मचर्यवाला (आचा) । °वडिसय पुं [°वित्तमक] निद्र-शिला, ईषत्प्राग्भारा पृथिवी (सम २२) । °वणग न [°वर्ण] एक देव-विमान (सम १६) । °वय न [°व्रन] ब्रह्मचर्य (णाय १, १) । °वि वि [°वित्] ब्रह्म का जानकार (आचा) । °व्वय देखो °वय (सं ५६, प्रासू १५६) । °सति पुं [°शान्ति] भगवान् महावीर का शासन-यक्ष (गण ११, ती १५) । °सिरा न [°शृङ्ग] एक देव-विमान (सम १६) । °सिट्ट न [°सृष्ट] एक देव-विमान (सम १६) । °सुत्त न [°सुत्र] उपवीत, यज्ञो-पवीत (मोह ३०, सुव २, १३) । °हिअ पुं [°हित] एक विमानावास, देव-विमान-विशेष (देवेन्द्र १३४) । °वित्त न [°वर्त] एक देव-विमान (सम १६) । देखो वभाण, दग्ध ।

बंध न [ब्रह्माण्ड] जगत्, समार (गउड, कुप्र ४, सुपा ३६८, ५६३) ।

बंधण पु [ब्राह्मण] ब्राह्मण, विप्र (स २६०, सुर २, १३०, सुपा १६८, हे ४, २८, महा) ।

वभणिआ ली [ब्राह्मणिका] पञ्चेन्द्रिय जन्तु-विशेष (पुष्क २६७) ।

वभणिआ } ली [दे. ब्राह्मणिका] कीट-
वभणी } विशेष (दे ६, ६०, पाय, दे ८, ६३, ७५) ।

बंधण } ली [ब्राह्मण्य, ब्राह्मण्य, °क]
बंधणय } ब्राह्मण का हित । २ ब्राह्मण-संबन्धी । ३ न. ब्राह्मण-समूह । ४ ब्राह्मण-

पोसण न [पोषण] १ पुष्टि (पण्ह १, २) ।
 २ पालन । ३ वि. पोषण-कर्ता, 'सोम परं
 पि जइअसिपोसणो' (सुम १, २, १, १६) ।
 पोसण न [पोसन] अपान, पुदा (जं ३) ।
 पोसणया की [पोषणा] १ पोषण, पुष्टि ।
 २ भरण, पालन (उवा) ।
 पोसय देखो पोस = पोस, 'पोसए ति' (ठा
 ६ टी—पत्र ४५०, बृह ४) ।
 पोसय देखो पोसग (राज) ।
 पोसइ पुं [पोषध, पौषध] १ अष्टमी,
 चतुर्दशी आदि पर्वतिथि में करने योग्य जैन
 आचर का व्रत-विशेष, आहार आदि के त्याग-
 पूर्वक किया जाता अनुष्ठान-विशेष (सम १६,
 उवा; मौप; महा, सुपा ६१६; ६२०) । २
 पर्व-दिवस—अष्टमी, चतुर्दशी आदि पर्व-
 तिथि, 'पोसहसहो स्वीए एत्थ पम्वालुवायपो
 मण्णो' (सुपा ६१६) । 'पडिमा की
 [प्रतिमा] जैन आचर को करने योग्य
 अनुष्ठान-विशेष, व्रत-विशेष (पंचा १०, ३) ।
 'वय न [व्रत] वही पूर्वोक्त अर्थ (पडि) ।
 'साला की [शाला] पौष-व्रत करने का
 स्थान (छाया १, १—पत्र ३१; मत, महा) ।
 'ोववास पुं [पोषास] पर्वदिन में उप-
 वास-पूर्वक किया जाता जैन आचर का अनु-
 स्ठान-विशेष, जैन आचर का ग्यारहवाँ व्रत
 (मौप; सुपा ६१६) ।
 पोसहिय वि [पौषधिक] जिसने पौष-
 व्रत किया हो वह, पौष करनेवाला (छाया
 १, १—पत्र ३०; सुपा ६१६, धर्मवि २७) ।
 पोमिअ वि [वे] दुःस्व, दरिद्र, दु की (दे
 ६, ६१) ।
 पोसिअ वि [पुष्ट] पोषण-युक्त (भवि) ।
 पोसिअ वि [पोषित] १ पुष्ट किया हुआ ।
 २ पालित (उत्त २७, १४) ।
 पोसिद (शौ) वि [प्रोषित] प्रवास—विदेश में
 गया हुआ । 'भत्तुआ की [भर्तृका] जिसका
 पति प्रवास—परदेश में गया हो वह की
 (स्वज १३४) ।
 पोसी की [पौषी] १ पौष मास की पूर्णिमा ।
 २ पौष मास की अमावस (सुज १०, ६;
 ६क) ।

पोह पुं [दे] बैल आदि की विहा का डेर
 कच्ची भाषा में 'पोह' (पिड २४५) ।
 पोह पुं [प्रोय] मरु के मुक्त का प्रान्त नाम
 (गउड) ।
 पोहण पुं [दे] छोटी मछली (दे ६, ६२) ।
 पोहण न [पुष्ट] चौकई (भा) ।
 पोहण देखो पुहण (पि ७८) ।
 पोहणिय वि [पार्थक्यत्वक] प्रथम-संबन्धी
 (पण्ह २२—पत्र ६३६, ६४०, २३—पत्र
 ६६४) ।
 पोहल देखो पोफल (वह) ।
 'प देखो प = प्र; 'विपोसहिपलाण' (संति
 २; गउड) ।
 'पयास देखो पयास = प्रयास (भमि ११७) ।
 'पउत्त देखो पउत्त = प्रवृत्त (मा ३) ।
 'पबअ देखो पबय (भमि १७६) ।
 'पडव (मा) एक [प्र + तप्] मरग होना ।
 पडववि (पि २१६) ।
 'पडिआर देखो पडिआर = प्रतिकार (मा
 ४३) ।
 'पडिहा देखो पडिहा = प्रतिमा (कुमा) ।
 'पणइ देखो पणइ = प्रणयिन् (कुमा) ।
 'पणाम देखो पणाम = प्रणाम (दे ३,
 १०५) ।
 'पणास देखो पणास = प्रणाय (सुपा
 ६५७) ।
 'पण्णा देखो पण्णा = प्रज्ञा (कुमा) ।
 'पत्थाण देखो पत्थाण (भमि ८१) ।
 'पदेस देखो पदेस (नाट—विक्क ४) ।
 'पफुरिद (शौ) देखो पफुरिअ (नाट—
 मालती ५४) ।
 'पवंध देखो पवंध (रंभा) ।
 'पमिदि देखो पमिइ (रंभा) ।
 'पभूद (शौ) देखो पभूय (नाट—वेणी
 ३६) ।
 'पमत्त देखो पमत्त (भमि १८५) ।
 'पमाण देखो पमाण (पि ३६६ ए) ।
 'पमुक्क देखो पमुक्क (नाट—उत्तर ५६) ।
 'पमुह देखो पमुह (गउड) ।
 'पयर देखो पयर (कुमा) ।
 'पयाव देखो पयाव (कुमा) ।

'पयास देखो पयास = प्रक्रम (सुपा ६५७) ।
 'पलावि देखो पलावि (भमि ४६) ।
 'पवत्तण देखो पवत्तण; 'अभिअणिण सुह-
 पवत्तण' (भमि ४) ।
 'पवह देखो पवह (कुमा) ।
 'पवेस देखो पवेस (रंभा) ।
 'पवेसि देखो पवेसि (भमि १७५) ।
 'पसर देखो पसर = प्र + स। वक्र. 'पसरंत
 (रंभा) ।
 'पसर देखो पसर = प्रसर ।
 'पसब देखो पसब = (नाट—मालवि ३७) ।
 'पसाय देखो पसाय = प्रसाद (रंभा) ।
 'पसुत्त देखो पसुत्त (रंभा) ।
 'पसुद (शौ) देखो पसूअ = प्रसूत (भमि
 १४०) ।
 'पहर देखो पहर = प्रहार (सि २, ४, पि
 २६७ ए) ।
 'पहा देखो पहा (कुमा) ।
 'पहाण देखो पहाण (रंभा) ।
 'पहाय देखो पहाय = प्रभाव, 'पहार'
 (रंभा) ।
 'पहार देखो पहार (रंभा) ।
 'पहाव देखो पहाव (भमि ११६) ।
 'पहु देखो पहु (रंभा) ।
 'पारंभ देखो पारंभ (रंभा) ।
 'पिअ देखो पिअ = प्रिय (भमि ११८, मा
 १८) ।
 'पिआ देखो पिआ (कुमा) ।
 'पिप देखो पिप (आक २६) ।
 'पेम् देखो पेम् (पि ४०४) ।
 'पेम् देखो पेम् (कुमा) ।
 'पोठ देखो पोठ (रंभा) ।
 'फंस देखो फंस = स्पर्श (काप्र ७४३, गा
 ४६२, ५५६) ।
 'फणा देखो फणा (सुपा ५३५) ।
 'फट्ठा देखो फट्ठा (कुमा) ।
 'फल देखो फल (पि २००) ।
 'फाल सक [स्फाल्य] १ आघात करना ।
 २ पछाड़ना । फालज (पिग) ।

वल्भासा स्त्री [दे] नदी-भेद, वह नदी जिसके पूर से भावित पानी में घाव्य आदि बोया जाता हो (राज)।

वल्भिआयण न [वाभ्रव्यायन] गोश्र-विशेष (इक)।

वल्माल पुं [दे] कलकल, कोलाहल (दे ६, ६०)।

वल्ह पु [ब्रह्मन्] १ ज्योतिष्क देव विशेष (ठा २, ३—पत्र ७७)। २ देखो वभ (हे २, ७४, कुमा, गा ८१६, अच्यु १३, वजा २६, सम्मत्त ७७, हे १, ५६, २, ६३, ३, ५६)। ३ चरिअ देखो वंभ-चेर (हे २, ६३, १०७)। ४ नरु पु [तर्] पलाश का पेड़ (कुमा)। ५ धमणी स्त्री [धमनी] ब्रह्मनाडी (अच्यु ८४)।

वल्हज (शौ) देखो वभण (प्राक् ८७)।

वल्हण देखो वभण (अच्यु १७, प्रयौ ३७)।

वल्हणय देखो वंभणय (भग)।

वल्हहर [दे] देखो वभहर (पङ्)।

वल्हल पु [दे] अपममार, वायु-रोग-विशेष, मृगी रोग (पङ्)।

वय पुं [वक] १ पक्षि-विशेष, वयुला। २ कुवेर। ३ महादेव। ४ पुष्प-वृक्ष विशेष, मल्लिका का गच्छ (आ २३)। ५ राक्षस-विशेष (आ २३)। ६ असुर-विशेष, वकासुर (वेणी १७७)।

वयाला देखो वा-याला (पव १६)।

वरठ पु [दे] घाव्य-विशेष (पव १५४ टी)।

वरह न [वर्ह] १ मयूर-पिच्छ (म ५००)। २ पत्र। ३ परिवार (प्राक् २८)। देखो वरिह्।

वरहि } पु [वर्हिन्] मयूर, मोर (पाम्र, वरहिण } प्राक् २८, पउम २८, १२०, णाया १, १, पएह १, १, औप)।

वरिह देखो वरह (हे २, १०४)। १ धर पु [धर] मयूर (पङ्, प्राक् २८)।

वरिहि } देखो वरहि (कण्, हे ४, ४२२)। वरिहिण }

वरुअ न [दे] वृण-विशेष, इक्षु-सदृश वृण (दे ५, १६, ६, ६१, पाम्र)।

वरुड पुं [द] शिल्पी-विशेष, चटाई बनाने-वाला शिल्पी (अणु १४६)।

वल अक [ज्वल्] जलना, गुजराती में 'वल्लु'। वलति (हे ४, ४१६)।

वल अक [वल्] १ जीना। २ सक. खाना। वलइ (हे ४, २५६)।

वल सक [ग्रह्] ग्रहण करना। वलइ (पङ्)। देखो वल = ग्रह्।

वल पुं [वल] १ वलदेव, हलधर, वासुदेव का बड़ा भाई (पउम २० ८४, पाम्र)। २ छन्द-विशेष (पिग)। ३ एक क्षत्रिय परिव्राजक (औप)। ४ न. सामर्थ्य, पराक्रम (जी ४२, स्वप्न ४२, प्रासू ६३)। ५ शारीरिक पराक्रम, 'वलवीरियाण जयो भेओ' (अज्म ६५)। ६ सैन्य, सेना (उत्त ६, ४, कुमा)। ७ खाद्य-विशेष, 'आसाठाहि वलेहि भोजा कज सावेति' (सुज १०, १७)। ८ अग्रम तप, लगातार तीन दिनों का उपवास (सवोच ५८)। ९ पर्वत-विशेष का एक कूट—शिखर (ठा ६)। १० चिह्न वि [चिह्नन्] १ वल का नाशक। २ न. जहर, विष (से २, ११)। ३ णु देखो ०न्न (राज)। ४ देव पुं [देव] हली, वासुदेव का बड़ा भाई, राम (सम ७१, औप)। ५ न वि [ज्ञ] वल को जाननेवाला (आचा)। ६ भद्र पुं [भद्र] १ भरतजेन का भावी सातवाँ वासुदेव (सम १५४)। २ राजा भरत का एक प्रपौत्र (पउम ५, ३)। ३ एक विमानावास, देवविमान-विशेष (देवेन्द्र १३३)। देखो हृद। ४ भाणु पुं [भानु] राजा वलमित्र का भागिनेय (काल)। ५ महणा स्त्री [मथनी] विद्या-विशेष (पउम ७, १४२)। ६ मित्र पुं [मित्र] इस नाम का एक राजा (विचार ४६४, काल)। ७ व वि [वत्] १ वलवान्, वलिष्ठ (विसे ७६८)। २ प्रभूत सैन्यवाला (औप)। ३ पुं. अहोरात्र का आठवाँ मुहूर्त (सुज १०, १३)। ४ वइ पुं [पति] सेनापति, सेनाध्यक्ष (महा)। ५ वत, ०वग देखो ०व (णाया १, १, औप, णाया १, ५)। ६ वत्त न [वत्त्व] वलिष्ठता (ओघमा ६)। ७ वाउय वि [व्यापृत] सैन्य में लगाया हुआ (औप)। ८ हृद पुं [भद्र] १ वलदेव। २ छन्द-विशेष (पिग)। देखो ०भद्र।

वलकार } पुं [वलात्कार] जवरदस्ती (पउम वलकार } ४६, २६, दे ६, ४६, अमि २१७, स्वप्न ७६)।

वलकारिद (शौ) वि [वलात्कारित] जिस पर वलात्कार किया गया हो वह (नाट—मालती १२३)।

वलइ पु [दे] वलव, वैल (मुपा ५४५, नाट—मृच्छ ६०)।

वलमझा स्त्री [दे] वलात्कार, जवरदस्ती (दे ६, ६२)।

वलमोडि देखो वलामोडि, 'मणिगलदे वल-मोडिचुंविअ अप्पणेण उवणीदे' (गा ८२७)। वलमोडिअ देखो वलामोडिअ, 'केसेमु वल-मोडिअ तेण समरम्मि जयमिरी गहिआ' (गा ६७७)।

वलय पुं [दे] वलव, वैल (पउम ८०, १३)।

वलया देखो वलाया (हे १, ६७)।

वलवट्टि स्त्री [दे] १ मल्ली। २ व्यायाम को सहन करनेवाली स्त्री (दे ६, ६१)।

वलहट्टुया स्त्री [दे] चने की रोटी (वज्जा ११४)।

वला अ स्त्री [वलात्] जवरदस्ती, वलात्कार (से १०, ७८, ओघमा २०), 'वलाए' (उप १०३१ टी)।

वला स्त्री [वला] १ मनुष्य की दश दशाओं में चौथी अवस्था, तीस से चालीम वर्ष तक की अवस्था (तुं १६)। २ दृष्टि-विशेष, योग की एक दृष्टि। ३ भगवान् कुन्धुनाय की शानन-देवी, अच्युता (राज)।

वलाका देखो वलाया (पएह १, १—पत्र ८)।

वलाणय न [दे] १ उद्यान आदि में मनुष्य को बैठने के लिए बनाया जाता स्थान—बेंच आदि (धर्मवि ३३, सिरि ५८६)। २ द्वार, दरवाजा, 'पविसतो चेव वलाणयम्मि कुज्जा निनीहिया तिन्नि' (वेइय १८८)।

वलामोडि स्त्री [दे. वलामोडि] वलात्कार (दे ६, ६२)।

वलामोडिअ अ [दे. वलामोडिअ] वलात्कार में, जवरदस्ती से, 'केसेमु वलामोडिअ तेण अ समरम्मि जयमिरी गहिआ' (काम्र १६७, उत्तर १०३, पि २३८)।

फडिअ वि [स्फटित्] खोदा हुआ, 'तो थोवे-सघरेहि नरोहि फडिया भडति सा गत्ता' (सुपा ६१३)।

फडिअ } देखो फलिह = स्फटिक (नाट—
फडिग } रत्ना ८३), 'फडिगपाहारणिभा'
(निबू ७)।

फडिल देखो फडा-ल (चंड)।

फडिह पुं [परिघ] १ अगंला, आगल (से १३, ३८)। २ कुठार (से ५, ५४)।

फडिहा देखो फलिहा = परिखा (से १२, ७५)।

फडु } पुंन [दे. स्पर्ध, °क] १ अश,
फडुग } भाग, निस्सा, गुजराती में 'फाडिउ',
फडु } 'कम्मियकईमिस्सा छुल्ली उक्खा य
फडुगु } फडुगजुया उ' (पिड २५३)। २

संपूर्ण गण के अधिष्ठाता के वशवर्ती गण का एक लघुतर हिस्सा, समुदाय का एक अति छोटा विभाग जो संपूर्ण समुदाय के अव्यक्त के अधीन हो, 'गच्छागच्छिं गुम्मायुम्मि फडुफडि' (घोष, बृह १)। ३ द्वार आदि का छोटा छिद्र, विवर। ४ अवधिज्ञान का निर्गम-स्थान, 'फडु य असलेजा', 'फडु य आणुगामी' (विसे ७३८, ७३९)। ५ समुदाय, 'तत्थ पव्वइयगा फडुगेहि एति' (आवम, आचू १)। ६ समुदाय-विशेष, वर्गणा-समुदाय, 'नेहप्यच्चय-फडुगमेग अविभागवगगणा एंता' (कम्मप २८, ४४, पंच ३, २८, ५, १८३, १८४, जीवस ७६), 'तं इगिफडुं सते', 'तासि खलु फडुङ्गाइ तु' (पंच ५, १७६, १७१)। °वइ पुं [°पति] गण के अवान्तर विभाग का नायक (बृह १)।

फण पु [फण] फन, सांप की फणा (से ६, ५५, पात्र, गा २४०, सुपा १, प्रासू ५१)।

फणग पुं [दे. फनक] कघा, केश सवारने का उपकरण (उत २२, ३०)।

फणजुय पु [दे] वनस्पति-विशेष, 'तुलसी करह-भोराले फणजुए अजए य भूयए' (पण १—पत्र ३४)।

फणस पु [पनस] कटहर का पेठ (पण १, हे १, २३२, प्राप्र)।

फणा स्त्री [फणा] फन (सुर २, २३६)।

फणि पुं [फणिन्] १ सांप, सर्प, नाग (उप ३५७ टी, पात्र, सुपा ५५६, महा, कुमा)।

२ दो कला या एक गुरु अक्षर की संज्ञा (पिंग)। ३ प्राकृत-पिंगल का कर्ता, पिंगला-चायं (पिंग)। °चिध पुं [°चिह] भगवान् पारवनाथ (कुमा)। °पहु पुं [°प्रभु] १ नागकुमार देवो का एक स्वामी, धरणेन्द्र (ती ३)। २ शेष नाग (धर्मवि ५७)। °राय पुं [°राज] १ शेष नाग (कुप्र २७२)। २ पिंगल-कर्ता (पिंग)। °लआ स्त्री [°लता] नागलता, वल्ली-विशेष, (कप्पू)। °वइ पुं [°पति] १ इन्द्र-विशेष, धरणेन्द्र (सुपा ३१)। २ नाग-राज (मोह २६)। ३ पिंगलकार (पिंग)। °सेहर पुं [°शेखर] प्राकृत-पिंगल का कर्ता (पिंग)।

फणिंद पुं [फणीन्द्र] १ नाग-राज, शेष नाग (प्रासू ११३)। २ पिंगलकार (पिंग)।

फणिल सक [चोरय्] चोरी करना। फणिल्लइ (घात्वा १४६)।

फणिह पुं [दे. फणिह] कघा, केश सवारने का उपकरण (सूत्र १, ४, २, ११)।

फणीसर पुं [फणीश्वर] देखो फणि-वइ (पिंग)।

फणुजय देखो फणजुय (राज)।

फड पुं [स्पर्ध] स्पर्धा, हिंस (कुमा)।

फड्ढा स्त्री [स्पर्धा] ऊपर देखो (दे ८, १३, कुमा ३, १८)।

फडि वि [स्पर्धिन्] स्पर्धा करनेवाला (प्राकृ २३)।

फर पुं [दे. फल, °क] १ काष्ठ आदि फरअ } का तह्ता। २ ढाल। (दे १, ७६, ६, ८२, कप्पू, सुर २, ३१)। देखो फल, फलग।

फरअ पुंन [दे. स्फरक] अन्न-विशेष, 'फरएहि छाइअणं तेवि हु गिएहंति जीवत' (धर्मवि ८०)।

फरकिद वि [दे] फरका हुआ, हिला हुआ, कम्पित (कप्पू)।

फरस देखो फरिस = स्पर्श (रंभा, नाट)।

फरसु पुं [परशु] कुठार, कुल्हाड़ा, फरसा (भवि, पि २०४)। °राम पुं [°राम] ब्राह्मण-विशेष, जमदग्नि ऋषि का पुत्र (भत १५३)।

फरहर अक [फरफराय्] फरफर आवाज करना। वक्र. फरहरंत (भवि)।

फरित देखो फलिह = स्फटिक (इक)।

फरिस सक [स्पृश्] छूना। फरिसइ (पड), फरिसइ (प्राकृ २७)। कर्म. फरिसिजइ (कुमा)। कवक. फरिसिज्जत (धर्मवि १३६)।

फरिस पुंन [स्पर्श, °क] स्पर्श, छूना फरिसग } (आचा, पणह १, १, गा १३२, प्राप्र, पात्र, कप्पू), 'न य कीरइ तएणफरिस' (गच्छ २, ४४)।

फरिसण न [स्पर्शन] इन्द्रिय-विशेष, त्वगिन्द्रिय (कुप्र २२४)।

फरिसिय वि [स्पष्ट] छुआ हुआ (कुप्र १६, ४२)।

फरिहा देखो फलिहा = परिखा (णाय १, १२)।

फरुस वि [परुप] १ कंकश, कठिन (उवा, पात्र, हे १, २३२, प्राप्र)। २ न कुवचन, निष्ठुर वाक्य, 'ए यावि किंची फरुसं वदेजा' (सूत्र १, १४, ७, २१)।

फरुस पुं [दे. परुष, °क] कुम्भकार, फरुसग } कुम्हार, कोहार्, कुंभार, 'पोगलमो-यगफरुसगदंते' (बृह ४)। °साला स्त्री [°शाला] कुम्भकार-गृह (बृह ३)।

फरुसिया स्त्री [परुपता, पारुप्य] कंकशता, निष्ठुरता (आचा)।

फल अक [फल] फलना, फलान्वित होना। फलइ (गा १७, ८६४), फलति (सिरि १२८२)। वक्र. फलत (से ७, ५६)।

फल पुंन [फल] १ वृक्षादि का शय्य (आचा, कप्पू, कुमा, ठा ६, जी १०)। २ लाम, 'पुच्छइ ते सुमिणाणं एएसि किमिह मह फलो होइ' (उप ६८६ टी)। ३ कार्य, 'हेउफनमा-वओ होति' (पंचव १, धर्म १)। ४ इष्टानिष्ठ-कृत कर्म का शुभ या अशुभ फल—परिणाम (सम ७२, हे ४, २३५)। ५ उद्देश्य। ६ प्रयोजन। ७ त्रिफला। ८ जायफल। ९ वाण का अग्र भाग। १० फाल। ११ दान। १२ मुष्क, अण्डकोप। १३ ढाल। १४ कक्षोल, गन्धद्रव्य-विशेष (हे १, २३)। १५ अग्र भाग, 'अदु वा मुट्टिणा अदु

(विपा १, १) । °दत्त पु [°दत्त] देखो अत के दो अर्थ (विपा १, ५) ।

बहि अ [बहिस्] बाहर, 'अवहिलेसे परिव्वए' (आचा), 'गामबहिम्मि यत ठाविकण गामंतरे पविट्ठो सो' (उप ६ टी) । °हुत्त वि [°दे] बहिम्ब (गउड) ।

बहिअ वि [°दे] मथित, विलोडित (षड्) ।

बहि देखो बहि (आचा, उव) ।

बहिणिआ } स्त्री [भगिनी] बहिन (अभि
बहिणी } १३७, कप्पू, पाअ, पउम ६,
६, हे २, १२६, कुमा) । २ सखी, वयस्या
(सखि ४७) । °तणअ पुं [°तनय] भगिनी-
पुत्र (दे) । °वइ पुं [°पति] बहनोई (दे) ।
देखो भइणी ।

बहिता अ [बहिस्तात्] बाहर (सुज ६) ।

बहिद्धा अ [°दे] १ बाहर । २ मैथुन, स्त्री-
सभोग (हे २, १७४, ठा ४, १—पत्र
२०१) ।

बहिद्धा अ [बहिर्धा] बाहर की तरफ (दस
२, ४) ।

बहिया अ [बहिस्, बहिस्तात्] बाहर
(विपा १, १, आचा, उवा, औप) ।

बहिर वि [बाह्य] बहिर्भूत, बाहर का (प्राक
३८) ।

बहिर वि [बधिर] बहरा, जो सुन न सकता
हो वह (विपा १, १, हे १, १८७, प्रासू
१४३) ।

बहिरिय वि [बधिरित] बधिर किया हुआ
(सुर २, ७५) ।

बहु वि [बहु] १ प्रचुर, प्रभूत, अनेक, अनल्प
(ठा ३, १, भग, प्रासू ४१, कुमा, आ २७) ।
स्त्री. °हुई (षड्, प्राक २८) । २ क्रिवि
अत्यन्त, अतिशय (कुमा ५, ६६, काल) ।
°उदग पु [°उदक] वानप्रस्थ का एक भेद
(औप) । °चूड पु [°चूड] विद्याधर वश
का एक राजा (पउम ५, ४६) । °जपिर वि
[°जलिपत्] वाचाट, बकवादी (पाअ) ।
°जण पु [°जन] अनेक लोग (भग) । २ न.
श्रालोचना का एक प्रकार (ठा १०) । °णड
देखो °नड (राज) । °णाय न [°नाद]
नगर-विशेष (पउम ५५, ५३) । °देसिअ

वि [°देश्य] कुछ ज्यादा, थोडा बहुत
(आचा २, ५, १, २२) । °नड पु [°नट]
नट की तरह अनेक भेप को धारण करने-
वाला (आचा) । °पडिपुण, °पडिपुअ वि
[°परिपूर्ण] पूरा पूरा (ठा ६, भग) ।
°पडिय वि [°पठित] अति शिक्षित.
अतिशय शिक्षित (णाय १, १४) ।
°पलावि वि [°प्रलापिन] बकवादी (उप
पृ ३३६) । °पुत्तिअ न [°पुत्रिक] बहु-
पुत्रिका देवी का मिहासन (निर १, ३) ।
°पुत्तिआ स्त्री [°पुत्रिका] १ पूर्णभद्र नामक
यक्षेन्द्र की एक अग्र-महिषी (ठा ४, १,
णाय २) । २ सौधर्म देवलोक की एक देवी
(निर १, ३) । °प्पएस वि [°प्रदेश]
प्रचुर प्रदेश—कर्म-दल वाला (भग) ।
°फोड वि [°स्फोट] बहु-भक्षक (ओघभा
१६१) । °भगिय न [°भङ्गिक] दृष्टिवाद
का सूत्र-विशेष (सम १२८) । °मय वि
[°मत्] १ अत्यन्त अभीष्ट (जोव १) । २
अनुमोदित, समत, अनुमत (काप्र १७६, सुर
४, १८८) । °माइ वि [°मायिन्] अति
कपटी (आचा) । °माण पुं [°मान] अति-
शय आदर (आवम, पि ६००, नाट—विक्र
५) । °माय वि [°माय] अति कपटी
(आचा) । °मुल्ल, °मोल्ल वि [°मूल्य]
मूल्यवान्, कीमती (राज, पड्) । °रय वि
[°रत] १ अत्यन्त आसक्त (आचा) । २
जमालि का अनुयायी । ३ न. जमालि का
चलाया हुआ एक मत—क्रिया की निष्पत्ति
अनेक समयो मे ही माननेवाला मत (ठा १०,
औप) । °रय न [°रजस्] खाद्य-विशेष,
चिउडा की तरह का एक प्रकार का खाद्य
(आचा २, १, १, ३) । °रव वि [°रव]
१ प्रभूत यशवाला, यशस्वी (सम ५१) । २
न एक विद्याधर-नगर (इक) । °रूवा स्त्री
[°रूपा] सुरूप नामक भूतेन्द्र की एक अग्र-
महिषी (ठा ४, १, णाय २) । °लेव पु
[°लेप] चावल आदि के चिकने माँड का
लेप (पडि) । °वयण न [°वचन] बहुत्व-
बोधक प्रत्यय (आचा २, ४, १, ३) । °विह
वि [°विध] अनेक प्रकार का, नानाविध
(कुमा, उव) । °विहिय वि [°विध,

°विधिक] विविध, अनेक तरह का (सुअनि
६४) । °सपत्त वि [°सप्राप्त] कुछ कम
सप्राप्त (भग) । °सय पु [°सत्य] ग्रहोरात्र
का दशवां मुहूर्त (सुज १०, १३) । °सो अ
[°शस्] अनेक वार (उव, आ २७, प्रासू
४२, १५६, स्वप्न ५६) । °सुय वि
[°श्रुत] शास्त्रज्ञ, शास्त्रो का अच्छा जानकार,
परिणत (भग, सम ५१, ठा ६—पत्र ३५२,
सुपा ५६४) । °हा प्र [°धा] अनेकधा
(उव, भवि) ।

बहुअ } वि [बहु, °क] ऊपर देखो (हे
बहुअय } २, १६४, कुमा, आ २७) ।

बहुआरिआ } स्त्री [°द] बहारी, भाडू (दे
बहुआरी } ८, १७ टी) ।

बहुई देखो बहु = ई ।

बहुखज्ज वि [बहुखाद्य] १ बहु-भक्ष्य, खूब
खाने योग्य । २ घृष्टक—चिउडा बनाने योग्य
(आचा २, ४, २, ३) ।

बहुग देखो बहुअ (आचा ७) ।

बहुजाण पु [°दे] १ चोर, तस्कर । २ घूर्त,
ठाग । ३ जार, उपपत्ति (षड्) ।

बहुण पु [°दे] १ चोर, तस्कर । २ घूर्त (दे
६, ६७) ।

बहुणाय वि [बाहुनाद] बहुनाद-नगर का
(पउम ५५, ५३) ।

बहुत्त वि [प्रभूत] बहुत, प्रचुर (हे १,
२३३) ।

बहुमुइ पुं [°दे. बहुमुख] दुर्जन, खल (दे ६,
६२) ।

बहुराणा स्त्री [°दे] खड्ग-धारा, तलवार की
धार (दे ६, ६१) ।

बहुरावा स्त्री [°दे] शिवा, श्रृगाली (दे ६,
६१) ।

बहुरिया स्त्री [°दे] बहारी, भाडू (वह १) ।

बहुल वि [बहुल] १ प्रचुर, प्रभूत, अनेक
(कुमा, आ २८) । २ बहुविध, अनेक प्रकार
का (आवम) । ३ व्याप्त (सुपा ६३०) । ४
पु कृष्ण पक्ष (पाअ) । ५ स्वनाम स्यात्
एक ब्राह्मण (भग १५) ।

बहुल पुं [बहुल] आचार्य महागिरि के शिष्य
एक प्राचीन जैन मुनि (एदि ४६) ।

फेला हुमा (सुर २, २३६, काम १७०, सुपा १६४, कुप्र ५१) ।

फारक वि [दे. स्फारक] स्फरकाज को कारण करनेवाला, 'तं नासंतं वदतुं फारका ननुवधधो बुक्का' (धर्मवि ८०) ।

फारसिध न [पारुष्य] पक्षता, कठोरता, कर्कशता, 'फारसिध समाहर्षति' (भाषा) ।

फाल देखो °फाल ।

फाल देखो फाल । फालेइ (हे १, १२८; २३२) । कबहु, फालिअंत, फालिअमाण (गा १५३, सम्मत १७४) । संहु, फालेऊण (गा ४८२) ।

फाल पुंन [फाल] १ लोहमय कुण्ड, एक प्रकार की सोहे की सम्मी कील (उवा) । २ फाल से की जाती एक प्रकार की बिम्ब-परीक्षा, शपथ-विशेष (सुपा १८२) । ३ फलांन, लौफ, 'दीवि न्व विहलफालो' (कुप्र १२) ।

फालण न [पाटन, स्फाटन] विदारण, 'सोणी कि न सहेदि सीरपुहमी तं तारित फालण' (रंभा; सम १२५) ।

फालण देखो °फालण ।

फाल की [फाल] फलाङ्ग, लौफ (कुप्र २७७; कुलक ३२) ।

फालि की [दे. फालि] १ फली, छोटी, फलियां २ शाला "सिबलिफालिअ भग्गिणा वड्ढो" (संभा ८५) । ३ फौक, टुकड़ा "— मानवसोदलपूगीफलफालिपुह—" (रयण ५५) ।

फालिअ वि [पाटित, स्फाटित] विदारित (कुमा, पण्ह १, १—पत्र, पउम ८२, ३१, औप) ।

फालिअ न [दे. फालिक] देश-विशेष में होता बल-विशेष, "अमिन्नाणि वा गब्बानाणि वा फलियाणि वा कायहाणि वा (भावा २, ५, १, ७) ।

फालिअ } पुं [स्फाटिक] १ रत्न-विशेष
फालिअ } (कप्य) । २ वि. स्फटिक-रत्न का
फालिअ } (वि २२६; उप २८६, सुपा ८८) ।

फालिहइ पु [पारिभट्ट] १ फरहद का पेड़ । २ देवदार का पेड़ । ३ निम्ब का पेड़ (१, २३२) ।

फालस सक [स्पृश, स्पर्शय] १ स्पर्श करना, छूना । २ पालन करना । फालस, फालेइ (हे ४, १८२; भग) । कर्म, फालिअइ (कुमा) । बह. फालसंत, फालसंत (पंभा १०, ३५, पण्ह २, ३—पत्र १२३) । कबहु, फाला-इअमाण (भग—भं) । संहु, फालसइता, फालसिता (उत २२, १, सुल २२, १, कप्य; भग) ।

फालस पुंन [स्पर्श] १ स्पर्श, छूना (भग; प्रासू १०४) । २ ग्रह-विशेष, पञ्चोत्पन्न देव-विशेष (ठा २, ३—पत्र ७८) । ३ बुध-विशेष, 'एयाई फालाई कुसंति बाल' (सूभ १, ५, २, २२) । ४ शब्द आदि विषय (उत ४, ११) । ५ स्पर्श इन्द्रिय, त्वचा (भग) । ६ रोग । ७ ग्रहण । ८ युद्ध, लड़ाई । ९ पुनः चर, वापस । १० बाध, पवन । ११ दान । १२ 'क' से लेकर 'म' तक के अक्षर । १३ वि. स्पर्श करनेवाला (हे २, २२) । 'कीव पुं [°कीव] क्लीब का एक भेद (निष् ४) । 'णाम, नाम न [°नामन] कर्म-विशेष, कर्कश आदि स्पर्श का कारणभूत कर्म (राज, सम ६७) । 'मंत वि [°मत्] स्पर्शवाला (ठा ५, ३; भग) । 'मय वि [°मय] स्पर्श-मय, स्पर्श से निरुद्ध; 'फाला-मयापो सोक्खामो' (ठा १०) ।

फालसग वि [स्पर्शक] स्पर्श करनेवाला (अण्क १०४) ।

फालसण न [स्पर्शन] १ स्पर्श-क्रिया (आ १६) । २ स्पर्शोद्भूत, त्वचा (पव ६७) ।

फालसणया } श्री [स्पर्शना] १ स्पर्श-क्रिया
फालसणा } (ठा ६, स १५२, जीवस १८१) । २ प्राप्ति (राज) ।

फालिअ वि [स्पृष्ट] १ छुना हुआ (भव ४१; विते २७८३) । २ प्राप्त; 'उच्चिए काले निहिणा पत्तं जं फालियं तयं अणियं' (पव ४) ।

फालिअ वि [स्पर्शिक] स्पर्श करनेवाला (विते १००१) ।

फालिअ वि [स्पर्शित] १ स्पर्श-युक्त, स्पृष्ट । २ प्राप्त (पव ४—गाथा २१२) ।

फालिअिय न [स्पर्शोद्भूत] स्वगोद्भूत (भग, शावा १, १७) ।

फालु } वि [प्रासू, °क] अक्षेपन, जीव-
फालुअ } रहित, निर्बीज, अक्षित वस्तु (भग;
फालुग } पंभा १०, ६; औप; उवा; शावा १, ५, पउम ८२, ५) ।

फिकर सक [फित् + क] प्रेत—पिशाच का चित्तावा; 'तह फिकरंति पेया' (सुपा ४२२) ।

फिकि पुंजी [दे] हर्ष, कुशी (दे ६, ८३) ।

फिज न [दे. स्फिच्] नितम्ब, खुतर, जंभा का उपरि-भाग (सुल ८, १३) ।

फिट्ट सक [अंश्] १ नीचे गिरना । २ टूटना, आंगना । ३ वस्त्र होना । ४ पलायन करना, भागना । फिट्टइ (हे ४, १७७; प्राहु ७६, गा १८३, केइय ५८७), फिट्टई (उत २०, ३०), फिट्टंति (सिरि १२२३) । अवि. फिट्टिहिइ, फिट्टिहिइ (कुप्र १६५, गा ७६८) ।

फिट्ट वि [अष्ट] विलुप्त; 'पालिएण तएह विवध न फिट्टा' (गा २३; अवि) ।

फिट्टा की [दे] १ मार्ग, रास्ता; 'वा फिट्टाए मिलियं कुट्टियनरपेडियं एण' (सिरि २२२) । २ प्रणाम-विशेष, मार्ग में किया जाता प्रणाम (पुमा १) । 'मिअ पुंन [°मित्र] मार्ग में मिलने पर प्रणाम करने तक की अवधिवासी मित्रतावाला (सुपा १८२) ।

फिट्ट देखो फिट्ट । फिट्टइ (हे ४, १७७) ।

फिट्टिअ वि [अष्ट, स्फिटित] १ अंश-प्राप्त, मष्ट, घुट (शेष ७, १११, ११२, से ४, ५४, ६४) । २ प्रतिश्रुत, उल्लिखित (मोपभा १७४, औप) ।

फिट्टु वि [दे] बामन (दे ६, ८४) ।

फिट्टप वि [दे] कुजिन, बनावटी (दे ६, ८३) ।

फिट्टिअ न [दे] अन्न—भात स्थित मांस-विशेष, फेफड़ा (सूभनि ७२; पण्ह १, १) ।

फिर सक [गम्] फिरना, चलना । वहु. फिरंत (धर्मवि ८१) ।

वाल पु [वाल] १ वाल, केश (उप ८३४)।
 २ बालक, शिशु (कुमा प्रासू ११६)। ३
 वि. मूर्ख, अज्ञानी (पात्र)। ४ नया, नूनन
 (कप्पू)। ५ पु स्वनाम-ख्यात एक विद्याधर
 राजा (पउम १०, २१)। ६ वि. असयत,
 समय-रहित (ठा ४, ३)। °कइ पुं [°कवि]
 तरुण कवि, नया कवि (कप्पू)। °क पुं
 [°क] उदित होता सूर्य (कुमा)। °ग्गाह
 पुं [ग्गाह] बालक की सार सम्हाल करने-
 वाला नौकर (सुर १, १६२)। °ग्गाहि पु
 [°ग्गाहिन्] वही पूर्वोक्त अर्थ (गाया १,
 २—पत्र ८४)। °घाय वि [°घात] बाल-
 हत्या करनेवाला (गाया १, २, १८)। °नव
 पुन [°तपस्] १ अज्ञानी की तपस्व्या
 (भग, श्रौप)। २ वि अज्ञान पूर्वक तप करने-
 वाला (कम्म १, ५६)। °तवस्सि वि
 [°तपस्विन्] अज्ञान-पूर्वक तप करनेवाला,
 मूर्ख तपस्वी (पि ४०५)। °पडिअ वि
 [°पण्डित] आशिक त्याग करनेवाला, कुछ
 अंशो में त्यागी और कुछ में अत्यागी (भग)।
 °बुद्धि वि [°बुद्धि] अनमिज्ञ (घण ५०)।
 °मरण न [°मरण] अविरत दशा का मरण,
 असंयमी की मौत (भग, सुपा ३५७)। °वियण,
 °वीयण पुत्री [°वियजन] चामर, चँवर
 (गाया १, ३), स्त्री. 'उवणहाओ बालवी-
 अणी' (ठा ५, १—पत्र ३०३)। °हार पु
 [°धार] बालक का सार-सम्हाल करनेवाला
 नौकर (सुपा ४५८)।

वाल देखो बल। °ण, °न्न वि [°ज्ञ] बल
 को जाननेवाला (आचा १, २, ५, ५,
 आचा)।

वाल न [वाल्थ] बालत्व, बचपन, लडकपन,
 लपन, मूर्खता (उत्त ७, ३०)। देखो बल।
 वालअ देखो वाल = बाल (गा १२६)।

वालअ पु [दे] वणिक-पुत्र (दे ६, ६२)।
 बालगपोइआ स्त्री [दे] १ जल-मन्दिर,
 तलाव आदि में बनवाया जाता छोटा प्रासाद।
 २ बलमी, अट्टालिका (उत्त ६, २४)।

बाला स्त्री [बाला] १ कुमारी, लडकी
 (कुमा)। २ मनुष्य की दस अवस्थाओं में
 पहली दशा, दस वर्ष तक की अवस्था (तंदु
 १६)। ३ छन्द-विशेष (पिंग)।

बालालुबी स्त्री [दे] तिरस्कार, अवहेलना
 (सुपा १४)।

बालि वि [बालिन्] बाल प्रधान, मुन्दर केश-
 वाला (अणु, बृह १)।

बालिआ स्त्री [बालिका] बाला, कुमारी,
 लडकी (प्रासू ५१, म्हा)।

बालिआ स्त्री [बालना] १ बालकपन, शिशुता
 (भग)। २ मूर्खता, वेवकूफी, 'विद्या मंदस्सा
 बालिया' (आचा)।

बालिस वि [बालिअ] मूर्ख, वेवकूफ (पात्र,
 घण २३)।

बाह सक [बाध] १ विरोध करना। २
 रोकना। ३ पीडा करना। ४ विनाश करना।

बाहइ, बाहए (पचा ५, १५, हे १, १८७,
 उव), बाहति (कुप्र ६८)। कवकू. बाहिज्जत,
 बाहीअमाण (पउम १८, १६, सुपा ६४५,
 अमि २४४) कृ बाहणिज्ज (कप्पू)।

बाह पु [बाप्प] अश्रु, आँसू (हे २, ७०,
 पात्र, कुमा)।

बाह पु [बाध] विरोध (भास ३४)।

बाह देखो बाढ (प्रयो ३७)।

बाह पुं [बाहु] हाथ, भुजा (संक्षि २)।

बाहग वि [बाधक] १ रोकनेवाला (पचा १,
 ४६)। २ विरोधी, 'अव्भुवगयबाहगा नियमा'
 (आवक १६२)।

बाहड पुं [बाहड, बाग्भट] राजा कुमारपाल
 का स्वनाम-प्रसिद्ध मन्त्री (कुप्र ६)।

बाहण न [बाधन] १ बाधा, विरोध (धर्मस
 १२७६)। २ विराधन (पंचा १६, ५)।

बाहणा स्त्री [बाधना] ऊपर देखो (धर्मस
 १११)।

बाहर देखो बाहिर (आचा)।

बाहल पुं [बाहल] देश-विशेष (आवम)।

बाहल न [बाहल्य] स्थूलता, मोटाई (सम
 ३५, ठा ८—पत्र ४४०, श्रौप)।

बाहा स्त्री [बाधा] १ हरकत, हरज। २
 विरोध (सुपा १२६)। ३ पीडा, परस्पर
 संश्लेष से होनेवाली पीडा (ज १, भग
 १४, ८)।

बाहा स्त्री [बाहु] हाथ, भुजा (हे १, ३६,
 कुमा, महा; उवा, श्रौप)।

बाहा स्त्री [दे. बाहा] नरकावास-श्रेणी
 (देवेन्द्र ७७)।

बाहि } अ [बाहिस्] बाहर (सुज्ज १६—
 बाहि } पत्र २७१; महा, आचा, कुमा, हे २,
 १४०, पि ४८१)।

बाहिज न [बाधिर्य] बधिरता, बहरापन
 (विसे २०८)।

बाहिर अ [बाहिस्] बाहर (हे २, १४०,
 पात्र, आचा; उव)। °ओ अ [°तस्]
 बाहर में (कप्पू)।

बाहिर वि [बाह] बाहर का (आचा, ठा
 २, १—पत्र ५५, भग २, ८ टी)। °उद्धि
 पु [°ऊर्ध्विन्] कायोत्तमं का एक दोष,
 दोनो पाष्णि मिलाकर और पैर को फैलाकर
 किया जाता कायोत्तमं (वेइय ४८६)।

बाहिरंग वि [बाहिरङ्ग] बाहर का, बाह्य
 (सूत्र २, १, ४२)।

बाहिरिय वि [बाहिरिक, बाह्य] बाहर का,
 बाहर से संबन्ध रखनेवाला (मम ८३, गाया
 १, १, पिड ६३६, श्रौप, कप्पू)।

बाहिरिया स्त्री [बाहिरिका] किले के बाहर
 की गृह-पक्ति, नगर के बाहर का मुहल्ला
 (सूत्र २, ७, १, स ६६)।

बाहिरिल्ल वि [बाह्य] बाहर का (भग, पि
 ५६५)।

बाहु पुत्री [बाहु] १ हाथ, भुजा (हे १,
 ३६, आचा, कुमा)। २ पुं भगवान् ऋषभदेव
 का पुत्र, बाहुवलि (कुप्र ३१०)। °बलि
 पु [°बलि] १ भगवान् आदिनाथ का एक
 पुत्र, तक्षशिला का एक राजा (सम ६०,
 पउम ४, ५२, उव)। २ बाहुवलि के प्रपौत्र
 का पुत्र (पउम ५, ११)। °मूल न [°मूल]
 कक्षा, बगल (कप्पू)।

बाहुअ पुं [बाहुक] स्वनाम ख्यात एक ऋषि
 (सूत्र १, ३, ४, २)।

बाहुअड वि [दे] लज्जित, शर्मिदा (सुपा
 ४७४)।

बाहुया स्त्री [बाहुका] श्रोत्रिय जन्तु-विशेष
 (राज)।

बाहुलग देखो बाहु (तदु ३६)।

बाहुलेय पु [बाहुलेय] गो-वत्स, बैल, वृषभ
 (आवम)।

फुरफुर अक [पोरुफुराय] खूब कांपना, थरथराना, तडफटाना। फुरफुरेबा (महानि १)। वक्र फुरफुरत, फुरफुरेत (सुर १४, २३३, स ६६६, २५६)।

फुरिअ वि [स्फुरित] १ कम्पित, हिला हुआ, फरका हुआ, चलित (दे ६, ८४, सुर ५, २२६, गा १३७)। २ दोस्त (दे ६, ८४)।

फुरिअ वि [दे] निन्दित (दे ६, ८४)।

फुरुफुर देखो फुरफुर। वक्र. फुरुफुरंत, फुरुफुरंत (परह १, ३, पिंड ५६०, सुर ७, २३१, राया १, ८—पत्र १३३)।

फुल देखो फुड = स्फुट। फुलइ (नाट)। फुले (अप) (पिंग)।

फुल (अप) देखो फुर = स्फुर। फुला (पिंग)।

फुल (अप) देखो फुड = स्फुट (पिंग)।

फुल (अप) देखो फुल = फुल (पिंग)।

फुलिअ देखो फुलिअ = स्फुटित (मे ५, ३०)।

फुलिअ (अप) देखो फुलिअ (पिंग)।

फुलिग पु [स्फुलिङ्ग] अग्नि-कण (राया १, १, दे ६, १३५, महा)।

फुल अक [फुल्ल] फूलना, पुष्प-युक्त होना, विकसना। फुलइ फुलए, फुलइ (रंभा, सम्मत १४०), फुलति (हे २, २६)। भवि. फुलिहिमि (गा ८०२)।

फुल देखो कम = क्रम। फुलइ (धात्वा १४६)।

फुल न [फुल] १ फूल, पुष्प (कुमा, धर्मवि २०, सम्मत १४३, दसनि १)। २ फूला हुआ, पुष्पित (भग, राया १, १—पत्र १८; कुमा)। ३ मालिया स्त्री [मालिका] फूल बेचनेवाली, मालाकार की स्त्री, मालिन (सुर ३, ७४)। ४ वल्लि स्त्री [वल्लि] पुष्प-प्रधान लता (राया १, १)।

फुलधय पुं [फुलन्धय, पुष्पन्धय] भ्रमर, भँवरा (उप ६८६ टी)।

फुलधुअ पुं [दे] भ्रमर, भौरा (दे, ६, ८५, पाय, कुमा)।

फुल्लग न [फुल्ल] पुष्प की आकृतिवाला ललाट का आभूषण (श्रौप)।

फुलण न [फुल्लन] विकास (वज्जा १५२)।

फुलया स्त्री [फुल्ला, पुष्पा] वल्ली-विशेष, पुष्पाह्ला, शतपुष्पा, सोया का काष्ठ, 'दहफुल्लय-

कोगलिमा (१ मो) गनी य तह अक्खवोदीया' (परह १—पत्र ३३)।

फुल्लवड न [दे] पुष्प-विशेष, मदिरा-वामक फूल (कुप्र ४५३)।

फुल्लविय } वि [फुल्लित] फुलाया हुआ
फुल्लविय } (सम्मत १४०, विक्र २३)।

फुल्लिअ वि [फुल्लित] पुष्पित, विकसित (अत १२, स ३०३, सम्मत १४०, २२७)।

फुल्लिम पुं स्त्री [फुल्लना] विकास, फूलन,
'अच्छउ ता फलकाले फुल्लिमसमए
वि कालिमा वयणे।

इय कलिउ व पलासो चत्तो
पत्तेहि किविणो व्व'
(सुर ३, ४४)।

फुल्लिर वि [फुल्लित] फूलनेवाला, प्रफुल्ल,
'हिययण दणचदणफुल्लिरफुल्लेहि' (सम्मत २१४)।

फुस सक [भ्रम्] भ्रमण करना। फुसइ
(हे ४, १६१)।

फुस सक [मृज्] मार्जन करना, पोछना,
साफ करना। फुसइ (हे ४, १०५, भवि)।
कर्म फुसिजइ, फुसिजउ (कुमा, सुपा १२४)।
वक्र फुसंत, फुसमाण (भवि, कुप्र २८५)।
संक्र. फुमिऊण (महा)।

फुस सक [स्पृग्] स्पर्श करना, छूना।
फुमइ (भग, श्रौप, उत्त २, ६), फुसति (विसे २०२३), फुसतु (भग)। वक्र. फुसंत,
फुसमाण (श्रौष ३८६, भग)। संक्र.
फुसिअ, फुसित्ता, फुसित्ताणं (पंच २,
३८, भग, श्रौप, पि ५८३)। क. फुस्स
(ठा ३, २)।

फुसण न [स्पर्शन] स्पर्श-क्रिया (भग, सुपा ५)।

फुसणा स्त्री [स्पर्शना] ऊपर देखो (विसे ४३२, नव ३२)।

फुसिअ देखो फुस = स्पृश।

फुसिअ वि [स्पृष्ट] छुआ हुआ (जीवस १६६)।

फुसिअ वि [मृष्ट] पोछा हुआ (उप पृ ३४५
सुपा २११, कुप्र २३१)।

फुसिअ पुंन [पृषत] १ बिन्दु, बुन्द, बूँद
(आचा, कप्प)। २ बिन्दु-पात (सम ६०)।

फुसिअ वि [भ्रमित] घुमाया हुआ (कुमा ७, ४)।

फुमिआ स्त्री [दे] वल्ली विशेष, 'सेमविदुगो-
त्तफुसिया' (परह १—पत्र ३३)।

फुरस देखो फुस = स्पृश।

फूअ पुं [दे] लोहकार, लोहार (दे ६, ८५)।

फूम देखो फुम। वक्र. फूमत (राज)।

फूमिय वि [फूकृत] फूँका हुआ (उप पृ १४१)।

फूल देखो फुल = फुल्ल, 'फलफूलल्लिकट्टा
मूलगपत्ताणि वीयाणि' (जी १३)।

फेक्षार पु [फेत्तार] १ शृगाल की आवाज
(सुर ६, २०४)। २ आवाज, चिल्लाहट
(कप्प)।

फेक्षारिय न [फेत्तारित] ऊपर देखो (स ३७०)।

फेड सक [स्फेडय्] १ विनाश करना।

२ दूर हटाना। ३ परित्याग करना। ४
उद्घाटन करना। फेडइ, फेडेइ, फेडति (उव,
हे ४, ३५८, सबोव ५४, स ४१४)। कर्म.
फेडिजइ (भवि)।

फेडण न [स्फेडन] १ विनाश। २ अपनयन
(पव १३५)।

फेडणया स्त्री [स्फेडना] ऊपर देखो (पिंड ३८७)।

फेडावणिय न [दे] विवाह समय की एक
रीति, वधू को प्रथम बार लजा-परिहार के
वक्त दिया जाता उपहार (स ७८)।

फेडिअ वि [स्फेडित] १ नष्ट किया हुआ,
विनाशित (पठम ३६, २२)। २ त्वाजित
(विरि ६५५)। ३ अपनीत (श्रौषभा ४२)।
४ उद्घाटित (स ७८)।

फेण पुं [फेण, फेन] फेण, भाग, जल-मल,
पानी आदि के ऊपर का बुद्बुदाकार पदार्थ
(पाय, राया १, १—पत्र ६२, कप्प)।

मालिणी स्त्री [मालिना] नदी-विशेष
(ठा २, ३, इक)।

फेणवध } पुं [दे] वरुण (दे ६, ८५)।

फेणाय अक [फेणाय्, फेनाय्] फेण—
फेन का वमन करना, भाग निकालना।
वक्र फेणायमाण (प्रयौ ७४)।

विभेलय देखो वृहेडय (पण १—पत्र ३१) ।
विराड पु [विडाल] १ पिगल-प्रसिद्ध मध्य-
लघुक पाच मात्रावाला अक्षर-समूह । २ छद-
विशेष (पिग) ।

विराल देखो विडाल (सुर १, १८) ।

विरालिआ देखो विडालिआ (सम्मत
विराली } १२३, पात्र) । २ भुजपरिसर्प-
विशेष हाथ से चलनेवाला एक प्रकार का
प्राणी (सूत्र २, ३, २५) ।

विरालिया स्त्री [विरालिका] स्थल-कन्द-
विशेष (आचा २, १, ८, ३) ।

विरुन न [विरुद] इल्काव, पदवी (सम्मत
१४१) ।

विचन न [विल] १ रत्न, विवर, साँप आदि
जन्तुओं के रहने का स्थान (विपा १, ७,
गडह) । २ कृप, कुमाँ (राय) । °कोलीकारक
वि [दे. °कोलीकारक] दूसरे को व्यामृग्य
करने के लिए विस्वर वचन बोलनेवाला
(पण १, ३—पत्र ४४) । °पतिया स्त्री
[°पडिक्तका] खान की पद्धति (पण २,
५—पत्र १५०) ।

विलाड } देखो विडाल (भग, पि २४१) ।
विलाड }

विलाडिआ देखो विरालिआ (पि २४१) ।

विल पु [विल्व] १ वृक्ष-विशेष, बेल का पेड़
(पण १, उप १०३१ टी) । २ न. बेल का
फल (पात्र) ।

विल्लल पु [विल्वल] १ अनार्य देश-विशेष ।
२ उस देश में रहनेवाली मनुष्य-जाति (पण १,
१—पत्र १४) । देखो चिल्लल = चिल्वल ।

विस न [विस] कमल आदि के नाल का
तन्तु, मृणाल (पाया १, १३, कुमा, पात्र) ।
°कठी स्त्री [°कण्ठी] बलाका, बक पक्षी की
एक जाति (दे ६, ६३) । देखो भिस =
विम ।

विसि देखो विसी (दे १, ८३) ।

विसिणी स्त्री [विसिनी] कमलिनी, कमल
का गाछ (पि २०६) ।

विसी स्त्री [वृषी] ऋषि का आसन (दे १,
८३, पि २०१) ।

विडक [भी] डरना । विहेड (प्राक ६४,
पे २०१) ।

विह वि [वृहन्] बड़ा महान् । °णर पु
[°नल] छन्द विशेष (पिग) ।

विहप्पइ } देखो वहस्सइ (हे २, १३७,
विहप्फइ } १, १३८, २, ६६, पड, कुमा) ।
विहस्सइ }

विहिअ देखो विहिअ (प्राक ८) ।

विहेल्ल देखो विभेलय (दस ५, २, २४) ।

वीअ देखो विइअ (हे १, ५, २, ७६, मुर १,
३८, सुपा ४८५) ।

वीअ न [वीज] १ बीज, बीया, 'लाउअवीअ
इक्कं नामइ भारं गुडस्स जह सहसा' (प्रासू
१५१, आचा, जो १३, श्रीप) । २ मूल
कारण, 'सारीरमाणसारोयदुल्लवीयभूयकम्म-
वणदहणसह' (महा) । ३ बीयें, शरीरान्तर्गत
सप्त धातुओं में से मुख्य धातु, शुक्र (सुपा
३६०, वव ६) । ४ 'हो' अक्षर (सिरि
१६६) । °बुद्धि वि [°बुद्धि] मूल ग्रंथ को
जानने से शेष ग्रंथों का निज बुद्धि से स्वयं
जाननेवाला (श्रीप) । °मत वि [°वत्]
बीजवाला (पाया १, १) । °रुड स्त्री
[°रुचि] एक ही पद से अनेक पद और
ग्रंथों का अनुसंधान द्वारा फेलनेवाली रुचि ।
२ वि उक्तं रुचिवाला (पण १) । °रुह वि
[°रुह] बीज से उत्पन्न होनेवाली वनस्पति
(पण १) । °वाय पु [°वाप] क्षुद्र जन्तु-
विशेष (राज) । °सुहुम न [°सूक्ष्म] छिलके
का अग्र भाग (कप्प) ।

बीअऊरय न [बीजपूरक] फल-विशेष, एक
तरह का नीबू (मा ३६) ।

बीअजमण न [दे] बीज मलने का खल—
खलिहान (दे ६, ६०) ।

बीअण पु [दे] नीचे देखो (दे ६, ६३ टी) ।

बीअय पुन [दे बीजक] वृक्ष-विशेष, असन
वृक्ष, विजयसार का गाछ (दे ६, ६३, पात्र) ।

बीअवावय पु [बीजवापक] विकलेन्द्रिय
जन्तु की एक जाति (अणु १४१) ।

बीआ स्त्री [द्वितीया] १ तिथि-विशेष, द्वज
(सम २६, आ २६, रयण २, पाया १,
१०, सुपा १७१) । २-द्वितीय विभक्ति
(चेइय ५०६) ।

बीज देखो बीअ = बीज (कुमा, पण २,
१—पत्र ६६) ।

बीडग न [बीटक] बीडा, पान का बीडा,
सजित ताम्बूल (सुपा ३३६) ।

बीडि } स्त्री [बीटि, °टी] ऊपर देखो;
बीडी } 'विल्लदलबीडीओ कीसेवि मुहम्मि
पक्खिवइ' (धमवि १४०) ।

बीभच्छ पु [बीभत्स] साहित्य प्रसिद्ध एक
रस (अणु १३५) ।

बीभच्छ } वि [बीभत्स] १ घृणोत्पादक,
बीभत्स } घृणा-जनक । २ भयंकर, भय-
जनक (उवा, तंदु ३८, पाया १, २, सवोष
४८) । ३ पु. रावण का एक सुमट (पत्तम
५६, २) ।

बीयत्तिय वि [दे बीजयित्] बीज बोनेवाला,
वपन करनेवाला । २ पु. पिता, 'बीय बीयत्ति-
यस्सेव' (सुपा ३६०, ३६१) ।

बीलय पु [दे] ताडक, कर्णभूषण-विशेष,
कान का एक गहना (दे ६, ६३) ।

बीह अक [भी] डरना । बीहड, बीहेड (हे
४, ५३, महा, पि २१३) । वृह बीहंत
(शोधमा १६, उप ७६८ टी, कुमा) । क.
बीहियव्व (स ६८२) ।

बीहच्छ देखो बीभच्छ (पि ३२७) ।

बीहण } वि [भीषण, °क] भय-जनक
बीहणग } भयकर (पि २१३, पण १, १,
बीहणय } पत्तम ३५, ५४) ।

बीहविय वि [भीषित] डराया हुआ (सम्मत
११८) ।

बीहिअ वि [भीत] १ डरा हुआ (हे ४,
५३) । २ न भय, डर, 'न य बीहिअ
ममावि हु' (आ १४) ।

बीहिर वि [भेत्] डरनेवाला (कुमा ६, ३५) ।
बुआव सक [वाचय] बुलवाना । सङ्ग.
बुआवइत्ता (ठा ३, २—पत्र १२८) ।

बुइअ वि [उक्त] कथित (सूत्र १, २, २,
२४, १, १४, २५, पण २, २) ।

बुंदि पुत्री [दे] १ चुम्बन । २ सूकर, सूअर
(दे ६, ६८) ।

बुंदि स्त्री [द] शरीर, देह, 'इह बुंदि चइत्ताण
तत्थ गतूण सिज्झइ' (ठा १ टी—पत्र २४)
सुज २०, तंदु १३, सुपा ६५६, धम्म ६
टी, पात्र) । देखो वोंदि ।

बुंदिणी स्त्री [दे] कुमारी-समूह (दे ६, ६४) ।

व

व पुं [व] ओष्ठ-स्यानीय व्यञ्जन वर्ण-विशेष (प्राप) ।

वअर (शौ) न [वदर] १ फल-विशेष, वेर ।
२ कपास का बीज (प्राक् ८३) ।

वइट्ट (अप) वि [उपविट] वैठा हुआ (हे ४, ४४४, भवि) ।

वइल्ल पुं [दे] कैल, वरध, वृषभ (दे ६, ६१, गा २३८, प्राक् ३८, हे २, १७४, धर्मवि ३, आवक २५८ टी, भु १५३, प्रासू ५५, कुप्र २७६, ती १५, वै ६, कप्पू) ।

वइस (अप) अक [उप + विग] वैठना, गुजराती में 'बैसवु' । वइसइ (भवि) ।

वइसणय (अप) न [उपवेशनक] आसन (ती ७) ।

वइसार (अप) सक [उप + वेशय] वैठाना । वइसारइ (भवि) ।

वइस्स देखो वइस्स (पि ३००) ।

वईस (अप) देखो वइस । वईसइ (भवि) ।
वईस (अप) न [उपवेश] वैठ, वैठन, वैठना, 'तोवि गोठुडा कराविआ मुदए उठु-वईस' (हे ४, ४२३) ।

वडणी छी [दे] कर्पासी, कर्पास-वल्ली (दे ३, ५७) ।

वडल पुं [वकुल] १ वृक्ष-विशेष, मौलमरी का पेड़ (सम १५२, पात्र, णाया १, ६) ।
२ वकुल का पुष्प (से १, ५६) ।
३ सिरी छी [श्री] १ वकुल का पेड़ । २ वकुल का पुष्प (आ १२) ।

वउस पुं [वकुश] १ अनार्य देश-विशेष ।
२ पुत्री, उस देश का निवासी (परह १, १—पत्र १४) ।
३ सी (णाया १, १—पत्र ३७) ।
४ वि शवल, चितकवरा ।
५ मलिन चरित्रवाला, शरीर के उपकरण और विभूषा आदि से सयम को मलिन करनेवाला (ठा ३, २, ५, ३, सुख ६, १), छी, 'तए ए सा सूमालिया अज्जा सरीरवउसा जाया यावि होत्या' (णाया १, १६) ।
४ पुंन मलिन सयम, शिथिल चारित्र-विशेष (सुख ६, १) ।

वउहारी छी [दे] बुहारी, समार्जनी, झाड़ू (दे ६, ६७) ।

वंग पुं [वङ्ग] १ भगवान् आदिनाथ के एक पुत्र का नाम (ती १४) ।
२ देश-विशेष, बंगाल देश (उप ७६५, ती १४) ।
३ बंग देश का राजा (पिंग) ।

वगल (अप) पुं [वङ्ग] वग देश का राजा (पिंग) ।

वंगाल पु [वङ्गाल] वगल देश 'वंगालदेम-वइणो तेणं तुह समुरयस्स दिन्ना ह' (सुपा ३७७) ।

वंग देखो वग (पि २६६) ।

वडि पुं [दे] देखो वदि = वन्दिन् (पड) ।

वद न [दे] वैदी, कारा-वद्ध मनुष्य, 'वदपि किपि' (स ४२१), 'वदाइ गिन्हइ कयावि', छलेण गिन्हति वदाइ', 'वंदाणं मोयावणकए' (धर्मवि ३२), 'एणत्थवदपगहियपहियकीरत-कण्णरुत्तमरा' (धर्मवि ५२) ।
३ गगह पु [प्रह] कैदी रूप से पकड़ना, 'परदोहवट्ट-वाडणवदगहखनखणणपमुहाइ' (कुप्र ११३) ।

वदण न [दे] कैदी (नदीटिप्प० वैनपि की बुद्धि में १३ वां कथानक) ।

वदि छी [वन्दि] देखो वदी (हे १, १४२, २, १७६) ।

वदि पुं [वन्दिन्] स्तुति-पाठक, मंगल-वदिण पाठक, मागव, 'मंगलपाठयमागह-चारणवेआलिआ वदी' (पात्र, उप ७२८ टी, धर्मवि ३०), 'उहामसदवदिणवदरसमुग्घु-नामाड' (स ५७६) ।

वदिर न [दे] समुद्र-वाणिज्य-प्रधान नगर, वदर (तिरि ४३३) ।

वंदी छी [वन्दी] १ हठ-हट छी, वाँदी (दे २, ८४, गउड १०५, ८४३) ।
२ कैद किया हुआ मनुष्य (गउड ४२६, गा ११८) ।

वदीकय वि [वन्दीकृत] कैद किया हुआ, बाँध कर आनीत (गउड) ।

वदुरा छी [वन्दुरा] अश्व-शाला, 'गच्छ निखेहि वदुराओ, भूसेहि तुरए' (स ७२५) ।

बंध सक [बन्ध] १ बाँधना, नियन्त्रण करना ।
२ कर्मों का जीव-प्रदेशों के साथ संयोग करना ।
बंध (भग, महा, उव; हे १, १८७) ।
३ भूका, बंधिमु (पि ५१६) ।
कर्म, बंधिज्झइ, बज्झइ (हे ४, २४७), भवि, बंधिहिइ, बाज्झाहिइ (हे ४, २४७) ।
वक्क बंधंत चधसाण (कम्म २, ८, पएण २२) ।
सक, बवइत्ता, बाधउं, बांधऊण, बांधिऊण, बंधित्ता, बंधित्तु (भग, पि ५१३, ५८५, ५८२) ।
हक, बधेउ (ह १, १८१) ।
क, बांधियव्व (पंच १, ३) ।
कवक्क बज्झत, बज्झमाण (सुपा १६८, कम्म १, ३५, औप) ।

बंध पुं [दे] भृत्य, नौकर (दे ६, ८८) ।
बध पु [बन्ध] १ कर्म-पुद्गलों का जीव-प्रदेशों के साथ दूध-पानी की तरह मिलना, जीव-कर्म-संयोग (आचा, कम्म १, १५, ३२) ।
२ बन्धन, नियन्त्रण, सयमन (आ १०, प्रासू १५३) ।
३ छन्द-विशेष (पिंग) ।
४ सामि वि [स्वामिन्] कर्म बन्ध करने-वाला (कम्म ३, १, २४) ।

बंधई छी [बन्धकी] पुंश्चली, असती छी (नाट—मालती १०६) ।

बधग वि [बन्धक] १ बाँधनेवाला ।
२ कर्म-बन्ध करनेवाला, आत्म-प्रदेश के साथ कर्म-पुद्गलों का संयोग करनेवाला (पंच ५, ८४, आवक ३०६, ३०७, पचा १६, ४०, कम्म ६, ६) ।

बंधन [बन्धन] १ बाँधने का—सश्लेष का साधन, जिससे बाँधा जाय वह स्निग्ध-तादि गुण (भग ८, ६—पत्र ३६४) ।
२ जो बाँधा जाय वह ।
३ कर्म, कर्म-पुद्गल ।
४ कर्म-बन्ध का कारण (सूत्र १, १, १, १) ।
५ संयमन, नियन्त्रण (प्रासू ३) ।
६ नियन्त्रण का साधन, रज्जु आदि (उव) ।
७ कर्म-विशेष, जिस कर्म के उदय से पूर्व-गृहीत कर्म-पुद्गलों के साथ गृह्यमाण कर्म-पुद्गलों का आपस में सम्बन्ध हो वह कर्म (कम्म १, २४, ३१, ३५, ३६, ३७) ।

बुल वि [दे] बोड, भदन्त, धर्मिष्ठ (पिंग १६८)।

बुलबुल छी [दे] बुलबुला, बुदबुद (दे ६, ६५)।

बुलबुल पुं [दे] ऊपर देखो (पङ्)।

बुल्ल देखो बोल्ल। बुल्लइ (कुप्र २६, आ १४), बुल्लति (प्रासू ४)। प्रयो. बुल्लावेद, बुलावेमि, बुल्लावए (कुप्र १२७, सिरि ४४०)।

बुव सक [ब्रू] बोलना। बुवइ (पङ्, कुमा)। वक्तु बुवंत, बुयाण, बुवाण (उत्त २३, २१, सूत्र १, ७, १०, उत्त २३, ३१)। देखो बू।

बुस न [बुस] १ भूसा, यव आदि का कडंगर, नाज का छिलका (ठा ८—पत्र ४१७)। २ तुच्छ धान्य, फल-रहित धान्य (गउड)।

बुसि छी [बुपि, सि] मुनि का आसन। ०म, ०मंत वि [०मंत] संयमी, व्रती, मूनि (सूत्र २, ६, १४, आचा)।

बुसिआ छी [बुसिका] यव आदि का कडंगर, भूसा (दे २, १०३)।

बुह पु [बुध] १ ग्रह-विशेष, एक ज्योतिष्क देव (सुर ३, ५३, धर्मवि २४)। २ वि. परिडत, विद्वान् (ठा ४, ४, सुर ३, ५३, धर्मवि २४, कुमा, पात्र)।

बुहप्पइ } देखो वहुस्सइ (हे २, ५३, १३७,
बुहप्फइ } पङ्, कुमा)।
बुहस्सइ }

बुहुक्ख सक [बुभुक्ष्] खाने की इच्छा करना। बुहुक्खइ (हे ४, ५, पङ्)।

बुहुक्खा देखो बुभुक्खा (राज)।

बुहुक्खिअ वि [बुभुक्षित] भूखा (कुमा)।

बू सक [ब्रू] बोलना, कहना। बूम, बूया, बूहि (उत्त २५, २६, सूत्र १, १, ३, ६, १, १, १, २)। विति, वेंति, वेमि, बुआ (कम्म ३, १२, महा, कप्प)। भूका, अन्नवी (उत्त २३, २१, २२, २५, ३१, ठा ३, २)। वक्तु. वित्त, वेंत (उप ७२८ टी, सुपा ३६०, विसे ११६)। सक. बूइत्ता (ठा ३, २) देखो वव, बुव।

बूर पुं [बूर] वनस्पति-विशेष (गाया १, १—पत्र ६, उत्त ३४, १६, कप्प; श्रौप)।

०णालिया, ०नालिआ छी [०नालिका] वूर से भरी हुई नली (राज, भग)।

बूल वि [दे] मूक, वाचा-शक्ति से रहित (पिंग १६८ टी)।

बूह सक [बूह्] पुष्ट करना। बूहए (सूत्र २, ५, ३२)।

वे देखो वि (वजा १०, हे ३, ११६, १२०; पिंग)। ०आसी (अप) छी [०अशीति] वयासी, ८२ (पिंग)। ०इदिय वि [०इन्द्रिय] त्वचा और जीभ ये दो ही इन्द्रियवाला प्राणी (ठा १, भग, स ८३, जी १५)। ०हिय [द्वयाहिक] दो दिन का (जीवस ११६)।

वेंट देखो विट (महा)।

वेंत देखो वू।

वेदि देखो वे-इदिय (पत्र ५, ५६)।

वेदु देखो विदु (श्रोधभा १७४)।

वेड } पु [दे] नौका, जहाज (दे ६, ६५,
वेडय } सुर १३, ५०)।

वेडा } छी [दे] नौका, जहाज (उप
वेडिया } ७२८ टी, मिरि ३८२, ४०७,
वेडी } आ १२, धम्म १२ टी), 'पाणीहि जलं दारइ अरित्तदहेहि वेडिअ' (धर्मवि १३२)।

वेड्डा छी [दे] श्मश्रु, दाढ़ी-मूँछ के बाल (दे ६, ६५)।

वेदोणिय वि [द्वैदोणिक] दो द्रोण का, द्रोण-द्वय-परिमित, 'कप्पइ मे वेदोणियाए कसपाईए हिरण्णभरियाए संबवहरित्तए' (उवा)।

वेभेल पुं [वेभेल] विन्ध्याचल के नीचे का एक सन्निवेश (भाग ३, २—पत्र १७१)।

वेमासिय वि [द्वैमासिक] दो मास का, दो महीने का सक्च रखनेवाला (पउम २२, २८)।

वेलि छी [दे] स्थूणा, खूँटा (दे ६, ६५, पात्र)।

वेल्ल देखो विल्ल (प्राकृ ५)।

वेल्लग पु [दे] बैल, बलीवदं (आवम)।

वेस अक [विश्, स्था] बैठना, अंततं भोक्खामि त्ति वेसए भुजए य तह चेव' (श्रोध ५७१)।

वेसक्खिअ न [दे] द्वेष्यत्व, रिपुता, दुश्मनाई (दे ७, ७६ टी)।

वेसण न [दे] वचनीय, लोकापवाद, लोक-निन्दा (दे ७, ७५ टी)।

वेहिम वि [दे. द्वैयिक] दो टुकड़े करते योग्य, खण्डनीय (दस ७, ३२)।

वोंगिल्ल मि [दे] १ भूषित, अलंकृत। २ पुं. आदोप, आडम्बर (दे ६, ६६)।

वोंटण न [दे] चूचुक, स्तन का अग्र भाग (दे ६, ६६)।

वोंड न [दे] १ चूचुक, स्तन-वृन्त (दे ६, ६६)। २ फन-विशेष, कपाम का फन (श्रौप, तडु २०)। ०य न [०ज] सूती वस्त्र, सूती कपडा (सूत्र २, २, ७३, श्रौप)।

वोंद न [दे] मुख, मुँह (दे ६, ६६)।

वोंदि छी [दे] १ ह्य। २ मुख, मुँह (दे ६, ६६)। ३ शरीर, देह (दे ६, ६६, पएह १, १, कप्प, श्रौप, उत्त ३५, २०, स ७१२, विसे ३१६१, पव ५५, पचा १०, ४)।

वोंदिया छी [दे] शाखा (सूत्र २, २, ४६)।
वोक्ड } पु [दे] छाग, वकरा; गुजराती में
वोक्ड } 'वोक्डो' (ती २, दे ६, ६६)।
छी. ०डी (दे ६, ६६ टी)।

वोक्कस पुं [वोक्कस] १ अनार्य देश-विशेष (पव २७४)। २ वणंसकर जाति-विशेष, निपाद मे अंबरी की कुक्षि मे उत्पन्न (सुव ३, ४)।

वोक्कसालिय पु [दे] तन्तुवाय, 'कोट्टागकुलाणि वा गामरक्खकुलाणि वा वोक्कसालियकुलाणि वा' (आचा २, १, २, ३)।

वोक्कार देखो वुक्कार (सुर १०, २२१)।

वोक्किय न [वृत्कृत] गर्जन, गर्जना (पउम ५६, ५४)।

वोगिल्ल वि [दे] चित्तकवरा, 'फसल सवलं सार किम्मीर चित्तलं च वोगिल्ल' (पात्र)।

वोट्ट सक [दे] उच्छिष्ट करना, फूँटा करना। गुजराती में 'वोट्टु', 'रयणीए रयणिचरा चरति वोट्ट ति अन्नमाईय' (सुपा ४६१)।

वोड वि [दे] १ धार्मिक, धर्मिष्ठ। २ तखण, युवा (दे ६, ६६)। ३ मुरिडत-मस्तक, 'एमेव अडइ वोडो', गुजराती मे 'वोडो' (पिंड २१७)।

वर्म, 'वमएणकज्जेसु सज्जो' (सम्मत १४०, कप्प, औप, पि २५०)।

वंभहीविग वि [ब्रह्मद्वीपिका] ब्रह्मद्वीपिका-शाखा मे उत्पन्न (एदि ५१)।

वंभहीविगा छी [ब्रह्मद्वीपिका] एक जैन-मुनि-शाखा (एदि ५१)।

वभल्लिज न [ब्रह्मलीय] एक जैन मुनि-कुल (कप्प)।

वभहर न [दे] कमल, पद्म (दे ६, ६१)।

वंभाण देखो वभ (पद्म ५, १२२)। °गच्छ

पुं [°गच्छ] एक जैन-मुनि गच्छ (ती २८)।

वभिं } छी [ब्राह्मी] १ भगवान् ऋषभदेव

वंभी } की एक पुत्री (कप्प, पद्म ५, १२०,

ठा ५, २, सम ६०)। २ लिपि-विशेष (सम

३५, भग)। ३ कल्प-विशेष (सुपा ३२४)।

४ सरस्वती देवी (सिरि ७६४)।

वंभुत्तर पुं [ब्रह्मोत्तर] एक विमानावाम,

देव-विमान-विशेष (देवेन्द्र १३४)। °वडिसक

न [°वतसक] एक देव-विमान (सम १६)।

वंहि पुं [वहिन्] मयूर, मोर (उत्तर २६)।

वंहिण (अप) ऊपर देखो (पि ४०६)।

वक देखो वय (पएह १, १—पत्र ८)।

वक्कर न [दे. वक्कर] परिहास (दे ६, ८६,

कुप्र १६७, कप्प)।

वक्कम न [दे] अन्न-विशेष, 'वक्कस' मृदमापा-

दिनपिकानिपन्नमन्' (सुख ८, १२, उत्त ८,

१२)।

वग देखो वय (दे २, ६, कुप्र ६६)।

वगदादि पु [वगदादि] देश-विशेष, वगदाद

देश, 'वगदादिविसयवसुहाहिवस्स खलीपना-

मवेयस्स' (हम्मरी ३४)।

वगी छी [वकी] वगुली, वगुले की भादा

(विपा १, ३, मोह ३७)।

वगगड पु [दे] देश-विशेष (ती १५)।

वज्झ वि [वाह] बाहर का, वहिरङ्ग (पएह

१, ३, प्राप्प १७२)। °ओ अ [°तस्]

वाह से, वहिरग से, 'किं ते जुज्झेण वज्झो'

(आचा)।

वज्झ न [वन्ध] वन्धन, बांधने का बागुरा

आदि साधन, 'अहं तं पवेज्ज वज्झ, अहे

वज्झस्स वा वए' (सूत्र १, १, २, ८)।

वज्झ वि [वद्ध] १ वन्धनाकार व्यवस्थित,

'अहं तं पवेज्ज वज्झ' (सूत्र १, १, २, ८)।

२ वंधा हुआ (प्रात १५)।

वज्झत } देखो वन्ध = वन्ध्।

वज्झमाण } वज्झमाण

वठर पु [वठर] मूर्ख छात्र (कुप्र १६)।

वड (अप) वि [दे] बड़ा, महान् (पिंग)।

देखो वड्ड।

वडवड अक [वि + लप्] विलाप करना,

बडबडाना। वडवडइ (पड्)।

वडहिला छी [दे] धुरा के मूल में दो जाती

कील, कीलक-विशेष (सट्ठि ११६)।

वडिस देखो वलिस (हे १, २०२)।

वड्ड } पु [वड्ड, क] लडका, छोकड़ा (उप

वड्डअ } ७१३, सुपा २००)।

वड्डवास [दे] देखो वड्डवास (दे ७, ४७)।

वत्तीस } (अप) देखो वत्तीस (पिंग)।

वत्तिस } वत्तिस

वत्तीस छीन [द्वात्रिंशत्] १ संख्या-विशेष,

वत्तीस, ३२। २ जिनकी संख्या वत्तीस हो वे;

'वत्तीस जोगसंगहा पन्नत्ता' (सम ५७, औप,

उव, पिंग)। छी °सा (सम ५७)।

वत्तीसइ° छी. ऊपर देखो (सम ५७)। वद्धय

न [°वद्धक] १ वत्तीस प्रकार रचनाओं से

युक्त। २ वत्तीस पात्रों से निबद्ध (नाटक),

'वत्तीसइवद्धएहि नाडएहि' (गाया १, १—

पत्र ३६, विपा २, १ टी—पत्र १०४)।

°विह वि [°विध] वत्तीस प्रकार का (सम

५७)।

वत्तीसइम वि [द्वात्रिंशत्तम] १ वत्तीसवाँ,

३२ वाँ (पद्म ३२, ६७, पएण ३२)। २

न पनरह दिनों का लगतार उपवास (गाया

१, १)।

वत्तीसा देखो वत्तीस।

वत्तीसिया छी [द्वात्रिंशिका] १ वत्तीस

पद्यों का निबन्ध—ग्रन्थ (सम्मत १४४)।

२ एक प्रकार का नाप (अणु)।

वद्ध वि [वद्ध] १ बंधा हुआ, नियन्त्रित,

'वद्धं सदाणिअ निअलिअ च' (पात्र)। २

संछिद्र, सयुक्त (भग, पात्र)। ३ निबद्ध,

रचित (आवम)। °फल, °फल पुं [°फल]

१ करवज का पेड़ (हे २, ६७)। २ वि.

फल-युक्त, फल-संपन्न (गाया १, ७—पत्र

११६)।

वद्धग पु [वद्धग] तूण-वाद्य विशेष (राय

४६)।

वद्धय पुं [दे] कान का एक आभूषण

(दे ६, ८६)।

वद्धेल्लग } देखो वद्ध (अणु, महा)।

वद्धेल्लय } वद्धेल्लय

वप्प पुं [दे] १ सुभट, योद्धा (दे ६, ८८)।

२ बाप, पिता (दे ६, ८८ दत्त ७, १८,

स ५८१, उप ३२० टी, सुर १, २२१, कुप्र

४३ जय, भवि, पिंग)।

वप्पहट्टि पुं [वप्पभट्टि] एक सुविख्यात जैन

आचार्य (विचार ५३३, ती ७)।

वप्पीह पुं [दे] पपीहा, चातक पक्षी (दे

६, ६०, स ६८६, पात्र, हे ४, ३८३)।

वप्पुड वि [दे] वेचारा, दीन, अनुकम्पनीय

मुजराती में 'वापडु' (हे ४, ३८७, पिंग)।

वप्प पुन [वाप्प] १ भाफ, ऊष्मा, 'वप्पो'

(हे २, ७०, पड्), 'वप्फ' (प्राक् २३, विसे

१५३५)। २ नेत्र जल, अश्रु, 'वप्फ वाहो

य नयणजल' (पात्र), 'वप्फपज्जाउललोअणहं'

(स ५६१, स्वप्न ८५)।

वाप्पाउल वि [दे वाप्पाकुल] प्रतिशय

उपण (दे ६, ६२)।

वव्वर पुं [वव्वर] १ अनार्य देश-विशेष (पद्म

६८, ६५)। २ वि. वव्वर देश का निवासी

(पएह १, १, पद्म, ६६, ५५)। °कूल न

[°कूल] वव्वर देश का किनारा (सिरि

४३०)।

वव्वरी छी [दे] केश-रचना (दे ६, ६०)।

वव्वरी छी [वव्वरी] वव्वर देश की छी (गाया

१, १, औप, इक)।

वव्वूल पुं [वव्वूल] वृक्ष-विशेष, वव्वूल का

पेड़ (उप ८३३ टी, महा)।

वव्व पुं [दे] वव्वं, चर्म, चमड़े की रज्जु,

'वव्वो वद्धे' (दे ६, ८८), 'वव्वो वद्धो =

(? वव्वो वद्धो)' (पात्र)।

वव्वभागम वि [वव्वभागम] वहु-श्रुत, शास्त्रों

का अच्छा जानकार (कस)।

भ

भ पु [भ] १ ओष्ठ-स्थानीय व्यञ्जन वर्ण-विशेष (प्राप, प्रामा)। २ पिगल-प्रसिद्ध आदि-गुरु और दो ह्रस्व अक्षरो की सज्ञा, भगण (पिग)। ३ न नक्षत्र (सुर १६, ४३)। ४ आर पुं [कार] १ 'भ' अक्षर। २ भगण (पिग)। ३ गण पु [गण] भगण (पिग)।

भइ देखो भय = भू।

भइ स्त्री [भृति] वेतन, तनखाह (गाथा १, ८—पत्र १५०, विपा १, ४, उवा)। देखो भुइ।

भइअ वि [भक्त] १ विभक्त (श्रावक १८५, सम ७६)। २ खण्डित, 'अनुसखासंखण्ड-एसमइय पुढो पयर' (पत्र २, १२, औप)। ३ विकल्पित (वव ६)।

भइअ न [भक्त] भागाकार (वव १)।

भइअ } देखो भय = भू।
भइअव्व }

भइअ } वि [भृति] कर्मकर नौकर,
भइग } चाकर (राय २१)।

भइगिं स्त्री [भगिनी] वहिन स्वसा
भइणिआ (सुपा १५, स्वप्न १५, १७,
भइणी विपा १, ४, प्रासू ७८, कुल
२३५, कुमा)। २ चड पु [पति] वहनोई
(सुपा १५, ५३२)। ३ सुअ पु [सुत]
भागिनेय, भानजा (सुपा १७)। देखो
वहिणी।

भइरव वि [भैरव] १ भयकर, भीषण, भय-जनक (पात्र, सुपा १८२)। २ पुं नाट्यादि-प्रसिद्ध एक रत्न, भयानक रत्न। ३ महादेव, शिव। ४ महादेव का एक अवतार। ५ राग-विशेष, भैरव राग। ६ नद-विशेष (हे १, १५१, प्राप्र)। देखो भैरव।

भइरवी स्त्री [भैरवी] शिव-पत्नी, पार्वती (गउड)।

भइरहि पु [भगीरथि] सगर चक्रवर्ती का एक पुत्र, भगीरथ (पउम ५, १७५)।

भइल वि [दे] भया, जात (रभा ११)।

भउम्हा (शौ) देखो भमुहा (पि २५१)।

भउहा (अप) देखो भमुहा (पिग)।

भएयव्व देखो भय = भू।

भंकार पुं [भङ्कार] भनकार, अव्यक्त आवाज विशेष (उप पृ ८६)।

भंकारि वि [भङ्गारिन्] भनकार करनेवाला (सण)।

भग पु [भङ्ग] १ भांगना, खण्ड, खण्डन (ओष ७८८, प्रासू १७०, जी १२, कुमा)। २ प्रकार, भेद, विकल्प (भग, कम्म ३, ५)। ३ विनाश (कुमा, प्रासू २१)। ४ रचना-विशेष, 'तरगरगतभग—' (कप्प)। ५ परा-जय। ६ पलायन (पिग)। ७ रय न [रत] मधुन-विशेष (वज्जा १०८)।

भंग पुं [भङ्ग] आर्य देश-विशेष जिसकी राजघाटी प्राचीन काल में पावापुरी थी (इक)।

भग (अप) देखो भग्ग = भग्न (पिग)।

भंगरय पुं [भङ्गरज, भङ्गारक] १ पौधा विशेष, भृङ्गराज, भंगरा, भगरैया। २ न. भंगरा का फूल (वज्जा १०८, सुपा ३२४)।

भंगा स्त्री [भङ्गा] १ वनस्पति-विशेष, पाट, कुष्टा, 'वप्पइ एण्णगथाण वा एण्णगयीण वा पच वत्थाइ धारित्ते वा परिहरेत्ते वा, तं जहा—जणिए भणिए साणए पोत्तिए तिगीड-पट्टए णामं पचमए' (ठा ५, ३—पत्र ३३८)। २ वाद्य-विशेष, '—पडहुडु कुडुडु-वकाभेरीभंगापट्टुदुभूरिवज्जभंडतुमुल—' (विक्र ८७)।

भगि स्त्री [भङ्गि] १ प्रकार, भेद (हे ४, ३३६, ४११)। २ व्याज, छल, वहाना, 'सहिभगिभणिएअसव्माविआवराहाए' (गा ६३३)। ३ विच्छित्ति, विच्छेद (राज)। ४ स्त्री. देश विशेष, 'पावा भगी य' (पव २७५, विचार ४६)।

भगिअ न [भङ्गिअ, भङ्गिक] १ भगा मय, एक तरह का वस्त्र, पाट का बना हुआ कपड़ा (ठा ३, ३, ५, ३—पत्र १३८, कस)। २ शास्त्र-विशेष, 'जोगतिगस्सवि भगियसुत्ते किरिया जओ भणिया' (चेव्य २४५)।

भंगिल वि [भङ्गवत्] प्रकारवाला, भेद-पतित, 'पढमभंगिल्ला' (सवोष ३२)।

भंगी स्त्री [भङ्गी] देखो भगि (हे ४, ३३६, गा ६१३, विचार ४६)।

भंगी स्त्री [भृङ्गी] वनस्पति-विशेष,—१ भांग, विजया। २ अतिविपा, अतिस बा गाछ (पण १—पत्र ३६, पण १७—पत्र ५३१)।

भंगुर वि [भङ्गुर] १ स्वयं भांगनेवाला, विनश्वर, विनाश-शील, 'तडिदडाडवरभंगुराइ हो विसयनोक्खाडं' (उप ६ टी, पण १, ४, सुर १०, १८, म ११४, घमंस ११७१, विवे ११४)। २ कुटिल, वक्र, 'कुडिल वकं भंगुर' (पात्र)।

भंझा देखो भत्था (राज)।

भंज सक [भञ्ज] १ भांगना, तोटना। २ पलायन कराना, भगाना। ३ पराजय करना। ४ विनाश करना। भजइ, भजए (हे ४, १०६, पड, पि ५०६)। भवि, भजिस्सइ (पि ५३२)। कम्मं भज्जइ (भग, महा)। वक्र. भजंत (गा १६७, सुपा ५६०)। कवक भजंत, भजमाण (से ६, ४४, नुर १०, २१७, म ६३)। सक. भजिअ, भजिउ, भंजिऊण, भजिऊण, भजेऊण (नाट, पि ५७६, महा, पि ५८५, महा), भजिउ (अप) (हे ४, ३६५)। हेह भंजित्तए (गाथा १, ८), भंजणह (अप) (हे ४, ४४१ टि)।

भंजअ } वि [भञ्जक] भांगनेवाला, भंग
भजग } करनेवाला (गा ५५२, पण १, ४)। २ पु वृक्ष, पेड़, 'भजगा इव सनिवेस नो चयति' (आचा)।

भजण न [भञ्जन] १ भग, खण्डन (पव ३८, नुर १०, ६१)। २ विनाश (सुपा ३७६, पण १, १)। ३ वि. भजन करने-वाला, तोड़नेवाला, विनाशक, 'भवभंजण' (सिरि ५४६), 'रिद्धसंगभंजणेण' (कुमा)। स्त्री. ०णी (गा ७४५)।

भजणा स्त्री [भञ्जना] ऊपर देखो, 'विणओ-वयारम-(१२ मा-) एस्स भंजणा पुयणा गुरुणस्स' (विते ३४६६, निव्व १)।

चलामोलि देखो चलामोडि (सि १०, ६४) ।
 चलाया ली [चलाका] वक-विशेष, विस-
 करिठका, वगुले की एक जाति (हे १, ६७,
 उप १०३१ टी) ।
 चलाहग पु [चलाहक] मेष, जीभूत, 'गलिय-
 जलवलाहगपडुर' (वसु) ।
 चलाहगा देखो चलाह्या (ठा ८) ।
 चलाह्य देखो चलाहग (गाया १, ५, कप्प,
 पाथ) ।
 चलाह्या ली [चलाहका] १ वक-विशेष,
 चलाका (उप २६४) । २ देवी-विशेष, अनेक
 दिक्कुमारी देवियों का नाम (इक—पत्र
 २३१, २३४) ।
 चलि पु [चलि] १ असुरकुमारो का उत्तर
 दिशा का इन्द्र (ठा २, ३, १०, इक) । २
 स्वनाम-प्रसिद्ध एक राजा (गा ४०६) । ३
 सातवाँ प्रतिवासुदेव (पठम ५, १५६) । ४
 एक दानव, दैत्य-विशेष (कुमा) । ५ पुंल्लि.
 उपहार, मेंट (पिंड १६५, दे १, ६६) । ६
 पूजोपहार, देवता को घरा जाता नैवेद्य,
 'सुरहिविलेवणवरकुसुमदामवलिदीवणेहि च'
 (पव १ टी), 'वदणपूयणवलिदीवणेसु' (चेइय
 ५२, पव १३३, सुर ३, ७८, कुप्र १७४) ।
 ७ भूत आदि को दिया जाता भोग, वलिदान,
 'भूमवलिब' (वे ४६) । ८ पूजा, अर्चा,
 सपर्या । ९ राज-ग्राह्य भाग । १० चामर का
 दण्ड । ११ उपप्लव (हे १, ३५) । १२
 छन्द-विशेष (पिंग) । 'उट्ट पु [पुट्ट] काक,
 कौआ (पाथ) । 'कम्म न [कम्मन्] १
 पूजन, पूजा की क्रिया । २ देवता को उप-
 हार—नैवेद्य घरने की क्रिया (भग, सूअ
 २, २, ५५, गाया १, १, ८, कप्प, औप) ।
 'चचा ली [चच्रा] वलीन्द्र की राजधानी
 (गाया २, इक) । 'सुह पु [सुख] वन्दर,
 फपि (पाथ) । 'यम्म देखो 'कम्म (पठम
 ३७, ४६) ।
 चलि वि [चलिन्] १ बलवान्, बलिष्ठ (सुपा
 ४५१, कुप्र २७७) । २ पु. रामचन्द्र का
 एक सुभट (पठम ५६, ३८) ।
 चलिअ वि [दे] १ पीन, मासल, स्थूल, मोटा
 (दे ६, ८८, उप १४२ टी, बृह ३) । २

क्रिचि. गाढ, वाढ, अतिशय, अत्यथः 'गाढं
 वाढं वलिअ वणिअं दढमच्चमएण अचत्थ'
 (पाथ, गाया १, १—पत्र ६४, भग ६,
 ३३) ।
 चलिअ वि [चलिन्, बलिक्] १ बलवान्,
 सबल, पराक्रमी, 'कत्थावि जीवो वलिअो
 कत्थवि कम्माइं वृत्ति वलियाइ' (प्रासू १२३),
 'एस अम्ह ताओ वलियदाइयपेल्लिओ इम
 विसमं पल्लि समस्सिओ' (महा, पठम ४८,
 ११७, सुपा २७५, औप) । २ प्राणवाला
 (ठा ४, ३—पत्र २४६) ।
 चलिअ वि [चलित] जिसको बल उत्पन्न
 हुआ हो, सबल (कुप्र २७७) । २ पु छन्द-
 विशेष (पिंग) ।
 चलिअरु पु [चलिनाङ्क] छन्द-विशेष (पिंग) ।
 चलिआ ली [दे. वलिका] सूप, सूप, अन्न
 को तुपादि-रहित करने का एक उपकरण
 (आचम) ।
 चलिठ वि [चलिष्ठ] बलवान्, सबल (प्रासू
 १५४) ।
 चलिइ पु [दे. वलीवर्द] बलघ, वृषभ, 'दो
 सारबलिहावि हु' (सुपा २३८) ।
 चलिमड्डा ली [दे] बलात्कार, 'अन्नह वलि-
 मड्डाए गहिउमणो सोम । एकलिय' (उप
 ७२८ टी) ।
 चलिवइ देखो वलीवइ (पठम ३३, ११६) ।
 चलिस न [चडिश] मछली पकड़ने का कांटा
 (हे १, २०२) ।
 चलिस्सइ पु [चलिस्सइ] स्वनाम-रूपात एक
 जैन मुनि, आर्य महागिरि का एक शिष्य
 (कप्प) ।
 चलीअ वि [चलीयस्] अधिक बलवाला,
 बलिष्ठ (अभि १०१) ।
 चलीवइ पु [चलीवर्द] बैल, वृषभ (विपा
 १, २) ।
 चलुल्लड (अप) देखो बल=बल (हे ४, ४३०) ।
 चले अ. इन अर्थों का सूचक अव्यय—१
 निश्चय, निर्णय । २ निर्वारण (हे २, १८५
 कुमा) ।
 चल न [चाल्य] बालत्व, बालकपन, शिशुता
 (कुमा ३, ३५) । देखो बाल = चाल्य ।

वव सक [वू] बोलना, कहना । ववइ, ववए
 (पड्) । देखो वुव, वू ।
 वव न [वव] ज्योतिष-शास्त्र-प्रसिद्ध एक करण
 (विसे ३३४८, सूअनि ११, सुपा १०८) ।
 वव्वाड पु [दे] दक्षिण हस्त (दे ६, ८६) ।
 वहड वि [वृहन्] बडा, महान् । 'इच्च न
 [दिद्य] नगर-विशेष (ती ३५) ।
 वहत्तरी देखो वाहत्तरि (पव २०) ।
 वहप्पइ } देखो वहस्सइ (हे १, १३८, २,
 वहप्फइ } ६६, १३७, पड्, कुमा, सम्मत
 १३७) ।
 वहरिय देखो वहिरिय, 'तालरववहरियदियतर'
 (महा) ।
 वहल न [दे] पक, कदम, कादा (दे ६,
 ८६) । सुरा ली [सुरा] पकवाली मदिरा
 (दे ५, २) ।
 वहल वि [वहल] १ निविड, सान्द्र,
 निरतर, गाढ (गड्ड, हे २, १७७) । २
 स्थूल, मोटा (ठा ४, २, गड्ड) । ३ पुष्कल,
 अत्यन्त (कप्प) ।
 वहलिम पुली [वहलता] १ स्थूलता, मोटाई ।
 २ सातत्य, निरतरता (वब्बा ५२, गा ७५५) ।
 वहली ली [वहली] १ देश-विशेष, भारतवर्ष
 का एक उत्तरीय देश, 'तक्खसिलाइ पुरीए
 वहलीविसयावयसभूयाए' (कुप्र २१२) । २
 वहली देश की ली (गाया १, १—पत्र
 ३७, औप, इक) ।
 वहलीय वि [वहलीक] देश-विशेष मे—
 वहली देश मे रहनेवाला (पण्ह १, १—
 पत्र १४) ।
 वहव देखो वह, 'काले समइक्कते अइवहवे'
 (पठम ४१, ३६), 'सोहगकप्पतखवरपमुहत्तवे
 सा कुराह वहवे' (सम्मत २१७), 'जायेति
 वहववरगपल्लवुल्लासिणो भक्ति' (हि ५) ।
 वहस्सइ पु [वृहस्पति] १ ज्योतिष्क देव-
 विशेष, एक महाग्रह (ठा २, ३—पत्र ७७,
 सुज २०—पत्र २६४) । २ सुराचाय, देव-
 ग्रह (कुमा) । ३ पुष्य नक्षत्र का अविष्टाता
 देव (सुज १०, ६२) । ४ राजनीति प्रणेता
 एक ऋषि । ५ नास्तिक मत का प्रवर्तक एक
 विद्वान् (हे २, १३७) । ६ एक ब्राह्मण,
 पुरोहित-भुज । ७ विपाकसूत्र का एक अव्ययन

(पठम ८४, ४, सुपा ३७०, णाय्या १, १०, सुर १४, ३४, आ २७) ।

भक्ख पु [भक्ष] भक्षण, भोजन, 'भो कीर खीरसक्करदक्काभक्खं करहि ताव' (सुपा २६७) ।

भक्ख देखो भक्ष = भक्षण ।

भक्ख पुन [भक्ष्य] खण्ड-खाद्य, चीनी का बना हुआ खाद्य द्रव्य, मिठाई (सुज्ज २० टी) ।

भक्खग वि [भक्षक] भक्षण करनेवाला (कुप्र २६) ।

भक्खण न [भक्षण] १ भोजन (परण २८) ।

२ वि खानेवाला, 'सव्वभक्खणो' (आ २८) ।

भक्खणया स्त्री [भक्षणा] भक्षण, भोजन (उवा) ।

भक्खर पु [भास्कर] १ सूर्य, रवि (उत्त २३, ७८, लहुअ १०) । २ अग्नि, वहि । ३ अकं वृक्ष (चंड) ।

भक्खराभ न [भास्कराभ] १ गोत्र-विशेष, जो गौतम गोत्र की शाखा है । २ पुत्री उस गोत्र में उत्पन्न (ठा ७—पत्र ३६०) ।

भक्खावण न [भक्षण] खिलाना (उप १५० टी) ।

भक्खि वि [भक्षिन्] खानेवाला (श्रौप) ।

भक्खिय वि [भक्षित] खाया हुआ (भवि) ।

भक्खेय देखो भक्ख = भक्षण ।

भग पुन [भग] १ ऐश्वर्य । २ रूप । ३ श्री । ४ यश, कीर्ति । ५ धर्म । ६ प्रयत्न, 'इस्सरियखुवसिरिजमघम्मपयत्ता मया भगामिक्खा' (विसे १०४८, चेइय २८८) । ७ सूर्य, रवि । ८ माहात्म्य । ९ वैराग्य । १० मुक्ति, मोक्ष । ११ वीर्य । १२ इच्छा (कप्प-टी) । १३ ज्ञान (प्रामा) । १४ पूर्वफाल्गुनी नक्षत्र (अणु) । १५ स्त्री. योनि, उत्पत्ति-स्थान (परह १, ४—पत्र ६८, सुज्ज १०, ८) । १६ देव-विशेष, पूर्वफाल्गुनी नक्षत्र का अघिष्ठाता देव, ज्योतिष्क देव-विशेष (ठा २, ३, सुज्ज १०, १२) । १७ गुदा और अण्ड-कोश के बीच का स्थान (वृह ३) । १८ दत्त पुं [°दत्त] नृप-विशेष (हे ४, २६६) । १९ व देखो °वत (भग, महा) । २० वई स्त्री [°वती] १ ऐश्वर्यादि-सम्पन्ना, पूज्या (पडि) । २

भगवती-सूत्र, पाँचवाँ जैन अग्र-ग्रन्थ (पच ५, १२५) । वंत वि [°वत्] ऐश्वर्यादि-गुण-सम्पन्न । २ पुं. परमेश्वर, परमात्मा (कप्प, विसे १०४८, प्रामा) ।

भगंदर पुं [भगन्दर] रोग विशेष—गुदा के भीतरी भाग में होनेवाला एक प्रकार का फोड़ा (णाय्या १, १३, विपा १, १) ।

भगदरि वि [भगन्दरिन्] भगन्दर रोगवाला (आ १६, सबोध ४३) ।

भगदरिअ वि [भगन्दरिक्] ऊपर देखो (विपा १, ७) ।

भगदल देखो भगदर (राज) ।

भगिणी देखो वहिणी (णाय्या १, ८, कप्प, कुप्र २३६, महा) ।

भगिरहि } पु [भगीरथि] सगर चक्रवर्ती
भगीरहि } का एक पुत्र, भगीरथ (पठम ५, १७६, २१५) ।

भग्ग वि [भग्ग] १ खण्डित, भागा हुआ (सुर २, १०२, दं ४६, उवा) । २ पराजित । ३ पलायित, भागा हुआ, 'जइ भग्गा पारक्ख' (हे ४, ३७६, ३५४, महा, वव २) । ४ पुं [°जित्] क्षत्रिय परिव्राजक-विशेष (श्रौप) ।

भग्ग वि [दे] लिप्त, पोता हुआ (दे ६, ६६) ।

भग्ग न [भाग्य] नमीव, दैव (सुर १३, १०५) ।

भग्गव पुं [भार्गव] १ ग्रह-विशेष, शुक्र ग्रह (पठम १७, १०८) । २ ऋषि-विशेष (समु १८१) ।

भग्गवेस न [भार्गवेश] गोत्र-विशेष (सुज १०, १६ टी, इक) ।

भगिअ (अप) । देखो भग्ग = भग्न (पिंग) ।

भच्च पुं [दे] भागितेय, मानजा (पड्) ।

भच्चिअ वि [भत्तिसत्] तिरस्कृत (दे १, ८०, कुमा ३, ८६) ।

भज देखो भय = भज् । वक्क. भजत, भजेंत, भजमाण, भजेमाण (पड्) ।

भज्ज सक [अस्ज्] पकाना, भुनाना । भज्जति, भज्जेंति (सूअनि ८१, विपा १, ३) । वक्क. भज्जत, भज्जेंत (पिंड ५७४, विपा १, ३) ।

भज्ज देखो भज (आचा २, १, १, २) ।

भज्ज देखो भय = भज् ।

भज्जंत देखो भंज ।

भज्जण } न [भज्जन] १ भुनन, भुनाना
भज्जणय } (परह १, १, अनु ५) । २ भुनने का पात्र (सूअनि ८१; विपा १, ३) ।

भज्जमाण देखो भज ।

भज्जा स्त्री [भार्या] पत्नी, स्त्री (कुमा, प्राप् ११६) ।

भज्जि स्त्री [भर्जिका] देखो भज्जिआ ।

भज्जिअ देखो भग्ग = भग्न, 'तरुणियं वा छिवाडि अभिक्खतमज्जिय पेहाए' (आचा २, १, १२) ।

भज्जिअ वि [भृष्ट, भर्जित] भुना हुआ, पकाया हुआ (गा ५५७, आचा २, १, १, ३, विपा १, २, उवा) ।

भज्जिआ स्त्री [भर्जिका] १ साजी, शाक-भेद पत्राकार तरकारी (पव २५६) । २ पथ्यदन, मार्ग-भोजन (कल्पभाष्य गा० ३६१८) ।

भज्जिम वि [भज्जिम] भुनने योग्य (आचा २, ४, २, १५) ।

भज्जिर वि [भङ्कृत्] भाँगेवाला, 'कारफन-भारभजिरसाहासयसंकुलो महासाही' (धर्मवि ५५, सण) ।

भज्जेंत देखो भज्ज = भज्जन् ।

भट्ट पुं [भट्ट] १ मनुष्य-जाति-विशेष, स्तुति-पाठक की एक जाति, भाट, 'जयजयसदक-रंतमुभट्ट' (सिरि १५५, सुपा २७९, उप पु १२०) । २ वेदान्त पण्डित, ब्राह्मण, विप्र (उप १०३१ टी) । ३ स्वामित्व, मालिकपन, मालिकियत (प्रति ७) ।

भट्टारग } पु [भट्टारक] १ पूज्य, पूजनीय
भट्टारय } (आव ३, महा) । २ नाटक की भाषा में राजा (प्राक् ६५) ।

भट्टि देखो भत्तु = भट्ट (ठा ३, १, सम ८६, कप्प, स १४४, प्रति ३, स्वप्न १५) ।

भट्टिअ पु [दे] विष्णु, श्रीकृष्ण (हे २, १७४, दे ६ १००) ।

भट्टिणी स्त्री [भर्त्री] स्वामिनी, मालिकिन (स १३४) ।

भट्टिणी स्त्री [भट्टिनी] नाटक की भाषा में वह रानी जिसका अभिप्रेत न किया गया हो (प्रति ७) ।

बहुला श्री [बहुला] १ गौ, गैया (पात्र) ।
२ इस नाम की एक श्री (उवा) । °वण न
[°वन्] मथुरा नगरी का एक प्राचीन वन
(तो ७) ।

बहुलि पुं [बहुलिन्] स्वनाम-ख्यात एक
राज-पुत्र (उप ६३७) ।

बहुली श्री [दे] माया, कपट, दम्भ (सुपा
६३०) ।

बहुलिआ श्री [दे] बड़े भाई की श्री (पङ्) ।

बहुली श्री [दे] क्रीडोचित शालभक्षिका, खेलने
की पुतली (पङ्) ।

बहुवी देखो बहुई (हे २, ११३) ।

बहुव्रीहि पु [बहुव्रीहि] व्याकरण-प्रसिद्ध
एक समाम (अणु १४७) ।

बहुअ वि [प्रभूत] बहुत, प्रचुर (गडड) ।

बहेडय पुं [विभीतक] १ बहेडा का पेड
(हे १, ८८, १०५, २०६) । २ न बहेडा
का फल (कुमा) ।

वां वि. व [द्वां, द्वि] दो, दो की संख्या-
वाला । °इस (अप) देखो °वीस (पिंग) ।
°ईस देखो °वीस (पिंग) । °णउइ श्री
[°नयति] वानवे, ६२ (सम ६६, कम्म
६, २६) । °णउय वि [°नवत] ६२ वां
(पउम ६२, २६) । °णुवइ देखो °णउइ
(रयण ६२) । °याल, °यालीस छोन
[°चत्वारिंशत्] बयालीस, चालीस और
दो, ४२ (उव, नव २, भग, सम ६६,
कप्प, ओप), छी. °याला, °यालीसा (कम्म
६, ६, कप्प) । °यालीसइम वि [°चत्वा-
रिंशत्तम] बयालीसवां, ४२ वां (पउम ४२,
३७) । °र, °रस त्रि. व [°दशन्] बारह,
१२, 'वारभित्तुपडिमवरो' (सवोष २२,
कम्म ४, ५, १५, नव २०, दं ७, कप्प,
जो २८, उवा) । °रस वि [°दश] बारहवां,
१२ वां (सुख २, १७) । °रसग छोन
[°दशाङ्ग] बारह जैन अग-नय (पि ४११),
छी. °गी (राज) । °रसम वि [°दश]
बारहवां (सूअ २, २, २१; पव ४६, महा) ।
°रसमासिय वि [°दशमासिक] बारह
मास का, बारह मास-सन्धो (कुप्र १४१) ।
°रसय न [°दशक] बारह का समूह (ओषभा

१५) । °रसवरिसिय वि [°दशवार्षिक]
बारह वर्ष का (मोह १०२, कुप्र ६०) ।
°रसविह वि [°दशविध] बारह प्रकार का
(नव ३०) । °रसाह न [°दशाह,
°दशाख्य] १ बारहवां दिन । २ जन्म के बार-
हवें दिन किया जाता उत्सव, वरही (राया
१, १, कप्प, औप, सुर ३, २५) । °रसी श्री
[°दशी] बारहवी तिथि, द्वादशी (सम २६,
पउम ११७, ३२, तो ७) । °रसुत्तरसय वि
[°दशोत्तरशत] एक सौ बारहवां (पउम
११२, २३) । °रह देखो °रस = दशन (हे
१, २१६) । °वट्टि श्री [°पट्टि] वासठ,
६२ (सम ७५, पंच ५, १८, सुर १३,
२३८, देवेन्द्र १३७) । °वण (अप) । देखो
°वन्न (पिंग) । °वण्ण देखो °वन्न (कुमा) ।
°वत्तर वि [°सप्तत] बहत्तरवां, ७२ वां
(पउम ७२, ३८) । °वत्तरि श्री [°सप्तति]
बहत्तर, ७२ (सम ८३, भग, औप, प्रासू
१२६) । °वन्न छोन [°पञ्चाशत्] बावन,
पचास और दो, ५२ (सम ७१, महा),
'वावन्नं होति जिणमवणा' (सुख ६, १) ।
°वन्न वि [°पञ्चाश] बावनवां (पउम ५२,
३०) । °वीस छोन [°विंशति] बाईस,
२२ (भग, जो ३४, छी. °सा (पि ४४७) ।
°वीस त्रि [°विंश] बाईसवां, २२ वां (पउम
२०, ८२, पत्र ४६) °वीसइ देखो वीस =
विंशति (भग, पव १८६) । °वीसइम वि
[°विंशतितम] १ बाईसवां, २२ वां (पउम
२२, ११०, अत २६) । २ लगातार दस
दिन का उपवास (राया १, १—पत्र ७२) ।
°वीसविह वि [°विंशतिविध] बाईस प्रकार
का (सम ४०) । °सट्टि वि [°पट्ट] वासठवां,
६२ वां (पउम ६२, ३७) । °सट्टि श्री
[°पट्टि] वासठ, ६२ (सम ७५, पिंग) ।
°सी, °सीइ श्री [°अशीति] ब्यासी, ८२
(नव २, सम ८६, कप्प, कम्म ५, १७) ।
°सीइम वि [°अशीतितम] ब्यासीवां, ८२
वां (पउम ८२, १२२) । °हत्तर (अप) देखो
°हत्तरि (सण) । °हत्तरि श्री [°सप्तति]
बहत्तर, ७२ (कप्प, कुमा, सुपा ३१६) ।

वाअ पु [दे] बाल, शिशु (पङ्) ।

वाह्या श्री [दे] मां, माता, गुजराती में 'वाई'
(कुप्र ८७) ।

वाउल्लया | श्री [दे] पञ्चालिका, पुतली,
वाउल्लिआ 'आलिहियभित्तिवाउल्लय व न हु
वाउल्ली' मुंजिउ तरइ' (वज्जा ११८,
कप्प, दे ६, ६२) ।

वाउस देखो वउस (पिंड २४, ओष ३४८) ।

वाउसिय वि [वाकुशिक] 'वकुश' चारित्र-
वाला (सुख ६, १) ।

वाउसिया श्री [वाकुशिका] 'बदुश' चारित्र-
वाली (राया १, १६—पत्र २०६) ।

बाढ क्वि [बाढ] १ अतिगद, प्रयत्न, घना
(उप ३२०, पात्र, महा) । °क्कार पु
[°कार] स्वीकार-सूचक उक्ति (निसे ५६५) ।

बाण पु [दे] १ पनम वृक्ष, कटहर का पेड ।
२ त्रि. सुभग (दे ६, ६७) ।

बाण पुत्री [बाण] १ वृक्ष-विशेष, कटसरैया
का गाछ (पण १७—पत्र ५२६, कुमा) ।
२ पुं. शर, बाण (कुमा, गडड) । ३ पाच की
संख्या (सुर १६, २४६) । °वत्त न [°पात्र]
तूणीर, शरवि (से १, १८) ।

बाध देखो बाह = बाध् । कवक बाधीअमाण
(पि ५६३) ।

बाधा श्री [बाधा] विरोध (धर्मस ११७) ।

बाधिय वि [बाधित] विरोधवाला, प्रमाण-
विच्छेद (धर्मस २५६) ।

बाह्ण देखो बम्हण (हे १, ६७, पङ्) ।

बाय न [वाक] वक समूह (आ २३) ।

बायर वि [बादर] १ स्थूल, मोटा, अमृक्षम
(पण १, १, पव १६२, दे ४४) । २ नववां
गुण-स्थानक (कम्म २, ३, ५, ७) । °नाम
न [°नामान्] कर्म-विशेष, स्थूलता-हेतु कर्म
(सम ६७) ।

बार न [द्वार] दरवाजा (हे १, ७६) ।

बारगा श्री [द्वारका] स्वनाम-प्रसिद्ध नगरी,
जो आजकल भी काठियावाड में 'द्वारका' के
ही नाम से प्रसिद्ध है (उत्त २२, २२, २७) ।
बारवई श्री [द्वारवती] १ ऊपर देखा (सम
१५१, राया १, ५, उप ६४८ टी) । २
भगवान् नेमिनाथ की दीक्षा शिविका (विचार
१२६) ।

१६७, प्रासू १६)। २ सुवर्ण, सोना। ३ मुस्तक, मोथा, नागरमोथा (हे २, ८०)। ४ दो उपवास (संबोध ५८)। ५ देव-विमान विशेष (सम ३२)। ६ शरासन, मूठ (गाया १, १ टी—पत्र ४३)। ७ भद्रासन, आसन-विशेष (पावम)। ८ त्रि, साधु, सरल, भला, सज्जन। ९ उत्तम, श्रेष्ठ (भग, प्रासू १६, सुर ३, ४)। १० सुख-जनक, कल्याण-कारक (गाया १, १)। ११ पुं हाथी की एक उत्तम जाति (ठा ४, २—पत्र २०८; महा)। १२ भारतवर्ष का तीसरा भावी बलदेव (सम १०४)। १३ अगविद्या का जानकार द्वितीय रुद्र पुरुष (विचार ४७३)। १४ तिथि-विशेष—द्वितीया, सप्तमी और द्वादशी तिथि (सुज १०, १५)। १५ छन्द-विशेष (पिंग)। १६ स्वनाम-ख्यात एक जैन आचार्य (महानि ६, कप्प)। १७ व्यक्ति-वाचक नामक (निर १, ३, आव १, धम्म)। १८ भारतवर्ष का चौबीसवाँ भावी जिनदेव (पव ७)। १९ गुत्त पुं [गुम्] स्वनाम-प्रसिद्ध एक जैनाचार्य (एदि, साध २३)। २० गुत्तिय न [गुम्निक] एक जैन मुनि-कुल (कप्प)। २१ जस पुं [यशस्] १ भगवान् पार्श्वनाथ का एक गणधर (ठा ८—पत्र ४२६)। २ एक जैन मुनि (कप्प)। २२ जसिय न [यशस्क] एक जैन मुनि-कुल (कप्प)। २३ नदि पुं [नन्दिन्] स्वनाम-ख्यात एक राज-कुमार (विपा २, २)। २४ वाहु पुं [वाहु] स्वनाम-प्रसिद्ध प्राचीन जैनाचार्य और ग्रन्थकार (कप्प, एदि)। २५ मुत्था ली [मुस्ता] वनस्पति-विशेष, भद्रमोथा (परण १)। २६ वया ली [पदा] नक्षत्र-विशेष (सुर १०, २२४)। २७ साल न [शाल] मेरु पर्वत का एक वन (ठा २, ३, इक)। २८ सेण पुं [सेन] १ धरणेन्द्र के पदाति-सैन्य का अधिपति देव (ठा ५, १, इक)। २ एक श्रेष्ठी का नाम (आव ४)। २९ स न [सन्ध] नगर-विशेष (इक)। ३० सण न [सन] आसन-विशेष, सिंहासन (गाया १, १, परह १, ४, पाश्र्व, औप)।

भददारु न [भद्रदारु] देवदारु, देवदार की लकड़ी (उत्ति ३)।

भह्वं } पुं [भाद्रपद] मास-विशेष, भादो
भह्वय } का महीना (वजा ८२, सुर ३, १३८)।

भह्सिरी ली [दे] श्रीखण्ड, चन्दन (दे ६, १०२)।

भहा ली [भद्रा] १ रावण की एक पत्नी (पत्रम ७४, ६)। २ प्रथम बलदेव की माता (सम १५२)। ३ तीसरे चक्रवर्ती की जननी (सम १५२)। ४ द्वितीय चक्रवर्ती की ली (सम १५२)। ५ मेरु के पूर्व रुचक पर्वत पर रहनेवाली एक दिक्कुमारी देवी (ठा ८)। ६ एक प्रतिमा, व्रत-विशेष (ठा २, ३—पत्र ६४)। ७ राजा श्रेणिक की एक पत्नी (अंत २५)। ८ तिथि-विशेष—द्वितीया, सप्तमी और द्वादशी तिथि (संबोध ५४)। ९ छन्द-विशेष (पिंग)। १० कामदेव आवक की भार्या का नाम। ११ तुलनीपिता नामक उपासक की माता का नाम (उवा)। १२ एक सार्थवाहक ली का नाम (विपा १, ४)। १३ गोशालक की माता का नाम (भग १५)। १४ अहिंसा, दया (परह २, १)। १५ एक वापी (दीव)। १६ एक नगरी (आव १)। १७ अनेक त्रियो का नाम (गाया १, ८, १६, आवम)।

भहाकरि वि [दे] प्रलम्ब, अति लम्बा (दे ६, १०२)।

भदिआ ली [भद्रिका, भद्रा] १ शोभना, सुन्दर (ली) (ओघमा १७)। २ नगरी-विशेष (कप्प)।

भद्विजिया ली [भद्रीया, भद्रीयिका] एक जैन मुनि-शाखा (कप्प)।

भद्विलपुर न [भद्विलपुर] भारतवर्ष का एक प्राचीन नगर (अंत ४, कुप्र ८४, इक)।

भद्वुत्तरवर्डिसग न [भद्रोत्तरावतसक] एक देव-विमान (सम ३२)।

भद्वुत्तरं } ली [भद्रोत्तरा] प्रतिमा-
भद्वोत्तरं } विशेष, प्रतिज्ञा का एक भेद,
भद्वोत्तरा } एक तरह का व्रत (औप, अंत ३०, पव २७१)।

भद्र देखो भद्र (हे २, ८०, प्राकृ १७)।

भन्नंत } देखो भण = भण्।
भन्नमाण }

भप्प देखो भस्स = भस्मन् (हे २, ५१, कुमा)।
भम सक [भ्रम] भ्रमण करना, घूमना।
भमइ (हे ४, १६१, प्राकृ ६६)। वहु,
भमत, भममाण (गा २०२, ३८७, कप्प,
औप)। सक, भमिआ, भमिऊण (पद्,
गा ७४६)। कृ. भमिअव्व (मुपा ४३८)।
भम पुं [भ्रम] १ भ्रमण (कुप्र ४)। २
भ्रान्ति, मोह, मिथ्या-ज्ञान (से ३, ४८,
कुमा)।

भमग न [भ्रमक] लगातार एकतीस दिनों
का उपवास (संबोध ५८)।

भमड देखो भम = भ्रम, 'भवम्मि भमडइ
एगुच्चिय' (विवे १०८, हे ४, १६१)।

भमडिअ वि [भ्रान्त] १ घूमा हुआ, फिरा
हुआ (स ४७३)। २ भ्रान्ति-युक्त (कुमा)।
देखो भमिअ।

भमण न [भ्रमण] घूमना, चकराना। (दे
४६, कप्प)।

भममुह पु [दे] आवर्त (दे, १०१)।

भमया ली [भ्रू] भौंह, नेत्र के ऊपर की
केश-पंक्ति (हे २, १६७, कुमा)।

भमर पु [भ्रमर] १ मधुकर, भौरा (हे १,
२४४, कुमा, जी १८, प्रासू ११३)। २ पु.
छन्द-विशेष (पिंग)। ३ विट, रडीबाज
(कप्प)। ४ रुअ पु [रुच] अनाय देश-विशेष
(पव २७४)। ५ वलि ली [वलि] १
छन्द-विशेष (पिंग)। २ भ्रमर-पंक्ति (राय)।

भमरट्टेदा ली [दे] १ भ्रमर की तरह अति-
गोलकवाली। २ भ्रमर की तरह अत्यर
आचरणवाली। ३ शुष्क व्रण के दागवाली
(कप्प)।

भमरिया ली [भ्रमरिका] जन्तु-विशेष, बरें
(जी १८)। देखो भमलिया।

भमरी ली [भ्रमरी] ली-भ्रमर, भौरी (दे)।
नीचे देखो।

भमलिया ली [भ्रमरीका, ०री] १ पित्त
भमली } के प्रकोप से होनेवाला रोग-विशेष,
चक्र, 'भमली पित्तुदयाओ भमंतमहिदसण'
(चेद्व ४३५, पडि)। २ वाद्य-विशेष
(राय)।

भमस पुं [दे] कृण-विशेष, ईक्ष की तरह का
एक प्रकार का घास (दे ६, १०१)।

बाहुलेर पुं [बाहुलेय] काली गाय का बछड़ा (अणु २१७)।

बाहुल्ल न [बाहुल्य] बहुलता, प्रचुरता (पिड ५६, भग, सुपा २७, उप ६०७)।

बाहुल्ल वि [वाष्पवत्] अश्रुवाला (कुमा, सुपा ४६०)।

वि वि. व [द्वि] दो, २, 'विलि' (हे ४, ४१८, नव ४, टा २, २, कम्म ४, २, १०, मुख १, १४)। °जडि पुं [°जटिन्] एक महाग्रह, ज्योतिष्क देव-विशेष (सुज्ज २०)। °दल न [°दल] चना आदि वह घान्य जिसके दो टुकड़े बराबर के होते हैं, 'जह विदल सुलीण' (वि ३)। °याल देखो वा-याल (कम्म ६, २८)। °यालसय पुंन [°चत्वारिंशच्छत] एक सौ वेगालीस, १४२ (कम्म २, २६)। °विह वि [°विध] दो प्रकार का (पिंग)। °तट्टि स्त्री [°षट्ठि] वासठ, ६२ (सुज्ज १०, ६ टी)। °सत्तरि, °सयरि स्त्री [सप्तति] बहतर, ७२ (पव १६, जीवस २०६, कम्म ३, ५)।

विं } वि [द्वितीय] दूसरा (कम्म ३, १६, विअ } पिंग)। °कसाय पुं [°कपाय] अग्रत्याख्यानावरण नामक कपाय (कम्म ४, ५६)।

विअ न [द्विक] दो का समुदाय, युग्म, युगल (भग, कम्म १, ३३, प्रासू १६)।

विआया स्त्री [दे] कीट-विशेष, संलग्न रहने-वाला कीट-द्वय (दे ६, ६३)।

विइअ देखो विइज्ज (हे १, ५, पव १६४)।

विइआ देखो वीआ (राज)।

विइज्ज वि [द्वितीय] १ दूसरा (हे १, २४८, प्रासू ५६)। २ सहाय, मदद करने-वाला (पाभ, सुर ३, १४),

'जे दुहियम्मि न दुहिया,

आवइपत्ते विइज्जया नेव ।

पहुणो न ते उ भिच्चा,

धुता परमत्थो रोया'

(सुर ७, १४५)।

विउण वि [द्विगुण] दुगुना (हे १, ६४, २, ७६; गा २८६)। °रय वि [°कारक] दुगुना करनेवाला (भवि)।

विउण सक [द्विगुण्य] दुगुना करना। विउणोइ (पि ५५६)।

विट न [वृत्त] फलादि का वन्धन, 'वघणं विट' (पाभ)। °सुरा स्त्री [°सुरा] मदिरा, दारु, 'विटसुरा पिटुखजरिया महरा' (पाभ)।

विउ देखो वू = वू।

विंदिय वि [द्विगुण्य] जिसको त्वचा और जीभ ये दो ही इन्द्रियां हो वह (श्रीप)।

विंदु पुन [विन्दु] १ अल्प अश्रु। २ विन्दी, शून्य, अनुस्वार। ३ दोनों भ्रू का मध्य भाग। ४ रेखागणित का एक चिन्ह, 'विंदुणो, विंदुइ' (हे १ ३४, कप्प, उप १०२२, स्वप्न ३६, कस, कुमा)। °कला स्त्री [°कला] अनुस्वार, विन्दी (सिरि १६६)। °सार न [°सार] १ चौदहवां पूर्व, जैन ग्रन्थाश-विशेष (सम २६, विसे ११२६)। २ पु. भौर्य वश का एक राजा, राजा चन्द्रगुप्त का पुत्र (विसे ८६२)।

विंदुइअ वि [विन्दुकि] विन्दु-युक्त, विन्दु-विलिप्त (पाभ, गउड)।

विंदुइज्जत वि [विन्दुयमान] विन्दुओं से व्याप्त होता (से ११, १२५)।

विद्रावण न [वृन्दावन] मथुरा के पास का एक वैष्णव-तीर्थ (प्राकृ १७)।

विंव सक [विन्व] प्रतिविम्बित करना। कर्म. विविज्जइ (सूक्त ४६)।

विंव न [विन्व] १ प्रतिमा, मूर्ति (कुमा)। २ छन्द-विशेष (पिंग)। ३ न विन्वीफल, कुन्दरुन का फल (गाया १, ८—पत्र १२६ पाभ, कुमा, दे २, ३६)। ४ प्रतिविम्ब, प्रतिच्छाया। ५ अर्थ-शून्य आकार, 'अएण जणं पस्सति विंवमूय' (सूत्र १, १३, ८)। ६ सूर्य तथा चन्द्र का मण्डल (गउड, कप्पू)।

विंववय न [दे] फल-विशेष, भिलावाँ, 'विंववय भल्लाय' (पाभ)।

विंविसार देखो भिंविसार (अंत)।

विंवी स्त्री [विन्वी] लता-विशेष, कुन्दरुन का गाछ (कुमा)। °फल न [°फल] कुन्दरुन का फल (सुपा २६३)।

विंवोवणय न [दे] १ क्षोभ। २ विकार। ३ ओसीसा, उच्छीर्षक (दे ६, ६८)।

विह सक [वृंह] पोषण करना। कृ. देखो विहणिज्ज।

विहणिज्ज वि [वृंहणीय] पुष्टि जनक (ठा ६—पत्र ३७५, गाया १, १—पत्र १६)।

विहिअ वि [वृंहित] पुष्ट, उपचित (हे १, १२८)।

विग्गाइआ } स्त्री [दे] कीट-विशेष, संलग्न
विग्गाई } रहता कीट-युग्म, गुजराती में 'वगाई' (दे ६, ६३)।

विज्ज देखो वीज, 'विज्जं पिव वड्डिया वहवे' (पउम ११, ६६)।

विज्जउर न [वीजपूर] फल-विशेष, एक तरह का नींबू, 'विज्जउरचिन्मिडेहिं कुणइ पिहा-णाइं सव्वथ' (सुपा ६३०)।

विज्जय (अप) देखो विइज्ज (भवि)।

विट्ट पुं [दे] बेटा, लडका, पुत्र (चड)।

विट्टी स्त्री [दे] बेटो, पुत्री, लडकी (चंड, हे ४, ३३०)।

विट्ट वि [दे विट्ट] बैठा हुआ, उपविष्ट (श्रीघ ४७१)।

विडाल पु [विडाल] मार्जार, विलाव, विलार, विल्ला (पि २४१)।

विडालिआ } स्त्री [विडालिका, °ली]
विडाली } बिल्ली, मार्जारी, विलारी, विलैया (सम्मत्त १२२, पि २४१)। देखो विरालिआ।

विडिस देखो वीडिस (उप १४२ टी)।

विदिय देखो विइअ (उप २७६)।

विन्ना स्त्री [वेन्ना] भारत की एक नदी (ण्डि ५०३)।

विचोअ पुं [विचोक] १ स्त्री की शृ गार-चेष्टा-विशेष, इष्ट अर्थ की प्राप्ति होने पर गर्व से उत्पन्न अनादर-क्रिया (परह २, ४—पत्र १३१, गाया १, ८—पत्र १४२, भत्त १०६)। २ न. उपधान, तकिया, ओसीसा, 'सयणोअ तूलिअं सविचोअ' (गच्छ ३, ८)।

विचोअ पुं [विचोक] काम-विकार (अणु १३६)।

विचोइअ न [विचोकि] स्त्री की शृ गार-चेष्टा का एक भेद (परह २, ४—पत्र १३१)।

विचोयण न [दे] उपधान, तकिया, ओसीसा (गाया १, १—पत्र १३)।

(प्रवि १२; सुपा ७, पात्र) । २ भार, बोभ (से ३, ५, प्रासू २६, सा ६) । ३ गुरुतर कार्य, 'भरणित्यरणसमत्या' (विसे १६६ टी, ठा ४, ४ टी—पत्र २८३ । ४ प्रचुरता, अतिशय । ५ कर—राजदेय भाग की प्रचुरता, कर की गुरुता, 'करेहि य भरेहि य' (विपा १, १) । ६ पूर्णता, सम्पूर्णता, 'इय चिताए निहं अलहंतो निसिभरम्मि नरनाहो' (कुप्र ६) । ७ मध्य भाग । ८ जमावट, 'भरमुवणए कोलापमोए, (स ५३०) ।

भरअ देखो भरह (पड्) ।

भरह पु [भरह] ब्रती-विशेष, एक प्रकार का वावा, 'सिवभवणाहिगारिणा भरहएण' (सम्मत्त १४५) ।

भरण न [स्मरण] स्मृति (गा २२२, ३७७) ।

भरण न [भरण] १ भरना, पूरना (गड्ड) । २ पोषण (गा ५२७) । ३ शिल्प-विशेष, वस्त्र में बेल-बूटा आदि आकार की रचना, 'सौवणं तुन्नण भरण' (गच्छ ३, ७) ।

भरणी व्री [भरणी] नक्षत्र-विशेष (सम ८, इक) ।

भरध (शौ) देखो भरह (प्राक् ८५) ।

भरह पु [भरत] १ भगवान् आदिनाथ का ज्येष्ठ पुत्र और प्रथम चक्रवर्ती राजा (सम ६०, कुमा, सुर २, १३३) । २ राजा रामचन्द्र का छोटा भाई (पडम २५, १४) । ३ नाट्य-शास्त्र का कर्ता एक मुनि (सिरि ५६) । ४ वर्ष-विशेष, भारत वर्ष, 'इहेव जवुदीवे दीवे सत्त वासा पत्तता, तं जहा—भरहे हेमवए हरिवासे महाविदेहे रम्मए एरणवए एवए' (सम १२, ज १, पडि) ।

५ भारतवर्ष का प्रथम भावी चक्रवर्ती (सम १५४) । ६ शवर । ७ तन्तुवाय । ८ नृप-विशेष, राजा दुष्यन्त का पुत्र । ९ भरत के वंशज राजा । १० नट (हे १, ११४, पड्) । ११ देव-विशेष (ज ३) । १२ कूट-विशेष, पर्वत-विशेष का शिखर (ज ४, ठा २, ३, ६) । १३ खिन्त न [क्षेत्र] भारतवर्ष (सण) । १४ वास न [वर्ष] भारतवर्ष, आर्यावर्त (पणह १, ४) । १५ सत्य न [शास्त्र] भरतमुनि-प्रणीत नाट्यशास्त्र (सिरि ५६) । १६ हिंवि पुं [धिप] १ संपूर्ण भारतवर्ष का राजा,

चक्रवर्ती । २ भरत चक्रवर्ती (सण) । १७ हिंवि पुं [धिप] वही अर्थ (सण) ।

भरहेसर पुं [भरतेश्वर] १ संपूर्ण भारतवर्ष का राजा, चक्रवर्ती । २ चक्रवर्ती भरत (कुमा २, १७, पडि) ।

भरिअ वि [मृत, भरित] भरा हुआ, पूर्ण, व्याप्त (विपा १, ३, ओप, धर्मवि १४४, काप्र १७४, हेका २७२, प्रासू १०) ।

भरिअ वि [स्मृत] याद किया हुआ, 'भरिअं लुद्धिअ सुमरिअ' (पात्र, कुमा, भवि) ।

भरिउल्लट्ट वि [दे. भृतोल्लुठित] भर कर खाली किया हुआ (दे ७, ८१, पात्र) ।

भरिम वि [भरिम] भर कर बनाया हुआ (अणु) ।

भरिया (अप) देखो भारिया (कुमा) ।

भरिली व्री [भरिली] चतुरिन्द्रिय जन्तु-विशेष (राज) ।

भरु पुं [भरु] १ एक अनायं देश । २ एक अनायं मनुष्य-जाति (इक) ।

भरुअच्छ पुं [भृगुअच्छ] गुजरात का एक प्रसिद्ध शहर जो आजकल 'भडौच' के नाम से प्रसिद्ध है (काल, मुनि १०८६६, पडि) ।

भरोच्छय न [दे] ताल का फल (दे ६, १०२) ।

भर देखो भर = स्मृ । भरह (हे ४, ७४) । प्रयो, वक्र. भलावत (कुमा) ।

भर सक [भल्] सम्हालना । भरिजामु (सुपा ५४६) । भवि भरिस्सामि (काल) । कृ भलेयव्व (ओष ३८६ टी) । प्रयो, संक्र. भलाविऊण (सिरि ३१२, ५६६) ।

भरलत वि [दे] खलित होता, गिरता (दे ६, १०१) ।

भरलाविअ वि [भालित] सौगा हुआ, सम्हालने के लिये दिया हुआ (आ १६) ।

भरलि पुं व्री [दे] कदाग्रह, हठ, 'अमुलहमेच्छण जाह भरि ते नवि दूर गणति' (हे ४, ३५३, चंड) ।

भरल पुं [भरल] १ भालू, रीछ (पणह १, १) । २ पुन. अन्न-विशेष, भाला, बरछी (गा ५०४, ५८५, ५६४) ।

भरल } वि [भद्र] मला, उत्तम, श्रेष्ठ, भरलय } अच्छा (कुमा, हे ४, ३५१, भवि) । ३ तण, ३ पण न [त्व] भलमनसी, भलाई (कुमा) ।

भरलय [भरलक] देखो भरल = भल (उप पु ३०, सण श्रावम) ।

भरलाअय } पुं [भरलात, क] १ वृक्ष-भरलातक } विशेष, भिलावा का पेड़ (पणह भरलाय } १, दे १, २३) । २ न भिलावा का फल (दे १, २३, ५, २६, पात्र) ।

भरलि व्री [भरलि] देखो भरली (कुमा) ।

भरलिम पुव्री [भद्रत्व] मलाई, भद्रता (सुपा १२३, कुप्र १०८) ।

भरली व्री [भरली] भाला, बरछी, अन्न-विशेष (सुर २, २८, कुप्र २७४, सुपा ५३०) ।

भरल्लु पुं व्री [दे] भालू, रीछ (दे ६, ६६) ।

भरल्लुंकी व्री [दे] शिवा, शृगाली (दे ६, १०१, सण), 'भरल्लुकी रुद्धिया विकट्टी' (सथा ६६) ।

भरलोड पुं न [दे] वाण का पुंख, शर का अप्र भाग, गुजराती में 'भालोड', 'कन्नायडिड-यवणुहपट्टदीसतभलोडा' (सुर २, ७) ।

भव अक [भू] १ होना । २ सक. प्राप्त करना । भवइ, भवए (कप्प, महा), भए (भग, ठा ३, १) । भूका, भविसु (भग) । भवि. भविस्सइ, भविस्सं (कप्प, भग, पि ५२१) । वक्र. भवत (गड्ड ५८८), 'भूयसा-विभा (२भ)वमाण भाविही' (कुप्र ४३७) । सक. भविअ, भवित्ता, भवित्ताण (भग्नि ५७, कप्प, भग, पि ५८३), भइ (अप), (पिण) । कृ. भवियव्व (णाय १, १, सुर ४, २०७, उव, भग, सुपा १६४) । देखो भव्व ।

भव पु [भव] १ संसार (ठा ३, १, उवा; भग, विपा २, १, कुमा, जी ४१) । २ संसार का कारण (सम्म १) । ३ जन्म, उत्पत्ति (ठा ४, ३) । ४ नरकादि योनि, जन्म-स्थान (आचा, ठा २, ३, ४, ३) । ५ महा-देव, शिव (पात्र) । ६ वि होनेवाला, भावी (ठा १) । ७ उत्पन्न, 'कणायपुर नामेण तत्थ भवो है महाभाग !' (सुपा ५८४) । ८ न. देव-विमान-विशेष (सम २) । ९ जिण

चुंदीर पुं [दे] १ महिप, भैंसा । २ वि महान्, बडा (दे ६, ६८) ।

चुध न [चुध्] १ वृक्ष का मूल । २ कोई भी मूल, मूलमात्र (हे १, २६, पङ्) ।

चुंवा छी [दे] चिल्लाहट, पुकार (मुपा ५६५) ।

चुवु पु [दे] ऊपर देखो (कह ३१) ।

चुवुअ न [दे] वृन्द, दूय, समूह (दे ६, ६४) ।

चुक् वि [दे] विस्मृत (वव १) ।

चुक् अक [गर्ज, चुक्] गर्जन करना, गरजना । चुकइ (हे ४, ६८) ।

चुक् अक [भप्, चुक्] श्रान—कृत्ता का भूँकना । चुकइ (पङ्) ।

चुक् पुंन [दे] १ चुप, छिपका (मुख १८, ३७) । २ वाद्य-विशेष, 'वृक्षतवृक्षसंवृक्षसंदु-कड' (मुपा ५०) ।

चुक्कण पुं [दे] काक, कौआ (दे ६, ६४, पात्र) ।

चुक्कस देखो वोक्कस (राज) ।

चुका छी [दे] १ मुष्टि (दे ६, ६४, पात्र) । २ ब्रीहिमुष्टि (दे ६, ६४) । ३ वाद्य-विशेष, 'ढक्काडकड्डकावुकासंवृक्षकरडिपभिईणं आउ-जाण' (मुपा १६५) ।

चुका छी [गर्जना] गर्जन, गर्जारव (पउम ६, १०८, गउड) ।

चुकार पु [दे वृद्धार] गर्जन, गर्जना (पउम ७, १०५, गउड) ।

चुकास पुं [दे] तन्तुवाय, जुलाहा (आचा २, १, २, २) ।

चुकासार वि [दे] भीरु, डरपोक (दे ६, ६५) ।

चुक्किअ वि [गर्जित] जिसने गर्जना की हो वह, 'अह चुक्किया तुह भडा' (कुमा) ।

चुज्झ सक [चुध्] १ जानना, ज्ञान करना, समझना । २ जागना । चुज्झइ (उव) । भूका चुज्झसु (मग) । भवि. चुज्झहिइ (भौप) । वक्. चुज्झत, चुज्झमाण (पिंग, आचा) । संक्रु चुज्झा (हे २, १५) । क. बुद्ध, बोद्धव्य, बोधव्य (पिंग, कुमा, नव २३, मग, जी २१) ।

चुज्झविय } वि [बोधित] १ जिसको ज्ञान
चुज्झाचिअ } कराया गया हो वह । २

जगाया गया (कुप्र ६४, मुपा ४२५, प्राक ६८) ।

चुज्झिअ वि [बुद्ध] ज्ञात, विदित (पात्र) ।
चुज्झिअ वि [बोद्ध] १ जाननेवाला । २ जागनेवाला (प्राक ६८) ।

बुडबुड अक [बुडबुडय] बुडबुड आवाज करना, 'सुरा जहा बुडबुडेइ अव्वत्त' (चेइय ४६२) ।

बुड्ड अक [बुड्ड, मस्ज] हुवना । बुड्डइ (हे ४, १०१, उव, कुमा, भवि) । भवि. बुड्डिसु (अप) (हे ४, ४२३) । वक्. बुड्डंत, बुड्डमाण (कुमा, उप १०३१ टी) । प्रयो, वक्. बुड्डावत (संवेध १५) ।

बुड्ड वि [बुड्डित, मझ] हुवा हुआ, निमग्न (धम्म १२ टी, गा ३७, रंसा २३, सुर १०, १८६, भवि), 'धयबुड्डमडगाई' (पव ४ टी) ।

बुड्डण न [बुड्डन] हुवना (संवे २, कप्पू) ।

बुड्डिर पुं [दे] महिप, भैंसा (पङ्) ।

बुड्ड वि [बुद्ध] बूढा (पिंग) । छी. 'ड्डा, 'ड्डी (काप्र १६७, सिरि १७३) ।

बुण्ण वि [दे] १ भीत, डरा हुआ । २ उद्विग्न (दे ७, ६४ टी) ।

बुत्ती छी [दे] चतुमती छी (दे ६, ६४) ।

बुद्ध वि [बुद्ध] १ विद्वान्, परिहृत, ज्ञात-तत्व (सम १, उप ६१२ टी, आ १२, कुप्र ४०, थु १) । २ जागा हुआ, जागृत (सुर ६, २४३) । ३ भूत, भविष्य और वर्तमान का जानकार (चेइय ७१३) । ४ विज्ञात, विदित (ठा ३, ४) । ५ पुं. जिन-देव, अहंन्, तीर्थंकर (सम ६०) । ६ बुद्धदेव, भगवान् बुद्ध (पात्र, दे ७, ५१, उर ३, ७, कुप्र ४४०, धम्मस ६७२) । ७ आचार्य, सूरि (उत्त १, १७) । 'पुत्त पु [पुत्र] आचार्य शिष्य (उत्त १, ७) । 'बोहिय वि [बोधित] आचार्य बोधित (नव ४३) । 'माणि वि [मानिन्] निज की परिहृत माननेवाला (सम १, ११, २५) । 'लिय पुन [लिय] बुद्ध-मन्दिर (कुप्र ४४२) ।

बुद्ध वि [बोद्ध] १ बुद्ध-भक्त । २ बुद्ध-संबन्धी, बुद्ध का (ती ७, मम्मत् ११६) ।

बुद्ध देखो बुज्झ ।

बुद्ध देखो बुध (मुज २०) ।

बुद्धत पुन [बुद्धान्त] अयो-भाग, नीचे का हिस्सा 'ता राहण देवे चद वा मूर वा गेएहमाणे बुद्धतेण गिएहत्ता बुद्धतेण मुयइ' (मुज २०) ।

बुद्धि छी [बुद्धि] १ मति, मेधा, मनीषा, प्रज्ञा (ठा ४, ४, जी ६, कुमा, कण, प्रासू ४७) । २ देव प्रतिमा-विशेष (णाय १, १ टी—पत्र ४३) । ३ महापुराणरीक हृद की अग्निप्राची देवी (ठा २, ६—पत्र ७२, इक) । ४ छन्द-विशेष (पिंग) । ५ तीर्थंकर । ६ साध्वी (राज) । ७ अहिंसा, दया (पएह २, १) । ८ पुं. इस नाम का एक मन्त्री (उप ८४४) । 'कूड न [कूट] पर्वत-विशेष का शिखर (राज) । 'बोहिय वि [बोधित] १ तीर्थंकर—छी-तीर्थंकर से प्रतिबोधित । २ सामान्य साध्वी से बोधित (राज) । 'मंत वि [मन्त] बुद्धिवाला (उप ३३६, मुपा ३७२, महा) । 'ल पृ [ल] १ एक स्वनाम-प्रसिद्ध श्रेष्ठी (महा) । २ देखो 'ल्ल (राज) । 'ल्ल वि [ल] बुद्ध, मूर्ख, दूसरे की बुद्धि पर जीनेवाला, 'तस्स पडियमाणे (?) एि)स्त बुद्धिस्स दुरप्पणो' (श्रोषभा २६ टी, २७) । 'वत देखो 'मत (भवि) । 'भागर, 'सायर पु [सागर] विष्णु की ग्यारहवीं शताब्दी का एक सुप्रसिद्ध जैन-आचार्य श्रीर ग्रन्थकार (सुर १६, २४५, सार्ध ६६, मम्मत् ७६) । 'सिद्ध पुं [सिद्ध] बुद्धि मे मिद्धहस्त, संपूर्ण बुद्धिवाला (आवम) । 'सुदरी छी [सुन्दरी] एक मन्त्री-कन्या (उप ७२८ टी) ।

बुध देखो बुह (पएह १, ५, मुज २०) ।

बुव्वुअ अक [बुव्वू] 'बु' 'बु' आवाज करना, छाग—बकरा का बोलना । बुव्वयइ (कुप्र २४) । वक्. बुव्वुयत (कुप्र २४) ।

बुव्वुअ पुं [बुद्धुद] बुलबुला, पानी का बुलका (दे ६, ६५, श्रीप, पिड ६, १, १, वे ४५, प्रासू ६६, २ १३) ।

बुभुक्खा छी [बुभुक्षा] भूख, पाने की इच्छा (अभि २०७) ।

बुय वि [बुव] बोलनेवाला (सम १ ७, १०) ।

बुयाण देखो बुव ।

का पुत्र (पठम २६, ८७) । °वल्य न [°वल्य] जिन-देव का एक महाप्रातिहार्य, पीठ के पीछे रखा जाता दीप्ति-मण्डल (सदोष २, सिरि १७७) ।

भा } अक [भी] डरना, भय करना । भाइ, भाअ } भाइइ, भाअमि (हे ४, ५३, पङ्, महा, स्वप्न ८०), भादि (शौ) (प्राकृ ६३), भायइ (सण) । भवि. भाइस्सदि, भाइस्स (शौ) (पि ५३०) । वक्र. भायत (कुमा) । क. भाइयव्व (पण्ह २, २, स ५६२, सुपा ४१) ।

भाअ देखो भा = भा । भाअदि (शौ) (प्राकृ ६३) ।

भाअ सक [भायय्] डराना । भाअइ, भाएइ (प्राकृ ६४), भाएसि (कपूर २४) । वक्र. भायमाग (सुपा २४८) ।

भाअ देखो भाव = भावय् । क. भाएअव्व (नव २५) ।

भाअ पुं [भाग] १ योग्य स्थान । २ एक देश (से १३, ६) । ३ अश, विभाग, हिस्सा (पाम्र, सुपा ४०७, पव—गाथा ३०, उवा) । ४ भाग्य, नसीब (साधं ८०) । °धेअ, °हेअ पुन [°धेय] १ भाग्य, नसीब (से ११, ८५, स्वप्न ५१, हम्मीर १४, अमि १६७) । २ कर, राज-देय । ३ दायाद, भागीदार, 'भाअहेअो, भाअहेअ' (प्राकृ ८८, नाट—चैत ६०) । देखो भाग ।

भाअ पु [दे] ज्येष्ठ भगिनी का पति (दे ६, १०२) ।

भाअ देखो भाव (भवि) ।

भाआव देखो भाअ = भायय् । भाआवेइ (प्राकृ ६४) ।

भाइ देखो भागि, 'सारिख वधवहमरणभाइणो जिण ए हंति तइ दिट्ठे' (धण ३२, उप ६८६ टी) ।

भाइ } पुं [भ्रातृ] भाई, बन्धु (उप ५१६, भाइअ } महा, आवम) । °वीया स्त्री [°द्वि-तीया] पर्व-विशेष, भैयादूज, कार्तिक शुक्ल द्वितीया तिथि (ती १६) । °सुअ पु [°सुत] भतीजा (सुपा ४७०) । देखो भाउ ।

भाइअ वि [भाजित] १ विभक्त किया हुआ, बँटा हुआ (पिड २०८) । २ खण्डित (पच २, १०) ।

भाइअ वि [भीत] १ डरा हुआ । २ न. डर, भय (हे ४, ५३) ।

भाइणिज्ज } पुत्री [भागिनेय] भगिनी-पुत्र, भाइणेअ } वहिन का लडका, भानजा (धम्म भाइणेज्ज } १२ टी, नाट—रत्ना ८५, स २७०, णाया १, ८—पत्र १३२, पठम ६६, ३६, कुप्र ४४०, महा) । स्त्री °ज्जी (पठम १७, ११२) ।

भाइयव्व देखो भा = भी ।

भाइर वि [भीरु] डरपोक (दे ६, १०४) ।

भाइल पु [दे] हालिक, कर्षक, कृषीवल, किसान (दे ६, १०४) ।

भाइल वि [भागिन्, °क] भागीदार, सामीदार, अश-ग्राही (सूअ २, २, ६३, पण्ह १, २, ठा ३, १—पत्र ११३, णाया १, १४) । देखो भागि ।

भाइहड न [दे भ्रातृभाण्ड] भाई, वहिन आदि स्वजन, गुजराती में 'भांवड' (कुप्र १५६) ।

भाईरही स्त्री [भागीरथी] गंगा नदी (गठड, हे ४, ३४७, नाट—विक्र २८) ।

भाउ } पु [भ्रातृ] भाई, बन्धु (महा, भाउअ } सुर ३, ८८, पि ५५, हे १, १३१ उव) । °जाया, °ज्जाइया स्त्री [°जाया] भौजाई, भाई की स्त्री (दे ६, १०३, सुपा २६४) ।

भाउअ देखो भाअ = (दे) (दे ६, १०२ टी) ।

भाउअ न [दे] आषाढ मास में मनाया जाता गौरी-पार्वती का एक उत्सव (दे ६, १०३) ।

भाउग देखो भाउ (उप १४६ टी, महा) ।

भाउज्जा स्त्री [दे] भौजाई, भाई की पत्नी (दे ६, १०३) ।

भाउराअण पु [भागुरायण] व्यक्ति-वाचक नाम (मुद्रा २२३) ।

भाएअव्व देखो भाअ = भावय् ।

भाग पुं [भाग] १ अश, हिस्सा (कुमा, जी २७, दे १, १६७) । २ अचित्त्य शक्ति, प्रभाव, माहात्म्य, 'भागोचिता सत्ती स महा-भागो महप्पभावो ति' (विसे १०५८) । ३ पूजा, भजन (सूअ १, ८, २२) । ४ भाग्य, नसीब, 'धन्ना कयपुत्ता हं महवभागोदधोवि मह अत्थि' (सिरि ८२३) । ५ प्रकार, भोगी

(राज) । ६ भवकाश (सुज्ज १०, ३—पत्र १०४) । °धेअ, °धेज्ज °हेअ देखो भाअ-हेअ (पठम ६, ५७, २८, ८६, स १२, सुर १४, ६, पाम्र) । देखो भाअ = भाग ।

भागवय वि [भागवत] १ भगवान् से संवन्ध रखनेवाला । २ भगवान् का भक्त (धम्म ३१२) । ३ न. ग्रन्थ-विशेष (णदि) ।

भागि वि [भागिन्] १ भजनेवाला, सेवन करनेवाला, 'भारस्स भागी' (उव), 'किं पुण मरणपि न मे संजाय मदभग्गभागिस्स' (मुपा ५४७) । २ भागीदार, सामीदार, अश-ग्राही (पाम्रा) ।

भागिणेज्ज } देखो भाइणेज्ज (महा, कुप्र भागिणेय } ३७१) ।

भागीरही देखो भाईरही (पाम्र) ।

भाज अक [भ्राज्] चमकना । वक्र. भाजत, भत (विसे ३४४७) ।

भाड पुंन [दे] भाड, वह बड़ा चूल्हा जहाँ अन्न भुना जाता है, भट्टी, 'जाया भाडसमाण मग्गा उत्तत्तवालुया अहिय' (धम्मवि १०४, सण) ।

भाडय न [भाटक] भाडा, किराया (सुर ६, १५७) ।

भाडिय वि [भाटकित] भाडे पर लिया हुआ, 'वोहित्यं भाडिय विमड' (सुर १३, ३५) ।

भाडिया } स्त्री [भाटिका, °टी] भाडा, भाडी } शुल्क, किराया, 'एक्काए देइ भाडि अन्नाहि सम रमेइ रयणीए', 'विला-सिणीए दाऊण इच्छियं भाडि' (सुपा ३८२, ३८३, उवा) । °कम्म न [°कम्मन्] वैल, गाडी आदि भाडे पर देने का काम—धन्वा, 'भाडियकम्म' (स ५०, आ २२, पडि) ।

भाण देखो भण = भण । संक्र. भाणिरुण, भाणिरुण (पिड ६१५, उव) । कृ भाणियव्व (ठा ४, २, सम ८४, मग; उवा, कप्प, औप) ।

भाण देखो भायण (ओष ६६५, हे १, २६७, कुमा) ।

भाणिअ वि [भाणित] १ पढाया हुआ, पाठित, 'नाणासत्थाइं भाणिअ' (रयण

बोडघेर न [दे] गुल्म-विशेष (पात्र) ।
 बोडिय पु [बोटि] १ दिगम्बर जैन संप्र-
 दाय । २ वि दिगम्बर जैन संप्रदाय का
 अनुयायी, 'बोडियसिवभूईओ बोडियलिंगस्त
 होइ उप्पत्ती' (विसे १०४१, २५५२) ।
 बोडिय वि [दे] मुण्डित-मस्तक (?) ,
 'बोडियमसिए घुवं मरण' (शोधभा ८३ टी) ।
 बोडुर न [दे] श्मश्रु, दाढी-मूँछ (दे ६, ६५) ।
 बोडुआ ओ [दे] कर्पदिका, कौडी, 'केसरि
 न लहइ बोडुआवि गय लक्खेति घेप्पति' (हे
 ४, ३३५) ।
 बोदर वि [दे] पृष्ठ, विशाल (दे ६, ६६) ।
 बोदि देखो बोदि (श्रीप) ।
 बोदह [दे] देखो बोदह (पात्र) ।
 बोद्ध वि [बौद्ध] बुद्ध-भक्त (सबोध ३४) ।
 बोद्धव देखो बुद्ध ।
 बोदह वि [दे] तरुण, जवान (दे ७, ८०) ।
 बोधण न [बोधन] बोध, शिक्षा, उपदेश
 (सम ११६) ।
 बोधव्य देखो बुद्ध ।
 बोधि देखो बोहि (ठा २, १—पत्र ४६) ।
 'सन्त पु [सत्त्व] सम्यग् दर्शन को प्राप्त
 प्राणी, अर्हन् देव का भक्त जीव (मोह ३) ।
 बोधिअ वि [बोधित] ज्ञापित, अवगमित
 (धर्मसं ५०६) ।
 बोच्चड वि [दे] मूक (दश० अगल्य ३०
 पत्र० २४३) ।
 बोर न [बदर] फल-विशेष, बेर (गा २००,
 हे १७०, पङ्, कुमा) ।
 बोरी ओ [बदरी] बेर का गाछ (प्राकृ ४, हे
 १, १७०, कुमा, हेका २५६) ।
 बोल सक [बोडय] डुबाना, 'तबोलो तं
 बोलइ जिणवसहिट्टिएण जेण खद्धो' (सार्ध
 ११४), 'डुद्धत बोलए अन्न' (सूक्त ६६),
 बोलेइ, बोलए (सबोध १३), 'केसि व वचित्तु
 गले सिलाओ उदरांसि बोलति महालयसि'
 (सूत्र १, ५, १०), बोलेमि (सिरि १३८) ।
 'गुरुनामेण लोए बोलेइ वहु' (उवर १५२) ।

बोल सक [व्यति + क्रम्] १ पसार होना,
 गुजरना । २ सक. उल्लंघन करना, 'दुई ए
 एइ, चदोवि उगग्रो, जामिणीवि बोलेइ' (गा
 ८५४), 'पुणो त वधेण न बोलइ कयाइ'
 (आवक ३३) । बोलए (चंड) । देखो
 बोल = गम् ।
 बोल पुं [दे] १ कलकल, कोलाहल (दे ६,
 ६०, भग, भवि, कप्प, उप उप ५०६),
 'हासबोलवहुला' (श्रीप) । २ समूह, 'कमडा-
 सुरेण रइयम्मि भोसणे पलयतुल्लंजलबोले'
 (भाव १; कुलक ३४) ।
 बोल्म पुन [दे ब्रोड] १ मज्जन, डूबना ।
 २ कर्ण, खोंचाव, 'उच्चूलं बोलग पज्जेति'
 (विपा १, ६—पत्र ६८) ।
 बोलिअ वि [बोडित] डुबाया हुआ (वज्जा
 ६८) ।
 बोलिंदी ओ [दे] लिपि-विशेष, ब्राह्मी लिपि
 का एक भेद, 'माहेसरीलिबो दामिलिबो बोलि-
 दिलीवो' (सम ३५) ।
 बोल्ह सक [कथय] बोलना, कहना । बोल्ह
 (हे ४, २ प्राकृ ११६, सुर ८, १६७,
 भवि) । कर्म बोलिअइ (अप) (कुमा) ।
 कृ. बोलेवय (अप) (कुमा) । प्रयो. बोल्हा-
 वइ (कुमा) ।
 बोल्हअ पुं [कथन] बोल, वचन (गा ६०३) ।
 बोल्हणअ वि [कथयित्तु] बोलने का स्वभाव-
 वाला (हे ४, ४४३) ।
 बोल्हा ओ [कथा] वार्ता, बात, 'नीयबोल्हाए'
 (उप १०१५) ।
 बोल्हाविय वि [कथित] बुलबाया हुआ (स
 ४६१, ६६६) ।
 बोल्हिअ वि [कथित] १ उक्त । २ न, उक्ति
 (भवि; हे ४, ३८३) ।
 बोव्व न [दे] क्षेत्र, खेत (दे ६६) ।
 बोह सक [बोधय] १ समझाना, ज्ञान
 कराना । २ जगाना । बोहेइ (उव) । कर्म.
 बोहिज्जइ (उव) । वहु बोहित, बोहित
 (सुर १५, २४६, महा) । कवकृ. बोहिज्जत
 (सुर २, १४५, ८, १६५) । हेकृ. बोहेउ
 (अज्म १७६) ।

बोह पुं [बोध] १ ज्ञान, समझ (जी १) ।
 २ जागरण (कुमा) ।
 बोहग देखो बोहय (दं १) ।
 बोहण देखो बोधण (उप २०६, सुर १, ३७,
 उवर १) ।
 बोहय वि [बोधक] बोध देनेवाला, ज्ञान-
 दाता (सम १, गाया १, १, भग, कप्प) ।
 बोहहर पुं [दे] मागव, स्तुति-पाठक (दे ६,
 ६७) ।
 बोहारी ओ [दे] ब्रह्मारी, समार्जनी, भाइ
 (दे ६, ६७) ।
 बोहि ओ [बोधि] १ शुद्ध धर्म का लाभ,
 सद्धर्म की प्राप्ति, 'दुल्लहा बोहो' (उत्त ३६,
 २५८), 'बोहो जिणेहि भणिया भवतरे सुद्ध-
 धम्मसपत्ती' (चेइय ३३२, सबोध १४, मम
 ११६, उप ४८१ टी) । २ अहिमा, अनुकम्पा,
 दया (परह २, १) । देखो बोधि ।
 बोहिअ वि [बोधित] १ ज्ञापित, समझाया
 हुआ (भग) । २ विकसित, विबोधित, 'रवि-
 किरणतरुणबोहियसहस्सपत्त—' (कप्प) ।
 बोहिअ पुं [बोधिक] मनुष्य चुरानेवाला
 चोर (निबू १, चेइय ४४६) ।
 बोहित देखो बोह = बोधय ।
 बोहिग देखो बोहिअ = बोधिक (राज) ।
 बोहित्य पुन [दे] प्रवहण, जहाज, यानपात्र,
 नौका (दे ६, ६६, स २०६, चेइय २६४,
 कुप्र २२२, सिरि ३८३, सम्मत १५७,
 सुपा ६४, भवि) ।
 बोहित्थिय वि [दे] प्रवहण-स्थित (वज्जा
 १५८) ।
 'बमस देखो भस (सुपा ५०६) ।
 'बमर देखो भमर (नाट—मुद्रा ३६) ।
 'बभास देखो अबभास, 'किंतु धद्धहवा सा
 दिट्ठिबामेवि कुणइ न हुकोइ' (सुपा ५६७) ।
 'चिभ वि [भित्] भेदन करनेवाला, नाश-
 कर्ता, 'सगडचिभ' (आवा १, ३, ४, १) ।
 ब्रो (अप) देखो बू । बोहि (प्राकृ १२१) ।

‘सो चैव देवलोगो देवसहस्रोवसोहिओ रम्मो ।
तुह विरहियाइ इयिह भावइ नरओवमो मज्झ ।’
(सुर ७, १६) ।

‘त चिय इम विमाण रम्म
मणिकरणगरयणविच्छुरिय ।

तुमए मुक्कं भावइ
घडियालयसच्छहं नाह ।’
(सुर ७, १७) ।

‘एम्बहि राहपओहरहं जं भावइ तं होउ’
(हे ४, ४२०) ।

भाव पुं [भाव] १ पदार्थ, वस्तु, ‘भावो वस्तु
पयथो’ (पाप्र, विसे ७०, १६६२) । २
अग्निप्राय, आशय (आचा; पचा १, १, प्रासू
४२) । ३ चित्त-विकार, मानस विकृति,
‘हावभावपललियविकखेवविलाससालिणीहि’
(परह २, ४—पत्र १३२) । ४ जन्म,
उत्पत्ति, पिंडो कज्जं पइसमयभावाउ’ (विसे
७१) । ५ पर्याय, धर्म, वस्तु का परिणाम,
द्रव्य की पूर्वापर अवस्था (परह १, ३,
उत्त ३०, २३, विसे ६६, कम्म ४, १,
७०) । ६ धात्वर्थ-युक्त पदार्थ विवक्षित क्रिया
का अनुभव करनेवाली वस्तु, पारमार्थिक
पदार्थ (विसे ४६) । ७ परमार्थ, वास्तविक सत्य
(विसे ४६) । ८ स्वभाव, स्वरूप (अणु; एण्डि) ।
९ भवन, सत्ता (विसे ६०, गउड ६७८) ।
१० ज्ञान, उपयोग (आचू १, विसे ५०) ।
११ चेष्टा (राया १, ८) । १२ क्रिया,
धात्वर्थ (अणु) । १३ विधि, कर्तव्योपदेश,
‘भावामावमाणता’ (भग ४१—पत्र ६७६) ।
१४ मन का परिणाम (पचा २, ३३, उव,
कुमा ७, ५५) । १५ अन्तर्ग बहुमान, प्रेम,
राग (उव, कुमा ७, ८३, ८५) । १६ भावना,
चिन्तन (गउड १२०४, सवोघ २४) । १७
नाटक की भाषा में विविध पदार्थों का चिन्तक
परिणत (अभि १८२) । १८ आत्मा (भग १७,
३) । १९ अवस्था, दशा (कप्पू) । ‘केउ पुं
[°केतु] ज्योतिष्क देव-विशेष, महाग्रह-विशेष
(ठा २, ३) । ‘त्य पुं [°र्थ] तात्पर्य,
रहस्य (स ६) । ‘अ न्नुय वि [°ज्ञ]
अभिप्राय को जाननेवाला (आचा, महा) ।
‘पाण पु [°प्राण] ज्ञान आदि आत्मा
का अन्तरंग गुण (परण १) । ‘सजय पुं

[°सयत] सचा, साधु (उप ७३२) । ‘साहु
पुं [°साधु] वही अर्थ (भग) । ‘सव पु
[°सव] वह आत्म-परिणाम, जिससे कर्म
का प्रागमन हो, ‘प्रासवदि जेण कम्म परि-
णामेणप्पणो स विण्णोओ भावासवो’ (द्रव्य
२६) ।

भाव पु [भाव] महान् वादी, समर्थ विद्वान्
(दस १, १ टी) ।

भावअ वि [भावक] होनेवाला (प्राकृ ७०) ।
देखो भावग ।

भावइआ स्त्री [दे] धार्मिक-गृहिणी (दे ६,
१०४) ।

भावग वि [भावक] वासक पदार्थ, गुणाधायक
वस्तु (आचू ३) । देखो भावअ ।

भावड पु [भावक] स्वनाम स्थात एक जैन
गृहस्थ (ती २) ।

भावण पुं [भावन] १ स्वनाम-स्थात एक
वर्णिक (पउम ५, ८२) । २ नीचे देखो
(सवोघ २४, वि ६) ।

भावणा स्त्री [भावना] १ वासना, गुणाधान,
संस्कार-करण (औप) । २ अनुप्रेक्षा, चिन्तन ।
३ पर्यालोचन (ओघभा ३, उव, प्रासू ३७) ।

भावि वि [भाविन्] भविष्य में होनेवाला
(कुमा, सण) ।

भाविअ वि [दे] गृहीत, उपात्त (दे ६,
१०३) ।

भाविअ न [भाविक] एक देव-विमान (सम
३३) ।

भाविअ वि [भावित] १ वासित (परह २,
५, उत्त १४, ५२, भग, प्रासू ३७) । २

भाव-युक्त, ‘जिएपवयणतिव्वभावियमइस्स’
(उव) । ३ शुद्ध, निर्दोष (बृह १) । °प्प

वि [°त्मन्] १ वासित अन्त करणवाला
(औप, राया १, १) । २ पुं-मुहूर्त-विशेष,

अहोरात्र का तेरहवाँ या अठारहवाँ मुहूर्त
(सुज १०, १३, सम ५१) । °प्पा स्त्री

[°त्मा] भगवान् धर्मनाथ की मुख्य शिष्या
(सम १५२) ।

भाविदिअ न [भावेन्द्रिय] उपयोग, ज्ञान
(भग) ।

भाविर वि [भाविन्, भवित्] भविष्य में
होनेवाला, अवश्यभावी, ‘अम्ह भाविरदीहर-

पवासदुहिया मिलाएइ’ (सुपा ६), ‘एत्थत-
रम्म भाविरनियपिउगुरिरहगिगदूमियमणेण’
(सुपा ७५) ।

भाविल्ल वि [भाववन्] भाव-युक्त, पण-
वीसं भावणां भाविल्लो पंचमहव्याईण’
(सवोघ २४) ।

भाविस्म देखो भविस्स, ‘भाविस्समूयपमवत-
भावमालोयलोयणं विमलं’ (सुपा ८६) ।

भावुक वि [दे] वयस्य, मित्र (सक्षि ४७) ।

भावुग } वि [भावुक] अन्य के संसर्ग की
भावुय } जिस पर असर हो सकती हो वह
वस्तु (ओघ ७७३, सवोघ ५४) ।

भास सक [भाप्] कहना, बोलना । भासइ,
भासति (भग, उव) । भवि, भासिस्तामि

(भग) । वक, भासंत, भासमाण (औप,
भग, विपा १, १) । कवक, भासिज्जमाण

(भग, सम ६०) । सक, भासित्ता (भग) ।
क, भासिअव्व (भग, महा) ।

भास अक [भास्] १ शोभना । २ लगना,
मालूम होना । ३ प्रकाशना, चमकना । भासइ

(हे ४, २०३), भासए, भासति, भाससि
(मोह २६, भत्त ११०, सुर ७, १६२) ।

वक भासत (अच्छु ५४) ।

भास सक [भीपय्] डराना । भासइ (धात्वा
१४७) ।

भास पुं [भास] १ पक्षि-विशेष (परह १,
१, दे २, ६२) । २ दीप्ति, प्रकाश; ‘नाव-

रिजइ कयावि । उक्कोसावरणम्मि वि जल-
यच्छन्नकमासो व्व’ (विसे ४६८, भवि) ।

भास पु [भस्मन्] १ ग्रह-विशेष, ज्योतिष्क
देव-विशेष (ठा २, ३, विचार ५०७) । २

भस्म, राख (राया १, १, परह २, ५) ।
°रासि पु [°राशि] ग्रह-विशेष (ठा २, ३,

कप्प) ।

भास न [भाष्य] व्याख्या-विशेष, पद्य-रद
टीका (चैत्य १, उप ३५७ टी, विचार ३५२,

सम्पक्त्वो ११) ।

भास° देखो भासा (कुमा) । °णु वि [°ज्ञ]
भाषा के गुण-दोष का जानकार (धर्मस

६२५) । °व वि [°वत्] वही अर्थ (सम
१, १३, १३) ।

भंजाविअ } वि [भञ्जित] १ भोग्या हुआ,
भंजिअ } तुडवाया हुआ, (स ५४०) । २
भगाया हुआ (पिंग) । ३ आक्रान्त (तंदु ३८) ।
भजिअ देखो भग्ग = भग्न (कुमा ६, ७०;
पिंग, भवि) ।

भड सक [भाण्डय] भंडारा करना, संग्रह
करना, इकट्ठा करना । भंडेइ (मुख २, ४५) ।
भंड सक [भण्ड] भंडना, भत्सना
करना, गाली देना । भंडइ (सण) । वहु.
भडत (गा ३७६) । सक भंडिउ (वव १) ।
भंड पुं [भण्ड] १ विट, भण्डूआ (पव ३८) ।
२ भंड, बहुरूपिया, मुख आदि के विकार से
हँसाने का काम करनेवाला, निर्लज्ज
(आव ६) ।

भड न [दे] १ वृन्ताक, वेंगन, भंडा (दे ६,
१००) । २ पुं. मागध, स्तुति-पाठक । ३
सखा, मित्र । ४ दौहित्र, पुत्री का पुत्र (दे
६, १०६) । ५ पुं. मण्डन, भ्रामपण,
गहना (दे ६, १०६, भग, श्रौप) । ६ वि.
छिन्न, मूर्धा, सिर-कटा (दे ६, १०६) । ७
न. छुर, छुरा । ८ छुरे से मुण्डन (राज) ।
भड } पुं [भाण्ड] १ वरतन, वासन, पात्र,
भडग } 'दुग्गइदुहमडे घडइ भक्खडे' (संवेग
१४, दे ३, २१, आ २७, सुपा १६६) ।
२ क्रयाणक, परण, वेचने की वस्तु (णाय
१, १—पत्र ६०, श्रौप, परह १, १, उवा;
कुमा) । ३ गृह, स्थान (जीव ३) । ४ वज्र-
पात्र आदि घर का उपकरण (ठा ३, १,
कप्प, श्रोघ ६६६, णाय १, ५) ।

भंडण न [दे भण्डन] १ कलह, वाक्-
कलह, गाली-प्रदान (दे ६, १०१, उव,
महा, णाय १, १६—पत्र २१३, श्रोघ
२१४, गा ६६६; उप ३३६, तंदु ५०) ।
२ क्रोध, गुस्सा (सम ७१) ।

भडणा छी [भण्डना] भंडना, गाली-
प्रदान (उप ३३६) ।
भंडय देखो भड = भण्ड (हे ४, ४२२) ।
भंडय देखो भडग, 'पायसघयदहियाणं भरि-
ऊण भंडए गरए' (महा ८०, २४, उत्त
२६, ८) ।

भंडवेआलिअ वि [भाण्डवैचारिक] करि-
याना वेचनेवाला (अणु १४६) ।

भडा छी [दे] सम्बोधन-सूचक शब्द (संलि
४७) ।

भडाआर } पुं [भाण्डागार] भंडार, कोठा
भंडागार } या कोठार, बखार (मुद्रा १४१, स
१७२, सुपा २२१, २६) ।

भडागारि } पुंछी [भाण्डागारिन्, क]
भडागारिअ } भंडारी, भंडार का अव्यय
(णाय १, ८, कुप्र १०८) । छी. रिंगी
(णाय १, ८) ।

भंडार देखो भंडागार (महा) ।

भंडार पु [भाण्डकार] वतन बढानेवाला
शिल्पी (राज) ।

भंडारि } देखो भडागारि (स २०७, सुर
भंडारिअ } ४, ६०) ।

भंडिअ पुं [भाण्डिक] भंडारी, भंडार का
अव्यय (सुख २, ४५) ।

भडिआ छी [भाण्डिका] स्थाली, थलिया
(ठा ८—पत्र ४१७) ।

भडिआ } छी [दे] १ गंभी, गाढी (वृह ३,
भंडी } दे ६, १०६, आवम, निव ३,
वव ६) । २ शिरोप वृक्ष । ३ अटवी, जंगल ।
४ असती, कुलटा (दे ६, १०६) ।

भंडीर पु [भण्डीर] वृक्ष-विशेष, शिरोप वृक्ष
(कुमा) । 'वडिसय, वडेंसयन [वतंसक]
मथुरा नगरी का एक उद्यान, 'महुराए
णयरीए भंडि (? डीर) वडेंसए उज्जाले'
(राज, णाय २—पत्र २५३) । 'वण न
[वन] १ मथुरा का एक वन (ती ७) ।
२ मथुरा का एक चैत्य (आवम) ।

भंडु न [दे] मुण्डन (दे ६, १००) ।

भंडुल देखो भंड = भाण्ड (भवि) ।

भंत वि [भ्रान्त] १ धुमा हुआ, 'भंतो जसो
मेईणी (ए)' (पत्रम ३०, ६८) । २ भ्रान्ति-
युक्त, भ्रमवाला, भ्रूला हुआ (दे १, २१) ।
३ अपेत, अनवस्थित (विसे ३४४८) ।
४ पुं. प्रथम नरक का तीसरा नरकेन्द्रक—
नरकावास-विशेष (देवेन्द्र ३) ।

भत वि [भगवत्] भगवान्, ऐश्वर्य-शाली
(ठा ३, १, भग, विसे ३४४८—३४५६) ।

भंत वि [भदन्त] १ कल्याण-कारक । २
सुख-कारक । ३ पूज्य (विसे ३४३६, कप्प,
विपा १, १, कस, विसे ३४७४) ।

भत वि [भजत्] सेवा करता (विसे
३४४६) ।

भंत वि [भात्, भ्राजत्] चमकता,
प्रकाशता (विसे ३४४७) ।

भत वि [भवान्त] भव का—संसार का
अन्त करनेवाला, मुक्ति का कारण (विसे
३४४६) ।

भंत वि [भयान्त] भय-नाशक (विसे ३४४६) ।

भति छी [भ्रान्ति] भ्रम, मिथ्या ज्ञान (धर्मसं
७२१, ७२३, सुपा ३१२, भवि) ।

भति (अप) छी [भक्ति] भक्ति, प्रकार
(पिंग) ।

भभल वि [दे] १ अप्रिय, अनिष्ट (दे ६,
११०) । २ मूर्ख, अज्ञान, पागल, देवकूफ
(दे ६, ११०, सुर ८, १६६) ।

भंभसार पुं [भम्भसार] भगवान् महावीर
के समकालीन और उनके परम भक्त एक
मगधाधिपति, ये श्रेणिक और विम्बसार के
नाम से भी प्रसिद्ध थे (णाय १, १३,
श्रौप) । देखो भिभसार, भिभिसार ।

भभा छी [दे. भम्भा] १ वाद्य-विशेष, भेरी
(दे ६ १००, णाय १, १७, विसे ७८ टी;
सुर ३, ६६, सम्मत १०६, राय, भग ७,
६) । २ 'भा' 'भा' की आवाज (भग ७, ६—
पत्र ३०५) ।

भभी छी [दे] १ असती, कुलटा (दे ६,
६६) । २ नीति-विशेष (राज) ।

भंस अक [भ्रश] १ नीचे गिरना । २ नष्ट
होना । ३ स्थलित होना । भंसइ (हे ४,
१७७) ।

भंस पुं [भ्रंश] १ स्थलना । २ विनाश
(सुपा ११३, सुर ४, २३०), 'सपाडइ
सपयाभंस' (कुप्र ४१) ।

भसग वि [भ्रशक] विनाशक (वव १) ।

भसण न [भ्रशन्] ऊपर देखो, 'को गु
उवाओ जिणवम्म-भसणे होज्ज ईईए' (सुपा
११३, मुर ४, १५) ।

भसणा छी [भ्रशाना] ऊपर देखो (परह
२, ४ आवक ६५) ।

भक्ख सक [भक्षय] भक्षण करना, खाना ।
भक्खेइ (महा) । कर्म. भक्खिज्जइ (कुमा) ।
वहु भक्खत (स १०२) । हेहु. भक्खिउं
(महा) । क. भक्ख, भक्खेय, भक्खणिज्ज

भित्तूणं, भिदिअ भिदिऊण, भेत्तूआण,
भेत्तण (रंभा, उत्त ६, २२, नाट—विक्र
१७, पि ५८६, हे २, १४६, महा) । हेक
भिदित्तए, भित्तुं, भेत्तुं (पि ५७८, कण,
पि ५७८) । कृ भिदियव्व (पएह २, १),
भेअव्व (मे १०, २६) ।

भिदण न [भेदन] खण्डन, विच्छेद (सुर १६,
५६) ।

भिदणया छी [भेदना] ऊपर देखो (सुर १,
७२) ।

भिदिवाल (शौ) देखो भिदिवाल (प्राकृ
८७) ।

भिमल देखो भिम्भल (सुपा ८३, ३६५,
पि २०६) ।

भिभलिय वि [विह्वलित] विह्वल किया
हुआ, 'ता गजइ मायगो विभवणे य (? म)
यपवार्हभिभलियो' (धर्मवि ८०) ।

भिभसार पुं [भिम्भसार] देखो भभसार
(श्रौप) ।

भिभा छी [भिम्भा] देखो भंभा (राज) ।

भिभिसार पुं [भिम्भिसार] देखो भंभसार
(ठा ६—पत्र ४५८, पि २०६) ।

भिभी छी [भिम्भी] वाद्य-विशेष, ढक्का (ठा
६ टी—पत्र ४६१) ।

भिकख सक [भिक्षू] भीख मांगना, याचना
करना । भिक्खइ (संवोध ३१) । वक्क
भिकखमाण (उत्त १४, २६) ।

भिकख न [भैक्ष] १ भिक्षा, भीख । २ भिक्षा-
समूह (शोधभा २१६, २१७), 'न कज्ज
मम भिक्खेण' (उत्त २५, ४०) । ३ जीविअ
वि [जीविक] भीख से निर्वाह करनेवाला,
भिक्षमगा (प्राकृ ६, पि ८४) ।

भिकखं देखो भिक्खा (पि ६७, कुप्र १८३,
धर्मवि ३८) ।

भिकखण न [भिक्षण] भीख मांगना, याचना
(धर्मस १०००) ।

भिकखा छी [भिक्षा] भीख, याचना (उव,
सुपा २७७, पिग) । १ यर वि [चर]
भिक्षुक (कण) । २ यरिया छी [चर्या]
भिक्षा के लिये पर्यटन (आचा, श्रौप, शोधभा

७४, उवा) । ३ लाभिय पुं [लाभिक]
भिक्षुक-विशेष (श्रौप) ।

भिकखाग } वि [भिक्षाक] भिक्षा मांगने-
भिकखाय } वाला, भिक्षा से शरीर-निर्वाह
करनेवाला (ठा ४, १—पत्र १५, आचा
२, १, ११, १, उत्त ५, २८, कण) ।

भिक्षु पुंछी [भिक्षु] १ भीख से निर्वाह
करनेवाला, साधु, मुनि, संन्यासी, ऋषि
(प्राचा, सम २१, कुमा, सुपा ३४६, प्रासु
१६६), 'भिक्षणसोली य तथो भिक्षु त्ति
निदरिसिओ समए' (धर्मसं १०००) । २
बौद्ध संन्यासी, 'कम्म चय न गच्छइ चउव्विह
भिक्षुममयम्मि' (सूत्रनि ३१) । छी. °णी
(आचा २, ५, १, १, गच्छ ३, ३१, कुप्र
१८८) । ३ पडिमा छी [प्रतिमा] साधु का
अभिग्रह-विशेष, मुनि का व्रत-विशेष (भग,
श्रौप) । ४ पडिआ छी [प्रतिज्ञा] साधु का
उद्देश, साधु के निमित्त, 'से भिक्खू वा भिक्षुणी
वा से ज पुण वत्थ जाणेना असजए भिक्षु-
पडियाए कीय वा घोय वा रत्त वा' (आचा
२, ५, १, ४) ।

भिक्षु ड देखो भिच्छुंड (राज) ।

भिक्षांड देखो भिच्छुड (अणु २४) ।

भिक्षारि (अप) वि [भिक्षाकारिन्] भिक्षारी,
भीख मांगनेवाला (पिग) ।

भिगु देखो भिउ (पठम ४, ८६, शोध ३७४) ।

भिगुडि देखो भिउडि (पि १२४) ।

भिष पुं [भृत्य] १ दास, सेवक, नौकर (पाप्र,
सुर २, ६२, सुपा ३०७) । २ वि. अच्छी
तरह पोषण करनेवाला (विपा १, ७—पत्र
७५) । ३ वि. भरणीय, पोषणीय (पएह १,
२—पत्र ४०) । ४ भाव पुं [भाव] नौकरी
(सुर ४, १५६) ।

भिच्छं देखो भिक्खं (पि ६७) ।

भिच्छा देखो भिक्खा (गा १६२) ।

भिच्छुड वि [दे भिक्षोण्ड] १ भिक्षारी,
भिक्षा से निर्वाह करनेवाला । २ पुं. बौद्ध
साधु (खाया १, १५—पत्र १६३) ।

भिज्ज न [भेद्य] कर-विशेष, दण्ड-विशेष
(विपा १, १—पत्र ११) ।

भिज्जा देखो भिज्जा (ठा २, ३—पत्र ७१,
सम ७१) ।

भिज्जिय देखो भिज्जिय (भग) ।

भिज्जा छी [अभिध्या] गृद्धि, लोभ (कस) ।

भिज्जिय वि [अभिधियत्त] लोभ का विषय,
सुन्दर (भग ६, ३—पत्र २५३) ।

भिट्ट सक [दे] भेंटना । कर्म. 'वहुविहमिट्ट-
णएहि मिट्टिज्जलदमालेहि' (मिरि ६०१) ।

भिट्टण न [दे] भेंट, उपहार, गुजराती में
'भेटण' (सिरि ७५६, ६०१) ।

भिट्टा छी [दे] ऊपर देखो (सिरि ३६२) ।

भिड सक [दे] भिडना—१ मिलना, सटना,
सट जाना । २ लडना, मूठमेड करना । भिडइ
(भवि), भिडति (मिरि ४५०) । वक्क भिडत
(उप ३२० टी, भवि) ।

भिडण न [दे] लडाई, मुठमेड, 'सांढीरमुह-
भिडणिक्कलपड' (सुपा ५६६) ।

भिडिय वि [दे] जिसने मुठमेड की हो वह,
लडा हुआ (महा, भवि) ।

भिणासि पुं [दे] पक्षि-विशेष (पएह १,
१ पत्र ८) ।

भिण्ण देखो भिन्न (गडड, नाट—चैत ३४) ।

°मरट्ट (अप) पुं [°महाराट्ट] छन्द का एक
भेद (पिग) ।

भित्त देखो भिच्च (संलि ५) ।

भित्तग } न [दे. भित्तक] १ खण्ड,
भित्तय } टुकड़ा । २ आवा हिस्सा (आचा
२, ७, २, ८, ६; ७) ।

भित्तर न [दे] १ द्वार, दरवाजा (दे ६,
१०५) । २ भीतर, अंदर (पिग) ।

भित्ति छी [भित्ति] भीत (गडड, कुमा) ।
°सध न [°सन्ध] भीत—दीवार का सधान,
'जाएवि भित्तिसधे खणिय खत्त सुत्तिकख-
सत्थेण' (महा) ।

भित्तिरुव वि [दे] टंक से छिन्न (दे ६,
१०५) ।

भित्तिल न [भित्तिल] एक देव-विमान (सम
३८) ।

भित्तु वि [भेत्तू] भेदन करनेवाला (पव २) ।

भित्तुं } देखो भिद ।

भिद देखो भिद । भिदति (आचा २, १, ६,
६) । भवि. भिदित्संति (आचा २, १, ६,

भट्ट (श्री) देखो भट्टारय (प्राक् ६५) ।

भट्ट वि [भ्रष्ट] १ नीचे गिरा हुआ । २ च्युत, स्वलित (महा ३ ४३) । ३ नष्ट (सुर ४, २१५, णाया १, ६) ।

भट्ट पुंन [भ्राष्ट्र] भर्जन-पात्र, भुनते का वर्तन (दि ५, २०), 'मट्टद्विचरणो विव सयणीए कीस तढकडसि' (सुर ३, १४८) ।

भट्टि } श्री [दे] धूलि-रहित मार्ग (शोध
भट्टी } २३, २४ टी, भग ७, ६ टी—पत्र ३०७) ।

भड पु [भट] १ योद्धा, लढाका (कुमा) । शूर, वीर (से ३, ६, णाया १, १) । ३ म्लेच्छो की एक जाति । ४ वरुण-सकर जाति-विशेष, एक नीच मनुष्य-जाति । ५ राक्षस (हे १, १६५) । 'खड्ग आ श्री [खादिता] दीक्षा-विशेष (ठा ४, ४) ।

भडक पुंजी [दे] आढम्बर, तढक-भडक, टीम-टाम, ठाठमाठ (सट्टि ४४ टी) । श्री. 'क्षा (उव) ।

भडग पु [भटक] १ अनार्य देश-विशेष । २ उस देश में रहनेवाली एक म्लेच्छ-जाति (पणह १, १—पत्र १४, इक) । देखो भड ।

भडारय (अप) देखो भट्टारय (भवि) ।

भडित्त न [भटित्र] शूल-यन्त्र मासादि, कवाव (स २६२, कुप्र ४३२) ।

भडिल वि [दे] संवोधन-सूचक शब्द (सलि ४७) ।

भण सक [भण] कहना, बोलना, प्रतिपादन करना । भणइ, भणइ (हे ४, २३६, कुमा) । कर्म. भणइइ, भणए, भणज्जई (पि ५४८, पड्, पिंग) । भुका. भणीम (कुमा) । भवि, भणिहि, भणिस्स (कुमा) । वक्र. भणत, भणमाण, भणेमाण (कुमा, महा, सुर १०, ११४) । कवक. भणत, भणिज्जत, भणिज्जमाण, भणीअत, भणमाण (कुमा, पि ५४८, गा १४५) । सक्र. भणिअ, भणिअ, भणिऊण (कुमा, पि ३४६) । हेक. भणिउ, भणिउ (पउम ६४, १३, पि ५७६) । क. भणिअव्व, भणेयव्व (मज्जि ३८, सुपा ६०८) । कवक. भन्नत, भन्नमाण (सुर २, १६१, उप पृ २३, उप १०३१ टी) ।

भणग वि [भण, 'क] प्रतिपादन करनेवाला (एदि) ।

भणण न [भणन] कथन, उक्ति (उप ५५३, सुपा २८३, संवोध ३) ।

भणाविअ वि [भाणित] कहलाया हुआ (सुपा ३५८) ।

भणिअ वि [भणित] कथित (भग) ।

भणिइ श्री [भणिति] उक्ति, वचन (सुर ६, १४५, सुपा २१४, धर्मवि ५८) ।

भणिर वि [भणित्] कहनेवाला, वक्ता (गा २६७, कुमा, सुर ११, २४४, आ १६) । श्री. 'री (कुमा) ।

भणेमाण देखो भण ।

भणण सक [भण] कहना, बोलना । भणणइ (धात्वा १४७) ।

भणमाण देखो भण = भण् ।

भत्त पुंन [भक्त] १ आहार, भोजन । २ अन्न, नाज (विपा १, १, ठा २, ४, महा) । ३ श्रोतन, भात (प्राभा) । ४ लगातार सात दिनों का उपवास (संवोध ५८) । ५ वि. भक्ति-युक्त, भक्तिमान्, 'सा सुलस' वालम्पभित्ति चेव हरिणोमेसीभत्तया यावि होत्या' (अंत ७, उप पृ ६६, महा, पिंग) । 'रुहा श्री [कथा] आहार-कथा, भोजन-संबन्धी वार्ता (ठा ४, ४) । 'च्छद, छद पु [च्छन्द] रोग-विशेष, भोजन की अवधि, 'कच्छू जरो खासो सासो भत्तच्छदो अक्खिदुक्खं' (महा, महा—टि) । 'पच्चक्खाण न [प्रत्याख्यान] आहार-त्याग-रूप अनशन, अनशन का एक भेद, मरण का एक प्रकार (ठा २, ४—पत्र ६४, औप ३०, २) । 'परिण्णा, परिज्जा श्री [परिज्ञा] १ वही पूर्वोक्त अर्थ (भत्त १६६, १०, पव १५७) । २ अर्थ-विशेष (भत्त १) । 'पाणय न [पानक] आहार-पानी, खान-पान (विपा १, १) । 'वेला श्री [वेला] भोजन-समय (विपा १, १) । भत्त वि [भूत] उत्पन्न, सजात (हे ४, ६०) ।

भत्ति देखो भत्तु (पिंग) ।

भत्ति श्री [भक्ति] १ सेवा, विनय, आदर (णाया १, ८—पत्र १२२, उव, औप, प्रासू २६) । २ रचना (विसे १६३१, औप,

सुपा ५२) । ३ एकाग्र-वृत्ति-विशेष (आव २) । ४ कल्पना, उपचार (धर्मस ७४२) । ५ प्रकार, भेद (ठा ६) । ६ विच्छित्ति-विशेष (औप) । ७ अनुराग (धर्म १) । ८ विभाग । ९ अवयव । १० श्रद्धा (हे २, १५६) । 'मंत, 'वत वि [मन्] भक्तिवाला, भक्त (पउम ६२, २८, उव, सुपा १६०, ह २, १५६, भवि) ।

भत्तिज्ज पुं [भ्रातृव्य] भतीजा, भाई का पुत्र (सिरि ७१६, धर्मवि १२७) ।

भत्ती नीचे देखो ।

भत्तु पुं [भर्तृ] १ स्वामी, पति, भतार (णाया १, १६—पत्र २०७), 'एववह उव-रतभत्तुया' (णाया १, ६, पाभ, स्वप्न ५६) । २ अधिपति, अध्यक्ष । ३ राजा, नरेश । ४ वि. पोषक, पोषण करनेवाला । ५ धारण करनेवाला (हे ३, ४४, ४५) । श्री—भत्ती (पिंग) ।

भत्तोस न [भक्तोप] १ भुना हुआ अन्न (पचा ५, २६, प्रभा १५) । २ सुखादिका, खाद्य-विशेष (पव ३८) ।

भत्थ पुंजी [दे] भाषा, तूणीर, तरकस, 'अह आरोवियचावो पिट्ठे दढवन्वभत्थमो अभमो' (धर्मवि १४६) ।

भत्था श्री [भत्था] चमड़े की घोंकनी, भाथी (उप ३२० टी, धर्मवि १३०) ।

भत्थिअ वि [भत्थिअ] तिरस्कृत (सम्मत १८६) ।

भत्थी श्री [भत्थी] भाथी, चमड़े की घोंकनी, 'भत्थि व्व अनिलपुष्पा वियसियमुदर' (कुप्र २६६) ।

भद् सक [भद्] १ सुख करना । २ कल्याण करना (विसे ३४३६) । वक्र. भदत, नीचे देखो ।

भदत वि [भदन्त] १ कल्याण-कारक । २ सुख-कारक । ३ पूज्य, पूजनीय (विसे ३४३६, ३४७४) ।

भद् न [दे] आमलक, आवला-फल-विशेष (दे ६, १००) ।

भद् न [भद्] १ मगल, कल्याण, 'भद् भद्अ' मिच्छादसणसमूहमद्अस्स अमय-सारस्स जिणवयणस्स भगवमो' (सम्मत

(पुत्र ५, २६३) । ६ सगर चक्रवर्ती का एक पुत्र (पुत्र ५, १७५) । ७ दमयंती का पिता (कुप्र ४८) । ८ एक कुल-पुत्र (कुप्र १२२) । ९ गुजरात का चालुक्य-वंशीय एक राजा—भीमदेव (कुप्र ४) । १० हस्तिनापुर नगर का एक कूटग्रह—राज-पुरुष (विपा १, २) । ११ एव पुं [°देव] गुजरात का एक चालुक्य राजा (कुप्र ५) । १२ कुमार पुं [°कुमार] एक राज-पुत्र (धम्म) । १३ पप्रभ पुं [°प्रभ] राक्षस-वंश का एक राजा, एक लका-पति (पुत्र ५, २५९) । १४ रथ पुं [°रथ] एक राजा, दमयंती का पिता (कुप्र ४८) । १५ सेण पुं [°सेन] १ एक पाण्डव, भीम (गाथा १, १६) । २ एक कुलकर पुरुष (सम १५०) । ३ वलि पुं [°वलि] अग-विद्या का जानकार पहला रुद्र पुरुष (विचार ४७३) । ४ सुर न [°सुर] शास्त्र-विशेष (अणु) ।

भीमासुरक न [भीमासुरोक्त °रीय] एक जैनतर प्राचीन शास्त्र (अणु ३६) ।

भीरु } वि [भीरु, °क] डरपोक (चैद्य
भीरुअ } ६६, गड्ड, उत्त २७, १०, अमि
८२) ।

भीस सक [भीषय्] डराना । भीसइ (घात्वा १४७), भीसेइ (प्राक् ६४) ।

भीसण वि [भीषण] भयंकर, भय-जनक (जी ४९, सण, पात्र) ।

भीसय देखो भेसग (राज) ।

भीसाव देखो भीस । भीसावेइ (घात्वा १४७) ।

भीसिद (शौ) वि [भीषित] भय-भीत किया हुआ, डराया हुआ (नाट—माल ५९) ।

भीह अक [भी] डरना । भीहइ (प्राक् ६४) ।

भुअ देखो भुज । भुअइ, भुअए (पड) ।

भुअ न [दे] भूज-पत्र, वृक्ष-विशेष की छाल (दे ६, १०६) । १ रुक्ख पुं [°वृक्ष] वृक्ष-विशेष, भूर्जपत्र का पेड़ (पण १—पत्र ३४) । २ वत्त न [°पत्र] भोजपत्र (गड्ड ६४१) ।

भुअ पुंछी [भुज] १ हाथ, कर (कुमा) । २ गणित-प्रसिद्ध रेखा-विशेष (हे १, ४) ।

झी. °आ (हे १, ४, पिंग, गड्ड, से १,

३) । १ परिमप्प पुंछी [°परिसर्प] हाथ से चलनेवाला प्राणी, हाथ से चलनेवाली मर्प-जाति (जी २१, पण १, जीव २) । २ झी. °पिणी (जीव २) । ३ मूल न [°मूल] कक्षा, काँख (पात्र) । ४ मोचग पुं [°मोचक] रत्न की एक जाति (भग औप, उत्त ३६, ७६, तंहु २०) । ५ सप्प पुं [°सपे] देखो °परिसप्प (पव १५०) । ६ ल वि [°वत्] बलवान् हाथवाला (सिरि ७९९) ।

भुअअ देखो भुअग (गड्ड, पिंग, से ७, ३९, पात्र) ।

भुअइद पुं [भुजगेन्द्र] १ श्रेष्ठ सर्प (गड्ड) । २ शेषनाग, वासुकि (अचु २७) । ३ वुरेस पुं [°पुरेश] श्रीकृष्ण (अचु २७) ।

भुअईसर } पुं [भुजगेश्वर] ऊपर देखो
भुअएसर } (पण १, ४—पत्र ७८, अचु ३९) । १ णअरणाह पुं [°नगरनाथ] श्री-कृष्ण (अचु ३९) ।

भुअग पुं [भुजग] १ सर्प, साँप (से ५, ६०, गा ६४०, गड्ड, सुर २, २४५, उव, महा, पात्र) । २ विट, रंडीवाज, वेश्या-नामी (कुमा, वज्जा ११६) । ३ जार, उपपति (कप्प) । ४ द्यूतकार, जुआड़ी (उप पु २५२) । ५ चोर, तस्कर, दिव सलोत्तमो चैव मायापत्रोयकुसलो वाणिज्यवेसवारी गहिमो महाभुअगो (स ४३०) । ६ वदमाश, ठग, 'तावसेवसवारीणो गहियनलियापत्रोअग-खग्गा विसेणकुमारसतिया चत्तारि महाभूयग ति' (स ५२४) । ७ किंत्ति छी [°कृत्ति] कंचुक (गा ६४०) । ८ पआत (अप) देखो °पपजाय (पिंग) । ९ पपजाय न [°प्रयात] १ सर्प-गति । २ छन्द-विशेष (भवि) । ३ राअ पुं [°राज] शेषनाग (त्रि ८२) । ४ वइ पुं [°पति] शेषनाग (गड्ड) । ५ पआअ (अप) देखो °पपजाय (पिंग) ।

भुअंगम पुं [भुजगम] १ सर्प, साँप (गड्ड १७८, पिंग) । २ स्वनाम-ख्यात एक चोर (महा) ।

भुअंगिणी } छी [भुजङ्गी] १ विद्या-विशेष
भुअङ्गी } (पुत्र ७, १४०) । २ नागिन (सुपा १८१, अत्त ११७) ।

भुअग पुं [भुजग] १ सर्प, साँप (सुर २,

२३६, महा, जी ३१) । २ एक देव-जाति, नाग-कुमार देव (पण १, ४) । ३ वानव्यतर देवों की एक जाति, महोरग (इक) । ४ रंडीवाज, 'म कुट्टणिव्व भुयं तुमं पयारेसि अलियवयणेहि' (कुप्र ३०९) । ५ वि. भोगी, विलासी (गाथा १, १ टी—पत्र ४, औप) । ६ परिंरिगिअ न [परिंरिङ्गत] छन्द-विशेष (अजि १६) । ७ वइं झी [°वती] एक इन्द्राणी, अतिकाय नामक महोरगेन्द्र की एक अग्र-महिषी (इक, ठा ४, १, गाथा २) । ८ वर पुं [°वर] द्वीप-विशेष (राज) ।

भुअग वि [भोजक] पूजक, सेवा-कारक (गाथा १, १ टी—पत्र ४, औप, अत्त) ।

भुअगा झी [भुजगा] एक इन्द्राणी, अतिकाय नामक इन्द्र की एक अग्र-महिषी (ठा ४, १, गाथा २, इक) ।

भुअगीसर देखो भुअईसर (तदु २०) ।

भुअण देखो भुवण (चड, हास्य, १२२, पिंग, गड्ड) ।

भुअप्पइ }
भुअप्फइ } देखो बहस्सइ (पि २१२, पड) ।
भुअस्सइ }

भुआ देखो भुअ = भुज ।

भुइ झी [भृति] १ भरण । २ पोषण । ३ वेतन । ४ मूल्य (हे १, १३१, पड) ।

भुउडि देखो भिउडि (पि १२४) ।

भु गल न [दे] वाद्य-विशेष (सिरि ४१२) ।

भुंज सक [भुज्] १ भोजन करना । २ पालन करना । ३ भोग करना । ४ अनुभव करना । भुजइ (हे ४, ११०, कस; उवा) । भुजेजा (कप्प), 'निअभुअ भुजमु सुहेण' (सिरि १०४४) । भूका भुजित्था (पि ५१७) । भवि भुजिही, भोक्खसि, भोक्खामि, भोक्खसे, भोक्ख (पि ५३२, कप्प, हे ३, १७१) । कर्म भुज्जइ, भुंजिज्जइ (हे ४, २४९) । वक्क. भुजत, भुजमाण, भुजेमाण, भुंजाण (आचा, कुमा, विपा १, २, सम ३९, कप्प, पि ५०७, धर्मवि १२७) । कवक्क. भुज्जंत (सुपा ३७५) । सक्क भुंजिअ, भुजिआ, भुजिऊण, भुजिऊण, भुजित्ता, भुजित्तु, भोक्खा, भोक्खु, भोक्खूण (पि ५९१, सुअ १, ३, ४, २, सण, पि ५८५,

भमाइअ वि [भ्रमित] घुमाया हुआ, फिराया हुआ (से ३, ६१)।

भमाड सक [भ्रमय] घुमाना, फिराना। भमाडेह (हे ४, ३०), भमाडेसु (सुपा ११४)। वक्र. भमाडेत (पउम १०६, ११)।

भमाड देखो भम = भ्रम। भमाडइ (हे ४, १६१, भवि)।

भमाड पुं [भ्रम] भ्रमण, घूमना, चक्कर (श्रोषमा २६ टी, ८३ टी)।

भमाडण न [भ्रमण] घुमाना (उप ४ २७८)।

भमाडअ देखो भमडिअ (कुमा)।

भमाडिअ वि [भ्रमित] घुमाया हुआ, फिराया हुआ (पउम १६, २५)।

भमाव देखो भमाड = भ्रमय। भमावइ, भमावेइ (पि ५५३, हे ४, ३०)।

भमास [दे] देखो भमस (दे ६, १०१, पाप्र)।

भमि स्त्री [भ्रमि] १ आवर्त, पानी का चक्राकार भ्रमण (अचु ६३)। २ चित्त-भ्रम करने की शक्ति (विसे १६५३)। ३ रोग-विशेष, चक्र, 'भमिपरिभ्रमियसरीरो' (हम्मीर २८)।

भमिअ देखो भमडिअ (जी ४८, भवि)। ३ न. भ्रमण, 'भमिभ्रमणिकंतदेहलीदेस' (गा ५२५)।

भमिअ देखो भमाइअ (पाप्र)।

भमिअव्य } देखो भम = भ्रम।
भमिआ }

भमिर वि [भ्रमित] भ्रमण करनेवाला (हे २, १४५, सुर १, ५५, ३, १८)।

भमुहन [भ्रू] नोचे देखो, 'दीहाई भमुहाई' (आचा २, १३, १७)।

भमुहा स्त्री [भ्रू] भौं, आँख के ऊपर की रोम-राजी (पउम ३७, ५०, श्रौप, आचा, पाप्र)।

भम्म } देखो भम = भ्रम। भम्मइ (प्राकृ भम्मड ६६), भम्मसु (गा ४१५, ४४७)।

भम्मइ (हे ४, १६१)। भम्मइइ (कुमा)।

भम्मर (अप) देखो भमर (पिंग)।

भय देखो भद। वक्र. देखो भयंत = भदंत।

भय अक [भज्] १ सेवा करना। २ विकल्प से करना। ३ विभाग करना। ४ ग्रहण करना। भयइ, भयइ (सम्म १२४, कुमा), भए, भएजा (बृह १), भयति (विसे १६६०), 'तम्हा भय जीव वेरग' (श्रु ६१)। वक्र. भयत, भयमाण (विसे ३४४६, सूत्र १, २, २, १७)। कवक्र. 'संवत्तुभदमाणसुहेहि' (कप)। सकृ. भइत्ता (ठा ६)। कृ. भइअ, भइअव्य, भएयव्य, भज्ज, भयणिज्ज (विसे ६१८, २०४६, उत्त ३६, २३, २४, २५, कम्म ५, ११, विसे ६१५, उप ६०४, विसे ३२०२, ७४८, ६८१, जीवम १४५, पंच ५, ८, विसे ६१६, जीवस १४७)।

भय न [भय] डर, त्रास, भीति (आचा, एया १, १, गा १०२, कुमा, प्रासू १६, १७३)। °अर वि [°कर] भय-जनक (से ५, ४४, ११, ७५)। °जणणी स्त्री [°जननी] १ त्रास उत्पन्न करनेवाली (बृह १)। २ विद्या-विशेष (पउम ७, १४१)। °वाह पुं [°वाह] राक्षस-वश का एक राजा, एक लंका-पति (पउम ५, २६३)।

भय देखो भव (उव, कुमा, सण, सुपा ४२०, गउठ)।

भय देखो भग (श्रौप, पिंग)।

भयंकर वि [भयंकर] १ भय-जनक, भोषण (हे ४, ३३१, सण, भवि)। २ प्राणि-वध, हिंसा (पएह १, १)।

भयत देखो भय = भज्।

भयत देखो भत = भगवत् (सूत्र १, १६, ६)।

भयंत देखो भदंत (श्रोष ४८, उत्त २०, ११, श्रौप)।

भयंत देखो भत = भयान्त (विसे ३४४६, ३४५३, ३३५४)।

भयंत देखो भत = भवान्त (विसे ३४५४, श्रौप)।

भयत वि [भयत्र] भय से रक्षा करनेवाला (श्रौप, सूत्र १, १६, ६)।

भयंतु वि [भयत्रात्] भय से रक्षा करनेवाला

'धम्ममाइक्खणे भयंतारो' (सूत्र १, ४, १, २५)।

भयतु वि [भयत्] सेवक, सेवा करनेवाला (श्रौप)।

भयक } पु [भृतक] १ नौकर, कर्मकर
भयग } (ठा ४, १, २)। २ वि. पोषित (पएह १, २, एया १, २)।

भयण न [भजन] १ सेवा (राज)। २ विभाग (सम्म ११३)। ३ पु. लोभ (सूत्र १, ६, ११)।

भयण देखो भवण (नाट—चैत ४०)।

भयणा स्त्री [भजना] १ सेवा (निचू १)। २ विकल्प (भग, सम्म १२४, द ३१, उव)। भयण्णइ } देखो वहरसइ (हे २, १३७, भयण्णइ } पड्)।

भयवग्गाम पु [दे] मोढेरक, गुजरात का एक गांव (दे ६, १०२)।

भयाणय वि [भयानक] भयकर, भय-जनक (स १२१)।

भयालि पु [भयालि] भारतवर्ष के भावी अठारहवें जिनदेव का पूर्व-भवीय नाम (सम १५४)। देखो सयालि।

भयालु वि [भीरु] भीरु, डरपोक (दे ६, १०७, नाट)।

भयावण (अप) देखो भयाणय (भवि)।

भयावह वि [भयावह] भय-जनक, भय-कारक (सूत्र १, १३, २१)।

भर सक [भृ] १ भरना। २ धारण करना। ३ पोषण करना। भरइ (भवि, पिंग), भरसु (कम्म ४, ७६)। वक्र. भरंत (भवि)। कवक्र. भरत, भरंत, भरिज्जत (से १, ५८, ४, ८, १, ३७)। सकृ. भरेऊणं (आक ६)। कृ. भरणिज्ज, भरणीअ, भत्तव्व, भरेअव्व (प्राप्र, नाट राज, से ६, ३)।

भर सक [स्मृ] स्मरण करना, याद करना। भरइ (हे ४, ७४, प्राप्र)। वक्र. भरत (गा ३८१, भवि)। संकृ. भरिअ, भरिऊणं (कुमा)। प्रयो, वक्र. भरावंत (कुमा)।

भर पुन [भर] १ समूह, प्रकार, निकर, जइअव्व तह एगागिणावि भीमारिदुडभरं'

भुल वि [भ्रष्ट] भूला हुआ, 'कामधयो किं पममेसि भुल्लो' (श्रु १५३, सुपा १२४, ५१६, कप्पू) ।

भुलविअ वि [भ्रशिन] भ्रष्ट किया हुआ (कुमा) ।

भुल्लि वि [भ्र'शिन] भूलनेवाला, 'मयण-भ्रभुल्लिरदुल्लियमस्सिमुमहल्लितिक्खमल्लीहि' (सुपा १२३) ।

भुल्लुकी [दे] देखो भल्लुकी (पात्र) ।

भुव देखो हुव = भू । भुवइ (पि ४७५) । भुवि (शौ) (घात्वा १४७) । भूका, भुवि (भग) ।

भुव देखो भूअ = भुज (भवि) ।

भुवइद् देखो भुअइद् (से ५, ७१) ।

भुवण न [भुवन] १ जगत्, लोक (जी १, सुपा २१, कुमा २, १५) । २ जीव, प्राणी, 'भुवणाभयदाणल्लिअम्म' (कुमा) । ३ आकाश (प्रासू १००) । 'अखोहणी ओ [क्षोभनी] विद्या-विशेष (सुपा १७४) । 'गुरु पु [गुरु] जगत् का गुरु (सुपा ७५) । 'नाह पु [नाथ] जगत् का आता (उप पृ ३५७) । 'पाल पुं [पाल] विक्रम की बारहवीं शताब्दी का गोपगिरि का एक राजा (मुणि १०८६६) । 'वधु पुं [वन्धु] १ जगत् का बन्धु । २ जिनदेव (उप २११ टी) । 'सोह पुं [ओभ] सातवें वनदेव के दीक्षक एक जैन मुनि (पउम २०, २०५) । 'लिकार पु [लिकार] रावण का एक पट्ट-हस्ती (पउम ८२, १११) ।

भुवणा ओ [भुवना] विद्या विशेष (पउम ७, १४०) ।

भुदका (भा) देखो भुक्खा (प्राक् १०१) ।

भुस देखो बुस, 'तुसरासी इवा भुसरासी इवा' (भग १५) ।

भुसुठि ओ [दे. भुशुण्डि] शस्त्र-विशेष (सण) ।

भू देखो भुव = भू । भूमि (पि ४७६) । सक भोत्ता, भोदूण (शौ) (हे ४, २७१) ।

भू ओ [भू] भौ, आँख के ऊपर की रोम-राजि, 'रक्षा भूसन्नाए' (सुपा ५७६, आ १४, सुपा २२६, कुमा) ।

भू ओ [भू] १ पृथिवी, धरती (कुमा, कुप्र ११६, जीवस २७६, सिरि १०४४) । २ पृथ्वीकाय, पार्थिव शरीरवाला जीव (कम्म ४, १०, १६, ३६) । 'आर पुं [दार] शूकर, सूयर (किरात ९) । 'कंन पु [कान्त] राजा, नर-पति (आ २८) । 'गोल पुं [गोल] गोलाकार भूमण्डल (कप्पू) । 'चद पु [चन्द्र] पृथिवी का चन्द्र, भूमि-चन्द्र (कप्पू) । 'चर वि [चर] भूमि पर चलने फिरनेवाला मनुष्य आदि (उप ६८६ टी) । 'च्छत्त पुन [च्छत्र] वनस्पति-विशेष (दे १, ६४) । 'तणग देखो 'यणय (राज) । 'धण पुं [धन] राजा (आ २८) । 'धर पुं [धर] १ राजा, नरपति (धर्मवि ३) । २ पर्वत, पहाड़ (धर्मवि ३, कुप्र २६४) । 'नाह पुं [नाथ] राजा (उप ६८६ टी, धर्मवि १०७) । 'मह पुं [मह] अहोरात्र का सत्ताईसवाँ गृहत्तं (सम ५१) । 'यणय पुन [तृणक] वनस्पति-विशेष (पण १—पत्र ३४) । 'रूह पु [रूह] वृक्ष, पेड़ (गउड, पुष्प ३६२, धर्मवि १३८) । 'व पु [प] राजा (उप ७२८ टी, ती ३, श्रु ६६, काल) । 'वइ पुं [पति] राजा (सुपा ३६, पिंग) । 'वाल पु [पाल] १ राजा (गउड, सुपा ५६०) । २ व्यक्ति-वाचक नाम (भवि) । 'वित्त पु [वित्त] राजा (आ २८) । 'वीढ न [पीठ] भूतल, भूमि-तल (सुपा ५६३) । 'हर देखो 'धर (सण) ।

भू } पु [भूयस्] कर्मवन्ध का एक प्रकार (कम्म ५, २२, २३) । 'गार पुं [कार] वही अर्थ (कम्म ५, २२) । देखो भूओगार ।

भूअ पुं [दे] यन्त्रवाह, यन्त्र-वाहक पुरुष (दे ६, १०७) ।

भूअ वि [भूत] १ वृत्त, सजात, वना हुआ । २ अतीत, गुजरा हुआ (पड, पिंग) । ३ प्राप्त, लब्ध (गाया १, १—पत्र ७४) । ४ समान, सदृश, तुल्य, 'तसभूएहि' (सूत्र २, ७, ७, ८ टी) । ५ वास्तविक, यथार्थ, सत्य, 'भूयत्थेहि चिम गुणेहि' (गउड), 'भूयत्थसत्थ-गथी' (सम्मत्त १३६) । ६ विद्यमान, 'एव

जह म हत्थो सतो भूयो तदन्नहामूयो' (विसे २२५१) । ७ उपमा, भौषम्य । ८ तादर्थ्य, तदर्थ-भाव, 'भोवम्मे तादत्थे व हुव एसित्थ भूयसद्दो ति' (आवक १२४) । ९ न, प्रकृत्यर्थ, 'उम्मत्तगमूए' (ठा ५, १) । १० पुं. एक देव-जाति (पण १, ४, इक, गाया १, १—पत्र ३६) । ११ पिशाच (पात्र; दे ४, २५) । १२ ममुद-विशेष (देवेन्द्र २५५) । १३ द्वीप-विशेष (सुज १६) । १४ पुन जन्तु, प्राणी, 'पाणाइ भूयाई जीवाई सत्ताई', 'भूयाणि वा जीवाणि वा' (आचा १, ६, ५, ४, १, ७, २, १, २, १, १, ११, पि ३६७), 'हरियाणि भूआणि विलंबगाणि' (सूत्र १, ७, ८, उवर १५६) । १५ पृथिवी आदि पाँच द्रव्य, महाभूत (स १६५), 'किं मन्ने पच भूया' (विसे १६८६) । १६ वृक्ष, पेड़, वनस्पति (आचा १, १, ६, २) । 'इंद पुं [इन्द्र] भूत-देवो का इन्द्र (पि १६०) । 'ग्गाह पु [ग्रह] भूत का आवेश (जीव ३) । 'ग्गाम पु [ग्राम] जीव-समूह (सम २६) । 'त्थ वि [र्थ] यथार्थ, वास्तविक (गउड, पउम २८, १४) । 'दिण्णा देखो 'दिन्ना (पडि) । 'दिन्न पुं [दिन्न] १ एक जैन आचार्य (एदि) । २ एक चाण्डाल-नायक (महा) । 'दिन्ना ओ [दिन्ना] १ एक अन्त-कृन् ओ (अत) । २ एक जैन साध्वी, महर्षि स्थूलभद्र की भगिनी (कप्पू) । 'मडलपवि-भत्ति न [मण्डलप्रविभक्ति] नाट्य-विधि का एक भेद (राज) । 'लिवि ओ [लिपि] लिपि-विशेष (सम ३५) । 'वडिसा ओ [वतसा] १ एक इन्द्राणी (जीव ३) । २ एक राजधानी (दीव) । 'वाइ, 'वाइय, 'वादिय पु [वादिन्, 'वादिक] १ एक देव-जाति (इक, पण १, ४, औप) । २ वि भूत ग्रह का उपचार करनेवाला, मन्त्र-तन्त्रादि का जानकार (सुख १, १४) । 'वाय पु [वाद] १ यथार्थवाद । २ दृष्टिवाद, वारहवाँ जैन अग-ग्रन्थ (ठा १०—पत्र ४६१) । 'विज्जा, 'वेज्जा ओ [विद्या] आयुर्वेद का एक भेद, भूत निग्रह-विद्या (विपा १, ७—पत्र ७५ टी) । 'णंद पुं [नन्द] १ नागकुमार देवो का दक्षिण दिशा का इन्द्र

वि [°जित] रागादि को जीतनेवाला; 'सासणं जिणणं भवजिणणं' (सम्म १)। °ट्टिहं स्त्री [°स्थिति] १ देव आदि योनि मे उत्पत्ति की काल-मर्यादा (ठा २, ३)। २ संसार मे अवस्थान (पंचा १)। °स्थ वि [°स्थ] संसार मे स्थित (ठा २, १)। °स्थकेवलं वि [°स्थकेवलं] जीवन्मुक्त (सम्म ८६)। °धारणिज्ज न [°धारणीय] जीवन-पर्यन्त संसार में धारण करने योग्य शरीर (भग, इक)। °पच्चइय वि [°प्रत्ययिक] १ नरकादि योनि-हेतुक। २ न. अवधिज्ञान का एक भेद (ठा २, १, मम १४५)। °भूइ पुं [°भूति] संस्कृत का एक प्रसिद्ध कवि (गड्ड)। °सिद्धिय. °सिद्धीय वि [°सिद्धिक] उसी जन्म मे या बाद के किसी जन्म में मुक्त होनेवाला, मुक्ति-गामी (सम २, पण १८, भग, विसे १२३०, जीवस ७५, आवक ७३, ठा १, विसे १२२६)। °भिणदि, °भिनिदि, °हिनिदि वि [°भिनिदि] संसार को पसंद करनेवाला, संसार को अच्छा माननेवाला (राज, सबोध ८, ५३)। °किग्गाहि न [°प्राहिन्] कर्म-विशेष (धर्मस १२६१)।

भय देखो भव (कम्म ४, ६)।

भय { पुं [भवत्] तुम, आप (कुमा, भवत्) हे २, १७४)।

भवत देखो भव = भू।

भवे (अप) भम = भ्रम। भवेइ (सण)। वहु भवेत (भवि)। संक. भवेत्तु (सण)।

भवेण (अप) देखो भमण (भवि)।

भमण न [भवन] १ उत्पत्ति, जन्म (धर्मस १७२)। २ गृह, मकान, वसति (पाय, कुमा)। ३ असुरकुमार आदि देवों का विमान (पण २)। ४ सत्ता (विसे ६६)। °वइ पुं [°पति] एक देव-जाति (भग)। °वासि पु [°वासिन्] वही पूर्वोक्त अर्थ (ठा १०, औप)। °वासिणी स्त्री [°वासिनी] देवी विशेष (पण १७, महा ६८, १२)। °हिच पु [°धिप] एक देव-जाति (सुपा ६२०)।

भयमाण देखो भव = भू।

भवर देखो भमर (चंड)।

भवानी स्त्री [भवानी] शिव-पत्नी, पार्वती (पाय, समु १५७)। °कत पुं [°कान्त] महादेव (पिग)।

भवारिस वि [भवादृग] तुम्हारे जैसा, आपके तुल्य (हे १, १४२, चड, सुपा २७३)।

भवि पुं [भविन्] भव्य जीव, मुक्ति-गामी प्राणी (भवि)।

भविअ देखो भव = भू।

भविअ वि [भव्य] १ सुन्दर (कुमा)। २ श्रेष्ठ, उत्तम (सबोध १)। ३ मुक्ति-योग्य, मुक्ति-गामी (पण १, उव)। ४ भावी, होनेवाला (हे २, १०७, पड्)। देखो भव = भव्य।

भविअ वि [भविक] १ मुक्ति-योग्य, मुक्ति-गामी। २ संसारी, संसार में रहनेवाला (सुर ४, ८०)।

°भविअ वि [°भविक] भव-संबन्धी (सण)।

भवित्ती स्त्री [भवित्ती] होनेवाली (पिग)।

भवियव्व देखो भव = भू।

भवियव्वया स्त्री [भवितव्यता] नियति, अवश्यभावी, होनी (महा)।

भविल वि [भविल] निष्ठुर (दश० अगस्त्य ७० पत्र० १६८, सूत्र० ३२६)।

भविस (अप) देखो भवीस। °त्त, °यत्त पुं [°दत्त] एक कथा-नायक (भवि)।

भविस्स पुं [भविष्य] १ भविष्य काल, आगामी समय (पठम ३५, ५६, पि ५६०)। २ वि. भविष्य काल मे होनेवाला, भावी (णाय १, १६—पत्र २१४, पठम ३५, ५६, सुर १, १३५, कप्पू)।

भवीस (अप) ऊपर देखो (भवि)।

भव्य वि [भव्य] १ सुन्दर, 'सर्वं भवं करिस्सामि' (सुपा ३३६)। २ उचित, योग्य (विसे २८, ४४)। ३ श्रेष्ठ, उत्तम (वज्जा १८)। ४ होता, वर्तमान, 'एयं भूयं वा भवं वा भविस्सं वा' (णाय १, १६—पत्र २१४, कप्पू, विसे १३४२)। ५ भावी, होनेवाला (विसे ५८, पंच २, ८)। ६ मुक्ति-योग्य, मुक्ति-गामी (विसे १८२२, ३, ४, ५, दं १)। °सिद्धीय देखो भव-सिद्धीय,

'पज्जत्तापज्जत्ता सुद्धमा किचहिया भव-सिद्धीया' (पच २, ७८)।

भव्य पुं [दे] भागिनेय, भानजा (दे ६, १००)।

भस सक [भप्] भूकना, श्वान का बोलना। भसइ (हे ४, १८६, पड्—पत्र २२२), भसति (सिरि ६२२)।

भसग पुं [भसक] एक राज-कुमार, श्रीकृष्ण के बड़े भाई जरत्कुमार का एक पौत्र (उव)। भसण देखो भिसण। भसणेमि (पि ५५६)। भसण न [भषण] १ कुत्ते का शब्द (आ २७)। २ पुं श्वान, कुत्ता (पाय, सिरि ६२२)।

भसणअ (अप) वि [भपित्] भूकनेवाला, 'सुणउ भसणअ' (हे ४, ४४३)।

भसम पु [भस्मन्] १ ग्रह-विशेष, 'भस-मग्गहपीडियं इमं तित्थं' (सट्ठि ४२ टी)। २ राख, भभूत, 'भसमुद्धलियगतो' (महा, सम्मत ७६)। देखो भास = भस्मन्।

भसल देखो भमर (हे, १, २४४, २५४, कुमा, सुपा ४, (पिग)।

भसुआ स्त्री [दे] शिवा, शृगाली, सियारिन (दे ६, १०१, पाय)।

भसुम देखो भसम (प्राक ३७)।

भसेह पुन [दे] धान्य आदि का तीक्ष्ण अप्र भाग, 'सालिभसेल्लसरिसा से केसा' (उवा)।

भसोल न [दे भसोल] एक नाट्य-विधि (राज)।

भस्थ (मा) देखो भट्ट (पड्)।

भस्थालय (मा) देखो भट्टारय (पड्)।

भस्स देखो भंस = भ्रश्। भस्सइ (प्राक ७६)। वहु. भस्संत (काल)।

भस्स पुं [भस्मन्] १ ग्रह-विशेष। २ राख (हे २, ५१)।

भस्सिअ वि [भस्मित] जलाकर राख किया हुआ, भस्म किया हुआ (कुमा)।

भा अक [भा] चमकना, दीपना, प्रकाशना, 'भा भाजो वा दितीए' (विसे ३४४७)।

भाइ (कप्पू), भासि (गड्ड)। वहु देखो भंत = मात्।

भा स्त्री [भा] दीप्ति, प्रभा, कान्ति, तेज (कुमा)। °मंडल पुं [°मण्डल] राजा जनक

भेअग वि [भेदक] भेद-कारक (श्रौप, भग) ।
 भेअण न [भेदन] १ विदारण, विच्छेदन,
 'कु तस्स सत्तपायालभेयणे नूण सामत्थ'
 (वेइय ७४६, प्रासू १४०) । २ भेद, फूट
 करना (पव १०६) । ३ विनाश, 'कुलसयण-
 मित्तभेयणकारिकाओ' (तंदु ४६) ।
 भेअय देखो भेअग (भग) ।
 भेअव्व देखो भिंद ।
 भेअव्व देखो भी = भी ।
 भेइल वि [भेदवत्] भेद वाला, 'सम्मत्त-
 नाणवःणा पत्तेयं अट्ठअट्ठभेइल्ला' (सवोष
 २२, पच ४, १) ।
 भेउर देखो भिउर (आचा, ठा २, ३) ।
 भेंडी ली [भिण्डा, °ण्डी] गुल्म-विशेष, एक
 जाति की वनस्पति (पण्ह १—पत्र ३२) ।
 भेंभल देखो भिभल (से ६, ३७) ।
 भेंभलिद (शौ) देखो भिंभलिअ (पि २०६) ।
 भेक देखो भेग (दे १, १४७) ।
 भेक्खस पु [दे] राक्षस रिपु, राक्षस का
 प्रतिपक्षी (कुप्र ११२) ।
 भेग पुं [भेक] भेंढक (दे ४, ६, धर्मस ५५७) ।
 भेच्छं देखो भिंद ।
 भेज्ज देखो भिज्ज (विपा १, १ टी—पत्र
 १२) ।
 भेज्ज | वि [दे] भीरु, डरपोक (दे ६,
 भेज्जलय | १०७, षड्) ।
 भेज्जल
 भेड वि [दे भेर] भीरु, कातर (दे १,
 २५१, दे ६, १०७, कुमा २, ६२) ।
 भेडन देखो भेलय (मृच्छ १८०) ।
 भेत्तु वि [भेत्तु] भेदन-कर्ता (आचा) ।
 भेत्तुआण |
 भेत्तु | देखो भिंद ।
 भेत्तूग |
 भेद देखो भिंद । सक्र भेदिअ (मृच्छ १४३) ।
 भेद देखो भेअ (भग) ।
 भेदअ देखो भेअय (वेणी ११२) ।
 भेदणया देखो भेअण (उप पृ ३२१) ।
 भेदिअ देखो भेद = भिंद ।
 भेदिअ वि [भेदित] भिन्न किया हुआ
 (भग) ।
 भेरंड पुं [भेरण्ड] देश-विशेष (राज) ।

भेरव न [भैरव] १ भय, डर (कप्प) । २
 पुं. राक्षस आदि भयंकर प्राणी (सूत्र १, २,
 २, १४, १६) । ३ देखो भइरव (पठम
 ६, १८३, वेइय १००, श्रौप, महा, पि ६१) ।
 ०णद पु [०णन्द] एक योगी का नाम
 (कप्प) ।
 भेरि } ली [भेरि, °री] वाय-विशेष, ढका
 भेरी } (कप्प, पिग, श्रौप, सण) ।
 भेरुड पु [भेरुण्ड] मारुड पक्षी, दो मुँह
 और एक शरीरवाला पक्षि-विशेष (दे ६,
 ५०) ।
 भेरुड पु [दे] १ चित्रक, चीता, श्वापद
 पशु-विशेष (दे ६, १०८) । २ निविष सर्प,
 'सविसो हम्मइ सण्पो भेरुडो तत्थ मुच्चइ'
 (प्रासू १६) ।
 भेरुताल पु [भेरुताल] वृक्ष-विशेष (राज) ।
 भेल सक [भेलय्] मिश्रण करना, मिलाना ।
 गुजराती में 'भेलववु' । सक्र भेलइत्ता (पि
 २०६) ।
 भेलय पुं [दे भेलक] वेढा, उडुप, नौका
 (दे ६, ११०) ।
 भेलविय वि [भेलित] मिश्रित, युक्त, 'सो
 भयभेलवियदिट्ठी जल ति मन्नमाणो' (वसु) ।
 भेली ली [दे] १ आज्ञा, हुकुम । २ वेढा,
 नौका । ३ चेटी, दासी (दे ६, ११०) ।
 भेस सक [भेषय्] डराना । भेसइ, भेसेइ
 (धात्वा १४८, प्राकृ ६४) । कर्म. भेसिज्जए
 (धर्मवि ३) । वक्र भेसत, भेसयत (पठम
 ५३, ८६, आ १२) । कवक्र. भेसिज्जत
 (पठम ४६, ५४) । सक्र भेसेऊण (काल,
 पि ५८६) । हेक्क भेसेउ (कुप्र १११) ।
 भेसग पुं [भीष्मक] रुक्मिणी का पिता,
 कौरिडन्य-नगर का एक राजा (णाय १,
 १६, उप ६४८ टी) ।
 भेसज न [भैषज] श्रौषध (पठम १४, ५४,
 ५६) ।
 भेसज्ज न [भैषज्य] श्रौषध, दवाई (उवा,
 श्रौप, रंभा) ।
 भेसण देखो भीसण (भग ७, ६—पत्र
 ३०७) ।
 भेसण न [भीषण] डराना, वित्रासन (श्रोष
 २०१) ।

भेसणा ली [भीषणा] ऊपर देखो (पण्ह २,
 १—पत्र १००) ।
 भेसयत देखो भेस ।
 भेसाव देखो भेस । भेसावइ (धात्वा १४८) ।
 भेसाविय } वि [भीषित] डराया हुआ
 भेसिअ } (पठम ४६, ५३, से ७, ४५,
 सुर २, ११०, श्रावक ६३ टी) ।
 भो देखो भुंज । सक्र भोऊण, भोत्तूण
 (धात्वा १४८, संक्षि ३७) । हेक्क भोउ
 (धात्वा १४८, संक्षि ३७) । क. भोत्तव्व
 (संक्षि ३७), भोअव्व (धात्वा १४८) ।
 भोअ [भोस्] ग्रामन्य-द्योतक अव्यय
 (प्राकृ ७६, उवा, श्रौप, जी ५०) ।
 भो° स [भवत्] तुम, आप । ली. भोई (उत्त
 १४, ३३, स ११६) ।
 भोअ सक [भोजय्] खिलाना, भोजन
 कराना । भोयइ, भोयए (सम्मत्त १२५, सूत्र
 २, ६, २६) । सक्र भोइत्ता (उत्त ६, ३८) ।
 भोअ पु [दे भोग] भाड़ा, किराया (दे ६,
 १०८) ।
 भोअ देखो भोग (स ६५८, पात्र, सुपा
 ४०४, रमा ३२) ।
 भोअ पु [भोज] उज्जयिनी नगरी का एक
 सुप्रसिद्ध राजा (रंभा) । ०राय पु [राज]
 वही ग्रंथ (सम्मत्त ७५) ।
 भोअ वि [भौत] भ्रम से उपलित (धर्मस
 ४१) ।
 भोअग वि [भोजक] १ खानेवाला (पिंड
 ११७) । २ पालन-कर्ता (बृह १) ।
 भोअडा ली [दे] कच्छ, लंगोट, 'लोवत्थं
 भोवडादीयं' (निचू १) ।
 भोअण न [भोजन] १ भक्षण, खाना । २
 भात आदि खाद्य वस्तु (आचा, ठा ६, उवा,
 प्रासू १८०, स्वप्न ६२, सण) । ३ लगातार
 सतरह दिनों का उपवास (सवोष ५८) । ४
 उपभोग, 'विख्वल्वाइं कामभोगाईं समारंभति
 भोयणाए' (सूत्र २, १, १७) । ०रुक्ख पु
 [वृक्ष] भोजन देनेवाली एक कल्पवृक्ष-जाति
 (पठम १०२, ११६) ।
 भोअल (अप) पुं [दे. भोल] छन्द-विशेष
 (पिग) ।

६८) । २ कहलाया हुआ, 'मयणसिरिनामाए रत्तो मज्जाए भाणिओ मती' (सुपा ५८७) ।
 भाणु पुं [भाणु] १ सूर्य, रवि (पउम ४६, ३६, पुण्ण १६४, सिरि ३२) । २ किरण (प्रामा) । ३ भगवान् धर्मनाथ का पिता, एक राजा (सम १५१) । ४ स्त्री. एक इन्द्राणी, शक्र की एक अग्र-महिषी (पउम १०२, १५६) । ५ कण्ठ पुं [कण्ठ] रावण का एक अनुज (पउम ७, ६७) । ६ स्त्री [मती] रावण की एक पत्नी (पउम ७४, १०) । ७ मालिणी [मालिनी] विद्या-विशेष (पउम ७, १३६) । ८ मित्र न [मित्र] उज्जयिनी के राजा वलमित्र का छोटा भाई (काल, विचार ४६४) । ९ वेग पुं [वेग] एक विद्याधर का नाम (महा, सण) । १० सिरी स्त्री [श्री] राजा वलमित्र की बहिन (काल) ।
 भाम देखो भमाह = भ्रमय् । भामेइ (हे ४, ३०) । कवक भामिज्जत (गा ४५७) । क. भामेयव्व (ती ७) ।
 भामण न [भ्रामण] घुमाना, फिराना (सम्मत्त १७४) ।
 भामर न [भ्रामर] १ मधु-विशेष, भ्रमरी का बनाया हुआ मधु (पव ४) । २ पुं. दोषक छन्द का एक भेद (पिण) ।
 भामरी स्त्री [भ्रामरी] १ बीणा-विशेष (गाया १, १७—पत्र २२६) । २ प्रदक्षिणा (कप्प, भवि) ।
 भामिअ वि [भ्रमित] १ घुमाया हुआ (से २, ३२) । २ भ्रान्त किया हुआ, भ्रान्त-चित्त किया हुआ, 'घत्तूरभामिओ इव' (मन २७, धर्मवि २३) ।
 भामिणी स्त्री [भ्रामिनी] भाग्यवाली (हे १, १६०, कुमा) ।
 भामिणी स्त्री [भ्रामिनी] १ कोप-शीला स्त्री । २ स्त्री, महिला (आ १२, सुर १, ७६, सुपा ४७५; सम्मत्त १६३) ।
 भाय देखो भाउ (कुमा) ।
 भायंत देखो भा = भी ।
 भायण पुं न [भाजन] १ पात्र । २ आघार । ३ योग्य, 'भायणा, भायणाइ' (हे १, ३३, २६७), 'ति चिय धन्ना ते पुत्रभायणा, ताणु जीविय सहल' (सुपा ५६७, कुमा) ।

भायण न [भाजन] आकाश, गगन (भग २०, २—पत्र ७७६) ।
 भायणग पुं [भाजनाङ्ग] कल्पवृक्ष की एक जाति, पात्र देनेवाला कल्पवृक्ष (पउम १०२, १२०) ।
 भायणिज्ज देखो भाङ्गणिज्ज (धर्मवि १२, काल) ।
 भायमाण देखो भाअ = भायय् ।
 भायर देखो भाउ (कुमा) ।
 भायल पु [दे] जात्य अश्व, उत्तम जाति का घोड़ा (दे ६, १०४, पात्र) ।
 भार पुं [भार] १ बोझ, गुरुत्व (कुमा) । २ भारवाली वस्तु, बोझवाली चीज (आ ४०) । ३ काम संपादन करने का अधिकार, 'भारक्खमेवि पुत्ते जो नियमार ठवित्तु नियपुत्ते, न य साहेइ सकज्ज' (प्रासू २७) । ४ परिमाण-विशेष, 'लाउअवीअ इक्कं नासइ भार गुहस्स जह सहसा' (प्रासू १५१) । ५ परिग्रह, धन-धान्य आदि का संग्रह (पएह १, ५) । ६ गगसो अ [ग्रशस्] भार भार के परिमाण से, 'दसद्ववन्नमल्लं कुम्भगगसो य भारगगसो य' (गाया १, ८—पत्र १२५) । ७ वह वि [वह] बोझा ढोनेवाला (आ ४०) । ८ वह वि [वह] वही अर्थ (पउम ६७, २६) ।
 भारई स्त्री [भारती] भाषा, वाणी, वाक्य, वचन (पात्र) । देखो भारही ।
 भारदाय न [भारद्वाज] १ गोत्र-विशेष, भारद्वाय जो गोतम गोत्र की एक शाखा है (कप्प, सुज्ज १०, १६) । २ पुं भारद्वाज गोत्र में उत्पन्न, 'जे गोयमा ते गग्गा ते भारद्वा (? हाया), ते अगिरसा' (ठा ७—पत्र ३६०) । पक्षि-विशेष (श्रीधमा ८४) । ४ मुनि-विशेष (पि २३६, २६८, ३६३) ।
 भारय देखो भार (सुपा १४, ३८५) ।
 भारह न [भारत] १ भारतवर्ष, भरत-क्षेत्र (उवा), 'जहा निसते तवण्णिमाली पभासई केवलभारहं तु' (दस ६, १, १४) । २ पाण्डव कौरवों का युद्ध, महाभारत (पउम १०५, १६) । ३ ग्रन्थ-विशेष, जिसमें पाण्डव-कौरव युद्ध का वर्णन है, व्यास-मुनि प्रणीत महाभारत (कुमा, जर ३, ८) । ४ भरत

मुनि-प्रणीत नाट्य शास्त्र (अणु) । ५ वि. भारतवर्ष-सम्बन्धी, भारतवर्ष का (ठा २, ३—पत्र ६६), 'तत्थ खलु इमे दुवे सूरिया पन्नत्ता, त जहा—भारहे चैव सूरिए, एवए चैव सूरिए' (सुज्ज १, ३) । ६ स्वेत्त न [क्षेत्र] भारतवर्ष (ठा २, ३ टी—पत्र ७१) ।
 भारहिय वि [भारतीय] भारत-सम्बन्धी, 'जा भारहियकहा इव नीमज्जुणनउलमउणि-सोहिल्ला' (सुपा २६०) ।
 भारही स्त्री [भारती] १ सरस्वती देवी (पि २०७) । २ देखो भारई (म ३१९) ।
 भारिअ वि [भारिक] भारी, भारवाला, गुरु (दे ४, २, गाया १, ६ पत्र—११४) ।
 भारिअ वि [भारित] १ भारवाला, भारी (उप ५ १३४) । २ जिस पर भार लादा गया हो वह, भार-युक्त किया गया (सुख २, २५) ।
 भारिआ देखो भज्जा (हे २, १०७, उवा, गाया २) ।
 भारिह वि [भारवत्] भारी, बोझवाला (धर्मवि १३७) ।
 भारुड पुं [भारुण्ड] दो मुँह और एक शरीर वाला पक्षी, पक्षि-विशेष (कप्प, श्रीप, महा, दे ६, १०८) ।
 भाल न [भाल] ललाट (पात्र, कुमा) ।
 भलुंकी [दे] देखो भल्लुकी (भत्त १६०) ।
 भाल पुन [दे] मदन-वेदना, काम-पीडा (संसि ४७) ।
 भाव सक [भावय्] १ वास्तित करना, गुणा-घात करना । २ चिन्तन करना । भावेइ (विवे ६८), भाविति (पिड १२६), 'भावेज्ज भावण' (हि १६), भावेमु (महा) । कर्म. भाविज्जइ (प्रासू ३७) । वक्र. भावेत, भावमाण, भावेमाण (सुर ८, १८५, सुपा २६५, उवा) । सक्र. भावेत्ता, भाविज्जण (उवा, महा) । क. भावणिज्ज, भाविज्जव्व, भावेयव्व (कप्प, काल, सुर १४, ८४) ।
 भाव ग्रन्थ [भास्] १ दिखाना, लगना, मालूम होना । २ पसन्द होना, उचित मालूम होना,

भोल्लय न [दे] पाथेय-विशेष, प्रवन्ध-प्रवृत्त
पाथेय (दे ६, १०८) ।

भोवाल (अप) देखो भू-वाल (भवि) ।
भोहा (अप) देखो भू = भ्रू (पिग) ।

भ्रंत्रि (अप) देखो भंति = भ्रान्ति (हे ४,
३६०) ।

॥ इअ तिरिपाइअसद्महणवम्मि भअराइसद्मकलणो

तीसइमो तरंगो समत्तो ॥

म

म पु [म] श्रोष्ठ स्थानीय व्यञ्जन वणं विशेष
(प्राप) ।

म अ [मा] मत, नही (हे ४, ४१८, कुमा,
पि ६४, ११४, भवि) ।

मअआ छी [मृगया] शिकार (अभि ५५) ।

मइ छी [मृति] मौत, मरण (सुर २, १४३) ।

मइ छी [मति] १ बुद्धि, मेधा, मनीषा,
'मेहा मई मणीसा' (पाअ, सुर २, ६५,
कुमा, प्रासू ७१) । २ ज्ञान-विशेष, इन्द्रिय
और मन से उत्पन्न होनेवाला ज्ञान (ठा ४,
४, एदि, कम्म ३, १८, ४, ११, १४,
विसे ६७) । ३ अज्ञान न [अज्ञान] विपरीत
मति-ज्ञान, मिथ्यादर्शन-युक्त मति-ज्ञान (भग
विसे ११४, कम्म ४, ४१) । ४ णाण,
५ णाण, ६ नाण न [ज्ञान] ज्ञान-विशेष
(विसे १०७, ११४, ११७, कम्म १, ४) ।

७ नाणावरण न [ज्ञानावरण] मति-ज्ञान
का आवरण कर्म (विसे १०४) । ८ नाणि
वि [ज्ञानिन्] मति-ज्ञानवाला (भग) ।
९ पत्तिया छी [पात्रिका] एक जैन मुनि-
शाखा (कप्प) । १० वस पु [अश] बुद्धि-
विनाश (भग, सुपा १३४) । ११ मं मत,
१२ वंत वि [मन्] बुद्धिमान् (ओष ६३०,
आचा, भवि) ।

मइं देखो मई = मृगी (कुप्र ४४) ।

मइअ वि [मत्त] मद-युक्त, जन्मत (से ७,
६६, गा ४६८, ७०६, ७६१) ।

मइअ देखो मा = मा ।

मइअ वि [दे मतिरु] १ भर्त्सित, तिरस्कृत
(दे ६, ११४) । २ न बोधे हुए बीजों के
आच्छादन के काम में लगती एक काष्ठ-मय
वस्तु, खेतों का एक श्रौजार, 'नगले मइयं
सिया' (दस ७, २८, परह १, १—पत्र ८) ।

३ मइअ वि [मय] व्याकरण-प्रसिद्ध एक
तद्धित-प्रत्यय, निवृत्त, बना हुआ, 'धम्ममइएहि
अइसुदरेहि' (उव), 'जिएपडिम गोसीमचद-
णमइय' (महा) ।

मइआ छी [मृगया] शिकार (सिरि १११५) ।

मइद पु [मैन्द] राम का एक मेनिक, वानर-
विशेष (से ४, ७, १३, ८३) ।

मइद पुं [मृगेन्द्र] १ सिंह, पचानन (प्राकृ
३०, सुर १६, २४२, गडह) । २ छन्द का
एक भेद (पिग) ।

मइज्ज देखो मईअ = मदीय (पड्) ।

मइत्तो अ [मत्] मुझसे (प्राप्र) ।

मइमोहणी छी [दे मतिमोहनी] सुरा,
मदिरा, दारू (दे ६, ११३, पड्) ।

मइरा छी [मदिरा] ऊपर देखो (पाअ, से
२, ११, गा २७०, दे ६, ११३) ।

मइरेय न [मेरेय] ऊपर देखो (पाअ) ।

मइल वि [मलिन] मैला, मल-युक्त, अस्वच्छ
(हे २, ३८, पाअ, गा ३४, प्रासू २५,
भवि) ।

मइल पु [दे] कलवल, कोलाहल (दे ६,
१४२) ।

मइल वि [दे मलिन] गत-तेजस्क, तेज-
रहित, फीका (दे ६, १४२, से ३, ४७) ।
मइल सक [मलिनय] मैला करना, मलिन
बनाना । मइलइ, मइलेइ, मइलित्ति, मइलेंति
(भवि, उव, पि ५५६) । कर्म, मइलिज्जइ
(भवि, पि ५५६) । वक्र, मइलत (पजम २,
१००) । कृ, मइलियव्व (स ३६६) ।

मइल अक [दे मलिनाय्] तेज-रहित
होना, फीका लगना । वक्र, मइलत (से ३,
४७, १०, २७) ।

मइलण न [मलिनना] मलिन करना (गडह) ।

मइलणा छी [मलिनना] १ ऊपर देखो
(ओष ७८८) । २ मालिन्य, मलिनता । ३
कलक, 'लहइ कुल मइलण जेण' (सुर ६,
१२०), 'इमाए मइलणाए अमुगम्मि नयल्ला-
णासन्ते नग्गोहपायवे उव्वघणेण अत्ताणय
परिच्चइउ ववसिओ चक्कदेवो' (स ६४) ।

मइलपुत्ती छी [दे] पुष्पवती, रजस्वला छी
(पड्) ।

मइलिअ वि [मलिनित] मलिन किया हुआ
(आवक ६५, पि ५५६, भवि) ।

मइल वि [मृत] मरा हुआ । छी १ ह्लिया,
'एव खलु सामो । पडमावती देवी मइल्लिय
दारिय पयाया । तए रा कणगरहे राया तीसे
मइल्लियाए दारियाए नीहरणं करेति, वहरिण
लोहयाइ मयकिच्चाइ' (णया १, १४—पत्र
१८६) ।

मइहर पु [दे] ग्राम-प्रधान, गाँव का मुखिया
(दे ६, १२१) । देखो मयहर ।

भासग वि [भाषक] बोलनेवाला, वक्ता, प्रतिपादक (विसे ४१०, पंचा १८, ६, ठा २, २—पत्र ५६) ।

भासण न [भासन] चमक, दीप्ति, प्रकाश, 'वरमल्लिभासणाणं' (श्रौप) ।

भासण न [भाषण] कथन, प्रतिपादन (महा) ।

भासणया } स्त्री [भाषणा] ऊपर देखो (उप
भासणा } ५१६, विसे १४७, उप) ।

भासय देखो भासग (विसे ३७४, परण १८) ।

भासय वि [भासर] प्रकाशक (विसे ११०४) ।

भासल वि [दे] दीप्त, प्रज्वलित (दे ६, १०३) ।

भासा स्त्री [भाषा] १ बोली, 'अट्टारसदेसी-भासाविसारण' (श्रौप १०६, कुमा) । २ वाक्य, वाणी, गिरा, वचन (पात्र) । ३ जडु वि [°जड] बोलने की शक्ति से रहित, मूक (आव ४) । ४ ज्ञप्ति स्त्री [°पर्याप्ति] पुद्गल को भाषा के रूप में परिणत करने की शक्ति (भग ६, ४) । ५ विजय पु [°विचय] १ भाषा का निर्णय । २ दृष्टिवाद, बारहवाँ जैन अंग-ग्रन्थ (ठा १०—पत्र ४६१) । ३ विजय पु [°विजय] दृष्टिवाद (ठा १०) । ४ समिअ वि [°समित] वाणी का संयम-वाला (भग) । ५ समिअ स्त्री [°समिति] वाणी का संयम (सम १०) । देखो भास° ।

भासा स्त्री [भास] प्रकाश, आलोक, दीप्ति (पात्र) ।

भासि वि [भाषिन्] भाषक, वक्ता (धर्मवि ५२, भवि) ।

भासिअ वि [भाषित] १ उक्त, कथित, प्रतिपादित (भग, आचा, सण, भवि) । २ न. भाषण, उक्ति (आवम) ।

भासिअ वि [भाषिन्, °क] वक्ता, बोलने-वाला (भवि) ।

भासिअ वि [दे] दत्त, अर्पित (दे ६, १०४) ।

भासिअ वि [भासित] प्रकाशवाला, प्रकाश-युक्त (निचू १३) ।

भासिर वि [भाषित] वक्ता (सुपा ५३८, सण) ।

भासिर वि [भास्वर] दीप्त, देदीप्यमान (कुमा) ।

भासिल वि [भाषावन्] भाषा-युक्त, वाणी-युक्त (उत्त २७, ११) ।

भासीकय वि [भस्मीकृत] जलाकर राख किया हुआ (उप ६८६ टी) ।

भासुड अक [दे] बाहर निकलना । भासुड (दे ६, १०३ टी) ।

भासुडि स्त्री [दे] नि सरण, निर्गमन (दे ६, १०३) ।

भासुर वि [भासुर] १ भास्वर, दीप्तिमान्, चमकता (सुर ६, १८४, सुपा ३३, २७२, कुप्र ६०, धर्मस १३२६ टी) । २ घोर, भीषण, भयकर, 'घोरा दासणभासुरभइरव-लल्लकभीमभीसणया' (पात्र) । ३ एक देव-विमान (सम १२) । ४ छन्द-विशेष (अजि ३०) ।

भासुरिअ वि [भासुरित] देदीप्यमान किया हुआ, 'भासुरमूणभासुरिअगा' (अजि २३) ।

भि देखो °दिभ (आचा) ।

भिअप्पड } देखो वहस्सइ (पि २१२, पड्) ।
भिअप्फइ }
भिअरसइ }

भिइ देखो भइ = मृति (राज) ।

भिउ पु [भृगु] १ स्वनाम-ख्यात ऋषि-विशेष । २ पर्वत-सानु । ३ शुक-ग्रह । ४ महादेव, शिव । ५ जमदग्नि । ६ ऊँचा प्रदेश । ७ ऋगु का वंशज । ८ रेखा, राजि (हे १, १२८, पड्) । ९ कच्छ न [°कच्छ] नगर-विशेष, मडौच (राज) ।

भिउड न [दे] अंग-विशेष, शरीर का अवयव-विशेष (?) , 'मुत्तूण तुरगभिउडे खगं पिटुम्मि उत्तरीय च', 'तो तस्सेव य खगं मिउडाओ गिहिअण चाणक्को' (धर्मवि ४१) ।

भिउडि स्त्री [भृकुटि] १ भौं-भग, भौं का विकार (विपा १, ३, ४) । २ पु भगवान् नमिनाथ का शायन-देव (सति ८) ।

भिउडिय वि [भृकुटित] जिसने भौं चढ़ाई हो वह (गाया १, ८) ।

भिउडी देखो भिउडि (कुमा) ।

भिउर वि [भिदुर] विनश्वर (आचा) ।

भिउव्व पुं [भार्गव] ऋगु मुनि का वंशज, परिव्राजक-विशेष (श्रौप) ।

भिग वि [दे] कृष्ण, काला (दे ६, १०४) । २ नील, हरा । ३ स्वीकृत (पड्) ।

भिग पुं [भृङ्ग] १ भ्रमर मधुकर (पउम ३३, १४८, पात्र) । २ पक्षि-विशेष (परण १७—पत्र ५२६) । ३ कीट-विशेष । ४ विदलित अंगार, कोयला (गाया १, १—पत्र २२, श्रौप) । कल्पवृक्ष की एक जाति (सम १६) । ६ छन्द-विशेष (पिंग) । ७ जार, उपपति । ८ भ्रंगरा का पेड़ । ९ पात्र-विशेष, भारी (हे १, १२८) । १० गिभा स्त्री [°निभा] एक पुष्करिणी (इक) । ११ प्पभा स्त्री [°प्रभा] पुष्करिणी-विशेष (ज ४) ।

भिगा स्त्री [भृङ्गा] एक पुष्करिणी, वापी-विशेष (इक) ।

भिगार पुं [भृङ्गार, °क] १ भाजन-विशेष, भारी (पराह १, ४, श्रौप) । २ पक्षि-विशेष, 'भिगार-रवंतभेरवरवे' (गाया १, १—पत्र ६५), 'भिगारकदीणकदियरवेसु' (गाया १, १—पत्र ६३, पराह ११, श्रौप) । ३ स्वर्ण-मय जल-पात्र (हे १, १२८, जं २) ।

भिगारी स्त्री [दे भृङ्गारी] १ कीट-विशेष, चिरी, भिक्खी (दे ६, १०५, पात्र, उत्त ३६, १४८) । २ मशक, डाँस (दे ६, १०५) ।

भिजा स्त्री [दे] अम्यग, मालिश (सूअ १, ४, २, ८) ।

भिडिया स्त्री [दे वृन्ताकी] भटा का गाछ (उप १०३१ टी) ।

भिडिमाल पु [भिन्दिपाल] शस्त्र-विशेष (पराह १, १, श्रौप, पउम ८, १२०, स ३८४, कुमा, हे २, ३८, प्राप्र) ।

भिद सक [भिद] १ भेदना, तोड़ना । २ विभाग करना । भिदइ, भिदए (महा, पड्) । भवि भेच्छं, भिदिस्सति (हे ३, १७१, कुमा, पि ५३२) । कर्म. मिज्जइ (आचा, पि ५४६) । वक्र. भिदत, भिदमाण (ग १३६, पि ५०६) । कवक भिज्जत, भिज्जमाण (से ५, ६५, ठा २, ३, आ ६, भग, उवा; गाया १, ६, विसे ३११) । सङ्ग. भित्तूण,

मंखलि पुं [मङ्गलि] एक मंख-भिक्षु, गोशालक का पिता । १ पुत्त पुं [पुत्त] गोशालक, आजीवक मत का प्रवर्तक एक भिक्षु जो पहले भगवान् महावीर का शिष्य था (ठा १०, उवा) ।

मंग सक [मङ्ग] १ जाना । २ साधना । ३ जानना । कर्म मंगिजए (विसे २२) ।

मंग पुं [मङ्ग] १ घर्म (विसे २२) । २ रजन-द्रव्य-विशेष, रग के काम में आता एक द्रव्य (सिरि १०५७) ।

मगइय देखो मगइय (निर १. १) ।

मगरिया स्त्री [दे] वाद्य विशेष (राय) ।

मंगल पुं [मङ्गल] १ ग्रह-विशेष, अगारक ग्रह (इक) । २ न कल्याण, शुभ, क्षेम, श्रेय (कुमा) । ३ विवाह सूत्र-बन्धन (स्वप्न ४६) । ४ विघ्न-क्षय (ठा ३, १) । ५ विघ्न-क्षय के लिए किया जाता इष्टदेव-नमस्कार आदि शुभ कार्य । ६ विघ्न-क्षय का कारण, दुरित-नाश का निमित्त (विसे १२, १३, २२, २३, २४, औप, कुमा) । ७ प्रशसावाक्य, खुशामद (सूत्र १, ७, २५) । ८ इष्टार्थ-सिद्धि, वाञ्छित-प्राप्ति (कप्प) । ९ तप-विशेष, आयविल (सबोध ५८) । १० लगातार आठ दिनों का उपवास (सबोध ५८) । ११ वि. इष्टार्थ-साधक, मंगल-कारक (आव ४) । १२ उभय पुं [ध्वज] मागलिक ध्वज (भग) । १३ तूर न [तूर्य] मंगल-वाद्य (महा) । १४ दीव पुं [दीप] मागलिक दीप, देव-मन्दिर में आरती के बाद किया जाता दीपक (धर्मवि १२३, पचा ८, २३) । १५ पाठय पु [पाठक] मागध, चारण (पात्र) । १६ पाठिया स्त्री [पाठिका] वीणा-विशेष, देवता के आगे सुवह और सन्ध्या में बजाई जाती वीणा (राज) ।

मंगल वि [दे] १ सदृश, समान (दे ६, ११८) । २ न. अग्नि, आग । ३ खोरा वृत्तने का एक साधन । ४ वन्दनमाला (विसे २७) ।

मंगलग पुन [मङ्गलक] स्वस्तिक आदि आठ मागलिक पदार्थ (सुपा ७७) ।

मंगलसज्ज न [दे] वह खेत जिसमें वीज बोना बाकी हो (दे ६, १२६) ।

मंगला स्त्री [मङ्गला] भगवान् श्रीसुमतिनाथ की माता का नाम (सम १५१) ।

मंगलालया स्त्री [मङ्गलालया] एक नगरी का नाम (आचू १) ।

मंगलावइ पुं [मङ्गलापातिन्] सौमनस-पर्वत का एक कूट (इक, ज ४) ।

मंगलावई स्त्री [मङ्गलावती] महाविदेह वर्ष का एक विजय, प्रान्त-विशेष (ठा २, ३, इक) ।

मंगलावत्त पुं [मङ्गलावर्त] १ महाविदेह वर्ष का एक विजय, प्रान्त-विशेष (ठा २, ३, इक) । २ देव-विशेष (ज ४) । ३ न एक देव-विमान (सम १७) । ४ पर्वत-विशेष का एक शिखर (इक) ।

मंगलिअ } वि [माङ्गलिक] १ मंगल-
मंगलीअ } जनक, 'सप्रलजीवलोअमंगलिअ-जम्मलाहस्स' (उत्तर ६०, अचु ३६, सुपा ७८) । २ प्रशसा-वाक्य बोलनेवाला, 'सुहम-गलीए' (सूत्र १, ७, २५) ।

मंगल वि [मङ्गल्य, माङ्गल्य] मंगल-कारी, मंगल-जनक, मागलिक, 'पढमाणो जिणुणुण-गणनिवद्धमगल्लवित्ताइ' (वेइय १६०, गाया १, १, सम १२२, कप्प, औप, सुर १, २३८, १५, १७३, सुपा ५५) ।

मंगी स्त्री [मङ्गी] पडज्ज ग्राम की एक मूच्छन्ता (ठा ७—पत्र ३६३) ।

मंगु पुं [मङ्गु] एक सुप्रसिद्ध जैन आचार्य, आर्यमणु (एदि, ती ७, आत्म २३) ।

मंगुल न [दे] १ अनिष्ट (दे ६, १४५, सुपा ३३८, सूक्त ८०) । २ पाप (दे ६, १४५, वजा ८, गउड, सूक्त ८०) । ३ पुं. चोर, तस्कर (दे ६, १४५) । ४ वि. असुन्दर, खराब (पात्र, ठा ४, ४—पत्र २७१, स ७१३, दस ३) । स्त्री. ०ली. 'मंगुली एं समणस्स भगवओ महावीरस्स धम्मपणत्तो' (उवा) ।

मंगुस पुं [दे] नकुल, न्यूला, भुजपरिसर्प-विशेष (दे ६, ११८, सूत्र २, ३, २५) ।

मंच पु [दे] वन्ध (दे ६, १११) ।

मच पु [मञ्च] १ मचान, उच्चासन (कप्प, गउड) । २ गणितशास्त्र प्रसिद्ध दश योगों में तीसरा योग, जिसमें चन्द्रादि मंचाकार से

रहते हैं (सुज १२—पत्र २३३) । ३ इमच पुं [०तिमञ्च] १ मचान के ऊपर का मञ्च, ऊपर ऊपर रखा हुआ मच (औप) । २ गणित-प्रसिद्ध एक योग जिसमें चन्द्र, सूर्य आदि नक्षत्र एक दूसरे के ऊपर रक्ते हुए मंचों के आकार से अपस्थित होते हैं (सुज १२) ।

मंची स्त्री [मञ्चा] खटिया, खाट; 'ता आह मंचीए' (सुर १०, १६८, १६९) ।

मछुडु (अप) म [मङ्गु] शीघ्र, जल्दी (भवि) ।

मंजर पुं [मार्जार] मजार, विला, विलाव (हे २, १३२, कुमा) । देखो मज्जर, मज्जार । मजरि स्त्री [मज्जरी] देखो मंजरी (औप) ।

मजरिअ वि [मज्जरित] मज्जरी-युक्त, 'मजरिओ चूयनिकरो' (स ७१६) ।

मंजरिआ } स्त्री [मज्जरिका, ०री] नवोत्पन्न
मजरी } सुकुमार पल्लवाकार लता, बौर (कुमा, गउड) । ०गुडी स्त्री [०गुण्डी] वल्ली-विशेष, 'तोमरिगुडी य मजरीगुडी' (पात्र) ।

मजार देखो मंजर (हे १, २६) ।

मजिआ स्त्री [दे] तुलसी (दे ६, ११६) ।

मजिह वि [माञ्जिष्ट] मजीठ रगवाला, लाल । स्त्री. ०ट्टी (कप्प) ।

मजिह्वा स्त्री [मज्जिष्टा] मजीठ, रंग विशेष (कप्प, हे ४, ४३८) ।

मजोर न [मज्जीर] १ नूपुर, 'हसय नेउं च मजोर' (पात्र, स ७०४, सुपा ६६) । २ छन्द-विशेष (पिंग) ।

मजोर न [दे] शृङ्खलक, साँकल, जजीर, सिकड (दे ६, ११६) ।

मजु वि [मज्जु] १ सुन्दर, मनोहर (पात्र) । २ कोमल, सुकुमार (औप, कप्प) । ३ प्रिय, इष्ट (राय, ज १) ।

मजुआ स्त्री [दे] तुलसी (दे ६, ११६, पात्र) ।

मजुल वि [मज्जुल] १ सुन्दर, रमणीय, मधुर (सम १५२, कप्प, विपा १, ७, पात्र, पिंग) । २ कोमल (गाया १, १) ।

मजुसा } स्त्री [मज्जुषा] १ विदेह वर्ष की
मजुसा } एक नगरी (ठा २, ३—पत्र ८०, इक) । २ पिढारी, छोटी संदूक (सुपा ३२१, कप्प) ।

६)। भवि. भिदिस्त्विति (आचा २, १, ६६, पि ५३२)।

भिन्न वि [भिन्न] १ विदारित, खरिडत (गाया १, ८, उव, भग, पात्र, महा)। २ प्रस्फुटित, स्फोटित (ठा ४, ४, परह २, १)। ३ अन्य विसृष्ट, विलक्षण (ठा १०)। ४ परित्यक्त, उज्झित, 'जीवजड भावयो भिन्न' (वृह १, आव ४)। ५ ऊन, कम, न्यून (भग)। ६ कहाँ छो [कथा] मैथुन सबद्ध वात, रहस्यालाप (भोष ६६)। ७ पडवाइय वि [पिण्डपातिक] स्फोटित अन्न आदि लेने की प्रतिज्ञावाला (परह २, १—पत्र १००)। ८ मास पुं [मास] पचीस दिन का महीना (जीत)। ९ मुहुत्त न [मुहुत्त] अन्तर्मुहुत्त, न्यून मुहुत्त (भग)।

भिष्म पु [भीष्म] १ स्वनाम-ख्यात एक कुरुवशीय क्षत्रिय, गांगेय, भीष्म पितामह। २ साहित्य-प्रसिद्ध रस-विशेष, भयानक रस। ३ वि. भय-जनक, भयकर (हे २, ५४, प्राक ६५, कुमा)।

भिष्मल वि [विह्वल] व्याकुल (हे २, ५८, ६०, प्राक २४, कुमा, वज्जा १५६)।

भिष्मलण न [विह्वलन] व्याकुल बनाना (कुमा)।

भिष्मिभस अक [भास् + यङ् = वाभास्य] अत्यन्त दीपना। वक्र. भिष्मिभसमाण, भिष्मिभसमीण (गाया १, १—पत्र ३८, राय पि ५५६)।

भिमोर पु [दे हिमोर] हिम का मध्य भाग (?) (हे २, १७४)।

भियग नेत्रो भयग (सण)।

भिलग पु [दे] अक्षण। देखो भिल्लिज (सूत्र कृताग सूत्र २८५ चूर्णी)।

भिलगा देखो भिलुगा (दस ६, ६२)।

भिल्लिग सक [दे] अम्यंग करना, मालिश करना। भिल्लिगेज (आचा २, १३, २, ४, ५, निचू १७)। वक्र. भिल्लिगत (निचू १७)। प्रयो भिल्लिगावेज्ज (निचू १७)। वक्र. भिल्लिगावत (निचू १७)।

भिल्लिग } पुं [दे] घान्य-विशेष, मसूर
भिल्लिगु } (कण्य, पंचा १०, ७३)।

भिल्लिज पुं [दे] अम्यंग, आपाद-मस्तक-नैल-मर्दन (सूत्र १, ४, २, ८ टी)।

भिलुग पुं [दे. भिलुङ्ग] हिंसक पक्षी (राय १२४)।

भिलुगा छो [दे] फटी हुई जमीन, भूमि की रेखा—फाट (आचा २, १, ५, ५)।

भिल्ल पुं [भिल्ल] १ अनार्य देश-विशेष (पव २७४)। २ एक अनार्य जाति (सुर २, ४, ६, ३४, महा)।

भिल्लमाल पुं [भिल्लमाल] स्वनाम-ख्यात एक प्रसिद्ध क्षत्रिय-वंश (विवे ११४)।

भिल्लायई छो [भिल्लतकी] मिलावा का पेड़ (उप १०३१ टी)।

भिल्लिअ वि [भिल्लित] खरिडत, तोड़ा हुआ, 'पचमहव्ययुगो पायारो भिल्लिओ जेण' (उव)।

भिस देखो भास = भास्। भिसइ (हे ४, २०३, पङ्)। वक्र. भिसंत, भिसमाण, भिसमीण (पत्र ३, १२७, ७५, ३७, गाया १, १, श्रौप, कुमा, गाया १, १, पि ५६२)।

भिस सक [प्लुप्] जलाना (प्राक ६५, घात्वा १४७)।

भिस सक [भायय्] डराना। भिसइ, भियेइ (प्राक ६४)।

भिम न [भृश] १ अत्यन्त, अतिशय, अतिशयित, 'गलंतभिमिन्नदेहे य' (पिंड ५८३, उप ३२० टी, सत्त ६१, भवि)।

भिस देखो विस (प्राक १५, परण १, सूत्र २, ३, १८)। २ कदय पुं [कन्दक] एक प्रकार की खाने की मिष्ट वस्तु (परण १७—पत्र ५३३)। ३ मुणाली छो [मृणाली] कमलिनी (परण १)।

भिसअ पु [भिपज्] १ वैद्य, चिकित्सक (हे १, १८, कुमा)। २ भगवान् मल्लिनाथ का प्रथम गणधर (पव ८)।

भिसत देखो भिस = भास्।

भिसत न [दे] अनार्य (दे ६, १०५)।

भिसग देखो भिमअ (गाया १, १—पत्र १५४)।

भिसण मक [दे] फेंकना, डालना। भिमणेमि (गा ३१२)।

भिसमाण देखो भिम = भास्।

भिमरा छो [दे] मत्स्य पकड़ने का जान-विशेष (विपा १, ८—पत्र ८५)।

भिसाव सक [भायय्] डराना। भिसावेइ (प्राक ६४)।

भिसिआ } छो [दे वृषिका] आसन-विशेष,
भिसिगा } ऋषि का आसन (दे ६, १०५, भग, कुप्र ३७२, गाया १, ८, उप ६४८ टी, श्रौप, सूत्र २, २, ४८)।

भिसिण देखो भिसण भिसिणेमि (गा ३१२ अ)।

भिसिणी छो [विसिनी] कमलिनी, पद्मिनी (हे १, २३८, कुमा, गा ३०८, काप्र ३१, महा, पात्र)।

भिसी छो [वृषी] देखो भिसिआ (पात्र)।

भिसोल न [दे] नृत्य-विशेष (ठा ४, ४—पत्र २८५)।

भिह् } अक [भी] डरना। भिह्इ (पङ्)।
भी } कृ. भेअव्व (सुपा ५८४)।

भी छो [भी] १ भय, 'नो दंडभी डंड समार-भेज्जसि' (आचा)। २ वि. डरनेवाला, भीह (आचा)।

भीअ वि [भीत] डरा हुआ (हे २, १६३, ४, ५३, पात्र, कुमा, उवा)। ३ भीय वि [भीत] अत्यन्त डरा हुआ (सुर ३, १६५)।

भीइ छो [भीति] डर, भय (सुर २, २३७, सिरि ८३६, प्रासू २४)।

भीइअ वि [भीत] डरा हुआ (उप ६४०)।

भीइर वि [भेतृ] डरनेवाला, 'ता मरणभीइरं विसज्जेह म, पव्वईस्स' (वसु)।

भीड [दे] देखो भिड। संक्र. भीडिवि (अप) (भवि)।

भीडिअ [दे] देखो भिडिय (सुपा २६२)।

भीतर [दे] देखो भित्तर (कुमा)।

भीम वि [भीम] १ मयंकर, भीषण (पात्र, उव, परह १, १, जो ४४, प्रासू १४४)।

२ पुं. एक पाण्डव, भीमसेन (गा ४४३)।

३ राजस-निकाय का दक्षिण दिशा का इन्द्र (ठा २, ३—पत्र ८५)। ४ भारतनर का भावी सत्तर्वा प्रतिवानुदेव, 'अपरतए य भीमे महाभीमे य सुगोवे' (सम १५४)।

५ राजम-वंश का एक राजा, एक लकापति

मडुग पुं [मण्डूक] १ मेढक, दादुर, मडूअ 'मडुगगदसरिसो खलु अहिगारो होइ मडूक सुतस्स' (वव ७, कुमा)। २ वृक्ष-मडूर विशेष, श्योनाक, सोनापाठा। ३ वन्ध विशेष (सफ़ि १७), 'महुरो' (प्राप्र)। ४ छन्द-विशेष (पिंग)। °पुअ न [°प्लुत] भेक की चाल। २ पु. ज्योषि-प्रसिद्ध योग-विशेष, भेक की गति की तरह होनेवाला योग (सुज्ज १२—पत्र २३३)।

मडोवर न [मण्डोवर] नगर विशेष (ती १५)।

मत सक [मन्त्रन्] १ गुप्त परामर्श करना, मसलहत करना। २ आमंत्रण करना। मतइ (महा, भवि)। भवि मतही (अप) (पिंग)। वक्तु मतत, मतयत (सुपा ५३५, ३०७, अमि १२०)। सकु मतिअ, मतिऊण, मतेऊण (अमि १२४, महा)।

मत पुंन [मन्त्र] १ गुप्त बात, गुप्त आलोचना, 'न कहिज्जइ एसिमेरिस मत' (सिरि ६२५), 'कुट्टिस्सइ वोहित्थ महिलाजणकहिय-मत व' (धर्मवि १३, कुमा)। २ जप्प, जाप करने योग्य प्रणवादि अक्षर-पद्धति (णाय १, १४, ठा ३, ४ टी—पत्र १५६, कुमा, प्रासू १४)। °जभंग पुं [°जम्भक] एक देव-जाति (भग १४, ८ टी—पत्र ६५४)। °देवया स्त्री [°देवता] मन्त्राधिष्ठायक देव (आ १)। °नु वि [°ज्ञ] मन्त्र का जानकार (सुपा ६०३)। °वाइ वि [°वादिन्] मान्त्रिक, मन्त्र को ही श्रेष्ठ माननेवाला (सुपा ५६७)। °सिद्ध वि [°सिद्ध] १ सब मन्त्र जिसके स्वाधीन हो वह। २ बहु-मन्त्र। ३ प्रधान मन्त्रवाला, 'साहोणसव्वमतो बहुमतो वा पहाणमंतो वा, नेमो स मतसिद्धो' (आवम)।

मत वि [मान्त्र] मन्त्र-सम्बन्धी, मान्त्रिक। स्त्री 'मतो ठक्कारपतिव्व' (धर्मवि २०)।

मंत देखो मा = मा।

मतक्ख न [दे] १ लज्जा, शरम। २ दुःख (दे ६, १४१)। ३ अपराध, 'न लेइ गरुयपि णाम मंतक्ख' (गडड)।

मतण न [मन्त्रण] १ गुप्त आलोचना, गुप्त मसलहत (पउम ५, ६६, ८२, ४६)। २ मसलहत, परामर्श, सलाह, 'मंतणत्थ हक्कारिओ अणेण जिणदत्तसेट्ठो' (कुप्र ११६)। ३ जाप, 'पुणो पुणो मंतमतणं सुहय (चिइय ७६३)।

मतर देखो वतर (क्प्प)।

मता अ [मत्वा] जानकार (सुअ १, १०, ६, आचा १, १, ५, १, १, ३, १, ३, पि ५८२)।

मति पुं [मन्त्रिन्] १ मन्त्री, अमात्य, दीवान (क्प्प, औप, पाप्र)। २ वि मन्त्रो का जानकार (गु १२)।

मति पु [दे] विवाह-गणक, जोशी, ज्योतिर्वित्त (दे ६, १११)।

मतिअ वि [मन्त्रित] गुप्त रीति से आलोचित (महा)।

मंतिअ देखो मत = मन्त्रय्।

मंतिअ वि [मान्त्रिक] मन्त्र का ज्ञाता, 'मंतेण मतियस्स व वाणीए ताडिओ तुज्ज' (धर्मवि ६, मन ११)।

मतिण देखो मति = मन्त्रिन्, निगूहिओ मंति-णेहि कुसलेहि' (पउम २१, ६०, ६५, ८, भवि)।

मंतु वि [मन्तु] १ ज्ञाता, जानकार। २ पु. जीव, प्राणी (विसे ३५२५)।

मतु देखो मण्णु (हे २, ४४, षड्, निचू २)।

°म वि [°मत्] क्रोधवाला, कोप-युक्त। स्त्री. °मई (कुमा)।

मतु पुंन [°मन्तु] अपराध, 'मतुं विलियं विधिय' (पाप्र)।

मतुआ स्त्री [दे] लज्जा, शरम (दे ६, ११६, भवि)।

मतेलि स्त्री [दे] सारिका, मैना (दे ६, ११६)।

मथ सक [मन्थ] १ विलोडन करना। २ मारना, हिंसा करना। ३ अक क्लेश पाना। मंथइ (हे ४, १२१, प्राकृ. ३३, षड्)। क्वकृ मथिज्जत, मंथिज्जमाण, मच्छंत (पउम ११३, ३३, सुपा २५१, १६५, परह १, ३—पत्र ५३)। सकृ. मंथित्तु (सम्मत् २२६)।

मंथ पुं [मन्थ] १ दही विलोने—महने का दण्ड, मयनी (पिसे ३८४)। २ केवल समुदात के समय मन्थाकार किया जाता जीव-प्रदेश समूह (ठा ६, औप)।

मथ (अप) देखो मत्थ = मत्त (पिंग)।

मंथण न [मन्थन] १ विलोडन, विलोने की क्रिया, 'खीओअमंथणुच्छलिअदुदसितो व महुमहणो' (गा ११७)। २ घर्षण, 'मयण-जोए अण्णो' (सवोष १)। ३ पुन मयनी, दही आदि मथने की लकड़ी (प्राकृ १४)।

मथणिआ स्त्री [मन्थनिका] १ मयनी, महानी, दही मथने की छोटी लकड़ी (राज)। २ मयानी, दधि-कलशी, दही महने की हँडिया (दे २, ६५)।

मंथणी स्त्री [मन्थनी] ऊपर देखो (दे २, ५५)।

मंथर वि [मन्थर] १ मन्द, धीमा (से १, ३८, गडड, पाप्र, सुपा १)। २ विलम्ब से होनेवाला (पचा ६, २२)। ३ पु. मन्थन दण्ड; 'वीसाममथरायमाणसेलवोच्छरणदूर-वडणाओ' (गडड)।

मथर वि [दे मन्थर] १ कुटिल, वक्र, टेढ़ा (दे ६, १४५, भवि)। २ स्त्रीन कुसुम्भ, वृक्ष-विशेष, कुसुम का पेड़ (दे ६, १४५)। स्त्री. °रा, 'मथरा कुसुंमो' (पाप्र)।

मथर वि [दे] बहु, प्रचुर, प्रभूत (दे ६, १४५, भवि)।

मंथरिय वि [मन्थरित] मन्थर किया हुआ (गडड)।

मथाण पु [मन्थान] १ विलोडन-दण्ड, 'तत्तो विसुद्धपरिणाममेवमथाणमहियभवज-लही' (धर्मवि १०७, दे ६, १४१, वज्जा ४, पाप्र, समु १५०)। २ छन्द विशेष (पिंग)।

मथिअ वि [मथित] विलोडित (दे २, ८८, पाप्र)।

मथु पुन [दे] १ बदरादि-चूर्ण (परह २, ५, उत ८, १२, सुख ८, १२, दस ५, १, ६८, ५, २, २४, आचा)। २ चूर्ण, चूर, चुकनी (आचा २, १, ८, ८)। ३ दूध का विकार-विशेष, मट्ठा और माखन के बीच की अवस्था वाला पदार्थ (पिड २८२)।

उत्त ६, ३. पि ५०७, हे २, १५, कुमा, प्राक ३४। हेक. भुंजित्तए, भोत्तुं, भोत्तए (पि ५७८, हे ४, २१२, आचा), भुंजण (अप) (कुमा)। क. भुज, भुजियव्व, भुजेयव्व, भोत्तव्व, भुत्तव्व, भोज, भोग (तंडु ३३; धर्मवि ४१, उप १३६ टी, आ १६; सुपा ४६५; पिडमा ४५, सम्मत २१६, णाया १, १, पठम ६४, ६४, हे ४, २१२, सुपा ४६५, पठम ६८, २२, दे ७, २१, ओष २१४, उप ७५, सुपा १६३, भवि)।

भुंजग वि [भोजक] भोजन करनेवाला (पिड १२३)।

भुंजण देखो भुंज = भुज।

भुजण न [भोजन] भोजन (पिड ५२१)।

भुंजणा स्त्री. ऊपर देखो (पव १०१)।

भुंजय देखो भुजग (मण)।

भुंजाव सक [भोजय] १ भोजन कराना। २ पालन कराना। ३ भोग कराना। भुंजावेड (महा)। कवक भुंजाविज्जंत (पठम २, ५)। संक. भुजाविरुण, भुंजावित्ता (पि ५८२)। हेक. भुजावेड (पचा १०, ४८ टी)।

भुजावय वि [भोजक] भोजन करानेवाला (स २५१)।

भुजाविअ वि [भोजित] जिसको भोजन कराया गया हो वह (धर्मवि ३८, कुप्र १६८)।

भुजिअ देखो भुंज = भुज।

भुजिअ देखो भुत्त (भवि)।

भुजिर वि [भोक्त्] भोजन करनेवाला (सुपा ११)।

भुंढ पुंस्त्री [दे] सूकर, वराह; गुजराती में 'मुंड' (दे ६, १०६)। स्त्री 'ढी', 'ढिणी' (दे ६, १०६ टी, भवि)।

भुंढीर [दे] ऊपर देखो (दे ६, १०६)।

भुंभल न [दे] मद्य-पात्र (कम्म १, ५२)।

भुंढडि (अप) देखो भूमि (हे ४, ३६५)।

भुक्क अक [वुक्] भूकना, खान का बोलना। भुक्क (गा ६६४ अ)।

भुक्कण पुं [दे] १ खान, कुत्ता। २ मद्य आदि का मान (दे ६, ११०)।

भुक्खिअ न [वुक्खित्] खान का शब्द (पाम, पि २०६)।

भुक्खिर वि [वुक्खित्] भूकनेवाला (कुमा)।

भुक्खा स्त्री [दे वुभुक्खा] भूख, बुधा (दे ६, १०६, णाया १, १—पत्र २८, महा, उप ३७६, आरा ६६, सम्मत १५७)।
°लु वि [°वत्] भूखा (धर्मवि ६६)।

भुक्खिअ वि [दे वुभुक्खित्] भूखा, बुधातुर (पाम, कुप्र १२६, सुपा ५०१, उप ७२८ टी, स ५८३, वै २६)।

भुग्गुभुग्ग अक [भुग्गुभुग्गाय्] 'भुग्' 'भुग्' आवाज करना। वक्क भुग्गुभुग्गंत (पठम १०५, ५६)।

भुग्ग वि [भुग्ग] १ मोटा हुआ, वक्क, कुटिल (णाया १, ८—पत्र १३३, उवा)। वि. भग्न, टूटा हुआ (णाया १, ८)। ३ दग्ध, जना हुआ; 'कि मज्झ जीविएण एवविहपरा-भवग्गिभुग्गाए' (उप ७६८ टी)। ४ मूना हुआ, 'चण्डव्व भुग्गु' (कुप्र ४३२)।

भुज (अप) देखो भुंज। भुजड (सण)।

भुजंग देखो भुअग (भवि)।

भुजग देखो भुअग = भुजग (धर्मवि १२४)।

भुज देखो भुंज भुज्जड (पड)।

भुज पुं [भूर्ज] १ वृक्ष-विशेष। २ न. वृक्ष-विशेष की छाल (कप्पु; उप ४ १२७, सुपा २७०)। °पत्त, °वत्त न [°पत्र] वही अर्थ (भावम, नाट. विक्र ३३)।

भुज देखो भुंज।

भुज वि [भूयस्] प्रभूत, अनल्प (श्रीप, पि ४१४)।

भुजिय वि [दे भुज] १ मूना हुआ घान्य। २ पुं घाना, मूना हुआ यव (पण्ह २ ५—पत्र १४८)।

भुजो अक [भूयस्] फिर, पुन (उवा; सुपा २७२)।

भुण्ण पुं [भ्रूण] १ स्त्री का गर्भ। २ बालक, शिशु (सज्जि १७)।

भुत्त वि [भुत्त] १ भक्षित (णाया १, १, उवा, प्राप् ३८)। २ जिसने भोजन किया हो वह, 'ते मायरो न भुत्ता' (मुख १, १५, कुप्र १२)। ३ सेवित। ४ अनुभूत, 'अम्म

ताय मए भोगा भुत्ता विसफलोषमा' (उत्त १६, ११, णाया १, १)। ५ न. मक्षण, भोजन, 'हासमुत्तासियाणि य' (उत्त १६, १२)। ६ विष-विशेष (ठा ६)। °भोगि वि [°भोगिन्] जिसने भोगो का सेवन किया हो वह (णाया १, १)।

भुत्तवत्त वि [भुत्तवत्त] जिसने भोजन किया हो वह (पि ३६७)।

भुत्तव्व देखो भुंज।

भुत्ति स्त्री [भुत्ति] १ भोजन (अच्छु १७; अज्जक ८२)। २ भोग (सुपा १०८)। ३ आजीविका के लिए दिया जाता गांव, क्षेत्र आदि गिरास, 'उज्जेणी नाम पुरी दिन्ना तस्स य कुमारभुत्तीए' (उप २११ टी, कुप्र १६६)। °वाल पुं [°पाल] गिरासदार (धर्मवि १५४)।

भुत्तु वि [भोक्त्] भोगनेवाला (आ ६, संवोध ३५)।

भुत्तूण पुं [दे] श्रुत्य, नौकर (दे ६, १०६)।

भुत्तूळ पुं [दे] विल्ली को फेंका जाता भोजन (कप्पु)।

भुम देखो भम = भ्रम। भुमइ (हे ४, १६१, सण)। संक. भुमिवि (अप) (सण)।

भुम स्त्री [भ्रू] सौ, आँख के ऊपर
भुमगा } की रोम राजि (मग; उवा, हे २,
भुमया } १६७, श्रीप, कुमा, पाम, पव
भुमा } ७३)।

भुमिअ देखो भमिअ = भ्रान्त, 'भुमिअवणू' (कुमा)।

भुम्मि (अप) देखो भूमि (पिग)।

भुरडिआ स्त्री [दे] शिवा, शृगाली, मिया-रित (दे ६, १०१)।

भुरडिय } वि [दे] उद्बलित, धूलि-लित,
भुरकुडिअ } 'धूलिभुरडियपुत्तेहि परिगया चि-
भुरहुडिअ } तए ततो' (सुपा २२६, दे ६, १०६), 'भुइभुर (? ह) कुडियगो' (कुप्र २६३, सूत्र क० चूर्णी गा० २८२)।

भुल अक [भ्रश्] १ व्युत्त होता। २ गिरना। ३ भूलना; 'भुल्लति ते मणा मग्गा हा पम्माओ डुरतओ' (आत्म १६, हे ४, १७७)।

मक्ख सक [अक्ष] १ चुपटना, स्नेहान्वित करना । २ घी, तेल आदि स्निग्ध द्रव्य से मालिश करना । मक्खड (पङ्), मक्खति (उप १४७ टी), मक्खज्ज, मक्खेज्ज, (आचा २, १३, २, ३) । हेक्क मक्खेत्तए (कम्) । क्क मक्खियव्व (ओघ ३८५ टी) ।

मक्खण न [अक्षण] १ मक्खन, नवनीत (स २५८, पभा २२) । २ मालिश, अभ्यंग (निच्च ३) ।

मक्खर पु [मस्सर] १ गति । २ ज्ञान । ३ वश वास । ४ छिद्रवाला वस्त्र (सकि १५, पि ३०६) ।

मक्खिअ वि [अक्षित] चुपडा हुआ (पाय, दे ८, ६२, ओघ ३८५ टी) ।

मक्खिअ न [माक्षिक] मक्षिका-संचित मधु (राज) ।

मक्खिआ स्त्री [मक्षिका] मक्खी (दे ६, १२३) ।

मगइअ वि [दे] हस्त-पाशित, हाथ में बांधा हुआ (विपा १, ३—पत्र ४८, ४९) ।

मगण पुं [मगण] छन्द शास्त्र-प्रसिद्ध तीन गुरु अक्षरों की सज्ञा (पिग) ।

मगदतिआ स्त्री [दे] १ मालती का फूल । २ मोगरा का फूल, 'कुमुअ वा मगदतिअ' (दस ५, २, १४, १६) ।

मगदनिआ स्त्री [दे मगदन्तिका] १ मेढी या मेहेंदी का गाछ । २ मेढी की पत्ती (दस ५, २, १४, १६) ।

मगर पुं [मकर] १ मगर-मच्छ, जलजन्तु-विशेष (पण १, २, औप, उव, सुर १३, ४२, लाया १, ४) । २ राहु (सुज्ज २०) । देखो मय्यर ।

मगरिया स्त्री [मकरिका] वाद्य-विशेष (राय ४६) ।

मगागर स्त्री [मगशिरस्] नक्षत्र विशेष 'कत्थि रोहिणी मगसिर घट्टा य' (ठा २, ३—पत्र ७७) । स्त्री. 'रा, 'दो मगसिराओ' (ठा २, ३—पत्र ७७) ।

मगह देखो मागह । °तिथ्य न [°तीर्थ] तीर्थ-विशेष (इक) ।

मगह } पुं. व. [मगध] देश विशेष (कुमा) ।
मगहग } वरच्छ [वराक्ष] आभरण-विशेष

(औप पृ ४८ टि) । १पुर न [°पुर] नगर-विशेष (महा) । देखो मय्यह ।

मगा अ [द] पश्चात्, पीछे, मराठी में 'मग' (दे १, ४, टी) ।

मगुद देखो मउद = मुकुन्द (उत्तनि ३) ।

मग्ग सक [मार्ग्य] १ भागना । २ खोजना । मग्गह, मग्गति (उव, पङ्, हे १, ३४) । वक्क मग्गत, मग्गमाण (गा २०२, उप ६४८ टी; महा, सुपा ३०८) । संक मग्गेविणु (अप) (अवि) । हेक्क मग्गिउ (महा) । क्क मग्गिअन्न मग्गेयन्न (से १४, २७, सुपा ५१८) ।

मग्ग सक [मग्] गमन करना, चलना । मग्गह (हे ४ २३०) ।

मग्ग पु [मार्ग] १ रास्ता, पथ (ओघ ३४, कुमा, प्रामू ५०, ११७, भग) । २ अन्वेषण, खोज (विसे १३८१) । °ओ अ [°तस्] रास्ते से (हे १ ३७) । °णु वि [°ज] मार्ग का जानकार (उप ६४४) । °द्व वि [°स्य] १ मार्ग में स्थित । २ सोलह से ज्यादा वर्ष की उम्रवाला (सूय २, १, ६) । °द्व वि [°द्व] मार्ग-दर्शक (भग, पडि) । °विउ वि [°चित्] मार्ग का जानकार (ओघ ८०२) । °ह वि [°व] मार्ग-नाशक (श्रु ७४) । °णुसारि वि [°नुसारिन्] मार्ग का अनुयायी (धर्म २) ।

मग्ग पुं [मार्ग] १ आकाश (भग २०, २—पत्र ७७५) । २ आवश्यक-कर्म, सामयिक आदि पट्-कर्म (अणु ३१) ।

मग्ग } पुं [दे] पश्चात्, पीछे (दे ६,
मग्गाअ } १११, से १, ५१, सुर २, ५६,
पाय, भग) ।

मग्गाअ वि [मार्गक] मार्गनेवाला (पउम ६६, ७३) ।

मग्गाण पु [मार्गण] १ याचक (सुपा २४) । २ बाण, शर (पाय) । ३ न अन्वेषण, खोज (विसे १३८१) । ४ मार्गण, विचारणा, पर्यालोचन (औप, विसे १८०) ।

मग्गाण } स्त्री [मार्गणा] १ अन्वेषण,
मग्गाणया } खोज (उप पृ २७६, उप ६६२,
मग्गाणा } ओघ ३) । २ अन्वय-धर्म के पर्यालोचन द्वारा अन्वेषण, विचारणा, पर्यालोचना (कम्म ४, १, २३, जीवस २) ।

मग्गाणया स्त्री [मार्गणा] ईहा-ज्ञान, ऊहापोह (एदि १७५) ।

मग्गाणिर वि [दे] अनुगमन करने की आदतवाला (दे ६, १२४) ।

मग्गासिर पुं [मार्गशिर] मास-विशेष, मगसिर मास, अग्रहन (कप्प, हे ४, ३५७) ।

मग्गासिरी स्त्री [मार्गशिरी] १ मगसिर मास की पूर्णिमा । २ मगसिर की अमावस (मुज्ज १०, ६) ।

मग्गिअ वि [मार्गित] १ अन्वेषित, गवेषित (से ६, ३६) । २ मार्ग हुआ, याचित (महा) ।

मग्गिर त्रि [मार्गयितृ] खोज करनेवाला (सुपा ५८) ।

मग्गिह वि [दे] पश्चात्, पीछे का (विसे १३२६) ।

मग्गु पु [मद्गु] पक्षि-विशेष, जल काक (सूय १, ७, १५, हे २, ७७) ।

मघ पुं [मघ] मेघ (भग ३, २, पण २) ।

मघमघ अक [प्र + सृ] फैलना, गन्व का पसरना, गुजराती में 'मघमघवु', मराठी में 'मघमघें' । वक्क मघमघंत, मघमघित, मघमघेंत (सम १३७, कप्प, औप) ।

मघव पुं [मघवन्] १ इन्द्र, देव-राज (कप्प, कुमा ७, ६४) । २ तृतीय चक्रवर्ती राजा (सम १५२, पउम २०, १११) ।

मघवा स्त्री [मघवा] छठवीं तरक-भूमि, 'मघव ति माघवति य पुढवीण नामवेयाई' (जीवस १२) ।

मघा स्त्री [मघा] १ ऊपर देखो (ठा ७—पत्र ३८८, इक) । २ देखो महा = मघा (राज) ।

मघोण पुं [दे मघवन्] देखो मघव (पङ्, पि ४०३) ।

मच्च अक [मच्च] गवं करना । मच्चद (पङ्, हे ४, २२५) ।

मच्च (अप) देखो मच, 'मकुणमच्चइ सुत्त वराई' (अवि) ।

मच्च न [दे] मल, मैल (दे ६, १११) ।

मच्च } पुं [मत्त्य] मनुष्य, मानुष (स
मच्चिअ } २०८, रंभा, पाय, सूय १, ८,
२, आचा) । °लोअ पु [°लोक] मनुष्य-

(इक, ठा २, ३—पत्र ८४) । २ राजा कृष्ण का पट्ट-हस्ती (भग १७, १) । 'जटप्पह पुं [°नन्दप्रभ] भूतानन्द इन्द्र का एक उत्पात-पर्वत (राज) । 'वाय देखो 'वाय (विसे ५५१, पव ६२ टी) ।

भूअण्ण पुं [दे] जोती हुई खल-भूमि में किया जाता यज्ञ (दे ६, १०७) ।

भूआ लो [भूता] १ एक जैन साध्वी, महर्षि स्थूलभद्र की एक भगिनी (कप्प, पडि) । २ इन्द्राणी की एक राजधानी (जीव ३) ।

भूइ लो [भूति] १ संपत्ति, धन, दौलत, 'ता परदेसं गतु विद्वित्ता भूरिभूइपण्णार' (सुर १, २२३, सुपा १४८) । २ भस्म, राख, 'जारमसाणसमुत्तभवभूइसुहृप्फसविज्जि-रणीए' (गा ४०८, स ६, गडह) । ३ महा-देव के अंग की भस्म, 'भूइभूसियं हरसरीरं व' (सुपा १४८, ३६३) । ४ वृद्धि (सूअ १, ६, ६) । ५ जीव-रक्षा (उत्त १२, ३३) । 'कम्म पुंन [°कर्मन्] शरीर आदि की रक्षा के लिए किया जाता भस्मलेपन-सूत्रवचनादि (पव ७३ टी, वृह १) । 'पण्ण, 'पन्न वि [°पन्न] १ जीव-रक्षा की बुद्धिवाला (उत्त १२, ३३) । २ ज्ञान की बुद्धिवाला, अनन्त-ज्ञानी (सूअ १, ६, ६) । देखो 'भूई ।

भूइंठ पुं [भूतेन्द्र] भूतों का इन्द्र (पि १६०) ।

भूइह्ठ वि [भूयिष्ठ] अति प्रभूत, अत्यन्त (विसे २०३६, विक्क १४१) ।

भूइह्ठा लो [भूतेष्टा] चतुर्दशी तिथि (प्राह) ।

भूईं देखो भूइ (पव २—११२) । 'कम्मिय वि [°कर्मिक] भूति-कर्म करनेवाला (श्रौप) ।

भूओ अ [भूयस्] १ फिर से, पुन (पउम ६८, २८, पच २, १८) । २ वारंवार, फिर फिर, 'भूओ य अहिलसंत' (उप ६५१) । 'गार पु [°कार] कर्म-बन्ध का एक प्रकार, थोड़ी कर्म-प्रकृति के बन्ध के बाद होनेवाला अधिक-प्रकृति-बन्ध (पच ५, १२) ।

भूओद पुं [भूतोद] समुद्र-विशेष (सुज १६) ।

भूओवघाइय वि [भूतोपघातिन् °क] जीवों की हिंसा करनेवाला (सम ३७, श्रौप) ।

भूइह्डी (अप) देखो भूमि (दे ४, ३६५ टि) ।

भूण देखो भुण्ण (सप्ति १७, सम्मत्त ८६) ।

भूज देखो भुज्ज = भूर्ज (प्राकृ २६) ।

भूप देखो भू-व (वव १) ।

भूमआ देखो भुमया (प्राप्र) ।

भूमणया लो [दे] स्थगन, आच्छादन (वव १) ।

भूमि लो [भूमि] १ पृथिवी, धरती (पउम ६६, ४८, गडह) । २ क्षेत्र (कुमा) । ३ स्थल, जमीन, जगह, स्थान (पाअ, उवा, कुमा) । ४ काल, समय (कप्प) । ५ माल, मजिला, तला, 'सत्तभूमिय पासायभवण' (महा) । 'कप पु [°कम्प] भू-कम्प (पउम ६६, ४८) । 'भिह्, 'वर न [°गृह] नीचे

का घर, भुइघरा, तहलाना (आ १६, महा) । 'गोयरिय वि [°गोचरिक] स्थलचर, मनुष्य आदि (पउम ५६, ५२) । लो. 'री (पउम ७०, १२) । 'च्छत्त न [°च्छत्र] वनस्पति-विशेष (दे) । 'तल न [°तल] धरा-गुष्ठ, भूतल (सुर २, १०५) । 'देव पु [°देव] ब्राह्मण (मोह १०७) । 'फोड पु [°स्फोट] वनस्पति-विशेष (जो ६) । 'फोडी लो [°स्फोटी] एक प्रकार का जहरीला जन्तु, 'पासवणं कुणमाणो दट्ठो गुज्जम्मि भूमि-फोडीए' (सुपा ६२०) । 'भाग पुं [°भाग] भूमि प्रदेश (महा) । 'रुह पुंन [°रुह] भूमिस्फोट, वनस्पति-विशेष (आ २०, पव ४) । 'वइ पु [°पति] राजा (उप पु १८८) । 'वाल पुं [°पाल] राजा (गडह) । 'सुअ पुं [°सुत] मगल-ग्रह (मृच्छ १४६) । 'हर देखो 'घर (महा) । देखो भूमी ।

भूमिआ लो [भूमिका] १ तला, मंजिल, माल (महा) । २ नाटक में पात्र का वेशान्तर-ग्रहण (कप्प) ।

भूमिद पुं [भूमीन्द्र] राजा, नरपति (सम्मत्त २१७) ।

भूमिपिसाय पुं [दे. भूमिपिशाच] ताल वृक्ष, ताड का पेड़ (दे ६, १०७) ।

भूमी देखो भूमि (से १२, ८८, कप्प, पिड ४४८, पउम ६४, १०) । 'तुडयकूड न [°तुडगकूट] एक विद्याधर-नगर (इक) । 'भुयग पुं [°भुजङ्ग] राजा (मोह ८८) ।

भूमीस पुं [भूमीश] राजा (आ १२) ।

भूमीसर पु [भूमीश्वर] राजा (सुपा ५०७) ।

भूयिह्ठ देखो भूइह्ठ (हास्य १२३) ।

भूरि वि [भूरि] १ प्रचुर, अत्यन्त, प्रभूत (गडह, कुमा, सुर १, २४८, २, ११४) ।

२ न स्वर्ण, सोना । ३ घन, दौलत (साधं ८४) । 'स्सव पु [°श्रवस्] एक चन्द्र-वशीय राजा, भूरिश्रवा (नाट—वेणी ३७) ।

भूस सक [भूषय्] १ सजावट करना । २ शोभाना, अलंकृत करना । भूसेमि (कुमा) । वहु भूसयत (रभा) । कृ भूस (रंभा) ।

भूसण न [भूपण] १ अलंकार, गहना (पाअ, कुमा) । २ सजावट । ३ शोभा-करण (पराह २, ४, सण) ।

भूसा लो [भूषा] ऊपर देखो (दे ३, ८, कुमा) ।

भूसिअ वि [भूपित] मण्डित, अलंकृत (गा ५२०, कुमा, काल) ।

भूहरी लो [दे] तिलक-विशेष (सिरि १०२२) ।

भे अ [भोस्] आमन्त्रण-सूचक अव्यय (श्रौप) ।

भेअ पुन [भेद] १ प्रकार, 'पुढविभेआइ इचाई' (जो ४, ५) । २ विशेष, पार्थक्य (ठा २, १, गडह, कप्प) । ३ एक राज-नीति, फूट, 'दाणमाणोवयारेहि सामभेआइएहि य' (प्रासू ६७), 'सामदडमेयवप्पयाणणीइ-सुप्पत्तणयविहिन्त' (णाय १, १—पत्र ११) । ४ धाव, आघात, 'वड्ढ ति वम्मह-विहणसण्णमार ताण पयासइ ललु' चित्र चित्तभेओ' (कप्प) । ५ मण्डल का अन्त-राल, बीच का भाग,

'पडिवत्तीओ उदए तह अत्यमणेसु य । भेयवा(?) धाओ करणकला

मुहुत्ताण गतीति य ॥'

(सुज १, १) ।

६ विच्छेद, पृथक्करण, विदारण (श्रौप, अणु) । 'कर वि [°कर] विच्छेद-कर्ता (श्रौप) । 'वाय पु [°घात] मंडल के बीच में गमन (सुज १, १) । 'समावन्न वि [°समापन्न] भेद-प्राप्त (भग) ।

°गेवेज्जय न [°गैवेयक] देवलोक्-विशेष (इक) । °ट्ठिअ वि [°स्थित] तटस्थ, मध्यस्थ (रयण ४८) । °ण्ण, °ण्ह पुं [°ह] दिन का मध्य भाग, दोपहर (प्राप्त, प्राक् १८, कुमा, अग्नि ५५, हे २, ८४, महा) । २ न. तप विशेष, पूर्वाध्वं तप (संवोध ५८) । °ण्हतरु पुं [°हतरु] वृक्ष-विशेष, मज्झिम्ह मग्ग मे अण्यन्त फूलनेवाले लाल रंग के फूलवाला वृक्ष (कुमा) । °त्थ वि [°स्थ] तटस्थ (उव, उप ६४८ टी, सुर १६, ६५) । २ बीच में रहा हुआ (सुपा २५७) । °देस देखो °एस (सुर ३, १६) । °अ देखो °ण (हे २, ८४, सण) । °म वि [°म] मध्य का, मझला, बीच का (भग, नाट—विक्र ५) । °रत्त पुं [°रात्र] निशीथ (उप १३६, ७२८ टी) । °रयणि स्त्री [°रजनि] मध्य रात्रि (स ६३६) । °लोक पुं [°लोक] मेरु पर्वत (राज) । °वत्ति वि [°वर्तिन्] अन्तर्गत (मोह ६४) । °वालिअ वि [°वलिअ] १ बीच में मुड़ा हुआ । २ चित्त में कुटिल (वज्जा १२) ।

मज्झिम पुं [दे] नापित, नाई, हजाम (दे ६, ११५) ।

मज्झिआर न [दे] गम्भार, मध्य, अन्तराल (दे ६, १२१, विक्र २८, उव, गा ३, विसे २६६१, सुर १, ४५, सुपा ४६, १०३, खा १), 'अमोगवणिआइ मज्झियारम्मि' (भाव ७) ।

मज्झित्तिअ न [दे] मध्यन्दिन, मध्याह्न (दे ६, १२४) ।

मज्झदिण न [मध्यन्दिन] मध्याह्न (दे ६, १२४) ।

मज्झमज्झ न [मध्यमध्य] ठीक बीच (भग, विपा १, १, सुर १, २४४) ।

मज्झिआर देखो मज्झिआर (राज) ।

मज्झिण्हिय वि [माध्याह्निक] मध्याह्न-सवन्वी (धर्मा १०५) ।

मज्झित्तय न [माध्यस्थ] तटस्थता, मध्यस्थता (उप ६१५, संवोध ४५) ।

मज्झिमा वि [मध्यम] १ मध्य-वर्ती बीच का (हे १, ४८, सम ४३, उवा, कप्प, औप,

कुमा) । २ पुं. स्वर-विशेष (ठा ७—पत्र ३६३) । °रत्त पुं [°रात्र] निशीथ, मध्य-रात्रि (उप ७२८ टी) ।

मज्झिमगंड न [दे] उदर, पेट (दे ६, १२५) ।

मज्झिमा स्त्री [मध्यमा] १ बीच की रंगली (शोध ३६०) । २ एक जैन मुनि-शाखा (कप्प) ।

मज्झिमेह वि [मध्यम] मध्य-वर्ती, बीच का (अणु) ।

मज्झिमिआ देखो मज्झिमा (कप्प) ।

मज्झिच्च वि [माध्यिक, मध्यम] मझला, बीच का (पव ३६, देवेन्द्र २३८) ।

मट्ट वि [दे] शृङ्ग-रहित (दे ६, ११२) ।

मट्टिआ स्त्री [मृत्तिका] मट्टी, मिट्टी, माटी (णाय १, १, औप, कुमा, महा) ।

मट्टी स्त्री [मृत्, मृत्तिका] ऊपर देखो (जी ४, पडि, दे) ।

मट्टुहिअ न [दे] १ परिणीत स्त्री का कोप । २ वि. कलुष । ३ अशुचि, मैला (दे ६, १४६) ।

मट्ट वि [दे] अलस, आलसी, मन्द, जड़ (दे ६, ११२, पात्र) ।

मट्ट वि [मृष्ट] १ मार्जित, शुद्ध (सूअ १, ६, १२, औप) । २ मखण, चिकना (सम १३७, दे ८ ७) । ३ घिसा हुआ (औप, हे २, १७४) । ४ न. मिरच, मरिच (हे १, १२८) ।

मड वि [दे मृत] १ मरा हुआ, निर्जीव (दे ६, १४१), 'मडोव्व अप्पाण' (वज्जा १४८), 'मडे' (मा) (प्राक् १०३) । °इ वि [°दिन्] निर्जीव वस्तु को खानेवाला (भग) । °सय पुं [°श्रय] शयान (निच ३) ।

मड पु [दे] कंठ, गला (दे ६, १४१) ।

मडं पुं न [दे मडम्ब] ग्राम-विशेष, जिसके चारों ओर एक योजन तक कोई गांव न हो ऐसा गांव (णाय १, १, भग, कप्प, औप, पण्ह १, ३, भवि) ।

मडक्क पुं [दे] १ गवं, अग्निमान, 'न किञ्च वयणु संचलिय मडक्क' (भवि) । २ मटका, कलश, घड़ा, मराठी में 'मडक' (भवि) ।

मडक्किया स्त्री [दे] छोटा मटका, कलश (कुप्र ११६) ।

मडप्प } पुं [दे] गवं, अग्निमान, ग्रहकार
मडप्पर } 'मज्जवि कंदप्पमडप्पलंढणे वह्म
मडप्पर } पडिक्क' (सुपा २६, कुप्र २२१,
२८४, पड्, दे ६, १२०, पात्र, सुपा ६,
प्रास ८५, कुप्र २५५, सम्मत १८६, धम्म
८ टी, भवि, सण) ।

मडभ वि [मडभ] कुञ्ज, वामन (राज) ।

मडमड } अक [मडमडाय] १ मड
मडमडमड } मड आवाज करना । २ सक,
मड मड आवाज हो उस तरह मारना ।
मडमडमडति (पउम २६, ५३) । भवि,
मडमडइशं, मडमडाइश (मा), (पि ५२८,
चाह ३५) ।

मडमडाइअ वि [मडमडायिअ] 'मड' 'मड'
आवाज हो उस तरह मारा हुआ (उत्तर
१०३) ।

मडय न [मृतक] मुढा, मुर्दा, शव (पात्र, हे
१, २०६, सुपा २१६) । °गिह न [°गृह]
कप्प (निच ३) । °चेइअ न [°चैत्य] मृतक
के दाह होने पर या गाढ़ने पर बनाया गया
चैत्य—स्मारक-मन्दिर (आचा २, १०, १६) ।
°डाह पु [°दाह] चिता, जहाँ पर शव फूँके
जाते हो (आचा २, १०, १६) । °शूमिया
स्त्री [°स्तूपिका] मृतक के स्थान पर बनाया
गया छोटा स्तूप (आचा २, १०, १६) ।

मडय पुं [दे] आराम, वगीचा (दे ६, ११५) ।

मडवोच्च्मा स्त्री [दे] शिविका, पालकी (दे ६, १२२) ।

मडह वि [दे] १ लघु, छोटा (दे ६, ११७,
पात्र, सण) । २ स्वल्प, थोड़ा (गा १०५,
स ८, गउड, वज्जा ४२) ।

मडहर पु [दे] गवं, अग्निमान (दे ६, १२०) ।

मडहिय वि [दे] अल्पीकृत, न्यून किया हुआ
(गउड) ।

मडहुल्ल वि [दे] लघु, छोटा, 'मडहुल्लियाए
कि तुह इमीए कि वा दलेहि तल्लिएहि'
(वज्जा ४८) ।

मडिआ स्त्री [दे] समाहत स्त्री, आहत महिला
(दे ६, ११४) ।

मडुवइअ वि [दे] १ हत, विष्वस्त । २
तीक्ष्ण (दे ६, १४६) ।

मडु सक [मृदु] मर्दन करना । मडुइ (हे ४,
१२६; प्राक् ६८) ।

भोइ वि [भोजिन्] भोजन करनेवाला (आचा, पिंड १२०, उव) ।

भोइ देखो भोगि (सुपा ४०४, संबोध ५०, पिण, रंभा) ।

भोइ } पु [दे भोगिन्, °क] १ ग्रामा-
भोइअ } ध्यक्ष, ग्राम का मुखिया, गाँव का
नायक (वव ७, दे ६, १०८, उत्त १५, ६,
बृह १, ओषमा ४३, पिंड ४३६, सुख १,
३, पव २६८, भवि, सुपा १६५, गा ५५६) ।
२ महेश (पड्) ।

भोइअ वि [भोगिक] १ भोग युक्त, भोगासक्त,
विलासी (उत्त १५, ६, गा ५५६) । २
भोग-वंश में उत्पन्न (उत्त १५, ६) ।

भोइअ वि [भोजित] जिसको भोजन कराया
गया हो वह (सुर १, २१४) ।

भोइणी छी [दे भोगिनी] ग्रामाध्यक्ष की
पत्नी (पिंड ४३६, गा ६०३, ७३७, ७७६,
निचू १०) ।

भोइया } छी [भोग्या] १ भार्या, पत्नी,
भोई } छी (बृह १, पिंड ३६८) । २
वेश्या (वव ७) ।

भोई देखो भो° = भवत् ।

भोइ देखो भुंङ (गा ४०२) ।

भोक्ख° देखो भुंज ।

भोग पुन [भोग] १ स्पर्श, रस आदि विषय,
उपभोग्य पदार्थ; 'छवी भते भोगा अछवी'
(भग ७, ७—पत्र ३१०), 'भोगभोगाइ
भु जमाणे विहरह' (विपा १, २) । २ विषय-
सेवा (भग ६, ३३, औप), 'भुजता बहुविहाई
भोगाइ' (सथा २७) । ३ मदन-व्यापार, काम-
चेष्टा, कामभोगे यं खलु मए अप्पाहट्टु' (सूअ
२, १, १२) । ४ विषयेच्छा, विषयामिलाप
(आचा) । ५ विषय-सुख, 'चइत्तु भोगाई
असासयाई' (उत्त १३, २०), 'तुच्छा य
कामभोगा' (प्रासू ६६), 'अहिभोगे विय भोगे
निहणव घणं मलव कमलपि मलता' (सुपा
८३) । ६ भोजन, आहार (पचा ५, ४,
उप २०७) । ७ गुरु-स्थानीय जाति-विशेष,
एक क्षत्रिय-कुल (कण्, सम १५१, ठा ३,
१—पत्र ११३, ११४) । ८ अमात्य आदि
गुरु-स्थानीय लोक, गुरु-वंश में उत्पन्न (औप) ।

६ शरीर, देह (तंदु २०) । १० सर्प की
फणा (सुपा) । ११ सर्प का शरीर (दे ६,
८६) । °करा देखो भोगकरा (इक) । °कुल
न [°कुल] पूज्य-स्थानीय कुल-विशेष (पि
३६७) । °पुर न [°पुर] नगर-विशेष
(भावम) । °पुरिस पुं [°पुरुष] भोग-तत्पर
पुरुष (ठा ३, १—पत्र ११३, ११४) ।

°भागि वि [°भागिन्] भोग-शाली
(पठम ५६, ८८) । °भूम वि [°भूम]
भोग-भूमि में उत्पन्न (पठम १०२, १६६) ।
°भूमि छी [°भूमि] देवकुह आदि अकर्म-
भूमि (इक) । °भाग पुंन [°भोग] भोगाहं
शब्दादि-विषय, मनोज्ञ शब्दादि (भग ७, ७,
विपा १, ६) । °मालिणी छी [°मालिनी]
अधोलोक में रहनेवाली एक दिक्कुमारी
देवी (ठा ८, इक) । °राय पुं [°राज]
भोग-कुल का राजा (दस २, ८) । °वइया
छी [°वतिऋ] लिपि-विशेष (पण १—
पत्र ६२), 'भोगवयता (?इया)' (सम ३५) ।
°वई छी [°वती] १ अधोलोक में रहनेवाली
एक दिक्कुमारी देवी (ठा ८, इक) । २ पक्ष
की हूमरी, सातवीं और बारहवीं रात्रि-तिथि
(सुज १०, १५) । °विस पुं [°विष] सर्प
की एक जाति (पण १—पत्र ५०) ।

भोगकरा छी [भोगकरा] अधोलोक में रहने-
वाली एक दिक्कुमारी देवी (ठा ८) ।

भोगा छी [भोगा] देवी-विशेष (इक) ।

भोगि पुं [भोगिन्] १ सर्प, साँप (सुपा
३६६, कुप्र २६८) । २ पुन शरीर, देह
(भग २, ५, ७, ७) । ३ वि भोग-युक्त,
भोगासक्त, विलासी (सुपा ३६६, कुप्र
२६८) ।

भोगा }
भोष्ठा }
भोच्छ° } देखो भुंज ।
भोज्ज }

भोट्ट पुं [भोटान्त] १ देश-विशेष, नेपाल
के समीप का एक भारतीय देश, भोटान ।
२ भोटान का रहनेवाला (पिण) ।

भोण देखो भोअण (पड्) ।

भोत्त देखो भुत्त (पड्, सुख २, ६, सुपा
४६५) ।

भोत्तए } देखो भुंज ।
भोत्तव्व }

भोत्ता देखो भू = भुव = भू ।

भोत्त वि [भोक्वृ] भोगनेवाला (विस
१५६६, दे २, ४८) ।

भोत्तु } देखो भुंज ।
भोत्तूण }

भोत्तूण देखो भुत्तूण (दे ६, १०६) ।

भोदूण देखो भू = भुव = भू ।

भोम वि [भौम] १ भूमि-सम्बन्धी (सूअ १,
६, १२) । २ भूमि में उत्पन्न (ओष २८,
जी ५) । ३ भूमि का विकार (ठा ८) ।
४ पु. मगल-ग्रह (पाअ) । ५ पु नगराकार
विशिष्ट स्थान । ६ नगर (सम १५, ७८) ।
७ निमित्त शास्त्र-विशेष, भूमि-कम्पादि से
शुभाशुभ फल बतलानेवाला । शास्त्र (सम
४६) । ८ अहोरात्र का सत्ताईसवां मुहूर्त,
'अणव च भोग (? म)रिसहे' (सुज १०,
१३) । °लिय न [°लीक] भूमि सम्बन्धी
मुणवाद (पणह १, २) ।

भोमिज्ज देखो भोमेज्ज (सम २, उत्त २३६,
२०३) ।

भोमिर देखो भमिर, 'लब्धइ णाइअणते
समार सुभोमिरो जीवो' (संबोध ३२) ।

भोमेज्ज } वि [भौमेय] १ भूमि का विकार,
भोमेयरा } पाथिव (सम १००, सुपा ४८) ।

२ पु एक देव-जाति, भवनपति नामक देव-
जाति (सम २) ।

भोरुड पुं [दे] भारंड पक्षी (दे ६, १०८) ।

भोल सक [दे] ठगना (सुपा ५२२) ।

भोल वि [दे] भद्र, सरल चित्तवाला, गुजराती
में 'भोलु' । छी. °ला, °लिया (महानि ६,
सु, ५१४) ।

भोलग पुं [भोलक] यक्ष-विशेष, 'भोलगनामा
जखो अमिर्विद्ययसिद्धिदा अत्यि' (धर्मसं
१४१) ।

भोलव सक [दे] ठगना, गुजराती में
'भोलवु' । संक्र. भोलविउ (सुपा २६४) ।

भोलवण न [दे] वञ्चन, प्रतापण (सम्मत
२२६) ।

भोलविय } वि [दे] वञ्चित, ठगा हुमा
भोलिअ } (कुप्र ४३५, सुपा ५२२) ।

विशेष (विपा २, ६) । °चूड पुं [°चूड] एक विद्या-धर नृप (महा) । °जाल न [°जाल] भूषण-विशेष, मणि-माला (श्रीप) । °तोरण न [°तोरण] नगर-विशेष (महा) । °प देखो °व (से ६, ४३) । °पेढिया स्त्री [°पीठिका] मणि-मय पीठिका (महा) । °पभ पुं [°प्रभ] एक विद्याधर (महा) । °भद्र पु [°भद्र] एक जैन मुनि (कप्प) । °भूमि स्त्री [°भूमि] मणि खचित जमीन (स्वप्न ५४) । °मइय, °मय वि [°मय] मणि-मय, रत्न निवृत्त (सुपा ६२, महा) । °रह पु [°रथ] एक राजा का नाम (महा) । °व पु [°प] १ यक्ष । २ सर्प, नाग (से २, २३) । ३ समुद्र (से ६, ५०) । °वई स्त्री [°मती] नगरी-विशेष (विपा २, ६—पत्र ११४ टि) । °वध पु [°वन्ध] हाथ और प्रकोष्ठ के बीच का अवयव (सण) । °वाल्य पु [°पालक, °वालक] समुद्र (ने २, २३) । °सलागा स्त्री [°शलाका] मद्य-विशेष (राज) । °हियय पु [°हृदय] देव-विशेष (दीव) ।

मणिअ न [मणित] संभोग-समय का स्त्री का अव्यक्त शब्द (गा ३६२, रभा) ।

मणिअ देखो मणय (पड्, हे २, १६६, कुमा) ।

मणिअड (अप) पु [मणि] माला का सुमेर (हे ४, ४१४) ।

मणिच्छिअ वि [मनईप्सित] मनोऽभीष्ट (सुपा ३८४) ।

मणिज्जमाण देखो मण = मन् ।

मणिट्ट वि [मनइष्ट] मन को प्रिय (भवि) ।

मणिगायहर न [दे मणिनागगृह] समुद्र, सागर (दे ६, १२८) ।

मणिरइआ स्त्री [दे] कटीसूत्र (दे ६, १२६) ।

मणीसा स्त्री [मनीपा] बुद्धि, मेधा, प्रज्ञा (पात्र) ।

मणीसि वि [मनीपिन्] बुद्धिमान्, परिहृत (कप्प) ।

मणीसिद वि [मनीषित] वाञ्छित (नाट—मृच्छ ५७) ।

मणु पु [मनु] १ स्मृति-कर्ता मृनि-विशेष (विसे १५०८, उप १५० टी) । २ प्रजापति-

विशेष, 'चोहमणुचोगुणओ' (कुमा, राज) । ३ मनुज, मनुष्य, 'देवताओ मणुत्त' (पउम २१, ६३, कम्म १, १६, २ १६) । ४ न, एक देव-विमान (सम २) ।

मणुअ पुं [मनुज] १ मनुष्य, मानव (उवा, भग, हे १, ८; पात्र, कुमा, स ८२, प्रामू ४५) । २ भगवान् श्रेयासनाथ का शासन-यक्ष (मति ७) । ३ वि मनुष्य सम्बन्धी, 'तिरिया मणुया य दिव्यगा उवमगा तिविहाहिया-सिया' (सूत्र १, २, २, १५) ।

मणुइद पु [मनुजेन्द्र] राजा, नरपति (पउम ८५, २२, सुर १, ३२) ।

मणुई स्त्री [मनुजी] मनुष्य-स्त्री, नारी, महिला (एदि १२६ टी) ।

मणुएसर पु [मनुजेश्वर] ऊपर देखो (सुपा २०४) ।

मणुज्ज } वि [मनोज] सुन्दर, मनोहर
मणुण्ण } (पात्र, उप १४२ टी, सम १४६, भग) ।

मणुस } पुस्त्री [मनुष्य] १ मानव, मर्त्य
मणुस्स } (आचा, पि ३००, आचा, ठा ४, २, भग, आ २८, सुपा २०३, जी १६, प्रासू २८) । स्त्री °स्सी (भग, पण १८, पत्र २४१) । °खेत्त न [°क्षेत्र] मनुष्य-लोक (जीव ३) । °सेणियापरिकम्म पु [°श्रेणिकापरिकर्मन्] दृष्टिवाद का एक सूत्र (सम १२८) ।

मणुस्स वि [मानुष्य] मनुष्य-सम्बन्धी, 'दिव्य व मणुस्स वा तेरिच्छ वा सरागहियएण' (आप २१) ।

मणुस्सिद पुं [मनुष्येन्द्र] राजा, नर-पति (उत्त १८, ३७, उप पृ १४२) ।

मणूस देखो मणुस्स (हे १, ४३, श्रीप, उवर १२२, पि ६३) ।

मणे अ [मन्ये] विमर्श-सूचक अव्यय (हे २, २०७, पड्, प्राकृ २६, गा १११, कुमा) ।

मणो° देखो मण = मन्सु । °गम न [°गम] देवविमान-विशेष, 'पालगपुप्फगसोमणससिरि-वच्छन्दिवावत्तकामगमपीतिगममणोगमविमल-सव्वओमहससिसनामधेज्जेहि विमाणेहि ओ-इएणा' (अप) । °ज्ज वि [°ज्ञ] १ सुन्दर, मनोहर (हे २, ८३, उप २६४ टी) । २

पुं. गुल्म-विशेष, 'सरियए खोमालियकोरिट्य-वत्थुजीवगमणोज्जे' (पण १—पत्र ३२) । °ण्ण, °ज्ज वि [°ज्ञ] सुन्दर, मनोहर (हे २, ८३, पि २७६) । °भव पुं [°भव] कामदेव, कन्दर्प (सुपा ६८; पिग) । °भिरमणिज्ज वि [°भिरमणीय] सुन्दर, चित्ताकर्षक (पउम ८, १४३) । °भू पुं [°भू] कामदेव, कन्दर्प (कप्प) । °मय वि [°मय] मानसिक; 'सारोरमणोमयाणि दुम्हाणि' (पण १, ३—पत्र ५५) । °माणसिय वि [°मानमिक] मन मे हो रहनेवाला—वचन से अप्रकटित—मानसिक दुःख आदि (णाय १, १, —पत्र २६) । °रम वि [°रम] १ सुन्दर, रमणीय (पात्र) । २ पुं एक विमानेन्द्रक, देवविमान विशेष (देवेन्द्र १३६) । ३ मेरु पर्वत (मुज्ज ५) । ४ राक्षस-चरा का एक राजा, एक लका-पति (पउम ५, २६५) । ५ किन्नर-देवों की एक जाति । रुक्क द्वीप का अधिष्ठाया देव (राज) । ७ तृतीय त्रैवेयक-विमान (पव १६४) । ८ आठवें देवलोक के इन्द्र का पारियानिक विमान (इक) । ९ एक देव-विमान (सम १७) । १० मिथिला का एक चैत्य (उत्त ६, ८, ६) । ११ उपवन-विशेष (उप ६८६ टी) । °रमा स्त्री [°रमा] चतुर्थ वायु-देव की पटरानी का नाम (पउम २०, १८६) । २ भगवान् सुपाशनाथ की दीक्षा-शिविका (सुपा ७५, विचार १२६) । ३ शक्र की अञ्जुका नामक इन्द्राणी की एक राजधानी (इक) । °रह पुं [°रथ] १ मन का अभिलाष (श्रीप, कुमा, हे ४, ४१४) । २ पक्ष का तृतीय दिवस (मुज्ज १०, १४—पत्र १४७) । °हंस पुं [°हस] छन्द-विशेष (पिग) । °हर पुं [°हर] १ पक्ष का तृतीय दिवस (मुज्ज १०, १४) । २ छन्द-विशेष (पिग) । ३ वि. रमणीय, सुन्दर (हे १, १५६, पड्, स्वप्न ५२, कुमा) । °हरा स्त्री [°हरा] भगवान् पद्मप्रभ की दीक्षा-शिविका (विचार १२६) । °हव देखो °भव (स ८१, कप्प) । °हिराम वि [°भिराम] सुन्दर (भवि) ।

मणोसिला देखो मणंसिला (हे १, २६, कुमा) ।

मण्ण देखो मण = मन् । मण्णइ (पि ४८८) ।

मई स्त्री [दे] मदिरा, दारू (दे ६, ११३) ।
मई स्त्री [मृगी] हरिणी, हरिण की मादा,
हिरनी (गा २८७, से ६, ८०, दे ३, ४६,
कुप्र १०) ।

मई देखो मइ = मति । °म, °व वि [°मत्]
बुद्धिवाला (पि ७३, ३६६, उप १४२ टी) ।

मईअ वि [मदीय] मेरा, अपना (पइ,
कुमा, स ४७७, महा) ।

मउ पुं [दे] पर्वत, पहाड़ (दे ६, ११३) ।
मउ } वि [°मृदु, °क] कोमल, सुकुमार
मउअ } (हे १, १२७, पइ, सम ४१, सुर
३, ३७, कुमा) । स्त्री. °उई (प्राकृ २८,
गउड) ।

मउअ वि [दे] दोन, गरीब (दे ६, ११४) ।

मउइअ वि [मृदुकित] जो कोमल बना
हो (गउड) ।

मउई देखो मउ = मृदु ।

मउद पु [मुकुन्द] १ विष्णु, श्रीकृष्ण
(राय) । २ वाद्य-विशेष, 'तुंदुहिमउदमदल-
तिलिमापमुहेण तूरमदेण' (सुर ३, ६८),
'महामउदसठाणसठिण' (भग) ।

मउक देखो माउक = मृदुव (पइ) ।

मउड पुन [मुकुट] शिरो-भूषण, किरोट,
सिरपेंच (पव ३८, हे १, १०७, प्राप्र,
कुमा, पाप्र, औप) ।

मउड } पुं [दे] घम्मिल्ल, कवरी, जूट,
मउडि } जूड़ा (पाप्र, दे ६, ११७) ।

मउण देखो मोण (हे १, १६२, चड) ।

मउर पुंन [मुकुर] १ बाल-पुष्प, फूल की
कली, बौर (कुमा) । २ दर्पण, आईना,
शीशा । ३ कुलाल-दण्ड । ४ बकुल का पेड़ ।
५ मल्लिका-वृक्ष । ६ कोली-वृक्ष । ७ ग्रथि-
पर्ण-वृक्ष, चोरक (हे १, १०७, प्राकृ ७) ।

मउर } पु [दे] वृक्ष-विशेष, अपामार्ग,
मउरद } ओगा, लट्जीरा, चिरचिरा (दे ६,
११८) ।

मउल देखो मउड = मुकुट (से ४, ५१) ।

मउल पुंन [मुकुल] थोड़ी विकसित कली,
कलिका, बौर (रमा २६) । २ देह, शरीर ।
३ आत्मा, 'मउल, मउलो' (हे १, १०७,
प्राप्र) ।

मउल अक [मुकुलय्] सकुचना, संकुचित
होना, 'मउलेंति णअणाइ' (गा ५) । वक्र
मउलत, मउलित (से ११, ६२, पि ४६१) ।
मउलण न [मुकुलन] सकोच, 'जं चेअ
मउलण लोअणाण' (हे २, १८४, विसे
११०६, गउड) ।

मउलाअ अक [मुकुलय्] १ सकुचना । २
सक सकुचित करना । वक्र मउलाअंत
(नाट—मालती ५४, पि १२३) ।

मउलाइय वि [मुकुलित] सकुचाया हुआ,
सकुचित (वजा १२६) ।

मउलाव देखो मउलाअ । कर्म. मउलाविजित
(पि १२३) । वक्र. मउलावेत (पउम १५,
८३) ।

मउलावअ वि [मुकुलायक] सकुचित करने-
वाला, 'हरिसविसेसो त्रियसावओय मउलावओ
य अच्छीण' (गउड) ।

मउलाविय देखो मउलाइय (उप पृ ३२१,
सुपा २००, भवि) ।

मउलि पुस्त्री [दे] हृदय रस का उच्छलन
(दे ६, ११५) ।

मउलि पुं [मुकुलित्] सर्व-विशेष (पणह १,
१—पत्र ८, पणण १—पत्र ५०) ।

मउलि पुस्त्री [मौलि] १ किरोट, मुकुट, शिरो-
भूषण (पाप्र) । २ मस्तक, सिर (कुप्र ३८६,
कुमा, अजि २२, अचु ३४) । ३ शिरो-
वेष्टन विशेष, एक तरह की पगड़ी (पव ३८) ।
४ बूड़ा, चोटी । ५ सयत केश । ६ पु
अशोक वृक्ष । ७ स्त्री. भूमि, पृथिवी (हे १,
१६२, प्राकृ १०) ।

मउलिअ वि [मुकुलित] १ सकुचित (सुर
३, ४५, गा १२३, से १, ६५) । २ मुकुला-
कार किया हुआ (औप) । ३ एकत्र स्थित
(कुमा) । ४ मुकुल-युक्त, कलिका-सहित
(राय) ।

मउवी देखो मउई (हे २, ११३, कुमा) ।

मऊर पुंस्त्री [मयूर] पक्षि-विशेष, मोर (प्राप्र,
हे १, १७१, राया १, ३) । स्त्री. °री
(विपा १, ३) । °माल न [°माल] एक
नगर (पउम २७, ६) ।

मऊरा स्त्री [मयूरा] एक रानी, महापद्म
चक्रवर्ती की माता (पउम २०, १४३) ।

मऊइ पु [मयूख] १ किरण, रश्मि (पाप्र) ।
२ कान्ति, तेज । ३ शिखा । ४ शोभा (हे
१, १७१, प्राप्र) । ५ राक्षस वश के एक
राजा का नाम, एक लका-पति (पउम ५,
२६५) ।

मए मक [मदय्] मद-युक्त करना, उन्मत्त
बनाना । वक्र. मएत (से २, १७) ।

मएजारिस वि [मादृश] मेरे जैसा, मेरे
तुल्य, 'मएजारिसाण पुरिसाहमाण इमं
चेवोचिय' (म ३३) ।

म (अप) देखो म = मा (पइ, हे ४, ४१८,
कुमा) । °कार पु [°कार] 'मा' अव्यय (ठा
१०—पत्र ४६५) ।

मंऊड देखो मऊड (आचा) ।

मऊण पु [मत्कुण] खटमल, खुद कीट-विशेष,
युजराती में 'माकण' (जी १६) ।

मकण पुस्त्री [दे मर्कट] बन्दर, वानर । स्त्री
°णी, 'सयमेव मकणीए घणोए त ककणी
वडा' (कुप्र १८५) ।

मकाइ पुं [मक्काति] एक अन्तकृद् महर्षि
(अत १८) ।

मकार पु [मकार] 'म' अक्षर (ठा १०—
पत्र ४६५) ।

मकिअ न [मक्कित] क्रुद्ध कर जाना (दे ८,
१५) ।

मकुण देखो मऊण = मत्कुण (दे, भवि) ।
°हृत्थि पुं [°हृत्थिन्] गरुडोपद प्राणि-विशेष
(पणण १—पत्र ४६) ।

मकुस [दे] देखो मगुस (गा ७८१) ।

मख देखो मक्ख = मक्ख । वक्र मखत
(राज) ।

मख पु [दे] अण्ड, वृषण (दे ६, ११२) ।

मंख पु [मङ्ग] एक मिश्रक जाति जो चित्र-
पट दिखाकर जीवन-निवाह करता है (राया
१, १ टी, औप, पणह २, ४, पिड ३८६,
कण्) । °फल्य न [°फलरु] १ मंख का
तस्त्रा । २ निर्वाह-हेतुक चैत्य (पचा ६,
४५ टी) ।

मखण न [मक्षण] १ मक्खन, 'मखण व
सुकुमालकरचरणा' (उप ६४८ टी) । २
अभ्यंग, मालिश (सुर १२, ८) ।

मन्त्र देखो माण = मानय् । क. मन्त्र, मन्त्राय मन्त्रणिज्ज, मन्त्रियव्व, मन्त्रिय (उप १०३६, धम्मवि ७६, भवि, सुर १०, ३८, सुपा ३६८, ठा १ टी—पत्र २१, सं ३५) ।

मन्त्रा स्त्री [मन्त्र] १ मति, बुद्धि (ठा १—पत्र १६) । २ आलोचन, चिन्तन (सूत्र २ १, ४१, ठा १) ।

मन्त्रा स्त्री [मान्या] श्रम्युपगम, स्वीकार (ठा १—पत्र १६) ।

मन्त्राय देखो मन्त्र = मानय् :

मन्त्राविय वि [मानित] मनाया हुआ (सुपा १५६) ।

मन्त्रिय वि [मत] माना हुआ (सुपा ६०५, कुमा) ।

मन्नु पु [मन्यु] १ क्रोध, गुस्सा (सुपा ६०४) । २ दैन्य, दीनता, 'सोयसमुन्मूयगक्य-मन्नुवमा' (सुर ११, १४४) । ३ अहंकार । ४ शोक, अफसोस । ५ क्रु, यज्ञ (हे २, २५, ४४) ।

मन्नुइय वि [मन्यवित] मन्यु-युक्त, कुपित (सुख ४, १) ।

मन्नुसिय वि [दे] उद्विग्न (स ५६६) ।

मन्ने देखो मण्णे (हे १, १७१, रसा) ।

मप्प न [दे] माप, बाँट, 'तेण य सह वरुणेण आणेवि य तस्स हट्टमप्पाणि' (सुपा ३६२) ।

मव्वभीसडी } (अप) स्त्री [मा भैयी] अभय-
मव्वभीसा } वचन (हे ४, ४२२) ।

ममकार पुं [ममकार] ममत्व, मोह, प्रेम, स्नेह (गच्छ २, ४२) ।

ममच्चय वि [मदीय] मेरा (सुख २, १५) ।

ममत्त न [ममत्व] ममता, मोह, स्नेह (सुपा २६) ।

ममया स्त्री [ममता] ऊपर देखो (पंचा १५, ३२) ।

ममा सक [ममाय्] ममता करना । ममाइ, ममायए (सूत्र २, १, ४२, उव) । वक्क ममायमाण, ममायमीण (आचा, सूत्र २, ६, २१) ।

ममाइ वि [ममत्विन्] ममतावाला (सूत्र १, १, १, ४) ।

ममाइय वि [ममायित] जिसपर ममता की गई हो वह (आचा) ।

ममाय वि [दे] ग्रहण करना । ममायंति (दस ६, ४६) ।

ममाय वि [ममाय] ममत्व करनेवाला (निचु १३) ।

ममि वि [मामक] मेरा, मदीय, 'ममं वा ममि वा' (सूत्र २, २, ६) ।

ममूर सक [चूर्णय्] चूरना । ममूरइ (घात्वा १४८) ।

मम्म पुंन [मर्मन्] १ जीवन-स्थान । २ सन्धि-स्थान (गा ४४६, उप ६६१, हे १, ३२) । ३ मरण का कारण-भूत वचन आदि (आया १, ८) । ४ गुप्त बात (प्रासू ११, सुपा ३०७) । ५ रहस्य, तात्पर्य (धु २८) । ५ वि [ग] मर्म-वाचक (शब्द) (उत्त १, २५, सुख १, २५) ।

मम्मक पु [दे] गर्व, अहंकार (पड्) ।

मम्मक्का स्त्री [दे] १ उत्कण्ठा । २ गर्व (दे ६, १४३) ।

मम्मण न [मन्मन] १ अव्यक्त वचन (हे २, ६१, दे ६, १४१, विपा १, ७, वा २६) । २ वि. अव्यक्त वचन बोलनेवाला (आ १२) ।

मम्मण पुं [दे] १ मदन, कन्दर्प । २ रोप, गुस्सा (दे ६, १४१) ।

मम्मणिआ स्त्री [दे] नील मक्षिका (दे ६, १२३) ।

मम्मर पुं [मर्मर] शुष्क पत्तो की आवाज (गा ३६५) ।

मम्मह पुं [मन्मथ] कामदेव, कन्दर्प (गा ४३०, अभि ६५) ।

मम्मी स्त्री [दे] मामी, मातुल-पत्नी (दे ६, ११२) ।

मय न [मत] मनन, ज्ञान (सूत्र २, १, ५०) । २ अभिप्राय, आशय (ओघनि १६०; सूत्रनि १२०) । ३ समय, दर्शन, धर्म, 'समगो मय' (पात्र, सम्पत्त २२८) । ४ वि. माना हुआ (कम्म ४, ४६) । ५ इष्ट, अभीष्ट (सुपा ३७१) । ६ नु वि [ज्ञ] दार्शनिक (सुपा ५८२) ।

मय पु [मय] १ उष्ट्र, ऊँट (सुख ६, १) । २ अश्वतर, खचर, 'मयमहिससरहकेसरि—'

(पउम ६, ५६) । ३ एक विद्याघर-नरेश (पउम ८, १) । ४ धर पु [धर] ऊँटवाला (सुख ६, १) ।

मय वि [मृत] मरा हुआ, जीव-रहित (आया १, १, उव; सुर २, १८, प्रासू १७, प्राप्र) । ५ किञ्च न [कृत्य] मरण के उपलक्ष में किया जाता आद आदि कर्म (विपा १, २) ।

मय पुन [मद] १ गर्व, अभिमान, 'एवाई मयाइ विणिच घोरा' (सूत्र १, १३, १६, सम १३, उप ७२८ टी, कुमा; कम्म २, २६) । २ हाथी के गण्ड-स्थल से ऋता प्रवाही पदार्थ (आया १, १—पत्र ६५, कुमा) । ३ आमोद, हर्ष । ४ कम्तूरी । ५ मत्तता, नशा । ६ नद, बड़ी नदी । ७ वीर्य, शूक्र (प्राप्र) । ८ करि पुं [करिन्] मदवाला हाथी (महा) । ९ गल वि [कल] १ मद से उत्कट, नरो मे चूर, 'मयगलकुंजरगमणी' (पिंग) । २ पु. हाथी (सुपा ६०; हे १, १८२, पात्र, दे ६, १२५) । ३ छन्द-विशेष (पिंग) । ४ नासणी स्त्री [नाशनी] विद्या-विशेष (पउम ७, १४०) । ५ धम्म पु [धर्म] विद्याघर-वंश के एक राजा का नाम (पउम ५, ४३) । ६ मजरी स्त्री [मजरी] एक स्त्री का नाम (महा) । ७ वारण पुं [वारण] मदवाला हाथी, 'मयवारणो ठ मत्तो निवा-डियालाणवरत्तं' (महा) ।

मय पुं [मृग] १ हरिण (कुमा; उप ७२८ टी) । २ पशु, जानवर । ३ हाथी की एक जाति । ४ नक्षत्र-विशेष । ५ कस्तूरी । ६ मकर राशि । ७ अन्वेषण । ८ याचन, मांग । ९ यज्ञ-विशेष (हे १, १२६) । १० च्छी स्त्री [क्षी] हरिण के नेत्रों के समान नेत्र-वाली (सुर ४, १६, सुपा ३५५, कुमा) । ११ णाह पु [नाथ] सिंह (स १११) । १२ णाहि पुत्री [नाभि] कस्तूरी (पात्र, सुपा २००, गजड) । १३ तण्हा स्त्री [तृष्णा] घृप मे जल-आन्ति (दे, से ६, ३५) । १४ तण्हिआ स्त्री [तृष्णिका] वही अर्थ (पि ३७५) । १५ तण्हा देखो तण्हा (पि ५४) । १६ तिण्हिआ देखो तण्हिआ (पि ५४) । १७ धुत्त पु [धूर्त] शृगाल, सियार (दे ६, १२५) । १८ नाभि देखो णाहि (कुमा) । १९ राय पुं [राज]

मठ वि [टे] १ शठ, लुचा, वदमाश । २ पु
बन्व (दि ६, १११) ।

मड सक [मण्ड] भूपित करना, सजाना ।
मडइ (पड), मडति (पि ५५७) ।

मड सक [दे] १ आगे घटना । २ प्रारम्भ
करना, गुजराती में 'माडवु', 'जो मडइ रण-
भरधुरहो खधु' (भवि) ।

मड पुन [मण्ड] रम, 'तयाणतरं च एं
धयविहिपरिमाणं करेइ, नम्रत्य मारइएण
गोवयमडेण' (उवा) ।

मडअ देखो मडव = मण्डप (नाट—शकु
६८) ।

मडअ पु [मण्डक] लाय-विशेष, मांडा,
मडग } एक प्रकार की रोटी (उप पृ ११५,
पव ४ टी, कुप्र ४३, घमंवि ११६) ।

मडग वि [मण्डक] विभूषक, शोभा बढ़ाने-
वाला, 'ससि च जोइसमुहमडग' ।
(कप्प) ।

मडग न [मण्डन] १ भूषण, भूषा (गडड,
प्रासू १३२) । २ वि विभूषक, शोभा बढ़ाने-
वाला (गडड, कुमा) । ३ 'णी (प्रासू ६४) ।
'धाट् छो [धात्री] आभूषण पहनानेवाली
दासी (रापा १, १—पत्र ३७) ।

मंडल पु [दे. मण्डल] धान, कुत्ता (दे ६,
११४, पाध्र, न ३६८, कुप्र २८०, सम्मत
१६०) ।

मंडल न [मण्डल] १ समूह, यूय (कुमा,
गडड, सम्मत १६०) । २ देश (उप १४२
टी, कुप्र ४६, २८०) । ३ गोल, वृत्ताकार
पदार्थ (कुमा, गडड) । ४ गोल आकार से
वेष्टन (ठा ३, ४—पत्र १६६, गडड) । ५
चन्द्र-सूर्य आदि का चार-क्षेत्र (सम ६६,
गडड) । ६ समार, जगत् (उत्त ३१, ३,
४, ५, ६) । ७ एक प्रकार का कुष्ठ रोग ।
८ एक प्रकार की वृत्ताकार दाद—दुहु (पिड
६००) । ९ विम्ब, 'डज्भइ समिमडलकलस-
दिएणकंठगह मयणो' (गडड) । १० सुभटो
का स्थान विशेष (राज) । ११ मण्डलाकार
परिभ्रमण (सुज १, ७, स ३४६) । १२
इंगित लेय (ठा ७—पत्र ३६८) । १३ पुं-
नरकायाम-विशेष (देवेन्द्र २६) । 'य वि
[वन्] मण्डन मे परिभ्रमण करनेवाला

(सुज १, ७) । 'हिच पुं [विप]
मण्डलावीश (भवि) । 'हिचइ पु
[विपति] वही अर्थ (भवि) ।

मंडल पुन [मण्डल] योद्धा का युद्ध समय का
आसन (वव १) । 'पवेस पु [प्रवेश]
एक प्राचीन जैन शास्त्र (एदि २०२) ।

मंडलग पुन [मण्डलग] तलवार, खड्ग
(हे ३, ३४, भवि) ।

मंडलय पुं [मण्डलक] एक माप, बारह
कर्म-मापको का एक बाँट (अणु १५५) ।

मंडलि पुं [मण्डलिन] १ मण्डलाकार चलता
वायु, चक्र-वात, ववडर (जो ७) । २ माण्ड-
लिक राजा, 'तेवीस तित्यकरा पुव्वमवे
मडलिरायणो हात्या' (सम ४२) । ३ सपं
की एक जाति (पणह १—पत्र ५१) । ४
न. गोत्र-विशेष, जो कौत्स गोत्र की एक
शाखा है । ५ पुंछी उम गोत्र में उत्पन्न (ठा
७—पत्र ३६०) । 'पुरी छो [पुरी] नगर-
विशेष, गुजरात का एक नगर, जो आजकल
भी 'माडल' नाम से प्रसिद्ध है (सुपा ६५६) ।

मंडलिअ वि [मण्डलिन] मण्डलाकार बना
हुआ, 'मंडलियचंडकोदडमुक्कंडोलिखडिय-
सिरेहि' (सुपा ४, वज्जा ६२, गडड) ।

मंडलिअ वि [मण्डलिक, माण्डलिक] १
मण्डलाकारवाला । २ पु मंडल रूप में स्थित
पर्वत विशेष (ठा ३, ४—पत्र १६६, पणह
२, ४) । ३ मण्डलावीश, सामान्य राजा
(रापा १, १, पणह १, ४, कुमा, कुप्र
१२०, महा) ।

मंडली छो [मण्डली] १ पत्ति, श्रेणी, समूह
(से ५, ७६, गच्छ २, ५६) । २ अश्व की
एक प्रकार की गति (मे १३, ६६, महा) ।
३ वृत्ताकार मंडल—समूह (सवोष १७,
उव) ।

मंडलीअ देखो मंडलिअ = मण्डलिक, 'तह
तलवरसेणाहिचकोसाहिमडलीयसामते' (सुपा
७३, ठा ३, १—पत्र १२६) ।

मडव पु [मण्डप] १ विश्राम-स्थान । २
वल्ली आदि से वेष्टित स्थान (जीव ३, स्वप्न
३६, महा, कुमा) । ३ स्नान आदि करने का
गृह, 'न्हाणमंडवसि', 'भोयणमंडवसि' (कप्प,
भीष) ।

मडव न [माण्डव्य] १ गोत्र-विशेष । २ पुत्री
उस गोत्र में उत्पन्न (ठा ७—पत्र ३६०) ।

मडविआ छो [मण्डपिका] छोटा मण्डप
(कुमा) ।

मडव्यायण न [माण्डव्यायन] गोत्र-विशेष
(सुज १०, १६, इक) ।

मडावण न [मण्डन] सजाना, विभूषित
कराना । 'धाट् छो [धात्री] मजनेवालो
दानो (आचा २, १५, ११) ।

मडावण वि [मण्डक] सजानेवाला (तिवू ६) ।

मडिं वि [मण्डित] १ भूषित (कप्प,
मडिअ } कुमा) । २ पुं. भगवान् महावीर के
पण गणधर का नाम (सम १६, विमे
१८०२) । ३ एक चोर का नाम (घमंवि
७२, ७३) । 'कुच्छि पुंन [कुच्छि] चैत्य-
विशेष (उत्त २०, २) । 'पुत्त पु [पुत्त]
भगवान् महावीर का छठवाँ गणधर (कप्प) ।

मडिअ वि [दे] रचित, बनाया हुआ । २
विद्याया हुआ,

'ससारे हयविहिणा महिलाह्वेण मडिए पामे ।
वज्झति जाणमाणा अयाणमाणावि वज्झति ॥'
(रयण ८) ।

३ आगे घरा हुआ, 'मड मडिउ रणभरधुरहो
खधु' (भवि) । ४ आरव्य, 'रणु मडिउ
कच्छाहिवेण ताम' (भवि, सण) ।

मडिह पु [दे] अपूप, पूआ, पक्वान्न-विशेष
(दे ६, ११७) ।

मडी छो [दे] १ पिधानिका, ढकनी (दे ६,
१११, पाध्र) । २ अन्न का अन्न रम, माड ।
३ मांडी, कलप, लेई (आव ४) । 'पाहुडिया
छो [प्राभृतिका] एक मिट्टा-लोप, अन्न के
मांड अथवा मांडी को दूसरे पात्र में रखकर
दो जाती भिक्षा का ग्रहण (आव ४) ।

मंडुक देखो मडूअ (आ २८, पणह १, १,
मडुक } हे २, ६८, पड; पाध्र) ।

मंडुकलिया छो [मण्डुकिा, °की] १ छो
मंडुकिया } मेढक, भेको, दादुरी (उप १४७
मंडुकी } टी, १३७ टी) । २ शाक-
विशेष, वनस्पति-विशेष (उवा, पणह १—
पत्र ३४) ।

मरमाण (गा ३७५, प्रासू ६४, सुपा ४०५, भग, सुपा ६५१, प्रासू ८३) । सक्र, मरिऊण (पि ५८६) । हेक, मरिउ, मरेउ (सक्ति ३४) । कृ, मरियन्व (अत २४, सुपा २१५, ५०१, प्रासू १०६), मरिएन्वडं (अप) (हे ८, ४३८) ।

मर पु [दे] १ मशक । २ उल्लू, धूक (दे ६, १४०) ।

मरअद } पुन [मरअत] नील वणवाला
मरगय } रत्न-विशेष, पद्मा (सक्ति ६, हे १, १८२, औप, पड् गा ७५, काप्र ३१),
'परिकम्मिओवि बहुसो काओ कि मरगओ होइ' (कुप्र ४०३) ।

मरजीवय पु [दे, मरजीवक] समुद्र के भीतर उतर कर जो वस्तु निकालने का काम करता है वह (मिरि ३८५) ।

मरट्ट पु [दे] गर्ब, ग्रहकार (दे ६, १२०, सुर ४, १५४, प्रासू ८५, ती ३, भवि, सण, हे ४, ४२२, सिरि ६६२), 'अखिलमइ (१२)ट्टकदप्पमहणे लद्धजयपजायत्त' (धर्मवि ६७) ।

मरट्टा स्त्री [दे] उत्कर्ष,

'एईइ अहरहरिआरुणिममरट्टाई'

(?) लजमाण्डाइ ।

विषफलाइ उव्वधण व

वल्लीसु विरयति ॥

(कुप्र २६६) ।

मरट्ट (अप) देखो मरहट्ट (पिंग) ।

मरठ देखो मरहट्ट । स्त्री °ठी (कप्पु) ।

मरण पुन [मरण] मौत, मृत्यु (आचा, भग, पात्र, जी ४३, प्रासू १०७, ११८) 'मिमा मरणा मन्वे तद्धभवमरणेण णायव्वा' (पव ११७) ।

मरळ एक मराट्ट = मराल, हम (प्राकृ ५) ।

मरह मक [मृप्] क्षमा करना, 'खमंतु मरहतु ण देवाणुप्पिया' (णाया १, ८—पत्र १३५) ।

मरहट्ट पुन [महाराष्ट्र] १ बडा देश । २ देश-विशेष, महाराष्ट्र, मराठा, 'मरहट्टो मरहट्ट' (हे १, ६६, प्राकृ ६, कुमा) । ३ नुराष्ट्र (कुमा ३, ६०) । ४ पु महाराष्ट्र देश का

निवासी, मराठा (पएह १, १—पत्र १४, पिंग) । ५ छन्द-विशेष (पिंग) ।

मरहट्टी स्त्री [महाराष्ट्री] १ महाराष्ट्र की रहनेवाली स्त्री । २ प्राकृत भाषा का एक भेद (पि ३५४) ।

मराल वि [दे] अलस, मन्द, आलसी (दे ६, ११२, पात्र) ।

मराल पु [मराल] १ हंम पक्षी (पात्र) । २ छन्द-विशेष (पिंग) ।

मराली स्त्री [दे] १ भारमी, सारम पक्षी की मादा । २ दूती । ३ मखी (दे ६, १४२) ।

मरिअ वि [मृत्] मरा हुआ (सम्मत १३६) ।

मरिअ वि [दे] १ श्रुति, हटा हुआ । २ विस्तोणं (पड्) ।

मरिअ देखो मिरिअ (प्रयी १०५, भास ८ टी) ।

मरिड देखो मरीड, 'अह उप्पन्ने नाणे जिणस्स, मरिई तओ य निक्खतो' (पउम ८२, २४) ।

मरिम सक [मृप्] नहन करना, क्षमा करना । मरिसड, मरिसेड, मरिसेउ (हे ४, २३५, महा म ६७०) । कृ मरिसियन्व (स ६७०) ।

मरिसावणा स्त्री [मरपणा] क्षमा (स ६७१) ।

मरीड पु [मरीचि] १ भगवान् ऋषभदेव का एक पौत्र और भरत चक्रवर्ती का पुत्र, जो भगवान् महावीर का जीव था (पउम ११, ६४) । २ पुखी किरण (पएह १, ४—पत्र ७२, धर्मम ७२३) ।

मरीडया स्त्री [मरीचिहा] १ किरण-समूह । २ मृग-वृष्णा, किरण में जल आन्ति (राज) ।

मरीचि देखो मरीड (औप मुज १, ६) ।

मरीचिया देवो मरीडया (औप) ।

मरु पु [मरुन्] १ पवन, वायु । २ देव, देवता । ३ सुगन्धी वृक्ष-विशेष, मरुआ, मरुवा (पड्) । ४ हनुमान का पिता (पउम ५३, ७६) । °णदण पुं [°नन्दन] हनुमान (पउम ५३, ७६) । °स्सुय पु [°सुत] वही (पउम १०१, १) । देखो मरुअ = मरुन् ।

मरु } पु [मरु, °क] १ निर्जल देश
मरुअ } (णाया १, १६—पत्र २०२, औप) । २ देश-विशेष, मारवाड (ती ५, महा, इक, पएह १, ४—पत्र ६८) । ३

पर्वत, ऊँचा पहाड (निचु ११) । ४ वृक्ष-विशेष, मरुआ, मरुवा (पएह २, ५—पत्र ११०) । ५ ब्राह्मण, विप्र (मुख २, २७) । ६ एक नृप वंश । ७ मरु-वंशीय राजा, 'तस्स य पुट्टोए नदो पणपन्नसय च होइ वामाण । मरुयाणं अट्टसयं' (विचार ४६३) । ८ मरु देश का निवासी (पएह १, १) । कनार न [°कान्तार] निर्जल जंगल (अचु ८५) । °थली स्त्री [°थली] मरु-भूमि (महा) । °भू स्त्री [°भू] वही (था २३) । °य वि [°ज] मरु देश में उत्पन्न (पएह १, ४—पत्र ६८) ।

मरुअ देखो मरु = मरुत् (पएह १, ४—पत्र ६८) । २ एक देव-जाति (ठा २, २) । °कुमार पुं [°कुमार] वानरद्वीप के एक राजा का नाम (पउम ६, ६७) । °वसभ पुं [°वृषभ] इन्द्र (पएह १, ४—पत्र ६८) ।

मरुअअ } पुं [मरुअक] वृक्ष-विशेष, मरुआ,
मरुअग } मरुवा (गडड, पएण १—पत्र ३४) ।

मरुआ स्त्री [मरुना] राजा श्रेणिक की एक पत्नी (अत) ।

मरुइणी स्त्री [मरुकिणी] ब्राह्मण-स्त्री, ग्राहणी (वित्ते ६२८) ।

मरुंड देखो मुरुंड (अत, औप, णाया १, १—पत्र ३७) ।

मरुकुट्ट पु [दे, मरुकुट्ट] मरुआ, मन्वे का गाछ (भवि) ।

मरुग देखो मरुअ = मरुक (पएह १, १—पत्र १४, इक) ।

मरुदेव पुं [मरुदेव] १ ऐरवत क्षेत्र में उत्पन्न एक जिनदेव (मम १५३) । ३ एक कुलकर पुरुष का नाम (नम १५०, पउम ३, ५५) ।

मरुदेवा } स्त्री [मरुदेवा, °वी] १ भगवान्
मरुदेवी } ऋषभदेव की माता का नाम (उव्व
सम १५०, १५१) । २ राजा श्रेणिक की एक पत्नी, जिसने भगवान् महावीर के पास दीक्षा लेकर मुक्ति पाई थी (अत) ।

मरुदेवा स्त्री [मरुदेवा] भगवान् महावीर के पास दीक्षा लेकर मुक्ति पानेवाली राजा श्रेणिक की एक पत्नी (अत २५) ।

मंद पु [मन्द] १ ग्रह-विशेष, शनिश्चर (सुर १०, २२४)। २ हाथी की एक जाति (ठा ४, २—पत्र २०८)। ३ वि. अलस, धीमा, मृदु (पात्र; प्रासू १३२)। ४ अल्प, थोड़ा (प्रासू ७१)। ५ मूर्ख, जड़, अज्ञानी (सूत्र १, ४, १, ३१, पात्र)। ६ नीच, खल, 'मुहमेव अहीण तह य मंदस्स' (प्रासू १६)। ७ रोग प्रस्त, रोगी (उत्त ८, ७)। ८ उणिण्या की [पुण्यका] देवी विशेष (पंचा १६, २४)। ९ भग वि [भाग्य] कमनसीव (सुपा ३७६, महा)। १० भाअ वि [भाग, भाग्य] वही अर्थ (स्वप्न २२, कुमा)। ११ भाइ वि [भागिन्] वही अर्थ (स ७५६; सुपा २२६)। १२ भाग देखो भाअ (सुर १०, ३८)।

मद न [मान्य] १ बीमारी, रोग, 'न य मदेण मरई कोइ तिरिओ अहव मणुओ वा' (सुपा २२६)। २ मूर्खता, बेवकूफी, 'वालस्स मदय वीय' (सूत्र १, ४, १, २६)।

मदक्ख न [मन्दाक्ष] लज्जा, शर्म (राज)। मदग } न [मन्दक] गेय-विशेष, एक प्रकार
मंदय } का गान (राज, ठा ४, ४—पत्र २८५)।

मदर पुं [मन्दर] १ पर्वत-विशेष, मेरु पर्वत (सुज्ज ५, सम १२, हे २, १७४, कप्प, सुपा ४७)। २ भगवान् विमलनाथ का प्रथम गणधर (सम १५२)। ३ वानरद्वीप का एक राजा, मरुपकुमार का पुत्र (पउम ६, ६७)। ४ छन्द का एक भेद (पिंग)। ५ मन्दर-पर्वत का अधिष्ठायक देव (ज ४)। ६ पुर न [पुर] नगर-विशेष, (इक)।

मंदा स्त्री [मन्दा] १ मन्द-स्त्री (वज्जा १०६)। २ मनुष्य की दश अवस्थाओं में तीसरी अवस्था २१ से ३० वर्ष तक की दश (तटु १६)।

मदाइणी स्त्री [मन्दाकिनी] १ गंगा नदी, भागीरथी (पउम १०, ५०, पात्र)। २ रामचन्द्र के पुत्र लव की स्त्री का नाम (पउम १०६, १२)।

मदाय क्वि [मन्द] शनै, धीमे से, 'मदायं मंदायं पव्वइयाए' (जीव ३)।

मदाय न [मन्दाय] गेय-विशेष (ज १)।

मंदार पुं [मन्दार] १ कल्पवृक्ष-विशेष (सुपा १)। २ पारिमद्र वृक्ष। ३ न. मन्दार वृक्ष का फूल; 'मदारदामरमणिज्जभूय' (कप्प, गउड)। ४ परिमद्र वृक्ष का फूल (वज्जा १०६)।

मदिअ वि [मान्दिक] मन्दता वाला, मन्द, 'वाले य मदिए मूढे' (उत्त ८, ५)।

मदिर न [मन्दिर] १ गृह, घर (गउड, भवि)। २ नगर-विशेष (इक, आचू १)।

मदिर वि [मान्दिर] मन्दिर-नगर का; 'सीह-पुरा सोहा वि य गीयपुरा मंदिरा य वहुणाया' (पउम ५५, ५३)।

मंदीर न [दे] १ शृखल, सांकल। २ मन्यान-दण्ड (दे ६, १४१)।

मंदुय पुं [दे. मन्दुक] जलजन्तु-विशेष (परह १, १—पत्र ७)।

मदुरा स्त्री [मन्दुरा] अश्व-शाला (सुपा ६७)।

मदोदरी } स्त्री [मन्दोदरी] १ रावण-पत्नी
मंदोयरी } (से १३, ६७)। २ एक वणिक्-पत्नी (उप ५६७ टी)।

मंदोशण (मा)। वि [मन्दोण] अल्प गरम (प्राक् १०२)।

मधाउ पु [मान्धाउ] हरिवंश का एक राजा (पउम २२, ६७)।

मधादण पु [मन्धादन] भेष, गाढर, 'जहा मधादण (?) रो) नाम थिमिअ भुजती दग' (सूत्र १, ३, ४, ११)।

मधाय पुं [दे] आढ्य, श्रीमत (दे ६, ११६)।

मंभीस (अप)। सक [मा + भी] डरने का निषेध करना, अभय देना। सक, मभीमिवि (भवि)।

मंभीसिय देखो माभीसिय (भवि)।

मंस पुं [मांस] मास, गोश्त, पिशित, 'अयमाउसो मंसे अयं अट्ठी' (सूत्र २, १, १६, आचा, ओधमा २४६, कुमा, हे १, २६)। २ इत्त वि [वत्] मास-जोड़प (सुख १, १५)। ३ खल न [खल] मास सुखाने का स्थान (आचा २, १, ४, १)। ४ चक्खु पुन [चक्षुस्] १ मास-मय चक्षु। २ वि. मास-मय चक्षुवाला, ज्ञान-चक्षु-रहित, 'अहिस्से

मंसचक्खुणा' (सम ६०)। ३ सण वि [शान] मांस-भक्षक (कुमा)। ४ सि, सिण वि [शिन्] वही अर्थ (पउम १०५, ४४, महा)। ५ 'मंससिणस्स' (पउम २६, ३७)।

मंस न [मांस] फल का गर्भ, फल का गुद्दा (आचा २, १, १०, ५, ६)।

मसल वि [मांसल] पीन, पुष्ट, उपचित (पात्र, हे १, २६, परह १, ४)।

मंसी स्त्री [मांसी] गन्ध-द्रव्य-विशेष जटामासी (परह २, ५—पत्र १५०)।

मसु पुन [श्मश्रु] दाढ़ी-मुँह—पुरुष के मुख पर का बाल (सम ६०, आँप कुमा), 'मसू' (हे १, २६, प्राप्र), 'मसूई' (जवा)।

मसु देखो मंस, 'मसूणि सिन्नपुव्वाइ' (आचा)।

मसुडग न [दे, मासोन्दुक] नात-खण्ड (पिड ५८६)।

मसुल वि [मासवत्] मामवाला (हे २, १५६)।

मकंडेअ पुं [मार्कण्डेय] ऋषि-विशेष (अभि २४३)।

मकड पु [मर्कट] १ वानर, वनरा, बन्दर (गा १७१, उप पु १८८, सुपा ६०६, दे २, ७२, कुप्र ६०, कुमा)। २ मकड़ा, जाल बनानेवाला क्रीडा (आचा, कस, गा ६३, दे ६, ११६)। ३ छन्द का एक भेद (पिंग)। ४ वध पुं [वन्ध] बन्ध-विशेष, नाराच-बन्ध (कम्म १, ३६)। ५ सताण पु [सतान] मकड़ा का जाल (पिड)।

मकडवध न [दे] शृखलाकार शीवा-भूषण (दे ६, १२७)।

मकडी स्त्री [मर्कटी] वानरी वनरी (कुप्र ३०३)।

मकल (अप) देखो मकड (पिंग)।

मकार पु [माकार] १ 'मा' वर्ण। २ 'मा' के प्रयोगवाली दण्डनीति, निषेध-सूचक एक प्राचीन दण्डनीति (ठा ७—पत्र ३६८)।

मकुण देखो मकुण (पव २६२, दे १, ६६)।

मकोड पुं [दे] १ यन्त्र-मुष्कनाथ राशि, जन्तर गठने के लिए बनाई जाती राशि (दे ६, १४२)। २ पुंजी, कीट-विशेष, चीटा, गुज-राती में 'मकोडो', 'मंकोडो' (निचू १, आवम, जी १६)। स्त्री 'डा' (दे ६, १४२)।

मल्ह अक [दे] मौज मानना, लीला करना ।
 वक्र. मल्हंत (दे ६, ११६ टी. भवि) ।
 मल्हण न [दे] लीला, मौज (दे ६, ११६) ।
 मव सक [मापय] मापना, माप करना,
 नापना । मवति (सिरि ४२५) । कर्म.
 'आउयाइं मविज्जति' (कम्म ५, ८५ टी) ।
 कवक्र. मविज्जमाण (विसे १४००) ।
 मविय वि [मापित] मापा हुआ (तंदु ३१) ।
 मअल्ली (मा) छी [मस्त्य] मछली (पि
 २३३) ।
 मस } पुं [मश, °क] १ शरीर पर का
 मसअ } तिलाकार काला दाग, तिल (पव
 २५७) । २ मच्छद, क्षुद्र जन्तु-विशेष (गा
 ५६०, चारु १०, वज्जा ४६) ।
 मसकसार न [मसकसार] इन्द्रो का एक
 स्वय आभाव्य विमान (देवेन्द्र २६३) ।
 मसग देखो मसअ (भग, श्रीप, पउम ३३,
 १०८, जी १८) ।
 मसण वि [मसृण] १ स्निग्ध, चिकना ।
 २ सुकुमाल, कोमल, अककंश । ३ मन्द,
 धीमा (हे १, १३०, कुमा) ।
 मसरक सक [दे] सकुचना, समेटना । सक.
 'दसवि करगुलीउ मसरकवि (अप)'
 (भवि) ।
 मसाण न [श्मशान] मसान, मरघट (गा
 ४०८, प्राप्र, कुमा) ।
 मसार पु [दे. मसार] मसृणता-सपादक
 पापाण-विशेष, कसौटी का पत्थर (गाया १,
 १—पत्र ६, ओप) ।
 मसारगल्ल पु [मसारगल्ल] एक रत्न-जाति
 (गाया १, १—पत्र ३१, कप्प, उत ३६,
 ७६, इक) ।
 मसि छी [मसि] १ काजल, कज्जल (कप्प) ।
 २ स्याही, सियाही (मुर २, ५) ।
 मसिहार पु [मसिहार] क्षत्रिय-परिव्राजक
 विशेष (श्रीप) ।
 मसिण देखो मसण (हे १, १३०, कुमा,
 श्रीप, से १, ४५, ५, ६४) ।
 मसिण वि [दे] रम्य, सुन्दर (दे ६, ११८) ।
 मसिणिअ वि [मसृणित] १ मृष्ट, शुद्ध
 किया हुआ, मार्जित, 'रोसिणिअ मसिणिअ'

(पाप्र) । २ स्निग्ध किया हुआ (से ६,
 ६) । ३ विलुलित, विमर्दित (से १, ५५) ।
 मसी देखो मसि (उवा) ।
 मसूर } पु न [मसूर, °रु] १ धान्य-विशेष,
 मसूरग } मसूरि (ठा ४, ३, सम १४६, पिंड
 मसूरय } ६२३) । २ उच्छीर्षक, श्रोसीसा
 (मुर २, ८३, कप्प) । ३ वज्र या चर्म का
 वृत्ताकार आसन (पव ८४) ।
 मसु देखो मसु (सक्ति १२, पि ३१२) ।
 मसूरग देखो मसूरग, 'मसूरय य यिउगे'
 (जीवस ५२) ।
 मह सक [काङ्क्ष] चाहना, वाञ्छना ।
 महइ (हे ४, १६२, कुमा, सण) ।
 मह सक [मथ्] १ मथना, विलोडन
 करना । २ मारना । महेज्जा (उवा) ।
 मह सक [मह] पूजना । महइ (कुमा),
 महइ (सिरि ५६६) । सक. महिअ (कुमा) ।
 क. महणिज्ज (उप पृ १२६) ।
 मह पुन [मह] उत्सव (विपा १, १—पत्र
 ५, रंभा, पाप्र, सण) ।
 मह पु [मल] यज्ञ (चड, गउड) ।
 मह वि [महत्] १ बड़ा, बृद्ध । २ विपुल,
 विस्तीर्ण । ३ उत्तम, श्रेष्ठ, 'एग मह सत्तुस्सेह'
 (गाया १, १—पत्र १३, काल, जी ७;
 हे १, ५) । छी 'ई (उव, महा) । °एवी
 छी [°देवी] पटरानी (भवि) । °कंतजस
 पुं [°नान्तयशस्] राक्षस वंश का एक
 राजा, एक लका-पति (पउम ५, २६५) ।
 °कमल्ला न [°कमलाङ्ग] सख्या-विशेष,
 ८४ लाख कमल की सख्या (जो २) ।
 °कव्व न [°काव्य] सगं-वद्ध उत्तम काव्य-
 ग्रन्थ (भवि) । °काल देखो महा-काल
 (देवेन्द्र २४) । °गइ पु [°गात] राक्षस वंश
 का एक राजा, एक लक्षेय (पउम ५, २६५) ।
 °गह देखो महा-गह (सम ६३) । °गघ
 वि [°अर्घ] महा-मूल्य, कीमती (मुर ३,
 १०३, सुपा ३७) । °गघविअ वि [°अर्घित]
 १ महंगा, दुर्लभ (से १४, ३७) । २
 विमूर्षित, 'विमलंगेवगणुणमहगघविआ' (सुपा
 १, ६०) । ३ सम्मानित, अर्चयवदियपूइय-
 सक्कारियपरणिमिओ महगघविओ' (उव) ।
 °गिघम (अप) वि [°अर्घित] बहू-मूल्य,

महंगा (भवि) । °चद पु [°चन्द्र] १
 राजकुमार-विशेष (विपा २, ५, ६) । २
 एक राजा (विपा १, ४) । °च वि [°अर्च]
 १ बड़ा ऐश्वर्यवाला । २ बड़ी पूजा—सत्कार-
 वाला (ठा ३, १—पत्र ११७, भग) ।
 °च वि [°अर्च्य] अति पूज्य (ठा ३, १,
 भग) । °चरिय न [°आश्रय] बड़ा
 आश्रय (मुर १०, ११८) । °जकर पु
 °यक्ष] भगवान् अजितनाथ का शासना-
 विधायक देव (पव २६, संति ७) । °जाला
 छी [°ज्वाला] विद्यादेवी-विशेष (संति ६) ।
 °जुइय वि [°द्युतिक] महान् तेजवाला
 (भग, श्रीप) । °डिइ छी [°द्वि] महान्
 वैभव (राय) । °डिइय, °डिइअ वि
 [°द्विक] विपुल वैभववाला (भग, श्रीप
 १०) । °णव पुं [°अर्णव] महा-सागर
 (मुपा ४१७, हे १, २६६) । °णया धा
 [°अर्ण्या] १ बड़ी नदी । २ समुद्र-नामिनी
 (कस ४, २७ टि, बृह ४) । °तुडियग न
 [°तुटिताङ्ग] ८४ लाख त्रुटित की सख्या
 (जो २) । °त्तण न [°त्त] बड़ाई, महत्ता
 (आ २७) । °त्तर वि [°तर] १ बहुत बड़ा
 (स्वप्न २८) । २ मुखिया, नायक, प्रधान
 (कप्प, श्रीप, विपा १, ८) । ३ अन्त पुर
 का रक्षक (श्रीप) । छी. °रिया, °री (ठा
 ४, १—पत्र १६८, इक) । °थ वि [°अर्थ]
 महान् अर्थवाला (गाया १, ८, आ २७) ।
 °थ न [°अर] अर-विशेष, बड़ा हथियार
 (पउम ७१, ६७) । °थिम पुत्री [°थित्व]
 महार्थता (भवि) । °दल्लि वि [°दल्लि]
 बड़ा दलवाला (प्रासू १२३) । °हह पु
 [°द्रह] बड़ा हह (गाया १, १—पत्र ६४,
 गा १८६ अ) । °हि छी [°अद्रि] १ बड़ी
 याचना । २ परिग्रह (परह १, ५—पत्र
 ६२) । °दुइ पुं [°द्रुम] १ महान् वृक्ष
 (हे ४, ४४५) । २ वैरोचन इन्द्र के एक
 पदाति-सैन्य का अधिपति (ठा ५, १—पत्र
 ३०२) । °द्वि वि [°द्वि] बड़ी द्विवाला
 (कुमा) । °धूम पुं [°धूम] बड़ा धुआँ
 (महा) । °न्नव देखो °णव (आ २८) ।
 °पाण न [°प्राण] ध्यान-विशेष (सिरि १३३०) ।
 °पुडरीअ पुं [°पुण्डरीक] ग्रह-विशेष

लोक (कुप्र ४११) । °लोईय वि [°लोकीय] मनुष्य-लोक से सम्बन्ध रखनेवाला (सुपा ५१६) ।

मञ्चिअ वि [दे] मल-युक्त (दे ६, १११ दो) ।

मञ्चिर वि [मदितृ] गवं करनेवाला (कुमा) ।

मच्चु पु [मृत्यु] १ मौत, मरण (आचा, सुर २, १३८, प्रासू १०६, महा) । २ यम, यमराज (पङ्) । ३ रावण का एक नैतिक (पउम ५६, ३१) ।

मच्छ पु [मत्स्य] १ मछली (आया १, १, पात्र; जो २०, प्रासू ५०) । २ राहु (सुज २०) । ३ देश-विशेष (इण, ननि) । ४ छन्द का एक भेद (पिण) । °खल न [°खल] मत्स्यों की सुखाने का स्थान (आचा २, १, ४, १) । °वंध पु [°वन्ध] मच्छीमार, धीवर (पणह १, १, महा) ।

मच्छ पु न [मत्स्य] मत्स्य के आकार की एक वनस्पति (आचा २, १, १०, ५, ६) ।

मच्छडिआ छी [मत्स्यण्डिका] खण्डशर्करा, एक प्रकार की शक्कर (पणह २, ४, आया १, १७, पण १७, पिंड २८३, मा ४३) ।

मच्छडी छी [मत्स्यण्डी] शक्कर (अणु १४७) ।

मच्छत देखो मथ = मन्थ ।

मच्छथ देखो मच्छ-बंध (विपा १, ८—पत्र ८२) ।

मच्छर पु [मत्सर] १ ईर्ष्या, द्वेष, डाह, पर-सपत्ति की असहिष्णुता (उव) । २ कोप, क्रोध । ३ वि. ईर्ष्यालु, द्वेषी । ४ क्षोधी । कृपण (हे २, २१) ।

मच्छर न [मात्सर्य] ईर्ष्या, द्वेष (से ३, १६) ।

मच्छरि वि [मत्सरिन्] मत्सरवाला (पणह २, ३, उवा, पात्र) । छी °णी (गा ८४, महा) ।

मच्छरिअ वि [मत्सरित्, मत्सरिक] ऊपर देखो (पउम ८, ४६, पचा १, ३२, भवि) ।

मच्छल देखो मच्छर = मत्सर (हे २, २१, पङ्) ।

मच्छिअ देखो मक्खिअ = माक्षिक (पव ४—गाथा २२०) ।

मच्छिअ वि [मात्स्यिक] मच्छीमार (आ १२, अमि १८७, विपा १, ६, पिंड ६३१) ।

मच्छिअ (मा) देखो माउ = मातृ (प्राक १०२) ।

मच्छिगा देखो मच्छिया (पि ३२०) ।

मच्छिया } छी [मक्षिका] मक्खी (आया मच्छी } १, १६, जो १८, उत्त ३६, ६०, प्राप्र, सुपा २८१) ।

मज्ज सक [मद्] अभिमान करना । मज्जइ, मज्जई, मज्जेज्ज (उव, सूअ १, २, २, १, धर्मसं ७८) ।

मज्ज अक [मज्ज] १ स्नान करना । २ झुवना । मज्जइ (हे ४, १०१), मज्जामा (महा ५७, ७, धर्मसं ८६४) । वक्र. मज्जमाण (गा २४६, आया १, १) । सक मज्जिऊण (महा) । प्रयो., सक मज्जाविता (ठा ३, १—पत्र ११७) ।

मज्ज सक [मज्ज] साफ करना, मार्जन करना । मज्जइ (पङ् प्राक ६६, हे ४, १०५) ।

मज्ज न [मद्य] दाह, मदिरा (औप, उवा, हे २, २४, भवि) । °इत्त वि [°वत्] मदिरा-लोष (सुख १, १५) । °व वि [°प] मद्य-पान करनेवाला (पात्र) । °वीअ वि [°पीत] जिसने मद्य-पान किया हो वह (विपा १, ६—पत्र ६७) ।

मज्जग वि [माद्यक] मद्य-सम्बन्धी, 'अल्लं वा मज्जगं रस' (दस ५, २, ३६) ।

मज्जण न [मज्जन] १ स्नान । २ झुवना (सुर ३, ७६, कप्पू, गउड, कुमा) । °धर न [°गृह] स्नान-गृह (आया १, १—पत्र १६) । °घाई छी [°घात्री] स्नान कराने-वाली दासी (आया १, १—पत्र ३७) ।

°पाली छी [°पाली] वही अर्थ (कप्प) ।

मज्जण न [मार्जन] १ साफ करना, शुद्धि (कप्प) । २ वि मार्जन करनेवाला (कुमा) ।

°धर न [°गृह] शुद्धि गृह (कप्प, औप) ।

मज्जर देखो मजर (प्राक ५) । छी. °री, 'को जुनमज्जरि कंजिएण पवियारिउ तरइ' (सुर ३, १३३) ।

मज्जविअ वि [मज्जित] १ स्नपित । २ स्नात, 'एत्थ सरे रे पथिअ गयवइवहुयाउ मज्जविआ' (वज्जा ६०) ।

मज्जा छी [दे. मर्या] मर्यादा (दे ६, ११३, भवि) ।

मज्जा छी [मज्जा] घातु-विशेष, चर्वी, हड्डी के भीतर का गूदा (सण) ।

मज्जाइल वि [मर्यादिन्] मर्यादावाला (निचू ४) ।

मज्जाया छी [मर्यादा] १ न्याय्य-व्यवस्था, व्यवस्था, 'रयणायरस्स मज्जाया' (प्रासू ६८, आवम) । २ सीमा, हृद, अववि । ३ कूल, किनारा (हे २, २४) ।

मज्जार पुछी [मार्जार] १ बिल्ला, बिलाव (कुमा, भवि) । २ वनस्पति-विशेष, 'वत्थुल-पोरगमज्जारपोइवल्लीय पालका' (पण १—पत्र ३४) । छी °रिआ, °री (कप्पू, पात्र) ।

मज्जार पु [मार्जार] वायु-विशेष (भग १५—पत्र ६८६) ।

मज्जाविअ वि [मज्जित] स्नपित (महा) ।

मज्जिअ वि [दे] १ अवलोकित, निरोक्षित । २ पीत (दे ६, १४४) ।

मज्जिअ वि [मज्जित] स्नात, (पिंड ४२३, महा, पात्र) ।

मज्जिअ वि [मार्जित] साफ किया हुआ (पउम २०, १२७, कप्प, औप) ।

मज्जिआ छी [मार्जिता] रसाला, भक्ष्य-विशेष—दही, शक्कर आदि का बना हुआ और सुगन्ध से वासित एक प्रकार का खाद्य, श्रीखण्ड (पात्र, दे ७, २, पत्र २५६) ।

मज्जिर वि [मज्जितृ] मज्जन करने की श्रावत-वाला (गा ४७३, सण) ।

मज्जोक्क वि [दे] अभिनय, नृतन (दे ६, ११८) ।

मज्झ न [मध्य] १ अन्तराल, मझार बीच (पात्र, कुमा; द ३६, प्रासू ५०, १६७) ।

२ शरीर का अवयव-विशेष (कप्पू) । ३

सख्या-विशेष, अन्त्य और पराव्य के बीच की सख्या (हे २, ६०, प्राप्र) । ४ वि. मध्यवर्ती,

बीच का (प्रासू १२५) । °एस पु [°देश] देश-विशेष, गंगा और यमुना के बीच का प्रदेश, मध्य प्रान्त (गउड) । °गय वि [°गत]

१ बीच का, मध्य में स्थित (आचा, कप्प) ।

२ पुं अवधिज्ञान का एक भेद (एदि) ।

पुत्र (निर १, १)। °कण्हा स्त्री [°कृष्णा] राजा श्रेणिक की एक पत्नी (अत २५)। °कप्प पु [°कल्प] १ जैन ग्रन्थ-विशेष (एदि)। २ काल का एक परिमाण (भग १५)। °कमल न [°कमल] सख्या-विशेष, चौरासी लाख महाकमलाग की सख्या (जो २)। °कन्व देखो °मह-कन्व (सम्मत १४६)। °काय पु [°काय] १ महोरग देवो का उत्तर दिशा का इन्द्र (ठा २, ३, इक)। २ वि महान् शरीरवाला (उवा)। °काल पु [°काल] १ महाग्रह-विशेष, एक ग्रह-देवता (सुज्ज २०, ठा २, ३)। २ दक्षिण लवण-समुद्र के पाताल-कलश का अधिष्ठायक देव (ठा ४, २—पत्र २२६)। ३ एक इन्द्र, पिशाच-निकाय का उत्तर दिशा का इन्द्र (ठा २, ३—पत्र ८५)। ४ परमाधार्मिक देवो की एक जाति (सम २८)। ५ वायु-कुमार देवो का एक लोकपाल (ठा ४, १—पत्र १६८)। ६ वेलम्ब इन्द्र का एक लोकपाल (ठा ४, १—पत्र १६८)। ७ नव निधियो में एक निधि, जो धातुओं की पूति करता है (उप ६८६ टी, ठा ६—पत्र ४४६)। ८ सातवीं नरक-भूमि का एक नरकावास (ठा ५, ३—पत्र ३४१, सम ५८)। ९ पिशाच देवो की एक जाति (राज)। १० उज्जयिनी नगरी का एक प्राचीन जैन मन्दिर (कुप्र १७४)। ११ शिव, महादेव (आव ६)। १२ उज्जयिनी का एक रमशान (अत)। १३ राजा श्रेणिक का एक पुत्र (निर १, १)। १४ न एक देव-विमान (सम ३५)। °काली स्त्री [°काली] १ °काल विद्या-देवी (सति ५)। २ भगवान् सुमतिनाथ की रासन-देवी (सति ६)। ३ राजा श्रेणिक की एक पत्नी (अत २५)। °किण्हा स्त्री [°कृष्णा] एक महा-नदी (ठा ५, ३—पत्र ३५१)। °कुमुद, °कुमुय न [°कुमुद] १ एक देव-विमान (सम ३३)। २ सख्या-विशेष, चौरासी लाख महाकुमुदाग की सख्या (जो २)। °कुमुयअंग न [°कुमुदाङ्ग] संख्या, कुमुद को चौरासी लाख से गुणने पर जो संख्या लब्ध हो वह (जो २)। °कूम पु [°कूम] कूर्मवतार (गउड)।

°कुल न [°कुल] १ श्रेष्ठ कुल (निचू ८)। २ वि, प्रशस्त कुल में उत्पन्न, 'निकर्षता जे महाकुला' (सूत्र १, ८, २४)। °गगा स्त्री [°गङ्गा] परिमाण-विशेष (भग १५)। °गह पु [°ग्रह] १ सूर्य आदि ज्योतिष्क (सार्ध ८७)। °गह वि [°आग्रह] आग्रही, हठी (सार्ध ८७)। °गिरि पु [°गिरि] १ एक जैन महर्षि (उव, कप्प)। २ बड़ा पर्वत (गउड)। °गोच पु [°गोच] १ महान् रत्नक। २ जिन भगवान् (उवा, विसे २६५६)। °घोस पु [°घोष] १ ऐरवत क्षेत्र के एक भावी जिनदेव (सम १५४)। २ एक इन्द्र, स्तनित कुमार देवो का उत्तर दिशा का इन्द्र (ठा २, ३—पत्र ८५)। ३ एक तुलकर पुरुष (सम १५०)। ४ परमाधार्मिक देवो की एक जाति (सम २६)। ५ न. देवविमान-विशेष (सम १२, १७)। चद पु [°चन्द्र] ऐरवत वर्ष के एक भावी तीर्थंकर (मम १५४)। °जणिअ पु [°जनिक] श्रेष्ठो, सायंवाह आदि नगर के गण्य-मान्य लोग (कुमा)। °जलहि पु [°जलधि] महा-सागर (सुपा ४७४)। °जस पु [°यशस्] १ भरत चक्रवर्ती का एक पौत्र (ठा ८—पत्र ४२६)। २ ऐरवत क्षेत्र के चतुर्थ भावी तीर्थंकर-देव (सम १५४)। ३ वि. महान् यशस्वी (उत १२, २३)। °जाड स्त्री [°जाति] तुलम-विशेष (पण १)। °जाण न [°यान] १ बड़ा यान—वाहन। २ चारित्र, संयम (आवा)। ३ एक विद्याधर-नगर का नाम (इक)। ४ पु मोक्ष, मुक्ति (आवा)। °जुद्ध न [°युद्ध] बड़ी लड़ाई (जीव ३)। °जुम्म पु न [°युग्म] महान् राशि (भग ३५)। °ण देखो °यण, 'गामदुआरम्भासे अगडममीवे महारामज्जे वा' (श्रीघ ६६)। °णई स्त्री [°नदी] बड़ी नदी (गउड, पत्र ४०, १३)। °णदियावत्त पु [°नद्यावर्त] १ घोष नामक इन्द्र का एक लोकपाल (ठा ४, १—पत्र १६८)। २ न एक देवविमान (सम ३२)। °णगर देखो °नगर (राज)। °णालिण देखो °नलिण (राज)। °णील न [°नील] १ रत्न-विशेष। २ वि अति नील वर्णवाता (जीव ३, औप)। °णीला देखो

°नीला (राज)। °णुभाअ, °णुभाग वि [°अनुभाग] महानुभाव, महाशय (नाट—मालती ३६, गच्छ १, ४, भग, सिरि १६)। °णुभाव वि [°अनुभाव] वही अर्थ (सुर २, ३५, द्र ६६)। °तमपहा स्त्री [°तम-प्रभा] सप्तम नरक-पृथिवी (पत्र १७२)। °तमा स्त्री [°तमा] वही (चेद्य ७५६)। °तीरा स्त्री [°तीरा] नदी-विशेष (ठा ५, ३—पत्र ३५१)। °तुडिअ न [°तुडित] महाश्रुतिनाग को चौरासी लाख से गुणने पर जो संख्या लब्ध हो वह, सख्या-विशेष (जो २)। °दामद्वि पु [°दामास्त्रि] ईशानेन्द्र के वृषभ-नैन्य का अधिपति (इक)। °दामद्वि पु [°दामद्वि] वही अर्थ (ठा ५, १—पत्र ३०३)। °दुम देखो मह-दुदुम (इक)। २ न एक देव-विमान (मम ३५)। °दुमसेण पु [°द्रुमसेन] राजा श्रेणिक का एक पुत्र जिसने भगवान् महावीर के पास दीक्षा ली थी (अनु २)। °द्व पु [°देव] १ श्रेष्ठ देव, जिन-देव (पत्र १०६, १२)। २ शिव, गौरी-पति (पत्र १०६, १२; सम्मत ७६)। °देवी स्त्री [°देवी] पटरानी (कप्प)। °धण पु [°धन] एक वणिक (पत्र ५५, ३८)। °धणु पु [°धनुष] बलदेव का एक पुत्र (निर १, ५)। °नई स्त्री [°नदी] बड़ी नदी (सम २७, कस)। °नदिआवत्त देखो °णदियावत्त (इक)। °नगर न [°नगर] बड़ा शहर (पण २, ४)। °नय पु [°नद] ब्रह्मपुत्रा आदि बड़ी नदी (आवम)। °नलिण न [°नलिन] १ सरया-विशेष, महानलिनाग को चौरासी लाख से गुणने पर जो संख्या लब्ध हो वह (जो २)। २ एक देव-विमान (सम ३३)। °नलिणग न [°नलिनाङ्ग] सख्या-विशेष, नलिन को चौरासी लाख से गुणने पर जो संख्या लब्ध हो वह (जो २)। °निजामय पु [°निर्यामक] श्रेष्ठ कण्ठधार (उवा)। °निहा स्त्री [°निद्रा] मृत्यु, मरण (पत्र ६, १६८)। °निनाद, °निनाय वि [°निनाद] प्रख्यात, प्रसिद्ध (श्रीघ ८६, ८६ टी)। °निशीह न [°निशीथ] एक जैन आगम-ग्रन्थ (गच्छ ३, २६)। °नीला स्त्री [°नीला] एक महानदी

मङ्गल पु [दे. मङ्गल] वाद्य-विशेष (राय ४६) ।

मङ्गल स्त्री [दे.] १ बलात्कार, हठ, जबरदस्ती (दे ६, १४०, पात्र, मुर ३, १३६, सुख २, १५) । २ आज्ञा, हुकुम (दे ६, १४०, सुपा २७६) ।

मङ्गल वि [मर्दित] जिसका मर्दन किया गया हो वह (हे २, ३६, पङ्, पि २६१) ।

मङ्गल देखो मद्दुअ (राज) ।

मढ देखो मङ्गु । मढ (हे ४, १२६) ।

मढ पुन [मठ] सन्यासियों का आश्रय, व्रतियों का निवासस्थान, 'मढो' (हे १, १६६, सुपा २३४, वज्जा ३४, भवि), 'मढ' (प्राप्र) ।

मढिअ देखो मङ्गिअ (कुमा) ।

मढिअ वि [दे.] १ खचित, गुजराती में 'मढेलु', 'एयार श्रोसहीश्रो तिघाळमढियाळ घारिज्जा' (सिरि ३७०) । २ परिवेष्टित (दे २, ७५, पात्र) ।

मढी स्त्री [मठिका] छोटा मठ (सुपा ११३) ।

मण सक [मन्] १ मानना । २ जानना । ३ चिन्तन करना । मणइ, मणसि (पङ्, कुमा) । कवक, मणिज्जमाण (भग १३, ७, विसे ८१३) ।

मण पुन [मनस्] मन, अन्त करण, चित्त (भग १३, ७, विसे ३५२५, स्वप्न ४५, द २२, कुमा, प्रासू ४४, ४८, १२१) । 'अगुत्ति स्त्री [अगुत्ति] मन का असयम (पि १५६) । 'करण न [करण] चिन्तन, पर्यालोचन (आवक ३३७) । 'गुत्त वि [गुत्त] मन को समय में रखनेवाला (भग) । 'गुत्ति स्त्री [गुत्ति] मन का संयम (उत्त २४, २) । 'जाणुअ वि [ज्ञ] १ मन को जाननेवाला, मन का जानकार । २ सुन्दर, मनोहर (प्राक १८) । 'जीविअ वि [जीविक] मन को आत्मा माननेवाला (पण्ड १, २—पत्र २८) । 'जोअ पुं [योग] मन की चेष्टा, मनो-व्यापार (भग) । 'ज्ज, 'ण्णु, 'ण्णुअ देखो 'जाणुअ (प्राक १८, पङ्) । 'यमणी स्त्री [स्तम्भनी] विद्या विशेष, मन को स्तब्ध करनेवाली दिव्य शक्ति (पञ्च ७, १३७) । 'नाण न [ज्ञान] मन का साक्षात्कार करनेवाला ज्ञान, मन -

पर्यव ज्ञान (कम्म ३, १८, ४, ११, १७, २१) । 'नाणि वि [ज्ञानिन्] मन-पर्यव नामक ज्ञानवाला (कम्म ४, ४०) । 'पज्जत्ति स्त्री [पर्याप्ति] पुद्गल को मन के रूप में परिणत करने की शक्ति (भग ६, ४) । 'पज्जव पुं [पर्यव] ज्ञान-विशेष, दूसरे के मन की अवस्था को जाननेवाला ज्ञान (भग, श्रौप, विसे ८३) । 'पज्जवि वि [पर्यविन] मन पर्यव ज्ञानवाला (पव २१) । 'पसिण-विज्जा स्त्री [प्रज्ञविद्या] मन के प्रश्नों का उत्तर देनेवाली विद्या (सम १२३) । 'वल्लिअ वि [वल्लिन्, क] मनो-बलवाला, दृढ मनवाला (पण्ड २, १, श्रौप) । 'मोहण वि [मोहन] मन को भ्रम्य करनेवाला, चित्ताकर्षक (गा १२८) । 'योगि वि [योगिन्] मन की चेष्टावाला (भग) । 'वग्गणा स्त्री [वर्गणा] मन के रूप में परिणत होनेवाला पुद्गल-समूह (राज) । 'वज्ज न [वज्र] एक विद्याधर नगर (इक) । 'समिड स्त्री [समिति] मन का संयम (ठा ८—पत्र ४२२) । 'समिअ वि [समित] मन को समय में रखनेवाला (भग) । 'हस पुं [हस] छन्द-विशेष (पिग) । 'हर वि [हर] मनोहर, सुन्दर, चित्ताकर्षक (हे १, १५६, श्रौप, कुमा) । 'हरण पुन [हरण] पिगल-प्रसिद्ध एक मात्रा-पद्धति (पिग) । 'भिराम, 'भिरामेळ वि [अभिराम] मनोहर (सम १४६, श्रौप, उप वृ ३२२, उप २२० टी) । 'म वि [आप] सुन्दर, मनोहर (सम १४६, विपा १, १, श्रौप, कप्प) । देखो मणो ।

मण देखो मणय (प्राक ३८) ।

मणसि वि [मनस्विन्] प्रशस्त मनवाला (हे १, २६) । स्त्री, 'णी (हे १, २६) ।

मणसिल स्त्री [मन शिला] लाल वणं मणसिला की एक उपधातु, मनशिल, मैनशिल (कुमा, हे १, २६) ।

मणग पु [मनक] एक जैन बाल-मुनि, महर्षि शर्मभवात्तूर का पुत्र और शिष्य (कप्प, धर्मवि ३८) । देखो मणय ।

मणगुलिया स्त्री [दे] पीठिका (राय) ।

मणण न [मनन] १ ज्ञान, जानना । २ समझना (विसे ३५२५) । ३ चिन्तन (आवक ३३७) ।

मणय पु [मनक] द्वितीय नरक-भूमि का तीसरा नरकेन्द्रक—नरकावास-विशेष (देवेन्द्र ६) । देखो मणग ।

मणयं थ [मनाग] भ्रष्ट, थोडा (हे २, १६६, पात्र, पङ्) ।

मणस देखो मण = मनस्, 'पसन्मणसो करिस्सामि' (पञ्च ६, ५६), 'लामो चैव तवस्सिस्स होइ अदीणमणसस्स' (श्रौप ५३७) ।

मणसिल स्त्री देखो मणसिला (कुमा, हे १, मणसिला २६, जी ३, स्वप्न ६४) ।

मणसीकय वि [मनसिकृत] चिन्तित (पण्ड ३४—पत्र ७८२ सुपा २४७) ।

मणसीकर सक [मनसि + कृ] चिन्तन करना, मन में रखना । मणसीकरे (उत्त २, २५) ।

मणस्सि देखो मणसि (धर्मवि १४६) ।

मणा देखो मणय (हे २, १६६, कुमा) ।

मणाउ स्त्री (अप) ऊपर देखो (कुमा, भवि, पि मणाउ ११४, हे ४, ४१८, ४२६) ।

मणाग ऊपर देखो (उप १३२, महा) ।

मणाल देखो मुणाल (राज) ।

मणालिया स्त्री [मृणालिका] पद्म-कन्द का मूल (तंडु २०) । देखो मुणालिआ ।

मणसिला देखो मणसिला (हे १, २६, पि ६४) ।

मणि पुत्री [मणि] पत्थर-विशेष, मुक्ता आदि रत्न (कप्प, श्रौप, कुमा, जी ३, प्रासू ४) । 'अग पुं [अद्ग] कल्प-वृक्ष की एक जाति जो आभूषण देती है (मम १७) । 'आर पु [कार] जीहरी, रत्नों के गहनों का व्यापारी (दि ७, ७७, मुद्रा ७६, राया १, १३, धर्मवि ३६) । 'कंचण न [काञ्चन] शक्तिमन्वन्त ना एक शिवर (ठा २, ३—पत्र ७०) । 'कूड न [कूट] रुचक पर्यंत का एक शिवर (दोव) । 'कण्डइअ वि [चंचित] रत्न-जटित (पि १६६) । 'चइया स्त्री [चयिता] नारी-

हजार योद्धाओं के साथ अकेला लड़नेवाला (सूत्र १, ३, १, १, गठ) । °रहि वि [°रथिन्] देखो पूर्व का २रा और ३रा अर्थ (उप ७२८ टी) । °राय पुं [°राज] १ बड़ा राजा, राजाधिराज (उप ७६८ टी, २भा, महा) । २ सामानिक देव, इन्द्र-समान ऋद्धिवाला देव (सुर १५, ६) । ३ लोकपाल देव (सम १६) । °रिद्ध पुं [°रिष्ठ] बलि नामक इन्द्र का एक सेनापति (इक) । °रिसि पुं [°रिषि] बड़ा मुनि, श्रेष्ठ साधु (उव) । °रिह, °रूह देखो मह-रिह (पि १४०, अमि १८७) । °रोरु पु [°रोरु] अग्रतिष्ठान नरकेन्द्रक की उत्तर दिशा में स्थित एक नरकावास (देवेन्द्र २४) । °रोरुअ पुं [°रोरुअ, °रोरव] सातवीं नरक-भूमि का एक नरकावास —नरक-स्थान (सम ५८, ठा ५, ३—पत्र ३४१, इक) । °रोहिणी स्त्री [°रोहिणी] एक महा-विद्या (राज) । °लजर पु [°अलजर] बड़ा जल-कुम्भ (ठा ४, २—पत्र २२६) । °लच्छी स्त्री [°लक्ष्मी] १ एक श्रेष्ठि-भार्या (उप ७२८ टी) । २ छन्द-विशेष (पिग) । ३ श्रेष्ठ लक्ष्मी । ४ लक्ष्मी-विशेष (नाट) । °लयंग न [°लताङ्ग] सख्या-विशेष, लता नामक सख्या को चौरासी लाख से गुणने पर जो सख्या लब्ध हो वह (इक, जो २) । °लया स्त्री [°लता] सख्या-विशेष, महालताग को चौरासी लाख से गुणने पर जो सख्या लब्ध हो वह (जो २) । °लोहिअक्ख पुं [°लोहिताक्ष] वलीन्द्र के महिष-सैन्य का अधिपति (ठा ५, १—पत्र ३०२, इक) । °वक्क न [°वाक्य] परस्पर-संबद्ध अर्थ वाले वाक्यों का समुदाय (उप ८५६) । °वच्छ पुं [°वत्स] विजय-विशेष, विदेह वर्ष का एक प्रान्त (ठा २, ३, इक) । °वच्छा स्त्री [°वत्सा] वही (इक) । °वण न [°वन] मथुरा के निकट का एक वन (तो ७) । °वण पुं [°आपण] बड़ी दूकान (भवि) । °वप्प पु [°वप्प] विजयक्षेत्र-विशेष (ठा २, ३—पत्र ८०, इक) । °वय देखो मह-वय (सुपा ६५०) । °वराह पुं [°वराह] १ विष्णु का एक अवतार (गठ) । २ बड़ा सूअर (सूत्र १, ७, २५) । °वह

देखो °पह (से १, ५८) । °वाड पुं [°वायु] ईशानेन्द्र के अश्व-सैन्य का अधिपति (ठा ५, १—पत्र ३०३, इक) । °वाड पुं [°वाट] बड़ा बाड़ा, महान् गोष्ठ, 'निव्वाणमहावाड' (उवा) । °विगइ स्त्री [°विकृति] अति विकार-जनक ये वस्तु—मधु, मास, मय और माखन (ठा ४, १—पत्र २०४, अत) । °विजय वि [°विजय] बड़ा विजयवाला, 'महाविजयपुष्कतरपवरपुडरीयाओ महाविमाणाओ' (कप्प) । °विदेह पुं [°विदेह] वर्ष-विशेष, क्षेत्र-विशेष (सम १२, उवा, औप, अत) । °विमाण न [°विमान] श्रेष्ठ देव-गृह (उवा) । °विल न [°विल] कन्दरा आदि बड़ा विवर (कुमा) । °वीर पु [°वीर] १ वर्तमान समय के अन्तिम तीर्थंकर (सम १, उवा, विपा १, १) । २ वि महान् पराक्रमी (किरात १६) । °वीरिअ पु [°वीर्य] इक्ष्वाकु वंश के एक राजा का नाम (पउम ५, ५) । °वीहि, °वीही स्त्री [°वीथि, °थी] बड़ा बाजार (पउम ६६, ३४) । २ श्रेष्ठ मार्ग (आचा) । °वेग पु [°वेग] एक देव-जाति, भूतों की एक प्रकार की जाति (राज, इक) । °वेजयत्ती स्त्री [°वैजयन्ती] बड़ी पताका, विजय-पताका, (कप्प) । °सई स्त्री [°सती] उत्तम पतिव्रता स्त्री (उप ७२८ टी, पडि) । °सडणि स्त्री [°शकुनि] एक विद्याधर-स्त्री (पणह १, ४—पत्र ७२) । °सडिह वि [°श्रद्धिन्] बड़ी श्रद्धावाला (आचा, पि ३३३) । °सत्त वि [°सत्त्व] पराक्रमी (द्र ११, महा) । °समुद् पु [°समुद्र] महासागर (उवा) । सयग, °सयय पु [°शतक] भगवान् महावीर का एक उपासक (उवा) । °सामाण न [°सामान] एक देव-विमान (सम ३३) । °साल पु [°शाल] एक ध्रुवराज (पडि) । °सिलाकंटय पुं [°शिलाकण्टक] राजा कूरिण और चेटकराज की लड़ाई (भग ७, ६—पत्र ३१५) । °सीह पुं [°सिंह] एक राजा, पृष्ठ बलदेव और वासुदेव का पिता (ठा ६—पत्र ४४७) । °सीहणिक्कीलिय, °सीहनिक्कीलिय न [°सिहनिक्कीलित] तप-विशेष (राज, पव २७१—गाथा १५२२) । °सीहसेण पुं [°सिंहसेन]

भगवान् महावीर के पाम दीक्षा लेकर अनुत्तर देवलोक में उत्पन्न राजा श्रेणिक का एक पुत्र (अनु २) । °सुक्क पु [°शुक] १ एक देवलोक, सातवां देवलोक (सम ३३, विपा २, १) । २ सातवें देवलोक का इन्द्र (ठा २, ३—पत्र ८५) । ३ न. एक देव-विमान (सम ३३) । °सुमिण पु [°स्वप्न] उत्तम फन का एक सूचक स्वप्न (गाया १, १—पत्र १३, पि ४४७) । °सुर पुं [°असुर] १ बड़ा दानव । २ दानवों का राजा हिरण्यकशिपु (से १, २, गठ) । °सुव्वय, °सुव्वया स्त्री [°सुव्रता] भगवान् नेमिनाय की मुख्य आविका (कप्प, आवम) । °सूला स्त्री [°शूला] फाँसी (आ २७) । °सेअ पुं [°श्वेत] एक इन्द्र, कूप्पाण्ड नामक वान-व्यन्तर देवों का उत्तर दिशा का इन्द्र (इक, ठा २, ३—पत्र ८५) । °सेण पु [°सेन] १ ऐरवत क्षेत्र के एक भावी जिन-देव (सम १५४) । २ राजा श्रेणिक का एक पुत्र जिसने भगवान् महावीर के पाम दीक्षा ली थी (अनु २) । ३ एक राजा (विपा १, ६—पत्र ८८) । ४ एक यादव (गाया १, ५) । ५ न एक वन (विसे २०८६) । देखो मह-सेण । °सेणकण्ह पुं [°सेनकृष्ण] राजा श्रेणिक का एक पुत्र (पि ५२) । °सेणकण्हा स्त्री [°सेनकृष्णा] राजा श्रेणिक की एक पत्नी (अंत २५) । °सेल पु [°शैल] १ बड़ा पर्वत (गाया १, १) । २ न नगर-विशेष (पउम ५५, ५३) । °सोआम, °सोआम पुं [°सौदाम] वैरोचन वलीन्द्र के अध-सैन्य का अधिपति (ठा ५, १, इक) । °हरि पु [°हरि] एक नर-पति, दसवें चक्रवर्ती का पिता (सम १५२) । °हिमव, °हिमवत पु [°हिमवत्] १ पर्वत-विशेष (पउम १०२, १०५, ठा २, २, महा) । २ देव-विशेष (जं ४) । महाअत्त वि [दे] आत्मा, श्रीमन्त (दे ६, ११६) । महाइय पुं [दे] महात्मा (भवि) । महाणड पुं [दे. महानट] रुद्र, महादेव (दे ६, ४, १२१) । महाणस न [महानस] रसोई-घर, पाक-स्थान (गाया १, ८, गा १३, उप २५६ टी) ।

कर्म मण्णणज्जइ (कुप्र १०६) । वक्क.
मण्णमाण (नाट. चैत १३३) ।
मण्णण न [मानन] मानना, आदर (उप
१५४) ।
मण्णा देखो मन्ना (राज) ।
मण्णिय देखो मन्त्रिय (राज) ।
मण्णु देखो मन्नु (गा ११, ५०८, दे ६, ७१,
वेणी १७) ।
मण्णे देखो मणे (कप्प) ।
मत्त वि [मत्त] १ मद-गुक्त, मतवाला (उवा,
प्रासू ६४, ६८, भवि) । २ न मत्त, दाह
(ठा ७) । ३ मद, नशा (पव १७१) । °जला
छी [°जला] नदी-विशेष (ठा २, ३, इक) ।
मत्त देखो मेत्त = मात्र, 'वयणमत्तमिद्वाण'
(रभा) ।
मत्त न [अमत्र, मात्र] पात्र, भाजन (प्राचा
२, १, ६, ३, श्रौष २५१) । देखो मत्तय ।
मत्त (अप) देखो मच्च = मत्त (भवि) ।
मत्तगय पु [मत्ताङ्गक, °द] कल्पवृक्ष की
एक जाति, मद्य देनेवाला कल्पतरु (मम १७,
पव १७१) ।
मत्तड पु [मार्तण्ड] सूर्य, रवि (सम्मत्त १४५,
सिरि १००८) ।
मत्तग न [दे] पेशाब, मूत्र (कुलक ६) ।
मत्तग { पुन [अमत्र, मात्रक] १ पात्र,
मत्तय } भाजन । २ छोटा पात्र, विहज्जन्थो
मत्तगो होई (वृह ३, कप्प) ।
मत्तय देखो मत्तग = दे (कुलक १३) ।
मत्तही छी [दे] बलात्कार (दे ६, ११३) ।
मत्तवारण पुन [मत्तवारण] वरडा, वरामदा,
बालान (दे ६, १२३, सुर ३, १००,
भवि) ।
मत्तवाल पु [दे] मतवाला, मदोन्मत्त (दे ६,
१२२, पड, मुख २, १७, सुखा ४८६) ।
मत्ता छी [मात्रा] १ परिमाण (पिंड ६५१) ।
२ अश, भाग, हिस्सा (स ४८३) । ३ समय
का सूक्ष्म नाप । ४ सूक्ष्म उच्चारण-कालवाला
वर्णवियत्र (पिंग) । ५ अल्प, लेश, लव (पात्र) ।
मत्ता अ [मत्वा] जानकर (सूत्र १, २, २,
३२) ।
मत्तालव पु [दे मत्तालव] वरडा, वरा-
मदा (दे ६, १२३, सुर १, ५७) ।

मत्तिया छी [मृत्तिका] मिट्टी (पण्ण १—
पत्र २५) । °वई छी [°वनी] नारी-विशेष,
दशाहंदेश की राजधानी (पव २७५) ।
मत्थ पुन [मस्त, °क] माथा, मिर (से
मत्थग } १. १, स ३८५, श्रौष) । °त्थ वि
मत्थय [°स्थ] सिर में स्थित (गउड) ।
°मणि पुं [°मणि] शिरोमणि, प्रवान, मुख्य
(उप ६४८ टी) ।
मत्थय पुन [मस्तक] गर्भ, फल आदि का
मध्यभाग—अन्त सार (प्राचा २, १, ८,
६) ।
मत्थयधोय वि [दे वीतमस्तक] दासत्व
से मुक्त, गुलामी से मुक्त किया हुआ (गाया
१, १—पत्र ३७) ।
मत्थुलुंग } न [मस्तुलुङ्ग] १ मस्तक-स्नेह,
मत्थुलुय } मिर में से निकलता एक प्रकार
का चिकना पदार्थ (पण्ह १, १, तदु १०) ।
२ मेद का फिफिस आदि (ठा ३, ४—पत्र
१७०, भग, तदु १०) ।
मत्थिय देखो महिअ = मथित (पण्ह २, ४—
पत्र १३०) ।
मद देखो मय = मद (कुमा, प्रयौ १६, पि
२०२) ।
मद (मा) देखो मय = मृत (प्राक १०३) ।
मदण देखो मयण (स्वप्न ६३, नाट—मृच्छ
२३१) ।
मदणसला(गा) देखो मयणसलागा (पण्ण
१—पत्र ५४) ।
मदणा देखो मयणा = मदना (गाया २—पत्र
२५१) ।
मदणिल्ल वि [मदनीय] कामोद्दीपक, मदन-
वर्धक (गाया १, १—पत्र १६, श्रौष) ।
मदि देखो मइ = मति (मा ३२, कुमा, पि
१६२) ।
मदीअ देखो मईअ (स २३२) ।
मदुवी देखो मउई (चड) ।
मदोली छी [दे] द्वीप, द्वीत कर्म करनेवाली
छी (पड) ।
मद सक [मृद] १ चूर्ण करना । मालिश
करना, मसलना, मलना । महाहि (कप्प) ।
कर्म, मदीअदि (नाट—मृच्छ १३५) । हेऊ.
महिउ (पि ५८५) ।

मदण न [मर्दन] १ अग-चप्पी, मालिश
(सुपा २४) । २ हिंसा करना, 'तसयावरभूय
मदण विविह' (उव) । ३ वि. मर्दन करने-
वाला (ती ३) ।
मदल पुं [मर्दल] वाद्य-विशेष, मुरज, मृदग
(दे ६, ११६, सुर ३, ६८, सिरि १५७) ।
मदलिअ वि [मार्दलिक] मृदग बजानेवाला
(सुपा २६४, ५५३) ।
मदव न [मार्दव] मृदुता, नम्रता, विनय,
अहंकार निग्रह (श्रौष, कप्प) ।
मदवि वि [मार्दविन्] नम्र, विनीत, 'अण्ण-
विय मददवियं लाधवियं' (सूत्र २, १, ५७,
प्राचा) ।
मदविअ वि [मार्दविक, °त] ऊपर देखो
(वृह ४, वव १) ।
महिअ देखो मड्डिअ (पात्र) ।
मही छी [माही] १ राजा शिशुपाल की मा
का नाम (सूत्र १, ३, १, १ टी) । २ राजा
पाण्डु की एक छी का नाम (वेणी १७१) ।
मदुदुअ पुं [मदुदुअ] भगवान् महावीर का
राजगृह-निवासी एक उपासक (भग १८,
७—पत्र ७५०) ।
मदुदुग पु [मदुगु, °क] पक्षि-विशेष, जल-
वायस (भग ७, ६—पत्र ३०८) । देखो
मगु ।
मदुदुग देखो मुदुग (राज) ।
मधु देखो महु (पड, रंभा, पिंग) ।
मधुघाद पु [मधुघात] एक स्तेच्छ-जाति
(मृच्छ १५२) ।
मधुर देखो महुर (निचू १, प्राक ८५) ।
मधुसित्थ देखो महुसित्थ (ठा ४, ४—पत्र
२७१) ।
मधूला छी [दे मधूला] पाद-गण्ड (राज) ।
मन अ [दे] निषेधार्थक अव्यय, मत, नही
(कुमा) ।
मनुस्स देखो मणुस्स (चड, भग) ।
मन्न देखो मण्ण मन्नइ, मन्नसि (प्राचा, महा),
मन्ते, मन्तेसि (रंभा) । कर्म, मन्त्रिज्जड
(महा) । वक्क. मन्नत, मन्नमाण (सुर १४,
१७१, प्राचा, महा, सुपा ३०७, सुर ३,
१७४) ।

महिस्सर पु [महेथर] एक इन्द्र, भूतवादि-
देवो का उत्तर दिशा का इन्द्र (ठा २, ३—
पत्र ८५)। देखो महेसर।

मही स्त्री [महा] १ प्रायवा, भूमि, धरती
(कुमा, पात्र)। २ एक नदी (ठा ५, २—
पत्र ३०८)। ३ छन्द-विशेष (पिंग)। °नाह
पु [°नाथ] राजा (उप पृ ६१)। °पहु
पु [°प्रभु] राजा (उप ७२८ टी)। °पाल
पु [°पाल] वही अर्थ (उप ११ टी, उप)।
°रुह पु [°रुह] वृक्ष पेड़ (पात्र, सुर ३,
११०, १६, २४८)। °वइ पु [°पति]
राजा (आ २८, उप १४६ टी सुपा ३८)।
°वीढ न [°पीठ] भूमि-तल (सुर २, ७४)।
°स पु [°श] राजा (आ १४)। °सक्क पु
[°शक्र] वही अर्थ (आ १४)। देखो
महि°।

महु पु [मधु] १ एक दैत्य (से १, १,
अञ्चु ४०)। २ वसन्त ऋतु, 'सुरही महु
वसतो' (पात्र, कुमा)। ३ चैत्र मास (सुर
३, ४०, १६, १०७ पिंग)। ४ पाचवाँ
प्रति-वासुदेव राजा (पठम ५, १५६)। ५
एक राजा (श्रु ६१)। ६ मथुरा का एक
राज-कुमार (पठम १२, २)। ७ चक्रवर्ती
का एक देव-कृत महल (उत्त १३, १३)।
८ मधुक का पेड़, महुआ का गाछ (कुमा)।
९ अशोक-वृक्ष (चड)। १० न मय, दारु
(से २, २७)। ११ क्षौद्र शहद (कुमा, पव
४, ठा ४, १)। १२ पुष्प-रस। १३ मधुर-
रस। १४ जल, पानी (प्राप्र, हे ३, २५)।
१५ छन्द-विशेष (पिंग)। १६ मधुर, मिष्ट
वस्तु (पएह २, १)। °अर पुत्री [°कर]
भ्रमर, भौरा (पात्र, स्वप्न ७३, श्रौप,
कप्प, पिंग)। स्त्री °रिआ °री (अमि
१६०, नाट—मृच्छ ५७)। °अरवित्ति स्त्री
[°करवृत्ति] माधुकरि, भिक्षा वृत्ति (सुपा
८३)। °अरीगीय न [°करागीत] नाट्य-
विधि-विशेष (महा)। °आसव वि [°आश्रव]
लव्घि-विशेषवाला, जिसके प्रभाव से वचन
मधुर लगे ऐसी लव्घिवाला (पएह २, १—
पत्र १००)। °गुलिया स्त्री [°गुटिका]
शहद की गोली (ठा ४, २)। °पडल न
[°पटल] मधुपुडा (दे ३, १२)। °भार

पुं [°भार] छन्द-विशेष (पिंग)। °मक्खिया,
°मच्छिआ स्त्री [°मक्षिका] शहद की
मक्खी, 'अह उड्डियाउ तांमरमुहाउ महुक्खि
(?मक्खि)याउ सव्वतो' (धर्मवि १२४,
गा ६३४)। °मय वि [°मय] मधु से
भरा हुआ (से १, ३०)। °मह पु [°मथ]
विष्णु, वासुदेव, उपेन्द्र (पात्र, से १, १७)।
२ भ्रमर (से १, १७)। °मह पु [°मह]
वसन्त का उत्सव (से १, १७)। °महण
पुं [°मथन] १ विष्णु (से १, १ वज्जा २४,
गा ११७, हे ४, ३८४, पि १४३, पिंग)। २
समुद्र, सागर। ३ सेतु, पुल (से १, १)।
°मास पुं [°मास] चैत्र मास (भवि)।
°मित्त पु न [°मित्र] कामदेव (सुपा
५२६)। °मेहण न [°मेहन] रोग-विशेष,
मधु-प्रमेह (आचा १, ६, १, २)। °मेहणि
वि [°मेहनिन्] मधु-प्रमेह रोगवाला
(आचा)। °मेहि पु [°मेहिन] वही अर्थ
(आचा)। °राय पुं [°राज] एक राजा
(रण ७४)। °लट्ठि स्त्री [°यष्टि] १
श्रोपधि-विशेष, यष्टिमधु, मुलेठी, जेठी मधु।
२ दक्ष, ईश (हे १, २४७)। °वक्क पु [°पर्क] १
दधियुक्त मधु, दही ओर शहद। २ पोडशोप-
चार पूजा का छठवाँ उपचार (उत्तर १०३)।
°वार पु [°वार] मय, दारु (पात्र)।
°सिंगी स्त्री [°शृङ्गी] वनस्पति-विशेष
(पएह १—पत्र ३५)। °सूयण पुं
[°सूदन] विष्णु (गड, सुपा ७)।

महुअ पु [मधूक] १ वृक्ष विशेष, महुआ
का गाछ (गा १०३)। २ न. महुआ का
फल (प्राप्र, हे १, २२२)।
महुअ पु [दे] १ पक्षि-विशेष, श्रीवद पक्षी।
२ मागव, स्तुति-पाठक (दे ६, १४४)।
महुण सक [सथ्] १ विलोडन करना।
२ विनाश करना। वक्क 'विमुक्कट्टहामा
जलियजलणपिगलकेसा महुणित-जालाकराल-
पिसाया मुक्का' (महा)।

महुत्त (अप) देखो मुहुत्त (भवि)।

महुप्पल न [महोत्पल] कमल, पद्म, 'महुप्पलं
पकय नल्लिण' (पात्र)।

महुमुह पु [दे. मधुमुख] पिशुन, दुर्जन,
खल (दे ६, १२२)।

महुर पुं [महुर] १ अनार्य देश-विशेष। २
उम देश? रहनेवाली अनार्य मनुष्य-जाति
(पएह १, १—पत्र १४)।

महुर वि [मथुर] १ मीठा, मिष्ट (कुमा,
प्रासू ३३, गड, गा ४०१)। २ कोमल
(भग ६, ३१, श्रौप)। °भामि वि
[°भापिन] प्रिय-भापी (पठम ६, १३३)।
महुरा स्त्री [मथुरा] भारत की एक प्रसिद्ध
नगरी, मथुरा (ठा १०, सम १५३, पएह
१, ३, ३२, १०, कुमा, वज्जा १२२)।
°मगु पु [°मङ्ग] एक प्रसिद्ध जैनाचार्य
(सिक्का ६२)। °हिच पुं [°धिप] मथुरा
का राजा (कुमा)।

महुरालिअ वि [दे] परिचित (दे ६, १२५)।
महुरिम पुत्री [मधुरिमन्] मधुरता, माधुर्य
(सुपा २६४, कुप्र ५०)।

महुरेम पुं [मथुरेश] मथुरा का राजा
(कुमा)।

महुला स्त्री [दे] रोग-विशेष, पाद-गण्ड
(निचू २)।

महुसिथ न [मधुसिक्थ] १ मदन, मोम
(उप पृ २०६)। २ पञ्च-विशेष, स्त्री के पैर
में लगा हुआ श्रलता तक लगनेवाला कादा
(श्रोपभा ३३)। ३ कला-विशेष (स ६०२)।

महुस्सव देखो महुसव (राज)।
महुअ देखो महुअ=मधूक (कुमा, हे १
१२२)।

महुसव पुं [महोत्सव] बड़ा उत्सव (सुर ३,
१०८, नाट—मृच्छ ५४)।

महेद देखो महिद (से ६, २२)।

महेडु पु [दे] पक, कादा (दे ६, ११६)।

महेचभ पुं [महेभ्य] बड़ा शेर (आ १६)।

महेभ पु [महेभ] बड़ा हाथी (कुमा)।

महेला स्त्री [महेला] स्त्री, नारी (हे १,
१४६, कुमा)।

महेस पु [महेश] नीचे देखो (त्रि ६४, भवि)।

महेसर पुं [महेश्वर] १ महादेव, शिव (पठम
३५, ६४, धर्मवि १२८)। २ जिनदेव,
अहंश्च (पठम १०६, १२)। ३ श्रीमन्त,
आद्य (सिरि ४२)। ४ भूतवादि देवो के
उत्तर दिशा का इन्द्र (इक)। °दत्त पु
[°दत्त] एक पुरोहित (विपा १, ५)।

सिंह, केसरी (पउम २, १७, उप पृ ३०) ।
 'लंछण पुं [°लाञ्छन] चन्द्रमा (पात्र, कुमा, सुर १३, ५३) । 'लोअणा खी [°रोचना] गोरोचन, गोरोचना, पीत-वर्णं द्रव्य-विशेष (अभि १२७) । 'रि पुं [°रि] सिंह (पात्र) । 'रिदमण पुं [°रिदमन] राक्षस-वंश का एक राजा; एक लका-पति (पउम ५, २६२) । 'रिह्व पु [°धिप] सिंह, केसरी (पात्र, स ६) । देखो मिअ, मिग = मृग ।

मयंक } देखो मिअक (हे १, १७७, १८०, मयंग } कुमा, षड्, गा ३६६, रंभा) ।

मयग देखो मायग = मातंग, 'कूवर वल्लो भिउडी गोमेहो वामण मयगो' (पव २६) ।

मयग पुं [°मृदङ्ग] वाद्य-विशेष (प्राकृ ८) ।

मयगाय पुं [°मतङ्गज] हाथी, हस्ती (पउम ८०, ६६, उप पृ २६०) ।

मयगा खी [°मृतगङ्गा] जहाँ पर गंगा का प्रवाह रुक गया हो वह स्थान (गाया १, ४—पत्र ६६) ।

मयंतर न [°मतान्तर] भिन्न मत, अन्य मत (भग) ।

मयद देखो मइद = मृगेन्द्र (सुपा ६२) ।

मयध वि [°मदान्ध] मद के कारण अन्धा बना हुआ, मदोन्मत्त (सुर २, ६६) ।

मयग वि [°मृतक] १ मरा हुआ । २ न. मृदा (गाया १, ११, कुप्र २६, श्रौप) । 'किञ्च न [°कृत्य] आद आदि कर्म (गाया १, २) ।

मयड पुं [°दे] आराम, बगीचा (दे ६, ११५) ।

मयण पुं [°मदन] १ कन्दर्प, कामदेव (पात्र, घण २५, कुमा, रंभा) । २ लक्ष्मण का एक पुत्र (पउम ६१, २०) । ३ एक वणिक्-पुत्र (सुपा ६१७) । ४ छन्द का एक भेद (पिंग) । ५ वि. मद-कारक, मादक, 'मयणा दग्निव्वलिया निव्वलिया जह कोद्वा तिविहा' (विसे १२२०) । ६ न. मीन, मोम, 'मयणो मयण विम्व विलोणो' (घण २५, पात्र, सुर २, २४६) । 'घरिणी खी [°गृहिणी] काम-प्रिया, रति (कुप्र १०६) । 'तार्लक पुं

[°तालङ्क] छन्द-विशेष (पिंग) । 'तेरसी खी [°त्रयोदशी] चैत्र मास की शुक्ल त्रयोदशी तिथि (कुप्र ३७८) । 'दुम पु [°द्रुम] वृक्ष-विशेष (से ७, ६६) । 'फल न [°फल] फल-विशेष, मैनफल, 'तम्रो तेगुप्पल मयणफनेण भाविय मणुस्सहत्थे दिन्नं, एयं वरुद्धस्स देजाहि' (मुख २, १७) । 'मजरी खी [°मञ्जरी] १ राजा चण्डप्रद्योत की एक खी का नाम । २ एक श्रेष्ठि-कन्या (महा) । 'रेहा खी [°रेखा] एक युवराज की पत्नी (महा) । 'वेय पु [°वेग] पुरुष-विशेष का नाम (मवि) । 'सुदरी खी [°सुन्दरी] राजा श्रीराम की एक पत्नी (सिरि ५३) । 'हरा खी [°गृह] छन्द विशेष (पिंग) । 'हल देखो 'फल', 'मयणहलगंधमो ता उव्वमिया चद-हाससुरा' (धर्मवि ६४) ।

मयणकुस पु [°मदनाकुश] श्रीरामचन्द्र का एक पुत्र, कुश (पउम ६७, ६) ।

मयणसलागा } खी [°दे मदनशालाका]
 मयणसलाया } मैना, सारिका (जीव १ टी—पत्र ४१, दे ६, ११६) ।

मयणसाला खी [°दे मदनशाला] सारिका-विशेष (परह १, १—पत्र ८) ।

मयणा खी [°दे. मदना] मैना, सारिका (उप १२६ टी, श्राव १) ।

मयणा खी [°मदना] १ वैरोचन बलीन्द्र की एक पटरानी (ठा ५, १—पत्र ३०२) । २ शक्र के लोकपाल की एक खी (ठा ४, १—पत्र २०४) ।

मयणाय पुं [°मैनाक] १ द्वीप-विशेष । २ पर्वत-विशेष (मवि) ।

मयणिज्ज देखो मदणिज्ज (कप्प, परण १७) ।

मयणिवास पुं [°दे] कन्दर्प, कामदेव (दे ६, १२६) ।

मयर पुं [°मकर] १ जलजन्तु-विशेष, मगर-मच्छ (श्रौप, सुर १३, ४६) । २ राशि-विशेष, मकर राशि (सुर १३, ४६, विचार १०६) । ३ रावण का एक सुभट (पउम ५६, २६) । ४ छन्द-विशेष (पिंग) । 'केड पुं [°केतु] कामदेव, कन्दर्प (कप्प) । 'द्धय पुं [°ध्वज] वही (पात्र, कुमा, रंभा) । 'लंछण पुं [°लाञ्छन] धही (कप्प, पि

५४) । 'हर पुं [°गृह] वही (पात्र, से १, १८; ४, ४८, वजा १५४, मवि) ।

मयरंद पुं [°दे मकरन्द] पुष्प-रज, पुष्प-पराग (दे ६, १२३, पात्र, कुमा ३, ५४) ।

मयरंद पु [°मकरन्द] पुष्प-रस, पुष्प-मधु (दे ६, १२३, सुर ३, १०, प्रासू ११३, कुमा) ।

मयल देखो मइल = मलिन (सुपा २६२) ।

मयलणा देखो मइलणा (सुपा १२४, २८६) ।

मयलवुत्ती [°दे] देखो मइलपुत्ती (दे ६, १२५) ।

मयलिअ देखो मल्लिणिअ (उप ७२८ टी) ।

मयल्लिगा खी [°मतल्लिका] प्रधान, श्रेष्ठ, 'कूडक्खरविमो(उ)मयल्लिगाणं' (रंभा १७) ।

मयह देखो मगह । 'सामिय पुं [°स्वामिन्] मगध देश का राजा (पउम ६१, ११) । 'पुर न [°पुर] राज-गृह नगर (वसु) । 'रिह्व पुं [°धिपति] मगध देश का राजा (पउम २०, ४७) ।

मयहर पुं [°दे] १ ग्राम-प्रधान, ग्राम-प्रवर, गांव का मुखिया (पव २६८, महा, पउम ६३, १६) । २ वि. वडील, मुखिया, नायक, 'सयलहत्थारोहपहाणमयहरेण' (स २८०, महानि ४, पउम ६३, १७) । खी. 'रिंगा, 'रिया, 'री (उप १०३१ टी, सुर १, ४१, महा, सुपा ७६, १२६) ।

मयार्ड खी [°दे] शिरो-माला (दे ६, ११५) ।

मयार पुं [°मकार] १ 'म' अक्षर । २ मकारादि अश्लील—अवाच्य शब्द, 'जत्थ जयार-मयारं समणी जंपइ गिहत्थपक्कव' (गच्छ ३, ४) ।

मयाल (अप) देखो मराल (पिंग) ।

मयालि पुं [°मयालि] जैन महर्षि-विशेष—१ एक अन्तर्कृद् मुनि (अत १४) । २ एक अनुत्तर-गामी मुनि (अनु १) ।

मयाली खी [°दे] लता-विशेष, निद्राकरी लता (दे ६, ११६, पात्र) ।

मर अक [°मृ] मरना । मरइ, मरण (हे ४, २३४, भग, उव, महा, षड्), मर (हे ३, १४१) । मरिजइ, मरिजउ (मवि, पि ४७७) । मूका. मरही, मरोअ (आचा, पि ४६६) । मवि. मरिस्ससि (पि ५२२) । वक्क. मरंत.

मंसुयाहि माउयाहि उवसोहियाइ' (एया १, ६—पत्र १५८)।

माउआपय न [मावृकाण्ड] मूलाक्षर, 'म' से 'ह' तक के अक्षर (दसनि १, ८)।

माउक वि [मृदु, °क] कोमल, कुमार (हे १, १२७, २, ६६, कुमा)।

माउक न [मृदुत्य] कोमलता (हे १, १२७, २, २, कुमा)।

माउचा छो [दे मावृप्पस] देखो माउ-च्छा (पड्)।

माउचा छो [दे] मखी, सहेली (पड्)।

माउच्छ वि [दे] मृदु, कोमल (दे ६, १२६)।

माउत्त } देखो माउक = मृदुत्व (कुमा, हे
माउत्तण } २, २, पड्)।

माउल पु [मातुल] माँ का भाई, मामा (सुर ३, ८१, रमा, महा)।

माउलिअ देखो मउलिअ (से ११, ६१)।

माउलिग देखो माहुलिग (राज)।

माउलिगा } छो [मातुलिङ्गा, °ङ्गी] बीजैरे
माउलिगी } का गाछ (पण १—पत्र ३२, पउम ४२, ६)।

माउलुग देखो माहुलिग (हे १, २१४, अनु)।

मागंदिअ पुं [माकन्दिक] माकन्दिकपुत्र नामक एक जैन मुनि (भग १८—१ टी)।
°पुत्त पु [°पुत्र] वही अर्थ (भग १८, ३)।

मागसीसी छो [मार्गशीर्षी] १ अगहन मास की पूर्णिमा। २ अगहन की अमावास्या (इक)।

मागह } वि [मागव °क] १ मगध-
मागहय } देशीय, मगध देश में उत्पन्न, मगध देश का, मगध-संबन्धी (श्लो ७१३, विसे १४६६, पव ६१, एया १, ८, पउम ६६, ५५)। २ पु स्तुति-पाठक, बन्दी, चारण (पात्र, औप)। ३ भासा छो [°भाषा] देखो मागहिआ का पहला अर्थ (राज)।

मागहिआ छो [मागधिका] १ मगध देश की भाषा, प्राकृत भाषा का एक भेद। २ कला-विशेष (औप)। ३ छन्द-विशेष (सुख २, ४५, अजि ४)।

माघवई छो [माघवती] सातवी नरक-भूमि (पव १४३, इक, ठा ७—पत्र ३८८)।

माघवा } [माघवा, °वी] ऊपर देखो, 'मघव
माघवी } ति माघव ति य पुढवीणं नामघेयाइ' (जीवस १२, इक)।

माज्जार देखो मज्जार (संलि २)।

माडविअ पुं [माडम्बिक] १ 'मडव' का अधिपति (एया १, १, औप, कप्प)। २ प्रत्यन्त—सीमा-प्रान्त का राजा (पण १, ५—पत्र ६४)।

माडविय वि [माडम्बिक] चित्र मंडप का अध्यक्ष (राय १४१)।

माडिअ न [दे] गृह, घर (दे ६, १२८)।

माडर पुं [माठर] १ सौधमैन्द्र के रथ-सैन्य का अधिपति (ठा ५, १—पत्र ३०३, इक)। २ न. गोय-विशेष (कप्प)। ३ शास्त्र विशेष (गुंदि)।

माडर पुंछी [माठर] माठर-गोय में उत्पन्न (गुंदि ४६)।

माडरी छो [माठरी] वनस्पति-विशेष (पण १—पत्र ३६)।

माडिअ वि [माठित] सन्नाह-युक्त, वर्मित (कुमा)।

माढी छो [माठी] कवच, वर्म, वस्त्र (दे ६, १२८ टी, पण १, ३—पत्र ४४, पात्र, से १२, ६२)।

माण सक [मानय्] १ सम्मान करना, आदर करना। २ अनुभव करना। माणइ, माणेइ, माणति, माणेमि (हे १, २२८, महा, कुमा; सिरि ६६)। वक्र. माणंत, माणेमाण (सुर २, १८२, एया १, १—पत्र ३३)। कवक. माणिज्जंत (गा ३२०)। हेऊ. माणिउ, माणेउं (महा, कुमा)। कृ. माणणिज्ज, माणणीअ माणेयउव (उव, सुर १२, १६५, अमि १०७, उप १०३१ टी), 'जया य माणिमो होइ पच्छा होइ म-माणिमो' (दसह १, ५)।

माण पुन [मान] १ गर्व, अहकार, अभिमान, 'मड्ढदीकयमाणिमाणो' (कुमा), 'पुव्व विवुहसमक्ख-गुरुणो एयस्स खडिंयं माणं' (सम्मत्त ११६)। २ माप, परिमाण। ३ नापने का साधन, वाट—वटखरा आदि (अणु;

कप्प, जी ३०, या १४)। ४ प्रमाण, सूत्र (विसे ६४६, घमंसं ५२५)। ५ आदर, सत्कार (एया १, १, कप्प)। ६ पुं. एक अर्थ-पुत्र (सुपा ५४५)। °इंत, °इत्त, °इल्ल वि [°वन्] मान-वाला (पड्, हे २, १५६, हेका ७३, पि ५६५) छो. °त्ता, °त्ती (कुमा, गउड)। °तुग पु [°तुङ्ग] एक प्राचीन जैन कवि (नमि २१)। °वई छो [°वती] १ मानवाली छो (से १०, ६६)। २ रावण की एक पत्नी (पउम ७४, ११)। °संध न [°सघ] एक विद्याधर-नगर (इक)। °वाइ वि [°वादिन्] ग्रहकारी (आचा)।

माण वि [मान] मान-संबन्धी, मान का 'कोहाए माणाए मायाए' (पडि)।

माण न [दे] परिमाण-विशेष, दस शेर का नाप, गुजराती में 'माणु' (उप १५४)।

माणसि वि [दे] १ मायावी, कपटी (दे ६, १४७, पड्)। २ छो. चन्द्र-वधू (दे ६, १४७)।

माणसि देखो मणसि (काप्र १६६, संलि १७, पड्)।

माणण न [मानन] १ आदर, सत्कार (आचा)। २ मानना (रयण ८४)। ३ अनुभव। ४ सुख का अनुभव, 'सुइसमाणणे' (अजि ३१)।

माणणा छो [मानना] ऊपर देखो (पण २, १, रयण ८४)।

माणय देखो माण = (दे) (सुपा ३५८)।

माणव पुं [मानव] १ मनुष्य, मर्त्य (पात्र, सुपा २४३)। २ भगवान् महावीर का एक गण (ठा ६—पत्र ४५१, कप्प)।

माणवग } पु [मानवक] १ एक निधि,
माणवय } अन्न शक्ती की पूर्ति करनेवाला निधि (उप ६८६ टी, ठा ६—पत्र ४४६, इक)। २ ज्योतिष्क ग्रह-विशेष, एक महाग्रह (ठा २, ३, सुज २०)। ३ सौधमं देवलोक का एक चैत्य-स्तम्भ (सम ६३)।

माणवी छो [मानवी] एक विद्या-देवी (सति ६)।

माणस न [मानस] १ सरोवर-विशेष (पण १, ४, औप, महा, कुमा)। २ मन, अन्त-करण (पात्र, कुमा)। ३ वि. मन संबन्धी,

मरुल पुं [दे] भूत-पिशाच (दे ६, ११४) ।
मरुवय देखो मरुअअ (गा ६७७, कुमा, विक्र २६) ।

मरुस देखो मरिस । मरसिज (भवि) ।

मल मक [मल्] धारण करना (भग ६, ३३ टी—पत्र ४८०) ।

मल देखो मद् । मलइ, मलेइ (हे ४, १२६, प्राकृ ६८, भवि), मलेमि (से ३, ६३), मलेंति (सुर १, ६७) । कर्म मलिजइ (पंचा १६, १०) । वक्र. मलें (से ४, ४२) । कवक्र. मलिज्जत (से ३, १३) । संक्र. मलिऊण, मणिऊण (कुमा, पि ५८५) । क. मलेव्व (वे ६६, निसा ३) ।

मल पु [दे] स्वेद, पसीना (दे ६, १११) ।

मल पुंन [मल] १ मैल (कुमा, प्रासू २५) । २ पाप (कुमा) । ३ बंधा हुआ कर्म (चैडय ६२२) ।

मलपिअ वि [दे] गर्वी, अहंकारी (दे ६, १२१) ।

मलण न [मर्दन, मलन] मर्दन, मलना (सम १२५, गडड, दे ३, ३४, सुपा ४४०, पंचा १६, १०) ।

मल्य पुं [दे मलक] आस्तरण-विशेष (गाया १, १—पत्र १३, १, १७—पत्र २२६) ।

मलय पुं [दे मलय] १ पहाड़ का एक भाग (दे ६, १४४) । २ उद्यान, बगीचा (दे ६, १४४, पात्र) ।

मलय पुं [मलय] १ दक्षिण देश में स्थित एक पर्वत (सुपा ४५६, कुमा, पड्) । २ मलय-पर्वत के निकट-वर्ती देश-विशेष (पव २७५, पिग) । ३ छन्द-विशेष (पिग) । ४ देवविमान-विशेष (देवेन्द्र १४३) । ५ न. श्रीखण्ड, चन्दन (जीव ३) । ६ पुत्री मलय देश का निवासी (पएह १, १) । °केउ पुं [°केतु] एक राजा का नाम (सुपा ६०७) । °गिरि पुं [°गिरि] एक सुप्रसिद्ध जैन आचार्य और ग्रन्थकार (इक, राज) । °चद् पुं [°चन्द्र] एक जैन उपासक का नाम (सुपा ६४५) । °दि पुं [°दि] पर्वत-विशेष (सुपा ४७७) । °भव वि [°भव] १ मलय देश में उत्पन्न । २ न. चन्दन (गडड) । °मई स्त्री

[°मती] राजा मलयकेतु की स्त्री (सुपा ६०७) । °य [°ज] देखो °भव (राज) । °रुह पु [°रुह] चन्दन का पेड़ (सुर १, २८) । २ न. चन्दन-काष्ठ (पात्र) । °चल पु [°चल] मलय पर्वत (सुपा ४५६) । °णिगल पुं [°निगल] मलयाचल से बहता शीतल पवन (कुमा) । °यल देखो °चल (रंभा) ।

मलय वि [मालय] १ मलय देश में उत्पन्न (अणु) । २ न. चन्दन (भवि) ।

मलवट्टी स्त्री [दे] तरुणी, युवति (दे ६, १२४) ।

मलहर पुं [दे] तुमुल-ध्वनि (दे ६, १२०) ।

मलि वि [मलिन्] मलवाला, मल-युक्त (भवि) ।

मलिअ वि [मृदित] जिसका मर्दन किया गया हो वह (गा ११०, कुमा, हे ३, १३५, औप, गाया १, १) ।

मलिअ न [दे] १ लघु क्षेत्र । २ कुण्ड (दे ६, १४४) ।

मलिअ वि [मलित] मल-युक्त, मलिन, 'मलमलियदेहवत्था' (सुपा १६६, गडड) ।

मलिज्जत देखो मल = मृद ।

मलिण वि [मलिन] मैला, मल-युक्त (कुमा, सुपा ६०१) ।

मलिणिय वि [मलिनित] मलिन किया हुआ (उव) ।

मलीमस वि [मलीमस] मलिन, मैला (पात्र) ।

मलेव्व देखो मल = मृद ।

मलेच्छ देखो मिलिच्छ पि ८४, नाट—चैत १८) ।

मल सक [मल्ल] देखो मल = मल् (भग ६, ३३ टी) ।

मल पु [मल] १ पहलवान, कुश्ती लड़ने-वाला, बाहु योद्धा (औप, कप्प; पएह २, ४, कुमा) । २ पात्र, 'दीवसिहापडिपिल्लण-मल्ले मिल्लति नीसासे' (कुप्र १३१) । ३ भीत का अवष्टम्भन-स्तम्भ । ४ छप्पर का आधार-भूत काष्ठ (भग ८, ६—पत्र ३७६) । °जुद्ध न [°युद्ध] कुश्ती (कप्प, हे ४, ३८२) । °दिज पुंन [°दत्त] एक राज-

कुमार (गाया १, ८) । °वाइ पु [°वादिन्] एक सुविख्यात प्राचीन जैन आचार्य और ग्रंथकार (सम्मत १२०) ।

मल्ल न [माल्य] १ पुष्प, फूल (ठा ४, ४) । २ फूल की गुंथी हुई माला (पात्र, औप) । ३ मस्तक-स्थित पुष्पमाला (हे २, ७६) । ४ एक देव-विमान (सम ३६) । ५ वलि, 'मल्ल ति वलीए णाम' (आव० चूर्णि० भा० १ पत्र ३३२) ।

मल्लइ पुं [मल्लकि, °किन्] नृप-विशेष (भग, औप, पि ८६) ।

मल्लग } न [दे. मल्लक] १ पात्र-विशेष,
मल्लय } शराव (विसे २४७ टी, पिड २१०,
तंदु ४४, महा, कुलक १४, गाया १, ६,
दे ६, १४५, प्रयौ ६७) । २ चपक, पानपात्र
(दे ६, १४५) ।

मल्लय न [दे] अपूप-भेद, एक तरह का पूसा । २ वि. कुसुम्भ से रक्त (दे ६, १४५) ।

मल्लाणी स्त्री [दे] मातुलानी, मामी (दे ६, ११२, पात्र, प्राकृ ३८) ।

मल्लि वि [मल्लिन्] धारण-कर्ता (भग ६, ३३ टी) ।

मल्लि वि [माल्यिन्] माल्य-युक्त, मालावाला (औप) ।

मल्लि स्त्री [मल्लि] १ उन्नीमवें जिन-देव का नाम (सम ४३, गाया १, ८, मगल १२, पडि) । २ वृक्ष-विशेष, मोतिया का गाछ (दे २, १८) । °णाह, °नाह पु [°नाथ] उन्नीमवें जिन-देव (महा, कुप्र ६३) ।

मल्लि स्त्री [मल्लि] पुष्प-विशेष (भग ६, ३३ टी) ।

मल्लिअज्जुण पुं [मल्लिकार्जुन] एक राजा का नाम (कुमा) ।

मल्लिआ स्त्री [मल्लिका] १ पुष्प-वृक्ष-विशेष (गाया १, ६, कुप्र ४६) । २ पुष्प-विशेष (कुमा) । ३ छन्द-विशेष (पिग) ।

मल्लिहाण न [माल्याधान] १ पुष्प-वन्धन-स्थान । २ केश-कलाप (भग ६, ३३ टी—पत्र ४८०) ।

मल्ली देखो मल्लि (गाया १, ८, पउम २० ३५, विचार १४८, कुमा) ।

मायहिय (अप) देखो मागहिया (भवि) ।

माया = देखो माइ = माव, 'मायाइ अहं भणियो' (धर्मवि ५, पात्र, निपा १, ६, पङ्) ।
 °पिड, °पिति पुन [°पिट] मां-वाप (पि ३६१, स १८४) । °मह पु [°मह] मां का वाप (सुर ११, ४६, सुपा ३८४) ।
 °वित्त देखो °पिड, 'दुहियाण होइ मरण मायावित्त महिलियाण' (पद्य १७, २१), 'तेणेव देवेण तहि मायावित्ताड रोवमाण्ड' (सुर ६, २३५, १, २३६, धर्मवि २१, महा) ।

माया देखो मत्ता = मात्रा, 'नो अइमायाए पाणभोयण आहारेता (उत्त १६, ८, औप, उव कम) ।

माया छी [माया] १ कपट, छल, शाठ्य, धोखा (भग, कुमा, ठा ३, ४, पात्र, प्रासू १७५) । २ इन्द्रजाल (दे ३, ५३, उप ८२३) । ३ मन्त्राक्षर-विशेष, 'ह्री' अक्षर (सिरि १६७) । ४ छन्द-विशेष (पिग) ।
 °गर पुं [°नर] पुरुष-वेश-वारी छी-आदि (धर्मस १२७८) । °वीय न [°वीज] 'ह्री' अक्षर (सिरि ४०१) । °मोस पुन [°मृपा] कपट-पूर्वक असत्य वचन (साया १, १, परह १, २, भग, औप) । °वन्तिअ, °वत्तीय वि [°प्रत्ययिक] कपट मे होनेवाला, छल-मूलक (भग, ठा २, १ नव १७) । °वि वि [°विन्] मायायुक्त (पद्य ८८, ११) । छी, °विणी (सुपा ६२७) ।

मायि वि [मायिन्] माया-युक्त, मायावी (उवा, पि ४०५) ।

मार सक [मारय्] १ ताडन करना । २ हिंसा करना । मारइ, मारेइ (आचा, कुमा, भग) । भवि मारेहिंस (पि ५२८) । कर्म, मारिजइ (उव) । वक्र, मारत, मारेत (भक्त ६२, पद्य १०५, ७६) । कवक मारिजत (सुपा १५७) । सक मारेत्ता (महा), मारि (अप) (हे ४, ४३६) । हेक मारेउं (महा) । क मारियन्व, मारेयन्व (पद्य ११, ४२), मारणज (उप ३५७ टी) ।

मार पु [मार] १ ताडन (सुपा २२६) । २ मरण, मौत (आचा, सूत्र २, २, १७, उप ५ ३०८) । ३ यम, जम (सूत्र १, १, ३,

७) । ४ कामदेव, कदपं (उप ७६८ टी) ।

५ चौथा नरक का एक नरकावास (ठा ४, ४—पत्र २६५, देवेन्द्र १०) । ६ वि. मारने-वाला (साया १, १६—पत्र २०२) । °वहू छी [°वधू] रति (सुपा ३०४) ।

मार पु [मार] मणि का एक लक्षण (राय ३०) ।

मारग वि [मारक] मारनेवाला । छी °रिगा (कुप्र २३५) ।

मारण न [मारण] १ ताडन । २ हिंसा (भग, स १२१) ।

मारणअ (अप) वि [मारयित्] मारनेवाला (हे ४, ४४३) ।

मारणंतिअ वि [मारणान्तिक] मरण के अन्त समय का (मम ११, ११६, औप, उवा, कप) ।

मारणया } छी [मारणा] मारना (भग, मारणा } परह १, १, निपा १, १) ।

मारय देखो मारग (उव, सत्रोव ४३) ।

मारा छी [मारा] प्राणि-व्य का स्थान, सूना (साया १, १६—पत्र २०२) ।

मारि छी [मारि] १ रोग-विशेष, मृत्यु-दायक रोग (स २४२) । २ मारण (आवम) । ३ मौत, मृत्यु (उप ३२६) ।

मारि हेखो मार = मारय् ।

मारि नि [मारिन्] मारनेवाला (महा) ।

मारिज पुं [मारीच] रावण का एक सुभट (पद्य ५९, ७) । देखो मारीअ ।

मारिजि देखो मग्नि (पद्य ८२, २६) ।

मारिय वि [मारित] मारा हुआ (महा) ।

मारिलगा छी [दे] कुत्सित छी (दे ६, १३१) ।

मारि पुन [दे] गौरव, 'गौरवे मारिखे' (सक्ति ४७) ।

मारिस वि [माइश] मेरे जैसा (कुमा) ।

मारी छी [मारी] देखो मारि (स २४२) ।

मारिअ पु [मारीच] ऋषि-विशेष (अभि २४६) । देखो मारिज ।

मारीइ } पु [मारीचि] एक विद्याधर
 मारीजि } सामन्त राजा (पद्य ८, १३२) ।
 २ रावण का एक सुभट (पद्य ५६, २७) ।

मारुअ पु [मारुत] १ पवन, वायु (पात्र, सुपा २०४, सुर ३, ४०, १२, १६४, अप १४, महा) । २ हनुमान का पिता (से २, ४४) । °तणय पुं [°तनय] हनुमान (से ४४, हे ३, ८७) । °रथ न [°रथ] अन्न-विशेष, वाताख (पद्य ५६, ६१) ।

मारुअ पि [मारुत] मरु देश का, मरु सवन्वी, 'एणे अमयवल्लरी मारुयम्मि कत्यइ थले होइ' (उप ६८६ टी) ।

मारुड पुं [मारुति] हनुमान (से १, ३७) ।

माल अक [माल्] १ शोभना । २ वेषित होना । कृ अच्विसहस्रमालगीय' (साया १, १—पत्र ३८) ।

माल पु [दे] १ आराम, वगीचा (दे ६, १४६) । २ मञ्च, आसन-विशेष (दे ६, १४६, साया १, १—पत्र ६३, पचा १३, १४) । ३ वि मञ्जु (दे ६, १४६) ।

माल पुं [दे. माल] १ देश-विशेष (पद्य ६८, ६५) । २ घर का उपरि-भाग, तला, मंजिल, गुजराती मे 'माळो' (साया १, ६—पत्र ५७, चेइय ४८१, पचा १३, १४, ठा ३, ४—पत्र १५६) । ३ वनस्पति-विशेष (जं १) ।

माल° देखो माला । °गार वि [°कार] माली (उप ५ १६६) ।

मालड° } छी [मालती] १ लता विशेष ।
 मालई } २ पुष्प-विशेष (पद्य ५३, ७६, पात्र, कुमा) । ३ छन्द-विशेष (पिग) ।

मालकार पुं [मालङ्कार] वेरोचन बलीन्द्र के हस्ति-सैन्य का अधिपति (ठा ५, १—पत्र ३०२, इक) ।

मालणीय देखो माल = माल् ।

मात्य देखो माल = दे माल (ठा ३, १—पत्र १२३) ।

मालव पु [मालव] १ भारतीय देश-विशेष (इक, उप १४२ टी) । २ मालव देश का निवासी मनुष्य (परह १, १—पत्र १४) ।

मालव पुं [मालव] म्लेच्छ-विशेष, आदमी को उठा ले जानेवाली एक चोर जाति (वव ४) ।

(हे २, १२०)। °प्प पुं [°आत्मन्] महान्
आत्मा, महा-पुरुष (पउम ११८ १२१)।
°प्फल वि [°फल] महान् फलवाला (सुपा
६२१)। °वाहु पुं [°वाहु] राक्षस वंश का
एक राजा, एक लंका-पति (पउम ५, २६५)।

°बोह पुं [°अबोध] महा-सागर,

‘ह्य व्रुत्तंत सोउ राणा

निव्वासिया तहा सुगया।

महवोहे जतूणं जह

पुणरवि नागया तत्य’

(सम्मत्त १२०)।

°व्यल पुं [°वल] १ एक राज-कुमार
(विपा २, ७, भग ११, ११, अत)। २ वि.
विपुल बलवाला (भग, औप)। देखो महा-
वल। °वभय वि [°भय] महाभय-जनक
(पएह १, १)। °वभूय न [°भूत] वृषिबी
आदि पांच द्रव्य (सूत्र २, १, २२)। °मरुय
पुं [°मरुत्] एक महर्षि, अन्तर्कृद् मुनि-विशेष
(अत २५)। °मास पुं [°अश्व] महान्
अश्व (औप)। °यर देखो °त्तर (गाया १,
१—पत्र ३७)। °रव पुं [°रव] राक्षस
वंश का एक राजा, एक लंका-पति (पउम ५,
२६६)। °रिसि पुं [°अपि] महर्षि, महा-
मुनि (उव, रयण ३७)। °रिह वि [°अर्ह]
बड़े के योग्य, बहु-मूल्य, कीमती (विपा १,
३, औप, पि १४०)। °वाय पुं [°वात]
महान् पवन (श्रौष ३८७)। °व्यइय वि
[°व्रतिक] महाव्रतवाला (सुपा ४७४)।
°व्यय पुं न [°व्रत] महान् व्रत, ‘महव्या
पंच वृत्ति इमे’ (पउम ११, २३), ‘सेसा
महव्या ते उत्तरगुणसज्जयावि न ह्व सम्म’
(सिक्खा ४८, भग, उव)। °व्यय पुं
[°व्यय] विपुल खर्च (उप पृ १०८)।
°सलाग छी [°शलाका] पत्य-विशेष, एक
प्रकार की नाप (जीवस १३६)। °सिव पुं
[°शिष] एक राजा, षष्ठ बलदेव और वासुदेव
का पिता (सम १५२)। °सुक्क देखो महा-
सुक्क (देवेन्द्र १३५)। °सेण पुं [°सेन]
१ भाठवें जिनदेव का पिता (सम १५०)।
२ एक राजा (महा)। ३ एक यादव (उप
६४८ टी)। ४ न. वन-विशेष (विसे
१४८४)। देखो महा-सेण। देखो महा°।

महअर पुं [दे] गह्वर-पति, निकुञ्ज का मालिक
(दे ६, १२३)।

महइ° अ [महाति] १ अति बड़ा। २ अत्यन्त
विपुल। °जड वि [°जट] अति बड़ी जटा-
वाला (पउम ५८, १२)। °महाइंदइ पुं
[°महेन्द्रजित्] इक्ष्वाकु-वंश के एक राजा
का नाम (पउम ५, ६)। °महापुरिस पुं
[°महापुरुष] १ सर्वोत्तम पुरुष, सर्व-श्रेष्ठ
पुरुष। २ जिनदेव, जिन भगवान् (पउम १,
१८)। °महालय वि [°महत्] अत्यन्त
बड़ा, ‘महइमहालयसि ससारसि’ (उवा, सम
७२)। छी. °लिया (भग, उवा)।

महई देखो मह = महत्।

महंगा पुं [दे] उष्ट्र, ऊँट (दे ६, ११७)।

महंत देखो मह = महत् (आचा, औप, कुमा)।

महच्च न [माहत्त्य] १ महत्त्व। २ महत्त्ववाला
(ठा ३, १—पत्र ११७)।

महण न [दे] पिता का घर (दे ६, ११४)।

महण न [मथन] १ विलोडन (से १, ४६,
वज्रा ८)। २ घर्षण (कुप्र १४८)। ३ वि.
मारनेवाला, ‘दरितनागदण्पमहणा’ (पएह १,
४)। ४ विनाश करनेवाला, ‘नारणं च
चरणं च भवमहणं’ (सवोध ३५, सुर ७,
२२५)। छी °णो (आ ४६)।

महण पुं [महन] राक्षस वंश का एक राजा,
एक लंका-पति (पउम ५, २६२)।

महणिज देखो मह = महत्।

महति° देखो महइ° (ठा ३, ४, गाया १,
१, औप)।

महती छी [महती] वीणा-विशेष, सौ ताँत-
वाली वीणा (राय ४६)।

महत्थार न [दे] १ भारद्वाज, भाजन। २
भोजन (दे ६, १२५)।

महप्पुर पुं [दे] माहात्म्य, प्रभाव, ‘तुह
मुहचदपहाए फरिसाए महप्पुरो एसो’ (रंभा
४३)।

महमह देखो मघमघ। महमहइ (हे ४, ७८,
पङ्, गा ४६७), महमहेइ (उव)। वक्र
महमहंत (काप्र ६१७)। सक्र महमहिअ
(कुमा)।

महमहिअ वि [प्रसूत] १ फैला हुआ (हे १,
१४६, वज्रा १५०)। २ सुरभित (रंभा)।

महम्मह देखो महमह, ‘जिअलोअसिरो महम्म-
हइ’ (गा ६०४)।

महया° देखो महा°, ‘महयाहिमवंतमहंतमलय-
मदरहिदसारे’ (गाया १, १ टी—पत्र ६,
औप, विपा १, १, भग)।

महर वि [दे] असमर्थ, अशक्त (दे ६,
११३)।

महलयपक्ख देखो महालवक्ख (पङ्—पृष्ठ
१७६)।

महल वि [दे महत्] १ वृद्ध, बड़ा (दे
६, १४३, उवा, गउड, सुर १, ५४, पत्रा
५, १६, सवोध ४७, श्रौष १३६, प्रासू
१४६, जय १२, सुपा ११७)। २ पृथुल,
विशाल, विस्तीर्ण (दे ६, १४३, प्रवि १०,
स ६६२, भवि)। छी °लिया (औप, सुपा
११३, ५८७)।

महल वि [दे] १ मुखर, वाचाट, वक्तादी
(दे ६, १४३, पङ्)। २ पुं जलधि,
समुद्र (दे ६, १४३)। ३ समूह, निवह (दे
६, १४३, सुर १, ५४)।

महल्लि देखो महल्ल, ‘हरिनहकडिणमहल्लिर-
पयनहरपरंपराए विकरालो’ (सुपा ११)।

महव देखो मघव (कुमा, भवि)।

महा छी [मघा] नक्षत्र-विशेष (सम १२,
सुज्ज १०, ५, इक)।

महा° देखो मह = महत् (उवा)। °अडड न
[°अटट] सख्या-विशेष, ८४ लाख महाअट-
टाग की सख्या (जो २)। °अडडग न
[°अटटाङ्ग] सख्या-विशेष, ८४ लाख अटट
(जो २)। °आल देखो °काल (नाट—चैत
८२)। °ऊह न [°ऊह] सख्या-विशेष,
८४ लाख महाऊहाग की सख्या (जो २)।
°कइ पुं [°कवि] श्रेष्ठ कवि, समर्थ कवि
(गउड, चेइय ८४३, रंभा)। °कदिय पुं
[°क्रन्दित] व्यन्तर देवों की एक जाति
(पएह १, ४, औप, इक)। °कच्छ पुं
[°कच्छ] १ महाविदेह वर्ष का एक विजय-
क्षेत्र—प्रान्त (ठा २, ३, इक)। २ देव-
विशेष (जं ४)। °कच्छा छी [°कच्छा]
अतिकाय नामक इन्द्र की एक अन्न-महिषी
(ठा ४, १—पत्र २०४, गाया २, इक)।
°कणह पुं [°कृष्ण] राजा श्रेणिक का एक

माहव पुं [माधव] १ श्रीकृष्ण, नारायण (गा ४४३, वज्जा १३०) । २ वसन्त ऋतु । ३ वैशाख मास (गा ७७७, रुक्मि ५३) । ४ पण्डिणी स्त्री [पण्डिनी] लक्ष्मी (स ५२३) ।

माहविआ स्त्री [माधविका] नीचे देखो (पाप्र) ।

माहवी स्त्री [माधवी] १ लता-विशेष (गा ३२२, अमि १६६, स्वप्न ३६) । २ एक राज-पत्नी (पञ्चम ६, १२६, २०, १८४) ।

माहारयण न [दे] १ वस्त्र, कपडा । २ वस्त्र-विशेष (दे ६, १३२) ।

माहिंद पु [माहेन्द्र] १ एक देव-लोक (सम ८) । २ एक इन्द्र, माहेन्द्र देवलोक का स्वामी (ठा २, ३—पत्र ८५) । ३ ज्वर-विशेष, 'माहिंदजरो जाग्रो' (सुपा ६०६) । ४ दिन का एक मुहूर्त (सम ५१) । ५ वि. महेन्द्र-सम्बन्धी (पञ्चम ५५, १६) ।

माहिंदफल न [माहेन्द्रफल] इन्द्रयव, कौरैया का बीज (उत्तनि ३) ।

माहिल पुं [दे] महिषी-पाल, भैंस चरानेवाला (दे ६, १३०) ।

माहिवाय पु [दे] १ शिशिर पवन (दे ६, १३१) । २ माघ का पवन (पङ् ७) ।

माहिसी देखो महिसी (कप्प) ।

माही स्त्री [माघी] १ माघ मास की पूर्णिमा । २ माघ की अमावस्या (सुज्ज १०, ६) ।

माहुर वि [माथुर] मथुरा का (भत्त १४५) ।

माहुर न [दे] शाक, तरकारी (दे ६, १३०) ।

माहुर } वि [माधुर, क] १ मधुर रस-
माहुरय } वाला । २ आम्ल रस से भिन्न
रसवाला (उवा) ।

माहुरिअ न [माधुर्य] मधुरता (प्राक् १६) ।

माहुलिग पु [मातुलिङ्ग] १ बीजपूर वृक्ष, बीजौरानीवृ का पेड़ (हे १, २४४, चंड) । २ न. बीजौरे का फल (पङ्, कुमा) ।

माहेसर वि [माहेश्वर] १ महेश्वर-भक्त (सिरि ४८) । २ न नगर-विशेष (पञ्चम १०, ३४) ।

माहेसरी स्त्री [माहेश्वरी] १ लिपि-विशेष (सम ३५) । २ नगरी-विशेष (राज) ।

मि (अप) देखो अवि—अपि (भवि) ।

मिं स्त्री [मृत्] मिट्टी, मट्टी, 'जह मिल्ले-वावगमादलावुणोवससमेव गइभावो' (विसे ३१४२) । १ पिण्ड पुं [पिण्ड] मिट्टी का पिंडा (अमि २००) । २ मय वि [मय] मिट्टी का बना हुआ (उप २४२, पिंड ३३४, सुपा २७०) ।

मिअ देखो मय = मृग, 'सर्वाण्यदियदोमेणं मिअो मअो वाहवाणेण' (सुर ८, १४२, उत्त १, ५, परह १, १, सम ६०, रंभा, ठा ४, २, पि ५४) । १ चक्र न [चक्र] विद्या-विशेष, ग्राम-प्रवेश आदि में मृगों के दर्शन आदि से शुभाशुभ फल जानने की विद्या (सूत्र २, २, २७) । २ णअणी, 'नयणा स्त्री [नयना] देखो मय-च्छी (नाट, सुर ६, १५३) । ३ मय पु [मद] कस्तूरी (रंभा ३५) । ४ रिउ पुं [रिपु] सिंह (सुपा ५७७) । ५ वाहण पु [वाहन] भरतलेख के एक भावी तीर्थंकर (सम १५३) ।

मिअ पुं [मृग] हरिण के आकार का पशु-विशेष, जो हरिण से छोटा और जिसका पुच्छ लम्बा होता है । १ लोमिअ वि [लोमिक] उसके बालों से बना हुआ (अणु ३५) ।

मिअ देखो मित्त = मित्र (प्राप्र) ।

मिअ वि [दे] अलकृत, विभूषित (पङ्) ।

मिअ वि [मित] मानोपेत, परिमित (उत्त १६, ८, सम १५२, कप्प) । २ थोडा, अल्प, 'मिश्रं तुच्छ' (पाप्र) । ३ वाइ वि [वादिन्] आत्मा आदि पदार्थों को परिमित माननेवाला (ठा ८—पत्र ४२७) ।

मिअ देखो मिअ = इव (गा २०६ अ, नाट) ।

मिअं देखो मिआ । १ गगाम पु [ग्राम] ग्राम-विशेष (विपा १, १) ।

मिअआ स्त्री [मृगाया] शिकार (नाट—शकु २७) ।

मिअक पुं [मृगाङ्क] १ चन्द्र, चाँद (हे १, १३०, प्राप्र कुमा, काप्र १६४) । २ चन्द्र का विमान (सुज्ज २०) । ३ इक्ष्वाकु वंश का एक राजा (पञ्चम ५, ७) । ४ मणि पुं [मणि] चन्द्रकान्त मणि (कप्प) ।

मिअंग देखो मयंग = मृदग (कप्प) ।

मिअसिर देखो मगसिर (पि ५४) ।

मिआ स्त्री [मृगा] १ राजा विजय की पत्नी (विपा १, १) । २ राजा वलभद्र की पत्नी (उत्त १६, १) । ३ उत्त, पुत्त पु [पुत्र] १ राजा विजय का एक पुत्र (विपा १, १, कर्म १५) । २ राजा वलभद्र का एक पुत्र, जिसका दूसरा नाम वलश्री था (उत्त १६, २) । ३ वई स्त्री [वती] १ प्रथम वासुदेव की माता का नाम (सम १५२) । २ राजा शतानीक की पटरानी का नाम (विपा १, ५) ।

मिइ स्त्री [मिति] १ मान, परिमाण । २ हृद, अविधि, 'किं दुक्करमुवायाण न मिई जमुवायसत्तीए' (धर्मवि १४३) ।

मिइ देखो मिउ = मृत् (धर्मस ५५८) ।

मिइग देखो मयग = मृदग (हे १, १३७, कुमा) ।

मिइंद देखो मइद = मृगेन्द्र (अमि २४२) ।

मिउ स्त्री [मृद] मिट्टी, मट्टी, 'मिउदडचक्क-चीवरसामग्गोवसा कुलालुव्व' (सम्मत २२४), 'मिउपिडो दव्वघडो सुसावगो तह य दव्वसाहुत्ति' (उप २५५ टी) ।

मिउ वि [मृदु] कोमल, सुकुमार (श्रौप, कुमा, सण) ।

मिउ वि [मृदु] मनोज्ञ, सुन्दर, 'मिउमइव-सपन्ने' (एदि ५२) ।

मिचण न [दे] मीचना, निमीलन (दे ३, ३०) ।

मिजं स्त्री [मज्जा] १ शरीर-स्थित घातु-विशेष, हाड के बीच का अवयव-मिजिया विशेष (परह १, १—पत्र ८, महा, उवा, श्रौप) । २ मध्यवर्ती अवयव, 'पेहुण-मिजिया इवा' (परण १७—पत्र ५२६) ।

मिठ पुं [दे] हस्तिपक, हाथी का महावत मिठिल (उप १२८ टी, कुप्र ३६८, महा, भत्त ७६, धर्मवि ८१, १३५, मन १०, उप १३०) । देखो मेठ ।

मिठ पुं [मेठ] १ मेंढा, भेड, मेप, गाढर मिठय (विने ३०४ टी, उप पृ २०५, कुप्र १६२), 'ते य दरा मिठया ते य' (धर्मवि

(ठा ५, ३—पत्र ३५१) । °पडम पुं [°पद्म] १ भरतक्षेत्र का भावी प्रथम तीर्थंकर (सम १५३) । २ पुंडरीकिणी नगरी का एक राजा और पीछे से राजर्षि (राया १, १६—पत्र २४३) । ३ भारतवर्ष में उत्पन्न नववाँ चक्रवर्ती राजा (सम १५२, पत्र २०, १४३) । ४ भरतक्षेत्र का भावी नववाँ चक्रवर्ती राजा (सम १५४) । ५ एक राजा (ठा ६) । ६ एक निधि (ठा ६—पत्र ४४६) । ७ एक द्रव्य (सम १०४, ठा २, ३—पत्र ७२) । ८ राजा श्रेणिक का एक पौत्र (निर १, १) । ९ देव-विशेष (दीव) । १० वृक्ष-विशेष (ठा २, ३) । ११ न. सत्या-विशेष, महापद्म का चौरासी लाख से गुणने पर जो सख्या लब्ध हो वह (जो २) । १२ एक देव-विमान (सम ३३) । °पडमअग न [°पद्माङ्ग] सख्या-विशेष, पद्म को चौरासी लाख से गुणने पर जो सख्या लब्ध हो वह (जो २) । °पडमा स्त्री [°पद्मा] राजा श्रेणिक की पत्नी पुत्र वधू (निर १, १) । °पडिय वि [°पण्डित] श्रेष्ठ विद्वान् (रंभा) । °पट्टण न [°पत्तन] बड़ा शहर (उवा) । °पण, °पन्न वि [°प्रज्ञ] श्रेष्ठ बुद्धिवाला (उप ७७३, पि २७६) । °पभ न [°प्रभ] एक देव-विमान (सम १३) । °पभा स्त्री [°प्रभा] एक राज्ञी (उप १०३१ टी) । °पम्ह पु [°पद्म] महाविदेह वर्ष का एक विजय—प्राप्त (ठा २, ३) । °परिणगा, °परिन्ना स्त्री [°परिज्ञा] आचारारण सूत्र के प्रथम श्रुतस्कन्ध का सातवाँ अध्ययन (राज, आक) । °पसु पुं [°पशु] मनुष्य (गड) । °पह पु [°पथ] बड़ा रास्ता, राज-मार्ग (मग, पएह १, ३, औप) । °पाण न [°प्राण] ब्रह्मलोक-स्थित एक देव-विमान (उत्त १८, २८) । °पायाल पु [°पाताल] बड़ा पातान-कलश (ठा ४, २—पत्र २२६, मम ७१) । °पालि स्त्री [°पालि] १ बड़ा पत्न्य । २ सागरोपम-परिमित भव-स्थिति—आयु, 'अहमामि महापाणे

जुद्धम वरिससओवमे ।

जा सा पालिमहापाली दिव्वा

वरिमसओवमा'

(उत्त १८, २८) ।

°पिउ पु [°पितृ] पिता का बड़ा भाई (विपा १, ३—पत्र ४०) । °पीठ पु [°पीठ] एक जैन महर्षि (सट्टि ८१ टी) । °पुख न [°पुङ्ख] एक देव-विमान (सम २२) । °पुड न [°पुण्ड्र] एक देव-विमान (मम २२) । °पुडरीय न [°पुण्डरीक] १ विशाल श्वेत कमल (राय) । २ पु. ग्रह-विशेष (सम १०४) । ३ देव-विशेष । ४ देखो °पुडरीअ (राज) । °पुर न [°पुर] १ एक विद्याधर-नगर (इक) । २ नगर-विशेष (विपा २, ७) । °पुरा स्त्री [°पुरी] महापद्म-विजय की राजधानी (ठा २, ३—पत्र ८०) । °पुरिस पु [°पुरिप] १ श्रेष्ठ पुरुष (पएह २, ४) । २ किपुरुष-निकाय का उत्तर दिशा का इन्द्र (ठा २, ३—पत्र ८५) । °पुरी देखो °पुरा (इक) । °पौडरीअ न [°पुण्डरीक] एक देव-विमान (स ३३) । देखो °पुडरीय (ठा २, ३—पत्र ७२) । °फल देखो मह-पफल (उवा) । °फलिह न [°रफटिक] शिखरी पर्वत का एक उत्तर-दिशा-स्थित कूट (राज) । °वल वि [°वल] १ महान् बलवाला (भग) । २ पु ऐरवत क्षेत्र का एक भावी तीर्थंकर (मम १५४) । ३ चक्रवर्ती भरत के वंश में उत्पन्न एक राजा (पत्र ५, ४, ठा ८—पत्र ४२६) । ४ सोमवशीय एक नर-पति (पत्र ५, १०) । ५ पाँचवें बलदेव का पूर्वजन्मीय नाम (पत्र २०, १६०) । ६ भारतवर्ष का भावी छठवाँ वासुदेव (सम १५४) । °वाहु पु [°वाहु] १ भारत-वर्ष का भावी चतुर्थ वासुदेव (सम १५४) । २ रावण का एक सुभट (पत्र ५६, ३०) । अपर विदेह-वर्ष में उत्पन्न एक वासुदेव (आव ४) । °भद् न [°भद्र] तप-विशेष (पव २७१) । °भद्प-डिमा स्त्री [°भद्रप्रतिमा] नीचे देखो (औप) । °भद्दा स्त्री [°भद्रा] व्रत विशेष, कायोत्सर्ग-ध्यान का एक व्रत (ठा २, ३—पत्र ६४) । °भय देखो मह-उभय (आवा) । °भाअ, °भाग वि [°भाग] महानुभाव, महाशय (अभि १७४, महा, सुपा १६८, उप पृ ३) । °भीम पु [°भीम] १ राक्षसी का उत्तर दिशा का इन्द्र (ठा २, ३—पत्र ८५) । २ भारतवर्ष का भावी आठवाँ प्रतिवामुदेव

(सम १५४) । ३ वि. बड़ा भयानक (दंस ४) । °भीमसेण पुं [°भीमसेन] एक कुलकर पुरुष का नाम (सम १५०) । °भुअ पु [°भुज] देव-विशेष (दीव) । °भुअग पु [°भुजङ्ग] शेष नाग (से ७, ५६) । °भोया स्त्री [°भोगा] एक महा-नदी (ठा ५, ३—पत्र ३५१) । °भउंद पुन [°मुकुन्द] वाद्य-विशेष (भग) । °मति पुं [°मन्त्रिन्] १ सर्वोच्च अमात्य, प्रधान मन्त्री (औप, सुपा २०३, राया १, १) । २ हस्ति-मैत्र्य का अव्यक्त (राया १, १—पत्र १६) । °मस न [°मास] मनुष्य का मास (कप्पू) । °मच्च पु [°अमात्य] प्रधान मन्त्री (कुमा) । °मत्त पु [°मात्र] हस्तिपक, हाथी का महावत,

'ततो नरसिहनिवस्स कुजरा

मिहभयविहुरहियया ।

अवगणियमहामत्ता मत्तावि

पलाइया भक्ति'

(कुप्र ३६४) ।

°मरुया स्त्री [°मरुता] राजा श्रेणिक की एक पत्नी (अत) । °मह पु [°मह] महोत्सव (आव ४) । °महत वि [°महन्] अति बड़ा (सुपा ५६४, स ६६३) । °माई (अप) स्त्री [°माया] छन्द-विशेष (पिंग) । °माउया स्त्री [°मातृका] माता की बड़ी बहन (विपा १, ३—पत्र ४०) । °माडर पु [°माठर] ईशानेन्द्र के रथ-मैत्र्य का अविपति (ठा ५, १—पत्र ३०३, इक) । °माणसिआ स्त्री [°मानसिका] एक विद्या-देवी (सति ६) । °माहण पु [°ब्राह्मण] श्रेष्ठ ब्राह्मण (उवा) । °मुणि पु [°मुनि] श्रेष्ठ साधु (कुमा) । °मेह पु [°मेघ] बड़ा मेघ (राया १, १—पत्र ४, ठा ४, ४) । °मेह वि [°मेघ] बुद्धिमान् (उप १४२ टी) । °मोक्ख वि [°मूर्ख] बड़ा देवकूप (उप १०३१ टी) । °यण पु [°जन] श्रेष्ठ लोग (सुपा २६१) । °यस देखो °जस (औप, कप्प) । °रक्खस पुं [°राक्षस] लका नगरी का एक राजा जो धनवाहन का पुत्र था (पत्र ५, १३६) । °रह पु [°रथ] १ बड़ा रथ (पएह २, ४—पत्र १३०) । २ वि. बड़ा रथवाला । ३ बड़ा योद्धा, दस

मित्तिवय पुं [दे] ज्येष्ठ, पति का बड़ा भाई (दे ६, १३२)।

मिन्ती स्त्री [मैत्री] मित्रता, दोस्ती (सूत्र २, ७, ३६, आ १४, प्रासू ८)।

मिथुण देखो मिट्टण (पठम ६६, ३१)।

मिट्टु देखो मिउ (अभि १८३, नाट—रत्ना ८०)।

मिरिअ पुन [मिरिच] १ मरिच का गाछ। २ मिरच, मिर्चा (परण १७—पत्र ५३१, हे १, ४६, ठा ३, १ टी, पव २५६)।

मिरिआ स्त्री [दे] कृती भोपड़ी (दे ६, १३२)।

मिरिइ । पुष्पी [मरीचि] किरण, प्रभा,

मिरी । तेज, 'चञ्चलमिरिइकवय' (औप),

मिरीइ । 'सप्पहा समिरि (२री) या' (औप),

मिरीय । 'निककडच्छाया समिरीया' (औप,

ठा ४, १—पत्र २२६), 'विज्जुघणमिरीइसूर-

दिप्पततेय' (औप), 'सूरमिरीयकवयं

विणिम्मयतेहि' (परह १, ४—पत्र ७२)।

मिल अक [मिल्] मिलना। मिलइ (हे ४, ३३२, रभा, महा)। कर्म, मिलिज्जइ (हे ४, ४३४)। वक्तु मिलत (से १०, १६)।

मिलक्खु पुन देखो मिच्छ = म्लेच्छ (शोध ४४०, धर्मस ५०८, ती १५, उत्त १०, १६), 'मिलक्खणि' (पि ३८१)।

मिलण न [मिलन] मेल, मिलना, एकत्रित होना, 'लोगमिलणम्मि' (उप ५७८, सुपा २५०)।

मिलणा स्त्री ऊपर देखो (उप १२८ टी, उप ७०६)।

मिला } अक [म्लै] म्लान होना, निस्तेज
मिलाअ } होना। मिलाइ, मिलाअइ (दे २, १०६, ४, १८, २४०, षड्)। वक्तु, मिला-
अत, मिलाअमाण (पि १३६, ठा ३, ३,
णाय १, ११)।

मिलाअ } वि [म्लान] निस्तेज, विच्छाया
मिलाण } (णाय १, १—पत्र ३७, स
४२५, हे २, १०६, कुमा, महा)।

मिलाण न [दे] पर्याण (?) '—थासगमिला-
णचमरोगडपरिमंडियकडीण' (औप)।

मिलाणि स्त्री [म्लानि] विच्छायाता (उप १४२ टी)।

मिलिअ वि [मिलित] मिला हुआ (गा ४४३, कुमा)।

मिलिअ वि [मेलित] मिलाया हुआ (कुमा)।

मिलिच्छ देखो मिच्छ = म्लेच्छ (हे १, ८४, हम्मीर ३४)।

मिलिट्टु वि [मिलिट्ट] १ अस्पष्ट वाक्यवाला।

२ म्लान। ३ न, अस्पष्ट वाक्य (प्राकृ २७)।

मिलिमिलिमिल अक [दे] चमकना। वक्तु,

मिलिमिलिमिलत (परह १, ३—पत्र ४४)।

मिलिण देखो मिलिअ (शोधभा २२ टी)।

मिल सक [मुच्] छोड़ना, त्यागना। मिलइ

(भवि)। वक्तु, मिलत (सुपा ३१७)। कृ,

मिलेव (अप) (कुमा)। प्रयो., कवक

मिल्लविज्जंत (कुप्र १६२)।

मिल्लविअ वि [मोचित] छुड़ाया हुआ (सुपा

३८८, हम्मीर १८, कुप्र ४०१)।

मिलिअ (अप) देखो मिलिअ (पिण)।

मिलिर वि [मोक्त्] छोड़नेवाला (कुमा)।

मिलह देखो मिल। मिलहइ (आत्मानु २२),

मिल्हति (कुप्र १७)। भवि मिल्हस्स (कुप्र

१०)। कृ, मिल्हयव्व (सिरि ३५७)।

मिल्हिय वि [मुक्त्] छोड़ा हुआ (आ २७)।

मिव देखो इव (हे २, २८२, प्राप्र, कुमा)।

मिस सक [मिस्] शब्द करना। वक्तु,

मिसत (तंदु ४४)।

मिस न [मिप] वहाना, छल, व्याज (वेइय

८३१, सिक्का २६, रंभा, कुमा)।

मिसमिस अक [दे] १ अत्यन्त चमकना। २

खूब जलना। वक्तु, मिसमिसत (णाय १,

१—पत्र १६, तंदु २६, उप ६४८ टी)।

मिसल (अप) सक [मिश्रय्] मिश्रण करना,

मिलाना। भराठी में 'मिसलणें'। मिसलइ

(भवि)।

मिसल (अप) देखो मीस, मीसालिअ

(भवि)।

मिसिमिस देखो मिसमिस वक्तु मि-

मिसंत, मिसिमिसित, मिसिमिसिमाण,

मिसिमिसीयमाण, मिसिमिसित मिसि-

मिसेमाण (औप, कप्प, पि ५५८, उवा,

पि ५५८, णाय १, १—पत्र ६४)।

मिसिमिसिय वि [दे] उद्दीप्त, उत्तेजित (सुर ३, ५०)।

मिस्स सक [मिश्रय्] मिश्रण करना,

मिलाना। मिस्सइ (हे ४, २८)।

मिस्स देखो मीस = मिश्र (भग)।

°मिस्स पुं [°मिश्र] पूज्य, पूजनीय, 'वसिष्ठ-

मिस्सेसु' (उत्तर १०३)।

मिस्साकूर पुन [मिश्राकूर] खाद्य-विशेष,

'अणुराहाहि मिस्साकूर भोच्चा कज्ज साधेति'

(सुज्ज १०, १७)।

मिह अक [मिध्] स्नेह करना। मिहसि

(सुर ४, २१)।

मिह देखो मिस = मिष, 'निग्गमो अलिया-

मंतरगमणमिहेण' (महा)।

मिह देखो मिहो (आचा)।

मिहिआ स्त्री [दे] मेघ-समूह (दे ६, १३२)।

देखो महिआ।

मिहिआ स्त्री [मेघिका] अल्प मेघ (से ४,

१७)। देखो महिआ।

मिहिर पु [मिहिर] सूर्य, रवि (उप पृ ३५०,

सुपा ४१६, धर्मा ५),

'सायरनिसायराणं मेहसिहडोण

मिहिरनलिणीण।

दूरेवि वसताणं पडिवन्न

नल्ला होइ

(उप ७२८ टी)।

मिहिला स्त्री [मिथिला] नगरी विशेष (ठा

१०, पठम २०, ४५, णाय १, ८—पत्र

१२४, इक)।

मिट्टु } देखो मिहो (उप ६४७, आचा)।

मिट्टु }

मिहुण न [मिथुन] १ स्त्री-पुरुष का युग्म,

दंपती (हे १, १८७, पाप्र, कुमा)। २

ज्योतिष-प्रसिद्ध एक राशि (विचार १०६)।

मिहो अ [मिथस्] परस्पर, आपस में (उप

६७६, स ५३६, पि ३४७)।

मीअ न [दे] समकाल, उसी समय (दे ६,

१३३)।

मीण पुं [मीन] १ मत्स्य, मछली (पाप्र,

गठड, शोध ११६, सुर ३, ५३, १३, ४६)।

२ ज्योतिष-प्रसिद्ध राशि-विशेष (सुर ३, ५३,

विचार १-६, सबोव ५४)।

महाणसि वि [महानसिन्] रसोई बनाने-
वाला, रसोइया । स्त्री. °णो (गाथा १, ७—
पत्र ११७) ।

महाणसिय वि [महानसिक] ऊपर देखो
(विपा १, ८) ।

महाविल न [दे महाविल] व्योम, आकाश
(दे ६, १२१) ।

महामति पुं [महामन्त्रिन्] महावत, हस्ति-
पक (राय १२१ टी) ।

महारिय (अप) वि [मदीय] मेरा (जय
३०) ।

महाल पुं [दे] जार, उपपति (दे ६,
११६) ।

महालक्ख वि [दे] तरण, जवान (दे ६,
१२१) ।

महालय देखो मह = महत् (गाथा १, ८, उवा,
श्रौप), 'मा कासि कम्माडं महालयाइ' (उत्त
१३, २६) । स्त्री. °लिया (श्रौप) ।

महालय पुं [महालय] १ उत्सवों का स्थान
(सम ७२) । २ बड़ा आलय । ३ वि
बृहत्काय, बड़ा शरीरवाला (सूत्र २, ५, ६) ।

महालवक्ख पुं [दे. महालयपक्ष] श्राद्ध-पक्ष,
आश्विन (गुजराती भाद्रपद) मास का कृष्ण
पक्ष (दे ६, १२७) ।

महावल्ली स्त्री [न] नलिनी, कमलिनी (दे ६,
१२२) ।

महाविजय पुं [महाविजय] एक देवविमान
(आचा २, १५, २) ।

महासडण पुं [दे] उल्लू, धूक-पक्षी (दे ६,
१२७) ।

महामदा स्त्री [दे] शिवा, शृगाली (दे ६,
१२०, पात्र) ।

महारेल वि [माहाशैल] महाशैल नगर मे
संबन्ध रखनेवाला, महाशैल का (पञ्च ५५,
५३) ।

महि° देखो मही (कुमा) । °अल न [°तल]
भू-पीठ, भूमि-गुह (कुमा, गड्ड, प्रासू ४५) ।
°गोयर पुं [°गोचर] मनुष्य (भवि, सण) ।
°पट्ट न [°पृष्ठ] भूमि-तल (पट्ट) । °पाल पुं
[°पाल] राजा (उव) । °मडल न [°मण्डल]
भू-मण्डल (भवि, हे ४, ३७२) । °रमण पु
[°रमण] राजा (आ २७) । °वइ पुं

[°पति] राजा (गाथा १, १ टी, श्रौप) ।
°वट्ट देखो °पट्ट (हे १, १२६, कुमा) ।
°वल्ल पुं [°वल्लभ] राजा (गु १०) । °वाल
पुं [°पाल] १ राजा, नरपति (हे १,
२२६) । २ व्यक्ति वाचक नाम (भवि) ।
°वेढ पु [°वेष्ट, °पीठ] मही-तल, भू-तल
(से १, ४, ४६) । °सामि पुं [°स्वामिन्]
राजा (कुमा) । °हर पु [°वर] १ पर्वत
(पात्र, से ३, ३८, ४, १७, कुप्र ११७) ।
२ राजा (कुप्र ११७) ।

महिअ वि [मयित] विलोहित (मे २, १८,
पात्र) ।

महिअ वि [महित] १ पूजित, सत्कृत (से
१२, ४७, उवा, श्रौप) । २ न. एक देव-
विमान (सम ४१) । ३ पूजा, सत्कार (गाथा
१, १) ।

महिअ वि [महीयस] बड़ा, गुरु, 'रात्र-
निघोघो महियो को एगाम गम्यागममिह करेइ'
(मुद्रा १८७) ।

महियदुअ न [दे] धी का किट्ट, घृत-मल
(राज) ।

महिआ स्त्री [महिका] १ सूक्ष्म वर्पा, सूक्ष्म
जल-तुपार (परण १, जो ५) । २ धूमिका,
घुघ, कुहरा (श्रौघ ३०, पात्र) । ३ मेघ-
समूह, 'धणनिवहो कालिआ महिआ' (पात्र) ।
देखो मिहिआ ।

महिद पुं [महेन्द्र] १ बड़ा इन्द्र, देवाधीश
(श्रौप, कण, गाथा १, १ टी—पत्र ६) ।
२ पर्वत-विशेष (मे ६, ५६) । ३ अति महान्,
खूब बड़ा (ठा ४, २—पत्र २३०) । ४ एक
राजा (पञ्च ५०, २३) । ५ ऐश्वर्य वर्ण का
भावी १५ वीं तीर्थंकर (पव ७) । ६ पुन
एक देव-विमान (सम २२, देवेन्द्र १४१) ।
°वत न [°कान्त] एक देव-विमान (सम
२७) । °केउ पुं [°केतु] हनुमान के मातामह
का नाम (पञ्च ५०, १६) । °ऊमय पु
[°ध्वज] १ बड़ा ध्वज । २ इन्द्र के ध्वज
के समान ध्वज, बड़ा इन्द्र-ध्वज (ठा ४,
४—पत्र २३०) । ३ न एक देव-विमान
(सम २२) । °दुहिया स्त्री [°दुहिता]
अञ्जनासुन्दरी, हनुमान की माता (पञ्च ५०,
२३) । °विकम पु [°विक्रम] इक्ष्वाकु

वश का एक राजा (पञ्च ५, ६) । °सीह
पुं [°सिंह] १ कुरु देश का एक राजा
(उप ७२८ टी) । २ सनत्कुमार चक्रवर्ती का
एक मित्र (महा) ।

महिद वि [माहेन्द्र] १ महेन्द्र-सम्बन्धी ।
२ उत्पात-विशेष (अणु २१५) ।

महिदुत्तरवडिसय न [महेन्द्रोत्तरावतसक]
एक देव-विमान (सम २७) ।

महिगा देखो महिआ (जीवम ३१) ।

महिच्छ वि [महेच्छ] महत्वाकांक्षी (सूत्र
२, २, ६१) ।

महिच्छा स्त्री [महेच्छा] महत्वाकांक्षा,
अपरिमित वाढ्या (परह १, ५) ।

महिट्ट वि [दे] मट्टा से ससृष्ट, तन्न-सत्कारित
(विपा १, ८—पत्र ८३) ।

महिडिड वि [महिद्वि, °क] बड़ी ऋद्धि-
महिडिडय } बाला, महान् वैभववाला (आ
महिडिडीय } २७, भग, श्रौघभा ६, श्रौप,
पि ७३) ।

महिम पुं स्त्री [महिमन्] १ महत्त्व, माहात्म्य,
गौरव (हे १, ३५, कुमा, गड्ड, भवि) । २
योगी का एक प्रकार का ऐश्वर्य (हे १, ३५) ।

महिला देखो मिहिला (महा, राज) ।

महिला स्त्री [महिला] स्त्री, नारी (कुमा,
हे ३, ४१, पात्र) । °धूम पु [°स्तूप] कूप
आदि का किनारा (विसे २०६४) ।

महिलिया स्त्री [महिलिका, महिल्या] ऊपर
देखा (गाथा १, २, पञ्च १४, १४५,
प्रासू २४) ।

महिलिया स्त्री [मिथिलिका, मिथिला]
देखो मिहिला (कण) ।

महिस पुं [माहिष] भैंसा (गड्ड, श्रौप,
गा ५४८) । °सुर पु [°सुर] एक
दानव (स ४३७) ।

महिसंद पुं [दे] वृक्ष विशेष, शिशु का पेड़
(दे ६, १२०) ।

महिसिअ वि [महिषिक] भैंसवाला, भैंस
चरानेवाला (अणु १४४) ।

महिसिअ न [दे] महिषी-समूह (दे ६,
१२४) ।

महिशी स्त्री [महिषी] १ राज-पत्नी (ठा ४,
१) । २ भैंस (पात्र, पञ्च, २६, ४१) ।

मुंड पुन [मुण्ड] १ मस्तक, सिर (हे ४, ४४६, पिंग) । २ वि मुण्डित, दीक्षित, प्रव्रजित (काग, उवा ११४) । ३ परसु पु [परशु] नगा कुल्हाडा, तीक्ष्ण कुठार (पणह १, ३—पत्र ५४) ।

मुण्डन [मुण्डन] केशो का अपनयन (पचा २, २, स २७१, सुर १२, ४५) ।

मुंडा स्त्री [दे] मृगी, हरिणी (दे ६, १३३) ।

मुंडाविअ वि [मुण्डित] मुंडाया हुआ (भग, महा ११५) ।

मुडि वि [मुण्डित] मुण्डन करनेवाला (उव, औप, भत्त १००) ।

मुडिअ वि [मुण्डित] मुण्डन-युक्त (भग, उप ६३४, महा) ।

मुंडी स्त्री [दे] नोरझी, शिरो-वस्त्र, घूँघट (दे ६, १३३) ।

मुड } पु [मूर्धन] मूर्धा, मस्तक, सिर
मुडाण } (हे १, २६, २, ४१, पङ्) ।
देखो मुद्ध = मूर्धन ।

मुकलाव राक [दे] मेजवाना, गुजराती मे 'मोकलाववु । सक मुकलाविऊण (तिरि ४७४) ।

मुकुर पु [मुकुर] दर्पण, आईना (दे १, १४) ।

मुक (अप) सक [मुच्] छोड़ना, गुजराती में 'मूकवु' । मुकइ (प्राक ११६) । सक, मुक्किअ (नाट—चैत ७६) ।

मुक वि [मू] वाक्-शक्ति से रहित, मूँगा (हे २, ६६, सुपा ५५२, पङ्) ।

मुक देखो मुक्कल (विने ५५०) ।

मुक वि [मुक्त] १ छोड़ा हुआ, त्यक्त (उवा, सुपा ४७५, महा, पात्र) । २ मुक्ति-प्राप्त, मोक्ष-प्राप्त (हे २, २) । ३ लगातार पाँच दिन का उपवास (सबोध ५८) । देखो मुत्त = मुक्त ।

मुकय न [दे] दुलहिन के अतिरिक्त अन्य निमन्त्रित कन्याओं का विवाह (दे १, १३५) ।

मुक्कल वि [दे] १ उचित, योग्य (दे ६, १४७) । २ स्वैर, स्वतन्त्र, बन्धन-मुक्त (दे ६, १४७, सुर १, २३३, विवे १८, गउड, सिरि ३५३, पात्र, सुपा १६८) ।

मुक्कलिअ वि [दे] बन्धन मुक्त किया हुआ, अनियन्त्रित (दे १, १५६ टी) ।

मुक्कुडी स्त्री [दे] जूट (दे ६, ११७) ।

मुक्कुरुड पु [दे] राशि, ढेर (दे ६, १३६) ।
हुत्तेज्ज देखो जुक्क = मुक्त (प्रपु १६८) ।

मुक्ख पु [मोक्ष] १ मुक्ति, निर्वाण (सुर १४, ६५, हे २, ८६, साधं ८६) । २ छुटकारा, 'रिणमुक्ख' (रयण ६५, धर्म्मवि २१) ।

मुक्ख वि [मूर्ख] अज्ञानी, वेकूफ (हे २, ११२, कुमा, गा ८२, सुपा २३१) ।

मुक्ख वि [मुख्य] प्रधान, नायक (हास्य १२५) ।

मुक्ख पुन [मुक्क] १ अण्डकोप । २ वृक्ष-विशेष । ३ चोर, तस्कर । ४ वि मासल पुष्ट (प्राप्र) ।

मुक्खण देखो मोक्खण (सिक्खा ४५) ।

मुक्खणी स्त्री [मोक्षणी] स्तम्भन से छुटकारा करनेवाली विद्या-विशेष (धर्म्मवि १२४) ।

मुख देखो मुह = मुख (प्रासू ६, राज) ।

मुख पु [मुख] १ एक म्लेच्छ-जाति (मृच्छ १५२) । २ गाड़ी के ऊपर का ढक्कन (अणु १५१) ।

मुग देखो मुग्ग, 'एगमुगभरुवहणे असमत्थो किं गिरि वहइ' (सुपा ४६१) ।

मुगुद देखो मउद = मकुन्द (आचा २, १, २, ४, विसे ७८ टी) ।

मुगुस पुत्री [दे] हाथ में चलनेवाले जन्तु की एक जाति, भुजपरिसर्प-जातीय एक प्राणी (पणह १, १—पत्र ८) । स्त्री, 'सा (उवा) । देखो मगुस, मुग्गस ।

मुग्ग पुं [मुद्ग] १ धान्य-विशेष, मूँग (उवा) । २ रोग-विशेष (ति १३) । ३ पक्षि-विशेष, जल-काक (प्राप्र) । ४ पण्णी स्त्री [पणी] वनस्पति विशेष (पणह १—पत्र २६) । ५ 'सेल पु [शैल] पर्वत-विशेष, कभी नहीं भौंगनेवाला एक पर्वत (उप ७२८ टी) ।

मुग्गड पुं [दे] मोगल, म्लेच्छ-जाति विशेष (हे ४, ४०६) । देखो मोगगड ।

मुग्गर न [मुद्गर] १ पुष्प-विशेष (वज्जा १०६) । २ देखो मोगगर (प्राप्र, आप ३६, कप्प) ।

मुग्गरय न [दे. मुग्धारत] मुग्घा के साथ रमण (वज्जा १०६) ।

मुग्गल देखो मुग्गड (ती १५) ।

मुग्गस पुं [दे] नकुल, न्यूला (दे ६, ११८) ।

मुग्गाइ अक [प्र + च] फैलना । मुग्गाइ (?) (घात्वा १४८) ।

मुग्गिल } पु [दे] पर्वत-विशेष (ती ७, भत्त
मुग्गिल } १६१) ।

मुग्गुसु देखो मुग्गस (दे ६, ११८) ।

मुग्घड देखो मुग्गड (हे ४, ४०६) ।

मुग्घुरुड देखो मुक्कुरुड (दे ६, १३६) ।

मुक्कुद } देखो मुउउद (सुर २, ७६,
मुक्कुद } कुमा) ।

मुच्छ अक [मूर्च्छ] १ मूर्छित होना । २ आसक्त होना । ३ बढना । मुच्छइ मुच्छए (कस, सूत्र १, १, ४, २) । वक्क, मुच्छत, मुच्छमाण (गा ५४६, आचा) ।

मुच्छणा स्त्री [मूर्च्छना] गान का एक अंग (ठा ७—पत्र ३६५) ।

मुच्छा स्त्री [मूर्च्छा] १ मोह (ठा २, ४, प्रासू १७६) । २ अचेतनावस्था, बेहोशी (उव, पडि) । ३ गृद्धि, आसक्ति (सम ७१) । ४ मूर्च्छना, गीत का एक अंग (ठा ७—पत्र ३६३) ।

मुच्छाविअ वि [मूर्च्छित] मूर्च्छा-युक्त किया हुआ (से १२, ३८) ।

मुच्छिअ वि [मूर्च्छित] १ मूर्च्छा-युक्त (प्रासू ५७, उवा) । २ पु नरकावास-विशेष (देवेन्द्र २७) ।

मुच्छिज्जत वि [मूर्च्छयिमान] मूर्च्छा को प्राप्त होता (से १३, ४३) ।

मुच्छिडम पुं [मूर्च्छिम] मत्स्य विशेष, 'वायाए काएण मयुरहिआण न दाएण कम्म । जोअणसहस्समाणो मुच्छिडमच्छो उआहरण' (मन ३) ।

मुच्छिर वि [मूर्च्छित] १ बढनेवाला । २ बेहोशीवाला (कुमा) ।

मुज्झ अक [मुह] १ मोह करना । २ धवडाना । मुज्झइ (आचा, उव, महा) । भवि मुज्झिहिति (औप) । क मुज्झियव (पणह २, ५—पत्र १४६, उव) ।

महेसि देखो मह-रिसि (सम १२३, पएह १, १, उप ३५७, ७२८ टी, अमि ११८)।

महोअर पु [महोदर] १ रावण का एक भाई (से १२, ५४)। २ वि बहु-भक्षी (निचू १)।

महोअहि पुं [महोदधि] महासागर (से ५, २, महा)। १ रव पुं [रव] वानर-वश का एक राजा (पउम ६, ६३)।

महोच्छ्रय देखो महूसव (सुर ६, ११०)।

महोदहि देखो महोअहि (पएह २, ४, उप ७२८ टी)।

महोरग पु [महोरग] १ व्यन्तर देवों की एक जाति (पएह १, ४—पत्र ६८, इक)। २ बड़ा सांप। ३ महा-काय सर्प की एक जाति (पएह १, १—पत्र ८)। ४ स्थ न [स्थ] अन्न-विशेष (महा)।

महोरगकठ पुं [महोरगकण्ठ] रत्न-विशेष (राय ६७)।

महोसव देखो महूसव (नाट—रत्ना २४)।

महोमहि ब्री [महौपधि] श्रेष्ठ औपधि (गउड)।

मा अ [मा] मत, नहीं (चैइय ६८४, प्रासु २१)।

मा ब्री [मा] १ लक्ष्मी, दौलत (से ३, १५, सुर १६, ५२)। २ शोभा (से ३, १५)।

मा } अक [मा] १ समाना, अटना। २ माअ } सक, माप करना। ३ निश्चय करना, जानना। माइ, माअइ, माइजा, माएजा (पव ४०, कुमा, प्राक ६६, संवेग १८, औप)। वक मन, माअत (कुमा, ४, ३०, से २, ६, गा २७८)। कवक मिज्जत, मिज्जमाग (मे ७, ६६, सम ७६, जीवस १४४)। क माअव्य, 'वाया सहस्म-मइया', माइअ (से ६, ३, महा, कप्प)। देवो मेअ = मेय।

माअडि पु [मातलि] इन्द्र का सारथि (से १५, ५१)।

माअरा देखो माइ = मातु (कुमा; हे ३, ४६)।

माअलि देखो माअडि (से १५, ४६)।

माअलिआ ब्री [दे] मातृषसा, माता की वहन (दे ६, १३१)।

माअही ब्री [मागवी] काव्य की एक रीति (कप्प)। देखो मागहिआ।

माआरा } ब्री [मातृ] १ माँ, जननी (पह, माइ } ठा ४, ३, कुमा, सुपा ३७७)।

२ देवता, देवी (हे १, १३५; ३, ४६, सुख ३, ६)। ३ ब्री, नारी। ४ माया (पंचा १७, ४८)। ५ भूमि। ६ विभूति। ७ लक्ष्मी। ८ देवी। ९ आबुकरणी। १० जटामासी। ११ इन्द्र-वाक्णी, इन्द्रायण (पह, हे १, १३५, ३, ४६)। १२ घर न [गृह] देवी-मन्दिर (सुख ३, ६)। १३ टाग, ठाण न [स्थान] १ माया-स्थान (पंचा १७, ४८, सम ३६)। २ माया, कपट-दोष (पंचा १७, ४८, उवर ८४)। ३ मेह पु [मेध] यज्ञ-विशेष, जिसमे माता का वष किया जाय वह यज्ञ (पउम ११, ४२)। ४ हर देखो घर (हे १, १३५)। देखो माउ, माया = मातु।

माइ वि [मायिन्] माया-युक्त, मायावी (भग, कम्म ४, ४०)।

माइ अ [मा] मत, नहीं (प्राक ७८)।

माइ } वि [दे] १ रोमश, रोमवाला, प्रभूत माइअ } वालो से युक्त (दे ६, १२८, णाया १, १८—पत्र २३७)। २ मयूरित, पुष्प-विशेषवाला (औप, भग, णाया १, १ टी—पत्र ५, अत)।

माइअ वि [मात] समाना हुआ, अटा हुआ (सुख ६, १)।

माइअ वि [मायिक] मायावी (दे ६, १४७, णाया १, १४)।

माइअ वि [मात्रिक] मात्रा-युक्त, परिमित (तदु २०, पन्ह १, ४ पत्र ६८)।

माइअ देखो मा = मा।

माइ देखो माइ = मा (हे २, १६१, कुमा)।

माइगण न [दे] वृन्ताक, नैटा (उप ५६३)।

माइंद [दे] देखो मायंद (प्राप्र, स ४१६)।

माइंद पु [मृगेन्द्र] सिंह, केसरी, 'एकसर-पहरदारियमाउदगइदजुज्जमामिडि' (वळा ४२)।

माइदजाल } न [मायेन्द्रजाल] माया-कर्म, माइदयाल } वनावटी प्रपच (सुर २, २२६, स ६६०)।

माइंदा ब्री [दे] आमलकी, आमला का गाछ (दे ६, १२६)।

माइण्हिआ ब्री [मृगतृणिका] घूप मे जल की भान्ति (उप २२० टी, मोह २३)।

माइलि वि [दे] मृदु, कोमल (दे ६, १२६)।

माइल्ल देखो माइ = मायिन् (सुप्र १, ४, १, १८, आचा, भग, ओघ ४१३, पउम ३१, ५१, औप, ठा ४, ४)।

माइवाह } पुं ब्री [दे मातृवाह] द्वीन्द्रिय माइवाह } जन्तु-विशेष, शुद्र कीट-विशेष (उत ३६, १२६, जो १५, पुष्प २६५)। ब्री हा (सुख १८, ३५, जो १५)।

माउ देखो माइ = मातु (भग, सुर १, १७६, औप, प्रामा कुमा, पड, हे १, १३४; १३५)। १ गगाम पु [ग्राम] ब्री-वगं (वृह १)। २ च्छा देखो सिआ (हे २, १४२, गा ६४८)। ३ पिउ पुं [पितृ] मा-त्राप (सुर १, १७६)। ४ म्मही ब्री [मही] माँ की माँ, नानी (रभा २०)। ५ सिआ, सी, स्सिआ ब्री [व्वसु] माँ की वहन, मौसी (हे २, १४२, कुमा, विपा १, ३, सुर ११, २१६, पि १४८, विपा १, ३—पत्र ४१)।

माउ } वि [मातृ, क] १ प्रमाता, माउअ } प्रमाण-कर्ता, सत्य ज्ञानवाला। २ परिमाण-कर्ता, नापनेवाला। ३ पुं जीव। ४ आकाश, 'माऊ', 'माउप्रो' (पड, हे १, १३१, प्राप्र, प्राक ८, हे १, १३४)।

माउअ वि [मातृक] माता-सवन्वी (हे १, १३१, प्राप्र, प्राक ८, राज)।

माउअ पुन [मातृक, का] १ अकार आदि छयालीस अक्षर, वंभीए रा लिबीए छयालीस माउयक्खरा (सम ६६, आच ५)। २ स्वर। ३ करण (हे १, १३१, प्राप्र, प्राक ८)। नीचे देखो।

माउआ ब्री [मातृका] १ माता, मा (णाया १, ६—पत्र १५८)। २ ऊपर देखो (सम ६६)। ३ पय पुंन [पद] शाखों के सार-भूत शब्द—उत्पाद, व्यय और औप्य (सम ६६)।

माउआ ब्री [दे मातृका] दुर्गा, पावँती, उमा (दे ६, १४७)।

माउआ ब्री [दे] १ सखी, सहेली (दे ६, १४७, पात्र, णाया १, ६—पत्र १५८)। २ ऊपर के होठ पर के बाल, मूँछ, रत्तगंड-

चउक्क' (सबोध २) । ३ शरीर, देह (सुर १, ३, पात्र) । ४ कठिन्य, कठिनत्व (हे २, ३०, प्राप्र) । ५ मत वि [०मत्] मूर्तिवाला, मूर्त, रूपी (धर्मवि ६, सुपा ३८६, श्रु ६७) ।

मुत्ति छी [मुत्ति] १ मोक्ष, निर्वाण (आचा; पात्र, प्रासू १५५) । २ निर्लोभता, सतोष (आ ३१) । ३ मुक्त जीवो का स्थान, ईषत्प्राग्भारा पृथिवी (ठा ८—पत्र ४४०) । ४ निस्सगता (आचा) ।

मुत्ति वि [मुत्तिन्] बहु-भूत रोगवाला, 'उपरि च पास मुत्ति च मूणियं च गिलासिए' (आचा) ।

मुत्ति वि [मौत्तिन्, मौत्तिक] मोतो विरोने या गूँथने वाला (उप पृ २१०) ।

मुत्तिअ न [मौत्तिक] मुक्ता, मोती (से ५, ४६, कुप्र ३, कुमा, सुपा २४, २४६, प्रासू ३६, १७१) । देखो मोत्तिअ ।

मुत्तोली छी [दे] १ मूत्राशय (तदु ४१) । २ वह छोटा कोठा जो ऊपर नीचे सकीर्ण और मध्य में विशाल हो (राज) ।

मुत्थ वि [मुस्त] मोथा, नागरमोथा (गउड) । छी. ०त्था (सबोध ४४, कुमा) ।

मुदग्ग देखो मुअग्ग (ठा ७—पत्र ३८२) ।

मुदा छी [मुद] हर्ष, खुशी । ०गर वि [०कर] हर्षजनक (सूअ १, ६, ६) ।

मुदुग पु [दे] ग्राह-विशेष, जल-जन्तु की एक जाति (जीव १ टी—पत्र ३६) ।

मुद सक [मुद] १ मोहर लगाना । २ वन्द करना । ३ अकन करना । मुदेह (धम्म ११ टी) ।

मुदग पुं [दे] १ उत्सव । २ सम्मान (?) (स ४६३, ४६४) ।

मुदग पुं [मुद्रिका] अंगूठी (उवा), 'लद्धो मुदय भद्द' तुमे कि अह अणुलिमुदओ एमो' (पउम ५३, २४) ।

मुदा छी [मुद्रा] १ मोहर, छाप (सुपा ३२१, वजा १५६) । १ अंगूठी (उवा) । ३ अंग-विन्यास-विशेष (चैत्य १४) ।

मुद्दिअ वि [मुद्रित] १ जिम पर मोहर लगाई गई हो वह । २ वद किया हुआ (एगाया १, २—पत्र ८६, ठा ३, १—पत्र १२३, कप्प, सुपा १४४, कुप्र ३१) ।

मुद्दिअ } छी [मुद्रिका] अंगूठी (पएह १, मुद्दिआ } ४, कप्प, औप, तदु २६) । ०वंध पुं [०वन्ध] ग्रन्थि-वन्ध, वन्ध-विशेष (ओघ ४०२, ४०५) ।

मुद्दिआ छी [मुद्दीका] १ द्राक्षा की लता (पएण १—पत्र ३३) । २ द्राक्षा, दाख (ठा ४, ३—पत्र २३६, उत्त ३४, १५, पव १५५) ।

मुद्दी छी [दे] चुम्बन (दे ६, १३३) ।

मुदुदुय देखो मुदुग (पएण १—पत्र ४८) ।

मुदु देखो मुठ (औप, कप्प, ओघभा १६, कुमा) । ०न्न वि [०न्य] १ मस्तक में उत्पन्न । २ मस्तक-स्थ, अग्रेसर । ३ मूर्धन्यानीय रकार आदि वणं (कुमा) । ०य पुं [०ज] केश, बाल (पएह १, ३—पत्र ५४) । ०शूल न [०शूल] मस्तरु-पीडा, रोग-विशेष (एगाया १, १३) ।

मुदु वि [मुग्ध] १ मूढ, मोह-युक्त । २ सुन्दर, मनोहर, मोह-जनक (हे २, ७७, प्राप्र, कुमा, विपा १, ७—पत्र ७७) ।

मुद्धा छी [मुग्धा] मुग्धा छी, नायिका का एक भेद, काम-चेष्टा-रहित अकुरित यौवना (कुमा) ।

मुद्धा (अप) देखो मुहा (कुमा) ।

मुद्धाण देखो मुठ (उवा, कप्प, पि ४०२) ।

मुत्थ पुं [दे] घर के ऊपर का तिर्थक काष्ठ, गुजराती में 'मोम' (दे ६, १३३) । देखो मोदभ ।

मुमुक्खु वि [मुमुक्षु] मुक्त होने की चाह-वाला (सम्मत्त १४०) ।

मुम्मुइ } वि [मूकमूक] १ अत्यन्त मूक । मुम्मुय } २ अव्यक्तभाषी (सूअ १, १२, ५, राज) ।

मुम्मुस सक [चूर्णय] चूरना, चूरण करना । मुम्मुस (प्राकृ ७५) ।

मुम्मुस पुं [दे] करीप, गोइठा (दे ६, १४७) ।

मुम्मुस पु [दे मुम्मुस] १ करीपाग्नि, गोइठा की आग (दे ६, १४७, जी ६) । २ तुपाग्नि (सुर ३, १८७) । ३ भस्म-च्छन्न अग्नि, भस्म-मिश्रित अग्नि-कण (उप ६४८ टी, जी ६, जीव १) ।

मुम्मुही छी [मुम्मुखी] मनुष्य की दश दशाओ में नववी दशा—८० से ९० वर्ष

तक की अवस्था (ठा १०—पत्र ५१६, तदु १६) ।

मुर अक [लड] १ विलास करना । २ सक, उत्पीडन करना । ३ जीम चलाना । ४ उपसेप करना । ५ व्यास करना । ६ बोलना । ७ फेकना । मुरइ (प्राकृ ७३) ।

मुर अक [स्फुट] खीलना । मुरइ (हे ४, ११४, पड) ।

मुर पुं [मुर] दैत्य विशेष । ०रिउ पु [०रिपु] श्रीकृष्ण (ती ३) । ०वेरिय पु [०वेरिन्] वही अर्थ (कुमा) । ०रि पु [०रि] वही अर्थ (वजा १५४) ।

मुरई छी [दे] अमती, कुलटा (दे ६, १३५) ।

मुरज पु [मुरज] मृदग, वाद्य-विशेष (कप्प, मुरय } पात्र, गा २५३, सुपा ३६३, अत, धर्मवि ११२, कुप्र २८८, औप; उप पृ २३६) । देखो मुरव ।

मुरल पु व. [मुरल] एक भारतीय दक्षिण देश, केरल देश, 'दिअर ए विद्धा नुए मुरला' (गा ८७६) ।

मुरव देखो मुरय (औप, उप पृ २३६) । २ अंग-विशेष, गल-परिष्ठा (औप) ।

मुरवि छी [दे. मुरजिन्] आभरण-विशेष (औप) ।

मुरिअ वि [स्फुटित] खीला हुआ (कुमा) ।

मुरिअ वि [दे] १ झुटित, टूटा हुआ (दे ६, १३५) । २ मुडा हुआ, बक्र बना हुआ (सुपा ५४७) ।

मुरिअ पुं [मौर्य] १ प्रसिद्ध क्षत्रिय-वंश (उप २११ टी) । २ मौर्य वंश में उत्पन्न, 'रायगिहे मू(?) मु)रियवलभदे' (विसे २३५७) ।

मुरड पुं [मुरण्ड] १ अनार्य देश-विशेष (इक, पव २७४) । २ पादलिप्तसूरि के समय का एक राजा (पिड ४६४, ४६८) । ३ पुत्री. मुरण्ड देश का निवासी मनुष्य (पएह १, १—पत्र १४) । छी ०डी (इक) ।

मुरुक्कि छी [दे] पकास-विशेष (सण) ।

मुरुक्ख देखो मुक्ख = मूख (हे २, ११२, कुमा, सुपा ६११; प्राकृ ६७) ।

मुरुसुड पुं [दे] जूट, केशों की लट (दे ६, ११७) ।

मन का (सुर ४, ७५) । ४ पुं. भूतानन्द के गन्धर्व-सैन्य का नायक (इक) ।

माणसिअ वि [मानसिक] मन-संबन्धी, मन का (आ २४, औप) ।

माणसिआ स्त्री [मानसिका] एक विद्या-देवी (सति ६) ।

माणि वि [मानिन्] १ मान-युक्त, मानवाला (उव, कुप्र २७६, कम्म ४, ४०) । स्त्री. °णिर्णा (कुमा) । २ पुं. रावण का एक सुमट (पउम ५६ २) । ३ पर्वत-विशेष । ४ कूट-विशेष (राज, इक) ।

माणिअ वि [दे. मानित] अनुभूत (दे ६, १३०, पाप्र) ।

माणिअ वि [मानित] सत्कृत (गउड) ।

माणिक न [माणिक्य] रत्न विशेष, माणिक (सुपा २१७, वजा २०, कप्पू) ।

माणिग देखो माणि (पउम ७३, २७) ।

माणिभद पु [माणिभद्र] १ यक्ष-निकाय के उत्तर दिशा का इन्द्र (ठा २, ३—पत्र ८५, इक) । २ यक्षदेवों की एक जाति (सिरि ६६६, इक) । ३ देव-विशेष । ४ शिखर-विशेष (राज, इक) । ५ एक देव-विमान (राज) ।

माणिम देखो माण = मानय ।

माणी स्त्री [मानिका] २५६ पलों का एक माप (अणु १५२) ।

माणुस पुन [मानुष] १ मनुष्य, मानव, मर्त्य (सूत्र १, ११, ३, परह १, १, उव, सुर ३, ५६, प्राप्र, कुमा), 'जपुण हिययाणदं जणेइ त माणुसं विरल' (कुप्र ६), 'मयाणि माइपिइपमुहमाणुसाणि सन्वाणि' (कुप्र २६) । २ वि. मनुष्य-सदन्वी, 'तिविहं कहावत्थुं ति पुव्वायरियपवाओ, तं जहा, दिव्व दिव्वमाणुसं माणुस च' (स २) ।

माणुसी स्त्री [मानुषी] १ स्त्री-मनुष्य, मानवी (पव २४१, कुप्र १६०) । २ मनुष्य से संबन्ध रखनेवाली, 'माणुसी भासा' (कुप्र ६७) ।

माणुसुत्तर } पुं [मानुषोत्तर] १ पर्वत-माणुसोत्तर } विशेष, मनुष्यलोक का सीमा-कारक पर्वत (राज, ठा ३, ४, जीव ३) । २ न. एक देव-विमान (सम २) ।

माणुस्स देखो माणुस (आचा, औप, घमंवि १३; उपप २, विसे ३००७), 'माणुस्सं लोग' (ठा ३, ३—पत्र १४२), 'माणुस्सगाई भोगमोगाई' (कप्प) ।

माणुस्स } न [मानुष्य, °क] मनुष्यत्व, माणुस्सय } मानुसपन, मनुष्यता (सुपा १६६, स १३१ प्रासू ४७, पउम ३१, ८१) ।

माणुस्सी देखो माणुसी (पव २४०) ।

माणूस देखो माणुस (सुर २, १७२, ठा ३, ३—पत्र १४२) ।

माणेसर पु [माणेश्वर] माणिभद्र यक्ष (भवि) ।

माणोरामा (अप) स्त्री [मनोरमा] छन्द-विशेष (पिंग) ।

मातग देखो मायग (औप) ।

मातजण देखो मायजण (ठा २, ३—पत्र ८०) ।

मातुलिं देखो माहुलिं (आचा २, १, ८, १) ।

मादलिआ स्त्री [दे] माता, जननी (दे ६, १३१) ।

मादु देखो माड = स्त्री (प्राकृ ८) ।

माधवी देखो माहवी = माववी (हास्य १३३) ।

माभाइ पुं स्त्री [दे] अमय-प्रदान, अमय-दान, अमय (दे ६, १२६, पड्) ।

माभीसिअ न [दे] ऊपर देखो (दे ६, १२६) ।

माम अ. कोमल आम्रान्तरण का सूचक अव्यय (पउम ३८, ३६) ।

माम } पु [दे] मामा, मां का भाई (सुपा मामग } १६, १६५) ।

मामग } वि [मामक] १ मदीय, मेरा मामय } (आचा, अचु ७३) । २ ममतावाला (सूत्र १, २, २, २८) ।

मामय देखो मामग = (दे) (पउम ६८, ५५, स ७३१) ।

मामा स्त्री [दे] मामी, मामा की बहू (दे ६, ११२) ।

मामाय वि [मामाक] 'मा' 'मा' बोलनेवाला, निवारक (औप ४३५) ।

मामास पु [मामाप] १ अनार्य देश-विशेष । २ अनार्य देश में रहनेवाली मनुष्य-जाति (इक) ।

मामि अ. सखी के आम्रान्तरण में प्रयुक्त किया जाता अव्यय (हे २, १६५, कुमा) ।

मामिया } स्त्री [दे] मामा की बहू (विपा मामी } १, ३—पत्र ४१, दे ६, ११२, गा २०४, प्राकृ ३८) ।

माय वि [मात] समाया हुआ (कम्म ५, ८५ टी, पुष्फ १७२, महा) ।

माय वि [मायावन्] कपटवाला, 'कोहाए माणाए मायाए लोनाए' (पडि) ।

माय देखो मे त = मत्र, 'लोमुक्खणणमायमवि' (सूत्र २, १, ४८) ।

मायं देखो माया = माया (आचा) ।

मायं देखो मत्ता = मात्रा । °न्न वि [°न्न] परिमाण का जानकार (सूत्र २, १, ५७) ।

मायइ स्त्री [दे] वृक्ष-विशेष (पउम ५३, ७६) ।

मायंग पु [मातङ्ग] १ भगवान् सुपाश्वनाथ का शासनयक्ष । २ भगवान् महावीर का शासन यक्ष (सति ७, ८) । ३ हस्ती, हाथी (पाप्र, सुर १, ११) । ४ चारुडाल, डोम (पाप्र) ।

मायगी स्त्री [मातङ्गी] १ चारुडालिन (निचू १) । २ विद्या-विशेष (आचू १) ।

मायजण पुं [मातञ्जण] पर्वत-विशेष (इक) ।

मायड पुं [मार्तण्ड] सूर्य, रवि (सुपा २४२, कुप्र ८७) ।

मायद पुं [दे माकन्द] आम्र, आम का पेड़ (हे २, १७४, प्राप्र, दे ६, १२८, कुप्र ७१, १०६) ।

मायदिअ देखो मागंदिअ (मग १८, १) ।

मायदी स्त्री [माकन्दी] नगरी-विशेष (स ६, कुप्र १०६) ।

मायदी स्त्री [दे] श्वेताम्बर साध्वी (दे ६, १२६) ।

मायण्हिया स्त्री [मृगतृष्णिका] किरण में जल की भ्रान्ति, मरु-भरीचिका, 'जह मुद्धमओ मायण्हियाए तिसिओ करेइ जल-बुद्धि । सह निव्विक्खेयपुरिसो कुणइ अषम्ममेवि घम्ममई' (सुपा ५००) ।

तस्स मुहिआइ सेवगा जाया' (सिरि ४५७),
'जिएमासएपि कहमविलद्धु हारेसिमुहियाए'
(सुपा १२४), 'मुह(?) हि) याइ गिएह लक्ख'
(कुप्र २३७)।

मुहु } अ [मुहुस्] बार बार (प्रासू २६,
मुहु } हे ४, ४४४. पि १८१)।

मुहुत्त } पुन [मुहुत्त] दो घड़ी का काल,
मुहुत्ताग } अठतालीस मिनट का समय (ठा
२, ४, हे २, ३०, औप, भग, कप्प, प्रासू
१०५, इक, स्वप्न ६५, आचा, ओष ५२१)।

मुहुमुह देखो मुहुमुह (पाअ)।

मुहुल देखो मुहुल = मुखर (पाअ)।

मुहुल देखो मुह = मुख (हे २, १६४, पड,
भवि)।

मूअ देखो मुक्क = मूक (हे २, ६६, आचा,
गडड, विपा १, १)।

मूअ देखो मुअ = मृत, 'लजाइ कह ए मूओ
सेवतो गामवाहलिय' (वजा ५४)।

मूअल } वि [दे मूक] मूक, वाक्-शक्ति
मूअल } से हीन (दे ६, १३७, सुर ११,
१५४)।

मूअल्लइअ } वि [दे. मूकायित] मूक बना
मूअल्लिअ } हुआ (से ५, ४१, गडड,
पि ५६५)।

मड्गलिया } देखो मुड्गलिया (उप १३४
मड्गगा } टी, ओष ५५८)।

मूइल्लअ } वि [मृत] मरा हुआ,
मूयल्लिअ }

'एगिह वारेइ जणो तइआ

मूडल्लओ, कहि व गओ।

जाहे विसं व जाअ

सव्वगपहोलिर पेम्म'

(गा ६६६ अ)।

मूड } पु [दे] अन्न का एक दीर्घ परिमाण,
मूड } 'इगमूडलक्खसमहियमवि घन्न अत्थि
तायगिहे' (सुपा ४२७), 'तो तेहि ताडिओ
सो गाढं कणमूडउव्व लउडेहि' (वर्मवि
१४०)।

मूड वि [मूड] मूख, मुग्ध (प्राप्र, कस, पउम
१, २८, महा, प्रासू २६)। 'नइय न
[नयिक] श्रुत-विशेष, शास्त्र-विशेष
(आवम)। 'विस्सुइया ली [विस्सुचिका]
रोग-विशेष (सुपा १३)।

मूण न [मौन] क्षुण्ण (स ४७७, परह २,
४—पत्र १३१)।

मूयग पु [दे मूयक] मेवाड देश मे प्रसिद्ध
एक प्रकार का वृण (परह २, ३—पत्र
१२३)।

मूर मक [भञ्ज] भांगना, तोड़ना। मूरड
(हे ४, १०६)। भूका मूरीअ (कुमा)।

मूरग वि [भञ्जक] भागनेवाला, चूरनेवाला
(परह १, ४—पत्र ७२)।

मूल न [मूल] १ जउ (ठा ६; गडड, कुमा,
गा २३२)। २ निग्रन्धन कारण (परह १,
३—पत्र ४२)। ३ आदि, आरम्भ (परह
२, ४)। ४ आत्र कारण (आचानि १, २,
१—गाथा १७३, १७४)। ५ समीप, पास,
निकट (ओष ३८४, सुर १०, ६)। ६ नक्षत्र-
विशेष (सुर १०, २२३)। ७ व्रतो का पुन
स्थापन (औप, पंचा १६, २१)। ८ पिप्पली-
मूल (आचानि १, २, १)। ९ वज्रीकरण
आदि के लिए किया जाता ओषधि-प्रयोग,
'अमत्तमूल वसोहरण' (प्रासू १४)। १०
आद्य, प्रथम, पहला। ११ मुख्य (सबोध ३,
आवम, नुपा ३६४)। १२ मूलधन, पुजी
(उत्त ७, १४, १५)। १३ चरण, पैर। १४
सूरण, कन्द-विशेष, ओल। १५ टीका आदि
से व्याख्येय ग्रन्थ (नक्षि २१)। १६ प्रायश्चित्त-
विशेष (विसे १२४६)। १७ पुन कन्द-
विशेष, मूली (अनु ६, आ २०)। 'छेज्ज
वि [छेज्ज] मूल नामक प्रायश्चित्त से नाश-
योग्य (विसे १२४६)। 'दत्ता ली [दत्ता]
कुण्ड-पुत्र शाम्भ की एक पत्नी (अत १५)।
'देव पु [देव] व्यक्ति वाचक नाम, (महा,
सुपा ५२६)। 'देवी ली [देवी] लिपि-
विशेष (विसे ४६४ टी)। 'नायग पुं
[नायक] मन्दिर की अनेक प्रतिमाओ मे
मुख्य प्रतिमा (सबोध ३)। 'प्पाडि वि
[उत्पाटिन्] मूल को उखाड़नेवाला (सक्षि
२१)। 'विण्व न [विण्व] मुख्य प्रतिमा
(सबोध ३)। 'राय पु [राज] गुजरात
का चौलुक्य-वंशीय एक प्रसिद्ध राजा (कुप्र
४)। 'वत वि [वत्] मूलवाला (औप,
राया १, १)। 'सिरि ली [श्री] शाम्भ-
कुमार की एक पत्नी (अत १५)।

मूलग } न [मूलक] १ कन्द-विशेष, मूली
मूलय } मूरई (परह १, जो १३)।
शाक-विशेष (पत्र १५४, कुमा)।

मूलगत्तिआ ली [मूलगत्तिआ] मूले—मूल
की पतली फाक (दन ५, २, २३)।

मूलवेलि ली [दे. मूलवेलि] घर के छप्प
का आचार-भूत-स्तम्भ-विशेष (आचा २, २,
३, १ टी, पत्र १३३)।

मूलिगा ली [मूलिका] ओषधि विशेष (उ
६०३)।

मूलिय न [मौलिक] मूलधन, पुजी (उत्त ७,
१६; २१)।

मूलिह वि [मूल, मौलिक] प्रधान, मुख्य
'मूलिहगहणे' (मिरि ४२३)।

मूलिह वि [मूलधन] मूलधनवाला, पुंजी
वाला, 'अत्थि य देवदत्ताए गाटाणुरत्त
मूलिहो मित्तसेणो अयलनामा मत्तवाहुत्त
(महा)।

मूली ली [मूली] ओषधि-विशेष, बशीकर
आदि के कार्य में लगती ओषधि (महा)।

मूस देखो मुस = मुष्। मूसइ (सजि ३६)

मूसग } पुं [मूपक, मूपिक] मूसा, चू
मूसय } (उत्त, सुर १, १८, हे १, ८,
पड, कुमा)।

मूसरि वि [दे] भग्न, भांगा हुआ (दे ६,
१३७)।

मूसल वि [दे] उपचित (दे ६, १३७)।

मूसल देखो मुसल = मुसल (हे १, ११३,
कुमा)।

मूसा देखो मुसा (हे १, १३६)।

मूसा ली [मूपा] मूस, धातु गालने—गालने
पात्र (कप्प, आरा १००, सुर १३, १८०)।

मूसा ली [दे] लघु द्वार, छोटा दरवाजा
(दे ६, १३७)।

मूसा न [दे] ऊपर देखो (दे ६, १३७)।

मूसिय देखो मूसय (आचा)। 'रि
[रि] मार्जार, बिल्ला (आचा)।

मे अ [मे] १ मेरा। २ मुक्से (स्वप्न १,
ठा १)।

मेअ पुं [मेद्] १ अनायं देश-विशेष (इक,
२ एक अनायं मनुष्य-जाति (परह १, १-
पत्र १४)। ३ पु ली. चाण्डाल (सम्म
१७२)। ली. मेई (सम्मत्त १७२)।

मालवंत पु [माल्यवत्] १ पर्वत-विशेष (ठा २, ३—पत्र ६६, ८०, सम १०२)। २ एक रामकुमार (पउम ६, २२०)। ३ परि-याग, परियाय पुं [पर्याय] पर्वत-विशेष (ठा २, ३—पत्र ८०, ६६)।

मालविणी स्त्री [मालविनी] लिपि-विशेष (विसे ४६४ टी)।

माला स्त्री [माला] १ फूल आदि का हार, 'मल्ल माला दाम' (पाय, स्वप्न ७२, सुपा ३१६, प्राप्त ३०, कुमा)। २ पत्नी, श्रेणी (पाय)। ३ समूह, 'जलमालकदमाल' (सूअनि १६१)। ४ छन्द-विशेष (पिंग)। ५ इल्ल वि [वन्] माला वाला (प्राप्र)। ६ कारि वि [कारिन्] माली, पुष्प व्यवसायी। स्त्री. ७ गी (सुपा ५१०)। ८ गार वि [कार] वही अर्थ (उप १४२, टी, अत १८, सुपा ५६२, उप पृ १५६)। ९ धर पु [वर] प्रतिमा के ऊपर के भाग की रचना-विशेष (चेइय ६३)। १० यार, ११ देखा १२ कार (अत १८, उप पृ १५७, गा ५६६)। स्त्री १३ री (कुमा, गा ५६७)। १४ हरा स्त्री [वरा] छन्द-विशेष (पिंग)।

माला स्त्री [दे] ज्योत्स्ना, चन्द्रिका (दे ६, १०८)।

मालाकुकुम न [दे] प्रधान कुकुम (दे ६, १३२)।

मालि पुत्री [मालि] वृक्ष-विशेष (मम १५२)।

मालि पुं [मालिन्] १ पाताल-लका का एक राजा (पउम ६, २२०)। २ देश-विशेष (इक)। ३ वि माली, पुष्प-व्यवसायी (कुमा)। ४ शोभनेवाला (कुमा)।

मालिअ पु [मालिक] ऊपर देखो (दे २, ८, 'परह १, २, सुपा २७३, उप पृ १५७)।

मालिअ वि [मालित] शोभित, विभूषित, परलोए पुए कल्लाए मालिआ मालिआ कमेएव' (सा २३, पाय, उप २६४ टी)।

मालिआ स्त्री [मालिका, माला] देखो माला = माला (सा २३, स्वप्न ५३, औप, उवा)।

मालिज्ज न [मालीय] एक जैन मुनि-कुल (कप्प)।

मालिणी स्त्री [मालिनी] १ माली की स्त्री (कुमा)। २ शोभनेवाली (औप)। ३ छन्द-विशेष (पिंग)। ४ मालावाली (गउड)।

मालिण्ण } न [मालिण्य] मतिनत्ता (उप
मालिज्ज } पृ २२, सुपा ३५२, ५८६)।

मालुग } पुं [मालुक] १ श्रोत्रिय जन्तु-
मालुय } विशेष (सुख ३६, १३८)। २ वृक्ष-विशेष (परण १—पत्र ३१, णाया १, २—पत्र ७८)।

मालुया स्त्री [मालुका] १ बल्ली, लता (सूअ १, ३, २, १८)। २ बल्ली-विशेष (परण १—पत्र ३३)।

मालुहाणी स्त्री [मालुहानी] लता-विशेष (गउड)।

मालूर पुं [दे मालूर] कपित्थ, कैय का गाछ (दे ६, १३०)।

मालूर पु [मालूर] १ विल्व वृक्ष, वेल का गाछ (दे ३, १६, गा ५७६, गउड, कुमा)। २ न वेल का फल (पाय, गउड)।

माहव } पु [मातुल] मामा (पुण्यमाला
माम्वह } ३२ श्लो० ८ भवभावना)।

माविअ वि [मापित] मापा हुआ (से ६, ६०, दे ८, ४८)।

मास देखो मम = मांस (हे १, २६, ७०, कुमा, उप ७२८ टी)।

मास पुं [मास] १ महिना, तीस दिन का समय (ठा २, ४, उप ७६८ टी, जी ३५)।

२ समय, काल, 'कालमासे काल किच्चा' (विपा १, १, २, कुप्र ३५), 'पमवमासे' (कुप्र ४०४)। ३ पर्व—वनस्पति-विशेष, 'वीरणा- (?) गी) तह इक्के य मामे य' (परण १—पत्र ३३)। ४ उम देखो तुस (राज)। ५ कपय पु [कल्प] एक स्थान में महिना तक रहने का आचार (वृह ६)।

६ स्वमण न [क्षपण] लगातार एक मास का उपवास (णाया १, १, विपा २, १, भग)। ७ गुरु न [गुरु] तप-विशेष, एका-शन तप (सवोच ५७)। ८ तुस पु [तुप] एक जैन मुनि (विसे ५१)। ९ पुरी स्त्री [पुरी] १ नगरी-विशेष, भृगी देश की राजधानी (इक)। २ 'वर्त' देश की राजधानी, 'पावा भगी य, मामपुरी वट्टा' (पव २७५)।

३ पुरिया स्त्री [पुरिका] एक जैन मुनि शाखा (कप्प)। ४ लहु न [लघु] तप-विशेष, 'पुरिमड्ड' तप (सवोच ५७)।

मास पु [माप] १ अनार्य देश-विशेष। २ देश-विशेष में रहनेवाली मनुष्य-जाति (परह १, १—पत्र १४)। ३ धान्य विशेष, उडद (दे १, ६८)। ४ परिमाण विशेष, मासा (वज्जा १-०)। ५ पण्णो स्त्री [पर्णी] वनस्पति विशेष (परण १—पत्र ३६)।

मासल देखो ममल (हे १, २६, कुमा)।

मासलिय वि [मासलिन] पुष्ट किया हुआ (गउड, सुपा ४७४)।

मासाहम पु [मामाहस] पञ्चि-विशेष, 'मासाहमसठणिसमो किं वा चिट्ठमि घघलिओ' (सवे ६, उव, उर ३, ३)।

मासिअ पु [दे] पिशुन, खल, दुर्जन (दे ६, १२२)।

मासिअ वि [मासिक] मास-सम्बन्धी (उवा, औप)।

मासिआ स्त्री [मानृष्यस्त्र] माँ की बहिन (धर्मवि २२)।

मासु देखो मंसु = श्मश्रु (हे २, ८६)।

मासुरी स्त्री [दे] श्मश्रु, दाढ़ी-मूँछ (दे ६, १३०, पाय)।

माह पुं [माघ] १ मास-विशेष, माघ का महिना (पाय, हे ४, ३५७)। २ सस्कृत का एक प्रसिद्ध कवि। ३ एक सस्कृत काव्य-ग्रन्थ, शिशुपाल वध काव्य (हे १, १८७)।

माह न [दे] क्रुन्द का फूल (दे ६, १२८)।

माहण पु स्त्री [माहन, ब्राह्मण] हिंसा से निवृत्त, अहिंसक—१ मुनि, साधु, ऋषि। २ श्रावक, जैन उपासक। ३ ब्राह्मण (आचा, सूअ २, २, ४८, ५४, भग १, ७, २, ५, प्राप्त ८०, मंश)। स्त्री ४ ण (कप्प)। ५ कुड न [कुण्ड] मगध देश का एक ग्राम (आच १)।

माहणप पुन [माहात्म्य] १ महत्त्व, गौरव। २ महिमा, प्रभाव (हे १, ३३, गउड, कुमा, सुर ३, ५३, प्राप्त १७)।

माहणपया स्त्री ऊपर देखो (उप ७६८ टी)।

माहय पु [दे] चतुरिन्द्रिय कीट-विशेष (उत्त ३६, १४६)।

मेलाय अक [मिल्] एकत्रित होना, 'पडि-
निक्खमिता एगयसो मेलायति' (भग)। संक.
मेलायित्ता (भग)। कृ. मेलाइयव्व (ओघभा
२२ टी)।

मेलाव देखो मेलय। मेलाव (भग)।

मेलाव पुन [मेल] १ मिलाप, संगम, मिलन
(सुपा ४६६), 'निच्च चिय मेलावं सुमग्ग-
निरयाण अद्दुलह' (सट्ठि १४३)।

मेलावग देखो मेलय (आन्पहि १६)।

मेलावड (अप) देखो मेलय, मणवल्हमेला-
वडउ पुंअहि लम्भइ एहु' (सिरि ७३)।

मेलावय देखो मेलावग (सुपा ३६१, भवि)।

मेलाविअ वि [मेलिन] मिलाया हुआ, इकट्ठा
किया हुआ (से १०, २८)।

मेलिअ वि [मिलित] मिला हुआ (ठा ३,
१ टी—पत्र ११६, महा, उव)।

'एवं सुलीलवतो असीलवतोहि मेलिओ सतो।
पावेइ गुणपरिहाणी मेलणदोसाणुसंगेण'

(प्रासू ३५)।

मेली स्त्री [दे] संकति, जन-समूह का एकत्रित
होना, मेला (दे ६, १३८)।

मेलीण देखो मिलीण (पउम २, ६), 'अरणो-
रणकडकवंतरपेनिअमेलीणदिट्ठिपसराइ' (गा
६६६, ७०२ अ)।

मेल्ल देखो मिल्। मेल्लइ (हे ४, ६१), मेल्लेमि
(कुप्र १६)। वकृ मेहंत (महा)। सकृ.
मेह्णव, मेहेप्पिणु (अप) (हे ४, ३५३,
पि ५८८)। कृ. मेह्लियव्व (उप ५५५)।

मेहण न [मोचन] छोड़ना, परित्याग (प्रासू
१०२)।

मेह्णविअ वि [मोचित] छोड़वाया हुआ (सुर
८, ६८, महा)।

मेव देखो एव (पि ३३६)।

मेवाड } देखो मेअवाडय (ती १५, मोह
मेवाड } ८८)।

मेस पु [मेप] १ मेंढा, मेड, गाडर (सुर ३,
५३)। २ राशि-विशेष (विचार १०६, सुर
३, ५३)।

मेह पु [मेघ] १ अम्र, जलघर (श्रीप)। २
कालागुरु, सुगंधी घृष-द्रव्य-विशेष (से ६,
४६)। ३ भगवान् मुमतिनाथ का पिता (सम
१५०)। ४ एक जैन महर्षि (अत १८)। ५

राजा श्रेणिक का एक पुत्र (णाय १, १—
पत्र ३७)। ६ एक देव-विमान (देवेन्द्र
१३२)। ७ छन्द-विशेष (पिंग)। ८ एक
वणिक-पुत्र (सुपा ६१७)। ९ एक जैनमुनि
(कप्प)। १० देव-विशेष (राज)। ११ मुस्तक,
श्रीप-विशेष, मोथा। १२ एक राक्षस।
१३ राग-विशेष (प्राप्र, हे १, १८७)। १४
एक विद्याघर-नगर (इक)। 'कुमार पुं
[कुमार] राजा श्रेणिक का एक पुत्र (णाय
१, १, उव)। 'उम्माण पुं [ध्यान] राक्षम-
वश का एक राजा, एक लकापति (पउम ५,
२६६)। 'णाअ पुं [नाड] रावण का एक
पुत्र (से १३, ६)। 'पुर न [पुर] वैताव्य पर्वत के दक्षिण श्रेणी का एक नगर
(पउम ६, २)। 'मुह पुं [मुख] १ देव-
विशेष (राज)। २ एक अन्तर्द्वीप। ३ अन्त-
र्द्वीप-विशेष का निवासी मनुष्य (ठा ४, २—
पत्र २२६, इक)। 'रव न [रव] विन्ध्य-
स्थली का एक जैन तीर्थ (पउम ७७, ६१)।
'वाहण पु [वाहन] १ राक्षस वश का
आदि पुरुष, जो लका का राजा था (पउम
५, २५१)। २ रावण का एक पुत्र
(पउम ८, ६४)। 'सीह पुं [सिंह]
विद्याघर-वश का एक राजा (पउम ५, ४३)।
देखो मेघ।

मेह पुं [मेह] १ सेचन (सूअ १, ४, २,
१२)। २ रोग-विशेष, प्रमेह (आ २०, सुख
१, १५)।

मेहकरा देखो मेघकरा (इक)।

मेहच्छीर न [दे] जल, पानी (दे ६, १३६)।

मेहण न [मेहन] १ भरन, टपकना। २
प्रस्रवण, मूत्र, 'महुमेहण (आचा १, ६,
१, २)। ३ पुरुष-लिंग (राज)।

मेहणि वि [मेहनिन्] भरनेवाला (आचा)।

मेहर पुं [दे] ग्राम-प्रवर, गाँव का मुखिया
(दे ६, १२१, सुर १५, १६८)।

मेहरि पुंजी [दे] काष्ठ-कोट, घुन (जी १५)।

मेहरिया स्त्री [दे] गानेवाली स्त्री (सुपा
मेहरी } ३६४)।

मेहलय पुं व. [मेखलक] देश-विशेष (पउम
६८, ६६)।

मेहला स्त्री [मेखला] काठची, करवनी
(प्राप्र, परह १, ४, श्रीप, गा ४६३)।

मेहलिज्जिया स्त्री [मेखलिया] एक जैन
मुनि-शाखा (कप्प)।

मेहा स्त्री [मेवा] एक इंद्राणी, चमरेन्द्र की
एक अग्र-महिषी (ठा ५, १—पत्र ३०२,
इक)।

मेहा स्त्री [मेधा] बुद्धि, मनीषा, प्रज्ञा (सम
१२५, से १, १६, हास्य १२५)। 'अर वि
[कर] १ बुद्धि-वर्धक। २ पुं. छन्द-विशेष
(पिंग)।

मेहा स्त्री [मेधा] अग्रग्रह-ज्ञान (एदि १७४)।
मेहावई देखो मेव-वई (इक)।

मेहावण न [मेवावण] एक विद्याघर-
नगर (इक)।

मेहावि वि [मेवाविन्] बुद्धिमान्, प्राज्ञ
(ठा ५, ३, णाय १, १, आचा, कप्प,
श्रीप, उप १४२ टी, कुप्र १४०, धर्मवि
६८)। स्त्री 'णी (नाट—शकु ११६)।

मेहि देखो मेडि (से ६, ४२)।

मेहि वि [मेहिन्] प्रस्रवण करनेवाला,
'महुमेहिण' (आचा)।

मेहिय न [मेधिक] एक जैन मुनि-कुल
(कप्प)।

मेहिल पुं [मेधिल] भगवान् पार्श्वनाथ के
वश का एक जैन मुनि (भग)।

मेहुण } न [मैथुन] रति-क्रिया, समोग
मेहुणय } (सम १०; परह १, ४; उवा,
श्रीप; प्रासू १७६, महा)।

मेहुणय पुं [दे] फूफा का लडका (दे ६,
१४८)।

मेहुणिअ पुं [दे] मामा का लडका (वृह ४)।

मेहुणिआ स्त्री [दे] १ साली, भार्या की
बहिन (दे ६, १४८)। २ मामा की लडकी
(दे ६, १४८, वृह ४)।

मेहुन्न देखो मेहुण, 'हिंसायिचोरिके मेहुन्न-
परिगहे य निसिमतते' (ओघ ७८७)।

मेरेअ न [मैरेय] मद्य-विशेष (माल १७७)।

मो अ. इन अर्थों का सूचक अव्यय—१
अवधारण, निश्चय (सूअनि ८६, आवक
१२५)। २ पाद-वृत्ति (पउम १०२, ८६,
धर्मसं ६४५, आवक ६०)।

१४०) । छी. °दिया (पात्र) । २ न पुरुष-
लिंग, पुरुष-चिह्न (राज) । °मुह पुं [°मुख]
१ अनार्य देश-विशेष (पव २७४) । २ न.
नगर-विशेष (राज) । देखो मेंढ ।

मिथिय पु [मेण्डक] ग्राम-विशेष (कर्म १) ।

मिग देखो मय = मृग (विपा १, ७, सुर २,
२२७, सुपा १६८, उव), 'सोहो मिगाएँ
सलिलाए गंगा' (सूत्र १, ६, २१) । °गघ
पुं [°गन्ध] युगलिक मनुष्य की एक जाति
(इक) । °नाह पुं [°नाथ] सिंह (सुपा
६३२) । °वइ पु [°पति] सिंह (पह १,
१, सुपा ६३६) । °वालुंकी छी [°वालुङ्की]
वनस्पति-विशेष (पराण १७—पत्र ५३०) ।
°रि पु [°रि] सिंह (उव, सुर ६, २७०) ।
°हिव पु [°धिप] सिंह (पह २, ५) ।

मिगया छी [मृगया] शिकार (सुपा २१४,
कुप्र २३, मोह ६२) ।

मिगव न [मृगव] ऊपर देखो (उत्त
१८, १) ।

मिगसिर देखो मगसिर (सम ८, इक, पि
४३६) ।

मिगावई देखो मिआ-वई (पउम २०, १८४
२२, ५५, उव, अत, कुप्र १८३, पडि) ।

मिगी छी [मृगी] १ हरिणी (महा) । २
विद्या-विशेष (राज) । °पद न [°पद] छी
का गुह्य स्थान, योनि (राज) ।

मिच्चु देखो मच्चु (पड, कुमा) ।

मिच्छ (अप) देखो इच्छ = इप्, 'न उ देह
कप्पु मिच्छइ न न दंडु' (मवि) ।

मिच्छ पु [म्लेच्छ] यवन, अनार्य मनुष्य
(पउम २७, १८, ३४, ४१, ती १५, सवोष
१६) । °पहु पुं [°प्रभु] म्लेच्छो का राजा
(रंभा) । °पिय न [°प्रिय] पलाएडु, प्याज,
लशुन, 'मिच्छपिय तु भुत जा गघो ता न
हिडति' (वृह ५) । °हिव पुं [°धिप]
यवनो का राजा (पउम १२, १४) ।

मिच्छ न [मिथ्य] १ असत्य वचन, झूठ ।
२ वि. असत्य, झूठा, 'मिच्छं ते एवमार्हयु'
(भग), 'त तहा, नेव मिच्छ' (पउम २३,
२६) । ३ मिथ्यादृष्टि, सत्य पर विश्वास नही
रखनेवाला, तत्त्व का अश्रद्धालु, 'मिच्छो

हियाहियविभागनाएसएणासमन्निओ कोइ'
(विसे ५१६) ।

मिच्छ देखो मिच्छा (कम्म ३, २, ४) ।

°कार पुं [°कार] मिथ्या-करण (आवम) ।
°त्त न [°त्व] सत्य तत्त्व पर अश्रद्धा,
सत्य धर्म का अविश्वास (ठा ३, ३,
आव ६, भग, औप; उप ५३१, कुमा) ।
°त्ति वि [°त्विन्] सत्य धर्म पर विश्वास
नहीं करनेवाला, परमार्थ का अश्रद्धालु (दं
१८) । °दिट्ठि, °दिट्ठिय, °दिट्ठि, °दिट्ठिय
वि [°दृष्टि, °क] सत्य धर्म पर श्रद्धा नहीं
रखनेवाला, जिन-धर्म से भिन्न धर्म को मानने-
वाला (सम २६, कुमा, ठा २, २, औप,
ठा १) ।

मिच्छा अ [मिथ्या] १ असत्य, झूठा
(पात्र) । २ कर्म-विशेष, मिथ्यात्व-मोहनीय
कर्म (कम्म २, ४, १४) । ३ गुण-स्थानक
विशेष, प्रथम गुण-स्थानक (कम्म २, २, ३,
१३) । °दसण न [°दर्शन] १ सत्य तत्त्व
पर अश्रद्धा (सन ८, भग, औप) । २ असत्य
धर्म (कुमा) । °नाण न [°ज्ञान] असत्य
ज्ञान, विपरीत ज्ञान, अज्ञान (भग) । °सुअ
न [°श्रुत] असत्य शास्त्र, मिथ्यादृष्टि-प्रणीत
शास्त्र (एदि) ।

मिज्ज अक [मृ] मरना । मिज्जति (सूत्र १,
७, ६) । वहु मिज्जमाण (भग) ।

मिज्जत } देखो मा = मा ।
मिज्जमाण }

मिज्ज वि [मिथ्य] शुचि, पवित्र (उप ७२८
टी) ।

मिट सक [दे] मिटाना, लोप करना । मिटि-
जसु (पिंग) । प्रयो. मिटावह (पिंग) ।

मिट्ट वि [मिट्ट, मृष्ट] मीठा, मधुर, 'मृहमिट्टा
मण्डुट्टा वेसा सिट्टाण कहमिट्टा' (धर्मवि
६५, कप्पू, सुर १२, १७, हे १, १२८,
रंभा) ।

मिण सक [मा, मी] १ परिमाण करना,
नापना, तोलना । २ जानना, निश्चय करना ।

मिणइ (विसे २१८६), मिणसु (पव २५४) ।

मिणण न [मान] मान, माप, परिमाण (उप
पृ ६७) ।

मिणाय न [दे] बलात्कार, जबरदस्ती (दे ६,
११३) ।

मिणाल देखो मुणाल (प्राक ८, रंभा) ।

मिन्न पुं [मित्र] १ सूर्य, रवि (सुपा ६४५,
सुख ४, ६, पात्र, वजा १४४) । २ नक्षत्रदेव-
विशेष, अनुराधा नक्षत्र का अधिपत्यक देव
(ठा २, ३—पत्र ७७, सुज १०, १२) । ३
अहोरात्र का तीसरा गृहर्तृ (सम ५१, सुज १०,
१३) । ४ एक राजा का नाम (विपा
१, २) । ५ पुंन. दोस्त, वयस्य सखा, 'मित्तो
सही वयसो' (पात्र), 'पहाणमित्ता' (स
७०७), 'तिविहो मित्तो हवइ' (स ७१५,
सुपा ६४५, प्रासू ७६) । °केसी छी [°केशी]
रुचक पर्वत पर रहनेवाली एक दिक्कुमारी
देवी, 'अलंडुसा मित्त (१त्त) केसी' (ठा ८—
पत्र ४३७, इक) । °गा छी [°गा] वैरोचन
बलीन्द्र की एक अग्र-महिषी, एक इन्द्राणी
(ठा ४, १—पत्र २०४) । °णदि पु
[°नन्दिन्] एक राजा का नाम (विपा २,
१०) । °दाम पु [°दाम] एक कुलकर
पुरुष का नाम (सम १५०) । °देवा छी
[°देवा] अनुराधा नक्षत्र (राज) । °व
वि [°वत्] मित्रवाला (उत्त ३, १८) ।
°सेण पुं [°सेन] एक पुरोहित-पुत्र (सुपा
५०७) ।

मित्त देखो मेत्त = माव (कप्प, जी ३१,
प्रासू १४५) ।

मित्तल पुं [दे] कन्दर्प, काम (दे ६, १२६,
सुर १३, ११८) ।

मित्ति छी मत्ति १ मान, परिमाण । २
सापेक्षता ।

'उत्तरगववायाण मित्तीए अह ए भोयण दुट्ठ ।
उत्तरगववायाण मित्तीइ तहेव उवगरण'

(अज्झ ३७) ।

मित्तिआ छी [मृत्तिका] मिट्टी, मट्टी (अभि
२४३) । °वई छी [°वता] दशार्ण देश की
प्राचीन राजधानी (विचार ८८) ।

मित्तिज्ज अक [मित्रोय] मित्र को चाहना ।
वहु मित्तिज्जमाण (उत्त ११, ७) ।

मित्तिय न [मैत्रेय] १ गोत्र-विशेष, जो वत्स
गोत्र की एक शाखा है । २ पुत्री, उस गोत्र मे
उत्पन्न (ठा ७—पत्र ३६०) ।

पएह २, १—पत्र १००)। °पय न [°पद]
संयम, चारित्र (सूत्र १, १३, ६)।

मोणावणा स्त्री [दे] प्रथम प्रसूति के समय
पिता की श्रोर से किया जाता उत्सव-पूर्वक
निमन्त्रण (उप ७६८ टी)।

मोणि वि [मौनिन] मौनवाला (उव, सुपा
१४, सवोध २१)।

मोत्त देखो मुत्त = मुक्त (धर्मस ७५)।

मोत्तव्व देखो मु'च।

मोत्ता देखो मुत्ता (से ७, २५, संक्षि ४,
प्राक् ६, षड् ८०)।

मोत्ति देखो मुत्ति = मुक्ति (पएह १, ५—
पत्र ६४)।

मोत्तिअ देखो मुत्तिअ (गा ३१०, स्वप्न ६३,
श्रौप, सुपा २३१, महा, गडड)। °दाम न
[°दाम] छन्द-विशेष (पिंग)।

मोत्तुआण
मोत्तु
मोत्तूण } देखो मु'च = मुच्।

मोत्थ देखो मुत्थ (जी ६, संक्षि ४, पि १२५,
प्राभा)।

मोदअ देखो मोअग = मोदक (स्वप्न ६०)।
२ न छन्द-विशेष (पिंग)।

मोन्भ [दे] देखो मुन्भ (दे ८, ४)।

मोर पु [दे] श्वपच, चाण्डाल (दे ६, १४०)।

मोर पु [मोर] १ पक्षि विशेष, मयूर (हे १,
१७१, कुमा)। २ छन्द-विशेष (पिंग)।
°वय पुं [°वन्ध] एक प्रकार का वन्धन
(सुपा ३४५)। °सिहा स्त्री [°शिखा] एक
महीपवि (तो ५)।

मोरडल्ला } अ. मुवा, व्यथं (हे २, २१४,
मोरकुल्ला } कुमा, चउप्पन्न० पत्र—७७,
सुमतिजिन-चरित्र)।

मोरड पुं [दे] तिल आदि का मोदक, खाद्य-
विशेष (राज)।

मोरग वि [मायूरक] मयूर के पिच्छो से
निष्पन्न (आचा २, २, ३, १८)।

मोरत्तय पुं [दे] श्वपच, चाण्डाल (दे ६,
१४०)।

मोरिय पु [मार्च] १ एक क्षत्रिय-वंश। २
मौर्य वंश में उत्पन्न (पि १३४)। °पुत्त पु
[°पुत्र] भगवान् महावीर का एक गणधर—
प्रधान शिष्य (सम १६)।

मोरी स्त्री [मोरी] १ मयूर पक्षी की मादा,
मोरनी (पि १६६, नाट—मृच्छ १८)। २
विद्या-विशेष (सुपा ४०१)।

मोल्ला पुं [दे मौलन] बाँधने के लिए गाढ़ा
हुआ सूँटा (उव)।

मोलि देखो मउलि (काल, मम १६)।

मोल्ल देखो मुल्ल (हे १, १२४, उव, उप पु
१०४, णाया १, १—पत्र ६०, भग)।

मोस पु [मोप] १ चोरी। २ चोरी का माल;
'राया जपइ मोसं एसि अण्णमु' (सुप्प २२१,
महा)।

मोस पुन [मृपा] झूठ, असत्य भाषण,
'चउन्निहे मोसे पएणत्ते', 'दमवि मोसे
पएणत्ते' (ठा ४, १, १०, श्रौप, कप्प)।

मोराण वि [मोपण] चोरी करनेवाला (कुप्र
४७)।

मोसलि } स्त्री [दे सुगली, मौगली]
मोसली } वस्त्रादि निरीक्षण का एक दोप,
वस्त्र आदि की प्रतिलेखना करते समय मुसल
की तरह ऊँचे या नीचे भीत आदि का स्पर्श
करना, प्रतिलेखना का एक दोप, 'वज्जेयव्वा
य मोसली तइया' (उत्त २६ २६, २५, ओघ
२६५, २६६)।

मोमा देखो मुसा (उवा, हे १, १३६)।

मोह सक [मोहय] १ भ्रम में डालना।
२ मुग्ध करना। मोहइ (भवि)। वक्र.
मोहत्त, मोहेत्त (पउम ४, ८६, ११, ६६)।
कृ देखो मोहणिज्ज।

मोह देखो मऊह (हे १, १७१, कुमा, कुप्र
४३७)।

मोह वि [मोघ] १ निष्फल, निरर्थक (से १०,
७०, गा ४८२), 'मोहाइ पत्यणाए सो पुण
सोएइ अण्णया' (अज्झ १७५; आत्म १)।
क्रि. 'मोहं कम्मो पयासो' (चेइय ७५०)।
२ असत्य, मिथ्या, 'मिच्छा मोहं विहलं
अलिअं असच्च असन्भूअ' (पाय)।

मोह पुं [मोह] १ मूढता, भ्रमता, म
(आचा, कुमा, पएण १, १)। २ वि
ज्ञान (कुमा २, ५३)। ३ चित्त की व्याकु
(कुमा ५, ५)। ४ राग, प्रेम। ५
झोटा, 'मोहाउरा मणुम्या तह कामदुह
विति' (प्रासू २८, पएह १, ४)। ६
वेहोशी (स्वप्न ३१, स ६६६)। ७
विशेष, मोहनीय कर्म (कम्म ४, ६०, ६
= छन्द-विशेष (पिंग)।

मोहण न [मोहन] १ मुग्ध करना। २
आदि से वश करना (सुपा ५६६)। ३
वेहोशी (निसा ६)। ४ वशीकरण,
करनेवाला मन्त्रादि-कर्म (सुपा ५६६)।
काम का एक दाण। ६ प्रेम, अनुराग (क
७ मैथुन, रति-क्रिया (स ७६०, णाया १
जीव ३)। ८ वि व्याकुल बनाने
(स ५५७, ७४४)। ९ मोहक, मुग्ध
वाला, 'मोहण पसूणपि' (धर्मवि ६५,
३, २६, कर्पूर २५)।

मोहणिज्ज वि [मोहनीय] १ मोह-ज
२ न कर्म-विशेष, मोह का कारण-भूत
(सम ६६, भग, अंत, श्रौप)।

मोहणी स्त्री [मोहनी] एक महौपवि (ती
मोहर न [मौखर्य] वाचावृत्ता, वक्रवाद
(२, ५—पत्र १४८, पुष्प १८०)।

मोहर वि [मोखर] वाचावृत्त, वक्रवादी
१०—पत्र ५१८)।

मोहरिअ वि [मौखरिक] ऊपर देखो
६—पत्र ३७१, श्रौप, सुपा ५२०)।

मोहरिअ न [मौखर्य] वाचालता, वक्र
(उवा, सुपा ५१४)।

मोहि वि [मोहिन] मुग्ध करनेवाला (म
मोहणी स्त्री [मोहिनी] छन्द-विशेष (पि
मोहिय वि [मोहित] १ मुग्ध किया
(पएह १, ४, द्र १४)। २ न. निष्ठ
मैथुन, रति-क्रीडा (णाया १; ६—
१६५)।

मोहुत्तिय वि [मौहूर्तिक] ज्योतिष शास्त्र
जानकार (कुप्र ५)।

मौलिअ देखो मोरिय, 'णिवेदेह दाव एद

मीत देखो मिन्त = मित्र (संज्ञि १७) ।
मीमस सक [मीमास्] विचार करना ।
कृ. अ-मीमसा गुह (स ७३०) ।
मीमसा स्त्री [मीमांसा] जैमिनीय दर्शन,
पूर्वमीमासा (सुख ३, १, धर्मवि ३८) ।
मीमसिय वि [मीमासित] विचारित (उप
६८६ टी) ।
मीरा स्त्री [दे] दीर्घं चुल्ली, बड़ा चुल्हा
(सुअनि ७६) ।
मील थक [मील्] मीचाना, बन्द होना,
सकुचाना । मीलइ (हे ४, २३२, पङ्) ।
मील देखो मिल (वि ११) ।
मीलच्छीकार पु [मीलच्छीकार] १ यवन
देश-विशेष, 'मीलच्छीकारदेसोवरि चलिदो
खपरखाणराया' (हम्मीर ३५) । २ एक
यवन राजा (हम्मीर ३५) ।
मीलण न [मीलन] संकोच (कुमा) ।
मीलण देखो मिलण, 'खणजणमणमीलणोवमा
विसया' (वि ११, राज) ।
मीलिअ देखो मिलिअ = मिलित (पिंग) ।
मीस सक [मिश्रय्] मिलाना, मिश्रण
करना । कर्म. मीसिजइ (पि ६४) ।
मीस वि [मिश्र] १ सयुक्त, मिला हुआ,
मिश्रित (हे १, ४३, २, १७०, कुमा, कम्म
२, १३, १५, ४, १३, १७, २४, भग,
औप, द २२) । २ न. लगातार तीन दिनों
का उपवास (संबोध ५८) ।
मीसालिअ वि [मिश्र] सयुक्त, मिला हुआ
(हे २, १७०, कुमा) ।
मीसिय वि [मिश्रित] ऊपर देखो (कुमा,
कप्प, भवि) ।
मुअ सक [मोदय्] खुश करना । कवक.
मुइजत (से ७, ३७) ।
मुअ सक [मुच्] छोड़ना । मुअइ (हे ४,
६१), मुअति (गा ३१६) । वकृ मुअत,
मुयमाण (गा ६४१, से ३, ३६, पि ४८५) ।
संक्र मुइत्ता (भग) ।
मुअ वि [मृत] मरा हुआ (से ३, १२, गा
१४२, वजा १५८, प्रासू ५७, पठम १८,
१६, उप ६४८ टी) । वहुण न [वहन]
शव-यान, ठठरी, अरथी (दे २, २०) ।

मुअ वि [स्मृत] याद किया हुआ (सूअ २,
७, ३८, आचा) ।
मुअं देखो मिअक (प्राकृ ८) ।
मुअग देखो मिअग (पङ्, सम्मत २१८) ।
मुअगी स्त्री [दे] कीटिका, चीटी (दे ६,
१३४) ।
मुअग्ग पु [दे] 'आत्मा वाह्य और अम्यन्तर
पृथगलो से बना हुआ है' ऐसा मिथ्या ज्ञान
(ठा ७ टी—पत्र ३८३) ।
मुअण न [मोचन] छुटकारा, छोड़ना (सम्मत
७८, विसे ३३१६, उप ५२०) ।
मुअल (अप) देखो मुअ = मृत (पिंग) ।
मुआ स्त्री [मृत्] मिट्टी (संज्ञि ४) ।
मुआ स्त्री [मुद्] हर्ष, खुशी, आनन्द,
'सुरयरसाओवि मुयं अहिय उवजणइ तस्स
सा एस' (रंभा) ।
मुआइणी स्त्री [दे] डुम्बी, डोमिन, चाण्डालिन
(दे ६, १३५) ।
मुआविअ वि [मोचित] छुड़वाया हुआ (स
४४६) ।
मुइ वि [मोचिन्] छोड़नेवाला (विसे ३४०२) ।
मुइअ वि [मुदित] १ हर्षित, मोद-प्राप्त (सुर
७, २२३, प्रासू १०५, उव, औप) । २ पुं
रावण का एक सुभट, (पठम ५६, ३२) ।
मुइअ वि [दे] योनि-शुद्ध, निर्दोष मातावाला,
'मुइओ जो होई जोणिमुद्धो' (औप—टी) ।
मुइअगा देखो मुअगी, 'उवलिप्यंते काया
मुइअगाई नवरि छट्ठ' (पिंड ३५१) ।
मुइग देखो मिअग (हे १, ४६, १३७, प्राप्र,
उवा, कप्प, सुपा ३६२, पाअ) । पुक्खर
पुंन [पुक्कर] मुदग का ऊपरवाला भाग
(भग) ।
मुइगलिया } स्त्री [दे] कीटिका, चीटी (उप
मुइगा } १३४ टी, सथा ८६, विसे
१२०८, पिंड ३५१ टी) ।
मुइगि वि [मृदङ्गिन्] मृदग बजानेवाला
(कुमा) ।
मुइद देखो मइद = मृगेन्द्र (प्राकृ ८) ।
मुइजत देखो मुअ = मोदय ।
मुइर वि [मोकृ] छोड़नेवाला (सण) ।
मुउ देखो मिउ (काल) ।

मुउउद पुं [मुचुकुन्द] १ नृप-विशेष (अच्छु
६६) । २ पुष्पवृक्ष-विशेष (कप्प) ।
मुउंद पुं [मुकुन्द] विष्णु, नारायण (नाट—
चैत १२६) ।
मुउर देखो मउर = मुकुर (पङ्) ।
मुउल देखो मउल = मुकुल (पङ्, मुद्रा ८४) ।
मुंगायण न [मृङ्गायण] गोत्र-विशेष, विशाखा
नक्षत्र का गोत्र (इक) ।
मुच देखो मुअ = मुच् । मुंचइ, मुचए (पङ्,
कुमा) । भूका मुची (भत्त ७६) । भवि.
मोच्छं, मोच्छिहि, मुचिहिइ (हे ३, १७१,
पि ५२६) । कर्म. मुच्चइ, मुचए, मुच ति
(आचा, हे ४, २०६, महा, भग) । भवि.
मुचिहि (भग) । वकृ मुचन (कुमा) ।
कवकृ मुचत (पि ५४२) । सकृ. मोत्तु,
मोत्तुआण, मोत्तूण (कुमा, पङ्, प्राकृ ३४) ।
हेकृ मोत्त (कुमा), मुचणहि (अप) (कुमा) ।
कृ. मोत्तव्व, मुत्तव्व (हे ४, २१२, गा
६७२, सुपा ५८६) ।
मुंज पुंन [मुञ्ज] मूँज, वृण-विशेष, जिसकी
रस्सी बनाई जाती है (सूअ २, १, १६,
गच्छ २, ३६, उप ६४८ टी) । 'मेहला
स्त्री [मेखला] मूँज का कटिमूत्र (गाया १,
१६—पत्र २१३) ।
मुंजइ न [मौञ्जिन्] १ गोत्र विशेष । २
पुत्री, गोत्र में उत्पन्न (ठा ७—पत्र ३६०) ।
मुजकार पु [मुञ्जकार] मूँज की रस्सी
बनानेवाला शिल्पी (अणु १४६) ।
मुजायण पु [मौजायन] ऋषि-विशेष (हे
१, १६०, प्राप्र) ।
मुजि पुं [मौञ्जिन्] ऊपर देखो (प्राकृ १०) ।
मुट वि [दे] हीन शरीरवाला,
'जे बंभचेरमट्टा पाए पाइंति वमयारीणं ।
ते हति टुट्ठुटा वोहोवि मुदुल्लाहा तेसि'
(संबोध १४) ।
मुंड सक [मुण्डय्] १ मुँडना, वाल
छाड़ना । २ दीक्षा देना, सन्यास देना ।
मुडइ (भवि), मुडेह (सूअ २, २, ६३) ।
प्रयो., वकृ. मुंडावेत्त (पंचा १०, ४८ टी) ।
हेकृ. मुंडावेत्त, मुडावेत्तए, मुडावेत्तए
(पंचा १०, ४८, ठा २, १, कस) ।

र

र पु [र] मूर्ध-स्थानीय व्यञ्जन वर्ण विशेष (सिरि १६६, पिंग) । °गण पु [°गण] छन्द शास्त्र-प्रसिद्ध मध्य लघु अक्षरवाले तीन स्वरो का समुदाय (पिंग) ।

र अ पाद-पूरक अव्यय (हे २, २१७, कुमा) ।

र अ [दे] निश्चय-सूचक अव्यय (दसनि १, १५२) ।

रइ स्त्री [रति] १ काम-क्रीडा, सुरत, मैथुन (से १, ३२, कुमा) । २ कामदेव की स्त्री (कुमा) । ३ प्रीति, प्रेम, अनुराग (कुमा, सुपा ५११) । ४ कर्म-विशेष (कम्म २, १०) ।

५ भगवान् पद्मप्रभ की मुख्य शिष्या (पव ८) । ६ पुं भूतानन्द नामक इन्द्र का एक सेनापति (इक) । °अर, °कर वि [°कर] १ रति-जनक (गा ३२६) । २ पु पर्वत-विशेष (पएह १, ५, ठा १०, महा) । °कीला स्त्री [°क्रीडा] काम-क्रीडा (महा) । °केलि स्त्री [°कलि] वही अर्थ (काप्र २०१) ।

°घर न [°गृह] सुरत-मन्दिर, विलास-गृह (पि ३६६ ए) । °णाह, °नाह पु [°नाथ] कामदेव (कुमा, सुर ६, ३१) । °पहु पु [°प्रभु] वही अर्थ (कुमा) । °प्पभा स्त्री [°प्रभा] किन्नर नामक इन्द्र की एक अग्र-महिषी (इक, ठा ४, १—पत्र २०४) । °प्पिय पु [°प्रिय] १ कामदेव (सुपा ७५) । २ एक इन्द्र । ३ किन्नर देवों की एक जाति (राज) । °प्पिया स्त्री [°प्रिया] वानव्यन्तरो के इन्द्र विशेष की एक अग्र महिषी (गाया २—पत्र २५२) । °भवण न [°भवन] कामक्रीडा-गृह (महा) । °मंत वि [°मत्] १ राग-जनक । २ पुं. कामदेव, कन्दर्प (तदु ४६) । °मंदिर न [°मन्दिर] शयन-गृह (पाप्र) । °रमण पुं [°रमण] कामदेव (सुपा ४, २८६, कप्प) । °लभ पुं [°लम्भ] १ सुरत की प्राप्ति । २ कामदेव (से ११, ८) । °वइ पु [°पति] कामदेव (कुमा, सुपा २६२) । °वार्द्ध स्त्री [°वृद्धि] विद्या-विशेष (पउम ७, १४४) । °रुदरी स्त्री [°सुन्दरी] एक राज-कन्या (उप ७२८ टी) । °सुहव

पुं [°सुभग] कामदेव (कुमा) । °सेणा स्त्री [°सेना] किन्नरेन्द्र की एक अग्र-महिषी (इक, ठा ४, १—पत्र २०४) । °हर न [°गृह] शयन गृह, सुरतमन्दिर (उप ६४८ टी, महा) ।

रइ पु [रवि] सूर्य, सूरज (गा ३४, से १, १४, ३२, कप्प) ।

रइअ वि [रचित] बनाया हुआ, निर्मित (सुर ४, २४४, कुमा, ओप, कप्प) ।

रइअ वि [रचित] महल आदि की पीठ-भित्ति (अणु १५४) ।

रइआव मक [रचय्] बनवाना । सकृ रइआविअ (तो ३) ।

रइगेह वि [दे] अभिलपित (दे ७, ३) ।

रइगेही स्त्री [दे] रति-तृष्णा (दे ७, ३) ।

रइज्जत देखो रय = रचय् ।

रइलक्ख न [दे] जघन, नितम्ब (दे ७, १३, पड्) ।

रइलक्ख न [दे. रतिलक्ष] रति-सयोग, मैथुन (दे ७, १३) ।

रइल्लिय वि [रजस्वल] रज से युक्त, रजवाला (पि ५६५) ।

रइवाडिया देखो राय-वाडिआ, 'सामिय रइवाडियासमओ' (सिरि १०६) ।

रईसर पुं [रतीश्वर] कामदेव, कन्दर्प (कुमा) ।

रउताणिया स्त्री [दे] रोग-विशेष, पामा, खुजली (सिरि ३०६) ।

रउइ देखो रोइ = रौद्र, 'रउइखुहेहि अलोह-णिजो' (यति ४२, भवि) ।

रउरव वि [रौरव] भयकर, घोर । °काल पुं [°काल] माता के उदर में पमार किया जाता समय-विशेष, 'नवमासहि नियकुक्खहि घरियउ पुणु रउरवकालहो नीसरियउ' (भवि) ।

रउरसल वि [रजस्वल] रजो-युक्त, धूलि-युक्त (भग ७, ७—पत्र ३०५) ।

रओ° देखो रय = रजस् (पिंड ६ टी, सण) ।

रंक वि [रङ्क] गरीब, दीन (पिंग) ।

रंखोल शक [डोलय्] १ झूना । २ हिलना, चलना, कांपना । रंखोलइ (हे ४, ४८, वजा ६४) ।

रंखोलिय वि [डोलिन] कम्पित (गठड) ।

रंखोलि वि [डोलिट्] झूनेवाला (गठड; कुमा, पाप्र) ।

रग शक [रङ्ग्] इधर-उधर चलना । वक्र. रंगंत (कप्प, पउम १०, ३१, पएह १, ३—पत्र ५५) ।

रग सक [रङ्गय्] रंगना । कर्म. रगिज्जइ (संघोष १७) । वक्र. 'रायगिह वरनयरं वर-नय-रगत-मदिरं अत्थि' (कुम्मा १८) ।

रंग वि [रङ्ग] रंगा हुआ, रंग कर बनाया हुआ (दसनि २, १७) ।

रग न [दे] रांग, रांगा, धातु-विशेष, सीखा (दे ७, १, से २, २६) ।

रग पुं [रङ्ग] १ राग, प्रेम (सिरि ५१५) । २ नाट्यशाला, प्रेक्षा-भूमि (पाप्र, सुपा १, कुमा) । ३ युद्ध-मण्डप, जय-भूमि (धर्मस ७८३) । ४ सग्राम, लड़ाई (पिंग) । ५ रक्त वर्ण, लाली (ने २, २६) । ६ वर्ण, रंग (भवि) । ७ रंगना, रंजन, रंग चढ़ाना (गठड) । °अ वि [°ट] कुतूहल-जनक (से ६, ४२) । °वलि स्त्री [°आवलि] रंगोली (चउप्पन्न० पत्र ३२६ गा ७१४) ।

रंगण न [रङ्गन] १ राग, रंगना । २ पु. जीव, आत्मा (भग २०, २—पत्र ७७६) ।

रंगिर वि [रङ्गित्] चलनेवाला (सुपा ३) ।

रगिह वि [रङ्गयन्] रंगवाला (उर ६, २) ।

रज सक [रज्जय्] १ रंग लगाना । २ खुशी करना । रंजए, रंजइ (वज्जा १३६, हे ४, ४६) । कर्म रजिज्जइ (महा) । वक्र. रजत (सवे ३) । सकृ रजिऊण (पि ५८६) । कृ. रंजियव्व (आत्महि ६) ।

रजग वि [रज्जक] रंजन करनेवाला (रंभा) ।

रजण न [रज्जन] १ रंगना (विसे २६६१) । २ खुशी करना, 'परचित्तरजणे' (उप ६८६

मुद्रिम पुंजी [दे] गवं, अहकार, गुजराती मे 'मोटाई', 'कयमुद्रिमंगीकारो' (हम्मीर ३५)। देखो मोद्रिम।

मुद्र वि [मुष्ट, मुपित] जिसकी चोरी हुई हो वह (पिड ४६६, सुर २, ११२, मुपा ३६१, महा)।

मुद्रि पुंजी [मुष्टि] मुट्टी, मूठी, घूँसा, मुक्का, 'मुद्रिणा', 'मुट्टीअ' (पि ३७६, ३८५, पाअ, रभा, भवि)। 'जुज्म न [युद्ध] मुष्टि से की जाती लडाई, मूकामूकी (आचा)। 'पुत्थय न [पुस्तक] १ चार अगुल लम्बा वृत्ताकार पुस्तक। २ चार अगुल लम्बा चतुष्कोण पुस्तक (पव ८०)।

मुद्रिअ पु [मौष्टिक] १ अनार्य देश-विशेष। २ एक अनार्य मनुष्य-जाति (परह १, १—पत्र १४)। ३ मुट्टी से लडनेवाला मल्ल (परह २, ५—पत्र १४६)। ४ वि मुद्रि-सम्बन्धी (कप्प)।

मुद्रिअ पु [मुष्टिक] १ मल्ल-विशेष, जिसको बलदेव ने मारा था (परह १, ४—पत्र ७२, पिग)। २ अनार्य देश-विशेष। ३ एक अनार्य मनुष्य जाति (इक)।

मुद्रिका स्त्री [दि] हिक्का, हिचकी (दे ६, १३४)।

मुद्ध देखो मुढ (कुमा)।

मुद्ध वि [मुग्ध, मूढ] मूर्ख, बेवकूफ (हम्मीर ५१)।

मुण मक [ज्ञा, मुण] जानना। मुणइ, मुणति, मुणिमो (हे ४, ७, कुमा)। कर्म, मुणिज्जइ (हे ४, २५२), मुणिज्जामि (हास्य १३८)। वक्क, मुणंत, मुणित (महा, पउम ४८, ६)। कवक्क मुणिल्लमाण (से २, ३६)। नक्क मुणिय, मुणित, मुणि-ऊण, मुणेऊण (श्रीप, महा)। क, मुणिअव्व मुणेअव्व (कुमा, से ४, २४, नव ४२, कप्प, उव, जी ३२)।

मुणण न [ज्ञान मुणन] ज्ञान, जानकारी (कुप्र १८४, संवोध २५, धर्मवि १२५, सण)।

मुणमुण सक [मुणमुणाय] श्रव्य शब्द करना, बढबढाना। वक्क, मुणमुणत, मुणमुणित (महा)।

मुणाल पुंन [मृणाल] १ पद्मकन्द के ऊपर की बेल—लता (आचा २, १, ८, ११)। २ विस, पद्मनाल। ३ पद्म आदि के नाल का तन्तु—सूत्र (पाअ, रणाय १, १३, श्रीप)। ४ वीरण का मूल। ५ पद्म, कमल, 'मुणालो', 'मुणाल' (प्राप्र, हे १, १३१)।

मुणालि पु [मृणालिन्] १ पद्म-ममूह। २ पद्म-युक्त प्रदेश, कमलवाला स्थान, 'मुणाली बालाली' (मुपा ४१३)।

मुणालिआ स्त्री [मृणालिका, °ली] १ मुणाली } विस-तन्तु, कमल-नाल का सूता (नाट—रत्ना २६)। २ विम का अकुर (गरड)। ३ कमलिनी (राज)। देखो मणालिया।

मुणि पु [मुनि] १ राग द्वेष-रहित मनुष्य, संत, साधु, ऋषि, यति (आचा, पाअ, कुमा, गरड)। २ अगत्स्य ऋषि, 'जलहिजल व मुणिणा' (मुपा ४८६)। ३ सात की संख्या। ४ छन्द-विशेष (पिग)। °चइ पु [°चन्द्र] १ एक प्रसिद्ध जैन आचार्य और ग्रथकार, जो वादी देवसूरि के गुरु थे (धम्मो २५)। २ एक राज-पुत्र (महा)। °नाह पु [°नाथ] साधुओं का नायक (मुपा १६०, २५०)। °पुगव पु [°पुङ्गव] श्रेष्ठ मुनि (मुपा ६७, श्रु ४१)। °राय पु [°राज] मुनि-नायक (मुपा १६०)। °वइ पु [°पति] वही अर्थ (मुपा १८१, २०६)। °वर पु [°वर] श्रेष्ठ मुनि (सुर ४, ५६, मुपा २४४)। °वेजयत पु [°वैजयन्त] मुनि-प्रधान, श्रेष्ठ मुनि (सूत्र १, ६, २०)। °सीह पु [°सिंह] श्रेष्ठ मुनि (पि ४३६)। °मुव्वय पु [°मुव्वत] १ वर्तमान काल में उत्पन्न भारतवर्ष के बीसवें तीर्थंकर (मम ४३)। २ भारतवर्ष के एक भावी तीर्थंकर (सम १५३)।

मुणि पु [दे, मुनि] वृक्ष-विशेष, अगस्ति-द्रुम (दे ६, १३३, कुमा)।

मुणिअ वि [ज्ञात, मुणित] जाना हुआ (हे २, १६६, पाअ, कुमा, अवि १६, परह १, २, उप १४३ दी)।

मुणिअ वि [दे मुणिक] ग्रह-गृहीत, भूता-विष्ट, पागल (भग १५—पत्र ६६५)।

मुणिइ पुं [मुनीन्द्र] श्रेष्ठ मुनि (हे १, ८४, भग)।

मुणिर वि [ज्ञात, मुणित] जाननेवाला (सण)।

मुणीश पुं [मुनीश] मुनि-नायक (उप १४१ दी, भवि)।

मुणीसर पु [मुनीश्वर] ऊपर देखो (मुपा ३६६)।

मुणीमिम (अप) पुन [मनुष्यत्व] १ मनुष्यपन। २ पुरुषार्थ (हे ६, ३३०)।

मुत्त मक [मूत्रय] मूतना, पेशाब करना। मुत्तति (कुप्र ६२)।

मुत्त न [मूत्र] प्रस्रवण, पेशाब (मुपा ६: ६)।

मुत्त देखो मुक्क = मुक्त (सम १, से २, ३०, जी २)। °लिय पुंजी [°लिय] मुक्त जीवों का स्थान, ईषट्पागभारा नामक पृथिवी (इक)। स्त्री °या (ठा ८, —पत्र ४४०, सम २२)।

मुत्त वि [मूर्त] १ मूर्तिवाला, रूपवाला, आकारवाला (चैत्य ६१)। २ कठिन। ३ मूढ़। ४ मूर्च्छा युक्त (हे २, ३०)। ५ पुं उपवास, एक दिन का उपवास (मवोध ५८)। ६ एक प्राण का नाम (कप्प)।

मुत्त° देखो मुत्ता (श्रीप, पि ६७, चैत्य १४)।

मुत्तव्व देखो मु च।

मुत्ता स्त्री [मुक्ता] मोती, मौक्तिक (कुमा)। °जाल न [°जाल] मुक्ता-ममूह, मोतियों की माला (श्रीप, पि ६७)। °दाम न [°दामन्] मोतियों की माला (ठा ४, २)। °वलि, °वली स्त्री [°वलि, °ली] १ मोती की माला, मोती का हार (सम ४४, पाअ)। २ तप-विशेष (अत ३१)। ३ द्वीप-विशेष। ४ समुद्र-विशेष (राज)। °मुत्ति स्त्री [°शुक्ति] १ मोती की शीप। २ मुद्रा-विशेष (चैद्य २४०, पचा ३, २१)। °हल न [°फल] मोती (हे १, २३६, कुमा, प्रासू २)। °हलिल वि [°फलवत्] मोतीवाला (कप्प)।

मुत्ति स्त्री [मूर्ति] १ रूप, आकार, 'मुत्ति-विमुत्तेमु' (पिड ५६, विसे ३१८२)। २ प्रतिविम्ब, प्रतिमूर्ति, प्रतिमा, 'चउपुहुमुत्ति-

रच्छामय पु [दे रथ्यामृग] "वान, कुत्ता (दे ७, ४)।

रज देखो रय = रजस् (कुमा)।

रजक } पुत्री [रजक] घोवी, कपड़ा धोने
रजग } का घन्वा करनेवाला (श्रा १२, दे ५, ३२)। स्त्री. °की (दे १, ११४)।

रजय देखो रयय = रजत (इक)।

रज्ज अक [रज्ज] १ अनुराग करना, आसक्त होना। २ रँगाना, रँग-युक्त होना। रज्जइ (आवा, उव), रज्जहु (गाया १, ८—पत्र १४८)। भवि. रज्जिहिति (श्रीप)। वक्र रज्जत, रज्जमाण (से १०, २०, गाया १, १७, उत्त २६, ३)। क. रज्जियन्व (पएह २, ५—पत्र १४६)।

रज्ज न [राज्य] १ राज, राजा का अधिकृत देश। २ शासन, हुकूमत (गाया १, ८, कुमा, दं ४७, भग. प्राह)। °पालिया स्त्री [°पालिका] एक जैन मुनि-शाखा (कप्प)। °वइ पु [°पति] राजा (कप्प)। °सिरी स्त्री [°श्री] राज्य लक्ष्मी (महा)। °हिसेय पुं [°भिषेक] राजगद्दी पर बैठाने का उत्सव (पउम ७७, ३६)।

रज्जव पुंन नीचे देखो, 'खररज्जवेसु वद्धा' (पउम ३६, ११६)।

रज्जु स्त्री [रज्जु] १ रस्सी (पात्र, उवा)। २ एक प्रकार की नाप, 'चउदसरज्जु लोगो' (पव १४३)।

रज्जु वि [दे] लेखक, लिखने का काम करने-वाला (कप्प)। °सभा स्त्री [°सभा] १ लेखक गृह। २ शुल्क-गृह, घुँगी-घर, 'हत्थि-पालस रओ रज्जुसभाए' (कप्प)।

रज्जिय देखो रहिअ = रहित, 'अरज्जिय-भितावा तहवी तवि' (सूअ १, ५, १, १७)।

रट्ट न [राष्ट्र] देश, जनपद (सुपा ३०७, महा)। °उड, °कूड पुं [°कूट] राज-नियुक्त प्रतिनिधि, सूवेदार (विपा १, १ टी—पत्र ११, विपा १, १—पत्र ११)।

रट्टिअ वि [राष्ट्रिय] १ देश-सम्बन्धी। २ पुं नाटक की भाषा में राजा का साला (अभि १६४)।

रट्टिअ पुं [राष्ट्रिक] देश की चिन्ता के लिए नियुक्त राज-प्रतिनिधि, सूवेदार (पएह १, ५—पत्र ६४)।

रड अक [रट्] १ रोना। २ चिल्लाना। रडइ (भवि)। वक्र. रडत (हे ४, ४४५, भवि)।

रडण न [रटन] चिल्लाहट, चीख (पिंड २२५)।

रडिय न [रटित] १ रुदन, रोना (पएह २, ५)। २ आवाज करना, शब्द-करण, 'परहुय-वहुय रडिय कुहुकुहुमहुसदेण' (रंभा)। ३ चिल्लाना, चीख (गाया १, १—पत्र ६३)। ४ वि. कलहायित, भगडालू, भगडाखोर, 'कलहाइअ रडिअ' (पात्र)।

रडरडिय न [रटरटित] शब्द-विशेष, वाद्य-विशेष की आवाज (सुपा ५०)।

रडु वि [दे] खिमक कर गिरा हुआ, गुजराती में 'रहेतु' (कुप्र ४५६)।

रड्डा स्त्री [रड्डा] दन्त विशेष (पिग)।

रण पुन [रण] १ सग्राम, लड़ाई (कुमा, पात्र)। २ पु. शब्द, आवाज (पात्र)। °खभउर न [°स्तम्भपुर] अजमेर के समीप का एक प्राचीन नगर, 'रणखंभउरजिणहरे चडाविया कणायमयकलसा' (मृशि १०६०१)।

रणकार पु [रणत्कार] शब्द-विशेष (गउड)।

रणमण अक [रणमणाय्] 'रन् रन्' आवाज करना। रणमणइ (वज्जा १२८)। वक्र. रणमणत (भवि)।

रणमणिर वि [रणमणायित्] 'रन् रन्' आवाज करनेवाला (सुपा ६४१, धर्मवि ८८)।

रणरण अक [रणरणाय्] 'रन् रन्' आवाज करना। वक्र. रणरणत (पिग)।

रणरण } पु [दे. रणरणक] १ निश्वास,
रणरणय } नोसास, 'अइउएहा रणरणया दुपेच्छा दूसहा डुरालोया' (वज्जा ७८)। २ उद्वेग, पीडा, अपृति, 'गव्यपियसगमासा-भंससमुज्जलियरणरणइन्न' (सुर ४, २३०, पात्र)। ३ उत्कण्ठा, श्रीतुक्क्य (दे १, १३६, गउड, खिम ४८, सवे २)।

रणरणाय देखो रणरण = रणरणाय्। वक्र. रणरणायत (पउम ६४, ३६)।

रणिअ न [रणित] शब्द, आवाज (सुर १, २४८)।

रणिर वि [रणित्] आवाज करनेवाला (सुपा ३२७, गउड)।

रणण न [अरण्य] जंगल, अटवी (हे १, ६६, प्राप्र, श्रीप)।

रत्त पु [रक्त] १ लाल बरुण, लाल रंग। २ कुमुभ। ३ वृक्ष विशेष, हिज्जल का पेड़ (हे २, १०)। ४ न. कुकुम। ५ ताम्र, ताँवा। ६ सिंदूर। ७ हिगुल। ८ खून, खिर। ९ राग (प्राप्र)। १० रि. रंगा हुआ (हंका २७२)। ११ लाल रंगवाला (पात्र)। १२ अनुराग-युक्त (ओघ ७५७, प्रासू १५५, १६०)। °वल्हा स्त्री [°रम्भल्हा] मेरुपर्वत के पण्डक वन में स्थित एक शिना, जिमपर जिनदेवों का अभिषेक किया जाता है (ठा २, ३—पत्र ८०)। °कूड न [°कूट] शिखर-विशेष (राज)। °कोरिंटय पुं [°कुरण्टक] वृक्ष-विशेष (पउम ५३, ७६)। °क्ख, °च्छ वि [°अ] १ लाल आँखवाला (राज, सुर २, ६)। स्त्री °च्छा (ओघमा २२ टी)। २ पुं महिप, भैंसा (दे ७, १३)। °ट्ट पुं [°ार्थ] विन्यायर वश का एक राजा (पउम ७, ४४)। °धाउ पु [°धातु] कुरण्डल पर्वत का एक शिखर (दीव)। °पड पुं [°पट] परिव्राजक, संन्यासी (गाया १, १५—पत्र १६३)। °पवाय पुं [°प्रपात] द्रह-विशेष (ठा २, ३—पत्र ७३)। °पह पुं [°प्रभ] कुरण्डल-पर्वत का एक शिखर (दीव)। °रयण न [°रत्त] रत्न की एक जाति, पद्म-राग मणि (श्रीप)। °वई स्त्री [°वती] एक नदी (सम २७, ४३, इक)। °वड देखो °पड (सुख ८, १३)। °सुभट्टा स्त्री [°सुभट्टा] श्रीकृष्ण की एक भगिनी (पएह १, ४—पत्र ८५)। °सोग, °सोय पुं [°शोक] लाल अशोक का पेड़ (गाया १, १, महा)।

°रत्त पुं [°रात्र] रात, निशा (जी ३४)।

रत्तर देखो रत्त = रक्त (महा)।

रत्तदण न [रक्तचन्दन] लाल चन्दन (सुपा १८१)।

मुरुमुरिअ न [दे] रणरणक, उत्सुकता (दे ६, १३६, पात्र)।

मुरुइ देखो मुरुक्कव (पङ्)।

मुलासिअ पुं [दे] म्फुलिग, अग्नि-कण (दे ६, १३५)।

मुल (अप) देखो मुच। मुलइ (प्राक् ११६)।

मुल पुन [मूल्य] कीमत, 'को मुल्लो' मुहिअ (वजा १५२, श्रीप, पात्र, कुमा, प्रयो ७७)।

मुव (अप) देखो मुअ = मुच्। मुवइ (भवि)।

मुव्वह देखो उव्वह = उद् + वह्। मुव्वहइ (हे २, १४७)।

मुस मक [मुप] चोरी करना। मुसइ (हे ४, २३६, सार्ध ६२)। भवि. मुसिस्मइ (धर्मवि ४)। कर्म मुसिज्जामो (पि ४५५)। वक्क मुसत (महा)। कवक्क मुसिज्जत, मुसिज्जमाण (सुपा ४५०, कुप्र २४७)। सक. मुसिऊण (स ६६३)।

मुसडि देखो मुसडि (सम १३७, परह १, १—पत्र ८, उत्त ३६, १००, परण १—पत्र ३५)।

मुसण न [मोपण] चोरी (सार्ध ६०, धर्मवि ५६)।

मुसल पुन [मुसल] १ मूसल या मूसर, एक प्रकार की मोटी लकड़ी जिससे चावल आदि अन्न कूटे जाते हैं (श्रीप, उवा, पङ्, हे १, ११३)। २ मान-विशेष (सम ६८)। ३ धर पु [वर] बलदेव (कुमा)। ४ उह पु [युध] बलदेव (पात्र)।

मुसल वि [दे] मासल, पुष्ट (पङ्)।

मुसलि पु [मुसालिन्] बलदेव (दे १, ११८, सण)।

मुसली देखो मोसली (श्रीपभा १६१)।

मुसह न [दे] मन की आकुलता (दे ६, १३४)।

मुसा म ली [मुपा] मिय्या, अनृत, झूठ, असत्य भाषण (उवा, पङ्, हे १, १३६, कस)। 'अयाणंता मुस वए' (सूप्र १, १, ३, ८, उव)। २ वाद देखो चाय (सूप्र १, ३, ४, ८)। ३ वादि वि [वादिन्] झूठ बोलनेवाला (परह १, २, भावा २, ४, १,

८)। ४ वाय पु [वाद] झूठ बोलना, असत्य भाषण (सम १०, भग, कस)।

मुसाविअ वि [मोपित] चुराया हुआ, चोरी कराया हुआ (श्रीव २६० टी)।

मुसिय वि [मुपित] चुराया हुआ (सुपा २२०)।

मुसुडि पुंली [दे] १ प्रहरण-विशेष, शस्त्र-विशेष (श्रीप)। २ वनस्पति-विशेष (उत्त ३६, १००, सुख ३६, १००)।

मुसुमूर सक [भञ्ज] भागना, तोड़ना। मुसुमूरइ (हे ४, १०६)। हेक्क 'तेसि च केसमवि मुसुमु [सुमू] रिउमसमत्यो' (सम्मत १२०)।

मुसुमूरण न [भञ्जन] तोड़ना, खण्डन (सम्मत १८७)।

मुसुमूराविअ वि [भञ्जित] भँगाया हुआ (सम्मत ३०)।

मुसुमूरिअ वि [भग्न] भाँगा हुआ (पात्र, कुमा, सण)।

मुह देखो मुज्ज, 'इय मा मुहसु मणेण' (जीवा १०)। सक. मुहिअ (पिंग)। कवक्क मुहिज्जत (से ११, १००)।

मुह न [मुख] १ मुँह, वदन (पात्र, हे ३, १३४, कुमा, प्रासू १६)। २ अप्र भाग (सुज ४)। ३ उपाय (उत्त २५, १६, सुख २५, १६)। ४ द्वार, दरवाजा। ५ आरम्भ। ६ नाटक आदि का सन्धि-विशेष। ७ नाटक आदि का शब्द-विशेष। ८ आय, प्रथम। ९ प्रधान, मुख्य। १० शब्द, आवाज। ११ नाटक। १२ वेद-शास्त्र (प्राप्र, हे १, १८७)। १३ प्रवेश (निचू ११)। १४ पुं वृत्त-विशेष, बड़हल का गद्य (सुज १०, ८)। १५ गतय न [नान्तक] मुख-वज्रिका (श्रीपभा १५८, पव २)। १६ तूरय न [तूर्य] मुह से बजाया जाता वाद्य (भग)। १७ धोवणिग्या ली [धावनिग्या] मुँह धोने की सामग्री, दतवन आदि, 'मुहधोवणिग्या क्षिप्प उवणमेहि' (उप ६४८ टी)। १८ पत्ती ली [पत्ती] मुख-वज्रिका (उवा; श्रीप ६६६, द्र ५८)। १९ पुत्तिग्या, २० पोत्तिग्या, २१ पोत्ती ली [पोत्तिग्या] मुख-वज्रिका, बोलते समय मुँह के आगे रखने का वस्त्र-खण्ड (सबोध ५, विपा १, १, पव

१२७)। २२ फुल्ल न [फुल्ल] १ बड़हल का फूल। २ विद्या-नक्षत्र का सम्बन्ध (सुज १०, ८)। २३ मडग न [भाण्डक] मुवाभरण (श्रीप)। २४ मंगलिय, मंगलीअ वि [माङ्गलिक] मुँह में पर-प्रणाम करनेवाला, मुग्धा-मदी (कप्प, श्रीप, सूप्र १, ७, २७)। २५ मक्कडा, मक्कडिग्या ली [मक्कडा, टिना] गला पकड़ कर मुँह को मोड़ना मुख-वक्रोकरण (मुर १२, ६७, साग्रा १, ८—पत्र १४४)। २६ वत वि [वन्] मुँहवाला (भवि)। २७ वड पु [पट] मुँह के आगे रखने का वस्त्र (मे २, २२, १३, ५६)। २८ वडग न [पतन] मुँह में गिरना (दे ६, १३६)। २९ वण्ण पु [वर्ण] प्रशसा, मुग्धामद (निचू ११)। ३० वाम पु [वाम] भोजन के अनन्तर खाया जाता पान, चूर्ण आदि मुँह को सुगन्धी वतानेवाला पदार्थ (उवा ४२, उर ८, ५)। ३१ वीणिग्या ली [वीणिग्या] मुँह से विकृत शब्द करना, मुँह में वाद्य का शब्द करना (निचू ५)। मुहड देखो मुहल।

३२ सय न [शय] एक नगर (ती १५)। मुहट्टयडी ली [दे] मुँह में गिरना (दे ६, १३६)। मुहर देखो मुहल = मुखर (सुपा २२८)। मुहरिय वि [मुखरित] वाचाल उता हुआ, आवाज करता (मुर ३, ५४)। मुहरोमराड ली [दे] भू, भी (दे ६, १३६, पङ्, १७३)। मुहल न [दे] मुख, मुँह (दे ६, १३४, पङ्)। मुहल वि [मुखर] १ वाचाट, बकबादी (गा ५७८, मुर ३, १८, सुपा ४)। २ पु. काक, कौश्रा। ३ शय (हे १, २५४, प्राप्र)। ४ रव पुं [रव] तुमुन, कोलाहन (पात्र)।

मुहा घ ली [मुधा] व्ययं, निरव्यं (पात्र, मुर ३, १, धर्मस ११३२, आ २८, प्रासू ६), 'मुहाइ हारिखि अण्णाए' (सर्पोव ६६)। ५ जीवि वि [जीविन्] मित्र पर निर्वाह करनेवाला (उत्त २५, २८)।

मुहिअ न [दे] मुक्त, बिना मूल्य, मुक्त में करना (दे ६, १३४)। मुहिआ ली [दे] मुधका ऊपर देगा (दे ६, १३४, कुमा, पात्र), 'ति सधेवि ह कुमरस्स

रयण वि [रचन] करनेवाला, निर्माता, 'चेडीसचितारयण' (सण)।

रयण पु [रदन] दाँत, दशन (उप ६८६ टी, पात्र, काप्र १२, गट १३)।

रयण पुन [रत्न] १ 'रत्न' यदि बहुमूल्य पत्थर, मणि, 'दुवे रयणा ममुप्पन्ना' (निर १, १, उप ५६३, गाया १, १, सुपा १४७, जी ३, कुमा, हे २, १०१)। २ श्रेष्ठ, स्वजानि पे उत्तम (राग २६, कुमा ३, ४७), 'तहवि हु चंद-सरिच्छा विरला रय-गायरे रयणा' (वज्जा १५६)। ३ छन्द-विशेष (पिंग)। ४ द्वीप-विशेष (गाया १, ६, पत्रम ५५, १७)। ५ पर्वत-विशेष का एक कूट (ठा ४, २, ८)। ६ पु ब. रत्न-द्वीप का निवासी (पउम ५५, १७)। ७ उर न [पुर] नगर-विशेष (जण)। ८ चित्त पु [चित्र] विद्याधर वंश का एक राजा (पउम ५, ५)। ९ दीव पु [द्वीप] द्वीप-विशेष (गाया १, ६—पत्र १६५)। १० निहि पु [निधि] समुद्र, सागर (सुपा ७, १२६)। ११ पुढर्वा स्त्री [पृथिवी] पहली नरक-भूमि, रत्नप्रभा नामक नरक-पृथिवी (स १३२)। १२ पुर देखो उर (कुप्र ६, महा, सण)। १३ प्पभा, प्पहा स्त्री [प्रभा] १ पहली नरक-भूमि (ठा ७—पत्र ३८८, औप, भग)। २ भोम नामक राक्षसेन्द्र की एक पटरानी (ठा ४, १—पत्र २०४)। ३ रत्न का तेज (स १३३)। ४ मय वि [मय] रत्नो का बना हुआ (महा)। ५ माला स्त्री [माला] छन्द-विशेष (अजि २४)। ६ मालि पु [मालिन्] विद्याधर वंश में उत्पन्न नमि-राज का एक पुत्र (पउम ५, १४)। ७ मुस वि [मुप्] रत्नो की चुरानेवाला (पड्)। ८ रह पुं [रथ] विद्याधर वंश का एक राजा (पउम ५, १४)। ९ रासि पु [राशि] समुद्र (प्राह)। १० वइ पु [पति] रत्नो का मालिक, धनी, श्रीमत (सुपा २६६)। ११ वई स्त्री [वती] एक रानी (रयण ३)। १२ वज्ज पु [वज्र] विद्याधर-वंशीय एक राजा (पउम ५, १४)। १३ वह वि [वह] रत्न-धारक (गडड १०७१)। १४ सचय न [सचय] १ रुचक पर्वत का कूट (इक)। २ एक नगर

(इक, सुर ३, २०)। ३ संचया स्त्री [सचया] १ मगलावती नामक विजय की राजधानी (ठा २, ३—पत्र ८०)। २ ईशानेन्द्र की वसुधरा-नामक इन्द्राणी की एक राजधानी (इक)। ३ ममया स्त्री [ममया] मगलावती नामक विजय की एक राजधानी (इक)। ४ मार पु [मार] १ एक राजा (राज)। २ एक शेर का नाम (उप ७२८ टी)। ३ सिंह पु [सिंह] एक जैन आचार्य, संवेगपूलिकाकुलक कर्त्ता (सवे १२)। ४ सिंह पु [सिंह] एक राजा (ग १०३१ टी)। ५ सेहर पुं [शेखर] १ एक राजा (रयण ३)। २ विक्रम की पनरहवीं शताब्दी में विद्यमान एक जैन आचार्य और ग्रंथकार (सिरि १३४०)। ६ अर, अर पु [अर] १ रत्न की खान (पड्)। २ समुद्र (पात्र, सुपा ३७, प्रासू ६७, गाया १, १७—पत्र २२८)। ३ भा स्त्री [भा] देखो प्पभा (उत्त ३६, १५७)। ४ मय देखो मय (महा, औप)। ५ अरसुअ पु [अरसुत] १ चन्द्रमा। २ एक वरिष्क-पुत्र (आ १६)। ६ वलि, वली स्त्री [वलि, वली] १ रत्नो का हार (सम्म २२)। २ तप-विशेष (अत २५)। ३ ग्रन्थ-विशेष (दे ८, ७७)। ४ एक विद्याधर-राजकन्या (पउम ६, ५२)। ५ वह न [वह] नगर-विशेष (महा)। ६ सव पुं [स्वव] रावण का पिता (पउम ७, ५६, ७१)। ७ सवसुअ पु [स्ववसुत] रावण (पउम ८, २२१)। ८ हिय वि [अधिक] ज्येष्ठ, अवस्था में बड़ा (राज)।

रयणप्पभिय वि [रात्नप्रभिक] रत्नप्रभा-सक्खी (पंच २, ६६)।

रयणा स्त्री [रचना] निर्माण, कृति (उत्त १५, १८, चेद्वय ८६६, सुपा ३०४, रभा)। रयणा स्त्री [रत्ना] रत्नप्रभा नामक नरक-भूमि (पव १७५)।

रयणि पुत्री [रत्नि] एक हाथ की नाप, बद्ध-मुष्टि हाथ का परिमाण (कस, पव ५८, १७६)।

रयणि स्त्री [रजनि] देखो रयणी = रजनी (गाया १, २—पत्र ७६, कप्प)। २ अर पुं [चर] १ राक्षस (से १०, ६६, पात्र)।

अर, अर पुं [अर] चन्द्रमा (हे १, ८ टि, कप्प)। ३ नाह, नाह पुं [नाथ] चन्द्रमा (पात्र, सुपा ३३)। ४ भक्त न [भक्त] रात्रि में खाना (सुपा १६५)। ५ रमण पु [रमण] चन्द्रमा (सण)। ६ वल्लह पुं [वल्लभ] चन्द्रमा (कप्प)। ७ विराम पु [विराम] प्रातः काल, सुबह (पात्र)।

रयणिंद पु [रजनीन्द्र] चन्द्रमा (सण)।

रयणिद्वय न [दे] कुमुद, कमल (दे ७, ४, पड्)।

रयणी स्त्री [रत्नी] देखो रगणि = रत्नि (ठा १, सम १२, जीवस १७७, जी ३३, औप)।

रयणी स्त्री [रजनी] १ रात्रि, रात (पात्र, प्रासू १३६, कुमा)। २ ईशानेन्द्र के लोकपाल की एक पटरानी (ठा ४, १—पत्र २०४)। ३ चमरेन्द्र की एक अग्र-महिषी (ठा ५ १—पत्र ३०२)। ४ मध्यम ग्राम की एक मूर्च्छंता (ठा ७—पत्र ३६३)। ५ पड्ज ग्राम की एक मूर्च्छंता, 'मगी कोरव्वीया हरी य रय-तणी(?) यणी) सारकता य' (ठा ७—पत्र ३६३)। ६ भोजन न [भोजन] रात में खाना (आ २०)। ७ सार न [सार] सुरत, मैथुन (से ३, ४८)। देखो रयणि = रजनि (हे १, ८)।

रयणी स्त्री [रजनी] औपवि-विशेष—१ पिंडदार। २ हरिद्रा, हलदी (उत्तनि ३)।

रयणुच्चय पु [रत्नोच्चय] १ मेघ-पर्वत रयणोच्चय (सुज ५ टी—पत्र ७७, इक)। २ कूट-विशेष (इक)।

रयणोच्चया स्त्री [रत्नोच्चया] वसुधरा नामक इन्द्राणी की एक राजधानी (इक)।

रयत न [रजत] १ रूप्य, चाँदी (गाया १, १—पत्र ६६, प्राह १२, प्राप्र, रयय पात्र, उवा, औप)। २ एक देव-विमान (देवेन्द्र १३१)। ३ हाथी का दाँत। ४ हार, माला। ५ सुवर्ण, सोना। ६ खिर, खून। ७ शैल, पर्वत। ८ धवल वर्ण। ९ शिखर-विशेष। १० वि. सफेद वर्णवाला, श्वेत (प्राह १२, प्राप्र, हे १, १७७, १८०, २०६)। ११ गिरि पु [गिरि] पर्वत-विशेष (गाया १, १, औप)। १२ वत्त न [पात्र]

मेअ वि [मेय] १ जानने योग्य, प्रमेय, पदार्थ, वस्तु (उत्त १८, २३)। २ नापने योग्य (षड्)। ३ वि [ंज्ञ] पदार्थ-ज्ञाता (उत्त १८, २३, सुख १८, २३)।

मेअ पुंन [मेदस्] शरीर-स्थित घातु-विशेष, चर्वी (तंदु ३८, णाया १, १२—पत्र १७३, गउड)।

मेअज्ज न [दे] घान्य, अन्न (दे ६, १३८)।

मेअज्ज पुं [मेदार्थ] मेदार्थ गोत्र मे उत्पन्न (सूअ २, ७, ५)।

मेअज्ज पुं [मेतार्य] १ भगवान् महावीर का दमर्वा गणवर (सम १६)। २ एक जैन महर्षि (उव, सुपा ४०६, विवे ४३)।

मेअय वि [मेचक] काला, कृष्ण-वर्ण (गउड ३३६)।

मेअर वि [दे] असहन, असहिष्णु (दे ६, १३८)।

मेअल पुं [मेकल] पर्वत-विशेष। १ कन्ना खी [कन्या] नर्मदा नदी (पाअ)।

मेअवाडय पुन [मेदपाटक] एक भारतीय देश, मेवाड, 'एगव दाहविश्रं सखलपि मेअ-वाडयं हम्मीरवीरेहि' (हम्मीर २७)।

मेइणि } खी [मेदिनी] १ पृथिवी, धरती
मेइणी } (सुपा ३२, कुमा, प्रासु ५२)। २
चाण्डालिन (सुपा १६, सम्मत्त १७२)। ३ नाह
पु [नाथ] राजा (उप पृ १८६, सुपा १०८)। ४ पइ पु [पति] १ राजा। २
चाण्डाल, 'जो विबुहपणयवरणोवि गोत्तमेई
न, मेइणिपईवि न ह्व मायंगो' (सुपा ३२)।
५ सामि पुं [स्वामिन्] राजा (उप ७२८ टी)।

मेइणीसर पु [मेदनीश्वर] राजा (उप ७२८ टी)।

मेठ पुं [द] हस्तिपक, महावत (दे ६, १३८)। देखो मिठ।

मेंठी खी [दे] मेंढी, मेपी गढरिया (दे ६, १३८)।

मेढ पुंखी [मेड] मेंढा, मेप, मेड, गाडर (ठा ४, २)। खी. ०ठी (दे ६, १३८)। १ मुह पुं [मुख] १ एक अन्तर्द्वीप। २ अन्तर्द्वीप-विशेष में रहनेवाली मनुष्य-जाति (ठा ४, २—पत्र २२६, इक)। ३ विसाणा खी

[विषाणा] वनस्पति-विशेष, मेढाशिगी (ठा ४, १—पत्र १८५)। देखो मिठ।

मेखला देखो मेहला (राज)।

मेज्ज न [मेय] मान, तौल, वाट, वटखरा, जिससे मापा जाय वह (अणु १५४)।

मेघ देखो मेह (कुमा, सुपा २०१)।

०मालिणी खी [मालिनी] नन्दन वन के शिखर पर रहनेवाली एक दिक्कुमारी देवी (ठा ८—पत्र ४३७)। ०वई खी [वती] एक दिक्कुमारी देवी (ठा ८—पत्र ४३७)।

०वाहण पुं [वाहन] एक विद्याधर राज-कुमार (पउम ५, ६५)।

मेघकरा खी [मेघङ्करा] एक दिक्कुमारी देवी (ठा ८—पत्र ४३७)।

मेच्छ देखो मिच्छ = म्लेच्छ (शोच २४, औप, उप ७२८ टी, मुदा २६७)।

मेज्ज देखो मेअ = मेय (पड्, णाय १, ८—पत्र १३२, आ १८)।

मेज्ज देखो मिज्ज (महा ४, ११, ४०, २४)।

मेट देखो मिट। प्रयो मेटाव (पिंग)।

मेढंभ पुं [दे] मृग-तन्तु (दे ६, १३६)।

मेडय पुं [दे] मजला, तला, गुजराती मे 'मेडो', 'तस्म य सयणहण सचारिमकडुमेड-यस्सुवरि' (सुपा ३५१)।

मेड्ड देखो मेड (उप पृ २२४)।

मेड पु [दे] वणिक्-सहाय, वणिक् को मदद करनेवाला (दे ६, १३८)।

मेडक पु [दे] काष्ठ-विशेष, काष्ठ का छोटा डंडा (पणह १, १—पत्र ८)।

मेडि पुं [मेथि] पशुवन्धन-काष्ठ, खले के बीच का काष्ठ, जहाँ पशु को बाँध कर घान्य-मर्दन किया जाता है (हे १, २१५, गच्छ १, ८, णाया १, १—पत्र ११)। २ आघार, स्तम्भ, 'सयस्स वि य ण कुडुवस्स मेडी पमाण आहारे आलवण चक्खू मेडीभूए' (उवा), 'सुत्तयविक लक्खणजुत्तो गच्छस्स मेडिभूयो अ' (आ १, कुप्र २६६, सवोध २४)। ३ भूअ वि [भूत] १ आघार-सदृश, आघार-भूत (भग)। २ नामि-भूत, मध्म में स्थित (कुमा)।

मेणआ } खी [मेनका] १ हिमालय की पत्नी।
मेणका } २ स्वर्ग की एक वेश्या (अमि ४२, नाट—विक्र ४७, पिंग)।

मेत्त न [मात्र] १ साकल्य, संपूर्णता। २ अवधारण, 'मोअणमेत्त' (हे १, ८१)।

मेत्तल [दे] देखो मित्तल (सुर १२, १५२)।

मेत्ती खी [मैत्री] मित्रता, दोस्ती (से १, ६, गा २७२, स ७१६, उव)।

मेधुणिआ देखो मेहुणिआ (निचू १)।

मेर (अप) वि [मदीय] मेरा (प्राक १२०, भवि)।

मेरग पुं [मेरक, मैरेयक] १ तृतीय प्रति-वासुदेव राजा (पउम ५, १५६)। २ पुन, मद्य-विशेष (उवा, विपा १, २—पत्र २७)। ३ वनस्पति का त्वचा-रहित टुकड़ा, 'उच्छु-मेरंग' (आचा २, १, ८, १०)।

मेरा खी [दे. मिरा] मर्यादा (दे ६, ११३, पाअ, कुप्र ३३५, अज्ज ६७, सण, हे १, ८७, कुमा, औप)।

मेरा खी [मेरा] १ तृण-विशेष, मुडज की सलाई (पणह २, ३—पत्र १२३)। २ दशवें चक्रवर्ती की माता (सम १५२)।

मेरु पु [मेरु] १ पर्वत-विशेष (उव, प्रासु १५४)। २ छन्द-विशेष (पिंग)।

मेरु पु [मेरु] पर्वत, कोई भी पहाड़ (आचा २, १०, २)।

मेल सक [मेलय्] १ मिलाना। २ इकट्ठा करना। मेलइ, मेलति (भवि, पि ४८६)। संक. मेलित्ता, मेलिय (पि ४८६, महा)।

मेल पुं [मेल] मेल, मिलाप, सगम, सयोग, मिलन (सूअनि १५, दे ६, ५२, साधं १०६), 'दिट्ठो पियमेलगो मए सुविणो' (कुप्र २१०)।

मेलण न [मेलन] ऊपर देखो (प्रासु ३५)।

मेलय पुं [मेलक] १ सवन्ध, सयोग (कुमा)। २ मेला, जन-समूह का एकत्रित होना (दे ७, ८६, वि ८६)।

मेलव सक [मेलय्, मिश्रय्] मिलाना, मिश्रण करना। मेलवइ (हे ४, २८)। भवि, मेलवेहिस्ति (पि ५२२)। संक. मेलवि (अप) (हे ४, ४२६)।

मेलाइयव्व नीचे देखो।

रसिअ वि [रसित] १ रस-युक्त, रसवाला (पव २)। २ न. शब्द, आवाज (गउड, पएह १, १)।

रसिआ छी [दे रसिआ] १ पूय, पीत्र, ब्रण से निकलता गंदा सफेद खून, गुजराती में 'रसी' (आ १२, विपा १, ७, पएह १, १)। २ छन्द-विशेष (पिंग)।

रसिद पुं [रसेन्द्र] पारद, पारा (जी ३, शु १५८)।

रसिग देखो रसिअ = रसिक (पचा २, ३४)।

रसिर वि [रसिर] आवाज करनेवाला (सण)।

रसोड (अप) देखो रस-त्रई (भवि)।

रसिम पुंछी [रसिम] १ किरण, 'भरहं समामियाओ आइबं चैव रसमीओ' (पउम ८०, ६४, पात्र, प्राप्र)। २ रस्ती, रज्जु (प्रासू ११७)।

रह अक [दे] रहना। रहइ, रहए, रहेइ (पिंग, महा, सिरि ८६३), रहसु, रहह (सिरि ३५५, ३५३)।

रह मक [रह] त्यागना, छोड़ना (कप्प, पिंग)।

रह पु [रभस] उत्साह, 'पुणो पुणो ते स-रहं दुहेति' (सूअ १, ५, १, १८)। देखो रहम = रभस।

रह पुंन [रहस्] १ एकान्त, निजंन, 'तत्त्य रहो ति आगच्छ' (कुप्र ८२), 'लहु मे रहं देनु' (सुपा १७४, बजा १५२)। २ प्रच्छन्न, गोप्य (ठा ३, ४)।

रह पुन [रथ] १ यान-विशेष, स्यन्दन, 'धम्मस्स निग्वाणपहे रहाणि' (मत्त १८, पात्र; कुमा)। २ पु एकजैन महर्षि (कप्प)। °कार पुं [°कार] रथ निर्माता, वर्षकि, बढई (सुपा ४४४, कुप्र १०४, जव)। °चरिया छी [°चर्या] रथ को हांकना, 'ईसत्यसत्यरहचरियाकुसलो' (महा)। °जत्ता छी [°यात्रा] उत्सव-विशेष (सुपा ५४१, सुर १६, १६, सिरि ११७५)। °णेउर न [°नूपुर] नगर-विशेष (पउम २८, ७, इक)। °णेउरचक्रवाल न [°नूपुर-चक्रवाल] वैताव्य पर्वत पर स्थित एक नगर (पउम ५, ६४, इक)। °नेमि पुं

[°नेमि] भगवान् नेमिनाथ का भाई (उत्त २२, ३६)। °नेमिज्ज न [°नेमीय] उत्तरा-ध्ययन सूत्र का वाइसर्वा अग्र्ययन (उत्त २२)। °मुसल पुं [°मुसल] भारतवर्ष की एक प्राचीन लड़ाई, राजा कोणिक और राजा चेटक का संग्राम (भग ७, ६)। °यार देखो °कार (पात्र)। °रेणु पुं [°रेणु] एक नाप, आठ अशरेणु का एक परिमाण (इक)। °वीरजर, °वीरपुर न [°वीरपुर] एक नगर (राज, विसे २५५०)।

रहइ अ [रभसा] वेग से (स ७६२)।

रहग पुंछी [रथाङ्ग] १ चक्रवाक पक्षी, चकवा (पात्र, सुर ३, २४७, कुमा)। छी. °गी (सुपा ४६८, सुर १०, १८५, कुमा)। २ न. चक्र, पहिया (पात्र)।

रहट्ट देखो अरहट्ट (गा ४६०, पि १४२)।

रहण न [दे] रहना, स्थिति, निवास (धर्मवि २१, रयण ६)।

रहण न [रहन] १ त्याग। २ विरति, विराम, 'रसरहण' (पिंग)।

रहमाण पुं [दे] १ यवन मत का एक तत्त्व-वेत्ता (मोह १००)। २ खुदा, अल्ला, परमेश्वर (ती १५)।

रहस पुं [रभस] १ औत्सुक्य, उत्कण्ठा (कुमा)। २ वेग। ३ हर्ष। ४ पूर्वपर का अविचार (सक्ति ७, गउड)।

रहस देखो रहस्स = रहस्य, 'रहसाभक्खाणे' (उवा, सबोव ४२, सुपा ४५४)।

रहसा अ [रभसा] वेग से (गउड)।

रहस्स वि [रहस्य] १ गुह्य, गोपनीय (पात्र, सुपा ३१८)। २ एकान्त में उत्पन्न, एकान्त का (हे २, २०४)। ३ न तत्त्व, तात्पर्य, भावार्थ (ओव ७६०, रंभा १६)। ४ अपवाद-स्थान (वृह ६)।

रहस्स वि [ह्रस्व] १ लघु, छोटा (विपा १, ८—पत्र ८३)। २ एक मात्रावाला स्वर (उत्त २६, ७२)।

रहस्स न [ह्रास्व] १ लाघव, छोटाई। °मंत वि [°वत्] लघु, छोटा (सूअ २, १, १३)।

रहस्सिअ वि [राहसिक] प्रच्छन्न, गुप्त (विपा १, १—पत्र ५)।

रहाविअ वि [दे] स्थापित, रखवाया हुआ (हम्मीर १३)।

रहि वि [रथिन्] १ रथ से लहनेवाला घोड़ा (उप ७२८ टी)। २ रथ को हांकनेवाला (कुप्र २८७, ४६०, धर्मवि १११)।

रहिअ वि [रथिक] उपर देखो, 'रहिण्हि महारहिणो' (उप ७२८ टी, पएह २, ४—पत्र १३०, धर्मवि २०)।

रहिअ वि [रहित] परित्यक्त, वर्जित, शून्य (उवा, दं ३२)।

रहिअ वि [रहित] एकाकी, अकेला (वव १)।

रहिअ वि [दे] रहा हुआ, स्थित (धर्मवि २२)।

रहु पुं [रघु] १ सूर्य वंश का एक स्वनाम-ख्यात राजा (उत्तर ५०)। २ पु. व रघु-वंश में उत्पन्न क्षत्रिय (से ४, १६)। ३ पु. श्रीरामचन्द्र, 'ताहे कथंतरिसी देइ रहु रिखवले दिहो' (पउम ११३, २१)। ४ कालिदास-प्रणीत एक संस्कृत काव्य-ग्रन्थ (गउड)। °आर पु [°कार] रघुवज नामक संस्कृत काव्य-ग्रन्थ का कर्ता, कवि कालिदास (गउड)। °णाह पु [°नाथ] १ श्रीरामचन्द्र (से १४, १६, पउम ११३, ५५)। २ लक्ष्मण (से १४, ६२)। °तणय पुं [°तनय] वही अर्थ (से २, १, १४, २६)। °तिलय पुं [°तिलक] श्रीरामचन्द्र (सुपा २०४)। °त्तम पुं [°उत्तम] वही अर्थ (पउम १०२, १७६)। °पुंगव पुं [°पुङ्गव] वही (से ३, ५, हे २, १८८, ३, ७०)। °सुअ पु [°सुत] वही (से ५, १६)।

रहो° देखो रह = रहस् (कप्प, औप)। °कम्म न [°कर्मन्] एकान्त-व्यापार (ठा ६—पत्र ४६०)।

रा सक [रा] देना, दान करना। राइ (वाल्वा १४६)।

रा अक [रै] शब्द करना, आवाज करना। राइ (प्राकृ ६६)।

रा अक [ली] श्लेष करना, चिपकना। राइ (पह)।

राअला छी [दे] प्रियंशु, मालकंगनी (दे ७, १)।

मोअ सक [मुच्] छुडवाना, त्यागना ।
मोअइ (प्राकृ ७०; ११६) । वक्र मोअंत
(से ८, ६१) ।

मोअ सक [मोचय्] छुडवाना, त्याग
कराना । मोअइदि (शौ) (नाट—मालवि
४१) । कवक. मोइज्जत (गा ६७२) ।

मोअ पुं [मोद] हर्ष, खुशी (रयण १५,
महा, भवि) ।

मोअ वि [दे] १ अधिगत । २ पु. विभं
आदि का वीजकोश (दे ६, १४८) । ३ मूत्र,
पेशाव (सूअ १, ४, २, १२, पिंड ४६८,
कस, पमा १५) । °पडिमा स्त्री [°प्रतिमा]
प्रसवण-विषयक नियम-विशेष (ठा ४, २—
पत्र ६४, श्रौप, वव ६) ।

मोअइ पुं [मोचकि] वृक्ष-विशेष, 'सल्ल-
मोयइमालुयवउलपलामे करंजे य' (पण
१—पत्र ३१) ।

मोअग वि [मोचक] मुक्त करनेवाला (सम
१, पडि, सुपा २३४) ।

मोअग पुं [मोदक] लड्डू, मिष्ठान-विशेष
(अत ६, सुपा ४०६) । देखो मोदअ ।

मोअण न [मोचन] नीचे देखो (स ५७५,
गठठ) ।

मोअणा स्त्री [मोचना] १ परित्याग (श्रावक
११५) । २ मुक्ति, छुटकारा (सूअ १, १४,
१८) । ३ छुडवाना, मुक्त कराना (उप
५१०) ।

मोअय देखो मोअग (भग, पउम ११५, ६,
सुपा ४०६, नाट—विक २१) ।

मोआ स्त्री [मोचा] कदली वृक्ष, केला का
गाछ (राज) ।

मोआव सक [मोचय्] छुडवाना । मोआ-
वेमि, मोआवेहि (नाट—शकु २५, मृच्छ
३१६) । भवि. मोआवइस्ससि (पि ५२८) ।
कर्म. मोयाविज्जइ (कुप्र २६१) । वक्र.
मोयावत (सुपा १८६) ।

मोआवण न [मोचन] छुटकारा कराना
(सिरि ६१८, स ४७) ।

मोआविअ } वि [मोचित] छुडवाया हुआ
मोइअ } (पि ५५२, नाट—मृच्छ ८६,
सुर १०, ६, सुपा ४७७, महा; सुर २,
३६, ६, ७८, सुपा २३२, भवि) ।

मोइल पुं [दे] मत्स्य-विशेष (नाट) ।

मोड देखो मुड = मुण्ड (हे १, ११६,
२०२) ।

मोक पुं [मोक्र] सर्प-कंचुक, साँप का कँचुल ।
मोकल सक [दे] भोजना, गुजराती में
'मोकलवु', मराठी में 'मोकलण' । मोकलइ
(भवि) ।

मोक्क देखो मुक्क = मुक्त (पड्) ।

मोक्कणिआ } स्त्री [दे] कृष्ण कणिका, कमल
मोक्कणी } का काला मध्य भाग (दे ६,
१४०) ।

मोक्कल देखो मोकल, 'नियपियर भणसु
तुमं मोक्कलइ जेण सिग्घपि' (सुपा ६१२) ।

मोक्कल देखो मुक्कल (सुपा ५८०, हे ४,
३६६) ।

मोक्कलिय वि [दे] १ प्रेषित, भेजा हुआ
(सुपा ५२१) । २ विष्ट (सुपा १४०) ।

मोक्ख देखो मुक्ख = मोक्ष (श्रौप, कुमा,
हे २, १७६, उप २६४ टी, भग, वसु) ।

मोक्ख देखो मुक्ख = मूर्ख (उप ५५५) ।

मोक्ख न [दे] वनस्पति-विशेष (सूअ २,
२, ७) ।

मोक्खण न [मोक्षण] मुक्ति, छुटकारा
(स ४१८, सुर २, १७) ।

मोग्गड पु [दे] व्यन्तर-विशेष (सुपा ४०८) ।
देखो मुग्गड ।

मोग्गर पुं [दे] मुकुल, कलिका, वौर (दे ६,
१३६) ।

मोग्गर पु [मुद्गर] मुगरा, मोगरी । २
कमरख का पेड (हे १, ११६, २, ७७) ।
३ पुण्यवृक्ष-विशेष, मोगरा का गाछ (पण
१—पत्र ३२) । ४ देखो मुग्गर । °पाणि
पुं [°पाणि] एक जैन महर्षि (अत १८) ।

मोग्गरिअ वि [दे] संकुचित, मुकुलित (दे
६, १३६ टी) ।

मोग्गलायण } न [मौद्गलायन, °ल्या°]
मोग्गलायण } १ गोत्र-विशेष (इक, ठा ७,
सुज्ज १०, १६) । २ पुत्री. उस गोत्र में
उत्पन्न (ठा ७—पत्र ३६०) ।

मोग्गाह देखो मुग्गाह । मोग्गाहइ (?)
(घात्वा १४६) ।

मोघ देखो मोह = मोघ; 'मोघमणोरहा'
(पणह १, ३—पत्र ५५) ।

मोच देखो मोअ = मोचय् । संक्र. मोचिअ
(अभि ४७) ।

मोच न [दे] अर्धजघी, एक प्रकार का जूता
(दे ६, १३६) ।

मोच देखो मोअ = (दे) (सूअ १, ४, २,
१२) ।

मोचग देखो मोअग = मोचक (वसु) ।

मोट्टाय अक [रम्] क्रीडा करना । मोट्टायइ
(हे ४, १६८) ।

मोट्टाइअ न [रत] रति-क्रीडा, रत, मैथुन
(कुमा) ।

मोट्टाइअ न [मोट्टायित] चेट्टा-विशेष, प्रिय-
कथा आदि में भावना से उत्पन्न चेट्टा (कुमा) ।

मोट्टिम न [दे] बलात्कार (पि २३७) ।
देखो मुट्टिम ।

मोड सक [मोटय्] १ मोडना, टेढा
करना । २ भांगना । मोडसि (सुर ७, ६) ।
वक्र. मोडंत, मोडित, मोडयंत (भवि,
महा, स २५७) । कवक. मोडिज्जमाण
(उप पृ ३४) । सक्र. मोडेउ (सुपा १३८) ।

मोड पुं [दे] झूट, लट (दे ६, ११७) ।

मोडग वि [मोटक] मोडनेवाला (पणह १,
४—पत्र ७२) ।

मोडण न [मोटन] मोडन, मोडना (वज्जा
३८) ।

मोडणा स्त्री [मोटना] ऊपर देखो (पणह १,
३—पत्र ५३) ।

मोडिअ वि [मोटित] १ भग्न, भांगा हुआ
(गा ५४६, गाय १, ६—पत्र १५७,
पणह १, ३—पत्र ५३) । २ आन्नेडित,
मोडा हुआ (विपा १, ६—पत्र ६८, स
३३५) ।

मोड पु [मोड] एक वणिक्-कुल (कुप्र २०) ।

मोडेरय न [मोडेरक] नगर-विशेष (दे ६,
१०२, ती ७) ।

मोण न [मौन] मुनिपन, धारणी का संयम,
चुप्पी (श्रौप, सुपा २३७, महा) । °चर वि
[°चर] मौन ब्रतवाला, धारणी का संयम-
वाला, वाचंयम (ठा ५, १—पत्र २६६,

ईशानेन्द्र की एक पटरानी (ठा ८—पत्र ४२६, इक) ।

रामणिज्जअ न [रामणीयक] रमणीयता, सौन्दर्य (विक्र २८) ।

रामा स्त्री [रामा] १ स्त्री, महिला, नारी (तदु ५०, कुमा, पाञ्च, वज्जा १०६, उप ३५७ टी) । २ नववें जिनदेव की माता (सम १५१) । ३ ईशानेन्द्र की एक पटरानी (ठा ८—पत्र ४२६, इक) । ४ छन्द-विशेष (पिंग) ।

रामायण न [रामायण] १ वाल्मीकि-कृत एक संस्कृत काव्यग्रन्थ (पउम २, ११६, महा) । २ रामचन्द्र तथा रावण की लड़ाई (पउम १०५, १६) ।

रामिअ वि [रमित] रमण कराया हुआ (गा ५६, पउम ८०, १६) ।

रामेसर पु [रामेश्वर] दक्षिण भारत का एक हिन्दू तीर्थ (सम्मत्त ८४) ।

राय अक [राज्] चमकना, शोभना । रायइ (हे ४, १००) । वक्क राय, रायमाण (कप्प) ।

राय देखो रा = रै । राअइ (प्राक्क ६६) ।

राय पु [राग] १ प्रेम, प्रीति (प्रासू १८०) । २ मत्सर, द्वेष, 'न पेमराइल्ला' (देवेन्द्र २७८) । ३ रँगना, रजन । ४ वणन । ५ अनुराग । ६ राजा, नरपति । ७ चन्द्र, चाँद । ८ लाल वण । ९ लाल रँगवाली वस्तु । १० वसन्त आदि स्वर (हे १, ६८) ।

राय पु [राजन्] १ राजा, नर-पति, नरेश (आचा, उवा, आ २७, सुपा १०३) । २ चन्द्र, चन्द्रमा (आ २७, हम्मीर ३, धर्मवि ३) । ३ एक महाग्रह (सुज २०) । ४ इन्द्र । ५ क्षत्रिय । ६ यक्ष । ७ शुचि, पवित्र । ८ श्रेष्ठ, उत्तम (हे ३, ४६, ५०) । ९ इच्छा, अभिलाषा (से १, ६) । १० छन्द-विशेष (पिंग) । इअ वि [कीय] राज-संवन्धी (प्राक्क ३५) । उत्त पुं [पुत्र] राज-पूत, राजकुमार (सुर ३, १६५) । उल देखो राउल (हे १, २६७, कुमा, पड्, प्राप्र, अमि १८४) । कीअ देखो ईअ (नाट—शकु १०४) । कुल देखो उल (महा) ।

केर, क वि [कीय] राज-संवन्धी (हे २, १४८, कुमा, पड्) । गिह न [गृह] मगध देश की प्राचीन राजधानी, जो आजकल 'राजगीर' नाम से प्रसिद्ध है (ठा १०—पत्र ४७७, उवा, अत) । गिहि स्त्री [गृही] वही अर्थ (ती ३) । चपय पुं [चम्पक] वृक्ष-विशेष, उत्तम चम्पक-वृक्ष (आ १२) । धम्म पुं [धर्म] राजा का कर्तव्य (नाट—उत्तर ४१) । धाणी स्त्री [धानी] राज-नगर, राजा का मुख्य नगर, जहाँ राजा रहता हो (नाट—चैत १३२) । पत्ती स्त्री [पत्नी] रानी (सुर १३, ५, सुपा ३७५) । पसेणीय वि [प्रश्नीय] एक जैन आगम-ग्रन्थ (राय) । पड पुं [पथ] राज-मार्ग (महा, नाट—चैत १३०) । पिड पुं [पिण्ड] राजा के घर की मित्रा—आहार (सम ३६) । पुत्त देखो उत्त (गउड) । पुर न [पुर] नगर-विशेष (पउम १, ८) । पुरिस पु [पुरुष] राजा का आदमी, राज-कर्मचारी (पउम २८, ४) । मगग पु [मार्ग] राजपथ, सड़क (औप; महा) । मास पु [माप] धान्य-विशेष, बरबटी (आ १८, सबोध ४३) । राय पु [राज] राजाओं का राजा, राजेश्वर (सुपा १०७) । रिसि देखो राएसि (गाया १, ५—पत्र १११, उप ७२८ टी, कुमा, सरण) । रुक्ख पुं [वृक्ष] वृक्ष-विशेष (औप) । लच्छी स्त्री [लक्ष्मी] राज-वैभव (अमि १३१, महा) । ललिय पु [ललित] आठवें बलदेव के पूर्व जन्म का नाम (सम १५३) । वट्टय न [वार्तक] राज-संवन्धी वार्ता-समूह (हे २, ३०) । वल्ली स्त्री [वल्ली] लता-विशेष (पण १—पत्र ३६) । वाडिआ, वाडी स्त्री [पाटिका, पाटी] चतुरंग सैन्य-अभिकरण, राजा की चतुर्विध सेना के साथ सवारी (कुमा, कुप्र ११६, १२०, सुपा २२२) । सद्दूल पु [शार्दूल] चक्रवर्ती राजा, श्रेष्ठ राजा (सम १५२) । सिट्ठि पु [श्रेष्ठिन्] नगर-सेठ (अमि) । सिरी स्त्री [श्री] राज-लक्ष्मी (से १, १३) । सुअ पुं [सुत] राजकुमार (कप्प, उप ७२८ टी) । सुअ पु [शुक] उत्तम तोता (उप ७२८

टी) । सुअ पुं [सूय] यज्ञ-विशेष, 'पिइमे-हमाइमेहे रायसुए आसमेहपमुमेहे' (पउम ११, ४२) । सेण पुं [सेन] छन्द-विशेष (पिंग) । सेहर पु [शेखर] १ महादेव, शिव । २ एक राजा (सुपा ५२६) । ३ एक कवि, कपूर्मजरी का कर्ता (कप्प) । हंस पुंस्त्री [हंस] १ उत्तम हंस पक्षी । २ श्रेष्ठ राजा (सुर १२, ३४, गा ६२४, गउड, सुपा १३६, रंभा, अमि) । स्त्री. मी (सुपा ३३४, नाट—रत्ना २३) । हर न [गृह] राजा का महल (पउम ८२, ८६, हे २, १४४) । हाणी देखो धाणी, (सम ८०, पउम २०, ८) । हिराय, हिराय पु [अधिराज] राजाओं का राजा, चक्रवर्ती राजा (काल, सुपा १०५) । हिव पु [विप] वही अर्थ (सुपा १०५) ।

राय देखो राव = राव (से ६, ७२) ।

राय पु [दे] चटक, गौरैया पक्षी (दे ७, ४) ।

राय पुं [रात्र] रात्रि, रात (आचा) ।

राय देखो राय = राज् ।

रायंलुअ पुं [दे] १ वेतस या वेंत का रायंलु पेढ (पाञ्च, दे ७, १४) । २ पुं. शरम (दे ७, १४) ।

रायंस पुं [राजास] राज-यक्ष्मा, क्षय का व्याधि (आचा) ।

रायसि वि [राजासिन्] राजयक्ष्मावाला, क्षय का रोगी (आचा) ।

रायगइ स्त्री [दे] जलौका, जोक (दे ७, ५) ।

रायगल पुं [राजार्गल] ज्योतिष्क ग्रह-विशेष (ठा २, ३—पत्र ७८) ।

रायणिअ देखो राइणिअ = रात्रिक (उव, शोधमा २२३) ।

रायणी स्त्री [राजादनी] खिन्नी, खिरनी का पेढ (पउम ५३, ७६) ।

रायण्ण देखो राइण्ण (ठा ३, १—पत्र ११४, उप ३५६ टी) ।

रायनीइ स्त्री [राजनीति] राजा की शासन करने की रीति (राय ११७) ।

रायमइया स्त्री [राजीमत्तिका] देखो राई-मई (कुप्र १) ।

रायस देखो राजस (स ३, से ३, १५) ।

एगकुलिसम्न मोलिमकुलपडिवाकस्स अज-
चाणकस्स' (मुद्रा ३०६)।

म्नि अ. पाद-पूर्ति में प्रयुक्त किया जाता
अव्यय (पिंग)।

म्निव देखो इव (प्राकृ २६)।
म्हस देखो भस = भ श्। म्हमइ (प्राकृ ७६)।

॥ इम सिरिपाइअसइमहणवम्नि मयाराइमइसकलणो
एगतीसइमो तरंगो समत्तो ॥

य

य पु [य] तानु-स्थानीय व्यञ्जन वर्ण-विशेष,
अन्तस्थ यकार (प्राप्र, प्रामा)।

य अ [च] १ हेतु-सूचक अव्यय (धर्मसं
३८५)। २ देखो च = अ (ठा ३, १, ८,
पठम ६, ८४, १५, २, आ १२, आचा,
रंभा, कम्म २, ३३, ४, ६, १०, देवेन्द्र
११, प्रासू २७)।

°य देखो °ज (आचा)।

°य वि [°ट] देनेवाला (धौप, राय, जीव ३)।

यउणा देखो जँउणा (सझि ७)।

°यच मक [अञ्च] १ गमन करना। २
पूजा करना। सङ्क. °यंचिय (ठा ५, १—
पत्र ३००)।

°यंत वि [यत] प्रयत्नशील, उद्योगी, 'अ-यंतै'
(सूत्र २, २, ६३)।

°यद देखो चद (सुपा २२६)।

°यक्क देखो चक्क, 'दिसा-यक्क' (पठम ६, ७१)।

°यड देखो तड = तट (गउड)।

°यण देखो जण = जन (मुर १, १२१)।

यणइण (अप्र) देखो जणइण, 'तो वि ए
देउ यणइणउ गोअरीहोइ मणस्सु' (पि १४
टि)।

°यणण देखो कणण = कण (पठम ६६, २८)।

°यत्तिअ वि [यात्रिक] यात्रा करनेवाला,
भ्रमण करनेवाला, 'सगइसएहि दिसायत्तिएहि'
(उवा, वृह १)।

यटावि अ [यटपि] अम्युपगम-सूचक अव्यय,
स्त्रीकार-द्योतक निपात (पचा १४, ३६)।

यन्नोवइय देखो जणगोवईय (उप ६४८
टी)।

यम देखो जम = यम, 'दो अस्मा दो यमा'
(ठा २, ३—पत्र ७७)।

°यर देखो कर = कर (गउड)।

°यल देखो तल = तल (उवा)।

या देखो जा = या, 'सुरनारणा य सम्महिट्ठी
जं यंति सुरमणुएसु' (विसे ४३१, कुमा
८, ८)।

याण सक [जा] जानना। याणइ, याणाइ,
याणइइ, याणति, याणामो, याणिमो (पि
५१०, उव, भग, धर्मवि १७, वै ६३, प्रासू
१०२)।

याण देखो जाण = यान (सम २)।

°याल देखो काल (पठम ६, २४३)।

याव (अप्र) देखो जाव = यावत् (कुमा)।

°यावदट्ट वि [यावदर्थ] यथेष्ट, जितने की
आवश्यकता हो उतना (दस ५, २, २)।

°युत्त देखो जुत्त = युक्त, 'एयम अयुत्तं जम्हा'
(अज्ज १६७, रंभा)।

येव } (पे. मा) देखो एव (पि ६०,
येन्व } ६५)।

यूचिश (मा) } देखो चिट्ठ = स्या। यूचि-
यूचिशत (पे) } शदि (शाकारी भाषा) (प्राकृ
१०५)। यूचिशतदि (पे) (प्राकृ १२६)।

य्येव (शौ) देखो एव (हे ४, २८०)।

य्येन्व देखो येव (पि ६५)।

॥ इम सिरिपाइअसइमहणवम्नि यआराइसइसकलणो
वत्तीसइमो तरंगो समत्तो ॥

रिक्ख वि [दे] १ वृद्ध, वृद्धा । २ पुं. वय-परिणाम, वृद्धता (दे ७, ६) ।

रिक्ख पुं [ऋक्ष] १ भालू, श्वापद प्राणि-विशेष (हे २, १६) । २ न. नक्षत्र (पात्र, सुर ३, २६, ८, ११६) । ३ पृष्ठ पुं [पथ] आकाश (सुर ११, १७१) । ४ राय पुं [राज] वानर-वंश का एक राजा (पञ्चम, २३४) ।

रिक्खण न [दे] १ उपलम्भ, अधिगम । २ कथन (दे ७, १४) ।

रिक्खा देखो रेहा = रेखा (ओष १७६) ।

रिग } अक [रिङ्ग] १ रेंगना, धीरे-धीरे
रिगा } और जमीन से रगड़ खाते हुए चलना ।
२ प्रवेश करना । रिगइ, रिगइ (हे ४, २५६; टि) ।

रिग पुं [दे] प्रवेश (दे ७, ५) ।

रिच चीन देखो रिड = ऋच् (पि ५६, ३१८) । ची ० चा (नाट—रत्ना ३८) ।

रिच्छ वि [दे] वृद्ध, वृद्धा (दे ७, ६) ।

रिच्छ देखो रिक्ख = ऋक्ष (हे १, १४०, २, १६, पात्र) । ३ हिच पुं [धिप] जाम्बवान्, राम का एक सेनापति (से ४, १८, ४५) ।

रिच्छभल्ल पु [दे] भालू, रीछ (दे ७, ७) ।

रिजु देखो रिड = ऋच् (भग) ।

रिजु देखो रिड = ऋजु (विसे ७८४) ।

रिज देखो रिअ = री । रिज्जइ (आचा) ।

रिज्जु देखो रिड = ऋजु (हे १, १४१, संक्षि १७, कुमा) ।

रिज्ज अक [ऋध्] १ बटना । २ रीझना, खुशी होना । रिज्जइ (भवि) ।

रिह पु [दे. अरिह] १ अरिह, दुरित (पङ्, पि १४२) । २ दैत्य-विशेष (पङ्; से १, ३) । ३ काक, कौआ (दे ७, ६, गाय १, १—पत्र ६३, पङ्, पात्र) । ४ नेमि पुं [नेमि] वार्हसर्वे जिनदेव (पि १४२) ।

रिह पुं [रिह] १ देव-विशेष, रिह नामक विमान का निवासी देव (गाय १, ८—पत्र १५१) । २ वेलम्ब और प्रम-ब्जन नामक इन्द्रो के लोकपाल (ठा ४, १—पत्र १६८) । ३ एक दृष्ट साँढ, जिसको

श्रीकृष्ण ने मारा था (पण्ह १, ४—पत्र ७२) । ४ पक्षि-विशेष (पञ्चम ७, १७) । ५ न. रत्न-विशेष (चिदय ६१५; ओप; गाय १, १ टी) । ६ एक देव-विमान (सम ३५) । ७ पुं. फल-विशेष, रीठा (उत्त ३४, ४, सुख ३४, ४) । ८ पुरी स्त्री [पुरी] कच्छावती-विजय की राजधानी (ठा २, ३—पत्र ८०, इक) । ९ मणि पु [मणि] श्याम रत्न-विशेष (सिरि ११६०) ।

रिह्ठा स्त्री [रिह्ठा] १ महाकच्छ विजय की राजधानी (ठा २, ३—पत्र ८०, इक) । २ पाँचवी नरक-भूमि (ठा ७—पत्र ३८८) । ३ मदिरा, दारू (राज) ।

रिह्ठाभ न [रिह्ठाभ] १ एक देव-विमान (सम १४) । २ लोकान्तिक देवों का एक विमान (पव २६७) ।

रिह्ठि स्त्री [रिह्ठि] १ खड्ग, तलवार (दे ७, ६) । २ अशुभ । ३ पु. रत्न, विवर (सलि ३) ।

रिड सक [मण्डय्] विभूषित करना । रिहइ (पङ्) ।

रिण न [ऋण] १ करजा या फर्ज, उधार लिया हुआ धन (गा ११३, कुमा, प्रासू ७७) । २ जल, पानी । ३ दुर्ग, किला । ४ दुर्ग भूमि । ५ आवश्यक कार्य, फर्ज । ६ कर्म (हे १, १४१, प्राप्र) । देखो अण = ऋण ।

रिणिअ वि [ऋणित] फर्जदार, अधमणं (कुप्र ४३६) ।

रिते अ [ऋते] सिवाय, विना (पिड ३७०) । रिक्त वि [रिक्त] १ खाली, शून्य (से ७, ११, गा ४६०, धर्मवि ६; ओषमा १६६) । २ न. विरेक, अभाव (उत्त २८, ३३) ।

रित्ठिअ वि [दे] शांति, ऋद्धाया हुआ (दे ७, ८) ।

रित्थ न [रित्थ] धन, द्रव्य (उप ५२०, पात्र, स ६०, सुख ४, ६, महा) ।

रिद्ध वि [ऋद्ध] ऋद्धि-संपन्न (गाय १, १, उवा; ओप) ।

रिद्ध वि [दे] पक्क, पक्का (दे ७, ६) ।

रिद्धि पुंजी [दे] समूह, राशि (दे ७, ६) ।

रिद्धि स्त्री [ऋद्धि] १ संपत्ति, समृद्धि, वैभव (पात्र; विपा २, १, कुमा, सुर २, १६८,

प्रासू १२, ६२) । २ वृद्धि । ३ देव-विशेष । ४ ओपधि-विशेष (हे १, १२८, २, ४१, पंचा ८) । ५ छन्द-विशेष (पिग) । ६ म, ० ह् वि [मन्] समृद्ध, ऋद्धि-मम्पन्न (ओष ६८४, पञ्चम ५, ५६, सुर २, ६८, सुपा २२३) । ७ सुन्दरी स्त्री [मुन्दरी] एक वणिक्-कन्या (उप ७२८ टी) ।

रिपु देखो रिउ (कण्) ।

रिप्प न [दे] शृष्ठ, पीठ (दे ७, ५) ।

रिभिय न [रिभित] १ एक प्रकार का नाट्य (ठा ४, ४—पत्र २८५) । २ स्वर का घोलन । ३ वि. स्वर घोलना से युक्त (राज, गाय १, १—पत्र १३) ।

रिमिण वि [दे] रोने की आदतवाला (दे ७, ७, पङ्) ।

रिरंसा स्त्री [रिरसा] रमण की चाह, मैथुनेच्छा (अज्ज ७६) ।

रिरिअ वि [दे] लीन (दे ७, ७) ।

रिह अक [दे] शोभना । वक्र रिहंत (भवि) ।

रिउ देखो रिड = रिपु (पञ्चम १२, ४१, ४४, ५०, स १३८, उप पृ ३२१) ।

रिसभ पु [ऋपभ] १ स्वर-विशेष (ठा रिसइ ७—पत्र ३६३) । २ अहोरात्र का अठाइसवाँ मुहूर्त (सम ५१, सुज्ज १०, १३) । ३ संहत अस्त्रि-द्वय के ऊपर का वलयाकार वेष्टन-पट्ट; 'रिसहो य होइ पट्टो' (जीवस ४६) । देखो उसभ (ओष हे १, १४१, सम १४६, कम्म २, १६, सुपा २६०) ।

रिसह पुं [ऋपभ] श्रेष्ठ, उत्तम (कुमा) ।

रिसि पुं [ऋपि] मुनि, सत्त, साधु (ओष; कुमा, सुपा ३१, अवि १०१, उप ७६८ टी) । ४ घाय पुं [घात] मुनि हत्या (उप ४६६) ।

रिह सक [प्र + विश्] प्रवेश करना, पैठना । रिहइ (पङ्) ।

री } अक [री] जाना, चलना । रीयइ,
रीअ } रीयए, रीयते, रीइजा (आचा, सूम १, २, २, ५, उत्त २४, ७) । भूका. रीइत्या (आचा) । वक्र. रीयत, रीयमाण (आचा) ।

रीइ स्त्री [रीति] प्रकार, ढंग, पद्धति; 'तं जणं विडवति निच्चं नवनवरीइइ' (धर्मवि ३२, कप्पु) ।

टी, संवे ५)। ३ पुं छन्द-विशेष (पिंग)।
 ४ वि खुशी करनेवाला, रागजनक (कुमा)।
 रंजण पुं [दे] १ घडा, कुम्भ (दे ७, ३)।
 २ कुराडा, पात्र-विशेष (दे ७, ३, पात्र)।
 रंजविय } वि [रञ्जित] राग-युक्त किया
 रंजिअ } हुआ (सण, से ६, ४८, गठड,
 महा, हेका २७२)।
 रंहा छो [रणडा] रांड, विधवा (उप ३१३,
 वज्जा ४४ कप्पू पिंग)।
 रंहुअ न [दे] रञ्जु, रप्सी, गुजराती मे
 'राहु' (दे ७, ३)।
 रध सक [रध्, मधय्] राधना, पकाना।
 'रवो राधयते स्मृत' रधइ (प्राकृ ७०),
 रधेहि (स २४६)। वक्र. रधत (गाया १,
 ७—पत्र ११७)। सक्. रधिऊण (कुप्र
 २०५)।
 रंध न [रन्ध्र] छिद्र, विवर (गा ६५२, रंभा,
 भवि)।
 रंधण न [रन्धन, राधन] राधना, पचन,
 पाक (गा १४, पव ३८, सूअनि १२१ टी,
 सुपा १२, ४०१)। रंध न [गृह] पाक-
 गृह (रयण ३१)।
 रधण न [रन्धन] पाक-गृह, रसोईघर (आचा
 २, १०, १४)।
 रप सक [तक्ष्] छिलना, पतला करना।
 रंपइ (हे ४, १६४, प्राकृ ६५, पड्)।
 रंपण न [तक्षण] तन्न-करण, पतला करना
 (कुमा)।
 रंफ देखो रंप। रंफइ, रफए (हे ४, १६४,
 पड्)।
 रफण देखो रपण (कुमा)।
 रंभ सक [गम्] जाना, गति करना। रंभइ
 (हे ४, १६२), रभति (कुमा)।
 रभ देखो रफ। रंभइ (घात्वा १४६)।
 रभ सक [आ+रम्] आरम्भ करना।
 रभइ (पड्)।
 रभ पु [दे] अन्दोलन-फलक, हिंडोले का
 तख्ता (दे ७, १)।
 रभा छो [रम्भा] १ कदली, केला का गाछ
 (सुपा २५४, ६०५, कुप्र ११७; पात्र)। २
 देवागना-विशेष, एक अम्सरा (सुपा २५४,

रयण ५)। ३ वैरोचन नामक वलीन्द्र की
 एक अग्र-महिषी (ठा ५, १—पत्र ३०२,
 गाया २—पत्र २५१)। ४ रावण की एक
 पत्नी (पउम ७४, ८)।
 रक्ख सक [रक्ष्] रक्षण करना, पालन
 करना। रक्खइ (उव, महा)। भूका रक्खोग्र
 (कुमा)। वक्र. रक्खत (गा ३८, औप, भा
 ३७)। कवक रक्खीअमाण (नाट—मालती
 २८)। क. रक्ख, रक्खणिज्ज, रक्खियठव,
 रक्खेयठव (से ३, ५, मार्ध १००, गठड,
 सुपा २४०)।
 रक्ख पुं [रक्षस्] राक्षस (पात्र, कुप्र
 ११३, सुपा १३०, सट्ठि ६ टी, संबोध ४४)।
 रक्ख वि [रक्ष्] १ रक्षक, रक्षा करनेवाला
 (उप ३६८, कप्प)। २ पु. एक जैन मुनि
 (कप्प)।
 रक्ख देखो रक्ख = रक्ष्।
 रक्खअ } वि [रक्षक] रक्षण-कर्ता (नाट—
 रक्खग } मालवि ५३, रंभा, कुप्र २३३,
 सार्ध ६६)।
 रक्खण न [रक्षण] रक्षा, पालन (सुर १३,
 १६७, गठड, प्रासू २३)।
 रक्खणा छो [रक्षणा] ऊपर देखो (उप ८५०,
 स ६६)।
 रक्खणिया छो [दे] रखी हुई छो, रखेलिन,
 रखनी, रखात (सुपा ३८३)।
 रक्खवाळ वि [दे] रखवाला, रक्षा करनेवाला
 (महा)।
 रक्खस पुं [राक्षस] १ देवों की एक जाति
 (पणह १, ४—पत्र ६८)। २ विद्याधर-मनुष्यों
 का एक वंश (पउम ५, २५२)। ३ वंश-
 विशेष मे उत्पन्न मनुष्य, एक विद्याधरजाति,
 तेण चिय खयरणां रक्खसनाम कयं लोए'
 (पउम ५, २५७)। ४ निशाचर, क्रव्याद (से
 १५, १७, नाट—मृच्छ १३२)। ५ अहोरात्र
 की तीसवां मुहूर्त (सम ५१, सुज १०, १३)।
 रंउरी छो [पुरी] लका नगरी (से १२,
 ८४)। रंणअरी छो [नगरी] वही
 अर्थ (से १२, ७८)। रंणाह पुं [नाथ]
 राक्षसों का राजा (से ८, १०४)।
 रंथ न [रिथ्] अन्न-विशेष (पउम
 ७१, ६३)। रंदीव पु [द्वीप] सिंहल

द्वीप (पउम ५, १२६)। रंणाह देखो रंणाह
 (पउम ६, ३६)। रंइ पुं [पति] राक्षसों
 का मुखिया (पउम ५, १२३ मे १२, १)।
 रंहिव पु [रंधिप] वही अर्थ (से १५, ८७,
 ६१)।
 रक्खसिंद पु [राक्षसेन्द्र] राक्षसों का राजा
 (पउम १२, ४)।
 रक्खसी छो [राक्षसी] १ राक्षस की छो
 (नाट—मृच्छ २३८)। २ लिपि-विशेष (विसे
 ४६४ टी)।
 रक्खसेद देखो रक्खसिंद (से १२, ७७)।
 रक्खा छो [रक्षा] १ रक्षण, पालन (आ १०,
 सुपा १०३, ११३)। २ राख, भस्म, 'सो
 चंदण रक्खकए दहिजा' (सत्त २८, सुपा
 ६५७)।
 रक्खिअ वि [रक्षित] १ पालित (गठड, गा
 ३३३)। २ पु. एक प्रसिद्ध जैन महर्षि (कप्प,
 विसे २२८८)।
 रक्खिआ देखो रक्खसी (रभा १७)।
 रक्खी छो [रक्षी] भगवान् अरुणाथ की मुख्य
 साखी (सम १५२, पव ८)।
 रक्खोवग वि [रक्षोपग] रक्षण में तत्पर
 (राय ११३)।
 रगिल [दे] देखो रङ्गोल (पड्)।
 रग देखो रत्त = रक्त (हे २, १०, ८६,
 पड्)।
 रगाय न [दे] कुसुम्भ-वज्र (दे ७, ३, पात्र,
 गठड)।
 रघुस पु [रघुप] हरिवंश का एक राजा
 (पउम २२, ६६)।
 रघ अक [दे रञ्ज्] राचना, आसक्त होना,
 अनुराग करना। रघइ, रघंति, रघेह (कुमा,
 वज्जा ११२)। कर्म. 'रत्ते रच्चिजए जम्हा'
 (कुप्र १३२)। वक्र. रघत (भवि)। प्रयो.
 रच्चावति (वज्जा ११२)।
 रक्षण न [दे रञ्जन] २ अनुराग। २ वि.
 अनुराग करनेवाला, राचनेवाला (कुमा)।
 रच्चि वि [दे. रञ्जित्] राचनेवाला (कुमा)।
 रच्छा देखो रक्खा (रंभा १६)।
 रच्छा छो [रथ्या] मुहल्ला (गा ११६, औप,
 कस)।

रत्तकखर न [दे] सोधु, मय-विशेष (दे ७, ४)।
 रत्तच्छ पुं [दे] १ हंस । २ व्याघ्र (७, १३)।
 रत्तडि (अप) देखो रत्ति = रात्रि (पि ५६६)।
 रत्तय न [दे रत्तक] वन्धूक वृक्ष का फूल (दे ७, ३)।
 रत्ता स्त्री [रत्ता] एक नदी (सम २७, ४३, इक)। °वइप्पवाय पुं [°वतीप्रपात] ब्रह्म-विशेष (ठा २, ३—पत्र ७३)।
 रत्ति स्त्री [दे] आज्ञा हुकुम (दे ७, १)।
 रत्ति स्त्री [रात्रि] रात, निशा (हे २, ७६; कुमा, प्रासू ६०)। °अधय वि [°अन्धक] रात को नहीं देख सकनेवाला (गा ६६७, हेका २६)। °अर वि [°चर] १ रात में विहनेवाला। २ पुं. राक्षस (पड्)। °दिचह न [°दिवस] रात-दिन, अर्हनिश (पि ८८)। देखो राइ = रात्रि।
 रत्तिचर देखो रत्ति = अर (धर्मवि ७२)।
 रत्तिदिअह न [रात्रिदिवस] रात-दिन, अर्हनिश, निरन्तर (अचु ७८)।
 रत्तिदिय न [रात्रिन्दिव] ऊपर देखो रत्तिदिव (पउम ८, १६४, ७५, ८५)।
 रत्तिध वि [रात्र्यन्ध] जो रात में न देख सकता हो वह (प्रासू १७५)।
 रत्तीअ पु [दे] नापित, हजाम (दे ७, २, पात्र)।
 रत्तुप्पल न [रत्तोत्पाल] लाल कमल (पएह १, ४)।
 रत्तोआ स्त्री [रत्तोदा] एक नदी (इक)।
 रत्तोप्पल देखो रत्तुप्पल (नाट—मृच्छ १४५)।
 रत्था देखो रच्छा (गा ४०, अत १२; सुर १, ६६)।
 रद्ध वि [रद्ध, राद्ध] राधा हुआ, पक्व (पिड १६५, सुपा ६३६)।
 रद्धि वि [दे] प्रधान, श्रेष्ठ (दे ७, २)।
 रज वि रण (सुपा ४०१, कुमा)।
 रप्प सक [आ + क्रम्] आक्रमण करना।
 रप्पइ (प्राक ७३)।
 रप्प पुं [दे] बल्मीक, गुजराती में 'राफ़ो' (दे ७, १, पात्र)। २ रोग-विशेष, 'करि कंपु पायमूलिमु रप्पय' (सण)।

रप्पडिआ स्त्री [दे] गोधा, गोह (दे ७, ४)।
 रच्चा वि [दे] राव, यवाण (आ १४, उर २, १२, धर्मवि ४२)।
 रभस देखो रहस = रमस (गा ८७२, ८६४, ६३४)।
 रम अक [रम्] १ क्रीडा करना। २ सभोग करना। रमइ, रमए, रमते, रमिज्ज, रमेज्जा (कुमा)। भवि रमिस्सदि, रमिहिइ (कुमा)। कर्म रमिज्जइ (कुमा)। वहु. रमत, रममाण (गा ४४, कुमा)। सक रमिअ, रमिउ, रमिऊण, रतूण (हे २, १४६, ३, १३६, महा, पि ३१२), रमेप्पि, रमेप्पिणु, रमेवि (अप) (पि ५८८)। हेहु. रमिउ (उप पृ ३८)। क. रमिअव्व (गा ४६१), देखो रमणिज्ज, रमणीअ, रम्म। प्रयो रमावेंति (पि ५५२)।
 रमण न [रमण] १ क्रीडा, क्रीडन। २ सुरत, संभोग, रति-क्रीडा (पव ३८, कुमा, उप पृ १८७)। ३ स्मर-कूपिका, योनि (कुमा)। ४ पु. जघन, नितम्ब (पात्र)। ५ पति, वर, स्वामी (पउम ५१, १६, पिग)। ६ छन्द-विशेष (पिग)।
 रमणिज्ज वि [रमणीय] १ सुन्दर, मनोहर, रम्य (प्राप्र, पात्र, अमि २००)। २ न. एक देव-विमान (सम १७)। ३ पु नन्दीश्वर द्वीप के मध्य में उत्तर दिशा की ओर स्थित एक अञ्जन-गिरि (पव २६६ टी)। ४ एक विजय, प्रान्त-विशेष (ठा २, ३—पत्र ८०)।
 रमणी स्त्री [रमणी] १ नारी, स्त्री (पात्र, उप पृ १८७, प्रासू १५५, १८०)। २ एक पुष्करिणी (इक)।
 रमणीअ वि [रमणीय] रम्य, मनोरम (प्राप्र, स्वप्न ४०, गउड, सुपा २५५, भवि)।
 रमा स्त्री [रमा] लक्ष्मी, श्री (कुम्मा ३)।
 रमिअ देखो रम।
 रमिअ वि [रत] १ क्रीडित, जिसने क्रीडा की हो वह (कुमा ४, ५०)। २ न. रमण, क्रीडा (खाया १, ६—पत्र १६५, कुमा, सुपा ३७६, प्रासू ६५)।
 रमिअ वि [रमित] रमाया हुआ (कुमा ३, ८६)।

रमिर वि [रन्त] रमण करनेवाला (कुमा)।
 रम्म वि [रम्य] १ मनोरम, रमणीय, सुन्दर (पात्र, से ६, ४७, सुर १, ६६, प्रासू ७१)। २ पुं. विजय-विशेष, एक प्रान्त (ठा २, ३—पत्र ८०)। ३ चम्पक का गाछ (से ६, ४७)। ४ न. एक देव-विमान (सम १७)।
 रम्मगा } पुं [रम्यङ्ग] १ एक विजय, प्रान्त-
 रम्मय } विशेष (ठा २, ३—पत्र ८०)।
 २ एक युगलिक-क्षेत्र, जवू-द्वीप का वर्ष-विशेष (सम १२, ठा २, ३—पत्र ६७, इक)। ३ न. एक देव-विमान (सम १७)। ४ पर्वत-विशेष का एक कूट (जं ४)।
 रम्ह देखो रंफ। रम्हइ (प्राक ६५)।
 रय सक [रज्] रंगना, 'नो घोएजा, नो रएज्जा, नो घोयरत्ताई वर्याई धारेज्जा' (आचा)।
 रय सक [रचय्] बनाना, निर्माण करना।
 रयइ, रएइ (हे ४, ६४, पड्, महा)। कवहु. रइज्जत (से ८, ८७)।
 रय पुं [रजस्] १ रेणु, धूल (श्रौप, पात्र, कुप्र २१)। २ पराग, पुष्प-रज (से ३, ४८)। ३ साख्य-दर्शन में उक्त प्रकृति का एक गुण (कुप्र २१)। ४ वव्यमान कर्म (कुमा ७, ५८, चेइय ६२२, उव)। °त्ताण न [°त्राण] जैन मुनि का एक उपकरण (श्रोध ६६८, पएह २, ५—पत्र १४८)। °रसला स्त्री [°स्वला] ऋतुमती स्त्री (दे १, १२५)। °हर पुं [°हर] जैन मुनि का एक उपकरण (सबोव १५)। °हरण न [°हरण] वही अर्थ (राया १, १, कस)।
 रय वि [रत] १ अनुरक्त, आसक्त (श्रौप; उव, सुर १, १२, सुपा ३०६, प्रासू १६६)। २ स्थित (से ६, ४२)। ३ न रति-कर्म, मैथुन (सम १५, उव, गा १५५, स १८०, वज्जा १००, सुपा ४०३)।
 रय पुं [रय] वेग (कुमा, से २, ७, सण)।
 रय देखो रव (पउम ११४, १७)।
 रयग देखो रयय = रजक (आ १२; सुपा ५८८)।
 रयण न [रजन] रंगना, रंग-युक्त करना (सुम १, ६, १२)।

रुढ वि [रुढ] उगा हुआ, उत्पन्न (दस ७, ३५) ।

रुढि स्त्री [रुढि] परम्परा में चली आती प्रसिद्धि, 'पोसहसद्दोह्दीए एत्थ पन्वाणुवायओ भण्णिओ' (सुपा ६१६, कप्प) ।

रूप पु [रूप] पशु, जानवर (मृच्छ २००) ।
रुअ = रूप (ठा ६—पत्र ३६१) ।

रूपि पृ [रूपिन्] मौनिक, कसाई (मृच्छ २००) ।

रुरुइय न [दे] उत्सुकता, रणरणक (पात्र) ।

रुव पुन [रूप] १ आकृति, आकार (गाया १, १, पात्र) । २ सौन्दर्य, सुन्दरता (कुमा, ठा ४, २, प्रासू ४७, ७१) । ३ वर्ण, शुक्ल आदि रंग (औप, ठा १, २, ३) । ४ मूर्ति (विसे १११०) । ५ स्वभाव (ठा ६) । ६ शब्द, नाम । ७ श्लोक । ८ नाटक आदि दृश्य काव्य (हे १, १४२) । ९ एक की सख्या, एक (कम्म ४, ७७, ७८, ७९, ८०; ८१) । १०—११ रूपवाला, वर्णवाला (हे १, १४२) । १२—देखो रुअ, रूप = रूप ।
°कता देखो रुअ-कता (ठा ६—पत्र ३६१, इक) । °जक्ख पु [°यक्ष] धर्मपाठक (व्यव० भा० गा० ६१४) । °धार वि [°वार] रूप-धारी, 'जलयरमज्झणएण अणे-गमच्छाडरुवधारेण' (खा ६) । °पभा देखो रुअ-पभा (इक) । °मंत देखो °वत (पउम १२, ५७, ६१, २६) । °वई स्त्री [°वती] १ भूतानन्द नामक इन्द्र की एक अग्र-महिषी (ठा ६—पत्र ३६१) । २ सुरूप नामक भूतेन्द्र की एक अग्र-महिषी (ठा ४, १—पत्र २०४) । ३ एक धिक्कुमारी महत्तरिका (ठा ६) । °वत, °स्मि वि [°वत्] रूपवाला, सुरूप (आ १०, उवा, उप पृ ३३२, सुपा ४७४, उव) ।

रुवग पुन [रूपत्त] १ रूपया (उप पृ २८०, धम्म ८ टी, कुप्र ४१४) २ साहित्य-प्रसिद्ध एक अलंकार (सुर १, २६, विसे ६६६ टी) । देखो रुअग = रूपक ।

रुवमिणी स्त्री [दे] लावती स्त्री (दे ७, ६) ।

रुवय देखो रुवग (कुप्र १२३, ४१३, भास ३४) ।

रुवसिणी देखो रुवमिणी (पड्) ।

रुवा देखो रुआ (इक) ।

रुवि वि [रूपिन्] रूपगाला (आचा, भग, स ८३) ।

रुवि पुत्री [दे] गुच्छ विशेष, अकं-वृक्ष, आक का पेड़ (पण १—पत्र ३२, दे ७, ६) ।

रुस अक [रूप] गुस्ता करना । रुसइ, रुसए (उव, कुमा, हे ४, २३६, प्राकृ ६८, पड्) । कर्म. रुमिज्जइ (हे ४, ४१८) । हेक रुमिउ, रुमेउ (हे ३, १४१; पि ५७३) । कृ. रुसिअन्व, रुसेयन्व (गा ४६६, पण २, ५—पत्र १५०, मुर १६, ६४) । प्रयो, सक रुसविअ (कुमा) ।

रुसण न [रोपण] १ रोप, गुस्ता (गा ६७५, हे ४, ४१८) । २ वि. गुस्ताखोर, रोप करने-वाला (मुख १, १४, सवोध ४८) ।

रुसिअ वि [रुप्] रोप-युक्त (मुख १, १३, १६) ।

रे अ [रे] इन अर्थों का सूचक अव्यय—१ परिहास । २ अविशेष (सलि ४७) । ३ समापण (हे २, २०१, कुमा) । ४ आक्षेप (सलि ३८) । ५ तिरस्कार (पत्र ३८) ।

रेअ पुं [रेतस्] वीर्य, शुक्र (राज) ।

रेअव सक [मुच्] छोड़ना, त्यागना । रेअ-वइ (हे ४, ६१) ।

रेअविअ वि [मुक्त] छोड़ा हुआ, त्यक्त (कुमा, दे ७, ११) ।

रेअविअ वि [दे. रेचिन्] क्षणीकृत, शून्य किया हुआ, खाली किया हुआ (दे ७, ११, पात्र, से ११, २) ।

रेआ स्त्री [रे] १ घन । २ सुवर्ण, सोना (पड्) ।

रेइअ वि [रेचित] रिक्त किया हुआ (से ७, ३१) ।

रेकिअ वि [दे] १ आक्षिप्त । २ लीन । ३ व्रीहित, लज्जित (दे ७, १४) ।

रेकार पुं [रेकार] 'रे' शब्द, 'रे' की आवाज (पत्र ३८) ।

रेट्टि देखो रिट्टि (सलि ३) ।

रेणा स्त्री [रेणा] महर्षि स्थूलभद्र की एक भगिनी, एक जैन साध्वी (कप्प, पडि) ।

रेणि पुत्री [दे] पङ्क, कदंम (दे ७, ६) ।

रेणु पुंस्त्री [रेणु] १ रज, धूलि (कुमा) । २ पराग (स्वप्न ७६) ।

रेणुया स्त्री [रेणुका] ओपवि-विशेष (पण १—पत्र ३६) ।

रेभ पु [रेफ] १ 'र' अक्षर, रकार (कुमा) ।

२ वि. दुष्ट । ३ अवम, नीच । ४ क्रूर, निर्दय ।

५ कृपण, गरीब (हे १, २३६, पड्) ।

रेरिज्ज अक [राराज्य] अतिशय शोभना । वक्र. रेरिज्जमाण (गाया १, २—पत्र ७८, १, ११—पत्र १७१) ।

रेल्ल सक [प्लावय्] सराबोर करना । वक्र. रेल्लत्त (कुमा) ।

रेल्लि स्त्री [दे] रेल, स्रोत, प्रवाह (राज) ।

रेवडनक्खत्त पु [रेवर्तानअत्र] आर्य नाग-हन्त्री के शिष्य एक जैन मुनि (एदि ५१) ।

रेवइय पुं [रेवतिक] स्वर-विशेष, रैवत म्बर (अणु १२८) ।

रेवइय न [रेवतिक] एक उद्यान का नाम (कप्प) ।

रेवइआ स्त्री [रेवतिका] भूत-ग्रह विशेष (मुख २, १६) ।

रेवई स्त्री [रेवती] १ वलदेव की स्त्री (कुमा) ।

२ एक आर्विका का नाम (ठा ६—पत्र ४५५, सम १५४) । ३ एक नक्षत्र (सम ५७) ।

रेवई स्त्री [दे. रेवती] मातृका, देवी (दे ७, १०) ।

रेवत पुं [रेवन्त] सूर्य का एक पुत्र, देव-विशेष, 'रेवन्तणुमवा इव अस्सकिसोरा सुलक्खणिणो' (धर्मवि १४२, सुपा ५६) ।

रेवज्जिअ वि [दे] उपालब्ध (दे ७, १०) ।

रेवण पुं [रेवण] व्यक्ति-वाचक नाम, एक साधारण काव्य-ग्रन्थ का कर्ता (धर्मवि १४२) ।

रेवय न [दे] प्रणाम, नमस्कार (दे ७, ६) ।

रेवय पुं [रेवन] गिरनार पर्वत (गाया १, ५—पत्र ६६, अंत, कुप्र १८) ।

रेवय पु [रेवत] स्वर विशेष (अणु १२७) ।

रेवलिआ स्त्री [दे] वालुकावर्त, धूल का आवर्त (दे ७, १०) ।

रेवा स्त्री [रेवा] नदी-विशेष, नर्मदा (गा ५७८; पात्र, कुमा; प्रासू ६७) ।

चौदी का वरतन (गउड)। ^१मय वि [^०मय] चौदी का वना हुआ (गाया १, १—पत्र ५४, पि ७०)।

रयय पुं [रजक] घोड़ी (स २८६, पात्र)।

रयवली स्त्री [दे] शिशुत्व, बाल्य (दे ७, ३)।

रयवाडी देखो राय-वाडिआ (सिरि ७५८)।

रयाव सक [रचय्] बनवाना, निर्माण कराना। रयावेह, रयाविति, रयावेह (कप्प)। सक रयावेत्ता (कप्प)।

रयाविय वि [रचित] बनवाया हुआ (स ४३५)।

रझा स्त्री [दे] प्रियंगु, मालकाँगनी (दे ७, १)।

रझि पुष्पी [दे] लम्बा मधुर शब्द (माल ६०)।

रव सक [रु] १ कहना, बोलना। २ वच करना। ३ गति करना। ४ अक. रोना। ५ शब्द करना, 'सुद्धं रवति परिताए' (सूत्र १, ४, १, १८), रवइ (हे ४, २३३, सति ३३)। वहु रवत, रवेत (गाया १, १—पत्र ६५, पिग, औप)।

रव सक [रावय्] बुलवाना, आह्वान करना। वहु रवेत (औप)।

रव सक [दे] आद्र करना। भवि—रवेहिइ (एदि)।

रव पुं [रव] १ शब्द, आवाज (कप्प; महा, सण, भवि)। २ वि मधुर शब्दवाला, 'रवं अलसं कलमंजुलं' (पात्र)।

रव (अप) देखो रय = रजस् (भवि)।

रवेण } (अप) देखो रमण (भवि)।
रवण }

रवण न [रवण] आवाज करना, 'पद्मासन्ने य करेणुया सया रवणसीला आसी' (महा)।

रवण्ण } (अप) देखो रम्म = रम्य (हे ४, रवन्न } ४२२, भवि)।

रवय पुं [दे] मग्यान-दण्ड, विलोनेकी लकड़ी। गुजराती मे 'रवेयो' (दे ७, ३)।

रवरव अक [रोरुय्] १ खूब आवाज करना। २ वारंवार आवाज करना। वहु. रवरवंत (औप)।

रवि वि [रविन्] आवाज करनेवाला (से २, २६)।

रवि न [रवि] १ सूर्य, सूरज (से २, २६, गउड, सण)। २ राक्षस-वंश का एक राजा (पउम ५, २६२)। ३ अक वृक्ष, आक का पेड (हे १, १७२)। ^०तेअ पुं [^०तेजस्] १ इक्ष्वाकु वंश का एक राजा (पउम ५, ४)। २ राक्षस वंश का एक राजा, एक लकेश (पउम ५, २६५)। ^०तेया स्त्री [^०तेजा] एक विद्या (पउम ७, १४१)। ^०नदण पु [^०नन्दन] शनि-ग्रह (आ १२)। ^०पभ पुं [^०प्रभ] वानरद्वीप का एक राजा (पउम ६, ६८)। ^०भत्ता स्त्री [^०भक्ता] एक महौषधि (ती ५)। ^०भास पु [^०भास] खड्ग-विशेष, सूर्यहास खड्ग (पउम ५५, २६)। ^०वार पु [^०वार] दिन-विशेष, रविवार (कुप्र ४११)। ^०सुअ पुं [^०सुत] १ शनिधर ग्रह (से ८, २८, सुपा ३६)। २ रामचन्द्र का एक सेनापति, सुग्रीव (से १५, ५६)। ^०हास पुं [^०हास] सूर्यहास खड्ग (पउम ५३, २७)।

रविगय न [रविगत] जिसपर सूर्य हो वह नक्षत्र (वव १)।

रविय वि [दे] आद्र किया हुआ, मिजाया हुआ (विसे १४५६)।

रव्वारिअ पुं [दे] दूत, सदेश-हारक, 'जेण भवज्जो रव्वारिओ त्ति' (सुपा ४२८)।

रस सक [रस्] चिल्लाना, आवाज करना। रसइ (गा ४३६)। वहु. रसत (सुर २, ७४, सुपा २७३)।

रस पुन [रस] १ जिह्वा का विषय—मधुर, तिक्त आदि, 'एगे रसे', 'एव गवाई रसाई फामाई' (ठा १०—पत्र ४७१, प्रासू १७४)।

२ स्वभाव, प्रकृति (से ४, ३२)। ३ साहित्य-शास्त्र-प्रसिद्ध शृंगार आदि नव रस (उत्त १४, ३२, धर्मवि १३, सिरि ३६)। ४ जल, पानी (से २, २७, धर्मवि १३)।

५ सुख (उत्त १४, ३१)। ६ आसक्ति, दिलचस्पी (सत्त ५३, गउड)। ७ अनुराग, प्रेम (पात्र)। ८ मद्य आदि द्रव पदार्थ (पएह १, १, कुमा)। ९ पारद, पारा (निचू १३)।

१० भुक्त अन्न का प्रथम परिणाम, शरीरस्थ घातु-विशेष (गउड)। ११ कर्म-विशेष (कम्म २, ३१)। १२ छन्द शास्त्र-प्रसिद्ध प्रस्तार-

विशेष (पिग)। १३ माधुर्य आदि रसवाला पदार्थ (सम ११, नव २८)। ^०नाम न [^०नामन्] कर्म-विशेष (सम ६७)। ^०न्न वि [^०ज्ञ] रस का जानकार (सुपा २६१)। ^०भेइ वि [^०भेदिन्] रमवाली चीजो का भेल-सेल करनेवाला (पउम ७५, ५२)। ^०मंत वि [^०वत्] रस-युक्त (भग, ठा ५, ३—पत्र ३३३)। ^०वई स्त्री [^०वती] रसोई (सुपा ११)। ^०ल, ^०लु वि [^०वन्] रसवाला (हे २, १५६, सुख ३, १)। ^०वण पुं [^०पण] मद्य की दूकान (पव ११२)।

रस पुन [रस] निष्यन्द, निषोड, सार (दसनि ३, १६)।

रसन न [रसन] जिह्वा, जीभ (पएह १, १—पत्र २३, आचा)।

रसणा स्त्री [रसना] १ मेखला, काची (पात्र, गउड, से १, १८)। २ जिह्वा, जीभ (पात्र)। ^०ल वि [^०वत्] रसनावाला (सुपा ५५६)।

रसइ न [दे] बुझी-मूल, बूल्हे का मूल भाग (दे ७, २)।

रसा स्त्री [रसा] पृथिवी, धरती (हे १, १७७, १८०, कुमा)।

रसाउ पुं [दे रसायुप्] अमर, भौरा (दे ७, २, पात्र)।

रसाय पुं [दे] ऊपर देवो (दे ७, २)।

रसायण न [रसायन] वैद्यक-प्रसिद्ध औषध-विशेष (विपा १, ७, प्रासू १६२, भवि)।

रसाल पुं [रसाल] आन्न-वृक्ष, आम का गाछ (सम्मत १७३)।

रसाला स्त्री [दे रसाला] माजिता, पेय-विशेष (दे ७, २, पात्र)।

रसालु पुं [दे. रसालु] मजिका, राज-योग्य पाक-विशेष—दो पल घी, एक पल मधु, आधा आढक दही, बीस मिरचा तथा दस पल चीनी या गुड से बनता पाक (ठा ३, १—पत्र ११८, सुज २० टी, पव २५६)।

रसि देखो रस्सि (प्राकू २६)।

रसिअ वि [रसिक] १ रसन, रसिया, शीकीन (से १, ६)। २ रस-युक्त, रसवाला (सुपा २६, २१७, पउम ३१, ४६)।

रोमथ पु [रोमन्थ] पगुराना, चवाई हुई वस्तु का पुन चवाना, पागुर (से ६, ८७, पात्र, सण) ।

रोमन्थ } अक [रोमन्थय] चवाई हुई
रोमथाअ } चीज का फिर से चवाना, पगु-
राना, जुगाली करना । रोमथइ (हे ४, ४३) ।
वक्क रोमथाअमाण (चाह ७) ।

रोमग } पु [रोमक] १ अनार्य देश-विशेष,
रोमय } रोम देश (पव २७४) । २ रोम
देश मे रहनेवाली मनुष्य-जाति (पएह १,
१—पत्र १४) ।

रोमय पु [रोमज] पक्षि-विशेष, रोम की
पांखवाला पक्षी (जी २२) ।

रोमराड छी [दे] जघन, नितम्ब (दे ७, १२) ।

रोमलयासय न [दे] पेट, उदर (दे ७, १२) ।

रोमस वि [रोमश] रोम-युक्त, रोमवाला
(दे ३, ११, पात्र) ।

रोमूसल न [दे] जघन, नितम्ब (दे ७, १२) ।

रोर पु [रोर] चौथी नरक-भूमि का एक
नरकावास (ठा ४, ४—पत्र २६५) ।

रोर वि [दे] रक, गरीब, निर्बन (दे ७, ११,
पात्र सुर २, १०५, सुपा २६६) ।

रोरु पु [रोरु] सातवी नरक पृथिवी का एक
नरकावास (देवेन्द्र २४, इक) ।

रोरुअ पु [रोरुअ, रौरव] १ रत्नप्रभा नरक-
पृथिवी का दूसरा नरकेन्द्रक—नरकावास-
विशेष (देवेन्द्र ३) । २ रत्नप्रभा का तेरहवां
नरकेन्द्रक (देवेन्द्र ५) । ३ सातवी नरकपृथिवी
का एक नरकावास—नरक-स्थान (ठा ५,
३—पत्र ३४१, सम ५८, इक) । ५ चौथी
नरक-भूमि का एक नरकावास (ठा ४, ४—
पत्र २६५) ।

रोल पु [दे] १ कलह, झगडा (दे ७, १५) ।
२ रव, कोलाहल, कलकल आवाज (दे ७,
१५, पात्र, कुमा, सुपा ५७६, चेइय १८४,
मोह ५) ।

रोलव पु [दे रोलम्ब] भ्रमर, मधुकर (दे
७, २, कुप्र ५८) ।

रोला छी [रोला] छन्द-विधेय (पिंग) ।

रोव देखो रुअ=रुद । रोवइ (हे ४, २२६,
सक्ति ३६, प्राकृ ६८, पड, महा, सुर १०,
१७१, भवि) । वक्क रोवत, रोवमाण (पत्रम
१७, ३७, सुर २, १२४, ६, २३५, पत्रम

११०, ३५) । सक्र. रोविऊण (पि ५८६) ।
हेक. रोविउं (स १००) ।

रोव पु [दे रोप] पौधा, गुजराती में 'रोपो'
(सम्मत १४४) ।

रोवण न [रोदन] रोना (सुर ६, ७६) ।

रोवण न [रोपण] वपन, बीज बोना (वव
१) ।

रोवाविअ देखो रोआविअ (वज्जा ६२) ।

रोविअ वि [रोपित] १ बोया हुआ । २
स्थापित (से १३, ३०) ।

रोविंदय न [दे] गेय-विशेष, एक प्रकार का
गान (ठा ४, ४—पत्र २८५) ।

रोविर देखो रोइर (दे ७, ७, कुमा, हे २,
१४५) ।

रोविर वि [रोपयित] बोनेवाला (हे २,
१४५) ।

रोस देखो रुस । रोसइ (?) (घात्वा १५०) ।

रोस पु [रोप] गुस्मा, क्रोध (हे २, १६०,
१६१) । °इत्त, °इत वि [°वत्] रोप-
(सक्ति २०, प्राप्र) ।

रोसण वि [रोपण] रोप करनेवाला, गुस्माखोर
(उप १४७ टो, सुख १, १३) ।

रोसविअ वि [रोपित] कोपित, कुपित किया
हुआ (पत्रम ११०, १३) ।

रोसाण सक [मृज्] मार्जन करना, शुद्ध
करना । रोमाणइ (हे १, १०५, प्राकृ ६६,
पड) ।

रोसाणिअ वि [मृष्ट] शुद्ध किया हुआ,
मार्जित (पात्र, कुमा, पिंग) ।

रोसिअ देखो रोसविअ (पत्रम ६६, ११,
भवि) ।

रोह अक [रुह] उत्पन्न होना । रोहति
(गउड) ।

रोह देखो रुध । सक्र. रोहिऊण, रोदेउं
(काल, वृह ३) ।

रोह पुं [रोध] १ घेरा, नगर आदि का सैन्य
से वेष्टन (गाया १, ८—पत्र १४६, उप पृ
८४, कुप्र १५८) । २ रुकावट, रोक, अटकाव
(कुप्र १, द्रव्य ४६) । ३ कैद (पुष्प १८६) ।

रोह पृ [रोधस्] तट, किनारा (पात्र) ।

रोह पुं [रोह] १ एक जैन मुनि (भग) । २
प्ररोह, वण आदि का सूख जाना (दे ६,
६५) । ३ वि. रोहक, रोहण-कर्ता (भवि) ।
रोह पु [दे] १ प्रमाण । २ नमन । ३ मार्गण
(दे ७, १६) ।

रोहग वि [रोधक] घेरा टालनेवाला, अटकाव
करनेवाला, 'रोहगसजुत्तीए रोहिओ कुमारेण'
(म ६३५), 'रोहगसजुत्ती उण कीरउ' (सुर
१२, १०१) ।

रोहग देखो रोह=रोध (म ६३५, सुर
१२, १०१) ।

रोहग पुं [रोहक] एक नट-कुमार (उप पृ
२१५) ।

रोहगुत्त पु [रोहगुत्त] १ एक जैन मुनि
(कप्प) । २ त्रैराशिक मत का प्रवर्तक एक
आचार्य (विसे २४५२) ।

रोहण न [रोधन] १ अटकाव (आरा ७२) ।
२ वि. रोकनेवाला (द्रव्य ३४) ।

रोहण व [रोहण] १ चढ़ना, आरोहण (सुपा
४३८, कुप्र ३६६) । २ उत्पत्ति (विसे
१७५३) । ३ पुं. पर्वत-विशेष (सुपा ३२,
कुप्र, ६) । ४ एक दिग्गन्धि-कूट, (इक) ।

रोहिअ [दे] देखो रोउअ (दे ७, १२, पात्र,
पएह १, १—पत्र ७) ।

रोहिअ वि [रोधित] घेरा हुआ, 'रोहिय
पाडलिपुर तेण' (धर्मवि ६२, कुप्र ३६६, स
६३५) ।

रोहिअ वि [रोहित] १ सुलाया हुआ (घाव)
(उप पृ ७६) । २ पुं. द्वीप-विशेष (ज ४) ।
३ पु. मत्स्य विशेष (स २५५) । ४ न. वृण-
विशेष (पएण १—पत्र ३३) । ५ कूट-
विशेष (ठा २, ३, ८) ।

रोहिअंस पु [रोहितांग] एक द्वीप (ज ४) ।

रोहिअंस } छी [रोहिताशा] एक नदी
रोहिअसा } (सम २७, इक) । °पवाय पुं
[°प्रपात] ब्रह्म-विशेष (ठा २, ३, ज ४) ।

रोहिअप्पवाय पु [रोहिताप्रपात] ब्रह्म-विशेष
(ठा २, ३—पत्र ७२) ।

रोहिआ छी [रोहित, रोहिता] एक नदी
(सम २७, इक, ठा २, ३—पत्र ७२, ८०) ।

रोहिंसा छी [रोहिदशा] एक नदी (इक) ।

रोहिणिअ पुं [रोहिणेय] एक प्रसिद्ध चोर का
नाम (आ २७) ।

राइ देखो रत्ति (हे २, ८८, काप्र १८६, महा, पङ्) । २ चमरेन्द्र की एक अग्र-महिषी (ठा ५, १—पत्र ३०२) । ३ ईशानेन्द्र के सोम लोकपाल की एक पटरानी (ठा ४, १—पत्र २०४) । °भक्त न [°भक्त] रात्रि-भोजन, रात में खाना (सुपा ४८५) । °भोजन न [°भोजन] वही अर्थ (सम ३६, कस) । देखो राई = रात्रि ।

राइ बी [राजि] पंक्ति, श्रेणी (पात्र, औप) । २ रेखा, लकीर (कम्म १, १६, सुपा १६७) । ३ राई, राज-सर्पप, एक प्रकार का मसाला (दि ६, ८८) ।

राइ वि [रागिन्] राग-युक्त, रागवाला (दमा ६) । बी °णी (महा) ।

राइ वि [राजिन्] शोभनेवाला (निचू १६) । राई देखो राय = राजन् (हे २ १४८, ३, ५२, ५३, कुमा) ।

राइअ वि [राजित] शोभित (से १, ५६, कुमा, ६, ६३) ।

राइअ वि [रात्रिक] रात्रि-सम्बन्धी (उत्त २६, ४६, औप, पङि) ।

राइआ बी [राजिका] राई का गाछ, 'गोलाएईअ कच्छे चक्खतो राइआइ पत्ताइ' (गा १७१ अ) । देखो राइगा ।

राइद पु [राजेन्द्र] बड़ा राजा (कुमा) ।

राइदिअ पु [रात्रिन्दिव] रात-दिन, महोरात्र (भग, प्राचा, कप्प, पत्र ७८, सम २१) ।

राइक्क वि [राजकीय] राज-सम्बन्धी (हे २, १४८, कुमा) ।

राइगा बी [राजिका] राई, राज-सरसो (कुप्र ४५) ।

राइणिअ वि [रात्तिक] १ चारियवाला, समयी (पचा १२, ६) । २ पर्याय से ज्येष्ठ, साधुत्व-प्राप्ति की अवस्था से बड़ा (सम ३७, ५८, कप्प) ।

राइणिअ वि [राजकल्प] राजा के समान वैभववाला, श्रीमन्त (सूअ १, २, ३, ३) ।

राइण्ण १ पुं [राजन्य] राजवंशीय, क्षत्रिय राइअ १ (सम १५१, कप्प, औप, भग) ।

राइलेऊण संक्र. चोरकर (नदीटिप्पनक अ पिम पादलिप्तकथा वैनयिकी बुद्धि विषयक) ।

राइल वि [रागिन्] राग-युक्त (देवेन्द्र २७८) ।

राई बी [राजी] देखो राइ = राजि (गठड, सुपा ३४, मासू ६२, पत्र २५६) ।

राई बी [रात्रि] देखो राइ = रात्रि (पात्र, णाया २—पत्र १५०, औप, सुपा ४६१, कस) । °दिवस न [°दिवस] रात्रिदिवस, अर्हनिश (सुपा १२७) ।

राईमई बी [राजीमत्तो] राजा उग्रसेन की पुत्री और भगवान् नेमिनाथ की पत्नी (पङि) । राईव न [राजीव] जन्मल, पद्म (पात्र, हे १, १८०) ।

राईसर पुं [राजेश्वर] १ राजाओं के मालिक, महाराज । २ युवराज (औप, उवा, कप्प) ।

राउत्त पुं [राजपुत्र] राजपूत, क्षत्रिय (प्राकृ ३०) ।

राउल पुं [राजकुल] १ राजाओं का वृथ, राज-समूह (कुमा, हे १, २६७, प्राप्र) । २ राजा का वंश (पङ्) । ३ राज-गृह, दरवार, 'ए ईदिसस्स राउलस्स दूरेण पणामो कीरदि, जत्य वंमणावि एवं विहविज्जति' (मोह ११) । देखो राओल ।

राउलिय वि [राजकुलिक] राजकुल-सम्बन्धी (सुख २, ८७) ।

राउल देखो राइक (प्राकृ ३५) ।

राएसि पुं [राजपि] १ श्रेष्ठ राजा । २ अश्वि-नुत्य राजा, सयतात्मा भूपति (अभि ३६, विक्र ६८, मोह ३) ।

राओ अ [रात्रौ] रात में (णाया १, १—पत्र ६१, सुपा ४६७, कप्प) ।

राओल देखो राउल,

'तो किपि घण सयणेहि विलसियं किपि वाणिपुत्तोहि ।

किपि गयं राओले एस भूतत्ति भणिएण ॥ (धर्मवि १४०) ।

राग देखो राय = राग (कप्प, सुपा २४१) ।

रागि देखो राइ = रागिन् (पठम ११७, ४१) ।

राघव देखो राहव । °घरिणी बी [°गृहिणी] सीता, जानकी (पठम ४६, ५७) ।

राच १ [चूपै पै] देखो राय = राजन् (हे राचि° ४, ३२५, ३०४, प्राप्र) ।

राज देखो राय = राजन् (हे ४, २६७, पि १६८) ।

राजस वि [राजस] रजो-गुण-प्रधान, 'राज-सचित्तस्स पुरस्स' (कुप्र ४२८) ।

राडि बी [राटि] वृम, चित्ताहट (सुख २, १५) ।

राडि बी [दे राटि] सग्राम, लड़ाई (दे ७, ४) ।

राढा बी [राढा] १ विभूषा (धर्मस १०१८, कप्प) । २ मव्यता (वज्जा १८) । ३ वगाल का एक प्रान्त । ४ वगाल दश का एक नगरी (कप्प) । °इत्त वि [°वत्] मव्य आत्मा, 'गंजणरहिओ धम्मो राढाइत्ताण संपडइ' (वज्जा १८) । °मणि पु [°मणि] काच-मणि (उत्त २०, ४२) ।

राग सक [वि + नम्] विशेष नमना । राणइ (?) (धात्वा १४६) ।

राण पु [राजन्] राणा, राजा / चंड, सिरि ११४) ।

राणय पुं [राजक] १ राणा, राजा (तो १५, सिरि १२३, १२५) । २ छोटा राजा (सिरि ६८६, १०४०) ।

राणिआ १ बी [राज्ञिका, °झी] रानी, राज-राणी १ पत्नी (कुमा ३, आवक ६३ टी, सिरि १२५, २६७) ।

राम सक [रमय्] रमण कराना । कृ. रामेयव्य (भत्त ८५) ।

राम पुं [राम] १ श्री रामचन्द्र, राजा दशरथ का बड़ा पुत्र (गा ३५, उप पृ ३७५, कुमा) । २ परशुराम (कुमा १, ३१) । ३ क्षत्रिय परिव्राजक-विशेष (औप) । ४ बलदेव, बलभद्र, वासुदेव का बड़ा भाई (पात्र) । ५ वि. रमने-वाला (उप पृ ३७५) । °कण्ह पु [°कृष्ण] राजा श्रेणिक का एक पुत्र (राज) । °कण्हा बी [°कृष्णा] राजा श्रेणिक की एक पत्नी (भत्त २५) । °गिरि पु [°गिरि] पर्वत-विशेष (पठम ४०, १६) । °गुत्त पुं [°गुप्त] एक राजपि (सूअ १, ३, ४, २) । °देव पुं [°देव] श्रीरामचन्द्र (पठम ४५, २६) । °पुत्त पुं [°पुत्र] एक जैन मुनि (अनु २) । °पुरी बी [°पुरा] अयोध्या नगरी (तो ११) । °रक्षिआ बी [रक्षिता]

लंछण न [लाञ्छन] १ चिह्न, निशानी (पात्र) । २ नाम । ३ भ्रंजन, चिह्न करना (हे १, २५, ३०) ।

लंछणा स्त्री [लाञ्छना] चिह्न करना (सप ५२२) ।

लंछिअ वि [लाञ्छित] चिह्नित, कृत-चिह्न (पव १५४, णाया १, २—पत्र ८६, ठा ३, १, कम, कप्पू) ।

लंछुअ वि [दे लण्डित] उल्लिखित, 'चङ्ख-वादलुओ विअ वरडो पव्वदादो दूरं आरो-विअ पाडिदो म्हि' (चारु ३) ।

लंतक पु [लान्तक] १ एक देवलोक, लंतग } छठवाँ देवलोक (भग औप, अत, लंतय } इक) । २ एक देवविमान (सम २७, देवेन्द्र १३४) । ३ पष्ठ देवलोक के निवासी देव । ४ पष्ठ देवलोक का इन्द्र (राज, ठा २, ३—पत्र ८५) ।

लंद पुन [लन्द] काल, समय (कप्प, पव) ७०) ।

लंदय पुन [दे] कलन्दक, गो आदि का खादन-पात्र (पव २) ।

लंपड वि [लम्पट] लोलुप, लालची, लुब्ध (पात्र, सुपा १०७, ५६६, सुर ३, १०) ।

लपाग पु [लम्पाक] देश विशेष (पउम ६८, ५६) ।

लंपिक्ख पु [दे] चोर, तस्कर (दे ७, १६) ।

लव सक [लम्ब] १ सहारा लेना, आलम्बन करना । २ अक लटकना । लवेइ (महा) । वक्क लवत, लवमाण (औप, सुर ३, ७१, ४, २४२, कप्प, वसु) । सक्क लविऊण (महा) ।

लव वि [लम्ब] लम्बा, दीर्घ, 'लुट्ठा लवुस्स चव लवा' (उवा, णाया १, ८—पत्र १३३) ।

लव पु [दे] गोवाट, गो बाड़ा (हे ७, २६) ।

लवअ न [लम्बक] ललन्तिका, नाभि-पर्यन्त लटकती माला आदि (स्वप्न ६३) ।

लवणा स्त्री [लम्बना] रज्जु, रस्सी (स १०१) ।

लंवा स्त्री [दे] १ वल्लरी, लता (पड्) । २ केश, बाल (पड्, दे ७, २६) ।

लवार्हा स्त्री [दे] पुष्प-विशेष (दे ७, १६) ।

लवि वि [लम्बिन्] लटकता (गउड) ।

लविअ } वि [लम्बिन्] १ लटकता हुआ लविअय } (गा ५३२, सुर ३, ७०) । २ पुं वानप्रस्थ का एक भेद (ओप) ।

लविर वि [लम्बितृ] लटकनेवाला (कुमा, गउड) ।

लवुअ वि [लम्बुअ] १ लम्बी लकड़ी के अन्त भाग में बँधा हुआ मिट्टी का ढेला । २ भीत में लगा हुआ ईंटों का समूह (मुच्छ ६) ।

लवुत्तर पुन [लम्बोत्तर] कायोत्सर्ग का एक दोष, चोलपट्टे को नाभि मडल से ऊपर रख-कर और जानु को चोलपट्टे में नीचे रख कर कायोत्सर्ग करना (चेइय ४८४) ।

लवूस पुन [दे लम्बूप] कन्दुक के आकार का एक आभरण, 'छत चमर-पडाया दण्ण-लवूमया वियाणं च' (पउम ३२, ७६, ६६, १२) ।

लवोदर } वि [लम्बोदर] १ बड़ा पेटवाला लवोयर } (सुख १, १४, उवा) । २ पुं गणपति, गणेश (आ १२, कुप्र ६७) ।

लभ सक [लम्] प्राप्त करना, 'अज्जेवाह न लंभामि अवि लाभो सुए मिया' (उत्त २, ३१) । भवि, लभम्म (पि ५२५) । कपं. लभीअदि, लभीआमो (शौ) (पि ५४१) । सक. लभिअ, लभित्ता (मा १६, नाट—चैत ६१, ठा ३, २) ।

लभ सक [लम्भय] प्राप्त करना । सक. लभिअ (नाट—चैत ४४) । कृ लभइदव्व (शौ), लभणिज्ज लभणीअ (मा ५१, नाट—मालती ३६, चैत १२५) ।

लभ पुं [लभ] प्राप्ति (पउम १००, ४३, से ११, ३१, गउड, सिरि ८२२, सुपा ३६४) । देखो लाह = लाभ ।

लभण पुं [लम्भन] मत्स्य की एक जाति (विपा १, ८ टी—पत्र ८४) ।

लभिअ देखो लंभ = लम्, लम्भय ।

लभिअ वि [लब्ध] प्राप्त (नाट—चैत १२५) ।

लंभिअ वि [लम्भित] प्राप्त कराया हुआ, प्रापित (सुअ २, ७, ३७, स ३१०, अन्नु ७१) ।

लक्कुड न [दे. लकुट] लकड़ी, यष्टि, छड़ी, लाठी (दे ७, १६, पात्र) ।

लक्ख सक [लक्षय] १ जानना । २ पहचानना । ३ देखना । लक्खइ (महा) । कर्म. लक्खिअए, लक्खीयमि (विसे २१४६, महा, काल) । कवक्क लक्खिअज्जत (से ११, ४५) । कृ लक्खणीअ (नाट—शकु २४), देखो लक्ख = लक्ष्य ।

लक्ख पुन [दे] वाय, शरीर, देह (दे ७, १७) ।

लक्ख पुन [लक्ष] सख्या-विशेष, लाख, मौहजार (जी ४५, सुपा १०२, २४८, कुमा, प्रासू ६६) । 'पाग पु [पाक] लाख रूपों के व्यय से बनता एक तरह का पाक (ठा ६) ।

लक्ख वि [लक्ष्य] १ पहचानने योग्य, 'चिर-लक्खगो' (पउम ८२, ८४) । २ जिससे जाना जाय वह, लक्षण, प्रकाशक, 'बुद्धदम्पवी-अलक्खं चाव' (से ५, १७) । ३ वेद्य, निशाना, 'लक्खविचण—' (धर्मवि ५२, दे २, २६, कुमा) ।

लक्खं देखो लक्खा (पडि) ।

लक्खग वि [लक्षक] पहचाननेवाला (पउम ८२, ८४ कुप्र ३००) ।

लक्खण पुन [लक्षण] १ इतर से भेद का बोधक चिह्न । २ वस्तु-स्वरूप (ठा ३, ३, ४, १, जी ११, विसे २१४६, २१४७, २१४८) । ३ चिह्न, 'लक्खणपुण्ण' (कुमा) । ४ व्याकरण-शास्त्र, 'लक्खणमाहितपमाण-जोइमाईणि सा पठइ' (सुपा १४१, ६५७) । ५ व्याकरण आदि का सूत्र । ६ प्रतिपाद्य, विषय (हे २, ३) । ७ पु लक्ष्मण । ८ मारस पत्नी, 'लक्खणो' (प्राक्क २२) । 'स्वच्छर पु [संचत्सर] वर्ष-विशेष (सुज १०, २०) ।

लक्खण पुं [लक्ष्मण] श्रीराम का छोटा भाई (से १, ४८) । देखो लखमण ।

लक्खण न [लक्षण] कारण, हेतु (दसनि १, १४) ।

लक्खणा स्त्री [लक्षणा] १ शब्द-वृत्ति विशेष, शब्द की एक शक्ति, जिससे मुख्य अर्थ के बाध होने पर भिन्न अर्थ की प्रतीति होती है (दे १, ३) । २ एक महौपधि (ती ५) ।

लक्खणा स्त्री [लक्ष्मणा] १ आठवें जिनदेव की माता (मम १५१) । २ उसी जन्म में मुक्ति

रायाण देखो राय = राजन्, (हे ३, ५६, पङ्.) ।

राल पुन [राल, °क] वाच्य-विशेष, रालग एक प्रकार की कँगु (सूत्र २, २, रालय १०, ठा ७—पत्र ४०५, पिङ १६२, बज्जा ३४) ।

राला बी [दे] प्रियगु, मालकांगनी (दे ७, १) ।

राव सक [दे] आद्रं करना । भवि, रावेहिति (विने २४६ टी) ।

राव देखो रज = रज्य् । रावेइ (हे ४, ४६) । हेइ, राविउ (कुमा) ।

राव सक [रायय्] पुकारना, आह्वान करना । वहु, रावेत (श्रीप) ।

राव पुं [राव] १ रोला, कलकल (पात्र) । २ पुकार, आवाज (सुपा ३४८, कुमा) ।

रावण पु [रावण] १ एक स्वनाम प्रसिद्ध लका-पति (पि ३६०) । २ गुल्म-विशेष (पण १—पत्र १२) ।

राविअ वि [रञ्जिन] रंगा हुआ (दे ७, ५) ।

राविअ वि [दे] आस्वादित (दे ७, ५) ।

रास पु [राम, °क] एक प्रकार का नृत्य, रासग जिममें एक दूसरे का हाथ पकड़कर नाचते-नाचते और गान करते-करते मडलाकार फिरना होता है (दे २, ३८, पात्र, बज्जा १२२, सम्मत १४१, धर्मवि ८१) ।

रासभ देखो रासभ (सुर २, १०२) ।

रासय देखो रासग (सुर १, ४६, सुपा ५०, ४३३) ।

रासह पुं [रासभ] गर्दभ, गदहा (पात्र, प्राप्र, रमा) । बी ही (काल) ।

रासाणंदिअय न [रासानन्दितक] छन्द-विशेष (अजि १२) ।

रासालुद्धय पुं [रासालुद्धक] छन्द-विशेष (अजि १०) ।

रासि देखो रासि (संक्षि १७) ।

रासि पुं [राशि] १ समूह, ढग, ढेर (भोघ ४०७, श्रीप, सुर २, ५, कुमा) । २ ज्योतिष्क-प्रसिद्ध मेघ आदि बारह राशि (विचार १०६) । ३ गणित-विशेष (ठा ४, ३) ।

राह पुं [राध] १ वैशाख मास । २ वसन्त ऋतु (से १, १३) । ३ एक जैन आचार्य (उप २८५, सुख २, १५) ।

राह पु [दे] १ दयित, प्रिय । २ वि. निरन्तर । ३ शोभित । ४ सनाथ । ५ पलित, सफेद केशवाला (दे ७, १३) । ६ रुचिर, सुन्दर (पात्र) ।

राहअ पु [राध] १ रघुवश में उत्पन्न राहव (उत्तर २०) । २ श्रीरामचन्द्र (से १२, २२, १, १३, ४७) ।

राहा बी [राधा] १ वृत्तावन की एक प्रधान गोपी, श्रीकृष्ण की पत्नी (बज्जा १२२, पिग) । २ रावावेध में रखी जाती पुतली (उप पु १३०) । ३ शक्ति-विशेष । ४ कर्ण का पालन करनेवाली माता (प्राक ४२) । ५ मडव पुं [मण्डप] जहाँ पर रावावेध किया जाय वह स्थान (सुपा २६६) । ६ वेह पु [वेध] एक तरह की वेध-क्रिया, जिसमें चक्राकार धूमती पुतली की वाम चक्षु वीधी जाती है (उप ६३५, सुपा २५५) ।

राहिआ बी [राधिका] ऊपर देखो (गा राही ८६, हे ४, ४४२, प्राक ४२) ।

राहु पुं [राहु] १ ग्रह-विशेष (ठा २, ३—पत्र ७८, पात्र) । २ कृष्ण पुद्गल-विशेष (सुज्ज २०) । ३ विक्रम की पहली शताब्दी के एक जैन आचार्य (पठम ११८, ११७) ।

राहुहय न [राहुहत] जिममें सूर्य और चन्द्र का ग्रहण हो वह नक्षत्र (वव १) ।

राहेअ पुं [रावेय] राधा-पुत्र, कर्ण (गउड) ।

रि अ [रे] संभाषण-सूचक श्रव्यय (तंडु ५०, ५२ टी) ।

रि सक [अट] गमन करना । कर्म. अज्जए (विसे १३६६) ।

रिअ सक [री] गमन करना । रियइ, रियति, रिए (सूत्र २, २, २०, सुपा ४४५, उत २४, ४) । वहु, रियंत (पठम २८, ४) ।

रिअ सक [प्र + अवश] प्रवेश करना, पैठना । रिअइ (हे ४, १८३, कुमा) ।

रिअ न [अट] १ गमन, 'पुरमो रियं सोह-माणे' (भग) । २ सत्य (भग ८, ७) ।

रिअ वि [दे] लून, काटा हुआ (पङ्.) ।

रिउ देखो उउ (हे १, १४१, कुमा, पव १४१) ।

रिउ वि [अजु] १ सरल, सीधा (सुपा ३४६) । २ न. विशेष पदार्थ. तामान-भिन्न वस्तु (पव २७०) । ३ सुन पुं [भूत्र] नय-विशेष (विसे २२३१, २६०८) । देखा उज्जु । रिउ पु [रिपु] शत्रु, वैरी, दुश्मन (सुर २, ६६, कुमा) । ४ महण पु [मण] राक्षस-वश का एक राजा (पठम ५, २६३) ।

रिउ बी [अच] वेद का नियत अक्षर-पादनाला अक्षर । ५ उदे पु [उदे] एक वेद-ग्रंथ (गाया १, ५, कप्य) ।

रिखण न [रिद्धण] सर्पण, गति, चाल (पठम २५, १२) ।

रिखि वि [रिद्धिन्] चलनेवाला, 'गिद्धाव-रिखि हद्वए (गिद्धु वव रिखी हद्वए)' (पिङ ४७१) ।

रिंग देखो रिग । रिगइ, रिगए (हे ४, २५६ टी, पङ्, पिग) । वहु, रिंगत (हास्य १४६) ।

रिंगण न [रिङ्गण] चलना, सर्पण (पव २) ।

रिंगणी बी [दे] वल्लो-विशेष, कण्टकारिका, गुजराती में 'रिंगणी' (दे २, ४, उर २, ८) ।

रिंगिअ न [दे] भ्रमण (दे ७, ६) ।

रिंगिअ न [रिङ्गित] १ रेंगना, कच्छन की तरह हाथ के बल चलना । २ गुरु-चन्दन का एक दोष (गुभा २४) ।

रिंगिसिया बी [दे] वाद्य-विशेष (राज) ।

रिंछ (अप) देखो रिच्छ = ऋक्ष (भवि) ।

रिछोली बी [दे] पत्ति, श्रेणी (दे ७, ७, सुर ३, ३१, विने १४३६ टी, पात्र, चेइय ४४, सम्मत १८८, धर्मवि ३७, भवि) ।

रिडो बी [दे] कन्याप्राया, कन्या की तरह का फटा-टूटा आच्छादन-वस्त्र (दे ७, ५) ।

रिक्क वि [दे] स्तोक, थोड़ा (दे ७, ६) ।

रिक्क देखो रिक्त = रिक्त (आचा, पात्र; पठम ८, ११८, सुपा ४२२, चउ ३६) ।

रिक्किअ वि [दे] शक्ति, मठा हुआ (दे ७, ७) ।

रिक्ख अक [रिद्ध्व] चलना । वहु, 'गिरिक्ख अचिद्धन्मपक्खो अंतरिक्खे रिक्खतो लक्खिज्जइ' (कुप्र ६७) ।

लज्जु वि [लज्जावत्] लज्जावाला, 'एसणा-
समिश्रो लज्जु गामे अनियमो चरे' (उत्त ६,
१७)।

लज्जु देखो रिज्जु = ऋजु (भग)।

लज्जु देखो लभ।

लट्ट } न [दे] १ खसखस आदि का तेल
लट्टय } (पभा ३१)। २ कुसुम्भ, 'लट्टयव-
सणा' (दे ७, १७)।

लट्टा बी [दे] लट्टा] धान्य विशेष, कुसुम्भ
धान्य (पव १५४)।

लट्टा बी [लट्टा] १ वृक्ष-विशेष (कुमा)।
२ कुसुम्भ (बृह १)। ३ गौरैया, पक्षि-
विशेष। ४ भ्रमर, भौरा। ५ वाद्य-विशेष
(दे २, ५५)।

लट्ट वि [दे] १ अन्यासक्त (दे ७, २६)। २
मनोहर, सुन्दर, रम्य (दे ७, २६, पात्र,
याया १, १, पणह १, ४, सुर १, २६,
कुप्र ११, श्रु ६, पुष्प ३४, सार्ध २१, घण
५, मुपा १५६)। ३ प्रियवद, प्रिय-भाषी
(दे ७, २६)। ४ प्रधान, मुख्य, 'खमियवो
भवराहो ममावि पाविट्टलट्टम्स' (उप ७२८
टी)। ५ दंत पुं [°दन्त] १ जैन मुनि (अनु
१)। २ द्वीप-विशेष, एक अन्तर्द्वीप। ३
द्वीप-विशेष मे रहनेवाला मनुष्य (ठा ४,
२—पत्र २२६, इक)।

लट्टरी बी [दे] सुन्दर, रमणीय (कुप्र २१०)।
लट्टि बी [यट्टि] लाठी, छडी (श्रौप, कुमा)।
लट्टिअ न [दे] खाद्य-विशेष, 'जेट्टाहि लट्टिएण
भोच्चा कज्ज साहिति' (सुज्ज १०, १७)।

लट्टह वि [दे] १ रम्य, सुन्दर (७, १७, सुपा
६, सिरि ४७, ८७५, गउड, श्रौप, कप्प,
कुमा, हेका २६५, सण, भवि)। २ सुकुमार,
कोमल (काप्र ७६५, भवि)। ३ विदग्ध,
चतुर (दे ७, १७)। ४ प्रधान, मुख्य (कुमा)।

लट्टहक्खमिअ वि [दे] विघटित, विद्युक्त
(दे ७, २०)।

लट्टहा बी [दे] विलासवती बी (पड्)।

लट्टाल देखो णट्टाल (प्राक् ३७, पि २६०)।

लट्टिय न [दे] लाड, छोह, प्यार (भवि)।

लट्टुअ } पु [लट्टुअ] लट्टू, मोदक
लट्टुअ } (गा ६४१, प्रयी ८३, कुप्र २०६,
भवि, पठम ८४, ४, पिड ३७७)।

लट्टुअर वि [लट्टुअर] लट्टु वनाने-
वाला, हलवाई (कुप्र २०६)।

लट्ट सक [स्मृ] स्मरण करना, याद करना।

लट्ट (हैं ४, ७४)। वक. लट्टंत (कुमा)।

लट्टिअ वि [स्मृत] याद किया हुआ (पात्र)।

लट्ट वि [लट्ट] १ चिकना, मसूण (सम
१३७, ठा ४, २, श्रौप, कप्प)। २ अल्प,
थोडा। ३ न लोहा, धातु-विशेष (दे २,
७७, प्राक् १८)।

लट्ट वि [लट्ट, लपिन] उक्त, कथित (मुपा
२३४)।

लट्टा } बी [दे] १ लात, पाणि-प्रहार
लट्टिआ } (मुपा २३८, ठा २, ३—पत्र
६३)। २ आतोद्य-विशेष (ठा २, ३, आचा
२, ११, ३)।

लट्टण } (मा) देखो रयण = रत्न (अभि
लट्टन } १८४, प्राक् १०२)।

लट्ट सक [दे] भार भरना, बोझ डालना,
लादना, गुजराती मे 'लादवु'। हेक्. लट्टेउं
(मुपा २७५)।

लट्टण न [दे] भार-क्षेप लादना (स ५३७)।

लट्टी बी [दे] हाथी आदि की विष्ठा, गुजराती
मे 'लोद' (मुपा १३७)।

लट्ट वि [लट्ट] प्राप्त (भग, उवा, श्रौप,
हे ३, २३)।

लट्टि बी [लट्टि] १ क्षयोपशम, ज्ञान आदि
के आवारक कर्मों का विनाश और उपशान्ति
(विसे २६६७)। २ सामर्थ्य-विशेष, योग
आदि से प्राप्त होती विशिष्ट शक्ति (पव
२७०, सबोध २८)। ३ अहिंसा (पणह २,
१—पत्र ६६)। ४ प्राप्ति, लाभ (भग ८,
२)। ५ इन्द्रिय और मन से होनेवाला विज्ञान,
श्रुत ज्ञान का उपयोग (विसे ४६६)। ६
योग्यता (अणु)। ७ पुलाअ पु [°पुलाअ]
लट्टि-विशेष सपन्न मुनि, 'संघादयाण कज्जे
चुरिएणज्जा चक्खवट्टिमवि जीए। तीए लट्टीह
जुत्थो लट्टिपुलाओ' (संबोध २८)।

लट्टिअ वि [लट्ट] प्राप्त (वै ६६)।

लट्टिल वि [लट्टिअ] लट्टि-युक्त (पंच
१, ७)।

लट्टुअ } देखो लभ।
लट्टुअ }

लप्पसिया बी [दे] लपमी, एक प्रकार का
पकान्न (पव ४)।

लठ्ठ नीचे देखो।

लभ सक [लभ्] प्राप्त करना। लभइ,
लभए (आचा, कस, विसे १२१५)। भवि
लच्छिमि, लभिस्सं, लभिस्सामि (उव, महा,
पि ५२५)। कर्म लज्जइ, लज्जइ (महा
६०, १६, हे १, १८७, ४, २४६, कुमा)।
सक लभिय, लट्टुअ, लट्टुअण (पंच ५,
१६४, आचा, काल)। हेक्. लट्टुअ (काल)।
क लठ्ठ (पणह २, १, विसे २८३७, मुपा
११, २३३, स १७५, सण)।

लय सक [ला] ग्रहण करना। लणइ, लयति
(उव)। कर्म—लज्जणइ, लिज्जणइ (भवि,
सिरि ६६३)। वक. लयत (वज्जा २८,
महा, सिरि ३७५)। सक लड, लणवि,
लणविणु (अप) (पिंग, भवि)। देखो
ले = ला।

लय न [दे] नव-दम्पति का आपस मे नाम
लेने का उत्सव (दे ७, १६)।

लय देखो लय = लव (गउड, से ५, १४)।

लय पु [लय] १ श्लेष। २ मन की साम्या-
वस्था (कुमा)। ३ लीनता, तल्लीनता। ४
तिरोभाव (विसे २६६६)। ५ सगीत का
एक अंग, स्वर-विशेष (न ७०४, हास्य
१२३)।

लय देखो लया। °हरय न [°गृहक] लता-
गृह (मुपा ३८१)।

लय पु [लय] तन्त्री का स्वन—ध्वनि-विशेष।
°सम न [°सम] गेय काव्य का एक भेद
(दसनि २, २३)।

लयग न [लताङ्ग] संख्या-विशेष, चौरासी
लाख पूर्व, 'पुव्वाण सयसहस्स चुलसीइणुण
लयंगमिह होइ' (जो २)।

लयण वि [दे] १ तनु, कृश, क्षाम (दे ७,
२७, पात्र)। २ मृदु, कोमल। ३ न वल्ली,
लता (दे ७, २७)।

लयण न [लयन] १ तिरोभाव, छिपना
(विसे २८१७, दे ७, २४)। २ अवस्थान
(सुर ३, २०६)। ३ देखो लेण (राज)।

लयणी बी [दे] लता, वल्ली (पात्र, षड्)।

रीड सक [मण्डय्] अलकृत करना । रीडइ (हे ४, ११५) ।

रीडण न [मण्डन] अलकरण (कुमा) ।

रीड लीन [दे] अवगणन, भनादर (दे ७, ८) । ली. °डा (पाय, धम्म ११ टी, पचा २, ८, वृह १) ।

रीण वि [रीण] १ क्षरित, स्तुत । २ पीडित (भक्त २) ।

रीर अक [राज्] शोभना, चमकना, दीपना । रीरइ (हे ४, १००) ।

रीरिअ वि [राजिन] शोभित (कुमा) ।

रीरी ली [रीरी] घातु-विशेष, पीतल (कुप्र ११, सुपा १४२) ।

रु ली [रुज्] रोग, बीमारी, 'अरु (? ल) उवसगो' (तंदु ४६) ।

रुअ अक [रुद्] रोना । रुअइ (पह्, सज्जि ३६, प्राकृ ६८, महा) । भवि. रोच्छं (हे ३, १७१) । वहु. रुअ°, रुअंत, रुयमाण (गा २१६, ३७६, ४००, सुर २, ६६, ११२, ४, १२६) । सकृ. रोत्तूण (कुमा, प्राकृ ३४) । हेऊ रोत्तुं (प्राकृ ३४) । कृ. रोत्तव्व (हे ४, २१२, से ११, ६२) । प्रयो. रुयावेइ (महा), रुयावति (पुष्क ४४७) ।

रुअ न [रुत] शब्द, आवाज (से १, २८, गाय १, १३, पव ७३ टी) ।

रुअ देखो रुअ = रूप (इक) ।

रुअ देखो रुअ = (दे) (औप) ।

रुअती ली [रुदती] वल्ली-विशेष (संवीव ४७) ।

रुअस देखो रुअस (इक) ।

रुअग पुं [रुचक] १ कान्ति, प्रभा (परह १, ४—पत्र ७८, औप) । २ पर्वत-विशेष, 'नगुत्तमो होइ पव्वगो रुयगो' (दीव) । ३ द्वीप-विशेष (दीव) । ४ एक समुद्र (सुज १६) । ५ एक विमानावास—देव-विमान (देवेन्द्र १३२) । ६ न. इन्द्रो का एक आभाष्य विमान (देवेन्द्र २६३) । ७ रत्न-विशेष (सत्त ३६, ७६, सुख ३६, ७६) । ८ रुचक पर्वत का पाँचवाँ कूट (दीव) । ९ निपष पर्वत का आठवाँ कूट (इक) । °प्पभ न [प्रभ] महाहिमवत पर्वत का एक कूट

(ठा २, ३) । °वर पुं [°वर] १ द्वीप-विशेष (सुज १६) । २ पर्वत-विशेष (परह २, ४—पत्र १३०) । ३ समुद्र-विशेष । ४ रुचकवर समुद्र का एक अविष्ठाता देव (जीव ३—पत्र ३६७) । °वरमह पुं [°वरमह] रुचकवर द्वीप का अविष्ठाता देव (जीव ३—पत्र ३६६) । °वरमहाभट्ट पुं [°वरमहाभट्ट] वही अर्थ (जीव ३) । °वरमहावर पुं [°वरमहावर] रुचकवर समुद्र का एक अविष्ठाता देव (जीव ३) । °वरावभास पुं [°वरावभास] १ द्वीप-विशेष । २ समुद्र-विशेष (जीव ३) । °वरावभासमह पुं [°वरावभासमह] रुचकवरवरावभास द्वीप का एक अविष्ठाता देव (जीव ३) । °वरावभासमहाभट्ट पुं [°वरावभासमहाभट्ट] वही अर्थ (जीव ३) । °वरावभासमहावर पुं [°वरावभासमहावर] रुचकवरवरावभास नामक समुद्र का एक अविष्ठाता देव (जीव ३) । °वरावभासवर पुं [°वरावभासवर] वही अर्थ (जीव ३—पत्र ३६७) । °वरोद पुं [°वरोद] समुद्र-विशेष (सुज १६) । °वरोभास देखो °वरावभास (सुज १६) । °वई ली [°वनी] एक इन्द्राणी (गाय २—पत्र २५२) । °ोद पुं [°ोद] समुद्र-विशेष (जीव ३—पत्र ३६६) ।

रुअगिद पुं [रुचकेन्द्र] पर्वत-विशेष (सम ३३) ।

रुअगुत्तम न [रुचकोत्तम] कूट-विशेष (इक) ।

रुअण न [रोदन] रुदन, रोना (संवीव ४) ।

रुअय देखो रुअग (सम ६२) ।

रुअरुइआ ली [दे] उत्कण्ठा (दे ७, ८) ।

रुआ ली [रुज्] रोग, बीमारी (उव, धर्मसं ५६८) ।

रुआविअ वि [रोदित] रुनाया हुआ (गा ३८६) ।

रुइ ली [रुचि] १ कान्ति, प्रभा, तेज (सुर ७, ४, कुमा) । २ अनुराग, प्रेम (जो ५१) । ३ आसक्ति (प्रासु १६६) । ४ स्पृहा, अभिलाष । ५ शोभा । ६ बुझा, खाने की इच्छा । ७ गीरोचना (पह्) ।

रुइअ वि [रुचित] १ अभीष्ट, पसंद (सुर ७, २४३, महा) । २ पुंन. विमानावास-विशेष, एक देव-विमान (देवेन्द्र १३२) ।

रुइअ देखो रुण्ण = वदिन (स १२०) ।

रुइर वि [रुचिर] १ सुन्दर, मनोरम (पाय) । २ दीप्त, कान्ति-युक्त (तंदु २०) । ३ पुंन. एक विमानेन्द्रक, देवविमान-विशेष (देवेन्द्र १३१) ।

रुइर वि [रोदित्] रोनेवाला । ली. °री (पि ५६६, गा २१६ अ) ।

रुइल वि [°रुचिर, °ल] १ शोभन, सुन्दर (औप, गाय १, १ टी, तंदु २०) । २ दीप्त, चमकता हुआ (परह १, ४—पत्र ७८, सुअ २, १, ३) । ३ पुंन. एक देव-विमान (सम ३८) ।

रुइल न [रुचिर, रुचिमत्] एक देव-विमान (सम १५) । °कंन न [°कान्त] एक देव-विमान (सम १५) । °कूड न [°कूट] एक देव-विमान (सम १५) । °उक्कय न [°ध्वज] देवविमान-विशेष (सम १५) । °प्पभ न [°प्रभ] एक देवविमान (सम १५) । °लेस न [°लेश्य] एक देवविमान (सम १५) । °वण्ण न [°वण] देवविमान-विशेष (सम १५) । °सिग न [°शृङ्ग] एक देवविमान (सम १५) । °सिट्ट न [°सृष्ट] एक देवविमान (सम १५) । °वित्त न [°वित्त] एक देवविमान (सम १५) ।

रुइल्लुत्तरवडिसग न [रुचिरोत्तरावत रु] एक देवविमान (सम १५) ।

रुंच सक [रुच्छ] रुई से उमके बीज को अलग करने की क्रिया करना । वहु. रुंचन (पिड ५७४) ।

रुंचण न [रुच्चन] रुई से कपाम को अलग करने की क्रिया (पिड ५८८) ।

रुचणी ली [दे] घरट्टो, दलने का पत्थर-यन्त्र (दे ७, ८) ।

रुज अक [रु] आवाज करना । रंजइ (हे ४, ५७, पह्) ।

रंजग पुं [दे रुञ्ज रु] वृक्ष, पेड़, गाछ 'कुहा महीरुहा वच्छा रोवगा रुजगाई अ' (दसनि १) ।

लहग पु [दे] वासी ग्रन्त में पेदा होनेवाला
द्वीन्द्रिय कोट-विशेष (जी १५) ।

लहण न [लभन] १ लाभ, प्राप्ति । २ ग्रहण,
स्वीकार (आ १४) ।

लहर पुं [लहर] एक वरिष्कपुत्र (मुपा
६१७) ।

लहरि } स्त्री [लहरि, 'री] तरंग, कल्लोल
लहरी } (सण, प्राप् ६६, कुमा) ।

लहाविअ वि [लम्भित] प्रापित, प्राप्तकराया
हुआ (कुप्र २३२) ।

लहिअ देखो लद्ध (कप्प, पिग) ।

लहिम देखो लघिम (पड्) ।

लहु } वि [लघु] १ छोटा, जघन्य (कुमा,
लहुअ } मुपा ३६०, कम्म १, ७२, महा) ।

२ हलका (मे ७, ४४, पाप्र) । ३ तुच्छ,
नि सार (पएह १, २—पत्र २८, पएह २,
२—पत्र ११६) । ४ श्लाघनीय, प्रशसनीय
(से १२, ५३) । ५ थोडा, अल्प (मुपा
३५४) । ६ मनोहर सुन्दर (हे २, १२२) ।
स्त्री 'ई, 'वी (पड्, प्राक् २८, गउड, हे
२, ११३) । ७ न. कृष्णागुरु, सुगन्धि धूप-
द्रव्य विशेष । ८ वीरण-मूल (हे २, १२२) ।
९ शीघ्र जल्दी (द्र ४६, पएह २, २—पत्र
११६) । १० स्पर्श-विशेष (अणु) । ११
लघुस्पर्श नामक एक कर्मभेद (कम्म १, ४१) ।
१२ पुं एक मात्रावाला अक्षर (हे ३, १३४) ।
'कम्म वि [°कर्मन्] जिनके अल्प ही कर्म
अवशिष्ट रहे हो, शीघ्र मुक्ति-गामी (मुपा
३५४) । 'करण न [°करण] दक्षता,
चातुरी (गाया १, ३—पत्र ६२, उवा) ।
'परकम्म पु [°पराकम्म] ईशानेन्द्र का एक
पदाति-सेनापति (ठा ५, १—पत्र ३०३,
इक) । 'सखिज्ज न [°सख्येय] सख्या-
विशेष, जघन्य संख्यात (कम्म ४, ७२) ।

लहुअ सक [लघय्, लघु + कृ] लघु करना,
छोटा करना । लहुअति, लहुअमि (आ २०,
गा ३४५) । वक्क. लहुअत (से १५, २७) ।

लहुअवड पुं [दे] न्यग्रोध वृक्ष, वरगाद का पेड
(दे ७, २०) ।

लहुआइअ } वि [लघूकृत] लघु किया
लहुइअ } हुआ (से ६, ४, १२, ५४, स
२०७, गउड) ।

लहुई देखो लहु ।

लहुग देखो लहु (कप्प, द्र ५८) ।

लहुवी देखो लहु ।

लाइअ वि [लागित] लगाया हुआ (से २,
२६, वजा ५०) ।

लाइअ वि [दे] १ गृहीत, स्वीकृत (दे ७,
२७) । २ घृष्ट (मे २, २६) । ३ न. भूपा,
मण्डन (दे ७, २७) । ४ भूमि को गोवर
आदि से लीपना (मम १३७, कप्प, औप,
गाया १, १ टी—पत्र ३) । ५ चर्मर्ध,
आधा चमड़ा (दे ७, २७) ।

लाइअन्व देखो लाय = लावय् ।

लाइज्जन देखो लाय = लागय् ।

लाइम वि [लन्व] काटने योग्य (दम ७,
३४) ।

लाइम वि [दे] १ लाजा के योग्य, खोई के
योग्य । २ रोपण के योग्य, बोने लायक
(प्राचा २, ४, २, १५) ।

लाइल पु [दे] वृषभ, बैल (दे ७, १६) ।

लाउ देखो अलाउ (हे १, ६६, भग, कस,
औप) ।

लाउलोडय न [दे] गोमय आदि से भूमि का
लेपन और खड़ी आदि से भीत आदि का
पोतना (राय ३५) ।

लाऊ देखो अलाऊ (हे १, ६६, कुमा) ।

लार (अप) देखो लक्ख = लक्ष (पिग) ।

लाग पु [दे] चुंगी, एक प्रकार का सरकारी
कर, लगान, गुजराती में 'लागो' (निरि ४३३,
४३४) ।

लाघव न [लाघव] लघुता, छोटाई, लघुपन
(भग, कप्प, मुपा १०३, कुप्र २७७, किरात
१६) ।

लाघवि वि [लाघविन्] लघुता-युक्त, लाघव-
वाला (उत्त २६, ४२, आचा) ।

लाघविअ न [लाघविक] लघुता, छोटापन,
लाघव (ठा ५, ३—पत्र ३४२, विसे ७ टी,
सूअ २, १, ५७, भग) ।

लाज देखो लाय = लाज (दे ५, १०) ।

लाड पुं [लाट] देश-विशेष (मुपा ६५८, कुप्र
२५४, मत्त ६७ टी, भवि, सण, इक) ।

लाडी स्त्री [लाटी] लिपि विशेष (विसे ४६४
टी) ।

लाड पुं [लाड] देश-विशेष, एक प्रायं देश
(प्राचा, पव २७५, विचार ४६) ।

लाड वि [दे] १ निर्दोष आहार से आत्मा
का निर्वाह करनेवाला, सयमी, आत्म-निग्रही
(मूम १, १०, ३, मुख २, १८) । २ प्रधान,
मुख्य (उत्त १५, २) । ३ पुं एक जैन
आचार्य (राज) ।

लाड वि [दे] श्रेष्ठ, उत्तम (प्राचा २, ३, १,
५) ।

लाण न [लान] ग्रहण, आदान (मे ७, ६०) ।

लावू देखो लाऊ (पड्) ।

लाभ पु [लाभ] १ नफा, फायदा (उव, मुख
८, १३) । २ प्राप्ति (ठा ३, ४) । ३ मूद,
व्याज (उप ६५७) ।

लाभतराडय न [लाभान्तराधिकर] लाभ का
प्रतिबन्धक कर्म (धर्मस ६४८) ।

लाभिय } वि [लाभिक] लाभ-युक्त, लाभ-
लाभिल्ल } वाना (औप, कर्म १७) ।

लाभ वि [दे] रम्य, सुन्दर (औप) ।

लाभजय न [दे] वृण-विशेष, उशीर वृण,
खम—गोंडर घास की जड़ (पाप्र) ।

लामा स्त्री [दे] डाकिनो, डाइन (दे ७, २१) ।

लाय सक [लागय्] लगाना, जोड़ना ।

लाएसि (विसे ४२३) । वक्क. लायंत (भवि) ।

कवक. लाइज्जत (से १३, १३) । सक्क.

लाइवि (अप) (हे ४, ३३१, ३७८) ।

लाय सक [लावय्] १ कटवाना । २ काटना,
छेदना । कृ. लाइअव्व (मे १५, ७५) ।

लाय देखो लाइअ = (दे), 'लाउल्लोइय'
(औप) ।

लाय वि [लात] १ आत्त, स्वीकृत, गृहीत ।
२ न्यस्त, स्थापित (औप) । ३ न. लगन का
एक दोष, 'लायाइदोसमुक्क नरवर ग्रइसोहण
लगं' (मुपा १०८) ।

लाय पुखी [लाज] १ आद्रं तण्डुल । २ व.
अष्ट घान्य, भुंजा हुआ नाज, खोई (कप्प) ।

लायण न [लागन] लगवाना (गा ४५८) ।

लायणन न [लाचण्य] १ शरीर-सौन्दर्य विशेष,
शरीरकान्ति (पाप्र, कुमा, सण, पि १८६) ।
२ लवणत्व, क्षारत्व (हे १, १७७, १८०) ।

लाल सक [लालय्] स्नेह-पूर्वक पालन
करना । लात्ति (तंडु ५०) । कवक.
लालिज्जत (सुर २, ७३, मुपा २४) ।

रूप न [रूप्य] चाँदी, रजत (श्रीप, सुर ३, ६, कप्प)। 'कूड पु [कूट] रुक्मि पर्वत का एक कूट (राज)। 'कूलप्पवाय पुं [कूलप्पवाय] ब्रह्म-विशेष (ठा २, ३—पत्र ७३)। 'कूला स्त्री [कूला] १ एक महानदी (ठा २, ३—पत्र ७२, ८०, सम २७, इक)। २ एक देवी। ३ रुक्मि पर्वत का एक कूट (जं ४)। 'मय वि [मय] चाँदी का बना हुआ (गाया १, १—पत्र ५२, कुमा)। 'भास पुं [भास] एक ज्योतिष्क महा-ग्रह (ठा २, ३—पत्र ७८)। रूप वि [रूप्य] रूपा का, चाँदी का (गाया १, १—पत्र २४, उर ८, ४)।

रूपय देखो रूप = रूप्य, 'रूपयं रूपयं' (पात्र, महा)।

रूपि पुं [रुक्मिन्] १ कौण्डिन्य नगर का एक राजा, रुक्मिणी का भाई (गाया १, १६—पत्र २०६, कुमा, रुक्मि ४२)। २ कुणाल देश का एक राजा (गाया १, ८—पत्र १४०)। ३ एक वर्षा-पर्वत (ठा २, ३—पत्र ६६, सम १२, ७२)। ४ एक ज्योतिष्क महा-ग्रह (ठा २, ३—पत्र ७८)। ५ देव-विशेष (जं ४)। ६ रुक्मि पर्वत का एक कूट (जं ४)। ७ वि सुवर्णवाला। ८ चाँदी वाला (हे २, ५२, ८६)। 'कूड पुन [कूट] रुक्मि पर्वत का एक कूट (ठा २, ३, सम ६३)।

रूपिणी स्त्री [रुक्मिणी] १ द्वितीय वासुदेव की एक पटरानी (पत्रम २०, १८६)। २ श्रीकृष्ण वासुदेव की एक अग्र-महिषी (पत्रम २०, १८७, पडि)। ३ एक श्रेष्ठि-पत्नी (मुपा ३३४)।

रूपोभास पुं [रूप्यावभास] १ एक महाग्रह (सुज्ज २०)। २ वि. रजत की तरह चमकता (जं ४)।

रूपभत } देखो रूंध।
रूपभमाण }

रुक्मिणी देखो रूपिणी (पड्)।

रूढ सक [रूढापय] म्लान करना, मलिन करना। 'प-रूढाइ जर्स' (से ३, ४)।

रू पु [रू] १ मृग-विशेष (पत्रम ६, ५६, पएह १, १—पत्र ७)। २ वनस्पति-विशेष

(पएह १—पत्र ३५)। ३ एक अनायं देश। ४ एक अनायं मनुष्य-जाति (पएह १, १—पत्र १४)।

रूख अक [रूख्य] १ खूब आवाज करना। २ बार-बार चिल्लाना। वक्र. रूखेंत (स २१३)।

रूळ अक [रूळ] लेटना। वक्र. रूळंत, रूळित (पएह १, ३—पत्र ४५, 'पडियगय-घडुरयं रूळतवरमुहडघडसयाइन्' (धर्मवि ८०)।

रूळुल अक [रू] नीचे साँस लेना, नि श्वास डालना। वक्र. रूळुलत (भवि)।

रूव देखो रूअ = रूद। रूवइ (हे ४, २२६; प्राक ६८, सक्षि ३६, भवि, महा), रूवामि (कुप्र ६६)। कर्म. रूवइ, रूविज्जइ (हे ४, २४६)।

रूवण न [रोदन] रोना (उप ३३५)।

रूवणा स्त्री. ऊपर देखो (श्रीधभा ३०)।

रूवणा स्त्री [रोवणा] आरोपणा, प्रायश्चित्त का एक भेद (वव १)।

रूविल देखो रूइल (श्रीप)।

रूव देखो रूअ = रूद। रूवइ (सक्षि ३६, प्राक ६८)।

रूसा स्त्री [रोष] रोष, गुस्सा (कुमा)।

रूसिय देखो रूसिअ (पत्रम ५५, १५)।

रूह अक [रूह] १ उत्पन्न होना। २ सक. घाव को सुखाना। रूहइ (नाट)। कर्म 'जेण विदारियट्टीवि खगाइपहारो इमीए पक्खालणोयएणं पणहुवेयण तक्खणा चैव रुहइ ति' (स ४१३)।

रूह वि [रूह] उत्पन्न होनेवाला (आचा)।

रूहण न [रोधन] निवारण (वव १)।

रूहरूह अक [रू] मन्द मन्द बहना, 'वामगि सुत्ति रूहरूह वाड' (भवि)।

रूहुरूह पुं [रू] उल्लगठा (भवि)।

रूअ न [रू] रूह, तूल (दे ७, ६, कप्प, पव ८४, देवेन्द्र ३३२, धर्मसं ६८०, मग, संवोध ३१)।

रूअ पु [रूप] १-२ पूर्णभद्र और विशिष्ट नामक इन्द्र का एक लोकपाल (ठा ४, १—पत्र १६७)। ३ आकृति, आकार (गा १३२)। ४ वि. सहश, तुल्य (दे ६, ४६)।

'कंत पुं [कान्त] १-२ पूर्णभद्र और विशिष्ट नामक इन्द्र का एक लोकपाल (ठा ४, १)। 'कंता स्त्री [कान्ता] १ भूतानन्द नामक इन्द्र की एक अग्र-महिषी (गाया २—पत्र २५२)। २ एक दिक्कुमारी-महत्तरिका (राज)। 'रूपभ पु [रूपभ] पूर्णभद्र और विशिष्ट नामक एक लोकपाल (ठा ४, १—पत्र १६७, १६८)। 'रूपभा स्त्री [प्रभा] १ भूतानन्द इन्द्र की एक अग्र-महिषी (गाया २—पत्र २५२)। २ एक दिक्कुमारी देवी (ठा ६—पत्र ३६१)। देखो रूव = रूप (गठड)।

रूअस पु [रूपास] १-२ पूर्णभद्र और विशिष्ट इन्द्र का एक लोकपाल (ठा ४, १—पत्र १६७, १६८)।

रूअंसा स्त्री [रूपासा] १ भूतानन्द इन्द्र की एक अग्र-महिषी (गाया २—पत्र २५२)। २ एक दिक्कुमारी देवी (ठा ६—पत्र ३६१)।

रूअग } पुंन [रूपक] १ रूपया (हे ४, रूअय } ४२२)। २ पु. एक गृहस्थ (गाया २—पत्र २५२)। ३ रूपा देवी का सिंहासन (गाया २—पत्र २५२)। 'वडिसय न [वितसक] रूपा देवी का भवन (गाया २)। 'सिरी स्त्री [श्री] एक गृहस्थ स्त्री (गाया २)। 'वई स्त्री [वर्त] भूतानन्द नामक इन्द्र की एक अग्र-महिषी (गाया २)। देखो रूवय = रूपक।

रूअरूइआ [रू] देखो रूअरूइआ (पड्)।

रूआ स्त्री [रूपा] १ भूतानन्द इन्द्र की एक अग्र-महिषी (गाया २—पत्र २५२)। २ एक दिक्कुमारी देवी (ठा ४, १—पत्र १६८)।

रूआमाला स्त्री [रूपमाला] छद्म-विशेष (पिंग)।

रूआर वि रूपकार] मूर्ति बनानेवाला, 'भोत्तुमजोग्ग जोग्गे दलिए रूव करेइ रूआरो' (विसे १११०)।

रूआवई स्त्री [रूपवती] एक दिक्कुमारी देवी (ठा ४, १—पत्र १६८)।

रूढ वि [रूढ] १ परंपरागत, हृदि-सिद्ध। २ प्रसिद्ध, 'रूढकमेण सव्वे नराहिवा तत्थ उवविट्ठा' (उप ६४८ टी)। ३ प्रगुण, तंदुरुस्त (पात्र)।

लिंन पुं [निम्ब] वृक्ष-विशेष, नीम का पेड़, मराठी में 'लिव' (हे १, २३०, कुमा, स २५)।

लिंन वि [दे] १ कोमल। २ नम्र (राय ३५)।
लिंन पुं [दे. लिम्ब] आस्तरण-विशेष (गाया १, १—पत्र १३)।

लिंनह (अप) देखो लिंन = निम्ब, गुजराती में 'लिवहो' (हे ४, ३८७, पि २४७)।

लिंनोहली स्त्री [दे] निम्ब-फल (सूक्त ८६)।

लिंनार देखो लिंनार (पि ५६)।

लिंन अक [नि + ली] छिपना। लिंनह (हे ४, ५५, पङ्)। वक्र लिंनह (कुमा)।

लिंनख न [लेख्य] लेखा, हिसाब, 'लिंनख गणिऊण चितए सिद्धी' (सिरि ४१८, सुपा ४२५)। देखो लेखन।

लिंनख स्त्रीन [दे] छोटा स्त्रोत (दे ७, २१)।
स्त्री. 'कखा' (दे ७ २१)।

लिंनखा स्त्री [लिंखा] १ लघु वृक्षा, छोटा जूँ, लीख—सर के बालों में होता कीड़ा (दे ८, ६६, स ६७)। २ परिमाण-विशेष (इक)।

लिंनखाप (अशो) सक [लेख्य] लिखवाना। भवि लिंनखापयिस्सं (पि ७)।

लिंनखापित (अशो) वि [लेखित] लिखवाया हुआ (पि ७)।

लिंनख सक [लिप्स्] प्राप्त करने को चाहना। लिंनख (हे २, २१)।

लिंनख देखो लिंन (ठा ८—पत्र ४३७)।

लिंनखवि देखो लेच्छइ = लेच्छकि (अत)।

लिंनखा स्त्री [लिप्सा] लाभ की इच्छा (उप ६३०, प्राकृ २३)।

लिंनखु वि [लिप्सु] लाभ की चाहवाला (सुख ६, १, कुमा)।

लिंनखिअ (अप) वि [लात] गृहीत (पिंग)।

लिंनखिअ न [दे] १ चाट, खुशामद (दे ७, २२)। २ वि लम्पट, लोलुप (सुपा ५६३)।

लिंनखु देखो लेट्टु (वसु)।

लिंन वि [लिप्] १ लेप-युक्त, लिपा हुआ (हे १, ६, कुमा, भवि)। २ सवेष्टित (सूत्र १, ३, ३, १३)।

लिंनित पुंस्त्री [दे] खड्ग आदि का दोष (दे ७, २२)।

लिप्प देखो लिप्प (गा ५१६, गउड)।

लिप्प देखो लेप्प (कुप्र ३८४)।

लिप्पत } देखो लिप।
लिप्पमाण }

लिप्पासण न [लिप्पासन] मसी-भाजन, दोत, दोभात, दावात (राय ६६)।

लिप्पभन देखो लिह = लिह्।

लिप्पि वि [दे] १ हरा, आद्र। २ हरा रंगवाला, 'अइलिलिरपट्टवधणमिसेण चोरमु पट्टवधं व जो फुड तथ ज्वहइ' (धर्मवि ७३)।

लिपि स्त्री [लिपि, 'पी'] अक्षर-लेखन प्रक्रिया लिपी (सम ३५, भग)।

लिस अक [स्वप्] सोना, सूतना, शयन करना। लिसइ (हे ४, १४६)।

लिस सक [लिप्] आलिंगन करना। भवि, लिसिस्सामो (सूत्र २, ७, १०)।

लिसय वि [दे] तनूकृत, क्षीण (दे ७, २२)।

लिसस देखो लिस = लिप्। लिससति (सूत्र १, ४, १, २)।

लिह सक [लिह्] १ लिखना। २ रेखा करना। लिहइ (हे १, १८७, प्राकृ ७०)।

कर्म लिखइ (उव)। प्रयो. लिहावेइ, लिहावति (कुप्र ३४८, सिरि १२७८)।

लिह सक [लिह्] चाटना। लिहइ (कुमा, प्राकृ ७०)। कर्म. लिहिज्जइ, लिहमइ (हे ४, २४५)। वक्र. लिहत (भत १४२)।

कवक लिहभत (से ६, ४१)। क. लेज्म (गाया १, १७—पत्र २३२)।

लिहण न [लेहन] चाटन (उर १, ८, पङ्. रमा १६)।

लिहण न [लेखन] १ लिखना, लेख (कुप्र ३६८)। २ रेखाकरण (तंदु ५०)। ३ लिखवाना, 'पवयणलिहण सहस्मे लक्खे जिणभवणकारवण' (सवोध ३६)।

लिहा स्त्री [लेखा] देखो रेखा = रेखा, 'इक्क चिय मह भइणी मयणा घन्नाए धू (?) धुरि लहइ लिह' (सिरि ६७७)।

लिहावण न [लेखन] लिखवाना (उप ७२४)।

लिहावि वि [लेखित] लिखवाया हुआ (स ६०)।

लिहिअ वि [लिखित] १ लिखा हुआ (प्रासू ५८)। २ उल्लिखित (उवा)। ३ रेखा किया हुआ, चित्रित (कुमा)।

लिहणअ (अप) वि [लात] लिया हुआ, गृहीत (पिंग)।

लिह वि [लीह] १ चाटा हुआ (सुपा ६५१)। २ स्पृष्ट, 'नरिखसिरि (?) सिर) कुमुमलीढपायवीढ' (कुप्र ५)। ३ युक्त (पव १२५)।

लीण वि [लीन] लय-युक्त (कुमा)।

लील पु [दे] यत्न (दे ७, २३)।

लीला स्त्री [लीला] १ विलास, मौज। २ क्रीडा (कुमा, पात्र, प्रासू ६१)। ६ छन्द-विशेष (पिंग)। 'वई स्त्री [वती] १ विलास-वती स्त्री (प्रासू ६१)। २ छन्द विशेष (पिंग)।

'वह वि [वह] लीला-वाक्क (गउड)।

लीलाइअ न [लीलायित] १ क्रीडा, कैल (कप्प)। २ प्रभाव, 'धम्मस्स लीलाइय' (उप १०३१ टी)।

लीलाय सक [लीलाय] लीला करना। वक्र लीलायत (गाया १, १—पत्र १३, कप्प)। कृ लीलाइयन्व (गउड)।

लीय पु [दे] बाल, बालक (दे ७, २२, सु १५, २१८)।

लीहा देखो लिहा (गाया १, ८—पत्र १४५, कुमा, भवि, सुपा १०६, १२४)।

लुअ सक [लू] छेदना, काटना। लुएज्जा (पि ४७३)।

लुअ देखो लुं। लुअइ (प्राकृ ५१)।

लुअ वि [लून] काटा हुआ, छिन्न (हे ४, २५८, गा ८, गा ८, से ३, ४२, दे ७, २३, सु १३, १७५, सुपा ५२४)।

लुअ वि [लुप्] १ जिसका लोप किया गया हो वह। २ न. लोप (प्राकृ ७७)।

लुअत वि [लूनवत्] जिसने छेदन किया हो वह (धात्वा १५१)।

लुं वि [दे] सुप्त, सोया हुआ (दे ७, २३)।

लुकणी स्त्री [दे] लुकना, छिपना (दे ७, २४)।

लुंख पु [दे] नियम (दे ७, २३)।

लुंखाय पुं [दे] निर्णय (दे ७, २३)।

रेसणिआ } स्त्री [दे] १ करोटिका, एक
रेसणी } प्रकार का कास्य-भाजन (पात्र,
दे ७, १५) । २ अक्षि-निकोच (दे ७, १५) ।
रेसम्मि देखो रेसम्मि, 'जो उण सद्धा-रहिओ
दाए देह जमकित्तिरेम्मि' (स १५७) ।
रेसि (अप) देखो रेसि (हे ४, ४२५, सण) ।
रेसिअ वि [दे] छिन्न, काटा हुआ (दे ७,
६) ।
रेसि (अप) नीचे देखो (हे ४ ४२५) ।
रेसिम्मि अ निमित्त, लिए, वास्ते, 'दसण-
नाणचरित्ताण एस रेसिम्मि सुपसत्थो' (पचा
१६, ४०) ।
रेह अक [राज्] दीपना, शोभना, चमकना ।
रेहइ, रेहए (हे ४, १००, घात्वा १५०,
महा) । वक्क रेहत्त (कप्प) ।
रेहा स्त्री [रेखा] १ चिह्न-विशेष, लकीर
(श्लोक ४८६, गण्ड, सुपा ४१, वजा ६४) ।
२ पत्ति, श्रेणि (कप्पू) । ३ छन्द-विशेष
(पिंग) ।
रेहा स्त्री [रजना] शोभा, दीप्ति (कप्पू) ।
रेहिअ न [दे] छिन्न पुच्छ, कटी हुई पूँछ
(दे ७, ९०) ।
रेहिअ वि [राजित] शोभित (सुर १०,
१८६) ।
रेहिर वि [रेखावत्] रेखावाला (हे २,
१५६) ।
रेहिर } वि [राजित्] शोभनेवाला (सुर
रेहिह } १, ५०, सुपा ५६), 'नयरे नयरे-
हिल्ले' (उप ७२८ टी) ।
रेहिह देखो रेहिर = रेखावत् (उप ७२८
टी) ।
रोअ देखो रुअ = रुद । रोअइ (संक्षि ३६, प्राक
३८) । वक्क रोअत्त, रोयमाण (गा ५४६,
उप पृ १२८, सुर २, २२६) । हेक्क रोउ
(संक्षि ३७) । क्क रोअत्तअ, रोइअन्व (सि
३, ४८, गा ३४८, हेक्का ३३) ।
रोअ देखो रुअ = रुत् । रोयइ, रोयए (भग,
उव), 'रोएइ ज पहुण त चेव कुणति सेवणा
निच्च' (रभा) । वक्क रोयत्त (आ ६) ।
रोअ सक [रोचय्] १ रुचि करना । २
पसन्द करना, चाहना । रोयइ, रोएमि, रोएहि
(उत्त १८, ३३, भग) । सक, रोयइत्ता
(उत्त २६, १) ।

रोअ सक [रोचय्] निणाय करना । रोअए
(दस ५, १, ७७) ।
रोअ पुं [रोच] रुचि,
'दुक्करोया विउमा वाला
भणियेपि नेव दुज्झति ।
तो मज्झिमबुद्धोए हियत्यमेसो
पयासो मे' (चिदय २६०) ।
रोअ पु [रोग] श्रामय, बीमारी (पात्र) ।
रोअग वि [रोचक] १ रुचि-जनक । २ न,
सम्यक्त्व का एक भेद (सवीघ ३५, सुपा
५५१) ।
रोअण न [रोदन] रोना, रुदन (दे ५, १०;
कुप्र २३५, २८६) ।
रोअण पु [रोचन] १ एक दिग्गहस्ति-कूट
(इक) । २ न, गोरोचन (गण्ड) ।
रोअणा स्त्री [रोचना] गोरोचन (से ११,
४५, गण्ड) ।
रोअणिआ स्त्री [दे] डाकिनी, डाइन (दे ७,
१२, पात्र) ।
रोअत्तअ देखो रोअ = रुद ।
रोआविअ वि [रोदित] रलाया हुआ (गा
३५७, सुपा ३१७) ।
रोइ वि [रोगिन्] रोगवाला, बीमार (गण्ड) ।
रोइ देखो रुइ = रुचि, 'अवि सुदरेवि दिणो
दुक्करोई कलहमाई' (पिड ३२१) ।
रोइअ वि [रोचित] १ पसन्द आया हुआ
(भग) । २ चिकीर्षित (ठा ६—पत्र ३५५) ।
रोइर वि [रोदित्] रोनेवाला (गा ३८६,
पड) ।
रौकण वि [दे] रंक, गरीब (दे ७, ११) ।
रौच सक [पिप्] पीसना । रोचइ, (हे ४,
१८५) ।
रोक्कअ वि [दे] प्रोक्षित, भ्रति सिक्त (पड) ।
रोक्कणि } वि [दे] १ शृंगी, शृंगवाला ।
रोक्कणिअ } २ नृशस, निर्दय (दे ७, १६) ।
रोग पु [रोग] १ बीमारी, व्याधि (उवा,
पण्ह १, ४) । २ एक ब्राह्मण-जातीय श्रावक
(उप ५३६) ।
रोगि वि [रोगिन्] बीमार (सुपा ५७६) ।
रोगिअ वि [रोगिक, 'त] ऊपर देखो (मुख
१, १४) ।

रोगिणिआ स्त्री [रोगिणिका] रोग के कारण
ली जाती बीधा (ठा १०—पत्र ४७३) ।
रोगिह देखो रोगि (ग्रामा) ।
रोघस वि [दे] रक, गरीब (दे ७, ११) ।
रोच्च देखो रौच । रोच्चइ (पड) ।
रोज्ज पुं [दे] अश्व, पशु-विशेष; गुजरातो मे
'रोक्क' (दे ७, १२, विपा १, ४, पात्र) ।
रोट्ट पुं [दे] १ तदुल पिष्ट, चावल आदि का
आटा, पिमान, गुजरातो मे 'लोट' (दे ७,
११, श्लोक ३६३, ३७४, पिड ४४, बृह १) ।
रोट्टग पु [दे] रोटी, रोट (महा) ।
रोड सक [दे] १ रोकना, अटकाना । २
अनादर करना । ३ हेरान करना । रोडिसि (म
५७५) । कवक्क, रोडिज्जत्त (उप पृ १३३) ।
रोड न [दे] घर का मान, गृह-प्रमाण (दे
७, ११) ।
रोडी स्त्री [दे] १ इच्छा, अभिलाषा । २ ब्रणी
की शिविका (दे ७, १५) ।
रोत्तव्व देखो रुअ = रुद ।
रोद पु [रौद्र] १ अहोरात्र का पहला मुहूर्त
(सम ५१) । २ एक नृपति, तृतीय वनदेव
और वासुदेव का पिता (ठा ६—पत्र ४४७) ।
३ अलंकार-शास्त्र-प्रसिद्ध नव रसो मे एक रस
(अणु) । ४ वि, दावण, भयंकर, भीषण
(ठा ४, ४, महा) । ५ न ध्यान-विशेष,
हिंसा आदि क्रूर कर्म का चिन्तन (श्रौप) ।
रोद पु [रुद्र] अहोरात्र का पहला मुहूर्त
(सुज्ज १०, १३) । देखो रुद = रुद ।
रोद्ध वि [दे] १ कृण्विताक्ष । २ न मल (दे
७, १५) ।
रोम पुं [रोमन्] लोम, बाल, रौम्रा (श्रौप,
पात्र, गण्ड) । 'कूय पुं' [कूप] लोम का
छिद्र (गाया १, १—पत्र १३, सुर २,
१०१) ।
रोम न [रोम] खान मे होता लवण (दस
३, ८) ।
रोमच पु [रोमाश्च] रोम्रो का खड़ा होना,
भय या हर्ष मे रोम्रो का उठ जाना, पुनक
(कुमा, काल, भवि, सण) ।
रोमचइअ } वि [रोमाश्चित] पुलकित,
रोमचिअ } जिसके रोम खड़े हुए हो वह
(पचम ३, १०४, १०२, २०३, पात्र,
भवि) ।

लूड वि [लुण्ट] लूटनेवाला । स्त्री °डी,
‘सो नत्थि एत्थ गामे जो
एयं महमहतलायएण ।
तरुणाण हिययलूडि
परिसक्कति निवारेइ ॥’
(हेका २६०, काप्र ६१७) ।
लूडण न [लुण्टन] लूट, चोरी (स ४४१) ।
लूडिअ वि [लुण्टित] लूटा हुआ (स ५३६,
पउम ३०, ६२, सुपा ३०७) ।
लूण देखो लूअ = लून (दे ७, २३, सुपा
५२२, कुमा) ।
लूण न [लूण] १ लून, लून, नोन, नमक
(जो ४) । २ पु वनस्पति विशेष (आ २०,
धर्म २) । देखो लयण ।
लूण न [लूण] लावण्य, सुन्दरता, शरीर-
कान्ति (सुपा २६३) ।
लूर सक [लूड] काटना । लूरइ (हे ४,
१२४) ।
लूरिअ वि [लूडिअ] काटा हुआ (कुमा ६,
८३) ।
लूस सक [लूपय] १ वध करना, मार
डालना । २ पीडना, कदर्थन करना, हैरान
करना । ३ दूषित करना । ४ चोरी करना ।
५ विनाश करना । ६ अनादर करना । ७
तोड़ना । ८ छोटे को बड़ा और बड़े को
छोटा करना । लूसति, लूसयति, लूसएज्जा
(सूत्र १, ३, १, १४, १, ७, २१, १, १४
१६, १, १४, २५) । भूका, लूसिसु (आचा) ।
नक लूसिउ (आ १२) ।
लूसअ } वि [लूपक] १ हिंसक, हिमा करने-
लूसण } वाला । २ विनाशक (सूत्र २, १,
५०, १, २, ३ ६) । ३ प्रकृति-क्रूर, निर्दय ।
४ भक्षक (सूत्र १, ३, १, ८) । ५ दूषित
करनेवाला (सूत्र १, १४, २६) । ६ विरा-
घक आज्ञा नहीं माननेवाला (सूत्र १, २, २,
६, आचा) । ७ हेतु-विशेष (ठा ४, ३—पत्र
२५४) ।
लूसण वि [लूपण] ऊपर देखो (आचा,
श्रीप) ।
लूसय वि [लूपक] १ परित्याप-कर्ता (आचा
२, १, ६, ४) । २ चोर, तस्कर (वव ४) ।

लूसिअ वि [लूषित] १ चुष्टित, लुटा गया
(आ १२) । २ उपद्रुत, पीडित (सम्मत
१७५) । ३ विनाशित (संवोध १०) । ४
हिंसित (आचा) ।
लूह सक [मृज्, रूक्षय] पोछना । लूहेइ,
लूहेति (राय, णाया १, १—पत्र ५३) ।
सक लूहिता (पि २५७) ।
लूह पुं [रूक्ष] मुनि, साधु श्रमण (दर्मान
२, ६) ।
लूह वि [रूक्ष] १ लूखा, रूखा, स्नेह-रहित
आचा, पिड, २६, उव) । २ पु. सयम, विरति,
चारित्र (सुत्र, १, ३, १, ३) । ३ न तप-
विशेष, निर्विकृतिक तप (संवोध ५८) । देखो
लुक्ख ।
लूहिय वि [रूक्षित] पोछा हुआ (णाया १,
१—पत्र १६, कप्प, श्रीप) ।
ले सक [ला] लेना, ग्रहण करना । लेइ (हे
४ २३८, कुमा) । वक लित (सुपा २५२,
पिग) । सक लेवि (अप) (हे ४, ४४०) ।
हेक. लेविणु (अप) (हे ४, ४४१) ।
लेक्ख न [लेख्य] १ व्यवहार, व्यापार (सुपा
४२४) । २ लेखा, हिमाव (कुप्र २३८) ।
लेक्खा देखो लिहा (गडड) ।
लेख देखो लेइ = लेख (सम ३५) ।
लेखापित देखो लिखापित (पि ७) ।
लेच्छइ पु [लेच्छकि] १ क्षत्रिय-विशेष ।
२ एक प्रसिद्ध राज-वृक्ष (सूत्र १, १३, १०,
भग, कप्प, श्रीप, अत) ।
लेच्छइ पु [लिसुक, लेच्छकि] १ वणिक्,
वैश्य । २ एक वणिग-जाति (सूत्र २, १,
१३) ।
लेच्छारिय वि [दे] खरिष्टित, लिप्त (पिड
२१०) ।
लेज्ज देखो लिह = लिह् ।
लेट्ठ पु न [लेट्टु] रोडा, ईंट, पत्थर आदि
का टुकड़ा (विसे २४६६, श्रीप, उव, कप्प,
महा) ।
लेड्डु } पु न [दे लेट्टु] ऊपर देखो (पात्र,
लेड्डुअ } दे ७, २४) ।
लेड्डु पुं [दे] १ रोडा, लोट्ट । २ वि.
लम्पट (दे ७, २६) ।
लेड्डिअ न [दे] स्मरण, स्मृति (दे ७, २५) ।

लेड्डु पु [दे] रोडा, लोट्ट (दे ७, २५,
पात्र) ।
लेण न [लयन] १ गिरि-वर्ती पापाण-गृह
(णाया १, २—पत्र ७६) । २ विल, जन्तु-
गृह (कप्प) । ३ विहि पुंस्त्री [विधि] कला-
विशेष (श्रीप) । देखो लयण = लयन ।
लेप्प न [लेप्प] भित्ति, भीत (धम्म २६,
कुप्र ३००) ।
लेप्पमार पु [लेप्पमार] शिल्पी-विशेष,
राज, राजगीर (अणु १४६) ।
लेप्पा स्त्री [लेप्पा] लेपन-क्रिया (उत्त १६,
६५) ।
लेलु देखो लेड्डु (आचा, सूत्र २, २, १८,
पिड ३४६) ।
लेव पु [लेप] १ लेपन (मम ३६, पउम २,
२८) । २ नामि-प्रमाण जल (श्रीधमा ३४) ।
३ पु भगवान् महावीर के समय का नालंदा-
निवासी एक गृहस्थ (सूत्र २, ७, २) । ४ कड,
०ड वि [कृत] लेप-मिश्रित (श्रीध ५६५,
पत्र ४ टी—पत्र ४६, पिड) ।
लेवण न [लेपन] लेप-करण (पव १३३) ।
लेवाड वि [लेपकत्त] लेप कारक (वव १) ।
लेस पु [लेश] १ अल्प, स्तोक, लव, थोड़ा
(पात्र, दे ७, २८) । २ संलेप (द १) ।
लेस वि [दे] १ लिखित । २ आश्रित । ३
नि शब्द, शब्द-रहित । ४ पु निद्रा (दे ७,
२८) ।
लेस पु [श्लेष] सश्लेष, संबन्ध, मिलान
(राय) ।
लेसण न [श्लेषण] ऊपर देखो (विसे
२०७) ।
लेसणया } स्त्री [श्लेषणा] ऊपर देखो (श्रीप,
लेसणा } ठा ४, ४—पत्र २८०, राज) ।
लेसणी स्त्री [श्लेषणी] व्याघ्र-विशेष (सूत्र
२, २, २७, णाया १, १६—पत्र २१३) ।
लेसा स्त्री [लेश्या] १ तेज, दीप्ति । २ मडल,
विम्ब, ‘चंदस लेस आवरेत्ताण चिट्ठइ’ (सम
२६) । ३ किरण (सुज १६) । ४ देह-
सौन्दर्य (राज) । ५ आत्मा का परिणाम-
विशेष, कृष्णादि द्रव्यो के सानिध्य से उत्पन्न
होनेवाला आत्मा का शुभ या अशुभ परिणाम ।
६ आत्मा के शुभ या अशुभ परिणाम की उत्पत्ति

रोहिणी स्त्री [रोहिणी] १ नक्षत्र-विशेष (सम १०)। २ चन्द्र की पत्नी (आ १६)। ३ ओषधि-विशेष (उत्त ३४, १०, सुर १०, २२३)। ४ भविष्य में भारतवर्ष में तीर्थकर होनेवाली एक श्राविका (सम १५४)। ५

नववें बलदेव का माता का नाम (सम १५२)। ६ एक विद्या देवी (सति ५)। ७ शक्रेन्द्र की एक पटरानी (ठा ८—पत्र ४२६)। ८ सत्पुरुष नामक किंपुरुषेन्द्र की एक अग्र-महिषी (ठा ४, १—पत्र २०४)।

९ शक्रेन्द्र के एक लोकपाल की पटरानी (ठा ४, १—पत्र २०४)। १० सप्त-विशेष (पव २७१, पचा १६ २३)। ११ गो, गैया (पाश्र)। रमण पु [रमण] चन्द्रमा (पाश्र)। रोहीडग न [रोहीटक] नगर-विशेष (संथा ६८)।

॥ इअ सिरिपाइअसद्महणवम्मि रआराइसद्सकलणो
तेत्तीसइमो तरगो समत्तो ॥

ल

ल पु [ल] मूर्ध-स्थानीय अन्तस्य व्यञ्जन वर्ण-विशेष (पाश्र)।

लइ अ ले, अच्छा, ठीक (भवि)।

लइ देखो लग = ला।

लइअ वि [दे लगित] १ परिहित, पहना हुआ। २ अग में पिनद्ध (दे ७, १८, पिड ५६१, भवि)।

लइअल पु [दे] वृषभ, बैल (दे ७, १९)।

लइआ स्त्री [लतिका, लता] देखो लया (नाट—रत्ना ७, गउड, उप ७६८ टी)।

लइणा } स्त्री [दे] लता, वल्ली (पड, दे
लइणी } ७, १८)।

लउअ पु [लकुच] वृक्ष-विशेष, बड़हल का गाछ (औप, पि ३६८)।

लउड } पु [लकुट] लकड़ी, लाठी, डंडा, लउर,
लउल } यष्टि (दे ७, १६, सुर २, ८, औप)।

लउस } पु [लकुश] १ अनायं देश-विशेष
लउसय } (पव २७४, इक)। २ पुष्पी, लकुश
देश का निवासी मनुष्य। स्त्री °सिया (गाया १, १—पत्र ३७, औप, इक)।

लंका स्त्री [लङ्का] नगरी-विशेष, सिंहलद्वीप की राजधानी (ने ३, ६२, पउम ४६, १६, कण्)। °लय वि [°लय] लका-निवासी (वच्चा १३०)। °सुदरी स्त्री [°सुन्दरी] हनुमान की एक पत्नी (पउम ५२, २१)। °सोग

पुं [°शोक] राक्षस वंश का एक राजा (पउम ५, २६५)। °हिव पुं [°विप] लका का राजा (उप पु ३७५)। °हिवइ पु [°धिपति] वही अर्थ (पउम ४६, १७)।

लका स्त्री [दे] शाखा (वज्जा १३०)।

लंख } पुंस्त्री [लङ्ख] बड़े बाँस के ऊपर खेल
लखग } करनेवाली एक नट-नाति (गाया १,
१—पत्र २, पएह २, ५—पत्र १३२, औप,
कण्)। स्त्री °खिगा (उप १०१४)।

लंगल न [लाङ्गल] हल, 'खित्तेमु वहति लंगलाण सया' (धर्मवि २४, हे १, २५६, पड ८०)।

लंगलि पु [लाङ्गलिन्] बलमद्र, बलदेव (कुमा)।

लंगलि° स्त्री [लाङ्गली] वल्ली-विशेष,
लंगली } शारदी लता (कुमा)।

लगिम पुष्पी [दे] १ जवानी, यौवन। २ ताजापन, नवीनता, 'पिसुणइ तणुलट्ठी लगिम चणिमं च' (कण्)।

लगूल न [लाङ्गूल] पुच्छ, पूँछ (हे १, २५६, पाश्र, कण्, कुमा)।

लंगूलि वि [लाङ्गूलिन्] पुच्छवाला, पशु (कुमा)।

लंगोल देखो लगूल (सुज्ज १०, ८)।

लघ सक [लङ्घ, लङ्घय] १ लांघना, अतिक्रमण करना। २ भोजन नहीं करना। लंघइ, लघेइ (महा, भवि)। कर्म लघिज्जइ (कुमा)। वक्क. लंघत, लघयत (सुपा २७१, पउम ६७, २१)। सक लघित्ता, लघिऊण (महा)। हेक्क लघेउ (पि ५७३)। क लघणिज्ज (से २, ४४), लघ (कुमा १, १७)।

लंघण न [लङ्घन] १ अतिक्रमण (सुर ५, १६२)। २ भोजन (उप ११५ टी)।

लघि वि [लङ्घिन्] लंघन करनेवाला (कण्)। लघिअ वि [लङ्घित] जिसका लघन किया गया हो वह (गउड)।

लच पुं [दे] कुक्कुट, मुर्गा (दे ७, १७)।

लचा स्त्री [लङ्खा] धूम, रिशवत, उत्कोच (पाश्र, पएह १, ३—पत्र ५३, दे १, ६२, ७, १७, सुपा ३०८)।

लंचिह वि [लाञ्छिक] धूसखोर, रिशवत से कर काम करनेवाला (वव १)।

लंछ सक [लञ्छ] १ भाँगना, तोड़ना। २ कलंकित करना। कर्म लंछिज्जइ (वसन्ति ८, १४)।

लछ पु [लञ्छ] चोरो की एक जाति (विपा १, १—पत्र ११)।

°वाल देखो °पाल (कुप्र १३५) । °वीर पुं [°वीर] भगवान् महावीर (उव) । °सिंग न [°शृङ्ग] एक देव-विमान (सम २५) । °सिट्ट न [°सृष्ट] एक देव-विमान (सम २५) । °हिअ न [°हित] एक देव-विमान (सम २५) । °यय न [°यत] नास्तिक-प्रणीत शास्त्र, चार्वाक-दर्शन (एदि) । °लोग पुन [°लोक] परिपूर्ण आकाश-क्षेत्र, संपूर्ण जगत् (उव, पि २०२) । °वत्त न [°वर्त्त] एक देव-विमान (सम २५) । °हाण न [°ख्यान] लोकोक्ति, जन-श्रुति (उप ५३० टी) । लोगतिय देखो लोअतिय (पि ४६३) ।

लोगिंग देखो लोइअ = लौकिक (घमसं १२४८) ।

लोगुत्तर देखो लोउत्तर । °वडिसय न [°वर्त्तसक] एक देव-विमान (सम २५) । लोगुत्तर पुं [लोकोत्तर] मुनि, साधु । २ जिन-शासन, जैन सिद्धान्त (अणु २६) ।

लोगुत्तरिअ वि [लोकोत्तरिक] १ साधु का । २ जिन शासन का (अणु २६) ।

लोगुत्तरिय देखो लोउत्तरिय (ओघ ७६५) ।

लोदृ अक [स्वप्] लोटना, सोना । लोदृइ (हे ४, १४६) । वक्र, लोदृय° (पाप्र) ।

लोदृ अक [लुठ्] १ लेटना । २ प्रवृत्त होना । लोदृइ, लोदृती (प्राक् ७२, सूत्र १, १५, १४) । वक्र, लोदृत्त (सुपा ४६६) ।

लोदृ पु [दे] १ कच्चा चावल (निचू लोदृय ४) । २ पुखी हाथी का छोटा बच्चा (गाया १, १—पत्र ६३), छी. °द्विया (गाया १, १) ।

लोदृअ वि [दे] उपविष्ट (दे ७, २५) ।

लोदृ वि [दे] स्मृत (षड्) ।

लोदृ पु [लोष्ट] रोडा, ढेला (दे ७, २४) ।

लोडाविअ वि [लोडित] घुमाया हुआ (गा ७६६) ।

लोड सक [दे] कपास निकालना, लोडना, गुजराती मे 'लोडवु' । वक्र, लोडयत (राज) ।

लोड पुं [दे] १ लोडा, शिलापुत्रक, पीसने का पत्थर (दस ५, १, ४५, उवा) । २ भोषवि-विशेष, पश्चिमीकन्द (पव ४, आ

२०, सबोध ४४) । ३ वि. स्मृत । ४ शयित (दे ७, ७२६) ।

लोडय पु [दे. लोडक] कपास के बीज निकालने का यन्त्र (गउड) ।

लोडिअ वि [लोडित] लेटवाया हुआ, सुलाया हुआ (पउम ६१, ६७) ।

लोण न [लवण] १ लून, नमक । २ लावण्य, शरीर-कान्ति (गा ३१६, कुमा) । ३ पुं. वृक्ष-विशेष (पउम ४२, ७, आ २०, पव ४) । ४—देखो लवण (हे १, १७१, प्राप्र, गउड, औप) ।

लोणिय वि [लावणिक] लवण-युक्त, लवण-सम्बन्धी (ओघ ७७६) ।

लोणन [लावण्य] शरीर-कान्ति (प्राक् ५) ।

लोत्त न [लोत्त्र] चोरी का माल (स १७३) ।

लोद्व पुं [लोध्र] वृक्ष-विशेष (गाया १, १—पत्र ६५, पण १, सूत्र १, ४, २, ७, औप, कुमा) । देखो लुद्व = लोध्र ।

लोद्व देखो लुद्व = लुव्व (पाप्र, सुर ३, ४७, १० २२३, प्राप्र) ।

लोप्प देखो लुप्प, 'जो एगं वायं लोप्पइ सो तिन्निवि लोप्पयंतो किं केणावि धरिउ पारीयइ' (स ४६२) ।

लोभ सक [लोभय] लुभाना, लालच देना । कवक्र, लोभिज्जत (सुपा ६१) ।

लोभ पु [लोभ] लालच, लुब्धा (आचा, कप्प, औप, उव, ठा ३, ४) । २ वि लोभ-युक्त (पडि) ।

लोभणय वि [लोभनक] लोभी, लालची (आचा २, १५, ५) ।

लोभि } व [लोभिन्] लोभवाला (कम्म लोभिह् ४, ४०, पउम ४, ४६) ।

लोम पुन [लोम] रोम, रोम्रां, रूंगटा (उवा) ।

°पक्खि पु [°पक्षिन्] रोम के पंखवाला पक्षी (ठा ४, ४—पत्र २७१) । °स वि [°श] लोम-युक्त (गउड) । °हत्थ पुं [°हस्त] पीछी, रोमो का बना हुआ भाङ्गू (विपा १, ७—पत्र ७८, औप, गाया १, २) । °हरिस पु [°हर्ष] १ नरकावास-विशेष (देवेन्द्र २७) ।

२ रोमाञ्च, रोमो का खड़ा होना (उत्त ५, ३१) । °हार पुं [°हार] मार कर घन लूटनेवाला चोर (उत्त ६, २८) । °हार पुं

[°हार] रूंगटो से लिया जाता ग्राहार, त्वचा से ली जाती खुराक (भग, सूत्रनि १७१) ।

लोमंथिअ पुं. [दे] नट (नदि टिप्पण वैनयिक बुद्धिगत १३ वां कयानक) ।

लोमसी छी [दे] १ ककडी, खोरा (उप पृ २५२) । २ वल्ली विशेष, ककडी का गाछ (वव १) ।

लोय न [दे] सुन्दर भोजन, मिष्ठान्न (आचा २, १, ४, ३) ।

लोर पुन [दे] १ नेत्र, आंख । २ अश्रु, आंसू (पिंग) ।

लोल अक [लुठ्] १ लेटना । २ सक. विलोडन करना । लोलइ (पिड ४२२, पिंग), 'लोलेइ रक्खसवल' (पउम ७१, ४०) । वक्र, लोलत, लोलमाण (कप्प, पिंग, पउम ५३, ७६) ।

लोल सक [लोठय्] लेटाना । लोलेइ, लोलेमि (उवा) ।

लोल वि [लोल] १ लम्पट, लुव्व, आसक्त (गाया १, १ टी—पत्र ५, औप, पाप्र, कप्प, सुपा ३६५) । २ पृ. रत्न-प्रभा नरक का एक नरकावास (ठा ६—पत्र ३६५, देवेन्द्र ३०) । ३ शर्कराप्रभा नामक द्वितीय नरक-पृथिवी का नववां नरकेन्द्रक—नरक स्थान (देवेन्द्र ७) । °मज्झ पुं [°मध्य] नरकावास-विशेष (ठा ६ टी—पत्र ३६७) । °सिट्ट पुं [°शिष्ट] नरकावास-विशेष (ठा ६ टी) । °वत्त पु [°वर्त्त] नरकावास-विशेष (ठा ६ टी, देवेन्द्र ७) ।

लोलिअ न [दे] चादु, खुशामद (दे ७, २२) ।

लोलण न [लोठन] १ लेटना, घोलन (सूत्र १, ५, १, १७) । २ लेटवाना (उप ५।८) ।

लोलपच्छ पु [लोलपाक्ष] नरक स्थान विशेष (देवेन्द्र ३०) ।

लोलिअ न [लौल्य] लम्पटता, लोलुपता (परह १, ३—पत्र ४३) ।

लोलिम पुखी [लोलत्त] ऊपर देखो (कुमा) ।

लोलुअ वि [लोलुप] १ लम्पट, लुव्व (पउम १, ३०, २६, ४७; पाप्र, सुर १४, ३३) ।

२ पृ. रत्नप्रभा नरक का एक नरकावास

पानेवाली श्रीकृष्ण की एक पत्नी (अंत १५) । ३ एक अमात्य की स्त्री (उप ७२८ टी) ।

लक्षणिग्य वि [लक्षणिग्य, लक्षण्य] १ लक्षणों का जानकार । २ लक्षण-युक्त (सुपा १३६) ।

लक्ष्मण } पु [लक्ष्मण] विक्रम की वार-
लक्ष्मण } हवीं शताब्दी का एक जैन मुनि
श्रीर ग्रथाकार (सुपा ६५८) ।

लक्ष्मा स्त्री [लक्षा] लाख, लाह, जतु, चपड़ा (गाथा १, १—पत्र २४, परह २, ५) ।
°रुणिय वि [°रुणित] लाख से रंगा हुआ (पात्र) ।

लक्ष्मिअ वि [लक्षित] १ जाना हुआ । २ पहचाना हुआ । ३ देखा हुआ (गडड, नाट—रत्ना १४) ।

लक्ष न [दे] निकट, पाम (पिंग) ।

लक्ष न [लक्षण] वक्र काष्ठ (पचा १८, १६, स ५६६) । °माइ वि [°शायिन] वक्र काष्ठ की तरह सोनेवाला (परह २, १—पत्र १००, औप, कस, पंचा १८, १६, ठा ५, १—पत्र २६६) । °सण न [°सिन] आसन-विशेष (सुपा ८५) ।

लक्षु देखो लउड (कुप्र ३८६) ।

लग सक [लग] लगना, संग करना, सबध करना । लगइ (हे ४, २३०, ४२०, ४२२, प्राकृ ६८, प्राप्र, उव) । भवि. लगिस्स, लगिहिइ (पि ५२७) । लगगत, लगमाण (चिह्न ११२, उप ६६६, गा १०५) । सकृ लग्गूण (कुप्र ६६), लगिगवि (अप) (हे ४, ३३६) । कृ. लगिअव्व (सुर १०, ११२) ।

लग न [दे] १ चिह्न । २ वि अघटमान, असम्बद्ध (दे ७, १७) ।

लग न [लग्न] १ मेघ आदि राशि का उदय (सुर २, १७०, मोह १०१) । २ वि. संसक्त, सबद्ध (पात्र, कुमा, सुर २, ५६) । ३ पु स्तुति-पाठक (हे २, ६८) ।

लग्गण न [लगन] सग, सवन्ध, 'वडपाय-वसाहालग्गणेण' (सुर १५, १४, उप १३४, ५३८) ।

लग्गणय पु [लग्नक] प्रविभू, जमानत करनेवाला, जामोन (पात्र) ।

लग्गूण देखो लग्ग = लग्ग ।

लघिम पृष्ठी [लघिमन्] १ लघुता, लाघव । २ योग की एक सिद्धि, जिसके प्रभाव में मनुष्य छोटा बन सकता है, 'लघिज्ज लघिमणुणो अनिलस्सवि लाघव साहू' (कुप्र २७७) । ३ विद्या-विशेष (पउम ७, १३६) ।

लचय न [दे] तृण-विशेष, गण्डुत् तृण (दे ७, १७) ।

लच्छ देखो लक्ख = लक्ष्य (नाट) ।

लच्छं देखो लभ ।

लच्छण देखो लक्खण = लक्षण (सुपा ६४, प्राकृ २२, नाट—चैत ५५) ।

लच्छिं स्त्री [लक्ष्मी] १ सपत्ति, वैभव । २ लच्छी } धन, द्रव्य । ३ कान्ति । ४ औपध-विशेष । ५ फलितो वृक्ष । ६ स्थल-पद्मिनी । ७ हरिद्रा । ८ मुक्ता, मोती । ९ शटी नामक औपधि (कुमा, प्राकृ ३०, हे २, १७) ।

१० शोभा (से २, ११) । ११ विष्णु-पत्नी (पात्र, से २, ११) । १२ रावण की एक पत्नी (पउम ७४, १०) । १३ पृष्ठ वासुदेव की माता (पउम २०, १८४) । १४ पुंडरीक द्रव्य की अधिष्ठात्री देवी (ठा २, ३—पत्र ७२) । १५ देव-प्रतिमा विशेष (गाथा १, १ टी—पत्र ४३) । १६ छन्द-विशेष (पिंग) । १७ एक वणिक्-पत्नी (७२८ टी) । १८ शिखरी पर्वत का एक कूट (इक) । °निलय पु [°निलय] वासुदेव (पउम ३७, ३७) । °मई स्त्री [°मती] १ छटवें वासुदेव की माता (सम १५२) । २ ग्यारहवें चक्रवर्ती का स्त्री-रत्न (सम १५२) । °मदिर न [°मन्दिर] नगर-विशेष (सुपा ६३२) । °वइ पु [°पति] लक्ष्मी का स्वामी, श्रीकृष्ण (प्राकृ ३०) । °वई स्त्री [°वती] दक्षिण रुक्क पर रहनेवाली एक दिक्कुमारी देवी (ठा ८—पत्र ४३६, इक) । °हर पु [°धर] १ वासुदेव (पउम ३८, ३४) । २ छन्द-विशेष (पिंग) । ३ न नगर-विशेष (इक) ।

लजुक (अशो) देखो रज्जु = (दे) (कप्प—रज्जु) ।

लज्ज अक [लज्ज] शरमाना । लज्जइ (उव, महा) । कर्म लज्जिज्जइ (हे ४, ४१६) ।

वकृ लज्जत, लज्जमाण (उप पृ ५५, महा, आचा) । कृ लज्जणिज्ज (से ११, २६, गाथा १, ८—पत्र १४३) ।

लज्जग } न [लज्जन] १ शरम, लाज
लज्जणय } (सा ८, राज) । २ वि लज्जा-कारक, 'कि एतो लज्जणय ज पह-रिज्जइ दीणे पलायमाणे पमत्ते वा' (सुपा २१५, भवि) ।

लज्जा स्त्री [लज्जा] १ लाज, शरम (औप, कुमा, प्रामु ६६, गा ६१०) । २ छन्द-विशेष (पिंग) । ३ समय (भग २, ५, औप) ।

लज्जापइत्तअ (शौ) वि [लज्जयित्] लज्जाने-वाला, 'जुवइवेसलज्जापइत्तअ' (मा ४२) ।

लज्जालु वि [लज्जालु] लज्जावान्, शरमिदा (उप १७६ टी) ।

लज्जालु स्त्री [लज्जालु] १ लता-विशेष, लज्जालुआ } लाजवती, लज्जवती, छुईमुई
लज्जालुइणी (पइ, हे २, १५६, १७४) । २ लज्जावाली स्त्री (पइ, हे २, १५६, १७४, सुर २, १५६, गा १२७, प्राकृ ३५) ।

लज्जालुइणी स्त्री [दे] कलह-कारिणी स्त्री (पइ) ।

लज्जालुइर } वि [लज्जालु] लज्जाशील,
लज्जालुइर } शरमिदा । स्त्री °री (गा ४८२, ६१२ अ) ।

लज्जाव सक [लज्जय] शरमिदा बनाना, लज्जवाना । लज्जावेदि (शौ) नाट—मृच्छ ११०) । कृ. लज्जावणिज्ज (स ३६८, भवि) ।

लज्जावण वि [लज्जन] शरमिन्दा करनेवाला (परह १, ३—पत्र ५४) ।

लज्जाचिय वि [लज्जित] लज्जवाया हुआ (परह १, ३—पत्र ५४) ।

लज्जिअ वि [लज्जित] १ लज्जा-युक्त (पात्र) । २ न लज्जा, शरम, 'न लज्जिअ अण्णोवि पलिआण' (आ १४) ।

लज्जिर वि [लज्जित्] लज्जा-शील (हे २, १४५, गा १५०, कुमा, वज्जा ८, भवि) । स्त्री °री (पि ५६६) ।

लज्जु स्त्री [रज्जु] १ रस्सी, लज्जुरी, लेज्जुरी या लेजुर । २ वि रस्सी की तरह सरल, सीधा, 'चाई लज्जु धन्ने तवस्सी' (परह २, ५—पत्र १४६, भग) ।

व

व पुं [व] १ अन्तस्थ व्यञ्जन वर्ण-विशेष, जिसका उच्चारणस्यान दन्त और ओष्ठ हैं (प्राप, प्रामा) । २ पुन. वरण (से १, १, २, ११) ।

व अ [व] देखो इव (से २, ११, गा १८, ६३, ६४, ७६, कुमा, हे २, १८२, प्रासू २) ।

व देखो वा = अ (हे १, ६७, गा ४२, १६४, कुमा, प्राकृ २६, भवि) ।

व° देखो वाया = वाच् । °कखेवअ वि [°क्षेपक] वचन का निरसन—खण्डन (गा १४२ अ) । °पइराय पुं [°पतिराज] एक प्राचीन कवि, 'गउडवहो' काव्य का कर्ता (गउड) ।

वअणीआ छी [दे] १ उन्मत्त छी । २ दु शील छी (पड्) ।

वअल अक [प्र + सू] पमरना, फेलना । वअलइ (पड्) ।

वआड देखो वायाड = वाचाट (सखि २) ।

वइ अ [वै] इन अर्थों का सूचक अव्यय— १ अवधारण, निश्चय (विसे १८००) । २ अनुनय । ३ संवोधन । ४ पादपूर्ति (चड) ।

वह अ [दे] वदि, कृष्ण पक्ष, 'फगुणवह-छट्टीए' (सुपा ८६) ।

वइ वि [व्रतिन्] व्रतवाला, सयमी (उव, सुपा ४३६) । छी. °णी (उप ५७१) ।

वइ छी [वाच्] वाणी, वचन (सम २५, वप्प, उप ६०४, आ ३१, सुपा १८४, कम्म ४, २४, २७, २८) । °गुत्त वि [°गुप्त] वाणी का सयमवाला (आचा, उप ६०४) । °गुत्ति छी [°गुप्ति] वाणी का सयम (आचा) । °जोअ, °जोग पु [°योग] वचन-व्यापार (भग, पएह १२) । °जोगि वि [°योगिन्] वचन-व्यापारवाला (भग) । °मत वि [°मत्] वचनवाला (आचा २, १, ६, १) । °मेत्त न [°मात्र] निरर्थक वचन (धर्मसं २८४, २८५, ८४४) । देखो वई ।

वइ छी [वृत्ति] बाड, कांटे आदि से वनाई जाती स्थानपरिवि, घेरा, 'घन्नाएं रक्खट्टा कोरति वईओ' (आ १०, गउड, गा ६६, उप ६४८, पउम १०३, १११, वजा ८६), 'उच्छू वोलति वइ' (धर्मवि ५३, सवोष ४२) ।

°वइ देखो पइ = पति (गा ६६, से ४, ३४, कप्प, कुमा) ।

वइ° देखो वय = वद् ।

वइ° देखो वय = वज् ।

वइअ वि [दे] १ पीत, जिसका पान किया गया हो वह (दे ७, ३४) । २ आच्छादित, ढका हुआ, 'पच्छाइअमूमिआइ वइआइ' (प्राप्र) ।

वइअ वि [व्ययित] जिसका व्यय किया गया हो वह, 'किमिह दव्वेण वइएण वट्टएण' (सुपा ५७८, ७३, ४१०) ।

वइअवभ पु [वैदर्भ] १ विदर्भ देश का राजा । २ वि. विदर्भ देश में उत्पन्न (पड्) ।

वइअर पु [व्यतिकर] प्रसङ्ग, प्रस्ताव (सुर ४, १३६, महा) ।

वइअवव देखो वय = वज् ।

वइआ छी [व्रजिआ] छोटा गोकुल (पिंड ३०६, सुख २, ५, ओष ८४) ।

वइआलिअ वि [वैतालिक] मंगल स्तुति आदि से राजा को जगानेवाला मागव आदि (हे १, १५२) ।

वइआलीअ पुन [वैतालीय] छन्द-विशेष (हे १, १५१) ।

वइएस वि [वैदेश] विदेश सक्की, परदेशी (पउम ३३, २४, हे १, १५१, प्राकृ ६) ।

वइएह पुं [वैदेह] १ वणिक्, वैश्य । २ शूद्र पुरुष और वैश्य छी से उत्पन्न जाति-विशेष । ३ राजा जनक । ४ वि. देह-रहित से सक्क रखनेवाला । ५ मिथिला देश का (हे १, १५१, प्राकृ ६) ।

वइगण न [दे] वैगन, वृत्ताक, भटा (दे ६, १००) ।

वइकच्छ पुं [वैकक्ष] उत्तरासग (श्रीप) ।

वइकलिअ न [वैकल्य] विकलता (प्राप्र) ।

वइकुठ पु [वैकुण्ठ] १ उपेन्द्र, विष्णु (प्राप्र) । २ लोक-विशेष, विष्णु का धाम (उप १०३१ टी) ।

वइक्कंत वि [व्यतिक्रान्त] व्यतीत, गुजरा हुआ (पउम २, ७४, उवा, पडि) ।

वइक्कम पुं [व्यतिक्रम] विशेष उल्लयन, व्रत-दोष-विशेष (ठा ३, ४—पत्र १५६, पव ६, टी, पउम ३१, ६१) ।

वइगरणिय पुं [वैकरणिक] राज कर्मचारि-विशेष (सुपा ५४८) ।

वइगा देखो वइआ (सुख २, ५, वृह ३) ।

वइगुण न [वैगुण्य] १ वैकल्य, अपरि-पूर्णता, असंपन्नता (धर्मसं ८८४) । २ विप-रीतपन, विपर्यय (राज) ।

वइचित्त न [वैचित्त्य] विचित्रता (विसे ३११, धर्मसं ६५) ।

वइजवण वि [वैजवन] गोत्र-शेष में उत्पन्न (हे १, १५१) ।

वइणी देखो वइ = व्रतिन् ।

वइतुलिय वि [वैतुलिक] तुल्यता-रहित (निबू ११) ।

वइत्तए } देखो वय = वद् ।

वइत्ता } देखो वय = वच् ।

वइत्तु वि [वदित्] बोलनेवाला, 'मुस वइत्ता भवति' (ठा ७—पत्र ३८६) ।

वइदम्भ देखो वइअम्भ (हे १, १५१) ।

वइदिस पुं [वैदिश] १ अवन्ती देश, मालव देश, 'वइदिम उज्जेणीए जियपडिमा एलगच्छं च' (उप २०२) । २ वि. विदिशा संवन्धी (वृह ६) ।

वइदंस देखो वइएस (प्राप्र) ।

वइदेसिअ वि [वैदेशिक] विदेशीय, परदेशी (सखि ५, कुप्र ३८०, सिरि ३६३, पि ६१) ।

वइदेह देखो वइएह (प्राप्र) ।

लया ली [लता] १ वल्ली, वल्लरी (पण १, गा २८, काप्र ७२३, कुमा, कप्प) । २ प्रकार, भेद, 'सघाडो ति वा लय ति वा पगारो ति वा एगट्टा' (वृह १) । ३ तप-विशेष (पव २७१) । ४ सख्या-विशेष, चौरासी लाख लताग-परिमित सख्या (जो २) । ५ कम्वा, छडी, यष्टि, 'कसप्पहारे य लयप्पहारे य छिवापहारे य' (णाय १, २—पत्र ८६, विपा १, ६—पत्र ६६) । ६ जुद्ध न [युद्ध] लडने की एक कला, एक तरह का युद्ध (श्रीप) ।

लयापुरिस पु [दे] वह स्थान, जहाँ पद्म-हस्त ली का चित्रण किया जाय, 'पद्मकरा जत्य वह लिहिलए सो लयापुरिसो' (दे ७, २०) ।

लल अक [ल, लड्] १ विलास करना, मौज करना । २ झूलना । ललइ, ललेइ (प्राकृ ७३, सण, महा, सुपा ४०३) । वक्र, ललत, ललमाण (गा ४४६, सुर २, २३७, भवि, श्रीप, सुपा १८१, १८७) ।

ललणा ली [ललना] ली, महिला, नारी (तड्ड ५०, मुपा ४.७) ।

ललाड देखो णडाल (श्रीप, पि २६०) ।

ललाम न [ललामन्] प्रवान, नायक (अभि ६५) ।

ललित न [ललित] १ विलास, मौज, लीला (पाप्र, पव १६६, श्रीप) । २ अग-विन्यास-विशेष (पणह १, ४) । ३ प्रसन्नता, प्रसाद (विपा १, २ टी—पत्र २२) । ४ वि. क्रीडा-प्रधान, मौजी (णाय १, १६—पत्र २०५) । ५ शोभा-युक्त, सुन्दर, मनोहर (णाय १, १, श्रीप, राय) । ६ मंजु, मधुर (पाप्र) । ७ ईप्सित, अभिलषित (णाय १, ६) । ८ मित्र पुं [मित्र] सातवें वासुदेव का पूर्वजन्मीय नाम (सम १५३, पठम २०, १७१) । ९ विस्तरा ली [विस्तरा] आचार्य श्रीहरिभद्रसूरि का बनाया हुआ एक जैन ग्रन्थ (चैद्य २५६) ।

ललितंग पु [ललिताङ्ग] एक राज-कुमार (उप ६८६ टी) ।

ललितय न [ललितक] छन्द-विशेष (अभि १८) ।

ललिआ ली [ललिना] एक पुरोहित-ली (उप ७२८ टी) ।

लल वि [दे] १ सस्पृह, स्पृहावाला । २ न्यून, अछूरा (दे ७, २६) ।

लल वि [लल] अव्यक्त आवाजवाला (पणह १, २) ।

ललक पु [ललक] छठवीं नरक-पृथिवी का एक नरक-स्थान (देवेन्द्र १२) ।

ललक वि [दे] १ भीम, भयकर (दे ७, १८, पाप्र, सुर १६, १४८), 'ललकनरयविअणामो' (भत्त ११०) । २ पुं ललकोर, लडाईं आदि के लिए आह्वान (उप ७६८ टी) ।

ललि ली [दे] खुशामद (धर्मवि ३८, जय १६) ।

ललिरी ली [दे] मछली पकड़ने का जाल-विशेष (विपा १, ८—पत्र ८१) ।

लव सक [लू] काटना । सक लविऊण । हेकू, लविउ । कू लविअन्व (प्राकृ ६६) ।

लव सक [लप्] बोलना, कहना । लवइ (कुमा, सवोध १८, सण), लवे (भास ६६) । वक्र लवत, लवमाण (सुपा २६७, सुर ३, ६१) ।

लव सक [प्र+वर्तय्] प्रवृत्ति कराना, 'णो विज्जु लवति' (सुज्ज २०) ।

लव वि [लप] वाचाट, वक्रवादी (सूअ २, ६, १५) ।

लव पु [लव] १ समय का एक सूक्ष्म परिमाण, सात स्तोक, मुहूर्त का सतरहवाँ अंश (ठा २, ४—पत्र ८६, सम ८५) । २ लेश, अल्प, थोडा (पाप्र, प्रासू ६६, ११८, सण) । ३ न. कर्म (सूअ १, २, २, २०, २, ६, ६) । ४ सत्तम पु [सत्तम] अनुत्तरविमान निवासी देव, सर्वोत्तम देव-जाति (पणह २, ४, उव, सूअ १, ६, २४) ।

लवअ पुं [दे. लवक] गोद, लाया, चेरा, निर्याप, 'लवओ गुदो' (पाप्र) ।

लवइअ वि [दे. लवकित] नूतन दल से युक्त, अकुरित, पल्लवित (श्रीप, भग, णाय १, १ टी—पत्र ५) ।

लवग पुन [लवङ्ग] १ वृक्ष-विशेष, लौंग का पेड़ (पणह १—पत्र ३४, कुप्र २४६) । २ वृक्ष-

विशेष का फूल, लौंग (णाय १, १—पत्र १२, पणह २, ५) ।

लवण न [लवन] छेदन, काटना (विसे ३२०६) ।

लवण न [लवण] १ लोत, नून, नोन, नमक (कुमा) । २ पु. रस विशेष, क्षार रस (अणु) । ३ समुद्र विशेष (सम ६७, णाय १, ६, पठम ६६, १८) । ४ सीता का एक पुत्र, लव (पठम ६७, १६) । ५ मधुराज का एक पुत्र (पठम ८६, ४७) । ६ जल पु [जल] लवण समुद्र (पठम ५७, २७) । ७ लव पु [लोद] लवण समुद्र (पठम ६४, १३) । देखो लोण ।

लवणिम पुली [लवणिमन्] लावण्य (कुमा) । लवल न [लवल] पुष्प-विशेष (कुमा) ।

लवली ली [लवली] लता-विशेष (सुपा ३८, कुप्र २४६) ।

लवव वि [दे] सुप्त, सोया हुआ (पड्) । लविअ वि [लपित] उक्त, कथित (सूअ १, ६, ३५, कुमा, सुपा २६७) ।

लवित्त न [लवित्र] दात्र, दाँती हँसुमा या हँसिया, घास काटने का एक औजार (दे १, ८२) ।

लविर वि [लपित्] बोलनेवाला (सण) । ली 'रा (कुमा) ।

लस अक [लस्] १ श्लेष करना । २ चमकना । ३ क्रीडा करना । लसइ (प्राकृ ७२) । वक्र लसत (सण) ।

लसइ पु [दे] काम, कन्दर्प (दे ७, १८) । लसक न [दे] तक्ष-शौर, पेड़ का दूध (दे ७, १८) ।

लसण देखो लसुण (सूअ १, ७, १३) ।

लसिर वि [लसित्] १ श्लिष्ट होनेवाला । २ चमकनेवाला, दीप्त (से ८, ४४) ।

लसुअ न [दे] तैल, तेल (दे ७, १८) ।

लसुण न [लशुन] लहसुन, कन्द-विशेष (आ २०) ।

लह देखो लभ । लहइ, लहेइ, लहए (महा, पि ४५७) । भवि लहिस्सामो (महा) । कर्म लहिज्जइ (हे ४, २४६) । वक्र लहंत (प्राकृ) । सक लहिउ, लहिऊण (कुप्र १, महा) लहेप्पि, लहेप्पिणु, लहेवि (अप, पि ५८८) । कू. लहणिज्ज, लहिअन्व (आ १४, सुर ६, ५३, सुपा ४२७) ।

वइस्स वि [द्वेप्य] अप्रीतिकर (उत्त ३२, १०३) ।

वइस्सदेव पुं [वैश्वदेव] वैश्वानर, अग्नि (निर ३, १) ।

वइस्साणर पु [वैश्वानर] १ वह्नि, अग्नि । ३ चित्रक वृक्ष । ३ सामवेद का अवयव-विशेष (हे १, १५१) ।

वई देखो वइ = वाच् (आचा) । °मय वि [°मय] वचनात्मक (दस ६, ३, ६) ।

वईअ वि [व्यतीत] अतीत, गुजरा हुआ । °मोग पुं [°शोक] एक जैन मुनि (पउम २०, २०) ।

वईवय सक [व्यति + व्रज्] जाना, गमन करना । वक्र, 'कोल्लायस्स सतिवेस्स अदूर-सामंतेण वईवयमाणे बहुजणसद् निसामेद् (उवा) ।

वईवाय देखो वइवाय (राज) ।

वउ पुं [दे] लावण्य, शरीर-कान्ति, 'वऊ अ लायणो' (दे ७, ३०) ।

वउ न [वपुप्] शरीर, देह (राज) ।

वउलिअ वि [दे] शूल-प्रोत (दे ७, ४४) ।

वएमाण देखो वय = वद् ।

वओ° देखो वय = वचस् (आचा) । °मय न [°मय] वाङ्मय, शास्त्र (विसे ५५१) ।

वओ° देखो वय = वयस् (पउम ४८, ११५) ।

वओवउप्फ पुं [दे] विपुवत्, समान वओवत्थ } रात और दिनवाला काल (दे ७, ५०) ।

व° देखो वाया = वाच् । °नियम पु [°नियम] वाणी की मर्यादा (उप ७२८ टी) ।

वक वि [वक्क, वक्क] १ बाँका, टेढ़ा, कुटिल (कुमा, सुपा १७२, पि ७४) । २ नदी का बाँक (हे १, २६, प्राप्र) ।

वक पु [दे] कलक, दाग (दे ७, ३०) ।

°वक देखो पक (से ६, २६, गउड) ।

वकचूल पु [वक्कचूल] एक प्रमिद्ध राज-कुमार (धर्मवि ५२, पडि) ।

वंकचूलि पु [वक्कचूलि] ऊपर देखो, तओ गया वकचूलिणो गेहे (धर्मवि ५३, ५६, ६०) ।

वंकण न [वक्कण, वक्कण] वक्कीकरण, कुटिल बनाना (ठा २, १—पत्र ४०) ।

वंकिअ वि [वक्कित] बाँका किया हुआ (से ६, ५६) ।

°वंकिअ वि [पक्कित] पंक-युक्त (से ६, ५६) । वंकिम पुं [वक्किमन्] वक्रता, कुटिलता (पि ७४, हे ४, ३४४, ४०१) ।

वकुड } देखो वक = वक्, 'विविहविसविड-
वंकुण } विनिगयवकुडित्क्खगकटइए। एया-
रिस्मि य वणे' (स २५६, हे ४, ४१८, भवि, पि ७४) ।

वंकुभ (शौ) ऊपर देखो (प्राक् ६७) ।

वग न [दे] वृत्ताक, भंडा (दे ७, २६) ।

वंग वि [व्यङ्ग] विकृत अंग, 'ववगय-वलीपलियवगदुव्वन्नवाधिदोहगसोयमुक्काओ' (पएह १, ४—पत्र ७६) ।

वगच्छ पु [दे] प्रमथ, शिव का अनुचर-विशेष (दे ७, ३६) ।

वगण न [व्यङ्गण] क्षत (राज) ।

वगिय वि [व्यङ्गित] विकृत शरीरवाला (राज) ।

वगेवडु पु [दे] सूकर, सूअर (दे ७, ४२) ।

वच सक [वच्च] ठगना । वंचइ (हे ४, ६३, पड, महा) । कर्म वचिउइ (भवि) । सक वचिऊण (महा) । कृ. वंचणीअ (प्राप्र) । प्रयो, वक 'तो सो वचावितो कुमरपहार वएइ पुरवाहि' (सुपा ५७२) ।

वंच (अप) देखो वच = वज् । वचइ (प्राक् ११६) । सक वंचिवि (भवि) ।

वच सक [उद् + नमय्] ऊँचा उठाना । वंचइ (?) (घात्वा १५१) ।

वच वि [वच्च] ठगनेवाला, धूर्त, 'कुडिलत्तण च वक्तण च वंचत्तण अस्सच्च च' (वज्जा ११६, हे ४, ४१२) ।

वचअ } वि [वच्चक] ऊपर देखो (नाट—
वंचग } मालवि, आ २८) ।

वंचण न [वच्चन] १ प्रतारण, ठगई (सम्मत्त २१७) । २ वि, ठगनेवाला, ठग (सबोध ४१) । °चण वि [°चण] ठगने में चतुर (सम्मत्त २१७) ।

वंचणा स्त्री [वच्चना] प्रतारणा (उव, कप्पु) ।

वंचिअ वि [वच्चित] १ प्रतारित (पाप्र) । २ रहित, वंचित (गउड) ।

वच्छा स्त्री [वाञ्छा] इच्छा, चाह (सुपा ४०४) ।

वज सक [वि + अञ्ज्] व्यक्त करना, प्रकट करना । कर्म, वजिजइ (विसे १६४, ४६३, धर्मसं ५३) ।

वज देखो वच = उद् + नमय् । वजइ (?) (घात्वा १५१) ।

वंज देखो वंद = वन्द ।

वजग देखो वजय (राज) ।

वजण न [व्यञ्जन] १ वण, अक्षर, 'अणक्खर होज्ज वजणक्खरओ' (विसे १७०), 'तो नत्थि अत्यन्नेओ वजणरयणा पर मित्ता' (चेइय ८६६) । २ स्वर-भिन्न अक्षर, क से ह तक वर्ण (विसे ४६१, ४६२) । ३ शब्द, पद, 'सो पुण समासओ विअ वंजणनिअओ य अत्यनिअओ अ' (सम्म ३०, सूअनि ६, पडि, विसे १७०) । ४ तरकारी, कढ़ी आदि रस-व्यञ्जक वस्तु (सुपा ६२३, ओघ ३५६) ।

५ शुक, वीर्य (विसे २२८) । ६ शरीर का मसा आदि चिह्न (पव २५७, श्रीप) । ७ मसा आदि शरीर चिह्न के फल का उपदेशक शास्त्र (सम ४६) । ८ कक्षा आदि के बाल (राज) ।

९ प्रकाशन, व्यक्तीकरण (विसे ४६१) । १० ओआदि इन्द्रिय । ११ शब्द आदि द्रव्य । १२ द्रव्य और इन्द्रिय का सवन्ध (एदि, विसे २५०) । °वग्गह, °ोगगह पुं [°विग्रह] ज्ञान-विशेष, चक्षु और मन को छोड़ कर अन्य इन्द्रियो से होनेवाला ज्ञान-विशेष (कम्म १, ४, ठा २, १) ।

वजय वि [व्यञ्जक] व्यक्त करनेवाला (भास २६) ।

वजर पु [मार्जार] विल्ला, विलार (हे २, १३२; कुमा) ।

वंजर न [दे] नीवी, कटी-वस्त्र (दे ७, ४१) ।

वंजिअ वि [व्यञ्जित] व्यक्त किया हुआ, प्रकटित (कुमा १, १८, २, ६६) ।

वंजुल पुं [वञ्जुल] १ अशोक वृक्ष (गा ४२२, स १११) । २ वेतस वृक्ष (पाप्र), 'वञ्जुलसणेण विस व पन्नगो मुयइ सो पाव' (धम्म ११ टी, वज्जा ६६, उप ७२८ टी) । ३ पक्षि-विशेष (पएह १, १—पत्र ८) ।

लालप अक [वि + लप्] विलाप करना, विकल होकर रोना । लालपइ (प्राकृ ७३) ।
 लालपिअ न [दे] १ प्रवाल । २ खलीन । ३ आक्रान्त (दे ७, २७) ।
 लालभ देखो लालंभ । लालभइ (प्राकृ ७३) ।
 लालण न [लालन] स्नेह-पूर्वक पालन (पचम २६, ८८) ।
 लालप्प देखो लालप । लालप्पइ (प्राकृ ७३) ।
 लालप्प सक [लालप्प] १ खूब वकना । २ बारबार बोलना । ३ गहित बोलना । लालप्पइ (सूत्र १, १०, १६) । वक्र. लालप्पमाण (उत्त १४, १०, आचा) ।
 लालप्पण न [लालपन] गहित जल्पन (पह १, ३—पत्र ४३) ।
 लालवभ } देखो लालप । लालवभइ, लालवभइ
 लालवभ } (प्राकृ ७३, धात्वा १५०) ।
 लालय न [लालक] लाला, लार (दे ५, १६) ।
 लालस वि [दे] १ मृदु, कोमल । २ स्त्रीन इच्छा (दे ७, २१) ।
 लालस वि [लालस] लम्पट, लोलुप (पात्र, हे ४, ४०१) ।
 लाला स्त्री [लाला] लार, मुँह से गिरता जल-लव (श्रौप, गा ५५१, कुमा, सुपा २२६) ।
 लालिअ देखो लालिअ, 'कुसुमिअहरिअदण-कणयदणपरिभलालिअगोअ' (गउड) ।
 लालिअ वि [लालित] स्नेह पूर्वक पालित (भवि) ।
 लालिच (अप) पु [नालिच] वृक्ष-विशेष (पिंग) ।
 लालिह वि [लालावत्] लारवाला (सुपा ५३१) ।
 लाव सक [लाप्य] बुलवाना, कहलाना । लावएज्जा (सूत्र १, ७, २४) ।
 लाव देखो लावग (उप ५०७) ।
 लावज न [दे] सुगन्धी द्रुण विशेष, उशीर, खस (दे ७, २१) ।
 लावक } पु [लावक] १ पक्षि-विशेष (विपा
 लावग } १, ७—पत्र ७५, पह १, १—
 पत्र ८) । २ वि. काटनेवाला (विसे ३२०६) ।
 लावणिअ वि [लावणिक] लवण से संस्कृत (विपा १, २—पत्र २७) ।

लावण } देखो लायण (श्रौप, रभा, काल,
 लावन्न } अमि ६२, भवि) ।
 लावय देखो लावग (उवा) ।
 लाविय (अप) वि [लात] लाया हुआ (भवि) ।
 लाविया स्त्री [दे] उपलोभन (सूत्र १, २, १, १८) ।
 लाविर वि [लवित्] काटनेवाला (गा ३५५) ।
 लास सक [लासय] नाचना । लासति (राय १०१) ।
 लास न [लास्य] १ भरतशास्त्र-प्रसिद्ध गेयपद आदि (कुमा) । २ नृत्य, नाच (पात्र) । ३ स्त्री का नाच । ४ वाद्य, नृत्य और गीत का समुदाय (हे २, ६२) ।
 लासक } पु [लासक] १ रास गानेवाला ।
 लासग } २ जय शब्द बोलनेवाला, भाएड (राया १, १ टी—पत्र २, श्रौप, पह २, ४—पत्र १३२, कण) ।
 लासय पु [लामक, हलासक] १ अनायं देश-विशेष । २ पु स्त्री अनायं देश-विशेष का रहनेवाला । स्त्री 'सिया (श्रौप, राया १, १—पत्र ३७, इक, अत) । देखो ल्हासिय ।
 लासयविहय पु [दे लासकविहग] मयूर, मोर (दे ७, २१) ।
 लाह सक [आघ] प्रशंसा करना । लाहइ (हे १, १८७) ।
 लाह देखो लाभ (उव, हे ४, ३६०, आ १२, राया १, ६) ।
 लाहण न [दे] भोज्य भेद, खाद्य वस्तु की भेंट (दे ७, २१, ६, ७३, सट्टि ७८ टी, रंभा १३) ।
 लाहल देखो लाहल (से १, २५६, कुमा) ।
 लाहव देखो लाघव (किरात १७) ।
 लाहवि देखो लाघवि (भवि) ।
 लाहविय देखो लाघविअ (राज) ।
 लिअ सक [लिप्] लेपन करना, लोपना । लिअइ (प्राकृ ७१) ।
 लिअ वि [लिप्] १ लोपा हुआ (गा ५२८) । २ न लेप (प्राकृ ७७) ।
 लिआर पु [ल्लकार] 'ल्ल' वर्ण (प्राकृ ६) ।
 लिंक पु [दे] बाल, लडका (दे ७, २२) ।
 लिंकिअ वि [दे] १ आक्षिप्त । २ लीन (दे ७, २८) ।
 लिखय देखो लख (सुपा ३५६) ।

लिग सक [लिङ्ग] १ जानना । २ गति करना । ३ आलिंगन करना । कर्म, लिगिअइ (सबोध ५१) ।
 लिग न [लिङ्ग] १ चिह्न, निशानी (प्रासू २४, गउड) । २ दार्शनिकों का वेप-धारण, साधु का अपने धर्म के अनुसार वेप (कुमा, विसे १५८५ टि, ठा ५, १—पत्र ३०३) । ३ अनुमान प्रमाण का साधक हेतु (विसे १५५०) । ४ पृश्निह, पुरुष का अमाधारण चिह्न (गउड) । ५ शब्द का धर्म-विशेष, पुलिग आदि (कुमा, राज) । ६ द्वय पुं [ध्वज] वेपचारी साधु (उप ४८६) । ७ जीव पु [जीव] वही अर्थ (ठा ५, १) ।
 लिगि वि [लिङ्गिन्] १ साध्य, हेतु से जानी जाती वस्तु (विसे १५५०) । २ किसी धर्म के वेप को धारण करनेवाला साधु, सन्यासी (पचम २२, ३, सुर २, १३०) । स्त्री 'णो (पुष्प ४५४) ।
 लिगिय वि [लिङ्गिक] १ अनुमान प्रमाण (विसे ६५) । २ किसी धर्म के वेप को धारण करनेवाला साधु, सन्यासी (मोह १०१) ।
 लिछ न [दे] १ कुल्ली-स्थान, कुल्हा का आश्रय । २ अग्नि-विशेष (ठा ८ टी—पत्र ४१६) । देखो लिच्छ ।
 लिड न [दे] १ हाथी आदि की विष्टा, गुजराती में 'लीद' (राया १, १—पत्र ६३, उप २६४ टी, तो २) । २ शैवल-रहित पुराना पानी (पह २, ५—पत्र १५१) ।
 लिडिया स्त्री [दे] अज—वकरा आदि की विष्टा, नेंदी, गुजराती में 'लिडी' (उप पु २३७) ।
 लिन देखो ले = ला ।
 लिप सक [लिप्] लोपना, लेप करना । लिपइ (हे ४, १४६, प्राकृ ७१) । कर्म लिप्पइ (आचा) । वक्र लिपेमाण (राया १, ६) । कवक लिप्पत, लिप्पमाण (शोधभा १६५, रयण २६) ।
 लिपण न [लेपन] लेप, लोपना (विह २४६, सुपा ६१६) ।
 लिपाविच वि [लेपित] लेप कराया हुआ (कुप्र १४०) ।
 लिपिय वि [लिप्न] लोपा हुआ (कुमा) ।

वसा स्त्री [वंशा] द्वितीय नरक-पृथिवी (ठा ७—पत्र ३८८, इक) ।

वसि° देखो वसी = वश (कम्म १, २०) ।

वसिअ वि [वांशिक] वश वाद्य बजानेवाला (हे १, ७०, कुमा) ।

वसिअ वि [व्यमित] छलित, प्रतारित (राज) ।

वसी स्त्री [वांशी] १ सुरा-विशेष (बृह २) ।

२ बाँस की जाली (ठा ३, १—पत्र १२१) ।

°कलङ्का स्त्री [°कलङ्का] बाँस की जाली की बनी हुई बाढ (विपा १, ३—पत्र ३८) ।

°पत्तिआ स्त्री [°पत्तिआ] योनि-विशेष, वंशजाली के पत्र के आकार की योनि (ठा ३, १) ।

वसी स्त्री [वशी] वाद्य-विशेष, मुरली (बृह २) । °णहिया स्त्री [°नखिका] वनस्पति-विशेष (पराण १—पत्र ३८) । °मुह पु [°मुख] द्विन्द्रिय जीव-विशेष (जीव १ टी—पत्र ३१) ।

वसी स्त्री [वश] बाँस । °मूल न [°मूळ] बाँस की जड़ (कस) ।

वसी स्त्री [दे] मस्तक पर स्थित माला (दे ७, ३०) ।

वक्क न [वाक्य] पद-समुदाय, शब्द-समूह (उव, उप ८३३, ८५६) ।

वक्क न [वलक] त्वचा, छाल (उप ८३६, औप) । °वध पु [°वन्ध] वल्क-बन्धन (विपा १, ८) ।

वक्क देखो वक = वंक (गाया १, ८—पत्र १३३, स ६११, धर्मसं ३४८, ३४६) ।

वक्क न [वक्त्र] मुख, मुँह (पउम १११, १७, गा १६४) ।

वक्क न [दे] पिष्ट, पिसान, आटा (पङ्) ।

वक्कत पुन [वक्रान्त] प्रथम नरक-भूमि का दसवाँ नरकेन्द्रक—नरकावास-विशेष (देवेन्द्र ५) ।

वक्कत वि [अवक्रान्त] उत्पन्न (कप्प, पि १४२) ।

वक्कति स्त्री [अवक्रान्ति] उत्पत्ति (कप्प, सम २, भग) ।

वक्कड न [दे] १ दुदिन । २ निरन्तर वृष्टि (दे ७, ३५) ।

वक्कडवध न [दे] कर्णभरण, कान का आभूषण (दे ७, ५१) ।

वक्कम अक [अव + क्रम्] उत्पन्न होना । वक्कमइ (भग, कप्प) । भूका, वक्कमिमु (कप्प) । भवि, वक्कमिस्सति (कप्प) । वक्क, वक्कममाण (भग, गाया १, १—पत्र २०) ।

वक्कर (अप) देखो वक्क = वक (भवि) ।

वक्कल न [वलल] वृक्ष की छाल (प्राप, सुपा २५२, हे ४, ३४१, ४११, प्रति ५) ।

°चीरि पु [°चीरिन्] एक महर्षि, जो राजा प्रमन्नचन्द्र के छोटे भाई थे (कुप्र २८६) ।

वक्कलि } वि [वलकलिन्] वृक्ष की छाल
वक्कलणि } पहननेवाला (तापम), (कुमा, भत्त १००, सवोव २१, पउम ३६, ८४) ।

वक्कल्लय वि [दे] पुरस्कृत, आगे किया हुआ (दे ७, ४६) ।

वक्कस न [दे] १ पुराना घान का चावल । २ पुरातन सक्तु-पिण्ड । ३ बहुत दिनों का बासी गोरस । ४ गेहूँ का माँड (आचा १, ६, ४, १३) ।

वक्किद (शौ) देखो वक्किअ (पि ७४) ।

वक्कख देखो वक्च्छ = वृक्ष (चड, उप ८८५) ।

वक्कख देखो वक्च्छ = वक्खस् (ससि १५; प्राक्क २२, नाट—मृच्छ १३३) ।

°वक्कख देखो पक्ख (गा ४४२, से ३, ४२, ४, २३, स ६५१) ।

वक्कखमाण देखो वय = व ।

वक्कखल वि [दे] आच्छादित, ढका हुआ (पङ्) ।

वक्कखा सक [व्या + ख्या] १ विवरण करना । २ कहना । कृ. वक्खेय (विसे १३७०) ।

वक्कखा स्त्री [व्याख्या] विवरण, विशद रूप से अर्थ प्रवृत्त (विसे ६६४) ।

वक्कखाण न [व्याख्यान] १ ऊपर देखो (चेइय २७१, विसे ६६५) । २ कथन (हे २, ६०) ।

वक्कखाण सक [व्याख्यानय्] १ विवरण करना । २ कहना । वक्खाणइ (भवि) । भवि, वक्खाणइस्स (शौ) (पि २७६) ।

कम्म, वक्खाणिज्जइ (विसे ६८४) । वक्क, वक्खाणयत (उवर ६८, रयण २१) ।

सक्क, वक्खाणेउ (विसे ११) । कृ वक्खाणे-अव्व (राज) ।

वक्कखाणि वि [व्याख्यानिन्] व्याख्यान-कर्त्ता (धर्मसं १२६१) ।

वक्कखाणिय वि [व्याख्यान्ति] व्याख्यात (विसे १०८७) ।

वक्कखाणीअ (अप) ऊपर देखो (पिग ५०६) ।

वक्कखाय वि [व्याख्यात] १ विवृत, वर्णित (स १३२, चेइय ७७१) । २ पुं. मोक्ष, मुक्ति (आचा १, ५, ६, ८) ।

वक्कखार पु [दे] वखार, अन्न आदि रखने का मकान, गोदाम (उप १०३१ टी) ।

वक्कखार पु [वखार, वक्खस्कार] १ पवत-विशेष, गज-दन्त के आकार का पर्वत (सम १०१, इक) । २ भू-भाग, भू-प्रदेश (पउम २, ५४, ५५; ५६, ५८) ।

वक्कखारय न [दे] १ रति-गृह । २ अन्न पुर (दे ७, ४५) ।

वक्कखाय सक [व्या + ख्यापय्] व्याख्यान कराना । वक्खावइ (प्राक्क ६१) ।

वक्खिखत्त वि [व्याक्षिप्प] १ व्यग्र, व्याकुल (ओघ १३, कुप्र २७) । २ किसी कार्य में व्यावृत्त (पव २) ।

वक्खेय देखो वक्कखा = व्या + ख्या ।

वक्खेव पु [व्याक्षेप] १ व्यग्रता, व्याकुलता (उवा, उप १३६ टी, १४०) । २ कार्य-बाहुल्य (सुख ३, १) ।

वक्खेव पु [अवक्षेप] प्रतिपेक्ष, खण्डन (गा २४२ अ) ।

वक्खो° देखो वक्च्छ = वक्खस् । °रुइ पुं [°रुह] स्तन, थन (सुपा ३८६) ।

वक्खु (शौ) देखो वक्क = वक्क (प्राक्क ६७) ।

वक्खा ग (अप) देखो वक्खाण = व्याख्यानय् । वखार (पिग) ।

वक्खाणिअ (अप) देखो वक्खाणिय (पिग) ।

वगडा स्त्री [दे] बाढ, परिक्षेप (कस, वव ६) ।

वगग सक [वल्ग] १ जाना, गति करना । २ कूटना । ३ बहु-भाषण करना । ४ अभिमान-सूचक शब्द करना, खूँखारना ।

वगगइ (भवि, सण, पि २६६), वगगति (सुपा २८८) । कम्म, वगगीअदि (शौ) (किरात १७) । वक्क, वगगत (स ३८३, सुपा ४६३, भवि) । संकृ. वगगित्ता (पि २६६) ।

लुंखिअ वि [दे] कलुप, मलिन (से १५, ४२)।

लुंच सक [लुञ्च] १ बाल उखाडना। २ अपनयन करना, दूर करना। लु चइ (भवि)। भूका, लु चिसु (आचा)।

लुंचिअ वि [लुञ्चित] केश-रहित किया हुआ, मुण्डित (कुप्र २६२, सुपा ६४१)।

लुंछ सक [मृज्, प्र + लुञ्च] मार्जन करना, पोछना। लु छइ (हे ४, १०५, प्राक ६७, धात्वा १५१)। वकृ. लुंछत (कुमा)।

लुंठ सक [लुण्ट] लूटना। लुंठति (सुपा ३५२)। वकृ. लुंठत (धर्मवि ११३)। वकृ. लुंठिज्जत (सुर २, १४)।

लुण्टन [लुण्टन] लूट (सुर २, ४६, कुमा)।

लुंठाक वि [लुण्ठाक] लूटनेवाला, लुटेरा (धर्मवि १२३)।

लुंठाग वि [लुण्ठाग] खल, दुर्जन, 'चडवद-वेडिआ उवहसिज्जमाणा लुंठागलोएण, अणु-कपिज्जती धम्मिअजणेण' (सुख २, ६)।

लुंठिअ वि [लुण्ठित] बलाद गृहीत, जबर-दस्ती से लिया हुआ (पिंग)।

लुंप सक [लुप्] १ लोप करना, विनाश करना। २ लुपीडन करना। लुंपइ, लुपहा (प्राक ७१, सूत्र १, ३, ४, ७)। कर्म लुप्पइ (अचा), लुप्पए (सूत्र १, २, १, १३)। वकृ. लुपंत, लुप्पमाण (पि पि ५४२, उवा)। सकृ. लुंपित्ता (पि ५८२)।

लुपइत्तु वि [लोपयित्] लोप करनेवाला (आचा, सूत्र २, २, ६)।

लुंपणा स्त्री [लोपना] विनाश (परह १, १—पत्र ६)।

लुपित्तु वि [लोपित्] लोप करनेवाला (आचा)।

लुंथी स्त्री [दे. लुंथी] १ स्तवक, फलो का गुच्छा (दे ७, २८, कुमा, गा ३२२, कुप्र ४६०)। २ लता, वल्ली (दे ७, २८)।

लुक भक [नि + ली] लुकना, छिपना। लुकइ (हे ४, ५५, पड्)। वकृ. लक्कत (कुमा, वज्जा ५६)।

लुक भक [लुड्] लूटना। लुकइ (हे ४, ११६)।

लुक वि [दे] सुभ, सोया हुआ (पड्)।

लुक वि [निलेन] लुका हुआ, छिपा हुआ (गा ४६, ५५८, पिंग)।

लुक वि [रुण] १ भग्न (कुमा)। २ बीमार, रोगी (हे २, २)।

लुक वि [लुञ्चिन] मुण्डित, केश-रहित (कप्प, पिड २१७)।

लुकमाण देखो लोअ = लोक।

लुकिअ वि [लुडित] लूटा हुआ, खण्डित (कुमा)।

लुकिअ वि [निलेन] लुका हुआ, छिपा हुआ (पिंग)।

लुक्ख पु [रुक्ख] १ स्पर्श विशेष, लूखा स्पर्श (ठा १, सम ४१) २ वि रुक्खा स्पर्शवाला, स्नेह रहित, लूखा, रुखा (गाया १, १—पत्र ७३, कप्प, प्रौप)। देखो लूइ = रुक्ख।

लुग्ग वि [दे. रुग्ण] १ भग्न, भांगा हुआ (दे ७, २३, हे २, २, ४, २५८)। २ रोगी, बीमार (हे २, २, ४, २५८ पड्)।

लुच्छ देखो लुछ = मृज्। लुच्छइ (पड्)।

लुट्ट सक [लुण्ट] लूटना। लुट्टइ (पड्)।

लुट्ट देखो लोट्ट = स्वप्। लुट्टइ (कुमा ६, १००)।

लुट्ट वि [लुण्डित] लूटा गया (धर्मवि ७)।

लुट्ट पु [लोष्ट] रोडा, डेला, इंट आदि का टुकड़ा (दे ७, २६)।

लुड्ड देखो लुद्ध (प्राक २१)।

लुड भक [लुड्] लुडकना, लेटना। वकृ. लुडमाण (म २५४)।

लुडिअ वि [लुडित] लेटा हुआ (सुपा ५०३, स ३६६)।

लुण देखो लुअ = लू। लुणइ (हे ४, २४१)। कर्म. लुणिज्जइ, लुव्वइ (प्राप्र, हे ४, २४२)।

सकृ. लुणिऊण, लुणेऊण (प्राक ६६, पड्), लुणेप्पि (अप) (पि ५८८)।

लुणिअ वि [लून] काटा हुआ (धर्मवि १२६, सिरि ४०४)।

लुत्त वि [लुप्] लोप-प्राप्त, 'करेइ लुत्तो इकारो ल्य' (चेइय ६७७)।

लुत्त न [लोप्प] चोरी का माल (आवक ६३ टी)।

लुद्ध पुं [लुव्व] १ व्याघ्र (परह १, २, निव्व ४)। २ वि लोलुप, लम्पट (प्राप्र, विपा १, ७—पत्र ७७, प्रासू ७६)। ३ न लोभ (वृह ३)।

लुद्ध न [लोप्प] गन्ध-द्रव्य विशेष, 'निगाण अदुवा कक्क लुद्धं पडमगाणि अ' (दम ६, ६४)। देखो लोट्ट = लोप्प।

लुद्ध पुन [लोप्प] क्षार-विशेष (आचा २, १३, १)।

लुपत } देखो लुंप।

लुप्पमाण } अक [लुम्] १ लाभ करना। लुम्भ } २ आसक्ति करना। लुम्भइ, लुम्भसि (हे ४, १५३, कुमा), लुम्भ (पड्)। कृ. लुम्भयव्व (परह २, ५—पत्र १४६)।

लुम्भ देखो लुह = मृज्। लुम्भइ (मसि ३५)।

लुरणी स्त्री [दे] वाद्य-विशेष (दे ७, २४)।

लुल देखो लुड। लुलइ (पिंग)। वकृ. लुलत्त, लुलमाण (सुपा ११०, सुर १०, २३१)।

लुलिअ वि [लुठित] लेटा हुआ (सुर ४, ६८)।

लुलिअ वि [लुलिन] घूर्णित, चलित (उवा, कुमा, काप्र ८६३)।

लुम् देखो लुअ = लू। लुवइ (धात्वा १५१)।

लुव्व देखो लुण।

लुइ सक [मृज्] मार्जन करना, पोछना। लुइइ (हे ४, १०५, पड्, प्राक ६६, भवि)।

लुहण न [मार्जन] शुद्धि (कुमा)।

लूअ देखो लूअ = लून (पड्)।

लूआ स्त्री [दे] मृग-वृष्णा, सूर्य-किरण में जल की भ्रान्ति (दे ७, २४)।

लूआ स्त्री [लूना] १ वास्तिक रोग विशेष (पचा १८, २७, सुपा १४७, सहस्र १५)। २ जाल बनावेवाला कृमि, मकड़ी (शोध ३२३, दे)।

लूड [लुण्ट] लूटना, चोरी करना। लूडइ, लूडेइ, लूडेह (धर्मवि ८०, संवेग २६, कुप्र ५६)। हेकृ. लूडेडं (सुपा ३०७, धर्मवि १२४)। प्रयो., वकृ. लूडावत (सुपा ३५२)।

वञ्जंसि वि [वचस्विन्] प्रशस्त वचनवाला (गाथा १, १—पत्र ६)।

वञ्जमि वि [वर्चस्विन्] तेजस्वी (गाथा १, १, सम १५२, श्रौप, पि ७४)।

वञ्जय पु [व्यत्यय] विपयास, उलट-पुलट (उपपृ २६६, पत्र १०४)। देखो वत्तअ।

वञ्जरा (अप) देखो वचा (भवि)।

वञ्ज। देखो वय = वच्।

वञ्जामेलिय देखो विञ्जामेलिय (विसे १४८१)।

वञ्जास पुं [व्यत्यास] विपर्यास, विपर्यय (श्लोक २७१, कम्म ५, ८६)।

वञ्जासिय वि [व्यत्यासित] उलटा किया हुआ (विसे ८५३)।

वञ्जीसग पुं [वञ्जीसक] वाद्य-विशेष (अनु)।

वञ्जो° देखो वञ्ज = वचस् (सुर ६, २८)।

वञ्छ न [दे] पार्श्व, समीप (दे ७, ३०)।

वञ्छ पुंन [वक्षस्] छाती, सीना (हे २ १७, सक्षि १५, प्राप्र, गा १५१, कुमा)।
°स्थल न [°स्थल] उर-स्थल, छाती (कुमा, महा)।
°सुत्त न [°सूत्र] आभूषण-विशेष, वक्ष स्थल में पहनने की सँकली—सिकड़ी या सिकरी (भग ६, ३३ टी—पत्र ४७७)।

वञ्छ पु [वृक्ष] पेड़, शाखी, द्रुम (प्राप्र, कुमा, हे २, १७, पाप्र)।

वञ्छ पुं [वत्स] १ वछडा (सुर २, ६५, पाप्र)। २ शिशु, वच्चा। ३ वत्सर, वर्ष। ४ वक्ष स्थल, छाती (प्राप्र)। ५ ज्योतिषशास्त्र-प्रसिद्ध एक चक्र (गण १६)। ६ देश-विशेष (ती १०)। ७ विजय-क्षेत्र-विशेष (ठा २, ३—पत्र ८०)। ८ न गोत्र-विशेष। ९ वि उम गोत्र में उत्पन्न (ठा ७—पत्र ३६०, कप्प)।
°दर पुत्री [°तर] धुद्र वत्स। २ दमनीय वछडा आदि। स्त्री, °री (प्राकृ २३)।
°मिता स्त्री [°मित्रा] १ श्रवोलोक में रहनेवाली एक दिक्कुमारी देवी (ठा ८—पत्र ४३७, इक)। २ ऊर्वलोक में रहनेवाली एक दिक्कुमारी देवी (इक, राज)।
°यर देखो °दर (दे २, ६, ७, ३७)।
°राय पु [°राज] एक राजा (ती १०)।
°वाल पुत्री [°पाल] गोप, ग्वाला (पाप्र)। स्त्री °ली (आवम)।

वच्छ वि [वात्स्य] वात्स्य गोत्र का (रांदि ४८)।

वच्छगावई स्त्री [वत्सकावती] एक विजय-क्षेत्र (ठा २, ३—पत्र ८०, इक)।

वच्छर पुंन [वत्सर] नाल, वर्ष (प्राप्र, सिरि ६३५)।

वच्छल वि [वत्सल] स्नेही, स्नेह-युक्त (गा ३, कुमा, सुर ६, १३७)।

वच्छल न [वात्सल्य] स्नेह, अनुराग, प्रेम (कुमा, पडि)।

वच्छा स्त्री [वत्सा] १ विजय-क्षेत्र विशेष। २ एक नगरी (इक)। ३ लडकी (कप्पु)।

वच्छाण पुं [उक्षन्] वैल, बलीवर्द, 'उक्खा वसहा य वच्छाणा' (पाप्र)।

वच्छावई स्त्री [वत्सावती] विजय-क्षेत्र विशेष (ज ४)।

वच्छि° देखो वय = वच्।

वच्छिउड पु [दे] गर्माश्रय (दे ७, ४४ टी)।

वच्छिम पुत्री [वृक्षत्व] वृक्षपन (पड्)।

वच्छिमय पु [दे] गर्भ शय्या (दे ७, ४४)।

वच्छीउत्त पुं [दे] नापित, हजाम (दे ७, ४७, पाप्र, न ७५)।

वच्छीव पु [दे] गोप, ग्वाला (दे ७, ४१, पाप्र)।

वच्छुदलिअ वि [दे] प्रत्युद्धत (पड्)।

वच्छोम न [वश्मोम] नगर-विशेष, कुन्तल देश की प्राचीन राजधानी (कप्पु)।

वच्छोमी स्त्री [दे] काव्य की एक रीति (कप्पु)।

वज्ज श्रक [त्रस्] डरना। वज्जइ, वज्जए (हे ४, १६८, प्राकृ ७५, घात्वा १५१)।

वज्ज देखो वञ्ज = वज्ज। वज्जइ (नाट—मृच्छ १६३), वज्जमि (पि ४८८)।

वज्ज सक [वर्जय्] त्याग करना। कवकू, वज्जिजंत (पंचा १०, २७)। सकू, वज्जिय, वज्जेचि, वज्जिऊण, वज्जेत्ता (महा, काल, पंचा १२, ६)। कू वज्ज, वज्जणिज्ज, वज्जेयव्व (पिड ५६२, भग, परह २, ४, सुपा ४८५, महा, परह १, ४, सुपा ११०, उप १०३७)।

वज्ज श्रक [वद्] वज्जना, वाय आदि की आवाज होना। वज्जइ (हे ४, ४०६; सुपा

३३४)। वकू, वज्जंत, वज्जमाण (सुर ३, ११५, सुपा ६५६)।

वज्ज न [वाद्य] वाजा, वादित (दे ३, ५८, गा ४२०)।

वज्ज वि [वर्थ] १ श्रेष्ठ, उत्तम (सुर १०, २)। २ प्रधान, मुख्य (हे २, २४)।

वज्ज वि [वर्ज] १ रहित, वर्जित, 'जिणवज्ज-देवयाणं न नमइ जो तस्स तणुमुद्धो' (आ ६), 'सहजनिश्रोणजवजा पायं न घटति प्रागारी' (चिइय ४७१), 'लोयववहारवज्जा तुम्हे परमत्यमूढा य' (धर्मवि ८४५, विसे २८४७, आवक ३०७, सुर १४, ७८)। २ न, छोड़कर, बिना, सिवाय (आ ६, ६ १७, कम्म ४, ३४, ५३)। ३ पु, हिंसा, प्राणि-वध (परह १, १—पत्र ६)।

वज्ज देखो अवज्ज (सूम १, ४, २, १६, वृह १)।

वज्ज देखो वज्ज = वज्ज (कुमा, सुर ४, १५२, यु ५, हे १, १७७, २, १०५, पड्, कम्म १, ३६, जीवस, ४६, सम २५)।
१७ पुं, विद्याधर-वंश का एक राजा (पउम ५, १६, १७, ८, १३३)। १८ हिंसा, प्राणि-वध (परह १, १—पत्र ६)। १९ कन्द-विशेष (परह १—पत्र ३६, उत्त, ३६, ६६)।
२० न कर्म-विशेष, वैवाता हुआ कर्म (सूम २, २, ६५, ठा ४, १—पत्र १६७)। २१ पाप (सूम १, ४, २, १६)।
°कठ पु [°कण्ठ] वानर-द्वीप का एक राजा (पउम ६, ६०)।
°कन न [°कान्त] एक देव-विमान (सम २५)।
°कद पु [°कन्द] एक प्रकार का कन्द, वनस्पति-विशेष (आ २०)।
°कूड न [°कूट] एक देव-विमान (सम २५)।
°क्ख पु [°क्ष] एक विद्याधर वंशीय राजा (पउम ८, १३२)।
°चूड पुं [°चूड] विद्याधर-वंश का एक राजा (पउम ५, ४६)।
°जंघ पु [°जङ्घ] विद्याधर-वंशीय एक नरेश (पउम ५, १५)।
°णाभ पु [°नाभ] भगवान् श्रमिनन्दन-स्वामी के प्रथम गणधर (सम १५२)। देखो °नाभ।
°दत्त पु [°दत्त] १ विद्याधर-वंश का एक राजा (पउम ५, १५)। २ एक जैन मुनि (पउम २०, १८)।
°द्धय पुं [°ध्वज] एक विद्याधर-

में निमित्त-भूत कृष्णादि द्रव्य (भग, उवा, औप, पव १५२, जीवस ७४, संवोध ४८, परण १७, कम्म ४, १, ३१) ।

लेसा ली [लेश्या] ज्वाला (राय ५६, ५७) ।
लेसिय वि [श्लेषित] श्लेष-युक्त (स ७६२) ।
लेसुरुडयतरु पुं [दे] लसोडा गुं गूदा (चत्पयन ० पत्र २४३) ।

लेरसा देखो लेसा (भग) ।

लेह देखो लिह = लिख् । लेहइ (प्राकृ ७०) ।
लेह देखो लिह = लिह् । लेहइ (प्राकृ ७०) ।
लेह (अप) देखो लइ = लम् । लेहइ (पिग) ।
लेह पुं [लेह] श्रवलेह, चाटन (पउम २, २८) ।

लेह पु [लेख] १ लिखना, लेखन, अक्षर-विन्यास (गा २४४, उवा) । २ पत्र, चिट्ठी (कप्प) । ३ देव, देवता । ४ लिपि । ५ वि लेख्य, जो लिखा जाय (हे २, १८६) । ६ लेखक, लिखनेवाला, 'अजवि लेहत्तणे तएहा' (वजा १००) । 'वाह वि [वाह] चिट्ठी ले जानेवाला, पत्र-वाहक (पउम ३१, १, सुपा ५१६) । 'वाहरा, 'वाहय वि [वाहक] वही अर्थ (सुपा ३३१, ३:२) । 'साला ली [शाला] पाठशाला (उप ७२८ टी) । 'रिय पुं [रिचर्य] उपाध्याय, शिक्षक (महा) ।

लेहइ वि [दे] लम्पट, लुव्व (दे ७, २५, उव) ।

लेहण न [लेहन] चाटन, आस्वादन (पउम ३, १०७) ।

लेहणी ली [लेखनी] कनम, लेखनी (पउम २६, ५, गा २४४) ।

लेहल देखो लहइ (गा ४६१) ।

लेहा देखो लिहा (औप, कप्प, कणू, कुप्र ३६६, स्वप्न ५२) ।

लेहिय वि [लेखित] लिखवाया हुआ (ती ७) ।

लेहुड पु [दे] लोष्ठ, रोडा, डेला (दे ७, २८) ।

लोअ देखो रोअ = रोचय् । सक्र लाएया (कस) ।

लोअ सक [लोक, लोकय्] देखना । वक्र. लोअत (नाट) । कवक. लुक्माण (उप १४२ टी) । सक्र लोइउ (कुप्र ३) ।

लोअ पु [लोक] १ घर्मास्तिकाय आदि द्रव्यो का आधार-भूत आकाश-क्षेत्र, जगत्, संसार, भुवन । २ जीव, अजीव आदि द्रव्य । ३ समय, आवलिका आदि काल । ४ गुण, पर्याय, धर्म । ५ जन, मनुष्य आदि प्राणि-वर्ग (ठा १—पत्र १३, टी—पत्र १४, भग, हे १, १८०, कुमा, जी १४, प्रासू ५२, ७१, उव, सुर १, ६६) । ६ आलोक, प्रकाश (वजा १०६) । गगं न [गग] १ ईपत्मागभारा नामक पृथिवी, मुक्त-स्थान (गाया १, ५—पत्र १०५, इक) । २ मुक्ति, मोक्ष, निर्वाण (पाप्र) । 'गगथूभिआ ली [गगस्तूपिका] मुक्त-स्थान, ईपत्मागभारा पृथिवी (इक) । 'गगपडिउज्झंगा ली [गगप्रतिशोधना] वही अर्थ (इक) । 'गाभि पु [नाभि] मेरु पर्वत (सुज ५) । 'पव्वाय पुं [प्रवाद] जन-श्रुति, कहावत (सुर २, ४७) । 'मज्झ पु [मध्य] मेरु पर्वत (सुज ५) । 'वाय पुं [वाद] जन-श्रुति, लोकोक्ति (स २६०, मा ४८) । 'गास पुं [काग] लोक-क्षेत्र, आलोक-मिश्र आकाश (भग) । 'हाणय न [भाणरु] कहावत, लोकोक्ति (भवि) । देखो लोग ।

लोअ पु [लोच] लुञ्चन, नोचना केशो का उत्पाटन, उखाड़ना (सुपा ६४१, कुप्र १७३, गाया १, १—पत्र ६०, औप, उव) ।

लोअ पु [लोप] अदर्शन, विध्वंस (वेइय ६६१) ।

लोअतिय पु [लोकान्तिक] एक देज-जाति (कप्प) ।

लोअग न [दे लोचक] गुण-रहित अन्न, खराब नाज (कम) ।

लोअडी (अप) ली [लोमपटी] कम्बल (हे ४, ४२३) ।

लोअण पुन [लोचन] आँख, चक्षु, नेत्र (हे १, ३३, २, १८४, कुमा, पाप्र, सुर २, २२२) । 'वत्त न [पत्र] अक्षि लोम, वरवनी, पक्ष्म (से ६, ६८) ।

लोअणिल वि [लोचनवन्] अँखवाला (सुपा २००) ।

लोआणी ली [दे] वनस्पति-विशेष (परण १—पत्र ३६) ।

लोइअ वि [लोकिउ] निरोक्षित, दृष्ट (गा २७१, स ७१३) ।

लोइअ वि [लोकिउ] लोक-संन्वी, मासारिक (आचा, विपा १, २—पत्र ३०, गाया १, ६—पत्र १६६) ।

लोउत्तर वि [लोकोत्तर] लोक-प्रधान, लोक-श्रेष्ठ, असाधारण, 'लोउत्तर चरिअ' (आ १६, विसे ८७०) । देखो लोगुत्तर ।

लोउत्तरिय वि [लोकोत्तरिक] ऊपर देखो (आ १) ।

लौक वि [दे] सुप्त, सोया हुआ (दे ७, २३) ।

लोग पुं [लोक] मान-विशेष, श्रेणी से गुणित प्रतर (अणु १७३) । 'यत देखो 'यय (अणु ३६) ।

लोग देखो लोअ = लोक (ठा ३, २, ३, ३—पत्र १४२, कप्प, कुमा, सुर १, ७६, हे १, १७७, प्रासू २५, ४७) । ७ न एक देव-विमान (मम २५) । 'कन न [कान्त] एक देव-विमान (सम २५) । 'कूड न [कूट] एक देव-विमान (सम २५) । 'गगचूलिआ ली [गगचूलिका] मुक्त-स्थान, सिद्धि-शिला (सम २२) । 'जत्ता ली [यात्रा] लोक-श्रवहार, रोजी (गाया १, २—पत्र ८८) । 'टिइ ली [रिथति] लोक-व्यवस्था (ठा ३, ३) । 'दव्व न [द्रव्य] जीव, अजीव आदि पदार्थ-समूह (भग) । 'नाभि पु [नाभि] मेरु पर्वत (सुज ५ टी—पत्र ७७) । 'नाह पु [नाथ] जगत् का स्वामी, परमेश्वर (सम १, भग) । 'परिपूरणा ली [परिपूरणा] ईपत्मागभारा पृथिवी मुक्त-स्थान (सम २२) । 'पाल पु [पाल] इन्द्रो के दिक्पाल, देव-विशेष (ठा ३, १, औम) । 'पपभ पुं [प्रभ] एक देव-विमान (सम २५) । 'विटुसार पुंन [विन्दुसार] चौदहवाँ पूर्व-ग्रन्थ (सम ४४) । 'मज्झावसिअ पुन [मध्यावसित] अभिनय-विशेष (ठा ४, ४—पत्र २८५) । 'मज्झावसाणिअ पुन [मध्यावसानिक] वही अर्थ (राय) । 'रुव न [रूप] एक देव-विमान (मम २५) । 'लेस न [लेश्य] एक देव-विमान (सम २५) । 'वण्ण न [वर्ण] एक देव-विमान (सम २५) ।

वट्ट सक [वर्त्तय] १ वरतना । २ पिंड रूप से वांधना । ३ परोसना । ४ ढकना, आच्छादन करना । वट्टति (पिंड २३६) । कवक वट्टिजमाण (ओप) ।

वट्ट वि [वृत्त] १ वतुल, गोलाकार (सम ६३, ओप, उवा) । २ अतीत, गुजरा हुआ । ३ मृत । ४ सजात, उत्पन्न । ५ अधीत । ६ दृढ । ७ पु कूर्म, कछुआ (हे २, २६) । ८ न, वर्तन, वृत्ति, प्रवृत्ति (सूत्र १, ४, २, ७) । 'कखुर' खुर पु [खुर] श्रेष्ठ अश्व (ओष ४३८, राज) । 'खेड, खेडु' छोन [खेल] कला-विशेष (गाथा १, १—पत्र ३८, स ६०३, अत ३१ टि), देखो वत्त-खेडु । देखो वत्त, वित्त = वृत्त । 'वेयडह पुं [वैताह्य] पर्वत विशेष (ठा १०) ।

वट्ट पुंन [वर्त्मन] वाट, मार्ग, रास्ता, 'पडि-सोएण पवट्टा चत्ता अणुसोअगामिणो वट्टा' (साधं ११८, सुर १०, ४, सुपा ३३०), 'वट्ट' (प्राकृ २०) । 'वाडण न [पातन] मुसा-फिरो को रास्ते में लुटना, 'परदोहवट्टवाडण-वदगहखत्तखणणमुहाइ' (कुप्र ११३), 'सो वट्टपाडणेहि वदगहणेहि खत्तखणणेहि' (धर्मवि १२३) ।

वट्ट पुन [दे] १ प्याला, गुजराती में 'वाटको', 'पहमघु टम्मि खलिया जीहा, हत्याउ निवडिय वट्ट' (सुपा ४६६) । २ पु हानि, नुकसान, गुजराती में 'वट्टो', 'अन्नह उवक्खएणवि मूला वट्टो इह होहि' (सुपा ४४५) । ३ लोटक, शिला-मुत्रक, लोढा, 'वट्टावरण' (भग १६, ३—पत्र ७६६) । ४ खाद्य-विशेष, गाढी कढ़ी (परह २, ५—पत्र १४८) ।

वट्ट पु [वते] देश-विशेष (सत्त ६७ टी) । 'वट्ट पुं [पट्ट] प्रवाह (कुमा) । देखो पट्ट (से ५, १४, भवि, गडड) ।

वट्ट देखो वट्ट = वृत्त ।

वट्टक } देखो वट्टय = वर्त्तक (परह १, वट्टग } १—पत्र ८, विपा १, ७—पत्र ७५, सूत्र २, २, १०, २६, ४३) ।

वट्टण देखो वत्तण (रंभा) ।

वट्टणा देखो वत्तणा (राज) ।

वट्टमग न [वर्त्मक] मार्ग, रास्ता (आचा, ओप) ।

वट्टमाण देखो वट्ट = वृत्त ।

वट्टमाण न [दे] १ अग, शरीर । २ गन्ध-द्रव्य का एक तरह का अधिवाम (दे ७, ८६) ।

वट्टय देखो वट्ट = दे (पउम १०२, १२०) । वट्टय पुं [वर्त्तक] १ पक्षि-विशेष, बटेर (सूत्र १, २, १ २, उवा) । २ बालकों को खेलने का एक तरह का चपडे का बना हुआ गोल किलौना (अनु ५, गाथा १, १८—पत्र २३५) ।

वट्टय देखो पट्ट (गडड) ।

वट्टा छी [दे. वर्त्मन] देखो वट्ट = वर्त्मन (दे ७ ३१) ।

वट्टा छी [वात्त] वात कथा (कुमा) ।

वट्टाव सक [वर्त्तय] वरताना, काम में लगाना । वट्टावेइ (उव) ।

वट्टावण न [वर्त्तन] वरताना, कार्य लगाना (उव) ।

वट्टावय वि [वर्त्तक] वरतानेवाला, प्रवर्त्तक (उव, गाथा १, १४—पत्र १८६) ।

वट्टावय वि [वर्त्तक] प्रतिजागरक, शुश्रूपाकर्त्ता (वव १) ।

वट्टि छी [पति] १ वत्ती, दीपक ने जलनेवाली वाती । २ सलाई, आँख में सुरमा लगाने की सली या सलाई । ३ शरीर पर किया जाता एक तरह का लेप । ४ लेख, लिखना । ५ कलम, पीछी (हे २, ३०) । देखो वत्ति, वित्ति ।

वट्टिअ वि [वर्त्तित] १ परिवर्त्तित (दे ५, २७) । २ बलित (पत्र २१६ टी) । ३ वतुल, गोल (परह १, ४—पत्र ७८, तदु २०) । ४ प्रवर्त्तित (भवि) ।

वट्टिआ छी [वर्त्तिका] देखो वट्टि (अभि २१७, नाट—रत्ना २१, स २३६) ।

वट्टिम वि [दे] अतिरिक्त (दे ७, ३४) ।

वट्टिय वि [दे] चूर्ण किया हुआ, पिसा हुआ, गुजराती में 'वाटेलु', 'पक्खितं साहिएवट्टिय लोण' (स २६४) ।

वट्टिव न [दे] पर-कार्य (दे ७, ४०) ।

वट्टी छी [वर्त्ती] देखो वट्टि (हे २, ३०) ।

वट्टी छी [पट्टी] पट्टा, 'ताव य कडिवट्टीओ पडिया रयणावली भक्ति' (सुपा ३४४, १५४) ।

वट्टु न [दे] पाय-विशेष (वृह १) । 'कर पुं [कर] यज्ञ-विशेष (राज) । 'करी' छी [करी] विद्या-विशेष (राज) ।

वट्टुल वि [वतुल] १ गोल, घृत्ताकार (पाम) । २ पुंन, पलाएडु—प्याज के समान एक तरह का कन्द-मूल (हे २, ३०, प्राह) ।

वट्ट देखो पट्ट = पृष्ठ (गडड, गा १५०, हे १, ८४, १२६) ।

वट्टि देखो सट्टि, 'वा-वट्टी' (सम ७५, पत्र ५, १८, प २६५, ४४६) ।

वड पुं [दे] १ द्वार का एक देश, दरवाजे का एक भाग । २ क्षेत्र (दे ७, ८२) । ३ मत्स्य की एक जाति (परह १—पत्र ४७) । ४ विभाग (निचू २) । देखो वड्ड, 'वडसकर-पवहणाण' (मिरि ३८२) ।

वड पुं [वट] १ वृक्ष-विशेष, बरगद, बड का पेड (परह १—पत्र ३१, गा ६४, कप्पू) । २ न, वस्त्र विशेष, 'वडजुगपट्टजुगाई' (गाथा १, १ टी—पत्र ४३) । 'नयर न [नगर] नगर-विशेष (पउम १०५, ८८) । 'वड न [पट्ट] १ गुजरात का एक नगर, जो आज कल 'वडोदा' नाम से प्रसिद्ध है (उप ५१६) । २ एक गोडुल (उप ५६७ टी) । 'सावित्री' छी [सावित्री] एक देवी (कप्पू) ।

वड देखो पड = पत्त । वड्ड, 'उमहिम्म उण वडंता' (मे ७, ७) ।

वड देखो पड = पट, 'पवणाहयवडचवलाओ लच्छीओ तह य मणुयाण' (सुर ४, ७६, से १०, १६, सुर १, ६१, ३, ६७, गा ३२६) ।

वडग न [वटक] खाद्य-विशेष, बडा (पिंड ६३७) ।

वडग देखो वड = वट (अत) ।

वडण देखो पडग (गा ५६७, गडड, महा) ।

वडप्प न [दे] १ लता-गहन । २ निरन्तर वृष्टि (दे ७, ८४) ।

वडभ वि [वडभ] १ वामन, हस्व (ओषमा ८२) । २ जिसका पृष्ठ-भाग बाहर निकल आया हो वह (आचा) । ३ नाभि के ऊपर का भाग जिसका टेढ़ा हो वह (परह १, १—पत्र २३) । ४ पीछे का या आगे का

(ठा ६—पत्र ३६५) । °च्युअ पु [°च्युत] रत्नप्रभा-नरक का एक नरक-स्थान (उवा) ।

लोलुचाविअ वि [दे] रचित-वृष्ण, जिसने वृष्णा की हो वह (दे ७, २५) ।

लोलुव देखो लोलुअ (सूत्र २, ६, ४४) ।

लोव सक [लोपय्] लोप करना, विव्वंस करना । लोवेइ (महा) ।

लोव पुन [लोप] विव्वंस, विनाश, अदरान, 'कम-लोवकारया' (कुप्र ४), 'आ दुट्टे जासु वहि लोवं व तुम अदसणा होसु' (धर्मवि १३३) ।

लोह देखो लोभ = लोम (कुमा, प्राप् १७६) ।

लोह पुन [लोह] १ धातु-विशेष, लोहा (विपा १, ६—पत्र ६६, पाय, कुमा) । २ धातु, कोई भी धातु, 'जह लोहाण सुवन्न तणाण धन्न घणाण रयणाइ' (सुपा ६३६) । °कार पु [°कार] लोहार (कुप्र १८८) । °जघ पु [°जघ] १ भारत में उत्पन्न द्वितीय प्रतिवासुदेव राजा (सम १५४) । २ राजा चण्डप्रद्योत का एक दूत (महा) । °जघवण न [°जघवन] मथुरा के समीप का एक वन (ती ७) ।

लोह वि [लौह] लोहे का, लोह-निर्मित (से १४, २०) ।

लोहगिणी व्री [लोहाङ्गिनी] छन्द-विशेष (पिंग) ।

लोहल पु [लोहल] शब्द-विशेष, अव्यक्त शब्द (पड्) ।

लोहार पु [लोहकार] लोहार, लोहे का काम करनेवाला शिल्पी (दे ८, ७१, ठा ८—पत्र ४१७) ।

लोहि° } देखो लोही, 'कुभीसु य पयणेसु लोहिअ° } य लोहियसु य कदुलोहिकुमीसु' (सूत्रनि ८०, ७६) ।

लोहिअ पुं [लोहित] १ लाल रंग, रक्त-वर्ण । २ वि रक्त वर्णवाला, लाल (से २, ४, उवा) । ३ न रुधिर, खून (पत्रम ५, ७६) । ४ गोत्र-विशेष, जो कौशिक गोत्र की एक शाखा है (ठा ७—पत्र ३६०) ।

लोहिअक पु [लोहित्यक, लोहिताङ्क] अठासी महाग्रहों में तीसरा महाग्रह (सुज्ज २०) ।

लोहिअक्ख पुं [लोहिताक्ष] १ एक महाग्रह (ठा २, ३—पत्र ७७) । २ चमरेन्द्र के महिष-सैन्य का अधिपति (ठा ५, १—पत्र ३०२, इक) । ३ रत्न की एक जाति (णाय १, १—पत्र ३१, कप्प, उत्त ३६, ७६) । ४ एक देव विमान (देवेन्द्र १३२, १४४) । ५ रत्नप्रभा पृथिवी का एक काण्ड (सम १०४) । ६ एक पर्वत-कूट (इक) ।

लोहिआ } अक [लोहिताय्] लाल लोहिआअ } होना । लोहिआइ, ओहिआअइ (हे ३, १३८, कुमा) ।

लोहिआमुह पु [लोहितामुख] रत्नप्रभा का एक नरकावास (स ८८) ।

लोहिच्च पु [लोहित्य] आचार्य भूतदिन के शिष्य एक जैन मुनि (एदि ५३) ।

लोहिच्च } न [लौहित्यायन] गोत्र-विशेष लोहिच्चायण } (सुज्ज १०, १६ टी, इक, सुज्ज १०, १६) ।

लोहिणी } व्री [दे] वनस्पति-विशेष, कन्द-लोहिणीहू } विशेष (पण १—पत्र ३५), 'लोहिणीहू य थोहू य' (उत्त ३६, ६६, सुख ३६, ६६) ।

लोहिल वि [दे लोभिन्] लम्पट, लुब्ध (दे ७, २५, पत्रम ८, १०७, गा ४४४) ।

लोही व्री [लोही] लोहे का बना हुआ भाजन-विशेष, कराह (उप ८३३, चार १) ।

लहस देखो लस = लम् । लहसइ (प्राक् ७२) ।

लहस अक [स्सस्] खिसकना, सरकना, गिर पडना । लहसइ (हे ४, १६७, पड्) । वक्क लहसत (वज्जा ६०) ।

लहसण न [स्ससन] खिसकना, पतन (सुपा ५५) ।

लहसाव सक [स्ससय्] खिसकाना । सक्क लहसाविअ (सुपा ३०८) ।

लहसाविअ वि [स्ससित] खिसकाया हुआ (कुमा) ।

लहसिअ वि [स्सस्त] खिसक कर गिरा हुआ (कुप्र १८७, वज्जा ८४) ।

लहसिअ वि [दे] हर्षित (चड) ।

लहसुण देखो लसुण (पण १—पत्र ४०, पि २१०) ।

लहादि व्री [हल्हादि] आहाद, प्रमोद, खुशी (राज) ।

लहाय पु [हल्हाद] ऊपर देखो (धर्मस २१६) ।

लहासिय पु [लहासिक] एक अनायं मनुष्य-जाति (पण १, १—पत्र १४) ।

ल्लिह अक [नि + ली] छिपना । ल्लिहकइ (हे ४, ५५, पड् २०६) । वक्क ल्लिहकत (कुमा) ।

ल्लिह वि [दे] १ नष्ट (हे ४, २५८) । २ गत (पड्) ।

॥ इअ सिरिपाइअसदमहणवम्मि लभाराइसदसकलणो

चउत्तीसइमो तरगो समत्तो ॥

वड्ढविअ वि [वर्धित, वर्धापित] जिसको
वर्धाई दी गई हो वह (दे ६, ७४)।

वड्ढार (अप) सक [वर्धय्] बढ़ाना,
गुजराती में 'वर्धारु'। वड्ढारइ (भवि)।

वड्ढाव देखो वड्ढव। वड्ढावेमि (प्राकृ
६१, पि ५५२)।

वड्ढावअ देखो वड्ढवअ (प्राकृ ६१, कप्पू,
उवा)।

वड्ढाविअ वि [दे] समापित, समाप्त किया
हुआ (दे ७, ४५)।

वड्ढि वि [वर्धन्] बढ़नेवाला (से १, १)।
वड्ढि स्त्री [वर्द्धि] बढ़ती, बढ़ाव (उवा, देवेन्द्र
३६७, जीवस २७४)।

वड्ढिअ वि [वृद्ध] बड़ा हुआ (कुमा ७,
५८, गा ४१०, महा)।

वड्ढिअ वि [वर्धित] १ बढ़ाया हुआ,
'महिबीडे नइवड्ढियनीरो उयहिब्ब वित्थरइ'
(सिरि ६२७)। २ खरिडत किया हुआ,
काटा हुआ (से १, १)।

वड्ढिआ स्त्री [दे] कूपतुला, हेंकुवा (दे ७,
३६)।

वड्ढिम पु स्त्री [वृद्धिमन्] वृद्धि, बढ़ाव;
'पत्ता दिण वड्ढिमा' (प्राकृ ३३, कप्पू)।

वड्ढ देखो वड्ढ = वट (हे २, १७४, पि २०७)।

वड्ढ वि [दे] मूक, वाक्-शक्ति से रहित
(ससि ३६)।

वड्ढर } पु [वठर] १ मूखें छात्र। २
वड्ढल } ब्राह्मण पुरुष और वैश्य स्त्री से
उत्पन्न सतान, अश्वघ्न। ३ वि. शठ, धूर्त।
४ मन्द, अलस (हे १, २५४, पड्)।

वण सक [वन्] मांगना, याचना करना।
वणोइ (पिड ४४३)।

वण पु [दे] १ अधिकार। २ श्वपच, चाँडाल
(दे ७, ८२)।

वण पुन [व्रण] घाव, प्रहार, क्षत, 'जस्सेअ
वणो तस्सेअ वेअणा (काप्र ८७१, गा ३८१,
४२७, पाप्र)। 'वट्ट पुं [पट्ट] घाव पर
बाँधी जाती पट्टी (गा ४५८)।

वण न [वन] १ अरण्य, जंगल (भग; पाप्र;
उवा; कुमा; प्रासू ६२, १४५)। २ पानी,
जल (पाप्र, वजा ८८)। ३ निवास। ४

आलय (हे ३, ८८, प्राप्र)। ५ वनस्पति
(कम्म ४, १०, १६, ३६, द १३)। ६
उद्यान, बगीचा (उप ६८६ टी)। ७ पु.
देवो की एक जाति, वानव्यतर देव (भग,
कम्म ३, १०)। ८ वृक्ष-विशेष (राय)।
'कम्म पुंन [कर्मन्] जंगल को काटने या
वेचने का काम (भग ८, ५—पत्र ३७०,
पडि)। 'कम्मत्त न [कर्मन्त] वनस्पति
का कारखाना (आचा २, २, २, १०)।
'गय पुं [गज] जंगली हाथी (मे ३, ६३)।
'ग्गि पुं [ग्गिन्] दावानल (पाप्र)। 'चर
वि [चर] वन में रहनेवाला, जंगली
(पएह १, १—पत्र १३)। स्त्री. 'री
(रयण ६०), देखो 'यर। 'छिड वि
[च्छिद्] जंगल काटनेवाला (कुप्र १०४)।
'थली स्त्री [स्थली] अरण्य-भूमि (से ३,
६३)। 'दव पु [दव] दवानल (गाया १,
१—पत्र ६५)। 'पठवय पुन [पर्वत]
वनस्पति से व्याप्त पर्वत, 'वणाणि वा
वणपव्वयाणि वा' (आचा २, ३, ३, २)।
'विराल पु [विडाल] जंगली विल्ला
(सण)। 'माल न [माल] एक देव-
विमान (सम ४१)। 'माला स्त्री [माला]
१ पैर तक लटकनेवाली माला (श्रीप, अचु
३६)। २ एक राज-पत्नी (पउम ११, १४)।
३ रावण की एक पत्नी (पउम ३६, ३२)।
'य वि [ज] वन में उत्पन्न, जंगली (वजा
१२८)। 'यर वि [चर] १ वन में
रहनेवाला, वनैला (गाया १, १—पत्र ६२,
गडड)। २ पु स्त्री व्यन्तर देव (विसे ७०७,
पव १६०)। स्त्री. 'री (उप पृ ३३०)। 'राइ
स्त्री [राजि] तरु-पत्ति, वृक्ष-समूह (चंड,
सुर ३, ४२, अमि ५५)। 'राज, 'राय पुं
[राज] १ विक्रम की आठवीं शताब्दी का
गुजरात का एक प्रसिद्ध राजा (मोह १०८)।
२ सिंह, केसरी (चड)। 'लइया, 'लया स्त्री
[लता] १ एक स्त्री का नाम (महा)। २
वह वृक्ष जिसकी एक ही शाखा हो (कप्प,
राय)। 'वाल वि [पाल] उद्यान-पालक,
माली (उप ६८६ टी)। 'वास पुं [वास]
अरण्य में रहना (पि ३५१)। 'वासी स्त्री
[वासी] नगरी-विशेष (राज)। 'विदुग्ग
न [विदुर्ग] नानाविध वृक्षों का समूह

(सूप्र २, २, ८, भग)। 'विरोहि पु
[विरोहिन्] आपाठ मास (सुज्ज १०,
१६)। 'सड पुंन [पण्ड] अनेकविध वृक्षों
की घटा—समूह (ठा २, ४, भग, गाया १,
२, श्रीप)। 'हत्थि पु [हस्तिन्] जंगल
का हाथी (से ८, ३६)। 'लि, 'लि स्त्री
[लि] वन पत्ति (गा ५७६, हे २, १७७)।
वणइ स्त्री [दे] वन-राजि, वृक्ष पत्ति (दे ७,
३८, पड्)।

वणण न [वनन] बछड़े को उसकी माता से
भिन्न दूसरी गाय से लगाना (पएह १, २—
पत्र २६)।

वणण न [दे, व्यान] बुनना। 'साला स्त्री
[शाला] बुनने का कारखाना (दस १,
१ टी)।

वणद्धि स्त्री [दे] गो-वृन्द, गो-समूह (दे ७,
३८)।

वणनत्तडिअ वि [दे] पुरस्कृत, आगे किया
हुआ (पड्)।

वणपकसावअ पुं [दे] शरम, श्वापद-विशेष
(दे ७, ५२)।

वणप्फइ पु [वनस्पति] १ वृक्ष-विशेष, फूल
के बिना ही जिसमें फल लगता हो वह वृक्ष
(हे २, ६६, कुमा)। २ लता, गुल्म, वृक्ष
आदि कोई भी गाछ, पेड़ मात्र (भग)। ३ न.
फल (कुमा ३, २६)। 'काइअ वि [कायिक]
वनस्पति का जीव (भग)।

वणय पुं [वनक] दूसरी नरक-भूमि की एक
नरक-स्थान (देवेन्द्र ६)।

वणरसि (अप) देखो वाणारसी (पिंग, पि
३५४)।

वणव पुं [दे] दावानल (दे ७, ३७)।

वणसवाई स्त्री [दे] कोकिला, कोयल (दे
७, ५२, पाप्र)।

वणस्सइ देखो वणप्फइ (हे २, ६६, जी २,
उव, पएण १)।

वणाय वि [दे] व्याव से व्याप्त (दे ७, ३५)।

वणार पु [दे] दमनीय बछड़ा (दे ७, ३७)।

वणि वि [वणिन्] घाववाला, जिसकी घाव
हुआ हो वह (दे ६, ३६, पंचा १६, ११)।

वणि पुं [वणिज्] बनिया, व्यापारी,
वणिअ } वैश्य (श्रीप, उप ७२८ टी, सुर

वइदेही स्त्री [वैदेही] १ राजा जनक की स्त्री, सीता की माता (पउम २६, ७५) । २ जन-कात्मजा, सीता । ३ हरिदा, हल्दी । ४ पिप्पली, पीपल । वणिक्-स्त्री (सस्ति ५) ।

वइधम्म न [वैधर्म्य] विरुद्धधर्मता, विपरीत-पन (विसे ३२२८) ।

वइमिस्म वि [व्यतिमिश्र] संमिलित (आचा २, १, ३, २) ।

वइर देखो चेर = वैर (हे १, १५२) ।

वइर पुंन [वज्र] १ रत्न-विशेष, हीरक, हीरा (सम ६३, श्रौप, कप्प, भग, कुमा) । २ इन्द्र का अस्त्र (पड्) । ३ एक देव-विमान (देवेन्द्र १३३, सम २५) । ४ विद्युत्, विजली (कुमा) । ५ पुं. एक सुप्रसिद्ध जैन महर्षि (कप्प, हे १, ६, कुमा) । ६ कोकिलाक्ष वृक्ष । ७ श्वेत कुशा । ८ श्रीकृष्ण का एक प्रपौत्र । ९ न, बालक, शिशु । १० घात्री । ११ काँजी । १२ वज्रपुष्प । १३ एक प्रकार का लोहा । १४ अन्न-विशेष । १५ ज्योतिष-प्रसिद्ध एक योग (हे २, १०५) । १६ कीलिका, छोटी कील (सम १४६) । १७ न [काण्ड] रत्नप्रभा पृथिवी का एक वज्ररत्न-मय काण्ड (राज) । १८ कंत न [कान्त] एक देव-विमान (सम २५) । १९ कूड न [कूट] १ एक देव-विमान (सम २५) । २ देवी विशेष का आवासभूत एक शिखर (राज) । ३ जघ पुं [जङ्घ] १ भरत-क्षेत्र में उत्पन्न तृतीय प्रतिवामुदेव (सम १५४) । २ पुष्कनावती विजय के लोहागल नगर का एक राजा (आव) । ४ पपभ न [प्रभ] एक देव-विमान (सम २५) । ५ मज्झा स्त्री [मध्या] प्रतिमा-विशेष, एक प्रकार का व्रत (ठा ४, १—पत्र १६५) । ६ रुव न [रूप] एक देव-विमान (सम २५) । ७ लेस न [लेइय] एक देव विमान (सम २५) । ८ वणन न [वर्ण] देवविमान-विशेष (सम २५) । ९ सिंग न [शृङ्ग] एक देव-विमान का नाम (सम २५) । १० सिंह पुं [सिंह] एक राजा (काल, पि ४००) । ११ सिट्ट न [सृष्ट] एक देव-विमान (सम २५) । १२ सीह देखो सिंह (काल) । १३ सेण पुं [सेन] एक प्राचीन जैन महर्षि, जो

वज्रस्वामी के शिष्य थे (कप्प) । १४ सेणा स्त्री [सेना] १ एक इन्द्राणी, दक्षिणत्य वानव्यन्तरेन्द्र की एक अग्र-महिषी (राया २—पत्र २५२) । २ एक दिक्कुमारी देवी (इक) । ३ हर पुं [धर] इन्द्र (पड्) । ४ मय वि [मय] वज्र रत्नो का बना हुआ (सम ६३, श्रौप, पि ७०, १३५), स्त्री ५ मई, ६ मती (जीव ३, पि २०३ टि ४) । ७ वत्त, न [वर्त्त] एक देव-विमान (सम २५) । ८ १० सेमनाराय न [ऋषभनाराच] सहनन-विशेष (सम १४६, भग) । देखो वज्ज = वज्र ।

वइरा स्त्री [वज्रा] एक जैन मुनि-शाखा (कप्प) ।

वइराग न [वैराग्य] विरक्ति, उदासीनता (पउम २६, २०) ।

वइराड पुं [वैराट] १ एक आर्य देश । २ न. प्राचीन भारतीय नगर-विशेष, जो मल्ल देश की राजधानी थी, 'वइराड मच्छ वरुणा अच्छा' (पव २७५) ।

वइराय देखो वइराग (भवि) ।

वइरि १ वि [वैरिन्] दुश्मन, रिपु (सुर वइरिअ १, ७, काल, प्रासू १७४) ।

वइरिक्क न [दे] विजन, एकान्त स्थान, देखो पइरिक्क, 'अहिअ सुएणाइ निरजणाइ वइरिक्कएणुसिआइ' (गा ८७०) ।

वइरिक्क वि [व्यतिरिक्त] भिन्न, अलग (सुर १२, ४४, वेइय ५६४) ।

वइरी स्त्री [वज्रा] एक जैन मुनि-शाखा (कप्प) ।

वइरुट्टा स्त्री [वैरोट्ट्या] १ एक विद्या-देवी (सति ६) । २ भगवान् मल्लिनाथजी की शासन-देवी (सति १०) ।

वइरुत्तरवडिसग न [वज्रोत्तरावतसक] एक देव-विमान (सम २५) ।

वइरेअ १ पुं [व्यतिरेक] १ अभाव (धर्मस वइरेअ ११२) । २ साध्य के अभाव में हेतु का नितान्त अभाव (धर्मस ३६२, उप ४१३, विसे २६०, २२०४) ।

वइरोअण पुं [वैरोचन] १ अग्नि, वह्नि (सूप्र १, ६, ६) । २ बलि नामक इन्द्र (देवेन्द्र ३०७) । ३ उत्तर दिशा में रहनेवाले असुर-

निकाय के देव (भग ३, १, सम ७४) । ४ पुन एक लोकान्तिक देव-विमान (पव २६७, सम १४) ।

वइरोअण पुं [दे] बुद्ध देव (दे ७, ५१) ।

वइरोड पुं [दे] जार, उपपत्ति (दे ७, ४२) ।

वइवल्लय पुं [दे] साँप की एक जाति, दुन्दुभ सपं (दे ७, ५१) ।

वइवाय पुं [व्यतीपात] ज्योतिष-प्रसिद्ध एक योग (राज) ।

वइवेला स्त्री [दे] सीमा (दे ७, ३१) ।

वइवम देखो वइस्स = वैश्य,

'वाणिज्जरिसणाइगोरक्खणपालणेसु उज्जुत्ता । ते होंति वइसनामा वावारपरायणा धीरा' (पउम ३, ११६) ।

वइसइअ वि [वैपयिक्क] विषय से उत्पन्न, विषय-सबन्धी (सस्ति ५) ।

वइसंपायण पुं [वैशम्पायन] एक ऋषि, जो व्यास का शिष्य था (हे १, १५१, प्राप्र) ।

वइसम्म पुन [वैपम्य] विषमता, 'वइसम्मो' (सस्ति ५, पि ६१) ।

वइसवण पुं [वैश्रवण] कुवेर (हे १, १५२, भवि) ।

वइसस न [वैशस] रोमाञ्चकारी पाप-कृत्य (उप ५७५) ।

वइसंगर देखो वइस्माणर (धम्म १२ टी) ।

वइमाल देखो [वैशाल] विशाला में उत्पन्न (हे १, १५१) ।

वइसाह पुं [वैशाख] १ मास-विशेष (सुर ४, १०१, भवि) । २ मन्थन-दण्ड । ३ पुन. योद्धा का स्थान-विशेष (हे १, १५१, प्राप्र) ।

वइमाही देखो वेसाही (राज) ।

वइसिअ वि [वैशिक] वेप से जीविका उपाजन करनेवाला (हे १, १५२, प्राप्र) ।

वइसिट्ट न [वैशिष्ट्य] विशिष्टता, भेद (धर्मस ६६) ।

वइसेसिअ न [वैशेषिक] १ दर्शन-विशेष, कणाद-दर्शन (विसे २५०७) । २ विशेष, 'जोएज्ज भावओ वा वइसेसियलक्खण चउहा' (विसे २१७८) ।

वइस्स पुं [वैश्य] वर्ण-विशेष, वणिक्, महाजन (विपा १, ५) ।

२८) । २ आवृत्ति, परावर्तन (पचा १२, ४३) । ३ स्थिति । ४ स्थापन । ५ वर्तन, होना । ६ वि. वृत्तिवाला । ७ रहनेवाला (संक्षि १०) ।

वत्तणा छी [वर्त्तना] ऊपर देखो, 'वत्तणा-लक्खणो कालो' (उत्त २६, १०, प्रावम) ।

वत्तणी छी [वर्त्तनी] मार्ग, रास्ता (पण्ह १, ३—पत्र ५४, विसे १२०७, सूअनि ६१ टी, सुपा ५१८) ।

वत्तद्ध वि [दे] १ सुन्दर । २ बहु-शिक्षित (दे ७, ८५) ।

वत्तमाण पुं [वर्त्तमान] १ काल-विशेष, चलता काल (प्राप्र, सक्षि १०) । २ वि वर्त्तमान-कालीन, विद्यमान । ३ पुं विद्यमानता (वर्मस ५७३) ।

वत्तरि देखो सत्तरि (सम ८३, प्रासू १२६, पि ४४६) ।

वत्तव्व देखो वय = वच् ।

वत्ता छी [दे] सूत्र-वलनक, सूत्र वेष्टन-यन्त्र (पण्ह १, ४—पत्र ७८, तदु २०) । देखो चत्ता = (दे) ।

वत्ता छी [वार्त्ता] १ बात, कथा (से ६, ३८; सुपा ३८७, प्रासू १, कुमा) । २ वृत्तान्त, हकीकत (प्राप्र) । ३ वृत्ति । ४ दुर्गा । ५ कृषि-कर्म, खेती । ६ जनश्रुति, किंवदन्ती । ७ गन्ध का अनुभव । ८ काल-कर्तुं भूत-नाश (हे २ ३०) । °लाव पु [°लाप] वातचीत (सिरि २८२) ।

वत्तार वि [दे] गवित, गर्व-युक्त (दे ७, ४१) ।

वत्ति छी [दे] सीमा (दे ७, ३१) ।

वत्ति देखो वट्टि (गा २३२, ६५८, विसे १३६८) ।

वत्ति वि [वर्त्तिन्] वर्तनेवाला (महा) ।

वत्ति छी [वृत्ति] प्रवृत्ति (सूअ २, ४, २) । देखो वित्ति ।

वत्ति छी [व्यक्ति] अमुक एक वस्तु, एकाकी वस्तु । °पइट्टा छी [°प्रतिष्ठा] प्रतिष्ठा-विशेष, जिन समय में जो तीर्थंकर विद्यमान हो उसके बिम्ब की विधि-पूर्वक स्थापना (चेइय ३५) ।

वत्तिअ वि [वार्त्तिक] कथाकार, 'वत्तिअो' (हे २, ३०) । २ पुंन. टीका की टीका (सम

४६, विसे १४२२) । ३ ग्रंथ की टीका—व्याख्या (विसे १३८५) ।

वत्तिअ वि [वर्त्तित] १ वृत्त—गोल किया हुआ (गाया १, ७) । २ आच्छादित (पटि) ।

°वत्तिअ देखो पच्चय = प्रत्यय (भौप) ।

वत्तिआ देखो वट्टिआ (प्राप्र) ।

वत्तिणी छी [वर्त्तिनी] मार्ग, रास्ता (प्राप्र, स ४, सुर १२, १३६) ।

°वत्ती देखो पत्ती = पत्नी (गा ७६, १०६, १७३) ।

वत्तु देखो वय = वच् ।

वत्तुकाम वि [वक्तुकाम] बोलने की चाह-वाला (स ३१८, अमि ४४, स्वप्न १०; नाट—विक्र ४०) ।

वत्तुल देखो वट्टुल (राज) ।

वत्थ पुंन [वत्थ] कपडा (आचा २, १४, २२, उवा, पण्ह १, १, उप पृ ३३३, सुपा ७२, ४६१, कुमा, सुर ३, ७०) । °खेडु न

[°खेल] कला विशेष (जं २ टी—पत्र १३७) । °धोव वि [°धाव] वस्त्र धोनेवाला (सूअ १, ४, २ १७) । °पूस पु [°पुण्य]

एक जैन मुनि (कुलक २२) । °पूसमित्त पुं [°पुण्यमित्त] एक जैन मुनि (ती ७) ।

°विज्जा छी [विद्या] विद्या-विशेष, जिसके प्रभाव से वस्त्र स्पर्श कराने से ही बीमार अच्छा हो जाय (वव ५) । °सोहग वि [°शोधक] वस्त्र धोनेवाला (स ४१) ।

वत्थ वि [व्यस्त] वृथग्, भिन्न, जुदा (सुर १६, ५४) ।

वत्थउड पुं [दे वस्त्रपुट] तंबू, कपड-कोट, वस्त्र-गृह (दे ७, ४५) ।

वत्थए देखो वस = वस् ।

वत्थग पुं [वस्त्राङ्ग] कल्पवृक्ष की एक जाति, जो वस्त्र देने का काम करता है (पउम १०२, १२१) ।

°वत्थर देखो पत्थर = प्रस्तर (गा ५५१) ।

वत्थल्लिज न [वस्त्रल्लिय] दो जैन मुनि-कुलो के नाम (कण्) ।

वत्थव्व वि [वास्तव्य] रहनेवाला, निवासी (पिड ४२७, सुर ३, ६१, सुपा ३६५, महा) ।

वत्थाणी छी [दे] वल्लो-विशेष (पण्ह १—पत्र ३३) ।

वत्थाणीअ पुंन [दे] खाद्य-विशेष, 'हत्थेण वत्थाणीएण भोच्चा कज्ज साधेति' (सुज १०, १७) ।

वत्थि पु [वत्थि] २ दृति, ममक (भाग १, ६, १८, १०, गाया १, १८), 'वत्थिच्च वायपुएणो अत्तुवकरिसेण जहा तहा लवई'

(संवीष १८) । २ अपान, गुदा, 'वत्थी अवाणं' (प्राप्र, पण्ह १, ३—पत्र ५३) ।

३ छाते में शलाका—मली—सनाई बैठने का स्थान, छत्र का एक अवयव (भौप) °कम्म न

[°कर्मन्] १ निर आदि में चर्म-वेष्टन द्वारा किया जाता तैल आदि का पूरण । २ मल

साफ करने के लिए गुदा में वत्ती आदि का किया जाता प्रसेप (विपा १, १—पत्र १४,

गाया १, १३) । °पुडग पुन [°पुटक] पेट का भीतरी प्रदेश (निर १, १) ।

वत्थिथ पुं [वास्तिक] वस्त्र बनानेवाला शिल्पी (अणु) ।

वत्थी छी [दे] उटज, तारसो को पणं कुटी (दे ७, ३१) ।

वत्थु न [वस्तु] १ पदार्थ, चीज (प्राप्र, उवा, सम्म ८, सुपा ४०१, प्रासू ३०, १६१, ठा

४, १ टी—पत्र १८८) । २ पुन पूर्व-अन्यो का अध्ययन—प्रकरण, परिच्छेद (सम २५,

एदि, अणु, कम्म १, ७) । °पाल, °वाल पुं [°पाल] राजा वीरधवल का एक सुप्रसिद्ध जैन मंत्री (ती २, हम्मीर १२) ।

वत्थु न [वास्तु] १ गृह, घर, 'खेतवत्थुविहि-परिमाणं करेइ' (उवा) । २ गृहादि-निर्माण-शास्त्र (गाया १, १३) । ३ शाक-विशेष (उवा) । °पाढग वि [°पाठक] वास्तु-शास्त्र का अभ्यासी (गाया १, १३, वर्मवि ३३) । °वज्जा छी [°विद्या] गृह-निर्माण-कला (भौप, ज २) ।

वत्थुल पुं [वस्तुल] गुच्छ और हरित वनस्पति-विशेष, शाक-विशेष (पण्ह १—पत्र ३२, ३४, पव २५६) ।

वत्थूल पुं [वस्तूल] ऊपर देखो, 'वत्थु (?त्थु) ला येगपल्लका' (जी ६) ।

वजुलि वि [वञ्जुलिन्] वेतस वृक्षवाला ।
छो ०णी (गउड) ।

वम् वि [वन्ध्य] शून्य, वर्जित (कुमा) ।

वंम्मा छो [वन्ध्या] वाम् छो, अपुत्रवती छो
(पउम २६, ८३, सुपा ३२४) ।

वंट न [वृन्त] फल या पत्तो का वन्धन (पिंड
४५) ।

वटग पुं [वण्टक] बाँट, विभाग (निचू १६) ।

वठ पु [दे] १ अकृत-विवाह, अविवाहित,
गुजराती में 'वाढो' (दे ७, ८३, ओघ २१८) ।
२ खण्ड, टुकड़ा । ३ गण्ड (दे ७, ८३) ।
४ श्रृंग, दास (दे ७, ८३, सुर २, १६८,
रयण ८३, सिरि १११५) । ५ वि. नि स्नेह,
स्नेह-रहित (दे ७, ८३) । ६ घूर्त, ठग
(आ १२) ।

वंठ वि [वण्ठ] खबं, वामन, नाटा, बौना
(हे ४, ४४७) ।

वठण (अप) न [वण्टन] बाँटना, विभाजन
(पिंग) ।

वडइअ वि [दे] पीडित (पड्) ।

०वंडु देखो पड्डु (गा २६५) ।

वडुअ न [दे] राज्य (दे ७, ३६) ।

०वडुर देखो पडुर (गा ३७४) ।

वड पु [दे] वन्ध (दे ७, २६) ।

वट वि [वान्त] पतित, गिरा हुआ (दस ३,
१ टी) ।

वट पुं [वान्त] १ जिसका वमन किया गया
हो वह (उव) । २ पुन वमन, 'वते इ वा
पित्ते इ वा' (भग) ।

वतर पु [व्यन्तर] एक देव-जाति (दं २७,
महा) ।

वंतरिअ पु [व्यन्तरिक] ऊपर देखो (भग) ।
वतरिणी छो [व्यन्तरी] व्यन्तर-जातीय देवी
(सुपा ६१३) ।

वता देखो वम ।

०वति देखो पन्ति (गा २७८, ४६३) ।

०वथ देखो पन्थ (से १, १६, ३, ४२, १३,
२०, पि ४०३) ।

वद सक [वन्द] १ प्रणाम करना । २
स्तवन करना । वदइ (उव, महा, कप्प) ।

वकृ. वन्दमाण (ओघ १८, सं १०, अमि
१७२) । कवकृ वन्दिजमाण (उप ६८६
टी, प्रासू १६५) । सकृ. वन्दिअ, वन्दिओ,
वन्दिऊण, वन्दिता, वन्दिचु, वंदेवि
(कम्म १, १, चड, कप्प, पड्, हे ३, १४६,
चह) । हेकृ. वंदित्तए (उवा) । कृ. वज,
वद, वंदणिज्ज, वदणीअ, वदिम (राज,
अजि १४, द्रव्य १, लाया १, १, प्रासू १६२,
नाट—मृच्छ १३०, दसचू १) ।

वद न [वृन्द] समूह, यूथ (पउम १, १,
औप, प्राप्र) ।

वदअ } वि [वन्दक] वन्दन करनेवाला
वदग } (पउम ६, ५८, १०१, ७३, महा,
औप, सुख १, ३) ।

वंदण न [वन्दन] १ प्रणामन, प्रणाम । २
स्तवन, स्तुति (कप्प, सुर ४, ६२, उव) ।
०कलस पुं [०कलश] मागलिक घट (औप) ।
०चड पुं [०चट] वही अर्थ (औप) । ०माला,
०मालिआ छो [०माला] घर के द्वार पर
मंगल के लिए बँधी जाती पत्र-माला (सुपा
५४, मुर १०, ४, गा २६२) । ०वडिआ,
०वत्तिआ छो [०प्रत्यय] वन्दन-हेतु (सुपा
४३२, पडि) ।

वदणा छो [वन्दना] १ प्रणाम । २ स्तवन
(पचा ३, २, पणह २, १—पत्र १००,
अत) ।

वदणिया छो [दे] मोरी, नाला, पनाला,
'अत्थि कवलो, गणियाए नेमि । मुक्को । तओ
तोमे दिओ । तीए च (१ व) दणियाए छूढो'
(सुख २, १७) ।

वदर देखो वद = वृन्द (प्राप्र) ।

वंदाप (अशो) देखो वदाव । वदापयति (पि
७) ।

वदारय पु [वृन्दारक] १ देव, देवता
(पाप्र, कुमा) । २ वि मनोहर (कुमा) ।
३ मुख्य, प्रधान (हे १, १३२) ।

वदारु वि [वन्दारु] वन्दन करनेवाला (वेइय
६२१, लहुम) ।

वंदाव सक [वन्दय्] वन्दन करवाना ।
वदावइ (उव) ।

वदावणग न [वन्दन] वन्दन, प्रणाम (आवक
३७४) ।

वंदिअ देखो वद = वन्द ।

वंदिअ वि [वन्दित] जिसको वन्दन किया
गया हो वह (कप्प, उव) ।

वदिम देखो वंद = वन्द ।

वंदुरा छो [मन्दुरा] वाजिशाला, घुहसाल,
अस्तबल ।

वंद्र न [वन्द्र] समूह, यूथ (हे १, ५३, २,
७६, पउम ११, १२०, स ६६६) ।

वध पुं [वन्ध] एक महाग्रह, ज्योतिष्क देव-
विशेष (सुज्ज २०) ।

वफ सक [काङ्क्ष] चाहना, अभिलाष
करना । वफइ, वफए, वफति (हे ४, १६२,
कुमा) ।

वंफ अक [चल्] लौटना । वंफइ (हे ४,
१७६, पड्) ।

वफि वि [वलिन्] १ लौटनेवाला । २ नीचे
गिरनेवाला (कुमा) ।

वफिअ वि [काङ्क्षित] अभिलषित (कुमा) ।

वफिअ वि [दे] भुक्त, खाया हुआ (दे ७,
३५, पाप्र) ।

वस पु [दे] कलंक, दाग (दे ७, ३०) ।

वस पुं [वश] १ बाँस, वेणु (पणह २, ५—
पत्र १४६, पाप्र) । २ वाद्य-विशेष, 'वाइओ
वसो' (कुमा २, ७०, राय) । ३ कुल,
'बुलुगवसदीवओ' (कुमा २, ६१) । ४ सन्तान,
मंतति । ५ पृष्ठावयव, पीठ का भाग । ६
वर्ग । ७ इक्षु, ऊख । ८ वृक्ष-विशेष, सालवृक्ष
(हे १, २६०) । ९ इरि पुं [०गिरि] पर्वत-
विशेष (पउम ३६, ४) । ०करिल्ल, ०गरिल्ल
पुन [०करीळ] वशाकुर, बाँस का कोमल
नवावयव (आ २०, पव ४) । ०जाली,
०याली छो [०जाली] बाँसो का गहन घटा
(सुर १२, २००, उव पृ ३६) । ०रोअणा
छो [०रोचना] वशलोचन (कप्प) ।

वसकवेल्लुय पुं [दे. वशकवेल्लुक] छत
के नीचे दोनों तरफ तिरछा रखा जाता बाँस
(जीव ३, राय) ।

वसग देखो वसय (राज) ।

वंसप्फाल वि [दे] १ प्रकट, व्यक्त । २ ऋजु,
सरल (दे ७, ४८) ।

वसय वि [व्यसक] १ घूर्त, ठग । २ पु.
दुष्ट हेतु-विशेष (ठा ४, ३—पत्र २५४) ।

चक्रवर्ती राजा हरिपेण की माता का नाम (पद्य ८, १४४, सम १५२) ।
 वपिअ पु [दे] १ केदार, खेत (पड्) ।
 २ नपुमक विशेष (पुष्प १२६) । ३ वि रक्त, राग-युक्त (पड्) ।
 वपिण पुन [दे] १ केदार, खेत (दे ७, ८५, औप, रागा १, १ टी—पत्र २, पात्र, पद्य २, १२, परह १, १, २, ५) । २ वि उचित, जिसने वाम किया हो वह (दे ७, ८५) ।
 वपिण पुन [दे] १ केदारवाला देश । २ तटवाला देश (भग ५, ७—पत्र २३८) ।
 वप्पी देखो वप्पा = वप्र (भग १५—पत्र ६६६) ।
 वप्पीअ पु [दे] चातक पक्षी (दे ७, ३३) ।
 वप्पीडिअ न [दे] क्षेत्र, खेत (दे ७, ४८) ।
 वप्पीह पु [दे] स्तूप, मिट्टी आदि का कूट (दे ७, ४०) ।
 वप्पु देखो वउ = वपुस् (भग १५—पत्र ६६६) ।
 वप्पे अ [दे] इन अर्थों का सूचक अव्यय—१ उपहाम-युक्त उल्लापन । २ विस्मय, आश्चर्य (संज्ञि ४७) ।
 वप्पाउल देखो वप्पाउल (दे ६, ६२ टी) ।
 वपर न [दे] गज-विशेष (सुर १३, १५६) ।
 वट्ठं देखो वह = वह् ।
 वट्ठ पुं [वभ्र] पशु-विशेष (स ४३७) ।
 वट्ठय न [दे] कमलोदर, कमल का मध्य भाग (दे ७, ३८) ।
 वभिचरिअ वि [व्यभिचरित] व्यभिचार दोष में दूषित (आ १४) ।
 वभिचार देखो वहिचार (स ७११) ।
 वभिचारि वि [व्यभिचारिन्] १ न्याय-शास्त्रोक्त दोष-विशेष में दूषित, ऐकान्तिक (धर्मसं १२२७, पंचा २, ३७) । २ परस्त्री-लम्पट (वव ६, ७) ।
 वभियार देखो वहिचार (उवर ७६) ।
 वम नक [वम्] उलटी करना, कै करना ।
 वक्क वमत, वममाण (गउड, विपा १, ७) ।
 संक वता (आचा, सूत्र १, ६, २६) । कृ. वम्म (उर १, ७) ।

वमग वि [वामरु] उलटी करनेवाला (वेइय १०३) ।
 वमण न [वमन] उलटी, वान्ति, कै (आचा, रागा १, १२) ।
 वमाल सक [पुज्य] १ इकट्ठा करना । २ विस्तारना । वमालइ (हे ८, १०२, पड्) ।
 वमाल पु [दे] कलकल, कोनाहल (दे ६, ६०, पात्र स ४३५, ५२०, भवि) ।
 वमाल पुं [पुज्] राशि, ढग (सण) ।
 वमालण न [पुज्ज] १ इकट्ठा करना । २ विस्तार । ३ वि इकट्ठा करनेवाला । ४ विस्तारनवाला (कुमा) ।
 वम्म पुं [वर्मन्] कवच, सनाह, बहुर (प्राप्र, कुमा) ।
 वम्म देखो वम ।
 वम्मय पुं [मन्मथ] कामदेव, कंदर्प ।
 वम्मह (चड, प्राप्र, हे १, २४२, २, ६१, पात्र) ।
 वम्मा देखो वामा (कप्प, पद्य २०, ४६; मुख २३, १, पत्र ११) ।
 वम्मिअ वि [वर्मित] कवचित, मंताह-युक्त (विपा १, २—पत्र २३) ।
 वम्मिअ पु [वल्मीक] कीट-विशेष-कृत ।
 वम्मिअ मिट्टी का स्तूप, दूह या भीटा, दीमको के रहने की बाँवी (सूत्र २, १, २६, हे १, १०१, पड्, पात्र, स १२३, सुपा ३१७) ।
 वम्मिइ पुं [वाल्मीकि] एक प्रसिद्ध ऋषि, रामायण-कर्ता मुनि (उत्तर १०३) ।
 वम्मिअ पु [दे] काम, कन्दर्प (दे ७, ४२) ।
 वम्ह न [दे] वल्मीक (दे ७, ३१) ।
 वम्ह पुं [व्रह्मन्] १ वृक्ष-विशेष, पलाश का पेड़, 'नगोहवम्हा तह' (पद्य ५३, ७६) । २ देखो वम (प्राप्र) ।
 वम्हल न [दे] केसर, किजल्क (दे ७, ३३, हे २, १७४) ।
 वम्हाण देखो वमण (कुमा) ।
 वय सक [वच्] बोलना, कहना । वयइ, वयए (पड्) । भवि. वच्छिहिइ, वच्छिइ, वच्छिहिति, वच्छिति, वोच्छिइ, वोच्छिहिइ, वोच्छिति, वोच्छिहिति, वोच्छ (संज्ञि ३२, पड्, हे ३, १७१, कुमा) । कर्म वुचइ

(कुमा) । कर्म. भवि. वक्क, वक्खमाण (विसे १०५३) । संक. वडत्ता, वञ्चा, वोत्तूण (ठा ३, १—पत्र १०८, सूत्र २, १, ६, हे ४, २११, कुमा) । हेक वत्तए, वत्तं, वोत्तु (आचा, अमि १७२, हे ४, २११, कुमा) । कृ. वञ्च, वत्तञ्च, वोत्तञ्च (विसे २, उप १३६ टी, ६४८ टी, ७६८ टी, पिड ८७, धर्मसं ६२२, सुर ४, ६७, सुपा १५०, औप, उवा, हे ४, २११) । देखो वयणिज्ज ।
 वय मक [वट्] बोलना, कहना । वयइ, वयमि (कस, कप्प), वड्जा, वएजा (कप्प) । भूका वयामि, वयामी (औप; कप्प, भग महा) । वक्क. वयंत, वयमाण, वएमाण (कप्प, काल, ठा ४, ४—पत्र २७४, सम्म ६६, ठा ७) । संक. वडत्ता (आचा) । हेक. वडत्तए (कप्प) ।
 वय सक [वज्ज] जाना, गमन करना । वयइ (सुर १, २८८) । वयट (महा), वड्क (गच्छ २, ६१) । कृ. वयंत (सुर ३, ३७, सुपा ४३२) । कृ. वड्दयव्व (राजा) ।
 वय पुं [वृक] पशु विशेष, भेड़िया (पद्य ११८, ७) ।
 वय पु [दे] गृध्र पक्षी (दे ७, २६, पात्र) ।
 वय पुं [वज] १ संस्कार-करण । २ गमन (आ २३) ।
 वय पुं [वज] १ देश-विशेष (गा ११२) । २ गोकुल, दस हजार गौश्री का समूह (रागा १, १ टी—पत्र ४३ आ २३) । ३ मार्ग, रास्ता । ४ संस्कार-करण । ५ गमन, गति (आ २३) । ६ नमूह, वृथ (आ २३, स २६७, सुपा २८८, टी ३) ।
 वय पुं [व्यय] १ खर्च (स ५०३) । २ हानि, नुकसान (उव, प्रासू १८१) । देखो विअ = व्यय ।
 वय न [वचस] वचन, उक्ति (सूत्र १, १, २, २३, १, २, २, १३, सुपा १६४, भास ६१, द २२) । 'ममिअ वि [समित] वचन का समयी (भग) ।
 वय पुं [वट] कथन, उक्ति (आ २३) ।
 वय पुन [व्रत] नियम, धार्मिक प्रतिज्ञा (भग, पचा १०, ८, कुमा; उप २११ टी, औपमा

वर्ग पु [वर्ग] १ सजातीय समूह (एदि, सुर ३, ४, कुमा) । २ गणित-विशेष, दो समान संख्या का परस्पर गुणन (ठा १०—पत्र ४६६) । ३ ग्रन्थ-परिच्छेद, अध्ययन, संग (हे १, १७७, २, ७६) । 'मूल न [मूल] गणित-विशेष, वह श्रृंखला जिसका वर्ग किया गया हो, जैसे ४ का वर्ग करने से १६ होता है, १६ का वर्गमूल ४ होता है (जीवस १५७) । 'वर्ग पु [वर्ग] गणित-विशेष, वर्ग से वर्ग का गुणन, जैसे २ का वर्ग ४, ४ का वर्ग १६, यह २ का वर्गवर्ग कहलाता है (ठा १०) ।

वर्ग मक [वर्गय] वर्ग करना, किसी श्रृंखला को समान श्रृंखला से गुणना । वर्गसु (कम्म ४, ८४) ।

वर्ग वि [व्यग्र] व्याकुल (उत्त १५, ४, रयण ८०) ।

वर्ग देखो वक्क = वल्क (विसे १५४) ।

वर्ग देखो वक्क = वाक्य, 'भुद्धा भणति अहलं बहु वर्गजालं' (रभा) ।

वर्ग वि [वाल्क] वृक्ष त्वचा—छाल का बना हुआ (णाय १, १ टी—पत्र ४३) ।

वर्गसिअ न [दे] युद्ध, लड़ाई (दे ७, ४६) ।

वर्गचूलिआ स्त्री [वर्गचूलिका] एक प्राचीन जैन ग्रन्थ (एदि २०२) ।

वर्गण न [वल्गन] कूटना (श्रीप, कुप्र १०७, कप्प, णाय १, १—पत्र १६, प्राप) ।

वर्गण न [वल्गन] वक्काद (रंभा) ।

वर्गणा स्त्री [वर्गणा] सजातीय समूह (ठा १—पत्र २७) ।

वर्गय न [दे] वार्ता, बात (दे ७, ३८) ।

वर्गा स्त्री [वल्गा] लगाम (उप ७६८ टी) ।

वर्गावर्गिअ वर्ग रूप से (श्रीप) ।

वर्गि वि [वाग्मिन्] १ प्रशस्त वाक्य बोलनेवाला । २ पुं. बृहस्पति (प्राप्र, पि २७७) ।

वर्गिअ वि [वर्गित] वर्ग किया हुआ (कम्म ४, ८०) ।

वर्गिअ न [वर्गित] १ बहु भाषण, वक्काद (सम्मत २२७) । २ बहाई की आवाज (मोह ८७) । ३ गति, चाल (सण) ।

वर्गिर वि [वर्गित] १ खूँखार आवाज करनेवाला । २ गति-विशेषवाला (सुर ११, १७१) ।

वर्गु देखो वाया = वाच्, 'वर्गुहि' (श्रीप, कप्प, सम ५०, कुम्मा १६) ।

वर्गु देखो वर्ग = वर्ग, 'वर्गुहि' (श्रीप) ।

वर्गु वि [वल्गु] १ मुन्दर, शोभन (सूत्र १, ४, २, ४) । २ कल, मधुर (पाप्र) । ३ पुं विजय-क्षेत्र-विशेष, प्रान्त विशेष (ठा २, ३—पत्र ८०) । ४ पुं. एक देव-विमान, वैश्रमण लोकपाल का विमान (देवेन्द्र १३१, २७०) ।

वर्गुरा न [वागुरा] १ मृग-जन्तु, पशु फँसाने का जाल, फन्दा (परह १, १, विपा १, २—पत्र ३५) । २ समूह, समुदाय, 'मणुस्सवर्गुरापरिक्खित्तं' (उवा, प्राप) ।

वर्गुरिय वि [वागुरिक] १ मृग-जाल से जीविका निर्वाह करनेवाला, व्याध, पारवि (श्रीप ७६६) । २ पुं. नर्तक-विशेष (राज) ।

वर्गुलि पुंस्त्री [वल्गुलि] १ पक्षि-विशेष (परह १, १—पत्र ८) । २ रोग-विशेष (श्रीपमा २७७, आवक ६१ टी) ।

वर्गोज्ज वि [दे] प्रचुर, प्रभूत (दे ७, ३८) ।

वर्गोअ पु [दे] नकुल न्यूला (दे ७, ४०) ।

वर्गोरमय वि [दे] रुस, लूखा (दे ७, ५२) ।

वर्गोल सक [रोमन्थय] पगुराना, चवी हुई वस्तु का पुन चवाना, गुजराती में 'वागोळ्ठु' । वर्गोलइ (हे ४, ४३) ।

वर्गोलिर वि [रोमन्थयित्] पगुरानेवाला (कुमा) ।

वर्ग वि [वैयाघ्र] व्याघ्र-चर्म का बना हुआ (भाचा २, ५, १, ५) ।

वर्ग पुं [व्याघ्र] १ बाघ, शेर (पाप्र, स्वप्न ७०, सुपा ४६३) । २ रक्त एरण्ड का पेड़ । ३ करज वृक्ष (हे २, ६०) । 'मुह पुं [मुख] १ एक अन्तर्द्वीप । २ उसमें रहनेवाली मनुष्य-जाति (ठा ४, २—पत्र २२६, इक) ।

वर्गअ पुं [दे] १ साहाय्य, मदद । २ वि. विकसित, खिला हुआ (दे ७, ८६) ।

वर्गहा स्त्री [दे] उग्रहास के लिये की

जाती एक प्रकार की आवाज, 'अप्पेगइया वर्गहाडीओ करेत्ति' (णाय १, ८—पत्र १४४) ।

वर्गहारिअ वि [व्याघारित] १ वधारा हुआ, छौंका हुआ (नाट—मृच्छ २२१) । २ व्यास, 'सीतोदयवियडवर्गहारिपाणिणा' (सम ३६) । ३ पिघला हुआ (दश० वै० वृ० चू० अ० ३ नि० गा० १६७) ।

वर्गहारिअ वि [दे] प्रलम्बित, पडिवद्धमरीर-वर्गहारियसोणिमुत्तगमल्लदामकलावे' (सूत्र २, २, ५५), 'वर्गहारिपाणि' (णाय १, ८—पत्र १५४, कप्प, श्रीप, महा) ।

वर्गवाञ्च न [व्याघ्रापत्य] एक गोत्र, जो वाशिष्ठ गोत्र की एक शाखा है (ठा ७—पत्र ३६०, सुज १०, १६, कप्प, इक) ।

वर्गही स्त्री [व्याघ्री] १ बाघ की मादा (कुमा) । २ एक विद्या (विसे २४५४) ।

वर्गाय देखो वाघाय, 'म्राउस्स कालाइचर वर्गाए, लद्धाणुमाणे य परस्स अट्ठे' (सूत्र १, १३, २०) ।

वर्चा स्त्री [वर्चा] १ पृथिवी, धरती (से २, ११) । २ श्रोत्र-विशेष, वच (मृच्छ १७०) । देखो वया = वचा ।

वञ्च सक [वञ्ज] जाना, गमन करना । वञ्चइ (हे ४, २२५, महा) । भवि, वञ्चि-हिंसि (महा) । वञ्च वञ्चत, वञ्चमाण (सुर २, ७२, महा, गा १६) ।

वञ्च सक [काङ्क्ष] चाहना, अभिनाप करना । वञ्चइ, वञ्चउ (हे ४, १६२, कुमा) ।

वञ्च देखो वय = वच् ।

वञ्च पुंन [वचस्] १ पुरीष, विष्ठा (पाप्र, श्रीप १६७, सुपा १७६, तदु १४) । २ कूडा-करकट, 'भोगो तत्रोलाइ कुणतो जिण-गिहे कुणइ वच्च' (संबोध ८) । ३ चौथा नरक का चौथा नरकेन्द्रक—नरकस्यान-विशेष (देवेन्द्र १०) । ४ तेज, प्रभाव (णाय १, १—पत्र ६) । 'वर, हर न [गृह] पाखाना, टट्टी (सूत्र १, ४, २, १३, स ७४१) ।

वञ्च देखो वय = वचस् (णाय १, १—पत्र ६) ।

वरग न [वरक] महामूल्य पात्र, कीमती
भाजन (आचा २, १, ११, ३)।
वरट्ट पु [दे] धान्य-विशेष (पव १५४)।
वरडा } स्त्री [दे वरटा] १ तैलाटी, कीट-
वरडी } विशेष, गधौली । २ दश अमर,
जन्तु-विशेष (मृच्छ १२, दे ७, ८४)।
वरण पु [वरण] १ सगाई, विवाह-सम्बन्ध
(सुपा ३५४, सुर १, १२६, ४ १०)। २ तट,
किनारा (गडड)। ३ पुल, सेतु (ओष ३०)। ४
प्राकार, किला (गा २४५)। ५ स्वीकार,
ग्रहण (राज)। देखो वीर-वरण। ६ पुं.
देश-विशेष, एक आर्य देश, 'वडराड वच्छ
वरणा अच्छा' (सूत्रनि ६६ टी, इक), देखो
वरुण।
वरणय न [वरणरु] वृण-विशेष (गडड)।
वरणसि (अप) देखो वाराणसी (पि ३५४)।
वरणा स्त्री [वरणा] १ काशी की एक नदी,
वरुणा (राज)। २ अच्छ देश की प्राचीन
राजधानी (सूत्रनि ६६ टी)। देखो वरुणा।
वरणीअ देखो वर = वृ।
वरत्त वि [दे] १ पीत। २ पतित। ३ पेटित,
संहत (पड्)।
वरत्ता स्त्री [वरत्ता] रज्जु, रस्ती (पात्र, विपा
१, ६, सुपा ५६२)।
वरय पु [वरक] सगाई करनेवाला, विवाह का
प्राणिक पुरुष (सुर ६, ११५)।
वरय पु [दे] शालि विशेष, एक तरह का
धान्य (दे ७, ३६)।
वरय वि [वराक] दीन, गरीब, बेचारा, रक
(पात्र, सुर २, १३, ६, १६५, सुपा ६३,
गा ५३३)। स्त्री 'रई' (सक्षि २, पि ८०)।
वरला स्त्री [वरला] हसी, हंसपक्षी की मादा
(पात्र)।
वरसि देखो वरिसि (मोह ३०)।
वरहाड अक [निर् + स्तृ] बाहर निकलना।
वरहाडड (हे ४, ७६)।
वरहाडिअ वि [नि स्तृ] बाहर निकला
हुआ, निर्गत (कुमा)।
वराग देखो वराय (रंभा)।
वराड } पु [वराट, °क] १ दक्षिण का
वराडग } एक देश, जो आजकल भी 'वरार'
वराडय } नाम से प्रसिद्ध है (कुप्र २५५,
सुख १८, ३५, राज)। २ कपर्दक, कौडा—

वडी कौडी (उत्त ३६, १३०, ओष ३३४,
आ १)। ३ न. कौडियो का जुआ जिसे
बालक खेलते हैं (मोह ८६)।
वराडिया स्त्री [वराटिका] कपर्दक, कौडी
(सुपा २०३)।
वराय देखो वरय = वराक (गा ६१, ६६,
१४१, महा)। स्त्री 'राइआ, °राई' (गा
४६२, पि ३५०)।
वरावड पु. व [वरावट] देश-विशेष (पउम
६८, ६४)।
वराह पु [वराह] १ शूकर, सूअर (पात्र)।
२ भगवान् सुविधिनाथ का प्रथम शिष्य
(सम १५२)।
वराही स्त्री [वराही] विद्या-विशेष (विते
२४५३)।
वरि अ [वरम्] अच्छा, ठीक,
'वरि मरण मा विरहो,
विरहो अइदुसहो म्ह पडिहाइ।
वरि एकक चिय मरण,
जेण समप्पति दुक्खाई ॥'
(सुर ४, १८२, भवि)।
वरिअ देखो वज्र = वर्य (हे २, १०७, पड्)।
वरिअ वि [वृत्त] १ स्वीकृत (से १२, ८८)।
२ सेवित (भवि)। ३ जिसकी सगाई की गई
हो वह (वसु, महा)। ४ न. सगाई करना,
'सुवरियं ति' (उप ६४८ टी)।
वरिट्ट पुं [वरिष्ठ] १ भरत-क्षेत्र का भावी
बारहवाँ चक्रवर्ती राजा (सम १५४)। २
अति श्रेष्ठ (ओष, कप्प, उप पु ३८४, सुपा
४०३, भवि)।
वरिल्ल न [दे] वज्र विशेष (कप्प)।
वरिस सक [वृप्] वरसना, वृष्टि करना।
वरिसइ (हे ४, २३५, प्राप्र)। वक्र.
वरिसंत, वरिसमाण (सुपा ६२४, ६२३)।
हेक. वरिसिउं (पि १३५)।
वरिस पुन [वर्ष] १ वृष्टि, वर्षा (कुमा,
कप्प, भवि)। २ सवत्सर, साल (कुमा,
सुपा ४५२, नव ६, द २७, कप्प, कम्म
१, १८)। ३ जवूदीप का अश-विशेष, भारत
आदि क्षेत्र। ५ मेघ (हे २, १०५)। 'अ
वि [°ज] वर्षा मे उत्पन्न (पड्)। 'कणह
न [°कृष्ण] १ एक गोत्र। २ पुत्री उस गोत्र

मे उत्पन्न (ठा ७—पत्र ३६०)। 'धर पुं
[°धर] अन्त पुर-रक्षक परड-विशेष (गाया
१, १—पत्र ३७, कप्प, ओष ५५ टि)।
'वर पुं [°वर] वही अनन्तरोक्त अर्थ
(ओष)। देखो वास = वर्ष।
वरिसविअ वि [वर्षित] वरसाया हुआ
(सुपा २२३)।
वरिसा स्त्री [वर्षा] १ वृष्टि, पानी का वरसना
(हे २, १०५)। २ वर्षा-काल, आवण और
भादो का महीना (प्रयौ ७४)। 'काल पु
[°काल] वर्षा ऋतु, प्रावृट् (कुप्र ७५)।
'रत्त पु [°रात्र] वही अर्थ (ठा ६, गाया
१, १—पत्र ६३)। 'ल देखो 'काल (पव
८५, महा)। देखो वासा।
वरिसि वि [वर्षिन्] वरसनेवाला (वेणी
१११)।
वरिसिणी स्त्री [वर्षिणी] विद्या-विशेष (पउम
७, १४२)।
वरिसोलक पु [दे वर्षोलक] पक्कान-विशेष,
एक प्रकार का खाद्य (पव ४ टी)।
'वरिहरिअ देखो परिहरिअ (से ७, ३८)।
वरु } पुन [दे] देखो वरुअ, 'चंपयतरुणो
वरुअ } वरुणो फुल्लति सुरहिजलसिन्ना (?)
त्ता' (संबोध ४७)।
वरुंट पुं [वरुण्ट] एक शिल्पि-जाति (राज)।
वरुड पुं [वरुड] एक अन्त्यज-जाति (दे २,
८४)।
वरुण पुं [वरुण] १ चमर आदि इन्द्रो का
पश्चिम दिशा का लोकपाल (ठा ४, १—पत्र
१६७, १६८, इक)। २ बलि-आदि इन्द्रो का
उत्तर दिशा का लोकपाल (ठा ४, १)।
३ लोकान्तिक देवो की एक जाति (गाया
१, ८—पत्र १५१)। ४ भगवान् मुनिसुव्रत
का शासनाधिष्ठातृ यक्ष (सति ८)। ५
शतभिषक् नक्षत्र का अधिष्ठाता देव (मुज १०,
१२)। ६ एक देव विमान (देवेन्द्र १३१)।
७ वृक्ष की एक जाति (पव ४)। ८ ग्रहोरात्र
का पनरहवाँ मुहूर्त (मुज १०, १३, सम
५१)। ९ एक विद्याधरनरपति (पउम ६,
४४, १६, १२)। १० एक श्रेष्ठि-पुत्र (सुपा
५५६)। ११ छन्द-विशेष (पिंग)। १२
वरुणवर द्वीप का एक अधिष्ठाता देव (जीव

वंशीय राजा (पउम ५, १५)। °धर देखो °हर (पउम १०२, १५६, विचार १००)। °नागरी स्त्री [°नागरी] एक जैन मुनि शाला (कप्प)। °नाभ पुं [°नाभ] एक जैन मुनि (पउम २०, १६)। देखो °णाभ। °पाणि पु [°पाणि] १ इन्द्र (उत्त ११, २३, देवेन्द्र २८३, उप २११ टी)। २ एक विद्याधर-नरपति (पउम ५, १७)। °पभ न [°प्रभ] एक देव-विमान (सम २५)। °वाहु पुं [°वाहु] एक विद्याधर-वंशीय राजा (पउम ५, १६)। °भूमि स्त्री [°भूमि] लाट देश का एक प्रदेश (आचा १, ६, ३, २)। °म (अप) देखो मय (हे ४, ३६५)। °मज्झ पुं [°मध्य] १ राक्षस-वंश का एक राजा, एक लंका (पउम ५, २६३)। २ रावणाधीन एक सामन्त राजा (पउम ८, १३२)। °मज्झा स्त्री [°मध्या] एक प्रतिमा, व्रत-विशेष (श्रीप २४)। °मय वि [°मय] वज्र का बना हुआ (पउम ६२, १०)। स्त्री °मई (नाट—उत्तर ४५)। °रिसहनाराय न [°अपभनाराच] सहनन-विशेष, शरीर का एक तरह का सर्वोत्तम वन्य (कम्म १, ३८)। °रुव न [°रूप] एक देव-विमान (सम २५)। °लेस न [°लेश्य] एक देव-विमान (सम २५)। °ध (अप) देखो °म (हे ४, ३६५)। °वण्ण न [°वर्ण] एक देव-विमान (सम २५)। °वेग पुं [°वेग] एक विद्याधर का नाम (महा)। °सिखला स्त्री [°शृङ्गला] एक विद्या-देवी (संति ५)। °सिंग न [°शृङ्ग] एक देव-विमान (सम २५)। °सिट्ठ न [°सुष्ट] एक देव-विमान (सम २५)। °सुदर पु [°सुन्दर] विद्याधर-वंश में उत्पन्न एक राजा (पउम ५, १७)। °सुजणहु पुं [°सुजह्नु] विद्याधर-वंश का एक राजा (पउम ५, १७)। °सेण पु [°सेन] १ एक जैन मुनि, जो भगवान् ऋषभदेव के पूर्व जन्म में गुरु थे (पउम २०, १७)। २ विक्रम की चौदहवीं शताब्दी के एक जैन आचार्य (सिरि १३४६)। °हर पु [°धर] १ इन्द्र, देवराज (सि १५, ४८, उव)। २ वि. वज्र को धारण करने-वाला (सुपा ३३४)। °उह पुं [°युध] १ इन्द्र (पउम ३, १३७, ५१, १८)। २

विद्याधर-वंश का एक राजा (पउम ५, १६)। °भ पुं [°भ] एक विद्याधर-वंशीय राजा (पउम ५, १६)। °वत्त न [°वर्त्त] एक देव-विमान (सम २५)। °स पुं [°श] एक विद्याधर-राजा (पउम ५, १७)। वज्रक पुं [वज्राङ्क] विद्याधर-वंश का एक राजा (पउम ५, १६)। वज्रकुसी स्त्री [वज्राकुशी] एक विद्या-देवी (संति ५)। वज्रत देखो वज्र = वद्। वज्रधर पु [वज्रधर] विद्याधर-वंश का एक राजा (पउम ५, १६)। वज्रघटिता स्त्री [दे] मन्द-भाग्य स्त्री (मंलि ४७)। वज्रण न [वर्जन] परित्याग, परिहार (सुर ४, ८२, स २७१, सुपा २४५, धु ६)। वज्रणअ (अप) वि [वदित्] वजनेवाला, 'पडहु वज्जणअ' (हे ४, ४४३)। वज्रणया स्त्री [वर्जना] परित्याग (सम वज्रणा ४४, उत्त १६, ३०, उव)। वज्रमाण देखो वज्र = वद्। वज्रय वि [वर्जक] त्यागनेवाला (उवा)। वज्रर सक [कथय्] कहना, बोलना। वज्ररह, वज्ररेड (हे ४, २, पड्, महा)। वहु वज्ररंत (हे ४, २, चेइय १४६)। संक्र. वज्ररिऊण (हे ४, २)। क वज्ररि-अव्व (हे ४, २)। वज्रर देखो वंजर = मार्जार (चड)। वज्रर पु [वर्जर] १ देश-विशेष। २ वि देश-विशेष में उत्पन्न, 'परिवाहिया य तेणं वहवे वल्हीयतुरुक्कवज्जराइया आसा' (स १३)। वज्ररण न [कथन] उक्ति, वचन (हे ४, २)। वज्ररा स्त्री [दे] तरगिणी, नदी (दे ७, ३७)। वज्ररिअ वि [कथित] कहा हुआ, उक्त (हे ४, २, सुर १, ३२, भवि)। वज्रा स्त्री [दे] अधिकार, प्रस्ताव (दे ७, ३२, वज्जा २)। वज्राव (अप) सक [वाचय्] वचवाना, पढ़ाना। वज्रावइ (प्राक्र १२०)। वज्राव सक [वादय्] वजाना। वज्रावइ (भवि)।

वज्जाविय वि [वादित्] वजाया हुआ (भवि)। वज्जि पुं [वज्जिन्] इन्द्र (सवोष ८)। वज्जिअ वि [दे] अवलोकित, दृष्ट (दे ७, ३६; महा)। वज्जिअ वि [वादित्] वजाया हुआ (सिरि ५२५)। वज्जिअ वि [वजित्] रहित (उवा, श्रीप, महा, प्रासू ७६)। वज्जियाव पु [दे] शेलडी (व्यव० भाष्य०)। वज्जियावग पुं [दे] इक्षु, ऊख (वव १)। वज्जिर वि [वदित्] वजनेवाला (सुर ११, १७२, सुपा ४५, ८७, सिरि १५५, सण), 'गहिह (१२व) जिंराउज्जगज्जिज्जरियवंभडभडो-यरो' (कुप्र २२४)। वज्जुत्तरवडिसग न [वज्जोत्तरायतंसक] एक देव-विमान (सम २५)। वज्जोयरी स्त्री [वज्जोदरी] विद्या-विशेष (पउम ७, १३८)। वज्झ वि [वध्य] वध के योग्य (सुपा २४८, गा २६, ४६६, दे ८, ४६)। °नेवदिय वि [°नेपथियक] मृत्यु-दंड-प्राप्त को पहनाया जाता वेप वाला (परह १, ३—पत्र ५४)। °माला स्त्री [°माला] वध्य को पहनाई जाती माला, कनेर के फूलों की माला (भत्त १२०)। वज्झ वि [वाह] १ वहन करने योग्य (प्राप्र, उप १५० टी)। २ न अश्व आदि यान (स ६०३)। °खेडु न [°खेल] कला-विशेष, यान की सवारी का इत्तम (स ६०३)। वज्झा स्त्री [हत्या] वध, घात (सुख ४, ६, महा)। वज्झियायण न [वध्यायन] गोत्र-विशेष (सुज १०, १६)। वव (अप) देखो वच्च = वज्। ववइ, ववदि (पड्)। वट्ट सक [वृत्] १ वर्त्तना, होना। २ आचरण करना। वट्टइ, वट्टए, वट्टति (सुर ३, ३६, उव, कप्प)। वहु वट्टंत, वट्टमाण (गा ४१०, कम्म ३, २०, चेइय ७१३, भवि; उवा, पडि, कप्प, पि ३५०)। हेहु, वट्टेउ (चेइय ३६८)। क. वट्टियव्व (उव)।

वलवाडी स्त्री [दे] वृत्ति, बाढ (दे ७, ४३) ।
 वलधिअ न [दे] शीघ्र, जल्दी (दे ७, ४८) ।
 वलहि स्त्री [दे] कर्पास, कपास (दे ७, ३२) ।
 वलहि } स्त्री [वलधि, भी] १ गृह-चूडा,
 वलही } छज्जा, वरामदा । २ महल का
 अग्रस्य भाग (प्राप्र) । ३ काठियावाड का
 एक प्राचीन नगर, जिसको आजकल 'वळा'
 कहते हैं (ती १५, सम्मत ११६) ।
 वलाअ देखो पलाय = परा + अय् । वक्तु
 'दीसइ वि वलाअतो' (से ६, ८६) ।
 वलाअ देखो पलाव = प्रलाप (मे ६, ४६) ।
 वलाअ देखो वल = वल् । मरण देखो
 वलय-मरणः 'सजमजोग विसन्ना मरति जे
 त वलायमरण तु' (पव १५७ ठा २, ४—
 पत्र ६३) ।
 वलि स्त्री [वलि] १ पेट का अवयव-विशेष,
 'उयरवलिमसेहि' (निर १, १) । २ त्रिवलि,
 नाभि के ऊपर पेट की तीन रेखाएँ (गा ४२५,
 भवि) । ३ जरा आदि से होती शिथिल
 चमड़ी (गाया १, १—पत्र ६६) ।
 वलिअ वि [दे] भुक्त, भक्षित (दे ७, ३५) ।
 वलिअ वि [वलिअ] १ मुडा हुआ (गा ६,
 २७०, औप) । २ जिमको बल चढ़ाया गया
 हो वह (रन्मि आदि) (उत्त २६, २५) ।
 वलिअ देखो विलिअ = व्यलोक (प्राप्र) ।
 वलिआ स्त्री [दे] ज्या, धनुष की डोरी (दे
 ७, ३४) ।
 वलिच्छत्त देखो परिच्छन्न (औप) ।
 वलिज्जत देखो वल = वल् ।
 वलित्त देखो पलित्त (उप ७२८ टी) ।
 वलिमोडय पु [वलिमोटक] वनस्पति मे
 ग्रन्थि का चक्राकार वेष्टन (परण १—पत्र
 ४०) ।
 वलिर वि [वलिर] लौटनेवाला (सुपा
 ५६) ।
 वली स्त्री [वली] देखो वलि (निर १, १) ।
 वलुण देखो वरुण (हे १, २५४) ।
 वले अ सवोधन-सूचक अव्यय (प्राकृ ८०) ।
 २-३ देखो वले (पङ्) ।
 वल् देखो वल = वल् । वल्लइ (घात्वा
 १५२) ।

वल अक [वल्] चलना, हिलना (कुप्र
 ८४) ।
 वल् पुं [दे] शिशु, बालक (दे ७, ३१) ।
 वल् पु [दे. वल्] अन्न-विशेष, निष्पाव, गुज-
 राती मे 'वाल' (सुपा १३, ६३१, सम्मत
 ११८, सण) ।
 वल्ई स्त्री [वल्वी] गोपी (दे ७, ३६ टी) ।
 वल्ई स्त्री [दे] गो, गैया (दे ७, ३६) ।
 वल्ई } स्त्री [वल्की] वोणा (पाप्र, दे
 वल्की } ७, ३६ टी, गाया १, १७—पत्र
 २२६) ।
 वल्ट्टि वि [दे] पुनरुक्त, फिर मे कहा हुआ
 (पङ्) ।
 वल्भ देखो वल्ह (गा ६०४) ।
 वल्ह न [दे वल्ह] १ वन, गहन (दे ७,
 ८६, पाप्र, उत्त १६, ८१) । २ क्षेत्र, खेत
 (दे ७, ८६, परह १, १—पत्र १४) । ३
 अरण्य क्षेत्र (पाप्र) । ४ बालुका-युक्त क्षेत्र
 (गा ८१२) ।
 वल्ह न [दे] १ अरण्य अटवी । २ निर्जन
 देश । ३ पुं. महिप, भैंसा, ४ समीर, पवन ।
 ५ वि युवा, तरुण (दे ७, ८६) । ६ वेष्टन-
 शील । ७ दंष्ट्रित नामक आलिंगन-विशेष
 करने की आदत वाला । स्त्री. °री (गा ५३४) ।
 वल्हरी स्त्री [वल्हरी] बल्ली, लता (पाप्र,
 गठह, सुपा ५२६) ।
 वल्हरी स्त्री [दे] केश, बाल (दे ७, ३२) ।
 वल्हव पुत्री [वल्हव] गोप, अहीर, ग्वाला
 (पाप्र) । स्त्री °वी (गा ८६) ।
 वल्हवाय न [दे] क्षेत्र, खेत (दे ६, २६)
 वल्हविअ वि [दे] लाक्षा से रंगा हुआ (पङ्) ।
 वल्ह पुं [वल्हभ] १ दयित, पति, भर्ता, बालम
 (गठह, कप्पू, गा १२३, हे ४, ३८३) ।
 २ वि प्रिय, स्नेह-पात्र, 'अहं जाया वल्लहा
 अईव पिडणो' (महा, गा ४२, ६७, कुमा
 पउम १५, ७३, रयण ७६) । °राय पुं
 [°राज] १ गुजरात का एक चौलुक्य-वंशीय
 राजा (कुप्र ४) । २ दक्षिण के कुन्तल देश
 का एक राजा (कप्पू) ।
 वल्हहा स्त्री [वल्हभा] दयिता, पत्नी (गा
 ७२) ।

वल्हादय न [दे] आच्छादन, ढकने का वल्ह
 (दे ७, ४५) ।
 वल्हाय पुं [दे] १ श्येन पक्षी । २ नकुल,
 न्यूला (दे ७, ८४) ।
 वल्हि स्त्री [वल्हि] लता, बेल (कुमा) ।
 वल्हिर वि [वल्हिर] हिलनेवाला, 'न तिरायइ
 वल्लिरपल्लवा वि वल्लिव्व फलहीणा' (कुप्र
 ८४) ।
 वल्ही स्त्री [वल्ही] लता, बेल (कुमा, वि
 ३८७) ।
 वल्ही स्त्री [दे] केश, बाल (दे ७, ३२) ।
 वल्हीअ पु [वाहलीक] १ देश-विशेष (स
 १३, नाट) । २ वि. बाह्योक्त देश मे उत्पन्न,
 बाह्योक्त देश का (स १३) ।
 वव नक [वव] बोना, 'जे सत्तखित्तु
 ववति वित्त' (सत्त ७२) । वक्तु ववंत
 (आत्महि ७) । कवक्तु, वविज्जत (गा
 ३५८) ।
 वव सक [वव] देना । ववइ (वव १) ।
 कर्म, उप्पइ (कुप्र ४१) ।
 ववइस नक [व्यप + डिङ्] १ कहना,
 प्रतिपादन करना । २ व्यवहार करना ।
 ववइसति (धर्मस ४५२ सूत्रनि १४१) ।
 अन्ने अकालमरणस्सभावो
 वहनिवित्तिमो मोहा ।
 वक्कासुअपिनिवासण-
 निवित्तिमुल्लं ववइसति ॥'
 (आवक १६२) ।
 ववएस पुं [व्यपदेश] १ कथन, प्रतिपादन ।
 २ व्यवहार (से ३, २६) । ३ कपट, बहाना,
 छल (महा) ।
 ववगम पुं [व्यपगम] नाश (आवम) ।
 ववगय वि [व्यपगत] १ दूर किया हुआ
 (सुपा ४६) । २ मृत (परह २, ५—पत्र
 १४८) । ३ नाश प्राप्त, नष्ट, 'ववगयविग्घा
 सिग्घं पत्ता हिअइच्छिअ ठाणं' (रामि ११,
 औप, कप्प) ।
 ववट्ठंभ पु [व्यवट्ठंभ] अवलम्बन, सहारा
 (से ४, ४६) ।
 ववट्ठावण देखो ववत्थावण (राज) ।
 ववट्टिअ वि [व्यवस्थित] व्यवस्था-प्राप्त
 (से १२, ५२) ।

अग जिसका बाहर निकल आया हो वह (पव ११०)। ५ जिसका पेट बड़ा होकर आगे निकल आया हो वह। स्त्री. °भी (गाया १, १—पत्र ३७, श्रौप, पि ३८७)।

वडय देखो वडग = वटक (सुपा ४८५)।

°वडल देखो पडल (गठड)।

वडवगि पु [वडवागि] वडवानल, समुद्र के भीतर की आग (गा ४०३)।

वडवड अक [वि + लप्] विलाप करना। वडवडइ (हे ४, १४८), वडवडति (कुमा)।

वडवा स्त्री [वडवा] घोड़ी (पाम्र, धर्मवि १४५)। °णल, नल पुं [°नल] समुद्र के भीतर की आग, वडवागि (पि २४०, आ १६)। °मुह न [°मुख] १ वही अर्थ (से १, ८)। २ एक महा-माताल (इक)। °हुआस पुं [°हुताश] वडवानल (समु १५४)।

वडह देखो वडभ (आचा १, २, ३, २)।

वडह पुं [दे] पक्षि-विशेष (दे ७, ३३)।

°वडह देखो पडह (से १२, ४७)।

वडही देखो वलही (गठड)।

°वडाआ देखो पडाया (गा १२०)।

°वडालि स्त्री [दे] पक्षि, श्रेणि (दे ७, ३६)।

°वडाहा देखो पडाया, धवलधयवडाहो (महा)।

°वडिअ देखो पडिअ (से ५, १०, कुप्र १८१, उवा)।

वडिअ वि [गृहीत] ग्रहण किया हुआ (सुर १, १६६)।

वडिस पुं [वर्तस] १ मेरु पर्वत (सुज ५ टी—पत्र ७८)। २ भूपण, 'रायकुलवडिसगा वि मुणिवसमा' (उव, कप्प)। ३ एक दिग्गहिस्त-कूट (इक)। ४ प्रधान, मुख्य। ५ श्रेष्ठ, उत्तम (कप्प, महा)। ६ कर्णपूर, कान का आभूषण (गाया १, १—पत्र ३१)। देखो वडेंस, अवयस।

वडिणाय पुं [दे] धरं करण, बैठा हुआ गला (पड्)।

वडिया स्त्री [वृत्तिता] वर्तन, 'भयवतदंसण-वडियाए' (स ६८३; आचा २, ७, १)।

°वडिया देखो पडिया = प्रतिज्ञा (आचा २, ७, १)।

वडिसर न [दे] चूली-मूल, चूल्हे का मूल (दे ७, ४८)।

वडिवस्सअ वि [वरिवस्यक] पूजक, पूजा करनेवाला (आच १)।

वडिसाअ वि [दे] सुत, टपका हुआ (पड्)। वडी स्त्री [दे] वही, एक प्रकार का खाद्य (पव ३८)।

वडुमग } देखो वट्टमग (श्रौप, आचा)।
वडूमग }

वडेंस पुं [वतस] शेखर, मुकुट (भग, गाया १, १ टी—पत्र ५)। देखो वडिस।

वडेंसा स्त्री [वतंसा] किनर नामक किन्नरेन्द्र की एक अश्रमहिणी (ठा ४, १—पत्र २०४, गाया २—पत्र २५२)।

वडेंसिया स्त्री [वतसिका] अवतंस की तरह करना, मुकुटस्थानापन्न करना, 'अट्टारसव-जणाल्ल भोयण भोयावेत्ता जावजीव पिट्ठिव-डेंसियाए परिवहेजा' (ठा ३, १—पत्र ११७)।

वडु वि [दे] बड़ा, महान् (दे ७, २६, तंडु ५५, सुपा १२४, गाया २—पत्र २४८, सम्मत १७३, भवि, हे ४, ३६६, ३६७, ३७१)। °अत्थरग पुं [°आस्तरक] ऊँट की पीठ पर रखा जाता आसन (पव ८४ टी)। °त्तण न [°त्व] वडप्पन, महत्ता (हे ४, ३८४; कप्प)। °प्पण (अप) न [°त्व] वही (हे ४, ३६६, ४३७, पि ३००)। °यर वि [°तर] विशेष बड़ा (हे २, १७४)। वडुवास पुं [दे] मेघ, अन्न (दे ७, ४७, कुमा)। वडुहुलि पुं [दे] मालाकार, माली (दे ७, ४२)।

वडुार (अप) देखो वडु-यर (भवि)।

वडुिम वि [दे] सुत, टपका हुआ (पड्)।

वडुिल [दे] देखो वडु,

'नयणाण पडठ वज्ज अहवा
वज्जस्स वडिलं किपि।

अमुणियजणेवि दिट्ठे अणुवंध
जाणि कुव्वति'

(सुर ४, २०, वजा ६२)।

वडुअर देखो वडु-यर (पड्)।

वड्ड अक [वृध्] वडना। वड्डइ (हे ४, २२०, महा, काल)। भूका. वड्डिया (कप्प)। वडु वडडत, वड्डमाण (सुर १, ११६, महा, गा ११३)। हक. वड्डउ (महा)।

वड्ड सक [वर्धय] १ बढ़ाना, विस्तारना। २ बढ़ाई देना। वड्डंति (उव)। वडु. वड्डअंत (नाट—मृच्छ १८)। कर्म. वड्डज्जति (सिरि ४२४)। देखो वड्ड = वर्धय्।

वड्डइ पु [वर्धकि] बढई, सुतार (सम २७, उप पृ १५३, पाम्र, धर्मस ४८६, दे ७, ४४)।

वड्डइअ पुं [दे] चर्मकार, मोची (दे ७, ४४)।

वड्डण न [वर्धन] १ वृद्धि, बढ़ाव (कप्प)। २ वि वृद्धि-जनक (महा, सुर १३, १३६)। वड्डणमिर वि [दे] पीन, पृष्ठ (दे ७, ५१)। वड्डणसाल वि [दे] जिसकी पूँछ कट गई हो वह (दे ७, ४६)।

वड्डमाण देखो वड्ड = वृध्।

वड्डमाण } न [वर्धमान, °क] १
वड्डमाणय } गुजरात का एक नगर, जो आजकल 'वडवाण' के नाम से प्रसिद्ध है, 'सिरिवड्डमाणनयरं पत्ता गुजरवरावलय' (सम्मत ७५)। २ अवधिज्ञान का एक भेद, उत्तरोत्तर बढ़ता जाता एक प्रकार का परोक्ष रूपी द्रव्यो का ज्ञान (ठा ६—पत्र ३७०, कम्म १, ८)। ३ पुं. भगवान् महावीर (भवि)। देखो वड्डमाण।

वड्डय देखो वड्ड = दे, 'पाणमरियं वड्डयं पियावयणसमप्पिय पीयमाण पि तीए सुट्ठयर भरियमसुएहि' (स ३८२)।

वड्डव सक [वर्धय, वर्धापय] १ बढ़ाना, वृद्धि करना। २ बढ़ाई देना, अश्रुदय का निवेदन करना। वड्डवइ (प्राक ६०)।

वड्डवअ वि [वर्धक] १ बढ़ानेवाला २ बढ़ाई देनेवाला (प्राक ६१)।

वड्डवण न [दे] वज्र का आहरण (दे ७, ८७)।

वड्डवण न [दे. वर्धापन] बढाई, अश्रुदय-निवेदन (दे ७, ८७)।

वञ्जीस देखो वञ्जीसग, वञ्जीसक (पउम ११३, ११)।

वशधि (मा) देखो वसहि = वसति (प्राकृ १०१)।

वश्च (म) देखो वच्छ = वृक्ष (प्राकृ १०१)।

वस अक [वस्] १ वास करना, रहना। २ सक वौघना। वसह (कप्प, महा)। भूका वसीय (उत्त १३, १८)। वक वसत, वसमाण (सुर २, २१६, ६, १२०, कुप्र १४, कप्प)। संकु वसित्ता, वसित्ताण (आचा, कप्प, पि ५८३)। हेक, वत्थए वसिउ (कप्प, पि ५७८, राज)। कृ. वसियव्व (ठा ३, ३, सुर १४, ८७, सुपा ४३८)।

वस वि [वश] १ आयत्त, अधीन (आचा, से २, ११)। २ पुन. अधीनता, परतन्त्रता (कुमा, कम्म १, ४४)। ३ प्रभुत्व, स्वामित्व। ४ आज्ञा (कुमा)। ५ बल, सामर्थ्य (गाया १, १७, औप)। ०अ, ०ग वि [०ग] वशी-भूत, पराधीन (पउम ३०, २०, अचु ६१, सुर २, २३१, कुमा, सुपा २५७)। ०ट्ट वि [०र्त] पराधीनता से पीड़ित, इन्द्रिय आदि की परवशता के कारण दुःखित (आचा, विपा १, १—पत्र ८, औप)। ०ट्टमरण न [०र्तमरण] इन्द्रियादि-परवश की मोत (ठा २, ४—पत्र ६३, भग)। ०वत्ति वि [वर्तिन] वशीभूत, अधीन (उप १३६ टी, सुपा २३८)। ०इत्त वि [०यत्त] अधीन, परतन्त्र (धर्मवि ३१)। ०णुग वि [०नुग] वही अर्थ (पउम १४, ११)।

वस पु [वृष] १ धर्म (चेइय ५४१)। २ वैल, वृषभ (स ६५४, कम्म १, ४३)। देखो विस = वृष।

वसइ छी [वसति] १ स्थान, आश्रय (कुमा)। २ रात्रि, रात (दे ७, ४१)। ३ गृह, घर (गा १६६)। ४ वास, निवास (हे १, २१४)।

वसत देखो वस = वस्।

वस्तु पु [वस्तु] १ ऋतु-विशेष, चैत्र और वैशाख मास का समय (गाया १, १—पत्र ६४, पाअ, सुर ३, ३६, कुमा, कप्प, प्रासू

३४, ६२)। २ चैत्र मास (सुज १०, १६)। ०उर न [०पुर] नगर-विशेष (महा)। ०तिलअ पु [०तिलक] १ हरिवंश मे उत्पन्न एक राजा (पउम २२, ६८)। २ न एक उद्यान, जहाँ भगवान् ऋषभदेव ने दोषा ली थी (पउम ३, १३४)। ०तिलआ छी [०तिलका] लन्द-विशेष (पिग)।

वसवय वि [वशवद] निज की अधीन कहनेवाला (धर्मवि ६)।

वसण न [वसन] १ वस्त्र, कपड़ा (पाअ, सुपा २४४, चेइय ४८२, धर्मवि ६)। २ निवास, रहना (कुप्र ४८)।

वसण पुं [वृषण] अण्ड-कोप, पोता (सम १२४, भग, पणह १, ३, विपा १, २, औप, कुप्र ३६५)।

वमण न [व्यसन] १ कष्ट, विपत्ति, दुःख (पाअ, सुर ३, १६२, महा, प्रासू २३)। २ राजादि-कृत उपद्रव (गाया १, २)। ३ खराब आदत—छूत, मद्य-पान आदि खोटी आदत (वृह १)।

वसणि वि [व्यमनिन्] खोटी आदतवाला (सुपा ४८८)।

वसथ पुं [वृषथ] १ ज्योतिष-प्रसिद्ध राशि-विशेष, वृष राशि (पउम १७, १०८)। २ भगवान् ऋषभदेव (चेइय ५४१)। ३ एक जैन मुनि, जो चतुर्थ बलदेव के पूर्व जन्म में गुरु थे (पउम २०, १६२)। ४ गीतार्थ मुनि, ज्ञानी साधु (वृह १, ३)। ५ वैल, बलीवद (उव)। ६ उत्तम, श्रेष्ठ, 'मुणिवसभा' (उव)। ०करण न [०करण] वह स्थान जहाँ वैल बांधे जाते हो (आचा २, १०, १४)। ०क्खेत्त न [०क्खेत्र] स्थान-विशेष, जहाँ पर वर्षा-काल में आचार्य आदि रहते हो वह स्थान (वव १०, निचू १७)। ०गाम पुं [०ग्राम] ग्राम-विशेष, कुत्तित देश में नगर-तुल्य गाँव, 'अत्थि ह वसभगामा कुदेसनगरोवमा सुहविहारा' (वव १०)। ०णुजाय पुं [०नुजात] ज्योतिषास्त्र-प्रसिद्ध दश योगों में प्रथम योग, जिसमें चन्द्र, सूर्य और नक्षत्र वैल के आकार से स्थित होते हैं (सुज १२—पत्र २३३)। देखो उसभ, रिसभ, वसह।

वसभुद्ध पुं [दे] काक, कौआ (दे ७, ४६)। वसम देखो वसिम (महा)।

वसमाण देखो वस = वस्।

वसल वि [दे] दीर्घ, लम्बा (दे ७, ३३)।

वसह पुं [वृषभ] वैयावृत्य करनेवाला मुनि (श्रीव १५०)। २ लक्ष्मण का एक पुत्र (पउम ६, २०)। ३ वैल, माढ़, साढ़ (पाअ)। ४ कान का छिद्र। ५ औपच-विशेष (प्राप्र)। ०डंथ पु [०चिह्न] शकर, महादेव (गजड)। ०केउ पु [०केतु] इक्ष्वाकु-वंश का एक राजा (पउम ५, ७)। ०वाहण पु [०वाहन] १ ईशान देवलोक का इन्द्र (ज २—पत्र १५७)। २ महादेव, शकर (वज्रा ६०)। ०वीही छी [०वीही] शुक्र ग्रह का एक क्षेत्रभाग (ठा ६—पत्र ४६८)।

वसहि देखो वसइ (हे १, २१४; कुमा, गा ५८२, पि ३८७)।

वसा छी [वसा] १ शरीरस्य धातु-विशेष, 'मेयवसामस—' (पणह १, १—पत्र १४, गाया १, १२)। २ भेद, चरबी (आचा)।

०वसारअ वि [प्रसारक] फैलानेवाला (से ६, ४०)।

०वसारअ देखो पसाहय (से ६, ४०)।

०वसाहा छी [प्रसाधा] अलंकार, भ्रामूपण (से १, १६)।

वसि देखो वसइ, 'जत्थ न नजइ पहि पहि अइववित्ठाणयविसेसो' (सुर १, ५२)।

वसिअ वि [उपिन] १ रहा हुआ, जिसने वास किया हो वह (पाअ, स २६५, सुपा ४२१, भत्त ११२, वे ७)। २ वासी, पशुपित, 'अवरोइ रयणिवसिय निम्मल्लं लोमहत्येण' (सवोव ६)।

वसिठ पु [वशिष्ठ] १ भगवान् पारश्वनाथ का एक गणधर (ठा ८—पत्र ४२६, सम १३)। २ एक ऋषि (नाट—उत्तर ८२)।

वसिठ पुं [वशिष्ठ] द्वीपकुमार देवों का उत्तर दिशा का इन्द्र (इक)।

वसित्त न [वशित्व] योग की एक सिद्धि, योग-जन्य एक ऐश्वर्य, 'साहवसित्तगुणेषां पसम कूरावि जतुणो जति' (कुप्र २७७)।

वसिम न [दे. वसिम] वसतिवाला स्थान (सुर १, ५२, सुपा १६४, कुप्र २२४, महा)।

१४, ६६, सुपा २७६, सुर १, ११६, प्रासू ८०, कुमा, महा) ।

वणिअ वि [वणिज] वण-युक्त, धाववाला (गा ४५८, ६४६, पउम, ७५, १३) ।

वणिअ पु [वनापक] भिक्षुक, भिखार, 'वरिण जायणि त्ति वणिओ पायप्पाणं वणेइत्ति' (पिड ४४३) ।

वणिअ न [वणिज] ज्योतिष-प्रसिद्ध एक करण (विसे ३३४८, सूत्रानि ११) ।

वणिआ स्त्री [वनिक्का] वाटिका, बगीचा, 'असोयवरिणआइ मज्झयारम्मि' (भाव ७, उवा) ।

वणिआ स्त्री [वनिता] स्त्री, महिला, नारी (गा १७, कुमा, तदु ५०, सम्मत १७५) ।

वणिज देखो वणिअ = वणिज् (चारु ३४) ।

वणिज } न [वाणिज्य] व्यापार, वैपार,
वणिज् } 'एत्थिक्कालं हट्ठे जइ तं चिट्ठेसि
वणिजकइ' (सुपा ५१०, २५२), 'उज्जेणी-
आगओ वणिज्जेण' (पउम ३३, ६३, स
४४३, सुर १, ६०, कुप्र ३६५, सुपा ३८४,
प्रासू ८०, भवि, आ १२) । 'रय वि
[कारक] व्यापारी (सुपा ३४३, उप पृ
१०४) ।

वणिम } देखो वणीमय (दस ५, १, ५१) ।
वणीमग } २ दखि, निर्धन (दस ५, २, १०) ।
वणी स्त्री [वनी] १ भोख से प्राप्त धन (ठा ५,
३—पत्र ३४१) । २ फली-विशेष, जिससे
कपास निकलता है (राज) ।

वणीमग } पु [वनीपक] याचक, भिक्षुक,
वणीमय } भिखारी (ठा ५, ३, सुपा १६८,
सण, श्लो ४३६) ।

वणे अ. इन अर्थों का सूचक अव्यय—१ निश्चय
(हे २, २०६, कुमा) । २ विकल्प । ३
अनुकम्पनीय । ४ सम्भावना (हे २, २०६) ।
वणेचर देखो वग-यर (रयण ५६) ।

वण सक् [वर्णय्] १ वर्णन करना । २
प्रशंसा करना । ३ रंगना । वणआमो (पि
४६०) । कर्म वरिणज्जइ (सिरि १२८८),
वरिणअइ (अप) (हे ४, ३४५) । वक्क.
वणत (गा ३५०) । हेक्क, वणिणउ (पि
५७३) । क. वणणज्ज, वणेअव्व (हे
३, १७६, भग) ।

वण पुं [वर्ण] १ प्रशंसा, श्लाघा (उप
६०७) । २ यश, कीर्ति (श्लो ६०) । २
शुक्ल आदि रंग (भग, ठा ४, ४, उवा) । ४
अकार आदि अक्षर । ५ ब्राह्मण, वैश्य आदि
जाति । ६ गुण । ७ अंगराग । ८ मुख,
सोना । ९ विलेपन की वस्तु । १० व्रत-
विशेष । ११ वर्णन । ११ विलेपन क्रिया ।
१३ गीत का क्रम । १४ चित्र (हे १, १७७,
प्राप्र) । १५ कर्म-विशेष, शुक्ल आदि वर्ण
का कारण-भूत कर्म (कम्म १, २४) । १६
सयम । १७ मोक्ष, मुक्ति (आचा) । १८ न.
कुकुम (हे १, १४२) । 'णाम, नाम पुंन
[नामन्] कर्म-विशेष (राज, सम ६७) ।
'भंत वि [वत्] प्रशस्त वर्णवाला
(भग) । 'वाइ वि [वादिन्] श्लाघा-कर्त्ता,
प्रशंसक (वव १) । 'वाय पुं [वाद्] प्रशंसा,
श्लाघा (पचा ६, २३) । 'वास पु
[वास] वर्णन-प्रकरण, वर्णन-पद्धति (जीव
३, उवा) । 'वास पुं [व्यास] वर्णन-
विस्तार (भग, उवा) ।

वण पुं [वर्ण] पचम आदि स्वर । 'सम न
[सम] गेय काव्य का एक भेद (दसनि २,
२३) ।

वण वि [दे] १ अच्छ, स्वच्छ । २ रक्त ।
(दे ७, ८३) ।

'वण देखो पण (गा ६०१, गउड) ।

वणग देखो वणाय (उवा, श्रौप) ।

वणग न [वर्णन] १ श्लाघा, प्रशंसा
(कप्प) । २ दिवचन, विवरण, निरूपण
(रयण ४) ।

वणणा स्त्री [वर्णना] ऊपर देखो (दे १,
२१, सार्व ४५) ।

वणाय पुन [दे वर्णक] १ वन्दन, श्रोत्रण्ड
(दे ७, ३७, पचा ८, २३) । २ पिष्टातक-
वर्ण, अंगराग (दे ७, ३७, स्वप्न ६१) ।

वणाय पुं [वर्णक] वर्णन-अर्थ, वर्णन-प्रकरण
(विपा १, १, उवा, श्रौप) ।

वणिअ वि [वर्णित] जिसका वर्णन किया
गया हो वह (महा) ।

वणिआ देखो वणिआ (गा ६२०) ।

वणि पु [वृष्णि] १ एक राजा, जो अन्धक-

वृष्णि नाम से प्रसिद्ध था, 'वरिह पिया
धारिणी माया' (अंत ३) । २ एक अन्तकृद्
महर्षि, 'अक्खोम पसेणई वरही' (अंत) ।
३ अन्धकवृष्णि-वंश में उत्पन्न, यादव (णदि) ।
'दसा स्त्री व [दसा] एक जैन आगम-
ग्रन्थ (निर ५) । 'पुंगव पु [पुगव] यादव-
श्रेष्ठ (उत्त २२, १३, णाया १, १६—पत्र
२१) ।

वणि पुं [वहि] १ अग्नि, आग (पाप्र,
महा) । २ लोकान्तिक देवों की एक जाति
(णाया १, ८—पत्र १५१) । ३ चित्रक
वृक्ष । ४ मिलावाँ का पेड़ । ५ नीबू का
गाछ (हे २, ७५) ।

वत देखो वय = व्रत (चड) ।

वति देखो वह = व्रतिन् (उप ३८१) ।

वति देखो वह = वृति (चड) ।

वतु पुं [दे] निबह, समूह (दे ७, ३२) ।

वत्त देखो वट्ट = वृत् । वत्तइ (भवि), वत्तदि
(शौ) (स्वप्न ६०) ।

वत्त देखो वट्ट = वर्तय् । वत्तइ (भवि) । वत्तेज्ज
(आचा २, १५, ४२) । वत्तेज्जसि, वत्तेहामि
(उवा, पि ५२८) ।

वत्त न [वार्त्त] आरोग्य (उत्त १८, ३८) ।

वत्त वि [व्याप्त] फैला हुआ, भरपूर (कप्प,
विसे ३०३६) ।

वत्त देखो वट्ट = वृत्त (स ३०८, महा, सुर १,
१७८, ३, ७६, श्रौप, हे १, १४५) ।

वत्त वि [व्यक्त] प्रकट, खुला (धर्मसं ५५५) ।

वत्त न [वक्त्र] मुख, मुँह (हे १, १८,
भवि) ।

'वत्त देखो पत्त = पत्र (गा ६०४, हेका ५०,
गउड) ।

'वत्त देखो पत्त = पात्र (गउड, गा ३००) ।

वत्त देखो वत्ता (भवि) । 'यार वि [कार]
वार्त्ता कहनेवाला (भवि) ।

वत्तअ पुं [व्यत्यय] १ विपर्यय, विपर्यास ।
२ व्यतिक्रम, उल्लंघन (प्राक्क २१) ।

वत्तए देखो वय = वच् ।

वत्तडिआ } (अप) देखो वत्ता (कुमा, हे ४,
वत्तडो } ४३२, सण) ।

वत्तण न [वर्त्तन] १ जीविका, निर्वाह, 'किं
न तुम मच्छएहि कुडु ववत्तण करेसि' (कुप्र

वह सक [वधू, हन] मार डालना । वहैह, वहति (उत्त १८, ३, ५, स ७२८, सवोध ४१) । कर्म वहिज्जति (कुप्र २५) । वह वहन, वहमाण (पउम २६, ७७, सुपा ६५१ आचम १३६) । कवक वहिज्जत, वञ्चमाण (पउम ४६, २०, आचा) । सक वहिज्जण (महा) ।

वह सक [व्यथ] १ पीडा करना । २ प्रहार करना । कृ वहैभव (पएह १, १—पत्र १००) ।

वह (अप) देखो वरिस = वृष् । वहदि (प्राकृ १२१) ।

वह पुत्री [वध] घात, हत्या (उवा, कुमा, ह ३ १३३, प्रासू १३६, १५३) । स्त्री. °हा (सुख १, ३, म २७) । °कारी स्त्री [°करी] विद्या-विशेष (पउम ७, १३७) ।

वह पु [दे] १ कन्वे पर का व्रण । २ व्रण, घाव (दे ७, ३१) ।

वह पुं [वह] १ वृष स्कन्ध, बैल का कन्धा (विपा १, २—पत्र २७) । २ परीवाह, पानी का प्रवाह (दे १, ५५) ।

वह पुं [व्यथ] लकट आदि का प्रहार (सूत्र १, ५, २, १४, उत्त १, १६) ।

°वह देखो पह = पयिन् (से १, ६१, ३, १४, कुमा) ।

वहडअ वि [दे] पर्याप्त (पड् १७७) ।

वहग वि [वधरु] घातक, हिंसक, मार डालनेवाला (उवा, स २१३, सुपा ५६४, उप पृ ५०, आचक २१२ आ २३) ।

वहग वि [व्यथक] ताडना करनेवाला (ज २) ।

वहड पु [ट] दमनीय वछडा (दे ७, ३७) ।

वहडोल पु [ट] वाट्या, वात-मसह (दे ७, ४०) ।

वहण न [वचन] वध, घात, हत्या, 'अजगो छज्जीवकायप्रहणम्मि' (सुपा ५२२, धर्मवि १७, मोह १०१, महा, आचक १४४, २३७, उप पृ ३७७, सुपा १८४, पउम ४३, ४६) ।

वहण न [वहन] १ ढोना (धर्मवि ७२) । २ पीत, जहाज, यानपात्र (पात्र, उप ५६६, कुम्मा १५) । ३ शकट आदि वाहन (उत्त

२७, २, सुपा १८२) । ४ वि. वहन करनेवाला (से ३, ६, ती ३) ।

वहण (शौ) देखो पगय = प्रकृत (प्राकृ ६७) ।

वहण (अप) देखो वसण = वसन (भवि) ।

वहणया स्त्री [वहना] निर्वाह (णाया १ २—पत्र ६०) ।

वहणा स्त्री [वचना] वध, घात, हिंसा (पएह १, १—पत्र ५) ।

वहण्ण पु [व्यधज] एक नरक-स्थान, 'उव्वेयणए विज्जलविमुहे तह विच्छवी वि (१व) हण्ण य' (देवेन्द्र २८) ।

वहय देखो वहग = वधक (सूत्र २, ४, ४, पउम २६ ४७, आचक २०८, सण) ।

वहलीअ देखो वहलीय (इक) ।

वहा देखो वह = वध ।

वहाव सक [वाहय] वहन कराना । कर्म. वहाविज्जइ (आचक २५८ टी) ।

वहाविअ वि [वधित] मरवाया हुआ (खा २४) ।

°वहाविअ देखो पहाविअ (से ६, १) ।

वहिअ वि [व्याधित] पीडित (पचा ५, ४४) ।

वहिअ वि [ऊठ] वहन किया हुआ (घात्वा १५२) ।

वहिअ वि [वधित] जिमका वध किया गया हो वह (आचक १७०, पउम ५, १६५, विपा १, ५, उवा, खा २३, २४) ।

वहिअ वि [दे] अवलोकित, निरीक्षित, 'तेलोककवहियमहियपूइए' (उवा) ।

वहिअ देखो वहडअ (पड्) ।

वहिचर अक [व्यभि + चर्] १ पर-पुरुष या पर-स्त्री से सभोग करना । २ सक. नियम-भंग करना । वकृ वहिचरन (म ७११) ।

वहिचार पु [व्यभिचार] १ पर-स्त्री या पर-पुरुष से सभोग (म ७११) । २ न्यायशास्त्र-प्रसिद्ध एक हेतु-दोष (धर्मस ६३) ।

वहिज्जत देखो वह = वध ।

वहिया स्त्री [दे] वही, हिंसाव लिखने की किताव (सम्मत्त १४२, सुपा ३८५, ३८६ ३८७, ३६१) ।

वहियाली देखो वाहियाली, गुरुज्जाण-तद्धित्यवहियालि नेइ तं निवइ' (धर्मवि ४) ।

वहिलग पुं [दे वहिलक] ऊँट, बैल आदि पशु (राज) ।

वहिल वि [दे] शीघ्र, शीघ्रता-युक्त, गुजराती मे 'वहेलो' (ह ८, ४२२, कुमा, वज्जा १२८) ।

वहु पृष्ठी [दे] चिविडा, गन्ध-द्रव्य विशेष (दे ७, ३१) ।

वहु° देखो वहू (हे १, ४, पड्, प्राप्र) ।

वहुधारिणी स्त्री [दे] नवोडा, दुलहिन (दे ७, ५०) ।

वहुण्णी स्त्री [दे] ज्येष्ठ-नार्या, पति के बड़े भाई की बहू (दे ७, ४१) ।

वहुमास पुं [दे] रमण-विशेष, क्रीडा विशेष, जिसमें खेलता हुआ पति नवोडा के घर से बाहर नहीं निकलता है (दे ७, ४६) ।

वहुरा स्त्री [दे] शिवा, मियारिन (दे ७, ४०) ।

वहुलिआ (अप) स्त्री [वधूटिका] अलग वध वाली स्त्री, बहुरिया (पिंग) ।

वहुव्या स्त्री [दे] छोटी सास (दे ७, ४०) ।

वहुहाडिणी स्त्री [दे] एक स्त्री के रहते हुए व्याही जाती दूसरी स्त्री (दे ७, ५०, पड्) ।

वहू स्त्री [वधू] बहू भार्या, नारी (स्वप्न ४२, पात्र, हे १, ४) ।

वहोल पुं [दे] छोटा जल-प्रवाह, गुजराती मे 'वहेगे' (दे ७, ३६) ।

वहोलिया स्त्री [दे] दबो वहोल (चउपम ० पत्र २१४) ।

वा सक [वा] गति करना, चलना । वइ (से ६, ५२, गा ५४३, कुमा) ।

वा अक [वै. म्ले] सूखना । वाइ (से ६, ५२, हे ८, १८) ।

वा सक [व्ये] वुनना । कृ वाइम, 'गयिम-पूरिमवेडिमवाइमसघाइम छेज्ज' (दमनि २) ।

वा अ [वा] इन अर्थों का सूचक अव्यय— १ विकल्प, अथवा, या (आचा, कुमा) । २ समुच्चय, और, तथा (उत्त ८, १२, सुव ८, १२) । ३ अथि भी (कुमा, कप्प, सुख ५, २२) । ४ अवधारण, निश्चय (ठा ८) । ५ सादृश्य, समानता (विसे १८६४) । ६

वद देखो वय = वद् । वदसि, वदह (उवा; भग, कप्प) । भूका. वदामी (भग) । हेक्क. वदित्तए (कप्प) ।

वद देखो वय = वत (प्राक् १२, नाट—विक ५६) ।

वदिंसा देखो वडेंसा (इक) ।

वदिकलिअ वि [ने] वलित, लौटा हुआ (दे ७, ५०) ।

वदूमग देखो वडुमग (आचा) ।

वदल न [दे वार्दल] १ वदल, बादल, मेघ-घटा, दुर्दिन (दे ७, ३५, हे ४, ४०१, सुपा ६५५, राय, आवम, ठा ३, ३—पत्र १४१) । २ पुं. छठवीं नरक का दूसरा नरकेन्द्रक—नरक-स्थान (देवेन्द्र १२) ।

वदलिया छी [दे वार्दलिका] वदली, छोटा वदल, दुर्दिन (भग ६, ३३—पत्र ४६७, औप) ।

वद देखो वडड = वर्धय् । कमं. वदसि (सुपा ६०) ।

वद पुन [वर्ध] चमं रज्जु, 'वज्जो वदो (? वज्जो वदो)' (पात्र; दे ६, ८८, पव ८३, सम्मत १७४) ।

वद देखो विद्ध = वृद्ध (प्राप्र, प्राक् ७) ।

वदण न [वर्धन] १ वृद्धि, वदती (आया १, १, कप्प) । २ वि. वढानेवाला (उप ६७३, महा) ।

वदणिआ } छी [वर्धनिका, °नी] संमार्जनी,
वदणी } झाडू (दे ८, १७, ७, ४१ टी) ।

वदमाण पुं [वर्धमान] १ भगवान् महावीर (आचा २, १५, १०, सम ४३, अत, कप्प, पडि) । २ एक प्रसिद्ध जैनाचार्य (सार्ध ६३, विचार ७६, ती १५, गु ८) । ३ स्कन्वा-रोपित पुरुष, कन्वे पर चढाया हुआ पुरुष (प्रंत, औप) । ४ एक शाश्वत जिन-देव । ५ एक शाश्वती जिन-प्रतिमा (पव ५६) । ६ न गृह-विशेष (उत्त ६, २४) । ७ राजा रामचन्द्र का एक प्रेक्षा-गृह—नाट्य-शाला (पउम ८०, ५) । देखो वड्डमाण ।

वदमाणग } पुं [वर्धमानक] १ अठासी
वदमाणय } महाग्रहो मे एक महाग्रह, ज्योतिष्क देव-विशेष (ठा २, ३—७८) । २ एक देव-विमान (देवेन्द्र १४०) । ३ न. पात्र-विशेष,

शराव (आया १, १—पत्र ५४, पउम १०२, १२०) । ४ पु पुरुष पर आरुढ़ पुरुष, पुरुष के कन्वे पर चढा हुआ पुरुष । ५ स्वस्तिक-पञ्चक । ६ प्रासाद-विशेष, एक तरह का महल (आया १, १—पत्र ५४, ठा—पत्र ५७) । ७ न. एक गाँव का नाम, अस्थिक ग्राम, अट्टियगामस्स पढमं वदमाणय ति नाम होत्था' (आवम) । ८ वि. कृता-भिमान, अभिमानी, गर्वित (औप) ।

वदय वि [दे] प्रधान, मुख्य (दे ७, ३६) ।

वद्वार सक [वर्धय्] वढाना, गुजराती में 'वधारवु' । वक्क. वद्वारत (सट्टि १२, सवोध ४, द्र ८) ।

वद्वारिय वि [वर्धित] वढाया हुआ (भवि) ।

वद्वार सक [वर्धय्, वर्धापय्] वढाई देना । वद्वारिइ, वद्वारिंति (कप्प) । कमं वद्वारिअसि (रभा) । वक्क. वद्वारित (सुपा २२०) । सक्क. वद्वारित्ता (कप्प) ।

वद्वारण न [वर्धन, वर्धापन] वढाई, अम्युदय-निवेदन (भवि, सुर ३, २४, महा, सुपा १२२, १३४) ।

वद्वारणिआ छी [वर्धनिका, वर्धापनिका] ऊपर देखो (सिरि १३१६) ।

वद्वारय वि [वर्धक, वर्धापक] वढाई देने-वाला (सुर १५, ७६, स ५७०, सुपा ३६१) ।

वद्वारिअ वि [वर्धित, वर्धापित] जिसको वढाई दी गई हो वह (सुपा १२२, १६५) ।

वद्विअ पु [दे] १ पण्ड, नपुसक (दे ७, ३७) । २ नपुसक-विशेष, छोटी उम्र में हो छेद दे कर जिसका अण्डकोव गलाया गया हो वह, बधिया (पव १०६ टी) ।

वद्विअ देखो वद्विअ = वृद्ध (भवि) ।

वद्वी छी [दे] अवश्य-कृत्य, आवश्यक कर्तव्य (दे ७, ३०) ।

वद्वीसक } पुन [दे-वद्वीसक] वाय-विशेष,
वद्वीसग } एक प्रकार का वाजा (पण्ड २, ५—पत्र १४६, अनु ६) ।

वध देखो वह = वध (कुमा) ।

वधय देखो वहय (भग) ।

वधू देखो वहू (औप) ।

वन्न देखो वण्ण = वण्य् । वन्नेहि (कुमा-उव) । हेक्क. वन्निउ (कुमा) । क. वन्नणिज्ज (सुर २, ६७, रयण ५४) ।

वन्न देखो वण्ण = वणं (भग, उव, सुपा १०३, सत्त ५६, कम्म ४, ४०, ठा ५ ३) ।

वन्नग देखो वण्णय (कप्प, आ २३) ।

वन्नण देखो वण्णण (उप ७६८ टी, सिरि ७२७) ।

वन्नणा देखो वण्णणा (रंभा) ।

वन्नय देखो वण्णय (पिड ३०८, कप्प) ।

वन्निअ देखो वणिअ (भग) ।

वन्निआ छी [वर्णिका] १ वानगी, नमूना- 'सगस्स वन्निआ मिव नयर इह अत्थि पाडली-पुत्तं' (वर्मवि ६४) । २ लाल रंग की मिट्टी (जी ३) ।

वन्हि देखो वणिह = वृष्णि (उत्त २२, १३) ।

वन्हि देखो वणिह = वहि (चंड) ।

वपु देखो वड = वपुस् (वव १) ।

वप्प सक [त्वच् ?] ढकना, आच्छादन करना । वप्पइ (धात्वा १५१) ।

वप्प पुं [वप्प] १ विजयक्षेत्र-विशेष, जवूद्वीप का एक प्रान्त, जिसकी राजधानी विजया है (ठा २, २—पत्र ८०, ज ४) । २ पुन. किला, दुर्ग, कोट (ती ८) । ३ केदार, खेत, 'केधारो वप्पिणं वप्पो' (पात्र, आचा २, १, ५, २, दे ७, ८३ टी) । ४ तट, किनारा, 'रोहो वप्पो य सडो' (पात्र) । ५ उन्नत भू-भाग, ऊँची-जमीन, 'वप्पाणि वा फलिहाणि वा पागाराणि वा' (आचा २, १, ५, २) ।

वप्प वि [दे] १ तनु, कृश । २ बलवान्, बलिष्ठ । ३ भूत-गृहीत, भूताविष्ट (दे ७, ८३) ।

वप्पइराय देखो व-प्पइराय ।

वप्पगा देखो वप्पा (राज) ।

वप्पगावई छी [वप्पकावती] जवूद्वीप का एक विजय क्षेत्र, जिसकी राजधानी का नाम अपराजिता है (ठा २, ३—पत्र ८०, इक) ।

वप्पा छी [वप्प] उन्नत भू-भाग, टेकड़ा, ऊँची जमीन (भग १५—पत्र ६६६) ।

वप्पा छी [वप्पा] १ भगवान् नमिनाथजी की माता का नाम (सम १५१) । २ दशवें

वाउल्ल वि [दे वातूल] वाचाट, प्रलाप-शील, वक्तादी (दे ७, ५६, पात्र, पङ्)।
 वाउल्लअ पुन [दे] पूतला गुजराती में 'वावलु', 'आलिहियभित्तिवाउल्लओ व्व एण परम्मुह ठाड' (गा २१७), 'आलिहियभित्ति-वाउल्लय व न परम्मुह ठाड' (वजा १४)।
 वाउल्लओ { ओ [] देखो वाउल्लया, वाउल्ली } वाउल्ली, 'आलिहियभित्तिवाउल्लय व्व एण समुह ठाड' (गा २१७ अ, दे ६, ६०)।
 वाऊल्ल देखो वाउल्ल = वातूल, 'अभिवायण-वाऊनो हसिजए नयरलोएण' (धर्मवि १११, प्राकृ २०)।
 वाऊल्ल देखो वाउल्ल = व्याकुल (प्राकृ ३०)।
 वाऊल्लिअ वि [वातूलित] १ वातूल बना हुआ। २ नास्तिक (दमनि १, ६६)।
 वाए सक [वाद्य] बजाना। वाएइ (महा)। वक्क वाएत (महा)। कवक्क वाडज्जत (कुप्र १६)। हेक्क वाइड (महा)।
 वाए यक [वाचय] १ पढाना। २ पढना। वाएइ, वाएति (भग, कप्प)। कवक्क वाइ-ज्जत (सुपा ३३८, कुप्र १६)।
 चाएरिअ वि [वातेरित] पवन-प्रेरित, हवा से हिलाया या कंपाया हुआ (गा १७६)।
 चाएसरी ओ [वागीश्वरी] सरस्वती देवी, 'वाएसरी पुत्तयवग्गहत्ता' (पडि, सम्मत्त २१५)।
 चाओलि } ओ [वातालि, °ली] पवन-चाओली } समूह, 'कि अयलो चालिज्जइ पयडवाड (? ओ) लिमएहिवि' (धर्मवि २७, गउड, राया १, १—पत्र ६३)।
 वाक } देखो वक्क = वल्क (श्रीप, विमे ६७, वाग } विपा १, ६—पत्र ६६)।
 वागउ पु [वागड] गुजरात का एक प्रान्त, जो आवदन भी 'वागड' नाम से ही प्रसिद्ध है (कुप्र ६)।
 वागडिअ वि [व्याकृत] प्रकट किया हुआ (वव १)।
 वागर मक [व्या + कृ] प्रतिपादन करना, कहना। वागरेइ, वागरेजा (कप्प, पि ५०६)। वक्क वागरमाण, वागरेमाण (सुर ७, ४१, मुपा ५११, श्रीप)। सकृ वागरित्ता (सम

७२)। हेक्क वागरिउ, वागरित्तए (कुप्र २३८, उवा)।
 वागरण न [व्याकरण] १ कथन, प्रतिपादन, उपदेश (विसे ५५०, कुप्र २, पएह १, १ टी)। २ निर्वचन, उत्तर (श्रीप, उवा, कप्प)। ३ शब्दशास्त्र (धर्मवि ३८, मोह २)।
 वागरणि वि [व्याकरणिन्] प्रातपादन करनेवाला (सम्म २)।
 वागणी ओ [व्यासणी] भाषा का एक भेद, प्रश्न के उत्तर की भाषा, उत्तर रूप वचन (ठा ४, १—पत्र १८३)।
 वागरिय वि [व्याकृत] उक्त, कथित (उवा, ज्ञन ६ उप १४२ टी, पव ७३ टी)। देखो वायड = व्याकृत।
 वागल न [वल्कल] वृक्ष की छाल (राया १, १६—पत्र २१३)।
 वागल वि [वाल्कल] वृक्ष की त्वचा—छाल से बना हुआ, 'वागलवत्थनियत्थे' (भग ११, ६—पत्र ५१६)।
 वागली ओ [दे] वल्लो-विशेष (पएण १—पत्र ३३)।
 वागिल्ल वि [वागिमन्] बहु-भाषी, वाचाल (वव -)।
 वागुर पु [वागुरा] मृग-वन्धन, जाल, फन्दा, 'रे रे रएह वागुरे' (मोह ७६)।
 वागुरि } वि [वागुरिन्, °रिक] देखो वागुरिय } वाउरिय, गुजराती में 'वाघरी', 'सकयपत्तयरोहिण य साहिति वागुरा (?री) ए' (पएह १, २—पत्र २६, सूप्र २, २, ३६, विपा १, ८—पत्र ८३)।
 वावाडय वि [व्यावातिक्क] व्याघात में उत्पन्न (ज ७—पत्र ५३१)।
 वाघाइम वि [व्यावातिम] व्याघात में होने-वाला (मुज १८—पत्र २६५)। २ न मरण-विशेष—सिंह, दावानल आदि से होने वाली मौत (श्रीप)।
 वाघाय पु [व्याघात] १ स्खलना (सुज्ज १८)। २ विनाश (उव ६७६)। ३ प्रतिवन्ध, रुकावट (भग, श्रीपभा १८)। ४ सिंह, दावानल आदि से अभिभव (श्रीप)।
 वाघारिय वि [व्याघारिन्] प्रलम्ब, लम्बा (पंचा १८, १८, पव ६७)।

वाघुण्णिय वि [वाघुण्णित] दोलायमान, डोलता (राया १, १—पत्र ३१)।
 वाघेल पुं [दे] एक अत्रिय-वंश (ती २६)।
 वाच देखो वाय = वाचय्। कवक्क वाचीअमाण (नाट—मालवि ६६)। सकृ वाचिऊण (हम्मोर १७)।
 वाचय देखो वायग = वाचक (द्रव्य ४६)।
 वाचिय देखो वाडअ = वाचित (स ६२१)।
 वाज देखो वाय = व्याज (कुप्र २०१)।
 वाजि पु [वाजिन्] अय, घोड़ा (विपा १, ७)।
 वाजीकरण न [वाजीकरण] १ वीर्य-वधक श्रीपघ-विशेष। २ उवा प्रतिपादन शास्त्र, आयुर्वेद का एक अंग (विपा १, ७—पत्र ७५)।
 वाड पु [वाट] १ वाड, कटक आदि से की जाती गृहादि की परिधि (उत्त २२, १४; मान १६५)। २ वाडा, वाडवाली जगह, वृत्तिमाला स्थान, 'निव्वाणमहावाड साहित्य सपावेइ' (उवा, गा २२७, दे ७, ५३ टि, गउड), 'अंति सो साहूण गोवाडनिरोहण करेज्जए' (विचार ५०६)। ३ वृत्ति आदि में परिवेष्टित गृह-समूह, रथ्या, मुहल्ला (उत्त ३०, १८); 'अहो गरिआवाडन्त सत्तिरोअभा' (चार ७६)।
 वाडतरा ओ [दे] कुटीर, झोपड़ा या झोपड़ी (दे ७, ५८)।
 वाडग देखो वाड (पिट ३३४, विपा १, ४—पत्र ५५, उा पृ २८६)।
 'वाडण देखो पाडण, 'परदोहवट्टवाडणवदण-हत्तत्तएणायमुआइ' (कुप्र ११३)।
 वाडय पुं [वाडय] बडवानल, नमुर-स्थित अग्नि (सएण)।
 वाडहाणग पुन [वाटधानक] १ एक छोटा गांव। २ वि उन गांव का निवासी, 'ठांहे तेण वाडहाणगा हरिएसा धिज्जाइया कया' (सुख ६, १, महा)।
 वाडि° देखो वाडा = वाटी (गा ८, राया १, ७—पत्र ११६)।
 वाडिआ ओ [वाटिका] बगीचा, उद्यान, 'सएवाडिआ' (गा ६, चार ५६, दे ७, ३५, रभा)।

२, प्रासू १५४) । °मंत वि [°वत्] व्रतो (आचा २, १, ६, १) ।

वय पुन [वयस्] १ उम्र, आयु (ठा ३, ३, ४, ४, गा २३२, उप पृ १८, कुमा, प्रासू ४८, आ १४) । २ पक्षी (गउड, उप पृ १८) । °त्य वि [°स्थ] तृण, युवा (सुख १, १६) । °परिणाम पु [°परिणाम] वृद्धता, वृद्धा (से ४, २३, पाप्र) ।

°वय पु [पच] पचन, पाक (आ २३) ।

°वय देखो पय = पद (स ३४५, आ २३, गउड कप्पू, से १, २४) ।

°वय देखो पय = पयस् (कुमा) ।

वयग न [दे] फल-विशेष (सिरि ११६८) ।

वयतरिअ वि [वृत्त्यन्तरित] बाढ़ से तिरो-हित (दे २, ६३) ।

वयंस पु [वयस्य] समान उमरवाला मित्र (ठा ३, १—पत्र ११४, हे १, २६, महा) ।

वयसि देखो वयसि = वचस्विन् (राज) ।

वयंसी वी [वयस्या] सखी, महेली (कप्पू) ।

वयड पु [दे] वाटिका, बगोचा (दे ७, ३५) ।

वयण न [दे] १ मन्दिर, गृह । २ शय्या, बिछौना (दे ७, ८५) ।

वयण पुंन [वदन] १ मुख, मुंह, 'वयणो, वयण' (प्राक ३३, पि ३५८, सुर २, २४३, ३, ४४; प्रासू ६२) । २ न. कथन, उक्ति (विसे २७६४) ।

वयण पुन [वचन] १ उक्ति, कथन, 'वयणा, वयणाइ' (हे १, ३३, पव २; सुर ३, ६४, प्रासू १४, १३४, १५०, कुमा) । २ एकत्व आदि संख्या का बोधक व्याकरण-शास्त्रोक्त प्रत्यय (पएह २, २ टी—पत्र ११८) ।

वयणिज्ज वि [वचनीय] १ वाच्य, कथनीय, अभिधेय, 'वत्थु दण्वट्ठिअस्स वयणिज्ज' (सम्म ८, सूअ २, १, ६०) । २ निन्दनीय (सुपा ३००) । ३ उपालम्भनीय, उलहना देने योग्य (कुप्र ३) । ४ न. वचन, शब्द (से ४, १३, सम्म ५३, काप्र ८६६) । ५ लोकापवाद, निन्दा (स ५३२) ।

वयर वि [दे] चूर्णित (दे ७, ३४) ।

वयर देखो वइर = वज्र (कप्पू, उव, ओषभा ८, सार्ध ३५, भग, श्रीप) ।

°वयर देखो पयर = प्रकर (से १, २२) ।

वयराड देखो वइराड (सत्त ६७ टी) ।

वयल वि [दे] १ विकसता, खिलता (दे ७, ८४) । २ पु कलकल, कोलाहल (दे ७, ८४, पाप्र) ।

वयली वी [दे] लता-विशेष, निद्राकरी लता (दे ७, ३४, पाप्र) ।

°वयस देखो वय = वयस्, 'सवयस' (आचा १, ८, २, २) ।

वयस्स देखो वयस (स ३१४, मोह ४७, अमि ५५, म्वप्प ७६) ।

वया वी [वपा] १ विवर, छिद्र । २ भेद, चरवी (आ २३) ।

वया वी [वचा] १ ओषधि विशेष । २ मैना, सारिका (आ २३) । देखो वचा ।

वया वी [व्यजा] १ मार्ग-विशेष, ऊप को खींचने के लिए रज्जुबद्ध घट आदि डालने का मार्ग । २ प्रेरण-दण्ड (आ २३) ।

वर सक [वृ] १ सगाई करना, सवन्व करना ।

२ आच्छादन करना, ढकना । ३ याचना करना । ४ सेवा करना । वरइ (हे ४, २३४, सुज १६, प्राप्र, पड्), 'वर वरेहि' (कुप्र ८०), 'वरं वरसु इच्छिअ' (आ १२) । भवि. वरिस्मइ (सिरि ८१६) । कृ वरणीअ (पउम २८, १०४) ।

वर सक [वरय्] १ प्राप्त करने की इच्छा करना । २ सच्छृ करना । वरइ, वरयति (भवि, सुज्ज ७), 'के सूरियं वरयते' (सुज्ज १, १) । वक्र. वरित (सुज्ज ७) ।

वर पु [वर] १ पति, स्वामी, दुलहा (स ७८, स्वप्न ४१, गा ४०४, ४७६, भवि) । २ वरदान, देव आदि का प्रसाद (कुमा, आ १२, २७, कुप्र ८०, भवि) । ३ वि. श्रेष्ठ, उत्तम (कप्पू, महा, कुमा, प्रासू ५२, १७५) । ४ अभीष्ट (आ १२, कुप्र ८०) । ५ न. कुछ अभीष्ट, इच्छा, 'वर मे अप्पा दती' (उत्त १, १६, प्रासू २२, ३८, १०६) । °दत्त पुं [°दत्त] १ भगवान् नेमिनाथजी का प्रथम शिष्य (सम १५२, कप्पू) । २ एक राज-कुमार (विपा २, १, १०) । °दाम न [दामन्] एक तीर्थ (ठा ३, १—पत्र १२२, इक, सण) । °धणु पुं [°धनुप्] एक मन्त्रिकुमार, अहमदत चक्रवर्ती का वाल-

मित्र (महा) । °पुरिस पुं [°पुरुष] वासुदेव (पएण १७—पत्र ५२६, राय, अवम, जीव ३) । °माल पु [°माल] एक देव-विमान (देवेन्द्र १३३) । °माला वी [°माला] वर की पहनायी जाती माला, वरत्व-सूचक माला (कुप्र ४०७) । °रुइ पु [°रुचि] राजा नन्द के समय का एक विद्वान् ब्राह्मण (कुप्र ४४७) । °वरिया वी [°वरिका] अभीष्ट वस्तु मांगने के लिए की जाती घोषणा, ईप्सित वस्तु के दान देने की घोषणा (राया १, ८—पत्र १५१, अवम, स ४०१, सुर १६, १८, सुपा ७२) । °सरक न [°सरक] खाय-विशेष (पएह २, ५—पत्र १४८) । °सिद्ध पुन [°शिष्ट] यम लोकपाल का एक विमान (भग ३, ७—पत्र १६७, देवेन्द्र २७०) ।

वर देखो वार । °विलया वी [°वनिता] वेश्या (कुमा) । °वर देखो पर, 'जीवाणम-भयदाणं जो देइ दयावरो नरो निच्च' (कुप्र १८२) ।

वरइअ वि [दे] धान्य-विशेष (दे ७, ४६) ।

वरइत्त पु [दे वरयित्] अभिनव वर, दुलहा (दे ७, ४४, पड्; भवि) ।

वरई देखो वरय = वराक ।

वरउप्प वि [दे] मृत (दे ७, ४७) ।

वर देखो पर = परम्, 'अवो वर विरुद्धमम्हाण इत्थ अवत्थाण' (मोह ६२, स्वप्न २०६) ।

वरंड पु [वरण्ड] १ दीर्घ काष्ठ, लम्बी लकड़ी । २ भित्ति, भीत (मृच्छ ६) ।

वरड पुं [दे] १ तृण-पुञ्ज, तृण मचय (चार ३) । २ प्राकार, किला (दे ७, ८६, पड्) । ३ कपोतपाली, गाल पर लगाई जाती कस्तूरी आदि की छत्र (दे ७, ८६) । ४ समूह (गा ६३०) ।

वरडिया वी [दे] छोटा वरडा, वरामदा, दालान (सुपा २०३) ।

वरकख न [वराख्य] गन्ध-द्रव्य विशेष, सिन्धुक (से ६, ४४) ।

वरकख पुं [वराक्ष] १ योगी । २ यज्ञ । ३ वि. श्रेष्ठ इन्द्रियवाला (मे ६, ४४) ।

वरकखा वी [वराख्या] त्रिफला (से ६, ४४) ।

हाथ, पैर आदि अवयव छोटे हो और छाती, पेट आदि पूर्ण या उन्नत हो वह शरीर (ठा ६—पत्र ३५७, सम १४६, कम्म १, ४०)। २ वि उक्त आकार के शरीरवाला, ह्रस्व, खर्व (पत्र ११०, से २, ६, पात्र)। स्त्री ंणी (औप, णाया १, १—पत्र ३७)। ३ पु श्रीकृष्ण का एक अवतार (से २, ६)। ४ देव-विशेष एक यक्ष-देवता (सिरि ६६७)। ५ न कर्म विशेष, जिसके उदय से वामन शरीर की प्राप्ति हो वह कर्म (कम्म १, ४०)। ६ स्त्री स्त्री [ंर्यली] देश-विशेष (ती १५)।

वामाणिअ वि [दे] नष्ट वस्तु—पलायित को फिर से ग्रहण करनेवाला (दे ७, ५६)।

वामणिआ स्त्री [दे] दीर्घ काष्ठ की वाड (दे ७, ५८)।

वामहण न [व्यामर्दन] एक तरह का व्यायाम, हाथ आदि अंगों का एक दूसरे से मोड़ना (णाया १, १—पत्र १६, कप्प, औप)।

वामरि पु [दे] सिंह, मृगेन्द्र (दे ७, ५४)।

वामलूर पु [वामलूर] वल्मीक, दीमक (पात्र, गड्ड)।

वासा स्त्री [वासा] भगवान् पार्श्वनाथजी की माता का नाम (मम १५१)।

वामिस्स देखो वामीस्स (पउम ६३, ३६)।

वामी स्त्री [दे] स्त्री महिला (दे ७, ५३)।

वामीस वि [व्यामिश्र] मिश्रित, युक्त, सहित (पउम ७२ ४, तदु ४४)।

वामीसिय वि [व्यामिश्रित] ऊपर देखो (भवि)।

वामुत्तय वि [व.मुत्तय] १ परिहित, पहना हुआ। २ प्रलम्बित, लटका हुआ (औप)।

वामूढ वि [व्यामूढ] विमूढ, अन्त (सुर ६, १२६, १२, १४३, सुपा ७०)।

वामोह पु [व्यामोह] मूढ़ता, भ्रान्ति (उप ५ ३२६, सुपा ६५, भवि)।

वामोहण वि [व्यामोहन] भ्रान्ति जनक (भवि)।

वाय सक [वाच्य] १ पहना। २ पढ़ाना। वाएइ, वाएसि (कुप्र १६६), 'सावकका सुयज्जणणी पासत्था गहिय वायए लेह' (धर्मावि ४७), 'सुत्त वाए उवज्जमाओ' (सवोष २५)। वकृ वायत (सुपा २२३)। संकृ वाइऊण (कुप्र १६६)। कृ वायणिज्ज (ठा ३, ४)।

वाय सक [वा] वहना, गति करना, चलना। वायति (भग ५, २)। वकृ वायत (पिंड ८२, सुर ३, ४०, सुपा ४५०, दस ५, १, ८)।

वाय अक [वै, म्ले] सूखना। वाअइ (सक्ति ३६, प्राप्र)। वकृ वायत (गड्ड ११६५)।

वाय सक [वादट्] वजाना। वकृ. वायंत, वायमाण (सुपा २६३, ४३२)। कृ. वाइयव्व (स ३१४)।

वाय वि [वान] शुष्क, सूखा, म्लान (गड्ड, से ५, ५७, पात्र, प्राप्र, कुमा)।

वाय पु [दे] १ वनस्पति-विशेष (सूप्र २, ३, १६)। २ न गन्व (दे ७, ५३)।

वाय पु [त्रात] समूह, सघ (आ २३, भवि)।

वाय वि [व्यातृ] सवरण करनेवाला (आ २३)।

वाय वि [व्यागस्] प्रकृष्ट अपराधी (आ २३)।

वाय पु [वातृ] १ पवन, वायु। २ कपडा बुननेवाला, जुलाहा (आ २३)।

वाय वि [व्याप] प्रकृष्ट विस्तारवाला (आ २३)।

वाय पुं [वाक] ऋग्वेद आदि वाक्य (आ २३)।

वाय पु [व्याय] १ गति, चाल। २ पवन, वायु। ३ पक्षी का आगमन। ४ विशिष्ट लाभ (आ २३)।

वाय पु [व्याच] वचन, ठगई (आ २३)।

वाय पु [वाज] १ पक्ष, पैर। २ मुनि, ऋषि। ३ शब्द, आवाज। ४ वेग। ५ न घृत, घी। ६ पानी, जल। ७ यज्ञ का घान्य (आ २३)।

वाय न [वाच] शुक-समूह (आ २३)।

वाय वि [वाज्] १ फेंकनेवाला। २ नाशक (आ २३)।

वाय पुं [व्याज] १ कपट, माया। २ वहाना, छल। ३ विशिष्ट गति (आ २३)।

वाय देखो वाग = वल्क (विपा १, ६—पत्र ६६)।

वाय पु [त्राय] विवाह, शादी (आ २३)।

वाय पु [व्यात] विशिष्ट गमन (आ २३)।

वाय पुं [वाप] १ वपन, बोना। २ क्षेत्र, खेत (आ २३)।

वाय पु [वाय] १ गमन, गति। २ सूँघना। ३ जानना, ज्ञान। ४ इच्छा। ५ खाना, भक्षण। ६ परिणयन विवाह (आ २३)।

वाय वि [व्याद] विशेष ग्रहण करनेवाला (आ २३)।

वाय वि [वाच्] वक्ता, बोलनेवाला (आ २३)।

वाय पुं [वात] १ पवन, वायु (भग, णाया १, ११, जी ७, कुमा)। २ उत्कर्ष (उव ५५ टि)। ३ पुन एक देव-विमान (सम १०)। ४ कृत पुंन [ंवान्न] एक देव-विमान (सम १०)। ५ कम्म न [ंकम्म] अपान वायु का मरना, पादना, पाद, पदन (ओघ ६२२ टी)। ६ कूड पुन [ंकूट] एक देव-विमान (सम १०)। ७ रुध पुं [ंरुध] घनवात आदि वायु (ठा २, ४—पत्र ८६)। ८ उक्कय पुन [ंध्वज] एक देव-विमान (सम १०)। ९ णिसग्ग पुं [ंनिम्मग्ग] अपान वायु का सरना, पदन (पडि)। १० पल्लिकलोभ पु [परिशोभ] कृष्णगजि, काले पुद्गलो की रेखा (भग ६, ५—पत्र २७१)। ११ प्पम पुन [ंप्रभ] देव-विमान विशेष (सम १०)। १२ फलिह पु [ंपरिध] कृष्णराजि (भग ६, ५)। १३ रुह पु [ंरुह] वनस्पति-विशेष (परण १—पत्र ३६)। १४ लेस्स पुन [ंलेय] एक देव-विमान (सम १०)। १५ वण्ण पुन [ंवर्ण] एक देव-विमान (सम १०)। १६ सिंग पुन [ंशृङ्ग] एक देव विमान (सम १०)। १७ सिद्ध पुन [ंसृष्ट] एक देव-विमान (सम १०)। १८ वत्त पुन [ंवर्त] एक देव-विमान (सम १०)।

वाय पु [वाद] १ तत्त्व-विचार, शास्त्रार्थ (ओघभा १७, धर्मावि ८०, प्रासू ६३)। २ उक्ति, वचन (औप)। ३ नाम, आख्याः

३—पत्र ३४८)। १३ पुं. व. एक आर्य-
देश (पत्र २७५)। °काइय पुं [°कायिक]
वरुण लोकपाल के भृत्य-स्थानीय देवों की एक
जाति (भग ३, ७—पत्र १९६)। °देवकाइय
पु [°देवकायिक] वही अर्थ (भग ३, ७)।
°प्पभ पुं [°प्रभ] १ वरुणवर द्वीप का
एक अधिष्ठापक देव (जीव ३—पत्र
३४८)। २ वरुण लोकपाल का उत्पात-
पर्वत (ठा १०—पत्र ४८२)। °प्पभा स्त्री
[°प्रभा] वरुणप्रम पर्वत की दक्षिण दिशा
में स्थित वरुण लोकपाल की एक राजधानी
(दीव)। °वर पु [°वर] एक द्वीप का नाम
(जीव २—पत्र ३४८, सुज्ज १६)।

वरुणा स्त्री [वरुणा] १ अच्छ देश की प्राचीन
राजधानी (पत्र २७५)। २ वरुणप्रम पर्वत
की पूर्व दिशा में स्थित वरुण नामक लोक-
पाल की एक राजधानी (दीव)। ३ एक राज-
पत्नी (पत्र ७, ४४)।

वरुणी स्त्री [वरुणी] विद्या-विशेष (पत्र ७,
१४०)।

वरुणो अ पु [वरुणोद] एक समुद्र (ठा
वरुणोद } पत्र ४०५, इक, सुज्ज १६)।

वरुल पु व [वरुल] देश-निशेष (पत्र ६८,
६४)।

वरुहिणी स्त्री [वरुथिनी] सेना, सैन्य
(पात्र)।

वरेइत्य न [दे] फल (दे ७, ४७)।

वल अक [वल] १ लौटना, वापस आना।
२ मुड़ना, टेढ़ा होना, गुजराती में 'वलुवु'।
३ उत्पन्न होना। ४ सक, ढकना। ५ जाना,
गमन करना। ६ साधना। वलइ (हे ४,
१७६, पड्, गा ४४६, घात्वा १५२)।
भवि, वलित्सं (गहा)। वक, वलत्त, वलय,
वलाय, वलमाण (हे ४, ४२२, गा २५,
मे ५, ४७-५, ४२, श्रौप, ठा २, ४, पत्र
१५७)। कवक, वलिज्जत (से ४, २६)।
सक वलिऊण (काल)। हेक, वलिउं (गा
४८४, पि ५७६)। क वलियव्व (महा,
सुपा ६०१)।

वल सक [आ + रोपय्] ऊपर चढ़ाना।
वलइ (दे ४, ४७, दे ७, ८६)।

वल सक [ग्रह] ग्रहण करना। वलइ
(हे ४, २०६, दे ७, ८६)। वलणिज्ज
(कुमा)।

वल पु [वल] रस्सी आदि को मजबूत करने
के लिए दिया जाता वल (उत्त २६, २५)।

वलअगी स्त्री [दे] वृतिवाली, बाढवाली (दे
७, ४३)।

वलइय वि [वलयित] १ वलय—कगन की
तरह गोलाकार किया हुआ, कलय की तरह
मुड़ा हुआ (पत्र २८, १२४, कप्प)। २ वेष्टित
(कप्प)।

वलअणिआ स्त्री [दे] बाढवाली (दे ७,
४३)।

वलकिअ वि [दे] उत्सगित, उत्सग-स्थित
(पड् १८३)।

वलक्ख वि [वलथ] श्वेत, सफेद (पात्र)।

वलक्ख न [वलाक्ष] आभूषण-विशेष एक
तरह का गले में पहनने का गहना (श्रौप)।

वलग्ग सक [आ + रुह्] आरोहण करना,
चढ़ना। गुजराती में 'वलगवु'। वलगगइ
(हे ४, २०६, पड्, भवि)।

वलग्ग वि [आरुढ] जिसने आरोहण किया
हो वह, चढ़ा हुआ (पात्र)।

वलग्गगणी स्त्री [दे] वृत्ति, बाढ (दे ७,
४३)।

वलग्गिअ देखो वलग्ग = आरुढ (कुमा)।

वलण न [वलन] १ मोड़ना, वक्र करना
(दे १, ४२)। २ प्रत्यावर्तन, पीछे लौटना
(से ८, ६, गउड)। ३ बाँक, वक्रता (हे
४, ४२२)।

वलण (शौ मा) देखो वरण (प्राकृ ८५, हे
२६३)।

वलणा स्त्री [वलना] देखो वलण = वलन
(गउड)।

वलत्थ वि [दे] पर्यस्त (भवि)।

वलमय न [दे] शीघ्र, जल्दी, 'वच्च वलमय
तत्थ' (दे ७, ४८)।

वलय पुन [वलय] १ ककण, कड़ा (श्रौप,
गा १३३, कप्प, हे ४, ३५२)। २ वृथिवी-
वेष्टन, घनवात आदि (ठा २, ४—पत्र
८६)। ३ वेष्टन, वेठन। ४ वतुल, गोलाकार
(गउड, कप्प, ठा ५, १)। ५ नदी आदि के

के बाँक से वेष्टित भू-भाग (सूत्र २, २, ८,
भग)। ६ माया, प्रपंच (सूत्र १, १२, २२,
सम ७१)। ७ असत्य वचन, मृपा झूठ (परह
१, २—पत्र २६)। ८ वलयकार वृक्ष, नारि-
केल, नारियल आदि (परह १, उत्त ३६, ६६,
सुख ३६ ६६)। °आर, °रअ पु [°कार,
°कारक] कंकण बनानेवाला शिल्पी (दे ७, ५४)।

वलय वि [वलरु] मोड़नेवाला, 'छगलग-गल-
वलया' (पिड ३१४)।

वलय न [दे] १ क्षेत्र, खेत। २ गृह, घर
(दे ७, ८४)।

वलय देखो वल = वल्। °मयग वि [°मृत्तक]
१ समय से भ्रष्ट होकर जिसका मरण हुआ
हो वह। २ भूख आदि से तड़फता हुआ जो
मरा हो वह (श्रौप)। °मरण न [°मरण]
समय से च्युत होनेवाले का मरण (भग
२, १)।

वलयणी स्त्री [दे] वृत्ति, बाढ (दे ७, ४३)।

वलयवाहा स्त्री [दे] १ दीर्घ काष्ठ, जिसपर
वलयवाहु } ध्वजा आदि बाँधा जाता है
वह लम्बा काष्ठ, 'ससारियासु वलयवाहासु
ऊसिएसु सिएसु भयग्गेसु' (राया १, ८—पत्र
१३३)। २ हाथ का एक आभूषण, चूड़ा,
कड़ा (दे ७, ५२, पात्र)।

वलया देखो वडवा। °णल पु [°नल] वड-
वाग्नि (हे १, १७७, पड्)। °मुह न
[°मुख] १ वडवानल (हे १, २०२, प्राकृ,
पि २४०)। २ पुं एक वडा पाताल-कलश
(ठा ४, २—पत्र २२६, टी—पत्र २२८,
सम ७१)।

वलया स्त्री [दे] वेला, समुद्र-कूल। °मुह न
[°मुख] वेला का अग्र भाग,

'ति वलागमुहुम्मुक्को, तिक्खुत्तो वलयाप्पुहं।
ति सत्तक्खुत्तो जालेण, सह छिन्नोदए दहे॥
एयारिस मम सत्त, सह घट्टियघट्टण।
इच्छसि गलेण नेत्तु, अहो ते अहिरोयया॥
(पिड ६३२, ६३३)।

वलयाइअ वि [वलयायित] जो वलय की
तरह गोल हुआ हो वह (कुमा)।

वलवट्टि [दे] देखो वलवट्टि (दे ६, ६१)।

वलया देखो वडवा, 'गोमहिक्खवट्टया' (पत्र २, २, दे ७, ४१, इक, पि २८०)

वार पु [वार] १ समूह, यूथ (सुपा २१४, सुर १४, २४, सार्धं ४६, कुमा, सम्मत १७५)। २ अवसर, वेला, दफा (उप ६२८, सुपा २६० भवि)। ३ सूर्य आदि ग्रह से अधिकृत दिन, जैसे रविवार, सोमवार आदि (गा २६१)। ४ चौथा नरक का एक नरक-स्थान (ठा ६—पत्र ३६५)। ५ वारी, परिपाटी (उप ६४८ टी)। ६ कुम्भ घड़ा (दस ५, १, ४५)। ७ वृक्ष-विशेष। ८ न फल-विशेष (पण्य १७—पत्र ५३१)।
 °जुवइ छो [°युवति] वागगना, वेश्या (कुमा)। °जोवणी छो [°यौवना] वही अर्थ (प्राकृ १४)। °तरुणी छो [°तरुणी] वही (सण)। °वहू छो [°वधू] वही अर्थ (कुप्र ४४३)। °विलया छो [°वनिता] वही पूर्वोक्त अर्थ (कुमा, सुपा ७८, २००)। °विलासिणी छो [°विलासिनी] वही (कुमा सुपा २००)। °रुदरी छो [°रुन्दरी] वही अर्थ (सुपा ७६)।

वार न [°द्वार] दरवाजा (प्राकृ २६, कुमा, गा ८८०)। °वई छो [°वती] द्वारका नगरी (कुप्र ६३)। °वाल पुं [°पाल] दरवान, प्रतीहार (कुमा)।

वारत देखो वार—वारय्।

वारवार न [वारवार] फिर फिर (से ६, ३२, गा २६४)।

वारग पु [वारक] १ वारी, क्रम (उप ६४८ टी)। २ छोटा घड़ा, लघु कलश (पिंड २७८)। ३ वि निवारक, निषेधक (कुप्र २६, धर्मवि १३२)।

वारहिय न [दे] रक्त वस्त्र, लाल कपड़ा (गच्छ २, ४६)।

वारड्डु वि [दे] अनिपीडित (पड्)।

वारण न [वारण] १ निषेध, रोक, अटकाव, निवारण (कुमा, ओष ४४८)। २ छत्र, छाता, 'वारणयचामेरेहि नज्जति फुड महा-सुहडा' (सिरि १०२३)। ३ वि. रोकनेवाला, निवारक (कुप्र ३१२)। ४ पुं हाथी (पात्र, कुमा, कुप्र ३१२)। ५ छन्द का एक भेद (पिंग)।

वारण देखो वागरण (हे १, २६८, कुमा, पड्)।

वारणा छो [वारणा] निवारण, अटकाव (बृह १)।

वारत्त पु [वारत्त] १ एक अन्तकृद् मुनि (अंत १८)। २ एक ऋषि (उव)। ३ एक अमात्य। ४ न एक नगर (धम्म ६ टी)।

वारवाण पु [वारवाण] कञ्चुक, चोली (पात्र)।

वारय देखो वारग (रभा, णाया १, १६—पत्र १६६, उप पृ ३४२, उवा, अत)।

वारसिआ छो [दे] मल्लिका, पुष्प-विशेष (दे ७, ६०)।

वारसिय देखो वारिसिय, 'वारसियमहादाण' (सुपा ७१)।

वारा छो [वारा] १ देरी, विलम्ब, 'अम्मो किमज्ज कज्ज ज लग्गा एत्तिया वारा' (सुपा ४५६)। २ वेला, दफा, 'तो पुणरवि निज्झायइ वाराओ दुन्नि तिन्नि वा जाव' (सट्ठि ६ टी), 'कह महई वाराणिग्गयस्स' (विबुधानन्द)।

वाराणसी देखो वाणारसी (अन्त, पि ५५४)।

वाराविय वि [वारित] जिसका निवारण कराया गया हो वह (कुप्र १४०)।

वाराह पु [वाराह] १ पाँचवें बलदेव का पूर्वमवीय नाम (सम १५३)। २ वि. शूकर के सदृश (उवा)।

वाराही छो [वाराही] १ विद्या-विशेष (पठम ७, १४१)। २ वराहमिहिर का बनाया हुआ एक ज्योतिष-ग्रन्थ, वराह-सहिता (सम्मत १२१)।

वारि न [वारि] १ पानी, जल (पात्र, कुमा, सण)। २ छो हाथी को फँसाने का स्थान, 'वारी करिघरणदाण' (पात्र, स १७७, ६७८)। °भदग पु [°भद्रक] भिक्षुक की एक जाति शैबलाशी भिक्षुक (सूअनि ६०)। °मय वि [°मय] पानी का बना हुआ। छो °ई (हे १४, पि ७०)। °मुअ पु [°मुच्] मेघ, जलधर (पड्)। °य पु [°य] पानी देनेवाला श्रुत्य (स ७४१)। °रासि पु [°राशि] समुद्र, सागर (सम्मत १६०)। °वाह पुं [°वाह] मेघ, अन्न (उप २६४ टी)। °सेण पुं [°पेण] १ एक अन्तकृद् महर्षि, जो राजा वसुदेव के पुत्र थे

और जिन्होंने भगवान् अरिष्टनेमि के पास दीक्षा ली थी (अन्त २४)। २ एक अनुत्तर-गामी मुनि, जो राजा श्रेणिक के पुत्र थे (अनु १)। ३ ऐरवत वर्ष में उत्पन्न चौबीसवें जिनदेव (सम १५३)। ४ एक शाश्वती जिन-प्रतिमा (पव ५६, महा)। °सेणा छो [°पेणा] १ एक शाश्वती जिन प्रतिमा (ठा ४, २—पत्र २३०)। २ अघोलोक में रहने-वाली एक दिक्कुमारी देवी (ठा ८—पत्र ४३७, इक २३१ टि)। ३ एक महानदी (ठा ५, ३—पत्र ३५१, इक)। ४ लब्धलोक में रहनेवाली एक दिक्कुमारी देवी (इक २३२)। °हर पु [°धर] मेघ (गड्ड)।

वारिअ पु [दे] हजाम, नापित (दे ७, ४७)।

वारिअ वि [वारित] १ निवारित, प्रतिपिद्ध (पात्र, से २, २३)। २ वेष्टित (मे २, २३)।

वारिआ छो [द्वारिका] छोटा दरवाजा, वारी (ती २),

'वप्पस्स चा(°वा)रियाए परिखित्तो

लाइयामज्जे।'

'जो जलपूरियविट्ठाकूवाओ

चा(°वा)रियाइ निक्कासो।

सो उवचियगन्माओ जोणीए निग्गमो इत्य।' (धर्मवि १४६)।

वारिज्ज पुन [दे] विवाह, शादी (दे ७, ५५, पात्र, उप पृ ८०)।

वारिसा देखो वरिसा (विक्र १०१)।

वारिसिय वि [वारिपिक] १ वर्ष-संवन्धी (राज)। २ वर्ष-संवन्धी, 'चिट्ठइ चउरो मासा वारिमिया विबुहपरिमहिओ' (पठम ८२, ६५)।

वारी छो [द्वारिका] वारी, छोटा दरवाजा (ती २)।

वारी छो [वारी] देखो 'वारि' का दूसरा अर्थ; 'वद्धो वारीवधे फासेण गमो निहण' (सुर ८, १३६, ओष ४४६ टी)।

वारी° न [वारि] जल, पानी (हे १, ४, पि ७०)।

वारुअ न [दे] ° शीघ्र, जल्दी। २ वि. शीघ्रता-युक्त, 'ए वारुआ अम्हे' (दे ७, ४८)।

ववण न [वपन] वोना (वव १, श्रु ६) ।
ववण छीन [दे] कार्पास, तूला, रूई,
‘पलही ववण तूलो रूवो’ (पात्र) । छी. °णी
(दे ६, ८२, ७, ३२) ।

ववस्थभ पुं [दे] वल, पराक्रम (दे ७,
४६) ।

ववस्था छी [व्यवस्था] १ मर्यादा, स्थिति
(म १३, कुप्र ११४) । २ प्रक्रिया, रीति ।
३ इतजाम, प्रवन्व (सुपा ४१) । ४ निर्णय
(स १३) । °पत्तय न [°पत्रक] दस्तावेज
(स ४१०) ।

ववस्थावण न [व्यवस्थापन] व्यवस्था
करना, ‘जीवववस्थावणादिणा’ (धर्मस
५२०) ।

ववस्थावणा न [व्यवस्थापना] ऊपर देखो
(धर्मस ५२०) ।

ववस्थिअ वि [व्यवस्थित] व्यवस्था युक्त
(स ४६, ७२७, सुर ७, २०५, सण) ।

ववस्थिअ वि [व्यवस्थित] जिसने व्यवस्था
की हो वह (दसनि ४, ३५) ।

वववेस देखो ववएस (उवा, स्वप्न १३२) ।

वववेसि वि [व्यपदेशिन्] व्यपदेश करने-
वाला (नाट—शकु ६६) ।

ववधान न [व्यवधान] अन्तर, दो पदार्थों
के बीच का अन्तर (अभि २२२) ।

ववरोच सक [व्यप + रोपय] विनाश
करना, मार डालना । ववरोवेसि, ववरोवेजसि,
ववरोवेज्जा (उवा) । कर्म. ववरोविज्जसि
(उवा) । सक्र ववरोवित्ता (उवा) ।

ववरोवण न [व्यपरोपण] विनाश, हिंसा
(सण) ।

ववरोविअ वि [व्यपरोपित] विनाशित,
मार डाला गया, ‘जीविआओ ववरोविआ’
(पहि) ।

ववस नक [व्यव + सो] १ करना । २
करने की इच्छा करना । ववसइ (राय
१०८) ।

ववस सक [व्यय + सो] १ प्रयत्न करना,
चेष्टा करना । २ निर्णय करना । ववसइ
(स २०२) । वक्र ववसत, ववसमाण
(सुपा २३८, स ५६२) । संक्र. ववसिऊण

(सुपा ३३६) । कवक्र ववसिऊमाण (पठम
५७, ३६) । हेक्र. ववसिडु (शौ) (नाट—
शकु ७१) ।

ववसाय पुं [व्यवसाय] १ निर्णय, निश्चय ।
२ अनुष्ठान (ठा ३, ३—पत्र १५१, एदि) ।
३ उद्यम, प्रयत्न (से ३, १४, सुपा ३५२,
स ६८३, हे ४, ३८५, ४२२, कुप्र २६) ।
४ व्यापार, कार्य, काम (औप, राय) ।

ववसायसभा छी [व्यवसायसभा] कार्य
करने का स्थान, कार्यालय (राय १०४) ।

ववसिअ न [दे] बलात्कार (दे ७, ४२) ।

ववसिअ } वि [व्यवसित] १ उद्यत,
ववसिअ } उद्यम-युक्त, ‘सेणिओ नाम राया
पयासुहे सुहं ववसिओ’ (वसु, उत्त २२,
३०, उव) । २ त्यक्त, ‘अवि जीवियं ववसिय
न चैव गुप्परिमवो सहिओ’ (उव) । ३
निश्चयवाला । ४ पराक्रमी (ठा ४, १—पत्र
१७६) । ५ न. व्यवसाय, कर्म (गाया १,
१—पत्र ५०) । ६ चेष्टित (स ७५६) । ७
उद्यम, प्रयत्न (से ३, २२) ।

ववहर सक [व्यव + ह्र] १ व्यापार करना ।
२ श्रक. वर्तना, आचरण करना । ववहरई,
ववहरण (उत्त १७, १८; स १०८, विसे
२२१२) । वक्र ववहरत, ववहरमाण
(उत्त २१, २, ३, भग ८, ८, सुपा १५,
४४६) । हेक्र ववहरिउं (स १०५) । क.
ववहरणिज्ज, ववहरियन्व (उप २११ टी,
वव १, सुपा ५८५) ।

ववहरण वि [व्यवहारक] व्यापार करने-
वाला, व्यापारी (कुप्र २२४) ।

ववहरण न [व्यवहरण] व्यवहार (गाया
१, ८—१३५, स ५८५, उप ५३० टी,
सुपा ४६५, विसे २२१२) ।

ववहरय देखो ववहरण (सुपा ५७८) ।

ववहरियन्व देखो ववहर ।

ववहार पु [व्यवहार] १ वर्तन, आचरण
(वव १, भग ८, ८, विसे २२१२, ठा ५,
२, पव १२६) । २ व्यापार, धन्वा, रोजगार
(सुपा ३३४) । ३ नय-विशेष, वस्तु-परीक्षा
का एक दृष्टिकोण (विसे २२१२, ठा ७—
पत्र ३६०) । ४ मुमुक्षु की प्रवृत्ति-निवृत्ति का
कारण-भूत ज्ञान-विशेष (भग ८, ८—पत्र

३८३, वव १, पव १२६, द्र ४६) । ५
जैन आगम-ग्रंथ विशेष (वव १) । ६ दोष के
नाशार्थ किया जाता प्रायश्चित्त, ‘आयारे
ववहारे पन्नत्ती चैव दिट्ठिवाए य’ (दसनि
३) । ७ विवाद, मामला, मुकद्दमा, ‘ववहार-
वियारणं कुणइ’ (पठम १०५, १००, स
४६०, चेइय ५६०, उप ५६७ टी) । ८
विवाद-निर्णय, फैसला, चुकादा (उप पृ
२८३) । ९ व्यवस्था (सुप्र २, ५, ३) । १०
काम काज (विसे २२१२, २२१४) । ११
जीवराशि-विशेष (सक्खा ६) । °व वि
[°वन्] व्यवहार-युक्त (द्र ४६) । °रामिय
वि [°राशिक] जीवराशि-विशेष में स्थित
(सिक्खा ६) ।

ववहार पु [व्यवहार] १ पूर्व-ग्रंथ । २
जीतकल्प सूत्र । ३ कल्पसूत्र । ४ मार्ग,
रास्ता । ५ आचरण । ६ ईप्सितव्य (वव १) ।

ववहारि पु [व्यवहारिन्] १ ऐरवत क्षेत्र
में उत्पन्न एक जिन-देव (सम १५३) । २
वि व्यापारी, वणिक् (मोह ६४, आ १४,
सुपा ३३४) । ३ व्यवहार-क्रिया-प्रवर्तक
(वव १) ।

ववहारिअ वि [व्यावहारिक] व्यवहार-
सम्बन्धी (शोध २८१, अणु) ।

ववहिअ वि [व्यवहित] व्यवधान-युक्त (अणु,
आवम) ।

ववहिअ वि [दे] मत्त, उन्मत्त (दे ७, ४१) ।
ववॉल देखो वमाल (मण) ।

वविअ वि [उप्त] बोया हुआ (उप ७२८ टी,
प्रासू ६) ।

वविज्जत देखो वव ।

ववेअ वि [व्यपेत] व्यपगत (सुप्र २, १,
४७) ।

ववेक्खा छी [व्यपेक्षा] विशेष अपेक्षा,
परवाह (धर्मसं ११६७) ।

वव्वय पु [वत्त्वज] तुण-विशेष, ‘भूययवक्क
(? व्व) यपुष्कफल—’ (पणह २, ३—पत्र
१२३, कस २, ३०) ।

वव्वर वि [वर्वर] १ पामर । २ ह. (कमा) ।

वव्वा° देखो वव्वय (कस २, ३०) ।

वव्वाह पु [दे] अर्थ, धन (दे ७, ३६) ।

वावड पु [दे] कुटुम्बी, किसान (दे ७, ५४) ।
वावड वि [व्यापृत] १ व्याकुल (दे ७, ५४ टी) । २ किसी कार्य में लगा हुआ (हे १, २०६, प्राप्र, कस, सुर १, २६) ।

वावड वि [व्यावृत्त] लौटाया हुआ, वापस किया हुआ (उप ५३४) ।

वावडय खीन [दे] विपरीत मैथुन (दे ७, ५८) । खी. 'या (पाप्र) ।

वावण न [व्यापन] व्याप्त करना (विसे ८६) ।

वावणग वि [वामनक] ठिंगणो, ठिंगना, बीना, छोटे कद का (चउप्पन० पत्र १६१) ।
वावणी खी [दे] छिद्र, विवर (दे ७, ५५) ।

वावण्ण देखो वावन्न (गाया १, १२) ।

वावत्ति खी [व्यापत्ति] विनाश, मरण (गाया १, ६—पत्र १६६, उप ५०६, स ३६५, ४३२, धर्मस ६३४, ६७६) ।

वावत्ति खी [व्यापृत्ति] व्यापार (उप ५०६) ।

वावत्ति खी [व्यावृत्ति] निवृत्ति (ठा ३, ४—पत्र १७४) ।

वावन्न वि [व्यापन्न] विनाश-प्राप्त (ठा ५, २—पत्र ३१३, स २४१, सम्मत्त २८, स ६०) ।

वावय पुं [दे] आयुक्त, गाँव का मुखिया (दे ७, ५५) ।

वावर अक [व्या + वृ] १ काम में लगना । २ सक. काम में लगाना । वावरेइ (हे ४, ८१), वावरइ (भवि), 'सय गिह परिचवळ परिगिहम्मि वावरे' (उत्त १७, १८, सुख १७, १८) । वकृ वावरत (कुमा ६, ५१) । प्रयो, हेकृ वावरावड (स ७६२) ।

वावरण न [व्यापरण] कार्य में लगाना (भवि) ।

वावल देखो वावड = व्यापृत (उप पृ ८७) ।

वावल पुन [दे. वावल] शस्त्र-विशेष (सण) ।

वावहारिअ वि [व्यावहारिक] व्यवहार से सम्बन्ध रखनेवाला (इक, विसे ६५६, जीवस ६५) ।

वावाअ (?) अक [अव + काश्] अवकाश पाना, जगह प्राप्त करना । वावाअइ (धात्वा १५२) ।

वावाअ सक [व्या + पादय] मार डालना, विनाश करना । वावाएइ (स ३१, महा) । कर्म. वावाइजइ, वावाईयइ (स ६७३), भवि वावाइजिस्सइ (पि ५४६) । सकृ. व.वाडऊण (स ७५५) । कृ. वावाइयन्व (स १३५) ।

वावाइअ वि [व्यापादित] मार डाला गया, विनाशित (सुपा २४१), 'अवावावि(?)ओ चेव विउत्तो खु एतो' (स ४११) ।

वावायग वि [व्यापादक] हिंसक, विनाश-कर्ता (स २६७) ।

वावायण न [व्यापादन] हिंसा, मार डालना, विनाश (स ३३, १०२, १०३, ६०५, सुर १२, २१६) ।

वावायय देखो वावायग (स ७५०) ।

वावार सक [व्या + पारय] काम में लगाना । वकृ वावारत (गउड २४४) । कृ वावारियन्व (सुपा १६२) ।

वावार पु [व्यापार] व्यवसाय (ठा ३, १ टी—पत्र ११४, प्रासू ६१, १२१, नाट—विक्र १७) ।

वावारण न [व्यापारण] कार्य में लगाना (विसे ३०७१, उप पृ ७१) ।

वावारि वि [व्यापारिन्] व्यापारवाला (से १४ ६६, हम्मीर १३) ।

वावारिइ (शौ) वि [व्यापारित] कार्य में लगाया हुआ (नाट—शकु १२०) ।

वावि अ [वापि] १ अयवा, या (पव ६७) । २ खी देखो वावी (पणह १, १—पत्र ८) ।

वावि वि [व्यापिन्] व्यापक (विसे २१५, आ २८४, धर्मस ५२५) ।

वाविअ वि [दे] विस्तारित (दे ७, ५७) ।

वाविअ वि [वापित] १ प्रापित, प्राप्त करवाया हुआ (से ६, ६२) । २ बोया हुआ, गुजराती में 'वावेनु', 'जं आसी पुव्वभवे धम्मवीय वाविय तए जीव' (आत्महि ८, दे ७, ८६) ।

वाविअ वि [व्याप्त] भरा हुआ (कुमा ६, ६५) ।

वावित्त वि [व्यावृत्त] व्यावृत्तिवाला, निवृत्त (धर्मस ३२१) ।

वावित्ति खी [व्यावृत्ति] व्यावर्तन, निवृत्ति (धर्मस १०५) ।

वाविद्ध देखो वाडद्ध = व्यादिध, व्याविद्ध (ठा ५, २—पत्र ३१३) ।

वाविर देखो वावर । वाविरइ (पड्) ।

वावी खी [वापी] चतुष्कोण जलाशय-विशेष (श्रीप, गउड, प्रामा) ।

वावुड } (शौ) देखो वावड = व्यापृत (नाट—
वावुद } मृच्छ २०१, पि २१८, चारु ६) ।

वावोणय न [दे] विकीर्ण, बिखरा हुआ (दे ७, ५६) ।

वाशू (मा) खी [वाभू] नाटक की भाषा में वाला (मृच्छ २७) ।

वास देखो वरिस = वृप् । वासति (भग) । भूका वासिमु (कप्प) । कृ वासिउ (ठा ३, ३—पत्र १४१, पि ६२, ५७७) ।

वास अक [वाग्] १ तिर्यंचा का—पशु पक्षियों का चोलना । २ आह्वान करना, 'खीरदुमम्मि वासइ वामत्थो वायसो चलिय-पक्खो' (पउम ५५, ३१), वासइ, वासए (भवि, कुप्र २२३) । वकृ वासत (कुप्र २२३, ३८७) ।

वास सक [वासय्] १ संस्कार डालना । २ सुगन्धित करना । ३ वास करवाना । वामइ (भवि) । वकृ. वारांत, वासयत (श्रीप, कप्प) । कृ वासणिज्ज (विसे १६७७, धर्मस ३२६) ।

वास देखो वरिस = वर्प (सम २, कप्प, जी ३४, गउड, कुमा, भग ३, ६, सम १२, हे १, ४३, २, १०५, पड् ४६, सुपा ६७) । 'त्ताण न [त्ताण] छत्र, छाता (धर्म ३, श्रोष ३०) । 'धर, 'हर पु [धर] पर्वत-विशेष (उवा ५४, २५३, ठा २, ३, सम १२, इक) ।

वास पु [वास] १ निवास, रहना (आचा, उप ४८६, कुमा, प्रासू ३८) । २ सुगन्ध (कुमा, भवि) । ३ सुगन्धी द्रव्य-विशेष (गउड) । ४ सुगन्धी चूर्ण-विशेष, 'पणवन्न-वासवास विहिय तोमाउ तियसेहि' (सुपा ६७, दस २) । ५ द्वीन्द्रिय जन्तु की एक जाति (पणण ६—पत्र ४४) । 'धर न [गृह] शयन-गृह (गाया १, १६—पत्र

वसियव्व देखो वस = वस् ।

वसिर वि [वसित्] वास करनेवाला, रहने-
वाला (सुपा ६४७, सम्मत २१७) ।

वसीकय वि [वशीकृत] वश में किया हुआ,
अधीन किया हुआ (सुपा ५१०, महा) ।

वसीकरण न [वशीकरण] वश में करने के
लिए किया जाता मन्त्र आदि का प्रयोग
(गाथा १, १४, प्रासू १४, महा) ।

वसीयरणी छी [वशीरर्गा] वशीकरण-
विद्या (सुर १३, ८१) ।

वसीहूअ वि [वशीभूत] जो अधीन हुआ हो
वह (उप ६८६ टी) ।

वसु न [वसु] १ घन, द्रव्य (आचा, सूत्र १,
१३, १८, कुमा) । २ समय, चारित्र (आचा,
सूत्र १, १३, १८) । ३ पु. जिनदेव । ४

वीतराग, राग-रहित । ५ समय, समयी,
साधु (आचा १, ६, २, १) । ६ आठ की
सख्या (विवे १४४, पिंग) । ७ घनिष्ठा नक्षत्र

का अधिपति देव (ठा २, ३, सुख १०,
१२) । ८ एक राजा का नाम (पउम ११,
२१, भत्त १०१) । ९ एक चतुर्दश-पूर्वी जैन

महर्षि (विसे २३३४) । १० एक छन्द का
नाम (पिंग) । ११ छी. ईशानेन्द्र की एक

पटरानी (इक) । १२ न लोकान्तिक देवों
का एक विमान (इक) । १३ सुवर्ण, सोना

(कप्प ६८, भग १५, उत्त १२, ३६) ।
'गुत्ता छी [गुप्ता] ईशानेन्द्र की एक

पटरानी (ठा ८—पत्र ४२६, इक, गाथा
२—पत्र २५३) । 'द्व पु [देव] नववें

वासुदेव श्रीकृष्ण और बलदेव का पिता (ठा
६, सम १५२, अत, उव) । 'नदय पु

[नन्दक] एक तह नी उतम तलवार (सुर
२, २२, भवि) । 'पुज्ज पुं [पूज्य] एक

द्रव्यवान्, घनी, श्रीमत (सूत्र १, १३, ८,
१, १५, ११, आचा) । २ समयी, साधु

(सूत्र १, १३, ८, आचा) । 'मित्ता छी
[मिता] १ ईशानेन्द्र की एक अग्र-महिषी

(ठा ८—पत्र ४२६, गाथा २, इक) । 'सद
पुं [शब्द] छन्द-विशेष (पिंग) । 'हारा

छी [धारा] १ आकाश से देव-कृत सुवर्ण-
वृष्टि (भग १५, कप्प ६८, उत्त १२, ३६,

विपा १, १०) । २ एक श्रेष्ठिनी (उप ७२८
टी) ।

वसुआ } अक [उद् + वा] शुष्क होना,
वसुआअ } सूखना । वसुआइ, वसुआअइ

(हि ४, ११, ३, १४५, प्राकृ ७४) । वकु.
वसुअत (कुमा) । प्रयो, कवक वसुआइज्ज-

माण (गडड) ।
वसुआअ वि [उद्वात] शुष्क (पात्र, से १,

२०, गडड, प्राकृ ७७) ।
वसुआइअ वि [उद्वापित] शुष्क किया गया,

सुखाया गया (से ६, २५) ।
वसुआइज्जमाण देखो वसुआ ।

वसुधर पु [वसुन्धर] एक जैन मुनि (पउम
२०, १६१) ।

वसुधरा छी [वसुन्धरा] १ पृथिवी, धरती
(पात्र, धर्मवि ४१, प्रासू १४२) । २ ईशा-

नेन्द्र की एक अग्र-महिषी (ठा ८—पत्र
४२६, गाथा २, इक) । ३ चमरेन्द्र के सोम

आदि चारो लोकपालो की एक पटरानी का
नाम (ठा ४, १—पत्र २०४, इक) । ४

अग्र-महिषी, एक इन्द्राणी (ठा ४, १—पत्र
२०४, गाथा २—पत्र २५२, इक) । 'णाह,

'नाह पुं [नाथ] राजा (उप ७६८ टी,
पउम ७४, २६) । 'भवण न [भवन]

भूमि-गृह, भोधरा (सुख ४, ६) । 'वइ पुं
[पति] राजा (पउम ६६, २) ।

वसुल पुंजी [दे वृषल] १ निष्ठुरता-बोधक
आमन्त्रण-शब्द, 'होलि त्ति वा गोलि त्ति वा

वमुलि त्ति वा' (आचा २, ५, २, ३), 'तहेव
होले गोलि त्ति साणे वा वसुलि त्ति य'

(दस ७, १४) । २ गौरव और कुत्सा-बोधक
आमन्त्रण शब्द, 'होल वसुल गोल गाह दइय

पिय रमण' (गाथा १, ६—पत्र १६५) ।
छी. 'ली (दस ७, १६, आचा २, ४,

२, ३) ।
वसुहा छी [वसुधा] पृथिवी, धरती (पात्र,

कुमा) । 'हिव पुं [धिप] राजा (सुपा
८७) ।

वसू छी [वसू] ईशानेन्द्र की एक पटरानी
(ठा ८—पत्र ४२६, इक, गाथा २—पत्र

२५३) ।
वसेरी छी [दे] गवेपणा, खोज (सुपा

४७३) ।
वस्स (शौ) देखो वरिस । वस्सदि (नाट—

मृच्छ १५५) ।
वस्स वि [वश्य] अधीन, आयत्त (विसे

८७५) ।
वस्सोऊ न [दे] एक प्रकार की क्रीडा,

आठ मो आठक का एक मान (तदु २६) ।
५ शाकटिक, गाढो हाँकनेवाला (सूत्र १, २, ३, ५) । °वाहिया स्त्री [°वाहिका] घुड़-सवारी (धर्मवि ४) ।

वाहगग } पु [दे] मन्त्रो, अमात्य, प्रधान
वाहगणय } (दे ७, ६१) ।

वाहड वि [दे] भृत, भरा हुआ, 'बहुवाहडा अगाहा' (दम ७, ३६) ।

वाहडिया स्त्री [दे] कविर, बहैनी (उप पृ ३३७) ।

वाहण पुन [वाहन] १ रथ आदि यान, 'जह मिचवाहणा लोण' (गच्छ १, ३८, उवा, औप, कप्प) । २ जहाज, नौका, यानपात्र, गुजराती मे 'वहाण' (उवा, सिरि ४२३, कुम्मा १६) । ३ न चलाना, 'वाहवाहण-परिस्सतो' (कुप्र १४७) । ४ शकट, वोभ आदि ढोआना, भार लाद कर चलाना (परह १, २—पत्र २६, द्र २६) । °साला स्त्री [°शाला] यान रखने का घर (औप) ।

वाहणा स्त्री [वाहना] वहन कराना, वोभ आदि ढोआना (आवक २५८ टी) ।

वाहणा स्त्री [दे] ग्रीवा, डोक, गला (दे ७ ५४) ।

वाहणा स्त्री [उपानह] जूता (औप, उवा, पि १४१) ।

वाहणिग वि [वाहनिक] वाहन सक्को (उप ७२८ टी) ।

वाहणिया स्त्री [वाहनिका] वहन कराना, चलाना, आसवाहणियाए' (स ३००) ।

वाहत्तुं देखो वाहर ।

वाह्य वि [वाह] चलानेवाला, हाँकनेवाला (उत्त १, ३७) ।

वाह्य वि [व्याहृत] व्याघात-प्राप्त (मोह १०७, उव) ।

वाहर सक [व्या + ह] १ बोलना, कहना ।

२ आह्वान करना । वाहरइ (हे ४, २५६, मुपा ३२२, महा) । कर्म वाहिप्पइ, वाहरिजइ (हे ४, २५३), 'वाहिप्पति पहाणा गाखडिया' (सुर १६, ६१) । कवक वाहिप्पत (कुमा) । वक. वाहरत (गा ५०३, सुर ६, १६६) । संक वाहरिउ (वव ४) । हेक वाहत्तुं (से ११, ११६) ।

वाहरण न [व्याहरण] १ उक्ति, कथन (कुमा) । २ आह्वान (स २५२, ५०६) ।
वाहराविय वि [व्याहारि] बलवाया हुआ (कुप्र १५, महा) ।

वाहरिअ देखो वाहित्त = व्याहृत (सुर १, १५० ४, ६, मुपा १३२, महा) ।

वाहलार वि [व. वात्सल्यकार] १ स्नेही, अनुरागी । २ सगा गुजराती मे 'वाहलेसरी'; 'अह सत्यातो तमन्नजायपि । नियतएणुज मन्तो लालेइ वाहलाख्व' (धर्मवि १२८) ।

वाहलिया } स्त्री [दे] सुद्र नदी, छोटा जल-
वाहली } प्रवाह (वज्जा २२, ५४, दे ७, ३६) ।

वाहा स्त्री [व] बालुका, रेत (दे ७, ५४) ।

वाहाया स्त्री [दे] वृक्ष-विशेष, 'समिसंगलिया ति वा वाहायासगलिया ति वा अगणियसगलिया ति वा' (अनु ५) ।

वाहाविय वि [वाहित] चलाया हुआ (महा) ।
वाहि देखो वाहर । संक वाहित्ता (आक ३८, पि ५८२) ।

वाहि पुत्री [व्याधि] रोग, बीमारी, 'चउज्विहे वाही पनत्ते' (ठा ४, ४—पत्र २६५, पात्र, सुर ४, ७५, उवा, प्रासू १३३, महा), 'एयाओ सत्त वाहीओ दाखणाओ' (महा) ।

वाहि वि [वाहिन्] वहन करनेवाला, ढोनेवाला, 'जहा खरो चदणभारनाही' (उव) ।

वाहिअ वि [वाहित] चलाया हुआ, 'वाहिय तम्मि वसकुडगे त खग' (महा), 'तो तेण तेण खगणेण कोसखित्तेण वाहिओ धाओ' (मुपा ५२७) ।

वाहिअ देखो वाहित्त = व्याहृत (हे २, ६६, पड, महा, एया १, १—पत्र ६३) ।

वाहिअ वि [व्याधित] रोगी, बीमार (सिरि १०७८, एया १, १३—पत्र १७६, विपा १, ७—पत्र ७५, परह १, ३—पत्र ५४, कस) ।

वाहिणी स्त्री [वाहिनी] १ नदी (धर्मवि ३) । २ सेना, लश्कर, 'मेणा वरुहिणी वारिणी अणीअ चमू सिन्न' (पात्र) । ३ सेना-विशेष, जिसमे ८१ हाथी, ८१ रथ, २४३ घोड़े और ४०५ प्यादें हो वह सैन्य (पउम ५६, ६) । °णाह पुं [°नाथ] सेना-पति (किरात १३) । °स पुं [°श] वही (किरात ११) ।

वाहित्त वि [व्याहृत] १ उक्त, कथित (हे १, १२८, २, ६६, प्राप्र) । २ आहृत, शब्दित (पात्र, उत्त १, २०) ।

वाहित्ति स्त्री [व्याहृति] १ उक्ति, वचन । २ आह्वान (अचु २) ।

वाहिप्पं देखो वाहर ।

वाहिम देखो वाह = वाहय ।

वाहियाली स्त्री [वाह्याली] अश्व खेलने की जगह (स १३, मुपा ३२७, महा) ।

वाहिल वि [व्याधिमन्] रोगी (धम्म ८ टी) ।

वाही देखो वाह = व्याघ ।

वाहुडिअ वि [दे] गत, चलित, 'तो वाहुडिअ जवेण' (कुप्र ४५८) । देखो वाहुडिअ ।

वाहुय देखो वाहित्त = व्याहृत (औप) ।

वि देखो अवि = अपि (हे २, २१८, कुमा, गा ११, १७, २३; कम्म ४, १६, ६०, ६६, रंभा) ।

वि अ [वि] इन अर्थों का सूचक अव्यय—
१ विरोध, प्रतिपक्षता, 'विगहा', 'विओग' (ठा ४, २, गच्छ १, ११, सुर २, २१५) । २ विशेष, 'विउत्तिसय' (सूत्र १, १, २, २३, भग १, १ टी) । ३ विविधता, 'वियक्खमाण', 'विउत्तमग' (ओघमा १८८, भग १, टी, आवम) । ४ कुत्सा, खराबो, 'विख्व' (उप ७२८ टी) । ५ अभाव, 'विइएह' (से २, १०) । ६ महत्त्व, 'विएम्' (गउड) । ७ भिन्नता, 'विएस' (महा) । ८ ऊँचाई, ऊँधता, 'विकखेव' (ओघमा १६३) । ९ पादपुत्ति (पउम १७, ६७) । १० पुं. पत्नी (से १, १, सुर १६, ४३) । ११ वि. उद्दीपक, उत्तेजक । १२ अवबोधक, ज्ञापक, 'सम्म सम्मनवियात्तड वर दिसठ भवियाण' (विवे १४३) ।

वि देखो वि = द्वि, 'ते पुण होज्ज विहत्था कुम्मापुत्तादओ जहन्नेण' (विसे ३१६६) ।

वि वि [विट्] जानकार, विज्ञ (आवा, विसे ५००) । °उच्छा स्त्री [°जुगुप्सा] विद्वान् की निन्दा, साधु की निन्दा (आ ६ टी—पत्र ३०) ।

वि° स्त्री [विप्] पुरीष, विष्टा (परह, २, १—६६, सति २, औप, विसे ७८१) ।

उपमा, 'कप्पदुम तणेणैव काणकवड्डेण कामवेणु वा' (हि १७, सूत्र १, ४, २, १५, मुख २, ६, वच १)। ७ पाद-पूर्ति (उत्त २८, २८)।

वाअड पु [दे] शुक्र, तोता (पड्)।

वाअड देखो वायड = व्यापृत, 'रइवाअडा रुअत पिअपि पुत्त सवइ माअ' (गा ४००)।

वाड वि [वादिन्] १ बोलनेवाला, वक्ता (आचा, भग, उव, ठा ४, ४)। २ वाद-कर्त्ता, शास्त्रार्थ में पूर्वपक्ष का प्रतिपादन करनेवाला (सम १०२, विसे १७२१, कुप्र ४४०, चेइय १२८, सम्मत्त १४१, आ ६)। ३ दार्शनिक, तीर्थिक, इतर धर्म का अनुयायी (ठा ४, ४)।

वाइ वि [वाचिन्] वाचन, अभिवाचक, कहने-वाला (विसे ८७४)।

वाइ देखो वाजि (राज)।

वाइअ वि [वाचिक] वचन-सवन्धी (औप, गा २४ पडि)।

वाइअ वि [वाचित] १ पाठित, पढाया हुआ (उत्त २७, १४, विसे २३५८)। २ पढ़ा हुआ, 'नामम्मि वाइए तथ' (सुपा २७०), 'अलाहि कि वाइएण लेहेण' (हि २, १८६)।

वाइअ वि [वातिक] १ वात से उत्पन्न, वायु-जन्य (राग आदि) (भग, गाया १, १—पत्र ५०, तट्ट १६)। २ वायु से फूला हुआ, वात-रोगवाला (विसे २५७६ टी, पव ६१)। ३ उत्कर्षवाला, 'सपरक्कमराउलवा-इएण मीमे पलीविण नियए' (उव), 'चित्तइ सुथे एमो निवमन्नो वाइउव्व दुदुमणो' (धर्मवि ७६)। ४ पु ननुसक का एक भेद (पुष्प १२७, धर्म २)।

वाइअ वि [वादित] १ बजाया हुआ (गा ५५७, कुमा २, ८, ६६, ७०)। २ बन्दित, अभिवादित, चलणेमु निवडिऊण वाइआ वंमणा' (स २६०)।

वाइअ न [वाच] १ बाजा, वादित्र (कप्प)। २ बाजा बजाने की कला (सम ८३, औप)।

वाइअ वि [वात] बहा हुआ, चला हुआ, 'मुचकुदकुडयसंदियरयगम्मिणवाइयसमीरो' (सुर २, ७६)।

वाइगण न [दे] वैगन, वृत्ताक, भंटा (उप ५६७ टी, दे ७, २६)।

वाइगणो } स्त्री [दे] वैगन का गाछ,
वाइगिणी } वृत्ताकी (राज पगगा १७—
पत्र ५२७)।

वाइगा [दे] देखो वाइया (उप १०३१ टी)।

वाइज्जत देखो वाए = वाच्य।

वाइज्जत देखो वाए = वादय।

वाइत्त न [वादित्र] वाद्य, वाजा (कुप्र ११०, भवि)।

वाइद्व वि [व्याविद्व] विपर्यय से उपन्यस्त, उलट-पुलट रखा हुआ (विसे ८५३)।

वाइद्व वि [व्यादिग्ग] १ उपदिग्ध, उपलित। २ वक्र, टेढ़ा (भग १६, ४—पत्र ७०४)।

वाइम देखो वा = व्ये।

वाइयव्य देखो वाय = वादय।

वाइकरण देखो वाजीकरण (राज)।

वाउ पुं [वायु] १ पवन, वात (कुमा)। २

वायु-शरीरवाला जीव (अणु, जी २, ८ १३)।

३ मृहृत्त-विशेष (सम ५६)। ४ सौधमैन्द्र के अन्न-सैन्य का अधिपति देव (ठा ५, १—पत्र ३०२)। ५ नक्षत्र-देव विशेष, स्वाति-नक्षत्र का अधिपति देवता (ठा २, ३—पव ७७, सुज १०, १२ टी)।

°आय पु [°काय] १ प्रचण्ड पवन (ठा ३, ३—पत्र १४१)। २ वायु शरीरवाला जीव (भग)।

°काइय पुं [°कायिक] वायु शरीरवाला जीव (ठा ३, १—पत्र १२३, पि ३५५)।

°काय देखो °आय (जी ७, पि ३५५)।

°कुमार पुं [°कुमार] १ एक देव-जाति, भवनपति देवों की एक अवान्तर जाति (भग)। २ हनुमान का पिता (पउम १६, २)।

°कलिया स्त्री [°उत्कलि] १ वायु-विशेष, नीचे बहनेवाला वायु (पण १—पत्र २६)।

°क्काइय देखो °काइय (भग)। °क्काय देखो °आय (राज)। °त्तरवडिसग पुन [°उत्तरावतंसक] एक देव-विमान (सम १०)।

°पवेस पु [°प्रवेश] गवाक्ष भरोखा वातायन (श्रोत्रमा ५८)। °पड्डाण वि [°प्रतिष्ठान] वायु के आघार से रहनेवाला (भग)। °भूइ पुं [°भूति] भगवान् महावीर का एक

गणधर—मुख्य शिष्य (कप्प)।

वाउ पु [दे] इधु, ऊख (दे ७, ५३)।

°वाउड वि [प्रावृत] १ आच्छादित, ढका हुआ (भग २, १, पव ६१)। न. कपडा, वज्र (ठा ५, १—पत्र २६६)।

वाउत्त पु [दे] १ विट। २ जार, उपपति (दे ७, ८८)।

वाउप्पइया स्त्री [ट वातोत्पतिना] भुज-परिसर्प की एक जाति, हाथ से चलनेवाले जन्तु की एक जाति, 'एउलमरडजाहगमुगु स-खाडहिलवाउप्पि (१०५) यधीरोलियमिरीमि-वगणे य' (पण १, १—पत्र ८)।

वाउव्भाम पु [वाउव्भाम] अनवस्थित पवन, 'वाउव्भामा (१०५) मे वाउक्कलिया' (पण १—पत्र २६)।

वाउय वि [व्यापृत] किसी कार्य में लगा हुआ (गाया १, ८—पत्र १४६, औप)।

वाउरा स्त्री [वागुरा] मृग-बन्धन, पशु फँसाने का जाल, फन्दा (पउम ३३, ६७, हेका ३१, गा ६५७)। देखो वगुरा।

वाउरिय वि [वागुरि] जाल में फँसाने का काम करनेवाला, व्याध (पण १, १, विपा १, ५—पत्र ६४)।

वाउल वि [व्याकुल] १ घबड़ाया हुआ (उव, उप पु २२०, कव ३४, हे २, ६६)। २ पुं क्षोभ (पण १, ३—पत्र ४४)। °हीहूअ वि [°भूत] व्याकुल बना हुआ (उप २२० टी)।

वाउल वि [वातूल] १ वात-रोगी, उन्मत्त। २ पुं वातसमूह (हे १, १२१, प्राक ३०)।

वाउलग न [दे] सेवा, भक्ति 'निच्च निय वाउलग कुणति' (राज)।

वाउलग न [व्यापरा] व्यावृत्त क्रिया, व्यापार (वव १)।

वाउलगा स्त्री [व्याकुलगा] व्याकुल करना (वव ४)।

वाउलिअ वि [व्याकुलित] १ व्याकुल बना हुआ (सण)। २ विलोलित, क्षोभ-प्राप्त (पण १, ३—पत्र ४५)।

वाउलिआ स्त्री [दे] छोटी खाई (गा ६२६)।

वाउल देखो वाउल = व्याकुल (हे २, ६६, पड्)।

विअड न [दे] १ प्रासुक जल, जीव-रहित पानी (सूत्र १, ७, २१, ठा ३, ३—पत्र १३८, ५, २—पत्र ३१३, सम ३७, उत्त २, ४, कप्प) । २ मद्य, दारु (पिंड २३६) । ३ प्रासुक आहार, निर्दोष आहार, 'ज किचि पावग भगवं त अकुव्व वियड भुजित्था' (आचा १, ६, १, १८), 'वियडगं भोचा' कप्प) ।

विअड वि [विकृत] विकार-प्राप्त (आचा, उत्त २, ४, कस, पि २१६) ।

विअड वि [विकट] १ प्रकट, खुला (सूत्र १, २, २, २२, पचा १०, १८, पव १५३) । २ विशाल, विस्तीर्ण, '—अकोसायतपउम-गभीरवियडनामे' (उवा, औप, गा १०३, गउड) । ३ सुन्दर, मनोहर (गउड) । ४ प्रभूत, प्रचुर (सूत्र २, २, १८) । ५ पु एक ज्योतिष्क महाग्रह (ठा २, ३—पत्र ७८, सुज २०) । ६ एक विद्याधर-राजा (पउम १०, २०) । ७ भोइ वि [भोजिन्] प्रकाश में भोजन करनेवाला, दिन में ही भोजन करनेवाला (सम १६) । ८ वइ, 'वाइ पु [पातिन्] पर्वत-विशेष (ठा ४, २—पत्र २२३, इक ठा २, ३—पत्र ६६, ८०) ।

विअड अक [विकटय्] विस्तीर्ण होना । वियडइ (गउड ११६८) ।

विअडण छीन [विकटन] १ अतिचारो की आलोचना । २ स्वाभिप्राय-निवदन (पचा २, २७) । ३ ओ. णा (ओघ ६१३, ७६१, पिंडभा ४१ श्रावक ३७६, पचा १६, १६) ।

विअडो छी [वितटी] १ खराब किनारा । २ अटवी, जंगल (गाया १ १—पत्र ६३) ।

विअड्ठि छी [वितटि] वेदिका, हवन-स्थान, वेदी, चोनरा (हे २, ३६, कुमा, प्राप्र) ।

विअड्ठ वि [विदग्ध] १ निपूण, कुशल । २ परिहृत, विद्वान् (हे २, ४०, गउड, महा) ।

विअड्ठ-वि [विरुपक] खीचनेवाला 'महाघणुवियट्ट' ('ट्टु)का' (परह १, ४—पत्र ७०) ।

विअड्ठा छी [विदग्धा] नायिका का एक भेद (कुमा) ।

वियडिदम पृष्ठी [विदग्धता] १ निगुणता । २ पारिदय्य (कुप्र ४०५ वज्जा १३४) ।

विअण पुन [व्यजन] वेना, पखा (प्राप्र, हे १, ४६, परह १, १—पत्र ८) ।

विअण वि [विजन] निर्जन, जन-रहित, 'लघति वियणकाणण' (भवि) ।

विअणा छी [वेदना] १ ज्ञान । २ सुख-दुःख आदि का अनुभव । ३ विवाह । (प्राप्र, हे १, १४६) । ४ पीडा, दुःख, संताप (पाप्र, गउड, कुमा) ।

विअणिय वि [वितनित, वितत] विस्तीर्ण (भवि) ।

विअणिय वि [विगणित] अनादृत, तिरस्कृत (भवि) ।

विअण्ण वि [विपन्न] मृत (गा ५४६) ।

विअण्ह वि [वितृण्ण] तृष्णा-रहित (गा ६३) ।

विअत्त सक [वि + वर्त्तय्] घूम कर जाना । संक्रु वियत्तूण, वियडत्ता, विउत्ता (आचा १ ८, १, २) ।

विअत्त वि [व्यक्त] १ परिस्फुट (सूत्र १, १, २, २५) । २ अमुग्ध, विवेकी (सूत्र १, १, २, ११) । ३ वृद्ध, परिणत-वयस्क, 'णिग्गयाण सखुहुयविअत्ताण' (सम ३५) ।

४ पु भगवान् महावीर का चतुर्थ गणधर—प्रमुख शिष्य (सम १६) । ५ गीतार्थ मुनि (ठा ४ १ टी—पत्र २००) । ६ किञ्च न [कृत्य] गीतार्थ का कर्तव्य—अनुष्ठान (ठा ४, १ टी) ।

विअत्त वि [विदत्त] विशेष रूप से दिया हुआ (ठा ४, १ टी—पत्र २००) ।

विअत्त पु [वितर्त] एक ज्योतिष्क महाग्रह (ठा २ ३ टी—पत्र ७६, सुज १६ टी—पत्र २६६) ।

विअह वि [वितर्ह] हिंसक (आचा १, ६, ४, ५) ।

विअह देखो विअह्ठ = विदग्ध (पच ६०, नाट—मालती ५४) ।

विअन्नु देखो विन्नु (सट्टि ८) ।

विअप्प सक [वि + कल्पय्] १ विचार करना । २ सशय करना । वियप्पइ, विअप्पेइ

(भवि, गा ४७६) । वहु. वियप्पत (महा) । क. वियप्प (उप ७२८ टी) ।

विअप्प पु [विकल्प] १ विविध तरह की कल्पना, 'तं जयइ विरुद्ध पिव वियप्पजालं कइदाण' (गउड) । २ वितर्क, विचार (महा) । ३ भेद, प्रकार, 'द्ववट्टिओ अ पज-वनओ अ, सेसा विअप्पा मि' (मम्म ३) । देखो विगप्प = विकल्प ।

विअप्पण न [विकल्पन] ऊपर देखो, 'एगुत्तुच्छेप्रमि वि मुहदुक्कविअप्पणमजुत्त' (सम्म १८, स ६८८) ।

विअप्पणा छी [विकल्पना] ऊपर देखो (धर्मस २१०) ।

विअवभ देखो विद्वम्भ (प्राक् ३८, पउम २६, ८) ।

विअम्ह देखो विअंभ = वि + जृम्म् । विअ-म्हइ (प्राक् ६४) ।

विअय देखो विजय = विजय (औप, गउड) ।

विअय वि [वितत] १ विस्तीर्ण, विशाल (महा) । २ प्रसारित, फैलाया हुआ (विते २०६१, श्रावक २०३) । ३ पक्षिण पु [पक्षिन्] मनुष्य-लाक से बाहर रहनेवाले पक्षी की एक जाति 'नरलोणाओ वाहि ममुगपक्खी विअयक्खी' (जी २२) । देखो वितत = वितत ।

विअर सक [वि + चर्] विहरना, घूमना-फिरना । विअरइ (गउड ३८८) ।

विअर सक [वि + त्] देना, अर्पण करना । वियरइ (कस, भवि), वियरेज्जा (कप्प) । कर्म वियरिज्जइ (उत्त १२, १०) । वहु वियरत (काल) ।

विअर पुं [दे] १ नदी आदि जलाशय सूख जाने पर पानी निकालने के लिए उसमें किया जाता गर्त, गुजराती में 'वियडो' (ठा ४, ४—पत्र २८१, गाया १, १—पत्र ६३, १, ५—पत्र ६६) । २ गर्त, खड्डा, 'तत्थ गुलस्स जाव अन्नेसि च बहूण जिग्भिदिय-पाउग्गाण दव्वाण पुजे य निकरे य करंति, करेत्ता वियरण खणति...वियरे भरति' (गाया १, १७—पत्र २२६) ।

विअरण न [विचरण] विहार, चलना-फिरना (अजि १६) ।

वाडिम पु [दे] पशु-विशेष, गण्डक, नेंडा (दे ७, ५७)।

वाडिल पु [दे] कृमि, कीट (दे ७, ५६)।

वाडो स्त्री [दे] वृत्ति, वाह, 'धरवारे कारिया कंटएहि वाडो' (कुप्र २६, दे ७, ४३, ५८, पङ्)।

वाडो स्त्री [वाट] वगोचा, उद्यान (धर्मस ४१)।

वाडि { पु [दे] वणिक् सहाय, वैश्य-मित्र
वाडिअ } (दे ७, ५३)।

वाण नक [वि + नम्] विशेष नमना—
नत होना। बाणइ (?) (घाटवा १५२)।

वाण वि [वान] वन में उत्पन्न, वन-सवन्वी (श्रौप, मम १०३)। °पत्थ, °पत्थ पुं [°प्रस्थ] वन में रहनेवाला तापस, तृतीय आश्रम में न्यस्त पुरुष (श्रौप, उप ३७७)। °मत, °मतर, °वतर पुंस्त्री [°व्यन्तर] देवो की एक जाति (भग, ठा २, २, सुर १, १३७, श्रौप, जी २४, महा, पि २५१)। स्त्री °री (पण्या १७—पत्र ४६६, जीव २)। °वासिआ स्त्री [°वासिका] छन्द-विशेष (अजि ३३)।

°वाण देखो पाण = पान। °वत्त न [°पात्र] पीने का प्याला (से १, १८)।

वाणय पुं [दे] बलयकार, ककण बनानेवाला शिल्पी (दे ७, ५४)।

वाणर पुन [वानर] १ वन्दर, कपि, मर्कट (पणह १, १, पात्र)। २ विद्याधर मनुष्यो का एक वंश। ३ वानर-वंश में उत्पन्न मनुष्य (पउम ६ १)। °उरी स्त्री [°पुरी] किष्किन्वा नामक एक भारतीय प्राचीन नगरी (से १४, ५०)। °कंड पु [°केतु] वानर-वंश का कोई भी राजा (पउम ८, २३५)। °दीत्र पु [°द्वीप] एक द्वीप (पउम ६, ३४)। °ध्वज पु [°ध्वज] हनुमान (पउम ५३, ४३)। °वड पु [°पति] सुश्रीव, रामचन्द्र का एक सेनापति (से २, ४१, ३, ५२)। देखो वानर।

वाणरिउ पु [वानरेन्द्र] वानर-वंशीय पुरषो का राजा, वाली (पउम ६, ४०)।

वाणवाल पु [दे] इन्द्र, पुरन्दर (दे ७, ६०)।

वाणहा देखो पाणहा, वाहणा = उपातह-
(पि १४१)।

वाणा देखो वायणा = वाचना। °यरिअ पु [°चार्य] श्रव्यापन करनेवाला साधु, शिक्षक, 'एसो च्चिय ता कीरउ वाणायरिओ, तओ गुरु भणइ' (उप १४२ टी)।

वाणारसी स्त्री [वाराणसी] भारतवर्ष की एक प्राचीन नगरी, जो आज कन 'बनारस' नाम से प्रसिद्ध है (हे २, ११६, एणया १, ४, उवा, इक, उव धर्मवि ५, पि ३८५)। वाणि देखो वाणि = वणिज् (भवि)। °उत्त, °पुत्त पुं [°पुत्र] वैश्य-कुमार, वनिष्ठा का लड़का (कुप्र ३६, ८८, २२१, ४०४, सिरि ३८४, धर्मवि १०४)।

वाणि स्त्री [वाणि] देखो वाणी (सति ५)। वाणिअ पु [वाणिज] १ वनिष्ठा, व्यापारी, वैश्य (आ १२, सुर १, २४८, १३, २६, नाट—मृच्छ ५५, वसु, मिरि ४०)। २ एक गाँव का नाम (उवा, अत, विपा १, २)।

वाणिअ (अप) देखो वाणिज (सण)।

°वाणिअ देखो पाणिअ = पानीय (गा ६८२, सिरि ४०, सुपा २२६)।

वाणिअय पु [वाणिजक] वनिष्ठा, वैश्य, व्यापारी (पात्र, काप्र ८६३, गा ६५१, उव, सुपा २२६, २७५ पासू १८१)।

वाणिज न [वाणिज्य] १ व्यापार, वैपार (सुपा ३४३, पडि)। २ एक जैन मुनि कुल का नाम (कप्प)।

वाणिज्जा स्त्री [वाणिज्या] व्यापार, 'अहिच्छत्त नगर वाणिज्जाए गमित्तए' (एणया १, १५)।

वाणिज्जिय वि [वाणिजिक] वाणिज्य-कर्ता, व्यापारी (भवि)।

वाणी स्त्री [वाणी] १ वचन, वाक्य (पात्र)। २ वाग्देवता, सरस्वती देवी (कुमा, सति ४)। ३ छन्द-विशेष (पिंग)।

°वाणीअ देखो पाणीअ (काप्र ६२५)।

वाणीर पुं [दे] जम्बू वृक्ष, जामुन का पेड़ (दे ७, ५६)।

वाणीर पु [वानोर] वेतय-वृक्ष, बेंत का पेड़ (पात्र, गा ५६६)।

वाणु जुअ पु [दे] वणिक्, वैश्य, 'एमो हला नवल्लो दीसइ वाणु जुमो कोवि' (उप ७२८ टी)।

वात देखो वाय = वात (ठा २, ४—पत्र ८६)।

वातिक { देखो वाइअ = वातिक (पणह १,
वानिय } ३—४, ४४, ओष ७२८)।

वाद देखो वाय = वाद (राज)।

वाडि देखो वाड = वादिन् (उवा)।

वानर देखो वाणर (विपा १, २—पत्र ३६, विमे ८६३, सुपा ६१८), 'पुवभवगानराणि व ताइ विलमति सिच्छाए' (धर्मवि १३१)।

वापफ देखो वावफ। वापफइ (पङ्)।

वापिद (शी) देखो वावड = व्यापृत (नाट—वेणो ६७)।

वावाहा स्त्री [व्यावाधा] विशेष पीडा (एणया १, ४, चेइय ३५५)।

वाम सक [वमय्] वमन कराना, कै कराना। वामेइ वामेज्ज (भग, पिड ६४६)। सक वामेत्ता (भग, उवा)।

वाम वि [दे] १ मृत (दे ७, ४७)। २ आक्रान्त (पङ्)।

वाम वि [वाम] १ सव्य, बाँया (ठा ४, २—पत्र २१६, कुमा, सुर ४, ५, गडड)। २ प्रतिकूल, अननुकूल (पात्र, पणह १, २—पत्र २८, गडड ८८, ६६४, कुमा)। ३ सुन्दर मनोहर, 'वामलोअणा' (पात्र)। ४ न. सव्य पक्ष, 'वामत्थो' (पउम ५५, ३१)। ५ बाँया शरीर (गा ३०३)। °लोअणा स्त्री [°लोचना] सुंदर नेशवाली स्त्री, रमणी (पात्र)। °लोअवादि, °लोगवादि पुं [°लोकवादिन्] दार्शनिक-विशेष, जगत् को असद् माननेवाले मत का प्रतिपादक दार्शनिक (पणह १, २—पत्र २८)। °वट्ट वि [°वर्त] प्रतिकूल आचरण करनेवाला (वृह १)। °वत्त वि [°वर्त] वही अर्थ (ठा ४, २—पत्र २१६)।

वाम पु [व्याम] परिमाण-विशेष, नीचे फैलाए हुए दोनों हाथों के बीच का अन्तराल (पत्र २१२, श्रौप)।

वामण पुन [वामन] १ सस्यान-विशेष, शरीर का एक तरह का आकार, जिसमें

विआरणा स्त्री [वितारणा] विप्रतारणा,
ठगाई (उप ६१९) ।

विआरय वि [विचारक] विचार करनेवाला
(पउम ८, ५) ।

विआरि दि [विचारिन्] ऊपर देखो (श्रौप) ।

विआरिअ वि [विचारित] जिसका विचार
किया गया हो वह (दे १, १६८) ।

विआरिअ वि [विदारित] १ खोला हुआ,
फाड़ा हुआ, 'दूरविआरिअमुह महाकाय—
मीह' (एभि १२) । २ विदीर्ण किया हुआ,
चौरा हुआ (भवि) ।

विआरिअ वि [विनारित] १ अर्पित, दिया
गया, 'वालि या मिरोहरा विआरिया दिट्ठी'
(स ३३७) । २ ठगा हुआ, विप्रतारित, 'जइ
पुण धुत्तण अहं विआरिओ' (सुपा २२४) ।

विआरिआ स्त्री [दे] पूर्वाह्न का भोजन (दे
७, ७१) ।

विआरिइ १ वि [विकारवत्] विकारवाला,
विआरइ १ विकारयुक्त (प्राप्र, हे २,
१५९) । स्त्री. °हा (मुपा १६४) ।

विआल देखो विआल = वि + चारय् । वक्र,
वियालन (उवर ८२) ।

विआल देखो विआर = वि + दारय् । कृ.
वियालणय (सूअनि ३६, ३७) ।

विआल पुं [विकाल] सन्ध्या, साँफ, सायकाल
(दे ७, ६१, कप्पू, विपा १, ५—पत्र ६३,
हे ४, ३७७, ४२४, कस, भवि । °चारि वि
[°चारिन्] विकाल में घूमनेवाला (एया
१, १—पत्र ३८, १, ४, श्रौप) ।

विआल पु [दे] चोर, तस्कर (दे ७, ६०) ।

विआल वि [व्याल] दुष्ट, 'मोणं वियाल
पडिपहे पेहाए, महिसं वियाल पडिपहे पेहाए
चिताचेल्लरय वियालं पडिपहे पेहाए' (आचा
२, १, ५, ४) । देखो वाल = व्याल ।

विआल देखो विचाल (राज) ।

विआलय देखो विआलय = विकालक (ठा
२, ३—पत्र ७७) ।

विआलय देखो विआरण = विचारण (श्रोध
६६, विने १७६, पिड ५६७) ।

विआटा देखो विआरणा = विचारणा (विसे
६४७ टी, पिड ५६७) ।

विआलय वि [विदारक] विदारण-कर्ता
(सूअनि ३६) ।

विआलय पु [विकालक] एक महाग्रह,
ज्योतिष्क देव-विशेष (सुज २०) ।

विआलिउ न [दे] व्यालू, सायंकाल का
भोजन, 'जा महु पुत्तह करयलि लग्गइ सा
अमिएण वियालिउ मग्गइ' (भवि) ।

विआलुअ वि [दे] असहन, असहिष्णु (दे
७, ६८) ।

विआव सक [वि + आप्] व्याप्त करना
(प्राप्ता) ।

विआवड देखो वावड = व्यापृत (श्रोधमा
१६६, पउम २, ६) ।

विआवत्त पुं [वावत्त] १ घोष और महाघोष
इन्द्रो के दक्षिण दिशा के लोकपाल (ठा ४,
१—पत्र १६८, इक) । २ ऋजुवालिका नदी
के तीर पर स्थित एक प्राचीन चैत्य (कप्प) ।
३ पुन एक देव-विमान (सम ३२) ।

विआवाय पु [व्यापात] भ्रश, नाश (आचा
१, ६, ५, ६ टि) ।

विआविअ देखो वावड = व्यापृत (धमंस
६७६) ।

विआस पुं [विआश] १ मुँह आदि की फाड़—
खुलापन, 'शूल वियासं मुहे' (सूअ १, ५, २,
३) । २ अवकाश (गउड २०१) ।

विआस पु [विकास] प्रफुल्लता (पि १०२,
भवि) ।

विआस देखो वास = व्याम (राज) ।

विआसइत्तअ (शौ) वि [विकासयितृक]
विकसित करनेवाला (पि ६००) ।

विआसग वि [विकासक] ऊपर देखो (सुपा
६५८) ।

विआसर वि [विकसर] विकसनेवाला,
प्रफुल्ल (पड्) ।

विआस } वि [विकासिन्] ऊपर देखो
विआसिह } (पि ४०५, सुपा ४०२, ६) ।

विआह सक [व्या + ख्या] व्याख्या करना ।
कर्म, विआहिज्जति (गंदि २२६) ।

विआह पु [व्याह] १ व्याह, परिणयन,
शादी (गा ८७६, नाट—मालती ६) । २
विविध प्रवाह । ३ विशिष्ट प्रवाह । ४ वि.
विशिष्ट सतानवाला (भग १, १ टी) ।

°पण्णत्ति स्त्री [°प्रज्ञप्ति] पाँचवाँ जैन भ्रग-
ग्रन्थ (भग १, १ टी) ।

विआह वि [विवाह] वाध-रहित (भग १,
१ टी) । °पण्णत्ति स्त्री [°प्रज्ञप्ति] पाँचवाँ
जैन भ्रग-ग्रन्थ (भग १, १ टी) ।

विआह° स्त्री [व्याख्या] १ विशद रूप से
अर्थ का प्रतिपादन । २ वृत्ति, विवरण ।
°पण्णत्ति स्त्री [°प्रज्ञप्ति] पाँचवाँ जैन भ्रग-
ग्रन्थ (भग १, १ टी) ।

विआहिअ वि [व्याख्यात] १ जिसकी
व्याख्या की गई हो वह, वर्णित (आ २२) ।
२ उक्त, कथित, 'स एव भवमत्ताए चक्षुभूए
विआहिए' (गच्छ १, २६, भग) ।

विइ स्त्री [वृत्ति] रज्जु बन्वन (श्रौप) । देखो
वइ = वृत्ति ।

विअइ वि [विदित] ज्ञात, जाना हुआ (पाअ,
पिड ८२, संवोव ४६, स १६२, महा) ।

विइइन्न देखो विइकिण (भग १, १ टी —
पत्र ३७) ।

विइचिअ वि [विविक्त] विनाशित (स
१३५) ।

विइंत सक [वि + कृन्] काटना, छेदना ।
विइंतेइ (एया १, १४ टी—पत्र १८७) ।

विइत देखो विचित । वक्र, विइतत (गउड
६७८) ।

विइकिण वि [व्यतिकीर्ण] व्याप्त, फैला
हुआ (भग १, १—पत्र ३६) ।

विइकंत वि [व्यतिक्रान्त] व्यतीत, गुजरा
हुआ (ठा ६—पत्र ४४५, उवा, कप्प) ।

विइगिंठा } देखो विनिगिंठा (आचा,
विइगिच्छा } कम, उवा) ।

विइगिठ्ठ वि [व्यतिकृष्ट] दूर-स्थित, विप्रकृष्ट
(बृह १) ।

विइगिण देखो विइकिण (कस) ।

विइज्जत देखो वीअ = वीजय् ।

विइज्जत देखो विकिर ।

विइण वि [विहीर्ण] १ विखरा हुआ,
'विइएणकेसी' (उवा) । २ विसिप्त, फँका
हुआ (से १०, ३) । देखो विकिण, विकिन्न ।

विइण वि [वितीण] दिया हुआ, अर्पित
(गा ३४६, ६१७, से ८, ६५, १०, ३; दे
४, ४४४, महा) ।

‘वल्हवाएण अल मम’ (गा १२३) । ४ वजाना, ‘मदलवायचरुफल्लोर्य’ (सिरि १५७) । ५ स्थैर्य, स्थिरता (आ २३) । ६ स्थ पु [‘स्थि’] तत्त्व-चर्चा, तेहि सम कुण्ड वायत्य’ (पठम ४१, ५-) । ७ स्थि वि [‘स्थिन्’] शास्त्रार्थ की चाहवाला (पठम १०५, २६) ।

वाय पु [पाक] १ रसोई । २ बालक । ३ दैत्य, दानव (आ २३) । देखो पाग ।

वाय पु [पात] १ पतन (स ६५७, कुमा) । २ गमन । ३ उत्पत्ति, दूदन (मि १, ५५) । ४ पक्षी । ५ न पक्षि-समूह (आ २३) ।

वाय वि [पात] १ रक्षा करनेवाला । २ पीनेवाला । ३ सूखनेवाला (आ २३) ।

वाय देखो वाय (आ २३) ।

वाय पु [पाद] १ पर्यन्त । २ पर्वत । ३ पूजा । ४ मूल । ५ किरण । ६ पैर । ७ चौथा भाग (आ २३) । देखो पाय = पाद ।

वाय देखो पाय = पाप (आ २३) ।

वाय पु [पाय] १ रक्षा, रक्षण । २ वि. पीनेवाला (आ २३) ।

वाय देखो अयाय = मपाय, ‘वहुवायम्मि वि देहं विसुज्झमाणस्स वर मरण’ (उव) ।

वायउत्त पु [दे] १ विट, भैंरुआ । २ जार, उपपत्ति (दे ७, ८८) ।

वायंगग न [दे] वैगन, वृत्ताक, भटा (आ २०, सत्तोव ४४, पव ४) ।

वायत्ति वि [वागन्तिक] वचन-मात्र मे नियमित (राज) ।

वायग पु [वाचक] १ अभिवायक, अभिवा-वृत्ति से अर्थ का प्रकाशक शब्द (सम्मत्त १४३) । २ उपाध्याय, सूत्र-पाठक मुनि (गण ५, सवोध २५, सार्ध १४७) । ३ पूर्व-ग्रन्थो का जानकार मुनि (पण १—पत्र ४, सम्मत्त १०१, पचा ६, ४५) । ४ एक प्राचीन जैन महर्षि और ग्रन्थकार, तत्त्वार्थ सूत्र का कर्ता श्री उमास्वातिजी (पंचा ६, ४५) । ५ वि. कथक, कहनेवाला । ६ पढ़ाने-वाला (गण ५) ।

वायग वि [वाचक] वजानेवाला (कुमा ६, महा) ।

वायग पु [वाचक] तन्तुवाय, जुलाहा (दे ६, ५६) ।

वायगवम पु [वाचकवश] एक जैन मुनि-वश (गण्दि ५०) ।

वायड पु [दे] एक श्रेष्ठि-वश (कुप्र १४३) ।

वायड वि [व्याकृत] स्पष्ट, प्रकट अर्थवाना (दसनि ७) । देखो वागरिय ।

वायडघड पुं [दे] वाय-विशेष, दडुर नामक बाजा (दे ७, ६१) ।

वायडाग पुं [दे] सर्प की एक जाति (पण १—पत्र ५१) ।

वायण न [वाचन] देखो वायणा (नाट—रत्ना १०) ।

वायण न [वादन] १ वजाना (सुपा १६, २६३, कुप्र ४१, महा, कप्प) । २ वि वजानेवाला (दे ७, ६१ टी) ।

वायण न [दे] भोज्योपायन, खाद्य पदार्थ का बाँटा जाता उपहार, वायन (दे ७, ५७, पात्र) ।

वायणया } स्त्री [वाचना] १ पठन, गुरु-
वायणा } समीपे अव्ययन (उप २६, १) ।
२ अव्यापन, पढ़ाना (सम १०६, उव) ।
३ व्याख्यान (पव ६४) । ४ सूत्र-पाठ (कप्प) ।

वायणिअ वि [वाचनिक] वचन-संबन्धी (नाट—विक्र ३५) ।

वायय देखो वायग = वायक (दे ५, २८) ।

वायरग देखो वागरण (हे १, २६८, कुमा, भवि, पड) ।

वायव वि [वायव] वायु रोगवाला, वात-रोगी (विपा १, १—पत्र ५) ।

वायव देखो पायव (से ७, ६७) ।

वायव्व वि [वायव्व] वायव्व कोण का (अणु २१५) ।

वायव्व पु [वायव्व] १ वायुदेवता-संबन्धी, ‘वारुणवायव्वार्डं पट्टविमार्डं कमेण सत्याइ’ (सुर ८, ४५, महा) । २ न. गौ के खुर मे उडो हुई धूलि—रज, ‘वायव्वएहाणएहाया’ (कुमा) ।

वायव्वा स्त्री [वायव्वा] पश्चिम और उत्तर के बीच की दिशा, वायव्य कोण (ठा १०—पत्र ४७८, सुपा ६८, २६७) ।

वायस पु [वायस] १ काक, कौआ (उवा, प्रामू १६६, हे ४, ३५२) । २ कायोत्सर्ग का एक दोष, कायोत्सर्ग में कौए की तरह दृष्टि को डघर-उघर घुमाना (पव ५) ।

परिमडल न [परिमण्डल] विद्या-विशेष, कौए के स्वर और स्थान आदि से शुभाशुभ फल बतलानेवाली विद्या (सूत्र २, २, २७) ।

वाया स्त्री [वाच] १ वाचन, वाणी (पाम्र, प्रामू ६, पडि, स ४६२, से १, ३७, गा ३२, ४००) । २ वाणी की अविष्टायिका देवी, सरस्वती (आ २३) । ३ व्याकरण-शास्त्र (गउड ८०२) । देखो वड = वाच् ।

वायाड पुं [दे वाचाट] शुक, तोता (दे ७, ५६) ।

वायाड वि [वाचाट] वाचाल, वक्तादी (सुपा ३६०, चेइय ११७, सक्ति २) ।

वायाम पुं [वायाम] कसरत, शारीरिक श्रम (ठा १—पत्र १६, गाय १, १—पत्र १६, कप्प, औप, स्वप्न ३६) ।

वायाम सक [वायामय] कसरत करना, शारीरिक श्रम करना । वक्क ‘मुट्टु वि वायामेतो काय न करेइ किंचि गुण’ (उव) ।

वायायण पुन [वातायन] १ गवाक्ष, झरोखा (पठम ३६, ६१, स २४१, पात्र, महा) । २ पु राम का एक सैनिक (पठम ६७, १०) ।

वायार पुं [दे] शिशिर-वात, गुजराती मे ‘वायरो’ (दे ७, ५६) ।

वायाल वि [वाचाल] मुखर, वक्तादी (आ १२, पात्र, सुपा ११३) ।

वायाल देखो पायाल (से ५, ३७) ।

वायाविअ वि [वादिअ] वजवाया हुआ (म ५२७, कुप्र १३६) ।

वायु देखो वाउ = वायु (सुज १०, १२, कुमा, मम १६) ।

वार सक [वारय] रोकना, निषेध करना । वारेइ (उव, महा) । वक्क वारत (सुपा १८३) । कवक्क वारिज्जत (काप्र १६१, महा) । हेक्क वारेड (सूत्र १, ३, २, ७) । क वारियव्व, वारेयव्व (सुपा ५५२, २७२) ।

वार पु [द वार] चक्क, तान-गाय (दे ७, ५४) ।

विउयाय पु [व्युत्पात] हिंसा, प्राणि-वध (सूत्र २, ४, ३)।
 विउव सक [वि + कृ, वि + कुर्व] १ वनाना—दिव्य सामर्थ्य से उत्पन्न करना। २ अलकृत करना मरिडत करना। विउवइ, विउवए (भग, कण, महा, पि ५०८)। भूका विउविसु। भवि, विउविवस्सति (भग ३, १—पत्र १५६), विउविवस्सामि (पि ५३३)। वहु विउवमाण (सुज २०)। कवहु विउविवज्जमाग (ठा १०—पत्र ४७२)। सहु विउविवऊण, विउविवऊणं, विउविवत्ता, विउविवउ (महा, पि ५८५, भग, कस, सुपा ४७)। हेहु विउविवत्तए (पि ५७८)।
 विउव न [वैक्रिय] १ शरीर-विशेष, अनेक स्वरूपो और क्रियायो को करने मे समर्थ शरीर (पउम १०२, ६८, पव १६२, कम्म १, ३७)। २ कर्म-विशेष, वैक्रिय शरीर की प्राप्ति का कारण-भूत कर्म (कम्म १, ३३)। ३ वि. वैक्रिय शरीर से सवन्ध रखनेवाला (कम्म ४, २६)।
 विउवणया } श्री [विक्रिया, विकुर्वणा]
 विउवणा } १ वनावट, शक्ति-विशेष से किया जाता वस्तु-निर्माण (सूत्रनि १६३, औप, पउम ११७, ३१, पत्र २३०)। २ शक्ति-विशेष, वैक्रिय-करणा शक्ति (देवेन्द्र २३०)।
 विउव्वाड वि [दे] १ विस्तीर्ण। दु ख-रहित (दे १, १२६)।
 विउव्वि वि [वैक्रियिन्, विकुर्विन्] १ विकुर्वणा करनेवाला (उप ३५७ टी)। २ वैक्रिय-शरीरवाला (उत्त १३, ३२, सुख १३, ३२)।
 विउव्विअ वि [विकृत, विकुर्वित] १ निर्मित, बनाया हुआ (भग, महा, औप, सुपा ८८)। २ अलकृत, विभूषित (बृह १)।
 विउव्विअ वि [वैक्रियिक] वैक्रिय शरीर से सवन्ध रखनेवाला (कम्म ४, २४)। देखो वेउव्विअ।
 विउस सक [व्युत् + सृज्] फेंकना। विउमिजा (आचा २, ३, २, ५), विउसिरे (आचा २, १६, १)।

विउस वि [विद्वस्] विज्ञ, परिदत (पात्र, उप पृ १०६, सुपा १०७, प्रासू ६३, भवि, महा), 'विउसेहि' (चइय ७७४), 'विउसाण' (मम्मत्त २१६)।
 विउसग्ग देखो विओसग्ग (हे २, १७४, पड्)।
 विउसन्न न [व्युपशमन्, व्यवशमन्] १ उपशम, उपक्षय। २ सुरत का अवसान, 'ता मे रां पुरिसे विउसमणकानममयंसि केरिस्सए सायासोवख पच्चणुवममाणे विहरति' (सुज्ज २०, भग १२, ६—पत्र ५७८)। ३ वि. विनाशक, 'सव्वदुक्खपावाण विउसमणं' (पएह २, १—पत्र १००)।
 विउसमणया श्री [व्यवशमना] उपशम, क्रोध-परित्याग (भग १७, ३—पत्र ७२६)।
 विउसमिय देखो विओसमिय (राज)।
 विउसरण न [व्युत्सर्जन] परित्याग (दंस १)।
 विउसरणया श्री [व्युत्सर्जना] ऊपर देखो (भग, राया १, १—पत्र ४६)।
 विउसव देखो विओसव। संक. विउसवेत्ता (कस १, ३५ टि)।
 विउसवण देखो विउसमण (पएह २, ४—पत्र १३१)।
 विउसविय देखो विओसविय (ठा ६—पत्र ३७०)।
 विउसिज्जा देखो विओसिज्जा (आचा १, ६, २, २)।
 विउसिरणया देखो विउसरणया (राय १२८)।
 विउस्स मक [वि + उश्] विशेष बोलना। विउस्सति (सूत्र १, १, २, २३)।
 विउस्स अक [विद्वस्य्] विद्वान् की तरह आचरण करना। विउस्सति (सूत्र १, १, २, २३)।
 विउस्सग्ग देखो विओसग्ग (भग १, ६, उत्त ३०, ३०)।
 विउस्सित्त वि [व्युत्सित, व्युत्सिक्त] अभिनिविष्ट, कदाग्रह-युक्त (सूत्र १, १, १, ६)।
 विउस्सिय वि [व्युपित] विशेष रूप से रहा हुआ (सूत्र १, १, २, २३)।

विउस्सिय वि [व्युच्छिद्य] विविध तरह से आश्रित, 'ससारं ते विउस्सिया' (सूत्र १, १, २, २३)।
 विउह सक [व्यूह्] प्रेरणा करना। सहु विउहित्ताण (दम ५, १, २२)।
 विउह वि [विबुध] १ परिदत, विद्वान्। २ पु. देव, सुर (ह १, १७७)। देखो विबुह।
 विऊरिअ वि [दे] नष्ट, नाश-प्राप्त (दे ७, ७२)।
 विऊसिर सक [व्युत् + सृज्] परित्याग करना, 'विऊसिरे विन्नु अगारवण' (आचा २, १६, १)।
 विऊह पु [व्यूह्] रचना-विशेष (पचा ८, ३०)।
 विएअ वि [विनेजस्] महान् प्रकाश, 'अचैतविएएणवि गय्याण ए एणवडति सक्कपा। विज्जुज्जुओ बहलत्तेण मोहेइ अचटोइ' (गड्ड)।
 विएऊण थ [दे] चुनकर, 'सुयसागरा विएऊण जेण सुययणमुत्तम दिएण' (पएण १—पत्र ४)।
 विएस पुं [विदेश] १ देशान्तर, परदेश (सिरि ४६७ महा)। २ कुत्सित ग्राम, खराब गाव। ३ दन्वन-स्थान (गा ७६)।
 विओअ पु [वियोग] जुदाई, विछोह, विरह (स्वप्न ६३, अग्नि ४६, हे १, १७७, सुर ४, १५२, महा)।
 विओइअ वि [वियोजित] जुदा किया हुआ (से ६, ७१, गा १३२, स ६८, सुर १५, २१७)।
 विओग देखो विओअ (सुर २, २१५ ४, १५१, महा)।
 विओगिय वि [वियोगित] वियोग-प्राप्त (धम्मवि १३१)।
 विओज सक [वि + योजय्] अलग करना। विओजयति (सूत्र १, ५, १, ६६)।
 विओजय वि [वियोजक] वियोग-कारक (स ७५०)।
 विओदर पु [वृकोदर] भीमसेन, एक पाण्डव (नाट—वेणी ३६)।
 विओयण न [वियोजन] वियोग, विछोह (सुर ११, ३२)।

वारुण न [वारुण] १ जल, पानी, 'निम्मल-वारुणमंडलमंडिअससिचारपाणसुपवेसे' (सिरि ३६१)। २ वि. वरुण-सवन्वी (पठम १२, १२७, सुर ८, ४५, महा)। ३ त्व न [वारु] वरुणाधिष्ठित अन्न (महा)। ४ पुर न [पुर] नगर-विशेष (इक)।

वारुणी स्त्री [वारुणी] १ मदिरा, सुरा, दारु (पात्र, से २, १७, सुर ३, ५५, परह २, ५—पत्र १५०)। २ लता-विशेष, इन्द्र-वारुणी, इन्द्रायन (कुमा)। ३ पश्चिम दिशा (ठा १०—पत्र ४७८, सुपा २५५)। ४ भगवान् सुविचिनाय की प्रथम शिष्या का नाम (सम १५२, पव ६)। ५ एक दिक्कु-मारी देवी (इक)। ६ कायोत्सर्ग का एक दोष—१ निष्पन्न होती मदिरा की तरह कायोत्सर्ग में 'बुड-बुड' आवाज करना। २ कायोत्सर्ग में मतवाला की तरह डोलते रहना (पव ५)।

वारुया } स्त्री [दे] हस्तिनी, हथिनी (स ७३५, वारुया } ६४)।

वारेज्ज देखो वारिज्ज (स ७३४)।

वारेयन्व देखो चार = वारय्।

वाल सक [वाल्य्] १ मोड़ना। २ वापस लौटाना। वानइ, वालेइ (हे ४, ३३०, भवि, सिरि ४४२)। कवक वालिज्जत (सुर ३, १३६)। संक्र. वालेऊण (महा)।

वाल पु [व्याल] १ सर्प, साँप (गड्ड, णाया १, १ टी—पत्र ६, श्रौप)। २ दुष्ट हाथी (सुर १०, २१६, चेइय ५८)। ३ हिंसक, पशु, श्वापद (णाया १, १ टी—पत्र ६, श्रौप)। देखो विआल = व्याल।

वाल न [वाल] १ एक गोत्र, जो कश्यप-गोत्र की एक शाखा है। २ पुत्री उस गोत्र में उत्पन्न (ठा ७—पत्र ३६०)।

वाल देलो वाल = वाल (श्रौप, पात्र)। १ य वि [ज] केशों से बना हुआ (पठम १०२, १२१)। २ वीयणी स्त्री [वीजनी] १ चामर 'पच रायकउहाई, त जहा—खग छत्तं उफेस वाहणाओ वालवीर्या' (श्रौप)। २ छोटा व्यंजन—पखा, 'सियचामरवाल-वीयणीहि वीइजमाणी' (णाया १, १—

पत्र ३२; सूत्र १, ६, १८)। ३ हि पु [वि] वही अर्थ (पात्र, सुपा २८१)।

०वाल देखो पाल = पाल (काल, भवि, कुमा १, ६६)।

वालफोस न [दे] कनक, सोना (दे ७, ६०)।

वालग न [वालक] पात्र-विशेष, गौ आदि के बालों का बना हुआ पात्र (आचा २, १, ८, १)।

वालगपोतिया } स्त्री [दे] देखो वालग-
वालगपोड्या } पोइआ (सुज्ज ४—पत्र ७०, उत्त ६, २४, सुख ६, २४)।

वालग न [वालन] लौटाना (सुर १, २४६)।

वालप न [दे] पुच्छ, दुम, पूँछ (दे ७, ५७)।

वालय पु [वालक] गन्ध-द्रव्य-विशेष (पात्र)।

वालवास पु [दे] मस्तक का आभूषण (दे ५६)।

वालवि पु [व्यालपिन्] मदारी, साँपो को पकड़ने आदि का व्यवसाय करनेवाला, सेंपेरा (परह १, २—पत्र २६)।

वालहिल पु [वालखिल्य] क्रु से उत्पन्न पुलस्त्य कन्या के साठ हजार पुत्र, जो अंगुष्ठ-पर्व के देह-मानवाले थे (गड्ड)। देखो वालिखिल।

वाला पुंस्त्री [वाला] कंगू, अन्न-विशेष, 'संपण्ण वालावल्लरअ' (गा ८२)।

वालि पुं [वालि] एक विद्याधर-राजा, कपिराज (पठम ६, ६, से १, १३)। ०तणअ पुं [तनय] राजा वालि का पुत्र, अगद (से १३, ८३)। ०सुअ पुं [रुत] वही अर्थ (से ४, १२, १३, ६२)।

वालि वि [वालिन्] वक्र, टेढ़ा (से १, १३)।

वालि वि [वालिन्] १ केशवाला। २ पुं कपिराज (अणु १४२)।

वालिअ वि [वालित] मोड़ा हुआ (पात्र, स ३३७)।

वालिआफोस न [दे] कनक, सुवर्ण (दे ७, ६०)।

वालिंद पुं [वालिन्] विद्याधर वंश का एक राजा (पठम ५, ४५)।

वालिखिल पु [वालिखिल्य] एक राजपि (पठम ३४, १८)। देखो वालिहिल।

वालिहाण न [वालधान] पुच्छ, पूँछ (णाया १, ३, उवा)।

वालिहिल देखो वालहिल (गड्ड ३२०)।

वाली स्त्री [दे] वाद्य विशेष, मुँह के पवन में बजाया जाता तृण वाद्य (दे ७, ५३)।

०वाली स्त्री [पाली] रचना विशेष, गाल आदि पर की जाती कस्तूरी आदि की छटा (कप्पु)। देखो पाली।

वालुअ पुं [वालुक] १ परमाधार्मिक देवों की एक जाति, जो नरक-जीवों को तप्त बालुका—बालू में चने की तरह भुनते हैं (सम २६)। २ धूली-सम्बन्धी (उप पु २०५)।

वालुअ } स्त्री [वालुका] धूलि, बालू, रेत, रज
वालुआ } (गड्ड)। ०पुढवी स्त्री [पृथिवी]
तीसरी नरक-पृथिवी (पठम ११८, २)। ०पभा, ०पहा स्त्री [प्रभा] तीसरी नरक-भूमि (ठा ७—पत्र ३८८, इक, अत १५)। ०भा स्त्री [भा] वही अर्थ (उत्त ३६, १५७)।

वालुं न [दे] पक्वान्न-विशेष, एक तरह का खाद्य, 'खीरदहिपूवकट्टरलमे गुडसण्णिवडग-वालु के' (पिंड ६३७)।

वालुं न [वालुङ्क] ककड़ी, खीरा (अनु ६, कुप ५८)।

वालुंकी } स्त्री [वालुङ्की] ककड़ी का गाछ
वालुकी } (गा १०, गा १-अ)।

वालुगं देखो वालुअ (स १०२)।

वाव सक [वि + आप्] व्याप्त करना। वावेइ (हे ४, १४१)।

वाव अ [वाव] अथवा या (विगे २०२०)।

वाव पुं [वाप] वपन बोना (दे ६, १२६)।

वावइज्ज देखो वावज्ज। वावइज्जामि (स ७४१)।

वावफ अक [वृ] श्रम करना। वावफइ (हे ४, ६८)।

वावफिर वि [वृ + णि] श्रम करनेवाला (कुमा)।

वावज्ज अक [वा + ज्] मर जाना। वावज्जति (भग)।

विकच वि [विकच] विकसित, प्रफुल्ल (दे ७, ८६) ।
 विवट्ट सक [वि + कृन्] काटना । वक्र.
 विकट्ट (सथा ६) ।
 विकट्टिय वि [विकट्ट] काटा हुआ (तदु ४४) ।
 विकट्ट देखो विअट्ट (राज) ।
 विकड्ड सक [वि + कृप्] खीचना ।
 विकड्ड (पएह १, १—पत्र १८) । वक्र.
 विकड्डमाण (उवा) ।
 विकट्ट देखो विकट्ट । विकट्टति (सूत्र १, ५, २, २), विकट्टाहि (पएह १, १—पत्र १८) ।
 विकट्टु वि [विकट्ट] विक्षेपक, विनाशक,
 'अप्या कत्ता विकत्ता य दुक्खाण य सुहाण य' (उत्त २०, ३७) ।
 विकट्ट देखो विकट्ट । विकट्टय, विकट्टयसि
 (उव, कुप्र १२५) । वक्र. विकट्टयंत (सुपा ३१६) ।
 विकट्टयण न [विकट्टयण] १ प्रशसा, श्लाघा ।
 २ वि प्रशमा-कर्ता (पुष्प ३३०, धर्मवि ३६) ।
 विकट्टयणा लो [विकट्टयणा] प्रशसा, श्लाघा
 (पिंड १२८) ।
 विकट्टप देखो विअट्ट (कस, पचमा) ।
 विकट्टपण न [विकट्टपण] छेदन, काटना;
 'पम्भोउ(पउ)लण-विकट्टपणाणि य' (पएह १, १—पत्र १८) ।
 विकट्टपणा. देखो विअट्टपणा (एगाया १, १६—पत्र २१८) ।
 विकट्टपिय देखो विगट्टपिअ (राज) ।
 विकट्ट देखो विगय = विकट्ट (पएह १, १—
 पत्र २३, १, ३—पत्र ४५) ।
 विकट्ट देखो विकच (पिंग) ।
 विकट्ट सक [वि + कृ] विकार पाना । कवक.
 विकीरत (अच्छु ४७) ।
 विकट्ट न [विकट्ट] विक्षेपण, विनाश,
 'कम्मरयविकट्टणकर' (एगाया १, ८—पत्र १५२) ।
 विकट्ट देखो विगराल (दे, राज) ।
 विकल देखो विअल = विकल, 'कला अविकला
 तुज्ज' (कुप्र ८, सिरि २२३, पंचा ६, ३६) ।
 देखो विगल = विकल ।

विकस देखो विअस । विकसइ (पड्) ।
 विकसिय देखो विअसिअ (कण्) ।
 विकहा देखो विगहा (सम ४६) ।
 विकारिण वि [विकारिन्] विकार-युक्त,
 'वालो अविकारिणो अबुद्धोओ' (पउम २६, ६०) ।
 विकासर देखो विआसर (हे १, ४३) ।
 विकिड देखो विगड = विकृति (विसे २६६८) ।
 विकिचण देखो विगिचण (ओषमा २०६
 टी) ।
 विगिचणया देखो विगिचणया (ओषमा
 २०६ टी, ठा ८ टी—पत्र ४४१) ।
 विकिट्ट वि [विकिट्ट] १ उत्कृष्ट, 'विकिट्टत-
 वसोसियगो' (महा) । २ न लगातार चार
 दिनों का उपवास (सवोष ५८) । देखो
 विगिट्ट ।
 विकिण सक [वि + क्री] देचना । विकिणइ
 (हे ४, ५२) ।
 विकिणण न [विकिणण] विक्रय, देचना
 (कुमा) ।
 विकिणण वि [विकिण] १ व्याप्त, भरा हुआ
 (भग) । २—देखो विइण, विकिन्न =
 विकीण (दे) ।
 विकिदि देखो विगइ = विकृति (प्राकृ १२) ।
 विकिन्न वि [विकिण] १ आकृष्ट (पएह १,
 १—पत्र १८) । २ देखो विइण = विकीण
 (पएह १, ३—पत्र ४५) ।
 विक्रिय देखो विगिय (ओषमा २८६ टी) ।
 विकिर अक [वि + कृ] शिखरना । २ सक
 फेंकना । ३ हिलाना । कवक. विडज्जत,
 विकिरिज्जमाण (गड ३३४, राज) ।
 विकिरण देखो विकरण (तदु ४१) ।
 विकिरिया लो [विकिरिया] १ विविध क्रिया ।
 २ विशिष्ट क्रिया (राजा) । देखो विकिरिया ।
 विकीण देखो विकिण । विकीणइ, विकीणए
 (पड्) ।
 विकीरत देखो विकर ।
 विकुच्छिअ वि [विकुत्तिस] खराब, दुष्ट
 (भवि) ।
 विकुज्ज सक [विकुज्जय] कुज्ज करना,
 दवाना । सक. विकुज्जिय (आचा २, ३,
 २, ६) ।

विकुप्प अक [वि + कुप्] कोप करना ।
 विकुप्पए (गा ६६७) ।
 विकुच्च देखो विउच्च = वि + कृ, कुर्व् ।
 विकुच्चति (पि ५०८) । भूका विकुच्चि
 (पि ५१६) । भवि. विकुच्चिसति (पि
 ५३३) । वक्र. विकुच्चमाण, (ठा ३, १—
 पत्र १२०) ।
 विकुस पु [विकुस] वलज आदि गृण
 (ओप, एगाया १, १ टी—पत्र ६) ।
 विकूड सक [वि + कूटय्] प्रतिघात करना ।
 विकूडे (विसे ६३३) ।
 विकूण सक [वि + कूणय्] घृणा से मुह
 मोहना । विकूणइ (विवे १०६) ।
 विकोअ पु [विकोच] विस्तार, फैलाव
 (धर्मस ३६५, भग ५, ७ टी—पत्र २३६) ।
 विकोच देखो विगोव, 'जो पवयण विकोवइ
 सो नेओ दोहससारी' (चैड्य ८३०) ।
 विकोचण न [विकोचण] विकाम, प्रसार
 फैलाव, 'सोसमइविकोचणइ' (पिंड ६७) ।
 विकोचणया लो [विकोचणया] विपाक,
 'इ दिअत्यविकोचणयाए' (ठा ६—पत्र
 ४४६) ।
 विकोचिय वि [विकोचि] कुशल, निपुण
 (पिंड ४३१) ।
 विकोस वि [विकोश] कोश-रहित (तदु
 २०) ।
 विकोस } अक [विकोशय्] १ कोश
 विकोसाय } रहित होना, विकसना । २
 फैलना । विकोसइ (हे ४, ४२) । वक्र.
 विकोसायत (पएह १, ४—पत्र ७८) ।
 विकोसिअ वि [विकोशित] १ विकसित
 (कुमा) । २ कोश-रहित, नगा (एगाया १,
 ८—पत्र १३३) ।
 विकस सक [वि + क्री] देचना । वक्र. विकसंत
 (पउम २६, ६) । कवक. विकसायमाण (दस
 ५, १, ७२) ।
 विकसअ पु [विकसय] देचना (भमि १८५,
 गड ३ सं ४६) ।
 विकस देखो विकव (पड्) ।
 विकइ वि [विकयिन्] बेचनेवाला (दे २,
 ६८) ।

२०१)। °सवण न [°भवन्] वही ग्रथ (महा)। °रेणु पु [°रेणु] सुगन्धी रज (श्रीप)। °हृन् न [°हृन्] शयन-गृह (सुर ६ २७ सुपा ३१२ भवि)।

वास पु [व्यास] १ ऋषि-विशेष, पुराण-कर्ता एक मुनि (हे , ५, कप्प)। २ विस्तार (भग २, ८ टी)।

वास न [वासस्] वस्त्र, कपडा (पात्र, वज्जा १६२, भवि)।

°वाम देखो वाम = पाश (गउड)।

°वास देखो वाम = पाश (पाक ३०, गउड)।

वासंग पु [वासङ्ग] आसक्ति, तत्परता, 'वाहे सा पडिबुद्धा विचं व मोत्तूण विमय-वासंग' (उप १३१ श्री कुप ११८, उप पृ १२७)।

वामठ } (ग्र) पु [वसन्त] छन्द का एक
वासत } भेद (पिग १६३, १६३ टि)।

वासत पु [वर्षान्त] वर्षा-काल का अन्त-भाग (उप ४८८)।

वासतिअ वि [वासन्तिअ] वसन्त सम्बन्धी (मै ३)।

वासन्तिअ ; स्त्री [वामन्तिका, °न्ती] लता-वामनिआ ; विशेष (श्रीप, कप्प, कुमा, परण वानती) १—पत्र ३२, एया १, ६—पत्र १६०, परह १, ४—पत्र ७६)।

वागदी स्त्री [दे] कुन्द का पुष्प (दे ७, ५५)।

वामग वि [वामग] १ रहनेवाला (उप ७६८ टी)। २ वासना-कर्ता, मस्कारावायक (धर्म ३२६)। ३ शब्द करनेवाला। ४ पु द्वीन्द्रिय आदि जन्तु (आचा)।

वामण न [दे] पात्र, वरतन, गुजराती मे 'वामण', 'दिट्ट च पयत्तट्टानिय चदणनामं-किय हिरणवासण' (म ६१, ६२)।

वामण न [वासन] वामित करना (दसनि ३, ३)।

वासणा स्त्री [वासना] सम्कार (धर्म ३२६)।

°वासणा स्त्री [दर्शन] अवलोकन, निरीक्षण (विसे १६७७, उप ४६७)। देखो वासणया।

वामय देखो वासग। °मज्जा स्त्री [°सज्जा] नायिका का एक भेद, वह नायिका जो नायक की प्रतीक्षा में सज घन कर बैठी हो (कुमा)।

वासर पुन [वासर] दिवस, दिन (पात्र, गउड, महा)।

वासव पु [वासव] १ इन्द्र, देव-पति (पात्र, सुपा ३०५, जेदा ५८०)। २ एक राजा-कुमार (विग १, १—पत्र १०३)। °केउ पु [°केतु] हरिद्वार का एक राजा, राजा जनक का पिता (पत्र २१, ३२)। °दत्त पु [°दत्त] विजयपुर नगर का एक राजा (विग २ ४)। °दत्ता स्त्री [°दत्ता] एक आख्यायिका (राज)। °वणु पुन [वनुप्] इन्द्र धनुष (कुप ४५६)। °नगर न [°नगर] अमरावती, इन्द्र-नगरी (सुपा ६०६)। °पुरी स्त्री [°पुरी] वही अथ (उप पृ १७६)। °सुअ पु [°सुत] इन्द्र का पुत्र, जयन्त (पात्र)।

वासवन्ता स्त्री [वासवन्ता] राग नंद प्रयोत की पुत्री और उदयन—वीणावत्तराज की पत्नी (उत्तनि ३)।

वामवार पु [दे] १ तुरग, घोडा (दे ७, ५६)। २ धान, कुत्ता, 'विट्ठालिजइ गगा कयाइ कि वामवारहि' (वेद्य १३४)।

वामवाल पु [दे] धान, कुत्ता (दे ७, ६०)।

वासस न [वासस्] वस्त्र, कपडा, 'कुमोयणा कुवामसा' (परह १, २—पत्र ४०)।

वाना देखो वरिना (कुमा, पात्र, नुर २, ७८, गा २०१)। °रन्ति स्त्री. देखो वरिसा रत्त (हे ४, ३६५)। °वास पु [°वास] चतुर्मास में एक स्थान में किया जाता निवाम (श्रीप, काल, कप्प)। °वासिग वि [°वापिअ] वर्षाकाल सबन्धी (आचा २, २, २, ८, ६)। °हू पु [°भू] मेक, मेढक (दे ७, ५७)।

वासाणिश स्त्री [द वासनिअ] वनस्पति-विशेष (सूत्र २, ३, १६)।

वासाणी स्त्री [दे] रथ्या, मुहल्ला (दे ७, ५५)।

वामि वि [वासिन्] १ निवाम करनेवाला, रहनेवाला (सूत्र १, २, ६, उवा, सुपा ६१८, कुप ४६, श्रीप)। २ वासना-कारक, सस्कार-स्थापक (विमे १६७७)।

वासि स्त्री [वासि] वसूला, बढई का एक अन्न—श्रीजार, 'न हि वामिबडईण इह अभेदो कहचिदवि' (धर्म ४८६)। देखो वासी।

वासिक } वि [वापिअ] वर्षाकाल-भावी
वालिअ } (सुज १२—पत्र २१६)।

वासिट्ट न [वाशिअ] १ गोत्र-विशेष (ठा ७—पत्र ३६०, कप्प, सुज १८, १६)।

२ पुत्री. वाशिअ गोत्र में उत्पन्न (ठा ७)। स्त्री °ट्टा, °ट्टी (कप्प पत्र १४, २६)।

वासिट्टिया स्त्री [वाशिअिया] एक जैन मुनि-शाखा (कप्प)।

वासित्तु वि [वर्षिअ] वरमनेवाला (ठा ४, ४—पत्र २६६)।

वासिअ } वि [वासित्त] १ वसाया हुआ,
वासिय } निवामिन (मोह २१)। २ वामी
रखा हुआ (अन्न आदि) (सुपा १२, ५३२)। ३ सुगन्धित किया हुआ (कप्प, पव १३३, महा)। ४ भावित, सम्कारित (आव)।

वासी स्त्री [वासी] वसूला, बढई का एक अन्न (परह १, १, पत्र ४४, ७८, कप्प; सुर १, २८, श्रीप)। °सुह पु [°सुख] बसूले के तुल्य मुँहवाला एक तरह का कीट, द्वीन्द्रिय जन्तु की एक जाति (उत्त ३६, १३६)।

वासुड } पु [वासुकि] एक महा-नाग,
वासुगि } संपराज (मै २, १३, गा ६६, गउड, ती ७, कुमा; सम्मत ७६)।

वासुदेव पु [वासुदेव] १ श्रीकृष्ण, नारायण (परह १, ४—पत्र ७२)। २ अर्ध-चक्रवर्ती राजा, त्रिखण्ड भूमि का अधीश (सम १७, १५२, १५३, अत)।

वासुपुज पु [वासुपुज] भारतवर्ष में उत्पन्न बारहवें जिन भगवान् (सम ४३, कप्प, पडि)।

वासुली स्त्री [दे] कुन्द का फूल (दे ७, ५५)।

वाह सक [वाहय] वहन कराना, चलाना। वाहइ, वाहेइ (भवि, महा)। कवकू. वाहिज्जमाण (महा)। तेअ तिउ (महा)। कू वाह, वाहिग (ह २, ७८ आचा २, ४, २, ६)।

वाह पुत्री [व्याध] लुब्धक, वहेलिया (ह १, १८७, पात्र)। स्त्री. °ही (गा १२१, पि ३८५)।

वाह पुं [वाह] १ अन्न, घोडा (पात्र, सूत्र १, २, ३, ५, उप ७२८ टी, कुप १४७, हम्मोर १८)। २ जहाज, नौका, 'वाहोडुवाइ तरण' (विमे १०२७)। ३ मारवहन, बोक डोना (सूत्र १ ३, ४, ५)। ४ परिमाण-विशेष,

विक्खेविया स्त्री [विक्खेपिका] व्याखेप,
विक्षेप (वव ६) ।
विक्खोड सक [दे] निन्दा करना, गुजराती
मे 'वखोडवु' । विक्खोडेह (सिरि ८२५) ।
विखण्डिय वि [विखण्डित] खण्डित किया
हुआ (पउम २२, ६२) ।
विग देखो विअ = वृक (परह १, १—पत्र
७, सण, णाया १, १—पत्र ६५) ।
विगइ स्त्री [विकृति] १ विकार-जनक घृत
आदि वस्तु (णाया १, ८—पत्र १२२,
उव, स ७२, आ २०) । २ विकार (उत्त
३२, १०१) ।
विगइ स्त्री [विगति] विनाश (विसे २१४६) ।
विगइगाल वि [विगताङ्गार] राग-रहित
(ओघ ५७६) ।
विगइच्छ वि [विगतेच्छ] इच्छा-रहित,
नि स्पृह (उप १३० टी, ६१३) ।
विगच देखो विगिच । संकृ विगचिं,
विगचिऊण (वव २, संवोध ५७) ।
विगचण देखो विगिचण, 'काए कङ्कयणं वज्जे
तहा खेलविगंचण' (संवोध ३) ।
विगचिअ देखो विइचिअ (स १३५ टि) ।
विगच्छ अक [वि + गम्] नष्ट होना ।
वकृ. विगच्छत (सम्म १३४) ।
विगज्ज देखो विगह = वि + ग्रह् ।
विगड देखो विअग = विकट (परह १, ४—
पत्र ७८, औप) ।
विगड देखो विअड = विवृत (ठा ३, १ टी—
पत्र १२२) ।
विगण सक [वि + गणय्] १ निन्दा
करना । २ घृणा करना । कवकृ विगणिज्जत
(तंदु १४) ।
विगत्त सक [वि + कृत्] काटना, छेदना ।
सकृ. विगत्तिऊणं (सूअ १, ५, २, ८) ।
विगत्त वि [विकृत्त] काटा हुआ, छिन्न
(परह १, १—पत्र १८) ।
विगत्तग वि [विकर्तक] काटनेवाला (सूअ
२, २, ६२) ।
विगत्तणा स्त्री [विकर्तना] छेदन (उव) ।
विगत्यय वि [विकर्तय] प्रशसा करनेवाला,
आत्मश्लाघा करनेवाला (भवि) ।

विगप्प देखो विअप्प = वि + कल्पय् । वकृ.
विगप्पयत, विगप्पमाण (सुर ६, २२४,
३, १२४) ।
विगप्प पु [विकल्प] १ एक पक्ष में प्राप्ति,
'वसहो विगप्पेण' (पंच ३, ४४) । २
देखो विअप्प = विकल्प (णाया १, १६—
पत्र २१८, सुर ३, १०२, ४, २२२, सुपा
१२६, जी २५) ।
विगप्पण देखो विअप्पण (उत्तर २३, ३२,
महा) ।
विगप्पिअ वि [विकल्पित] १ उत्प्रेक्षित,
कल्पित (पव २, उव) । २ चिन्तित, विचारित
(पव १४५) । ३ काटा हुआ, छिन्न, 'हृत्यपा-
यपडिच्छिन्नं कन्ननासविगप्पिअ' (दस ८, ५६) ।
विगम पुं [विगम] विनाश (सुर ७, २२६,
१२, १६) ।
विगय वि [विकृत] विकार-प्राप्त (णाया १,
२—पत्र ७६, १, ८—पत्र १३३) ।
विगय वि [विगत] १ नाश-प्राप्त, विनष्ट
(सम्म १३४, विसे ३३७७, पिड ६१०) ।
२ पु. एक नरक-स्थान (देवेन्द्र २६) । ३ धूम
वि [°धूम] द्वेप-रहित (ओघ ५७६) ।
°सोग पु [°शोक] एक महा-ग्रह, ज्योतिष्क
देव-विशेष (ठा २, ३—पत्र ७८), देखो
वीअ-सोग । °सोगा स्त्री [°शोका] विजय-
विशेष की एक नगरी (ठा २, ३—पत्र ८०) ।
विगरण न [विकरण] परिष्ठापन, परित्याग
(कस) ।
विगरह सक [वि + गर्ह] निन्दा करना ।
वकृ विगरहमाण (सूअ २, ६, १२) ।
विगराल वि [विकराल] भीषण, भयकर
(सुपा १८२, ५०५, सण) ।
विगल सक [वि + गल्] टपकना, घूना ।
विगलह (पड्) ।
विगल पु [विकल] १ विकलेन्द्रिय—दो,
तीन या चार ज्ञानेन्द्रियवाला जन्तु (कम्म ३,
१६, ४, ३, १५, १६, जी ४१) । २ देखो
विअल = विकल (उव, उप पृ १८१, पचा
१४, ४७) । ३ °देस पु [°देश] नय-वाक्य
(अज्ज ६२) ।

विगलिंदिय पु [विकलेन्द्रिय] दो, तीन या
चार इन्द्रियवाला जन्तु (ठा २, २, ३, १—
पत्र १२१) ।
विगम अक [वि + कम्] खिलना, फूटना ।
विगसंति (तंदु ५३) । वकृ. विगसत (णाया
१, १—पत्र १६) ।
विगह सक [वि + ग्रह] १ लड़ाई करना ।
२ वर्ग-मूल निकालना । ३ ममास आदि का
समानार्थक वाक्य बनाना । संकृ. 'भूमो भूमो
विगज्ज मूलतिग' (पचा २, १८) ।
विगह देखो विगह, 'हागदवविगहिए विगह-
मुक्के' (गच्छ २, ३३) ।
विगहा स्त्री [विकथा] शास्त्र-विरुद्ध वार्ता,
स्त्री आदि की अनुपयोगी बात (भग, उव, सुर
१४ ८८, सुपा २५२ गच्छ १, ११) ।
विगाढ वि [विगाढ] १ विशेष गाढ, अतिशय
निविड (उत्त १०, ४ टी) । २ चारो ओर से
व्याप्त (राज) ।
विगाण न [विगाण] १ वचनीय, लोकापवाद
(दे ३, ३) । २ विप्रतिपत्ति, विरोध (धम्मसं
२६६, चेइय ७५६) ।
विगार पु [विकार] विकृति, प्रकृति का अन्त्यया
परिणाम (उप ६८६ टी, विसे १६८८) ।
विगारि वि [विकारिण] विकृत होनेवाला
(पिड २८०, पउम १०१ ४८) ।
विगाल देखो विआल = विकाल (सुर १,
११७) ।
विगालिय वि [विगालित] विलम्बित, प्रती-
क्षित, 'एतियमेत काल विमा (११)लियं
जेण आसाए' (सुर ६ २३) ।
विगाह सक [वि + गाह] १ अवगाहन
करना । २ प्रवेश करना । सकृ. विगाहिआ
(सम ५०) ।
विगिच सक [वि + चिच्] १ पृथक्
करन, अलग करना । २ परित्याग करना ।
३ विनाश करना । विगिचइ, विगिचए,
विगिचंति (आचा, कस, आवक २६२ टी,
सूअ १, १, ४, १२, पिड ३६६), विगिच
(सूअ १, १३, २१ उत्त ३, १३, पिड
३६५) । वकृ. विगिचत, विगिचमाण
(आवक २६० टी, आचा) । सकृ. विगिचि-
ऊणं, विगिचित्ता (पिड ३०५, आचा) ।

विअ सक [विद्] जानना । वियसि (विसे १६००) । भवि. विच्छं, वेच्छ (पि ५२३, ५२६, प्राप्, हे ३, १७१) । वक्क. विअंत (रंभा) । संक. विइत्ता, विइत्ताणं, विइत्त (आचा, दन १०, १८) ।

विअ न [वियन्] आकाश, गगन (से ६, ४८) । °धर वि [°धर] आकाश-विहारी । °धरपुर न [°धरपुर] एक विद्याधर-नगर (इक) ।

विअ वि [विद्] १ जानकार, विद्वान्, 'तं च भित्तू परित्राय विय तेसु न मुच्छए' (सूअ १, °, ४, २) । २ विज्ञान, जानकारी (राज) ।

विअ देखो इव (हे २, १८२, प्राप्, स्वप्न २७, कुपा, पठम ११, ८१, महा) ।

विअ पुं [वृक] श्वापद जन्तु-विशेष, भेडिया (नाट—उत्तर ७१) ।

विअ पु [व्यय] विगम, विनाश, 'पचविहे छेयणे पघत्ते, तं जहा—उप्पाछेयणे वियच्छे दणे' (ठा ५, ३—पत्र ३४६) ।

विअ वि [विगत] विनष्ट, मृत । °आ छी [°आ] मृत आत्मा का शरीर (ठा १—पत्र १६) ।

विअ देखो अविअ = अपिच (जीव १) ।

विअड वि [विजयिन्] जिसकी जीत हुई हो वह (मा २२) ।

विअइ छी [विगति] विगम, विनाश (ठा १—पत्र १६) ।

विअइ देखो विगइ = विकृति (ठा १—पत्र १६, राज) ।

विअइत्ता देखो विअत्त = वि + वत्तय् ।

विअइल पु [विचकिल] १ पुष्प-बुल विशेष । २ न पुष्प-विशेष (हे १, १६६, कप्प, वा २३, कुमा) । ३ वि. विकच, विकसित (सण) ।

विअओलिअ वि [दे] मलिन (दे ७, ७२) ।

विअग सक [व्यङ्ग्य] अग से हीन करना—हाथ, कान आदि को काटना । वियगेइ (गाया १, १४—पत्र १८५) ।

विअग वि [व्यङ्ग] अग हीन, 'वियगमगा' (परह १, १—पत्र १८) ।

विअगिअ वि [दे] निन्दित (दे ७, ६६) ।

विअगिअ वि [व्यङ्गित] खण्डित, छिन्न (परह १, ३—पत्र ४५, टी—पत्र ४६) ।

विअंजण देखो वंजण = व्यञ्जन (प्राक् ३१, सम्म ७२) ।

विअंजिअ वि [व्यञ्जित] व्यक्त किया हुआ, प्रकट किया हुआ (सूअ २, १, २७, ठा ५, २—पत्र ३०८) ।

विअंटूत वि [दे] १ अवरोपित । २ मुक्त (पड १७७) ।

विअति छी [व्यन्ति] अन्त क्रिया । °कारय वि [°कारक] अन्त-क्रिया करनेवाला, कर्मों का अन्त करनेवाला, मुक्ति-साधक (आत्मा १, ८, ४, ३) ।

विअभ अक [वि + जृम्भ्] १ उत्पन्न होना । २ विकसना । ३ जँमाई खाना । विअभइ (हे ४, १५७, पड, भवि) । वक्क. विअंभत, विअभमाण (घात्वा १५२, से १, ४३, गा ४२५, महा) ।

विअभ वि [विदम्भ] निष्कपट, सत्य, 'अया-णय वियंमसुहस्स' (स ६६०) ।

विअभण न [विजृम्भण] १ जँमाई, जम्हाई (स ३३६, सुपा १४६) । २ विकाश । ३ उत्पत्ति (भवि, माल ८४) ।

विअभिअ वि [विजृम्भित] १ प्रकाशित (गा ५६४) । २ उत्पन्न (माल ८६) । ३ न. जँमाई (गा ३५२) ।

विअंसण वि [विवसन] वज्र-रहित, नग्न (प्राक् ३२) ।

विअसय पु [दे] व्याघ्र, बहेलिया (दे ७, ७२) ।

विअक सक [वि + तर्कय्] विचारना, विमर्श करना, मोमासा करना । वक्क. विय-कंत, वियकमाण (मुपा २६४, उप २२० टी) ।

विअक पुछी [वितर्क] विमर्श, मोमासा (भौप, सम्मत १४१) । छी. °क्का (सूअ १, १२, २१, पठम ६३, ६) ।

विअकिय वि [विर्त्ति] विमर्शित, विचारित (सण) ।

विअक्ख सक [वि + ईक्ष्] देखना । वक्क. वियक्खमाण (ओघमा १८८) ।

विअक्खण वि [विचक्षण] विद्वान्, परिणत, दक्ष (महा, प्रासू ४१, भवि. नाट—वेणी २४) ।

विअग्ग वि [व्यग्र] व्याकुल (प्राक् ३१) ।

विअग्घ देखो वग्घ = व्याघ्र, '—महिसवि (?विय)ग्घल्लमलदीविया—' (परह १, १—पत्र ७, पि १३४) ।

विअग्घ पु [वैयाघ्र] व्याघ्र-शिशु (परह १, १—पत्र १८) ।

विअज्जास देखो विवज्ज, स (नाट—मृच्छ ३२६) ।

विअट्ट सक [विस + वट्] अप्रमाणित करना, असत्य सावित करना । विअट्टइ (हे ४, १२६) ।

विअट्ट अक [वि + वृत्] विचरना, विहरना । वक्क. 'गिम्हसमयति पत्ते वियट्ट-माणे (सु?) वणेमु वणकरेणुविविहदिएण-कयपंसुघाओ तुम' (गाया १, १—पत्र ६५) ।

विअट्ट वि [विट्टत्त] निवृत्त, व्यावृत्त, 'विअ-ट्टच्छमेणं जिणेण' (सम १, भग, कप्प, भौप, पडि) । °भोइ वि [°भोजिन्] प्रतिदिन भोजन करनेवाला (भग) ।

विअट्ट पुं [विचर्त] प्रपञ्च (स १७८) ।

विअट्ट } वि [विसन्नदित] संवाद-रहित, विअट्टिअ } अप्रमाणित, 'विअट्ट विसवइअ' (पाम्म, कुमा ६, ८८) ।

विअट्ट वि [विकृष्ट] १ दूर-स्थित । २ क्रिवि. दूर (गाया १, १ टी—पत्र १) ।

विअड सक [वि + कटय्] १ प्रकट करना । २ आलोचना करना । वियडेइ (ठा १० टी—पत्र ४८५) । वक्क. वियडिज्जंत (राज) ।

विअड वि [व्यर्द्ध] लज्जित, लज्जा-युक्त (गाया १, ८—पत्र १४३) ।

विअड वि [विट्टन] खुला हुआ, अनावृत (ठा ३, १—पत्र १२१, ५, २—पत्र ३१२) । °गिह न [°गृह] चारों तरफ खुला घर, स्थान-मण्डपिका (कप्प, कस) । °जाण न [°यान] खुला वाहन, ऊपर से खुला यान (गाया १, १ टी—पत्र ४३) ।

विचिंतण न [विचिन्तन] विचार, विमर्श (श्रु ६)।

विचिंतिअ वि [विचिन्तित] विचारित (सुर ८, ३)।

विचिंतिर वि [विचिन्तयित्] विचार-कर्ता (श्रा १२, सण)।

विचिक्की छो [दे] वाद्य-विशेष (राय ४६)।
विचिगिच्छा छो [विचिकित्सा] सशय, धर्म-कार्य के फल की तरफ संदेह (सम्मत्त ६५)।

विचिद्धिअ वि [विचेष्टित] १ जिसकी कोशिश की गई हो वह (सुपा ४७०)। २ न चेष्टा, प्रयत्न (उप ३२० टी)।

विचिण १ सक [वि + चि] १ खोज
विचिण्ण १ करना। २ फूल आदि चुनना।
विचिण्णति (पि ५०२)। वक्र विचिण्णंत (मा ४६)।

विचित्त वि [विचित्र] १ विविध, अनेक तरह का, 'विचित्ततो कम्मोहि' (महा, राय, प्रासू ४२)। २ अद्भुत, आश्चर्यकारक, 'विहिणो विचित्तय जाणिऊण' (सुर १३, ४)। ३ अनेक रंगवाला, शबल (गाया १, ६, कप्प)। ४ अनेक चित्रों से युक्त (कप्प, सुज्ज २०)। ५ पु. पर्वत विशेष (पणह १, ५—पत्र ६४)। ६ वेणुदेव और वेणुदारि नामक इन्द्रों का एक लोकपाल (ठा ४, १—पत्र १६७)। 'कूड पुं [कूट] शीतोदा नदी के किनारे पर स्थित पर्वत विशेष (इक)। 'पक्ख पु [पक्ष] १ वेणुदेव और वेणुदारि नामक इन्द्रों का एक लोकपाल (ठा ४, १—पत्र १६७, इक)। २ चतुरिन्द्रिय जंतु की एक जाति (पणह १—पत्र ४६)।

विचित्ता छो [विचित्रा] ऊर्ध्व लोक में रहनेवाली एक दिक्कुमारी देवी (ठा ७—पत्र ४३७)। २ अधोलोक में रहनेवाली एक दिक्कुमारी देवी (राज)।

विचित्तिय वि [विचित्रित] विचित्रता से युक्त (सण)।

विचुणिद (शी) देखो विचिअ (नाट—मालती १४१)।

विचुन्नण न [विचूर्णन] चूर-चूर करना, टुकड़ा-टुकड़ा करना (द्र ३०)।

विचेयण वि [विचेतन] चैतन्य-रहित, निर्जीव (उप पृ ४६)।

विचेल वि [विचेल] वस्त्र-वर्जित, नगा (पिड ४७८)।

विच्च सक [वि + अय्] व्यय करना। विच्चेइ (ती ८)। देखो विच्च।

विच्च पुंन [दे] व्यूत, बुनने की क्रिया (राय ६२)।

विच्च न [दे. वर्त्मन्] १ वीच, मध्य, 'विच्चम्मि य सज्झाओ कायव्वो परमपणहेल' (पुप्फ ४२७), 'ठिओ अहं कूडकवाडविच्चे' (निसा १६)। २ मार्ग, रास्ता (हे ४, ४२१, कुमा, भवि)।

विच्च सक [दे] समीप में आना। विच्चइ (भवि)।

विच्चवण न [विच्चवन] भ्रंश, विनाश (विसे २६१)।

विचामेलिय वि [वगत्याम्रोडित] १ मिला
मिलन अशों से मिश्रित। २ अस्थान में ही छिन्न हो कर फिर ग्रथित, तोड़ कर सांवा हुआ (विसे ८५५)।

विचाय पुं [वित्याग] परित्याग, 'पूयम्मि वीयरायं भावो विष्फुरइ विसयविच्चाया' (संघोष ८)।

विचिं छो [वाचि] तरंग, कल्लोल (पउम १०६, ४१)।

विच्चु १ देखो विंचुअ (उप ५६३, पि विंचुअ ५०, पणह १—पत्र ४६)।

विच्चुइ छो [विच्युति] भ्रंश, विनाश (विसे १८०)।

विच्चोअय न [दे] उपवान, ओसीसा (दे ७, ६८)।

विच्छं देखो विअ = विद।

विच्छइ सक [वि + छर्दय्] परित्याग करना। वक्र. विच्छइमाण (गाया १, १८—पत्र २३६)। संक्रु विच्छइइत्ता (कप्प)।

विच्छइ पुं [विच्छर्द] १ अदि, वैभव, संपत्ति (पात्र, दे ७, ३२ टी, हे २, ३६, पड्)। २ विस्तार (कुमा, सुपा १६२)।

विच्छइ पुं [दे] १ निवह, समूह (दे ७, ३२, गउड, से २, २, ६, ७२, गा ३८७)।

२ ठाटवाट, सजषण, घूमघाम; 'मह्या विच्छइएण सोहणलगम्मि गुरुपमोएण'। कमलावई उ रत्ना परिणीया' (सुर १, १६६; कुप्र ४१, सम्मत १६३, धर्मवि ८२)।

विन्छइ छो [विन्छर्दि] १ विशेष वमन। २ परित्याग (प्राप्र)। ३ विस्तार, 'निम्मलो केवलाओअलच्छिर्विन्छ' (१च्छ) द्विकारमो (सिरि १०६१)।

विन्छइअ वि [विन्छर्दि] १ परित्यक्त, 'पामुक्कं विन्छइअं अवहत्तिअं उज्झिअं चत्त' (पात्र, गाया १, १, ठा ८, प्रोप)। २ विलिप्त, फँका हुआ (से १०, ४६)। ४ विच्छादित, आच्छादित (हम्मोर १७)।

विन्छइमाण देखो विन्छइ = वि + छर्दय्। विन्छइअ देखो विन्छइअ (नाट—मालती १२६)।

विन्छय वि [विक्षत] विविध तरह से पीड़ित (सूत्र १, २, ३, ५)। देखो विक्खय।

विन्छल देखो विच्चल (पड् ४०)।

विन्छवि वि [विन्छवि] १ विरूप आकृति-वाला, कुडौल (पणह १, ३—पत्र ५४)। २ पुं. एक नरक-स्थान (देवेन्द्र २८)।

विन्छाइय वि [विन्छायित] निस्तेज किया हुआ (सुपा १६६)।

विन्छाय वि [विन्छाय] निस्तेज, कान्ति-रहित, फीका (सुर ४, १०६, कप्प, प्रासू १३७, महा, गउड)।

विन्छाय सक [विन्छायय] निस्तेज करना, 'विन्छाएइ मियं कं तुसारविसो अणुगुणोवि' (गउड)। वक्र. विन्छाअत्त (कप्प)।

विच्छिअ वि [दे] १ पाटित, विदारित। २ विचित, चुना हुआ। ३ विरल (दे ७, ६१)।

विच्छिअ देखो विच्छिअ (उत्त ३६, १४८; पि ५०, ११८, ३०१)।

विच्छिअ सक [वि + छिद्] तोड़ना, अलग करना। विच्छिइइ (पि ५०६)। भवि. विच्छिदिहिंति (पि ५३२)। वक्र. विच्छिइइमाण (भग ८, ३—पत्र ३६५)।

विच्छिण्ण वि [विच्छिन्न] अलग किया हुआ (विपा १, २ टि—पत्र २८, नाट—मुच्छ ८६)।

विअरण न [विनरण] प्रदान, अर्पण, (पंचा ७, ६, उप ५६७ टी. सण) ।

विअरिय वि [विचरित] जिमने विचरण किया हो वह विद्वत (महा), 'विमलोकयम्ह चक्खु जहत्थया दियरिया गुणा तुज्झ' (पिड ४६३) ।

विअल अक [मुज्] मोडना, वक्र करना । विअलइ (घात्वा १५२) ।

विअल अक [वि + गल्] १ गल जाना, क्षीण होना । २ टपकना, फरना । वक्र. विअलत (गा ३६८, मुर ५, १२७) ।

विअल अक [ओजय्] मजबूत होना (संक्षि ३५) ।

विअल वि [विकल] १ हीन, असंपूर्ण (परह १, ३—पत्र ४०) । २ रहित, वर्जित, वन्ध्य (सा २) । ३ विह्वल, व्याकुल, 'विअलुद्धरणमहावा हुवति जइ केवि सप्पुरिसा' (गा २८५) । देखो विगल = विकल ।

विअल सक [विकलय्] विकल बनाना । वियलई (मण) ।

विअल देखो विअड = विकट (से ८, २१) ।

विअल देखो विदल = द्विदल (संघोष ४४) ।

विअलल वि [दे] दीर्घ, लम्बा (दे ७, ३३) ।

विअलिअ वि [विगलित] १ नाश-प्राप्त, नष्ट (मे २, ४५, सण) । २ पतित, टपक कर गिरा हुआ, 'विअलिअ उच्चत' (पाथ) ।

विअल अक [वि + चल] १ झुक्क होना । २ अव्यवस्थित होना, 'खलइ जीहा, मूहवयणु वियल्लइ' (भवि) ।

विअस अक [वि + कस्] खिलना । विअसइ (प्राक ७६, हे ४, १६५) । वक्र. विअसत, विअसमाण (श्रीप, सुपा २०) ।

विअसावय वि [विकासक] विकसित करनेवाला (गडड) ।

विअमाविअ वि [विकासित] विकसित किया हुआ (मुपा २२५) ।

विअसिअ वि [विकसित] विकास-प्राप्त (गा १३, पाथ, मुर २, २२२, ४, ५८, श्रीप) ।

विअह देखो विजह = वि + हा । सक्र. वियहित्तु (आचा १, १, ३, २) ।

विआउआ ओ [विपादिका] रोग-विशेष, विवाई, या वेवाई (दे ८, ७१) ।

विआउरी ओ [विजनयित्री] व्यानेवाली, प्रसव करनेवाली (गाया १, २—पत्र ७६) ।

विआगर देखो वागर । वियागरेइ, वियागरति (आचा २, २, ३, १, सूत्र १, १४, १८), वियागरे, वियागरेज्जा (सूत्र १, ६, २५, वित्ते ३३६, सूत्र १, १४, १६) । वक्र. वियागरेमाण (आचा २, २, ३, १) ।

विआघाय देखो वाघाय (आचा) ।

विआण सक [वि + ज्ञा] जानना, मालूम करना । वियाणइ, विआणति (भग, गा ४८), वियाणासि (पि ५१०), वियाणाहि, वियाणेहि (परण १—पत्र ३६, महा) । कर्म वियाणिज्जइ (सट्ठि १६) । वक्र. वियाणंत, वियाणमाण (श्रीप, उव) । संक्र. वियाणिआ, वियाणिऊण, वियाणिता (दमन्न १, १८, महा, श्रीप, कप्प) । कृ. वियाणियन्त्र (उप पृ ६०) ।

विआण न [विज्ञान] जानकारी, ज्ञान, 'एक्कपि भाय । दुलह जिणमयविहिरिया-सुवियाण' (सट्ठि १६) । देखो विज्ञाण ।

विआण न [वितान] १ विस्तार, फैलाव (गडड १७६, ३८६, ५६२) । २ वृत्ति-विशेष । ३ अवसर । ४ यज्ञ (हे १, १७७, प्राप्र) । ५ पुंन चन्द्रातप, चंदवा, आच्छादन-विशेष (गडड २००, ११८०, हे १, १७७, प्राप्र) ।

विआणग वि [विज्ञायक] जानकार, विज्ञ (उप पृ ११६) ।

विआणण न [विज्ञान] जानना, मालूम करना (स २६७, मुर ३, ७) ।

वियाणय देखो विआणग (मम्म १६०, भग, श्रीप, मुर ६, २१, मण) ।

विआणिअ पि [विज्ञात] जाना हुआ, विदित (स २६७, सुपा ३६१, महा, मुर ४, २१४, १२, ७१, पिग) ।

विआय सक [वि + जनय] जन्म देना, प्रसव करना, 'गुजराती मे 'वियायु', 'वियायड पढमं ज विउपिहे नारी' (उप ६६८ टी) । सक्र. विआय (राज) ।

विआर सक [वि + कारय] विकृत करना । विआरेदि (शौ) (मा ५१) ।

विआर सक [वि + चारय] विचारना, विमर्श करना । विआरेइ (प्राक ७१, भग), वियारिज (सत्त ३६) । वक्र. वियारियत (आ १६) । कवक. वियारिजंत (सुपा १४८) । सक्र. विआरिअ (अभि ४८) । कृ. विआरणिज्ज (आ १४) ।

विआर सक [वि + दारय] फाड़ना, चीरना । विआरे (अप) (पिग) । सक्र. वियारिऊण (श २६०) ।

विआर पु [विआर] विकृति, प्रकृति का मूल रूपवाला परिणाम (हे ३, २३ गडड, मुर ३, २६, प्रासू ४६) ।

विआर पु [विचार] १ तत्त्व-निर्णय (गडड, विचार १, ८ १) । २ तत्त्व-निर्णय के अनुकूल शब्द रचना (जो ५१) । ३ ख्याल, सोच, 'अएणो वक्करकालो अएणो कज्जवि-आरकालो' (कप्प) । ४ दिशा-फरागत के लिए बाहर जाना (पव २, १०१) । ५ गमन की अनुकूलता (पव १०४) । ६ विचरण । ७ अवकाश, 'अतेउरे य दिएणवियारे जाते यावि होत्था' (विपा १, ५—पत्र ६३) । ८ विमर्श, मोमासा । ९ मत, अभिप्राय (भवि) । १० धवल पु [धवल] एक राजा का नाम (उप ७२८ टी, महा) । ११ भूमि ओ [भूमि] दिशा-फरागत जाने का स्थान (कप्प, उप १४२ टी) ।

विआरण न [विचारण] १ विचार करना (सुपा ४६४, सार्ध ६०) । २ वि. विचार करनेवाला, 'जय जिणानाह समत्थवत्थुपरमत्थ-वियारण' (सुपा ५२) । ३ वि. विचरण करनेवाला, 'अंवरतरविआरणिआहि' (अजि २६) ।

विआरण न [विदारण] चीरना, फाड़ना (सार्ध ४१, त २४१) ।

विआरण देखो वागरण (कुप्र २४५) ।

विआरण वि [विदारण] विदारण-संस्कृति, विदारण से उत्पन्न होनेवाला । ओ णिआ (नव ६६) ।

विआरणा ओ [विचारणा] विचार, विमर्श (उप ७२८ टी, स २४७, पचा ११, ३४) ।

२२६, इक)। १६ क्षेत्र-विशेष, महाविदेह वर्ष का प्रान्त-तुल्य प्रदेश (ठा ८—पत्र ४३५, इक, जं ४)। २० उत्तरपं: 'जएण विजएण वद्धावेइ (गाथा १, १—पत्र ३०, औप, राय)। २१ परामव करके ग्रहण करना (कुमा)। २२ विक्रम की प्रथम शताब्दी के एक जैन आचार्य (पउम ११८, ११७)। २३ अभ्युदय (राय)। २४ समृद्धि (राज)। २५ धात की खण्ड का पूर्व द्वार (इक)। २६ कालोद ममुद्र, पुष्करवरद्वीप तथा पुष्करोद ममुद्र का पूर्व द्वार (राज)। २७ रुचक पर्वत का एक कूट (ठा ८—पत्र ४३६, इक)। २८ एक राजकुमार (धम्म ११)। २९ छन्द-विशेष (पिंग)। ३० त्रि जीतनेवाला, 'वरतुरए विहगाहिविजयवेगधरे' (सम्मत्त २१६)। °चरपुर न [°चरपुर] एक विद्याधर-नगर (इक)। °जत्ता स्त्री [°यात्रा] विजय के लिए किया जाता प्रयाण (धर्मवि ५६)। °ढक्का स्त्री [°ढक्का] विजय-सूचक भेरी (सुपा २६८)। °देव पु [°देव] अठारहवीं शताब्दी का एक जैन आचार्य (अजम् १)। °पुर न [°पुर] नगर-विशेष (इक २२३, २२४, ३२६)। °पुरा, पुरी स्त्री [°पुरी] पक्षमावती नामक विजय-क्षेत्र की राजधानी (ठा २, ३—पत्र ८०, इक)। °माण पुं [°मान] एक जैन आचार्य (द्र ७०)। °वत वि [°वन्] विजयी, विजेता (ति १४)। °वत्त न [°वर्त] चैत्य-विशेष (कल्पटिप्पनक)। °वद्धमाण पुन [°वर्धमान] ग्राम-विशेष (विपा १, १)। °वेजयती स्त्री [°वैजयन्ती] विजय सूचक पताका (औप)। °सायर पुं [°सागर] एक सूर्यवंशी राजा (पउम ५, ६२)। °सिंह, °सीह पु [°सिंह] १ मुप्रसिद्ध प्राचीन जैनाचार्य (सुपा ६५८)। २ एक विद्याधर राजकुमार (पउम ६, १५७)। °सूरि पु [°सूरि] चन्द्रगुप्त के समय का एक जैन आचार्य (धर्मवि ४४)। °सेण पुं [°सेन] एक प्रसिद्ध जैन आचार्य जो आम्नदेव सूरि के शिष्य थे (पव २७६—गाथा १५६६)।

विजयता स्त्री [विजयन्ती] १ पक्ष की विजयवर्त, २ आठवीं रात (मुज्ज १०, १४)। २ एक रानी का नाम (उप ७२८ टी)।

विजया स्त्री [विजया] भगवान् शान्तिनाथ की दीक्षा-शिविका (विचार १२६)।

विजया स्त्री [विजया] १ भगवान् अजित-नाथजी की माता का नाम (सम १५१)। २ पाँचवें बलदेव की माता (सम १५२)। ३ आगरक आदि ग्रहों की एक पटरानी (ठा ४, १—पत्र २०४)। ४ विद्या-विदेश (पउम ७, १४१)। ५ पूर्व-रुचक पर रहनेवाली एक दिक्कुमारी देवी (ठा ८—पत्र ४३६)। ६ पाँचवें चक्रवर्ती राजा की पटरानी—स्त्री-रत्न (सम १५२)। ७ विजय नामक देव की राजधानी (सम २१)। ८ वप्रा नामक विजय की राजधानी (ठा २, ३—पत्र ८०, इक)। ९ पक्ष की सातवीं रात (मुज्ज १०, १४)। १० एक श्रेष्ठिनी (सुपा ६२६)। ११ भगवान् विमलनाथजी की शासन-देवी (पव २७, सति १०)। १२ भगवान् सुमतिनाथजी की दीक्षा-शिविका (सम १५१)। १३ एक पुष्करिणी (इक)।

विजल वि [विजल] १ जल-रहित (गउड)। २ न. जल-रहित पक्ष (दस ५, १, ४)। देखो विजल।

विजह सक [वि + हा] परित्याग करना। विजहइ (पि ५७७)। सकृ. विजहित्तु (उत्त ८, २)।

विजहणा स्त्री [विहान] परित्याग (ठा ३, ३—पत्र १३६)।

विजाइय वि [विजातीय] भिन्न जाति का, दूसरी तरह का (उप १२८ टी)।

विजाण देखो विआण = वि + ज्ञा। सकृ. विजाणित्ता, विजाणिय (कप्प)।

विजाणय वि [विजायक] जाननेवाला, विजाणय विज्ञ (आचा, सूत्रनि १४५)।

विजाणुअ वि [विज्ञ, विज्ञायक] ऊपर देखो (प्राकृ १८)।

विजादीअ (शौ) देखो विजाइय (नाट—चैत ८८)।

विजाय न [दे] लक्ष्य, निशाना, 'लख्खं विजाय' (पाअ)।

विजिअ वि [विजित] पराभूत, हारा हुआ (सुर ६, २५, स ७००)।

विजुत्त वि [वियुक्त] विरहित (धम्मस १७४)।

विजुरि (अप) स्त्री [विद्युन्] विजली (पिंग)।

विजेट्ट वि [विज्येष्ट] मध्यम, 'जेट्ट विजेट्टा करिण्टा य' (चेडय १५३)।

विजेतव्व देखो विजय = वि + जि।

विजोज सक [वि + योजय्] वियोग करना, अलग करना। संकृ. विजोजिय (पच ५, १२६)।

विजोजण न [वियोजन] वियोग, विरह (मोह ६८)।

विजोजिअ वि [वियोजिन] जुवा किया हुआ (कुप्र २८८)।

विजोयावइत्तु वि [वियोजयित्तु] वियोजक, अलग करनेवाला (ठा ४, ३—पत्र २३८, २३६)।

विजोहा स्त्री [विजोहा] छन्द-विशेष (पिंग)।

विज्ज अक [विद्] होना। विज्जइ, विज्जए (पड्, कस, भग, महा), विज्जई (सुम १, ११, ६)। वक्क. विज्जत, विज्जमाण (सुर २, १७६, पंचा ६, ४७)।

विज्ज सक [वीजय्] पंखा चलाना, हवा करना। कर्म. विज्जिज्जइ (भवि)। कवक्क. विज्जिज्जत (पउम ६१, ३७, वज्जा ३६)।

विज्ज पुं [वैद्य] चिकित्सक, हकीम (सुर १२, २४, नाट—विक्र ६५)।

विज्ज पु व. [दे] देश-विशेष (पउम ६८, ६५)।

विज्ज पुं [विट्ठस्, विज्ञ] परिदल, जानकार (हे २, १५, कुमा, प्राकृ १८, सूत्र १, ६, ५)।

विज्ज देखो वीरिअ (पउम ३७, ७०)।

विज्ज° देखो विज्जा। °ज्जर (अप) देखो विज्जा-हर (पि २१६)। °त्थि वि [°थिन] छात्र, श्रम्यासी (सम्मत्त १४३)।

विज्ज° देखो विज्जु (कुप्र ३६६)।

°विज्जतअ देखो पिज्जत (से २, २४, पि ६०३)।

विज्जय न [वैद्यक] चिकित्सा (उर ८, १०, भवि)।

विङ्गह वि [वितृष्ण] तृष्णा-रहित, नि.स्पृह (सं २, १०, प्राप्र: गा ६३, १७६)।

विङ्गह देखो विचित्त (गड २ २३६, ७४०)।

विङ्गह देखो विचित्त (स ७४०)।

विङ्गहा } देखो विअ = विद।
विङ्गहाण }

विङ्गित्त (शौ) देखो विचित्तिय (स्वप्न ३६)।

विङ्गित्त देखो विअ = विद।

विङ्गह देखो विङ्गण = वितीण (सुर ४, ११)।

विङ्गिस्स वि [व्यतिमिश्र] मिश्रित, मिला हुआ (आचा)।

विड वि [विद्, विद्वस्] विद्वान्, परिष्ठत, जानकार (गाया १, १६, उप ७६८ टी, सुर १, १३५, सूत्र २, १, ६०, रंभा)।
°पफुड छी [°प्रकृत] १ विद्वान् द्वारा प्रकान्त। २ विद्वान् द्वारा किया हुआ (भग ७, १० टी—पत्र ३२५, १८, ७—पत्र ७५०)।

विडअ वि [वियुत] वियुक्त, रहित, 'द्वन् पञ्जवविडअ दव्व-विउत्ता य पजवा नत्थि' (सम्म १२)।

विडअ वि [विवृत] १ विस्तृत। २ व्याख्यात (हे १, १३१)।

विडअ (प्रप) देखो विओअ = वियोग (हे ४, ४१६)।

विडचिआ छी [दे. विचर्चिका] रोग-विशेष, पामा रोग का एक भेद, 'केवि विडचिअपामा-समन्निया सेवगा तस्स' (सिरि ११७)।

विडज सक [वि + युज्] विशेष रूप से जोड़ना। विडजति (सूत्र २, २, २१)।

विडकति छी [व्युत्क्रान्ति] उत्पत्ति, 'अ-विडकतियं चयमाणे' (भग १, ७)।

विडकति छी [व्युत्क्रान्ति, व्यवक्रान्ति] मरण, मौत (भग १, ७)।

विडकम सक [व्युत् + क्रम्] १ परित्याग करना। २ उल्लंघन करना। ३ अक्र. व्युत्त होना, नष्ट होना, मरना। ४ उत्पन्न होना। विडकमति (भग: ठा ३, ३—पत्र १४१)। संकृ विडकम्म (सूत्र १, १, १, ६, उत्त ५, १५, आचा १, ८, १, २)।

विडकस सक [व्युत् + कर्षय्] गर्व करना, बड़ाई करना। विडकसेजा, (सूत्र १, १३, ६), विडकसे (आचा १, ६, ४, २)।

विडकस्स पुं [व्युत्कर्ष] गर्व, अभिमान (सूत्र १, १, २, १२)।

विडच्छा देखो वि-उच्छा = विद-जुगुप्सा।

विडच्छेअ पु [व्यवच्छेद] विनाश (पचा १७, १८)।

विडज्जम अक्र [व्युद् + यम्] विशेष उद्यम करना। वक्र. 'अणिअपि विडज्जमताण' (पउम १०२, १३७)।

विडज्ज अक्र [वि + जुध्] जागना। विडज्जइ (भवि; सण)।

विडट्ट सक [वि + कुट्टय्] विच्छेद करना, विनाश करना। हेक. विडट्टित्तए (ठा २, १—पत्र ५६, कस)।

विडट्ट सक [वि + त्रोटय्] तोड़ डालना। विडट्टइ (सूत्र २, २, २०)। हेक. विडट्टित्तए (ठा २, १—पत्र ५६)।

विडट्ट अक्र [वि + वृत्] १ उत्पन्न होना। २ निवृत्त होना। विडट्टति (सूत्र २, ३, १), विडट्टेजा (ठा ८ टी—पत्र ४१८)।

विडट्ट सक [वि + वर्तय्] १ विच्छेद करना। २ घूमकर जाना। विडट्टति (स १७८)। सकृ. विडट्टाण (आचा १, ८, १, २)। हेक. विडट्टित्तए (ठा २, १—पत्र ५६)।

विडट्ट देखो विअट्ट = विवृत (कप्प)।

विडट्टण न [विवर्तन] निवृत्ति (ओष ७६१)।

विडट्टण न [विकुट्टन] १ विच्छेद। २ आलोचना, अतिचार विच्छेद (ओष ७६१)। ३ वि. विच्छेद-कर्ता (धम्मस ६६६)।

विडट्टणा छी [विकुट्टना] १ विविध कुट्टन। २ पीड़ा, सताप (सूत्र १, १२, २१)।

विडट्टिअ वि [व्युत्थित] जो विरोध में खड़ा हुआ हो वह, विरोधी बना हुआ (सूत्र १, १४, ८)।

विडह सक [वि + नाशय्] विनाश करना। विडहइ (हे ४, ३१)। कम्. विडहज्जति (स ६७६)।

विडडण न [विनाशन] १ विनाश (म २७, ६६१)। २ वि. विनाश-कर्ता (स ३७, २८२)।

विडडिअ वि [विनाशित] नष्ट किया गया (पाम्र, कुमा, उप ७२८ टी)।

विडण वि [विगुण] गुण रहित, गुण-हीन (दे ६, ७८)।

विडत्त वि [वियुक्त] विरहित, वियोग प्राप्त (सुर ३, १२३, १०, १४५, सुपा ११०, काल, सण)।

विडत्ता देखो विअत्त = वि + वर्तय्।

विडत्थिअ देखो विडट्टिअ (कुप्र २२४, ३६६)।

विडद देखो विडअ = विवृत (प्राप्र)।

विडद्ध वि [विवृद्ध] १ जागृत (सुपा १४०)। २ विकसित (स ७६८)।

विडप्पफुड वि [व्युत्प्रकट] अतिशय प्रकट—व्यक्त (भग ७, १० टी—पत्र ३२५)।

विडवभाअ अक्र [व्युद् + भ्राज्] शोमना, दीपना, चमकना। वक्र. विडवभाएमाण (भग ३, २—पत्र १७३)।

विडवभाअ सक [व्युद् + भ्राजय्] शोमित करना। वक्र. विडवभाएमाण (भग ३, २)।

विडम वि [विद्वस्] विद्वान्, विज्ञ, 'विडमं ता पयहिज्ज सयवं' (सूत्र १, २, २, ११)।

विडर देखो विदुर (वेणी १२४)।

विडल वि [विपुल] १ प्रभूत, प्रचुर। २ विस्तीर्ण, विशाल (उवा, औप)। ३ उत्तम, श्रेष्ठ (भग ६, ३३)। ४ अगाध, गम्भीर (प्राप्र)। ५ पुं. राजगिरि के समीप का एक पर्वत (पउम २, ८८)। °जस पु [°थरास्] एक जिनदेव का नाम (उप ६८६ टी)। °मड छी [°मति] मन पर्यंत नामक ज्ञान का एक भेद (कम्म १, ८, आचम)। २ वि. उक्त ज्ञानवाला (कप्प, औप)। °अरी छी [°अरी] विद्या-विशेष (पउम ७, १३८)। देखो विपुल।

विउव देखो विउव = वैक्रिय (कम्म ३, २)।

विउवसिय देखो विओविय = व्यवसित (राज)।

विज्झ सक [व्यध्] वीधना, वेध करना, भेदना । विज्झंति (सूत्र १, ५, १, ६), विज्झमे (गा ४४१) सक विद्धूण (सूत्र १, ५, १, ६) । कृ विज्झ (पङ्) ।

विज्झ अक [वि + घट्] अलग होना ।

विज्झइ (घाट्वा १५२) ।

विज्झ न [दे] वीक, धक्का, ठेला, 'तो हत्यो तम्मि पडे विज्झ दाऊण कुमरमाण-मग्गे' (धर्मवि ८१),

'ताव वणवारणेण य विज्झाइ

(? ई) नर अपावमाणेण

कुविएण विइएणाइ धणियं

नग्गेहसकम्मि' (स ११३) ।

विज्झ वि [विद्ध] विधा हुआ, 'जइ तपि तेण बाणेण विज्झमे जेण ह विज्झा' (गा ४४१) ।

विज्झ देखो विज्झ = व्यध् ।

विज्झडिय वि [दे] १ मिश्रित, व्याप्त, 'सीउरहखरपसवायविज्झडिया' (भग ७, ६—पत्र ३०७, उव) ।

विज्झल देखो विज्झल = विह्वल (भग ७, ६ टी—पत्र ३०८) ।

विज्झव सक [वि + ध्यापय्] बुझाना, दीपक आदि को गुल करना, ठंडा करना । विज्झवइ (गउड, कुत्र ३६७) । कर्म विज्झविज्झइ (गा ४०७, स ४८६) । सकृ. विज्झवेऊणं, विज्झविय (धर्मस ६५८, स ४६६) । कृ. विज्झवियव्व (पउम ७८, ३७) ।

विज्झवण छीन [विध्यापन] बुझाना, उप-शान्ति (स ४८६, सम्मत १६२, कुप्र २७०) ।

विज्झविअ वि [विध्यापित] बुझाया हुआ, गुल किया हुआ, ठंडा किया हुआ (सि ८, १६, १२, ७७, गा ३३३, पउम २०, ६२) ।

विज्झा } अक [वि + ध्यै] बुझना, ठंडा
विज्झाअ } होना, गुल होना । विज्झाइ (गा ४३०, हे २, २८) । वक्र. विज्झाअत (गा १०६) ।

विज्झाअ } वि [विध्यात] १ बुझा हुआ,
विज्झाण } उपशान्त (सि १, ३१, गायी १, १—पत्र ६६, १, १४—पत्र १६०,

गउड, सुपा ४४८, प्रासू १३७, पउम ५, १८२) । २ सक्रम-विशेष, 'विज्झायनाम-गेणं संक्रममेत्तेण सुज्झति' (सम्यक्त्तो २१) ।

विज्झाव देखो विज्झव । विज्झावेइ (गा ८३६) ।

विज्झावग देखो विज्झवण (उप २६४ टी) ।

विज्झाविअ देखो विज्झविअ (महा) ।

विज्झिडिय पुं [दे] मत्स्य की एक जाति (परण १—पत्र ४७) ।

विटक देखो विडक (माल २३४, राज) ।

विट्टाल सक [दे] असुस्थ करना, उच्छिष्ट करना, बिगाडना, दूषित करना, अपवित्र करना । विट्टालिति (सुख १, १५) । कर्म 'विट्टालिज्जइ गंगा कयाइ कि वासवारेहि' (चेइय १३४) । वक्र. विट्टालयंत (सिरि ११३२) ।

विट्टाल पु [दे] असुस्थ-संसर्ग, उच्छिष्टता, अपवित्रता, 'तुह घरम्मि चंडाली, विट्टालं कुणइ', 'सा घरवाहि चिट्ठइ भुजइ य, न तेण देव विट्टालो' (कुप्र २४३, हे ४, ४२२) ।

विट्टालण न [दे] ऊपर देखो (स ७०१) ।

विट्टालि वि [दे] बिगाडनेवाला, अपवित्र करनेवाला । छी ०णी (कप्पू) ।

विट्टालिअ वि [दे] उच्छिष्ट किया हुआ, अपवित्र किया हुआ, बिगाडा हुआ (धर्मवि ४५, सिरि ७१६, सुपा ११५, ३६०, महा) ।

विट्टी छी [दे] गठरी, पोटली (श्रोष ३२४) । देखो विट्टिया ।

विट्ट वि [वृष्ट] बरसा हुआ (हे १, १३७, पङ्) ।

विट्ट वि [विष्ट] १ प्रविष्ट, पैठा हुआ (सूत्र १, ३, १, १३) । २ उपविष्ट, बैठा हुआ (पिंड ६००) ।

विट्ट वि [दे] सुप्तोत्थित, सो कर उठा हुआ (पङ्) ।

विट्टअ न [विष्टप] भुवन, जगत् (मुच्छ १०६) ।

विट्टभ सक [वि + घृभ्य] १ रोकना । २ स्थापित करना, रखना । विट्टंमंति (श्रीप) । सकृ. विट्टभित्ता (श्रीप) ।

विट्टंभणया छी [विष्टम्भना] स्थापना (श्रीप) ।

विट्टर पुंन [विष्टर] आसन, 'विट्टरो' (प्राप्र, पउम ८०, ७, पाप्र, सुपा ६०) ।

विट्टा छी [विष्टा] वीट, पुरीष, मल (पाप्र, श्रोषभा २६५, प्रासू १२८) । 'हं न [गृह] मलोत्सर्गं-स्थान, टट्टी (पउम ७४, ३८) ।

विट्टि छी [विष्टि] १ कर्म, काज, काम (दे २, ४३) । २ ज्योतिष-प्रसिद्ध एक करण, श्रवं तिथि (वित्ते ३३४८, स २६५, गण १६) । ३ भद्रा नक्षत्र (सुर १६, ६०) । ४ वेगार, मज्जरी दिए बिना ही जवरदस्ती या वेमन का कराया जाता काम (उर ६, ११) ।

विट्टि छी [वृष्टि] वर्षा, बारिश (हे १, १३७, प्राकृ ८, सक्षि ५, पउम २०, ८७, कुमा, रभा) । देखो वुट्टि ।

विट्टित वि [दे] श्रजित (पङ्) ।

विट्टिय न [विस्वित] विशिष्ट स्थिति (भग ६, ३२ टी—पत्र ४६६) ।

विड पु [विट] १ भँडुआ (कुमा, सुर, ३, ११६, रभा) ।

विड न [विड] लवण-विशेष, एक तरह का नमक (दस ६, १८) ।

विडक पुन [विटङ्क] कपोतपाली, प्रासाद आदि के आगे की श्रोर काठ का बना हुआ पक्षियों के रहने का स्थान, छतरी (गाया १, १—पत्र १२, दे ७, ८६, गउड) ।

विडकिआ छी [दे] वेदिका, वेदी, चौतरा (दे ७, ६७) ।

विडंग देखो विडंक (परह १, १—पत्र ८) ।

विडग पुंन [विडङ्ग] १ औषध-विशेष । २ वि अभिज्ञ, विदग्ध,

'विज्ज न एसो जरओ न

य वाही एस कोवि समूओ ।

उवसमइ सलोणेण विडगजोया-

मयरमेण' (वज्जा १०४) ।

विडंब सक [वि + डम्भय्] १ तिरस्कार करना, अपमान करना । २ दुःख देना । ३ नकल करना । विडवड, विडवति, विडवेमि (भवि, कुप्र १६४, स ६६३) । वक्र.

विओरमण न [व्युपरमण] विराधना,
विनाश, 'छक्कायविओरमण' (श्रीधमा १६०,
श्रीध ३२६)।

विओल वि [दे] शान्ति, उद्वेग युक्त (दे ७,
६३)।

विओवाय पुं [व्यवपात] अश, नाश
(आचा, सूत्र १, ३, ३, ४)।

विओसग पुं [व्युत्सर्ग] १ परित्याग। २
तप-विशेष, निरीहपन से शरीर आदि का
त्याग (श्रीप)।

विओसमण देखो विउसमण (पह २, २—
पत्र ११८, २, ५—पत्र १४६)।

विओसमिय वि [व्यवशमित] उपशान्त
किया हुआ (कस ६, १ टि)।

विओसरणया देखो विउसरणया (श्रीप)।

विओसव सक [व्यव + शमय] उपशान्त
करना, ठण्डा करना, दवा देना। संक.
'तं ग्रहिणरणं अ-विओसवेत्ता' (कस)।

विओसविय } देखो विओसमिय, 'अवि-
विओसिय } ओसवियपाहुवे' (कस १,
३५, ४, ५), 'विओसविय वा पुणो उदीरि-
त्तए' (कस ६, १, ४, ५ टि)।

विओसिज्जा अ [व्युत्सृज्य] परित्याग कर
(आचा १, ६, २, १)।

विओसिय वि [व्यवसित] पर्यवसित, समाप्त
किया हुआ (सूत्र १, १, ३, ५)।

विओसिय वि [विकोशित] कोश-रहित,
निरावरण, नंगा, 'विउ(ओ)सियवरासि—'
(पह १, ३—पत्र ४५)।

विओसिर देखो विऊसिर (पि २३५)।

विओह पु [विवोध] जागरण, जागृति
(भवि)।

विख न [दे] वाद्य-विशेष (राज)।

विचिणिअ वि [दे] १ पाटित, विदारित।
२ घारा (दे ७, ६३)।

विचुअ पु [वृश्चिक] जन्तु-विशेष, बिच्छू (हे
१, १२८, २, १६, ८६)।

विछ अक [वि + घट्] अलग होना। विछह
(प्राक ७१)।

विछिअ } देखो विचुअ (हे १, २६, २,
विछुअ } १६, सुख ३६, १४८, पठम
३६, १७, प्राप्र, प्राक २३, गा २३७ अ)।

विंजण देखो वजण, 'तेतीसविजणाई' (चंड)।
विंजण देखो विअण = व्यजन, गुजराती मे
'विजणो' (रमा २०)।

विंफ पुं [विन्ध्य] १ पर्वत विशेष, निन्ध्यान्त
(गा ११५, शाया १, १—पत्र ६४)। २
व्याघ्र, बहेलिया (हे १, २५, २, २६, प्राप्र)।
३ एक जैन मुनि (विसे २५१२)। ४ एक
श्रेष्ठ-पुत्र (सुपा ५७८)।

विंट सक [वेष्टय] वेष्टन करना, नपेटना,
गुजराती में 'विंटवु', 'विंटइ त उज्जाण'
हयगयरहुसुहडकोडोहि' (सुपा ५७३)। प्रयो,
सक विंटाविल (सुपा १८६)।

विंट न [वृन्त] फल-पत्र आदि का बन्धन
(हे १, १३६, प्राक ४, रमा, प्रासू १०२)।

विंटल } न [दे] १ वशीकरण विद्या,
विंटलिअ } 'अभाहपि कुडलवि(टलवि)-
टलाई करलाघवाई कम्माई' (सिरि ५७)।
२ निमित्त आदि का प्रयोग (वृह १), 'विंटलि-
आणि पञ्जति' (गच्छ ३, १३)।

विंटलिआ ओ [दे] गठरी, पोटी, गुजराती
में 'विंटवु', 'ताव कुमरेण खिता तप्पुरया
वत्यविंटलिया', 'तीए विंटलियाए' (सुपा
२६१)।

विंटिया ओ [दे] १ गठरी, पोटी (सुख २,
५, उप १४२ टी)। २ मुद्रिका, अगुलीयक,
गुजराती में 'वीटी', 'उच्चारोवरि मुफा
करणमयविंटिया नियया' (सुपा ६११),
'पडिवन्नाओ मणिविदि(टि)याहि तह अगु-
लीओ ति' (स ७६)।

विंतर पुं [व्यन्तर] १ बिच्छू आदि दुष्ट जन्तु
(उप ५६४), 'डुडुआ को न वीहइ वितर-
सप्पाण व खलाण' (वज्जा १२)। २ एक
देव-जाति, 'निस्सुगाण नराण हि वितरा अवि
किकरा' (आ १२, दं २)।

विंतागी ओ [वृन्ताकी] वैंगन का गाछ
विंद सक [विद्] १ जानना। २ प्राप्त करना,
'धम्म च जे विदति तथ तथ' (सूत्र १, १४,
२७)। वक विंदमाण (शाया १, १—पत्र
२६, विपा १, २—पत्र ३४)।

विंद देखो वद = वुन्द (भवि, पि ३६८)।

विंदारग } देखो वंदारय (सुपा ५०३, नाट—
विंदारय } शकु ८८)। वर पु [वर] इन्द्र
(सम्मत ७५)।

विंदावण पुं [वृन्दावन] मथुरा का एक
वन (ती ७)।

विंदुरिलि वि [दे] १ उज्ज्वल, देदीप्यमान।
२ मज्जुल घोषनाला, ना कंठ। ३ विद्राण,
म्लान। ४ विस्तृत, 'घटाहि विंदुरिल्लासुर-
तरणीविमाणाणुसारं लहती' (कप्पु)।

विंद्र देखो वद्र (प्राक ३६)।

विंद्रावण देखो विंदावण (प्राक ३६)।

विंध सक [व्यध्] वीधना, छेदना, वेधना।
विषइ, विषेजा (पि ४८६, भग)। वक,
विधत (सुर २, ६३)। सक, विंधिअ
(नाट—मृच्छ २१३)। हेक विंधिअ (स
६२)। क. विंधेयव्य (सुपा २६६)।

विंधण न [व्यधन] छेदन, वेधना, 'लक्ख-
विंधण'—(धर्मांवि ५२)।

विंधिअ वि [विद्ध] जो वेधा गया हो वह,
छिन्न (सम्मत १५८)।

विंभय देखो विंमह्य = विस्मय (भवि)।

विंभर देखो विंमहर। विंभरइ (पि ३१३)।

विंभल वि [विह्वल] व्याकुल, घबड़ाया
हुआ, 'विसविंभल' (उप ५६७ टी, कुप्र ६०,
५६८, भवि, श्रीध ७३)।

विंभिअ वि [विस्मित] आश्चर्य-चकित
'ओधुणइ दीवओ विम (विंभि)ओ व पवणा-
हमो सीस' (वज्जा ६६, भवि)।

विंभिअ देखो विआभिअ, 'सोहगविंभियासाए'
(वज्जा ८६)।

विंसदि (शौ) ओ [विशति] बीस, २०
(प्रयो २०)।

विकंथ सक [वि + कथ्] प्रशना करना।
विकथइजा (सूत्र १, १४, २१)।

विकप अक [वि + कप्] हिल जाना,
चलित होना। वक, विकपआणो (सूत्र १,
१४, १४)।

विकप सक [वि + कम्पय्] १ हिलाना,
चलाना। २ त्याग करना, छोड़ना। ३ अपने
मंडल से बाहर निकलना। ४ भीतर प्रवेश
करना। विकंपइ (सुज्ज १, १)। सक
विकपइत्ता (सुज्ज १, ६)।

विकंप वि [विकम्प] कम्प, हिलन (पचा
१८, १५)।

विणिमिअ वि [विनत] विशेष रूप से नत (भग, औप, एया १, १ टी—पत्र ५) ।

विणिमिअ वि [विनमित] नमाया हुआ (गउड) ।

विणय पु [विनय] १ अभ्युत्थान, प्रणाम आदि भक्ति, श्रुषूपा, शिष्टता, नम्रता (आचा, ठा ४, ४ टी—पत्र २८३, कुमा, उवा, औप, गउड, महा, प्रासू ८) । २ संयम, चारित्र्य (सम ५१) । ३ नरकावास विशेष, एक नरक स्थान (देवेन्द्र २६) । ४ अपनयन, दूरीकरण । ५ शिक्षा, सीख । ६ अनुनय । ७ वि विनय-युक्त, विनीत । ८ निभृत, शान्त । ९ क्षिप्त, फेंका हुआ । १० जितेन्द्रिय, सयमी (हे १, २४५) । ११ पु शास्त्रानुसार प्रजा का पालन (गउड ६७) । १२ वि [विन] विनय युक्त (उप पृ १६६) ।

विणय वि [विनत] १ विशेष रूप से नमा हुआ (औप) । २ पुन. एक देव-विमान (सम ३७) ।

विणय^० देखो विगया । १ तणय पु [तनय] गण्ड पक्षी (वजा १२२) । २ सुअ पु [सुत] वही अर्थ (पाम्र) ।

विणयइत्तु देखो विणइत्तु (मुख २६, ४) ।

विणयधर पु [विनान्धर] एक शेर का नाम (उप ७२८ टी) ।

विणयण न [विनयन] विनय-शिक्षा, शिक्षण, 'आचारदेसणाओ आचरिया, विणयणादुव-ज्झाया' (विसे ३२००) ।

विणया वी [विनता] गण्ड की माता का नाम (गउड) । १ तणय पु [तनय] गण्ड पक्षी (से १४, ६१, सुपा ३५४) ।

विणस देखो विणरस । विणसइ (उर ७, ३, कुमा ८, २१) ।

विणसिर वि [विनश्चर] विनाश-शील, नश्वर (दे १, ६०) ।

विणस्स अक [वि + नञ्] नष्ट होना, विध्वस्त होना । विणस्सइ, विणस्सए, विणस्से (उव, महा, धर्मस ४०१) । भवि विणस्सिहिसि (महा) । वहु विणस्समाण (उवा) । कु. विणस्स (धम्मस ४०२, ४०३) ।

विणरसर देखो विणारसर (पि ३१५) ।

विणा अ [विना] मिवाय, विना (गउड, प्रासू १०; १५६, द १७) ।

विणामिद (जौ) देखो विणिमिअ = विनमित (नाट—मृच्छ २१८) ।

विणायग पु [विनायक] यक्ष, एक देव-जाति, 'तत्थेव आगमो सो विणायगो पूयणो नाम' (पउम ३५, २२) । २ गणपति, गणेश (सट्ठि ७८ टी) । ३ गण्ड (पउम ७१, ६७) । ४ न [वि] अत्र विशेष, गण्डात्र (पउम ७१, ६७) ।

विणास देखो विगरस । विणामइ (भवि) ।

विणास सक [वि + नाशय्] ध्वंस करना, नष्ट करना । विणामेइ (उव, महा) । भवि. विणासिहो, विणामेहामि (पि ५२७, ५२८) । कर्म. विणामिज्जइ (महा) । कवक. विणा-सिज्जत (महा) । क. विणासियव्व (मुपा १४५) ।

विणास पुं [विनाश] विध्वंस (उव, हे ४, ४२४) ।

विणासग वि [विनाशक] विनाश-कर्ता (द्र १७) ।

विणासण न [विनाशन] १ विनाश, विध्वंस (भवि) । २ वि विनाश-कर्ता (पएह २ १—पत्र ६६, दम ८, ३८) ।

विणासिअ वि [विनाशित] विनाश-प्राप्त (पाम्र, महा, भवि) ।

विणि^० देखो विणी ।

विणिअसण न [विनिदर्शन] खास उदाहरण, विशेष दृष्टान्त (से १२, ६६) ।

विणिअसण वि [विनिवसन] वस्त्र-रहित, नगा (गा १२५) ।

विणिइत्तु देखो विणइत्तु (उत्त २६, ४) ।

विणिउत्त वि [विनियुक्त] कार्य में प्रवृत्तित (उप पृ ७५) ।

विणिओग पु [विनियोग] १ उपयोग, ज्ञान (विसे २४३७) । २ कार्य में लगाना (पचा ७, ६) । ३ विनिमय, लेनदेन (कुप्र २०६) ।

विणओय सक [विनि + योजय्] जोड़ना, लगाना । विणिओयइ (भवि) ।

विणत देखो विणी = विनिर् + इ ।

विणिकुट्टिय वि [विनिकुट्टित] कूट कर बैठाया हुआ, 'अभविणिकुट्टियाहि पवरानि सालहजीहि' (मुपा १८८) ।

विणिकम देखो विणिम्वम । विणिकमइ (गउड २७५, पि ४८४) ।

विणिकस सक [विनि + कृप्] खींच कर निकालना । सक. विणिकस्स (मूम १, ५, १, २२) ।

विणिकरसत वि [विनिष्क्रान्त] १ बाहर निकला हुआ । २ जिसने गृह-त्याग किया हो वह, सन्यस्त (उप १८७ टी, कुप्र ३६, महा) ।

विणिक्कम अक [विनिस् + क्रम्] १ बाहर निकलना । २ सन्यास लेना । विणि-क्कमइ (गउड ८५१, ११८१) । सक. विणिक्कमिन्ता (भग) ।

विणिक्यमण न [विनिष्क्रमण] १ बाहर निकलना । २ मन्यास लेना (पचा १८, २१) ।

विणिकिस्सत्त वि [विनिक्षिप्त] फेंका हुआ (नाट—मृच्छ ११६) ।

विणिगिण्ह सक [विनि + ग्रह्] निग्रह करना, दंड देना । वहु विणिगिण्हत (उप पृ २३) ।

विणिगूह मक [विनि + गूहय्] गुप्त रखना, ढकना । विणिगूहज्जा (आचा २, १, १०, २) ।

विणिग्गम पु [विनिर्गम] नि सरण, बाहर निकलना (गउड) ।

विणिग्गय वि [विनिर्गत] बाहर निकला हुआ, बाहर गया हुआ (से २, ५, महा, भवि) ।

विणिघाय पु [विनिघात] १ मरण, मौत । २ सत्सार, भव-भ्रमण (ठा ५, १—पत्र २६१) ।

विणिच्छ सक [विनिस् + चि] निश्चय करना । विणिच्छइ (सण) । सक. विणि-च्छिऊण (सण) ।

विणिच्छय पु [विनिश्चय] निश्चय, निर्णय, परिज्ञान (पएह १, १—पत्र १, ठा ३, ३, उव) ।

विणिच्छिअ वि [विनिश्चित] निश्चित, निर्णीत (भग, उवा, कप्प सुर २, २०२) ।

विक्रत देखो विक्र ।

विक्रत वि [विक्रान्त] १ पराक्रमी, शूर (राया १, १—पत्र २१, विसे १०५६, प्राप् १०७, कप्प) । २ पुं पहली नरक-भूमि का बरहवा नरकेन्द्रक—नरक-स्थान विशेष (देवेन्द्र ५) ।

विक्रति स्त्री [विक्रान्ति] विक्रम, पराक्रम (राया १, १६—पत्र २१५) ।

विक्रम देखो विक्रम = विक्रम (देवेन्द्र ३०६) ।

विक्रण न [विक्रयण] विक्रय, वेचना (सुपा ६०६, सट्टि ६ टो) ।

विक्रम अक [वि + क्रम्] पराक्रम करना, शूरता दिखलाना । भवि. विक्रमिस्सदि (शौ) (पार्थ ६) ।

विक्रम पु [विक्रम] १ शौर्य, पराक्रम (कुमा) । २ सामर्थ्य (गडड) । ३ एक राजा का नाम (सुपा ५६६) । ४ राजा विक्रमादित्य (रमा ७) । ५ जस पु [५शस] एक राजा (महा) । ६ पुर न [५पुर] एक नगर का नाम (ती २१) । ७ राय पु [५राज] एक राजा (महा) । ८ सेण पु [५सेन] एक राज-कुमार (सुपा ५६२) । ९ इक्ष्वा, इक्ष्वा पुं [५दित्य] एक सुप्रसिद्ध राजा (गा ४६४ अ, सम्मत १४६, सुपा ५६२, गा ४६४) ।

विक्रमण पुं [द] चतुर चालवाला घोडा (दे ७, ६७) ।

विक्रमि वि [विक्रमिन्] पराक्रमी, शूर (कुमा) ।

विक्रय वि [विक्रय] व्याकुल, बेचैन (पव १६६, प्राप्, सबोध २१) ।

विक्रयमाण देखो विक्र ।

विक्रि देखो विक्रि, 'ते नाएविक्रिणो पुरा मिच्छतपरा, न ते मुणिणो' (सबोध १६) ।

विक्रिअ वि [दे] संस्कृत, सुधारा हुआ (दस ७, ४३) ।

विक्रित वि [विक्रित] छिन्न, काटा हुआ (पणह १, ३—पत्र ५४) ।

विक्रिठ देखो विक्रिठ (संबोध ५८) ।

विक्रिण सक [वि + क्री] वेचना । विक्रिणइ (प्राप्) । कर्म. विक्रिणीमति (पि ५४८) ।

वक्र. विक्रिणंत, विक्रिणित (पि ३६७, सुपा २७६) । संक्र. विक्रिणिअ (नाट—मृच्छ ६५) ।

विक्रिणिअ } वि [विक्रीत] वेचा हुआ (सुपा विक्रिय } ६४२, भवि) ।

विक्रिय देखो विउठव = वैक्रिय, 'कयवि-क्रियलो सुरु व लक्खियसि' (सुपा १८७), 'कयविक्रिय-कायो देवुव' (सम्मत् १०४) ।

विक्रि सक [वि + कृ] विक्रेता, छितराना, फैलाना । कवक्र. विक्रिरिजमाण (राय १४) ।

विक्रिरिया स्त्री [विक्रिया] विकृति, विकार, 'तोए नयणाइएहि विक्रिरिय कुणइ' (सुपा ५१४) । देखो विक्रिरिया ।

विक्रीय देखो विक्रिय = विक्रीत (सुर ६, १६५, सुपा ३८५) ।

विक्री सक [वि + क्री] वेचना । विक्रीइ, विक्रीइइ (हे ४, ५२, प्राप्, घात्वा १५२) । कृ विक्रीज (दे ६, ४०, ७, ६६) ।

विक्रीणुअ वि [दे] विक्रीय, वेचने योग्य (दे ७, ६६) ।

विक्रीण पुं [विक्रीण] विक्रीणन, घृणा से मुंह सिकुडना (दे ३, २८) ।

विक्रीस सक [वि + क्रुञ्] चिल्लाना । विक्रीश (मा) (मृच्छ २७) ।

विक्रिखंभ पुं [दे] १ स्थान, जगह (दे ७, ८८) । २ अंतराल, बीच का भाग (दे ७, ८८, से ६, ५७) । ३ विवर, छिद्र (से ३, १४) ।

विक्रिखंभ पुं [विक्रिखंभ] १ विस्तार (पणह १—पत्र ५२, ठा ४, २—पत्र २२६, दे ७, ८८, प्राप्) । २ चौड़ाई, 'जवुदीवे दीवे एग जोयणसहस्स थायामविक्रिखंभेण पणत्ते' (सम २) । ३ बाहुल्य, स्थूलता, मोटाई (सुज्ज १, १—पत्र ७) । ४ प्रतिबन्ध, निरोध (सम्यकत्त्वो ८) । ५ नाटक का एक अंग (कप्प) । ६ द्वार के दोनों तरफ के बीच का अन्तर (ठा ४, २—पत्र २२५) ।

विक्रिखंभअ वि [विक्रिखंभत] निरुद्ध, रोका हुआ (सम्यकत्त्वो ८) ।

विक्रिखण न [दे] कार्य, काम, काज (दे ७, ६४) ।

विक्रिखय वि [विक्रित] ब्रण-भुक्त, कृत-ब्रण (भग ७, ६—पत्र ३०७) ।

विक्रिखर सक [वि + कृ] १ छितरना, तितर-वितर करना । २ फैलाना । ३ इधर उधर फेंकना । विक्रिखरइ (कप्प), विक्रिखरेज्जा (उवा २०० टि) । कवक्र. विक्रिखरिज्जनाण (राज) ।

विक्रिखवण न [विक्रिपण] १ विनाश । २ वि विनाशक, 'वज्जं भ्रमलपडिक्खविक्रिखवण' (सुपा ४७) ।

विक्रिखाइ स्त्री [विक्रियाति] प्रसिद्धि (भवि) । विक्रिखाय वि [विक्रियात] प्रसिद्ध, विभ्रुत (प्राप्, सुर १, ४६, रमा, महा) ।

विक्रिखास वि [दे] विरूप, खराब, कुत्तित (दे ७, ६३) ।

विक्रिखण वि [दे] १ श्रायत, लम्बा । २ भ्रवतीर्ण । ३ न. जघन (दे ७, ८८) ।

विक्रिखण देखो विक्रिण (कस) ।

विक्रिखत्त वि [विक्रिप्त] १ फेंका हुआ (प्राप्, कस, गडड) । २ भ्रान्त, पागल, 'पमुत्तविक्रिखत्तजणे परियणे' (उप ७२८ टी, दे १, १३३, महा) ।

विक्रिखर देखो विक्रिखर । विक्रिखरेज्जा (उवा) ।

विक्रिखरिअ वि [विक्रीण] विक्रिखर हुआ, छितरा हुआ, फैला हुआ (सुर ५, २०६, सुपा २४६, गडड) ।

विक्रिखय सक [वि + क्षिप्] १ दूर करना । २ प्रेरना । ३ फेंकना । विक्रिखयइ (महा) ।

विक्रिखवण न [विक्रिपण] १ दूरीकरण । २ प्रेरणा (पव ६४) ।

विक्रिखेव पुं [विक्रिप] १ क्षोभ, 'छोहो विक्रिखेवो' (प्राप्) । २ उचाट, ग्लानि, खेद (से ५, ३) । ३ ऊँचा फेंकना, ऊँच-क्षेपण (श्रोधमा १६३) । ४ फेंकना, क्षेपण (गा ५८२) । ५ शृ गार-विशेष, भ्रवजा से किया हुआ मरडन (पणह २, ४—पत्र १३२) । ६ चित्त-भ्रम (स २८२) । ७ विलंब, देरी (स ७३५) । ८ सैन्य, लश्कर (स २४, ५७३) ।

विक्रिखेवणी स्त्री [विक्रिपणी] कथा का एक भेद (ठा ४, २—पत्र २१०) ।

विणिञ्चवण न [विनिर्चपन] शान्ति, दाहो-
पशम (गड्ड) ।

विणिस्सरिय वि [विनि स्त] बाहर निकला
हुआ (सण) ।

विणिस्सह वि [विनिस्सह] श्रान्त, थका
हुआ, 'कइयावि घणुपरिस्समविणस्सहो दीही-
यासु मज्जेह' (सुपा ५६) ।

विणिहं देखो विणिहण ।

विणिहट्ठु देखो विणिहा ।

विणिहण सक [विनि + हण्] मार डालना ।
विणिहणेज्जा, विणिहति (सूत्र १, ११, ३७;
१, ७, १६) । कर्म विणिहम्मति (उत्त
३, ६) ।

विणिहय वि [विनिहत्त] जो मार डाला गया
हो, व्यापादित (महा) ।

विणिहा सक [विनि + धा] १ व्यवस्था
करना । २ स्थापन करना । सक्र. विणिहट्ठु,
विणिहाय, विणिहित्तु (चेइय २६८, सूत्र
१, ७, २१, कप्प) ।

विणिहाय देखो विणिघाय (गाया १, १४—
पत्र १८६) ।

विणिहिअ } वि [विनिहित] स्थापित (गा
विणिहित्त } ३६१, सुपा ६२) ।

विणिहित्तु देखो विणिहा ।

विणी अक [विनिर् + इ] बाहर निकलना ।
विणिंति, विणिंति (गा ६५४, पि ४६३) ।
वक्र. विणिंत (गड्ड १३८) ।

विणी सक [वि + नी] १ दूर करना, हटाना ।
२ विनय-ग्रहण कराना । विणिंति (गाया
१, १—पत्र २६, ३०), विणिज्जामि,
विणिज्ज, विणिज्ज, विणिज्ज (गाया १, १—
पत्र २६, सूत्र १, १३, २१, वि ४६०,
गाया १, १—पत्र ३२) । भूका. विणिइंसु
(सूत्र १, १२, ३) । भवि. विणिहिइ (पि
५२१) । वक्र. विणिमाण (गाया १, १—
पत्र ३३) । कवक. विणिज्जमाण (गाया १,
१—पत्र २६) । हेक. विणिणत्तु (आचा १,
५, ६, ४, पि ५७७) ।

विणीअ वि [विनीत] १ अपनीत, दूर किया
हुआ, हटाया हुआ (गाया १, १—पत्र ३३),
'सव्वदब्बेसु विणीयतरहे' (उत्त २६, १३) ।

२ विनय-युक्त, नम्र, शिष्ट (ठा ४, ४—पत्र
२८५, सुपा ११६, उव) । ३ शिक्षित, 'भदो
विणीअविण्णो' (उव ६) ।

विणीआ स्त्री [विनीता] अयोध्या नगरी (सम
१५१, कप्प, पत्र ३२, ५०, ती १) ।

विणील वि [विनील] विशेष हरा रंग का
(गड्ड) ।

विणु (अप) देखो विणा (हे ४, ४२६, पट्;
हम्मीर २८, कुलक १२; भवि, कम्म २, ६,
२६, २७, ३, ५, कुमा) ।

विणेअ वि [विनेय] शिक्षणीय, शिष्य,
अन्तेवासी, चेला (सार्ध ७०, उप १०३१
टी) ।

विणेमाण देखो विणी = वि + नी ।

विणेअ सक [वि + नोदय्] १ खरिदत
करना । २ दूर करना, हटाना । ३ खेल
करना । ४ कुतूहल करना । विणेअइ,
विणेयति (गड्ड), विणेदेमि (शौ) (स्वप्न
५१) । भवि. विणेदइस्सामो (शौ) (पि
५२८) । वक्र. विणेदअत (शौ) (नाट—
उत्तर ६५) । कवक. विणेदीअमाण (शौ)
(नाट—मालवि ४५) ।

विणेअ पुं [विनोद] १ खेल, क्रीडा । २
कौतुक, कुतूहल (गड्ड, तिरि ५६, सुर ४,
२१६, हे १, १४६) ।

विणेअइ वि [विनोदित] विनोद-युक्त किया
हुआ (सुर ११, २३८, सण) ।

विणेदअत देखो विणेअ = वि + नोदय् ।

विणेयक } वि [विनोदक] कुतूहल-जनक
विणेयग } (रंभा) ।

विणेयण न [विनोदन] १ अपनयद, दूर
करना, 'परिस्समविणेयणत्थ' (उप १०३१
टी, कुप्र १४७) । २ कुतूहल, कौतुक (गा
४८७) ।

विण देखो विण्णु (सलि १६) ।

विण्णइदव्व देखो विण्णव ।

विण्णत्त वि [विज्ञप्त] निवेदित (सुपा २२) ।

विण्णत्ति स्त्री [विज्ञप्ति] १ निवेदन, प्रार्थना
(कुमा) । २ ज्ञान (सूत्र १, १२, १७) ।

विण्णत्ति स्त्री [विज्ञप्ति] विज्ञान, विनिर्णय
(एदि १३४) ।

विण्णय देखो विणइय (ठा १०—पत्र
५१६) ।

विण्णय देखो विण्ण (विपा १, २—पत्र
३६, १, ८—पत्र ८४) ।

विण्णव सक [वि + ज्ञपय्] १ विनती
करना, प्रार्थना करना । २ मालूम करना,
विदित करना । ३ कहना । विण्णवइ,
विण्णवेमि, विण्णवेमो (पि ५५३, ५५१) ।
भवि. विण्णविसं (रुक्मि ४१) । वक्र.
विण्णवत (काल) । सक्र. विण्णविअ
(नाट—मृच्छ २६४) । हेक. विण्णविदुं
(शौ) (अभि ५३) । क. विण्णइदव्व (शौ)
(पि ५५१) ।

विण्णवणा स्त्री [विज्ञापना] विज्ञापन, निवे-
दन (उवा) । देखो विन्नवणा ।

विण्णा सक [वि + ज्ञा] जानना । सक्र.
विण्णाय (दस ८, ५६) । क. विण्णेय
(काल) ।

विण्णाउ देखो विन्नाउ (राज) ।

विण्णाण देखो विन्नाण (उवा, महा, पट्) ।

विण्णाण न [विज्ञान] अवाय-ज्ञान, निश्च-
यात्मक ज्ञान (एदि १७६) ।

विण्णाणि वि [विज्ञानिन्] निपुण, विचक्षण
(कुमा) ।

विण्णाय वि [विज्ञात] १ जाना हुआ,
विदित (पाम्म, गड्ड १२०) । २ न विज्ञान
(कप्प) ।

विण्णाव देखो विण्णव । विण्णावेमि, विण्णा-
वेहि (मा ३८, ३६) ।

विण्णास वि [वि + न्यामय्] स्थापना
करना, रखना । वक्र. विण्णासत (पत्र
४३, २६) ।

विण्णास देखो विन्नास (मा ५१) ।

विण्णासणा स्त्री [विन्यासना] स्थापना (उप
३५४) ।

विण्णु } वि [विज्ञ] परिदत्त, जानकार,
विण्णुअ } विद्वान् (भग, प्राक १८) ।

विण्णेय देखो विण्णा ।

विण्हावणक न [विस्नापनक] मन्त्र आदि
द्वारा संस्कृत जल से कराया जाता स्नान
(परह १, २—पत्र ३०) ।

विगिचण—विचित

हेक विगिचिउ (पिड ३६८) । कृ.
विगिचियव्व (पि ५७०) ।

विगिचण न [विचेचन] पत्तिपान, परित्याग
(पिड ४८३, कस) ।

विगिचणना } ओ [विचेचना] १ निर्जरा,
विगिचणा } विनाश (ठा ८—पत्र
विगिचाणआ ४४१) । २ परित्याग (ओघमा
२०६, स ५१, ओघ ६०६, ८७) ।

विगिच्छा ओ [विचिच्छि] सदेह, सशय,
बहम (आ ३, पडि) ।

विगिट्ठ देखो विकिट्ठ, 'अन्ने तवं विगिट्ठ काउ
थोवावसेससारा' (पठम २, ८३, ४, २७,
गच्छ २, २४, उत २६, २५३) । °खमग
पु [°क्षपक] तपस्वी साधु (राज) । °भत्तिय
वि [°भक्तिक] लगातार चार या उससे
अधिक दिनों का उपवास करनेवाला (कप्प) ।
विगिय देखो विगय = विकृत (ओघमा २८६) ।

विगिला } अक [वि + ग्लै] विशेष ग्लान
विगिलाअ } होना, खिन्न होना । विगिलाइ,
विगिलाएजा (पि १३६, आचा २, २, ३,
२८) ।

विगुण वि [विगुण] १ गुण-रहित (सिरी
१२३३ प्रासू ७१) । २ अननुगुण, प्रतिकूल
(पंचा ६, ३२) ।

विगुत्त वि [विगुम्] १ तिरस्कृत, अवधोरित
(आ १२) । २ जो खुला पड गया हो वह,
जिमकी पाल खुल गई हो वह, जिसकी फजी-
हत हुई हो वह, 'सदुक्कयविगुत्तो' (आ १८,
धर्मवि ७७) ।

विगुप्प° देखो विगोव ।

विगुव्वणा देखो विउव्वणा (ठा १—पत्र
१६) ।

विगुव्विय देखो विउव्विय (पठम ३६,
३२) ।

विगोइय वि [विगोपित] जिसका दोष प्रकट
किया गया हो वह (सण) ।

विगोव सक [वि + गोपय] १ प्रकाशित
करना । २ तिरस्कार करना । ३ फजीहत
करना । भवि. 'न खु न खु चउवेयपुत्तगो
भोहुं सुहदिवल पवजिय अप्पाण विगोविस्सं'
(मोह १०) । कर्म. विगुप्पसु (धर्मवि १३४),

विगुप्पहि (अप) (भवि) । संकृ विगोवित्ता,
विगोवइत्ता (कप्प, राया १, १६—पत्र
२४४) ।

विगोवण न [विकोपन] विकास, 'तहवि य
दसिज्जतो सोसमइविगोवणमदुट्ठा' (आवक
२२८) ।

विग्गह पु [विग्रह] १ वक्रता, बांक (ठा २,
४—पत्र ८६) । २ शरीर, देह (पाग्र, स
७२६, सुपा १६) । ३ युद्ध, लड़ाई (स
६३४) । ४ समास आदि के समान अर्थवाला
वाक्य (विसे १००२) । ५ विभाग (ठा
१०) । ६ आकृति, आकार, 'वरवइरविग्गहए'
(भग २, ८) । °गइ ओ [°गति] बांकवाली
गति, वक्र गति (ठा २, १—पत्र ५५, भग) ।

विग्गहिय वि [वैग्रहिक] शरीर के अनुसूच,
'विग्गहिय उन्नयकुच्छी' (पएह १, ४—पत्र
७८) ।

विग्गहीअ वि [विग्रहिक] युद्ध-प्रिय, 'जे
विग्गहीए अनायमान्नी' (सूम् १, १३, ६) ।

विग्गाहा (अप) ओ [विगाथा] छन्द-विशेष
(पिग) ।

विग्गुत्त वि [दे] व्याकुल किया हुआ
(भवि) ।

विग्गुत्त देखो विगुत्त (धर्मवि ५८, ६८) ।

विग्गेव देखो विगोव । सकृ विग्गोवित्ता
(कप्प, औप)

विग्गेव पुं [दे] आकुलता, व्याकुलता (दे ७,
६४, भवि, वजा २३) ।

विग्गोवणया ओ [विगोपना] १ तिरस्कार ।
२ फजीहत (उव) ।

विग्घ पुन [विघ्न] १ अन्तराय, व्याघात,
प्रतिवन्ध (सुपा २६५, कुमा, प्रासू ५४,
१३५, कप्प, कम्म १, ६१, पड्) । २ कर्म-
विशेष, आत्मा के वीर्य, दान आदि शक्तियों
का घातक कर्म (कम्म १, ५२, ५३) । °कर
वि [°कर] प्रतिवन्ध-कर्ता (कम्म १, ६१) ।
°ह वि [°घ] विघ्न-नाशक (श्रु ७५) ।
°वह वि [°वह] विघ्नवाला (सुर १, ४३) ।

विग्घर वि [विग्रह] गृह-रहित, 'तह उग्घर-
विग्घरनिरगणोवि न य इच्छिय लहइ'
(राया १, १० टी—पत्र १७१) ।

विग्घिय वि [विघ्निय] विघ्न-युक्त (हम्मीर
१४) ।

विग्घुट्ठ वि [विघुट्ठ] चिल्लाया हुआ (विपा
१, २—पत्र २६) । देखो विघुट्ठ ।

विघट्ट सक [वि + घट्टय] १ विघुक्त
करना । २ विनाश करना । विघट्टेड (नव) ।

विघट्टण न [विघट्टन] विनाश (नाट) ।
विघडग देखो विहडण (राज) ।

विघट्थ वि [विघरत विग्रस्त] १ विशेष
रूप से भक्षित । २ व्याप्त, 'वाहिविघट्थस्स
मत्तम्म' (महा, प्राप्र) ।

विघर देखो विग्घर (उव) ।

विघाय पु [विघात] विनाश (कुमा) ।

विघायग वि [विघातक] विनाश-कर्ता
(धर्मस ५२६) ।

विघुट्ठ न [विघुट्ठ] विरूप आवाज करना
(पएह १, ३—पव ४५) । देखो विग्घुट्ठ ।

विघुम्म अक [वि + घूर्णय] डोलना ।
वक्र विघुम्ममाण (सुर ३, १०६) ।

विचक्खु वि [विचक्षुष्क] चक्रु रहित,
अन्वा (उप ७२८ टी) ।

विचच्चिया ओ [विचर्चिका] रोग-विशेष,
पामा (राज) ।

विचल्लि वि [विचलित] चलायमान होने-
वाला (मण) ।

विचल्लिय वि [विचलित] चचल बना हुआ
(भवि) ।

विचार देखो विआर = वि + चारय् । विचा-
रंति (मृच्छ १०४) ।

विचारग वि [विचारक] विचार-कर्ता (रंभा) ।
विचारण देखो विआरण = विचारण (कुप्र
३६७) ।

विचारणा देखो विआरणा = विचारणा
(धर्मस ३०६) ।

विचाल न [विचाल] अन्तराल (दे ७,
८८) ।

विचिअ वि [विचित] चुना हुआ (दे ७,
६१) ।

विचित मक [वि + चिन्तय] विचार
करना । विचितेड (महा) । वक्र. विचितेत
(सुर १२, १६६) । कृ विचितियव्व,
विचितिज्ज (पंचा ६, ४६, द्रव्य ५०) ।

विती° देखो वित्त = वृत्त । °कल्प वि
[°कल्प] मिद्वप्राय, पूर्ण-प्राय (तदु ७) ।

विती° देखो वित्ति = वृत्ति । °सखेव पुं
[°सखेप] बाह्य तप का एक भेद—खाने,
पीने और भोगने की चोजो को कम करना
(सम ११) । °सखेवण न [°सखेपण]
वही अर्थ, 'वित्ति सखेवण रसच्चाओ' (नव
२८, पडि) ।

वित्तेस वि [वित्तेश] धनी, श्रीमत (उव
७२८ टी) ।

वित्थ पुन [विस्त] सुवर्ण, सोना (से १, १) ।

वित्थक्क अक [वि + स्था] १ स्थिर होना ।
२ विलम्ब करना । ३ विरोध करना । वक्क.
वित्थक्कन (से ३, ४, १३, ७०, ७४) ।

वित्थक्क देखो विथक्क (स ६३४ टि) ।

वित्थड } वि [विस्तृत] १ विस्तार-युक्त,
वित्थय } विशाल (भग, ओप, पाअ, वसु,
भवि, गा ४०७) । २ सबद्ध, घटित (से
१, १) ।

वित्थर अक [वि + स्तृ] १ फैलना । २
वढ़ना । वित्थरइ (प्राक्क ७६, स २०१,
६८४, सिरि ६२७, मन २५) । वक्क.
वित्थरत (से ३, ३१, स ६८६) । हेक्क
वित्थरिड (पि ५०५) ।

वित्थर पुन [विस्तर] १ विस्तार, प्रपच
(गउड) । २ शब्द-समूह (गउड ८६) ।

वित्थर देखो वित्थड, 'तत्थ वित्थरा कज्ज-
धुरा' (से ४, ४६), 'वित्थर च तलवट्ट'
(वज्जा १०४) ।

वित्थरग वि [विस्तरण] १ फैलानेवाला । २
बुद्धिजरेक (कुमा) ।

वित्थरिअ देखो वित्थड (सुर ३, ५४, सुपा
३६८, पि ५०५, भवि, सण) ।

वित्थार सक [वि + स्तारय] फैलाना ।
वित्थारइ (भवि), वित्थारेदि (शौ) (नाट—
शकु १०८) ।

वित्थार पु [विस्तर] फैलाव, प्रपच (गउड,
हे ४, ८६५, नाट—शकु ६) । °रुइ वि
[°रुचि] सम्यक्त्व विशेष वाला, सब पदार्थों
को विस्तार में जानने की चाहवाला सम्य-
क्त्वो (पव १४६) ।

वित्थारइत्तअ (शौ) वि [विस्तारयित्त]
फैलानेवाला (अभि २८, पि ६००) ।

वित्थारग वि [विस्तारक] फैलानेवाला
(रंभा) ।

वित्थारण न [विस्तारण] फैलाव, 'सोसमइ-
वित्थारणमित्तथोय कओ समुल्लावो' (सम्म
१२२, सिरि १२०७) ।

वित्थारिय वि [विस्तारित] फैलाया हुआ
(सण, दे) ।

वित्थिण्ण } वि [विस्तीर्ण] विस्तार-युक्त,
वित्थिअ } विशाल (नाट—मृच्छ ६४,
पाअ, भवि) ।

वित्थिय देखो वित्थड (स ६६७, गा ४०७
अ) ।

वित्थिर न [दे] विस्तार, फैलाव (पड्) ।

वित्थिय देखो वित्थड (स ६१०) ।

विथक्क वि [विप्रित] जो विरोध में खड़ा
हुआ हो, विरोधी बना हुआ (स ४६७,
६३४) ।

विद देखो विअ = विद् । वक्क. विदंत (उप
२८० टी) । सकु विदित्ता, विदित्ताणं
(सुअ १, ६, २८, पि ५८३) ।

विदड पुं [विदण्ड] कक्षा तक लम्बी लट्टी
(पव ८१) ।

विदसग देखो विदसय (पएह १, १ टी—
पत्र १५) ।

विदसण न [विदर्शन] अन्धकार-स्थित वस्तु
का प्रकाशन (पएह १, १—पत्र ८) । देखो
विदरिसण ।

विदसय वि [विदंशक] श्येन आदि हिंसाक
पक्षी (उत्त १६, ६५, सुख १६, ६५) ।

विदड्ड } वि [विदग्ध] १ परिहृत, विच-
विदड्ड } क्षण (सक्ति ८) । २ विशेष दग्ध
(पव १२५) । ३ अनीएँ का एक भेद
(राज) । देखो विदड्ड ।

विदड्ड पुत्री [विदर्भ] १ देश-विशेष, 'इओ
य विदड्डदेसमडणं कुडिणं नयर' (कुप्र ४८, गा
८६) । २ भगवान् सुपाश्वर्नपथ के गणवर—
मुख्य शिष्य का नाम (सम १५२) । ३ पुत्री.
विदर्भ देश की प्राचीन राजधानी, कुरिडनपुर,
जो आजकल 'नागपुर' के नाम से प्रसिद्ध है,
'दूरे विदड्डा' (कुप्र ७०) ।

विदरिसण नि [विदर्शन] जिसके देखने से
भय उत्पन्न हो वह वस्तु, विरूप आकारवाली
विभीषिका आदि, 'एस ए तए विदरिसणे
दिट्ठे' (उवा) । देखो विदंमण ।

विदल न [विडल] वंश, वंश (सुख १०,
१, ठा ४, ४—पत्र २७१) ।

विदल न [विदल] १ चना आदि वह शुष्क
धान्य जिसके दो टुकड़े समान होते हैं,
'जम्मि हु पीनिज्जते नेहो न
हु होइ विति त विदल ।
विदलेवि हु उप्पन्न नेदुजुयं
होइ नो विदल' (सवोष ४४) ।

२ वि. जिसके दो टुकड़े किए गए हों वह
(सुअनि ७१) ।

विदलिद (शौ) वि [विदलिन] खरिहत,
चूर्णित (नाट—वेणी २६) ।

विदाअ देखो विदाय = विदुत (से १३, २५) ।

विदारग } वि [वि.ारक] विदारण कर्ता
विदारय } 'कम्मरयविदारगाइ' (पएह २,
१—पत्र ६६, राज) ।

विदालण न [विदारण] विविध प्रकार से
चोरना, फाड़ना (पएह १, १—पत्र १४) ।

विदिअ देखो विडिअ (अभि १२३, पउम
३६, ६८) ।

विदिण्ण देखो विडण्ण = वितीणं (विपा १,
२—पत्र २२) ।

विदिण्ण वि [विदीर्ण] फाड़ा हुआ, चीरा
हुआ (नाट—मृच्छ ३५५) ।

विदिता } देखो विद = विद् ।
विदित्ताणं }

विदिन्न देखो विदिण्ण = वितीणं (विपा १,
२ टी—पत्र २२, सुर ५, १८७) ।

विदिस (अप) स्त्री [विदिशा] एक नगरी का
नाम (भवि) ।

विदिसा } स्त्री [विदिश] १ विदिशा,
विदिर्सा° } उपदिशा, कोण (आचा, पि
४१३, पएह १—२६) । २ विपरीत दिशा,
असयम (आचा) ।

विदु देखो विउ (पचा १६, ७) ।

विदुगुल्ला देखो विउन्ल्ला (राज) ।

विदुग्ग न [विदुर्ग] समुदाय (भग १, ८)

विच्छिन्ति स्त्री [विच्छिन्ति] १ विन्यास, रचना (पाप्र, स ६१५ सुपा ५४, ८३, २६०, गउड)। २ प्रान्त भाग (सुर ३, ७०)। ३ अग्रराग (गा ७८०)।

विच्छिन्न देवो विच्छिण्ण (विपा १, २ टो—पत्र २८)।

विच्छिव सक [वि + स्पृश्] विशेष रूप से स्पर्श करना। कवक विच्छिप्पमाण (कप्प, औप)।

विच्छिय सक [वि + क्षिप्] फेंकना। संक विच्छिविअ (नाट—वैत ३८)।

विच्छु } देखो विचुअ (गा २३७, जो विच्छुअ } १८, उत्त ३६, १४८, प्रासू १६, राया १, ८—पत्र १३३)।

विच्छुडिअ वि [विच्छुटित] १ बिछुडा हुआ, जो अलग हुआ हो, विरहित, 'जहवि ह कालवसेणं समी समुदाप्रो कहवि विछु (चु)डिअ' (वज्जा १५६)। २ मुक्त (राज)।

विच्छुरिअ वि [दे] अपूर्व, अद्भुत (पट्)।

विच्छुरिअ वि [विच्छुरित] १ खचित, जडा हुआ, 'खचिअ विच्छुरिअयं जडिअ' (पाप्र)। २ संवद, जोडा हुआ (से १४, ७६)। ३ व्याप्त (पठम २, १०१, सुपा ६, २१२, सुर २, २२१)।

विच्छुह सक [वि + क्षिप्] फेंकना, दूर करना। विच्छुह (से १०, ७३, गा ४२४ म)। क. विच्छुहव (से १०, ५३)।

विच्छुह अक [वि + क्षुम्] विक्षोभ करना, चल हो उठना। विच्छुहिरे (हे ३, १४२)।

विच्छुह वि [विक्षिप्] १ फेंका हुआ, दूर किया हुआ (से ६, १६)। २ प्रेरित (पाप्र)।

विच्छुह वि [दे] वियुक्त, विरहित, विघटित, 'विच्छुहा जूहायो' (स ६७८)।

विच्छुहव देखो विच्छुह = वि + क्षिप्।

विच्छेअ पुं [दे] १ विलास। २ जघन (दे ७, ६०)।

विच्छेअ पु [विच्छेद] १ विभाग, पृथक्करण (विसे १००६)। २ वियोग (गा ६१३)।

३ अनुबन्ध विनाश, प्रवाह-निरोध (कप्प)।

विच्छेअण न [विच्छेदन] ऊपर देखो (राज)।

विच्छेअय वि [विच्छेदरु] विच्छेद-कर्ता (भवि)।

विच्छेइ वि [विच्छेदिन्] ऊपर देखो (कुप्र २२)।

विच्छेइअ वि [विच्छेदित] विच्छिन्न किया हुआ (नाट—विरू ८२)।

विच्छोइय वि [दे] विरहित (भवि)।

विच्छोह देवो विच्छोल। सक विच्छोडिवि (अप) (हे ४, ४३६)।

विच्छोम पु [दे. विदर्भ] नगर-विशेष, 'विदर्भे विच्छोमो' (प्राक ३८)।

विच्छोय पुं [दे] विरह, वियोग (भवि)। देखो विच्छोह।

विच्छोल सक [कम्पय] कंपाना। विच्छोलद (हे ४, ४६)। वक्र. विच्छोलंत, विच्छोलित (कप्प, सुर १०, १०७, १५, १३)।

विच्छोलिअ वि [कम्पित] कंपाया हुआ (कुमा, गउड)।

विच्छोलिअ वि [विच्छोलिन्] धीत, धोया हुआ, 'धोअ विच्छोलिअ' (पाप्र)।

विच्छोव सक [दे] वियुक्त करना, विरहित करना,

'कालेण रुढपेम्मे परोप्परं

हिययनिव्वडियभावे।

अकलुणहियमो एसो

विच्छोवइ सत्तसंघाए'

(स १८६)।

विच्छोह पु [दे] विरह, वियोग (दे ७, ६२, हे ४, २६६)।

विच्छोह पु [विक्षोभ] १ विक्षेप, 'जे संमुहागअवोलतवलअपिअपेसिअच्छिविच्छोहा' (गा २१०), 'पुलइयकवोलमूला विमुक्ककडक्ख-विच्छोहा' (सम्मत्त १६१)। २ चंचलता (उप पृ १५८)।

विछल सक [वि + छल्य] छलित करना, ठगना। कर्म. विछलिअइ (महा)।

विछोय देखो विच्छोव। विछोयइ (स १८६ टि)।

विजइ वि [विजयिन्] विजेता, जीतनेवाला (कप्प, नाट—विरू ५)।

विजंभ देखो विअभ = वि + जम्भ। वक्र. विजभत (काप्र १८६)।

विजठ वि [वित्यक्त] परित्यक्त (उत्त ३६, ८३, सुख ३६, ८३, औप २४६)।

विजण देखो विअण = विजन। 'लवणण! देसो इमो विजणो' (पठम ३३, १३, हे १, १७७, कुमा)।

विजय सक [वि + जि] १ जीतना, फतह करना। २ अक. उत्कर्ष ने वर्तना, उत्कर्ष-युक्त होना। विजयइ (पव २७६—गाया १५६६), 'विजयतु ते पएना विहरेइ जेत्य वीरजिणुनाहो' (धर्मवि २२)। क. विजेतव्य (पै) (कुमा)।

विजय पु [विजय] १ निर्णय, शास्त्र के अर्थ का ज्ञान-पूर्वक निश्चय (ठा ६, १—२१ १८८, सुज १०, २२)। २ अनुचिन्तन, विमर्श (औप)।

विजय पुं [विजय] आश्रय, स्थान (दस ६, ५६)।

विजय पुं [विजय] १ जय, जीत, फतह (कुमा, कम्म १, ५५, अमि ८१)। २ एक देव-विमान (अनु, सम ५७, ५८)। ३ विजय-विमान-निवासी देवता (सम ५६)। ४ एक मुहूर्त, आहोरात्र का बारहवां या सतरहवां मुहूर्त (सम ५१, सुज १०, १३, कप्प, राया १, ८—पत्र १३३)। ५ भगवान् नमिनायजी का पिता (सम १५१)। ६ भारतवर्ष के बीसवें भावी जिनदेव (नम १५४, पव ४६)। ७ तृतीय चक्रवर्ती के पिता का नाम (सम १५२)। ८ आश्विन मान (सुज १०, १६)। भारतवर्ष में ३ पञ्चद्वितीय बलदेव (सम ८४, १५८ टो; अनु, पव २०६)। १० भारतवर्ष का भावी दूसरा बलदेव (सम १५४)। ११ ग्यारहवें चक्रवर्ती राजा का पिता (सम १५२)। १२ एक राजा (उप ७६८ टो)। १३ एक क्षत्रिय का नाम (विपा १, १—पत्र ४)। १४ भगवान् चन्द्र-प्रभ का शासन-देव (सति ७)। १५ जवू-द्वीप का पूर्व द्वार। १६ उस द्वार का अधिष्ठाता देव (ठा ४, २—पत्र २२५)। १७ लवण समुद्र का पूर्व द्वार। १८ उस द्वार का अधिपति देव (ठा ४, २—पत्र

विद्धंसण न [विध्वंसन] विनाश (गाया १, १—पत्र ४८, परह १, ३—पत्र ५५, सूत्र १, २, २, १०, चेद्वय ६६४, उप पृ १८७)।

विद्धसणया स्त्री [विध्वसना] विनाश (भग)।

विद्धसित वि [विध्वसित] विनाशित (चड ३, ५)।

विद्धंसिय } वि [विध्वस्त] विनष्ट (पउम
विद्धत्थ } ८, २३७, १६, ३०, पव १५५)।

विद्धि स्त्री [वृद्धि] १ बढाव, बढती (उप ७२८ टी, सुर ४, ११५)। २ समृद्धि (ठा १०—पत्र ५२५, विसे ३४०८)। ३ अमृदय। ४ सपत्ति। ५ अहिंसा (परह २, १—पत्र ६६)। ६ कलान्तर, सूद (विपा १, १—पत्र ११)। ७ व्याकरण-प्रसिद्ध स्वर का विकार (विसे ३४८२)। ८ ओषधि-विशेष (राज)।

विद्धूण देखो विद्ध = व्यध्।

विधम्म देखो विहम्म (राज)।

विधम्मिय वि [विधर्मित] तिरस्कृत (विसे २३४६)।

विधवा देखो विहवा (निवृ ८)।

विधा अ [वृथा] मुधा, निरर्थक, व्यर्थ (धर्मसं ४११)।

विधाण देखो विहाण = विधान (वृह १)।

विधाय देखो विहाय = विधातृ (राज)।

विधार सक [वि + धारय्] निवारण करना। संकृ. विधारेउं (पिड १०२)।

विधि (शौ) देखो विहि (हे ४, २८२, ३०२)।

विधुर वि [विधुर] १ व्याकुल, विह्वल, 'नहि विधुरसहावा हुंति दुत्येवि धीरा' (कुप्र ५४)। २ विपम, असमान (धर्मसं १२२३, १२२४)। देखो विहुर।

विधुव (शौ) देखो विहुण = वि + धू। विधुवेदि (पि ५०३)।

विधूण देखो विहुण = वि + धू। संकृ. विधू-णिता (सूत्र २, ४, १०)।

विधूम पु [विधूम] अग्नि, वह्नि (सूत्र १, ५, २, ८, वसु)।

विधूय वि [विधूत] क्षुण्ण, सम्यक् स्पृष्ट, 'विधूयकण्ये' (आचा १, ३, ३, ३, १, ६, ३, १)। देखो विहूअ।

विनड देखो विणड। विनडइ (भवि), 'अइ हिअअ पसिम विरमसु दुल्लहपेम्मेण किं नु विनडेसि' (सुम्मि ५८)। कवक. विनडिज्जत, विनडिज्जमाण (मुपा ६५५, १३४)।

विनडण न [विनटन] १ व्याकुल करना। २ विडम्बना (मुपा २०८)।

विनडिअ वि [विनटित] १ व्याकुल बना हुआ। २ विडम्बित, 'तएहाल्लुहाविनडिओ फलजलरहियम्मि सेलम्मि' (सम्मत्त १५६, सुपा २६०)।

विनमि पु [विनमि] भगवान् ऋषभदेव का एक पौत्र (घण १४)।

विनास देखो विणास = वि + नाशय्। विना-सए (महा)।

विनिज्झा सक [विनि + ध्यै] देखना। विनिज्झाए (दस ५, १, १५)।

विनिवद्ध वि [विनिवद्ध] सवद्ध, बँचा हुआ (महा)।

विनिमय पुं [विनिमय] व्यत्यय, 'इअ सव्व-भासविनिमयपरिहि' (कुमा)।

विनियट्ट देखो विणिवट्ट। वक. विनियट्ट-माण (आचा १, ५, ४, ३)।

विनियट्टण न [विनिवर्त्तन] निवृत्ति, विराम (आचा)।

विनिरय वि [विनिरत] लीन, प्राप्त (कुप्र ६६)।

विनिहन्न सक [विनि + हन्] मार डालना, विनाश करना। विनिहन्निज्जा (उत्त २, १७)।

विनिहाय देखो विणिघाय (विपा १, २—पत्र ३१)।

विनीय देखो विणीअ (कस)।

विन्नत्त देखो विण्णत्त (काल)।

विन्नत्ति देखो विण्णत्ति (दं ४७, कुमा)।

विन्नप्प देखो विन्नव।

विन्नव देखो विण्णव। विन्नवइ, विन्नवेइ (पउम ३६, ११४, महा), विन्नवेज्जा (कप्प)। वक. विन्नवेमाण (कप्प)। सकृ. विन्नविट्ठ, विन्नवित्ता (मुपा ३२३, पि ५८२)। कृ. विन्नप्प, विन्नवणीय, विन्नवियव्व (पउम

४६, ४६, मोह ८२, सुपा १६२, २१६, ३२१)।

विन्नवण न [विज्जपन] निवेदन, विज्ञापन (मुपा २६७)।

विन्नवणा स्त्री [विज्ञापना] १ प्रार्थना, विनती (सूत्र १, ३, ४, १०)। २ महिला, नारी (सूत्र १, २, ३, २)। देखो विज्जणणा।

विन्नविय वि [विज्ञापित] निवेदित (महा)।

विन्ना देखो विण्णा = वि + ज्ञा। कृ. विन्नेय (भग, उप ३३६ टी)।

विन्ना देखो विन्ना। 'यड न [तट] एक नगर का नाम (उप पृ ११२)।

विन्नाउ वि [विज्ञातृ] जाननेवाला (आचा)।

विन्नाण न [विज्ञान] १ सद्बोध, ज्ञान (भग, आचा)। २ कला, शिल्प, 'तं नत्थि किं पि विन्नाण जेण घरिज्जइ काया' (वै ७), 'कुसुम-विन्नाण' (कुमा, प्रासू ४३, ११२)। ३ मेवा, मति, बुद्धि, 'मेहा मई मणीसा विन्नाण धी चिई बुद्धी' (पाप्र)।

विन्नाणिय } देखो विण्णाय (उप १५० टी,
विन्नाय } सुर २, १३१, पि १०६, पाप्र)।

विन्नाविय देखो विन्नविय (मुपा १४४)।

विन्नास पुं [विन्यास] १ रचना, विच्छिन्ति, 'विन्नासो विच्छिन्ती' (पाप्र), 'वयणविन्नासो' (स ३०१, सुपा १७, २६६, महा)। २ स्थापना (भवि)।

विन्नासण न [विन्यासन] सस्थापन (स ३१८)।

विन्नासिअ वि [विन्यासित] सस्थापित (स ५६०)।

विन्नासिअ (अप) देखो विणासिअ (हे ४, ४१८)।

विन्नु देखो विण्णु (आचा), 'एगा विन्नू' (ठा १—पत्र १६)।

विन्नेय देखो विन्ना = वि + ज्ञा।

विन्हु पुं [विण्णु] एक जैन मुनि, जो प्रार्थन-जेहिल के शिष्य थे (कप्प)। देखो विण्हु। 'पअ न [पद] आकाश (समु १५०)। 'पदी स्त्री [पदी] गंगा नदी (समु १५०)।

विजल पु [विजल] १ नरकावास-विशेष, एक नरक-स्थान (देवेन्द्र २८)। २ वि जल-रहित (निचू १)।

विजल } न [दे विजल] कर्दम, पक,
विजुल } कादो, कादा (आ २, १, ५,
३, २ १०, २)।

विजलिया स्त्री [विद्युत्] विजली (कुप्र २८५)।

विज्ञा स्त्री [विद्या] १ शास्त्र ज्ञान, यथार्थ ज्ञान, सम्यग् ज्ञान (उत्त २३, २, एदि, धमवि ३६, कुमा, प्राप् ४३)। २ मन्त्र, देवी-अधिष्ठित अक्षर पद्धति। ३ साधनावाला मन्त्र (पिङ ४६४, औप ठा ३, ४ टी—पत्र १५६)। ४ अणुपवायन [अनुप्रवाद] जैन अग्र ग्रन्थाश विशेष, दसवाँ पूर्व (सम २६)। ५ चारण पु [चारण] शक्ति-विशेष-संपन्न मुनि (भग २०, ६—पत्र ७६३)। ६ चारणलद्धि स्त्री [चारणलद्धि] शक्ति-विशेष (भग २०, ६)। ७ गुणपवाय देखो अणुपवाय (राज)। ८ गुणवायन [नुवाद] दसवाँ पूर्व (सिरि २०७)। ९ पिंड पु [पिण्ड] विद्या के बल से अर्जित भिक्षा (निचू १३)। १० मत वि [वन्] विद्या-संपन्न (उप ४२५)। ११ लय पुन [लय] पाठशाला (ग्रामा)। १२ सिद्ध वि [सिद्ध] १ सर्व विद्याओं का अधिपति, सभी विद्याओं से संपन्न। २ जिसको कम से कम एक महाविद्या सिद्ध हो चुकी हो वह, 'विज्जाण चकवट्टी विज्जासिद्धो स, जस्म वेगावि सिज्जेज्ज महाविज्जा' (आवम)। ३ हर पुं [धर] १ क्षत्रियों का एक वंश (पत्तम ५, २)। २ पुत्री उम वंश में उत्पन्न (महा)। स्त्री. ३ री (महा, उव)। ४ वि विद्या-वारी, शक्ति विशेष-सम्पन्न (औप, राय, ज ४)। ५ हरगोवाल पुं [वरगोपाल] एक प्राचीन जैन मुनि, जो सुस्थित और सुप्रतिबुद्ध आचार्य के शिष्य थे (कप्प)। ६ हरी स्त्री [वरी] एक जैन मुनि-शाखा (कप्प)। ७ हार (अप) न [धर] छन्द-विशेष (पिंग)।

विज्ञावच्च (अप) देखो वेयावच्च (भवि)।

विज्ञाहर वि [वैद्याधर] विद्याधर-सम्बन्धी, स्त्री 'एसा विज्जाहरी माया' (महा)।

विज्जाडिय देखो विज्जिडिय (राज)।

विज्जु पु [विद्युत्] १ विद्याधर-वंश का एक राजा (पत्तम ५, १८)। २ देवों की एक जाति, भवनपति देवों का एक भेद (परह १, ४—पत्र ६८)। ३ ग्रामलक्षणा नगरी का निवासी एक गृहस्थ (राया २—पत्र २५१)। ४ एक नरक-स्थान (देवेन्द्र २६)। ५ स्त्री ईशानेन्द्र के सोम आदि लोकपालों की एक-एक अग्रमहिषी—पटरानी (ठा ४, १—पत्र २०४)। ६ चमर नामक इन्द्र की एक पटरानी (ठा ५, १—पत्र ३०२, राया २—पत्र २५१)। ७ पुत्री विजली, 'विज्जुणा, विज्जूए' (हे १, ३३, कुमा, गा १३५)। ८ सन्ध्या, शाम (हे १, ३३)। ९ वि विशेष रूप से चमकनेवाला, 'विज्जुसोयामणिप्पभा' (उत्त २२, ७)। १० कार देखो यार (जीव ३—पत्र ३४२)। ११ कुमार पुं [कुमार] एक देव-जाति (भग, इक)। १२ कुमारी स्त्री [कुमारी] विद्विग्धक पर रहनेवाली दिक्कुमारी देवी, 'चत्तारि विज्जुकुमारिमहत-रियाओ परएत्ताओ' (ठा ४, १—पत्र १६८)। १३ जिम्म (?) , जिम्भ पु [जिह्व] अनुवेलधर नागराज का एक आवास पर्वत (इक, राज)। १४ तेअ पु [तेजस्] विद्याधरवंश का एक राजा (पत्तम ५, १८)। १५ दत्त पु [दन्त] १ एक अन्तर्द्वीप। २ उसमें रहनेवाली मनुष्य-जाति (ठा ४, २—पत्र २२६)। ३ दत्त पु [दन्त] विद्याधरवंश का एक राजा (पत्तम ५, १८)। ४ दाढ पु [दट्ट] विद्याधर-वंश में उत्पन्न एक राजा का नाम (पत्तम ५, १८)। ५ पह, प्पभ, प्पह पु [प्रभ] १ एक वक्षस्कार पर्वत का नाग (सम १०२ टी, ठा २, ३—पत्र ६६, ५, २—पत्र ३२६, ज ४, सम १०२, इक)। २ कूट-विशेष, विद्युत्प्रभ वक्षस्कार का एक शिखर (ज ४, इक)। ३ देव-विशेष, विद्युत्प्रभ नामक वक्षस्कार पर्वत का अधिष्ठाता देव (ज ४)। ४ अनुवेलधर नागराज का एक आवास-पर्वत (ठा ४, २—पत्र २२६, इक)। ५ उस पर्वत का निवासी देव (ठा ४, २—पत्र २२६)। ६ देवकुल वर्ण में स्थित एक महाद्रह (ठा ५, २—पत्र

३२६)। ७ न, एक विद्याधर-नगर (इक ३२६)। ८ मई स्त्री [मती] एक स्त्री का नाम (परह १, ४—पत्र ८५)। ९ मालि पुं [मालिन] १ पचशैल द्वीप का अधिपति एक यक्ष (महा)। २ रावण का एक सुभट (से १३, ८४)। ३ ब्रह्मादेवलोक का इन्द्र (राज)। ४ मुह पु [मुख] १ विद्याधर-वंश का एक राजा (पत्तम ५, १८)। २ एक अन्तर्द्वीप। ४ उसका निवासी मनुष्य (ठा ४, २—पत्र २२६, इक)। ५ मेह पुं [मेघ] १ विद्युत्प्रधान मेघ, जल-रहित मेघ। २ विजली गिरानेवाला मेघ (भग ७, ६—पत्र ३०५)। ६ यार पु [कार] विजली करना, विद्युत्-रचना (भग २, ६)। ७ लआ, ल्हाया स्त्री [लता] विद्युत्, विजली (नाट—वेणी ६६, काल)। ८ ल्हाद न [लखायित] विजली की तरह आचरण (कप्प)। ९ विल-सिअ न [विलसित] १ छन्द-विशेष (अजि २१)। २ विजली का विलाम (से ४, ४०)। ३ सिहा स्त्री [शिखा] एक रानी का नाम (महा)।

विज्जुआ स्त्री [विद्युत्] १ विजली (नाट—वेणी ६६)। २ बलि नामक इन्द्र के सोम आदि चारों लोकपालों की एक-एक पटरानी, 'मित्ता सुभहा विज्जुत्ता (?) या अमरणी' (ठा ४, १—पत्र २०४, इक)। ३ धरणेन्द्र की एक अग्र-महिषी (राया २—पत्र २५१, इक)।

विज्जुआइत्तु वि [विद्युत्कर्तृ] विजली करने-वाला (ठा ४, ४—पत्र २६६)।

विज्जुला देखो विज्जु = विद्युत् (ह २
विज्जुलिआ १७३, पङ् १६१, कुमा, प्राक्
विज्जुली ३६, प्राप्, पि २४४)।

विज्जू देखो विज्जु। १ माला स्त्री [माला] छन्द-विशेष (पिंग)।

विज्जे अ [दे] १ मार्ग में, रास्ता से। २ लिए (भवि)।

विज्जोअ पु [विद्योत] उद्योत, प्रकाश, 'जोन्वणं जीविअ रुव विज्जुविज्जोअवचल' (हित ६)।

विज्जोडय } वि [विद्योतित] प्रकाशित,
विज्जोविय } चमका हुआ (उप पृ ३३, स ५७६)।

विप्परिस पु [विप्रकर्ष] दूरी, आमन्नता का अभाव, 'दिमाइविप्परिसा' (धर्मस १२१७)।

विप्परिणसक [विप्र + गाल्य] नाश करना। विप्परिणस (हे ४, ३१, पि ५५३)।

विप्परिणालिअ वि [नाशित, विप्रणाशित] नाशित (कुमा)।

विप्परिणट्ट वि [विप्रकट्ट] १ दूरवर्ती, दूरी पर स्थित (स २२६)। २ दोष, लम्बा, 'एण्ड-विप्परिणट्टेहि अट्ठाणेहि' (साया १, १५)।

विप्परिचय सक [विप्र + त्यज्] छोड़ना, त्याग करना। कृ. विप्परिचयव्य (तट्ट ३५)।

विप्परिचय पु [विप्रत्यय] १ सदेह, संशय (उत्त २३, २४)। २ वि प्रत्यय-रहित, अविश्वसनीय (उव)।

विप्परिजड वि [विप्रहीण] परित्यक्त (साया १, २—पत्र ८४ पचा १४, ६, पव १२३)।

विप्परिजह सक [विप्र + हा] परित्याग करना, छोड़ देना। विप्परिजहइ, विप्परिजहति, विप्परिजहे (कस, उवा, सूत्र २, १, ३८, उत्त ८, ४)। भवि विप्परिजहस्सामो (पि ५३०)। वकृ. विप्परिजहमाण (ठा २, २—पत्र ५६, पि ५००)। सकृ. विप्परिजहिता, विप्परिजहाय (उत्त २६, ७३, भग)। कृ. विप्परिजहणिज्ज, विप्परिजहियव्य (साया १, १—पत्र ४८, पि ५७१, साया १, १८—पत्र २४१)।

विप्परिजह न [विप्रहाण] परित्याग। 'सेणिया खी [अंणिका] वारहवें जैन अग-अन्य का एक परिकर्म—अश-विशेष (सम १२६)।

विप्परिजहणा } खी [विप्रहाणि] प्रकृष्ट
विप्परिजहन्ना } त्याग, परित्याग (उत्त २६, ७३, श्रीप, विसे ३०८६, पण ३६—पत्र ८४७)।

विप्परिजहिय वि [विप्रहीण] परित्यक्त (पि ५६५)।

विप्परिजोग देखो विप्परिओअ (चंड)।

विप्परिडइ अक [विपरि + इ] विपरीत होना, उलटा होना। विप्परिडइ (सूत्र १, १२, १०)।

विप्परिडिवाय पु [विप्रतिधात] प्रतिवन्ध, अटकाव (साया १, १६—पत्र २४५)।

विप्परिडिपह पुं [विप्रतिपथ] विपरीत मार्ग (उप १०३१ टी)।

विप्परिडिवण देखो विप्परिडिवन्न (पव ७३ टी)।

विप्परिडिवत्ति खी [विप्रतिपत्ति] १ विरोध (निसे २४८०)। २ प्रतिज्ञा-भग (उप ५१६)।

विप्परिडिवन्न वि [विप्रतिपन्न] १ जिसने विशेष रूप में स्वीकार किया हो वह, 'मिच्छ-पज्जेवेहि परिवड्डमाणेहि २ मिच्छतं विप्परिडिवन्ने जाए जाए यावि होत्या' (साया १, १३—पत्र १७८)। २ विरोध-प्राप्त. विरोधी बना हुआ (आचा १, ८, १, ३, सूत्र १, ३, १, ११)।

विप्परिडिवेअ } सक [विप्रति + वेदय्]
विप्परिडिवेद } १ जानना। २ विचारना।
विप्परिडिवेइ (आचा १, ५, ४, ४), विप्परिडिवेदंति (सूत्र २, १, १५)।

विप्परिडिसिद्ध वि [विप्रतिपिद्ध] आपस में असमत (उवर ३)।

विप्परिडोव वि [विप्रतीप] प्रतिकूल (माल १७७)।

विप्परिणट्ट वि [विप्रनट्ट] पलायित, नाश-प्राप्त (म ३५३, उवा)।

विप्परिणम } सक [विप्र + णम्] १ नमना।
विप्परिणय } २ अक. तत्पर होना। विप्परिणवन्ति (सूत्र १, १२, १७)। वकृ. विप्परिणमत (राज)।

विप्परिणरस अक [विप्र + नञ्] नष्ट होना, विनाश-प्राप्त होना। विप्परिणरसइ (कस) भवि विप्परिणरसिहिइ (महानि ४)।

विप्परिणास पु [विप्रणाश] विनाश (धर्मवि ५७)।

विप्परितार सक [विप्र + तारय्] ठगना। विप्परितारसि (धर्मवि १४७)। कर्म. विप्परितारीअदि (शौ) (नाट—शकु ७५)।

विप्परिदीअ } (शौ) देखो विप्परिदीव (नाट—
विप्परिदीव } मालती १०६, ११६, मुच्छ ४८)।

विप्परिमाय पुं [विप्रमाद] विविध प्रमाद (सूत्र १, १४, १)।

विप्परिमुच सक [विप्र + मुच्] छोड़ना, मुक्त करना। कर्म. विप्परिमुच्चइ (उत्त २५, ४१)।

विप्परिमुक्क वि [विप्रमुक्त] विमुक्त (श्रीप, सुर २, २३७, सुपा ४४५)।

विप्परिय न [दे] १ खल-भिक्षा। २ दान। ३ वि वापित। ४ पु वैय (दे ७, ८६)।

विप्परियार सक [विप्र + तारय्] ठगना। विप्परियारति, विप्परियारेमि (कुप्र ६, त्रि ८८)। कर्म. विप्परियारोअइ (कुप्र ४८)। सकृ. विप्परिआरिअ (त्रि ८८)।

विप्परियारणा खी [विप्रनारणा] वचना, ठगई (कुप्र ४४, मोह ६४)।

विप्परियारिअ वि [विप्रतारित] वञ्चित, ठगा हुआ (मोह १०१)।

विप्परिद्ध वि [दे] विशेष पीडित, 'करवरण-दंतमुसलप्पहारेहि विप्परिद्धे समाणे त चेव महद्दहं पाणीयं पादेउ (पाउ) समोयरेति' (साया १, १—पत्र ६४)। देखो परद्ध।

विप्परिआमुस देखो विपरिआमुस, 'आवती कैयावती लोगसि विप्परिआमुसति अट्ठाए अणट्ठाए वा, एणसु चेव विप्परिआमुसति' (आचा)।

विप्परिणम देखो विपरिणम। भवि विप्परिणमिस्सति (भग)।

विप्परिणय देखो विपरिणय (भग ५, ७ टी—पत्र २३६, काल)।

विप्परिणाम देखो विपरिणाम = विपरि + णमय्। विप्परिणामति विप्परिणामंति (आचा)। सकृ. विप्परिणामइत्ता (भग)।

विप्परिणाम देखो विपरिणाम = विपरिणाम (आचा, भग ५, ७ टी—पत्र २३६)।

विप्परिणामिय देखो विपरिणामिय (भग ६, १—पत्र २५०)।

विप्परियास सक [विपरि + आसय्] व्यत्यय करना, उलटा करना। विप्परियासइ (निच्च ११)। वकृ. विप्परियासत (निच्च ११)।

विप्परियास पु [विपर्यास] १ व्यत्यय, विपरीतता (आचा, सूत्र ६, ७, ११)। २ परिभ्रमण (सूत्र १, १२, १३, १, १३, १२)।

विडवंत (परम ८, ३२) । कवक विडंविज्जत (सुपा ७०) ।

विडव सक [वि + डम्बय्] विवृत करना, फैलाना । विडवेह (भग ३, २—पत्र १७३) ।

विडव पुन [विडम्ब] १ तिरस्कार, अपमान (भवि) । २ माया जाल, प्रपञ्च, 'अणिच्चं च कामाण सेवाविडव' (श्रु ६, कप्पु) ।

विडवग वि [विडम्बक] विडवना-जनक, 'जइवेसविडवगा नवर' (संदोव १४, उव) ।

विडवण न [विडम्बन] नीचे देखो (भवि) ।

विडवणा स्त्री [विडम्बना] १ तिरस्कार, अपमान (दे) । २ दुःख, कष्ट (धण ४२) । ३ अनुकरण, नकल । ४ उपहास । ५ कपट-वेप (कप्पु) ।

विडविय वि [विडम्बित] विडम्बना-प्राप्त (कप्पु; गठड, ३०२) ।

विडज्झमाण वि [विडह्यमान] जो जलाया जाता हो वह, जलता हुआ (आचा १, ६, ४, १) ।

विडड्ढ देखो विडड्ढ (गा ६७१) ।

विडप्प पुं [दे] राहु (दे ७, ६५, पाप्प, विडय) गउड, वज्जा ६८, दे ७, ६५) ।

विडव पु [विटप] १ पल्लव (सुर ३, ४५) । २ शाखा (भवि ११०) । ३ पल्लव-विस्तार । ४ स्तम्भ गुच्छा (प्राप्प) ।

विडवि पु [विटपिन्] वृक्ष, पेड़, दरहन (पाप्प; सुपा ८८, गठड, सण) ।

विडविड सक [रचय्] बनाना, निर्माण करना । विडविडड, विडविड्ड (दे ४, ६४, पड्) । भूका, विडविड्डीअ (कुमा) ।

विडिअ वि [व्रीडित] लज्जित (से ११, ५०, पि ८१) ।

विडिचिअ वि [दे] विकराल, भीषण, विडिच्चिअ भयकर (दे ७, ६६) ।

विडिम पुं [दे] १ बाल-भृग (दे ७, ८६) । २ गण्डक, गंडा (दे ७, ८६, गठड) । ३ वृक्ष, पेड़, 'हुमा य पायवा रुक्खा आगमा विडिमा तह' (दसनि १, ३५) । ४ शाखा (परह २, ४—पत्र १३० औप; तदु २१) ।

विडिमा स्त्री [दे] शाखा (परह २, ४, तदु २१, राज) ।

विडुच्छअ वि [दे] निपिद्ध, प्रतिपिद्ध (पड्) ।

विडुविल्ल वि [दे] भीषण, भयकर (नाट—मालती १३७) ।

विडूर पुं [विदूर] १ पर्वत-विशेष । २ देश-विशेष, जहाँ वैदूर्य रत्न पैदा होता है (कप्पु) ।

विडोमिअ पुं [दे] गण्डक भृग, गंडा (दे ७, ५७) ।

विडु वि [दे] १ दीर्घ, लम्बा (दे ७, ३३) । २ प्रपञ्च, विस्तार (दे १, ४) ।

विडु वि [व्रीड, व्रीडित] लज्जित, शरमिन्दा, 'लज्जिया विलिया विडु' (निर १, १, पि २४०) ।

विडूर देखो विडूर, 'अकडविडूरमेयं कि देव पारद' (उप ७६८ टी) ।

विडु स्त्री [व्रीडा] लज्जा, शरम (दे ७, ६१, पि २४०) ।

विडूर न [विदूर] देखो विडूर (राज) ।

विडूर न [दे] १ आमोग (दे ७, ६०) । २ आटोप, आडम्बर (पाप्प) । ३ वि रौद्र भयकर (दे ७, ६०) ।

विडूरिहा स्त्री [दे] रात्रि, निशा (दे ७, ६७) ।

विडुडुम देखो विडुडुम (पाप्प) ।

विडुदुरी स्त्री [दे] आटोप, आडम्बर, 'किं लिगविडुदुरीवारणेण' (उव) ।

विडुदुरिल्ल वि [वैडूर्यवत्] वैदूर्य रत्नवाला (सुपा ५६) ।

विडुडेर न [दे. विडूर] नक्षत्र-विशेष, पूर्व द्वारवाले नक्षत्रों में पूर्व दिशा से जाने के बदले पश्चिम दिशा से जाने पर पड़ता नक्षत्र (विसे ३४०६) । देखो विडूर ।

विडज्ज (शौ) सक [वि + दह्] जलाना । संक्रु विडज्जिअ (पि २१२) ।

विडणा स्त्री [दे] पाणि, फीली का नीचला भाग (दे ७, ६२) ।

विडत्त वि [आजित] उपाजित, पैदा किया हुआ (दे ४, २५८, गउड, आ १०, प्राप्प ७४, भवि) ।

विडत्ति स्त्री [अर्जिति] अर्जन, उपाजन (आ १२) ।

विडप्प अक [व्युन् + पद्] व्युत्पन्न होना । विडप्पति (प्राक् ६४) ।

विडप्प नीचे देखो ।

विडव सक [अर्ज] उपाजन करना; पैदा करना । विडवड (दे ४, १०८ महा, भवि) । कमं विडविज्जड, विडप्पड (दे ४, २५१, कुमा, भवि) ।

विडवण न [अर्जन] उपाजन (सुर १, २२१) ।

विडविअ वि [अर्जित] पैदा किया हुआ (कुमा, सुपा २८०, महा) ।

विडिअ वि [वेष्टिन्] लपेटा हुआ (सुपा ३८८) ।

विणइ वि [विनयिन्] दूर करनेवाला, 'भारभविणइण' (आचा) ।

विणइत्त वि [विनयवन्] विनयवाला, विनय को ही सर्व-प्रधान माननेवाला (सुसनि ११८) ।

विणइत्तु वि [विनेत्त] विनीत बनानेवाला, विनय की शिक्षा देनेवाला (उत्त २६, ४) ।

विणइत्तु देखो विणी = वि + नी ।

विणइय वि [विनयित] शिक्षित किया हुआ, सिखाया हुआ (राज) । देखो विणगय ।

विणइल्ल देखो विणइत्त (कुमा) ।

विणएत्तु देखो विणी = वि + नी ।

विणट्ट वि [विनष्ट] विनाश-प्राप्त (उव, प्राप्प ३१, नाट—मुच्छ १५२) ।

विणड सक [वि + नटय्, वि + गुप्] १ व्याकुल करना । २ विडम्बना करना । विणडड (गउड ६८), विणडडति (उव), विणडड (दे ४, ३८५, पि १००) ।

विणडिअ देखो विनडिअ (गा ६३० टी) ।

विणण न [वान] कुनना (वृह १) ।

विणभ सक [खेदय्] खिन्न करना । विणभड (घात्वा १५३) ।

विणम सक [वि + नम्] विशेष रूप से नमना । वक्र. विणमत (नाट—मालवि ३४) ।

विणमि देखो विनमि (राज) ।

विष्फुरण न [विस्फुरण] १ विजृम्भण, विकाम (आवक २४५, सुर २, २३७) । २ स्पन्दन, हिलन (गउड) ।

विष्फुरय वि [विस्फुरेत] विजृम्भित (सुपा २०४, मण) ।

विष्फुल्ल वि [विफुल्ल] विकसित, प्रफुल्ल, 'तह तह सुएहा विष्फुल्लगडविवरमुही हसई' (वज्जा ४४) ।

विष्फोडअ पुं [विस्फोटक] फोडा (नाट—शकु २७, पि ३११, प्राप्र) ।

विफंद देखो विफद । वहु विफदमाण (आचा १, ४, ३, ३) ।

विफाल सक [वि + पाटय्] १ विदारण करना । २ उझाडना । सक विफालिय (आचा २, ३, २, ६) ।

विफुट् अक [वि + स्फुट्] फटना । वहु चितति किं विफुट् चंदमडयस्स रवो' (सुपा ४५) ।

विफुरण देखो विष्फुरण (सुपा २५) ।

विधधक वि [विधन्धक] विशेष रूप से बाधनेवाला (पच २, १) ।

विधद्ध वि [विद्ध] १ विशेष बद्ध । २ माहित (सूत्र १, ३, २, ६) ।

विवाहग वि [विवाधक] विरोधी, बाधक (धर्म ४६६) ।

विधुद्ध वि [विधुद्ध] जागृत (सिरि ११५) । विधुध (शौ) नीचे देखो (पि ३६१) ।

विधुह पु [विधुध] १ देव, त्रिदश (पात्र, सुर १, ४५) । २ पण्डित, विद्वान् (सुर १, ४५) । 'चंद पु [चन्द्र] एक प्रसिद्ध जैनाचार्य (सुपा ६५८) । 'पहु पुं [प्रभु] इन्द्र (सुर १, १७२) । 'पुर न [पुर] स्वर्ग (सम्मत् १७५) ।

विधुहेरर पु [विधुधेश्वर] इन्द्र (आवक ५) । विधोह पु [विधोध] जागरण (पचा १, ४२) ।

विधोहग देखो विधोहय (कण्) ।

विधोहण न [विधोधन] ज्ञान कराना, 'अवुहणविधोहणकरस्स' (सम १२३) ।

विधोहय वि [विधोधक] १ विकासक, 'कुमुयवणविधोहय' (कण् ३८ टि) । २ ज्ञान-जनक (विसे १७४) ।

विध्वोअ पु [विध्वोक] विलास, लीला, 'हेला ललिअ लीला विध्वोओ विध्वमो विलासो य' (पात्र) । देखो विध्वोअ ।

विध्वभग देखो विभग (भग, पव २२६, कम्म ४, १४, ४०) ।

विध्वभि वि [विभङ्गिन्] विभंग-ज्ञानवाला (भग) ।

विध्वभत वि [विभ्रान्त] १ विशेष भ्रान्त, चकर मे पडा हुआ (आचा १, ६, ४, ३) ।

२ पु प्रथम नरक-भूमि का सातवाँ नर-केन्द्रक—स्थान-विशेष (देवेन्द्र ४) ।

विध्वभस पुं [विभ्रश] अतिपात, हिंसा, प्राण-वियोजन (राज) ।

विध्वभट्ट वि [विभ्रष्ट] विशेष भ्रष्ट (प्रति ४०) ।

विध्वभम पुं [विभ्रम] १ विलास (पात्र, गउड ५५, १६७, कुमा) । २ स्त्री की शृंगार के अग-भूत चेष्टा-विशेष (गउड, गा ५) । ३ चित्त-भ्रम, पागलपन (राय) । ४ शृंगार-सवन्धी मानसिक अशान्ति (कप्पू) । ५ विशेष भ्रान्ति (सुपा ३२७, गउड) । ६ सदेह । ७ आश्चर्य । ८ शोभा (गउड) । ९ भूषणों का स्थान-विपर्यय (कुमा) । १० रावण का एक सुभट (पउम ५६, २६) । ११ मैथुन, अन्नह । १२ काम-विकार (पएह १, ४—पत्र ६६) ।

विध्वभल वि [विह्वल] १ व्याकुल, व्यग्र (सुर ८, ५७, १२, १६८) । २ व्यापक, तल्लीन । ३ पुं. विष्णु, नारायण (पड् ४०, हे २, ५८) ।

विध्वभलिअ वि [विह्वलित] व्याकुल किया हुआ (कुमा) ।

विध्वभवण न [दे] उपधान, ओसीसा (दे ७, ६८) ।

विध्वभाडिय वि [दे] नाशित (भवि) ।

विध्वभार देखो वेध्वभार (पि २६६) ।

विध्वभडि पु [दे] मत्स्य की एक जाति (विपा १, ८ टी—पत्र ८३) ।

विध्वोइअ वि [दे] सूई से विद्ध (दे ७, ६७) ।

विभग पुं [विभङ्ग] १ विपरीत अवधिज्ञान, वितथ अवधिज्ञान, मिथ्यात्व-युक्त अवधिज्ञान

(पव २२६ टी) । २ ज्ञान-विशेष (सूत्र २, २, २५) । ३ विराधना, छेड़ना । ४ मैथुन, अन्नह (पएह १ ४—पत्र ६६) । देवो विहंग = विपंग ।

विभगु पुंस्त्री [दे] छृण-विशेष, 'एरडे कुरुविदे करकरसुठे तहा विभगु य' (पएण १—पत्र ३३) ।

विभंगुर वि [विभङ्गुर] विनश्वर (सुपा ६०५, प्रासू ६६, पुष्प २२०) ।

विभंज सक [वि + भञ्ज] भंग डालना, तोड़ना । संकृ. विभजिज्जण (काल) ।

विभतडी (अप) स्त्री [विभ्रान्ति] विविष्ट भ्रम (हे ४, ४१४) ।

विभग वि [विभग्न] भागा हुआ, छिड़कत (पउम ११३, २६) ।

विभज सक [वि + भज] १ बाँटना, विभाग करना । २ विकला से प्राप्त करना, पक्षत. प्राप्ति करना—विधान और निषेध करना । कर्म. विभज्जति (तंदु २) । कवक. विभज्जमाण (णाय १, १—पत्र ६०, उप २६४ टी) । संकृ. विभजिज्जण (धर्मवि १०५) । देखो विभज ।

विभजण न [विभजन] विभाग भाग-बाँटाई (पव ३८) ।

विभज देखो विभज । विभज्ज (कम्म ६, १०) ।

विभज्जवाड } पु [विभज्जवाड] स्याद्वाद, विभज्जवाय } अनेकान्तवाद, जैन दर्शन (धर्मस ६२१, सूत्र १, १४, २२, उवर ६६) ।

विभत्त वि [विभक्त] १ विभाग-युक्त, बाँटा हुआ (नाट—शकु ४६, कण्) । २ भिन्न, अलग, जुदा विभत्त धम्म भोनेमाणे' (आचा कण्, महा) । ३ न विभाग (राज) ।

विभत्ति स्त्री [विभक्ते] १ विभाग, भेद (भग १२, ५—पत्र ५७४, सूत्रनि ६६, उत्तनि ३६), 'लोगस्स पणसेसु अणंतरपरपरा-विभत्तोहि' (पच २, ३६, ४०, ४१) । २ व्याकरण प्रसिद्ध प्रत्यय-विशेष (ओघभा ४, चेइय २६८, सूत्रनि ६६) ।

विभमण न [दे] उपधान, ओसीसा (दे ७, ६८ टी) ।

विणिजुज सक [विनि + युज्] जोडना, कार्यं मे लगाना, प्रवृत्त करना । विणिजुजइ (कुप्र ३६१) ।

विणिज्जतण वि [विनियन्त्रण] १ नियन्त्रण-रहित । २ प्रकटित, खुला । ३ निव्यजि, कपट-रहित (मे ११, २१) ।

विणिज्जमाण देखो विणी = वि + नी ।

विणिज्जरण न [विनिर्जरण] निर्जरा, विनाश (विसे ३७७६, सवोघ ५१) ।

विणिज्जरा छो [विनिर्जरा] ऊपर देखो (सवोघ ४६) ।

विणिज्जिअ वि [विनिर्जित] पराभूत, जिसका परामव किया गया हो वह (महा, रमा, नाट—विक्र ६०) ।

विणिइ वि [विनिद्र] खिला हुआ, विकसित (पाम्र) ।

विणिइलिय वि [विनिर्दलित] विदारित, तोड़ा हुआ (सण) ।

विणिइधुण सक [विनिर् + धू] कपाना । वक्र. विणिइधुणमाण (पि ५०३) ।

विणिप्फन्न वि [विनिष्पन्न] ससिद्ध, संपन्न (उप ३६६) ।

विणिप्फिअ वि [विनिस्फिटित] विनिर्गत, बाहर निकला हुआ, 'सालिग्गामाउ तप्पो वदणहउ विणिप्फिअओ' (पउम १०५, २३) ।

विणियुडु देखो विणियुडु (पि ५६६) ।

विणिच्चिन्न वि [विनिर्भिन्न] विदारित, 'कुतविणिच्चिन्नकरिकलहुमुक्कसिक्कारपउरम्मि' (एमि १६) ।

विणिमीलिअ वि [विनिमीलित] मीचा हुआ, मूँदा हुआ, 'अलिअपमुत्तअविणिमीलिअच्छ दे सुहय मज्झ ओआस' (गा २०) ।

विणिमुक्क देखो विणिम्मुक्क (पि ५६६) ।

विणिमुय देखो विणिम्मुय । वक्र. विणिमुयत्त (औप, पि ५६०) ।

विणिम्मविअ वि [विनिर्मित] विरचित, बनाया हुआ, कृत (उा ७२८ टी) ।

विणिन्मग १ [विनिर्माण] रचना, कृति (विसे ३३१२) ।

विणिम्मिअ देखो विणिम्मविअ (गा १५६, २३५, पाअ, महा) ।

विणिम्मुक्क वि [विनिर्मुक्त] परित्यक्त, 'सव्व-कम्मविणिम्मुक्कं त वय वूम माहण' (उत्त २५, ३४) ।

विणिम्मुय वि [विनिर् + मुच्] छोडना, परित्याग करना । वक्र. विणिम्मुयमाण (एगाया १, १—पत्र ५३, पि ४८५) ।

विणिय देखो विणीअ (भवि) ।

विणियट्ट देखो विणियट्ट । विणियट्टिज्ज (दस ८, ३४) । वक्र. विणियट्टमाण (आचा १, ५, ४, ३) ।

विणियट्ट वि [विनिवृत्त] १ पीछे हटा हुआ । २ प्रणष्ट, 'विणियट्ट ति पणट्ट' (वेइय ३४६) ।

विणियट्टणया छो [विनिवर्तना] निवृत्ति (उत्त २६, १) ।

विणियत्त देखो विणियट्ट (सुपा ३३५, भवि, गा ७१, कुप्र १८२) ।

विणियत्ति छो [विनिवृत्ति] निवृत्ति, उपरम (कुप्र १८२, गउड) ।

विणिरोह पुं [विनिरोध] प्रतिवन्ध, अटकाव (भवि) ।

विणिवट्ट अक [विनि + वृत्] निवृत्त होना, पीछे हटना । वक्र. विणिवट्टमाण (आचा १, ५, ४, ३) ।

विणिवट्टण देखो विनियट्टण (राज) ।

विणिवट्टणया छो [विनिवर्तना] निवर्तन, विराम (भग १७, ३—पत्र ७२७) ।

विणिवडिअ वि [विनिपतित] नीचे गिरा हुआ (दे १, १५७) ।

विणिवत्ति देखो विणियत्ति (उप ७२८ टी) ।

विणिवाइ वि [विनिपातिन्] मार गिराने-वाला (गा ६३०) ।

विणिवाइज्जत देखो विणिवाए ।

विणिवाइय न [विनिपातिक] एक तरह का नाटक (राज) ।

विणिवाइय वि [विनिपातित] मार गिराया हुआ, व्यापादित (उा ६४८ टी, महा, स ५६, सिक्खा ८२) ।

विणिवाए सक [विनि + पातय्] मार गिराना । कवकृ विणिवाइज्जत (पउम ४५, ८) ।

विणिवाडिअ देखो विणिवाइय (दे १, १३८) ।

विणिवाद पु [विनिपात] १ निपात, विणिवाय } अन्तिम पतन, विनाश, 'पर-खगणे वि दिट्ठो विणिवादो किं न लोगम्मि' (धम्मस १२५, १२६, स २६५, ७ २) । २ मरण, मौत (से १३, १६, गउड, गा १०२) । ३ ससार (राज) ।

विणिवायण न [विनिपादन] मार गिराना (पउम ४, ४८) ।

विणिवार सक [विनि + वारय] रोकना, निवारण करना, निषेध करना । विणिवारइ (भवि) । कवकृ. विणिवारीअत्त (नाट—मृच्छ १५४) ।

विणिवारण न [विनिवारण] १ निवारण, प्रतिषेध । २ वि निवारण करनेवाला (पचा ७, ३२) ।

विणिवारि वि [विनिवारिन्] निवारण-कर्ता (पचा ७, ३२) ।

विणिवारिय वि [विनिवारित] प्रतिषिद्ध, निवारित (महा) ।

विणिविट्ट वि [विनिविष्ट] १ उपविष्ट, स्थित (कुप्र १५२), 'सकम्मविणिविट्टमरिसकयचेट्ठो' (उव, वै ६०) । २ आसक्त, तल्लीन (आचा) ।

विणिवित्त देखो विणियट्ट (उप ७८६) ।

विणिवित्ति देखो विणियत्ति (विसे २६३६, उवर १२७, आचक २५१, २५२, पंचा १, १७) ।

विणियुडु वि [विनिमग्न] निमग्न, बुझा हुआ, तरावोर, सरावोर, 'तइया ठिओ सि जं किद पलोट्टसरभसेयविणियुडु' (गउड ४६०) ।

विणिवेइअ वि [विनिवेदित] जनाया हुआ, ज्ञापित (मे १४, ४०) ।

विणिवेस पु [विनिवेश] १ स्थिति, उप-वेशन । २ विन्यास, रचना (गउड) ।

विणिवेसिअ वि [विनिवेशित] स्थापित, रखा हुआ (गा ६७४, मुर ३, ६७) ।

विणिज्वर न [दे] पथात्ताप, अनुशय (दे ७, ६८) ।

विमद सक [वि + मर्दय्] १ सघर्ष करना । २ मर्दन करना । कवकृ. विमदि-
ल्लमाण । (मिरि १०३८) ।

विमद पु [विमर्द] १ विनाश, 'आसत्तपुरिस-
संतद्वालिहविमहसंजणय' (सुपा ३८, गउड) ।
२ सघर्ष । (पउ २२, कुप्र ४६) ।

विमदण न [विमर्दन] ऊपर देखो (भवि) ।

विमन्न सव्व [वि + मन्] मानना, गिनना ।
वकृ 'सव्वं तुविण व तं विमन्नतो' (मुर
४, २४) ।

विमण पुं [ने] पदं-वनस्पति-विशेष (पण्ण
१—पत्र ३३) ।

विमर (अप) नीचे देखो । विमरह (पिंग) ।

विमरिम मक [वि + मृश्] विचारना ।

कृ. विमरिसिद्वव (शौ) (अभि १८४) ।

विमरिस पु [विमर्श] विकल्प, विचार
(राज) ।

विमल वि [विमल] १ मल-रहित, विशुद्ध,
निर्मल (कप्प, श्रीप, से ८, ४६, पउम ५१,
२७, कुमा, प्रासू २, १५७, १६१) । २
पुं इस अवसर्पिणी-काल में उत्पन्न तेरहवें
जिनदेव (सम ४३, पडि) । ३ भारतवर्ष में
होनेवाले बाईसवें जिन-भगवान् (सम १५४) ।
४ एक प्राचीन जैन आचार्य और कवि जिन्होंने
विक्रम की प्रथम शताब्दी में 'पउमचरित्र'
नामक जैन रामायण बनाई है (पउम ११८
११८) । ५ एक महाग्रह, ज्योतिष्क-देव-विशेष
(ठा २, ३—पत्र ७८) । ६ भगवान् अजित-
नाथ का पूर्वजन्मीय नाम (सम १५१) । ७ पुं
सहस्रार दवलाक के इन्द्र का एक पारियानिक
विमान (ठा ८—पत्र ४३७) । ८ ब्रह्म-देवलोक
में स्थित एक देव-विमान (सम १३, देवेन्द्र
१४०) । ९ एक त्रैवेयक देव-विमान (सम
४१, देवेन्द्र १४१) । १० लगातार छ
दिनों का उदय । ११ लगातार सात दिनों
का उपवास (संघोष ५८) । १२ पुं अहिंसा,
दया (परह २, १—पत्र ६६) । १३ घोस पु
[घोष] एक कुलकर पुरुष (सम १५०) ।
१४ चद पु [चन्द्र] एक जैन आचार्य (महा) ।
१५ पहा की [प्रभा] भगवान् शीतलनाथजी
की दीक्षा-शिविका (विचार १२६) । १६ वर

पु [वर] आनत-प्राणत देवलोक के इन्द्र का
एक पारियानिक विमान (ठा १०—पत्र
५१८) । १७ वाहण पु [वाहन] १ भारत-
वर्ष के भावी प्रथम जिनदेव, जिनके दूसरे
नाम देवसेन तथा महापद्म होंगे (ठा ६—पत्र
४५६) । २ कुलकर पुरुष-विशेष (सम १०४,
१५०, १५३, पउम, ३, ५५) । ३ भारतवर्ष
का एक भावी चक्रवर्ती राजा (सम १५४) ।
४ एक जैन, जो भगवान् अभिनन्दन के पूर्व
जन्म में गुरु थे (पउम २०, १२, १७) ।
५ भगवान् सभवाथ का पूर्व-जन्मीय नाम
(सम १५१) । ६ मामि पु [स्वामिन्]
सिद्धचक्रजी का अधिष्ठायक देव (मिरि २०४) ।
७ सुंदरी स्त्री [सुन्दरी] पृष्ठ वासुदेव की
पटरानी (पउम २०, १८६) ।

विमलग न [विमर्दन] मणि आदि को शाल
पर घिसना, घर्षण (दे १, १४८) ।

विमलहर पु [दे] कलकल, कोलाहल (दे ७,
७२) ।

विमला स्त्री [विमला] १ ऊर्ध्व दिशा (ठा
१०—पत्र ४७८) । २ धरणीन्द्र के लोकपालों
की अग्र-महिषियों के नाम (ठा ४, १—पत्र
२०४) । ३ गीतरति और गीतयरा नाम के
गन्धर्वों की अग्र-महिषियों के नाम (ठा ४,
१—पत्र २०४) । ४ चौदहवें जिनदेव की
दीक्षा-शिविका (सम १५१) ।

विमलिअ वि [विमर्दित] जिसका मर्दन
किया गया हो वह, घृष्ट (से ६, ७) ।

विमलिअ वि [दे] १ मत्सर से उक्त । २
शब्द-सहित, शब्दवाला (दे ७, ७०) ।

विमलेसर पु [विमलेश्वर] सिद्धचक्रजी का
अधिष्ठायक देव (सिरि ७७३) ।

विमलोत्तर पु [विमलोत्तर] ऐरवत वर्ष का
एक भावी जिनदेव (सम १५४) ।

विमहिद (शौ) वि [विमर्दित] जिसका मर्दन
किया गया हो वह (नाट—मालवि ४०) ।

विमाउ स्त्री [विमातृ] सौतेली मां (सत्त ३५,
१७१) ।

विमाण सक [वि + मानय्] अपमान
करना, तिरस्कार करना । विमाणज्जह (महा
५६) ।

विमाण पुन [विमान] १ देव का निवास-
भवन (सम २, ८, ६, १०, १२, ठा ८, १०,
उवा, कप्प देवेन्द्र २५१, २५३, परह १, ४—
पत्र ६८, ति १२) । २ देव-यान, आकाश यान,
आकाश में गति करने में समर्थ रथ (मे ६,
७२, कप्प) । ३ अपमान, तिरस्कार । ४
वि. मान रहित, प्रमाण शून्य (मे ६, ७२) ।
५ पविभक्ति स्त्री [पविभक्ति] जैन ग्रन्थ-
विशेष (सम ६६) । ६ भयण न [भयन]
विमानाकार गृह (कप्प) । ७ वानि पु
[वाग्निन्] देवों की एक उत्तम जाति,
वैमानिक देव (परह १, ४—पत्र ६८, ति
१२) ।

विमाणणा स्त्री [विमानना] भगवणना,
तिरस्कार (वेडय १३२) ।

विमाणिअ वि [विमानित] अपमानित (पिड
४१३, कप्प, महा) ।

विमिस्म म [विमृद्य] विचार करके ।
१ गारि वि [गारिन्] विचार-पूर्वक करने-
वाला (म १८४, ३२४) ।

विमिस्स वि [विमिश्र] मिश्रित, मिला हुआ,
युक्त (पच २, ७, महा) ।

विमिस्सण न [विमिश्रण] मिश्रण, मिलावट
(सम्मत्त १७१) ।

विमोसिय वि [विमिश्रित] विमिश्र, मिश्रित
(भवि) ।

विमुडल देखो विमडल (राज) ।

विमुच सक [वि + मुच्] १ छोड़ना,
वन्धन-मुक्त करना । २ परित्याग करना ।
विमुचह (नण, कर्म विमुचई (आचा २,
१, ६, ६) । वकृ विमुचत (महा), विमुच
[विमुच] माण (णाय १, ३—पत्र ६५) ।
कृ. विमोत्तन्न (उप २६४ टी), विमोय
(ठा २, १—पत्र ४७) ।

विमुकुल देखो विमडल (परह १, ४—पत्र
७२) ।

विमुक्क वि [विमुक्त] १ छोड़ा हुआ, छोड़ा,
वन्धन-रहित, 'जवविमुक्केण आतेण' (महा
४६, पाप्म आचानि ३४३) । २ परित्यक्त,
'विमुक्कजीयाण' (महा ७७) । ३ नि सग,
संग-रहित (आचा २, १६, ८) ।

विणिह देखो वणिह = वृणिह (राज)।

विण्ह पुं [विण्णु] भगवान् श्रेयामनाथ के पिता का नाम (सम १५१)। २ श्रवण नक्षत्र का आधात दस (ठा २, ३—पत्र ७७)। ३ यदुवश कं राजा अन्धकवृणिह का नववा पुत्र (अत ३)। ४ एक जैन मुनि, विष्णुकुमार नामक मुनि (कुलक ३३)। ५ एक श्रेष्ठो (उप १०१४)। ६ वासुदेव नारायण, श्रीकृष्ण। ७ व्यापक। ८ वह्नि, अग्नि। ९ शुद्ध। १० एक स्मृति-कर्ता मुनि (हे २, ७५)। ११ आर्य जेहिल के शिष्य एक जैन मुनि (राज)। १२ स्त्री ग्यान्ह्वे जिन्देव की माता का नाम (सम १५१)। १३ कुमार पुं [कुमार] एक विख्यात जैन मुनि (पांड)। १४ सरी स्त्री [श्री] एक सार्वबाह-पत्नी (महा)। देखो विण्हु।

वितंड देखो वितद (आचा)।

वितण्ह वि [वितण्ण] तुण्णा-रहित, नि स्पृह (उप २६८ टी)।

वितन पुं [विनत] १ वाद्य का एक प्रकार का शब्द (ठा २, ३—पत्र ६३)। २ एक महाग्रह (सुज्ज २०—पत्र २६५)। देखो विअत्त। ३ देखो विअय = वितत (ठा ४, ४—पत्र २७१)।

वितत न [दे] कार्य, काम काज (दे ७, ६४)।

वितत्त वि [विन्तत्त] विशेष वृत्त (पण्ह १, ३—पत्र ६०)।

वितत्थ पुं [वित्रत्त] १ एक महाग्रह, ज्योतिष्का देन विन्त (ठा २, ३—पत्र ७८)। २ वि भयभीत, डरा हुआ (महा)।

वितत्था दी [विन्तत्ता] एक महानदी (ठा ५, ३—पत्र २१५)।

विदद वि [वितदे] १ हिंसक। २ प्रतिकूल (आचा)।

वितर देखो विअर = वि + तृ। वितराम, वितरामो (पि १०, ४५५)।

वितर (अप) अक [वि + स्तारय] विस्तार करना। वितर (पिग)।

वितरण देखो विअरण = वितरण (राज)।

वितल वि [वितल] शबल, चितकबरा (राज)।

वितह वि [वितथ] मिथ्या, असत्य, झूठा (आचा कण, मण)।

वितिकिच्छिअ वि [विचिकित्सित] फल को तरह संदेह वाला (भग)।

वितिकिण देखो विइकिण (निह १६)।

वितिकंत देखो विइकत (भग)।

वितिगिंछ सक [वि + चिकित्स] १ विचार करना, विमर्श करना। २ सशय करना। ३ निन्दा करना। वितिगिंछइ (सूअ २, २, ४६, ५०, पि ७४, २१५)।

वितिगिंछा देखो वितिगिंछा (आचा १, ३, ३, १ १, ५, ५, २, पि १०४)।

वितिगिंछिय देखो वितिकिच्छिअ (पि ७४, २१५)।

वितिंगेच्छ देखो वितिगिंछ। वितिगिंछामि (पि २१५, ३२७)।

वितिगिंछा स्त्री [विचिकित्सा] १ सशय, शंका, वहम (सूअ १, ३, ३ ५, पि ७४)। २ चित्त-विप्लव, चित्त-भ्रम। ३ निन्दा (सूअ १, १०, ३, पि ७४)।

वितिगिंछिअ देखो वितिकिच्छिअ (भग)।

वितिगिट्ट देखो विइगिट्ट (राज)।

वितिमिर वि [विनिमिर] १ अन्वकार-रहित, विशुद्ध, निर्मल (सम १३७, पण्ह १७—पत्र ५१६, ३६—पत्र ८४७, कण्)। २ अज्ञान-रहित (औप)। ३ पुं ब्रह्म देवलोक का एक विमान-प्रस्तट (ठा ६—पत्र ३६७)।

वितिरिच्छ वि [वितिर्यच्छ] वक्र, टेढ़ा (स ३३५, पि १५१, भग ३, २—पत्र १७३)।

वित्त वि [दे] दीर्घ, लम्बा (दे ७, ३३)।

वित्त न [वित्त] १ द्रव्य, धन (पाअ, सूअ १, २, १, २२, औप)। २ वि. प्रनिद्ध, विख्यात (सूअ २, ७, २, उत्त १, ४४)। ३ म वि [वित्त] धनी (द्र ५)।

वित्त न [वृत्त] १ छन्द, पद्य, कविता (सूअनि ३८, सम्मत ८३)। २ चरित्र, आचरण (सिरि १०६३)। ३ वृत्ति, वर्तन (हे १, १२८)। ४ वि. उत्पन्न, सजात (स ७२७, महा)। ५ अतीत, गुजरा हुआ (महा)। ६ दढ़, मजबूत। ७ वर्तुल, गोल। ८ अघीत,

पठित। ९ मृत (हे १, १२८)। १० ससिद्ध, पूर्ण (सुर ४, ३८, महा)। ११ प्राय [प्राय] पूर्ण-प्राय (सुर ७, ८४)। देखो वट्ट = वृत्त।

वित्त देखो वेत्त = वत्त (सूअनि १०८)।

वित्त देखो पित्त (उप ५२२)।

वित्तइ वि [दे] १ गर्वित, अभिमानो। २ पु विलसित, विलास। ३ गर्व, अहंकार (दे ७, ६१)।

वित्तत पुं [वृत्तान्त] समाचार, खबर (पठम २३, १८, सुपा २०४, भवि)।

वित्तत्थ देखो वितत्थ (सुख ६, १, नाट—वेणी २६)।

वित्तविय देखो वट्टिअ, वत्तिअ = वत्तित (भवि)।

वित्तास सक [वि + त्रासय] भयभीत करना, डराना। वित्तासए (उत्त २, २०)। वट्ट वित्तासत (पठम २८, २६)।

वित्तास पुं [वित्राम] भय, आस, डर (सुपा ४४१)।

वित्तासण न [वित्रासन] भय-प्रदर्शन (आव)।

वित्तासिअ वि [वित्रासित] डरा कर भगाया हुआ (सुपा ६५२)।

वित्ति पुं [वेत्तिन] दरवान, प्रतीहार (कम्म १, ६)।

वित्ति स्त्री [वृत्ति] १ जीविका, निर्वाह-साधन (गाया १, १—पत्र ३७ स ६७६, सुर २, ४६)। २ टीका, विवरण (सम ४६, विसे १४२२, सार्ध ७३)। ३ वर्तन, आचरण। ४ स्थिति। ५ कौशिकी आदि रचना-विशेष। ६ अन्त करण आदि का एक तरह का परिणाम (हे १, १२८)। ७ अ वि [वृत्ति] वृत्ति देनेवाला (औप, अत, गाया १, १ टी—पत्र ३)। ८ आर वि [वृत्ति] टीकाकार, विवरण-कर्ता (कण्)। ९ छे १, छेय [च्छेद] जीविका-विनाश (आचा, सूअ १, ११, २०)। देखो वित्ती = वृत्ति।

वित्तिअ वि [वित्तिअ] वित्त से युक्त, धन-वाला, वैभवशाली (औप, अन्त, गाया १, १ टी—पत्र ३)।

विरड् स्त्री [विरति] १ विराम, निवृत्ति । २ सावध—पाप कर्म से निवृत्ति, संयम, त्याग (उव, आचा) । ३ छन्द शास्त्र-प्रसिद्ध विश्राम-स्थान, यति (चेइय ५-७) ।

विरडअ वि [विरचित] १ कृत, निर्मित, बनाया हुआ । २ सजाया हुआ (पात्र; श्रौप, कण, पउम ११८, १२१, कुमा, महा, रभा, कण्ण) ।

विरडअ देखो विराडअ (कण्ण) ।

विरड्यव्व देखो विरय = वि + रचय् ।

विरचि पृ [विरञ्चि] ब्रह्मा, विधाता (कुप्र ४०३, वि ८७, सम्मत १६२) ।

विरञ्च १ अक [वि + रञ्ज्] १ रिक्त होना, विरज्ज उदासीन होना । २ रङ्ग-रहित होना । विरज्ज (उव, उत्त २६, २, महा) । वक्क. विरज्जत, विरञ्चमाण, विरज्जमाण (से ४, १४, भवि, उत्त २६, २, गा १४६, २६६) ।

विरत्त वि [विरक्त] १ उदासीन, विराग प्राप्त (मम ५७, प्रासू १५५ १६६, महा) । २ विविध रङ्गवाला (आचा १, २, ३, ५) ।

विरत्ति स्त्री [विरक्ति] वैराग्य, उदासीनता (उप पृ ३२) ।

विरम अक [वि + रम्] निवृत्त होना, अटकना । विरमइ (गा ७०८), विरमेजा (आचा), विरम, विरममु (गा ३४५, १४६) । प्रयो, हेक्क. विरमावेड (गा ३४६) ।

विरम पु [विरम] विराम, निवृत्ति (गउड, गा ४५६, ६०६, मुर ७, १६३) ।

विरमग देखो वैरमग (राज, प्रामा) ।

विरमाण मक [प्रति + पालय्] पालन करना, रक्षण करना । विरमाणइ (धात्वा १५३) ।

विरमाल सक [प्रति + ईक्ष्] राह देखना, वाट जोहना, प्रतीक्षा करना । विरमालइ (हे ४, १६३) । संक्र. विरमालिअ (कुमा) ।

विरमालिअ वि [प्रनीक्षित] जिसकी प्रतीक्षा की गई हो वह (पात्र) ।

विरय मक [वि + रचय्] १ करना, बनाना । २ सजाना, सजावट करना । विरयइ, विरयत्ति, विरयअमि, विरयइ (प्राकृ ७४,

कण्ण, पि ५६०, सण) । वक्क. विरयमाण (मुर १६, १५) । संक्र. विरडअ (नाट) । हेक्क. विरडउ° (सुपा २) । कृ. विरड्यव्व (पउम १६, १६) ।

विरय वि [विरत] १ निवृत्त, रुका हुआ विराम-प्राप्त (उवा, गा ५४१, द ४६) । २ गण-गण ने गिरुत, संयमी, रक्षणी, नाना उव) । ३ न. विरति, विराम । ४ संयम, त्याग (द ४६, कम्म २, २) । १ विरय वि [१ विरत] आशिक समय रखनेवाला, जैन उपासक आचक (सम २६) ।

विरय पु [दे] छोटा जल-प्रवाह, छोटी नदी (दे ७, ३६), 'विरया तणुमरिआओ' (पात्र) ।

विरय पु [विरजस्] १ महाप्रह, ज्योतिष्क देव-विशेष (सुज्ज २०) । २ एक देव-विमान (देवेन्द्र १४१) ।

विरयण स्त्रीन [विरचन] १ कुनि, निर्माण । २ सजावट (नाट—मालती २८, कण्ण) । स्त्री. १णा (सुपा ६५, मे १५, ७१), 'पडिन्दए विश्र तमर-विरयणा' (कण्ण) ।

विरया स्त्री [विरजा] १ गो-लोक में स्थित राधा की पुत्र सखी । २ उनके शाप में बनी हुई एक नदी, 'लघिअविरयासरिअ' (अच्छु ८६) ।

विरल वि [विरल] १ अल्प, थोड़ा, 'परदुक्खे दुक्खिआ विरला' (हे २, ७२, ४, ४१२, उवा, प्रासू १८०, गउड) । २ अनिन्दित । ३ चिच्छिन्न (गउड, उव) ।

विरलि स्त्री [दे] वज्र-विशेष, डोरिया, डोरी-वाला ळण्डा, 'विरलिमाई भूरिमेया' (पव ८४ टी) ।

विरलिअ वि [विरलित] विरल बना हुआ, विरल किया हुआ (गउड) ।

विरली देखो विराली (राज) ।

विरल सक [तन्] विस्तारना, फैलाना । विरल्लइ, विरल्लेइ, विरल्लति (हे ४, १३७, पड्, गउड) ।

विरल पु [तान] विस्तार, फैलाव, (वव ४) ।

विरलण न [तनन] विस्तार, फैलाव, 'अट्ट-मयविरल्लणे सया रमइ' (उव) ।

विरलिअ वि [तत] विस्तारवाना, विस्तारित (दे ७, ७१, पात्र, कुमा, एया १, १७—पत्र २३२, ठा ४, ४—पत्र २७६), 'जह उल्ला साडोया आमुं मुक्कइ विरल्लिया सती' (विसे ३०३२) ।

विरलिअ देखो विरलिअ (राज, भवि) ।

विरलिअ वि [दे] जलाद्र, भोजा हुआ (दे ७, ७१) ।

विरस अक [वि + रस्] चिह्नाना, क्रन्दन करना । वक्क. विरसत (सण) ।

विरस वि [विरस] रस-रहित, शुष्क (एया १, ५—पत्र १११, गउड, हे १, ७, सण) । २ विरुद्ध रसवाला (भग ७, ६—पत्र ३०५) । ३ पु. रामभ्राता भरत के माय जैन दीक्षा लेनेवाला एक राजा (पउम ८५, ३) ४ न. तप-विशेष, निर्विकृतिक तप (सन्धोष ५८) ।

विरस न [दे] वर्ष, साल, बारह मास (दे ७, ६२) ।

विरसमुह पु [दे] काक, कौआ (दे ७, ४६) ।

विरसिय वि [विरमित] रस-हीन, रस-रहित (हम्मोर ५१) ।

विरह मक [वि + रह्] १ परित्याग करना । २ अलग करना । कवक्क. विरहिज्जत (नाट—शकु ८२) । कृ. विरहियव्व (शौ) (नाट—शकु ११७) ।

विरह पु [विरह] १ वियोग, विछोह, जुदाई (गउड, हे १, ८४, ११५, प्रासू १५६, कुमा, महा) । २ आन्तर, व्यनयान (भग) । ३ पु. वृक्ष-विशेष, फुल्लति विरहवत्त्वा नोज्जण पंचमुग्गार' (सन्धोष ४७, आ ३५), 'वरा-विश्रो पञ्चासन्ने विराहो नाम तरु, वाइज्जण वीण फुल्लाविश्रो सो' (कुप्र १३६), 'फुल्लति विरहिणो विरहयव्व लहिज्जण पचम वेवि' (कुप्र २४८) । ४ अभाव । ५ विनाश (राज) । ६ हरिवंश में उत्पन्न एक राजा (पउम २२, ६८) ।

विरह वि [विरथ] रथ-रहित (पउम १०, ६३) ।

विदुम वि [विद्वस्] विद्वान्, जानकार (सूत्र १, २, ३, १७)।

विदुर वि [विदुर] १ विचक्षण, विन (कुमा)।
२ वीर। नाट्य, नाटिका (हे ६, १७७)।
४ पुं. कौरवों के एक प्रख्यात मन्त्री (राया १, १६—पत्र २०८)।

विदुलतंग न [विद्युलताङ्ग] सख्या-विशेष, हाहाहू को चौरासी लाख से गुनने पर जो सख्या लब्ध हो वह (इक)।

विदुलता स्त्री [विद्युलता] सख्या-विशेष, विद्युलतांग को चौरासी लाख से गुनने पर जो सख्या लब्ध हो वह (इक)।

विदुस देखो विदु, 'ए पमाण अत्यि विदुसाण' (धर्मस ८८०)।

विदूसग पु [विदूषक] मसखरा, राजा के विदूसय साथ रहनेवाला मुसाहव (साधं ६५, सम्मत्त ३०)।

विदेस देखो विदेस = विदेश (राया १, २—पत्र ७६, औप, पत्र १, ६६, विसे १६७१, कुमा, प्रासू ४४)।

विदेसि कि [विदेशिन्] परदेशी (सुपा ७२)।
विदेसिअ वि [विदेशिक] ऊपर देखो (सिरि ३६४)।

विदेह पु [विदेह] १ राजा जनक (ती ३)।
२ पुं. व देश-विशेष, बिहार का उत्तरीय प्रदेश जो आजकल 'तिरहुत' के नाम से प्रसिद्ध है, 'इदेव भारदे वासे पुव्वदेसे विदेहा एणं जणवया' (ती १७, अत)। ३ पुं. वं-विशेष, महाविदेह-क्षेत्र (पव १६३)। ४ वि. विशिष्ट शरीरवाला। ५ निर्लेप, लेप-रहित। ६ पुं. अन्न, कामदेव। ७ गृह-वास (कप्प ११०)। ८ निषध पर्वत का एक कूट। ९ नीलवत पर्वत का एक कूट (ठा ६—पत्र ४५४)। °जवू स्त्री [°जम्बू] जम्बूवृक्ष विशेष, जिके नाम से यह जम्बू-द्वीप कहलाता है (ज ४, इक)। °जच्च पु [°जार्च, °यात्] भगवान् महावीर (कप्प ११०)। °दिन्ना स्त्री [°दत्ता] भगवान् महावीर की माता, रानी त्रिशला (कप्प)। °दुहिआ स्त्री [°दुहि] राजा जनक की पुत्री, सीता (ती ३)। °पुत्त पुं [°पुत्र] राजा कृष्ण (भग ७, ८)।

विदेहदिन्न पुं [विदेहदत्त] भगवान् महावीर (कप्प १० टी)।

विदेहा स्त्री [विदेहा] १ भगवान् महावीर की माता, त्रिशला देवी (कप्प ११० टी)।
२ जानकी, सीता (पउम ४६, १०)।

विदेहि पु [विदेहिन्] विदेह देश का अधिपति, तिरहुत का राजा (सूत्र १, ३, ४, २)।

विदेही स्त्री [विदेही] राजा जनक की पत्नी, सीता की माता (पउम २६, २)।

विहंडिअ वि [दे] नाशित, नष्ट किया हुआ (दे ७, ७०)।

विहड्ड पुं [विदग्ध] एक नरक-स्थान (देवेन्द्र २७)।

विहव सक [वि + द्रावय्] १ विनाश करना। २ हरान करना, उपद्रव करना। ३ दूर करना, हटाना। ४ झरना, टपकना। विहवई (कुप्र २८०)। वक्क. विदवय्यंत (रयण ७२)। कवक्क 'रज्ज रक्खइ न परेहि विहविल्लत' (कुप्र २७, सुर १३, १७०)।

विहव पु [विद्रव] १ उपद्रव, उपसर्ग, 'परचक्कचरइचोराइविहवा दूरपुवगया सब्बे' (कुप्र २०)। २ विनाश (राया १, ६—पत्र १५७, धर्मवि २३)।

विहविअ वि [विद्रवित] १ विप्लावित (से ४, ६०)। २ दूर किया हुआ, हटाया हुआ (गा ८८)। ३ विनाशित (भवि, सण)।

विहाअक [वि + द्रा] खराब होना। विहाइ (से ४, २६)।

विहाण वि [विद्राण] १ म्लान, निस्तेज, फीका, 'विहाणमुहा ससोगिल्ला' (सुर ६, १२४), 'अदीणविहाणमुहकमलो' (यति ४३) 'दारिद्रमविहाण नज्जइ आयारमिन्नओ तुष्क' (कुप्र १६५)। २ शोकानुर, दिनगौर, 'विहाणो परियणो' (स ४७३, उप ६०४, उप ३२० टी)।

विहाय वि [विद्रुत] १ विनष्ट (कुमा)। २ पलायित। ३ द्रव-युक्त, द्रव-प्राप्त (हे १, १०७, पड्)।

विहायअक [विद्रुस्य्] बुद को विद्वान् मानना। वक्क विहायमाण (आचा)।

विहार देखो विहार (वव १)।

विहारण (अप) वि [विहारण] चीरनेवाला, फाड़नेवाला। स्त्री °र्णा (भवि)।

विद्वप्पि देखो विद्वप्पिअ (भवि)।

विद्वदुम पु [विद्रुम] १ प्रवाल, मूंगा (मे २६, गउड, जो ३)। २ उत्तम वृक्ष (से २, २६)। °म पुं [°म] नववें बलदेव का पूर्व-जन्म का गुरु (पउम २०, १६३)।

विद्वदुय वि [विद्वत्] अभिभूत, पीड़ित, 'अग्गिभयविहु (१६)या' (राया १, १—पत्र ६५)।

विद्वदूणा स्त्री [दे] लज्जा, शर्म (दे ७, ६५)।

विद्वेस पु [विद्वेष] द्वेष, मत्सर (पएह १, २—पत्र २६)।

विद्वेस वि [विद्वेषण] द्वेष-योग्य, अप्रिय (पएह १, २—पत्र २६)।

विद्वेसण न [विद्वेषण] एक प्रकार का अभिचार-कर्म, जिससे परस्पर में शत्रुता होती है (स ६७८)।

विद्वेसि वि [विद्वेषिन्] द्वेष-कर्ता (कुप्र ३६७)।

विद्वेसिअ देखो विद्वेसिअ (आ १२)।

विद्वेसिअ वि [विद्वेषित] द्वेष-युक्त (भवि)।

विद्ध सक [व्यध्] वीधना, छेद करना। विद्धइ (घात्वा १५२, नाट—रत्ना ७)। कवक्क विद्विज्जत (प ८८)। संक्क विद्धूण (सूत्र १, ५, १, ६)।

विद्ध वि [विद्ध] वीधा हुआ, वेध किया हुआ (से १, १३, भवि)।

विद्ध देखो वुद्ध = वृद्ध (उत्त ३२, ३, हे १, १२८, भवि)।

विद्धंसअक [वि + ध्वस्] विनष्ट होना। विद्धंसइ (ठा ३, १—पत्र १२३)। वक्क.

विद्धसमाण (सूत्र १, ५, १८)।

विद्धस सक [वि + ध्वस्सय्] विनष्ट करना। भवि. विद्धसेहिंति (भग ७, ६—पत्र ३०५)।

विद्धस पु [विध्वंस] १ विनाश (सुर १, १२)। २ वि. विनाश-कर्ता, 'जहा से तिमिरविद्धसे उत्तिट्ठ ते दिवायरे' (उत्त ११, २४)।

विरुद्ध वि [विरुद्ध] विरोधवाला, विपरीत, प्रतिकूल उलटा (औप, गउड)। 'चारि वि [चारिन्] विपरीत आचरण करनेवाला (उप ७२८ टी)।

विरुद्ध देखो विरुद्ध (दे ६, ७५)।

विरुद्ध अक [वि + रुह्] विशेष रूप से उमता, अकुरित होना। विरुहति (उत्त १२, १३)।

विरुद्ध देखो विरुद्ध (परण १—पत्र ३६, आ २०)।

विरुअ } वि [विन्प] १ कुरूप, भौंडा,
विरुव { कुडौल, खराब, कुस्मिन (गा २६३, भवि, स्वप्न ४४, सुर १, २६, उप ७२८ टी)। २ विरुद्ध, प्रतिकूल, उलटा (सुर ११, ८०)। ३ बह्वावध, अनेक तरह का, नानावध (आचा)।

विरुह पुन [विरुह] अकुरित द्विदल-धान्य (पव ४)।

विरेअ सक [वि + रेचय्] १ मल को नीचे से निकालना। २ बाहर निकालना। विरेअइ (हे ४, २६)। वहु विरेअत (कुमा ६, १७)।

विरेअण न [विरेचन] १ मल-निस्सारण, जुलाव (उवकु २५, णाया १, १३—पत्र ६८१)। २ वि भेदक, विनाशक, 'सयल-दुक्खविरेयण समणत्तणति' (स २७८, ६६३)।

विरेहिअ देखो विरिहिअ = तत (णाया १, १७ टी—पत्र २३४, गउड ४३५)।

विरोयण पु [विरोचन] अग्नि, वहि (भत्त १२३)।

विरोल सक [मन्ध्] विलोडना, विलोडन करना। विरोलइ (हे ४, १२१, पड)।

विरोल सक [वि + लम्] १ अवलम्बन करना। २ आरोहण करना, चढ़ना। विरोलइ (घात्वा १५३)।

विरोलिअ वि [मथित] विलोडित (पात्र, कुमा, भवि)।

विरोह म- [वि + रोधय्] विरोध करना। विरोहति (सवोध १७)।

विरोह पु [विरोध] विरुद्धता, प्रतोपता, वैर, दुश्मनाई (गउड, नाट—मालती १३८, भवि)।

विरोहय वि [विरोधक] विरोध-कर्ता (भवि)। विरोहि वि [विरोधिन] दुश्मन, प्रतिपक्षी पि ४०५, नाट—शकु १६)।

विरोहिय वि [विरोधित] विरोध-प्राप्त (वज्जा ७०)।

विल अक [व्रीड्] लज्जा करना, शरमिन्दा होना। सक. विलिऊग (म ३७५)।

विल न [विल] नमक-विशेष, एक तरह का नोन (आचा २, १, ६, ६)।

विलइअ वि [दे] १ अधिज्य, घनुप की डोरी पर चढ़ाया हुआ। २ दोन, गरीब (दे ५, ६२)। ३ ऊपर चढ़ाया हुआ, आरोपित 'आणा जम्भ विलइआ नीसे सेमव्व हरिहरे-हिपि' (घण २५), 'पहुम चिअ रहवइणा उवरि हिअए तुलिअो भरोव्व विलइआ' (से ३, ५)।

विलओलग पु [दे] लुटाक, लुटेरा (राज)।

विलओली छी [दे] १ विस्वर वचन। २ विलोकना, तलाशी (परह १, ३—पत्र ५३)। देखो विलकोली।

विलंघ सक [वि + लङ्घ्] उल्लघन करना। विलंघति (धर्मसं ८४२)। वहु विलंघत (काल)।

विलण न [विलङ्घन] उल्लघन, अतिक्रमण, 'ही ही सोनविलण' (उप ५६७ टी)।

विलघल (अप) देखो विहलघल (मण)।

विलघलिअ (अप) वि [विह्वलाङ्गित] व्याकुल शरीरवाला, 'मुच्छविलघलिअ' (सण)।

विलघ देखो विहव = वि + डम्बय्। वहु विलंघमाण (धर्मसं १००५)।

विलघ अक [वि + लम्ब] १ देरी करना। २ सक लटकाना, धारण करना। कम. विलवीअदि (शौ) (नाट—विक्र ३१)। वहु विलघत (से ३, २६)। सक विलविअ (नाट—वेणी ७)। क विलघणिज्ज (आ १४)।

विलघ पुं [विलम्ब] १ देरी, अशीप्रता (गा ५८८)। २ तप-विशेष, पूर्वाधं तप (संवोध

५८)। ३ न नक्षत्र-विशेष, सूर्य के द्वारा परि-भोग कर छोड़ा हुआ नक्षत्र (विसे ३४०६)।

विलघ वि [विलम्बक] धारण करनेवाला (सूत्र १, ७, ८)।

विलघणा देखो विहंघणा (प्राप् १०३)।

विलघणा छी [विहंघना] निर्वन्तना, वनावट, कृति (अणु १३६)।

विलवि न [विलम्बिन] १ सूर्य के द्वारा भोकर छोड़ा हुआ नक्षत्र। २ सूर्य जिसपर हो उसके पीछे का तीमरा नक्षत्र (वव १)।

विलविअ वि [विलम्बित] १ विलम्ब-युक्त (वप्प)। २ न नक्षत्र-विशेष (वव १)। ३ नाट्य-विशेष (राय)।

विलक्ख वि [विलङ्ग] १ लज्जित, शरमिन्दा (से १०, ७०, सुर १२, ६६, सुपा १६८, ३२८, महा, भवि)। २ प्रतिभा शून्य, मूढ़ (से १०, ७०)।

विलक्ख न [विलङ्ख्य] विलसता, लज्जा, शरम (सुर ३, १७६)।

विलक्खिम पुंछी ऊपर देखो, 'उवसमियविल-क्खिम—' (भवि)।

विलग्ग सक [वि + लग्] १ अवलम्बन करना, महारा लेना। २ चढ़ना, आरोहण करना। ३ पकड़ना। ४ चिपटना। गुजराती में 'वल्गवु'। विलग्गसि, विलग्गेजासि (महा)। वहु विलग्गन (पि ४८८)।

विलग्ग वि [विलग्न] १ लगा हुआ, चिपटा हुआ, संलग्न, 'जह लोहमिला अण्णपि वोलए तह विलग्गगुरिसपि' (सवोध १३, से ४, २, ३, १४२, गा १८८, ५६, महा)। २ अवलम्बित (सुर १०, ११४)। ३ आरुद्ध, 'अन्नया आयरिया मिद्धनेल तेण सम वदगा विलग्गा' (सुख १, ३)।

विलज्ज अक [वि + लम्ज्] शरमाना। विलज्जामि (कुप्र ५७)।

विलट्ठि पुंछी [वियष्टि] साढे तीन हाथ में चार अंगुल कम लट्ठी, जैन साधुओं का उप-करण-दंड (पव ८१)।

विलद्ध वि [विलद्ध] अच्छी तरह प्राप्त, सुलब्ध, (पिंग)।

विपंची स्त्री [विपञ्ची] वाद्य-विशेष, वीणा (परह १, ४—पत्र ६८, २, ५—पत्र १४६)।

विपक्क वि [विपक्क] पका हुआ (उप ४ २११)। देखो विवक्क।

विपक्ख देखो विवक्ख, 'निजियविपक्ख-लक्खो' (सुपा १०९, २४०)।

विपक्खिय वि [विपक्खि] विरोधी, दुश्मन (सवोध ५६)।

विपक्खिय न [विप्रत्ययिक] बारहवें जैन भग्न ग्रन्थ का सूत्र-विशेष (सम १२८)।

विपञ्चमाण वि [विपञ्चमान] १ जो पकाया जाता हो वह (आ २०, स ८६), 'आमासु अप्पक्कासु विपञ्चमाणामु मसपेसीसु' (सवोध ४४)। २ दग्ध होता, जलता, 'तत्त्विहान-लजालाविपञ्चमाणस्स मह निच्च' (रयण ४१)।

विपञ्जय देखो विवज्जय (राज)।

विपज्जास देखो विवज्जास (नाट—गुच्छ २२६)।

विपडिवत्ति देखो विपडिवत्ति (विसे २६१४, सम्मत २२८)।

विपडिसेह सक [विप्रति + सिध्] निषेध करना। कृ. विपडिसेहेयव्व (भग ५, ७—पत्र २३४)।

विपणोह सक [विप्र + नोदय्] प्रेरणा करना। विपणोहए (आचा १, ५, २, २, पि २४४)।

विपण्ण देखो विवण्ण = विपण (चार ८)।

विपत्ति देखो विवत्ति = विपत्ति (गा २८२ अ, राज)।

विपत्थाविद (शौ) वि [विप्रस्तावित] आरब्ध, जिसका प्रारंभ किया गया हो वह, 'एदाए चोरिआए एसम्ह घरे कलहो विपत्था-विदो' (हास्य १२१)।

विपरामुस सक [विपरा + मृश] १ समा-रम्भ करना, हिंसा करना। २ पीडा उपजाना, हैरान करना। ३ अक उत्पन्न होना, उप-जना। विपरामुसह, विपरामुसति, विपरामुसह (आचा, पि ४७?)। देखो विपरामुस।

विपराहुत्त वि [विपराहुत्त] विशेष पराहुत्त, अतिशय उदासीन (पउम ११५, २२)।

विपरिकम्म न [विपरिकर्मन्] शरीर की आकुञ्चन-प्रसारण आदि क्रिया (आचा २, ८, १)।

विपरिकुंचि वि [विपरिकुञ्चिन्] विपरि-कुचित नामक वन्दन-दोषवाला, 'देमकहा-वित्तते कहेइ दरवदिए विपरिकुंची' (वृह ३)।

विपरिकुचिय देखो विपणलिउचिय (राज)।

विपरिखल अक [विपरि + खल] १ स्थलित होना, गिरना। २ भूल करना। वक्र. विपरिखलंत (अच्छु २२)।

विपरिणम अक [विपरि + णम्] १ बद-लना, रूपान्तर को प्राप्त होना। २ विपरीत होना, उलटा होना। विपरिणमे (पिड ३२७)। वक्र. विपरिणममाण (भग ७, १०—पत्र ३२५)।

विपरिणय वि [विपरिणत] रूपान्तर को प्राप्त (पिड २६५)।

विपरिणाम सक [विपरि + णमय्] १ विपरीत करना, उलटा करना। २ बदलवाना, रूपान्तर को प्राप्त करना। विपरिणामेह (स ५१३)। हेहू विपरिणामित्तए (उवा)।

विपरिणाम पुं [विपरिणाम] १ रूपान्तर-प्राप्ति (आचा, औप)। २ उलटा परिणाम, विपरीत अच्यवमाय (धर्मसं ५११)।

विपरिणामिय वि [विपरिणमित] रूपान्तर को प्राप्त (भग ६, १ टी—पत्र २५१)।

विपरिधाव सक [विपरि + धाव्] इधर उधर दौटना। विपरिधावई (उत्त २३, ७०)।

विपरियास देखो विपपरियास (राज)।

विपरिवसाव सक [विपरि + वासय्] रखना। विपरिवसावेह (गाया १, १२—पत्र १७५)। वक्र. विपरिवसावेमाण (गाया १, १२)।

विपरीअ देखो विवरीअ (सूत्र १, १, ४, ५, गा ५४ अ)।

विपलाअ अक [विपरा + अय्] दूर भागना। वक्र. विपलाअत (गा २६१)।

विपल्हत्थ देखो विवल्हत्थ (पि २८५)।

विपरिस वि [विदर्शिन्] देखनेवाला (आचा)।

विपाग देखो विवाग (राज)।

विपिक्ख देखो विप्पेक्ख। वक्र. विपिक्खंत (राज)।

विपिण देखो विविण (कुमा)।

विपित्त वि [दे] विकसित, खिला हुआ (दे ७, ६१)।

विपुल देखो विउल (गाया १, १—पत्र ७५, कप्प, परह २, १—पत्र ६६)। 'वाहण पुं [वाहन] भारतवर्ष में होनेवाला बारहवां चक्रवर्ती राजा (सम १५४)।

विप्प न [दे] पुच्छ, दुम, पूँछ (दे ७, ५७)।

विप्प पुं [विप्र] ब्राह्मण, द्विज (हे १, १७७, महा)।

विप्प पु [विप्पु, विप्र] १ मूत्र और विष्ठा के बिन्दु। २ विष्ठा और मूत्र, 'मुत्तपुरीसाण विप्पुसो विप्पा अन्ने विडित्ति विष्ठा भासति य पत्ति पासवण' (विसे ७८१, औप, महा)।

विप्पइह्ठ देखो विप्पगिट्ट (राज)।

विप्पइण वि [विप्रकीर्ण] बिखरा हुआ, इधर उधर पटका हुआ (मे २, ५, कस)।

विप्पइर सक [विप्र + कृ] इधर उधर पटकना, बिखरेना। विप्पइरामि (उवा)। वक्र. विप्प-इरमाण (गाया १, ६—पत्र १५७)।

विप्पउज सक [विप्र + युज्] १ विच्छ प्रयोग करना। २ विशेष रूप से जोड़ना, 'अदुवा वायाओ विप्पउजंति' (आचा १, ८, १, ३)।

विप्पओअ } पुं [विप्रयोग] अलहदा, अलग,
विप्पओग } जुदा, विरह, वियोग (उत्तर १५, स २८१, चंड, पउम ४५, ४६, जी ४३, उत्त १३, ८, महा)।

विप्पकड वि [विप्रकट] विशेष रूप से प्रकट (भग ७, १८—पत्र ३२४)।

विप्पकिर देखो विप्पइर। वक्र. विप्पकिरेमाण (गाया १, १—पत्र ३६)।

विप्पक्ख देखो विपक्ख (पि १६६)।

विपणगन्धिमय वि [विप्रगन्धिम] अत्यन्त घृष्ट (सूत्र १, १, २, ५)।

विलुंगायाम वि [दे] निग्रन्थ, अकिंचन, साधु, 'एम विलु गयामो मित्राण' (आचा २, १, २, ४)।

विलुचण न [विलुञ्चन] उन्मूलन, जड़ से उखाटना (परह १, १—पत्र २२)।

विलुप मक [वि + लुप्] १ लूटना। २ काटना। ३ विनाश करना। विलुपति, विलुपह (आचा; सूत्र २, १, १६, पि ४७१), 'अद्य चोरा विलुपति' (महा)। वक्र. विलुपमाण (मुपा ५७४)। कवक. विलुप्पन, विलुप्पमाण (पत्र १६, ३१, मुपा ८०, मुर २, २१, उवा)।

विलुप मक [काङ्क्ष्] अभिलाष करना, चाहना। विलुपइ (हे ४, १६२)।

विलुपइत्तु वि [विलोपत्] विलोप-कर्ता, काटनेवाला (सूत्र २, २, ६)।

विलुपय पुं [दे] कीट, कीड़ा (दे ७, ६७)।

विलुपिअ वि [काङ्क्षित] अभिलषित (कुमा ७, ३८, दे. ७, ६६)।

विलुपिअ पु [दे. विलुप्त] आशित, कवन्तित, खाया हुआ, 'घट्य कवलिअ अमिअ विलुपिअ वफिअ खइअ' (पात्र)। देखो विलुत्त।

विलुपित् देवो विलुपइत्तु (आचा)।

विलुक्क [दे] छिपा हुआ (भवि)।

विलुक्क वि [विलुञ्जित] विमुण्डित, सर्वथा केश-रहित किया हुआ (पिड २१७)।

विलुत्त वि [विलुप्त] १ काटा हुआ, छिन्न, 'विलुनकेवि' (परम १०२, ५३, परह १, ३—पत्र ५८)। २ लुटित, लुटा हुआ, 'इमाड अडवीड वारियगमत्यो। मह पुरि-मेहि विलुत्तो, पत्तं वित्तं तहि पउर' (मुर ११, ४८)। ३ विनष्ट, 'तुम उण जलविलुत्तपमाहण जेव सुमरसि' (कणू)।

विलुत्तहिअ वि [दे] जो समय पर काम करने को न जानता हो वह (दे ७, ७३)।

विलुप्पन } देखो विलुप।
विलुप्पमाण }

विलुल्लिअ वि [विलुल्लित] उपमन्वित (से ६, १२)।

विलुण वि [विलुण] काटा हुआ, छिन्न (मुपा ६)।

विलेवण न [विलेपन] १ शरीर पर लगाने का चन्दन, कुकुम आदि पिटु द्रव्य (कुमा, उवा, पात्र)। २ लेपन-क्रिया (ग्रीप)।

विलेविअ वि [विलेपिन] विनेपन-युक्त (नण)।

विलेविआ स्त्री [विलेपिआ] पान-विशेष (राज)।

विलेहिअ वि [विलेपिन] चित्रित किया हुआ (मुर १२, ११७)।

विलोअ मक [वि + लोक्] देयना। कर्म विलोइज्जति, विलोईअति (पि ११)। कवक. विलोइज्जमाग (उप पृ ६७)। सक्र. विलोइऊण (काप्र १६५)।

विलोअ पु [विलोक] आलोक, प्रकाश (उप पृ ३५८)।

विलोअ देखो विलोय (मुपा ४८०)।

विलोअण पुन [विलोचन] आस, नेत्र (काप्र १६१, गा ६७०, मुपा ५२६)।

विलोअण न [विलोक्त] १ देखना, निरीक्षण। २ वि देखनेवाला, 'लोयानोयविनो-यणकेवलनाणेण नायमावस्म' (मुर ४, ८६)।

विलोट्ट अक [विम + वट्] १ अप्रमाणित होना, झूठा मानित होना। २ उलटा होना, विपरीत होना। विनोट्ट, विलोट्टए (हे ४, १२६, भवि, न ७१६)।

विलोट्ट } वि [विमवन्तित] १ जो झूठा
विलोट्टिअ } मानित हुआ हो (कुमा ६, ८८)। २ जो कहकर फिर गया हो, प्रतिज्ञा-च्युत, 'कप्पाए मयणमहिलाईलोयवक्खो विस्सिट्ठो सो' (उप ५६७ टी)। ३ विरुद्ध बना हुआ, 'चउरो महनरवइणो विलोट्टि (१ ट्टि) या चउदिमि पि अइवल्लिणो' (मुपा ४५२)।

विलोड सक [वि + लोडय्] मथन करना। विलोडिइ (कुप्र ३४७)।

विलोडिय वि [विलोडित] मथित (कुप्र ७८)।

विलोभ सक [वि + लोभय्] १ लुब्ध करना, लुभाना, आमक्त करना। २ लालच देना। ३ विस्मय उपजाना। कृ विलोभ-णिज्ज (कुप्र १३८)।

विलोल देवो विलोड। वक्र. विलोलन (उप पृ ८७)।

विलोल अक [वि + लुट्] नेटना; 'विलो-नति महोतने विमूणियगमंगा' (परह १, १—पत्र १८)।

विलोल वि [विलोल] चंचल, अस्थिर (से २, १६, गठ, कणू)।

विलोव पुं [विलोप] लूट, डकैती, सव्य-विनोवे जाए' (मुर १५, १८)।

विलोवण न [विलोपन] ऊपर देवो, 'परव-णविनोवणादीण' (उव)।

विलोवय वि [विलोपक] लूटनेवाला, लुटेरा, 'अट्ठाणम्मि विनोवण' (उत्त ७, ५)।

विलोह देवो विलोभ। हंक्र. विलोहइइट्टु (शौ) (मा ४२)।

विलोहण वि [विलोभन] १ आश्रय-कारक। २ लुभानेवाला, 'मुद्धमइविलोहण नेय' (आवक १३०)।

विह अक [वेह्] चलना, हिलना, 'विल्लंति इदुमपल्लवा' (रंभा)।

विह देखो विह (हे १, ८५, राज)।

विह वि [दे] १ अच्छ, अच्छ। २ विलसित, विलान-युक्त (दे ७, ८८)। ३ पुन. मुगधी द्रव्य-विशेष, जो धूप के काम में आता है, 'उज्जकतविल्लमुगुलुअविमियवूमसवाय' (स ४३६)।

विल्लय देवो विल्लअ (ग्रीप)।

विल्लय देखो वेहग (मुपा २७६)।

विहरी स्त्री [दे] केश, बाल (दे ७, ३२)।

विहल देवो विहल (इक)।

विहल देवो वेहल (प्रवि २३)।

विह्री स्त्री [विल्ली] गुच्छ-वनस्पति-विशेष (परण १—पत्र ३२)।

विलह वि [दे] घबल, सफेद (दे ७, ६१)।

विह देखो डय (हे २, १८२, गा २६०, ६०६ अ, कुमा)।

विहड स्त्री [विपट्] विपत्ति, कष्ट, दुःख (उप ७७१, हे ४, ४००)। 'गर वि [कर] दुःख-जनक (कुमा)।

विहड स्त्री [विवृति] व्याख्या, विवरण, टीका (कुप्र १६)। देखो विवदि।

विप्परियासणा: श्री [विपार्सना] व्यत्यय करना (निचू ११)।

विप्परुद्ध वि [विप्ररुद्ध] तिरस्कृत, 'हयनिह यविप्परुद्धो दूधो' (पउम ८, ८५)।

विप्पल देखो विप्प = विप्र (प्राक् ३७)।

विप्पलभ मक [विप्र + लभ्] ठगना। विप्पलभेमि (स ५०६)।

विप्पलभ पुं [विप्रलम्भ] १ वञ्चना, ठगना (उप २४)। २ शृङ्गार की एक अवस्था—जिसमें उत्कृष्ट अनुराग होने पर भी प्रिय समागम नहीं होता (सुपा १६४)। ३ विप-यांस, व्यत्यय, वैपरीत्य (धम्मस ३०४)। विरह, विद्योग (कप्पु)।

विप्पलभअ वि [विप्रलम्भक] प्रतारक, ठगनेवाला (मुच्छ ४७)।

विप्पलभअ वि [विप्रलम्भित] १ प्रतारित। २ विरहित (मुपा २१६)।

विप्पलद्र वि [विप्रलद्र] वञ्चित, प्रतारित (चारु ५५, स ४१८, ६८०)।

विप्पलय पुन [दे] विविधता, विचित्रता, 'तदट्ठु सो सर्वं जाणइ सबधविप्पलयं' (धम्मवि १२७)।

विप्पलविद (शौ) न [विप्रलपित] निरर्थक वचन, वकवाद (स्वप्न ८१)।

विप्पलाअ देखो विपलाअ। भूका, विप्पला-इत्या (विपा १, २—पत्र २६)। वक्क विप्पलाअमाण (णाया १, १—पत्र ६५)।

विप्पलाअ } पु [विप्रलाप] १ परिवेदन,
विप्पलाव } रोना, कन्दन, 'अविप्रोगो विप्प-
लाओ' (तट्ट ८७, रणण ६४)। २ निरर्थक वचन, वकवाद (उत्त १३, ३३)। ३ विरहा-
लाप (पउम ४४, ६८)।

विप्पल्लिअचिअ न [विपरिकुञ्चित] गुरु-
वन्दन का एक दोष, सपूर्ण वन्दन न करके बीच में बातचीत करने लग जाना (पव २—
गाया १५२)।

विप्पल्लुपग वि [विप्रलोपक] लुटनेवाला,
लुटेरा (पएह १, ३—पत्र ४४)।

विप्पलोहण वि [विप्रलोभन] लुमानेवाला
(स ७६३)।

विप्पव पुं [विप्पव] १ देश का उपद्रव,
क्रान्ति। २ दूसरे राजा के राज्य आदि से भय (दे २, १०६)। ३ शरीर की विसंस्थु-
लता, अस्वस्थता (कुमा)।

विप्पवर न [दे] भ्रष्टातक, भिलाँवा (दे ७,
६६)।

विप्पवस अक [विप्र + वस्] प्रवास में
जाना, देशान्तर जाना। संकृ विप्पवसिय
(आचा २, ५, २, ३)।

विप्पवसिय वि [विप्रोषित] देशान्तर में
गया हुआ, प्रवास में गया हुआ (णाया ८,
२—पत्र ७६, १, ७—पत्र ११५)।

विप्पवाम पु [विप्रवास] प्रवास, देशान्तर-
गमन (प्रति १००)।

विप्पसन्न वि [विप्रसन्न] १ विशेष प्रसन्न,
खुश। २ प्रमत्त-चित्त का मरण (उत्त ५,
१८)।

विप्पसर अक [विप्र + सृ] फेलना। भूका,
'वहवे हत्थी'*** दिसो दिसं विप्पसरित्था'
(पि ५१७)।

विप्पसाय सक [विप्र + सादय्] प्रसन्न
करना। विप्पसायए (आचा १, ३, ३, १)।

विप्पसीअ अक [विप्र + सद्] प्रसन्न होना।
विप्पसीएज (उत्त ५, ३०, सुख ५, ३०)।

विप्पहय वि [विप्रहत] आहत, जखमी (सुर
६, २२१)।

विप्पहाइय वि [विप्रभाजित] विभक्त, बँटा
हुआ (श्रीप)।

विप्पहीण } वि [विप्रहीण] रहित, वर्जित
विप्पहूण } (सं ७७, स १६१, पि १२०,
५०३)।

विप्पावग वि [दे] हास्य-कर्ता, उपहाम
करनेवाला (सुख १, १३)।

विप्पिअ पुन [विप्रिय] १ अप्रिय, अनिष्ट
(णाया १, १८—पत्र २१३, गा २५०, से
४, ३६, हे ४, ४२३)। २ अपराध, गुनाह
(पात्र)। *आरय वि [कारक] १ अप्रिय-
कर्ता। २ अपराध-कर्ता (हे ४, ३४३)।

विप्पिअ वि [दे] नाशित (दे ७, ७०)।

विप्पीइ श्री [विप्रोति] अप्रोति (पएह १,
३—पत्र ४२)।

विप्पु श्री [विप्पु] विन्दु, अवयव, अंश,
'मुत्तपुरीसाण विप्पुसा विप्पा' (श्रीप, विसे
७८१)।

विप्पुअ वि [विप्पुत] उपद्रुत, उपद्रव-युक्त
(दे ६, ७६)।

विप्पुस पुं. देखो विप्पु, 'अमुइस्स विप्पु-
सेणवि' (पिठ १६५)।

विप्पेक्ख सक [विप्र + ईक्ष्] निरीक्षण
करना, देखना। वक्क विप्पेक्खंत (पएह १,
१—पत्र १८)।

विप्पेक्खिअ वि [विप्रेक्षित] निरीक्षित
(पएह २, ८—पत्र १८१, भग ६, ३३—
पत्र ४६६)।

विप्पोसहि श्री [विप्रोपगि] आध्यात्मिक-
शक्ति-विशेष, जिसके प्रभाव में योगी के
विष्ठा और मूत्र का विन्दु ओपधि का काम
करता है (पएह २, १—पत्र ६६, श्रीप,
विसे ७७६, संति २)।

विप्पद अक [वि + स्पन्द्] इधर-उधर
चलना, तडफटना। वक्क विप्पदमाण
(आचा)।

विप्पदिअ वि [विप्पन्दि] इधर-उधर
भटका हुआ, परिभ्रान्त,

'खज्जेतेण जलयले सकम्म-

विप्पदि(दि)एण जीवेणं।

तिरियमेवे दुक्खाइं छुहतएहा-

ईणि भुत्ताइ।' (पउम ६५, ५२)।

विप्परिम पु [विस्पर्श] विरुद्ध स्पर्श (प्राप्र)।

विप्पाडग वि [विपाटक] चीरनेवाला,
विदारक (पएह १, ४—पत्र ७२)।

विप्पाडिअ वि [दे विपाटित] नाशित
(दे ७, ७०)।

विप्पारिय वि [विफारित] १ विस्तारित
(उप पु १५२)। २ विकासित (मुपा ८३)।

विप्पाल सक [दे] पृच्छना, पृच्छा करना।
विप्पालेइ (वव १)।

विप्पाल देखो विप्पाल। सकृ. विप्पालिय
(राज)।

विप्पाल पुं [दे] पृच्छा, प्रश्न (वव १ टी)।

विप्पालणा श्री [दे] ऊपर देखो (वव १ टी)।

विप्पारिय देखो विप्पारिय (राज)।

विप्पुड वि [विस्फुट] स्पष्ट, व्यक्त (रंगा)।

विप्पुअ अक [वि + स्फुर्] १ होना। २
विकसना। ३ तडफटना। ४ फरकना,
हिलना। विप्पुअ (संविध ३४, काल, भवि)।

वक्क विप्पुअ (उत्त १६, ५४, पउम
६३, ३)।

विवर न [विवर] १ छिद्र (पात्र, गड्ड, प्रासू ७३) । २ कन्दरा, गुहा (से ६, ४६) । ३ एकान्त, विजन, 'कामज्झयाए गणियाए वहरिण अतराणि य छिद्राणि य विवराणि य पडिजानरमरो विहरति' (विपा १२—पत्र ३४) । ४ पुन आकाश (भग २०, २) ।

विवरमुह वि [विपराङ्मुख] विमुख, पराङ्मुख (पउम ७३, ३०, से ६, ४२) ।

विवरण न [विवरण] १ व्याख्यान, 'सोऊण सुमिणविवरण' (सुपा ३८) । २ व्याख्या-कारक ग्रन्थ, टीका (विसे ३४२२, पव—गाथा ३६, सम्मत्त ११६) । ३ बाल संवार्ता (दे १, १५० पत्र ३८) ।

विवरामुह } देखो विवरमुह (भवि, से ११, विवराहुत्त ८५) ।

विवरिअ वि [विघृत] व्याख्यात (विसे १:६६, स ७१७) । देखो विवुअ ।

विवरिअ (अप) नीचे देखो (सण) ।

विवरीअ वि [विपरीत] उलटा, प्रतिकूल (भग १, १ टी, गड्ड, कप्पू, जी १२, सुपा ६१०) । ०णु वि [ज्ञ] उलटा, जाननेवाला (धर्मस १२७४) ।

विवरीर } (अप) ऊपर देखो 'घइ विवरीरी विवरेर' बुद्धो होइ विणामहो कालि' (हे ४, ४२४), 'माइ कज्जु विवरेरओ दोसइ' (भवि) ।

विवरुक्ख } वि [विपरोक्ष] परोक्ष, अ-विवरोक्ख } प्रत्यक्ष, 'जावच्चिय दहवयणो विवरोक्खो आबलीए घूयाए' (पउम ६ ११) । २ न अभाव, 'पासम्मि अहकारो होहिइ वह वा गुणाण विवरुक्खे' (गड्ड ७६) । ३ परोक्षता, अप्रत्यक्षपन,

'इय ताहे भावागयपच्चक्खायतणरवइगुणाण । विवरोक्खम्मि वि जाया कईण सबोहरालावा' (गड्ड १२०४) ।

विवल अक [वि + वल] मुडना, टेढ़ा होना (गड्ड ४२४) ।

विवला } अक [विपरा + अय] पलायन विवलाअ } करना, भाग जाना । विवलाइ, विवलायइ, विवलाअति (गड्ड ६३४, ११७६, पि ५६७) । वक्र, विवलाअंत,

विवलाअमाण (से ३, ६०, गा २६१, गड्ड १६६, से १५, १४, गड्ड ४७२) ।

विवलाअ वि [विपलायित] भागा हुआ (से १, २, १४, ३०) ।

विवलिअ वि [विवलित] मोड़ा हुआ, परावर्तित (गा ६८०, गड्ड ४२४, काप्र १६५) ।

विवलीअ देखो विवरीअ, 'विवलीअभासए' (अणु) ।

विवलहत्थ वि [विपर्यस्त] विपरीत, उलटा (से ६, ८) ।

विवस वि [विवश] १ अवीन, परायत्त, परतन्त्र (प्रासू १०७, कुमा, कम्म १, ५७) । २ बाध्य, लाचार (कुप्र १३५) ।

विवह सक [वि + वह] विवाह करना, शादी करना (प्राप्ता) ।

विवहण न [विन्यधन] विनाश (णाया १, १—पत्र ६५) ।

विवाइअ व [विपादित] व्यापादित, जो जान से मार डाला गया हो वह, 'छिहेण विवाइओ वाली' (पउम ३, १०, उत १६, ५६, ६३) ।

विवाउग वि [विवादक] विवाद-कर्ता (स ४५६) ।

विवाग पु [विपाक] १ कर्म-परिणाम, सुख-दुःखादि भोग रूप कर्म-फल (ठा ४, १—पत्र १८८, विपा १, १, उव, सुपा ११०, सण, प्रासू १२२) । २ प्रकर्ष, 'वयविवाग-परिणामा' (ठा ४, ४ टी—पत्र २८३) ।

३ पाककाल, ज से पुणो होइ दुह विवागे' (उत ३२, ३३) । ०विजय पुन [०विचय] धर्मध्यान का एक भेद, कर्म-फल का अनु-चिन्तन (ठा ४, ४—पत्र १८८) । ०सुय न [०श्रुत] ग्यारहवां जैन अङ्ग-ग्रन्थ (सम १, विपा १, १, औप) ।

विवागि वि [विपाकिन्] विपाकवाला (अज्झ ११३) ।

विवाद } पु [विवाद] झगडा, तकरार, वाक्-विवाय } कलह, जवानी लड़ाई (उवा, उव, स ३८५, सुपा २८२, ३६१) ।

विवाय सक [वि + पादय] मार डालना । विवाएमि (विसे २३८५) । वक्र, विवाएंत, विवार्यंत (पउम ५७, ३१, २७, ३७) ।

विवाय देखो विवाग (सुर १२, १३६, स २७५, ३२१, स ११८, सण) ।

'मव्व चिय सहदक्ख

पुव्वज्जियसुकयदुक्कयविवाया ।

जायइ जियाए ज ता

को खेओ सकयउवभोगे'

(उप ७२८ टी) ।

विवायण वि [विवादन] विवाद-कर्ता, 'ते दोवि विवायणु व्व रायकुले' (धर्मवि २०) ।

विवाविड न [दे] अतिशय गौरव (संक्षि ४७) ।

विवाह मक [वि + वाहय] लग्न करना, शादी करना । विवाहेमो (कुप्र १३१) ।

विवाह देखो विआह = विवाह (उवा, स्वप्न ५१, नम १, ८८) । ०गणय पुं [०गणक] ज्योतिषी, जोशी (दे ६, १११) । ०जन्न पुं [०यज] विवाह-उत्सव (मोह ४४) ।

विवाह देखो विआह = विवाह (सम १, ८८) ।

विवाह देखो विआह = व्याख्या (सम १, ८८) ।

विवाहावित्र वि [विवाहित] जिसकी शादी कराई गई हो वह (महा) ।

विवाहिय वि [विवाहित] जिसकी शादी हुई हो वह (महा, मण) ।

विचिइसा स्त्री [विचिदिपा] जानने की इच्छा, जिज्ञासा (अज्झ ६६) ।

विचिक्क देखो विविक्त (सूय १, १, २, १७) ।

विविच सक [वि + विच्] पृथक् करना, अलग करना । सक विविचित्ता (सूय २, ४, १०) ।

विविण न [विपिन] जंगल, वन (गड्ड, नाट—चैत ७२) ।

विविक्त वि [विविक्त] १ रहित, वर्जित । २ पृथग्भूत (दस ८, ५३, भग ६, ३३, उत २६, ३१, उव) । ३ विविध, अनेकविध, 'आसवेहि विविक्तेहि तिप्पमाणो हियासए । गंधेहि विविक्तेहि आउकालस्स पारए'

(आचा १, ८, ८, ६, १०) ।

विभय देखो विभज । विभए, विभयति (कम्म ६, ३१, आचा, उत १३, २३) ।

विभयणा छो [विभजना] विभाग (मम्म १०१) ।

विभर सक [वि + स्मृ] विस्मरण करना, भूल जाना । विभरइ (पि ३१३) ।

विभव देखो विहव (उव, महा) ।

विभवण न [विभवत] चिह्न-करण, खराब करना (राज) ।

विभाडम वि [विभाज्य] विभाग योग्य (ठा ३, २—पत्र १३४) ।

विभाडम वि [विभागिम] विभाग से बना हुआ (ठा ३, २—पत्र १३४) ।

विभाग पु [विभाग] अंश, बाँट (काल, सण) ।

विभागिम देखो विभाडम = विभागिम (उप पृ १४१) ।

विभाय देखो विभाग (रमा) ।

विभाय न [विभात] प्रकाश, कान्ति, तेज (सण) ।

विभाय पु [विभाव] परिवय, 'कस्त विस-मदसाविभायो न होइ' (म १६८) ।

विभाव सक [वि + भावय] १ विचार करना, ख्याल करना । २ विवेक से ग्रहण करना । ३ समझना । वहु विभावन, विभावेत, विभावेमाण (सुपा ३७७, उप ५६७ टी, कप्प) । कवहु विभाविज्जत, विभाविज्जमाग (से ८, ३२, स ७५०) । हेहु, विभावेत्तए (कत्त) । कृ विभावणीय (पुष्क २५४) ।

विभाव देखो विभय, 'तयो महाविभावेण पुड्ढण पेसिया गया य' (महा) ।

विभावसु पु [विभावसु] १ सूर्य, रवि । २ रविवार (पडम १७, १७७) । देखो विहावसु ।

विभाविय वि [विभावित] विचारित (सण) ।

विभास सक [वि + भाप्] १ विशेष रूप से कहना, स्पष्ट कहना । २ व्याख्या करना । ३ विकल्प से विधान करना । विभासइ (पव ७३ टी) । कृ विभासियव्व (उत्तनि ३६,

पिड १२४) । हेहु विभामिड (विमे १०८५) ।

विभासण न [विभापण] व्याख्या, व्याख्यान (विम १४२८) ।

विभासय वि [विभापक] व्याख्याता, व्याख्या-कर्ता (विसे १४२५) ।

विभासा छो [विभापा] १ विकल्प-विधि, पाक्षिक प्राप्ति, भजना, विप्रि और निपेव का का विधान (पिड १४३, १४४, १४५, २३५, ३०२, उप ८१५ टी द्र १६) । २ व्याख्या, विवरण, स्पष्टीकरण (विमे १३८५, १४२१, पिड ६३७) । ३ विज्ञापन, निवेदन (उप ६८०) । ४ विविध भाषण (पिड ४३८) । ५ विशेषोक्ति (देवेन्द्र ३६७) । ६ परिमापा, सकेत (कम्म १, २८, २६) । ७ एक महानदी (ठा ५, ३—पत्र ३५१) ।

विभासिय वि [विभासित] प्रकाशित, उद्घोषित (सम्मत्त ६२) ।

विभिण्ण } देखो विहिण्ण = विभिन्न (गड ५७०, १८८०, उत १६, ५५) ।

विभीसण पु [विभीपण] १ रावण का एक छोटा भाई (पडम ८, ६२) । २ विदेह वर्ष का एक वामदेव (राज) ।

विभीसावण वि [विभीपग] भय-जनक, भयकर (मवि) ।

विभीसिया छो [विभिपिका] भय-प्रदर्शन (उव) ।

विभु पु [विभु] १ प्रभु, परमेश्वर (पडम ५, ११२) । २ नाय, स्वामी, मालिक (पडम ७०, १२) । ३ इक्ष्वाकु वंश के एक राजा का नाम (पडम ५, ७) । ४ वि व्यापक (विसे १६८५) ।

विभूइ छो [विभूति] १ ऐश्वर्य, वैभव (उव, औप) । २ ठाटवाट, घूमघाम, 'महाविभूइए चलिओ जिणजताए' (सुर ३, ६२, महा) । ३ अहिंसा (पहह २, १—पत्र ६६) ।

विभूसण न [विभूपण] १ अलंकार, गहना । २ शोभा, दिव्वालंकारविभूसणाई' (उव, औप) ।

विभूसा छो [विभूपा] १ सिंगार की सजावट, शरीर पर अलंकार-वस्त्र आदि की सजावट (प्राचा १, २, १, ३, औप, जीव ३) ।

२ शरीर-शोभा, 'मिट्टणाओ उवसतस्म कि विभूसाइ कारिअ' (दत्त ६, २, ६५, ६६, ६७, उत १६, ६) ।

विभूसिय वि [विभूपित] विभूपा-युक्त, अलंकृत, शोभित (भग उत १६, ६, महा, विपा १, १—पत्र ७) ।

विभेद } पु [विभेद] १ भेदन, विदारण
विभेय } (धर्मस ८२६), 'जयवारणकुभ-
विभेयवत्तमे' (गडड, उत ७२८ टी) । २ नेद,
प्रकार, 'उड्डाहोतिरिविभेयं तिगुणापि'
(चेइय ६६४) ।

विभेयग वि [विभेदक] भेदनकर्ता, परमम्म-विभेयगो' (धर्मवि ७६) ।

विमइ छो [विमति] छन्द-विशेष (पिंग) ।

विमइअ वि [दे] भक्ति, तिरस्कृत (दे ७, ७१) ।

विमउल वि [विमुकुल] विकसित खिला हुआ (णाया १, १ टी—पत्र ३, औप) ।

विमंतिय वि [विमन्त्रित] जिमके बारे में ममलहत—गुप्त युक्ति की गई हो वह (सुर ११, ६७) ।

विमसिअ वि [विमृष्ट, विमर्शित] विचारित, पर्यालोचित (सिदि १०४५) ।

विमग देखो विमय (राज) ।

विमग्ग सक [वि + मार्गय] १ विचार करना । २ अन्वेषण करना, खोजना । ३ प्रार्थना करना, मागना । ४ इच्छा करना, चाहना । विमग्गइ, विमग्गहा (उव, उत १२, ३८) । वहु विमग्गत, विमग्गमाग (गा ३५१, सुर २, १७, मे ४, ३६, महा) ।

विमग्गिअ वि [विमग्गिन] १ माचित, मांगा हुआ (मिदि १२७, सुर ४, १०३) । २ अन्वेषित, गवेपित (पाअ) ।

विमज्ज न [विमध्य] अन्तराल (राज) ।

विमण वि [विमनम] १ विपण, मित, शोक-सन्तप्त (कप्प, सुर ३, १६८, महा) । २ शून्य-चित्त, मुक्त चित्तगता (विपा ६, २—पत्र २७) । ३ निराश, हताश (गा ७६) । ४ जिमका मन अन्यत्र गया हो वह (से ४, ३१, गडड) ।

विसंधि पुं [विमन्धि] १ एक महाग्रह, ज्योतिष्क देव-विशेष (ठा २, ३—पत्र ७८)।
२ वि वन्धन रहित (राज)। 'कप्प, 'कप्पेल्लय पु [°कल्प] एक महाग्रह (सुज २०)।

विसनिविट्ट न [विसनिविट्ट] विविध रथ्या, अनेक महत्ता (श्रीप)।

विसभ देखो वीसभ (महा)।

विसभणया देखो विस्सभणया (आचा १, ८, ६, ४)।

विसभोइय वि [विसभोगिक] जिमके साथ भोजन आदि का व्यवहार न किया जाय वह, मडली-वाद्य, समाज-वाद्य (ठा ५, १—पत्र ३००)।

विसभोग पु [विसभोग] साथ बैठकर भोजन आदि का व्यवहार (ठा ३, ३)।

विसंभोगिय देखो विसभोइय (ठा ३, ३—पत्र १३६)।

विसंवडय वि [विसंवदित] १ सवृत रहित, अप्रमाणित (पाम्म, स ५७६)। २ विघटित, विद्युत (से ११, ३६)।

विसवय अक [विस + वट्] १ अप्रमाणित होना, असत्य ठहरना, सवृत से सिद्ध न होना। २ विघटित होना, अलग होना। ३ विपरीत होना, अन्यथा होना। विसवयइ, विसवयति (ह ४, १२६, उव), 'सो तारिसो धम्मो नियमेण फले विसवयइ' (म ६४८, ७१६), 'वरिएण कह विसवयसि' (मन २६), विसवएजा (महानि ४)। वक्क विसवयंत (उव उप ७६८ टी, धर्मसं ८८३)।

विसवयण न [विसवदन] विसवाद, सवृत का अभाव (उप पृ २६८)।

विसवाइ वि [विस्वादिन्] १ विघटित होने-वाला, विच्छिन्न होनेवाला (कुमा ६, ८६)। २ अप्रमाणित होनेवाला, सवृत से सिद्ध नहीं होनेवाला, असत्य ठहरनेवाला (कुप्र २६४, सम्मत्त १२३)।

विसवाइअ वि [विसंवादित] विसवाद-युक्त (दे १, ११४, से ३, ३०)।

विसवाद देखो विसवाय = विसवाद (धर्मस १४८)।

विसवादण देखो विसवायण (उत्त २६, ४८)।

विसंवादणा देखो विसवायणा (ठा ४, १—पत्र १६६)।

विसवाय वि [दे] मलिन, मैला (दे ७, ७२)।

विसवाय पु [विसंवाद] १ सवृत का अभाव, विरुद्ध सवृत, विपरीत प्रमाण, 'अरणोरएण-विसंवायो' (सबोध १७, सुपा ६०८)। २ व्याघात (गा ६१६)। ३ विचलता (मे ३, ३०)।

विसवायग वि [विसवाडक] १ सवृत रहित, प्रमाण-रहित। २ ठगनेवाला, वचक (सुपा ६०८)।

विस्वायण न [विसवादन] नीचे देखो (उत्त २६, ४८, सुख २६, ४८)।

विसवायणा खी [विसवादना] १ असत्य कथन। २ वचना, ठगई (ठा ४, १—पत्र २६६)।

विससरिय वि [विसंसृत] उठ गया हुआ, 'पहायसमए य विससरिएसु थाणएसु' (स ५३७)।

विसहणा देखो विस्संभणया (आचा)।

विसकल वि [विशकल] नीचे देखो (राज)।

विसकलिय वि [विशकलित] टुकड़ा-टुकड़ा किया हुआ, खण्डित (आवम)।

विसग्ग पु [विसर्ग] १ निसर्ग, त्याग, 'सिमि-रोवि सुरयसगमकिरियासजणियवजणविसग्गो' (विसे २२८)। २ विसर्जन, छुटकारा, छोड़ देना (पि २१५)। ३ अक्षर-विशेष, विसर्ज-नीय वर्ण (पिंग)।

विसज्ज सक [वि + सृज्, सर्जय] १ विदा करना, भेजना। २ त्यागना। विसज्जेह (महा)। सक विसज्जिऊण, विसज्जिअ (महा, अभि ४६)। हेक्क विसज्जिदु (शौ) (अभि ६०)। क विसज्जिदव्व (शौ) (अभि ५०)।

विसज्जणा खी [विसर्जना] विदाई (वव ४)।

विसज्जिअ वि [विसृष्ट, विसर्जित] १ विदा किया हुआ, भेजा हुआ (श्रीप, अभि ११६,

महा, सुपा १५० - ५७)। २ त्यक्त, 'जीवेण जाणि उ विमज्जियाणि जाईसएसु देहाणि' (उव)।

विसट्ट अक [टल] फटना, टूटना, टुकड़े-टुकड़े होना। विमट्टइ (दे ८, १७६, पड्) विसट्टति (गउड), 'तम्स विसट्टउ हियय' (कुमा)। वक्क विसट्टत (म ५७६)।

विमट्ट अक [वि + कस] विकसना, खिलना, फूलना। विसट्टइ (प्राक्क ७६), विसट्टति (वजा १३८)। वक्क विसट्टत, विसट्टमाण (वजा ६०, ठा ४, ४—पत्र २६४)।

विसट्ट सक [वि + कासय] विकसित करना, फूलाना, प्रफुल्ल करना। विसट्टइ (धात्वा १५३)।

विसट्ट अक [पन] गिरना, स्थलित होना। विसट्टति (मुख २, २६)।

विसट्ट वि [दे] १ विघटित, विश्लिष्ट (पाम्म, गउड १००६)। २ विकसित, प्रफुल्ल, खिला हुआ (प्राक्क ७७, गउड ६६७, ८०५, कुमा, सुर ३, ४२, भत्त ३०)। ३ दलित, विशीर्ण, खण्डित, जिराका टुकड़ा-टुकड़ा हुआ हो वह (से ६, ३०, गउड ५५६, भवि)। ४ उत्थित (गउड ७)।

विमट्टण न [विरुसन] विकास, प्रफुल्लता, 'देव। पणयजणकल्लाणकदुट्टविसट्टणुगतमि-हराणुगारिणो' (धर्मा ५)।

विसड } देवो विसम (पड्, हे १, २४१,
विसड } कुमा, दे ७, ६२), 'ढेहेण तहा विसडा, विसडा जह सफलिया जाया' (उव)।

विमड वि [दे] १ नीराग, राग-रहित। २ नीरोग, रोग-रहित (दे ७, ६२)। ३ विषोड, सहन किया हुआ (उव)। ४ विशीर्ण, टुकड़े-टुकड़े किया हुआ (से ६, ६६)। ५ आकुल, व्याकुल (से ११, ८६)।

विसड वि [विशठ] १ अत्यंत दभी, अतिशय मायावी, देवेहि पाडिहेरं किं व कय एव्य विसडोहि' (पउम १०२, ५२)। २ पुं. एक श्रेष्ठ-पुत्र (सुपा ५५०)।

विसण देखो वसण = वृषण (दे ६, ६२)।

विसण न [वेशन] प्रवेश (राज)।

विमुक्ख पुं [विमोक्ष] छुटकारा मुक्ति (से ११, ५६, आचानि २५८, २५९, अजि ५) ।

विमुक्खण देखो विमोक्खण (उत्त १४, ४, कप्प ३६६) ।

विमुच्छिअ वि [विमुच्छित] मूर्छा-प्राप्त (से ११, ५६) ।

विमुत्त देखो विमुक्क 'मुत्तिविमुत्तेसुवि' (पिंड ५६) ।

विमुत्ति स्त्री [विमुक्ति] १ मोक्ष, मुक्ति (आचानि ३४३, कुप्प १६) । २ आचाराग सूत्र का अन्तिम अन्ययन (आचा २, १६, १२) । ३ अहिता (परह २, १—पत्र ६६) ।

विमुयण न [विमोचन] परित्याग (सवोय १०) ।

विमुह वि [विमुख] १ पराङ्मुख, उदासीन (गड्ड, सुपा २८, भवि) । २ पु एक नरक-स्थान (देवेन्द्र २८) । ३ पुन आकाश, गगन (भग २०, २—पत्र ७७६) ।

विमुह अक [वि + मुह] धवराना, व्याकुल होना, वैचैन होना । वक्क विमुहिज्जत (से २, ४६, ११, ४६) ।

विमुहिअ वि [विमुग्ध] धवराया हुआ (से ४, ४४, गा ७६२) ।

विमुहिअ वि [विमुग्धित] पराङ्मुख किया हुआ (परह १, ३—पत्र ५३) ।

विमूढ वि [विमूढ] १ धवराया हुआ । २ अस्फुट, अस्पष्ट (गड्ड) ।

विमूरण वि [विभञ्जक] तोड़नेवाला, खरबन-कर्ता, 'ज मगल बाहुनलिसस आसि तेअस्सिणो माणविमूरणस्स' (मगल १०) ।

विमोइय वि [विमोचित] छुड़ाया हुआ (णाय १, २—पत्र ८८, सण) ।

विमोक्ख देखो विमुक्ख (से ३, ८) ।

विमोक्खण न [विमोक्षण] १ छुटकारा, छुड़ाना, क्वचन-मोचन (गाचा, सूत्र २, ७, १०, पउम १०२, १८८, स ६८, ७४२) । २ वि, छुड़ानेवाला, विमुक्त करनेवाला, 'सव्वदुक्खविमोक्खण' (सूत्र १, ११, २, २, ७, १०) । स्त्री 'णी' (उत्त २६, १) ।

विमोक्खय वि [विमोक्षक] छुटकारा पाने-वाला, 'ते दुक्ख विमोक्खया' (सूत्र १, १, २, ५) ।

विमोडण न [विमोटन] मोड़ना (दे) ।

विमोत्तञ्ज देखो विमुञ्च ।

विमोय सक [वि + मोचय्] छुड़ाना, मुक्त करना । सक विमोइऊण (सण) ।

विमोय देखो विमुच ।

विमोयग वि [विमोचक] छोड़नेवाला, दूर करनेवाला, 'न ते दुक्खविमोयगा' (सूत्र १, ६, ३) ।

विमोयण न [विमोचन] १ छुटकारा, मुक्ति ।

२ वि, छुड़ानेवाला, 'दुहसयविमोयणाकाइ' (परह २, १—पत्र ६६) ।

विमोयणा स्त्री [विमोचना] छुटकारा (सूत्र १, १३, २१) ।

विमोह मक [वि + मोहय्] मृग्य करना, मोह उपजाना । विमोहेइ (महा) । सक विमोहिता, विमोहेता (भग १०, ३—पत्र ४६८) ।

विमोह देखो विमोक्ख (आचा) ।

विमोह वि [विमोह] १ मोह-रहित (उत्त ५, २६) । २ पु विशेष मोह, धवराहट (मम्मत्त २२६) । ३ आचाराग सूत्र का एक अन्ययन (सम १५, ठा ६ टी—पत्र ४४५) ।

विमोहण न [विमोहन] १ मोह उपजाना । (सुर ६, ३८) । २ वि मोह उपजानेवाला (उप ७२८ टी) ।

विमोहिअ वि [विमोहित] मोह-प्राप्त (महा २३, ५२) ।

विम्ह न [वेश्मन्] गृह, घर (राज) ।

विम्हइअ वि [विस्मित] आश्चर्य-चकित, चमत्कृत (सुर १, ६६०) ।

विम्हय अक [वि + रिम] चमत्कृत होना, विस्मित होना, आश्चर्यान्वित होना । कृ. विम्हयगिज्ज विम्हयणीअ (हे १, २४८, अमि २०२) ।

विम्हय पु [विस्मय] आश्चर्य, चमत्कार (हे २, ७४, पड्, प्राप्, उव, गड्ड, अवि १) ।

विम्हर सक [स्मृ] याद करना । विम्हरइ (हे ४, ७४) ।

विम्हर सक [वि + स्मृ] विस्मरण करना, याद न आना, भूल जाना । विम्हरइ (हे ४, ७५, प्राकृ ६३, पड्) । वक्क विम्हरंत (आ १६) ।

विम्हरण न [विस्मरण] विस्मृति (पव ६, सवोय ४३, सूक्त ८०) ।

विम्हराइअ वि [दे] १ मूर्छित, मूर्छा-प्राप्त । २ विम्मापित (से ६ ५१) ।

विम्हरावण वि [स्मरण] स्मरण करानेवाला, याद दिलानेवाला, 'वावरणादीरकविम्हरा वणा' (कुमा) ।

विम्हरिअ वि [विस्मृत] भुग्न हुआ, याद न किया हुआ (कुमा, पात्र) ।

विम्हल देखो विम्भल (उप ५३० टी) ।

विम्हलिअ देखो विम्भलिअ (अन्तु २२) ।

विम्हारिअ वि [विस्मारित] धुंसा हुआ (कुमा, आ २८) ।

विम्हारिअ (अप) देखो विम्हग्गिअ (मण) ।

विम्हाव सक [वि + स्मापण] आश्चर्य-चकित करना । विम्हावेइ (महा, निचू ११) । वक्क विम्हावेंत (उत्त ३६, २६२) ।

विम्हावण न [विस्मापन] आश्चर्य उपजाना, विस्मय-करण (अप) ।

विम्हावणा स्त्री [विस्मापना] ऊपर देखो (निचू ११) ।

विम्हावय वि [विस्मापक] विस्मय-जनक (सम्मत्त १७४) ।

विम्हाविअ वि [विस्मापिन] आश्चर्यान्वित किया हुआ (धर्मवि १४७) ।

विम्हिअ वि [विस्मित] विस्मय-प्राप्त, चमत्कृत (आ २८—पत्र १६०, उव) ।

विम्हिय (अप) देखो विम्हय । विम्हियइ (सण) ।

विम्हिर वि [विस्मेर] विस्मय पानेवाला, चमत्कृत होनेवाला (आ १२, २७) ।

विद्यञ्चा देखो विअ-ञ्चा ।

विद्यट् अक [वि + वृत्] वरतना, होना । हेक्क विद्यट्तिअ (आचा २, २, २, ३) ।

विद्य पु [व्यर्द, व्यट्] आकाश, गगन (भग २०, २—पत्र ७७६) ।

विर सक [भञ्ज] भाँगना तोड़ना । विरइ (हे ४, १०६) ।

विर अक [गुप्] व्याकुल होना । विरइ (हे ४, १५०), विरंति (कुमा) ।

विर (अप) देखो वीर (सण) ।

विसाह वि [विपादिन्] विपाद-युक्त, शोक-ग्रस्त (संघोष ३६) ।

विसाण न [विपाण] १ हाथी का दाँत (पण्ड १, १—पत्र ८, अणु २१२) । २ शृंग, सींग (सुख ६, १, पात्र, श्रीप) । ३ सुश्रम का दाँत (उवा) । ४ पु. व. देश-विशेष (पउम ६८, ६५) ।

विसाण सक [विशाणय्] विसना, शाण पर चढ़ाना । कर्म विशाणीप्रदि (शौ) (नाट—मृच्छ १३६) ।

विसाणि वि [विपाणिन्] १ सींगवाला । २ पुं. हाथी, हस्ती । ३ शृंगटक, मिषाण । ४ ऋषभ नामक औषध (अणु १४२) ।

विसाय सक [वि + स्वादय्] विशेष चखना, खाना । वक्तृ विसाणमाण (शाया १, १—पत्र ३७, कण्ठ) ।

विसाय पुं [विपाद] खेद, शोक, दिलगिरी, अफसोस (उवा, गडड, सुपा १०४, हे १, १५५) । १ वत वि [० वत्] खिन्न, शोक-ग्रस्त (श्रा १४) ।

विसाय वि [विपात] १ सुख रहित (विवे १३६) । २ पुन. एक देव-विमान (सम ३८) ।

विसाय वि [विस्वाद] स्वाद-रहित, 'ग्राम-यकारि विसाय मिच्छतं कयसण व ज भुत्' (विवे १३६) ।

विसार सक [वि + सारय्] फैलाना । वक्तृ विमारीत (उत्त २२, ३४) ।

विसार पु [दे] मैत्र्य, सेना (पड्) ।

विसार वि [विसार] सार-रहित, निम्सार (गडड) ।

विसारण न [विशारण] खण्डन (पिठ ५६०) ।

विसारणिय वि [विस्मारणिक] स्मारणा-रहित, जिसको याद न दिलाया गया हो वह (काल) ।

विसारय वि [दे] घृष्ट, ठीठ, साहसी (दे ७, ६६) ।

विमारीय वि [विशारद] विद्वान्, परिणत, वक्ष (पण्ड १, ३—पत्र ५३, भग, श्रीप, सुर १, १३, आत्म १६) ।

विसारि वि [विसारिन्] फैलनेवाला, व्यापक (गडड) । श्री. ० (कण्ठ) ।

विसारि पुं [दे] कमलासन, श्रद्धा (दे ७, ६२) ।

विसाल वि [विशाल] १ विस्तृत, बड़ा, विस्तोर्ण, चौड़ा (पात्र, मुर २, ११६, प्रति १०) । २ पु. एक बहु-देवता, श्रद्धासी महा-ग्रहों में एक महाग्रह (ठा २, ३—पत्र ७८) । ३ एक द्वाद, प्रन्दिन-निकाय का उत्तर दिशा का द्वाद (ठा २, ३—पत्र ८५) । ४ पुन. देव-विमान विशेष (सम ३५, देन्द १३६, पत्र १६४) । ५ न. एक विशा-घर-नगर (झ) ।

विसालय पु [दे] जलधि, नमृद्र (दे ७, ७१) ।

विसाला श्री [विशाला] १ एक नगरी का नाम, उज्जयिनी, उज्जैन (सुपा १०३, उव ६८८) । २ भगवान् पारवनाय की दोहा-शिविका (विचार १२६) । ३ जवूयुन विशेष, जिसमें यह जवूदोष कहलाना है । ४ राजधानी-विशेष (झ) । ५ भगवान् महावीर की माता का नाम (सूत्र १, २, ३, २२) । ६ एक पुष्करिणी (राज) ।

विसालिस देवो विसारिम (उत्त ३, १४) ।

विसासन वि [विशासन] विघातक, निनाशक, 'कुमुमयविसासन' (सम्म १) ।

विमारीय वि [विशासित] १ मारित, हिसित, जिमका वध किया हो वह । २ विशेष रूप से धर्षित । ३ विश्लेषित, विपुक्त किया हुआ । ४ मार भगाया हुआ (से ८, ६३) ।

विसाह पुं [विशाय] स्कन्द, कार्तिकेय (पात्र) ।

विसाहा श्री [विशाखा] १ नक्षत्र-विशेष (सम १०) । २ व्यक्ति-वाचक नाम, एक स्त्री का नाम (वज्जा १२२) । ३ एक विद्याधर-कन्या (महा) ।

विसाहिअ वि [विसाधित] १ सिद्ध किया गया । २ न. संसिद्धि, 'खगविसाहिअ जहि लहहु पिय तहि देसहि जाहु' (हे ४, ३८६, ४११) ।

विसाही श्री [विशार्ग] १ वैशाख मास की पूर्णिमा । २ वैशाख मास की अमावस (सुज १०, ६) ।

विमि श्री [दे] मणि शरी, गज पर्वाण (दे ७, ६१) ।

विमि देवो विमि (हे १, १२८, प्राप्र) ।

विमिजमाण देवो विम = वि + शृ ।

विमिद्र वि [विमिद्र] १ प्रधान, मुख्य (सूत्र १, ६, ७; पण्ड २, १—पत्र ६६) । २ विशेष-युक्त (महा) । ३ विशेष शिष्ट मुमन्य (वज्जा १६०) । ४ पुन. महित (पण्ड २३—पत्र ६७१) । ५ अतिशय, अति, विलक्षण (रिसे) । ६ पु. एा द्वाद, द्वीपकुमार-देवों का उत्तर दिशा का द्वाद (ठा २, ३—पत्र ८४) । ७ न. लगातार छ दिनों का उपवास (संघोष ५८) । ८ दिद्रि श्री [दिद्रि] अहिना (पण्ड २, १) ।

विमिद्रि श्री [विमिद्रि] विपरीत रूप (विरि ८७८) ।

विमिण वि [दे] रोमश, प्रचुर रोमवाना (दे ७, ६४) ।

विमिस मर [वि + शिप्] विशेषण-युक्त करना । कर्म 'किरिया विम(रि)न्नाए पुण नाणाठ, मुए जमो भणिम' (अज्ज ५८, ५६) ।

विमिह पुं [विशिम्य] १ बाण, तीर (पात्र, पउम ८, १००, सुपा २२, विशा १३) । २ वि. शिवा रहित (गडड ५३६) ।

विमी देवो विमी (हे १, १२८, प्राप्र) ।

विमी श्री [विमिति] वीर, वीर का समूह 'केत्ती(रति)भाप्रो भाप्रवदाण विमीप्रो' (हाम्प १३६) ।

विमीअ अक [वि + सद्] १ खेद करना । २ निमग्न होना, हूबना । विमीयद विमीप्रति, विमीमए, विमीयह (सूत्र १, ३, ४, १०१, ३, ४, ५, ठा ४, ४—पत्र २७८, उव) । वक्तृ विमीयंत (पि ३६७) ।

विमीइय वि [विमोर्ण] १ जीर्ण, युद्धित । २ न. दूटना, जर्जरित होना, 'सधीहि विहिडिय पिव विमीइय सन्नधोहि' (सुर १२, १६६) ।

विमीरत देवो विस = वि + शृ ।

विरह पुन [दे] ? एकान्त, विजन (दे ७, ६१, गाय १, २—पत्र ७६, पुष्क २४४), 'मामाए देवीए अतराणि य छिहाणि य विरहाणि य पडिजागरमाणीओ २ विहरवि' (विपा १, ६—पत्र ८६) । २ कुमुम से रंगा हुआ कपडा (दे ७, ६१) ।

विरहान् न [दे] कुमुम मे रंगा हुआ वस्त्र (दे ७, ६८) ।

विरहि वि [विरहिन्] वियोगी, विछुड़ा हुआ (कुमा) ।

विरहिअ वि [विरहिन्] विरह-युक्त (भग, उव, हे ४, ३७७) ।

विरा अक [वि + ली] १ नष्ट होना । २ द्रवित होना, पिघलना । ३ अटकना, निवृत्त होना । विराइ (हे ४, ५६) ।

विराइ वि [विरागिन्] विरागवाला, विरक्त, उदासीन । स्त्री 'गी' (नाट) ।

विराइ वि [विराजिन्] शोभनेवाला, चमकता (मे २, २६) ।

विराइ वि [विराजिन्] शब्द-युक्त, आवाज-वाला (से २, २६) ।

विराइअ देखो विराय = विलीन (मे २, २६) ।

विराइअ वि [विराजित] सुशोभित (उवा, श्रौप, महा) ।

विराग पु [विराग] १ राग का अभाव, विराग्य, उदासीनता (मुख १३, उप ७२८ टी) । २ वि राग-रहित, वीतराग (पच्च १०४, श्रौप) ।

विराइ पु [विराट] देश विशेष (उप ६४८ टी) । नयर न [नगर] नगर-विशेष (गाया १, १६—पत्र २०६) ।

विराव (अप) पु [विराव] एक राक्षस का नाम (पिंग) ।

विराम पु [विराम] उपरम, निवृत्ति, अवसान (गडड) ।

विरामण न [विरमण] विरत करना, निवर्तन, विरमाना, 'वेरविरामणपज्जवमाण' (पण्ह २, ४—पत्र १३१) ।

विराय अक [वि + राज्] शोभना, चमकना । विरायण (पात्र) । वहु विरायत, विरायमाण (वप्प, श्रौप, गाय १, १ टी—पत्र २, मुर २, ७६) ।

विराय वि [विलीन] १ विशोण, विगलित, नष्ट (से ७, ६४, गडड, कुमा ६, ३८) । २ पिघला हुआ (पात्र) ।

विराय देखो विराग (पण्ह २, ५—पत्र १४६, कुमा, सुपा २०५, वज्जा ६, कुप्र १११) ।

विराल देखो विराल (गाया १, १—पत्र ६५, पि २४१) ।

विरालिआ स्त्री [विरालिका] १ पलाश-कन्द । २ पर्ववाला कद (दम ५, २, १८) । देखो विरालिआ ।

विराली स्त्री [विराली] १ वल्ली-विशेष (पव ४, आ २०, सवोध ४४) । २ चतुरिन्द्रिय जंतु की एक जाति (उत्त ३६, १४८, सुख ३६, १४८) । देखो विराली ।

विराव पु [विराव] शब्द, आवाज (गडड) ।

विरावि वि [विराविन्] आवाज करनेवाला (गडड) ।

विराह सक [वि + राधय्] १ खरडन करना, भांगना, तोड़ना । विराहति (उव) । वहु. विराहत, विराहेत (सुपा ३२८, उव) । विराहअ } वि [विरावक] खरडन करनेवाला, विराहग } तोड़नेवाला, भजक (भग, गाय १, ११—पत्र १७१) ।

विराहणा स्त्री [विराधना] खरडन, भग (सम ८, गाय १, ११ टी—पत्र १७३, पण्ह १, १—पत्र ६, श्रौघ ७८८) ।

विराहिअ वि [विराधित] १ खरिडत, भगन (भग) । २ अपराध, जिसका अपराध किया गया हो वह, 'अविराहियवेरिणहि' (पण्ह १, ३—पत्र ५३) । ३ पुं. एक विद्यावर नरेश (पउम ७६, ७) ।

विरिअ वि [भगन] भांगा हुआ, तोड़ा हुआ (कुमा) ।

विरिअ देखो वीरिअ (सुअनि ६१, ६४, श्रौप) ।

विरिच सक [वि + भज्] विभाग ग्रहण करना, भाग लेना, वांट लेना, 'मयणो वि य से रोग न विरिचइ, नेय नासेइ' (म १. ७) ।

विरिच पुं [विरिच] ग्रहा, विघाता (पात्र) ।

विरिचि पुं [विरिचि] ऊपर देखो (मुर १२, ७८) ।

विरिचिअ वि [दे] १ विमल, निर्मल । २ विरक्त, उदासीन (दे ७, ६३) ।

विरिचिर पुं [दे] १ अश्व, घोड़ा । २ वि विरल (दे ७, ६३) ।

विरिचिरा स्त्री [द] धारा, प्रवाह (दे ७, ६३) ।

विरिक् वि [दे] पाटित, विदागित (दे ७, ६४) ।

विरिक् वि [विरिक्] जो खाली हुआ हो वह (पउम ४५, ३०, सुपा ४२०) ।

विरिक् वि [विभक्] १ बाँटा हुआ 'जेण चित्तयराण सभा नममागेहि विरिक्का' (महा) । २ जिसने भाग बाँट लिया हो वह, अपना हिंसा ले कर जो अलग हुआ हो वह, 'एगम्मि सरिएणवेमे दो भाउया वणिथा; ते य परोप्पर विरिक्का' (श्रौघ ४६४ टी) ।

विरिक्का स्त्री [दे] विन्दु, लव, लेश (सुख २, २७) ।

विरिचिर वि [दे] धारा से विरेचन करने वाला (पड्) ।

विरिज्जय वि [दे] अनुचर, अनुगत (दे ७, ६६) ।

विरिल्ल मक [वि + रु] विस्तारना, फैलाना । विरिल्लइ (प्राक् ५६) ।

विरिअ (अप) देखो विदरीअ (पिंग) ।

विरिह सक [प्रति + पालय्] पालन करना, रक्षण करना । विरीहइ (प्राक् ७५, घात्वा १५३) ।

विरु } अक [वि + रु] रोना चिल्लाना । विरुअ } वहु विरुयमाण (उप ३३६ टी) ।

विरुअ न [विमन] व्वनि, पक्षी की आवाज, शब्द (गा ६८, मे १, २३, नाट—मृच्छ १३६) ।

विरुअ वि [दे विरुप] १ खराब, कुडौल, दुष्ट रूपवाला, कुत्सित (दे ७, ६३, भवि) । २ विरुद्ध, प्रतिकूल (पड्) । देखो विरुअ ।

विरुद्ध पु [विरुद्ध] नरक-स्थान विशेष (देवेन्द्र २८) ।

विस्स देखो विस = विश्, 'देवीए जेण समयं अहंपि अगोए विस्सामि' (सुर २, १२७)।

विस्स न [विस्स] १ कच्ची गन्ध अपक्व मास आदि की वृ। २ वि कच्ची गन्धवाला (प्राप्र; अमि १८४)। ३ गंधि वि [गन्धिन्] आमगन्धि, अपक्व मास के समान गंधवाला (अमि १८४)।

विस्स पुं [विस्स] १ एक नक्षत्र-देवता उत्तराषाढा नक्षत्र का अधिष्ठाता देव (ठा २, ३—पत्र ७७, अणु १४५, सुज्ज १०, १२)। २ स सर्व सकल, सब (विसे १६०३, सुर १२, ५६)। ३ पुन. जगत, दुनियाँ (सुपा १३६, सम्मत्त १६०, रंमा)। ४ पुं [जिन्] यज्ञ विशेष (प्राकृ ६५)। ५ कम्म पु [कर्मन्] शिली-विशेष, देव-वर्धक (स ८००, कुप्र ६)। ६ पुर न [पुर] नगर-विशेष (सुपा ६३५)। ७ भूइ पुं [भूति] प्रथम वासुदेव का पूर्व-भवीय नाम (सम १५३, पचम २०, १७१, भत्त १३७, ती ७)। ८ यम्म देखो कम्म (स ६१०)। ९ वाइअ पुं [वादिक्] भगवान् महावीर का एक गण (ठा ६—पत्र ४५६)। १० सेण पुं [सेन] १ भगवान् शान्तिनाथजी का पिता, एक राजा (पम १५१, १५२)। २ अहोरात्र का एक गृह्य (सम ५१)। देखो वीम = विश्व।

विस्सअ (मा) देखो विम्हय = विस्मय (पङ्)।

विस्सुत देखो वीसत (सुपा ५८३)।

विस्सतिअ न [विश्रान्तिक] मथुरा का एक तीर्थ (ती ७)।

विस्संद सक [वि + स्थन्द्] टपकना, फरना, घूना। विस्संदति (ठा ४, ४—पत्र २७६)।

विस्सभ सक [वि + श्रम्भ्] विश्वास करना। कृ विस्संभणिज्ज (आ १४, उपप १६)।

विस्सभ पु [विश्रम्भ] विश्वास, अद्वा (प्रयी ६६, महा)। १ घाइ वि [घातिन्] विश्वास-घातक (णाय १, २—पत्र ७६)।

विस्सभण न [विश्रम्भण] विश्वास (माल १६६)।

विस्संभणया स्त्री [विश्रम्भणा] विश्वास (आचा)।

विस्संभर पु [विश्वम्भर] जन्तु-विशेष, भुजपरिस्पं की एक जाति (सुप्र २, ३, २५, श्रोष ३२३)। २ मूपक, चूहा (श्रोष ३२३)। ३ इन्द्र। ४ विष्णु, नारायण (नाट—चैत ३८)।

विस्सभरा स्त्री [विश्वम्भरा] पृथिवी, धरती (कुप्र २१३)।

विस्संभिय वि [विश्रब्ध] विश्वास-प्राप्त, विश्वासी (सुख १, १४)।

विस्सभिय वि [विश्वभृन्] जगत-पूरक (उत्त ३, २)।

विस्सत्थ देखो वीमत्थ (नाट—शकु ५३)।

विस्सद्ध देखो वीमद्ध (पमि १६३, मुद्रा २२३)।

विस्सम अक [वि + श्रम्] घाक लेना। विस्समइ (प्राकृ २६)। कृ. विस्समिअ (नाट—मालती ११)।

विस्सम पु [विश्रम] विश्राम, विश्रान्ति (स्वप्न १०६)।

विस्समिअ देखो विस्सत (सुपा ३७२)।

विस्सर सक [वि + स्मृ] भूलना। विस्सरइ (घात्वा १५३)।

विस्सर वि [विस्वर] खराब आवाजवाला (सम ५०, पणह १, १—पत्र १८)।

विस्सरण न [विस्मरण] विस्मृति, याद न आना (पमा २४, कुल १४)।

विस्सरिय वि [विस्मृत] भुला हुआ (उप पृ १६३)।

विस्सस सक [वि + श्वस्] विश्वास करना, भरोसा करना। विस्ससइ (प्राकृ २६)। वकृ विस्ससन (आ १४)। कृ. विस्ससणिज्ज (आ १४, भत्त ६६)।

विस्ससिअ वि [विश्वस्त] विश्वास-युक्त, भरोसा-पात्र (आ १४, सुपा १८३)।

विस्साणिय वि [विश्राणित] दिया हुआ, अर्पित (उप १३८ टी)।

विस्साम देखो वीसाम (प्राकृ २६, नाट—शकु २७)।

विस्सामण न [विश्रामण] चप्पी, अग-मर्दन आदि भक्ति, वैयावृत्त्य (ती ८)।

विस्सामणा स्त्री [विश्रामणा] ऊपर देखो (पव ३८, हित २०)।

विस्साव देखो विसाव = वि + स्वाद्य। कृ. विस्सायणिज्ज (णाय १, १२—पत्र १७४)।

विस्सार सक [वि + स्मृ] भूल जाना। सकृ. 'कोऊहलपरा विस्सारिऊण रायसाण अणणिऊण नियमूमि पविट्ठा नवरि' (महा)।

विस्सार सक [वि + स्मारय्] विस्मरण करवाना (नाट—मानती ११७)।

विस्सारण न [विमारण] विस्तारण, फैलाना (पव ३८)।

विस्सावसु पुं [विश्ववसु] एक गन्धर्व, देव-विशेष (पचम ७२, २६)।

विस्सास पुं [विश्वाम] भरोना, प्रतीति, यद्वा (सुख १, १०, सुपा ३५२, प्राप्र)।

विस्सामिय वि [विश्वसिन] जिसको विश्वास कराया गया हो वह (सुपा १७७)।

विस्साइल पुं [विश्वइल] अग विद्या का जानकार चतुर्थ उद-पुरुष (विचार ४७३)।

विस्सुअ वि [विश्रुत] प्रसिद्ध, विख्यात (प्राप्र, श्रौप प्रासू १०७)।

विस्सुमरिय देखो विस्सुमरिअ (उप १२७)।

विस्सेणि स्त्री [विश्रेणि, °णी] नि श्रेणि, विस्सेणी स्त्री (आचा)।

विस्सेसर पुं [विश्वेश्वर] काशी-विश्वनाथ, काशी में स्थित महादेव की एक मूर्ति (सम्मत्त ७५)।

विस्सोअसिआ दलो विमोत्तिआ (हं २, ६८)।

विह सक [विह] ताडन करना। वकृ विहमाण (उत्त २७, ३, सुख २७, ३)।

विह देखो विम = विप (आचा, पि २६३)।

विह पुन [दि] १ मार्ग, रास्ता (आच ६०६)। २ अनेक दिनों में उल्लघनीय मार्ग (आचा २, ३, १, ११, २, ३, ३, १४)। ३ अष्टवी-प्राय मार्ग (आचा २, ५, २, ७)।

विह पुं [विहायस्] आकाश, गगन (भग २०, २—पत्र ७७५, दत्तनि १, २३)। देखो विहग = विहायस्।

विलपप पु [विलात्मन्] एक नरक-स्थान (देवेन्द्र २६) ।

विलभ सक [खेद्य] खिन्न करना, खेद उपजाना । विलभेइ (प्राक् ६७) ।

विलमा ली [दे] ज्या, घनुष की डोरी (दे ७, ३४) ।

विलय पुं [दे] सूर्य का अस्त होना (दे ७, ६३, पात्र) ।

विलय पुं [विलय] १ विनाश (कुप्र ५१, मुपा १६७, ती ३) । २ तल्लीनता (ती ३) । ३ पुं एक नरक-स्थान (देवेन्द्र २६) ।

विलया ली [वन्ति] ली, महिला, नारी (पात्र, हे २, १२८, पङ्, कुमा, रंभा, भवि) ।

विलय अक [वि + लप्] रोना, काँदना, चिल्लाना । विलवइ (पङ्, महा) । वहु विलयत, विलयमाण (महा, गाया १, १—पत्र ४७) ।

विलयण वि [विलपन] रोनेवाला, चिल्लानेवाला । या ली [ता] विलाप, क्रन्दन (श्रौप) ।

विलविअ न [विलपित] विलाप, क्रन्दन (पात्र, श्रौप) ।

विलविर वि [विलपित] विलाप करनेवाला (कुमा, मण) ।

विलस अक [वि + लस्] १ मौज करना । २ चमकना । विलमइ, विलसेसु (महा) । वहु, विलमंन (कप्प, सुर १, २२८) ।

विलसण न [विलमन] १ विलास, मौज (उप पृ १८१) । २ वि. मौज करनेवाला (सुर १, २२१ टि) ।

विलसिय न [विलसित] १ चेष्टा-विशेष । २ दीप्ति, चमक (महा) ।

विलमिर वि [विलासित] विलासी, विलास करनेवाला (मुपा २०४, २५४, धर्मवि १६, सण) ।

विला देखो विरा, 'मयणं व मणो मूणणोवि हत सिग्घ चिय विलाइ' (भत्त १२७), 'तावेण व नवणीय विलाइ सो उदरिजतो' (कुप्र १०५) ।

विलाल देखो विराल (पि २४१) ।

विलाव पुं [विलाप] क्रन्दन, विलख-विलख या विकल होकर रोना परिदेवन (उव) ।

विलाविअ वि [विलापित] विलाप-युक्त (वै ८६, भवि) ।

विलास पु [विलास] १ ली का नेत्र-विकार । २ ली की श्रृंगार-चेष्टा विशेष, अग और क्रिया-सवन्धी ली की चेष्टा-विशेष (परह २, ४—पत्र १३२, श्रौप, गउड) । २ दीप्ति, चमक (कुमा, गउड) । ३ चेष्टा-विशेष, मौज (गउड) । ४ पुर न [पुर] नगर-विशेष (मुपा ६२२) । ५ वइ ली [वती] ली, नारी, महिला (से १०, ७१, गउड) ।

विलासि वि [विलासिन्] १ मौजी, शौकीन (हास्य १३८, गउड) । २ चमकनेवाला । ली. 'णी, 'चदविलासिणीओ चददसमललाडाओ' (श्रौप) ।

विलासिअ वि [विलासिक, 'सित] विलास-युक्त (गा ४०५) ।

विलासिणी ली [विसिनी] १ नारी, ली । २ वेश्या (गा २६३, ८०३ अ, गउड, नाट—रटना ६, पि ३४६, ३८७) । देखो विलासि ।

विलिअ न [व्यलीक] १ कंदपं-सवन्धी अपराध, वह अपराध जो काम के आवेग के कारण किया जाय, गुनाह (कुमा, गा ५३) । २ अकार्य (गा ५३) । ३ अप्रिय, विप्रिय (गा ५३, पात्र) । ४ अनृत, अरात्य । ५ प्रतारणा, ठगाई । ६ गति-विपर्यय । ७ वि अपराधी । ८ अकार्य-कर्ता । ९ विप्रिय-कर्ता । १० झूठ बोलनेवाला (हे १, ४६, १०१) ।

विलिअ वि [व्रीडित] लजित, शरमिन्दा (पात्र, पङ्) ।

विलिअ न [दे व्रीडित] लजा, शरम (दे ७, ६५, सण) ।

विलिइअ वि [व्यलीकित] व्यलीक-युक्त, 'विलि (गलिइ)ए विडु' (भग १५—पत्र ६८१, राज) ।

विलिअ सक [वि + लिङ्ग] आलिङ्गन करना, स्पर्श करना । विलिगेज (आचा २, ६, ३) ।

विलिजरा ली [दे] घाना, भुने हुए जौ (दे ७, ६६) ।

विलिप सक [वि + लिप्] लेप करना, लेपना, पोतना । विलिपइ (सण) । संक्. विलिपिऊण (मण) । हेक्क विन्निपित्तण (कस) । प्रयो., वहु. विलिपावत (निच् १७) ।

विलिज्ज अक [वि + ली] १ नष्ट होना । २ पिघलना । विलिज्जइ, विलिज्जति, विलिज्ज (हे ४, ५६, ४१८, भवि, अज्ज ५५, सवोष ५२, गच्छ २, २६) । वहु विलिज्जत, विलिज्जमाण (पउम ६, २०, ३, २१, २२) ।

विलित देखो विलिअ = व्रीडित (उप २६६) । विलित्त वि [विलिप्त] लिपा हुआ, जिसको विलेपन किया गया हो वह (सुर ३, ६२, १०, १७, भवि) ।

विलिज्जली ली [दे] कोमल और निर्वल शरीरवाली ली, नाजुक बदनवाली नारी (दे ७, ७०) ।

विलिह सक [वि + लिख्] १ रेखा करना । २ चित्र बनना । ३ खोदना । विलिहइ (भवि) । वहु विलिहमाण (पउम ७, १२०) । कवहु विलिहिज्जमाण (कप्प) । हेक्क विलिहिइ (कप्प) ।

विलिह सक [वि + लिह्] १ चाटना । २ चुम्बन करना । विलिहतु (कप्प) । वहु. विलिहत (गच्छ १, १७, भत्त १४२) ।

विलिहण न [विलेखन] रेखा-करण (तडु ५०) ।

विलिहिअ वि [विलिखित] चित्रित (सुर १२, २०) ।

विलीअ देखो विलिअ = व्रीडित, 'सोगवि-वसो विलीओ' (कुप्र १३५) ।

विलीअ देखो विलिअ = व्यलीक, 'मज्झ विलीय नरवइस्स परिवसइ किपि चित्ते' (मुपा ३००) ।

विलाइर वि [विलेत्] द्रवण-शील, पिघलनेवाला (कुमा) ।

विलीण वि [विलीन] १ पिघला हुआ, द्रवीभूत । २ विनष्ट, 'सोवि तुह भाणजलणे मयणो मयण विअ विलीणो' (धण २५, पात्र, महा, भवि) । ३ जुगुप्सित (परह १, १—पत्र १४) ।

विहरमाण (उत्त २३, ७, सुख २३, ७, श्रौघ १२४, महा, भग) । सकृ. विहरित्ता, विहरिअ (भग, नाट—वक्र १०२) । विहरित्तए, विहरिउं (भग, ठा २, १—पत्र ५६, उव) । कृ. विहरियन्व (उप १३१ टी) ।

विहर सक [प्रति + ईक्ष्] प्रतीक्षा करना, बाट जोहना । विहरइ (पड्) ।

विहर देखो विहार (उप ८३३ टी) ।

विहरण ने [विहरण] विहार (कुप्र २२) ।

विहरिअ न [दे] सुरत, सभोग (दे ७, ७०) ।

विहरिअ वि [विहृत] जिसने विहार किया हो वह (श्रौघ २१०, उव, कुप्र १६६) ।

विहल अक [वि + हल्] व्याकुल होना । वक्र. विहलन (स ४१५) ।

विहल देखो विहड = वि + घट् । वक्र. विहलत (से १४, २६) ।

विहल वि [विहल] व्याकुल, व्यग्र (हे २, ५८, प्राकृ २४, पउम ८, २००, से ५, ५८, गा २८५, प्रासू ५, हास्य १४०, वज्जा २४, षड्, गउड) ।

विहल देखो विअल = विकल (सक्ति ८) ।

विहल वि [विफल] १ निष्फल, निरर्थक (गउड, सुपा ३६६) । २ असत्य, झूठा, 'मिच्छा मोह विहल अलिअ असत्त असम्भूअ' (पात्र) ।

विहल सक [विफल्य] निष्फल बनाना, निरर्थक करना । विहलति (उव) ।

विहललल } वि [विहलल] व्याकुल
विहललल } शरीरवाला (काप्र १६६, स २५५, सुख १८, ३५, सुर ६, १७३, सुपा ४४७), 'वियणाविहललला पडिया' (सुर १५, २०४) ।

विहलिअ वि [विहलित] व्याकुल किया हुआ (कुमा ३, ४३, प्राप, महा) ।

विहलिअ देखो विहडिय (से ७, ४६) ।

विहलिअ वि [विफलित] विफल किया हुआ (सण) ।

विहल अक [वि + रु, वि + स्तृ] १ श्रावाज करना । २ सक. विस्तार करना । विहलइ (घात्वा १४३) ।

विहल पु [विहल] राजा श्रेणिक का एक पुत्र (पडि) ।

विहव पु [विभव] समृद्धि, संपत्ति, ऐश्वर्य (पात्र, गउड, कुमा, हे ४, ६०, प्रासू ७२, ७६) ।

विहवण न [विधवण] विनाश (राज) ।

विहवा स्त्री [विहवा] जिसका पति मर गया हो वह स्त्री, रौंड (श्रौप, उव, गा ५३६, स्वप्न ५६, सुर १, ४३) ।

विहवि वि [विभविन्] संपत्ति-शाली, धनाढ्य (कुमा, सुपा ४२२, गउड) ।

विहव देखो विहव = विभव (नाट—मृच्छ ६६) ।

विहस अक [वि + हस्] १ विकसना, खिलना, प्रफुल्ल होना । २ हास्य करना, मध्यम प्रकार का हास्य करना । विहसइ, विहसए, विहसेइ, विहसति (प्राकृ २६, सण, कुमा, हे ४, ३६५) । विहसेज, विहसेजा (कुमा ५, ८५) । भवि. विहसिहिइ, विहसेहिइ (कुमा ५, ८३) । वक्र. विहसुत, विहसेत (से २, ३६, कुमा ३, ८६, ५, ८४) । सकृ. विहसिऊण, विहसिअ, विहसेऊण (गउड ८४५, ६१५, नाट—शकु ६८, कुमा ५, ८२) । हेकृ. विहसिउ, विहसेउ (कुमा ५, ८२) ।

विहसाव सक [वि + हासय] १ हँसाना । २ विकसित करना । सकृ. विहसाविऊण, विहसावेऊण (प्राकृ ६१) ।

विहसाविअ वि [विहासित] १ हँसाया हुआ । २ विकसित किया हुआ (प्राकृ ६१) । विहसिअ वि [विहसित] १ विकसित, खिला हुआ, प्रफुल्ल, 'विहसियदिट्टीए विहसियमुहीए' (महा, सम्मत्त ७६) । २ न. मध्यम प्रकार का हास्य (गउड ६६६, ७५१) ।

विहसिर वि [विहसितृ] खिलनेवाला, विकसित होनेवाला ।

विहसिन्विअ वि [दे] विकसित, खिला हुआ (दे ७, ६१) ।

विहस्सइ देखो विहस्सइ (पात्र, श्रौप) ।

विहा अक [वि + भा] शोभना, चमकना । विहादि (शौ) (पि ४८७) ।

विहा सक [वि + हा] परित्याग करना । सकृ. विहाय (सूम १, १४, १) ।

विहा अ [वृथा] निरर्थक व्यर्थ, मुधा (पंचा १२, ५) ।

विहा स्त्री [विधा] प्रकार, भेद (कप्प, महा, अणु) ।

विहा देखो विहग = विहायस् (धर्मसं ६१६) ।

विहाइ वि [विधायिन्] कर्ता, करनेवाला (चैश्य ४०३, उप ७६८ टी, धर्मवि १३६) ।

विहाउ वि [विधाट] १ कर्ता, निर्माता (विसे १५६७, पचा ६, ३६) । २ पु. पणपन्नि-देवो के उत्तर दिशा का इन्द्र (ठा २, ३—पत्र ८५) ।

विहाउ सक [वि + घटय] १ विगुक्त करना, भ्रमल करना । २ विनाश करना । ३ खोलना, उधाडना । विहाडेइ, विहाडेंति (राय १०४, महा, भग), 'कम्मसमुग्ग विहाडेंति' (श्रौप, राय) । संक्र. 'समुग्गय तं विहाडेउ' (धर्मवि १५) । कृ. विहाडेयन्व (महा) ।

विहाउ वि [विघाट] विकट (राज) ।

विहाउ वि [विहाट] प्रकाश-कर्ता (सम्म २) ।

विहाउण न [दे] अनर्थ (दे ७, ७१) ।

विहाडिअ वि [विघटित] १ वियोजित, भ्रमल किया हुआ (धर्मसं ७४२) । २ विनाशित (उप ५६७ टी) ।

विहाडिअ वि [विघटित] उद्घाति, खोला हुआ (उप पृ ५४, वसु) ।

विहाडिर वि [विघटयितृ] भ्रमल करनेवाला वियोजक (सण) ।

विहाण पु [दे] १ विधि, विधाता, दैव, भाग्य (दे ७, ६०), 'माणुसमयज्जहवह विहाणवाहो करेमाणो' (स १३०, भवि) । २ विहान, प्रभात, सुबह (दे ७, ६०, से ३, ३१, भवि, हे ४, ३३०, ३६२, सिरि ५२५) । ३ पूजन अर्चन, 'अप्पो चेव कूरदेवयाविहाणनिमित्त पयारिऊण परियणं एयाए वावाइप्पो हविस्सइ' (स २६६) ।

विहाण न [विधान] १ शास्त्रोक्त रीति (उप ७६८, पव ३५) । २ निर्माण, रचना (पंचा

विविडण्य वि [विप्रकीर्ण] विखरा हुआ (पठम ७८, २६ मे ५, ५२, १३, ८६)।

विवर्क वि [विवर्क] विशेष बाँका, टेढा (स २५१)।

विवचिआ ली [विपञ्चिका] वाद्य-विशेष, वीणा (पात्र)।

विवक्क वि [विपक्व] १ अच्छी तरह पूर्ण किया हुआ। २ प्रकर्ष को प्राप्त, अत्यन्त पका हुआ। ३ उदय में आगत, पलामिमुख, 'विवक्कतवयमचेराणं देवाणं प्रवन्नं वदमाणं' (ठा ५, २—पत्र ३२१)।

विवक्ख पु [विपक्ष] १ दुश्मन, रिपु, विरोधी, 'विवक्खदेवीहि' (गण्ड, स ५६४, अचु ३१)। २ न्याय-शास्त्र-प्रसिद्ध विरुद्ध पक्ष, वह वस्तु जहाँ साध्य आदि का अभाव हो (दत्तनि १—गाथा १४२)। ३ विपरीत धर्म (अणु)। ४ वैधर्म्य, विरुद्धता (ठा १ टी—पत्र १३)।

विवक्खा ली [विवक्षा] कहने की इच्छा (पच १, १० भास ३१, दत्तनि १, ७१)।

विवग्घ वि [विग्र्यात्र] व्याघ्र के चमड़े से मढ़ा हुआ, व्याघ्र-चर्म-युक्त (आचा २, ५, १, ५)।

विवच्चास पु [विपर्यास] विपर्यय, विपरीतता, व्यत्यास, उलटा (उत्त ३०, ४, सुख ३०, ४, ओघ २६८)।

विवच्छा ली [विवत्सा] १ एक महानदी (ठा १०—पत्र ४७७)। २ वत्स-रहित ली (राज)।

विवज्ज अक [वि + पट्] मरना, नष्ट होना। विवज्जइ, विवज्जामि (स ११६, पच्च १४, सुख २, ४५)। भवि. विवज्जिही (कुप्र १८६)। वक्क. विवज्जत (नाट—रत्ना ७७)।

विवज्ज सक [वि + वर्जय्] परित्याग करना। विवज्जेइ (उव)। वक्क. विवज्जयत, विवज्जमाण (उव, धर्मस १०३२)। कृ. विवज्जणिज्ज, विवज्जणीअ (उप ५६७ टी, अमि १८३)।

विवज्ज वि [विवर्ज] १ रहित, वर्जित, 'मउडविवज्जाहरणं सर्वं से देह भट्टस्स' (सुपा २७१)। २ परित्याग, परिहार (पिठ १२६)।

विवज्जरा वि [विवर्जक] वर्जन करनेवाला (सुप्र २, ६, ५)।

विवज्जण न [विवर्जन] परित्याग (रत्न २२)।

विवज्जणया } ली [विवर्जना] परित्याग,
विवज्जणा } परिहार, वर्जन (सम ४४, उत्त ३२, २, दमचू २, ५)।

विवज्जत्थ वि [विपर्यस्त] विपरीत, उलटा (पचा ११, ३७, कम्म १, ५१)।

विवज्जय पु [विपर्यय] विपर्यास, व्यत्यास, वैपरीत्य (पात्र, उप १४२ टी, पव १३३, पचा ६, ३०, कम्म १, ५५)।

विवज्जास पु [विपर्यास] १ विपर्यय, व्यत्यय (पात्र, पचा ८, ११)। २ भ्रम, मिथ्याज्ञान (सुर ६, १५४)।

विवज्जिअ वि [विवाजित] रहित, वर्जित, परित्यक्त (उव, दं ३६, सुर ३, १५५, रंभा, भवि)।

विवट्ठ अक [वि + वृत्] वरतना, रहना। विवट्ठइ (हे ४, ११८)। वक्क. विवट्ठमाण (कुमा ६, ८०, रभा)।

विवडिअ वि [विपत्ति] गिरा हुआ (पठम १६, २२, भग ७, ६ टी—पत्र ३१८)।

विवड्ठ अक [वि + वृध्] बढना। वक्क. विवड्ठमाण (गाथा १, १० टी—पत्र १७१)।

विवड्ठण वि [विवर्धन] बढानेवाला, 'मयविवड्ठण' (उत्त १६, ७)। ली. 'णी' (उत्त १६, २)। देखो विवड्ठण।

विवडिअ ली [विपृद्धि] बढाव, वृद्धि (पंचा १८, १३)।

विवडिअ वि [विपृद्ध] बढा हुआ (नाट—पिण)।

विवणि पुंली [विपणि] १ बाजार (सुपा ५३०)। २ हाट, दूकान, 'विवणी तह आवणो हट्ठो' (पात्र)।

विवणीय वि [व्यपनीत] दूर किया हुआ, हटाया हुआ (कण्)।

विवण्य देखो विवन्न = विपन्न (उत्त २०, ४४, गा ५५० अ)।

विवण्य वि [विवर्ण] १ कुरूप, कुडौल (से ५, ४७, दे ६७६)। २ फीका, निस्तेज, म्लान (गाथा १, १—पत्र २८, से ८, ८७)।

विज्ज वि [द्विपर्ण] १ दो पन्नावाला। २ पुं. वृक्ष, पेड़ (राज)।

विवत्त पुं [विवर्त्त] एक महाग्रह, ज्योतिष्क देव-विशेष (सुज्ज २०)।

विवत्ति ली [विपत्ति] १ विनाश (गाथा १, ६—पत्र १५७, विपा १, २—पत्र ३२, सुपा २३५, उव)। २ मरण, मौत (सुर २, ५१, स ११६)। ३ कार्य की असिद्धि (सुपा २३५, उव, वृह १)। ४ आपदा, कष्ट (सुपा २३५)।

विवत्तिअ वि [विवर्त्तित] फिराया हुआ, घुमाया हुआ (से ६, ८०)।

विवत्थ पुं [विवत्थ] एक महाग्रह (सुज्ज २०)।

विवदि ली [विपृति] १ विवरण, टीका। २ विस्तार (संक्षि ६)।

विवड्ठण न [विवर्धन] वृद्धि, बढाव (कण्)। देखो विवड्ठण।

विवड्ठणा ली [विवर्धना] वृद्धि, बढाव (उप ६५५)।

विवड्ठि पु [विपृथि] देव-विशेष (अणु १४५)।

विवन्न देखो विवण्य = विवर्ण (सुपा ३१६)।

विवन्न वि [विपन्न] १ नाश-प्राप्त, जिनट (गाथा १, ६—पत्र १५७, स ३४५, सुपा ५०६)। २ मृत, मरा हुआ (पठम ४४, १०, उत्त १०, ४४, स ७५६, सुअनि १६२, धर्मवि १४४)।

विवय अक [वि + वद्] झगडा करना, विवाद करना। वक्क. विवयत (सुपा ५४६, सम्मत्त २१५)।

विचय वि [दे] विस्तीर्ण (पड्)।

विचया ली [विपद्] कष्ट, दुःख (उप ७२८ टी)।

विवर सक [वि + वृ] १ बाल सँवारना। २ विस्तारना। ३ व्याख्या करना। विवरइ (भवि), विवरेहि (स ७१७)। वक्क. 'किसे निवस्स विवरन्ती' (कुप्र २८५)।

महादेव । ५ वायु, पवन । ६ कपूर (हे ३, १६) ।

विहुअ वि [विधुत] कम्पित (गा ६६०, गउड) । २ उन्मूलित, उखाड़ा हुआ (से १, ५५) । ३ त्यक्त (गउड) ।

विहुहुअ पु [दे] राहु, ग्रह-विशेष (दे ७, ६५) ।

विहुण सक [वि + धू] १ कँपाना, हिलाना । २ दूर करना, हटाना । ३ त्याग करना । ४ पृथक् करना, अलग करना । विहुणइ, विहुणति (भवि, पि ५०३), विहुणाहि (उत्त १०, ३) । कर्म विहुवइ (पि ५३६) । वक्तु विहुणत, विहुणमाण (सुपा २७२, पउम ६४, ३५) । कवक विहुवत (से ६, ३५, ७, २१) । सक. विहुणिय (सूत्र १, २, १, १५, यति २१, स ३०८) ।

विहुणन [विधूनन] १ दूरीकरण (पउम १०१, १६) । २ व्यजन, पखा (राज) ।

विहुणिय वि [विधूत] देखो विहुअ (सुपा २५३, यति २१) ।

विहुर वि [विधुर] १ विकल, व्याकुल, विह्वल (स्वप्न ६३, महा, कुमा, दे १, १५, सुपा ६२, गउड मण) । २ क्षीण (गउड १०३६) । ३ विसदृश विलक्षण, विषम, 'अवि-सिद्धिम्मवि जोगम्मि वाहिरे होइ विहुरया' (श्लोक ५१) । ४ विच्छिष्ट, विद्युक्त (गउड ८३६) । ३ न व्याकुल-भाव, विह्वलता, 'विलोद्वए विहुरम्मि' (स ७१६, वज्जा ३२, ६४, प्रासू ५८, भवि, सण) ।

विहुराइअ वि [विधुरायित] व्याकुल बना हुआ (गउड १११ टी) ।

विहुरिजमाण वि [विधुरायमाण] व्याकुल बनता (सुपा ४१६) ।

विहुरिय वि [विधुरित] १ व्याकुल बना हुआ (सुर २, २१६, ६११५, महा) । २ विद्युक्त बना हुआ, विछुड़ा हुआ, विरहित (गउड) ।

हुरीकय वि [विधुरीकृत] व्याकुल किया हुआ (कुमा) ।

हुल देखो विहुर (पात्र) ।

विहुल वि [विफुल] १ खिला हुआ । २ उत्साही, 'नियकज्जविहुल्ली' (भवि) ।

विहुवत देखो विहुण ।

विहूअ वि [विधूत] १ कम्पित, (माल १७८) । २ वर्जित, रहित, 'नयविहिवि-हूयन्तु' (पउम ५५, ४) । देखो विधूय विहुअ ।

विहूइ देखो विभूइ (अच्छु १४, भवि) ।

विहूण देखो विहुण । सक. विहूणिया (आचा १, ७, ८, २४, सूत्र १, १, २, १२, पि ५०३) ।

विहूण देखो विहीण (कुमा, उव) ।

विहूणय न [विधूनक] व्यजन, पखा (सूत्र १, ४, २, १०) ।

विहूसण देखो विभूसण (दे ६, १२७, सुपा १६१, कुप्र २६) ।

विहूसा स्त्री [विभूपा] १ शोभा (सुपा ६२१, दे ६, ८३) । २ अलंकार आदि से शरीर की सजावट (पचा १०, २१) ।

विहूसिअ वि [विभूपित] विभूपा-युक्त, अलंकृत (भवि) ।

विहे सक [वि + धा] करता, बनाना । विहेइ, विहेति, विहेसि, विहेमि (धर्मस १०११, स ६३४, ७१२, गउड, ३३२; कुमा ७, ६७) । सक. विहेऊण (पि ५८५) । हेक विहेउ (हित १) । क विहियव्व, विहेअ, विहेअव्व (सुपा १५८, हि २२, धम्मो ४, महा, सुपा १६३, आ १२, हि २, पउम ६६, १८, सुपा १५६) ।

विहेड सक [वि + हेटय] १ मारना, हिंसा करना । २ पीडा करना । वक्तु विहेडयत (उत्त १२, ३६) । कवक. 'विहम्मणाहि विहेड (हु)यंता' (पण १, ३—पत्र ५३) ।

विहेडय वि [विहेठक] अनादर-कर्ता (दस १०, १०) ।

विहेडि वि [विहेटिन्] १ हिंसा करनेवाला । २ पीडा करनेवाला, 'अगे मते अहिज्जंति पाणभूयविहेडिणो' (सूत्र १, ८, ४) ।

विहेडिय वि [विहेटित] पीडित (भत्त १३३) ।

विहेठणा स्त्री [विहेठना] कदयना, पीडा (उव) ।

विहोड सक [ताडय] ताडन करना । विहोडइ (दे ४, २७) ।

विहोडिअ वि [ताडित] जिसका ताडन किया गया हो वह (कुमा) ।

विहोय (अप) देखो विहव (भवि) ।

वी देखो वि = अपि, वि, 'एकं चिय जाव न वी, दुक्ख बोलेइ जणियपियविरह' (पउम १७, १२) ।

वीअ सक [वीजय] हवा डालना, पखा करना । वीअअति अमि ८६, वीयति (सुर १, ६६) । वक्तु. वीअंत (गा ८६, सुर ७, ८८) । कवक. विइज्जत, वीइज्जमाण (से ६, ३७, णाया १, १—पत्र ३३) ।

वीअ वि [दे] १ विधुर, व्याकुल । २ तत्काल, तात्कालिक, उसी समय का (दे ६, ६३) ।

वीअ देखो वीअ = द्वितीय (कुमा; गा ८६, २०६, ४०६, गउड) ।

वीअ वि [वीत] विगत, नष्ट (भग, अज्झ ६६) । 'कम्ह न [कदम ?] १ गोत्र-विशेष । २ पुत्री उम गोत्र में उत्पन्न (ठा ७—पत्र ३६०) । 'धूम वि [धूम] द्वेप-रहित (भग ७, १—पत्र २६१) । 'अभय, 'अभय न [अभय] १ नगर-विशेष, सिन्धुसौवीर देश की प्राचीन राजधानी (धर्मवि १६, २१, इक, विचार ४८, महा) । २ वि भय-रहित (धर्मवि २१) । 'मोह वि [मोह] मोह-रहित (अज्झ ६६) । 'राग, 'राय वि [राग] राग-रहित, क्षीण राग (भग, स ४१) । 'सोग पुं [शोक] एक महाग्रह (सुज्ज २०, ठा २, ३—पत्र ७६) । 'सोगा स्त्री [शोका] सलिलावती नामक विजय-प्रान्त की राजधानी, नगरी-विशेष (णाया १, ८—पत्र १२१, इक, पउम २०, १४२) ।

वीअजमण देखो वीअजमण (दे ६, ६३ टी) ।

वीअण न [वीजन] १ हवा करना, पखा से हवा करना (कप्पू) । २ क्षीन, पखा, व्यजन (सुर १, ६६, कुप्र ३३३, महा) । स्त्री. 'णी (श्लोक; सूत्र १, ६, ८, णाया १, १—पत्र ३२) ।

४ न एकान्त, विजन, 'किंतु विवितमाइसर ताओ' (स ७४३) ।

विविक्त वि [विविक्त] १ विवेक-युक्त । २ सुनिद्र, भन नीह (नन ५) ।

विविदिअ वि [विविदित] विशेष रूप से ज्ञात (परह २, १—पत्र ६६) ।

विविदिसा देखो विविडसा (पचा ३, २७) ।

विविद्धि पु [विधुद्धि] उत्तर भाद्रपदा नक्षत्र का अधिष्ठाता देव (ठा २, ३—पत्र ७७) ।

विविह वि [विविध] अनेक प्रकार का, बहुविध, भौति भौति का (आचा, राय, उव, महा) ।

विवुअ वि [विधृत] १ विस्तृत । २ व्याख्यात (ससि ४) ।

विवुज्म अक [वि + वुध्] जागना । विवुज्मदि (शौ) (प्राप्र) ।

विवुडिह देखो विवडिह (प्रोधमा १३६, स १३५) ।

विवुद देखो विवुअ (प्राकृ ८, १२) ।

विवुदि देखो विवदि (प्राकृ १२) ।

विवुह देखो विवुह (सण) ।

विवेअ देखो विवेग (कुमा, महा ५२, ७७) ।
°नु वि [°ज] विवेक ज्ञाता (पचम ५३, ३८) ।

विवेअ पुं [विवेप] विशेष कं (सुपा १४) ।

विवेइ वि [विवेकिन्] विवेकवाला (सुपा १४८, कुमा, सण) ।

विवेग पुं [विवेक] १ परित्याग (सूअ १, २, १, ८, ठा २, ३, औप, आचानि ३०३) ।
२ ठीक-ठीक वस्तु-स्वरूप का निर्णय, निनिश्चय (औप कुमा) । ३ प्रायश्चित्त (आचा १, ५, ४, ४) । ४ पृथक्करण (औप) ।

विवेगि देखो विवेइ (सुपा ५४३, कुप्र ४७) ।

विवेच सक [वि + वेचय्] विवेचन करना, ठीक-ठीक निर्णय करना, विवेक करना । कर्म विवेचिज्ज (धर्मस १३१०) ।
हेह. विवेचितुं (धर्मस १३११) ।

विवेयण न [विवेचन] विवेक, निर्णय (विसे १६४२) ।

विवोल पुं [दे] विशेष कोलाहल, कलकल आवाज, 'विवोलेण सवणमुहय' (स ५७१) ।

विवोलिअ वि [दे] व्यक्तिक्रान्त, गुजरा हुआ, 'कहकहवि विवोलिया मे रयणी' (स ५०६) ।

विवोह देखो विवोह (भवि) ।

विव्व सक [वि + अय्] व्यय करना, खर्च करना, 'चित्तामणिपभावा सपजइ तस्स दविणमद्वपर' । त विव्वइ जिणभवणे' (सुपा ३८२) । कृ 'विव्वेयव्वो' (सुपा ४२४, ५८६) । देखो विव्व = वि = अय ।

विव्वाय वि [दे] १ अवलोकित । २ विश्रान्त (दे ७, ८६) ।

विव्वोअ देखो विव्वोअ (कुमा) ।

विव्वोयण [दे] देखो विव्वोयण (कम्प) ।

विस सक [विश्] प्रवेश करना । विसइ, विसति (वजा २६, सण, गउड) । वक्क विसत (गउड) । सकृ विसिऊण (गउड) ।

विस सक [वि + श्] १ हिंसा करना । २ नष्ट करना । कवक्क. विसिज्जमाण, विसीरत (विसे ३४३८, अचु ७४) ।

विस पुंन [विष] १ जहर, गरल, हलाहल, 'भक्ति नटो दुहावि विमोहविसो' (सम्मत्त २२६, उवा, गउड, प्रासू १२०, कुमा) ।

२ पानी, जल (से ८, ६३) । °नदि पुं [°नन्दिन्] प्रथम बलदेव का पूर्वमवीय नाम (सम १५३) । °ज [°ज] विष-मिश्रित अन्न (उप ६४८ टी) । °मइअ, °मय वि [°मय] विष का बना हुआ (हे १, ५०, पड्) । °व वि [°वत्] १ विषवाला, विष-युक्त । २ पृ सपं, सौप (से ७, ६७) । °हर पुं [°धर] सांप, सपं (से २, २५, सुर १, २४६, महा) । °हरवइ पुं [°धरपति] शेष नाग (से ६, ७) । °हरिद पुं [°धरेन्द्र] शेष नाग (गउड) । °हारिणी को [°हारिणी] पनोहारी, पानी भरनेवाली स्त्री (हे ४, ४३६) ।

विस देखो विस (गा ६५२, गउड) ।
विस पु [वृष] १ बैल, साँड, वृषभ (सुर १, २४८, सुपा ३६३, ५६७, सुख ८, १३) ।
२ ज्योतिष-प्रसिद्ध एक राशि (सुपा १०८, विचार १०७) । ३ मूषक, चूहा (दे ७, ६१, पड्) । ४ धर्म । ५ बल-युक्त । ६ ऋषभ नामक औषध । ७ पुरुष विशेष (सुपा ३६३) ।

विस देखो विस (गा ६५२, गउड) ।

विस पु [वृष] १ बैल, साँड, वृषभ (सुर १, २४८, सुपा ३६३, ५६७, सुख ८, १३) ।
२ ज्योतिष-प्रसिद्ध एक राशि (सुपा १०८, विचार १०७) । ३ मूषक, चूहा (दे ७, ६१, पड्) । ४ धर्म । ५ बल-युक्त । ६ ऋषभ नामक औषध । ७ पुरुष विशेष (सुपा ३६३) ।

८ काम, कन्दर्प । ९ शुक्र-युक्त, वीर्य-युक्त ।
१० शृङ्गवाला कोई भी जानवर (सुपा ५६७) ।

विम्व वि [विम्विज्] विम्वज्ज, विम्व-युक्त (विसे २७६०) ।

विसंक वि [विशङ्क] शका-रहित, नि शक (उप १३६ टी) ।

विसखल वि [विशृङ्खल] स्वच्छन्द, स्वैरो, निरंकुश, उद्धत (पाम्म, स १८०, मे ५, ६८) ।

विसखल सक [विशृङ्खलय्] निरंकुश करना, अव्यवस्थित कर डालना । संकु. विसंखलेऊण (सुख २, १५) ।

विसंघट्टिय वि [विसंघट्टित] विद्युक्त, विघटित (कुप्र ६) ।

विसंघड अक [विस + घट्] अलग होना, जुदा होना । वक्क विसवडत (गा ११५) ।

विसघडिय वि [विसघटित] विद्युक्त, जो जुदा हुआ हो वह (गाया १, ८—१४१, महा) ।

विसंघाइय वि [विसंघातित] संहत किया हुआ (अणु १७६) ।

विसघाय सक [विस + घातय्] सहत करना । कर्म. विसघाइज्जइ (अणु १७६) ।

विसजुत्त वि [विसंयुक्त] विद्युक्त, जो अलग हुआ हो (सम्म २२, सूअनि १२१ टी) ।

विसजोअ पु [विसं + योजय्] विद्युक्त करना, अलग करना । विसंजोएइ (भग) ।

विसजोअ पु [विसंयोग] वियोग, विघटन, विसजोग } पृथग्भाव, जुदाई (कम्म ५, ८२, पच ३, ५४) ।

विसठुल वि [विसस्थुल] १ विह्वल, व्याकुल (पाम्म, से १४, ४१, हे २, ३२, ४, ४३६, मोह २२, धम्मो ५) । २ अव्यवस्थित (गा १४६, कुप्र ४१७, दे १, ३४) ।

विसतव पु [द्विपन्तप] शत्रु को तपानेवाला, दुश्मन को हैरान करनेवाला (हे १, १७७) ।

विसथुल देखो विसठुल (पचम ८, २००, स ५२१) ।

विसथुलिय वि [विसस्थुलित] व्याकुल बना हुआ (सण) ।

[वरणी] प्रतिसुभट से प्रथम शत्रु-प्रहार की याचना (सिरि १०२४)। °वल्य न [°वल्य] सुभट का एक आभूषण, वीरत्व-सूचक कढ़ा (कप्प, तदु २६)। °विराली स्त्री [°विराली] वल्ली-विशेष (पण १—पत्र ३३)। °सिंग पुन [°सृङ्ग] एक देव-विमान (सम १२)। सिट्ट पुन [°सृष्ट] एक देव-विमान (सम १२)। °सेण पुं [°सेन] एक प्रसिद्ध वीर यादव का नाम (णाय १, ५—पत्र १००, अत, उप ६४८ टी)। °गेणि पुंन [°सैनिक, श्रेणिक] एक देव-विमान (सम १२)। °वत्त पुंन [°वत्त] देवविमान विशेष (सम १२)। °सण न [°सन] आसन-विशेष, नीचे पैर रखकर सिंहासन पर बैठने के जैसा अवस्थान (णाय १, १—पत्र ७२ भग)। °सणिय वि [°सनिक] वीरासन से बैठनेवाला (ठा ५, १—पत्र २६६, कस; श्रौप)।

वीरंगय पु [वीराङ्गय] १ भगवान् महावीर के पास दीक्षा लेनेवाला एक राजा (ठा ८—पत्र ४३०)। २ एक राजकुमार (उप १०३१ टी)।

वीरण स्त्री [वीरण] तृण-विशेष, उशीर, खस (अणु २१२, पाप्र)।

वीरल्ल पु [वीरल्ल] श्वेत पक्षी (पण १, १—पत्र ८, १३)।

वीरिअ पु [वीर्य] १ भगवान् पार्श्वनाथ का एक मुनि सघ। २ भगवान् पार्श्वनाथ का एक गणधर (ठा ८—पत्र ४२६)। ३ पुन. शक्ति, सामर्थ्य (उवा, ठा ३, १ टी—पत्र १०६)। ४ अन्तरंग शक्ति, आत्म-बल (प्रासू ४६, अज्झ ६५)। ५ पराक्रम (कम्म १, ५२)। ६ एक देव-विमान (देवेन्द्र १३१)। ७ शरीर-स्थित एक घातु, शुक। ८ तेज, दीप्ति (हे २, १०७, प्राप्र)।

वीरुणी स्त्री [वीरुणी] पर्व-वनस्पति विशेष, 'वीरुणा (? री) तह इक्कडे य मासे य' (पण १—पत्र ३३)।

वीरुत्तरवडिसग पुन [वीरोत्तरावतंसक] एक देव-विमान (सम १२)।

वीरुहा स्त्री [वीरुहा] विस्तृत लता (कुप्र ६५, १३६)।

वीलण वि [दे] पिच्छिल, स्निग्ध, मछण, चिकना (दे ७, ७३)।

वीलय देखो वीलय (दे ६, ६३)।

वीली स्त्री [दे] १ तरंग, कल्लोल (दे ७, ७३)। २ वीथी, पक्ति, श्रेणी (पड्)।

वीवाह देखो विवाह = विवाह, 'एसा एक्का घूया वल्लहिया ता इमीए वीवाह' (सुर ७, १२१, महा)।

वीवाहण न [विवाहन] विवाह करण, विवाह क्रिया (उव ६८६ टी, मिरि १५१)।

वीवाहिग वि [वेवाहिक] विवाह-सम्बन्धी (धर्मवि १४७)।

वीवाहिय वि [विवाहित] जिसकी शादी की गई हो वह (महा)।

वीवी स्त्री [दे] वीचि, तरंग (पड)।

वीस देखो विस्स = विस्स (सूत्र २, २, ६६, संक्षि २०)।

वीस देखो विस्स = विश्व (सूत्र १, ६, २२)।

°उरी स्त्री [°पुरी] नगरी-विशेष (उप ५६२)।

°सअ वि [°सृज] जगत्कर्ता (पड्)।

°सेण पुं [°सेन] १ चक्रवर्ती राजा, 'जोहेसु' (सूत्र १, ६, २२)।

२ पु. अहोरात्र का १८ वां मुहूर्त (सुज्ज १०, १३)।

वीस° } स्त्री [विंशति] १ संख्या-विशेष,

वीसइ } वीस, २०। २ जिनही संख्या

बीस हो वे (कप्प, कुमा, प्राकृ ३१, संक्षि २१)।

°म वि [°म] १ बीसवां, २० वां

(सुपा ४५२, ४५७, पउम २०, २-८, पव ४६)।

२ न. लगातार नव दिनों का उपवास (णाय १, १—पत्र ७२)।

°हा अ [°धा] बीस प्रकार से (कम्म १, ५)।

वीसंत वि [विश्रान्त] १ विश्राम-प्राप्त,

जिसने विश्रान्ति ली हो वह, 'परिस्संता

वीसता नग्गोहतस्तले' (कुप्र ६२, पउम ३३, १३, दे ७, ८६, पाप्र, सण, उप ६४८ टी)।

वीसदण न [विस्स्यन्दन] दही की तर और

आटे से बनता एक प्रकार का खाद्य (पव ४, पमा ३३)।

वीसंभ देखो विस्संभ = वि + श्रम्। वीसंभ (सूत्र २१ टी)।

वीसंभ देखो विस्संभ = विश्रम (उव, प्राप्र, गा ४३७)।

वीसज्जिअ देखो विसज्जिअ (से ६, ७७, १५, ६३, पउम १०, ५२, धर्मवि ४६)।

वीसत्थ वि [विश्वस्त] विश्राम-युक्त (प्राप्र, गा ६०८)।

वीसद्व वि [विश्रब्ध] विश्राम युक्त (गा ३७६, अभि ११६, भवि, नाट—मृच्छ १६१)।

वीसम देखो विस्सम = वि + श्रम्। वीसमइ,

वीसमामो (पड्, महा, पि ४८६)। वहु.

वीसममाण (पउम ३२, ४२, पि ४८६)।

वीसम देखो विस्सम = विश्रम (पड्)।

वीसम देखो वीस-म।

वीसमिर वि [विश्रमिर] विश्राम करनेवाला

(मण)।

वीसर देखो विस्सर = वि + स्मृ। वीसरइ

(हे ४, ७५, ४२६, प्राकृ. ६३, पड्, भवि), वीसरेसि (रभा)।

वीसर देखो वीस्सर = विस्वर, 'वीसरसर

रसतो जो सो जोणीमुहाओ निफिडइ' (तदु १४)।

वीसरणालु वि [विस्मृत्] भूल जानेवाला

(श्रौष ४२५)।

वीसरिअ देखो विस्सरिय (गा ३६१)।

वीसव (अप) सक [वि + श्रमय्] विश्राम

करवाना। वीसवइ (भवि)।

वीसस देखो विस्सस। वीससइ (पि ६४, ४६६)।

वहु वीससत (पउम ११३, ५)।

कृ. वीससणिज्ज, वीससणीअ (उत्त २६, ४२, नाट—मालवि ५३)।

वीससा अ [विस्ससा] स्वभाव, प्रकृति (ठा ३, ३—पत्र १५२, भग, णाय १, १२)।

वीससिय वि [वैस्ससिक] स्वामाविक

(आवम)।

वीसा देखो वीसइ (हे १, २८, ६२, ठा ३, १—पत्र ११६, पड्)।

वीसा स्त्री [विश्वा] पृथिवी, घरती (नाट)।

वीसाण पुं [विष्वाण] आहार, भोजन (हे १, ४३)।

विसण्ण वि [विसंज] सज्ञा-रहित, चैतन्य-वर्जित (से ६, ६८) ।

विसण्ण देखो विसमन्न = विपण्ण (महा, वसु, राज) ।

विसत्त नि [विमत्त] सत्त्व-रहित (व ६) ।
विसत्थ देखो वीसत्थ (णाय १, १—पत्र १३, स्वप्न १६, उप ७२८ टी) ।

विसद देखो विसय = विशद (पण्ह १, ४—पत्र ७२ कप्प, त्रि ६७) ।

विसद पु [विणब्द] १ विशिष्ट शब्द । २ वि, विशिष्ट शब्दवाला (गड्ड) ।

विसन्न वि [विपण्ण] १ खिन्न, शोक ग्रस्त, विषादयुक्त (पण्ह १, ३—पत्र ५५, सुर ६, १८०, सु १२) । २ आसक्त, तल्लीन (सूत्र १, १२, १४) । ३ निमग्न, 'अतरा चैव सेवसि विसन्ने' (णाय १, १—पत्र ६३) । ४ पु. असंयम (सूत्र १, ४, १, २६) ।

विसन्न देखो विस-न्न ।

विसन्ना ओ [विसज्ञा] विद्या-विशेष (पउम ७, १३६) ।

विसप्प अक [वि + सप्] फैलना, विस्तरना, व्याप्त होना । वहु विसप्पत, विसप्पमाण (कप्प, भग, औप, तदु ५३) ।

विसप्प पु [विसर्प] एक नरक-स्थान (देवेन्द्र २७) ।

विसप्पि वि [विसर्पिन्] फैलनेवाला (सुपा ४४७) ।

विसप्पि वि [विसर्पित्] ऊपर देखो (सण) ।
विसम देखो वीसम = वि + अम् । विसमदु (रंभा ३१) ।

विसम वि [विपम] १ ऊँचा-नीचा, उन्नता-वनत (कुमा, गड्ड) । २ असम, असमान, अतुल्य (भग, गड्ड) । ३ अयुग्म, एकी सख्या, जैसे—एक, तीन, पाँच, सात आदि । ४ दाक्षिण, कठिन, कठोर । ५ संकट, संकरा, कम चौड़ा, सकीर्ण (हे १, २४१, पड्) । ६ पुन आकाश (भग २०, २) । 'क्खर वि [क्खर] अपसिद्धान्तवाला, असत्य निर्णय-वाला (से ४, २४) । 'लोअण पु [लोचन] महादेव, शिव (वेणी ११७) । 'वाण पु [वाण] कामदेव (सण) । 'सर पु [शर] चही (स १, सुपा १६३, सण) ।

विसमय न [दे] भल्लातक, मिलावाँ (दे ७, ६६) ।

विसमय देखो विस-मय ।

विसमिअ वि [विपमित] १ बीच-बीच में विच्छेदित (से ६, ८७) । २ विपम वना हुआ (गड्ड) ।

विसमिअ वि [विस्मृत] भुला हुआ, अस्मृत (से ६, ८७) ।

विसमिअ [विश्रमित] विश्रान्त किया हुआ, विश्राम-प्रापित (से ६, ८७) ।

विसमिअ वि [दे] १ विमल, निर्मल । २ उत्थित (दे ७, ६२) ।

विसमिर वि [विश्रमित्] विश्राम करनेवाला । ओ. 'री (गा ५२, प्राकृ ३०) ।

विसम्म अक [वि + अम्] विश्राम करना, आराम करना । भवि. विसम्मिहिड (गा ५७५) । कृ. विसम्मिअव्व (से ६, २) ।

विसय वि [विशद] १ निर्मल, स्वच्छ (कुप्र ४१५, सट्ठ ७८ टी) । २ व्यक्त, स्पष्ट (पाप्र) । ३ धवल, सफेद (घौप) ।

विसय पुन [विशय] १ गृह, घर (उत्त ७, १) । २ समय, संभावना (आवु १) ।

विसय पु [विपय] १ गोचर, इन्द्रिय आदि से जाना जाता पदार्थ—शब्द, रूप, रस आदि वस्तु (पाप्र, कुमा, महा) । २ जनपद, देश (ओषभा ८, कुमा, पउम २७, ११, सुपा ३१, महा) । ३ काम-भोग, विलास, 'भोग-पुरिसो समज्जियविसयसुहो' (ठा ३, १ टी — पत्र ११४, कम्म १, ५७, सुपा ३१, महा) । ४ वाचत, प्रकरण, प्रस्ताव, 'जोहसविसए' (उप ६८६ टी, ओषभा ६) । 'विहइ पु [विधिपति] देश का मालिक, राजा (सुपा ४६४) ।

विसर सक [वि + सृज्] १ त्याग करना । २ विदा करना, भेजना । विसरइ (पड्) ।

विसर अक [वि + सृ] सरकना, घसना, नीचे गिरना, खिसकना । वहु. विसरत (णाय १, ६—पत्र १५७, से १४, ५४) ।

विसर सक वि + स्मृ भूल जाना, याद न आना । विसरइ (प्राकृ ६३) ।

विसर पुं [दे] सैन्य, सेना, लश्कर (दे ७, ६२) ।

विसर पु [विसर] समूह, यूथ, सघात (सुपा ३, सुर १, १८५, १०, १४) ।

विसरण न [विशरण] विनाश (राज) ।

विसरय पुन [दे] वाद्य-विशेष (महा) ।

विसरा ओ [विसरा] मच्छी पकड़ने का जाल विशेष (विपा १, ८—पत्र ८५) ।

विसरिअ वि [विस्मृत] याद नहीं आया हुआ (पि ३१३) ।

विसरिया ओ [दे] सरट, कृवलास, गिरगिट (राज) ।

विसरिस वि [विसदृश] असमान, विजा-तीय (सण) ।

विसलेस पु [विश्लेष] जुदाई, वियोग, पृथग्भाव (चंड) ।

विसह वि [विशाल्य] शल्य-रहित (पउम ६३ ११, चेइय ३८७) । 'करणी ओ [करणी] विद्या-विशेष (सूत्र २, २, २७) ।

विसहा ओ [विशाल्या] १ एक महौषधि (ती ५) । २ लक्ष्मण की एक ओ (पउम ६३, २६) ।

विमस सक [वि + शस्] वध करना, मार डालना, 'विससेह महिसे' (मोह ७६) । कवक विससिज्जंत (गड्ड ३१६) ।

विसस देखो विस्सस = वि + श्वस् । कृ-विमसिअव्व (सं १०८) ।

विससिय वि [विशसित] वध किया हुआ, जो मार डाला गया हो वह (गड्ड, ४७५, ससम्मत् १४०) ।

विसह सक [वि + पड्] सहन करना । विसहति (उव) । वहु विसहत (से १२, २३, सुपा २३३) । हेहु विसहिउ (स ३४६) ।

विसह वि [विषह] सहन करनेवाला, सहिष्णु, 'वसुधरा इव सव्वफासविसहे' (कप्प, औप) । विसह देखो वसभ (गड्ड) ।

विसहण न [विपहण] १ सहन करना (धर्मस ८६७) । २ वि. सहिष्णु (पव ७३ टी) ।

विसहिअ वि [विषोड] सहन किया हुआ (से ६, ३३) ।

विसाअ (अप) ओ [विश्वा] छन्द-विशेष (पिग) ।

बुज्झंत वि [उह्यमान] पानी के वेग से खींचा जाता, वह जाता (पउम १०२, २४), 'गिरि-निज्झरणोदगेहि बुज्झतो' (वे ८२)। देखो वह = वह ।

बुज्झण देखो बुज्झण (धर्मसं १०२१)।

बुज्झमाण देखो बुज्झंत (पउम ८३, ४)।

बुव्व (अप) देखो वव्व = वज्ज। बुव्व (हे ४, २६२, कुमा)। सक्क. बुव्वेप्पि, बुव्वेप्पिणु (हे ४, ३६२)।

बुट्ठ अक [व्युत् + स्था] उठना, खड़ा होना। बुट्ठ (पि ३३७)।

बुट्ठ वि [वृष्ट] १ वरसा हुआ (हे १, १३७, विपा २, १—पत्र १०८, कुमा १, ८५)।

२ न. वृष्टि (दम ८, ६)।

बुट्ठि देखो विट्ठि = वृष्टि (हे १, १३७, कुमा)। 'काय पु [काय] वरसता जल-समूह (भग १४, २—पत्र ६३४, कप्प)।

बुट्ठिय वि [व्युत्थित] जो उठ कर खड़ा हुआ हो वह (भवि)।

'बुड देखो पुड = पुट, 'जपइ कयजलिवुडो' (पउम ६३, २२)।

बुड्ढ अक [वृध्] बढना (संक्षि ३४)। बुड्ढति (भग ५, ८)।

बुड्ढ सक [वर्धय] बढाना। वक बुड्ढत (द्व २३)।

बुड्ढ वि [वृद्ध] १ जरा अवस्थावाला, बूढ़ा (औप. सुर ३, १०४, सुपा २२७, सम्मत्त १५८, प्रासू ११६, सण)। २ बडा, महान् (कुमा)। ३ वृद्धि-प्राप्त। ४ अनुभव, कुशल, निपुण। ५ पंडित, जानकार (हे १, १३१, २, ४०, ६०)। ६ निमृत्त, शान्त, निर्विकार (ठा ८)। ७ पुं तापस, सन्यासी (णाय १, १५—पत्र १६३, अणु २४)। ८ एक जैन मुनि का नाम (कप्प)।

'त्त, 'त्तण न [त्व] बुढ़ापा, जरावस्था (सुपा ३६०, २४२)। 'वाइ पु [वादिन्] एक समर्थ जेनाचार्य जो सुप्रसिद्ध कवि सिद्धसेन दिवाकर के गुरु थे (सम्मत्त १४०)।

'वाय पुं [वाद] किवदन्ती, कहावत, जनश्रुति (स २०७)। 'सावग पु [श्रावक] ब्राह्मण (णाय १, १५—पत्र १६३, औप)।

'णुग वि [णुग] बूढ़ का अनुयायी (सं ३३)।

बुड्ढ वि [दे] विनष्ट (राज)।

बुड्ढि स्त्री [वृद्धि] १ बढाव, बढना (आचा, भग, उवा, कुमा, सण)। २ अभ्युदय, उन्नति।

३ ममृद्धि, संपत्ति। ४ व्याकरण-प्रसिद्ध ऐकार आदि वर्णों की एक संज्ञा (सुपा १०३, हे १, १३१)। ५ समूह। ६ कलान्तर, सूद। ७ श्रोत्र-विशेष। ८ पुं. गन्धद्रव्य-विशेष (हे १, १३१)।

'कर वि [कर] वृद्धि-कतां (सुर १ १२६, द्व २४)।

'धम्मय वि [धर्मक] बढनेवाला, वर्धन-शील (आचा)। 'म वि [मन्] वृद्धिवाला (विचार ४६७)।

बुण्ण न [दे] बुनना (सम्मत्त १७३)।

बुणिय वि [दे] बुना हुआ, 'अ-बुणिया खटा' (कुप्र २२)।

बुण्ण वि [दे] १ भीत, प्रस्त (दे ७, ६४, विपा १, २—पत्र २४)। २ उद्विग्न (दे ७, ६४)।

बुत्त वि [उत्त] कथित (उवा, अनु ३, महा)।

बुत्त वि [उत्त] बोया हुआ (उव)।

बुत्त न [वृत्त] छन्द, कविता, पद्य (पिंग)।

देखो वट्ट = वृत्त।

'बुत्त देखो पुत्त (प्रयौ २२)।

बुत्तत पुं [वृत्तान्त] खबर, समाचार, हकीकत, बात (स्वप्न १५३, प्राप्र, हे १, १३१, स ३५)।

बुत्ति देखो वत्ति = वृत्ति, 'जायामायावुत्तिण' (सूअ २, १, ५०, प्राकृ ८)।

बुत्थ वि [उपित] बसा हुआ, रहा हुआ (पाम्म, णाय १, ८—पत्र १४८, उव, घण ४३, उप पृ १२७, सुख २, १७, से ११, ८०, कुप्र १८७)।

बुद देखो बुअ = वृत्त (प्राकृ ८)।

बुदास पुं [व्युदास] निरास (विसे ३४७५)।

बुदि देखो वइ = वृत्ति (प्राकृ ८)।

बुद्ध देखो बुड्ढ = वृद्ध (पड्)।

बुद्धि देखो बुड्ढि (ठा १०—पत्र ५२५, सम १७, संक्षि ४)।

बुन्न देखो बुण्ण (सुर ६, १२४, सुपा २५०, णमि १०, भवि, कुमा, हे ४, ४२१)।

बुप्पत वि [उप्यमान] बोया जाता, 'पेच्छइ य मगलसएहि वप्पिण करिसगेहि बुप्पत' (आक २५, पि ३३७)।

बुप्पाय वि [व्युत् + पादय] व्युत्पन्न करना, होशियार करना। वक, बुप्पाएमाण (णाय १, १२—पत्र १७४, औप)।

बुप्फ न [दे] शेखर, शिर-स्थित (दे ७, ७४)।

बुब्भं देखो वह = वह्।

बुब्भमाण देखो बुज्झमाण (कुप्र २२३)।

'बुर देखो पुर (अच्छु १६)।

'बुरिस देखो पुरिस = पुत्त (अउम ६५, ४५)।

बुल्लह पुं [दे] अश्व की एक उत्तम जाति (सम्मत्त २१६)।

बुसह देखो वसभ (चार ७, गा ४६०, ८२०, नाट—मृच्छ १०)।

बुसि स्त्री [वृषि] मुनि का आसन। 'राइ, राइअ वि [राजिन्] सयमी, जितेन्द्रिय, त्यागी, साधु (निचू १६)। देखो बुसि, बुसी।

बुसि वि [वृषिन्] सविग्न, साधु, संयमी, मुनि, 'बुमि सविगो भणिओ' (निचू १६)।

बुसिम वि [वश्य] वश में आनेवाला, श्वीन होनेवाला, 'निस्सारिय बुसिम मन्नमाण' (निचू १६)।

बुसी स्त्री [वृषी] मुनि का आसन। 'म वि [मन्] सयमी, साधु, मुनि, 'एस वम्मे बुसीमओ' (सूअ १, ८, १६, १, ११, १५, १, १५, ४, उत्त ५, १८, सुख ५, १८)।

देखो बुसि।

बुस्सग्ग देखो विओसग्ग, 'सच्चित्ताण पुप्फाइयाण दब्बाण कुणइ बुस्सग्ग' (उप १४२, सबोष ५१, ५२)।

बूढ देखो बुड्ढ = वृद्ध (सुपा ५१०, ५२०)।

बूढ वि [व्यूढ] १ धारण किया हुआ, 'सीआपरिमट्टेण व बूढो तेणवि णिरंतरं रोमंचो' (से १, ४२, घण २०, विचार २२६ एदि ५२)। २ बोया हुआ, मुणिवूढो सील-मरो विसयपसत्ता तरंति नो वोडु (प्रवि १७, स १६२)। ३ वहा हुआ, वेग में खिंचा

विशील वि [विशील] १ ब्रह्मचर्य-रहित, व्यभिचारी (वसु, उप ५६७ टी)। २ खराब स्वभाववाला, विरूप आचरणवाला (उत्त ११, ५)।

विसुज्झ अन् [वि + शुध्] शुद्धि करना। विसुज्झ (उव)। वक्क विसुज्झंत, विसुज्झमाण (उप ३२० टी, एणमा १, १—पत्र ६४, उवा, औप, सुर १६, १६१)।

विसुणिग्ग वि [वि + णि] विज्ञात (पणह १, ४—पत्र ८५)।

विसुत्त वि [विस्त्रोतस] १ प्रतिकूल। २ खराब, दुष्ट (भवि)।

विसुत्तिया देखो विसोत्तिया (आवक ५६, दस ५, १, ६)।

विसुद्ध वि [विशुद्ध] १ निर्मल, निर्दोष (सम ११६, ठा ४, ४ टी—पत्र २८३, प्रासू २२, उव, हे ३, ३८)। २ विशद, उज्ज्वल (पणह १७—पत्र ४८६)। ३ पु. ब्रह्मदेव-लोक का एक प्रतर (ठा ६—पत्र ३६७)।

विसुद्धि स्त्री [विशुद्धि] निर्दोषता, निर्मलता (औप, गा ७३७)।

विसुमर सक [वि + रमृ] भूल जाना, याद न आना। विसुमरइ, विसुमरामि (महा, पि ३१३), विसुमरेहि (स २०४)।

विसुमरिअ वि [विस्मृत] जिसका विस्मरण हुआ हो वह (स २६५, सुख २, २६, सुर १४, १७)।

विसुराविय वि [खेदित] खिन्न किया हुआ, 'अरइविलासविसुरावियाण निव्वडइ सोहग्ग' (गउड १११)।

विसुय न [विमुक्ता] रात और दिन की समानतावाला काल, वह समय जब दिन और रात दोनों बराबर होते हैं (दे ७, ५०)।

विसुद्धा स्त्री [विशुद्धि] रोग-विशेष, हैजा (उव, सुर १६, ७२, आचा २, २, १, ४)।

विसुणिय वि [विशुनित] १ फुला हुआ, सुजा हुआ (पणह १, १—पत्र १८)। २ काटा हुआ, उच्छिन्न (सूत्र १, ५, २, ६)।

विसूर देखो विमुमर। विसूरइ (प्राकृ ६३)।

विसूर अक [खिद] खेद करना। विसूरइ (हे ४, १३२, प्राप्र, उव)। वक्क विसूरंत,

विसूरमाण (उव, गा ४१४, सुपा ३०२, गउड)। कृ विसूरियव्व (गउड)।

विसूरण न [खेदन] १ खेद। २ पीडा (पणह १, ५—पत्र ६४)।

विसूरणा स्त्री [खेदना] खेद, अफसोस, दुःख (से ५, ३)।

विसूरिअ वि [खिन्न] खेद-युक्त, दिलगीर (से १०, ७६)।

विसुहिय पुन [विप्रवृत्त] एक देव-विमान (सम ४१)।

विसेद्धि स्त्री [विश्रेणि] १ विदिशा सम्प्रन्वी श्रेणि, वक्क रेखा। २ वि. विश्रेणि मे स्थित (णदि, पि ६६, ३०४)।

विसेस सक [वि + शेषय] विशेष-युक्त करना, शुण आदि द्वारा दूसरे से भिन्न करना, विशेषण से अन्वित करना, व्यवच्छेद करना। विसेसइ, विसेसेइ (भवि, सण, सुअनि ६१ टी, भग, विसे ७६, महा)। कर्म विसेसिज्जइ (विने ३१११)। संकृ विसेसिउं (विसे ३११४)। कृ विसेसणिज्ज, विसेसम (विसे २१५६, १०३५)।

विसेस पुन [विशेष] १ प्रभेद, पार्यंक्य, भिन्नता, 'एण सपरायासि विसेसमत्थि' (सूअ २, ६, ४६, भग, विसे १०५, उव)। २ भेद, प्रकार, 'दसविहे विसेसे पन्नत्ते' (ठा १०, महा, उव)। ३ अमाधारण, अप्रकृत, व्यक्ति, खाम (उव, जी ३६, महा, अभि २१०)। ४ पर्याय, धर्म, गुण (विसे २६७)। ५ अधिक, अतिशय, ज्यादा, 'तयो विसेसेण तं पुज्ज' (भग, प्रासू १७६, महा, जी ३६)। ६ तिलक। ७ साहित्यशास्त्र-प्रसिद्ध अलंकार-विशेष। ८ वैशेषिक-प्रसिद्ध अन्त्य पदार्थ (हे १, २६०)। ९ 'नु [ं] वि' विशेष जानने वाला (स ३२, महा)। १० ओ अ [ं] तस [ं] खास करके (महा)।

विसेस पुं [विश्लेष] पृथक्करण (वव १)।

विसेसण न [विशेषण] दूसरे से भिन्नता बतानेवाला गुण आदि (उप ४४४, भास ८६, पच १, १२, विसे ११५)।

विसेसणिज्ज देखो विसेस = वि + शेषय।

विसेसय पुंन [विशेषक] तिलक, चन्दन आदि जा मस्तक-स्थित चिह्न (पाअ, से १०, ७४, वेणी ४६, गा ६३८, कुप्र २५५)।

विसेसिअ वि [विशेषित] १ विशेषण-युक्त किया हुआ, भेदित (सम्म ३७, विसे २६८०)। २ अतिशयित (पाअ)।

विसेस देखो विसेस = वि + शेषय।

विसोग वि [विशोक] शोक-रहित (आचा)।

विमोत्तिथा स्त्री [विस्त्रोतसिका] १ विमार्ग-गमन, प्रतिकूल गति। २ मन का विमार्ग में गमन, अपचयान, दुष्ट चिन्तन (आचा, विने ३०१२, उव, धर्मस ८१२)। ३ शका (आचा)।

विसोपग पुन [दे विशोपक] कौडी का विसोवग } बीसवाँ हिस्सा (धर्मवि ५७, पचा ११, २२)।

विसोह सक [वि + शोवय] १ शुद्ध करना, मल-रहित करना, निर्दोष बनाना। २ त्याग करना। विसोहइ, विमोहेइ (उव, सण, कस)। विसोहिज्ज (आचा २, ३, २, ३)। हेक्क विसोहिज्जए (ठा २, १—पत्र ५६)।

विसोह वि [विशोभ] शोभा-रहित (दे १, ११०)।

विसोहण न [विशोधन] शुद्धि-करण (कस)।

विमोहणया स्त्री [विशोधना] ऊपर देखो (ठा ८—पत्र ४४१)।

विमोहय वि [विशोवक] शुद्धि-कर्ता (सूअ १, ३, ३, १६)।

विसोहि स्त्री [विशोधि] १ विशुद्धि, निर्मलता, विशुद्धता (पउम १०२, १६६, उव, पिड ६७१, सुपा १६२)। २ अपराध के योग्य प्रायश्चित्त (ओघ २)। ३ आवश्यक, सामयिक आदि पद-कर्म (अणु ३१)। ४ भिक्षा का एक दोष, जिस दोषवाले आहार का त्याग करने पर शेष भिक्षा या भिक्षा-पात्र विशुद्ध हो वह दोष (पिड ३६५)। ५ 'कोडि स्त्री [ं] कोटि' पूर्वोक्त विशोधि-दोष का प्रकार (पिड ३६५)।

विसोहिय वि [विशोधित] १ शुद्ध किया हुआ। २ पु. मोक्ष-मार्ग (सूअ १, १३, ३)।

वेआरणिय वि [दे] प्रतारण-सम्बन्धी, ठगने से उत्पन्न (ठा २, १—पत्र ४०)।

वेआरणिय वि [वैचारणिक] विचार-संबन्धी (ठा २, १—पत्र ४०)।

वेआरिअ वि [दे] १ प्रतारित, ठगा हुआ (दे ७, ६५, पत्र १४, ४६, सुपा १५२)। २ पु. वेश, बाल (दे ७, ६५)।

वेआल पु [वेताल] १ भूत-विशेष, विकृत पिशाच, प्रेत (परह १, ३—पत्र ४६, गउड, महा, पिग)। २ छन्द-विशेष (पिग)।

वेआल वि [दे] १ अन्धा। २ पु. अघकार (दे ७, ६५)।

वेआलग वि [विदारक] विदारण-कर्ता (सूअनि ३६)।

वेआलग न [विदारण] फाड़ना, चीरना (सूअनि ३६)।

वेआलि पु [वैतालिन] बन्दी, स्तुति-पाठक (उप ७२८ टी)।

वेआलिअ देखो वइआलिअ (पाअ, हे १, १५२, चेइय ७४६)।

वेआलिय वि [वैक्रिय] विक्रिया से उत्पन्न (सूअ १, ५, २, १७)।

वेआलिय वि [वैकालिक] विकाल-सम्बन्धी, अपराह्न में बना हुआ (दसनि १, ६, १५)।

वेआलिय न [विदारक] विदारण-क्रिया (सूअनि ३६)।

वेआलिय देखो वइआलीअ (सूअनि ३८)।

वेआलिया स्त्री [वैतालिकी] चीरणा-विशेष (जीव ३)।

वेआली स्त्री [वैताली] १ विद्या-विशेष, जिनके प्रभाव से अचेतन काष्ठ भी उठ खड़ा होता है—चेतन की तरह क्रिया करता है (सूअ २, २, २७)। २ नगरी-विशेष (एयाया १, १६—पत्र २१७)।

वेइ स्त्री [वेाड] परिष्कृत भूमि-विशेष, चौतरा (कुमा, महा)।

वेइ वि [वेादन] १ जाननेवाला (चेइय ११६, गउड)। २ अनुभव करनेवाला (पत्र ५, ११६)।

वेइअ वि [वेदित] १ अनुभूत (भग)। २ ज्ञात, जाना हुआ (दस ४, १, पत्र ६६, ३)।

वेइअ देखो वेविअ = वेपित (गा ३६२ अ)।

वेइअ वि [वैदिक] १ वेदाश्रित, वेद-संबन्धी (ठा ३, ३—पत्र १५१)। २ वेदों का जानकार (दसनि ४, ३५)।

वेइअ वि [वेगित] वेलावाला, वेग-युक्त (एयाया १, १—पत्र २६)।

वेइअ वि [व्येजित] १ कम्पित, काँपा हुआ (भग १, १ टी—पत्र १८)। २ काँपाया हुआ (राय ७४)।

वेइआ स्त्री [दे] पनीहारी, पानी ढोनेवाली स्त्री (दे ७, ७६)।

वेइआ स्त्री [वेदिका] १ परिष्कृत भूमि-विशेष, चौतरा (भग, कुमा, महा)। २ अगुलि-मुद्रा, अगुठी (दे ७, ७६ टी)। ३ वर्जनीय प्रतिलेखन का एक भेद, प्रत्युपेक्षणा का एक दोष (उत्त २६, २६, सुख २६, २६, शोधभा १६३)।

वेइज्ज अक [वि + एज्] काँपना। वक्र वेइज्जमाण (भग १, १ टी—पत्र १८)।

वेइज्जमाण देखो वेअ = वेदय्।

वेइइ वि [दे] १ ऊँचा किया हुआ। २ विसस्थुल। ३ आविद्ध। ४ शिथिल (दे ७, ६५)।

वेइल देखो विअइल (हे १, १६६, २, ६८, कुमा)।

वेउठ देखो वेकुठ (गउड)।

वेउट्टिया स्त्री [दे] पुन पुन, फिर-फिर (कप्प)।

वेउव्व देखो विउव्व = वि + कृ, कुव्वं। सकृ वेउव्वऊण (सुपा ४२)।

वेउव्व वि [वैक्रिय] १ विकृत, विकार-प्राप्त (विसे २५७६ टी)। २ देखो विउव्व = वैक्रिय (कम्म ३, १६)। ३ लद्धि स्त्री [लद्धि] शक्ति-विशेष, वैक्रिय शरीर उत्पन्न करने का सामर्थ्य (पउम ७०, २६)।

वेउव्वि देखो विउव्वि (परह २, १—पत्र ६६, कप्प, श्रौप, शोधभा ५७)।

वेउव्विअ देखो विउव्विअ = विकृत, विकृ-वित, वेउव्विय असुइज्जवाल अइचिक्कण फासेण' (म ७६२, मुपा ४७)।

वेउव्विअ वि [वैक्रिय, वैक्रियिक, वैकुर्विक] १ शरीर-विशेष, अनेक स्वरूपों और क्रियाओं

को करने में समर्थ शरीर (सम १४१, भग, दं ८)। २ वैक्रिय शरीर बनाने की शक्तिवाला (सम १०३, पव—गाथा ६)। ३ विकुर्वणा से बनाया हुआ, 'विभगिरिसमीवगय एय वेउव्विय च मह भवण' (सुपा १७८)। ४ वैक्रिय शरीरवाला (विसे ३७५)। ५ वैक्रिय शरीर से सम्बन्ध रखनेवाला (भग)। ६ विभू-पित (भग १८, ५—पत्र ७४६)। ७ लद्धिअ वि [लद्धि] वैक्रिय शरीर उत्पन्न करने की शक्तिवाला (भग)। ८ समुग्घाय पु [समुद्गात] वैक्रिय शरीर बनाने के लिए आत्म-प्रदेशों को बाहर निकालना (अत)।

वेउव्विया स्त्री [दे] पुन-पुन, फिर-फिर (कप्प)।

वेउड पु [वेड्डट] दक्षिण देश में स्थित एक पर्वत (अचु १)। १ ग्राह पु [नाथ] विष्णु की वेंकटाद्रि पर स्थित मूर्ति (अचु १)। वेगी स्त्री [दे] वृत्तिवाली, बाढ़वाली (दे ७, ४३)।

वेजण देखो वजण (प्राकृ ३१)।

वेट देखो विट = वृत्त (गा ३५६, हे १, १३६, २, ३१, कुमा, प्राकृ ४)।

वेटल देखो विटल (शोध ४२४)।

वेटली देखो विटलिआ, 'तस्रो तेण तस्स (करिणो) पुरसो वेटलीकाऊण पक्खित्त-मुत्तरीय' (महा)।

वेटिआ देखो विटिया (शोध २०३, शोधभा ७६, उप १४२ टी, पव १)।

वेड पु [वेतण्ड] हाथी, हस्ती (प्राकृ ३०)। देखो वेयड।

वेडसुरा स्त्री [दे] कलुष मदिरा (दे ७, ७८)।

वेडि पु [दे] पशु (दे ७, ७४)।

वेडिअ वि [दे] वेष्टित, लपेटा हुआ (दे ७, ७६, महा)।

वेभल देखो विभल (परह १, ३—पत्र ४५, पउम ५, १६२)।

वेकक्ख देखो वेअच्छ, 'वेकक्खउत्तरीआ' (कुमा)।

वेकच्छिया } देखो वेगच्छिया (शोधभा
वेकच्छी } ३१८, शोध ६७७)।

वेकिह्लिअ न [दे] रोमन्थ, चवी हुई चीज को फिर से चवाना (दे ७, ८२)।

विह पुत्री [विध] १ भेद, प्रकार (उवा, कप्प) । २ पुन आकाश, गगन (भग २०, २—पत्र ७७५, आचा १, ८, ४, ५, दसनि १, २३) ।

विहइ स्त्री [दे] वृन्ताकी, वैगन का गाछ (दे ७, ६३) ।

विहग पुं [विहङ्ग] पक्षी, चिडिया, पखेरू (पाय, गउड, कप्प, सुर ३, २४५, प्रासू १७२) । °णाह पुं [°नाथ] गह्वर पक्षी (गउड ८२३, ८२४, १०२२) ।

विहग पुं [विभङ्ग] विभाग, टुकड़ा, अंश (परह १, ३—पत्र ५४, गउड ४०४) । देखो विभग (गउड, भवि) ।

विहगम पुं [विहगम] पक्षी, चिडिया (गउड, मोह ३२, शु ७७, सण) ।

विहज सक [वि + भञ्ज्] भाँगना, तोड़ना, विनाश करना । सकृ. विहजिजि (अप) (भवि) ।

विहजिअ वि [विभक्त] बाँटा हुआ, 'आगम-जुतिपमाणविहजिअ' (भवि) ।

विहड सक [वि + खण्डय्] विच्छेद करना, विनाश करना । विहंडइ (भवि) ।

विहडण न [विखण्डन] १ विच्छेद, विनाश (मम्मत्त ३०) । २ वि विच्छेद-कर्ता, विनाशक (सण) ।

विहडण वि [विभण्डन] भाँड़नेवाला, गालि-सूचक, 'भरणसि रे जइ विहंडण वअण' (गा ६१२) ।

विहडिअ वि [विखण्डित] विनाशित (पिंग; सण) ।

विहग पु [विहग] पक्षी, चिडिया (पउम १४, ८०, स ६६७, उत्त २०, ६०) । °हिव पु [°धिप] गह्वर पक्षी (सम्मत्त २१६) ।

विहग पुन [विहायस्] आकाश, गगन । °गइ स्त्री [°गति] १ आकाश में गमन (पचा ३, ६) । २ कर्म-विशेष, आकाश में गति कर सकने में कारण-भूत कर्म (सम ६७, कम्म १, २४, ४३) ।

विहट्ट देखो विघट्ट । विहट्टइ (भवि) ।

विहट्टिअ वि [विघट्टित] खण्डित, टिघाभूत (से २, १२) ।

विहड अक [वि + घट्] नियुक्त होना, अलग होना, टूट जाना । विहडइ, विहडेइ (महा, प्राकृ ७१) । वक्र. विहडत (से ३, १४) ।

विहड सक [वि + घटय्] तोड़ना, खण्डित करना । सकृ. विहडिऊण (सण) ।

विहड देखो विहल = विहल (से ४, ५४) ।

विहडण न [विघटन] १ अलग होना, वियोग (सुपा ११६, २४३) । २ अलग करना । ३ खोलना, 'तह भीणा जह मउलि-यलोयणउडविहडणे वि असमत्था' (वजा ८८) ।

विहडण पु [दे] अनर्थ (पड) ।

विहडणा स्त्री [विघटना] वियोजन, अलग करना, 'सघडणविहडणावावडेण विहिणा जणो नडिओ' (धर्मवि ४२) ।

विहडणफड वि [दे] १ व्याकुल, व्यग्र (हे २, १७४) । २ त्वरित, शीघ्र (भवि) ।

विहडा स्त्री [विघटा] विभेद, अनैक्य, फाट-फुट, 'जह मह कुडु वविहडा न घडइ कइयावि दतकलहेण' (सुपा ४२१) ।

विहडाव सक [वि + घटय्] वियुक्त करना, अलग करना । विहडावइ (महा) ।

विहडावण न [विघटन] वियोजन (भवि) ।

विहडाविय वि [विघटित] वियोजित (साधं ७१) ।

विहडिय वि [विघटित] १ वियुक्त, विच्छिन्न (महा ३६, ५) । २ खुला हुआ (महा ३०, ३०) ।

विहण देखो विहन्न । विहणति (पि ४६०) ।

सक्र. विहत्तु (सुप्र १, ५, १, २१) ।

विहणु वि [दे] सपूर्ण, सकल (मण) ।

विहणण न [दे] पिंजन, पीजना, धुनना (दे ७, ६३) ।

विहत्त देखो विभत्त (से ७, १५, चेइय २७४, सुर १, ४७, सुपा ३६६) ।

विहत्ति देखो विभत्ति (पउम २४, ५, उप पृ १४७) ।

विहत्तु देखो विहण ।

विहत्थ वि [विहस्त] १ व्याकुल, व्यग्र (से १२, ४९, कुप्र ४०६, सिरि ३८६, ८३६, सम्मत्त १६१) । २ कुशल, दक्ष, 'पहरणवि-

हत्थहत्था' (कुप्र १०३, २०६) । ३ पुं. विशिष्ट हाथ, किसी वस्तु से युक्त हाथ, 'पढमं उत्तरिऊणं ववलो जा जाइ पाहुडवि-हत्थो' (सिरि ६६१), 'सद्वभाणविहत्थो' (उव) । ४ क्लोव (सम्मत्त ६६१) ।

विहत्थि पुंस्त्री [वितस्ति] परिमाण-विशेष, बारह अंगुल का परिमाण (हे १, २१४, कुमा, अणु १५७) ।

विहदि स्त्री [विधृति] १ विशेष धैर्य । २ वि धैर्य-रहित (सक्षि ६) ।

विहन्न सक [वि + हन्] १ मारना, विहम्म ताडन करना । २ नाश करना ।

३ अतिक्रमण करना । विहन्नई (उत्त २, २२) । कर्म. विहन्निजा (उत्त २, १) । वक्र.

विहम्ममाण, विहम्माण (पि ५६२, उत्त २७, ३) । कवक्र. विहम्ममाण (सुप्र १, ७, ३०) ।

विहम्म वि [विधर्मन्] भिन्न धर्मवाला, विभिन्न, विलक्षण, 'मोत्तूणायसहाव वसेज्ज वत्थुं विहम्मम्मि' (विसे २२४१) ।

विहम्म सक [विधर्मय्] धर्म-रहित करना । वक्र. विहम्मेमाण (विपा १, १—पत्र ११) ।

विहम्म न [वैधर्म्य] १ विधर्मता, विरुद्ध-धर्मता । २ तर्कशास्त्र-प्रसिद्ध उदाहरण-भेद, वैधर्म्य-हृष्टान्त (सम्म १५३) ।

विहम्माणा स्त्री [विधर्मणा, विहनन] कद-थंन, पीड़ा (परह १, ३—पत्र ५३, विसे २३५०) ।

विहय वि [दे] पिंजित, धुना हुआ (दे ७, ६४) ।

विहय वि [विहत्] १ मारा हुआ, आहत (पउम २७, २८) । २ विनाशित (महा) ।

विहय देखो विहग = निहग (गउड, सण) ।

विहय देखो विहव = विभव (दे ३, २६, नाट—मालवि ३३) ।

विहर अक [वि + ह्] १ क्रीडा करना, खेलना । २ रहना, स्थिति करना । ३ सक.

गमन करना, जाना । विहरइ (हे ४, २५६, उवा, कप्प, उव), विहरति (भग), विहरेज्ज (पव १०४) । भूका विहरिमु, विहरित्था (उत्त २३, ६, पि ३५०, ५१७) । भवि.

विहरिस्सइ (पि ५२२) । वक्र. विहरत,

वेढण न [वेष्टन] लपेटना (मे १, ६०, ६, ४३, १२, ६५, गा ५६३ धर्मस ४६७) ।

वेढिअ वि [वेष्टन] लपेटा हुआ (उव, पात्र, सुर २, २३८) ।

वेढिम वि [वेष्टिम] १ वेष्टन से बना हुआ (परह १, २—पत्र १५०, ११५ १, १२—पत्र १७८, श्रोप) । २ पुखी खाद्य-विशेष (परह २, ५—पत्र १८८, राज) ।

वेण पु [दे] नदी का विषम घाट (दे ७, ७४) ।

वेण (अप) देखो वयण = वचन (हे ४, ३२६) ।

वेणइअ न [वनयिक] १ वित्त, नम्रता (ठा ५ २—पत्र ३३१, दस ६, १, १२, सट्टि १०६ टी) । २ मिथ्यात्व-विशेष, सभी देवों और धर्मों को सत्य मानना (सबोध ५२) । ३ वि वित्त-सबन्धी (सम १०६, भग) । ४ वित्त को ही प्रधान माननेवाला, वित्त-वादी (मूत्र १, ६, २७) । 'वाद पु [वाद] वित्त को ही मुख्य माननेवाला दर्शन (धर्मसं ६६५) ।

वेणइगी } स्त्री [वैनयिकी] वित्त से प्राप्त
वेणइया } होनेवाली बुद्धि (उप पु ३४०, गाय १, १—पत्र ११) ।

वेणइया स्त्री [वैणकिया] लिपि-विशेष (सम ३५, परण १—पत्र ६२)

वेणा स्त्री [वेणा] महर्षि स्थूलभद्र की एक भगिनी (कप्प, पडि) ।

वेणि स्त्री [वेणी] १ एक प्रकार की केश-रचना, बालों की गूथी हुई चोटी (उवा) । २ वाद्य-विशेष (सण) । ३ गंगा और यमुना का सगम-स्थान (राज) । 'वच्छराय पुं [वत्सराज] एक राजा (कुप ४४०) ।

वेणिअ न [द] वचनीय, लोकापवाद (दे ७, ७५, पड्) ।

वेणी स्त्री [वेणी] देखो वेणि (से १, ३६, गा २७३, कप्प) ।

वेणु पु [देणु] १ वश, बाँस (पात्र, कुमा, पड्) । २ एक राजा (कुमा) । ३ वाद्य-विशेष, वसी (हे १, २०३) । 'दालि पु [दालि] एक इन्द्र, सुपर्णकुमार देवों का उत्तरदिशा का इन्द्र (ठा २, ३—पत्र ८४,

इक) । 'देव पु [देव] १ सुपर्णकुमार-नामक देव-जाति का दक्षिण दिशा का इन्द्र (ठा २, ३—पत्र ८४) । २ देव-विशेष (ठा २, ३—पत्र ६७, ७६) । ३ गरुड पक्षी (सूत्र १, ६, २१) । 'याणुजाय पुं [यानुजान्] गणितशास्त्र-अभिज्ञ योगों में द्वितीय योग, जिसमें चन्द्र सूर्य और नक्षत्र वशाकार से अवस्थान करते हैं (सुज १२—पत्र २३३) ।

वेणुणास } पुं [दे] भ्रमर, भौरा (दे ७,
वेणुसाअ } ७८, पड्) ।

वेण्ण वि [दे] भ्रातृन्त (पड्) ।

वेण्णा स्त्री [वेन्ना] नदी-विशेष । 'यड न [तट] नगर-विशेष (पउम ४८, ६३, महा) ।

वेण्हु देखो विण्हु (सखि ३ प्राकृ ५) ।

वेताली स्त्री [दे] १ तट, किनारा, 'जन्म नावा पुव्ववेतालीउदाहिणवेतानि जलपहेण गच्छति' (परण १६—पत्र ४८०) । २ गली (आव० वृ० पत्र ३५५) ।

वेत्त न [टे] स्वच्छ वस्त्र (दे ७, ७५) ।

वेत्त पु [वेत्त] वृक्ष-विशेष, वेंत का गाछ (परण १—पत्र ३३, विपा १, ६—पत्र ६६) । 'सण न [सिन] वेंत का बना हुआ आसन (पउम ६६, १४) ।

वेत्तव्व वि [वेत्तव्व] जानने योग्य (प्राप्र) ।

वेत्तिअ पु [वैत्रिक] द्वारपाल, चपरागी (सुपा ७३) ।

वेद देखो वेअ = वेदय् । वेदेइ, वेदत्ति, वेदंति (भग, सूत्र १, ७, ४, ठा २ ४—पत्र १००), वेदेज (धर्मसं १६६) । भूका, वेदंमु (ठा २, ४, भग) । भवि, वेदिस्सनि (ठा २, ४, भग) । कक्क वेदेज्जमाण (ठा १०—पत्र ४७२) ।

वेद देखो वेअ = वेद (परह १, २—पत्र ४०, धर्मसं ८६२) ।

वेदत्त देखो वेअत्त (धर्मसं ८६३) ।

वेदक } देखो वेअग (परह १, २—पत्र
वेदग } २८, धर्मसं १६६) ।

वेदणा देखो विअणा (भग स्वप्न ८०, नाट—मालवि १४) ।

वेदन्भी स्त्री [वेदंभी] प्रद्युम्न कुमार की एक स्त्री का नाम (अत १४) ।

वेदस्स (शौ) देखो वेडिस्स (प्राकृ ८३, नाट शकु ६८) ।

वेदि देखो वेड = वेदि (पउम ११, ७३) ।

वेदग पु [वाटक] एक इम्य मनुष्य-जाति, 'अवठ्ठा य कलदा य

वेदेहा वेदिगात्तिता (? इया) ।

हरिता चुचुणा चव

छप्पेता इवमज्झो ॥'

(ठा ६—पत्र ३५८) ।

वेदिय देखो वेइअ = वेदित (भग) ।

वेदिस्स न [वेदिस्स] विदिशा की तरफ का नगर (अणु १४६) ।

वेदुलिय देखो वेरुलअ (चंड) ।

वेदूणा स्त्री [दे] लज्जा, शरम (दे ७, ६५) ।

वेदेसिय देखो वइदेसिअ (राज) ।

वेदेह पु [वेदेह] एक इम्य मनुष्य-जाति (ठा ६—पत्र ३५८) । देखो वइदेह ।

वेदेहि पु [विदेहिन्] विदेह देश का राजा (उत्त ६, ६२) ।

वेधम्म देखो वडधम्म (धर्मसं १८५) ।

वेधव्व देखो वेहव्व (मोह ६६) ।

वेन्ना देखो वेण्णा (उप पु ११५) ।

वेप्प वि [दे] भूत आदि से गृहीत, पागल (दे ७, ७४) ।

वेप्पुअ न [दे] १ शिशुपन, वचपन । २ वि, भूत-गृहीत, भूताविष्ट (दे ७, ७६) ।

वेफल न [वेफल्य] निष्फलता (विसे ४१६, धर्मसं २२, अज्झ १३३) ।

वेव्भल वि [विह्वल] व्याकुल (प्राप्र) ।

वेव्भार } पु [वैभार] पर्वत विशेष, राजगृही
वेव्भार } के समीप का एक पहाड़ (गाया १, ६—पत्र ३३, सिरि ४) ।

वेम देखो वेमय । वेमइ (प्राकृ ७४) ।

वेम पु [वेमन्] तन्तुवाय का एक उपकरण (विसे २१००) ।

वेमइअ वि [भग्न] भाँगा हुआ (कुमा ६, ६८) ।

वेमणस्स न [वैमनस्य] १ मनमुटाव, भीतरी द्वेष (उव) । २ दैन्य, दोनता (परह १, १—पत्र ५) ।

७, ५, रंभा, महा) । ३ प्रकार, भेद (से ३, ३१, परह १, १, भग) । ४ व्याकरणोक्त विवि-विशेष (परह २, २—पत्र ११४) । ५ अवस्था-विशेष (सूत्र २, १, ३२) । ६ विशेष, 'विहाणमगण पडुव' (भग १, १ टी) । ७ रीति (महा) । ८ क्रम, परिपाटी (बृह १) ।

विहाण न [विहान] परित्याग (राज) ।

विहाणिय (अप) वि [विधायिन्] कर्ता, करनेवाला (सण) ।

विहाय अक [वि + भा] १ शोभना । २ प्रकाशना, चमकना, दीपना । विहार्यति (म १२) । वक्तु विहार्यत (गिरि २६८) ।

विहाय पुं [विघात] १ अवसान, अंत (से १, १६) । २ विरोधी, दुश्मन, परिपन्थी (से ८, ५४, स ४१२) ।

विहाय देखो विभाग (गच्छ, से ६, ३२) ।

विहाय वि [विभात] १ प्रकाशित, 'निमा विहाय ति उद्धिओ कएहो' (कुप्र २६८) । २ न. प्रमात, प्रात काल (से १२, १६) ।

विहाय देखो विहग = विहायस् (आ २२) ।

विहाय देखो विहा = वि + हा ।

विहाय (अप) देखो विहिअ (भवि) ।

विहार सक [वि + वारय्] १ अपेक्षा करना । २ विशेष रूप से चारण करना । वक्तु विहारंत (पद्म ८, १५६) ।

विहार पु [विहार] १ विचरण, गमन, गति (पव १०४, उवा) । २ क्रीडा-स्थान (सम १००) । ३ देव-गृह, देव-मन्दिर (उत ३०, ७, कुमा) । ४ अवस्थान, अवस्थिति, 'असा-सयं दट्ठु इमं विहार' (उत १४, ७) । ५ क्रीडा (ठा ८, कप्प) । ६ मुनि-वर्त्तन, मुनि-चर्या, भाव्याचार (वव १, एदि, उव) । 'भूमि ओ [भूमि] १ स्वाध्याय-स्थान (आचा २, १, १, ८, कस, कप्प) । २ विचरण-भूमि (वव ४) । ३ क्रीडा-स्थान । ४ चैत्य की जगह (कप्प, राज) ।

विहारि वि [विहारिन्] विहार करनेवाला (आचा; उव, आ १४) ।

विहालिय देखो विहाडिअ, 'दुवारं विहालिय पासइ' (उप ६४८ टी) ।

विहाव देखो विभाव = वि + भावय् । विहा-वइ, विहावेमि (भवि, रुविम ५७) । कवक विहाविज्जमाण (स ४१) । क. विहावियव्व (उप ३४२) ।

विहावण न [विधापन] निर्माण, करवाना (चेइय ६६) ।

विहावण न [विभावन] आलोचना, 'एव विचित्तिव्व गुणदोसविहावण परम' (पचा ६, ४६) ।

विहावरी ओ [विभावरी] रात्रि, निशा (पात्र, उप ७६८ टी, सुपा ३६३) ।

विहावसु पु [विभावसु] अग्नि, आग (पात्र) । देखो विभावसु ।

विहाविअ वि [विभावित] दृष्ट, निरीक्षत, 'दिट्ठ विहाविअ' (पात्र, गा ५०७) ।

विहाविअ वि [विधावित] उल्लसित, प्रस्फुरित (स ६७) ।

विहास पु [विहास] हँसी, उपहास (भवि) ।

विहास } देखो विहसाव । सक. विहा-
विहासाव } सिऊण, विहासेऊण, विहा-
साविऊण, विहासावेऊण (प्राक ६१) ।

विहासाविअ } देखो विहासाविअ (प्राक
विहासिअ } ६१) ।

विहि पुं [विहि] १ ब्रह्मा, चतुरानन, विघाता (पात्र, अञ्चु ३७, घर्मस ६२६, कुमा) । २ पृथ्वी प्रकार, भेद (उवा), 'सव्वाहि नयवि-हीहि' (पव १४६) । ३ शास्त्रोक्त विधान, अनुष्ठान, व्यवस्था (पचा ६, ४८, औप) । ४ क्रम, सिलसिला, परिपाटी (बृह १) । ५ रीति । ६ नियोग, आदेश, आज्ञा । ७ आज्ञा-सूचक वाक्य । ८ व्याकरण का सूत्र-विशेष । ९ कर्म । १० हाथी को खाने का अन्न (हे १, ३५) । ११ देव, भाग्य, 'अणुकूलो अहव विही किवा तं ज न करेइ' (सुर ६, ८१, पात्र, कुमा; प्रासू ५८) । १२ नीति, न्याय । १३ स्थिति, मर्यादा (बृह १) । १४ कृति, करण (पचा ११) । 'नु वि [ंज्ञ] विवि का जानकार (एया १, १—पत्र ११, सुर ८, ११८) । 'वयण न [वचन] विधि-वाक्य, विधि-वाद, विध्युपदेश (चेइय ७४४) । 'वाय पु [वाद] वही पूर्वोक्त अर्थ (भास ७५, चेइय ७४४) ।

विहिअ वि [विहित] १ कृत, अनुष्ठित, निर्मित (पात्र, महा) । २ चेटित (औप) । ३ शास्त्र में जिसका विधान हो वह, शास्त्रोक्त (पचा १४, २७) ।

विहिस सक [वि + हिंस] विविध उपायो में मारना, वध करना । विहिमइ (आचा १, १, १, ४) । क. विहिस (परह १, २—पत्र ४०) ।

विहिस वि [विहिस] हिमा करनेवाला, 'अ-विहिसे सुव्वए दते' (आचा १, ६, ४, ३) ।

विहिसग वि [विहिसक] वध करनेवाला (आचा, गच्छ १, १०) ।

विहिसण न [विहिसन] विविध प्रकार से मारना (परह १, १—पत्र १८) ।

विहिसा ओ [विहिसा] १ विशेष हिंसा (परह १, १—पत्र ५) । २ विविध हिंसा (सूत्र १, २, १, १४) ।

विहिण्ण } वि [विभिन्न] १ जुदा, अलग
विहिन्न } (से ७, ५३, १३, ८६, भवि) ।
२ खरिडत, माँग कर टुकड़ा-टुकड़ा बना हुआ (से ३, ६०) ।

विहिम न [दे] जगल, अरण्य (उप ८४२ टी) ।

विहिमिहिय वि [दे] विकर्मित, प्रकुल (पद्) ।

विहियव्व देखो विहे = वि + घा ।

विहिविल्ल सक [वि + रचय्] बनाना, निर्माण करना । विहिविल्लइ (प्राक ७४) ।

विहीण वि [विहीन] १ वजित, रहित (प्रासू १७२) । २ त्यक्त (कुमा) ।

विहीर सक [प्रति + ईक्ष्] प्रतीक्षा करना, बाट जोहना । विहीरइ (हे ४, १६३), विहीरह (स ४१८) ।

विहीर वि [प्रतीक्ष] प्रतीक्षा करनेवाला (कुमा ७, ३८) ।

विहिरिअ वि [प्रतीक्षित] जिसकी प्रतीक्षा की गई हो वह (पात्र) ।

विहीसण देखो विभीसण (से ४, ५५) ।

विहीसिया देखो विभीसिया (सुपा ५४१) ।

विहु पुं [विधु] १ चन्द्र, चाँद (पात्र) । २ विष्णु, श्रीकृष्ण । ३ ब्रह्मा । ४ शकर,

वासकरिला, वनस्पति-विशेष (दम ५, २, २१) ।

वेलुरिअ } देखो वेस्लिअ (प्राप्र पि २४१,
वेलुलिअ } दे ७ ७७) ।

वेल्लणा स्त्री [दे] लज्जा लाज (दे ७, ६५) ।

वेल्ल अक [वेल्ल] १ कपना । २ लेटना ।
३ सक कपना । ४ प्रेरना । वेल्लइ (पि
१०७) । वेल्लति (गउड) । वळ् वेल्लत,
वेल्लमाण (गउड हे १, ६६ पि १०७) ।

वेल्ल अक [रम्] क्रीडा करना । वेल्लइ (हे
४, १६८) । क वेल्लणिज्ज (कुमा ७, १४) ।

वेल्ल पु [दे] १ केश, बाल । २ पल्लव । ३
विलास (दे ७ ६४) । ४ मदन-वेदना, काम-
पीडा । ५ वि. अविदग्ध मूर्ख (मणि ४७) ।
६ न देखो वेल्लण (मुपा २७६) ।

वेल्लइअ देखो वेल्लइअ (पड्) ।

वेल्लण न [दे] १ एक तरह की गाड़ी, जो
ऊपर से ढकी हुई होती है, गुजराती में
'वेल' । २ गाड़ी के ऊपर का तला (आ
१२) ।

वेल्लण न [वेल्लण] प्रेरणा (गउड) ।

वेल्लय देखो वेल्लण (मुपा २८१, २८२) ।

वेल्लरिअ पु [दे] केश बाल (पड्) ।

वेल्लरिआ स्त्री [दे] बल्ली, लता (पड्) ।

वेल्लरी स्त्री [दे] वेश्या, वारागता (दे ७,
७६, पड्) ।

वेल्लविअ देखो वेल्लिअ (दे १, २६) ।

वेल्लविअ वि [दे] विलिप्त पोता हुआ (मि
१, २६) ।

वेल्लहल } वि [दे] १ कीमल, मृदु (दे ७,
वेल्लहल } ६६ पड्, गउड, मुपा ५६२,
स ७०४) । २ विलासी (दे ७, ६६, पड्,
मुपा ५२) । ३ सुन्दर (गा ५६८) ।

वेल्ल स्त्री [दे वल्ली] लता, बल्ली (दे ७,
६४) ।

वेल्ललअ वि [दे] सकुचित, मकुचा हुआ (दे
७, ७६) ।

वेल्लि देखो वलि (उव, कुमा) ।

वेल्लिअ वि [वेल्लिअ] १ कपना हुआ (से ७,
५१) । २ प्रेरित (से ६, ६५) ।

वेल्लि वि [वेल्लि] कपनेवाला (गउड) ।

वेल्ली देखो वलि (गा ८=२, गउड) ।

वेव अक [वेप्] कपना । वेवइ (हे ४,
१४७, कुमा, पड्) । वळ् वेवत, वेवमाण
रमा, कप्प, कुमा) ।

वेवउम्भ न [वेवाह] विवाह, शादी (राज) ।

वेवण्ण न [वेवण्ण] फोकापन (कुमा) ।

वेवय पुन [वेपक] रोग-विशेष, कप्प
(आचा) ।

वेवाडअ वि [दे] उल्लसित, उल्लास-प्राप्त
(दे ७, ७६) ।

वेवाहिअ वि [वेवाहिक] सवन्धी, विवाह-
संक्छवाला (मुपा ४६६, कुप्र १७७) ।

वेविअ वि [वेपिन] १ कम्पित (गा ३६२,
पाप्र) । २ पु एक नरक-स्नान (देवेन्द्र २७) ।

वेविर वि [वेपित] कपनेवाला (कुमा, हे २,
१४५, ३, १३७) ।

वेव्व अ [दे] आमन्त्रण-सूचक अव्यय (हे
२, १६८, कुमा) ।

वेव्व अ [दे] इन अर्थों का सूचक अव्यय—
१ भय, डर । २ वारण, रूकावट । ३ विपाद,
खेद । ४ आमन्त्रण (हे २, १६३, १६४,
कुमा) ।

वेम पुं [वेप] शरीर पर वस्त्र आदि की सजा-
वट (कप्प, स्वप्न ५२, मुपा ३८६, ३८७,
गउड, कुमा) ।

वेस वि [वेप्य] विशेष रूप से वाछनीय
(वव ३) ।

वेस पु [वेप] १ विरोध, वेर । २ घृणा,
अप्रोति (गउड, भवि) ।

वेस वि [वेप्य] वेपोचित, वेप के योग्य
(भग २, ५—पत्र १३७, सुज्ज २०—
पत्र २६१) ।

वेस वि [वेप्य] १ द्वेष करने योग्य, अप्रो-
तिकर (पउम ८८, १६, गा १२६, सुर २,
२०८, दे १, ४१) । २ विरोधी, शत्रु, दुश्मन
(मुपा १५२, उप ७६८ टी) ।

वेस देखो वइस्स = वैश्य (भवि) ।

वेमइअ वि [वैपयिक] विषय से सवन्ध
रखनेवाला (पि ६१) ।

वेमपायण देखो वइसपायण (हे १, १७२,
पड्) ।

वेमम पु [विश्रम्भ] विश्राम (पउम २८,
७४) ।

वेसभरा स्त्री [दे] गृहगोधा, छिपकनी (दि
७, ७७) ।

वेमक्खिज्ज न [ट] द्वेष्यत्व, विरोध,
दुश्मनाई (दे ७, ७६) ।

वेमण न [दे] धचनीय, लोकापवाद (दे
७, ७५) ।

वेसण न [वेपण] जीरा आदि मसाला
(पिड ५४) ।

वेमण न [वेसन] चना आदि द्विदल—दाल
का आटा, वेसन (पिड २५६) ।

वेममग पु [विश्रमण] १ यक्षराज, कुबेर
(पाप्र, छाया १, १—पत्र २६, मुपा
१२८) । २ इन्द्र का उत्तर दिशा का लोकपान
(मम ८६, भग ३, ७—पत्र १६६) । ३
एक विद्याधर नरेश (पउम ७, ६६) । ४
एक राजकुमार (विपा २, ३) । ५ एक
शेठ का नाम (मुपा १२८, ६२७) । ६
अहोरात्र का चौदहवां मूर्त (सुज १०, १३,
सम ५१) । ७ एक देव-विमान (देवन्द्र
१४८) । ८ धुद्र हिमवान् आदि पर्वतों के
शिखरों का नाम (ठा २, ३—पत्र ७०,
८०, ८—पत्र ४३६, ६—पत्र ४५४) ।
°काइय पुं [°कायिक] वैश्रमण की आज्ञा
में रहनेवाली एक देव-जाति (भग ३, ७—
पत्र १६६) । °दत्त पु [°दत्त] एक राजा
का नाम (विपा १, ६—पत्र ८८) ।
°देवकाइय पुं [°देवकायिक] वैश्रमण के
अधोतनस्य एक देव-जाति (भग ३, ७—पत्र
१६६) । °प्पम पुं [°प्रभ] वैश्रमण के
उत्पात-पर्वत का नाम (ठा १०—पत्र ४८२) ।
°भद पुं [°भद्र] एक जैन मुनि (विपा
२, ३) ।

वेसम्म न [वेपम्य] विषमता, असमानता
(अज्ज ५, पव २१६ टी) ।

वेसर पुं स्त्री [वेसर] १ पक्षि-विशेष (पण्ह
१, १—पत्र ८) । २ अश्वतर, खच्चर ।
स्त्री °री (सुर ८, १६) ।

वीआविय वि [वीजित] जिसको पंखा से हवा कराई गई हो वह (स ५४६)।

वीइ पुछी [वीचि] १ तरंग, कल्लोल (पात्र, श्रौप)। २ आकाश, गगन (भग २०, २—७७५)। ३ सप्रयोग, सवन्ध (भग १०, २—पत्र ८८)। ४ पृथग् भान, जुदाई (भग १४, ६ टी—पत्र ६४४)। ५ द्रव्य न [द्रव्य] प्रदेश से न्यून द्रव्य, अवयव-हीन वस्तु (भग १४, ६ टी—पत्र ६४४)।

वीइ छी [विभूति] १ विरूप कृति, दुष्ट क्रिया। २ वि दुष्ट क्रियावाला (भग १०, २—पत्र ४६५)। ३ देखो विगड (कम ४, ५ टी)।

वीइगाल वि [वीताङ्गार] राग-रहित (भग ७, १—पत्र २६२, पि १०२)।

वीइकत वि [व्यतिक्रान्त] १ व्यतीत, गुजरा हुआ, 'वामीए राइदिर्हि वीइकतेहि' (सम ८६)। २ जिसने उल्लघन किया हो वह (भग १०, ३ टी—पत्र ४६६)।

वीइकम सक [व्यति + क्रम] उल्लघन करना। वक्र वीइकममाण (कस)।

वीइजमाण देखो वीअ = वीजय्।

वीइमिस्स वि [व्यतिमिश्र] मिश्रित, मिला हुआ (आचा)।

वीइय वि [वीजित] जिसको हवा की गई हो वह (श्रौप, महा)।

वीइवय सक [व्यति + व्रज्] १ परिभ्रमण करना। २ गमन करना, जाना। ३ उल्लघन करना। वीइवयइ, वीइवइजा, वीइवइजा (सुज २० टी, भग १०, ३—पत्र ४६८)। वक्र वीइवयमाण (गाया १, १—पत्र ३१)। सक वीइवइत्ता, वीइवइत्ता (भग २, ८, १०, ३—पत्र ४६६)।

वीई छी देखो वीइ = वीचि (पात्र, भग १०, २, २० २)।

वीई अ [विचिच्य] पृथग् होकर, जुदा होकर (भग १०, २—पत्र ४६५)।

वीई अ [विचिन्त्य] चिन्तन करके (भग १०, २—पत्र ४६५)।

वीईवय देखो वीइवय। वीईवयइ (भग, सुज २० टी, भग ७, १०—पत्र ३२४)। वक्र वीईवयमाण (राय १६, पि ७०, १५१)। वीचि देखो वीइ = वीचि (कप्प, भग १४, ६—पत्र ६४४)।

वीचि छी [दे] लघु रय्या छोटा मुहल्ला (दे ७, ७३)।

वीज देखो वीअ = वीजय्। वीजइ, वीजेमि (हे ४, ५, पद् मै ६६)।

वीजण देखो वीअण (कुमा)।

वीजिय देखो वीइय (स ३०८)।

वीडग } देखो वीडग (स ६७)।
वीडय }

वीडय पु [वीडक] लज्जा, शरम (गठड ७३१)।

वीडिअ वि [वीडिन] लज्जित, शरमिन्दा (गाया १, ८—पत्र १४३)।

वीडिआ छी [वीटिका] सजाया हुआ पान, बीडा (गठड)। देखो बीडी।

वीड देखो पीड (गठड, उप पृ २२६, भगि)।

वीण सक [वि + चारय्] विचार करना। वीणइ, वीणइ (घात्वा १५३, प्राकृ ७१)।

वीण देखो पीण (सुर १३, १८१)।

वीणण न [दे] १ प्रकट करना (उप पृ ११८)। २ विदित करना, ज्ञापन (उप ७६५)।

वीणा छी [वीणा] वाद्य-विशेष (श्रौप, कुमा, गा ५६१, स्वप्न ६७)। १ यरिणी छी [करी] वीणा-नियुक्त दासी, 'ता लहु वीणायरिणि सदेहि, सदिया वीणायरिणी' (स ३०६)। २ वायन वि [वादक] वीणा बजानेवाला (महा)।

वीत देखो वीअ = वीत (ठा २, १—पत्र ५२, परण १७—पत्र ४६४, सुज २०—पत्र २६५)।

वीतिकत } देखो वीइकत (भग १०, ३—
वीतिकत } पत्र ४६८, गाया, १, १—पत्र २४, २६)।

वीतिघय } देखो वीइवय। वीतिवयति (भग)।

वीतीघय } वीतीवयड (गाया १, १२—पत्र १७४)। वक्र वीतिवयमाण (कप्प)। सक वीतिवइत्ता (श्रौप)।

वीमंस सक [वि + मृज्, मीमाम्] विचार करना, पर्यालोचन करना। संक्र. वीमसिय (सम्मत्त ५६)।

वीमसय वि [विमर्शक, मीमामक] विचार-कर्ता (उव)।

वीमसा छी [विमर्श, मीमाला] विचार, पर्यालोचन निर्णय की चाह (सूप्र १, १, २, १७, विमे २८६, ३६६, ५६५, उप ५२०)।

वीममिय वि [विमर्शित, मीमामिन] विचारित, पर्यालोचित (सम्मत्त ५४)।

वीर पु [वीर] १ भगवान् महावीर (परह १, १—पत्र २३, १, २, सुज २०, जी १)। २ छन्द-विशेष (पिंग)। ३ साहित्य-प्रसिद्ध एक रम (अणु १३६)। ४ वि पराक्रमी, शूर (आचा, सूप्र १, ८, २३, कुमा)। ५ पुन एक देव-विमान (मम १२, इक)। ६ न वेताव्य पवत की उत्तर श्रेणी में स्थित एक विद्याधर-नगर (इक)। ७ वत पुन [मान्त] एक देव-विमान (मम १२) ८ कण्ह पु [कृष्ण] राजा श्रेणिक का एक पुत्र (निर १, १, पि ५२)। ९ कण्हा छी [कृष्णा] राजा श्रेणिक की एक पत्नी (अत २५)। १० कूड पुन [कूट] एक देव-विमान (मम १२)। ११ गत पुन [गत] एक देव-विमान (सम १२)। १२ जस पु [यशस्] भगवान् महावीर के पाम दीक्षा लेनेवाला एक राजा (ठा ८—पत्र ४३०)। १३ उक्तय पुन [ध्वज] एक देव-विमान (मम १२)। १४ धवल पु [धवल] गुजरात का एक प्रसिद्ध राजा (तो २, हम्मीर १३)। १५ निहाण न [निधान] स्थान-विशेष (महा)। १६ प्पभ न [प्रभ] एक देव-विमान (मम १२)। १७ भद्र पु [भद्र] भगवान् पार्वनाथ का एक गण-धर (मम १३ तप्प)। १८ मई छी [मर्ता] एक चोर-भगिनी (महा)। १९ लेम पुन [लेह्य] एक देव-विमान (सम १२)। २० वण पुन [वर्ण] एक देव-विमान (मम १२) २१ वरण न [वरण] प्रतिमुष्ट से युद्ध का स्तोत्रार, 'इस योद्धा ने मैं लड़ूंगा' ऐसी युद्ध की मान (कुमा ६, ४६, ५२)। २२ वरणी छी

वोक्क सक [व्या + ह, उद् + नद्] पुकारना, आह्वान करना। वोक्कइ (पङ्, प्राक् ७४)।

वोक्क सक [उद् + नद्] अभिनय करना। वोक्कइ (प्रा ७४)।

वोक्कत वि [व्युत्क्रान्त] १ विपरीत क्रम से स्थित (हे १, ११६)। २ अतिक्रान्त, 'पञ्जवनयवोक्कंत त वत्थु दव्वट्टिअस्स वयणिएज्ज' (सम्म ८)। देखो वुक्कत।

वोक्कस सक [व्यप + कृप्] हास प्राप्त करना, कमी करना। कवक्क वोक्कसिज्जमाण (भग ५, ६—पत्र २२८)।

वोक्कस देखो वोक्कम (सूअ १, ६, २)।

वोक्कस देखो वुक्कस = व्युत् + कृप्। वोक्कसाहि (जाना २, ३, १, १६)।

वोक्का स्त्री [दे] वाद्य-विशेष, 'डक्कावोक्काण एवो वियभिओ रायपगणए' (सुपा २४२)। देखो वुक्का।

वोक्का स्त्री [व्याहृति] पुकार (उप ७६८ टी)।

वोक्कार देखो वोक्कार (सुर १, २४६)।

वोक्ख देखो वोक्क = उद् + नद्। वोक्खइ (घात्वा १५४)।

वोक्खदग्ग पु [अनङ्गन्ध] आक्रमण (महा)।

वोक्खारिय वि [दे] विभूषित, 'पवरदेवंगवत्थवोक्खारियकणयखम' (स २३६)।

वोगड वि [व्याकृत] १ कहा हुआ, प्रतिपादित (सूअ २, ७, ३८, भग, कस)। २ परिष्कृत (आचानि २६२)।

वोगडा स्त्री [व्याकृता] प्रकट अर्थ वाली भाषा (पण ११—पत्र ३७४)।

वोगसिअ वि [व्युत्क्रान्त] निष्कासित, बाहर निकाला हुआ (तंदु २)।

वोच } सक [वद्] बोलना, कहना। वोचइ, वोच्च } वोच्चइ (घात्वा १५४)।

वोच्चत्थ वि [व्यत्यस्त] विपरीत, उल्टा, 'हियनिस्सेस (यस) बुद्धिवोच्चत्थे' (उत्त ८, ५, सुख ८, ५, विसे ८५३)।

वोच्चत्थ न [दे] विपरीत रत (दे ७, ५८)।

वोच्छं देखो वय = वच्।

वोच्छिद सक [व्युत्, व्यव + छिद्] १ भांगना, तोड़ना, खरिडत करना। २ विनाश करना। ३ परित्याग करना। वोच्छिदइ (उत्त २६, २)। भवि वोच्छिदिहिंति (पि ५३२)। कर्म. वुाच्छिज्ज, वोच्छिज्जइ, वोच्छिज्जए (कम्म २, ७, पि ५४६, काल)। भवि. वोच्छिज्जिहिंति (पि ५४६)। वक्क. वोच्छिज्जत, वोच्छिज्जंमाण (मे १५, ६२, ठा ६—पत्र ३५६)। कवक्क वोच्छिज्जत, वोच्छिज्जमाण (मे ८, ५, ठा ३, १—पत्र ११६)।

वोच्छिण देखो वोच्छिन्न (विपा १, २—पत्र २८)।

वोच्छित्ति स्त्री [व्यवच्छित्ति] विनाश, 'समारवोच्छित्ति' (विमे १-३३)। °णय पु [°नय] पर्याय-नय (एदि)।

वोच्छिन्न देखो वुच्छिन्न (भग, कप्प; सुर ४, ६६)।

वोच्छेअ } पु [व्युच्छेद, व्यवच्छेद]
वोच्छेद } १ उच्छेद, विनाश, 'ससारवोच्छेयकरे' (साया १, १—पत्र ६०, घमसं २२८)। २ अभाव, व्यावृत्ति (कम्म ६, २३)। ३ प्रतिवन्ध, रूकावट, निरोध (उवा, पचा १, १०)। ४ विभाग (गउड ७४०)।

वोच्छेयण न [व्युच्छेदन] १ विनाश (वेइय ५२४, पिड ६६६)। २ परित्याग (ठा ६ टी—पत्र ३६०)।

वोज्ज देखो वुज्ज। वोज्जइ (हे ४, १६८ टी)। वोज्ज सक [वीजय्] हवा करना। वोज्जइ (हे ४, ५, पङ्)। वक्क वोज्जत (कुमा)।

वोज्जिर वि [त्रसित्] डरनेवाला (कुमा)।

वोज्जम देखो वह = वह्। भवि 'तेण कालेण तेण समएण गगासिधुओ महानदीओ रहपहवित्थराओ अक्खसोयप्पमाणमेत्त जण वोज्जिहिति' (भग ७, ६—पत्र ३०७)। कृ. 'नासानोसासवायवोज्जं असुय' (साया १, १, १—पत्र २५, राय १०२, प्राप)।

वोज्जम } पु [दे] वोक्क, भार, 'असि-
वोज्जमल्ल } वोज्जम फलयवोज्जमल्लं च' (दे ७, ८०)।

वोज्जमर वि [दे] १ अतीव। २ भीत, त्रस्त (दे ७, ६६)।

वोट्टि वि [दे] सक्त, लीन (पङ्)।

वोट्टि वि [दे] १ दुष्ट। छिन्न-वर्ण, जिसका कान कट गया हो वह (गा ५४६)। देखो वोट्टि।

वोट्टि स्त्री [दे] १ तरुणी, युवति। २ कुमारी, 'मिक्खंतु वोट्टिओ' (गा ८६२)। देखो वोट्टिह।

वोट्टि वि [दे] मूर्ख, बेवकूफ (उव)।

वोट्टि वि [ऊढ] वहन किया हुआ (घात्वा १५४)।

वोट्टि वि [द] देखो वोट्टि (गा ५५० म)।

वोट्टि देखो वह = वह्।

वोट्टि वि [वोट्टि] वहन-कर्ता (महा)।

वोट्टि देखो वह = वह्।

वोट्टि म [उड्डवा] वहन कर (पि ५८६)।

वोत्तव्य देखो वय = वच्।

वोत्तुआण म [उक्त्वा] कह कर (पङ्—पु १५३)।

वोत्तु } देखो वय = वच्।
वोत्तूण }

वोदाण न [व्यवदान] १ कर्म-निर्णय, कर्मों का विनाश (ठा ३, ३—पत्र १५६, उत्त २६, १)। २ शुद्धि, विशेष रूप से कर्म-विशोधन (पचा १५, ४ उत्त २६, १, भग)। ३ तप, तपश्चर्या (सूअ १, १४, १७)। ४ वनस्पति-विशेष (पण १—पत्र ३४)।

वोट्टि वि [दे] तरुण युवा (दे ७, ८०), 'वोट्टिहद्रम्मि पडिआ' (हे २, ८०)। स्त्री. °ही, 'सिक्खंतुवोट्टिओ' (हे २, ८०)।

वोभीसण वि [दे] बराक, दीन, गरीब (दे ७, ८२)।

वोम न [व्योमन] आकाश, गगन (पाम्प, विसे ६५६)। °विन्दु पु [°विन्दु] एक राजा का नाम (पउम ७, ५३)।

वोमज्ज पु [दे] अनुचित वेप (दे ७, ८०)।

वोमज्जिअ न [दे] अनुचित वेप का ग्रहण (दे ७, ८० टी)।

वोमिल पु [व्योमिल] एक जैन मुनि (कप्प)।

वोमिला स्त्री [व्योमिला] एक जैन मुनि-शाखा (कप्प)।

वीसाम पुं [विश्राम] १ विराम, उपरम । २ प्रवृत्त व्यापार वा श्रवसान, चालू क्रिया का श्रत (हे १, ४३, से २, ३१, महा) ।

वीसामण देखो विस्सामण (कुप्र ३१०) ।

वीसामणा देखो विस्सामणा (कुप्र ३१०) ।

वीसाय देखो विसाय = वि + स्वादय् । क. विसायणिज्ज (परण १७—पत्र ५२२) ।

वीसार देखो विस्सार = वि + स्मृ । वीसारोह (धम्मवि ५३१) ।

विसारिअ वि [विस्मारित] भुलवाया हुआ (कुमा) ।

वीसाल सक [मिश्रय्] मिलाना, मिला-वट करना । वीसालइ (हे ४, २८) ।

वीसालिअ वि [मिश्रित] मिलाया हुआ (कुमा) ।

वीसार्ये (अप) देखो वीसाम (कुमा) ।

वीसास देखो विस्सास (प्राप्र, कुमा) ।

वीसिया स्त्री [विशिका] वीस संख्यावाला (वव १) ।

वीसु न [दे] युक्त, पृथग्, जुदा (दे ७, ७३) ।

वीसु अ [विष्वक्] १ समन्तात्, सब ओर से । २ समस्तपन, सामस्त्य (हे १, २४, ४३, ५२, पड्, कुमा, दे ७, ७३ टी) ।

वीसुभ देखो वीसभ = वि + श्रम्भ् । वीसु-भेज्जा (ठा ५, २—पत्र ३०८, कस) ।

वीसुभ अक [दे] पृथग् होना, जुदा होना । वीसुभेज्जा (ठा ५, २—पत्र ३०८, कस) ।

वीसुभण न [दे] पृथग्भाव, अलग होना (ठा ५, २ टी—पत्र ३१०) ।

वीसुभण न [विश्रम्भण] विश्वास (ठा ५, २ टी—पत्र ३१०) ।

वीसुय देखो विस्सुअ (परह १, ४—पत्र ६८) ।

वीसेडि } देखो वीसेडि (भास १०, एवि
वीसेणि } १८४) ।

वीहि पुं [वीहि] घान, धान्य-विशेष, 'सालीण वा वीहीण वा कोह्वाण वा कंगूण वा' (सुप्र २, २, ११, कस) ।

वीहि } स्त्री [वीथि, °का, °श्री] १ मार्ग,
वीहिया } रास्ता (आचा, सूअ १, २, १,
वीही } २१, प्रयो १००, गउड ११८८) ।
२ श्रेणी, पक्ति (स १४) । ३ क्षेत्र-भाग (ठा ६—पत्र ४६८) । ४ बाजार (उप २८, महा) ।

वुअ वि [दे] १ बुना हुआ । २ बुनवाया हुआ, 'जन्न तयट्ठा कीय नेव वुय ज न गहिमन्तेसि' (पव १२५) । देखो वूय ।

वुअ } वि [वृत्] १ प्रार्थित । २ प्रार्थना
वुइय } आदि से नियुक्त, 'वुओ' (सलि ४) ।
३ वेष्टित, 'कुक्कम्मवुइया' (सुपा ६३) ।

वुइय वि [उक्त] कथित (उत्त १८, २६) ।

वुज (?) सक [उद् + नमय्] ऊँचा करना । वुजइ (घात्वा १५४) ।

वुताकी स्त्री [वृन्ताकी] वैगन का गाछ (दे ७, ६३) ।

वुद देखो वद = वृन्द (गा ५५६, हे १, १३१) ।

वुदारय देखो वंदारय (दे १, १३२, कुमा, पड्) ।

वुदावण देखो विंदावण (हे १, १३१, प्राप्र, सलि ४, कुमा) ।

वुंद्र देखो वंद्र (हे १, ५३, कुमा १, ३८) ।

वुक्क देखो वुक्क = दे (सण) ।

वुक्कत वि [व्युत्क्रान्त] १ अतिक्रान्त, व्यतीत, गुजरा हुआ, 'वोलीए वुक्कतं अडच्छिअ वोलिअं अडक्कत' (प्राप्र), 'वुक्कतो बहुकालो तुह पयसेव कुणतस्स' (सुपा ५६१) । २ विष्वस्त, विनष्ट (राज) । ३ निष्क्रान्त, बाहर निकला हुआ (निच् १६) । देखो वोक्कत ।

वुक्कति स्त्री [व्युत्क्रान्ति] उत्पत्ति (राज) ।

वुक्कम पु [व्युत्क्रम] १ वृद्धि, वढाव (सूअ २, ३, १) । २ उत्पत्ति (सूअ २, ३, १, २, ३, १७) ।

वुक्कस सक [व्युत् + कृप्] पीछे खीचना, वापस लोटाना । वुक्काहि (आचा २, ३, १, ६) ।

वुक्कार देखो वुक्कार (सण) ।

वुक्कार सक [दे. वृद्धारय्] गजंन करना । वुक्कारेंति (राय १०१) ।

वुक्कारिय न [दे वृद्धारित] गजंन (स ५४८) ।

वुग्गाह पु [व्युद्ग्रह] १ कलह, झगडा, विग्रह, लडाई (ठा ५, १—पत्र ३००, वव १, पव २६८) । २ घाट, डाका (उप पु २४५) । ३ बहकाव (सवोष ५२) । ४ मिथ्याभिनिवेश, कदाग्रह (राज) ।

वुग्गाहअ वि [व्युद्ग्रहाद्] कलह-कारक, 'नय वुग्गाहअ कह कहिजा' (दस १०, १०) ।

वुग्गाहिअ वि [व्युद्ग्रहिक] कलह-सबन्धी (दस १०, १०) ।

वुग्गाह सक [व्युद् + ग्राहय्] बहकाना, भ्रान्त-चित्त करना । वुग्गाहेमो (महा) ।

वह्. वुग्गाहेमाण (णाय १, १२—पत्र १७४, औप) ।

वुग्गाहणा स्त्री [व्युद्ग्राहणा] बहकाव (शोषभा २५) ।

वुग्गाहिअ वि [व्युद्ग्राहित] बहकाया हुआ, भ्रान्तचित्त किया हुआ (कस, चेइय ११७, सिरि १०८१) ।

वुच्च° देखो वय = वच् ।

वुच्चमाण वि [उच्यमान] जो कहा जाता हो वह (सूअ १, ६, ३१, भग, उप ५३० टी) ।

वुच्चा अ [उक्त्वा] कह कर (सूअ २, २, ८१, पि ५८७) ।

वुच्छ देखो वच्छ = वृक्ष (नाट—मृच्छ १५४) ।

वुच्छ° देखो वोच्छ° (कम्म १, १) ।

वुच्छ° देखो वोच्छिद ।

वुच्छिण देखो वुच्छिन्न (राज) ।

वुच्छित्ति देखो वोच्छित्ति (विसे २४०५) ।

वुच्छिन्न वि [व्युच्छिन्न, व्यवच्छिन्न] १ अपगत, हटा हुआ । २ विनष्ट (उव) । ३ न लगातार चौदह दिनो का उपवास (सवोष ५८) ।

वुच्छेअ देखो वोच्छेअ (पव २७३, कम्म २, २२, सुपा २५४) ।

वुच्छेयण देखो वोच्छेयण (ठा ६—पत्र ३५८) ।

वुज्ज अक [त्रस्] डरना । वुज्जइ (प्राप्र) । देखो वोज्ज ।

वुज्जण न [दे] त्यगन, आच्छादन, ढकना (धम्मसं १०२१ टी, ११०२) ।

श

शिआल (मा) पुं [श्याल] बहू का भाई, | श्रिट (मा) देको चिट्टु—स्या । श्रिटिदि
साला (प्राकृ १०२, मृच्छ २०४) । | (घात्वा १५४, प्राकृ १०३) ।

॥ इम सिरिपाइअसदमहणवमि शमाराइसदसंकलणो
छत्तीसदमो तरगो समत्तो ॥

स

स पु [म] व्यञ्जन वर्ण-विशेष, इसका उच्चारण-स्थान दाँत होने से यह दन्त्य कहा जाता है (प्राप्र) । °अण, °गण पु [°गण] पिंगल-प्रसिद्ध एक गण, जिसमें प्रथम के दो ह्रस्व और तीसरा गुरु अक्षर होता है (पिंग) । गार° पुं [°कार] 'स' अक्षर (दर्शन १०, २) ।

स देखो सं = सम् (पङ्, पिंग) ।

स पु [°ध्वन्] श्वान, कुत्ता (हे १, ५२, ३, ५६, पङ्) । °पाग पु [°पाक] चण्डाल (उव) । °मुहि पुत्री [°मुखि] कुत्ते की तरह आचरण, कुत्ते की तरह भरण—भूकना (पाया १, ६—पत्र १६०) । °वच पु [°पच] चाण्डाल (दे १, ६४) । °वाग, °वाय देखो °पाग (वै ५६, पात्र) ।

स अ [स्वर] सुरालय, स्वर्ग (विसे १८८३) ।

स वि [सत्] १ श्रेष्ठ, उत्तम (उवा, कुमा, कुप्र १४१) । २ विद्यमान, 'नो य उपज्जए अ-स' (सूप्र १, १, १, १६) । °उरिस पुं [°पुरुष] श्रेष्ठ पुरुष, सज्जन (गडड) । °कय वि [°कृत] संमानित (पण्ह १, ४—पत्र ६८), देखो °क्किअ । °कह वि [°कथ] सत्य वक्ता (स ३२) । °क्किअ न [°कृत] सत्कार, संमान (उत्त १५, ५), देखो °कय । °ग्गाइ स्त्री [°गति] उत्तम गति—१ स्वर्ग ।

२ मुक्ति, मोक्ष (भवि, राज) । °जण पुं [°जन] भला आदमी, मत्पुरुष (उव, हे १, ११, प्रासू ७) । °त्तम वि [°त्तम] अतिशय साधु, सज्जनो मे अतिश्रेष्ठ (सुपा ६५५, आ १४, सार्ध ३) । °स्थाम न [°स्थामन्] प्रशस्त बल (गडड) । °धम्मिअ वि [°धार्मिक] श्रेष्ठ धार्मिक (आ १२) । °ज्ञान न [°ज्ञान] उत्तम ज्ञान (आ २७) । °प्पभ वि [°प्रभ] सुन्दर प्रभा वाला (राय) । °प्पुरिस पुं [°पुरुष] १ सज्जन, भला आदमी (अभि २०१, प्रासू १२) । २ किपुरुष-निकाय के दक्षिण दिशा का इन्द्र (ठा २, ३—पत्र ८५) । ३ श्रीकृष्ण (कुप्र ४८) । °फल वि [°फल] श्रेष्ठ फलवाला (अचु ३१) । °वभाव पु [°भाव] १ सम्भव, उत्पत्ति (उप ७२६) । २ सत्त्व, अस्तित्व (सम्म ३७, ३८, ३९) । ३ सुन्दर भाव, चित्त का अच्छा अभिप्राय, 'सव्भावो पुण उज्जुजणस्स कोडि विसेसेइ' (प्रासू ६, १७२, उव, हे २, १६७) । ४ भावार्थ, तात्पर्य (सुर ३, १०१) । ५ विद्यमान पदार्थ (अणु) । °वभावदायणा स्त्री [°भावदर्शन] आलोचना, प्रायश्चित्त के लिए निज दोष का गुर्वादि के समक्ष प्रकटीकरण (भोध ७६१) । °वभाविअ वि [°भावित] सद्भाव-युक्त (स २०१, ६६८) । °वभूअ वि

[°भूत] १ सत्य, वास्तविक, सच्चा, 'सव्भू-एहि भावेहि' (उवा) । २ विद्यमान (पचा ४, २४) । °याचार पुं [°आचार] प्रशस्त आचरण (रयण १५) । °रूप वि [°रूप] प्रशस्त रूपवाला (पठम ८, ६) । °ल्ला पु [°लग] प्रशस्त सवरण, इन्द्रिय-सयम (सूप्र २, २, ५७) । °वाय पुं [°वाद] प्रशस्त वाद (सूप्र २, ७, ५) । °वाया स्त्री [°वाच्] प्रशस्त वाणी (सूप्र २, ७, ५) ।

स पुं [स्व] १ आत्मा, खुद (उवा, कुमा, सुर २, २०६) । २ जाति, नात (हे २, ११४, पङ्) । ३ वि. आत्मीय, स्वीय, निजी (उवा, भोधमा ६, कुमा, सुर ४, ६०) । ४ न घन, द्रव्य (पचा ८, ६, आचा २, १, १, ११) । ५ कर्म (आचा २, १६, ६) । °कडविभ, °गडविभ वि [°कृतभिद्] निज के किए हुए कर्मों का विनाशक (पि १६६, आचा १, ३, ४, १, ४) । °जण पुं [°जन] १ जाति, सगा । २ आत्मीय लोग (स्वप्न ६७, पङ्) । °तत वि [°तन्त्र] १ स्वाधीन, स्व-वश (विसे २११२, दे ३, ४३, अचु १) । २ न. स्वकीय सिद्धान्त (निच् ११) । °त्थ वि [°स्थ] १ तंदुरुस्त, स्वभाव-स्थित । २ सुख से अवस्थित (पाप्र, पठम २६, ३१, स्वप्न १०६, सुर १०, १०४, सुपा २७६, महा सण) । °पक्ख पुं [°पक्ष] १ सार्वभौमिक,

°रय वि [°रत] कामो (मे १, २७) ।
 °रहस वि [°रभस] वेग-युक्त, उतावला
 (गा ३५४, सुपा ६३०, कप्पु) । °राग वि
 [°राग] राग-सहित (ठा २, १—पत्र ५८) ।
 °रागसज्जत, °रागसज्जय वि [°रागसयत्त]
 वह साधु जिसका राग क्षीण न हुआ हो
 (परण १७—पत्र ४६४, उवा) । °रूच
 वि [°रूप] समान रूपवाला (पउम ८,
 ६) । °लूण वि [°लवण] लावण्य-युक्त
 (सुपा २६३) । °लोक वि [°लोक] समान,
 सह्य (सट्ठि २१ टी) । °लोण देखो °लूण
 (गा ३१६, हे ४, ४४४, कुमा) । लो.
 °लोणी (हे ४, ४२०) । °वक्ख देखो °पक्ख
 (गठ, भवि) । °वण वि [°व्रण] घाववाला,
 व्रण-युक्त (सुपा २८१) । °वय वि
 [°वयस्] समान उम्रवाला (दे ८, २२) ।
 °वय वि [°व्रत] व्रती (मुपा ४५१) । °वाय
 वि [°पाद] सवा (स ४४१) । °वाय
 वि [°वाद] वाद-सहित (सूम २, ७, ५) ।
 °वास वि [°वास] समान वामवाला, एक
 देश का रहनेवाला (प्रासू ७६) । °विज्ज वि
 [°विद्य] विद्यावान्, विद्वान् (उप ४ २१५) ।
 °व्वण देखो °वण (गठ, आ १२) ।
 °व्वयेक्ख वि [°व्यपेक्ष] हमरे की परवाह
 रखनेवाला, सापेक्ष (धम्मस ११६७) । °व्वाव
 वि [°व्याप] व्याप्ति-युक्त, व्यापक (भग
 १, ६—पत्र ७७) । °व्विवर वि [°विवर]
 विवरण-युक्त, सविस्तर (सुपा ३६४) ।
 °संक वि [°शङ्क] शंका-युक्त (दे २, १०६,
 सुर १६, ५५, कुप्र ४४५, गठ) । °संकिअ
 वि [°शङ्कित] वही (सुर ८, ४०) । °सत्ता
 लो [°सत्त्वा] मगर्मा, गर्मिणी लो (उत्त
 २१, ३) । °सिरिय, °सिरीय वि [°श्रीक]
 श्री-युक्त, शोभा-युक्त (पि ६८, णाया १, १,
 राय) । °मिह वि [°स्पृह] स्पृहावाला
 (कुमा) । °सिह वि [°शिख] शिखा-युक्त
 (राज) । °सूग वि [°शूक] दयालु (ज्व) ।
 °सेस वि [°शेष] १ शेष, बाकी रहा
 हुआ (दे ८, ५६, गठ) । २ शेषनाग-महित
 (गठ १५) । °सोग, सोगिह वि [°शोक]
 दिलगिर, शोक-युक्त (पउम ६३, ४; सुर ६,
 १२४) । °स्सिरिअ, °स्सिरीअ देखो

°सिरिय (पि ६८, अग्नि १५६, भग, सम
 १३७, णाया १, ६—पत्र १५७) ।
 सअ सक [स्वद] १ प्रीति करना । २ चखना,
 स्वाद लेना । समइ (प्राकृ ७५, घात्वा
 १५४) ।
 सअ न [सदस्] सभा (पह) ।
 सअअ न [दे] १ शिला, पत्थर का तह्ता ।
 २ वि धूँगा (दे ८, ४६) ।
 सअक्खगत्त पु [दे] कितव, जुगारी (दे ८,
 २१) ।
 सअज्जिअ पुंल्लो [दे] प्रातिवेशिक,
 सअज्जिअ } पड़ोसी (गा ३३५) । लो. °आ
 (गा ३६, ३६ अ), 'समज्जिअ संठवतीए'
 (गा ३६, पिड ३४२) । देखो सइज्जिअ ।
 सअडिआ देखो सगडिआ (पि २०७) ।
 सअठ पुं [दे] लम्बा केश (दे ८, ११) ।
 सअठ पु [शकट] १ दैत्य-विशेष (प्राप्र,
 संसि ७, हे १, १६६) । २ पुंन. यान-विशेष,
 गाड़ी (हे १, १७७, १८०) । °रि पुं
 [°रि] नरसिंह, श्रीकृष्ण (कुमा) । देखो
 सगड ।
 सअर देखो स-अर = स-कर, स-गर ।
 सअर देखो सगर (मे २, २६) ।
 सआ अ [सदा] १ हमेशा, निरन्तर (प्राप्र,
 हे १, ७२, कुमा, प्रासू ४६) । °चार पुं
 [°चार] निरन्तर गति (रयण १५) ।
 सआ लो [सज्ज] माला (पड) ।
 सइ देखो सआ = मदा (पाम्र, हे १, ७२,
 कुमा) ।
 सइ अ [सकृत्] एक बार, एक दफा (हे
 १, १२८, सम ३५, सुर ८, २४४) ।
 सइ लो [स्मृति] स्मरण, चिन्तन, याद (आ
 १६) । °काल पु [°काल] भिक्षा मिलने का
 समय (दत्त ५, २, ६) ।
 सइ देखो स = स्व, 'सइकारियजिणपडिमाए'
 (सुपा ५१०, भवि) ।
 सइ देखो सय = शत, 'अस्सोयव्वं सोष्वावि
 फुट्टए जं न सइखंड' (सुर १४, २) । °कोडि
 लो [°कोटि] एक सौ करोड़, एक अरब—
 अरब (पह) ।
 सइ देखो सइ = स्वयम् (काल, हे ४, ३६५,
 ४३०) ।

सइ° देखो सइ = सती (सुपा ३०१) ।
 सइअ वि [शक्ति] सौ का परिमाणवाला
 (णाया १, १—पत्र ३७) । देखो सइग ।
 सइअ वि [गयित] सुप्त, सोया हुआ (दे
 ७, २८, गा २५४; पउम १०१, ६०) ।
 सइएल्लय देखो स = स्व; 'ताव य भागमो
 परिव्वायमो जक्खदेउल्लामो सइएल्लए दालिह-
 पुरिये घेत्तूण' (महा) ।
 सइ° देखो सइ = सकृत् (भावा) ।
 सइ देखो सयं = स्वयम् (ठा २, ३—पत्र
 ६३, हे ४, ३३६, ४०२, भवि) ।
 सइग वि [शक्ति] सौ (रुपया आदि) की
 कीमत का (दसनि ३, १३) ।
 सइज्ज } पुंल्लो [दे] प्रातिवेशिक, पड़ोसी
 सइज्जिअ } (दे ८, १०) । लो. °आ (मुपा
 २७८, पिड ३४२ टी, वज्रा ६४) ।
 सइज्जिअ न [दे] प्रातिवेश्य, पड़ोसिपन
 (दे ८, १० टी) ।
 सइण्ण न [सैन्य] सेना, लश्कर (पह) ।
 सइत्तए देखो सय = शी ।
 सइदंसण वि [दे. स्मृतिदर्शन] मनो-दृष्ट,
 चित्त में अवलोकित, विचार में प्रतिभासित
 (दे ८, १६; पाम्र) ।
 सइदिट्ठ वि [दे. स्मृतिदृष्ट] ऊपर देखो (दे
 ८, १६) ।
 सइन्न देखो सइण्ण (हे १, १५१, कुमा) ।
 सइम वि [शततम] सौवाँ, १०० वाँ (णाया
 १, १६—पत्र २१४) ।
 सइर न [स्वैर] १ स्वेच्छा, स्वच्छन्दता (हे
 १, १५१, प्राप्र, णाया १, १८—पत्र
 २३६) । २ वि. मन्द, अलस (पाम्र) । ३
 स्वैरी, स्वच्छन्दी (पाम्र, प्राप्र) ।
 सइरवसह पुं [दे. स्वैरवृषभ] स्वच्छन्दी
 सौद, धर्म के लिए छोड़ा जाता बैल (दे २,
 २५, ८, २१) ।
 सइरि वि [स्वैरिन्] स्वच्छन्दी, स्वेच्छाचारी
 (गच्छ १, ३८) ।
 सइरिणी लो [स्वैरिणी] व्यभिचारिणी लो,
 कुलटा (पउम ५, १०५) ।
 सइल देखो सेल (हे ४, ३२६) ।
 सइलंभ वि [दे. स्मृतिलम्भ] देखो सइ-
 दंसण (दे ८, १६, पाम्र) ।

वेकुठ पुं [वैकुण्ठ] १ विष्णु, नारायण । २ इन्द्र, देवाधीश । ३ गरुड पक्षी । ४ अर्जक वृक्ष, सफेद बरंगी का गाछ । ५ लोक-विशेष, विष्णु का घाम (हे १, १६६) । ६ पुन मथुरा का एक वैष्णव तीर्थ (ती ७) ।

वेग देखो वेअ = वेग (उवा, कप्प, कुमा) ।
वेई छी [वेयती] एक नदी का नाम (ती १५) ।
वेत वि [वेन्] वेगवाला (सुर २, १६७) ।

वेगच्छ देखो वेअच्छ (उवा) ।

वेगच्छिया } छी [वैकक्षिका, °क्षा] कक्षा
वेगच्छी } के पास पहना जाता वस्त्र,
उत्तरासग (पव ६२), 'कयतिलओ वेगच्छि
आणाववहारपणह्व' (सवोव ६) ।

वेगड छोन [दे] पोत-विशेष, एक तरह का जहाज, 'चलसट्टी वेगडाण' (सिरि ३८२) ।

वेगर पुं [दे] द्राक्षा, लोग आदि से मिश्रित चीनी आदि (उर ५, ६) ।

वेगुन्न देखो वइगुण (धर्मसं ८८४, सुपा २६०) ।

वेग देखो विअग्ग (प्राक् ३०) ।

वेग देखो वेग (भवि) ।

वेगल वि [दे] दूर-वर्ती, गुजराती में 'वेगळु' (हे ४, ३७०) ।

वेचित्त देखो वइचित्त (भास ३०, अज्म ४६) ।

वेच्च देखो विच्च = वि + अच्। वेच्च (हे ४, ४१६) ।

वेच्छं देखो विअ = विद् ।

वेच्छा देखो वगच्छिया । °सुत्त न [°सूत्र] उपवीत की तरह पहनी जाती सांकली (भग ६, ३३ टी—४७७, राय) ।

वेजयत पुन [वैजयन्त] १ एक अनुत्तर देव-विमान (सम ५६, औप, अनु) । २-७ जवू-द्वीप, लवण समुद्र, घातकी खण्ड, कालोद समुद्र, पुष्करवर द्वीप तथा पुष्करोद समुद्र का दक्षिण द्वार (ठा ४, २—पत्र २२५, जीव ३, २—पत्र २६०, ठा ४ २—पत्र २२६, जीव ३, २—पत्र ३२७, ३२६, ३३१, ३४७) । ८-१३ पु जवूद्वीप, लवण समुद्र आदि के दक्षिण द्वारों के अधिष्ठाता देव (ठा

४, २—पत्र २२५, जीव ३, २—पत्र २६०, ठा ४, २—पत्र २२६, जीव ३, २—पत्र ३२७, ३२६, ३३१, ३४७) । १४ एक अनुत्तर देवविमान का निवासी देव (सम ५६) । १५ जवू-मन्दर के उत्तर रुचक पर्वत का एक शिखर, 'विजए य वि(?) वे जयते' (ठा ८—पत्र ४३६) । १६ वि प्रधान, श्रेष्ठ (सूत्र १, ६, २०) ।

वेजयती छी [वैजयन्ती] १ वज्रा, पताका (सम १३७, सूत्र १, ६, १०, सुर १, ७०, कुमा) । २ पष्ठ बलदेव की माता का नाम (सम १५२) । ३ अगारक आदि महाग्रहों की एक-एक अग्रमहिणी का नाम (ठा ४, १—पत्र २०४) । ४ पूर्व रुचक पर रहनेवाली एक दिक्कुमारी देवी (ठा ८—पत्र ४३६) । ५ विजय-विशेष की राजधानी (ठा २, ३—पत्र ८०) । ६ एक विद्यावर-नगरी (सुर ५, २०४) । ७ रामचन्द्रजी की एक सभा (पउम ८०, ३) । ८ भगवान् पद्मप्रभ की दीक्षा-शिविका (सम १५१) । ९ उत्तर अजनगिरि की दक्षिण दिशा में स्थित एक पुष्करिणी (ठा ४, २—पत्र २३०) । १० पक्ष की आठवीं रात्रि का नाम, 'विजया य विजयता (? वेजयती)' (सुज १०, १४) । ११ भगवान् कुन्धुनाथ की दीक्षा-शिविका (विचार १२६) ।
वेज वि [वेद्य] भोगने योग्य, अनुभव करने योग्य (संवोध ३३) ।

वेज पु [वेद्य] १ चिकित्सक, हकीम (गा २३७, उव) । २ वृक्ष-विशेष । ३ वि परिणत, विद्वान् (हे १, १४८, २, २४) । °सत्य न [°शास्त्र] चिकित्सा-शास्त्र (स १७) ।

वेज्जग } न [वेद्यक] १ चिकित्सा-शास्त्र (ओष
वेज्जय } ६२२ टी, स ७११) । २ वेद्य-सम्बन्धी क्रिया, वैद्य-कर्म (अणु २३४, कुप्र १८१) ।

वेज्जवि [वेध्य] बोधने योग्य (नाट—साहित्य १५८) ।

वेडण देखो वेडग (नाट—मालती ११६) ।

वेडणग पु [वेडनक] १ सिर पर बांधी जाती एक तरह की पगड़ी । २ कान का एक आभूषण (राज) ।

वेट्टया देखो विट्टा (सुर १६, १७५) ।

वेट्टि देखो विट्टि, 'रायवेट्टि व मन्नात' (उत २७, १३, प्राक् ५) ।

वेट्टिड (शौ) देखो वेट्टिअ (नाट—मृच्छ ६२) ।

वेड [दे] देखो वेड (दे ६, ६५, कुमा) ।

वेडइअ पुं [दे] वाणिज्य, व्यापारी (दे ७, ७८) ।

वेडवग देखो विडवग, 'जह वेडवगलिगे' (सवाव १२) ।

वेडम पु [वेतम] वृक्ष-विशेष, वेंत का गाछ (पात्र, मम १५२, कप्प) ।

वेडिअ पु [दे] मणिकार, जौहरी (दे ७, ७७) ।

वेडिक्कि वि [दे] सकट, सकरा, कमचौड़ा (दे ७, ७८) ।

वेडिस देखो वेडस (प्राप्र, हे १, ४६, २०७, कुमा, गा ७६०) ।

वेडुंवर } वि [दे] नृपादि कुल में उत्पन्न
वेडुवग } (आव० परि नि० गा० ७६
आव० दीपिका भा० २ पत्र, ७०, २) ।

वेडुज्ज } देखो वेरुलिअ (हे २, १३३,
वेडुरिअ } पात्र, नाट—मृच्छ १३६) ।

वेडुल वि [दे] गवित, अभिमानी (दे ७, ४१) ।

वेडु देखो वेड = वेण्ट । वेडुइ (प्राप्र) ।

वेडुय पु [वेष्टरु] छन्द-विशेष (अत्रि ६) ।

वेड सक [वेष्ट] लपेटना । वेडइ, वेडेइ (हे ४, २२१, उवा) । कर्म वेडिज्जइ (हे ४, २२१) । वक्र वेडत, वेडेमाण (पउम ४९, २१, णाया १, ६) । कवक वेडिज्ज-माण (सुपा ६४) । सक वेडित्ता, वेडेत्ता, वेडिउ, वेडेउ (पि ३०४, महा) । प्रयो. वेडावेइ (पि ३०४) ।

वेड पु [वेष्ट] १ छन्द-विशेष (सम १०६, अणु २३३, एदि २०६) । २ वेष्टन, लपेटन (गा ६६, २२१, से ६, १३) । ३ एक वस्तु-विषयक वाक्य-समूह, वर्णन-ग्रन्थ (णाया १, १६—पत्र २१८, १, १७—पत्र २२८, अनु) ।

वेड देखो पीड (गउड) ।

‘घन्नाएवि ते घन्ना

पुरिसा निम्मीमसत्तिसजुत्ता ।

जे विसमसकडेसुवि पडियावि

चयति एणे वम्मं ॥’

(रयण ७३) ।

सकडिय वि [संकाटित] सकीएँ किया हुआ (कुप्र ३६०) ।

सकडिल्ल वि [दे] निश्छिद्र, छिद्र-रहित (दे ८ १५, सुर ४ १४३) ।

सकडिह्य वि [संकापित] आकपित (राज) ।

सकण न [शङ्कन] शका सदेह (दस ६, ५६) ।

संकप्प पु [संरूप] १ अव्यवसाय, मन-परिणाम, विचार (उवा, कप्प, उप १०३५) ।

२ सगत आचार, सदाचार (उप १०३५) ।

३ अभिलाष, चाह (गउड) । ० जोणि पु [०योनि] कामदेव, कवर्ष (पाप्र) ।

सकम सक [सं + क्रम] १ प्रवेश करना ।

२ गति करना, जाना । सकमड, सकमंति (पिड १०८, सूअ २, ४, १०) । वकू.

सकममाण (सम ३६, सुज्ज २, १, रभा) ।

हेकू. सकमत्तए (कस) ।

सकम पुं [सक्रम] १ सेतू, पुल, जल पर से उतरने के लिए काष्ठ आदि से बंधा हुआ मार्ग (से ६, ६५, दस ५, १, ४, पणह १, १) । २ सचार, गमन, गति,

‘पाउल्लाइ सकमट्टाए’ (सूअ १, ४, २, १५, आवक २२३) । ३ जीव जिम कर्म-प्रकृति को बाधता हो उसी रूप से अन्य प्रकृति के

दल को प्रयत्न द्वारा परिणामाना, बँधी जाती कर्म-प्रकृति में अन्य कर्म-प्रकृति के दल को डाल कर उसे बँधी जाती कर्म-प्रकृति के रूप से परिणत करना (ठा ४, २—पत्र २२०) ।

सकमग वि [सक्रामक] सक्रमण-कर्ता (धर्मसं १३३०) ।

सकमण न [सक्रमण] १ प्रवेश, ‘नवर मुत्तूण घरं घरसकमण कय तेहि’ (सवोष १४) । २ संचार, गमन (प्रासू १०५) । ३ चारित्र, संयम (आन्ना) । ४ देखो संकम का तीसरा अर्थ (पंच ३, ४८) । ५ प्रतिविम्बन (गउड) ।

सकर पु [दे] रय्या, मुहल्ला (दे ८, ६) ।

संकर पु [शङ्कर] १ शिव, महादेव (पउम ५, १२२, कुमा, सम्मत्त ७६) । २ वि. सुख करनेवाला (पउम ५, १२२, दे १, १७७) ।

संकर पु [सकर] १ मिलावट, मिश्रण (पणह १, ५—पत्र ६२) । २ न्यायशास्त्र-प्रसिद्ध एक दोष (उवर १७३) । ३ शुभाशुम-रूप मिश्र भाव (सिरि ५०६) । ४ अशुचि-पुज, कचरे का ढेर (उत्त १२, ६) ।

सकरण न [सकरण] अच्छी कृति (सवोष ६) ।

संकरिसण पु [सकपेण] भारतवर्ष का भावी नववा बलदेव (मम १५४) ।

सकरी छी [शङ्करी] १ विद्या-विशेष (पउम ७, १४२, महा) । २ देवी-विशेष । ३ सुख करनेवाली (गउड) ।

सकल सक [स + कलय] सकलन करना, जोड़ना । सकलेइ (उव) ।

सकल पुन [शृङ्खल] १ साकल, निगड ।

२ लोहे का बना हुआ पाद-बन्धन, बेड़ी (विपा १, ६—पत्र ६६, धर्मवि १३६, सम्मत्त १६०, हे १, १८६) । ३ सिकड़ी, आभूषण-विशेष (सिरि ८११) ।

सकलण न [सकलन] मिश्रता, मिलावट (माल ८७) ।

संकला छी [शृङ्खल] देखो संकल = शृङ्खल (स १७१, सुगा २६१, प्राप) ।

संकलिअ वि [सकलित] १ एकत्र किया हुआ (उप पु ३४१, तट्ट २) । २ युक्त, ‘तत्थ य भमिओ तं पुण कायट्ठिअकालसखसकलिओ’ (सिक्खा १०) । ३ योजित, जोड़ा हुआ (सिरि १३४०) । ४ संगृहीत (उव) । ५ न. सकलन, कुल जोड़ (वव १) ।

सकलिआ छी [सकलिका] १ परपरा (पिड २३६) । २ संकलन । ३ सूत्रकृतांग सूत्र का पनरहवाँ अव्ययन (राज) ।

सकलिआ } छी [शृङ्खलिका, ०ली] साकल, सिकली } सिकड़ी, जंजीर, निगड (सूअ १, ५, २, २०, प्राप्ता) ।

सकहा छी [सकथा] सभापण, वार्तालाप (पउम ७, १५८, १०६, ६, मुर ३, १२६; उप पु ३७८, पिड १६४) ।

संका छी [शङ्का] १ सशय, सदेह (पिड) । २ भय, डर (कुमा) । ० लुअ वि [०वत्] शकावाला, शंका युक्त (गउड) ।

सकाम देखो संकम = स + क्रम । सकामइ (मुज्ज २, १, पंच ५, १४७) ।

सकाम सक [स + क्रमय] सक्रम करना, बँधी जाती कर्म प्रकृति में अन्य प्रकृति के कर्म-दलो को प्रसिप्त कर उस रूप में परिणत करना । संकामेति (भग) । भूका. सकामिसु, (भग) । भवि संकामेस्सति (भग) । कवकू सन्नामिज्जमाण (ठा ३, १—पत्र १२०) ।

सकामण न [सक्रमण] १ सक्रम-करण (भग) । २ प्रवेश कराना (कुप्र १४०) । ३ एक स्थान से दूसरे स्थान में ले जाना (पचा ७, २०) ।

सकामणा छी [सक्रमणा] सक्रमण, पैठ (पिड २८) ।

सकामणी छी [सक्रमणी] विद्या-विशेष, जिमसे एक से दूसरे में प्रवेश किया जा सके वह विद्या (णाय १, १६—पत्र २१३) ।

सकामिय वि [संक्रामित] एक स्थान से दूसरे स्थान में नीत (राज) ।

संकार देखो सक्कार = सस्कार (धर्मसं ३५४) ।

सकाम्य वि [सकाश] १ समान, तुल्य, सरीखा (पाप्र, णाय १, ५, उत्त ३४, ४, ५, ६, कप्प, पंच ३, ४०, धर्मवि १४६) । २ पुं. एक आवक का नाम (उप ४०३) ।

सकामिया छी [सकाशिका] एक जैन मुनि-शाखा (कप्प) ।

सकि वि [शङ्किन्] शंका करनेवाला (सूअ १, १, २, ६, गा ८७३, संवोष ३४, गउड) ।

सकिअ वि [शङ्कित] १ शकावाला, शंका-युक्त (भग, उवा) २ न सशय, सदेह (पिड ४६३, महा ६८) । ३ भय, डर (गा ३३३), ‘सकिअमवि नेव दविअस्स’ (आ १४) ।

संकिट्ट वि [सकृष्ट] विलिखित, जोता हुआ, खेती किया हुआ (श्रीप, णाय १, १ टी—पत्र १) ।

वेमय सक [भञ्ज] भाँगना, तोडना ।
वेमयइ (हे ४, १०६, पङ्.) ।

वेमाउअ } वि [वैमानिक] विमाता की
वेमाउग } सतान (सम्मत १७१, मोह
८८) ।

वेमाणि पखी [विमानिन] विमान-वासी
देवता एक उत्तम देव-जाति (दे २) । श्री
'णिणी (पण १७—पत्र ५००, पचा २,
१८) ।

वेमाणिअ पु [वैमानिक] एक उत्तम देव-
जाति, विमानवासी देवता (भग, श्रीप, पणह
१, ५—पत्र ६३, जो २४) ।

वेमाया श्री [विमात्रा] अनियत परिमाण
(भग १, १० टी) ।

वेम्मि कि [वच्चि] मैं कहता हूँ (चंड) ।

वेयड पु [वेतण्ड] हस्ती, हाथी (स ६३०,
७३५) । देखो वेड ।

वेयावच्च } न [वैयावृत्त्य, वैयापृत्त्य]
वेयावडिय } सेवा, शुश्रूषा (उव, कस, णाया
१, ५, श्रीप, ओषभा ३२१, आचा, णाया
१, १—पत्र ७५, धर्मसं ६६५, श्रु ५३) ।

वेर न [वैर] दुश्मनाई, शत्रुता (दे १, १५२,
अत १२, प्रासू १२३) ।

वेर न [द्वार] दरवाजा (पङ्.) ।

वेरगग न [वैराग्य] विरागता, उदासीनता
(उव, रयण ३०, सुपा १७३, प्रासू ११६) ।

वेरगिअ वि [वैराग्यिक] वैराग्य-युक्त,
विरागी (उव, स १३५) ।

वेरज्ज न [वैराज्य] १ वैरि-राज्य, विरुद्ध
राज्य (सुख २, ३५, कस) । २ जहाँ पर
राजा विद्यमान न हो वह राज्य । ३ जहाँ
पर प्रधान आदि राजा से विरक्त रहते हो
वह राज्य (कस, वृह १) ।

वेरत्तिय वि [वैरात्रिक] रात्रि के तृतीय पहर
का समय (उत्त २६, २०, ओष ६६२) ।

वेरमण न [विरमण] विराम, निवृत्ति (सम
१०, भग, उवा) ।

वेराड पु [वैराट] भारतीय देश-विशेष, अल-
वर तथा उनके चारों ओर का प्रदेश (भवि) ।

वेराय (अप) पुं [विराग] वैराग्य, उदासीनता
(भवि) ।

वेरि } देखो वइरि (गड, कुमा, पि
वेरिअ } ६१) ।

वेरिज्ज वि [दे] १ असहाय, एकाकी । २
न सहायता, मदद (दे ७, ७६) ।

वेरुलिअ पुंन [वेडूर्य] १ रत्न की एक जाति,
'सुचिरं पि अञ्छमाणो वेरुलिओ दादणीअ
उम्मीसो' (प्रासू ३२, पात्र), 'वेरुलिअ' (हे
२, १३३, कुमा) । २ विमानावास-विशेष
(देवेन्द्र १३२) । ३ शक्र आदि इन्द्रो का एक
आभाव्य विमान (देवेन्द्र २६३) । ४ महा-
हिमवत पर्वत का एक शिखर (ठा २, ३—
पत्र ७०, ठा ८—पत्र ४३६) । ५ रुचक
पर्वत का एक शिखर (ठा ८—पत्र ४३६) ।
६ वि, वैडूर्य रत्नवाला (जीव ३, ४, राय) ।
'मय वि [मय] वैडूर्य रत्नो का बना हुआ
(पि ७०) ।

वेरोयण देखो वइरोअण = वैरोचन (णाय
२, १—पत्र २४७) ।

वेल न [दे] दन्त-मांस, दाँत के मूल का मांस
(दे ७, ७४) ।

वेलधर पुं [वेलधर] एक देव-जाति, नाग-
राज-सिंशेप (सम ३३) । २ पर्वत-विशेष ।
३ न नगर-विशेष (पउम ५४, ३६) ।

वेलवर पु [वैलन्वर] वेलन्धर संबन्धी (पउम
५५, १७) ।

वेलव पुं [वेलम्ब] १ वायुकुमार नामक देवो
के दक्षिण दिशा का इन्द्र (ठा २, ३—पत्र
८५, इक) । २ पाताल-कलश का अधिष्ठाता
देव-विशेष (ठा ४, १—पत्र १६८, ४, २—
पत्र २२६) ।

वेलव पुं [दे. विडम्ब] १ विडम्बना (दे
७, ७५, गड) । २ वि पिडम्बना कारक
(पणह २, २—पत्र ११४) ।

वेलवग पु [विडम्बक] १ विडम्बक, मसखरा
(श्रीप, णाया १, १ टी—पत्र २, कप्प) ।
२ वि. विडम्बना करनेवाला (पुप्फ २२६) ।

वेलक्ख न [वेलक्ष्य] लज्जा, शरम (गड) ।

वेलणय न [दे. व्रीडनक] १ लज्जा, शरम
(दे ७, ६५ टी) २ पु साहित्य-प्रसिद्ध रम-
विशेष, लज्जा-जनक वस्तु के दर्शन आदि से
उत्पन्न होनेवाला एक रस (अणु १३५) ।

वेलव सक [उपा + लम्] १ उपालम्भ
देना, उलाहना देना । २ कपाना । ३ व्याकुल
करना । ४ ध्यावृत्त करना, हठाना । वेलवइ
(हे ४, १५६, पङ्.) । वक्क वेलवत (से २,
८) । कवक्क वेलविज्जत (से १०, ६८) ।
क वेलवगिअ (कुमा) ।

वेलव सक [वज्ज] १ ठगना २ पीडा
करना । वेलवइ (हे ४, ६३) । कर्म, वेल-
विज्जति (सुपा ४८२, गड) ।

वेलविअ वि [वज्जित] १ प्रतारित, ठगा
हुआ (पात्र, वज्जा १५२, विवे ७७, वै
२६) । २ पीडित, हैरान किया हुआ (खा
११) ।

वेलो श्री [दे] दन्त-मांस, दाँत के मूल का
मांस (दे ७, ७४) ।

वेलो श्री [वेलो] १ समय, अवसर, काल
(पात्र, कप्प) । २ ज्वार, समुद्र के पानी की
वृद्धि (पणह १, ३—पत्र ५५) । ३ समुद्र
का किनारा (से १, ६२; श्रीप, गड) । ४
मर्यादा (सुप्प १, ६, २६) । ५ वार, दफा
(पंचा १२, २६) । 'उल न [कुल] कन्दर,
जहाजों के ठहरने का स्थान (सुर १३, ३०,
उप ५६७ टी) । 'वासि पुं [वासिन्]
समुद्र-तट के समीप रहनेवाला वानप्रस्थ
(श्रीप) ।

वेलोइअ वि [दे] मृदु, कोमल । २ दीन,
गरीब (दे ७, ६६) ।

वेलोअ (अप) सक [वि + लम्बय्] देरी
करना, विलम्ब करना । वेलोवसि (पिंग) ।

वेलिह वि [वेलोवत्] वेलो-युक्त (कुमा) ।

वेली श्री [दे] १ लता-विशेष, निद्राकरी लता
(दे ७, ३४) । २ घर के चार कोणों में
रखा जाता छोटा स्तम्भ (पव १३३) ।

वेलु देखो वेणु (हे १, ४, २०३) ।

वेलु पुं [दे] १ चोर, तस्कर । २ मुसल (दे
७, ६४) ।

वेलुंक्क वि [दे] विरूप, खराब, कुत्सित (दे
७, ६३) ।

वेलुग पुं पुन [वेणुक] १ वेल का गाछ । २
वेलुय } वेल का फल (आचा २, १, ८,
१४) । ३ वश, वस, वेलुयाणि तणाणि
य' (पण १—पत्र ४३, पि २४३) । ४

विशेष (पिंग)। °धमग पु [°ध्मायक] वानप्रस्थ की एक जाति (राज)। °धर पु [°धर] श्रीकृष्ण, विष्णु (कुमा)। °पाल देखो °वाल (ठा ४, १—पत्र १६७)। °पुर न [°पुर] १ एक विद्याधर नगर (इक)। २ नगर-विशेष जो आजकल गुजरात में सखेश्वर के नाम से प्रसिद्ध है (राज)। °पुरी स्त्री [°पुरी] कुरुजगल देश की प्राचीन राजधानी, जो पीछे से अहिच्छत्रा के नाम से प्रसिद्ध हुई थी (सिरि ७८)। °माल पु [°माल] वृक्ष की एक जाति (जीव ३—पत्र १४५)। °वण न [°वन] एक उद्यान का नाम (उवा)। °वण्णाभ पु [°वर्णाभ] ज्योतिष्क महाग्रह-विशेष (सुज्ज २०)। °वन्न पु [°वर्ण] ज्योतिष्क महाग्रह-विशेष (ठा २, ३—पत्र ७८)। °वन्नाभ देखो °वण्णाभ (ठा २, ३—पत्र ७८)। °वर पु [°वर] १ एक द्वीप। २ एक समुद्र (दीव, इक)। °वरोभास पु [°वरावभास] १ एक द्वीप। २ एक समुद्र (दीव)। °वाल पु [°पाल] नाग-कुमार-देवों के धरुण और भूतानन्द नामक इन्द्रों के एक एक लोकपाल का नाम (इक)। °वाल्य पु [°पालक] १ जैनैतर दर्शन का अनुयायी एक व्यक्ति (भग ७, १०—पत्र ३२३)। एक आजीविक मत का एक उपासक (भग ८, ५—पत्र ३७०)। °ल्ला वि [°वत्] शखवाला (गाया १, ८—पत्र १३३)। °वई स्त्री [°वती] नगरी-विशेष (ती ५)। सख वि [सख्य] सख्यात, गिना हुआ, गिनती-वाला (कम्म ४, ३६, ४१)। सख न [साख्य] १ दर्शन-विशेष, कपिलमुनि-प्रणीत दर्शन (गाया १, ५—पत्र १०५, सुपा ५६६)। २ वि साख्य मत का अनुयायी (श्रौप, कुप्र २३)। संख पु [दे] मागध, स्तुति-पाठक (दे ८, २)। सखइम वि [सख्येय] जिसकी सख्या हो सके वह (विसे ६७०, अणु ६१ टी)। सखइ न [दे] कलह, झगडा (पिंड ३२४, ओघ १५७)। सखडि स्त्री [दे] १ विवाह आदि के उपलक्ष्य में नात-नातेदार आदि को दिया जाता भोज,

जेवनार (आचा २, १, २, ४, २, १, ३, १, २, ३, पिंड २२८, ओघ १२, ८८, भास ६२)। सखडि स्त्री [सस्कृति] ओदन-पाक (कप्प)। संखणग पु [गङ्गनक] छोटा शख (उत्त ३६, १२६, पण १—पत्र ४४, जीव १ टी—पत्र ३१)। सखद्रह पु [दे] गोदावरी हृद (दे ८, १४)। सखवइल पु [दे] कृपक की इच्छानुसार उठ कर खडा होनेवाला वेल (दे ८, १६)। सखम वि [सक्षम] समर्थ (उप ६८६ टी)। सखय पु [सक्षय] क्षय, विनाश (से ६, ४२)। सखय वि [सस्कृत] सस्कार-युक्त, 'एय सखयमाहु जीविय' (सूअ १, २, २, २१, १, २, ३, १०, पि ४६), 'असंखय जीविय मा पमायए' (उत्त ४, १)। सखल्य पु [दे] शम्भूक, शुक्ति के आकार-वाला जल-जन्तु विशेष (दे ८, १८)। सखला देखो सफला (गउड, प्रामा)। संखलि पुत्री [दे] कर्ण-भूषण विशेष, शख-पत्र का बना हुआ ताडक (दे ८, ७)। सखव सक [स + क्षपय] विनाश करना। सक्र. सखवियाण (उत्त २०, ५२)। संखविअ वि [सक्षपित] विनाशित (अचु ८)। सखा सक [स + ख्या] १ गिनती करना। २ जानना। सक्र. संखाय (सूअ १, २, २, २१)। कृ. संखिज्ज, सखेज्ज (उवा, जो ४१, उव, कप्प)। सखा अक [स + स्तयै] १ आवाज करना। २ सहत होना, सान्द्र होना, निविह बनना। संखाइ, संखाअइ (हे ४, १५, पड्)। सखा स्त्री [सख्या] १ प्रजा, बुद्धि (आचा १, ६, ४, १)। २ ज्ञान (सूअ १, १३, ८)। ३ निर्णय (अणु)। ४ गिनती, गणना (भग, अणु, कप्प, कुमा)। ५ व्यवस्था (सूअ २, ७, १०)। ईअ वि [तीत] असख्य (भग १, १ टी, जीव १ टी—पत्र १३, आ ४१)। °दत्तिय वि [°दत्तिक] उतनी ही शिक्षा

लेने का व्रतवाला सयमी, जितनी कि अमृत गिने हुए प्रक्षेपो में प्राप्त हो जाय (ठा २, ४—पत्र १००, ५, १—पत्र २६६, श्रौप)। सखाण न [सख्याण] १ गिनती, गणना, सख्या। २ गणित-शास्त्र (ठा ४, ४—पत्र २६३, भग, कप्प, श्रौप, पउम ८५, ६, जीवस १३५)। सखाय वि [सस्त्यान] १ सान्द्र, सघन, निविह (कुमा ६, ११)। २ आवाज करनेवाला। ३ सहत करनेवाला। ४ न. स्नेह। ५ निविह-पन। ६ सहति, सघात। ७ आलस्य। ८ प्रतिशब्द, प्रतिध्वनि (हे १, ७४, ४, १५)। सखाय देखो सखा = स + ख्या। संखाय वि [सखाय] संख्या-युक्त (सूअ १, १३, ८)। संखायण न [शाङ्खायन] गोत्र विशेष (सुज १०, १६, इक)। संखाल पु [दे] हरिण की एक जाति, सांबर मृग (दे ८, ६)। सखालग देखो संखालग = शङ्ख-वत्। सखावई देखो संखावई = शङ्खावती। संखाचिय वि [सख्यापित] जिसकी गिनती कराई गई हो वह (सुपा ३६२, स ४१६)। सखिग देखो सखिय = शाङ्खिक (स १७३, कुप्र १४६)। सखिज्ज देखो संखा = सं + ख्या। सखिज्जड वि [सख्येयतम] सख्यातवर्ग (अणु ६१)। सखित्त वि [सक्षिप्त] सक्षेप-युक्त, छोटा किया हुआ (उवा, द ३, जी ५१)। सखिय वि [शाङ्खिक] १ मगल के लिए चन्दन-नामित शख को हाथ में धारण करने-वाला। शख वजानेवाला (कप्प, श्रौप)। सखिय देखो संख = संख्य (स ४४१, पत्र २, ११, जीवस १४६)। संखिया स्त्री [शङ्खिका] छोटा शंख (जीव ३—पत्र १४६, जं २ टी—पत्र १०१, राय ४५)। संखुडु अक [रम्] झीडा करना, समोग करना। संखुडु (हे ४, १६८)।

वेसल्ला पुं [वृषल] शूद्र, अघम-जातीय मनुष्य (सूत्र २, २, ५४) ।

वेसवण पु [वैश्रवण] देखो वेसमण (हे १, १५२, चंड, देवेन्द्र २७०) ।

वेसवाडिय पुं [वेशवाटिक] एक जैन मुनि-गण (कप्प) ।

वेसवार पुं [वेसवार] घनिया आदि मसाला (कुप्र ६८) ।

वेसा देखो वेस्सा (कुमा, सुर ३, ११६, सुपा २३५) ।

वेसाणिय पु [वैषाणिक] १ एक अन्तर्द्वीप । २ अन्तर्द्वीप विशेष मे रहनेवाली मनुष्य-जाति (ठा ४, २—पत्र २२५) ।

वेसानर देखो वइसानर (सट्टि ६ टी) ।

वेसायण देखो वेसियायण (राज) ।

वेसालिअ वि [वैशालिक] १ समुद्र में उत्पन्न । २ विशालाख्य जाति में उत्पन्न । ३ विशाल, बड़ा, विस्तीर्ण, 'मच्छा वेसालिया चैव' (सूत्र १, १, ३, २) । ४ पुं. भगवान् ऋषभदेव (सूत्र १, २, ३, २२) । ५ भगवान् महावीर (सूत्र १, २, ३, २२, भग) ।

वेसाली स्त्री [वैशाली] एक नगरी का नाम (कप्प, ३३०) ।

वेसास देखो वीसास, 'को किर वेसासु वेसासो' (धमवि ६५) ।

वेसासिअ वि [वैश्वसिक, विश्वास्य] विश्वास-योग्य, विश्वसनीय, विश्वास-पात्र (ठा ५, ३—पत्र ३४२, विपा १, १—पत्र १५, कप्प, औप, तदु ३५) ।

वेसाह देखो वइसाह (पाभ, वव १) ।

वेसाही स्त्री [वैशाखी] १ वैशाख मास की पूर्णिमा । २ वैशाख मास की अमावस (इक) ।

वेसि वि [वैषिन्] द्वेष करनेवाला (पउम ८, १८७, सुर ६, ११५) ।

वेसिअ देखो वइसिअ (दे १, १५२) ।

वेसिअ पुं स्त्री [वैशिक] १ वैश्य, वणिक् (सूत्र १, ६, २) । २ न जैनतर शास्त्र-विशेष, काम-शास्त्र (अणु ३६, राज) ।

वेसिअ वि [वैपिक] वेप-प्राप्त, वेप-सबन्धी (सूत्र २, १, ५६, आचा २, १, ४, ३) ।

वेसिअ वि [व्येपित] १ विशेष रूप से अभिलषित । २ विविध प्रकार से अभिलषित (भग ७, १—पत्र २६३) ।

वेसिट्ट देखो वइसिट्ट (धर्मस २७१) ।

वेसिणी स्त्री [दे] वेश्या, गरिका (गा ४७४) ।

वेसिया देखो वेस्सा, 'कामामत्तो न मुणह गम्मागम्मापि वेसियाणुव्व' (भत्त ११३, ठा ४, ४—पत्र २७१) ।

वैसियायण पुं [वैश्यायन] एक बाल तापस (भग १५—पत्र ६६५, ६६६) ।

वेसी स्त्री [वैश्या] वैश्य जाति की स्त्री (सुख ३, ४) ।

वेसुम पुं [वेश्मन्] गृह, घर (प्राक्क २८) ।

वेस्स देखो वइस्स = वैश्य (सूत्र १, ६, २) ।

वेस्स देखो वेस = द्वेष्य (उत्त १३, १८) ।

वेस्स देखो वेस = वेप्य (राज) ।

वेस्सा स्त्री [वेइया] १ परयांगना, गरिका (विसे १०३०, गा १५६, ८६०) । २ औपवि-विशेष, पाठ का गाल (प्राक्क २६) ।

वेस्सासिअ देखो वेसासिअ (भग) ।

वेह सक [प्र + ईक्ष्] देखना, अवलोकन करना, 'जहा संगमकालसि पिट्ठतो भीर वेहइ' (सूत्र १, ३, ३, १) ।

वेह सक [व्यध्] वीधना, छेदना । वेहइ (पि ४८६) ।

वेह पु [वेध] १ वेधन, छेद (सम १२५, वज्जा १४२) । २ अनुवोध, अनुगम, मिश्रण । ३ द्यूत-विशेष, एक तरह का जुआ (सूत्र १, ६, १७) । ४ अनुशय, अत्यन्त द्वेष (पएह १, ३—पत्र ४२) ।

वेह पुं [वेधस्] विधि, विघाता (सुर ११, ५) ।

वेहण न [वेधन] वेधन, छेद करना (राय १४६, धर्मवि ७१) ।

वेहम्म देखो वइधम्म (उप १०३१ टी, धर्मस १८५ टी) ।

वेहल्ल पुं [विहल्ल] राजा श्रेणिक का एक पुत्र (अनु १, २, निर १, १) ।

वेहव सक [वञ्च्] ठगना । वेहवइ (हे ४, ६३, पड) ।

वेहव न [वैभव] विभूति, ऐश्वर्य (भवि) ।

वेहविअ पुं [दे] १ अनादर, तिरस्कार । २ वि. क्रोधी (दे ७, ६६) ।

वेहविअ वि [वञ्चत] प्रतारित (दे ७, ६६ टी) ।

वेहव न [वैधव्य] १ विधवापन, रैंडापा, रांडपन (गा ६३०, हे १, १४८, गउड, सुपा १३६) ।

वेहाणस देखो वेहायस (आचा २, १०, २, ठा २ ४—पत्र ६३, सम ३३, णाया १, १६—पत्र २०२, भग) ।

वेहाणसिय वि [वैहायसिक] फाँसी आदि मे लटक कर मरनेवाला (औप) ।

वेहायस वि [वैहायस] १ आकाश-सम्बन्धी, आकाश में होनेवाला । २ न. मरण-विशेष, फाँसी लगा कर मरना (पव १५७) । ३ पुं. राजा श्रेणिक का एक पुत्र (अनु) ।

वेहारिय वि [वैहारिक] विहार-सम्बन्धी, विहार-प्रवण (सुख २, ४५) ।

वेहास न [विहायस] १ आकाश, गगन (णाया १, ८—पत्र १३४) । अन्तराल, बीच भाग (सूत्र १, २, १, ८) ।

वेहास देखो वेहायस (पव १५७, अनु १) ।

वेहिम वि [वैधिक, वेध्य] तोड़ने योग्य, दो टुकड़े करने योग्य (दस ७, ३२) ।

वैउठ देखो वेकुठ (समु १५०) ।

वैभव देखो वेहव (त्रि १०३) ।

वोअस देखो वोक्स । कवक. वोयसिज्जमाण (भग) ।

वोइय वि [व्यपेत] वर्जित, रहित (भवि) ।

वोंट देखो विंट = वृत्त (हे १, १३६) ।

वोकिह वि [दे] गृह-शूर, घर में वीर बनने-वाला, झूठा शूर (दे ७, ८०) ।

वोकिहअ न [दे] रोमन्थ, चवी हुई चीज को पुन चवाना (दे ७, ८२) ।

वोक्क सक [वि + ज्ञपय] विज्ञप्ति करना । वोक्कइ (हे ४, ३८) । वक्क वोक्कत (कुमा) ।

संगहिअ वि [संग्रहिअ] संग्रहवाला, संग्रह-
नय को माननेवाला (विसे २८५२)।

संगहिअ वि [संगृहीत] १ जिमका संवय
किया गया हो वह (हे २, १६८)। २
स्वीकृत, स्वीकार किया हुआ (सण)। ३
पकड़ा हुआ, 'संग्रहिओ हत्थी' (कुप्र ८१)।
देखो संगिहीअ।

संगा सक [सं + गै] गान करना। कवक
संगिज्जमाण (उप ५६७ टी)।

संगा छी [दे] बला, घोड़े की लगाम (दे
८, २)।

संगाम सक [सङ्ग्रामय्] लड़ाई करना।
संगामेइ (भग, तदु ११)। वक संगामेमाण
(णाय १, १६—पत्र २२३, निर १, १)।

संगाम पु [सङ्ग्राम] लड़ाई, युद्ध (आचा,
पाम, महा)। 'सूर पु [शूर] एक राजा
का नाम (श्रु २८)।

संगामिय वि [साङ्ग्रामिक] संग्राम-संबंधी,
लड़ाई से मन्व रखनेवाला (ठा ५, १—पत्र
३०२, श्रौप)।

संगामिया छी [साङ्ग्रामिकी] श्रीकृष्ण
वासुदेव की एक भेरी, जो लड़ाई की खबर
देने के लिए बजाई जाती थी (विमे १४७६)।

संगामुद्धामरी छी [सङ्ग्रामोद्धामरी] विद्या-
विशेष, जिसके प्रभाव से लड़ाई में आसानी
से विजय मिलती है (सुपा १४४)।

संगार पु [दे] सकेत (ठा ४, ३—पत्र
२४३, णाय १, ३, श्रोधभा २२, सुख २,
१७, सूअनि २६, धर्मस १३८८ उप ३०६)।

संगहि वि [संग्रहिन्] संग्रह-कर्ता (विमे
१५३०)।

संगि वि [सङ्गिन्] संग-युक्त (भग, सवोध
७, कप्पू)।

संगिज्जमाण देखो संगा = सं + गै।

संगिण्ह देखो संगह = सं + ग्रह्। संगिण्ह
(विसे २२०३)। कर्म, संगिज्जते (विमे
२२०३)। वक संगिण्हमाण (भग ५,
६—पत्र २३१)। सक संगिण्हत्ताण (पि
५८३)।

संगिण्हण न [संग्रहण] आश्रय-दान (ठा
८—पत्र ४४१)। देखो संगहण।

संगिल्ल वि [सङ्गवत्] बद्ध, संग युक्त
(पाम)।

संगिल्ल देखो संगेल्ल (राज)।

संगिल्ली देखो संगेल्ली (राज)।

संगिहीय वि [संगृहीत] १ आश्रित (ठा
८—पत्र ४४१)। २ देखो संगहिअ =
संगृहीत।

संगीअ न [संगेत] १ गाना, गान-तान
(कुमा)। २ वि जिसका गान किया गया
हो वह, 'तेण संगीओ तुह चेव गुणग्गामो'
(सुपा २०)।

संगुण सक [सं + गुणय्] गुणकार
करना। संगुणए (सुज्ज १०, ६ टी)।

संगुण वि [संगुण] गुणित, जिसका गुणकार
किया गया हो वह (सुज्ज १०, ६ टी)।

संगुणिअ वि [संगुणित] ऊपर देखो (श्रोध
२१, देवेन्द्र ११६, कम्म ५, ३७)।

संगुत्त वि [संगुत्त] १ छिपाया हुआ,
प्रच्छन्न रखा हुआ (उप ३३६ टी)। २
गुप्ति-युक्त, अकुशल प्रवृत्ति से रहित (पव
१२३)।

संगेल्ल पु [दे] समूह, समुदाय (दे ८, ४,
वव १)।

संगेल्ली छी [दे] १ परस्पर अवलम्बन,
'हत्थसंगेल्लीए' (णाय १, ३—पत्र ६३)।
२ समूह, समुदाय (भग ६, ३३—पत्र
४७४, श्रौप)।

संगोढण वि [दे] ब्रणित, ब्रण-युक्त (दे
८, १७)।

सगोप्फ पु [सगोफ] बन्ध-विशेष, मकंठ-
सगोफ } बन्ध रूप गुम्फन (उत्त २२, ३५)।

संगोल्ल न [दे] सघात, समूह (पह्)।

संगोल्ली छी [दे] समूह, सघात (दे ८, ४)।

सगोव सक [सं + गोपय्] १ छिपाना,
गुप्त रखना। २ रक्षण करना। सगोवह
(प्राक ६६)। वक सगोवमाण, संगोवेमाण
(णाय १, ३—पत्र ६१, विपा १, २—
पत्र ३१)।

सगोवग वि [सगोपक] रक्षण-कर्ता (णाय
१, १८—पत्र २४०)।

सगोवाव देखो सगोव। संगोवावसु (स
८६)।

सगोविअ वि [सगोपित] १ छिपाया हुआ
(स ८६)। २ संरक्षित (महा)।

संगोवित्तु वि [सगोपयित्तु] संरक्षण-कर्ता
संगोवेत्तु } (ठा ७—पत्र ३८५)।

संघ सक [कथ्] कहना। संघइ (हे ४,
२), संघसु (कुमा)।

संघ पुं [सय] १ साधु, साध्वी, श्रावक और
श्राविकाओ का समुदाय (ठा ४, ४—पत्र
२८१, एदि, महानि ४, सिग्घ १, ३, ५)।
२ समान धर्मवालों का समूह (धर्मस
६८८)। ३ समूह, समुदाय (सुपा १८०)।
४ प्राणि-समूह (हे १, १८७)। 'दास पु
[दास] एक जैन मुनि और ग्रन्थ-कर्ता (ती
३, राज)। 'पालिय, 'वालिय पु [पालिन]
एक प्राचीन जैन मुनि, जो आर्यवृद्ध मुनि के
शिष्य थे (कप्प, राज)।

संघअ वि [सहत्] निविद्ध, सान्द्र (से १०,
२६)।

सघस पु [सघर्ष] १ घिसाव, रगड़। २
आघात, घक्का (णाय १, १—पत्र ६५,
आ २८)।

संघट्ट सक [स + घट्ट] १ स्पर्श करना,
छूना। २ अक, आघात लगाना। सघट्टइ
(भवि), सघट्टेइ (णाय १, ५—पत्र ११२,
भग ५, ६—पत्र २२६), संघट्टए (दस ८,
७)। वक सघट्टंत (पिड ५७५)। सक
सघट्टिऊण (पव २)।

सघट्ट पु [सघट्ट] १ आघात, घक्का, सघर्ष
(उव, कुप्र १६, धर्मवि ५७, सुपा १४)।
२ अर्ध जघा तक का पानी (श्रोधभा ३४)।
३ दूसरा नरक का छठवाँ नरकेन्द्रक—स्यान
विशेष (देवेन्द्र ६)। ४ भीड़, जमावड़ा
(भवि)। ५ स्पर्श (राय)।

सघट्ट वि [सघट्टित] सलग्न (भवि)।

सघट्टण न [सघट्टन] १ समर्पण, सघर्ष
(णाय १, १—पत्र ७१, पिड ५८६)। २
स्पर्श करना (राज)।

सघट्टणा छी [सघट्टना] संचलन, सचार
'गम्मे सघट्टणा उ उट्ठतुवेसमाणोए' (पिड
५८६)।

सघट्टा छी [संघट्टा] वल्ली-विशेष (पण
१—पत्र ३३)।

वोय पुं [वोक] एक देश का नाम (पउम ६८, ६४) ।	उल्लघित (पाय, सुर २, १, कुप्र ४५, से १, ३, ४, ४८, गा ५७, २५२, ३४०, हे ४, २५८, कुमा, महा) ।	श्रौप), वोसिरेजा, वोसिरे (पि २३५) । वक्र. वोसिरंत (कुप्र ८१) । सक्र वोसिज्ज, वोसिरित्ता (सूअ १, ३, ३, ७, पि २३५) । क. वोसिरियव्व (पत्र ४६) ।
वोरच्छ वि [दे] तरुण, युवा (दे ७, ८०) ।	वोल्ल सक [आ + क्रम्] आक्रमण करना । वोल्लइ (घात्वा १५४) ।	वोसिर वि [व्युत्सर्जन] छोड़नेवाला (उप पृ २६८) ।
वोरमण न [व्युपरमण] हिसा, प्राणि-वध (पएह १, १—पत्र ५) ।	वोलाह पुं [वोलाह] देश-विशेष (स ८१) ।	वोसिरण न [व्युत्सर्जन] परित्याग (हे २, १७४, आ १२, आवक ३७६, ओघ ८५) ।
वोरल्ली व्री [दे] १ श्रावण मास की शुक्ल चतुर्दशी तिथि में होनेवाला एक उत्सव । २ श्रावण मास की शुक्ल चतुर्दशी (दे ७, ८१) ।	वोलाह वि [वौलाह] देश-विशेष में उत्पन्न (स ८१) ।	वोसिरिअ देखो वोसट्ठ (पउम ४, ५२, धमंस १०५६, महा) ।
वोरविअ वि [व्यपरोपित] जो मार डाला गया हो वह, 'सक्कारित्ता जुयल दिन्न विइएण वोरविओ' (वव १) ।	वोवाल पुं [दे] वृषभ, बैल (दे ७, ७६) ।	वोसेअ वि [दे] उन्मुख-गत (दे ७, ८१) ।
वोरुट्ठी व्री [दे] रुई से भरा हुआ वस्त्र (पव ८४) ।	वोसग्ग पु [व्युत्सर्ग] परित्याग (विसे २६०५) ।	वोहित्त न [वहित्र] प्रवहण, जहाज, नौका (गा ७४६) । देखो वोहित्थ ।
वोल सक [गम्] १ गति करना, चलना । २ गुजारना, पसार करना । ३ अतिक्रमण करना, उल्लंघन करना । ४ अक. गुजरना, पसार होना । वोलइ (प्राकृ ७३, हे ४, १६२, महा; धमंस ७५४), 'कालं वोलेइ' (कुप्र २२४), वोलेति (वजा १४८, धमंवि ५३) । वक्र. वोल्लत, वोलेत्त (कुमा, गा २१०, २२०, पउम ६, ५४, से १४, ७५, सुपा २२४, से ६, ६६) । संक्र. वोलिऊण, वोलेत्ता (महा, आव) । क. वोलेअव्व (से २, १, स ३६३) । प्रयो., सक्र. वोलाविठ, वोलावेठ (सुपा १४०, गा ३४६ अ १) । देखो वोल = व्यति + क्रम् ।	वोसग्ग } अक [वि + कस्] १ विकसना, वोसट्ठ } खिलना । २ बढ़ना । वोसग्गइ, वोसट्ठइ (पड्, हे ४, १६५, प्राकृ ७६) । वक्र. वोसट्ठमाण (भग, गा ८२८) ।	वोहार न [दे] जल-वहन (दे ७, ८१) ।
	वोसट्ठ सक [वि + कासय्] १ विकास करना । २ बढ़ाना । वोसट्ठइ (घात्वा १५४) ।	व्युड पु [दे] विट, भट्टा (पड्) ।
	वोसट्ठ वि [विकसित] विकास-प्राप्त (हे ४, २५८, प्राकृ ७७) ।	व्रद देखो वद = वृन्द (प्राप्र) ।
	वोसट्ठ वि [दे] भर कर खाली किया हुआ (दे ७, ८१) ।	व्रत्त (अप) देखो वय = व्रत (हे ४, ३६४) ।
	वोसट्ठिअ वि [विकसित] विकास-प्राप्त (कुमा) ।	व्राक्रोस (अप) पुं [व्याक्रोश] १ शाप । २ निन्दा । ३ विरुद्ध चिन्तन (प्राकृ ११२) ।
	वोसट्ठ वि [व्युत्सृष्ट] १ परित्यक्त, छोड़ा हुआ (कप्प, कस, ओघ ६०५, उत्त ३५, १६, आचा २, ८, १, पचा १८, ६) । २ परिष्कार-रहित, साफसूफ-वजित (सूअ १, १६, १) । ३ कायोत्सर्ग में स्थित (दस ५, १, ६१) ।	व्रागरण (अप) देखो वागरण (प्राकृ ११२) ।
वोल देखो वोल = दे (दे ६, ६०) ।	वोसमिय वि [व्यवशमित] उपशमित, शान्त किया हुआ, 'खामिय वोसमियाई अहिगरणाइतु जे उदीरेंति । ते पावा नायव्वा' (ठा ६ टी—पत्र ३७१) ।	व्राडि (अप) पु [व्याडि] संस्कृत व्याकरण
वोलट्ठ अक [व्युप + लुट्] छलकना । वक्र. वोलट्ठमाण (भग) ।	वोसर } सक [व्युत् + सृज्] परित्याग वोसरि } करना, छोड़ना । वोसरिमो, वोसरिइ, वोसरामि (पव २३७, महा, भग,	श्रीर कोष का कर्ता एक मुनि (प्राकृ ११२) ।
वोलाविअ वि [गमित] अतिक्रामित (वजा १४, सुपा ३३४, गा २१) ।		व्रास देखो वास = व्यास (हे ४, ३६६, प्राकृ ११२, पड्, कुमा) ।
वोलीअ } वि [गत] १ गया हुआ (प्राकृ वोलीण } ७७) । २ गुजरा हुआ, जो पसार हुआ हो वह, व्यतीत (सुर ६, १६, महा, पव ३५, सुर ३, २५) । ३ अतिक्रान्त,		व्व देखो इव (हे २, १८२, कप्प, रंभा) ।
		व्व देखो वा = अ (प्राकृ २६) ।
		°व्वअ देखो वय = व्रत (कुमा) ।
		व्ववसिअ देखो ववसिय = व्यवसित (अभि १२४) ।
		°व्वाज देखो वाय = व्याज (मा २०) ।
		°व्वावार देखो वावार = व्यापार (मा ३६) ।
		°व्वावुड देखो वावुड (अभि २४६) ।
		°व्वाहि देखो वाहि (मा ४४) ।
		व्विव देखो इव (प्राकृ २६) ।
		व्वे अ [दे] संवोधन-सूचक अव्यय (प्राकृ ८०) ।

॥ इअ सिरिपाइअसदमहणवम्मि वअराइसदसंकलणो

पचत्तीसइमो तरंगो समत्तो ॥

२४, सुर ३, ७६, नाट—चैत १३०) । कृ.
सचरणिज्ज, सचरिअव्य (नाट—वेणी
१४ से १८, २८) ।

सचरण न [सचरण] १ चलना, गति । २
सम्यग् गति (गड्ड, पि १०२, कप्पू) ।

संचरिअ वि [सचरिन्] चला हुआ, जिसने
सचरण किया हो वह (उप पृ ३५८, रुक्मि
५६, भवि) ।

संचलण न [सचलन्] सचार, गति (गड्ड) ।

संचलिअ वि [सचालत्] चला हुआ (सुर
३, १४०, महा) ।

सचल नक [स + चल] चलना, गति
करना । सचल्लइ (भवि) ।

सचल्ल (अप) देखा सचल्लिय (भवि) ।

सचल्लिअ देखो सचलिअ (महा) ।

सचाइय वि [सशक्ति] जो ममर्थ हुआ
हो वह (भग ३, २ टी—पत्र १७८) ।

संचाय अक [स + शक्] समर्थ होना ।
संचाएइ (भग, उवा, कम), संचाएमी (सूत्र
२, ७, १०, णाया १, १८—पत्र २४०) ।

सचाय पुं [सत्याग] परित्याग (पंचा १३,
३४) ।

सचार सक [सं + चारय्] सचार कराना ।
सचारइ (भवि) । सक सचारि (अप)
(पिग) ।

सचार पृ [सचार] सचरण, गति (गड्ड,
महा, भवि) ।

सचारि वि [सचारिन्] गति करनेवाला
(कप्पू) ।

सचारअ वि [सचारित] जिसका संचार
कराया गया हो वह (भवि) ।

सचार, वि [सचारिम] सचार-योग्य, जो
एक स्थान से उठा कर दूसरे स्थान में रखा
जा सके वह (पिंड ३००, सुपा ३५१) ।

सचारा स्त्री [दे] दूत-कर्म करनेवाली स्त्री
(प्राप्र, पड्ड) ।

सचाल सक [स + चालय्] चलाना ।
सचालइ (भवि) । कवक, सचालिज्जंत,
सचालिज्जमाण (से ६, ३६, णाया १,
६—पत्र १५६) ।

सचालिअ वि [सचालिन्] चलाया हुआ
(से ४, २७) ।

सचिअ वि [सचित] सगृहीत (श्रोष ३२६
भवि, नाट—वेणी ३७, सुपा ३५२) ।

सचितण न [सचिन्तन] चिन्तन, विचार
(हि २२) ।

सचिनणया स्त्री [सचिन्तना] ऊपर देखो
(उत्त ३२, ३) ।

सचिक्ख अक [स + स्थ] रहना, ठहरना,
अच्छी तरह रहना, समाधि से रहना ।

सचिक्खइ (आचा १, ६, २, २) । सचिक्खे
(उत्त २, ३३, श्रोष ६६) ।

सचिज्जमाण देखो सचिण ।

सचिट्ठ देखो सचिक्ख । सचिट्ठइ (भग, उवा,
महा) ।

सचिट्ठण न [सस्थान] अवस्थान (पि ४८३) ।

सचिण नक [स + चि] १ संग्रह करना,
इकट्ठा करना । २ उपचय करना । सचिणइ,
सचिणइ, सचिणति (श्रु १०७, पि ५०२) ।

सक सचिणिता (सूत्र २, २, ६५, भग) ।
कवक सचिज्जमाण (आचा २, १, ३, २) ।

सचिणिय वि [सचिन्] सगृहीत (स ४०३) ।

सचिन्न वि [सचीर्ण] आचरित (सण) ।

सचुण्ण नक [स + चूर्णय्] चूर-चूर
करना, खड-खड करना, टुकड़ा-टुकड़ा करना ।
कवक सचुण्णिज्जत (पठम ५६, ४४) ।

सचुण्णिअ } वि [सचूर्णित] चूर-चूर
संचुत्तिअ } किया हुआ (महा, भवि,
णाया १, १—पत्र ४७, सुर १२, २४१) ।

सचेयणा स्त्री [गचेतना] अच्छी तरह सूध,
भान, 'लद्धसचेयणा' (सिदि ६५७) ।

सचोइय वि [सचोदेत] प्रेरित (ठा ४, ३
टी—पत्र २३८) ।

संछइय } वि [सछन्न] ढका हुआ (उप
संछण्ण } पृ १०३, सुर २, २४७, सुपा
संछन्न } ५६२, महा, सण) ।

संछाइय वि [संछादित] ढका हुआ (सुपा
५६२) ।

संछाय सक [स + छादय्] ढकना । वक.
संछायंत (पठम ५६, ४७) ।

संछुइ सक [स + क्षिप्] एकत्रित कर

छोड़ना, इकट्ठा करना, 'संछुइ एगोहम्मि'
(पिंड ३११) ।

संछोअ पुं [संक्षेप] अच्छी तरह फेंकना,
क्षेपण (पच ५, १५६, १८०) ।

संछोअभग वि [संक्षेपक] प्रक्षेपक (राज) ।

संछोअभण न [संक्षेपण] परावर्तन (राज) ।

संजइ पुं [सज्जि] उत्तम साधु, मुनि,
'सज्जइ दव्वलिगीणमतरे मेरुसरिसवसरिच्छ'
(संघोष ३६) ।

संजई स्त्री [संज्जी] साध्वी (श्रोष १६,
महा, द्र २७) ।

सजणग वि [संजनक] उत्पन्न करनेवाला
(सुर ११, १६६) ।

सजणण न [सज्जन] १ उत्पत्ति । २ वि,
उत्पन्न करनेवाला (सुर ६ १४२, सुपा
३८२) । स्त्री णी (रत्त २८) ।

सजणय देखो सजणग (चैइय ६१५, सुपा
३८, सिक्खा २६) ।

सजणिय वि [सज्जित] उत्पादित (प्राप्र
१४६, सण) ।

सजत्त नक [दे] तैयार करना । सजत्तेह
(स २२) ।

संजत्ता स्त्री [संयात्रा] जहाज की मुसाफिरी
(णाया १, ८—पत्र १३२) ।

सजत्ति स्त्री [दे] तैयारी, 'आणत्ता निय-
पुरिसा सजत्ति कुणह गमणत्थ' (सुर ७,
१३०, स ६३५, ७३५, महा) । देखो
सजुत्ति ।

सजत्तिअ वि [दे] तैयार किया हुआ (स
४४३) ।

संजत्तिअ } वि [सायात्रिक] जहाज से
सजत्तिग } यात्रा करनेवाला, समुद्र-मार्ग का
मुसाफिर (सुपा ६५५, टी ६, सिदि ४३१,
पच २७६, हे १, ७०, महा, णाया १,
८—पत्र १३५) ।

सजत्थ वि [दे] १ कुपित, क्रुद्ध । २ पु.
क्रोध दे ८, १०) ।

सजद देखो सजय = सयत (प्राप्र, प्राकृ १२,
संक्षि ६) ।

सजम अक [स + यम्] १ निवृत्त होना ।
२ प्रयत्न करना । ३ व्रत-नियम करना । ४
सक, बाँधना । ५ कावू में करना । कर्म,

समान धर्मवाला (इ १७) । २ तरफदार (कुप्र ११६) । ३ अपना पक्ष (सम्म २१) । पाय न [पात्र] निज का नाम, खुद की संज्ञा (राज) । °पपभ वि [प्रभ] निज से ही शोभनेवाला (सम १३७) । °भवाव, °भाव पुं [भाव] प्रकृति, निसर्ग, 'कणियारतरु नवकरिणायारमुंदेरदरिअसवभायो' (कुमा ३, ४४, सम्म २१, सुर १, २७, ४, १२४),

°कुवियस्त आउरत्स य

वसणामत्तस्स आयरत्तस्स ।

मत्तस्स मरतस्स य

सवभावा पायडा हुति”

(प्रासू ६४) ।

°भावन्तु वि [भावज्ञ] स्वभाव का जान-कार (पउम ८६, ४१) । °यण देखो °जण (उवा, हे २, ११४, सुर ४, ७६, प्रासू ७६, ६५) । °रूय, °रूव न [रूप] स्वभाव (गउड, धम्मस ६१३, कुमा, भवि, सुर २, १४२) । °सवेयण न [सवेदन] स्व-प्रत्यक्षज्ञान (धम्मसं ४४) । °हाअ, °हाय देखो °भाव (से ३, १५, ७, १७, गउड, सुर ३, २०, प्रासू २, १०३) । °हाववाड पुं [भाववाद] स्वभाव से ही सब कुछ होता है ऐसा माननेवाला मत (उप १००३) । °हिअ न [हित] १ निज का भला, स्वीय—अपनी भलाई । २ वि निज का भला करने-वाला, स्वहितकर (सुपा ४१०) ।

सं वि [सं] १ सहित, युक्त (सम १३७, भग, उवा, सुपा १६२, सण) । २ समान, तुल्य, 'समुत्ते', 'सपक्खे' (कप्प, निर १, १) । °अण्ह वि [तृण] उत्कण्ठित, उत्सुक (मे १२, ८८, गा ३४८, गउड, सुपा ३८४) । °अर वि [कर] कर-सहित (से २, २६) । °अर वि [गर] विप-युक्त, जहरीला (से २, २६) । °इण्ह देखो °अण्ह (सुपा ४१२) । °उग वि [गुण] गुण-युक्त (सुपा १८५) । °उण्ण, °उन्न वि [पुण्य] पुण्य-युक्त, पुण्य-शाली (महा, सुर २, ६८, सुपा ६३५) । °ओस वि [तोष] सन्तुष्ट (उप ७२८ टी) । °ओस वि [दोष] दोष-युक्त (उप ६२८ टी) । °काम वि [काम] १ समृद्ध मनोरथवाला (स्वप्न ३०) । २ मनोरथ-युक्त,

इच्छावाला (राज) । °कामणिजरा स्त्री [कामनिर्जरा] कर्म-निर्जरा का एक भेद (राज) । °काममरण न [काममरण] मरण-विशेष, परिणत-मरण (उत्त ५, २) । °केय वि [केत] १ गृहस्थ । २ प्रत्याख्यान-विशेष (पव ४) । °क्खर वि [क्षर] विद्वान्, जानकार (वज्जा १५८ सम्मत्त १४३) । °गार वि [गार] गृहस्थ (ओवभा २०) । °गार वि [गार] आकार-युक्त (धर्मवि ७२) । °गुण वि [गुण] गुणवान्, गुणी (उव, सुपा ३४५, सुर ४, १६६) । °ग्ग वि [ग] श्रेष्ठ, उत्तम (से ६, ४७) । °ग्गह वि [ग्रह] उपरक्त, ग्रहण-युक्त, जुष्ट ग्रह मे आक्रान्त (पाय, वव १) । °घिण वि [घृण] दयालु (अचु ५०) । °चक्खु, °चक्खुअ वि [चक्षुष, चक्षुष्क] नेत्र-वाला, देखता (पउम ६७, २३, वसु, सं ७८, विपा १, १—पत्र ५) । °चित्त वि [चित्त] चेतनावाला, सजीव (उवा, पडि) । °चेयण वि [चेतन] वही अर्थ (विमे १७५३) । °चित्त देखो °चित्त (ओष २२, सुपा ६२५, ६२६, पि १६६, ३५०) । °जिय देखो °जीअ (सुर १२, २१०) । °जोड वि [उत्थातिप्] प्रकाश-युक्त (पि ४११, सूत्र १, ५, १, ७) । °जोणिय वि [योनिक्] उत्पत्ति-स्थानवाला, ससारी (ठा २, १—पत्र ३८) । °जीअ, °जीव वि [जीव] १ ज्या-युक्त, धनुष की डोरी-वाला । २ सचेतन, जीववाला (पि १६६, से १, ४५) । ३ न कला-विशेष, मृत घातु वगैरह को मजीवन करने का ज्ञान (ओप, राय, ज २ टी—पत्र १३७) । °ड्ह वि [व] डेढ । °ड्हकाल पुं [वर्धकाल] तप-विशेष, पुरिमड्ड तप (सवोष ५८) । °णपय, °णफड, °णफय वि [नखपद] नख युक्त पैरवाला, सिंह आदि श्वापद जंतु (सूत्र २, ३, २३, ठा ४, ४—पत्र २७१; सूत्र १, ५, २, ७, परण १—पत्र ४६, पि १४८) । °णाह वि [नाथ] स्वामी-वाला, जिसका कोई मालिक हो वह (विपा १, २—पत्र २७, रमा, कुमा) । °त्तण्ह वि [तृण] तृणा-युक्त, उत्कण्ठित,

उत्सुक (से १, ४६) । °त्तर वि [त्वर] १ त्वरा-युक्त, वेगवाला । २ न. शीघ्र, जल्दी (सुपा १५६) । °द्ध वि [वर्ध] अर्थ सहित, डेढ (पउम ६८, ५४) । °ववा स्त्री [ववा] सौभाग्यवती स्त्री, जिसका पति जीवित हो वह स्त्री (सुपा ३६५) । °नय वि [नय] न्याय-युक्त, व्याजवी (सुपा ५०४) । °पक्ख वि [पक्ष] १ पंखवाला, पंखों से युक्त (से २, १४) । २ सहायता करनेवाला, नहायक, मित्र (पव २३६, स ३६७) । ३ समान पार्श्ववाला, दक्षिण आदि तरफ से जो समान हो वह (निर १, १) । °पुन्न वि [पुण्य] पुण्यशाली, पुण्यवान् (सुपा ३८४) । °पपभ वि [प्रभ] प्रभा-युक्त (सम १३७, भग) । °परिआव, °परिताव वि [परिताप] परिताप—सताप से युक्त (आ ३७, पड्) । °पिस-ह्म वि [पिशाचक] पिशाच-गृहीत, पागल (पण्ह २, ५—पत्र १५०) । °पिपास वि [पिपास] तृपातुर, सतृण (हे २, ६७) । °पिह वि [स्पृह] स्पृहावाला (दे ७, २६) । °फड वि [स्पन्द] चलायमान (दे ८, ८) । °फल, °फल वि [फल] सार्यक (मे १५, १४, हे २, २०४, प्राय, उप ७२८ टी) । °वल वि [वल] वलवान्, बलिष्ठ (पिंग) । °मल देखो °फल (हे १, २३६, कुमा) । °मण वि [मनस्] १ मनवाला, विवेक-बुद्धिवाला (घण २२) । २ समान मनवाला, राग-द्वेष आदि से रहित, मुनि, साधु (अणु) । °मणस्स वि [मनस्क] पूर्वोक्त अर्थ (मूम २, ४, २) । °मय वि [मद] मद-युक्त (से १, १६, सुपा १८८) । °महिड्डिअ वि [महर्षिक] महान् वैभव-वाला (प्रासू १०७) । °मिरिइअ, °मिरीय वि [मराचिक] किरण-युक्त (भग, ओप, ठा ४, १—पत्र ३२६) । °मेर वि [मर्याद] मर्यादा-युक्त (ठा ३, २—पत्र १२६) । °यण्ह वि [तृण] तृणा-युक्त (गउड, सुपा ३८४) । °याण वि [ज्ञान] सयाना, जानकार (सुपा ३८५) । °योगि वि [योगिन्] १ व्यापार-युक्त, योगवाला । २ न तेरहां गुण स्थानक (कम्म २, ३१) ।

संज्ञोद्भय वि [सदृष्ट] दृष्ट, निरीक्षित (भवि)।
संज्ञोग देखो सज्ञोअ = संयोग (हे १, २४५)।

संज्ञोगि वि [सयोगिन्] सयोग-युक्त, संबन्धी
(सबोध ४६)।

सजीगेत्तु वि [सयोजगित्] जोड़नेवाला
(ठा ८—पत्र ४२६)।

सज्ञोत्त (अप) देखो सज्ञोअ = स + योजय्।
सकृ सज्ञोत्तिवि (भवि)।

सम्भ^० नीचे देखो (गाया १, १—पत्र ४८)।
°च्छेयावरण वि [°च्छेदावरण] १ मन्व्या-
विभाग का आवारक। २ पु. चन्द्र चाँद
(अणु १२० टी)। °पभ पुन [°प्रभ]
शक्र के सोम-लोकपाल का विमान (भग ३,
७—पत्र १७५)।

सम्भा स्त्री [सन्ध्या] १ साँझ, साम, सायंकाल
(कुमा, गड, महा)। २ दिन और रात्रि
का सधि-काल। ३ दुगो का सधि-काल।
४ नदी-विशेष। ५ ब्रह्मा की एक पत्नी (हे
१, ३०)। ६ मध्याह्न काल, 'तिसम्भ' (महा)।
°गय न [°गत] १ जिस नक्षत्र में सूर्य
अनन्तर काल में रहनेवाला हो वह नक्षत्र।
२ सूर्य जिसमें हो उससे चौदहवाँ या पनरहवाँ
नक्षत्र। ३ जिसके उदय होने पर सूर्य उदित
हो वह नक्षत्र। ४ सूर्य के पीछे के या आगे
के नक्षत्र के बाद का नक्षत्र (वव १)।
°छेयावरण देखो सम्भ-°छेयावरण (पत्र
२६८)। °णुराग पु [°नुराग] साँझ के
बादल का रंग (पण २—पत्र १०६)।
°वली स्त्री [°वली] एक विद्याधर-कन्या का
नाम (महा)। °विगम पु [°विगम] रात्रि,
रात (निष् १६)। °विराग पु [°विराग]
साँझ का समय (जीव ३, ४)।

संभाअ सक [स + ध्यै] ख्याल करना,
चिन्तन करना ध्यान करना। सम्भाअदि
(शौ) (पि ४७६, ५५८)। वक्र सम्भायंत
(सुपा ३८६)।

सम्भाअ अक [सध्याय] सध्या की तरह
आचरण करना। सम्भायइ (गड ६३२)।

सटक पुं [सटक्क] अन्वय, सबन्ध (चिद्व
३६६)।

सठ वि [शठ] धूर्त, मायावी (कुमा, दे ६,
१११)।

संठ (वृष) देखो संठ (हे ४, ३२५)।

सठप्प देखो सठव।

सठव सक [स + स्थापय] १ रखना,
स्थापना करना। २ आश्वासन देना, उद्वेग-
रहित करना, सान्त्वना करना। सठवइ,
सठवेइ (भवि, महा)। वक्र सठवत (गा
३६)। कवक्र, सठविज्जत (सुर १२, ४१)।
सक्र सठवेऊण (महा), सठप्प (उव),
संठविअ (पिण)।

सठवण देखो सठावण (मृच्छ १५४)।

सठविअ वि [सस्थापित] १ रखा हुआ
(हे १, ६७, प्राप्र, कुमा)। २ आश्वासित।
३ उद्वेग-रहित किया हुआ (महा)।

संठा अक [स + स्था] रहना, अवस्थान
करना, स्थिति करना। सठाइ (पि ३०६,
४८३)।

सठाण न [सस्थान] १ आकृति, आकार
(भग, औप, पत्र २७६, गड, महा, दं ३)।
२ कर्म-विशेष, जिसके उदय से शरीर के शुभ
या अशुभ आकार होता है वह कर्म (सम
६७, कम्म १, २४, ४०)। ३ सन्निवेश,
रचना (प्रासू ८७)।

सठाव देखो सठव। संक्र. सठाविअ (नाल-
चैत ७५)।

सठावण न [सस्थापन] रखना, 'तेरिच्छ-
सठावण' (पत्र ३८)। देखो सथावण।

सठावणा स्त्री [सस्थापना] आश्वासन,
सान्त्वना (से ११, १२१)। देखो संथावणा।

सठाविअ देखो सठविअ (हे १, ६७, कुमा,
प्राप्र)।

सठावि वि [सस्थित] १ रहा हुआ, सम्यक्
स्थित (भग, उवा, महा, भवि)। २ न
आकार (राय)।

सठाइ स्त्री [सस्थिति] १ व्यवस्था (सुज्ज
१, १)। २ अवस्था, दशा, स्थिति (उप
१३६ टी)।

सड पु [शण्ड, पण्ड] १ वृष, बैल, साँढ,
'मत्तसडुव्व भमेइ विलसेइ अ' (आ १२,
सुर १५, १४०)। २ पुन. पक्ष आदि का
समूह, वृक्ष आदि की निविडता (गाया १,

१—वत्र १६, भग, कप्प, औप, गा ८, सुर
३, ३०, महा, प्रासू १४५), 'नियमत्तस्सडो'
(गड)। ३ पु. नपुमक (हे १, २६०)।

संठास पुन [सदण] १ यन्त्र-विशेष, सँढही,
चिमटा (सुप्र १, ४, २, ११, विपा १,
६—पत्र ६८, स ६६६)। २ ऊरु-सधि,
जाँघ और ऊरु के बीच का भाग (औष
२०६, औषभा १५५)। °तोड पु [°तुण्ड]
पक्षि-विशेष, सँढही की तरह मुखवाला पाँखी
(पण १, १—पत्र १४)।

सडिउम्भ } न [दे] बालको का क्रीडा-स्थान
संडिउम्भ } (राज, दस ५, १, १०)।

सडिइ पु [शाण्डिल्य] १ देश-विशेष (उप
१०३१ टी, सत्त ६७ टी)। २ एक जैन
मुनि का नाम (कप्प, एदि ४६)। ३ एक
ब्राह्मण का नाम (महा)। देखो सडैइ।

सडो स्त्री [दे] बल्गा, लगाम (दे ८, २)।

सडेय पुं [पाण्डेय] पढ-पुत्र, पढ, नपुसक,
'कुक्कुडसडेयगामपट्टरा' (औप, गाया, १,
१ टी—पत्र १)।

सडैइ न [शाण्डिल्य] १ गोत्र-विशेष। २
पुंस्त्री. उस गोत्र में उत्पन्न (ठा ७—पत्र
३६०)। देखो सडिइ।

सडैव पु [दे] पानी में पैर रखने के लिए
रखा जाता पापाण आदि (औष ३१)।

सडेवय (अप) देखो सडेय, 'गामइ कुक्कुड-
सडेवयाइ' (भवि)।

संडोलिअ वि [दे] अनुगत, अनुयात (दे
८, १७)।

सड पु [पण्ड] नपुसक (प्राप्र, हे १, ३०,
सबोध १६)।

सडो स्त्री [दे] साँढनी, ऊँढनी (सुपा ५८०)।

सडोइय वि [सडौकित] उपस्थापित (सुपा
३२३)।

सण वि [सज्ञ] जानकार, ज्ञाता (आचा
१, ५, ६, १०)।

सणक्खर देखो संनक्खर (राज)।

सणज्ज न [सानाय्य] मन्त्र आदि से सास्कार
जाता घी वगैरह (प्राकृ १६)।

सणज्म अक [स + नह] १ कवच धारण
करना, बखतर पहनना। २ तैयार होना।

सणज्मइ (पि ३३१)।

सइलासअ } पुं [दे] मयूर, मोर (दे ८, सइलासिअ } २०, पड्) ।

सइव पुं [मचिव] १ प्रधान, मन्त्री, अमात्य (पात्र) । २ सहाय, मदद-कर्ता । ३ काला घतूरा (प्राक् ११) ।

सइसिलिं पुं [दे] स्कन्द, कार्तिकेय (दे ८, २०) ।

सइसुह वि [दे.स्मृतिसुख] देखो सइदसण (दे ८, १६, पात्र) ।

सईं बी [शची] इन्द्राणी, शक्रेन्द्र की एक पटरानी (ठा ८—पत्र ४२६, एया २—पत्र २५३, पात्र, सुपा ६८, ६२२, कुप्र २३) । °स पु [°श] इन्द्र (कुमा) । देखो सची ।

सईं बी [सती] पतिव्रता बी (कुमा २३, सिरि १४३) ।

°सईं बी [°शती] सौ, १००, 'पंचसई' (धर्मवि १४) ।

सईणा बी [दे] अन्न-विशेष, तुवरी, रहुर (ठा ५, ३—पत्र ३४३) ।

सउ } (अप) देखो सहु (सण, भवि) ।
सउं }

सउत पुं [शकुन्त] १ पक्षी, पाली (पात्र) । २ पक्षि-विशेष, मास-पक्षी (स ४३६) ।

सउंतला बी [शकुन्तला] विद्यामित्र ऋषि की पुत्री और राजा दुष्यंत की गन्धर्व-विवाहिता पत्नी (हे ४, २६०) ।

सउंदला (शौ) ऊपर देखो (अभि २६, ३०, पि २७५) ।

सउण वि [दे] रूढ, प्रसिद्ध (दे ८, ३) ।

सउण पुंन [शकुन] १ शुभाशुभ-सूचक बाहु-स्पन्दन, काक-दर्शन आदि निमित्त, सगुन, 'सुहजोगाई सउणो कंदिअसहाई इमरो उ' (धर्म २, सुपा १८५, महा) । २ पुं. पक्षी, पाली (पात्र, गा २२०, २८५, कच ३४, सट्टि ६ टी) । ३ पक्षि-विशेष (पणह १, १—पत्र ८) । °विउ वि [°विद्] सगुन का जानकार (सुपा २६७) । °रुअ न [°रुत] १ पक्षी की आवाज । २ कला-विशेष, सगुन का परिज्ञान (एया १, १—पत्र ३८, ज २ टी—पत्र १३७) ।

सउण देखो स-उण = स-गुण ।

सउणि पु [शकुनि] १ पक्षी, पलेरू, पाली (औप, हेका १०५, सवोव १७) । २ पक्षि-विशेष, चील पक्षी (पात्र) । ३ ज्योतिष-प्रसिद्ध एक स्थिर करण जो कृष्ण चतुर्दशी की रात में सदा अवस्थित रहता है (विसे ३३५०) । ४ नपुंसक-विशेष, चटक की तरह बारबार मैथुन-प्रमत्त क्रीव (पव १०६, पुष्क १२७) । ५ दुर्योधन का मामा (एया १, १६—पत्र २-८, सुपा २६०) ।

सउणिअ देखो साउणिअ (राज) ।

सउणिआ } बी [शकुनिका, °नी] १
सउणिगा } पक्षिणी, पक्षी की मादा (गा
सउणी } ८१०, याव १) । २ पक्षि-विशेष की मादा, 'सउणी जाया तुम' (ती ८) ।

सउण्ण देखो स-उण्ण = सपुण्य ।

सउत्ती बी [सपत्नी] एक पति की दूसरी बी, समान पतिवाली बी, सौत, सौतिन (सुपा ६८) ।

सउन्न देखो स-उन्न ।

सउम पु [सदूमन्] १ गृह, घर । २ जल, पानी (प्राक् २८) ।

सउमार वि [सुकुमार] कोमल (से १०, ३४, पड्) ।

सउर पु [सौर] १ ग्रह-विशेष, शनैश्वर । २ यम, जमराज । ३ वृक्ष-विशेष, उदुम्बर का पेड़ । ४ वि सूर्य का उपासक । ५ सूर्य-सवन्धी (चड, हे १, १६२) ।

सउरि पुं [शौरि] विष्णु, श्रीकृष्ण (पात्र) ।

सउरिस देखो स-उरिस = सत्पुरुष ।

सउल पुं [शकुल] मत्स्य, मछली, 'सउला सहरा मोणा तिमी भत्ता अणिमिसा मच्छा' (पात्र) ।

सउलिअ वि [दे] प्रेरित (दे ८, १२) ।

सउलिआ } बी [दे. शकुनिका, °नी]
सउली } १ पक्षि-विशेष की मादा, चील पक्षी की मादा (ती ८, अणु १४१, दे ८, ८) । २ एक महौषधि (ती ५) । °विहार पु [°विहार] गुजरात के भरीच शहर का एक प्राचीन जैन मन्दिर (ती ८) ।

सउह पु [सौध] १ राज महल, राज-प्रासाद (कुमा) । २ न खा, चाँदी । ३ पुं. पापाण-

विशेष । ४ वि. सुधा-सवन्धी, अमृत का (चड, हे १, १६२) ।

सएग्मिअ देखो सइग्मिअ (कुप्र १६३) ।

सओस देखो स ओस = स-तोप-स-दोष ।

सं अ [शम्] मुख, शर्म (स ६११, सुर १६, ४२, सुपा ४१६) ।

स अ [सम्] इन अर्थों का सूचक अव्यय— १ प्रकर्ष । प्रतिशय (धर्मस ८६७) । २ सगति । ३ सुन्दरता, शोभनता । ४ समुच्चय । ५ योग्यता, व्याजवोधन (पड्) ।

सक सक [शङ्क्] १ संशय करना, सदेह करना । २ भ्रक, भय करना, डरना । संकइ, सकण, सकति, सकसि, संकसे, सकह, सकत्य, संकामि, संकामो, सकामु, संकाम (संसि ३०), 'असकिआई सकति' (सूप्र १, १, २, १०, ११), 'ज सम्ममुज्जमताए पाणि (१णी) ए सकण हू विही' (सिरि ६६६) । कर्म संकिज्जह (गा ५०६) । वक्र. संकत, सक-माण (पव, रंभा ३३) । कृ. सकणिज्ज (उप ७२८ टी) ।

सकत वि [सक्रान्त] १ प्रतिविम्बित (गा १, से १, ५७) । २ प्रविष्ट, घुसा हुआ (ठा ३, ३, कप्प, महा) । ३ प्राप्त । ४ संक्रमण-कर्ता । ५ संक्राति-युक्त । ६ पिता आदि से दाय रूप से प्राप्त बी का घन (पात्र) ।

सकंति बी [सक्रान्ति] १ संक्रमण, प्रवेश (पव १५५, अज्ज १५३) । २ सूर्य आदि का एक राशि से दूसरी राशि में जाना, 'आरब्ध कक्षसंकतिदिवसयो दिवसनाहु व्व' (धर्मवि ६६) ।

सकदण पु [संक्रन्दन] इन्द्र, देवाघोश (उप ५३० टी, उपप १) ।

सकट्टिअ वि [सकर्तित] काटा हुआ, 'घन्न-सकट्टितमोण' (ठा ४, ४—पत्र २७६) ।

सकट्ट वि [सकट्ट] व्याप्त (राज) ।

सकट्ट देखो सकिट्ट (राज) ।

सकड वि [सकट] १ सकीर्ण, कम-चौड़ा, अल्प अवकाशवाला (स ३६२, सुपा ४१६, उप ८३३ टी) । २ वियम, गहन (पिड ६३४) । ३ न. दुःख,

६८१) । कृ संतपिअयच्च (स ६८१) ।
 वक्क. सतपमाणा (सुज ६) ।
 सतपिअ वि [सतप] १ सताप-युक्त (कुमा
 ६, १४) । २ न. सताप (स २०) ।
 संतमस न [संतमस] १ अन्धकार, अंधेरा
 (पाअ, सुपा २०५) । २ अन्ध कूप, अंधेरा
 कुँआ (सुर १०, १५८) ।
 सतय देखो सनत्त = सतत (पाअ, भग) ।
 संतर सक [स + तृ] तैरना, तैर कर पार
 करना । हेक्क. सतारत्तए (कस) ।
 सतरण न [सतरण] तैरना, तेर कर पार
 करना (ओध ३८, चेइय ७४३, कुप्र २२०) ।
 संतस अक [स + त्रन्] १ भय-भीत
 होना । २ उद्विग्न होना । सतमे (उत्त २,
 ११) ।
 सता छी [शान्ता] सातवें जिन-भगवान् की
 शासन-देवता (मति ६) ।
 सताण पु [सतान] १ वंश (कप्प) । २
 अविच्छिन्न धारा, प्रवाह (विसे २३६७,
 २३६८, गडड, सुपा १६८) । ३ ततु-जाल,
 मकड़ी आदि का जाल, 'मक्खडासताणए'
 (आचा, पडि, कस) ।
 सताण न [सत्राण] परित्राण, संरक्षण
 (बृह १) ।
 सताणि वि [सतानिन्] १ अविच्छिन्न धारा
 में उत्पन्न, प्रवाह-वर्ती, 'सताणियो न मिएणो
 जइ सताणो न नाम सताणो' (विसे २३६८,
 धर्मस २३५) । २ वश में उत्पन्न, परंपरा
 में उत्पन्न, 'देव इह अत्थि पत्तो उज्जाणे
 पासनाहसताणो । केसो नाम गणहरो'
 (धर्मवि ३) ।
 सतार वि [सतार] १ तारनेवाला, पार
 उतारनेवाला (पउम २, ४४) । २ पु.
 संतरण, तैरना (पिंग) ।
 सतारिअ वि [सतारित] पार उतारा हुआ
 (पिंग) ।
 सतारिम वि [सतारिम] तैरने योग्य (आचा
 २, ३, १, १३) ।
 सताव सक [स + तापय] १ गरम
 करना तपाना । २ द्वैरान करना । सतावेंति

(सुज ६) । वक्क. सताविन (मुपा २४८) ।
 कवक्क सताविज्जमाण (नाट—मुच्च १३७) ।
 सताव पु [सताव] १ मन का खेद (परह
 १, ३—पत्र ५५, कुमा, महा) । २ ताप,
 गरमी (परह १, ३—पत्र ५५, महा) ।
 संतावण न [सतापन] संताप, संतप्त करना
 (सुपा २३२) ।
 सतावणी छी [सतापनी] नरक-कुम्भी (सूअ
 १, ५, २, ६) ।
 संतावय वि [सतापक] सताप-जनक (भवि) ।
 सतावि वि [सतापिन्] सतप्त होनेवाला,
 जलनेवाला (कप्प) ।
 सताविय वि [सतापित] सतप्त किया हुआ
 (काल) ।
 सतास सक [स + त्रासय] भय-भीत
 करना, डराना । सतासइ (पिंग) ।
 सतास पु [सत्रास] भय, डर (म ५४४) ।
 सतास वि [सत्रासिन्] त्रास-जनक (उप
 ७६८ टी) ।
 सति छी [शान्ति] १ क्रोध आदि का जय,
 उपशम, प्रशम (आचा १, १, ७, १, चेइय
 ५६४) । २ मुक्ति, मोक्ष (आचा १, २, ४,
 ४, सूअ १, १, १, ठा ८—पत्र ४२५) ।
 ३ अहिंसा (आचा १, ६, ५, ३) । ४
 उपद्रव-निवारण (विपा १, ६—पत्र ६१,
 सुपा ३६४) । ५ विषयोसे मन को रोकना ।
 ६ चैन, आराम । ७ स्थिरता (उप ७२८ टी,
 संति १) । ८ दाहोपशम, ठंडाई (सूअ १,
 ३, ४, २०) । ९ देवी-विशेष (पंचा १६,
 २४) । १० पु. सोलहवें जिनदेव का नाम
 (सम ४३, कप्प, पडि) । °उदअ न [उदक]
 शान्ति के लिए मस्तक में दिया जाता
 मन्त्रित पानी (पि १६२) । °कम्म न
 [°कर्मन्] उपद्रव-निवारण के लिए किया
 जाता होम आदि कर्म (परह १, २—पत्र
 ३०, सुपा २६२) । °कम्मत्त न [°कर्मान्त]
 जहाँ शान्ति-कर्म किया जाता हो वह स्थान
 (आचा २, २, २, ६) । °गिह न [°गृह]
 शान्ति कर्म करने का स्थान (कप्प) । °जल
 न [°जल] देखो °उदअ (धर्म २) । °जिण
 पुं [°जिन] सोलहवें जिन-देव (सति १) ।
 °मई छी [°मती] एक आधिका का नाम

(सुपा ६२२) । °य वि [°द] शान्ति-प्रदाता
 (उप ७२८ टी) । °सूरि पु [°सूरि] एक
 जैनाचार्य और ग्रन्थकार (जी ५०) । °सेणिय
 पु [°श्रेणिक] एक प्राचीन जैन मुनि (कप्प) ।
 °हर न [°गृह] भगवान् शान्तिनाथजी का
 मन्दिर (पउम ६७, ५) । °होम पु [°होम]
 शान्ति के लिए किया जाता हवन (विपा १,
 ५—पत्र ६१) ।
 सतिअ } वि [दे. सत्क] सवन्धी, सवन्ध
 सतिग } रखनेवाला, अम्मा-पिउसतिए
 वद्धमारो' (कप्प), नो कप्पइ निग्गयाण वा
 निग्गथीण वा सागारियसतिय सेज्जासथारयं
 आयाए अहिगरणं कटट्ठ संपव्वइत्तए' (कस,
 उव, महा, स २०६, सुपा २७८, ३२२,
 परह १, ३—पत्र ४२) ।
 सतिज्जाघर देखो सति-गिह (महा ६८, ८) ।
 सतिण्ण वि [सतीर्ण] पार-प्राप्त, पार उतरा
 हुआ, 'सतिण्ण सव्वमया' (अजि १२) ।
 सतुट्ठ वि [सतुष्ट] सतोष-प्राप्त (स्वप्न २०,
 महा) ।
 सतुयट्ठ वि [सत्यगृह] जिसने पार्श्व
 धुमाया हो वह, जिसने करवट बदली हो वह,
 लेटा हुआ (गाया १, १३—पत्र १७६) ।
 सतुल्लगा छी [सतुल्लना] तुलना, तुल्यता,
 सरोझाई (सार्ध २०) ।
 संतुस्म अक [स + तुप्] १ प्रसन्न होना ।
 २ वृत्त होना । सतुस्सइ (सिदि ४०२) ।
 सतेज्जाघर देखो सतिज्जाघर (महा ६८,
 १४) ।
 सतो अ [अन्तर] मध्य, बीच, 'अतो सतो
 च मध्यायें' (प्राक् ७६) ।
 सतोस सक [स + तोपय] १ प्रसन्न
 करना, खुशी करना । २ वृत्त करना । कर्म.
 सतोसोअदि (शौ) (नाट—रत्ना ४०) ।
 सतोस पु [सतोप] वृत्ति, लोभ का अभाव,
 'हरइ अणुवि परणुणो गळ्यम्मि वि णियणुणे
 न सतोसो' (गडड, कुमा, परह १, ५—
 पत्र ६३, प्रासू १७७, सुपा ४३६) ।
 सतोसि छी [सतोपि] सन्तोष, वृत्ति, वृत्ति
 (उवा) ।
 संतोसि वि [सतोपिन्] १ सन्तोष-युक्त,
 लोभ-रहित, निर्लोभी, वृत्त (सूअ १, १२,

संकिट्ट देखो संकिलिट्ट (राज) ।

संकिण्ण वि [संकीर्ण] १ सँकरा, तग, अल्पा-वकाशवाला (पात्र, महा) । २ व्याप्त (राज) । ३ मिश्रित, मिला हुआ (ठा ४, २, भग २५, ७ टी—पत्र ६१६) । ४ पुं. हाथी की एक जाति (ठा ४, २—पत्र २०८) ।
संकिट्ट देखो संकिअ (गाया १, ३—पत्र ६४) ।

संकिट्ठण न [संकीर्तन] उच्चारण (स्वप्न १७) ।

संकिन्न देखो संकिण्ण (ठा ४, २, भग २५, ७) ।

संकिर वि [शङ्किट्ट] शङ्का करने की आदत वाला, शंकाशील (गा २०६, ३३३, ५८२, सुर १२, १२५, सुपा ४६८) ।

संकिलिट्ट वि [संक्लिष्ट] सक्लेश युक्त, सक्लेशवाला (उव औप, पि १३६) ।

संकिलिस्स भक [सं + क्लिश्] १ क्लेश-पाना, दुःखी होना । २ मलिन होना । संकिलिस्सइ, संकिलिस्सति (उत्त २६, ३४, भग, औप) । वक्क संकिलिस्समाण (भग १३, १—पत्र ५६६) ।

संकिलेस पु [संक्लेश] १ अममाधि दुःख, कष्ट, हैरानी (ठा १०—पत्र ४८९, उव) । २ मलिनता, अविशुद्धि (ठा ३, ४—पत्र १५६, पचा १५, ४) ।

संकीलिअ वि [संकीलित] कील लगाकर जोड़ा हुआ (सं १४, २८) ।

संकु पु [शङ्कु] १ शल्य अस्त्र । २ कीलक, छूटा, कील, 'अतोनिविट्टसकुव' (कुप्र ४०२, राय ३०, आवम) । 'कण्ण न [कण्] एक विद्याघर-नगर (इक) ।

सकुइय वि [सकुचित] १ सकुचा हुआ, सकोच-प्राप्त (औप, रंभा) । २ न. सकोच (राज) ।

संकु पु [शङ्कु] वेताव्य पर्वत की उत्तर श्रेणी का एक विद्याघर-निकाय (राज) ।

सकुआ वी [शङ्कुआ] विद्या-विरोध (राज) ।

सकुच भक [स + कुच्] सकुचना, सकोच करना । संकुचए (भाचा, सवोध ४७) वक्क संकुचमाण, संकुचेमाण (भाचा) ।

संकुचिय देखो सकुइय (दस ४, १) ।

संकुड वि [संकुट] सँकरा, सकीर्ण, सकुचित, 'अतो य सकुडा वाहि वित्थडा चदसुराणं' (सुज्ज १६) ।

संकुडिअ वि [संकुटित] सकुचा हुआ, संकुचित (भग ७, ६—पत्र ३०७, धर्मस ३८७, स ३५८, सिर ७८६) ।

संकुद्ध वि [संकुद्ध] क्रोध-युक्त (वज्जा १०) ।

संकुय देखो सकुच । सकुयइ (वज्जा ३०) । वक्क संकुयंत (वज्जा ३०) ।

संकुल वि [सकुल] व्याप्त, पूर्ण भरा हुआ (सं १, ५७, उव, महा, स्वप्न ५१, धर्मवि ५५, प्रासू १०) ।

संकुलि } देखो सक्कुलि (पि ७४, ठा ४, संकुली } ४—पत्र २२६, पव २६२, भाचा २, १, ४, ५) ।

सकुसुमिअ वि [सकुसुमित] अन्धेरी तरह पुष्पित (राय ३८) ।

सकेअ सक [स + केतय] १ इशारा करना । २ मसलहत करना । संकु सकेइय जोगिणिमेग' (सम्मत्त २१८) ।

सकेअ पुं [सकेत] १ इशारा, इंगित (सुपा ४१५, महा) । २ प्रिय-समागम का गुप्त स्थान (गा ६२६, गठ ३) । ३ विचिह्न-युक्त । ४ न. प्रत्याख्यान विशेष (भाव) ।

सकेअ वि [साङ्केत] १ सकेत-सबन्धी । २ न. प्रत्याख्यान विशेष (पव ४) ।

सकेइअ वि [सकेतित] सकेत-युक्त (आ १४, धर्मवि १३४, सम्मत्त २१८) ।

सकेलिअ वि [दे] सकेला हुआ, सकुचित किया हुआ (गा ६६४) ।

सकेस देखो संकिलेस (उप ३१२, कम्म ५, ६३) ।

सकोअ सक [स + कोचय] सकुचित करना । वक्क सकोअत (सम्मत्त २१७) ।

सकोअ पुं [सकोच] सकोच, सिमट (राय १४० टी, धर्मस ३६५, सवोध ४७) ।

सकोअण न [सकोचन] सकोच, सकुचाना (दे ५, ३१, भग, सुर १, ७६, धर्मवि १०१) ।

सकोइय वि [सकोचित] सकुचित किया हुआ, सकेला हुआ (उप ७२८ टी) ।

सकोड पुं [संकोट] सकोडना, संकोच (परह १, ३—पत्र ५३) ।

संकोडणा वी [संकोटना] ऊपर देखो (राज) ।

संकोडिय वि [संकोटित] सकोडा हुआ, संकोचित (परह १, ३—पत्र ५३, विपा १, ६—पत्र ६८, स ७४१) ।

सख पुन [शङ्ख] १ वाद्य विशेष, शंख (एदि, राय, जी १५, कुमा, दे १, ३०) । २ पुं. ज्योतिष्क ग्रह-विशेष (ठा २, ३—पत्र ७८) । ३ महाविदेह वर्ष का प्रान्त-विशेष, विजय-क्षेत्र विशेष (ठा २, ३—पत्र ८०) । ४ नव निधि में एक निधि, जिसमें विविध तरह के बाजों की उत्पत्ति होती है (ठा ६—पत्र ४४६, उप ६८६ टी) । ५ लवण समुद्र में स्थित वेलन्वर-नागराज का एक आवास-पर्वत (ठा ४, २—पत्र २२६, सम ६८) । ६ उक्त आवास-पर्वत का अधिष्ठाता एक देव (ठा ४, २—पत्र २२६) । ७ भगवान् मल्लिनाथ के समय का काशी का एक राजा (गाया १, ८—पत्र १४१) । ८ भगवान् महावीर के पास दीक्षा लेनेवाला एक काशी-नरेश (ठा ८—पत्र ४३०) । ९ तीर्थंकर-नामकर्म उपाजित करनेवाला भगवान् महावीर का एक श्रावक (ठा ६—पत्र ४५५, सम १५४, पव ४६, विचार ४७७) । १० नववें बलदेव का पूर्वजन्मीय नाम (पउम २०, १६१) । ११ एक राजा (उप ७३६) । १२ एक राज-पुत्र (सुपा ५६६) । १३ रावण का एक सुभट (पउम ५६, ३४) । १४ छन्द-विशेष (पिग) । १५ एक द्वीप । १६ एक समुद्र । १७ शंखवर द्वीप का एक अधिष्ठाता देव (दीव) । १८ पुन ललाट की हड्डी (धर्मवि १७, हे १, १०) । १९ नवी नामका एक गन्ध-द्रव्य । २० कान के समीप की एक हड्डी । २१ एक नाग-जाति । २२ हाथी के दाँत का मध्य भाग । २३ सख्या-विशेष, दस निखवें की सख्यावाला (हे १, ३०) । २४ आँख के समीप का भ्रव्यव (गाया १, ८—पत्र १३३) । २५ देखो 'पुर (ती ३, महा) । 'णाभ पु [नाभ] ज्योतिष्क महाग्रह-विशेष (सुज्ज २०) । 'णारी वी [नारी] छन्द-

भवि) । २ जिसको आज्ञा दी गई हो वह, 'हरिरोगमेसिणा सककवयणसदिट्ठेण' (कप्प) । ३ छँटा हुआ, छिनका निकाला हुआ (चावल आदि) (राय ६७) ।

सदिद्व वि [सद्व] सशय युक्त, सदेह-वाला (पात्र) ।

सदिन्न न [सदत्त] उनतोस दिनो का लगातार उपवास (सवोध ५८) ।

सदिय वि [स्यन्दित] क्षरित टपका हुआ (सुर २, ७६) ।

सदिर वि [स्यन्दित्] भरनेवाला (मण) ।

सदिस सक [स+दिश्] १ सदेशा देना, समाचार पहुँचाना । २ आज्ञा देना । ३ अनुज्ञा देना, सम्मति देना । ४ दान के लिए सकल्प करना । सदिसइ (पड्, महा), सदिसह (पडि) । कवक सदिससत (पिड २३६) । प्रयो, सक्, सदिसाविऊण (पचा ५, ३८) ।

सदिसण न [सदेसन] उपदेश, कथन, 'कुलनी-इट्ठिइभगप्पमुहारोगप्पमोससदिसण' (सवोध १५) ।

सदीण पुं [सदीन] १ द्वीप-विशेष, पक्ष या मास आदि में पानी से सराबोर होता द्वीप । २ अल्पकाल तक रहनेवाला दीपक । ३ श्रुतज्ञान । ४ क्षोभ्य, क्षोभणीय (आचा १, ६, ३, ३) ।

संदीवग वि [सदीपक] उत्तेजक, उद्दीपक, 'कामगिसदीवग' (रभा) ।

सदीवण न [सदीपन] १ उत्तेजना, उद्दीपन (सवोध ४८, नाट—उत्तर ५६) । २ वि. उत्तेजन का कारण, उद्दीपन करनेवाला (उत्तम ८८) ।

संदीविय वि [सदीपित] उत्तेजित, उद्दीपित (भवि) ।

संदुक्ख अक [प्र + दीप्] जलना, सुलगना । सदुक्खइ (पड्) ।

सदुट्ठ वि [सदुष्ट] अतिशय दुष्ट (सवोध ११) । सदुम अक [प्र + दीप्] जलना, सुलगना । सदुमइ (हे ४, १५२, कुमा) ।

सदुमिअ वि [प्रदीप्त] जला हुआ, सुलगा हुआ (पात्र) ।

संदेव पु [दे] १ सीमा, मर्यादा । २ नदी-मेलक, नदी-सगम (दे ८, ७) ।

सदेस पु [सदेश] सदेशा, समाचार (गा ३४२, ८३३, हे ४, ४३४, सुपा ३०१, ५१६) ।

सदेह पुं [सदेह] सशय, शका (स्वप्न ६६, गउड, महा) ।

सदोह पु [सदोह] समूह, जल्ला (पात्र, सुर २, १४६, सिरि ५६४) ।

सध सक [स + धा] १ साधना, जोड़ना । २ अनुसधान करना, खोज करना । ३ वांछना, चाहना । ४ वृद्ध करना, बढ़ाना । ५ करना, 'भग्ग व सधइ रह सो' (कुप्र १०२), सधइ, सवए (आचा, सूत्र १, १४, २१, १, ११, ३४, ३५) । भवि. सधिसमि, सधिसि (पि ५३०) । वक्क सधन (वे ५, २४) । कवक सधिज्जमाण (भग) । हेक्क सधिउ (कुप्र ३८१) ।

सधं देखो सभं (देवेन्द्र २७०) ।

सधण वीन [सधान] १ साधा, सवि, जोड़ (धर्मसं १०१७) । २ अनुसधान (पचा १२, ४३) । वी. णा (आचानि १७५, सूत्रनि १६७, ओघ ७२७) ।

सधणया वी [सधना] साधना, जोड़ना (वव १) ।

सधय वि [सधक] सधान-कर्ता (दस ६, ४, ५) ।

सधया देखो सव = सं + धा । सधयाती (सूत्र २, ६, २) ।

सधा वी [सधा] प्रतिज्ञा, नियम (आ १२, उप पु ३३३, सम्मत्त १७१) ।

सधाण न [सधान] १ दो हाथों का सयोग-स्थान (सुर १२, ६) । २ सधि, सुलह (हम्मोर १५) । ३ मद्य, सुरा, दारू (धर्मस ५६) । ४ जोड़, सयोग, मिलान (आचा, कुमा, भवि) । ५ अचार, नोबू आदि का मसाला दिया खाद्य-विशेष (पव ४) ।

सधारण न [सधारण] सान्त्वना, आशवासन (स ४१६) ।

सधारिअ वि [दे] योग्य, लायक (दे ८, १) ।

सधारिअ वि [सधारित] रखा हुआ, स्थापित (गाया १, १—पत्र ६६) ।

संधाव सक [स + धाव्] दौड़ना । सधावह (उत्त २०, ४६) ।

सधि पुत्री [सधि] १ छिद्र, विवर । २ सधान, उत्तरोत्तर पदार्थ-परिज्ञान (सूत्र १, १, १, २०, २१, २२, २३, २४) । ३ व्याकरण-प्रसिद्ध दो अक्षरों के संयोग से होने वाला वर्ण-विकार (पएह २, २—पत्र ११४) । ४ संध, चोरी के लिए भीत में किया जाता छेद (चार ६०, महा, हास्य ११०) । ५ दो हाथों का सयोग-स्थान, 'धक्काओ सव्व-सधीओ' (सुर ४, १६५, १२, १६६, जी १२) । ६ मत, अभिप्राय, 'अहवा विचित्त-सधिणो हि पुरिमा हवति' (स २६) । ७ कर्म, कर्म-सतति (आचा, सूत्र १, १, १, २०) । ८ सम्यग् ज्ञान की प्राप्ति । ९ चारित्र-मोहनीय कर्म का क्षयोपशम । १० अवसर, समय, प्रसंग । ११ मीलन, संयोग (आचा) । १२ दो पदार्थों का सयोग-स्थान (विपा १, ३—पत्र ३६, महा) । १३ मेल के लिए कतिपय नियमों पर मित्रता-स्थापन, सुलह (कप्प, कुमा ६, ४०) । १४ अघ का प्रकरण, अघ्याय, परिच्छेद (भवि) । 'गिह न [गृह] दो भीतों के बीच का प्रच्छन्न स्थान (कप्प) । 'च्छेयग, 'छेयग वि [च्छेदक] संध लगा कर चोरी करनेवाला (गाया १, १८—पत्र २३६, विपा १, ३—पत्र ३६) । 'पाल, 'वाल वि [पाल] दो राज्यो की सुलह का रक्षक (कप्प, औप, गाया १, १—पत्र १६) ।

सधिअ वि [दे] दुर्गन्धि, दुर्गन्धवाला (दे ८, ८) ।

सधिअ वि [सहित] साधा हुआ, जोड़ा हुआ (से १, ५४, गा ५३, स २६७, तदु ३६, वजा ७०) ।

सधिअ वि [सधित] प्रसारित (गउड) ।

सधिआ देखो सहिया (ओघ ६२) ।

सधिउ देखो सध = स + धा ।

सधित देखो सधिअ = सहित (भग) ।

सधिविगहहिअ पुं [सान्धिविग्रहिक] राजा की सधि और लड़ाई के कार्य में नियुक्त मंत्री (कुमा) ।

सखुङ्गण न [रमण] क्रीडा, सुरत-क्रीडा (कुमा) ।

संखुत्त (अप) नीचे देखो (भवि) ।

सखुद्ध वि [संखुद्ध] क्षोभ-प्राप्त (स ५६८, ६७४, सम्मत १५६, सुपा ५१७, कुप्र १७४) ।

संखुभिअ } वि [संखुद्ध, संखुभित्त]
सखुहिअ } ऊपर देखो (सम १२५, पव २७२, पठम ३३, १०६, पि ३१६) ।

सखेज्ज देखो सखा = स + ह्या ।

सखेज्जइ } देखो सखिज्जइ (अणु ६१,
सखेज्जइम } विसे ३६०) ।

संखेत्त देखो सखित्त (ठा ४ २—पत्र २२६, चेइय ३२५) ।

सखेव पु [सक्षेप] १ अल्प, कम, थोडा (जी २५, ५१) । २ पिड, सघात, सहति (ओघभा १) । ३ स्थान, 'तेरसमु जीवसखेवएसु' (कम्म ६, ३५) । ४ सामायिक, सम-भाव से अव-स्थान (विसे २७६६) ।

सखेवण न [सक्षेपण] अल्प करना, न्यून करना (नव २८) ।

सखेवय वि [सक्षेपिक] संक्षेप-युक्त । 'दसा खी व. [दसा] जैनग्रन्थ-विशेष (ठा १०—पत्र ५=५) ।

संखोभ } सक [स + क्षोभय्] खुव्व
संखोह } करना । सखोहइ (भवि) । कवक.
संखोभिज्जमाण (णायया १, ६—पत्र १५६) ।

संखोह पुं [सक्षोभ] १ भय आदि से उत्पन्न चित्त की व्यग्रता, क्षोभ (उव, सुर २, २२, उपपृ १३१, गु ३, वि ६४, गठड) । २ चंचलता (गठड) ।

सखोहिअ वि [संक्षोभित्त] खुव्व किया हुआ, क्षोभ-युक्त किया हुआ (से १, ४६, अमि ६०) ।

सग न [शृङ्ग] १ सींग, विपाण (धर्मसं ६३, ६४) । २ उत्कर्ष (कुमा) । ३ पर्वत के ऊपर का भाग, शिखर । ४ प्रधानता, मुख्यता । ५ वाद्य-विशेष । ६ काम का उद्देक (हे १, १३०) । देखो सिंग = शृङ्ग ।

सग न [शार्ङ्ग] शृङ्ग-सवन्धो (विसे २८६) ।
सग पुन [मङ्ग] १ सपकं, सवन्ध (आचा, महा, कुमा) । २ सोहवत, 'तह हीणायारज-इजणसगं सङ्गाण पडिसिद्ध' (सवोध ३६, आचा, प्रसू ३०) । ३ आसक्ति, विषयादि-राग (गठड, आचा, उव) । ४ कर्म, कर्म-वन्ध (आचा) । ५ वन्धन, 'मोगा इमे सगकरा हवति' (उत्त १३, २७) ।

संगइ खी [रागनि] १ औचित्य, उचितता (मुपा ११०) । २ मेल (भवि) । ३ निर्यात (सूत्र १, १, २, ३) ।

संगइअ वि [साङ्गतिक] १ नियति-कृत, नियति-सवन्धो (सूत्र १, १, २, ३) । २ परिचित, मुही ति वा सहाए ति वा सग(?) गइए ति वा' (ठा ४, ३—पत्र २४३, राज) ।

सगथ पु [सग्रन्थ] १ स्वजन का स्वजन, सगे का सगा (आचा) । २ सवन्धो, श्वशुर-कुल से जिसका सवन्ध हो वह (पएह २, ४—पत्र १३२) ।

सगच्छ सक [स + गम्] १ स्वीकार करना । २ अक, सगत होना, मेल रखना । सगच्छइ (चेइय ७७६, षड्), सगच्छह (स १६) । कृ सगमणीअ (नाट—विक्र १००) ।

सगच्छण न [सगमन] स्वीकार, अंगीकार (उप ६३०) ।

सगम पुं [सगम] १ मेल, मिलाप (पाअ, महा) । २ प्राप्ति, 'सग्गापवग्गसगमहेऊणिण-देसिओ धम्मो' (महा) । ३ नदी-मीलक, नदियों का आपस में मिलान (णायया १, १—पत्र ३३) । ४ एक देव का नाम (महा) । ५ स्त्री-पुरुष का सभोग (हे १, १७७) । ६ एक जैन मुनि का नाम (उव) ।

संगमय पुं [संगमक] भगवान् महावीर को उपसर्ग करनेवाला एक देव (चेइय २) ।

संगमी खी [संगमी] एक द्वीप का नाम (महा) ।

सगय वि [दे] मछण, चिकना (दे ८, ७) ।

सगय न [सगत] १ मित्रता, मैत्री (सुर ६, २०६) । २ सग, सोहवत (उव; कुप्र १३४) । ३ पुं एक जैन मुनि का नाम (पूष्क १८२) । ४ वि. युक्त, उचित (विपा १, २—पत्र

२२) । ५ मिलित, मिला हुआ (प्रामू ३१, पचा १, १, महा) ।

सगयय न [सगतक] छन्द विशेष (अजि ७) ।

सगर देखो संकर = सकर (विसे २८८४) ।

सगर न [स्गर] युद्ध, रण, लड़ाई (पाअ, काप्र १६३, कुप ७३, धर्मवि ६३, हे ४, ३४५) ।

सगरिगा खी [दे] फली-विशेष, जिमकी तरकारी होती है, सांगरी (पव ४—गाया २२६) ।

संगल सक [स + घटय्] मिलना, सघटित करना । संगलइ (हे ४, ११३) । सक संगलिअ (कुमा) ।

संगल अक [स + गल्] गल जाना, हीन होना । वक संगलंत (से १०, ३४) ।

संगलिया खी [दे] फली, फलिया, छीमी (मग १५—पत्र ६८०, अनु ४) ।

संगह सक [स + ग्रह्] १ सचय करना । २ स्वीकार करना । ३ आश्रय देना । संगहइ (भवि) । भवि, सगहिस्स (मोह ६३) ।

संगह पु [दे] घर के ऊपर का तिरछा काठ (दे ८, ४) ।

संगह पुं [संग्रह] १ सचय, इकट्ठा करना, बटोरना (ठा ७—पत्र ३८५, वव ३) । २ संक्षेप, समास (पाअ, ठा ३, १ टी—पत्र ११४) । ३ उपधि, वज्र आदि का परिग्रह (ओघ ६६६) । ४ नय-विशेष, वस्तु-पराक्षा का एक दृष्टिकोण, सामान्य रूप में वस्तु को देखना (ठा ७—पत्र ३६०, विसे २२०३) । ५ स्वीकार, ग्रहण (ठा ८—पत्र ४२२) । ६ कष्ट आदि में सहायता करना (ठा १०—पत्र ४६६) । ७ वि संग्रह करनेवाला (वव ३) । ८ न नक्षत्र-विशेष, दुष्ट ग्रह से आक्रान्त नक्षत्र (वव १) ।

सगहण न [सग्रहण] संग्रह (विसे २२०३, सवोध ३७, महा) । 'गाहा खी [गाया] संग्रह-गाथा (कप्प ११८) । देखो सगिण्हण ।

सगहणि खी [सग्रहणि] संग्रह-ग्रन्थ, संक्षिप्त रूप से पदार्थ प्रतिपादक ग्रन्थ, सार-संग्राहक ग्रन्थ (सग १, धर्मसं ३) ।

सनिवेस पुं [सनिवेश] १ नगर के बाहर का प्रदेश, जहाँ आभीर वगैरह लोग रहते हैं। २ गाँव, नगर आदि स्थान (भग १, १—पत्र ३६)। ३ यात्री आदि का डेरा मार्ग का वाम-म्यान, पड़ाव (उत्त ३०, १७)। ४ ग्राम ग.व (निरि ३८)। ५ रचना (उप पृ १४०)।

सनिवेसणया स्त्री [सनिवेशना] संन्यापन (उत्त २६, १)।

सनिवेमिह वि [सनिवेशिन] रचनावाला, (उप पृ १४२)।

सनिमत्र वि [सनिपण] बैठा हुआ, सम्यक् स्थित (आया १ १—पत्र १६ कुप्र १६६ ध्रु १२, मण)।

सनिमिज्जा स्त्री [सनिपच्चा] आमन-सनिसेज्जा विशेष, पीठ आदि आमन (सम २१, उत्त १६, ३, उव)।

सनिह वि [सनिभ] ममान, महेश (प्रास ६६, मण)।

सनिहाण न [सनिधान] १ ज्ञानावरणीय आदि कर्म (आचा)। २ कारक विशेष, अवि-करण कारक, आवार (विमे २०६६, ठा ८—पत्र ४०७)। ३ मान्निव्य, निकटता (स ७१८, ७६१)। ४ मत्थ न [शस्त्र] समय, त्याग (आचा)। ५ मत्थ न [शस्त्र] कर्म का स्वरूप बतानेवाला शास्त्र (आचा)।

सनिहि पुं [सनिधि] १ उपभोग के लिए स्थापित वस्तु (आचा १, २, १, ४)। २ मस्थापन। ३ मृन्दर निधि (आचा १, २, ५, १)। ४ समीपता, निकटता (उप पृ १८६, म ६८, कुप्र १३०)। ५ सचय, मग्रह (उत्त ६, १५, दस ३, ३, ८, २४)।

सनिहिअ पु [सनिहित] अणपत्ति देवों के दक्षिण दिशा का इन्द्र (ठा २, ३—पत्र ८५)। देखो सणिहिअ (आया १, १ टी—पत्र ४)।

मनेज्म देखो सनिज्म, 'उवगारि ति करेइ कुमरस्त सवेज्ज(१ ज्म)' (कुप्र २५, चेइय ७८३)।

सपअ (अप) देखो सपया (पिंग, पि ४१३, संपइ } हे ४, ३३५, कुमा)।

संपइ अ [सप्रति] १ इस समय, अधुना, अब (पात्र, महा, जी ५८, द ४६, कुमा)। २ पुं. एक प्रसिद्ध जैन राजा, मम्राट् अशोक का पोत्र (कुप्र २, धर्मवि ८७, पुष्प २६०)। ३ काठ पु [काठ] वर्तमान काल (मुपा ४४६)। ४ काठोण वि [काठोण] वर्तमान काल-मन्वन्वी (विमे २२२६)।

सपइण वि [सप्रतीर्ण] व्याप्त (राज)।

सपउत्त वि [सप्रयुक्त] सयुक्त, संबद्ध, जोड़ा हुआ (ठा ४, १—पत्र १८३, सूअ २, ७, २, उवा, औप, धर्मस ६६५ राय १४६)।

सपअण पु [संप्रयोग] मयोग, संबन्ध (ठा ४, १—पत्र १८७, म ६१४, उर ७२८ टी, कुप्र ३७३ औप)।

सपअर देखो सगर। सगरेइ (उत्त २१, १६)।

सपक पु [सपर्क] सम्बन्ध (मुपा ५८, सम्मत १४१)।

सपकि वि [सपर्किन] सङ्गवाला, सवन्वी (कणू, काप्र १७)।

सपक्खाल पु [सप्रक्षाल] तापम का एक भेद जो मिट्टी वगैरह घिस कर शरीर का प्रक्षालन करते हैं (औप)।

सपन्खालिय वि [सप्रक्षालित] बोया हुआ (धर्म ३)।

सपक्खत्त वि [सप्रक्षिप्त] प्रक्षिप्त, फेंका हुआ, डाला हुआ (पत्र ५, १५७)।

सपगर सक [सप्र + कृ] करना। सगरेइ (उत्त २१, १६)।

सपगाढ वि [सप्रगाढ] १ घट्यन्त आउक्त (उत्त २०, ४५, सूअ २, ६, २२)। २ व्याप्त (सूअ १, ५, १, १७)। ३ स्थित, व्यवस्थित (सूअ १, १२, १२)।

सपगिद्व वि [सप्रगृह्य] अति आसक्त (पणह १, ४—पत्र ८५)।

सपगहिअ वि [सप्रगृहीत] खूब प्रकर्ष से गृहीत, विशेष अभिमान-युक्त (दस ६, ४, २)।

सपज्ज अक [स + पद्] १ सपन्न होना, सिद्ध होना। २ मिलना। सपज्ज (पठ्, महा)। भवि, सपज्जिस्सइ (महा)।

सपज्जलिअ पु [सप्रज्वलित] तीसरा नरक का नववाँ नरकेन्द्रक, नरकावास-विशेष (देवेन्द्र ६)।

सपट्ठिअ देखो सपत्तिअ = संप्रस्थित (उप १४२ टी, औप, मवोव ५५, मुपा ७७; उपपृ १५८)।

सपड अक [सं + पद्] १ प्राप्त होना, मिलना, गुजराती में 'मापडव'। २ सिद्ध होना, निष्पन्न होना। सपड्ड सपडिति (वजा १८६, सपु १५८, वज्जा ५८)। वरु सपडत (से १४, १, मुर १० २७)।

सपडिअ वि [दे सण्ण] लव्य मिला हुआ, प्राप्त (दे ८ १८, न २८)।

सपडिअह मक [सप्रति + वृह] प्रशंसा करना तारीफ करना। सपडिअहनि मृ २, २, ५७)।

सपडिलेह मक [सप्रति + लव्य] प्रति-जागरण करना, प्रत्युपेक्षण करना, अच्छी तरह निरीक्षण करना। सपडिलेह (उत्त २६, ४३)। क. संपडिलेहिअव्व (दस १, १)।

सपडिअज्ज सक [सप्रति + पद्] स्वीकार करना। संपडिअज्जइ (भग)।

सपडिअत्ति स्त्री [सप्रतिपत्ति] स्वीकार, अंगीकार (विमे २६१४)।

सपडिअइअ वि [सप्रतिपादित] स्थित (उत्त २२, ४६, सुख २२, ४६)। २ स्थापित (दस २, १०)।

सपडिअय सक [सप्रति + पाद्य] सगदन करना, प्राप्त करना। संपडिअयए (दस ६, २, २०)।

सपणदिय } देखो सपणाइय (राज, सपणदिय } कण)।

सपणा देखो सपणा (दे ८, ८)।

सपणाइय } वि [सप्रगाढित] नमी-संपणादिय } चीन शब्दवाला, 'सुडियनमन-पणाइया' (जीव ३, ४—पत्र २२५ पत्र २२७ टी)।

सपणाम सक [संप्र + नामय] अर्पण करना। सपणामए (उत्त २३, १७)।

सपणिपाअ } पुं [सप्रणिपात] प्रणाम, संपणिवाय } समीचीन नमस्कार (पंचा ३, १८, चेइय २३७)।

संघट्टिय वि [सघट्टित] १ स्मृत्, छुआ
हुआ (गाया १, ५—पत्र ११२, पडि) ।
२ सघर्षित, समर्पित (भग १६, ३—पत्र
७६६, ७६७) ।

सघड अक [सं + घट्] १ प्रयत्न करना ।
२ सघट्ट होना, युक्त होना । कृ सघडयन्त्र
(ठा ८—पत्र ४४१) । प्रयो मयडावेइ
(महा) ।

सघड वि [संघट] निरन्तर, 'सघडदसिणो'
(आचा १, ४, ४, ४) ।

सघडण देखो संघयण (चड—पु ४८, भवि) ।
संघडणा छी [सघटना] रचना, निर्माण
(समु १५८) ।

संघडिअ वि [सघटित] १ संबद्ध, युक्त
(से ४, २४) । २ गठित, जटित (प्रासू २) ।
सघदि (शौ) छी [सहति] समूह (पि
२६७) ।

संघयण न [दे संहनन] १ शरीर, काय
(दे ८, १४, पात्र) । २ अस्थि-रचना, शरीर,
के हाडो की रचना, शरीर का बाँध (भग,
सम १४६, १५५, उव, श्रीप, उवा, कम्म
१, ३८, पड्) । ३ कर्म-विशेष, अस्थि-
रचना का कारण-भूत कर्म (सम ६७, कम्म
१, २४) ।

सघयणि वि [दे सहननिन्] संहनन-
वाला (सम १५५, अणु ८ टी) ।

सघरिस देखो सघंस (उप २६४ टी) ।

सघरिमिद (शौ) वि [सघर्षित] सघर्ष-युक्त,
घिसा हुआ (मा ३७) ।

सघस सक [स + घृप्] सघर्ष करना ।
संघसिज (आचा २, १, ७, १) ।

सघस्सिद देखो सघरिसिद (नाट—मालवि
२६) ।

सघाइअ वि [सघातित] १ सघात रूप से
निष्पन्न (से १३, ६१) । २ जोडा हुआ
(आव) । ३ इकट्ठा किया हुआ (पडि) ।

सघाइस वि [सघातम] ऊपर देखो (श्रीप,
आचा २, १२, १, पि ६०२, अणु १२,
दसनि २, १७) ।

सघाड देखो सघाय = सघात (श्रीपभा १०२,
राज) ।

सघाड १ पु [दे संघाट] १ युग्म,
सघाडग १ युगल (राय ६६, धर्मस १०६५,
उप पु ३६७, सुपा ६०२, ६२३, ओघ
४११, उप २७५) । २ प्रकार, भेद, 'संघाडो
त्ति वा लय त्ति वा पगारो त्ति वा एगट्टो'
(निचू) । ३ ज्ञाताधर्म-कथा नामक जैन अग-
ग्रन्थ का दूसरा अध्ययन (सम ३६) ।

सघाडग देखो सिघाडन (कण्) ।

सघाडगा छी [सघटना] १ सवन्व । २
रचना, 'अक्खरगुणमत्ति सघाय (? ड)णाए'
(सूअनि २०) ।

सघाडी छी [दे. सघाटो] १ युग्म, युगल
(दे ८, ७, प्राकृ ३८, गा ४१६) । २
उत्तरीय वस्त्र-विशेष (ठा ४, १—पत्र १८६,
गाया १, १६—पत्र २०४, ओघ ६७७,
विमे २३२६, पत्र ६२, कस) ।

सघाणय पु [शिङ्खानक] श्लेष्मा, नाक में
से बहता द्रव पदार्थ (तदु १३) ।

सघातिम देखो सघाइम (गाया १, ३—पत्र
१७६, पणह २, ५—पत्र १५०) ।

सघाय सक [सं + घातय] १ सहत करना,
इकट्ठा करना, मिलाना । २ हिंसा करना
मारना । सघायइ, सघाएइ (कम्म १, ३६,
भग ५, ६—पत्र २२६) । कृ. सघायणिज्ज
(उत्त २६, ५६) ।

संघाय पु [सघात] १ सहति, सहत रूप से
अवस्थान, निविडता (भग; दस ४, १) । २
समूह, जत्या (पात्र, गडड, श्रीप, महा) ।
३ संहनन-विशेष, वज्रश्रृंग-भन-नाराच नामक
शरीर-बन्ध, 'सघाएण सठाएण' (श्रीप) ।
४ श्रुतज्ञान का एक भेद (कम्म १, ७) ।
५ सकोच, सकुचाना (आचा) । ६ न.
नामकर्म-विशेष, जिस कर्म के उदय से शरीर-
योग्य पुद्गल पूर्व-गृहीत पुद्गलो पर व्यवस्थित
रूप से स्थापित होते हैं (कम्म १, ३१,
३६) । 'समास पुं [समास] श्रुतज्ञान
का एक भेद (कम्म १, ७) ।

सघायण न [सघातन] १ विनाश, हिंसा
(स १७०) । २ देखो 'सघाय' का छठवाँ
अर्थ (कम्म १, २४) ।

सघायणा छी [सघातना] सहति । °करण

न [°करण] प्रदेशों को परस्पर सहत रूप
से रखना (विमे ३३०८) ।

संघार पु [संहार] १ बहु-जतु-सय, प्रलय
(तदु ४५) । २ नाश (पउम ११८, ८०,
उप १३६ टी) । ३ संक्षेप । ४ विसर्जन ।
५ नरक-विशेष । ६ भैरव-विशेष (हे १,
२६४, पड्) ।

सघार (अग) देखो सहर = स + ह । सकृ.
सवारि (पिंग) ।

सघारिय वि [सहारित] मारित, व्यापादित
(भवि) ।

संघासय पुं [दे] स्पर्धा, बराबरी (द ८,
१३) ।

सधिअ देखो सधिय = सहित (प्राप) ।

सधिल्ल वि [संघवत्] सघ-युक्त, नमुदित
(राज) ।

सघोडी छी [दे] व्यतिकर, सवन्व (दे ८,
८) ।

सच (अप) देखो सचिय । सचइ (भवि) ।

सच (अप) पु [सचय] परिचय (भवि) ।

सचइ १ वि [सचयिन्] संचयवाला,
सचइग १ सग्रही, सग्रह करनेवाला, (दसनि
१०, १०, पत्र ७३ टी) ।

सचइय वि [सचयित] संचय-युक्त (राज) ।

सचक्कार पुं [दे] अवकाश, जगह,

'अविगणिय कुलकलं इय

कुहियकरककारणे कीस ।

वियरसि सचक्कार त

नारयतिरियदुक्काण ॥'

(उप ७२८ टी) ।

सचत्त वि [सत्यक्त] परित्यक्त (अज्झ
१७८) ।

सचय पुं [सचय] १ सग्रह (पणह १, ५—
पत्र ६२, गडड, महा) । २ समूह (कण्,
गडड) । ३ संकलन, जोड (वव १) ।
°भास पुं [°नाम] प्रायश्चित्त-सवन्वो मास-
विशेष (राज) ।

सचर सक [स + चर] १ चलना, गति
करना । २ सम्यग् गति करना, अच्छी तरह
चलना । ३ धीरे धीरे चलना । संवरइ
(गडड ४२६, भवि) । कृ. सचरत (से २,

सपलत्त वि [सप्रलपित] उक्त, कथित, प्रतिपादित (शाया १, २—पत्र ८६) ।

सपललिय वि [सप्रललित] जिमका अन्धो तरह लालन हुआ हो वह 'सुहसपललिया' (श्रौप) ।

संपलिअ पुं [सपलित] एक जैन महर्षि (कप्प) ।

संपलिअरु पु [सपर्यङ्क] पद्यासन (भग, श्रौप, कप्प, राय १४५) ।

संपलित्त वि [संप्रदीप्त] प्रज्वलित, सुलगा हुआ (शाया १, १—पत्र ६३, पत्र २२, १६, वर्मस ६७०, सुपा २६८, महा) ।

संपलिमज्ज सक [सपरि + मृज्] प्रमार्जन करना । वहु संपलिमज्जमाण (आचा १, ५, ४, ३) ।

सपली सक [सपरि + ड] जाना, गति करना । सपलिति (सूत्र १, १, २, ७) ।

सपवेय } अक [सप्र + वेप्] कांपना ।
सपवेव } संपवेयए, सपवेवए (आचा २, १६, ३) ।

संपवेस पुं [संप्रवेश] प्रवेश, पैठ (गउड) ।

संपव्वय सक [सप्र + व्रज] गमन करना, जाना । वहु संपव्वयमाण (आचा १, ५, ५, ३, ठा ६—पत्र २५२) । हेक्क संपव्वइत्तए (कम) ।

संपसार पुं [सप्रसार] एकत्रित होना, समवाय (राज) ।

सपसारग } वि [सप्रसारक] १ विस्तार-
सपसारय } रक, फैलानेवाला (सूत्र १, २, २, २८) । २ पर्यालोचनकर्ता (आचा १, ५, ४, ५) ।

संपसारि वि [सप्रसारिन्] ऊपर देखो (सूत्र १, ६, १६) ।

सपसिद्ध वि [संप्रसिद्ध] अत्यन्त प्रसिद्ध (वर्मस ८३७) ।

सपस्स सक [स + दृश्] १ अन्धो तरह देखना । विचार करना । संक्क सपरिस्सय (दमच्च १, १८) ।

सपहार सक [सप्र + धारय] १ चिंतन करना । २ निर्णय करना, निश्चय करना । संपहारैति (सुख १, १५) । भूका. संपहारिमु

(सूत्र २, १, १४, २६) । संक्क. सपहारिऊण (स १०६) ।

संपहार पु [सप्रधार] निश्चय, निर्णय (पत्र १६, २६, उप १०३१ टी, भवि) ।

सपहार पुं [सप्रहार] युद्ध, लड़ाई (मे ८, ४६) ।

सपहारण न [संप्रधारण] निश्चय (पत्र ४८, ६८) ।

सपहाव सक [सप्र + वाव्] दौड़ना । सपहावेइ (आचा २, १, ३, ३) ।

सपहिट्ट वि [सप्रहृष्ट] हर्षित, प्रमुदित (उत्त १५, ३) ।

सपा स्त्री [दे] काची, मेखला, करघनी (दे ८, २) ।

सपाडअव वि [सपाडितवत्] जिमने सम्पादन किया हो वह (हे ४, २६५, विसे ६३४) ।

सपाडम वि [सपातिम] १ भ्रमर, कीट, पतंग आदि उड़नेवाला जंतु (आचा, पिड २४, सुपा ४६१, श्रौष ३४८) । २ जानेवाला, गति-कर्ता, 'तिरिच्छसपाडमा वा तसा पाणा' (आचा २, १, ३, ६, २, ३, १, १४) ।

संपाडय वि [संपातित] १ आगत, आया हुआ । २ मिलित, मिला हुआ (भवि) ।

संपाडय वि [सपादिन] साधित, सिद्ध किया हुआ, 'सपाडयइट्टफलि' (मण) ।

सपाऊण सक [सप्र + आप्] अन्धो तरह प्राप्त करना । संपाऊणइ, संपाऊणति (उत्त २६, ५६, पि ५०४) । भवि. संपाऊणिस्सामो (शाया १, १८—पत्र २४१) । प्रयो 'जेणप्पाण परं चेव सिद्धि सपाऊणेज्जासि' (उत्त ११, ३२) ।

संपाओ अ [सप्रातर] १ जब प्रभात होय तब, प्रात काल । २ अति प्रभात, बड़ी सुबह । ३ हर प्रभात (ठा ३, १ टी—पत्र ११८) ।

संपागड वि [सप्रकट] प्रकट, खुला, 'सपागडपडिसेवी' (ठा ४, १—पत्र २०३, उप) ।

संपाड सक [सं + पादय्] १ सिद्ध करना, निष्पन्न करना । २ प्रायित वस्तु देना,

दान करना । ४ प्राप्त करना, 'देइ सो जम्मग्गिय, सपाडेइ वट्ठामरणाइय' (महा), 'सपाडेमि भयवन्नो भाए ति' (स ६८४), सपाडेइ (स ६६) । क. संपाडेयव्व (म २१४) ।

संपाडग वि [संपाडक] कर्ता निर्माता, 'ता को अन्नो तस्सुत्तइए सपाडगो होज्जा' (उप १४२ टी) ।

सपाडण न [सपादन] १ निष्पादन (म ७४८) । २ करण निर्माण (पंचा ६, ३८), 'परत्थसंपाडणिक्कसिप्रत्त' (सा ११) ।

संपाडिअ वि [संपाडिन] १ सिद्ध किया हुआ, निष्पादित (म २०४, मुर २, १७०) । २ प्राप्त किया हुआ (उप पृ १२४) । ३ दत्त, अर्पित (स २३५) ।

संपातो देवो सपाओ (ठा ३, १—पत्र ११७) ।

सपाद (श्री) देखो संपाड = सं + पादय् । सपादेदि (नाट—शकु ६५) । क. सपादणीअ (नाट—विक्र ६०) ।

संपाडइत्तअ (शो) । वि [संपपादवित्] सपादन-कर्ता, सपादक (पि ६००) ।

सपाडिअवद (श्री) देखो सपाडअव (पि ५८६) ।

सपाय पु [सपात] सम्यकपतन, 'सलिल-सपायकयकहुमुप्पोलय' (सुर ३ ११६) । २ सवन्ध, सयोग, 'सारीरमाणसारोयदुक्खसंपायकलिय ति' (सुर ४, ७५, गउड) ३ व्यर्थ का झूठ, निरर्थक असत्य-भाषण (पणह १, ५—पत्र ६२) । सग, सगति (आ ६, पचा १, ४१) । ५ आगमन (पंचा ७, ७०) । ६ चलन, हिलन (उत्त १८, २३, सुख १८, २३) ।

सपाय देखो सपाओ (राज) ।

सपायग वि [सपादक] सपादन-कर्ता (उप पृ २६, महा, चेइय ६०५) ।

सपायग वि [सप्रापक] १ प्राप्त करनेवाला; 'रिसिगुणसपायगो होइ' (चेइय ६०५) । २ प्राप्त करानेवाला (उप पृ २६) ।

सपायण देखो सपाडण (सुर ४, ७३, सुपा २८, ३४३, चेइय ७६७) ।

सजमिन्नति (गउड २८६)। वहु सजमेत, सजमयंत सजममाण (गउड ८४०, दसनि १, १४०, उत्त १८, २६)। कवक सज-मीथमाण (नाट—विक्र ११२)। संकु सजमित्ता (सूत्र १, १०, २)। हेकु सजमिठ (गउड ४८७)। कृ. सजमिअव्य, सजमितव्य (भग. णाया १, १—पथ ६०)।

संजम सक [दे] छिपाना। संजमेसि (दे ८, १४ टी)।

संजम पु [सयम] १ चारित्र्य, व्रत, विरनि हिसादि पाप-कर्म से निवृत्ति (भग. ठा ७, औप कुमा, महा)। २ शुभ अनुष्ठान (कुमा ७, २२)। ३ रक्षा, ग्रहिसा (णाया १, १—पथ ६०)। ४ इन्द्रिय निग्रह। ५ वचन। ६ नियन्त्रण कावू (हे १, २४५)। १. सजम पु [सयम] श्रावक-व्रत (औप)।

सजमण न [सयमन] ऊपर देखो (धर्मवि १७ गा २६१, मुपा ५५३)।

सजमिअ वि [दे] सगोपित, छिपाया हुआ (दे ८, १४)।

सजमिअ वि [सयमित] बाँधा हुआ बद्ध (गा ६४६ सुर ७, ५, कुप्र १८७)।

सजय अक [सं + यन्] १ सम्यक् प्रयत्न करना। २ मक. अचछी तरह प्रवृत्त करना। सजयए सजए (पव ७२, उत्त २, ४)।

सजय वि [सयत] साधु मुनि, व्रती (भग. ओघमा १७, बाल), 'ममावि मायावित्ताणि सजयणि' (महा)। १. पता छो [प्राप्ता] साधु को उपद्रव करनेवाली देवी आदि (ओघमा ३७ टी)। १. भद्रिगा छो [भद्रिगा] साधु को अनुकूल रहनेवाली देवी आदि (ओघमा १७ टी)। १. सजय वि [सयत] किसी अश में व्रती और किसी अश में अव्रती, श्रावक (भग)।

सजय पुं [सजय] भगवान् महावीर के पास दीक्षा लेनेवाला एक राजा (ठा ८—पथ ४३०)।

सजयत पुं [सजयन्त] एक जैन मुनि (पञ्चम ५, २१)। १. पुर न [पुर] नगर-विशेष (इक)।

सजर पुं [सज्वर] ज्वर, बुखार (अचु ६७)। सजल अक [स + ज्वल्] १ जलना। २ आक्रोश करना। ३ क्रुद्ध होना। सजले (सूत्र १, ६, ३१, उत्त २, २४)।

संजलग वि [सज्वलन] १ प्रतिक्षण क्रोध करनेवाला (मम ३७)। २ पु कपाय-विशेष (कम्म १ १७)।

संजलिअ पु [सज्वलिन] तीमरी नरक भूमि का एक नरक-स्थान (देवेन्द्र ६)।

सजल्लिअ (अप) वि [सज्वलित] आक्रोश-युक्त (भवि)।

सजय देखो सजम = स + यम्। सजयहु (अप) (भवि)।

सजय देखो सजम = (दे)। सजयइ (प्राकृ ६६)।

सजविअ देखो सजमिअ = (दे) (पात्र, भवि)।

सजविअ देखो सजमिअ = संयमित (भवि)।

सजा देखो सगा (हे २, ८३)।

सजाणय वि [सजायक] विज्ञ, विद्वान्, जानकार (राज)।

सजात } देखो सजाय = संजात (सुर २, सजाद } ११४, ४, १६०, प्राप्र, पि २०४)।

सजाय अक [स + जन्] उत्पन्न होना। सजायइ (सण)।

सजाय वि [सजात] उत्पन्न (भग, उवा, महा, मण, पि ३३३)।

सजीवणी छो [सजीवनी] १ मरते हुए को जीवित करनेवाली औपवि (प्रासू ८३)। २ जीवित-दात्री नरक-भूमि (सूत्र १, ५, २, ६)।

सर्जावि वि [सजिविन्] जिलानेवाला, जीवित करनेवाला (कप्पु)।

मजुअ वि [सयुत] सहित, सयुक्त (द्र २२, मिक्खा ४८, मुर ३, १७७, महा)। देखो सजुन।

सजुअ न [सयुग] १ लडाई, युद्ध, सग्राम (पात्र)। २ नगर-विशेष (राज)।

सजुज सक [सं + युज्] जोड़ना। कर्म 'अविसिद्धे सग्भावे जलेण सजुअ (१ अ) ती

जहा वत्थ' (धर्मस १८०)। कवक. सजुज्जत (सम्म ५३)।

सजुन न [सयुत] छन्द-विशेष (पिंग)। देखो संजुअ = मयुत।

सजुना छो [सयुता] छन्द-विशेष (पिंग)।

सजुन वि [सयुक्त] सयोगवाला, जुड़ा हुआ (महा, सण पि ४४४, पिंग)।

मजुत्ति छो [दे] तैयारी (सुर ४, १०२, १२, १०१, स १००, कुप्र २००)। देखो सजत्ति।

सजुव वि [दे] स्पन्द-युक्त थोड़ा हिलने-चलनेवाला, फरकनेवाला (दे ८ ६)।

सजूह पुन [सयुथ] १ उचित समूह (ठा १०—पथ ४६५)। २ सामान्य, मावारणता। ३ संक्षेप, समास (सूत्र २, २, १)। ४ ग्रन्थ-रचना, पुस्तक निर्माण (अणु १४६)। ५ दृष्टिवाद के अठासी मूत्रों में एक सूत्र का नाम (सम १०८)।

सजोअ सक [स + योजय्] सयुक्त करना, सबद्ध करना, मिश्रण करना। सजोएइ, सजोयइ (पिड ६३८, भग. उव, भवि)। वहु सजोयंत (पिड ६३६)। सक सजो-एऊण (पिड ६३६)। कृ सजोएअव्य (भग)।

सजोअ सक [स + दृश्] निरीक्षण करना, देखना। सक सजोइऊण (श्रु ३२)।

संजोअ पु [सयोग] सवन्ध, मेल-मिलाप, मिश्रण (पड, महा)।

सजोअण न [सयोजन] १ जोड़ना, मिलाना (ठा २, १—पथ २६)। २ वि जोड़नेवाला। ३ कपाय-विशेष, अनन्तानुवन्धि नामक क्रोधादि-चतुष्क (विसे १२२६, कम्म ५, ११ टी)। १. धि करणिया छो [धि करणिकी] खड्ग आदि को उसको मूठ आदि से जोड़ने की क्रिया (ठा २, १—पथ ३६)।

सजोअणा छो [सयोजना] १ मिलान, मिश्रण (पिड ६३६)। २ भिक्षा का एक दोष स्वाद के लिए भिक्षा-प्राप्त चीजों को आपस में मिलाना (पिड १)।

सजोइय वि [सयोजित] मिलाया हुआ, जोड़ा हुआ (भग, महा)।

सवल पुंन [शम्बल] १ पाथेय, रास्ते में खाने का भोजन, 'घन्नाणं चिय परलायसवलो मिलइ नत्ताण' (सम्मत्त १५७, पाथ, सुर १६, ५०, दे ६, १०८, महा, भवि, सुपा ६४) । २ एक नागकुमार देव (आवम) ।

सवल्लि देखो सिवल्लि = शिम्बलि (आचा २, १, १०, ४) ।

सवल्लि पुत्री [शाल्मलि] वृक्ष-विशेष, सेमल का पेड़ (मुर २, २३४, ८, ५७) । देखो सिवल्लि ।

सवाधा देखो सवाहा (पउम २, ८६) ।

सवाह सक [सं + बाध्] १ पीड़ा करना । २ दवाना, चप्पी करना । सवाहज्जा (निचू ३) ।

सवाह पुं [सवाध] १ नगर-विशेष, जहाँ ब्राह्मण आदि चारों वर्णों की प्रभूत वस्ती हो वह शहर (उत्त ३०, १६) । २ पीड़ा, 'सवाहा वहवे भुज्जो दुरइक्कमा अजाणओ अपासरो' (आचा) । ३ वि. सकीणं, सकरा, 'सवाहं सकीण' (पाथ) ।

संवाहण न [संवाधन] देखो संवाहण (आचा १, ६, ४, २) ।

सवाहणा स्त्री [संवाधना] देखो सवाहणा (औप) ।

सवाहणी स्त्री [संवाधनी] विद्या-विशेष (पउम ७, १३७) ।

सवाहा स्त्री [सवाधा] १ पीड़ा (आचा १, ५, ४, २) । २ अंग-मर्दन, चप्पी (निचू ३) ।

सवाहिय वि [सवाधित] १ पीड़ित (सुअ १, ५, २, १८) । २ देखो संवाहिय (औप) ।

सवुक्क पु [शम्बुक] १ शंख (ठा ४, २—पत्र २१६, सुपा ५०, १६५) । २ रावण का एक भागिनिय—खरदूषण का पुत्र (पउम ४३, १८) । ३ एक गांव का नाम (राज) । 'विट्ठा स्त्री [विर्ता] शंख के आवतं के समान भिक्षा-चर्या (उत्त ३०, १६) । देखो सवूअ ।

सवुज्झ सक [सं + बुध्] समझना, ज्ञान पाना । सवुज्झइ, सवुज्झंति, सवुज्झह (महा,

स ४८६, सुअ १, २, १, १, वै ७३) । वक्क. संवुज्झमाण (आचा १, १, २, ५) । सवुद्ध वि [सवुद्ध] ज्ञान-प्राप्त (उवा, महा) । संवुद्धि स्त्री [सवुद्धि] ज्ञान, बोध (अज्झ ३६) ।

संवूअ पु [शम्बूक] जल-शुक्ति, शुक्ति के आकार का जल-जंतु-विशेष (दे ८, १६, गउड) ।

सवोधि स्त्री [सवोधि] सत्य धर्म की प्राप्ति (धम्मस १३६६) ।

सवोह सक [स + वोधय्] १ समझाना, बुझाना । २ आमन्त्रण करना । ३ विज्ञप्ति करना । सवोहइ, सवोहेइ (भवि, महा) । कवक्क. सवोहिज्झमाण (णाय १, १४) । क. सवोहेअव्व (ठा ४, ३—पत्र २४३) ।

संवोइ पुं [संवोध] ज्ञान, बोध, समझ (आत्म २०) ।

सवोहण न [सवोधन] १ ऊपर देखो (विसे २३३२, सुख १०, १, चेइय ७७५) । २ आमन्त्रण (गउड) । ३ विज्ञप्ति (णाय १, ८—पत्र १५१) ।

संवोहि देखो संवोधि (उप पु १७६, वै ७३) ।

सवोहिअ वि [संवोधित] १ समझाया हुआ (यति ४८) । २ विज्ञापित (णाय १, ८—पत्र १५१) ।

सभत वि [सभ्रान्त] १ भीत, घबड़ाया हुआ, त्रस्त (उत्त १८, ७, महा; गउड) । २ पुन. प्रथम नरक का पाचवाँ नरकेन्द्रक-नरकस्थान-विशेष (देवेन्द्र ४) । ३ न. भय, घबराहट (महा) ।

सभति स्त्री [सभ्रान्ति] सभ्रम, उत्सुकता (भग १६, ५—पत्र ७०६) ।

संभंतिय वि [सभ्रान्तिक] सभ्रम से बना हुआ (भग १६, ५—पत्र ७०६) ।

सभग्ग वि [सभग्न] क्षुण्णित (उत्त १६, ६१) ।

सभण सक [स + भण्] कहना । सक. संभणिअ (पिंग) ।

सभणिअ वि [सभणित] कथित, उक्त (पिंग) ।

संभम सक [सं + भ्रम्] १ अतिशय भ्रमण करना । २ भ्रक भय-भीत होना, घबड़ाना । वक्क. संभमत (पि २७५) ।

संभम पुं [संभ्रम] १ आदर, 'संभमो भायतो पयत्तो य' (पाथ) । २ भय, घबराहट, क्षोभ; 'सखोहो संभमो तासो' (पाथ, प्रासू १८५, महा) । ३ उत्सुकता (औप) ।

सभर सक [सं + भृ] १ धारण करना । २ पोषण करना । ३ संक्षेप करना, संकोच करना । वक्क. सभरमाण (ने ७, ४१) । सक. सभार (अप) (पिंग) ।

संभर सक [सं + स्मृ] स्मरण करना, याद करना । सभरेइ, सभरिमो (महा, पि ४५५) । वक्क. सभरत, सभरमाण (गा २६, सुपा ३१७, से ७, ४१) । क. सभरणिज्झ, संभरणीय (धम्मो १८, उप ५३८ टी) ।

सभरण न [सस्मरण] स्मरण, याद (गा २२२, णाय १, १—पत्र ७१, दे ७, २५, उवकु १४) ।

सभरणा स्त्री [सस्मरणा] ऊपर देखो (उप ५३० टी) ।

सभराविअ वि [सस्मारित] याद कराया हुआ (दे ८, २५, कुप्र ४२१) ।

सभरिअ वि [सस्मृत] याद किया हुआ (गउड, काप्र ८६२) ।

सभल सक [सं + स्मृ] याद करना । संभलइ (उप पु ११३) । कर्म. सम्मलज्झइ (वज्जा ८०) । वक्क. सभलि (अप) (पिंग २६७) ।

सभल सक [स + भल] १ सुनना; गुजराती में 'सामञ्जु' । २ भ्रक. सम्मलना, सावधान होना । संभलइ (भवि), 'संभलसु मह पइल्ल' (सम्मत्त २१७) । सक. सभलि (अप) (पिंग २८६) ।

सभली स्त्री [दे सभली] १ द्वी (दे ८, ६, वव ५) । २ कुटुंबी, पर-पुरुष के साथ अन्य स्त्री का योग करानेवाली स्त्री (कुमा) ।

संभव अक [सं + भू] १ उत्पन्न होना । समावना होना, उत्कट सशय होना । सभवइ

संणडिअ वि [सनटिट] व्याकुल किया हुआ, विडम्बित (वज्जा ७०)।

सणद्ध वि [सनद्ध] संनाह-युक्त, कवचित (विपा १, २—पत्र २३, गड्ड)।

सणय देखो सनय (राज)।

सणयणा स्त्री [सजापना] संज्ञप्ति, विज्ञापन (उवा)।

सगा स्त्री [सजा] १ आहार आदि का अभिलाष (सम ६, भग, पण्ण १, ३—पत्र ५५, प्रासू १७६)। २ मति, बुद्धि (भग)। ३ संकेत, इशारा (से ११, १३४ टी)। ४ आख्या, नाम। ५ सूर्य की पत्नी। ६ गायत्री (हे २, ४२)। ७ विष्ठा, पुरीष (उप १४२ टी)। ८ सम्यग् दर्शन (भग)। ९ सम्यग् ज्ञान। (राय १३३)। १० इअ वि [°इअ] टट्टो फिरा हुआ, फरागत गया हुआ (दस १ १ टी)। ११ भूमि स्त्री [°भूमि] पुरीषोत्सर्जन की जगह (उप १४२ टी, दम १, ६ टी)।

सणामिय वि [सनामित] अवगत किया हुआ (पचा १६, ३६)।

सणाय वि [सजात] १ ज्ञात, नात का आदमी (पंच १०, ३६)। २ स्वजन, सगा (उप ६५३)। देखो सनाय।

सणाम्म पु [सण्यास] संसार-त्याग, चतुर्थ आश्रम (नाट—चैत ६०)।

संणामि वि [सण्यासिन्] संसार-त्यागी, चतुर्थ-आश्रमी, यति, ब्रह्म (नाट—चैत ८८)।

सणाह सक [नं + नाहय] लड़ाई के लिए तैयार करना, युद्ध-सज्ज करना। सणाहेहि (श्रौप ४०)।

सणाह पु [संनाह] १ युद्ध की तैयारी (से ११, १३६)। २ कवच, वस्त्र (नाट—वेणी ६२)। ३ पट्ट पु [°पट्ट] शरीर पर बांधने का वस्त्र-विशेष (वृह ३)।

सणाहिय वि [सानाहिक] युद्ध की तैयारी से सम्बन्ध रखनेवाला, 'सणाहियाए भेरीए सद् सोचा' (णाय १, १६—पत्र २१७)।

सणि वि [सजिन्] १ सजावाला, संज्ञा-युक्त। २ मनवाला प्राणी (सम २, भग, श्रौप)। ३ आवक, जैन गृहस्थ (श्रौप ८)।

४ सम्यग् दर्शनवाला, सम्यक्वी, जैन (भग)। ५ न गोत्र-विशेष, जो वासिष्ठ गोत्र की शाखा है। ६ पुष्पी उम गोत्र में उत्पन्न (ठा ७—पत्र ३६०)।

सणिक्रियत्त देखो सनिक्रियत्त (राज)।

सणिगास देखो सणियास (णाय १, १—पत्र ३२)।

सणिगास देखो सनिगास = सनिकपं (राज)।

सणिचय देखो सनिचय (राज)।

सणिचिय देखो सनिचिय (आचा २, १, २, ४)।

सणिज्झ देखो सनिज्झ (गड्ड)।

संणिगाय देखो सनिनाय (राज)।

सणिघाइ देखो सणिहाइ (नाट—मालती २६)।

सणिघाण देखो सनिहाण (नाट—उत्तर ४४)।

सणिपडिअ वि [सनिपतिन] गिरा हुआ (विपा १, ६—पत्र ६८)।

सणिभ देखो सनिभ (राज)।

सणिय वि [सजित] जिसको इशारा किया गया हो वह (सुपा ८८)।

सणियास पुं [संनिगाश] समान, सदृश (पठम २०, १८८)। देखो सनियास।

सणिरुद्ध वि [सनिरुद्ध] रूका हुआ, नियन्त्रित (आचा २, १, ४, ४)।

सणिरोह पुं [सनिरोध] अटकाव, रुकावट (से ५, ६४)।

सणिवय अक [सनि + पत्] पडना, गिरना। वक्क सणिवयमाण (आचा २, १, ३, १०)।

सणिवाय पु [सनिपात] सम्बन्ध (पचा ७, १८)।

सणिविट्ठ देखो सनिविट्ठ (णाय १, १ टी—पत्र २)।

सणिवेस देखो सनिवेस (आचा १, ८, ६ ३, भग, गड्ड, नाट—मालती ५६)।

संणिसिज्जा } देखो सनिसिज्जा (राज)।
सणिसेज्जा }

सणिह देखो सनिह (गा २५८, नाट—मृच्छ ६१)।

सणिहाइ वि [संनिवायिन्] समीप-स्थायी (माल ५२)।

संणिहाण देखो सनिहाण (राज)।

सणिहि देखो सनिहि (आचा २, १, २, ४)।

सणिहिअ वि [सनिहित] सहायता के लिए समीप-स्थित, निकट-वर्ती (महा)। देखो सनिहिअ।

सणेज्झ देखो सनिज्झ (गड्ड)।

सत देखो सत् = सत् (उवा, कप्प, महा)।

सत वि [शान्त] १ शम युक्त, क्रोध-रहित (कप्प, आचा १, ८, ५, ४)। २ पुं रम-विशेष, 'विणयता चैव गुणा संततरसा किया उ भावता' (मिरि ८८२)।

सत वि [शान्त] यका हुआ (णाय १, ४, उवा १०१, ११२, विपा १, १, कप्प, दे ८, ३६)।

सतइ स्त्री [सतति] १ सतान, अपत्य, लडकावाला, 'दुट्टसीला खु इत्थिया विणसेइ सतइ' (म ५०५, सुपा १०४)। २ अविच्छिन्न धारा, प्रवाह (उत्त ३६, ६, उप पृ १८१)।

सतच्छण न [सतक्षण] छिलना (सूम्म १, ५, १, १४)।

सतच्छिअ वि [सतक्षित] छिला हुआ (पणह १, १—पत्र १८)।

सतट्ट वि [सत्रस्त] डरा हुआ, भय-भीत (सुर ६, २०५)।

सतति देखो सतइ (स ६८४)।

सतत्त वि [सतत] १ निरन्तर, अविच्छिन्न। २ विस्तीर्ण।

अच्छिनिमीलियमित्त नत्थि सुहं

दुक्खमेव सतत्त।

नरए नेरइयाण भरोनिस्सि

पच्चमाणाणं।

(सुर १४, ४६)।

सतत्त वि [सतत] संताप युक्त (सुर १४, ५६, गा १३६, सुपा १६, महा)।

सतत्थ देखो सतट्ट (उव, आ १८)।

सतप्प अक [स + तप्] १ तपना, गरम होना। २ पीडित होना। सतप्पइ (हे ४, १४०, स २०)। भवि. सतप्पिस्सइ (स

संभोगि वि [संभोगिन्] देखो संभोइअ (कुप्र १७२)।

संभोगिय देखो संभोइय (ठा ३ ३—पत्र १३६)।

समइ स्त्री [संमति] १ अनुमति (सूय १, ८, १४, विसे २२०६)। २ पु. वायुकाय, पवन। ३ वायुकाय का अधिष्ठाता देव (ठा ५, १—पत्र २६२)।

समज्ज पुं [समार्ज] समार्जन, साफ करना (विसे ६२५)।

समज्जग पुं [समज्जक] वानप्रस्थ तापसो की एक जाति (श्रौप)।

समज्जण न [समार्जन] नाफ करना, प्रमार्जन (भ्रमि १५६)।

समज्जणी स्त्री [समार्जनी] भाइ (दे ६, ६७)।

समज्जिय वि [समार्जित] नाफ किया हुआ (सुपा ५४, श्रौप, भवि)।

समट्ट वि [समृट्ट] १ प्रमार्जित, सफा किया हुआ (राय १००, श्रौप, पव १३३)। २ पूर्ण भरा हुआ (जीवस ११६, पव १५८)।

समट्ट पुं [समट्ट] १ युद्ध, लड़ाई (हे २, ३६)। २ परस्पर सघर्ष (हे २, ३६, कुमा)।

समट्टिअ वि [समट्टित] सघट्ट (हे २, ३६)।

समद सक [स + मृद्] मर्दना करना। सक. सम'दआ (दम ५, २, १६)।

समद देखो समट्ट (उप १३६ टी, पाप्र, दे १, ६३, सुपा २२२, प्राकृ ८६)।

समदा स्त्री [समर्दा] प्रत्युपेक्षणा-विशेष, वस्त्र के कोनों को मध्य भाग में रखकर श्रयवा उपधि पर बैठकर जो प्रत्युपेक्षणा—निरीक्षण की जाय वह (श्रौप २६६ श्रौषभा १६२)।

समय वि [समत] १ अनुमत। २ अभीष्ट (उव)।

समविय वि [समापित] नापा हुआ (भवि)।

समा अक [स + मा] समाना, अटना। समाइ (कुप्र २७७)।

समाग सक [स + मानय्] आदर करना, गौरव करना। समाणइ, संमाणइ, समाणित्ति,

समाणेओ (भवि, उग, महा, कप्प, पि ४७०)। भवि. ममाणेहिहि (पि ५२८)।

वक्र. समाणत, समाणेन (सुपा २२४, पउम १०५, ७६)। मक. ममाणिऊण,

समाणेऊण, ममाणित्ता (महा, कप्प)। कवक. संमाणिज्जमाण (काल)। क. समा-

णणिज्ज (गाया १, १ टी—पत्र ४, उग)।

समाण पु [समान] आदर, गौरव (उव, हे ४, ३१६, नाट—मालवि ६३)।

समाणण न [समानन] ऊपर देखो (सुपा २०८)।

ममाणिय वि [समानित] जिमका आदर किया गया हो वह (कप्प, महा)।

समिद (श्री) वि [समित] १ तुल्य, समान। २ समान परिमाणवाला (भ्रमि १८६)।

समिल अक [स + मिल्] मिलना। संमिलइ (भवि)।

समिलिअ वि [समिलित] मिला हुआ (भवि)।

समिल अक [स + मील्] सकुचाना, सकोच करना। समिलइ (हे ४, २३२, पड्, घात्वा १५५)।

समिस्स वि [समिश्र] १ मिला हुआ, युक्त (महा)। २ उलझे हुई छालवाला (प्राचा २, १, ८, ६)।

समील देखो समिल। समीलइ (हे ४, २३२, पड्)।

समीलिअ वि [समीलिन] सकुचित (से १२, १)।

संमीस देखो समिरस (मुर २, १११, सण)।

समुइ पु [समुचि] भारतवर्ष में भविष्य में होनेवाला एक कुलकर पुरुष (ठा १०—पत्र ५६८)।

समुच्छ अक [स + भूच्छ्] उत्पन्न होना, 'एतासि ए लेसाण अतरेसु अणणत-रीओ छिएणलेसाओ समुच्छति' (सुज ६)।

समुच्छण स्त्री [समूच्छन] स्त्री-पुरुष के संयोग के बिना ही युकादि की तरह होती जीवों की उत्पत्ति (धर्मसं १०७७)। स्त्री. °णा (धर्मसं १०३१)।

समुच्छिम वि [समूच्छिम] स्त्री-पुरुष के समागम के बिना उत्पन्न होनेवाला प्राणी (प्राचा, ठा ५, ३—पत्र ३३४ सम १४६, जी २३)।

संमुच्छिअ वि [संमूच्छित] उत्पन्न (सुज ६)।

समुज्झ अक [स + मुद्] मोह करना, भ्रष्ट होना समुज्झद (सवोय ५२)।

समुत्त देखो समुत्त (राज)।

समुम अक [सं + मृग्] पूर्ण रूप से स्थिर करना। वक्र. समुममाण (भग ८, ३—पत्र ३६५)।

समुह वि [समुह] नामने प्राया हुआ (हे १, २६, ४, ८६५, ४१४, महा)। स्त्री. °ही (काप्र ७२३)।

समूड वि [संमूड] जड़, विमूड (पाप्र, मुग ५४०)।

समेअ पु [संमेत] १ पर्वत विशेष जो आजकल 'बारमनाच पहाड़' के नाम से प्रसिद्ध है (गाया १, ८—पत्र १५४, कप्प, महा, सुपा २११, ५८४; विसे १८)। २ राम का एक मुगट (पउम ५६, ३७)।

संमेल पुं [समेले] परिजन श्रयवा मित्रों का निमनवार, प्रीति-भोजन (प्राचा २, १, ४, १)।

समोह पुं [समोह] १ मूढता, अज्ञान (अणु; स ३५८)। २ मूर्च्छा (मिक्खा ४२)। ३ दुःख, कष्ट (से ३, १३)। ४ सान्निपात रोग (उप १९०)।

समोह न [सामोह] १ मिथ्यात्व का एक भेद—रागी को देव, सगी—परिग्रही को गुरु और हिंसा को धर्म मानना (सवोय ५२)। २ वि. सामोह-सक्खी (ठा ४, ४—पत्र २७४)। स्त्री. °हा, °ही (ठा ४, ४ टी—पत्र २७४, वृह १)।

समोहण न [समोहन] १ मोहित करना। २ मूर्च्छित करना (कुप्र २५०)।

समोहा स्त्री [समोहा] छन्द-विशेष (निग)।

सरभ पुं [सरम्भ] १ हिंसा करने का सकल, 'सकप्पो सारभो' (सवोय ४१, आ ७)। २ आटोप (कुमा १, २१, ६, ६२)। ३ उद्यम (कुमा ५, ७०)। ४ क्रोध, गुस्सा (पाप्र)।

१५. सुपा ४३६) । २ आनन्दित, खुशी (कप्पू) ।

संतोनिअ पुं [संतोपिअ] मतोप, तृप्ति (उवा १६) ।

सतोसिअ वि [संतोपित] सतुष्ट किया हुआ (महा, सण) ।

सथ वि [संस्थ] सस्थित (विसे ११०१) ।

सथड वि [संस्तृत्] १ आच्छादित, संथडिअ परस्पर के सश्लेष से आच्छादित (भग, ठा ४, ४) । २ घन, निविड (आचा २, १, ३, १०) । ३ व्याप्त (उत्त २१, २२, ओघ ७४७) । ४ समर्थ । ५ तृप्त, जिसने पर्याप्त भोजन किया हो वह (कम, आचा २, ४, २, ३, दस ७, ३३) । ६ एकत्रित (आचा २, १, ६, १) ।

सथण अक [स + स्तन्] आक्रन्द करना । संथणती (सूत्र १, २, ३, ७) ।

सथर सक [सं + स्तृ] १ विछौना करना, विछाना । २ निस्तार पाना, पार जाना । ३ निर्वाह करना । ४ अक. समर्थ होना । ५ तृप्त होना । ६ होना, विद्यमान होना ।

सथरइ (भग २, १—पत्र १२७, उवा, कस), 'ए समुच्छे एो संथरे तण' (सूत्र १, २, २, १३, आचा), सथरिअ, संथरे, सथरेआ (कप्प, दम ५, २, २, आचा) । वकू. सथरं, संथरंत, सथरमाण (उवर १४२, ओघ १८२, १८१; आचा २, ३, १, ८) ।

सक सथरिअ (भग, आचा) ।

सथर पुं [सस्तर] निर्वाह (पिड ३७५, ४००) ।

सथर देखो सथार (सुर २, २४७) ।

सथरण न [सस्तरण] १ निर्वाह (वृह १) । २ विछौना करना (राज) ।

सथव सक [स + स्तृ] १ स्तुति करना, श्लाघा करना । २ परिचय करना । संथवेआ (सूत्र १, १०, ११) । क. संथवियव्व (सुपा २) ।

सथव पुं [सस्तव] १ स्तुति, श्लाघा, 'सथवो थुई' (निबू २, वव ३, पिड ४८४) । २ परिचय, संसर्ग (उवा, पिड ३१०, ४८४, ४८५, आवक ८८) । ३ वि स्तुति-कर्ता (आया १, १६ टी—पत्र २२०, राज) ।

सथव देखो सथार (सुर २, २४७) ।

सथव न [सस्तवण] १ स्तुति, श्लाघा, 'सथवो थुई' (निबू २, वव ३, पिड ४८४) । २ परिचय, संसर्ग (उवा, पिड ३१०, ४८४, ४८५, आवक ८८) । ३ वि स्तुति-कर्ता (आया १, १६ टी—पत्र २२०, राज) ।

सथव पुं [सस्तव] १ स्तुति, श्लाघा, 'सथवो थुई' (निबू २, वव ३, पिड ४८४) । २ परिचय, संसर्ग (उवा, पिड ३१०, ४८४, ४८५, आवक ८८) । ३ वि स्तुति-कर्ता (आया १, १६ टी—पत्र २२०, राज) ।

सथव पुं [सस्तव] १ स्तुति, श्लाघा, 'सथवो थुई' (निबू २, वव ३, पिड ४८४) । २ परिचय, संसर्ग (उवा, पिड ३१०, ४८४, ४८५, आवक ८८) । ३ वि स्तुति-कर्ता (आया १, १६ टी—पत्र २२०, राज) ।

सथव पुं [सस्तव] १ स्तुति, श्लाघा, 'सथवो थुई' (निबू २, वव ३, पिड ४८४) । २ परिचय, संसर्ग (उवा, पिड ३१०, ४८४, ४८५, आवक ८८) । ३ वि स्तुति-कर्ता (आया १, १६ टी—पत्र २२०, राज) ।

सथव पुं [सस्तव] १ स्तुति, श्लाघा, 'सथवो थुई' (निबू २, वव ३, पिड ४८४) । २ परिचय, संसर्ग (उवा, पिड ३१०, ४८४, ४८५, आवक ८८) । ३ वि स्तुति-कर्ता (आया १, १६ टी—पत्र २२०, राज) ।

संथवण न [सस्तवण] ऊपर देखो (सवोव ५६, उप ७६८ टी) ।

संथवय वि [सस्तावक] स्तुति-कर्ता (आया १, १६—पत्र २१३) ।

सथविअ देखो संठविअ (पउम ८३, १०) ।

सथार पु [सस्तार] १ दर्भ—कुश आदि सथारग की शय्या, विछौना (आया १, १—पत्र ३०, उवा, उव, भग) । २ अपवरक, कमरा (आचा २, २, ३, १) । ३ उपाश्रय, साधु का वास-स्थान (वव ४) । ४ सस्तार-कर्ता (पव ७१) ।

सथाव देखो संठाव । वकू सथावत (पउम १०३, २४) ।

सथावण न [सस्थापन] सान्त्वना, समाश्वासन (पउम ११, २०, ४६, ८, ६५, ४७) । देखो सठावण ।

संथावणा'ओ [सस्थापना] सस्थापन, रखना (सा २४) । देखो सठावणा ।

सथिद (शौ) देखो सठिअ (नाट—मुच्छ ३०१) ।

संथुअ वि [सस्तुत] १ सवद्ध, सगत (सूत्र १, १२, २) । २ परिचित (आचा १, २, १, १) । ३ जिसकी स्तुति की गई हो वह, श्लाघित (उत्त १, ४६, भवि) ।

सथुइ ओ [संस्तुति] स्तुति, श्लाघा, प्रशंसा (चेइय ४६६, सुपा ६५०) ।

सथुण सक [स + स्तृ] स्तुति करना, श्लाघा करना । सथुणइ (उव, यति ६) । वकू सथुणमाण (पउम ८३, १०) । कवकू संथुणिज्जत, सथुव्वत (सुपा १६०, आक ७) । सकू. संथुणिन्ता (पि ४६४) ।

सथुल वि [सस्थुल] रमणीय, रम्य, सुन्दर (चाह १६) ।

सथुव्वंत देखो सथुण ।

सद अक [स्यन्द] १ भरना, टपकना । सदंति (सूत्र १, १२, ७) ।

सद पुं [स्यन्द] १ भरन, प्रसन्न (से ७, ५६) । २ रथ, 'रवि-सदु(१ दु)व्व भमतो (धर्मवि १४४) ।

सद वि [सान्द्र] घन, निविड (अच्छु ३७, विक्र २३) ।

सदंति (सूत्र १, १२, ७) ।

सद पुं [स्यन्द] १ भरन, प्रसन्न (से ७, ५६) । २ रथ, 'रवि-सदु(१ दु)व्व भमतो (धर्मवि १४४) ।

सद वि [सान्द्र] घन, निविड (अच्छु ३७, विक्र २३) ।

सदंति (सूत्र १, १२, ७) ।

सद पुं [स्यन्द] १ भरन, प्रसन्न (से ७, ५६) । २ रथ, 'रवि-सदु(१ दु)व्व भमतो (धर्मवि १४४) ।

सद वि [सान्द्र] घन, निविड (अच्छु ३७, विक्र २३) ।

सदंस पुं [सदंश] दक्षिण हस्त, 'छिदाविओ निवेणं कोववसा तहवि तस्म सदमो' (कुप्र २३२) ।

सदसण न [सदंशन] दर्शन, देखना, साक्षात्कार (उप ३५७ टी) ।

सदट्ट वि [सदट्ट] जो काटा गया हो वह, जिसको दश लगा हो वह (हे २, ३४, कुमा ३, ८, पड्) ।

सदट्ट वि [दं] १ सलग्न, मयुक्त, सदट्टय सवद्ध (दे ८, १८, गउड; २३६) । २ न. सघट्ट, सघर्ष (दे ८, १८) ।

सदड्ड वि [सदग्ग] अति जला हुआ (सुर ६, २०५, सुपा ५६६) ।

सदण पुं [स्यन्दन] १ रथ (पात्र, महा) । २ भारतवर्ष में अतीत उत्सर्पणो काल में उत्पन्न तेइसवां जिनदेव (पव ७) । ३ न. क्षरण, प्रसन्न । ४ वहन, वहना । ५ जल, पानी, 'जत्य ए नई निच्चोयगा निच्चसदणा' (कप्प) ।

सदव्व पुं [सदव्व] रचना, ग्रन्थ (उवर २०३, सण) ।

सदमाणिया ओ [स्यन्दमानिका, 'नी] सदमाणी एक प्रकार का वाहन, एक तरह की पालकी (श्रौप, आया १, ५—पत्र १०७, १, १ टी—पत्र ४३, श्रौप) ।

सदाण सक [कृ] अवलम्बन करना, सहारा लेना । सदाणइ (हे ४, ६७) । वकू. सदाणत (कुमा) । कवकू. सदाणिज्जत (नाट—मालती ११६) ।

सदाणिअ वि [सदानित] बद्ध, नियन्त्रित (पात्र, से १, ६०, १३, ७१, सुपा ३, कुप्र ६६, नाट—मालती १६६) ।

सदामिय वि [सदामित] ऊपर देखो (स ३१६, सम्मत १६०) ।

सदाव देखो संताव = सताप (गा ८१७, ६६४, पि २७५, स्वप्न २७, अमि ६१, माल १७६) ।

सदाव पुं [सद्राव] समूह, समुदाय (विमे २८) ।

सदिह वि [सदिह] १ जिसका ग्रन्थवा जिसको संदेश दिया गया हो वह, उपदिष्ट, कथित (पात्र, उप ७२८ टी, ओघमा ३१,

संवत्तय वि [सवर्तक] १ अपवर्तन-कर्ता ।
२ पु वलदेव । ३ बडवानल (हे २, ३०,
प्राप्र) ।

संवत्तुवत्त पुं [सवर्तोद्धते] उलट-पुलट (स
१७४, २५८) ।

संवद्धण न [संवर्धन] १ वृद्धि, बढाव । २
वि वृद्धि करनेवाला (भवि, स ७२७) ।

सवय सक [स + वद्] १ बोलना,
कहना । २ प्रमाणित करना, सत्य सावित
करना । संवयइ, सवएज्जा (कुप्र १८७,
सुप्र १, १४, २०) । वहु. संवयंत (धर्मस
८८३) ।

सवय वि [संवृत] आवृत्त, आच्छादित
(कुप्र ३६) ।

सवर सक [स + वृ] १ निरोध करना,
रोकना । २ कर्म को रोकना । ३ बँध करना ।
४ ढकना । ५ गोपन करना । सवरइ,
सवरसि, सवरेमि (भग. भवि, सण, हास्य
१३०, पव २३६ टी), सवरेहि (कुप्र ३११) ।
वहु. सवरेमाण (भग) । सहु. सवरेवि
(महा) ।

सवर पुं [सवर] १ कर्म-निरोध, नूतन कर्म-
बन्ध का अटकाव (भग, पएह १, १, नव
१) । २ भारतवर्ष में होनेवाले अठारहवें
जिनदेव (पव ४६, सम १५४) । ३ चौथे
जिनदेव के पिता का नाम (सम १५०) ।
४ एक जैन मुनि (पउम २०, २०) । ५
पशु-विशेष (कुप्र १०४) । ६ दैत्य-विशेष ।
७ मत्स्य की एक जाति (हे १ १७७) ।

सवरण न [सवरण] १ निरोध, अटकाव
(पचा १, ४४), 'आतवदाराण सवरण'
(श्रु ७) । २ गोपन (गा १६६, सुपा ३०१) ।
३ सकोटन समेटन (गा २७०) । ४
प्रत्याख्यान, परित्याग (आव ३७, विसे २६१०,
आवक ३३३) । ५ आवक के बारह व्रतो
का अंगीकार (सम्मत्त १५२) । ६ अनशन,
आहार परित्याग (उप पृ १७६) । ७
विवाह, लग्न शादी (पउम ४६, २३) ।
८ वि रोकनेवाला (पव १२३) ।

सवरिअ वि [न + र] १ आनेनित, आराधित,
'एवमण नवरण पएह २२२ नवरण होइ'

(पएह २, १—पत्र १०१) । २ सकोचित
(दे ८, १२) । ३ आच्छादित (वृह ३) ।

सवलण न [सवलन] मिलन (गड्ड, नाट-
मालती ५७) ।

सवल्लिअ वि [सवल्लि] १ व्याप्त (गा ७५,
सुर ६, ७६, ८, ४३, रुक्मि ६८) । २
युक्त, मिलित, मिश्रित (सुर ३, ७८; धर्मवि
१३६), 'सरसा वि दुमा दावाणलेण डज्जति
सुक्खसवल्लिया' (वजा १४) ।

सववहार यु [संव्यवहार] व्यवहार (विसे
१८५३) ।

सवस सक [स + वस्] १ साय मे
रहना । २ रहना, वास करना । ३ सभोग
करना । सवसइ (कस) । वहु. संवसमाण
(ठा ५, २—३१२, ३१४, गच्छ १, ३) ।
संहु. सवसित्ता (गच्छ १, २) । हेहु
सवसित्तर (ठा २, १—पत्र ५६) । कृ
संवसेयव्व (उप पृ १६) ।

सवह सक [स + वह] १ वहन करना ।
२ सक. सज्ज होना, तय्यार होना । वहु.
सवहमाण (सुपा ४६४, गाय १, १३—
पत्र १८०) । संहु. सवहिऊण (सण) ।

संवहण न [सवहन] १, ढोना, वहन करना ।
(राज) । २ वि. वहन करनेवाला (आचा
२, ४, २, ३, दस ७, २५) ।

सवहणिय वि [सावहणिक] देखो सवाहणिय
(उवा) ।

सवहिअ वि [संमृढ] जो सज्ज हुआ हो
वह, तय्यार बना हुआ, 'सामिअ पूरिअपोआ
अम्हे सव्वेवि सवहिआ' (सिरि ५६६,
सम्मत्त १५७) ।

सवाइ वि [सवादिन्] प्रमाणित करनेवाला,
सवृत देनेवाला (सुर १२, १७६) ।

सवाइय वि [सवायेल] १ खबर दिया
हुआ, जनाया हुआ (स २६६) । २ प्रमाणित
(स ३१५) ।

सवाद पुं [सवाद] १ पूर्वज्ञान को सत्य
संवाय सावित करनेवाला ज्ञान, सवृत,
प्रमाण (धर्मस १४८, स ३२६, उव ७२८
टी) । २ विवाद, वाक्-कलह,

"इय जाओ संवाओ तेसि पुत्तस्स कारणे गरुओ ।
त कीरेण भणियं रायसमीवे समागच्छ ॥"
(सुपा २६०) ।

संवाय सक [सं + वाटय] खबर देना,
समाचार कहना । संवाएमि, संवाएहि (स
२६१, २६६) ।

संवायय पु [दे] १ नकुल, न्यौला । २ खेन
पक्षी (दे ८, ४८) ।

संवास सक [स + वासय] साय में रहने
देना । हेहु सवासेउ (पंचा १०, ४८ टी) ।

संवास पु [सवास] १ महावास, साय में
निवास (उव २२३, ठा ४, २—पत्र १६७,
श्लो ६७ हित १७, पत्र ६ १३) । २
मैथुन के लिए स्त्री के साथ निवास (ठा ४,
१—पत्र १६३) ।

सवासिय (अप) वि [स + वासित] जिसको
आवासन दिया गया हो वह, 'ति वर्याण
घणवइ सवासित' (भवि) ।

संवाह सक [सं + ग्राहय] १ वहन
करना । २ तय्यारी करना । अग मदन—
चप्पी करना । सवाहइ (भवि) । कवहु.
संवाहिज्जत (सुपा २००, ३४६) ।

सवाह पु [सवाह] १ दुर्ग विशेष, जहाँ
कृपक-लोग धान्य आदि को रक्षा के लिए
ले जाकर रखते हैं (ठा २, ४—पत्र ८६,
पएह १, ४—पत्र ६८, श्रौप, कस) । २
लग्न, विवाह (मुपा २५५) । ३ गिरिशिखरस्थ
ग्राम ।

सवाहण न [सवाहन] १ अग-मदन, चप्पी
(पएह २, ४—पत्र १३१, सुर ४, २४७,
गा ४६४) । २ संवाहन, विनाश (गा
४६४) । ३ पुं. एक राजा का नाम (उव) ।
४ वि वहन करनेवाला (आचा २, ४,
२, १०) ।

सवाहणा स्त्री [सवाहना] ऊपर देखो (कप्प,
श्रौप) ।

संवाहणिय वि [सावाहणिक] भार-वहन
करने के काम में आता वाहन (उवा) ।

सवाहय वि [सवाहक] चप्पी करनेवाला
(चार ३६) ।

सवाहिअ वि [सवाहित] जिसका अग-
मदन—चप्पी किया गया हो वह (कप्प)

संधीर सक [स + वीरय्] आश्वासन देना, धीरज देना। वक्र. संधीरत (सुपा ४७६)।

संधीरविय वि [संधीरित] जिसको आश्वासन दिया गया हो वह, आश्वासित (सुर ४, १११)।

सधुक्क अक [प्र + दीप् सं + धुक्] १ जलना, सुलगना। २ सक जलाना। ३ उत्तेजित करना। सधुक्कइ (हे ४, १५२, कुमा)। कर्म सधुक्कइड (वजा १३०)।

संधुक्कण न [संधुक्कण] १ सुलगना, जलना। २ प्रज्वालन सुलगाना (भवि)। ३ वि. सुलगानेवाला (स २४१)।

सधुक्किय वि [सधुक्कित] १ जलाया हुआ, सुलगाया हुआ (सुपा ५०१)। २ जला हुआ, प्रदीप्त, सुलगा हुआ (पाश्र, महा, स २७)। ३ उत्तेजित, 'अविद्येयपवणसधुक्कियो पज्जल्लियो मे मणम्मि कोवाणलो' (स २४१)।

सधुक्कइड (शौ) ऊपर देखो (नाट—मृच्छ २३३)।

सधुम देखो सदुम। सधुमइ (पह)।

सधे देखो सध = स + धा। सधेइ, सधेंति, सधेजा (आचा १, १, १, ५, पि ५००, सूत्र १, ४, १, ५)। वक्र. सधेंत, सधेमाग (पउम ६८, ३१, पचा १४, २७, आचा, पि ५००)।

संन देखो सण (आचा १, ५, ६, ४)।

सनक्खर न [सञ्जाक्षर] अकार प्रादि अक्षरों की आकृति (एदि १८७)।

सनज्झ देखो सणज्झ। सनज्झइ (भवि)। सक. सनज्झऊण (महा)। हेक्क. सनज्झिउ (स ३७६)।

सनण न [सज्जान] इशारा करना, सज्ञा करना (उप २६०)।

सनत देखो सनय (एह १, ४—पत्र ७८)। सनद्ध देखो सणद्ध (श्रीप, विपा १, २ टी—पत्र २३)।

सनय वि [सनत] नमा हुआ, अवनत (श्रीप, वजा १५०)।

सनव सक [स + ज्ञापय्] संभाषण से सतुष्ट करना। सनवेइ (राय १४०)।

सनह देखो सणज्झ। संनहइ (भवि), संनहह (धर्मवि २०)।

सनहण न [सनहन] सनाह (पउम १०, ६४)।

सनाहिय देखो सणद्ध (सुपा २२)।

संना देखो सणा (ठा १—पत्र १६, एह १, ३—पत्र ५५, पाश्र, सुर ३, ६७, पिड २४५, उप ७११, द ३)।

सनाय वि [सज्जान] पिछाना हुआ, पहिचाना हुआ, 'संनाया परियण्ण' (महा)। देखो सणाय (पव १५३)।

सनाह देखो सणाह = स + नाहय्। सनाहेइ (श्रीप, तदु ११)। सक. सनाहित्ता (तदु ११)।

सनाह देखो सणाह = सनाह (महा)।

सनाहिय वि [सनाहित] तय्यार किया हुआ, सजाया हुआ (श्रीप)।

सनाहिय देखो सणाहिय (आया १, १६—पत्र २१७)।

सनि देखो सणि (सम २, ठा २, २—पत्र ५६, जी ४३, कम्म १, ६)।

सनिकास देखो सनिगास (ठा ६—पत्र ४५६, कप्प)।

सनिक्किट्ट वि [सनिकृष्ट] आसन, समीप में स्थित (सुख ४, ८)।

सनिक्खित्त वि [सनिक्षिप्त] डाला हुआ, रखा हुआ (कप्प)।

सनिगास वि [सनिकाश] १ समान, तुल्य (भग २, १, आया १, १—पत्र २५, श्रीप, स ३८१)। २ पु अपवाद (पंचू)। ३ पुन. समीप, पास (पउम ३६, २८)।

सनिगास पु [सनिरुपे] सयोग, 'सजोग संनिगासो पडुच्च सवध एगट्ठा' (एदि १२८ टी)।

सनिचय पु [सनिचय] १ निचय, समूह (आचा)। २ सग्रह (आचा १, २, ५, १)। सनिचिय वि [सनिचित] निविड किया हुआ (पव १५८, जीवस ११६)।

सनिजुज सक [सनि + युज्] अच्छी तरह जोड़ना। कवक्क. सनिजुज्जत (पिड ४५५)।

सनिज्झ न [सानिध्य] सहायता करने के लिए समीप में आगमन, निकटता (स ३८२)।

सनिनाय पु [सनिनाद] प्रतिध्वनि, प्रतिशब्द (कप्प)।

सनिभ देखो सनिह (आया १, १—पत्र ४८, उवा, श्रीप १)।

संनिम हअ वि [सनिमहित] १ व्याप्त, पूर्ण, भग हुआ। २ पूजित, 'चपा नाम नयरी पडुखरभवणसनिमहिया' (श्रीप, आया १, १ टी—पत्र ३) 'अत्थि मग्हा जणवओ गामसतसनिमहियो' (वमु)।

सनिय देखो साणय (सिरि ८६०, भवि)।

सनियट्ट वि [सनिवृत्त] रुका हुआ, विरत। 'चारि वि [चारिन्] प्रतिपिद्ध का वर्जन करनेवाला (कप्प)।

सनियास देखो सनिगास (पउम ३३, ११६)।

सनिलयण न [सनिलयन] आश्रय, आचार, 'लोभधत्था ससार अतिवयति सव्वदुक्खसनि-लयण' (एह १, ५—पत्र ६४)।

सनिवइय देखो सणिपडिअ (आया १, १—पत्र ६५)।

सनिवाइ वि [सनिपातिन्] सयोगी, सम्बन्धी, 'सव्वक्खरसनिवाइणो' (कप्प, श्रीप, सम्मत्त १४४)।

सनिवाइ वि [सनिवादिन्] संगत बोलने-वाला, व्याजवी कहनेवाला (भग १, १—पत्र ११)।

संनिवाइय वि [सानिपातिक्क] सनिपात रोग से सम्बन्ध रखनेवाला (आया १, १—पत्र ५०, तदु १६, श्रीप ८७)। २ भाव-विशेष, अनेक भावों के सयोग से बना हुआ भाव (अणु ११३, कम्म ४, ६४, ६८)। ३ पु. सनिपात, मेल, सयोग (अणु ११३)।

सनिवाइय वि [सनिपातिक्क] देखो सनि-वाइ, 'सव्वक्खरसनिवाइयाए' (श्रीप ५६)।

सनिवाडिय वि [सनिपातित] विध्वस्त किया हुआ (आया १, १६—पत्र २२३)।

सनिवाय पु [सनिपात] सयोग, सम्बन्ध (कप्प, श्रीप)।

सनिविट्ट न [सनिविट्ट] १ मोहला, रथ्या (श्रीप)। २ वि. जिसने पड़ाव डाला हो वह, नगर के बाहर पड़ाव डालकर पड़ा हुआ (कस)। ३ संहत और स्थिर आसन से व्यवस्थित—बैठा हुआ (आया १, ३—पत्र ६१, राय २७)।

सवेहिअ वि [सवेष्टित] लपेटा हुआ (गा ६४६) ।

सवेह पुं [सवेध] सयोग, 'अन्नघ्नवरणसवे-
हरमणिज्ज गधव्व' (महा), 'अन्नघ्नवरणसवे-
हमणहरं मोहण पसूणं पि तणीय सोऊण'
(धर्मवि ६५) ।

सस अक [स्संस्] खिसकना, गिरना ।
ससइ (हे ४, १६७, षड्) ।

संस सक [शंस] १ कहना । २ प्रशंसा
करना । ससइ (चेइय ७३७, भवि) ससति
(तिरि १८७) । कृ. ससणिज्ज (पउम
११८, ११४) ।

सस वि [साश] अश-युक्त, सावयव (धर्मस
७०६) ।

संसइ वि [सशयिन्] सशय-कर्ता, शका-
शील (विसे १५५७, सुर १३, ७, सुपा
१४७) ।

संसइअ वि [सशयित] सशयवाला, सदिग्ध
(पाअ, विसे १५५७, सम १०६, सुर १२,
१०८) ।

ससइअ न [सासयिक] मिथ्यात्व-विशेष
(पच ४, २, आ ६, सबोध ५२, कम्म ४,
५१) ।

ससग्ग पुच्छी [ससर्ग] संबन्ध, सग, सोहवत
(सुपा ३५८, प्रासू ३१, गउड) । स्त्री. °ग्गी
(गाया १, १ टी—पत्र १७१, प्रासू ३३,
सुपा १७१),
'एएण चिय नेच्छंति

साहवो सज्जणेहि ससर्गि ।

जम्हा विओगविट्ठरिय-

हिययस्स, न ओसव अन्न'

(सुर २, २१६) ।

ससज्ज अक [स + सज्ज] सवन्ध करना,
ससर्ग करना । ससज्जति (सम्मत्त २२०) ।

संसज्जिम वि [ससक्तिमत्] बीच में गिरे
हुए जीवों से युक्त (पिड ५३८) ।

ससट्ठ वि [ससृष्ट] १ खरिष्ट, विलिप्त ।
२ न. खरिष्ट हाथ से दी जाती भिक्षा
आदि (औप) । देखो ससिट्ठ ।

ससण न [शंसन] १ कथन । २ प्रशंसा ।
३ आस्वादन, 'मुत्तविहीण पुण सुयमपक्क-

फलससणसरिच्छ' (उप ६४८ टी, उवकु
१६) ।

संसणिज्ज देखो संस = शंस ।

संसत्त वि [ससत्त] १ ससर्ग-युक्त, सबद्ध
(गाया १, ५—पत्र १११, औप, स ६,
उत्त २, १६) । २ श्वापद-जन्तु-विशेष
(कप्प) ।

ससत्ति स्त्री [ससक्ति] समर्ग (सम्मत्त
१५६) ।

संसद् पु [सशब्द] शब्द, आवाज (सुर २,
११०) ।

ससप्पग वि [ससर्पक] १ चलने-फिरने-
वाला । २ पुं. चीटी आदि प्राणी (आचा
१, ८, ८, ६) ।

ससप्पिअ न [दे ससर्पित] कूद कर
चलना (दे ८, १५) ।

ससमण न [सशमन] उपशम, शान्ति (पिड
४५६) ।

ससय पुं [सशय] सवेह, शका (हे १, ३०,
भग, कुमा, अभि ११०, महा, भवि) ।

ससया स्त्री [ससन्] परिपत्, समा (उत्त
१, ४७) ।

ससर सक [स + सृ] परिभ्रमण करना ।
बहु ससरत, ससरमाण (प्रवि १, वै ८८,
सबोध ११, अचु ६७) ।

ससरण न [सस्मरण] स्मृति, याद (श्रु ७) ।

ससवण न [सश्रवण] श्रवण, सुनना (सुर
१ २४२, रंभा) ।

ससइ सक [स + सह] सहन करना ।
ससइह (धर्मस ६८२) ।

संसा स्त्री [शसा] प्रशंसा, श्लाघा (पव ७१
टी, भग) ।

ससाअ वि [दे] १ आच्छ । २ वर्णित । ३
पीत । ४ उद्भिन्न (षड्) ।

ससार पु [ससार] १ नरक आदि गति में
परिभ्रमण, एक जन्म से जन्मान्तर में गमन
(आचा, ठा ४, १—पत्र १६८, ४, २—
पत्र २१६, दसनि ४, ४६, उत्त २६, १,
उव, गउड, जी ४४) । २ जगत, विश्व (उव,
कुमा, गउड, पउम १०३, १४१) । °वत्
वि [°वत्] ससारवाला, ससार-स्थित
जीव, प्राणी (पउम २, ६२) ।

ससारि } वि [समारिन्] नरक आदि
समारिण } योनि में परिभ्रमण करनेवाला

जीव (जी २), 'ससारिणस्स जं पुण जीवस्स
सुह तु फरिसमादीण' (पउम १०२, १७४) ।

संसारिय वि [समारिक] ऊपर देखो (स
४०२, उव) ।

ससारिय वि [समारिक] ससार से सवन्ध
रखनेवाला (पउम १०६, ४३, उप १४२
टी, स १७६, सिक्खा ७१, सण, काल) ।

संसारिय वि [समारित] एक स्थान से दूसरे
स्थान में स्थापित, ससारियासु बलयवाहासु'
(गाया १, ८—पत्र १३३) ।

ससाहण स्त्रीन [दे] अनुगमन (दे ८, १६;
दमनि ३८८) । स्त्री °णा (वव १) ।

ससाहण न [सकथन] कथन (सुपा ४१५) ।

ससाहिय वि [संसावित] सिद्ध किया हुआ
(सुपा ३६७) ।

ससि वि [शसिन्] कहनेवाला (गउड) ।

ससिअ वि [शसित] १ श्लाघित (सुर १३,
६८) । २ कथित (उप पृ १६१) ।

संसिअ वि [सश्रिन] आश्रित (विपा १,
३—पत्र ३८, परह १, ४—पत्र ७२, औप
४८, अणु १५१) ।

ससिच सक [स + सिच्] १ पूरना,
भरना । २ बढ़ाना । ३ सिंचन करना । कवक्क.
संसिच्चमाण (आचा, पि ५४२) । सक्क.
संसिचियाणं (आचा १, २, ३, ४) ।

ससिज्ज अक [स + सिध्] अच्छी तरह
सिद्ध होना । ससिज्जति (स ७६७) ।

ससिट्ठ देखो ससट्ठ (भग) । °कप्पिअ वि
[°कल्पिक] खरिष्ट हाथ अथवा भाजन
से दी जाती भिक्षा को ही ग्रहण करने के
नियमवाला मुनि (परह २, १—पत्र १००) ।

संसित्त वि [ससित्त] सींचा हुआ (सुर ४,
१४, महा, हे ४, ३६५) ।

ससिद्धिअ वि [सांसिद्धिक] स्वभाव-सिद्ध
(हे १, ७०) ।

ससिलेस देखो संसेस (राज) ।

संसिलेसिय देखो—ससेसिय (राज) ।

ससीव सक [स + सिव्] सीना, सिलाई
करना । ससीविज्जा (आचा २, ५, १, १) ।

सपणुण वि [सप्रनुज] प्रेस्ति, उत्तेजित,
'श्रक्खडचडानिलसपणुणविलोलजालासयस-
कुलम्मि' (उपप ४५) ।

संपणुल } सक [सप्र + नुद] प्रेरणा
सपणोद } करना । सक. सपणुल्लिया,
सपणोहिया (दस ५, १, ३०) ।

सपणुण देखो सपन्न (गाथा १, १—पत्र ६,
हेका ३३१, नाट—मृच्छ ६) ।

सपणगा स्त्री [दे] धेवर या धीवर (मिष्टान-
विशेष) बनाने का आटा, गेहूँ का वह आटा
जिसका घृतपूर बनता है (दे ८, ८) ।

सपत्त वि [सप्राप्त] १ सम्यक् प्राप्त (गाथा
१, १, उवा, विपा १, १, महा, जी ५०) ।
२ समागत, आया हुआ (सुपा ४१६) ।

सपत्त पुन [सपात्र] सुन्दर पात्र, सुपात्र
(सुपा ४१६) ।

सपत्ति स्त्री [सपत्ति] १ समृद्धि, वैभव,
संपदा (पात्र, प्रासू ६६, १२८) । २ समृद्धि ।
३ पूति, 'तव दोहलस्स सपत्ती भवित्सइ'
(विपा १, २—पत्र २७) ।

सपत्ति स्त्री [सप्राप्ति] लाभ, प्राप्ति (वेइय
८६४, सुपा २१०) ।

सपत्तिआ स्त्री [दे] १ बाला, कुमारी, लडकी
(दे ८, १८, वज्जा ११६) । पिप्पली-पत्र,
पीपल की पत्ती (दे ८, १८) ।

सपत्थिअ न [दे] शीघ्र, जलदी (दे ८, ११) ।

सपत्थिय } वि [सप्रस्थित] १ जिसने
संपत्थित } प्रयाण किया हो वह, प्रयात,
प्रस्थित (अत २१, उप ६६६, सुपा १०७,
६५१, गाथा १, २—पत्र ३२) । उपस्थित,
'गहियाउहेहि जइवि हु रक्खिजइ पजरोवरच्छो
(? रुद्धो)वि । तहवि हु मरड निरुत्त पुरिसो
सपत्थिए काले ॥" (पउम ११, ६१) ।

सपद अ [साप्रतम्] १ युक्त, उचित (प्राकृ
१२) । २ अधुना, अब (अभि ५६) ।

सपदत्त वि [सप्रदत्त] दिया हुआ, अर्पित
(महा, प्राप) ।

सपदाण देखो सपयाण (गाथा १, ८—पत्र
१५०, आचा २, १५, ५) ।

संपदाय पु [सप्रदाय] गुरु परंरागत उपदेश,
श्राम्नाय (संबोध ५३, धर्मस १२३७) ।

सपदावण न [सप्रदापन, सप्रदान] कारक-
विशेष, 'तत्तिआ करणम्मि कत्ता चउल्यो
सपदावणे' (ठा ८—पत्र ४२७) ।

सपदि देखो सपइ = सप्रति (प्राकृ १२) ।

सपदि देखो सपत्ति = सपत्ति (सक्ति ६, पि
२०४) ।

सपधार देखो सपहार = संप्र + धारय् ।

सपधारेदि (शौ) (नाट—मृच्छ २५६) ।

कर्म सपधारीअदु (शौ) (पि ५४३) ।

सपधारणा स्त्री [सप्रधारणा] व्यवहार-विशेष,
धारणा व्यवहार (वव १०) ।

सपधारिय वि [सप्रधारिण] निश्चित, निर्णीत
(सण) ।

सपधूमिय वि [सप्रधूमित] धूप-वासित,
धूप दिया हुआ (कस, कप्प, आचा २, २,
१, १) ।

सपन्न वि [सपन्न] १ सपत्ति-युक्त (भग,
महा, कप्प) । २ सद्धि (विपा १, २—पत्र
२६) ।

सपप्प देखो सपाव ।

संपवुज्झ अक [सप्र + वुध्] सत्य ज्ञान
को प्राप्त करना । सपवुज्झति (पचा ७, २३) ।

सपमज्ज सक [सप्र + मृज्] मार्जन करना,
भाटना, साफ-सूफ करना । सपमज्जेइ (औप
४४) । सक. सपमज्जेत्ता, सपमज्जिय
(औप, आचा २, १, ४, ५) ।

सपमार सक [सप्र + मारय्] मूर्च्छित
करना । सपमारण (आचा १, १, २, ३) ।

सपय वि [साप्रत] वियमान, वर्तमान,
'पाएण सपए चिय कालम्मि न याइदीहका-
लएणा' (विसे ५१६) ।

सपय देखो सपद (पात्र, महा, सुपा ५६८) ।

सपयट्ट अक [सप्र + वृत्] सम्यक् प्रवृत्ति
करना । सपयट्टेज्जा (धर्मस ६३१) । वक्क
सपयट्टत्त (पंचा ८, १४) ।

सपयट्ट वि [सप्रवृत्त] सम्यक् प्रवृत्त (मुर
४, ७६) ।

संपया स्त्री [सपद] १ समृद्धि, सपत्ति,
सक्ष्मी, विभव (उवा, कुमा, मुर ३, ६८,
महा, प्रासू ६६) । २ वाक्यों का विश्राम-

स्थान (पव १) । ३ प्राप्ति, 'वाहोलाभो
जिणधम्मसपया' (वेइय ६३१, पव ६२) ।
६२) । ४ एक वणिक्-स्त्री का नाम (उप
५६७ टी) ।

सपयाण न [सप्रदान] १ सम्यक् प्रदान,
अच्छी तरह देना, समर्पण (आचा २, १५,
५, गा ६८, सुपा २६८) । २ कारक-विशेष,
चतुर्थी-कारक, जिमको दान दिया जाय वह
(विसे २०६६) ।

सपयावण देखो सपदावण, चउल्यो सपयावणे'
(अणु १३३) ।

सपराइग } वि [सापरायिक्] सपराय-
सपराइय } मवन्धी, सपराय में उत्पन्न (ठा
२, १—पत्र ३६, सूत्र १, ८, ८, भग,
आवक २२६) ।

सपराय पु [सपराय] १ संसार, जगत् (सूत्र
१, ५, २, २३, दम २, ५) । २ क्रोध आदि
कपाय (ठा २, १—पत्र ३६) । ३ वादर
कपाय, स्थूल कपाय (सूत्र १, ८, ८) । ४
कपाय का उदय (औप) । ५ युद्ध, संग्राम,
लड़ाई (गाथा १, ६—पत्र १५७, कुप्र
४००, विक्र ८८, दस २, ५) ।

सपरिकित्ति पुं [सपरिकीर्त्ति] राजस वश
का एक राजा, एक लका-पति (पउम ५,
२६०) ।

सपरिक्ख मक [सपरि + ईक्ष्] सम्यक्
परीक्षा करना । सक. सपरिक्खाए (संबोध
२१) ।

सपरिक्खित्त } वि [संपरिक्षित्त] वेष्टित
सपरिक्खित्त } (भग, पउम ३, २२, गाथा
१, १ टी—पत्र ४) ।

सपरिफुड वि [सपरिफुट] सुस्पष्ट, अति
व्यक्त (पउम ७८, १६) ।

सपरिखुड वि [सपरिखृत] १ सम्यक् परि-
वृत, परिवार-युक्त (विपा १, १—पत्र १,
उवा, औप) । २ वेष्टित (सूत्र २, २, ५५) ।

सपरी सक [सपरी + इ] पर्यटन करना,
भ्रमण करना । सपरीइ (विसे १२७७) ।

सपल (अप) अक [स + पत्] आ गिरना ।
संपलइ (पिंग) ।

सपलगा वि [सप्रलग्न] १ मयुक्त, मिला
हुआ । २ जो लड़ाई के लिए भिड़ गया हो
वह (गाथा १, १८—पत्र २३६) ।

सकणो (शौ) देखो सकुण । सकणोमि (अभि ६२ पि १४०), सकणोदि (नाट—रत्ना १०२) ।

सक्य देखो स-क्य = संस्कृत ।

सक्य वि [संस्कृत] ? सम्कार युक्त (पिंड १६१) । २ स्त्री संस्कृत भाषा (कुमा, हे १, २८, २, ४), 'परमेष्ठिनमोक्षार सक्य (२)भासाए भणइ धुडमण' (चेइय ४६८) । स्त्री, 'या, 'सक्या पायया चैव भणइईओ होति दोरिण वा' (अणु १३१) ।

सक्य न [शर्कर] खण्ड टुकड़ा (उव) ।

सक्य देखो सक्यरा । १ पुढरी स्त्री [पृथिवी] दूसरी नरक-भूमि (पडम १०८, १) । २ पभा स्त्री [प्रभा] वही अर्थ (ठा ७—पत्र ३८८, इक) ।

सक्यरा स्त्री [शर्करा] १ चीनी, पकी खांड (गाया १, १७—पत्र २२६, सुपा ८४, सुर १, १४) । २ उपलखण्ड, पत्थर का टुकड़ा, कंकड (सूत्र २ ३, ३६ अणु) । ३ बालु, रेती (महा) । ४ न [भ] १ गोत्र-विशेष जो गोतम गोत्र की एक शाखा है । २ पुत्री उस गोत्र में उत्पन्न (ठा ७—पत्र ३६०) । ३ भा स्त्री [भा] दूसरी नरक-पृथिवी (उत्त ३६, १५७) ।

सक्यर पुं [सदर] समान, आदर, पूजा (भग, स्वप्न ८६, भवि हे ४, २६०) ।

सक्यर पु [संस्कार] १ गुणान्तर का आधान । २ मृति का कारण-भूत एक गुण । ३ वेग । ४ शाखाभ्यास में उत्पन्न होती व्युत्पत्ति । ५ गुण-विशेष स्थिति-स्थान । ६ व्याकरण के अनुसार शब्द-सिद्धि का प्रकार । ७ गर्भाधान आदि समय की जाती धार्मिक क्रिया । ८ पाक, पकाना (हे १, २८, २, ४, प्राक २१) ।

सक्यर सक [सत्कारय] सत्कार करना, सम्मान करना । सक्यरेइ, सक्यरित्ति, सक्यरेमो (उवा, कप्प भग) । संज्ञ सक्यरित्ता (भग, कप्प) । क सक्यारणज्ज (गाया १, १ टी—पत्र ८ उवा) ।

सक्यारण न सत्कारण] सत्कार, सम्मान (भग १०, १७) ।

सक्यारि वि [सत्कारिन्] सत्कार करनेवाला, सम्मानकर्ता (गड) ।

सक्यारिय वि [सत्कारित] सम्मानित (सुख २, १३, महा) ।

सक्यारिय वि [सत्कारित] सत्कार-युक्त किया हुआ (धर्मसं ८३) ।

सक्याल देखो सक्यार = संस्कार (हे १, २५४) ।

सक्यअ देखो सक्य = शक्य, 'अहं सु दाव कत्तव्वकरत्थीकिदसकेदो विअ सक्यअसमणओ रिइ ए लमामि' (चार ५६) ।

सक्यअ देखो सक्य = शक् ।

सक्यअ वि [शक्ति] जो समर्थ हुआ हो वह (आ २८, कुप्र ३) ।

सक्यअ वि [म्यक्तीय] निज का, आत्मीय, 'सि (१ स) कियमुवहि च तहा पडिहेहंतो न वेमि सया' (कुलक ७, ६) ।

सक्यअ देखो स-क्यअ = संस्कृत ।

सक्यरिआ स्त्री [सांस्कृत्या] संस्कार, संस्कृति (प्राक ३३) ।

सक्यकुण देखो सक्युण । सक्युणदि (शौ) (प्राक ६४), सक्युणोमि (स २४, मोह ७) ।

सक्यकुलि स्त्री [गन्कुलि] १ कर्ण-विवर कान का छिद्र (गाया १, ८—पत्र १३३) । २ तिलपापड़ी, एक तरह का खाद्य पदार्थ (परह २, ५—पत्र १४८, दस ५, १, ७१, कस, विसे २६६) । ३ कण्ण पुं [कर्ण] एक अन्तर्द्वीप । १ उसमें रहनेवाली मनुष्य-जाति (इक) ।

सक्य देखो सक्य = शक् ।

सक्य न [सख्य] मैत्री, दोस्ती (उत्त १४, २७) ।

सक्य न [साक्ष्य] साक्षिपन, गवाही (सुपा २७६, सबोध १७) ।

सक्य अ [साक्षात्] प्रत्यक्ष, आंखों के सामने, प्रकट (हे १, २४, पि ११४) ।

सक्यय देखो सक्य = संस्कृत (ज २ टी—पत्र १०४) ।

सक्यर देखो स-क्यर = साक्षर ।

सक्यला देखो सक्यलं (पचा ६, ४०, सुर ५, २२१, १२, ५६, पि ११४) ।

सक्यवि वि [साक्षिन्] साक्षी साक्षी, गवाह (परह १, २—पत्र २६, धर्मसं १२००, कप्प, आ १४, स्वप्न १३१) ।

सक्यअ देखो सक्य = सख्य, 'कादवरी-सविअअं भम्हाए पडमसोहिद इच्छीमदि' (अभि १८८) ।

सक्यज्ज न [साक्षित्त] गवाही, साक्ष (आवक २६०) ।

सक्यण देखो सक्य (हे २, १७४, पड, सुर ६, ४४) ।

सग [स्वक] देखो स = स्व (भग, परह २१—पत्र ६२८, पडम ८२, ११७, उत्त २०, २६, २७, सबोध ५८, चेइय ५६१) ।

सग देखो सत्त = सप्तन् (रयण ७२, उर ५, ३, २, २३) । १ वण्ण, १ वन्न स्त्री [पञ्चाशत्] सत्तावन, पचास और सात (कम्म ६, ६०; श्रु १११, कम्म २ २०) । २ वीस स्त्री [विशति] सत्ताईस (आ २८, रयण ७२, सबोध २६) । ३ सयरि स्त्री [सप्तति] सत्तहत्तर (कम्म २, ६) । ४ सीइ स्त्री [शीति] सत्तासी (कम्म २, १६) ।

सग देखो सत्तम (कम्म ४, ७६) ।

सग पुं [शक] १ एक अनाय देश, अफगानिस्तान के उत्तर का एक म्लेच्छ देश (सूत्रनि ६६, पडम ६८, ६४, इक) । २ उस देश का निवासी (काल) । ३ एक सुप्रसिद्ध राजा जिसका शक-संवत् चलता है (विचार ४६५, ५१३) । ४ कूल न [कूल] एक म्लेच्छ-देश का किनारा (काल) ।

सग स्त्री [सज्ज] माला, 'सगचंदणविस-सत्थाइजोगओ तस्स अह य दीसति' (आवक १८६) ।

सगड न [शकट] १ गाड़ी (उवा, आचा २, ३, १६) । २ पुं एक सार्थवाह-पुत्र (विपा १, १—पत्र ४, १, ४—पत्र ५५) । ३ भदिआ स्त्री [भद्रिका] जैनतर ग्रन्थ-विशेष (गुंदि १६४, अणु ३) । ४ मुह न [मुख] पुरिमताल नगर का एक प्राचीन उद्यान (कप्प) । ५ वूह पुं [व्यूह] कला-विशेष, गाड़ी के आकार से सैन्य की रचना (श्रीप) । देखो सअड ।

सपायणा स्त्री [सपादना] ऊपर देखो (पचा १३, १७)।

संपाल सक [स + पालय्] पालन करना। सपालइ (भवि)।

सपाव सक [सप्र + आप्] प्राप्त करना। सपावेइ (भवि)। सकृ. सपप्प (सवेग १२)। हेकृ. सपाविउं (मम १, भग, सौप)।

सपाव सक [सप्र + आपय्] प्राप्त करवाना। सपावेइ (उवा)।

सपावण न [सप्रापण] प्राप्ति, लाभ (गाया १, १८—पत्र २४१, सुर ४, ५७)।

सपाविअ वि [सप्राप्त] प्राप्त, लब्ध (सुर २, २२६, सुपा १६५, सण)।

सपाविअ वि [सप्रापित] नीत जो ले जाया गया हो वह (राज)।

सपासग वि [दे] दीर्घ, लम्बा (दे ८, ११)।

सपिडग न [सपिण्डन] १ द्रव्यो का परस्पर संयोजन (पिड ७)। २ समूह (शोध ४०७)।

संपिडिअ वि [सपिण्डित] पिएडाकार किया हुआ, एकत्र किया हुआ (श्रीपू. जी ४७, सण)।

सपिण्ण देखो सपेह = सप्र + ईक्ष्। सपि-कई (दसत्त २, १२)।

संपिड वि [सपिट] पिसा हुआ (सूत्र १, ४, ८)।

सपिण्ण वि [सपिण्ड] नियन्त्रित, 'रज्जु-पिण्डो व इदकेतु विमुद्धरणेण सपिण्ड' (पण्ह २ ४—पत्र १३०)।

सपिहा सक [समपि + धा] आच्छादन करना, ढकना। सकृ. सपिहिताण (पि ५८३)।

सपीड पु [सपीड] सपीडन, दवाना (गउड)। देखो सपील।

सपीडिअ वि [सपीडित] दवाया हुआ (गउड १४४)।

सपीणिअ वि [सप्रीणित] खुश किया हुआ (सण)।

सपील पु [सपीड] सघात, समूह (उत्त ३२, २६)।

सपीला स्त्री [सपीडा] पीडा, दुःखानुभव (उत्त ३२, ३६, ५२, ६५, ७८)।

सपुच्छ सक [म + प्रच्छ्] पूछना, प्रश्न करना। सपुच्छिदि (शौ) (नाट—विक्र २१)।

सपुच्छण स्त्रीन [सप्रच्छन, सप्रश्न] प्रश्न, पृच्छा (सूत्र १, ६, २१, सुपा २१)। स्त्री °णी (दस ३, ३)।

सपुच्छणी स्त्री [सपुच्छनी] भाहू, समाननी (राय २१)।

संपुज्ज वि [सपूज्य] समाननीय, आदरणीय (पउम ३३, ४७)।

सपुड पु [सपुट] १ जुड़े हुए दो समान अश्र वाली वस्तु, दो समान अश्रो का एक दूसरे से जुड़ना, 'कवाडसपुडघणम्मि' (वण ३), 'दलसपुडे' (कप्पू, महा, भवि, से ७, ५६)। २ सचय, समूह (सूत्र १, ५, १, २३)। °फलग पु [°फलक] दोनों तरफ जितने बँधी पुस्तक, हिसाब की वही के समान किताब (पव ८०)।

संपुड सक [सपुटय्] जोड़ना, दोनों हिस्सों को मिलाना। सपुडइ (भवि)।

सपुडिअ वि [सपुटित] जुड़ा हुआ (गाया १, १—पत्र ६३)।

सपुण्ण वि [सपूर्ण] १ पूर्ण, पूरा (उवा, महा)। २ न. दश दिनों का लगातार उपवास (सवोध ५८)।

सपूअ सक [स + पूजय्] सम्मान करना, अभ्यर्चना करना। सकृ. सपूअण (पचा ८, ७)।

सपूजिय वि [सपूजित] अभ्यर्चित (महा)।

सपूयण न [सपूजन] पूजन, अभ्यर्चना (सूत्र १, १०, ७, धर्मस ६३४)।

सपूरिय वि [सपूरित] पूर्ण किया हुआ, 'सपूरियदोहला' (महा, सण)।

सपेह पुं [सपीड] दवाव (पउम ८, २७२)।

सपेस सक [सप्र + इप्] भोजना। सपेसइ (महा, भवि)।

सपेस पु [सप्रेय] प्रेषण, भोजना (गाया १, ८—पत्र १४७)।

सपेसण न [सप्रेपण] ऊपर देखो (गाया १, ८—पत्र १४६, स ३७६, गउड, भवि)।

सपेसिय वि [सप्रेपित] भेजा हुआ (सुर १६, ११५)।

सपेह सक [सप्र + ईच्] देखना, निरीक्षण करना। सपेहइ, सपेहेइ (दसत्त २, १२, पि ३०३, भग, उवा, कप्प)। सट्. सपेहाए, सपेहिता (आचा १, २, ४, ४, १, ५, ३, २, सूत्र २, २, १, भग)।

सपेहा स्त्री [सप्रेक्षा] पर्यालोचन (आचा १, २, २, ६)।

सफ न [दे] कुमुद, चन्द्र-कमल (दे ८, १)।

सफाल सक [स + पाटय्] फाटना, चीरना। सफालइ (भवि)।

सफाली स्त्री [दे] पक्वित श्रेणि (दे ८, ५)। संफाम सक [स + स्पृश्] स्पर्श करना, छूना, 'माड्डाण सफामे' (आचा २, १, ३, ३, २, १, ५, ५, २, १, ६, २, ४, ५)।

सफाम पु [सस्पृश] स्पर्श (आचा, उप ६४८ टी, पव २ टी, हे १, ४३, पडि)।

सफासण न [संस्पृशन] ऊपर देखो, 'आणावीरियसफासणभावतो' (पंचा १०, २८)।

सफिट्ट पुं [दे] संयोग, मेलन (आ १६)।

संफुल्ल वि [सफुल्ल] विकसित (प्राकृ १४)।

सफुसिय वि [संसृष्ट] प्रमाजित, 'दसणकर-नियरसफुसियदिसिमुहमला' (सुपा २६३)।

सव पु [शाम्ब] १ श्रीकृष्ण वासुदेव का एक पुत्र (गाया १, ५—पत्र १००, अत १४)। २ राजा कुमारपाल के समय का एक सेठ (कुप्र १४३)।

सव पुन [शम्ब] वज्र, इन्द्र का आयुध (सुर १६, ५०)।

सवंध सक [स + वन्ध्] १ जोड़ना। २ नाता करना। कर्म सवज्जइ (चेइय ७२७)।

सवंध पुं [सवन्ध] १ ससर्ग, सग (भवि)। २ संयोग (कम्म १, ३५)। ३ नाता, सगाई, रिश्तेदारी (स्वप्न ४३)। ४ योजना, मेल (वव ५)।

संवधि वि [सवन्धिन] सम्बन्ध रखनेवाला (उवा, सम्म ११७, स ५३६)।

सवर पु [शम्बर] मृग-विशेष, हरिण की एक जाति (पण्ह १, १—पत्र ७, दे ८, ६, कुप्र ४२६)।

पत्नी, सत्यभामा (कुप्र २५८) । ३ इन्द्राणी (चउपप्ल० ऋषभ-चरित) । ० भोस वि [मृपा] मिश्र-भाषा, सत्य मे मिला हुआ झूठ वचन, सचामोसाणि भासइ (सम ५०) । सञ्चित्त देवो स-ञ्चित्त = स-चित्त । सञ्चित्त वि [दे. सत्य] मच्चा, यथार्थ (दे ८ १४) । सञ्चीसय पुं [दे सञ्चीसक] वाद्य-विशेष (पठम १०२ १०३) । देखो सञ्चीसक । सञ्चेविअ वि [दे] रचित, निर्मित (दे ८, १८) । सञ्छ वि [रवञ्छ] अति निर्मल (सुपा ३०) । सञ्छद वि [स्वञ्छन्द] १ स्वाधीन, स्व-वश (उप ३३६ टी. मुर १८ ८५) । २ न स्वच्छानुमार (गाया १ ८—पत्र १५२, औप, अभि ४६ प्रामू १७) । ० गामि वि [० गामिन्] इच्छानुमार गमन करनेवाला, स्वैरी । स्त्री. ० णी (सुपा २३५) । ० पारि, ० पारि वि [० पारिन्] स्वच्छन्दी, इच्छानुसार विहरण करनेवाला, स्वैरी । स्त्री ० णी (स ३६, आ १६ गच्छ १, १०) । सञ्छर सक [द्वरा] देखना (संक्षि ३६) । सञ्छइ वि [दे सञ्छाय] सदृश, समान, तुल्य (दे ८, ६, गा ५, ४५, ३०८, ५३३, ५८०, ६८१ ७२१, मुर ३, २४६, धर्मवि ५७) । सञ्छाय वि [सञ्छाय] १ समान छाया-वाला तुल्य (गडड, कुप्र २३) । २ अच्छी कान्तिवाला (कुमा) । ३ सुन्दर छायावाला । ४ कान्ति-युक्त । ५ छाया युक्त (हे १, २४६) । सञ्छाद वि [सञ्छाय] जिसकी छाही सुन्दर हो वह । २ छाही वाला । ३ समान छाया-वाला, तुल्य, सदृश (हे १, २४६) । सञ्जत्ता स्त्री [सञ्जत्ता] वनस्पति-विशेष (मृग २, ३, १६) । सञ्जण देखो स-जण = स्व-जन । सञ्जय देखा सञ्जीव (सुर १२, २१०) । सञ्जुन देवो संजुत (पिग) । सञ्जोइ देखो स-जोइ = स-ज्योतिष । सञ्जो ग वि [स-जिगिन्] १ मन आदि का व्यापारवाला । २ पुन तेरहवां गुण-स्थानक (पि ४११, मम २६, वम्म २, २, २०) ।

सज्जोणिय देखो स-जोणिय = स-योनिक । सज्ज अक [सज्ज] १ आसक्ति करना । २ सक. आलिंगन करना । सज्जइ (उत्त २५, २०), सज्जह (गाया १, ८—पत्र १४८) । वक्र. सज्जमाण (सूत्र १, ७, २७, दसवू २, १०, उत्त १४, ६, उवर १२) । क. सज्जियव्व (पण्ह २, ५—पत्र १४६) । सज्ज अक [सज्ज] १ तय्यार होना । २ सक तय्यार करना, सजाना । सज्जेइ, सज्जेति (कुमा, गाया १, ८—पत्र १३२) । कर्म. सज्जोअति (कप्पू) । कवक. सज्जिज्जत (कप्पू) । सक. सज्जिऊण, सज्जेइ (स ६४, महा) । क. सज्जियव्व, सज्जेयव्व (सत्त ६०, स ७०) । प्रयो, सक. सज्जावेऊण (महा) । सज्ज पु [सज्ज] वृद्ध-विशेष (गाया १, १—पत्र २५, विसे २६८२ स १११, कुमा) । सज्ज पुं [पड्ज] म्वर विशेष (कुमा) । सज्ज वि [सज्ज] तय्यार, प्रणुण (गाया १, ८—पत्र १४६, सुपा १२२, १६७, हेका ४६, पिग) । सज्ज } अ [नद्यम्] तुरन्त, जल्दी शीघ्र, सज्ज } 'सज्जघायण ने कम्मणजोग पञ्जामि' (स १०८, सुख ८, १३, गा ५६७ अ, कस) । सज्जभव पु [सज्जभव] एक प्रसिद्ध जैन महर्षि (मार्घ १२) । सज्जण देखो स-जण = सज्जन । सज्जा देखो सेज्जा (राज) । सज्जिअ वि [सज्जित] सजाया हुआ, तय्यार किया हुआ (औप, कुमा, महा) । सज्जिअ वि [सज्जि] बनाया हुआ (दे १, १३८) । सज्जिअ पुं [दे] ३ नापित, नाई । २ रजक, बोवो । ३ वि पुरस्कृता, आगे किया हुआ । ४ दीर्घ, लम्बा (दे ८, ४७) । सज्जिआ स्त्री [सज्जिआ] क्षार-विशेष, साजो खार, 'वत्थं सज्जियाखारेण अणुलिपति' (गाया १, ५—पत्र १०६) । सज्जीअ } देखो स-ज्ज अ = स-जीव । सज्जीव }

सज्जीहव अक [सज्जी + भू] सज्ज होना, तय्यार होना । सज्जीहवेइ (आ १४) । सज्जो देखो सज्ज = मद्यस (सुपा ३६७) । सज्जोअ वि [दे] प्रत्यग्र, नूतन, ताजा (दे ८, ३) । सज्ज वि [साध्व] १ सावनीय, सिद्ध करने योग्य । २ वश में करने योग्य, 'बलिओ हु इमो सत्तू ताव य सज्जो न पुरिसगारम्भ' (सुर ८, २६ सा २४) । ३ तर्कशास्त्र-प्रसिद्ध अनुमेय पदार्थ, जैसे धूम से ज्ञातव्य वहि (पंचा १४, ३५) । ४ पुं साध्यवाला, पक्ष (विसे १०७७) । ५ देवगण-विशेष । ६ योग-विशेष । ७ मन्त्र-विशेष (हे २, २६) । सज्ज पु [सज्ज] १ पर्वत-विशेष (स ६७६) । २ वि. सहन-योग्य (हे २, २६, १२४) । सज्जनिअ पु [स] ब्रह्मचारी (राज) । सज्जनिअ स्त्री [दे] भगिनी, वहिन (राज) । सज्जनेअसि पु [स्वाध्यायान्तेवासिन] विद्या-शिष्य (सुख २, १५) । सज्जमाण वि [साध्वमान] जिसकी साधना की जाती हो वह (ग्यण ४०) । सज्जव सक [दे] ठीक करना, तन्दुस्त करना । सज्जवेहि, सज्जवेमि (सुख २, १५) । सज्जस न [साध्वस] भय, डर (हे २, २६, कुमा) । सज्जमाडय वि [स्वाध्यायिक] १ जिसमें पठन आदि स्वाध्याय हो सके ऐसा शास्त्रोक्त देश, काल आदि (ठा १०—पत्र ४७५) । २ न स्वाध्याय, शास्त्र-पठन आदि (पव २६८, एदि २०७ टी) । सज्जमाय पुं [स्वाध्याय] शोभन अर्थयन, शास्त्र का पठन, आवर्तन आदि (औप, हे २, २६, कुमा, नव २६) । सज्जमारय वि [यत्तराज] सहाचल के राजा से सम्बन्ध रखनेवाला, सहाद्रि के राजा का (पठम ५५, १७) । सज्जिमल्ल पु [दे] भ्राता, भाई (उप २७५, ३७७, पिड ३२४) । सज्जिमल्ला स्त्री [दे] भगिनी, वहिन (पिड ३१६, उप २०७) । सज्जिमल्ल देखो सज्जिमल्ला (राज) ।

(पि ४७५, काल, भवि)। वक्र संभवंत (सुपा ५६)। क. संभव्य (आ १२, सूत्रनि ६५)।

संभव पु [संभव] १ उत्पत्ति (महा, उव, हे ४, ३६५)। २ संभावना (भवि)। ३ वर्तमान अवसर्पिणी काल में उत्पन्न तीसरे जिनदेव का नाम (सम ४३, पडि)। ३ एक जैन मुनि जो दूसरे वामुदेव के पूर्व-जन्म के गुरु थे (पठम २८, १७६)। ५ कला-विशेष (श्रौप)।

संभव पृ [दे] प्रसव-जरा, प्रसूति से होने-वाला दुःखापा (दे ८, ४)।

संभव (अप) देखो सभम = संभ्रम (भवि)। संभवि वि [संभविन्] जिसका सम्भव हो वह (पच ५, २५, भास ३५)।

संभविय देखो संभूअ (चेदय ५५६)।

संभव्य देखो सभम = सं + भू।

संभाणय न [संभाणक] गुजरात का एक प्राचीन नगर (राज)।

संभार सक [स + भारय्] मसाला से सज्जित करना, वासित करना। संभारेह, संभारेंति, संभारेह (णाय १, १२—पत्र १७५, १७६)। संक्र संभारिय (पिड १६३)। क. संभारणिज्ज (णाय १, १२)।

संभार पुं [संभार] १ समूह, जत्था, 'उत्तुग-धर्मसंभारभासमाण करावण राया' (उप ६४८ टी, श्रावक १३०)। २ मसाला, शाक आदि में ऊपर डाला जाता मसाला (णाय १, १६—पत्र १६६)। ३ परिग्रह, द्रव्य-सचय (पणह १, ५—पत्र ६२)। ४ अवश्यतया कर्म का वेदन (सूम २, ७, ११)।

संभारिअ वि [संस्मृत] याद किया हुआ (से १४, ६५)।

संभारिअ वि [संस्मारित] याद कराया हुआ (णाय १, १—पत्र ७१, सुर १४, २३५)।

संभाल सक [स + भालय्] समालना। संभालइ (भवि)।

संभाल पु [संभाल] खोज, अन्वेषण, 'उदिण सूरम्मि जा न जणणोए पायपणामनिमित्तं समागमो ताव संभालो जाओ तस्स, न कथवि जाव णउत्ती कहवि उवलद्धा' (उप २२० टी)।

संभालिय वि [संभालित] संभाला हुआ (सण)।

संभाव सक [सं + भावय्] १ समावना करना। २ प्रसन्न नजर में देखना, 'न संभावसि अवरोह' (मोह ६)। संभावेमि (सवेग ४)। सम्भावेहि मोह २६)। कर्म संभावीअदि (शौ) (नाट—मृच्छ २०)। वक्र, संभावअत (नाट—शकु १३४)। सक्र, संभाविअ (नाट—शकु ६७)। क. संभावणिज्ज, संभावणीय (उप ७६८ टी, स ६१, आ २३)।

संभाव अक [लुभ्] लोभ करना, आसक्ति करना। संभावइ (हे ४, १५३, वड्)।

संभावणा स्त्री [संभावना] संभार (से ८, १६, गउड)।

संभावि वि [संभाविन्] जिसका संभव हो वह (आ १४)।

संभाविअ वि [संभावित] जिसकी संभावना की गई हो वह (नाट—विक्र ३४)।

संभाम सक [स + भाप्] बातचीत करना, आलाप करना। क. संभामणय (सुपा ११५)।

संभास पुं [संभाप] संभाषण, वार्तालाप (उप पृ ११२, सवोष २१ सण, काल, सुपा ११५, ५४२)।

संभासण न [संभापण] ऊपर देखो (भवि)। संभासा स्त्री [संभाग] संभाषण, बातचीत (श्रौप)।

संभासि वि [संभाप] संभाषण, 'संभासि-त्साणरिहो' (काल)।

संभासिय वि [संभापिन] जिसके साथ संभाषण—वार्तालाप किया गया हो वह (महा)।

संभिडण न [संभेदन] आघात (गउड)।

संभिण्ण, वि [संभिन्न] १ परिपूर्ण (पच संभिन्न १६८)। २ किंचिद् न्यून, कुछ कम (देवेन्द्र ३४२)। ३ व्याप्त। ४ विल-कुल भिन्न—भेदवाला (पणह २, १—पत्र ६६)। ५ खटित (दसवू १, १३)। °सोअ वि [°श्रोतस °श्रोतृ] लट्वि विशेषवाला, शरीर के कोई भी अंग में शब्द को स्पष्ट रूप

से सुनने की शक्तिवाला (पणह २, १—पत्र ६६, श्रौप)।

संभिन्न न [२] आघात (गउड ६३४ टी)।

संभिय वि [संभृत] १ पुष्ट, 'आरभसभिया' (सूत्र १, ६, ३)। २ सम्भार-युक्त सत्कृत, 'बहुसंभारसमिण' (णाय २, १६—पत्र १६६, स ६८ विमे २६३)।

संभु पुं [शम्भु] शिव, शकर (सुपा २४०, सार्ध १३५, समु १५)। २ रावण का एक सुभट (पठम ५६, २)। ३ छन्द-विशेष (पिण)। °वारिणो स्त्री [°गृहिणी] गौरी, पार्वती (सुपा ४४२)।

संभुज सक [स + भुज्] साथ भोजन करना, एक मण्डली में बैठकर भोजन करना। संभुजइ (कम)। हेक. मग्गुल्लित्तण (सूत्र २, ७, १६, ठा २, १—पत्र ५६)।

संभुजणा स्त्री [संभोजना] एकत्र भोजन-व्यवहार (पंचू)।

संभुल्ल वि [दे] दुर्जन, खल (दे ८, ७)।

संभूअ वि [संभूत] १ उत्पन्न, सजात (सुपा ८०, ५०७, महा)। २ पु एक जैन मुनि जो प्रथम वामुदेव के पूर्वजन्म में गुरु थे (सम १५३, पठम २०, १७६)। ३ एक प्रसिद्ध जैन महर्षि जो स्थूलभद्र मुनि के गुरु थे (वर्मवि ३८, सार्ध १३)। ४ व्यक्ति-वाचक नाम (महा)। °विजय पु [°विजय] एक जैन महर्षि (कुप्र ४५३, विपा २, ५)।

संभूइ स्त्री [संभूति] १ उत्पत्ति (पठम १७ ६८, गा ६५४, सुर ११, १३५, पच २४८)। २ श्रेष्ठ विभूति (सार्ध १३)।

संभूस सक [स + भूप्] अलकृत करना। संभूसइ (सण)।

संभोअ पु [संभोग] मुन्दर भोग (सुपा ४६८, कप्पु)। देखो संभोग।

संभोइअ वि [संभोगिक] समान नामाचारी-क्रियानुष्ठान होने के कारण जिसके साथ खान-पान आदि का व्यवहार हो सके ऐसा साधु (ओघभा २०, पचा ५, ४१, द्र ५०)।

संभोग पुं [संभोग] समान नामाचारीवाले साधुओं का एकत्र भोजनादि-व्यवहार (सम २१, श्रौप, कम)।

सणिद्ध देखो सणिद्ध (हे २, १०६, कुमा) ।
सणिष्वाय पुं [गनै प्रपात] जीवो से भरी
हुई पौद्गलिक वस्तु-विशेष (ठा २, ४—पत्र
८६) ।

सणेह पु [स्नेह] १ प्रेम, प्रीति (अभि २७,
कुमा) । २ घृत, तेल आदि स्निग्ध रस । ३
चिकनाई, चिकनाहट (प्राप्र, हे २, १०२) ।
सण्ण देखो सन्न (से १३, ७२) ।

सण्णज्ज न [सान्णाय्य] मन्त्र आदि से
सत्कारा जाता घृत आदि (प्राक् १६) ।

सण्णत्तिअ वि [दे] परित्यापित (दे ८, २८) ।

सण्णविअ वि [दे] १ चिन्तित । २ न.
सान्ध्य, मदद के लिए समीप-गमन (दे ८,
५०) ।

मण्णिअ वि [दे] आर्द्र, गीला (दे ८, ५) ।

मण्णिर देखो सन्निर (राज) ।

सण्णुमिअ वि [दे] १ सनिहित । २ मापित,
नापा हुआ । ३ अनुनीत, अनुनय-युक्त (दे ८,
४८) ।

सण्णुमिअ देखो सन्नुमिअ (दे ८, ४८ टी) ।

सण्णेउम्भ पु [दे] यक्ष-देवता (दे ८, ६) ।

सण्ह वि [श्रद्धण] १ मछण, चिकना (कप्प,
औप) । २ छोटा, बारीक (विपा १, ८—
पत्र ८३) । ३ न. लोहा (हे २, ७५, पङ्) ।

४ पुं. वृक्ष-विशेष (पराण १—पत्र ३१) ।
°करगीं छो [°करणी] पोमने की शिला
(भग १६, ३—पत्र ७६६) । °मच्छ पुं
[°मत्स्य] मछली की एक जाति (विपा १,
८—पत्र ८३, पराण १—पत्र ४७) ।

°साण्हआ छो [°श्रद्धिगका] घाठ उच्छ-
लक्षणश्लक्ष्णिका का एक नाप (इक) ।

सण्ह वि [सूक्ष्म] १ छोटा, बारीक (कुमा) ।
२ न. कैतव, कपट । ३ अध्यात्म । ४
अलकार-विशेष (हे २, ७५) । देखो सुहम,
सुहुम ।

सण्हईं छो [दे] हूती (दे ८, ६) ।

सत देखो सय = शत (गा ३) । °कतु पुं
[°कटु] इन्द्र (कप्प) । °ग्धी छो [°घ्नी]
अन्न-विशेष (पराह १, १—पत्र ८, वसु) ।
°दुदु छो [°द्र] एक महानदी (ठा ५,
३—पत्र ३५१) । °भिसया छो [°भिमज्]

नक्षत्र-विशेष (सम २६) । °रिसभ पु
[°रूपभ] अहोरात्र का इक्कीसवाँ मुहूर्त (सम
२१) । °वच्छ पु [°वत्स] पक्षि-विशेष
(पराण १—पत्र ५२) । °वाइया छो
[°पादिका] श्रोत्रिय जन्तु की एक जाति
(पराण १—पत्र ४५) ।

सत देखो सत्त = सप्तन् (पिण) । °र त्रि
[°दशन्] सतरह, १७, °ज चाणत्तुण्णि
हु वणिणज्जइ सतरमेअदसमेअ (सिरि
१२८८, कम्म २, १, १६) । °रसय न
[°दशशत] एक सौ सतरह (कम्म २, १३) ।

सतत देखो स-तत = स्व-तन्त्र ।

सतत देखो सय = सत्त (राज) ।

सतय देखो सयय = शतक (सम १५४) ।

सतर न [सतर] दधि, दही (श्रोघ ४८) ।

सति देखो सइ = स्मृति (ठा ४, १—पत्र
१८७, औप) ।

सती देखो सई = सती (कुप्र ६०) ।

मतीणा देखो सट्ठणा (ठा ५, ३—पत्र
३४३) ।

सतेरा छो [शतेरा] विदिग् रुचक पर रहने
वाली एक विद्युत्कुमारी देवी (ठा ४, १—
पत्र १६८, इक) ।

सत्त वि [शक्त] समर्थ (हे २, २, पङ्) ।

सत्त वि [शम] शाय-ग्रस्त, जिसपर आक्रोश
किया गया हो वह (परम ३५, ६८, पव
१०६ टी, प्रति ८६) ।

सत्त देखो सच्च = सत्य (अभि १८६, पिण) ।

सत्त वि [सक्त] आसक्त, गूढ़, लोलुप (सूय
१०, १, ६, सुर ८, १३६, महा) ।

सत्त पुन [सत्त] मदाव्रत, जहाँ हमेशा
अन्न आदि का दान दिया जाता हो वह स्थान
(कुप्र १७२) । °यत्त अजि ८) । °साला
छो [°शाला] मदाव्रत-स्थान, दान क्षेत्र
(सण) । °गार न [°गार] वही अर्थ
(धर्मवि २६) ।

सत्त वि [दे] गत, गया हुआ (पङ्) ।

सत्त पुन [सत्त] १ प्राणी, जीव, चेतन
(आचा, सुर २, ३६, सुपा १०३, धर्मस
११८६) । २ अह रात्र का दूसरा मुहूर्त (सम
५१) । ३ न. वल, पराक्रम । ३ मानसिक

उत्साह (पिठ ६३३, अणु, प्रासू ७१) । ५
विद्यमानता (धर्मस १०५) । ६ लगातार
सात दिनों का उपवास (सवोष ५८) ।

सत्त वि [सप्तन्] सात सख्यावाला, सात
(विपा १, १—पत्र २, कप्प, कुमा, जी ३३,
४१) । °खिती, °खेत्ता छो [°क्षेत्री]
जिन-चैत्य, जिन-विम्ब, जैन आगम, साधु,
साध्वी, थावक और आदिका ये सात धन-
व्यय-स्थान (ती ८, श्रु १२६, राज) । °ग न
[°क] सात का समुदाय (द ३५, कम्म २,
२६, २७, ६, १३) । °चत्ताल वि
[°चत्वारिज] सैतालीसवाँ, ४७ वाँ (परम
४७, ५८) । °चत्तालास छो न [°चत्वारि-
शत्] सैतालीस, ४७, सम ६७) । °च्छय
पु [°च्छद] वृक्ष-विशेष, सतवन का पेड़,
सतौना (प्राप्र, से १, २३, राया १, १६—
पत्र २११, सण) । °ट्टि छो [°पट्टि] १
सख्या-विशेष, मडसठ, ६७ । २ सडसठ सख्या
वाला (सम १०६, कम्म १, २३, ३२, २,
६) । °ट्टिधा अ [°पट्टिधा] सडसठ प्रकार
का (मुज १२—पत्र २२८) । °णउइ देखो
°णउइ (राज) । °तीमइम वि [°त्रिशत्तम]
सइतीसवाँ, ३७ वा (परम ३७, ७१) । °ततु
पुं [°तन्तु] यज्ञ (प्राप्र) । °दस वि
[°दशन्] सतरह, १७ (परम ११७, ४७) ।
°पण्ण देखो वण्ण (राज) । °भूम वि
[°भूम] सात तलावाला प्रासाद (आ १२) ।
°भूमिय वि [°भूमिक] वही पूर्वोक्त अर्थ
(महा) । °म वि [°म] सातवाँ, ७ वाँ
(कप्प) । छो, °भा (जी २६) । °मासिअ वि
[°मासिक] सात मास का (भग) ।
°मानिया छो [°मासिनी] सात मास मे
पूर्ण होनेवाली एक साधु-प्रतिज्ञा, व्रत-विशेष
(सम २१) । °भिया, °या छो [°मिका,
°मी] १ नातवाँ, ७ वा (महा, सम २६,
कह ३०, कम्म ३, ६, प्रासू १२१) । २
सात-विभक्ति-चैत्य ६८२, राज) । °य
देखो °ग (कम्म ६, ६६ टी) । °र वि [°त]
सत्तरवाँ, ७० वाँ (परम ७०, ७२) । °र वि
[°दशन्] सतरह, १७ (कम्म २, ३) । °रत्त
पु [°रात्र] सात रातदिन का समय (महा) ।
°रस वि [°दशन्] सतरह, १७ (भग) ।
°रस, °रसम वि [°दश] सतरहवाँ,

सरक्खग वि [संरक्षक] अच्छी तरह रक्षा करनेवाला (णाय १, १८—पत्र २४०) ।
 सरक्खण न [संरक्षण] समीचीन रक्षण (णाय १, १४, पि ३६१) ।
 सरक्खय देवो सरक्खग (उत्त २६, ३१) ।
 सरद्ध नक [स + राध्] पकाना । कृ संरद्धियन्व (कुप्र ३७) ।
 सरुंघ सक [सं + रुध्] रोकना, अटकाना । कम, सारुधिज्जइ, सारुम्भइ (हे ४, २४८) । भवि, सारुधिहिइ, सारुम्भहिइ (हे ४, २४८) ।
 सरोह पुं [सरोध] अटकाव (कुप्र ५१, पव २३८) ।
 सरोहणी छी [सरोहणी] घाव को रूझाने-वाली औषधि-विशेष (सुपा २१७) ।
 सलक्ख सक [स + लक्ष्य] पहिचानना । कम, सलक्खीअदि (शौ), (नाट—वेणी ७८) ।
 सलग्ग वि [सलग्न] लगा हुआ, सायुक्त (सुपा २२६) ।
 सलग्गिअ वि [सलग्गित] सायुक्त होनेवाला, जुड़नेवाला (ओष ६८) ।
 सलत्त वि [संलपित] समापित, उक्त, कथित (सुर ३, ६१, सुपा ३२६, ३८५, महा) ।
 सलप्प नीचे देखो ।
 संलव सक [स + लप्] संभाषण करना । सलवइ, सलवेमि (महा, पव १४८) । वक्क, संलवमाण (णाय १, १—पत्र १३, कप्प) । कृ, संलप्प (राज) ।
 संलव पुं [सलाप] संभाषण, वार्तालाप (सूप्रनि ५८) ।
 सलाव सक [स + लापय्] बातचीत करना । सलाविति (कप्प) ।
 संलाव देवो सलव = सलाप (ओष, से २, ३६, गठड, आ ६) ।
 सलाविअ वि [संलापित] १ उक्त, कथित । २ कहलवाया हुआ (गा १११) ।
 संलिद्ध वि [संलिष्ट] संयुक्त (संबोध १६) ।
 संलिद्ध सक [स + लिख्] १ निलेप करना । २ शरीर आदि का शोषण करना, कुश करना । ३ पिसना । ४ रेखा करना । सलिह्हे (उत्त ३६, २४६, दस ८, ४, ७) । संकृ सलिहिय (कप्प) ।

सलिहिय वि [सलिखित] जिसने तपश्चर्या से शरीर आदि का शोषण किया हो वह (स १३०) ।
 सलीढ वि [सलीढ] संलेखना-युक्त (णदि २०६) ।
 सलीण वि [सलीन] जिमने इन्द्रिय तथा कपाय आदि को कावू में किया हो वह, संवृत (पव ६) ।
 सलीणया छी [सलीनता] तप-विशेष, शरीर आदि का संगोपन (सम ११, नव २८, पव ६) ।
 सलुंघ सक [स + लुञ्घ्] काटना । कवकृ सलुचमाणा सुणएहिं (आचा १, ६, ३, ६) । सकृ, सलुंघिआ (दस ५, २, १४) ।
 सलेहणा छी [सलेखना] शरीर, कपाय आदि का शोषण, अनशन-व्रत से शरीर-त्याग का अनुष्ठान (नह ११६, सुपा ६४८) ।
 सुअ न [श्रुत] ग्रन्थ-विशेष (णदि २०२) ।
 सलेहा छी [सलेखा] ऊपर देखो (उत्त ३६, २५०, सुपा ६४८) ।
 सलोअ पुं [सलोअ] १ दर्शन, अवलोकन (आचा २, १, ६, २, उत्त २४, १६, पव ६१) । २ दृष्टि-पात, दृष्टिप्रचार । ३ जगत, संपूर्ण लोक । ४ प्रकाश (राज) । ५ वि दृष्टि-प्रचारवाला, जिस पर दृष्टि पड़ सकती हो वह (उत्त २४, १६) ।
 सलोक सक [स + लोक्] देखना । कृ संलोकणिज्ज (सूप्र १, ४, १, ३०) ।
 सवइयर पु [सन्वयितकर] व्यतिसवन्ध, विपरीत प्रसंग (उव) ।
 सवग्ग पु [सवर्ग] १ गुणन, गुणाकार (वव १, जीवस १५४) । २ गुणित, जिसका गुणाकार किया गया हो वह (राज) ।
 संवन्द्धर पु [संवत्सर] वर्ष, साल (उव, हे २, २१) । पडिलेहणग न [प्रतिलेखनक] वर्ष-गाँठ, वर्ष की पूर्णता के दिन किया जाता उत्सव (णाय १, ८—पत्र १३१, भग, अत) ।
 सवन्द्धरिय पु [सावत्सरिक] १ ज्योतिषी, ज्योतिष शास्त्र का विद्वान् (स ३४, कुप्र ३२) । २ वि, सवत्सर संवधी, वार्षिक (धर्मवि १२६, पडि) ।

सवच्छल देखो सवच्छर (हे २, २१) ।
 सवट्ट सक [सं + वर्तय्] १ एक स्थान में रखना । २ संकुचित करना । संवट्टेइ (ओष) । संवट्टेज्जा (आचा १, ८, ६, ३) । संकृ, संवट्टेज्जा (ठा २, ४—पत्र ८६), सवट्टेज्जा (आचा १, ८, ६, ३) ।
 संवट्ट पु [संवर्त] १ पीडा (उप २६६) । २ भय-भीत लोगों का समवाय—समूह (उत्त ३०, १७) । ३ वायु-विशेष तृण को उड़ाने-वाला वायु (पण्ण १—पत्र २६) । ४ अपवर्तन (ठा २, ३—पत्र ६७) । ५ घेरा । ६ जहाँ पर बहुत गाँवों के लोग एकत्रित हो कर रहें वह स्थान, दुर्ग आदि (राज) । देखो संवत्त ।
 संवट्टइअ वि [संवर्तकिन] तूफान में फँसा हुआ (उप पृ १४३) ।
 सवट्टग पुं [संवर्तक] वायु-विशेष (सुपा ४१) । देखो सवट्टय ।
 सवट्टण न [संवर्तन] १ जहाँ पर अनेक मार्ग मिलते हो वह स्थान (णाय १, २—पत्र ७६) । २ अपवर्तन (विने २०४५) ।
 सवट्टय पुं [संवर्तक] अपवर्तन (ठा २, ३—पत्र ६७) । देखो सवट्टग ।
 सवट्टिअ वि [दे संवर्तित] सवृत्त, सकोचित (दे ८, १२) ।
 सवट्टिअ वि [संवर्तित] १ पिंडीभूत, एकत्रित (वव १) । २ सवर्त-युक्त (हे २, ३०) ।
 सवड्डअक [स + वृध्] बढ़ना । सवड्डइ (महा) ।
 सवड्डइअ देवो सवट्टण (अगि ४१) ।
 सवड्डिअ वि [सवृद्ध] बढ़ा हुआ (महा) ।
 सवड्डिअ वि [संवर्धित] बढ़ाया हुआ (नाट—रत्ना २२) ।
 सवत्त पुं [सवर्त] १ प्रलय काल (ने ५, ७१, १०, २२) । २ वायु-विशेष, 'जुगन-सरिस संवत्तवाय विरुग्गिअण' (कुप्र ६६) । ३ मेघ । ४ मेघ का अधिपति विशेष । ५ वृक्ष-विशेष, बहेहा का पेड़ । ६ एक स्मृतिार भुजि (नंलि १०) । देवो सवट्ट = सवर्त ।
 सवत्तण देवो सवट्टण (हे २, ३०) ।

[कोश] शस्त्र—श्रौजार रखने का थैला (गाथा १, १३—पत्र १८२)। 'वज्र' वि [वध्य] हथियार से मारने योग्य (गाथा १, १६—पत्र १६६)। 'वाडण' न [विपा-टन] शस्त्र से चोरना (गाथा १, १६—पत्र २०२, भग)।

सत्य वि [दे] गत, गया हुआ (दे ८, १)।

सत्य देखो सत्य = स्व-स्य।

सत्य न [स्वास्थ्य] स्वस्थता (गाथा १, ६—पत्र १६६)।

सत्य पु [सार्थ] १ व्यापारी मुसाफिरी का समूह (गाथा १, १५—पत्र १६३, उत्त ३०, १७, बृह १, अणु, सुर १, २१४)। २ प्राणि-समूह (कुमा हे १, ६७)। ३ वि. श्रन्वर्थं यथार्थनामा (वेइय ५७२)। 'वह', 'वाह' पुत्री [वाह] सार्थ का मुखिया सघ-नायक (श्रु ५५ उवा विपा १, २—पत्र ३१)। 'ही' (उवा, विपा १, २—पत्र ३१)। 'वाहिक' पु [वाहिन्] वही पूर्वोक्त अर्थ (भवि)। 'ह' देखो 'वाह' धर्मवि ४१, सण)। 'हिव' पु [विप] सार्थ-नायक (सुर २, ३२, सुपा ५६४)। 'हिवइ' पुं [धिपति] वही अर्थ (सुपा ५६४)।

सत्य पुन [शास्त्र] हितोपदेशक ग्रन्थ, हित-शिक्षक पुस्तक, तत्त्व-ग्रन्थ (विमे १३८४, कुमा), 'नाणामत्ये सुणतोवि' (आ ४)। 'णु' वि [ज्ञ] शास्त्र का जानकार, 'सुमि-णसत्यणू' (उप ६८६ टी, उप पु ३२७)। 'गार' वि [कार] शास्त्र-प्रणेता (धर्मस १००३, सिक्खा ३१)। 'त्य' पुं [र्थ] शास्त्र-रहस्य (कुप्र ६, २०६, भवि)। 'यार' देखो 'गार' (स ४, धर्मस ६८२)। 'वि' वि [विद्] शास्त्र ज्ञाता (स ३१२)।

सत्यइअ वि [द] उत्तेजित (दे ८, १३)।

सत्यर पुं [दे] निकर, समूह (दे ८, ४)।

सत्यर } पुन [स्तर] शय्या, बिछौना
सत्यरय } (दे ८, ४ टी, सुपा ५८३, पाप्र, षड्, हास्य १३६ सुर ४ २४४)।

सत्यव देखो सत्यव = सस्तव (प्राक ३३, पि ७६)।

सत्याम देखो सत्याम = स-स्थामन्।

सत्याव देखो सत्याव = संस्तव (प्राक ३३)।

सत्यि अ. स्त्री [स्वस्ति] १ आशीर्वाद, 'सत्यि करेइ कविलो' (पउम ३५, ६२)। २ क्षेम, कल्याण, मंगल। ३ पुण्य आदि का स्वीकार (हे २, ४५, ससि २१)। 'मई' स्त्री [मनी] १ एक विप्र-स्त्री, क्षीरकदम्बक उपाध्याय की स्त्री (पउम १. ६)। २ एक नगरी (उप ६०२)। ३ सनिवेश-विशेष (स १०३)। देखो सौत्थि।

सत्यिअ पुं [स्तस्ति] १ माङ्गलिक विन्याम-विशेष, मंगल के लिए की जाती एक प्रकार की चावल आदि की रचना-विशेष (आ २७, सुपा ५२)। २ स्वस्तिक के आकार का आमन-त्रय (बृह ३)। ३ एक देव-विमान (देवेन्द्र १४०)। 'पुर' न [पुर] एक नगर का नाम (आ २७)। देखो सत्यिअ।

सत्यिअ वि [सार्थिक] १ सार्थ-सम्बन्धी, सार्थ का मनुष्य आदि (कुप्र ६२, स १२६, सुर ६, १६६, सुपा ६५१, धर्मवि १२८)। २ पुं. सार्थ का मुखिया (बृह १)।

सत्यिअ न [सविथक] ऊरु, जघ (स २६२)।

सत्यिआ स्त्री [गच्छिका] छुरी (प्राप्र)।

सत्यिग देखो सत्यिअ = स्वस्तिक (पचा ८, २३)।

सत्यिह देखो सत्यिअ = सार्थिक (नुर १०, २०८)।

सत्यिहय देखो सत्य = सार्थ (महा, भवि)।

सत्यु वि [शास्त्र] शास्त्र-कर्ता, सीख देने-वाला (आचा, सूत्र २, ५, ४, १, १३, २)।

सत्युअ देखो संथुअ (प्राक ३३, पि ७६)।

सदा देखो सआ = सदा (राज)।

सदावरी देखो सयावरी = सदावरी (उत्त ३६, १३६)।

सदिस (शौ) देखो सरिस = सदश (नाट—मृच्छ ११३)।

सह अक [शब्दय] १ आवाज करना। २ सक आह्वान करना, बुलाना। सहइ (पिग)।

सह पुन [शब्द] १ ध्वनि, आवाज (हे १, २६०, २, ७६, कुमा, सम १५), 'सहाणि विरुवखाणि' (सूत्र १, ४, १, ६), 'सहाई' (आचा २, ४, २, ४)। २ पु नय-विशेष

(ठा ७—पत्र ३६०, विमे २१८१)। ३ छन्द-विशेष (पिग)। ४ नाम, आख्या (महा)। ५ प्रसिद्धि (श्रीप, गाथा १, १ टी—पत्र ३)। 'वेहि' वि [वयिन्] शब्द के अनुसार निशाना मारनेवाला (गाथा १, १८—पत्र २३६, गडह)। 'वाइ' पु [पातिन्] एक वृत्त वेताव्य पर्वत (ठा २, ३—पत्र ६६, ८०, ८, २—पत्र २२३, डक)।

मदल न [गादल] हरित, हरा घास (पाप्र, गाथा १, १—पत्र २४, गडह)।

सदलिय वि [गादलिन] हरा घासवाला प्रदेश (गडह)।

सदह सक [श्रद् + धा] श्रद्धा करना, विश्वास करना, प्रतीति करना। नदहइ सदहामि (हे ४, ६, भग, उवा)। भवि, सदहिसइ (पि ५३०)। वक नदहत, सदहनाण नदहाण (नव ३६, हे ४, ६ श्रु २३)। सक. सदहित्ता (उत्त २६, १)। क. महहियव्य (उव, स ८६ कुप्र ५४६)।

रादहग देखो सदहाण (हे ४, २३८, कुमा)।

सदहणया } स्त्री [श्रद्धान] श्रद्धा, विश्वास,
नदहणा } प्रतीति (ठा ६—पत्र ३५५, पंचमा)।

सदहा देखो सदहा = श्रद्धा (सट्टि १२७)।

सदहाण न [श्रद्धान] श्रद्धा विश्वास (आवक ६२, पव ११६, हे ४, २३८)।

मदहाण देखो सदह।

सदहिअ वि [श्रद्धित] जिस पर श्रद्धा की गई हो वह, विश्वस्त (ठा ६—पत्र ३५५, पि ३३३)।

सदाइद (शौ) वि [शब्दायित] आहूत, बुलाया हुआ (नाट—मृच्छ २८६)।

सदाण देखो संदाण। सदाणइ (पड्)।

सदाल वि [शब्दवत्] शब्दवाला (हे २, १५६, पउम २०, १०, प्राप्र, सुर ३, ६६, पाप्र, श्रीप)।

सदाल न [दे] तूपुर (दे ८, १०, षड्)।

'पुत्त' पु [पुत्र] एक जैन उपासक (उवा)। सदाव सक [शब्दय, शब्दायय] आह्वान करना, बुलाना। सदावेइ, सदाविति, सदावेति (श्रीप, कप्प, भग)। सदावेहि

सुर ४, २४^२) । २ वहन किया हुआ (भवि) ।

संविक्किण्ण वि [संविक्कीर्ण] अच्छी तरह व्याप्त (परण २—पत्र १००) ।

संविक्कय सक [संवि + ईक्ष्] सम भाव से देखना, रागादि-रहित हो कर देखना । वहु. संविक्कयमाण (उत्त १४, ३३) ।

संविग्ग वि [संविग्ग] सवेग-युक्त, भव-भीरु मुक्ति का अमिलापी, उत्तम साधु (उव, पंचा ५, ४; सुर ८, १६६, ओघमा ४६) ।

संविनिण्ण वि [संविनिर्ण] सविचरित, संविचित्र 'आसेवित (णाय १, ५ टी—पत्र १००, णाय १, ५—पत्र ६६) ।

संविज्ज अक [स + विद्] विद्यमान होना । संविज्ज (सूत्र १, ३, २, १८) ।

संविट्ठ मक [स + वेष्टय्] १ वेष्टन करना, लपेटना । २ पोषण करना । सक. संविट्ठमाण (णाय १, ३—पत्र ६१) ।

संविट्ठत्त वि [संविजित] पैदा किया हुआ, उपाजित (स ५) ।

संविणीय वि [संविनीत] विनय-युक्त (ओघमा १३४) ।

संविच्च देखो संवीच (सूत्र १, ३, १, १७) ।

संविच्च वि [संविच्च] १ सजात, बना हुआ (सुर ६, ८६) । २ वि. अच्छा आचरण-वाला । ३ विलकुल गोल (सिरि १०६३) ।

संविच्चि ओ [संविच्चि] संवेदन, ज्ञान (विसे १६२६, धर्मसं २६६) ।

संविद् सक [स + विद्] जानना, 'जिच्चमाणो न संविदे' (उत्त ७, २२) ।

संविद्ध वि [संविद्ध] १ संयुक्त (उवर १३३) । २ अभ्यस्त । ३ दृष्ट, 'संविद्धपहे' (आचा १, ५, ३, ६) ।

संविधा ओ [संविधा] सविवान, रचना, बनावट (चाच १) ।

संविधुग सक [संवि + धू] १ दूर करना । २ परित्याग करना । ३ अवगणना, तिरस्कार करना । संक्र. संविधुणिय, संविधुणित्ताण (आचा १, ८, ६, ५, सूत्र १, १६, ४, औप) ।

संविभत्त वि [संविभत्त] बाँटा हुआ, 'देवगुत्सविभत्त भत्त' (कुप्र १५३) ।

संविभाअ पुं [संविभाग] १ विभाग संविभाग करना, बाँट (णाय १, २—पत्र ८६, उवा, औप) । २ आदर, सत्कार (स ३३४) ।

संविभागि वि [संविभागिन्] दूसरे को दे कर भोजन करनेवाला (उत्त ११, ६, दस ६, २, २३) ।

संविभाव सक [संवि + भावय्] पर्यालोचन करना, चिन्तन करना । संक्र. संवि-भाविऊण (राज) ।

संविराय अक [संवि + राज्] शोभना । वहु. संविरायंन (पठम ७, १४६) ।

संविहल्ल देखो संवेहल्ल । वहु. संविहल्ल (वै ४२) । सक. संविहल्लऊण (कुप्र ३१५) ।

संविहल्लिअ वि [संवेहल्लित] चालित (उवा) ।

संविहल्लिअ देखो संवेहल्लिअ = संवेष्टित (कुमा) । संविहल्लिअ देखो संवेहल्लिअ = (दे) (उवा, ज १) ।

संविह पृ [संविध] गोशाले का एक उपासक (भग ८, ६—पत्र ३६६) ।

संविहाण न [संविधान] १ रचना, बनावट (सुपा ५८६, धर्मवि १२७, माल १५१, १६३) । २ भेद, प्रकार (वै १०) ।

संवीअ वि [संवीत] १ व्याप्त (सूत्र १, ३, १, १६) । २ परिहित, पहना हुआ, 'संवी-यदिव्वसणो' (धर्मवि ६) ।

संवुअ देखो संवुड (हे १, १३१, संक्षि ४, औप) ।

संवुट्ट देखो संवुत्त (रंभा ४४) ।

संवुड वि [संवुत्त] १ सकट, मकड़ा, अत्रि-वृत्त (ठा ३, १—पत्र १२१) । २ संवर-युक्त, सावद्य प्रवृत्ति से रहित (सूत्र १, १, २, २६, पचा १४, ६, भग) । ३ निरुद्ध, निरोध-प्राप्त (सूत्र १, २, ३, १) । ४ आवृत । ५ सगोपित (हे १, १७७) । ६ न. कषाय और इन्द्रियो का नियन्त्रण (पणह २, ३—पत्र १२३) ।

संवुड्ड वि [संवुड्ड] बड़ा हुआ (सूत्र २, १, २६, औप) ।

संवुत्त वि [संवुत्त] सजात, बना हुआ, 'पव्वड्या ते संसारंत्तकरा संवुत्ता' (वसु,

कुप्र ४३५, किरात १७, स्वप्न १७, अग्नि ८२, उत्तर १४१, महा, सण) ।

संवुट्ट देखो संवुड (प्राक ८, १२, प्राप्र) ।

संवुदि ओ [संवुदि] सवरण (प्राक ८, १२) ।

संवूड वि [संवूड] १ तय्यार बना हुआ, सजित, 'जह इह नगरनरिदो सव्ववलेणपि एह सवूडो' (सुरा ५८५, सुर ६, १५२) । २ वह कर किनारे लगा हुआ, वह कर स्थित, 'तए ए ते मार्गादिग्गदारागा तेण फलयत्तवेणं ववु- (ववु)ज्जमाण २ रयणदीवतेण संवु- (ववु)डा यावि होत्था' (णाय १, ६—पत्र १५७) ।

संवेअ वि [संवेद्य] अनुभव-योग्य (विसे ३००७) ।

संवेअ पु [संवेग] १ भय आदि के कारण संवेग से होती त्वरा—शोघ्रता (गठड) । २ भव-वैराग्य, संसार से उदासीनता । ३ मुक्ति का अमिलाप, मुमुक्षा (द्र ६३, सम १२६, भग, उव, सुर ८, १६५, सम्मत १६६, १६५, सुपा ५४१) ।

संवेयण न [संवेदन] १ ज्ञान (धर्मसं ४४ कुप्र १४६) । २ वि. बोध-जनक । ओ. 'णी' (ठा ४, २—पत्र २१०) ।

संवेयण वि [संवेजन] सवेग-जनक । ओ. 'णी' (ठा ४, २—पत्र २१०) ।

संवेयण वि [संवेगन] ऊपर देखो (ठा ४, २—पत्र २१०) ।

संवेह सक [स + वेह्] चालित करना, कँपाना (से ७, २६) ।

संवेह सक [स + वेष्ट] लपेटना । संवेहल्ल (हे ४, २२२, संक्षि ३६) ।

संवेह सक [दे] सकलना, समेटना, संकुचित करना । संवेहल्लेह (भग १६, ६—पत्र ७१२) । वहु. संवेहल्लेण, संवेहल्लेमाण (उव, भग १६, ६) । सक. संवेहल्लेऊण (महा) ।

संवेहल्लिअ वि [दे] संवृत, संकुचित, 'संवे-ल्लिअ मज्झिअ' (पाप्र, दे ८, १२, भग १६, ६—पत्र ७१२, राय ४५) ।

संवेहल्लिअ वि [संवेहल्लित] चालित (से ७, २६) ।

सफल देखो स-फल = स-फल ।

सफल देखो स-फल = स-फल ।

सफर देखो सभर = शफर (वै २०) ।

सफर पुन [दे] मुसाफिरी, 'वडसफरपवह-
णण' (सिरि ३८२) ।

सफल देखो स-फल = स-फल ।

सफल सक [सफलय्] सार्थक करना ।
वहु. सफलत (सुपा ३७४) ।

सफलअ वि [सफलित] नफल किया हुआ
(सुपा ३५६, उव) ।

सव (अप) देखो सव्व = सर्व (पिंग) ।

सवर पु [शवर] १ एक अनार्य देश । २ उस
देश में रहनेवाली एक अनार्य मनुष्य-जाति,
किरात, भील (पह १, १—पत्र ४, पात्र,
गडड) । ३ शिवसण न [निवसन] तमाल-
पत्र (उत्तानि ३) । देखो सवर ।

सवरो छी [शवरी] १ भिल्ल जाति की छी
(एगाया १, १—पत्र ३७, अत, गडड, चेइय
४८२) । २ कायोत्सर्ग का एक दोष, हाथ से
गुह्य-प्रदेश को ढककर कायोत्सर्ग करना (चेइय
४८२) ।

सवल पुं [शवल] १ परमाधार्मिक देवों की
एक जाति (सम २८) । २ वि. कर्बुर,
चितकबरा (भाचा, उप २८२, गडड) । ३
न. दूषित चारित्र । ४ वि. दूषित चरित्रवाला
मुनि (सम ३६) ।

सवलिय वि [शवलित] कर्बुरित (गडड) ।

सवलीकरण न [शवलीकरण] सदोष करना,
चारित्र को दूषित बनाना (ओष ७७८) ।

सव्व (अप) देखो सव्व = सर्व (पिंग) ।

सव्वल पुन [दे] शत्रु-विशेष, 'सरम्सरसत्ति-
सव्वलकरालकोत्तिमु' (पठम ८, ६५, धर्मवि
५६) ।

सव्वल देखो स-व्वल = स-वल ।

सव्व वि [सव्व] १ सभावद, सदस्य (पात्र,
सम्मत् ११६) । २ समोचित, शिष्ट, 'असव्व-
भासी' (दस ६, २, ८, सुर ६, २१५, स
६५०) ।

सव्वभाव देखो स-व्वभाव = सद-भाव ।

सव्वभाव देखो स-व्वभाव = स्व-भाव ।

सव्वभाव वि [नादभाववि] पारमाश्रिक,
वास्तविक (दमनि १, १३५) ।

सभ न. देखो सभा, 'समाणि' (आचा २,
१०, २) ।

सभर पुछी [शफर] मत्स्य, मछली (कुमा) ।
छी. ०री (हे १, २३६, प्राकृ १४) ।

सभर पुं [दे] गृध्र पक्षी (दे ८, ३) ।

सभराउअ न [शफरायित] जिसने मत्स्य की
तरह आचरण किया हो वह (कुमा) ।

सभल देखो स-भल = म-फल ।

सभा छी [सभा] १ परिपद (उगा, रयण
८३ धर्मवि ६) । २ गाड़ी के ऊपर की
छत—ढकन (आ १२) ।

सभाज सक [सभाजय्] पूजन करना ।
हेक सभाजइठु (शी) (धमि १६०) ।

सभाव देखो स-भाव = स्व-भाव ।

सम अक [शान्] १ शान्त होना, उपशान्त
होना । २ नष्ट होना । ३ आसक्त होना ।
नमइ, समति (हे ४, १६७, कुमा), 'जइ
नमइ सकराए पित ता कि पटोलाए' (सिरि
६६६) । बहु. समेमाण (आचा १, ४,
१, ३) ।

सम सक [शमय्] १ उपशान्त करना,
दवाना । २ नाश करना । बहु. 'डुडुडुरिए
समंतो' (धर्मा ३) ।

सम पु [श्रम] १ परिश्रम, आयास । २ खेद,
यकावट (काप्र ८४, सम्मत् ७७, दे १,
१३१, उप पु ३५, सुपा ५२५, गडड, सण,
कुमा) । ३ जल न [जल] पसोना (पात्र) ।

सम पु [शम] शान्ति, प्रशम, क्रोध आदि का
निग्रह (कुमा) ।

सम वि [सम] १ समान, तुल्य, सरिखा
(सम ७५, उव, कुमा, जो १२; कम्म ४,
४०, ६२) । २ तत्स्य, मध्यस्थ, उदासीन,
राग-द्वेष से रहित (सुम १, १३, ६, ठा
८) । ३ स. सर्व, सब (श्रु १२४) । ४ पुन.
एक देव-विमान (सम १३, देवेन्द्र १४०) ।
५ सामायिक (संघोष ४५, विसे १४२१) ।
६ आकाश, गगन (भग २०, २—पत्र
७७५) । ७ चउरंस न [चतुरस्र] संस्थान-
विशेष, चारो कोणों के समान शरीर की

आकृति-विशेष (ठा ६—पत्र ३५७, सम
१४६, भग, कम्म १, ४०) । ८ चक्रवाल न
[चक्रवाल] वृत्त, गोलाकार (गुज ४) ।
९ ताल न [ताल] १ कला विशेष (भौप) ।
२ वि. समान तालवाला (ठा ७) । ३ धम्मिअ
वि [धर्मिक] समान धर्मवाला (उप ५३०
टी) । ४ पादपुत पुंन [पादपुन] आसन-
विशेष, जिसमें दोनों पैर मिलाकर जमीन में
लगाए जाते हैं वह आसन-बन्ध (ठा ५, १—
पत्र ३००) । ५ पासि वि [पासि] तुल्य
दृष्टिवाला, समदर्शी (गच्छ १, २२) । ६ पम
पुन [पम] एक देव-विमान (सम १३) ।
७ भाव पु [भाव] समता (सुपा ३२०) ।
८ या छी [ता] राग-द्वेष का अभाव,
मध्यस्थता (उत ४, १०, पठम ४४, ४०,
आ २७) । ९ वत्ति पुं [वर्तिन्] यमराज,
जम (सुपा ४३३) । १० सरिस वि [सदृश]
अत्यन्त तुल्य, सदृश, (पठम ४६, ५७) ।
११ सहिय वि [सहित] युक्त, सहित
(पठम १७, १०५) । १२ सुद्ध पु [शुद्ध]
एक राजा जो छठवें केशव का पिता था
(पठम २०, १८२) ।

समईअ वि [सामयिक] समय-संबन्धी,
समय का (भग) ।

समईअ वि [समयित] संकेतित (धर्मसं
५०५) ।

समईअ न [समयिक] सामायिक नामक
समय-विशेष (कम्म ३, १८, ४, २१, २८) ।
समईअ देखो समईअ (से १२, ७२) ।
समईअ वि [समतिक्रान्त] व्यतीत, गुजरा
हुआ (सुपा २३) ।

समईअ सक [समति + क्रम्] १ उल्लंघन
करना । २ अक गुजरना, पसार होना । बहु.
समईअमाण (भौप, कप्य) ।

समईअ वि [समतिक्रान्त] १ गुजरा
हुआ । २ उल्लंघित (उप ७२८ टी, दे ८,
२०, स ४५) ।

समईअ वि [समतीत] १ गुजरा हुआ
(पठम ५, १५२) । २ पुं. मृत काल (जीवस
१८१) ।

समईअ देखो समईअ = समयिक (कम्म ४,
४२) ।

संसुद्ध वि [सशुद्ध] १ विशुद्ध, निर्मल (सुपा ५७३)। २ न. लगातार उन्नीस दिन का उपवास (सवोष ५८)।
 संसूयग वि [समुचक] सूचना-कर्ता (रंभा)।
 संसेडम वि [समेकिम] ससेक से बना हुआ (नित्र १५)। २ उवाली हुई भाजी जिस ठंडे जल से सिंची जाय वह पानी (ठा ३, ३—पत्र १४७, कप्प)। ३ तिल की घोवन (भाचा २, १, ७, ८। ४ पिण्डोदक, आटा की घोवन (दस ५ १ ७५)।
 संसेडम वि [सस्वेदिम] १ पसीने से उत्पन्न होनेवाला (पण्ह १, ४—पत्र ८५)।
 संसेय अक [स + स्विद्] बरमना; 'जावं च एं वहवे उराला बलाहया संसेयति' (भग)।
 संसेय पुं [सस्वेड] पसीना। १ य वि [°ज] पसीने से उत्पन्न (सुप्र १, ७, १, आचा)।
 संसेय पुं [समेक] सिंचन (ठा ३, ३)।
 संसेविय वि [संसेवित] आसेवित (सुपा २२७)।
 संसेस पुं [संसेव] सम्बन्ध, सयोग (आचा २, १३, १)।
 संसेसिय वि [सदलेपिक] संछेपवाला (आचा २, १३, १)।
 संसोधन न [सशोधन] शुद्धि-करण (पिंड ४५६)। देखो समोहण।
 संसोधित वि [सशोधित] अच्छी तरह शुद्ध किया हुआ (सुप्र १, १४, १८)।
 संसोय सक [स + शोचय्] शोक करना।
 कृ संसोयणिज्ज (सुर १४, १८१)।
 संसोहण न [सशोधन] विरेचन, जुलाब (आचा १, ६, ४, २)। देखो संसोधन।
 संसोहा स्त्री [सशोभा] शोभा, श्री (सुपा ३७)।
 संसोहि वि [सशोभिन्] शोभनेवाला (सुपा ४८)।
 समोहिय देखो संसोधित (राज)।
 सह देखो सत्र (नाट—विक्क २५)।
 सहडण देखो मद्ययण (चंड)।
 सहदि स्त्री [सहनि] सहार (ससि ६)।
 सह्य वि [सहत] मिला हुआ (पण्ह १, ४—पत्र ७८)।

संहर सक [सं + ह्र] १ अपहरण करना।
 २ विनाश करना। ३ संवरण करना, संकेलना, समेटना। ४ ले जाना। संहरइ (पव २६१, हे १, ३०, ४, २५६)। कवक सहरिज्जमाण (णाय १, १—पत्र ३७)।
 संहर पुं [सभार] समुदाय, सघात, 'सघाभो सहरो निग्रो' (पाप्र)।
 सहरण न [सहरण] मंहार (श्रु ८७)।
 सहार देखो सभार = स + भारय्। कृ. सहारणिज्ज (णाय १, १२—पत्र १७६)।
 सहार देखो सघार (हे १, २६४, षड्)।
 सहारग न [सवारण] धारण, बनाये रखना, ठिकाना, 'कायसहारणट्ठाए' (आचा)।
 सहाव देखो सभाव = स + भावय्। कृ. सहावअत (शौ) (पि २७५)।
 सहिदि देखो सहदि (प्राकृ १२)।
 सहिच्च अ [सहत्थ] साथ में मिलकर, एकत्रित होकर (णाय १, ३ टी—पत्र ६३)।
 सहिय देखो सधिअ = सहित (कप्प, नाट—महावी २६)।
 सहिया स्त्री [सहिता] १ चिकित्सा आदि शास्त्र, 'चिगिच्छासहियाओ' (स १७)। २ अस्खलित रूप से सूत्र का उच्चारण, 'अस्खलियसुतुच्चारणरूपा इह सहिया गुण्येव्वा' (वेइय २७२)।
 सहुदि स्त्री [सभृति] अच्छी तरह पोषण (ससि ४)।
 सक देखो सग = शक (पण्ह १, १—पत्र १४)।
 सकण्ण देखो सकन्न (राज)।
 सकथ न [सकथ] तापयो का एक उपकरण (निर ३, १)।
 सकधा देखो सकहा, 'चेइयखंभेसु जिणसकधा सणिक्खित्ता चिट्ठति' (सुज्ज १८)।
 सकय अ [सकत्] एक बार, 'किं सक (१ क)यं वोलोण' (सुर १६, ४५)।
 सकन्न वि [सकर्ण] विद्वान्, जानकार (सुर ८, १४६, १२, ५४)।
 सकल देखो सयल = सकल (पण्ह १, ४—पत्र ७८)।

सकहा स्त्री [सकियन्] अस्थि, हाड (सम ६३, सुग ६५७, राय ८६)।
 सकाम देखो स-काम = सकाम।
 सकुंत पुं [शकुन्त] पक्षी (कुप्र ६८, अणु १४१)।
 सकुण देखो मक्क = शक्। सकुणोमो (स ७६५)।
 सकेय देखो स-केय = मकेत।
 मक्क अक [शक्] सकना, समर्थ होना।
 मक्कइ, मक्कए (हे ४, २३०, प्राप्र, महा)।
 भवि मक्क, सकखामो, सकिन्सामो (आचा, पि ५३१)। कृ मक्क, सकणिज्ज, मक्किअ (ससि ६, सुर १, १३०, ४, २२७, स ११४, संबोष ४०, सुर १०, ८१)।
 सक सक [सृप्] जाना, गति करना।
 सकइ (प्राकृ ६५, घात्वा १५५)।
 सक सक [ष्वष्क्] गति करना, जाना।
 सकइ (पि ३०२)।
 सक न [शक्त] छाल (दे ३, ३४)।
 सक वि [शक्त] समर्थ, शक्ति-युक्त, 'को सको वेयणाविगमे' (विदे १०२, हे २, २)।
 सक देखो मक्क = शक्।
 सक पुं [शक्र] १ नौधर्म नामक प्रथम देवलोक का इन्द्र (ठा २, ३—पत्र ८५, उवा. सुपा २६६)। २ कोई भी इन्द्र, देव-पति (कुमा)। ३ एक विद्याधरराजा (पउम १२, ८२)। ४ छन्द-विशेष (पिंग)। १ गुरु पुं [°गुरु] बृहस्पति (सिरि ४४)। १ पभ पुं [°प्रभ] शक्र का एक उत्पात-पर्वत (ठा १०—पत्र ४८२)। १ सार न [°सार] एक विद्याधर-नगर (इक)। १ वदार (शौ) न [°वतार] तीर्थ-विशेष (असि १८३)। १ वयार न [°वतार] चैत्य-विशेष (स ४७७, द्र ६१)।
 सक पुं [शाक्य] १ बुद्ध देव (पाप्र)। २ वि बौद्ध, बुद्ध का भक्त (विसे २४१६, थावक ८८, पव ६४, पिंड ४४५)।
 सक (अग) देखो सग = स्वक (भवि)।
 सकदण पुं [सकन्दन] इन्द्र (सुर १, ६ टि, ४, १६०)।

समणुवत्त वि [समनुवृत्त] सवृत्त, सजात (पउम १०, १) ।

समणुवास सक [समनु + वासय्] १ वासना-युक्त करना । २ सिद्ध करना । ३ परिपालन करना । 'आयट्ठ सम्म समणुवासे-ज्जासि' (आचा १, २, १, ५, १, २, ४, ४, १, ५, ४, ५, १, ६, १, ६) ।

समणुमट्ठ वि [समनुशिष्ट] अनुजात, अनुमत (आचा २, १, १०, ४) ।

समणुसास सक [समनु + सासय्] सम्मग् सोव देना, अच्छी तरह सिखाना । समणुसासयंति (सूत्र १, १४, १०) ।

समणुसिट्ठ वि [समनुशिष्ट] अच्छी तरह शिक्षित (वसु) । देखो समणुमट्ठ (आचा २, १, १०, ४) ।

समणुहो सक [समनु + भू] अनुभव करना । समणुहोइ (वव १) ।

समण्णागय वि [समन्वागत] १ समन्वित, सहित, 'उत्तीमणुणसमण्णागएण' (गच्छ १, १२) । २ सप्राप्त (राय) ।

समण्णाहार पु [समन्वाहार] समागमन (राज) ।

समण्णिय देखो समन्त्रिय (काल) ।

समतिवत्त देखो समइकत (आया १, १—पत्र ६३) ।

समतुरग सक [समतुरंगाय्] समान अश्व की तरह आपस में आरोहण करना, आश्लेष करना । वक्र. समतुरंगेमाण (आया १, ८—पत्र १३४, पव १७४ टी) ।

समत्त वि [समस्त] १ सपूर्ण (परह १, ४—पत्र ६८) । २ सकल, सब (विसे ४७२) । ३ सामान-युक्त । ४ मिलित, मिला हुआ (हिं २, ४५, पङ्) ।

समत्त वि [समाप्त] पूर्ण, पूरा, सिद्ध, जो हो चुका हो वह (उवा, औप) ।

समत्ति स्त्री [समाप्ति] पूर्णता (उप १४२, ७२८ टी, विसे ४१५, पव—गाथा ६५, स ५३, सुपा २५३, ४३५) ।

समत्थ सक [सम् + अर्थय्] १ सावित करना, मिद्ध करना । २ पुष्ट करना । ३ पूर्ण करना । कर्म समत्थीअइ (स १६५),

'उएहो ति समत्थिजइ दाहेण सरोह्हाण हेमंतो । चरिएहि गुजइ जणो सगोवतोवि अप्पाण' (गा ७३०) ।

समत्थ देखो समत्त = समस्त (से ४, २८, सुर १, १८१, १६, ५५) ।

समत्थ वि [समर्थ] शक, शक्तिमान् (पात्र, ठा ४, ४—पत्र २८३, प्रासू २३, १८२; औप) ।

समत्थि वि [समर्थिन्] प्रार्थक, चाहनेवाला (कुप्र ३५१) ।

समत्थिअ वि [समर्थित] १ पूर्ण, पूरा किया हुआ (कुप्र ११५, सुपा २६६) । २ पुष्ट किया हुआ (सुर १६, ६५) । ३ प्रमाणित, सावित किया हुआ (अज्झ १२१) ।

समद्धासिय वि [समाध्यासित] अविष्टित (स ३५, ६७६) ।

समद्धि देखो समिद्धि (गा ४२६) ।

समन्नागय देखो समण्णागय (ओव ७६४, आया १, १—पत्र ६४, औप, महा, ठा ३, १—पत्र ११७) ।

समन्नि सक [समनु + इ] १ अनुसरण करना । २ अक, एकवित होना, मिलना । समन्नेइ, समन्निति (विसे २५१७, औप) ।

समन्निअ वि [समन्वित] युक्त, सहित (हे ३, ४६, सुर ३, १३०, ४, २२०, गरड) ।

समन्ने° देखो समन्नि ।

समप्प सक [सम् + अर्पय्] अर्पण करना, दान करना, देना । समप्पेइ (महा) । वक्र. समप्पत, समप्पअत, समप्पेत (नाट—मृच्छ १०५, रत्ना ५५, पउम ७३, १४) । सक्क. समप्पिअ, समप्पिऊण (नाट—मृच्छ ३१५, महा) । हेक्क. समप्पिउ (महा) । क. समप्पियव्व (सुपा २५६) ।

समप्प° देखो समाव = सम् + आप् ।

समप्पण न [समर्पण] अर्पण, प्रदान (सुर ७, २२, कुप्र १३, वजा ६६) ।

समप्पणया स्त्री [समर्पणा] ऊपर देखो (उप १७६) ।

समप्पिय वि [समर्पित] दिया हुआ (महा, काल) ।

समव्भस सक [सवभि + अस्] भ्रम्यास करना । समव्भसह (द्रव्य ४७) ।

समव्भहिअ वि [समभ्यधिक] अत्यन्त अधिक (से १५, ८५) ।

समव्भास पुं [समभ्यास] निकट, पास (पउम ३३, १७) ।

समव्भिडिय वि [दे] भिड़ा हुआ, लड़ा हुआ (पउम ८६, ४८) ।

समभिआवणण वि [समभ्यापन्न] संमुख आया हुआ (सूत्र १, ४, २, १४) ।

समभिजाण सक [समभि + ज्ञा] १ निर्णय करना । २ प्रतिज्ञा-निर्वाह करना । समभिजाणिया, समभिजाणाहि (आचा) । वक्र. समभिजाणमाण (आचा) ।

समभिदव सक [समभि = द्रु] हैरान करना । समभिदवति (उत्त ३२, १०) ।

समभिधस सक [समभि + ध्वसय्] नष्ट करना । समभिधसेज, समभिधसेति (भग) ।

समभिपड सक [समभि + पत्] आक्रमण करना । हेक्क. समभिपडित्तए (अत २१) ।

ससभिभूअ वि [समभिभूत] अत्यन्त परा-भूत (उवा, धर्मेवि ३४) ।

समभिरूड पुं [समभिरूढ] नय-विशेष (ठा ७—पत्र ३६०) ।

समभिलोअ सक [समभि + लोक्] देवता, निरीक्षण करना । समभिलोएइ (भग १५—पत्र ६७०) । वक्र. समभिलोएमाण (पएण १७—पत्र ५१८) ।

समभिलोइअ वि [समभिलोकि] विलो-कित, दृष्ट (भग १५—पत्र ६७०) ।

समय अक [सम् + अय्] समुदित होना, एकवित होना, 'सव्वे समयति सम्मं वेगव-साओ नया विट्ठावि' (विसे २२६७) ।

समय पु [समय] १ काल, वक्त, अवसर (आचा, सूअनि २६, कुमा) । २ काल-विशेष, सर्व-सूक्ष्म काल, जिसका दूसरा हिस्सा न हो सके ऐसा सूक्ष्म काल (अणु, इक, कम्म २, २३, २४, ३०) । ३ मत, दर्शन (प्राप) । ४ सिद्धान्त, शास्त्र, आगम (आचा, पिठ ६,

सगडविभ देखो स-गडविभ = स्वकृतभिद ।
सगडाल पुं [शकटाल] राजा नन्द का
सु-सिद्ध मंत्री और महर्षि स्थूलभद्र का पिता
(कुप्र ४४३) ।

सगडिया स्त्री [शकटिका] छोटी गाड़ी
(भग, विपा १, १—पत्र ८, एाया १,
१—पत्र ७४) ।

सगडी स्त्री [शकटी] गाड़ी (एाया १, ७—
पत्र ११८) ।

सगण देखो स-गण = स-गण ।

सगन्न देखो सकन्न (कुप्र ४०३) ।

सगय न [दे] श्रद्धा, विश्वास (दे ८, ३) ।

सगर पु [सगर] एक चक्रवर्ती राजा (सम
८२, उत १७, ३५) ।

सगल देखो सयल = सकल (एाया १,
१६—पत्र २१३, भग, पंच १, १३, सुर
१, ११६, पव २१६, सिक्खा ३७) ।

सगसग भ्रक [सगसगाय] 'सग-सग'
आवाज करना । वक्र. सगसगत (पठम
४२, ३१) ।

सगार देखो स-गार = सागार, साकार ।

सगार देखो स-गार = स-कार ।

सगास न [सकाश] पास, निकट, समीप
(औप, सुपा ४४२, ४८८, महा) ।

सगुण देखो स-गुण = स-गुण ।

सगुणि देखो सगणि (पएह १, ४—पत्र
७८) ।

सगुत्त वि [सगोत्र] समान गोत्रवाला,
एकगोत्रीय (कण्) ।

सगेइ न [दे] निकट, समीप (दे ८, ६) ।

सगोत्त देखो सगुत्त (कुप्र २१७) ।

सग्ग पुं [स्वर्ग] देवों का आवास-स्थान
(एाया १, ५—पत्र १०५, भग, सुपा
२६३), 'विरग चैवमिह सग्ग' (श्रु ५८) ।
'तरु पु [तरु] कल्पवृक्ष (से ११, ११) ।
'सामि पुं [स्वामिन्] इन्द्र (उप २६४
टी) । 'वहू स्त्री [वधू] देवागना, देवी
(उप ७२८ टी) ।

सग्ग पुं [सग्गे] १ मुक्ति, मोक्ष, ब्रह्म (औप) ।
२ छटि, रचना (रंभा) ।

सग्ग देखो स-ग्ग = साम ।

सग्ग देखो सग = स्वक (उत २०, २६,
राज) ।

सग्गइ देखो स-ग्गइ = सद्गति ।

सग्गह वि [दे] मुक्त, मुक्ति-प्राप्त (दे ८,
४ टी) ।

सग्गह देखो स-ग्गह = स-ग्रह ।

सग्गीय वि [स्वर्गीय] स्वर्ग-सम्बन्धी (विसे
१८००) ।

सग्गु देखो सिग्गु (उप १०३१ टी) ।

सग्गोकस पुं [स्वर्गोक्तस] देव, देवता
(धर्मा ६) ।

सग्घ सक [कथ] कहना । सग्घइ (षड्) ।

सग्घ वि [श्लाघ्य] प्रशसनीय (सूत्र १, ३,
२, १६, विसे ३५७८) ।

सघिण देखो स-घिण = स-घृण ।

सचक्खु } देखो स-चक्खु = स-चक्षुः ।
सचक्खुअ }

सचित्त देखो स-चित्त = स-चित्त ।

सचिव देखो सइव (सण) ।

सची देखो सई = शची (धर्मा ६६, नाट—
शकु ६७) । 'वर पुं [वर] इन्द्र (सिदि
४२) ।

सचेयण देखो स-चेयण = स-चेतन ।

सच्च न [सत्य] १ यथार्थ भाषण, अमुपा-
कथन (ठा १०—पत्र ४८६, कुमा, पएह
२, ५—पत्र १४८, स्वप्न २२, प्रासू १५०,
१७७) । २ शपथ, सोगन । ३ सत्य युग ।
४ सिद्धान्त (हे २, १३) । ५ वि. यथार्थ,
सच्चा, वास्तविक, 'सच्चपरक्कमे' (उत
१८, ४६, आ १२, ठा ४, १—पत्र १६६,
कुमा) । ६ पु सयम, चारित्र (आचा, उत
६, २) । ७ जिनागम, जैन सिद्धान्त (आचा) ।

८ अहोरात्र का दसवाँ मुहूर्त (सम ५१) ।
९ एक वणिक्-पुत्र (उप ५१६) । 'उर
न [पुर] भारत का एक प्राचीन नगर,
जो आजकल 'साचोर' नाम से मारवाड में
प्रसिद्ध है (ती ७, सिग्घ ७) । 'उरी स्त्री
[पुरी] वही अर्थ (पडि) । 'णेमि, 'नेमि
पु [नेमि] भगवान् अरिष्टनेमि के पास
दीक्षा ले मुक्ति पानेवाला एक मुनि जो राजा
समुद्रविजय का पुत्र था (अत, अंत १४) ।
'पवाय न [प्रवाद] छठवाँ पूर्व-ग्रंथ (सम

२६) । 'भामा स्त्री [भामा] श्रीकृष्ण की
एक पत्नी (अत १५) । 'वाइ वि [वादिन्]
सत्य-वक्ता (पठम १५, ३१) । 'सन्ध वि
[सन्ध] सत्य प्रतिज्ञावाला, प्रतिज्ञा-निर्वाहक
(उप पृ ३३३, सुपा २८३) । 'सिरी स्त्री
[श्री] पाँचवें आरे की अन्तिम आविका
(विचार ५३४) । 'सेण पु [सेन] ऐश्वर्य
वर्ष में होनेवाला एक जिनदेव (सम १५४) ।
'हामा देखो 'भामा (पि १४) । 'वाइ
देखो 'वाड (आचा १, ८, ६, ५, १,
८, ७, ५) ।

सच्चइ पुं [सत्यकि] १ आगामी काल में
बारहवाँ तीर्थंकर होनेवाला एक साध्वी-पुत्र
(ठा ६—पत्र ४५७, सम १५४, पव ४६) ।
२ विषय लम्पट एक विद्याघर (उव, उर
७, १ टी) । ३ श्रीकृष्ण का सबन्धी एक
व्यक्ति (रुक्मि ४६) । 'सुय पु [सुत]
ग्यारह छद्मों में अन्तिम छद्म पुरुष (विचार
४७३) ।

सच्चकार वि [सत्यंकार] सत्य सावित करने-
वाला, लेन-देन की सच्चाई के लिए दिया
जाता बहाना, 'गहिओ सजमभारो सच्चकार
व्व सिद्धोए' (धर्मा १४, आप ६६,
रयण ३४) ।

सच्चव सक [टश] देखना । सच्चवइ (हे ४,
१८१, षड्, सण) । कर्म सच्चविज्जइ
(कुप्र ६८) ।

सच्चव सक [सत्यापय] सत्य सावित
करना । सच्चवइ (सुपा २६०) । कर्म,
'अलिअपि सच्चविज्जइ पटुत्तए तेण रमरिअ'
(सूक्त ८५) ।

सच्चवण न [दर्शन] अवलोकन, निरीक्षण
(कुमा, सुपा २२६) ।

सच्चवय वि [दर्शक] द्रष्टा (सञ्चोव २४) ।

सच्चविअ वि [टष्ट] देखा हुआ, विलोकित
(गा ५३६, ८०६, सुर ४, २२५, पात्र,
महा) ।

सच्चविअ वि [दे] अभिप्रेत, इष्ट (दे ८,
१७, भवि) ।

सच्चा स्त्री [सत्या] १ सत्य वचन (पएण
११—पत्र ३७६) । २ श्रीकृष्ण की एक

समहिअ वि [समधिक] विशेष ज्यादा (प्रासू १७८ महा, कुमा, सुर ४, १६६, मण) ।

समहिअय वि [समधिगत] १ प्राप्त, मिला हुआ । २ ज्ञात (सण) ।

समहिट्ट मक [समधि + स्था] काबू में रखना, अधीन रखना । कवक. समहिट्टि-ज्जमाण (राय १३२) ।

समहिट्टाउ वि [समधिष्टाउ] अघ्यक्ष, मुखी, अधिपति (आचा २, २, ३, ३, २, ७, १, २) ।

समहिट्टाउ वि [समधिष्टिन] आश्रित (उप ७२८ टी सुपा २०६) ।

समहिड्डिय देखो समहिड्डिय = समहदिक ।

समहिण्दिय वि [समभिनन्दित] आनन्दित खुशी किया हुआ (उप ५३० टी) ।

समहिल वि [समखिल] सकल, समस्त (गठड) ।

समहुत्त वि [दे] समुत्त, अभिमुत्त (अणु २२२) ।

समा जी [समा] १ वर्ष, बारह मास का समय (जी ४१) । २ काल, समय (सम ६७, ठा २, १—१त्र ४७, कण) ।

समाअम देखो समागम (अभि २०२, नाट. मालती ३२) ।

समाइच्छ सक [समा + गम्] १ सामने आना । २ समादर करना, सत्कार करना । सक. समाइच्छिऊण (महा) ।

समाइच्छय वि [समागत] आहत, सत्कृत (स ३७२) ।

समाइट्ट वि [समादिष्ट] फरमाया हुआ (महा) ।

समाइड्ड वि [समाविद्ध] वेध किया हुआ (से ६, ३८) ।

समाअण वि [समाकीर्ण] व्याप्त (औप, सुर ४, २४१) ।

समाइण्ण वि [समाकीर्ण] अच्छी तरह समाअण } आचरित (भग, उप ८१३, विचार ८६५) ।

समाउट्ट अक [समा + वृत्त] नम्र होना, नमना, अधीन होना । भुका. समाउट्टिसु (सुअ २, १, १८) ।

समाउट्ट वि [समावृत्त] विनम्र (वव १) ।
समाउत्त वि [समायुक्त] युक्त, सहित (औप, सुपा ३०१) ।

समाउल वि [समाकुल] १ समिश्र, मिश्रित (राय) । २ व्याप्त (सुपा ३०५) । ३ आकुल, व्याकुल (हे ४, ४४४, सुर ६, १७४) ।

समाउल्लिअ वि [समाकुलित] व्याकुल बना हुआ (स ६६) ।

समाएस पुं [समादेश] १ आज्ञा, हुकुम (उप १०२१ टी) । २ विवाह आदि के उपलक्ष में किए हुए जीमन में वचा हुआ वह खाद्य जिसको निग्रंथो में बाँटने का संकल्प किया गया हो (पिड २२६, २३०) ।

समाएसण न [समादेशन] आज्ञा, हुकुम (भवि) ।

समाओग पु [समायोग] स्थिरता (तंदु १४) ।

समाओसिय वि [समातोषित] सतुष्ट किया हुआ (भवि) ।

समाकरिस सक [समा + कृप्] खीचना । हेक समाकरिसिउ (पि ५७५) ।

समाकरिसण न [समाकर्षण] खींचाव (सुपा ४) ।

समाकार सक [समा + कारय्] आह्वान करना, बुलाना । सक. समाकारिय (सम्मत्त २२६) ।

समागच्छं देखो समागम = समा + गम् ।

समागत देखो समागय (सुर २, ८०) ।

समागम सक [समा + गम्] १ सामने आना । २ आगमन करना । ३ जानना । समागच्छइ (महा) । भवि. समागमिस्सइ (पि ५२३) । सक. समागच्छिअ (पि ५८१), 'विन्नाण्णेण भमागम्म (उत्त २३, ३१) ।

समागम पुं [समा + गम्] १ संयोग, संवन्ध (गठड, महा) । २ प्राप्ति (सुअ १, ७, ३०) ।

समागमण न [समागमन] ऊपर देखो (महा) ।

समागय वि [समागन] आया हुआ (पि ३६७ ए) ।

समागूढ वि [समागूढ] समाच्छिष्ट, आलिखित (पउम ३१, १२२) ।

समाज पुं [समाज] मण्डल, संघात (धर्मवि १२३) । देखो ममाय = समाज ।

समाजुत्त न [समायुक्त] संयोजन, जोड़ना (राय ४०) ।

समादत्त वि [समारब्ध] १ आरब्ध, जिसका आरम्भ किया गया हो वह (काल, पि २२३, २८६) । २ जिसने आरम्भ किया हो वह : एवं भणिएं समादत्तो (सुर १, ६६) ।

समाण सक [भुज्] भोजन करना, खाना । समाणइ (हे ४, ११०, कुमा) ।

समाण सक [सम् + आप्] समाप्त करना, पूरा करना । समाणइ (हे ४, १४२), समाणेमि (स ३७६) ।

समाण वि [समान] १ सदृश, तुल्य, सरिवा (कण्) । २ मान-सहित, अहंकारी (से ३, ४६) । ३ पुन. एक देव-विमान (सम ३५) ।

समाण वि [सत्] विद्यमान, होता हुआ (उवा, विपा १, २—पत्र ३४) । औ. णी (भग, कण्) ।

समाण-देखो संमाण = संमान (से ३, ४६) ।

समाणअ वि [समापक] समाप्त करनेवाला (से ३, ४६) ।

समाणण न [भोजन] भक्षण, खाना, 'तंबोल-समाणणपज्जावलवयणाय' (स ७२) ।

समाणत्त वि [समाज्ञप्त] जिसको हुकुम दिया गया हो वह (महा) ।

समाणिअ देखो संमाणिय (से ३, २४) ।

समाणिअ वि [समानीत] जो लाया गया हो वह, आनीत (महा, सुपा ५०५) ।

समाणिअ वि [समाप्त] पूरा किया हुआ (से ६, ६२, णाय १, ८—पत्र १३३, स ३०६, कुमा ६, ६५) ।

समाणिअ वि [दे] म्यान किया हुआ, म्यान में डाला हुआ, 'विनिण्ण तत्तल्लण चव समाणिअं मंडलग्ग' (स २४२) ।

समाणिअ वि [भुक्त] भक्षित, खाया हुआ (स ३१५) ।

समाणिआ जी [समानिक] छन्द-विशेष (पिंग) ।

सट्ट पुंल्लो [दे] १ सट्टा, विनिमय, बदला (मुप २३३)। लो. °ट्टी (मुपा २७५, वज्जा १४२) २ वि. सटा हुआ; 'पीणुणणय-सट्टइ' 'थणवट्टइ' (भवि)।

सट्ट पुंन [सट्टक] १ एक तरह का नाटक सट्टय (कप्प, रंभा १०), 'रभं तं परिलेदि अट्टमतिथं एयम्मि सट्टे वरे' (रंभा १०)। २ छात्र-विशेष (रंभा ३३)।

सट्ट न [शाठ्य] शठता, घूर्तता (उप ७२८ टी, गुभा २४)।

सट्ट (शौ) देखो छट्ट (चार ७, प्रवो ७३, पि ४४६)।

सट्टि लो [पट्टि] १ सख्या-विशेष, साठ, ६०। २ साठ संख्यावाला (सम ७४, कप्प, महा, पि ४४८)। °तन, °तन न [°तन्त्र] शास्त्र-विशेष, साख्य-शास्त्र (भग, राया १, ५—पत्र १०५, औप, अणु ३६)। °म वि [°तम] साठवां (पडम ६०, १०)।

सट्टिक वि [पट्टिक] १ साठ वर्ष की सट्टिय { वयवाला (तंदु १७, राज)। २ सट्टीअ } पुंन. एक प्रकार का चावल (राज, आ १८)।

सड अक [सड्] १ सडना। २ विपाद करना, खिन्न होना। ३ सक गति करना, जाना। सडइ (हे ४, २१६, प्राप्र, पड्, घात्वा १५५)।

सड अक [शट्] १ सडना। २ खेद करना। ३ रोगी होना। ४ सक. जाना। सडइ (विपा १, १—पत्र १६)।

सडग न [पडङ्ग] शिक्षा, कल, व्याकरण, निरुक्त छन्द और ज्योतिष। °वि वि [°विट्] छ अंगो का जानकार (भग, औप, पि ३४१)।

सडण न [शटन] विशरण, सडना (पणह १, १—पत्र २३, राया १, १—पत्र ४८)। सडा देखो सडा (से १, ५०, पि २०७)।

सडिअ वि [सन्न, शटित] सडा हुआ, विशेष (विपा १, ७—पत्र ७३, आ १४, कुमा)।

सडिअगिअ वि [दे] १ वधित, बढाया हुआ। २ प्रेरित (पड्)।

सड्ड सक [गड्] १ विनाश करना। २ कृश करना। सड्डइ (घात्वा १५५)।

सड्ड पुंल्लो [श्राद्ध] १ श्रावक जैन गृहस्थ (श्रौव ६३, महा)। लो. °ड्डा (मुपा ६५४)। २ वि. श्रद्धेय वचनवाला, जिसका वचन श्रद्धेय हो वह (ठा ३, ३—पत्र १३६)। देखो सड्ड = श्राद्ध।

सड्ड देखो स-ड्ड = साधं।

सड्ड पुं [श्राद्धिन्न] वानप्रस्थ तापस की एक जाति (औप)।

सड्डा लो [श्राद्धा] १ स्मृता, अभिलाष, गच्छा (विपा १, १ पत्र २)। २ धर्म आदि में विश्वास, प्रतीति। ३ आदर, सम्मान। ४ शुद्धि। ५ चित्त की प्रवृत्ति (हे १, ४१, पड्)। देखो सड्डा।

सडिड वि [श्राद्धिन्] १ श्रद्धालु, श्रद्धालु (ठा ६—पत्र ३५२, उत ५, ३१, पिडभा ३३)। २ पुं. श्रावक, जैन गृहस्थ (कप्प)।

सडिडअ वि [श्राद्धिन्] देखो सड्ड = श्राद्ध (पि ३३३, राज)।

सड्डी देखो सड्ड = श्राद्ध।

सड वि [शठ] १ घूर्त, मायावी, कपटी (कुमा, उप २६४ टी, श्रौवभा ५८, भग, कम्म १, ५८)। २ कुटिल, वक्र (पिड ६३३)। ३ पुं. घत्तूरा। ४ मध्यस्थ पुरुष (हे १, १६६, सखि ८)।

सड पु [दे] १ पाल, जहाज का वादवान, गुजराती में 'सड' (सिरि ३८७)। २ केश, बाल (दे ८, ४६)। ३ स्तम्भ, गुच्छा (दे ८, ४६, पात्र)। ४ वि विषम (दे ८, ४६)।

सडय न [दे] कुसुम, फूल (दे ८, ३)।

सडा लो [सटा] १ सिंह आदि की केसरा। २ जटा। ३ व्रती का केश-समूह। ४ शिखा (हे १, १६६)।

सडाल पु [सटाल] सटावाला, सिंह (कुमा)।

सडि पु [दे सटिन्] सिंह (दे ८, १)।

सडिल वि [शिथिल] ढीला (हे १, ८६, कुमा)।

सण पुंन [शण] १ धान्य-विशेष (आ १८, पव १५४, पणह २, ५—पत्र १४८)। २ तुण-विशेष, पाट, जिसके ततु रस्सी आदि

वनाने के काम में लाए जाते हैं (राया १, १—पत्र २४, पणह १—पत्र ३२, कप्प)। °वण न [°वन्वन] सन का पुष्प-वृन्त (औप, राया १, १ टी—पत्र ६)। °वाडिआ लो [°वाटिका] सन का वगीचा (गा ६)।

सण पु [स्वन] शब्द, आवाज (स ३७८)।

सणकुमार पुं [सनत्कुमार] १ एक चक्रवर्ती राजा (सम १५२)। २ तीसरा देवलोक (अनु, औप)। ३ तीसरे देवलोक का इन्द्र (ठा २, ३—पत्र ८५)। °वाडिआ पुन [°वतसक] एक देव-विमान (सम १३)।

सणप्पय { देखो स-णप्पय = स-नखद।
सणप्फड
सणप्फय }

सणा अ [सना] सदा, हमेशा। °नण °यण वि [°तन] सदा रहनेवाला, नित्य शाश्वत (सूत्र २, ६, ४७), 'सिद्धाण सणायणो परिणामिओ दव्वओवि गुणो' (सवोष २)। सणाण न [स्तान] नहाना, नहान अवगाहन (उवा)।

सणाह देखो स-णाह = स-नाथ।

सणाहि पुं [सनाभि] १ स्वजन, जाति, 'वंधू समणो सणाही य' (पात्र)। २ समान, सदृश (रंभा)।

सणि पुं [शनि] १ ग्रह-विशेष, शनैश्चर (पडम १७ ८१)। २ शनिवार (मुपा ५३२)।

सणिअ पुं [दे] १ साक्षी, गवाह। २ ग्राम्य, ग्रामीण (दे ८, ४७)।

सणिअ अ [शनैस] धीरे, हौले (राया १, १६—पत्र २२६, गा १०८, हे २, १६८ गउड, कुमा)।

सणिचर पुं [शनैश्चर] ग्रह-विशेष, शनि-ग्रह (पि ८८)। °सवच्छर पुं [°संवत्सर] वर्ष-विशेष (ठा ५, ३—पत्र ३४४)।

सणिचारि पु [शनैश्चारिन्] युगलिक सणिचारि { मनुष्यो की एक जाति (इक, भग ६, ७—पत्र २७६)।

सणिच्चर { देखो सणिचर (ठा २, ३—
सगिच्छर } पत्र ७७, हे १, १४६, औप, कुमा, सुज १०, २०, २०)।

समालोच पुं [समालोच] विचार, विमर्श (उप ३६६)।

समालोचन न [समालोचन] सामान्य अर्थ का दर्शन (विसे २७६)।

समाव सक [सम् + आप्] पूरा करना। समावेइ (हे ४, १४२)। कर्म. समप्यइ (हे ४, ४२२)।

समावज्जिय वि [समावज्जित] प्रसन्न किया हुआ (महा)।

समावड्ढ अक [समा + पत्] १ समुल्ल आकर पडना, गिरना। २ लगना। ३ सम्बन्ध करना। समावड्ढ (भवि)।

समावडण न [समापतन] पडना, गिरना (गड्ड)।

समावडिय वि [समापत्ति] १ समुल्ल आकर गिरा हुआ (सुर २, ६, सुपा २०३)। २ बढ (औप)। ३ जो होने लगा हो वह, 'समावडिय जुढ' (स ३८३, महा)।

समावण्ण वि [समापन्न] संग्राह (सम १३४, भग)।

समावत्ति लो [समावाप्ति] समाप्ति, पूर्णता; 'ते य समावत्तीए विहरंता' (सुख २, ७)।

समावद् सक [समा + वद्] बोलना, कहना। समावदेजा (आचा १, १५, ५४)।

समावन्न देखो समावण्ण (स ४७६; उवा, ठा २, १—पत्र ३८, दस ५, २, २)।

समावय देखो समावद्। समावइजा (आचा २, १५, ५)।

समावय देखो समावड। वक. समावयंत (दस ६, ३, ८)।

समाविअ वि [समापित] पूर्ण किया हुआ (गा ६१, दे ७, ४५)।

समास अक [सम् + आस्] १ बैठना। २ रहना। समासइ (भवि)।

समास सक [समा + अस्] अञ्छी तरह फेंकना। कर्म. समासिज्जति (एदि २२६)।

समास पु [समास] १ संक्षेप, संकोच (जीवस १, जी २१)। २ सामायिक, संयम-विशेष (विसे २७६५)। ३ व्याकरण-प्रसिद्ध एक प्रक्रिया, अनेक पदों के मेल करने की रीति

(पएह २, २—पत्र ११४, अणु, विसे १००३)। ४ समीप (दश वै० वृद्ध० पत्र)।

समासंग पु [समासङ्ग] संयोग (गा ६६१ ?)।

समासगय वि [समासगत] सगत, सम्बद्ध (रंभा)।

समासज्ज देखो समासाद्।

समासत्थ वि [समास्थस्त] १ आश्वासन-प्राप्त (पउम १८, २८, मे १२, ३७, सुख २, ६)। २ स्वस्थ बना हुआ (स १२०, सुर ६, ६६)।

समासय पुं [समाश्रय] आश्रय, स्थान (पउम ७, १६८, ४२, ३५)।

समासव सक [समा + स्तु] आना, आगमन करना। समासवदि (द्रव्य ३१)।

समासस देखो समस्सस। कृ. समाससि-अव्व (से ११, ६५)।

समासाद् (शौ) सक [समा + सादय्] प्राप्त करना। समासादेहि (स्वप्न ३७)। कृ.

समासाद्इदव्व (मा ३६)। सङ्क. समा-सज्ज, समासिज्ज (आचा १, ८, ८, १, पि २१)।

समासादिअ वि [समासादित] प्राप्त (दस १, १ टी)।

समासासिय वि [समाश्वासित] जिसको आश्वासन दिया गया हो वह (महा)।

समासि सक [समा + श्रि] सम्यग् आश्रय करना। कर्म. समासिज्जइ, समासिज्जति (एदि २२६)।

समासिज्ज देखो समासाद्।

समासिय वि [समाश्रित] आश्रय-प्राप्त (पउम ८०, ६४)।

समासिय वि [समासित] उपवेशित, बैठाया हुआ (भवि)।

समासीण वि [समासीन] बैठा हुआ (महा)।

समाहट्ठु देखो समाहर।

समाहड वि [समाहृत] १ विशुद्ध, निपल, 'असमाहडाए लेस्ताए' (आचा २, १, ३, ६)। २ स्वीकृत (राज)।

समाहय वि [समाहृत] आघात-प्राप्त, आहृत (औप, सुर ४, १२७, सण)।

समाहर सक [समा + हृ] ग्रहण करना। २ एकत्रित करना। सङ्क. समाहट्ठु (सुप्र १, ८, २६, १, १०, १५), समाहरिवि (अप) (भवि)।

समाहविअ वि [समाहृत] आहृत, कुलाया हुआ (धर्मवि ६०)।

समाहाण न [समाधान] १ समाधि (उत्त ३२० टी)। २ श्रीसुक्य-निवृत्ति रूप स्वास्थ्य, मानसिक शान्ति, चित्त-स्वस्थता (अणु १३६, सुपा ५४८)।

समाहार पु [समाहार] १ समूह, 'द्वद्व-समाहारो भाविज्जइ एस जियलोभो' (धु ११५)। २ दंद पुं [द्वन्द्व] व्याकरण-प्रसिद्ध समास-विशेष (वेइय ६६०)।

समाहारा लो [समाहारा] १ दक्षिण रुक्क पर रहनेवाली एक दिक्कुमारी देवी (ठा ८—पत्र ४३६, इक)। २ पक्ष की बाहूनों रात्रि (सुज्ज १०, १४)।

समाहि पुंलो [समाधि] १ चित्त की स्वस्थता, मनोदुःख का अभाव (सम ३७, उत्त १६, १, सुख १६, १, वेइय ७७७)। २ स्वस्थता; 'साहाहि ल्खो लभ्ते समाहि छिन्नाहि सहाहि तमेव खाणु' (उत्त १४, २६)। ३ धर्म। ४ शुभ ध्यान, चित्त की एकाग्रता-रूप ध्यानावस्था (सुप्र १, १०, १, सुपा ८६)। ५ समता, राग आदि का अभाव (ठा १० टी—पत्र ४७४)। ६ श्रुतज्ञान। ७ चारित्र्य, संयमानुष्ठान (ठा ४, १—पत्र १६५)। ८ पुं. भरतनेत्र के सतरहवें भावी तीर्थंकर (सम १५४, पव ४६)। ९ पट्टिमा लो [प्रतिमा] समाधि-विषयक व्रत-विशेष (ठा ४, १)। १० पाण न [पान] शक्कर आदि का पानी (भत्त ४०)। ११ भरण न [भरण] समाधि-युक्त मौत (पडि)।

समाहि पुंलो [समाधि] १ चित्त की स्वस्थता, मनोदुःख का अभाव (सम ३७, उत्त १६, १, सुख १६, १, वेइय ७७७)। २ स्वस्थता; 'साहाहि ल्खो लभ्ते समाहि छिन्नाहि सहाहि तमेव खाणु' (उत्त १४, २६)। ३ धर्म। ४ शुभ ध्यान, चित्त की एकाग्रता-रूप ध्यानावस्था (सुप्र १, १०, १, सुपा ८६)। ५ समता, राग आदि का अभाव (ठा १० टी—पत्र ४७४)। ६ श्रुतज्ञान। ७ चारित्र्य, संयमानुष्ठान (ठा ४, १—पत्र १६५)। ८ पुं. भरतनेत्र के सतरहवें भावी तीर्थंकर (सम १५४, पव ४६)। ९ पट्टिमा लो [प्रतिमा] समाधि-विषयक व्रत-विशेष (ठा ४, १)। १० पाण न [पान] शक्कर आदि का पानी (भत्त ४०)। ११ भरण न [भरण] समाधि-युक्त मौत (पडि)।

समाहि पुंलो [समाधि] १ चित्त की स्वस्थता, मनोदुःख का अभाव (सम ३७, उत्त १६, १, सुख १६, १, वेइय ७७७)। २ स्वस्थता; 'साहाहि ल्खो लभ्ते समाहि छिन्नाहि सहाहि तमेव खाणु' (उत्त १४, २६)। ३ धर्म। ४ शुभ ध्यान, चित्त की एकाग्रता-रूप ध्यानावस्था (सुप्र १, १०, १, सुपा ८६)। ५ समता, राग आदि का अभाव (ठा १० टी—पत्र ४७४)। ६ श्रुतज्ञान। ७ चारित्र्य, संयमानुष्ठान (ठा ४, १—पत्र १६५)। ८ पुं. भरतनेत्र के सतरहवें भावी तीर्थंकर (सम १५४, पव ४६)। ९ पट्टिमा लो [प्रतिमा] समाधि-विषयक व्रत-विशेष (ठा ४, १)। १० पाण न [पान] शक्कर आदि का पानी (भत्त ४०)। ११ भरण न [भरण] समाधि-युक्त मौत (पडि)।

समाहि पुंलो [समाधि] १ चित्त की स्वस्थता, मनोदुःख का अभाव (सम ३७, उत्त १६, १, सुख १६, १, वेइय ७७७)। २ स्वस्थता; 'साहाहि ल्खो लभ्ते समाहि छिन्नाहि सहाहि तमेव खाणु' (उत्त १४, २६)। ३ धर्म। ४ शुभ ध्यान, चित्त की एकाग्रता-रूप ध्यानावस्था (सुप्र १, १०, १, सुपा ८६)। ५ समता, राग आदि का अभाव (ठा १० टी—पत्र ४७४)। ६ श्रुतज्ञान। ७ चारित्र्य, संयमानुष्ठान (ठा ४, १—पत्र १६५)। ८ पुं. भरतनेत्र के सतरहवें भावी तीर्थंकर (सम १५४, पव ४६)। ९ पट्टिमा लो [प्रतिमा] समाधि-विषयक व्रत-विशेष (ठा ४, १)। १० पाण न [पान] शक्कर आदि का पानी (भत्त ४०)। ११ भरण न [भरण] समाधि-युक्त मौत (पडि)।

समाहि पुंलो [समाधि] १ चित्त की स्वस्थता, मनोदुःख का अभाव (सम ३७, उत्त १६, १, सुख १६, १, वेइय ७७७)। २ स्वस्थता; 'साहाहि ल्खो लभ्ते समाहि छिन्नाहि सहाहि तमेव खाणु' (उत्त १४, २६)। ३ धर्म। ४ शुभ ध्यान, चित्त की एकाग्रता-रूप ध्यानावस्था (सुप्र १, १०, १, सुपा ८६)। ५ समता, राग आदि का अभाव (ठा १० टी—पत्र ४७४)। ६ श्रुतज्ञान। ७ चारित्र्य, संयमानुष्ठान (ठा ४, १—पत्र १६५)। ८ पुं. भरतनेत्र के सतरहवें भावी तीर्थंकर (सम १५४, पव ४६)। ९ पट्टिमा लो [प्रतिमा] समाधि-विषयक व्रत-विशेष (ठा ४, १)। १० पाण न [पान] शक्कर आदि का पानी (भत्त ४०)। ११ भरण न [भरण] समाधि-युक्त मौत (पडि)।

समाहि पुंलो [समाधि] १ चित्त की स्वस्थता, मनोदुःख का अभाव (सम ३७, उत्त १६, १, सुख १६, १, वेइय ७७७)। २ स्वस्थता; 'साहाहि ल्खो लभ्ते समाहि छिन्नाहि सहाहि तमेव खाणु' (उत्त १४, २६)। ३ धर्म। ४ शुभ ध्यान, चित्त की एकाग्रता-रूप ध्यानावस्था (सुप्र १, १०, १, सुपा ८६)। ५ समता, राग आदि का अभाव (ठा १० टी—पत्र ४७४)। ६ श्रुतज्ञान। ७ चारित्र्य, संयमानुष्ठान (ठा ४, १—पत्र १६५)। ८ पुं. भरतनेत्र के सतरहवें भावी तीर्थंकर (सम १५४, पव ४६)। ९ पट्टिमा लो [प्रतिमा] समाधि-विषयक व्रत-विशेष (ठा ४, १)। १० पाण न [पान] शक्कर आदि का पानी (भत्त ४०)। ११ भरण न [भरण] समाधि-युक्त मौत (पडि)।

समाहि पुंलो [समाधि] १ चित्त की स्वस्थता, मनोदुःख का अभाव (सम ३७, उत्त १६, १, सुख १६, १, वेइय ७७७)। २ स्वस्थता; 'साहाहि ल्खो लभ्ते समाहि छिन्नाहि सहाहि तमेव खाणु' (उत्त १४, २६)। ३ धर्म। ४ शुभ ध्यान, चित्त की एकाग्रता-रूप ध्यानावस्था (सुप्र १, १०, १, सुपा ८६)। ५ समता, राग आदि का अभाव (ठा १० टी—पत्र ४७४)। ६ श्रुतज्ञान। ७ चारित्र्य, संयमानुष्ठान (ठा ४, १—पत्र १६५)। ८ पुं. भरतनेत्र के सतरहवें भावी तीर्थंकर (सम १५४, पव ४६)। ९ पट्टिमा लो [प्रतिमा] समाधि-विषयक व्रत-विशेष (ठा ४, १)। १० पाण न [पान] शक्कर आदि का पानी (भत्त ४०)। ११ भरण न [भरण] समाधि-युक्त मौत (पडि)।

(कम्म ६, १६, पउम १७, १२३, पव ४६) ।
 ०रह देखो ०रस = ०दशन् (पड) ०रि औ
 [०ति] सत्तर, ७० (सम ८१, कप्प, पड) ।
 रिसि पु [०श्रुषि] सात नक्षत्रो का मङ्गल-
 विशेष (सुपा ३५४) । ०वण्ण, ०वन्न पुं
 [०पणे] १ वृक्ष-विशेष, सतीना (श्रौप,
 भाग) । २ देव-विशेष (राय ८०) । ०वन्नय-
 डिसय पुं [०पर्णावनम्भक] नौघर्म देवलोक
 का एक विमान (राय ५६) । ०विइ वि
 [०विश्र] सात प्रकार का (जी १६, प्रासू
 १०४ पि ४५१) । ०वेमइ, ०वीमा औ
 [०विश्र] सताईम, २७ (पि ४४५, भग) ।
 ०सइय वि [०शानिक] सात सौ की सख्या-
 वाला (राया १, १—पत्र ६४) । ०मट्ट
 वि [०पट्ट] सडसठवाँ, ६७वाँ (पउम ६७,
 ५१) । ०मट्टि देखो ०ट्टि (सम ७६) ०सत्त-
 मिया औ [०मम्मिका] प्रतिज्ञा-विशेष,
 नियम-विशेष (अत) । ०सिक्खावइय वि
 [०शिक्षावन्निक] सात शिक्षावन्नवाला (राया
 १, १२, श्रौप) । ०हत्तर वि [०सप्तत]
 सतहतरवाँ, ७७ वाँ (पउम ७७, ११८) ।
 ०हत्तर औ [०सप्ततति] १ सख्या-विशेष,
 सतहतर की सख्या, ७७ । २ सतहतर सख्या-
 वाला (सम ८५, भग, आ २८) । ०हा अ
 [०धा] सात प्रकार का, सप्तविध (पि
 ४५१) । ०हुत्तर देखो ०हत्तरि (नव ८) ।
 ०इंस (अप) देखो ०वीसा (पि ४८५) ।
 ०णउइ औ [०नवति] सतानवे, ६७ (सम
 ६८) । ०णउय वि [०नवत] १ सतानवेवाँ,
 ६७ वाँ (पउम ६७, ३०) । २ जिसमें सता-
 नवे अधिक हो वह, 'सताणउयजोयणसए'
 (भग) । ०रह (अप) देखो ०रह (पिग) ।
 ०वण्ण ०वन्न औन [०पञ्चाशत्] १
 सख्या-विशेष, सतावन, ५७ । २ सतावन
 सख्यावाला (पडि, पिग, सम ७३, नव २) ।
 औ ०ण्ण, ०ण्णा (पिग, पि २६५, ८४७) ।
 ०वन्न वि [०पञ्चाशत्] सतावनवाँ, ५७वाँ
 (पउम ५७, ३७) । ०वीम न [०विशति]
 १ सख्या-विशेष, सताईम । २ सताईस की
 सख्यावाला, 'एव सतावीस भगा रोयव्वा'
 (भग) । ०वीसइ औ [०विशति] वही पूर्वोक्त
 अर्थ (कुमा) । ०वीसइम वि [०विशतितम]

सताईसवाँ, २७ वाँ (पउम २७, ४२) ।
 ०वीसइविह वि [०विशतिविध] सताईम
 प्रकार का (पण्ण १७—पत्र ५३४) । ०वीसा
 औ. देखो ०वीस (हे १, ४, पड) । ०सीड
 औ [०शीति] सतासी, ८७ (सम ६३) ।
 ०सीइम वि [०शीतितम] सतासीवाँ,
 ८७ वाँ; (पउम ८७, २१) ।

सत्तंग वि [सत्तंग] १ राजा, मन्त्री, मित्र
 कोश-भटार, देश, किला तथा सैन्य ये सात
 राज्याङ्गवाला (कुमा) । २ न. हस्ति-शरीर
 के ये सात अवयव—चार पैर, सूँढ़, पुच्छ
 और लिंग, 'सत्तंगपइट्ठिय' (उवा १०१) ।

सत्तण्ह देखो स-त्तण्ह = स तुण्ण ।

सत्तत्थ वि [दे] अभिजाव, कुलीन (दे ८,
 १०) ।

सत्तम देखो सत्तम = सत्-तम ।

सत्तर देखो स-त्तर = सत्तर ।

सत्तर देखो सत्त-र = सप्त-दशन्, दश ।

सत्तल न [सप्तल] पुण्य विशेष (गउड) ।

सत्तला } औ [सप्तला] लता-विशेष, नव-
 सत्तली } मालिका का गाछ (पात्र, गा
 ६१६, पउम ५३, ७६) ।

सत्तली औ [ने सप्तला] लता-विशेष,
 शेफालिका का गाछ (दे ८, ४) ।

सत्तवीसजोयण देखो सत्तावीसजोअग
 (चड) ।

सत्ता औ [सत्ता] १ सद्भाव, अस्तित्व (एदि
 १३६ टी) । २ आत्मा के साथ लगे हुए कर्मों
 का अस्तित्व, कर्मों का स्वरूप से अप्रच्यव—
 अवस्थान (कम्म २, १, २५) ।

सत्तावरी औ [शानावरी] कन्द-विशेष, 'सत्ता-
 वरी विराली कुमारि तह थोहरी गलोई य'
 (पव ४, सवोष ८४, आ २०) ।

सत्तावीसजोअण पु [न] चन्द्र, चन्द्रमा (दे
 ८, २२), 'सत्तावीसजोअणकरपसरो जाव
 अज्जवि न होइ' (वाअ १५) ।

सत्ति औ [दे] १ तिपाई, तीन पाया वाला
 गोल काष्ठ विशेष । २ घड़ा रखने का पलंग
 की तरह ऊँचा काष्ठ-विशेष (दे ८, १) ।

सत्ति औ [नत्ति] १ अन्न-विशेष (कुमा) ।
 २ विशूल (पण्ह १, १—पत्र १८) । ३

सामर्थ्य (ठा ३, १—पत्र १०६, कुमा, प्रासू
 २६) । ४ विद्या विशेष (पउम ७, १४२) ।
 ०म, ०मंत वि [०मन्] शक्तिवाला (ठा
 ६—पत्र ३५२, सवोष ८, उप १३६ टी) ।

सत्ति पु [सप्ति] अश्व, घोड़ा (पात्र) ।

सत्तिअ वि [सात्तिअ] सत्त्व-युक्त, सत्त्व-
 प्रधान (सूअनि ६२, हम्मौर ६, स ४) ।

सत्तिअणा औ [दे] अभिजात्य, कुलीनता
 (दे ८, १६) ।

सात्तवण्ण } देखो सत्त-वण्ण (सम १५२,
 सत्तिवन्न } पि १०३, विचार १४८) ।

सत्तु पु [शत्रु] रिपु, दुश्मन, वैरी (राया
 १, १—पत्र, कप्प, सुपा ७) । ०इ वि
 [०जित्] १ शत्रु को जीतनेवाला । २ पु.
 एक राजा का नाम (प्राकृ ६५) । ०गव वि
 [०ग्न] १ रिपु को मारनेवाला (प्राकृ ६५) ।
 २ पुं रामचन्द्र का एक छोटा भाई (पउम
 २५, १४) । ०निहण [०निग्न] वही पूर्वोक्त
 अर्थ (पउम १०, ६६) । ०मदण वि [०मदंन]
 शत्रु का मदन करनेवाला (सम १५२) । ०सेण
 पु [०सेन] एक अन्तर्द्व द्वि मुनि (अत ३) ।
 ०हण देखो ०गव (पउम ८०, ३८) ।

सत्तु } पुं [सक्तु] सत्तू, सतुआ, भुजे
 सत्तुअ } हुए यव आदि का चूर्ण (पि
 ३६७, निव्व १, स २५३, सुर ५, २०६,
 सुपा ४०६, महा) ।

सत्तुंज न [शत्रुञ्ज] १ एक विद्याधर-नगर
 (इक) । २ पु. रामचन्द्रजी का एक छोटा
 भाई, शत्रुञ्ज (पउम ३२, ४७) ।

सत्तुंजय पु [शत्रुञ्जय] १ काठियावाड़ में
 पालीताना के पास का एक सुप्रसिद्ध पर्वत
 जो जैनो का सर्वश्रेष्ठ तीर्थ है (सुर ५,
 २०३) । २ एक राजा का नाम (राज) ।

सत्तुंदम पु [शत्रुन्दम] एक राजा का नाम
 (पउम ३८, ४५) ।

सत्तुग देखो सत्तुअ (कुप्र १२) ।

सत्तुत्तरि औ [सप्तसपत्ति] सतहतर, ७७
 (कम्म ६, ४८) ।

सत्थ वि [शस्त्त] प्रशस्त, श्लाघनीय (वेइय
 ५७२) ।

सत्थ न [शत्थ] हथियार, आयुध प्रहरण
 (आचा उप, भग, प्रासू १०५) । ०काल पु

समीहिय वि [समीहित] इष्ट, वाञ्छित (महा) ।
 समीहिय देखो समिक्खअ (वव ३) ।
 समुआचार पुं [समुदाचार] समीचीन आचरण (दे २, ६४) ।
 समुइअ वि [समुचित] योग्य, उचित (से १३, ६८, महा) ।
 समुइअ वि [समुदित] १ परिवृत, 'गुण-समुइओ' (उव, स २८६) । २ एकत्रित (विसे २६२४) ।
 समुइअ वि [समुदीर्ण] उदय-प्राप्त (सुपा ६१४) ।
 समुईर देखो समुदीर । कर्म, 'जह बुड्ढगाण मोहो समुईरइ किनु तच्छाण' (गच्छ ३, १५) ।
 समुक्कस देखो समुक्करिस (उत्त २३, ८८) ।
 समुक्कत्तय वि [समुक्कतित] काट डाला हुआ (सुर १४, ४५) ।
 समुक्करिस पु [समुत्कर्ष] अतिशय उत्कर्ष (उत्त २३, ८८, सुख २३, ८८) ।
 समुक्कस सक [समुत् + कृष्] १ उत्कृष्ट बनाना । २ अक, गर्व करना । समुक्कसेआ (ठा ३, १—पत्र १७), समुक्कसंति (प्रासू १६५) ।
 समुक्किट्ट वि [समुत्कृष्ट] उत्कृष्ट (ठा ३, १—पत्र ११७) ।
 समुक्कित्तण न [समुत्कीर्तन] उच्चारण (सुपा १४६) ।
 समुक्खअ वि [समुत्खात] उखाड़ा हुआ (गा २७६) ।
 समुक्खण सक [समुत् + खन्] उखाड़ना । समुक्खणइ (गा ६८४) । वक्र, समुक्खणंत (सुपा ५४१) ।
 समुक्खणण न [समुत्खनन] उन्मूलन, उत्पादन (कुप्र १७४) ।
 समुक्खित्त वि [समुत्क्षिप्त] उठा कर फेंका हुआ (से ११, ७२) ।
 समुक्खिव सक [समुत् + क्षिप्] उठा कर फेंकना । समुक्खिवइ (पि ३१६, सण) ।
 समुग्ग पु [समुद्ग] १ डिब्बा, संपुट (सम ६३, ऋण, णाया १, १७ टी, धर्मवि १५,

श्रौप, परण ३६—पत्र ८३७, महा) । २ पक्षि-विशेष (जो २२, ठा ४, ४—पत्र २७१) ।
 समुग्गद (शौ) वि [समुद्गत] समुद्भूत, समुत्पन्न (नाट—पालती ११६) ।
 समुग्गम पुं [समुद्गम] समुद्भव (नाट—रत्ना १३) ।
 समुग्गिअ वि [दे] प्रतीक्षित (दे ८, १३) ।
 समुग्गिण वि [समुद्गीर्ण] उगामा हुआ, उत्तोलित, ऊपर उठाया हुआ (पउम १५, ७४) ।
 समुग्गिर सक [समुद् + गृ] ऊपर उठाना, उगामना । वक्र, समुग्गिरत (पउम ६५, ४८) ।
 समुग्घडिअ वि [समुद्घाटित] खुला हुआ (धर्मवि १५) ।
 समुग्घाइअ वि [समुद्घातित] विनाशित (प्रासू १६५) ।
 समुग्घाय पुं [समुद्घात] कर्म-निर्जरा विशेष, जिस समय आत्मा वेदना, कषाय आदि से परिणत होता है उस समय वह अपने प्रदेशों को बाहर कर उन प्रदेशों से वेदनीय, कषाय आदि कर्मों के प्रदेशों की जो निर्जरा—विनाश करता है वह, ये समुद्घात सात हैं—वेदना, कषाय, मरण, वैक्रिय, तैजस, आहारक और केवलिक (परण ३६—पत्र ७६३, भग, श्रौप, विसे ३०५०) ।
 समुग्घायण न [समुद्घातन] विनाश (विसे ३०५०) ।
 समुग्घुट्ट वि [समुद्घोषित] उद्घोषित (सुर ११, २६) ।
 समुग्घाय देखो समुग्घाय (दं ३) ।
 समुच्चय पुं [समुच्चय] विशिष्ट राशि, ढग, समूह (भग ८, ६—पत्र ३६५; भवि) ।
 समुच्चर सक [समुन् + चर] उच्चारण करना, बोलना । समुच्चरइ (चेइय ६४१) ।
 समुच्चलिअ वि [समुच्चलित] चला हुआ (उप पु ४८, भवि) ।
 समुच्चिण सक [समुन् + चि] झकड़ा करना, संचय करना । समुच्चिणइ (गा १०४) ।

समुच्चिय वि [समुच्चित] एक क्रिया आदि में धनित (विसे ५७६) ।
 समुच्छ सक [समुत् + छिद्] १ उन्मूलन करना, उखाड़ना । २ दूर करना । समुच्छे (सूत्र १, २, २, १३) । भवि, समुच्छिहिति (सूत्र २, ५, ४) । सक, समुच्छित्ता (सूत्र २, ४, १०) ।
 समुच्छइय वि [समवच्छादित] सतत आच्छादित (पउम ६३, ७) ।
 समुच्छणी छी [दे] समाजनी, भाई (दे ८, १७) ।
 समुच्छल सक [समुत् + शल्] १ उछलना, ऊपर उठना । २ विस्तीर्ण होना । समुच्छले (गच्छ १, १५) । वक्र, समुच्छलंत (सुर २, २३६) ।
 समुच्छलिअ वि [समुच्छलित] १ उछला हुआ । २ विस्तीर्ण (गच्छ १, ६, महा) ।
 समुच्छारण न [समुत्सारण] दूर करना (अभि ६०) ।
 समुच्छिअ वि [दे] १ तोषित, सतुष्ट किया हुआ । २ समारचित । ३ न अंजलि-करण, नमन (दे ८, ४६) ।
 समुच्छिद (शौ) वि [समुच्छित] अति-उन्नत (पि २८७) ।
 समुच्छिन्न वि [समुच्छिन्न] क्षीण, विनष्ट (ठा ४, १ पत्र—१८७) ।
 समुच्छुगिय वि [समुच्छृङ्गित] ढोब पर चढ़ा हुआ (हम्मोर १५) ।
 समुच्छुग वि [समुत्सुक] अति-उत्कण्ठित (सुर २, २१५, ४, १७७) ।
 समुच्छेद } पुं [समुच्छेद] सर्वथा विनाश
 समुच्छेय } (ठा ८—पत्र ४२५, राज) ।
 'वाइ वि [वादिन्] पदार्थ को प्रतिक्षण सर्वथा विनश्वर माननेवाला (ठा ८—पत्र ४२५, राज) ।
 समुज्जम सक [समुद् + यम्] प्रयत्न करना । वक्र, समुज्जमंत (पउम १०२, १७६, चेइय १५०) ।
 समुज्जम पुं [समुद्यम] १ समीचीन उद्यम । २ वि, समीचीन उद्यमवाला (सिरि २४८) ।
 समुज्जल वि [समुज्ज्वल] अत्यन्त उज्ज्वल (गवड, भवि) ।

(स्वप्न ६२) । कर्म, सहावीअति (अभि १२८) । सक्क.महाविच्चा, सदावेत्ता (पि ५८२ महा) ।

सहादिच वि [अच्छित, सव्दायित] आहूत, दुलाया ह्वा (कप्प, महा, सुर ८, १३३) ।

सहिअ वि [अच्छित] १ प्रसिद्ध (अपि, गाय १, १ टी—पत्र ३) । २ आहूत (सुपा ४१३, महा) । ३ वाचित, जिनको बात कही गई हो वह (कुमा ३, ३४) ।

सहिअ वि [शाच्छिन्न] शब्द-शास्त्र का ज्ञाता (अणु २३४) ।

सद्धूळ पु [गार्दूल] १ श्वाभ पशु को एक जाति, बाव (पात्र, परह १, १—पत्र ७, दे १, २४, अभि ५५) । २ छन्द विशेष (पिंग) । °विक्रीडिअ न [°विक्रीडित] उन्नीम अक्षरो के पादवाला एक छन्द (पिंग) । °सद्ध पुन [°साटक] छन्द-विशेष (पिंग) ।

सद्ध देखो स-द्ध = सार्ध ।

सद्ध न [अद्ध] १ पितरो की वृत्ति के लिए तर्पण पिएड दानादि (अच्छु १७, पुष्प १६७) । २ वि. अद्धावाला, अद्धावु (उप ८६८) । देखो सद्ध = अद्ध (उप १६६) । °पक्ख पुं [°पक्ख] आश्विन मास का कृष्ण पक्ष (दे ६, १२७) ।

सद्ध देखो सद्ध = साव्य (नाट—चैत ३५) ।

सद्धउ पु [अद्ध] व्यक्ति-वाचक नाम (महा) ।

सद्धरा छी [सद्धरा] एककीम अक्षरो के चरणवाला एक छन्द (पिंग) ।

सद्धल पु [सद्धल] एक प्रकार का हथियार, कुन्त, मछा (परह १, १—पत्र १८) । देखो सव्वल ।

सद्धस देगे सद्धमन (प्राक् २१, प्राप्र) ।

सद्धा देखो सद्धा (हे २, ४१, गाय १, १—पत्र ७४, प्राप् ४६, पात्र) । °ल वि [°ल] अद्धावाला (चंड, आवक १७५) । °ल वि [°ल] वही अर्थ (सवोव ८) । छी. °लग (गा ४ ५) ।

सहिअ वि [अच्छिन्न] अद्धावाला (परह १, ३—पत्र ४४, वमु, श्रोधमा १६ टी) ।

सहिअ [सार्धम्] सहित, साथ (आचा, उवा, उत्त १६३) ।

सद्धेय वि [अद्धेय] अद्धास्पद (विसे ४८२) । सधम्म वि [सधर्मन्] समान धर्मवाला (स ७१२) ।

सधम्मिअ देखो स-धम्मिअ = सद्ध-वार्मिक । सधम्मिणी छी [सधर्मिणी] पत्नी (दे २, १०६, सण) ।

सधवा देखो स-धवा = स-धवा ।

सनय देखो स-नय = स-नय ।

सन्न वि [सन्न] १ क्लान्त (पात्र) । २ अवसन्न, मग्न (सूत्र १, २, १, १०) । ३ खिन्न (परह १, ३—पत्र ५५) ।

सन्नाण देखो स-न्नाण = मज्ज्ञान ।

सन्नाम सक [आ + ह्] आदर करना, समान करना । सन्नामइ, सन्नामेइ (पड, हे ४, ८३) ।

सन्नामिअ वि [आह्वन] समानित (कुमा) ।

सन्निअत्य वि [द] परिहित, पहना हुआ (सुपा ३६) ।

सन्निअ (अप) देखो सणिअ (भवि) ।

सन्निर न [दे] पत्र-शाक, भाजी (दस ५, १, ७०) ।

मन्नुम मक [आद्य] आच्छादन करना, ढांकना । सन्नुमइ (हे ४, २१) ।

मन्नुमिअ वि [आच्छिन्न] ढका हुआ (कुमा) ।

सन्ह देखो सण्ह = शृङ्गण (कप्प) ।

सप देखो सव = शप् । सपइ (विसे २२२७) ।

सपक्ख देखो स-पक्ख = स-पक्ष ।

सपक्ख देखो स पक्ख = स्व-पक्ष ।

सपक्खं अ [सपक्षम्] अभिमुख, सामने (अत ८४) ।

सपक्खी छी [मपक्षी] एक महौषधि (तो ५) ।

सपज्जा छी [सपर्या] पूजा (अच्छु ७०) ।

सपडदिसि अ [सप्रतिदिक्] अत्यन्त संमुख, ठीक सामने (अत १४) ।

सपात्तअ वि [सपत्रिन] वाण से प्रतिव्यथित (दे १, १३५) ।

सपह देखो सवह (धर्मवि १२६) ।

सपाग देखो स-पाग = ध-पाक ।

सपिगल्लग देखो सप्पिसल्लग (पि २३२) ।

सप्प नक [सप्] १ जाना, गमन करना । २ आक्रमण करना । सप्पइ (वात्वा ६५५), 'घोरविता वि हु सप्पा सप्पति न वद्धवयणव्व' (सुर २, २४३) । वक्क. सप्पत, सप्पमाण (गज्ज, कप्प) । क्क. सप्पणीअ (नाट—शकु १८७) ।

सप्प पुत्री [सर्प] १ साँप, भुजगम (उवा, सुर २, १४३, जो २१, प्राप् १६, ३८, ११२) । छी. °प्प (राज) । २ पुं. अश्लेषा नक्षत्र का अधिष्ठाता देव (सुज्ज १०, १२, ठा २, ३—पत्र ७०) । ३ एक नरकस्थान (देवेन्द्र २७) । ४ छन्द-विशेष (पिंग) । °सिर पु [°शिरस] हस्त-विशेष, वह हाथ जिसकी उंगलियाँ और अंगूठा मिला हुआ हो और तला नीचा हो (दे ८, ७२) । °सुगवा छी [°सुगन्धा] वनस्पति-विशेष (पण १—पत्र ३६) ।

सप्पभ देखो स-प्पभ = स्व-प्रभ, सत्-प्रभ, स-प्रभ ।

सप्पमाग देखो सप्प = सप्, भव = शप् । सप्पारेआव } देखो स-प्परिआव = स-सप्परिआव } परिताप ।

सप्पि न [सर्पिम] घृत, घी (पात्र, पव ४, सुपा १३, सिरि ११८४, सण) । °आमव °यासव वि [°आस्त्रव] लविवि-विशेषवाला, जिसका वचन घी की तरह मधुर होता है (परह २, १—पत्र १००) ।

स.प्प वि [सर्पिन्] १ जानेवाला, गति करने-वाला (कप्प) । २ रोगि विशेष, हाथ में लकड़ी के सहारे से चल सकनेवाला रोगि-विशेष (परह २, ५—पत्र १००) ।

सप्पिसल्लग देखो स-प्पिसल्लग = स-पिशा-चक ।

सप्प, देखो सप्प = सर्प ।

सप्पुरस देखो स-प्पुरिस = सत्-पुरुष ।

सप्प न [शप्प] बाल वृण, नया घास (हे २, ५३, प्राप्र) ।

सप्प न [दे] कुमुद, कैरव, 'चंदुजय तु कुमुअ गद्धय केरव सप्प' (पात्र) ।

सप्पद देखो स-प्पद = स-स्पन्द ।

समुद्रणवणीअ न [दे समुद्रनवनीत] १
धृत, सुधा । २ चन्द्रमा (दे ८, ५०) ।

समुद्रव सक [समुद्र + द्रावय्] १
भयंकर उपद्रव करना । २ मार डालना ।
ममुद्वे (गच्छ २, ४) ।

समुद्रहर न [दे] पानीय-गृह, पानी-घर (दे
८, २१) ।

समुद्राम वि [समुद्राम] अति उदाम, प्रखर,
“थुई समुद्रामसदेण” (चेइय ६५०) ।

समुद्रिस सक [समुद्र + दिश्] १ पाठ
को न्यिर-परिचित करने के लिए उपदेश
देना । २ व्याख्या करना । ३ प्रतिज्ञा करना ।
४ आश्रय लेना । ५ अविकार करना । कर्म
समुद्रिस्सइ (उवा), समुद्रिस्सिज्जति (अणु
३) । संकृ समुद्रिस्स (आचा १, ८, २,
१, २, २, १, ४, ५) । हेक. समुद्रिस्सित्तए
(ठा २, १—पत्र ५६) ।

समुद्रेस पु [समुद्रेश] १ पाठ को न्यिर-
परिचित करने का उपदेश (अणु ३) । २
व्याख्या, सूत्र के अर्थ का अध्यापन (वव १) ।
३ ग्रंथ का एक विभाग, अध्ययन, प्रकरण,
परिच्छेद (पउम २, १२०) । ४ भोजन,
‘जत्य समुद्रेसकाले’ (गच्छ २, ५६) ।

समुद्रेस वि [सामुद्रेश] देखो समुद्रेसिय
(पिंड २३०) ।

समुद्रेसण न [समुद्रेशण] सूत्रों के अर्थ का
अध्यापन (एदि २०६) ।

समुद्रेसिय वि [समुद्रेशिक] १ समुद्रेश-
सम्बन्धी । २ विवाह आदि के उपलक्ष्य में
किये गये जीमन में बचे हुए वे खाद्य पदार्थ
जिनको सब साधु-सन्यासियों में बाँट देने का
संकल्प किया गया हो (पिंड २२६) ।

समुद्रर सक [समुद्र + ह्] १ मुक्त करना ।
२ जोएँ मन्दिर आदि को ठीक करना ।
समुद्ररइ (प्रासू ५) । वकृ. समुद्ररत (सुपा
४७०) । संकृ समुद्ररेऊण (सिक्खा ६०) ।
हेक. समुद्ररत्तु (उत्त २५, ८) ।

समुद्ररण न [समुद्ररण] १ उदार । २ वि.
उदार करनेवाला (सण) ।

समुद्ररिअ वि [समुद्रधृत] उदार-प्राप्त
(गा ५६३, सण) ।

समुद्राइअ वि [समुद्रावित] समुत्थित,
उठा हुआ (स ५६६, ५६७) ।

समुद्राय अक [समुद्र + धाव्] उठना ।
वकृ समुद्रायत (पणह १, ३—पत्र ४५) ।

समुद्रिअ देखो समुद्ररिअ (गच्छ ३, २६) ।

समुद्रधुर वि [समुद्रधुर] दृढ, मजबूत (उप
१४२ टी) ।

समुद्रधुसिअ वि [समुद्रधुपित] पुलकित,
रोमाञ्जित, ‘घणायमे कयवकुसुम व समुद्रधु-
(?दधु)सियं सरीर’ (कुप्र २१०, स १८०,
धर्मवि ४८) ।

समुद्र पु [समुद्र] १ एक देव-विमान (देवेन्द्र
१४३) । २. देखो समुद्र (हे २, ८०) ।

समुन्नइ व्री [समुन्नति] अभ्युदय (सावं
८२) ।

समुन्नद्ध वि [समुन्नद्ध] संनद्ध, सज,
‘ज नमिया सयलनिवा

जिणस्स अर्चत्तवलसमुन्नद्धा ।

तेण विजएण रत्ता

नमित्ति नाम विणिम्मविय’

(चेइय ६१३) ।

समुन्नय वि [समुन्नत] अति ऊँचा (महा) ।

समुपेह सक [समुत्प्र + ईक्ष्] १ अन्धी
तरह देखना, निरीक्षण करना । २ पर्यालोचन
करना, विचार करना । वकृ. समुपेहमाण
(सूत्र १, १३, २३) । संकृ. समुपेहिआ,
समुपेहिआण (दस ७, ५५, महा) ।

समुप्पज्ज अक [सपुन् + पद्] उत्पन्न
होना । समुप्पज्जइ (भग, महा) । समुप्पज्जिआ
(कप्प) । भूका. समुप्पज्जित्था (भग) ।

समुप्पण्ण १ वि [समुत्पन्न] उत्पन्न (पि
समुप्पन्न १०२, भग, वसु) ।

समुप्पयण न [समुत्पतन] ऊँचा जाना,
ऊर्व-गमन, उद्भयन (गउड) ।

समुप्पाअ वि [समुत्पादक] उत्पत्ति-कर्ता
(गा १८८) ।

समुप्पाड सक [समुत् + पादय्] उत्पन्न
करना । समुप्पाडेइ (उत्त २६, ७१) ।

समुप्पाय पुं [समुत्पाद] उत्पत्ति, प्रादुर्भाव
(सूत्र १, १, ३, १०, आचा) ।

समुप्पिजल न [दे] अग्रश, अपकीर्ति । २
रज, धूलि (दे ८, ५०) ।

समुप्पित्थ वि [दे] उत्पत्ति, भय-भीत (सुर
१३, ४४) ।

समुप्पेक्ख } समुपेह । वकृ. समुप्पेक्ख-
समुप्पेह } माण, समुप्पेहमाण (राज,
आचा १, ४, ४, ४) । संकृ. समुप्पेह (दस
७, ३) । देखो समुपेक्ख ।

समुप्फालय वि [समुत्पाटक] उठाकर लाने-
वाला, ‘पहए जयसिरिसमुप्फालए मगनतूरे’
(स २२) ।

समुप्फालिय वि [समुत्फालिन] आस्फालित
(भवि) ।

समुप्फुद सक [समा + क्रम्] आक्रमण
करना । वकृ. समुप्फुदत (से ४, ४३) ।

समुप्फोडण न [समुत्स्फोटन] आस्फालन
(पउम ६, १८०) ।

समुप्पभड वि [समुप्पट] प्रचड (प्रासू
१०२) ।

समुप्पभव अक [समुद्र + भू] उत्पन्न होना ।
समुप्पवन्ति (उपप २५) ।

समुप्पभव पुं [समुद्रव] उत्पत्ति (उव-
भवि) ।

समुप्पिभय वि [समूर्ध्वित] ऊँचा किया हुआ
(सुपा ८८, भवि) ।

समुप्पभुय (अप) नीचे देखो (सण) ।

समुप्पभूअ वि [समुद्रभूत] उत्पन्न (स
४७६, सुर २, २३५, सुपा २६५) ।

समुप्पाण देखो समुदाण = समुदान (विपा
१, २—पत्र २५, श्लो १८४) ।

समुप्पाण देखो समुदाण = समुदानय् । वकृ.
समुप्पाणित (सुख ३, १) ।

समुप्पाणिअ देखो समुदाणिय (श्लो ५१२) ।

समुप्पाय सक समुदाय (राज) ।

समुप्पल सक [समुत् + लप्] वा. पाठ
कहना । समुप्पलवइ (सण) । वकृ. समुप्प-
(सुर २, २६) । कवकृ. समुप्पलविज्जत (ह
२, २१७) ।

समुप्पलवण न [समुद्रपन] कथन, उक्ति (से
१२, ७४) ।

समुप्पलविअ वि [समुद्रपित] उक्त, कथित
(सुर २, १५१, ५, २३८, प्रासू ७) ।

समउ (अप) नीचे देखो (भवि) ।

सम अ [समम्] साय, सह (गा १०२, १६४, २६५, उत १६, ३; महा, कुमा) ।

समजस वि [समजस] उचिन, योग्य (आचा, गठ, भवि) ।

समत^० देखो समता, 'वसिओ अगेमु समत-पीणकणकवुरो सेओ' (गजठ) ।

समत देखो सामन्त (उप पृ ३२७) ।

समत (अप) देखो समत्थ = समस्त (पिग) ।

समतओ अ [समन्तस] सर्वत, चारो तरफ (गा ६७३; सुर २, २३८) ।

समता } अ [समन्तात्] ऊपर देखो समतेण } (पात्र, भग, विपा १, २—पत्र २६, से ६, ५१, सुर २, २८, १३, १६५) ।

समकत वि [समाक्रान्त] १ जिसपर आक्रमण किया गया हो वह (से ५, ५७) । २ अवच्छेद, रोका हुआ (से ८, ३३) ।

समकव न [समक्ष] नजर के मामले, प्रत्यक्ष (गा ३७०, सुपा १५०, महा) । देखो समच्छ ।

समकवाय } वि [समाख्यात] उक्त, समकियअ } कथित (उप २११ टी, ६६४, जो २५, श्रु १३३) ।

समगं देखो समय = समकम् (पव २३२, सुपा, ८७, सण) ।

समगा वि [समग्र] १ सकल, समस्त (सुपा ६६) । २ युक्त, सहित (पण्ह १, ३—पत्र ४४, कुप्र ७) ।

समगल वि [समर्गल] अत्यधिक (सिरि ८६७, सुपा ३६७, ४२०) ।

समगल (अप) देखो समगा (पिग) ।

समगव पि [समर्घ] सस्ता, अल्प मूल्यवाला (सुपा ४४५, ४४७, सम्मत् १४१) ।

समघण न [समर्चन] पूजन, पूजा (सुपा ६) ।

समच्चिअ वि [समर्चित] पूजित (पउम ११६, ११) ।

समच्छ अक [सम् + आस्] १ बैठना । २ मक. अवलम्बन करना । ३ अवीन रखना । वक. समच्छेत (उप ६६८ टी) ।

समच्छ वि [समक्ष] -प्रत्यक्ष का विषय (सक्षि १५) । देखो समकव ।

समच्छायग वि [ग्माच्छादक] ढकनेवाला (स ६६) ।

समज्ज } सक [सम् + अर्ज] पैदा
समज्जिण } करना, उपार्जन करना । समज्जइ, समज्जिणइ (सण, पव १०, महा) । वक.

समज्जिणमाण (विपा १, १—पत्र १२) । सक. समज्जिवि (अप) (सण) ।

समज्जिणिय } वि [समजित] उपाजित
समज्जिय } (सण, ठा ३, १—पत्र ११४, सुपा २०५, सण) ।

समज्झासिय वि [समध्यासित] अधिष्ठित (सुज्ज १०, १) ।

समट्ट वि [समर्थ] सगत अर्थ, व्याजवी, न्याय-युक्त (गाया १, १—पत्र ६२, उवा) । देखो समत्थ = समर्थ ।

समण न [शमन] १ उपशमन, दवाना, शान्त करना (सुपा ३६६) । २ पथ्यानुष्ठान (उवर १४०) । ३ एक दिन का उपवास (सवोध ५८) । ४ वि. उपशमन करनेवाला, दवाने-वाला (उप ७८२, पचा ४, २६, सुर ४, २३१) ।

समण देखो स-मण = स-मनस् ।

समण देखो सवण = श्रवण (पउम १७, १०७, राज) ।

समण पुं [समण] सर्वत्र समान प्रवृत्तिवाला, मुनि, साधु (अणु) ।

समण पुं [श्रमण] १ भगवान् महावीर (आचा २, १५, ३) । २ पुंछी, निर्यन्त्र मुनि साधु, यति, भिक्षु, सन्यासी, तापस, 'निरगय-सक्कतावसगेह्यआजीव पंचहा समणा' (पव ६४, अणु, आचा, उवा, कप्प, विपा १, १, वण २१, सुर १०, २२४) । बी. °णी (भग, गच्छ १, १५) । °सीह पुं [°सिह] १ एक जैन मुनि जो दूसरे बलदेव के पूर्वभवीय गुरु थे (पउम २०, १६२) । २ श्रेष्ठ मुनि (पण्ह २, ५—पत्र १४८) । °वासग, °वासय पुंछी [°पासक] श्रावक, जैन गृहस्थ (उवा) । बी. °सिया (उवा, गाया १, १४—पत्र १८७) ।

समणतरु (अप) न [समनन्तरम्] अनन्तर, बाद में, पीछे (सण) ।

समणकव देखो स-मणकव = स-मनस्क ।

समणुगच्छ } सक [समनु + गम्] १
समणुगम } अनुसरण करना । २ अच्छी तरह व्याख्या करना । ३ अक. सवद्ध होना, जुड जाना । वक. समणुगच्छमाण (गाया १, १—पत्र २५) । कवक. समणुगमंत, समणुगम्ममाण (औप, सूत्र २, २, ७६, गाया १, १—पत्र ३२, कप्प) ।

समणुग वि [समनुगत] १ अनुसन (स ७२०) । २ अनुविद्ध, जुडा हुआ (पंचा ६, ४६) ।

समणुचिण वि [समनुचीर्ण] आचरित, विहित, 'तवो समणुचिएणो' (पउम ६, १६४) ।

समणुजाण सक [समनु + ज्ञा] १ अनुमोदन करना, अनुमति देना । २ अधिकार प्रदान करना । समणुजाणइ, समणुजाणाइ समणुजाणेजा (आचा) । वक. समणुजाणमाण (आचा) ।

समणुजाय वि [समनुजात] उत्पन्न, सजात (पउम १००, २४, सुपा ५७८) ।

समणुनाय वि [समनुज्ञात] अनुमत, अनुमोदित (पउम ८, ७) ।

ससणुन्न वि [समनुज्ञ] अनुमोदन-कर्ता (आचा १, १, १, ५) ।

समणुन्न वि [समनोज्ञ] १ सुन्दर, मनोहर । २ सुन्दर वेष आदिवाला (आचा १, ८, १, १) । ३ संविग्न, सवेग-युक्त मुनि (आचा १, ८, २, ६) । ४ समान समाचारीवाला—सामोहिक मुनि (ठा ३, ३—पत्र १३६, व्व १) ।

समणुन्ना बी [समनुज्ञा] १ अनुमति, संमति २ अधिकार-प्रदान (ठा ३, ३—पत्र १३६) ।

समणुन्नाय देखो समणुनाय (आचा २, १, १०, ४) ।

समणुपत्त वि [समनुप्राप्त] संप्राप्त (सुर १, १८३, १०, १२०, सिरि ४३०, महा) ।

समणुवद्ध वि [समनुवद्ध] निरन्तर रूप से व्याप्त (गाया १, ३—पत्र ६१, औप, उव) ।

समणुभूअ वि [समनुभूत] अच्छी तरह जिसका अनुभव किया गया हो वह (वै ६२) ।

उत्तरना । ३ जन्म-ग्रहण करना । ममोअरइ (अणु २४६, उव, विसे ६४५), समोअरति सूअ २, २, ७६, अणु ५६) ।

समोआर पु [समवतार] अन्तर्भाव (अणु २४६) ।

समोइन्न वि [समवतीर्ण] नीचे उतरा हुआ (सुर ७, १३४) ।

समोगाढ वि [समवगाढ] मम्यग अवगाढ (श्रौप) ।

समोच्छइअ वि [समवच्छादित] आच्छादित, अतिशय ढका हुआ (सुर १०, १५७) ।

समोणम सक [समवमनम्] मम्यग नमना—नीचा होना । वहु नमोणमत (श्रौप, सुर ६, २३७) ।

समोणय वि [समवन्न] अति नमा हुआ (गा २८२) ।

समोत्थइअ वि [समवस्थान] आच्छादित, (से ६, ८४) ।

समोत्थय वि [समवस्तुन] ऊपर देखो (उप ७७३ टी) ।

समोत्थर सक [समव + स्तृ] ? आच्छादन करना, ढकना । २ आक्रमण करना । वहु, समोत्थरत (गाया १, १—पत्र २५, पउम ३, ७८) ।

समोथार पुं [समवतार] अन्तर्भाव, समावेश (विसे ६५६, अणु) ।

समोथारणा स्त्री [समवतारणा] अन्तर्भाव (विसे ६७३) ।

समोथारिय वि [समवतारित] अन्तर्भावित, समावेशित (विसे ६५६) ।

समोत्थय वि [दे] समुत्क्षिप्त (गउड) ।

समोलुग्ग वि [समवसृग्ग] रोगी, रोग-ग्रस्त (से ३, ४७) ।

समोवअ सक [समव + पन्] १ सामने आना । २ नीचे उतरना । वहु, समोवअयत्त, समोवअमाण (म १३६, ३३०) ।

समोवअ वि [समवपत्तिन] नीचे उतरा हुआ (गाया १, १६—पत्र २१३) ।

समोसइह } वि [समवसृत्त] समागत, समोसइह } पधारा हुआ (सम्मत्त १२०,

पि ६७, भग, गाया १, १—पत्र ३६, श्रौप, सुपा ११) ।

समोसर सक [समव + स्तृ] १ पधारना, आगमन करना । २ नीचे गिरना । समोसरेखा (श्रौप, पि २३५) । हेहु समोसरिउ^० (श्रौप) । वहु समोसरत (मे २, ३६) ।

समोसर अक [समव + स्तृ] १ पीछे हटना । २ पलायन करना । समोसरइ (काप्र १६६), समोसर (हे २, १६७) । वहु, समोसरत (गा १६०) ।

समोन्नग्ग पुन [समवल्लरण] १ एकत्र मिलन, मेलापक, मेला (सूअनि ११७, राय ३३) । २ समुदाय, समवाय, समूह, 'समोसरण निचय उवचय चए य जुम्मं य रासी य' (ओष ४०७) । ३ साधु-समुदाय, साधु-समूह (पिड २८५, २८८ टी) । ४ जहाँ पर उत्पन्न आदि के प्रसंग में अनेक साधु लोग इकट्ठे होते हैं वह स्थान (सम २१) । ५ परतीर्थिकों का समुदाय, जैनतर दार्शनिकों का समवाय (सूअ १, १२, १) । ६ धर्म-विचार, आगम-विचार (सूअ २, २, ८१, ८२) । ७ 'सूत्रकृताङ्ग सूत्र' के प्रथम श्रुतस्कन्ध का बारहवाँ अध्यायन (सूअनि १२०) । ८ पधारना, आगमन (उवा, श्रौप, विपा १, ७—पत्र ७२) । ९ तीर्थंकर-देव की परंपरा । १० जहाँ पर जिन-भगवान् उपदेश देते हैं वह स्थान (आवम, पचा २, १७, ती ४३) । ११ तव पुं [तपस्] तप-विशेष (पव २७१) ।

समोसरिअ वि [समवसृत्त] १ पीछे हटा हुआ (गा ६५६, पउम १२, ६३) । २ पलायित (से १०, ५) ।

समोसरिअ वि [समवसृत्त] समायात, समागत (से ७, ४१ उवा) ।

समोसय सक [दे] टुकड़ा टुकड़ा करना । समोसवेति (सूअ १, ५, २, ८) ।

समोमिअ अक [समव + सद्] क्षीण होना, नाश पाना, नष्ट होना । वहु, समोसिअत (से ८, ७) ।

समोसिअ पुं [दे] १ प्रातिवेशिक, पड़ोसी (दे ८, ४६, पाप्र) । २ प्रदीप । ३ वि. वध्य, वध-योग्य (दे ८, ४६) ।

समोहण सक [समुद् + हन] समुद्धात करना, आत्म-प्रदेशों को बाहर निकाल कर उनसे कर्म-निर्जरा करना । समोहणइ, समोहणति (कप्प, श्रौप, पि ४६६) । संकृ. समोहणित्ता (भग, कप्प, श्रौप) ।

समोहय वि [समुद्धत] जिसने समुद्धात किया हो वह (ठा २, २—पत्र ६१) ।

समोहय वि [समवहत] आघात-प्राप्त (सुर ७, २८) ।

सम्म अक [श्रम्] १ खेद पाना । २ घटना । मम्मइ (उत्त १, ३७) ।

सम्म अक [शम्] शान्त होना, ठण्डा होना । मम्मइ (घात्वा १५५) ।

सम्म न [गरीन] सुख (हे १, ३२ कुमा) ।

सम्म वि [सम्मच्च] १ सत्य, सच्चा (सूअ १, ८, २३, कप्प, सम्म ८७, वसु) । २ अविपरीत, अविरोध (ठा १—पत्र २७, ३, ४—पत्र १५६) । ३ प्रशमनीय, श्लाघनीय (कम्म ४, १४, पत्र ६) । ४ शोभन, सुन्दर । ५ संगत, उचित, व्याजवी (सूअ २, ४, ३) । ६ न. मम्यग् दर्शन (कम्म ४, ६, ४५) । ७ न [त्वं] १ समकित, मम्यग्-दर्शन, सत्य तत्त्व पर श्रद्धा (उवा, उव, पव ६३, जी ५०, कम्म ४, १४) । २ सत्य, परमार्थ, 'सम्मत्तदसिणो' (आचा सूअ १, ८, २३) । ३ दिट्ठिय, दिट्ठिय वि [दिट्ठिक] सत्य तत्त्व पर श्रद्धा रखनेवाला (ठा १—पत्र २७, २, २—पत्र ५६) । ४ सण न [दर्शन] सत्य तत्त्व पर श्रद्धा (ठा १०—पत्र ५०३) । ५ दिट्ठि वि [दिट्ठि] देखो दिट्ठिय (सूअनि १२१) । ६ ज्ञान न [ज्ञान] सत्य ज्ञान, यथार्थ ज्ञान (सम्म ८७, वसु) । ७ सुय न [श्रुत] १ सत्य शास्त्र । २ सत्य शास्त्र-ज्ञान (एदि) । ३ सिच्छादिट्ठि वि [सिच्छादिट्ठि] मिश्र दृष्टिवाला, सत्य और असत्य तत्त्व पर श्रद्धा रखनेवाला (सम २६, ठा १—पत्र २८) । ४ वाय पु [वाट] १ अविरोध वाद । २ दृष्टिवाद, बारहवाँ जैन अग-ग्रन्थ (ठा १०—पत्र ४६१) । ३ सामायिक, समय-विशेष, 'सामाज्य समइय सम्मावाओ समास सखेवो' (आव १) ।

सूत्रनि २६, कृमा, दं २२) । ५ पदार्थ, चीज,
वस्तु (सम्म १ टी. षष्ठ ११४) । ६ सकेत,
इशारा (सूत्रनि २६, पिड ६, प्राप, से १,
१६) । ७ समीचीन परिणति, सुन्दर परि-
णाम । ८ आचार, रिवाज । ९ एकवाक्यता
(सूत्रनि २६) । १० सामायिक, समय-विशेष
(विसे १४२१) । °कखेत्त, °खेत्त न [°क्षेत्र]
कालोपलक्षित भूमि, मनुष्य-लोक, मनुष्य-क्षेत्र
(भग, सम ६८) । °ज्ज, °ण्ण, °न्न वि [°ज्ञ]
समय का जानकार (घण ३६, गा ४०५,
पि २७६) ।

समय देखो स-मय = स-मद ।

समय } अ [समकम्] १ युगपत्, एक
समय } साथ (पव २१६ टी, विसे १६६६,
१६६७, सुर १, ५, महा, गजड ११०६)।
२ सह, साथ (गा ६१)।

समया देखो सम-या ।

समया अ [समया] पास, नजदीक (सुपा
१८८)।

समर सक [स्मृ] याद करना । कृ. समरणीय
(चत २७, नाट. शकु ६), समरियव्व
(रयण २८) ।

समर देखो सवर (हे १, २५८, पङ्) । स्त्री.
री (कृमा) ।

समर पुन [समर] १ युद्ध, लड़ाई (सं १३, ४७; उप ७२८ टी, कुमा)। २ छन्द-विशेष (पिंग)। ३ लोहकारशाला (उत्त० ग्रन्थ० १ गा० २६)। ४ इन्द्र पुं [इन्द्र] भवन्ती-देश का एक राजा (सं ५)।

समर वि [स्मार] कामदेव-सबन्धी, कामदेव
का (मन्दिर प्रादि), (उप ४५४) ।

समरश्चु वि [स्मर्तु] स्मरण-कर्ता (सम
१५) ।

समरण न [स्मरण] स्मृति, याद (धर्मवि २०,
आप ६८) ।

समरसद्वय पृ [दे] समान उम्रवाला (दे
८, २२) ।

समराइअ वि [दे] पिष्ट, पिता हुमा (पह्) ।
समरी देखो समर = शवर ।

समरेत्त देखो समरइत्त (ठा ६—पत्र ४४४)।

समलकर एक [समलम् + कृ] विभूषित
करना । समलंकरेइ (ग्राचा २, १५, ५) ।
सकृ समलकरेत्ता (ग्राचा २, १५, ५) ।

समलंकार सक [समलम् + कारय्]
विभूषित करना, विभूषण-युक्त करना । सम-
लंकारेइ (ध्रौप) । संकृ. समलंकारेत्ता
(ध्रौप) ।

समलद्ध (ग्रण) वि [समालव्य] विलिप्त
(भवि) ।

समल्लिङ्ग शक [समा + ली] १ सवद्ध
होना । २ लीन होना । ३ सक. प्राश्रय
करना । समल्लियङ्ग (शक ४७) । वक्तु
समल्लिङ्गत (से १२, १०) ।

समझीण वि [समालीन] अन्धो तरह लीन
(ग़ौप) ।

सकवड्ण वि [समवतीर्ण] अवतीर्णं (सुपा
२२) ।

समवद्वाण न [समवस्थान] सम्यग् प्रवस्यति
(अज्म १४७) ।

समवद्विद् ब्री [समवस्थिति] ऊपर देखो,
'कोई विति मुणीण सहावसमवद्विद् हवे
चरण' (प्रज्ञ १४६)।

समवत्ति देखो सम-वत्ति = सम-वर्तिन् ।

समवयं^० देखो समवे ।

समवसर देखो समोसर = समव + स
(प्रामा) ।

સમવસરણ દેહો સમોસરણ (સૂત્રાનિ ૧૧૬) ।

समवसरिअ देखो समोसरिअ = समवसत
(धर्मवि ३०) ।

समवसेअ वि [समवसेय] जानने योग्य,
ज्ञातव्य (सा ४) ।

म समवाह वि [समवायिन्] समवाय संवन्ध
का, समवाय-संवन्धी (विसे १६२६, धर्मसं
४८७) ।

समवायं पुं [समवाय] १ संबन्ध विशेष,
गण-गणी आदि का संबन्ध (विसे २१०८) ।

२ सवन्ध (पञ्च ३६, २५, धर्मस ४८१;
विवे ११६) । ३ समूह, समुदाय (सूत्र २,
३ २३, श्लोक ४०१-४०२, २१० टी. पित्र

करना, 'कार्डें तो सधसमवाय' (विसे

२६६ टी) । ६ न. एक नगर का नाम, राजा रावण के लिए कुवेर द्वारा बनाया हुआ एक नगर (पउम ७, १४६) । १० वि. आप से प्रकाश करनेवाला (पउम ३६, ४) । °पभा स्त्री [°प्रभा] १ प्रथम वासुदेव की पटरानी (पउम २०, १८६) । २ एक रानी का नाम (उप १०३१ टी) । °पह देखो °पभ (पउम ८, २२) । °बुद्ध वि [°बुद्ध] अन्य के उपदेश के बिना ही जिसको तत्त्व-ज्ञान हुआ हो वह (नव ४३) । °भु पुं [°भु] १ ब्रह्मा (पएह १, २—पत्र २८) । २ भारत में उत्पन्न तीसरा वासुदेव (सम ६४) । ३ सनरहवें जिनदेव का गणधर—मुख्य शिष्य (सम १५२) । ४ जीव, आत्मा, चेतन (भग २०, २—पत्र ७७६) । ५ एक महा-सागर, स्वयभूरमण समुद्र, 'जहा सयभू उदहोण सेट्ठे' (सूत्र १, ६, २०) । ६ पुंन. एक देव-विमान (सम १२) । देखो °भू । °भुगेहिणी स्त्री [°भुगेहिनी] सरस्वती देवी (अच्छ २) । °भुरमण पुं [°भुरमण] देखो °भूरमण (पएह २, ४—पत्र १३०, पउम १०२, ६१, स १०७, सुज १६, जी ३, २—पत्र ३६७, देवेन्द्र २५५) । °भुव, °भू पुं [°भू] १ अनादि-सिद्ध सर्वज्ञ, 'जयजय नाह सयभुव' (स ६४७, उवर १२२) । २ ब्रह्मा (पात्र, पउम २८, ४८, ती ७, से १४, १७) । ३ तीसरा वासुदेव (पउम ५, १५५) । ४ रावण का एक योद्धा (पउम ५६, २७) । ५ भगवान् विमलनाथ का प्रथम श्रावक (विचार ३७८) । ६ कुच, स्तन (प्राक् ४०) । देखो °भु । °भूरमण पुं [°भूरमण] १ समुद्र-विशेष । २ द्वीप-विशेष (जीव ३, २—पत्र २६७, ३७०) । ३ एक देव-विमान (सम १२) । °भूरमणभद्र पुं [°भूरमणभद्र] स्वयभूरमण द्वीप का एक अधिष्ठाता देव (जीव ३, २—पत्र ३६७) । °भूरमणमहाभद्र पुं [°भूरमणमहाभद्र] वही अर्थ (जीव ३, २) । °भूरमणमहावर पुं [°भूरमणमहावर] स्वयभूरमण-समुद्र का एक अधिष्ठाता देव (जीव ३, २—पत्र ३६७) । °भूरमणवर पुं [°भूरमणवर] वही अनन्तर उक्त अर्थ (जीव ३, २) । °वर पुं [°वर] कन्या का

स्वेच्छानुसार वरण, एक प्रकार का विवाह जिसमें कन्या निमन्त्रित विवाहार्थियों में से अपनी इच्छानुसार अपना पति वरण कर ले (उव, गउड, अमि ३१) । °वरी स्त्री [°वरा] अपनी इच्छानुसार वरण करनेवाली (पउम १०६, १७) । °संबुद्ध वि [°संबुद्ध] स्वय ज्ञात-तत्त्व (सम १) ।

सयंजय पु [शतञ्जय] पक्ष का तेरहवाँ दिवस (सुज १०, १४) ।

सयंजल पु [शतञ्जल] १ एक कुलकर-पुरुष (सम १५०) । २ वरण लोकपाल का विमान (भग ३, ७—पत्र १६८) देखो सय-जल । ३ ऐरवत वर्ष में उत्पन्न चौदहवें जिनदेव (पव ७) ।

सयंभरी स्त्री [शाकम्भरी] देश-विशेष (मुणि १०८७३) ।

सयग देखो सयय (पव ४६, कम्म ५, १००) । सयग्वी स्त्री [दे] जाता, चक्की, पोमने का यन्त्र (दे ८, ५) ।

सयड पुंन [शकट] १ गाड़ी (पउम २६, २१), 'सयडो गती' (पात्र) । २ न. नगर-विशेष (पउम ५, २७) । °मुह न [°मुख] उद्यान-विशेष, जहाँ भगवान् ऋषभदेव को केवलज्ञान उत्पन्न हुआ था (पउम ४, १६) ।

सयडाल देखो सगडाल (कुप्र ४४८) ।

सयण देखो स-यण = स्व-जन ।

सयण न [सदन] १ गृह, घर (गउड, सुपा ३६६) । २ अग-ग्लानि, शरीर-पीडा (राज) ।

सयण न [शयन] १ वसति, स्थान (आचा १, ६, १, ६) । २ शय्या, बिछौना (गउड, कुमा, गा ३३) । ३ निद्रा (कुमा ८, १७) । ४ स्वाप, सोना (पएह २, ४, सुपा ३६६) ।

सयणिज्ज न [शयनीय] शय्या, बिछौना (गाया १, १४—पत्र १६०, गउड) ।

सयणिज्जग देखो स-यण = स्व-जन, 'सिहस्स सयणिज्जगा आगया' (ओघभा ३० टी) ।

सयणीअ देखो सयणिज्ज (स्वप्न ६२, ६८, सुर ३, ६०) ।

सयण्ण देखो सकण्ण (महा) ।

सयण्ह देखो स-यण्ह = स-मुण्ह ।

सयत्त वि [दे] मुदित, हर्षित (दे ८, ५) ।

सयन्न देखो सकन्न (सुपा २८२) ।

सयय वि [सतत] निरन्तर (उव, सुर १, १३, महा) ।

सयय पु [शतक] १ वर्तमान अवसर्पिणी-काल में उत्पन्न ऐरवत वर्ष के एक जिन-देव (सम १५३) । २ आगामी उत्सर्पिणी में भारतवर्ष में होनेवाले एक जिनदेव के पूर्वजन्म नाम, जो भगवान् महावीर का श्रावक था (ठा ६—पत्र ४५५) । ३ न. सौ का समुदाय (गा ७०६, अच्छ १०१) ।

सयर देखो सायर = सागर (विसे ११८७) ।

सयरहं देखो सयराहं (स ७६२) ।

सयरा देखो सक्करा, 'सयर दहि च दूदं तूरतो कुणसु साहीण' (पउम ११५, ८) ।

सयराहं } अ [दे] १ शीघ्र, जल्दी (दे ८, सयराहा } ११, कुमा, गउड, चेइय ६१०) । २ युगन्त, एक साथ (विसे ६५६) । ३ अकस्मात् (श्रीप) ।

सयरि देखो सत्त-रि = सप्तति (पि २४५, ४४६) ।

सयरी स्त्री [शतावरी] वृक्ष-विशेष, शतावर का गाछ (पएह १—पत्र ३१) ।

सयल न [शकल] खंड, टुकड़ा (दे १, २८) ।

सयल वि [सकल] १ संपूर्ण, पूरा । २ सब, समग्र (गा ५३०; कुमा; सुपा १६७, द ३६, जी १४, प्रासू १०८, १६४) । °चंद पु [°चन्द्र] 'श्रुतास्वाद' का कर्ता एक जैन मुनि (आ १६६) । °भूसण पु [°भूषण] एक केवलज्ञानी मुनि (पउम १०२, ५७) । °देस पुं [°देश] सवपिस्ती वाक्य, प्रमाण-वाक्य (अच्छ ६२) ।

सयलि पुं [शकलिन्] मीन, मछली (दे ८, ११) ।

सयहत्थिय वि [सौवहस्तिक] १ स्व-हस्त से उत्पन्न । २ न शस्त्र-विशेष, 'महालोवि नरिदो मिल्हइ सयहत्थियं सयहत्थेण' (सिरि ४५१, ४५२) ।

सयाचार देखो स-याचार = सदाचार ।

सयाचार देखो सआ-चार = सदाचार ।

सयाण देखो स-याण = स-ज्ञान ।

सयालि पुं [शतालि] भारतवर्ष के भावी

समाणी सक [समा + नी] ले आना ।

समाणेइ (विसे १३२५) ।

समाणी देखो समाण = सन् ।

समाणु (अप) देखो सम (हे ४, ४१८, कुमा) ।

समादह सक [समा + दह] जलाना, मुलगाना । वहु समादहमाण (आचा १, ६, २, १४) ।

समादा सक [समा + दा] ग्रहण करना ।

सहु समादाय (आचा १, २, ६, ३) ।

समादान न [समादान] ग्रहण (राज) ।

समादिठु वि [समादिष्ट] फरमाया हुआ (मोह ८६) ।

समादिस सक [समा + दिश] आना करना । सहु समादिसिअ (नाट) ।

समादेस देखो समाएस (नाट—मालती ४६) ।

समाधारणया छी [समाधारणा] समान भाव से स्थापन (उत्त ३६, १) ।

समाधि देखो समाहि (ठा १०—पत्र ४७३) ।

समापणा छी [समापना] समाप्ति (विसे ३५६५) ।

समाभरिअ वि [समाभरित] आभरण-युक्त (अणु २५३) ।

समाय पु [समाज] १ सभा, परिषत् (उत्त ३०, १७, अचु ४) । २ पशु-मिल अन्यो का समूह, सघात । ३ हाथी (पड्) ।

समाय पु [समाय] सामायिक, संयम-विशेष (विसे १४२१) ।

समाय देखो समवाय, 'एते चैव य दोसा पुरिसममाएवि इत्थियाएवि' (सूअनि ६३, राज) ।

समाय देखो समयं (भा २६, १—पत्र ६४०) ।

समायण सक [समा + कर्णय] सुनना । सहु समायणिऊण (महा) ।

समायणन [समाकर्णन] श्रवण (गठड) ।

समायणिय वि [समाकर्णिय] सुना हुआ (काल) ।

समायय सक [समा + दय] ग्रहण करना, स्वीकार करना । समाययति (उत्त ४, २) ।

समायय देखो समागय (भवि) ।

समायर सक [समा + चर] आचरण करना । समायरइ (उवा, उव), समायरेसि (निमा ५) । सहु समायरियव्व (उवा) ।

समायरिय वि [समाचरित] आचरित (गठड) ।

समाया देखो समादा । सहु, समायाय (आचा १, ३, १, ४) ।

समायाय वि [समायात] समागत (उप ७२८ टी) ।

समायार पुं [समाचार] १ आचरण (विपा १ १—पत्र १२) । २ सदाचार (अणु १०२) । ३ वि आचरण करनेवाला (एदि ५२) ।

समार सक [समा + रचय] १ ठोक करना, दुस्त करना । २ करना, बनाना । समारइ (हे ४, ६५, महा) । भूका समारोअ (कुमा) । वहु समारत (पठम ६८, ४०) ।

समार सक [समा + रभ] प्रारम्भ करना । समारइ (पड्) ।

समार वि [समारचित] बनाया हुआ, 'अद्वसमारम्मि जरकुडीरम्मि' (सुर २, ६६) ।

समारभ सक [समा + रभ] १ प्रारम्भ करना । २ हिंसा करना । समारभेज्जा (आचा) । वहु समारभत, समारभमाण (आचा) । प्रयो, समारभावेज्जा (आचा) ।

समारभ पु [समारम्भ] १ पर-परिताप, हिंसा (आचा, पणह १, १—पत्र ५, आ ७), 'परितावकरो भवे समारभो' (सवाध ४१) । २ प्रारम्भ (कप्पु) ।

समारचण } न [समारचन] १ ठोक करना, समारण } दुस्त करना, 'कारेइ जिण-हराणं समारण जुएणभगपडियाण' (पठम ११, ३) । २ वि विधायक, कर्ता (कुमा) ।

समारद देखो समादत्त (सुर १, १, स ७६४) ।

समारभ देखो समारभ = समा + रभ ।

समारह } समारभे, समारभेजा, समारभेजासि, समारहइ (सूअ १, ८, ५, पि ४३०, पड्) । सहु, समारब्भ (पि ५६०) ।

समारिय वि [समारचित] दुस्त किया हुआ (कुप्र ३३४) ।

समारुह सक [समा + रुह] आरोहण करना, चढना । समारुहइ (भवि, पि ४८२) । वहु समारुहत (गा ११) । सहु समारुहिय (महा) ।

समारुहण न [समारोहण] आरोहण, चढना (सुपा २५३) ।

समारुठ वि [समारुठ] चढा हुआ (महा) ।

समारोव सक [समा + रोपय] चढाना । सहु, समारोविय (पि ५६०) ।

समालकार } देखो समलकार = सभल + समालके } कार्य । समालकारेइ, समालकेइ (श्रीप, आचा २, १५, १८) । सहु समालकारेत्ता, समालकेत्ता (श्रीप, आचा २, १५, १८) ।

समालव पु [समालम्ब] आलम्बन, सहारा (संवेध ४०) ।

समालभण न [समालम्भन] अलंकरण, विभूषा करना, 'भगलममालभणाणि विरएमि' (अभि १२७) । देखो समालभण ।

समालत्त वि [समालपित] उक्त, कथित, 'पवणजओ समालत्तो' (पठम १५, ८८) ।

समालभण न [समालभन] विलेपन, अग्रगण (सुर १६, १४) । देखो समालभण

समालव सक [समा + लप्] विस्तार ने कहना । समालवेज्जा (सूअ १, १४, २४) ।

समालवणी छी [समालपनी] वाद्य-विशेष, 'वेणुवीणासमालवणिरवसुदरं मल्लरिधोससमी-सखरकुहिनर' (सुपा ५०) ।

समालविय देखो समालत्त (भवि) ।

समालह सक [समा + लभ] १ विलेपन करना । २ विभूषा करना, अलंकार पहनना । सहु समालहिवि (अप) (भवि) ।

समालहण देखो समालभण (सुपा १०८, दस ३, १ टी, नाट—शकु ७३) ।

समालाव पुं [समालाप] वातचीत, सभापण (पठम ३०, ३) ।

समालिगिय वि [समालिङ्गित] आलिङ्गित, आश्लित (भवि) ।

समालाढ वि [समालिष्ट] ऊपर देखो (भवि) ।

सरभेअ वि [दे] स्मृत, याद किया हुआ (दे ८, १३) ।

सरमय पु.व. [शर्मक] देश-विशेष (पञ्चम ६८, ६५) ।

सरय पुंन [शरद्] ऋतु-विशेष, आसोज—आश्विन तथा कार्तिक का महीना (पएह २, २—पत्र ११४, गडड, से १, २७, गा ५३४, स्वप्न ७०, कुमा, हे १, १८), 'मुय माणं माण पियं पियसरय जाव वच्चए सरय' (वज्जा ७४) । °चंद पु [°चन्द्र] शरद् ऋतु का चाँद (गाया १, १—पत्र ३) । देखो सर = शरद् ।

सरय पुं [शरक] काष्ठ-विशेष, अग्नि उत्पन्न करने के लिए अरणि का काष्ठ जिससे घिमा जाता है वह (गाया १, १८—पत्र २४१) ।

सरय पुन [सरक] १ मय-विशेष, गुड तथा घातकी का बना हुआ दारु (पएह २, ५—पत्र १५०, सुपा ४८५, गा ५५१ अ, कुप्र १०) । २ मद्य-पान (वज्जा ७४) ।

सरय देखो स-रय = स-रत ।

सरय (अप) पु [सरस] छन्द-विशेष (पिंग) ।

सरल पु [सरल] १ वृक्ष-विशेष (पएह १—पत्र ३४) । २ ऋतु, माया-रहित (कुमा, सण) । ३ सीधा, अवक्र (कुमा, गडड) ।

सरलिअ वि [सरलित] सीधा किया हुआ (कुमा, गडड) ।

सरली स्त्री [दे] चौरिका, क्षुद्र कीट-विशेष, भीगुर (दे ८, -) ।

सरलीआ स्त्री [दे] १ जन्तु-विशेष, साही, जिसके शरीर में काँटे होते हैं । २ एक जात का कीड़ा (दे ८, १५) ।

सरव पुं [शरप] भुजपरिस्प की एक प्रकार (सूत्र २, ३, २५) ।

सरस वि [सरस] रस-युक्त (श्रौप, अत, गडड) । °रण पु [°रण्य] समुद्र, सागर (से ६, ४३) ।

सरसिज १ न [सरसिज] कमल, पद्म सरसिय १ (हम्मीर ५१, रभा) ।

सरसिरुह न [सरसिरुह] कमल, पद्म (उप ७२८ टी, सम्मत ७६) ।

सरसी स्त्री [सरसी] बड़ा तालाव—तडाग (श्रौप, उप पृ ३८, सुपा ४८५) । °रुह न [°रुह] कमल (सम्मत १२०, १३६) ।

सरस्सई स्त्री [सरस्वती] १ वाणी, भारती, भाषा (पात्र, श्रौप) । २ वाणी की अघिष्ठात्री देवी (सुर १, १५) । ३ गीतरति नामक इन्द्र की एक पटरानी (ठा ४, १—पत्र २०४, गाया २—पत्र २५२) । ४ एक राज-पत्नी (विपा २, २—पत्र ११२) । ५ एक जैन साध्वी जो सुप्रसिद्ध कालकाचार्य की बहिन थी (काल) ।

सरह पु [शरभ] १ शिकारी पशु की एक जाति (सुपा ६३२) । २ हरिवश का एक राजा (पञ्चम २२, ६८) । ३ लक्ष्मण के एक पुत्र का नाम (पञ्चम ६१, २०) । ४ एक सामन्त नरेश (पञ्चम ८, १३२) । ५ एक वानर (मे ४, ६) । ६ छन्द-विशेष (पिंग) ।

सरह पुं [दे] १ वृक्ष-विशेष, वेतस या बेंत का पेड़ (दे ८, ४७) । २ सिंह, पञ्चानन (दे ८, ४७, सुर १०, २२२) ।

सरह (अप) वि [इलाह्य] प्रशस्तनीय (पिंग) ।

सरहस देखो स-रहस = स-रभस ।

सरहा स्त्री [सरघा] मधु-मक्षिका (दे २, १००) ।

सरहि पुं स्त्री [शरधि] तूणीर, तीर रखने का भाया—तरकस (मे ७०) ।

सरा स्त्री [दे] माला (दे ८, २) ।

सराग देखो स राग = स-राग ।

सराडि स्त्री [शराटि, शराडि] पक्षी की एक जाति (गडड) ।

सराव पु [शराव] मिट्टी का पात्र-विशेष, सकोरा, पुरवा (दे २, ४७, सुपा २६६) ।

सरासण देखो स-रासण = शरासन ।

सराह वि [दे] दर्पोद्भूत, गर्व से उद्धत (दे ८, ५) ।

सराहय पुं [दे] सर्प, साँप (दे ८, १२) ।

सरि वि [सदृश] सदृश, सरीखा, तुल्य (भग, गाया १, १—पत्र ३६, अंत ५, हे १, १४२, कुमा) ।

सरि स्त्री [सरित्] नदी (से २, २६, सुपा ३५४, कुप्र ४३, भत्त १२३, महा) ।

°नाह पु [°नाथ] समुद्र (धर्मवि १०१) । देखो सरिआ ।

सरिअ वि [स्मृत] याद किया हुआ (पञ्चम ३०, ५४, सुपा २२१, ४६२) ।

सरिअ देखो सरि = सदृश, 'मोमेमाणा सरिय संपत्तिया थिरजया देविदा' (श्रौप) ।

सरिअ न [सृतम्] श्रलं, पर्याप्त, बस, 'बहुभणिएण सरिअ' (रयण ५०) ।

सरिआ स्त्री [सरित्] नदी (कुमा, हे १५, महा) । °वड पु [°पति] समुद्र (मे ७, ४१, ६, २) ।

सरिआ स्त्री [दे] माला, हार (पएह १, ४—पत्र ६८, कुप्र ३, सुपा ३४३) ।

सरिअस्स १ वि [सदृश] सदृश, समान, सरिअस्स २ तुल्य (प्राक् ८६, प्राप्र, हे १, १४२, २, १७, कुमा) ।

सरिअ वि [स्मृत] स्मरण-कर्ता (ठा १—पत्र ४४४) ।

सरिभरी स्त्री [दे] समानता, सरोखाई, गुजराती में 'सरभर', 'तम्रो जाया दोएहवि सरिभरी' (महा १०) ।

सरि देखो सरीर (पव २०५) ।

सरिवाय पुं [दे] आसार, वेगवाली वृष्टि (दे ८, १२) ।

सरिस वि [सदृश] समान, मरीखा, तुल्य (हे १, १४२, भग, उव, हेका ४८) ।

सरिस पुन [दे] १ सह, साथ,

'का समसीसी तिर्यसिदयाण

वडवालणुस्म सरिसम्मि ।

उवसमियसिहोपसरो

मयरहरो इधण जस्स ।

(वज्जा १५४) ।

“आडत्तो संगामो वलवडणा तेण सरिसोत्ति” (महा) । २ तुल्यता, समानता (संक्षि ४७), “अतेउरसरित्तेणं पलोइयं नरवरिदेण” (महा) ।

सरिसरी देखो सरिभरी (महा) ।

सरिसव पु [सर्पप] सरनो (चड, श्रौप ४०६, सं ४४, कुमा, कम्म ४, ७४, ७५, ७७, गाया १, ५—पत्र १०७) ।

सरिसाहुल वि [दे] समान, सदृश (दे ८, ६) ।

सरिस्सव देखो सरीसव (पञ्चम २०, ६२) ।

समाहिअ वि [समाहृत] गृहीत (आचा १, ८, ५, ७) ।

समाहिअ वि [समाख्यात] सम्यग् कथित (सूत्र १, ६, २६, आचा २, १६, ४) ।

समाहुत्त (अप) नीचे देखो (भवि) ।

समाहूअ वि [समाहृत] बुलाया हुआ, आकारित (मावं १०५) ।

समाहे सक [समा + वा] स्वस्थ करना, 'सुकृष्णार्ण समाहेइ' (सवोच ५१) ।

समि खी [शमि] देखो समी (अणु, पात्र) ।

समि वि [शमिन्, °क] १ शम-युक्त ।

समिअ } २ पुं साधु, मुनि (सुपा ४३६, ६४२, उप १४२ टी) ।

समिअ देखो सत = शान्त (सिरि ११०४) ।

समिअ वि [समित] सम्यक् प्रवृत्ति करने-वाला, सावधान होकर गति आदि करनेवाला (भग, उप ६०४, कप, औप, उव; सूत्र १, १६, २, पव ७२) । २ राग-आदि से रहित (सूत्र १, ६, ४) । ३ उपपन्न (सुज ६) । ४ सम्यग् गत (सूत्र १, ६, ४) । ५ सन्तत (ठा २, २—पत्र ५८) । ६ सम्यग् व्यवस्थित (सूत्र २, ५, ३१) ।

समिअ वि [सम्यञ्च] १ सम्यक् प्रवृत्ति-वाना (भग २, ५—पत्र १४०) । २ अच्छा, सुन्दर, शोभन, समीचीन (सूत्र २, ५, ३१) ।

समिअ वि [शमित] शान्त किया हुआ (विने २४५८, औप, परह २, ५—पत्र १४८, सण) ।

समिअ वि [श्रमित] श्रम-युक्त (भग २, ५—पत्र १६०) ।

समिअ वि [समिक] सम, राग-द्वेष-रहित, 'समियमावे' (परह २, ५—पत्र १४६) ।

समिअ न [साम्य] समता, रागादि का अभाव, सम-भाव (सूत्र १, १६, ५, आचा १, ८, ८, १४) ।

समिअ वि [समित] प्रमाणोपेत (आया १, १—पत्र ६२, भग) ।

समिअ वि [सामित] गेहूँ के भाटा का बना हुआ पकान-विशेष, मण्डक (पिंड २४५) ।

समिअ अ [सम्यग्] अच्छी तरह (आचा, परह २, ३—पत्र १२३) ।

समिआ खी. अ ऊपर देखो (भग २, ५—पत्र १४०, आचा १, ५, ५, ४), 'समियाए' (आचा १, ५, ५, ४) ।

समिआ खी [समिता] गेहूँ का भाटा (आया १, ८—पत्र १३२, सुख ४, ५) ।

समिआ खी [समिका, शमिका, शमिता] चमर आदि सब इन्द्रों की एक अभ्यन्तर परिपद् (भग ३, १० टी—पत्र २०२) ।

समिइ खी [समिति] १ सम्यक् प्रवृत्ति, उपयोग पूर्वक गमन-भाषण आदि क्रिया (सम १०, ओघमा ३, उव, उप ६०२, रयण ४) ।

२ समा, परिपद्, 'नत्थि किर देवलोगेवि देवसमिईसु ओगासो' (विने १३६ टी, तदु २५ टी) । ३ युद्ध, लड़ाई (रयण ४) । ४ निरन्तर मिलन (अणु ४२) ।

समिइ खी [स्मृति] १ स्मरण । २ शास्त्र-विशेष, मनुस्मृति आदि (सिरि ५५) ।

समिइम वि [समितिम] गेहूँ के भाटे की बनी हुई मडक आदि वस्तु (पिंड २०२) ।

समिजग पु [समिजक] श्रीन्द्रिय जन्तु की एक जाति (उत्त ३६, १३६) ।

समिक्ख सक [सम् + ईक्ष्] १ आलोचना करना, गुणदोष-विचार करना । २ पर्यालोचन करना, चिन्तन करना । ३ अच्छी तरह देखना, निरीक्षण करना । समिक्खए (उत्त २३, २५) । सक, समिक्ख (सूत्र १, ६, ४, उत्त ६, २, महा, उपप २५) ।

समिक्खा खी [समीक्षा] पर्यालोचना (सूत्र १, ३, ३, १४) ।

समिक्खअ वि [समीक्षित] आलोचित (धर्मसं ११११) ।

समिच्च देखो समे ।

समिच्छण न [समीक्षण] समीक्षा (भवि) ।

समिच्छिय देखो समिक्खअ (भवि) ।

समिज्झा अक [सम् + इन्ध्] चारो तरफ से चमकना । समिज्झाइ (हे २, २८) । वहु समिज्झन्त (कुमा ३, ४) ।

समिता देखो समिआ = समिका (ठा ३, २—पत्र १२७, भग ३, १०—पत्र ३०२) ।

समिद्ध वि [समृद्ध] १ अतिशय संपत्तिवाला (औप, आया १, १ टी—पत्र १) । २ वृद्ध, बढ़ा हुआ (प्रासू १३) ।

समिद्धि खी [समृद्धि] १ अतिशय संपत्ति । २ वृद्धि (हे १, ४४, पड, कुमा, स्वप्न ६५, प्रासू १२८) । °ल वि [°ल] समृद्धिवाला (सुर १, ४६) ।

समिर पु [समिर] पवन, वायु (सम्मत्त १५६) ।

समिरिईअ } देखो स-मिरिईअ = समरी-
मिरीय } चिक ।

समिला खी [शमिला, सम्या] युग-कोलक, गाड़ी की घोंसरी में दोनों ओर डाला जाता लकड़ी का खोला (उप पृ १३८, सुपा २५८) ।

समिल्ल देखो समिल्ल । समिल्लइ (पड) ।

समिहा खी [समिध्] काष्ठ, लकड़ी (अत ११, पउम ११, ७६, पिंड ४४०) ।

समी खी [शमी] १ वृक्ष-विशेष, छोंकर का पेड़ (सूत्र १, २, २, १६ टी, उप १०३१ टी, वजा १५०) । २ शिवा, छिमी, फली (पात्र) । °खल्लय न [दे] छोंकर की पत्ती, शमी वृक्ष का पत्र-पुट (सूत्र १, २, २, १६ टी, वृह १) ।

समीअ देखो समीव (नाट—मालवि ५) ।

समीकय वि [समीकृत] समान किया हुआ, 'ज किंचि अणण तात तपि समीकत' (सूत्र १, ३, २, ८, गउड) ।

समीचीण वि [समीचीन] साधु, सुन्दर, शोभन (नाट—चैत ४७) ।

समीर सक [सम् + ईरय्] प्रेरणा करना । समीरण (आचा १, ८, ८, १७) ।

समीर पु [समीर] पवन, वायु (पात्र, गउड) ।

समीरण पु [समीरण] ऊपर देखो (गउड) ।

सम ल देखो समील । समीलइ (पड) ।

समीव वि [समीप] निकट, पास (पउम ६६, ८, महा) ।

समीह सक [सम् + ईह्] चाहता, वाछा करना । वहु. समीहमाण (उप ३२० टी) ।

समीहा खी [समीहा] इच्छा, वाछा (उप १०३१ टी) ।

सल्लुद्धरण न [गल्लोद्धरण] १ शन्य को बाहर निकालना (विा १, ८—पत्र ८६) ।
२ आलाचना प्रायश्चित्त के लिए गुरु के पास दूषण-निवेदन (श्रौच ७६१) ।

सल्लेहणा देखो सल्लेहणा (नारा ३५, भवि) ।
सल्लेहि ! वि [सल्लेखन] आण, 'मत्तेहिया कमाया करति मुणियो ए विससखोह' (आरा ३६) ।

सव सक [शप] १ शाप देना, आक्रोश करना गाली देना । २ आह्वान करना ।
सवइ (गा ३२४ ४००) नविमो, सवमु (कुमा) । कर्म सणए (विने २२२७) । वक्क सवमाण (उव) । कवक्क सपमाग (पण्ड १, ३—पत्र ५८) ।

सव सक [सृ] उत्पन्न करना जन्म देना ।
नवइ (हं ४, २३३, पड) ।

सव देखो स। = मु । सवइ, सवर (पड) ।

सव सक [सृ] भरना टपटना, छूना । सवइ (विने १३६८) ।

सव पु [श्रवस] १ कान । २ स्थाति, 'सवोमूआ' (प्राप्र) ।

सव न [राव] शत्रु, मुरदा मृत शरीर (पाप्र, स ७६३, सण) ।

सवर्ता छो [स्वर्गता] नरी (उप १०३१ टी) ।

सवक्क देखो सवत्ती (सुपा ३३७, ६०१, सूक्त ४६, महा, कुप्र १७०) ।

सवक्ख देखो स-वक्ख = स-पक्ष ।

सवग्गीय वि [रावर्गीय] सवर्ग-सवन्वी (हास्य १३०) ।

सवच देखो स-वच = श्व-पच ।

सवज्जा देखो सपज्जा (वेइय २०४, कप्पू) ।

सवडहुह } वि [दे] अभिमुख, समुख,
सवडहुत्त } 'सहसा सवडहुहो चलिआ'
(महा दे ८, २१, पउम ७२, ३२, भवि),
उ'आ नहुयल विमाण्यो अह ताण
सवडहुत्तो रणारसनणालुओ सहसा' (पउम ८, ४७), 'वच्चइ य दाहिणदिस लकानयरो-
सवडहुत्ता' (पउम ८, १३४) ।

सवण देखो स-वण = श्रमण (आरा ३६, भवि) ।

सवण पु [श्रवण] १ कर्ण, कान (पाप्र, सुपा १२८) । २ नक्षत्र-विशेष (मम ८, १५, सुज १०, ५) । ३ न. आकर्ण, सुनना (भग, सुर १, २४६) । देखो सवन ।

सवण न [जपन] आह्वान (विने २२२७) ।

सवण देखो स-वण = स-वण ।

सवण न [रावन] कर्मों में प्रेरणा (राज) ।

सवणता } छो [श्रवणता] १ आकर्ण, सवणता } श्रवण, सुनना (ठा २, १—
पत्र ४६, ६—पत्र ३५५, एया १, १—
पत्र २६, भग, औप) । २ श्रवण-ज्ञान (एयादि १७४) ।

सवणग वि [सवर्ग] समान वर्णवाला (पउम २, २१) ।

सवणण न [सावर्ण्य] समान-वर्णता (प्रयौ २०) ।

सवत्त पु [रापत्त] १ दुश्मन, शत्रु, रिपु, (से ३, ५७, उप १०३१ टी, गठड) । २ वि. विरुद्ध (श्रौच २७६) । ३ समान, तुल्य, 'सयवत्तसवत्तनयणरमणिज' (कुप्र २), 'सयमेव ससिसवत्त छत्त उवरि ठिय तप्प' (कुप्र ११६) ।

सवत्तेणो देखो सवत्ती, 'सवि (? व)त्तिणी' (पिड ५१०) ।

सवत्तिगा छो [सपत्तिका] नीचे देखा (उवा) ।

सवत्ती छो [सपत्ती] पति की दूसरी छो (उवा, काप्र ८७१, स्वप्न ७७ ठा ४, २—
पत्र २८२, हेका ४५) ।

सवन (मा) पु [श्रवण] एक ऋषि का नाम (मोह १०६) । देखो सवण = श्रवण ।

सवन्न देखो सवण (हम्मोर १७) ।

सवय देखो स-वय = स-वयस, स-व्रत ।

सवर देखो सवर (पउम ६८, ६५, इक, कप्पू, पि २५०) ।

सवरिआ देखो सपज्जा (नाट—वेणी २६) ।

सवल देखो सवल (दे ०, १५ कुमा हं १, १३, रभा) ।

सवल्लिआ छो [द] भराव का एक प्राचीन जैन मन्दिर (मुणि १०८६६) ।

सवह पु [शपय] १ आक्रोश वचन, गाली (एया १, १—पत्र २६, देवेन्द्र ३५) । २ मोगन्व, मोह (गा ३३३, महा) । ३ दिव्य, दापारोप की शुद्धि के लिए किया जाता अग्नि-प्रवेश आदि (पउम १०१, ७) ।

सवाय पु [दे] श्येन पक्षी (दे ८, ७) ।

सवाय } देखो स-वाय = श्व-पाक ।
सवाय }

सवाय देखो स-वाय = स-पाद, स-वाद, स-वाच् ।

सवार न [दे] सुवह, प्रभात, गुजराती में 'सवार' (वृह १) ।

सवास पु [दे] ब्राह्मण (दे ८, ५) ।

सवाल देखा स-वास = स-वास ।

सविअ वि [शप्त] शाप-ग्रन्थ, आक्रु (दे १, १३, पाप्र) ।

सविउ पु [सवितृ] १ सूर्य रवि (श्रौच ६६७) । २ हस्त-नक्षत्र का अविजति देव (सुज १०, ६२) । ३ हस्त नक्षत्र (अणु) ।

सविकख वि [रापेक्ष] अथवा रखनेवाला (गम्मत्त ७६) ।

सविज्ज देखो स-विज्ज = स-विद्य ।

सविट्ठा छो [श्रविष्ठा] नक्षत्र-विशेष, वनिष्ठा नक्षत्र (राज) ।

सविग देखो सुमिग = स्वप्न (पव ६८) ।

सवितु देखो सविउ (ठा २, ३—पत्र ७७) ।

सविम न [दे] मुरा, दाह (दे ८, ४) ।

सविह न [सविध] पास, निकट (पाप्र) ।

सव्व वि [सव्य] वाम, बाया (औप, उप पृ १३०) ।

सव्व वि [श्रव] श्रवण योग्य, 'सव्वक्खरमं-
निवाई' (भग १, १—पत्र ११) ।

सव्व न [सर्व] १ सब, सकल, समस्त । २ सूर्य (हं ३, ५८, ५६) । ३ आ. प्र [नस] १ मव से । २ सब श्रोत से (हं १, ३७, कुमा आचा) । ३ ओ. भद्र वि [तोभद्र] १ सब प्रकार से सुखी । २ न सब प्रकार से मुक्त (पत्र १) । ३ चक्र विशेष शुभाशुभ के ज्ञान का साधन-भूत एक चक्र (ति ६) । ४ महाशुक्र देवलोका में स्थित एक विमान (मम ३२) । ५ प. चवा श्रैवेयक विमान

समुज्जाय वि [समुद्यात] १ निर्गत (विसे २६०६)। २ ऊँचा गया हुआ (कण्)।

समुज्जोअ अक [समुद् + जुन्] चमकना, प्रकाशना। वहु समुज्जोयत (पठम ११६, १७)।

समुज्जोअ पुं [समुद् + ज्योत] प्रकाश दीप्ति (सुपा ४० महा)।

समुज्जोवय सक [समुद् + द्योतय] प्रकाशित करना। वहु समुज्जोवयंत (म ३४=)।

समुज्झ सक [समुद् + उज्झ] त्याग करना। सहु समुज्झिऊण (वि ८७)।

समुट्ठा अक [समुत् + स्था] १ उठना। २ प्रयत्न करना। ३ ग्रहण करना। ४ उत्पन्न होना। सहु समुट्ठिऊण (सण), समुट्ठाए, समुट्ठिऊण (आवा १, २, २, १, १, २, ६, १, सण)।

समुट्ठाइ वि [समुत्थायिन्] सम्यग् यत्न करनेवाला (आवा)।

समुट्ठाइअ देखो समुट्ठिअ (स १२५)।

समुट्ठाण न [समुपस्थान] फिर से वास करना। सुय न [श्रुत] जैन शास्त्र विशेष (णदि २०२)।

समुट्ठाण न [समुत्थान] १ सम्यग् उत्थान। २ निमित्त, कारण (राज)। देखो समुत्थान।

समुट्ठिअ वि [समुत्थित] १ सम्यक् प्रयत्न-शील (सूत्र १, १४, २२)। २ उपस्थित। ३ प्राप्त (सूत्र १, ३, २, ६)। ४ उठा हुआ, जो खड़ा हुआ हो वह (सुर १, ९६)। ५ अनुष्ठित, विहित (सूत्र १, २, २, ३१)। ६ उत्पन्न (णया १, ६—पत्र १५६)। ७ आश्रित (राज)।

समुट्ठाण वि [समुट्ठान] उठा हुआ (वज्जा ६२, मोह ६३)।

समुण्णइय देखो समुत्तइय (राज)।

समुत्त न [समुत्त] १ गोत्र-विशेष। २ पुंस्त्री उस गोत्र में उत्पन्न, 'समुता (?ता)' (ठा ७—पत्र ३६०)। देखो समुत्त।

समुत्तइय वि [दे] गवित (पिंड ४६५)।

समुत्तर सक [समुत् + तृ] १ पार जाना। २ अक नीचे उतरना। ३ अवतीर्ण

होना। समुत्तरइ (गठ ६४१, १०६६)। सहु समुत्तरेवि (अप) (भवि)।

समुत्तारायि वि [समुत्तारित] १ पार पहुँचाया हुआ। २ कूप आदि से बाहर निकाला हुआ (म १०२)।

समुत्तास सक [समुत् + तास] अति-शय भय उपजाना। समुत्तासेदि (शौ) (नाट—मालती ११६)।

समुत्तिण वि [समवतीर्ण] अवतीर्ण (पठम १०६, ४२)।

समुत्तुंग वि [समुत्तुङ्ग] अति ऊँचा (भवि)।

समुत्तुण वि [दे] गवित (गठ)।

समुत्थ वि [समुत्थ] उत्पन्न (स ४८ ठा ४, ४ टी—पत्र २८०, सुर २, २२५, सुपा ४७०)।

समुत्थइ देखो समुत्थय = समुत् + स्थग्य।

समुत्थण न [समुत्थान] उत्पत्ति (णया १, ६—पत्र १५७)।

समुत्थय सक [समुत् + स्थग्य] आच्छादन करना, ढकना। हेहु. समुत्थइ (गा ३६४ अ, वि ३०६)।

समुत्थय वि [समवस्तृत] आच्छादित (कुप्र १६०)।

समुत्थल्ल वि [समुच्छलित] उछला हुआ (स ५७८)।

समुत्थाण न [समुत्थान] निमित्त, कारण (विसे २८२८)। देखो समुट्ठाण।

समुत्थिय देखो समुट्ठिअ (भवि)।

समुदय पु [समुद्य] १ समुदाय, संहति, समूह (औप, भग, उवर १८६)। २ समुन्नति, अभ्युदय (कुप्र २२)।

समुदाआर } देखो समुआचार (स्वप्न समुदाचार } ४५, नाट—शकु ७७, औप, स ५६५)।

समुदाण न [समुदान] १ भिक्षा (औप)। २ भिक्षा-समूह (भग)। ३ क्रिया-विशेष, प्रयोग-नृहीत कर्मों की प्रकृति-स्थित्यादि-रूप से व्यवस्थित करनेवाली क्रिया (सूत्रनि १६६)। ४ समुदाय (आव ४)। ५ चर वि [चर] भिक्षा की खोज करनेवाला (पणह २, १—पत्र १००)।

समुदाग सक [समुदानय] भिक्षा के लिए भ्रमण करना। सहु समुदाणेऊण (पणह २, १—पत्र १०१)।

समुदाणिअ देखो सामुदाणिय (औप, भग ७, १—पत्र २६३)।

समुदाणिगा बी [सामुदानिगी] क्रिया-विशेष, समुदान-क्रिया (सूत्रनि १६८)।

समुदाय पु [समुदाय] समूह (अणु २७० टी, विसे ६२१)।

समुदाहिय वि [समुदाहृत] प्रतिपादित, कथित (उन ३६, २१)।

समुदिअ देखो समुइअ = समुदित (सूत्रनि १२१ टी, सुर ७, ५६)।

समुदिण देखो समुइअ (राज)।

समुदीर सक [समुद् + ईरय] १ प्रेरणा करना। २ कर्मों को खींच कर उदय में लाना, उदीरणा करना। वहु. समुदी [दी] रेमाण (णया १, १७—पत्र २२६)। सहु. समुदीरिऊण (सम्यक्त्वो ५)।

समुद पु [समुद्र] १ सागर, जलवि (पाप्र, णया १, ८—पत्र १३३, भग, से १, २१, हे २, ८०, कप्पू, प्रासू ६०)। २ अन्वकवृष्णि का षष्ठ पुत्र (अत ३)। ३ आठवें बलदेव और वानुदेव के पूर्वजन्म के धर्म-गुरु (सम १५३)। ४ बेलन्वर नगर का एक राजा (पठम ५४, ३६)। ५ शाण्डिल्य मुनि के शिष्य एक जैन मुनि (णदि ४६)। ६ वि. मुद्रा-सहित (से १, २१)। ७ दत्त पुं [दत्त] १ चौथे वासुदेव का पूर्वजन्मीय नाम (सम १५३)। २ एक मच्छीमार का नाम (विपा १, ८—पत्र ८२)। ३ दत्ता बी [दत्ता] १ हरिपेण वासुदेव की एक पत्नी (महा ४४)। २ समुद्रदत्तमच्छीमार की भायाँ (विपा १, ८)। ३ लिक्खा बी [लिक्खा] द्विन्द्रिय जंतु की एक जाति (पणह १—पत्र ४४)। ४ विजय पुं [विजय] १ चौथे चक्रवर्ती राजा का पिता (सम १५२)। २ भगवान् अरिष्टनेमि का पिता (सम १५१, कप्प, अंत)। ३ सुआ बी [सुता] लक्ष्मी (समु १५२)। देखो समुद्र।

सन्निवर देखो स-निवर = स-विवर ।

सन्निषिद्धि लो [सन्निषिद्धि] १ लब्ध-विशेष, जिके प्रभाव ने शरीर की कफ आदि सब चीज औषधि का काम करती है (पृष्ठ २, १—पृष्ठ ६६) । २ वि लब्ध-विशेष को प्राप्त (राज) ।

सस अक [-स] श्वास लेना ममता । ससइ (खण्ड ६) । दक ससन (गाथा १, १—पृष्ठ ६३ गा ५५६, सुर १२, १६४, नाट—मृच्छ २२०) ।

सस पं [गर] खरगोश (गाथा १, १—पृष्ठ २४, ६०) । इय पु [चिह्न] चन्द्रमा (गड्ड) । हर पु [वर] चन्द्रमा (गाथा १, ११, सुर १६, ६०, ह ३, ८५, कुमा, वज्रा १६, रमा) ।

ससक पं [सगाङ्क] १ चन्द्रमा, चांद (कप्प, सुर १६ ५५, सुपा २, कप्प, रमा) । २ नृप विशेष (पञ्चम ५, ४३, ८५, २) । ३ वस्म पृ [वमे] विद्यावर-वंश का एक राजा (पञ्चम ५, ४४) ।

ससक देखो स-सक = स-शङ्क ।

ससकिअ देखो स-सकिअ = स-शङ्कित ।

ससग देखो ससक = शशाङ्क ।

ससवेण देखो स-सवेयण = स-संवेदन ।

ससकय वि [ससाक्ष्य] साक्षीवाला (राय १४०) ।

ससग पु [शराक] देखो सस = शश (उव) ।

ससण पु [चसन] १ शृङ्गा-दण्ड, हाथी की सूँड (नटु २, औप) । २ वायु, पवन । ३ न. निखाल (राज) ।

ससत्ता देखा स-सत्ता = स-सत्त्वा ।

ससरक्ख वि [सरजस्क, सरक्ष] १ रजो-युक्त, धूलावाला (आचा २, १, ६, ३, २, ३, ३३, आवा ४) । २ पु. बौद्ध मत का साधु (मुख १८, ४३, मत्ता) ।

सससईअ वि [द] निष्पिष्ट, पिसा हुआ (दे ८, २) ।

सस लो [स्यम] वहन, भगिनी (पिड ३१७, हे ३, ३५ कुमा) ।

ससि पु [शशिम] १ चन्द्रमा, चांद (मुज्ज २०—पृष्ठ २६१, उव, कप्प, कुमा, पि ४ ५) । २ एक विद्यार्थी का नाम (पञ्चम ५ ६४) । ३ चन्द्र नाडी, वाम नाडी (मिरि ३६१) । ४ एक देव-विमान (देवेन्द्र १४३) । ५ छन्द-विशेष (पिप) । ६ एक राजा का नाम (उव) । ७ दक्षिण रुचक पर्वत का एक कूट (ठा ८—पृष्ठ ४३६) । ८ अंत पु [कान्त] चन्द्रकान्त मणि (गन्तु ५८) । ९ अला लो [कला] चन्द्र की कला, सोनहवां भाग (गड्ड) । १० कन देवो अंत (कुमा, मण) । ११ पभ पठ पु [प्रम] १ भाठवें जिनदेव, भगवान् चन्द्रप्रभा । २ उवाकु वश का एक राजा (पञ्चम ५, ५) । ३ पहा लो [प्रभा] एक रानी, कर्पूरमजरो की माता (पञ्चम ६, ६१, कप्प) । ४ मणि पुली [मणि] चन्द्रकान्त मणि (न ६, ६७) । ५ लेहा लो [लेहा] चन्द्र की कला (सुपा ६०३) । ६ वक्कय न [वक्कय] आभूषण-विशेष (औप) । ७ वेग पु [वेग] एक राज-कुमार (उप १०३१ टी) । ८ सेहर पु [शेखर] महादेव, शिव (सुपा ३३) ।

ससिअ न [श्वासित] श्वास, साँस (ने १२, ३२) ।

ससिण देखो ससि (कप्प) ।

सासणिद्ध वि [सस्तिगध, सस्तिगध] स्नेह-युक्त (आचा २, १, ७, ११, कप्प) ।

समित्थ न [ससिक्] आटा आदि से लिप्त हाथ या वस्त्र आदि का धोवन (पडि) ।

ससिरिय } देखो स-सिरिय = स-श्रीक ।
ससिरीय }

ससिह देखो स-निह = स-स्पृह स शिख ।

ससुर पुं [श्वर] नरुर, पति और पत्नी का पिता (पञ्चम १८, ८, हेका ३२, कुमा, सुपा ३७७) ।

ससृग देखो स-सृग = स-शूक ।

ससेम देखो स-सेस = स-शेष ।

ससोग } देखो स-सोग = स-शोक ।
ससोगिह }

ससस न [जस्य] १ क्षेत्र-गत धान्य (गा ६८६, महा, सुपा ३२) । २ वि प्रशमनीय, श्लाघ्य (सुपा ३२) । देखा सान = शस्य ।

सरस्वण वि [सश्रवण] सकर्ण निपुण (सुपा ६४५) ।

सरसिय पु [सरियक] छपीवल, कृपक (राज) ।

सस्मिरिअ देखो स-स्मिरिअ = स-श्रीक ।

सस्मिरिली देखो सस्मिरिली (उत्त ३६, ६८) ।

सन्सिरीअ देखो स-स्मिरीअ = स-श्रीक ।

सरसू लो [श्वधू] सास, पति या पत्नी की माता (प्राक ३८ सिरि ३५५) ।

सह अक [राज] गोभता, विराजना । सहइ (हे ४, १००, पाप्र, कुमा, सुपा ६) ।

सह अक [सह] सहन करना । सहइ, सहति (उव, महा, कुमा), सहइरे, सहइरे (पि ४५८) वक्क. सहन, महमाण (महा, पड्) । सह सहिअ (महा) । हेक सहिउ, सोहु (महा, धात्वा १५५, १५७) । क. सहिअव्व, सोढव्व (धात्वा १५५, सुर १४, ८०, गा १८, कप्प, उप ७२८ टी, धात्वा १५७) ।

सह सक [आ + ज्ञा] हुकुम करना प्रादेश करना, फरमाना । सहइ (धात्वा १५५) ।

सह वि [दे] १ योग्य, लायक (दे ८, १) ।

२ सहाय, मदद-कर्ता (सूत्र १, ३, २, ६) ।

सह वि [स्व] देखो स = स्व (आचा) ।

३ देस पु [देश] स्वदेश, स्वकीय देश (पिप) ।

४ संयुद्ध वि [संयुद्ध] १ निज से ही ज्ञान को प्राप्त । २ पु. जिन-देव (औप) ।

सह वि [सइ] १ समर्थ, शक्तिमान् (पाप्र, से ५, २३) । २ सहिष्णु, सहन कर्ता (आचा) । ३ पुं युगलिक मनुष्य की एक जाति (इक, राज) । ४ अ साथ, सग (स्वप्न ३४, आचा, जी ४३, प्रामू ३८) । ५ युगपत्, एक साथ (राज) । ६ कार पु [कार] १ ग्राम का पेड़ (कप्प) । २ साथ मिलकर काम करना । ३ मदद, साहाय्य (हे १, ७७) ।

७ कारि वि [कारि] १ साहाय्य-कर्ता (पचा ११, १२) । २ कारण-विशेष (विसे ११६८, आवाक २०६) । ३ गत, गत वि [गत] सयुक्त (पण, २२—पृष्ठ ६३७, उव) । ४ गारि, गारिअ देखो कारि (धर्मस ३०६, उप ४७२, उवर ७६) । ५ चर देखो

समुहस अक [समुन् + लस्] उल्लसित होना, विकसना। समुलसइ (नाट—विक्र. ७१)। वक्र समुलसंत (कप्प, सुर २, ८५)।

समुहसिय वि [समुहसित] उल्लास-प्राप्त (सण)।

समुहलिय वि [समुहलित] उल्लाहा हुआ (णाय १, १८—पत्र २३७)।

समुहलव पुं [समुहलप] आलाप, संभाषण (विपा १, ७—पत्र ७७, महा, णाय १, १६—पत्र १६६)।

समुहलस पुं [समुहलस] विकास (गउड)।

समुवइह वि [समुपविष्ट] बैठा हुआ (उ २८८)।

समुवउत्त वि [समुपयुक्त] उपयोग-युक्त, सावधान (जीवस ३६३)।

समुवगय वि [समुपगत] समीप आया हुआ (वव ४)।

समुवजिय वि [समुपार्जित] उपाजित, पैदा किया हुआ (सुपा १००, सण)।

समुवस्थिय वि [समुपस्थित] हाजिर, उपस्थित (उप ४३५)।

समुवयत देखो समुवे।

समुवविट्ट वि [समुपविष्ट] बैठा हुआ (राय ७५)।

समुवसपन्न वि [समुपसंवन्न] समीप में समागत (घमं ३)।

समुवहसिअ वि [समुपहसित] जिसका खूब उपहास किया गया हो वह (सण)।

समुवागय वि [समुपागत] समीप में आगत (णाय १, १६—पत्र १६६, सण)।

समुवे सक [समुपा + इ] १ पास में आना। २ प्राप्त करना। समुवेइ, समुवेति (यति ४२, पि ४६३)। वक्र. समुवयंत (स ३७०)।

समुवेक्ख } सक [समुत्प + ईक्ष्] १
समुवेह } निरीक्षण करना। २ व्यवहार करना, काम में लाना। वक्र. समुवेक्खमाण, समुवेहमाण (णाय १, १—पत्र ११, आचा १, ५, २, ३)।

समुव्वत्त वि [समुद्वृत्त] ऊँचा किया हुआ (से ११, ५१)।

समुव्वत्तिय वि [समुद्वर्तित] घुमाया हुआ, फिराया हुआ (सुर १३, ४३)।

समुव्वह सक [समुद् + वह्] १ धारण करना। २ ढोना। समुव्वहइ (भवि, सण)। वक्र. समुव्वहंत (से ६, २, नाट—रत्ना ८३)।

समुव्वहण न [समुद्वहन] सम्यग् वहन—ढोना (उव)।

समुव्विगग वि [समुद्विग्न] अत्यन्त उद्वेग-वाला (गा ४६२)।

समुव्वूढ वि [समुद्व्यूढ] १ विवाहित (उप पृ १२७)। २ उत्तानित, ऊँचा किया हुआ (से ११, ६०)।

समुव्वेह वि [समुद्वेहित] अत्यन्त कैपाया हुआ, संचालित, 'गयसूहसमायद्वियविसमस-मुव्वेहकमलसंघाय' (पउम ६४, ५२)।

समुसरण देखो समोसरण (पिठ २)।

समुस्सय पुं [समुच्छ्रय] १ ऊँचाई, ऊँचता (सूत्र २, ४, ७)। २ उन्नति, उत्तमता (सूत्र १, १५, ७)। ३ कर्मों का उपचय (आचा)। ४ संघात, समूह, राशि, ढग (दस ६, १७, अणु २०)।

समुस्सविय वि [समुच्छ्रयित] ऊँचा किया हुआ (पउम ४०, ६)।

समुस्ससिय वि [समुच्छ्रवसित] १ उल्लास-प्राप्त, 'समुस्ससियरोमकूवा' (कप्प)। २ उच्छ्रवास-प्राप्त (पउम ६४, ३८)। देखो समूमसिअ।

समुस्सिअ वि [समुच्छ्रित] ऊँच-स्थित, ऊँचा रहा हुआ (सूत्र १, ५, १, १५, पि ६४)।

समुस्सिणा सक [समुत् + श्रु] १ निर्माण करना, बनाना। २ सत्कार करना, संवारना, जीर्ण मन्दिर आदि को ठीक करना। समुस्सि-णासि, समुस्सिणामि (आचा १, ८, २, १, २)।

समुस्सुग } देखो समूसुअ (द्र ४८, महा)।
समुस्सुय }

समुह देखो समूह (हे १, २६, गा ६५६, कुमा, हेका ५१, महा; पाप्म)।

समुहय वि [समुद्वत्त] समुदाय-प्राप्त (आवक ६८)।

समुहि देखो स-मुहि = श्व-मुखि।

समूसण न [समूपण] त्रिकदुक—सूँठ, पीपल तथा मरिच या मिरचा (उत्तनि ३)।

समूसवय देखो समुस्सविय (पणह १, ३—पत्र ४५)।

समूसस अक [समुत् + श्वस्] १ ऊँचा जाना। २ उल्लसित होना। ३ ऊर्ध्व श्वास लेना। समूससंति (पि १४३)। वक्र. समू-ससत, समूससमाण (गा ६०४, गउड, से ११, १३२)।

समूससिअ न [समुच्छ्रवसित] १ नि श्वास (से ११, ५६)। २ देखो समुस्ससिय (णाय १, १—पत्र १३, कप्प, गउड)।

समूसिअ देखो समुस्सिअ (भग, औप, सूत्र १, ५, १, ११ टी, पणह १, ३—पत्र ४५)।

समूसुअ वि [समुत्सुक] अति उत्कंठित (सुपा ४७७, नाट—विक्र ६२)।

समूह पुंन [समूह] समुदाय, राशि, संघात, 'भतीहि य उवसमियं भुयगमाणं समूह व' (पउम १०६, १५, ओष ४०७, गउड, भवि)।

समूह (अर) देखो समुह (भवि)।

समे सक [समा + इ] १ आगमन करना, आना, संमुख आना। २ जानना। ३ प्राप्त करना। ४ अक. संहत होना, इकट्ठा होना। समेइ, समेति (भवि, विसे २२६६)। वक्र. समेमाण (आचा १, ८, १, २)। संक्र. समिच्च, समेच्च (सूत्र १, १२, ११, पि ५६१, आचा १, ६, १, १६, पत्र ३, ४५)।

समेअ } वि [समेत] १ समागत, समायत
समेत } 'सोलवड परिणेतं गिह समेअ महिद्धीए' (आ १६)। २ युक्त, सहित, 'तेहि समेतो ग्रहय वयामि जा कित्तियपि भूमागं' (सुर १, १६३, ३, ८८, सुपा २५६ महा)।

समेर देखो स-मेर = स-मयदि।

समोअर अक [समव + त्] १ समान समावेश होना, अन्तर्भाव होना। २ नी

सहिआ देखो सही (महा) ।

सहिज्ज वि देखो सहाअ = सहाय, 'हुति सहिज्जा विहुरे कुवियावि सहोयरा चेव' (सुपा ४२७, महा, कुप्र १२) । छी. °ज्जी (सुपा १६ टि) ।

सहिण देखो सणह + श्लक्ष्ण (आचा २, ५, १, ७, स २६४, ३२६, ३३३) ।

सहिणहु } वि [सहिण्णु] सहन करने की
सहिर } आदतवाला (राज, पि ५६६) ।
छी °री (गा ४७, पि ५६६) ।

सही छी [सखी] सहेली, सगिनी (स्वप्न १४१, कुमा) ।

सहो° देखो सहि । °वाय पु [°वाड] मित्रता-सूचक वचन (सूत्र १, ६ २७) ।

सहोण वि [स्वार्धन] स्वायत्त, स्व-वश (पउम २७, १७, उप दम ८, ६) ।

सहु वि [सह] समर्थ, शक्तिमान् (ओष, ७७, ओषभा ६८, उवर १४२, वव ४) ।

सहु (अप) देखो सच (ससि ३६) ।

सहु (अप) अ [सह] साथ, सग (हे ४, ४१६, कुमा) ।

सहेज्ज देखो सहिज्ज (महा) ।

सहेर (अप) पु [शेखर] पट्पद छन्द का एक भेद (पिंग) ।

सहेल वि [सहेल] हेला युक्त, अनायास होनेवाला, सरल, गुजराती में 'सहेलु' (प्रवि ११) ।

सहोअर वि [सहोदर] १ तुल्य, सदृश (से ६, ४) । २ पु. सगा भाई (पात्र, काल) ।

सहोअरी छी [सहोदरी] सगी वहिन (राज) ।

सहोड वि [सहोड] चोरी के माल से युक्त, स-मोष (पिंड ३८०, राया १, २—पत्र ८६) ।

सहोदर देखो सहोअर (सुपा २४०, महा) ।

सहोअस वि [सहोअपत] एक-स्थान-वासी (दे १, ४६) ।

साअड्ड मक [ड्डप्] १ चाप करना, कृपि करना । २ खोजना । साअड्ड (हे ४, १८८ पड्) ।

साअड्डिअ वि [कृष्ट] खोचा हुआ (कुमा ५, ३१) ।

साअद (शी) देखो सागद (अभि १०२; नाट—मृच्छ ४, पि १८५) ।

साड वि [जा'यन] मोनेवाला, शयन-कर्ता (सूत्र १, ४. १ २८, आचा, दम ४, २६) ।

साइ वि [सट्टि] १ आदि माहित, उत्पत्ति-युक्त (सम्म ६१) । २ न सस्यान-विशेष, शरीर की आकृति-विशेष जिन शरीर में नाभि से नीचे के अवयव पूर्ण और नाभि के ऊपर के अवयव होन हों ऐसी शरीराकृति (सम १/६ अणु) । ३ कर्म-विशेष सादि-सस्यान की प्राप्ति का कारण-भूत कर्म (कम्म १, ४) ।

साड न [साचि] १ मेमल का पेड शान्मली वृक्ष । २ सस्यान-विशेष, देखो साड = सादि का दूसरा और तीसरा अर्थ (जीव १ टी—पत्र ४२) ।

साड पुत्री [स्वानि] १ नक्षत्र-विशेष (सम २६ कप्प) 'सा माई त च जल पत्तविमेमेल अतर गच्छ' (प्रामू ३६) । २ पु. भारतवर्ष में होनेवाले एक जिनदेव का पूर्वजन्मोय नाम (सम १५४) । ३ एक जैन मुनि (एदि ४६) । ४ हैमवत्त-अर्ष के शब्दापाती पर्वत का अधिष्ठायाक देव (ठा २, ३—पत्र ६६, ८०) ।

साइ पु [सादन्] घुडमवार (उप ७२८ टी) ।

साड पुत्री [साति] १ अच्छी चीज के साथ खराब चीज का मिश्रण, उत्तम वस्तु के साथ हीन वस्तु की मिलावट (सूत्र २, २, ६५) । २ अविश्रम्भ, अविश्वास । ३ अमत्य वचन, झूठ (परह १, २—पत्र २६) । ४ सातिशय द्रव्य, अपेक्षा-कृत अच्छी चीज (राज ११४) । °जोग पु [°योग] १ मोहनीय कर्म (सम ७) । २ अच्छी चीज से हीन चीज की मिलावट (राय ११४ टी) । °सपजोग पु [°सप्रयोग] वही अर्थ (राय १४) ।

साइ पुत्री [स] केसर, 'सालतले सारिठिआ अचवइ चडि ससाइपउमोहि' (दे ८, २२) ।

साउज मक [म्याद्, सार्म + कृ] १ स्वाद लेना, खाना । २ चाहना, अभिलाष करना । ३ स्वीकार करना ग्रहण करना । ४ आमक्ति करना । ५ अनुमोदन करना । ६ उपभोग करना । माइज्जड माइज्जामो (आचा कम, कप्प—टी, भग १५—पत्र ६८०, औप), साइज्जेज्ज (आचा २ १, ३ २) । भवि माइज्जिस्सामि (आचा) । हेहू साइज्जित्तण (औप) ।

साउजग न [स्वादन्] अभिष्वङ्ग, आमक्ति (विने २६८५) ।

साउज्जणया छी [स्वादना] उपभोग, सेवा (ठा ३ ३ टी—पत्र १४७) ।

साइज्जअ वि [दे] अवलम्बित (दे ८, २६) ।

साइज्जिअ वि [स्वादिन] उपभुक्त (कप्प—टी) । २ उपभुक्त-सम्बन्धी । छी. °या (कप्प) ।

साइम वि [स्वादिम] पान, सुपारी आदि मुखवाम (ठा ४, २—पत्र २१६, आचा, उवा, औप, सम २६) ।

साइय वि [सादिक्र] आदिवाला (कम्म १, ६, नव ३६) ।

साइय देखो सागत्र = स्वागत (सुर ११, २१७) ।

साइय न [दे] सस्कार (दे ८, २५) ।

साइयनार वि [दे] स-प्रत्यय, विध्वस्त (पिंडभा ४२) ।

साइरेग वि [सातिरेक] साधिक, सविशेष (सम २, भग) ।

साइसय वि [सातिशय] अतिशयवाला (महा, सुपा ३६७) ।

साई देखो सई = सची (इक) ।

साउ वि [स्वादु] स्वादवाला, मधुर (पिंड १२८, उप ६७, से २, १८, कुमा, हे १, ५) ।

साउग वि [स्वादुक] स्वादिष्ठ भोजनवाला, मधुर भोजनवाला, 'कुलाई जे धावइ साउगाई' (सूत्र १, ७, २३) ।

साउज न [सायुज्य] सहयोग, साहाय्य (अच्छु ६५) ।

सम्मड देखो सम्मुइ = सन्मति, स्वमति (उत्त २८, १७, आचा)।

सम्मडग देखो सामाड्य (सवोव ४५)।

सम्म अ [सम्यग्] अच्छी तरह (आचा, सूत्र १, १४, ११, महा)।

सम्मड छी [सन्मति] १ सगत मति। २ सुन्दर बुद्धि, विशद बुद्धि (उत्त २८, १७, मुख २८, १७, कप, आचा)। ३ पुं एक कुलवर पुरुष (पउम ३, ५२)।

सम्मड छी [स्यमति] स्वकीय बुद्धि (आचा)। सम्मरिअ वि [सम्भृत] अच्छी तरह याद किया हुआ (अच्छु ३५)।

सय अक [जी, म्यप्] सोना, शयन करना। सयइ, सए, सएज्जा (कप्प, आचा १, ७, ८, १३, २, २, ३, २५, २६), सयति (भग १३, ६—पत्र १७)। वहु सयमाण (आचा २, २, ३ २६)। हेहू, सडत्तए (पि ५७८)। कू देखो मयगिज्ज, मयणीअ।

सय अक [स्वद्] पचना, जीएँ होना, माफिक आना। सयइ (आचा २, १, ११, १)।

सय अक [स्त्र] करना, टपकना। सयइ (सूत्र २, २, ५६)।

सय सक [श्रि] सेवा करना। सयति (भग १३, ६—पत्र ६१७)।

सय देखो स = सत्त, 'वदशिज्जो सयाण' (स ६६५)।

सय देखो स = सय (सूत्र १, १, २, २३, णाय १, १४—पत्र १६०, आचा, उवा, स्वप्न १६)।

सय देखो सग = सप्तन्। 'हत्तारि छी [सप्तति] सतहत्तर, ७७ (आ २८)।

सय अ [सदा] हमेशा, निरन्तर, 'असवुडो सय करेइ कदप्प' (उव)। 'काल न [काल] हमेशा, निरन्तर (मुपा ८५)।

सय पुन [शान] १ सख्या-विशेष, मौ, १००। २ सौ की सख्यावाला (उवा, उव, गा १०१, जो २६, ८६)। ३ वहुव, भूरि, अन्त्य सख्यावाला (णाय १, १—पत्र ६५)। ४ अध्ययन, अथ प्रकरण, ग्रन्थाश-विशेष, 'विवाहपन्नतीए एकासीति महाजुम्मसया

पन्नता' (सम ८८)। 'कत न [कान्त] १ रत्न-विशेष। २ वि शतकान्त रत्नो से बना हुआ (देवेन्द्र २६८)। 'किन्ति पुं [कीर्ति] एक भावी जिन-देव (पव ४६), 'सत्त (१५) किन्ती' (सम १५३)। 'गुणिअ वि [गुणित] सौधुना (आ १०, सुर ३, २३२)। 'ग्वी छी [घ्नी] १ यन्त्र-विशेष, पापाण-शिला-विशेष (सम १३७, अत, औप)। २ चक्की, जाँता (दे ८, ५, टी)। 'ज्जल न [ज्वल] १ वस्त्र का विमान (देवेन्द्र २७०)। देखो सयजल। २ रत्न को एक जाति। ३ वि. शतज्वल-रत्नो का बना हुआ (देवेन्द्र २६६)। ४ पुंन विद्युत्प्रभ नामक वस्कार पर्वत का एक शिखर (इक)। 'दुवार न [द्वार] एक नगर (अत)। 'धणु पुं [धनुप्] १ ऐरयत वर्ष में होनेवाला एक कुलकर पुरुष (सम १५३)। २ भारत वर्ष में होनेवाला दसवाँ कुलकर पुरुष (ठा १०—पत्र ५१८)। 'पई छी [पडो] ध्रुव जन्तु की एक जाति (आ २३)। 'पत्त देखो 'वत्त (णाय १, १—पत्र ३८)। 'पाग न [पाक] एक सौ ओपविओ से बनता एक तरह का उत्तम तेल (णाय १, १—पत्र १६, ठा ३, १—पत्र ११७)। 'पुप्फा छी [पुष्पा] वनस्पति-विशेष, सोया का गाल (पण १—पत्र ३४, उत्तनि ३)। 'पोर न [पर्वन्] इधु, ऊख (पव १७४ टी)। 'वाहु पु [वाहु] एक राजपि (पउम १०, ७४)। 'भिसवा, 'भिसा छी [भिषज्] नक्षत्र-विशेष (इक, पउम २०, ३८)। 'यम वि [तम] सौवां, १०० वां (पउम १००, ६८)। 'रुह पु [रय] एक कुलकर पुरुष (नम १५०)। 'रिन्ह पु [रूपभ] 'गहाराय का तेईयां ग्रहण (मुज १०, १३)। 'वई देखो 'पई (दे २, ६१)। 'वत्त न [पत्र] १ पत्र, कमल (पाग्र)। २ सौ पत्तीवाला कमल, पत्र-विशेष (मुपा ४६)। ३ पु पक्षि विशेष, जिसका दक्षिण दिशा में बोलना अपशुक्न माना जाता है (पउम ७, १७)। 'सहस्स पुन [सहस्त्र] सख्या-विशेष, लाख (सम २, भग, सुर ३, २१, प्रानू ६, १३४)। 'सहस्सइम वि

[सहस्रतम] लाखवां (णाय १, ८—पत्र १३१)। 'साहस्स वि [साहस्र] १ लाख-सख्या का परिमाणवाला (णाय १, १—पत्र ३७)। २ लाख रुपया जिसका मूल्य हो वह (पव १११, दसनि ३, १३)। 'साहस्मि वि [सहस्मिन्] लक्षपति, लक्षाधीश (उग पृ ३१५)। 'साहस्सिय वि [साहस्त्रि] देखो 'साहस्स (स ३६६, राज)। 'साहस्सी छी [सहस्त्री] लक्ष, लाख (पि ४४७, ४४८)। 'सिक्कर वि [शर्कर] शत खंडवाला, सौ टुकड़ावाला (सुर ४, २२, १५३)। 'हा अ [वा] सौ प्रकार से, सौ टुकड़ा हो ऐसा (सुर १४, २४२)। 'हुत्त अ [कृत्यस] सौ वार (हे २ १५८, प्राप्र, पड)। 'उ पुं [युप्] १ एक कुलकर पुरुष का नाम (सम १५०)। २ मदिरा-विशेष (कुप्र १६०, राज)। 'णिग्र, 'णीअ पु [नीरु] एक राजा का नाम (विपा १, ५—पत्र ३०, अत, ती १०)।

सय देखो सय = स्वय, 'सयपालणा य एत्थ' (पचा ५, ३६)।

सय देखो सइ = सकृत् (वै ८८)।

सय अ [स्वयम्] आप, खुद, निज (आचा १, ६, १, ६, सुर २, १८७, भग, प्रासू ७८, अभि ५६, कुमा)। 'कड वि [कृत] खुद किया हुआ (भग)। 'गाह पुं [ग्राह] १ जवरदस्ती ग्रहण करना। २ विवाह-विशेष (मे १, ३४)। ३ वि स्वयं ग्रहण करने-वाला (वव १)। 'पभ पु [प्रभ] १ ज्योतिष्क ग्रह विशेष (ठा २, ३—पत्र ७८)। २ भारतवर्ष में गतीत उत्सर्पणी काल में उत्पन्न चौथा कुलकर पुरुष (सम १५०)। ३ आगामी उत्सर्पणी काल में भारत में होनेवाला चौथा कुलकर पुरुष (सम १५३)। ४ आगामी उत्सर्पणी काल में इस भारतवर्ष में होनेवाले चाये जिन-देव (सम १५३)। ५ एक जैन मुनि जो भगवान् संभवनाय के पूर्व-जन्म में गुरु थे (पउम २०, १७)। ६ एक हार का नाम (पउम ३६, ४)। ७ नेरु पर्वत (मुज ५)। ८ नन्दीधर द्वीप के नद्य में पश्चिम-दिशा स्थित एक अजन-गिरि (पव

साडी. स्त्री [शाटी] वस्त्र, कपडा (कुप्र ४१२)।
साडी स्त्री [शकटी] गाडी । °कर्म पुन
[°कर्मन्] गाडी बनाना, बेचना, चलाना
आदि शकट-जीविका (उवा, श्रा २२)।

साडी देखो साडीआ, जह उल्ला माडीया
श्रामु सुकड़ विरल्लिया सती (विमे ३०३२)।
साडीह देखो साडी (गाथा १, १८—
पत्र २३५)।

साण सक [शाणय] शाण पर चढ़ाना,
तीक्ष्ण करना। माणिज्जदि (शौ) (नाट)।

साण पुत्री [श्वान] १ कुत्ता (पात्र, परह १,
१—पत्र ७ प्रामू १६६ ह १, ५२)। स्त्री.
°र्ण। (मुण ११४)। २ पु छन्द विशेष
(पिग)।

साण वि [श्यान] निविड, घनीभूत (गा
६८२)।

साण पु शाण, ज्ञान] शस्त्र को घिस कर
तीक्ष्ण करने का यन्त्र (गठड २भा)।

साण वि [शाण] सन का बना हुआ, पाट का
बना हुआ। स्त्री, °ण। (दम ५, १, १८)।

साण देखो सासायण कम्म ३, २१)।

साणइअ वि [दे शाणिन] उत्तेजित (दे ८,
१३)।

साणय न [शाणक] सन का बना हुआ वस्त्र
(ठा ५, ३—पत्र ३३८, कप)।

साणि स्त्री [शाण] मन का बना हुआ
कपडा (दम ५, १, १८)।

साणिअ वि [व] शान्त (पड्)।

साणी देखो साण = श्वान।

साणी स्त्री [शाणी] देखो साणि, 'साणीपा-
वारपिहिम्' (दस ५, १, १८)।

साणु पुन [सानु] पर्वत पर का समान भूमि-
वाला प्रदेश (पात्र, मुर ७, २१४, स ३६५)।
°मत पु [°मत्] पर्वत (उप १०३१ टी)।
°लट्टिया स्त्री [°यष्टिका] ग्राम-विशेष
(राज)।

साणुकोस वि [सानुकोश] दयालु (ठा ४,
४—पत्र २८५, परह १, ४—पत्र ७२,
स्वप्न २६, ४४, वसु)।

साणुअ न [सानुअ] प्रातः काल, प्रभात-
समय (बृह १)।

साणुअ वि [सानुअ] निरन्तर, अन्विष्ट
प्रवाहवाला (उप ७७२)।

साणुनीय वि [सानुनीज] जिनमे उत्पादन-
शक्ति नष्ट न हुई हो वह बीज (आचा २, १,
८, ३)।

साणुवाय वि [सानुवान] अनुकूल पवन-
वाला (उत्र)।

साणुमय वि [सानुमय] अनुताप युक्त (गभि
१११ गठड)।

साणूर न [दे] देव गृह, देव-मन्दिर (दे ८,
२४)।

सान न [सान] १ मुख (ठा २, ४)। २
वि. मुखवाला। स्त्री °ता (परह ३५—पत्र
७८६)। °वेर्यागज्ज न [°वेर्यागज्ज] मुख
का कारण-भूत कर्म (ठा २, ४—पत्र ६६)।

सानि देखो साइ = स्वाति, मादि माचि, माति
(सम २ ठा २, ३—पत्र ८०, ६—पत्र ३५७,
जीव १—पत्र ४२, परह १, २—पत्र २६,
सम ७१)।

सातिज्जण्या देखो साइज्जण्या (ठा ३,
३—पत्र १४७)।

साड पु [साड] श्रवसाद, खेद (दे १, १६८)।
सादिव्व वि [सदैव] देवता-प्रयुक्त, देव कृत
(पत्र २६८)।

सादिव्व देखो सादेव्व (पिड ४२७)।

सादीअ देखो साइअ = सादिक (भग, श्रीप)।

सादीणगंगा स्त्री [सादीणगङ्गा] आजीविक
मत मे उक्त एक परिमाण (भग १५—पत्र
६७४)।

सादेव्व न [सादिव्व] देव का अनुग्रह—
सानिध्य, 'नादेव्वणि य देवयाओ करेति
गच्चवयणे रयाण' (परह २, २—पत्र ११४,
उप ८०३)।

सादूदूलसट्ट (अप) देखो सद्दूल-सट्ट
(पिग)।

साध देखो साह = साधय। साधेति (मुज
१०, १७)।

साधग देखो साहग (धर्मस १४२ ३२३)।
साधम्म देखो साहम्म (धर्मस ८७७)।

साधम्मिअ देखो साहम्मिअ (पत्र ३५,
७४)।

साधारण देखो साहारण = साधारण (पि
८२)।

साधारण स्त्री [साधारणा] वाग्मना, धारणा,
स्मरणशक्ति (एदि १७६)।

साधीण देखो साहीण (नाट—मालती १११)।

सापड (शौ) देखो सावय = सापड (नाट—
गठु ३०)।

साफट्ट } देखो साफट्ट (विमे २५३२,
साफट्टया } उप ७६८ टी, वरंनि ६६, म
७०८, ७०६)।

सावाह वि [सावाय] आवाग मन्ति (उप
३३६ टी)।

साभग पु [साभरक] कषया, सोलह
श्राने का मिष्ट (पत्र १, १)।

सानव्व देखो साहव्व (विमे १३६)।

साभानि } देखो साहाभिअ (सूत्र १६,
साभाविय } कप्प आचक २५८ टी)।

सान पुन [सामन्] १ शत्रु को वश करने का
उपाय-विशेष, एक राज नीति (गाथा १,
१—पत्र ११, प्रामू ६७)। २ प्रिय वस्तु
(कुमा, महा १४)। ३ एक त्रेद शास्त्र (भग,
कप्प)। ४ मैत्री-मित्रता (विसे ४८१)।
५ शर्करा आदि मिष्ट वस्तु, 'महुपरिणाम
साम' (आव १)। ६ सामायिक, समय-विशेष
(संबोध ४५), 'साम नम च सम्म हगमवि
सामादयत्स एगट्ठा' (आव १)। °होठ्ट पु
[°कोष्ट] ऐश्वर्य वर्ष मे उत्पन्न एकीसवें
जिनदेव (सम १५३)। देखो सामि-कुट्ट।

साम पुं [उत्थान] १ कृष्ण वर्ण, काला रंग।
२ हरा वर्ण, नीला रंग। ३ वि. काला वर्ण-
वाला। ४ हरा वर्णवाला (आचा, कुमा, मुर
४, ४४)। ५ पु परमाधमो देवो की एकजाति
(सम २८, सूत्र ७२)। ६ एक जैन मुनि,
श्यामार्य (एदि ४६)। ७ न वृण-विशेष,
गन्ध-वृण (सूत्र २, २, ११)। ८ पुन.
आकाश, गगन (भग २०, २—पत्र ७७६)।
°हत्थि पु [°हस्तिन] भगवान् महावीर
का शिष्य एक मुनि (भग १०, ४—पत्र
५०१)।

सामइअ वि [प्रतीक्षित] जिसकी प्रतीक्षा
की गई हो वह (कुमा)।

अठारहवें जिनदेव का पूर्वजन्मीय नाम (पव ४६, सम १५४) । देखो भयालि ।

सयालु वि [शयालु] सोने की आदतवाला, भालसी (कुम) ।

सयावरी स्त्री [सदावरी] श्रीन्द्रिय जन्तु की एक जाति (उत्त ३६, १३६, सुख ३६, १३६) ।

सयावरी देखो सयरी = शतावरी (राज) ।

सयास देखो सगास = सकाश (काल, अमि १२५, नाट—मृच्छ ५२) ।

सयासव वि [शताश्रव, सदाश्रव] सूक्ष्म छिद्रवाला (भग) ।

सय्य देखो सज्ज = सद्यस्, 'सय्यंभवुत्ति सय्यं भवोयहीपारगो जयो तेण' (धर्मवि ३८) ।

सय्यभव देखो सज्जंभव (धर्मवि ३८) ।

सय्द देखो सज्म = सद्य (हे २, १२४, पङ्) ।

सर सक [सृ] १ सरता खिसकना । २ अवलम्बन करना, आश्रय लेना । ३ अनुसरण करना । सरइ (हे ४, २३४), सरेज्जा (उपप २५) । कृ. सरणीअ (चउ २७), सरेअव्व (सुपा ४१४) ।

सर सक [स्मृ] याद करना । सरइ (हे ४, ७४, गुरु १२, प्राप्र) । वक्र. सरत (सुपा ५६४), सरमाण (गाया १, ६—पत्र १६५, पउम ८, १६४, सुपा ३३६) । हेक सरित्तए (पि ५७८) । कृ. सरणीअ, सरेअव्व, सरियव्व (चउ २७, धम्मो २०, सुपा ३०७) । प्रयो सरयति (सूत्र १, ५, १, १६) ।

सर सक [स्वर] आवाज करना । सरइ, सरति (विसे ४६२) ।

सर पुन [गर] १ वाण, 'मज्जे सराणि वरिमयति' (गाया १, १४—पत्र १६१, कुमा, सुर १, ६४, स्वप्न ५५) । २ तृण-विशेष; 'सो सरवणे निलोणो रहिओ तक्खिव्व पच्छओ' (धर्मवि ६२, पणण १—पत्र ३३, कुप्र १०) । ३ छन्द-विशेष । ४ पाँच की संख्या (पिग) । ५ पण्णी स्त्री [पणी] तृण-विशेष, = मुञ्ज का घास (राज) । ६ पत्त न [पत्र] अन्न-विशेष (विसे ५१३) । ७ पाय न [पात]

धनुष (सूत्र १, ४, २, १३) १ सण पुन [सिन] धनुष (विपा १, २—पत्र २४, पाप्र, औप) । २ सणपट्टी, सणवट्टिया स्त्री [सिनपट्टी, सिनपट्टिका] १ धनुषी, धनुर्दण्ड । २ धनुष खींचने के समय हाथ की रक्षा के लिए बाँधा जाता चर्मपट्ट—चमटे का पट्टा (विपा १, २—पत्र २४, औप) । ३ सिरि न [शरि] बाण-युद्ध (सिरि १०३२) ।

सर पु [स्मर] कामदेव (कुमा, से ६, ४३) । सर वि [सर] गमन-कर्ता (दस ६, ३, ६) । सर पुं [स्वर] १ वर्ण-विशेष, 'अ' से 'ओ' तक के अक्षर (पणह २, २, विसे ४६१) । २ गीत आदि की ध्वनि; आवाज, नाद (सुपा ५६, कुमा) । ३ स्वर के अनुरूप फलाफल को बतानेवाला शास्त्र (सम ४६) ।

सर पुन [सरस्] तडाग, तालाब (से ३, ६, उवा, कप्प, कुमा, सुपा ३१६) । १ पति स्त्री [पडक्ति] तडाग-पद्धति (ठा २, ४—पत्र ८६) । २ रुह न [रुह] कमल, पद्म (प्राप्र, हे १, १५६, कुमा) । ३ सरपत्तिया स्त्री [सर पडक्ति] श्रेणि-बद्ध रहे हुए अनेक तालाब (पणह २, ५—पत्र १५०) ।

सर देखो सरय = शरद (गा ७१२) । १ दिंदु पु [इन्दु] शरद ऋतु का चन्द्र (सुर २, ७०, १६, २४६) ।

सरऊ स्त्री [सरयू] नदी-विशेष (ठा ५, १—पत्र ३०८, ती ११, कस) ।

सरग (अप) पु [सारङ्ग] छन्द-विशेष (पिग) ।

सरं व पु [शरम्भ] हाथ से चलनेवाले सर्प की एक जाति (पणह १, १—पत्र ८) ।

सरक्ख सक [सं + रक्ष्] अचछी तरह रक्षण करना । सरक्खए (सूत्र १, १, ४, ११ टि) ।

सरक्ख वि [सरजस्क, सरक्ष] १ शैव-धर्मी, शिव-भक्त, भौत, शैव (ओष २१८, विमे १०४०, उप ६७७) । २ वि. रजो-युक्त (आव ४) ।

सरक्ख पुन [सद्वरजस्] १ धूलि, रज, 'ससरक्खहि पाएहि' (दस ५, १, ७) । २ भस्म (पिड ३७, ओष ३५६) ।

सरग देखो सरय = शरक (गाया १, १८—पत्र २४१) ।

सरग वि [शारक] शर-तृण से बना हुआ (शूषं आदि) (आचा २, १, ११, ३) ।

सरगिका (अप) स्त्री [सारङ्गिका] छन्द-विशेष (पिग) ।

सरड पुं [सरट] कृकलास, गिरगिट (गाया १, ८—पत्र १३३, ओष ३२३, पुष्फ २६७, दे ८, ११, उप पृ २६८, सुपा १७७) ।

सरडु } न [शलादु, क] वह फल जिसमें
सरडुअ } अस्थि—गुठली न बँधी हो, कोमल फल (पिड ४५, आचा २, १, ८, ६, पि ८२, २५६) ।

सरण पुन [शरण] १ त्राण, रक्षा (आचा, सम १, प्रासू ११६, कुमा) । २ त्राण-स्थान (आचा कुमा २, ४५) । ३ गृह, आश्रय, स्थान, 'निवायसरणप्पईवमिव चित्त' (सवोव ५१) । ४ दय वि [दय] त्राण-कर्ता (भग, पडि) । ५ गाय वि [गत] शरणापन्न (प्रासू ५) ।

सरण न [स्मरण] स्मृति, याद (ओष ८, विसे ५१८, महा, उप ५६२, औप, वि ६) ।

सरण न [स्वरण] आवाज करना, ध्वनि करना (विसे ४६१) ।

सरण न [सरण] गमन (राज) ।

सरणि पुं स्त्री [सरणि] १ मार्ग, रास्ता (पाप्र, सुपा २, कुप्र २२), 'सरलो सरणी समग कहिओ' (सावं ७५) । २ आलवाल, क्यारी (गउड) ।

सरण वि [शरण्य] शरण-योग्य, त्राण के लिए आश्रयणीय (सम १५३, पणह १, ४—पत्र ७२, सुपा २६१, अचु १५, संवोव ४८) ।

सरत्ति अ [दे] शीघ्र, जल्दी, सहसा (दे ८, २) ।

सरद देखो सरय = शरत् (प्राप्र) ।

सरन्न देखो सरण (सुपा १८३) ।

सरभ देखो सरह = शरण (भग, गाया १—पत्र ६५, पणह १, १—पत्र ७, गा ७४२, पिग) ।

२६ नौ नैया । ३० द्याया । ३१ शिमपा, मीसम का पेड़ । ३२ पक्षि विशेष (हे १, २६०) । १°स पु [°ग] रात्रि-भोजन (मूत्र २, १ ७६ आचा १, २, ५, १) ।

सामाङ्ग न [सामागिक] समय-विशेष, सम भाव, राग द्वेष-रहित अवस्थान (विसे २६६६, २६६८, २६६९, २६६८, वन, श्रौष नव) ।

सामाङ्ग वि [सामाजिक] समाज का, समूह से संबन्ध रखनेवाला, सम्य (उत्त ११, २६, सुख ११, २६) ।

सामाङ्ग वि [श्यामायिन] रात्रि-सदृश (गा ५६८) ।

सामाग पु [श्यामाक] भगवान् महावीर के समय का एक गृहस्थ, जिसके ऋजुवालि का नदी के किनारे पर स्थित क्षेत्र में भगवान् महावीर को केवलज्ञान हुआ था (कप्प) । देखो सामाय = श्यामाक ।

सामाजिअ देखो सामाङ्ग = सामाजिक (हास्य ११८) ।

सामाण देखो समान = समान, 'लोहो हलि-हृखणकहमकिमिरागनामाणो' (कम्म १, २० पुष्प २८७) ।

सामाण पुंन [सामान] एक देव-विमान (सम ३३) ।

सामागिअ वि [सामानिक] १ सनिहित, निकट-वर्ती, नजदीक में स्थित (विसे २६७६) । २ पु इन्द्र के समान ऋद्धिवाले देवों की एक जाति (सम ३७, ठा ३, १—पत्र ११६, उवा, श्रौष, पउम २, ४१) ।

सामाय त्रक [श्यामाय] काला होना । मामाङ्ग, सामायङ्ग, सामायति (गड्ड) । वहु सामायत्त (गड्ड) ।

सामाय देखो सामय = श्यामाक (राज) ।

सामाय पुंन [सामाय] समय-विशेष, सामायिक (विसे १४२१, संवोध ४५) ।

सामायारि वि [समाचारिन्] आचरण करनेवाला (उव) ।

सामायारी स्त्री [सामाचारी] साधु का आचार—क्रिया-कलाप (गच्छ १, १५, उव, उप ६६६) ।

सामाम देखो मामा-म = श्यामा-य ।

सामामिय वि [सामासिक] मामा-सम्बन्धी (प्रणु १४७) ।

सामि } वि [श्यामिन] १ नायक, अधि-
सामिअ } पति । २ ईश्वर, मालिक (सम ८६, विपा १, १ टी—पत्र ११, उव, कुमा प्रामू ८८) । स्त्री. °णी (महा) । ३ पु. प्रभु, भगवान् (कुमा १, २, ७, ३७, मुपा ३७) । ४ राजा, नृप । ५ भर्ता, पति (महा) । °कुट्ट पुंन [°कुट्ट] ऐश्वर्य वर्ष में उत्पन्न एककीसवें जिन देव (पत्र ७) । देवा साम-कोट्ट । °त्त न [°त्व] मानकियत, आधिपत्य (सम ८६, स २२) । °पुर न [°पुर] नगर-विशेष (उप ५६७ टी) ।

सामिअ वि [दे] दग्ध, जलाया हुआ (दे ८, २३) ।

सामिअ वि [शामिन] शान्त किया हुआ (मुपा ३५) ।

सामिद्धि स्त्री [समृद्धि] १ प्रति संपत्ति । २ वृद्धि (प्राप्र, हे १, ४४, कुमा) ।

सामिघेय न [सामिघेय] काष्ठ-समूह (अत ११, म ५६१) ।

सामिली न [सामिलिन्] १ गोत्र-विशेष, जो वत्त गोत्र की एक शाखा है । २ पुंस्त्री, उस गोत्र में उत्पन्न (ठा ७—पत्र ३६०) ।

सामिसाल देखो सामि (पउम ८, ६८, मुपा २६३, भवि, सण) । स्त्री °ली (म ८८६) ।

सामिहेय देखो सामिघेय (स ३४०, ३४४, महा) ।

सामीर वि [सामीर] समीर-संबन्धी (गड्ड) ।

सामुंउअ पु [दे] तृण-विशेष, वरु तृण, जिसकी कलम की जाती है (पाप्र) ।

सामुग्ग वि [सामुद्ग] मण्डाकारवाला, 'सामुग्गनिमग्गुद्धजालू' (श्रोप) ।

सामुच्छेडय वि [सामुच्छेदिक] वस्तु को एकान्त क्षणिक माननेवाला एक मत श्रीर उसका अनुयायी (ठा ७—पत्र ४१०, विसे २३८६) ।

सामुदाइय वि [सामुदायिक] समुदाय का, समुदाय से सम्बन्ध रखनेवाला (राया १, १६—पत्र २०८) ।

सामुदाणिय वि [सामुदानिक] १ भिक्षा-संबन्धी, भिक्षा से लब्ध (ठा ८, १—पत्र २१०, मूत्र २, १, ५६) । २ भिक्षा, भैक्ष (भग ७, १ टी—पत्र २६३) ।

सामुद् पुंन [दे] दधु-समान तृण विशेष (दे ८, २३) ।

सामुद् वि [सामुद्, °क] १ समुद्र-सामुद्ध्य । सम्बन्धी, मागर का (राया १, ८—पत्र १७५, भग ५, २—पत्र २११, दस ३, ८) । २ न. छन्द-विशेष (मूत्रति १३६) ।

सामुद्दिअ न [सामुद्रिक] १ शास्त्र-विशेष, शरीर पर के चिह्नों का शुभाशुभ फल बतलानेवाला शास्त्र (था १०) । २ शरीर की रन्धा आदि चिह्न, 'सामुद्दिअनस्सराण लक्खवि' (संवोध ४०) । ३ वि. सामुद्रिक शास्त्र का ज्ञाता (मुप्र ५) ।

सामुदाणिय देवो सामुदाणिय (उत्त १७, १६) ।

साय देखो साङ्गज = स्वाद, नास्ती + कृ । सायए (आचा २, १३, १), साएज्जा (वव १) ।

साय देखो साग = शाक, 'भोत्तव्वं संजएण ममियं न नायसूयादिकं' (पएह २, ३—पत्र १२३, पएण १—पत्र ३४) ।

साय न [सात] १ मुख (भग, उव) । २ मुख का कारण-भूत कर्म (कम्म १, १३३ ५५) । ३ एक देव-विमान (सम ३८) ।

°वाइ वि [°वादिन्] मुख-सेवन से ही मुख की उत्पत्ति माननेवाला (ठा ८—पत्र ४२५) ।

°वाहण पु [°वाहन] एक प्रसिद्ध राजा (कान) । °गारव पुंन [°गौरव] १ सुख-शीलता (नम ८) । २ सुख का गर्व (राज) । °नुक्ख न [°नोख्य] अतिशय सुख (जीव ३) । देखो सात = सात ।

साय पु [स्वाड] रस का अनुभव (विसे ७६६, पउम ३३, १०, उप ७६८ टी) ।

साय न [दे] १ महाराष्ट्र देश का एक नगर । २ दूर (दे ८, ५१) ।

साय अ [सायम्] १ सन्ध्या-समय, शाम (पाप्र, गड्ड, कप्प) । २ सत्य, सच्चा (ठा

सरी श्री [दे] माला, हार (मुपा २३१) ।
 सरीर पुं [शरीर] देह, काय, तनु (सम ६७, उवा, कुमा, जी १२), 'कइ ए भते सरोरा परणत्ता' (परण १२) । 'णाम, 'नाम पुन 'नामन्'] कर्म-विशेष, शरीर का कारण-भूत कर्म (राज, सम ६७) । 'वन्धण न [वन्धन] कर्म-विशेष (सम ६७) । 'सघायण न [सघातन] नाम कर्म का एक भेद (सम ६७) ।
 सरीरि पुं [शरीरिन्] जीव आत्मा (पउम ११२, १७) ।
 सरीसव { पुं [नरीसव] १ सर्प, माप (सा सरीसिव ११, सूत्र २, २ १४) । २ सर्प की तरह पेट में चलनेवाला प्राणी (सम ६०) ।
 सरुय { देहो स-रुय = स्वरूप ।
 सरुव { देहो स-रुव = स्वरूप, स रूप ।
 सरुवि पुं [सरुपिन्] जीव, प्राणी (ठा २, १—पत्र ३८) ।
 सरोअन्व देखो सर = स, स्मृ ।
 सरोवय पुं [दे] १ हन । २ वर का जल-प्रवाह, मोती (दे ८, ४८) ।
 सरोअ न [सरोज] कमल, पद्म (कुमा, अञ्चु ४२, सुपा ५६, २११, कुप्र २६८) ।
 सरोरुह न [सरोरुह] ऊपर देखो (प्राप्र, कुमा, कुप्र ३०४) ।
 सरोवर न [सरोवर] बड़ा तालाब (मुपा २६०, महा) ।
 सलभ देखो सलह = शलभ (राज) ।
 सलली श्री [दे] सेवा (दे ८, ३) ।
 सल्लह नक [शलाघ] प्रशंसा करना । सलहइ (दे ४, ८८) । कर्म, सलहिज्जइ (पि १३२) ।
 क. सलहिज्ज (कुमा) । देखो सलहा ।
 सलह पुं [शलभ] १ पतङ्ग (पाप्र, गउड, मुपा १४२) । २ एक वणिक्-पुत्र (मुपा ६१७) ।
 सलहण न [शलाघन] प्रशंसा, शलाघा (गा ११४, पि १३२) ।
 सलहत्थ पु [दे] कुहली आदि का हाथा (दे ८, ११) ।
 सलहिअ वि [शलाघित] प्रशंसित (कुमा) । १११

मलहिज्ज देखो सलह = शलाघ ।
 सलगा न [शालाग] चिकित्सा शास्त्र—आयुर्वेद का एक अंग, जिसमें श्वण आदि शरीर के ऊर्ध्व भाग के नम्वन्व में चिकित्सा का प्रतिपादन हो वह शास्त्र (विपा १, ७—पत्र ७५) ।
 सलगा श्री [शलगा] १ सली, सलाई सलया { (सूत्र १, २, १०, कप्पु) । २ पत्य-विशेष, एक प्रकार की नाप (जीवस १३६, कम्म ४ ३५, ५) । 'पुरिस पु [पुरुष] २४ जिनदेन, १२ चक्रवर्ती ६ वामुदेव । ६ प्रतिवासुग्ग तथा ६ बलदेव ये ६३ महापुरुष (सत्तोव ११) ।
 सलह देखो सलह = शलाघ । सलहड (प्राठ २८) । वक्र, सलहमाण (गा ३४६, नम्म १५६) । कृ सलहणिय, सलहणीअ (प्राठ २८, णाया १, १६—पत्र २०१, सुर ७, १७१, रयण ३५, पउम ८२, ७३, पि १३०) ।
 सलहण न [शलहण] श्लाघा, प्रशंसा (गा ११४, उप पृ १०६) ।
 सलहा श्री [शलाघ] प्रशंसा (प्राप्र, दे २, १०१, पड्) ।
 सलहिअ देखो नल्लहिअ (कुमा) ।
 सलिल पुन [सलिल] 'पानी, जल, 'सलिला ए सदति ए वति नाया' (सूत्र १, १२, ७, कुमा, प्रासू ३५) । 'गाहि पु [निधि] सागर, समुद्र (मे ६ ६) । 'नाह पुं [नाथ] वही (पउम ६, ६६) । 'विल न [विल] भूमि-निर्भर, जमीन में बहता भरना (भग ७, ६—पत्र ३०५) । 'रासि पु [राशि] समुद्र (पाप्र) । 'वाइ पु [वाइ] मेघ (पउम ४२, ३४) । 'वर पु [वर] वही (से ६, ६४) । 'वती श्री [वती] विजय-क्षेत्र-विशेष (राज, णाया १, ८—पत्र १२१) । 'वत्त न [वत्त] वैताल्य पर्वत पर उत्तर दिशा-स्थित एक विद्याघर-नगर (इफ) ।
 सलिला श्री [सलिला] महानदी, बड़ी नदी (सम १२२) ।
 सलिलुच्छय वि [सलिलोच्छय] प्लावित, डूबोया हुआ (पाप्र) ।

सलिस प्रक [स्वप्] सोना, शयन करना । सलिसइ (पड्) ।
 सल्लि देखो सल्ल = स-सवरण ।
 सल्लोग पुं [शल्लोग] श्लाघा, प्रशंसा (सूत्र १, १३, १२) । देखो सल्लो ।
 सल्लोग देखो सल्लोग = स लोक ।
 सल्लोण देखो सल्लोण = स-लोग ।
 सल्लोय देखो सल्लोय = लोक (सूत्र १ ६, २२) ।
 सल्ल पुन [शल्ल] १ शल्ल-विशेष तोमर, माँग, 'तमो मल्ला परणत्ता' (ठा ३, ३—पत्र ६८) । २ शरीर में छुग हुआ काँटा, तीर आदि (सूत्र २ २, ५, पचा ६, १६, प्रासू २०) । ३ पापानुत्थान, पाप-क्रिया, 'पागडियमव्वनल्लो' (उअ सूत्र १, १५, २४) । ४ पापानुत्थान में ल-नेवाला कर्म (सूत्र १, १५, २४ वज ११, ५ पु. भरत के माय दीक्षा लेनवाले एक गना का (पउम ८५, ७) । ६ न. छन्द विशेष (पिग) । 'ग वि [ग] शल्यवाला, शूल आदि शल्य से पीड़ित (परह २, ५—पत्र १५०) । 'ग न [ग] परिज्ञान, जानकारी (सूत्र २, २, ५७) ।
 सल्ल पुत्री [दे] हाथ से चलनेवाले सर्प-जातीय जन्तु की एक जाति (सूत्र २, ३, २५) ।
 सल्लइय वि [शल्लयित्त] शल्य-युक्त, जिसको शल्य पैदा हुआ हो वह (णाया १, ७—पत्र ११६) ।
 सल्लई श्री [शल्लई] वृद्ध-विशेष (णाया १, ७ टी—पत्र ११६, उप १०३७ टी कुमा, धर्मवि २०, मुपा २६१) ।
 सल्लग देखो सल्लग = शल्य क, शल्य ग ।
 सल्लग देखो सल्लग = सल्लग ।
 सल्लहत्त पुन [शल्लहत्त] आयुर्वेद का एक अंग, जिसमें शल्य निकालने का प्रतिपादन किया गया हो वह शास्त्र (विपा १, ७—७५) ।
 सल्ल श्री [शल्ल] एक महौषधि ती ५) ।
 सल्लिअ वि [शल्लियत्त] शल्य-पीड़ित (सुर १२, १५२, सुपा २२७, महा भवि) ।
 सल्लिह देखो सल्लिह = स + लिह् । सल्लिहदि (आरा ३५) ।

सारस्वतु वि [संरक्षित] सरक्षण-कर्ता
(ठा ७—पत्र ३८६) ।

सारग देखो सारय = स्मारक (आचा,
श्रौप) ।

सारज न [स्वाराज्य] स्वर्ग का राज्य (विमे
१८८३) ।

सारण पु [मारण] १ एक यादव-कुमार
(अत ३, वृप्र १०१) । २ रावणाधीन एक
सामन्त राजा (पद्म ८, १२३) । ३ रावण
का मन्त्री (मे १२, ६४) । ४ रावण का
एक सुभट (मे १४, १३) । ५ न ले जाना,
प्रापण (शोध ४४८) ।

सारण न [स्मारण] १ याद कराना (शोध
४४८) । २ वि याद दिलानेवाला । स्त्री
°णि, °णी (ठा १०—पत्र ४७३) ।

सारणा न [स्मारणा] १ याद दिलाना (सुर
१५, २४८ विचार २८८, काल) ।

सारणि } स्त्री [सारणि, °णी] १ आलवाल,
सारणी } नीक, कियारी (घण २६, कुप्र
५८) । २ परपरा (नम्मन ७७) ।

सारथ न [सारथ्य] सारथिपन (णाय
१, १६, पद्म २४, ३८) ।

सारदा देखो सारया (रभा) ।

सारदिअ देखो सारइय (अभि ६६) ।

सारमिअ वि [दे] स्मारित, याद कराया
हुआ (दे ८, २५) ।

सारमेअ पु [सारमेय] ध्यान, कुत्ता (उप
७६८ टी, कुप्र ३६३, सम्मत् १८६, प्रासू
१५८) ।

सारमेई स्त्री [सारमेयी] कुत्ती, शुनी (सुर
१४, १५१) ।

सारय वि [शारद] शरद ऋतु का (सम
१५३ परह १, ४—पत्र ६८, विमे १४६६,
अजि १३, कप्प, श्रौप) ।

सारय वि [सारक] १ श्रेष्ठ करनेवाला (मे
३, ४८) । २ मात्रक, मिद्ध करनेवाला (कप्प,
मे ६, ४८) ।

सारय वि [स्मारक] १ याद करनेवाला । २
याद दिलानेवाला (अग, आचा १, ४, ४, १,
कप्प) ।

सारय वि [स्वारत] ग्रामस्त, खूब लीन
(आचा १, ४, ४, १) ।

सारय देखो सारय ।

सारया स्त्री [गारय] सरस्वती देवी (नम्मत्
१४०) ।

सारव देखो सार = सारय । भवि. सारविस्त
(वव १) ।

सारव सक [समा + रच्] माफ करना,
ठीक-ठाक करना, दुरुस्त करना । सारवइ
(हे ४, ६५), 'सारवह सयलमरणो' (सुर
१५, ८२) । वक्र सारवेन (गउड) । कवक.
सारविज्जन (सण) ।

सारव सक [समा + रभ्] शुल्कात करना,
प्रारम्भ करना । सारवइ (पड्) ।

सारवण न [समारचन] समानन, माफ
करना (शोध ७३) ।

सारविअ वि [समारचिन] दुरुस्त किया
हुआ, माफ किया हुआ (दे ८, ४६, कुमा,
शोधभा ८) ।

सारस पु [सारस] १ पक्षि-विशेष (कप्प,
श्रौप, स्वप्न ७०, कुमा, सण) । २ छन्द-
विशेष (पिग) ।

सारसी स्त्री [सारसी] १ पड़ज ग्राम की एक
मूर्छना (ठा ७—पत्र ३६३) । मादा सारम-
पत्नी । ३ छन्द-विशेष (पिग) ।

सारस्सय पु [सारस्वत] १ लौकान्तिक देवों
की एक जाति (णाय १, ८—पत्र १५१,
पि ३५८) ।

सारद न [सारव] मधु शहद (गम, दे ८,
२७) ।

सारहि पु [मारयि] रथ हाँकनेवाला (सम
१, पात्र, महा) ।

साराडि पु स्त्री [दे] पक्षि-विशेष, शरारि पक्षी
(दे ८, २४) ।

साराय अक [साराय्] सार-रूप होना ।
वक्र. सारायत (उप ७२८ टी) ।

साराव सक [सारय्] चिपकवाना, लगवाना,
सील कराना । सक. 'साराविअ लखं
नोरंघत्त तत्थ कय' (धर्मवि ५) ।

सारि स्त्री [शारि] १ पक्षि-विशेष, मैना (गा
५५२) । २ पासा खेलने का रंग-विरंगा

मंचा (गा १३८) । ३ युद्ध के लिए गज-
पर्याण (दे ७, ६१; भवि) ।

सारि देखो सारी (दे) (पात्र) ।

सारिअ वि [सारिअ] सारवाला, 'सारोम-
सारिअ माणुमतण सधसारिओ धम्मो' (आ
१८) ।

सारिअ वि [सारित] चिपकाया हुआ, सील
किया हुआ, ततो कुमोए निमित्तविज्जण तीए
सम्म मुह पूज्जण उवरि लम्भाए सारियाए'
(सम्मत् २२६) ।

सारिआ } स्त्री [सारिका] मैना, पक्षि-
मारिडआ } विशेष (गा ५८६, पात्र, दे ८,
२४) ।

सारिअ न [सादृश्य] समानता, सरीखाई
(हे २, १८, कुमा, धर्मस ४२५, समु १८०,
विमे ४६६) ।

सारिअ } वि [सादृश] समान, सरीखा,
मारिअ } 'सारिअविपलभा तह मेदे
किमिह सारिअ' (धर्मस ४२५, समु १७६,
प्राप, हे १, ४४, कुमा, गा ३०, ६४) ।

सारिअ देखो सारिअ = सादृश्य (हे २,
१७, सुर १२, १२२) ।

सारिअिअ स्त्री [दे] दुर्वा, दूब (दे ८,
२७) ।

सारिअंत देखो सार = सारय ।

सारिअ देखो सारिअ = सादृश्य (सजि २,
ववा ११४) ।

सारिअ } न [सादृश्य] समानता, सरीखाई
मारिअ } (राज, नाट - रत्ना ७६) ।

सारी स्त्री [दे] वृक्षी, श्रपि का घासन (दे ८,
२२, ६१) । २ मृत्तिका, मिट्टी (दे ८,
२२ टी) ।

सारी स्त्री [शारी] देखो सारि = शारि,
'सज्जिओ कचणगुडासारीहि हवी' (वृप्र
१२०) ।

सारीर वि [शारीर] शरीर का, शरीर-सम्बन्धी
(उप, सुर ४, ७५) ।

सारीरिय वि [शारीरिक] ऊपर देखो (सुर
१२, १०, सण) ।

सारुवि } पु [सारुपिन्, °क] जैन साधु
सारुविअ } के नमान वेप को धारण करने-
वाला रजोहरण-व्रजित स्त्री-रहित गृहस्थ,

(पत्र १६४) । ६ एक नगर का नाम (विषा १, ५—पत्र ६१) । ७ अच्युतेन्द्र का एक पारिषानिक विमान (ठा १०—पत्र ५१८, श्रौप) । ८ दृष्टिवाद का एक सूत्र (सम १२८) । ९ पृथ्वी की एक जाति (राज) । १० देव-विमान-विशेष (देवेन्द्र १३६, १४१) ।
 °ओभटा स्त्री [°तोभटा] प्रतिमा-विशेष, एक व्रत (श्रौप ठा २, ३—पत्र ६४, अत २६) । °कामनमिद्र पु [°कामनमसृद्र] पञ्च का छठवाँ दिवस, पड़ो नित्य (मुज्ज १०, १८) । °कामा स्त्री [°कामा] विद्या-विशेष, जिसको गायना में सर्व इच्छाएँ पूर्ण होती हैं (पउम ७, १०७) । °गा वि [°गान] व्यापक (अच्यु १०) । °गा स्त्री [°गा] उत्तर दक्षक पर्वत पर रहनेवाली एक दिक्कुमारी देवी (ठा ८—पत्र ४६७) । °गुप्त पु [°गुप्त] एक जैन मुनि (पउम २०, १६) । °ज्ञ वि [°ज्ञ] १ सर्व पदार्थों का जानकार । २ पुं. जिन भगवान् । ३ बुद्धदेव । ४ महादेव । ५ परमेश्वर (हे २, ८३, पड, प्राप्र) । °हृ पु [°र्थ] १ अहोरात्र का उत्तरीमर्वा मुहूर्त (मुज्ज १०, १३) । २ पुन सहस्रार देवलोक का एक विमान (नम १०५) । ३ अनुत्तर देवलोक का सर्वाधिक-नामक एक विमान (पव १६०) । ४ पुं. सत्र अर्थ (आचा १, ८, ८, २५) । °हृसिद्ध पुन [°र्थमिद्र] १ अहोरात्र का उत्तरीमर्वा मुहूर्त (सम ५१) २ एक सर्व-श्रेष्ठ देव-विमान, अनुत्तर देवलोक का पञ्चवाँ विमान (नम २, भग, अत, श्रौप) । ३ पु ऐरवत वर्ष में उत्पन्न होनेवाले छठवें जिनदेव (पव ७) । °हृमेन्द्रा स्त्री [°र्थसिद्धा] भगवान् धर्मनाथजी की दोक्षा-शिक्षिका (विचार १२६) । °हृसिद्धि स्त्री [°र्थमिद्रि] एक देव विमान (देवेन्द्र १३७) । °णु देवो °ज्ञ (हे १, ५६, पड, श्रौप) । °त्त देवो °थ (समु १५०) । °त्ता देवो °ओ (पाम) । °थ्य श्र [°त्र] मत्र स्थान में, सत्र में (गड्ड प्रागू ३६, ६८) । °द.म, °दरिमि वि [°दशिन] १ सत्र वस्तुओं को देनेवाला । २ पु जिन भगवान्, महान् (राज, भग, सम १, पडि) । °देव पु [°दय] १ एक प्रसिद्ध जैन आचार्य

(साधं ८०) । २ राजा कुमारपाल के समय का एक मेठ (कुप्र १४३) । °दमि देवो °दमि (वेद्य ३५४) । °ट्टा स्त्री [°ट्टा] सब फाल, शतौत आदि सर्व नमय (भग) । °वत्ता स्त्री [°वत्ता] व्यापक, सर्व-ग्राहक (विमे ३८६१) । °न्तु रत्ना °ज्ञ (नम १, प्रागू १७०, महा) । °प्पग वि [°त्तक] १ व्यापक । २ पु लोभ (सूत्र ११, २, १२) । °प्पभा स्त्री [°प्रभा] उत्तर दक्षक पर्वत पर रहनेवाली एक दिक्कुमारी देवी (राज) । °भक्त्य वि [°भक्त्य] नम्रो खाने-वाला, सर्व-भोजी, 'अग्निमिव नवभक्त्य' (णाय १, २—पत्र ७६) । °भट्टा स्त्री [°भट्टा] प्रतिज्ञा विशेष, व्रत विशेष (पव २७१) । °भावविड पु [°भावविड] आगामी काल में भारत वर्ष में होनेवाले बाहरवें जिन-देव (नम १५३) । °य वि [°द] मव देनेवाला (परह २, १—पत्र ६६) । °या श्र [°दा] हमेशा, नदा (रंभा) । °रयण पु [°रत्न] १ एक महा-निवि (ठा ६—पत्र ४४६) । २ पुन पर्वत-विशेष का एक शिखर (इक) । °रयणा स्त्री [°रत्ना] ईशानेन्द्र की वसुमित्रा नामक इन्द्राणी की एक राजधानी (इक) । °रयणामय वि [°रत्नमय] १ मव रत्नों का बना हुआ (पि ७०, जीव २, ४) । २ चक्रवर्ती का एक निधि (उव ६८६ टी) । °विगमहिअ वि [°विप्रहिक] सर्व-मक्षिप्त, मवमे छोटा (भग १३, ४—पत्र ६६) । °विरड स्त्री [°विरति] पाप-कर्म में सर्वथा निवृत्ति, पूर्ण समय (विमे २६८४) । °रगय [°मद्र] मृत्यु (पउम—पत्र ० २०१, पर्व ११०, गा० ४४) । °मजम पु [°सयम] पूर्ण समय (राय) । °मड वि [°सह] सब महन करनेवाला, पूर्ण सहिष्णु (पउम १४, ७६) । °सिद्धा स्त्री [°मद्रा] पञ्च की चौथी, नववी और चौदहवीं रात्रि त्रिधि (मुज्ज १०, १५) । °से श्र [°शम] मव और से, सब प्रकार से (उत १, ८, आचा) । °स्म न [°स्व] सकल द्रव्य, सब घन (म ४५६ ममि ४० कपू) । °हा श्र [°या] मव प्रकार से, सब तरह से (गा ८६७, महा, प्रागू ३,

१८१) । °णद पु [°नन्द] ऐरवत धेनु के एक भावी जिन-देव (सम १५४) । °णुभूड पु [°नुभूति] १ भारत वर्ष में होनेवाले पञ्चवें जिन भगवान् (नम १५३) । २ भगवान् महावीर का एक शिष्य (नम ११—पत्र ६७८) । °ण्डा स्त्री [°ण्डा] विद्या-विशेष (पउम ७, १४४) । °प वि [°प] सपूर्ण (भग) । °सग पु [°गन] अग्नि प्राग (हे ४, ३६५) ।

राव्यक्षय वि [°नय] १ समाप्तगयो, सर्व से विनिगृ (कपू) । २ न. पाप (आव) । सव्यग वि [°सर्वाङ्ग] १ सपूर्ण (ठ ०, १—पत्र २०८) । सर्व-शरीर-प्रापा (राज) । °सुर वि [°सुर] १ सर्व अंगों में श्रेष्ठ । २ पुन तान-विशेष (राज, पव २७१) ।

सव्यगिअ वि [°सर्वाङ्गिण] सर्व अंगयों सव्यगिण में व्याप्त (हे २, १५१, कुमा, से १५, ५४), 'सव्यगिणानरण पत्तेय तेण ताण कय' (कुप्र २३४, धर्मवि १८६) ।

सव्यग देवो स-व्यग = मक्षण ।

सव्यराडअ वि [°सर्वाङ्गिण] सपूर्ण रात्रि में सम्बन्ध रखनेवाला, सारी रात का (सूत्र २, २, ५५, कपू) ।

सव्यरी स्त्री [°शर्वरी] रात्रि, रात (पात्र, गा ६५३, मुपा ४६१) ।

सव्यल पु [°दे शर्वल] कुन्त, बर्द्धा (राज, काल) । देवो सव्यल ।

सव्यन्ता स्त्री [°दे शर्वल] कुशी, लाह का एक हथियार (दे ८, ६) ।

सव्यरक्षय देवा स-व्यरक्षय = सव्यपक्ष ।

सव्याव देवो सव्यय = सर्वाप ।

सव्याव दयो स-व्याव = सव्याव ।

सव्यावनि श्र [°दे] सर्व, मत्र, सपूर्ण, 'एवा-वति सव्यावति लोगमि' (आचा), सव्यावति च ए लोमे ए पुक्करिणीए' (सूत्र २, १, ५), 'सव्या-ति च ए लोगमि' (सूत्र २, ३, १), 'सव्य ति सव्यावनि पुग्गमाएकालनमममि जावतिय छेन कुमड' (भग १, ६—पत्र ७७) ।

सव्यविड स्त्री [°सर्वाङ्गि] सपूर्ण विज्ञ (णाय १, ८—पत्र १३१) ।

°यर (कुमा) । °चरण न [°चरण] सहचर, साथ रहना, भेलाप, 'रयणनिहाणेहि भवठ सहचरण' (श्रु ८४) । °ज पु [°ज] १ स्वभाव (कुमा, पिंग) । २ वि. स्वाभाविक (चिइय ४३१) । °जाय वि [°जात] एक साथ उत्पन्न (गाया १, ५—पत्र १०७) । °देव पु [°देव] १ एक पाण्डव, माद्री-पुत्र (धर्मवि ८१) । २ राजगृह नगर का एक राजा (उप ६४८ टी) । °देवा स्त्री [°देवा] श्रोपधि-विशेष (धर्मवि ८१) । °देवी स्त्री [°देवी] १ चतुर्थ चक्रवर्ती की माता (सम १५२ महा) । २ एक महौपवि (तो ५) । °धम्मआग्णिणी स्त्री [°धम्मआग्णिणी] पत्नी, भार्या (प्रति २२) । °पसुकीलिअ वि [°पाशुकीलिअ] बाल-मित्र (सुपा २५४, गाया १, ५—पत्र १०७) । °य देखो °ज (चिइय ४४६, राज) । °यर वि [°चर] १ सहाय, साहाय्य-कर्ता । २ वयस्य, दोस्त । ३ अनुचर (पात्र, कुप्र २, अचु ६०, नाट—शकु ६१) । °यरी स्त्री [°चरी] पत्नी, भार्या (कुप्र १५१, से ८, ६६) । °यार देखो °रार (पात्र, हे १, १७७) । °राग वि [°राग] राग-सहित (पउम १४, ३३) । °र देखो °रार (पउम ५३, ७६) ।

सह° देखो सहा = नभा (कुमा) ।

सहउत्थिय्या स्त्री [दे] दूती (दे ८, ६) ।

सहगुह पु [दे] घूक, उल्लू, पक्षि-विशेष (दे ८, १६) ।

सहडामुह न [शरुडामुख] बैताल्य की उत्तर श्रेणी में स्थित एक विद्यावर-नगर (इक) ।

सहण अ [दे] सह, साथ में (सूत्र० चूणि० गा० २५७) ।

सहण न [सहण] १ तितिक्षा, मर्पण । २ वि. सहिष्णु, नहन करनेवाला (सं २६) ।

सहण पुत्री [शफर] मत्स्य, मछली (पात्र, गउड) । स्त्री °रि (दे १, २३६, गउड) ।

सहर वि [दे] साहाय्य-कर्ता, सहाय, 'न तस्स माया न पिया न भाया, कालम्मि तम्मि (°म्मी) सहरा भवति' (वे ४३) ।

सहल वि [सफल] फल-युक्त, सार्थक (उप १०३६ टी, हे १, २३६, कुमा, स्वप्न १६) ।

सहस देखो महस्स (श्रा ४४, पि ६२, ६६) । °किरण पु [°किरण] सूर्य, रवि (सम्मत् ७६) । °कव पु [°क्ष] १ इन्द्र (सुपा १३०) । २ रावण का एक योद्धा (पउम ५६, २६) । ३ छन्द-विशेष (पिंग) ।

सहसकार पु [सहसाकार] १ विचार किए बिना करना (आचा) । २ आत्मिक क्रिया अकस्मात् करना (भग २५, ७—पत्र ६१६) । ३ वि विचार किए बिना करनेवाला (आचा) ।

सहसन्ति अ अकस्मात्, शीघ्र, जल्दी, तुरन्त (पात्र, प्राकृ ८१) ।

सहसा अ [सहसा] अकस्मात्, शीघ्र, जल्दी (पात्र, प्रासू १५१, भवि) । °वित्तासिय न [°वेत्तासिन] अकस्मात् स्त्री के नेत्र-म्य-गन आदि क्रोडा (उत्त १६, ६) ।

सहस्स पुन [सहस्स] १ संख्या-विशेष, दम सौ, १००० । २ वि हजार की संख्यावाला (जी २७, ठा ३१ टी—पत्र ११६, प्रासू ४, कुमा) । ३ प्रचुर बहुत (कप्प, आवम, हे २, १६८) । °किरण पु [°किरण] १ सूर्य, रवि (सुपा ३७) । २ एक राजा (पउम ६०, ३४) । °कव पु [°क्ष] इन्द्र, देवाधिपति (कप्प, उत्त ११, २३) । °णयण, °नयण पुं [°नयन] १ इन्द्र (उव, हम्मीर ५, महा) । २ एक विद्यावर राज-कुमार (पउम ५, ६७) । °पत्त अ [°पत्र] हजार दन-वाला कमल (कप्प) । °पाग पुन [°पाक] हजार श्रोपधि से बनता एक प्रकार का तैल (गाया १, १—पत्र १६, ठा ३, १—पत्र ११७) । °रस्सि पुं [°रश्मि] सूर्य, रवि (गाया १, १—पत्र १७, भग, रयण ८३) । °लोयण पु [°लोचन] इन्द्र (स ६२२) ।

°सिर वि [°शिरम्] १ प्रभूत मस्तक-वाला । २ पु विष्णु (हे २, १६८) । °वत्त देखो °पत्त (से ६, ३८, सुपा ४६) । °सो अ [°शस्] हजार-हजार, अनेक हजार (श्रा १२) °हा अ [°वा] सहस्र प्रकार से (सुपा ५३) । °हुत्त अ [°हृत्त्वस] हजार बार (प्राप्र, हे २, १८८) । देखो सहस, सहास ।

सहस्सबवण न [सहस्साम्रवण] एक उद्यान, ग्राम के प्रभूत पेड़ोंवाला वन (गाया, १, ८—पत्र १५२, अत उवा) ।

सहस्सार पु [सहस्सार] १ आठवां देवलोक (सम ३५, भग, अत) । २ आठवें देवलोक का इन्द्र (ठा २, ३—पत्र ८५) । ३ एक देस विमान (देवेन्द्र १३५) । °वडिसिय पुन [°वित्समरु] एक देव विमान (सम ३५) । सहा स्त्री [सभा] समिति, परिषत् (कुमा, स १२६, ५१६, सुपा ३८४) । °मय वि [°म्ह] सम्य, मध्य (पात्र, स ३८५) ।

सहा देखो साहा = शाखा (गा २१८) ।

सहाअ देखो स-हाअ = स्व-भाव ।

सहाअ पु [सहाय] साहाय्य-कर्ता (गाया १, २—पत्र ८८, पात्र, से ३, ३, स्वप्न १०६, महा, भग) ।

सहाइ वि [साहाय्यिन्] ऊपर देखो (मिरि ६७, सुपा ५६३) ।

सहाइया स्त्री [सहायिका] मदद करनेवाली (उवा) ।

सहार देखो सह-र = सह-कार ।

सहाव देखो स-हाव = स्व-भाव ।

सहाम देखो सहस्स (भवि) । °हुत्तो अ [°हृत्त्वस] हजार बार (वड) ।

सहामय देखो सहा सय = सभा-सद ।

सहि वि [सहि] मित्र, दोस्त (पात्र, उर २६) । देखो सही° ।

सहि° देखो मही (कुमा) ।

सहिअ वि [सोह] सहन किया हुआ (से १, ५५, घात्वा १५५) ।

सहिअ वि [सहित] १ युक्त, समन्वित (उव, कुमा, सुपा ६१) । २ हित-युक्त (सुप्र १, २२, २३) । ३ पु. ज्योतिषक ग्रह-विशेष (ठा २, ३—पत्र ७७) ।

सहिअ पु [सभिक] द्यूत-कारक, जुआ खेलनेवाला (दे ६, ४२, पात्र सुपा ४८८) ।

सहिअ देखो स-हिअ = स्व-हित ।

सहिअ देखो सह = सह- ।

सहिअ वि [सहदय] १ मुन्दर चित्त-सहिअ वाला । २ परिक्व बुद्धिवाला (हे १, २६६, दे १, १, काप्र ५२१) ।

साहन्नत देखो साहण = म + हन् ।

साहम्म न [साधर्म्य] १ समान धर्म, तुल्य धर्म (सम्म १५३, पिड १३६) । २ सादृश्य, समानता (विसे २५८६, ओघ ४०४, पचा १४, ३५) ।

साहम्मि वि [साधर्मिन्, साधर्मिन्] समान धर्मवाला, एक-धर्मी (पिड १३६, १४६, १४७) स्त्री °णी (आचा २, १, १, १२, महा) ।

साहम्मिअ १ वि [साधर्मिक] ऊपर देखो साहम्मिग १ (ओघ १५, ७७६, औप, उत्त २६, १, कस सुपा ११२ पचा १६, २२) ।

साह्य देखो साह्य = साधक (उप ३६०, स ४५, काल) ।

साह्य देखो साह्य = शासक, कथक (सम्म १४३) ।

साह्य वि [सह्य] सक्षिप्त, समेटा हुआ (पणह १, ४—पत्र ७८, औप, तदु २०) ।

साहर सक [स + वृ] सवरण करना । साहरद (हे ४, ८२) ।

साहर सक [स + हृ] १ सकोच करना सक्षेप करना, सकेलना, ममेटना । २ स्थानान्तर में ले जाना । ३ प्रवेश कराना । ४ छिपाना । ५ व्यापार-रहित करना । साहरद, साहरे साहरति (भग ५, ४—पत्र २१८, कप्प, उव, सुअ १, ८, १७, पि ७६) । साहरिज्ज (भग ५, ४) । भवि, साहरिज्जिस्सामि (कप्प) । कवक साहरिज्जमाण (कप्प औप) । सक साहरित्ता (कप्प) । हेऊ, साहरित्ताए (भग ५, ४—पत्र २१८) ।

साहरण न [सहरण] एक स्थान से दूसरे स्थान में ले जाना, स्थानान्तर-नयन (पिड ६०६ ६०७) ।

साहरय वि [दे] गत-मोह, मोह-रहित (दे ८, २६) ।

साहरिज्ज वि [संहृत] १ स्थानान्तर में नीत (सम ८६, कप्प) । २ अत्यन्त क्षिप्त (पिड ५२०) । ३ संलीन किया हुआ, संकोचित (औप) ।

साहरिअ वि [सवृत] सवरण-युक्त (कुमा, पाअ) ।

साहल्ल न [साफल्य] सफनता (ओप ७३) । साहव देखो साहु = साधु, अह पेच्छइ साहवें तहि वालि' (पउम ६, ६१, ७७, ६४) ।

साहव न [साधव] साधुता, साधुपन (पउम १, ६०) ।

साहव न [स्वाभाव] स्वभावना, स्वभाव-पन (धम्मस ६६) ।

साहस न [माहस] १ विना विचार किया जाता काम (उव, महा) । २ पु. एक विद्या-धर नरेन्द्र, साहम गनि (पउम ४७, ४७) । °गइ पु [°गहि] वही अर्थ (पउम ४७, ४५, महा) ।

साहस देखो साहस्स = साहस (राज) ।

साहसि वि [साहसिन्] साहम कर्म करने-वाला साहसिक, 'ते घोरा साहसिणो उत्तम-सत्ता' (उप ७२८ टी, किरात १४) ।

साहसिअ वि [साहसिक] ऊपर देवो (औप, सुअ २, २, ६२, चार ३७, कुप्र ४१६) ।

साहस्स वि [साहस्स] १ जिनका मूल्य हजार (मुद्रा, रुपया आदि) हो वह वस्तु (दसनि ३, १०, उव, महा) । २ हजार का परिमाणवाला, 'जोयणसयसाहस्सो वित्थिएणो मेस्सनाभीओ' (जीवस १८५) । ३ न. हजार (जीवस १८५) । °मल्ल पु [°मल्ल] व्यक्ति-वाचक नाम (उव) ।

साहस्सिय वि [साहस्सिक] १ हजार का परिमाणवाला (गाया १, १—पत्र ३७, कप्प) । २ हजार आदमी के साथ लड़नेवाला मल्ल (राज) ।

साहस्सी स्त्री [साहस्सी] हजार, दस सौ, 'गिहत्थाण अणेगाओ साहस्सीओ समागया' (उत्त २३, १६, सम २६, उवा, औप, उत्त २२, २३, ह ३, १२३) ।

साहा स्त्री [आघा] प्रशंसा (सम ५१) ।

साहा अ [रवाहा] देवता के उद्देश से द्रव्य-त्याग का सूचक अव्यय, आहुति-सूचक शब्द (ठा ८—पत्र ४२७, ओघभा ५७) ।

साहा स्त्री [साखा] १ एक ही आचार्य की सतति में उत्पन्न अमुक मुनि की सन्तान-परम्परा, अवान्तर सतति (कप्प) । २ वृक्ष

की डाल, डाली (आचा २, १, ७, ६, उव, औप, प्रासू १०२) । ३ वेद का एक देश (मुख ४, ६) । °भग पु [°भग] शाखा का टुकड़ा, पल्लव (आचा २, १, ७, ६) । °मय, °मिअ, °मिग पु [°मृग] वानर, वन्दर (पाअ, ती २, मुपा २६२, ६१८) । °र, ल वि [°वन्] १ शाखावाला, शाखा-युक्त (धम्म १२ टी सुपा ४७४) । २ पु. वृक्ष, पेड़ (सुपा ६३८) ।

साहाणुमाहि पु [न्] शक देश का मन्त्राट, वादशाह, पत्तो मगकूल नाम कूल, तत्त्व जो नामता ते माहिणा भएणति जो सामता-हिवई मयलनरिदवदूडामणी सो साहाणुमाही भएणइ' (काल) ।

साहार सक [म + आ + वृ] अर्च्छी तरह धारण करना । साहारद (भवि) ।

साहार पु [सहहार] ग्राम का गाछ 'होसइ किल साहारो साहारे अणम्मि वडु ते' (वज्ज १३८, मुपा ६३८) ।

साहार पु [दे साधुहार] साधुकार, महा-जन (धम्म १२ टी) ।

साहार पु [सहावार सहकार] अर्च्छा आधार, सहारा, अवलम्बन, सहायता, मदद, उपकार, 'परचित्तरजणेण न वेसमेतेण साहारो' (उव, पुप्फ २२५), भुजतो आहारं गुणोवयारमरीरसाहार' (ओघ ५८३, स ४२५, वज्ज १३०, सण) ।

साहार वि [साहकार] ग्राम के गाछ से उत्पन्न, आन्न-वृक्ष-सम्बन्धी (कप्प) ।

साहार पुन [साधारण] १ वनस्पति-साधारण विशेष, जहाँ एक शरीर में अनन्त जोय हो वह वनस्पति, कन्द आदि । २ कर्म-विशेष, जिनके उदय से माधारण-वनस्पति में जन्म होय वह कर्म (कम्म २, २८, पणह १, १—पत्र ८, कम्म १, २७, जी ८, पणह १—पत्र ४२) । ३ कारण (आवृ १) । ४ पुं. साधारण वनस्पति-काय का जीव (पणह १—पत्र ४२) । ५ वि सामान्य । ६ समान, तुल्य (पणह १—पत्र ४२) । ७ पुन. उपकार, सहायता, मदद, साधारणद्वारा जो केइ गिलाणम्मि उवट्टिए । पभू ए कुणई किच्च' (सम ५१) । °शरीरनाम न [°शरीर-

साङ्गिअ वि [शाकुनि] १ पक्षि-घातक, पक्षियों के बच का काम करनेवाला (पण्ण १, १, २—पत्र २६, अणु १२६ टि, विपा १, ८—पत्र ८२) । २ शकुन शास्त्र का जानकार (नुपा २६७, कुप्र ५) । ३ श्येन पक्षी द्वारा शिकार करनेवाला (अणु १२६ टि) ।

साङ्गि देखो साङ्ग (राज) ।

साङ्गि वि [साङ्गि] आयुवाला, प्राणी (ठा २, १—पत्र ३८) ।

साङ्गि वि [सकुल] व्याप्त, भरपूर (सुर १०, १८) ।

साङ्गि वि [साकुल] आकुलता युक्त, व्याकुल, व्यग्रः इदियमुहसाङ्गिओ परिहिड्ढी सोवि समारं (पठम ०२, १६५) ।

साङ्गि ली [द] (वज्राञ्जल (गा २६६) ।

२ वज्र, कपड़ा (गा ६०५) । देखो साङ्गि ।

साङ्गि पु [द] अनुराग, प्रेम (हे ८, २४, पङ् ५) ।

साङ्गि देवी साङ्गि । साङ्गिइ (भवि ११, २) ।

साङ्गि न [साङ्गि] अयोध्या नगरी (इक, सुपा ५५०, पि ६३) । १ पुर न [पुर] वही अर्थ (उप ७२८ टी) । २ पुरी ली [पुरी] वही (पठम ४, ४) । देखो साङ्गि ।

साङ्गि ली [साङ्गि] अयोध्या नगरी (पठम २०, १, एया १, ८—पत्र १३१) ।

साङ्गि न [साङ्गि] व्रत-विशेष (प्रबो ७३) ।

साङ्गि देवी साङ्गि (३६, १३०) ।

साङ्गि न [साङ्गि] १ नगर-विशेष, अयोध्या (ती १) । २ वि. गृहस्थ-संन्यो । ३ न प्रत्याख्यान-विशेष (पव ४) ।

साङ्गि वि [साङ्गि] १ सकेत का, सकेत-संन्यो । २ न प्रत्याख्यान का एक भेद (पव ४) ।

साङ्गि पु [साङ्गि] १ इक्ष-विशेष (पठम ४२, ७, दे १, २७) । २ तरु-सिद्ध वडा आदि लाय, 'सागा सो तक्कसिद्ध ज' (पव २५६) । ३ शाक, तरकारी (पि २२२, ३६४) ।

साङ्गिअ वि [शाङ्गिअ] गाढीवान, गाढी चला कर निर्वह करनेवाला (सुर १६, २२३, न २६२, उत ५, १४, आ १२) ।

साङ्गि न [साङ्गि] १ शान्त चागमन, प्रशस्त आगमन (भग) । २ अतिथि गन्कार, आदर, बहु-मान (नुपा २५६) । ३ कुशल (कुमा) ।

साङ्गि पु [साङ्गि] १ नमुद्र (पण्ण १, ३—पत्र ४४, प्रामू १३४) । २ एक राज-पुत्र (उप ६३७) । ३ राजा अन्वक्रवृष्णि का एक पुत्र (अंत ३) । ४ एक वणिक्-व्यापारी (उप ६४८ टी) । ५ नातवें वनदेव तथा वासुदेव के पूर्व भव के धर्म-गुरु (सम ६५३) ।

६ पुन कूट-विशेष (इक) । ७ समय-परिमाण-विशेष, दश काटाकोटि-पल्यापम-परिमित काल (नव, ६, जी ३६, पव २०१) । ८ एक देव-विमान (सम २) । ९ कृत पुन [कृत] एक देव विमान (सम २) । १० चंद पु [चंद] १ एक जैन आचार्य (काल) । २ एक व्यक्तिगचक नाम (उव, पडि, राज) ।

११ चित्त पुन [चित्त] कूट-विशेष (इक) । १२ दत्त पुं [दत्त] १ एक जैन भुनि (सम १५३) । २ तीमरे बलदेव का पूर्वजन्मीय नाम (सम १५३) । ३ एक श्रेष्ठि-पुत्र (महा) ।

४ एक मार्गवाह का नाम (विपा १, ७) । ५ हरिपेण चक्रवर्ती का एक पुत्र (महा ८४) । ६ दत्ता ली [दत्ता] १ भगवान् धर्मनाथजी की दीक्षा-शिषिका (सम १५) । २ भगवान् विमलनाथजी की दीक्षा-शिषिका (विचार १२६) । ३ दत्त पु [दत्त] हरिपेण चक्रवर्ती का एक पुत्र (महा) । ४ दूह पु [दूह] सैन्य की रचना विशेष (महा) । देखो साङ्गि = नागर ।

साङ्गिअ देखो साङ्गिअ (पिड ५६८, पव ११८) ।

साङ्गिअ पुन [साङ्गिअ] समय-परिमाण विशेष, दश-कोटाकोटि-पल्यापम-परिमित काल (ठा २, ८—पत्र ६०, सम २, ८, ६, ६०, ११, उत, पि ४४८) ।

साङ्गि वि [साङ्गि] १ आकार-सहित, आकृतिवाला । २ विशेषाश को ग्रहण करने की शक्ति विशेष-ग्रहण, ज्ञान (श्रोप, भग,

मम्म ६५) । ३ आवाद-युक्त (भग ७, २—पत्र २६२, उप ७२८ टी) । ४ पक्षि वि [पक्षि] ज्ञानवाला (पण्ण ३—पत्र ७५६) ।

साङ्गि वि [साङ्गि] गृह-युक्त गृहस्थ (आवम) ।

साङ्गि , वि [साङ्गिअ, रिक] १ साङ्गिअ { गृह का मालिक उपाश्रय का मालिक नाथु को म्यात देनेवाला गृहस्थ, शय्यातर (पिड ३१०, आचा २, २, ३, ५, सूत्र ८, ६१६, श्रोव १६६) । २ मूतक, प्रपत्र श्रोत्र मरण की अनुद्धि, अशोच (सूत्र २, ६, १६) । ३ गृहस्थ से युक्त, 'साङ्गिअ उवमम' (आचा २, २, १, ८, ५) । ४ न, मैथुन (आचा १, ६, १, ६) । ५ वि.

शय्यातर गृहस्थ का, उपाश्रय के मालिक से सवन्ध रखनेवाला, 'साङ्गिअ पिड भुजेमारी' (सम ३६) ।

साङ्गि देवा साङ्गि = साङ्गेन (एया १, ८—पत्र १३१ उप ७२८ टी) ।

साङ्गि मक [साङ्गि शान्त] सडाना, विनाश करना । हेक साङ्गिअ (विपा १, २—पत्र १६) ।

साङ्गि पु [साङ्गि, शान्त] १ शाटन, विनाश (विसे ३.२१) । २ शाटक, उत्तरीय वज्र, चद्दर (पव ३८) । ३ वज्र, कपड़ा, 'एगनाडे अदुवा अचेल' (आचा, सुपा ११) ।

साङ्गि पुन [साङ्गि] वज्र, कपड़ा (सुपा साङ्गि १५३, राज) ।

साङ्गि न [साङ्गि, शान्त] १ विशरण, विनाश (विने ३३१६, स ११६) । २ छेदन (सूत्रनि ७२) ।

साङ्गि ली [साङ्गि, शान्त] खण्ड-खण्ड होकर गिराने का कारण, विनाश-कारण (विपा १, २—पत्र १६) ।

साङ्गिअ वि [साङ्गिअ, शान्त] सडाकर गिराया हुआ, विनाशित (सुर ५, ३, दे ७, ८) ।

साङ्गिआ ली [साङ्गिआ] वज्र, कपड़ा (श्रोप, कप) ।

साङ्गिअ देखो साङ्गि = शाट, 'नियनियम्राजाणु-मल्लिणमाङ्गि' (सुपा १) ।

सिअग पु [दे] वरुण देवता (दे ८, ३१) ।
सिअवर पुं [श्वेताम्बर] जैनो का एक सम्प्र-
दाय, श्वेताम्बर जैन (सुपा ६५८) ।
मिअलि पुंस्त्री [दे] वृक्ष-विशेष (स २५६) ।
देखो सीअलि ।

सिआ देखो सिवा = शिवा (से १३, ६५) ।
मिआ अ [ग्यात्] इन अर्थों का सूचक
अव्यय—१ प्रशंसा, श्लाघा । २ अस्तित्व,
मत्ता । ३ सशय, सदेह । ४ प्रश्न । ५
अवधारण, निश्चय । ६ विवाद । ७ विचारणा
(हे २, १०७) । ८ अनेकान्त, अनिश्चय,
कदाचित् (सूअ १, १०, २३, बृह १, परण
५—पत्र २३७) । °वाइ पुं [°वादिन्]
जिनदेव, अहंन् देव (कुमा) । °वाय पु
[°वाड] अनेकान्त दर्शन, जैन दर्शन (हे २,
१०७, चड, षड्) ।

मिआ स्त्री [मित्ता] १ लेश्या-विशेष, शुक्ल-
लेश्या (पव १५२) । २ द्राक्षा आदि का संग्रह
(राज) ।

सिआल पु [शृगाल, सृगाल] १ पशु-विशेष,
सियार, गीदड़ (राया १, १—पत्र ६५) ।
२ दैत्य-विशेष । ३ वामुदेव । ४ निष्ठुर ।
५ खल, दुर्जन (हे १, १२८, प्राप्र) ।

मिअली स्त्री [दे] डमर, देश का भीतरी या
बाहरी उपद्रव (दे ८, ३२) ।

सिआली स्त्री [शृगाली] मादा सियार (नाट,
पि ५०) ।

सिआलीस स्त्री [पट्चत्वारिंशत्] छेप्रा-
लीस, चालीस और छ (विमे ३४६ टी) ।

सिआसिअ पु [सितासित] १ वलभद्र,
वलराम । २ वि श्वेत और कृष्ण (प्राप्र) ।

सिइ पु [शिति] १ हरा वर्ण । २ वि हरा
वर्णवाला । °पावरण पु [°प्रावरण] वल-
राम, वलभद्र (कुमा) ।

सिड स्त्री [द शिति] सीढी, नि श्रेणि (पिड
४७३, वव १०) ।

मिउ (अप) देखो सम (भवि) ।

सिउंठा स्त्री [दे असिकुण्ठा] साधारण
वनस्पति-विशेष (परण १—पत्र ३५) ।

मिअर वि [सितेतर] कृष्ण, काला
(पाप्र) ।

सिकला देखो सकला (अचु ४०) ।

सिखल न [दे] नूपुर (दे ८, १०, कुप्र ६८) ।
सिखला देखो सकला (से १, १४, प्राप्र,
नाट—मृच्छ ८६) ।

सिग न [शृङ्ग] १ लगातार छव्वीम दिनो
के उपवास (सवोव ५८) । २—देखो सग =
शृङ्ग (उवा, पाप्र, राय ४६, कप्प, उप
५६७ टी, मुपा ४३२, विक्र ८६, गउड,
हे १, ६३०) । °णाइय न [°नादित]
प्रधान काज (पचमा ३) । °पाय न [°पात्र]
सोग का वना हुआ पात्र (आचा २, ६, १,
५) । °माल पु [°माल] वृक्ष-विशेष (राज) ।
°वटण न [°वटन] लगाट से नमन (बृह ३) ।
°वेर न [°वेर] १ आद्रक, आदी । २ शुण्ठी,
सोठ (उत्त ३६, ६७, दस ५, १, ७०, भास
८ टी, परण १—पत्र ३५) ।

सिग त्रि [दे] कृश, दुर्बल (दे ८, २८) ।

सिगय वि [दे] तरुण, जवान (दे ८ ३१) ।

सिगरीडी देखो सिगिरीडी (राज) ।

सिंगा स्त्री [दे] फली, फलिया (भास ८ टी) ।

सिगार पु [शृङ्गार] १ नाट्यशास्त्र-प्रसिद्ध
रस-विशेष, 'मिगारो एणम रमो रइसंजोगा-
भिलासमजण्णो' (अणु) । २ वेप, भूपण
आदि की सजावट, भूपण आदि की शोभा
(औप, विपा १, २) । ३ लवङ्ग, लौंग । ४
सिन्दूर । ५ चूर्ण, चून । ६ काला अगह ।
७ आद्रक, आदी । ८ हाथी का भूपण । ९
अलकार, भूपण (हे १, १२८, प्राप्र) । १०
वि अतिशय शोभावाला, 'तए ए समणस्स
भगवओ महावीरस्स वियट्ठोइस्स सरोरय
ओराल मिगार कल्लाण मिव धन्नं मगल्लं
अणल्लिकम्विभूसिअ चिट्ठइ' (मग) ।

सिगार सक [शृङ्गारय्] सिगार करना,
सजावट करना । सिगारइ (भवि) ।

सिगारि वि [शृङ्गारिन] मिगार करनेवाला,
शोभा करनेवाला (सिरि ८४४) ।

सिगारिअ वि [शृङ्गारित] सिगारा हुआ,
सजाया हुआ (सिरि १५८) ।

सिगारिअ वि [शृङ्गारिक] शृङ्गार-युक्त
(उवा) ।

सिगि वि [शृङ्गिन] १ मीगवाला (सुव ८,
१३, दे ७, १६) । २ पुं. मेप, भेड । ३
पर्वत । ४ भारतवर्ष का एक सीमा-पर्वत ।
५ मुनि-विशेष । ६ वृक्ष (अणु १४२) ।

सिगिणी स्त्री [दे] गौ, गैया (दे ७, ३१) ।

मिगिया स्त्री [शृङ्गिका] पानी छिड़कने का
पात्र विशेष, पिचकारी (सुपा ३२८) ।

सिगिरीडी स्त्री [शृङ्गिरीटी] चतुरिन्द्रिय
जन्तु की एक जाति (उत्त ३६, १४८) ।

मिगी स्त्री [शृङ्गी] देखो सिंगिया (मुपा
३२८) ।

मिगेरिवम्म न [दे] वल्मीक (दे ८, ३३) ।

सिव नक [शिडव्] तूँघना । सिघड (कुप्र
८) । सक मिविउ (धर्मवि ६४) । हेक्
सिघेउ (धर्मवि ६४) ।

सिअ देखो मिह (हे १, २६, विपा १, ६—
पत्र ५५, पड्) ।

सिंघल देखो सिंहल (नुर १३, २६, मुपा
१५, पि २६७) ।

सिंघाडग पुन [शृङ्गाटक] १ सिंघाडा,
सिंघाडय पानी-फल (परण १—पत्र २६,
आचा २, १, ८, ५) । २ त्रिकोण मार्ग
(परह १, ३—पत्र ५८, औप, राया १,
१ टी—पत्र ३, कप्प) । ३ पु राहु (मुज्ज
२०) ।

सिघाण पुन [शिङ्घाण] १ नासिका-मल,
श्लेष्मा (ठा ५, ३—पत्र ३४२, सम १०,
परह २, ५—पत्र १४८, औप, कप्प, कस,
दम ८, १८, पि २६७) । २ पुं. काला
पुद्गल-विशेष (मुज्ज २०) ।

मिघासण देखो सिहासण (स ११७) ।

सिघुअ पुं [दे] राहु (दे ८, ३१) ।

सिच सक [मिच्] मीचना, छिड़कना ।
मिचइ (हे ४, ६६, महा) । भूका. सिचिम
(कुमा) । भवि मिचिस्स (पि ५२६) । क.
सिचेयव्व (सुर ७, २३५) । कवक.
सिच्चंत, सिच्चमाण (पि ५४२, उप २११
टी, स ३४६) ।

सिचण न [मेचन] छिड़काव (सूअ १, ४,
१, २१, मोह ३१) ।

सिचाण पु [दे] पक्षि-विशेष, श्येन पक्षी,
बाज, गुजराती मे 'मिचाणो' (सण) ।

सामङ्ग देखो सामाङ्ग (विसे २६२४, २६३०, २६३४, २६३६)।

सामङ्ग पुं [सामयिक] १ एक गृहस्थ सामङ्ग } का नाम (सूत्रनि १६१)। २ वि समय-सम्बन्धी (पंच ५, १६६)। ३ सिद्धान्त का जानकारी (पिडभा ६)। ४ आगम-आश्रित, सिद्धान्त-आश्रित (ठा ३, ३—पत्र १५१)। ५ बौद्ध विद्वान् (दसनि ४, ३५)।

सामङ्ग देखो सामाङ्ग (विसे २७१६)।

सामङ्गि वि [सामायिकिन्] सामायिक-वाला (विसे २७१६)।

सामंत पुन [सामन्त] १ निकट, समीप, पास, 'तस्म ए अदूरसामन्ते' (गाया १, २—पत्र ७८, उवा, कप्प)। २ पुं अवीन राजा (महा, काल)। ३ अपने देश के अन्तर देश का राजा, समीप देश का राजा (कप्प)।

सामती स्त्री [दे] सम-भूमि (दे ८, २३)।

सामतोवणिवाइय न [सामन्तोपनिपातिक] अभिनय का एक भेद (राय ५४)।

सामतोवणिवाइया स्त्री [सामन्तोपनिपा-सामतोवणीया] तिकी] क्रिया-विशेष, चारों तरफ से इकट्ठे हुए जन-समुदाय में होनेवाली क्रिया—कर्म बन्ध का कारण (ठा २, १—पत्र ४०, नव १८)।

सामतोवायणिय पुंन [सामन्तोपपातिक] अभिनय-विशेष (ठा ४, ४—पत्र २८५)।

सामत्त्व देखो समक्त्व, सभरिय चिय वयण, 'ज त अणुरणमित्तसामक्त्वं। भणिय अईयवाने' (पठम १८, ८४)।

सामग देखो सामय = श्यामाक (राज)।

सामग सक [शिल्प] आलिङ्गन करना। सामगह (हे ८, १६०)।

सामग } न [सामग्र्य] सामग्री, सपू-सामगिअ } र्णता, सकलता (से ६, ४७, आचा २, १, १, ६, महा)।

सामगिअ वि [शिल्प] आलिङ्गित (कुमा)।

सामगिअ वि [दे] १ चलित। २ अव-लम्बित। ३ पालित, रक्षित (दे ८, ५३)।

सामगा स्त्री [सामग्री] १ समन्तता। २ कारण-समूह (सम्पत्त २२४, महा, कप्प, रंभा)।

सामच्छ सक [दे] मन्त्रणा करना, पर्या-लोचन करना। सक्र. सामच्छिऊण (पठम ४२, ५)।

सामच्छ न [सामर्थ्य] समर्थता, शक्ति (हे २, २२ कुमा)।

सामच्छग देखो सामत्थण (राज)।

सामच्छ न [साम्राज्य] सार्वभौम राज्य, बड़ा राज्य (उप ३५७ ठी)।

सामण } वि [श्रामण, श्रमण] श्रमण-सामणिय } संवन्धी (राज)।

सामणिय देखो सामण = श्रामण्य (सूत्र १, ७, २३, दम ७, ५६)।

सामणेर पुं [श्रामाण] श्रमण का अपत्य, साधु की सतान (सूत्र १, ४, २, १३)।

सामण न [श्रामण्य] श्रमणता, साधुपन (भग, दम २, १, महा)।

सामण पु [सामान्य] १ अणुपक्षी देवी का एक इन्द्र (ठा २, ३—पत्र ८५)। २ न. वैशेषिक दर्शन में प्रसिद्ध सत्ता पदार्थ (धर्मस २५६)। ३ वि. साधारण (गा ८६१, ६६६, नाट—रत्ना ८१)।

सामत्थ देखो सामच्छ (दे)। सक्र. सामत्थे-ऊण (काल)।

सामत्थ देखो सामच्छ = सामर्थ्य (हे २, २२, कुमा; ठा ३, १—पत्र १०६, सुपा २८२, प्राप् १४४)।

सामत्थ } न [दे] पर्यालोचन, मन्त्रणा, सामत्थण } 'कास हरामोत्ति अज्ज इव इति सामत्थ करेति गुज्झ' (पणह १, ३—पत्र ४६, पिड १२१, वृह १)।

सामन्न देखो सामण = श्रामण्य (भग, कप्प, मुर १, १)।

सामन्न देखो सामण = सामन्य (उव, स २२५, धर्मवि ५६, कम्म १, १०, ३१)।

सामय सक [प्रति + ईक्ष्] प्रतीक्षा करना, बाट जोहना (हे ४, १६३, पड्)।

सामय पु [श्यामाक] धान्य-विशेष, साँवा (हे १, ७१, कुमा)।

सामरि पुत्री [दे शाल्मलि] शाल्मली वृक्ष, सेमर का पेड़ (दे ८, २, पात्र)।

सामरिस वि [सामर्प] ईर्ष्यालु, अमहिष्णु (मुर २, ६०)।

सामल वि [श्यामल] १ काला, वृष्ण वर्ण-वाला (से १, ५६, मुर ३, ६५, कुमा)। २ पुं एक वणिग—वनिया (सुपा ५५५)।

सामलइअ वि [श्यामलित] काला विया हुआ (से ८, ६६)।

सामलय वि [श्यामलय] १ काला। २ काला पानीवाला (से १, ५६)। ३ पु. वनस्पति-विशेष (राज)।

सामला स्त्री [श्यामला] १ वृष्ण वर्णवाली स्त्री। २ सोलह वर्ष की स्त्री, श्यामा (वज्ज ११२)।

सामलि पुत्री [शाल्मलि] सेमर का गाछ (सूत्र १, ६, १८, उव, श्रौप)।

सामलिय देखो सामलइअ (मुर ४, १०७)।

सामली देखो सामला (गउड, गा १२३, २३८, ७६४, सुपा १८५)।

सामलेर पुं [शाल्मल्य] कावचित्त गौ—चित्त-कवरी गाय का वत्स (अणु २१७)।

साम स्त्री [श्यामा] १ तेरहवें जिनदेव की माता (सम १५१)। २ तृतीय जिनदेव की प्रथम शिष्या (सम १५२)। ३ रात्रि, रात (सूत्र २, १, ५६, से १, ५६, श्रौप ३८७)। ४ शक्र की एक अग्र-महिषी—पटरानी (पठम १०२, ११६)। ५ प्रिययु वृक्ष (पणह १—पत्र ३३, १७—पत्र ५२६, अनु ४)। ६ एक महौपधि (ती ५)। ७ लता-विशेष, साम-लता (श्रौप)। ८ नोम लता (से १, ५६)। ९ नारी, स्त्री (से १, ५६; अणु १३६)। १० श्याम वर्णवाली स्त्री (कुमा)। ११ सोलह वर्ष की उम्रवाली स्त्री (वज्ज १०४)। १२ सुन्दर स्त्री, रमणी (से १, ५६, गउड)। १३ यमुना नदी। १४ नील का गाछ। १५ गुग्गुल का गाछ। १६ गुह्वरी, गला। १७ गुन्द्रा। १८ कृष्णा। १९ अम्बिका। २० कस्तूरी। २१ वटपत्री। २२ वन्दा की लता। २३ हरी पुनर्नवा। २४ पिप्पली का गाछ। २५ हस्तिदा, हलदी। २६ नील द्वार। २७ तुलसी। २८ पचवीज।

‘वलोक’ पु [‘वलोक’] १ मिह की तरह पीछे की तरफ देखना । २ छन्द-विशेष (पिंग) । १ गण न [‘गण’] आसन-विशेष, राजासन, राज-गद्दी (महा) । देखो सीह ।

सिंहल पु [‘सिंहल’] १ देश विशेष, सिंहल-द्वीप, लका द्वीप (इक मुर १३, २५, २७) । २ पुत्री, सिंहल-द्वीप का निवासी (श्रौप) । श्री ‘ली’ (श्रौप, एया १, १—पत्र ३७) ।

सिंहलिआ श्री [‘दे’] शिखा चोटी (पात्र) । सिंहिणी श्री [‘सिंहिणी’] छन्द-विशेष (पिंग) । सिंहीभूय न [‘सिंहीभूत’] व्रत-विशेष, चतुर्विध आहार की संलेखनः—परित्याग (सवोध ५८) ।

सिकता श्री [‘सिकता’] बालू, रेत (अणु सिकता २७० टी, पउम १२, १७, विसे १७३६) ।

सिक पु [‘सिक’] हाठ का अन्त भाग (दे १, ८८) ।

सिकग पुन [‘सिकग’] सिकहर, मीका, छोका, रस्सी की बनी डोलनुमा एक चीज जो छत में लटकायी जाती है और उसमें चीजें रख दी जाती हैं जिनमें उसमें चीटियाँ न चढ़ें और उमें बिल्ली न खाय (राय ६३, उवा, निचू १, आवक ६३ टी) ।

सिकड पुन [‘दे’] खटिया, मचिया, ‘कोव-भवणम्मि जरजिन्नसिककडे पडइ जरियव्व’ (सुपा ६) ।

सिकय देखो सिकग (राय ६३, आवक ६३ टी, स ५८३) ।

सिकरा श्री [‘शर्करा’] खड, टुकड़ा, ‘सय-सिकरो’ (स ६६३) ।

सिकरिअ न [‘सीत्कृत’] अनुराग से उत्पन्न आवाज (गा ३६२) ।

सिकरिआ श्री [‘दे श्रीकरी’] जहाज का आभरण-विशेष (मिरि ३८७) ।

सिकार पु [‘सीत्कार’] १ अनुराग की आवाज (गा ७२१, भवि, सण, नाट—मृच्छ १३६) । २ हाथी की चिल्लाहट, ‘कुंतविरिअभिन्नकरि-कलहमुक्कपिककारपउरम्मि समरम्मि’ (एभि १६) ।

सिकिआ श्री [‘शिक्या, शिक्रियका’] रस्सी की बनी हुई एक चीज जो चढ़ने के काम में आती है (सिरि ४२४) ।

सिकख सक [‘शिक्ष’] सीखना, पढ़ना, अभ्यास करना । सिकखइ (गा ४७५, ५२४), सिकखतु सिकखह (गा ३६२, गुण ४) । भवि सिकखस्सामि (स्वप्न ६७) । वक्क सिकखत, सिकखमाण (नाट—मृच्छ १४१, पि ३६७, सूत्र १ १४, १) । संक. सिकखअ (नाट—रत्ना २१) । हेक्क सिकखउ (गा ८६२) ।

सिकख देखो सिकखाव । वक्क. सिकखयंत (पउम ८२, ६२) । क. सिकखगोअ (पउम ३२, ५०) ।

सिकखग वि [‘शिक्षक’] शिक्षा-कर्ता, ‘दुक्खाण सिकखग त परिणदमिह मे दुक्कयं (रगा) ।

सिकखग पु [‘शैक्षक’] नूतन शिष्य (सूत्रनि १२८) ।

सिकखण न [‘शिक्षण’] १ अभ्यास, पाठ (कुप्र २३०) । २ सीख, उपदेश (सुर ८, ५१) । ३ अध्यायन, पाठन (सिरि ७८१) ।

सिकखव देखो सिकखाव । सिकखवेषु (गा ७५०, ६४८) । कवक्क. सिकखविज्जमाण (सुपा ३१५) । क. सिकखवियव्व (सुपा २०७) ।

सिकखवअ वि [‘शिक्षक’] शिक्षा देनेवाला, पढ़ानेवाला, शिक्षक (प्राकृ ६१) ।

सिकखविअ वि [‘शिक्षित’] १ सिखाया हुआ, पढ़ाया हुआ (गा ३५२) । २ न शिक्षा देना, अभ्यास कराना, अध्यापन (सुपा २५) ।

सिकखा श्री [‘शिक्षा’] १ सजा, दरह (कुप्र ११०) । २ वेद का एक अङ्ग, वर्णों के उच्चारण सम्बन्धी ग्रन्थ-विशेष, अक्षरों के स्वरूप को बतलानेवाला शास्त्र, ‘सिम्खावा-गरणद्वदकण्डडो’ (वर्मवि ३८, श्रौप, कप्प, अत) । ३ शास्त्र और आचार सम्बन्धी शिक्षण, अभ्यास, सीख, सिखाई, उपदेश (श्रौप, बृह १, महा, कुप्र १६७) । ‘वय न [‘व्रत’] व्रत-विशेष, जैन गृहस्थ के सामायिक आदि चार व्रत (श्रौप, महा, सुपा ५४०) । ‘वय न [‘पद’] शिक्षा-स्थान (श्रौप) ।

सिकखा (अप) श्री [‘शिखा’] छन्द-विशेष (पिंग) ।

सिकखाण न [‘शिक्षाण’] आचार-सम्बन्धी उपदेश देनेवाला शास्त्र (कप्प) ।

सिकखाव सक [‘शिक्षय’] सिखाना, पढ़ाना, अभ्यास कराना । मिकवावेइ (पि ५५६) । भवि. सिकखावहिति (श्रौप) । सक. सिकखा-वेत्ता (श्रौप) । हेक्क सिकखावित्तए, सिकखावेत्तए, सिकखावेउ (ठा २, १—पत्र ५६ कस, पचा १०, ४८ टी) ।

सिकखावअ देखो सिकखवअ (गा ३५८, प्राकृ ६१) ।

सिकखावण न [‘शिक्षण’] सिखाना, सीख, हितोपदेश (सुख २, १६, प्राकृ ६१, कप्प) । मिकखावणा श्री [‘शिक्षणा’] ऊपर देखो (सूत्रनि १२७, उप १५० टी) ।

सिकखाविअ वि [‘शिक्षित’] सिखाया हुआ (अप, पउम ६७, २२, एया १, १—पत्र ६०, १, १८—पत्र २३६) ।

सिकखअ वि [‘शिक्षित’] सिखा हुआ, जानकार, विद्वान् (एया १, १४—पत्र १८७, श्रौप) ।

सिकखर वि [‘शिक्षित’] सीखने की आदतवाला, अभ्यासी (गा ६६१) ।

सिखा श्री [‘शिखा’] छन्द-विशेष (पिंग) ।

सिखि देखो सिद्धि-शिखिन् (नाट—विक्र ३४) ।

सिगया देखो मिकया (राज) ।

सिगाल देखो सिआल (अण) ।

सिगाली देखो सिआली = शृगाली (चाव ११) ।

सिग वि [‘दे’] १ आन्त, थका हुआ (दे ८, २८, श्रौच २३) । २ पुन. परिश्रम, थकावट (वव ४) ।

सिगु पु [‘शिगु’] वृद्ध विशेष, सहजना का पेठ (दे ६, २०, पात्र) ।

सिगय न [‘शीघ्र’] १ जल्दी, तुरत । २ वि. शीघ्रता-युक्त, त्वरा-युक्त (पात्र, स्वप्न ५४, चड, कप्प, महा, सुर १, २१०, ४, ६६, सुपा ५८०) ।

सिचय पुं [‘सिचय’] वज्र, कपड़ा (पात्र, गा २६१, कुप्र ४३३) ।

१०—पत्र ४६५) । °कार पु [°कार] १ सत्य । २ सत्य-करण (ठा १०—पत्र ४६५) । °तण वि [°तन] सन्ध्या-ममय का (विक्र १६) ।

सायदूर न [दे] नगर-विशेष (दे ८ ५१ टी) । सायदूला बी [दे] केतकी, केवडे का गाछ (दे ८, २५) ।

सायकुभ न [शातकुम्भ] १ सुवर्ण, सोना । २ वि. सुवर्ण का बना हुआ (मुपा २०१) ।

सायग पुं [सायक] बाण, तीर (मुपा ६५१) ।

सायग वि [स्वादक] स्वाद लेनेवाला (दन ४, २६) ।

सायणा बी [शातना] खण्डन, छेदन (सम ५८) ।

सायणी बी [शायनी, स्वापनी] मनुष्य की दस दशाओं में दसवी—६० से १०० वर्ष की उम्रवाली—दशा (तदु १६) ।

सायत्त वि [स्वायत्त] स्वाधीन, स्वतन्त्र (स २७६) ।

सायय देखो सायग (पात्र, स ५४८) ।

सायर पुं [सागर] १ समुद्र (मुपा ५६, ८८, जी ४४, गण्ड, प्रासू ८७, १४४, प्राप्र, हे २, १८२) । २ ऐरवत वर्ष में होनेवाले चौथे जिन-देव (पव ७) । ३ मृग-विशेष । ४ सख्या-विशेष (प्राप्र) । ५ एक सेठ का नाम (मुपा २८०) । °घोस पुं [°घोप] एक जैन मुनि जो आठवें वनदेव के पूर्वजन्म में गुरु थे (पउम २०, १६३) । °भद पु [°भद्र] इक्ष्वाकुवंश का एक राजा (पउम ५, ४) । देखो सागर = सागर ।

सायर वि [सादर] आदर युक्त (गण्ड, नुर २, २४५) ।

सायार देखो सागार = साकार (सम्म ६४, पउम ६, ११८) ।

सार सक [प्र + ह] प्रहार करना । सारह (हे ४, ८४) । वक्र. सारत (कुमा) ।

सार सक [स्मारय्] याद दिलाना । सारे (वव १) ।

सार सक [सारय्] १ ठीक करना, दुरुस्त करना । २ प्रख्यात करना, प्रसिद्ध करना ।

३ प्रेरणा करना । ४ उन्नत करना, उत्कृष्ट बनाना । ५ मिद्ध करना । ६ अन्वेषण करना, खोजना । ७ सरकाना, खिसकाना, एक स्थान से अन्य स्थान में ले जाना । सारह (मुपा १५४), सारति, सारयइ (सूत्र १, २, २, २६, २, ६, ४), 'सारेहि वीण' (स ३०६), सारेह (सूत्र १, ३, ३, ६) । कर्म 'हंसाण सरेहि सिरि सारिज्जइ अह मराण हसेहि' (गा ६५३, काप्र ८६२) । कवक सारिज्जत (मुपा ५७) ।

सार सक [स्वरय्] १ बुलवाना । २ उच्चारण-योग्य करना । सारति (विने ४६२) ।

सार वि [गार] १ शवल, चितकवरा (पात्र, गण्ड ३७८, ५३०) । २ पु सार, पासा, खेलने के लिए काठ आदि का चौपहल रंगविरंगा सांचा (मुपा १५४) ।

सार पुन [सार] १ वन, दौलत (पात्र, से २, १, २६, मुद्रा २६७) । २ न्याय्य, न्याय-युक्त, 'एय खु नाणिणो सारं जं न हिसइ किचण' (सूत्र १, १, ४, १०) । ३ वल, पराक्रम (पात्र, से ३, २७) । ४ परमार्थ (आचानि २३६) । ५ प्रकर्ष (आचानि २४०) । ६ फल (आचानि २४१) । ७ परिणाम (ठा ४, ४ टी—पत्र २८३) । ८ रस, निचोह (कप्पू) । ९ एक देव विमान (देवेन्द्र १४३) । १० स्थिर अश (से ३, २७, गण्ड) । ११ पृ. वृक्ष-विशेष (पण १—पत्र ३४) । १२ छन्द विशेष (पिग) । १३ वि. श्रेष्ठ उत्तम, 'जह चवो ताराण गुणाण सारा तहेह दया' (धम्मो ६, से २, २६) । °कता बी [°कान्ता] पड़न ग्राम की एक मूर्छिता (ठा ७—पत्र ३६३) । °य वि [°द] सार देनेवाला (से ६, ४०) । °वई बी [°वती] छन्द विशेष (पिग) । °वत वि [°वन्] सार-युक्त (ठा ७—पत्र ३६४, गण्ड) । °वती देखो °वई (पिग) । सारइय वि [सारदिक] शब्द ऋतु का (उत्त १०, २८, पण १७—पत्र ५२६, ती ५, उवा) ।

सारग वि [शाङ्ग] १ सींग का बना हुआ । २ न. धनुष । ३ आर्द्रक, आदी (हे २,

१०० प्राप्र) । ४ विष्णु का धनुष (हे २ १००, मुपा ३४८) । °पाणि पुं [°पाणि] विष्णु (प्राप्र २७) ।

सारग पुं [सारग] १ सिंह, मृगेन्द्र (सुर १, ११, मुपा ३४८) । २ चातक पक्षी (पात्र, से ६, ८२) । ३ हरिण, मृग (से ६, ८२, कप्पू) । ४ हाथी । ५ भ्रमर । ६ छत्र । ७ राजहम । ८ चित्र मृग, चितकवरा हरिण । ९ वाद्य-विशेष । १० शस्त्र । ११ मयूर । १२ धनुष । १३ केश । १४ आभरण, अलंकार । १५ वज्र । १६ पद्म, कमल । १७ चन्दन । १८ कपूर । १९ फूल । २० कोयल । २१ मेघ (मुपा ३४८) । °रूपक, °रूपक (अप) पुन [°रूपक] छन्द-विशेष (पिग) ।

सारग न [साराङ्ग] प्रधान दल, श्रेष्ठ अवयव (पण २, ५—पत्र १५०, मुपा ३४८) ।

सारगि पु [शाङ्गिन्] विष्णु, श्रीकृष्ण (कुमा) ।

सारगिका } बी [सारङ्गिका] छन्द-विशेष
सारगिका } (पिग) ।

सारगी बी [सारङ्गी] १ हरिणी (पात्र) । २ वाद्य-विशेष (मुपा १३२) ।

सारभ देखो सरभ (ठा ७—पत्र ४०१) ।

सारकल्लाण पु [सारकल्याण] बलयाकार वनस्पति-विशेष (पण १—पत्र ३४) । देखो सालकल्लाण ।

सारक्ख सक [स + रक्ष्] परिपालन करना, अचड़ी तरह रक्षण करना । सारक्खइ (तदु १३) । वक्र. सारक्खन, सारक्खमाग (पि ७८, उवा) ।

सारक्खण न [सरक्षण] सम्यग् रक्षण, आण (णाया १, २—पत्र ६०, सूत्र १, ११, १८, औप) ।

सारक्खणया बी [सरक्षणा] ऊपर देखो (पि ७६) ।

सारक्खि वि [सरक्षिन्] सरक्षण-कर्ता (पि ७६) ।

सारक्खिअ वि [सरक्षित] जिसका सरक्षण किया गया हो वह (पण २, ४—पत्र १३०) ।

सिणेह देखो सणेह (भग, एया १, १३—
पत्र १८१, स्वप्न १५, कुमा, प्रासू ६) ।

सिणेहालु वि [स्नेहवन्] स्नेहाला (स
७६३) ।

सिण्ण वि [स्विन्न] स्वेद-युक्त (गा २४४)

सिण्ण देखो सिन्न = शीर्ण (नाट—मृच्छ
२१०) ।

सिण्ह पुन [शिश्न] पुथिह, पुरुष-लिंग
(प्राप्र, दे ४, ५) ।

सिण्हा स्त्री [दे] १ हिम, आकाश से गिरता
जल-कण (दे ८, ५३) । २ अवश्याय, कुहरा,
कुहासा (दे ८, ५३, पाप्र) ।

सिण्हालय पुन [दे] फल विशेष (अनु ६) ।

सिति देखो सिद्ध = (दे) (वव १०) ।

सित्त वि [सिक्त] सीचा हुआ (सुर ४, १४५,
कुमा) ।

सित्तुंज देखो सेत्तुज (मूक्त ५२) ।

सित्थ न [दे] गुण, धनुष की डोरी, 'सित्थ
व असोत्तगय मह मण देव हूमेइ' (कुप्र ५४,
पाप्र) ।

सित्थ } न [सिक्थ] १ धान्य-कण (परह
सित्थय } १, ३—पत्र ५५, कप्प, औप,
अणु १४२) । २ मोम (दे १, ५२, पाप्र,
उप ७२८ टी) । ३ ओपवि विशेष, नीली,
नील (हे २, ७७) । ४ पुन, कवल, आस,
'मामे मासे उ जा अज्जा एगसित्थेण पारए'
(गच्छ ३, २८, प्राप्र) ।

सित्था स्त्री [दे] १ लाला । २ जीवा, धनुष
की डोरी (दे ८, ५३) ।

सित्थि पु [दे] मत्स्य, मछली (दे ८, २८) ।

सिट्ठ वि [दे] परिपाटित, विदारित, चीरा
हुआ (दे ८, ३०) ।

सिट्ठ वि [सिद्ध] १ मुक्त, मोक्ष-प्राप्त, निर्वाण-
प्राप्त (ठा १—पत्र २५, भग, कप्प, विसे
३०२७, २६, सम्म ८६, जी २५, सुपा
२४४, ३४२) । २ निष्पन्न, बना हुआ
(प्रासू १५) । ३ पका हुआ (सुपा ६३३) ।
४ शाश्वत, नित्य (चेइय ६७६) । ५ प्रतिष्ठित,
लब्ध-प्रतिष्ठ (चेइय ६७६, सम्म १) । ६
निश्चित, निर्णीत (सम्म १) । ७ विख्यात,
प्रसिद्ध (चेइय ६८०) । ८ शब्द-विशेष,

साव्य-विलक्षण शब्द (भान ८६) । ९ सावित
किया हुआ । १० प्रतीत, ज्ञात (पचा ११,
२६) । ११ पुं. विद्या, मय, कर्म, शिल्प
आदि में जिसने पूर्णता प्राप्त की हो वह
पुरुष (ठा १—पत्र २५, विसे ३०२८, वजा
६८) । १२ समय-परिमाण विशेष, स्तोक-
विशेष (कप्प) । १३ न. लगातार पनरह
दिनों के उपवास (सवोव ५८) । १४ पुन
महाहिमवत आदि अनेक पर्वतों के शिखरों
का नाम (ठा ८—पत्र ४३६, ६—पत्र
४५४, इक) । १५ पुन [अश्वर] नमो
अरिहताए' यह वाक्य (भांवि) । १६ गडिया
स्त्री [गण्डिका] सिद्ध सन्ध्या एक ग्रन्थ-
प्रकरण (भग) । १७ चक्र न [चक्र] अहं
आदि नव पद (मिरि ३४) । १८ न [अन्न]
पकाया हुआ अन्न (मुपा ६३३) । १९ पुत्त पु
[पुत्र] जैन साधु और गृहस्थ के बीच की
अवस्थावाला पुरुष (सवोव ३१, निवू १) ।
२० मणोरम पुं [मनोरम] पक्ष का दूसरा
दिन (सुज १०, १४) । २१ राय पु [राज]
विक्रम की बारहवीं शताब्दी का गुजरात का
एक सुप्रसिद्ध राजा, जो मिदराज जयसिंह के
नाम ने प्रसिद्ध था (कुप्र २२, याप्र १५) ।
२२ वाल पुं [पाल] बारहवीं शताब्दी का
गुजरात का एक प्रसिद्ध जैन कवि (कुप्र
१७६) । २३ सेण पु [सेन] एक सुप्रसिद्ध
प्राचीन जैन महाकवि और तार्किक आचार्य
(सम्मत्त १४१) । २४ सेणिया स्त्री [श्रेणिया]
बारहवीं जैन अग्र ग्रन्थ का एक अंश (रादि) ।
२५ मेल पु [शैल] शत्रुजय पर्वत, सौराष्ट्र
देश में पालीताना के पाम का जैन महा-
तीर्थ (मुख १, ३, मिरि ५५२) । २६ हेम
न [हेम] आचार्य हेमचन्द्र विरचित प्रसिद्ध
व्याकरण-ग्रन्थ (मोह २) ।

सिद्धन पु [सिद्धान्त] १ आगम, शास्त्र (उव,
वृह १, रादि) । २ निश्चय (स १०३) ।

सिद्धत्थ पुं [दे] रुद्र, देव-विशेष (दे ८,
३१) ।

सिद्धत्थ वि [सिद्धार्थ] १ कृतार्थ, कृतकृत्य
(पठम ७२, ११) । २ पु. भगवान् महावीर
के पिता का नाम (सम १५१, कप्प, पठम
२, २१, मुर १, १०) । ३ ऐरवत वर्ष के

भावी दूसरे जिन-देव (सम १५४) । ४ एक
जैन मुनि जो नववें वलदेव के दोहा-गुरु थे
(पठम २०, २०६) । ५ वृक्ष-विशेष (मुपा
७७, पिड ५६१) । ६ सर्प, सरसो (अणु
२३, कुप्र ४६०, पत्र १५४, हे ४, ४२३,
उप पृ ६६) । ७ भगवान् महावीर के कान
में कील निकालनेवाला एक वणिक् (चेइय
६६) । ८ एक देव-विमान (सम ३८, आचा
२, १५, २, देवेन्द्र १४५) । ९ यक्ष-विशेष
(आक्) । १० पाटलिसंभ नगर का एक राजा
(विपा १, ७—पत्र ७२) । ११ एक गांव
का नाम (भग १५—पत्र ६६८) । १२ पुर न
[पुर] अग्न देश का एक प्राचीन नगर (सुर
२, ६८) । १३ वग न [वन] वन-विशेष
(भग) ।

सिद्धत्था स्त्री [सिद्धार्था] १ भगवान् अग्नि-
नन्दन-स्वामी की माता का नाम (सम
१५१) । २ एक विद्या (पठम ७, १४५) ।
३ भगवान् समवनायजी की दीक्षा-शिविका
(विचार १२६) ।

सिद्धत्थिया स्त्री [सिद्धार्थिका] १ मिष्ट-वस्तु-
विशेष (परण १७—पत्र ५३३) । २ आम-
रण-विशेष, मोने की कठो (औप) ।

सिद्धय पुं [मिद्धक] १ वृक्ष-विशेष, निदुवार
वृक्ष, सम्हालु का गाछ । २ शाल वृक्ष (हे
१, १८७) ।

सिद्धा स्त्री [सिद्धा] १ भगवान् महावीर की
शामन-देवी, सिद्धायिका (सति १०) । २
पृथिवी विशेष, मुक्ति-न्याय, सिद्ध-शिला (सम
२२) ।

सिद्धाडया स्त्री [सिद्धायिका] भगवान् महा-
वीर की शामन-देवी (गण १२) ।

मिद्धाययण पुं [सिद्धायतन] १ शाश्वत
मन्दिर—देव-गृह । २ जिन-मन्दिर (ठा ४
२—पत्र २२६, इक, मुर ३, १२) । ३ अग्रक
पर्वतों के शिखरों का नाम (इक, ज ४) ।

सिद्धालय स्त्री [सिद्धालय] मुक्त-स्थान,
सिद्ध-शिला (औप, पठम ११, १२१, इक) ।
स्त्री. १ या (ठा ८—पत्र ४४०, सम २२) ।

सिद्धि स्त्री [सिद्धि] १ सिद्ध-शिला, पृथिवी-
विशेष, जहाँ मुक्त जीव रहते हैं (भग, उव, ठ

साधु श्रीर गृहस्थ के बीच की अवस्थावाला जैन पुरुष (मवोव ३१, ५४, वृह १ वव ४)।

सार्वविभ न [सार्वप्य] समान रूपता (सूत्र २, ३, २ २१)।

सार्वेच्छ देखो सारिच्छ = साहस्य (गउड)।

सारोहि वि [सारोहिन] सरोहण-कर्ता (पि ७६)।

साल पु [साल, शाल] १ ज्यौतिष्क महाग्रह-विशेष (ठा २, ३—पत्र ७८)। २ वृक्ष-विशेष; माखू का पेड़ (नम १५२, श्रौप, कुमा)। ३ वृक्ष, पेड़। ४ किला, प्राकार (सुपा ४६७)। ५ एक राजा, 'साल महानाल-सादिमहो य' (पडि)। ६ पक्षि-विशेष (परह १, १ टी—पत्र १८)। ७ पुन एक देव-विमान (सम ३५)। ८ कोट्ट्य न [कोष्टक] चैत्य-विशेष (राज)। ९ वाहन, १० हण [१० वाहन] एक सुप्रसिद्ध राजा (विचार ५३१, हे १ २११, प्राप, पि २४८, पड, कुमा)।

साल देखो सार = मार (सुपा ३८४, राया १, १६—पत्र १६६)। १० इय वि [चित] सार-युक्त (राया १, १६)।

साल न [शाला] घर, गृह, 'मायामत्तानपि ह कालेण सयलमुच्छन्न' (सुपा ३८४)।

साल पु [शाल] माला, वृक्ष का भाई (मोह ८८, निरि ६८८ भवि, नाट मुच्छ ३५)।

साल पु देखो शाला = (दे), 'जम्म मालम्म भग्गस्स', 'परित्तजीवे उ से माले' (परण १—पत्र ३७, ठा ८—पत्र ४२६)। १० मन वि [३० न] शाखावाला (राया १, १ टी—पत्र ४, श्रौप)।

साल देखो शाला = शाला। १० गिह, १० घर न [१० गृह] १ भित्ति रहित घर (निचू ८)। २ वगमदावाला घर (राय)।

सालइय देखो सारइय = शारदिक (राया १, १६ पत्र १६६)।

सालजयन न [शालङ्कायन] १ कौशिक गोत्र का एक शाखा-गोत्र। २ पुत्री उम गोत्रवाला (ठा ७—पत्र ३६०)।

सालकी स्त्री [दे] सारिका, मैना (दे ८, २४)।
सालगगी स्त्री [दे] सोढी, निश्रेणी (दे ८, २६, कुप्र १२०)।

सालव वि [सालम्ब] श्रवलम्बन युक्त, आश्रय-युक्त (गउड, राज)।

सालकल्लाण पु [शालकल्याण] वृक्ष-विशेष (भग ८ ३ टी—पत्र ३६४)। देखो सारकल्लाण।

सालक्किआ स्त्री [दे] गारिका, मैना (पड)।

सालग न [दे] १ वृक्ष की बाहरी छाल (निचू १५)। २ लम्बी शाखा (आव १)। ३ रम, 'श्रवसालग वा श्रवदालग वा भोत्तए वा पायए वा' (आचा २, ७, २, ७)।

सालगय न [सारणक] कटो के समान एक तरह का खाद्य (भवि)।

सालभजी देखो सालहजी (धर्मवि १४७, कुमा)।

सालम वि [सालस] शालस्य-युक्त, श्रनमी (गउड, सुपा २५१)।

सालहजिया ; स्त्री [शालभञ्जिका, सालहजी ; ३० जी] काष्ठ आदि की बनाई हुई पुतली (सुपा ४३, ५४)।

सालहिआ } स्त्री [दे] सारिका, मैना (पात्र, सालही } आ २८, दे ८, २४)।

साला स्त्री [शाला] १ गृह, घर। २ भित्ति-रहित घर (कुमा, उप ७२८ टी)। ३ छन्द-विशेष (पिग)।

साला स्त्री [दे] शाला (दे ८, २२, परह १, ३ पत्र ५४ दस ७, ३१, राय ८८)।

सालाइय देखो सालग (राज)।

सालाणय वि [दे] १ स्तुत, जिसकी स्तुति की गई हो वह। २ मृत्यु, स्तुति-योग्य (दे ८, २७)।

सालाहण देखो सालाहण = शाल-वाहन।

सालि पुन [शालि] १ ब्रीहि, घान, चावल (सूत्र २, २, ११, गा ५६६, ६६१, कुमा, गउड)। २ वलयाकार वनस्ति-विशेष, वृक्ष-विशेष (परण १—पत्र ३४)। १० भद्र पुं [१० भद्र] एक प्रसिद्ध श्रेष्ठि-पुत्र, जिसने गगवान् महावीर के पास दीक्षा ली थी (उव, पडि)। १० भसेल, १० भसेल पुं [दे] घान

के कणिश—बाल का तीक्ष्ण अग्रभाग (राज, उवा)। १० रक्खिआ स्त्री [रक्खिआ] घान का रक्षण करनेवाली स्त्री, कलम-गोपी (पात्र)। १० वाहण पुं [१० वाहन] एक सुप्रसिद्ध राजा (सम्मत्त १३७)। देखो साल-वाहण। १० सन्निध्य पुं [१० सान्निध्य] मत्स्य की एक जाति (परण १—पत्र ४७)। १० सिन्ध पुं [१० सिन्ध] मत्स्य-विशेष (आरा ६३)।

१० गालि वि [१० गालिन] शोभनेवाला (गउड, कुमा)।

सालिआ स्त्री [शालिका] घर का कमरा, एहिह भुवति घरमज्झिमसालिआसु' (कप्पू)।

सालिआ देखो गडिआ (राज)।

सालिणिआ } स्त्री [शालिनिआ, १० नी] १ सालिगी } शोभनेवाली, 'पीणसोणिण-णमालिणिआहि' (अजि २६)। २ छन्द-विशेष (पिग)।

सालिभजिया स्त्री [शालिभञ्जिका] पुतली (पउम १६, ३७)।

सालिय पु [शालिक] तन्तुवाय, जुलाहा (विमे २६०१)।

सालिय वि [शालमलिक] शालमलि वृक्ष का, मेमल के गाछ का, 'एग मालियापोड बढो आमेलगो होई' (उत्तनि ३)।

सालिम देखो सारिम = महश (राया १, १—पत्र १३, ठा ४, ४—पत्र २६५, कप्प)।

सालिणीपिड पु [शालिणीपिट] एक जैन गृहस्थ (उवा)।

साली स्त्री [श्याली] पत्नी-भगिनी, भार्या की वहन (दे ६, १४८)।

सालुअ पुन [शालूक] जल-कन्द विशेष, कमल कन्द (आचा २, १, ८, ३, दस ५, २, ८)।

सालुअ न [दे] १ शम्भूक, शम्भू। सूत्रे यव आदि घान्य का अग्र भाग (दे ८, ५२)।

सालूर पु स्त्री [शालूर] १ मेक, मेहक (पात्र, मुर २, ७४, मुग ६२, साध १०६, सूक्त २)। स्त्री १० री (गा ३६१)। २ न छन्द-विशेष (पिग)।

जिनदेव (सम १५४, पव ७)। ३ आठवें वलदेव का पूर्वमन्त्रीय नाम (पउम २०, १६१)। °चदा स्त्री [°चन्द्रा] १ एक पुष्करिणी (इक)। २ एक राज-पत्नी (उप ६८६ टी)। °ड्ड पु [°आढ्य] एक जैन मुनि (कप्प), °गय्यर न [°नगर] वैताढ्य की दक्षिण-श्रेणी का एक विद्याधरनगर (इक)। देखो °नय्यर। °णिकेतण न [°निकेतन] वैताढ्य की उत्तर-श्रेणी में स्थित एक विद्याधर-नगर (इक)। °णिलय न [°निलय] वैताढ्य पर्वत की दक्षिण-श्रेणी में स्थित एक नगर (इक)। देखो °निलय। °णिलया स्त्री [°निलया] एक पुष्करिणी (इक)। °णिहुवय पु [°कामक] विष्णु, श्रीकृष्ण (कुमा)। °नाली स्त्री [°नाली] वृक्ष-विशेष (कप्प)। °दत्त पुं [°दत्त] ऐरवत वर्ष में उत्पन्न पाँचवें जिन-देव (पव ७)। °दाम न [°दामन्] १ शोभावाली माला (जं ५)। २ आभरण-विशेष (आत्रम)। ३ पु एक राजा (विपा १, ६—पत्र ६४)। °दामकड, °दामगड पुन [°दामकाण्ड] १ शोभावाली मालाओं का समूह (ज ५)। २ एक देव-विमान (सम ३६)। °दामगंड पुन [°दामगण्ड] १ शोभावाली मालाओं का दण्डाकार समूह (ज ५)। °देवी स्त्री [°देवी] १ देवी-विशेष (राज)। २ लक्ष्मी (धर्मवि १४७)। °देवी-नन्दण पु [°देवी-नन्दन] कामदेव (धर्मवि १८७)। नन्दण पु [°नन्दन] १ कामदेव। २ वि. श्री से समृद्ध (सुपा २३४, धम्म १३ टी)। °नय्यर न [°नगर] दक्षिण देश का एक शहर (कुमा)। देखो °गय्यर। °निलय पु [°निलय] वामुदेव (पउम ३८, १०)। देखो °णिलय। °पट्ट पु [°पट्ट] नगर-मेठाई का सूचक एक राज-चिह्न (सुपा २८३)। °पव्वय पुं [°पर्वत] पर्वत विशेष (वज्जा ६८)। °पह पु [°प्रभ] एक प्रसिद्ध जैन आचार्य और ग्रन्थकार (धर्मवि १५२)। °पाल देखो °वाल (मिरि ३४)। °फल पु [°फल] विल्व-वृक्ष (कुमा)। देखो °हल। °भूइ पु [°भूति] भारतवर्ष में होनेवाले छठवें चक्रवर्ती राजा (सम १५४)। °म देखो

°मत (उप पृ ३७४)। °मई स्त्री [°मती] १ इन्द्र-नामक विद्याधर-राज की एक पत्नी (पउम ६, ३)। २ एक राज-पत्नी (महा)। ३ एक सार्थवाह कन्या (महा)। °मगल पु [°मङ्गल] दक्षिण भारत का एक देश (उप ७६८ टी)। °मंन वि [°मन्] १ शोभावाला, शोभा-युक्त (कुमा)। २ पु. तिलक वृक्ष। अरवत्य वृक्ष। ४ विष्णु। ५ शिव, महादेव। ६ श्वान, कुत्ता (हैं २, १५६, पड्)। °मलय न [°मलय] वैताढ्य की दक्षिण-श्रेणी में स्थित एक विद्याधर नगर (इक)। °महिअ पुन [°महिक] एक देव-विमान (सम २७)। °महिआ स्त्री [°महिना] एक पुष्करिणी (इक)। °माल पु [°माल] एक प्रसिद्ध वंश (कुप्र १४३)। °मालपुर न [°मालपुर] एक नगर (ती १५)। °यठ देखो °कठ (गउड)। °यटल देखो °कटलग (परह १, १—पत्र ७)। °वड पु [°पति] श्रीकृष्ण, वामुदेव (सम्मत्त ७५)। °वच्छ पु [°वत्स] १ जिनदेव आदि महापुरुषों के हृदय का एक ऊँचा अवयवाकार चिह्न (औप, सम १५३, महा)। २ महेंद्र देवलोक के इन्द्र का एक पारियानिक विमान (ठा ८—पत्र ४३७)। ३ एक देव-विमान (नम २६, देवेन्द्र १४०, औप)। °वच्छा स्त्री [°वत्सा] भगवान् श्रेयामनाथजी की शासन-देवी (सति ६)। °वडिसय न [°अवतसय] सौधमं देवलोक का एक विमान (राज)। °वण न [°वन्त] एक उद्यान (अत ४)। °वणी स्त्री [°पर्णी] वृक्ष-विशेष (परण १—पत्र ३१)। °वत्त (अप) देखो °मत (भवि)। °वट्टण पु [°वर्जन्त] एक राजा (पउम ५, २६)। °वथ पु [°वट] पक्षि-विशेष (दे १, ६७, ८, ५२ टी)। °वारिसेण पु [°वारि-पेण] ऐरवत वर्ष में होनेवाले चौबीसवें जिनदेव (पव ७)। °वाल पुं [°पाल] १ एक प्रसिद्ध जैन राजा (सिरि ३१७)। २ राजा सिद्धराज के समय का एक जैन महाकवि (कुप्र २१६)। °सभूआ स्त्री [°सभूता] पक्ष की छठवी रात (सुज्ज १०, १४)। °सिचय पु [°सिचय] ऐरवत वर्ष में

उत्पन्न दूसरे जिनदेव (पव ७)। °सेण पुं [°पेण] एक राजा (उप ६८६ टी)। °सेल पुं [°शैल] हनुमान (पउम १७, १२०)। °सोम पु [°सोम] भारतवर्ष में होनेवाला सातवाँ चक्रवर्ती राजा (सम १५४)। °सोमणस पुंन [°सोमनस] एक देव-विमान (सम २७)। °हर न [°गृह] भंडार (आ २८)। °हर पुं [°धर] १ भगवान् पार्श्वनाथ का एक मुनि-गण। २ भगवान् पार्श्वनाथ का एक गणधर—मुख्य शिष्य (कप्प)। ३ भारतवर्ष में अतीत उत्सर्पणी काल में उत्पन्न सातवें जिनदेव। ४ ऐरवत वर्ष में वर्तमान अवसर्पणी काल में उत्पन्न बीसवें जिनदेव (पव ७, उप ६८६ टी)। ५ वासुदेव (पउम ४७, ४६, पड्)। °हर वि। [°हर] श्री को हरण करनेवाला (कुमा)। °हल न [°फल] विल्व फल (पात्र), देखो °फल।

सिरिअ पुं [°श्रीक, श्रीयक] स्थूलभद्र का छोटा भाई और नन्द राजा का एक मन्त्री (पडि)।

सिरिअ न [°स्वैर्य] स्वच्छन्दता (मै ७३)।

सिरिग पुं [°दे] विट, लम्पट, कामुक (दे ८, ३२)।

सिरिहह पुस्त्री [°दे] पक्षियों का पान-पात्र (पात्र, दे ८, ३२)।

सिरिमुह वि [°दे] मद-मुख, जिसके मुह में मद हो वह (दे ८, ३२)।

सिरिया देवो सिरी (सम १५१)।

सिरिली स्त्री [°दे श्रीली] कन्द-विशेष (उत्त ३६, ६८)।

सिरिवच्छीव पु [°दे] गोपाल, ग्वाला (दे ८, ३३)।

सिरिवय पुं [°दे] हंस पक्षी (दे ८, ३२)।

सिरिवय देखो सिरि-वय।

सिरिस पु [°शिरीप] १ वृक्ष-विशेष, सिरसा का पेड़ (सम १५२, हे १, १०१)। २ न सिरसा का फूल (कुमा)।

सिरी स्त्री [°श्री] १ लक्ष्मी, कमला (पात्र, कुमा)। २ सपत्ति, समृद्धि, विभव (पात्र, कुमा)। ३ शोभा (औप, राय, कुमा)। ४

(अणु) । ४ आज्ञा हुकुम (परह २, १—पत्र १०१, महा) । ५ आस, निर्वाह-माचन, 'जीवतसामिपडिमाए सासणं विश्ररिऊण भत्तीए' (कुलक २३) । ६ वि प्रतिपादक, प्रतिपादन-कर्ता (सम्म १, गण २२, एदि ४८) । ७ प्रतिपाद्य, जिसका प्रतिपादन किया जाय वह (परह २, १—पत्र ६६) । °देवी स्त्री [°देवी] शासन की अधिष्ठात्री देवी (कुमा) । °सुरा स्त्री [°सुरी] वही ग्रथ (पचा ८, ३२) ।

सासण देखो सासायण (कम्म २, २, ५, १४, ४, १८, ८६, ५, ११, ६, ५६, पत्र २, ४०) ।

सासणा स्त्री [शासना] शिक्षा (परह २, १—पत्र १००) ।

सासणावण न [शासन] आज्ञापन (म ४६३) ।

सासय वि [शाधन] नित्य, अविनश्वर (भग, पात्र, से २, ३, मुर ३, ५८, प्रासू १४१) ।

सासय पुं [स्वाश्रय] निज का आधार (से २, ३) ।

सासव पु [सर्पप] सरसो (आचा २, १, ८, ५) । °नालिया स्त्री [°नालिका] कन्द-विशेष (आचा २, १, ८, ३) ।

सासवृल पु [दे] कपिकच्छू का पेड़, कौष्ठ, किवाच, कवाछ (दे ८, २५) ।

सासाण } न [सास्वादन] १ गुण-स्थानक-सासायण } विशेष, द्वितीय गुण-स्थान (कम्म ४, १३, ४६) । २ वि द्वितीय गुण-स्थान में वर्तमान जीव (सम्म १६, सम्म २६) ।

सासि वि [आसिन्] श्वास-रोगवाला (तंदु ५०) ।

सासिदु (शौ) वि [शासितृ] शासन-कर्ता, शिक्षा-कर्ता (अभि २१४) ।

सासिद्ध देखो सासि (विपा १, ७—पत्र ७३) ।

सासुया देखो सासु (सुर ६, १५७, ६, २३३, सिरि ६८६) ।

सासुर न [आशुर] श्वशुर गृह (सुर ८, १६४) ।

सासुर (अप) देखो ससुर = श्वशुर (भवि) ।

सासू स्त्री [श्वशू] मासू, पति तथा पत्नी की माता (पात्र, पउम १७, ४, गा ३३६) ।

सासूय वि [सासूय] असूया-युक्त, मत्सरो (सुर ३, १६७, उप ७२८ टी) ।

सासेरा स्त्री [दे] यान्त्रिक नाचनेवाली, यन्त्र की बनी हुई नर्तकी (राज) ।

साह सक [कथय शास] कहनी । साहइ, साहेइ (हे ४, २, उव, काल, महा) । साहसु, साहेसु (महा) । भवि. साहिस्सइ, साहिस्सामो (महा, आचा १, ४, ४, ४) । वक्क. साहेत, साहयत (हेका ३८, काप्र ३०, सुर ६, १३२) । कवक्क. साहिज्जत, साहिप्पत, साहिय्यत, साहियमाण (चड, सुर १, ३०, सुपा २०५, चंड, सुपा २६३, उप पृ ४२, चड) । सक. साहिऊण, साहेत्ता (काल) । हेक्क. साहिउं (काल, महा) । क. साहियव्व, साहेअव्व (महा, मुर १, १५४) ।

साह देखो सलाह = श्लाघ । क. साहणीअ (प्राप) ।

साह सक [साध्] १ सिद्ध करना, बनाना । २ वश में करना । साहइ, साहेइ, साहेति (भग, कप्प, उव, प्रासू २७, महा) । वक्क. माहत, साहित, साहेमाण (सिरि ६२८, महा, सुर १३, ८२) । कवक्क. साहिज्जमाण (नाट) । हेक्क. माहिउ (महा) । क. साह-णिज्ज, साहणीअ, साहियव्व (मा २६, पउम ३७, ३०, सुर ३, २८) ।

साह पुं [दे] १ बालुका, बालू । २ उलूक, उल्लू । ३ दधिसर, दही की मलाई (दे ८, ५१) । ४ प्रिय, पति (संझि ४७) ।

साह (अप) देखो सव्व = मव्व (हे ४, ३६६, कुमा) ।

साहजग } पु [दे] गोशुर, गोखरू (दे साहजय } ८, २७) ।

साहजणी स्त्री [साभाजनी] नगरी विशेष (विपा १, ४—पत्र ५६) ।

साहग वि [सावक] मिद्धि करनेवाला, सावना करनेवाला (गाया १, ८ टी—पत्र १५५, कप्प, नव २५, सुपा ८४, धर्मसं ७०, हि २०) ।

साहग वि [शासक, कथक] कहनेवाला (मुर १२, ३०, म ३६१) ।

साहज्ज न [माहाज्य] सहायता, मदद (विसे २६५८ गण ६ खण १४, सिरि ३६८, कुप्र १२) ।

साहट्ट सक [स + वृ] सवरण करना, समेटना । माहट्टइ (हे ४ ८२) ।

माहट्टिअ वि [सवृत्] समेटा हुआ, सहत किया हुआ, पिडीकृत (कुमा) ।

साहट्टुअ [महत्त्य] समेट कर, सकुचित कर 'दाहिण जाणु धरणिउतलंसि साहट्टु' (कप्प), 'साहट्टु पाय रोएज्जा' (आचा २, ३, १, ६), 'वियडेण साहट्टु य जे सिराई' (सूत्र १, ७, २१) ।

साहट्ट वि [सहट्ट] पुलकित (राज) ।

साहण सक [स + हन्] संघात करना, सहत करना, चिपकाना । साहणति (भग) । कर्म साहन्ति (भग १२, ४—पत्र ५६१) । कवक्क. माहणणत, साहणत (राज, ठा २, ३—पत्र ६२) । संक. साहणित्ता (भग) ।

साहण न [साधन] १ उपाय, कारण, हेतु (विसे १७०६) । २ सैन्य, लश्कर (कुमा, मुर १०, १२१) । ३ वि. सिद्ध करनेवाला, 'जह जीवाण पमाप्पो अणत्थमयमाहणो होई' (हि १३, मुर ४, ७०) । स्त्री. °णा, °णी (हे ३ ३१, पड्) ।

साहणण न [सहनन] संघात, अवयवों का आपस में चिपकना (भग ८, ६—पत्र ३६५, १२, ४—पत्र ५०७) ।

साहणिअ पु [माधनिक] सेना-पति (सुपा २६२) ।

साहणज्ज देखो साह = साध् ।

साहर्ण, देखो माहण = साधन ।

साहणअ देखो साह = श्लाघ, साध् ।

साहणणन देखो साहण = स + हन् ।

साहात्थ अ [सहस्तेन] १ अपने हाथ ने । २ साक्षात् (गाया १, ६—पत्र १६३, उवा) ।

साहतियया } स्त्री [स्वाहम्भिकी] क्रिया-विशेष, साहत्था } अपने हाथ से गृहीत जीव आदि द्वारा हिमा करने से होनेवाला कर्म-बन्ध (ठा २, १—पत्र ४०, नव १८) ।

१२ एक देव-विमान (देवेन्द्र १४३)। १३ छन्द-विशेष (पिप)। १०कर न [०कर] १ शैलेशी श्रवस्था की प्राप्ति। २ मुक्ति-मार्ग (मूअनि ११५)। १ गड्छी [०गति] १ मुक्ति, मोक्ष। २ वि. मुक्त, मुक्ति-प्राप्त (राज)। ३ पु. भारतवर्ष में अतीत उत्स-पिणी-काल में उत्पन्न चौदहवें जिन-देव (पव ७)। १०नित्य न [०तीर्थ] काशी, बनारस (हे ४, ४४२)। १ नन्दा स्त्री [०नन्दा] आनन्द-श्रावक की पत्नी (उवा)। १ भूइ पु [०भूति] १ एक जैन महर्षि (कण्)। २ बोटिक मत—दिगवर जैन संप्रदाय का स्थापक एक मुनि (विसे २५५१)। १०रत्ति स्त्री [०रात्रि] फाल्गुन (गुजराती माघ) माघ की दृष्टि चतुर्दशी तिथि (सट्टि ७८ टी)। १०सेण पु [०सेन] ऐरवत वर्ष में उत्पन्न एक ग्रहण (मम १५३)।

सिवंकर पु [शिवङ्कर] पाँचवे केशव का पिता (पठम २०, १८२)।

सिवरु १ पु [शिवरु] १ घड़ा तैयार होने सिवय १ के पूर्व की एक श्रवस्था (विसे २३१६)। २ बेलन्वर नागराज का एक श्रावास-पर्वत (इक)।

सिवा स्त्री [शिवा] १ भगवान नेमिनाथ जी की माता का नाम (मम १५१)। २ सौधमं देवलोक के इन्द्र की एक अग्र-महिषी (ठा ८—पत्र ४१६, राया २—पत्र २५३)। ३ पनरहवें जिनदेव की प्रवर्तिनी—मुख्य साध्वी (पव ६)। ४ शृगाली, मादा सियार (अणु, वज्जा ११८)। ५ पार्वती (पात्र)।

सिवाणदा देखो सिव-नदा (उवा)।

सिवासि पुं [शिवाशिन्] भरतक्षेत्र में अतीत उत्स-पिणी-काल में उत्पन्न बारहवें जिनदेव (पव ७)।

सिविग देखो सुमिग (हे १, ४६, प्राप्र, रभा, कुमा, कण्)।

सिविया स्त्री [शिविका] सुखासन, पालकी, डोली (कण्, श्रौप, महा)।

सिविर न [शिविर] १ स्कन्धावार, सैन्य-निवास-स्थान, छावनी (कुमा)। २ सैन्य, सेना, लश्कर (सुपा ६)।

सिन्व सक [सांव्] सीना, सांवना। सिन्वइ (षड्, विसे १३६८)। भवि. सिन्वि-स्वामि (आचा १, ६, ३, १)।

सिन्व देखो सिव = शिव (प्राक् २६; सखि १७)।

सिन्विअ वि [स्यून] सिया हुआ (पव ६२)। सिन्विणी } स्त्री [दे] मूची, सूई (दे ८, सिन्वी } २६)।

सिस देखो सिलेस - शिल्प। सिसइ (षड्)। मिमिर न [दे] दधि, दही (दे ८, ३१, पात्र)।

सिसिर पृ [शिगिर] १ ऋतु-विशेष, माघ तथा फाल्गुन का महिना (उप ७२८ टी, हे ४, ३५७)। २ माघ माघ का लोकोत्तर (सुज्ज १०, १६)। ३ फाल्गुन माघ, 'सिसिरो फाल्गुण-माहो' (पात्र)। ४ वि जड, ठंडा, शीतल (पात्र, उप ७६८ टी)। ५ हलका (उप ७६८ टी)। ६ न हिम (उप ६८६ टी)। १०किरण पु [०किरण] चन्द्रमा (धर्मवि ५)। १०महीहर पुं [०महीधर] हिमालय पर्वत (उप ६८६ टी)।

सिसिरली देखो सिसिरिली (राज)।

सिसु पुन [शिशु] बालक, बच्चा (सुपा ५८८, सम्मत १२२), 'सा खाइ पायमेकं सिसुणि वीय पढमपहरे' (कुप्र १७३)। १०आल पु [०काल] बाल्य, बाल-काल (नाट—चैत ३७)। १०नाग पुं [०नाग] क्षुद्र कीट-विशेष, भलस (उत्त ५, १०)। १०पाल पु [०पाल] एक प्रसिद्ध राजा (राया १, १६—पत्र २०८, सूअ १, ३, १, १, उप ६४८ टी, कुप्र २५६)। १०यव पुं [०यव] तुण-विशेष (परण १—पत्र ३३)। १०वाल देखो १०पाल (सूअ १, ३, १, १ टी)।

सिस्स पुत्री [शिष्य] १ चेला, छात्र, विद्यार्थी (राया १, १—पत्र ६०, सूअनि १२७)। स्त्री १०स्सा, १०सिणी (मा ६, राया १, १४—पत्र १८८)।

सिस्स देखो सीस = शीर्ष (सस ५०)।

सिस्सिरिली स्त्री [दे] कन्द-विशेष (उत्त ३६, ६८)।

सिह सक [सृह्] इच्छा करना, चाहना। सिहइ (हे ४, ३४, प्राक् २३)। कृ सिह-णिज्ज (दे ८, ३१ टी)।

सिह पु [दे] भुजपरिसर्प की एक जाति (सूअ २, ३, २५)।

सिहंड पु [शिखण्ड] शिखा, चूला, चोटी (पात्र, अमि १५१)।

सिहडइल पुं [दे] १ बालक, शिशु। २ दवि-मर, दही की मलाई। मयूर, मोर (दे ८, ५४)।

सिहडहिल पुं [दे] बालक, बच्चा (षड्)।

सिहडि वि [शिखण्डिन्] १ शिखापारी (भत्त १००, श्रौप)। २ पुं मयूर-पक्षी, मोर (पात्र, उप ७२८ टी)। ३ विष्णु (सुपा १४२)।

सिहण देखो सिहिण (रंभा)।

सिहर न [शिखर] १ पर्वत के ऊपर का भाग, शृङ्ग (पात्र, गड्ड, सुर ४, ५६, से ६, २८)। २ अग्रभाग (राया १, ६)। ३ लगातार अठारह दिनों के उपवास (सर्वोष ५८)। १०अग वि [०चण] शिखरों से प्रसिद्ध (से ६, १८)।

सिहिरि पुं [शिखरिन्] १ पहाड़, पर्वत (पात्र, सुपा ४६)। २ वर्षधर पर्वत-विशेष (ठा २, ३—पत्र ६६, सम १२, ४३)। ३ पुन. कूट-विशेष (ठा २, ३—पत्र ७०)। १०वइ पुं [०पति] हिमालय पर्वत (से ८, ६२)।

सिहिरिणी } स्त्री [दे शिखरिणी] मार्जिता
सिहिरिणी } खाद्य-विशेष, दही-चोनी आदि
से बनता एक तरह का मिष्ठ खाद्य (दे १, १५४, ८, ३३, परह २, ५—पत्र १४८, पव ४, पभा ३३, कस, सण)।

सिहली } स्त्री [शिखा] १ चोटी, मस्तक
सिहा } पर के बालों का गुच्छा (पचा १०, ३२, पव १५३, पात्र, राया १, ५—पत्र १०८, सर्वोष ३१)। २ अग्नि की ज्वाला (पात्र, कुमा, गड्ड)।

सिहाल वि [शिखावत्] शिखावाला, शिखा-युक्त (गड्ड)।

सिहि पु [शिखिन्] १ अग्नि, आग (गा १३, पात्र, सुपा ५१६)। २ मयूर, मोर (पात्र, हेका ४५, गा ५२, १७३)। ३ रावण का एक सुभट (पठम ५६, ३०)। ४ पर्वत। ५ ब्राह्मण। ६ मुर्गा। ७ केतु

नामन्] देखो ऊपर का दूसरा अर्थ (सम ६७) ।

साधारण न [सधारण] ठीक तरह से धारण करना, टिकाना, 'अभिक्रमे पडिक्कमे संकुचए पसारए कायसाधारणट्टाए' (आचा १, ८, ८, १५) ।

साधारण न [स्वाधारण] सहारा करना, उपकार करना (सम ५१) ।

साधारण न [सहरण] संकोचन, समेटन (विसे ३०५२) ।

साहारिअ वि [संधारिन] ठीक तरह धारण किया हुआ (भवि) ।

साहाविअ वि [स्वाभाविक] स्वभाव सिद्ध, नैसर्गिक, कुदरती (गा २२५, गउड, कप्प, सुपा ४६३) ।

साहि पु [शाखिन्] वृक्ष, पेड़ (पाम्र, सण, उप पृ १५३) ।

साहि पु [दे] १ शरु देश का सामन्त राजा, 'पत्तो सगकूलं नाम कूलं । तत्त्य जे सामन्ता ते साहिणो भणणति' (भग) । २ देखो साही (दे ८, ६, से १२, ६२) ।

साहि (अप) देखो सामि = स्वामिन् (विग) ।

साहिअ वि [कथित, शासित, स्वाख्यात] कहा हुआ, उक्त, प्रतिपादित (सुपा २७६, सुर १, २०४, काल, पाम्र, आचा) ।

साहिअ वि [साधित] सिद्ध किया हुआ, निष्पादित (अत १३, सुर ६, ६६, भवि) ।

साहिअ वि [माधिक] सविशेष, सातिरेक (कप्प, सुपा २७६) ।

साहिअ वि [स्वाहित] स्वहित से विरुद्ध, निज का अहित (सुपा २७६) ।

साहिकरण वि [साधिकरण] १ अधिकरण-युक्त (निचू १०) । २ कलह करता, झगड़ता (ठा ३—पय ३५२) ।

साहिकरणि वि [साधिकरणिन्] अधिकरण-युक्त, शरीर आदि अधिकरणवाला (भग १६, १—पय ६६८) ।

साहिकरण देखो साहिकरण (राज) ।

साहिकरणि देखो साहिकरणि (भग १६, १ टी—पय ६६६) ।

साहिज्ज देखो साहज्ज (अत १३, सुपा २०५, गउड, कुप्र १३) ।

साहिज्जत देखो साह = कथय् ।

साहिज्जमाण देखो साह = साध् ।

साहिण (अप) वि [कथिन] कहनेवाला (सण) ।

साहित्त न [माहित्य] अलंकार-शास्त्र (सुपा १०३ ४५३) ।

साहिप्पन } देखो साह = कथय् ।
साहिग्माग }
साहिज्जयत }

साहिर वि [शासित्, कथयित्] शासन करनेवाला कहनेवाला (गउड) ।

साहिल्य न [दे] मधु, शहद (दे ८ २७) ।

साही स्त्री [दे] १ रय्या मुहल्ला (दे ८, ६, से १२, ६२) । २ बल्लेनी, मार्ग, रास्ता (विड ३३४) । ३ राजमार्ग (ने १२, ६२) । ४ खिडकी, छोटा दरवाजा (श्रीप ६२२) ।

साहीण वि [स्वाधीन] स्वायत्त, स्वतन्त्र (पाम्र, गा १६७, चार ४३, सुर ३, ५६, प्रासू ६६) ।

साहीय देखो साहिअ = साधिक, 'तत्तीस उयहिनामा साहीया वृत्ति अजयसम्माण' (जीवम २२३) ।

साहु पु [साधु] १ मुनि, यति (विसे ३६००; आचा, सुपा ३४२) । २ सज्जन, सत्पुरुष, 'साहवो सुअण' (पाम्र) । ३ वि सुन्दर, शोभन, अच्युता (आचा, स्वप्न ६७, कुप्र ४५६) । ४ 'कम्म न [कर्मन्] तय-विशेष, निर्विकृतिक तप (सवोध ५८) । ५ 'कार, क्लार पुं [कार] धन्यवाद, साधुवाद, प्रशंसा (वेणो ११४, ठा ४, ४ टी—पय २८३, पयम ५६, २३, मे १३, १६, महा, भवि, विक्र १०६) । ६ 'नाह पु [नाय] श्रेष्ठ मुनि, आचार्य (सुपा ५४५) । ७ 'वाय पुन [वाद] प्रशंसा, 'जाय च साहुवाय' (मिरि ३३४, स ३८५, सुपा ३७०) ।

साहुई स्त्री [साध्वी] १ स्त्री-साधु, भ्रमणी, यतिनी । २ सती स्त्री । ३ अच्युती (प्राक २८) ।

साहुणी स्त्री [साध्वी] स्त्री-साधु, यतिनी (काल; उप १०१४, सुपा ६७, ३३२, साधं २६, कुप्र २१४) ।

साहुलिजा } स्त्री [दे] १ वस्त्र कपडा (दे
साहुली } ८, ५२, गा ६०६ अ, कप्प
पाम्र, सुपा २२०, २४६) । २ शिरोवस्त्र-खड
(रभा) । ३ शाखा, डाली (दे ८ ५२ पड्,
पाम्र) । ४ ऋ, भौ । ५ भुज, हाथ । ६
पिकी, कोयन । ७ सदृश, समान । ८ मल्ली,
महचरी (दे ८, ५२) । ९ मग्न-पिच्छ (स
५२३ टि) ।

साहेज्ज देखो साहज्ज (दे ७, ८६ सुपा १५२, गउड महा, उप २८) ।

साहेज्ज वि [दे] अनुगृहीत (दे ८, २६) ।

साहेमाण देखो साह = नाध् ।

सिअ देखो सिअ = शिव (सज्जि १७) ।

सिअ वि [श्रित] आश्रित (मे ६, ८८ उत १३, १५, मूअ, ७, ८) ।

सिअ देखो सिआ = स्वात् (भग आवक १२८, धर्मस २५८, १११२, गण ५, कुप्र १५६) ।

सिअ वि [गिन] तीक्ष्ण धारवाला (सुपा ४७५) ।

सिअ वि [गिन] अच्छी तरह प्राप्त (विसे ३४४५) ।

सिअ पु [सित] १ शुक्ल वर्ण । २ वि श्वेत, सफेद, शुक्ल (श्रीप, उप, नाट—विक्र ७१, सुपा ११ भवि) । ३ वस्त्र, वस्त्रा हुआ (विसे ३०२६) । ४ न. नाम-कर्म का एक भेद, श्वेत वर्ण का कारण-भूत कर्म (कम्म १, ४०) । ५ 'स्फिरण पु [स्फिरण] चन्द्र, चांद (उप १३३ टी) । ६ 'गिरि पु [गिरि] वेताव्य पर्वत की उत्तर श्रेणि में स्थित एक विद्याघर नगर (डक) । ७ 'व्यान न [व्यान] नवं श्रेष्ठ ध्यान, शुक्ल ध्यान (सुपा १) । ८ 'पन्नस पु [पन्न] शुक्ल पत्र (सुपा १७१) । ९ 'वर पु [वर] चन्द्रमा (उप ७२८ टी) । १० 'वड पु [वड] पाल जहाज का वादमान, 'सकोइओ नियवटो पारट्टा दववाण विवत्ती' (उप ७२८ टी) । ११ 'वाम पु [वामन्] श्वेताम्बर जैन (ती १५) ।

सिअ (अप) देखो सिअ = श्री (भवि) । १ 'वन वि [मन्] लक्ष्मी-संपन्न, धनान्न (भवि) । सिअअ देखो सिअअ (गा ८७७ ८६८ कप्प) ।

सीत देखो सीअ = शीत (ठा ३, ४—पत्र १६१)।

सीता देखो सीआ = शीता, सोता (ठा ८—पत्र ४०६, ६—पत्र ४५४)।

सीतालीम देखो सीआलीम (मुज्ज २, ३—पत्र ५१)।

सीतोदं देखो सीओअं (ठा २, ३—पत्र ७२)।

सीतोदा } देखो सीओआ (पएह २, ४—
सीतोया } पत्र १३०, सम ८४)।

सीदण न [सदन] शैथिल्य, प्रमत्तता (पचा १२, ४६)।

सीधु देखो सीहु (गाया १, १६—पत्र २०६ उवा)।

सीभर देखो सीअर (प्राप्र, कुमा, हे १, १८४, षड)।

सीभर वि [दे] समान, तुल्य (अणु १३१)।

सीमआ स्त्री [सीमन्] १ मर्यादा। २ अवधि। ३ स्थिति। ४ क्षेत्र। ५ वेला, समय। ६ अण्डकोष, पोता (षड)। देखो सीमा।

सीमकर पु [सीमङ्कर] १ इस अवसरपिणी काल में उत्पन्न एक कुलकर पुरुष का नाम (पउम ३, ५३)। २ ऐरवत क्षेत्र के भावी द्वितीय कुलकर (सम १५३)। ३ वि. मर्यादा-कर्ता (सूत्र २, १, १३)।

सीमत पुं [सीमन्त] १ बालों में बनावी हुई रेखा-विशेष (से ६, २०, गउड, उप ७२८ टी)। २ अपर काय (गउड ८५)। ३ ग्राम से लगी हुई भूमि का अन्त, सीमा, गाँव का पर्यन्त भाग (गउड २७३, २७७, उप ७२८ टी)। ४ सीमा का अन्त, हद्द; 'एसो चिय सीमंती गुणए दूरं फुरंताए' (गउड)।

सीमंत पुं [सीमान्त] १ सीमा का अन्त भाग, गाँव का पर्यन्त भाग (गउड ३६७, ४०५)। २ हद्द (गउड ८८६)।

सीमत सक [दे. सीमान्तय] वेचना। संक्र. सीमतिऊण (राज)।

सीमतग } पुं [सीमन्तक] प्रथम नरक-भूमि
सीमतय } का एक नरकावास, नरक-स्थान (निचू १; ठा ३, १—पत्र १२६, सम ६८)।

°प्पभ पुं [°प्रभ] सीमन्तक नरकावास की पूर्व तरफ स्थित एक नरकावास (देवेन्द्र २०)। °मज्झिम पु [°मध्यम] सीमन्तक की उत्तर तरफ स्थित एक नरकावास (देवेन्द्र २०)। °वसिट्ठ पु [°वशिष्ट] सीमन्तक की दक्षिण दिशा में स्थित एक नरकावास (देवेन्द्र २१)। °वत्त पु [°वर्त] सीमन्तक की पश्चिम तरफ का एक नरकावास (देवेन्द्र २१)।

सीमंतय न [दे] सीमत—बालों की रेखा-विशेष में पहना जाता अलंकार-विशेष (दे ८, ३५)।

सीमतिअ वि [सीमन्तित] छण्डित, छिन्न (पाप्र)।

सीमतिणी स्त्री [सीमन्तिनी] स्त्री, नारी, महिला (पाप्र, उप ७२८ टी, सम्मत् १९१, सुपा ७)।

सीमधर पुं [सीमन्धर] १ भारतवर्ष में उत्पन्न एक कुलकर पुरुष (पउम ३, ५३)। २ ऐरवत वर्ष का एक भावी कुलकर (सम १५३)। ३ पूर्व-विदेह में वर्तमान एक अर्हन् देव (काल)। ४ एक जैन मुनि, जो भगवान् सुमतिनाथ के पूर्व जन्म में गुरु थे (पउम २०, १७)। ५ भगवान् शीतलनाथ जी का मुख्य श्रावक (विचार ३७८)। ६ वि. मर्यादा को धारण करनेवाला, मर्यादा का पालक (सूत्र २, १, १३)।

सीमा स्त्री [सीमा] देखो सीमआ (पाप्र, गा १६८, ७५१, काल, गउड)। °गार पु [°कार] जलजन्तु-विशेष, ग्राह का एक भेद (पएह १, १—पत्र ७)। °धर वि [°वर] मर्यादा धारक (पडि हे ३, १३४)। °ल वि [°ल] सीमा के पास का, सीमा के निकट-वर्ती, 'सीमाला नरवइणो सन्ने ते सेवमावन्ना' (सुपा २२२, ३५२, ४६३, धर्मवि ५६)।

सीर पुंन [सीर] हल, जिससे खेत जोतते हैं (पउम ११३, ३२, कुमा, पडि), 'समयवसु-हासीरो' (धर्मवि १६)। °धारिपु [°धारिन्] बलदेव, बलभद्र, राम (पउम २०, १६३)। °पाणि पुं [°पाणि] वही (दे २, २३, कुमा)। °सीमत पु [°सीमन्त] हल से फाड़ी हुई जमीन की रेखा (दे)।

सीरि पुं [सीरिन्] बलभद्र, बलदेव (पाप्र)। सीरिअ वि [दे] भिन्न, 'सीरिअो भिन्नो' (पाप्र)।

सील सक [शीलय] १ अभ्यास करना, आदत डालना। २ पालन करना, 'सीनेआ सीलमुजल' (हित १६), 'सव्वसील सीलह पव्वज्जगहणेण' (आ १६)। देखो संलाय।

सील न [गील] १ चित्त का ममाधान, 'सील चित्तसमाहाणलक्खण भएणए एय' (उप ५६७ टी)। २ ब्रह्मचर्य (प्रासू २२, ५१, १५८, १६६, आ १६, हित १६)। ३ प्रकृति, स्वभाव, 'सील पयई' (पाप्र), 'बलहसील' (कुमा)। ४ सदाचार, चरित्र, उत्तम वर्तन (कुमा, पचा १४, १, पएह २, १—पत्र ६६)। ५ चरित्र, वर्तन (हे २, १८४)। ६ अहिंसा (पएह २, १—पत्र ६६)। °इ पुं [°जित्] क्षत्रिय परिव्राजक का एक भेद (धौप)। °ड्ढ वि [°ह्य] शील-पूर्ण (धोघ ७८४)। °परिधर पुन [°परिगृह] १ चरित्र-स्थान। २ अहिंसा (पएह २, १—पत्र ६६)। °मत, °व वि [°वत्] शील-युक्त (आचा, धोघ ७७७, आ ३६)। °व्वय न [°व्रत] अणुव्रत, जैन श्रावक के पालने योग्य अहिंसा आदि पाँच व्रत (भग)। °सालि वि [°शालिन्] शील से शोभनेवाला (सुपा २४०)।

सीलाय सक [शीलय] तदुस्त करना। कर्म सीलप्पए (वव १)।

सीलुट्ट न [दे] ऋषुस, खीरा, ककड़ी (दे ८, ३५, पाप्र)।

सीव सक [सीव्] सीना, सिलाई करना, साँधना। भवि सीविस्सामि (आचा)। सकृ सीविऊण (स ३५०)।

सीवणा स्त्री [सीवना] सीना, मिलाई (उप पृ. २६८)।

सीवणी स्त्री [दे] सूची, सूई (गउड)। देखो सिन्विणी।

सीवणी स्त्री [श्रीपर्णी] वृक्ष-विशेष (धोघ सीवन्नी } ४४६ टी, पडि ८१, ८२, उप
१०३१ टी)।

सीविअ देखो सिन्विअ (से १४, २८, दे ४, ७, ओघभा ३१५)।

सिचाविअ वि [सेचित] छिडकवाया हुआ (उप १०३१ टी, स २८०, ५४६)।
 सिचिअ वि [सिक्त] सौंचा हुआ, छिडका हुआ (कुमा)।
 सिंज अक [शिञ्ज] अस्फुट आवाज करना। वक्र. सिजत (सुपा ५०, मण)। क. सिजि-अवत्र (गा ३६२)।
 सिंजण न [शिञ्जण] १ अस्फुट शब्द, भूषण की आवाज। २ वि. अस्फुट आवाज करने-वाला (सुपा ४)।
 सिंजा छी [शिञ्जा] भूषण का शब्द (कप्पू, प्राप)।
 सिजिणी छी [शिञ्जिनी] धनुष, धनुष की डोरी (गा ५४)।
 सिंजिय न [शिञ्जित] अव्यक्त आवाज (उप १०३१ टी, कप्पू)।
 सिंजिर वि [शिञ्जित] अस्फुट आवाज करने-वाला, 'सहालं सिजिरं कणिर' (प्राप)।
 सिंभ पुन [सिध्मन्] कुछ रोग-विशेष (भग ७, ६—पत्र ३०७)।
 सिंढ वि [दे] मोटित, मोटा हुआ (दे ८, २६)।
 सिंढ पु [दे] मयूर, मोर (दे ८, २०)।
 सिंढा छी [दे] नासिका-नाद, नाक की आवाज (दे ८, २६)।
 सिंढाण न [दे] विमान (उप १४२ टी)।
 सिंदी छी [दे] खजूरी, खजूर का गाछ (दे ८, २६, पात्र, आवम)।
 सिंदीर न [दे] नूपुर (दे ८, १०)।
 सिंदु छी [दे] रज्जु, रस्सी (दे ८, २८)।
 सिंदुरय न [दे] १ रज्जु, रस्सी। २ राज्य (दे ८, ५४)।
 सिंदुवण पु [दे] अग्नि, आग (दे ८, ३२)।
 सिंदुवार पु [सिन्दुवार] वृक्ष-विशेष, निगुंएजी, सम्हालु का गाछ (गठड, कुमा, उप १०१६, कुप्र ११७)।
 सिंदूर न [दे] राज्य (दे ८, ३०)।
 सिंदूर न [सिन्दूर] १ सिंदूर, रक्त-वर्ण, चूर्ण-विशेष (पत्र २, ३८, गठड, महा)। २ पु. वृक्ष-विशेष (हे १, ८५, सप्त ३)।
 सिंदूरिअ वि [सिन्दूरित] सिन्दूर-युक्त किया हुआ (गा ३००)।

सिंदोल न [दे] खजूर, फल-विशेष (पात्र)।
 सिंदोला छी [दे] खजूरी, खजूर का पेड़ (दे ८, २६)।
 सिंवय न [सैन्वय] १ सिंव देश का लवण, सेंधा नोन (गा ६७६, कुमा)। २ पु. घोड़ा (हे १, १४६)।
 सिंवविआ छी [सैन्वविका] लिपि-विशेष (विसे ४६४ टी)।
 सिंधु छी [मिन्धु] १ नदी-विशेष, सिन्धु नदी (धर्मवि ८३, ज ४—पत्र २६० मम २७)। २ नदी, 'सरिआ तरगिणी निरणया नई आवागा सिंधू' (पात्र)। ३ मिन्धु नदी की अधिष्ठायिका देवी (ज ४)। ४ पु. समुद्र, सागर (पात्र, कुप्र २२, सुपा १, २६४)। ५ देश विशेष, सिन्ध देश (मुद्रा २४२, भवि, कुमा)। ६ द्वीप विशेष। ७ पक्ष-विशेष (ज ४—पत्र २६०)। °णद न [°नद] नगर-विशेष (पउम ८, १६८)। °णाह पु [°नाथ] समुद्र (समु १५१) °देवी छी [°देवी] सिन्धु नदी की अधिष्ठायिका देवी (उप ७२८ टी)। °देवीकूड पु [°देवीकूट] सुद हिमवत पर्वत का एक शिखर (ज ४—पत्र २६५) °पवाय पुन [°प्रपात] कुण्ड-विशेष, जहाँ पर्वत से सिन्धु नदी गिरती है (ठा २, ३—पत्र ७२)। °राय पु [°राज] सिन्ध देश का राजा (मुद्रा २४२)। °वइ पु [°पति] १ समुद्र, सागर (म २०२)। २ सिन्ध देश का राजा (कुमा)। °सोवीर पु [°सौवीर] सिन्धु नदी के समीप का देश-विशेष (भग १३, ६, महा)।
 सिंधुर पु [सिन्धुर] हस्ती, हाथी (सुपा ८३, सम्मत १८७, कुमा)।
 सिप देखो सिच। सिपइ (हे ४, ६६)। कर्म सिपइ (हे ४, २५५) कवक सिपपत (कुमा ७, ६०)।
 सिपिअ देखो सिचिअ (कुमा)।
 सिपुअ वि [दे] पागल, भूत-गृहीत, भूताविष्ट (दे ८, ३०)।
 सिवल पु [शाल्मल] सेमल का गाछ (रंभा २०)।

सिवाल देखो सवलि = शाल्मलि (हे १, १४६, ८, २३, पात्र, सुर १४, ४३, पि १०६, सथा ८५, उत्त १६, ५२)।
 सिवलि छी [शिम्बलि, शिम्वा] कलाय आदि की फली, छीमी, फलियाँ (भग १५—पत्र ६८०, आचा २, १, १०, ३, दस ५, १, ७३)। °यालग पुन [°यालक] १ फली की थाली। २ फली का पाक (आचा २, १, १०, ३)। देखो सवलि।
 सिवलिका छी [मिम्बलि] टोकरा (जिन-दत्तास्थान)।
 सिवा छी [शिम्वा] फली, छीमी 'कोसी समी य सिवा' (पात्र)।
 सिवाडी छी [दे] नाक की आवाज (दे ८, २६)।
 सिवीर न [दे] पलाल, घास (दे ८, २८)।
 सिंभ पु [श्लेष्मन्] श्लेष्मा कफ (हे २, ७४, तदु १४ महा)।
 सिंभलि देखो सिवलि = शाल्मलि (सुपा ८४)।
 सिभि वि [श्लेष्मिन्] श्लेष्म-युक्त, श्लेष्म-रोगी (सुपा ५७६)।
 सिभिय वि [श्लैष्मिक] श्लेष्म-सम्बन्धी (तदु १६, राया १, १—पत्र ५०, औप, पि २६७)।
 सिंह पु [सिंह] १ श्वापद पशु-विशेष, मुंग-राज, केसरी (प्रासू १५४, १६६)। २ एक राज-कुमार (उा ६८६ टी)। ३ एक राजा (रयण २६)। ४ भगवान् महावीर का एक शिष्य, मुनि-विशेष (राज)। ५ व्रत-विशेष, त्रिविवाहार को सनेखना—परित्याग (सबोध ५८)। °अलाअण (अप) न [°अलोअण] १ सिंह की तरह पीछे देवता। २ छन्द-विशेष (पिग)। °उर न [°पुर] राजाव देश का एक प्राचीन नगर (भवि)। °कणी छी [°कर्णी] वनस्पति-विशेष (पण १—पत्र ३५)। °केसर पु [°केसर] एक प्रकार का उत्तम मोदन—लड्डू (उप २११ टी)। °दत्त पु [°दत्त] १ व्यक्ति-वाचक नाम। २ वि. मिह ने दिया हुआ (हे १, ६२)। °दुवार न [°द्वार] राज-द्वार (मोह १:३)।

देखना (महा) । १।मण न [१।सन] आसन-विशेष सिंहाकार आसन, सिंहाङ्कित आसन, राजासन (भग) । देखो सिंह ।

सीह वि [सैह] सिंह-संबन्धी । स्त्री. ०हा (गाथा १, १—पत्र ३१) ।

०सीह पुं [०सिह] श्रेष्ठ, उत्तम (सम १, पडि) ।

सीहडय पुं [दे] मत्स्य, मछली (दे ८, २८) ।

सीहणही स्त्री [दे] १ वृक्ष-विशेष, करौंदी का गाछ । २ करौंदी का फल (दे ८, ३५) ।

सीहपुर वि [सैहपुर] सिंहपुर सबन्धी (पउम ५५, ५३) ।

सीहर देखो सीअर (हे १, १८४, कुमा) ।

सीहरय पुं [दे] आसार, जोर की बृष्टि (दे ८, १२) ।

सीहल देखो सिंहल (पएह १, १—पत्र १४, इक, पउम ६६, ५५) ।

सीहलय पु [दे] वस्त्र आदि को धूप देने का यन्त्र (दे ८, ३४) ।

सीहलिआ स्त्री [दे] १ शिखा, चोटी । २ नवमालिका, नवारी का गाछ (दे ८, ५५) ।

सीहलिपासग पु न [दे] ऊन का बना हुआ ककण, जो वेणी बाँधने के काम में आता है (सूअ १, ४, २, ११) ।

सीही स्त्री [सिही] स्त्री-सिंह, सिंह की मादा (नाट) ।

सीहु पु न [सीधु] १ मद्य, दारु । २ मद्य-विशेष (पएह २, ५—पत्र १५०, दे १, ४६, पाअ, गा ५४५ मा ४३) ।

सु अ [सु] इन अर्थों का सूचक अव्यय—१ प्रशंसा, श्लाघा (विसे ३४४३, सूअनि ८८) । २ अतिशय, अत्यन्तता (श्रु १६) । ३ समीचीनता (सट्ठि १६) । ४ अतिशय योग्यता (पिग) । ५ पूजा । ६ कष्ट, मुश्किली । ७ अनुमति । ८ समृद्धि (पड १२२, १२३, १३५) । ९ अनायास (ठा ५, १—पत्र २६६) ।

सुअ अक [सुअप्] सोना । सुअइ (हे ४, १४६, प्राक ६६, पि ४६७, उव), सुयामि (निसा १), 'खणंपि मा सुय वोसत्थो' (आत्महि ६) । कर्म. सुण्ड (हे २, १७६) ।

वक्क सुयत, सुयमाण (सुर ५, २१६, सुपा ५०५, महा ३७, १२, पि ४६७) । हेक्क. सोउ (पि ४६७) । क. सोएवा (अप) (हे ४, ४३८) ।

सुअ सक [श्रु] सुनना । वक्क सुअत (घात्वा १५६) ।

सुअ पु [सुत] पुत्र, लडका (सुर १, १०, प्रासू ८६, कुमा, उव) ।

सुअ पु [शुक] १ पक्षि-विशेष तोता (पएह १, १—पत्र ८, उत ३४, ७, सुपा ३१) । २ रावण का मन्त्री (से १२, ६३) । ३ रावणाधीन एक सामंत राजा (पउम ८, १३३) । ४ एक परिव्राजक (गाथा १, ५—पत्र १०५) । ५ एक अनायें देश (पउम २७, ७) ।

सुअ वि [श्रुत] १ सुना हुआ, आकर्णित (हे १, २०६, भग, ठा १—पत्र ६) । २ न ज्ञान-विशेष, शब्द-ज्ञान, शास्त्र-ज्ञान (विसे ७६, ८१, ८५, ८६, ६४, १०४, १०५, एदि, अणु) । ३ शब्द, ध्वनि, आवाज । ४ क्षयोपशम, श्रुतज्ञान के आवरक कर्मों का नाश-विशेष । ५ आत्मा, जीव, 'तं तेण तओ तम्मि व सुणेइ सो वा मुअ तेण' (विसे ८१) । ६ आगम, शास्त्र, सिद्धान्त (भग, एदि, अणु, से ४, २७, कम्म ४ ११, १४, २१, बृह १, जी ८) । ७ अव्ययन, स्वाध्याय (सम ५१, से ४, २७) । ८ श्रवण (प्राक ७०) । ९ केवलपि पु [केवलपि] चौदह पूर्व ग्रंथों का जानकार मुनि (राज) । १० खड्ग, खड्ग पु [स्कन्ध] १ अग-ग्रन्थ का अव्ययन-समूहात्मक महान् अंश—खण्ड (सूअ २, ७, ४०, विपा १, १—पत्र ३) । २ वारह अग-ग्रंथों का समूह । ३ वारहवाँ अग-ग्रन्थ, दृष्टिवाद (राज) । ४ नाण देखो ०नाण (ठा २, १ टी—पत्र ५१) । ५ नाणि वि [ज्ञानिन्] शास्त्र-ज्ञान-संपन्न, शास्त्रों का जानकार (भग) । ६ निस्सिय न [निश्चित] मति-ज्ञान का एक भेद (एदि) । ७ तिहि स्त्री [तिथि] शुक्ल पंचमी तिथि (रयण २) । ८ थेर पु [स्थविर] तृतीय और चतुर्थ अग-ग्रंथ का जानकार मुनि (ठा ३, २) । ९ देवया स्त्री [देवता] जैन

शास्त्रों की अविष्ठात्री देवी (पडि) । १० देवी स्त्री [देवी] वही (सुपा १, कुमा) । ११ धम्म पुं [धर्म] १ जैन अग-ग्रन्थ (ठा २, १—पत्र ५२) । २ शास्त्र-ज्ञान (आवम) । ३ आगमों का अव्ययन. शास्त्राभ्यास (एदि) । ४ धर वि [वर] शास्त्रज्ञ (सुपा ६५२, पएह २, १—पत्र ६६) । ५ नाण पु न [ज्ञान] शास्त्रज्ञान (ठा २, १—पत्र ४६, भग) । ६ नाणि देखो ०णाणि (वव १०) । ७ निस्सिय देखो ०णिस्सिय (ठा २, १—पत्र ४६) । ८ पचती स्त्री [पञ्चमी] कार्तिक मास की शुक्ल पंचमी तिथि (भवि) । ९ पुण्य वि [पूर्व] पहले सुना हुआ (उप १४२ टी) । १० सागर पु [सागर] ऐकत क्षेत्र के एक भावी जिनदेव (सम १५४) ।

सुअ वि [स्मृत] याद किया हुआ (भग) ।

सुअध पुं [सुगन्ध] १ अच्छी गन्ध, खुशबू (गा १४) । २ वि. सुगन्धी (से ८, ६२, सुर १, २८) ।

सुअंधि वि [सुगन्धि] सुन्दर गन्धवाला (से १, ६२, दे ८ ८) । देखो सुगंधि ।

सुअक्खाय वि [स्वाख्यात] अच्छी तरह कहा हुआ (सूअ २, १, १५, १६, २०, २६) ।

सुअच्छ वि [स्वच्छ] निर्मल, विशुद्ध (भवि) ।

सुअण पुं [सुजन] सज्जन, भला आदमी (गा २२४, पाअ, प्रासू ८, ४०, सुर २, ४६, गउड) ।

सुअण न [स्वपन] सोना, शयन (सूक्त ३१) ।

सुअणा स्त्री [दे] अतिमुक्तक, वृक्ष-विशेष (दे ८, ३८) ।

सुअणु वि [सुतनु] १ सुन्दर शरीरवाला । २ स्त्री. नारी, महिला (गा २६६, ३८४, ५६६, पि ३४६, गउड) ।

सुअण्ण देखो सुवण्ण (प्राक ३०) ।

सुअम वि [सुगम] सुबोध (प्राक ११) ।

सुअर वि [सुकर] जो अनायास से हो सके वह, सरल (अभि ६६) ।

सुअर पुं [शूकर] सूअर, बराह (विपा १, ७—पत्र ७५, नाट—मृच्छ २२२) ।

सिञ्चत } देखो सिच = सिच् ।
सिञ्चमाण }

सिञ्छा स्त्री [स्वेच्छा] स्वच्छन्द (सुपा ३१६) ।

सिज्ज अक [स्विट्] पसीना होना । सिज्जइ (पङ् २०३) । वक्क. सिज्जत (नाट—उत्तर ६१) ।

सिज्जं देखो सिज्जा (सम्मत १७०) ।

सिज्जंभण पु [शय्यभण] एक सुप्रसिद्ध प्राचीन जैन महर्षि (कप्प—पृ ७८, एंदि) ।

सिज्जंस देखो सेज्जस = श्वेयास (कप्प, पडि, आचा २, १५, ३) ।

मिज्जा स्त्री [शय्या] १ विद्योना (सम १५, उवा, सुपा ५५३) । २ उपाश्रय, वसति (श्लो १६७) । ३ तरी, यरो स्त्री [तरी] उपाश्रय की मालकिन (श्लो १६७, पि १०१) । ४ वाली स्त्री [पाली] विद्योना का काम करनेवाली दासी (सुपा ६४१) । देखो सेज्जा ।

सिज्जिअ (अप) वि [सृष्ट] उत्पन्न किया हुआ, बनाया हुआ (पिंग) ।

सिज्जिर वि [स्वेत्त] जिसको पसीना हुआ करता हो वह, पसीनावाला (गा ४०७, ४०८, ७७४, कुमा) । स्त्री ०री (हे ४, २२४) ।

सिज्जूर न [दे] राज्य (दे ८, ३०) ।

सिज्ज्म अक [सिध्] १ निष्पन्न होना, बनना । २ पकना । ३ मुक्त होना । ४ मंगल होना । ५ सक. गति करना, जाना । ६ शासन करना । सिज्जइ (हे ४, २१७, भग, महा) सिज्जमति (कप्प) । भूका. सिज्जिमु (भग, पि ५१६) । भवि मिज्जिहिइ, मिज्जिहसति, सिज्जिहिइ, सिज्जिही (उवा, भग, पि ५२७, महा) । वक्क. सिज्जमन (पिड २५१) ।

सिज्ज्म देखो सिंभ (राज) ।

सिज्ज्मणया } स्त्री [सेधना] १ सिद्धि, मुक्ति, सिज्ज्मणा } मोक्ष, निर्वाण (सम १४७, उप १३१, ७६६, पव ८८, धर्मवि १५१, विसे ३०३७) । २ निष्पत्ति, साधना,

‘सव्वो परोवयारं करेइ

नियकज्जिज्ज्मणाभिरम्भो ।

निरविकलो नियकज्जे

परोवयारी हवइ धन्नो ॥’

(रयण ४६) ।

सिद्ध वि [श्रेष्ठ] अति उत्तम (उप ८७६) ।

सिद्ध वि [सृष्ट] १ रचित, निमित्त (उप ७२८ टी, रंभा) । २ युक्त । ३ निश्चित । ४ भूषित । ५ बहुल, प्रचुर । ६ व्यक्त (हे १, १२८) ।

सिद्ध वि [शिष्ट] १ कथित, उक्त, उपदिष्ट (सुर १, १६५, २, १८४, जो ५०, वजा १३६) । २ सज्जन, भलामानस, प्रतिष्ठित (उप ७६८ टी, कुप्र ६४, सिरि ४५, सुपा ४७०) । ३ गार पु [चार] भलमनसी, सदाचार (धर्म १) ।

सिद्ध वि [दे] मो कर उठा हुआ (पङ्) ।

सिद्धि स्त्री [सृष्टि] १ विश्व-निर्माण, जगद-रचना (सुपा १११, महा) । २ निर्माण, रचना । ३ स्वभाव । ४ जिसका निर्माण होता हो वह (हे १, १२८) । ५ सीधा क्रम, अविपरीत क्रम, ‘चक्काई जतजोगेण मिद्धि-विसिद्धिकमेण एगतरिय भमताइ’ (सिरि ८७८) ।

सिद्धि पु [दे] १ नगर सेठ, नगर का मुख्य साहूकार, महाजन (कप्प, सुपा ५८०) । २ पय न [पद] नगर सेठ की पदवी (सुपा ३४२) । देखो सेट्ठि ।

सिद्धिणी स्त्री [प्रेष्टिनी] श्रेष्ठि-पत्नी, सेठानी (सुपा १२) ।

सिद्धी स्त्री [दे] सीढ़ी, नि श्रेणि (अज्ज ७०) ।

सिद्धिल वि [शिथिर, शिथिल] १ लथ, ढीला । २ अट्ठ, जो मजबूत न हो वह । ३ मन्द (हे १, २१५, २५८, प्राप्र, कुमा, प्रासू १०२, गउड) ।

सिद्धिल सक [शिथिलय्] शिथिल करना । सिद्धिलेइ, सिद्धिलति, सिद्धिलेति (उव, वजा १०, से ६ ६५) सिद्धिलेहि (वेणी २४३, पि ४६८) । वक्क. सिद्धिलेत्त (से ५, ४२) ।

सिद्धिलाविअ वि [शिथिलित] शिथिल कराया हुआ (प्राक ६१) ।

सिद्धिलिअ वि [शिथिलित] शिथिल किया हुआ (कुमा, गउड, भवि) ।

सिद्धिलीकय वि [शिथिलीकृत] शिथिल किया हुआ (सुर २, १६, १७३) ।

सिद्धिलीभूय वि [शिथिलीभूत] शिथिल बना हुआ (पठम ५३, २४) ।

सिण देखो सण = शण (जो १८, सुपा १८६, गा ७६८) ।

सिणगार देखो सिंगार = शृङ्गार, ‘सिणगार-चाख्वेसो’ (सवोध ४७), ‘कारिअमुरसुदरिसि-णगार’ (सिरि १५८) ।

मिगा अक [स्ना] स्नान करना, नहाना । सिणाइ (सूत्र १, ७, २१, प्राक २८) । संक. सिणाइत्ता (सूत्र २, ७, १७) । इंक सिणाइत्तए (श्रौप) ।

सिणाउ पुंस्त्री [स्नायु] नाड़ी-विशेष, वायु वहन करनेवाली नाड़ी (प्राक २८) ।

सिणाण उ [स्नान] नहान, श्रवगाहन (नम ३५, श्लो ४६६, रयण १४) ।

सिणात देखो सिणाय = स्नात (ठा ४, १—पत्र १६३, ५, ३—पत्र ३३६) ।

सिणाय देखो सिणा । सिणायति (दम ६, ६३) । वक्क. मिणायत (दम ६, ६२, पि १३३) ।

सिणाय } वि [स्नात, क] १ प्रधान, सिणायग } श्रेष्ठ (सूत्र २, २, ५६) । २ सिणायथ } मुनि-विशेष, केवलज्ञान प्राप्त मुनि, केवली भगवान् (भग २५, ६, एंदि १३८ टी, ठा ३, २—पत्र १२६, धर्मस १३५८, उत्त २५, ३४) । ३ बुद्ध गिण्य, बोधि सत्त्व (सूत्र २, ६, २६) ।

सिगाव सक [स्नपय्] स्नान कराना । सिणावेदि (शी) (नाट—चैत ४६) । सिणावति, सिणावेति (आचा २, २, ३, १०, पि १३३) ।

सिणि स्त्री [मृणि] अकुश (सुपा ५३७, मिरि १०५८) ।

सिणिज्ज अक [स्निह्] प्रीति करना । सिणिज्जइ (प्राक २४) । कर्म. सिप्पइ (हे ४, २५५) । कवक्क. सिप्पत (कुमा ७, ६०) ।

सिणिद्ध वि [स्निग्ध] १ प्रीति-युक्त, स्नेह-युक्त (स्वप्न ५३, प्रासू ६२) । २ आद्र, रस-युक्त (कुमा) । ३ मखण, कोमल । ४ चिकना । ५ न भात का मॉड (हे २, १०९, प्राप्र) ।

३, १२० वि १८) । ३ रावण की एक पत्नी (पउम ७४, ६) । ४ छन्द-विशेष (पिंग) । ५ मनोहरा शोभना, 'सुंदरी ए देवाणुप्पिया गोमालस्स मखलिपुत्तस्स घम्म-परणत्ती' (उवा) ।

सुंदर } न [मौन्दर्य] सुन्दरता, शरीर
सुंदरिम } का मनोहरपन (प्राप्र, हे १, ५७,
कुमा सुपा ४, ६२२, घम्म ११ टी) ।

सुव न [शुम्ब] १ तृण-विशेष (ठा ४, ४—
पत्र २७१, सुख १०, १) । २ तृण-विशेष
की बनी हुई डोरो—रस्ती (विसे १५४) ।

सुभ ५ [शुम्भ] १ एक गृहस्थ जो शुभा
नामक इन्द्राणी का पूर्व-जन्म में पिता था
(गाया २, २—पत्र २५१) । २ दानव-
विशेष (पि ३६०, ३६७ ए) °वडेगय न
[°वितसक] शुम्भा देवी का एक भवन
(गाया २, २) । °सरी स्त्री [°श्री] शुम्भा
देवी की पूर्व-जन्मीय माता (गाया २, २) ।

सुभा स्त्री [शुम्भा] बलि नामक इन्द्र की एक
पटरानी (गाया २, २—पत्र २५१) ।

सुसुमा स्त्री [सुसुमा] घन सार्थवाह की कन्या
का नाम (गाया १, १८—पत्र २३५) ।

सुसुमार ५ [सुसुमार, शिशुमार] १ जल-
चर प्राणी की एक जाति, सूँस, सोस या सूसर
(गाया १, ४, पि ११७) । २ द्रव-विशेष (भत्त
६६) । ३ पर्वत-विशेष । ४ न. एक अरण्य
(स ८६) । देखो सु सु-मार ।

सुक देखो सुअ = शुक्र (सुपा २३४) । °पहा
स्त्री [°प्रभा] भगवान् सुविधिनाथ की दोहा-
शिविका (विचार १२६) ।

सुकइ पुं [सुकवि] अच्छा कवि (गा ५००,
६००, महा) ।

सुकठ वि [सुकण्ठ] १ सुन्दर कण्ठवाला ।
२ पुं. एक वणिक्-पुत्र (आ १६) । ३ एक
चोर-सेनापति (महा) ।

सुकच्छ पु [सुकच्छ] विजय-क्षेत्र-विशेष
(ठा २, २—पत्र ८०, इक) । °कूड पुं
[°कूट] शिखर-विशेष (इक, राज) ।

सुकड देखो सु .य (चउ ५८) ।

सुरुह पु [सुरुह] एक राज-पुत्र (निर
१, १, पि ५२) ।

सुरुहा स्त्री [सुरुहा] राजा श्रेणिक की
एक पत्नी (अंत २५) ।

सुरुद देखो सु न (संक्षि ६) ।

सुकम्माण वि [सुकर्मन्] अच्छा कर्म करने-
वाला (हे ३, ५६, पड्) ।

सुकय न [सुकुन] १ पुण्य (पणह १, २—
पत्र २८, पाअ) । २ उपकार (से १, ४६) ।
३ वि. अच्छी तरह निर्मित (राज) ।
°जाणुअ, °णु, °णुअ वि [°ज्ञ] सुकृत
का जानकार, उपकार की कदर करनेवाला
(प्राक १८, उप ७६८ टी) ।

सुकयय वि [सुकुतार्थ] अत्यन्त कृतकृत्य
(प्रासू १५५) ।

सुकर देखो सुगर (आचा १, ६, १, ८) ।

सुमाल पुं [सुमाल] राजा श्रेणिक का एक
पुत्र (निर १, १) ।

सुमाली स्त्री [सुमाली] राजा श्रेणिक की
एक पत्नी (अंत २५) ।

सुकिअ देखो सुकय (हे ४, ३२६, भवि) ।

सुकिट्ट वि [सुकुट्ट] अच्छी तरह जोता हुआ
(पउम ३, ४५) ।

सुकिट्टि पुं [सुकुट्टि] एक देव-विमान (सम
६) ।

सुकिदि वि [सुकुतिन्] १ पुण्य-शाली । २
सत्कर्म-कारी (रंभा) ।

सुकिळ } देखो सुक = शुक्ल (हे २, १०६,
सुकिळ } पि १३६) ।

सुकुमार } वि [सुकुमार] १ अति कोमल ।
सुकुमाल } २ सुन्दर कुमार अवस्थावाला
(महा, हे १, १७१, पि १२३, १६०) ।

सुकुमालिअ वि [दे] सुघटित, सुन्दर बना
हुआ (दे ८, ४०) ।

सुकुल पुंन [सुकुल] उत्तम कुल (भवि) ।

सुकुसुम न [सुकुसुम] १ सुन्दर फूल । २
वि. सुन्दर फूलवाला (हे १, १७७, कुमा) ।

सुकुसुमिय वि [सुकुसुमित] जिसको अच्छी
तरह फूल आया हो वह (सुपा ५६८) ।

सुकोमल पुं [सुकोशल] १ ऐश्वर्य-वर्ष के
एक भावी जिनदेव (सम १५४, पव ७) ।
२ एक जैन मुनि (पउम २२, ३६) ।

सुकोसला स्त्री [सुकोशला] एक राज-कन्या
(उप १०३१ टी) ।

सुक अक [शुप्] सुखना । सुकइ (विसे
३ ३२, पव ७०), सुककति (दे ८, १८
टी) ।

सुक वि [शुक्क] मूखा हुआ (हे २, ५,
गाया १, ६—पत्र ११४, उवा, पिड २७६,
सुर ३, ६५, १०, २२३, घात्वा १५६) ।

सुक न [शुक्क] १ चुगी. बेचने की वस्तु पर
लगता राज-कर (गाया १, १—पत्र ३७,
कुमा, आ १४, सम्मत १५६) । २ स्त्री-घन
विशेष । ३ वर पत्र से कन्या पक्षवालों को
लेने योग्य घन । ४ स्त्री को समोग के लिए
दिया जाता घन । ५ मूल्य (हे २ ११) ।
देखो सुक ।

सुक पु [शुक्क] १ ग्रह-विशेष (ठा २, ३—
पत्र ७८, सम ३६, वज्जा १००) । २ पुन
एक देव-विमान (सम ३३, देवेन्द्र १४३) ।
३ न वीर्य, शरीरस्य धातु-विशेष (ठा ३,
३—पत्र १४४, धर्मसं ६८४, वज्जा १००) ।

सुक पुं [शुक्क] १ वर्य-विशेष, सफेद रंग ।
२ सफेद वर्यमाला, श्वेत (हे २, १०६,
कुमा, सम २६) । ३ न. शुभ ध्यान विशेष
(श्रीप) । ४ वि. जिसका संसार अर्धं पुद्गल-
परावर्त काल से कम रह गया हो वह (पत्र
१, २) । °उभाण, °भाण न [°ध्यान]
शुभ ध्यान-विशेष (सम ६, सुपा ३७, अंत) ।
°पक्ख पुं [°पक्ष] १ जिसमें चन्द्र की कला
क्रमशः बढ़ती है वह आधा महीना (सम
२६, कुमा) । २ हंस पक्षी । ३ काक, कौआ ।
४ वगला, बक पक्षी (हे २, १०६) ।
°पक्खिय वि [°पाक्षिक] वह आत्मा जिसका
संसार अर्धं पुद्गल-परावर्त से कम रह गया हो
(ठा २, २—पत्र ५६) । °लेस देखो °लेस
(भग) । °लेसा देखा °लेसा (सम ११,
ठा १—पत्र २८) । °लेस वि [°लेश्या]
शुक्ल लेश्यावाला (परण १७—पत्र ५११) ।
°लेसा स्त्री [°लेण्या] आत्मा का अव्यव-
साय-विशेष, शुभतम आत्म-परिणाम (पणह
२, ४—पत्र १३०) ।

सुकड } देखो °सुकय (सम १२५, पउम
सुकय } १५, १००) ।

सुकव सक [शोषय्] सुखाना । वक्क-
सुकवेमाण (गाया १, ६—पत्र १४) ।

८—पत्र ४४०, औप, इक)। २ मुक्ति, निर्वाण, मोक्ष (ठा १—पत्र २५, पडि, औप, कुमा)। ३ कर्म-क्षय (सूय २, ५, २५, २६)। ४ अणिमा आदि योग की शक्ति (ठा १)। ५ कृतार्थता, कृतकृत्यता (ठा १—पत्र २५, कप्प, औप)। ६ निष्पत्ति, 'न कयाद दुक्खिणीओ सकजसिद्धि समाणेइ' (उव)। ७ नन्वन्व (दसनि १, १२२)। ८ छन्द विशेष (पिग)। ९ गइ छो [गति] मुक्ति-स्थान में गमन (कप्प, औप, पडि)। १० गडिया छो [गण्डिका] ग्रन्थ-प्रकरण-विशेष (भग ११, ६—पत्र ५२१)। ११ पुर न [पुर] नगर-विशेष (कुप्र २२)।

सिन्न वि [जीर्ण] जीर्ण, गला हुआ (सुपा ११, विवे ७० टी)।

निन्न देखो सिण्ण = म्विन्न (सुपा ११)।

सिन्न ज्ञोन [सैन्य] १ मिला हुआ हाथी-घोडा आदि। २ सेना का समुदाय (हे १, १५०, कुमा)। छो 'ता अन्नविणे नयेरे पवेदिय सत्तुसिन्नाए' (सुर १२, १०४)।

सिप्प देखो सिप। निप्पइ (पड्)।

सिप्प न [दे] पलाल, पुआल, सुण-विशेष (दे ८, २८)।

सिप्प न [शिल्प] कारु-कार्य, कारीगरी, चित्रादि-विज्ञान, कला, हुनर, क्रिया-कुशलता (पएह १, ३—पत्र ५५, उवा, प्रासू ८०)। २ तेजस्काय, अग्नि-सघात। ३ अग्नि का जीव। ४ पु तेजस्काय का अविष्ठाता देव (ठा ५, १—पत्र २६२)। ५ सिद्ध पुं [सिद्ध] कला में अतिकुशल (आवम)। ६ जीव वि [जीव] कारीगर, कला—हुनर से जीविका-निर्वाह करनेवाला (ठा ५, १—पत्र ३०३)।

सिप्पा छो [सिप्रा] नदी-विशेष, जो उजैन के पास से गुजरती है (स २६३, उप पृ २१८, कुप्र ५०)।

सिप्प वि [शिल्पिन्] कारीगर, हुनरी, चित्र आदि कला में कुशल (औप, मा ४)।

सिप्पि छो [शुक्ति] सीप, घोषा (हे २, १३८, उवा, पड्, कुमा, प्रासू ३६, पि ३८५)।

सिप्पिअ वि [शिल्पिक] शिल्पी, कारीगर (महा)।

सिप्पिर न [दे] सुण-विशेष, पलाल, पुआल (पएण १—पत्र ३३, गा ३३०)।

सिप्पी छो [दे] सूची, सूई (पड्)।

सिप्पीर देखो सिप्पिर (गा ३३० अ, पि २०१)।

सिविर देखो सिविर (पउम १०, २७)।

सिच्च देखो सिम्भ (चड)।

सिभा छो [शिफा] वृक्ष का जटाकार मूल (हे १, २३६)।

सिम स [सिम] सर्व, सब (प्राभा)।

सिम° देखो सीमा, 'जाव सिमसनिहाणं पत्तो नगरस्स वाहिज्जाणे' (सुपा १६२)।

सिमसिम } थक [सिममिमाय] 'सिम सिमसिमाय' } सिम° आवाज करना। सिम-मिमायति (वजा ८२)। वहु सिमसिमन (गा ५६१ अ)।

सिमिग देखो सुमिण (हे १, ४६, २५६)।

सिमिर (अप) देखो सिविर (भवि)।

सिमिसिम } देखो सिमसिम। वहु सिमिसिमाअ } सिमिसिमन, सिमिसि-माअन (गा ५६०, पि ५५८)।

सिमिसिमिय वि [सिमिसिमिव] 'मिम सिम' आवाज करनेवाला (पउम १०५, ५५)।

सिर सक [सृज्] १ बनाना, निर्माण करना। २ छोड़ना, त्याग करना। मिरइ (पि २३५), सिरामि (विसे ३५७६)।

सिर न [शिरस्] १ मस्तक, माथा, मिर (पाय, कुमा, गउड)। २ प्रधान, श्रेष्ठ। ३ अग्र भाग (हे १, ३२)। ४ क न [क] शिरस्त्राण, मस्तक का वस्त्र (दे ५, ३१, कुमा, कुप्र २६२)। ५ ताण, ताण न [त्राण] वही पूर्वोक्त ग्रन्थ (कुमा, स ३८५)।

६ वदिय छो [वन्ति] चिकित्सा विशेष, मिर में चर्म-कोश देकर उसमें सस्कृत तेल आदि पूरने का उपचार (विपा १, १—पत्र १४), 'सिरावेहेहि (१)सिरवत्तोहि'य' (गाया १, १३—पत्र १८१)। ७ मणि देखो सिरो मणि (सुपा ५३२)। ८ य पुं [ज] केश, बाल (भग, कप्प, औप, स ५७८)। ९ हर न

[गृह] मकान के ऊपर की छत, चन्द्रशाला (दे ३, ४६)। देखो सिरो°।

सिर° देखो सिरा (जो १०)।

°सिरय } देखो सिर = शिरस् (कप्प, पएह °सिरस } १, ४—पत्र ६८, औप)।

सिरसावत्त वि [शिरसावर्त, शिरस्यावर्त] मन्तक पर प्रदक्षिणा करनेवाला, शिर पर परिभ्रमण करता (गाया १, १—पत्र १३, कप्प, औप)।

सिरा छो [शिरा, सिरा] १ रग, नस, नाडी (गाया १, १३—पत्र १८१, जो १०, जीव १)। २ धारा, प्रवाह (कुमा, उप पृ ३६६)।

सिरि° देखो सिरि (कुमा, जो ५०, प्रासू ५२, ८०, कम्म १, १, पि ६८)। १ उक्त पुं [पुत्र] भारतवर्ष में होनेवाला एक चक्रवर्ती राजा (सम १५४)। २ उर न [पुर] नगर-विशेष (उप ५५०)। ३ कंठ पुं [कण्ठ] १ शिव, महादेव (कुमा)। २ वानरद्वीप का एक राजा (पउम ६, ३)। ३ कन पुन [कान्त] एक देव-विमान (सम २७)। ४ कता छो [कान्ता] १ एक राज-पत्नी (पउम ८, १८७)। २ एक कुलकर-पत्नी (सम १५०)। ३ एक राज-कन्या (महा)। ४ एक पुष्करिणी (इक)। ५ कद-लग पु [कन्दलग] पशु-विशेष, एक-खुरा जानवर की एक जाति (पएण १—पत्र ४६)। ६ करण न [करण] १ न्याया-यालय, न्याय-मन्दिर। २ कैसला (सुपा ३६१)। ३ करणीय वि [करणिय] छो करण-सवन्धी (सुपा ३६१)। ४ कूड पुन [कूट] हिमवत पर्वत का एक शिखर (राज)। ५ खड न [खण्ड] चन्दन (सुर २, ५६, कप्प)। ६ गरण देखो करण (सुपा ४२५)। ७ गीव पुं [ग्रीव] राक्षस वज्र का एक राजा, एक लंका-पति (पउम ५, २६१)। ८ गुत्त पु [गुप्त] एक जैन महर्षि (कप्प)। ९ घर न [गृह] भंडार, खजाना (गाया १, १—पत्र ५३, सूअनि ५५)। १० घरिअ वि [गृहिक] भंडारी, खजानची (विमे १४२५)। ११ चद पु [चन्द्र] १ एक प्रसिद्ध जैनाचार्य और ग्रन्थकार (पव ४६, सुपा ६५८)। २ ऐरवत क्षेत्र में होनेवाले एक

सुचोइअ वि [सुचोइअ] प्रेरित (उत्त १, ४८) ।

सुच वि [गोन्य] अफसोस करने योग्य, 'मुच्चा ते जियलाए जियावयण जे नरा न यारान' धर्मवि १७) ।

सुच्चा देखो सुग = थु ।

सुजपिन न [सुजलिपन] आशीर्वाद (राया १, १—पत्र ३६) ।

सुजड पु [सु, ट] एक विद्यावरनरेश (पउम १-२-२) ।

सुजम पु [सुयरास] १ एक जिनदेव का नाम (उप १०-१ टी) । २ वि यशस्वी (श्रा १६) ।

सुनना ओ [सुगशस्] १ चौदहवें जिन-देव की माता (मम १५१) । २ एक राज-पत्नी (उप ६८६ टी) ।

सुजह वि [सुहान] सुख में जिसका त्याग हो सके वह (उत्त २, ६) ।

सुजाइ वि [सुजाति] प्रशस्त जातिवाला, जात्य (महा) ।

सुजाण वि [सुज] मयाना अच्छा जानकार (मिार ६१ प्राप् १३ सुपा ५८८) ।

सुजाय वि [सुजात] १ मुन्दर जाति में उत्पन्न कुलोन, खानदानी (उप ७२८ टी) । २ अच्छी तरह उगन्न, मुन्दर रूप में उत्पन्न (ठा ४, ४-४२ २०८ ओप, जीव ३, ४, उवा) । ३ न मुन्दर जन्म (आव) । ४ पु एक राज कुमार (विपा २, ३) । ५ पुन एक एक देव-विमान (देवेन्द्र २७२) ।

सुजाया ओ [सुजाता] १ कालवाल आदि लोकपानों की पन्थानियों के नाम (ठा ४, १—पत्र २०४, इक) । २ राजा श्रेणिक की एक पत्नी (अन २५) ।

सुजिट्ट ओ [सुजेष्ट] एक महामली राज-दुमारी, जो चंकराज की पुत्री थी (पडि) ।

सुजुत्ति ओ [सुयुक्ति] मुन्दर युक्ति (सुपा १११) ।

सुजेष्टा देखा सुजिट्टा (राज) ।

सुजास वि [सुजुष्ट] अच्छी तरह सेवित (सूय १, १, २, २६) ।

सुजमय वि [सुजोयिन] गृष्ट क्षपित, सम्पत्तिनाशित (सूय १, २, २, २६) ।

सुज पु [सूय] १ मूरज रवि । २ आक का पेड । ३ दैत्य-विशेष (हे २, ६४, प्राप्र) । ४ पुन एक देव-विमान (सम १५) । ५ पुन [कान्त] एक देव-विमान (सम १५) । ६ पुन [ध्वज] देव-विमान-विशेष (सम १५) । ७ पुन [प्रभ] एक देव-विमान (मम १५) । ८ पुन [लेइय] एक देव-विमान (मम १५) । ९ पुन [वर्ण] देव विमान विशेष (सम १५) । १० पुन [सिग] एक देव-विमान (सम १५) । ११ पुन [मिद्व] एक देव-विमान का नाम (मम १५) । १२ पुन [मिरी] ओ [श्री] एक ब्राह्मण-कन्या (महानि २) । १३ पुन [गिव] एक ब्राह्मण का नाम (महानि २) । १४ पुन [हास] पु [नाम] तनवार की एक उत्तम जाति (पउम ४३-४६) । १५ पुन [मि] वैताव्य की उत्तम-श्रेणि में स्थित एक विद्यावर-नगर (इक) । १६ पुन [विते] एक देव-विमान (मम १५) । देखो 'सूर, सूरिअ = सूर, सूर्य' ।

सुजाण वि [सुजान] सुजान, सयाना, मुज (पड, पिंग) ।

सुजुत्तरवडिनग पुन [सूर्योत्तरावतंसक] एक देव-विमान (मम ५) ।

सुज्म अक [शुध] शुद्ध होना । सुज्मइ (महा) । सक सुज्मज्जग (सम्पक्को ८) ।

सुज्मत वि [इष्टमान] सूक्ता, दीख पड़ता, मालूम होता, 'अन्नवि ज अमुज्मत । मुजत-एण रत्ति' (पउम १०३, २५) ।

सुज्मगया ओ [सोयना] शुद्धि (उप ८०४) ।

सुज्मय न [दे] ० रौप्य, चाँदी । २ पु. रजक, घोड़ी (दे ८, ५६) ।

सुज्मय पु [दे] रजक, घोड़ी (दे ८, ३६) ।

सुज्मवण न [शोवन] शुद्धि, प्रदालन (उप ६८५) ।

सुज्माइ वि [सुध्यायिन] शुभ ध्यान करने-वाला (सर्वोव ५२) ।

सुज्माइय वि [सुयान] अच्छी तरह चिन्तित (राज) ।

सुद्विअ वि [सुन्धिन] ० नन्यन् स्थित (कण्) । २ पु लक्षण समुद्र का अविष्टायक

देव (राया १, १६—पत्र २१७) । ३ आर्यमुहर्त्ति आचार्य का शिष्य एक जैन महर्षि (कण्) ।

सुट्टु, अ [सुण्डु] १ अच्छा, शोभन मुन्दर सुट्टु (आचा, भग, स्वप्न २३, मुर २, १७८) । २ अतिशय, अत्यन्त (मुर ४, २४, प्राप् १३७) ।

सुठिअ देखो सुठिअ (पाप्र) ।

सुठ नक [स्मृ] याद करना । सुठइ (प्राक् ६३) ।

सुठिअ वि [दे] १ आन्त, थंका हुआ (दे ८, ३६, गउड, सुपा १७६, ५३०) मुर १०, २१८) । २ सकुचित अगगला (महा) ।

सुण मक [श्रु] सुनना । सुणइ, सुणेइ (हे ४, ५८, २४१, महा) । सुणउ, सुणेउ, मुणाउ (हे ३, १५८) । भवि, मुणिस्सइ, मुणिस्सामो, सोच्छइ, सोच्छिइ, सोच्छ, सोच्छिस्स, मोच्छिमि, सोच्छिहिमि, सोच्छिस्सामि, सोच्छिहामि (पि ५३१, औप, हे ३, १७२) । कर्म मुणिजइ, सुव्वइ, सुव्वए, सुम्मइ, सुणीअइ (हे ४, २४२, कुमा, महा, पि ५३६) । वक्क सुणत, सुणित, सुगमाण, सुणेमाण (हेका १०५, मुर ११, ३७, पि ५६१, विपा १, १, मुर ३, ७६) । कक्क, सुम्मत, सुव्वत, सुव्वमाण (मुर ११, १६६, ३, ११, से २, १०, ६, ४६) । सक, सुणिअ, सुणिऊण, सुणित्ता, सुणेत्ता, सोऊण, सोउआण, सोउआण, सोउ, सोआ, सोआ, सुआ (अमि ११६, पड, हे ४, २४१, पि ५८२, हे ४, २३७, २, १६६, कुमा हे २, १५, पि ११४, ३४६, ५८७) । हेक्क सोउ (कुमा) । क. सुणेयव्व, सोअव्व (भग, पण्ड १, १—पत्र ५, ने २, १०, गउड, अजि ३८) ।

सुगइ देखो सुगय ।

सुगड पु [सुनन्द] १ एक राजपि (धम्म) । २ भगवान् वासुपूज्य को प्रथम भिक्षा-दाता गृहस्थ (मम १५१) । ३ पुन एक देव-विमान (सम २६) । देखो सुनंद ।

सुगडा ओ [सुनन्दा] ० भगवान् पार्श्वनाथ की मुख्य श्राविका (कण्) । २ तृतीय चक्रवर्ती

पद्महृद की अधिष्ठात्री देवी (ठा २, ३—पत्र ७२)। ५ उत्तर रुक्म पर रहनेवाली एक दिक्कुमारी देवी (ठा ८—पत्र ४३७)। ६ देव प्रतिमा-विशेष (गाथा १, १ टी—पत्र ४३)। ७ भगवान् कुन्धुनाथ जी की माता का नाम (पत्र ११)। ८ एक श्रेष्ठि-कन्या (कुप्र १५२)। ९ एक श्रेष्ठि पत्नी (कुप्र २२१)। १० देव, गुरु आदि के नाम के पूर्व में लगाया जाता आदर-सूचक शब्द (पत्र ७, कुमा, पि ६८)। ११ वारी। १२ वप-रचना। १३ घर्म आदि पुरुषार्थ। १४ प्रकार, भेद। १५ उपकरण, माधन। १६ वृद्धि, मती। १७ अधिकार। १८ प्रभा, तेज। १९ कीर्ति, यश। २० सिद्धि। २१ वृद्धि। २२ विभूति। २३ लवग, लौंग। २४ सरल वृक्ष। २५ बिल्व-वृक्ष। २६ औषधि विशेष। २७ कमल, पद्म (हे २, १०४) देखो सिस, सिरि, सी = श्री।

सिरीस देखो सिरिम (गाथा १, ६—पत्र १६०, औप, कुमा)।

सिरीसिव पु [सरीसुप] सर्प, साँप (सूत्र १, ७, १५, पि ८१, १७७)।

सिरो° देखो सिर = शिरस्। °धरा (श्री) देखो °हरा (पि ३४७)। °मणि पु [°मणि] प्रधान, अग्रणी, मुख्य, 'अलससिरोमणी' (गा ६७०, सुपा ३०१, प्रासू २७)। °रुह पु [°रुह] केश, बाल (पात्र)। °विअणा श्री [°वदना] सिर की पीडा (हे १, १५६)। °वात्य देखो सिर-वत्य (राज)। °हरा श्री [°धरा] श्रीवा, गला, डोक (पात्र, गाथा १, ३, स ८, अभि २२४)।

सिल° देखो सिला (कुमा)। °पवाल न [°प्रवाल] विद्रुम (औप)।

सिलव देखो सिलिव (पात्र)।

सिलय पु [दे] उच्छ, गिरे हुए अन्न-कणों का ग्रहण (दे ८, ३०)।

सिला श्री [शिला] १ सिल, चट्टान, पत्थर (पात्र प्राप्र, कप्प, कुमा)। २ शिला (दस ८, ६)। °जउ पु न [°जतु] शिलाजित, पर्वतों से उत्पन्न होनेवाला द्रव्य-विशेष, जो दवा के काम में आता है, शिला-रस (उप ७२८ टी, घर्मवि १४१)।

सिलाश्च पु [सिल-दित्य] बलभीपुर का एक प्रसिद्ध राजा (ती १५)।

सिलागा देखो सलागा (स ८४)।

सिलाघ (श्री) नीचे देखो। कृ सिलाघणीअ (प्रयौ ६७)।

सिलाह सक [श्याव] प्रशंसा करना।

कृ. सिलाहणिज्ज (ग्यण १६)।

सिलाहा श्री [श्लया] प्रशंसा (मै ८८)।

सिलिंद पु [शिलान्द] धान्य-विशेष (पत्र १५६, सवोव ८३, आ १८, दसनि ६, ८)।

सिलिध पु न [शिलीन्ध्र] १ वृक्ष-विशेष, छत्रक वृक्ष, भूमिस्फोट वृक्ष (गाथा १, १—पत्र २५, ६—पत्र १६०, औप, कुमा)।

२ पु. पर्वत-विशेष (स २५२)। °निलय पु [°निलय] पर्वत-विशेष (स ४२४)।

सिलिव पु [दे] शिशु, वच्चा (दे ८, ३०, सुर ११, २०६, सुगा ३४)।

सिलिट्ट वि [शिलट्ट] १ मनोज्ञ, सुन्दर, 'अद्भुततविसप्पमाणमउयसुकुमालकुम्मसठिय-सिलिट्टचरण' (पण्ह १, ४—पत्र ७६)।

२ संगत, सुयुक्त (औप)। ३ आलिङ्गित। ४ ससृष्ट। ५ श्लेपालकार-युक्त (हे २, १०६, प्राप)।

सिलिपइ देखो सिलिवइ (राज)।

सिलिम्ह पु श्री [श्लेप्मन्] श्लेष्मा, कफ (हे २, ५५, १०६, पि १३६)। देखो सेम्ह।

सिलिया श्री [शिलिका] १ चिरैता आदि वृण, औषधि-विशेष। २ पापाण-विशेष, शत्रु को तीव्र करने का पापाण (गाथा १, १३—पत्र १८१)।

सिलियिअ देखो मिलिट्ट (कुमा ७, ३५)।

सिलिवड वि [श्लोपादन्] श्लोपद नामक रोगवाला, जिससे पैर फुला हुआ और कठिन हो जाता है उम रोग से युक्त (आचा, बृह १)।

सिलीमुह पु [शिलीमुख] १ वाण, तीर (पात्र, सुर ६, १८)। २ रावण का एक योद्धा (पउम ५६, ३६)।

सिलीस देखो सिलेस = छिप्। सिलीसह (भवि)। सिलीसति (सूत्र २, २, ५५)।

सिलुच्चय पु [शिलोच्चय] १ मेघ पर्वत (सुज ५)। २ पर्वत, पाहाड (रंभा)।

सिलेच्छिय पु [शिलैच्छिक] मत्स्य-विशेष (जीव १ टी पत्र ३६)।

सिलेम्ह देखो सिलिम्ह (पड)।

सिलेस सक [शिल्प] आलिङ्गन करना, भेंटना। सिलेसइ (हे ४, १६०)।

सिलेस पु [श्लेप] १ वज्रनेप आदि सवान (सूत्रानि १८५)। २ आलिङ्गन भेंट (मुर १६, २४३)। ३ ससर्ग। ४ दाह (हे २, १०६ पड)। ५ एक शब्दालकार (मुर १, २६ १६, २४३)।

सिलेस देखो मिलिम्ह (अनु ५)।

सिलोअ } पु [श्लोक] १ कविता, पद्य, सिलोग } काव्य (मुद्रा १६८, सुपा ५६४, अजि ३, महा)। २ यश, कीर्ति (सूत्र १, १३, २२, हे २, १०६)। ३ कला-विशेष, कवित्व, काव्य बनाने की कला (औप)।

सिलोच्चय देखो सिलुच्चय (पात्र, मुर १, ७, राज)।

सिल्ल पु [दे] १ कुन्त, वरछा, शत्रु-विशेष (सुपा ३११, कुप्र २८, काल, सिरि ४०३)। २ पोत-विशेष, एक प्रकार का जहाज (सिरि ३८३)।

सिल्ला देखो सिला। २ पु [°कार] शिला-वट, पत्थर गढ़नेवाला शिल्पी (ती १५)।

मिल्लहा न [सिह्लक] गन्ध-द्रव्य-विशेष (राज)।

सिल्ला श्री [दे] शीत, जाड़ा (से १२, ७)।

सिव न [शिव] १ मङ्गल, कल्याण। २ सुख (पात्र, कुमा, गडड)। ३ अहिमा (पण्ह २, १—पत्र ६६)। ४ पुन मुक्ति, मोक्ष (पात्र, सम्मत ७६, सम १, कप्प, औप, पडि)। ५ वि मङ्गल-युक्त, उपद्रव-रहित (कप्प, औप, सम १, पडि)। ६ पु महादेव (गाथा १, १—पत्र ३६, पात्र, कुमा, सम्मत ७६)। ७ जिनदेव, तीर्थंकर, श्रहन् (पउम १=६, १२)। ८ एक राजपि, जिसने भगवान् महावीर के पास दीक्षा ली थी (ठा ८—पत्र ४३०, भग ११, ६)। ९ प. चर्वे वासुदेव तथा बलदेव का पिता (सम १५२)। १० देव-विशेष (गय, अणु)। ११ पौष मास का लोकोत्तर नाम (सुज्ज १०, १६)।

सुत्थिय देखो सुद्धिअ (मुपा ६३२) ।

सुत्थियर वि [सुत्थियर] अतिशय स्थिर, अति-
निश्चल (प्राक १६, मुपा २४८, कुमा) ।

सुथेव वि [सुत्थेव] अत्यल्प (पउम ८,
१५२) ।

सुदती स्त्री [सुदती] सुन्दर दात-गाली (उप
७६८ टी) ।

सुदसण पु [सुदर्शन] १ भगवान् अरनाथ
के पिता का नाम (सम १५१) । २ तीसरे
वासुदेव तथा बलदेव के धर्म-गुरु (सम १५३) ।
३ भारतवर्ष में होनेवाला पाचवाँ बलदेव
(सम १५४) । ४ घरणेन्द्र के हस्ति-सैन्य का
अधिपति (ठा ५, १—पत्र ३०२) । ५ एक
अन्तर्दृष्ट भुनि (अत ५८) । ६ मेरु पर्वत
(सूत्र १६, ६, मुपज ५) । ७ एक विख्यात
श्रेष्ठी (पडि वि १६) । ८ देव-विशेष (ठा
२, ३—पत्र ७६) । ९ विष्णु का चक्र
(मुपा ३१०) । १० भगवान् अरनाथ का
पूर्वभोग्य नाम । ११ भगवान् पार्श्वनाथ का
पूर्वजन्मोप नाम (सम १५१) । १२ पुन.
एक देव-विमान (देवेन्द्र १३६) । १३ वि.
जिसका दर्शन सुन्दर हो वह (वि १६) ।
१४ न पश्चिम रुचक पर्वत का एक शिखर
(ठा ८—पत्र ४३६) ।

सुदसणा स्त्री [सुदर्शना] १ जम्बू नामक
एक वृक्ष, जिससे यह द्वीप जम्बूद्वीप कहलाता
है (सम १३ पएह २, ४—पत्र १३०) । २
भगवान् महावीर की ज्येष्ठ बहिन का नाम
(आचा २ १५, ३ कप्प) । ३ घरण आदि
इन्द्रो के कालवाल आदि लोकपालों की एक-
एक अग्रमहिषी (ठा ४, १—पत्र २०४) । ४
काल तथा महाकाल-नामक पिशाचेन्द्रो की
अग्रमहिषियों के नाम (ठा ४, १—पत्र
२०४) । ५ भगवान् ऋषभदेव की दीक्षा-
शिषिका (विचार १२६) । ६ चतुर्थ बलदेव
का माता (सम १५२) ।

सुदक्खिन्न वि [सुदक्खिण्य] दाक्षिण्यवाला
(वम्म १५, स ३१) ।

सुदच्छ वि [सुदक्ष] अति चतुर (मुपा
५१७) ।

सुदसिण देखो सुदसण (हे २, १०५,
पउम २०, १७६, १६० पत्र १६४, इक) ।

सुदाम पु [सुदाम] अनीत उत्सर्पिणी-काल
में उत्पन्न भारतवर्ष का दूसरा कुलकर पुरुष
(सम १५०) ।

सुदारु न [सुदारु] सुन्दर काष्ठ (गउड) ।

सुदारुण पुं [द] चंडाल (दे ८, ३६) ।

सुदित्ठ वि [सुदित्ठ] नम्यग् विलोकिन (गा
२२५) ।

सुदित्थिप अक [सु + दीप्] अतिशय
चमकना । वक्र. सुदित्थिपत्त (मुपा ३५१) ।

सुदीह वि [सुदीर्घ] अत्यन्त लम्बा (सुर
सुदीहर २, १२५, १६८) । 'कालीय
वि [कालिक] सुदीर्घ-काल-सम्पन्नी (सुर
१५, २००) । 'दग्नि वि [दग्नि]]
परिणाम का विचार कर कार्य करनेवाला
(सं ३०) ।

सुदुकर वि [सुदुकर] जो अत्यन्त दुःख में
किया जा सके वह अति मुश्किल (उप ५
१६०) ।

सुदुक्खत्त वि [सुदुग्धान] अति दुःख में
पीड़ित (सुर ७, ११) ।

सुदुक्खिज वि [सुदुक्खित] अत्यन्त दुःखित
(मुपा ३०४) ।

सुदुग्ग वि [सुदुग्ग] जहाँ दुःख में गमन
किया जा सके वह (पउम ३०, ४६) ।

सुदुग्ग वि [सुदुग्ग] मुश्किल से जिसका
त्याग हो सके वह सहावो वि सुदुग्गो
(आ १२) ।

सुदुत्तार वि [सुदुत्तार] कठिनाता में जिमको
पार किया जा सके वह (औप, पि ३०७) ।

सुदुद्धर वि [सुदुद्धर] अति दुःख में जो
धारण किया जा सके वह (आ ४६ प्रामू
४८) ।

सुदुत्तिवार वि [सुदुत्तिवार] अति कठिनाई
से जिमका निवारण किया जा सके वह
(मुपा ६४) ।

सुदुत्तिपच्छ वि [सुदुत्तिपच्छ] अतिशय मुश्किल
से देखने योग्य (सुर १२, १६६) ।

सुदुग्गेअ वि [सुदुग्गेअ] अति दुःख से
जिसका भेदन हो सके वह (उप २५३ टी) ।

सुदुग्गमाअ स्त्री [दे] हगवती स्त्री (दे
८, ४०) ।

सुदुग्ग वि [सुदुग्ग] अत्यन्त दुर्लभ (राज) ।
सुदुग्ग वि [सुदुग्ग] अत्यन्त दुःख से
सहन करने योग्य (सुर ६, १५८) ।

सुदेव पु [सुदेव] उत्तम देव (मुपा २५६) ।

सुद पु [श्रु] मनुष्य की अघम जाति चतुर्थ
वर्ण (विपा १, ५—पत्र ६१, पउम ३,
११७, श्रु १३) ।

सुदय पु [श्रु] एक राजा का नाम (मोह
१०५, १०६) ।

सुद्धिणी (अप) स्त्री [श्रु] शूद्रजातीय स्त्री
(पिग) ।

सुद्ध पु [दे] गावाल, ग्वाला (दे ८, ३३) ।

सुद्ध वि [श्रु] १ शुक्ल, उज्जल, 'वदमान-
मुद्धपचमिरत्तीए मोहण लम्ग' (मु. ४,
२०१, कुप्र ७०, पचा ६, ३४) । २ पवित्र ।
३ निर्दोष । ४ केवल, किनो से अमिश्रित । ५
न संधा नून-नमक । ६ मरिच, मिर्चा (ह. १,
२६०) । ७ लगातार १८ दिनों के उवाच
(सवोय ५८) । ८ पु. छन्द-विशेष (पिग) ।

'गंधारा स्त्री [गन्धारा] गन्धार-ग्राम की
एक मूर्च्छना (ठा ७—पत्र ३६३) । 'दंत
पु [दन्त] १ भारतवर्ष में होनेवाले चौथे
जिनदेव (सम १५४) । २ एक अनुत्तर-गामी
जैन भुनि (अनु २) । ३ एक अन्तर्द्वीप । ४

उनमें रहनेवाली एक मनुष्य-जाति (इक) ।
'पक्ख पुं [पक्ष] शुक्ल पक्ष (पउम ६,
२७) । 'पु पुं [पु] पवित्र आत्मा
(कप्प) । 'पुवेस वि [पुवेस] पवित्र
और प्रवेश के लिए उचित (भग) । 'पुवेस
वि [पुवेस] पवित्र तथा वेशोचित
(भग) । 'वाय पुं [वात] वायु-विशेष,
मन्द पवन (जी ७) । 'विण्ड न [विण्ड]
उष्ण जल (कप्प) । 'सज्जा स्त्री [पद्मा]
पद्म नाम की एक मूर्च्छना (ठा ७—पत्र
३६३) ।

सुद्धत पुं [सुद्धान्त] अन्त पुर (उप ७६८
टी, कुप्र ५१, कुम्मा २६, कस) ।

सुद्धवाल वि [दे] शुद्ध-पूत, शुद्ध और पवित्र
(दे ८, ३८) ।

सुद्धि स्त्री [श्रु] १ शुद्धता, निर्दोषता,
निर्मलता (सम्मत २३०, कुमा) । २ पता,

ग्रह । ८ वृक्ष । ९ अश्व । १० चित्रक-वृक्ष ।
११ मयूरशिखा-वृक्ष । १८ वकरे का रोम ।
१३ वि. शिखा-युक्त (ग्रण १४२) ।

सिंहि पृ [दे] कुक्कुट, मुर्गा (दे ८, २८) ।

सिंहिअ वि [मृहिण] अभिलपित (कुमा) ।

सिंहिण पुन [दे] स्तन, धन (दे ८, ३१,
सुर १, ६०, पात्र, पङ्, २भा, सुपा ३२,
भवि, हम्मीर ५०, सम्मत्त १६०) ।

सिंहिणी स्त्री [शिखिना] छन्द-विशेष
(पिंग) ।

सिही (अप) स्त्री [शिखि] छन्द-विशेष
(पिंग) ।

सी (अप) स्त्री [श्री] छन्द-विशेष (पिंग) ।
देखो सिरी ।

सीअ अक [सद्] १ विपाद करना, खेद
करना । २ यकना । ३ पीडित होना, दुःखी
होना । ४ फलना, फल लगना । सीअइ,
सीअति (पि ४८२, गा ८७४) जया सीवर्णि
सीयइ' (पिड ८२), 'सीयति य सव्वअगाइ'
(सुर १२, २) । वक्र. सीअत (पात्र ५०७,
सुपा ५१०, कुप्र ११८) ।

सीअ न [दे] सिक्यक, मोम (दे ८, ३३) ।

सीअ वि [स्वीय] स्वकीय, निज का, 'सीयने-
यलेस्सापडिसाहरणहुयाए', 'सीप्रोसिणा तेय-
लेस्सा' (भग १५—पत्र ६६६) ।

सीअ देखो सिस = सित, 'सीआसीअ (प्राप्र) ।

सीअ पुन [शीत] १ स्पर्श-विशेष, ठंडा स्पर्श
(ठा १—पत्र २५, पव ८६) । ३ हिम.
तुहिन (से ३, ४७) । ३ शीत काल (राज) ।
४ ठंड, जाड़ा (ठा ४, ४—पत्र २८७, औप,
गठड, उत्त २, ६) । ५ कर्म-विशेष, शीत
स्पर्श का कारण-भूत कर्म (कम्म १, ४१,
४२) । ६ वि. शीतल, ठंडा (भग, औप,
गाया १, १ टी—पत्र ४) । ७ पु. प्रथम
नरक का एक नरक-स्थान (देवेन्द्र ४) । ८
न तप-विशेष, आयविल तप (सवोध ५८) ।
९ वि. अनुकूल (सूअ १, २ २, २२) ।
१० न सुख (आचा) । ११ न [गृह]
चक्रवर्ती का वर्षकि-निमित्त वह घर, जहाँ सर्व
ऋतु में स्पर्श की अनुकूलता होती है (वव ३) ।
१२ च्छाय वि [च्छाय] शीतल छायावाला

(औप, गाया १, १ टी—पत्र ४) । १३ परीसह
पु [परीपह] शीत को महना (उत्त २,
१) । १४ फास पु [म्पश] ठंड, जाड़ा, सर्दी
(आचा) । १५ ओआ स्त्री [ओता, सोता]
नदी-विशेष (इक, ठा ३, ४—पत्र १६१) ।
१६ ओअअ पु [ओलोकक] १ चन्द्रमा । २
शीतकाल, हिम-ऋतु (से ३, ४७) ।

सीअ° देखो साआ = शीता । १७ पसाय पु
[प्रपात] द्रह-विशेष, जहाँ शीता नदी पहाड़
पर से गिरती है (ठा २, ३—पत्र ७२) ।

सीअ° देखो साआ = सीता (कुमा) ।

सीअउरय पु [द शीतारस्क] गुल्म-विशेष,
'पत्तउरसीयउरए हवइ तह जवासए य बोध-वे'
(पराण १—पत्र ३२) ।

सीअण न [सदन] हैरानी (सम्मत्त १६६) ।

सीअणय न [दे] १ दुग्ध-पारी, दूध दोहने
का पात्र । २ श्मशान, मसान (दे ८, ५५) ।

सीअर पुं [शीकर] १ पवन से क्षित जल,
फुहार जल-कण (हे १, १८४, गठड, कुमा,
मण) । २ वायु, पवन (हे १, १८४, प्राक
८४) ।

सीअरि वि [शीकरिन्] शीकर-युक्त (गठड) ।

सीअल पुं [शीनल] १ वर्तमान अवसर्पिणी
काल के दसवें जिन-देव (सम ४३, पडि) ।
२ कृष्ण पुद्गल-विशेष (सुज २०) । ३ वि.
ठंडा (हे ३, १० कुमा, गठड, रयण ५७) ।

सीअलिया स्त्री [शीनलिका] १ ठंडी, शीतला,
'सीयलिय तेअनेम्म निसिरामि' (भग १५—
पत्र ६६६) । २ लूता-विशेष (राज) ।

सीअलि पुस्त्री [दे] १ हिमकाल का दुर्दिन ।
२ ब्रुल-विशेष (दे ८, ५५) ।

सीआ स्त्री [जाता] १ एक महा-नदी (सम
२७, १०२, इक) । २ ईषत्प्रागभारा-नामक
पृथिवी, मिट्ट-शिला (इक) । ३ शीताप्रपात
द्रह की अधिष्ठात्री देवी (ज ४) । ४ नील
पर्वत का एक शिखर । ५ माल्यवत् पर्वत का
एक कूट (इक) । ६ पश्चिम रुचक पर रहने-
वाली दिक्कुमारी देवी (ठा ८—पत्र ४३६) ।
७ मुह न [मुख] एक वन (जं ४) ।

सीआ स्त्री [सीना] १ जनक-सुता, राम-पत्नी
(पउम ३८, ५६) । २ चतुर्थ वासुदेव की

माता का नाम (पउम २८, १८४, सम
१५२) । ३ लाङ्गल-पद्धति खेत में हल
चलाने से होती भूमि-रेखा (दे २, १०४) ।
४ ईषत्प्रागभारा नामक पृथिवी (उत्त ३६,
६२, चेडय ७२५) । ५-६ नील त ग माल्य-
वत् पर्वतों के शिखर-विशेष (इक) । ७ एक
दिक्कुमारी देवी (ठा ८) ।

सीआ देखो सिविद्या (कण, औप, नम
१५१) ।

सीआण देखो मसाण = श्मशान (हे २, ८६,
वव ७) ।

सीआर देखो सिक्कार (गाया १, १—पत्र
६३) ।

सीआला स्त्री [सप्तचत्वारिंशत्] सैंतालीस,
४७, (कम्म ६, २१) ।

सीआलीम स्त्री, ऊपर देखो (पि ४४५,
४४८) । स्त्री °सा (सुज २, ३—पत्र
५१) ।

सीआव सक [सादय] शिथिल करना,
'सीयावेइ विहार' (गच्छ १, २३) ।

सीइआ स्त्री [दे] भंडी, निरन्तर वृष्टि (दे
८, ३४) ।

सीइय वि [सन्न] खिन्न, परिश्रान्त (स ८५) ।

सीई स्त्री [दे] सीढी, नि श्रेणि (पिड ६८) ।

सीउग्गय वि [दे] सुजात (दे ८, ३४) ।

सीउट्ट न [दे] हिम-काल का दुर्दिन (पड्) ।

सीउण्ह न [शीतोष्ण] १ ठंडा तथा गरम ।
२ अनुकूल तथा प्रतिकूल (मूअ १, २, २,
२२, पि १३३) ।

सीउल्ल देखो सीउट्ट (पड्) ।

सीओअ° देखो साओआ । १ पचाय पुं
[प्रपात] कुरण्ड-विशेष, जहाँ शीतोदा नदी
पहाड़ से गिरती है (ज ४—पत्र ३०७) ।
२ ओव पुं [द्वीप] द्वीप-विशेष (ज ४—पत्र
३०७) ।

सीओआ स्त्री [शीतोदा] १ एक महा-नदी
(ठा २, ३—पत्र ७२, इक, सम २७,
१०२) । २ निपव पर्वत का एक कूट (ठा
६—पत्र ४५४) ।

सीकोत्तरी स्त्री [दे] नारी, स्त्री, महिला (सिरि
३६०) ।

सुपवित्त वि [सुपवित्र] अत्यन्त विशुद्ध (मुपा ३५४)।
 सुपवित्तिय [सुपवित्रित] अत्यन्त पवित्र किया हुआ (मुपा ३)।
 सुपवन् वं [सुपवन्] १ देव। २ न. सुन्दर पर्व (कप्र ४०)।
 सुपमाडअ वि [सुप्रमादिन] अच्छी तरह प्रसन्न किया हुआ (रभा)।
 सुप्रमिन् वि [सुप्रमिन्] अति विख्यात (गि)।
 सुप्रस्म वि [सुप्रस्म] मुख में देखने योग्य (ठा ४, ३—पत्र २५३, ५, १—पत्र २६६)।
 सुप्रहं [सुप्रथ] शुभ मार्ग (उव, मुपा ३७७)।
 सुप्रहाय न [सुप्रभात] माङ्गलिक प्रातः काल (हे २, ०४)।
 सुपावय वि [सुपापक] अतिशय पापी (उत्त १२ १४)।
 सुपाव वं [सुपाव] १ भारतवर्ष में उत्पन्न सातवें जिन भगवान् (सम ४३ कप्र, मुपा २)। २ भगवान् महावीर के पिता का भाई (ठा ६—पत्र ४२५, विचार ८७८)। ३ एक कुलकर पुरुष का नाम (सम १५०)। ४ भारतवर्ष के भावी तीसरे जिनदेव (सम १५३)। ५ ऐरवत क्षेत्र में उत्पन्न एक जिनदेव (सम १५३)। ६ ऐरवत क्षेत्र में आगामि उत्सर्पिणी-काल में होनेवाले अठारहवें जिनदेव (सम १५४ पव ७)। ७ भारतवर्ष के भावी दूसरे जिनदेव का पूर्वजन्मीय नाम (सम १५४)।
 सुपामा श्री [सुपार्था] एक जैन माध्वी (ठा ६—पत्र ४५७)।
 सुपाव पु [सुपीत] अहोरात्र का पवित्र, सुहृत् (सम ५१)।
 सुपुन्व पुन [सुपुह्व] एक देव विमान (सम २२)।
 सुपुन्व पुन [सुपुह्व] एक देव-विमान (सम २२)।
 सुपुन्व पुन [सुपु-प] एक देव-विमान (सम ३८)।
 सुपुरस पु [सुपुर] सज्जन, साधु पुरुष (हे २, १८४, गजड, प्रामू ३)।

सुपेसल वि [सुपेाल] अति मनोहर (उत्त १२, १३)।
 सुप्प अक [स्वप्] सोना। सुप्पइ (हे २, १७६)।
 सुप्प पुन [स्वप्] मूष छात्र मित्रकी का बना एक पात्र जिसमें अन्न पन्दोरा जाता है (स्वा, परह १, १—पत्र ८)। °णह वि [°नख] मूष के जैसा नखवाला (गाया १, ८—पत्र १३३)। °य . °णरी श्री [°न-] रावण की बहिन का नाम (प्राकृ १२)।
 सुप्पइट्ट देवो सुप्पइट्ट (राज)।
 सुप्पइट्ट देवो सुप्पइट्ट (राज)।
 सुप्पइण्णा } श्री [सुप्रनिजा] दक्षिण रुक्क
 सुप्पइण्णा } पर रहनेवाली एक दिक्कुमारी
 देवी (राज इक)।
 सुप्पडत्तिन न शीतवारक वज्र विशेष (भव ० वृ० पत्र ३६५, रत्ना १०, ४६)।
 सुप्पजल वि [सु-जल] अत्यन्त ऋजु—सीधा (कप्पू)।
 सुप्पडिआण्ड वि [सुप्रत्यानन्द] उपकृत पुरुष के किये हुए उपकार को माननेवाला (ठा ४, ३—पत्र २४८)।
 सुप्पडिआर न [सुप्रतिकार] उपकार का बदला, प्रत्युपकार (ठा ३, १—पत्र ११७)।
 सुप्पडिवुद्ध देवो सुप्पडिवुद्ध (राज)।
 सुप्पडिलग वि [सुप्रनिलग्न] अच्छी तरह लगा हुआ, अवलम्बन (मुपा ५६१)।
 सुप्पणिदाण न [सुप्रणिधान] शुभ ध्यान (ठा ३, १—पत्र १२१)।
 सुप्पणिहिय देवो सुप्पणिहिय (परह २, १—पत्र १०१)।
 सुप्पन्न वि [सु-] सुन्दर बुद्धिवाला (सूक्ष्म १, ६, ३३)।
 सुप्पन्न पुन [सुप्रजुद्ध] एक त्रैवेयक-विमान (देवन्द १३६, पत्र १६४)।
 सुप्पजुद्धा श्री [सुप्रजुद्धा] दक्षिण रुक्कपर रहनेवाली एक दिक्कुमारी देवी (ठा ८—पत्र ४३६, इक)।
 सुप्पभ पु [सुप्र] वर्तमान अवसर्पिणी-काल में उत्पन्न चतुर्थ बलदेव (सम ७१)। २ आगामी उत्सर्पिणी में होनेवाला चौथा बल-

देव (सम १५४)। ३ भारतवर्ष का भावी तीसरा कुलकर पुरुष (सम १५३)। ४ हरिकान्त तथा हर्गिह नामक इन्द्रो के एक-एक लोकपाल का नाम (ठा ४, १—पत्र १६७, इक)। ५ पुन एक देव-विमान (देवन्द १४१)। °कत पु [°नन्] हरिकान्त तथा हरिसह नामक इन्द्रो के एक-एक लोकपाल का नाम (ठा ४, १—पत्र १६७)।
 सुप्पया खा [सुप्रभा] १ तीसरे बलदेव को माना (सम १५२)। २ घरण आदि दाक्षिण-श्रेणि के कई इन्द्रो के लोकपालों को एक-एक अग्रमहिषी का नाम (ठा ४, १—पत्र २०४)। ३ धनवाहन नामक त्रिद्यावर-नरेश की पत्नी (पठम ५, १२८)। ४ भगवान् अजिननाथ की दोक्षा-शिविका (विचार १२६, सम १५१)।
 सुप्पभूय वि [सुप्रभूत] अति प्रचुर (पठम ५५, ३६)।
 सुप्पसुण्ण } वि [सुप्र-] अत्यन्त प्रमाद
 सुप्पसुण्ण } युक्त (नाट—मालती १६१, भवि)।
 सुप्पसार वि [सुप्रसारित] मुख से पसारने योग्य (सुख २, २६)।
 सुप्पसान्नि वि [सुप्रसारित] अच्छी तरह पसारा हुआ (श्रीप)।
 सुप्पमिन् देवो सुप्पमिन् (सम १५१, पि ३५०)।
 सुप्पसूय वि [सुप्रसूत] सम्यग् उत्पन्न (श्रीप)।
 सुप्पहूव (अप) देवो सुप्पभूय (भवि)।
 सुप्पाडोस पु [दे] अच्छा पडोम (आ २७)।
 सुप्पिय वि [सुप्रिय] अत्यन्त प्रिय (उत्त ११, ८, मुपा ४६५)।
 सुप्पुरिय देवो सुप्पुरिय (रयण २४)।
 सुफणि श्रीन [सुफणि] जिसमें तक्र आदि उवाला जाय ऐसा बटुआ आदि पात्र (सूक्ष्म १, ४, २, १०)।
 सुवधु पु [सु-धु] १ दूसरे बलदेव का पूर्वजन्मीय नाम (सम १५३)। २ भारतवर्ष का भावी सातवां कुलकर (सम १५३)।
 सुवभ पुन [सुवभान्] एक देव-विमान (सम १६)।

सीस सक [शिप्] १ वध करना, हिंसा करना । २ शेष करना, बाकी रखना । ३ विशेष करना । सीसइ (हे ४, २३६, पङ्) ।

सीन सक [कथय्] कहना । सीनइ (हे ४, २, मवि) ।

सीस न [सीस] धातु विशेष, सीसा (दे २, २७) ।

सीस देखो सिस्स = शिष्य (हे १, ४३, कुमा, द ४७, एया १, ५—पत्र १०३) ।

सीस पुन [शीर्ष] १ मस्तक, माया (स्वप्न ६०, प्रासू ३) । २ स्तवक, गुच्छा (आवा २, १, ८, ६) । ३ छन्द-विशेष (पिग) । °अ न [°क] शिरस्त्राण (वेणी ११०) । °घडी छी [°घटी] सिर की हड्डी (तदु ३८) । °पर्कपिअ न [°प्रकम्पित] सख्या-विशेष, महालना को चौरासी लाख से गुनने पर जो सख्या लब्ध हो वह (इक) । °पहेलिअ छीन [°प्रहेलिक] सख्या-विशेष, शीर्षप्रहेलिका को चौरासी लाख से गुनने पर जो सख्या लब्ध हो वह (इक) । छी. °आ (ठा २, ४—पत्र ८६, सम ६०, अणु ६६) । °पहेलियग न [°प्रहेलिकाङ्ग] सख्या-विशेष, चूलिका को चौरासी लाख से गुनने पर जो सख्या लब्ध हो वह (ठा २, ४—पत्र ८६, अणु ६६) । °पूरग, °पूरय पुं [°पूरक] मस्तक का आभरण (राज, तदु ४१) । °रूपक, °रुअ (अप) । पुन [°रूपक] छन्द-विशेष (पिग) । °वेढ पु [°वेष्ट] गोले चमड़े आदि से मस्तक को लपेटना (सम ५०) ।

सीस° देखो मास = शास् ।

सीसक न [दे. शीर्षक] शिरस्त्राण, मस्तक का कवच (दे ८, ३४, से १५, ३०) ।

सीसम पुन [दे] सीसम का गाछ, शिशपा (उप १०३१ टी) ।

सीसय वि [दे] प्रवर, श्रेष्ठ (दे ८, ३४) ।

सीसय न [सीसक] देखो सीस = सीस (महा) ।

सीसया छी [शिंशपा] सीसम का गाछ (पण १—पत्र ३१) ।

सीह देखो सिग्घ = शीघ्र (राज) ।

सीह पुं [सिह] १ श्वापद जन्तु-विशेष, केमरी, मृग-राज (पण १, १—पत्र ७, प्रासू ५१, १७१) । २ वृक्ष-विशेष, महिजने का पेड़ (हे १, १४४, प्राप्र) । ३ राशि-विशेष, मेष से पाँचवी राशि (विचार १०६) । ४ एक अनुत्तर देवलोक गामी जैन मुनि (अनु २) । ५ एक जैन मुनि, जो आर्य-धर्म के शिष्य थे (कप्प) । ६ भगवान् महावीर का शिष्य एक मुनि (भग १५—पत्र ६८५) । ७ एक विद्याधर मामन्त राजा (पउम ८, १३२) । ८ एक श्रेष्ठि-पुत्र (सुपा १०६) । ९ एक देव-विमान (सम ३३, देवेन्द्र १४०) । १० एक जैन आचार्य, जो रेवतीनक्षत्र नामक आचार्य के शिष्य थे (एदि ५१) । ११ छन्द-विशेष (पिग) °उर न [°पुर] नगर-विशेष (सण) । °कन पुन [°कान्त] एक देव-विमान (सम ३३) । °कडि पु [°कटि] रावण का एक घोड़ा (पउम ५६, २७) । °कण पु [°कर्ण] एक अन्तर्द्वीप (इक) । °कण्णा छी [°कर्णा] कन्द-विशेष (उत्त ३६, १००) । °केसर पु [°केसर] १ आस्तरण-विशेष, जटिल कम्बल (एया १—पत्र १३) । २ मोदक-विशेष (अत ६, पिड ४८२) । °गइ पु [°गति] अमितगति तथा अमितवाहन नामक इन्द्र का एक-एक लोकपाल (ठा ४, १—पत्र १६८) । °गिरि पुं [°गिरि] एक प्रसिद्ध जैन महर्षि (उव, उप १४२ टी, पिड) । °गुहा छी [°गुहा] एक चोर-पत्नी (एया १, १८—पत्र २३६) । °चूड पुं [°चूड] विद्याधर वंश का एक राजा (पउम ५, ४६) । °जस पु [°यशस्] भरत चक्रवर्ती का एक पौत्र (पउम ५, ३) । °णाय पुं [°नाड] मिहगर्जन, मिह की गर्जना के तुल्य आवाज (भग) । °णिक्कीलिय न [°निक्कीलित] १ मिह की गति । २ तप-विशेष (अत २८) । °णिसाइ देखो °निसाइ (राज) । °दुवार न [°द्वार] राज-द्वार, राज-प्रासाद का मुख्य दरवाजा (कुप्र १६६) । °द्वय पु [°ध्वज] १ विद्याधरवंश का एक राजा (पउम ५, ४३) । २ हरिपण चक्रवर्ती का पिता का नाम (पउम ८, १४४) । °नाय देखो °णाय (पण १,

३—पत्र ४५) । °निक्कीलिय, °देखो °णिक्कीलिय (पव २७१, एया १, ८—पत्र १२२) । °निस [°निपाटन्] मिह की तरह वै (सुज्ज १०, ८ टी) । °णि [°निपट्टा] भरत चक्रवर्ती द्वारा ५ पर वनवाया हुआ जैन मन्दिर (ती °पुच्छ न [°पुच्छ] षष्ठ वस्त्र, चमड़ी (सूप्रनि ७७) । °पुच्छग [°पुच्छन] पुरुष चिह्न का तोड़ना, झोटन (पण २, ५—पत्र १५१) । °पुनि वि [°पुच्छित] १ जिनका पुरुष-चिह्न दिया गया हो वह । २ जिनको श्रुत से लेकर पुन-प्रदेश—नितम्ब तक की उखाड़ कर सिंह के पुच्छ के तुल्य की वह (ओप) । °पुरा, °पुरी छी [°पुरी नगरी-विशेष, विजय-क्षेत्र की एक (ठा २, ३—पत्र ८०, इक) । °मुह पु [°मुख] १ अन्तर्द्वीप-विशेष । २ उसमें रहनेवाली मनुष्य-जाति (ठा ४, २—पत्र २२६, इक) । °रव पु [°रव] सिंह-गर्जना, मिह-नाद, मिह की तरह आवाज (पउम ४४, ३५) । °रह पु [°रथ] गन्धार देश के पुङ्गवर्धन नगर का एक राजा (महा) । °वाह पु [°वाह] विद्याधर-वंश का एक राजा (पउम ५, ४३) । °वाहण पुं [°वाहन] राक्षस-वंश का एक राजा (पउम ५, २६३) । °वाहणा छी [°वाहना] अम्बिका देवी (राज) । °विक्रमगइ पुं [°विक्रमगति] अमितगति तथा अमितवाहन नामक इन्द्र का एक-एक लोकपाल (ठा ४, १—पत्र १६८, इक) । °वोअ पुं [°वीत] एक देव-विमान (सम ३३) । °सेण पु [°सेन] चौदहवें जिनदेव का पिता, एक राजा (सम १५१) । २ भगवान् अजितनाथ का एक गणधर (सम १५२) । ३ राजा श्रेणिक का एक पुत्र (अनु २) । ४ राजा महासेन का एक पुत्र (विपा १, ६—पत्र ८६) । ५ ऐरवत क्षेत्र में उत्पन्न एक जिनदेव (राज) । °सोआ छी [°सोना] एक नदी (ठा २, ३—पत्र ८०) । °वलोइअ न [°वलोकिन] मिहावलीन, मिह की तरह चलते हुए पीछे की तरफ

सुमण } न [सुमनम्] १ पुष्प, फूल
सुमणम् } (हे १, ३२, सुपा ८६) । २ पुं.
देव, सुर (सुपा ८६, ३३४) । ३ वि. सुन्दर
मनवाला, मञ्जन (सुपा ३३४, पउम ३६,
१३०, ७७ १७, रयण ३) । ४ हर्षवान्
आनन्दित, सुखी (ठा ३, २—पत्र १३०) ।
५ पुन. एक देव-विमान (देवेन्द्र १३६) ।
°भद्र पुं [°भद्र] १ भगवान् महावीर के
पास दीक्षा लेकर मुक्ति पाने वाला एक
गृहस्थ (अन १८) । २ आर्य सभूतिविजय के
एक शिष्य, एक जैन मुनि (कप) ।
सुमण्वा स्त्री [सुमनस] वल्ली-विशेष
(परण १—पत्र ३३) ।
सुमणा स्त्री [सुमनस] १ भगवान् चन्द्रप्रभ
की प्रथम शिष्या (सम १५२, पव ६) । २
भूतानन्द आदि इन्द्रो के एक-एक लोकपाल
की एक एक अग्र-महिषी का नाम (ठा ४,
१—पत्र २०८) । ३ राजा श्रेणिक की एक
पत्नी (अत २५) । ४ एक जम्बू वृक्ष का
नाम (इक) । ५ शक्र की पत्नी नामक
इन्द्राणी की एक राजधानी (इक) । ६
मालती का फूल (स्वप्न ६१) ।
सुमणो° देखो सुमण (उप पृ १८) ।
सुमणोहर वि [सुमनोहर] अत्यन्त मनोहर
(उप पृ १८) ।
सुमर सक [स्मृ] याद करना । सुमरइ (हे
४, ७४) । भा०. सुमरिस्मसि (पि ५२२) ।
कर्म सुमरिइइ (हे ४, ४२६, पि ५३७) ।
वक्क सुमरत (सुर ६ ६४, सुपा ४०८,
पउम ७८, ५६) । कवक्क सुमरिज्जत (पउम
५ १८६, नाट—मालती ११०) । सक
सुमरिअ, सुमारज्जण (कुमा, काल) । हेक्क
सुमरउ, सुमरत्तए (पि ४६५, ५७८) ।
क सुमरियव्व, सुमरियव्व, सुमरणीअ
(सुपा १५३, ८८२, २१७, अमि १२०) ।
सुमर पु [स्मर] कामदेव (नाट—चेत ८१) ।
सुमरण स्त्री [स्मरण] याद, स्मृति (कुमा,
हे ४, ४२६, वसु, प्राप, सुपा ७१, १५६,
३६७ न ३०४) । स्त्री °णा (स ६७०,
सुपा २२०) ।
सुमराय सक [स्मारय] याद दिलाना ।
वक्क सुमरावन (कुप्र ५६) ।

सुमराविय वि [स्मारित] याद कराया हुआ
(सुर १४, ४८, २४३) ।
सुमारिअ देखो सुमर = स्मृ ।
सुमारिअ वि [स्मृत] याद किया हुआ (पाअ) ।
सुमरुया स्त्री [सुमरुन्] भगवान् महावीर
के पास दीक्षा लेकर मुक्ति पानेवाला राजा
श्रेणिक की एक पत्नी (अत २५) ।
सुमटुर वि [सुमधुर] अति मधुर (विपा १,
७—पत्र ७७) ।
सुमाणस वि [सुमानस] प्रशस्त मनवाला,
सज्जन (पउम १-२, २७) ।
सुमाणुम पु [सुमानुप] सज्जन, उत्तम मनुष्य
(सुपा २५६) ।
सुमालि पु [सुमालिन्] एक राज-कुमार
(पउम ६ २२०) ।
सुमिण पुन [स्वान] १ स्वप्न, सपना (हे १,
४६, कुमा महा, पडि, सुर ३, ६१, ६७) ।
२ स्वप्न के फल को बतलानेवाला शास्त्र
(स्वप्न ४६) । °पाठय वि [°पाठक] स्वप्न
के फल बतलानेवाले शास्त्रो का जानकार
(गाया १, १—पत्र २०) । देखो सुविण ।
सुमित्त पुं [सुमित्र] १ भगवान् मुनिसुव्रत-
स्वामी का पिता—एक राजा (मम १५८) ।
२ द्वितीय चक्रवर्ती का पिता (सम १५२) ।
३ चतुर्थ बलदेव के पूर्व जन्म का नाम (पउम
२०, १६०) । ४ छठे बलदेव के धर्मगुरु—
एक जैन मुनि (पउम २०, २०५) । ५ एक
वरिष्ठा का नाम (उप ७२८ टी) । ६ अच्छा
मित्र, 'सुमिताव्व जिणवम्मो' (सुपा २३४) ।
७ भगवान् शान्तिनाथ को प्रथम भिक्षा देनेवाले
एक गृहस्थ का नाम (मम १५१) ।
सुमित्ता स्त्री [सुमित्रा] लक्ष्मण की माता
और राजा दशरथ की एक पत्नी (पउम २५,
४) । °तणय पु [°तनय] लक्ष्मण (मे ४,
१५, १४, ३२) ।
सुमित्त पु [°मैमित्रि] सुमित्रा का पुत्र—
लक्ष्मण (पउम ४५, ३६) ।
सुमुइय वि [सुमुदित] अति हर्षित (मौप) ।
सुमुखी देखो सुमुही (पिग) ।
सुमुणिअ वि [सुवान] अच्छी तरह जाना
हुआ (सुपा २८२) ।

सुमुट पुं [सुमुख] १ भगवान् नेमिनाथ के पास
दीक्षा लेकर मुक्ति पानेवाला एक राज-कुमार
(अत ३) । २ राक्षस-वश का एक राजा, एक
लका-पति (पउम ५, २६१) । ३ न छन्द-
विशेष (अजि २०) ।
सुमुही स्त्री [सुमुखा] छन्द-विशेष (पिग) ।
सुमेघा स्त्री [सुमेघा] ऊर्ध्व लोक में रहनेवाली
एक दिक्कुमारी देवी (ठा ८—पत्र ४३७) ।
सुमेरु पु [सुमेरु] मेरु पर्वत (पाअ, पउम
७५, ३८) ।
सुमेहा देखो सुमेघा (इक) ।
सुमेहा स्त्री [सुमेघा] सुन्दर बुद्धि (उप पृ
३६८) ।
सुम्मत देखो सुण = श्रु ।
सुम्ह पु व [सुम्ह] देश-विशेष (हे २, ७४) ।
सुर पु [सुर] १ देव, देवता (परह १, ४—
पत्र ६८, कप, जी ३३, कुमा) । २ एक
राजा का नाम (उप ७६५) । °अण न
[°वन] नन्दन-वन (मे ६, ८६) । °अरु पु
[°तरु] कल्प वृक्ष (नाट) । °करडि पु
[°करटिन्] ऐरावण हाथी (सुपा १७६) ।
°करि पु [°करिन्] वही अर्थ (सुपा २६१) ।
°कुभि पु [°कुम्भिन्] वही (सुपा २०१) ।
°कुमर पु [°कुमार] भगवान् वासुपूज्य का
शानन-यज्ञ (पव २६) । °कुसुम न [°कुसुम]
लवण, लौण (पि १४) । °गय पु [°गज]
इन्द्र हस्ती, ऐरावण (पाअ, से २, २२) ।
°गिरि पु [°गिरि] मेरु पर्वत (सुपा २,
३१, ३५४ सण) । °गिह देखो °घर (उप
७६८ टी) । °गुरु पु [°गुरु] १ बृहस्पति
(पाअ, सुपा १७६) । २ नास्तिक मत का
प्रवर्तक एक आचार्य (मोह १०१) । °गोत्र
पु [°गोप] कीट-विशेष, इन्द्रगोप (गाया
१, ६—पत्र १६०, पाअ) । °घग न [°गृह]
१ देव-मन्दिर (कुप्र ४) । २ देव-विमान
(सण) । °चमू स्त्री [°चमू] देव-सेना
(सुपा ४५) । °चाव पु [°चाप] इन्द्र-
धनुष (गा ५८५ ८८८, सुपा १२४) ।
°जाल न [°जाल] इन्द्रजाल (राज) । °णई
स्त्री [°नदी] गंगा नदी (पाअ) । °गाह पु
[°नाथ] इन्द्र (गा ८६४, दे) । °तरगिणि

सुअरिअ न [सुअरित] सदाचार, मद्धर्तन (अभि २५३)।

सुअलकिय वि [स्वलकृत] अच्छी तरह विभूषित (राया १, १—पत्र १६)।

सुआ छो [सुता] पुत्री, लडकी (गा ६=२, ८६३ (कुमा)।

सुआ (शौ) अक [गी] शयन करना, सोना। मुआदि (प्राक् ६४)।

सुआ छो [सूच] यज्ञ का उपकरण-विशेष, धी आदि डालने की कड्यो या कलड्यो (उत्त १२, ४३, ४४)।

सुआडक्कवि [स्वाह्येय] सुख से—अनायास ने कहने योग्य (ठा ५, १—पत्र २६६)।

सुआउत्त वि [स्वायुक्त] अच्छी तरह ब्याल रखनेवाला (उत्त)।

सुड पुं [शुचि] १ पवित्रता, निर्मलता, 'जिणवम्मठिया मुणिलो य वच्छ दीसति मुडरहिया' (सुपा १६६)। २ वि. श्वेत, सफेद (कुमा)। ३ पवित्र, निर्मल (औप, कप्प, आ १२, महा, कुमा)। ४ छो शक्र की एक अग्र-महिषी (इक)।

सुड छो [श्रुति] १ श्रवण, आकर्णन, मुनना (उत्त ३, १, वनु, विसे १२५)। २ कर्ण, कान (गा ६४१, सुर ११, १७४, सम्मत्त ८४, मुपा ८६, २४७)। ३ वेद शास्त्र (प्राक्; अचु ४, कुमा)। ४ शास्त्र, सिद्धान्त (सथा ७, प्रासू ४६)।

सुड छो [स्मृति] स्मरण (विपा १, २—पत्र ३४)।

सुडअ देखो सुडअ = सूचिक (दे १, ६६)।

सुडण देखो सुमिण (सुर ६, ८२, उप ७२८ टी, हे ४, ४८)।

सुडदि छो [सुदित] १ पुण्य। २ मङ्गल, कल्याण। ३ सत्-कर्म (प्राप्, पि २=४)।

सुडयाणिया छो [दे स्तुतिकारिणी] स्तुति-कर्म करनेवाली छो (सुपा ५७८)।

सुडर न [सुचिर] अत्यन्त दीर्घ काल, बहू काल (गा १३७, ४६, सुपा १, १२७, महा)।

सुडल देखो सुक्क = शुक्ल (हे २, १०६)।

सुडव्व वि [श्वस्तन] आगामी कल से संवन्ध रखनेवाला, कल होनेवाला (पिड २४१)।

सुड छो [दे] बुद्धि, मति (दे ८, ३६)।

सुड छो [शुकी] शुक् पत्नी की मादा, मैना (सुपा ३६०)।

सुडजुयार वि [सुजुकार] अतिशय समय में रहनेवाला, सुसयमी (सूत्र १, १३, ७)।

सुडजुयार वि [सुजुचार] अतिशय मरल आचरणवाला (सूत्र १, १३, ७)।

सुडमार } देखो सुकुमाल (स्वप्न ६०,
सुडमाल } कुमा)।

सुडरिस पु [सुपुरुष] सज्जन, भला आदमी (प्राप्, हे १, ८ कुमा)।

सुए अ [श्वस्] आगामी कल (स ३६, वै ४१)।

सुक न [शुल्क] १ मूल्य (राया १, ८—पत्र १३५, विपा १, ६—पत्र ६३)। २ चुगी, विक्रेय वस्तु पर लगता राज-कर (धम्म १२ टी, मुपा ४४७)। ३ वर-पक्ष के पास से कन्या पक्षवालों को लेने योग्य धन (विपा १, ६—पत्र ६४)। °ठाण न [°स्थान] चुगी-घर (धम्म १२ टी)। °पालय वि [°पालक] चुगी पर नियुक्त राज-पुरुष (मुपा ४४७)। देखो सुक्क = शुक्ल।

सुकअ } पुंन [दे] किशोर, धान्य आदि का
सुकल } अग्र भाग (दे ८, ३८)।

सुकलि पुंन [दे] वृण-विशेष (परण १—पत्र ३३)।

सुकविय वि [शुक्लित] जिसकी चुगी दी गई हो वह (सुपा ४४७)।

सुकाणिअ पु [दे] नाव का डह खेनेवाला व्यक्ति, पतवार चलानेवाला (सिरि ३८५)।

सुकार पु [सूत्कार] अव्यक्त शब्द विशेष (सुर २, ८, गउड)।

सुकिअ वि [शौक्तिरु] शुल्क लेनेवाला, चुगी पर नियुक्त पुरुष (उप पृ १२०)।

सुख देखो सुक्क = शुक्क (संक्षि १६)।

सुग देखो सुक्क = शुक्क (हे २, ११, कुमा)।

सुंगायण न [सौङ्गायन] गोत्र-विशेष (सुज्ज १०, १६)।

सुग मक [दे] सूँघना। वक्क. सुंघंत (सिरि ६२२)।

सुधिअ वि [दे] घ्रात, सूँघा हुआ (दे ८, ३७)।

सुचल न [दे] काला नमक, 'सुठिसुचलाईय' (कुप्र ४१४)।

सुठ पुन [शुण्ठ] पर्व-वनस्पति विशेष (परण १—पत्र ३३)।

सुंठय पुंन [शुण्ठरु] भाजन-विशेष, 'मीरासु य मुठएमु य कंङ्गु य पयडएमु य पयंति' (सूअनि ७६)।

सुंठी छो [शुण्ठी] सूँठ या सोठ (पभा १५; कुप्र ४१४, पंचा ५, ३०)।

सुंड वि [शौण्ड] १ मत्त, मद्यप, दारु पीने-वाला (हे १, १६०, प्राक् १०, संक्षि ६)। २ दल, कुशल (कुमा)। देखो सौंड।

सुडा देखो सौडा (आचा २, १, ३, २, आवम)।

सुडिअ पु [शौण्डिक] कलवार, दारु बेचने-वाला (प्राक् १०, संक्षि ६)।

सुडिआ छो [शौण्डिका] मदिरा-पान में आसक्ति (दम ५, २, ३८)।

सुडिक देखो सुडिअ (दे ६, ७५)।

सुडिकिणी छो [सौण्डिकी] कलवार की छो (प्रयौ १०६)।

सुडीर देखो सौडीर (भवि)।

सुद पुं [सुन्द] राजा रावण का एक भागि-नेय, खरदूषण का पुत्र (पचम ४३, १८)।

सुदर वि [सुन्दर] १ मनोहर, चार, शोभन (पणह १, ४, सुपा १२८, २६५, कप्प, काप्र ४०८)। २ पुं एक सेठ का नाम (सुपा ६४३)। ३ तेरहवें जिनदेव का पूर्वजन्मीय नाम (मम १५१)। ४ न तप-विशेष, तैला, तीन दिनों का लगातार उपवास (सबोध ५८)। °वाहु पु [°वाहु] सातवें जिनदेव का पूर्वजन्मीय नाम (मम १५१)।

सुदरिअ देखो सुदेर (हे २, १०७)।

सुदरिम पुंनो देखो सुदेर (कुप्र २२१)।

सुदरी छो [सुदरी] १ उत्तम छो (प्रासू ५७, वि १८)। २ भगवान् ऋषभदेव की एक पुत्री (ठा ५, २—पत्र ३२६, सम ६०, पचम

विद्याधर नरेश (पउम ७, २६) । °दत्त पु [°दत्त] एक राज-कुमार (उप ६३६) ।

सुरिदय पु [सुरेन्द्रक] विमानेन्द्रक, देव-विमान-विशेष (दवेन्द्र १३७) ।

सुरी स्त्री [सुरा] देवी (कुमा)

सुरगा देखो सुरगा (पउम ८, १५८) ।

सुरुघ पु [रुघ्न] देश-विशेष (हे ० ११३, पङ्) । °ज वि [°ज] देश विशेष में उत्पन्न (कुमा) ।

सुरुद्र वि [सुमद्र] अत्यन्त रोष युक्त (पउम ६८, २५) ।

सुम्बा स्त्री [सुम्बा] एक इन्द्राणी (गाया २—पत्र २५०) । देखो सुम्बा ।

सुम्ब पु [सुम्ब] १ भूत-निकाय के दक्षिण दिशा का इन्द्र (ठा २, ३—पत्र ८५) । २ न सुन्दर रूपा । ३ वि सुन्दर रूपवाला (उवा, भग) ।

सुम्बा स्त्री [सुम्बा] १ मुख्य तथा प्रतिरूप नामक भूतेन्द्रो की एक एक अग्र-महिषी (ठा ४, १—पत्र २०४) । २ भूतानन्द नामक इन्द्र की एक अग्र-महिषी (इक) । ३ एक दिशा-कुमारी देवी (ठा ४, १—पत्र १६८, ६—पत्र ३६६) । ४ एक कुलकर-पत्नी (सम १५०) । ५ सुन्दर रूपावाली (महा) ।

सुरेस पु [सुरेश] १ देव पति, इन्द्र । २ उत्तम देव (मुपा ६१८) ।

सुरेसर पुं [सुरेश्वर] इन्द्र, देव-राज (मुपा २७, कुप्र ४) ।

सुलक्षणि वि [सुलक्षणिन्] उत्तम लक्षण-वाला (धर्मवि १४२) ।

सुलग वि [सुलग्न] अच्छी तरह लगा हुआ (महा) ।

सुलद्र वि [सुलद्र] सम्यक् प्राप्त (गाया १, १—पत्र २४, उवा) ।

सुलभ { वि [सुलभ] मुख से प्राप्त हो सके
सुलभ } वह (आ १२, सुख २, १५, महा) ।

सुलभ पु [सुलभ] पर्वत-विशेष (इक) ।

सुलभ न [दे] कुम्भ-रक्त वज्र (दे ८, ३७) ।

सुलभमजरी { स्त्री [दे] तुनसी (दे ८, ४०,
सुलसा } पात्र) ।

सुलसा स्त्री [सुलसा] १ नववें जिनदेव की प्रथम शिष्या (सम १५२) । २ भगवान् महावीर की एक श्राविका, जिसका आत्मा आगामि काल में तीर्थंकर होगा (ठा ६—पत्र ४५५, सम १५४) । ३ नाग नामक गृहपति की स्त्री (अत ४) । ४ शक्र की एक अग्र-महिषी, एक इन्द्राणी (पउम १०२, १५६) । ५ शखपुर के राजा सुन्दर की पत्नी (महा) । सुलह देखो सुलभ (स्वप्न ४८, महा, व ४६) ।

सुलाह पु [सुलाभ] अच्छा नफा (मुपा ४४६) ।

सुली स्त्री [दे] उल्का, आकाश से गिरनी आग (दे ८, ३६) ।

सुलुसुल { अक[सुलसुलाय] 'सुल' 'सुल'
सुलुसुलाय } आवाज करना । सुलुसुलायइ (तंडु ४१) । वक्र. सुलुसुलिन, सुलुसुलिन (तंडु ४४, महा) ।

सुलूह वि [सुलूह] अत्यन्त लूना—लूना (सूप्र १, १३, १२) ।

सुलोअ देखो सिलोअ = श्लोक (अवि १६) ।

सुलोयण पु [सुलोचन] एक विद्याधर-नरेश (पउम ५, ६६) ।

सुलोह वि [सुलोह] अति चपल (कपू) ।

सुल न [शूल्य] शूला-प्रोत मांस (दे ८, ३६, पात्र) ।

सुव अक [स्वप्] सोना । सुवइ, सुवति (हे १, ६४, पङ्, महा, रभा) । भवि. सुविस्स (वि ५२६) । वक्र. सुवत, सुवमाण (पात्र, से १, २१, भग) । संक्र. सुविऊण (कुप्र ५६) ।

सुव देखो स = स्व (हे २, ११४, पङ्, कुमा) ।

सुव (अप) देखो सुअ = श्रुत, सुत (भवि) ।

सुवस पु [सुवश] १ अच्छा वाँस । २ वि सुन्दर कुल में उत्पन्न, खानदानी (हे ४, ४१६) ।

सुवग्ग पुं [सुवग्ग] एक विजय-क्षेत्र, जिसकी राजधानी खड्गपुरी है (ठा २, ३—पत्र ८०, इक) ।

सुवच्छ पु [सुवत्स] १ व्यन्तर-देवों का एक इन्द्र (ठा २, ३—पत्र ८५) । २ एक

विजय-क्षेत्र, प्रान्त-विशेष, जिसकी राजधानी कुंडला नगरी है (ठा २, ३—पत्र ८०, इक) ।

सुवच्छा स्त्री [सुवत्सा] १ अधोलोक में रहनेवाली एक दिशा-कुमारी देवी (ठा ८—पत्र ४३७) । २ सौमनस पर्वत पर रहनेवाली एक देवी (इक) ।

सुवज्ज पुं [सुवज्ज] १ एक विद्याधर-वशीय राजा (पउम ५, १६) । २ पुन, एक देव-विमान (सम २५) ।

सुवट्टिय वि [सुवत्त] अतिशय गोल किया हुआ (राज) ।

सुवण न [स्वपन] शयन (शोध ८७, पचा १, ४५, उप ७६२) ।

सुवण्ण पु [सुवर्ण] १ गरुड पक्षी (उत्त १४, ४७) । २ भवनपति देवों की एक जाति (श्रीप) । ३ आदित्य, सूर्य (गडड) । °कुमार पु [°कुमार] भवनपति देवों की एक जाति (इक) ।

सुवण्ण पु [दे] अजुंन वृक्ष (दे ८, ३७) ।

सुवण्ण न [सुवर्ण] १ सोना, हेम (उवा, महा, गाया १, १७, गडड) । २ पुं. भवन-पति देवों की एक जाति (भग) । ३ सोलह कर्म-भाषक का एक बाँट (अणु १५५) । ४ सुन्दर वर्ण । ५ वि. सुन्दर वर्णवाला (भग) । °आर, °कार पुं [°कार] सोनी, सुनार (दे महा) । °कुभ पुं [°कुम्भ] प्रथम बलदेव के घर्म-गुरु एक जैन मुनि (पउम २०, २०५) । °कुसुम न [°कुसुम] सुवर्ण-शुभिका लता का फूल (राय ३१) । °कूला स्त्री [°कूला] नदी-विशेष (सम २७, इक) । °गुलिया स्त्री [°गुलिका] एक दासी का नाम (महा) । °सिला स्त्री [°शिला] एक महौषधि (तो ५, राज) । °गर पुं [°गर] सोने की खान (गाया १, १७—पत्र २२८) । °र पु [°कार] सोनी (उप पृ ३५१) । देखो सुवन्न = सुवर्ण ।

सुवण्णविंदु पुं [दे] विष्णु (दे ८, ४०) ।

सुवण्णिअ वि [सौवर्णिक] सुवर्ण-मय, सोने का बना हुआ (हे १, १६०, पङ्, प्राक् ३६) ।

सुवत्त देखो सुवत्त (राज) ।

सुक्राण्य न [दे] जहाज के आगे का ऊँचा काष्ठ, गुजराती में 'मुकान' (सिरि ४२४)।

सुक्राम न [शुक्राम] १ एक लोकांतिक देव-विमान (पव ३६७)। २ वैताड्य पर्वत की दक्षिण श्रेणि में स्थित एक विद्यावर-नगर (इक)।

सुक्रिय देखो सुक्रय (भवि)।

सुक्रिय देखो सुक्रीअ (राज)।

सुक्रिल { देखो सुक्र = शुक्ल (भग, सुक्रिलय { श्रौप, हे २, १०६, पञ्च ५ सुक्रिल ३३, अणु १०६), 'पुत्तु सुक्किलवत्थं' (गच्छ २, ४६, कप्प, सम ४१ धर्मस ४५४)। श्री. 'एगो सुक्किलियाणं एगो सबलाणं वगो करो' (आक ७)।

सुक्रीअ वि [सुक्रीत] अच्छी तरह खरोदा हुआ 'सुक्रीअ वा सुविक्कीअं' (दस ७, ४५)।

सुक्ख देखो सुक्क = शुक्। वक्क सुक्खत (गा ४१४, वज्जा १४६)।

सुक्ख देखो सुक्क = शुक्क (हे २, ५, गा २६३, मा ३१, उप ३२० टी)।

सुक्ख न [सौख्य] सुव (कप्प, कुमा, सार्ध ५१, प्रासू २८, १४५)।

सुक्खव देखो सुक्कय। कर्म सुक्खवीअति (पि ३५६, ५४३)।

सुक्खिय वि [स्वाख्यात] अच्छी तरह कहा हुआ, प्रतिज्ञात, 'तथो सुइवइयराजपणे जं ते सुक्खियमामि बुद्धिलेण अटलक्ख, तन्निमित्त-मेसो पेसिओ चालीससाहसो हारो ति वोत्तु समप्पिच च हारकरडिय गओ दामचेडो' (महा)।

सुखम (पै) देखो सण्ह = सूक्ष्म, 'सुखमवरिसो' (प्राक १२४)।

सुग देखो सुअ = शुक् (उप ६७२, स ८६, उर ५, ७, कुप्र ४३८, कुमा)।

सुगड श्री [सुगति] १ अच्छी गति (ठा ३, ३—पत्र १४६)। २ सन्मार्ग, अच्छा मार्ग (सूअनि ११५)। ३ वि अच्छी गति को प्राप्त (भावम)।

सुगध देखो सुअध (कप्प, कुमा, श्रौप, सुर २, ५८)।

सुगंधा श्री [सुगन्धा] पश्चिम विदेह का एक विजयक्षेत्र (इक)।

सुगंधि देखो सुअंधि (श्रौप)। 'पुर न [पुर] वैताड्य की उत्तर श्रेणि में स्थित एक विद्या-धर-नगर (इक)।

सुगग वि [सुगण] अच्छी तरह गिननेवाला (पड्)।

सुगम वि [सुगम] १ अल्प परिश्रम में जाया जा मके वैसा सुख-मय (श्रौपमा ७५)। २ सुबोध (चेहय ३६३)।

सुगय वि [सुगति] १ अच्छी गतिवाला (ठा ४, १—पत्र २०२, कुप्र १००)। २ सुस्थ। ३ धनी। ४ गुणी (ठा ८, १—पत्र २०२, राज हे १, ७७)। ५ पुं. बुद्धदेव (पाअ, पव ६४)।

सुगय वि [सौगत] बुद्ध-भक्त, बौद्ध (सम्मत्त १२०)।

सुगर वि [सुगर] सुख-भाव्य, अल्प परिश्रम से हो सके ऐसा (आचा १, ६, १, ८)।

सुगरिट्ट वि [सुगरिट्ट] प्रति वडा (श्रु १६)।

सुगिअ वि [सुगह] सुख से ग्रहण करने योग्य (पउम ३१, ५४)।

सुगिअ पु [सुग्री-म] १ चैत्र मास की पूर्णिमा (ठा ५, २—पत्र २१३)। २ फाल्गुन का उत्तम (दे ८, ३६)।

सुगिर वि [सुग] अच्छी वाणीवाला (पड्)।

सुगिअ वि [सुगहीन] विख्यात, सुगिहीय विवृत (न ६६, १३)।

सुगी देखो सुड = शुकी (कुमा)।

सुगुत्त पु [सुगुम] एक मन्त्री का नाम (महा)।

सुगुरु पु [सुगुरु] उत्तम गुरु (कुमा)।

सुगन न [दे] १ आत्म-कुशल (दे ८, ५६, सण)। २ वि निर्विघ्न, विघ्न-रहित। ३ विमज्जित (दे ८, ५६)।

सुगाड देखो सुगड (सुपा १६१, स ८१)।

सुगाध देखो सुगय = सुगत (ठा ४, १—पत्र २०२)।

सुगाह अक [प्र र] फैलना। सुगाहड (धात्वा १५६)।

सुगीव पु [सुगीव] १ नागकुमार देवों के इन्द्र भूतानन्द के अश्व-गैय का अधिपति

(ठा ५, १—पत्र ३०२)। २ भारतवर्ष में होनेवाला नवरात्रि प्रतिवासुदेव राजा (नम १५४)। ३ राक्षस-वंश का एक राजा, एक लङ्का-पति (पउम ५, २६०)। ४ नववें जिनदेव के पिता का नाम (मम १५१)। ५ राजा वाणि का छोटा भाई (पउम ६, ६, से १, ४६ १४ ३६)। ६ एक राजा का नाम (सुर २, २४)। ७ न नगर-विशेष (उत्त ६, १)।

सुव (अप) देखो सुड = सुख (दे ४ ३६६)।

सुवट्ट वि [सुवट्ट] अच्छी तरह पिना हुआ (राय ८० टी)।

सुवरा श्री [सुगृहा] मादा-पक्षी की एक जाति जो गण्ठा घोंमला खूब मुन्दर बनाती है (ग्राव १)।

सुवोम पु [सुवोप] १ एक कुलकर-पुरुष (सम १५०)। २ एक पुरोहित का नाम (उप १२८ टी)। ३ पुन सनत्कुमार देवलोक का एक विमान (सम १२)। ४ लान्तक नामक देवलोक का एक विमान (मम १७)। ५ वि मुन्दर आवाजवाला (जीव ३, १, भवि)। ६ एक नगर का नाम (विपा २, ८)।

सुवोमा श्री [सुवोपा] १ गीतरति नामक गन्धर्व-देव की एक पटरानी (ठा ४, १—पत्र २०४)। २ गीतयशनामक गन्धर्व की एक पटरानी (ठा ४, १—पत्र २०४)। ३ सुधर्मेन्द्र की प्रसिद्ध घटा (पण्ह २, ५—पत्र १४६, मुपा ४५)। ४ वाद्य-विशेष (राय ४६)।

सुचन पु [सुचन्द्र] ऐरवत वर्ष में उत्पन्न दूसरे जिन देव (मम १५३)।

सुचरिअ न [सुवरिन] १ मदाचरण, मदा-चार (कप्प, गडड)। २ वि. मदाचरण सपन्न (गडड)। ३ अच्छी तरह आचरित (पउम ७५, १८, राया १, १६—पत्र २०५)।

सुचिण १ वि [सुचीर्ण] १ सम्यग् आच-सुचिर्ण १ रित, 'तत्रमजमो मुचिणोवि' (पउम ६, ६, ६४, ३२, ठा ४, २—पत्र २१०)। २ न पुराय (श्रौप, उवा)।

सुचिर न [सुचिर] अत्यन्त विर काल, सुदीर्घ काल (मुपा २७, महा, प्रासू ३२)।

सुवो देखो सुवे (पड, प्राप) ।

सुव न [शुल्व] १ तांबा, ताम्र (ती २) ।

२ रज्जु रस्ती । ३ जल समीप । ४ आचार ।

५ यज्ञ का कार्य (हे २, ७६) ।

सुवत देखो सुण ।

सुवत देखो सुवत (ठा २, ३—पत्र ७८) ।

सुवत वि [सुवत्त] स्फुट, सुस्पष्ट (अत २०, श्रौप. नाट—मृच्छ २८) ।

सुवमाण देखो सुण ।

सुवय पु [सुव्रत] १ भारतवर्ष में उत्पन्न बीसवें जिनदेव, मुनिसुव्रत स्वामी (ती ८, पव ३५) । २ ऐरवत वर्ष के एक भावी जिनदेव (मम १५४) । ३ छठवें जिनदेव के गणधर (१५२) । ४ एक जैन मुनि जो तीसरे बलदेव के पूर्व जन्म में गुरु थे (पउम २०, १६२) । ५ आठवें बलदेव के धर्म गुरु (पउम २०, २०६) । ६ भगवान् पार्वनाथ का मुख्य श्रावक (कप्प) । ७ एक ज्योतिष्क महा-भूह (राज) । ८ एक दिवस का नाम (आचा २ १५, ५, कप्प) । ९ न एक गोत्र (कप्प) । १० वि सुन्दर व्रतवाला (पव ३५) । ११ गि पु [गिनि] एक दिवस का नाम (कप्प) ।

सुवया स्त्री [सुव्रता] १ भगवान् धर्मनाथ की माता (मम ५१) । २ एक जैन माध्वी (सुर ५५, २७७, महा) ।

सुव्विआ स्त्री [दे] अम्मा, माता (दे ८, ३८) ।

सुस देखो सुस, 'सुसइ व पकं न वहति निज्झरा वरहिणो न नच्चति' (वज्जा १३४, भवि) । क सुसियव्व (सुर ४, २२६) ।

सुसगद वि [सुसगत] अति-संवद्ध (प्राक १२) ।

सुसमिअ वि [सुसयमित] अति-नियन्त्रित (दे) ।

सुसमिआ स्त्री [दे] शूला-प्रोत मांस (दे ८, ३६) ।

सुसस वि [सुसत्त] अति सुन्दर, 'अहो जणा कुणह नवसुसतय' (पउम ८८, ५६) ।

सुसनिविट्ठ वि [सुसनिविट्ठ] अच्छी तरह स्थित (सुपा १३३) ।

सुसंपरिगहिय वि [सुसंपरिगृहीत] खूब अच्छी तरह ग्रहण किया हुआ (राय ६३) ।

सुसपिण्ड वि [सुसपिण्ड] खूब अच्छी तरह बँधा हुआ (राय) ।

सुसमत वि [सुर भ्रान्त] अतिशय व्याकुल (उत्त २०, १३) ।

सुसमिअ वि [सुसंभूत] अच्छी तरह सस्कृत (स १८६, उप ६४८ टी) ।

सुसमय वि [सुसमत] अच्छी तरह समति-युक्त (सुर १०, ८२) ।

सुसवुअ } वि [सुसवृत्त] १ परिगत,
सुसवुड } व्याप्त । २ अच्छी तरह पहना हुआ (आया १, १—पत्र १६, पि २१६) ।

३ जितेन्द्रिय । ४ रुका हुआ (उत्त २, ४२) ।

सुसहय वि [सुसहन] अतिशय सश्लिष्ट (श्रौप) ।

सुसज्ज वि [सुसज्ज] अच्छी तरह तय्यार (सुपा २११) ।

सुसणपप देखो सुसन्नपप (राज) ।

सुसद वि [सुसद] १ सुन्दर आवाजवाला । २ प्रसिद्ध, विख्यात (सुपा ५६६) ।

सुसन्नपप वि [सुसन्नपप] सुख-बोध्य (कम) ।

सुसमत्थ वि [सुसमत्थ] सुशक्त, अतिशय सामर्थ्यवाला (सुर १, २३२) ।

सुसमदुस्समा } स्त्री [सुसमदुप्पमा] काल-
सुसमदुग्गमा } विशेष, अवसर्पिणी-काल का तीसरा और उत्सर्पिणी का चौथा आरा (इक, ठा २, ३—पत्र ७६) ।

सुसमसुग्गमा स्त्री [सुसमसुपमा] काल-विशेष, अवसर्पिणी का पहला और उत्सर्पिणी का छठवाँ आरा (इक, ठा १—पत्र २७) ।

सुसमा स्त्री [सुपमा] १ काल-विशेष अवसर्पिणी का दूसरा और उत्सर्पिणी का पाँचवाँ आरा (ठा २, ३—पत्र ७६, इक) । २ छन्द विशेष (पिंग) ।

सुसमाहर सक [सुसमा + ह] अच्छी तरह ग्रहण करना । सुसमाहरे (सूत्र १, ८, २०) ।

सुसमाहिअ वि [सुसमाहित] अच्छी तरह समाधिसपन्न (दस ५, १, ६, उत्त २०, ४) ।

सुसमिद्व वि [सुसमृद्ध] अत्यन्त समृद्ध (नाट—मृच्छ १५६) ।

सुसर पुंन [सुस्वर] १ एक देव-विमान (सम १७) । २ न. नामकर्म का एक भेद, जिनके उदय से सुन्दर स्वर की प्राप्ति हो वह कर्म (मम ६७, कम्म १, २६, ५१) । देखो सुस्स१. सुमृ१ ।

सुसा स्त्री [स्वस्] वहित, भगिनी (सूत्र १, ३, १, १ टी) ।

सुमा देखो सुण्हा = सुपा (कुमा) ।

सुसागय न [सुस्वागत] सुन्दर स्वागत (भग) ।

सुसागर पुन [सुसागर] एक देव विमान (सम २) ।

सुसाण न [श्मसान] मुर्दाघाट, मरघट (आया १, २—पत्र ७६, हे २, ८६, स ५६७, आ १४, महा) ।

सुसामण्ण न [सुश्रामण्य] अच्छा साधुपन (उवा) ।

सुसाय वि [सुसाय] स्वादिष्ट, सुन्दर स्वाद-वाला (पउम ८२, ६६, १०२, १२२) ।

सुसाल पुन [सुसाल] एक देव-विमान (सम ३५) ।

सुसायग पु [सुश्रावक] अच्छा श्रावक—सुसावय } जैन गृहस्थ (कुमा, पडि, द्र २१) ।

सुसाहय देखो सुसहय (पएह १, ४—पत्र ७६) ।

सुसाहु पु [सुसाधु] उत्तम मुनि (पएह २, १—पत्र १०१, उव) ।

सुसिअ वि [शुष्क] सूखा हुआ (सुपा २०४, कुप्र १३) ।

सुसिअ वि [शोपित] सुखाया हुआ (महा वज्जा १५०, कुप्र १३) ।

सुसिक्खिअ वि [सुशिक्षित] अच्छी तरह शिक्षा को प्राप्त (मा २०) ।

सुसिणिद्व वि [सुस्निग्ध] अत्यन्त स्नेह-युक्त (सुर ४, १६६) ।

सुसित्थ देखो सुत्थ = सौस्थ्य (ससि १२) ।

सुसिन्न वि [सुशीर्ण] अति सड़ा हुआ (सुपा ४६६) ।

सुसिर वि [शुपिर] १ पोला, खाली । छूँछा (उप ७२८ टी, कुप्र १६२) । २ पुन. एक देव-विमान (सम ३७) ।

की पटरानी—तीसरा छी-रत्न (सम १५२, महा) । ३ भूतानन्द आदि इन्द्रो के लोकपालो की अष्टमहिषियो के नाम (ठा ४, १—पत्र २०४ इक) ।

सुणकवच पु [सुनश्चत्र] १ एक जैन मुनि (अनु २) । २ भगवान् महावीर का शिष्य एक मुनि (भग १५—पत्र ६७८) ।

सुणकवच की [सुनश्चत्रा] पक्ष की दूसरी रात (मुज्ज १, १४) ।

सुणग १ सुगय (आचा, पि २०६) ।

सुणग न [श्रवण] सुना (स ५३) ।

सुणग { पुत्री [शुनक] १ कुक्कुर, कुत्ता (हे सुणह १, ५२, गा ५५०, ६८८, ६९०, ६९८, ७०५, गा १२८, १७५, सुर २, १०३, ६, २०४, आ १६, कुप्र १५३, रभा) ।

सुणह { १, ५२, गा ५५०, ६८८, ६९०, ६९८, ७०५, गा १२८, १७५, सुर २, १०३, ६, २०४, आ १६, कुप्र १५३, रभा) ।

सुणहिल्या की [शुनही] कुत्ती, मादा-कुक्कुर (वज्जा ८६) ।

सुणावण न [श्रावण] सुना (विम २४८५) ।

सुणाविअ वि [श्राविन] सुनाया हुआ (मुपा ६०२) ।

सुणासोर पु [सुनासीर] इन्द्र, देव-राज (पाप्र, हम्मौर १२) ।

सुणाह देखो सुनाभ (राज) ।

सुगिअ देखो सुग ।

सुगिअ वि [श्रुत] सुना हुआ (कुमा, रयण ४४) ।

सुगिअ पुं [शौनिक] कसाई (निरि १०७७) ।

सुगिउण देखो सुनिउण (राज) ।

सुगिप्पकप देखो सुनिप्पकप (राज) ।

सुगिम्भिय वि [सुनिर्मित] चाह रूप में बना हुआ (कप्प) ।

सुगिउय वि [सुनिर्भूत] अत्यन्त स्वस्थ (गाया १, १—पत्र ३०) ।

सुगिस्त वि [सुनिशान्त] अच्छी तरह सुना हुआ, इहमेगेन आयागोपरे एणो सुगिम्भे भवति' (आचा १, ८, १, २, २, २, २, १०, ३, १५) ।

सुणुणाय नक [सुनसुनाय] 'सुन' 'सुन' आवाज करना । वक्. सुणुमुणायत (महा) ।

सुण्ण न [शून्य] १ निर्जन स्थान (गड्ड ५२४) । २ वि. रिक्त, रिता, खाली (स्वप्न ३१ गड्ड, १० निष्पल व्यर्थ निष्प्रयोजन (गड्ड ८४२, ६७२) । ४ न तप-विशेष, एकाशन-व्रत (सबोध ५७) । देखो सुल्ल ।

सुण्णआर देखो सुण्णार (दे ३, ५४) ।

सुण्णअ वि [शून्य] शून्य किया सुण्णायअ { हुआ, १, ४०, गड्ड, गा २६, १६६, ६-६) ।

सुण्णार पु [सुवण न] सुनार, सोनी (दे ५, ३६) ।

सुण्ह देखो मण्ह = मूष्य (हे १, ११८, कुमा) ।

सुण्हसिअ वि [ह] स्वपन शोल, सोने की आदतवाला (दे ८, १० पड) ।

सुण्ह की [सास्ना] गौ का गल-कम्वल (हे १, ७५, कुमा) । ल पु ल वृषभ, बैल (कुमा) । लचि २ पु ल चिह्न १ भगवान् ऋषभदेव । २ महादेव (कुमा) ।

सुण्ह की [सुत्ता] पुत्र-वधू (गाया १, ७—पत्र ११७, मुर ८, ६८) ।

सुत्ता की [सुत्ता] नारी, स्त्री (मुर २, ८६) ।

सुत्तर अ [सुत्तरा] निश्चित अर्थ के अतिशय का सूचक अव्यय (विम ८६१) ।

सुत्तसिअ न [सुत्तसि] सुन्दर तप, तपश्चर्या का सुन्दर अनुष्ठान (राज) ।

सुत्तवम्म वि [सुत्तवम्म] अच्छा तपस्वी (सम ५१) ।

सुत्तार वि [सुत्तार] १ अत्यन्त निर्मल । अति-शय ऊँचा । ३ अच्छा नरनेवाला । अत्युच्च आवाजवाला (ह १, १७७) ।

सुत्तारया, स्त्री [सुत्तार] १ भगवान् मुनिवि-सुत्तारा { नाथजी का शामन-देवी (सति ६) ।

२ मुनीव की पत्नी (पत्रम १०, ६) । ३ आनूपण विशेष (कुमा) ।

सुत्तिविअ वि [सुत्तिवि] मुख से सहन करने योग्य (ठा १—पत्र २६६) ।

सुत्तोसअ वि [सुत्तोस] मुख से तृप्त करने योग्य (सम ५, २, ३८) ।

सुत्त नक [सुत्त] बनाना । सुत्त (मुपा २३५) ।

सुत्त दवा सुअ = श्रुत, पञ्चममोहिमण-केवल च परामम मड्मुत्त' (जीवन १४१) ।

सुत्त देखो मे न = सोतस् (भवि) ।

सुत्त देखा सोत्त = श्रोत्र (रभा, भवि) ।

सुत्त वि [सुत्त] सोया, शयित (ठा ५, २—पत्र ३१६, स्वप्न १०४, प्रासू ६८, आ २५) ।

सुत्त वि [सुत्त] १ सुचारु रूप में कहा हुआ । २ न सुभाषित, सुन्दर वचन 'सुत्तवत्त मुत्त-उत्तीए' (मुपा ३३) ।

सुत्त न [सुत्त] सूना, बागा, वड्ड तत्तु (विम १, ८—पत्र ८, सुता २८) । २ नः का प्रमाण (माह ४८, मुपा १) । ३ गात्र-विशेष । नग, ठा ४, ४—पत्र २८८ जी ३६) । ४ पु [सुत्त] अक्षर (मुर १, १०३, ७८) गहारा विप्र (पत्रम ४, ६२) । ५ न [सुत्त] द्वितीय जैन अगम-अथ (सुपनि २) । ६ न [सुत्त] यज्ञोपवीत (श्रीप । 'वार पु [सुत्त] देखो 'हार (मुपा १ माह ४८) । 'फासि (गिज्जुत्ति की [सुत्त] निर्युक्ति' सूय की व्याख्या (अणु) । 'रुड की [सुत्त] शास्त्र अडा (श्रीप) । ७ पु [सुत्त] १ प्रवान नट, नाटक का उद्धारण (प्रासू ६३) । २ सुत्तार, वटई (कम्म १, ४८) ।

सुत्ति की [सुत्ति] मौप बोधा (ह २, १३८, कुमा) । 'म' की [सुत्ति] यदि देश की प्राचीन राजधानी (गाया १, १०—पत्र २०८) ।

सुत्ति की [सुत्ति] सुन्दर वचन, सुभाषित । 'वत्ति' वा [सुत्ति] एक जैन मुनि-शाखा (अथ—मृ ७६ टि राज) ।

सुत्ति देखा मात्तिअ = मौयिक (पत्र ६) ।

सुत्ति वि [सुत्ति] सूय-निवद्ध (राज) ।

सुत्त वि [सुत्त] १ स्वस्थ, तन्दुरन्त । २ सुयी (सति १०, गा ८७८, महा, चन्द्र २६६ गा १०३१ टी) ।

सुत्त न [सुत्त] १ नदुरन्ता, स्वस्थना । २ सुविपन (सति १२, कुप्र १७६ सुता १८, १९८ स १२५ उप ६०२, धर्मि २२) ।

सुहग देखो सुभग (रयण ४०, गा ६, नाट—मालवि २८) ।

सुहड पु [सुहट] थोड़ा (मुर २, २६, कुमा, प्रासू ७४, सण) ।

सुहड वि [सुहट] अच्छी तरह हरण किया हुआ (दम ७, ४१) ।

सुहस्थ वि [सुहस्त] १ अच्छा हाथवाला, हाथ की लघुतावाला हाथ से शीघ्र शीघ्र काम करने में समर्थ (मे १२, ५५) । २ दाता, दानशील (भवि) ।

सुहृत्वि पु [सुहृत्तिन्] १ गन्ध हस्तो (गाथा १, १—पत्र ७४, उवा) । २ एक जैन मठपि (कप्प, पडि) ।

सुहृद न [सौहार्द] १ स्नेह । २ मित्रता (भवि) ।

सुहम न [सूक्ष्म] १ फूल, पुष्प (दसनि १, ३६) । २ देखो सण्ह, सुहम = सूक्ष्म (ह २, १०१, चड) ।

सुहम्म पुं [सुवर्म्मन्] १ भगवान् महावीर का पट्टधर शिष्य (विपा ६ १—पत्र १) । २ बारहवें जिनदेव का प्रथम शिष्य (सम १५२) । ३ एक यक्ष का नाम (विपा १, १—पत्र ४, १, २—पत्र २१) । ४ सामि पुं [स्वामिन] भगवान् महावीर का पट्टधर शिष्य (भग) । देखो सुवम्म ।

सुहम्मं देखो सुहम्मा । ०इ पुं [०पति] इन्द्र (महा) ।

सुहम्ममाण वि [सुहन्ममाण] जो अच्छी तरह मारा जाता हो वह (पि ५४०) ।

सुहम्मा की [सुधर्मा] चमर आदि इन्द्रो की सभा, देव-सभा (सम १५, भग) ।

सुहय देखो सुह-अ = सुख द, शुभ-द ।

सुहय देखो सुभग (गडड, सण, हेका २७२, कुमा) ।

सुहय वि [सुहट] अच्छी तरह जो मारा गया हो वह (कुप्र २२६) ।

सुहर वि [सुभर] सुख से भरने योग्य (दस ८, २५) ।

सुहरअ देखो सुहराय (पड) ।

सुहरा की [द सुगृहा] पक्षि-विशेष, सुधरी (से ८, ३६) ।

सुहराय पुं [दे] १ केश्या का घर । २ चटक, नैरैया पक्षी (दे ८, ५६) ।

सुहल्ली की [दे] सुख, आनन्द (दे ८, ३६) ।

सुहव देखो सुभग (वज्जा ६६, सद्धि ६) । की ०वी (प्राकृ ३७) ।

सुहा अक [सु + मा] अच्छा लगना, न सुहाइ गोमईए सासु' (कुप्र ३५२) ।

सुहा देखो लुहा = सुधा (म २८२, कुमा, मण) । ०न्मत न [०र्मन्त] चूने का कारवाना (आचा २, २, २, ६) । ०हार पुं [०हार] देव, देवता (म ७५५) ।

सुहा } गक [सुन्नाय] १ सुख पाना ।

सुहाअ } २ मक, गुनी करना । मुहाइ,

सुहाव } मुहाप्रई, मुहावइ मुहावेऽ (भवि गा ६१७, पि ५५८, मे १२, ८६, वज्जा १६४, भवि उव) । वकृ सुन्नाअने (मे १, २८, नाट—रत्ना ६१) ।

सुहाव देखो सहाव = स्वभाव (गा ५८८, वज्जा १०) ।

सुहावण वि [सुखायन] सुख-जनक (मण, भवि) ।

सुहावय वि [सुन्वागक] ऊपर देखो (वज्जा ४६४, भवि) ।

सुहासिय वि [सुभापित] १ सम्यग् उक्त (पण्ह १, १—पत्र १) । २ न. सुन्दर वचन, सूक्त (स ७६१, सुपा ५१४) ।

सुहि वि [सुखिन्] सुख-युक्त (सुपा ३१२, ४३१) ।

सुहि } पु [सुहद] मित्र, दोस्त (ठा ४, सुहिअ } ३—पत्र २४३, गाथा १, २—पत्र ६०, उत २०, ६, सुर ४, ७६, सुपा १०७, ४१६, प्रयौ ३६, मुर ३, १५४, भवि) ।

सुहिअ वि [सुखित] सुखी, सुख-युक्त (से २, ८, गा ४१८, कुप्र ४०६, उव, कुमा) ।

सुहिअ वि [सुहित] १ वृष (से २, ८) । २ सुन्दर हितवाला (धर्म २) ।

सुहिट्ट वि [सुहट्ट] अति हर्षित (उप ७२८ टी) ।

सुहिर देखो सुसिर, 'अवनानतो पुहहि अंतो सुहिरं व चरणाघाएहि' (धर्मवि १२४, रंभा) ।

सुहिरण्णा श्री [सुहिरण्णा, ०ण्यि] सुहिरण्णिआ (वनम्मान-विशेष, पुष्प-प्रधान सुहिरण्णिआ) वृक्ष-विशेष (राय ३१, राज, पण्ह १७—पत्र ५२६) ।

सुहिरिमग वि [सुहमनम्] अव्यन्त लज्जावु, अतिशय शर्मन्दा (सूप्र १, ८, २, १३, राज) ।

सुहिरिआ देखो सुहेहि 'सुहिरिआ अट्टिय रम सुहिरिओ' (भत २६२) ।

सुही वि [सुही] पंडित, विद्वान् (मिरि ४०) ।

सुहुम वि [सूक्ष्म] १ वारीक अव्यन्त छोटा ।

२ तीक्ष्ण (हे १, १, ८, २, १३, कुमा, जी १४) । ३ पु नारन वयं के एक भावी कुलवर पुत्र (सम ०५३) । ४ एकैन्द्रिय जीव-विशेष (ठा ८, कम्म ४, २, ५) । ५ न कर्म विशेष (सम ६) । ॥ सपराग, ॥ सपराग पुन [सपराय] १ चारित्र्य विशेष (ठा ५, २—पत्र ३२२) । २ दशयां गुण-स्थानक (सम २६) । देखो सण्ह, सुहम = सूक्ष्म ।

सुहुय वि [सुहुत] अच्छी तरह होम किया हुआ (ठा २८८ टी कप्प, श्रीप) ।

सुहेहि की [दे. सुखकलि] सुख, आनन्द, मना (दे ८, ३६, गाथा गा १०८, २११, २६१ २८८, ३६८, ५५६, ८६४, स ७२) ।

सुहेसि वि [सुहैपिन्] सुखाभिलाषी (सुपा २७७) ।

सू अ. निन्दा-सूचक अव्यय (नाट) ।

सूअ सक [सूचय] १ सूचना करना । २ जानना । ३ तक्ष करना । सूएइ, सूअति, सूएमो (विसे १३६८, स २४८, गडड, पिड ४१७) । कर्म. सूहज्जइ (गा ३२६) । वकृ. सूयत, सूयदत (गडड, स ३६६) । कवक. सूडज्जत (वेद्य ६०५) । कृ सूअअव (से १०, २८) ।

सूअ पुं [सूद] रमोडया (महा) ।

सूअ पु [सूत] १ नारथि, रथ हांमनेवाला (पाप्र) । २ वि प्रसून, जिसने जन्म दिया हो वह, 'मु(१ सू)यगोव्व अदूरए' (सूप्र १, ३, २, ११) । ॥ गड पुंन [०कृत] दूसरा जैन अग-ग्रन्थ (सूप्रनि २) ।

खवर, कोई हुई चीज की प्राप्ति, 'वद्धाविज्जह पियाइ मूद्धीए' (सुपा ५१७, कुप्र २०२, सम्मत १७२, कुम्मा ६)।

सुद्धेसणिअ वि [शुद्धैपणिअ] निर्दोष आहार की खोज करनेवाला (पगह २, १—पत्र १००)।

सुद्धोअण पु [शुद्धोअण] बुद्धदेव के पिता का नाम। 'तणय पु [तनय] बुद्ध देव (सम्प १४५)। देखो सुद्धोअण।

सुद्धोअणि पु [शौद्धोअणि] बुद्धदेव (पात्र)।

सुद्धोअण देखो सुद्धोअण। 'पुत्त पु [पुत्र] बुद्ध देव (कुप्र ८४०)।

सुधम्म पु [सुधमेन] १ भगवान् महावीर का पट्टवर शिष्य (कुमा)। २ एक जैन मुनि (विपा २, ४)। ३ तीसरे बलदेव के गुरु—एक जैन मुनि (पउम २०, २०५)। ४ एक जैन मुनि, जो मातर्वे बलदेव के पूर्व-जन्म में गुरु थे (पउम २०, १६३)। ५ एक जैनाचार्य, 'तह अज्जममुनुरि अज्जमुधम्म च धम्मरय' (साधं २२)। देखो सुहम्म।

सुधा देखो लुहा = सुधा (कुमा)।

सुनद पु [सुनन्द] १ भारतवर्ष के भावी दमर्वे जिनदेव के पूर्वभव का नाम (सम १५४)। २ एक जैन मुनि (पउम २०, २०)। देखो सुणद।

सुनकखत्त देखो सुणकखत्त (भग १५—पत्र ६७८, ६८७)।

सुनच्चिरा बी [सुनत्तिनी] अच्छी तरह नृत्य करनेवाली बी (सुपा २८६)।

सुनयण पु [सुनयन] १ राजा रावण के अधीनस्थ एक विद्यावर सामन्त राजा (पउम ८, १३३)। २ वि सुन्दर लोचनवाला (आवम)।

सुनाम पु [सुनाम] अमरकका नगरी के राजा पद्मनाभ का पुत्र (शाया १, १६—पत्र २१४)।

सुनिउण वि [सुनिपुण] १ अत्यन्त सूक्ष्म (मम ११४)। २ अति चतुर (सुर ४, १३६)।

सुनिउण वि [सुनिगुण] अतिशय निश्चित गुणवाला (मम ११४)।

सुनिगल वि [सुनिर्गल] चिर-स्थायी (विने ७६६)।

सुनिच्छय वि [सुनिश्चय] दृढ निर्णयवाला (सुपा ४६८)।

सुनिप्पकप वि [सुनिप्पक्रम्प] अत्यन्त निश्चल (सुपा ६५३)।

सुनिम्मल वि [सुनिर्मल] अतिशय निर्मल (पउम २०, ६२)।

सुनिरुविय वि [सुनिरूपिन] अच्छी तरह तलासा हुआ (सुपा ५२३)।

सुनिविन्न वि [सुनिविण्ण] अतिशय विन्न (सुर १४, ५८, उव)।

सुनिव्वुड देखो सुणिव्वुय (द्र ४७)।

सुनिमाय वि [सुनिशात] अत्यन्त तीक्ष्ण (सुपा ५७०)।

सुनिसिअ वि [सुनिशित] ऊपर देखा (दस १०, २)।

सुनिस्संरु वि [सुनि शङ्क] बिलकुल शङ्का-रहित (सुपा १८८)।

सुनीविआ बी [सुनीविका] सुन्दर नीवी—बल-अभियवाली बी (कुमा)।

सुनेत्ता बी [सुनेत्रा] पाँचवें वासुदेव की पटरानी (पउम २०, १८६)।

सुज न [शून्य] १ विन्दी (सुर १६, १४६)। २—देखो सुण (प्रागू १०, महा, भग, आचा, स ३६, २भा)। 'पत्तिया बी [प्रत्ययिका, पत्रिका] एक जैन मुनि-शाखा (कप्प)।

सुजयार देखो सुणयार (सुपा ५६४, धमवि १२)।

सुजार देखो सुणार (सुपा ५६२)।

सुन्हा देखो सुण्हा (वा ३७, भवि)।

सुप मक [मृज्] मार्जन करना, शोधन करना। सुपद (प्राप्र)।

सुपद्व वि [सुप्रतिष्ठ] १ न्याय-मार्ग में स्थित। २ प्रतिज्ञा-शूर (कुमा १, २८)। ३ अतिशय प्रसिद्ध। ४ जिसकी स्थापना विधि-पूर्वक की गई हो वह (कुमा २, ४०)। ५ पुं भगवान् महावीर के पास दीक्षा लेकर मुक्ति पानेवाला एक गृहस्थ (अंत १८)। ६ अग-विद्या का जानकार पाँचवा रुद्र पुरुष (विचार ४७३)। ७ भगवान् सुपार्वनाथ के पिता का

नाम (सुपा ३६)। ८ भाद्रपद मास का लोकोत्तर नाम (मुज्ज १०, १६)। ९ पात्र-विशेष (राय)। १० न एक नगर का नाम विपा १, ६—पत्र ८८)। 'भ पुन [भ] एक देव-विमान (मम १४, पत्र २६७)।

सुपड्ढाय वि [सुप्रतिष्ठित] अच्छी तरह प्रतिष्ठा-प्राप्त (भग, राय)।

सुपक्क वि [सुपक्क] अच्छी तरह पका हुआ (प्रागू १०२, नाट—मृच्छ ५७)।

सुपडाय वि [सुपनाक] सुन्दर ध्वजावाला (कुमा)।

सुपाडवुद्ध वि [सुप्रतिवृद्ध] १ सुन्दर रीति स प्रतिबोध का प्राप्त (आचा १, ५, २, ३)। २ पु एक जैन महर्षि (कप्प)।

सुपाडवत्त वि [सुपरिवृत्त] जो अच्छी तरह हुआ हो वह (पउम ६४, ८५)।

सुपणिहिय वि [सुप्रणिहित] सुन्दर प्रणि-धानवाला (पगह २, ३—पत्र १२३)।

सुपण्ण देखो सुपण्ण (राज)।

सुण्ण पु [सुवर्ण] गरुड पक्षी (नाट, कुप्र सुपन्न ६३)।

सुपन्नत्त वि [सुप्रजन्त] १ सुन्दर रूप में कथित (आचा १, ८, १, ३)। २ सम्यग्-आमेवित (दम ८, १)।

सुपभ देखो सुपभ (राज)।

सुपम्ह पुं [सुपद्मन] १ एक विजय-क्षेत्र (ठा २ ३—पत्र ८०)। २ पुन. एक देव-विमान (सम १५)।

सुपार्गकम्मिय वि [सुपरिक्रमित] सुन्दर सत्कारवाला (शाया १, ७—पत्र ११६)।

सुपर कख । वि [सुपरीक्षित] अच्छी सुपरिनिच्छय } तरह जिसकी परोक्षा की गई हो वह (उव, प्रासू १५)।

सुपारे णट्ठिय वि [सुपरिनिष्ठित] अच्छी सुपरिनिष्ठित } तरह निगुण (राज, भग)।

सुपारफु वि [सुपरिस्फुट] सुस्फुट (पउम ४५, २६)।

सुपारसत्त वि [सुपरिआन्त] अतिशय पका हुआ (पउम १०२, ४५)।

सुपरुज वि [सुप्ररुदित] जिसने जोर से रोने का आरम्भ किया हो वह (शाया १, १८—पत्र २४८)।

°दीव पु [°दीप] द्वीप-विशेष (इक) । °देव पु [°दव] आगामि उत्सर्पणी-काल मे होने-वाले भारतवर्ष के हमारे जिनदेव (सम १५३) । °पञ्चत्ति स्त्री [°पञ्चत्ति] एक जैन उपाङ्ग-ग्रथ (ठा २, २—पत्र १२६) । °परिवेस पु [°परिवेप] मेघ आदि से होता सूर्य का वल-याकार मडल (अणु १२०) । °पञ्चय पु [°पञ्चत] पर्वत-विशेष (ठा २, ३—पत्र ८०) । °पाया स्त्री [°पाया] सूर्य के किरण से होनेवाली रमोई (कुप्र ६६) । °पपभ पुन [°प्रभ] एक देव-विमान (सम १०) । °पपभा °पपहा स्त्री [°प्रभा] १ सूर्य की एक अग्र-महिषी (इक, एया २—पत्र २५२) । २ ग्यारहवें जिनदेव की दोष्ठा-शिविका (सम १५१) । ३ आठवें जिनदेव की दोष्ठा-शिविका (विचार १०६) । °मल्लिया स्त्री [°मल्लिका] वनस्पति-विशेष (राय ७६) । °मालिका स्त्री [°मालिका] आभरण-विशेष (औप) । °लेस पुन [°लेस्य] एक देव-विमान (सम १०) । °वक्रय न [°वक्रण] आभूषण-विशेष (औप) । °वर पु [°वर] १ एक द्वीप । २ एक समुद्र (मुज्ज १६) । °वरेभास पु [°वरावभास] १ द्वीप-विशेष । २ समुद्र-विशेष (मुज्ज १६) । °वल्ली स्त्री [°वल्ली] लता-विशेष (पण १—पत्र ३३) । °वेग पु [°वेग] एक राज-कुमार (उप १०३१ टी) । °सिंग पुन [°शृङ्ग] एक देव-विमान (सम १०) । °मिद्ध पुन [°सृष्ट] एक देव-विमान (सम १०) । °सिरी स्त्री [°श्री] सातवें चक्रवर्ती की स्त्री (सम १५२) । सुअ पु [°सुत] शनैश्चर-ग्रह (हाट—मृच्छ १६२) । °भ पुन [°भ] एक देव-विमान (सम १४, पव २६७) । °वित्त पुन [°वित्त] एक देव-विमान (सम १०) । देखो मुज्ज ।

सूरग पु [°दे] प्रदीप दीपक (दे ८, ४१, पङ्) ।

सूरगय पु [सुराङ्गज] एक राजा (उप १०३१ टी) ।

सूरण पु [°द. नूरण] कन्द-विशेष, सूरन, श्रील (दे ८, ४१, पण १—पत्र ३६, उच ३६ ६६, पंचा ५, २०) ।

सूरद्वय पु [°दे] दिन दिनन (दे ८, ८२, पङ्) ।

सूरहि पुत्री [°द] १ मध्याह्न, दुपहर का समय (दे ८, ५७, पङ्) । २ कीट-विशेष, मशक के समान आकृतिवाला कीट (दे ८, ५७) । ३ तृण-विशेष, ग्रामणी नामक तृण (दे ८, ५७, जीव ३, ४, राय) ।

सूरि पु [°रि] आचार्य (जी १, सण) ।

सूरिअ वि [भञ्ज] भांगा हुआ (कुमा) ।

सूरिअ देखो सुज्ज (हे २, १०७, सम ३६, भग, उप ७०८ टी) । °कंत पु [°कान्त] प्रदेश-नामक राजा का पुन (भग ११, ६—पत्र ५१४, कुप्र १४८) । °कंता स्त्री [°कान्ता] प्रदेशी राजा की पत्नी (कुप्र १४६) । °पाग पुत्री [°पाग] सूर्य के ताप से होनेवाली रमोई (कुप्र ७०) । स्त्री °गा (कुप्र ६८) । °लेस्मा स्त्री [°लेस्या] सूर्य की प्रभा (सुज्ज ५—पत्र ७६) । °भ पु [°भ] १ प्रथम देव लोकका एक देव (राय १४, धर्मवि ६) । २ पुन. एक देव विमान । ३ न. सूर्याभ देव का मिहानन (राय १४) । °वित्त पु [°वित्त] मेरु पर्वत (मुज्ज ५, इक) । °विरण पु [°विरण] मेरु पर्वत (मुज्ज ५, इक) ।

सूरिल पु [°दे] श्वशुर पक्ष (?), 'महतं मे सभोयण ति साहिज्जण नुरिलस्म समागमो चप' (म ५१०) ।

सूरिस देखो सुजरिस (हे १, ८) ।

सूरुत्तरवडिसण पुन [सूरुत्तरावतंसक] एक देव-विमान (सम १०) ।

सूरुहि देखो सूरुहि (राय ८० टी) ।

सूरुद पु [°रुद] एक समुद्र (मुज्ज १६) ।

सूरुदय न [सूरुदय] नगर-विशेष (पठम ८, १८६) ।

सूरुवराग पु [सूरुपराग] सूर्य-ग्रहण (भग) ।

सूल पुन [शूल] १ नोहे का सुतीक्ष्ण काँटा, शूली (विपा १, ३—पत्र ५३, औप) । शब्द-विशेष, त्रिशूल (पण १, १—पत्र १८, कुमा) । २ रोग-विशेष (प्रासू १०५) । ४ ववूल आदि का तीक्ष्ण अग्र भागवाला काँटा

(कुप्र ३७) । पु व. देश-विशेष (पठम ६८, ६५) । °पाणि पु [°पाणि] यज्ञ-विशेष (कर्म ५) । °वर पु [°वर] मित्र, महादेव (पिण) ।

सूलच्छ न [°दे] पल्लव, छोटा तालाव (दे ८, ४२) ।

सूलधारी स्त्री [°दे] चण्डी, पावती (दे ८, ४०) ।

सूला स्त्री [शूला] शूली सुतीक्ष्ण साह-कटक (गा ६५, उप ३३६ टी, धर्मवि १२३) । °डय वि [°चित, °निग] शूली पर चढ़ाया हुआ (एया १, ६—पत्र १५७ १६३, राय १३४) ।

सूला स्त्री [°दे] बेश्या, वारागना (दे ८, ४१) ।

सल्लि वि [शूलिन] १ शूल-रोगवाला, 'जह विदल मूलोण' (वि ३) । २ पुं शिव, महादेव (पाम्म) ।

सूलिका स्त्री [शूलिका] शूली, जिसपर वध्य को चढ़ाया जाता है (पण १, १—पत्र ८) ।

सूय पु [सूप] दाल (उवा, ओव ७१४, चार ६ पिड ६२४ पचा १०, ३७) । °यार, °र पु [°कार] रमोइया, रमोइ बनानेवाला नौकर (पठम ११३, ७, सुर १६, ३८, उप ३०२) ।

सूम अक [शुप्] सूखना । सूसइ, सूसठि, सूमइरे (हे ४, २३६, प्राकृ ६८, कुमा ३७४, हे ३, १४२) ।

सूमर वि [सुस्वर] १ सुन्दर आवाजवाला (सुर १६, ४६) । २ न नामकर्म का एक भेद, जिसमे सुन्दर स्वर की प्राप्ति हो वह कर्म (धर्मसं ६२०, श्रावक २३, कम्म २, २२) । °परिवादिणी स्त्री [°परिवादिनी] एक तरह की वीणा (पण २, ५—पत्र १४६) ।

सूसास वि [सोच्छ्वास] ऊर्ध्वं स्वासवाला (हे १, १५७, कुमा) ।

सूमिय वि [शोपित] सुखाया हुआ (सुर १५, २४८) ।

सुवम्भण पु [सुवम्भण] प्रशस्त विप्र (पि २५०) ।

सुवद्ध वि [सुवद्ध] अन्धो तरह देवा हुआ (उव) ।

सुवल पु [सुवल] १ मोम-वश का एक राजा (पउम ५, ११) । २ पहले वनदेव का पूर्व-जन्मीय नाम (पउम २०, १६०) ।

सुवल्लिट्ठ वि [सुवल्लिट्ठ] अतिशय बलवान् (धु ८८) ।

सुवहु वि [सुवहु] अति प्रभूत (उव) ।

सुवहुल वि [सुवहुल] ऊपर देखो (कप्पु) ।

सुवाहु पु [सुवाहु] १ एक राज-कुमार (विपा २, १—पत्र १०३) । २ श्री रुक्मिराज की एक कन्या (गाया १, ८—पत्र १४०) ।

सुवुद्धि लो [सुवुद्धि] १ सुन्दर प्रजा (श्रा १४) । २ पुं राम-भ्राता भरत के साथ दीदा लेनेवाला एक राजा (पउम ८५, ३) । ३ एक मन्त्री (महा) ।

सुव्भ वि [सुव्भ] १ सफेद, श्वेत (मुपा ५०६) । २ न एक प्रकार की चाँदी (राय ७५) ।

सुव्भ न [शौभ्रय] सफेदी, श्वेतता (संवीष ५२) ।

सुव्भि पुं [सुरभि] १ सुगन्ध, खुशबू (सम ४१, भग, गाया १, १२) । २ वि. सुगन्धी, सुगन्ध-युक्त (उत्त ३६, २८, आचा १, ६, २, ३) । ३ मनोहर, मनोज्ञ, सुन्दर (गाया १, १२—पत्र १७४) ।

सुव्भिक्ख न [सुभिक्ख] मुकाल (मुपा ३५८) ।

सुव्भु लो [सुव्भु] नारी, महिला (रमा) ।

सुभ पु [शुभ] १ भगवान् पार्श्वनाथ का प्रथम गणवर (ठा ८—पत्र ४२६, सम १३) । २ भगवान् नमिनाथ का प्रथम गणवर (मम १५२) । ३ एक मुहूर्त (पउम १७, ८२) । ४ न नाम कर्म का एक भेद (सम ६७, कम्म १, २६) । ५ मंगल, कर्याण । ६ वि. मंगल-जनक, मांगलिक, प्रशस्त (कप्प, भग, कम्म १ ४२, ८३) । ७ घोस पु [घोष] भगवान् पार्श्वनाथ का द्वितीय गणवर (मम १३) । ८ शुभस्म पु [शुभस्म] राक्षस-वश का एक राजा (पउम ५, २६२) । देखो सुह = शुभ ।

सुभकर न [शुभकर] वरुण नामक लोकान्निव देवो का विमान (राज) । देखो सुहकर ।

सुभग वि [सुभग] १ आनन्द-जनक (कप्प) । २ सौभाग्य-युक्त, वल्लभ, जन-प्रिय (मुज्ज २०) । ३ न पद्म-विशेष (नूअ २, ८, १८, राय ८२) । ४ कर्म-विशेष (सम ६७, कम्म १, २६, ५०, धर्मस ६०० टी) ।

सुभगा लो [सुभगा] १ लता-विशेष (परण १—पत्र ३३) । २ गुरुप नामक भूतेन्द्र की एक पटरानी (ठा ४, १—पत्र २०४ गाया २—पत्र २५३ इक) ।

सुभग्ग वि [सुभग्ग] भाग्य-शाली, जिमवा भाग्य अच्छा हो वह (उव ०३१ टी) ।

सुभड देखो सुहड (नाट—मालती १३८) ।

सुभणिय वि [सुभणित] वचन कुशल (उव) ।

सुभद्द पु [सुभद्द] १ इक्ष्वाकु-वश का एक राजा (पउम २८, १३६) । २ हमरे वामुदेव तथा बलदेव के धर्म-गुरु (सम १५३) । ३ पुन एक देव-विमान (देवेन्द्र १४१) । ४ ४ नगर-विशेष (उप १०३१ टी) ।

सुभद्दा लो [सुभद्दा] १ दूसरे बलदेव की माना (सम १५२) । २ प्रथम लो-रत्न, भरत चक्रकर्त्ता की अग्र-महिषी (मम १५२) । ३ बलि नामक इन्द्र के मोम आदि चारो लोक-पालो की एक-एक अग्रमहिषी का नाम (ठा ४, १—पत्र २०४) । ४ भूतानन्द आदि इन्द्रो के कालवाल नामक लोकपाल की एक-एक अग्र-महिषी का नाम (ठा ४, १—पत्र २०४) । ५ प्रतिमा-विशेष, एक व्रत (ठा ४, १—पत्र २०४) । ६ राम के भाई भरत की पत्नी (पउम २८, १३६) । ७ राजा कोणिक की लो (श्रीप) । ८ राजा श्रेणिक की एक लो (अत २५) । ९ एक सती लो (पडि) । १० एक सार्थवाह-पत्नी (विपा १, २—पत्र २२) । ११ जम्बुवृक्ष-विशेष, जिससे यह द्वीप जव द्वीप कहलाता है (इक) ।

सुभय देखो सुभग (भग १२, ६—पत्र ५७८) ।

सुभरिय वि [सुभृत] अन्धो तरह भरा हुआ, भरपूर, परिपूर्ण (उव) ।

सुभा लो [शुभा] १ वैरोचन बलीन्द्र की एक अग्र-महिषी (ठा ५ १—पत्र ३०२) । २

एक विजय-क्षेत्र (ठा २, ३—पत्र ८०) । ३ रात्रण की एक पत्नी (पउम ७४, १) ।

सुभासिय देखो सुहासिय (उत्त २०, ५१, दन ६ १ १७) ।

सुभासिर वि [सुभासित] सुन्दर बोलने-वाला । लो [रा] (मुपा ५६८) ।

सुभिकख देखो सुत्थिकख (उव, सार्ध ३६) ।

सुभच्च पु [सुभृत्] अच्छा नौकर (मुपा ४६५ ह ४, ३३८) ।

सुभाम वि [सुभीम] अति भयकर (मुर ७ २३३) ।

सुभीसण पुं [सुभीपण] रावण का एक मुन्ट (पउम ५६, ३१) ।

सुभूम पु [सुभूम] १ भारतवर्ष में उत्पन्न आठवाँ चक्रवर्त्ती राजा (ठा २, ४—पत्र ६६) । २ भारतवर्ष के भावी दूसरा कुलकर पुरुष (सम १५३) । भगवान् अमरनाथ का प्रथम श्रावक (विचार ३७८) ।

सुभूमण पु [सुभूपण] विभीषण का एक पुत्र (पउम ६७, १६) ।

सुभोगा लो [सुभोगा] शघोलोक में रहने वाली एक दिक्कुमारी देवी (ठा ८—पत्र ४३७, इक) ।

सुभो ण न [सुभोजन] व्रत विशेष, एकाग्रान तप (संवीष ५८) ।

सुभ न [सुभ] पुष्प, फूल (सम्मत्त १६) । १ मर पु [गर] कामदेव (रंभा) ।

सुवइ पु [सुमति] १ पाँचवाँ जिन भगवान् (मम ४३) । २ ऐरवत क्षेत्र में होनेवाला दमवाँ कुलकर पुरुष (सम १५३) । ३ एक जैन उपासक (महानि ४) । ४ वि शुभ बुद्धि वाला (गडड) । ५ पु एक नैमित्तिक विद्वान् (मुर ११, १३२) ।

सुमगल पु [सुमङ्गल] ऐरवत वर्ष में होने वाले प्रथम जिनदेव (मम १५४) ।

सुमगला लो [सुमङ्गला] १ भगवान् ऋषभ-देव की एक पत्नी (पउम ३, ११६) । २ मयवंशीय राजा विजयसागर की पत्नी (पउम ५ २) ।

सुमग्ग पु [सुमार्ग] अच्छा रास्ता (मुपा ३३०) ।

जिसने भगवान् आदिनाथ को द्यु-रस से प्रथम पारणा कराया था (कप्प, कुप्र २१२) । ३ मार्गशीर्ष मास का लोकोत्तर नाम (मुज १०, १६) । ४ भगवान् महावीर का पिता, राजा सिद्धार्थ (आचा २ १५, २) । देखो सिज्जस, जेअम = श्रेयास ।

सेज्जम देवो जेअस = श्रेयस् (आवम) ।

सेज्जा स्त्री [जय्या] १ मेज, विछौना (से १, ५७, कुमा) । २ मकान घर, वसति, उपाश्रय (पव १ २ मुख १, १५) । ३ यर पु [तर] गृह-स्वामी, उपाश्रय का मानिक, साधु को रहने के लिए स्थान देनेवाला गृहस्थ (ओघ २५२, पव ११२, पचा १७, १७) । ४ बाल पु [पाल] जय्या का काम करनेवाला चाकर (मुपा ५८७) । देखो मिज्जा ।

सेज्जारिअ न [दे] अन्दोलन, हिंडोले में झूलना (दे ८, ४२) ।

सेट्टि पु [द श्रिट्ठि] गाँव का मुखिया, मेठ, महाजन (दे ८, ८२, मम ५१, णाया १, १—पत्र १६, उवा) ।

सेडिय न [दे] वृण-विशेष (पण १—पत्र ३२) ।

सेडिया स्त्री [दे सेटिका] सफेद मिट्टी, खडी (आचा २, १, ६, ३) ।

सेडि स्त्री [श्रेणि] देखो सेडी = श्रेणी (सुर ३, १७, ५, १६६) ।

सेडिया, देखो सेडिया (दस ५, १, ३४, सेडी) जो ३) ।

सेडी स्त्री [श्रेणी] १ पक्ति (सम १४२, महा) । २ राशि (अणु) । ३ असह्य योजन-कोटाकोटी की एक नाप (अणु १७३) । देखो सेणि ।

सेण पु [श्येन] १ पक्षि-विशेष (पउम ८, ७६, दे ७, ८४, वै ७४) । २ विद्याधर-वश का एक राजा (पउम ५, १५) ।

सेण देखो सेण्ण, 'मण्णारवइणो मण्णे मरति मेण्णइ इदियमयाई' (आरा ६०) ।

सेणा स्त्री [सेना] १ भगवान् संभवनायकी की माता (मम १५१) । २ लश्कर, सैन्य (कुमा) । ३ एक जैन माव्वी, जो महर्षि स्थूलभद्र की बहिन थी (कप्प, पडि) । ४ वह

लश्कर जिसमें ३ हाथी, ३ रथ, ६ घोड़े और १५ प्यादे हो (पउम ५६, ५) । ५ णिय, णी, णंय पु [नी] मेना-यति, लश्कर का मुखिया, 'मेणाणिओवि ताहे छेतूण जिणोसरं मुखइस्स' (पउम ३ ७७, मुपा ३००, धर्मवि ८४, पउम ६४, २०) । ६ मुह न [मुख] वह मेना जिसमें ६ हाथी, ६ रथ, २७ घोड़े और ४५ प्यादे हो (पउम ५६, ५) । ७ वड पु [पति] मेना का मुखिया, मेना-नायक (कप्प, पउम ३७, २, सम २७, मुपा २५५) । ८ हिंवि पु [धिपति] वही पूर्वोक्त अर्थ (मुपा ७३) । सेणावच्च न [सेनापत्य] सेनापतिपन, सेना का नेतृत्व (कप्प, आ०) ।

सेणि स्त्री [श्रेणि] १ पक्ति । २ समूह (महा) । ३ कुम्भकार आदि मनुष्य-जाति (णाया १, १—पत्र ३७) ।

सेणिअ पु [श्रेणिक] १ मगध देश का एक प्रख्यात राजा (णाया १, १—पत्र ११, ३७, ठा ६—पत्र ४५५ सम १५४, उवा, अंत, पउम २, १५, कुमा) । २ एक जैन मुनि (कप्प) ।

सेणिआ स्त्री [सेणिका] एक जैन मुनि-शाखा (कप्प) ।

सेणिआ } स्त्री [सेनिका] छन्द का एक
सेणिका } भेद (पिग) ।

सेणिग देखो सेणिअ (सवोव ३५) ।

सेणिग पु [सैनिक] लश्करी सिपाही (स ३८१) ।

सेणी स्त्री [श्रेणी] देखो सेणि (महा, णाया १, १) ।

सेण्ण देखो सिन्न = नेन्य (णाया १, ८—पत्र १४६, गउड) ।

सेत्त देखो सिन्न = सिक्त (कुप्र १६) ।

सेत्त (अप) देखो सेअ = श्वेत (पिग) ।

सेत्तुज पु [शत्रुञ्जय] एक प्रसिद्ध पर्वत (णाया १, १६—पत्र २२६, अत) ।

सेद देखो सेअ = स्वेद (दे ४, ३४, स्वप्न २६) ।

सेध देखो सेह = सेह (जीव २—पत्र ५२) ।

सेन्न देखो सिन्न = मैन्य (दे १, १५०, कुमा, सण, सुर १२, १०८ टि) ।

सेप्फ } देखो सेम्ह (हे २, ५५, पड, कुमा,
सेफ } प्राकृ २०) ।

सेफ पुन [शेफ] पुष्प-चिह्न, लिंग (प्राकृ १४) ।

सेभालिआ स्त्री [शेफालिका] लता-विशेष (हे १, २३६, प्राकृ १४) ।

सेमुमी } स्त्री [शेमुपी] मेघा, बुद्धि (राज,
सेमुही } उप पृ ३३३, हम्मोर १४, २२) ।

सेम्ह पुस्त्री [श्लेष्मन्] कफ, सेम्हा गर्द' (प्राकृ २२ पि २६७) ।

सेर वि [स्वेर] स्वच्छन्दी, स्वतन्त्र, स्वच्छ (स्वप्न ७७, विक्र ३७) ।

सेर वि [स्मेर] विकन्धर (हे २, ७८, कुमा) ।

सेर पु [दे] नेर, परिमाण-विशेष (पिग) ।

सेरवी स्त्री [मैरन्त्री] स्त्री-विशेष, प्रत्य के घर में रहकर शिल्प-कार्य करनेवाली स्वतन्त्र स्त्री (कप्प) ।

सेराह पु [दे] अश्व की एक उत्तम जाति (सम्मत २१६) ।

सेरिभ पु [दे] धुयं वृषभ, गाड़ी का बैल (दे ८, ४४) ।

सेरिभ देखो सेरिह (सुख ८, १३, दे ८, ४४ टी) ।

सेरिय पु स्त्री [दे] वाद्य-विशेष, 'करडिभम-सेरियहुक्कहि' (सण) ।

सेरियय पु [दे] गुल्म-विशेष (पण १—पत्र ३२) ।

सेरिह पु स्त्री [सैरिभ] भैंसा, महिष (गा १७२, ७४२, नाट—मृच्छ १३५) । स्त्री. ही (पाप्र) ।

सेरी स्त्री [दे] १ लम्बी आकृति । २ नद्र आकृति (दे ८, ५७) । ३ रथ्या, मुहल्ला (सिरि ३१८) । ४ यन्त्र निमित्त नर्तकी (राज) ।

सेरीस पुन [सेरीश] एक गाँव का नाम (तो ११) ।

सेल पु [शैल] १ पर्वत, पहाड़ (से २, ११, प्राप्र, सुर ३, २२६) । २ पाषाण, पत्थर (उप १०३१) । ३ न पत्थरों का समूह (सि ६, ३१) । ४ कार पु [कार] पत्थर घटने-वाला शिल्पी, शिलावट (अणु १४६) । ५ गिह न [गृह] पर्वत में बना हुआ घर (कप्प) । ६ जाया स्त्री [जाया] पार्वती

स्त्री [तरङ्गिणी] गंगा नदी (मण) । तुरु देखो अरु (मण) । ताण पुं [त्राण] यवननृप, मुलतान (तो १५) । तारु न [टारु] देवदार की लकड़ी (स ६३३) । धसी स्त्री [धमिनी] विद्या विशेष (पउम ७, १३७) । धणु, धणुह न [वनुप्] इन्द्र-धनुष (कुमा, मण) । नई देखो णई (श्रु ७७) । नाह देखो णाह (सण) । पहु पुं [प्रभु] इन्द्र, देव-राज (मुपा ५०२, उप १४२ टी, मण) । पुर न [पुर] देव-पुरी, अमरावती, स्वर्ग (पउम ५०, १ मण) । पुरी स्त्री [पुरी] वही अर्थ (पाप्र, कुमा) । पिअ पुं [प्रिय] एक यक्ष (अत) । वदी स्त्री [वन्दी] देवी, देव-स्त्री (मे ६, ५०) । भवण न [भवन] देव-प्रासाद (भग, सण) । मनि पुं [मान्न] बृहस्पति (मुपा ३२६) । मंदिर न [मन्दिर] १ देहरा, मन्दिर (कुप ४) । २ देव-विमान (सण) । मुणि पु [मुनि] नारद मुनि (पउम ६०, ८) । रमण न [रमण] रावण का एक बगीचा (पउम ४६, ३७) । राय पुं [राज] इन्द्र (मुपा ८५, सिरि २४) । रिउ पु [रिपु] दैत्य, दानव (पाप्र) । लोअ पु [लोक] स्वर्ग (महा) । लाइय वि [लौकिक] स्वर्गीय (पुष्क २५८) । लोग देखो लाअ (पउम ५२, १८) । वड पुं [पति] १ इन्द्र, देव-राज (पाप्र, मुपा ४४, ४८, ८८, ४०२) । २ इन्द्र नामक एक विद्यावर-नरेश (पउम ७, २७) । वण पु [वर्ण] एक देव विमान (सम १०) । ववू देखो वहु (पि ३८७) । वन्नी स्त्री [वर्णा] पुंनाग वृक्ष (पाप्र) । वर पु [वर] उत्तम देव (भग) । वरिद पु [वरिन्द्र] इन्द्र, देव-राज (श्रा ७) । वहु स्त्री [व्यू] देवाङ्गना, देवी (कुमा) । वारण पुं [वारण] ऐरावण हस्ती (उप २११ टी) । सगीय न [सगीत] नगर-विशेष (पउम ८, १८) । सरि स्त्री [सरित्] भागीरथी, गङ्गा नदी (गउड, उप ५ ३६, मुपा ३३, २८६) । सिहरि पु [शिहरिन्] मेरु पर्वत (सण) । सुदर पु [सुन्दर] रथचक्रवाल-नगर का एक ११६

विद्यावर-नरेश (पउम ८, ४१) । सुदरी स्त्री [सुन्दरी] १ देव-वधू, देवाङ्गना (मुर ११, ११५, मुपा २०८) । २ एक राज-पुत्री (मुर ११—१४३) । ३ एक राज-कुमारी (मिरि ५०) । सुरहि स्त्री [सुरभि] काम-धेनु (रयण १३) । सेल पु [शैल] मेरु-पर्वत (मुपा १३) । हस्थि पु [हस्तिन्] ऐरावण हाथी (मे ६, ६) । उह न [युव] वज्र (पाप्र) । देव पुं [देव] एक आरक का नाम (उवा) । दिनी स्त्री [दिनी] पश्चिम रुक्क पर रहनेवाली एक दिशा-कुमारी देवी (ठा ८—पत्र ४-६, इक) । रि पु [रि] राक्षसवध का एक राजा, एक लंका-पति (पउम ५, २६२) । लय पुन [लय] स्वर्ग (पाप्र, सूत्र १, ६, ६, मुपा ५६६) । हिराय पु [विराज] इन्द्र (उप १४२ टी) । हिव पु [विप] इन्द्र (से १५, ५३) । हिवइ पु [विपति] वही (मुपा ४६) ।

सुरइ स्त्री [सुरति] सुख (पएह १, ४—पत्र ६८) ।

सुरइय वि [सुरचित] अच्छी तरह किया हुआ (पएह १, ४—पत्र ६८) ।

सुरंगणा स्त्री [सुराङ्गना] देव-वधू (मुपा २४६) ।

सुरगा स्त्री [सुरङ्गा] सुरग, जमीन के भीतर का मार्ग (उप ५ २६, महा, मुपा ४५४) ।

सुरंगि पुं स्त्री [दे] वृक्ष-विशेष, शिपु वृक्ष, सहिजना का गाछ (दे ८, ३७) ।

सुरजेद पु [दे] वरुण देवता (दे ८, ३१) ।

सुरद पु व [सुराट्ट] एक भारतीय देश जो आजकल काठियावाड़ के नाम से प्रसिद्ध है (एया १, १६—पत्र २०८, हे २, ३४, पिड २०२) ।

सुरणुचर वि [स्वनुचर] मुख में करने योग्य (ठा ५, १—पत्र २६६) ।

सुरत १ देखो सुरय (पउम १६, ८०, सखि सुरद १, ६, प्राक १२) ।

सुरभि पुं स्त्री [सुरभि] १ वमन्त ऋतु । २ स्त्री गौ, गैया (कुम्मा १४) । ३ वि सुगन्ध-युक्त, सुगंधी (मम ६०, गा ८६१, कप्प,

कुम्मा १४) । ४ पुंन. एक देव-विमान (देवेन्द्र १८०) । गव वि [गन्ध] सुगन्धी (आचा) । पुर न [पुर] नगर-विशेष (राज) । देखो सुहि ।

सु-सगीय वि [सुर-सगीय] श्रद्धन्त मनोहर (मुर ३, ११२) ।

सुरम्म वि [सुरम्म] ऊपर देखो (श्रीव) ।

सुरय न [सुरत] मैथुन, स्त्री-संभोग (मुर १३, २०, गा १५५, काप्र ११३) ।

सुरयण न [सुरन्] सुन्दर रत्न (मुपा ३२७) ।

सुरयणा स्त्री [सुरयणा] सुन्दर रचना (मुपा ३२) ।

सुरस वि [सुरस] १ सुन्दर रसवाला (एया १, १०—पत्र १७४) । २ न. वृण विशेष (दे १, ५४) । लदा स्त्री [लता] तुलसी-लता (दे ५, १४) ।

सुरसुर पु [सुरसुर] वृत्ति-विशेष, 'सुर सुर' आवाज (श्रीव २८) ।

सुरसुर अक [सुरसुराय्] 'सुर सुर' आवाज करना । वहु सुरसुरत (गा ७४) ।

सुरह सक [सुरभय्] सुगन्धित करना । सुरहेइ (कुमा, प्रासू ६) ।

सुरह पुन [मौरभ] सुन्दर गन्ध, वृक्ष, 'गवोव्विअ मुरहो मालईइ मलय पुण विणासो' (मत्त १२१) ।

सुरह पु [सुरथ] माकेतपुर का एक राजा (महा) ।

सुरहि पुं स्त्री [सुरभि] १ वसंत ऋतु (रमा, पाप्र, कप्प) । २ चैत्र मास (गा १०००) । ३ वृक्ष-विशेष, शतदु वृक्ष (आचा २, १, ८, ६) । ४ स्त्री गौ, गैया (रयण १३, धर्मवि ६५, पाप्र, प्रासू १६८) । ५ न नाम कर्म का एक भेद, जिसके उदय से प्राणी के शरीर में सुगन्ध उत्पन्न होती है (कम्म १, ४१) ।

६ वि. सुगन्ध-युक्त (उवा, कुमा, गा ३१७, ३६६, मुर ३, ३६, हे २, १५५) । देखो सुगभ

सुरा स्त्री [सुरा] मदिरा, दारु (उवा) । रस पु [रस] सप्टद्र-विशेष (दीव) ।

सुरिद पु [सुरेन्द्र] १ इन्द्र, देव-स्वामी (मुर २, १५३, गउड, मुपा ४४) । २ एक

सेहणा स्त्री [शिञ्जणा] शिञ्जा, नजा, कदर्यना,
'वहवचमारणमेहणाओ काओ परिगाहे नत्थि'
(उव) ।

सेहर पु [जेहर 'शिवा फनसेहरा' (पिड
१६७ पात्र) । २ छन्द-विशेष (पिग) । ३
मन्त्र-न्यस्त माता (कुमा) ।

सेहरय पु [जे] चक्रदार पत्नी (दे ८, ८३) ।
सेहान्तिआ देवी सेहान्तिआ (स्वप्न ६३,
गा ८१२ कुमा, ह १, २३६) ।

सेहाली स्त्री [जेफाली] नता-विशेष (दे
५, ४) ।

सेहाय देवा सेह = शिञ्जय् । मेहायेड (पि
३२३) । भवि, मेहावेत्ति (श्रौप) । नकु
मेहावेत्तः (पि ५८२) । हेकु मेहावेत्तए
(कम) । क. मेहावेयव्य (भक्त १६८) ।

सेहाविअ वि [शिञ्जित] मिखाया हुआ
(भग, राया १, १—पत्र ६ पि ३२३) ।

सेहि देखो मिद्व (आचा) ।

सेहिअ वि [मेद्वरु] १ मुक्ति-सम्बन्धी । २
निष्पत्ति-सम्बन्धी (सूत्र १ १ २, २) ।

सेहिऊ वि [दे] गत, गया हुआ (दे ८, १) ।

सो नक [सु] १ दाह बनाना । २ पीडा
करना । ३ मन्थन करना । ४ श्रक स्नान
करना । सोड (पड्) ।

सो { श्रक [स्वप्] मोना, सूतना । मोड,
सोअ } मोअइ (घात्वा १५७ प्राकृ ६६) ।

सोअ मरु [शुच्] १ शोक करना । २ शुद्धि
करना । सोअइ, मोएइ मोइति सोयति (मे
१, ३८, ह ३, ७०, आचा, अरुम १७४,
१७५, सूत्र २, २, ५५) । वहु सोइत,
मोएत (उप १८६ टी, पत्रम ११८ ३५) ।
क्वहु, मोइज्जत (नए) । क. सोअगिज्ज,
सोअणीअ, मोइयव्य (अभि १०५, सूक्त
४७, पत्रम ३०, ३५) । देखो सोच = शुच् ।

सोअ न [शौच] १ शुद्धि, पवित्रता, निर्मलता
(आचा, श्रौप, सुर २, ६२, उप ७६८ टी,
सुपा २८) । २ चोरी का भभाव, परद्रव्य
का अहरण (नम १२०, नव २३, था ३१) ।

सोअ पुं [शोक] अफमोम, दिलगीरी (सुर
१, ५३, गउड, कुमा, महा) ।

सोअ न [श्रोत्र] कान, श्रवणेन्द्रिय (आचा,
भग, श्रौप, सुर १ ५३) । १ मय वि [मग]
श्रोत्रेन्द्रिय-जन्य (ठा ०—पत्र ४७६) ।

सोअ पुंन [स्नेहम] १ प्रवाह (आचा,
गा ६६२) । २ छिद्र (श्रौप) । ३ वेग (राया
१, ८) ।

सोअण न [स्वपल] शयन (उव) ।

सोअग न [न न] १ शोक, दिलगीरी
(सूत्र २, २, ५५, संवेव ८६) । २ शुद्धि,
प्रक्षालन (म ३४८) ।

सोअणया, स्त्री [ताचना] १ ऊपर देखो
सोअणा । (श्रौप, अरुम १७८) । २
दीनता, दैन्य (ठा ४ १—पत्र १८८) ।

सोअमह न [स्नेहम] मुकुमारता, अति-
कोमलता (हे १, १०७, प्राप्र, कुमा) ।

सोअर पु [सोदर] मगा भाई (प्रवो २६,
सुपा १६३, रभा) ।

सोअरा स्त्री [सोदरा] मगी बहन (कुमा) ।

सोअरिअ वि [शौकरिक] १ शूकरो का
शिकार करनेवाला (विपा १, ३—पत्र ५४) ।
२ शिकारी, मृगया करनेवाला । ३ कमाई
(पिड ३१४, उव, सुपा २१४) ।

सोअरिअ वि [सोअये] सहोदर, एक उदर
से उत्पन्न (सूत्र १, १, १, ५) ।

सोअह देखो सोअमह (सझि २) ।

सोअविय स्त्रीन [शौच] शुद्धि, पवित्रता (सूत्र
२, १, ५७) । स्त्री. ०या (आचा) ।

सोअव्य देखो सुण = शु ।

सोआमणी स्त्री [सोआमनी, ०मिनी] १
सोआमिणी विद्युत, विजली (उत्त २२,
७, पत्रम ७४, १४, स १२, महा, पात्र) ।
२ एक दिक्कुमारी देवी (इक ठा ४, १—पत्र
१६८) ।

सोइअ न [ओचिन] चिन्ता, विचार (सुर
८, १४, सुपा २६६) । देखो सोनिय ।

सोइदिय न [श्रोत्रेन्द्रिय] श्रवणेन्द्रिय, कान
(भग) ।

सोइधिअ देखो सोर्गाध (इक) ।

सोड वि [श्रोत्र] सुननेवाला (म ३, प्रासू २) ।

सोडणिअ देखो सोवणिअ (सूत्र २, २, २८,
पि १५२) ।

सोडमह देखो सोअमह (अभि २१३, सुर
८, १२५) ।

सोड देखो मुंड (पात्र) । ०मगर पुं [०मगर]
मगर की एक जाति (पएण १—पत्र ४८) ।

सोडा स्त्री [शुण्डा] १ मुरा, दाह (आचा
२, १, ३, २) । २ हाथों की नाक, मुँह
(उवा) ।

सोडिअ पुं [शौण्डिक] दाह देनेवाला,
कलत्रार (अभि १८८) ।

सोडिया स्त्री [शुण्डिका] दाह का पात्र-
विशेष (ठा ८—पत्र ४१७) ।

सोडोर वि [शौण्डोर] १ शूर, वीर, पराक्रमी
(कप्प, सुर २, १३४, सुपा ७०) । २ गर्व-
युक्त, गर्वित (महा) ।

सोडोर न [शौण्डोर्य] १ पराक्रम, शूरता ।
२ गर्व (हे २, ६३, पड) ।

सोडोरिम पुत्री [शौण्डोरिमन] ऊपर देखो
(सुपा २६२) ।

सोडज्ज (शौ) देखो मुदेर (पि ८४) ।

सोक्क देखो मुक्क = शुक्क (पड्) ।

सोक्ख देखो सुक्ख = सौख्य (प्राकृ १०, गा
१५८, सुपा ७०, कुमा) ।

सोक्ख देखो सुक्ख = शुक्क (पड्) ।

सोग देखो सोअ = शोक (पत्रम २०, ४५,
सुर २, १८०, स २५५, प्रासू ८३, उव) ।

सोगव } न [सौगन्ध] १ लगातार
सोर्गाध } चौबीस दिनों के उपवास (संवेव
५८) । २ सुगन्धिपत्र, सुगन्ध, 'सौगन्धिय-
परिकलिय तवोल' (मम्मत्त २२०) ।

सोर्गाध न [सौगन्धिक] १ रत्न-विशेष,
रत्न की एक जाति (राया १, १—पत्र ३१,
पएण १—पत्र २६, उत्त ३६, ७७, कप्प,
कुम्मा १५) । २ रत्नप्रभा नामक नरक-
पृथिवी का एक सौगन्धिक-रत्न-मय काण्ड
(सम ८६) । ३ कड़ार, पानी में होनेवाला
श्वेत कमल (सूत्र २, ३, १८, राय ८२) ।
४ पु. नपुसक का एक भेद, अपने लिंग को
सूँघनेवाला नपुसक (पव १०६, पुष्प १२८) ।
५ पु. न एक देव-विमान (देवेन्द्र १४२) ।
६ वि. सुगन्धवाला, सुगन्धी (उवा, सम्मत
२२०) ।

सुवन्न न [सुवर्ण] १ सोना (स ५०, प्रासू २, कुप्र १, कुमा) । २ वि सुन्दर अक्षरवाला (कुप्र १) । ३ कुमार पु [कुमार] मनपति देवों की एक जाति (भग, सम ८३) । ४ कूतप्पवाय पुं [कूलप्रपात] एक ह्रद जहाँ से सुवर्णकूला नदी बहती है (ठा २, ३—पत्र ७२) । ५ गार पु [कार] सोनी (गाया १, ८—पत्र १४०, उप पृ ३५३) । ६ जूहिया बी [यूथिका] लता-विशेष (पण १७—पत्र ५२६) । ७ गार देखो गार (सुपा ५६५) । देखो सुवर्ण = सुवर्ण ।

सुवन्न वि [सौवर्ण] सोने का बना हुआ (कुप्र ४) ।

सुवन्नलुगा बी [दे] दतवन करने का पात्र—लोटा आदि (कुप्र १/०) ।

सुवप्प पुं [सुवप्र] एक विजय-क्षेत्र (ठा २, ३—पत्र ८०) ।

सुवयण न [सुवचन] सुन्दर वचन (भग) ।

सुवर { (अप) देखो सुमर । सुवरद, सुवरहि सुवर } (भवि, पि २५१) ।

सुवहु देखो सुवहु (प्राप) ।

सुवाय पुंन [सुवात] एक देव-विमान (सम १०) ।

सुवास पुं [सुवर्ष] १ सुन्दर वृष्टि (उप ८४६) । २ छन्द-विशेष (पिंग) ।

सुवासणी देखो सुवामिणी (धर्मवि १२३) ।

सुवासव पुं [सुवामव] एक राज-कुमार (विपा २, ४) ।

सुवासिणी बी [दे सुवामिनी] जिसका पति जीवित हा बंद बी (सिरि १५६) ।

सुवाहा अ [स्वाहा] देवता को हविष आदि अर्पण का सूचक अव्यय (सिरि १६७) ।

सुविआज्जअ वि [सुव्यजित] विशेष रूप से उपाजित (तदु ५६) ।

सुविअद्ध वि [सुविदग्ध] अत्यन्त चतुर (नाट—रत्ना ६) ।

सुविश्य वि [सुवदित] अच्छी तरह ज्ञात (उव, सुपा ४०४) ।

सुविउ वि [सुविद] अच्छा जानकार (श्रा २८) ।

सुविउल वि [सुविपुल] अति विशाल (उव) । सुविद्धम पुं [सुविद्धम] भूतानन्द नामक इन्द्र के हस्ति मैत्र्य का अधिपति (ठा ५, १—पत्र ३०२, इक) ।

सुविक्खाय वि [सुविख्यात] सुप्रसिद्ध (सुर ६, ६०) ।

सुविगा बी [सुमिका, शुकी] मैना (उप ६७३, ६७५) ।

सुविज्जा बी [सुविद्या] उत्तम विद्या (प्रासू ५३) ।

सुविण देखो सुमिण (सुर ३, १-१, महा-रंभा) । २ नु वि [ज] स्वप्न-शास्त्र का जानकार (उप पृ ११६, सुर १०, ६८) ।

सुविणट्ट वि [सुविनट्ट] विलकुल नष्ट (गा ७४०) ।

सुविणिच्छिय वि [सुविनिश्चित] अच्छी तरह निर्णीत (उव) ।

सुविणिम्मिय वि [सुविनिमित] अच्छी तरह बनाया हुआ (गाया १, १—पत्र १२) ।

सुविणीय वि [सुविनीत] १ अतिशय दूर किया हुआ (उत्त १, ४७) । २ अत्यन्त विनय-युक्त (दम ६, २, ६) ।

सुवित्त न [सुवृत्त] अत्यन्त गोलाकार । २ सदाचार, अच्छा आचरण (सुर १, २१) ।

सुवित्थड वि [सुविस्त्त] अति विस्तारयुक्त (अजि ४०, प्रासू १२८, द्र ८८) ।

सुवित्थिन्न वि [सुविस्तीर्ण] ऊपर देखो (सुर १, ४५, १२, १) ।

सुविधि देखो सुविहि (सम ४३) ।

सुविभज्ज वि [सुविभज] जिसका विभाग अनायाम हो सके वह (ठा ५, १—पत्र २६६) ।

सुविभत्त वि [सुविभक्त] अच्छी तरह विविक्त (गाया १, २ टी—पत्र ५, औप, भग) ।

सुविमिहअ वि [सुविस्मित] अतिशय आश्चर्यान्वित (उत्त २०, १३) ।

सुवियक्खण वि [सुविचक्षण] अति चतुर (सुपा १५०) ।

सुवियाण न [सुविज्ञान] अच्छा ज्ञान, सुन्दर जानकारी, पहिटाई (सद्धि १६) ।

सुविर वि [स्वपृ] स्वपन-शील, सोने की आदतवाला (ओघभा १३३, दे ८ ३६) ।

सुविरइय वि [सुविराचत] अच्छी तरह घटित, सुघटित (उवा २०६) ।

सुविराडय वि [सुविराजन] सुशोभित (सुपा २१०) ।

सुविराहिय वि [सुविरावित] अतिशय विराधित (उव) ।

सुविलास वि [सुविलास] सुन्दर दिलासवाला (सुर ३, ११४) ।

सुविवेइय वि [सुविवेचन] सम्यग् विवेचित (उव) ।

सुविवेच सक [सुवि + विच्] अच्छी तरह व्याख्या करना । सक सुविवेचित (य) (धर्मस १३११) ।

सुविसट्ट वि [सुविकसित] अच्छी तरह विकसित (सुर ३, १११) ।

सुविसत्थ पु [दे] व्यभिचारी पुरुष (वजा ६८) ।

सुविसाय पुंन [सुविसात] एक देव-विमान (सम ३८) ।

सुविहाणा बी [सुविधाना] विद्या-विशेष (पठम ७, १३७) ।

सुविहि पु [सुविधि] १ नववां जिन भगवान् (सम ८५, पडि) । २ पुंस्त्री सुन्दर अनुष्ठान (पण २, ५ टी—पत्र १४६) । ३ न. रामचन्द्र तथा लक्ष्मण का एक यान, चक्रमणं हवइ सुविहि-नामेण (पठम ८०, ८) ।

सुविहिअ वि [सुविहित] सुन्दर आचरण-वाला, सदाचारी (नम १२५, भास १, उव, स १३०, मार्घ ११५, द्र ३२) ।

सुर्वार पु [सुर्वार] १ यदुराज का एक पौत्र (अंत) । २ पुंन एक देव-विमान (सम १२) ।

सुवीसत्थ वि [सुविश्चस्त] अच्छी तरह विश्वासप्राप्त (सुर ६, १५६, सुपा २११) ।

सुवुण्णा बी [दे] सकेत, इशारा (दे ८, ३७) ।

सुवुरिस देखो सुपुरिस (गठड) ।

सुवे अ [श्चस्] आगामी कल (हे २, ११४, चड, कुमा) ।

सुवेल पुं [सुवेल] १ पर्वत-विशेष (से ८, ८०) । २ न. नगर-विशेष (पठम ५४, ४३) ।

सोमिय देखो सोहिअ = शोभित (गाथा १, १ टी—पत्र ३)।

सोम पु [सोम] १ चन्द्र, चाँद, एक ज्योतिष्क महाग्रह (ठा २, ३—पत्र ७७, विसे १८८३, गठड)। २ भगवान् पार्श्वनाथ का पाँचवाँ गणधर (सम १३, ठा ८—पत्र ४२६)। ३ एक प्रसिद्ध क्षत्रिय-वंश (पउम ५, २)। ४ चतुर्थ बलदेव और वासुदेव का पिता (ठा ६—पत्र ४४७, पउम २०, १८२)। ५ एक विद्याधर नर-पति, जो ज्योति पुर का स्वामी था (पउम ७, ४३)। ६ एक सेठ का नाम (सुपा ५६७)। ७ एक ब्राह्मण का नाम (गाथा १, १६—पत्र १६६)। ८ चमरेन्द्र, बलीन्द्र, सौधर्मेन्द्र तथा ईशानेन्द्र के एक-एक लोकपाल के नाम (ठा ४, १—पत्र २०४, भग ३, ७—पत्र १६४)। ९ लता-विशेष, सोमलता। १० उसका रस। ११ अमृत (पड्)। १२ आर्य-सुहस्ति सूरि का एक शिष्य—जैन मुनि (कप्प)। १३ पुन देव-विमान-विशेष (देवेन्द्र १३३, १४३, १४५)। १४ वि. कीर्तिमान्, यशस्वी (कप्प)। १५ कांड्य पृ [कायिक] सोम लोकपाल का आज्ञाकारी देव (भग ३, ७—पत्र १६५)। १६ ग्राहण न [ग्रहण] चन्द्र-ग्रहण (हे ४, ३६६)। १७ चंद पु [चन्द्र] १ ऐरवत क्षेत्र में उत्पन्न सातवें जिन-देव (सम १५३)। २ आचार्य हेंमचन्द्र का दीक्षा समय का नाम (कुप्र २१)। ३ जस पुं [जयस] एक राजा (सुर २, १३४)। ४ नाह देखो नाह (राज)। ५ दत्त पुं [दत्त] १ एक ब्राह्मण का नाम (गाथा १, १६—पत्र १६६)। २ एक जैन मुनि, जो भद्र-वाहु-स्वामी का शिष्य था (कप्प)। ३ भगवान् चन्द्रप्रभ स्वामीको प्रथम भिक्षा-दाता गृहस्थ (सम १५१)। ४ राजा शतानीक का एक पुरोहित (विपा १, ५—पत्र ६०)। ५ देव पु [देव] १ सोम नामक लोकपाल का सामानिक देव (भग ३, ७—पत्र १६५)। २ भगवान् पद्मप्रभ को प्रथम भिक्षा-दाता गृहस्थ (सम १५१)। ३ नाह पु [नाथ] सौराष्ट्र देश की सुप्रसिद्ध महादेव-मूर्ति (ती १५, सम्मत्त ७५)। ४ प्पभ, प्पह पु [प्रभ]

१ क्षत्रियो के सोमवंश का आदि पुरुष, वाहु-बलि का एक पुत्र (पउम ५, १०, कुप्र २१२)। २ तेरहवीं शताब्दी का एक जैन आचार्य और ग्रंथकार (कुप्र ११५)। ३ चमरेन्द्र के सोम लोकपाल का उत्पात-पर्वत (ठा १०—पत्र ४८२)। ४ भूड पुं [भूति] एक ब्राह्मण का नाम (गाथा १, १६—पत्र १६६)। ५ भूड्य न [भूतिक] एक कुल का नाम (कप्प)। ६ य न [य] एक गोत्र जो कौत्स गोत्र की शाखा है (ठा ७—पत्र ३६०)। ७ व वा, वि [व, पा] सोम-रस पीनेवाला (पड्)। ८ सिरों स्त्री [श्री] एक ब्राह्मणी (अत)। ९ सुन्दर पुं [सुन्दर] एक प्रसिद्ध जैनाचार्य तथा ग्रंथकार (सति १४, कुलक ४४)। १० भूरि पु [भूरि] एक जैनाचार्य, आराधना-प्रकरण का कर्ता एक जैनाचार्य (प्राप ७०)।

सोम वि [सौम्य] १ अरौद्र, अनुग्रह (ठा ६, भग १२, ६—पत्र ५७८)। २ नीरोग, रोग-रहित (भग १२, ६)। ३ प्रशस्त, श्लाघ्य (कप्प)। ४ प्रिय दर्शन, जिसका दर्शन प्रिय मालूम हो वह। ५ मनोहर, सुन्दर। ६ शान्त आदृतिवाला (ओषभा २२, उव, सुपा १८०, ६२२)। ७ शोभा-युक्त, दीप्तिमान् (ज २)। देखो सोम्म।

सोमइअ वि [दे] सोने की आदतवाला (दे ८, ३६)।

सोमगल पुं [सौमङ्गल] द्विन्द्रिय जन्तु की एक जाति (उत्त ३६, १२६)।

सोमणतिय वि [स्वापनान्तिक, स्वाप्नान्तिक] १ सोने के बाद किया जाता प्रतिक्रमण—प्रायश्चित्त-विशेष। २ स्वप्न-विशेष में किया जाता प्रतिक्रमण (ठा ६—पत्र ३७६)।

सोमणस पुं [सौमनस] १ महाविदेह-वर्ष का एक वक्षस्कार-पर्वत (ठा २, ३—पत्र ६६, सम १०२, जं ४)। २ उस पर्वत पर रहनेवाला एक महाद्विक देव (जं ४)। ३ पक्ष का आठवाँ दिन (मुज्ज १०, १४) ४ पुंन सनत्कुमार नामक इन्द्र का एक पारि-यानिक विमान (ठा ८—पत्र ४३७, औप)।

५ एक देव-विमान, छुडवाँ त्रैवेयक-विमान (देवेन्द्र १३७, १४३ पत्र १६६)। ६ सोम-नन-पर्वत का एक शिखर (ठा २, ३—पत्र ८०)। ७ न मेरु-पर्वत का एक वन (ठा २, ३—पत्र ८०)।

सोमणन न [सौमनस्य] १ सुन्दर मन, सतुष्ट मन (राय, कप्प)।

सोमगमा स्त्री [सौमनमा] १ जम्बू-द्वीप विशेष जिसमें यह द्वीप जम्बूद्वीप कहलाता है (इक)। २ एक राजवानी (इक)। ३ सौमनस वन की एक बापी (जं ४)। ४ पक्ष की पाँचवीं रात्रि (मुज्ज ६, ४)।

सोमणसिय वि [सौमनस्यिय] १ सतुष्ट मनवाला। २ प्रशस्त मनवाला (कप्प)।

सोमणस्स देखो सोमणस = सौमनस्य (कप्प, ओप)।

सोमणम्मिय देवो सोमणम्मिय (कप्प, औप, गाथा १, १—पत्र १३)।

सोमह देखो सोअमह (प्राकृ २०, ३०)।

सोमहिद न [दे] उदर, पेट (दे ८, ४५)।

सोमहिडु पु [ट] पक, कादा (दे ८, ४३)।

सामा स्त्री [सामा] १ शक्र के सोम आदि चारों लोकपालों की एक-एक पटरानी का नाम (ठा ४, १—पत्र २०४)। २ सातवें जिनदेव की प्रथम शिष्या (सम १५२, पव ६)। ३ सोम लोकपाल की राजवानी (भग ३, ७—पत्र १६५)।

सोमा स्त्री [सौम्या] उत्तर दिशा (ठा १०—पत्र ४७८, भग १०, १—४६३)।

सोमाण न [सममान] मसान, मरघट (दे ८, ४५)।

सोमाणम पु [सौमानस] सातवाँ त्रैवेयक विमान (पव १६४)।

सोमर } देखो सुकुमार (गा १८६, स
माभाल } ३५६, मै ७, पड्, प्राप्र, हे १,
१७१, कुमा, प्राकृ २०, ३८, भवि)।

सोमाट न [ट] मास (दे ८, ४४)।

सोमिति पु [सौमित्रि] राम भ्राता लक्ष्मण (गा ३५)।

सोमिति स्त्री [सुमित्रा] लक्ष्मण की माता। १ पुत्त पु [पुत्र] लक्ष्मण, 'रामसोमिति-पुत्ता' (पउम ३८, ५७) २ सुय पु [सुत] वही अर्थ (पउम ७२, ३)।

सुसिलिङ्ग वि [सुसिलिङ्ग] सुसंगत, अति
सबद्ध (सुर १०, ८२, पंचा १८, २३) ।

सुसिस्स पु [सुशिष्य] उत्तम चेला (उप
पृ ४०६) ।

सुसीज वि [सुसीत] अति गीतल (कुमा) ।

सुसीम न [सुसीम] नगर-विशेष (उप
७२८ टी) ।

सुसीमा स्त्री [सुसीमा] १ भगवान् पद्मप्रभ
की माता (मम १५१) । २ कृष्ण वामदेव
की एक पत्नी (अत १५) । ३ वत्स नामक
विजय-क्षेत्र की एक राजधानी (ठा २,
३—पत्र ८०) ।

सुसीन् न [सुसील] १ उत्तम स्वभाव (पउम
१४, ४४) । २ वि. उत्तम स्वभाववाला,
सदाचारी (प्रासू ८) । ३ वंत् वि [वन्]
सदाचारी (पउम १४, ४४, प्रासू ३६) ।

सुसु ६ [शिशु] बच्चा, बालक । १ मार पु
[मार] जलचर प्राणी की एक जाति,
महिषाकार मत्स्य-विशेष (पि ११७) ।
१ मारिया स्त्री [मारिका] वाद्य-विशेष
(राय ४६) । देखो सुसुमार ।

सुसुज्ज पुन [सुमूर्य] एक देव-विमान (मम
१५) ।

सुसुमार पु [सुसुमार] जलचर जन्तु की एक
जाति (जी २०) । देखो सुसु-मार ।

सुसुग्ध वि [सुसुगन्ध] १ अत्यन्त सुगन्धी
(पउम ६, ४१, गउड) । २ पु अत्यन्त
कुशब्द (गउड) ।

सुसुर देखो ससुर (धर्मवि ११४, मिरि
३३४, ३४५, ३४७, ६८८) ।

सुसुहकर पु [सुशुभङ्कर] छन्द का एक भेद
(पिंग) ।

सुसुर पुन [सुमूर] एक देव-विमान (मम
१०) ।

सुसेण पुं [सुसेण] १ सुग्रीव का ध्वजुर (ने
४, ११, १३, ८४) । २ एक मंत्री (विपा
१, ४—पत्र ५४) । ३ भरत चक्रवर्ती का
मन्त्री (राज) ।

सुसेण, स्त्री [सुसेणा] एक वही नदी (ठा
५, ३—पत्र ३५) ।

सुसोह वि [सुशोभ] अच्छी शोभावाला
(सुपा २७५) ।

सुसोहिय वि [सुशोभित] शोभा सपन्न,
समलकृत (उप ७२८ टी) ।

सुस्स अक [शुप्] सूचना । सुस्से (मूअ
१, २, ९, १६) । वक्र. सुस्सत (स १६६) ।

सुस्समण पुं [सुश्रमण] उत्तम साधु (उव) ।

सुस्सर वि [सुग्गर] सुन्दर आवाजवाला
(सुपा २०६) । देखो सुसर ।

सुस्सरा स्त्री [सुस्वरा] गीतरति तथा गीतयश
नाम के गन्धर्वों की एक एक अग्रमहिषी का
नाम (ठा ४, १—पत्र २ ४० इक) ।

सुस्सार वि [सुसार] सार-युक्त (भवि) ।

सुस्सावग } देखो सुमावग (उव, आ १२) ।
सुस्सावय }

सुस्सील देखो सुसील (सुपा ११०, ५०८) ।

सुसुय देखो सुसुय (राज) ।

सुसुयाय अक [सुसुताय, सूत्कारय]
सु सु आवाज करना, सूत्कार करना । सङ्ग
सुसुयाइत्ता (उत्त २७, ७) ।

सुस्सू स्त्री [श्रू] सासू (वृह २) ।

सुस्सू स मक [शुश्रूप्] सेवा करना ।
सुस्सू सइ (उप, महा) । वक्र. सुस्सू सत,
सुस्सू समाण (कुलक ३४, भग, श्रीप) ।
हेक. सुस्सू सिट्ठ (श्री) (मा ३६) ।

सुस्सू सअ वि [शुश्रूपक] सेवा करनेवाला
(कप्प) ।

सुस्सू सण न [शुश्रूपण] सेवा, शुश्रूपा (कुप्र
२४७, रत्न २१) ।

सुस्सू सणया } स्त्री [शुश्रूपणा] ऊपर देखो
सुस्सू मणा } (उत्त २६, १, श्रीप, राया
१, १३—पत्र १५८) ।

सुस्सू सा स्त्री [शुश्रूपा] ऊपर देखो (सुपा
१२७) ।

सुह देखो सोह = शुभ । सुहइ (वज्ज १४,
पिंग) ।

सुह सक [सुख] सुखी करना । सुहइ
(पिंग), मुहेदि (श्री) (अभि ८६) ।

सुह देखो सुभ (हे ३, २६, ३०, कुमा,
सुपा ३६०, कम्म १, ५०) । १ अ वि [द]

मगलकारी (कुमा) । १ कम्म : वि [मरिक्]
पुण्यशाली (भवि) । १ काम वि [काम]
मङ्गल की चाहवाला (सुपा ३२६) । १ गर
वि [गर] मङ्गल-जनक (कुमा) । १ गामा
स्त्री [नामा] पक्ष की पाँचवी, दमवी तथा
पनरहवी रात्रि-तिथि (सुज्ज १०, १५) ।
१ तिथि वि [तिथि] १ शुभेच्छक (भग) ।
२ शुभ अर्थवाला (राया १, १—पत्र ७४) ।
१ दे देखो अ (कुमा) ।

सुह न [सुख] १ आनन्द चैन, मजा । २
आराम, शान्ति (ठा २, १—पत्र ४७, ३,
४—पत्र ११४, भग, स्वप्न २३, प्रासू
१३३, ह १, १७७, कुमा) । ३ निर्वाण,
मुक्ति । ४ वि. जितेन्द्रिय (विसे ३८४३,
३४८८) । ५ सुख-प्रद, सुख-जनक (राया
१, १०—पत्र १७८, आचा, कम्म १,
५१) । ६ अनुकूल (राया १, १२) । ७
सुखी (हे ३, १६) । १ अ वि [द] सुख-
दायक (सुर २, ६५, सुपा ११०, कुमा) ।
१ इत्त अ वि [वन्] सुखी (पि ६००) ।
१ कर वि [कर] सुख-जनक (हे १, १७७) ।
१ ग्रामि वि [ग्रामिन] सुखामिलापी (श्रीव
११६) । १ तिथि वि [तिथि] वही अर्थ
(आचा) । १ द वि [द] सुख-दाता (वे
१०३, कुमा) । १ दाय वि [दाय] वही
(पउम १०३, १६२) । १ फस वि [स्फर्श]
कीमल (पात्र) । १ यर देखो कर (हे १,
१७७, कुमा, सुपा ३) । १ सभा स्त्री
[मन्धा] सुख-जनक सायकाल (कप्प) ।
१ चह वि [चह] १ सुख-जनक (आ २८,
उव; स ६७) । २ पुन एक पर्वत-शिखर (ठा
२, ३—पत्र ८०) । १ सण न [सन]
आसन-विशेष, पालकी (सुर २, ६०, सुपा
२७८, कप्प) । १ सिया स्त्री [सिका]
सुख स बैठना, सुखी स्थिति (प्रासू ८५) ।

सुहउत्थिआ स्त्री [दे] दूती (दे ८, ६) ।

सुहकर वि [सुखकर] सुख-कारक (सिरि
३६, कुमा) ।

सुहकर वि [शुभकर] १ शुभकारक (कुमा) ।
२ पु एक वणिक् का नाम (उप ५०७ टी) ।

सुहभर वि [सुखभर] सुखी (गउड) ।

सोवरी स्त्री [शाम्बरी] विद्या-विशेष (सूत्र २, २, २७) ।

सोववत्तिअ वि [सोपपत्तिक] समुक्तिक, मुक्ति-युक्त (उप ७२८ टी) ।

सोवाअ वि [सोपाय] उपाय-साध्य (गडड) ।

सोवाग पु [श्वपाक] चाण्डाल, डोम (आचा, ठा ४, ४—पत्र २७१, उत १३, ६, उव, सुपा ३७०, कुप्र २६२, उर १, १५) ।

सोवाग स्त्री [श्वपाकी] विद्या-विशेष (सूत्र २, २, २७) ।

सोवाण न [सोपान] सोही, निमेनी, पैडी (सम १०६, गा २७८, उव, मुर ६२) ।

सोवासिण देखो मन्वास्मिन्, (भवि) ।

सोविअ वि [स्वापत्त] सुलाया हुआ, शायित, 'कमलकिसलयरङ्ग सत्यरए मोविओ तेण' (सुर ४, २४४, उप १०३१ टी) ।

सोविअह पु स्त्री [सौविअह] अन्त पुर का रक्षक (गडड) । स्त्री °ह्नी (सुपा ७) ।

सोवीर पु व [सौर्वार] १ देश-विशेष (पव २७५, सूत्र ५, १, १—टी) । २ न काजिक, काजी (ठा ३—पत्र १४७, पाध) अञ्जन-विशेष, सौवीर देश में होता सुरमा (जी ४) । ४ मद्य-विशेष (कस) ।

सोवीरा स्त्री [सौर्वारा] मध्यम ग्राम की एक मूछना (ठा ८—पत्र ३६३) ।

सोव्व वि [व] पतित-दन्त, जिसका दात गिर गया हो वह (दे ८, ४५) ।

सोस सक [शौषय] सुखाना, शोषण करना । सोसइ (भवि) । वहु सोसयत (कप्प) ।

सोस देखो सुस्म । सोसउ (हे ४, ३६५) ।

सोस पु [शोष] १ शोषण (गडड, प्रासू ६४) । २ रोग-विशेष, दाह राग (लहुअ १५) ।

सोसण पु [दे] पवन, वायु (दे ८, ४५) ।

सोसण न [शोषण] १ मुखाना । २ कामदेव का एक नाण (कप्प) । ३ वि. शोषण-कर्ता, सुखानेवाला (पउम २८, ५, कुप्र ४७) ।

सोसण न स्त्री [शोषणा] शोषण (उवा, सोसणा } उत ३, ५) ।

सोसर्णा स्त्री [दे] कटी, कमर (दे ८, ४) ।

सोसविअ वि [शोषित] सुखाया हुआ (हे ३, १५०, उव) ।

सोसाव देखो सोस = शोषय । हेतु मोत्तावेटु (शौ) (नाट) ।

सोसास वि [सोन्ध्याम] ऊर्ध्व धाम युक्त (पड) ।

सोमिअ देखो मोनविअ (हे ३, १५०, मुर ३, १६, मठा) ।

सोसिअ वि [सान्द्रत] ऊँचा किया हुआ (कप्प) ।

सोसिअ वि [शोफवन] शाफ युक्त, मूजन रोगवाला (विपा १, ७—पत्र ७३) ।

सोह अक [शुभ] शोभना, चमकना ।

सोहइ, मोहए मोहिती (हे १, १८७ पाप्र कुमा) । वहु मोहन, सोहमाण (कप्प, मुर ३, १११ नाट—उत्तर ८) ।

सोह नक [शोभय] शोभा युक्त करना । मोहइ (उवा) ।

सोह नक [शोभय] १ शुद्धि करना । २

खोज करना, गवेषणा करना । ३ मशोधन करना । सोहइ (उव) । वहु, 'लूनिअ सगिह दटु मोहितो दइअ निअ' (था १२) ।

मोहेमाण (उवा, विपा १, १—पत्र ७) ।

कवहु. मोहिजन (उप ७२८ टी) । व

सोहर्णाअ, मोहेयव (णया १, १६—

पत्र २०२, नाट—शकु ६६, सुपा ६५७) ।

सहु. मोहइत्ता (उत २६, १) ।

सोह देखो मउह = सौध (रुक्मि ६१, प्रति ४१; नाट—मालती १३८) ।

सोहजण पु [दे शोभाजन] वृक्ष-विशेष, सहिजने का पेड (दे ८, ३७, कप्प) ।

सोहग देखो सोभग (कप्प ३८ टी) ।

सोहग पु [शोधक] बोधी, रजक (उप पृ २६१) । देखो सोहय = शोधक ।

सोहग न [सौभाग्य] १ सुभगता; लोक-

प्रियता (श्रीप, प्रासू ६६) । २ पति-प्रियता

(मुर ३, १८१, प्रासू ८५) । ३ सुन्दर

भाग्य (उप पृ ४७, १०८) । °कल्पस्व

पु [कल्पवृक्ष] तप-विशेष (पव २७१) ।

°गुलिया स्त्री [गुलिका] सौभाग्य-जनक

मन्त्र विशेष में सन्तत गौरी (सुपा ५६७) ।

सोहगजण न [सौभाग्यजन] सौभाग्य-जनक अजन (सुपा ५६७) ।

सोहग्गिअ वि [सौभागिन] भाग्य गाली, सुन्दर भाग्यवाला (उप पृ ४७, १०८) ।

सोहण पु [शोभन] १ एक प्रसिद्ध देव

मूर्ति (सम्मत ७५) । २ वि. शोभा-युक्त,

सुन्दर (मुर १, १७७, ३, १८५, प्रासू

१३२) । स्त्री, °णा, °णी (प्राकृ ८२) । °वर

न [°वर] वैताड्य की उत्तर धोए का एक

विद्यावर-नगर (शक) ।

सोहण न [शोधन] १ शुद्धि, सफाई (उप

५६७ टी, मुज १०, ६ टी, कप्प) । २

वि शुद्धि-जनक (था ६) ।

सोहणी स्त्री [दे] समाजनी; नाटू (दे ८,

१७) ।

सोहद न [सौहृद] १ मित्रता । २ वधुता

(अभि २१८, अन्ध ५) ।

सोहम्म देखो सुधम्म, सुहम्म = सुधम्म

(नम १६) ।

सोहम्म पु [सौधम्म] प्रथम देवलोक (सम

२, राय, अणु) । °कप्प पुं [°कल्प] पहला

देवलोक, स्वर्ग-विशेष (महा) । °वड पु

[°पति] प्रथम देवलोक का स्वामी शक्र

(सुपा ५१) । °वडिसय पुन [°वत्तसक]

एक देव-विमान (सम ८, २५, राय ५६) ।

°सामि पु [°स्वामिन्] प्रथम देवलोक का

इन्द्र (सुपा ५१) ।

सोहम्म° देखो सुहम्मा (महा) ।

सोहम्मण देखो सोहण = शोधन, 'रयणपि

गुणुक्करित उवेइ सोहम्मणगुणेण' (कम्म

६, १ टी) ।

सोहम्मिअ पु [सौधर्मेन्द्र] शक्र, प्रथम देव-

लोक का स्वामी (महा) ।

सोहय वि [शोधक] शाब्द-कर्ता, सफाई

करनेवाला (विसे ११६६) । देखो लाहग =

शोधक ।

सोहय देखो सोहग = शोभक (उप पृ २१६) ।

सोहल वि [शोभावन] शोभा-युक्त (सण,

सूअ पु [शूक] धान्य आदि का तीक्ष्ण अग्र भाग (गउड गा ५६८) ।

सूअ वि [शून] फुला हुआ, सूजनवाला 'सूय-मुह सूयहत्य सूयपाय' (विपा १, ७—पत्र ७३) ।

सूअ पुं [सप] दाल (पव ६१, टी, उवा, परह २, ३—१२३, सुपा ५७) । गार, गार, गार पु [कार] रसोइया (म १७, कुप्र ६६, २७, धावक ६३ टी) । गिरणी लो [गारण], रसोई बनानवाली लो (पउम ५७, ५०६) ।

सूअ देखो सुत्त = सूत्र । गड पुन [कृन] दूसरा जैन अग्र-ग्रन्थ, 'आयारो सूयगडो' (सूअ २, १, २७ नम) ।

सूअअ वि [सूचक] १ सूचना करनेवाला सूअक (वेणी ४५, आ ११, सुर २, सूअग २०६) । २ पु पिशुन, खल, दुजन (परह १, २—पत्र २८) । ३ गुप्त दूत, जासूस (प्राप्र) ।

सूअग, न [सूतक] सूतक, जनन और मरण सूअय की अशुद्धि (पचा १३, २८, वव १) ।

सूअण न [सूचन] सूचना (उव, सुर २, २३३) ।

सूअर पु [शूक] सूअर, बराह (उवा, विपा १, ३—पत्र ५३, प्रयो ७०) । वड पु [वड] अतन्तकाय वनस्पति विशेष (पव ४, आ २०) ।

सूअरिअ वि [दे] यन्त्र-पीडित (दे ८ ४१ टी) ।

सूअरिया, लो [दे] यन्त्र-पीडना (सुर १२, सूअरी १५७, दे ८, ४१) ।

सूअल न [द] किशोर, धान्य का तीक्ष्ण अग्र भाग (दे ८, ३८) ।

सूआ लो [सूचा] सूचन, सूचना (गिड ४३७, उपप ५०, सूअनि २) । कर वि [कर] सूचक (उप ७६८ टी) ।

सूआ, लो [सूति] प्रभव, प्रभूति, जन्म सूइ (पउम २६, ८५, १, ६१, सुपा २३) । कम्म न [कम्म] प्रसव-क्रिया (सुर १०, १, मुना ५०) । हर न [गृह] प्रसूति-गृह (पउम २६, ८५) ।

सूइ लो [सूचि] देखो सूई (आचा, सम १४६, राय २७) ।

सूइअ वि [सूचित] जिसकी सूचना की गई हो वह (महा) । २ उक्त, कथित (प्राप्र) । ३ व्यवसाय-युक्त (खाद्य) (दस ५, १, ६८) ।

सूइअ वि [सूत] प्रभूत जिसने जन्म दिया हो वह, व्यायी 'साण सूइअ गावि' (दम ५, १ १२) ।

सूइअ पु [सूचि] दरजी (कुप्र ५०१) ।

सूइअ पु [द] चण्डाल (दे ८ ३६) ।

सूइअ न [मुप्र] निद्रा 'सिज अत्थरिऊण अलियसूइअ काऊण अन्धत्ति' (महा) ।

सूइअ वि [द सूप्य, सूपिठ] भोजा हुआ (खाद्य) अत्रि सूइअ वा मुक वा' (आचा) ।

सूइअ लो [सूति] प्रभूति-कर्म करनेवाली लो (सम्मत १४५) ।

सूई लो [सूची] कपडा सोने की सलाई, सूई (परह १, ३—पत्र ४४, गा ३६४, ५०२) ।

२ परिमाण-विशेष, एक अगुल लम्बी एक प्रदेशवाली श्रेणी (अगु १४८) । ३ दो तल्लो के जोड़ने के काम में आती एक तरह की पतली कील (राय २७, ८२) । फलय न [कलक] तल्ले का वह हिस्सा, जहाँ सूची-कीलक लगाया गया हो (राय ८२) । मुह पुं [मुग] १ पक्षि-विशेष (परह १ १—पत्र ८) । २ द्वीन्द्रिय जन्तु की एक जाति (परह १—पत्र ४४) । ३ न जहाँ सूची-कीलक तल्ले का छेद कर भीतर घुसता है उसके भमीप की जगह (राय ८२) ।

सूई लो [दे] मजरी (दे ८, ४१) ।

सूई देखो सूइ = सूति (सुपा २६५) ।

सूइ सक [भञ्ज, सूइ] भगना, तोड़ना, विनाश करना । सूइइ (दे ४, १०६) । कर्म, सूडिजनु (परह १, २—पत्र २६) ।

सूइण न [सूदन] १ भजन विनाश (गउड) । २ वि. विनाशक (पव २७१) ।

सूग वि [शून] सूजा हुआ, सूजन से फुला हुआ (पउम १०३, १८८, गा ६३६, स ३७१, ८८०) ।

सूण, लो [सूना] वध-स्थान (निर १, १, सूणा ३४, कुप्र २७६) । वइ पुं [पनि] कसाई (दे २, ७०) ।

सूणिग वि [शूनिग] १ सूजन का रोगवाला जिमका शरीर सूज गया हो वह । २ न सूजन (आचा) ।

सूणु पु [सूनु] पुत्र, लडका (कुप्र ३१६) ।

सूतर देखो सूअय = सूतक (वव १) ।

सूप देखो सूअ = सूप (परह २ ५—पत्र १४८) ।

सूभग देखो सूभग 'सूभग दूभगनाम सूसर तह दूनरं चव' (धर्मम ६२, धावक २३) ।

सूभग देखो सोभग (पिड ५०२) ।

सूमाल देखो सुउमाल (परह १, ४—पत्र ७८, उपाया १ १—पत्र ४७, १, १६—पत्र २००, कप्प, मुर १३, ११८ कुप्र ५५) ।

सूर सक [भञ्ज] तोड़ना, भाँगना । सूरइ (दे ४, १०६) ।

सूर वि [शूर] १ पराक्रमी, वीर (ठा ४, ३—पत्र २३७, कप्प, सुपा २२२, ४१२, प्रासू ७१) । २ पु. एक राजा (सुपा ६२२) । ३ पुन. एक देव-विमान (देवेन्द्र १४३) । सेण पु [सेन] एक भारतीय देश, जिसकी प्राचीन राजधानी मथुरा थी (विचार ४६, पउम ६८, ६६, ती १४, विक्र ६, सत ६७ टी) । २ ऐरवत वप के एक भावी जिन-देव (सम १५४) । ३ एक जैनाचार्य (उप ७२८ टी) । ४ भगवान् आदिनाथ का एक पुत्र (ती १८) ।

सूर पु [सूर, सूर्य] १ सूर्य, रवि (हे २, ६४, ठा २, ३—पत्र ८५, उव, सुपा २२२, ६२२, कप्प, कुमा) । २ सतरहवें जिन-देव का पिता (सम १५१) । ३ इक्ष्वाकु-वंश का एक राजा (पउम ५, ६) । ४ एक लका-पति (पउम ५, २६३) । ५ एक द्रोण का नाम (मुज्ज १६) । ६ एक राजा (सुपा ५५६) । ७ छन्द का एक भेद (पिग) ८ पुन एक देव-विमान (सम १०) । अन, कन पु [कान्त] १ मणि-विशेष (म ६, ५०, पउम ३, ७५, परह १—पत्र २६, उत ७७) । २ पुन. एक देव-विमान (देवेन्द्र १४४, सम १०) । कूड पुन [कूट] एक देव-विमान—देव-भवन (सम १०) । उक्तय पुन [ध्वज] एक देव-विमान (सम १०) ।

विष्णु । ६ परमेश्वर, परमात्मा । १० मत्सर ।
११ मन्त्र-विशेष । १२ शरीर-स्थित वायु की
वेष्टा-विशेष । १३ मेरु पर्वत । १४ शिव,
महादेव । १५ अश्व की एक जाति । १६
श्रेष्ठ । १७ श्रुगुम्मा । १८ विशुद्ध । १९ मन्त्र-
वर्ण-विशेष (ह २, १८२) । २० पतंग,
चतुरिन्ध्रिय जन्तु-विशेष (अणु ३४) । 'गठभ
पुं' [°भ] रत्न की एक जाति (गाथा १,
१—पत्र ३१, १७—पत्र २२६, कप्प,
उत्त ३६, ७७) । 'तूली' स्त्री [°तूली]
विछौने की गद्दी (सुर ३, १८८, ६,
१२८) । 'द्वीप' पु [°द्वीप] द्वीप-विशेष
(पञ्चम ५४, ४५) । 'लक्ष्मण' वि [°लक्ष्मण]
१ शुक्ल, सफेद (अत) । २ विशद, निर्मल
(ज २) ।

हसय पुन [हसय] तुरुर (पात्र, सुपा
३२७) ।

हसल पु [दे] आभूषण-विशेष (अणु) ।
देखो हासल ।

हसी स्त्री [हसी] १ हस पक्षी की मादा
(पात्र) । २ छन्द का एक भेद (पिंग) ।

हंसुल्य पुं [हस] अश्व की एक उत्तम जाति
(सम्मत २१६) ।

हंहो अ [हंहो] इन अर्थों का सूचक अव्यय—
१ सवोधन, आमन्त्रण (सुख २३, १, धर्मवि
५५, उप ५६७ टी) । २ तिरस्कार (धम्म
११ टी) । ३ दर्प, गर्व । ४ दम्भ, कपट । ५
प्रश्न (हे २, २१७) ।

हकुव न [हकुव] फल-विशेष (अनु ५) ।

हक सक [नि + धिष्] निषेध करना,
निवारण करना । हक्कइ (हे ४, १३४,
पङ्) । वक्र, हक्कमाण (कुमा) ।

हक सक [दे] हांकना—१ पुकारना, आह्वान
करना । २ प्रेरणा करना । ३ खदेड़ना ।
हक्कई (सुपा १८३) । वक्र हक्कत (सुर
१५, २०३, सुपा ५३८) । कवक्र हक्किज्जत
(सुपा २५३) । संक्र हक्किय, हक्किउ,
हक्किऊण (सुर २, २३१, सुपा २४८,
महा) ।

हक्का स्त्री [दे] हाँक—१ पुकार, बुलाहट,
आह्वान । २ प्रेरणा, 'धवल्लो धुरम्मि जुत्तो न

सहइ उच्चारिय हक्क' (वज्जा ३८, पिंग,
सुपा १५१, मिरि ८१०, उप पृ ७८) ।

हकार सक [आ + कारय्] पुकारना,
आह्वान करना, बुलाना । हक्कारइ (महा;
भवि) । हक्कारह (सुपा १८८) । कर्म,
हक्कारिज्जतु (सुर १, १२६, सुपा २६२) ।
वक्र, हक्कारेत, हक्कारेमाण (सुर ३, ६८,
गाथा १, १८—पत्र २४८) । सक्र हक्का
रिऊण, हक्कारेऊण (कुम ५, सुपा २२०) ।
प्रयो, हक्काराणइ (सुपा ११८) ।

हकार सक [ट] ऊँचे फैलाना । कर्म, हक्का-
रिज्जति (सिरि ४२४) ।

हकार पु [हकार] १ युगलिकी के समय की
एक दण्डनीति (ठा ७—पत्र ३६८) । २
हाँकने की आवाज (सुर १, २४६) ।

हकारण न [आकारण] आह्वान (स २६४,
कुप्र ११६) ।

हकारिअ वि [आकारित] आहूत (सुपा
२६६, श्रोघ ६२२ टी, महा) ।

हक्किअ वि [दे] हाँका हुआ—१ खदेड़ा
हुआ, 'हक्किअो करो' (महा), 'जेण तप्पो
पामत्याइतेणमेणावि हक्किआ सम्म' (साधं
१०३) । २ आहूत (कुप्र १४१) । ३ प्रेरित
(सुपा २६१) । ४ उन्नत (पङ्) ।

हक्किअ वि [निपिद्ध] निवारित (कुमा) ।

हक्कोद्ध वि [दे] अभिलपित (दे ८, ६०) ।

हक्कुत्त वि [दे] उत्पादित, उठाया हुआ,
उत्थित (दे ८, ६०, पञ्चम ११७, ५, पात्र,
स ६१४) ।

हक्कुव सक [उत् + क्षिप्] १ ऊँचा करना,
उठाना । २ फेंकना । हक्कुवइ (हे ४, १४४),
'तणुयरेहो देवो हक्कुवइ व किं महासेल'
(विसे ६६५) ।

हक्कुविअ वि [उत्थित] उत्पादित (कुमा) ।

हक्का स्त्री [हत्या] वध, घात (कुप्र १५७,
धर्मवि १७) ।

हट्ट पुं [हट्ट] १ आपाण, बाजार (गा ७६४,
भवि) । २ दूकान (सुपा ११, १८६) । 'गाई,
'गावी' स्त्री [°गावी] व्यभिचारिणी स्त्री,
कुलटा (सुपा ३०१, ३०२) ।

हट्टिगा } स्त्री [हट्टिका] छोटी दूकान (मोह
हट्टी } ६२, सुपा १८६) ।

हट्ट वि [हट्ट] १ हर्ष-युक्त, प्रानन्दित । २
विस्मित (उवा विपा १, १, भौप राय) ।
३ नीरोग, रोग-रहित, 'हट्टेण गिलाणेण व
श्रमुगतवो श्रमुगदिएणमि नियमेण कायव्वो'
(पव ४—गाथा १६२) । ४ शक्तिशाली
जवान, समर्थ तरुण (कप्प) । ५ दृढ़, मज-
बूत (श्रोघ ७५) ।

हट्ट देखो भट्ट (गा ६५४ प्र) ।

हट्टमहट्ट वि [दे] १ नीरोग । २ दम, चनुर
(दे ८, ६५) । ३ स्वस्थ युवा (पङ्) ।

हड वि [दे, हन] जिसका हरण किया गया
हो वह (दे ८, ५६, कप्प) ।

हडक } (मा) देखो हिअय = हृदय (प्राकृ
हडक } १०५, १०२, प्राप, नाट—मृच्छ
६१, पि ५०, १५०) ।

हडप्प } पु [दे] १ पात्र-विशेष, द्रम्म
हडप्प } आदि का पात्र । २ ताम्बूल आदि
का पात्र (भौप) । ३ आभरण का करण्डक
(गाथा १, १ टी—पत्र ५७, ५८) ।

हडहड पुं [दे] १ अनुराग, प्रेम (दे ८, ७४;
(पङ्) । २ ताप (दे ८, ७४) ।

हडहड पु [हडहड] 'हड हड' आवाज (सिरि
७७६) ।

हडाहड वि [दे] अत्यर्थ, अत्यन्त (विपा १,
१—पत्र ५ गाथा १, १६—पत्र १६६) ।

हडि पुं [हडि] काष्ठ का वन्धन-विशेष, काठ
की वेड़ी (गाथा १, २—पत्र ८६, विपा १,
६—पत्र ६६, भौप, कम्म १, २३) ।

हडु न [दे] हाड, अस्थि (दे ८, ५६, तदु
३८, सुपा ३५५, श्रु १००) ।

हड पुं [हठ] १ बलात्कार (पात्र, परह १,
३—पत्र ४४, दे १, १६) । २ जल में होने-
वाली वनस्पति-विशेष, कुम्भी, जलकुम्भी,
फाई, 'वायाइद्धो व्व हडो अटिअप्पा भवि-
स्ससि' (उत्त २२, ४४, सूत्र २, ३, १८,
परण १—पत्र ७४) ।

हण सक [हन] १ वध करना । २ जाना,
गति करना । हणइ, हरिया (कुमा, आचा) ।
भुका, हरिणु, हणीअ (आचा, कुमा) ।
भवि, हरिणीही (कुमा) कर्म, हरिण-
ज्जइ, हरिणज्जए, हरणए, हणइ, हम्मइ
(हे ४, २४४, कुमा, प्रासू १६, आचा) ।

सूअ वि [सुश्रु] १ अन्धो तरह सुना हुआ । २ अन्धो तरह ज्ञात (वज्जा १०६) ।
३ पु. वैद्यक ग्रन्थ-विशेष (वज्जा १०६) ।

सूअ } देखो सुभग (सक्ति २०, हे १,
सूअ } ११३, १६२) ।

से° देखो सेअ = श्वेत । °वड पु [°पट]
श्वेताम्बर जैन (सम्मत १३७) ।

से अ [दे] इन अर्थों का सूचक अव्यय—
१ वाक्य का उपन्यास । २ प्रश्न (भग १,
१, उवा) । ३ प्रस्तुत वस्तु का परामर्श
(उत्त २, ४०, ज °) । ४ अनन्तरता (ठा
१०—पत्र ४६५) ।

से } अक [शी] मोना । सेइ, सेअइ
सेअ } (पड) ।

सेअ सक [सिच्] सीचना । सेअइ (हे
४, ६६) ।

सेअ पु [दे] गणपति, गणेश (दे ८, ४२) ।
सेअ पु [मेय] १ कदम, कादो, पक (सूअ
२, १, २, लाया १, १—पत्र ६३) । २
एक अधम मनुष्य-जाति, 'चडाला मुट्टिया
सेया जे अन्ने पावकम्मिणो' (ठा ७—पत्र
३६३) ।

सेअ पु [स्वेद] पसीना (गा २७८, दे ४,
४६, कुमा) ।

सेअ पु [सेरु] मेचन, सीचना (मै ६५, गा
७६६, हेका ६६, अग्नि ३३) ।

सेअ न [श्रेयस्] १ शुभ, कल्याण (भग) ।
२ धर्म । ३ मुक्ति, मोक्ष (ठ १, २२) । ४
वि. अति प्रशस्त, अतिशय शुभ, 'इय संज-
मोवि सेअ' (पचा ७, १४, कुमा, पच ६६) ।
५ पु. अहोरात्र का दूसरा मुहूर्त (मुज्ज १०,
१३) ।

सेअ वि [सैज] सकम्प, कम्प-युक्त (भग ५,
७—पत्र २३४) ।

सेअ वि [श्वेत] १ शुक्ल, सफेद (लाया १,
१—पत्र ५३, अग्नि ३३, उवा) । २ पु.
एक इन्द्र, कुम्भ-निकाय के दक्षिण दिशा
का इन्द्र (ठा २, ३—पत्र ८५) । ३ शक्र की
नट-सेना का अधिपति (इक) । ४ आमल-
कल्पा नगरी का एक राजा, जिसने भगवान्
महावीर के पास दीक्षा ली थी (ठा ८—पत्र
११७

४३०, राय ६) । °ठ पु [°कण्ठ]
भूतानन्द नामक इन्द्र के महिष-नैन्य का
अधिपति (ठा ५, १—पत्र ३०२, इक) ।
°पड, °वड पु [°पट] श्वेताम्बर जैन, जैन
का एक संप्रदाय (मुन ६८१, विम २५८५,
धर्मस ११०६) ।

सेअ वि [गयत्त] आगामी, भविष्य, पभू
ए अन्ते देवकी सेयनालसि वि तेसु चैव
त्रागासपदेमेसु हन्थ दा जाव आगाहिताए
चिट्ठितए' (भग ५, ४—पत्र २२३ ठा
१०—पत्र ४६५ अगा २१) । °ल पुं
[°वाल] भविष्यकाल (भग, उत्त २६, ७१) ।

सेअंकर पु [अयन्तर] ज्योतिष्क ग्रह-विशेष
(ठा २, ३—पत्र ७८) ।

सेअंकार पुं [अयस्त्रार] श्रेय-करण, 'श्रेयस्'
का उच्चारण (ठा १०—पत्र ४६५) ।

सेअवर पु [श्वेताम्बर] १ एक जैन संप्रदाय
(स २, सम्मत १२३, सुपा ५६६) । २ न
सफेद वस्त्र (पद्म ६६, ३०) ।

सेअस पु [अयस्] १ एक राज-कुमार (घण
१५) । २ चतुर्थ वामदेव तथा बलदेव के पूर्व
जन्म के धर्म गुरु—एक जैन मुनि (सम
१५३, पटम २०, १७६) । देखो सेज्जस ।

सेअंस देखो सेअ = अयस् (ठा ४, ४—पत्र
२६५) ।

सेअण न [सेचन] लेक, सीचना (कुमा, अग्नि
४७, लाया १, १३—पत्र १८१, सुपा
३०६) । °वह पु [°पथ] नौक (आचा २,
१०, २) ।

सेअणग } पु [सेचन] १ राजा अल्लिक
सेअणय } का एक हाथा (उप २६४ दो,
लाया १, १—पत्र २५) । २ वि सीचने-
वाला (कुमा) । देखो सेचणय ।

सेअविद्य वि [सेवनीय] सेवा-योग्य, 'ए
सिक्खतो सेयविद्यम्स किचि' (सूअ १, ५, १,
४) ।

सेअविया स्त्री [श्वेतिका] नेकयाधं देश की
प्राचीन राजधानी (विचार ५०, पव २७५,
इक) ।

सेआ स्त्री [श्वेता] सफेदपन (सुज १, १) ।

सेआ देखो सेवा (नाट—चैत ६२) ।

सेआल देखो सेनाल = शैवाल (मे २, ३१) ।
सेआल देखो सेआल = एष्यत्-काल ।

सेआल पु [°] १ गांव का कुंविया । २
सानिध्य करनेवाला यज्ञ आदि (दे ८, ५८) ।
३ कृपक, खेती करनेवाला गृहस्थ (प्राप्र) ।

सेआली स्त्री [°] दूर्वा, दूव, दूम (दे ८, २७) ।

सेआलु अ पु [दे] मनौती की मिठाई के लिए
उत्सृष्ट वेल (दे ८, ८४) ।

सेअड त [स्वेडिन] पनीना (भवि) ।

सेअडा } स्त्री [पेलिका] परिमाण विशेष,
सेअगा } दा प्रकृति की एक नाप (तदु २६,
उप पु ३३७, अगू १५१) ।

सेअ पु न [सेनु] १ बाघ, पुल (मे ६ १७,
कुप्र २२०, कुमा) । २ आलवान नियारी,
थावला । ३ कियागी के पानी से नीचने योग्य
खेत (श्रीप, लाया १, १ टी—पत्र १) ।
४ मार्ग (श्रीप, लाया १, १ टी—पत्र १,
कप्प ८६) । °द्व पु [°यन्य] पुल बावना
(से ६, १७) । °वह पु [°पथ] पुलवाला
मार्ग (मे ८, ८) ।

सेअ वि [सेकृ] सेचक, मिचन करनेवाला
(कप्प ८६) ।

सेअय वि [सेवक] नेवा-कर्ता (कप्प ६) ।

सेदूर देखो सिदूर (प्राप्र, सक्ति ३) ।

सेयव देखो सियव (विक्र ८६) ।

सेंभ देखो मिभ (उवा, पि २६७) ।

सेभिय देखो रिभिय (भग, पि २६७) ।

सेवाडन पुं [दे] गुटकी की आवाज (दे ८,
४३) ।

सेचणय न [सेचनक] मिचन छिड़काव
(मोह २७) । देखो सेअणय ।

सेचाण (पु) पु [श्वेन] छन्द-विशेष
(पिंग) । देखो सेण = श्वेन ।

सेच न [शैत्य] शीतपन ठढापन (प्राप्र) ।

सेज्ज° देखो सेज्जा । °वड पुं [°पते] वसति-
स्वामी गृहस्थ (पव ८४) ।

सेज्जभव देखो सिज्जभव (कप्प, धमनि १,
१२) ।

सेज्जंग पु [श्रेयाम] १ ग्यारहवें जिनदेव का
नाम (सम ८८, कप्प) । २ एक राज-पुत्र,

(रभा) । °त्यभ पु [°स्तम्भ] पापाण का खंभा (कम्म १, १८) । °पाल, °वाल पु [°पाल] १ वरण तथा भूतानन्द नामक इन्द्रो का एक एक लोकपाल (ठा ४, १—पत्र १६७, इक) । २ एक जैनैतर धर्मावलम्बी पुरुष (भग ७, १०—पत्र ३०३) । °न न [°स] वज्र (से ३, २७) । °सिहर न [°शिखर] पर्वत का शिखर (कप्प) । °सुआ छो [°सुता] पावती (पात्र) ।

सेलगा पु [°शैलक] १ एक राजपि (गाया सेलय १, ५—पत्र १०४, १११) । २ एक यक्ष (पि १५६, गाया १ ६—पत्र १६४) । °पुर न [°पुर] एक नगर (गाया १, ५) ।

सेलयय न [°शैलयज] एक गोत्र (ठा ७—पत्र ३६०, राज) ।

सेला छो [°शैल] तीसरी नरक-वृथिवी (ठा ७—पत्र ३८८, इक) ।

सेलाइच्च पु [°शैलादित्य] बलभीपुर का एक प्रसिद्ध राजा (ती १५) ।

सेलु पु [°शैलु] श्लेष्म-नाशक वृक्ष-विशेष (परण १—पत्र ३१) ।

सेलूस पु [°दे] कितव, जुआड़ी (दे ८, २१) ।

सेलेय वि [°शैलेय] पर्वत में उत्पन्न, पर्वतीय (धर्मवि १४०) ।

सेलेस पु [°शैलेश] मेरु पर्वत (विसे ३०६५) ।

सेलेसी छो [°शैलेशी] मेरु की तरह निखल साम्यावस्था, योगी की सर्वोत्कृष्ट अवस्था (विसे ३०६५, ३०६७, सुपा ६५५) ।

सेलोदाइ पु [°शैलोदायिन] एक जैनैतर धर्मावलम्बी गृहस्थ (भग ७, १०—पत्र ३२३) ।

सेह देखो सेल = शैल, 'न हू भिज्जइ ताण भण सेल्लं मिंव सलिलपूरेण' (वज्जा ११२) ।

सेह पु [°दे] १ मृग-शिशु । २ शर, बाण (दे ८, ५७) । ३ कुल्ल, बर्छा (कुमा, हे ४, ३८७) ।

सेह पु [°शैल्य] एक राजा (गाया १, १६—पत्र २०८) ।

सेल्लगा पु [°शैल्यक] भुजपरिसर्प की एक जाति, जन्तु-विशेष (परह १, १—पत्र ८) ।

सेल्लि छो [°दे] रज्जु, रस्सी (उत्त २७, ७) । सेव सक [°सेव] १ आराधन करना । २ आश्रय करना । ३ उपभोग करना । मेवइ, सेवए (आचा, उव, महा) । भूका सेवित्था, सेविसु (आचा) । वक्क सेवमाणा (नम ३६, भग) । कवक्क सेविज्जत, सेविज्जमाण (सुर १२, १३६, कप्प) । सक्क सेविअ, सेवित्ता (नाट—मृच्छ २८५, आचा) । क्क सेवेयव्व (मुपा ५५७, कुमा), सेवणिय (मुपा १६७) ।

सेवग देखो सेवय (पचा ११, ४१) ।

सेवड देखो से° = श्वेत ।

सेवण न [°सेवन] १ सीना, सिलाई करना (उप पृ १२३) । २ सेवा (उत्त ३५, ३) ।

सेवणया छो [°सेवना] सेवा (उत्त २६, सेवणा १, उप ८०१) ।

सेवय वि [°सेवक] १ सेवा-कर्ता (कुप्र ४०२) । २ पुं नौकर, भृत्य (पात्र, कुप्र ४०२, सुपा ५३२) ।

सेवल न [°शैवल] सेवार, सेवाल, एक प्रकार की घास जो नदियों में लगती है (पात्र) ।

सेवा छो [°सेवा] १ मजन, पशुपासना, भक्ति । २ उपभोग । ३ आश्रय । ४ आराधन (हे २, ६६, कुमा) ।

सेवाड पु [°शैवाल] १ सेवार, सेवाल, सेवाल घास विशेष (उप पृ १३६, पात्र, जी ६) । २ पु एक तापस, जिसको गौतम स्वामी ने प्रतिवोध किया था (कुप्र २६३) ।

°ोदाइ पु [°ोदायिन्] भगवान् महावीर के समय का एक अजैन पुरुष (भग ७, १०—पत्र ३२२) ।

सेवाल पु [°दे] पट्ट, कादा, काँदो (दे ८, ४३, पड) ।

सेवालि पु [°शैवालिन्] एक तापस, जिसको गौतम स्वामी ने प्रतिवोध किया था (उप १४२ टी) ।

सेवालिय वि [°शैवालिक, °त] सेवालवाला, शैवाल-युक्त, 'मेवालियभूमितने फिल्लुसमाणा य थामथामम्मि' (सुर २, १०५) ।

सेवि वि [°सेविन्] सेवा-कर्ता (उवा) ।

सेवित्त वि [°सेवित्त] ऊपर देखो (सम १५) ।

सेविय वि [°सेविन्] जिमकी सेवा की गई हो वह (काल) ।

सेव्या देखो सेवा (हे २, ६६, प्राप्र) ।

सेस पुं [°शेष] १ शेष-भाग, सर्प राज (से २, २८) । २ छन्द का एक भेद (पिंग) । ३ वि. अवशिष्ट, बाकी का (ठा ३, १ टी—पत्र ११४, दमनि १, १३४, हे १, १८२, गउड) । °मट्टे, °वट्टे छो [°वनी] १ नातवें वसुदेव की माता (नम १५२) । २ दक्षिण रुचक पर रहनेवाली एक दिक्कुमारी देवी (ठा ८—पत्र ४३६, इक) । ३ बल्ली-त्रिजेष (परण १—पत्र ३३) । ४ भगवान् महावीर की दौहित्री—पुत्री की पुत्री (आचा २, १५, १६) । °व न [°वन्] अनुमान का एक भेद (अणु २१०) । °राअ पुं [°राज] छन्द-विशेष (पिंग) ।

सेसव न [°शैशव] बाल्यावस्था (दे ७, ७६) ।

सेसा छो [°शेषा] निर्माल्य (उप ७२८ टी, सिरि ५५५) ।

सेसिअ वि [°शेषित] १ बाकी बचाया हुआ (गा ६६१) । २ अल्प किया हुआ, खतम किया हुआ (विमे ३०२६) ।

मेमिअ वि [°शेषित] सवद्ध किया हुआ, चिपकाया हुआ (विमे ३०३६) ।

सेह अक [°नश] पलायन करना, भागना । सेहइ (हे ४, १७८, कुमा) ।

सेह सक [°शिक्षय] १ सिखाना, मील देना । २ मजा करना । सेहति (सूत्र १, २, १, १६) । कवक्क सेहिज्जत (सुपा ३५५) ।

सेह पुं [°दे, सेह] भुजपरिसर्प की एक जाति, साही, जिसके शरीर में काँटे होते हैं (परह १, १—पत्र ८, परण १—पत्र ५३) ।

सेह पु [°शैल] १ नव-दीक्षित साधु (सूत्र १, ३, १, ३, सम ५८, श्लो १६५, ३७८, उव, कस) । २ जिसको दीक्षा दी जानेवाली हो वह (पव १०७) । ३ शिष्य, चेला (मुख १, १३) ।

सेह पु [°सेव] सिद्धि (उवा) ।

सेहव वि [°सेधाम्ल] खाद्य-विशेष, वह खाद्य जिसमें पकने पर खटाई का संस्कार किया जाय (उवा, परह २, ५—पत्र १५०) ।

सोमविद्या स्त्री [सौमन्धिका] नगरी-विशेष (गाथा १, ५ पत्र १०५)।

सोममह देखो सोममह (दम २, ५)।

सोमगड देखो सुमगड (उत्त २८, ३, पउम २६, ६०, स २५०)।

सोमगाह (?) अक [प्र + मृ] पसरना, फैलना। सोमगाह (वात्वा १५६)।

सोच देखो सोच = शुच। वक्र सोचन, सोचमाण (नाट—मृच्छ २८१, गाथा १, १—पत्र ८७)। सक्र 'सोचिऊण हृदयपाए आरोगमणिरयणेण श्रोमजिओ राया' (स ५६७)। कृ सोच (उव)।

सोचि वि [शोचित] शुद्ध किया हुआ, प्रशालित (स ३४८)।

सोच देखो सोच।

सोच देखो सुण = श्रु।

सोच्छ देखो सोत्थिअ (इक)।

सोजण न [सौजन्य] सुजनता, सजनता, सोजन भलमनसी (उप ७२८ टी, सुर २, ६१)।

सोज देखो सोरिअ = शौर्य (प्राक् १६)।

सोजक वि [शोध] शुद्धि-योग्य, शोधनीय (मुज १०, ६ टी)।

सोजक्य पु [दे] रजक, घोबो (पात्र)। देखो सुजक्य।

सोडिअ देखो सौडिअ (कर्पूर ३४)।

सोडीर वि [शोटीर] देखो सौडीर = शोएडीर (कप्प, औप, मोह १०४, कप्पू, चार ६८)।

सोडीर न [शोटीर्य] देखो सौडीर = शोएडीर्य (कुमा, से ३, ४, ५, ३, १३, ५६, ८७, प्राक् १६)।

सोड वि [सोड] सहन किया हुआ (उप २६४ टी, वात्वा १५७)।

सोडव्य } देखो सह = सह्।

सोण वि [शोण] लाल, रक्त वर्णवाला (पात्र)।

सोणद न [दे सौनन्द] त्रिकाष्ठिका, तिपाई (पह १, ४—पत्र ७८, औप, तदु २०)।

सोणहिअ वि [शौनिक] १ श्वान-पालक।

२ कुत्तो से शिकार करनेवाला (स २५३)।

सोणार देखो सुणार (गा १६१, पि ६६, १५२)।

सोणि स्त्री [शोणि] कटी, कमर (कप्प, उप १५६)। 'सुत्तग न [सूत्रक] कटी-सूत्र, करवनी (औप)।

सोणिअ पुं [शोणिक] कसाई (दे ६, ६२)।

सोणिअ न [शोणित] रुधिर, खून (उवा, भवि)।

सोणिम पुं स्त्री [शोणिमन्] रक्तता, लाली (विक्र २८)।

सोणी स्त्री [शोणी] देखो सोणि (पह १, ४—पत्र ६८, ७६)।

सोणीअ देखो सोणिअ = शोणित, 'भुजते मससोणीअ ए छेए ए पमजए' (आचा १, ८, ८, ६, पि ७३)।

सोणन [स्वर्ण] सोना, सुवर्ण (प्राक् ३०, सक्षि २१)।

सोणह देखो सुणह = सूक्ष्म (पड्, गा ७२३)।

सोणहा देखो सुणहा = स्तुपा (सक्षि १५, प्राक् ३७, गा १०७, काप्र ८६३)।

सोत्त न [श्रोत्र] कान, श्रवणेन्द्रिय (आचा, रभा, विक्र ६८)।

सोत्त देखो सोअ = स्रोतस (हे २, ६८, गा ५५१, से १, ५८, कुमा)।

सोत्ति देखो सुत्ति = शुक्ति (पड्, उप ६४८ टी)।

सोत्तिअ पु [श्रोत्रिय] वेदाम्यासी ब्राह्मण (पिड ४३६, नाट—मृच्छ १३४, प्राप)।

सोत्तिअ वि [सौत्रिक] १ सूत्र-निर्मित, सूते का बना हुआ (शोधभा ८६; शोध ७०५)।

२ सूते का व्यापारी (पणु १४६)।

सोत्तिअ पुं [शौक्तिक] द्वीन्द्रिय जन्तु-विशेष (पह १—पत्र ४८)।

सोत्तिअमई स्त्री [शुक्तिमावती] केकय सोत्तिअवई देश की प्राचीन राजधानी (राज, इक)।

सोत्ती स्त्री [दे] नदी (दे ८, ४४, पड्)।

सोत्थि पुं न [स्वस्ति] १ एक देव-विमान (देवेन्द्र १३३)। २—देखो सत्थि (सक्षि

२१, गा २४४, अभि १२८, नाट—रत्ना १०)।

सोत्थिअ पु [स्वस्तिरु] १ ज्योतिष्क ग्रह-विशेष (ठा २, ३—पत्र ७८)। २ न

शाक-विशेष, एक प्रकार की हरित वनस्पति (पह १—पत्र ३४)। ३—देखो सत्थिअ,

सोवत्थिअ = स्वस्तिक (पह १, ४—पत्र ६८, गाथा १, १—पत्र ५८)।

सोदाम पु [सोदाम] देखो सोदामि (इक)।

सोदामणी देखो सोआमणी (पउम २६, ८१)।

सोदामि पु [सोदामिन्] चमरेन्द्र के अश्व-सैन्य का अधिपति (ठा ५, १—पत्र ३०२)।

सोदामिणी देखो सोआमिणी (नाट—मालती ८)।

सोदास पुं [सौदास] एक राजा (पउम २२, ८१)।

सोध (शौ) देखो सउह = सौध (पि ६१ ए)।

सोपार पुं व. [सोपार, क] देश-सोपारय विशेष (पउम ६८, ६४, सुपा २७५)। २ न. नगर-विशेष (साध ३६, ती ११)।

सोवंधव वि [सौवन्धव] सुवन्धु नामक कवि का बनाया हुआ ग्रंथ (गडड)।

सोभ अक [शुभ] शोभना, चमकना।

सोभति (मुज्ज १६) भूका, सोभिषु, सोभेमु (मुज्ज १६)। भवि सोभिस्सति (मुज्ज १६)। वक्र सोभत (गाथा १, १—पत्र २५, कप्प, औप)।

सोभ सक [शोभय] शोभाना, शोभा-शुक्त करना। सोभेइ (भग)। वक्र सोभयत (पि ४६८)। सक्र सोभित्ता (कप्प)।

सोभग वि [शोभक] १ शोभनेवाला। २ शोभानेवाला (कप्प)।

सोभग देखो सोहग (स्वप्न ४५)।

सोभण देखो सोहण = शोभन (पउम ७८, ५६, स्वप्न ४६)।

सोभा देखो मोहा = शोभा (प्राक् १७, उत्त २१, ८, कप्प, मुज्ज १६)।

सोमिल पु [सोमिल] एक ब्राह्मण (अंत ६)।

सोनेत्ति देवो सोमिन्ति = सौमित्रि (से १२ ८८)।

सोमेश्वर पु [सोमेश्वर] सौराष्ट्र का सोमनाथ महादेव (सम्मत ७५)।

सोम्म वि [सौम्य] १ रमणीय, मुन्दर (ने १, २७)। २ ठठा शीतल (ने ४, ८)। ३ शीतल प्रकृतिवाला शान्त स्वभाववाला (से ५, १६, विसे १७३१)। ४ प्रिय-दर्शन, जिमका दर्शन प्रिय लगे वह। ५ जिमका अविष्टाता सोम-देवता हो वह। ६ भास्वर, कान्तिवाला। ७ पु. बुध ग्रह। ८ शुभ ग्रह। ९ वृष आदि सम राशि। १० उदुम्बर वृक्ष। ११ द्वीप-विशेष। १२ सोम रस पीनेवाला ब्राह्मण (प्राप्र)। देखो सोम = सौम्य।

सोज्जि (अप) अ [स एव] वही (प्राकृ १२१)।

सोरट्ट पुं [सौराष्ट्र] १ एक भारतीय देश, सोरठ, काठियावाड (इक, ती १५)। २ वि. सोरठ देश का निवासी (आवक ६३)। ३ न छन्द-विशेष (पिंग)।

सोरट्टिया बी [सौराष्ट्रिका] १ एक प्रकार की मिट्टी, फिटकिरी (आचा २, १, ६, ३, दस ५, १, ३४)। २ एक जैन मुनि-शाखा (कप्य)।

सोरम्भ न [सौरभ] सुगन्ध, खुशबू (विक्र सोरभ ११३, कुप्र २२८, भवि, उप सोरभ ६८६ टी)।

सोरसेणी बी [जौरसेनी] शूरसेन देश की प्राचीन भाषा, प्राकृत भाषा का एक भेद (विक्र ६७)।

सोरह देखो सोरभ (गड्ड)।

सोरिअ न [शौर्य] शूरता, पराक्रम (प्राप्र, प्राकृ १६)।

सोरिअ न [शोरिक] १ कुशावर्त देश की प्राचीन राजधानी (इक)। २ एक यज्ञ (विपा १, ८—पत्र ८२)। ३ दत्त पु [दत्त] १ एक मच्छीमार का पुत्र (विपा १, १—पत्र ४, विपा १, ८)। २ एक राजा (विपा १, ८—पत्र ८२)। ३ पुर न [पुर] एक नगर

(विपा १, ८)। ४ वडिसग न [वतंसक] एक उद्यान (विपा १, ८—पत्र ८२)।

सोलम् वि. व [पोडशन] १ संख्या-विशेष, सोलह, १६। २ ज़ोलह सख्यावाला (भग ३५, १—पत्र ६६४, ६६७, उवा, सुर १, ३५, प्रासू ७७, पि ४४३)। ३ वि. सोलहवाँ, १६ वाँ (राज)। ४ म वि [°श] १ सोलहवाँ, १६ वाँ (राया १, १६—पत्र १६६, मुर १६, २५१, पत्र ४६)। २ लगा तार मात दिनो के उपवास (राया १, १—पत्र ७२)। ३ य न [°क] सोलह का समूह (उत ३१, १३)। ४ विह वि [°विह] सोलह प्रकार का (पि ४५१)।

सोलमिआ बी [पोडशिका] रम-मान-विशेष, मोलह पलों की एक नाप (अणु १५२)।

सोलह देखो सोलस (नाट, भवि)।

सोलहावत्तय पु [दे] शख (दे ८, ४६)।

सोह मक [पच्] पकाना। सोहइ (हे ४, ६०, घात्वा १५६)। वहु. सोहंत (विपा १, ३—पत्र ४३)।

सोह सक [क्षिप्] फेंकना। सोहइ (हे ४, १४३, पड्)। कर्म सोहज्जइ (कुमा)।

सोह सक [ईर, सम + ईर] प्रेरणा करना। सोहइ (घात्वा १५६, प्राकृ ६६)।

सोह न [दे] माँ (दे ८, ४४)। देखो सुह = शूल्य।

सोह वि [पक्] पकाया हुआ (उवा, विपा १, २—पत्र २७, १, ८—पत्र ८५, ८६, औप)।

सोहिय वि [पक्] १ पकाया हुआ, 'इंगाल-सोहिय' (औप)। २ न. पुष्प-विशेष (औप)।

सोव देखो सुव = स्वप्। सोवइ, सोवति (हे १, ६४, उव, भवि, पि १५२)।

सोवक्रम } वि [सोपक्रम] निमित्त-कारण
सोवक्रम } से जो नष्ट या कम हो सके वह
कर्म, आयु, आपदा आदि (मुपा ४५२, ४५६)।

सोवचिय वि [सोपचित] उपचय-युक्त, स्फूर्त, पुष्ट (कप्य)।

सोवचल पुं [सौवर्चल] एक तरह का नोन, काला नमक (दस ३, ८, चड)।

सोवण न [स्वपन] शयन, मोना (उप पु २३७)।

सोवण न [दे] १ वाम-गृह, शय्या-गृह, रति-मन्दिर (दे ८, ५८, स ५०३ पाप्र)। २ स्वप्न। ३ पुं मल्ल (दे ८, ५८)।

सोवण (अप) देखो सोवण्ण (भवि)।

सोवणिअ वि [शौचनिक] १ श्वान-पालक, कुत्तो की पालनेवाला। २ कुत्तो से शिकार करनेवाला (सूत्र २, २, ४२)।

सोवणी श्री [स्वापनो] विद्या-विशेष (पि ७८)।

सोवण्ण वि [सौवर्ण] स्वर्ण-निर्मित, सोने का (महा, सम्मत १७३)।

सोवण्णमक्खिआ बी [दे] मधुमक्षिका की एक जाति, एक तरह की शहद की मक्खी (दे ८, ४६)।

सोवणिअ } वि [सौवर्णिक] सोने का,
सोवणिग } मुवर्ण-घटित (प्रति ७, स ४५८)। ३ पञ्चय पुं [°पर्वत] मेरु पर्वत (पत्र २, १८)।

सोवण्णेअ पुत्री [सौपर्णेय] गरुडपत्नी। बी °आ, °ई (पड्)।

सोवत्थ न [दे] १ उपकार। २ वि. उपभोग्य, उपभोगयोग्य (दे ८, ४५)।

सोवत्थि } वि [सौवस्तिक] १ माङ्गलिक
सोवत्थिअ } वचन बोलनेवाला, मागध आदि
स्वस्ति-वाचक (ठा ४, २—पत्र २१३, औप)। २ पुं. ज्योतिष्क महाग्रह-विशेष (ठा २ ३—पत्र ७८)। ३ श्रोत्रिय जन्तु की एक जाति (पराण १—पत्र ४५)।

सोवत्थिअ पु [स्वस्तिक] १ साधिया, एक माङ्गलचिह्न (औप)। २ पुन विद्युत्प्रसम नामक वक्षस्कार पर्वत का एक शिखर (इक)। ३ पूर्वे रुचक-पर्वत का एक शिखर (राज)। ४ एक देव-विमान (देवेन्द्र १४१)। देखो सत्थिअ, सोत्थिअ = न्त्वस्तिक।

सोवन्न देखो मोवण्ण (अत १७, आ २८, सिरि ८११, भवि)।

सोवन्निअ देखो सोवणिअ (राया १, १—पत्र ५२)।

सोवरिअ देखो सोअरिअ = शौकरिक (सूत्र २, २, २८)।

सोहा स्त्री [शोभा] १ दीप्ति, चमक (से १, ४८, कुमा, सुपा ३१, रंभा)। २ छन्द-विशेष (पिंग)।

सोहाव सक [शोधय] सफा कराना। सोहावेह (स ५१६)।

सोहाविय वि [शोधित] साफ कराया हुआ (स ६२)।

सोहि स्त्री [शुद्धि, शोधि] १ निर्मलता (गाया १, ५—पत्र १०५, सवोध १२)। २ आलोचना, प्रायश्चित्त (ओघ ७६१, ७६७, आचा)।

सोहि वि [शोधिन] शुद्धि-कर्ता (श्रीप)।

सोहि वि [शोभिन्] शोभनेवाला (सवोध ४८, कप्पू, भवि)। स्त्री. ०णी (नाट—रत्ना १३)।

सोहि पुंस्त्री [दे] १ भूत काल। २ भविष्य काल (दे ८, ५८)।

सोहिअ न [दे] पिष्ट, आटा, चावल आदि का चूर्ण (पङ्)।

सोहिअ वि [शोभित] शोभा-युक्त (सुर ३, ७२, महा, श्रीप, भग)।

सोहिअ वि [शोधित] शुद्ध किया हुआ (पणह २, १, भग)।

सोहिद देखो सोहद (नाट—शकु १०६)।

सोहिर वि [शोभित्] शोभनेवाला (गा ५११)।

सोहिह वि [शोभावत्] शोभा-युक्त (गा ५४७, सुर ३, ११, ८, १०८, हे २, १५६, चड, भवि, सण)।

सौअरिअ देखो सोअरिअ = सौदयं (चड)। सौअरिअ न [सौन्दर्य] सुन्दरता (हे १, १)।

सौह देखो सउह = सौध (रुक्मि ५६, नाट—मालती १३६)।

०स्स देखो स = स्व (गा २२६)।

०स्सास देखो सास = द्वास (गा ८५६)।

०स्सिरी देखो सिरी = श्री (गा ६७७)।

०स्सेअ देखो सेअ = स्वेद (अभि २१०)।

॥ इअ सिरिपाइअसदमहण्णवम्मि सयाराइसदसंकलणो
सत्ततीसइमो तरगो समत्तो ॥

ह

ह पु [ह] १ कठ-स्थानीय व्यञ्जन वरुण-विशेष (प्राप, प्रामा)। २ अ. इन अर्थों का सूचक अव्यय—संवोधन, 'से-भिवखू गिलाइ, से हंद ह ए तत्साहरह' (आचा २, १, ११, १, २, पि २७५)। ३ नियोग। ४ क्षेप, निन्दा। ५ निग्रह। ६ प्रसिद्धि। ७ पादपूति (हे २, २१७)।

ह देखो हा = अ. (हे १, ६७)।

हइ स्त्री [हति] हतन, वध, मारण (आ २७)।

ह अ. [हम्] इन अर्थों का सूचक अव्यय—१ क्रोध (उवा)। २ असम्मति (स्वप्न २१)।

हजय पुं [दे] शरीर-स्पर्श-पूर्वक किया जाता शपथ—सौगंध (दे ८, ६१)।

हजे अ. इन अर्थों का सूचक अव्यय—१ दासी का आह्वान (हे ४, २८१, कुमा, पिंग)। २ सखी का आमन्त्रण (स ६२२, सम्मत १७२)।

हंड देखो खंड (हम्मीर १७)।

११८

हडण देखो भडण (गा ६१२, पि ५८८)। हंत देखो हंता (धर्मस २०२, राय २६, सण, कप्पू, पि २७५)।

हंतव्य } देखो हण।
हंता }

हंता अ [हन्त] इन अर्थों का सूचक अव्यय—१ अम्युपगम, स्वीकार (उवा, श्रीप, भग, तदु १४, अणु १६०, गाया १, १—पत्र ७४)। २ कोमल आमन्त्रण (भग, अणु १६०, तदु १४, श्रीप)। ३ वाक्य का आरम्भ। ४ प्रत्यवधारण। ५ संप्रेषण। ६ छेद। ७ निर्देश (राज)। ८ हर्ष। ९ अनुकम्पा (राय)। १० सत्य (उवा)।

हंतु वि [हन्तु] मारनेवाला (आचा, भग, पठम ५१, १६, ७३, १६, विसे २६१७)। हंतूण देखो हण।

हदि अ. 'ग्रहण करो' इस अर्थ का सूचक अव्यय (हे २, १८१, कुमा, आचा २, १, ११, १, २, पि २७५)।

हदि अ. इन अर्थों का सूचक अव्यय—१ विषाद, खेद। २ विकल्प। ३ परचात्ताप। ४ निश्चय। ५ सत्य। ६ 'लो', 'ग्रहण करो' (पाम्र, हे २, १८०, पङ्, कुमा)। ७ आमन्त्रण, संवोधन (पिड २१०, धर्मस ४४)। ८ उपदर्शन (पचा ३, १२, दमनि ३, ३७)।

हभो देखो हहो (सुर ११, २३४, आचा-सूअ २, २, ८१)।

हंस देखो हस्स = हन्व (प्राप्र)।

हंस पुं [हस] १ पक्षि-विशेष (गाया १, १—पत्र ५३, पणह १, १—पत्र ८, कुमा, प्रासू १३, १६६)। २ रजक, घोषी, 'वत्य-घोवा हवति हमा वा' (सूअ १, ४, २, १७)। ३ संन्यासि विशेष (से १, २६; श्रीप)। ४ सूर्य, रवि (सिरि ५४७)। ५ मणि-विशेष, हंसगर्भ नामक रत्न की एक-जाति (पणह १—पत्र २६)। ६ छन्द का एक भेद (पिंग)। ७ तिलोभी राजा। ८